निवेदन

हिंदी-शब्दसागर का यह संक्षिप्त संस्करण हिंदी संसार के सामने रखा जा रहा है। जिन दिनों शब्दसागर प्रस्तुत हो रहा था, उन्हीं दिनों बहुत से लोगों का यह आग्रह था कि जन-साधारण के लिये इसका एक संक्षिप्त संस्करण भी निकाला जाय। पीछे जब कालेजों के विद्यार्थियों को इसकी और भी अधिक आवश्यकता का अनुभव होने लगा, तब काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा ने भी यह सोचकर कि बृहत् शब्दसागर के मूल्य की अधिकता के कारण सब लोग उसका उपयोग नहीं कर सकते, इसका एक संक्षिप्त संस्करण निकालना निश्चित किया। पहले यह काम मेरे परम श्रद्धेय और पुराने मित्र श्रीयुक्त पं० रामचंद्र जी शुक्ल को सौंपा गया था; पर अन्यान्य कार्यों की अधिकता के कारण आप इस संक्षिप्त संस्करण का काम उतनी शीघ्रता से न कर सके, जितनी शीघ्रता से सभा चाहती थी। जब आप शब्दसागर के दो खंडों अर्थात् १२ अंकों को संक्षिप्त कर चुके, तब सभा ने, जल्दी के विचार से, यह काम मुझे सौंपा। मैंने इसे, जहाँ तक शीघ्र मुझसे हो सका, तैयार कर दिया। पर जब कापी प्रेस में गई और एक दो फार्म कंपोज हो गए, तब यह देखा गया कि शुक्ल जी ने जितने अंश का संक्षेप किया है, उसे अभी और भी अधिक संक्षिप्त करने की आवश्यकता है। यदि वह अंश फिर से और अधिक संक्षिप्त न किया जाता और उस अनुपात से शेषांश का भी संक्षेप होता, तो शायद प्रस्तुत संक्षिप्त संस्करण का कलेवर वर्त्तमान से दूना हो जाता। इसलिये शुक्ल जी का संक्षिप्त किया हुआ अंश भी और स्वयं अपना संक्षिप्त किया हुआ कुछ अंश भी मुझे फिर से दोहराकर संक्षिप्त करना पड़ा। अब अंत में यह अपने वर्त्तमान रूप में हिंदी-प्रेमियों के सामने उपस्थित किया जाता है। यद्यपि हिंदी-शब्दसागर के प्रस्तुत करने में मेरा भी कुछ हाथ रहा है, तो भी मैं बिना किसी प्रकार की आत्मश्लाघा के कह सकता हूँ कि शब्दसागर सचमुच सागर है और उसका संक्षिप्त संस्करण तैयार करना भी कदाचित् समुद्र में से मोती निकालने के समान ही कठिन है। तो भी, जैसा हो सका है, यह काम करके पारखियों के सामने रखा जाता है। इसके गुण-दोष का विवेचन उन्हीं पर निर्भर है।

यह संक्षिप्त संस्करण विशेषतः कालेजों के विद्यार्थियों के उपयोग के लिये प्रस्तुत किया गया है और इसे प्रस्तुत करते समय प्रायः उन्हीं की आवश्यकताओं का विशेष ध्यान रखा गया है। कालेजों की पढ़ाई में विद्यार्थियों को प्राचीन काव्यों तथा आधुनिक गद्य तथा पद्य-साहित्य में जो कठिन शब्द मिलते हैं, उन्हीं का संग्रह इसमें विशेष रूप से किया गया है। और यही कारण है कि इसमें अँगरेजी के बहुत ही थोड़े शब्दों को, प्रायः नहीं के समान, स्थान दिया गया है। पर साथ ही यह भी ध्यान रखा गया है कि कालेज के विद्यार्थियों के अतिरिक्त जन-साधारण भी इससे पूरा लाभ उठा सकें। आशा है कि जिन लोगों के उद्देश्य से और जिनके उपयोग के लिये यह संस्करण प्रस्तुत किया गया है, वे इससे यथेष्ट लाभ उठावेंगे। यदि इसका उपयोग करनेवाले सुविज्ञों को इसमें कोई त्रुटि दिखलाई दे तो वे कृपया मुझे सूचित करने का कष्ट करें। आगामी संस्करण में वे त्रुटियाँ दूर कर दी जायँगी।

काशी
१५ फरवरी, १९३३

निवेदक
रामचंद्र वर्म्मा

संकेताक्षरों का विवरण

अं० = अँगरेजी भाषा
अ० = अरबी भाषा
अनु० = अनुकरण शब्द
अप० = अपभ्रंश
अल्पा० = अल्पार्थक प्रयोग
अव्य० = अव्यय
इब० = इबरानी भाषा
उप० = उपसर्ग
क्रि० = क्रिया
क्रि० अ० = क्रिया अकर्मक
क्रि० वि० = क्रिया-विशेषण
क्रि० स० = क्रिया सकर्मक
क्व० = क्वचित् अर्थात् इसका प्रयोग बहुत कम होता है
गुज० = गुजराती भाषा
तु० = तुरकी भाषा
दे० = देखो
देश० = देशज
पं० = पंजाबी भाषा
पा० = पाली भाषा
पुं० = पुल्लिंग
पु० हिं० = पुरानी हिंदी
पुर्त० = पुर्तगाली भाषा
प्रत्य० = प्रत्यय

प्रा० = प्राकृत भाषा
प्रे०, प्रेर० = प्रेरणार्थक
फ़्रां० = फ़्रांसीसी भाषा
फ़ा० = फ़ारसी भाषा
बँग० = बँगला भाषा
बहु० = बहुवचन
भाव० = भाववाचक
मि० = मिलाओ
मुहा० = मुहावरा
यू० = यूनानी भाषा
यौ० = यौगिक अर्थात् दो या अधिक शब्दों के पद
लश० = लशकरी भाषा
लै० = लैटिन भाषा
वि० = विशेषण
व्या० = व्याकरण
सं० = संस्कृत
संयो० क्रि० = संयोज्य क्रिया
स० = सकर्मक
सर्व० = सर्वनाम
स्त्रि० = स्त्रियों द्वारा प्रयुक्त
स्त्री० = स्त्रीलिंग
स्पे० = स्पेनी भाषा
हिं० = हिंदी भाषा

---

* यह चिह्न इस बात को सूचित करता है कि यह शब्द केवल पद्य में प्रयुक्त होता है।
† यह चिह्न इस बात को सूचित करता है कि इस शब्द का प्रयोग प्रांतिक है।
‡ यह चिह्न इस बात को सूचित करता है कि शब्द का यह रूप ग्राम्य है।

संक्षिप्त

हिंदी-शब्दसागर

अ—संस्कृत और हिंदी वर्णमाला का पहला अक्षर। इसका उच्चारण कंठ से होता है, इससे यह कंठ्य वर्ण कहलाता है। व्यंजनों का उच्चारण इस अक्षर की सहायता के बिना अलग नहीं हो सकता; इसी से वर्ण-माला में क, ख, ग आदि वर्ण अकार-संयुक्त लिखे और बोले जाते हैं।

अंक—संज्ञा पुं० [सं०] १. चिह्न। निशान। छाप। आंक। २. लेख। अक्षर। लिखावट। ३. संख्या का चिह्न, जैसे १, २, ३। आँकड़ा। अदद। ४. लिखन। भाग्य। किस्मत। ५. काजल की बिंदी जो नजर से बचाने के लिये बच्चों के माथे पर लगा देते हैं। डिठौना। ६. दाग़। धब्बा। ७. नौ की संख्या (क्योंकि अंक नौ ही तक होते हैं)। ८. नाटक का एक अंश जिसके अंत में जवनिका गिरा दी जाती है। ९. दस प्रकार के रूपकों में से एक। १०. गोद। अँकवार। क्रोड़। ११. शरीर। अंग। देह। १२. पाप। दुःख। १३. बार। दफा। मर्तबा।

मुहा०—अंक देना या लगाना = गले लगना। आलिंगन करना। अंक भरना या लगाना = हृदय से लगाना। लिपटाना। गले लगाना।

अंककार—संज्ञा पुं० [सं०] युद्ध या बाज़ी में हार और जीत का निर्णय करनेवाला।

अंकगणित—संज्ञा पुं० [सं०] १, २, ३ आदि संख्याओं का हिसाब। संख्या की मीमांसा।

अँकटा†—संज्ञा पुं० [सं० कर्कर, प्रा० कक्कर] कंकड़ का छोटा टुकड़ा।

अँकटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० अँकटा] छोटा अँकटा

अँकड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० अंकुर = अँखुआ, टेढ़ी नोक] १. कटिया। हुक। २. तीर का मुड़ा हुआ फल। टेढ़ी गाँसी। ३. बेल। लता। ४. फल तोड़ने का बाँस का डंडा। लग्गी।

अंकधारण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अंकधारी] तप्त मुद्रा के चिह्नों का दगवाना। शंख, चक्र, त्रिशूल आदि के चिह्न गरम धातु से छपवाना।

अंकन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अंकनीय, अंकित, अंक्य] १. चिह्न करना। निशान करना। २. लेखन। लिखना। ३. शंख, चक्र या त्रिशूल के चिह्न गरम धातु से बाहु पर छपवाना। (वैष्णव, शैव) ४. गिनती करना।

अंकपलई—संज्ञा स्त्री० [सं० अंकपल्लव] वह विद्या जिसमें अंकों को अक्षरों के स्थान पर रखते हैं और उनके समूह से वाक्य के समान तात्पर्य निकालते हैं।

अंकपाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] धाय। दाई।

अंकमाल—संज्ञा पुं० [सं०] १ आलिंगन। मैं टाता रहता हैं।
परिरंभण। गले लगाना। २ भेंट।

अंकमालिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. छोटा हार। छोटी माला। २ आलिंगन। भेंट। छड़।

अँकरा—संज्ञा पुं० [सं०] एक घास जो गेहूँ के पौधों में बीच जमता है।

अँकरी—संज्ञा स्त्री०[अँकरा का अल्पा०]अँकरा

अंकरोरी, अँकरौरी—संज्ञा स्त्री० [सं० कर्कर=कंकड़] कंकड़ या खपड़े का बहुत छोटा टुकड़ा।

अँकवार—संज्ञा स्त्री० [सं० अंकपालि, अंकमाल] गोद। छाती।

मुहा०—अँकवार देना=गले लगाना। छाती से लगाना। आलिंगन करना। भेंटना। अँकवार भरना=१ आलिंगन करना। गले मिलना। हृदय से लगाना। २ गोद में बच्चा रहना। संतानयुक्त होना। जैसे—यह तुम्हारी अँकवार भरी रहे।—आशीर्वाद।

यौ०—भेंट अँकवार=आलिंगन। मिलना।

अंकविद्या—संज्ञा स्त्री० दे० "अंकगणित"।

अँकाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० आँकना] १ कूत। अदाजा। अटकल। तखमीना। २ फसल में से जमींदार और काश्तकार के हिस्सों का ठहराव।

अँकाना—क्रि० स० [सं० अंकन] १ कुतवाना। मूल्य निर्धारित कराना। अदाज कराना। २ परीक्षा कराना। परखाना।

अँकाव—संज्ञा पुं० [हिं० आँकना] कूतने या आँकने का काम। कुताई। अदाज।

अंकावतार—संज्ञा पुं० [सं०] नाटक में एक अंक के अंत में आगामी दूसरे अंक के अभिनय की पात्रों द्वारा सूचना या आभास।

अंकित—वि० [सं०] १ चिह्नित। निशान किया हुआ। दागदार। २ लिखित। खचित। ३ वर्णित।

अँकुड़ा—संज्ञा पुं० [सं० अंकुर] १ लोहे का झुका हुआ टेढ़ा काँटा या छड़। २ गाय बैल के पेट का दर्द या मरोड़। ऐंचा। ३ कुलावा। पायजा। ४ लोहे का एक गोल पच्चड़ जो किवाड़ की चूल

में टाता रहता है।

अँकुड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० अँकुड़ा का अल्पा०] १ टेढ़ी कटिया। हुक। २ लोहे की मुड़ी हुई छड़।

अँकुड़ीदार—वि० [हिं० अँकुड़ी+फा० दार] जिसमें अँकुड़ी या कटिया लगी हो। जिस के लिए हुक लगा हो। हुकदार

अँकुर—संज्ञा पुं० एक प्रकार का कसीदा। गड़ारी

अंकुर—संज्ञा पुं० [सं०] [क्रि० अंकुरना वि० अंकुरित] १ अँखुआ। नवोद्भिद गाभ। कनखा। २ डाभ। कल्ला कनखा। कोपल। आँख। ३ कली। ४ नोक। ५ रुधिर। रक्त। खून। ६ रोयाँ। लोम। ७ जल। पानी। ८ मांस के बहुत छोटे लाल दाने जो घाव भरते समय उत्पन्न होते हैं। अंगूर। भराव।

अंकुरना, अंकुराना*—क्रि० अ० [सं० अंकुर] अंकुर फोड़ना। जमना।

अंकुरित—वि० [सं०] अँखुवाया हुआ। उगा हुआ। जिसमें अंकुर हो गया हो।

अंकुरितयौवना—वि० [सं०] वह स्त्री जिसके यौवनावस्था के चिह्न निकल आए हों। उभड़ती हुई युवती।

अंकुश—संज्ञा पुं० [सं०] १ हाथी को हाँकने का दोमुहा भाला। आँकुस। गजबाग। २ प्रतिबंध। दबाव। रोक।

अंकुशग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] महावत। हाथी वान। निषादी। फीलवान।

अंकुशदंता—वि० [सं० अंकुशदंत] वह हाथी जिसका एक दाँत सीधा और दूसरा पृथ्वी की ओर झुका रहता है। गुंडा।

अँकुसी—संज्ञा स्त्री० [हिं० अंकुश+ई] १ टेढ़ी या झुकी कील जिसमें कोई चीज टाँकी या फँसाई जाय। हुक। कँटिया। २ टेढ़ी छड़ जिससे किवाड़ बाहर से सिटकिनी लोहे के छेद में डालकर खोलते हैं।

अंकोट—संज्ञा पुं० दे० "अंकोल"।

अँकोर—संज्ञा पुं० [सं० अंकमाल या अंकपालि हिं० अँकवार] १ अंक। गोद। छाती।

"अँकवार"। २. भेंट । नजर । ३. । रिश्वत । ४. खुराक या कलेवा खेत में काम करनेवालों के पास भेजा ता है। छाक । कोर । दुपहरिया ।
ारी–संज्ञा स्त्री० [हिं० अँकार + ई] १. द । अंक । २. आलिंगन।
ोल–संज्ञा पुं० [सं०] एक पहाड़ी पेड़।
य–वि० [सं०] चिह्न करने योग्य। शान लगाने लायक।
ा पुं० १. दागने के योग्य अपराधी। मृदंग, तबला, पखावज आदि बाजे गोद में रखकर बजाए जायँ।
ड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "आँख"।
-मीचनी–संज्ञा स्त्री० दे० "आँख-मचौली"।
खिया–संज्ञा स्त्री० [हिं० आँख] १. थौड़ी से ठोंक ठोंककर नक्काशी करने की कलम या ठप्पा । २. दे० "आँख"।
खुआ–संज्ञा पुं० [सं० अंकुर] [क्रि० अँखुआना] १. बीज से फूटकर निकली हुई टेढ़ी नोक जिसमें से पहली पत्तियाँ निकलती हैं। अंकुर । २. बीज से पहले-पहल निकली हुई मुलायम बँधी पत्ती। गाभ । कल्ला । कनखा। कोंपल ।
अँखुआना–क्रि० अ० [हिं० अँखुआ] अंकुर फोड़ना या फेंकना । उगना । जमना।
अंग–संज्ञा पुं० [सं०] १. शरीर । बदन । देह । तन । गात्र । जिस्म । २. अवयव। ३. भाग । अंश । खंड । टुकड़ा । ४. भेद । प्रकार । भाँति । तरह । ५. उपाय। ६. पक्ष। तरफ । अनुकूल पक्ष । सहायक । सुहृद । पक्ष का तरफ़दार । ७. प्रत्यययुक्त शब्द का प्रत्ययरहित भाग। प्रकृति । (व्या०) । ८. जन्मलग्न । ९. साधन जिसके द्वारा कोई कार्य्य हो। १०. बंगाल में भागलपुर के आसपास का प्रदेश जिसकी राजधानी चंपापुरी थी। ११. एक संबोधन । प्रिय । प्रियवर। १२. छः की संख्या । १३. पार्श्व । ओर। तरफ । १४. नाटक में अप्रधान रस। १५. नाटक में नायक या अंगी का कार्य-साधक पात्र । १६. सेना के चार विभाग; यथा—हाथी, घोड़े, रथ और पैदल। १७. योग के आठ विधान । १८. राजनीति के सात अंग; यथा–स्वामी, अमात्य, सुहृद, कोष, राष्ट्र, दुर्ग और सेना।
मुहा०–अंग छूना = माथा छूना । क़सम खाना। अंग टूटना = अँगड़ाई आना। जम्हाई के साथ आलस्य से अंगों का फैलाया जाना। अंग तोड़ना = अँगड़ाई लेना। अंग लगाना = १. लिपटना। आलिंगन करना । छाती से लगाना। २. (भोजन का) शरीर को पुष्ट करना। शरीर को बलवान् करना। ३. काम में आना। ४.हिलना । परचना । अंग लगाना = १. आलिंगन करना । छाती से लगाना। २. हिलाना । परचाना । अंग करना = अंगीकार करना।
वि० १. अप्रधान । गौण। २. उलटा।
अंगज–वि० [सं०] शरीर से उत्पन्न । संज्ञा पुं० [स्त्री० अंगजा] १. पुत्र । बेटा। लड़का । २. पसीना । ३. बाल । केश । रोम । ४. काम, क्रोध आदि विकार । ५. साहित्य में कायिक अनुभाव । ६. कामदेव । ७. मद । ८. रोग ।
अंगजा–संज्ञा स्त्री० [सं०] कन्या । पुत्री।
अंगजाई–संज्ञा स्त्री० दे० "अंगजा"।
अंगड़ खंगड़–वि० [अनु०] १. बचा खुचा । गिरा पड़ा । २. टूटा फूटा । संज्ञा पुं० लकड़ी, लोहे आदि का टूटा फूटा सामान ।
अँगड़ाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० अँगड़ाना] देह टूटना। बदन टूटना । आलस से जँभाई के साथ अंगों को तानना या फैलाना।
मुहा०–अँगड़ाई तोड़ना = आलस्य में बैठे रहना । कुछ काम न करना।
अँगड़ाना–क्रि० अ० [सं० अंग + अटन] देह तोड़ना। सुस्ती में ऐंडाना। बंद या जोड़ों के भारीपन को हटाने के लिये अंगों को पसारना या तानना।
अंगण–संज्ञा पुं० [सं०] आँगन । सहन।

अंगत्राण–संज्ञा पुं० [सं०] १ शरीर को ढकनेवाला। अँगरखा। कुरता। २ कवच।

अंगद–संज्ञा पुं० [सं०] १. बाहु पर पहनने का एक गहना। बिजायठ। बाजूबन्द। २ बालि नामक बंदर का पुत्र जो रामचन्द्र जी की सेना में था। ३ लक्ष्मण के दो पुत्रों में से एक।

अंगदान–संज्ञा पुं० [सं०] १ पीठ दिखलाना। युद्ध से भागना। लड़ाई से पीछे फिरना। २ तनुदान। तनसमर्पण। सुरति। रति। (स्त्री के लिये)

अँगना†–संज्ञा पुं० दे० "आँगन"।

अंगना–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अच्छे अंगवाली स्त्री। कामिनी। २ सार्वभौम नामक उत्तर दिग्गज की हथिनी।

अँगनाई–संज्ञा स्त्री० दे० "आँगन"।

अँगनैया†–संज्ञा स्त्री० दे० "आँगन"।

अंगन्यास–संज्ञा पुं० [सं०] शास्त्र के मंत्रों को पढ़ते हुए एक एक अंग का छूना। (तंत्र)

अंगभंग–संज्ञा पुं० [सं०] १ अवयव का खंडन या नाश। अंग का खंडित होना। शरीर के किसी भाग की हानि। २ स्त्रियों की मोहित करने की चेष्टा। अंगभंगी।

वि० जिसका कोई अवयव कटा या टूटा हो। अपाहज। लँगड़ा लूला। लुंज।

अंगभंगी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चेष्टा। २ स्त्रियों की मोहित करने की क्रिया।

अंगभाव–संज्ञा पुं० [सं०] संगीत में नेत्र, भृकुटी और हाथ पैर आदि अंगों से मनो विकार का प्रकाश।

अंगभूत–वि० [सं०] १ अंग से उत्पन्न। २ अंतर्गत। भीतर। अंतरभूत।

संज्ञा पुं० पुत्र। बेटा।

अंगमर्द–संज्ञा पुं० [सं०] १ हड्डियों का फूटना। हड्डियों में दर्द। हड़फूटन रोग। २ हाथ पैर दबानेवाला नौकर। संवाहक।

अंगरक्षा–संज्ञा स्त्री० [सं०] शरीर की रक्षा। देह का बचाव। बदन की हिफाजत।

अँगरखा–संज्ञा पुं० [सं० अंग = देह + रक्षक = बचानेवाला] एक पहनावा जो घुटनों के नीचे तक लंबा होता है और जिसमें बाँधने के लिये बंद टँके रहते हैं। बंददार अंगा। चपकन।

अँगरा†–संज्ञा पुं० [सं० अंगार] १ दहकता हुआ कोयला। अंगारा। २ बैलों के पैर का एक रोग।

अंगराग–संज्ञा पुं० [सं०] १ चंदन आदि का लेप। उबटन। बटना। २ केसर, कपूर, कस्तूरी आदि सुगंधित द्रव्यों से मिला हुआ चंदन जो अंग में लगाया जाता है। ३ वस्त्र और आभूषण। ४ शरीर की शोभा के लिये महावर आदि रँगने की सामग्री। ५ स्त्रियों के शरीर के पाँच अंगों की सजावट—माँग में सिंदूर, माथे में खौर, गाल पर तिल की रचना, केसर का लेप, हाथ पैर में मेंहदी या महावर। ६ एक प्रकार की सुगन्धित दली किसी बुकनी जिसे मुँह में लगाते हैं।

अँगराना*–क्रि० अ० दे० "अँगड़ाना"।

अँगरी–संज्ञा स्त्री० [सं० अंग + रक्षा] कवच झिलम। बख्तर।

संज्ञा स्त्री० [सं० अंगुलीय] अंगुलित्राण।

अँगरेज–संज्ञा पुं० [पुर्त० इंगलेज] [वि० अँगरेजी] इँगलैंड देश का निवासी।

अँगरेजी–वि० [हिं० अँगरेज] अँगरेजों का। इँगलैंड देश का। विलायती।

संज्ञा स्त्री० अँगरेज लोगों की बोली। इँगलैंड निवासियों की भाषा।

अँगलेट–संज्ञा पुं० [सं० अंग] शरीर की गठन। देह का ढाँचा। काठी। उठान।

अँगवना*–क्रि० स० [सं० अंग] १ अंगीकार करना। स्वीकार करना। २ ओढ़ना। अपने सिर पर लेना। ३ बरदाश्त करना। सहना। उठाना।

अँगवारा–संज्ञा पुं० [सं० अंग = भाग, सहायता + चार] १ गाँव के एक छोटे भाग,

मालिक। २. खेत की जोताई में एक दूसरे की सहायता।

विकृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] अपस्मार। मृगी या मिरगी रोग। मूर्च्छा रोग।

विक्षेप—संज्ञा पुं० [सं०] १. चमकना। मटकना। २. नृत्य। ३. कलाबाजी।

विद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] सामुद्रिक विद्या।

शोष—संज्ञा पुं० [सं०] एक रोग जिसमें शरीर सूखता है। सुखंडी रोग।

सिहरी—सं० स्त्री० [सं० अंग = शरीर + हर्ष = कंप] ज्वर आने के पहिले देह की कँपकँपी। जूड़ी। कंप। कँपकँपी।

गहार—संज्ञा पुं० [सं०] १. अंगविक्षेप। चमकना। मटकना। २. नृत्य। नाच।

अंगहीन—वि० [सं०] जिसका कोई एक अंग न हो।

संज्ञा पुं० कामदेव का एक नाम।

अंगांगिभाव—संज्ञा पुं० [सं०] १. अवयव और अवयवी का परस्पर संबंध। अंश का संपूर्ण के साथ संबंध। २. गौण और मुख्य का परस्पर संबंध। ३. अलंकार में संकर का एक भेद।

अंगा—संज्ञा पुं० [सं० अंग] अँगरखा। चपकन।

अंगाकड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० अंगार + हिं० करी] अँगारों पर सेंकी हुई मोटी रोटी। लिट्टी। बाटी।

अंगार—संज्ञा पुं० [सं०] १. दहकता हुआ कोयला। आग का जलता हुआ टुकड़ा। बिना धुएँ की आग। निर्धूम अग्नि। २. चिनगारी।

मुहा०—अंगार उगलना = कड़ी कड़ी बातें मुँह से निकालना। अंगारों पर पैर रखना = १. जान बूझकर हानिकारक कार्य्य करना। अपने को खतरे में डालना। २. जमीन पर पैर न रखना। इतराकर चलना। अंगारों पर लोटना = १. अत्यंत रोष प्रकट करना। २. दाह से जलना। ईर्ष्या से व्याकुल होना। लाल अंगारा = १. बहुत लाल। २. अत्यंत क्रुद्ध।

अंगारक—संज्ञा पुं० [सं०] १. अंगारा। २. मंगल ग्रह। ३. भृंगराज। भँगरैया। भँगरा। ४. कटसरैया का पेड़।

अंगारधानिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] अँगीठी। बोरसी। आतिशदान।

अंगारपाचित—संज्ञा पुं० [सं०] अंगार या दहकती हुई आग पर पकाया हुआ खाना। जैसे, कबाब, नानखताई इत्यादि।

अंगारपुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] इंगुदी वृक्ष। हिंगोट का पेड़।

अंगारमणि—संज्ञा पुं० [सं०] मूँगा।

अंगारवल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं०] गुंजा। घुंघची या चिरमटी।

अंगारा—संज्ञा पुं० दे० "अंगार"

अंगारिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अँगीठी। बोरसी। आतिशदान। २. ऐसी दिशा जिस पर डूबे हुए सूर्य्य की लाली छाई हो।

अंगारी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. छोटा अंगारा। २. चिनगारी। ३. लिट्टी। बाटी। अंगाकड़ी। ‡ ४. बोरसी।

अँगारी—संज्ञा स्त्री० [सं० अंगारिका] १. ईख के सिर पर की पत्ती। २. गँडेरी। गेंड़ी। गन्ने के छोटे कटे टुकड़े।

अंगिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] अँगिया। चोली। स्त्रियों की कुरती। कंचुकी।

अँगिया—संज्ञा स्त्री० [सं० अंगिका, प्रा० अँगिया] स्त्रियों की चोली। कुरती।

अंगिरस—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्राचीन ऋषि जो दस प्रजापतियों में गिने जाते हैं। २. बृहस्पति। ३. साठ संवत्सरों में से छठा। ४. कटीला गोंद। कतीरा।

अंगिरा—संज्ञा पुं० दे० "अंगिरस"।

अँगिराना*—क्रि० अ० दे० "अँगड़ाना"।

अंगी—संज्ञा पुं० [सं०] १. शरीरी। देहधारी। शरीरवाला। २. अवयवी। उपकार्य। अंशी। समष्टि। ३. प्रधान। मुख्य। ४. चौदह विद्याएँ। ५. नाटक का प्रधान नायक। ६. नाटक में प्रधान रस।

अगीकार–सज्ञा पु० [स०] स्वीकार। मजूर। कबूल। ग्रहण।

अंगीकृत–वि० [स०] स्वीकृत। मजूर। स्वीकार किया हुआ। ग्रहण किया हुआ।

अँगीठा–सज्ञा पु० [स० अग्नि=आग+स्था=ठहरना] बडी अँगीठी। बडी बोरसी। आग रखने का बरतन।

अँगीठी–सज्ञा स्त्री० [अँगीठा का अल्पा०] आग रखने का बरतन। आतिशदान।

अंगुर†–सज्ञा पु० दे० "अगुल"।

अँगुरी†–सज्ञा स्त्री० दे० "उँगली"।

अगुल–सज्ञा पु० [स०] १ आठ जौ की लबाई। आठ यवोदर का परिमाण। २ ग्रास या बारहवाँ भाग। (ज्यो०)

अगुलित्राण–सज्ञा पु० [स०] गोह के चमडे का बना हुआ दस्ताना जिसे बाण चलाते समय उँगलियो में पहनते है।

अगुलिपव–सज्ञा पु० [स०] उँगलियो की पोर। उँगली की गाँठो के बीच का भाग।

अँगुली–सज्ञा स्त्री० [स० अगुली] † १ उँगली। २ हाथी के सूँड का अगला भाग।

अगुल्यादेश–सज्ञा पु० [स०] उँगली से अभिप्राय प्रकट करना। इशारा। सकेत।

अगुल्यानिर्देश–सज्ञा पु० [स०] बदनामी। कलक। लाछन। अगुश्तनुमाई।

अगुश्तनुमाई–सज्ञा स्त्री० [फा०] बदनामी। कलक। लाछन। दोषारोपण।

अगुश्तरी–सज्ञा स्त्री० [फा०] अँगूठी, मुदरी। मुद्रिका।

अगुश्ताना–सज्ञा पु० [फा०] १ उँगली पर पहनने की लोहे या पीतल की एक टोपी जिसे दरजी सीते समय एक उँगली में पहन लेते हैं। २ आरसी। अङ्सी। हाथ के अँगूठे की एक प्रकार की मुदरी।

अंगुष्ठ–सज्ञा पु० [स०] हाथ या पैर की सबसे मोटी उँगली। अँगूठा।

अंगुसी–सज्ञा स्त्री० [स० अकुश] १ हल का फाल। २ सोनारों की बकनाल या टेढी नली जिससे दीये या लौ को फूँक-कर टाँका जोडते हैं।

अँगूठा–सज्ञा पु० [स० अगुष्ठ, प्रा० अगुट्ठ] मनुष्य के हाथ की सबसे छोटी और मोटी उँगली। पहली उँगली।

मुहा०–अँगूठा चूमना=१ खुशामद करना। शुश्रूषा करना। २ अधीन होना। अँगूठा दिखाना=१ किसी वस्तु को देने से अवज्ञापूर्वक नाही करना। २ किसी कार्य को करने से हट जाना। किसी कार्य का करना अस्वीकार करना। अँगूठे पर मारना=तुच्छ समझना। परवा न करना।

अँगूठी–सज्ञा स्त्री० [हि० अँगूठा+ई] १ मुदरी। मुद्रिका। उँगली में पहनने का एक गहना। छल्ला। २ उँगली में लिपटाया हुआ तागा। (जुलाह)

अगूर–सज्ञा पु० [फा०] एक लता और उसके फल का नाम जो बहुत मीठा और रसीला होता है। दाख। द्राक्षा।

मुहा०–अगूर का मडवा या अगूर की टट्टी=१ अगूर की बेल के चढने और फैलने के लिये बाँस की फट्टियो का बना हुआ मडप। २ एक प्रकार की आतिशबाजी।

सज्ञा पु० [स० अकुर] १ मास के छोटे छोटे लाल दाने जो घाव भरते समय दिखाई पडते है। घाव का भराव।

मुहा०–अगूर तडकना या फटना=भरते हुए घाव पर बँधी हुई मास की झिल्ली का अलग हो जाना।

२ अकुर। अँखुवा।

अगूरशेफा–सज्ञा पु० [फा०] हिमालय की एक जडी।

अँगूरी–वि० [फा० अगूर+ई] १ अगूर से बना हुआ। २ अगूर के रग का। सज्ञा पु० हल्का हरा रग।

अँगेजना*–क्रि० स० [स० अग=शरीर+एज=हिलना, काँपना।] १ सहना। बरदाश्त करना। उठाना। २ अगीकार करना। स्वीकार करना।

अँगेठी–सज्ञा स्त्री० दे० "अँगीठी"।

ंगेरना*–क्रि०स०[सं० अंग=देह+ईर=जाना] १. स्वीकार करना। मंजूर करना। २. सहना। बरदाश्त करना।
ंगोछना–क्रि० अ०[सं० अंगप्रोक्षण] गीले कपड़े से देह पोंछना। गीला कपड़ा फेरकर बदन साफ़ करना।
ंगोछा–संज्ञा पुं०[सं० अंगप्रोक्षक] १. देह पोंछने का कपड़ा। तौलिया। गमछा। २. उपरना। उपवस्त्र। उत्तरीय।
ंगोछी–संज्ञा स्त्री०[हिं० अँगोछा] १. देह पोंछने के लिये छोटा कपड़ा। २. छोटी धोती जिससे कमर से आधी जाँघ तक ढक जाय।
ंगोजना*–क्रि० स० दे० "अँगेजना"।
ंगोरा–संज्ञा पुं० [देश०] मच्छर।
ंगौंगा–संज्ञा पुं०[सं० अग्र=अगला+अंग=भाग] धर्म्मार्थ बाँटने या देवता को चढ़ाने के लिए अलग निकाला हुआ अन्न आदि। अँगऊँ। पुजौरा।
ंगौरिया–संज्ञा पुं०[सं० अंग=भाग] वह हलवाहा जिसे कुछ मजदूरी न देकर हल बैल उधार देते हैं।
ंघड़ा–संज्ञा पुं०[सं० अंघ्रि] काँसे का छल्ला जिसे छोटी जाति की स्त्रियाँ पैर के अँगूठे में पहनती है।
ंघस–संज्ञा पुं०[सं०] पाप। पातक।
ंघिया–संज्ञा स्त्री०[देश०] आटा या मैदा चालने की छलनी। अँगिया। आखा।
ंघ्रि–संज्ञा पुं०[सं०] पैर। चरण। पाँव।
ंघ्रिप–संज्ञा पुं०[सं०] पेड़। वृक्ष।
अंचरा–संज्ञा पुं० दे० "आंचल"।
अंचल–संज्ञा पुं०[सं०] १. साड़ी का छोर। आँचल। पल्ला। छोर। दे० "आँचल"। २. देश का वह भाग या प्रांत जो सीमा के समीप हो। ३. किनारा। तट।
अँचला–संज्ञा पुं० [सं० अंचल] १. दे० "आँचल"। २. कपड़े का एक टुकड़ा जिसे साधु लोग धोती के स्थान पर लपेटे रहते हैं।
–चित–वि०[सं०] पूजित। आराधित।

अंछर–संज्ञा पुं०[सं० अक्षर] १. मुँह के भीतर का एक रोग जिसमें काँटे से उभर आते हैं। † २. अक्षर। ३. टोना। जादू।
मुहा०–अंछर मारना=जादू करना। टोना करना। मंत्र का प्रयोग करना।
अंज–संज्ञा पुं०[सं०] दे० "कंज"।
अंजन–संज्ञा पुं०[सं०] १. सुरमा। काजल। २. रात। रात्रि। ३. स्याही। रोशनाई। ४. पश्चिम का दिग्गज। ५. छिपकली। ६. एक जाति का बगला। नटी। ७. एक पेड़ जिसकी लकड़ी बड़ी मजबूत होती है। ८. सिद्धांजन, जिसके लगाने से कहा जाता है कि जमीन में गड़े खज़ाने दिखाई पड़ते हैं। ९. एक पर्वत। १०. कद्रु से उत्पन्न एक सर्प का नाम। ११. लेप। १२. माया।
वि० काला। सुरमई रंग का।
अंजनकेश–संज्ञा पुं०[सं०] दीपक। दीया।
अंजनकेशी–संज्ञा स्त्री०[सं०] नख नामक सुगंध द्रव्य।
अंजन-शलाका–संज्ञा स्त्री०[सं०] अंजन या सुरमा लगाने की सलाई। सुरमचू।
अंजनसार–वि० [सं० अंजन+सारण] सुरमा लगा हुआ। अंजन-युक्त।
अंजनहारी–संज्ञा स्त्री०[सं० अंजन+कार] १ आँख की पलक के किनारे की फुनसी। बिलनी। गुहंजनी। अंजना। २. एक प्रकार का उड़नेवाला कीड़ा जिसे कुम्हारी या बिलनी भी कहते हैं। भृङ्ग।
अंजना–संज्ञा स्त्री०[सं०] १. केशरी नामक बंदर की स्त्री जिसके गर्भ से हनुमान् उत्पन्न हुए थे। २. बिलनी। गुहांजनी। दो रंग की छिपकली।
संज्ञा पुं० एक मोटा धान।
* क्रि० स० दे० "आँजना"।
अंजनानंदन–संज्ञा पुं० [सं०] अंजना के पुत्र हनुमान्।
अंजनी–संज्ञा स्त्री०[सं०] १. हनुमान् की माता अंजना। २. माया। ३. चंदन

लगाए हुई, स्त्री। ४ सुरमा। ५ अंजित–वि० [स०] अंजन लगाए हुए। आँख की पलक की फुड़िया। बिलनी। अंजनहार। आँज हुआ।

अंजबार–संज्ञा पु० [फा०] एक पौधा जिसकी जड़ या शाखा और शरबत हकीम लोग सरदी और कफ के रोग में देते हैं।

अंजर पंजर–संज्ञा पु० [स० पंजर] देह का बंद। शरीर का जोड़। ठठरी। पसली।

मुहा०–अंजर पंजर ढीला होना = शरीर के जोड़ों का उखड़ना या हिल जाना। देह का बंद बंद टूटना। शिथिल होना। पस्त होना।

क्रि० वि० अगल बगल। पार्श्व में।

अंजल, अंजला–संज्ञा पु० [स० अंजलि] दे० "अंजली"।

संज्ञा पु० दे० 'अन्नजल'।

अंजलि, अंजली–संज्ञा स्त्री० [स०] १ दोनों हथेलियों को मिलाकर बनाया हुआ संपुट। दोनों हथेलियों को मिलाने से बना हुआ गड्ढा। २ उतनी वस्तु जितनी एक अंजली में आवे। प्रस्थ। कुडव। ३ एक नाप जो सोलह तोले के बराबर होती है। दो पसर। ४ हथेलियों से दान देने के लिये निकाला हुआ अन्न।

अंजलिगत–वि० [स०] १ अंजली में आया हुआ। दोनों हथेलियों पर रक्खा हुआ। २ हाथ में आया हुआ। प्राप्त।

अंजलिपुट–संज्ञा पु० [स०] अंजली।

अंजलिबद्ध–वि० [स०] हाथ जोड़े हुए।

अँजवाना–क्रि० स० [स० अंजन] अंजन लगवाना। सुरमा लगवाना।

अंजहा†–वि० [हिं० [अनाज + हा] [स्त्री अंजही] अनाज का। अन्न के मेल से बना हुआ।

अंजही–संज्ञा स्त्री० [हिं० अंजहा] वह बाजार जहाँ अन्न बिकता है। अनाज की मंडी।

अँजाना–क्रि० स० [हिं० अंजन] अंजन लगवाना। सुरमा लगवाना।

अंजाम–संज्ञा पु० [फा०] १ समाप्ति। पूर्ति। अंत। २ परिणाम। फल।

मुहा०–अंजाम देना = पूर्ण करना।

अंजीर–संज्ञा पु० [फा०] एक पेड़ तथा उसका फल जो गूलर के समान होता है और खाने में मीठा होता है।

अँजुरी, अंजुली*†–संज्ञा स्त्री० दे० "अंजलि"।

अँजोर*†–संज्ञा पु० दे० "उजाला"।

अँजोरना*†–क्रि० स० [हिं० अँजुरी] १ बटोरना। २ छीनना। हरण करना।

क्रि० स० [स० उज्ज्वलन] जलाना। प्रकाशित करना। बालना। जैसे–दीपक अँजोरना।

अँजोरा†–वि० दे० "उजाला"।

यौ०–अँजोरा पाख = शुक्ल पक्ष।

अँजोरी*†–संज्ञा स्त्री० [हिं० अँजोर + ई] १ प्रकाश। रोशनी। चमक। उजाला। २ चाँदनी। चंद्रिका।

वि० स्त्री० उजाली। प्रकाशमयी।

अंझा–संज्ञा पु० [स० अनध्याय, प्रा० अनज्झा] नागा। तातील। छुट्टी।

अँटना–क्रि० अ० [स० अट = चलना] १ समाना। किसी वस्तु के भीतर जाना। २ किसी वस्तु के ऊपर सटीक बैठना। ठीक चिपकना। ३ भर जाना। ढँक जाना। ४ पूरा पड़ना। काफी होना। बस होना। काम चलना। ५ पूरा होना। खपना।

अंटा–संज्ञा पु० [स० अण्ड] १ बड़ी गोली। गोला। २ सूत या रेशम का लच्छा। ३ बड़ी कौड़ी। ४ एक खेल जिसे अँगरेज हाथीदाँत की गोलियों से मेज पर खेला करते हैं। बिलियर्ड।

अंटा गुड़गुड़–वि० [हिं० अंटा + गुड़गुड़] नशे में चूर। बेहोश। बेसुध। अचेत।

अंटाघर–संज्ञा पु० [हिं० अंटा + घर] वह घर जिसमें गोली का खेल खेला जाय।

अंटाचित–क्रि० वि० [हिं० अंटा + चित] पीठ के बल। सीधा। पीठ जमीन पर किए हुए। पट और औंधा का उलटा।

मुहा०–अंटाचित होना = १ स्तब्ध होना। अवाक् होना। सन्न होना। २ बेका

ोना। बरबाद होना। किसी काम का न रह जाना। ३. नशे में बेसुध होना। बेख़बर होना। अचेत होना। चूर होना।

टाघ्घू–संज्ञा पुं० [हिं० अंटक + सं० अधिक] जुए में फेंकनेवाली कौड़ी।

टिया–संज्ञा स्त्री० [हिं० अंटी] घास, खर या पतली लकड़ियों आदि का बँधा हुआ छोटा गट्ठा। गठिया। पूला। मुट्ठी।

टियाना–क्रि० स० [हिं० अँटी] १. उँगलियों के बीच में छिपाना। हथेली में छिपाना। २. चारों उँगलियों में लपेटकर डोरे की पिंडी बनाना। ३. घास, खर या पतली लकड़ियों का मुट्ठा बाँधना। ४. ग़ायब करना। हज़म करना।

टी–संज्ञा स्त्री० [सं० अष्टि, प्रा० अट्ठि] गाँठ। [क्रि० अँटियाना] १. उँगलियों के बीच का स्थान या अंतर। घाई। २. धोती की वह लपेट जो कमर पर रहती है। गाँठ।

मुहा०–अंटी करना = किसी का माल उड़ा लेना। धोखा देकर कोई वस्तु ले लेना। अंटी मारना = १ जुआ खेलते समय कौड़ी को उँगलियों के बीच में छिपा लेना। २. आँख बचाकर धीरे से दूसरे की वस्तु को सरका लेना। धोखा देकर कोई चीज़ उड़ा लेना। ३ तराजू की डाँडी को इस ढंग से पकड़ना कि तौल में चीज़ कम चढ़े। कम तौलना। डाँडी मारना ३. तर्जनी के ऊपर मध्यमा को चढ़ाकर बनाई हुई मुद्रा। डोंडिया। डॅंडोइया। (जब कोई लड़का अत्यज या अपवित्र वस्तु को छू लेता है तब और लड़के छूत से बचने के लिए ऐसी मुद्रा बनाते हैं।) ४. सूत या रेशम का लच्छा। अट्टी। ५. अटेरन। सूत लपेटने की लकड़ी। ६. विरोध। बिगाड़। लड़ाई। शरारत। ७. कान में पहनने की छोटी बाली। मुरकी।

[illegible]–संज्ञा पुं० [हिं० अटना] तेली के [illegible] की आँख का ढक्कन।

[illegible]–संज्ञा स्त्री० सं० अष्टपदी] किलनी।

[illegible]–संज्ञा स्त्री० [सं० अष्ठि = गठली, गाँठ] १. चीयाँ। गुठली। बीज। २. गाँठ। गिरह। ३. गिल्टी। कड़ापन।

अंड–संज्ञा पुं० [सं०] १. अंडा। २. अंडकोश। फोता। ३. ब्रह्मांड। लोकमंडल। विश्व। ४. वीर्य्य। शुक्र। ५. कस्तूरी का नाफ़ा। मृगनाभि। ६. पंच आवरण। दे० "कोश"। ७. कामदेव। ८. पिंड। शरीर। ९. मकानों की छाजन के ऊपर के गोल कलश।

अंडकटाह–संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मांड। विश्व।

अंडकोश–संज्ञा पुं० [सं०] १. फोता। ख़ुसिया। आँड। बैजा। वृषण। २. ब्रह्मांड। लोकमंडल। संपूर्ण विश्व। ३. सीमा। हद। ४. फल का छिलका।

अंडज संज्ञा पुं० [सं०] अंडे से उत्पन्न होनेवाले जीव; जैसे, सर्प, पक्षी, मछली इत्यादि।

अंडबंड–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. असंबद्ध प्रलाप। बे सिर पैर की बात। ऊटपटाँग। अनाप शनाप। व्यर्थ की बात। २ गाली। वि० असंबद्ध। बे सिर पैर का। इधर उधर का। अस्त व्यस्त। व्यर्थ का।

अंडरना†–क्रि० अ० [सं० अतरण] धान के पौधे का उस अवस्था में पहुँचना जब बाल निकलने पर हों। रेंड़ना। गर्भाना।

अंडवृद्धि–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक रोग जिसमें अंडकोश या फोता फूलकर बहुत बढ़ जाता है। फोते का बढ़ना।

अंडस–संज्ञा स्त्री० [देश०]. कठिनता। कठिनाई। मुश्किल। संकट। असुविधा।

अंडा–संज्ञा पुं० [सं० अंड] [वि० अंडैल] १. वह गोल वस्तु जिसमें से पक्षी, जलचर और सरीसृप आदि अंडज जीवों के बच्चे फूटकर निकलते हैं। बैजा।

मुहा०–अंडा ढीला होना = १. नस ढीली होना। थकावट आना। शिथिल होना। २. सुस्त होना। निर्द्रव्य होना। दिवालिया होना। अंडा सरकना = हाथ पैर हिलना। अंग डोलना। उठना। चेष्टा या प्रयत्न होना। अंडा सरकाना = हाथ पैर हिलाना। अंग

होजाना। १उठना। ऊपर जाना। अडा सना = १ पक्षियों का अपने अडों पर गर्मी पहुँचाने के लिये बैठना। २ घर म बैठे रहना। बाहर न निकलना।
२ शरीर। देह। पिंड।
अडाकार–वि० [स०] अडे के आकार का। लवाई लिए हुए गोल।
अडाकृति–सज्ञा स्त्री० [स०] अडे का आकार। अडे की शक्ल।
वि० अडाकार। लवाई लिए गोल।
अडी–सज्ञा स्त्री० [स० एरड] १ रेंडी। रेड के फल का बीज। २ रेंड या एरड का पेड। ३ एक प्रकार का रेशमी कपडा।
अँडुआ–सज्ञा पु० दे० 'आँड'।
अँडुआना–क्रि० स० [स० अड] बधिया करना। बछड के अडकोश को कुचलना।
अँडुआ बैल–सज्ञा पु० [हि० अँडुआ + बैल] १ बिना बधियाया हुआ बैल। साँड। २ बडे अडकोशवाला आदमी जो उसके बोझ से चल न सके। ३ सुस्त आदमी।
अडैल–वि० [हि० अडा] जिसके पेट म अडे हो। अडवाली।
अत–सज्ञा पु० [स०] [वि० अतिम, अत्य] १ समाप्ति। अखीर। अवसान। इति। २ शेप या अतिम भाग। पिछला अश। महा०–अत बनना = परिणाम अच्छा होना। अत बिगडना = परिणाम बुरा होना। ३ सीमा। हद। अवधि। पराकाष्ठा। ४ अतकाल। मरण। मृत्यु। ५ परिणाम। फल। नतीजा। ६ समीप। निकट। ७ बाहर। दूर। ८ प्रलय। सज्ञा पु० [स० अन्तस] १ अत करण। हृदय। जी। मन। जैसे अत की बात। २ भेद। रहस्य। गुप्त भाव। मन की बात। *सज्ञा पु० [स० अन्त्र] आँत। अँतडी। क्रि० वि० अत में। आखिरकार। निदान। क्रि० वि० [स० अन्यत्र, हि० अनत] और जगह। दूर। अलग। जुदा।
अतक–सज्ञा पु० [स०] १ अत करनेवाला। नाश करनेवाला। २ मृत्यु जो प्राणियों के जीवन का अत करती है। मौत। ३ यमराज। काल। ४ सन्निपात ज्वर का एक भेद। ५ ईश्वर, जो प्रलय में सबका सहार करता है। ६ शिव।
अतकारी–सज्ञा पु० [स०] अत करनेवाला। सहारक। मार डालनेवाला।
अतकाल–सज्ञा पु० [स०] १ अतिम समय। मरने का समय। आखिरी वक्त। २ मृत्यु। मौत। मरण।
अतक्रिया–सज्ञा स्त्री० [स०] अत्येष्टि कर्म। मरने के पीछे का क्रिया कर्म।
अतग–सज्ञा पु० [स०] पारगामी। पार गत। जानकारी में पूरा। निपुण।
अतगति–सज्ञा स्त्री० [स०] अतिम दशा। मृत्यु। मरण। मौत।
अतघाई*–वि० [स० अन्तघाती] विश्वासघाती। धोखा देनवाला। दगाबाज।
अँतडी–सज्ञा स्त्री० [स० अन्त्र] आँत। मुहा०–अँतडी जलना = पेट जलना। बहुत भूख लगना। अँतडी गले में पडना = किसी आपत्ति म फँसना। अँतडियों का बल खोलना = बहुत दिन के बाद भोजन मिलने पर खूब पेट भरना खाना।
अतपाल–सज्ञा पु० [स०] १ द्वारपाल। ड्योढीदार। पहरू। दरबान। २ राज्य की सीमा पर का पहरेदार।
अतरग–वि० [स०] १ भीतरी। बहिरग का उलटा। २ अत्यत समीपी। घनिष्ठ। ३ गुप्त बातों को जाननेवाला। जिगरी। दिली। ४ मानसिक। अत करण का। सज्ञा पु० मित्र। दिली दोस्त। आत्मीय।
अतर–सज्ञा पु० [स०] १ फर्क। भेद। विभिन्नता। अलगाव। २ बीच। मध्य। फासला। दूरी। अवकाश। दो वस्तुओं के बीच में का स्थान। ३ *मध्यवर्ती काल।* दो घटनाओं के बीच का समय। बीच। ४ ओट। आड। व्यवधान। परदा। दो वस्तुओं के बीच में पडी हुई चीज। ५ छिद्र। छेद। रध्र।
वि० १ अतर्धान। गायब। लुप्त।

२. दूमरा। अन्य। और। जैसे, कालांतर। क्रि० वि० दूर। अलग। जुदा। पृथक्। संज्ञा पुं० [सं० अन्तस्] हृदय। अन्तःकरण। क्रि० वि० भीतर। अंदर।

अंतरअयन—संज्ञा पुं० [सं०] अंतर्गृही। तीर्थों की एक परिक्रमाविशेष।

अंतरचक्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. दिशाओं और विदिशाओं के बीच के अंतर को चार चार भागों मे बाँटने से बने हुए ३२ भाग। २. दिग्विभागों मे चिड़ियों की बोली सुनकर शुभाशुभ फल बताने की विद्या। ३. तंत्र के अनुसार शरीर के भीतर माने हुए मूलाधार आदि कमल के आकार के छः चक्र। षट् चक्र। ४. आत्मीय वर्ग। भाई बंधु की मडली।

अंतरजामी†—संज्ञा पुं० दे० "अंतर्यामी"।

अंतरदिशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दो दिशाओं के बीच की दिशा। कोण। विदिशा।

अंतरपट—संज्ञा पुं० [सं०] १. परदा। आड़। ओट। आड करने का कपड़ा। २. विवाह-मडप में मृत्यु की आहुति के समय अग्नि और वर-कन्या के बीच मे डाला हुआ परदा। ३. परदा। छिपाव। दुराव। ४. धातु या ओषधि को फूँकने के पहले उसकी लुगदी या संपुट पर गीली मिट्टी के लेप के साथ कपड़ा लपेटने की क्रिया। कपड़मिट्टी। कपड़ौरी। ५. गीली मिट्टी का लेप देकर लपेटा हुआ कपड़ा।

अंतरसंचारी—संज्ञा पुं० [सं०] संचारी भाव। (साहित्य)

अंतरस्थ—वि० [सं०] भीतर का। अंदर का। भीतर रहनेवाला।

अंतरा—संज्ञा पुं० [सं० अंतर] १. अंका। नागा। वकफा। अंतर। बीच। २. वह ज्वर जो एक दिन नागा देकर आता है। ३. कोना।
वि० एक बीच में छोड़कर दूसरा।

अंतरा—क्रि० वि० [सं० अन्तर] १. मध्य। २. निकट। ३. अतिरिक्त। सिवाय। ४. पृथक्। ५. विना।
संज्ञा पुं० १. किसी गीत में स्थायी या टेक के अतिरिक्त बाकी और पद या चरण। २. प्रातः-काल और संध्या के बीच का समय। दिन।

अंतरात्मा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जीवात्मा। २. अंतःकरण।

अंतराय—संज्ञा पुं० [सं०] १. विघ्न। बाधा। २. ज्ञान का बाधक। ३. योग की सिद्धि के विघ्न जो नौ हैं।

अंतराल—संज्ञा पुं० [सं०] १. घेरा। मंडल। आवृत स्थान। २. मध्य। बीच।

अंतरिक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १. पृथिवी और सूर्यादि लोकों के बीच का स्थान। दो ग्रहों या तारों के बीच का शून्य स्थान। आकाश। अधर। शून्य। २. स्वर्गलोक। ३. तीन प्रकार के केतुओं में से एक।
वि० अंतर्द्धान। गुप्त। अप्रकट। गायब।

अंतरिख, अंतरिच्छ*—संज्ञा पुं० दे० "अंतरिक्ष"।

अंतरित—वि० [सं०] १. भीतर किया हुआ। भीतर रक्खा हुआ। छिपा हुआ। २. अंतर्धान। गुप्त। गायब। तिरोहित। ३. आच्छादित। ढका हुआ।

अंतरीप—संज्ञा पुं० [सं०] १. द्वीप। टापू। २. पृथ्वी का वह नुकीला भाग जो समुद्र मे दूर तक चला गया हो। रास।

अंतरीय—संज्ञा पुं० [सं०] अधोवस्त्र। कमर मे पहनने का वस्त्र। धोती।
वि० भीतर का। अंदर का। भीतरी।

अंतरौटा—संज्ञा पुं० [सं० अन्तर] + पट] साड़ी के नीचे पहनने का महीन कपड़ा।

अंतर्गत—वि० [सं०] [संज्ञा अंतर्गति] १. भीतर आया हुआ। समाया हुआ। शामिल। अंतर्भूत। सम्मिलित। २. भीतरी। छिपा हुआ। गुप्त। ३. हृदय के भीतर का। अंतःकरणस्थित।
*संज्ञा पुं० मन। जी। हृदय। चित्त।

अंतर्गति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मन का भाव। चित्तवृत्ति। भावना। २. चित्त की अभिलाषा। हार्दिक इच्छा। कामना।

अंतर्गृही–संज्ञा स्त्री० [सं०] तीर्थस्थान के भीतर पड़नेवाले प्रधान स्थलों की यात्रा।

अंतर्जानु–वि० [सं०] हाथों को घुटनों के बीच किए हुए।

अंतर्दशा–संज्ञा स्त्री० [सं०] फलित ज्योतिष के अनुसार मनुष्य के जीवन में ग्रहों के नियत भोगकाल।

अंतर्दशाह–संज्ञा पु० [सं०] मरने के पीछे दस दिनों के भीतर होनेवाले कर्मकांड।

अंतर्द्धान–संज्ञा पु० [सं०] लोप। अदर्शन। छिपाव। तिरोधान।

वि० गुप्त। अलक्ष। गायब। अदृश्य। अंतर्हित। अप्रकट। लुप्त छिपा। हुआ।

अंतर्निविष्ट–वि० [सं०] १. भीतर बैठा हुआ। अंदर रखा हुआ। २ अंतःकरण में स्थित। मन में जमा हुआ। हृदय में बैठा हुआ।

अंतर्बोध–संज्ञा पु० [सं०] १ आत्मज्ञान। आत्मा की पहिचान। २ आंतरिक अनुभव।

अंतर्भाव–संज्ञा पु० [सं०] [वि० अंतर्भावित, अंतर्भूत] १ मध्य में प्राप्ति। भीतरी समावेश। अंतर्गत होना। शामिल होना। २. तिरोभाव। विलीनता। छिपाव। ३ नाश। अभाव। ४. भीतरी मतलब। आंतरिक अभिप्राय। आशय। मंशा।

अंतर्भावना–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ध्यान। सोच विचार। चिंता। २ गुणन-फल के अंतर में संख्याओं को ठीक करना।

अंतर्भावित–वि० [सं०] १ अंतर्भूत। अंतर्गत। शामिल। भीतर। २ भीतर किया हुआ। छिपाया हुआ। लुप्त।

अंतर्भूत–वि० [सं०] अंतर्गत। शामिल।

संज्ञा पु० जीवात्मा। प्राण। जीव।

अंतर्मुख–वि० [सं०] जिसका मुँह भीतर की ओर हो। भीतर मुँहवाला। जिसका छिद्र भीतर की ओर हो। जैसे, अंतर्मुख फोड़ा।

क्रि० वि० भीतर की ओर प्रवृत्त। जो बाहर से हटकर भीतर ही लीन हो।

अंतर्यामी–वि० [सं०] १. भीतर जानेवाला। जिसकी गति मन के भीतर तक हो। २. अंतःकरण में स्थित होकर प्रेरणा करनेवाला। जिस पर दबाव या अधिकार रखनेवाला। ३. भीतर की बात जाननेवाला। मन की बात का पता रखनेवाला।

संज्ञा पु० ईश्वर। परमात्मा। परमेश्वर।

अंतर्लंब–संज्ञा पु० [सं०] वह त्रिकोण क्षेत्र जिसके भीतर लंब गिरा हो।

अंतर्लापिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह पहेली जिसका उत्तर उसी पहेली के अक्षरों में हो।

अंतर्लीन–वि० [सं०] मग्न। भीतर छिपा हुआ। डूबा हुआ। गर्क। विलीन।

अंतर्वर्ती–वि० स्त्री० [सं०] १ गर्भवती। गर्भिणी। हामिला। २. भीतरी। भीतर की। अंदर रहनेवाली।

अंतर्वर्ण–संज्ञा पु० [सं०] अंतिम वर्ण का। चतुर्थ वर्ण का। शूद्र।

अंतर्वाणी–संज्ञा पु० [सं०] शास्त्रज्ञ। पंडित। विद्वान्।

अंतर्विकार–संज्ञा पु० [सं०] शरीर का धर्म। जैसे, भूख, प्यास, पीड़ा इत्यादि।

अंतर्वेगी ज्वर–संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का ज्वर जिसमें रोगी को पसीना नहीं आता।

अंतर्वेद–संज्ञा पु० [सं०] [वि० अंतर्वेदी] १ देश जिसके अंतर्गत यज्ञों की वेदियाँ हों। २ गंगा और यमुना के बीच का देश। ब्रह्मावर्त। ३ दो नदियों के बीच का देश। दोआब।

अंतर्वेदी–वि० [सं० अंतर्वेदीय] अंतर्वेद का निवासी। गंगा-यमुना के दोआब में बसनेवाला।

अंतर्वेशिक–संज्ञा पु० [सं०] अंतःपुर-रक्षक। ख्वाजा सरा।

अंतर्हित–वि० [सं०] तिरोहित। अंतर्द्धान। गुप्त। गायब। छिपा हुआ। अदृश्य।

अंतर्शय्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मृत्युशय्या। मरनखाट। भूमिशय्या। २ श्मशान। मसान। मरघट। ३ मरण। मृत्यु।

अंतस्–संज्ञा पु० [सं०] अंतःकरण। हृदय। चित्त।

अंतसद–संज्ञा पुं० [सं०] शिष्य । चेला ।
अंतसमय–संज्ञा पुं० [सं०] मृत्युकाल । मरणकाल ।
अंतस्थ–वि० [सं०] [विशे० अंतस्थित] १. भीतर का । भीतरी । २. बीच में स्थित । मध्य का । मध्यवर्ती । बीचवाला । ३. य, र, ल, व, ये चारों वर्ण ।
अंतस्नान–संज्ञा पुं० [सं०] अवभृथ स्नान । वह स्नान जो यज्ञ समाप्त होने पर किया जाता है ।
अंतस्सलिल–वि० [सं०] [स्त्री० अंतस्सलिला] जिसके जल का प्रवाह बाहर न देख पड़े, भीतर हो । जैसे *अंतस्सलिला* सरस्वती ।
अंतस्सलिला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सरस्वती नदी । २. फल्गू नदी ।
अंतावरी–संज्ञा स्त्री० [सं० अंत्रावलि] अँतड़ी । आँतो का समूह ।
अंतावशायी–संज्ञा पुं० [सं०] १. ग्राम की सीमा के बाहर बसनेवाले । २. अस्पृश्य ।
अंतावसायी–संज्ञा पुं० [सं०] १. नाई । हज्जाम । २. हिंसक । चांडाल ।
अंतिम–वि० [सं०] १. जो अंत में हो । अंत का । आखिरी । सबके पीछे का । २. चरम । सबसे बढ़कर । हद दरजे का ।
अंतेउर, अंतेवर*–संज्ञा पुं० [सं० अन्तःपुर] अंतःपुर जनानखाना ।
अंतेवासी–संज्ञा पुं० [सं०] १. गुरु के समीप रहनेवाला । शिष्य । चेला । २. ग्राम के बाहर रहनेवाला । चांडाल । अंत्यज ।
अंतःकरण–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह भीतरी इंद्रिय जो संकल्प, विकल्प, निश्चय, स्मरण तथा सुख दुःखादि का अनुभव करती है । मन । २. विवेक । नैतिक बुद्धि ।
अंतःपटी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. किसी चित्रपट में नदी, पर्वत, नगर आदि का दिखलाया हुआ दृश्य । २. नाटक का परदा । संज्ञा स्त्री० सोमरस जब वह छानने के लिये छनने में रखा हो ।
अंतःपुर–संज्ञा पुं० [सं०] [संज्ञा अंतःपुरिक] जनानखाना । जनाना । भीतरी महल । रनिवास । हरम ।
अंतःपुरिक–संज्ञा पुं० [सं०] अंतःपुर का रक्षक कंचुकी ।
अंतःराष्ट्रीय–वि० दे० "सार्वराष्ट्रीय" ।
अंतःशरीर–संज्ञा पुं० [सं०] लिंगशरीर
अंतःसंज्ञा–संज्ञा पुं० [सं०] जो जीव अपने सुख दुःख के अनुभव को प्रकट न कर सके । जैसे, वृक्ष ।
अंत्य–वि० [सं०] अंत का । अंतिम । आखिरी । सबसे पिछला ।
संज्ञा पुं० १. वह जिसकी गणना अंत में हो । जैसे, *लग्नों में मीन, नक्षत्रों में रेवती ।* २. दस सागर की संख्या (१०००,०००,०००,०००,०००) । यम ।
अंत्यकर्म–संज्ञा पुं० [सं०] अंत्येष्टि क्रिया ।
अंत्यज–संज्ञा पुं० [सं०] वह जो अंतिम वर्ण में उत्पन्न हो । वह शूद्र जो छूने के योग्य न हो या जिसका छुआ हुआ जल द्विज ग्रहण न कर सकें; जैसे, धोबी, चमार ।
अंत्यवर्ण–संज्ञा पुं० [सं०] १. अंतिम वर्ण । शूद्र । २. अंत का अक्षर 'ह' । ३. पद के अंत में आनेवाला अक्षर ।
अंत्यविपुला–संज्ञा स्त्री० [सं०] आर्या छंद का एक भेद ।
अंत्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] चांडाली । चांडाल की स्त्री । चंडालिनी ।
अंत्याक्षर–संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी शब्द या पद के अंत का अक्षर । २. वर्णमाला का अंतिम अक्षर "ह" ।
अंत्याक्षरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी कहे हुए श्लोक या पद्य के अंतिम अक्षर से आरंभ होनेवाला दूसरा श्लोक पढ़ना । (विद्यार्थियों में प्रचलित) ।
अंत्यानुप्रास–संज्ञा पुं० [सं०] पद्य के चरणों के अंतिम अक्षरों का मेल । तुक ।
अंत्येष्टि–संज्ञा पुं० [सं०] मृतक का शव-दाह से सपिंडन तक कर्म्म । क्रिया कर्म्म ।
अंत्र–संज्ञा पुं० [सं०] आँत । अँतड़ी ।

अंत्रकूजन–संज्ञा, पु० [सं०] आँतों का शब्द। आँतों की गुड़गुड़ाहट।
अंत्रवृद्धि–संज्ञा स्त्री० [सं०] आँत उतरने का रोग।
अंत्रांडवृद्धि–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक रोग जिसमें आँतें उतरकर फोते में चली आती हैं और फोता फूल जाता है।
अंत्री*–संज्ञा स्त्री० [सं० अन्त्र] अँतड़ी।
अंदर–क्रि० वि० [फा०] भीतर।
अँदरसा–संज्ञा पु० [फा० अंदर+सं० रस] एक प्रकार की मिठाई।
अंदरी–वि० [फा० अन्दर+ई] भीतरी।
अंदरूनी–वि० [फा०] भीतरी। भीतर का।
अंदाज–संज्ञा पु० [फा०] [संज्ञा अंदाजी, क्रि० वि० अंदाजन] १ अटकल। अनुमान। मान। नाप जोख। कूत। तखमीना। दे० "अंदाजा"। २ ढंग। ढब। तौर। तर्ज। ३ मटक। भाव। चेष्टा।
अंदाजन–क्रि० वि० [फा०] १ अन्दाज से। अटकल से। २ लगभग। करीब।
अंदाजपट्टी–संज्ञा स्त्री० [फा० अंदाज+पट्टी (भूभाग)] खेत में लगी हुई फसल के मूल्य की कूतना। कनकूत।
अंदाजा–संज्ञा पु० [फा०] अटकल। अनुमान। कूत। तखमीना।
अंदु, अंदुक–संज्ञा पु० [सं०] १ पैर में पहनने का स्त्रियों का एक गहना। पाजेब। पैरी। पैंजनी। २ हाथी को बाँधने का सांकड़ा या रस्सी।
अँदुआ–संज्ञा पु० [सं० अंदुक] हाथियों के पिछले पैर में डालने के लिए लकड़ी का बना काँटेदार यंत्र।
अंदेशा–संज्ञा पु० [फा०] १ सोच। चिंता। फिक्र। २ संशय। अनुमान। संदेह। शक। ३ खटका। आशंका। भय। डर। ४ हरज। हानि। ५ दुविधा। असमंजस। आगा पीछा। पसोपेश।
अँदोर*–संज्ञा पु० [सं० आंदोल=झूलना, हलचल] शोर। हल्ला। हुल्लड़।
अंदोह–संज्ञा पु० [फा०] १ शोक। दुःख। रंज। खेद। २ तरद्दुद। खटका।
अंध–वि० [सं०] [संज्ञा अंधता] १. नेत्रहीन। बिना आँख का। अंधा। जिसकी आँखों में ज्योति न हो। जिसमें देखने की शक्ति न हो। २ अज्ञानी। अजानकार। अनजान। मूर्ख। बुद्धिहीन। अविवेकी। ३ असावधान। अचेत। गाफिल ४. उन्मत्त। मतवाला। मस्त।
संज्ञा पु० १ वह व्यक्ति जिसे आँखें न हों। नेत्रहीन प्राणी। अंधा। २ जल। पानी। ३ उल्लू। ४ चमगादड़। ५ अँधेरा। अंधकार। ६ कवियों के बाँधे हुए पथ के विरुद्ध चलने का काव्य-संबंधी दोष।
अंधक–संज्ञा पु० [सं०] १ नेत्रहीन मनुष्य। दृष्टिरहित व्यक्ति। अंधा। २ कश्यप और दिति का पुत्र एक दैत्य।
अंधकार–संज्ञा पु० [सं०] अँधेरा।
अंधकूप–संज्ञा पु० [सं०] १ अंधा कूँआ। सूखा कूँआ। वह कूँआ जिसका जल सूख गया हो और जो घास पात से ढका हो। २ एक नरक का नाम। ३ अँधेरा।
अंधखोपड़ी–संज्ञा स्त्री० [सं० अन्ध+हिं० खोपड़ी] जिसके मस्तिष्क में बुद्धि न हो। मूर्ख। भोंदू। नासमझ।
अंधड़–संज्ञा पु० [सं० अंध] गर्द लिए हुए बड़े झोंके की वायु। वेगयुक्त पवन। आँधी। तूफान।
अंधतमस–संज्ञा पु० [सं०] महा अंधकार। गहिरा अँधेरा। गाढ़ा अँधेरा।
अंधता–संज्ञा स्त्री० [सं०] अंधापन। दृष्टिहीनता।
अंधतामिस्र–संज्ञा पु० [सं०] १ घोर अंधकारयुक्त नरक। बड़ा अँधेरा नरक। २१ बड़े नरकों में दूसरा। २ सांख्य में इच्छा के विघात या विपर्यय के पाँच भेदों में से एक। जीने की इच्छा रहने भी मरने का भय। ३ पाँच क्लेशों में से एक। मृत्यु का भय। (योग)
अंधधुंध*–संज्ञा स्त्री० दे० "अंधाधुंध"।
अंधपरंपरा–संज्ञा स्त्री० [सं०] बिना समझे

बूझे पुरानी चाल का अनुकरण। एक को कोई काम करते देखकर दूसरे का बिना किसी विचार के उसे करना। भेड़ियाधँसान।

अंधपूतना ग्रह–संज्ञा पुं० [सं०] बालकों का एक रोग।

अंधबाई*–संज्ञा स्त्री० [सं० अंधवायु] आंधी। तूफान।

अँधरा†*–वि० दे० "अंधा"।

अँधरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० अँधरा+ई] १. अंधी। अंधी स्त्री। २. पहिए की पुट्ठियों अर्थात् गोलाई को पूरा करनेवाली धनुपाकार लकड़ियों की चूल।

अंधविश्वास–संज्ञा पुं० [सं०] बिना विचार किए किसी बात का निश्चय। संभव-असंभव-विचार-रहित धारणा। विवेकशून्य धारणा।

अंधसैन्य–संज्ञा पुं० [सं०] अशिक्षित सेना।

अंधा–संज्ञा पुं० [सं० अंध] [स्त्री० अंधी] बिना आँख का जीव। वह जिसको कुछ सूझता न हो। दृष्टिरहित जीव।

वि० १. बिना आँख का। दृष्टिरहित। जिसे देख न पड़े। २. विचाररहित। अविवेकी। भले बुरे का विचार न रखनेवाला।

मुहा०–अंधा बनना=जान बूझकर किसी बात पर ध्यान न देना।–अंधे की लकड़ी या लाठी=१. एकमात्र आधार। सहारा। आसरा। २. एक लड़का जो कई लड़कों में बचा हो। इकलौता लड़का। अंधा दीया=वह दीपक जो धुंधला या मंद जलता हो।–अंधा भैंसा=लड़कों का एक खेल।

३. जिसमें कुछ दिखाई न दे। अँधेरा।

यौ०–अंधा शीशा या आइना=धुंधला शीशा। वह दर्पण जिसमें चेहरा साफ न दिखाई देता हो। अंधा कुँआ=१. सूखा कुँआ। वह कुँआ जिसमें पानी न हो और जिसका मुंह घास पात से ढका हो। २. लड़कों का एक खेल।

अंधाधुंध–संज्ञा स्त्री० [हिं० अंधा+धुंध] १. बड़ा अँधेरा। घोर अंधकार। २. अंधेर। अविचार। अन्याय। गड़बड़। धींगाधींगी।

वि० १. बिना सोच विचार का। विचाररहित। २. अधिकता से। बहुतायत से।

अंधार*†–संज्ञा पुं० दे० "अँधेरा"।

संज्ञा पुं० [देश०] रस्सी का जाल जिसमें घास भूसा आदि भरकर बैल पर लादते हैं।

अंधाहुली–संज्ञा स्त्री० दे० "चोरपुष्पी"।

अँधियार†–संज्ञा पुं० वि० दे० "अँधेरा"।

अँधियारा*†–संज्ञा पुं० वि० दे० "अँधेरा"।

अँधियारी–संज्ञा स्त्री० [हिं० अँधेरी] उपद्रवी घोड़ों, शिकारी पक्षियों और चीतों की आँख पर बाँधी जानेवाली पट्टी।

अँधेर–संज्ञा पुं० [सं० अंधकार] १. अन्याय। अत्याचार। जुल्म। २. उपद्रव। गड़बड़। कुप्रबंध। अंधाधुंध। धींगाधींगी।

अँधेरखाता–संज्ञा पुं० [हिं० अँधेर+खाता] १. हिसाब किताब और व्यवहार में गड़बड़ी। व्यतिक्रम। २. अन्यथाचार। अन्याय। कुप्रबंध। अविचार।

अँधेरना*–क्रि० स० [हिं० अँधेर] अंधकारमय करना। तमाच्छादित करना।

अँधेरा–संज्ञा पुं० [सं० अंधकार, प्रा० अंधयार] [स्त्री० अँधेरी] १. अंधकार। तम। प्रकाश का अभाव। उजले का उलटा। २. धुंधलापन। धुंध।

यौ०–अँधेरा गुप=ऐसा अँधेरा जिसमें कुछ दिखाई न दे। घोर अंधकार।

३. छाया। परछाईं। ४. उदासी। उत्साहहीनता। शोक।

वि० अंधकारमय। प्रकाशरहित।

मुहा०–अँधेरे घर का उजाला=१. अत्यंत कांतिमान्। अत्यंत सुंदर। २. सुलक्षण। शुभ लक्षणवाला। कुलदीपक। वंश की मर्यादा बढ़ानेवाला। ३. इकलौता बेटा। अँधेरा पाख या पक्ष=कृष्ण पक्ष। बदी। मुंह अँधेरे या अँधेरे मुंह=बड़े तड़के। बड़े सवेरे।

अँधेरा उजाला–संज्ञा पुं० [हिं० अँधेरा+उजाला] कागज मोड़कर बनाया हुआ लड़कों का एक खिलौना।

अँधेरिया–संज्ञा स्त्री० [हिं० अँधारी]

१. अंधकार। *अँधेरा। २ अँधेरी रात। काली रात। अँधेरा पक्ष। अँधेरा पाख।

संज्ञा स्त्री० [देश०] ऊख की पहली गोड़ाई।

अँधेरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० अँधेरा + ई] १ अंधकार। तम। प्रकाश का अभाव। २ अँधेरी रात। काली रात। ३ आँधी। अंधड़। ४ घोड़ों या बैलों की आँख पर डालने का परदा।

मुहा०—अँधेरी डालना या देना = १ किसी की आँखें मूँदकर उसकी दुर्गति करना। २ आँख में धूल डालना। धोखा देना।

वि० प्रकाशरहित। तमाच्छादित। बिना उजेले का। जैसे—अँधेरी रात।

मुहा०—अँधेरी कोठरी = १ पेट। गर्भ। कोख। २ गुप्त भेद। रहस्य।

अँधोटी—संज्ञा स्त्री० [सं० अंध + पट, प्रा० अंधवटी, अंधोटी] बैल या घोड़े की आँख बंद करने का ढक्कन या परदा।

अंध्यार*†—संज्ञा पु० दे० "अँधेरा"।

अंध्यारी*†—संज्ञा स्त्री० दे० "अँधेरी"।

अंध्र—संज्ञा पु० [सं०] १ बहेलिया। व्याध। शिकारी। २ वैदेहक पिता और करावर माता से उत्पन्न नीच जाति।

अंध्रभृत्य—संज्ञा पु० [सं०] मगध देश का एक प्राचीन राजवंश।

अंब—संज्ञा स्त्री० दे० "अंबा"।

संज्ञा पु० [सं० आम्र, प्रा० अंब] आम का पेड़।

अंबक—संज्ञा पु० [सं०] १ आँख। नेत्र। २ ताँबा। ३ पिता।

अंबर—संज्ञा पु० [सं०] १ वस्त्र। कपड़ा। पट। २ स्त्रियों के पहनने की एक प्रकार की एक रंगी किनारदार धोती। ३ आकाश। आसमान। ४ कपास। ५ एक सुगंधित वस्तु जो ह्वेल मछली की अँतड़ियों में जमी हुई मिलती है। ६ एक इत्र। ७ अभ्रक धातु। अबरक। ८ राजपूताने का एक पुराना नगर। ९ अमृत। १० प्राचीन ग्रंथों के अनुसार उत्तरीय भारत का एक देश। ११ बादल। मेघ। (क्व०)

अंबरबारी—संज्ञा पु० [सं०] एक झाड़ी जिसकी जड़ और लकड़ी से रसवत या रसौत निकलता है। चित्रा। दारु हल्दी।

अंबर डंबर—संज्ञा पु० [सं० अंबर + आडंबर] सूर्यास्त के समय की लाली।

अंबरबेलि—संज्ञा स्त्री० [सं०] आकाशबेल।

अंबराई—संज्ञा स्त्री० [सं० आम्र = आम + राजी = पंक्ति] आम का बगीचा। आम की बारी।

अंबराव*—संज्ञा पु० दे० "अंबराई"।

अंबरांत—संज्ञा पु० [सं०] १ कपड़े का छोर। २ वह स्थान जहाँ आकाश पृथ्वी से मिला हुआ दिखाई देता है। क्षितिज।

अंबरीष—संज्ञा पु० [सं०] १ भाड़। २ वह मिट्टी का बर्तन जिसमें भड़भूजे गरम बालू डालकर दाना भूनते हैं। ३ विष्णु। ४ शिव। ५ सूर्य्य। ६ किशोर अर्थात् ११ वर्ष से छोटा बालक। ७ एक नरक का नाम। ८ अयोध्या का एक सूर्य्यवंशी परम वैष्णव राजा। ९ आमड़े का फल और पेड़। १० अनुताप। पश्चात्ताप। ११ समर। लड़ाई।

अंबरौक—संज्ञा पु० [सं०] देवता।

अंबष्ठ—संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० अंबष्ठा] १ पंजाब के मध्यभाग का पुराना नाम। २ अंबष्ठ देश में बसनेवाला मनुष्य। ३ ब्राह्मण पुरुष और वैश्य स्त्री से उत्पन्न एक जाति। (स्मृति)। ४ महावत। हाथीवान। फीलवान।

अंबष्ठा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अंबष्ठ की स्त्री। २ एक लता। पाढ़ा। ब्राह्मणी लता।

अंबा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ माता। जननी। माँ। अम्मा। २ पार्वती। देवी। दुर्गा। ३ अंबष्ठा। पाढ़ा। ४ काशी के राजा इंद्रद्युम्न की उन तीन कन्याओं में सबसे बड़ी जिन्हें भीष्मपितामह अपने भाई विचित्रवीर्य्य के लिये हरण कर लाए थे।

संज्ञा पु० दे० "आम"।

अंबाड़ा—संज्ञा स्त्री० दे० "आमड़ा"।

अंबापोली—संज्ञा स्त्री० [हिं० आम + सं० पोलि = रोटी] अमावट। अमरस।

अंबार—संज्ञा पुं० [फा०] ढेर। समूह।

अंबारी—संज्ञा स्त्री० [अ० अमारी] १. हाथी की पीठ पर रखने का हौदा जिसके ऊपर एक छज्जेदार मंडप होता है। २. छज्जा।

अंबालिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. माता। मा। २. अंबष्ठा लता। पाढ़ा। ३. काशी के राजा इंद्रद्युम्न की उन तीन कन्याओं में से सबसे छोटी जिन्हें भीष्म अपने भाई विचित्रवीर्य्य के लिये हर लाए थे।

अंबिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. माता। मा। २. दुर्गा। भगवती। देवी। पार्वती। ३. जैनियों की एक देवी। ४. कुटकी का पेड़। ५. अंबष्ठा लता। पाढ़ा। ६. काशी के राजा इंद्रद्युम्न की उन तीन कन्याओं में मझली जिन्हें भीष्म अपने भाई विचित्रवीर्य्य के लिये हर लाए थे।

अंबिकेय—संज्ञा पुं० [सं०] १. अंबिका के पुत्र। २. गणेश। ३. कार्तिकेय। ४. धृतराष्ट्र।

अँबिया—संज्ञा स्त्री० [सं० आम्र, प्रा० अंब] आम का छोटा कच्चा फल जिसमें जाली न पड़ी हो। टिकोरा। केरी।

अँबिरथा*—वि० [सं० वृथा] वृथा। व्यर्थ।

अंबु—संज्ञा पुं० [सं०] १. जल। पानी। २. सुगंधवाला। ३. जन्मकुंडली के १२ स्थानों वा घरों में चौथा। ४. चार की संख्या।

अंबुज—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अंबुजा] १. जल से उत्पन्न वस्तु। २. कमल। ३. बेंत। ४. वज्र। ५. ब्रह्मा। ६. शंख।

अंबुद—वि० [सं०] जो जल दे। संज्ञा पुं० १. बादल। २. मोथा।

अंबुधर—संज्ञा पुं० [सं०] बादल।

अंबुधि—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।

अंबुनिधि—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।

अंबुप—संज्ञा पुं० [सं०] १. समुद्र। सागर। २. वरुण। ३. शतभिषा नक्षत्र।

अंबुपति—संज्ञा पुं० [सं०] १. समुद्र। २. वरुण।

अंबुभृत—संज्ञा पुं० [सं०] १. बादल। २. मोथा। ३. समुद्र।

अंबुराशि—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।

अंबुरुह—संज्ञा पुं० [सं०] कमल।

अंबुवाह—संज्ञा पुं० [सं०] बादल।

अंबुवेतस—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का बेंत जो पानी में होता है।

अंबुशायी—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

अंबोह—संज्ञा पुं० [फा०] भीड़भाड़। जमघट। झुंड। समाज। समूह।

अंभ—संज्ञा पुं० [सं० अम्भस्] १. जल। पानी। २. पितरलोक। ३. लग्न से चौथी राशि। ४. चार की संख्या। ५. देव। ६. असुर। ७. पितर।

अंभस्तुष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] सांख्य में चार आध्यात्मिक तुष्टियों में से एक।

अंभनिधि—संज्ञा पुं० [सं०] दे० "अंभोनिधि"।

अंभोज—वि० [सं०] जल से उत्पन्न। संज्ञा पुं० १. कमल। २. सारस पक्षी। ३. चंद्रमा। ४. कपूर। ५. शंख।

अंभोधर—संज्ञा पुं० [सं०] १. बादल। मेघ। २. मोथा।

अंभोनिधि—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र। सागर।

अंभोराशि—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।

अंभोरुह—संज्ञा पुं० [सं०] कमल।

अँवरा†—संज्ञा पुं० दे० "आँवला"।

अंश—संज्ञा पुं० [सं०] १. भाग। विभाग। २. हिस्सा। बखरा। बाँट। ३. भाज्य अंक। ४. भिन्न की लकीर के ऊपर की संख्या। ५. चौथा भाग। ६. कला। सोलहवाँ भाग। ७. वृत्त की परिधि का ३६० वाँ भाग जिसे एकाई मानकर कोण वा चाप का प्रमाण बतलाया जाता है। ८. कारबार या लाभ का हिस्सा। ९. कंधा। १०. बारह आदित्यों में से एक।

अंशक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अंशिका] १. भाग। टुकड़ा। २. दिन। दिवस। ३. हिस्सेदार। साझीदार। पट्टीदार। वि० १. अंश धारण करनेवाला। अंशधारी। २. बाँटनेवाला। विभाजक।

अंशपत्र–संज्ञा पुं० [सं०] वह कागज जिसमें पट्टीदारों का अंश या हिस्सा लिखा हो।
अंशावतार–संज्ञा पुं० [सं०] वह अवतार जिसमें परमात्मा की शक्ति का कुछ भाग ही आया हो। वह जो पूर्णावतार न हो।
अंशी–वि० [सं० अंशिन्] [स्त्री० अंशिनी] १. अंशधारी। अंश रखनेवाला। २ देवता की शक्ति या सामर्थ्य रखनेवाला। अवतारी। संज्ञा पुं० हिस्सेदार। साझीदार। अवयवी।
अंशु–संज्ञा पुं० [सं०] १ किरण। प्रभा। २ लता का कोई भाग। ३ सूत। तागा। ४. बहुत सूक्ष्म भाग। ५ सूर्य्य।
अंशुक–संज्ञा पुं० [सं०] १ पतला या महीन कपड़ा। २ रेशमी कपड़ा। ३ उपरना। दुपट्टा। ४ ओढ़नी। ५ तेजपात।
अंशुनाभि–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह बिंदु जिस पर समानांतर प्रकाश की किरणें तिरछी और इकट्ठी होकर मिलें।
अंशुमान्–संज्ञा पुं [सं० अंशुमत्] १ सूर्य्य। २ अयोध्या के एक सूर्य्यवंशीय राजा।
अंशुमाली–संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य्य।
अंस–संज्ञा पुं० दे० "अंश"।
अँसुआ अँसुवा*‡–संज्ञा पुं० दे० "आँसू"।
अँसुवाना*–क्रि० अ० [हिं० आँसू] अश्रु-पूर्ण होना आँसू से भर जाना।
अंह–संज्ञा पुं० [सं० अंहस्] १ पाप। दुष्कर्म। अपराध। २ दुःख। व्याकुलता। ३ विघ्न। बाधा।
अँहड़ा–संज्ञा पुं० [देश०] तौलने का बाट। बटखरा।
अंहस्पात–संज्ञा पुं० [सं०] क्षय मास।
अँहुड़ी–संज्ञा स्त्री० [?] एक लता। बाकला।
अ–उप० संज्ञा और विशेषण शब्दों से पहले लगकर यह उनके अर्थों में फेरफार करता है। जिस शब्द के पहले यह लगाया जाता है, उस शब्द के अर्थ का प्रायः अभाव सूचित करता है। जैसे—अधर्म, अन्याय, अचल। कहीं कहीं यह अक्षर शब्द के अर्थ को दूषित भी करता है। जैसे—अभागा, अकाल। स्वर से आरंभ होनेवाले संस्कृत शब्दों के पहले जब इस अक्षर को लगाना होता है, तब उसे "अन" कर देते हैं। जैसे—अनंत, अनेक, अनीश्वर। संज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु। २. विराट। ३ अग्नि। ४ विश्व। ५ ब्रह्मा। ६ इंद्र। ७ ललाट। ८ वायु। ९. कुबेर। १० अमृत। ११ कीर्ति। १२ सरस्वती। वि० १ रक्षक। २ उत्पन्न करनेवाला।
अउर*–सर्व० दे० "और"।
अऊत*–वि० [सं० अपुत्र, प्रा० अउत्त] [स्त्री० अऊती] बिना पुत्र का। निपूता।
अऊलना*–क्रि० अ० [सं० उल्+जलना] १ जलना। गरम होना। २ गरमी पड़ना। दे० "ओलना"। क्रि० अ० [सं० आ=अच्छी तरह+शूलन] छिलना। छिदना।
अएरना*–क्रि० स० [सं० अंगकरण, प्रा० अंगिअरण, हिं० अँगेरना] अंगीकार करना। अँगेरना। स्वीकार करना। धारण करना।
अकंटक–वि० [सं०] १ बिना काँटे का। कंटकरहित। २ निर्विघ्न। बाधारहित। बिना रोक टोक का। ३ शत्रु-रहित।
अकंपन–वि० [सं०] [वि० अकंपित, अकंप्य] न काँपनेवाला। स्थिर।
अक–संज्ञा पुं० [सं०] १ पाप। २ दुःख।
अकच्छ–वि० [सं० अ=रहित+कच्छ कक्ष=धोती] १ नंगा। नंगा। २ व्यभिचारी। परस्त्रीगामी।
अकड़–संज्ञा स्त्री० [सं० आ=अच्छी तरह+कड्ड=कड़ा होना] १ ऐंठ। तनाव। मरोड़। बल। २ कड़ाई के साथ ऐंठ। ३. घमंड। अहंकार। शेखी। ४ धृष्टता। ढिठाई। ५ हठ। अड़। जिद।
अकड़ना–क्रि० अ० [सं० आ=अच्छी तरह+कड्ड=कड़ापन] [संज्ञा अकड़, अकड़ाव] १ सूखकर सिकुड़ना और कड़ा होना। ऐंठना। २ ठिठुरना। सुन्न होना। ३ छाती को उभाड़कर डील को थोड़ा पीछे की ओर झुकाना। तनना। ४ शेखी करना। घमंड दिखाना। ५ ढिठाई करना।

६. हठ करना। जिद करना । अड़ना।
७. मिजाज बदलना। चिटकना।

अकड़बाई–संज्ञा स्त्री० [सं० कट्ट=कड़ापन + वायु] ऐंठन। कुड़ल। शरीर की नसों का पीड़ा के सहित खिंचना।

अकड़बाज–वि० [हिं० अकड़ + फा० बाज] ऐंठदार । शेखीबाज। अभिमानी।

अकड़बाजी–संज्ञा स्त्री० [हिं० अकड़ + फ़ा० बाजी] ऐंठ । शेखी । अभिमान।

अकड़ाव–संज्ञा पुं० [हिं० अकड़] ऐंठन। खिंचाव।

अकड़ा–संज्ञा पुं० दे० "अकड़बाज"।

अकड़ैत–वि० दे० "अकड़बाज" ।

अकल*–वि० [सं० अक्षत्] सारा । समूचा। क्रि० वि० बिलकुल । सरासर।

अकत्थ–वि० दे० "अकथ"।

अकथ–वि० [सं०] १. जो कहा न जा सके। अकथनीय। अनिर्वचनीय। २. न कहने योग्य।

अकथनीय–वि० [सं०] न कहे जाने योग्य। अनिर्वचनीय। अवर्णनीय।

अकथ्य–वि० [सं०] न कहने योग्य। अवर्णनीय। अनिर्वचनीय।

अकधक*†–संज्ञा पुं० [हिं० धक] आशंका। आगा पीछा । सोचविचार । भय। डर।

अकनना†–क्रि० स० [सं० आकर्णन] १. कान लगाकर सुनना । आहट लेना। २. सुनना। कर्णगोचर करना।

अकना–क्रि० अ० [सं० आकुल] ऊबना। घबराना।

अकबक–संज्ञा स्त्री० [अनु० अक + हिं० बकना] १. निरर्थक वाक्य। अनाप शनाप । असंबद्ध प्रलाप। २. घबराहट । धड़क। खटका। ३. छक्का पंजा। चतुराई ।
वि० [सं० अवाक्] भौचक्का। निस्तब्ध।

अकबकाना–क्रि० अ० [सं० अवाक्] चकित होना। भौचक्का होना । घबराना।

अकबरी–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. एक प्रकार की मिठाई। २. लकड़ी पर की एक नक्काशी।

अक़बाल–संज्ञा पुं० दे० "इक़बाल"।

अकर–वि० [सं०] १. न करने योग्य । कठिन । विकट । २. बिना हाथ का। हस्तरहित । ३. बिना कर या महसूल का।

अकरकरा–संज्ञा पुं० [सं० आकरकरभ] एक पौधा जिसकी जड़ दवा के काम में आती है।

अकरखना*–क्रि० स० [सं० आकर्षण] १. खींचना । तानना। २. चढ़ाना ।

अकरण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अकरणीय] १. कर्म का अभाव। २. कर्म का न किए हुए के समान या फलरहित होना। ३. इंद्रियों से रहित, ईश्वर । परमात्मा। वि० न करने योग्य । कठिन।
*वि० [सं० अकारण] बिना कारण का।

अकरणीय–वि० [सं०] न करने योग्य। न करने लायक । करने के अयोग्य।

अकरा†–वि० [सं० अक्रय्य] [स्त्री० अकरी] १. न मोल लेने योग्य। महँगा। अधिक दाम का। २. खरा । श्रेष्ठ। उत्तम।

अकरास–संज्ञा स्त्री० [हिं० अकड़] अँगड़ाई। देह टूटना।
संज्ञा स्त्री० [सं० अकर] आलस्य सुस्ती।

अकरासू–वि० स्त्री० [हिं० अकरास] गर्भवती।

अकरी–संज्ञा स्त्री० [सं० आ = अच्छी तरह + किरण = बिखराना] हल में लगा लकड़ी का चोंगा जिसमे बीज डालते जाते है।

अकर्त्तव्य–वि० [सं] न करने योग्य। जिसका करना उचित न हो।

अकर्त्ता–वि० [सं०] १. कर्म का न करनेवाला। कर्म से अलग । २. सांख्य के अनुसार पुरुष जो कर्मों से निर्लिप्त रहता है।

अकर्तृक–संज्ञा पुं० [सं०] बिना कर्त्ता का। जिसका कोई कर्त्ता या रचयिता न हो।

अकर्म–संज्ञा पुं० [सं०] १. न करने योग्य कार्य । बुरा काम । २. कर्म का अभाव।

अकर्मक–संज्ञा पुं० [सं०] वह क्रिया जिसे किसी कर्म की आवश्यकता न हो। (व्या०)

अकर्मण्य–वि० [सं०] कुछ काम न करने वाला। आलसी।
अकर्मी–संज्ञा पुं० [सं० अकर्मिन्] [स्त्री० अकर्मिणी] बुरा कर्म करनेवाला। पापी। दुष्कर्मी। अपराधी।
अकलंक–वि० [सं०] निष्कलंक। दोष-रहित। निर्दोष। बेऐब। बेदाग।
†संज्ञा पुं० [सं० कलंक] दोष। लांछन।
अकल्कता–संज्ञा स्त्री० [सं०] निर्दोषता। कलंकहीनता।
अकलंकित–वि० [सं०] निष्कलंक। निर्दोष।
अकल–वि० [सं०] १ अवयव-रहित। जिसके अवयव न हों। २ जिसके खंड न हों। सर्वांगपूर्ण। समूचा। ३ परमात्मा का एक विशेषण। *४ बिना कला या चतुराई का।
वि० [सं० अ=नहीं+हिं० कल=चैन] विकल। व्याकुल। बेचैन।
संज्ञा स्त्री० दे० "अक्ल"।
अकलखुरा–वि० [हिं० अकेला+फा० खोर] १ अकेला खानेवाला अर्थात् स्वार्थी। मतलबी। २ रूखा। मनहूस। जो मिलन-सार न हो। ३ ईर्ष्यालु। डाही।
अकलबीर–संज्ञा पुं० [सं० करवीर ?] भाँग की तरह का एक पौधा। कलबीर। वज्र।
अकवन–संज्ञा पुं० [हिं० आक] आक। मदार।
अकस–संज्ञा पुं० [सं० आकर्ष] १ बैर। द्वेष। शत्रुता। अदावत। २ बुरी उत्तेजना।
अकसना–क्रि० स० [हिं० अकस] १ अकस रखना। बैर करना। २ बराबरी करना। आँट करना।
अकसर–क्रि० वि० [अ०] प्राय। बहुधा। अधिकतर। बहुत करके। विशेष करके।
*क्रि० वि०, वि० [सं० एक+सर (प्रत्य०)] अकेले। बिना किसी के साथ।
अकसीर–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ वह रस या भस्म जो धातु को सोना या चाँदी बना दे। रसायन। कीमिया। २ वह औषधि जो प्रत्येक रोग का नष्ट कर।
वि० अव्यर्थ। अत्यंत गुणकारी।
अकस्मात्–क्रि० वि० [सं०] १ अचानक। अनायास। एकबारगी। सहसा। २ दैव योग से। संयोगवश। आपसे आप
अकह*–वि० दे० "अकथ"।
अकहुवा*†–वि० दे० "अकथ"।
अकांड–वि० [सं०] बिना शाखा का।
क्रि० वि० अकस्मात्। सहसा।
अकांडतांडव–संज्ञा पुं० [सं०] व्यर्थ की उछल-कूद। व्यर्थ की बकवाद। वितंडावाद।
अकाज–संज्ञा पुं० [सं० अ+हिं० काज] [क्रि० अकाजना, वि० अकाजी] १ कार्य्य की हानि। नुकसान। हर्ज। विघ्न। बिगाड़। २ बुरा कार्य्य। दुष्कर्म्म। खोटा काम।
*क्रि० वि० व्यर्थ। बिना काम। निष्प्रयोजन।
अकाजना*–क्रि० अ० [हिं० अकाज] १ हानि होना। २ गत होना। मरना।
क्रि० स० हानि करना। हर्ज करना।
अकाजी*–वि० [हिं० अकाज] [स्त्री० अकाजिन] अकाज करनेवाला। हर्ज करने-वाला। कार्य्य की हानि करनेवाला।
अकाट्य–वि० [सं० अ+हिं० काटना] जिसका खंडन न हो सके। दृढ़। मजबूत।
अकाथ*–क्रि० वि० दे० "अकारथ"।
अकाम–वि० [सं०] बिना कामना का। कामनारहित। इच्छाविहीन। निःस्पृह।
क्रि० वि० [सं० अकर्म्म] बिना काम के। निष्प्रयोजन। व्यर्थ।
अकाय–वि० [सं०] १ बिना शरीरवाला। देहरहित। २ शरीर न धारण करनेवाला। जन्म न लेनेवाला। ३ निराकार।
अकार–संज्ञा पुं० "अ" अक्षर।
अकारज*–संज्ञा पुं० [सं० अकार्य्य] काय की हानि। हानि। नुकसान। हर्ज।
अकारण–वि० [सं०] १ बिना कारण का। बिना वजह का। २ जिसकी उत्पत्ति का कोई कारण न हो। स्वयंभू।
क्रि० वि० बिना कारण के। बसबब।

अकारथ*†–क्रि० वि० [सं० अकार्य्यार्थ] बेकाम। निष्फल। निष्प्रयोजन। वृथा। फ़ज़ूल। लाभरहित।

अकाल–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अकालिक] १. अनुपयुक्त समय। अनवसर। कुसमय। २. दुष्काल। दुर्भिक्ष। महँगी। क्रि० प्र०—पड़ना। ३. घाटा। कमी।

अकालकुसुम–संज्ञा पुं० [सं०] १. बिना समय या ऋतु में फूला हुआ फूल। (अशुभ)। २. बेसमय की चीज़।

अकालमूर्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] नित्य या अविनाशी पुरुष।

अकालमृत्यु–संज्ञा स्त्री० [सं०] बेसमय की मृत्यु। असामयिक मृत्यु। थोड़ी अवस्था में मरना।

अकाली–संज्ञा पुं० [सं० अकाल + हिं० ई] नानकपंथी साधु जो सिर में चक्र के साथ काले रंग की पगड़ी बाँधे रहते हैं।

अकावा†–संज्ञा पुं० दे० "आक"।

अकास*–संज्ञा पुं० दे० "आकाश"।

अकासदीया–संज्ञा पुं० [सं० आकाशदीपक] वह दीपक जो बाँस के ऊपर आकाश में लटकाया जाता है।

अकासबानी–संज्ञा स्त्री० दे० "आकाशवणी"।

अकासबेल–संज्ञा स्त्री० [सं० आकाशबेलि] अंबरबेलि। अमरबेल। अकासबौर।

अकासी*†–संज्ञा स्त्री० [सं० आकाश] १. चील। २. ताड़ी।

अकिंचन–वि० [सं०] निर्धन। कंगाल।

अकिंचनता–संज्ञा स्त्री० [सं०] दरिद्रता। गरीबी। निर्धनता।

अकिल†–संज्ञा स्त्री० दे० "अक्ल"।

अकिलदाढ़–संज्ञा पुं० [अ० अक्ल + हिं० दाढ़] पूरी अवस्था प्राप्त होने पर निकलनेवाला अतिरिक्त दाँत।

अकीक–संज्ञा पुं० [अ०] एक प्रकार का लाल पत्थर जिस पर मुहर खोदी जाती है।

अकीर्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] अयश। अपयश। बदनामी।

अकुंठ–वि० [सं०] १. तीक्ष्ण। चोखा। २. तीव्र। तेज। ३. खरा। उत्तम।

अकुताना*–क्रि० अ० दे० "उकताना"।

अकुल–वि० [सं०] १. जिसके कुल में कोई न हो। २. बुरे या नीच कुल का। संज्ञा पुं० बुरा कुल। नीच कुल।

अकुलाना–क्रि० अ० [सं० आकुलन] १. जल्दी करना। उतावला होना। २. घबराना। व्याकुल होना। ३. मग्न होना। लीन होना।

अकुलीन–वि० [सं०] तुच्छ वंश में उत्पन्न। कमीना। क्षुद्र।

अकूत–वि० [सं० अ० + हिं० कूतना] जो कूता न जा सके। बे अंदाज। अपरिमित।

अकूहल*–वि० [देश०] बहुत। अधिक।

अकृत–वि० [सं०] १. बिना किया हुआ। २. बिगाड़ा हुआ। अंड बंड किया हुआ। ३. जो किसी का बनाया न हो। नित्य। स्वयंभू। ४. प्राकृतिक। ५. निकम्मा। बेकाम। ६. बुरा। मंदा।

अकेला–वि० [सं० एक + हिं० ला (प्रत्य०)] [स्त्री० अकेली] १. जिसके साथ न कोई हो। बिना साथी का। तनहा। २. अद्वितीय। निराला।
यौ०–अकेला दम = एक ही प्राणी। अकेला दुकेला = एक या दो। अधिक नहीं। संज्ञा पुं० एकांत। निर्जन स्थान।

अकेले–क्रि० वि० [हिं० अकेला] १. किसी साथी के बिना। एकाकी। तनहा। २. सिर्फ़। केवल।

अकोतर सौ*–वि० [सं० एकोत्तरशत] सौ के ऊपर एक। एक सौ एक।

अकोसना*–क्रि० स० दे० "कोसना"।

अकौवा†–संज्ञा पुं० [सं० अर्क] १. आक। मदार। २. गले में का कौआ। घंटी।

अक्खड़–वि० [हिं० अड़ + खड़ा] १. किसी का कहना न माननेवाला। उद्दत। उच्छृङ्खल। २. बिगड़ैल। झगड़ालू। ३. निर्भय। बेडर। ४. असभ्य। अशिष्ट।

५ उजड्ड। जड़। ६ खरा। स्पष्टवक्ता।

अक्खड़पन–संज्ञा पु० [हिं० अक्खड़+पन] १ अशिष्टता। असभ्यता। उजड्डपन। २ उग्रता। कलहप्रियता। ३. निःशंकता। ४. स्पष्टवादिता।

अक्खर*–संज्ञा पु० दे० "अक्षर"।

अक्खा–संज्ञा पु० [सं० अक्ष=संग्रह करना] बैलों पर अनाज आदि लादने का दोहरा थैला। खुरजी। गोन।

अक्खो मक्खो–संज्ञा पु० [सं० अक्ष+मुख] दीपक की लौ तक हाथ ले जाकर बच्चे के मुह पर 'अक्खो मक्खो' कहते हुए फेरना। (नजर से बचाने के लिये)

अक्त–वि० [सं०] व्याप्त। संयुक्त। युक्त। (प्रत्यय के रूप में, जैसे, विषाक्त।)

अक्रम–वि० [सं०] बिना क्रम का। अंड बंड। बे सिलसिले।

संज्ञा पु० क्रम का अभाव। व्यतिक्रम।

अक्रम संन्यास–संज्ञा पु० [सं०] वह संन्यास जो क्रम से (ब्रह्मचर्य्य, गार्हस्थ्य और वानप्रस्थ के पीछे) न लिया गया हो बीच ही में धारण किया गया हो।

अक्रमातिशयोक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] अतिशयोक्ति अलंकार का एक भेद जिसमें कारण के साथ ही कार्य्य कहा जाता है।

अक्रिय–वि० [सं०] १ जो कर्म न करे। क्रियारहित। २ निश्चेष्ट। जड़। स्तब्ध।

अक्रूर–वि० [सं०] जो क्रूर न हो। सरल। संज्ञा पु० श्वफल्क का पुत्र एक यादव जो श्रीकृष्ण का चाचा लगता था।

अक्ल–संज्ञा स्त्री० [अ०] बुद्धि। समझ। ज्ञान। प्रज्ञा।

मुहा०–अक्ल का दुश्मन – मूर्ख। बेवकूफ। अक्ल का पूरा = (व्यंग) मूर्ख। जड़। अक्ल खर्च करना = समझ को काम में लाना। सोचना। अक्ल का चरने जाना = समझ का जाता रहना। बुद्धि का अभाव होना। अक्ल मारी जाना = बुद्धि नष्ट होना।

अक्लमंद–संज्ञा पु० [फा०] [संज्ञा अक्लमंदी] बुद्धिमान्। चतुर। समझदार।

अक्लमंदी–संज्ञा स्त्री० [फा०] समझदारी। चतुराई। विज्ञता।

अक्लिष्ट–वि० [सं०] १ कष्ट-रहित। २. सुगम। सहज। आसान।

अक्ष–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० अक्षा] १ खेलने का पासा। २ पासा का खेल। चौसर। ३ छकड़ा। गाड़ी। ४ धुरी। ५ वह कल्पित स्थिर रेखा जो पृथ्वी के भीतरी केंद्र से होती हुई उसके आर-पार दोनों ध्रुवों पर निकली है और जिस पर पृथ्वी घूमती हुई मानी गई है। ६ तराजू की डाँड़ी। ७ मामला। मुकदमा। ८. इंद्रिय। ९ आँख। १० रुद्राक्ष। ११ साँप। १२ गरुड़। १३ आत्मा।

अक्षक्रीडा–संज्ञा स्त्री० [सं०] पासे का खेल। चौसर। चौपड़।

अक्षत–वि० [सं०] बिना टूटा हुआ। अखंडित। समूचा।

संज्ञा पु० १ बिना टूटा हुआ चावल जो देवताओं की पूजा में चढ़ाया जाता है। २ धान का लावा। ३ जौ।

अक्षतयोनि–वि० स्त्री० [सं०] (कन्या) जिसका पुरुष से संसर्ग न हुआ हो।

अक्षता–वि० स्त्री० [सं०] जिसका पुरुष से संयोग न हुआ हो (स्त्री)।

संज्ञा स्त्री० वह पुनर्भू स्त्री जिसने पुनर्विवाह तक पुरुष संयोग न किया हो।

अक्षपाद–संज्ञा पु० [सं०] १ न्यायशास्त्र के प्रवर्तक गौतम ऋषि। २ तार्किक। नैयायिक।

अक्षम–वि० [सं०] [संज्ञा अक्षमता] १ क्षमारहित। असहिष्णु। २ असमर्थ। अशक्त।

अक्षमता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ क्षमा का अभाव। असहिष्णुता। २. ईर्ष्या। डाह। ३ असामर्थ्य

अक्षय–वि० [सं०] १ जिसका क्षय न हो। अविनाशी। अनश्वर। २ कल्प के अंत तक रहनेवाला।

अक्षयतृतीया–संज्ञा स्त्री० [सं०] वैशाख

शुक्ल-तृतीया। आखा तीज। (स्नान-दान)
अक्षयनवमी–संज्ञा स्त्री० [सं०] कार्तिक शुक्ला नवमी। (स्नान-दान आदि)
अक्षयवट–संज्ञा पुं० [सं०] प्रयाग और गया में एक बरगद का पेड़, पौराणिक जिसका नाश प्रलय में भी नहीं मानते।
अक्षय्य–वि० [सं०] अक्षय। अविनाशी।
अक्षर–वि० [सं०] अविनाशी। नित्य। संज्ञा पुं० १ अकारादि वर्ण। हरफ़। २. आत्मा। ३. ब्रह्म। ४. आकाश। ५. धर्म। ६. तपस्या। ७. मोक्ष। ८. जल।
अक्षरन्यास–संज्ञा पुं० [सं०] १. लेख। लिखावट। २. मंत्र के एक एक अक्षर को पढ़कर हृदय, नाक, कान आदि छूना। (तंत्र)
अक्षरशः–क्रि० वि० [सं०] एक एक अक्षर। बिलकुल। सब।
अक्षरेखा–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह सीधी रेखा जो किसी गोल पदार्थ के भीतर केंद्र से होकर दोनों पृष्ठों पर लंब रूप से गिरे।
अक्षरौटी–संज्ञा स्त्री० [सं० अक्षरावर्त्तन] १. वर्णमाला। २. लेख। लिपि का ढंग। ३. वे पद्य जो क्रम से वर्णमाला के अक्षरों को लेकर आरंभ होते हैं।
अक्षांश–संज्ञा पुं० [सं०] १. भूगोल पर उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव के अंतर के ३६० समान भागों पर से होती हुई ३६० रेखाएँ जो पूर्व पश्चिम मानी गई हैं। २. वह कोण जहाँ पर क्षितिज का तल पृथ्वी के अक्ष से कटता है। ३. भूमध्य रेखा और किसी नियत स्थान के बीच में याम्योत्तर का पूर्ण झुकाव या अंतर। ४. किसी नक्षत्र के क्रान्तिवृत्त के उत्तर या दक्षिण की ओर का कोणांतर।
अक्षि–संज्ञा स्त्री० [सं०] आँख। नेत्र।
अक्षिगोलक–संज्ञा पुं० [सं०] आँख का ढेँढर।
अक्षितारा–संज्ञा स्त्री० [सं०] आँख की पुतली।
अक्षिपटल–संज्ञा पुं० [सं०] आँख का परदा।
अक्षुण्ण–वि० [सं०] १. बिना टूटा हुआ। समूचा। २. अनाड़ी।
अक्षोट–संज्ञा पुं० [सं०] अखरोट।
अक्षौनी*–संज्ञा स्त्री० दे० "अक्षौहिणी"।
अक्षोभ–संज्ञा पुं० [सं०] क्षोभ का अभाव। शांति। वि० १. क्षोभरहित। गंभीर। शांत। २. मोहरहित। ३. निडर। निर्भय। ४. जिसे बुरा काम करते हिचक न हो।
अक्षौहिणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] पूरी चतुरंगिणी सेना जिसमें १,०९,३५० पैदल, ६५,६१० घोड़े, २१,८७० रथ और २१,८७० हाथी होते थे।
अक्स–संज्ञा पुं० [अ०] १. प्रतिबिंब। छाया। परछाईं। २. तसवीर। चित्र।
अक्सर–क्रि० वि० दे० "अक्सर"।
अखंग*–वि० [सं० अखंड] न खँगनेवाला। न चुकनेवाला। अविनाशी।
अखंड–वि० [सं०] १. जिसके टुकड़े न हों। संपूर्ण। समग्र। पूरा। २. जो बीच में न रुके। लगातार। ३. बेरोक। निर्विघ्न।
अखंडनीय–वि० [सं०] १. जिसके टुकड़े न हो सकें। २. जिसके विरुद्ध न कहा जा सके। पुष्ट। युक्तियुक्त।
अखंडल*–वि० [सं० अखंड] १. अखंड। अविच्छिन्न। २. समूचा। संपूर्ण। संज्ञा पुं० दे० "आखंडल"।
अखंडित–वि० [सं०] १. जिसके टुकड़े न हुए हों। अविच्छिन्न। २. संपूर्ण। समूचा। ३. निर्विघ्न। बाधारहित। ४. जिसका क्रम न टूटा हो। लगातार।
अखज–वि० [सं० अखाद्य] १. अखाद्य। न खाने योग्य। २. बुरा। खराब।
अखड़ैत संज्ञा पुं० [हिं० अखाड़ा + ऐत (प्रत्य०)] मल्ल। बलवान् पुरुष।
अखती, अखतीज–संज्ञा स्त्री० दे० "अक्षय-तृतीया"।
अखनी–संज्ञा स्त्री० [अ० यख़नी] मांस का रसा। शोरबा।
अख़बार–संज्ञा पुं० [अ०] समाचारपत्र।

साय.दपत्र। खर्रा या कागज।
अखय*–वि० दे० "अक्षय"।
अखर*–संज्ञा पु० दे० "अक्षर"।
अखरना–क्रि० अ० [सं० खर] खलना। बुरा लगना। कष्टकर होना।
अखरा*–वि० [सं० अ+हिं० खरा= सच्चा] झूठा। बनावटी। कृत्रिम।
संज्ञा पु० [सं० अक्षर=समूचा] भूसी मिला हुआ जौ का आटा।
अखरावट, अखरावटी–संज्ञा स्त्री० दे० "अक्षरौटी"।
अखरोट–संज्ञा पु० [सं० अक्षोट] एक फल-दार ऊँचा पेड़ जो भूटान से अफगानिस्तान तक होता है।
अखा†–संज्ञा पु० दे० "आखा"।
अखाड़ा–संज्ञा पु० [सं० अक्षवाट] १ कुश्ती लड़ने या कसरत करने के लिए बनाई हुई चौखूँटी जगह। २ साधुओं की सांप्रदायिक मंडली। जमायत। ३ तमाशा दिखानेवालों और गाने बजानेवालों की मंडली। जमायत। दल। ४ सभा। दरबार। रंगभूमि।
अखाद्य–वि० [सं०] न खाने योग्य।
अखिल–वि० [सं०] १ संपूर्ण। समग्र। पूरा। २ सर्वांगपूर्ण। अखंड।
अखीन*–वि० दे० "अक्षीण"।
अखीर–संज्ञा पु० [अ०] १. अंत। छोर। २ समाप्ति।
अखूट–वि० [सं० अ=नहीं+खूँटना=कम होना] जो न घटे या चुके। अक्षय। बहुत।
अखै*–वि० दे० "अक्षय"।
अखैवर–संज्ञा पु० [सं० अक्षयवट] अक्षय-वट।
अखोर*–वि० [हिं० अ+खोटा=बुरा] १ भद्र। सज्जन। २ सुंदर। ३ निर्दोष।
वि० [फा० आखोर] निकम्मा। बुरा।
संज्ञा पु० १ कूड़ा करकट। निकम्मी चीज़। २ खराब घास। बुरा चारा। विचाली।
अखोह–संज्ञा पु० [हिं० खोह] ऊँची नीची या ऊबड़ खाबड़ भूमि।
अखोट } संज्ञा पु० [सं० अक्ष=धुरा] १.
अखोटा } जाँते या चक्की के बीच की खूँटी। जाँते की किल्ली। २ लकड़ी या लट्ठा या डंडा जिस पर गड़ारी घूमती है।
अख्खाह!–अव्य० उद्वेग या आश्चर्यसूचक शब्द।
अख्तियार–संज्ञा पु० दे० "इख्तियार"।
अख्यान*–संज्ञा पु० दे० "आख्यान"।
अगड़–संज्ञा पु० [अ०] वह घोड़ा जिसका हाथ पैर कट गया हो। कबंध।
अग–वि० [सं०] १ न चलनेवाला। स्थावर। २. टेढ़ा चलनेवाला।
संज्ञा पु० १ पेड़। वृक्ष। २ पर्वत। ३. सूर्य। ४. साँप।
अगज–वि० [सं०] पर्वत से उत्पन्न।
संज्ञा पु० १. शिलाजीत। २ हाथी।
अगटना†–क्रि० अ० [हिं० इकट्ठा] इकट्ठा होना। जमा होना।
अगड़*–संज्ञा पु० [हिं० अकड़] अकड़। ऐंठ। दर्प।
अगड़धत्ता–वि० [सं० अग्रोद्धत] १ लंबा तड़ंगा। ऊँचा। २ श्रेष्ठ। बड़ा।
अगड़बगड़–वि० [अनु०] अंड बंड। बे सिर पैर का। क्रमविहीन।
संज्ञा पु० १ बे सिर पैर की बात। प्रलाप। २ अंड बंड काम। अनुपयोगी कार्य।
अगड़ा†–संज्ञा पु० [देश०] अनाजों की बाल जिसमें से दाना झाड़ लिया गया हो। खुखड़ी। अखरा।
अगण–संज्ञा पु० [सं०] छंद-शास्त्र में चार बुरे गण—जगण, रगण, सगण और तगण।
अगणनीय–वि० [सं०] १ न गिनने योग्य। सामान्य। २ अनगिनत। असंख्य।
अगणित–वि० [सं०] जिसकी गणना न हो। अनगिनत। असंख्य। बहुत।
अगण्य–वि० [सं०] १. न गिनने योग्य। २ सामान्य। तुच्छ। ३ असंख्य। बेशुमार।
अगत*†–संज्ञा स्त्री० दे० "अगति"।
अगति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बुरी गति।

दुर्गति। दुर्दशा। खराबी। २. मृत्यु के पीछे की बुरी दशा। नरक। ३. मरने के पीछे शव की दाह आदि क्रिया। ४. गति का अभाव। स्थिरता।

अगतिक–वि० [सं०] जिसकी कहीं गति या ठिकाना न हो। अशरण। निराश्रय।

अगती–वि० [सं० अगति] बुरी गतिवाला। पापी। दुराचारी।

†वि० स्त्री० [सं० अग्रतः] अगाऊ। पेशगी।

क्रि० वि० आगे से। पहले से।

अगनिउ†–संज्ञा पुं० [सं० आग्नेय] उत्तर-पूर्व का कोना।

अगनित*–वि० दे० "अगणित"।

अगनू*–संज्ञा स्त्री० [सं० आग्नेय] अग्नि कोण।

अगनेउ*–संज्ञा पुं० [सं० आग्नेय] आग्नेय दिशा। अग्निकोण।

अगनेत*–संज्ञा पुं० [सं० आग्नेय] आग्नेय दिशा। अग्निकोण।

अगम–वि० [सं० अगम्य] १. जहाँ कोई जा न सके। दुर्गम। अवघट। २. विकट। कठिन। मुश्किल। ३. दुर्लभ। अलभ्य। ४. बहुत। अत्यंत। ५. बुद्धि के परे। दुर्बोध। ६. अथाह। बहुत गहरा।

संज्ञा पुं० दे० "आगम"।

अगमन*–क्रि० वि० [सं० अग्रवान्] १. आगे। पहले। प्रथम। २. आगे से पहले से।

अगमनीया–वि० स्त्री० [सं०] जिस (स्त्री) के साथ संभोग करने का निषेध हो।

अगमानी*–संज्ञा पुं० [सं० अग्रगामी] अगुआ। नायक। सरदार।

†संज्ञा स्त्री० दे० "अगवानी"।

अगमासी–संज्ञा स्त्री० दे० "अगवाँसी"।

अगम्य–वि० [सं०] १. जहाँ कोई न जा सके। अवघट। गहन। २. कठिन। मुश्किल। ३. बहुत। अत्यंत। ४. जिसमें बुद्धि न पहुँचे। अज्ञेय। दुर्बोध। ५. अथाह। बहुत गहरा।

अगम्या–वि० स्त्री० [सं०] (स्त्री) जिसके साथ संभोग करना निषिद्ध हो। जैसे, गुरुपत्नी, राजपत्नी, सौतेली माँ आदि।

अगर–संज्ञा पुं० [सं० अगुरु] एक पेड़ जिसकी लकड़ी सुगंधित होती है।

अव्य० [फ़ा०] यदि। जो। मुहा०–अगर मगर करना = १. हुज्जत करना। तर्क करना। २. आगा पीछा करना।

अगरई–वि० [हिं० अगर] श्यामता लिए हुए सुनहले संदली रंग का।

अगरचे–अव्य० [फ़ा०] गोकि। यद्यपि। बावजूदे कि।

अगरना*–क्रि० अ० [सं० अग्र] आगे होना। बढ़ना।

अगरबत्ती–संज्ञा स्त्री० [सं० अगरुवर्तिका] सुगंध के निमित्त जलाने की पतली सींक या बत्ती।

अगरसार–संज्ञा पुं० दे० "अगर"।

अगरा*–वि० [सं० अग्र] १. अगला। प्रथम। २. बढ़कर। श्रेष्ठ। उत्तम। ३. अधिक। ज्यादा।

अगरी–संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की घास।

संज्ञा स्त्री० [सं० अर्गल] लकड़ी या लोहे का छोटा डंडा जो किवाड़ के पल्ले में कोंढा लगाकर डाला रहता है। ब्योंड़ा।

संज्ञा स्त्री० [सं० अग्र] फूस की छाजन का एक ढंग।

*संज्ञा स्त्री० [सं० अनर्गल] अंडबंड बात। बुरी बात। अनुचित बात।

अगरु–संज्ञा पुं० [सं०] अगर लकड़ी। ऊद।

अगल बगल–क्रि० वि० [फ़ा०] इधर उधर। दोनों ओर। आसपास।

अगला–वि० [सं० अग्र] [स्त्री० अगली] १. आगे का। सामने का। "पिछला" का उलटा। २. पहले का। पूर्ववर्ती। ३. प्राचीन। पुराना। ४. आगामी। आनेवाला। ५. अपर। दूसरा।

संज्ञा पुं० १. अगुआ। प्रधान। २. चतुर आदमी। ३. पूर्वज। पुरखा। (बहु०

चलना में)।

अगवना–क्रि० अ० [हिं० आगे+ना] आगे बढ़ना। उद्यत होना।

अगवाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० आगा+अवाई] अगवानी। अभ्यर्थना।
संज्ञा पु० [सं० अग्रगामी] आगे चलनेवाला। अगुआ। अग्रसर।

अगवाड़ा–संज्ञा पु० [सं० अग्रवाट] घर के आगे का भाग। "पिछवाड़ा" का उलटा।

अगवान–संज्ञा पु० [सं० अग्र+यान] १. अगवानी या अभ्यर्थना करनेवाला। २ विवाह में कन्यापक्ष के लोग जो बरात को आगे से जाकर लेते हैं।
संज्ञा स्त्री० दे० "अगवानी"।

अगवानी–संज्ञा स्त्री० [सं० अग्र+यान] १ अतिथि के निकट पहुँचने पर उससे सादर मिलना। अभ्यर्थना। पेशवाई। २ विवाह में बरात को आगे से लेने की रीति।
*संज्ञा पु० [सं० अग्रगामी] अगुआ। नेता।

अगवार–संज्ञा पु० [सं० अग्र+वर] १ अन्न का वह भाग जो हलवाहे आदि के लिये अलग कर दिया जाता है। २ वह अन्न जो बरसाने में भूसे के साथ चला जाता है। ३ दे० "अगवाड़ा"।

अगवाँसी–संज्ञा स्त्री० [सं० अग्रवासी] १ हल की वह लकड़ी जिसमें फाल लगा रहता है। २ पैदावार में हलवाहे का भाग।

अगसार*–क्रि० वि० [सं० अग्रसर] आगे।

अगस्त–संज्ञा पु० दे० "अगस्त्य"।

अगस्त्य–संज्ञा पु० [सं०] १. एक ऋषि जिन्होंने समुद्र सोखा था। २ एक तारा जो भादों में सिंह के सूर्य्य के १७ अंश पर उदय होता है। ३ एक पेड़ जिसके फूल अर्द्धचंद्राकार लाल या सफेद होते हैं।

अगह*–वि० [सं० अग्रह] १. हाथ में न आने लायक। चंचल। २ जो वर्णन और चिंतन के बाहर हो। ३ कठिन। मुश्किल।

अगहन–संज्ञा पु० [सं० अग्रहायण] [वि० अगहनिया, अगहनी] हेमंत ऋतु का पहला महीना। मार्गशीर्ष। मगसिर।

अगहनिया–वि० [सं० अग्रहायणी] अगहन में होनेवाला (धान)।

अगहनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० अगहन] वह फसल जो अगहन में काटी जाती है।

अगहर*†–क्रि० वि० [हिं० आगे+हर (प्रत्य०)] १. आगे। २ पहले। प्रथम।

अगहुँड़–क्रि० वि० [सं० अग्र+हिं० हुँड (प्रत्य०)] आगे। आगे की ओर।

अगाउनी*–क्रि० वि०, संज्ञा स्त्री० दे० "अगौनी"।

अगाऊ–क्रि० वि० [सं० अग्र+हिं० आऊ (प्रत्य०)] अग्रिम। पेशगी। समय के पहले।
*वि० अगला। आगे का।
*क्रि० वि० आगे। पहले। प्रथम।

अगाड़ा†–संज्ञा पु० [हिं० अगाड़] कछार। नरी।
संज्ञा पु० [सं० अग्र] यात्री का वह सामान जो पहले से आगे के पड़ाव पर भेज दिया जाता है। पेशखेमा।

अगाड़ी–क्रि० वि० [सं० अग्र, प्रा० अग्ग+हिं० आड़ी (प्रत्य०)] १ आगे। २ भविष्य में। ३ सामने। समक्ष। ४. पूर्व। पहले।
संज्ञा पु० १ किसी वस्तु के आगे या सामने का भाग। २. घोड़े के गराँव में बँधी हुई दो रस्सियाँ जो इधर उधर दो खूँटों से बँधी रहती हैं। ३ सेना का पहला धावा। हल्ला।

अगाड़ू–क्रि० वि० दे० "अगाड़ी"।

अगाध–वि० [सं०] १ अथाह। बहुत गहरा। २ अपार। असीम। बहुत। ३ समझ में न आने योग्य। दुर्बोध।
संज्ञा पु० छेद। गड्ढा।

अगान*–वि० दे० "अज्ञान"।

अगामें*–क्रि० वि० [सं० अग्रिम] आगे।

अगार–सं० पु० दे० "आगार"।
क्रि० वि० [सं० अग्र] आगे। पहले।

अगास*–संज्ञा पु० [सं० अग्र + हिं० आस (प्रत्य०)] द्वार के आगे का चबूतरा।

अगाह*–वि० [सं० अगाध] १. अथाह। बहुत गहरा। २. अत्यंत। बहुत।
क्रि० वि० आगे से। पहले से।
*वि० [फा० आगाह] विदित। प्रकट।

अगाही†–संज्ञा स्त्री० [हिं० अगाह] किसी बात के होने का पहले से संकेत या सूचना।

अगिन*–संज्ञा स्त्री० [सं० अग्नि] [क्रि० अगियाना] १. आग। २. गौरैया या बया के आकार की एक छोटी चिड़िया। ३. अगिया घास।
वि० [सं० अ = नहीं + हिं० गिनना] अगणित। बेशुमार।

अगिन बोट–संज्ञा पुं० [सं० अग्नि + अं० बोट] वह बड़ी नाव जो भाप के एंजिन के जोर से चलती है। स्टीमर। धूआँकश।

अगिनित*–वि० दे० "अगणित"।

अगिया–संज्ञा स्त्री० [सं० अग्नि, प्रा० अग्गि] १. एक खर या घास। २. नीली चाय। यज्ञकुश। अगिन घास। ३. एक पहाड़ी पौधा जिसके पत्तों और डंठलों में ज़हरीले रोएँ होते हैं। ४. घोड़ों और बैलों का एक रोग। ५. अगिया सन। कोढ़ा।

अगिया कोइलिया–संज्ञा पु० [हिं० आग + कोयला] दो कल्पित बैताल जिन्हें विक्रमादित्य ने सिद्ध किया था।

अगियाना–क्रि० अ० [सं० अग्नि] अंग का तप उठना। जलन या दाहयुक्त होना।

अगिया बैताल–संज्ञा पु० [सं० अग्नि, प्रा० अग्गि + बैताल] १. विक्रमादित्य के दो बैतालों में से एक। २. मुंह से लुक या लपट निकालनेवाला भूत। ३. बहुत क्रोधी आदमी।

अगियार, अगियारी–संज्ञा स्त्री० [सं० अग्निकार्य] आग में सुगंध-द्रव्य डालने की पूजन-विधि। धूप देने की क्रिया।

अगिया सन–संज्ञा पुं० [हिं० आग + सन] १. एक प्रकार की घास। २. एक कीड़ा। ३. एक चर्मरोग जिसमें भलकते हुए फफोले निकलते हैं।

अगिला†–वि० दे० "अगला"।

अगीठा*–संज्ञा पुं० [सं० अग्रस्थ] आगे का भाग।

अगीत पछीत*–क्रि० वि० [सं० अग्रतः पश्चात्] आगे और पीछे की ओर।
संज्ञा पुं० आगे का भाग और पीछे का भाग।

अगुआ–संज्ञा पुं० [हिं० आगा] १. आगे चलनेवाला। अग्रसर। नेता। २. मुखिया। प्रधान। नायक। ३. पथ-दर्शक। मार्ग बतानेवाला। ४. विवाह की बातचीत ठीक करनेवाला।

अगुआई–संज्ञा स्त्री० [हिं० आगा + आई (प्रत्य०)] १. अग्रणी होने की क्रिया। अग्रसरता। २. प्रधानता। सरदारी। ३. मार्ग-प्रदर्शन।

अगुआना–क्रि० स० [हिं० आगा] अगुआ बनाना। सरदार नियत करना।
क्रि० अ० आगे होना। बढ़ना।

अगुवानी–संज्ञा स्त्री० दे० "अगवानी"।

अगुण–वि० [सं०] १. रज, तम आदि गुण-रहित। निर्गुण। २. निर्गुणी। मूर्ख।
संज्ञा पुं० अवगुण। दोष।

अगुताना*†–क्रि० अ० दे० "उकताना"।

अगुरु–वि० [सं०] १. जो भारी न हो। हलका। २. जिसने गुरु से उपदेश न पाया हो।
संज्ञा पु० १. अगर वृक्ष। ऊद। २. शीशम।

अगुवा–संज्ञा पुं० दे० "अगुआ"।

अगुसरना–[सं० अग्रसर + ना (प्रत्य०)] आगे बढ़ना। अग्रसर होना।

अगूठना†–क्रि० सं० [सं० अवगुंठन] १. तोपना। ढाकना। २. घेरना। छेकना।

अगूठा–[सं० अगूढ़] घेरा। मुहासिरा।

अगूढ़–वि० [सं०] १. जो छिपा न हो। २. स्पष्ट। प्रकट। ३. सहज। आसान।
संज्ञा पुं० साहित्य में गुणीभूत व्यंग्य के आठ भेदों में से एक जो वाच्य के समान ही स्पष्ट होता है।

अगूता—क्रि० वि० [हिं० आगे] आगे। सामने।

अगोचर—वि० [सं०] जिसका अनुभव इंद्रियों को न हो। इंद्रियातीत। अव्यक्त।

अगोट—संज्ञा पुं० [सं० अग्र + हिं० ओट] १ ओट। आड़। २ आश्रय। आधार।

अगोटना—क्रि० स० [सं० अग्र + हिं० ओट + ना (प्रत्य०)] १ रोकना। छेकना। २ पहरे में रखना। कैद करना। ३ छिपाना। ४. चारों ओर से घेरना।

क्रि० स० [सं० अग + हिं० ओट + ना (प्रत्य०)] १ अंगीकार करना। स्वीकार करना। २. पसंद करना। चुनना।

क्रि० अ० १. दबना। ठहरना। २ फँसना।

अगोता|*—क्रि० वि० [सं० अग्रत] आगे। सामने।

अगोरना—क्रि० स० [सं० अग्र] १ राह देखना। प्रतीक्षा करना। २ रखवाली या चौकसी करना। ३ रोकना। छेकना।

अगोरिया—संज्ञा पुं० [हिं० अगोरना] रखवाली करनेवाला। रखवाला।

अगौढ़|—संज्ञा पुं० [हिं० आगे] पेशगी। अगाऊ।

अगौनी*—क्रि० वि० [सं० अग्र] आगे। संज्ञा स्त्री० दे० "अगवानी"।

अगौरा—संज्ञा पुं० [सं० अग्र + हिं० ओर] ऊख के ऊपर का पतला नीरस भाग।

अगौहैं*—क्रि० वि० [सं० अग्रमुख] आगे की ओर।

अग्नि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ आग। ताप और प्रकाश। (आकाश आदि पंच भूतों में से एक) २. वेद के तीन प्रधान देवताओं में से एक। ३ जठराग्नि। पाचन-शक्ति। ४ पित्त। ५ तीन की संख्या। ६ सोना।

अग्निकर्म—संज्ञा पुं० [सं०] १ अग्निहोत्र। हवन। २ शवदाह।

अग्निकीट संज्ञा पुं० [सं०] समंदर नाम का कीड़ा जिसका निवास अग्नि में माना जाता है।

अग्निकुमार—संज्ञा पुं० [सं०] कार्त्तिकेय।

अग्निकुल—संज्ञा पुं० [सं०] क्षत्रियों का एक वंश।

अग्निकोण—संज्ञा पुं० [सं०] पूर्व और दक्षिण का कोना।

अग्निक्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] शव का अग्निदाह। मुर्दा जलाना।

अग्निक्रीड़ा—संज्ञा स्त्री० [सं०] आतिशबाजी।

अग्निगर्भ—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्यकांत मणि। आतिशी शीशा।

वि० जिसके भीतर अग्नि हो।

अग्निज—वि० [सं०] १ अग्नि से उत्पन्न। २ अग्नि को उत्पन्न करनेवाला। ३ अग्निसंदीपक। पाचक।

अग्निजिह्व—संज्ञा पुं० [सं०] देवता।

अग्निजिह्वा—संज्ञा स्त्री० [सं०] आग की लपट। (अग्नि देवता की सात जिह्वाएँ मानी गई हैं—काली, कराली, मनोजवा, लोहिता, धूम्रवर्णा, स्फुलिंगिनी और विश्वरूपी।)

अग्निज्वाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] आग की लपट।

अग्निदाह—संज्ञा पुं० [सं०] १. जलाना। २ शवदाह। मुर्दा जलाना।

अग्निदीपक—वि० [सं०] जठराग्नि को बढ़ानेवाला।

अग्निदीपन—संज्ञा पुं० [सं०] १ पाचन-शक्ति की बढ़ती। २ पाचन शक्ति को बढ़ानेवाली दवा।

अग्निपरीक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जलती हुई आग पर चलाकर अथवा जलता हुआ पानी, तेल या लोहा छुलाकर किसी व्यक्ति के दोषी या निर्दोष होने की जाँच (प्राचीन)। २ सोने चाँदी आदि को आग में तपाकर परखना।

अग्निपुराण—संज्ञा पुं० [सं०] अठारह पुराणों में से एक।

अग्निबाण—संज्ञा पुं० [सं०] वह बाण जिसमें से आग की ज्वाला प्रकट हो।

अग्निबाव—संज्ञा पुं० [सं० अग्नि + वायु] पित्ती या जुड़पित्ती नामक रोग।

अग्निमंथ–संज्ञा पुं० [सं०] १. अरणी वृक्ष। २. अरणी नामक यंत्र जिससे यज्ञ के लिये आग निकाली जाती है।
अग्निमांद्य–संज्ञा पुं० [सं०] भूख न लगने का रोग। मंदाग्नि।
अग्निमुख–संज्ञा पुं० [सं०] १. देवता। २. प्रेत। ३. ब्राह्मण। ४. चीते का पेड़।
अग्निलिंग–संज्ञा पुं० [सं०] आग की लपट की रंगत और उसके झुकाव को देखकर शुभाशुभ फल बतलाने की विद्या।
अग्निवंश–संज्ञा पुं० [सं०] अग्निकुल।
अग्निशाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह घर जिसमें अग्निहोत्र की अग्नि स्थापित हो।
अग्निशिखा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आग की लपट। २. कलियारी।
अग्निशुद्धि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आग छुलाकर किसी वस्तु को शुद्ध करना। २. अग्निपरीक्षा।
अग्निष्टोम–संज्ञा पुं० [सं०] एक यज्ञ जो ज्योतिष्टोम नामक यज्ञ का रूपांतर है।
अग्निसंस्कार–संज्ञा पुं० [सं०] १. तपाना। जलाना। २. शुद्धि के लिये अग्निस्पर्श करना। ३. मृतक का दाह-कर्म।
अग्निहोत्र–संज्ञा पुं० [सं०] वेदोक्त मंत्रों से अग्नि में आहुति देने की क्रिया।
अग्निहोत्री–संज्ञा पुं० [सं०] अग्निहोत्र करनेवाला।
अग्न्यस्त्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह अस्त्र जिससे आग निकले। आग्नेयास्त्र। २. वह अस्त्र जो आग से चलाया जाय। जैसे बंदूक।
अग्न्याधान–संज्ञा पुं० [सं०] १. अग्नि की विधानपूर्वक स्थापना। २. अग्निहोत्र।
अग्य–वि० दे० "अज्ञ"।
अग्यारी–संज्ञा स्त्री० [सं० अग्नि + कार्य्य] १. अग्नि में धूप आदि सुगंध द्रव्य देना। धूपदान। २. अग्निकुण्ड।
अग्र–संज्ञा पुं० [सं०] आगे का भाग। अगला हिस्सा।
क्रि० वि० आगे।
वि० १. प्रथम। २. श्रेष्ठ। उत्तम।
अग्रगण्य–वि० [सं०] जिसकी गिनती सबसे पहले हो। प्रधान। श्रेष्ठ।
अग्रगामी–संज्ञा पुं० [सं०] आगे चलनेवाला। अगुआ। नेता।
अग्रज–संज्ञा पुं० [सं०] १. बड़ा भाई। २. नायक। नेता। अगुआ। ३. ब्राह्मण।
*वि० श्रेष्ठ। उत्तम।
अग्रजन्मा–संज्ञा पुं० [सं०] १. बड़ा भाई। २. ब्राह्मण। ३. ब्रह्मा।
अग्रणी–वि० [सं०] अगुआ। श्रेष्ठ।
अग्रसोची–संज्ञा पुं० [सं०] आगे विचार करनेवाला। दूरदर्शी।
अग्रसर–संज्ञा पुं० [सं०] १. आगे जानेवाला व्यक्ति। अगुआ। २. आरंभ करनेवाला। ३. मुखिया। प्रधान व्यक्ति।
अग्रहायण–संज्ञा पुं० [सं०] अगहन। मार्गशीर्ष मास।
अग्रहार–संज्ञा पुं० [सं०] १. राजा की ओर से ब्राह्मण को भूमि का दान। २. ब्राह्मण को दी हुई भूमि।
अग्राशन–संज्ञा पुं० [सं०] भोजन का वह अंश जो देवता के लिये पहले निकाल दिया जाता है।
अग्राह्य–वि० [सं०] १. न ग्रहण करने योग्य। न लेने लायक। २. त्याज्य। छोड़ने लायक। ३. न मानने लायक।
अग्रिम–वि० [सं०] १. अगाऊ। पेशगी। २. आगे आनेवाला। आगामी। ३. प्रधान। श्रेष्ठ। उत्तम।
अघ–संज्ञा पुं० [सं०] १. पाप। पातक। २. दुःख। ३. व्यसन। ४. अघासुर।
अघट–वि० [सं० अ = नहीं + घट = होना] १. जो घटित न हो। न होने योग्य। २. दुर्घट। कठिन। *३. जो ठीक न घटे। अनुपयुक्त। बेमेल।
वि० [हिं० घटना] १. जो कम न हो। अक्षय। २. एकरस। स्थिर।
अघटित–वि० [सं०] १. जो घटित न हुआ हो। २. असंभव। न होने योग्य। *३. अवश्य होनेवाला। अमिट। अनि-

वार्य। ४ अनुचित। नामुनासिब।
*वि० [हि० घटा] बहुत अधिक। जो घटाए न हो।
अघमर्षण–वि० [सं०] पापनाशक।
अघवाना–क्रि० स० [हि० अघाना] १ भर पेट खिलाना। २ संतुष्ट करना।
अघाट–संज्ञा पु० [देश०] वह भूमि जिसे बचने का अधिकार उसके स्वामी को न हो।
अघात*–संज्ञा पु० दे० 'आघात"।
वि० [हि० अघाना] खूब। अधिक।
अघाना–क्रि० अ० [सं० अग्रह] १ भोजन से तृप्त होना। पेट भर खाना या पीना। २ संतुष्ट होना। तृप्त होना। ३ प्रसन्न होना। खुशी होना। ४ थकना।
मुहा०–अघाकर=मन भर। यथेष्ट।
अघारि–संज्ञा पु० [सं०] १ पाप का शत्रु। पापनाशक। २ श्रीकृष्ण।
अघासुर–संज्ञा पु० [सं०] कंस का सेनापति अघ दैत्य जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।
अघी–वि० [सं०] पापी। पातकी।
अघोर–वि० [सं०] १ सौम्य। सुहावना। २ अत्यंत घोर। बहुत भयंकर।
संज्ञा पु० १ शिव का एक रूप। २ एक संप्रदाय जिसके अनुयायी मद्य-मांस का व्यवहार करते हैं और मल-मूत्र आदि से घृणा नहीं करते।
अघोरनाथ–संज्ञा पु० [सं०] शिव।
अघोरपंथ–संज्ञा पु० [सं० अघोरपथ] अघोरियों का मत या संप्रदाय।
अघोरपंथी–संज्ञा पु० [सं०] अघोर मत का अनुयायी। अघोरी। औघड़।
अघोरी–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० अघोरिन] १ अघोर मत का अनुयायी। औघड़। २ भक्ष्याभक्ष्य का विचार न करनेवाला।
वि० घृणित। घिनौना।
अघोष–संज्ञा पु० [सं०] व्याकरण का एक वर्णसमूह जिसमें प्रत्येक वर्ग का पहला और दूसरा अक्षर तथा श, ष और स भी हैं।
अघौघ–संज्ञा पु० [सं०] पापों का समूह।
अघ्रान*–संज्ञा पु० दे० 'आघ्राण"।
अघ्रानना*–क्रि० स० [सं० आघ्राण] आघ्राण करना। सूँघना।
अचंचल–वि० [सं०] १ जो चंचल न हो। स्थिर। २ धीर। गंभीर।
अचंभव*–संज्ञा पु० [सं० असंभव] अचंभा।
अचंभा–संज्ञा पु० [सं० असंभव] १ आश्चर्य। अचरज। विस्मय। २ अचरज की बात।
अचंभित*–वि० [हि० अचंभा] आश्चर्यित। चकित। विस्मित।
अचंभौ*–संज्ञा पु० दे० "अचंभा"।
अचक–वि० [सं० चक=समूह] भरपूर। पूर्ण। पूरा। ज्यादा। बहुत।
संज्ञा पु० [सं० चक् = भ्रांत होना] घबराहट। भौचक्कापन। विस्मय।
अचकन–संज्ञा पु० [सं० कंचुक, प्रा० अंचुक] एक प्रकार का लंबा अंगा।
अचका*–क्रि० वि० दे० 'अचानक"।
अचक्का–संज्ञा पु० [सं० आ=भले प्रकार+चक्र=भ्रांति] अनजान।
अचगरी*–संज्ञा स्त्री० [सं० अति+करण] नटखटी। शरारत। छेड़छाड़।
अचना*–क्रि० स० [सं० आचमन] आचमन करना। पीना।
अचपल–वि० [सं०] १ अचंचल। धीर। गंभीर। २ बहुत चंचल। शोख।
अचपली–संज्ञा स्त्री० [हि० अचपल] अठखेली। किलोल। क्रीड़ा।
अचभौन*–संज्ञा पु० दे० 'अचंभा"।
अचर–वि० [सं०] न चलनेवाला। स्थावर। जड़।
अचरज–संज्ञा पु० [सं० आश्चर्य] आश्चर्य। अचंभा। तअज्जुब।
अचल–वि० [सं०] १ जो न चले। स्थिर। ठहरा हुआ। २ चिरस्थायी। सब दिन रहनेवाला। ३ ध्रुव। दृढ़। पक्का। ४ जो नष्ट न हो। मजबूत। पुख्ता।
संज्ञा पु० पर्वत। पहाड़।
अचलधृति–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त।

अचला–वि० स्त्री० [सं०] जो न चले। स्थिर। ठहरी हुई।
संज्ञा स्त्री० पृथ्वी।
अचला सप्तमी–संज्ञा स्त्री० [सं०] माघ शुक्ला सप्तमी।
अचवन–संज्ञा पुं० [सं० आचमन] [क्रि० अचवना] १. आचमन। पीने की क्रिया। २. भोजन के पीछे हाथ-मुंह धोकर कुल्ली करना।
अचवना–क्रि० स० [सं० आचमन] १. आचमन करना। पीना । २. भोजन के पीछे हाथ-मुंह धोकर कुल्ली करना। ३. छोड़ देना। खो बैठना।
अचवाना–क्रि० सं० [म० आचमन] १. आचमन कराना। पिलाना । २. भोजन के बाद हाथ मुंह धुलाना और कुल्ली कराना।
अचांचक–क्रि० वि० दे० "अचानक"।
अचाका*–क्रि० वि० [सं० आ=अच्छी तरह +चक्र=भ्रांति] अचानक । सहसा।
अचान*–क्रि० वि० दे० "अचानक"।
अचानक–क्रि० वि० [सं० अज्ञानात] एक-बारगी। सहसा। अकस्मात्।
अचार–संज्ञा पुं० [फा०] मसालों के साथ तेल में कुछ दिन रखकर खट्टा किया हुआ फल या तरकारी। कचूमर । अथाना।
*संज्ञा पुं० दे० "आचार"।
संज्ञा पुं० [सं० चार] चिरौंजी का पेड़।
अचारज*–संज्ञा पु० दे० "आचार्य्य"।
अचारी*–संज्ञा पुं० [सं० आचारी] १. आचार विचार से रहनेवाला आदमी। नित्यकर्म विधि करनेवाला। २. रामानुजसंप्रदाय का वैष्णव।
संज्ञा स्त्री० [फ़ा० अचार] छिले हुए कच्चे आम की धूप में सिझाई फाँक।
अचाहा*–वि० [सं० अ+हिं० चाहना] जिस पर रुचि या प्रीति न हो।
संज्ञा पुं० १. वह व्यक्ति जो प्रेमपात्र न हो।
*२. प्रीति न करनेवाला। निर्मोही।
अचाही*–वि० [सं० अ+हिं० चाह] कुछ इच्छा न रखनेवाला। निष्काम।
अचित*–वि० [सं० अचित] चितारहित। निश्चित। बेफ़िक्र।
अचितनीय–वि० [सं०] जो ध्यान में न आ सके। अज्ञेय। दुर्बोध।
अचिंतित–वि० [सं०] १. जिसका चिंतन न किया गया हो। बिना सोचा विचारा। २. आकस्मिक। निश्चित। ३. बेफ़िक्र।
अचित्य–वि० [सं०] १. जिसका चिंतन न हो सके। अज्ञेय। कल्पनातीत। २. जिसका अंदाजा न हो सके। अतुल । ३. आशा से अधिक। ४. आकस्मिक।
अचित्–संज्ञा पुं० [सं०] जड़ प्रकृति।
अचिर–क्रि० वि० [सं०] शीघ्र। जल्दी ।
अचिरात्–क्रि० वि० [सं०] जल्दी।
अचीता–वि० [सं० अ+हिं० चिता] [स्त्री० अचीती] १. जिसका पहले से अनुमान न हो। आकस्मिक । २. बहुत ।
वि० [सं० अचित] निश्चित । बेफ़िक्र।
अचूक–वि० [सं० अच्युत] १. जो न चूके। जो अवश्य फल दिखावे। २. ठीक। भ्रमरहित । पक्का।
क्रि० वि० १. सफ़ाई से। कौशल से। २. निश्चय । अवश्य । ज़रूर।
अचेत–वि० [सं०] १. चेतनारहित। बेसुध । बेहोश। मूर्च्छित। २. व्याकुल। विकल। ३. अनजान। बेखबर । ४. नासमझ । मूढ। *५ जड़।
*संज्ञा पुं० [सं० अचित्] जड़ प्रकृति। जड़त्व। माया। अज्ञान।
अचेतन–वि० [सं०] १. जिसमें सुख दुःख आदि के अनुभव की शक्ति न हो। चेतनारहित । जड़ । २. संज्ञाशून्य । मूर्च्छित ।
अचैतन्य–संज्ञा पुं० [सं०] वह जो ज्ञानस्वरूप न हो। अनात्मा। जड़।
अचैन–संज्ञा पुं० [सं० अ+हिं० चैन] बेचैनी । व्याकुलता । विकलता।
वि० बेचैन। व्याकुल। विकल।
अचोना*–संज्ञा पुं० [सं० आचमन] आचमन करने या पीने का बरतन। कटोरा।

अच्छ–वि० [सं०] स्वच्छ। निर्मल।
संज्ञा पु० दे० "अक्ष"।
अच्छत–संज्ञा पु० दे० "अक्षत"।
अच्छर–संज्ञा पु० दे० "अक्षर"।
अच्छरा, अच्छरी*–संज्ञा स्त्री० [सं० अप्सरा] अप्सरा।
अच्छा वि० [सं० अच्छ] १ उत्तम। बढ़िया। उमदा।
मुहा०—अच्छे आना=ठीक या उपयुक्त अवसर पर आना,। अच्छा दिन=सुख संपत्ति का दिन। अच्छा लगना=१ भला जान पड़ना। सजना। सोहना। २ रुचिकर होना। पसंद आना।
२ स्वस्थ। तंदुरुस्त। नीरोग।
संज्ञा पु० १ बड़ा आदमी। श्रेष्ठ पुरुष। २. गुरुजन। बाप दादा। बड़े बूढ़े। (बहुवचन)।
क्रि० वि० अच्छी तरह। खूब।
अव्य० प्रार्थना या आदेश के उत्तर में स्वीकृतिसूचक शब्द।
अच्छाई–संज्ञा स्त्री० दे० "अच्छापन"।
अच्छापन–संज्ञा पु० [हिं० अच्छा + हिं० पन] अच्छे होने का भाव। उत्तमता।
अच्छाबिच्छा–वि० [हिं० अच्छा + बीछना =चुनना] १ चुना हुआ। २ भला चंगा। नीरोग।
अच्छोत*–वि० [सं० अच्छत] अधिक। बहुत।
अच्छोहिनी–संज्ञा स्त्री० दे० "अक्षौहिणी"।
अच्युत–वि० [सं०] १ जो गिरा न हो। २ अटल। स्थिर। ३ नित्य। अविनाशी। ४ जो विचलित न हो।
संज्ञा पु० विष्णु।
अच्युतानंद–वि० [सं०] जिसका आनंद नित्य हो।
संज्ञा पु० परमात्मा। ईश्वर।
अछक*–वि० [सं० चप्] बिना छका हुआ। अतृप्त। भूखा।
अछकना*–क्रि० वि० [अ=नहीं + चप्= खाना] तृप्त न होना। न अघाना।
अछत*–क्रि० वि० ['आछना' का कृदंत रूप] १. रहते हुए। उपस्थिति में। सम्मुख। सामने। २ सिवाय। अतिरिक्त।
वि० [सं० अ=नहीं + अस्ति] न रहना हुआ। अनुपस्थित। अविद्यमान।
अछताना पछताना–क्रि० अ० [हिं० पछ-ताना] पछताना। पश्चात्ताप करना।
अछन*–संज्ञा पु० [सं० अ + क्षण] बहुत दिन। दीर्घकाल। चिरकाल।
क्रि० वि० धीरे धीरे। ठहर ठहरकर।
अछना*–क्रि० अ० [सं० अस्] विद्यमान रहना।
अछप*–वि० [अ + छप = छिपना] न छिपने योग्य। प्रकट। जाहिर।
अछय*–वि० दे० "अक्षय"।
अछरा*–संज्ञा स्त्री० [सं० अप्सरा] अप्सरा।
अछरी–संज्ञा स्त्री० दे० "अछरा"।
अछरौटी–संज्ञा स्त्री० [सं० अक्षर + औटी (प्रत्य०)] वर्णमाला।
अछवाना*–क्रि० स० [सं० अच्छ=साफ] साफ करना। सँवारना।
अछवानी–संज्ञा स्त्री० [हिं० अजवाइन] अजवाइन, सोंठ तथा मेवों को पीसकर घी में पकाया हुआ मसाला जो प्रसूता स्त्रियों को पिलाया जाता है।
अछाम*–वि० [सं० अक्षाम] १ मोटा। २ बड़ा। भारी। ३ हृष्टपुष्ट। बलवान्।
अछूत–वि० [सं० अ=नहीं + छुप्त] १. जो छुआ न गया हो। अस्पृश्य। २ जो काम में न लाया गया हो। नया। ताजा। ३ जिसे अपवित्र मानकर लोग न छुएँ। अस्पृश्य। (आधुनिक)
अछूता–वि० [सं० अ=नहीं + छुप्त=छुआ हुआ] [स्त्री० अछूती] १ जो छुआ न गया हो। अस्पृष्ट। २. जो काम में न लाया गया हो। नया। कोरा। ताजा।
अछेद*–वि० [सं० अछेद्य] जिसका छेदन न हो सके। अभेद्य। अखंड्य।
संज्ञा पु० अभेद। अभिन्नता।
अछेद्य–वि० [सं०] १ जिसका छेदन न

हो सके। अभेद्य। २. अविनाशी।
अछेव*–वि० [सं० अच्छिद्र] छिद्र या दूषण-रहित। निर्दोष। बेदाग़।
अछेह*–वि० [सं० अछेद्य] १. निरंतर। लगातार। २. बहुत अधिक। ज्यादा।
अछोप*–वि० [सं० अ+छुप] १. आँच्छादन-रहित। नंगा। २. तुच्छ। दीन।
अछोभ–वि० दे० "अक्षोभ"।
अछोह–संज्ञा पुं० [सं० अक्षोभ] १. क्षोभ का अभाव। शांति। स्थिरता। २. दया-शून्यता। निर्दयता।
अछोही–वि० दे० "अछोह"।
अजगण–संज्ञा पु० [सं०] छप्पय का एक भेद।
अज–वि० [सं०] जिसका जन्म न हो। अजन्मा। स्वयंभू।
संज्ञा पु० १. ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. शिव। ४. कामदेव। ५. सूर्यवंशीय एक राजा जो दशरथ के पिता थे। ६. बकरा। ७. भेड़ा। ८. माया। शक्ति।
*क्रि० वि० [सं० अद्य] अब। अभी तक। (यह शब्द "हूँ" के साथ आता है।)
अजगंधा–संज्ञा स्त्री० [सं०] अजमोदा।
अजगर–संज्ञा पु० [सं०] बहुत मोटी जाति का साँप जो अपने शरीर के भारीपन के लिए प्रसिद्ध है।
अजगरी–संज्ञा स्त्री० [सं० अजगरीय] अजगर की-सी बिना परिश्रम की जीविका।
वि० १. अजगर का-सा। २. बिना परिश्रम का।
अजगव–संज्ञा पु० [सं०] शिवजी का धनुष। पिनाक।
अजगुत–संज्ञा पु० [सं० अयुक्त, पु० हिं० अजुगुति] १. युक्ति-विरुद्ध बात। अचंभे की बात। असाधारण बात। २ अनुचित बात। असंगत बात।
वि० आश्चर्यजनक। असगत।
अजग्रैब*–संज्ञा पुं० [फ़ा० अज+अ० गैब] अलक्षित स्थान। अदृष्ट स्थान। परोक्ष।
अजड़–वि० [सं०] जो जड़ न हो। चेतन।
संज्ञा पुं० चेतन पदार्थ।
अजदहा–संज्ञा पुं० दे० "अजगर"।
अजन–वि० [सं०] जन्म के बंधन से मुक्त। अनादि। स्वयंभू।
वि० [सं०] निर्जन। सुनसान।
अजनबी–वि० [अ०] १. अज्ञात। अपरिचित। २. नया आया हुआ। परदेसी। ३. अनजान। नावाक़िफ़।
अजन्म–वि० दे० "अजन्मा"।
अजन्मा–वि० [सं०] जो जन्म के बंधन में न आवे। अनादि। नित्य।
अजपा–वि० [सं०] १. जिसका उच्चारण न किया जाय। २. जो न जपे या भजे।
संज्ञा पुं० उच्चारण न किया जानेवाला तांत्रिकों का एक मंत्र।
अजपाल–संज्ञा पु० [सं०] गड़ेरिया।
अजब–वि० [अ०] विलक्षण। अद्भुत। विचित्र। अनोखा।
अजमत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. प्रताप। महत्त्व। २. चमत्कार।
अजमाना–क्रि० स० दे० "आजमाना"।
अजमोद–संज्ञा पुं० [सं० अजमोदा] अजवायन की तरह का एक पेड़।
अजय–संज्ञा पु० [सं०] १. पराजय। हार। २. छप्पय छंद का एक भेद।
वि० जो जीता न जा सके। अजेय।
अजया–संज्ञा स्त्री० [सं०] विजया। भाँग।
*संज्ञा स्त्री० [सं० अजा] बकरी।
अजय्य–वि० [सं०] जो जीता न जा सके। अजेय।
अजर–वि० [सं०] १. जरारहित। जो बूढ़ा न हो। २. जो सदा एकरस रहे।
वि० [सं० अ=नहीं+जृ=पचना] जो न पचे। जो न हज़्म हो।
अजरायल*–वि० [सं० अजर] जो जीर्ण न हो। पक्का। चिरस्थायी।
अजराल–वि० [सं० अ+जरा] बलवान्।
अजवायन–संज्ञा स्त्री० [सं० यवानिका] एक पौधा जिसके सुगंधित बीज मसाले और दवा के काम में आते हैं। यवानी।

अजस*–संज्ञा पुं० [सं० अयश] अपयश। अपकीर्त्ति। बदनामी।

अजसी–वि० [सं० अयशिन्] अपयशी। बदनाम। निंद्य।

अजस्र–क्रि० वि० [सं०] सदा। हमेशा।

अजहत्स्वार्था–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक लक्षणा जिसमें लक्षक शब्द अपने वाच्यार्थ को न छोड़कर कुछ भिन्न या अतिरिक्त अर्थ प्रकट करे। उपादान लक्षणा।

अजहद–क्रि० वि० [फा०] हद से ज्यादा। बहुत अधिक।

अजा–वि० स्त्री० [सं०] जिसका जन्म न हुआ हो। जन्मरहित।

संज्ञा स्त्री० १ बकरी। २ सांख्यमतानुसार प्रकृति या माया। ३ शक्ति। दुर्गा।

अजाचक–संज्ञा पुं० दे० "अयाचक"।

अजाची–संज्ञा० पुं० दे० "अयाची"।

अजात–वि० [सं०] जो पैदा न हुआ हो। जन्मरहित। अजन्मा।

अजातशत्रु–वि० [सं०] जिसका कोई शत्रु न हो। शत्रुविहीन।

संज्ञा पुं० १ राजा युधिष्ठिर। २ शिव। ३ उपनिषद् में वर्णित काशी का एक ज्ञानी राजा। ४ राजगृह (मगध) के राजा बिंबसार का पुत्र जो गौतम बुद्ध का समकालीन था।

अजाती–वि० [सं० अ+जाति] जाति से निकाला हुआ। पंक्तिच्युत।

अजान–वि० [सं० अज्ञान] १ जो न जाने। अनजान। अबोध। नासमझ। २ अपरिचित। अज्ञात।

संज्ञा पुं० १ अज्ञानता। अनभिज्ञता। जानकारी का अभाव। ('में' के साथ) २ एक पेड़ जिसके नीचे जाने से लोग समझते हैं कि बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।

संज्ञा पुं० [अ० अज़ान] नमाज़ की पुकार जो मसजिदों में होती है। बाँग।

अजानपन–संज्ञा पुं० [सं० अज्ञान+हिं० पन] अनजानपन। नासमझी।

अजामिल–संज्ञा पुं० [सं०] पुराणों के अनुसार एक पापी ब्राह्मण जो मरते समय अपने पुत्र 'नारायण' का नाम पुकारने से तर गया था।

अजाय*–वि० [अ=नहीं+फा० जा] बेजा। अनुचित।

अजायब–संज्ञा पुं० [अ०] अजब का बहुवचन। विलक्षण पदार्थ या व्यापार।

अजायबखाना–संज्ञा पुं० [अ०] वह भवन जिसमें अनेक प्रकार के अद्भुत पदार्थ रखते हैं। अद्भुत-वस्तु-संग्रहालय। म्यूज़ियम।

अजायबघर–संज्ञा पुं० दे० "अजायबखाना"।

अजार*–संज्ञा पुं० दे० "आज़ार"।

अजारा–संज्ञा पुं० दे० "इजारा"।

अजिऔरा*†–संज्ञा पुं० [हिं० आजी+सं० पुर] आजी या दादी के पिता का घर।

अजित–वि० [सं०] जो जीता न गया हो।

संज्ञा पुं० १ विष्णु। २ शिव। ३ बुद्ध।

अजितेंद्रिय–वि० [सं०] जो इंद्रियों के वश में न हो। इंद्रियलोलुप। विषयासक्त।

अजिर–संज्ञा पुं० [सं०] १ आँगन। सहन। २ वायु। हवा। ३. शरीर। ४. इंद्रियों का विषय।

अजी–अव्य० [सं० अयि!] संबोधन शब्द। जी।

अज़ीज़–वि० [अ०] प्यारा। प्रिय।

संज्ञा पुं० संबंधी। सुहृद्।

अजीत–वि० दे० 'अजित'।

अजीब–वि० [अ०] विलक्षण। विचित्र। अनोखा। अनूठा।

अजीरन–संज्ञा पुं० दे० "अजीर्ण"।

अजीर्ण–संज्ञा पुं० [सं०] १ अपच। अध्यशन। बदहज़मी। अन्न न पचने का दोष। २ अत्यंत अधिकता। बहुतायत। जैसे बुद्धि का अजीर्ण। (व्यंग्य)

वि० जो पुराना न हो। नया।

अजीव–संज्ञा पुं० [सं०] अचेतन। जीवतत्त्व से भिन्न जड़ पदार्थ।

वि० बिना प्राण का। मृत।
अजुगुत–संज्ञा पुं० दे० "अजगुत"।
अजू*–अव्य० दे० "अजौं"।
अजूजा*–संज्ञा पुं० [देश०] बिज्जू की तरह का एक जानवर जो मुर्दा खाता है।
अजूबा–वि० [अ०] अद्भुत। अनोखा।
अजूह*–संज्ञा पुं० [सं० युद्ध] युद्ध। लड़ाई।
अजेय–वि० [सं०] जिसे कोई जीत न सके।
अजोग–वि० दे० "अयोग्य"।
अजोता–संज्ञा पुं० [सं० अ० + हिं० जोतना] चैत्र की पूर्णिमा। (इस दिन बैल नहीं नाधे जाते।)
अजौं*–क्रि० वि० [सं० अद्य] अब भी। अब तक।
अज्ञ–संज्ञा पुं० [सं०] अज्ञानी। जड़। मूर्ख। नासमझ।
अज्ञता–संज्ञा स्त्री० [सं०] मूर्खता। जड़ता। नादानी। नासमझी।
अज्ञा*–संज्ञा स्त्री० दे० "आज्ञा"।
अज्ञात–वि० [सं०] १. बिना जाना हुआ। अविदित। अप्रकट। अपरिचित। २. जिसे ज्ञात न हो। जैसे—अज्ञातयौवना।
*क्रि० वि० बिना जाने। अनजान में।
अज्ञातनामा–वि० [सं०] १. जिसका नाम विदित न हो। २. अविख्यात। तुच्छ।
अज्ञातवास–संज्ञा पुं० [सं०] ऐसे स्थान का निवास जहाँ कोई पता न पा सके। छिपकर रहना।
अज्ञातयौवना–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह मुग्धा नायिका जिसे अपने यौवन के आ मन का ज्ञान न हो।
अज्ञान–संज्ञा पुं० [सं०] १. बोध का अभाव। जड़ता। मूर्खता। २. जीवात्मा को गुण और गुण के कार्यों से पृथक् न समझने का अविवेक। ३. न्याय में एक निग्रह स्थान।
वि० मूर्ख। जड़। नासमझ।
अज्ञानता–संज्ञा स्त्री० [सं०] जड़ता। मूर्खता। अविद्या। नासमझी।
अज्ञानी–वि० [सं०] मूर्ख। नासमझ।
अज्ञेय–वि० [सं०] जो समझ में न आ सके। ज्ञानातीत। बोधागम्य।
अज्यों*–क्रि० वि० दे० "अजौं"।
अझर*–वि० [सं० अ = नहीं + झर] जो न झरे। जो न गिरे। जो न बरसे।
अटंबर–संज्ञा पुं० [सं० अट्ट + फ़ा० अंबार] अटाला। ढेर। राशि।
अट–संज्ञा स्त्री० [हिं० अटक] शर्त। क़ैद। प्रतिबंध।
अटक–संज्ञा स्त्री० [हिं० अटक = बंधन] [क्रि० अटकना। वि० अटकाऊ] १. रोक। रुकावट। अड़चन। विघ्न। बाधा। २. संकोच। हिचक। ३. सिंध नदी। ४. अकाज। हर्ज।
अटकन*–संज्ञा पुं० दे० "अटक"।
अटकन-बटकन–संज्ञा पुं० [देश०] छोटे लड़कों का एक खेल।
अटकना–क्रि० अ० [सं० अ = नहीं + टिक = चलना] १. रुकना। ठहरना। अड़ना। २. फँसना। लगा रहना। ३. प्रेम में फँसना। प्रीति करना। ४. विवाद करना। झगड़ना।
अटकर*–संज्ञा स्त्री० दे० "अटकल"।
अटकरना†–क्रि० स० [हिं० अटकर] अंदाज करना। अटकल लगाना।
अटकल–संज्ञा स्त्री० [सं० अट = घूमना + कल = गिनना] १. अनुमान। कल्पना। २. अंदाज़। कूत।
अटकलना–क्रि० स० [हिं० अटकल] अटकल लगाना। अनुमान करना।
अटकलपच्चू–संज्ञा पुं० [हिं० अटकल + पचाना (सिर)] मोटा अंदाज। कल्पना। स्थूल अनुमान।
वि० खयाली। ऊटपटाँग।
क्रि० वि० अंदाज से। अनुमान से।
अटका–संज्ञा पुं० [सं० अट् = खाना] जगन्नाथजी को चढ़ाया हुआ भात और धन।
अटकाना–क्रि० स० [हिं० अटकाना] १. रोकना। ठहराना। अड़ाना। २. फँसाना।

उलझाना। ३ पूरा करने में विलम्ब करना।

अटकाव–संज्ञा पु० [हिं० अटकाना] १ रोक। रुकावट। प्रतिबंध। २ बाधा। विघ्न।

अटखट*–वि० [अनु०] अट्टसट्ट। अंडबंड।

अटन–संज्ञा पु० [सं०] घूमना। फिरना।

अटना–क्रि० अ० [सं० अट्] १ घूमना। फिरना। २ यात्रा करना। सफर करना।
क्रि० अ० [हिं० ओट] आड करना। ओट करना। छेंकना।

अटपट–वि० [सं० अट् = चलना + पत् = गिरना] [स्त्री० अटपटी] १ विकट। कठिन। मुश्किल। २ दुर्गम। दुस्तर। ३ गूढ़। जटिल। ४ ऊटपटाँग। बेठिकाने।

अटपटाना–क्रि० अ० [हिं० अटपट] १ अटकना। लड़खड़ाना। २ गड़बड़ाना। चूकना। ३ हिचकना। संकोच करना।

अटपटी*–संज्ञा स्त्री० [हिं० अटपट] नटखटी। शरारत। अनरीति।

अटब्बर–संज्ञा पु० [सं० आडंबर] आडंबर। दर्प।
संज्ञा पु० [फ० टब्बर = परिवार] खानदान। परिवार। कुटुंब। कुनबा।

अटरनी–संज्ञा पु० [अं० एटारनी] एक प्रकार का मुख्तार जो कलकत्ता और बंबई हाईकोर्टों में मुअक्किलों के मुकद्दमे लेकर पैरवी के लिए बैरिस्टर नियुक्त करता है।

अटल–वि० [सं० अ० = नहीं + हिं० टलना] १ जो न टले। स्थिर। २ जो सदा बना रहे। नित्य। चिरस्थायी। ३ जिसका होना निश्चित हो। अवश्यंभावी। ४ ध्रुव। पक्का।

अटवाटी खटवाटी–संज्ञा स्त्री० [हिं० खाट = पाटी] खाट खटोला। साज समाज।
मुहा०—अटवाटी खटवाटी लेकर पड़ना = काम काज छोड़ रूठकर अलग पड़ रहना।

अटवी–संज्ञा स्त्री० [सं०] वन। जंगल।

अटहर–संज्ञा स्त्री० [सं० अट्ट = अटाला] १ अटाला। ढेर। २ फेंटा। पगड़ी।
संज्ञा पु० [हिं० अटक] दिक्कत। कठिनाई।

अटा–संज्ञा स्त्री० [सं० अट्ट = अटारी] घर के ऊपर की कोठरी। अटारी।
संज्ञा पु० [सं० अट्ट = अतिशय] अटाला। ढेर। राशि। समूह।

अटाउ*–संज्ञा पु० [सं० अट्ट = अतिक्रमण] १ बिगाड़। बुराई। २ नटखटी। शरारत।

अटाटूट–वि० [सं० अट्ट = ढेर + हिं० टूटना] नितांत। बिल्कुल।

अटारी–संज्ञा स्त्री० [सं० अट्टाली] घर के ऊपर की कोठरी या छत। चौबारा। कोठा।

अटाल–संज्ञा पु० [सं० अट्टाल] बुर्ज। धरहरा।

अटाला–संज्ञा पु० [सं० अट्टाल] १. ढेर। राशि। २ सामान। असबाब। ३ कसाइयों की बस्ती।

अटूट–वि० [सं० अ = नहीं + हिं० = टूटना] १ न टूटने योग्य। दृढ़। पुष्ट। मजबूत। २ जिसका पतन न हो। अजेय। ३ अखंड। लगातार। ४ बहुत अधिक।

अटेरन–संज्ञा पु० [सं० अट = घूमना] [क्रि० अटेरना] १ सूत की आँटी बनाने का लकड़ी का एक यंत्र। ओयना। २ घोड़े को कावा या चक्कर देने की एक रीति।

अटेरना–क्रि० स० [हिं० अटेरन] १ अटेरन में सूत की आँटी बनाना। २ मात्रा से अधिक मद्य या नशा पीना।

अटोक*–वि० [सं० अ + हिं० टोकना] बिना रोकटोक का।

अट्टहास–संज्ञा पु० दे० "अट्टहास"।

अट्टसट्ट–संज्ञा पु० [अनु०] अनाप शनाप। व्यर्थ की बात। प्रलाप।

अट्टहास–संज्ञा पु० [सं०] ज़ोर की हँसी। ठठाकर हँसना।

अट्टालिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] अटारी। कोठा।

अट्टी–संज्ञा स्त्री० [सं० अट् = घूमना] अटेरन पर लपटा हुआ सूत या ऊन। लच्छा।

अट्ठा–संज्ञा पु० [सं० अष्ट] ताश का वह पत्ता जिस पर किसी रंग की आठ बूटियाँ हों।

अट्ठाइस–वि० दे० 'अट्ठाईस'।

अट्ठाईस–वि० [सं० अष्टाविंशति] बीस और आठ। २८।

अट्ठानबे–वि० [सं० अष्टानवति] एक संख्या। नब्बे और आठ। ९८।

अट्ठावन–वि० [सं० अष्टपंचाशत] पचास और आठ। ५८।

अट्ठासी–वि० दे० "अठासी"।

अठंग*–संज्ञा पुं० [सं० अष्टांग] अष्टांगयोग।

अठ*–वि० दे० 'आठ'। (समास में)

अठइसी–संज्ञा स्त्री० [हिं० अट्ठाइस] २८ गाही अर्थात् १४० फलों की संख्या जिसे फलों के लेन-देन में सैंकड़ा मानते हैं।

अठई–संज्ञा स्त्री० [सं० अष्टमी] अष्टमी तिथि।

अठकौशल–संज्ञा पुं० [हिं० आठ+अं० कौंसिल] १. गोष्ठी। पंचायत। २. सलाह। मंत्रणा।

अठखेली–संज्ञा स्त्री० [सं० अष्टक्रीड़ा] १. विनोद। क्रीड़ा। २. चपलता। चुलबुलापन। ३. मतवाली या मस्तानी चाल।

अठत्तर–वि० दे० "अठहत्तर"।

अठन्नी–संज्ञा स्त्री० [हिं० आठ + आना] आठ आने का चाँदी का सिक्का।

अठपहला–वि० [सं० अष्टपटल] आठ कोनेवाला। जिसमें आठ पार्श्व हों।

अठपाव*–संज्ञा पुं० [सं० अष्टवाद] उपद्रव। ऊधम। शरारत।

अठमासा–संज्ञा पुं० दे० "अठवाँसा"।

अठमासी–संज्ञा स्त्री० [हिं० आठ + माशा] आठ माशे का सोने का सिक्का। सावरिन। गिनी।

अठलाना*–क्रि० अ० [हिं० ऐंठ] १. ऐंठ दिखलाना। इतराना। ठसक दिखाना। २. चोचला करना। नखरा करना। ३. मदोन्मत्त होना। मस्ती दिखाना। ४. छेड़ने के लिए जान बूझकर अनजान बनना।

अठवना*–क्रि० अ० [सं० स्थान] जमना। ठनना।

अठवाँस–वि० [सं० अष्टपार्श्व] अठपहला।

अठवाँसा–वि० [सं० अष्टमास] वह गर्भ जो आठ ही महीने में उत्पन्न हो जाय।
संज्ञा पुं० १. सीमंत संस्कार। २. वह खेत जो असाढ़ से माघ तक समय समय पर जोता जाय और जिसमें ईख बोई जाय।

अठवारा–संज्ञा पुं० [हिं० आठ + सं० वार] आठ दिन का समय। सप्ताह। हफ्ता।

अठहत्तर–वि० [सं० अष्टसप्तति, प्रा० अट्ठहत्तरि] सत्तर और आठ। ७८।

अठाई*†–वि० [सं० अस्थायी] उत्पाती। नटखट। शरारती। उपद्रवी।

अठान*–संज्ञा पुं० [सं० अ = नहीं + हिं० ठानना] १. न ठानने योग्य कार्य्य। अयोग्य या दुष्कर कर्म। २. वैर। शत्रुता। झगड़ा।

अठाना*†–क्रि० स० [सं० अट्ट = वध करना] सताना। पीड़ित करना।
क्रि० स० [हिं० ठानना] मचाना। ठानना।

अठारह–वि० [सं० अष्टादश] दस और आठ। १८।
संज्ञा पुं० १. काव्य में पुराणसूचक संकेत या शब्द। २. चौसर का एक दाँव।

अठासी–वि० [सं० अष्टाशीति] अस्सी और आठ। ८८।

अठिलाना*–क्रि० अ० दे० "अठलाना"।

अठेल*–वि० [सं० अ = नहीं + हिं० ठेलना] बलवान्। मजबूत। जोरावर।

अठौट*–संज्ञा पुं० [हिं० ठाट] ठाट। आडंबर। पाखंड।

अठोतरी–संज्ञा स्त्री० [सं० अष्टोत्तरी] एक सौ आठ दानों की जपमाला।

अड़ंगा–संज्ञा पुं० [हिं० अड़ाना + टाँग] १. टाँग अड़ाना। रुकावट। २. बाधा। विघ्न।

अडंड*–वि० दे० "अदण्ड"।

अड़–संज्ञा पुं० [सं० हठ] हठ। ज़िद।

अड़काना†–क्रि० स० दे० "अड़ाना"।

अडग–वि० [हिं० डगना] न डिगनेवाला। अटल। अचल।

अड़गड़ा–संज्ञा पुं० [अनु०] १. बैलगाड़ियों के ठहरने का स्थान। २. बैलों या घोड़ों की बिक्री का स्थान।

अड़गोड़ा–संज्ञा पुं० [हिं० अड़+गोड़] लकड़ी का टुकड़ा जिसे नटखट चौपायों के गले में बाँधते हैं।

अड़चन–संज्ञा स्त्री० दे० "अड़चल"।

अड़चल–संज्ञा स्त्री० [हिं० अड़ना + चलना] अड़न। आपत्ति। कठिनाई। दिक्कत।
अड़तल–संज्ञा पु० [हिं० आड़ + सं० तल] १. ओट। ओझल। आड़। २. शरण। ३. बहाना। हीला।
अड़तालीस–वि० [सं० अष्टचत्वारिंशत] चालीस और आठ। ४८।
अड़तीस–वि० [सं० अष्टत्रिंशत] तीस और आठ। ३८।
अड़दार–वि० [हिं० अड़ना + फा० दार (प्रत्य०)] १ अड़ियल। रुकनेवाला। २ ऐंठदार। ३. मस्त। मनवाला।
अड़ना–क्रि० अ० [सं० अल् = वारण करना] १. रुकना। ठहरना। २ हठ करना।
अड़बंग*†–वि० पु० [हिं० अड़ना + सं० वक्र] १. टेढ़ा मेढ़ा। अड़बड़। अटपट। २ विकट। कठिन। दुर्गम। ३. विलक्षण।
अड़र*–वि० [सं० अ + हिं० डर] निडर। निर्भय। वेडर। बेखौफ।
अड़सठ–वि० [सं० अष्टषष्ठि] साठ और आठ की संख्या। ६८।
अड़हुल–संज्ञा पु० [सं० ओण् + फुल्ल] देवी-फूल। जपा या जवापुष्प।
अड़ाड़–संज्ञा पु० [हिं० आड़] १. चौपायों के रहने का हाता। खरिक। २ दे० "अडार"।
अड़ान–संज्ञा स्त्री [हिं० अड़ना] १. रुकने की जगह। २ पड़ाव।
अड़ाना–क्रि० स० [हिं० अड़ना] १. टिकाना। रोकाना। ठहराना। अटकाना। २. टेकना। डाट लगाना। ३ कोई वस्तु बीच में देकर गति रोकना। ४. ठूँसना। भरना। ५ गिराना। ढरकाना।
संज्ञा पु० १ एक राग। २ वह लकड़ी जो गिरती हुई छत या दीवार आदि को गिरने से बचाने के लिये लगाई जाती है। डाट। चाँड़। थूनी।
अड़ायता–वि० [हिं० आड़] जो आड़ करे। ओट करनेवाला।
अड़ार–संज्ञा पु० [सं० अट्टाल = बुर्ज] १. समूह। राशि। ढेर। २ ईंधन का ढेर जो बेचने के लिये रखा हो। ३ लकड़ी या ईंधन की दुकान।
*वि० [सं० अराल] टेढ़ा। तिरछा। आड़ा।
अड़ारना†–क्रि० स० [हिं० डालना] डालना। देना।
अड़ियल–वि० [हिं० अड़ना] १. अटकर चलनेवाला। चलते चलते रुक जानेवाला। २. सुस्त। मट्ठर। ३ हठी। जिद्दी।
अड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० अड़ना] १ जिद। हठ। आग्रह। २. रोक। ३ जरूरत का वक्त या मौका।
अड़ूलना*–क्रि० स० [सं० उत् = ऊँचा + इल् = फेंकना] जल आदि डालना। उड़ेलना।
अड़ूसा–संज्ञा पु० [सं० अटरूष] एक पौधा जिसके फूल और पत्ते कास, श्वास आदि की औषध हैं।
अडोल–वि० [सं० अ = नहीं हिं० डोलना] १ जो हिले नहीं। अटल। स्थिर। २. स्तब्ध। ठकमारा।
अडोस पडोस–संज्ञा पु० [हिं० पडोस] आसपास। करीब।
अडोसी पडोसी–संज्ञा पु० [हिं० पडोस] आसपास का रहनेवाला। हमसाया।
अड्डा–संज्ञा पु० [सं० अट्टा = ऊँची जगह] १. टिकने की जगह। ठहरने का स्थान। २. मिलने या इकट्ठा होने की जगह। ३ केंद्र स्थान। प्रधान स्थान। ४ चिड़ियों के बैठने के लिये लकड़ी या लोहे की छड़। ५ कबूतरों की छतरी। ६ करघा।
अढ़तिया–संज्ञा पु० [हिं० आढ़त] १ वह दुकानदार जो ग्राहकों या महाजनों को माल खरीदकर भेजता और उनका माल मँगाकर बेचता है। आढ़त करनेवाला। २ दलाल।
अढ़वना*–क्रि० स० [सं० आज्ञापन] आज्ञा देना। काम में लगाना।
अढ़वायक*–संज्ञा पु० [सं० आज्ञापक] दूसरों से काम लेनेवाला।
अढ़िया–संज्ञा स्त्री० [देश०] काठ, पत्थर या लोहे का छोटा बर्तन।

अड़ुक–संज्ञा पुं० [हिं० अड़ुकना] ठोकर। चोट।

अड़ुकना–क्रि० अ० [सं० आ = अच्छी तरह + टक = रोक] १. ठोकर खाना। २. सहारा लेना।

अढ़ैया–संज्ञा पुं० [हिं० अढ़ाई] १. २½ सेर की तौल या बाट। २. ढाई गुने का पहाड़ा।

अणिमा–संज्ञा स्त्री० [सं०] अष्ट सिद्धियों में पहिली सिद्धि जिससे योगी लोग किसी को दिखाई नहीं पड़ते।

अणु–संज्ञा पुं० [सं०] १. द्वचणुक से सूक्ष्म और परमाणु से बड़ा कण (६० परमाणुओं का)। २. छोटा टुकड़ा या कण। ३. रजकण। ४. अत्यंत सूक्ष्म मात्रा। वि० १. अति सूक्ष्म। अत्यंत छोटा। २. जो दिखाई न दे।

अणुवाद–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह दर्शन या सिद्धान्त जिसमें जीव या आत्मा अणु माना गया हो (रामानुज का)। २. वैशेषिक दर्शन।

अणुवादी–संज्ञा पुं० [सं०] १. नैयायिक। वैशेषिक शास्त्र का माननेवाला। २. रामानुज का अनुयायी।

अणुवीक्षण–संज्ञा पुं० [सं०] १. सूक्ष्मदर्शक यंत्र। खुर्दबीन। २. बाल की खाल निकालना। छिद्रान्वेषण।

अतंक*–संज्ञा पुं० दे० "आतंक"।

अतंद्रिक–वि० [सं०] १. आलस्यरहित। चुस्त। चंचल। २. व्याकुल। बेचैन।

अतः–क्रि० वि० [सं०] इस वजह से। इसलिये। इस वास्ते।

अतएव–क्रि० वि० [सं०] इसलिये। इस हेतु से। इस वजह से।

अतद्गुण–संज्ञा पु० [सं०] एक अलंकार जिसमें एक वस्तु का किसी ऐसी दूसरी वस्तु के गुणों को न ग्रहण करना दिखलाया जाय जिसके कि वह अत्यंत निकट हो।

अतनु–वि० [सं०] १. शरीर-रहित। बिना देह का। २. मोटा। स्थूल। संज्ञा पुं० अनंग। कामदेव।

अतर–संज्ञा पुं० [अ० इत्र] फूलों की सुगंधि का सार। निर्यास। पुष्पसार।

अतरदान–संज्ञा पुं० [फ़ा० इत्रदान] इत्र रखने का चाँदी का बर्तन।

अतरसों–क्रि० वि० [सं० इतर + श्वः] १. परसों के आगे का दिन। आनेवाला तीसरा दिन। २. परसों से पहले का दिन। तीसरा व्यतीत दिन।

अतरिख*–संज्ञा पुं० दे० "अंतरिक्ष"।

अतर्कित–वि० [सं०] १. जिसका पहले से अनुमान न हो। २. आकस्मिक। ३. बे सोचा समझा। जो विचार में न आया हो।

अतर्क्य–वि० [सं०] जिस पर तर्क वितर्क न हो सके। अनिर्वचनीय। अचिंत्य।

अतल–संज्ञा पुं० [सं०] सात पातालों में दूसरा पाताल।

अतलस–संज्ञा स्त्री० [अ०] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

अतलस्पर्शी–वि० [सं०] अतल को छूनेवाला। अत्यंत गहरा। अथाह।

अतसी–संज्ञा स्त्री० [सं०] अलसी।

अत्तवार–संज्ञा पुं० दे० "रविवार"।

अता–संज्ञा स्त्री० [अ०] प्रदान।

अताई–वि० [अ०] १. दक्ष। कुशल। प्रवीण। २. धूर्त। चालाक। ३. जो किसी काम को बिना सीखे हुए करे।

अति–वि० [सं०] बहुत। अधिक। संज्ञा स्त्री० अधिकता। ज्यादती।

अतिकाय–वि० [सं०] स्थूल। मोटा।

अतिकाल–संज्ञा पुं० [सं०] १. विलंब। देर। २. कुसमय।

अतिकृच्छ्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. बहुत कष्ट। २. छः दिनों का एक व्रत।

अतिकृति–संज्ञा स्त्री० [सं०] पचीस वर्ण के वृत्तों की संज्ञा।

अतिक्रम–संज्ञा पु० [सं०] नियम या मर्य्यादा का उल्लंघन। विपरीत व्यवहार।

अतिक्रमण–संज्ञा पुं० [सं०] हद के बाहर

जाना। बढ़ जाना। उल्लंघन।

अतिक्रांत–वि० [सं०] १. हद के बाहर गया हुआ। २. बीता हुआ। व्यतीत।

अतिचार–संज्ञा पुं० [सं०] १ ग्रहों की शीघ्र चाल। एक राशि का भोगकाल समाप्त किए बिना किसी ग्रह का दूसरी राशि में चला जाना। २ विघात। व्यतिक्रम।

अतिजगती–संज्ञा स्त्री० [सं०] तेरह वर्ण के वृत्तों की संज्ञा।

अतिथि–संज्ञा पुं० [सं०] १ घर में आया हुआ अज्ञातपूर्व व्यक्ति। अभ्यागत। मेहमान। पाहुन। २ वह संन्यासी जो किसी स्थान पर एक रात से अधिक न ठहरे। व्रात्य। ३ अग्नि। ४ यज्ञ में सोमलता लानेवाला।

अतिथिपूजा–संज्ञा स्त्री० [सं०] अतिथि का आदर सत्कार। मेहमानदारी। पंचमहायज्ञों में से एक।

अतिथियज्ञ–संज्ञा पुं० [सं०] अतिथि का आदर सत्कार। अतिथिपूजा।

अतिदेश–संज्ञा पुं० [सं०] १ एक स्थान के धर्म का दूसरे स्थान पर आरोपण। २ वह नियम जो और विषयों में भी काम आवे।

अतिधृति–संज्ञा स्त्री० [सं०] उन्नीस वर्ण के वृत्तों की संज्ञा।

अतिपात–संज्ञा पुं० [सं०] १. अतिक्रम। अव्यवस्था। गड़बड़ी। २ बाधा। विघ्न।

अतिपातक–संज्ञा पुं० [सं०] पुरुष के लिये माता, बेटी और पतोहू के साथ और स्त्री के लिये पुत्र, पिता और दामाद के साथ गमन।

अतिबरवै–संज्ञा पुं० [सं० अति + हिं० बरवै] एक छंद।

अतिबल–वि० [सं०] प्रबल। प्रचंड।

अतिबला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक प्राचीन युद्ध-विद्या जिसके सीखने से श्रम और ज्वर आदि की बाधा का भय नहीं रहता था। २ कँगही या कंघी नाम का पौधा।

अतिमुक्त–वि० [सं०] १ जिसकी मुक्ति हो गई हो। २ विषयवासना-रहित।

अतिरंजन–संज्ञा पुं० [सं०] बढ़ा बढ़ाकर कहने की रीति। अत्युक्ति।

अतिरथी–संज्ञा पुं० [सं०] वह जो अकेले बहुतों के साथ लड़ सके।

अतिरिक्त–क्रि० वि० [सं०] सिवाय। अलावा। छोड़कर।

वि० १ शेष। बचा हुआ। २ अलग। जुदा। भिन्न।

अतिरिक्त पत्र–संज्ञा पुं० [सं०] अखबार के साथ बँटनेवाली सूचना या विज्ञापन। क्रोड़पत्र।

अतिरोग–संज्ञा पुं० [सं०] यक्ष्मा। क्षयी।

अतिवाद–संज्ञा पुं० [सं०] १ सच्ची बात। २ कड़ई बात। ३ डींग। शेखी।

अतिवादी–वि० [सं०] १ सत्यवक्ता। २ बकवादी। ३ जो डींग मारे।

अतिविषा–संज्ञा स्त्री० [सं०] अतीस।

अतिवृष्टि–संज्ञा स्त्री० [सं०] ६ ईतियों में से एक। अत्यंत वर्षा।

अतिव्याप्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] न्याय में किसी लक्षण या कथन के अंतर्गत लक्ष्य के अतिरिक्त अन्य वस्तु के आ जाने का दोष।

अतिशय–वि० [सं०] बहुत। ज्यादा।

संज्ञा पुं० प्राचीनों के अनुसार एक अलंकार जिसमें किसी वस्तु की उत्तरोत्तर संभावना या असंभावना दिखलाई जाय।

अतिशयोक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अलंकार जिसमें भेद में अभेद, असंबंध में संबंध आदि दिखाकर किसी वस्तु को बहुत बढ़ाकर वर्णन करते हैं।

अतिशयोपमा–संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० "अनन्वय"।

अतिसंध–संज्ञा पुं० [सं०] प्रतिज्ञा या आज्ञा का भंग करना।

अतिसंधान–संज्ञा पुं० [सं०] १ अतिक्रमण। २ विश्वासघात। धोखा।

अतिसामान्य–संज्ञा पुं० [सं०] वह बात जो इतने अधिक सामान्य रूप में कही

जाय कि पूरी पूरी सब पर न घटे। (न्याय)

अतिसार–संज्ञा पुं० [सं०] एक रोग जिसमें खाया हुआ पदार्थ अँतड़ियों में से पतले दस्तों के रूप में निकल जाता है।

अतिहसित–संज्ञा पुं० [सं०] हास के छः भेदों में से एक जिसमें हँसनेवाला ताली पीटे और उसकी आँखों से आँसू निकलें।

अतींद्रिय–वि० [सं०] जिसका अनुभव इंद्रियों द्वारा न हो। अगोचर। अव्यक्त।

अतीत–वि० [सं०] [क्रि० अतीतना] १. गत। व्यतीत। बीता हुआ। २ पृथक्। जुदा। अलग। ३. मृत। मरा हुआ। क्रि० वि० परे। बाहर। संज्ञा पुं० संन्यासी। यति। साधु।

अतीतना*–क्रि० अ० [सं० अतीत] बीतना। गुज़रना। क्रि० स० [सं०] १. बिताना। व्यतीत करना। २. छोड़ना। त्यागना।

अतीथ*–संज्ञा पुं० दे० "अतिथि"।

अतीव–वि० [सं०] बहुत। अत्यंत।

अतीस–संज्ञा पुं० [सं०] एक पहाड़ी पौधा जिसकी जड़ दवाओं में काम आती है। विषा। अतिविषा।

अतीसार–संज्ञा पुं० दे० "अतिसार"।

अतुराई*–संज्ञा स्त्री० [सं० आतुर] १. आतुरता। जल्दी। २. चंचलता। चपलता।

अतुराना*–क्रि० अ० [सं० आतुर] आतुर होना। घबराना। जल्दी मचाना।

अतुल–वि० [सं०] १. जिसकी तोल या अंदाज न हो सके। २. अमित। असीम। बहुत अधिक। ३. अनुपम। बेजोड़। संज्ञा पुं० १. केशव के अनुसार अनुकूल नायक। २. तिल का पेड़।

अतुलनीय–वि० [सं०] १. अपरिमित। अपार। बहुत अधिक। २. अनुपम। अद्वितीय।

अतुलित–वि० [सं०] १. बिना तोला हुआ। २. अपरिमित। अपार। बहुत अधिक। ३. असंख्य। ४. अनुपम।

अतुल्य–वि० [सं०] १. असमान। असदृश। २. अनुपम। बेजोड़।

अतूथ*–वि० [सं० अति+उत्थ] अपूर्व।

अतूल*–वि० दे० "अतुल"।

अतृप्त–वि० [सं०] [संज्ञा अतृप्ति] १. जो तृप्त या संतुष्ट न हो। २. भूखा।

अतृप्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] मन न भरने की दशा।

अतोर*–वि० [सं० अ+हिं० तोड़] जो न टूटे। अभंग। दृढ़।

अतोल–वि० [सं० अ+हिं० तोल] १ बिना अंदाज़ किया हुआ। २. बहुत अधिक। ३. अनुपम। बेजोड़।

अतौल–वि० दे० "अतोल"।

अत्त*†–संज्ञा स्त्री० [सं० अति] अति। अधिकता। ज्यादती।

अत्तार–संज्ञा पुं० [अ०] १. इत्र या तेल बेचनेवाला। गंधी। २. यूनानी दवा बनाने और बेचनेवाला।

अत्ति*†–संज्ञा पुं० दे० "अत्त"।

अत्यंत–वि० [सं०] बहुत अधिक। हद से ज्यादा। अतिशय।

अत्यंताभाव–संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी वस्तु का बिलकुल न होना। सत्ता की नितान्त शून्यता। २. पाँच प्रकार के अभावों में से एक। तीनों कालों में संभव न होना,—जैसे, आकाशकुसुम, वंध्या-पुत्र। (वैशेषिक) ३. बिलकुल कमी।

अत्यंतिक–वि० [सं०] १. समीपी। नज़दीकी। २. बहुत घूमनेवाला।

अत्यम्ल–संज्ञा पुं० [सं०] इमली। वि० बहुत खट्टा।

अत्यय–संज्ञा पुं० [सं०] १. मृत्यु। नाश। २. हद से बाहर जाना। ३. दंड। सजा। ४. कष्ट। ५. दोष।

अत्यष्टि–संज्ञा स्त्री० [सं०]-१७ वर्ण के वृत्तों की संज्ञा।

अत्याचार–संज्ञा पुं० [सं०] १. आचार का अतिक्रमण। अन्याय। ज्यादती।

जुल्म। २ दुराचार। पाप। ३ पाखड। ढोग। आडबर।

अत्याचारी-वि० [स०] १ अन्यायी। निठुर। जालिम। २ पाखडी। ढोगी।

अत्याज्य-वि० [स०] १ न छोड़ने योग्य। २ जो छोडा न जा सके।

अत्युक्त-वि० [स०] जो बहुत बढ़ा चढाकर कहा गया हो।

अत्युक्ति-सज्ञा स्त्री० [स०] १ बढा चढाकर वर्णन करने की शैली। मुबालिगा। बढावा। २ एक अलकार जिसमे शूरता, उदारता आदि गुणो का अद्भुत और अतथ्य वर्णन होता है।

अत्र-क्रि० वि० [स०] यहाँ। इस जगह।
*सज्ञा पु० 'अस्त्र' का अपभ्रंश।

अत्रक-वि० [स०] १ यहाँ का। २ इस लोक का। ऐहिक।

अत्रभवान्-सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० अत्रभवती] माननीय। पूज्य। श्रेष्ठ।

अत्रि-सज्ञा पु० [स०] १ सप्तर्षियो में से एक जो ब्रह्मा के पुत्र माने जाते हैं। २ एक तारा जो सप्तर्षि-मडल में है।

अत्रैगुण्य-सज्ञा पु० [स०] सत, रज, तम, इन तीनो गुणो का अभाव।

अथ-अव्य० [स०] १ एक शब्द जिससे प्राचीन लोग ग्रथ या लेख का आरभ करते थे। २ अब। ३ अनतर।

अथऊ-सज्ञा पु० [हि० अथवना] वह भोजन जो जैन लोग सूर्यास्त के पहले करते हैं।

अथक-वि० [स० अ=नही+हि० थकना] जो न थके। अश्रात।

अथच-अव्य० [स०] और। और भी।

अथना*-क्रि० अ० [स० अस्त] अस्त होना। डूबना।

अथमना-सज्ञा पु० [स० अस्तमन] पश्चिम दिशा। 'उगमना' का उलटा।

अथरा-सज्ञा पु० [स० स्थाल] [स्त्री० अथरी] मिट्टी का खुले मुँह का चौडा बर्तन। नाँद।

अथर्व-सज्ञा पु० [स० अथर्वन्] चौथा वेद जिसके मत्र द्रष्टा या ऋषि भृगु और अगिरा गोत्रवाले थे।

अथर्वन्-सज्ञा पु० दे० "अथर्व"।

अथर्वनी-सज्ञा पु० [स० अथर्वणि] कर्मकाडी। यज्ञ करानेवाला। पुरोहित।

अथवना*-क्रि० अ० [स० अस्तमन] १ (सूर्य्य, चद्र आदि का) अस्त होना। डूबना। २ लुप्त होना। गायब होना। चला जाना।

अथवा-अव्य० [स०] एक वियोजक अव्यय जिसका प्रयोग वहाँ होता है जहाँ कई शब्दो या पदो में से किसी एक का ग्रहण अभीष्ट हो। या। वा। किंवा।

अथाई-सज्ञा स्त्री० [स० स्थायि] १ बैठने की जगह। बैठक। चौबारा। २ वह स्थान जहाँ लोग इकट्ठे होकर पचायत करते हैं। ३ घर के सामने का चबूतरा। ४ मडली। सभा। जमावडा।

अथान, अथाना-सज्ञा पु० [स० स्थाणु] अचार।

अथाना*-क्रि० अ० दे० "अथवना"।
क्रि० स० [स० स्थान] १ थाह लेना। गहराई नापना। २ ढूँढना।

अथाह-वि० [स० अ+हिं० थाह] १ जिसकी थाह न हो। बहुत गहरा। २ जिसका अदाज न हो सके। अपरिमित। बहुत अधिक। ३ गभीर। गूढ।
सज्ञा पु० १ गहराई। २ जलाशय। ३ समुद्र।

अथिर*-वि० दे० 'अस्थिर'।

अथोर*-वि० [स० अ=नही+हिं० थोर] अधिक। ज्यादा। बहुत।

अदक*-सज्ञा पु० [स० आतक] डर। भय।

अदंड-वि० [स०] १ जो दड के योग्य न हो। सजा से बरी। २ जिस पर कर या महसूल न लगे। ३ निर्भय। स्वेच्छाचारी। ४ उद्दड। बली।
सज्ञा पु० वह भूमि जिसकी मालगुजारी

न लगे। मुआफ़ी।

अदंडनीय–वि० [सं०] जो दंड पाने के योग्य न हो। अदंडच।

अदंडमान–वि० [सं०] दंड के अयोग्य। दंड से मुक्त।

अदंड्य–वि० [सं०] जिसे दंड न दिया जा सके। सजा से बरी।

अदंत–वि० [सं०] १. जिसे दाँत न हो। २. बहुत थोड़ी अवस्था का। दुधमुहाँ।

अदंभ–वि० [सं०] १. दंभरहित। पाखंडविहीन। २. सच्चा। निश्छल। निष्कपट। ३. प्राकृतिक। स्वाभाविक। ४. स्वच्छ। शुद्ध।

संज्ञा पुं० शिव।

अदग–वि० [सं० अदग्ध] १. बेदाग। शुद्ध। २. निरपराध। निर्दोष। ३. अछूता। अस्पृष्ट। साफ़।

अदत्त–वि० [सं०] न दिया हुआ।

संज्ञा पुं० वह वस्तु जिसके दिए जाने पर भी लेनेवाले को उसे रखने का अधिकार न हो। (स्मृति)

अदत्ता–संज्ञा स्त्री० [सं०] अविवाहिता कन्या।

अदद–संज्ञास्त्री० [अ०] १. संख्या। गिनती। २. संख्या का चिह्न या संकेत।

अदन–संज्ञा पुं० [अ०] पैगंबरी मतों के अनुसार स्वर्ग का वह उपवन जहाँ ईश्वर ने आदम को बनाकर रखा था।

अदना–वि० [अ०] १. तुच्छ। क्षुद्र। २. सामान्य। मामूली।

अदब–संज्ञा पुं० [अ०] शिष्टाचार। क़ायदा। बड़ों का आदर सम्मान।

अदबदाकर–क्रि० वि० [सं० अधि + वद] टेक बाँधकर। अवश्य। ज़रूर।

अदभ्र–वि० [सं०] १. बहुत। अधिक। ज़्यादा। २. अपार। अनंत।

अदमपैरवी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] किसी मुकद्दमे में ज़रूरी कार्रवाई न करना।

अदम्य–वि० [सं०] जिसका दमन न हो सके। प्रचंड। प्रबल।

अदय–वि० [सं०] १. दयारहित। (व्यापार) २. निर्दय। निष्ठुर। (व्यक्ति)

अदरक–संज्ञा पुं० [सं० आर्द्रक फ़ा० अदरक] एक पौधा जिसकी तीक्ष्ण और चरपरी जड़ या गाँठ औषध और मसाले के काम में आती है।

अदरकी–संज्ञा [सं० आर्द्रक] सोंठ और गुड़ मिलाकर बनाई हुई टिकिया।

अदरा–संज्ञा पुं० दे० "आर्द्रा"।

अदराना–क्रि० अ० [सं० आदर] बहुत आदर पाने से शेखी पर चढ़ना। इतराना क्रि० स० आदर देकर शेखी पर चढ़ाना। घमंडी बनाना।

अदर्शन–संज्ञा पुं० [सं०] १. अविद्यमानता। असाक्षात्। २. लोप। विनाश।

अदर्शनीय–वि० [सं०] १. जो देखने लायक न हो। २. बुरा। कुरूप। भद्दा।

अदल–संज्ञा पुं० [अ०] न्याय। इंसाफ़।

अदल बदल–संज्ञा पुं० [अ०] उलट पुलट। हेर फेर। परिवर्तन।

अदली*–संज्ञा पुं० [अ० अदल] न्यायी।

अदवान–संज्ञा स्त्री० [सं० अधः = नीचे हिं० वान = रस्सी] चारपाई के पैताने बिनावट को खींचकर कड़ी रखने के लिये उसके छेदों में पड़ी हुई रस्सी। ओनचन।

अदहन–संज्ञा पुं० [सं० आदहन] आग पर चढ़ा हुआ वह गरम पानी जिसमें दाल, चावल आदि पकाते हैं।

अदाँत–वि० [सं० अदंत] जिसे दाँत न आए हों। (पशुओं के संबंध में)

अदांत–वि० [सं०] १. जो इंद्रियों का दमन न कर सके। विषयासक्त। २. उद्दंड। अक्खड़।

अदा–वि० [अ०] चुकता। बेबाक़।

मुहा०–अदा करना = पालन या पूरा करना। जैसे—फ़र्ज़ अदा करना।

संज्ञा स्त्री० [अ०] १. हाव भाव। नखरा। २. ढंग। तर्ज़।

अदाई*–वि० [अ० अदा] १. ढंगी। २. चालबाज़।

अदायाँ*–वि० [अ = नही + हिं० दायाँ] वाम। प्रतिकूल। बुरा।

अदाग*–वि० [स० अ + अ० दाग] १ बेदाग। साफ। २ निर्दोष। पवित्र।

अदागी*†–वि० दे० "अदाग"।

अदाता–सज्ञा पु० [स०] कृपण। कजूस।

अदान*–वि० [स० अ + फा० दाना] अनजान। नादान। नासमझ।

अदालत–सज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० अदालती] १ न्यायालय। कचहरी। २ न्यायाधीश।

यौ०–अदालत खफीफा = वह दीवानी अदालत जिसमें छोटे मुकद्दमे लिए जाते है।

अदालत दीवानी = वह अदालत जिसमें सपत्ति या स्वत्व सबधी बातो का निर्णय होता है।

अदालत माल = वह अदालत जिसमे लगान और मालगुजारी सबधी मुकद्दमे दायर किए जाते है।

अदालती–वि० [अ० अदालत] १ अदालत का। २ जो अदालत करे। मुकद्दमा लडनेवाला।

अदावँ–सज्ञा पु० [स० अ + हिं० दावँ] बुरा दाँव पेंच। असमजस। कठिनाई।

अदावत–सज्ञा स्त्री० [अ०] शत्रुता। दुश्मनी। वैर। विरोध।

अदावती–वि० [अ० अदावत] १ जो अदावत रक्खे। २ विरोधजन्य। द्वेषमूलक।

अदाह*–सज्ञा स्त्री० [अ० अदा] हाव भाव। नखरा।

अदित*–सज्ञा पु० दे० "आदित्य"।

अदिति–सज्ञा स्त्री० [स०] १ प्रकृति। २ पृथ्वी। ३ दक्ष प्रजापति की कन्या और कश्यप की पत्नी जो देवताओ की माता है। ४ द्युलोक। ५ अतरिक्ष। ६ माता। ७ पिता।

अदितिसुत–सज्ञा पु० [स०] १ देवता। २ सूर्य।

अदिन–सज्ञा पु० [स०] १ बुरा दिन। सकट या दुख का समय। २ अभाग्य।

अदिव्य–वि० [स०] १ लौकिक। साधारण। २ बुरा।

अदिव्य नायक–सज्ञा पु० [स०] मनुष्य नायक। नायक जो देवता न हो। (साहित्य)

अदिष्ट*–वि० स० पु० दे० "अदृष्ट"।

अदिष्टी*–वि० [स० अ + दृष्टि] १ अदूरदर्शी। मूर्ख। २ अभागा। बदकिस्मत।

अदीठ*–वि० [स० अदृष्ट] बिना देखा हुआ। गुप्त। छिपा हुआ।

अदीन–वि० [स०] १ दीनतारहित। २ उग्र। प्रचड। निडर। ३ ऊँची तबीअत का। उदार।

अदीयमान–वि० [स०] जो न दिया जाय।

अदुद*–वि० [स० अद्वद्व, प्रा० अदुद] १ द्वद्वरहित। निर्द्वंद्व। बिना झझट का। बाधा-रहित। २ शात। निश्चिन्त। ३ बेजोड। अद्वितीय।

अदूरदर्शी–वि० [स०] जो दूर तक न सोचे। स्थूलबुद्धि। नासमझ।

अदूषण–वि० [स०] निर्दोष। शुद्ध।

अदूषित–वि० [स०] निर्दोष। शुद्ध।

अदृश्य–वि० [स०] १ जो दिखाई न दे। अलख। २ जिसका ज्ञान इद्रियो को न हो। अगोचर। ३ लुप्त। गायब।

अदृष्ट–वि० [स०] १ न देखा हुआ। २ लुप्त। अतर्द्धान। गायब।

सज्ञा पु० १ भाग्य। किस्मत। २ अग्नि और जल आदि से उत्पन्न आपत्ति। जैसे, आग लगना, बाढ आना।

अदृष्टपूर्व–वि० [स०] १ जो पहले न देखा गया हो। २ अद्भुत। विलक्षण।

अदृष्टवाद–सज्ञा पु० [स०] परलोक आदि परोक्ष बातो का निरूपक सिद्धात।

अदृष्टार्थ–सज्ञा पु० [स०] वह शब्द प्रमाण जिसके वाच्य या अर्थ का साक्षात् इस ससार में न हो, जैसे, स्वर्ग, परमात्मा इत्यादि।

अदेख*–वि० [स० अ = नही + हिं० देखना] १ छिपा हुआ। अदृश्य। गुप्त। २ न देखा हुआ। अदृष्ट।

अदेखी–वि० [स० अ = नही + हिं० देखना]

जो न देख सके। डाही। द्वेषी। ईर्षालु।
अदेय–वि० [सं०] न देने योग्य। जिसे दे न सकें।
अदेस*–संज्ञा पुं० [सं० आदेश] १. आज्ञा। २. आदेश। २. प्रणाम। दंडवत। (साधु)
अदेह–वि० [सं०] बिना शरीर का। संज्ञा पुं० कामदेव।
अदोख*–वि० दे० "अदोष"।
अदोखिल*–वि० [सं० अदोष] निर्दोष।
अदोष*–वि० [सं०] १. निर्दोष। निष्कलंक। बेऐब। २. निरपराध।
अदौरी†–संज्ञा स्त्री० [सं० ऋद्ध + हिं० बरी] उर्द की सुखाई हुई बरी।
अद्ध*–वि० दे० "अर्द्ध"।
अद्धरज*–संज्ञा पुं० दे० "अध्वर्य्य"।
अद्धा–संज्ञा पुं० [सं० अर्द्ध] १. किसी वस्तु का आधा मान। २. वह बोतल जो पूरी बोतल की आधी हो।
अद्धी–संज्ञा स्त्री० [सं० अर्द्ध] १. दमडी का आधा। एक पैसे का सोलहवाँ भाग। २. एक बारीक और चिकना कपड़ा।
अद्भुत–वि० [सं०] आश्चर्यजनक। विलक्षण। विचित्र। अनोखा।
संज्ञा पुं० काव्य के नौरसों में एक जिसमें विस्मय की परिपुष्टता दिखलाई जाती है।
अद्भुतालय–संज्ञा पु० दे० "अजायबघर"।
अद्भुतोपमा–संज्ञा स्त्री० [सं०] उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें उपमेय के ऐसे गुणों का उल्लेख किया जाय जिनका होना उपमान में कभी संभव न हो।
अद्य–क्रि० वि० [सं०] अब। अभी।
अद्यापि–क्रि० वि० [सं०] आज भी। अभी तक। आज तक।
अद्यावधि–क्रि० वि० [सं०] अब तक।
अद्रव्य–सं० पु० [स०] सत्ताहीन पदार्थ। अवस्तु। असत्। शून्य। अभाव।
वि० द्रव्य या धन रहित। दरिद्र।
अद्रा*–संज्ञा स्त्री० दे० "आर्द्रा"।
अद्रि–संज्ञा पुं० [सं०] पर्वत। पहाड़।
अद्रितनया–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पार्वती। २. गंगा। ३. २३ वर्णों का एक वृत्त।
अद्वितीय–वि० [सं०] १. अकेला। एकाकी। २. जिसके ऐसा दूसरा न हो। बेजोड़। अनुपम। ३. प्रधान। मुख्य। ४. विलक्षण।
अद्वैत–वि० [सं०] १. एकाकी। अकेला। २. अनुपम। बेजोड़।
संज्ञा पु० ब्रह्म। ईश्वर।
अद्वैतवाद–संज्ञा पुं० [सं०] वह सिद्धांत जिसमें चैतन्य या ब्रह्म के अतिरिक्त और किसी वस्तु या तत्त्व की वास्तव सत्ता नहीं मानी जाती और आत्मा और परमात्मा में भी कोई भेद नही स्वीकार किया जाता। वेदांतमत।
अद्वैतवादी–संज्ञा पुं० [सं०] अद्वैत मत को माननेवाला। वेदांती।
अधः–अव्य [सं०] नीचे। तले।
संज्ञा स्त्री० पैर के नीचे की दिशा।
अधःपतन–संज्ञा पुं० [सं०] १. नीचे गिरना। २. अवनति। अधःपात। ३. दुर्दशा। दुर्गति। ४. विनाश।
अधःपात–संज्ञा पुं० [सं०] १. नीचे गिरना। पतन। २. अवनति। दुर्दशा।
अध*–अव्य० दे० "अधः"।
वि० [सं० अर्द्ध, प्रा० अद्ध] 'आधा' शब्द का संकुचित रूप। आधा। (यौगिक में) जैसे, अधकचरा, अधखुला।
अधकचरा–वि० [सं० अर्द्ध + हिं० कच्चा] १. अपरिपक्व। २. अधूरा। अपूर्ण। ३. अकुशल। अदक्ष।
वि० [सं० अर्द्ध + हिं० कचरना] आधा कूटा या पीसा हुआ। दरदरा।
अधकपारी–संज्ञा स्त्री० [सं० अर्द्ध = आधा + कपाल = सिर] आधे सिर का दर्द। आधा सीसी। सूर्यावर्त्त।
अधकरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० आधा + कर] मालगुजारी, महसूल या किराए की आधी रकम जो किसी नियत समय पर दी जाय। अठनिया किस्त।
अधकहा–वि० [हिं० आधा + कहना] अस्पष्ट

रूप में या आधा बटा हुआ।

अधखिला–वि० [हिं० आधा + खिलना] आधा खिला हुआ। अर्द्धविकसित।

अधघट*–वि० [हिं० आधा + घटना] जिससे ठीक अर्थ न निकले। अटपट।

अधचरा–वि० [हिं० आधा + चरना] आधा चरा या खाया हुआ।

अधड़*–वि० [सं० अधर] [स्त्री० अधड़ी] १ न ऊपर न नीचे का। निराधार। २ ऊटपटाँग। बे सिर पैर का। असंबद्ध।

अधन*–वि० पु० [सं० अ + धन] निर्धन। कंगाल। गरीब।

अधनिया–वि० [हिं० आध + आना] आध आने या दो पैसे का।

अधन्ना–संज्ञा पु० [हिं० आधा + आना] आध आने का सिक्का। टका।

अधपई–संज्ञा स्त्री० [हिं० आधा + पाव] एक सेर के आठवें हिस्से की तौल या बाट।

अधबर*–संज्ञा पु० [हिं० आधा बाट] १ आधा मार्ग। आधा रास्ता। २ बीच।

अधबैसू*–वि० पु० [सं० अर्द्ध + वयस्] [स्त्री० अधबैसी] अधेड़। मध्यम अवस्था की (स्त्री)।

अधम–वि० [सं०] १ नीच। निकृष्ट। बुरा। २ पापी। दुष्ट।

अधमई*†–संज्ञा स्त्री० [सं० अधम + हिं० ई (प्रत्य०)] नीचता। अधमता।

अधमता–संज्ञा स्त्री० [सं०] अधम का भाव। नीचता। खोटाई।

अधमरा–वि० [हिं० आधा + मरा] आधा मरा हुआ। मृतप्राय। अधमुआ।

अधमर्ण–संज्ञा पु० [सं०] ऋण लेनेवाला आदमी। कर्जदार या ऋणी।

अधमाई*–संज्ञा स्त्री० [सं० अधम] अधमता।

अधमा दूती–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह दूती जो कटु बात कहकर नायक या नायिका का संदेसा एक दूसरे को पहुँचावे।

अधमा नायिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जो प्रिय या नायक के हितकारी होने पर भी उसके प्रति अहित या दुर्व्यवहार करे।

अधमुआ–वि० दे० "अधमरा"।

अधमुख–संज्ञा पु० दे० "अधोमुख"।

अधर–संज्ञा पु० [सं०] १ नीचे का ओंठ। २ ओंठ।

संज्ञा पु० [सं० अ = नहीं + हिं० धरना] १ बिना आधार या स्थान। अंतरिक्ष।

मुहा०–अधर में झूलना, पड़ना या लटकना = १ अधूरा रहना। पूरा न होना। २ असमंजस में पड़ना। दुविधा में पड़ना।

२ पाताल।

वि० १. जो पकड़ में न आवे। चंचल। २ नीच। बुरा।

अधरज–संज्ञा पु० [सं० अधर + रज] १. ओंठों की ललाई। ओंठों की सुर्खी। २. ओंठ पर की पान या मिस्सी की धड़ी।

अधरपान–संज्ञा पु० [सं०] ओंठों का चुंबन।

अधरम*–संज्ञा पु० दे० "अधर्म"।

अधर्म–संज्ञा पु० [सं०] धर्म के विरुद्ध कार्य्य। कुकर्म। दुराचार। बुरा काम।

अधर्मात्मा–वि० पु० [सं०] अधर्मी।

अधर्मी–संज्ञा पु० [सं० अधर्मिन्] [स्त्री० अधर्मिणी] पापी। दुराचारी।

अधवा–संज्ञा स्त्री० [सं० अ + धव = पति] बिना पति की स्त्री। विधवा। राँड़।

अधसेरा–संज्ञा पु० [हिं० आधा + सेर] दो पाव का मान।

अधस्तल–संज्ञा पु० [सं०] १ नीचे की कोठरी। २ नीचे की तह। ३ तहखाना।

अधाधुध–क्रि० वि० दे० "अधाधुंध"।

अधावट–वि० पु० [हिं० आधा + औटना] आधा औटा हुआ। (दूध)

अधार–संज्ञा पु० दे० "आधार"।

अधारी–संज्ञा स्त्री० [सं० आधार] १ आश्रय। सहारा। आधार। २ काठ के डंडे में लगा हुआ पीढ़ा जिसे साधु लोग सहारे के लिए रखते हैं। ३ यात्रा का सामान रखने का झोला या थैला।

वि० स्त्री० जो को सहारा देनेवाली। प्रिय।

अधि–एक संस्कृत उपसर्ग जो शब्दों के पहले लगाया जाता है और जिसके ये अर्थ होते हैं—१. ऊपर। ऊँचा। जैसे—अधिराज। अधिकरण। २. प्रधान। मुख्य। जैसे—अधिपति। ३. अधिक। ज्यादा। जैसे—अधिमास। ४. संबंध में। जैसे—आध्यात्मिक।

अधिक–वि० [सं०] १. बहुत। ज्यादा। विशेष। २. बचा हुआ। फ़ालतू।
संज्ञा पुं० १. वह अलंकार जिसमें आधेय को आधार से अधिक वर्णन करते हैं। २. न्याय में एक निग्रह-स्थान।

अधिकता–संज्ञा स्त्री० [सं०] बहुतायत। ज्यादती। विशेषता। बढ़ती। वृद्धि।

अधिकमास–संज्ञा पुं० [सं०] मलमास। लौंद का महीना। शुक्ल प्रतिपदा से लेकर अमावास्या पर्य्यंत ऐसा काल जिसमें संक्रांति न पड़े। (प्रति तीसरे वर्ष)

अधिकरण–संज्ञा पुं० [सं०] १. आधार। आसरा। सहारा। २. व्याकरण में कर्त्ता और कर्म द्वारा क्रिया का आधार। सातवाँ कारक। ३. प्रकरण। शीर्षक। ४. दर्शन में आधार विषय। अधिष्ठान।

अधिकांग–वि० [सं०] जिसे कोई अवयव अधिक हो। जैसे—छाँगुर।

अधिकांश–संज्ञा पुं० [सं०] अधिक भाग। ज्यादा हिस्सा।
वि० बहुत।
क्रि० वि० १. ज्यादातर। विशेषकर। २. अक्सर। प्रायः।

अधिकाई*–संज्ञा स्त्री० [सं० अधिक+हिं० आई (प्रत्य०)] १. ज्यादती। अधिकता। बहुतायत। २. बड़ाई। महिमा।

अधिकाना*–क्रि० अ० [सं० अधिक] अधिक होना। ज्यादा होना। बढ़ना।

अधिकार–संज्ञा पुं० [सं०] १. कार्य्यभार। प्रभुत्व। आधिपत्य। प्रधानता। २. प्रकरण। ३. स्वत्व। हक। अख़्तियार। ४. क़ब्ज़ा। प्राप्ति। ५. सामर्थ्य। शक्ति। ६. योग्यता। जानकारी। लियाक़त। ७. प्रकरण। शीर्षक। ८. रूपक के प्रधान फल की प्राप्ति की योग्यता। (नाट्यशास्त्र)

†*वि० पुं० [सं० अधिक] अधिक।

अधिकारी–संज्ञा पुं० [सं० अधिकारिन्] [स्त्री० अधिकारिणी] १. प्रभु। स्वामी। मालिक। २. स्वत्वधारी। हकदार। ३. योग्यता या क्षमता रखनेवाला। उपयुक्त पात्र। ४. नाटक का वह पात्र जिसे रूपक का प्रधान फल प्राप्त होता है।

अधिकृत–वि० [सं०] अधिकार में आया हुआ। उपलब्ध।
संज्ञा पुं० अधिकारी। अध्यक्ष।

अधिगत–वि० [सं०] १. प्राप्त। पाया हुआ। २. जाना हुआ। ज्ञात।

अधिगम–संज्ञा पुं० [सं०] १. पहुँच। ज्ञान। गति। २. परोपदेश द्वारा प्राप्त ज्ञान। ३. ऐश्वर्य्य। बड़प्पन।

अधित्यका–संज्ञा स्त्री० [सं०] पहाड़ के ऊपर की समतल भूमि। ऊँचा पहाड़ी मैदान।

अधिदेव–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अधिदेवी] इष्टदेव। कुलदेव।

अधिदैव–वि० [सं०] दैविक। आकस्मिक।

अधिदैवत–संज्ञा पुं० [सं०] वह प्रकरण या मंत्र जिसमें अग्नि, वायु, सूर्य्य इत्यादि देवताओं के नाम-कीर्त्तन से ब्रह्म-विभूति की शिक्षा मिले।
वि० देवता-संबंधी।

अधिनायक–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अधिनायिका] सरदार। मुखिया।

अधिप–संज्ञा पुं० [सं०] १. स्वामी। मालिक। २. सरदार। मुखिया। ३. राजा।

अधिपति–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अधिपत्नी] १. मालिक। स्वामी। २. नायक। अफसर। मुखिया।

अधिमास–संज्ञा पुं० दे० "अधिक मास"।

अधिया–संज्ञा स्त्री० [हिं० आधा] १. आधा हिस्सा। २. गाँव में आधी पट्टी की हिस्सेदारी। ३. एक रीति जिसके अनुसार उपज का आधा मालिक को और आधा परिश्रम करनेवाले को मिलता है।

संज्ञा पु० गाँव में आधी पट्टी का मालिक।
अधियाना–क्रि० स० [हिं० आधा] आधा करना। दो बराबर हिस्सों में बाँटना।
अधियार–संज्ञा पु० [हिं० आधा] [स्त्री० अधियारिन] १ किसी जायदाद में आधा हिस्सा। २ आधे का मालिक। ३ वह जमींदार या असामी जो गाँव में हिस्से या जोत में आधे का हिस्सेदार हो।
अधियारी–संज्ञा स्त्री० [हिं० अधियार] किसी जायदाद में आधी हिस्सेदारी।
अधिरथ–संज्ञा पु० [सं०] १ रथ हाँकने-वाला। गाड़ीवान। २ बड़ा रथ।
अधिराज–संज्ञा पु० [सं०] राजा। बादशाह। महाराज।
अधिराज्य–संज्ञा पु० [सं०] साम्राज्य।
अधिरोहण–संज्ञा पु० [सं०] चढ़ना। सवार होना। ऊपर उठना।
अधिवास–संज्ञा पु० [सं०] [वि० अधिवासित] १ रहने की जगह। २ खुशबू। ३ विवाह से पहले तेल हल्दी चढ़ाने की रीति ४ उबटन।
अधिवासी–संज्ञा पु० [सं० अधिवासिन्] निवासी। रहनेवाला।
अधिवेशन–संज्ञा पु० [सं०] बैठक। सभा। जलसा।
अधिष्ठाता–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० अधिष्ठात्री] १ अध्यक्ष। मुखिया। प्रधान। २ वह जिसके हाथ में किसी कार्य्य का भार हो। ३ ईश्वर।
अधिष्ठान–संज्ञा पु० [सं०] [वि० अधिष्ठित] १ वासस्थान। रहने का स्थान। २ नगर। शहर। ३ स्थिति। कयाम। पड़ाव। ४ आधार। सहारा। ५ वह वस्तु जिसमें भ्रम का आरोप हो। जैसे रज्जु में सर्प और शुक्ति में रजत का। ६ सांख्य में भोक्ता और भोग का संयोग। ७ अधिकार। शासन। राजसत्ता।
अधिष्ठान शरीर–संज्ञा पु० [सं०] वह सूक्ष्म शरीर जिसमें मरण के उपरांत पितृलोक में आत्मा का निवास रहता है।
अधिष्ठित–वि० [सं०] १ ठहरा हुआ। स्थापित। २ नियोजित। नियुक्त।
अधीन–वि० [सं०] [संज्ञा अधीनता] १ आश्रित। मातहत। वशीभूत। आज्ञाकारी। २ विवश। लाचार। ३ अवलंबित। मुनहसर।
संज्ञा पु० दास। सेवक।
अधीनता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ परवशता। परतंत्रता। मातहती। २ लाचारी। बेबसी। ३ दीनता। गरीबी।
अधीनना–क्रि० अ० [हिं० अधीन+ना (प्रत्य०)] अधीन होना। वश में होना।
अधीर–वि० पु० [सं०] [संज्ञा अधीरता] १ धैर्य्यरहित। घबराया हुआ। उद्विग्न। २ चंचल। व्याकुल। विह्वल। ३ चचल। उतावला। आतुर। ४ असंतोषी।
अधीरा–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जो नायक में नारी विलास-सूचक चिह्न देखने से अधीर होकर प्रत्यक्ष कोप करे।
अधीश अधीश्वर–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० अधीश्वरी] १ मालिक। स्वामी। अध्यक्ष। २ भूपति। राजा।
अधुना–क्रि० वि० [सं०] [वि० आधुनिक] अब। संप्रति। आजकल।
अधुनातन–वि० [सं०] वर्त्तमान समय का। हाल का। 'सनातन' का उल्टा।
अधूत–संज्ञा पु० [सं०] १ अकंपित। २ निर्भय। निडर। ३ ढीठ। ४ उचक्का।
अधूरा–वि० [हिं० अध+पूरा] [स्त्री० अधूरी] अपूर्ण। जो पूरा न हो। असमाप्त।
अधेड़–वि० [हिं० आधा+एड (प्रत्य०)] ढलती जवानी का। बुढ़ापे और जवानी के बीच का।
अधेला–संज्ञा पु० [हिं० आधा+एला (प्रत्य०)] आधा पैसा।
अधेली–संज्ञा स्त्री० [हिं० आधा+एली (प्रत्य०)] रुपये का आधा सिक्का। अठन्नी।
अधो–अव्य० दे० अध।
अधोगति संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पतन। गिराव। २ अवनति। दुर्दशा।

अधोगमन–संज्ञा पुं० [सं०] १. नीचे जाना। २. अवनति। पतन।
अधोगामी–वि० [सं० अधोगामिन्] [स्त्री० अधोगामिनी] १. नीचे जानेवाला। २. अवनति की ओर जानेवाला।
अधोतर†–संज्ञा पुं० [सं० अधः + उतर] दोहरी बुनावट का एक देशी मोटा कपड़ा।
अधोमार्ग–संज्ञा पुं० [सं०] १. नीचे का रास्ता। २. सुरंग का रास्ता। ३. गुदा।
अधोमुख–वि० [सं०] १. नीचे मुँह किए हुए। २. औंधा। उलटा।
क्रि० वि० औंधा। मुँह के बल।
अधोलंब–संज्ञा पुं० [सं०] वह खड़ी रेखा जो किसी दूसरी सीधी आड़ी रेखा पर आकर इस प्रकार गिरे कि पार्श्व के दोनों कोण समकोण हों। लंब।
अधोवायु–संज्ञा पुं० [सं०] अपानवायु। गुदा की वायु। पाद। गोज।
अध्यक्ष–संज्ञा पुं० [सं०] १. स्वामी। मालिक। २. नायक। सरदार। मुखिया। ३. अधिकारी। अधिष्ठाता।
अध्यच्छ*–संज्ञा पुं० दे० "अध्यक्ष"।
अध्ययन–संज्ञा पुं० [सं०] पठन-पाठन। पढ़ाई।
अध्यवसाय–संज्ञा पुं० [सं०] १. लगातार उद्योग। दृढ़तापूर्वक किसी काम मे लगा रहना। २. उत्साह। ३. निश्चय।
अध्यवसायी–वि० [सं० अध्यवसायिन्] [स्त्री० अध्यवसायिनी] १. लगातार उद्योग करनेवाला। उद्योगी। उद्यमी। २. उत्साही।
अध्यस्त–वि० [सं०] वह जिसका भ्रम किसी अधिष्ठान में हो; जैसे रज्जु में सर्प का। (वेदांत)
अध्यात्म–संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मविचार। ज्ञानतत्व। आत्मज्ञान।
अध्यापक–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अध्यापिका] शिक्षक। गुरु। पढ़ानेवाला। उस्ताद।
अध्यापकी–संज्ञा स्त्री० [सं० अध्यापक + ई] पढ़ाने का काम। मुदर्रिसी।
अध्यापन–संज्ञा पुं० [सं०] शिक्षण। पढ़ाने का कार्य।
अध्याय–संज्ञा पुं० [सं०] १. ग्रंथविभाग। २. पाठ। सर्ग। परिच्छेद।
अध्यारोप–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक व्यापार को दूसरे में लगाना। दोष। अध्यास। २. झूठी कल्पना। अन्य में अन्य वस्तु का भ्रम।
अध्यास–संज्ञा पुं० [सं०] अध्यारोप। मिथ्याज्ञान।
अध्यासन–संज्ञा पुं० [सं०] १. उपवेशन। बैठना। २. आरोपण।
अध्याहार–संज्ञा पुं० [सं०] १. तर्कवितर्क। विचार। बहस। २. वाक्य को पूरा करने के लिये उसमें और कुछ शब्द ऊपर से जोड़ना। ३. अस्पष्ट वाक्य को दूसरे शब्दों में स्पष्ट करने की क्रिया।
अध्यूढ़ा–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसका पति दूसरा विवाह कर ले। ज्येष्ठा पत्नी।
अध्येय–वि० [सं०] पढ़ने योग्य।
अध्रुव–वि० [सं०] १. चंचल। डावाँडोल। अस्थिर। २. अनिश्चित। बेठौर ठिकाने का।
अध्वर–संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञ।
अध्वर्यु–संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञ में यजुर्वेद का मंत्र पढ़नेवाला ब्राह्मण।
अन्–अव्य० [सं०] अभाव या निषेधसूचक अव्यय। जैसे—अनंत, अनधिकार।
अनंग–वि० [सं०] [क्रि० अनगना] बिना शरीर का। देह-रहित।
२. संज्ञा पुं० कामदेव
अनंगक्रीड़ा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रति। संभोग। २. छंदःशास्त्र में मुक्तक नामक विषम वृत्त का एक भेद।
अनंगना*–क्रि० अ० [सं०] शरीर की सुध छोड़ना। सुधबुध भुलाना।
अनंगशेखर–संज्ञा पुं० [सं०] दंडक नामक वर्ण वृत्त का एक भेद।
अनंगारि–संज्ञा पुं० [सं०] शिव।
अनंगी–वि० [सं० अनंगिन्] [स्त्री० अनंगिनी

अगरहित। बिना देह का।
सज्ञा पु० १. ईश्वर। २ कामदेव।

अनत–वि० [स०] १. जिसका अत या पार न हो। असीम। बेहद। बहुत बड़ा। २ बहुत अधिक। ३ अविनाशी। सज्ञा पु० १ विष्णु। २ शेषनाग। ३ लक्ष्मण। ४. बलराम। ५ आकाश। ६ बाहु का एक गहना। ७ सूत का गडा जिसे भादो सुदी चतुर्दशी या अनत के व्रत के दिन बाहु में पहनते है।

अनंतचतुर्दशी–सज्ञा स्त्री० [स०] भाद्र-शुक्ल चतुर्दशी।

अनतमूल–सज्ञा पु० [स०] एक पौधा या बेल जो रक्त शुद्ध करने की औषध है।

अनतर–क्रि० वि० [स०] १ पीछे। उपरात। बाद। २ निरतर। लगातार।

अनतवीर्य–वि० [स०] अपार पौरुष-वाला।

अनता–वि० स्त्री० [स०] जिसका अत या पारावार न हो।
सज्ञा स्त्री० १ पृथ्वी। २ पार्वती। ३ कलियारी। ४ अनतमूल। ५ दूब। ६ पीपर। ७ अनतमूत्र।

अनद–सज्ञा पु० [स०] १ चौदह वर्णों का एक वृत्त। * २ दे० "आनद"।

अनदना*–क्रि० अ० [स० आनद] आनदित होना। खुश होना। प्रसन्न होना।

अनदी–सज्ञा पु० [स० आनद] १ एक प्रकार का धान। २ दे० "आनदी"।

अनभ–वि० [स०] बिना पानी का।
*वि० [स० अन् – नहीं + अह = विघ्न] निर्विघ्न। बाधारहित।

अन*–क्रि० वि० [स० अन्] बिना। बगैर।
वि० [स० अन्य] अन्य। दूसरा।

अनअहियात–सज्ञा पु० [स० अन् = नहीं + हि० अहियात = सौभाग्य] वैधव्य। विधवापन। रँडापा।

अनइस–सज्ञा पु० दे० "अनैस"।

अनऋतु–सज्ञा स्त्री० [स० अन् + ऋतु] १ विरुद्धऋतु। बेमौसिम। अकाल। २ ऋतुविपर्यय। ऋतु के विरुद्ध कार्य।

अनक*–सज्ञा पु० दे० "आनक"।

अनकना*–क्रि० स० [स० आकर्णन] १. सुनना। २ चुपचाप या छिपकर सुनना।

अनकहा–वि० [स० अन् = नहीं + हि० कहना] [स्त्री० अनकही] बिना कहा हुआ। अकथित। अनुक्त।
मुहा०–अनकही देना = चुपचाप होना।

अनख–सज्ञा पु० [स० अन् = बुरा + अक्ष = आँख] १ क्रोध। कोप। नाराजी। २ दुख। ग्लानि। खिन्नता। ३ ईर्ष्या। द्वेष। डाह। ४ झझट। अनरीति। ५ डिठौना। काजल की बिंदी जिसे डीठ (नज़र) से बचाने के लिये माथे म लगाते हैं।
वि० [स० अ + नख] बिना नख का।

अनखना*–क्रि० अ० [हि० अनख] क्रोध करना। रुष्ट होना। रिसाना।

अनखाना*–क्रि० अ० [हि० अनख] क्रोध करना। रिसाना। रुष्ट होना।
क्रि० स० अप्रसन्न करना। नाराज करना।

अनखाहट–सज्ञा स्त्री० [हि० अनखना + आहट (प्रत्य०)] अनख दिखाने की क्रिया या भाव। नाराजगी। क्रोध।

अनखी*†–वि० [हि० अनख] क्रोधी। गुस्सावर। जो जल्दी नाराज हो।

अनखौंहा*†–वि० [हि० अनख] [स्त्री० अनखौंही] १ क्रोध से भरा। कुपित। रुष्ट। २ चिड़चिड़ा। जल्दी क्रोध करनेवाला। ३ क्रोध दिलानेवाला। ४ अनुचित। बुरा।

अनगढ़–वि० [स० अन् = नहीं + हि० गढ़ना] १ बिना गढ़ा हुआ। २ जिसे किसी ने बनाया न हो। स्वयभू। ३ बेडौल। भद्दा। बेढगा। ४ उजड्ड। अक्खड। ५ बेतुका। अडबड।

अनगन*–वि० [स० अन् + गणन] [स्त्री० अनगनी] अगणित। बहुत।

अनगना–वि० [स० अन = नहीं + हि० गिनना] न गिना हुआ। अगणित। बहुत।

संज्ञा पुं० गर्भ का आठवाँ महीना।
अनगवना–क्रि० अ० [हिं० अन (प्रत्य०) = नहीं + गवन = जाना] रुककर देर करना। जान बूझकर विलंब करना।
अनगाना–क्रि० अ० दे० "अनगवना"।
अनगिन–वि० दे० "अनगिनत"।
अनगिनत–वि० [सं० अन् = नहीं + गिनना] जिसकी गिनती न हो। असंख्य। बे-शुमार। बहुत।
अनगिना–वि० पुं० [सं० अन् + हिं० गिनना] १. जो गिना न गया हो। २. असंख्य।
अनगैरी*–वि० [अ० ग़ैर] गैर। पराया।
अनघेरी*–वि० [सं० अन् + हिं० घेरना] बिना बुलाया हुआ। अनिमंत्रित।
अनघोर*–संज्ञा पु० [सं० घोर] अंधेर। अत्याचार। ज्यादती।
अनचाहत*–वि० [सं० अन् = नहीं + हिं० चाहना] न चाहनेवाला। जो प्रेम न करे।
अनचीन्हा*†–वि० [सं० अन् + हिं० चीन्हना] अपरिचित। अज्ञात।
अनजान–वि० [सं० अन् + हिं० जानना] १. अज्ञानी। नादान। नासमझ। २. अपरिचित। अज्ञात।
अनट*–संज्ञा पु० [सं० अनृत] उपद्रव। अनीति। अन्याय। अत्याचार।
अनडीठ*–वि० [सं० अन् + दृष्ट] बिना देखा।
अनत–वि० [सं०] न झुका हुआ। सीधा।
*क्रि० वि० [सं० अन्यत्र] और कहीं। दूसरी जगह में।
अनति–वि० [सं०] कम। थोड़ा।
संज्ञा स्त्री० नम्रता का अभाव। अहंकार।
अनदेखा–वि० पुं० [सं० अन् + हिं० देखना] [स्त्री० अनदेखी] बिना देखा हुआ।
अनद्यतन भविष्य–संज्ञा पु० [सं०] व्याकरण में भविष्यकाल का एक भेद।
अनद्यतन भूत–संज्ञा पु० [सं०] व्याकरण में भूतकाल का एक भेद।
अनधिकार–संज्ञा पु० [सं०] १. अधिकार का अभाव। इख्तियार का न होना। २. बेबसी। लाचारी। ३. अयोग्यता।
वि० १. अधिकाररहित। २. अयोग्य।
यौ०—अनधिकारचर्चा = जिस विषय में गति न हो, उसमें टाँग अड़ाना।
अनधिकारी–वि० [सं० अनधिकारिन्] १. जिसे अधिकार न हो। २. अयोग्य। अपात्र।
अनध्यवसाय–संज्ञा पुं० [सं०] १. अध्यवसाय का अभाव। अतत्परता। ढिलाई। २. किसी एक वस्तु के संबंध में साधारण अनिश्चय का वर्णन किया जाना।
अनध्याय–संज्ञा पु० [सं०] १. वह दिन जिसमें शास्त्रानुसार पढ़ने पढ़ाने का निषेध हो। (अमावास्या, परिवा, अष्टमी, चतुर्दशी और पूर्णिमा।) २. छुट्टी का दिन।
अनन्नास–संज्ञा पु० [पुर्त० अनानास] राम-बाँस की तरह का एक छोटा पौधा जिसके डंठल के अकुरों की गाँठ खटमीठी और खाने योग्य होती है।
अनन्य–वि० [सं०] [स्त्री० अनन्या] अन्य से संबंध न रखनेवाला। एकनिष्ठ। एक ही में लीन। जैसे—अनन्य भक्त।
संज्ञा पु० विष्णु का एक नाम।
अनन्यता–संज्ञा स्त्री [सं०] १. अन्य के संबंध का अभाव। २. एकनिष्ठा।
अनन्वय–संज्ञा पु० [सं०] काव्य में वह अलंकार जिसमें एक ही वस्तु उपमान और उपमेय रूप से कही जाय।
अनन्वित–वि० [सं०] १. असंबद्ध। पृथक्। २. अडबंड। अयुक्त।
अनपच–संज्ञा पु० [सं० अन् = नहीं + पचना] अजीर्ण। बदहज़मी।
अनपढ़–वि० [सं० अन् = नहीं + हिं० पढ़ना] बेपढ़ा। अपठित। मूर्ख। निरक्षर।
अनपेक्ष–वि० [सं०] बेपरवा।
अनपेक्षित–वि० [सं०] जिसकी परवा न हो। जिसकी चाह न हो।
अनपेक्ष्य–वि० [सं०] जो अन्य की अपेक्षा न रखे। जिसे किसी की परवा न हो।
अनफाँस*–संज्ञा स्त्री० [हिं० अन् + फाँस]

अनहद-नाद–संज्ञा पु० दे० "अनाहत"।

अनहित*–संज्ञा पु० [सं० अन्=नहीं+हित] १. अहित। अपकार। बुराई। २ अहित-चिंतक। शत्रु।

अनहोता–वि० [सं० अन्=नहीं+हिं० होना] १. दरिद्र। निर्धन। गरीब। २ अलौकिक। अचंभे का।

अनहोनी–वि० स्त्री० [सं० अन्=नहीं+हिं० होना] न होनेवाली। अलौकिक। संज्ञा स्त्री० अलौकिक बात।

अनाकानी–संज्ञा स्त्री० [सं० अनाकर्णन] सुनी अनसुनी करना। जान बूझकर बहलाना। टाल-मटोल।

अनाकार–वि० [सं०] निराकार।

अनाखर†–वि० [सं० अनक्षर] बेडौल। बेढंगा।

अनागत–वि० [सं०] १ न आया हुआ। अनुपस्थित। २ भावी। होनहार। ३ अपरिचित। अज्ञात। ४ अनादि। अजन्मा। ५ अपूर्व। अद्भुत। क्रि० वि० अचानक। सहसा।

अनागम–संज्ञा पु० [सं०] आगमन का अभाव। न आना।

अनाचार–संज्ञा पु० [सं०] [वि० अनाचारी] १ कदाचार। दुराचार। निंदित आचरण। २ कुरीति। कुप्रथा।

अनाचारिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दुराचारिता। निंदित आचरण। २ कुरीति। कुचाल।

अनाज–संज्ञा पु० [सं० अन्नाद्य] अन्न। धान्य। दाना। गल्ला।

अनाड़ी–वि० [सं० अनार्य्य] १ ना-समझ। नादान। अनजान। २ जो निपुण न हो। अकुशल। अदक्ष।

अनात्म–वि० [सं०] आत्मरहित। जड़। संज्ञा पु० आत्मा का विरोधी पदार्थ। अचित्। जड़।

अनाथ–वि० [सं०] १ नाथहीन। बिना मालिक का। २ जिसका कोई पालन पोषण करनेवाला न हो। ३ असहाय। अशरण। ४ दीन। दुखी।

अनाथालय–संज्ञा पु० [सं०] १ वह स्थान जहाँ दीन दुखियों और असहायों का पालन हो। मुहताजखाना। लंगर-खाना। २ लावारिस बच्चों की रक्षा का स्थान। यतीमखाना। अनाथाश्रम।

अनाथाश्रम–संज्ञा पु० दे० "अनाथालय"।

अनादर–संज्ञा पु० [सं०] [वि० अनादरणीय, अनादरित, अनादृत] १ आदर का अभाव। निरादर। अवज्ञा। २ अपमान। अप्रतिष्ठा। बेइज्जती। ३ एक काव्यालंकार जिसमें प्राप्त वस्तु के तुल्य दूसरी अप्राप्त वस्तु की इच्छा के द्वारा प्राप्त वस्तु का अनादर सूचित किया जाता है।

अनादि–वि० [सं०] जिसका आदि न हो। जो सब दिन से हो।

अनादृत–वि० [सं०] जिसका अनादर हुआ हो। अपमानित।

अनाना*–क्रि० स० [सं० आनयन] मँगाना।

अनाप शनाप–संज्ञा पु० [सं० अनाप्त] १ उटपटाँग। आयँ बायँ। अडबड। २ असंबद्ध प्रलाप। निरर्थक बकवाद।

अनाप्त–वि० [सं०] १ अप्राप्त। अलब्ध। २ अविश्वस्त। ३ असत्य। ४ अकुशल। अनाड़ी। ५ अनात्मीय। अबंधु।

अनाम–वि० [सं०] [स्त्री० अनामा] १. बिना नाम का। २ अप्रसिद्ध।

अनामय–वि० [सं०] १ रोग-रहित। नीरोग। तंदुरुस्त। २ निर्दोष। बेऐब। संज्ञा पु० १ नीरोगता। तंदुरुस्ती। २ कुशल क्षेम।

अनामा–संज्ञा स्त्री० दे० "अनामिका"।

अनामिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] कनिष्ठा और मध्यमा के बीच की उँगली। अनामा।

अनायास–क्रि० वि० [सं०] बिना प्रयास। बिना परिश्रम। अकस्मात्। अचानक।

अनार–संज्ञा पु० [फा०] एक पेड़ और उसके फल का नाम। दाड़िम।

संज्ञा पुं० [सं० अन्याय] अन्याय। अनीति।
अनारदाना–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. खट्टे अनार का सुखाया हुआ दाना। २. रामदाना।
अनारी*–वि० [हिं० अनार] अनार के रंग का। लाल।
वि० दे० "अनाड़ी"।
अनार्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो आर्य न हो। अश्रेष्ठ। २. म्लेच्छ।
अनावश्यक–वि० [सं०] [संज्ञा अनावश्यकता] जिसकी आवश्यकता न हो। अप्रयोजनीय। गैरजरूरी।
अनावृत–वि० [सं०] १. जो ढँका न हो। खुला। २. जो घिरा न हो।
अनावृष्टि–संज्ञा स्त्री० [सं०] वर्षा का अभाव। अवर्षा। सूखा।
अनाश्रमी–वि० [सं०] १. गार्हस्थ्य आदि चारों आश्रमों से रहित। आश्रमभ्रष्ट। २. पतित। भ्रष्ट।
अनाश्रय–वि० [सं०] निराश्रय। निरवलंब। अनाथ। दीन।
अनाश्रित–वि० [सं०] आश्रयरहित। निरवलंब। बेसहारा।
अनास्था–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आस्था का अभाव। अश्रद्धा। २. अनादर। अप्रतिष्ठा।
अनाह–संज्ञा पुं० [सं०] अफरा। पेट फूलना।
अनाहक़*–क्रि० वि० दे० "नाहक"।
अनाहत–वि० [सं०] जिस पर आघात न हुआ हो।
संज्ञा पुं० १. शब्द योग में वह शब्द जो दोनों हाथों के अँगूठों से दोनों कानों को बन्द करने से सुनाई देता है। २. हठ-योग के अनुसार शरीर के भीतर के छः चक्रों में से एक।
अनाहार–संज्ञा पुं० [सं०] भोजन का अभाव या त्याग।
वि० १. निराहार। जिसने कुछ खाया न हो। २. जिसमें कुछ खाया न जाय।
अनाहूत–वि० [सं०] बिना बुलाया हुआ। अनिमंत्रित।
अनिच्छा–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० अनिच्छित, अनिच्छुक] इच्छा का अभाव। अरुचि।
अनिच्छित–वि० [सं०] १. जिसकी इच्छा न हो। अनचाहा। २. अरुचिकर।
अनिच्छुक–वि० [सं०] इच्छा न रखनेवाला। अनभिलाषी। निराकांक्षी।
अनिंद*–वि० दे० "अनिंद्य"।
अनिंद्य–वि० पु० [सं०] १. जो निंदा के योग्य न हो। निर्दोष। २. उत्तम। अच्छा।
अनित्य–वि० [सं०] [स्त्री० अनित्या। संज्ञा अनित्यत्व, अनित्यता] १. जो सब दिन न रहे। अस्थायी। क्षणभंगुर। २. नश्वर। नाशवान्। ३. जो स्वयं कार्यरूप हो और जिसका कोई कारण हो। ४. असत्य। झूठा।
अनित्यता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अनित्य अवस्था। अस्थिरता। २. नश्वरता।
अनिद्र–वि० [सं०] निद्रारहित। जिसे नींद न आवे।
संज्ञा पु० नींद न आने का रोग।
अनिप*–संज्ञा पु० [हिं० अनी = सेना + प = स्वामी] सेनापति। सेनाध्यक्ष।
अनिमा*–संज्ञा स्त्री० दे० "अणिमा"।
अनिमिष, अनिमेष–वि० [सं०] स्थिर दृष्टि। टकटकी के साथ।
क्रि० वि० १. बिना पलक गिराए। एकटक। २. निरंतर।
अनियंत्रित–वि० [सं०] १. प्रतिबंध-रहित। बिना रोक-टोक का। २. मनमाना।
अनियत–वि० [सं०] १. जो नियत न हो। अनिश्चित। २. अस्थिर। अदृढ़। ३. अपरिमित। असीम।
अनियम–संज्ञा पु० [सं०] नियम का अभाव। व्यतिक्रम। अव्यवस्था।
अनियमित–वि० [सं०] १. नियमरहित। अव्यवस्थित। बेकायदा। २. अनिश्चित। अनिर्दिष्ट।
अनियाउ*–संज्ञा पुं० दे० "अन्याय"।
अनियारा*–वि० [सं० अणि = नोक + हिं०

मोक्ष। मुषित।

अनबन–संज्ञा पु० [सं० अन् = नहीं + हिं० बनना] बिगाड़। विरोध। खटपट। *वि० भिन्न भिन्न। नाना। विविध।

अनबिधा–वि० [सं० अन् + विद्ध] बिना बेधा या छेद किया हुआ। जैसे, अनबिधा मोती।

अनबेधा–वि० दे० "अनबिधा"।

अनबोल–वि० [सं० अन् = नहीं + हिं० बोलना] १ न बोलनेवाला। २ चुप्पा। मौन। ३ गूंगा। ४ जो अपने सुख दुःख को न कह सके। (पशुओं के लिये)

अनबोलता–वि० [सं० अन् = नहीं + हिं० बोलना] न बोलनेवाला। गूंगा। बे-जबान। (पशु)

अनब्याहा–वि० [सं० अन् = नहीं + ब्याहा] [स्त्री० अनब्याही] अविवाहित। क्वाँरा।

अनभल*–संज्ञा पु० [सं० अन् = नहीं + हिं० भला] बुराई। हानि। अहित।

अनभिज्ञ–वि० [सं०] [स्त्री० अनभिज्ञा, संज्ञा अनभिज्ञता] १ अज्ञ। अनजान। मूर्ख। २ अपरिचित। नावाकिफ।

अनभिज्ञता–संज्ञा स्त्री० [सं०] अज्ञता। अनजानपन। अनाड़ीपन। मूर्खता।

अनभो*–संज्ञा पु० [सं० अन् = नहीं + भव-होना] अचंभा। अचरज। अनहोनी बात। वि० अपूर्व। अलौकिक। अद्भुत।

अनभोरी*–संज्ञा स्त्री० [हिं० भोर = भुलावा] भुलावा। बहाली। चकमा।

अनभ्यस्त–वि० [सं०] १ जिसका अभ्यास न किया गया हो। २ जिसने अभ्यास न किया हो। अपरिपक्व।

अनभ्यास–संज्ञा पु० [सं०] अभ्यास का अभाव। मश्क न होना।

अनमन अनमना–वि० [सं० अन्यमनस्क] १ जिसका जी न लगता हो। उदास। खिन्न। सुस्त। २ बीमार। अस्वस्थ।

अनमापा*–वि० [सं० अन् + मापना] न नापा जाने योग्य।

अनमारग*–संज्ञा पु० [सं० अन् = बुरा + मार्ग] कुमार्ग।

अनमिख*–वि० संज्ञा पु० दे० "अनिमिष"।

अनमिल*–वि० [सं० अन् = नहीं + हिं० मिलना] बेमेल। बेजोड़। असंबद्ध।

अनमिलता–वि० [सं० अन् = नहीं + हिं० मिलना] अप्राप्य। अलभ्य। अदृश्य।

अनमीलना*–क्रि० स० [सं० उन्मीलन] आँख खोलना।

अनमेल–वि० [सं० अन् + हिं० मेल] १ बेजोड़। असंबद्ध। २ बिना मिलावट का। विशुद्ध।

अनमोल–वि० [सं० अन् + हिं० मोल] १ अमूल्य। २ मूल्यवान्। बहुमूल्य। कीमती। ३ सुंदर। उत्तम।

अनय–संज्ञा पु० [सं०] १ अमंगल। विपद्। २ अनीति। अन्याय।

अनयास*–क्रि० वि० दे० "अनायास"।

अनरथ*–संज्ञा पु० दे० "अनर्थ"।

अनरना*–क्रि० स० [सं० अनादर] अनादर करना। अपमान करना।

अनरस–संज्ञा पु० [सं० अन् = नहीं + सं० रस] १ रसहीनता। शुष्कता। २ रुखाई। कोप। मान। ३ मनोमालिन्य। मनमोटाव। अनबन। ४ दुःख। खेद। रंज। ५ रसविहीन काव्य।

अनरसा*–वि० [सं० अन् + रस] अनमना। माँदा। बीमार।

अनराता*–वि० [सं० अन् = नहीं + हिं० राता] १ बिना रँगा हुआ। सादा। २ प्रेम में न पड़ा हुआ।

अनरीति–संज्ञा स्त्री० [सं० अन् + रीति] १ कुरीति। कुचाल। बुरी रस्म। २ अनुचित व्यवहार।

अनरुचि*–संज्ञा स्त्री० दे० 'अरुचि'।

अनरूप*–वि० [सं० अन् = बुरा + रूप] १ कुरूप। बदसूरत। २ असमान। असदृश।

अनर्गल–वि० [सं०] १ बरोक। बेधड़क। २ व्यर्थ। अंडबंड। ३ लगातार।

अनर्घ–वि० [सं०] १ बहुमूल्य। क़ीमती।

२. कम क़ीमत का। सस्ता।
अनर्घ्य–वि० [सं०] १. अपूज्य। २. बहु-मूल्य। अमूल्य।
अनर्थ–संज्ञा पुं० [सं०] १. विरुद्ध अर्थ। उलटा मतलब। २. कार्य्य की हानि। नुक़सान। ३. विपद। अनिष्ट। ४. वह धन जो अधर्म से प्राप्त किया जाय।
अनर्थक–वि० [सं०] १. निरर्थक। अर्थ-रहित। २. व्यर्थ। बेमतलब। बेफ़ायदा।
अनर्थकारी–वि० [सं० अनर्थकारिन्] [स्त्री० अनर्थकारिणी] १. उलटा मतलब निकालने-वाला। २. अनिष्टकारी। हानिकारी। ३. उपद्रवी। उत्पाती।
अनल–संज्ञा पुं० [सं०] १. अग्नि। आग। २. तीन की संख्या।
अनलपक्ष–संज्ञा पुं० [सं०] एक चिड़िया। कहते हैं कि यह सदा आकाश में उड़ा करती है और वहीं अंडा देती है।
अनल्प–वि० [सं०] बहुत। अधिक।
अनलमुख–वि० [सं०] जो अग्नि द्वारा पदार्थों को ग्रहण करे।
संज्ञा पुं० १. देवता। २. ब्राह्मण।
अनलस–वि० [सं०] आलस्यरहित। फुर्तीला। चैतन्य।
अनलायक़*–वि० [सं० अन् = नहीं + अ० लायक़]। नालायक। अयोग्य।
अनवच्छिन्न–वि० [सं०] १. अखंडित। अटूट। २. जुड़ा हुआ। संयुक्त।
अनवट–संज्ञा पुं० [सं० अंगुष्ठ] पैर के अँगूठे में पहनने का एक प्रकार का छल्ला।
संज्ञा पुं० [हिं० अयन + ओट] कोल्हू के बैल की आँखों के ढक्कन। ढोका।
अनवद्य–वि० [सं०] निर्दोष। बेऐब।
अनवधान–संज्ञा पुं० [सं०] असावधानी। ग़फ़लत। बेपरवाही।
अनवधि–वि० [सं०] असीम। बेहद।
क्रि० वि० सदैव। हमेशा।
अनवरत–क्रि० वि० [सं०] निरंतर। सतत। लगातार। हमेशा।
अनवसर–संज्ञा पुं० [सं०] १. फ़ुरसत का न होना। २. कुसमय। बेमौक़ा।
अनवस्था–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. स्थिति-हीनता। अव्यवस्था। २. आतुरता। अधीरता। ३. न्याय में एक प्रकार का दोष।
अनवस्थित–वि० [सं०] १. अधीर। चंचल। अशांत। २. निराधार। निरवलंब।
अनवस्थिति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चंचलता। अधीरता। २. आधारहीनता। ३. समाधि प्राप्त हो जाने पर भी चित्त का स्थिर न होना। (योग)
अनवासना–क्रि० वि० [सं० नव + हिं० बसन] नए बर्तन को पहले पहल काम में लाना।
अनवाँसा–संज्ञा पुं० [सं० अण्वंश] कटी हुई फ़सल का एक बड़ा मुट्ठा या पूला। औंसा।
अनवाँसी–संज्ञा स्त्री० [सं० अण्वंश] एक बिस्वे का $\frac{1}{400}$ भाग। बिस्वांसी का बीसवाँ हिस्सा।
अनवाद*–संज्ञा पुं० [सं० अन् = बुरा + वाद = वचन] बुरा वचन। कटु भाषण।
अनशन–संज्ञा पुं० [सं०] उपवास। अन्न-त्याग। निराहार व्रत।
अनश्वर–वि० [सं०] नष्ट न होनेवाला। अटल। स्थिर।
अन-सखरी–संज्ञा स्त्री [सं० अन् = नहीं + हिं० सखरी] पक्की रसोई। घी में पका हुआ भोजन। निखरी।
अनसमझा*–वि० [सं० अन् + हिं० समझना] १. जिसने न समझा हो। नासमझ। २. अज्ञात। बिना समझा हुआ।
अनसहत*–वि० [सं० अन् + हिं० सहना] जो सहा न जाय। असह्य।
अनसुना–वि० [सं० अन् + हिं० सुनना] अश्रुत। बे सुना। बिना सुना हुआ। मुहा०—अनसुनी करना = आनाकानी करना। बहँटिआना।
अनसूया–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पराये गुण में दोष न देखना। नुक्ताचीनी न करना। २. ईर्ष्या का अभाव। ३. अत्रि मुनि की स्त्री।

और (प्रत्य०)] [स्त्री० अनियारी] नुकीला। पैना। धारदार। तीक्ष्ण।

अनिरुद्ध–वि० [सं०] जो रोका हुआ न हो। अबाध। बेरोक।
संज्ञा पु० श्रीकृष्ण के पौत्र और प्रद्युम्न के पुत्र जिनको ऊपा व्याही थी।

अनिर्दिष्ट–वि० [सं०] १. जो बताया न गया हो। अनिर्धारित। २. अनिश्चित। ३. असीम।

अनिर्देश्य–वि० [सं०] जिसके विषय में ठीक बतलाया न जा सके। अनिर्वचनीय।

अनिर्वचनीय–वि० [सं०] जिसका वर्णन न हो सके। अकथनीय।

अनिर्वाच्य–वि० [सं०] १. जो बतलाया न जा सके। २ जो चुनाव के अयोग्य हो।

अनिल–संज्ञा पु० [सं०] वायु। हवा।

अनिलकुमार–संज्ञा पु० [सं०] हनुमान्।

अनिवार्य–वि० [सं०] १. जिसका निवारण न हो। जो हटे नहीं। २. जो अवश्य हो। ३. जिसके बिना काम न चल सके।

अनिश्चित–वि० [सं०] जिसका निश्चय न हुआ हो। अनियत। अनिर्दिष्ट।

अनिष्ट–वि० [सं०] जो इष्ट न हो। अनभिलषित। अवांछित।
संज्ञा पु० अमंगल। अहित। बुराई। खराबी।

अनी–संज्ञा स्त्री० [सं० अणि = अग्रभाग, नोक] १. नोक। सिरा। कोर। २. किसी चीज का अगला सिरा। नोक।
संज्ञा स्त्री० [सं० अनीक = समूह] १ समूह। झुंड। दल। २. सेना। फ़ौज।
संज्ञा स्त्री० [हिं० आन = मर्यादा] ग्लानि।

अनीक–संज्ञा पु० [सं०] १. सेना। फौज। २ समूह। झुंड। ३ युद्ध। लड़ाई।
*वि० [सं० अ + हिं० नीक = अच्छा] जो अच्छा न हो। बुरा। खराब।

अनीठ*–वि० [सं० अनिष्ट] १. जो इष्ट न हो। अप्रिय। २. बुरा। खराब।

अनीति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अन्याय। बेइंसाफी। २ शरारत। ३. अंधेर। अत्याचार।

अनीश–वि० [सं०] [स्त्री० अनीशा] १. बिना मालिक का। २. अनाथ। असमर्थ। ३. सबसे श्रेष्ठ।
संज्ञा पु० १. विष्णु। २. जीव। माया।

अनीश्वरवाद–संज्ञा पु० [सं०] १. ईश्वर के अस्तित्व पर अविश्वास। नास्तिकता। २. मीमांसा।

अनीश्वरवादी–वि० [सं०] १. ईश्वर को न माननेवाला। नास्तिक। २. मीमांसक।

अनीस*–संज्ञा पु० [सं० अनीश] जिसका कोई रक्षक न हो। अनाथ।

अनु–उप० [सं०] एक उपसर्ग। जिस शब्द के पहले यह उपसर्ग लगता है, उसमें इन अर्थों का संयोग करता है—१. पीछे। जैसे—अनुगामी। २ सदृश। जैसे—अनुकूल। अनुरूप। ३. साथ। जैसे—अनुपान। ४. प्रत्येक। जैसे—अनुक्षण। ५. बार-बार। जैसे—अनुशीलन।
*अव्य० हाँ। ठीक है।

अनुकंपा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दया। कृपा। अनुग्रह। २. सहानुभूति। हमदर्दी।

अनुकंपित–वि० [सं०] जिस पर कृपा की गई हो। अनुगृहीत।

अनुकरण–संज्ञा पु० [सं०] [वि० अनुकरणीय, अनुकृत] १. देखादेखी कार्य। नकल। २. वह जो पीछे उत्पन्न हो या आवे।

अनुकर्त्ता–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० अनुकर्त्री] १. अनुकरण या नकल करनेवाला। २. आज्ञाकारी।

अनुकार–संज्ञा पु० दे० "अनुकरण"।

अनुकारी–वि० [सं० अनुकारिन्] [स्त्री० अनुकारिणी] १. अनुकरणकारी। २ नकल करनेवाला। ३. आज्ञाकारी।

अनुकूल–वि० [सं०] १. मुआफ़िक़। २ पक्ष में रहनेवाला। सहायक। ३. प्रसन्न।
संज्ञा पु० १. वह नायक जो एक ही विवाहिता स्त्री में अनुरक्त हो। २ एक काव्यालंकार जिसमें प्रतिकूल से अनुकूल वस्तु की सिद्धि दिखाई जाती है।

अनुकूलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अप्रतिकूलता। अविरुद्धता। २. पक्षपात। सहायता। ३. प्रसन्नता।
अनुकूलना*—क्रि० सं० [सं० अनुकूलन] १. मुआफ़िक होना। २. हितकर होना। ३. प्रसन्न होना।
अनुकृत—वि० [सं०] अनुकरण या नक़ल किया हुआ।
अनुकृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. देखादेखी कार्य। नक़ल। २. वह काव्यालंकार जिसमें एक वस्तु का कारणांतर से दूसरी वस्तु के अनुसार हो जाना वर्णन किया जाय।
अनुक्त—वि० [सं०] [स्त्री० अनुक्ता] अकथित। बिना कहा हुआ।
अनुक्रम—संज्ञा पुं० [सं०] क्रम। सिलसिला।
अनुक्रमणिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. क्रम। सिलसिला। २. सूची। फ़िहरिस्त।
अनुक्रिया—संज्ञा स्त्री० दे० "अनुक्रम"।
अनुक्षण—क्रि० वि० [सं०] १. प्रतिक्षण। २. लगातार। निरंतर।
अनुग, अनुगत—वि० [सं०] [संज्ञा अनुगति] १. अनुगामी। अनुयायी। २. अनुकूल। मुआफ़िक।
संज्ञा पुं० सेवक। नौकर।
अनुगति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अनुगमन। अनुसरण। २. अनुकरण। नक़ल। ३. मरण।
अनुगमन—संज्ञा पुं० [सं०] १. पीछे चलना। अनुसरण। २. समान आचरण। ३. विधवा का मृत पति के साथ जल मरना।
अनुगामी—वि० [सं०] [स्त्री० अनुगामिनी] १ पीछे चलनेवाला २. समान आचरण करनेवाला। ३. आज्ञाकारी।
अनुगुण—संज्ञा पुं० [सं] वह काव्यालंकार जिसमें किसी वस्तु के पूर्व गुण का दूसरी वस्तु के संसर्ग से बढ़ना दिखाया जाय।
अनुगृहीत—वि० [सं०] १. जिस पर अनुग्रह किया गया हो। उपकृत। २. कृतज्ञ।
अनुग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अनुगृहीत, अनुग्रही, अनुग्राहक] १. कृपा। दया। २. अनिष्ट-निवारक। ३. सरकारी रिआयत।
अनुग्राहक—वि० [सं०] [स्त्री० अनुग्राहिका] अनुग्रह करनेवाला। कृपालु। उपकारी।
अनुग्राही—वि० दे० "अनुग्राहक"।
अनुचर—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अनुचरी] १. दास। नौकर। २. सहचारी। साथी।
अनुचित—वि० [सं०] अयुक्त। नामुनासिब। बुरा। खराब।
अनुज—वि० [सं०] जो पीछे उत्पन्न हुआ हो। संज्ञा पुं० [स्त्री० अनुजा] छोटा भाई।
अनुज्ञा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आज्ञा। हुक्म। इजाज़त। २. एक काव्यालंकार जिसमें दूषित वस्तु में कोई गुण देखकर उसके पाने की इच्छा का वर्णन किया जाता है।
अनुताप—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अनुतप्त] १. तपन। दाह। जलन। २. दुःख। रंज। ३. पछतावा। अफ़सोस।
अनुत्तर—वि० [सं०] निरुत्तर। क़ायल।
अनुदात्त—वि० [सं०] १. छोटा। तुच्छ। २. नीचा (स्वर)। लघु (उच्चारण)। ३. स्वर के तीन भेदों में से एक।
अनुदिन—क्रि० वि० [सं०] नित्यप्रति। प्रतिदिन। रोजमर्रा।
अनुधावन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अनुधावक, अनुधावित] १. पीछे चलना। अनुसरण। २. अनुकरण। नकल। ३. अनुसंधान।
अनुनय—संज्ञा पुं० [सं०] १. विनय। विनती। प्रार्थना। २. मनाना।
अनुनासिक—वि० [सं०] जो (अक्षर) मुँह और नाक से बोला जाय। जैसे, ङ, ञ, ण।
अनुपम—वि० [सं०] [संज्ञा अनुपमता] उपमा-रहित। बेजोड़।
अनुपमेय—वि० दे० "अनुपम"।
अनुपयुक्त—वि० [सं०] अयोग्य। बेठीक।
अनुपयुक्तता—संज्ञा स्त्री० [सं०] अयोग्यता।
अनुपयोगिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] उपयोगिता का अभाव। निरर्थकता।
अनुपयोगी—वि० [सं०] बेकाम। व्यर्थ का।

अनुपस्थित–वि० [स०] जो सामने मौजूद न हो। अविद्यमान। गैरहाज़िर।
अनुपस्थिति–सज्ञा स्त्री० [स०] अविद्यमानता। गैरमौजूदगी।
अनुपात–सज्ञा पु० [स०] गणित की त्रैराशिक क्रिया।
अनुपातक–सज्ञा पु० [स०] ब्रह्महत्या के समान पाप। जैसे—चोरी, झूठ बोलना।
अनुपान–सज्ञा पु० [स०] वह वस्तु जो औषध के साथ या ऊपर से खाई जाय।
अनुप्रास–सज्ञा पु० [स०] वह शब्दालकार जिसमे किसी पद मे एक ही अक्षर बार-बार आता है। वर्णवृत्ति। वर्णमैत्री।
अनुबध–सज्ञा पु० [स०] १ बधन। लगाव। २ आगा-पीछा। ३ आरभ।
अनुभव–सज्ञा पु० [स०] [वि० अनुभवी] १ वह ज्ञान जो साक्षात् करने से प्राप्त हो। २ परीक्षा द्वारा प्राप्त ज्ञान। तजरबा।
अनुभवना*–क्रि० स० [स० अनुभव] अनुभव करना।
अनुभवी–वि० [स० अनुभविन्] अनुभव रखनेवाला। तजरबेकार। जानकार।
अनुभाव–सज्ञा पु० [स०] १ महिमा। बडाई। २ काव्य मे रस के चार योजको मे से एक। चित्त के भाव को प्रकाश करने वाली कटाक्ष रोमाच आदि चेष्टाएँ।
अनुभावी–वि० [स० अनुभाविन्] [स्त्री० अनुभाविनी] १ जिसे अनुभव या संवेदना हो। २ वह साक्षी जिसने सब बातें खुद देखी-सुनी हो। चश्मदीद गवाह।
अनुभूत–वि० [स०] १ जिसका अनुभव या साक्षात् ज्ञान हुआ हो। २ परीक्षित। तजरबा किया हुआ।
अनुभूति–सज्ञा स्त्री० [स०] १ अनुभव। २ परिज्ञान। बोध।
अनुमति–सज्ञा स्त्री० [स०] १ आज्ञा। हुक्म। २ सम्मति। इजाजत।
अनुमान–सज्ञा पु० [स०] [वि० अनुमित] १ अटकल। अदाज़ा। कयास। २ न्याय मे प्रमाण के चार भेदो मे से एक जिसमे प्रत्यक्ष साधन के द्वारा अप्रत्यक्ष साध्य की भावना हो।
अनुमानना*–क्रि० स० [स० अनुमान] अनुमान करना। अदाज़ा करना।
अनुमित–वि० [स०] अनुमान किया हुआ।
अनुमिति–सज्ञा स्त्री० [स०] अनुमान।
अनुमेय–वि० [स०] अनुमान के योग्य।
अनुमोदन–सज्ञा पु० [स०] १ प्रसन्नता का प्रकाशन। खुश होना। २ समर्थन।
अनुयायी–वि० [स० अनुयायिन्] [स्त्री० अनुयायिनी] १ अनुगामी। पीछे चलने-वाला। २ अनुकरण करनेवाला। सज्ञा पु० अनुचर। सेवक। दास।
अनुरजन–सज्ञा पु० [स०] १ अनुराग। प्रीति। २ दिलबहलाव।
अनुरक्त–वि० [स०] १ अनुरागयुक्त। आसक्त। २ लीन।
अनुराग–सज्ञा पु० [स०] प्रीति। प्रेम।
अनुरागना*–क्रि० स० [स० अनुराग] प्रीति करना। प्रेम करना।
अनुरागी–वि० [स० अनुरागिन्] [स्त्री० अनुरागिनी] अनुराग रखनेवाला। प्रेमी।
अनुराध–सज्ञा पु० [स०] विनती। विनय।
अनुराधना*–क्रि० स० [स० अनुराध] विनय करना। मनाना।
अनुराधा–सज्ञा स्त्री० [स०] २७ नक्षत्रो मे १७वाँ नक्षत्र।
अनुरूप–वि० [स०] १ तुल्य रूप का। सदृश। समान। २ योग्य। उपयुक्त।
अनुरूपता–सज्ञा स्त्री० [स०] १ समानता। सादृश्य। २ अनुकूलता। उपयुक्तता।
अनुरोध–सज्ञापु० [स०] १ रुकावट। बाधा। २ प्रेरणा। उत्तेजना। ३ विनयपूर्वक किसी बात के लिये हठ। आग्रह। दबाव।
अनुलेपन–सज्ञा पु० [स०] १ किसी तरल वस्तु की तह चढाना। लेपन। २ उबटन करना। बटना। लगाना। ३ लीपना।
अनुलोम–सज्ञा पु० [स०] १ ऊँचे से नीचे की ओर आने का क्रम। उतार का सिल-सिला। २ सगीत मे सुरो का उतार।

अवरोही।

अनुलोम विवाह—संज्ञा पुं० [सं०] उच्च वर्ण के पुरुष का अपने से किसी नीच वर्ण की स्त्री के साथ विवाह।

अनुवर्तन—संज्ञा पुं० [सं०] १. अनुकरण। अनुगमन। २. अनुकरण। समान आचरण। ३. किसी नियम का कई स्थानों पर बार बार लगाना।

अनुवर्त्ती—वि० [सं० अनुवर्त्तिन्] [स्त्री० अनुवर्त्तिनी] अनुसरण करनेवाला। अनुयायी। अनुगामी।

अनुवाक्—संज्ञा पुं० [सं०] १. ग्रंथविभाग। अध्याय या प्रकरण का एक भाग। २. वेद के अध्याय का एक अंश।

अनुवाद—संज्ञा पुं० [सं०] १. पुनरुक्ति। फिर कहना। दोहराना। २. भाषांतर। उल्था। तर्जुमा। ३. वाक्य का वह भेद जिसमें कही हुई बात का फिर फिर कथन हो। (न्याय)

अनुवादक—संज्ञा पुं० [सं०] अनुवाद या भाषांतर करनेवाला। उल्था करनेवाला।

अनुवादित—वि० [सं० अनुवाद] अनुवाद किया हुआ।

अनुवृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी पद के पहले अंश से कुछ वाक्य उसके पिछले अंश मे अर्थ को स्पष्ट करने के लिए लाना।

अनुशयाना—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह परकीया नायिका जो अपने प्रिय के मिलने के स्थान के नष्ट हो जाने से दुःखी हो।

अनुशासक—संज्ञा पु० [सं०] १. आज्ञा या आदेश देनेवाला। हुक्म देनेवाला। २. उपदेष्टा। शिक्षक। ३. देश या राज्य का प्रबंध करनेवाला।

अनुशासन—संज्ञा पु० [सं०] १. आदेश। आज्ञा। हुक्म। २. उपदेश। शिक्षा। ३. व्याख्यान। विवरण।

अनुशीलन—संज्ञा पुं० [सं० १. चिंतन। मनन। विचार। २. पुन. पुन. अभ्यास।

अनुषंग—संज्ञा पु० [सं०] [वि० आनुषंगिक] १. करुणा। दया। २. संबंध। लगाव।

३. प्रसंग मे एक वाक्य के आगे और वाक्य लगा लेना।

अनुष्टुप्—संज्ञा पुं० [सं०] ३२ अक्षरों का एक वर्ण छंद।

अनुष्ठान—संज्ञा पुं० [सं०] १. कार्य्य का आरंभ। २. नियमपूर्वक कोई काम करना। ३. शास्त्रविहित कर्म करना। ४. फल के निमित्त किसी देवता का आराधन। प्रयोग। पुरश्चरण।

अनुसंधान—संज्ञा पुं० [सं०] १. पीछे लगना। २. खोज। ढूँढ़। जाँच-पड़ताल। तहकीकात। ३. चेष्टा। कोशिश।

अनुसंधानना*—क्रि० स० [सं० अनुसंधान] १. खोजना। ढूँढना। २. सोचना।

अनुसरण—संज्ञा पु० [सं०] १. पीछे या साथ चलना। २. अनुकरण। नक़ल। ३. अनुकूल आचरण।

अनुसरना*—क्रि० स० [सं० अनुसरण] १. पीछे या साथ साथ चलना। २. अनुकरण करना। नकल करना।

अनुसार—वि० [सं०] अनुकूल। सदृश। समान। मुआफिक।

अनुसारना*—क्रि० स० [सं० अनुसरण] १. अनुसरण करना। २. आचरण करना। ३. कोई कार्य्य करना।

अनुसारी*—वि० [सं० अनुसार] अनुसरण या अनुकरण करनेवाला।

अनुसाल*—संज्ञा पु० [सं० अनु + हिं० सालना] वेदना। पीड़ा।

अनुस्वार—संज्ञा पु० [सं०] १. स्वर के पीछे उच्चारण होनेवाला एक अनुनासिक वर्ण, जिसका चिह्न (ं) है। निगृहीत। २. स्वर के ऊपर की बिंदी।

अनुहरत*—वि० [हिं० अनुहरना का कृदंत रूप] १. अनुसार। अनुरूप। समान। २. उपयुक्त। योग्य। अनुकूल।

अनुहरना*—क्रि० स० [सं० अनुहरण] १. अनुकरण या नकल करना। २. समान होना।

अनुहारिया*‡—दे० "अनुहार"। संज्ञा स्त्री० आकृति। मुस्तानी।

अनुहार–वि० [सं०] १. सादृश । तुल्य। समान । २ अनुसार । अनुकूल।
संज्ञा स्त्री० १ भेद। प्रकार। २ मुखाकृति। ३ सादृश्य।
अनुहारना*–क्रि० स० [सं० अनुहारण] तुल्य करना। सदृश करना। समान करना।
अनुहारी–वि० [सं० अनुहारिन्] [स्त्री० अनुहारिणी] अनुकरण या नकल करनेवाला।
अनूठा–वि० [सं० अनुत्थ] [स्त्री० अनूठी] १ अनोखा। विचित्र। विलक्षण। अद्भुत। २ अच्छा। बढ़िया।
अनूठापन–संज्ञा पु० [हिं० अनूठा + पन (प्रत्य०)] १ विचित्रता। विलक्षणता। २ सुंदरता। अच्छापन।
अनूढ़ा–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह बिना ब्याही स्त्री जो किसी पुरुष से प्रेम रखती हो।
अनूतर*–वि० दे० "अनुत्तर"।
अनूदित–वि० [सं०] १ कहा हुआ। किया हुआ। २ तर्जुमा किया हुआ। भाषांतरित। उल्था किया हुआ।
अनूप–संज्ञा पु० [सं०] जलप्राय देश। वह स्थान जहाँ जल अधिक हो।
वि० [सं० अनुपम] १ जिसकी उपमा न हो। बेजोड़। २ सुंदर। अच्छा।
अनृत–संज्ञा पु० [सं०] १ मिथ्या। असत्य। झूठ। २ अन्यथा। विपरीत।
अनेक–वि० [सं०] एक से अधिक। बहुत। ज्यादा।
अनेकार्थ–वि० [सं०] जिसके बहुत से अर्थ हों।
अनेग–वि० दे० "अनेक"।*
अनेरा–वि० [सं० अनृत] [स्त्री० अनेरी] १ झूठ। व्यर्थ। निष्प्रयोजन। २ झूठा। ३ अन्यायी। दुष्ट। ४ निकम्मा।
क्रि० वि० व्यर्थ। फजूल।
अनैक्य–संज्ञा पु० [सं०] एका न होना। मतभेद। फूट।
अनैठ†–संज्ञा पु० [सं० अन् + पण्यस्थ] वह दिन जिसमें बाजार बंद रहे। 'पैंठ' का उल्टा।
अनैस*†–संज्ञा पु० [सं० अनिष्ट] बुराई।
वि० बुरा। खराब।
अनैसना*–क्रि० अ० [हिं० अनैस] बुरा मानना। रूठना।
अनैसा*–वि० [हिं० अनैस] [स्त्री० अनैसी] अप्रिय। बुरा। खराब।
अनैसे*–क्रि० वि० [हिं० अनैस] बुरे भाव से।
अनैहा*–संज्ञा पु० [हिं० अनैस] उत्पात।
अनोखा–वि० [सं० अन् + ईक्ष] [स्त्री० अनोखी] १ अनूठा। निराला। विलक्षण। विचित्र। २ नया। ३ सुंदर। खूबसूरत।
अनोखापन–संज्ञा पु० [हिं० अनोखा + पन (प्रत्य०)] १ अनूठापन। निरालापन। विलक्षणता। विचित्रता। २ नयापन। ३ सुंदरता। खूबसूरती।
अनौचित्य–संज्ञा पु० [सं०] उचित बात का अभाव। अनुपयुक्तता।
अनौट*–संज्ञा पु० दे० "अनवट"।
अन्न–संज्ञा पु० [सं०] १ खाद्य पदार्थ। २ अनाज। धान्य। दाना। गल्ला। ३ पकाया हुआ अन्न। भात। ४ सूर्य। ५ पृथ्वी। ६ प्राण। जल।
*वि० [सं० अन्य] दूसरा। विरुद्ध।
अन्नकूट–संज्ञा पु० [सं०] एक उत्सव जो *कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा से पूर्णिमा पर्यंत* किसी दिन होता है। इसमें अनेक प्रकार के भोजनों का भोग भगवान् को लगाते हैं।
अन्नक्षेत्र–संज्ञा पु० दे० 'अन्नसत्र'।
अन्नजल–संज्ञा पु० [सं०] १ दाना पानी। खाना-पानी। खान पान।
महा०–अन्न-जल त्यागना या छोड़ना= उपवास करना।
२ आबदाना। जीविका।
अन्नदाता–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० अन्नदात्री] १ अन्नदान करनेवाला। २ पोषक। प्रतिपालक। ३ मालिक। स्वामी।
अन्नपूर्णा–संज्ञा स्त्री० [सं०] अन्न की अधिष्ठात्री देवी। दुर्गा का एक रूप।
अन्नप्राशन–संज्ञा पु० [सं०] बच्चों को पहले पहल अन्न चटाने का संस्कार।

अन्नमय कोश–संज्ञा पुं० [सं०] पंच कोशों में से प्रथम। अन्न से बना हुआ त्वचा से लेकर वीर्य्य तक का समुदाय। स्थूल शरीर। (वेदांत)

अन्नसत्र–संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ भूखों को मुफ्त भोजन दिया जाता है।

अन्ना–संज्ञा स्त्री० [सं० अंब] दाई। धाय।

अन्य–वि० [सं०] दूसरा। और कोई। भिन्न। गैर।

अन्यतः–क्रि० वि० [सं०] १. किसी और से। २. किसी और स्थान से।

अन्यत्र–वि० [सं०] और जगह। दूसरी जगह।

अन्यथा–वि० [सं०] १. विपरीत। उलटा। विरुद्ध। २. असत्य। झूठ।
अव्य० नहीं तो।

अन्यथासिद्धि–संज्ञा स्त्री० [सं०] न्याय में एक दोष जिसमें यथार्थ कारण दिखाकर किसी बात की सिद्धि की जाय।

अन्यपुरुष–संज्ञा पुं० [सं०] १. दूसरा आदमी। गैर। २. व्याकरण में वह पुरुष जिसके संबंध में कुछ कहा जाय। जैसे, 'यह', 'वह'।

अन्यमनस्क–वि० [सं०] जिसका जी न लगता हो। उदास। चिंतित। अनमना।

अन्यसंभोगदुःखिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जो अन्य स्त्री में अपने प्रिय के संभोग-चिह्न देखकर दुःखित हो।

अन्यसुरतिदुःखिता–संज्ञा स्त्री० दे० "अन्यसंभोगदुःखिता"।

अन्यापदेश–संज्ञा पुं० दे० "अन्योक्ति"

अन्याय–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अन्यायी] १. न्याय-विरुद्ध आचरण। अनीति। बे-इंसाफ़ी। २. अंधेर। ३. जुल्म।

अन्यायी–वि० [सं० अन्यायिन्] अन्याय करनेवाला। जालिम।

अन्यारा*–वि० [सं० अ+हिं० न्यारा] १. जो पृथक् न हो। जो जुदा न हो। २. अनोखा। निराला। ३. खूब। बहुत।

अन्योक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह कथन जिसका अर्थ साधर्म्य के विचार से कथित वस्तु के अतिरिक्त अन्य वस्तुओं पर घटाया जाय। अन्यापदेश।

अन्योदर्य–वि० [सं०] दूसरे के पेट से पैदा। 'सहोदर' का उलटा।

अन्योन्य–सर्व० [सं०] परस्पर। आपस में।
संज्ञा पुं० वह काव्यालंकार जिसमें दो वस्तुओं की किसी क्रिया या गुण का एक दूसरे के कारण उत्पन्न होना कहा जाय।

अन्योन्याभाव–संज्ञा पुं० [सं०] किसी एक वस्तु का दूसरी वस्तु न होना।

अन्योन्याश्रय–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अन्योन्याश्रित] १. परस्पर का सहारा। एक दूसरे की अपेक्षा। २. न्याय में, एक वस्तु के ज्ञान के लिये दूसरी वस्तु के ज्ञान की अपेक्षा। सापेक्ष ज्ञान।

अन्वय–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अन्वयी] १. परस्पर संबंध। तारतम्य। २. संयोग। मेल। ३. पद्यों के शब्दों को वाक्यरचना के नियमानुसार यथास्थान रखने का कार्य्य। ४. अवकाश। खाली स्थान। ५. कार्य्य-कारण का संबंध। ६. वंश। खानदान। ७. एक बात की सिद्धि से दूसरी बात की सिद्धि का संबंध।

अन्वित–वि० [सं०] युक्त। शामिल।

अन्वीक्षण–संज्ञा पुं० [सं०] १. गौर। विचार। २. खोज। तलाश।

अन्वीक्षा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ध्यानपूर्वक देखना। २. खोज। तलाश।

अन्वेषक–वि० [सं०] [स्त्री० अन्वेषिका] खोजनेवाला। तलाश करनेवाला।

अन्वेषण–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अन्वेषणा] अनुसंधान। खोज। ढूँढ़। तलाश।

अन्वेषी–वि० [सं० अन्वेषिन्] [स्त्री० अन्वेषिणी] खोजनेवाला। तलाश करनेवाला।

अन्हवाना*–क्रि० स० [हिं० नहाना] स्नान कराना। नहलाना।

अन्हाना*†–क्रि० अ० दे० "नहाना"।

अप्–संज्ञा पुं० [सं०] जल। पानी।

अपंग–वि० [सं० अपांग] १. अंगहीन।

२ लोंडा। ऊल। ३ अशक्त। बकरा। भग। गड़बड़। उलट-पलट।

अप–उप० [सं०] उल्टा। विरुद्ध। बुरा। अधिक। यह उपसर्ग जिस शब्द के पहले आता है उसके अर्थ में निम्नलिखित विशेषता उत्पन्न करता है। १ निषेध। जैसे, अपमान। २ अपकृष्ट (दूषण)। जैसे, अपकर्म। ३ विकृति। जैसे, अपांग। ४ विशेषता। जैसे, अपहरण।

सर्व० आप का संक्षिप्त रूप। (यौगिक में) जैसे—अपस्वार्थी। अपकाजी।

अपकर्त्ता–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० अपकर्त्री] १ हानि पहुँचानेवाला। २ पापी।

अपकर्म–संज्ञा पु० [सं०] बुरा काम। कुकर्म। पाप।

अपकर्ष–संज्ञा पु० [सं०] १ नीचे को खींचना। गिराना। २ घटाव। उतार। ३ बेकदरी। निरादर। अपमान।

अपकाजी–वि० [हिं० आप+काज] स्वार्थी। मतलबी।

अपकार–संज्ञा पु० [सं०] १ बुराई। अनुपकार। हानि। नुकसान। अहित। २ अनादर। अपमान।

अपकारक–वि० [सं०] १ अपकार करने वाला। हानिकारी। २ विरोधी। द्वेषी।

अपकारी–वि० [सं० अपकारिन्] [स्त्री० अपकारिणी] १ हानिकारक। बुराई करने-वाला। २ विरोधी। द्वेषी।

अपकारोचार*–वि० [सं० अपकार+आचार] हानि पहुँचानेवाला। विघ्नकारी।

अपकीरति*–संज्ञा स्त्री० दे० "अपकीर्त्ति"।

अपकीर्त्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] अपयश। अयश। बदनामी। निंदा।

अपकृत–वि० [सं०] १ जिसका अपकार किया गया हो। २ अपमानित ३ जिसका विरोध किया गया हो। 'उपकृत' का उल्टा।

अपकृति–संज्ञा स्त्री० दे० "अपकार"।

अपकृष्ट–वि० [सं०] [संज्ञा अपकृष्टता] १ गिरा हुआ। पतित। भ्रष्ट। २ अधम। नीच। ३ बुरा खराब।

अपक्रम–संज्ञा पु० [सं०] व्यतिक्रम। क्रम-

अपक्व–वि० [सं०] [सं० अपक्वता] १. बिना पका हुआ। कच्चा। २ अनभ्यस्त। असिद्ध। जैसे, अपक्व बुद्धि।

अपघात–संज्ञा पु० [सं०] [वि० अपघातक, अपघाती] १ हत्या। हिंसा। २ विश्वास-घात। धोखा।

संज्ञा पु० [हिं० अप=अपना+घात=मार] आत्महत्या। आत्मघात।

अपच–संज्ञा पु० [सं०] अजीर्ण।

अपचार–संज्ञा पु० [सं०] [वि० अपचारी] १ अनुचित बर्त्ताव। बुरा आचरण। २ अनिष्ट। बुराई। ३ निंदा, अपयश। ४ कुपथ्य। स्वास्थ्य-नाशक व्यवहार।

अपचाल*–संज्ञा पु० [हिं० अप+चाल] कुचाल। खोटाई। नटखटी।

अपची–संज्ञा स्त्री० [सं०] गंडमाला रोग का एक भेद।

अपछरा*–संज्ञा स्त्री० दे० "अप्सरा"।

अपजय–संज्ञा स्त्री० [सं०] पराजय। हार।

अपजस†*–संज्ञा पु० दे० "अपयश"।

अपटन†–संज्ञा पु० दे० "उबटन"।

अपटु–वि० [सं०] [संज्ञा अपटुता] १ जो पटु न हो। २ सुस्त। आलसी।

अपठ–वि० [सं०] १ अपढ़। जो पढ़ा न हो। २ मूर्ख।

अपठ्यमान*–वि० [सं० अपठ्यमान] १ जो न पढ़ा जाय। २ न पढ़ने योग्य।

अपडर*–संज्ञा पु० [सं० अप+डर] भय। शंका।

अपडरना*–क्रि० अ० [हिं० अपडर] भयभीत होना। डरना।

अपडाना*–क्रि० अ० [सं० अपर] [संज्ञा अपडाव] १ खींचा-तानी करना। २ रार या झगड़ा करना।

अपडाव*–संज्ञा पु० [सं० अपर] [क्रि० अपडाना] झगड़ा। रार। तकरार।

अपढ़–वि० [सं० अपठ] बिना पढ़ा। मूर्ख। अनपढ़।

अपत*–वि० [सं० अ=नहीं+पत्र] १ पत्र-

हीन। बिना पत्तों का। २. आच्छादन-रहित। नग्न।
वि० [सं० अपात्र] अधम । नीच।
वि० [अ + पत = लज्जा, प्रतिष्ठा] निर्लज्ज।
अपतई*–संज्ञा पुं० [हिं० अपत] १. निर्लज्जता। बेहयाई । २. ढिठाई । उत्पात। ३. चंचलता।
अपताना*–संज्ञा पुं० [हिं० अप = अपना + तानना] जंजाल । प्रपंच।
अपति*–वि० स्त्री० [सं० अ + पति] बिना पति की । विधवा।
वि० [सं० अ + पति = गति] पापी। दुष्ट।
संज्ञा स्त्री० १. दुर्गति । दुर्दशा । २. अनादर। अपमान।
अपत्य–संज्ञा पुं० [सं०] संतान । औलाद।
अपथ–संज्ञा पुं० [सं०] १. बीहड़ राह। विकट मार्ग। २. कुपथ । कुमार्ग।
अपथ्य–वि० [सं०] १. जो पथ्य न हो। स्वास्थ्य-नाशक । २. अहितकर।
संज्ञा पुं० रोग बढ़ानेवाला आहार-विहार।
अपद–संज्ञा पुं० [सं०] बिना पैर के रेंगनेवाले जंतु; जैसे, साँप, केंचुआ आदि।
अपदेखा–वि० [हिं० आप + देखना] १. अपने को बड़ा माननेवाला। आत्मश्लाघी। घमंडी। २. स्वार्थी।
अपद्रव्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. निकृष्ट वस्तु। बुरी चीज। २. बुरा धन।
अपन*–सर्व० दे० "अपना"। "हम"।
अपनपौ*–संज्ञा पुं० [हिं० अपना + पौ (प्रत्य०)] १. अपनायत। आत्मीयता। संबंध। २. आत्मभाव। आत्मस्वरूप। ३. संज्ञा। सुध। होश। ज्ञान। ४. अहंकार। गर्व। ५. मर्यादा।
अपनयन–संज्ञा पुं० [सं०][वि० अपनीत] १. दूर करना। हटाना। २. एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना। ३. गणित में समीकरण में किसी परिमाण को एक पक्ष से दूसरे पक्ष में ले जाना। ४. खंडन।
अपना–सर्व० [सं० आत्मनः][क्रि० अपनाना] निज का। (तीनों पुरुषों में) संज्ञा पुं० आत्मीय। स्वजन।
मुहा०–अपना-सा करना = अपने सामर्थ्य या विचार के अनुसार करना। भर सक करना। अपना-सा मुह लेकर रह जाना = किसी बात में अकृतकार्य्य होने पर लज्जित होना। अपनी अपनी पड़ना = अपनी अपनी चिंता में व्यग्र होना। अपने तक रखना = किसी से न कहना।
यौ०–अपने आप = स्वयं। स्वतः। खुद।
अपनाना–क्रि० स० [हिं० अपना] १. अपने अनुकूल करना। अपनी ओर करना। २. अपना बनाना। अपनी शरण में लेना। ३. अपने अधिकार में करना।
अपनापन–संज्ञा पुं० [हिं० अपना] १. अपनायत। आत्मीयता। २. आत्माभिमान।
अपनायत–संज्ञा स्त्री० [हिं० अपना] आत्मीयता। अपनापन । अपने से संबंध।
अपभय–संज्ञा पुं० [सं०] १. निर्भयता। २. व्यर्थ भय। ३. डर। भय।
वि० [सं०] निर्भय। जो न डरे।
अपभ्रंश–संज्ञा पुं० [सं०][वि० अपभ्रंशित] १. पतन। गिराव। २. बिगाड़। विकृति। ३. बिगड़ा हुआ शब्द।
वि० विकृत। बिगड़ा हुआ।
अपमान–संज्ञा पुं० [सं०] १. अनादर। अवज्ञा। २. तिरस्कार। बेइज्जती।
अपमानना*–क्रि० स० [सं० अपमान] अपमान करना। तिरस्कार करना।
अपमानित–वि० [सं०] १. निंदित। २. बेइज्जत।
अपमानी–वि० [सं० अपमानिन्] [स्त्री० अपमानिनी] निरादर करनेवाला। तिरस्कार करनेवाला।
अपमृत्यु–संज्ञा स्त्री० [सं०] कुमृत्यु। कुसमय मृत्यु। जैसे–साँप आदि के काटने से मरना।
अपयश–संज्ञा पुं० [सं०] १. अपकीर्ति। बदनामी। बुराई। २. कलंक। लांछन।
अपरं च–अव्य० [सं०] १. और भी। २. फिर भी। पुनः।
अपरंपार*–वि० [सं० अपर + हिं० पार]

जिसका पारावार न हो। असीम। बेहद।

अपर-वि० [सं०] [स्त्री० अपरा] १ पहला। पूर्व का। २ पिछला। ३ अन्य। दूसरा।

अपरछन*-वि० [सं० अप्रच्छन्न या अपरिच्छन्न] १ आवरण-रहित। जो ढका न हो। २ [सं० प्रच्छन्न] आवृत। छिपा। गुप्त।

अपरता-संज्ञा स्त्री० [सं०] परायापन। संज्ञा स्त्री० [सं० अ=नहीं+परता=परायापन] भेद-भाव शून्यता। अपनापा। *†वि० [हिं० अप+रत] स्वार्थी।

अपरती*-संज्ञा स्त्री० [हिं० अप+सं० रति] १. स्वार्थ। २ बेईमानी।

अपरत्व-संज्ञा पुं० [सं०] १ पिछलापन। अर्वाचीनता। २ परायापन। बेगानगी।

अपरना*-संज्ञा स्त्री० दे० "अपर्णा"।

अपरलोक-संज्ञा पुं० [सं०] परलोक। स्वर्ग।

अपरस-वि० [सं० अ+स्पर्श] १ जिसे किसी ने छूआ न हो। २ न छूने योग्य। संज्ञा पुं० एक चर्मरोग जो हथेली और तलवे में होता है।

अपरांत-संज्ञा पुं० [सं०] पश्चिम का देश।

अपरा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अध्यात्म या ब्रह्मविद्या के अतिरिक्त अन्य विद्या। लौकिक विद्या। पदार्थविद्या। २ पश्चिम दिशा।

अपराजिता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विष्णुक्रांता लता। कौआठोंठी। कोयल। २ दुर्गा। ३ अयोध्या का एक नाम। ४ चौदह अक्षरों के एक वृत्त का नाम।

अपराध-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अपराधी] १ दोष। पाप। कसूर। जुर्म। २ भूल। चूक।

अपराधी-वि० पुं० [सं० अपराधिन्] [स्त्री० अपराधिनी] दोषी। पापी। मुलजिम।

अपराह्न-संज्ञा पुं० [सं०] दोपहर के पीछे का काल। तीसरा पहर।

अपरिग्रह-संज्ञा पुं० [सं०] १ दान का न लेना। दान-त्याग। २ आवश्यक धन से अधिक का त्याग। विराग। ३ योगशास्त्र में पाँचवाँ यम। सगत्याग।

अपरिचय-संज्ञा पुं० [सं०] परिचय का अभाव।

अपरिचित-वि० [सं०] १ जिससे परिचय न हो। जो जानता न हो। अनजान। २. जो जाना-बूझा न हो। अज्ञात।

अपरिच्छिन्न-वि० [सं०] १ जिसका विभाग न हो सके। अभेद्य। २ मिला हुआ। ३. असीम। सीमा-रहित।

अपरिणामी-वि० [सं० अपरिणामिन्] [स्त्री० अपरिणामिनी] १ परिणाम-रहित। विकार-शून्य। जिसकी दशा या रूप में परिवर्तन न हो। २ निष्फल। व्यर्थ।

अपरिपक्व-वि० [सं०] १ जो पक्का न हो। कच्चा। २ अधकच्चा। अधकचरा।

अपरिमित-वि० [सं०] १ असीम। बेहद। २ असंख्य। अगणित।

अपरिमेय-वि० [सं०] १ बेअंदाज। अकूत। २ असंख्य। अनगिनत।

अपरिहार-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अपरिहारित, अपरिहार्य्य] १ अवर्जन। अनिवारण। २ दूर करने के उपाय का अभाव।

अपरिहार्य्य-वि० [सं०] १ जो किसी उपाय से दूर न किया जा सके। अनिवार्य्य। २ अत्याज्य। न छोड़ने योग्य। ३ आदरणीय। ४ न छीनने योग्य। ५ जिसके बिना काम न चले।

अपरूप-वि० [सं०] १ बदशक्ल। भद्दा। बेडौल। २ अद्भुत। अपूर्व।

अपर्णा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पार्वती। २ दुर्गा।

अपलक्षण-संज्ञा पुं० [सं०] कुलक्षण। बुरा चिह्न।

अपवर्ग-संज्ञा पुं० [सं०] १ मोक्ष। निर्वाण। मुक्ति। २ त्याग। ३ दान।

अपवश*-वि० [हिं० अप+सं० वश] अपने अधीन। अपने वश का। 'परवश' का उलटा।

अपवाद-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अपवादित] १ विरोध। प्रतिवाद। खंडन। २ निंदा। अपकीर्ति। ३ दोष। पाप। ४ वह नियम जो व्यापक नियम से विरुद्ध हो।

उत्सर्ग का विरोधी। मुस्तसना। ५. सम्मति। राय। ६. आदेश। आज्ञा।

अपवादक, अपवादी–वि० [सं०] १. निंदक। २. विरोधी। बाधक।

अपवारण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अपवारित] १. व्यवधान। रोक। आड़। २. हटाने या दूर करने का कार्य्य। ३. अंतर्द्धान।

अपवित्र–वि० [सं०] जो पवित्र न हो। अशुद्ध। नापाक। मलिन।

अपवित्रता–संज्ञा स्त्री० [सं०] अशुद्धि। अशौच। मैलापन। नापाकी।

अपविद्ध–वि० [सं०] १. त्यागा हुआ। छोड़ा हुआ। २. बेधा हुआ। विद्ध। संज्ञा पुं० वह पुत्र जिसको उसके माता-पिता ने त्याग दिया हो और किसी दूसरे ने पुत्रवत् पाला हो। (स्मृति)

अपव्यय–संज्ञा पुं० [सं०] १. निरर्थक व्यय। फ़जूलख़र्ची। २. बुरे कामों में ख़र्च।

अपव्ययी–वि० [सं० अपव्ययिन्] अधिक ख़र्च करनेवाला। फ़जूलख़र्च।

अपशकुन–संज्ञा पुं० [सं०] कुसगुन। असगुन। बुरा शकुन।

अपशब्द–संज्ञा पुं० [सं०] १. अशुद्ध शब्द। २. बिना शब्द का शब्द। ३. गाली। कुवाच्य। ४. पाद। गोज़।

अपसगुन*–संज्ञा पुं० दे० "अपशकुन"।

अपसना*–क्रि० अ० [सं० अपसरण] १. खिसकना। सरकना। भागना। २. चल देना।

अपसर–वि० [हिं० अप=अपना+सर (प्रत्य०)] आपही आप। मनमाना। अपने मन का।

अपसर्जन–संज्ञा पुं० [सं०] विसर्जन। त्याग।

अपसव्य–वि० [सं०] १. 'सव्य' का उलटा। दहिना। दक्षिण। २. उलटा। विरुद्ध। ३. जनेऊ दहिने कंधे पर रक्खे हुए।

अपसोस*–संज्ञा पुं० दे० "अफ़सोस"।

अपसोसना*–क्रि० अ० [हिं० अफ़सोस] सोच करना। अफ़सोस करना।

अपसोन*–संज्ञा पुं० [सं० अपशकुन] असगुन। बुरा सगुन।

अपसौना†–क्रि० अ० [?] आना। पहुँचना।

अपस्नान–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अपस्नात] वह स्नान जो प्राणी के कुटुंबी उसके मरने पर करते हैं। मृतकस्नान।

अपस्मार–संज्ञा पुं० [सं०] एक रोग जिसमें रोगी काँपकर पृथ्वी पर मूर्च्छित हो गिर पड़ता है। मिरगी।

अपस्वार्थी–वि० [हिं० अप+सं० स्वार्थी] स्वार्थ साधनेवाला। मतलबी। ख़ुदग़रज़।

अपह–वि० [सं०] नाश करनेवाला। विनाशक। जैसे क्लेशापह।

अपहत–वि० [सं०] १. नष्ट किया हुआ। मारा हुआ। २. दूर किया हुआ।

अपहरण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अपहरणीय, अपहरित, अपहृत, अपहर्ता] १. छीनना। ले लेना। हर लेना। लूट। २. चोरी। ३. छिपाव। संगोपन।

अपहरना*–क्रि० स० [सं० अपहरण] १. छीनना। ले लेना। लूटना। २. चुराना। ३. कम करना। घटाना। क्षय करना।

अपहर्ता–संज्ञा पुं० [सं०] १. छीननेवाला। हर लेनेवाला। ले लेनेवाला। २. चोर। लूटनेवाला। ३. छिपानेवाला।

अपहास–संज्ञा पुं० [सं०] १. उपहास। २. अकारण हँसी।

अपहृत–वि० [सं०] छीना हुआ। चुराया हुआ। लूटा हुआ।

अपह्नव–संज्ञा पुं० [सं०] १. छिपाव। दुराव। २. मिस। बहाना। टाल-मटूल।

अपह्नुति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुराव। छिपाव। २. बहाना। टाल-मटूल। ३. वह काव्यालंकार जिसमें उपमेय का निषेध करके उपमान का स्थापन किया जाय।

अपांग–संज्ञा पुं० [सं०] आँख का कोना। आँख की कोर। कटाक्ष। वि० अंगहीन। अंगभंग।

अपात्र–वि० [सं०] १. अयोग्य। कुपात्र। २. मूर्ख। ३. श्राद्धादि में निमंत्रण के अयोग्य (ब्राह्मण)।

अपादान–संज्ञा पुं० [सं०] १. हटाना। अलगाव। विभाग। २. व्याकरण में

पाँचवाँ कारक जिससे एक वस्तु से दूसरी वस्तु की क्रिया का प्रारंभ सूचित होता है। इसका चिह्न 'से' है। जैसे "घर से"।

अपान–संज्ञा पु० [सं०] १ दस या पाँच प्राणों में से एक। २ गुदास्थ वायु जो मल मूत्र को बाहर निकालती है। ३ वह वायु जो तालु से पीठ तक और गुदा से उपस्थ तक व्याप्त है। ४ वह वायु जो गुदा से निकले। ५ गुदा।

*संज्ञा पु० [हिं० अपना] १ आत्मभाव। आत्मतत्त्व। आत्मज्ञान। २ आपा। आत्मगौरव। भरम। ३ सुध। होश-हवास। ४ अहम्। अभिमान। घमंड।

*सर्व० दे० "अपना"।

अपान-वायु–संज्ञा पु० [सं०] १ पाँच प्रकार की वायु में से एक। २ गुदास्थ वायु। पाद।

अपाना†–सर्व० दे० "अपना"।

अपामार्ग–संज्ञा पु० [सं०] चिचड़ा।

अपाय–संज्ञा पु० [सं०] १ विश्लेष। अलगाव। २ अपगमन। पीछे हटना। ३ नाश। *४ अन्ययाचार। अनरीति।

वि० [सं० अ = नहीं + हिं० पाय = पैर] १ बिना पैर का। लँगड़ा। अपाहिज। २ निरुपाय। असमर्थ।

अपार–वि० [सं०] १ सीमारहित। अनंत। असीम। बेहद। २ असंख्य। अतिशय।

अपार्थ–संज्ञा पु० [सं०] कविता में वाक्यार्थ स्पष्ट न होने का दोष।

अपाव*–संज्ञा पु० [सं० अपाय = नाश] अन्यथाचार। अन्याय। उपद्रव।

अपावन–वि० पु० [सं०] [स्त्री० अपावनी] अपवित्र। अशुद्ध। मलिन।

अपाहिज–वि० [सं० अपभज, प्रा० अपहज] १ अंगभंग। खंज। लूला-लँगड़ा। २ काम करने के अयोग्य। ३ आलसी।

अपि–अव्य० [सं०] १ भी। ही। २ निश्चय। ठीक।

अपितु–अव्य० [सं०] १ किंतु। २ बल्कि।

अपिधान–संज्ञा पु० [सं०] आच्छादन। आवरण। ढक्कन।

अपीच*–वि० [सं० अपीच्य] सुंदर।

अपील–संज्ञा स्त्री० [अं०] १. निवेदन। विचारार्थ प्रार्थना। २ मातहत अदालत के फैसले के विरुद्ध ऊँची अदालत में फिर से विचार के लिये अभियोग उपस्थित करना।

अपुत्र–वि० [सं०] निस्संतान। पुत्रहीन।

अपुनपौ*–संज्ञा पु० दे० "अपनपौ"।

अपुनीत–वि० [सं०] १ अपवित्र। अशुद्ध। २ दूषित। दोषयुक्त।

अपूठन*–क्रि० स० [सं० अ = नहीं + पृष्ठ] १ विध्वंस या नाश करना। २ उलटना।

अपूठा*–वि० [सं० अपुष्ट] अपरिपक्व। अजानकार। अनभिज्ञ।

वि० [सं० अस्फुट] अविकसित। बेखिला।

अपूत–वि० [सं०] अपवित्र। अशुद्ध।

*वि० [हिं० अ + पूत] पुत्रहीन। निपूता।

*संज्ञा पु० कुपूत। बुरा लड़का।

अपूर*–वि० [सं० आपूर्ण] पूरा। भरपूर।

अपूरना*–क्रि० स० [सं० आपूर्णन] १ भरना। २ फूँकना। बजाना। (शंख)

अपूरब*–वि० दे० 'अपूर्व'।

अपूरा*–संज्ञा पु० [सं० आ + पूर्ण] [स्त्री० अपूरी] भरा हुआ। फैला हुआ। व्याप्त।

अपूर्ण–वि० [सं०] १ जो पूर्ण या भरा न हो। २ अधूरा। असमाप्त। ३ कम।

अपूर्णता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अधूरापन। २ न्यूनता। कमी।

अपूर्णभूत–संज्ञा पु० [सं०] व्याकरण में क्रिया का वह भूत काल जिसमें क्रिया की समाप्ति न पाई जाय। जैसे–वह खाता था।

अपूर्व–वि० [सं०] १ जो पहले न रहा हो। २ अद्भुत। अनोखा। विचित्र। ३ उत्तम। श्रेष्ठ।

अपूर्वता–संज्ञा स्त्री० [सं०] विलक्षणता। अनोखापन।

अपूर्वरूप–संज्ञा पु० [सं०] वह काव्यालंकार जिसमें पूर्व गुण की प्राप्ति का निषेध हो।

अपेक्षा–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० अपेक्षित]

१. आकांक्षा। इच्छा। अभिलाषा। चाह। २. आवश्यकता। जरूरत। ३. आश्रय। भरोसा। आसा। ४. कार्य्य-कारण का अन्योन्य संबंध। ५. तुलना। मुकाबिला।

अपेक्षकृत-अव्य० [सं०] मुक़ाबिले में। तुलना में।

अपेक्षित-वि० [सं०] १. जिसकी अपेक्षा हो। जिसकी आवश्यकता हो। आवश्यक। २. इच्छित। वांछित। चाहा हुआ।

अपेय-वि० [सं०] न पीने योग्य।

अपेल*-वि० [सं० अ=नहीं+पीड़=दवाना] जो हटे या टले नहीं। अटल

अपोगंड-वि० [सं०] १. सोलह वर्ष के ऊपर की अवस्थावाला। २. वालिग।

अप्रकाशित-वि० [सं०] १. जिसमें उजाला न हो। अँधेरा। २. जो प्रकट न हुआ हो। गुप्त। छिपा हुआ। ३. जो सर्वसाधारण के सामने न रक्खा गया हो। ४. जो छाप कर प्रचलित न किया गया हो।

अप्रकृत-वि० [सं०] १. अस्वाभाविक। २. बनावटी। कृत्रिम। ३. झूठा।

अप्रचलित-वि० [सं०] जो प्रचलित न हो। अव्यवहृत। अप्रयुक्त।

अप्रतिभ-वि० [सं०] १. प्रतिभाशून्य। चेष्टाहीन। उदास। २. स्फूर्तिशून्य। सुस्त। मंद। ३. मतिहीन। निर्बुद्धि। ४. लजीला।

अप्रतिभा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्रतिभा का अभाव। २. न्याय में एक निग्रह-स्थान।

अप्रतिम-वि० [सं०] अद्वितीय। अनुपम।

अप्रतिष्ठा-संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० अप्रतिष्ठित] १. अनादर। अपमान। २. अपयश। अपकीर्ति।

अप्रत्यक्ष-वि० [सं०] १. जो प्रत्यक्ष न हो। परोक्ष। २. छिपा। गुप्त।

अप्रमेय-वि० [सं०] १. जो नापा न जा सके। अपरिमित। अपार। अनंत। २. जो प्रमाण से न सिद्ध हो सके।

अप्रयुक्त-वि० [सं०] जो काम में न लाया गया हो। अव्यवहृत।

अप्रसन्न-वि० [सं०] १ असंतुष्ट। नाराज। २. खिन्न। दुखी। उदास।

अप्रसन्नता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नाराजगी। असंतोष। २. रोष। कोप। ३. खिन्नता।

अप्रसिद्ध-वि० [सं०] १. जो प्रसिद्ध न हो। अविख्यात। २. गुप्त। छिपा हुआ।

अप्रस्तुत-वि० [सं०] १. जो प्रस्तुत या मौजूद न हो। अनुपस्थित। २. जिसकी चर्चा न आई हो।
संज्ञा पुं० उपमान।

अप्रस्तुत प्रशंसा-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह अलंकार जिसमें अप्रस्तुत के कथन द्वारा प्रस्तुत का बोध कराया जाय।

अप्राकृत-वि० [सं०] जो प्राकृत न हो। अस्वाभाविक। असाधारण।

अप्राप्त-वि० [सं०] १. जो प्राप्त न हो। दुर्लभ। अलभ्य। २. जिसे प्राप्त न हुआ हो। ३. अप्रत्यक्ष। परोक्ष। अप्रस्तुत।

अप्राप्तव्यवहार-वि० [सं०] सोलह वर्ष से कम का (वालक)। नावालिग।

अप्राप्य-वि० [सं०] जो प्राप्त न हो सके। अलभ्य।

अप्रामाणिक-वि० [सं०][स्त्री० अप्रामाणिकी] १. जो प्रमाण से सिद्ध न हो। ऊटपटांग। २. जिसपर विश्वास न किया जा सके।

अप्रासंगिक-वि० [सं०] प्रसंग-विरुद्ध। जिसकी कोई चर्चा न हो।

अप्रिय-वि० पुं० [सं०] १. अरुचिकर। जो न रुचे। २. जिसकी चाह न हो।

अप्सरा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अंबुकण। वाष्पकण। २. वेश्याओं की एक जाति। ३. स्वर्ग की वेश्या। इंद्र की सभा में नाचनेवाली देवांगना। परी।

अफ़ग़ान-संज्ञा पुं० [अ०] अफगानिस्तान का रहनेवाला। काबुली।

अफ़यून-संज्ञा स्त्री० दे० "अफीम"।

अफरना-क्रि० अ० [सं० स्फार] १. पेट भर खाना। भोजन से तृप्त होना। २. पेट का फूलना। ३. ऊबना और अधिक की इच्छा न रखना।

अफरा-संज्ञा पुं० [सं० स्फार] अजीर्ण या

वायु से पेट फूलना।

अफराना*–क्रि० अ० [हिं० अफरना] भोजन से तृप्त करना।

अफल–वि० [स०] १ फलहीन। निष्फल। २ व्यर्थ। निष्प्रयोजन। ३ बाँझ।

अफवाह–सज्ञा स्त्री० [अ०] उडती खबर। बाजारू खबर। किंवदंती। गप्प।

अफसर–सज्ञा पु० [अ० ऑफिसर] १ प्रधान। मुखिया। २ अधिकारी। हाकिम।

अफसरी–सज्ञा स्त्री० [हिं० अफसर] १. अधिकार। प्रधानता। २ हुकूमत। शासन।

अफसाना–सज्ञा पु० [फा०] किस्सा। कहानी। कथा।

अफसोस–सज्ञा स्त्री० [फा०] १ शोक। रज। २ पश्चात्ताप। खेद। पछतावा। दुःख।

अफीम–सज्ञा स्त्री० [यू० ओपियन, अ० अफ्यून] पोस्त के ढढ का गोंद जो कडुआ, मादक और विष होता है।

अफीमची–सज्ञा पु० [हिं० अफीम+ची (प्रत्य०)] वह पुरुष जिसे अफीम खाने की लत हो।

अफीमी–वि० [हिं० अफीम] अफीमची।

अब–क्रि० वि० [स० अथ, अद्य] इस समय। इस क्षण। इस घडी।

मुहा०–अब की = इस बार। अब जाकर = इतनी देर पीछे। अब तब लगना या होना = मरने का समय निकट पहुँचना।

अबखरा–सज्ञा पु० [अ०] भाप। वाष्प।

अबटन–सज्ञा पु० दे० "उबटन"।

अबतर–वि० [फा०] [सज्ञा अबतरी] १ बुरा। खराब। २ बिगडा हुआ।

अबद्ध–वि० [स०] १ जो बँधा न हो। मुक्त। २ स्वच्छद। निरकुश।

अबध–वि० [स० अबाध] १ अचूक। जो खाली न जाय। २ जो रोका न जा सके।

अबधू*–वि० [स० अबोध] अज्ञानी। अबोध। सज्ञा पु० [स० अवधूत] त्यागी। विरागी।

अबध्य–वि० [स०] [स्त्री० अबध्या] १. जिसे मारना उचित न हो। २ जिसे शास्त्रानुसार प्राणदड न दिया जा सके। जैसे, स्त्री, ब्राह्मण। ३ जिसे कोई मार न सके।

अबर*–वि० [स० अबल] निर्बल। कमजोर।

अबरक–सज्ञा पु० [स० अभ्रक] १. एक धातु जिसकी तहें काँच की तरह चमकीली होती हैं। भोडल। भोडर। २ एक प्रकार का पत्थर।

अबरन*–वि० [स० अवर्ण्य] जिसका वर्णन न हो सके। अवर्णनीय।

वि० [स० अवर्ण] १. बिना रूप रग का। वर्णशून्य। २ एक रग का नहीं। भिन्न।

*सज्ञा पु० दे० "आवरण"।

अबरस–सज्ञा पु० [फा०] १. घोडे का एक रग जो सब्जे से कुछ खुलता हुआ सफेद होता है। २ इस रग का घोडा।

अबरा–सज्ञा पु० [फा०] १. 'अस्तर' का उलटा। दोहरे वस्त्र के ऊपर का पल्ला। उपल्ला। उपल्ली। २ न खुलनेवाली गाँठ। उलझन।

अबरी–सज्ञा स्त्री० [फा०] १. एक प्रकार का धारीदार चिकना कागज। २ एक पीला पत्थर जो पच्चीकारी के काम में आता है। ३ एक प्रकार की लाह की रँगाई।

अबरू–सज्ञा स्त्री० [फा०] भौंह। भ्रू।

अबल–वि० [स०] निर्बल। कमजोर।

अबलक–वि० [स० अवलक्ष] सफेद और काले अथवा सफेद और लाल रग का। कबरा। दोरगा।

सज्ञा पु० वह घोडा या बैल जिसका रग सफेद और काला हो।

अबलखा–सज्ञा पु० [स० अवलक्ष] एक प्रकार का काला पक्षी।

अबला–सज्ञा स्त्री० [स०] स्त्री। औरत।

अबवाब–सज्ञा पु० [अ०] वह अधिक कर जो सरकार मालगुजारी पर लगाती है।

अबा–सज्ञा पु० [अ०] अगे से नीचा एक ढीला-ढाला पहनावा।

अबाती*–वि० [स० अ+वात] १ बिना वायु का। २ जिसे वायु न हिलाती हो। ३ भीतर-भीतर सुलगनेवाला।

अबादान–वि० [अ० आबाद] बसा हुआ। पूर्ण। भरा पूरा।

अबादानी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० आबादानी] १. पूर्णता। बस्ती। २. शुभचिंतकता। ३. चहल-पहल। रौनक़।

अबाध–वि० [सं०] १. बाधारहित। बेरोक। २. निर्विघ्न। ३. अपार। अपरिमित। बेहद। ४. जो असंगत न होता हो।

अबाधित–वि० [सं०] १. बाधारहित। बेरोक। २. स्वच्छंद। स्वतंत्र।

अबाध्य–वि० [सं०] १. बेरोक। जो रोका न जा सके। २. अनिवार्य्य।

अबान*–वि० [सं० अ+हिं० बाना] शस्त्ररहित। हथियार छोड़े हुए। निहत्था।

अबाबील–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] काले रंग की एक चिड़िया। कृष्णा। कन्हैया।

अबार*–संज्ञा स्त्री० [सं० अ=बुरा+बेला=समय] देर। बेर। विलंब।

अबास*–संज्ञा पुं० [सं० आवास] रहने का स्थान। घर। मकान।

अबीर–संज्ञा पुं० [अ०] [वि० अबीरी] रंगीन बुकनी या अबरक का चूर जिसे लोग होली में इष्ट-मित्रों पर डालते हैं।

अबीरी–वि० [अ०] अबीर के रंग का। कुछ कुछ स्याही लिए लाल रंग का।
संज्ञा पुं० अबीरी रंग।

अबूझ–वि० [सं० अबुद्ध] अबोध। नासमझ। नादान।

अबे–अव्य० [सं० अयि] अरे। हे। (छोटे या नीच के लिये संबोधन)
मुहा०—अबे तबे करना=निरादरसूचक वाक्य बोलना।

अबेर*–संज्ञा स्त्री० [सं० अबेला] विलंब।

अबेश*–वि० [फ़ा० बेश] अधिक। बहुत।

अबोध–संज्ञा पुं० [सं०] अज्ञान। मूर्खता।
वि० [सं०] अनजान। नादान। मूर्ख।

अबोल*–वि० [सं० अ=नहीं+हिं० बोल] १. मौन। अवाक्। २. जिसके विषय में बोल या कह न सकें। अनिर्वचनीय।
संज्ञा पुं० कुबोल। बुरा बोल।

अबोला–संज्ञा पुं० [सं० अ=नहीं+हिं० बोलना] रंज से न बोलना। रूठने के कारण मौन।

अब्ज–संज्ञा पुं० [सं०] १. जल से उत्पन्न वस्तु। २. कमल। ३. शंख। ४. हिज्जल। ईंजड़। ५. चंद्रमा। ६. धन्वन्तरि। ७. कपूर। ८. सौ करोड़। अरब।

अब्जा–संज्ञा स्त्री० [सं०] लक्ष्मी।

अब्द–संज्ञा पुं० [सं०] १. वर्ष। साल। २. मेघ। बादल। ३. आकाश।

अब्धि–संज्ञा पुं० [सं०] १. समुद्र। सागर। २. सरोवर। ताल। ३. सात की संख्या।

अब्धिज–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अब्धिजा] १. समुद्र से पैदा हुई वस्तु। २. शंख। ३. चंद्रमा। ४. अश्विनीकुमार।

अब्बास–संज्ञा पुं० [अ०] [वि० अब्बासी] एक पौधा जो फूल के लिये लगाया जाता है। गुले अब्बास। गुलाबाँस।

अब्बासी–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मिस्र देश की एक प्रकार की कपास। २. एक प्रकार का लाल रंग।

अब्र–संज्ञा पुं० [फ़ा०] बादल। मेघ।

अब्रह्मण्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह कर्म जो ब्राह्मणोचित न हो। २. हिंसादि कर्म। ३. जिसकी श्रद्धा ब्राह्मण में न हो।

अभंग–वि० [सं०] १. अखंड। अटूट। पूर्ण। २. अनाशवान्। न मिटनेवाला। ३. लगातार।

अभंगपद–संज्ञा पुं० [सं०] श्लेष अलंकार का एक भेद। वह श्लेष जिसमें अक्षरों को इधर-उधर न करना पड़े।

अभंगी*–वि० [सं० अभंगिन्] १. अभंग। पूर्ण। अखंड। २. जिसका कोई कुछ ले न सके।

अभंजन–वि० [सं०] अटूट। अखंड।

अभक्त–वि० [सं०] १. भक्तिशून्य। श्रद्धाहीन। २. भगवद्विमुख। ३. जो बाँटा या अलग न किया गया हो। समूचा।

अभक्ष्य–वि० [सं०] १. अखाद्य। अभोज्य

जो खाने के योग्य न हो। २ जिसके खाने या धर्मशास्त्र में निषेध हो।
अभान–वि० [सं०] अखंड। समूचा।
अभद्र–वि० [सं०] [संज्ञा अभद्रता] १ अमांगलिक। अशुभ। २ अशिष्ट। बेहूदा कमीना।
अभद्रता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अमांगलिकता। अशुभ। २ अशिष्टता। बेहूदगी।
अभय–वि० [सं०] [स्त्री० अभया] निर्भय। बेडर। बेखौफ।
मुहा०–अभय देना या अभय बाँह देना = भय से बचाने का वचन देना। शरण देना।
अभयदान–संज्ञा पु० [सं०] भय से बचाने का वचन देना। शरण देना। रक्षा करना।
अभयपद–संज्ञा पु० [सं०] मुक्ति।
अभयवचन–संज्ञा पु० [सं०] भय से बचाने की प्रतिज्ञा। रक्षा का वचन।
अभर*–वि० [सं० अ + भार] दुर्वह। न ढोने योग्य।
अभरन*–संज्ञा पु० दे० "आभरण"। वि० [सं० अवर्ण] अपमानित। दुर्दशा ग्रस्त। ज़लील।
अभरम*–वि० [सं० अ + भ्रम] १ भ्रम न करनेवाला। अभ्रांत। २ निःशंक। निडर। क्रि० वि० निःसंदेह। निश्चय।
अभल*–वि० [सं० अ = नहीं + हिं० भला] अश्रेष्ठ। बुरा। खराब।
अभव्य–वि० [सं०] १ न होने योग्य। २ विलक्षण। अद्भुत। ३ अशुभ। बुरा।
अभाउ*–वि० [सं० अ = नहीं + भाव] १ जो न भावे। जो अच्छा न लगे। २ जो न सोहे। अशोभित।
अभाग*–संज्ञा पु० दे० "अभाग्य"।
अभागा–वि० [सं० अभाग्य] [स्त्री० अभागिनी] भाग्यहीन। प्रारब्धहीन। बदकिस्मत।
अभागी–वि० [सं० अभागिन] [स्त्री० अभागिनी] १ भाग्यहीन। बदकिस्मत। २ जो जायदाद के हिस्से का अधिकारी न हो।
अभाग्य–संज्ञा पु० [सं०] प्रारब्धहीनता। दुर्दैव। बुरा दिन। बदकिस्मती।
अभाव–संज्ञा पु० [सं०] १. अविद्यमानता। न होना। २ त्रुटि। टोटा। कमी। घाटा। *३ कुभाव। दुर्भाव। विरोध।
अभास*–संज्ञा पु० दे० "आभास"।
अभि–उप० [सं०] एक उपसर्ग जो शब्दों में लगाकर इनमें इन अर्थों की विशेषता करता है–१ सामने। २ बुरा। ३ इच्छा। ४ समीप। ५ बारबार। अच्छी तरह। ६ दूर। ७ ऊपर।
अभिक्रमण–संज्ञा पु० [सं०] चढ़ाई। धावा।
अभिगमन–संज्ञा पु० [सं०] १ पास जाना। २ सहवास। संभोग।
अभिगामी–वि० [सं०] [स्त्री० अभिगामिनी] १ पास जानेवाला। २ सहवास या संभोग करनेवाला।
अभिघात–संज्ञा पु० [सं०] [वि० अभिघातक, अभिघाती] चोट पहुँचाना। प्रहार। मार।
अभिचार–संज्ञा पु० [सं०] मंत्र यंत्र द्वारा मारण और उच्चाटन आदि हिंसा-कर्म। पुरश्चरण।
अभिचारी–वि० [सं० अभिचारिन्] [स्त्री० अभिचारिणी] यंत्र मंत्र आदि का प्रयोग करनेवाला।
अभिजन–संज्ञा पु० [सं०] १ कुल। वंश। २ परिवार। ३ जन्मभूमि। ४ वह जो घर में सबसे बड़ा हो। ५ ख्याति।
अभिजात–वि० [सं०] १ अच्छे कुल में उत्पन्न। कुलीन। २ बुद्धिमान्। पंडित। ३ योग्य। उपयुक्त। ४ मान्य। पूज्य। ५ सुंदर। मनोहर।
अभिजित–वि० [सं०] विजयी। संज्ञा पु० [सं०] सिंघाड़े के आकार का एक नक्षत्र जिसमें तीन तारे हैं।
अभिज्ञ–वि० [सं०] १ जानकार। विज्ञ। २ निपुण। कुशल।
अभिज्ञान–संज्ञा पु० [सं०] [वि० अभिज्ञात] १ स्मृति। खयाल। २ लक्षण। पहचान। ३ निशानी। सहिदानी। परिचायक चिह्न।

अभिधा—संज्ञा स्त्री० [सं०] शब्दों के उस अर्थ को प्रकट करने की शक्ति जो उनके नियत अर्थों ही से निकलता हो।

अभिधान—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक नाम। लक्षण। २. कथन। ३. शब्दकोश।

अभिधायक—वि० [सं०] १. नाम रखने-वाला। २. कहनेवाला। ३. सूचक।

अभिधेय—वि० [सं०] १. प्रतिपाद्य। वाच्य। २. जिसका बोध नाम लेने ही से हो जाय।
संज्ञा पुं० नाम।

अभिनंदन—संज्ञा पुं० [सं०] १. आनन्द। २. संतोष। ३. प्रशंसा। ४. उत्तेजना। प्रोत्साहन। ५. विनीत प्रार्थना।
यौ०—अभिनंदनपत्र=वह आदर या प्रतिष्ठा-सूचक पत्र जो किसी महान् पुरुष के आगमन पर हर्ष और संतोष प्रकट करने के लिये उसे सुनाया और अर्पण किया जाता है। एड्रेस।

अभिनंदनीय—वि० [सं०] वंदनीय। प्रशंसा के योग्य।

अभिनंदित—वि० [सं०] वंदित। प्रशंसित।

अभिनय—संज्ञा पुं० [सं०] १. दूसरे व्यक्तियों के भाषण तथा चेष्टा को कुछ काल के लिये धारण करना। स्वाँग। नक़ल। २. नाटक का खेल।

अभिनव—वि० [सं०] १. नया। नवीन। २. ताजा।

अभिनिविष्ट—वि० [सं०] १. धँसा हुआ। गड़ा हुआ। २. बैठा हुआ। ३. अनन्य मन से अनुरक्त। लिप्त। मग्न।

अभिनिवेश—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रवेश। पैठ। गति। २. मनोयोग। लीनता। एकाग्रचिंतन। ३. दृढ़ संकल्प। तत्परता। ४. योगशास्त्र में मरण के भय से उत्पन्न क्लेश। मृत्युशंका।

अभिनीत—वि० [सं०] १. निकट लाया हुआ। २. सुसज्जित। अलंकृत। ३. उचित। न्याय्य। ४. अभिनय किया हुआ। खेला हुआ (नाटक)।

अभिनेता—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अभिनेत्री] अभिनय करनेवाला व्यक्ति। स्वाँग दिखाने-वाला पुरुष। नट। ऐक्टर।

अभिनेय—वि० [सं०] अभिनय करने योग्य। खेलने योग्य (नाटक)।

अभिन्न—वि० [सं०] [संज्ञा अभिन्नता] १. जो भिन्न न हो। अपृथक्। एकमय। २. मिला हुआ। सटा हुआ। संबद्ध।

अभिन्नपद—संज्ञा पुं० [सं०] श्लेष अलंकार का एक भेद।

अभिप्राय—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अभिप्रेत] आशय। मतलब। अर्थ। तात्पर्य।

अभिप्रेत—वि० [सं०] इष्ट। अभिलषित।

अभिभावक—वि० [सं०] १. अभिभूत या पराजित करनेवाला। २. स्तंभित कर देनेवाला। ३. वशीभूत करनेवाला। ४. रक्षक। सरपरस्त।

अभिभूत—वि० [सं०] १. पराजित। हराया हुआ। २. पीड़ित। ३. जो वश में किया गया हो। वशीभूत। ४. विचलित।

अभिमंत्रण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अभि-मंत्रित] १. मंत्र द्वारा संस्कार। २. आवाहन।

अभिमत—वि० [सं०] १. मनोनीत। वांछित। २. सम्मत। राय के मुताबिक।
संज्ञा पुं० १. मत। सम्मति। राय। २. विचार। ३. मनचाही बात।

अभिमति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अभिमान। गर्व। अहंकार। २. वेदांत के अनुसार यह भावना कि 'अमुक वस्तु मेरी है'। ३. अभिलाषा। इच्छा। चाह। ४. मति। राय। विचार।

अभिमन्यु—संज्ञा पुं० [सं०] अर्जुन के पुत्र का नाम।

अभिमान—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अभिमानी] अहंकार। गर्व। घमंड।

अभिमानी—वि० [सं० अभिमानिन्] [स्त्री० अभिमानिनी] अहंकारी। घमंडी।

अभिमुख—क्रि० वि० [सं०] सामने। सम्मुख।

अभियुक्त—वि० [सं०] [स्त्री० अभियुक्ता] जिसपर अभियोग चलाया गया हो।

मुलज़िम।
अभियोक्ता–वि० [सं०] [स्त्री० अभियोक्त्री] अभियोग उपस्थित करनेवाला। वादी। मुद्दई। फरियादी।
अभियोग–संज्ञा पु० [सं०] १. किसी के किए हुए दोष या हानि के विरुद्ध न्यायालय में निवेदन। नालिश। मुकद्दमा। २ चढ़ाई। आक्रमण। ३ उद्योग।
अभियोगी–वि० [सं०] अभियोग चलानेवाला। नालिश करनेवाला। फरियादी।
अभिरना*–क्रि० अ० [सं० अभि + रण = युद्ध] १ भिड़ना। लड़ना। २ टेकना। ३ क्रि० स० मिलाना।
अभिराम–वि० [सं०] [स्त्री० अभिरामा] मनोहर। सुंदर। रम्य। प्रिय।
अभिरुचि–संज्ञा स्त्री० [सं०] अत्यंत रुचि। चाह। पसंद। प्रवृत्ति।
अभिलषित–वि० [सं०] वांछित। इष्ट। चाहा हुआ।
अभिलाख*–संज्ञा पु० दे० "अभिलाष"।
अभिलाखना*–क्रि० स० [सं० अभिलषण] इच्छा करना। चाहना।
अभिलाखा*–संज्ञा स्त्री दे० "अभिलाषा"।
अभिलाष–संज्ञा पु० [सं०] १. इच्छा। मनोरथ। कामना। चाह। २ वियोग शृंगार के अंतर्गत दस दशाओं में से एक। प्रिय से मिलने की इच्छा।
अभिलाषा–संज्ञा स्त्री० [सं०] इच्छा। कामना। आकांक्षा। चाह।
अभिलाषी–वि० [सं० अभिलाषिन्] [स्त्री० अभिलाषिणी] इच्छा करनेवाला। आकांक्षी।
अभिवदन–संज्ञा पु० [सं०] १ प्रणाम। नमस्कार। २ स्तुति।
अभिवदना–संज्ञा स्त्री० दे० "अभिवदन"।
अभिवादन–संज्ञा पु० [सं०] १ प्रणाम। नमस्कार। वंदना। २ स्तुति।
अभिव्यंजक–वि० [सं०] प्रकट करनेवाला। प्रकाशक। सूचक। बोधक।
अभिव्यक्त–वि० [सं०] प्रकट या ज़ाहिर किया हुआ। स्पष्ट किया हुआ।
अभिव्यक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रकाशन। स्पष्टीकरण। साक्षात्कार। २ सूक्ष्म और अप्रत्यक्ष कारण का प्रत्यक्ष कार्य में आविर्भाव। जैसे, बीज से अंकुर निकलना।
अभिशप्त–वि० [सं०] १ शापित। जिसे शाप दिया गया हो। २ जिसपर मिथ्या दोष लगा हो।
अभिशाप–संज्ञा पु० [सं०] १ शाप। बददुआ। २ मिथ्या दोषारोपण।
अभिशापित–वि० दे० "अभिशप्त"।
अभिषंग–संज्ञा पु० [सं०] १ पराजय। २. निंदा। आक्रोश। कोसना। ३ मिथ्या अपवाद। झूठा दोषारोपण। ४. दृढ़ मिलाप। आलिंगन। ५ शपथ। कसम। ६ भूत प्रेत का आवेश। ७ शोक।
अभिषिक्त–वि० [सं०] [स्त्री० अभिषिक्ता] १ जिसका अभिषेक हुआ हो। २ बाधा-शांति के लिये जिसपर मंत्र पढ़कर दूर्वा और कुश से जल छिड़का गया हो। ३ राजपद पर निर्वाचित।
अभिषेक–संज्ञा पु० [सं०] १ जल से सिंचन छिड़काव। २ ऊपर से जल डालकर स्नान। ३ बाधाशांति या मंगल के लिये मंत्र पढ़कर कुश और दूब से जल छिड़कना। मार्जन। ४ विधिपूर्वक मंत्र से जल छिड़ककर राजपद पर निर्वाचन। ५ यज्ञादि के पीछे शान्ति के लिये स्नान। ६ शिवलिंग के ऊपर छेदवाला घड़ा रखकर धीरे धीरे पानी टपकाना।
अभिष्यंद–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बहाव। स्राव। २ आँख आना।
अभिसंधि–संज्ञा पु० [सं०] १ वंचना। धोखा। २ चुपचाप कोई काम करने की कई आदमियों की सलाह। कुचक्र। षड्यन्त्र।
अभिसंधिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] कलहांतरिता नायिका।
अभिसरण–संज्ञा पु० [सं०] १ आगे जाना। २ समीप गमन। ३ प्रिय से मिलने के लिये जाना।

अभिसरना*–क्रि० अ० [सं० अभिसरण] १. संचरण करना। जाना। २. किसी वांछित स्थान को जाना। ३. प्रिय से मिलने के लिये संकेत-स्थल को जाना।

अभिसार–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अभिसारिक, अभिसारी] १. सहाय। सहारा। २. युद्ध। ३. प्रिय से मिलने के लिये नायिका या नायक का संकेत-स्थल में जाना।

अभिसारना*–क्रि० अ० दे० "अभिसरना"।

अभिसारिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जो संकेत-स्थान में प्रिय से मिलने के लिये स्वयं जाय या प्रिय को बुलावे।

अभिसारिणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] अभिसारिका।

अभिसारी–वि० [सं० अभिसारिन्] [स्त्री० अभिसारिका] १. साधक। सहायक। २. प्रिय से मिलने के लिये संकेत-स्थल पर जानेवाला।

अभिहित–वि० [सं०] कथित। कहा हुआ।

अभी–क्रि० वि० [हिं० अब + ही] इसी क्षण। इसी समय। इसी वक्त।

अभीक–वि० [सं०] १. निर्भय। निडर। २. निष्ठुर। कठोरहृदय। ३. उत्सुक।

अभीर–संज्ञा पुं० [सं०] १. गोप। अहीर। २. एक छंद।

अभीष्ट–वि० [सं०] १. वांछित। चाहा हुआ। २. मनोनीत। पसंद का। ३. अभिप्रेत। आशय के अनुकूल।

संज्ञा पुं० मनोरथ। मनचाही बात।

अभुआना–क्रि० अ० [सं० आह्वान] हाथ पैर पटकना और ज़ोर ज़ोर से सिर हिलाना जिससे सिर पर भूत आना समझा जाता है।

अभुक्त–वि० [सं०] १. न खाया हुआ। २. बिना बर्त्ता हुआ। अव्यवहृत।

अभुक्तमूल–संज्ञा पुं० [सं०] ज्येष्ठा नक्षत्र के अंत की दो घड़ी तथा मूल नक्षत्र के आदि की दो घड़ी। गंडांत।

अभू*–क्रि० वि० दे० "अभी"।

अभूखन*–संज्ञा पुं० दे० "आभूषण"।

अभूत–वि० [सं०] १. जो हुआ न हो। २. वर्तमान। ३. अपूर्व। विलक्षण।

अभूतपूर्व–वि० [सं०] १. जो पहले न हुआ हो। २. अपूर्व। अनोखा।

अभेद–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अभेदनीय, अभेद्य] १. भेद का अभाव। अभिन्नता। एकत्व। २. एकरूपता। समानता। ३. रूपक अलंकार के दो भेदों में से एक।

वि० भेदशून्य। एकरूप। समान।

*वि० दे० "अभेद्य"।

अभेदनीय–वि० [सं०] जिसका भेदन, छेदन या विभाग न हो सके।

अभेद्य–वि० [सं०] १. जिसका भेदन, छेदन या विभाग न हो सके। २. जो टूट न सके।

अभेय–संज्ञा पुं० दे० "अभेद"।

अभेरना–क्रि० स० [सं० अभि + रण] १. भिड़ाना। मिलाकर रखना। सटाना। २. मिलाना। मिश्रित करना।

अभेरा–संज्ञा पुं० [सं० अभि + रण = लड़ाई] १. रगड़ा। मुठ-भेड़। २. रगड़। टक्कर।

अभेव*–संज्ञा पुं० दे० "अभेद"।

अभौतिक–वि० [सं०] १. जो पंचभूत का न बना हो। २. अगोचर।

अभ्यंग–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अभ्यक्त, अभ्यंजनीय] १. लेपन। चारों ओर पोतना। २. शरीर में तेल लगाना।

अभ्यंतर–संज्ञा पुं० [सं०] १. मध्य। बीच। २. हृदय।

क्रि० वि० भीतर। अंदर।

अभ्यर्थना–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० अभ्यर्थनीय, अभ्यर्थित] १. सम्मुख प्रार्थना। विनय। दरख़ास्त। २. सम्मान के लिये आगे बढ़कर लेना। अगवानी।

अभ्यसित–वि० दे० "अभ्यस्त"।

अभ्यस्त–वि० [सं०] १. जिसका अभ्यास किया गया हो। बार बार किया हुआ। २. जिसने अभ्यास किया हो। दक्ष। निपुण।

अभ्यागत–वि० [सं०] १. सामने आया हुआ। २. अतिथि। पाहुना। मेहमान।

अभ्यास–सज्ञा पु० [स०] [वि० अभ्यासी, अभ्यस्त] १ पूर्णता प्राप्त करने के लिये फिर फिर एक ही क्रिया का अवलबन। साधन। आवृत्ति। मश्क। २ आदत। बान। टेव।

अभ्यासी–वि० [स० अभ्यासिन्] [स्त्री० अभ्यासिनी] अभ्यास करनेवाला। साधक।

अभ्युत्थान–सज्ञा पु० [स०] १ उठना। २ किसी बडे के आने पर उसके आदर के लिए उठकर खडे हो जाना। प्रत्युद्गम। ३ बढती। समृद्धि। उन्नति। ४ उठान। आरभ। उदय। उत्पत्ति।

अभ्युदय–सज्ञा पु० [स०] १ सूर्य आदि ग्रहो का उदय। २ प्रादुर्भाव। उत्पत्ति। ३ मनोरथ की सिद्धि। ४ विवाह आदि शुभ अवसर। ५ वृद्धि। बढती।

अभ्युपगम–सज्ञा पु० [स०] [वि० अभ्युपगत] १ सामने आना या जाना। प्राप्ति। २ स्वीकार। अगीकार। मजूरी। ३ बिना परीक्षा किए किसी ऐसी बात को मान-कर, जिसका खडन करना है फिर उसकी विशेष परीक्षा करना। (न्याय)

अभ्र–सज्ञा पु० [स०] १ मेघ। बादल। २ आकाश। ३ अभ्रक धातु। ४ स्वर्ण। सोना। ५ नागरमोथा।

अभ्रक–सज्ञा पु० [स०] अबरक। भोडर।

अभ्रात–वि० [स०] १ भ्राति शून्य। भ्रम-रहित। २ स्थिर।

अमगल–वि० [स०] मगलशून्य। अशुभ। सज्ञा पु० अकल्याण। दुख। अशुभ।

अमद–वि० [स०] १ जो धीमा न हो। तेज। २ उत्तम। श्रेष्ठ। ३ उद्योगी।

अमका–सज्ञा पु० [स० अमुक] एसा ऐसा। अमुक। फलाना।

अमचूर–सज्ञा पु० [हिं० आम + चूर] सुखाए हुए कच्चे आम का चूर्ण। पिसी हुई आम की फाँक।

अमडा–सज्ञा पु० [स० आम्रात] एक पेड जिसमें आम की तरह के छोटे छोटे खट्टे फल लगते हैं। अमारी।

अमत–सज्ञा पु० [स०] १ मत का अभाव। असम्मति। २ रोग। ३ मृत्यु।

अमत्त–वि० [स०] १ मदरहित। २ बिना घमड का। ३ शात।

अमन–सज्ञा पु० [अ०] १ शाति। चैन। आराम। २ रक्षा। बचाव।

अमनिया*–वि० [देश०] शुद्ध। पवित्र। अछूता।
सज्ञा स्त्री० रसोई पकाने की क्रिया। (साधु)

अमर–वि० [स०] जो मरे नही। चिरजीवी।
सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० अमरा, अमरी] १ देवता। २ पारा। ३ हडजोड का पेड। ४ अमरकोश। ५ लिंगानुशासन नामक प्रसिद्ध कोश के कर्त्ता अमरसिंह। ६ उनचास पवनो में से एक।

अमरख*–सज्ञा पु० [स० अमर्ष = क्रोध] [स्त्री० अमरखी] १ क्रोध। कोप। गुस्सा। रिस। २ क्षोभ। दुख। रज।

अमरखी*–वि० [हिं० अमरख] क्रोधी। बुरा माननेवाला। दुखी होनेवाला।

अमरता–सज्ञा स्त्री० [स०] १ मृत्यु का अभाव। चिरजीवन। २ देवत्व।

अमरत्व–सज्ञा पु० दे० "अमरता"।

अमरपख*–सज्ञा पु० [स० अमरपक्ष] पितृपक्ष।

अमरपद–सज्ञा पु० [स०] मुक्ति।

अमरपुर–सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० अमरपुरी] अमरावती। देवताओ का नगर।

अमरबेल–सज्ञा स्त्री० [स० अमरवल्ली] एक पीली लता या बौर जिसमे जड और पत्तियाँ नही होती। आकाश-बौर।

अमरलोक–सज्ञा पु० [स०] इद्रपुरी। देवलोक। स्वर्ग।

अमरवल्ली–सज्ञा स्त्री० [स० अमरवल्ली] अमरबेल। आकाश-बँवर। अमर-बौरिया।

अमरस–सज्ञा पु० दे० "अमावट"।

अमरसी–वि० [हिं० अमरस] आम के रस की तरह पीला। सुनहला।

अमराई–सज्ञा स्त्री० [स० आम्रराजि] आम का बाग। आम की बारी।

अमरालय–सज्ञा पु० [स०] स्वर्ग।

अमराव*†–संज्ञा पु० दे० "अमराई"।

अमरावती–संज्ञा स्त्री० [सं०] देवताओं की पुरी। इंद्रपुरी।

अमरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. देवता की स्त्री। देवकन्या। देवपत्नी। २. एक पेड़। सग। आसन। पियासाल।

अमरू–संज्ञा पुं० [अ० अहमर = लाल ?] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

अमरूत–संज्ञा पुं० [सं० अमृत (फल)] एक पेड़ जिसका फल खाया जाता है।

अमरेश–संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

अमर्याद–वि० [सं०] १. मर्यादा-विरुद्ध। बेक़ायदा। २. अप्रतिष्ठित।

अमर्यादा–संज्ञा स्त्री० [सं०] अप्रतिष्ठा। बेइज्ज़ती।

अमर्ष–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अमर्षित, अमर्षी] १. क्रोध। रिस। २. वह द्वेष या दुःख जो ऐसे मनुष्य का कोई अपकार न कर सकने के कारण उत्पन्न होता है जिसने अपना तिरस्कार किया हो। ३. असहिष्णुता। अक्षमा।

अमर्षण–संज्ञा पुं० [सं०] क्रोध। रिस।

अमर्षी–वि० [सं० अमर्षिन्] [स्त्री० अमर्षिणी] क्रोधी। असहनशील। जल्दी बुरा माननेवाला।

अमल–वि० [सं०] १. निर्मल। स्वच्छ। २. निर्दोष। पापशून्य।

संज्ञा पुं० [अ०] १. व्यवहार। कार्य। आचरण। साधन। २. अधिकार। शासन। हुकूमत। ३. नशा। ४. आदत। बान। टेव। लत। ५. प्रभाव। असर। ६. भोगकाल। समय। वक्त।

अमलता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. निर्मलता। स्वच्छता। २. निर्दोषता।

अमलतास–संज्ञा पुं० [सं० अम्ल] एक पेड़ जिसमें लंबी गोल फलियाँ लगती हैं।

अमलदारी–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. अधिकार। दखल। २. एक प्रकार की काश्तकारी जिसमें असामी को पैदावार के अनुसार लगान देनी पड़ती है। कनकूत।

अमलपट्टा–संज्ञा पु० [अ० अमल + हिं० पट्टा] वह दस्तावेज़ या अधिकार-पत्र जो किसी प्रतिनिधि या कारिंदे को किसी कार्य्य में नियुक्त करने के लिये दिया जाय।

अमलबेत–संज्ञा पुं० [सं० अम्लवेतस्] १. एक प्रकार की लता जिसकी सूखी हुई टहनियाँ खट्टी होती हैं और चूरण में पड़ती हैं। २. एक पेड़ जिसके फल की खटाई बड़ी तीक्ष्ण होती है।

अमला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लक्ष्मी। २. सातला वृक्ष।

संज्ञा पुं० [अ०] कार्य्याधिकारी। कर्म्मचारी। कचहरी में काम करनेवाला।

यौ०–अमलाफैला = कचहरी के कर्म्मचारी।

अमली–वि० [अ०] १. अमल में आनेवाला। व्यावहारिक। २. अमल करनेवाला। कर्मण्य। ३. नशेबाज।

अमलोनी–संज्ञा स्त्री० [सं० अम्ललोणी] नोनियाँ घास। नोनी।

अमहर–संज्ञा पुं० [हिं० आम] छिले हुए कच्चे आम की सुखाई हुई फाँक।

अमहल*–संज्ञा पुं० [सं० अ = नहीं + अ० महल] १. जिसके रहने का कोई एक स्थान न हो। २. व्यापक।

अमा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अमावास्या की कला। २. घर। ३. मर्त्यलोक।

अमातना*–क्रि० सं० [सं० आमंत्रण] आमंत्रित करना। निमंत्रण या न्योता देना।

अमात्य–संज्ञा पु० [सं०] मंत्री। वजीर।

अमान–वि० [सं०] १. जिसका मान या अंदाज़ न हो। अपरिमित। बेहद। बहुत। २. गर्वरहित। निरभिमान। सीधा-सादा। ३. अप्रतिष्ठित। अनादृत। तुच्छ।

संज्ञा पुं० [अ०] १. रक्षा। बचाव। २. शरण। पनाह।

अमानत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. अपनी वस्तु किसी दूसरे के पास कुछ काल के लिये रखना। २. वह वस्तु जो इस प्रकार रखी जाय। थाती। धरोहर।

अमानतदार–संज्ञा पु० [अ०] वह जिसके पास अमानत रखी जाय।
अमाना–क्रि० अ० [सं० आ=पूरा+मान] १ पूरा पूरा भरना। समाना। अँटना। २ फूलना। इतराना। गर्व करना।
अमानी–वि० [सं० अमानिन्] निरभिमान। घमंडरहित। अहंकारशून्य।
संज्ञा स्त्री०[सं०आमन्] १ वह भूमि जिसकी जमींदार सरकार हो। खास। २ वह जमीन या कोई कार्य्य जिसका प्रबंध अपने ही हाथ में हो। ३ लगान की वह वसूली जिसमें फसल के विचार से रिआयत हो।
†संज्ञा स्त्री० [सं० अ०+हि० मानना] अपने मन की कारवाई। अंधेर। मनमानी।
अमानुष–वि० [सं०] १ मनुष्य की सामर्थ्य के बाहर का। २ मनुष्य-स्वभाव के विरुद्ध। पाशव। पैशाचिक।
संज्ञा पु० १ मनुष्य से भिन्न प्राणी। २ देवता। ३ राक्षस।
अमानुषी–वि० [सं० अमानुषीय] १ मनुष्य स्वभाव के विरुद्ध। पाशव। पैशाचिक। २ मानवी शक्ति के बाहर का।
अमाय*–वि० दे० 'अमाया'।
अमाया–वि० [सं०] १ मायारहित। निर्लिप्त। २ निष्कपट। निश्छल।
अमारी–संज्ञा स्त्री० दे० 'अबारी'।
अमार्ग–संज्ञा पु० [सं०] १ कुमार्ग। कुराह। २ बुरी चाल। दुराचरण।
अमावट–संज्ञा स्त्री० [हि०आम+सं०आवर्त] १ आम के सुखाए हुए रस की पर्त या तह। २ पहिना जाति की एक मछली।
अमावस–संज्ञा स्त्री० दे० 'अमावास्या।'
अमावास्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] कृष्ण पक्ष की अंतिम तिथि।
अमाह–संज्ञा पु० [सं० अमांस] आँख के डेले से निकला हुआ लाल मांस। नाखूना।
अमिट–वि० [सं० अ+मिटना] १ जो न मिटे। जो नष्ट न हो। स्थायी। २ जिसका होना निश्चित हो। अटल। अवश्यभावी।
अमित–वि० [सं०] १ अपरिमित। बेहद। असीम। २ बहुत अधिक।
अमिताभ–संज्ञा पु० [सं०] बुद्धदेव।
अमित्र–वि० [सं०] १ शत्रु। वैरी। २ जिसका कोई दोस्त न हो। अमित्रक।
अमिय*–संज्ञा पु० [सं० अमृत] अमृत।
अमिय-मूरि–संज्ञा स्त्री० [सं० अमृत मूरि] अमृतबूटी। संजीवनी जड़ी।
अमिरती†–संज्ञा स्त्री० दे० "इमरती"।
अमिल*–वि० [सं०अ=नहीं+हि०मिलना] १ न मिलने योग्य। अप्राप्य। २ बेमेल। ३ जिसमें मेल जोल न हो। ४ ऊबड़-खाबड़। ऊँचा-नीचा।
अमिली–संज्ञा स्त्री० दे० "इमली"।
संज्ञा स्त्री० [हि० अ+मिलना] मेल या अनुकूलता न होना। विरोध। मन मुटाव।
अमिश्रित–वि० [सं०] १ जो मिलाया न गया हो। २ बेमिलावट। खालिस।
अमिष–संज्ञा पु० [सं०] १ छल का अभाव। बहाने का न होना। २ दे० "आमिष"।
वि० निश्छल। जो हीलेबाज न हो।
अमी*–संज्ञा पु० दे० 'अमिय'।
अमीकर*–संज्ञा पु० [सं० अमृतकर] चंद्रमा।
अमीत*–संज्ञा पु० [सं० अमित्र] शत्रु।
अमीन–संज्ञा पु० [अ०] वह अदालती कर्मचारी जिसके सिपुर्द बाहर का काम हो।
अमीर–संज्ञा पु० [अ०] १ कार्याधिकार रखनेवाला। सरदार। २ धनाढ्य। दौलतमंद। ३ उदार।
अमीराना–वि० [अ०] अमीरों का सा। जिससे अमीरी प्रकट हो।
अमीरी–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ धनाढ्यता। दौलतमंदी। २ उदारता।
वि० अमीर का-सा। जैसे अमीरी ठाट।
अमुक–वि० [सं०] फलाँ। ऐसा ऐसा। कोई व्यक्ति। (इस शब्द का प्रयोग किसी नाम के स्थान पर करते हैं।)
अमूर्त्त–वि० [सं०] मूर्त्तिरहित। निराकार। संज्ञा पु० १ परमेश्वर। २ आत्मा। ३ जीव। ४ काल। ५ दिशा। ६

आकाश। ७. वायु।

अमूर्त्ति–वि० [सं०] मूर्त्तिरहित। निराकार।

अमूर्त्तिमान्–वि० [सं० अमूर्त्तिमत्] १. निराकार। २. अप्रत्यक्ष। अगोचर।

अमूल–वि० [सं०] बे जड़ का।
संज्ञा पुं० प्रकृति। (सांख्य)

अमूलक–वि० [सं०] १. जिसकी कोई जड़ न हो। निर्मूल। २. असत्य। मिथ्या।

अमूल्य–वि० [सं०] १. जिसका मूल्य निर्धारित न हो सके। अनमोल। २. बहुमूल्य। बेशक़ीमत।

अमृत–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह वस्तु जिसके पीने से जीव अमर हो जाता है। सुधा। पीयूष। २. जल। ३. घी। ४. यज्ञ के पीछे की बची हुई सामग्री। ५. अन्न। ६. मुक्ति। ७. दूध। ८. औषध। ९. विष। १०. बछनाग। ११. पारा। १२. घन। १३. सोना। १४. मीठी वस्तु।

अमृतकर–संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

अमृतकुंडली–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक छंद। २. एक बाजा।

अमृतगति–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक छंद।

अमृतत्व–संज्ञा पुं० [सं०] १. मरण का अभाव। न मरना। २. मोक्ष। मुक्ति।

अमृतदान–संज्ञा पुं० [सं० अमृत + आधान] भोजन की चीजें रखने का एक प्रकार का ढकनेदार वर्तन।

अमृतधारा–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त।

अमृतध्वनि–संज्ञा स्त्री० [सं०] २४ मात्राओं का एक यौगिक छंद।

अमृतवान–संज्ञा पुं० [सं० अमृत = घी + वान] लाह का रोगन किया हुआ मिट्टी का बरतन।

अमृतमूरि–संज्ञा स्त्री० [सं०] संजीवनी जड़ी। अमरमूर।

अमृतयोग–संज्ञा पुं० [सं०] फलित ज्योतिष में एक शुभ फल-दायक योग।

अमृतसंजीवनी–वि० स्त्री० दे० "मृत-संजीवनी"।

अमृतांशु–संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

अमेजना*–क्रि० स० [फ़ा० आमेज़न] मिलावट करना। मिलाना।

अमेध्य–संज्ञा पुं० [सं०] अपवित्र वस्तु। विष्ठा, मल-मूत्र आदि।
वि० १. जो वस्तु यज्ञ में काम न आ सके। जैसे, पशुओं में कुत्ता और अन्नों में मसूर, उर्द आदि। २. जो यज्ञ कराने योग्य न हो। ३. अपवित्र।

अमेय–वि० [सं०] १. अपरिमाण। असीम। बेहद। २. जो जाना न जा सके। अज्ञेय।

अमोघ–वि० [सं०] निष्फल न होनेवाला। अव्यर्थ। अचूक।

अमोल, अमोलक*–वि० [सं० अ + हिं० मोल] अमूल्य। बहुमूल्य। क़ीमती।

अमोला–संज्ञा पुं० [सं० आम्र] आम का नया निकलता हुआ पौधा।

अमोही–वि० [सं० अमोह] १. विरक्त। २. निर्मोही। निष्ठुर।

अमौआ–संज्ञा पुं० [हिं० आम + औआ (प्रत्य०)] १. आम के सूखे रस का-सा रंग जो कई प्रकार का होता है, जैसे पीला, सुनहरा, मूँगिया, इत्यादि। २. इस रंग का कपड़ा।

अम्माँ–संज्ञा स्त्री० [सं० अम्बा] माता। माँ।

अम्मामा–संज्ञा पुं० [अ०] एक प्रकार का बड़ा साफ़ा।

अम्मारी–संज्ञा स्त्री० दे० "अंबारी"।

अम्ल–संज्ञा पुं० [सं०] १. खटाई। २. तेज़ाब।
वि० खट्टा। तुर्श।

अम्लजन–संज्ञा पुं० दे० "आक्सिजन"।

अम्लपित्त–संज्ञा पुं० [सं०] एक रोग जिसमें जो कुछ भोजन किया जाता है, सब पित्त के दोष से खट्टा हो जाता है।

अम्लसार–संज्ञा पुं० [सं०] १. काँजी। २. चूक। ३. अमलवेत। ४. हिंताल। ५. आमलासार गंधक।

अम्लान–वि० [सं०] १. जो उदास न हो। २. निर्मल। स्वच्छ। साफ़।

अम्हौरी–संज्ञा स्त्री० [सं० अम्भस् + औरी

(प्रत्य०)] बहुत छोटी-छोटी फुंसियाँ जो गरमी के दिनों में पसीने के कारण शरीर में निकलती हैं। अँधौरी। घमौरी।
अयं-सर्व० [सं०] यह।
अय-संज्ञा पुं० [सं०] १ लोहा। २ अस्त्र-शस्त्र। हथियार। ३ अग्नि।
अयथा-वि० [सं०] १. मिथ्या। भूठ। अतथ्य। २ अयोग्य।
अयन-संज्ञा पुं० [सं०] १. गति। चाल। २ सूर्य्य या चंद्रमा की दक्षिण और उत्तर की गति या प्रवृत्ति जिसका उत्तरायण और दक्षिणायन कहते हैं। बारह राशियों के चक्र का आधा। ३ राशिचक्र की गति। ४ ज्योतिषशास्त्र। ५ एक प्रकार का सेनानिवेश (कवायद)। ६ आश्रम। ७ स्थान। ८. घर। ९ काल। समय। १० अंश। ११ एक यज्ञ जो अयन के प्रारम्भ में होता था। १२ गाय या भैंस के थन का वह ऊपरी भाग जिसमें दूध रहता है।
अयनकाल-संज्ञा पुं० [सं०] १ वह काल जो एक अयन में लगे। २ छ महीने का काल।
अयनसंक्रम-संज्ञा पुं० [सं०] मकर और कर्क की संक्रांति। अयन-संक्रांति।
अयनसंक्रांति-संज्ञा स्त्री० [सं०] अयन संक्रम।
अयनसंपात-संज्ञा पुं० [सं०] अयनांशों का योग।
अयश-संज्ञा पुं० [सं०] १ अपयश। अपकीर्ति। २ निंदा।
अयस्कांत-संज्ञा पुं० [सं०] चुंबक।
अयाचक-वि० [सं०] १ न माँगनेवाला। जो माँगे नहीं। २ संतुष्ट। पूर्णकाम।
अयाचित-वि० [सं०] बिना माँगा हुआ।
अयाची-वि०[सं० अयाचिन्] १ अयाचक। न माँगनेवाला। २ संपन्न। धनी।
अयाच्य-वि० [सं०] १ जिसे माँगने की आवश्यकता न हो। भरा-पूरा। २ संतुष्ट। तृप्त।
अयान-वि० दे० "अजान"।
वि० [सं०] बिना सवारी का। पैदल।
अयानप, अयानपन*-संज्ञा पुं० [हिं० अजान+पन] १ अज्ञानता। अनजानपन। २ भोलापन। सीधापन।
अयानी*-वि० स्त्री० [हिं० अजान][पुं० अयाना] अजान। बुद्धिहीन। अज्ञानी।
अयाल-संज्ञा पुं० [फा०] घोड़े और सिंह आदि की गर्दन के बाल। केसर।
अयि-अव्य० [सं०] संबोधन का शब्द है। अय। अरे। अरी।
अयुक्त-वि० [सं०] १ अयोग्य। अनुचित। बेठीक। २ असंयुक्त। अलग। ३ आपद्ग्रस्त। ४ अनमना। ५ असंबद्ध। युक्तिशून्य।
अयुक्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ युक्ति का अभाव। असंबद्धता। गड़बड़ी। २ योग न देना। अप्रवृत्ति।
अयुग, अयुग्म-वि० [सं०] १ विषम। ताक। २ अकेला। एकाकी।
अयुत-संज्ञा पुं० [सं०] १ दस हजार की संख्या का स्थान। २ उस स्थान की संख्या।
अयोग-संज्ञा पुं० [सं०] १ योग का अभाव। २ बुरा योग। फलित ज्योतिष के अनुसार दुष्ट ग्रह-नक्षत्रादि का पड़ना। ३ कुसमय। कुकाल। ४ कठिनाई। संकट। ५ वह वाक्य जिसका अर्थ सुगमता से न लगे। कूट। ६ अप्राप्ति। ७ असंभव।
वि० [सं०] अप्रशस्त। बुरा।
वि० [सं० अयोग्य] अयोग्य। अनुचित।
अयोग्य-वि० [सं०] १ जो योग्य न हो। अनुपयुक्त। २ नालायक। निकम्मा। अपात्र। ३ अनुचित। ना-मुनासिब।
अयोनि-वि० [सं०] १ जो उत्पन्न न हुआ हो। अजन्मा। २ नित्य।
अरग-संज्ञा पुं० [देश०] सुगंध का झोंका।
अरंड-संज्ञा पुं० दे० "एरंड", "रेंड"।
अरंभ*-संज्ञा पुं० १ दे० "आरंभ"। २ हलचल। शोर। ३ नाद। शब्द।
अरंभना*-क्रि० अ० [सं० आ+रंभ=शब्द

करना] १. बोलना। नाद करना। २. शोर करना।
क्रि० स० [सं० आरंभ] आरंभ करना।
क्रि० अ० आरंभ होना। शुरू होना।
अर*–संज्ञा पुं० [हिं० अड़] जिद। अड़।
अरक़–संज्ञा पुं० [अ०] १. किसी पदार्थ का रस जो भभके से खींचने से निकले। आसव। २. रस। ३. पसीना।
अरकना*–क्रि० अ० [अनु०] १. अरराकर गिरना। टकराना। २. फटना। दरकना।
अरक़ नाना–संज्ञा पुं० [अ०] एक अरक़ जो पुदीना और सिरका मिलाकर खींचने से बनता है।
अरकना-बरकना*–क्रि० अ० [अनु०] इधर-उधर करना। खींचा-तानी करना।
अरकाटी–संज्ञा पुं० [आरकाट प्रदेश] वह जो कुली भरती कराकर बाहर टापुओं में भेजता है।
अरगजा–संज्ञा पुं० [हिं० अरग + जा] एक सुगंधित द्रव्य जो केसर, चंदन, कपूर आदि को मिलाने से बनता है।
अरगजी–संज्ञा पुं० [हिं० अरगजा] एक रंग जो अरगजे का-सा होता है।
अरगट*–वि० [हिं० अलग] पृथक्। अलग। निराला। भिन्न।
अरगनी–संज्ञा स्त्री० दे० "अलगनी"।
अरगवानी–संज्ञा पुं० [फा०] लाल रंग। वि० १. लाल। २. बैंगनी।
अरगल–संज्ञा पुं० दे० "अर्गल"।
अरगला–संज्ञा पुं० [सं० अर्गल] १. अर्गल। २. रोक। संयम।
अरगाना*–क्रि० अ० [हिं० अलगाना] १. अलग होना। पृथक् होना। २. सन्नाटा खींचना। चुप्पी साधना। मौन होना।
क्रि० स० अलग करना। छांटना।
अरघ–संज्ञा पुं० दे० "अर्घ"।
अरघा–संज्ञा पुं० [सं० अर्घ] १. एक गावदुम पात्र जिसमें अरघ का जल रखकर दिया जाता है। २. वह आधार जिसमें शिवलिंग स्थापित किया जाता है। जलधरी। जलहरी। ३. कूएँ की जगत पर पानी के लिये बना हुआ रास्ता। चँवना।
अरघान*–संज्ञा पुं० [सं० आघ्राण] गंध। महक। आघ्राण।
अरचन*–संज्ञा पुं० दे० "अर्चन"।
अरचना*–क्रि० स० [सं० अर्चन] पूजा करना।
अरचि*–संज्ञा स्त्री० दे० "अर्चि"।
अरज–संज्ञा स्त्री० [अ० अर्ज़] १. विनय। निवेदन। विनती। २. चौड़ाई।
अरजल–संज्ञा पुं० [अ०] १. वह घोड़ा जिसके दोनों पिछले पैर और अगला दाहिना पैर सफ़ेद या एक रंग के हों। (ऐबी) २. नीच जाति का पुरुष। ३. वर्णसंकर।
अरज़ी–संज्ञा स्त्री० [अ० अर्ज़ी] आवेदनपत्र। निवेदनपत्र। प्रार्थनापत्र।
*†[अ० अर्ज़] प्रार्थी। अर्ज करनेवाला।
अरणि, अरणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वृक्ष। गनियार। अँगेयू। २. सूर्य्य। ३. काठ का बना हुआ एक यंत्र जिसमें यज्ञों में आग निकालते हैं। अग्निमंथ।
अरण्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. वन। जंगल। २. कायफल। ३. सन्यासियों के दस भेदों में से एक।
अरण्यरोदन–संज्ञा पुं० [सं०] १. निष्फल रोना। ऐसी पुकार जिसका सुननेवाला न हो। २. ऐसी बात जिसपर कोई ध्यान न दे।
अरति–संज्ञा स्त्री० [सं०] विराग। चित्त का न लगना।
अरथ*–संज्ञा पुं० दे० "अर्थ"।
अरथाना*–क्रि० स० [सं० अर्थ] समझाना। विवरण करना। व्याख्या करना।
अरथी–संज्ञा स्त्री० [सं० रथ] सीढ़ी के आकार का ढाँचा जिसपर मुर्दे को रखकर श्मशान ले जाते हैं। टिखटी।
संज्ञा पुं० [सं० अ + रथी] जो रथी न हो।

पैदल।
वि० दे० "अर्धा"।
अरदना–क्रि० स० [सं० अर्द] १ रौंदना। गारना। हीगना।
कुचलना। २ वध या नाश करना।
अरदली–संज्ञा पु० [अं० आर्डरली] वह चप-रासी जो साथ में या दरवाजे पर रहता है।
अरदास–संज्ञा स्त्री० [फा० अर्जदाश्त] १ विदा में साथ भेंट। नजर। २ देवता के निमित्त भेंट निकालना।
अरधंग–संज्ञा पु० दे० "अर्द्धांग"।
अरधंगी*–संज्ञा पु० दे० "अर्द्धांगी"।
अरध*–वि० दे० "अर्ध"।
क्रि० वि० [सं० अधः] अंदर। भीतर।
अरन*–संज्ञा पु० दे० "अरण्य"।
अरना–संज्ञा पु० [सं० अरण्य] जंगली भैंसा।
*क्रि० अ० दे० "अड़ना"।
अरनि*–संज्ञा स्त्री० दे० "अड़नि"।
अरनी–संज्ञास्त्री० [सं० अरणी] १ एक छोटा वृक्ष जो हिमालय पर होता है। २ यज्ञ का अग्निमथन काष्ठ।
वि० दे० "अरणि"।
अरपन*–संज्ञा पु० दे० "अर्पण"।
अरपना*–क्रि० स० [अर्पण] अर्पण करना।
अरब–संज्ञा पु० [सं० अर्बुद] १ सौ करोड़। २ इसकी संख्या।
*संज्ञा पु० [सं० अर्वन्] १ घोड़ा। २ इंद्र।
संज्ञा पु० [अ०] १ एशिया खंड का एक मरुदेश। २ इस देश का उत्पन्न घोड़ा।
अरबर*–वि० दे० "अडबड"।
अरबराना*–क्रि० अ० [हिं० अरबर] १ घबराना। व्याकुल होना। विचलित होना। २ चलने में लड़खड़ाना।
अरबरी*–संज्ञा स्त्री० [हिं० अरबर] घब-राहट। हड़बड़ी। आकुलता।
अरबी–वि० [फा०] अरब देश का।
संज्ञा पु० १ अरबी घोड़ा। ताजी। ऐराकी। २ अरबी ऊँट। ३ अरबी बाजा। ताशा।
अरबीला*–वि० [अनु०] भोलाभाला।
अरभक*–वि० दे० "अर्भक"।
अरमान–संज्ञा पु० [तु०] इच्छा। लालसा।
अरर–अव्य० [अनु०] अत्यंत व्यग्रता तथा अचंभे का सूचक शब्द।
अरराना–क्रि० अ० [अनु०] १ अररर शब्द करना। टूटने या गिरने का शब्द करना। २ सहसा पड़ना। सहसा गिरना।
अरवा–संज्ञा पु० [सं० अ+हिं० लावा] वह चावल जो कच्चे धान अर्थात् बिना उबाले धान से निकाला जाय।
संज्ञा पु० [सं० आलय] आला। ताखा।
अरविंद–संज्ञा पु० [सं०] १ कमल। २ सारस।
अरवी–संज्ञा स्त्री० [सं० आलु] एक कंद जो तरकारी के रूप में खाया जाता है।
अरस–वि० [सं० अ+रस] १ नीरस। फीका। २ गँवार। अनाड़ी।
संज्ञा पु० [सं० अलस] आलस्य।
संज्ञा पु० [अ० अर्श] १ छत। पाटन। २ धरहरा। ३ महल।
अरसना*–क्रि० अ० [सं० अलस] शिथिल पड़ना। ढीला पड़ना। मंद होना।
अरसना-परसना–क्रि० स० [सं० स्पर्शन] आलिंगन करना। मिलना। भेंटना।
अरस परस–संज्ञा पु० [सं० स्पर्श] लड़कों का एक खेल। छुआ छुई। आँखमिचौली।
संज्ञा पु० [सं० दर्शन-स्पर्शन] देखना।
अरसा–संज्ञा पु० [अ०] १ समय। काल। २ देर। अतिकाल। विलंब।
अरसात–संज्ञा पु० [सं० अलस] २४ अक्षरों का एक वृत्त।
अरसाना*–क्रि० अ० [सं० अलस] १ अलसाना। २ निद्राग्रस्त होना।
अरसी*–संज्ञा स्त्री० दे० 'अलसी'।
अरसीला*–वि० [सं० अलस] आलस्यपूर्ण। आलस्य से भरा।
अरसौहाँ*–वि० दे० 'अलसौहाँ'।
अरहट–संज्ञा पु० [सं० अरघट्ट] रहट नामक यंत्र जिससे कूएँ से पानी निकालते हैं।

अरहन–संज्ञा पुं० [सं० रंधन] वह आटा या बेसन जो तरकारी आदि पकाते समय उसमें मिलाया जाता है। रेहन।

अरहना*–संज्ञा स्त्री० [सं० अर्हणा] पूजा।

अरहर–संज्ञा स्त्री० [सं० आढकी, प्रा० अड्ढकी] दो दल के दानों का एक अनाज जिसकी दाल खाई जाती है। तुवरी। तुअर।

अराक–संज्ञा पुं० [अ० इराक़] १. एक देश जो अरब में है। २. वहाँ का घोड़ा।

अराज–वि० [सं० अ+राजन्] १. बिना राजा का। २. बिना क्षत्रिय का।
संज्ञा पुं० [सं० अ+राजन्] अराजकता। शासन-विप्लव। हलचल।

अराजक–वि० [सं०] जहाँ राजा न हो। राजाहीन। बिना राजा का।

अराजकता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. राजा का न होना। २. शासन का अभाव। ३. अशांति। हलचल।

अराति–संज्ञा पुं० [सं०] १. शत्रु। २. काम, क्रोध आदि विकार। ३. छः की संख्या।

अराधन–संज्ञा पुं० दे० "आराधन"।

अराधना–क्रि० स० [सं० आराधन] १. आराधना करना। पूजा करना। २. जपना। ध्यान करना।

अराबा–संज्ञा पुं० [अ०] १. गाड़ी। रथ। २. वह गाड़ी जिसपर तोप लादी जाय। चरख।

अराम|–संज्ञा पुं० दे० "आराम"।

अरारूट–संज्ञा पुं० [अं० एरोरूट] एक पौधा जिसके कंद का आटा तीखुर की तरह काम में आता है।

अरारोट–संज्ञा पुं० दे० "अरारूट"।

अराल–वि० [सं०] कुटिल। टेढ़ा।
संज्ञा पुं० १. राल। २. मत्त हाथी।

अरावल–संज्ञा पुं० दे० 'हरावल'।

अरि–संज्ञा पुं० [सं०] १. शत्रु। वैरी। २. चक्र। ३. काम, क्रोध आदि। ४. छः की संख्या। ५. लग्न से छठा स्थान। (ज्यो०) ६. विट् खदिर। दुर्गंध खैर।

अरियाना*–क्रि० स० [सं० अरे] अरे यह कर बोलना। तिरस्कार करना।

अरिल्ल–संज्ञा पुं० [सं० अरिला] सोलह मात्राओं का एक छंद।

अरिष्ट–संज्ञा पुं० [सं०] १. दुःख। पीड़ा। २. आपत्ति। विपत्ति। ३. दुर्भाग्य। अमंगल। ४. अपशकुन। ५. दुष्ट ग्रहों का योग। मरणकारक योग। ६. एक प्रकार का मद्य जो धूप में ओषधियों का खमीर उठाकर बनता है। ७. काढ़ा। ८. वृषभासुर। ९. अनिष्ट-सूचक उत्पात; जैसे भूकंप। १०. सौरी। सूतिकागृह।
वि० [सं०] १. दृढ़। अविनाशी। २. शुभ। ३. बुरा। अशुभ।

अरिष्टनेमि–संज्ञा पुं० [सं०] १. कश्यप प्रजापति का एक नाम। २. कश्यप जी का एक पुत्र जो विनता से उत्पन्न हुआ था।

अरिहन–संज्ञा पुं० [सं० अरिघ्न] शत्रुघ्न।
संज्ञा पुं० दे० "अरहर"।

अरिहा–वि० [सं०] शत्रु का नाश करनेवाला।
संज्ञा पुं० [सं०] लक्ष्मण के छोटे भाई शत्रुघ्न।

अरी–अव्य० [सं० अयि] स्त्रियों के लिये संबोधन।

अरुंधती–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वशिष्ठ मुनि की स्त्री। २. दक्ष की एक कन्या जो धर्म से ब्याही गई थी। ३. एक बहुत छोटा तारा जो सप्तर्षिमंडलस्थ वशिष्ठ के पास पड़ता है।

अरु–संयो० दे० "और"।

अरुई|–संज्ञा स्त्री० दे० "अरवी"।

अरुचि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रुचि का अभाव। अनिच्छा। २. अग्निमांद्य रोग जिसमें भोजन की इच्छा नहीं होती। ३. घृणा। नफ़रत।

अरुचिकर–वि० [सं०] जो रुचिकर न हो। जो भला न लगे।

अरुज–वि० [सं०] नीरोग। रोगरहित।

अरुझना–क्रि० अ० दे० "उलझना"।

अरुझाना–क्रि० स० दे० "उलझाना"।

अरुण–वि० [सं०] [स्त्री० अरुणा] लाल। रक्त।
संज्ञा पुं० [सं०] १ सूर्य्य। २ सूर्य्य का सारथी। ३ गुड़। ४ ललाई जो संध्या-सवेरे पश्चिम में दिखाई पड़ती है। ५ एक प्रकार का कुष्ठ रोग। ६ गहरा लाल रंग। ७ कुमकुम। ८ सिंदूर। ९ एक देश। १० माघ के महीने का सूर्य।
अरुणचूड़–संज्ञा पुं० [सं०] कुक्कुट। मुर्गा।
अरुणप्रिया–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अप्सरा। २ छाया और संज्ञा, सूर्य्य की स्त्रियाँ।
अरुणशिखा–संज्ञा पुं० [सं०] मुर्गा।
अरुणाई–संज्ञा स्त्री० [सं० अरुण] ललाई। रक्तता। लाली।
अरुणिमा–संज्ञा स्त्री० [सं०] ललाई। लालिमा। सुर्खी।
अरुणोदय–संज्ञा पुं० [सं०] उषाकाल। ब्राह्म मुहूर्त। तड़का। भोर।
अरुणोपल–संज्ञा पुं० [सं०] पद्मराग मणि। लाल।
अरुन*–वि० दे० "अरुण"।
अरुनाना*–क्रि० अ० [सं० अरुण] लाल होना।
क्रि० स० [सं० अरुण] लाल करना।
अरुनारा–वि० [सं० अरुण] लाल। लाल रंग का।
अरुरना*†–क्रि० अ० [देश०] लचकना। बल खाना। मुड़ना।
अरुवा–संज्ञा पुं० [सं० अरु] एक लता जिसका कंद खाया जाता है।
संज्ञा पुं० [हिं० रुरुआ] उल्लू पक्षी।
अरूढ़*–वि० दे० 'आरूढ़'।
अरूप–वि० [सं०] रूपरहित। निराकार।
अरूलना–क्रि० अ० [सं० अरुस् = क्षत, घाव] १ छिदना। घाव होना। २ पीड़ित होना।
अरे–अव्य० [सं०] १ संबोधन का शब्द। ए! ओ! २ एक आश्चर्य्यसूचक अव्यय।
अरेरना*–क्रि० अ० [अनु०] रगड़ना।
अरोगना*–क्रि० अ० दे० "आरोगना"।
अरोच*–संज्ञा पुं० दे० "अरुचि"।
अरोचक–संज्ञा पुं० [सं०] एक रोग जिसमें अन्न आदि का स्वाद नहीं मिलता।
वि० [सं०] जो रुचे नहीं। अरुचिकर।
अरोहन*–संज्ञा पुं० दे० "आरोहण"।
अरोहना–क्रि० अ० [सं० आरोहण] चढ़ना।
अर्क–संज्ञा पुं० [सं०] १ सूर्य्य। २ इंद्र। ३ ताँबा। ४ स्फटिक। ५ विष्णु। ६ पंडित। ७ आक। मदार। ८ बारह की संख्या।
संज्ञा पुं० [अ०] उतारा या निचोड़ा हुआ रस। दे० "अरक"।
अर्कज–संज्ञा पुं० [सं०] १ सूर्य्य के पुत्र। यम। २ शनि। ३ अश्विनीकुमार। ४ सुग्रीव। ५ कर्ण।
अर्कजा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सूर्य्य की कन्या यमुना। २ तापती।
अर्कनाना–संज्ञा पुं० [अ०] सिरके के साथ भबके में उतारा हुआ पुदीने का अर्क।
अर्कव्रत–संज्ञा पुं० [सं०] राजा का प्रजा की वृद्धि के लिये उनसे कर लेना।
अर्कोपल–संज्ञा पुं० [सं०] १ सूर्य्य-कांत मणि। २ लाल। पद्मराग।
अर्गल–संज्ञा पुं० [सं०] १ वह लकड़ी जिसे किवाड़ बंद करके पीछे से आड़ी लगा देते हैं। अरगल। अगरी। ब्योंड़ा। २ किवाड़। ३ अवरोध। ४ कल्लोल। ५ वे रंग बिरंग के बादल जो सूर्य्योदय या सूर्यास्त के समय पूर्व या पश्चिम दिशा में दिखाई पड़ते हैं। ६ मास।
अर्गला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अरगल। अगरी। २ ब्योंड़ा। ३ सिकड़ी। किल्ली। सिटकिनी। ४ जंजीर जिसमें हाथी बाँधा जाता है। ५ एक स्तोत्र जिसका दुर्गासप्तशती के आदि में पाठ करते हैं। मत्स्य-सूक्त। ६ अवरोध। ७ बाधक।
अर्घ–संज्ञा पुं० [सं०] १ षोडशोपचार में से एक। जल, दूध, कुशाग्र, दही, सरसों, तंडुल और जौ को मिलाकर देवता को अर्पण करना। २ अर्घ देने का पदार्थ।

३. जलदान। सामने जल गिराना। ४. हाथ धोने के लिये जल देना। ५. मूल्य। भाव। ६. भेंट। ७. जल से सम्मानार्थ सींचना। ८. घोड़ा। ९. मधु। शहद।
अर्घपात्र–संज्ञा पुं० [सं०] शंख के आकार का ताँबे का बरतन जिससे सूर्य्य आदि देवताओं को अर्घ दिया जाता है। अर्घा।
अर्घा–संज्ञा पुं० [सं० अर्घ] १. अर्घपात्र। २. जलहरी।
अर्घ्य–वि० [सं०] १. पूजनीय। २. बहुमूल्य। ३. पूजा में देने योग्य (जल, फूल, मूल आदि) ४. भेंट देने योग्य।
अर्चक–वि० [सं०] पूजा करनेवाला। पूजक।
अर्चन–संज्ञा पुं० [सं०] १. पूजा। पूजन। २. आदर। सत्कार।
अर्चनीय–वि० [सं०] १. पूजनीय। पूजा करने योग्य। २. आदरणीय।
अर्चा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पूजा। २. प्रतिमा।
अर्चित–वि० [सं०] १. पूजित। २. आदृत।
अर्ज–संज्ञा स्त्री० [अ०] विनती। विनय। संज्ञा पुं० चौड़ाई। आयत।
अर्जदाश्त–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] निवेदन-पत्र।
अर्जन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अर्जनीय] १. उपार्जन। पैदा करना। कमाना। २. संग्रह करना। संग्रह।
अर्जमा*–संज्ञा पुं० दे० "अर्यमा"।
अर्जित–वि० [सं०] १. संग्रह किया हुआ। संगृहीत। २. कमाया हुआ। प्राप्त।
अर्जी–संज्ञा स्त्री० [अ०] प्रार्थना-पत्र। निवेदन-पत्र।
अर्जीदावा–संज्ञा पुं० [फा०] वह निवेदन-पत्र जो अदालत में किसी दादरसी के लिये दिया जाय।
अर्जुन–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक बड़ा वृक्ष। कहू। २. पाँच पांडवों में से मँझले का नाम। ३. हैहय-वंशी एक राजा। सहस्रार्जुन। ४. सफ़ेद कनेर। ५. मोर। ६. आँख की फूली। ७. एकलौता बेटा।
अर्जुनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सफ़ेद रंग की गाय। २. कुटनी। ३. उषा।
अर्ण–संज्ञा पुं० [सं०] १. वर्ण। अक्षर। जैसे, पंचार्ण=पंचाक्षर। २. जल। पानी। ३. एक दंडक वृत्त। ४. शाल वृक्ष।
अर्णव–संज्ञा पुं० [सं०] १. समुद्र। २. सूर्य्य। ३. इंद्र। ४. अंतरिक्ष। ५. दंडक वृत्त का एक भेद। ६. चार की संख्या।
अर्थ–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अर्थी] १. शब्द का अभिप्राय। शब्द की शक्ति। मानी। २. अभिप्राय। प्रयोजन। मतलब। ३. काम। इष्ट। ४. हेतु। निमित्त। ५. इंद्रियों के विषय। ६. धन। संपत्ति।
अर्थकर–वि० पुं० [सं०] [स्त्री० अर्थकरी] जिससे धन उपार्जन किया जाय। लाभकारी। जैसे, अर्थकरी विद्या।
अर्थदंड–संज्ञा पुं० [सं०] वह धन जो किसी अपराध के दंड में अपराधी से लिया जाय। जुर्माना।
अर्थपति–संज्ञा पुं० [सं०] १. कुबेर। २. राजा।
अर्थपिशाच–वि० [सं०] बहुत बड़ा कंजूस। धनलोलुप।
अर्थमंत्री–संज्ञा पुं० दे० "अर्थसचिव"।
अर्थवाद–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह वाक्य जिससे किसी विधि के करने की उत्तेजना पाई जाय। २. वह वाक्य जो सिद्धांत के रूप में न कहा जाय, केवल किसी ओर चित्त प्रवृत्त करने के लिये कहा जाय।
अर्थवेद–संज्ञा पुं० [सं०] शिल्प-शास्त्र।
अर्थशास्त्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह शास्त्र जिसमें अर्थ की प्राप्ति, रक्षा और वृद्धि का विधान हो। २. राज्य के प्रबंध, वृद्धि, रक्षा आदि की विद्या।
अर्थसचिव–संज्ञा पुं० [सं०] वह मंत्री जो राज्य के आर्थिक विषयों की देख-रेख करे।
अर्थान्तरन्यास–संज्ञा पुं० [सं०] वह काव्यालंकार जिसमें सामान्य से विशेष का या विशेष से सामान्य का साधर्म्य या वैधर्म्य द्वारा समर्थन किया जाय।

अर्थात्–अव्य० [सं०] यानी। मतलब यह कि। विवरण-सूचक शब्द।
अर्थाना*–क्रि० स० [सं० अर्थ] अर्थ लगाना।
अर्थापत्ति–संज्ञा पुं० [सं०] १. मीमांसा के अनुसार वह प्रमाण जिसमें एक बात से दूसरी बात की सिद्धि आपसे आप हो जाय। २. एक अर्थालंकार जिसमें एक बात के कथन से दूसरी बात की सिद्धि दिखलाई जाय।
अर्थालंकार–संज्ञा पुं० [सं०] वह अलंकार जिसमें अर्थ का चमत्कार दिखाया जाय।
अर्थी–वि० [सं० अर्थिन्] [स्त्री० अर्थिनी] १. इच्छा रखनेवाला। चाह रखनेवाला। २. कार्य्यार्थी। प्रयोजनवाला। गर्जी। संज्ञा पुं० १. वादी। मुद्दई। २. सेवक। ३. धनी।
संज्ञा स्त्री० दे० "अरथी"।
अर्दन–संज्ञा पुं० [सं०] १. पीड़न। हिंसा। २. जाना। ३. माँगना।
अर्दना*–क्रि० स० [सं० अर्दन] पीड़ित करना।
अर्दली–संज्ञा पुं० दे० "अरदली"।
अर्द्ध–वि० [सं०] आधा।
अर्द्धचन्द्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. आधा चाँद। अष्टमी का चंद्रमा। २. चंद्रिका। मोर-पख पर की आँख। ३. नखक्षत। ४. एक प्रकार का बाण। ५. सानुनासिक का एक चिह्न। चंद्रबिंदु। ६. एक प्रकार का त्रिपुंड। ७. गरदनिया। निकाल बाहर करने के लिये गले में हाथ लगाने की मुद्रा।
अर्द्धजल–संज्ञा पुं० [सं०] श्मशान में शव को स्नान कराके आधा जल में और आधा बाहर रखने की क्रिया।
अर्द्धनयन–संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं की तीसरी आँख जो ललाट में होती है।
अर्द्धनारीश्वर–संज्ञा पुं० [सं०] तंत्र में शिव और पार्वती का सम्मिलित रूप।
अर्द्धमागधी–संज्ञा स्त्री० [सं०] प्राकृत का एक भेद। काशी और मथुरा के बीच के देश की पुरानी भाषा।
अर्द्धसम वृत्त–संज्ञा पुं० [सं०] वह छंद जिसका पहला चरण तीसरे चरण के बराबर और दूसरा चौथे के बराबर हो। जैसे, दोहा और सोरठा।
अर्द्धांग–संज्ञा पुं० [सं०] १. आधा अंग। २. लकवा। रोग जिसमें आधा अंग बेकाम हो जाता है। फालिज। पक्षाघात।
अर्द्धांगिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] स्त्री। पत्नी।
अर्द्धांगी–संज्ञा पुं० [सं० अर्द्धांगिन्] शिव। वि० [सं०] अर्द्धांग-रोग-ग्रस्त।
अर्द्धाली–संज्ञा स्त्री० [सं० अर्धालि] आधी चौपाई। चौपाई की दो पंक्तियाँ।
अर्द्धोदय–संज्ञा पुं० [सं०] एक पर्व जो उस दिन होता है जिस दिन माघ की अमावास्या रविवार को होती है और श्रवण नक्षत्र और व्यतीपात योग पड़ता है।
अर्धंग*–संज्ञा पुं० दे० "अर्द्धांग"।
अर्धंगी–संज्ञा पुं० दे० "अर्द्धांगी"।
अर्पण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अर्पित] १. देना। दान। २. नजर। भेंट। ३. स्थापन।
अर्पना*–क्रि० स० दे० "अरपना"।
अर्ब-दर्ब*–संज्ञा पुं० [सं० द्रव्य] धन-दौलत।
अर्बुद–संज्ञा पुं० [सं०] १. गणित में नवें स्थान की संख्या। दस कोटि। दस करोड़। २. अरावली पहाड़। ३. एक असुर। ४. कद्रु का पुत्र, एक सर्प। ५. मेघ। बादल। ६. दो मास का गर्भ। ७. एक रोग जिसमें एक प्रकार की गाँठ शरीर में पड़ जाती है। बतौरी।
अर्भक–वि० पुं० [सं०] १. छोटा। अल्प। २. मूर्ख। ३. दुबला। पतला। संज्ञा पुं० [सं०] बालक। लड़का।
अर्य्य–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अर्या, अर्याणी, अर्यी] १. स्वामी। ईश्वर। २. वैश्य। वि० श्रेष्ठ। उत्तम।
अर्य्यमा–संज्ञा पुं० [सं०] [अर्यमन्] १. सूर्य। २. बारह आदित्यों में से एक। ३. पितर के गणों में से एक। ४. उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र। ५. मदार।
अर्वाक्–अव्य० [सं०] १. पीछे। इधर।

२. निकट। समीप।
अर्वाचीन-वि० [सं०] १. पीछे का। आधुनिक। २. नवीन। नया।
अर्श-संज्ञा पुं० [सं०] बवासीर।
संज्ञा पुं० [अ०] १. आकाश। २. स्वर्ग।
अर्हत-संज्ञा पुं० [सं०] १. जैनियों के पूज्य देव। जिन। २. बुद्ध।
अर्ह-वि० [सं०] १. पूज्य। २. योग्य। उपयुक्त। जैसे, पूजार्ह, मानार्ह, दंडार्ह।
संज्ञा पुं० १. ईश्वर। २. इंद्र।
अर्हणा-संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० अर्हणीय] पूजा।
अर्हत, अर्हन्-वि० [सं०] पूजा।
संज्ञा पुं० जिनदेव।
अर्ह्य-वि० [सं०] पूज्य। मान्य।
अलं-अव्य० दे० "अलम्"।
अलंकार-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अलंकृत] १. आभूषण। गहना। जेवर। २. वर्णन करने की वह रीति जिसमें चमत्कार और रोचकता आ जाय। ३. नायिका का सौंदर्य्य बढ़ानेवाले हाव-भाव या चेष्टाएँ।
अलंकृत-वि० [सं०] १. विभूषित। सँवारा हुआ। २. काव्यालंकार-युक्त।
अलंग-संज्ञा पुं० [सं० अल=पूर्ण+अंग] ओर। तरफ़। दिशा।
मुहा०-अलंग पर आना वा होना=घोड़ी का मस्ताना।
अलंघनीय-वि० [सं०] जो लाँघने योग्य न हो। अलंघ्य।
अलंघ्य-वि० [सं०] १. जो लाँघने योग्य न हो। जिसे फाँद न सकें। २. जिसे टाल न सकें।
अलंब*-संज्ञा पुं० दे० "आलंब"।
अलक-संज्ञा पुं० [सं०] १. मस्तक के इधर उधर लटकते हुए बाल। केश। लट। छल्लेदार बाल। २. हरताल। ३. मदार।
अलकतरा-संज्ञा पुं० [अ०] पत्थर के कोयले को आग पर गलाकर निकाला हुआ एक गाढ़ा काला पदार्थ।
अलक-लड़ैता*-वि० [हिं० अलक=बाल+लाड़=दुलार] [स्त्री० अलकलड़ैती] दुलारा। लाडला।
अलकसलोरा*-वि० [सं० अलक=बाल+हिं० सलोना] [स्त्री० अलकसलोरी] लाडला। दुलारा।
अलका-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कुबेर की पुरी। २. आठ और दस वर्ष के बीच की लड़की।
अलकापति-संज्ञा पुं० [सं०] कुबेर।
अलकावलि-संज्ञा स्त्री० [सं०] केशों का समूह। बालों की लटें।
अलक्त, अलक्तक-संज्ञा पुं० [सं०] १. लाख। चपड़ा। २. लाह का बना हुआ रंग जिसे स्त्रियाँ पैर में लगाती हैं।
अलक्षित-वि० [सं०] १. अप्रकट। अज्ञात। २. अदृश्य। गायब।
अलक्ष्य-वि० [सं०] १. अदृश्य। जो न देख पड़े। गायब। २. जिसका लक्षण न कहा जा सके।
अलख-वि० [सं० अलक्ष्य] १. जो दिखाई न पड़े। अदृश्य। अप्रत्यक्ष। २. अगोचर। इंद्रियातीत। ईश्वर का एक विशेषण।
मुहा०-अलख जगाना=१. पुकारकर परमात्मा का स्मरण करना या कराना। २. परमात्मा के नाम पर भिक्षा माँगना।
अलखधारी-संज्ञा पुं० दे० "अलखनामी"।
अलखनामी-संज्ञा पुं० [सं० अलक्ष्य+नाम] एक प्रकार के साधु जो भिक्षा के लिये ज़ोर ज़ोर से "अलख अलख" पुकारते हैं।
अलखित*-वि० दे० "अलक्षित"।
अलग-वि० [सं० अलग्न] जुदा। पृथक्। भिन्न। अलहदा।
मुहा०-अलग करना=१. दूर करना। हटाना। २. छुड़ाना। बरखास्त करना। ३. बेलाग। ब[illegible]ा हुआ। रक्षित।
अलगनी-संज्ञा स्त्री० [सं० आलग्न] आड़ी रस्सी या बाँस जो कपड़े लटकाने या फैलाने के लिये घर में बाँधा जाता है। डारा।
अलगरज-वि० दे० "अलगरजी"।
अलगरजी†-वि० [अ०] बेग़रज़। बेपरवाह।

संज्ञा स्त्री० बेपरवाही।

अलगाना–क्रि० स० [हिं० अलग] अलग करना। छाँटना। जुदा करना। २. दूर करना। हटाना।

अलगोजा–संज्ञा पुं० [अ०] एक प्रकार की बाँसुरी।

अलच्छ*–वि० दे० "अलक्ष्य"।

अलज्ज–वि० [सं०] निर्लज्ज। बेहया।

अलता–संज्ञा पुं० [सं० अलक्तक, प्रा० अलत्तअ] १. लाल रंग जो स्त्रियाँ पैर में लगाती हैं। जावक। महावर। २. रसी की मूत्रेंद्रिय।

अलप*–वि० दे० "अल्प"।

अलपाका–संज्ञा पुं० [स्पे० एलपका] १. ऊँट की तरह का एक जानवर जो दक्षिण अमेरिका में होता है। २. इस जानवर का ऊन। ३. एक प्रकार का पतला कपड़ा।

अलफा–संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० अलफी] एक प्रकार का बिना बाँह का लंबा कुरता।

अलबत्ता–अव्य० [अ०] १. निस्संदेह। निःसंशय। बेशक। २. हाँ। बहुत ठीक। दुरुस्त। ३. लेकिन। परंतु।

अलबेला–वि० [सं० अलभ्य + हिं० ला (प्रत्य०)] [स्त्री० अलबेली] १. बाँका। बना-ठना। छैला। २. अनोखा। अनूठा। सुन्दर। ३. अल्हड़। बेपरवाह। मनमौजी। संज्ञा पुं० नारियल का बना हुक्का।

अलबेलापन–संज्ञा पुं० [हिं० अलबेला + पन (प्रत्य०)] १. बाँकापन। सज-धज। छैलापन। २ अनोखापन। अनूठापन। सुंदरता। ३. अल्हड़पन। बेपरवाही।

अलबी तलबी–संज्ञा स्त्री० [अरबी + अनु०] अरबी फारसी या कठिन उर्दू। (उपेक्षा)

अलभ्य–वि० [सं०] १. न मिलने योग्य। अप्राप्य। २ जो कठिनता से मिल सके। दुर्लभ। ३. अमूल्य। अनमोल।

अलम्–अव्य० [सं०] यथेष्ट। पर्याप्त। पूर्ण।

अलम–संज्ञा पुं० [अ०] १. रंज। दुःख। २. झंडा।

अलमस्त–वि० [फा०] १. मतवाला। बदहोश। बेहोश। २. बे-गम। बेफिक्र।

अलमारी–संज्ञा स्त्री० [पुर्त्त० अलमारियो] १. वह खड़ा सन्दूक जिसमें चीजें रखने के लिए खाने या दर बने रहते हैं। बड़ी नदरिया।

अलर्क–संज्ञा पुं० [सं०] १. पागल कुत्ता। २. सफेद आक या मदार। ३. एक प्राचीन राजा जिसने एक अंधे ब्राह्मण के माँगने पर अपनी दोनों आँखें निकालकर दे दी थीं।

अलल-टप्पू–वि० [देश०] अटकलपच्चू। ठिकाने का। अंड बंड।

अलल-बछेड़ा–संज्ञा पुं० [हिं० अल्हड़ + बछेड़ा] १. घोड़े का जवान बच्चा। २. अल्हड़ आदमी।

अललाना†–क्रि० अ० [सं० अर = बोलना] चिल्लाना। गला फाड़कर बोलना।

अलवाँती–वि० स्त्री० [सं० बालवती] (स्त्री) जिसे बच्चा हुआ हो। प्रसूता। जच्चा।

अलवाई–वि० स्त्री० [सं० बालवती] (गाय या भैंस) जिसको बच्चा जने एक या दो महीने हुए हों। "बाखरी" का उल्टा।

अलवान–संज्ञा पुं० [अ०] ऊनी चादर।

अलस–वि० [सं०] आलसी। सुस्त।

अलसान, अलसानि*–संज्ञा स्त्री० [हिं० आलस] १. आलस्य। सुस्ती। २. शैथिल्य।

अलसाना–क्रि० अ० [सं० अलस] आलस्य में पड़ना। शिथिलता अनुभव करना।

अलसी–संज्ञा स्त्री० [सं० अतसी] १. एक पौधा जिसके बीजों से तेल निकलता है। २. उस पौधे के बीज। तीसी।

अलसेट*–संज्ञा स्त्री० [सं० अलस] [वि० अलसेटिया] १. ढिलाई। व्यर्थ की देर। २. टालमटूल। भुलावा। चकमा। ३. बाधा। अड़चन। ४. झगड़ा। तकरार।

अलसेटिया*–वि० [हिं० अलसेट] १. व्यर्थ देर करनेवाला। २. अड़चन डालनेवाला। बाधा उपस्थित करनेवाला। ३. टालमटूल करनेवाला। ४. झगड़ा करनेवाला।

अलसौंहाँ–वि० [सं० अलस] [स्त्री० अलसौंही] १. आलस्ययुक्त। क्लांत। शिथिल। २. नींद से भरा। उनींदा।

अलहदा–वि० [अ०] जुदा। अलग। पृथक्।

अलहदी–वि० दे० "अहदी"।
अलाई–वि० [सं० आलस] आलसी। काहिल।
संज्ञा पुं० घोड़े की एक जाति।
अलान–संज्ञा पुं० [सं० आलान] १. हाथी बांधने का खूँटा या सिक्कड़। २. बंधन। बेड़ी। ३. बेल चढ़ाने के लिये गाड़ी हुई लकड़ी।
अलाप–संज्ञा पुं० दे० "आलाप"।
अलापना–क्रि० अ० [सं० आलापन] १. बोलना। बातचीत करना। २. तान लगाना। ३. गाना।
अलापी*–वि० [सं० आलापी] बोलनेवाला। शब्द निकालनेवाला।
अलाबू–संज्ञा स्त्री० [सं०] लौवा। कद्दू। तूँबा।
अलाम*–वि० [अ० अल्लामा] बात बनानेवाला। मिथ्यावादी।
अलायक़*–संज्ञा पुं० [सं० अ + अ० लायक़] नालायक़। अयोग्य।
अलार–संज्ञा पुं० [सं०] कपाट। किवाड़।
*[सं० अलात] अलाव। आग का ढेर। आँवाँ। भट्ठी।
अलाल–वि० [सं० अलस] १. आलसी। सुस्त। २. अकर्मण्य। निकम्मा।
अलाव*–संज्ञा पुं० [सं० अलात] तापने के लिये जलाई हुई आग। कौड़ा।
अलावा–क्रि०वि० [अ०] सिवाय। अतिरिक्त
अलिंग–वि० [सं०] १. लिंगरहित। बिना चिह्न का। २. जिसकी कोई पहचान बतलाई न जा सके।
संज्ञा पुं० १. व्याकरण मे वह शब्द जो दोनों लिंगों में व्यवहृत हो। जैसे—हम, तुम, मैं, वह, मित्र। २. ब्रह्म।
अलिंजर–संज्ञा पुं० [सं०] पानी रखने का मिट्टी का बरतन। झंझर। घड़ा।
अलिंद–संज्ञा पुं० [सं०] मकान के बाहरी द्वार के आगे का चबूतरा या छज्जा।
संज्ञा पुं० [सं० अलींद्र] भौरा।
अलि–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अलिनी] १. भौंरा। भ्रमर। २. कोयल। ३. कौवा। ४. बिच्छू। ५. वृश्चिक राशि। ६. कुत्ता। ७. मदिरा।
संज्ञा स्त्री० दे० "अली"।
अली–संज्ञा स्त्री० [सं० आली] १. सखी। सहेली। २. पंक्ति। क़तार।
*संज्ञा पुं० [सं० अलि] भौंरा।
अलीक–वि० [सं०] १. मिथ्या। झूठा। २. मर्यादारहित। अप्रतिष्ठित।
संज्ञा पुं० [सं० अ + हिं० लीक] अप्रतिष्ठा। अमर्यादा।
अलीन–संज्ञा पुं० [सं० आलीन] १. द्वार के चौखट की खड़ी लंबी लकड़ी। साह। बाजू। २. दालान या बरामदे के किनारे का खंभा जो दीवार से सटा होता है।
वि० [सं० अ = नहीं + लीन = रत] १. अग्राह्य। अनुपयुक्त। अनुचित। बेजा। २. जो लीन न हो। विरत।
अलील–वि० [अ०] बीमार। रुग्ण।
अलीह*–वि० [सं० अलीक] १. मिथ्या। असत्य। झूठ। २. अनुचित।
अलुक्–संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण में समास का एक भेद जिसमें बीच की विभक्ति का लोप नहीं होता। जैसे—सरसिज, मनसिज।
अलुझना*–क्रि० अ० दे० "अरझना" और "उलझना"।
अलुटना*–क्रि० अ० [सं० लुट् = लोटना] लड़खड़ाना। गिरना-पड़ना।
अलुमीनम–संज्ञा पुं० [अ० एलुमीनियम] एक हलकी धातु जो कुछ कुछ नीलापन लिए सफेद होती है।
अलूला*–संज्ञा पुं० [हिं० बुलबुला] १. भभूका। बबूला। लपट। २. बुलबुला।
अलेख–वि० [सं०] १. जिसके विषय में कोई भावना न हो सके। दुर्बोध। अज्ञेय। २. जिसका लेखा न हो सके। अनगिनत।
वि० [सं० अलक्ष्य] अदृश्य।
अलेखा*–वि० [सं० अलेख] १. बेहिसाब। २. व्यर्थ। निष्फल।
अलेखी*–वि० [सं० अलेख] १. बेहिसाब

या अडवड़ काम करनेवाला। २. गड़बड़ मचानेवाला। अंधेर करनेवाला। अन्यायी।
अलोक–वि० [सं०] १. जो देखने में न आवे। अदृश्य। २ निर्जन। एकांत। ३ पुण्यहीन।
संज्ञा पु० १. पातालादि लोक। परलोक। २. मिथ्या दोष। कलंक। निंदा।
अलोकना*–क्रि० स० [सं० आलोकन] देखना। ताकना।
अलोना–वि० [सं० अलवण] [स्त्री० अलोनी] १. जिसमें नमक न पड़ा हो। २ जिसमें नमक न खाया जाय। जैसे, अलोना व्रत। ३. फीका। स्वादरहित। बेमज़ा।
अलोप*–वि० दे० "लोप"।
अलोलिक*–संज्ञा पु० [सं० अलोल] अचपलता। धीरता। स्थिरता।
अलौकिक–वि० [सं०] १ जो इस लोक में न दिखाई दे। लोकोत्तर। २ अद्भुत। अपूर्व। ३ अमानुषी।
अल्प–वि० [सं०] १ थोड़ा। कम। २ छोटा।
संज्ञा पु० एक काव्यालंकार जिसमें आधेय की अपेक्षा आधार की अल्पता या छोटाई वर्णन की जाती है।
अल्पजीवी–वि० [सं०] जिसकी आयु कम हो। अल्पायु।
अल्पज्ञ–वि० [सं०] १ थोड़ा ज्ञान रखनेवाला। छोटी बुद्धि का। २ नासमझ।
अल्पता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कमी। न्यूनता। २ छोटाई।
अल्पत्व–संज्ञा पु० दे० "अल्पता"।
अल्पप्राण–संज्ञा पु० [सं०] व्यंजनों के प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा और पाँचवाँ अक्षर, तथा य, र, ल और व।
अल्पवयस्क–वि० [सं०] छोटी अवस्था का। कमसिन।
अल्पशः–क्रि० वि० [सं०] थोड़ा थोड़ा करके। धीरे धीरे। क्रमशः।
अल्पायु–वि० [सं०] थोड़ी आयुवाला। जो छोटी अवस्था में मरे।
अल्ल–संज्ञा पु० [अ० आल] वंश का नाम। उपगोत्रज नाम। जैसे–पाँडे, त्रिपाठी, मिश्र।
अल्लम गल्लम–संज्ञा पु० [अनु०] अनाप शनाप। व्यर्थ की बकवाद। प्रलाप।
अललाना*†–क्रि० अ० दे० "अललाना"।
अल्लामा†–वि० स्त्री० [अ० अल्लामा] कर्कशा। लड़ाकी।
अल्हजा*–संज्ञा पु० [अ० अल्हज़ल] इधर उधर की बात। गप्प।
अल्हड़–वि० [सं० अल = बहुत + लल = चाह] १ मनमौजी। बेपरवाह। २ बिना अनुभव का। जिसे व्यवहार-ज्ञान न हो। ३ उद्धत। उजड्ड। ४ अनारी। गँवार।
संज्ञा पु० नया बैल या बछड़ा जो निकाला न गया हो।
अल्हड़पन–संज्ञा पु० [हिं० अल्हड़ + पन] १ मनमौजीपन। बेपरवाही। २. व्यवहार-ज्ञान का अभाव। भोलापन। ३. उजड्डपन। अक्खड़पन। ४. अनाड़ीपन।
अवंती–संज्ञा स्त्री० [सं०] उज्जैन। उज्जयिनी (यह सप्तपुरियों में से एक है)।
अव–उप० [सं०] एक उपसर्ग। यह जिस शब्द में लगता है, उसमें निम्नलिखित अर्थों की योजना करता है—१ निश्चय, जैसे—अवधारण। २ अनादर, जैसे—अवज्ञा। ३ न्यूनता या कमी, जैसे—अवघात। ४ निचाई या गहराई, जैसे—अवतार। अवक्षेप। ५ व्याप्ति, जैसे—अवकाश। अवगाहन।
*अव्य० दे० "और"।
अवकलन–संज्ञा पु० [सं०] [वि० अवकलित] १ इकट्ठा करके मिला देना। २ देखना। ३ जानना। ज्ञान। ४ ग्रहण।
अवकलना*–क्रि० अ० [सं० अवकलन] ज्ञान होना। समझ पड़ना।
अवकाश–संज्ञा पु० [सं०] १ रिक्त स्थान। खाली जगह। २ आकाश। अंतरिक्ष। शून्य स्थान। ३ दूरी। अंतर। फासिला। ४ अवसर। समय। मौका। ५ खाली वक्त। फुर्सत। छुट्टी।

अवकिरण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवकीर्ण, अवकृष्ट] बिखेरना। फैलाना। छितराना।

अवकीर्ण—वि० [सं०] १. फैलाया या छितराया हुआ। बिखेरा हुआ। २. नाश किया हुआ। नष्ट। ३. चूर चूर किया हुआ।

अवक्खन*—संज्ञा पुं० [सं० अवेक्षण] देखना।

अवगत—वि० [सं०] १. विदित। ज्ञात। जाना हुआ। मालूम। २. नीचे गया हुआ। गिरा हुआ।

अवगतना*—क्रि० स० [सं० अवगत + हिं० ना (प्रत्य०)] समझना। विचारना।

अवगति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बुद्धि। धारणा। समझ। २. बुरी गति।

अवगारना*—क्रि० स० [सं० अव + गृ] समझाना बुझाना। जताना।

अवगाह*—वि० [सं० अवगाध] १. अथाह। बहुत गहरा। * २. अनहोना। कठिन।
*संज्ञा पुं० १. गहरा स्थान। २. संकट का स्थान। कठिनाई।
संज्ञा पुं० [सं०] १. भीतर प्रवेश करना। हलना। २. जल में हलकर स्नान करना।

अवगाहन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवगाहित] १. पानी में हलकर स्नान। निमज्जन। २. प्रवेश। पैठ। ३. मंथन। विलोड़न। ४. खोज। छान-बीन। ५. चित्त लगाना। लीन होकर विचार करना।

अवगाहना*—क्रि० अ० [सं० अवगाहन] १. हलकर नहाना। निमज्जन करना। २. पैठना। धँसना। ३. मग्न होना।
क्रि० स० १. छान-बीन करना। २. विचलित करना। हलचल डालना। ३. चलाना। हिलाना। ४. सोचना। विचारना। ५. धारण करना। ग्रहण करना।

अवगुंठन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवगुंठित] १. ढँकना। छिपाना। २. रेखा से घेरना। ३. घूँघट। बुर्का।

अवगुण—संज्ञा पुं० [सं०] १. दोष। ऐब। २. बुराई। खोटाई।

अवग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] १. रुकावट। अड़चन। बाधा। २. वर्षा का अभाव। अनावृष्टि। ३. बाँध। बंद। ४. संधि-विच्छेद। (व्या०) ५. 'अनुग्रह' का उलटा। ६. स्वभाव। प्रकृति। ७. शाप। कोसना।

अवघट—वि० [सं० अव + घट्ट = घाट] विकट। दुर्गम। कठिन।

अवचट—संज्ञा पुं० [सं० अव + हिं० चट = जल्दी] १. अनजान। अचक्का। २. कठिनाई। अंडस।
क्रि० वि० अकस्मात्। अनजान में।

अवच्छिन्न—वि० [सं०] १. अलग किया हुआ। पृथक्। २. विशेषण-युक्त।

अवच्छेद—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवच्छेद्य, अवच्छिन्न] १. अलगाव। भेद। २. हद। सीमा। ३. अवधारण। छानबीन। ४. परिच्छेद। विभाग।

अवच्छेदक—वि० [सं०] १. भेदकारी। अलग करनेवाला। २. हद बाँधनेवाला। ३. अवधारक। निश्चय करानेवाला।
संज्ञा पुं० विशेषण।

अवछंग*—संज्ञा पुं० दे० "उछंग"।

अवज्ञा—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० अवज्ञात, अवज्ञेय] १. अपमान। अनादर। २. आज्ञा न मानना। अवहेला। ३. पराजय। हार। ४. वह काव्यालंकार जिसमें एक वस्तु के गुण या दोष से दूसरी वस्तु का गुण या दोष न प्राप्त करना दिखलाया जाय।

अवज्ञात—वि० [सं०] अपमानित।

अवज्ञेय—वि० [सं०] अपमान के योग्य। तिरस्कार के योग्य।

अवटना—क्रि० स० [सं० आवर्त्तन] १. मथना। आलोड़न करना। २. किसी द्रव पदार्थ को आँच पर गाढ़ा करना।
क्रि० अ० घूमना। फिरना।

अवडेर—संज्ञा पुं० [देश०] १. फेर। चक्कर। २. झंझट। बखेड़ा। ३. रंग में भंग।

अवडेरना—क्रि० स० [हिं० अवडेर] १. फेर में डालना। झंझट में फँसाना। २. शांतिभंग करना। तंग करना।

अवडेरा–वि० [हिं० अवडेर] १. चक्कर-दार। फेर का। २. झंझटवाला। ३. बेढब। भुडगा।

अवतंस–संज्ञा पु० [सं०][वि० अवतंसित] १. भूषण। अलंकार। २ शिरोभूषण। टीका। ३. मुकुट। ४. श्रेष्ठ व्यक्ति। सबसे उत्तम पुरुष। ५. माला। हार। ६. बाली। मुरकी। ७ कर्णफूल। ८. दूल्हा।

अवतरण–संज्ञा पु० [सं०] १. उतरना। पार होना। २. जन्म ग्रहण करना। ३. नक़ल। प्रतिकृति। ४ प्रादुर्भाव। ५ सीढ़ी। ६. घाट।

अवतरणिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रस्तावना। भूमिका। उपोद्घात। २ परिपाटी।

अवतरना*–क्रि० अ० [सं० अवतरण] प्रकट होना। उपजना। जन्मना।

अवतार–संज्ञा पु० [सं०] १. उतरना। नीचे आना। २ जन्म। शरीर-ग्रहण। ३ देवता का मनुष्यादि संसारी प्राणियों के शरीर को धारण करना। ४ विष्णु या ईश्वर का संसार में शरीर धारण करना। * ५ सृष्टि।

अवतारण–संज्ञा पु० [सं०][स्त्री० अवतारणा] १ उतारना। नीचे लाना। २ नकल करना। ३. उदाहृत करना।

अवतारना–क्रि० स० [सं० अवतारण] १ उत्पन्न करना। रचना। २ जन्म देना।

अवतारी–वि० [सं० अवतार] १. उतरनेवाला। २. अवतार ग्रहण करनेवाला। ३. देवांशधारी। अलौकिक। ४ अलौकिक शक्तिवाला।

अवदशा–संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्दशा।

अवदात–वि० [सं०] १ उज्ज्वल। श्वेत। २. शुद्ध। स्वच्छ। निर्मल। ३. गौर। शुक्ल वर्ण का। ४ पीला।

अवदान–संज्ञा पु० [सं०] १ शुद्ध आचरण। अच्छा काम। २ खंडन। तोड़ना। ३ शक्ति। बल। ४ अतिक्रम। उल्लंघन। ५ पवित्र करना। साफ करना।

वि० [सं०] १. पराक्रमी। बली। २. अतिक्रमणकारी। हद से बाहर जानेवाला। ३. कंजूस।

अवदारण–संज्ञा पु० [सं०][वि० अवदारित] १ विदारण करना। तोड़ना। फोड़ना। २ मिट्टी खोदने का रंभा। खंता।

अवद्य–वि० [सं०] १. अधम। पापी। २. त्याज्य। कुत्सित। निकृष्ट। ३. दोषयुक्त।

अवध–संज्ञा पु० [सं० अयोध्या] १. कोशल देश जिसकी प्रधान नगरी अयोध्या थी। २ अयोध्या नगरी।

*संज्ञा स्त्री० दे० "अवधि"।

अवधान–संज्ञा पु० [सं०] १. मनोयोग। चित्त का लगाव। २ चित्त की वृत्ति का निरोध कर उसे एक ओर लगाना। समाधि। ३. सावधानी। चौकसी।

*संज्ञा पु० [सं० आधान] गर्भ। पेट।

अवधारण–संज्ञा पु० [सं०][वि० अवधारित, अवधारणीय, अवधार्य्य] निश्चय। विचारपूर्वक निर्धारण करना।

अवधारना*–क्रि० स० [सं० अवधारण] धारण करना। ग्रहण करना।

अवधि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सीमा। हद। २. निर्धारित समय। मियाद। ३ अंतसमय। अंतिम काल।

अव्य० [सं०] तक। पर्यंत।

अवधिमान*–संज्ञा पु० [सं०] समुद्र।

अवधी–वि० [सं० अयोध्या] अवध-संबंधी। अवध का।

संज्ञा स्त्री० अवध की बोली।

अवधूत–संज्ञा पु० [सं०][स्त्री० अवधूतिन] संन्यासी। साधु। योगी।

अवनत–वि० [सं०] १ नीचा। झुका हुआ। २ गिरा हुआ। पतित। ३. कम।

अवनति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ घटती। कमी। न्यूनता। २ अधोगति। हीन दशा। ३ झुकाव। झुकाना। ४. नम्रता।

अवना*–क्रि० अ० दे० "आवना"।

अवनि–संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी। जमीन।

अवपात–संज्ञा पु० [सं०] १. गिराव। पतन। २ गड्ढा। कुंड। ३ हाथियों के

फँसाने का गड्ढा। खाँड़ा। माला। ४. नाटक में भयादि से भागना, व्याकुल होना आदि दिखाकर अंक की समाप्ति।

अवभृथ–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह शेष कर्म जिसके करने का विधान मुख्य यज्ञ के समाप्त होने पर है। २. यज्ञांत स्नान।

अवम–संज्ञा पुं० [सं०] १. पितरों का एक गण। २. मलमास। अधिमास।

अवम तिथि–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह तिथि जिसका क्षय हो गया हो।

अवमर्श संधि–संज्ञा स्त्री० [सं०] पाँच प्रकार की संधियों में से एक (नाट्यशास्त्र)।

अवमान–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवमानित] तिरस्कार। अपमान।

अवयव–संज्ञा पुं० [सं०] १. अंश। भाग। हिस्सा। २. शरीर का अंग। ३. तर्क-पूर्ण वाक्य का एक एक अंश या भेद। (न्याय)

अवयवी–वि० [सं०] १. जिसके बहुत-से अवयव हों। अंगी। २. कुल। सपूर्ण। संज्ञा पुं० १. वह वस्तु जिसके बहुत-से अवयव हों। २. देह। शरीर।

अवर*–वि० [सं० अपर] १. अन्य। दूसरा। और। २. अधम। नीच।

अवरत–वि० [सं०] १. जो रत न हो। विरत। निवृत्त। २. ठहरा हुआ। स्थिर। ३. अलग। पृथक्।

*संज्ञा पुं० दे० "आवर्त्त"।

अवराधक–वि० [सं० आराधक] आराधना करनेवाला। पूजनेवाला।

अवराधन–संज्ञा पुं० [सं० आराधन] आराधन। उपासना। पूजा। सेवा।

अवराधना*–क्रि० स० [सं० आराधन] उपासना करना। पूजना। सेवा करना।

अवराधी*–वि० [सं० आराधन] आराधना करनेवाला। उपासक। पूजक।

अवरुद्ध–वि० [सं०] १. रुँधा या रुका हुआ। २. गुप्त। छिपा हुआ।

अवरूढ़–वि० [सं०] ऊपर से नीचे आया हुआ। उतरा हुआ। 'आरूढ़' का उलटा।

अवरेखना*–क्रि० स० [सं० अवलेखन] १. उरेहना। लिखना। चित्रित करना। २. देखना। ३. अनुमान करना। कल्पना करना। सोचना। ४. मानना। जानना।

अवरेब–संज्ञा पुं० [सं० अव = विरुद्ध + रेव = गति] १. वक्र गति। तिरछी चाल। २. कपड़े की तिरछी काट।

यौ०—अवरेबदार = तिरछी काट का।

३. पेच। उलझन। ४. खराबी। कठिनाई। ५. झगड़ा। विवाद। खींचा-तानी।

अवरोध–संज्ञा पुं० [सं०] १. रुकावट। अड़चन। रोक। २. घेर लेना। मुहासिरा। ३. निरोध। बंद करना। ४. अनुरोध। दबाव। ५. अंतःपुर।

अवरोधक–वि० [सं०] रोकनेवाला।

अवरोधन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवरोधित, अवरोधी, अवरुद्ध] १. रोकना। छेकना। २. अंतःपुर। जनाना।

अवरोधना*–क्रि० स० [सं० अवरोधन] रोकना। निषेध करना।

अवरोधित–वि० [सं०] रोका हुआ।

अवरोधी–वि० [सं० अवरोध] [स्त्री० अवरोधिनी] अवरोध करनेवाला।

अवरोह–संज्ञा पुं० [सं०] १. उतार। गिराव। अधःपतन। २. अवनति।

अवरोहण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवरोहक, अवरोहित, अवरोही] नीचे की ओर जाना। उतार। गिराव। पतन।

अवरोहना*–क्रि० अ० [सं० अवरोहण] उतरना। नीचे आना।

क्रि० अ० [सं० आरोहण] चढ़ना।

*क्रि० स० [हिं० उरेहना] खींचना। अंकित करना। चित्रित करना।

*क्रि० स० [सं० अवरोधन] रोकना।

अवरोही–(स्वर)–संज्ञा पुं० [सं० अवरोहिन्] वह स्वर-साधन जिसमें पहले षड्ज का उच्चारण हो, फिर निषाद से षड्ज तक क्रमानुसार उतरते हुए स्वर निकलें। विलोम। आरोही का उलटा।

अवर्ण–वि० [सं०] १. वर्णरहित। बिना रंग का। २. बदरंग। बुरे रंग का। ३.

वर्ण-धर्म-रहित।
अवर्ण्य-वि० [सं०] जो वर्णन के योग्य न हो।
संज्ञा पुं० [सं० अ + वर्ण्य] जो वर्ण्य या उपमेय न हो। उपमान।
अवर्षण-संज्ञा पुं० [सं०] वर्षा का न होना।
अवलंघना-क्रि० स० [सं०] लाँघना।
अवलंब-संज्ञा पुं० [सं०] आश्रय। सहारा।
अवलंबन-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवलंबित, अवलंबी] १. आश्रय। आधार। सहारा। २. धारण। ग्रहण।
अवलंबना*-क्रि० स० [सं० अवलंबन] १. अवलंबन करना। आश्रय लेना। टिकना। २. धारण करना।
अवलंबित-वि० [सं०] १. आश्रित। सहारे पर स्थिर। टिका हुआ। २. निर्भर। किसी बात के होने पर स्थि किया हुआ।
अवलंबी-वि० पुं० [सं० अवलंबिन्] [स्त्री० अवलंबिनी] १. अवलंबन करनेवाला। सहारा लेनेवाला। २. सहारा देनेवाला।
अवली*-संज्ञा स्त्री० [सं० आवलि] १. पंक्ति। पाँती। २. समूह। झुंड। ३. वह अन्न की डाँठ जो नवान्न करने के लिये खेत से पहले पहल काटी जाती है।
अवलीक-वि० [सं० अव्यलीक] पापशून्य। निष्कलंक। शुद्ध।
अवलेखना-क्रि० स० [सं० अवलेखन] १. खोदना। खुरचना। २. चिह्न डालना।
अवलेप-संज्ञा पुं० [सं० अवलेपन] १. उबटन। लेप। २. घमंड। गर्व।
अवलेपन-संज्ञा पुं० [सं०] १. लगाना। पोतना। २. वह वस्तु जो लगाई जाय। लेप। ३. घमंड। अभिमान। ४. दूषण।
अवलेह-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवलेह्य] १. लेई जो न अधिक गाढ़ी और न अधिक पतली हो। २. चटनी। माजून। ३. वह औषध जो चाटी जाय।
अवलोकन-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवलोकित, अवलोकनीय] १. देखना। २. देख-भाल। जाँच पड़ताल।
अवलोकना*-क्रि० स० [सं० अवलोकन] १. देखना। २. जाँचना। अनुसंधान करना।
अवलोकनि*-संज्ञा स्त्री० [सं० अवलोकन] १. आँख। दृष्टि। २. चितवन।
अवलोकनीय-वि० [सं०] देखने योग्य।
अवलोचना*-क्रि० स० [सं० आलंनन] दूर करना।
अवश-वि० [सं०] विवश। लाचार।
अवशिष्ट-वि० [सं०] शेष। बाक़ी।
अवशेष-वि० [सं०] १. बचा हुआ। शेष। बाक़ी। २. समाप्त।
संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवशिष्ट] १. बची हुई वस्तु। २. अंत। समाप्ति।
अवश्यंभावी-वि० [सं० अवश्यंभाविन्] जो अवश्य हो, टले नहीं। अटल। ध्रुव।
अवश्य-क्रि० वि० [सं०] निश्चय करके। निःसंदेह। ज़रूर।
वि० [सं०] [स्त्री० अवश्या] १. जो वश में न आ सके। २. जो वश में न हो।
अवश्यमेव-क्रि० वि० [सं०] अवश्य ही। निःसंदेह। ज़रूर।
अवसन्न-वि० [सं०] १. विषाद-प्राप्त। दुःखी। २. नष्ट होनेवाला। ३. सुस्त। आलसी। निकम्मा।
अवसर-संज्ञा पुं० [सं०] १. समय। काल। २. अवकाश। फुरसत। ३. इत्तफ़ाक़। मुहा०-अवसर चूकना = मौक़ा हाथ से जाने देना।
४. एक काव्यालंकार जिसमें किसी घटना का ठीक अपेक्षित समय पर घटित होना वर्णन किया जाय।
अवसर्पण-संज्ञा पुं० [सं०] अधोगमन। अधःपतन। अवरोहण।
अवसर्पिणी-संज्ञा स्त्री० [सं०] जैन शास्त्रानुसार पतन का समय जिसमें रूपादि का क्रमशः ह्रास होता है।
अवसाद-संज्ञा पुं० [सं०] १. नाश। क्षय। २. विषाद। ३. दीनता। ४. थकावट।

५. कमज़ोरी।

अवसान–संज्ञा पुं० [सं०] १. विराम। ठहराव। २. समाप्ति। अंत। ३. सीमा। ४. सायंकाल। ५. मरण।

अवसि–क्रि० वि० दे० "अवश्य"।

अवसेख*–वि० दे० "अवशेष"।

अवसेचन–संज्ञा पुं० [सं०] १. सींचना। पानी देना। २. पसीजना। पसीना निकलना। ३. वह क्रिया जिसके द्वारा रोगी के शरीर से पसीना निकाला जाय। ४. शरीर का रक्त निकालना।

अवसेर*–संज्ञा स्त्री० [सं० अवसर] १. अट-काव। उलझन। २. देर। विलंब। ३. चिंता। व्यग्रता। उचाट। ४. हैरानी।

अवसेरना–क्रि० स० [हिं० अवसेर] तंग करना। दुःख देना।

अवस्था–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दशा। हालत। २. समय। काल। ३. आयु। उम्र। ४. स्थिति। ५. मनुष्य की चार अवस्थाएँ—जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति और तुरीय। ६. मनुष्य-जीवन की आठ अवस्थाएँ—कौमार, पौगंड, कैशोर, यौवन, बाल, तरुण, वृद्ध और वर्षीयान्।

अवस्थान–संज्ञा पुं० [सं०] १. स्थान। जगह। २. ठहराव। टिकना। स्थिति।

अवस्थित–वि० [सं०] १. उपस्थित। विद्यमान। मौजूद। २. ठहरा हुआ।

अवस्थिति–संज्ञा स्त्री० [सं०] वर्तमानता। स्थिति। सत्ता।

अवहित्था–संज्ञा स्त्री० [सं०] छिपाव। भाव छिपाना।

अवहेलना–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अवज्ञा। तिरस्कार। २. ध्यान न देना। बेपरवाही। *क्रि० स० [सं० अवहेलन] तिरस्कार करना। अवज्ञा करना।

अवहेलित–वि० [सं०] जिसकी अवहेलना हुई हो। तिरस्कृत।

अवाँ–संज्ञा पुं० दे० "आँवाँ"।

अवांतर–वि० [सं०] अंतर्गत। मध्यवर्ती। संज्ञा पुं० [सं०] मध्य। बीच। यौ०—अवांतर दिशा = बीच की दिशा। विदिशा। अवांतर भेद = अंतर्गत भेद। भाग का भाग।

अवांसी–संज्ञा स्त्री० [सं० अवासित] वह बोझ जो नवान्न के लिये फ़सल में से पहले पहल काटा जाय। कवल। अवली।

अवाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० आना] १. आग-मन। आना। २. गहिरी जोताई। 'सेव' का उलटा।

अवाक्–वि० [सं० अवाच्] १. चुप। मौन। २. स्तंभित। चकित। विस्मित।

अवाङ्मुख–वि० [सं०] १. अधोमुख। उलटा। नीचे मुँह का। २. लज्जित।

अवाची–संज्ञा स्त्री० [सं०] दक्षिण दिशा।

अवाच्य–वि० [सं०] १. जो कुछ कहने योग्य न हो। अनिंदित। विशुद्ध। २. जिससे बात करना उचित न हो। नीच। संज्ञा पुं० [सं०] कुवाच्य। गाली।

अवाज*–संज्ञा स्त्री० दे० "आवाज़"।

अवार–संज्ञा पुं० [सं०] नदी के इस पार का किनारा। 'पार' का उलटा।

अवारजा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. वह बही जिसमें प्रत्येक असामी की जोत आदि लिखी जाती है। २. जमा-खर्च की बही।

अवारना*–क्रि० स० [सं० अवारण] १. रोकना। मना करना। २. दे० "वारना"। संज्ञा स्त्री० [सं० अवार] १. किनारा। मोड़। २. मुख। विवर। मुँह का छेद।

अवास*–संज्ञा पुं० दे० "आवास"।

अवि–संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य्य। २. मदार। आक। ३. भेंड़ा। ४. बकरा। ५. पर्वत।

अविकल–वि० [सं०] १. ज्यों का त्यों। बिना उलट-फेर का। २. पूर्ण। पूरा। ३. निश्चल। शांत।

अविकल्प–वि० [सं०] १. निश्चित। २. निःसंदेह। असंदिग्ध।

अविकार–वि० [सं०] १. विकार-रहित। निर्दोष। २. जिसका रूप-रंग न बदले। संज्ञा पुं० [सं०] विकार का अभाव।

अविकारी–वि० [सं० अविकारिन्] [स्त्री०

अविकारिणी] १. जिसमें विकार न हो। या विकार न हो।

अविकृत–वि० पु० [सं०] जो विकृत न हो। जो विगड़ा या बदला न हो।

अविगत–वि० [सं०] १ जो जाना न जाय। २ अज्ञात। अनिर्वचनीय। ३ जिसका नाश न हो। नित्य।

अविचल–वि० [सं०] जो विचलित न हो। अचल। स्थिर। अटल।

अविचार–संज्ञा पु० [सं०] १. विचार का अभाव। २ अज्ञान। अविवेक। ३ अन्याय। अत्याचार।

अविचारी–वि० [सं० अविचारिन्] [स्त्री० अविचारिणी] १ विचारहीन। बेसमझ। २ अत्याचारी। अन्यायी।

अविच्छिन्न–वि० [सं०] अटूट। लगातार।

अविच्छेद–वि० [सं०] जिसका विच्छेद न हो। अटूट। लगातार।

अविज्ञात–वि० [सं०] १. अनजाना। अज्ञात। २ बेसमझा। अर्थ निश्चय-शून्य।

अविज्ञेय–वि० पु० [सं०] जो जाना न जा सके। न जानने योग्य।

अवितत्–वि० [सं०] विरुद्ध। उल्टा।

अविदित–वि० [सं०] जो विदित न हो। अज्ञात। बिना जाना हुआ।

अविद्यमान–वि० [सं०] १ जो विद्यमान या उपस्थित न हो। अनुपस्थित। २ असत्। ३ मिथ्या। असत्य।

अविद्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विरुद्ध ज्ञान। मिथ्या ज्ञान। अज्ञान। मोह। २ माया का एक भेद। ३ कर्मकांड। ४. सांख्य-शास्त्रानुसार प्रकृति। जड़।

अविधि–वि० [सं०] विधि-विरुद्ध। नियम के विपरीत।

अविनय–संज्ञा पु० [सं०] विनय का अभाव। ढिठाई। उद्दंडता।

अविनश्वर–वि० [सं०] जिसका नाश न हो। जो बिगड़े नहीं। चिरस्थायी।

अविनाभाव–संज्ञा पु० [सं०] १ संबंध। २ व्याप्य-व्यापक संबंध। जैसे, अग्नि और धूम का।

अविनाश–संज्ञा पु० [सं०] विनाश का अभाव। अक्षय।

अविनाशी–वि० पु० [सं० अविनाशिन्] [स्त्री० अविनाशिनी] १ जिसका विनाश न हो। अक्षय। अक्षर। २ नित्य। शाश्वत।

अविनीत–वि० [सं०] [स्त्री० अविनीता] १. जो विनीत न हो। उद्धत। २ अदांत। सरकश। ३ दुष्ट। ४ ढीठ।

अविभक्त–वि० [सं०] [वि० अविभाज्य] १. मिला हुआ। २ जो बाँटा न गया हो। शामिलाती। ३ अभिन्न। एक।

अविमुक्त–वि० पु० [सं०] जो विमुक्त न हो। बद्ध। संज्ञा पु० [सं०] १ कनपटी। २ काशी।

अविरत–वि० [सं०] १. विरामशून्य। निरंतर। २ लगा हुआ।

क्रि० वि० [सं०] १ निरंतर। लगातार। २ नित्य। हमेशा।

अविरति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ निवृत्ति का अभाव। लीनता। २ विषयासक्ति। ३ अशांति।

अविरल–वि० [सं०] १ मिला हुआ। २ घना। सघन।

अविराम–वि० [सं०] १ बिना विश्राम लिए हुए। २ लगातार। निरंतर।

अविरोध–संज्ञा पु० [सं०] १ समानता। २. विरोध का अभाव। अनुकूलता। ३ मेल। संगति।

अविरोधी–वि० [सं० अविरोधिन्] १ जो विरोधी न हो। अनुकूल। २ मित्र।

अविवाहित–वि० पु० [सं०] स्त्री० [अविवाहिता] जिसका ब्याह न हुआ हो। कुँआरा।

अविवेक–संज्ञा पु० [सं०] १ विवेक का अभाव। अविचार। २ अज्ञान। नादानी। ३ अन्याय।

अविवेकता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अज्ञानता।

२. विवेक का न होना।

अविवेकी–वि० [सं० अविवेकिन्] १. अज्ञानी। विवेक-रहित। २. अविचारी। ३. मूढ़। मूर्ख। ४. अन्यायी।

अविशेष–वि० [सं०] भेदक धर्म रहित। तुल्य। समान।

संज्ञा पुं० १. भेदक धर्म का अभाव। २. सांख्य में सांतत्व, घोरत्व और मूढ़त्व आदि विशेषताओं से रहित सूक्ष्म भूत।

अविश्रांत–वि० [सं०] १. जो रुके नहीं। २. जो थके नहीं।

अविश्वसनीय–वि० [सं०] जिसपर विश्वास न किया जा सके।

अविश्वास–संज्ञा पुं० [सं०] १. विश्वास का अभाव। बेएतबारी। २. अप्रत्यय। अनिश्चय।

अविश्वासी–वि० [सं० अविश्वासिन्] १. जो किसी पर विश्वास न करे। २. जिसपर विश्वास न किया जाय।

अविषय–वि० [सं०] १. जो मन या इंद्रिय का विषय न हो। अगोचर। २. अनिर्वचनीय।

अविहड़*–वि० [सं० अ + विघट] जो खंडित न हो। अखंड। अनश्वर।

अवीरा–वि० स्त्री० [सं०] १. पुत्र और पति-रहित (स्त्री)। २. स्वतंत्र (स्त्री)।

अवेक्षण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवेक्षित, अवेक्षणीय] १. अवलोकन। देखना। २. जाँच-पड़ताल। देख-भाल।

अवेज*–संज्ञा पुं० [अ० एवज़] बदला। प्रतीकार।

अवेस*–संज्ञा पुं० दे० "आवेश"।

अवैतनिक–वि० [सं०] बिना वेतन या तनख्वाह के काम करनेवाला। आनरेरी।

अवैदिक–वि० [सं०] वेदविरुद्ध।

अव्यक्त–वि० [सं०] १. अप्रत्यक्ष। अगोचर। जो जाहिर न हो। २. अज्ञात। ३. अनिर्वचनीय। ३. जिसमें रूप-गुण न हो।

संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु। २. कामदेव। ३. शिव। ४. प्रधान। प्रकृति (सांख्य)। ५. सूक्ष्म शरीर और सुषुप्ति अवस्था। ६. ब्रह्म। ७. बीजगणित में वह राशि जिसका मान अनिश्चित हो। अनवगत राशि। ८. जीव।

अव्यक्त गणित–संज्ञा पुं० [सं०] बीज गणित।

अव्यक्तलिंग–संज्ञा पुं० [सं०] १. सांख्य के अनुसार महतत्त्वादि। २. संन्यासी। ३. वह रोग जो पहचाना न जाय।

अव्यय–वि० [सं०] १. जो विकार को प्राप्त न हो। सदा एकरस रहनेवाला। अक्षय। २. नित्य। आदि-अंत-रहित।

संज्ञा पुं० [सं०] १. व्याकरण में वह शब्द जिसका सब लिंगों, सब विभक्तियों और सब वचनों में समान रूप से प्रयोग हो। २. परब्रह्म। ३. शिव। ४. विष्णु।

अव्ययीभाव–संज्ञा पुं० [सं०] समास का एक भेद (व्याकरण)।

अव्यर्थ–वि० [सं०] १. जो व्यर्थ न हो। सफल। २. सार्थक। ३. अमोघ। न चूकनेवाला। ४. अवश्य असर करनेवाला।

अव्यवस्था–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० अव्यवस्थित] १. नियम का न होना। बेक़ायदगी। २. स्थिति या मर्यादा का न होना। ३. शास्त्रादि-विरुद्ध व्यवस्था। अविधि। ४. बेइंतजामी। गड़बड़।

अव्यवस्थित–वि० [सं०] १. शास्त्रादि-मर्यादा-रहित। २. बेठिकाने का। ३. चंचल। अस्थिर।

अव्यवहार्य्य–वि० [सं०] १. जो व्यवहार में न लाया जा सके। २. पतित।

अव्याकृत–वि० [सं०] १. जिसमें विकार न हो। २. अप्रकट। गुप्त। ३. कारणरूप। ४. सांख्यशास्त्रानुसार प्रकृति।

अव्याप्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० अव्याप्त] १. व्याप्ति का अभाव। २. न्याय में संपूर्ण लक्ष्य पर लक्षण का न घटना।

अव्यावृत–वि० [सं०] १. निरंतर। लगातार। अटूट। २. ज्यों का त्यों।

अव्याहत–वि० [स०] १ अप्रतिरुद्ध। बेरोक। २ सत्य। ठीक। युक्तियुक्त।

अव्युत्पन्न–वि० [स०] १ अनभिज्ञ। अनाड़ी। २ व्याकरण शास्त्रानुसार वह शब्द जिसकी व्युत्पत्ति या सिद्धि न हो सके।

अव्वल–वि० [अ०] १ पहला। आदि। प्रथम। २ उत्तम। श्रेष्ठ।
सज्ञा पु० आदि। प्रारभ।

अशक–वि० [स०] बेडर। निर्भय।

अशकुन–सज्ञा पु० [स०] बुरा शकुन। बुरा लक्षण।

अशक्त–वि० [स०] [सज्ञा अशक्ति] १ निर्बल। कमजोर। २ असमर्थ।

अशक्ति–सज्ञा स्त्री० [स०] [वि० अशक्त] १ निर्बलता। कमजोरी। २ इद्रियो और बुद्धि का बेकाम होना। (सांख्य)

अशक्य–वि० [स०] असाध्य। न होने योग्य।

अशन–सज्ञा पु० [स०] १ भोजन। आहार। अन्न। २ खाने की क्रिया। खाना।

अशरण–वि० [स०] जिसे कही शरण न हो। अनाथ। निराश्रय।

अशरफी–सज्ञा स्त्री० [फा०] १ सोलह से पचीस रुपये तक का सोने का एक सिक्का। मोहर। २ पीले रग का एक फूल।

अशराफ–वि० [अ०] शरीफ। भद्र।

अशात–वि० [स०] जो शात न हो। अस्थिर। चचल।

अशाति–सज्ञा स्त्री० [स०] १ अस्थिरता। चचलता। २ क्षोभ। असताप।

अशिक्षित–वि० [स०] जिसने शिक्षा न पाई हो। बेपढा-लिखा। अनपढ।

अशिष्ट–वि० [स०] उजड्ड। बेहूदा।

अशिष्टता–सज्ञा स्त्री० [स०] १ असाधुता। बेहूदगी। उजड्डपन। २ ढिठाई।

अशुचि–वि० [स०] [सज्ञा अशौच] १ अपवित्र। २ गदा। मैला।

अशुद्ध–वि० [स०] १ अपवित्र। नापाक। २ बिना शोधा। असस्कृत। ३ गलत।

अशुद्धता–सज्ञा स्त्री० [स०] १ अपवित्रता। गदगी। २ गलती।

अशुद्धि–सज्ञा स्त्री० दे० "अशुद्धता"।

अशुन*–सज्ञा पु० [स० अश्विनी] अश्विनी नक्षत्र।

अशुभ–सज्ञा पु० [स०] १ अमगल। अहित। २ पाप। अपराध।
वि० [स०] जो शुभ न हो। बुरा।

अशेष–वि० [स०] १ पूरा। समूचा। २ समाप्त। खतम। ३ अनत। बहुत।

अशोक–वि० [स०] शोकरहित। दुःख-शून्य।
सज्ञा पु० १ एक पेड़ जिसकी पत्तियाँ आम की तरह लबी लबी और किनारो पर लहरदार होती है। २ पारा।

अशोकपुष्प-मजरी–सज्ञा स्त्री० [स०] दडक वृत्त का एक भेद।

अशोक-वाटिका–सज्ञा स्त्री० [स०] १ शोक का दूर करनेवाला रम्य उद्यान। २ रावण का वह प्रसिद्ध बगीचा जिसमे उसने सीता जी को ले जाकर रक्खा था।

अशौच–सज्ञा पु० [स०] [वि० अशुचि] १ अपवित्रता। अशुद्धता। २ हिंदू शास्त्रानुसार वह अशुद्धि जो घर के किसी प्राणी के मरने या सतान होने पर कुछ दिन मानी जाती है।

अश्मतक–सज्ञा पु० [स०] १ मूँज की तरह की एक घास जिससे प्राचीन काल मे मेखला बनाते थे। २ आच्छादन। ढकना।

अश्मक–सज्ञा पु० [स०] दक्षिण के एक प्रदेश का प्राचीन नाम। ट्रावकोर।

अश्मकुट्ट–सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार के वानप्रस्थ जो केवल पत्थर से अन्न कूटकर पकाते थे।

अश्मरी–सज्ञा स्त्री० [स०] पथरी नामक रोग।

अश्रद्धा–सज्ञा स्त्री० [स०] [वि० अश्रद्धेय] श्रद्धा का अभाव।

अश्रात–वि० [स०] जो थका माँदा न हो।
क्रि० वि० लगातार। निरतर।

अश्रु–सज्ञा पु० [स०] आँसू।

अश्रुत–वि० [सं०] १. जो सुना न गया हो। २. जिसने कुछ देखा सुना न हो।
अश्रुतपूर्व–वि० [सं०] १. जो पहले न सुना गया हो। २. अद्भुत। विलक्षण।
अश्रुपात–संज्ञा पुं० [सं०] आँसू गिराना। रुदन। रोना।
अश्लिष्ट–वि० [सं०] श्लेषशून्य। जो जुड़ा या मिला न हो। असंबद्ध।
अश्लील–वि० [सं०] फूहड़। भद्दा। लज्जाजनक।
अश्लीलता–संज्ञा स्त्री० [सं०] फूहड़पन। भद्दापन। लज्जा का उल्लंघन। (काव्य में एक दोष)
अश्लेषा–संज्ञा स्त्री० [सं०] २७ नक्षत्रों में से नवाँ।
अश्व–संज्ञा पुं० [सं०] घोड़ा। तुरंग।
अश्वकर्ण–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का शाल वृक्ष। २. लता-शाल।
अश्वगंधा–संज्ञा स्त्री० [सं०] असगंध।
अश्वगति–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक छंद। २. एक चित्रकाव्य।
अश्वतर–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अश्वतरी] १. नाग-राज। २. खच्चर।
अश्वत्थ–संज्ञा पुं० [सं०] पीपल।
अश्वत्थामा–संज्ञा पुं० [सं०] द्रोणाचार्य के पुत्र।
अश्वपति–संज्ञा पुं० [सं०] १. घुड़सवार। २. रिसालदार। ३. घोड़ों का मालिक। ४. भरतजी के मामा। ५. केकय देश के राजकुमारों की उपाधि।
अश्वपाल–संज्ञा पुं० [सं०] साईस।
अश्वमेध–संज्ञा पुं० [सं०] एक बड़ा यज्ञ जिसमें घोड़े के मस्तक पर जयपत्र बाँधकर उसे भूमंडल में घूमने के लिये छोड़ देते थे। फिर उसको मारकर उसकी चर्बी से हवन किया जाता था।
अश्वशाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्थान जहाँ घोड़े रहें। अस्तबल। तबेला।
अश्वारोहण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अश्वारोही] घोड़े की सवारी।
अश्वारोही–वि० [सं०] घोड़े का सवार।
अश्विनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. घोड़ी। २. २७ नक्षत्रों में से पहला नक्षत्र।
अश्विनीकुमार–संज्ञा पुं० [सं०] त्वष्टा की पुत्री प्रभा नाम की स्त्री से उत्पन्न सूर्य्य के दो पुत्र जो देवताओं के वैद्य माने जाते हैं।
अषाढ़–संज्ञा पुं० दे० "आषाढ़"।
अष्ट–वि० [सं०] आठ।
अष्टक–संज्ञा पुं० [सं०] १. आठ वस्तुओं का संग्रह। २. वह स्तोत्र या काव्य जिसमें आठ श्लोक हों।
अष्टकमल–संज्ञा पुं० [सं०] हठयोग के अनुसार मूलाधार से ललाट तक के आठ कमल।
अष्टका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अष्टमी। २. अष्टमी के दिन का कृत्य। अष्टकायाग।
अष्टकुल–संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार सर्पों के आठ कुल—शेष, वासुकि, कंबल, कर्कोटक, पद्म, महापद्म, शंख और कुलिक।
अष्टकृष्ण–संज्ञा पुं० [सं०] वल्लभ कुल के मतानुसार आठ कृष्ण या कृष्ण-मूर्तियाँ—श्रीनाथ, नवनीतप्रिय, मथुरानाथ, विट्ठलनाथ, द्वारकानाथ, गोकुलनाथ, गोकुलचंद्रमा और मदनमोहन।
अष्टद्रव्य–संज्ञा पुं० [सं०] आठ द्रव्य जो हवन में काम आते हैं—अश्वत्थ, गूलर, पाकर, वट, तिल, सरसों, पायस और घी।
अष्टधाती–वि० [सं० अष्टधातु] १. अष्ट-धातुओं से बना हुआ। २. दृढ़। मजबूत। ३. उत्पाती। उपद्रवी। ४. वर्णसंकर।
अष्टधातु–संज्ञा स्त्री० [सं०] आठ धातुएँ—सोना, चाँदी, ताँबा, राँगा, जस्ता, सीसा, लोहा और पारा।
अष्टपदी–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का गीत जिसमें आठ पद होते हैं।
अष्टपाद–संज्ञा पुं० [सं०] १. शरभ। शार्दूल। २. लूता। मकड़ी।
अष्टप्रकृति–संज्ञा स्त्री० [सं०] राज्य के आठ प्रधान कर्मचारी। यथा—सुमंत्र, पंडित, मंत्री, प्रधान, सचिव, अमात्य, प्राड्विवाक

और प्रतिनिधि।
अष्टभुजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।
अष्टम—वि० पु० [सं०] आठवाँ।
अष्टमंगल—संज्ञा पु० [सं०] आठ मंगल-द्रव्य—सिंह, वृष, नाग, कलश, पंखा, वैजयंती, भेरी और दीपक।
अष्टमी—संज्ञा स्त्री० [सं०] शुक्ल या कृष्ण-पक्ष की आठवीं तिथि।
अष्टमूर्ति—संज्ञा पु० [सं०] १ शिव। २ शिव की आठ मूर्तियाँ—शर्व, भव, रुद्र, उग्र, भीम, पशुपति, ईशान और महादेव।
अष्टवर्ग—संज्ञा पु० [सं०] १ आठ ओषधियों का समाहार—जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, ऋद्धि और वृद्धि। २ ज्योतिष का एक गोचर। ३ राज्य के ऋषि, वस्ति, दुर्ग, सोना, हस्तिबंधन, खान, कर-ग्रहण और सैन्य संस्थापन का समूह।
अष्टांग—संज्ञा पु० [सं०] [वि० अष्टांगी] १ योग की क्रिया के आठ भेद—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। २ आयुर्वेद के आठ विभाग—शल्य, शालाक्य, कायचिकित्सा, भूतविद्या, कौमारभृत्य, अगदतंत्र, रसायन-तंत्र और वाजीकरण। ३ आठ अंग—जानु, पद, हाथ, उर, सिर, वचन, दृष्टि और बुद्धि, जिनसे प्रणाम करने का विधान है। वि० [सं०] १ आठ अवयववाला। २ अठपहल।
अष्टांगी—वि० [सं०] आठ अंगोंवाला।
अष्टाक्षर—संज्ञा पु० [सं०] आठ अक्षरों का मंत्र।
वि० [सं०] आठ अक्षरों का।
अष्टाध्यायी—संज्ञा पु० [सं०] पाणिनीय व्याकरण का प्रधान ग्रंथ जिसमें आठ अध्याय हैं।
अष्टावक्र—संज्ञा पु० [सं०] १ एक ऋषि। २ टेढ़े मेढ़े अंगों का मनुष्य।
अष्ठीला—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक रोग जिसमें पेशाब नहीं होता और गाँठ पड़ जाती है।

असंक०—क्रि० दे० "अशक"।
असंक्रांति मास—संज्ञा पु० [सं०] अधिक-मास। मलमास।
असंख्य—वि० [सं०] अनगिनत। बेशुमार।
असंग०—वि० [सं०] १ अकेला। एकाकी। २ किसी से वास्ता न रखनेवाला। निर्लिप्त। ३ जुदा। अलग। ४ विरक्त।
असंगत—वि० [सं०] १ अयुक्त। बेठीक। २ अनुचित। नामुनासिब।
असंगति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बेसिलसिलापन। बेमेल होने का भाव। २ अनुपयुक्तता। नामुनासिबत। ३ एक काव्यालंकार जिसमें कारण कहीं बताया जाय और कार्य कहीं।
असंत—वि० [सं०] खल। दुष्ट।
असंतुष्ट—वि० [सं०] [संज्ञा असंतुष्टि] १ जो संतुष्ट न हो। २ अतृप्त। जिसका मन न भरा हो। ३ अप्रसन्न। नाराज।
असंतुष्टि—संज्ञा स्त्री० दे० "असंतोष"।
असंतोष—संज्ञा पु० [सं०] [वि० असंतोषी] १ संतोष का अभाव। अधैर्य। २ अतृप्ति। ३ अप्रसन्नता।
असंबद्ध—वि० [सं०] १ जो मेल में न हो। २ पृथक्। अलग। ३ अनमिल। बेमेल। अंड-बंड। जैसे, असंबद्ध प्रलाप।
असंबाधा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त।
असंभव—वि० [सं०] जो संभव न हो। जो हो न सके। नामुमकिन।
संज्ञा पु० एक काव्यालंकार जिसमें यह दिखाया जाता है कि जो बात हो गई, उसका होना असंभव था।
असंभार—वि० [हिं० अ + संभार] १ जो सँभालने योग्य न हो। २ अपार। बहुत बड़ा।
असंभावना—संज्ञा स्त्री० [सं०] संभावना का अभाव। अनहोनापन।
असंभावित—वि० [सं०] जिसके होने का अनुमान न किया गया हो। अनुमान-विरुद्ध।
असंभाव्य—वि० [सं०] जिसकी संभावना

न हो। अनहोना।

असंभाष्य–वि० [सं०] १. न कहे जाने योग्य। २. जिससे बात-चीत करना उचित न हो। बुरा।

असंयत–वि० [सं०] संयमरहित। जो संयत या नियमबद्ध न हो।

असंस्कृत–वि० [सं०] १. बिना सुधारा हुआ। अपरिमार्जित। २. जिसका उपनयन संस्कार न हुआ हो। व्रात्य।

अस*†–वि० [सं० ईदृश] १. इस प्रकार का। ऐसा। २. तुल्य। समान।

असकताना–क्रि० अ० [हिं० आसकत] आलस्य में पड़ना। आलसी होना।

असकरना–संज्ञा पुं०[सं० असि + करण] लोहे का एक औज़ार जिससे तलवार की म्यान के भीतर की लकड़ी साफ की जाती है।

असगंध–संज्ञा पुं० [सं० अश्वगंधा] एक सीधी झाड़ी जिसकी मोटी जड़ पुष्टई और दवा के काम में आती है। अश्वगंधा।

असगुन–संज्ञा पुं० दे० "अशकुन"।

असज्जन–वि० [सं०] खल। दुष्ट।

असती–वि० [सं०] जो सती न हो। कुलटा। पुंश्चली।

असत्–वि० [सं०] १. अस्तित्व-विहीन। सत्तारहित। २. बुरा। खराब। ३. असाधु। असज्जन।

असत्ता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सत्ता का अभाव। अनस्तित्व। २. असज्जनता।

असत्य–वि० [सं०] मिथ्या। झूठ।

असत्यता–संज्ञा स्त्री० [सं०] मिथ्यात्व। झुठाई।

असत्यवादी–वि० [सं०] झूठ बोलने-वाला। झूठा। मिथ्यावादी।

असबर्ग–संज्ञा पुं० [फा०] खुरासान की एक लंबी घास जिसके फूल रेशम रँगने के काम में आते हैं।

असबाब–संज्ञा पुं० [अ०] चीज़। वस्तु। सामान। प्रयोजनीय पदार्थ।

असभई†–संज्ञा स्त्री० [सं० असभ्यता] अशिष्टता। बेहूदगी। असभ्यता।

असभ्य–वि० [सं०] अशिष्ट। गँवार।

असभ्यता–संज्ञा स्त्री० [सं०] अशिष्टता। गँवारपन।

असमंजस–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुविधा। आगा-पीछा। २. अड़चन। कठिनाई।

असमंत*–संज्ञा पुं० [सं० अश्वमत] चूल्हा।

असम–वि० [सं०] १. जो सम या तुल्य न हो। जो बराबर न हो। असदृश। २. विषम। ताक़। ३. ऊँचा-नीचा। ऊबड़-खाबड़। ४. एक काव्यालंकार जिसमें उपमान का मिलना असंभव बतलाया जाय।

असमय–संज्ञा पुं० [सं०] विपत्ति का समय। बुरा समय।

क्रि० वि० कुअवसर। बे-मौक़ा।

असमर्थ–वि० [सं०] १. सामर्थ्यहीन। दुर्बल। अशक्त। २. अयोग्य।

असमवायि कारण–संज्ञा पुं० [सं०] न्याय-दर्शन के अनुसार वह कारण जो द्रव्य न हो, गुण या कर्म हो।

असमशर–संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।

असम्मत–वि० [सं०] १. जो राजी न हो। विरुद्ध। २. जिसपर किसी की राय न हो।

असम्मति–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० असम्मत] सम्मति का अभाव। विरुद्ध मत या राय।

असमान–वि० [सं०] जो समान या तुल्य न हो।

‡संज्ञा पुं० दे० "आसमान"।

असमाप्त–वि० [सं०] [संज्ञा असमाप्ति] अपूर्ण। अधूरा।

असमेध*–संज्ञा पुं० दे० "अश्वमेध"।

असयाना*–वि० [हिं० अ + सयाना] १. सीधा-सादा। २. अनाड़ी। मूर्ख।

असर–संज्ञा पुं० [अ०] प्रभाव।

असरार*–क्रि० वि० [हिं० सरसर] निरंतर। लगातार। बराबर।

असल–वि० [अ०] १. सच्चा। खरा। २. उच्च। श्रेष्ठ। ३. बिना मिलावट का। शुद्ध। ख़ालिस। ४. जो झूठा या बना-

घटी न हो।

संज्ञा पुं० १. जड़। बुनियाद। २. मूल धन।

असलियत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. तथ्य। वास्तविकता। २. जड़। मूल। ३. मूल तत्त्व। सार।

असली–वि० [अ० असल] १. सच्चा। खरा। २. मूल। प्रधान। ३ बिना मिलावट का। शुद्ध।

असवार†–संज्ञा पुं० दे० "सवार"।

असह*–वि० दे० "असह्य"।

असहनशील–वि० [सं०] [संज्ञा स्त्री० असहनशीलता] १. जिसमें सहन करने की शक्ति न हो। असहिष्णु। २ चिड़चिड़ा। तुनक-मिज़ाज।

असहनीय–वि० [सं०] न सहने योग्य। जो बर्दाश्त न हो सके। असह्य।

असहयोग–संज्ञा पुं० [सं०] १. मिलकर काम न करना। २. आधुनिक राजनीति में प्रजा या उसके किसी वर्ग का राज्य से असंतोष प्रकट करने के लिये उसके कामों से बिलकुल अलग रहना।

असहाय–वि० [सं०] १ जिसे कोई सहारा न हो। निःसहाय। निराश्रय। २ अनाथ।

असहिष्णु–वि० [सं०] [संज्ञा असहिष्णुता] १. असहनशील। २. चिड़चिड़ा।

असही–वि० [सं० असह] दूसरे को देखकर जलनेवाला। ईर्ष्यालु।

असह्य–वि० [सं०] जो बर्दाश्त न हो सके। असहनीय।

असांच*–वि० [सं० असत्य] असत्य। झूठ। मृषा।

असा–संज्ञा पुं० [अ०] १. सोंटा। डंडा। २. चाँदी या सोने से मढ़ा हुआ सोंटा।

असाई†–वि० [सं० अशालीन] अशिष्ट। बेहूदा। बदतमीज़।

असाढ़–संज्ञा पुं० दे० "आषाढ़"।

असाढ़ी–वि० [सं० आषाढ़] आषाढ़ का। संज्ञा स्त्री० १ वह फसल जो आषाढ़ में बोई जाय। खरीफ। २ आषाढ़ी पूर्णिमा।

असाधारण–वि० [सं०] जो साधारण न हो। असामान्य। गैर-मामूली।

असाधु–वि० [सं०] [स्त्री० असाध्वी] १. दुष्ट। दुर्जन। २. अविनीत। अशिष्ट।

असाध्य–वि० [सं०] १. न होने योग्य। दुष्कर। कठिन। २. न आरोग्य होने के योग्य। जैसे असाध्य रोग।

असामयिक–वि० [सं०] जो नियत समय से पहले या पीछे हो। बिना समय का।

असामर्थ्य–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शक्ति का अभाव। अक्षमता। २ निर्बलता। नाताकती।

असामान्य–वि० [सं०] असाधारण। गैर-मामूली।

असामी–संज्ञा पुं०[अ० आसामी] १. व्यक्ति। प्राणी। २. जिसमें किसी प्रकार का लेन-देन हो। ३ वह जिसने लगान पर जोतने के लिये ज़मींदार से खेत लिया हो। रैयत। काश्तकार। जोता। ४. मुद्दालेह। देनदार। ५ अपराधी। मुलज़िम। ६ वह जिससे किसी प्रकार का मतलब गाँठना हो।

संज्ञा स्त्री० नौकरी। जगह।

असार–वि० [सं०] [संज्ञा असारता] १. सार-रहित। निःसार। २. शून्य। खाली। ३ तुच्छ।

असालत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. कुलीनता। २ सचाई। तत्त्व।

असालतन–क्रि० वि० [अ०] स्वयं। खुद।

असावधान–वि० [सं०] जो सावधान या सतर्क न हो। जो सचेत न हो।

असावधानी–संज्ञा स्त्री० [सं०] बेखबरी। बे-परवाही।

असावरी–संज्ञा स्त्री० [सं० आसावरी] छत्तीस रागिनियों में से एक।

असासा–संज्ञा पुं० [अ०] माल। असबाब। संपत्ति।

असि–संज्ञा स्त्री [सं०] तलवार। खड्ग।

असित–वि० [सं०] १. काला। २. दुष्ट। बुरा। ३ टेढ़ा। कुटिल।

असिद्ध–वि० [सं०] १. जो सिद्ध न हो।

२. बे-पका।-कच्चा। ३. अपूर्ण। अधूरा। ४. निष्फल। व्यर्थ। ५. अप्रमाणित।

असिद्धि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अप्राप्ति। अनिष्पत्ति। २. कच्चापन। कचाई। ३. अपूर्णता।

असिपत्र वन–संज्ञा पुं० [सं०] एक नरक।

असी–संज्ञा स्त्री० [सं० असि] एक नदी जो काशी के दक्षिण गंगा से मिली है।

असीम–वि० [सं०] १. सीमारहित। बेहद। २. अपरिमित। अनंत। ३. अपार।

असील*–वि० दे० "असल"।

असीस*–संज्ञा स्त्री० दे० "आशिष"।

असीसना–क्रि० स० [सं० आशिष] आशीर्वाद देना। दुआ देना।

असु*–संज्ञा पु० देखो "अश्व"।

असुविधा–संज्ञा स्त्री० [सं० अ=नहीं+सुविधि=अच्छी तरह] १. कठिनाई। अड़चन। २. तकलीफ़। दिक्क़त।

असुर–संज्ञा पु० [सं०] १. दैत्य। राक्षस। २. रात्रि। ३. नीच वृत्ति का पुरुष। ४. पृथ्वी। ५. सूर्य्य। ६. बादल। ७. राहु। ८. एक प्रकार का उन्माद।

असुरसेन–संज्ञा पुं० [सं०] एक राक्षस। (कहते हैं कि इसके शरीर पर गया नामक नगर बसा है।)

असुरारि–संज्ञा पु० [सं०] १. देवता। २. विष्णु।

असूझ–वि० [सं० अ+हिं० सूझना] १. अँधेरा। अंधकारमय। २. जिसका वार-पार न दिखाई पड़े। अपार। बहुत विस्तृत। ३. जिसके करने का उपाय न सूझे। विकट। कठिन।

असूत*–वि० [सं० अस्यूत] विरुद्ध। असंबद्ध।

असूया–संज्ञा स्त्री० [सं०][वि० असूयक] पराये गुण में दोष लगाना। ईर्ष्या। डाह। (रस के अंतर्गत एक संचारी भाव।)

असूर्यंपश्या–वि० [सं०] जिसको सूर्य्य भी न देखे। परदे में रहनेवाली।

असूल–संज्ञा पुं० दे० १. "उसूल" और २. "वसूल"।

असेग*–वि० [सं० असह्य] न सहने योग्य। असह्य। कठिन।

असेसर–संज्ञा पुं० [अं०] वह व्यक्ति जो जज को फ़ौजदारी के मुक़द्दमे में राय देने के लिए चुना जाता है।

असैला*–वि० [सं० अ=नहीं+शैली=रीति][स्त्री० असैली] १. रीति-नीति के विरुद्ध काम करनेवाला। कुमार्गी। २. शैली के विरुद्ध। अनुचित।

असोज*†–संज्ञा पुं० [सं० अश्वयुज्] आश्विन। क्वार मास।

असोस*–वि० [सं० अ+शोष] जो सूखे नहीं। न सूखनेवाला।

असौंध*–संज्ञा पुं० [अ+हिं० सौंध=सुगंध] दुर्गंधि। बदबू।

अस्तंगत–वि० [सं०] १. अस्त को प्राप्त। नष्ट। २. अवनत। हीन।

अस्त–वि० [सं०] १. छिपा हुआ। तिरोहित। २. जो न दिखाई पड़े। अदृश्य। ३. डूबा हुआ (सूर्य्य, चंद्र आदि)। ४. नष्ट। ध्वस्त। संज्ञा पुं० [सं०] लोप। अदर्शन। यौ०–सूर्य्यास्त। शुक्रास्त। चंद्रास्त।

अस्तबल–संज्ञा पु० [अ०] घुड़साल। तबेला।

अस्तमन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अस्तमित] १. अस्त होना। २. सूर्यादि ग्रहों का अस्त होना।

अस्तमित–वि० [सं०] १. तिरोहित। छिपा हुआ। २. डूबा हुआ। ३. नष्ट। ४. मृत।

अस्तर–संज्ञा पु० [फ़ा०] १. नीचे की तह या पल्ला। भितल्ला। २. दोहरे कपड़े में नीचे का कपड़ा। ३. चंदन का तेल जिसे आधार बनाकर इत्र बनाते हैं। [illegible] ज़मीन। ४. वह कपड़ा [illegible] साड़ी के नीचे लगा[illegible] पहनती हैं। अंत-रौटा। अंतरपट।

अस्तरकारी–संज्ञा स्त्री० [illegible] की लिपाई। सफ़ेदी। कलई। २. गच-

मारी। पलस्तर।

अस्तव्यस्त–वि० [स०] उलटा-पुलटा। छिन्न-भिन्न। तितर-बितर।

अस्ताचल–संज्ञा पु० [स०] वह कल्पित पर्वत जिसके पीछे अस्त होने पर सूर्य का छिप जाना कहा जाता है। पश्चिमाचल।

अस्ति–संज्ञा स्त्री० [स०] १. भाव। सत्ता। २. विद्यमानता। वर्त्तमानता।

अस्तित्व–संज्ञा पु० [स०] १ सत्ता का भाव। विद्यमानता। होना। मौजूदगी। २ सत्ता। भाव।

अस्तु–अव्य० [स०] १ जो हो। चाहे जो हो। २ खैर। भला। अच्छा।

अस्तुति–संज्ञा स्त्री० [स०] निंदा। बुराई। *संज्ञा स्त्री० दे० "स्तुति"।

अस्तुरा–संज्ञा पु० [फा०] बाल बनाने का छुरा। उस्तरा।

अस्तेय–संज्ञा पु० [स०] चोरी का त्याग। चोरी न करना। (दस धर्मों म से एक)

अस्त्र–संज्ञा पु० [स०] १ वह हथियार जिसे फेककर शत्रु पर चलावें। जैसे, बाण, शक्ति। २ हथियार जिससे शत्रु के चलाए हथियारो की रोक हो। जैसे, ढाल। ३ वह हथियार जो मंत्र-द्वारा चलाया जाय। ४ वह हथियार जिससे चिकित्सक चीर-फाड करते है। ५ शस्त्र। हथियार।

अस्त्रचिकित्सा–संज्ञा स्त्री० [स०] वैद्यक शास्त्र का वह अश जिसमें चीर-फाड का विधान है।

अस्त्रवेद–संज्ञा पु० [स०] धनुर्वेद।

अस्त्रशाला–संज्ञा स्त्री० [स०] वह स्थान जहाँ अस्त्र-शस्त्र रक्खे जायें। अस्त्रागार।

अस्त्रागार–संज्ञा पु० [स०] अस्त्रशाला।

अस्त्री–संज्ञा पु० [स० अस्त्रिन्] [स्त्री० अस्त्रिणी] अस्त्रधारी मनुष्य। हथियारबंद।

अस्थि–संज्ञा स्त्री० [स०] हड्डी।

अस्थिर–वि० [स०] १ चचल। चला-यमान। डाँवाँडोल। २ जिसका कुछ ठीक न हो। *वि० दे० "स्थिर"।

अस्थिसंचय–संज्ञा पु० [स०] अत्येष्टि संस्कार के अनंतर जलने से बची हुई हड्डियाँ एकत्र करने का कर्म।

अस्थूल–वि० [स०] जो स्थूल न हो। सूक्ष्म। *वि० दे० "स्थूल"।

अस्नान*–संज्ञा पु० दे० "स्नान"।

अस्पताल–संज्ञा पु० [अँ० हॉस्पिटल] औषधालय। चिकित्सालय। दवाखाना।

अस्पृश्य–वि० [स०] १ जो छूने योग्य न हो। २ नीच या अत्यज जाति का।

अस्फुट–वि० [स०] १ जो स्पष्ट न हो। २ गूढ़। जटिल।

अस्मिता–संज्ञा स्त्री० [स०] १ दृक्, द्रष्टा और दर्शन शक्ति को एक मानना या पुरुष (आत्मा) और बुद्धि में अभेद मानने की भ्रांति (योग)। २ अहकार। मोह।

अस्र–संज्ञा पु० [स०] १ कोना। २ रुधिर। ३. जल। ४ आँसू। ५ केसर।

अस्रप–संज्ञा पु० [स०] १ राक्षस। २ मूल नक्षत्र। ३. जोंक। वि० रक्त पीनेवाला।

अस्वस्थ–वि० [स०] १ रोगी। बीमार। २ अनमना।

अस्वाभाविक–वि० [स०] १ जो स्वाभाविक न हो। प्रकृति विरुद्ध। २ कृत्रिम। बनावटी।

अस्वीकार–संज्ञा पु० [स०] [वि० अस्वीकृत] स्वीकार का उलटा। इनकार। नामंज़ूरी। नाहीं।

अस्वीकृत–वि० [स०] अस्वीकार या नामंजूर किया हुआ। नामंजूर।

अस्सी–वि० [स० अशीति] सत्तर और दस की संख्या। दस का अठगुना।

अहं–सर्व० [स०] मैं। संज्ञा पु० [स०] अहंकार। अभिमान।

अहंकार–संज्ञा पु० [स०] [वि० अहंकारी] १ अभिमान। गर्व। घमंड। २ "मैं हूँ" या "मैं करता हूँ" इस प्रकार की भावना।

अहंकारी–वि० [स०] अहंकारिन् [स्त्री०

अहंकारिणी] अहंकार करनेवाला। घमंडी।

अहंता—संज्ञा स्त्री० [सं०] अहंकार। गर्व।

अहंवाद—संज्ञा पु० [सं०] डींग मारना। शेखी हाँकना।

अह—संज्ञा पुं० [सं० अहन्] १. दिन। २. विष्णु। ३. सूर्य्य। ४. दिन का देवता। अव्य० [सं० अहह] आश्चर्य, खेद या क्लेश आदि का सूचक शब्द।

अहक*—संज्ञा स्त्री० [सं० ईहा] इच्छा।

अहकना—क्रि० अ० [हिं० अहक] लालसा करना। प्रबल इच्छा करना।

अहटाना*—क्रि० अ० [हिं० आहट] आहट लगना। पता चलना। क्रि० स० आहट लगाना। टोह लेना। क्रि० अ० [सं० आहत] दुखना।

अहद—संज्ञा पुं० [अ०] प्रतिज्ञा। वादा।

अहथिर†—वि० दे० "स्थिर"।

अहदनामा—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. इकरारनामा। प्रतिज्ञापत्र। २. सुलहनामा।

अहदी—वि० पुं० [अ०] १. आलसी। आसकती। २. अकर्मण्य। निठल्लू। संज्ञा पुं० [अ०] अकबर के समय के एक प्रकार के सिपाही जिनसे बड़ी आवश्यकता के समय काम लिया जाता था और जो सब दिन बैठे खाते थे।

अहन्—संज्ञा पु० [सं०] दिन।

अहना*†—क्रि० अ० [सं० अस् = होना] होना। (अब यह क्रिया केवल वर्तमान रूप "अहै" में ही बोली जाती है।)

अहनिसि*—अव्य० दे० "अहर्निश"।

अहमक—वि० [अ०] बेवकूफ़। मूर्ख।

अहमिति*—संज्ञा स्त्री० दे० "अहम्मति"।

अहमेव—संज्ञा पुं० [सं०] गर्व। घमंड।

अहम्मति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अहंकार। २. अविद्या।

अहरन—संज्ञा स्त्री० [सं० आ + घरण] निहाई।

अहरना†—क्रि० स० [सं० आहरण] १. लकड़ी को छीलकर सुडौल करना। २. डौलना।

अहरा—संज्ञा पुं० [सं०] आहरण १. कंडे का ढेर। २. वह स्थान जहाँ लोग ठहरें।

अहर्निश—क्रि० वि० [सं०] १. रात-दिन। २. सदा। नित्य।

अहलकार—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. कर्मचारी। २. कारिंदा।

अहलमद—संज्ञा पुं० [फ़ा०] अदालत का वह कर्मचारी जो मुक़दमों की मिसिलें रखता तथा अदालत के हुक्म के अनुसार हुक्मनामे जारी करता है।

अहल्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] गौतम ऋषि की पत्नी।

अहसान—संज्ञा पुं० [अ०] १. किसी के साथ नेकी करना। सलूक। उपकार। २. कृपा। अनुग्रह। ३. कृतज्ञता।

अहह—अव्य० [सं०] आश्चर्य, खेद, क्लेश या शोक-सूचक एक शब्द।

अहा—अव्य० [सं० अहह] आह्लाद और प्रसन्नता-सूचक एक शब्द।

अहाता—संज्ञा पुं० [अ०] १. घेरा। हाता। बाड़ा। २. प्राकार। चहारदीवारी।

अहार*—संज्ञा पुं० दे० "आहार"।

अहारना*—क्रि० स० [सं० आहरण] १. खाना। भक्षण करना। २. चपकाना। ३. कपड़े में माँड़ी देना। ४. दे० "अहरना"।

अहारी—वि० दे० "आहारी"।

अहाहा—अव्य० [सं० अहह] हर्ष-सूचक अव्यय

अहिंसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी को दुःख न देना। किसी जीव को न सताना या न मारना।

अहिंस्र—वि० [सं०] जो हिंसा न करे। अहिंसक।

अहि—संज्ञा पु० [सं०] १. साँप। २. राहु। ३. वृत्रासुर। ४. खल। वंचक। ५. पृथिवी। ६. सूर्य्य। ७. मात्रिक गणों में ठगण। ८. इक्कीस अक्षरों के वृत्त का एक भेद।

अहिगण—संज्ञा पु० [सं०] पाँच मात्राओं के गण—ठगण—का सातवाँ भेद।

अहिच्छत्र—संज्ञा पु० [सं०] प्राचीन दक्षिण पांचाल।

अहित—वि० [सं०] १. शत्रु। वैरी। २.

हानिकराव।
संज्ञा पु० बुराई। अकल्याण।
अहिफेन–संज्ञा पु० [सं०] १ सर्प के मुँह की लार या फेन। २ अफीम।
अहिबेल*–संज्ञा स्त्री० [सं० अहिवल्ली] नागवेल। पान।
अहिवर–संज्ञा पु० [सं०] दोहे का एक भेद।
अहिवात–संज्ञा पु० [सं० अभिवाद] [वि० अहिवाती] स्त्री का सौभाग्य। सोहाग।
अहिवाती–वि० स्त्री० [हिं० अहिवात] सौभाग्यवती। सोहागिन। सधवा।
अहीर–संज्ञा पु० [सं० आभीर] [स्त्री० अहीरिन] एक जाति जिसका काम गाय भैंस रखना और दूध बेचना है। ग्वाला।
अहीश–संज्ञा पु० [सं०] १ शेषनाग। २ शेष के अवतार लक्ष्मण और बलराम आदि।
अहुटना*–क्रि० अ० [हिं० हटना] हटना। दूर होना। अलग होना।
अहुटाना*–क्रि० स० [हिं० हटाना] हटाना। दूर करना। भगाना।
अहुठ*–वि० [सं० अध्युष्ठ] साढ़े तीन। तीन और आधा।
अहेतु–वि० [सं०] १ बिना कारण का। निमित्त-रहित। २ व्यर्थ। फजूल।
अहेतुक–वि० दे० 'अहेतु'।
अहेर–संज्ञा पु० [सं० आखेट] १ शिकार। मृगया। २ वह जंतु जिसका शिकार किया जाय।
अहेरी–संज्ञा पु० [हिं० अहेर] १ शिकारी *आदमी। आखेटक। २ व्याध।*
अहो–अव्य० [सं०] एक अव्यय जिसका प्रयोग कभी संबोधन की तरह और कभी करुणा, खेद प्रशंसा, हर्ष या विस्मय सूचित करने के लिये होता है।
अहोरात्र–संज्ञा पु० [सं०] दिन रात।
अहोर बहोर–क्रि० वि० [हिं० बहुरना] फिर फिर। बार बार।
अहोरा बहोरा–संज्ञा पु० [सं० अह = दिन + हिं० बहुरना] *विवाह की एक रीति* जिसमें दुलहिन ससुराल में जाकर उसी दिन अपने घर लौट जाती है। फेरा फेरी।

आ

आ–हिंदी वर्णमाला का दूसरा अक्षर जो *'अ'* का दीर्घ रूप है।
आँक–संज्ञा पु० [सं० अंक] १ अंक। चिह्न। निशान। २ संख्या का चिह्न। अदद। ३ अक्षर। हरफ। ४ गढ़ी हुई बात। ५ अंश। हिस्सा। ६ लकीर।
मुहा०–एक ही आँक – दृढ़ बात। पक्की बात। निश्चय।
आँकड़ा–संज्ञा पु० [हिं० आँक] १ अंक। अदद। संख्या का चिह्न। २ पेच।
आँकना–क्रि० स० [सं० अंकन] १ चिह्नित करना। निशान लगाना। दागना। २ कूतना। अंदाज करना। मूल्य लगाना। ३ अनुमान करना। ठहराना।
आँकर–वि० [सं० आकर] १ गहरा। २ बहुत *अधिक।*
वि० [सं० अक्रय्य] महँगा।
आँकुस*†–संज्ञा पु० दे० 'अंकुश'।
आँकू–संज्ञा पु० [हिं० आँक + ऊ (प्रत्य०)] आँकने या कूतनेवाला।
आँख–संज्ञा स्त्री० [सं० अक्षि] १ वह इंद्रिय जिससे प्राणियों को रूप अर्थात् वर्ण, विस्तार तथा आकार का ज्ञान होता है। नेत्र। लोचन। २ दृष्टि। नजर। ध्यान।
मुहा०–आँख आना या उठना = आँख में लाली, पीड़ा और सूजन होना। आँख उठाना = १ ताकना। देखना। २ हानि पहुँचाने की चेष्टा करना। आँख

उलट जाना = पुतली का ऊपर चढ़ जाना (मरने के समय)। आंख का तारा = १. आंख का तिल। २. बहुत प्यारा व्यक्ति। आंख की पुतली = १. आंख के भीतर रंगीन भरी झिल्ली का वह भाग जो सफ़ेदी पर की गोल काट से होकर दिखाई पड़ता है। २. प्रिय व्यक्ति। प्यारा मनुष्य। आंखों के डोरे = आंखों के सफेद डेलों पर लाल रंग की बहुत बारीक नसें। आंख खुलना = १. पलक खुलना। २. नींद टूटना। ३. ज्ञान होना। भ्रम का दूर होना। ४. चित्त स्वस्थ होना। तबीअत ठिकाने आना। आंख खोलना = १. पलक उठाना। ताकना। २. चेताना। सावधान करना। ३. सुध में होना। स्वस्थ होना। आंख गड़ना = १. आंख किर-किराना। आंख दुखना। २. दृष्टि जमना। टकटकी बँधना। ३. प्राप्ति की उत्कट इच्छा होना। आंख चढ़ना = नशे या नींद में पलकों का तन जाना और नियमित रूप से न गिरना आंखें चार करना, चार आंखें करना = देखा-देखी करना। सामने आना। आंख चुराना या छिपाना = १. कतराना। सामने न होना। २. लज्जा से बराबर न ताकना। आंख झपकना = १. आंख बंद होना। २. नींद आना। आंखें डबडबाना = १. क्रि०अ० आंखों में आंसू भर आना। २. क्रि०स० आंख में आंसू लाना। आंखें तरेरना = क्रोध की दृष्टि से देखना। आंख दिखाना = क्रोध की दृष्टि से देखना। कोप जताना। आंख न ठहरना = चमक या द्रुत गति के कारण दृष्टि न जमना। आंख निकालना = १. क्रोध की दृष्टि से देखना। २. आंख के डेले को काट-कर अलग कर देना। आंख नीची होना = सिर का नीचा होना। लज्जा उत्पन्न होना। आंख पथराना = पलक का नियमित रूप से न गिरना और पुतली की गति का मारा जाना (मरने का पूर्व लक्षण)। आंखों पर परदा पड़ना = अज्ञान का अंधकार छाना। भ्रम होना। आंख फड़कना = आंख की पलक का बार-बार हिलना (शुभ-अशुभ-सूचक)। आंख फाड़कर देखना = खूब आंख खोलकर देखना। आंखें फिर जाना = १. पहले की सी कृपा न रहना। बे-मुरौअती आ जाना। २. मन में बुराई आना। आंख फूटना = १. आंख की ज्योति का नष्ट होना। २. बुरा लगना। कुढ़न होना। आंख फेरना = १. पहिले की सी कृपा या स्नेहदृष्टि न रखना। २. मित्रता तोड़ना। ३. विरुद्ध होना। प्रतिकूल होना। आंख फोड़ना = १. आंखों की ज्योति का नाश करना। २. कोई ऐसा काम करना जिसमें आंख पर जोर पड़े। आंख बन्द होना = १. आंख झपकना। पलक गिरना। २. मृत्यु होना। मरण होना। आंख बन्द करके या मूंदकर = बिना सब बात देखे, सुने या विचार किए। आंख बचाना = सामना न करना। कतराना। आंखें बिछाना = १. प्रेम से स्वागत करना। २. प्रेमपूर्वक प्रतीक्षा करना। बाट जोहना। आंख भर आना = आंख में आंसू आना। आंख भर देखना = खूब अच्छी तरह देखना। तृप्त होकर देखना। इच्छा भर देखना। आंख मारना = १. इशारा करना। सन-कारना। २. आंख के इशारे से मना करना। आंख मिलाना = १. आंख सामने करना। बराबर ताकना। २. सामने आना। मुंह दिखाना। आंखों में खून उतरना = क्रोध से आंखें लाल होना। आंख में गड़ना या चुभना = १. बुरा लगना। २. जँचना। पसंद आना। आंखों में चरबी छाना = मदांध होना। गर्व से किसी की ओर ध्यान न देना। आंखों में धूल डालना = सरासर धोखा देना। भ्रम में डालना। आंखों में फिरना = ध्यान पर चढ़ना। स्मृति में बना रहना। आंखों में रात काटना = किसी कष्ट, चिंता या व्यग्रता से सारी रात जागते बीतना। आंखों में समाना = हृदय में बसना। चित्त में स्मरण बना रहना। किसी पर आंख रखना = १. नजर रखना। चौकसी करना। २. चाह रखना। इच्छा रखना। आंख लगना = १. नींद लगना। झपकी आना। सोना। २. टकटकी लगना। दृष्टि जमाना।

(किसी से) आंख लगना = प्रीति होना। प्रेम होना। आंख लड़ना = १ देखादेखी होना। आंख मिलना। २ प्रेम होना। प्रीति होना। आंख लाल करना = क्रोध-दृष्टि से देखना। आंख सेंकना = दर्शन का सुख उठाना। नेत्रा-नद लेना। आंखों से लगाकर रखना = बहुत प्रिय करके रखना। बहुत आदर-सत्कार से रखना। आंख होना = १ परख होना। पह-चान होना। २ ज्ञान होना। विवेक होना। ३ विचार। विवेक। परख। शिनाख्त। पहचान। ४ कृपादृष्टि। दया-भाव। ५ सतति। संतान। लड़का-वाला। ६ आंख के आकार का छेद या चिह्न। जैसे—सूई का छेद।

आंखडी‡—संज्ञा स्त्री० दे० "आंख"।

आंखफोड टिड्डा—संज्ञा पु० [स० आक = मदार + हिं० फोड़ना] १ हरे रंग का एक कीड़ा या फतिंगा। २ कृतघ्न। बे मुरौअत।

आंखमिचौली, आंखमीचली—संज्ञा स्त्री० [हिं० आंख + मीचना] लड़कों का एक खेल जिसमें एक लड़का किसी दूसरे लड़के की आंख मूंदकर बैठता है और बाकी लड़के इधर-उधर छिपते हैं जिन्हें उस आंख मूंदने-वाले लड़के को ढूंढकर छूना पड़ता है।

आंग*†—संज्ञा पु० [स० अग] अग।

आंगन—संज्ञा पु० [स० अगण] घर के भीतर का सहन। चौक। अजिर।

आंगिक—वि० [स०] अग-सबधी। अग का। संज्ञा पु० १ चित्त के भाव को प्रकट करने-वाली चेष्टा। जैसे भ्रू-विक्षेप, हाव आदि। २ रस में कायिक अनुभाव। ३ नाटक के अभिनय के चार भेदों में से एक।

आगिरस—संज्ञा पु० [स०] १ अगिरा के पुत्र बृहस्पति, उतथ्य और सवर्त्त। २ अगिरा के गोत्र का पुरुष। वि० अगिरा-सबधी। अगिरा का।

आंगी*†—संज्ञा स्त्री० दे० "अंगिया"।

आंगुरी*—संज्ञा स्त्री० दे० "उंगली"।

आंघी—संज्ञा स्त्री० [स० घृ = क्षरण] महीन कपड़े से मढ़ी हुई चलनी।

आंच—संज्ञा स्त्री० [स० अर्चि] १ गरमी। ताप। २ आग की लपट। लौ। ३ आग। मुहा०—आंच खाना = गरमी पाना। आग पर चढ़ना। तपना। आंच दिखाना = आग के सामने रखकर गरम करना। ४ एक बार पहुंचा हुआ ताप। ५ तेज। प्रताप। ६ आघात। चोट। ७ हानि। अहित। अनिष्ट। ८ विपत्ति। सकट। आफ्त। ९ प्रेम। मुहब्बत। १० काम-ताप।

आंचना*—क्रि० स० [हिं० आंच] जलाना। तपाना।

आंचर*†—संज्ञा पु० दे० "आंचल"।

आंचल—संज्ञा पु० [स० अचल] १ धोती, दुपट्टे आदि के दोनों छोरों पर का भाग। पल्ला। छोर। २ साधुओं का अंचला। ३ साड़ी या ओढ़नी का वह भाग जो सामने छाती पर रहता है। मुहा०—आंचल देना = १ बच्चे को दूध पिलाना। २ विवाह की एक रीति। आंचल फाड़ना = बच्चे के जीने के लिये टोटका करना। आंचल में बांधना = १ हर समय साथ रखना। प्रतिक्षण पास रखना। २ किसी की कही हुई बात को अच्छी तरह स्मरण रखना। कभी न भूलना। आंचल लेना = आंचल छूकर सत्कार या अभिवादन करना। (स्त्रि०)

आंजन†—संज्ञा पु० दे० "अंजन"।

आंजना—क्रि० स० [स० अंजन] अंजन लगाना।

आंजनेय—संज्ञा पु० [स०] अंजना के पुत्र, हनुमान्।

आंट—संज्ञा स्त्री० [हिं० अंटी] १ हथेली में तर्जनी और अंगूठे के नीचे का स्थान। २ दांव। वश। ३ बैर। लाग डांट। ४ गिरह। गांठ। ऐंठन। ५ पूला। गट्ठा।

आंटना*—क्रि० अ० दे० "अंटना"।

आंटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० आंटना] १ लंबे तृणों का छोटा गट्ठा। पूला। २ लड़कों के खेलने की गुल्ली। ३ सूत का लच्छा। ४ धोती की गिरह। टेंट। मुर्री। ऐंठन।

आंट-सांट—संज्ञा स्त्री० [हिं० आंट + सटना]

१. गुप्त अभिसंधि। साजिश। बंदिश।
२. मेल-जोल।
आँठी–संज्ञा स्त्री० [सं० अष्टि, प्रा० अट्ठि] १. दही, मलाई आदि वस्तुओं का लच्छा। २. गिरह। गाँठ। ३. गुठली। बीज।
आँड़–संज्ञा पुं० [सं० अण्ड] अंडकोश।
आँड़–वि० [सं० अण्ड] अंडकोशयुक्त। जो बधिया न हो। (बैल)
आँत–संज्ञा स्त्री० [सं० अन्त्र] प्राणियों के पेट के भीतर की वह लंबी नली जो गुदा-मार्ग तक रहती है और जिससे होकर मल या रद्दी पदार्थ बाहर निकल जाता है। अंत्र। अँतड़ी। लाद।
मुहा०–आंत उतरना = एक रोग जिसमें आँत ढीली होकर नाभि के नीचे उतर आती है और अंडकोश में पीड़ा उत्पन्न होती है। आँतों का बल खुलना = पेट भरना। भोजन से तृप्ति होना। आँतें कुलकुलाना या सूखना = भूख के मारे बुरी दशा होना।
आँतर*–संज्ञा पुं० दे० "अंतर"।
आँदू–संज्ञा पुं० [सं० अंदु = पैंडी] १ लोहे का कड़ा। बेड़ी। २. बाँधने का सीकड़।
आंदोलन–संज्ञा पु० [सं०] १. बार बार हिलना डोलना। २. उथल-पुथल करने-वाला प्रयत्न। हलचल। धूम।
आँध*–संज्ञा स्त्री० [सं० अन्ध] १. अँधेरा। धुंध। २. रतौंधी। ३. आफ़त। कष्ट।
आँधना*–क्रि० अ० [हिं० आँधी] वेग से धावा करना। टूटना।
आँधरा†*–वि० दे० "अंधा"।
आँधारंभ*–संज्ञा पुं० [सं० अध + आरभ] अंधेरखाता। बिना समझा-बूझा आचरण।
आँधी–संज्ञा स्त्री० [सं० अघ + अँधेरा] बड़े वेग की हवा जिससे इतनी धूल उठती है कि चारों ओर अँधेरा छा जाय। बंघड़। अंधवाव।
वि० आँधी की तरह तेज। चुस्त। चालाक।
आंध्र–संज्ञा पुं० [सं०] ताप्ती नदी के किनारे का देश।
आँबा हलदी–संज्ञा स्त्री० दे० "आमा हल्दी"।
आँय बाँय–संज्ञा स्त्री० [अनु०] अनाप-शनाप। अंडबंड। व्यर्थ की बात।
आँव–संज्ञा पुं० [सं० आम = कच्चा] एक प्रकार का चिकना सफ़ेद लसदार मल जो अन्न न पचने से उत्पन्न होता है।
आँवठ–संज्ञा पुं० [सं० ओष्ठ] किनारा।
आँवड़ना*–क्रि० अ० दे० "उमड़ना"।
आँवड़ा*†–वि० [सं० आकुंड] गहरा।
आँवल–संज्ञा पुं० [सं० उल्वम्] झिल्ली जिससे गर्भ में बच्चे लिपटे रहते हैं। खेंड़ी। जेरी। साम।
आँवला–संज्ञा पु० [सं० आमलक] एक पेड़ जिसके गोल फल खट्टे होते तथा खाने और दवा के काम में आते हैं।
आँवलासार गंधक–संज्ञा स्त्री० [हिं० आँवला + सं० सार गंधक] खूब साफ़ की हुई गंधक जो पारदर्शक होती है।
आँवाँ–संज्ञा पुं० [सं० आपाक] वह गड्ढा जिसमें कुम्हार लोग मिट्टी के बरतन पकाते हैं।
मुहा०–आँवा का आँवा बिगड़ना = किसी समाज के सब लोगों का बिगड़ना।
आंशिक–वि० [सं०] अंश-संबंधी। अंश-विषयक।
आंशुकजल–संज्ञा पु० [सं०] वह जल जो दिन भर धूप में और रात भर चाँदनी या ओस में रखकर छान लिया जाय। (वैद्यक)
आँस*–संज्ञा स्त्री० [सं० काश] संवेदना। दर्द। संज्ञा स्त्री० [सं० पाश] १. सुतली। डोरी। २. रेशा।
संज्ञा पुं० दे० "आँसू"।
आँसी*†–संज्ञा स्त्री० [सं० अंश] भाजी। बैना। मिठाई जो इष्ट मित्रों के यहाँ बाँटी जाती है।
आँसू–संज्ञा पुं० [सं० अश्रु] वह जल जो आँखों से शोक या पीड़ा के समय निकलता है। अश्रु।
मुहा०–आँसू गिराना या डालना = रोना।

आँगू पीकर रह जाना = भीतर ही भीतर रोकर रह जाना। आँसू पुंछना = आश्वासन मिलना। ढारस बँधना। आँसू पोंछना = ढारस बँधाना। दिलासा देना।

आँहड़–संज्ञा पुं० [सं० भाड] बरतन।

आँहाँ–अव्य० [हिं० ना + हाँ] अस्वीकार या निषेध-सूचक एक शब्द। नहीं।

आ–अव्य० [सं०] एक अव्यय जिसका प्रयोग सीमा, अभिव्याप्ति, ईषत् और अतिक्रमण के अर्थों में होता है। जैसे— (क) सीमा—आसमुद्र = समुद्र तक। आजन्म = जन्म से। (ख) अभिव्याप्ति—आपाताल = पाताल के अंतर्भाग तक। (ग) ईषत् (थोड़ा, कुछ)—आपिंगल = कुछ कुछ पीला। (घ) अतिक्रमण—आकालिक = बेमौसिम का।

उप० [सं०] एक उपसर्ग जो प्रायः गत्यर्थक धातुओं के पहले लगता है और उनके अर्थों में कुछ थोड़ी-सी विशेषता कर देता है, जैसे, आरोहण, आकंपन। जब यह 'गम्' (जाना), 'या (जाना), 'दा' (देना), तथा 'नी' (ले जाना) धातुओं के पहले लगता है, तब उनके अर्थों को उलट देता है, जैसे 'गमन से 'आगमन', 'नयन' से 'आनयन', 'दान' से 'आदान'।

आइंदा–वि० [फा०] आनेवाला। आगामी। भविष्य।

संज्ञा पुं० [फा०] भविष्यकाल।

क्रि० वि० आगे। भविष्य में।

आइ*–संज्ञा स्त्री० [सं० आयु] आयु। जीवन।

आइना–संज्ञा पुं० दे० "आईना"

आई–संज्ञा स्त्री० [हिं० आना] मृत्यु। मौत।

*संज्ञा स्त्री० दे० "आइ"।

आईन–संज्ञा पुं० [फा०] १ नियम। कायदा। जाबता। २ कानून। राजनियम।

आईना–संज्ञा पुं० [फा०] १ आरसी। दर्पण। शीशा।

मुहा०–आईना होना = स्पष्ट होना। आईने में मुँह देखना = अपनी योग्यता को जाँचना।

२ किवाड़ का दिल्ला।

आईनाबंदी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १ भाड़-फानूस आदि की सजावट। २ फर्श में पत्थर या ईंट की जुड़ाई।

आईनासाज–संज्ञा पुं० [फा०] आईना बनानेवाला।

आईनासाजी–संज्ञा स्त्री० [फा०] काँच की चद्दर के टुकड़े पर कलई करने का काम।

आईनी–वि० [फा० आईन] कानूनी। राज-नियम के अनुकूल।

आउ*–संज्ञा स्त्री० [सं० आयु] जीवन। उम्र।

आउज*–संज्ञा पुं० [सं० वाद्य] ताशा।

आउबाउ*†–संज्ञा पुं० [सं० वायु] अंड-बंड बात। असंबद्ध प्रलाप।

आउस–संज्ञा पुं० [सं० आशु, बंग० आउश] धान का एक भेद। भदई। ओसहन।

आकंपन–संज्ञा पुं० [सं०] काँपना।

आक–संज्ञा पुं० [सं० अर्क] मदार। अकौआ। अकवन।

आकड़ा†–संज्ञा पुं० दे० "आक"।

आकबत–संज्ञा स्त्री० [अ०] मरने के पीछे की अवस्था। परलोक।

आकबाक*–संज्ञा पुं० [सं० वाक्य] अक-बक। अडबड बात। उटपटाँग बात।

आकर–संज्ञा पुं० [सं०] १ खान। उत्पत्ति-स्थान। २ खजाना। भाडार। ३ भेद। किस्म। जाति। ४ तलवार चलाने का एक भेद।

आकरकरहा–संज्ञा पुं० [अ०] दे० "अक-रकरा"।

आकरखना*–क्रि० स० दे० "आकर्षना"।

आकरिक–संज्ञा पुं० [सं०] खान खोदने-वाला।

आकरी–संज्ञा स्त्री० [सं० आकर] खान खोदने का काम।

आकर्ण–वि० [सं०] कान तक फैला हुआ।

आकर्ष–संज्ञा पुं० [सं०] १ एक जगह के पदार्थ का बल से दूसरी जगह जाना। खिंचाव। कशिश। २ पासे का खेल।

३. बिसात। चौपड़। ४. इंद्रिय। ५. धनुष चलाने का अभ्यास। ६. कसौटी। ७. चुंबक।

आकर्षक–वि० [सं०] आकर्षण करनेवाला। खींचनेवाला।

आकर्षण–संज्ञा पुं० [सं०][वि० आकर्षित, आकृष्ट] १. किसी वस्तु का दूसरी वस्तु के पास उसकी शक्ति या प्रेरणा से लाया जाना। २. खिंचाव ३. एक प्रयोग जिसके द्वारा दूर देशस्थ पुरुष या पदार्थ पास में आ जाता है। (तंत्र)

आकर्षण शक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] भौतिक पदार्थों की वह शक्ति जिससे वे अन्य पदार्थों को अपनी ओर खींचते हैं।

आकर्षना*–क्रि०स०[सं० आकर्षण] खींचना।

आकर्षित–वि० [सं०] खींचा हुआ।

आकलन–संज्ञा पुं०[सं०][वि० आकलनीय, आकलित] १. ग्रहण। लेना। २. संग्रह। संचय। इकट्ठा करना। ३. गिनती करना। ४. अनुष्ठान। संपादन। ५. अनुसंधान।

आकली–संज्ञा स्त्री० [सं० आकुल] आकुलता। बेचैनी।

आकस्मिक–वि० [सं०] १. जो बिना किसी कारण के हो। २. जो अचानक हो। सहसा होनेवाला।

आकांक्षक–वि० दे० "आकांक्षी"।

आकांक्षा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. इच्छा। अभिलाषा। वांछा। चाह। २. अपेक्षा। ३. अनुसंधान। ४. वाक्यार्थ के ठीक ज्ञान के लिये एक शब्द का दूसरे शब्द पर आश्रित होना। (न्याय)

आकांक्षित–वि० [सं०] १. इच्छित। अभिलषित। वांछित। २. अपेक्षित।

आकांक्षी–वि० [सं० आकांक्षिन्][स्त्री० आकांक्षिणी] इच्छा करनेवाला। इच्छुक।

आकार–संज्ञा पुं० [सं०] १. स्वरूप। आकृति। सूरत। २. डील-डौल। कद। ३. बनावट। संघटन। ४. निशान। चिह्न। ५. चेष्टा। ६. 'आ' वर्ण। ७. बुलावा।

आकारी*–वि०[सं०] [स्त्री०आकारिणी] आह्वान करनेवाला। बुलानेवाला।

आकाश–संज्ञा पुं० [सं०] १. अंतरिक्ष। आसमान। २. वह स्थान जहाँ वायु के अतिरिक्त और कुछ न हो। (पंचभूतों में से एक।) ३. अभ्रक। अबरक।

मुहा०—आकाश छूना या चूमना = बहुत ऊँचा होना। आकाश पाताल एक करना = १. भारी उद्योग करना। २. आंदोलन करना। हलचल करना। आकाश पाताल का अंतर = बड़ा अंतर। बहुत फ़र्क़। आकाश से बात करना = बहुत ऊँचा होना।

आकाशकुसुम–संज्ञा पुं० [सं०] १. आकाश का फूल। खपुष्प। २. अनहोनी बात। असंभव बात।

आकाशगंगा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बहुत से छोटे छोटे तारों का एक विस्तृत समूह जो आकाश में उत्तर-दक्षिण फैला है। आकाशजनेऊ। डहर। २. पुराणानुसार आकाश में की गंगा। मंदाकिनी।

आकाशचारी–वि० [सं० आकाशचारिन्] आकाश में फिरनेवाला। आकाशगामी। संज्ञा पुं० १. सूर्य्यादि ग्रह। नक्षत्र। २. वायु। ३. पक्षी। ४. देवता।

आकाशदीया–संज्ञा पुं० [सं०आकाश + हिं० दीया] वह दीपक जो कार्तिक में हिंदू लोग कंडील में रखकर एक ऊँचे बाँस के सिरे पर बाँधकर जलाते हैं।

आकाशधुरी–संज्ञा स्त्री० [सं० आकाश + धुरी] खगोल का ध्रुव। आकाशध्रुव।

आकाशनीम–संज्ञा स्त्री०[सं०आकाश + हिं० नीम] नीम का बाँदा।

आकाशपुष्प–संज्ञा पुं० [सं०] १. आकाश का फूल। आकाशकुसुम। खपुष्प। २. असंभव वस्तु। अनहोनी बात।

आकाशबेल–संज्ञा स्त्री० दे० "अमरबेल"।

आकाशभाषित–संज्ञा पुं० [सं०] नाटक के अभिनय में वक्ता का ऊपर की ओर देखकर किसी प्रश्न को इस तरह कहना मानो वह उससे किया जा रहा है और फिर उसका उत्तर देना।

आकाशमडल–सज्ञा पु० [स०] खगोल।
आकाशमुखी–सज्ञा पु० [स० आकाश + हिं० मुखी] एक प्रकार के साधु जो आकाश की ओर मुंह करके तप करते हैं।
आकाशलोचन–सज्ञा प० [स०] वह स्थान जहाँ से ग्रहो की स्थिति या गति देखी जाती है। मानमदिर। अवजरवेटरी।
आकाशवाणी–सज्ञा स्त्री० [स०] वह शब्द या वाक्य जो आकाश से देवता लोग बोलें। देववाणी।
आकाशवृत्ति–सज्ञा स्त्री० [स०] अनिश्चित जीविका। ऐसी आमदनी जो बँधी न हो।
आकाशी–सज्ञा स्त्री० [स० आकाश + ई (प्रत्य०)] वह चाँदनी जो धूप आदि से बचने के लिये तानी जाती है।
आकाशीय–वि० [स०] १ आकाश-सबधी। आकाश का। २ आकाश में रहने या होनेवाला। ३ दैवागत। आकस्मिक।
आकिल–वि० [अ०] बुद्धिमान्।
आकिलखानी–[अ० + फा०] एक रग जो कालापन लिए लाल होता है।
आकीर्ण–वि० [स०] व्याप्त। पूर्ण।
आकुचन–सज्ञा पु० [स०] सिकुडना। सिमटना। सकोचन।
आकुचित–वि० [स०] १ सिकुडा हुआ। सिमटा हुआ। २ टेढा। कुटिल।
आकुठन–सज्ञा पु० [स०] [वि० आकुंठित] १ गुठला या कुद होना। २ लज्जा। शर्म।
आकुल–वि० [स०] [सज्ञा आकुलता] १ व्यग्र। घबराया हुआ। उद्विग्न। २ विह्वल। कातर। ३ व्याप्त। सकुल।
आकुलता–सज्ञा स्त्री० [स०] [वि० आकुलित] १ व्याकुलता। घबराहट। २ व्याप्ति।
आकुलित–वि० [स०] १ व्याकुल। घबराया हुआ। २ व्याप्त।
आकृति–सज्ञा स्त्री० [स०] १ बनावट। गढन। ढाँचा। २ मूर्ति। रूप। ३ मुख। चहरा। ४ मुख का भाव। चेष्टा। ५ २२ अक्षरो की एक वर्णवृत्ति।
आकृष्ट–वि० [स०] खींचा हुआ।
आक्रदन–सज्ञा पु० [स०] १ रोना। २ चिल्लाना।
आक्रम*–सज्ञा पु० दे० 'पराक्रम'।
आक्रमण–सज्ञा पु० [स०] १ बलपूर्वक सीमा का उल्लघन करना। हमला। चढाई। २ आघात पहुँचाने के लिये किसी पर झपटना। हमला। ३ घेरना। छेकना। मुहासिरा। ४ आक्षेप। निंदा।
आक्रमित–वि० [स०] [स्त्री० आक्रमिता] जिसपर आक्रमण किया गया हो।
आक्रमिता (नायिका)–सज्ञा स्त्री० [स०] वह प्रौढा नायिका जो मनसा, वाचा, कर्मणा अपने मित्र को वश करे।
आक्रात–वि० [स०] १ जिसपर आक्रमण हो। जिसपर हमला हो। २ घिरा हुआ। आवृत्ति। ३ वशीभूत। पराजित। विवश। ४ व्याप्त। आकीर्ण।
आक्रोश–सज्ञा पु० [स०] कोसना। शाप देना। गाली देना।
आक्षिप्त–वि० [स०] १ फेंका हुआ। गिराया हुआ। २ दूषित। ३ निंदित।
आक्षेप–सज्ञा पु० [स०] १ फेंकना। गिराना। २ दोष लगाना। अपवाद या इल्जाम लगाना। ३ कटूक्ति। ताना। ४ एक वातरोग जिसमें अग मे कँपकँपी होती है। ५ ध्वनि। व्यग्य।
आक्षेपक–वि० [स०] [स्त्री० आक्षेपिका] १ फेंकनेवाला। २ खींचनेवाला। ३ आक्षेप करनेवाला। निंदक।
आखत*†–सज्ञा पु० [स० अक्षत] १ अक्षत। बिना टूटा चावल। २ चदन या केसर में रँगा चावल जो मूर्ति या दूल्हा-दुलहिन के माथे मे लगाया जाता है।
आख्ता–वि० [फा०] जिसके अडकोश चीरकर निकाल लिए गए हों। (घोडा)
आखन*–क्रि० वि० [स० आ + क्षण] प्रतिक्षण। हर घडी।
आखना*–क्रि० स० [स० आख्यान] कहना। क्रि० स० [स० आकाक्षा] चाहना। क्रि० स० [हिं० आँख] देखना। ताकना।

आखर*–संज्ञा पुं० [सं० अक्षर] अक्षर।
आखा–संज्ञा पुं० [सं० आक्षरण] झीने कपड़े से मढ़ी हुई मैदा चालने की चलनी।
वि० [सं० अक्षय] कुल। पूरा। समूचा।
आखा तीज–संज्ञा स्त्री० [सं० अक्षयतृतीया] वैशाख सुदी तीज। (स्त्रियों-द्वारा वट का पूजन और दान)
आखिर–वि० [फा०] अंतिम। पीछे का।
संज्ञा पुं० १. अंत। २. परिणाम। फल।
क्रि० वि० [फ़ा०] अंत में। अंत को।
आखिरकार–क्रि० वि० [फा०] अंत में।
आखिरी–वि० [फ़ा०] अंतिम। पिछला।
आखु–संज्ञा पुं० [सं०] १. मूसा। चूहा। २. देवताल। देवताड़। ३. सूअर।
आखुपाषाण–संज्ञा पुं० [सं०] १. चुंबक पत्थर। २. संखिया।
आखेट–संज्ञा पुं० [सं०] अहेर। शिकार।
आखेटक–संज्ञा पुं० [सं०] शिकार। अहेर।
वि० [सं०] शिकारी। अहेरी।
आखेटी–संज्ञा पुं० [सं० आखेटिन्] [स्त्री० आखेटिनी] शिकारी। अहेरी।
आखोर–संज्ञा पुं० [फा०] १. जानवरों के खाने से बची हुई घास या चारा। २. कूड़ा-करकट। ३. निकम्मी वस्तु।
वि० [फा०] १. निकम्मा। बेकाम। २. सड़ा-गला। रद्दी। ३. मैला-कुचैला।
आख्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नाम। २. कीर्ति। यश। ३. व्याख्या।
आख्यात–वि० [सं०] १. प्रसिद्ध। विख्यात। २. कहा हुआ। ३. राजवंश के लोगों का वृत्तांत।
आख्याति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नामवरी। ख्याति। शुहरत। २. कथन।
आख्यान–संज्ञा पुं० [सं०] १. वर्णन। वृत्तांत। बयान। २. कथा। कहानी। क़िस्सा। ३. उपन्यास के नौ भेदों में से एक। वह कथा जिसे स्वयं कवि ही कहे।
आख्यानक–संज्ञा पुं० [सं०] १. वर्णन। वृत्तांत। बयान। २. कथा। किस्सा। कहानी। ३. पूर्व वृत्तांत। कथानक।
आख्यानिकी–संज्ञा स्त्री० [सं०] दंडक वृत्त का एक भेद।
आख्यायिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कथा। कहानी। क़िस्सा। २. वह कल्पित कथा जिससे कुछ शिक्षा निकले। ३. एक प्रकार का आख्यान जिसमें पात्र भी अपने अपने चरित्र अपने मुँह से कुछ कुछ कहते हैं।
आगंतुक–वि० [सं०] १. जो आवे। आगमनशील। २. जो इधर-उधर से घूमता-फिरता आ जाय।
आग–संज्ञा स्त्री० [सं० अग्नि] १. तेज और प्रकाश का पुंज जो उष्णता की पराकाष्ठा पर पहुँची हुई वस्तुओं में देखा जाता है। अग्नि। बसुंदर। २. जलन। ताप। गरमी। ३. कामाग्नि। काम का वेग। ४. वात्सल्य। प्रेम। ५. डाह। ईर्ष्या।
वि० १. जलता हुआ। बहुत गरम। २. जो गुण में उष्ण हो।
मुहा०—आगबबूला (बगूला) होना या बनना=क्रोध के आवेश में होना। अत्यंत कुपित होना। आग बरसना = बहुत गरमी पड़ना। आग बरसाना=शत्रु पर खूब गोलियाँ चलाना। आग लगना = १. आग से किसी वस्तु का जलना। २. क्रोध उत्पन्न होना। कुढ़न होना। ३.महँगी फैलना। गिरानी होना। आग लगे= बुरा हो। नाश हो। (स्त्री०)आग लगाना= १.आग से किसी वस्तु को जलाना। २.गरमी करना। जलन पैदा करना। ३. उद्वेग बढ़ाना। जोश बढ़ाना। भड़काना। ४. क्रोध उत्पन्न करना। ५. चुगली खाना। ६. बिगाड़ना। नष्ट करना। आग होना = १. बहुत गर्म होना। २. क्रुद्ध होना। रोष में भरना। पानी में आग लगाना = १. अनहोनी बातें कहना। २. असंभव कार्य करना। ३. जहाँ लड़ाई की कोई बात न हो वहाँ भी लड़ाई लगा देना। पेट की आग = भूख।
आगत–वि० [सं०] [स्त्री० आगता] आया हुआ। प्राप्त। उपस्थित।
आगतपतिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जिसका पति परदेश से लौटा हो।

आगत स्वागत–संज्ञा पुं० [सं० आगत + स्वागत] आए हुए व्यक्ति का आदर। सत्कार। आव-भगत।
आगम–संज्ञा पुं० [सं०] १ अवाई। आगमन। आमद। २ भविष्य काल। आनेवाला समय। ३ होनहार।
मुहा०—आगम करना = ठिकाना करना। उपक्रम बाँधना। लाभ का डौल करना। उपाय रचना। आगम जनाना = होनहार की सूचना देना। आगम बाँधना = आनेवाली बात का निश्चय करना।
४ समागम। संगम। ५ आमदनी। आय। ६ व्याकरण में किसी शब्दसाधन में वह वर्ण जो बाहर से लाया जाय। ७ उत्पत्ति। ८ शब्द प्रमाण। ९ वेद। १० शास्त्र। ११ तंत्र-शास्त्र। १२ नीति-शास्त्र। नीति।
वि० [सं०] आनेवाला। आगामी।
आगमजानी–वि० [सं० आगमज्ञानी] आगम-ज्ञानी। होनहार का जाननेवाला।
आगमज्ञानी–वि० [सं०] भविष्य का जाननेवाला। आगमजानी।
आगमन–संज्ञा पुं० [सं०] १ अवाई। आना। आमद। २ प्राप्ति। आय। लाभ।
आगमवाणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] भविष्यवाणी
आगमविद्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] वेदविद्या।
आगमसोची–वि० [सं० आगम + हिं० सोचना] दूरदर्शी। अग्रसोची।
आगमी–संज्ञा पुं० [सं० आगम = भविष्य] आगम विचारनेवाला। ज्योतिषी।
आगर–संज्ञा पुं० [सं० आकर] [स्त्री० आगरी] १ खान। आकर। २ समूह। ढेर। ३ कोष। निधि। खजाना। ४ वह गड्ढा जिसमें नमक जमाया जाता है।
संज्ञा पुं० [सं० आगार] १ घर। गृह। २ छाजन। छप्पर।
वि० [सं० अग्र] १ श्रेष्ठ। उत्तम। बढ़कर। २ चतुर। होशियार। दक्ष। कुशल।
आगरी–संज्ञा पुं० [हिं० आगर] नमक बनानेवाला पुरुष। लोनिया।
आगल–संज्ञा पुं० [सं० अर्गल] अगरी। ब्योंड़ा। बेंवड़ा।
क्रि० वि० [हिं० अगला] सामने। आगे।
वि० अगला।
आगला*–क्रि० वि० दे० "अगला"।
आगवन*–संज्ञा पुं० दे० "आगमन"।
आगा–संज्ञा पुं० [सं० अग्र] १ किसी चीज के आगे का भाग। अगाड़ी। २ शरीर का अगला भाग। ३ छाती। वक्षस्थल। ४ मुख। मुँह। ५ ललाट। माथा। ६ लिंगेंद्रिय। ७ अँगरखे या कुरते आदि की काट में आगे का टुकड़ा। ८ सेना या फौज का अगला भाग। हरावल। ९ घर के सामने का मैदान। १० पेश-खीम। आगड़ा। ११ आगे आनेवाला समय। भविष्य।
संज्ञा पुं० [तु० आगा] १ मालिक। सरदार। २ काबुली। अफगान।
आगान*–संज्ञा पुं० [सं० आ + गान] बात। प्रसंग। आख्यान। वृत्तान्त।
आगा-पीछा–संज्ञा पुं० [हिं० आगा + पीछा] १ हिचक। सोच-विचार। दुविधा। २ परिणाम। नतीजा। ३ शरीर का अगला और पिछला भाग।
आगामि, आगामी–वि० [सं० आगामिन्] [स्त्री० आगामिनी] भावी। होनहार। आनेवाला।
आगार–संज्ञा पुं० [सं०] १ घर। मकान। २ स्थान। जगह। ३ खजाना।
आगाह–वि० [फा०] जानकार। वाकिफ।
संज्ञा पुं० [हिं० आगा + आह (प्रत्य०)] आगम। होनहार।
आगाही–संज्ञा स्त्री० [फा०] जानकारी।
आगि*†–संज्ञा स्त्री० दे० 'आग'।
आगिल*–वि० दे० "अगला"।
आगी*†–संज्ञा स्त्री० दे० "आग"।
आगु†–क्रि० वि० दे० "आगे"।
आगे–क्रि० वि० [सं० अग्र] १ और दूर पर। और बढ़कर। 'पीछे' का उलटा। २ समक्ष। सम्मुख। सामने। ३ जीवन-

काल में। जीते जी। ४. इसके पीछे। इसके बाद। ५. भविष्य में। आगे को। ६. अनंतर। बाद। ७. पूर्व। पहले। ८. अतिरिक्त। अधिक। ९. गोद में। लालन पालन में। जैसे, उसके आगे एक लड़का है।
मुहा०—आगे आना = १. सामने आना। २. सामने पड़ना। मिलना। ३. सामना करना। भिड़ना। ४. घटित होना। घटना। आगे करना = १. उपस्थित करना। प्रस्तुत करना। २. अगुआ बनाना। मुखिया बनाना। आगे को = आगे। भविष्य में। आगे चलकर या आगे जाकर = भविष्य में। इसके बाद। आगे निकलना = बढ़ जाना। आगे पीछे = १. एक के पीछे एक। एक के बाद दूसरा। क्रम से। २. आस-पास। किसी के आगे पीछे होना = किसी के वश में किसी प्राणी का होना। आगे से = १. सामने से। २. आइंदा से। भविष्य में। ३. पहले से। पूर्व से। बहुत दिनों से। आगे से लेना = अभ्यर्थना करना। आगे होना = १. आगे बढ़ना। अग्रसर होना २. बढ़ जाना। ३. सामने आना। ४. मुक़ाबिला करना। भिड़ना। ५. मुखिया बनना।

आगौन*—संज्ञा पुं० दे० "आगमन"।

आग्नीध्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. यज्ञ के सोलह ऋत्विजों में से एक। २. वह यजमान जो साग्निक हो या अग्निहोत्र करता हो। ३. यज्ञमंडप।

आग्नेय—वि० [सं०] [स्त्री० आग्नेयी] १. अग्नि-संबंधी। अग्नि का। २. जिनका देवता अग्नि हो। ३. अग्नि से उत्पन्न। ४. जिससे आग निकले। जलानेवाला।
संज्ञा पुं० १ सुवर्ण। सोना। २. रक्त। रुधिर। ३. कृत्तिका नक्षत्र। ४. अग्नि के पुत्र कार्त्तिकेय। ५. दीपन ओषध। ६. ज्वालामुखी पर्वत। ७. प्रतिपदा। ८. दक्षिण का एक देश जिसकी प्रधान नगरी माहिष्मती थी। ९. वह पदार्थ जिससे आग भड़क उठे। जैसे बारूद। १०. ब्राह्मण। ११. अग्निकोण।
यौ०—आग्नेयस्नान = भस्म पोतना।

आग्नेयास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल के अस्त्रों का एक भेद जिनसे आग निकलती थी या जिनके चलाने पर आग बरसती थी।

आग्नेयी—वि० स्त्री० [सं०] १. अग्नि को दीपन करनेवाली ओषध। २. पूर्व और दक्षिण के बीच की दिशा।

आग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] १. अनुरोध। हठ। जिद। २. तत्परता। परायणता। ३. बल। जोर। आवेश।

आग्रहायण—संज्ञा पुं० [सं०] १. अगहन। मार्गशीर्ष मास। २. मृगशिरा नक्षत्र।

आग्रही—वि० [सं० आग्रहिन्] हठी। जिद्दी।

आघ*—संज्ञा पुं० [सं० अर्घ] मूल्य। क़ीमत।

आघात—संज्ञा पुं० [सं०] १. धक्का। ठोकर। २. मार। प्रहार। चोट। आक्रमण। ३. वध-स्थान। बूचड़खाना।

आघूर्ण—वि० [सं०] १. घूमता हुआ। फिरता हुआ। २. हिलता हुआ।

आघूर्णित—वि० [सं०] इधर उधर फिरता हुआ। चकराया हुआ।

आघ्राण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आघ्रात, आघ्रेय]। १. सूँघना। बास लेना। २. अघाना। तृप्ति।

आचमन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आचमनीय, आचमित] १. जल पीना। २. पूजा या धर्म्म-संबंधी कर्म्म के आरंभ में दाहिने हाथ में थोड़ा-सा जल लेकर मंत्रपूर्वक पीना।

आचमनी—संज्ञा स्त्री० [सं० आचमनीय] एक छोटा चम्मच जिससे आचमन करते हैं।

आचरज*—संज्ञा पुं० दे० "अचरज"।

आचरण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आचरणीय, आचरित] १. अनुष्ठान। २. व्यवहार। बर्त्ताव। चाल-चलन। ३. आचार-शुद्धि। सफाई। ४. रथ। ५. चिह्न। लक्षण।

आचरणीय—वि० [सं०] व्यवहार करने योग्य। करने योग्य।

आचरन*—संज्ञा पुं० दे० "आचरण"।

आचरना*—क्रि० अ० [सं० आचरण] आचरण करना। व्यवहार करना।

आचरित–वि० [स०] किया हुआ।

आचार–सज्ञा पु० [स०] १ व्यवहार। चल्न। रहन-सहन। २ चरित्र। चाल-ढाल। ३ शील। ४ शुद्धि। सफाई।

आचारज*–सज्ञा पु० दे० "आचार्य्य"।

आचारजी*–सज्ञा स्त्री० [स० आचार्य्य] पुरोहिताई। आचार्य्य होने का भाव।

आचारवान्–वि० [स०] [स्त्री० आचारवती] पवित्रता से रहनवाला। शुद्ध आचार का।

आचार-विचार–सज्ञा पु० [स०] आचार और विचार। रहने की सफाई। शौच।

आचारी–वि० [स० आचारिन्] [स्त्री० आचारिणी] आचारवान्। चरित्रवान्। सज्ञा पु० रामानुजसप्रदाय का वैष्णव।

आचार्य्य–सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० आचार्य्याणी] १ उपनयन के समय गायत्री मन्त्र का उपदेश करनवाला। गुरु। २ वेद पढानेवाला। ३ यज्ञ के समय कर्मोपदेशक। ४ पुरोहित। ५ अध्यापक। ६ ब्रह्मसूत्र के प्रधान भाष्यकार शकर रामानुज, मध्व और वल्लभाचार्य्य। ७ वद का भाष्यकार।

विशेष—स्वय आचार्य्य का काम करनेवाली स्त्री आचार्य्या कहलाती है। आचार्य्य की पत्नी को आचार्य्याणी कहते है।

आच्छन्न–वि० [स०] १ ढका हुआ। आवृत। २ छिपा हुआ।

आच्छादक–सज्ञा पु० [स०] ढाँकनेवाला।

आच्छादन–सज्ञा पु० [स०] [वि० आच्छादित, आच्छिन्न] १ ढकना। २ वस्त्र। कपडा। ३ छाजन। छवाई।

आच्छादित–वि० [स०] १ ढका हुआ। आवृत। २ छिपा हुआ। तिरोहित।

आछत*†–क्रि० वि० [क्रि० अ० आछना का कृदत रूप] १ होते हुए। रहते हुए। विद्यमानता में। मौजूदगी मे। सामने। २ अतिरिक्त। सिवाय। छोडकर।

आछना*–क्रि० अ० [स० अस् = होना] १ होना। २ रहना। विद्यमान होना।

आछा*–वि० दे० "अच्छा"।

आछे*–क्रि० वि० [हि० अच्छा] अच्छी तरह।

आछेप*–सज्ञा पु० दे० "आक्षेप"।

आज–क्रि० वि० [स० अद्य] १ वर्तमान दिन में। जो दिन बीत रहा है, उसमें। २ इन दिनों। वर्तमान समय में। ३ इस वक़्त। अब।

आजकल–क्रि० वि० [हि० आज + कल] इन दिनों। इस समय। वर्तमान दिनो में। मुहा०–आजकल करना = टाल मटोल करना। हीला हवाला करना। आजकल लगना = अब तक लगना। मरण-काल निकट आना।

आजन्म–क्रि० वि० [स०] जीवन भर। जन्म भर। ज़िदगी भर।

आज़माइश–सज्ञा स्त्री० [फा०] परीक्षा।

आज़माना–क्रि० स० [फा० आज़माइश] परीक्षा करना। परखना।

आजा–सज्ञा पु० [स० आर्य] [स्त्री० आजी] पितामह। दादा। बाप का बाप।

आजागुरु–सज्ञा पु० [हि० आजा + गुरु] गुरु का गुरु।

आज़ाद–वि० [फा०] [सज्ञा आज़ादी, आज़ादगी] १ जो बद्ध न हो। छूटा हुआ। मुक्त। बरी। २ बेफिक्र। बेपरवाह। ३ स्वतन्त्र। स्वाधीन। ४ निडर। निर्भय। ५ स्पष्टवक्ता। हाज़िर-जवाब। ६ उद्धत। ७ सूफीसप्रदाय के फकीर जो स्वतन्त्र विचार के होते है।

आज़ादी–सज्ञा स्त्री० [फा०] १ स्वतन्त्रता। स्वाधीनता। २ रिहाई। छुटकारा।

आजानु–वि० [स०] जाँघ या घुटने तक लबा।

आजानुबाहु–वि० [स०] जिसके बाहु जानु तक लब हों। जिसके हाथ घुटने तक पहुँचें। (वीरो का लक्षण)

आज़ार–सज्ञा पु० [फा०] १ रोग। बीमारी। २ दुख। तकलीफ।

आजिज़–वि० [अ०] १ दीन। विनीत। २ हैरान। तग।

आजिज़ी–सज्ञा स्त्री० [अ०] दीनता।

आजीवन–क्रि० वि० [स०] जीवन-पर्यंत। ज़िदगी भर।

आजीविका–सज्ञा स्त्री० [स०] वृत्ति। रोज़ी।

आज्ञा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बड़ों का छोटों को किसी काम के लिये कहना। आदेश। हुक्म। २. अनुमति।

आज्ञाकारी–वि०[सं० आज्ञाकारिन्] [स्त्री० आज्ञाकारिणी] १.आज्ञा माननेवाला। हुक्म माननेवाला। २. सेवक। दास।

आज्ञापक–वि० [सं०] [स्त्री० आज्ञापिका] १. आज्ञा देनेवाला। २. प्रभु। स्वामी।

आज्ञापत्र–संज्ञा पुं० [सं०] वह लेख जिसके अनुसार किसी आज्ञा का प्रचार किया जाय। हुक्मनामा।

आज्ञापन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आज्ञापित] सूचित करना। जताना।

आज्ञापालक–वि० [सं०] [स्त्री० आज्ञापालिका] १. आज्ञा का पालन करनेवाला। आज्ञाकारी। २. दास। टहलुआ।

आज्ञापित–वि० [सं०] सूचित किया हुआ। जताया हुआ।

आज्ञापालन–संज्ञा पुं० [सं०] आज्ञा के अनुसार काम करना। फ़रमाँबरदारी।

आज्ञाभंग–संज्ञा पुं० [सं०] आज्ञा न मानना।

आटना–क्रि० स० [सं० अट्ट] तोपना। दबाना।

आटा–संज्ञा पुं० [सं० अटन = घूमना] १. किसी अन्न का चूर्ण। पिसान। चून।
मुहा०–आटे दाल का भाव मालूम होना = ससार के व्यवहार का ज्ञान होना। आटे दाल की फ़िक्र = जीविका की चिंता।
२. किसी वस्तु का चूर्ण। बुकनी।

आटोप–संज्ञा पुं० [सं०] १. आच्छादन। फैलाव। २. आडंबर। विभव।

आठ–वि० [सं० अष्ट] चार का दूना।
मुहा०–आठ आठ आँसू रोना = बहुत अधिक विलाप करना। आठों गाँठ कुम्मैत = १. सर्वगुण-संपन्न। २. चतुर। ३. छँटा हुआ। धूर्त्त। आठों पहर = दिन-रात।

आडंबर–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आडंबरी] १. गंभीर शब्द। २. तुरही का शब्द। ३. हाथी की चिग्घाड़। ४. ऊपरी बनावट। तड़क-भड़क। टीम-टाम। ढोंग। ५. आच्छादन। ६. तंबू। ७. बड़ा ढोल जो युद्ध में बजाया जाता है। पटह।

आडम्बरी–वि० [सं०] आडंबर करनेवाला। ऊपरी बनावट रखनेवाला। ढोंगी।

आड़–संज्ञा स्त्री० [सं० अल = रोक] १. ओट। परदा। ओझल। २. रक्षा। शरण। पनाह। सहारा। आश्रय। ३. रोक। अड़ान। ४. थूनी। टेक।
संज्ञा पुं० [सं० अल = डंक] बिच्छू या भिड़ आदि का डंक।
संज्ञा स्त्री० [सं० आलि = रेखा] १. लंबी टिकली जिसे स्त्रियाँ माथे पर लगाती हैं। २. स्त्रियों के मस्तक पर का आड़ा तिलक। ३. माथे पर पहनने का स्त्रियों का एक गहना। टीका।

आड़न–संज्ञा स्त्री० [हिं० आड़ना] ढाल।

आड़ना–क्रि० स० [सं० अल् = वारण करना] १. रोकना। छेंकना। २. बाँधना। ३. मना करना। न करने देना। ४. गिरवी या रेहन रखना। गहने रखना।

आड़ा–संज्ञा पुं० [सं० अलि] १. एक धारीदार कपड़ा। २. लट्ठा। शहतीर।
वि० १. आँखों के समानांतर दाहिनी ओर से बाईं ओर को या बाईं ओर से दाहिनी ओर को गया हुआ। २. वार से पार तक रखा हुआ।
मुहा०–आड़े आना = १. रुकावट डालना। बाधक होना। २. कठिन समय में सहायक होना। आड़े हाथों लेना = किसी को व्यंग्योक्ति द्वारा लज्जित करना।

आड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० आड़ा] १. तबला मृदंग आदि बजाने का एक ढंग। २. चमार की छुट्टी। ३. ओर। तरफ। दे० "आरी"। ४. सहायक। अपने पक्ष का।

आड़ू–संज्ञा पुं० [सं० आलु] एक प्रकार का फल जिसका स्वाद खटमीठा होता है।

आढ़–संज्ञा पुं० [सं० आढ़क] चार प्रस्थ अर्थात् चार सेर की एक तौल।
*संज्ञा स्त्री० [हिं० आड़] १. ओट। पनाह। *२. अंतर। बीच। ३. नागा।

वि० [सं० आढ्य = सपन्न] कुशल। दक्ष।

आढ़क–संज्ञा पुं० [सं०] १ चार सेर की एक तौल। २ इतना अन्न नापने का बाट या पात्र बरतन। ३ अरहर।

आढ़त–संज्ञा स्त्री० [हिं० आड़ना = जमानत देना] १ किसी अन्य व्यापारी के माल की बिक्री करा देने का व्यवसाय। २ वह स्थान जहाँ आढ़त का माल रहता हो। ३ वह धन जो इस प्रकार बिक्री कराने के बदले में मिलता है।

आढ़तिया–संज्ञा पुं० दे० "अढ़तिया"।

आढ्य–वि० [सं०] १ सपन्न। पूर्ण। २. युक्त। विशिष्ट।

आणक–संज्ञा पुं० [सं०] एक रुपए का सोलहवाँ भाग। आना।

आतंक–संज्ञा पुं० [सं०] १ रोब। दब-दबा। प्रताप। २ भय। शंका। ३ रोग।

आततायी–संज्ञा पुं० [सं० आततायिन्] [स्त्री० आततायिनी] १ आग लगानेवाला। २ विष देनेवाला। ३ वधोद्यत शस्त्रधारी। ४ जमीन, धन या स्त्री हरनेवाला।

आतप–संज्ञा पुं० [सं०] १ धूप। घाम। २ गर्मी। उष्णता। ३ सूर्य्य का प्रकाश।

आतपी–संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य्य। वि० धूप का। धूप संबंधी।

आतम–वि० दे० "आत्म"।

आतमा–संज्ञा स्त्री० दे० "आत्मा"।

आतश–संज्ञा स्त्री० [फा०] आग। अग्नि।

आतशक–संज्ञा पुं० [फा०] [वि० आतशकी] फिरंग रोग। उपदंश। गर्मी।

आतशखाना–संज्ञा पुं० [फा०] १ वह स्थान जहाँ कमरा गर्म करने के लिये आग रखते हैं। २ वह स्थान जहाँ पारसियों की अग्नि स्थापित हो।

आतशदान–संज्ञा पुं० [फा०] अँगीठी।

आतशपरस्त–संज्ञा पुं० [फा०] अग्नि की पूजा करनेवाला। अग्निपूजक। पारसी।

आतशबाजी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १ बारूद के बने हुए खिलौनों के जलने का दृश्य। २ बारूद के बने हुए खिलौने जो जलाए से गई आकार और रंग-बिरंग की चिनगारियाँ छोड़ते हैं।

आतशी–वि० [फा०] १ अग्नि-संबंधी। २ अग्नि-उत्पादक। ३ जो आग में तपाने से न फूटे, न तड़के।

आतापी–संज्ञा पुं० [सं०] १ एक असुर जिसे अगस्त्य मुनि ने अपने पेट में पचा डाला था। २ चील पक्षी।

आतिथ्य–संज्ञा पुं० [सं०] अतिथि का सत्कार। पहुनाई। मेहमानदारी।

आतिश–संज्ञा स्त्री० दे० "आतश"।

आतिशय्य–संज्ञा पुं० [सं०] अतिशय होने का भाव। आधिक्य। बहुतायत। ज्यादती।

आतुर–वि० [सं०] [संज्ञा आतुरता] १ व्याकुल। व्यग्र। घबराया हुआ। उतावला। २ अधीर। उद्विग्न। बेचैन। ३ उत्सुक। ४ दुःखी। ५ रोगी। क्रि० वि० शीघ्र। जल्दी।

आतुरता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ घबराहट। बेचैनी। व्याकुलता। २ जल्दी। शीघ्रता।

आतुरताई*–संज्ञा स्त्री० दे० "आतुरता"।

आतुरसंन्यास–संज्ञा पुं० [सं०] वह संन्यास जो मरने के कुछ पहले धारण कराया जाता है।

आतुरी*–संज्ञा स्त्री० [सं० आतुर+ई (प्रत्यय)] १ घबराहट। व्याकुलता। २ शीघ्रता।

आत्म–वि० [सं० आत्मन्] अपना।

आत्मक–वि० [सं०] [स्त्री० आत्मिका] मय। युक्त। (यौगिक में)

आत्मगौरव–संज्ञा पुं० [सं०] अपनी बड़ाई या प्रतिष्ठा का ध्यान।

आत्मघात–संज्ञा पुं० [सं०] अपने हाथों अपने को मार डालने का काम। खुदकुशी।

आत्मघातक, आत्मघाती–वि० [सं०] अपने हाथों अपने को मार डालनेवाला।

आत्मज–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० आत्मजा] १ पुत्र। लड़का। २ कामदेव।

आत्मज्ञ–संज्ञा पुं० [सं०] जो अपने को जान गया हो। जिसे निज स्वरूप का

ज्ञान हो।

आत्मज्ञान–संज्ञा पुं० [सं०] १. जीवात्मा और परमात्मा के विषय में जानकारी। २. ब्रह्म का साक्षात्कार।

आत्मज्ञानी–संज्ञा पुं० [सं०] आत्मा और परमात्मा के संबंध में जानकारी रखनेवाला।

आत्मतुष्टि–संज्ञा स्त्री० [सं०] आत्मज्ञान से उत्पन्न संतोष या आनंद।

आत्मत्याग–संज्ञा पुं० [सं०] दूसरों के हित के लिये अपना स्वार्थ छोड़ना।

आत्मनिवेदन–संज्ञा पुं० [सं०] अपने आपको या अपना सर्वस्व अपने इष्टदेव पर चढ़ा देना। आत्मसमर्पण। (नवधा भक्ति में)

आत्मनीय–संज्ञा. पुं० [सं०] १. पुत्र। २. साला। ३. विदूषक।

आत्मप्रशंसा–संज्ञा स्त्री० [सं०] अपने मुँह से अपनी बड़ाई।

आत्मबोध–संज्ञा पुं० दे० "आत्मज्ञान"।

आत्मभू–वि० [सं०] १. अपने शरीर से उत्पन्न। २. आप ही आप उत्पन्न।

संज्ञा पुं० १ पुत्र। २ कामदेव। ३. ब्रह्मा। ४. विष्णु। ५ शिव।

आत्मरक्षा–संज्ञा स्त्री [सं०] अपनी रक्षा या बचाव।

आत्मरत–वि० [सं०] [संज्ञा आत्मरति] जिसे आत्मज्ञान हुआ हो। ब्रह्मज्ञानप्राप्त।

आत्मरति–संज्ञा स्त्री० [सं०] ब्रह्मज्ञान।

आत्मविक्रय–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आत्मविक्रयी] अपने को आप बेच डालना।

आत्मविक्रेता–संज्ञा पुं० [सं०] वह जो अपने आपको बेचकर दाम बना हो।

आत्मविद्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह विद्या जिससे आत्मा और परमात्मा का ज्ञान हो। ब्रह्मविद्या। अध्यात्म-विद्या। २. मिस्मरिज्म।

आत्मविस्मृति–संज्ञा स्त्री० [सं०] अपने को भूल जाना। अपना ध्यान न रखना।

आत्मश्लाघा–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० आत्मश्लाघी] अपनी तारीफ करना।

आत्मश्लाघी–वि० [सं०] अपनी प्रशंसा आप करनेवाला।

आत्मसंयम–संज्ञा पुं० [सं०] अपने मन को रोकना। इच्छाओं को वश में रखना।

आत्महत्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] अपने आपको मार डालना। खुदकुशी।

आत्मा–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० आत्मिक, आत्मीय] १. मन या अंतःकरण से परे उसके व्यापारों का ज्ञान करनेवाली सत्ता। द्रष्टा। रूह। जीव। जीवात्मा। चैतन्य। २. मन। चित्त। ३. हृदय। दिल।

मुहा०–आत्मा ठंडी होना = १. तुष्टि होना। तृप्ति होना। संतोष होना। प्रसन्नता होना। २. पेट भरना। ३. भूख मिटना। ४. देह। शरीर। ५. सूर्य्य। ६. अग्नि। ७. वायु। ८. स्वभाव। धर्म्म।

आत्मानंद–संज्ञा पुं० [सं०] १. आत्मा का ज्ञान। २. आत्मा में लीन होने का सुख।

आत्माभिमान–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आत्माभिमानी] अपनी इज्जत या प्रतिष्ठा का खयाल। मान अपमान का ध्यान।

आत्माराम–संज्ञा पुं० [सं०] १. आत्मज्ञान से तृप्त योगी। २. जीव। ३. ब्रह्म। ४. तोता। सुग्गा (प्यार का शब्द)

आत्मावलंबी–संज्ञा पुं० [सं०] जो सब काम अपने बल पर करे।

आत्मिक–वि० [सं०] [स्त्री० आत्मिका] १. आत्मा-संबंधी। २ अपना। ३. मानसिक।

आत्मीय–वि० [सं०] [स्त्री० आत्मीया] निज का। अपना।

संज्ञा पुं० अपना संबंधी। रिश्तेदार।

आत्मीयता–संज्ञा स्त्री० [सं०] अपनायत। स्नेह-संबंध। मैत्री।

आत्मोत्सर्ग–संज्ञा पुं० [सं०] दूसरे की भलाई के लिये अपने हिताहित का ध्यान छोड़ना।

आत्मोद्धार–संज्ञा पुं० [सं०] १. अपनी आत्मा को संसार के दुःख से छुड़ाना या ब्रह्म में मिलाना। मोक्ष। २. अपना

उद्धार या छुटकारा।

आत्यंतिक–वि० [सं०] [स्त्री० आत्यंतिकी] जो बहुतायत से हो।

आत्रेय–वि० [सं० अत्रि] १ अत्रिसंबंधी। २ अत्रि गोत्रवाला।
संज्ञा पुं० [सं० अत्रि] १ अत्रि के पुत्र दत्त, दुर्वासा, चंद्रमा। २ आत्रेयी नदी के तट का देश जो दीनाजपुर जिले के अंतर्गत है।

आत्रेयी–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक तपस्विनी जो वेदांत में बड़ी निष्णात थी।

आथना*–क्रि० अ० [सं० अस्ति] होना।

आथर्वण–संज्ञा पुं० [सं०] १ अथर्व वेद का जाननेवाला ब्राह्मण। २ अथर्व-वेद-विहित कर्म।

आथि*–संज्ञा स्त्री० [सं० अस्ति] १ स्थिरता। २ पूंजी। जमा।

आदत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ स्वभाव। प्रकृति। २ अभ्यास। टेव। बान।

आदम–संज्ञा पुं० [अ०] इबरानी और अरबी मतों के अनुसार मनुष्यों का आदि प्रजापति।

आदमजाद–संज्ञा पुं० [अ० आदम+फा० जाद] १ आदम की संतान। २ मनुष्य।

आदमियत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ मनुष्यत्व। इंसानियत। २ सभ्यता।

आदमी–संज्ञा पुं० [अ०] १ आदम की संतान। मनुष्य। मानव जाति।
मुहा०—आदमी बनना = सभ्यता सीखना। अच्छा व्यवहार सीखना।
२ नौकर। सेवक।

आदर–संज्ञा पुं० [सं०] सम्मान। सत्कार। प्रतिष्ठा। इज्जत।

आदरणीय–वि० [सं०] आदरयोग्य। आदर करने के लायक।

आदरना*–क्रि० स० [सं० आदर] आदर करना। सम्मान करना। मानना।

आदर भाव–संज्ञा पुं० [सं० आदर+भाव] सत्कार। सम्मान। कदर। प्रतिष्ठा।

आदर्श–संज्ञा पुं० [सं०] १ दर्पण। शीशा। आईना। २ टीका। व्याख्या। ३ वह जिसके रूप और गुण आदि का अनुकरण किया जाय। नमूना।

आदान प्रदान–संज्ञा पुं० [सं०] लेना-देना।

आदाब–संज्ञा पुं० [अ०] १ नियम। कायदे। २ लिहाज। आन। ३ नमस्कार। सलाम।

आदि–वि० [सं०] १ प्रथम। पहला। शुरू का। आरंभ का। २ त्रिशूल। नितांत।
संज्ञा पुं० [सं०] १ आरंभ। बुनियाद। मूल कारण। २ परमेश्वर।
अव्य० वगैरह। आदिक। (इस शब्द से यह सूचित होता है कि इसी प्रकार और भी समझो।)

आदिक–अव्य० [सं०] आदि। वगैरह।

आदि कारण–संज्ञा पुं० [सं०] पहला कारण जिससे सृष्टि के सब व्यापार उत्पन्न हुए। मूल कारण। जैसे ईश्वर या प्रकृति।

आदित*–संज्ञा पुं० दे० 'आदित्य'।

आदित्य–संज्ञा पुं० [सं०] १ अदिति के पुत्र। २ देवता। ३ सूर्य। ४ इन्द्र। ५ वामन। ६ वसु। ७ विश्वेदेवा। ८ बारह मात्राओं के छंदों की संज्ञा। ९ मदार का पौधा।

आदित्यवार–संज्ञा पुं० [सं०] एतवार।

आदिपुरुष–संज्ञा पुं० [सं०] परमेश्वर।

आदिम–वि० [सं०] पहले का। पहला।

आदिल–वि० [फा०] न्यायी। न्यायवान्।

आदिविपुला–संज्ञा स्त्री० [सं०] आर्या छंद का एक भेद।

आदी–वि० [अ०] अभ्यस्त।
संज्ञा स्त्री० [सं० आर्द्रक] अदरक।

आदृत–वि० [सं०] जिसका आदर किया गया हो। सम्मानित।

आदेय–वि० [सं०] लेने के योग्य।

आदेश–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आदेशक, आदिष्ट] १ आज्ञा। २ उपदेश। ३ प्रणाम। नमस्कार। (साधु) ४ ज्योतिष शास्त्र में ग्रहों का फल। ५ व्याकरण में एक अक्षर के स्थान पर दूसरे अक्षर का आना। अक्षर-परिवर्त्तन।

आदेस*-संज्ञा पुं० दे० "आदेश"।

आद्यंत-क्रि० वि० [सं०] आदि से अंत तक। शुरू से आखीर तक।

आद्य-वि० [सं० आदि, आद्य] पहला।

आद्या-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुर्गा। २. दस महाविद्याओं में से एक।

आद्योपांत-क्रि० वि० [सं०] शुरू से आखीर तक।

आद्रा-संज्ञा स्त्री० दे० "आर्द्रा"।

आध-वि० [हिं० आधा] दो बराबर भागों में से एक। आधा। निस्फ़। (यौगिक में)
यौ०—एक आध = थोड़े से। चंद।

आधा-वि० [सं० अर्द्ध] [स्त्री० आधी] दो बराबर हिस्सों में से एक। निस्फ़।
मुहा०—आधो आध = दो बराबर भागों में। आधा तीतर आधा बटेर = कुछ एक तरह का और कुछ दूसरी तरह का। बेजोड़। बेमेल। अंडबंड। आधा होना = दुबला होना। आधे आध = दो बराबर हिस्सों में बँटा हुआ। आधी बात = ज़रा सी भी अपमानसूचक बात।

आधान-संज्ञा पुं० [सं०] १. स्थापन। रखना। २. गिरवी या बंधक रखना।

आधार-संज्ञा पुं० [सं०] १. आश्रय। सहारा। अवलंब। २. व्याकरण में अधिकरण कारक। ३. थाला। आलवाल। ४. पात्र। ५. नींव। बुनियाद। मूल। ६. योगशास्त्र में एक चक्र। मूलाधार। ७. आश्रय देनेवाला। पालन करनेवाला।
यौ०—प्राणाधार = जिसके आधार पर प्राण हों। परम प्रिय।

आधारी-वि० [सं० आधारिन्] [स्त्री० आधारिणी] १. सहारा रखनेवाला। सहारे पर रहनेवाला। २. साधुओं की टेव की या अड्डे के आकार की एक लकड़ी।

आधासीसी-संज्ञा स्त्री० [सं० अर्द्ध + शीर्ष] अधकपाली। आधे सिर की पीड़ा।

आधि-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मानसिक व्यथा। चिंता। २. रेहन। बंधक।

आधिक*-वि० [हिं० आधा + एक] आधा। क्रि० वि० आधे के लगभग। थोड़ा।

आधिकारिक-संज्ञा पुं० [सं०] दृश्य काव्य में मूल-कथावस्तु।

आधिक्य-संज्ञा पुं० [सं०] बहुतायत। अधिकता। ज़्यादती।

आधिदैविक-वि० [सं०] देवता, भूत आदि द्वारा होनेवाला। देवताकृत। (दुःख)

आधिपत्य-संज्ञा पुं० [सं०] प्रभुत्व। स्वामित्व।

आधिभौतिक-वि० [सं०] व्याघ्र, सर्पादि जीवों कृत। जीवों या शरीरधारियों-द्वारा प्राप्त। (दुःख)

आधीन*-वि० दे० "अधीन"।

आधुनिक-वि० [सं०] वर्तमान समय का। हाल का। आज-कल का।

आधेय-संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी सहारे पर टिकी हुई चीज़। २. ठहराने योग्य। रखने योग्य। ३. गिरों रखने योग्य।

आध्यात्मिक-वि० [सं०] १. आत्मासंबंधी। २. ब्रह्म और जीव-संबंधी।

आनंद-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आनंदित, आनंदी] हर्ष। प्रसन्नता। खुशी। सुख।
यौ०—आनंदमंगल।

आनंद-बधाई-संज्ञा स्त्री० [सं० आनंद + हिं० बधाई] १. मंगल-उत्सव। २. मंगल-अवसर।

आनंदवन-संज्ञा पुं० [सं०] काशी।

आनंदमत्ता-संज्ञा स्त्री० दे० "आनंदसम्मोहिता"।

आनंदसम्मोहिता-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह प्रौढ़ा नायिका जो रति के आनंद में अत्यंत निमग्न होने के कारण मुग्ध हो रही हो।

आनंदित-वि० [सं०] हर्षित। प्रसन्न।

आनंदी-वि० [सं०] १. हर्षित। प्रसन्न। २. खुशमिज़ाज। प्रसन्न रहनेवाला।

आन-संज्ञा स्त्री० [सं० आणि = मर्य्यादा, सीमा] १. मर्य्यादा। २. शपथ। सौगंद। क़सम। ३. विजय-घोषणा। दुहाई। ४. ढंग। तर्ज़। ५. क्षण। लहमा।
मुहा०—आन की आन में = शीघ्र ही। चटपट। फ़ौरन।
६. अकड़। ऐंठ। ठसक। ७. अदब।

सिंगार। ८ प्रतिमा। रूप। देह।
*वि० [सं० अन्य] दूसरा। और।
आनक–संज्ञा पुं० [सं०] १ डंका। भेरी। दुंदुभी। २. गरजता हुआ बादल।
आनकदुंदुभी–संज्ञा पुं० [सं०] १ बड़ा नगाड़ा। २ कृष्ण के पिता वसुदेव।
आनद्ध–वि० [सं०] १ बँधा हुआ। २ मढ़ा हुआ।
संज्ञा पुं० वह बाजा जो चमड़े से मढ़ा हो। जैसे—ढोल, मृदंग आदि।
आनन–संज्ञा पुं० [सं०] १ मुख। मुँह। २. चेहरा। मुखड़ा।
आनन फानन–क्रि० वि० [अ०] अति शीघ्र। फौरन। झटपट।
आनना†*–क्रि० स० [सं० आनयन] लाना।
आन बान–संज्ञा स्त्री० [हिं० आन + बान] १ सजधज। ठाट-बाट। तड़क-भड़क। २ ठसक। अदा।
आनयन–संज्ञा पुं० [सं०] १ लाना। २ उपनयन संस्कार।
आनरेरी–वि० [अं०] अवैतनिक। कुछ मर्यादी। वेतन न लेकर केवल प्रतिष्ठा के हेतु काम करनेवाला। जैसे,—आनरेरी मजिस्ट्रेट। आनरेरी सेक्रेटरी।
आनर्त्त–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आनर्त्तक] १ द्वारका। २ आनर्त्त देश का निवासी। ३ नृत्यशाला। नाचघर। ४ युद्ध।
आना–संज्ञा पुं० [सं० आणक] १ एक रुपए का सोलहवाँ हिस्सा। २ किसी वस्तु का सोलहवाँ अंश।
क्रि० अ० [सं० आगमन] १ आगमन करना। वक्ता के स्थान की ओर चलना या उस पर प्राप्त होना। २ जाकर लौटना। ३ काल प्रारंभ होना। ४ फलना। फूलना। फल-फूल लगना। ५ किसी भाव का उत्पन्न होना। जैसे—आनंद आना।
मुहा०—आए दिन = प्रतिदिन। रोज-रोज। आता जाता = आने जानेवाला। पथिक। बटोही। आ धमकना = एकबारगी आ पहुँचना। आ पड़ना = १ सहसा गिरना। एकबारगी गिरना। २ आक्रमण करना। (अनिष्ट घटना का) घटित होना। आया गया = अतिथि। अभ्यागत। आ रहना = गिर पड़ना। आ लेना = १ पास पहुँच जाना। पकड़ लेना। २ आक्रमण करना। टूट पड़ना। (किसी की) आ बनना = काम उठाने का अच्छा अवसर हाथ आना। किसी को कुछ आना = किसी को कुछ ज्ञान होना। (किसी वस्तु) में आना = १ ऊपर से ठीक या जमकर बैठना। २ भीतर अटना। समाना।
आनाकानी–संज्ञा स्त्री० [सं० अनाकर्णन] १ सुनी अनसुनी करने का कार्य। न ध्यान देने का कार्य। २ टाल-मटूल। हीला-हवाला। ३ कानाफूसी।
आनाह–संज्ञा पुं० [सं०] मलमूत्र रुकने से पेट फूलना।
आनि*–संज्ञा स्त्री० दे० "आन"।
आनुपूर्वी–वि० [सं० आनुपूर्वीय] क्रमानुसार। एक के बाद दूसरा।
आनुमानिक–वि० [सं०] अनुमान-संबंधी।
आनुवंशिक–वि० [सं०] जो किसी वंश में बराबर होता आया हो। वंशानुक्रमिक।
आनुश्राविक–वि० [सं०] जिसको परंपरा से सुनते चले आए हों।
आनुषंगिक–वि० [सं०] जिसका साधन किसी दूसरे प्रधान कार्य को करते समय बहुत थोड़े प्रयास में हो जाय। गौण। अप्रधान। प्रासंगिक।
आन्वीक्षिकी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ आत्मविद्या। २ तर्कविद्या। न्याय।
आप–सर्व० [सं० आत्मन्] १ स्वयं। खुद। (तीनों पुरुषों में)
यौ०—आपकाज = अपना काम। जैसे—आपकाज महाकाज। आपकाजी = स्वार्थी। मतलबी। आपबीती = घटना जो अपने ऊपर बीत चुकी हो। आपरूप = स्वयं। आप।
मुहा०—आप आपको पड़ना = अपने अपने काम में फँसना। अपनी अपनी रक्षा या लाभ का ध्यान रहना। आप आपको = अलग

अलग। न्यारे न्यारे। आपको भूलना = १. किसी मनोवेग के कारण बेसुध होना। २. मदांध होना। घमंड में चूर होना। आप से = स्वयं। खुद। आपसे आप = स्वयं। खुद ब-खुद। आप ही = स्वयं। आपसे आप। आप ही आप = १. बिना किसी और की प्रेरणा के। आपसे आप। २. मन ही मन में। किसी को संबोधन करके नहीं। स्वगत। २. "तुम" और "वे" के स्थान में आद-रार्थक प्रयोग। ३. ईश्वर। भगवान्। संज्ञा पु० [सं० आपः = जल] जल। पानी।

आपगा—संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी।

आपत्काल—संज्ञा पुं० [सं०] १. विपत्ति। दुर्दिन। २. दुष्काल। कुसमय।

आपत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुःख। क्लेश। विघ्न। २. विपत्ति। संकट। आफ़त। ३. कष्ट का समय। ४. जीविका-कष्ट। ५. दोषारोपण। ६. उज्र। एतराज।

आपद्—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विपत्ति। आपत्ति। २. दुःख। कष्ट। विघ्न।

आपदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुःख। क्लेश। २. विपत्ति। आफ़त। ३. कष्ट का समय।

आपद्धर्म—संज्ञा पु० [सं०] १. वह धर्म जिसका विधान केवल आपत्काल के लिये हो। २. किसी वर्ण के लिये वह व्यवसाय या काम जिसकी आज्ञा और कोई जीवनो-पाय न होने की अवस्था में ही हो। जैसे, ब्राह्मण के लिये वाणिज्य। (स्मृति)

आपन, आपना*†—सर्व० दे० "अपना"।

आपन्न—वि० [सं०] १. आपद्ग्रस्त। दुःखी। २. प्राप्त। जैसे, संकटापन्न।

आपया*—संज्ञा स्त्री० [सं० आपगा] नदी।

आपरूप—वि० [हिं० आप + सं० रूप] अपने रूप से युक्त। मूर्तिमान्। साक्षात्। (महा-पुरुषों के लिये) सर्व० साक्षात् आप। आप महापुरुष। हजरत। (व्यंग्य)

आपस—संज्ञा स्त्री० [हिं० आप + से] १. संबंध। नाता। भाई-चारा। जैसे—आपस-वालों में, आपस के लोग। २. एक दूसरे का साथ। एक दूसरे का संबंध। (केवल संबंध और अधिकरण कारक में)

मुहा०—आपस का = १. इष्ट-मित्र या भाई बंधु के बीच का। २. पारस्परिक। एक दूसरे का। परस्पर का। आपस में = परस्पर। एक दूसरे के साथ।

यौ०—आपसदारी = परस्पर का व्यवहार। भाईचारा।

आपस्तंब—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आपस्तंबीय] १. एक ऋषि जो कृष्णयजुर्वेद की एक शाखा के प्रवर्तक थे। २. आपस्तंब शाखा के कल्प सूत्रकार जिनके बनाए तीन सूत्र-ग्रंथ हैं। ३. एक स्मृतिकार।

आपा—संज्ञा पुं० [हिं० आप] १. अपनी सत्ता। अपना अस्तित्व। २. अपनी असलियत। ३. अहंकार। घमंड। गर्व। ४. होश-हवास। सुध-बुध।

मुहा०—आपा खोना = १. अहंकार त्यागना। नम्र होना। २. मर्य्यादा नष्ट करना। अपना गौरव छोड़ना। आपा तजना = १. अपनी सत्ता को भूलना। आत्मभाव का त्याग। २. अहंकार छोड़ना। निरभिमान होना। ३. प्राण छोड़ना। मरना। आपे में आना = होश हवास में होना। चेत में होना। आपे में न रहना = १. आपे से बाहर होना। बेक़ाबू होना। अपने ऊपर वश न रखना। २. घब-राना। बदहवास होना। ३. अत्यंत क्रोध में होना। आपे से बाहर होना = १. क्रोध और हर्ष आदि के आवेश में सुध-बुध खोना। क्षुब्ध होना। २. घबराना। उद्विग्न होना।

संज्ञा स्त्री० [हिं० आप] बड़ी बहिन। (मुसल०)

आपात—संज्ञा पुं० [सं०] १. गिराव। पतन। २. किसी घटना का अचानक हो जाना। ३. आरंभ। ४. अंत।

आपाततः—क्रि० वि० [सं०] १. अकस्मात्। अचानक। २. अंत को। आखिरकार।

आपातलिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक छंद।

आपाधापी—संज्ञा स्त्री० [हिं० आप + धाप] १. अपनी अपनी चिंता। अपनी अपनी धुन। २. खींच-तान। लाग-डाँट।

आपापंथी–वि० [हिं० आप + सं० पथिन्] मनमाने मार्ग पर चलनेवाला। कुमार्गी। कुपंथी।
आपी*–संज्ञा पुं० [सं० आप्य] पूर्वाषाढ़ नक्षत्र।
आपीड़–संज्ञा पुं० [सं०] १. सिर पर पहनने की चीज; जैसे—पगड़ी, सिरपेच, इत्यादि। २. पिंगल में एक विषम वृत्त।
आपु*†–सर्व० दे० "आप"।
आपुन*†–सर्व० दे० "अपना", "आप"।
आपुस*†–संज्ञा पुं० दे० "आपस"।
आपूरना*–क्रि० अ० [सं० आपूरण] भरना।
आपेक्षिक–वि० [सं०] १. सापेक्ष। अपेक्षा रखनेवाला। २. दूसरी वस्तु के अवलंबन पर रहनेवाला। निर्भर रहनेवाला।
आप्त–वि० [सं०] १. प्राप्त। लब्ध। (यौगिक में) २. कुशल। दक्ष। ३. विषय को ठीक तौर से जाननेवाला। साक्षात्तधर्मा। ४. प्रामाणिक। पूर्ण तत्त्वज्ञ का कहा हुआ।
संज्ञा पुं० [सं०] १. ऋषि। २. शब्द-प्रमाण। ३. भाग का लब्ध।
आप्तकाम–वि० [सं०] जिसकी सब कामनाएँ पूरी हो गई हों। पूर्णकाम।
आप्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] प्राप्ति। लाभ।
आप्यायन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आप्यायित] १. वृद्धि। वर्धन। २. तृप्ति। तर्पण। ३. एक अवस्था से दूसरी अवस्था को प्राप्त होना। ४. मृत धातु को जगाना या जीवित करना।
आप्लावन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आप्लावित] डुबाना। बोरना।
आफत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. आपत्ति। विपत्ति। २. कष्ट। दुःख। ३. मुसीबत का दिन।
मुहा०–आफत उठाना = १. दुःख सहना। विपत्ति भोगना। २. ऊधम मचाना। हलचल मचाना। आफत का परकाला = १. किसी काम को बड़ी तेजी से करनेवाला। पटु। कुशल। २. घोर उद्योगी। आकाश-पाताल एक करनेवाला। ३. हलचल मचानेवाला। उपद्रवी। आफत खड़ी करना = विपद् उपस्थित करना। आफत ढाना = १. ऊधम, उपद्रव या हलचल मचाना। २. तकलीफ देना। दुःख पहुँचाना। अनहोनी बात कहना। आफत मचाना = १. हलचल करना। ऊधम मचाना। दंगा करना। २. गुल-गपाड़ा करना। ३. जल्दी मचाना। उतावली करना। आफत लाना = १. विपद् उपस्थित करना। २. बखेड़ा खड़ा करना। झंझट पैदा करना।
आफताब–संज्ञा पुं० [फा०] [वि० आफ़ताबी] सूर्य्य।
आफ़ताबा–संज्ञा पुं० [फा०] हाथ-मुंह धुलाने का एक प्रकार का गडुआ।
आफताबी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. पान के आकार का पंखा जिसपर सूर्य्य का चिह्न बना रहता है और जो राजाओं के साथ या बारात आदि में झंडे के साथ चलता है। २. एक प्रकार की आतशबाजी। ३. दरवाजे या खिड़की के सामने का छोटा सायबान या ओसारी।
वि० [फा०] १. गोल। २. सूर्य्य-संबंधी।
यौ०–आफताबी गुलकंद = वह गुलकंद जो धूप में तैयार किया जाय।
आफू–संज्ञा स्त्री० [हिं० अफीम, मि० मरा० आफू] अफीम।
आब–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. चमक। तड़क-भड़क। आभा। कांति। पानी। २. शोभा। रौनक। छवि।
संज्ञा पुं० पानी। जल।
आबकारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. वह स्थान जहाँ शराब चुआई या बेची जाती हो। हौली। शराबखाना। कलवरिया। भट्ठी। २ मादक वस्तुओं से संबंध रखनेवाला सरकारी मुहकमा।
आबखोरा–संज्ञा पुं० [फा०] १. पानी पीने का बरतन। गिलास। २. प्याला। कटोरा।
आबजोश–संज्ञा पुं० [फा०] गरम पानी के साथ उबाला हुआ मुनक्का।
आबताब–संज्ञा स्त्री० [फा०] तड़क-भड़क। चमक-दमक। द्युति।
आबदस्त–संज्ञा पुं० [फा०] मल त्याग के

पीछे गुदेंद्रिय को धोना। सींचना। पानी छूना।

आबदाना–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. अन्न-पानी। दाना-पानी। अन्न-जल। २. जीविका। ३. रहने का संयोग।

मुहा०—आब दाना उठना=जीविका न रहना। संयोग टलना।

आबदार–वि० [फ़ा०] चमकीला। कांतिमान्। द्युतिमान्।

संज्ञा पुं० वह आदमी जो पुरानी तोपों में सुंबा और पानी का पुचारा देता है।

आबदारी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] चमक। कांति।

आबद्ध–वि० [सं०] १. बँधा हुआ। २. क़ैद।

आबनूस–संज्ञा पुं० [फ़ा०] [वि० आबनूसी] एक जंगली पेड़ जिसके हीर की लकड़ी बहुत काली होती है।

मुहा०—आबनूस का कुंदा=अत्यंत काले रंग का मनुष्य।

आबनूसी–वि० [फा०] १. आबनूस का सा काला। गहरा काला। २. आबनूस का बना हुआ।

आबपाशी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] सिंचाई।

आबरवाँ–संज्ञा स्त्री० [फा०] एक प्रकार की बहुत महीन मलमल।

आबरू–संज्ञा स्त्री० [फा०] इज़्ज़त। प्रतिष्ठा। बड़प्पन। मान।

आबला–संज्ञा पु० [फ़ा०] छाला। फफोला। फुटका।

आबहवा–संज्ञा स्त्री० [फा०] सरदी-गरमी, स्वास्थ्य आदि के विचार से किसी देश की प्राकृतिक स्थिति। जलवायु।

आबाद–वि० [फा०] १. बसा हुआ। २. प्रसन्न। कुशलपूर्वक। ३. उपजाऊ। जोतने बोने योग्य (ज़मीन)।

आबादकार–संज्ञा पुं० [फा०] वे काश्तकार जो जंगल काटकर आबाद हुए हों।

आबादानी–संज्ञा स्त्री० दे० "अबादानी"।

आबादी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. बस्ती। २. जनसंख्या। मर्दुमशुमारी। ३. वह भूमि जिसपर खेती हो।

आबी–वि० [फा०] १. पानी-संबंधी। पानी का। २. पानी में रहनेवाला। ३. रंग में हलका। फीका। ४. पानी के रंग का। हलका नीला या आसमानी। ५. जलतट-निवासी।

संज्ञा पुं० समुद्र-लवण। साँभर नमक।

संज्ञा स्त्री० वह भूमि जिसमें किसी प्रकार की आबपाशी होती हो। (ख़ाकी के विरुद्ध।)

आब्दिक–वि० [सं०] वार्षिक। सालाना।

आभरण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आभरित] १. गहना। आभूषण। जेवर। अलंकार। इनकी गणना १२ है—(१) नूपुर। (२) किंकिणी। (३) चूड़ी। (४) अँगूठी। (५) कंकण। (६) बिजायठ। (७) हार। (८) कंठश्री। (९) बेसर। (१०) बिरिया। (११) टीका। (१२) सीसफूल। २. पोषण। परवरिश। पालन।

आभरन*–संज्ञा पुं० दे० "आभरण"।

आभा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चमक। दमक। कांति। दीप्ति। २. झलक। प्रतिबिंब। छाया।

आभार–संज्ञा पुं० [सं०] १. बोझ। २. गृहस्थी का बोझ। गृह-प्रबंध की देख-भाल की जिम्मेदारी। ३. एक वर्णवृत्त। ४. एहसान। उपकार।

आभारी–वि० [सं० आभारिन्] उपकार माननेवाला। उपकृत।

आभास–संज्ञा पु० [सं०] १. प्रतिबिंब। छाया। झलक। २. पता। संकेत। ३. मिथ्या ज्ञान। जैसे—रस्सी में सर्प का। ४. वह जो ठीक या असल न हो। वह जिसमें असल की कुछ झलक भर हो। जैसे, रसाभास, हेत्वाभास।

आभीर–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० आभीरी] १. अहीर। ग्वाल। गोप। २. एक देश। ३. ११ मात्राओं का एक छंद। ४. एक राग।

आभीरी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक संकर रागिनी। अहीरी। २ प्राकृत का एक भेद।
आभूषण-संज्ञा पु० [सं०] [वि० आभूषित] गहना। जेवर। आभरण। अलंकार।
आभूषन*-संज्ञा पु० दे० "आभूषण"।
आभोग-संज्ञा पु० [सं०] १ रूप में कोई कसर न रहना। २ किसी वस्तु को लक्षित करनेवाली सब बातों की विद्यमानता। पूर्ण लक्षण। ३ किसी पद्य के बीच में कवि के नाम का उल्लेख।
आभ्यंतर-वि० [सं०] भीतरी।
आभ्यंतरिक-वि० [सं०] भीतरी।
आभ्युदयिक-वि० [सं०] अभ्युदय, मंगल या कल्याण-संबंधी।
संज्ञा पु० [सं०] नांदीमुख श्राद्ध।
आमंत्रण-संज्ञा पु० [सं०] [वि० आमंत्रित] बुलाना। आह्वान। निमंत्रण। न्योता।
आमंत्रित-वि० [सं०] १ बुलाया हुआ। २ निमंत्रित। न्योता।
आम-संज्ञा पु० [सं० आम्र] १ एक बड़ा पेड़ जिसका फल हिंदुस्तान का प्रधान फल है। रसाल। २ इस पेड़ का फल।
यौ०—अमचूर। अमहर।
वि० [सं०] कच्चा। अपक्व। असिद्ध।
संज्ञा पु० १ खाए हुए अन्न का कच्चा न पचा हुआ मल जो सफेद और लसीला होता है। आँव। २ वह रोग जिसमें आँव गिरती है।
वि० [अ०] १ साधारण। मामूली। २ जन-साधारण। जनता।
यौ०—आम खास = महलों के भीतर का वह भाग जहाँ राजा या बादशाह बैठते हैं। दरबार आम = वह राजसभा जिसमें सब लोग जा सकें।
३ प्रसिद्ध। विख्यात। (वस्तु या बात)
आमड़ा-संज्ञा पु० [सं० आम्रात] एक बड़ा पेड़ जिसके फल आम की तरह खट्टे और बड़े बेर के बराबर होते हैं।
आमद-संज्ञा स्त्री० [फा०] १ अवाई। आगमन। आना।
यौ०—आमदरफ्त = आना जाना। आवागमन। २ आय। आमदनी।
आमदनी-संज्ञा स्त्री० [फा०] १ आय। प्राप्ति। आनेवाला धन। २ व्यापार की वस्तु जो और देश से अपने देश में आवे।
रफ्तनी का उलटा। आयात।
आमनाय-संज्ञा पु० दे० "आम्नाय"।
आमना सामना-संज्ञा पु० [हिं० सामना] मुकाबिला। भेंट।
आमने सामने-क्रि० वि० [हिं० सामने] एक दूसरे के समक्ष। एक दूसरे के मुकाबिले।
आमय-संज्ञा पु० [सं०] रोग। बीमारी।
आमरक्तातिसार-संज्ञा पु० [सं०] आँव और लहू के साथ दस्त होने का रोग।
आमरख*-संज्ञा पु० दे० 'आमर्ष'।
आमरखना*-क्रि० अ० [सं० आमर्ष] क्रुद्ध होना। दुःखपूर्वक क्रोध करना।
आमरण-क्रि० वि० [सं०] मरणकाल-पर्यंत। जिंदगी भर।
आमरस-संज्ञा पु० दे० "अमरस"।
आमर्दन-संज्ञा पु० [सं०] [वि० आमर्दित] जोर से मलना, पीसना या रगड़ना।
आमर्ष-संज्ञा पु० [सं०] १ क्रोध। गुस्सा। २ असहनशीलता। (रस में एक संचारी भाव)
आमलक-संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री०, अल्प० आमलकी] आमला। आँवला। धात्री-फल।
आमलकी-संज्ञा स्त्री [सं०] छोटी जाति का आँवला। आँवली।
आमला†-संज्ञा पु० दे० "आँवला"।
आमवात-संज्ञा पु० [सं०] एक रोग जिसमें आँव गिरती है और शरीर सूजकर पीला पड़ जाता है।
आमशूल-संज्ञा पु० [सं०] आँव के कारण पेट में मरोड़ होने का रोग।
आमातिसार-संज्ञा पु० [सं०] आँव के कारण अधिक दस्तों का होना।

आमात्य–संज्ञा पुं० दे० "अमात्य"।

आमादगी–संज्ञा स्त्री० [फा०] तैयारी। मुस्तैदी। तत्परता।

आमादा–वि० [फा०] उद्यत। तत्पर। उतारू। तैयार। सन्नद्ध।

आमाल–संज्ञा पुं० [अ०] कर्म। करनी।

आमालनामा–संज्ञा पुं० [अ०] वह रजिस्टर जिसमें नौकरों के चाल-चलन और योग्यता आदि का विवरण रहता है।

आमाशय–संज्ञा पुं० [सं०] पेट के भीतर की वह थैली जिसमें भोजन किए हुए पदार्थ इकट्ठे होते और पचते हैं।

आमाहल्दी–संज्ञा स्त्री० [सं० आम्रहरिद्रा] एक पौधा जिसकी जड़ रंग में हल्दी की तरह और गंध में कचूर की तरह होती है।

आमिख–संज्ञा पुं० दे० "आमिष"।

आमिल–संज्ञा पुं० [अ०] १. काम करनेवाला। २. कर्त्तव्य-परायण। ३. अमला। कर्मचारी। ४. हाकिम। अधिकारी। ५. ओझा। सयाना। ६. पहुँचा हुआ फकीर। सिद्ध।

वि० [सं० अम्ल] खट्टा अम्ल।

आमिष–संज्ञा पुं० [सं०] १. मांस। गोश्त। २. भोग्य वस्तु। ३. लोभ। लालच।

आमिषप्रिय–वि० [सं०] जिसे मांस प्यारा हो।

आमिषाशी–वि०[सं० आमिषाशिन्] [स्त्री० आमिषाशिनी] मांसभक्षक। मांस खानेवाला।

आमी–संज्ञा स्त्री० [हिं० आम] १. छोटा कच्चा आम। अँबिया। २. एक पहाड़ी पेड़।

संज्ञा स्त्री० [सं० आम = कच्चा] जौ और गेहूँ की भूनी हुई हरी बाल।

आमुख–संज्ञा पुं० [सं०] नाटक की प्रस्तावना।

आमेजना*–क्रि० सं० [फा० आमेज] मिलाना। सानना।

आमोद–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आमोदित, आमोदी] १. आनंद। हर्ष। खुशी। प्रसन्नता। २. दिलबहलाव। तफ़रीह।

आमोद-प्रमोद–संज्ञा पुं० [सं०] भोग-विलास। हँसी-खुशी।

आमोदित–वि० [सं०] १. प्रसन्न। खुश। २. दिल लगा हुआ। जी बहला हुआ।

आमोदी–वि० [सं०] प्रसन्न रहनेवाला। खुश रहनेवाला।

आम्नाय–संज्ञा पुं० [सं०] १. अभ्यास। २. परंपरा।

यौ० अक्षराम्नाय = वर्णमाला। कुलाम्नाय = कुलपरंपरा। कुल की रीति।

३. वेद आदि का पाठ और अभ्यास। ४. वेद।

आम्र–संज्ञा पुं० [सं०] आम का पेड़ या फल।

आम्रकूट–संज्ञा पुं० [सं०] एक पर्वत जिसे अमरकंटक कहते हैं।

आयँतो पायँतो†–संज्ञा स्त्री० [सं० अंगस्थ + फा० पायताना] सिरहाना। पायताना।

आय–संज्ञा स्त्री० [सं०] आमदनी। आमद। लाभ। प्राप्ति। धनागम।

यौ०–आयव्यय = आमदनी और खर्च।

आयत–वि० [सं०] विस्तृत। लंबा-चौड़ा। दीर्घ। विशाल।

संज्ञा स्त्री० [अ०] इंजील या कुरान का वाक्य।

आयतन–संज्ञा पुं० [सं०] १. मकान। घर। मंदिर। २. ठहरने की जगह। ३. देवताओं की वंदना की जगह।

आयत्त–वि० [सं०] अधीन।

आयत्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] अधीनता।

आयद–वि० [अ०] १. आरोपित। लगाया हुआ। २. घटित। घटता हुआ।

आयस–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आयसी] १. लोहा। २. लोहे का कवच।

आयसी–वि० [सं० आयसीय] लोहे का।

संज्ञा पुं० [सं०] कवच। जिरहबक्तर।

आयसु*–संज्ञा स्त्री० [सं० आदेश] आज्ञा। हुक्म।

आया–क्रि० अ० [हिं० आना] आना का भूतकालिक रूप।

संज्ञा स्त्री० [पुर्त०] अँगरेजों में बच्चों को दूध पिलाने और उनकी रक्षा करनेवाली स्त्री। धाय। धात्री।
अव्य० [फा०] क्या। कि। (ब्रज०'कैधौं' के समान) जैसे, आया तुम जाओगे या नहीं।
आयात—संज्ञा पु० [सं०] देश में बाहर से आया माल।
आयाम—संज्ञा पु० [सं०] १ लंबाई। विस्तार। २ नियमित करने की क्रिया। नियमन। जैसे, प्राणायाम।
आयाम—संज्ञा पु० [सं०] परिश्रम। मेहनत।
आयु—संज्ञा स्त्री० [सं०] वय। उम्र। जिंदगी। जीवन-काल।
मुहा०—आयु घटाना=आयु कम होना।
आयुध—संज्ञा पु० [सं०] हथियार। शस्त्र।
आयुर्बल—संज्ञा पु० [सं०] आयुष्य। उम्र।
आयुर्वेद—संज्ञा पु० [सं०] [वि० आयुर्वेदीय] आयु-संबंधी शास्त्र। चिकित्सा-शास्त्र। वैद्य-विद्या।
आयुष्मान्—वि० [सं०] [स्त्री० आयुष्मती] दीर्घजीवी। चिरंजीवी।
आयुष्य—संज्ञा पु० [सं०] आयु। उम्र।
आयोगव—संज्ञा पु० [सं०] वैश्य स्त्री और शूद्र पुरुष से उत्पन्न एक संकर जाति। बढ़ई। (स्मृति)
आयोजन—संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० आयोजना, वि० आयोजित] १ किसी कार्य में लगाना। नियुक्ति। २ प्रबंध। इंतजाम। तैयारी। ३. उद्योग। ४ सामग्री। सामान।
आरंभ—संज्ञा पु० [सं०] १ किसी कार्य्य की प्रथमावस्था का संपादन। अनुष्ठान। उत्थान। शुरू। २ किसी वस्तु का आदि। शुरू का हिस्सा। ३ उत्पत्ति। आदि।
आरंभना†—क्रि० अ० [सं० आरंभण] शुरू होना।
क्रि० स० आरंभ करना।
आर—संज्ञा पु० [सं०] १. एक प्रकार का बिना साफ किया निकृष्ट लोहा। २ पीतल। ३ किनारा। ४ कोना। जैसे, द्वादश कोण। ५ पहिए का आरा। ६. हरताल।
संज्ञा स्त्री० [अल=डंक] १. लोहे की पतली कील जो साँटे या पैने में लगी रहती है। अनी। पैनी। २ नर मुर्गे के पंजे के ऊपर का काँटा। ३ बिच्छू, भिड़ या मधु-मक्खी आदि का डंक।
संज्ञा स्त्री० [सं० आरा] चमड़ा छेदने का सूआ या टेकुआ। सुतारी।
†संज्ञा पु० [हि० अड़] जिद। हठ।
संज्ञा स्त्री० [अ०] १ तिरस्कार। घृणा। २ अदावत। बैर। ३ शर्म। लज्जा।
आरक्त—वि० [सं०] १ ललाई लिए हुए। कुछ लाल। २ लाल।
आरग्वध—संज्ञा पु० [सं०] अमिलतास।
आरज*—वि० दे० "आर्य्य"।
आरजा—संज्ञा पु० [अ०] रोग। बीमारी।
आरजू—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ इच्छा। वांछा। २ अनुनय। विनय। विनती।
आरण्य—वि० [सं०] जंगली। वन का।
आरण्यक—वि० [सं०] [स्त्री० आरण्यकी] वन का। जंगली।
संज्ञा पु० [सं०] वेदों की शाखा का वह भाग जिसमें वानप्रस्थों के कृत्यों का विवरण और उनके लिये उपयोगी उपदेश हैं।
आरत*—वि० दे० "आर्त्त"।
आरति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विरक्ति। २. दे० "आर्त्ति"।
आरती—संज्ञा स्त्री० [सं० आरात्रिक] १ किसी मूर्त्ति के ऊपर दीपक को घुमाना। नीराजन। (षोडशोपचार पूजन में) २ वह पात्र जिसमें कपूर या घी की बत्ती रखकर आरती की जाती है। ३ वह स्तोत्र जो आरती के समय पढ़ा जाता है।
आरन*—संज्ञा पु० [सं० अरण्य] जंगल। वन।
आर पार—संज्ञा पु० [सं० आर=किनारा+पार=दूसरा किनारा] यह किनारा और वह किनारा। यह छोर और वह छोर।
क्रि० वि० [सं०] एक किनारे से दूसरे किनारे तक। एक तल से दूसरे तल तक।

जैसे, आर-पार जाना, आर-पार छेद होना।

आरबल, आरबला–संज्ञा पुं० दे० "आयुर्बल"।

आरब्ध–वि० [सं०] आरंभ किया हुआ।

आरभटी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. क्रोधादिक उग्र भावों की चेष्टा। २ नाटक में एक वृत्ति का नाम जिसमें यमक का प्रयोग अधिक होता है और जिसका व्यवहार इंद्रजाल, संग्राम, क्रोध, आघात, प्रतिघात, रौद्र, भयानक और बीभत्स रस आदि में होता है।

आरव–संज्ञा पुं० [सं०] १. शब्द। आवाज़। २. आहट।

आरषी*–वि० स्त्री० [सं० आर्ष] आर्ष। ऋषियों की।

आरस*–संज्ञा पुं० दे० "आलस्य"। संज्ञा स्त्री० दे० "आरसी"।

आरसी–संज्ञा स्त्री० [सं० आदर्श] १. शीशा। आईना। दर्पण। २. शीशा जड़ा कटोरीदार छल्ला जिसे स्त्रियाँ दाहिने हाथ के अँगूठे में पहनती हैं।

आरा–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अल्पा० आरी] १. लोहे की दाँतीदार पटरी जिससे रेतकर लकड़ी चीरी जाती है। २. चमड़ा सीने का टेकुआ या सूजा। सुतारी। संज्ञा पुं० [सं० आर] लकड़ी की चौड़ी पटरी जो पहिए की गड़ारी और पुट्ठी के बीच जड़ी रहती है।

आराज़ी–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. भूमि। जमीन। २. खेत।

आराति–संज्ञा पुं० [सं०] शत्रु। वैरी।

आराधक–वि० [सं०] [स्त्री० आराधिका] उपासक। पूजा करनेवाला।

आराधन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आराधक, आराधित, आराधनीय, आराध्य] १. सेवा। पूजा। उपासना। २. तोषण। प्रसन्न करना।

आराधना–संज्ञा स्त्री० [सं०] पूजा। उपासना। *क्रि० स० [सं० आराधन] १. उपासना करना। पूजना। २. संतुष्ट करना। प्रसन्न करना।

आराम–संज्ञा पुं० [सं०] बाग। उपवन संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. चैन। सुख। २. चंगापन। सेहत। स्वास्थ्य। ३. विश्राम। थकावट मिटाना। दम लेना। मुहा०–आराम करना = सोना। आराम में होना = सोना। आराम लेना = विश्राम करना। आराम से = फुरसत में। धीरे धीरे। वि० [फ़ा०] चंगा। तंदुरुस्त। स्वस्थ।

आराम-कुरसी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० + अ०] एक प्रकार की लंबी कुरसी।

आराम-तलब–वि० [फ़ा०] १. सुख चाहनेवाला। सुकुमार। २. सुस्त। आलसी।

आरास्ता–वि० [फ़ा०] सजा हुआ।

आरि*–संज्ञा स्त्री० [हिं० अड़] जिद। हठ।

आरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० आरा का अल्पा०] १. लकड़ी चीरने का बढ़ई का एक औज़ार। छोटा आरा। २. लोहे की एक कील जो बैल हाँकने के पैने की नोक में लगी रहती है। ३. जूता सीने का सूजा। सुतारी। *संज्ञा स्त्री० [सं० आर = किनारा] १. ओर। तरफ़। २. कोर। अवँठ।

आरूढ़–वि० [सं०] १. चढ़ा हुआ। सवार। २. दृढ़। स्थिर। किसी बात पर जमा हुआ। ३. सन्नद्ध। तत्पर। उतारू।

आरूढ़यौवना–संज्ञा स्त्री० [सं०] मध्या नायिका के चार भेदों में से एक।

आरो*–संज्ञा पुं० दे० "आरव"।

आरोगना*–क्रि० स० [सं० आ + रोगना (रुज् = हिंसा)] भोजन करना। खाना।

आरोग्य–वि० [सं०] रोग-रहित। स्वस्थ।

आरोग्यता–संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वास्थ्य।

आरोधना*–क्रि० स० [सं० आ + रुधन] रोकना। छेकना। आड़ना।

आरोप–संज्ञा पुं० [सं०] १. स्थापित करना। लगाना। मढ़ना। जैसे दोषारोप। २. एक पेड़ को एक जगह से उखाड़कर दूसरी जगह लगाना। रोपना। बैठाना। ३. झूठी कल्पना। ४. एक पदार्थ में दूसरे पदार्थ के धर्म की कल्पना। ५. (साहित्य में)

एक वस्तु में दूसरी वस्तु के धर्म की कल्पना।

आरोपण—संज्ञा पु० [सं०] [वि० आरोपित, आरोप्य] १ लगाना। स्थापित करना। मढ़ना। २ पौधे को एक जगह से उखाड़कर दूसरी जगह लगाना। रोपना। बैठाना। ३ किसी वस्तु में स्थित गुण को दूसरी वस्तु में मानना। ४ मिथ्या ज्ञान।

आरोपना*—क्रि० स० [सं० आरोपण] १ लगाना। २ स्थापित करना।

आरोपित—वि० [सं०] १ लगाया हुआ। स्थापित किया हुआ। २ रोपा हुआ।

आरोह—संज्ञा पु० [सं०] [वि० आरोही] १ ऊपर की ओर गमन। चढ़ाव। २ आक्रमण। चढ़ाई। ३ घोड़े, हाथी आदि पर चढ़ना। सवारी। ४ वेदांत में क्रमानुसार जीवात्मा की ऊर्ध्व गति या क्रमशः उत्तमोत्तम योनियों की प्राप्ति। ५ कारण से कार्य्य का प्रादुर्भाव या पदार्थों की एक अवस्था से दूसरी अवस्था की प्राप्ति। जैसे—बीज से अंकुर। ६ क्षुद्र और अल्प चेतनावाले जीवों से क्रमानुसार उन्नत प्राणियों की उत्पत्ति। आविर्भाव। विकास। (आधुनिक) ७ नितंब। ८ संगीत में स्वरों का चढ़ाव या नीचे स्वर के बाद क्रमशः ऊँचा स्वर निकालना।

आरोहण—संज्ञा पु० [सं०] [वि० आरोहित] चढ़ना। सवार होना।

आरोही—वि० [सं० आरोहिन्] [स्त्री० आरोहिणी] चढ़नेवाला। ऊपर जानेवाला।
संज्ञा पु० १ संगीत में वह स्वर साधन जो षड्ज से लेकर निषाद तक उत्तरोत्तर चढ़ता जाय। २ सवार।

आर्जव—संज्ञा पु० [सं०] १ सीधापन। ऋजुता। २ सरलता। सुगमता। ३ व्यवहार की सरलता।

आर्त्त—वि० [सं०] १ पीड़ित। चोट खाया हुआ। २ दुखी। कातर। ३ अस्वस्थ।

आर्त्तता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पीड़ा। दर्द। २ दुःख। क्लेश।

आर्त्तनाद—संज्ञा पु० [सं०] दुःख-सूचक शब्द। पीड़ा से निकली हुई ध्वनि।

आर्त्तव—वि० [सं०] [स्त्री० आर्त्तवी] ऋतु में उत्पन्न। मौसिमी। सामयिक।

आर्त्तस्वर—संज्ञा पु० [सं०] दुःख-सूचक शब्द।

आर्थिक—वि० [सं०] धन-संबंधी। द्रव्य-संबंधी। रुपए-पैसे का। माली।

आर्थी—संज्ञा स्त्री० दे० "कैतवापह्नुति"।

आर्द्र—वि० [सं०] [संज्ञा आर्द्रता] १ गीला। ओदा। तर। २ सना। लथपथ।

आर्द्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सत्ताइस नक्षत्रों में छठा नक्षत्र। २ वह समय जब सूर्य्य आर्द्रा नक्षत्र का होता है। आषाढ़ के आरंभ का काल। ३ ग्यारह अक्षरों की एक वर्ण-वृत्ति। ४ अदरक।

आर्य्य—वि० [सं०] [स्त्री० आर्य्या] १ श्रेष्ठ। उत्तम। २ बड़ा। पूज्य। ३ श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न। मान्य।
संज्ञा पु० [सं०] १ श्रेष्ठ पुरुष। श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न। २ मनुष्यों की एक जाति जिसने संसार में बहुत पहले सभ्यता प्राप्त की थी।

आर्य्यपुत्र—संज्ञा पु० [सं०] पति को पुकारने का संबोधन। (प्राचीन)

आर्य्यसमाज—संज्ञा पु० [सं०] एक धार्मिक समाज या समिति जिसके संस्थापक स्वामी दयानंद थे।

आर्य्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पार्वती। २ सास। ३ दादी। पितामही। ४ एक अर्द्ध-मात्रिक छंद।

आर्य्या गीत—संज्ञा स्त्री० [सं०] आर्य्या छंद का एक भेद।

आर्य्यावर्त्त—संज्ञा पु० [सं०] उत्तरीय भारत।

आर्ष—वि० [सं०] १ ऋषि-संबंधी। २ ऋषि प्रणीत। ऋषि-कृत। ३ वैदिक।

आर्ष प्रयोग—संज्ञा पु० [सं०] शब्दों का वह व्यवहार जो व्याकरण के नियम के विरुद्ध हो, पर प्राचीन ग्रंथों में मिले।

आर्ष विवाह—संज्ञा पु० [सं०] आठ प्रकार के विवाहों में तीसरा, जिसमें वर से कन्या

का पिता दो बैल शुल्क में लेकर कन्या देता था।

आलंकारिक–वि० [सं०] १. अलंकार-संबंधी। २. अलंकारयुक्त। ३. अलंकार जाननेवाला।

आलंग–संज्ञा पुं० [देश०] घोड़ियों की मस्ती।

आलंब–संज्ञा पुं० [सं०] १. अवलंब। आश्रय। सहारा। २. गति। शरण।

आलंबन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आलंबित] १. सहारा। आश्रय। अवलंब। २. रस में वह वस्तु जिसके अवलंब से रस की उत्पत्ति होती है। वह जिसके प्रति किसी भाव का होना कहा जाय। जैसे,—शृंगार रस में नायक और नायिका, रौद्र रस मे शत्रु। ३. बौद्ध मत में किसी वस्तु का ध्यान-जनित ज्ञान। ४. साधन। कारण।

आलंभ–संज्ञा पुं० [सं०] १. छूना। मिलना। पकड़ना। २. मारण। वध।

आल–संज्ञा पुं० [सं०] हरताल।
संज्ञा स्त्री० [सं० अल् = भूषित करना] १. एक पौधा जिसकी छाल और जड़ से लाल रंग निकलता है। २. इस पौधे से बना हुआ रंग।
संज्ञा पुं० [अनु०] झंझट। बखेड़ा।
संज्ञा पु० [सं० आर्द्र] १. गीलापन। तरी। २. आँसू।
संज्ञा स्त्री० [अ०] १. बेटी की सन्तति।
यौ०–आल-औलाद = बाल-बच्चे।
२. वंश। कुल। खानदान।

आलकस†–संज्ञा पुं० दे० "आलस्य"।

आलथी पालथी–संज्ञा स्त्री० [हिं० पालथी] बैठने का एक आसन जिसमें दाहिनी एँड़ी बाएँ जंघे पर और बाईं एँड़ी दाहिने जंघे पर रखते हैं।

आलपीन–संज्ञा स्त्री० [पुर्त० आलफिनेट] एक घुंडीदार सूई जिससे कागज आदि के टुकड़े जोड़ने या नत्थी करते हैं।

आलम–संज्ञा पुं० [अ०] १. दुनिया। संसार। २. अवस्था। दशा। ३. जन-समूह।

आलमारी–संज्ञा स्त्री० दे० "अलमारी"।

आलय–संज्ञा पुं० [सं०] १. घर। मकान। २. स्थान।

आलवाल–संज्ञा पुं० [सं०] थाला। अवाल।

आलस–वि० [सं०] आलसी। सुस्त।
*†संज्ञा पुं० दे० "आलस्य"।

आलसी–वि० [हिं० आलस] सुस्त। काहिल।

आलस्य–संज्ञा पुं० [सं०] कार्य्य करने में अनुत्साह। सुस्ती। काहिली।

आला–संज्ञा पुं० [सं० आलय] ताक। ताखा। अरवा।
वि० [अ०] सबसे बढ़िया। श्रेष्ठ।
संज्ञा पुं० [अ०] औज़ार। हथियार।
*†वि० [सं० आर्द्र] गीला। ओदा।

आलाइश–संज्ञा स्त्री० [फा०] गंदी वस्तु। मल। गलीज।

आलान–संज्ञा पुं० [सं०] १. हाथी बाँधने का खूँटा, रस्सा या जंजीर। २. बंधन।

आलाप–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आलापक, आलापित] १. कथोपकथन। संभाषण। बात-चीत। २. संगीत के सात स्वरों का साधन। तान।

आलापक–वि० [सं०] १. बात-चीत करनेवाला। २. गानेवाला।

आलापचारी–संज्ञा स्त्री० [सं० आलाप + चारी] स्वरों को साधने या तान लड़ाने की क्रिया।

आलापना–क्रि० स० [सं०] गाना। सुर खींचना। तान लड़ाना।

आलापी–वि० [सं० आलापिन्] [स्त्री० आलापिनी] १. बोलनेवाला। २. आलाप लेनेवाला। तान लगानेवाला। गानेवाला।

आलिंगन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आलिंगित] गले से लगाना। परिरंभण।

आलिंगना*–क्रि० स० [सं० आलिंगन] भेंटना। लपटना। गले लगाना।

आलि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सखी। सहेली। २. बिच्छू। ३. भ्रमरी। ४. पंक्ति। अवली।

आलिम–वि० [अ०] विद्वान्। पंडित।

आली–संज्ञा स्त्री० [सं० आलि] सखी।

*।वि० स्त्री० [सं० आर्द्र] भीगी हुई।
वि० [अ०] बड़ा। उच्च। श्रेष्ठ।

आलीशान–वि० [अ०] भव्य। भड़कीला। शानदार। विशाल।

आलू–संज्ञा पुं० [सं० आलु] एक प्रकार का कंद जो बहुत खाया जाता है।

आलूचा–संज्ञा पुं० [फा०] १. एक पेड़ जिसका फल पंजाब इत्यादि में बहुत खाया जाता है। २ पेड़ का फल। मोटिया बदाम। गर्दालू।

आलूबुखारा–संज्ञा पुं० [फा०] आलूचा नामक वृक्ष का सुखाया हुआ फल।

आलेख–संज्ञा पुं० [सं०] लिखावट। लिपि।

आलेख्य–संज्ञा पुं० [सं०] चित्र। तसवीर।
यौ०—आलेख्य विद्या = चित्रकारी।
वि० लिखने योग्य।

आलोक–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आलोक्य] १ प्रकाश। चाँदनी। उजाला। रोशनी। २ चमक। ज्योति।

आलोचक–वि० [सं०] [स्त्री० आलोचिका] १ देखनेवाला। २ जो आलोचना करे।

आलोचन–संज्ञा पुं० [सं०] १ दर्शन। २ गुण-दोष का विचार। विवेचन।

आलोचना–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० आलोचित] किसी वस्तु के गुण-दोष का विचार।

आलोडन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आलोडित] १ मथना। हिलोरना। २ विचार।

आलोड़ना*–क्रि० स० [सं० आलोडन] १ मथना। २ हिलोरना। ३ खूब सोचना-विचारना। ऊहापोह करना।

आल्हा–संज्ञा पुं० [देश०] १ ३१ मात्राओं का एक छंद। वीर छंद। २ महोबे के एक वीर का नाम जो पृथ्वीराज के समय में था। ३. बहुत लंबा-चौड़ा वर्णन।

आव*–संज्ञा स्त्री० [सं० आयु] आयु।

आवटना*–संज्ञा पुं० [सं० आवर्त्त] १ हलचल। उथल-पुथल। अस्थिरता। २ संकल्प-विकल्प। ऊहापोह।

आवन*–संज्ञा पुं० [सं० आगमन] आगमन। आना।

आवभगत–संज्ञा स्त्री० [हिं० आवना + भक्ति] आदर-सत्कार। खातिर-तवाज़ा।

आवरण–संज्ञा पुं० [सं०] १. आच्छादन। ढकना। २ वह कपड़ा जो किसी वस्तु के ऊपर लपेटा हो। वेठन। ३. परदा। ४ ढाल। ५ दीवार इत्यादि का घेरा। ६ चलाए हुए अस्त्र-शस्त्र को निष्फल करनेवाला अस्त्र।

आवरणपत्र–संज्ञा पुं० [सं०] वह कागज़ जो किसी पुस्तक के ऊपर उसकी रक्षा के लिये लगा रहता है।

आवर्त्त–संज्ञा पुं० [सं०] १ पानी का भँवर। २. वह बादल जिससे पानी न बरसे। ३ एक प्रकार का रत्न। राजावर्त्त। लाजवर्द। ४ सोच-विचार। चिंता।
वि० घूमा हुआ। मुड़ा हुआ।

आवर्त्तन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आवर्त्तनीय, आवर्त्तित] १ चक्कर देना। फिराव। घुमाव। २ मथना। हिलाना।

आवर्दा–वि० [फा०] १. लाया हुआ। २ कृपापात्र।

आवलि–संज्ञा स्त्री० [सं०] पंक्ति। श्रेणी।

आवली–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पंक्ति। श्रेणी। २ वह युक्ति या विधि जिसके द्वारा खेत की उपज का अंदाज़ होता है।

आवश्यक–वि० [सं०] १ जिसे अवश्य होना चाहिए। ज़रूरी। सापेक्ष्य। २ प्रयोजनीय। जिसके बिना काम न चले।

आवश्यकता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ज़रूरत। अपेक्षा। २ प्रयोजन। मतलब।

आवश्यकीय–वि० [सं०] ज़रूरी।

आवाँ–संज्ञा पुं० [सं० आपाक] गड्ढा जिसमें कुम्हार मिट्टी के बरतन पकाते हैं।

आवागमन–संज्ञा पुं० [हिं० आवा = आना + सं० गमन] १ आना-जाना। आमद-रफ्त। २ बार बार मरना और जन्म लेना।
यौ०–आवागमन से रहित = मुक्त।

आवागवन*।–संज्ञा पुं० दे० "आवागमन"।

आवाज़–संज्ञा स्त्री० [फा० मिलाओ सं०

आवाज] १. शब्द । ध्वनि । नाद । २. बोली । वाणी । स्वर ।
मुहा०—आवाज उठाना = विरुद्ध कहना । आवाज देना = जोर से पुकारना । आवाज बैठना = कफ के कारण स्वर का साफ़ न निकलना । गला बैठना । आवाज भारी होना = कफ के कारण कंठ का स्वर विकृत होना ।

आवाजा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] बोली ठोली । ताना । व्यंग्य ।

आवाजाही†–संज्ञा स्त्री० [हिं० आना + जाना] आना-जाना ।

आवारगी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] आवारापन । शुहदापन ।

आवारजा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] जमा-खर्च की किताब ।

आवारा–वि० [फ़ा०] १. व्यर्थ इधर-उधर फिरनेवाला । निकम्मा । २. बेठौर ठिकाने का । उठल्लू । ३. बदमाश । लुच्चा ।

आवारागर्द–वि० [फ़ा०] व्यर्थ इधर-उधर घूमनेवाला । उठल्लू । निकम्मा ।

आवास–संज्ञा पुं० [सं०] १. रहने की जगह । निवास-स्थान । २. मकान । घर ।

आवाहन–संज्ञा पुं० [सं०] १. मंत्र-द्वारा किसी देवता को बुलाने का कार्य्य । २. निमंत्रित करना । बुलाना ।

आविद्ध–वि० [सं०] १. छिदा हुआ । भेदा हुआ । २. फेंका हुआ ।
संज्ञा पुं० तलवार के ३२ हाथों में से एक ।

आविर्भाव–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आविर्भूत] १. प्रकाश । प्राकट्य । २. उत्पत्ति । ३. आवेश । संचार ।

आविर्भूत–वि० [सं०] १. प्रकाशित । प्रकटित । २. उत्पन्न ।

आविष्कर्त्ता–वि० [सं०] आविष्कार करनेवाला ।

आविष्कार–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आविष्कारक, आविष्कर्त्ता, आविष्कृत] १. प्राकट्य । प्रकाश । २. कोई ऐसी वस्तु तैयार करना जिसके बनाने की युक्ति पहले किसी को न मालूम रही हो । ईजाद । ३. किसी बात का पहले-पहल पता लगाना ।

आविष्कारक–वि० दे० "आविष्कर्त्ता" ।

आविष्कृत–वि० [सं०] १. प्रकाशित । प्रकटित । २. पता लगाया हुआ । जाना हुआ । ३. ईजाद किया हुआ ।

आविष्क्रिया–संज्ञा स्त्री० दे० "आविष्कार" ।

आवृत–वि० [सं०] १. छिपा हुआ । ढका हुआ । २. लपेटा या घिरा हुआ ।

आवृत्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बार बार किसी बात का अभ्यास । २. पढ़ना ।

आवेग–संज्ञा पुं० [सं०] १. चित्त की प्रबल वृत्ति । मन की झोंक । ज़ोर । जोश । २. रस के संचारी भावों में से एक । अकस्मात् इष्ट या अनिष्ट के प्राप्त होने से चित्त की आतुरता । घबराहट ।

आवेदक–वि० [सं०] निवेदन करनेवाला ।

आवेदन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आवेदनीय, आवेदित, आवेदी, आवेद्य] अपनी दशा को सूचित करना । निवेदन । अर्ज़ी ।

आवेदनपत्र–संज्ञा पुं० [सं०] वह पत्र या कागज जिसपर कोई अपनी दशा लिखकर सूचित करे । अरज़ी ।

आवेश–संज्ञा पुं० [सं०] १. व्याप्ति । संचार । दौरा । २. प्रवेश । ३. चित्त की प्रेरणा । झोंक । वेग । जोश । ४. भूत-प्रेत की बाधा । ५. मृगी रोग ।

आवेष्टन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आवेष्टित] १. छिपाने या ढँकने का कार्य्य । २. छिपाने, लपेटने या ढँकने की वस्तु ।

आशंका–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० आशंकित] १. डर । भय । २. शक । संदेह । ३. अनिष्ट की भावना ।

आशना–संज्ञा उभ० [फ़ा०] १. जिससे जान-पहचान हो । २. चाहनेवाला । प्रेमी ।

आशनाई–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. जान-पहचान । २. प्रेम । प्रीति । दोस्ती । ३. अनुचित संबंध ।

आशय–संज्ञा पुं० [सं०] १. अभिप्राय । मतलब । तात्पर्य । २. वासना ।

इच्छा। ३ उद्देश्य। नीयत।

आशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अप्राप्त के पाने की इच्छा और थोड़ा बहुत निश्चय। उम्मीद। २ अभिलषित वस्तु की प्राप्ति के थोड़े बहुत निश्चय से उत्पन्न संतोष। ३ दिशा। ४ दक्ष प्रजापति की एक कन्या।

आशिक—संज्ञा पु० [अ०] प्रेम करनेवाला मनुष्य। अनुरक्त पुरुष। आसक्त।

आशिष—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ आशीर्वाद। आसीस। दुआ। २ एक अलंकार जिसमें अप्राप्य वस्तु के लिये प्रार्थना होती है।

आशिषाक्षेप—संज्ञा पु० [सं०] वह काव्या-लंकार जिसमें दूसरे का हित दिखलाते हुए ऐसी बातों के करने की शिक्षा दी जाती है जिनसे वास्तव में अपने ही दुःख की निवृत्ति हो। (केशव)।

आशी—वि० [सं० आशिन्] [स्त्री० आशिनी] खानेवाला। भक्षक।

आशीर्वाद—संज्ञा पु० [सं०] कल्याण या मंगलकामना-सूचक वाक्य। आशिष। दुआ।

आशु—क्रि० वि० [सं०] शीघ्र। जल्द।

आशु कवि—संज्ञा पु० [सं०] वह कवि जो तत्क्षण कविता कर सके।

आशुतोष—वि० [सं०] शीघ्र संतुष्ट होने-वाला। जल्दी प्रसन्न होनेवाला। संज्ञा पु० शिव। महादेव।

आश्चर्य—संज्ञा पु० [सं०] [वि० आश्च-र्य्यित] १ वह मनोविकार जो किसी नई, अभूतपूर्व या असाधारण बात को देखने, सुनने या ध्यान में आने से उत्पन्न होता है। अचंभा। विस्मय। तअज्जुब। २ रस के नौ स्थायी भावों में से एक।

आश्चर्यित—वि० [सं०] चकित।

आश्रम—संज्ञा पु० [सं०] [वि० आश्रमी] १ ऋषियों और मुनियों का निवासस्थान। तपोवन। २ साधु-संत के रहने की जगह। ३ विश्राम-स्थान। ठहरने की जगह। ४ स्मृति में कही हुई हिंदुओं के जीवन की चार अवस्थाएँ—ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ और संन्यास।

आश्रमी—वि० [सं०] १ आश्रम-संबंधी। २ आश्रम में रहनेवाला। ३ ब्रह्मचर्य्यादि चार आश्रमों में से किसी को धारण करनेवाला।

आश्रय—संज्ञा पु० [सं०] [वि० आश्रयी, आश्रित] १. आधार। सहारा। अव-लंब। २ आधार वस्तु। वह वस्तु जिसके सहारे पर कोई वस्तु हो। ३ शरण। पनाह। ४ जीवन-निर्वाह का हेतु। भरोसा। सहारा। ५ घर।

आश्रयी—वि० [सं०] आश्रय लेने या पाने-वाला। सहारा लेने या पानेवाला।

आश्रित—वि० [सं०] १ सहारे पर टिका हुआ। ठहरा हुआ। २ भरोसे पर रहनेवाला। अधीन। ३ सेवक।

आश्लेषण—संज्ञा पु० [सं०] मिलावट।

आश्लेषा—संज्ञा पु० [सं०] श्लेषा नक्षत्र।

आश्वास, आश्वासन—संज्ञा पु० [सं०] [वि० आश्वासनीय, आश्वासित, आश्वास्य] दिलासा। तसल्ली। सांत्वना।

आश्विन—संज्ञा पु० [सं०] वह महीना जिसकी पूर्णिमा अश्विनी नक्षत्र में पड़े। क्वार का महीना।

आषाढ़—संज्ञा पु० [सं०] १ वह चांद्र मास जिसकी पूर्णिमा को पूर्वाषाढ़ नक्षत्र हो। असाढ़। २ ब्रह्मचारी का दंड।

आषाढ़ा—संज्ञा पु० [सं०] पूर्वाषाढ़ा और उत्तराषाढ़ा नक्षत्र।

आषाढ़ी—संज्ञा स्त्री० [सं०] आषाढ़ मास की पूर्णिमा। गुरुपूजा।

आसंग—संज्ञा पु० [सं०] १ साथ। संग। २ लगाव। संबंध। ३ आसक्ति।

आस—संज्ञा स्त्री० [सं० आशा] १ आशा। उम्मेद। २ लालसा। कामना। ३ सहारा। आधार। भरोसा।

आसक्त—संज्ञा स्त्री० [सं० आसक्ति] [वि० आसक्ती, क्रि०आसकताना] सुस्ती।आलस्य

आसक्ती—वि० दे० "आलसी"।

आसक्त–वि० [सं०] १. अनुरक्त। लीन। लिप्त। २. आशिक़। मोहित। लुब्ध। मुग्ध।

आसक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अनुरक्ति। लिप्तता। २. लगन। चाह। प्रेम।

आसते*–क्रि० वि० [फ़ा० आहिस्तः] धीरे धीरे।

आसत्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सामीप्य। निकटता। २. अर्थ-बोध के लिये बिना व्यवधान के एक दूसरे से संबंध रखनेवाले दो पदों या शब्दों का पास पास रहना।

आसन–संज्ञा पुं० [सं०] १. स्थिति। बैठने की विधि। बैठने का ढब। बैठक।
मुहा०–आसन उखड़ना=अपनी जगह से हिल जाना। घोड़े की पीठ पर रान न जमना। आसन कसना = अंगों को तोड़ मरोड़कर बैठना। आसन छोड़ना = उठ जाना (आदरार्थ)। आसन जमना = जिस स्थान पर जिस रीति से बैठे, उसी स्थान पर उसी रीति से स्थिर रहना। बैठने में स्थिर भाव आना। आसन डिगना या डोलना = १. बैठने में स्थिर भाव न रहना। २. चित्त चलायमान होना। मन डोलना। आसन डिगाना = १. जगह से विचलित करना। २. चित्त को चलायमान करना। लोभ या इच्छा उत्पन्न करना। आसन देना = सत्कारार्थ बैठने के लिये कोई वस्तु रख देना या बतला देना। २. वह वस्तु जिसपर बैठें। ३. ठिकाना। निवास। डेरा। ४. चूतड़। ५. हाथी का कंधा जिसपर महावत बैठता है। ६. सेना का शत्रु के सामने डटे रहना।

आसना*–क्रि० अ० [सं० अस् = होना] होना।

आसनी–संज्ञा स्त्री० [सं० आसन] छोटा आसन। छोटा बिछौना।

आसन्न–वि० [सं०] निकट आया हुआ। समीपस्थ। प्राप्त।

आसन्नभूत–संज्ञा पुं० [सं०] भूतकालिक क्रिया का वह रूप जिससे क्रिया की पूर्णता और वर्त्तमान से उसकी समीपता पाई जाय। जैसे—मैं रहा हूँ।

आसपास–क्रि० वि० [अनु० आस + सं० पार्श्व] चारों ओर। निकट। इधर-उधर।

आसमान–संज्ञा पुं० [फ़ा०] [वि० आसमानी] १. आकाश। गगन। २. स्वर्ग। देवलोक।
मुहा०–आसमान के तारे तोड़ना = कोई कठिन या असंभव कार्य करना। आसमान टूट पड़ना = किसी विपत्ति का अचानक आ पड़ना। वज्रपात होना। आसमान पर उड़ना = १. इतराना। गरूर करना। २. बहुत ऊँचे ऊँचे संकल्प बाँधना। आसमान पर चढ़ना = गरूर करना। घमंड दिखाना। आसमान पर चढ़ाना = १. अत्यंत प्रशंसा करना। २. अत्यंत प्रशंसा करके मिजाज बिगाड़ देना। आसमान में थिगली लगाना = विकट कार्य्य करना। आसमान सिर पर उठाना = १. ऊधम मचाना। उपद्रव मचाना। २. हलचल मचाना। खूब आंदोलन करना। दिमाग आसमान पर होना = बहुत अभिमान होना।

आसमानी–वि० [फ़ा०] १. आकाश-संबंधी। आकाशीय। आसमान का। २. आकाश के रंग का। हलका नीला। ३. दैवी। ईश्वरीय।
संज्ञा स्त्री० ताड़ के पेड़ से निकाला हुआ मद्य। ताड़ी।

आसमुद्र–क्रि० वि० [सं०] समुद्र-पर्यंत। समुद्र के तट तक।

आसरना*–क्रि० स० [हिं० आसरा] आश्रय लेना। सहारा लेना।

आसरा–संज्ञा पुं० [सं० आश्रय] १. सहारा। आधार। अवलंब। २. भरण-पोषण की आशा। भरोसा। आस। ३. किसी से सहायता पाने का निश्चय। ४. जीवन या कार्य्य-निर्वाह का हेतु। आश्रयदाता। सहायक। ५. शरण। पनाह। ६. प्रतीक्षा। प्रत्याशा। इंतजार। ७. आशा।

आसव–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह मद्य जो भभके से न चुआया जाय, केवल फलों के खमीर को निचोड़कर बनाया जाय। २. द्रव्यों का खमीर छानकर बनी हुई औषध। ३. अर्क।

आसा–संज्ञा स्त्री० दे० "आशा"।

सज्ञा पु० [अ० असा] सोने या चाँदी का डंडा जिसे केवल राजावट के लिये राजा महाराजाओं अथवा बारात और जुलूस के आगे चोबदार लेकर चलते हैं।
यौ०—आसा-बल्लम। आसा-सोटा।
आसाइश–सज्ञा स्त्री० [फा०] आराम। सुख। चैन।
आसान–वि० [फा०] सहज। सरल।
आसानी–सज्ञा स्त्री० [फा०] [वि० आसान] सरलता। सुगमता। सुबीता।
आसार–सज्ञा पु० [अ०] चिह्न। लक्षण।
आसावरी–सज्ञा स्त्री० [?] श्री राग की एक रागिनी।
सज्ञा पु० एक प्रकार का कबूतर।
आसिख*–सज्ञा स्त्री० दे० "आशिष"।
आसिन–सज्ञा पु० दे० "आश्विन"।
आसी*–वि० दे० "आशी"।
आसीन–वि० [स०] बैठा हुआ। विराजमान।
आसीस–सज्ञा स्त्री० दे० "आशिष"।
आसु*–क्रि० वि० दे० "आशु"।
आसुर–वि० [स०] असुर-सबधी।
यौ०–आसुर-विवाह = वह विवाह जो कन्या के माता-पिता को द्रव्य देकर हो।
*सज्ञा पु० दे० 'असुर'।
आसुरी–वि० [स०] असुर-सबधी। असुरो का। राक्षसी।
यौ०–आसुरी चिकित्सा = शस्त्र चिकित्सा। चीर-फाड़। आसुरी माया = चक्कर में डालनेवाली राक्षसों की चाल।
सज्ञा स्त्री० राक्षस की स्त्री।
आसूदा–वि० [फा०] [सज्ञा आसूदगी] १ सतुष्ट। तृप्त। २ सपन्न। भरा-पूरा।
आसेब–सज्ञा पु० [फा०] [वि० आसेबी] भूत-प्रेत की बाधा।
आसोज–सज्ञा पु० [स० अश्वयुज] आश्विन मास। क्वार का महीना।
आसों*–क्रि० वि० [स० इह + सवत्] इस वर्ष। इस साल।
आस्तिक–वि० [स०] १ वेद, ईश्वर और परलोक इत्यादि पर विश्वास करनेवाला। २ ईश्वर के अस्तित्व को माननेवाला।
आस्तिकता–सज्ञा स्त्री० [स०] वेद, ईश्वर और परलोक मे विश्वास।
आस्तीक–सज्ञा पु० [स०] एक ऋषि जिन्होने जनमेजय के सर्पसत्र में तक्षक का प्राण बचाया था।
आस्तीन–सज्ञा स्त्री० [फा०] पहनने के कपड़े का वह भाग जो बाँह को ढँकता है। बाँही।
मुहा०—आस्तीन का साँप = वह व्यक्ति जो मित्र होकर शत्रुता करे।
आस्था–सज्ञा स्त्री० [स०] १. पूज्य बुद्धि। श्रद्धा। २ सभा। बैठक। ३ आलबन। अपेक्षा।
आस्थान–सज्ञा पु० [स०] १ बैठने की जगह। बैठक। २ सभा। दरबार।
आस्पद–सज्ञा पु० [स०] १ स्थान। २ कार्य्य। कृत्य। ३ पद। प्रतिष्ठा। ४ अल्ल। वश। कुल। जाति।
आस्य–सज्ञा पु० [स०] मुख। मुँह।
आस्वाद–सज्ञा पु० [स०] रस। स्वाद। जायका। मजा।
आस्वादन–सज्ञा पु० [स०] [वि० आस्वादनीय, आस्वादित] चखना। स्वाद लेना।
आह—अव्य० [स० अहह] पीडा, शोक, दुख, खेद और ग्लानि-सूचक अव्यय।
सज्ञा स्त्री० कराहना। दुख या क्लेश-सूचक शब्द। ठढी साँस। उसास।
मुहा०—आह पडना = शाप पडना। किसी को दुख पहुँचाने का फल मिलना। आह भरना = ठढी साँस खींचना। आह लेना = सताना। दुख देकर कलपाना।
*सज्ञा पु० [स० साहस] १ साहस। हियाव। २ बल। जोर।
आहट–सज्ञा स्त्री० [हि० आ = आना + हट (प्रत्य०)] १ वह शब्द जो चलने मे पैर तथा दूसरे अगो से होता है। आने का शब्द। पाँव की चाप। खटका। २ वह आवाज जिससे किसी स्थान पर किसी के रहने का

अनुमान हो। ३. पता। सुराग। टोह।

आहत–वि० [सं०] [संज्ञा आहति] १. चोट खाया हुआ। घायल। ज़ख़मी। २. जिस संख्या को गुणित करें। गुण्य। ३. व्याघात-दोष-युक्त (वाक्य)।

यौ०—हताहत = मारे हुए और ज़ख़मी।

आहन–संज्ञा पुं० [फ़ा०] लोहा।

आहर*–संज्ञा पुं० [सं० अहः] समय। संज्ञा पुं० [सं० आहव] युद्ध। लड़ाई।

आहरण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आहरणीय, आहृत] १. छीनना। हर लेना। २. किसी पदार्थ को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना। ३. ग्रहण। लेना।

आहरन–संज्ञा पुं० [आहनन] लोहारों और सुनारों की निहाई।

आहवन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आहवनीय] यज्ञ करना। होम करना।

आहाँ–संज्ञा स्त्री० [सं० आह्वान] १. हाँक। दुहाई। घोषणा। २. पुकार। बुलावा।

आहा–अव्य० [सं० अहह] आश्चर्य और हर्ष-सूचक अव्यय।

आहार–संज्ञा पुं० [सं०] १. भोजन। खाना। २. खाने की वस्तु।

आहार-विहार–संज्ञा पु० [सं०] खाना, पीना, सोना आदि शारीरिक व्यवहार। रहन-सहन

आहारी–वि० [सं० आहारिन्] [स्त्री० आहारिणी] खानेवाला। भक्षक।

आहार्य्य–वि० [सं०] १. ग्रहण किया हुआ। २. बनावटी। ३. खाने योग्य। संज्ञा पुं० [सं०] चार प्रकार के अनु-भावों में चौथा। नायक और नायिका का परस्पर एक दूसरे का वेष धारण करना।

आहार्य्याभिनय–संज्ञा पु० [सं०] बिना कुछ बोले या चेष्टा किए केवल रूप और वेष द्वारा नाटक का अभिनय करना।

आहि–क्रि० अ० [सं० अस्] 'आसना' का वर्त्तमान-कालिक रूप। है।

आहित–वि० [सं०] १. रक्खा हुआ। स्थापित। २. धरोहर या गिरों रक्खा हुआ। संज्ञा पुं० [सं०] १. पंद्रह प्रकार के दासों में से एक, जो अपने स्वामी से इकट्ठा धन लेकर उसकी सेवा में रहकर उसे पटाता हो। २. गिरवी रखा हुआ माल।

आहिस्ता–क्रि० वि० [फ़ा०] धीरे से। धीरे धीरे। शनैः शनैः।

आहुत–संज्ञा पुं० [सं०] १. आतिथ्य-सत्कार। २. भूतयज्ञ। बलिवैश्वदेव।

आहुति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मंत्र पढ़कर देवता के लिये द्रव्य को अग्नि में डालना। होम। हवन। २. हवन में डालने की सामग्री। ३. होम-द्रव्य की वह मात्रा जो एक बार यज्ञकुंड में डाली जाय।

आहूत–वि० [सं०] बुलाया हुआ। आह्वान किया हुआ। निमंत्रित।

आहे*–क्रि० अ० [सं० अस्] 'आसना' का वर्त्तमान-कालिक रूप। है।

आह्निक–वि० [सं०] रोज़ाना। दैनिक।

आह्लाद–संज्ञा पु० [सं०] [वि० आह्लादक, आह्लादित] आनंद। खुशी। हर्ष।

आह्वय–संज्ञा पु० [सं०] १. नाम। संज्ञा। २. तीतर, बटेर, मेढ़े आदि जीवों की लड़ाई की बाज़ी। प्राणिद्यूत।

आह्वान–संज्ञा पु० [सं०] १. बुलाना। बुलावा। पुकार। २. राजा की ओर से बुलावे का पत्र। समन। तलबनामा। ३. यज्ञ में मंत्र द्वारा देवताओं को बुलाना।

इ

इ–वर्णमाला में स्वर के अंतर्गत तीसरा वर्ण। इसका स्थान तालु और प्रयत्न विवृत है। ई इसका दीर्घ रूप है।

इंगनी–संज्ञा स्त्री० [अं० मैंगनीज़] एक प्रकार का धातु का मोर्चा जो काँच या शीशे का हरापन दूर करने के काम में आता है।

इंगला–संज्ञा स्त्री० [सं० इडा] इड़ा नाम की एक नाड़ी। (हठयोग)

इंगलिस्तान–संज्ञा पु० [अं० इँगलिश + फा० स्तान] अँगरेज़ों का देश। इँगलैंड।

इंगित–संज्ञा पु० [सं०] अभिप्राय को किसी चेष्टा द्वारा प्रकट करना। इशारा। चेष्टा। वि० १ हिलता हुआ। चलित। २ इशारा किया हुआ।

इंगुदी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हिंगोट का पेड़। २ ज्योतिष्मती वृक्ष। मालकँगनी।

इंगुर*†–संज्ञा पु० दे० 'ईंगुर'।

इंगुरौटी–संज्ञा स्त्री० [हिं० ईंगुर + औटी (प्रत्य०)] वह डिबिया जिसमें सौभाग्यवती स्त्रियाँ ईंगुर या सिंदूर रखती हैं। सिंधोरा।

इंच–संज्ञा स्त्री० [अं०] एक फुट का बारहवाँ हिस्सा। तस्सू।

इंचना*–क्रि० अ० दे० 'खिंचना'।

इंजन–संज्ञा पु० [अं० एंजिन] १ कल। पेंच। २ भाप या बिजली से चलनेवाला यंत्र। ३ रेलवे ट्रेन में वह गाड़ी जो भाप के जोर से सब गाड़ियों को खींचती है।

इंजीनियर–संज्ञा पु० [अं० एंजीनियर] १ यंत्र की विद्या जाननेवाला। कलों का बनाने या चलानेवाला। २ शिल्पविद्या में निपुण। विश्वकर्मा। ३ वह अफसर जिसके निरीक्षण में सरकारी सड़क, इमारत और पुल इत्यादि बनते हैं।

इंजील–संज्ञा स्त्री० [यू०] ईसाइयों की धर्म पुस्तक।

इंडुरी*†–संज्ञा स्त्री० दे० 'इँडुवा'।

इँडुवा–संज्ञा पु० [सं० कुंडल] कपड़े की बनी हुई छोटी गोल गद्दी जिसे बोझ उठाते समय सिर के ऊपर रख लेते हैं। गेंडुरी।

इंतकाल–संज्ञा पु० [अ०] १ मृत्यु। मौत। २ किसी संपत्ति का एक के अधिकार से दूसरे के अधिकार में जाना।

इंतजाम–संज्ञा पु० [अ०] प्रबंध। बंदोबस्त। व्यवस्था।

इंतजार–संज्ञा पु० [अ०] प्रतीक्षा।

इंदव–संज्ञा पु० [सं० ऐंद्रव] एक छंद।

इंदिरा–संज्ञा स्त्री० [सं०] लक्ष्मी।

इंदीवर–संज्ञा पु० [सं०] १ नील कमल। नीलोत्पल। २ कमल।

इंदु–संज्ञा पु० [सं०] १ चंद्रमा। २ कपूर। ३ एक की संख्या।

इंदुवदना–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त।

इंद्र–वि० [सं०] १ ऐश्वर्यवान्। विभूतिसंपन्न। २ श्रेष्ठ। बड़ा। जैसे, नरेंद्र। संज्ञा पु० १ एक वैदिक देवता जिसका स्थान अंतरिक्ष है और जो पानी बरसाता है। २ देवताओं का राजा।
यौ०—इंद्र का अखाड़ा = १ इंद्र की सभा जिसमें अप्सराएँ नाचती हैं। २ बहुत सजी हुई सभा जिसमें खूब नाच-रंग होता हो। इंद्र की परी = १ अप्सरा। २ बहुत सुंदरी स्त्री।
३ बारह आदित्यों में से एक। सूर्य। ४ बिजली। ५ मालिक। स्वामी। ६ ज्येष्ठा नक्षत्र। ७ चौदह की संख्या। ८ छप्पय छंद के भेदों में से एक। ९ जीव। प्राण।

इंद्रकील–संज्ञा पु० [सं०] मंदराचल।

इंद्रगोप–संज्ञा पु० [सं०] बीरबहूटी नाम का कीड़ा।

इंद्रजव–संज्ञा पु० [सं० इंद्रयव] कुड़ा। कौरैया का बीज।

इंद्रजाल–संज्ञा पु० [सं०] [वि० इंद्रजालिक] मायाकर्म। जादूगरी। तिलिस्म।

इंद्रजाली–वि० [सं० इंद्रजालिन्] [स्त्री० इंद्रजालिनी] इंद्रजाल करनेवाला। जादूगर।

इंद्रजित्–वि० [सं०] इंद्र को जीतनेवाला। संज्ञा पु० रावण का पुत्र मेघनाद।

इंद्रजीत–संज्ञा पु० दे० 'इंद्रजित्'।

इंद्रदमन–संज्ञा पु० [सं०] १ बाढ़ के समय नदी के जल का किसी निश्चित कुंड, ताल अथवा बट या पीपल के वृक्ष तक पहुँचना जो एक पर्व समझा जाता है। २ मेघनाद का एक नाम।

इंद्रधनुष–संज्ञा पु० [सं०] सात रंगों का बना हुआ एक अर्द्धवृत्त जो वर्षा काल में सूर्य के विरुद्ध दिशा में आकाश में देख पड़ता है।

इंद्रनील–संज्ञा पु० [सं०] नीलम।

इंद्रप्रस्थ–संज्ञा पु० [सं०] एक नगर जिसे पांडवों ने खांडव वन जलाकर बसाया था।

इंद्रलोक–संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग।

इंद्रवंशा–संज्ञा पुं० [सं०] १२ वर्णो का एक वृत्त।

इंद्रवज्रा–संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्ण-वृत्त।

इंद्रवधू–संज्ञा स्त्री० [सं०] बीरबहूटी।

इंद्राणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. इंद्र की पत्नी, शची। २. बड़ी इलायची। ३. इंद्रायन। ४. दुर्गा देवी।

इंद्रायन–संज्ञा पुं० [सं० इंद्राणी] एक लता जिसका लाल फल देखने में सुंदर, पर खाने मे बहुत कड़वा होता है। इनारु।

इंद्रायुध–संज्ञा पुं० [सं०] १. वज्र। २. इंद्रधनुष।

इंद्रासन–संज्ञा पुं० [सं०] १. इंद्र का सिंहासन। २. राजसिंहासन।

इंद्रिय–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह शक्ति जिससे बाहरी विषयों का ज्ञान प्राप्त होता है। २. शरीर के वे अवयव जिनके द्वारा यह शक्ति विषयों का ज्ञान प्राप्त करती है। पदार्थों के रूप, रस, गंध आदि के अनुभव मे सहायक अंग, जो पाँच हैं—चक्षु, श्रोत्र, रसना, नासिका और त्वचा। ज्ञानेंद्रिय। ३. वे अंग या अवयव जिनसे भिन्न भिन्न कर्म किए जाते हैं और जो पाँच हैं— वाणी, हाथ, पैर, गुदा, उपस्थ। कर्मेंद्रिय। ४. लिंगेंद्रिय। ५. पाँच की संख्या।

इंद्रियजित्–वि० [सं०] जिसने इंद्रियों को जीत लिया हो। जो विषयासक्त न हो।

इंद्रियनिग्रह–संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रियों के वेग को रोकना।

इंद्री*–संज्ञा स्त्री० दे० "इंद्रिय"।

इंद्रीजुलाब–संज्ञा पुं० [सं० इंद्रिय + फा० जुलाब] वे ओषधियाँ जिनसे पेशाब अधिक आता है।

इंसाफ–संज्ञा पुं० [अ०] [वि० मुंसिफ] १. न्याय। अदल। २. फ़ैसला। निर्णय।

संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।

इकंग*–वि० दे० "एकांग"।

इकंत*–वि० दे० "एकांत"।

इक*–वि० दे० "एक"।

इकजोर*–क्रि० वि० [सं० एक + हिं० जोर = जोड़ना] इकट्ठा। एक साथ।

इकट्ठा–वि० [सं० एकस्थ] एकत्र। जमा।

इकतर*–वि० दे० "एकत्र"।

इकता*–संज्ञा स्त्री० दे० "एकता"।

इकताई*–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० यकता] १. एक होने का भाव। एकत्व। २. अकेले रहने की इच्छा, स्वभाव या बान। एकांतसेविता। ३. अद्वितीयता।

इकतान*–वि० [हिं० एक + तान] एकरस। एक सा। स्थिर। अनन्य।

इकतार–वि० [हिं० एक + तार] बराबर। एकरस। समान।

क्रि० वि० लगातार।

इकतारा–संज्ञा पुं० [हिं० एक + तार] १. सितार के ढंग का एक बाजा जिसमे केवल एक ही तार रहता है। २. एक प्रकार का हाथ से बुना जानेवाला कपड़ा।

इकतीस–वि० [सं० एकत्रिंशत्, प्रा० एकतीस] तीस और एक।

संज्ञा पुं० तीस और एक की संख्या। इकतीस का अंक। ३१।

इकत्र*–क्रि० वि० दे० "एकत्र"।

इकबाल–संज्ञा पुं० दे० "एकबाल"।

इकराम–संज्ञा पुं० [अ०] १. पारितोषिक। इनाम। २. इज्जत। आदर।

इक़रार–संज्ञा पुं० [अ०] १. प्रतिज्ञा। वादा। २. कोई काम करने की स्वीकृति।

इकला*–वि० दे० "अकेला"।

इकलाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० एक + लाई या लोई = पर्त्त] १. एक पाट का महीन दुपट्टा या चादर। २. अकेलापन।

इकलौता–संज्ञा पुं० [हिं० इकला + पुं० हिं० ऊत (सं० पुत्र)] वह लड़का जो अपने माँ-बाप का अकेला हो।

इकल्ला–वि० [हिं० एक + ला (प्रत्य०)] १. एकहरा। एक पर्त्त का। *†२. अकेला।

इकसठ–वि० [सं० एकषष्टि] साठ और एक।

संज्ञा पुं० वह अंक जिससे साठ और एक

का बाप हो। ६१।

इकगर*-वि० [हि० एक + गर (प्रत्य०)] अकेला। एकाकी।

इकसूत*-वि० [सं० एक + सूत्र] एक साथ। इकट्ठा। एकत्र।

इकहरा-वि० दे० "एकहरा"।

इकहाई*-क्रि०वि०[हि०एक + हाई(प्रत्य०)] १. एक साथ। फौरन। २ अचानक।

इकांत*-वि० दे० "एकांत"।

इकंठ*-वि० [सं० एकस्थ] इकट्ठा।

इकौंज-संज्ञा स्त्री०[सं०एक (इक) + वध्या, अथवा काकवध्या] वह स्त्री जिसको एक ही संतान हुई हो। काक-वध्या।

इकौसो*[वि०[सं०एक + आवास] एकांत।

इक्का-वि०[सं०एक] १ एकाकी।अकेला। २ अनुपम। बेजोड।

संज्ञा पु० १ एक प्रकार की कान की बाली जिसमें एक मोती होता है। २ वह योद्धा जो लडाई में अकेला लडे। ३ वह पशु जो अपना झुंड छोडकर अलग हो जाय। ४ एक प्रकार की दो पहिए की घोडा-गाडी जिसमें एक ही घोडा जोता जाता है। ५ ताश का वह पत्ता जिसमें किसी रंग की एक ही बूटी हो।

इक्का-दुक्का-वि० [हि० इक्का + दुक्का] अकेला दुकेला।

इक्कीस-वि० [सं० एकविंशत्] बीस और एक। संज्ञा पु० बीस और एक की संख्या या अंक जो इस तरह लिखा जाता है---२१।

इक्यावन-वि० [सं० एकपंचाशत्, प्रा० एकपावन] पचास और एक। संज्ञा पु० पचास और एक की संख्या या अंक जो इस तरह लिखा जाता है---५१।

इक्यासी-वि० [सं० एकाशीति, प्रा० एकासि] अस्सी और एक। संज्ञा पु० अस्सी और एक की संख्या या अंक जो इस तरह लिखा जाता है---८१।

इक्षु-संज्ञा पु० [सं०] ईख। गन्ना।

इक्ष्वाकु-संज्ञा पु० [सं०] १ सूर्यवंश का एक प्रधान राजा। २ कड़ुवी लौकी।

इखद*-वि० दे० "ईषत्"।

इखराज-संज्ञा पु० [अ०] निकास। खर्च।

इखलास-संज्ञा पु० [अ०] १ मेल मिलाप। मित्रता। २ प्रेम। भक्ति। प्रीति।

इखु*-संज्ञा पु० दे० "इषु"।

इख्तियार-संज्ञा पु० [अ०] १ अधिकार। २ अधिकार क्षेत्र। ३ सामर्थ्य। काबू। ४ प्रभुत्व। स्वत्व।

इच्छना*-क्रि० स० [सं० इच्छन] इच्छा करना। चाहना।

इच्छा-संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० इच्छित, इच्छुक] एक मनोवृत्ति जो किसी सुखद वस्तु की प्राप्ति की ओर ध्यान ले जाती है। कामना। लालसा। अभिलाषा। चाह।

इच्छाभोजन-संज्ञा पु० [सं०] जिन जिन वस्तुओं की इच्छा हो, उनको खाना।

इच्छित-वि० [सं०] चाहा हुआ। वांछित।

इच्छु*-संज्ञा पु० दे० "इक्षु"। वि० [सं०] चाहनेवाला। (यौगिक में)

इच्छुक-वि० [सं०] चाहनेवाला।

इजमाल-संज्ञा पु० [अ०] [वि० इजमाली] १ कुल। समष्टि। २ किसी वस्तु पर कुछ लोगों का संयुक्त स्वत्व। साझा।

इजमाली-वि० [अ०] शिरकत का। मुश्तरका। संयुक्त। साझे का।

इजराय-संज्ञा पु० [अ०] १ जारी करना। प्रचार करना। २ व्यवहार। अमल। यौ०-इजराय डिगरी = डिगरी का अमल-दरामद होना।

इजलास-संज्ञा पु० [अ०] १ बैठक। २ वह जगह जहाँ हाकिम बैठकर मुकद्दमे का फैसला करता है। कचहरी। न्यायालय।

इजहार-संज्ञा पु० [अ०] १ जाहिर करना। प्रकाशन। प्रकट करना। २ अदालत के सामने बयान। गवाही। साक्षी।

इजाजत-संज्ञा स्त्री० [अ०] १ आज्ञा। हुक्म। २ परवानगी। मंजूरी।

इजाफा-संज्ञा पु० [अ०] १ बढ़ती। वृद्धि। २ व्यय से बचा हुआ धन। बचत।

इजार-संज्ञा स्त्री० [अ०] पायजामा। सूथन।

इजारबंद–संज्ञा पुं० [फ़ा०] सूत या रेशम का बना हुआ जालीदार बँधना जो पायजामे या लहँगे के नेफे में उसे कमर से बाँधने के लिये पड़ा रहता है। नारा।
इजारदार, इजारेदार–वि० [फ़ा०] किसी पदार्थ को इजारे या ठेके पर लेनेवाला। ठेकेदार। अधिकारी।
इजारा–संज्ञा पुं० [अ०] १. किसी पदार्थ को उजरत या किराये पर देना। २. ठेका। ३. अधिकार। इख्तियार। स्वत्व।
इज्जत–संज्ञा स्त्री० [अ०] मान। मर्यादा। प्रतिष्ठा। आदर।
मुहा०–इज्जत उतारना=मर्य्यादा नष्ट करना। इज्जत रखना=प्रतिष्ठा की रक्षा करना।
इज्जतदार–वि० [फ़ा०] प्रतिष्ठित।
इठलाना–क्रि० अ० [हिं० ऐंठ+लाना] १. इतराना। ठसक दिखाना। गर्व-सूचक चेष्टा करना। २. मटकना। ३. नखरा करना।
इठलाहट–संज्ञा स्त्री० [हिं० इठलाना] इठलाने का भाव। ठसक।
इठाई*–संज्ञा स्त्री० [सं० इष्ट+आई (प्रत्य०)] १. रुचि। चाह। प्रीति। २. मित्रता।
इड़ा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पृथ्वी। भूमि। २. गाय। ३. वाणी। ४. स्तुति। ५. अन्न। हवि। ६. नभदेवता। ७. दुर्गा। अंबिका। ८. पार्वती। ९. कश्यप ऋषि की एक पत्नी जो दक्ष की एक पुत्री थी। १०. स्वर्ग। ११. हठयोग की साधना के लिये कल्पित बाईं ओर की नाड़ी।
इत*†–क्रि० वि० [सं० इतः] इधर। इस ओर। यहाँ।
इतना–वि० [सं० एतावत् अथवा पु० हिं० ई (यह)+तना (प्रत्य०)] [स्त्री० इतनी] इस मात्रा का। इस क़दर।
मुहा०–इतने में=इसी बीच में।
इतनो*†–वि० दे० "इतना"।
इतमाम*†–संज्ञा पुं० [अ० इह्‌तिमाम] इंतज़ाम। बंदोबस्त। प्रबंध।
इतमीनान–संज्ञा पुं० [अ०] [वि० इतमीनानी] विश्वास। दिलजमई। संतोष।
इतर–वि० [सं०] १. दूसरा। अपर। और। अन्य। २. नीच। पामर। ३. साधारण। संज्ञा पुं० दे० "अतर"।
इतराजी*–संज्ञा स्त्री० [अ० एतराज़] विरोध। बिगाड़। नाराज़ी।
इतराना–क्रि० अ० [सं० उत्तरण] १. घमंड करना। २. ठसक दिखाना। इठलाना।
इतराहट*–संज्ञा स्त्री० [हिं० इतराना] दर्प। घमंड। गर्व।
इतरेतर–क्रि० वि० [सं०] परस्पर।
इतरेतराभाव–संज्ञा पुं० [सं०] न्यायशास्त्र में एक के गुणों का दूसरे में न होना। अन्योन्याभाव।
इतरेतराश्रय–संज्ञा पुं० [सं०] तर्क में एक प्रकार का दोष जो वहाँ होता है जहाँ एक वस्तु की सिद्धि दूसरी वस्तु की सिद्धि पर निर्भर होती है, और उस दूसरी वस्तु की सिद्धि भी पहली वस्तु की सिद्धि पर निर्भर होती है।
इतरौहाँ*–वि० [हिं० इतराना+औहाँ (प्रत्य०)] जिससे इतराने का भाव प्रकट हो। इतराना सूचित करनेवाला।
इतवार–संज्ञा पुं० [सं० आदित्यवार] शनि और सोमवार के बीच का दिन। रविवार।
इतस्ततः–क्रि० वि० [सं०] इधर उधर।
इताअत–संज्ञा स्त्री० [अ०] आज्ञापालन।
इताति*–संज्ञा स्त्री० दे० "इताअत"।
इति–अव्य० [सं०] समाप्तिसूचक अव्यय। संज्ञा स्त्री० [सं०] समाप्ति। पूर्णता। यौ०–इतिश्री=समाप्ति। अंत।
इतिकर्त्तव्यता–संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी काम के करने की विधि। परिपाटी।
इतिवृत्त–संज्ञा पुं० [सं०] पुरावृत्त। पुरानी कथा। कहानी।
इतिहास–संज्ञा पुं० [सं०] बीती हुई प्रसिद्ध घटनाओं और उनसे संबंध रखनेवाले पुरुषों का काल-क्रम से वर्णन। तवारीख़।
इतेक*–वि० [हिं० इत+एक] इतना।

इतो*–वि० [सं० इयत्=इतना] [स्त्री०इती] इतना। इस मात्रा का।

इत्तफ़ाक़–संज्ञा पुं० [अ०] [वि०इत्तफ़ाक़िया, क्रि० वि० इत्तफ़ाक़न्] १ मेल। मिलाप। एका। सहमति। २ संयोग। मौक़ा। अवसर

मुहा०–इत्तफ़ाक़ पड़ना=संयोग उपस्थित होना। मौक़ा पड़ना। इत्तफ़ाक़ से=संयोग-वश।

इत्तला–संज्ञा स्त्री० [अ० इत्तलाअ] सूचना। खबर।

यौ०–इत्तलानामा=सूचनापत्र।

इत्ता, इत्तो*–वि० दे० "इतो"।

इत्थं–क्रि० वि० [सं०] ऐसे। यों।

इत्थंभूत–वि० [सं०] ऐसा।

इत्थमेव–वि० [सं०] ऐसा ही।

क्रि० वि० इसी प्रकार से।

इत्यादि–अव्य० [सं०] इसी प्रकार अन्य। इसी तरह और दूसरे। वगैरह। आदि।

इत्यादिक–वि० [सं०] इसी प्रकार के अन्य और। ऐसे ही और दूसरे। वगैरह।

इत्र–संज्ञा पुं० दे० "अतर"।

इत्रीफल–संज्ञा पुं० [सं० त्रिफला] शहद में बनाया हुआ त्रिफला का अवलेह।

इदम्–सर्व० [सं०] यह।

इदमित्थ–पद० [सं०] ऐसा ही है। ठीक है।

इधर–क्रि० वि० [सं० इतर] इस ओर। यहाँ। इस तरफ़।

मुहा०–इधर-उधर–१ यहाँ वहाँ। इतस्तत २ आस पास। इनारे किनारे। ३ चारों ओर। सब ओर। इधर उधर करना=१ टाल मटूल करना। हीला-हवाला करना। २ उलट पुलट करना। क्रम भंग करना। ३ तितर बितर करना। ४ हटाना। भिन्न भिन्न स्थानों पर कर देना। इधर उधर की बात=१ अफ़वाह। सुनी सुनाई बात। २ बेठिकाने की बात। असंबद्ध बात। इधर की उधर करना या लगाना=चुगलखोरी करना। झगड़ा लगाना। इधर की दुनिया उधर होना=अनहोनी बात का होना। इधर उधर में रहना=व्यर्थ समय खोना। इधर उधर होना=१ उलट पुलट होना। बिगड़ना। २ भाग जाना। तितर-बितर होना।

इन–सर्व० [हिं० इस] 'इस' का बहुवचन।

इनकार–संज्ञा पुं० [अ०] अस्वीकार। नामंजूरी। 'इकरार' का उलटा।

इनसान–संज्ञा पुं० [अ०] मनुष्य।

इनसानियत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ मनुष्यत्व। आदमियत। २. बुद्धि। शऊर। ३ भलमनसी। सज्जनता।

इनाम–संज्ञा पुं० [अ० इनआम] पुरस्कार। उपहार। बख़शिश।

यौ०–इनाम इकराम=इनाम जो कृपापूर्वक दिया जाय।

इनायत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ कृपा। दया। अनुग्रह। २ एहसान।

मुहा०–इनायत करना=कृपा करके देना।

इनारा–संज्ञा पुं० दे० "इँदारा"।

इने-गिने–वि० [अनु० इन+हिं० गिनना] कतिपय। कुछ। थोड़े से। चुने चुनाए।

इन्ह*–सर्व० दे० "इन"।

इफरात–संज्ञा स्त्री० [अ०] अधिकता।

इबरानी–वि० [अ०] यहूदी।

संज्ञा स्त्री० फ़िलिस्तीन देश की प्राचीन भाषा।

इबादत–संज्ञा स्त्री० [अ०] पूजा। अर्चा।

इबारत–संज्ञा स्त्री [अ०] [वि० इबारती] १ लेख। २ लेख-शैली।

इमरती–संज्ञा स्त्री० [सं० अमृत] एक प्रकार की मिठाई।

इमली–संज्ञा स्त्री० [सं० अम्ल+हिं० ई (प्रत्य०)] १ एक बड़ा पेड़ जिसकी गूददार लंबी फलियाँ खटाई की तरह खाई जाती हैं। २ इस पेड़ का फल।

इमाम–संज्ञा पुं० [अ०] १ अगुआ। २ मुसलमानों के धार्मिक कृत्य करानेवाला मनुष्य। ३ अली के बेटों की उपाधि।

इमामदस्ता–संज्ञा पुं० [फ़ा० हावन+दस्ता] लोहे या पीतल का खल और बट्टा।

इमामबाड़ा–संज्ञा पुं० [अ० इमाम+हिं० बाड़ा] वह हाता जिसमें शीया मुसलमान ताजिया रखते और उसे दफ़न करते हैं।

इमारत–संज्ञा स्त्री० [अ०] बड़ा और पक्का मकान। भवन।
इमि*–क्रि० वि० [सं० एवम्] इस प्रकार।
इम्तहान–संज्ञा पुं० [अ०] परीक्षा। जाँच।
इयत्ता–संज्ञा स्त्री० [सं०] सीमा। हद।
इरषा*–संज्ञा स्त्री० दे० "ईर्ष्या"।
इरा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कश्यप की वह स्त्री जिससे वृहस्पति और उद्भिज उत्पन्न हुए थे। २. भूमि। पृथ्वी। ३. वाणी।
इराकी–वि० [अ०] अरब के इराक़ प्रदेश का।
संज्ञा पुं० घोड़ों की एक जाति।
इरादा–संज्ञा पुं० [अ०] विचार। संकल्प।
इर्द गिर्द–क्रि० वि० [अनु० इर्द + फा० गिर्द] १. चारों ओर। २. आस पास।
इर्षना*–संज्ञा स्त्री० [सं० एषणा] प्रबल इच्छा।
इलजाम–संज्ञा पुं० [अ०] १. दोष। अपराध। २. अभियोग। दोषारोपण।
इलहाम–संज्ञा पुं० [अ०] ईश्वर का शब्द। देववाणी।
इला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पृथ्वी। २. पार्वती। ३. सरस्वती। वाणी। ४. गो।
इलाक़ा–संज्ञा पुं० [अ०] १. संबंध। लगाव। २. कई मौज़ों की ज़मींदारी।
इलाज–संज्ञा पुं० [अ०] १. दवा। औषध। २. चिकित्सा। ३. उपाय। युक्ति।
इलाम*–संज्ञा पुं० [अ० ऐलान] १. इत्तलानामा। २. हुक्म। आज्ञा।
इलायची–संज्ञा स्त्री० [सं० एला + ची (फा० प्रत्य० 'च')] एक सदाबहार पेड़ जिसके फल के बीजों में बड़ी तीक्ष्ण सुगंध होती है। बीज मसाले में भी पड़ते हैं और मुख सुगंधित करने के लिये खाए भी जाते हैं।
इलायचीदाना–संज्ञा पुं० [सं० एला + फा० दाना] १. इलायची का बीज। २. चीनी में पागा हुआ इलायची या पोस्ते का दाना।
इलावर्स*–संज्ञा पुं० दे० "इलावृत"।
इलावृत–संज्ञा पुं० [सं०] जंबूद्वीप के नौ खंडों में से एक।
इलाही–संज्ञा पुं० [अ०] ईश्वर। खुदा। वि० दैवी। ईश्वरीय।
इलाही गज–संज्ञा पुं० [अ०] अकबर का चलाया हुआ एक प्रकार का गज जो ४१ अंगुल (३३¾ इंच) का होता है और इमारत आदि में नापने के काम में आता है।
इल्जाम–संज्ञा पुं० [अ०] आरोप। दोषारोपण।
इल्तिजा–संज्ञा स्त्री० [अ०] निवेदन।
इल्म–संज्ञा पुं० [सं०] विद्या। ज्ञान।
इल्लत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. रोग। बीमारी २. झंझट। बखेड़ा। ३. दोष। अपराध।
इल्ला–संज्ञा पुं० [सं० कील] छोटी कड़ी फुंसी जो चमड़े के ऊपर निकलती है।
इल्ली–संज्ञा स्त्री० [देश०] चींटी के बच्चों का वह रूप जो अंडे से निकलते ही होता है।
इव–अव्य० [सं०] उपमावाचक शब्द। समान। नाईं। तरह।
इशारा–संज्ञा पुं० [अ०] १. सैन। संकेत। २. संक्षिप्त कथन। ३. बारीक सहारा। ४. गुप्त प्रेरणा।
इश्क़–संज्ञा पुं० [अ०] [वि० आशिक़, माशूक़] मुहब्बत। चाह। प्रेम।
इश्तहार–संज्ञा पुं० [अ०] विज्ञापन।
इश्तियालक–संज्ञा स्त्री० [अ०] बढ़ावा। उत्तेजना।
इषण*–संज्ञा स्त्री० दे० "एषणा"।
इष्ट–वि० [सं०] १. अभिलषित। चाहा हुआ। वांछित। २. पूजित।
संज्ञा पुं० १. अग्निहोत्रादि शुभ कर्म्म। २. इष्टदेव। कुलदेव। ३. अधिकार। देवता की छाया या कृपा। ४. मित्र।
इष्टका–संज्ञा स्त्री० [सं०] ईंट।
इष्टता–संज्ञा स्त्री० [सं०] इष्ट का भाव।
इष्टदेव, इष्टदेवता–संज्ञा पुं० [सं०] आराध्य देव। पूज्य देवता।
इष्टापत्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] वादी के कथन में दिखाई हुई ऐसी आपत्ति जिसे वादी स्वीकृत कर ले।

इष्टि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. इच्छा। अभिलाषा। २ यज्ञ।

इस–सर्व० [सं० एत.] 'यह' शब्द का विभक्ति के पहले आदिष्ट रूप। जैसे, इसको।

इसफंज–संज्ञा पुं० [अ० स्पंज] समुद्र में एक प्रकार के अत्यंत छोटे कीड़ों के योग से बना हुआ मुलायम रूई की तरह का सजीव पिंड जो पानी खूब सोखता है। मुर्दा बादल।

इसपात–संज्ञा पुं० [सं० अयस्पत्र, अथवा पुर्त० स्पेडा] एक प्रकार का कड़ा लोहा।

इसबगोल–संज्ञा पुं० [फा०] फारस की एक झाड़ी या पौधा जिसके गोल बीज हकीमी दवा में काम आते हैं।

इसलाम–संज्ञा पुं० [अ०] [वि० इसलामिया] मुसलमानी धर्म।

इसलाह–संज्ञा स्त्री० [अ०] संशोधन।

इसारत*–संज्ञा स्त्री० [अ० इशारा] संकेत। इशारा।

इसे–सर्व० [सं० एत.] 'यह' का कर्मकारक और संप्रदानकारक का रूप।

इस्तमरारी–वि० [अ०] सब दिन रहनेवाला। नित्य। अविच्छिन्न।

यौ०—इस्तमरारी बंदोबस्त=ज़मीन का वह बंदोबस्त जिसमें मालगुज़ारी सदा के लिये मुकर्रर कर दी जाती है।

इस्तिंजा–संज्ञा पुं० [अ०] पेशाब करने के बाद मिट्टी के ढेले से इंद्रिय की शुद्धि।

इस्तिरी–संज्ञा स्त्री० [सं० स्तरी = तह करनेवाली] कपड़े की तह बैठाने का धोबियों या दरज़ियों का औज़ार।

इस्तीफा–संज्ञा पुं० [अ० इस्तेफा] नौकरी छोड़ने की दरख्वास्त। त्यागपत्र।

इस्तेमाल–संज्ञा पुं० [अ०] प्रयोग। उपयोग।

इह–क्रि० वि० [सं०] इस जगह। इस लोक में। इस काल में। यहाँ।

इहाँ–क्रि० वि० दे० "यहाँ"।

ई

ई–हिंदी-वर्णमाला का चौथा अक्षर और 'इ' का दीर्घ रूप जिसके उच्चारण का स्थान तालु है।

ईंगुर–संज्ञा पुं० [सं० हिंगुल प्रा० इंगुल] गंधक और पारे से घटित एक खनिज पदार्थ जिसकी ललाई बहुत चटकीली और सुंदर होती है। सिंगरफ।

ईंचना–क्रि० स० दे० "खींचना"।

ईंट–संज्ञा स्त्री० [सं० इष्टका] १ साँचे में ढाला हुआ मिट्टी का चौखूँटा लंबा टुकड़ा जिसे जोड़कर दीवार उठाई जाती है।

मुहा०—ईंट से ईंट बजना = किसी नगर या घर का ढह जाना या ध्वस्त होना। ईंट से ईंट बजाना = किसी नगर या घर को ढाना या ध्वस्त करना। ईंट चुनना = दीवार उठाने के लिये ईंट पर ईंट बैठाना। जोड़ाई करना। डेढ़ या ढाई ईंट की मसजिद अलग बनाना = जो सब लोग कहते या करते हो, उसके विरुद्ध कहना या करना। ईंट पत्थर = कुछ नहीं।

२ धातु का चौखूँटा ढला हुआ टुकड़ा। ३ ताश का एक रंग।

ईंटा–संज्ञा पुं० दे० "ईंट"।

ईंडरी–संज्ञा स्त्री० [सं० कुंडली] कपड़े की कुंडलाकार गद्दी जिसे भरा घड़ा या बोझ उठाने समय सिर पर रख लेते हैं। गेंडुर

ईंधन–संज्ञा पुं० [सं० इंधन] जलाने लकड़ी या कंडा। जलावन। जरनी।

ई–संज्ञा स्त्री० [सं०] लक्ष्मी।

*सर्व० [सं० ई = निकट का संकेत] यह

अव्य० [सं० हि] जोर देने का शब्द। ही

ईक्षण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० ईक्षणी ईक्षित, ईक्ष्य] १. दर्शन। देखना। २ आँख ३ विवेचन। विचार। जाँच।

ईख–संज्ञा स्त्री० [सं० इक्षु] शर जाति की एक घास जिसके डंठल में मीठा रस भरा रहता है। इसी रस से गुड़ और चीनी बनती है। गन्ना। ऊख।

ईखना*–क्रि० स० [सं० ईक्षण] देखना

ईछन*–संज्ञा पुं० [सं० ईक्षण] आँख।
ईछना*–क्रि० स० [सं० इच्छा] इच्छा करना। चाहना।
ईछा*–संज्ञा स्त्री० "इच्छा"।
ईजाद–संज्ञा स्त्री० [अ०] किसी नई चीज का बनाना। नया निर्माण। आविष्कार।
ईठ*–संज्ञा पुं० [सं० इष्ट] मित्र। सखा।
ईठना*–क्रि० स० [सं० इष्ट] इच्छा करना।
ईठि–संज्ञा स्त्री० [सं० इष्टि, प्रा० इट्ठि] १. मित्रता। दोस्ती। प्रीति। २. चेष्टा। यत्न।
ईढ़*–संज्ञा स्त्री० [सं० इष्ट प्रा० इट्ठ] [वि० ईढ़ी] ज़िद। हठ।
ईतर*–वि० [हिं० इतराना] १. इतरानेवाला। ढीठ। शोख। गुस्ताख।
वि० [सं० इतर] निम्न श्रेणी का।
ईति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. खेती को हानि पहुँचानेवाले उपद्रव जो छः प्रकार के हैं– (क) अतिवृष्टि। (ख) अनावृष्टि। (ग) टिड्डी पड़ना। (घ) चूहे लगना। (च) पक्षियों की अधिकता। (छ) दूसरे राजा की चढ़ाई। २. बाधा। ३. पीड़ा। दुःख।
ईथर–संज्ञा पुं० [अं०] १. एक प्रकार का अति सूक्ष्म और लचीला द्रव्य या पदार्थ जो समस्त शून्य स्थल में व्याप्त है। आकाशद्रव्य। २. एक रासायनिक द्रव पदार्थ जो अलकोहल और गंधक के तेजाब से बनता है।
ईद–संज्ञा स्त्री० [अ०] मुसलमानों का एक त्योहार जो रोजा खतम होने पर होता है।
यौ०–ईदगाह = वह स्थान जहाँ मुसलमान ईद के दिन इकट्ठे होकर नमाज पढ़ते हैं।
ईदृश–क्रि० वि० [सं०] [स्त्री० ईदृशी] इस प्रकार। इस तरह। ऐसे।
वि० इस प्रकार का। ऐसा।
ईप्सा–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० ईप्सित, ईप्सु] इच्छा। वांछा। अभिलाषा।
ईप्सित–वि० [सं०] चाहा हुआ। अभिलषित।
ईबी सीबी–संज्ञा स्त्री० [अनु०] सिसकारी का शब्द 'सी सी' का शब्द जो आनंद या पीड़ा के समय मुँह से निकलता है।
ईमान–संज्ञा पुं० [अ०] १. धर्म-विश्वास। आस्तिक्य बुद्धि। २. चित्त की सद्वृत्ति। अच्छी नीयत। ३. धर्म। ४. सत्य।
ईमानदार–वि० [फ़ा०] १. विश्वास रखनेवाला। २. विश्वासपात्र। ३. सच्चा। ४. दियानतदार। जो लेन-देन या व्यवहार में सच्चा हो। ५. सत्य का पक्षपाती।
ईरखा*–संज्ञा स्त्री० दे० "ईर्षा"।
ईरान–संज्ञा पुं० [फ़ा०] [वि० ईरानी] फ़ारस देश।
ईर्षणा*–संज्ञा स्त्री० [सं० ईर्ष्यण] ईर्षा। डाह।
ईर्षा–संज्ञा स्त्री० [सं० ईर्ष्या] [वि० ईर्षालु, ईर्षित, ईर्षु] दूसरे का उत्कर्ष न सहन होने की वृत्ति। डाह। हसद।
ईर्षालु–वि० [सं०] ईर्षा करनेवाला। दूसरे की बढ़ती देखकर जलनेवाला।
ईर्ष्या–संज्ञा स्त्री० दे० "ईर्षा"।
ईश–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० ईशा, ईशी] १. स्वामी। मालिक। २. राजा। ३. ईश्वर। परमेश्वर। ४. महादेव। शिव। रुद्र। ५. ग्यारह की संख्या। ६. आर्द्रा नक्षत्र। ७. एक उपनिषद्। ८. पारा।
ईशता–संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वामित्व। प्रभुत्व।
ईशान–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० ईशानी] १. स्वामी। अधिपति। २. शिव। महादेव। रुद्र। ३. ग्यारह की संख्या। ४. ग्यारह रुद्रों में से एक। ५. पूरब और उत्तर के बीच का कोना।
ईशिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक जिससे साधक सब पर शासन कर सकता है।
ईशित्व–संज्ञा पुं० दे० "ईशिता"।
ईश्वर–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० ईश्वरी] १. मालिक। स्वामी। २. क्लेश, कर्म, विपाक और आशय से पृथक् पुरुष-विशेष। परमेश्वर। भगवान्। ३. महादेव। शिव।
ईश्वरप्रणिधान–संज्ञा पुं० [सं०] योगशास्त्र के पाँच नियमों में से अंतिम। ईश्वर में अत्यंत श्रद्धा और भक्ति रखना।

ईश्वरीय-वि० [सं०] १. ईश्वर-संबंधी। २ ईश्वर का।
ईषत्-वि० [सं०] थोडा। कुछ। कम।
ईषत्स्पृष्ट-संज्ञा पु० [सं०] वर्ण के उच्चारण मे एक प्रकार का आभ्यतर प्रयत्न जिसमे जिह्वा तालु, मूर्द्धा और दत को तथा दांत ओष्ठ को कम स्पर्श करता है। ('य', 'र', 'ल', 'व' ईषत्स्पृष्ट वर्ण है।
ईषद्-वि० दे० "ईषत्"।
ईषना*-संज्ञा स्त्री० [सं० एषणा] प्रबल इच्छा।
ईस*-संज्ञा पु० दे० "ईश"।
ईसन* संज्ञा पु० [सं० ईशान] ईशान कोण।
ईसर*-संज्ञा पु० [सं० ऐश्वर्य] ऐश्वर्य।
ईसरगोल-संज्ञा पु० दे० "इसबगोल"।
ईसवी-वि० [फा०] ईसा से सबध रखनेवाला।
यौ०—ईसवी सन् ईसा मसीह के जन्मकाल से चला हुआ सवत्।
ईसा-संज्ञा पु० [अ०] ईसाई धर्म के प्रवर्तक। ईसा मसीह।
ईसाई-वि० [फा०] ईसा को माननेवाला। ईसा के बनाए धर्म पर चलनेवाला।
ईहा-संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० ईहित] १ चेष्टा। उद्योग। २ इच्छा। ३ लोभ।
ईहामृग-संज्ञा पु० [सं०] रूपक का एक भद जिसमे चार अक होते है।

उ

उ-हिंदी वर्णमाला का पांचवां अक्षर जिसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ है।
उँ-अव्य० एक प्राय अव्यक्त शब्द जो प्रश्न, अवज्ञा या क्रोध सूचित करने के लिये व्यवहृत होता है।
उगल-संज्ञा स्त्री० दे० "अगुल"।
उँगली-संज्ञा स्त्री० [सं० अगुलि] हथेली के छोरो से निकले हुए फलियों के आकार के पाँच अवयव जो मिलकर वस्तुओ को ग्रहण करते है और जिनके छोरों पर स्पर्श-ज्ञान की शक्ति अधिक होती है।
मुहा०-(किसी की ओर) उँगली उठना = (किसी का) लोगों की निंदा का लक्ष्य होना। निंदा होना। बदनामी होना। (किसी की ओर) उँगली उठाना = १ निंदा का लक्ष्य बनाना। लांछित करना। दोषी बताना। २ तनिक भी हानि पहुँचाना। टेढ़ी नजर से देखना। उँगली पकडते पहुँचा पकडना = थोडा सा सहारा पाकर विशेष की प्राप्ति के लिये उत्साहित होना। उँगलियो पर नचाना = १ जैसा चाहे वैसा कराना। २ अपनी इच्छा के अनुसार ले चलना। कानी उँगली-कनिष्ठिका या सबसे छोटी उँगली। कानो में उँगली देना = किसी बात से विरक्त या उदासीन होकर उसकी चर्चा बचाना। पाँचो उँगलियाँ घी मे होना= सब प्रकार से लाभ ही लाभ होना।
उँचाई-संज्ञा स्त्री० दे० "ऊँच", "ओंचाई"।
उचन-संज्ञा स्त्री० [सं० उद + चन = ऊपर खींचना या उठाना] अदवायन। अदवान।
उचना-क्रि० स० [सं० उदञ्चन] अदवान तानना। उचन कसना। अदवान खीचना।
उँचाना*-क्रि० स० [हिं० ऊँची] ऊँचा करना। उठाना।
उँचाव*†-संज्ञा पु० [सं० उच्च] ऊँचाई।
उँचास*†-संज्ञा पु० दे० "ऊँचाई"।
उछ-संज्ञा स्त्री० [सं०] मालिक के ले जाने के पीछे खेत मे पड़े हुए अन्न के एक एक दाने का जीविका के लिये चुनने का काम। सीला बीनना।
उछवृत्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] खेत में गिरे

हुए दानों को चुनकर जीवन-निर्वाह करने का कर्म।

उँदुर-संज्ञा पुं० [सं०] चूहा। मूसा।

उँह-अव्य० [अनु०] १. अस्वीकार, घृणा या बे-परवाही का सूचक शब्द। २. वेदना-सूचक शब्द। कराहने का शब्द।

उ-संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्रह्मा। २. नर। *अव्य० भी।

उअना*-क्रि० अ० दे० "उगना"।

उआना*-क्रि० स० दे० "उगाना"।

*†क्रि० स० [सं० उद्गुरण] किसी के मारने के लिये हाथ या हथियार तानना।

उऋण-वि० [सं० उत् + ऋण] ऋणमुक्त। जिसका ऋण से उद्धार हो गया हो।

उकचना*-क्रि० अ० [सं० उत्कर्ष] १. उखड़ना। अलग होना। २. पर्त से अलग होना। उचड़ना। ३. उठ भागना।

उकटना-क्रि० स० दे० "उघटना"।

उकटा-वि० [हिं० उकटना] [स्त्री० उकटी] उकटनेवाला। एहसान जतानेवाला।

संज्ञा पुं० किसी के किए हुए अपराध या अपने उपकार को बार बार जताने का कार्य्य।

यौ०—उकटा पुरान = गई बीती और दबी दबाई बातों का विस्तारपूर्वक कथन।

उकठना-क्रि०अ०[सं०अव = बुरा + काष्ठ] सूखना। सूखकर कड़ा होना।

उकठा-वि० [हिं० उकठना] शुष्क। सूखा।

उकड़ूँ-संज्ञा पुं० [सं० उत्कुतोरु] घुटने मोड़कर बैठने की एक मुद्रा जिसमें दोनों तलवे जमीन पर पूरे बैठते हैं और चूतड़ एँड़ियों से लगे रहते हैं।

उकताना-क्रि० अ० [सं० आकुल] १. ऊबना। २. जल्दी मचाना।

उकति*-संज्ञा स्त्री० दे० "उक्ति"।

उकलना-क्रि०अ०[सं० उत्कलन = खुलना] १. तह से अलग होना। उचड़ना। २. लिपटी हुई चीज का खुलना। उधड़ना।

उकलाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० उगलना] कै। उलटी। वमन। मचली।

उकलाना-क्रि० अ० [हिं० उकलाई] उलटी करना। वमन करना। कै करना।

उकवथ-संज्ञा पुं० [सं० उत्कोथ] एक प्रकार का चर्म्म-रोग जिसमें दाने निकलते हैं, खाज होती है और चेप बहता है।

उकसना-क्रि०अ० [सं० उत्कर्षण या उत्सुक] १. उभरना। ऊपर को उठना। २. निकलना। अंकुरित होना। ३. उघड़ना।

उकसनि*-संज्ञा स्त्री० [हिं० उकसना] उठने की क्रिया या भाव। उभाड़।

उकसाना-क्रि० स० [हिं० 'उकसना' का प्रे० रूप] १. ऊपर को उठाना। २. उभाड़ना। उत्तेजित करना। ३. उठा देना। हटा देना। ४. (दिए की बत्ती) बढ़ाना या खसकाना।

उकसौंहाँ-वि० [हिं० उकसना + औहाँ (प्रत्य०)] [स्त्री०उकसौंही] उभड़ता हुआ।

उकाब-संज्ञा पुं० [अ०] बड़ी जाति का एक गिद्ध। गरुड़।

उकालना*-क्रि० स० दे० "उकेलना"।

उकासना*-क्रि० स० [हिं० उकसाना] १. उभाड़ना। २. खोदकर ऊपर फेंकना। ३. उघारना। खोलना।

उकुति*-संज्ञा स्त्री० दे० "उक्ति"।

उकुसना*-क्रि० स० [हिं० उकसना] उजाड़ना। उधेड़ना।

उकेलना-क्रि० स० [हिं० उकलना] १. तह या पर्त से अलग करना। उचाड़ना। २. लिपटी हुई चीज को छुड़ाना या अलग करना। उधेड़ना।

उकौना-संज्ञा पुं० [हिं० ओकाई] गर्भवती की भिन्न-भिन्न वस्तुओं की इच्छा। दोहद।

उक्त-वि० [सं०] कथित। कहा हुआ।

उक्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कथन। वचन। २. अनोखा वाक्य। चमत्कारपूर्ण कथन।

उखड़ना-क्रि० अ० [सं० उत्खिदन या उत्कर्षण] १. किसी जमी या गड़ी हुई वस्तु का अपने स्थान से अलग हो जाना। जड़-सहित अलग होना। खुदना। "जमना"

का उलटा। २ किसी दृढ़ स्थिति से अलग होना। जमा या सटा न रहना। ३. जोड़ से हट जाना। ४ (घोड़े के वास्ते) चाल में भेद पड़ना। गति सम न रहना। ५ संगीत में बेताल और बेसुर होना। ६ एकत्र या जमा न रहना। तितर-बितर हो जाना। ७ हटना। अलग होना। ८ टूट जाना।

मुहा०—उखड़ी उखड़ी बातें करना = उदासीनता दिखाते हुए बात करना। विरक्ति सूचक बात करना। पैर या पाँव उखड़ना = ठहर न सकना। एक स्थान पर जमा न रहना। लड़ने के लिये सामने न खड़ा रहना।

उखड़वाना—क्रि० स० [हिं० उखड़ना का प्रे० रूप] किसी को उखाड़ने में प्रवृत्त करना।

उखम*—संज्ञा पुं० [सं० ऊष्म] गरमी।

उखमज*†—संज्ञा पुं० दे० "ऊमज"।

उखरना†*—क्रि० अ० दे० "उखड़ना"।

उखली—संज्ञा स्त्री० [सं० उलूखल] पत्थर या लकड़ी का एक पात्र जिसमें डालकर भूसीवाले अनाजों की भूसी मूसलों से कूटकर अलग की जाती है। काँड़ी।

उखा*—संज्ञा स्त्री० दे० "उषा"।

उखाड़—संज्ञा पुं० [हिं० उखाड़ना] १ उखाड़ने की क्रिया। उत्पाटन। २ वह युक्ति जिससे कोई पेच रद्द किया जाता है। तोड़।

उखाड़ना—क्रि० स० [हिं० उखड़ना का स० रूप] १ किसी जमी, गड़ी या बैठी हुई वस्तु को स्थान से पृथक् करना। जमा न रहने देना। २ अंग को जोड़ से अलग करना। ३ भड़काना। बिचकाना। ४ तितर-बितर कर देना। ५ हटाना। टालना। ६ नष्ट करना। ध्वस्त करना।

मुहा०—गड़े मुर्दे उखाड़ना = पुरानी बातों को फिर से छेड़ना। गई बीती बात उभाड़ना। पैर उखाड़ देना = स्थान से विचलित करना। हटाना। भगाना।

उखारना*†—क्रि० स० दे० "उखाड़ना"।

उखारी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० ऊख] ईख का खेत।

उखेलना*—क्रि० स० [सं० उल्लेखन] उरेहना। लिखना। खींचना। (तसवीर)

उगटना*—क्रि० अ० [सं० उद्घाटन या उद्घट्टन] १ उघटना। बार बार कहना। २ ताना मारना। बोली बोलना।

उगना—क्रि० अ० [सं० उद्गमन] १ निकलना। उदय होना। प्रकट होना। (सूर्य-चंद्र आदि ग्रह) २ जमना। अंकुरित होना। ३ उपजना। उत्पन्न होना।

उगरना*—क्रि० अ० [सं० उद्गरण] १ भरा हुआ पानी आदि निकलना। २ भरा हुआ पानी आदि निकल जाने से खाली होना।

उगलना—क्रि० स० [सं० उद्गिलन, पा० उग्गिलन] १ पेट में गई हुई वस्तु को मुँह से बाहर निकालना। कै करना। २ मुँह में गई हुई वस्तु को बाहर थूक देना। ३ पचाया माल विवश होकर वापस करना। ४ जो बात छिपाने के लिये कही जाय, उसे प्रकट कर देना।

मुहा०—उगल पड़ना = तलवार का म्यान से बाहर निकल पड़ना। बाहर निकलना। ज़हर उगलना = ऐसी बात मुँह से निकालना जो दूसरे को बहुत बुरी लगे या हानि पहुँचावे।

उगलवाना—क्रि० स० दे० "उगलाना"।

उगलाना—क्रि० स० [हिं० उगलना का प्रे० रूप] १ मुख से निकलवाना। २ इकबाल कराना। दोष को स्वीकार कराना। ३ पचे हुए माल को निकलवाना।

उगवना*—क्रि० स० दे० 'उगाना'।

उगसाना*—क्रि० स० दे० "उकसाना"।

उगसारना*—क्रि० स० [हिं० उकसाना] बयान करना। कहना। प्रकट करना।

उगाना—क्रि० स० [हिं० उगना का स० रूप] १ जमाना। अंकुरित करना। उत्पन्न करना। (पौधा या अन्न आदि) २ उदय करना। प्रकट करना।

उगार, उगाल*—संज्ञा पुं० [सं० उद्गार, पा० उग्गाल] पीक। थूक। खखार।

उगालदान—संज्ञा पुं० [हिं० उगाल + फा० दान]

(प्रत्य०)] थूकने या खखार आदि गिराने का बरतन। पीकदान।

उगाहना–क्रि० स० [सं० उद्ग्रहण] वसूल करना। नियमानुसार अलग अलग अन्न, धन आदि लेकर इकट्ठा करना।

उगाही–संज्ञा स्त्री० [हिं० उगाहना] १. रुपया-पैसा वसूल करने का काम। वसूली। २. वसूल किया हुआ रुपया-पैसा।

उगिलना*†–क्रि० स० दे० "उगलना"।

उग्गाहा–संज्ञा स्त्री० [सं० उद्गाथा, प्रा० उग्गाहा] आर्य्या छंद के भेदों में से एक।

उग्र–वि० [सं०] प्रचंड। उत्कट। तेज।
संज्ञा पुं० १. महादेव। २. वत्सनाग विष। बच्छनाग जहर। ३. क्षत्रिय पिता और शूद्रा माता से उत्पन्न एक संकर जाति। ४. केरल देश। ५. सूर्य्य।

उग्रता–संज्ञा स्त्री० [सं०] तेजी। प्रचंडता।

उघटना–क्रि० अ० [सं० उत्कथन] १. ताल देना। सम पर तान तोड़ना। २. दबी दबाई बात को उभाड़ना। ३. कभी के किए हुए अपने उपकार या दूसरे के अपराध को बार बार कहकर ताना देना। ४. किसी को भला बुरा कहते कहते उसके बाप-दादे को भी भला बुरा कहने लगना।

उघटा–वि० [हिं० उघटना] किए हुए उपकार को बार बार कहनेवाला। एहसान जतानेवाला। उघटनेवाला।
संज्ञा पुं० [सं०] उघटने का कार्य्य।

उघड़ना–क्रि० अ० [सं० उद्घाटन] १. खुलना। आवरण का हटना। २. खुलना। आवरणरहित होना। ३. नंगा होना। ४. प्रकट होना। प्रकाशित होना। ५. भंडा फूटना।

उघरना*†–क्रि० अ० दे० "उघड़ना"।

उघरारा*†–वि० [हिं० उघरना] [स्त्री० उघरारी] खुला हुआ।

उघाड़ना*–क्रि० स० [हिं० उघड़ना का स० रूप] १. खोलना। आवरण का हटाना। (आवरण के संबंध में) २. खोलना। आवरण-रहित करना। (आवृत के संबंध में)। ३. नंगा करना। ४. प्रकट करना। प्रकाशित करना। ५. गुप्त बात को खोलना। भंडा फोड़ना।

उघारना*–क्रि० स० दे० "उघाड़ना"।

उघेलना*–क्रि० स० [हिं० उघारना] खोलना।

उचकन–संज्ञा पुं० [सं० उच्च + करण] ईंट-पत्थर आदि का वह टुकड़ा जिसे नीचे देकर किसी चीज की एक ओर ऊँचा करते हैं।

उचकना–क्रि० अ० [सं० उच्च = ऊँचा + करण करना] १. ऊँचा होने के लिये पैर के पंजों के बल एँड़ी उठाकर खड़ा होना। २. उछलना। कूदना।
क्रि० स० उछलकर लेना। लपककर छीनना।

उचका*–क्रि० वि० [हिं० अचाका] अचानक। सहसा।

उचकाना–क्रि० स० [हिं० उचकना का स० रूप] उठाना। ऊपर करना।

उचक्का–संज्ञा पुं० [हिं० उचकना] [स्त्री० उचक्की] १. उचककर चीज ले भागनेवाला आदमी। चाई। ठग। २. बदमाश।

उचटना–क्रि० अ० [सं० उच्चाटन] १. जमी हुई वस्तु का उखड़ना। उचड़ना। चिपका या जमा न रहना। २. अलग होना। पृथक् होना। छूटना। ३. भड़कना। बिचकना। ४. विरक्त होना।

उचटाना*–क्रि० स० [सं० उच्चाटन] १. उचाड़ना। नोचना। २. अलग करना। छुड़ाना। ३. उदासीन करना। विरक्त करना। ४. भड़काना। बिचकाना।

उचड़ना–क्रि० अ० [सं० उच्चाटन] १. सटी या लगी हुई चीज का अलग होना। पृथक् होना। २. किसी स्थान से हटना या अलग होना। जाना। भागना।

उचना*–क्रि० अ० [सं० उच्च] १. ऊँचा होना। ऊपर उठना। उचकना। २. उठना।
क्रि० स० ऊँचा करना। उठाना।

उचनि*–संज्ञा स्त्री० [सं० उच्च] उभाड़।

उचरंग†–संज्ञा पुं० [हिं० उछलना + अंग] उड़नेवाला। कीड़ा। पतंग। पतिंगा।

उचरना*–क्रि० स० [सं० उच्चारण] उच्चा-

रण करना। बोलना।
क्रि० अ० मुंह से शब्द निकलना।
†*–क्रि० अ० दे० "उचड़ना"।
उचाट–संज्ञा पु० [सं० उच्चाट] मन का न लगना। विरक्ति। उदासीनता।
उचाटन*–संज्ञा पु० दे० "उच्चाटन"।
उचाटना–क्रि० स० [सं० उच्चाटन] उच्चाटन करना। जी हटाना। विरक्त करना।
उचाटी*–संज्ञा स्त्री० [सं०उच्चाट] उदासीनता। अनमनापन। विरक्ति।
उचाड़ना–क्रि० स० [हिं० उचड़ना] १ लगी या सटी हुई चीज को अलग करना। नोचना। २ उखाड़ना।
उचाना*†–क्रि०स०[सं०उच्च+करण] १. ऊँचा करना। ऊपर उठाना। २ उठाना।
उचार*–संज्ञा पु० दे० "उच्चार"।
उचारना*–क्रि०स०[सं० उच्चारण] उच्चारण करना। मुंह से शब्द निकालना।
क्रि० स० दे० "उचाड़ना"।
उचित–वि०[सं०][संज्ञा औचित्य] योग्य। ठीक। मुनासिब। वाजिब।
उचेलना†–क्रि० स० दे० "उकेलना"।
उचौंहाँ*–वि०[हिं०ऊँचा+औंहाँ(प्रत्य०)] [स्त्री० उचौंही] ऊँचा उठा हुआ।
उच्च–वि०[सं०] १ ऊँचा।२ श्रेष्ठ। बड़ा।
उच्चतम–वि० [सं०] सबसे ऊँचा।
उच्चता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ऊँचाई। २ श्रेष्ठता। बड़ाई। ३ उत्तमता।
उच्चरण–संज्ञा पु०[सं०][वि० उच्चरणीय, उच्चरित] कंठ, तालु, जिह्वा आदि से शब्द निकलना। मुंह से शब्द फूटना।
उच्चरना*–क्रि० स०[सं० उच्चारण] उच्चारण करना। बोलना।
उच्चाट–संज्ञा पु० [सं०] १ उखाड़ने या नोचने की क्रिया। २ अनमनापन।
उच्चाटन–संज्ञा [सं०][वि० उच्चाटनीय, उच्चाटित] १ लगी या सटी हुई चीज को अलग करना। विश्लेषण। २ उखाड़ना। उखाड़ना। नोचना। ३ किसी के चित्त को कहीं से हटाना। (तंत्र के छ अभिचारों या प्रयोगों में से एक)। ४ अनमनापन। विरक्ति। उदासीनता।
उच्चार–संज्ञा पु० [सं०] मुंह से शब्द निकालना। बोलना। कथन।
उच्चारण–संज्ञा पु०[सं०][वि०उच्चारणीय, उच्चारित, उच्चार्य, उच्चार्य्यमाण] १.कंठ, ओष्ठ, जिह्वा आदि के प्रयत्न द्वारा मनुष्यों का व्यक्त और विभक्त ध्वनि निकालना। मुंह से स्वर और व्यंजनयुक्त शब्द निकालना।
२. वर्णों या शब्दों को बोलने का ढंग। तलफ्फुज।
उच्चारना*–क्रि०स०[सं०उच्चरण] (शब्द) मुंह से निकालना। बोलना।
उच्चारित–वि० [सं०] जिसका उच्चारण किया गया हो। बोला या कहा हुआ।
उच्चार्य्य–वि० [सं०] उच्चारण के योग्य।
उच्चैःश्रवा–संज्ञा पु०[सं० उच्चैःश्रवस्] खड़े कान और सात मुंह का इंद्र या सूर्य का सफेद घोड़ा जो समुद्र-मथन के समय निकला था।
वि० ऊँचा सुननेवाला। बहरा।
उच्छन्न–वि० [सं०] दबा हुआ। लुप्त।
उच्छलना*–क्रि० अ० दे० "उछलना"।
उच्छव*–संज्ञा पु० दे० "उत्सव"।
उच्छाव*–संज्ञा पु० दे० "उत्साह"।
उच्छाह*–संज्ञा पु० दे० "उछाह"।
उच्छिन्न–वि०[सं०] १ कटा हुआ। खंडित। २ उखाड़ा हुआ। ३ नष्ट।
उच्छिष्ट–वि० [सं०] १ किसी के खाने से बचा हुआ। जूठा। २ दूसरे का बर्ता हुआ।
संज्ञा पु० १ जूठी वस्तु। २ शहद।
उच्छू–संज्ञा स्त्री० [सं० उत्थान, प० उत्थू] एक प्रकार की खाँसी जो गले में पानी इत्यादि के रुकने से आने लगती है। सुरसुरी।
उच्छृङ्खल–वि० [सं०] १ जो शृंखलाबद्ध न हो। क्रमविहीन। अंडबंड। २ निरंकुश। स्वेच्छाचारी। मनमाना काम करनेवाला। ३ उद्दंड। अक्खड़।
उच्छेद, उच्छेदन–संज्ञा पु० [सं०] १. उखाड़-पछाड़। खंडन। २ नाश।

उछ्वसित—वि० [सं०] १. उच्छ्वासयुक्त। २. जिस पर उच्छ्वास का प्रभाव पड़ा हो। ३. विकसित। प्रफुल्लित। ४. जीवित।

उच्छ्वास—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उच्छ्वसित, उच्छ्वासित, उच्छ्वासी] १. ऊपर को खींची हुई साँस। उसास। २. साँस। श्वास। ३. ग्रंथ का विभाग। प्रकरण।

उछंग*—संज्ञा पुं० [सं० उत्संग] १. गोद। क्रोड़। कोरा। २. हृदय। छाती।

उछकना—क्रि० अ० [हिं० छकना] नशा हटना। चेत में आना।

उछरना*†—क्रि० अ० दे० "उछलना"।

उछल-कूद—संज्ञा स्त्री० [हिं० उछलना + कूदना] १. खेल-कूद। २. हलचल। अधीरता।

उछलना—क्रि० अ० [सं० उच्छलन] १. वेग से ऊपर उठना और गिरना। २. झटके के साथ एक बारगी शरीर को क्षण भर के लिये इस प्रकार ऊपर उठा लेना जिसमें पृथ्वी का लगाव छूट जाय। कूदना। ३. अत्यंत प्रसन्न होना। खुशी से फूलना। ४. रेखा या चिह्न का साफ़ दिखाई पड़ना। चिह्न पड़ना। उपटना। उभड़ना। ५. उतराना। तरना।

उछलवाना—क्रि० स० [हिं० उछलना का प्रे० रूप] उछलने में प्रवृत्त करना।

उछलाना—क्रि० स० [हिं० उछालना का प्रे० रूप] उछालने में प्रवृत्त करना।

उछाँटना—क्रि० स० [हिं० उचाटना] उचाटना। उदासीन करना। विरक्त करना। *क्रि० स० [हिं० छाँटना] छाँटना। चुनना।

उछारना*†—क्रि० स० दे० "उछालना"।

उछाल—संज्ञा स्त्री० [सं० उच्छालन] १. सहसा ऊपर उठने की क्रिया। २. फलाँग। चौकड़ी। कुदान। ३. ऊँचाई जहाँ तक कोई वस्तु उछल सकती है। †४. उलटी। कै। वमन। ५. पानी का छींटा।

उछालना—क्रि० स० [सं० उच्छालन] १. ऊपर की ओर फेंकना। उचकाना। २. प्रकट करना। प्रकाशित करना।

उछाह*—संज्ञा पुं० [सं० उत्साह] [वि० उछाही] १. उत्साह। उमंग। हर्ष। २. उत्सव। आनंद की धूम। ३. जैन लोगों की रथ-यात्रा। ४. इच्छा।

उछाला—संज्ञा पुं० [हिं० उछाल] १. जोश। उबाल। २. वमन। कै। उलटी।

उछाही*†—वि० [हिं० उछाह] उत्साह करनेवाला। आनंद मनानेवाला।

उछीनना*—क्रि० स० [सं० उच्छिन्न] उच्छिन्न करना। उखाड़ना। नष्ट करना।

उछीर*—संज्ञा पुं० [हिं० छोर = किनारा] अवकाश। जगह।

उजड़ना—क्रि० अ० [सं० अव—उ = नहीं + जड़ना = जमाना] [वि० उजाड़] १. उखड़ना-पुखड़ना। उच्छिन्न होना। ध्वस्त होना। २. गिर-पड़ जाना। तितर-बितर होना। ३. बरबाद होना। नष्ट होना।

उजड़वाना—क्रि० स० [हिं० उजाड़ना का प्रे० रूप] किसी को उजाड़ने में प्रवृत्त करना।

उजड्ड—वि० [सं० उद्दंड] १. वज्र मूर्ख। अशिष्ट। असभ्य। २. उद्दंड। निरंकुश।

उजड्डपन—संज्ञा पुं० [हिं० उजड्ड + पन (प्रत्य०)] उद्दंडता। अशिष्टता। असभ्यता।

उजबक—संज्ञा पुं० [तु०] तातारियों की एक जाति। वि० उजड्ड। बेवकूफ़। मूर्ख।

उजरत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मज़दूरी। २. किराया। भाड़ा।

उजरना*—क्रि० अ० दे० "उजड़ना"।

उजरा*—वि० दे० "उजला"।

उजराना*—क्रि० स० [सं० उज्ज्वल] उज्ज्वल कराना। साफ़ कराना। क्रि० अ० सफेद या साफ होना।

उजलत—संज्ञा स्त्री० [अ०] जल्दी।

उजलवाना—क्रि० स० [हिं० उजालना का प्रे० रूप] गहने या अस्त्र आदि का साफ़ करवाना।

उजला—वि० [सं० उज्ज्वल] [स्त्री० उजली] १. श्वेत। धौला। सफेद। २. स्वच्छ। साफ। निर्मल। झक।

उजागर—वि० [सं० उद् = ऊपर, अच्छी तरह + जागर = जागना, प्रकाशित होना] [स्त्री०-

उजागरी] १. प्रकाशित। जाज्वल्यमान। जगमगाता हुआ। २. प्रसिद्ध। विख्यात।

उजाड़–संज्ञा पु० [हिं० उजड़ना] १. उजड़ा हुआ स्थान। गिरी पड़ी जगह। २. निर्जन स्थान। वह स्थान जहाँ बस्ती न हो। ३ जंगल। बियाबान।
वि० १. ध्वस्त। उच्छिन्न। गिरा पड़ा। २ जो आबाद न हो। निर्जन।

उजाड़ना–क्रि० स० [हिं० उजड़ना] १ ध्वस्त करना। गिराना पड़ाना। उधेड़ना। २ उच्छिन्न या नष्ट करना।

उजार*–संज्ञा पु० दे० "उजाड़"।

उजारा*–संज्ञा पु० [हिं० उजाला] उजाला। वि० प्रकाशवान्। कांतिमान्।

उजालना–क्रि० स० [सं० उज्ज्वलन] १. गहने या हथियार आदि साफ करना। चमकाना। निखारना। २ प्रकाशित करना। ३ बालना। जलाना।

उजाला–संज्ञा पु० [सं० उज्ज्वल] [स्त्री० उजाली] १. प्रकाश। चाँदना। रोशनी। २. अपने कुल और जाति में श्रेष्ठ व्यक्ति।
वि० [सं० उज्ज्वल] [स्त्री० उजली] प्रकाशवान्। 'अँधेरा' का उलटा।

उजाली–संज्ञा स्त्री० [हिं० उजाला] चाँदनी। चंद्रिका।

उजास–संज्ञा पु० [हिं० उजाला + स (प्रत्य०)] चमक। प्रकाश। उजाला।

उजियर*–वि० दे० "उजला"।

उजियरिया†–संज्ञा स्त्री० दे० "उजाली"।

उजियार*–संज्ञा पु० दे० "उजाला"।

उजियारना–क्रि० स० [हिं० उजियारा] १ प्रकाशित करना। २ जलाना।

उजियारा*–संज्ञा पु० दे० "उजाला"।

उजियाला–संज्ञा पु० दे० "उजाला"।

उजीर*†–संज्ञा पु० दे० "वज़ीर"।

उजेर*–संज्ञा पु० दे० "उजाला"।

उजेला–संज्ञा पु० [सं० उज्ज्वल] प्रकाश। चाँदना। रोशनी।
वि० [सं० उज्ज्वल] प्रकाशवान्।

उज्जर†*–वि० दे० "उज्ज्वल"।

उज्झल–क्रि० वि० [सं० उद्=ऊपर+जल=पानी] बहाव से उलटी ओर। नदी के चढ़ाव की ओर। उजान।
२. *वि० दे० "उज्ज्वल"।

उज्जयिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] मालवा देश की प्राचीन राजधानी जो सिप्रा नदी के तट पर है। (सप्तपुरियों में से एक)

उज्जैन–संज्ञा पु० दे० "उज्जयिनी"।

उज्यारा*–संज्ञा पु० दे० "उजाला"।

उज्र–संज्ञा पु० [अ०] १ बाधा। विरोध। आपत्ति। विरुद्ध वक्तव्य। २ किसी बात के विरुद्ध विनय-पूर्वक कुछ कथन।

उज्रदारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] किसी ऐसे मामले में उज्र पेश करना जिसके विषय में अदालत से किसी ने कोई आज्ञा प्राप्त की हो या प्राप्त करना चाहता हो।

उज्ज्वल–वि० [सं०] [संज्ञा उज्ज्वलता] १ दीप्तिमान्। प्रकाशमान्। २ शुभ्र। स्वच्छ। निर्मल। ३ बेदाग। ४ श्वेत। सफेद।

उज्ज्वलता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कांति। दीप्ति। चमक। २ स्वच्छता। निर्मलता। ३ सफेदी।

उज्ज्वलन–संज्ञा पु० [सं०] [वि० उज्ज्वलित] १ प्रकाश। दीप्ति। २ जलना। ३ स्वच्छ करने का कार्य्य।

उज्ज्वला–संज्ञा स्त्री० [सं०] बारह अक्षरों की एक वृत्ति।

उझकना*–क्रि० अ० [हिं० उचकना] १. उचकना। उछलना। कूदना। २ ऊपर उठना। उभड़ना। उमड़ना। ३ ताकने के लिये ऊँचा होना। देखने के लिये सिर उठाना। ४ चौंकना।

उझरना–क्रि० अ० [सं० उत्सरण, प्रा० उच्छरण] ऊपर की ओर उठना।

उझलना–क्रि० स० [सं० उज्झरण] किसी द्रव पदार्थ को ऊपर से गिराना। ढालना। उँडेलना।
*क्रि० अ० उमड़ना। बढ़ना।

उझाँकना–क्रि० स० दे० "झाँकना"।

उटंगन–संज्ञा पुं० [सं० उट = घास] एक घास जिसका साग खाया जाता है। चौ-पतिया। गुठुवा। सुसना।
उटकना*–क्रि० स० [सं० उत्कलन] अनुमान करना। अटकल लगाना।
उटज–संज्ञा पुं० [सं०] झोपड़ी।
उट्ठी–संज्ञा स्त्री० [देश०] खेल या लाग डाट में बुरी तरह हार मानना।
उठँगन–संज्ञा पुं० [सं० उत्थ + अंग] १. आड़। टेक। २. बैठने में पीठ को सहारा देनेवाली वस्तु।
उठँगना–क्रि० अ० [सं० उत्थ + अंग] १. किसी ऊँची वस्तु का कुछ सहारा लेना। टेक लगाना। २. लेटना। पड़ रहना।
उठँगाना–क्रि० स० [हिं० उठँगना] १. खड़ा करने में किसी वस्तु से लगाना। भिड़ाना। २. (किवाड़) भिड़ाना या बंद करना।
उठना–क्रि०अ०[सं०उत्थान] १. किसी वस्तु का ऐसी स्थिति में होना जिसमें उसका विस्तार पहले की अपेक्षा अधिक ऊँचाई तक पहुँचे। ऊँचा होना। बैठी से खड़ी स्थिति में होना।
मुहा०–उठ जाना=दुनिया से चला जाना। मर जाना। उठती जवानी=युवावस्था का आरंभ। उठते बैठते=प्रत्येक अवस्था में। हर घड़ी। प्रतिक्षण। उठना बैठना=आना-जाना। संग-साथ। २. ऊँचा होना। और ऊँचाई तक चढ़ जाना। जैसे—लहर उठना। ३. ऊपर जाना। ऊपर चढ़ना। आकाश में छाना। ४. कूदना। उछलना। ५. बिस्तर छोड़ना। जागना।* ६. निकलना। उदय होना। ७. उत्पन्न होना। पैदा होना। जैसे—विचार उठना। ८. सहसा आरंभ होना। एकबारगी शुरू होना। जैसे—दर्द उठना। ९. तैयार होना। उद्यत होना। १०. किसी अंक या चिह्न का स्पष्ट होना। उभड़ना। ११. पाँस बनना। खमीर आना। सड़कर उफनाना। १२. किसी दूकान या कार्य्यालय के कार्य्य का समय पूरा होना। १३. किसी दूकान या कारखाने का काम बंद होना। १४. चल पड़ना। प्रस्थान करना। १५. किसी प्रथा का दूर होना। १६. खर्च होना। काम में लगना। जैसे, रुपया उठना। १७. बिकना या भाड़े पर जाना। १८. याद आना। ध्यान पर चढ़ना। १९. किसी वस्तु का क्रमशः जुड़-जुड़कर पूरी ऊँचाई पर पहुँचना। २०. गाय, भैंस या घोड़ी आदि का मस्ताना या अलंग पर आना।
उठल्लू–वि०[हिं०उठना + ल्लू (प्रत्य०)] १. एक स्थान पर न रहनेवाला। आसनकोपी। २. आवारा। बेठिकाने का।
मुहा०–उठल्लू का चूल्हा या उठल्लू चूल्हा = बेकाम इधर उधर फिरनेवाला। निकम्मा।
उठवाना–क्रि० स० [हिं० उठाना क्रिया का प्रे० रूप] उठाने का काम दूसरे से कराना।
उठाईगीर–वि० [हिं०उठाना + फ़ा० गीर] १. आँख बचाकर चीजों को चुरा लेनेवाला। उचक्का। चाई। २. बदमाश। लुच्चा।
उठान–संज्ञा स्त्री० [सं० उत्थान] १. उठना। उठने की क्रिया। २. बाढ़। बढ़ने का ढंग। वृद्धि-क्रम। ३. गति की प्रारंभिक अवस्था। आरंभ। ४. खर्च। व्यय। खपत।
उठाना–क्रि० स० [हिं० उठना का स० रूप] १. बैठी स्थिति से खड़ी स्थिति में करना। जैसे, लेटे हुए प्राणी को बैठाना। २. नीचे से ऊपर ले जाना। ३. धारण करना। ४. कुछ काल तक ऊपर लिये रहना। ५. जगाना। ६. निकालना। उत्पन्न करना। ७. आरंभ करना। शुरू करना। छेड़ना। जैसे–बात उठाना। ८. तैयार करना। उद्यत करना। ९. मकान या दीवार आदि तैयार करना। १०. नियमित समय पर किसी दूकान या कारखाने को बंद करना। ११. किसी प्रथा का बंद करना। १२. खर्च करना। लगाना। १३. भाड़े या किराये पर देना। १४. भोग करना। अनुभव करना। १५. शिरोधार्य करना। मानना। १६. किसी वस्तु को हाथ में लेकर क़सम खाना।
मुहा०—उठा रखना = बाकी रखना। कसर छोड़ना।

उठाव–संज्ञा पुं० दे० "उठान"।
उठौआ–वि० दे० "उठौवा"।
उठौनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० उठाना] १. उठाने की क्रिया। २. उठाने की मजदूरी या पुरस्कार। ३. वह रुपया जो किसी फसल की पैदावार या और किसी वस्तु के लिये पेशगी दिया जाय। अगौहा। दादनी। ४. बनियों या दूकानदारों के साथ उधार या लेन-देन। ५. वह धन जो छोटी जातियों में वर की ओर से कन्या के घर विवाह दृढ़ करने के लिये भेजा जाता है। लगन-धरौआ। ६. वह धन या अन्न जो संकट पड़ने पर किसी देवता की पूजा के उद्देश से अलग रखा जाय। ७ एक रीति जिसमें किसी के मरने के दूसरे या तीसरे दिन बिरादरी के लोग इकट्ठे होकर मृतक के परिवार के लोगों को कुछ रुपया देते हैं और पुरुषों को पगड़ी बाँधते हैं।
उठौवा–वि० [हिं० उठाना] १. जिसका कोई स्थान नियत न हो। जो नियत स्थान पर न रहता हो। २ जो उठाया जाता हो।
उड़ंकू–वि० [हिं० उड़ना + अंकू (प्रत्य०)] १. उड़नेवाला। जो उड़ सके। २ चलने-फिरनेवाला। डोलनेवाला।
उड़*–संज्ञा पुं० दे० "उडु"।
उड़न–संज्ञा स्त्री० [हिं० उड़ना] उड़ने की क्रिया। उड़ान।
उड़नखटोला–संज्ञा पुं० [हिं० उड़ना + खटोला] उड़नेवाला खटोला। विमान।
उड़नछू–वि० [हिं० उड़ना] चपत। गायब।
उड़नझाँई–संज्ञा स्त्री० [हिं० उड़ना + झाँई] चकमा। धुत्ता। बहाली।
उड़नफल–संज्ञा पुं० [हिं० उड़ना + फल] वह फल जिसके खाने से उड़ने की शक्ति उत्पन्न हो।
उड़ना–क्रि० अ० [सं० उड्डयन] १ चिड़ियों का आकाश में या हवा में होकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना। २. आकाश-मार्ग से एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना। ३ हवा में ऊपर उठना। जैसे—गुड्डी उड़ रही है। ४. हवा में फैलना। जैसे—छींटा उड़ना। ५. इधर-उधर हो जाना। छितराना। फैलना। ६. फहराना। फरफराना। जैसे—पताका उड़ना। ७. तेज चलना। भागना। ८. झटके के साथ अलग होना। कटकर दूर जा पड़ना। ९. पृथक् होना। उधड़ना। छितराना। १०. जाता रहना। गायब होना। लापता होना। ११. खर्च होना। १२ किसी भोग्य वस्तु का भोगा जाना। १३. आमोद-प्रमोद की वस्तु का व्यवहार होना। १४. रंग आदि का फीका पड़ना। धीमा पड़ना। १५ किसी पर मार पड़ना। लगना। १६. बातों में बहलाना। भुलावा देना। चकमा देना। १७. घोड़े का चौफाल कूदना। १८ फलाँग मारना। कूदना। (कुश्ती) क्रि० स० फलाँग मारकर किसी वस्तु को लाँघना। कूदकर पार करना।
मुहा०—उड़ चलना = १. तेज दौड़ना। सरपट भागना। २. शोभित होना। फबना। ३ मजेदार होना। स्वादिष्ठ बनना। ४. कुमार्ग स्वीकार करना। बदराह बनना। ५. इतराना। घमंड करना। उड़ती खबर = बाजारू खबर। किंवदंती। उड़कर खाना = १. उड़-उड़कर काटना। २. अप्रिय लगना। बुरा लगना।
उड़प–संज्ञा पुं० [हिं० उड़ना] नृत्य का एक भेद।
संज्ञा पुं० दे० "उडुप"।
उड़व–संज्ञा पुं० [सं० ओडव] रागों की एक जाति। वह राग जिसमें केवल पाँच स्वर लगें और कोई दो स्वर न लगें।
उड़वाना–क्रि० स० [हिं० 'उड़ाना' का प्रे० रूप।] उड़ाने में प्रवृत्त करना।
उड़सना–क्रि० अ० [उप० उ + डासन = बिछौना] १. बिस्तर या चारपाई उठाना। २ भग होना। नष्ट होना।
उड़ाऊ–वि० [हिं० उड़ना] १. उड़नेवाला। उड़ाकू। २. खर्च करनेवाला। खर्चीला।
उड़ाका, उड़ाकू–वि० [हिं० उड़ना] उड़नेवाला। जो उड़ सकता हो।

उड़ान—संज्ञा स्त्री० [सं० उड्डयन] १. उड़ने की क्रिया। २. छलांग। कुदान। ३. उतनी दूरी जितनी एक दौड़ में तय कर सकें। *४. कलाई। गट्टा। पहुँचा।

उड़ाना—क्रि० स० [हिं० उड़ना] १. किसी उड़नेवाली वस्तु को उड़ने में प्रवृत्त करना। २. हवा में फैलाना। जैसे—धूल उड़ाना। ३. उड़नेवाले जीवों को भगाना या हटाना। ४. झटके के साथ अलग करना। काटकर दूर फेंकना। ५. हटाना। दूर करना। ६. चुराना। हज़म करना। ७. मिटाना। नष्ट करना। ८ खर्च करना। बरबाद करना। ९. खाने-पीने की चीज को खूब खाना-पीना। चट करना। १०. भोग्य वस्तु को भोगना। ११. आमोद-प्रमोद की वस्तु का व्यवहार करना। १२. प्रहार करना। लगाना। मारना। १३. भुलावा देना। बात टालना। १४. झूठ-मूठ दोष लगाना। १५. किसी विद्या को इस प्रकार सीख लेना कि उसके आचार्य्य को खबर न हो।

उड़ायक*—वि०[हिं० उड़ान + क (प्रत्य०)] उड़ानेवाला।

उड़ास*—संज्ञा स्त्री० [सं० उद्वास] रहने का स्थान। वास-स्थान। महल।

उड़ासना—क्रि०स० [सं०उद्वासन] १. बिछौने को समेटना। बिस्तर उठाना। *† २. किसी चीज को तहस-नहस करना। उजाड़ना। ३. बैठने या सोने में विघ्न डालना।

उड़िया—वि० [हिं० उड़ीसा] उड़ीसा देश का रहनेवाला।

उड़ियाना—संज्ञा पुं० [?] २२ मात्राओं का एक छंद।

उडंबर—संज्ञा पुं० [सं०] गूलर। ऊमर।

उडु—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नक्षत्र। तारा। २. पक्षी। चिड़िया। ३. केवट। मल्लाह। ४. जल। पानी।

उडुप—संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा। २. नाव। ३. धड़नई या घंडई। ४. भिलावाँ। ५. बड़ा गरुड़।

संज्ञा पुं० [हिं० उड़ना] एक प्रकार का नृत्य।

उडुपति—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

उडुराज—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

उडुस—संज्ञा पुं० [सं० उद्दंश] खटमल।

उड़ौनी*—संज्ञा स्त्री० [हिं० उड़ना] जुगनू।

उड़ौहाँ†—वि० [हिं० उड़ना + औहाँ (प्रत्य०)] उड़नेवाला।

उड्डयन—संज्ञा पुं० [सं०] उड़ना।

उड्डीयमान—वि० [सं० उड्डीयमन्] [स्त्री० उड्डीयमती] उड़नेवाला। उड़ता हुआ।

उढ़कना—क्रि० अ० [हिं० अड़ना] १. अड़ना। ठोकर खाना। २. रुकना। ठहरना। ३. सहारा लेना। टेक लगाना।

उढ़काना—क्रि० स० [हिं० उढ़कना] किसी के सहारे खड़ा करना। भिड़ाना।

उढ़रना†—क्रि० अ० [सं० ऊढ़ा] विवाहिता स्त्री का पर-पुरुष के साथ निकल जाना।

उढ़री—संज्ञा स्त्री० [हिं० उढ़रना] रखेली स्त्री। सुरैतिन।

उढ़ाना—क्रि० स० दे० "ओढ़ाना"।

उढ़ारना—क्रि० स० [हिं० उढ़रना] दूसरे की स्त्री को ले भागना।

उढ़ावनी*†—संज्ञा स्त्री० दे० "ओढ़नी"।

उतंक—संज्ञा पुं० [सं० उत्तंक] १. एक ऋषि जो वेद-मुनि के शिष्य थे। २. एक ऋषि जो गौतम के शिष्य थे।
वि०* [सं० उत्तुंग] ऊँचा।

उतंग*—वि० [सं० उत्तुङ्ग] १. ऊँचा। बलंद। २. श्रेष्ठ। उच्च।

उतंत*—वि० [सं० उत्पन्न] उत्पन्न। पैदा।

उत्—उप० दे० "उद्"।

उत*—क्रि० वि० [सं० उत्तर] वहाँ। उधर। उस ओर।

उतन*—क्रि० वि० [हिं० उ + तनु] उस तरफ़। उस ओर।

उतना—वि० [हिं० उस + तन हिं० प्रत्य० (सं० 'तावान्' से)] उस मात्रा का। उस क़दर।

उतपानना*-क्रि० स० [सं० उत्पन्न] उत्पन्न करना। उपजाना।
क्रि० अ० उत्पन्न होना।
उतर*-संज्ञा पु० दे० "उत्तर"।
उतरन-संज्ञा स्त्री० [हिं० उतरना] पहने हुए पुराने कपड़े।
उतरना-क्रि० अ० [सं० अवतरण] १ ऊँचे स्थान से सँभलकर नीचे आना। २ ढलना। अवनति पर होना। ३ शरीर में किसी जोड़ या हड्डी का अपनी जगह से हट जाना। ४ कांति या स्वर का फीका पड़ना। ५ उग्र प्रभाव या उद्वेग का दूर होना। ६ वर्ष, मास या नक्षत्र विशेष का समाप्त होना। ७ थोड़े थोड़े अंश को बैठाकर किया जानेवाला काम पूरा होना। जैसे मोजा उतरना। ८ ऐसी वस्तु का तैयार होना जो खराद या साँचे पर चढ़ाकर बनाई जाय। ९ भाव का कम होना। १० डेरा करना। ठहरना। टिकना। ११ नकल होना। खिंचना। अंकित होना। १२ बच्चों का मर जाना। १३ भर आना। संचारित होना। जैसे— थन में दूध उतरना। १४ भभके में खिंचकर तैयार होना। १५ सफाई के साथ कटना। १६ उचड़ना। उधड़ना। १७ धारण की हुई वस्तु का अलग होना। १८ तौल में ठहरना। १९ किसी बाजे की कसन का ढीला होना जिससे उसका स्वर विकृत हो जाता है। २० जन्म लेना। अवतार लेना। २१ आदर के निमित्त किसी वस्तु का शरीर के चारों ओर घुमाया जाना। वसूल होना।
मुहा०—उतरकर = निम्न श्रेणी का। नीचे दरजे का। घटकर। चित्त से उतरना = १ विस्मृत होना। भूल जाना। २ नीचा जँचना। अप्रिय लगना। चेहरा उतरना— मुख मलिन होना। मुख पर उदासी छाना।
क्रि० स० [सं० उत्तरण] नदी, नाले या पुल का पार करना।

उतरवाना-क्रि० स० [हिं० उतरना] उतारने का काम कराना।
उतराई-संज्ञा स्त्री० [हिं० उतरना] १ ऊपर से नीचे आने की क्रिया। २ नदी के पार उतारने का महसूल। ३ नीचे की ओर ढलती हुई जमीन। ढालू जमीन।
उतराना-क्रि० अ० [सं० उत्तरण] १ पानी के ऊपर आना। पानी की सतह पर तैरना। २ उबलना। उफान खाना। ३ प्रकट होना। हर जगह दिखाई देना।
क्रि० अ० "उतारना" क्रिया प्रे० रूप।
उतराहाँ†-क्रि० वि० [सं० उत्तर + हा (प्रत्य०)] उत्तर की ओर।
उतलाना†*-क्रि० अ० [हिं० आतुर] जल्दी करना।
उतान-वि० [सं० उत्तान] पीठ को जमीन पर लगाए हुए। चित।
उतायल*-वि० [सं० उत् + त्वरा] जल्दी।
उतायली-संज्ञा स्त्री० दे० "उतावली"।
उतार-संज्ञा पु० [हिं० उतरना] १ उतरने की क्रिया। २ क्रमशः नीचे की ओर प्रवृत्ति। ३ उतरने योग्य स्थान। ४ किसी वस्तु की मोटाई या घेरे का क्रमशः कम होना। ५ घटाव। कमी। ६ नदी में हलकर पार करने योग्य स्थान। हिलान। ७ समुद्र का भाटा। ८ उतारन। निकृष्ट। ९ उतारा। न्योछावर। सदका। १० वह वस्तु या प्रयोग जिससे नशे, विष आदि का दोष दूर हो। परिहार।
उतारन-संज्ञा स्त्री० [हिं० उतारना] १ वह पहनावा जो पहनने से पुराना हो गया हो। २ निछावर। उतारा। ३ निकृष्ट वस्तु।
उतारना-क्रि० स० [सं० अवतरण] १ ऊँचे स्थान से नीचे स्थान में लाना। २ प्रतिरूप बनाना। (चित्र) खींचना। ३ लिखावट की नकल करना। ४ लगी या लिपटी हुई वस्तु को अलग करना। उचाड़ना। उधेड़ना। ५ किसी धारण की

हुई वस्तु को धूर करना। पहनी हुई चीज को अलग करना। ६. ठहराना। टिकाना। डेरा देना। ७. उतारा करना। किसी वस्तु को मनुष्य के चारों ओर घुमाकर भूत-प्रेत की भेंट के रूप में चौराहे आदि पर रखना। ८. निछावर करना। वारना। ९. वसूल करना। १०. किसी उग्र प्रभाव को दूर करना। ११. पीना। घूंटना। १२. ऐसी वस्तु तैयार करना जो मशीन, खराद, साँचे आदि पर चढ़ाकर बनाई जाय। १३. बाजे आदि की कसन को ढीला करना। १४. भभके से खींचकर तैयार करना या खौलते पानी में किसी वस्तु का सार निकालना।

क्रि० स० [सं० उत्तारण] पार ले जाना। नदी-नाले के पार पहुँचाना।

उतारा–संज्ञा पुं० [हिं० उतरना] १. डेरा डालने या टिकने का कार्य्य। २. उतरने का स्थान। पड़ाव। ३. नदी पार करने की क्रिया।

संज्ञा पुं० [हिं० उतारना] १. प्रेत-बाधा या रोग की शांति के लिये किसी व्यक्ति के शरीर के चारों ओर कुछ सामग्री घुमाकर चौराहे आदि पर रखना। २. उतारे की सामग्री या वस्तु।

उतारू–वि० [हिं० उतरना] उद्यत। तत्पर।

उताल*–क्रि० वि० [सं० उद्+त्वर] जल्दी। शीघ्र।

संज्ञा स्त्री० शीघ्रता। जल्दी।

उताली*–संज्ञा स्त्री० [हिं० उताल] शीघ्रता। जल्दी। उतावली।

क्रि० वि० शीघ्रतापूर्वक। जल्दी से।

उतावल*–क्रि० वि० [सं० उद्+त्वर] जल्दी जल्दी। शीघ्रता से।

उतावला–वि० [सं० उद्+त्वर] [स्त्री० उतावली] १. जल्दी मचानेवाला। जल्दबाज। २. व्यग्र। घबराया हुआ।

उतावली–संज्ञा स्त्री० [सं० उद्+त्वर] १. जल्दी। शीघ्रता। जल्दबाजी। २. व्यग्रता। चंचलता।

उतृण–वि० [सं० उत्+ऋण] १. ऋण से मुक्त। उऋण। २. जिसने उपकार का बदला चुका दिया हो।

उत*†–क्रि० वि० [हिं० उत] वहाँ। उधर।

उत्कंठा–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० उत्कंठित] १. प्रबल इच्छा। तीव्र अभिलाषा। २. रस में एक संचारी का नाम। किसी कार्य्य के करने में विलंब न सहकर उसे चटपट करने की अभिलाषा।

उत्कंठित–वि० [सं०] उत्कंठायुक्त। चाव से भरा हुआ।

उत्कंठिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] संकेत-स्थान में प्रिय के न आने पर तर्क-वितर्क करनेवाली नायिका।

उत्कट–वि० [सं०] तीव्र। विकट। उग्र।

उत्कर्ष–संज्ञा पुं० [सं०] १. बड़ाई। प्रशंसा। २. श्रेष्ठता। उत्तमता। ३. समृद्धि।

उत्कर्षता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. श्रेष्ठता। बड़ाई। उत्तमता। २. अधिकता। प्रचुरता। ३. समृद्धि।

उत्कल–संज्ञा पुं० [सं०] उड़ीसा देश।

उत्कीर्ण–वि० [सं०] १. लिखा हुआ। खुदा हुआ। २. छिदा हुआ।

उत्कुण–संज्ञा पुं० [सं०] १. मत्कुण। खटमल। २. बालों का कीड़ा। जूँ।

उत्कृति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. २६ वर्णों के वृत्तों का नाम। २. छब्बीस की संख्या।

उत्कृष्ट–वि० [सं०] उत्तम। श्रेष्ठ। अच्छा।

उत्कृष्टता–संज्ञा स्त्री० [सं०] श्रेष्ठता। अच्छापन। बड़प्पन।

उत्कोच–संज्ञा पुं० [सं०] घूँस। रिश्वत।

उत्क्रांति–संज्ञा स्त्री० [सं०] क्रमशः उत्तमता और पूर्णता की ओर प्रवृत्ति।

उत्तंग*–वि० दे० "उत्तुंग"।

उत्त*–संज्ञा पु० [सं० उत्] १. आश्चर्य । २. संदेह ।

उत्तप्त–वि० [सं०] १. खूब तपा हुआ । २ दुखी । पीड़ित । संतप्त ।

उत्तम–वि० [सं०] [स्त्री० उत्तमा] श्रेष्ठ । अच्छा । सबसे भला ।

उत्तमतया–क्रि० वि० [सं०] अच्छी तरह से । भली भाँति से ।

उत्तमता–संज्ञा स्त्री० [सं०] श्रेष्ठता । उत्कृष्टता । खूबी । भलाई ।

उत्तमत्व–संज्ञा पु० [सं०] अच्छापन ।

उत्तम पुरुष–संज्ञा पु० [सं०] व्याकरण में वह सर्वनाम जो बोलनेवाले पुरुष को सूचित करता है । जैसे "मैं", "हम" ।

उत्तमर्ण–संज्ञा पु० [सं०] ऋण देनेवाला व्यक्ति । महाजन ।

उत्तमा दूती–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह दूती जो नायक या नायिका को मीठी बातों से समझा-बुझाकर मना लावे ।

उत्तमा नायिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्वकीया नायिका जो पति के प्रतिकूल होने पर भी स्वयं अनुकूल बनी रहे ।

उत्तमोत्तम–वि० [सं०] अच्छे से अच्छा ।

उत्तर–संज्ञा पु० [सं०] १ दक्षिण दिशा के सामने की दिशा । उदीची । २ किसी प्रश्न या बात को सुनकर उसके समाधान के लिये कही हुई बात । जवाब । ३ बनाया हुआ जवाब । बहाना । मिस । हीला । बरासत । ४ प्रतिकार । बदला । ५ एक काव्या-लंकार जिसमें उत्तर के सुनते ही प्रश्न का अनुमान किया जाता है, अथवा प्रश्नों का ऐसा उत्तर दिया जाता है जो अप्रसिद्ध हो । ६ एक काव्यालंकार जिसमें प्रश्न के वाक्यों ही में उत्तर भी होता है अथवा बहुत से प्रश्नों का एक ही उत्तर होता है ।
वि० १ पिछला । बाद का । २ ऊपर का । ३ बढ़कर । श्रेष्ठ ।
क्रि० वि० पीछे । बाद ।

उत्तर-कोशल–संज्ञा पु० [सं०] अयोध्या के आस पास का देश । अवध ।

उत्तरक्रिया–संज्ञा स्त्री० [सं०] अंत्येष्टि क्रिया ।

उत्तरदाता–संज्ञा पु० [सं० उत्तरदातृ] [स्त्री० उत्तरदात्री] वह जिससे किसी कार्य के बनने बिगड़ने पर पूछ-ताछ की जाय । जवाबदेह । जिम्मेदार ।

उत्तरदायित्व–संज्ञा पु० [सं०] जवाबदेही । जिम्मेदारी ।

उत्तरदायी–वि० [सं० उत्तरदायिन्] स्त्री० उत्तरदायिनी] जवाबदेह । जिम्मेदार ।

उत्तर पक्ष–संज्ञा पु० [सं०] शास्त्रार्थ में वह सिद्धांत जिससे पूर्व पक्ष अर्थात् पहले किए हुए निरूपण या प्रश्न का खंडन या समाधान हो । जवाब की दलील ।

उत्तरपथ–संज्ञा पु० [सं०] देवयान ।

उत्तरपद–संज्ञा पु० [सं०] किसी यौगिक शब्द का अंतिम शब्द ।

उत्तरमीमांसा–संज्ञा स्त्री० [सं०] वेदांत दर्शन ।

उत्तरा–संज्ञा स्त्री० [सं०] अभिमन्यु की स्त्री जिससे परीक्षित उत्पन्न हुए थे ।

उत्तराखंड–संज्ञा पु० [सं० उत्तरा + खंड] भारतवर्ष का हिमालय के पास का उत्तरीय भाग ।

उत्तराधिकार–संज्ञा पु० [सं०] किसी के मरने के पीछे उसके धनादि का स्वत्व ।

उत्तराधिकारी–संज्ञा पु० [सं० उत्तराधिकारिन्] [स्त्री० उत्तराधिकारिणी] वह जो किसी के मरने पर उसकी संपत्ति का मालिक हो ।

उत्तराफाल्गुनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] बारहवाँ नक्षत्र ।

उत्तराभाद्रपद–संज्ञा स्त्री० [सं०] छब्बीसवाँ नक्षत्र ।

उत्तराभास–संज्ञा पु० [सं०] झूठा जवाब । अंडबंड जवाब । (स्मृति)

उत्तरायण–संज्ञा पु० [सं०] १ सूर्य की मकर रेखा से उत्तर कर्क रेखा की ओर गति । २ वह छ महीने का समय जिसके

बीच सूर्य्य मकर रेखा से चलकर बराबर उत्तर की ओर बढ़ता रहता है।

उत्तरार्द्ध–संज्ञा पुं० [सं०] पिछला आधा। पीछे का अर्द्ध भाग।

उत्तराषाढ़ा–संज्ञा स्त्री० [सं०] इक्कीसवाँ नक्षत्र।

उत्तरीय–संज्ञा पुं० [सं०] उपरना। दुपट्टा। चद्दर। ओढ़ना।
वि० १. ऊपर का। ऊपरवाला। २. उत्तर दिशा का। उत्तर दिशा-संबंधी।

उत्तरोत्तर–क्रि० वि० [सं०] १. एक के पीछे एक। एक के अनंतर दूसरा। २. क्रमशः। लगातार। बराबर।

उत्ता–वि० दे० "उतना"।

उत्तान–वि० [सं०] पीठ को ज़मीन पर लगाए हुए। चित। सीधा।

उत्तानपाद–संज्ञा पुं० [सं०] एक राजा जो स्वायंभुव मनु के पुत्र और प्रसिद्ध भक्त ध्रुव के पिता थे।

उत्ताप–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उत्तप्त, उत्तापित] १. गर्मी। तपन। २. कष्ट। वेदना। ३. दुःख। शोक। ४. क्षोभ।

उत्तीर्ण–वि० [सं०] १. पार गया हुआ। पारंगत। २. मुक्त। ३. परीक्षा में कृत-कार्य्य। पास-शुदः।

उत्तुंग–वि० [सं०] बहुत ऊँचा।

उत्तू–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. वह औजार जिसको गरम करके कपड़े पर बेल-बूटों या चुनट के निशान डालते हैं। २. बेल-बूटे का काम जो इस औजार से बनता है।
मुहा०–उत्तू करना = बहुत मारना।
वि० बदहवास। नशे में चूर।

उत्तेजक–वि० [सं०] १. उभाड़ने, बढ़ाने या उकसानेवाला। प्रेरक। २. वेगों को तीव्र करनेवाला।

उत्तेजन–संज्ञा पुं० दे० "उत्तेजना"।

उत्तेजना–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० उत्तेजित, उत्तेजक] १. प्रेरणा। बढ़ावा। प्रोत्साहन। २. वेगों को तीव्र करने की क्रिया।

उत्तोलन–संज्ञा पुं० [सं०] १. ऊँचा करना। तानना। २. तौलना।

उत्थपना*–क्रि० सं० [सं० उत्थापन] अनु-ष्ठान करना। आरंभ करना।

उत्थान–संज्ञा पुं० [सं०] १. उठने का कार्य्य। २. उठान। आरंभ। ३. उन्नति। समृद्धि। बढ़ती।

उत्थापन–संज्ञा पुं० [सं०] १. ऊपर उठाना। तानना। २. हिलाना। डुलाना। ३. जगाना।

उत्पत्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० उत्पन्न] १. उद्गम। पैदाइश। जन्म। उद्भव। २. सृष्टि। ३. आरंभ। शुरू।

उत्पन्न–वि० [सं०] [स्त्री० उत्पन्ना] जन्मा हुआ। पैदा।

उत्पल–संज्ञा पुं० [सं०] कमल।

उत्पाटन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उत्पाटित] उखाड़ना।

उत्पात–संज्ञा पुं० [सं०] १. कष्ट पहुँचानेवाली आकस्मिक घटना। उपद्रव। आफ़त। २. अशांति। हलचल। ३. ऊधम। दंगा। शरारत।

उत्पाती–संज्ञा पुं० [सं० उत्पातिन्] [स्त्री० हिं० उत्पातिन] उत्पात मचानेवाला। उपद्रवी। नटखट। शरारती।

उत्पादक–वि० [सं०] [स्त्री० उत्पादिका] उत्पन्न करनेवाला।

उत्पादन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उत्पादित] उत्पन्न करना। पैदा करना।

उत्पीड़न–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उत्पीड़ित] तकलीफ़ देना। सताना।

उत्प्रेक्षा–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० उत्प्रेक्ष्य] १. उद्भावना। आरोप। २. एक अर्थालंकार जिसमें भेद-ज्ञान-पूर्वक उपमेय में उपमान की प्रतीति होती है। जैसे, "मुख मानो चंद्रमा है।"

उत्प्रेक्षोपमा–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें किसी एक वस्तु के गुण का बहुतों में पाया जाना वर्णन किया जाता है। (केशव)

उत्फुल्ल–वि० [सं०] १. विकसित। खिला

हुआ। २ उत्ता। चित।
उत्संग–संज्ञा पु० [सं०] १ गोद । क्रोड । अंक। २ मध्य भाग। बीच। ३ ऊपर का भाग। वि० निर्लिप्त। विरक्त।
उत्सर्ग–संज्ञा पु० [सं०][वि० उत्सर्गी, औत्सर्गीय, उत्सर्ग्य] १ त्याग । छोडना। २ दान । न्योछावर । ३ समाप्ति।
उत्सर्जन–संज्ञा पु० [सं०][वि० उत्सर्जित, उत्सृष्ट] १ त्याग । छोडना। २ दान।
उत्सर्पण–संज्ञा पु० [सं०] १ ऊपर चढना। चढाव। २ उल्लंघन। लाँघना।
उत्सर्पिणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] काल की वह गति या अवस्था जिसमे रूप, रस, गंध, स्पर्श इन चारो की क्रम क्रम से वृद्धि होती है। (जैन)
उत्सव–संज्ञा पु० [सं०] १ उछाह । मंगल-कार्य्य । धूम धाम। २ मंगल-समय। तहवार। पर्व। ३ आनंद। विहार।
उत्साह–संज्ञा पु० [सं०][वि० उत्साहित, उत्साही] १ उमंग । उछाह । जोश। हौसला। २ हिम्मत। साहस की उमंग। (वीर रस का स्थायी भाव)
उत्साही–वि० [सं० उत्साहिन्] उत्साहयुक्त। हौसलेवाला।
उत्सुक–वि० [सं०] १ उत्कंठित । अत्यंत इच्छुक । २ चाही हुई बात में देर न सहकर उसके उद्योग में तत्पर।
उत्सुकता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ आकुल इच्छा। २ किसी कार्य में विलंब न सहकर उसमे तत्पर होना। (एक संचारी भाव)
उथपना*–क्रि० स० [सं० उत्थापन] १ उठाना २ उखाडना। ३ उजाडना।
उथलना–क्रि० अ० [सं० उत् + स्थल] १ डगमगाना । डाँवाडोल होना । चलायमान होना। २ उलटना । उलट-पुलट होना। ३ पानी का उथला या कम होना। क्रि० स० नीचे-ऊपर करना । इधर-उधर करना।
उथल-पुथल–संज्ञा स्त्री० [हिं० उथलना] उलट-पुलट। विपर्यय। क्रम भंग। वि० उलट-पुलट। अंड बंड।
उथला–वि० [सं० उत् + स्थल] कम गहरा। छिछला।
उदंत–वि० [सं० अ + दंत] जिसके दाँत न जमे हों। अदंत । (चौपाया के लिये)
उद्–उप० [सं०] एक उपसर्ग जो शब्दों के पहले लगकर उनमे इन अर्थों की विशेषता करता है। ऊपर, जैसे–उद्गमन। अतिक्रमण, जैसे–उत्तीर्ण। उत्कर्ष जैसे–उद्बोधन। प्राबल्य, जैसे–उद्वेग। प्राधान्य, जैसे–उद्देश । अभाव, जैसे–उत्पथ। प्रकाश, जैसे–उच्चारण। दोष, जैसे–उन्मार्ग।
उदक–संज्ञा पु० [सं०] जल । पानी।
उदकक्रिया–संज्ञा स्त्री० [सं०] तिलांजलि।
उदकना*–क्रि० अ० [देश०] कूदना।
उदकपरीक्षा–संज्ञा स्त्री० [सं०] प्राचीन काल की शपथ का एक भेद जिसमें शपथ करनेवाले को अपने वचन की सत्यता प्रमाणित करने के लिये जल में डूबना पड़ता था।
उदगरना†–क्रि० अ० [सं० उद् गरण] १ निकलना । बाहर होना। २ प्रकाशित होना । प्रकट होना । ३ उभडना।
उदगार्गल–संज्ञा पु० [सं०] वह विद्या जिससे यह ज्ञान प्राप्त हो कि अमुक स्थान में इतने हाथ की दूरी पर जल है।
उदगार*–संज्ञा पु० दे० 'उद्गार'।
उदगारना*–क्रि० स० [सं० उद्गार] १ बाहर निकालना। बाहर फेंकना। २ उभाडना । भडकाना । उत्तेजित करना।
उदग्र*–वि० [सं० उदग्र] १ ऊँचा। उन्नत । २ प्रचंड। उग्र। उद्धत।
उदघटना*–क्रि० अ० [सं० उद्घटन] प्रकट होना। उदय होना।
उदघाटना*–क्रि० स० [सं० उद्घाटन] प्रकट करना। प्रकाशित करना। खोलना।
उदघ*–संज्ञा पु० [सं० उद्गीथ = सूर्य] सूर्य।
उदधि–संज्ञा पु० [सं०] १ समुद्र। २ घड़ा। ३ मेघ।
उदधिसुत–संज्ञा पु० [सं०] १ समुद्र से

उत्पन्न पदार्थ। २. चंद्रमा। ३. अमृत। ४. शंख। ५. कमल।
उदधिसुता–संज्ञा स्त्री० [सं०] लक्ष्मी।
उदबस*–वि० [हिं० उद्वासन] १. उजाड़। सूना। २. एक स्थान पर न रहनेवाला। खानाबदोश।
उदबासना–क्रि० स० [सं० उद्वासन] १. तंग करके स्थान से हटाना। रहने में विघ्न डालना। भगा देना। २. उजाड़ना।
उदमदना*–क्रि० अ० [सं० उद्+मद] पागल होना। उन्मत्त होना।
उदमाद*–संज्ञा पुं० दे० "उन्माद"।
उदय–संज्ञा पुं० [सं०][वि० उदित] १. ऊपर आना। निकलना। प्रकट होना। (विशेषतः ग्रहों के लिए)
मुहा०–उदय से अस्त तक=पृथ्वी के एक छोर से दूसरे छोर तक। सारी पृथ्वी में। २. वृद्धि। उन्नति। बढ़ती। ३. निकलने का स्थान। उद्गम। ४. उदयाचल।
उदयगिरि–संज्ञा पुं० [सं०] उदयाचल।
उदयाचल–संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार पूर्व दिशा का एक पर्वत जहाँ से सूर्य निकलता है।
उदयाद्रि–संज्ञा पुं० [सं०] उदयाचल।
उदर–संज्ञा पुं० [सं०] १. पेट। जठर। २. किसी वस्तु के बीच का भाग। मध्य। पेटा। ३. भीतर का भाग।
उदरना*–क्रि० अ० दे० "ओदरना"।
उदवना–क्रि० अ० दे० "उगना"।
उदात्त–वि० [सं०] १. ऊँचे स्वर से उच्चारण किया हुआ। २. दयावान्। कृपालु। ३. दाता। उदार। ४. श्रेष्ठ। बड़ा। ५. स्पष्ट। विशद। ६. समर्थ। योग्य।
संज्ञा पुं० [सं०] १. वेद के स्वर के उच्चारण का एक भेद जिसमें तालु आदि के ऊपरी भाग से उच्चारण होता है। २. उदात्त स्वर। ३. एक काव्यालंकार जिसमें संभाव्य विभूति का वर्णन खूब बढ़ा चढ़ाकर किया जाता है। ४. दान।
उदान–संज्ञा पुं० [सं०] प्राण-वायु का एक भेद जिसका स्थान कंठ है और जिससे डकार और छींक आती है।
उदायन*–संज्ञा पुं० [सं० उद्यान] बाग़।
उदार–वि० [सं०] [संज्ञा उदारता] १. दाता। दानशील। २. बड़ा। श्रेष्ठ। ३. ऊँचे दिल का। ४. सरल। सीधा।
उदारचरित–वि० [सं०] जिसका चरित्र उदार हो। ऊँचे दिल का। शीलवान्।
उदारचेता–वि० [सं० उदारचेतस्] जिसका चित्त उदार हो।
उदारता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दानशीलता। फ़ैयाज़ी। २. उच्च विचार।
उदारना–क्रि० स० [सं० उदारण] १. दे० "ओदारना"। २. गिराना। तोड़ना।
उदावर्त–संज्ञा पुं० [सं०] गुदा का एक रोग जिसमें काँच निकल आती है और मल-मूत्र रुक जाता है। गुदग्रह। काँच।
उदास–वि० [सं०] १. जिसका चित्त किसी पदार्थ से हट गया हो। विरक्त। २. झगड़े से अलग। निरपेक्ष। तटस्थ। ३. दुःखी। रंजीदा।
उदासी–संज्ञा पुं० [सं० उदास+हिं० ई (प्रत्य०)] १. विरक्त पुरुष। त्यागी पुरुष। संन्यासी। २. नानकशाही साधुओं का एक भेद।
संज्ञा स्त्री० [सं० उदास+हिं० ई (प्रत्य०)] १. खिन्नता। २. दुःख।
उदासीन–वि० [सं०] [स्त्री० उदासीना; संज्ञा उदासीनता] १. विरक्त। जिसका चित्त हट गया हो। २. झगड़े-बखेड़े से अलग। ३. जो परस्पर विरोधी पक्षों में से किसी की ओर न हो। निष्पक्ष। तटस्थ। ४. रूखा। उपेक्षायुक्त। प्रेमशून्य।
उदासीनता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विरक्ति। त्याग। २. निरपेक्षता। निर्द्वन्द्वता। ३. उदासी। खिन्नता।
उदाहरण–संज्ञा पुं० [सं०] १. दृष्टांत। मिसाल। २. न्याय में तर्क के पाँच अवयवों में से तीसरा, जिसके साथ साध्य का साधर्म्य या वैधर्म्य होता है।

उदियाना*–क्रि० अ० [सं० उद्विग्न] उद्विग्न होना। घबराना। हैरान होना।

उदित–वि० [सं०] [स्त्री० उदिता] १ जो उदय हुआ हो। निकला हुआ। २ प्रकट। ज़ाहिर। ३ उज्ज्वल। स्वच्छ। ४ प्रफुल्लित। प्रसन्न। ५ कहा हुआ।

उदितयौवना–संज्ञा स्त्री० [सं०] मुग्धा नायिका के सात भेदों में से एक जिसमें तीन हिस्सा यौवन और एक हिस्सा लड़कपन हो।

उदीची–संज्ञा स्त्री० [सं०] उत्तर दिशा।

उदीच्य–वि० [सं०] १ उत्तर का रहनेवाला। २ उत्तर दिशा का।

संज्ञा पुं० [सं०] वैताली छं० का एक भेद।

उदुंबर–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० औदुंबर] १ गूलर। २ देहली। ड्योढ़ी। ३ नपुंसक। ४ एक प्रकार का कोढ़।

उदूलहुक्मी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] आज्ञा न मानना। आज्ञा का उल्लंघन करना।

उदेग*–संज्ञा पुं० [सं० उद्वेग] उद्वेग।

उदो*–संज्ञा पुं० दे० "उदय"।

उदोत*–संज्ञा पुं० [सं० उद्योत] प्रकाश। वि० १ प्रकाशित। दीप्त। २ शुभ्र। ३ उत्तम।

उदोती*–वि० [सं० उद्योत] [स्त्री० उदोतिनी] प्रकाश करनेवाला।

उदौ*–संज्ञा पुं० दे० "उदय"।

उद्गम–संज्ञा पुं० [सं०] १ उदय। आविर्भाव। २ उत्पत्ति का स्थान। उद्भव-स्थान। निकास। मखरज। ३ वह स्थान जहाँ से कोई नदी निकलती हो।

उद्गाता–संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञ में चार प्रधान ऋत्विजों में से एक जो सामवेद के मंत्रों का गान करता है।

उद्गाथा–संज्ञा स्त्री० [सं०] आर्या छंद का एक भेद।

उद्गार–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उद्गारी, उद्गारित] १ उबाल। उफान। २ वमन। कै। ३ थूक। कफ। ४ डकार। ५ बाढ़। आधिक्य। ६ घोर शब्द। ७ किसी के विरुद्ध बहुत दिनों से मन में रखी हुई बात एकबारगी कहना।

उद्गारी–वि० [सं० उद्गारिन्] [स्त्री० उद्गारिणी] १ उगलनेवाला। बाहर निकालनेवाला। २ प्रकट करनेवाला।

उद्गीति–संज्ञा स्त्री० [सं०] आर्या छंद का एक भेद।

उद्घाटन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उद्घाटक, उद्घाटनीय, उद्घाटित] १. खोलना। उघाड़ना। २ प्रकट करना। प्रकाशित करना।

उद्घात–संज्ञा पुं० [सं०] १ ठोकर। धक्का। आघात। २ आरंभ।

उद्घातक–वि० [सं०] [स्त्री० उद्घातिका] १ धक्का मारनेवाला। ठोकर लगानेवाला। २ आरंभ करनेवाला।

संज्ञा पुं० नाटक में प्रस्तावना का एक भेद जिसमें सूत्रधार और नटी आदि की कोई बात सुनकर उसका और अर्थ लगाता हुआ कोई पात्र प्रवेश करता है या नेपथ्य से कुछ कहता है।

उद्दंड–वि० [सं०] [संज्ञा उद्दंडता] जिसे दंड इत्यादि का कुछ भी भय न हो। अक्खड़। प्रचंड। उद्धत।

उद्दाम–वि० [सं०] १ बंधनरहित। २ निरंकुश। उग्र। उद्दंड। बे-कहा। ३ स्वतंत्र। ४ महान्। गंभीर।

संज्ञा पुं० [सं०] १ वरुण। २ दंडक वृत्त का एक भेद।

उद्दिम*–संज्ञा पुं० दे० "उद्यम"।

उद्दिष्ट–वि० [सं०] १ दिखाया हुआ। इंगित किया हुआ। २ लक्ष्य। अभिप्रेत।

संज्ञा पुं० पिंगल में वह क्रिया जिससे यह बतलाया जाता है कि दिया हुआ छंद मात्रा प्रस्तार का कौन-सा भेद है।

उद्दीपक–वि० [सं०] [स्त्री० उद्दीपिका] उत्तेजित करनेवाला। उभाड़नेवाला।

उद्दीपन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उद्दीपनीय, उद्दीपित, उद्दीप्त, उद्दीप्य] १ उत्तेजित करने

की क्रिया। उभाड़ना। बढ़ाना। जगाना। २. उद्दीपन या उत्तेजित करनेवाला पदार्थ। ३. काव्य में वे विभाग जो रस को उत्तेजित करते हैं। जैसे, ऋतु, पवन आदि।

उद्देश्य–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उद्दिष्ट, उद्देश्य उद्देशित] १. अभिलाषा। चाह। मंशा। २. हेतु। कारण। ३. न्याय में प्रतिज्ञा।

उद्देश्य–वि० [सं०] लक्ष्य। इष्ट। संज्ञा पुं० १. वह वस्तु जिसपर ध्यान रखकर कोई बात कही या की जाय। अभिप्रेत अर्थ। इष्ट। २. वह जिसके संबंध में कुछ कहा जाय। विशेष्य। विधेय का उलटा। ३. मतलब। मंशा।

उद्ध*–क्रि० वि० दे० "ऊर्ध्व"।

उद्धत–वि० [सं०] [संज्ञा औद्धत्य] १. उग्र। प्रचंड। अक्खड़। २. प्रगल्भ। संज्ञा पुं० चार मात्राओं का एक छंद।

उद्धतपन–संज्ञा पुं० [सं० उद्धत + हिं० पन (प्रत्य०)] उजड्डपन। उग्रता।

उद्धरण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उद्धरणीय, उद्धृत] १. ऊपर उठना। २. मुक्त होने की क्रिया। ३. बुरी अवस्था से अच्छी अवस्था में आना। ४. पढ़े हुए पिछले पाठ को अभ्यास के लिये फिर फिर पढ़ना। ५. किसी लेख के किसी अंश को दूसरे लेख में ज्यों का त्यों रखना। ६. उन्मूलन।

उद्धरणी–संज्ञा स्त्री० [सं० उद्धरण + हिं० ई (प्रत्य०)] पढ़े हुए पिछले पाठ को अभ्यास के लिये बार बार पढ़ना।

उद्धरना*–क्रि० स० [सं० उद्धरण] उद्धार करना। उबारना। क्रि० अ० बचना। छूटना।

उद्धव–संज्ञा पुं० [सं०] १. उत्सव। २. यज्ञ की अग्नि। ३. कृष्ण के एक सखा।

उद्धार–संज्ञा पुं० [सं०] १. मुक्ति। छुटकारा। निस्तार। २. सुधार। उन्नति। दुरुस्ती। ३. क़र्ज़ से छुटकारा। ४. वह ऋण, जिसपर ब्याज न लगे।

उद्धारना*–क्रि० स० [सं० उद्धार] उद्धार करना। छुटकारा देना।

उद्ध्वस्त–वि० [सं०] टूटा-फूटा। ध्वस्त।

उद्धृत–वि० [सं०] १. उगला हुआ। २. ऊपर उठाया हुआ। ३. अन्य स्थान से ज्यों का त्यों लिया हुआ।

उद्बुद्ध–वि० [सं०] १. विकसित। फूला हुआ। २. प्रबुद्ध। चैतन्य। जिसे ज्ञान हो गया हो। ३. जागा हुआ।

उद्बुद्धा–संज्ञा स्त्री० [सं०] अपनी ही इच्छा से उपपति से प्रेम करनेवाली परकीया नायिका।

उद्बोध–संज्ञा पुं० [सं०] थोड़ा ज्ञान।

उद्बोधक–वि० [सं०] [स्त्री० उद्बोधिका] १. बोध करानेवाला। चेतानेवाला। २. प्रकाशित, प्रकट या सूचित करनेवाला। ३. उत्तेजित करनेवाला। ४. जगानेवाला।

उद्बोधन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उद्बोधनीय, उद्बोधित] १. बोध कराना। चेताना। २. उत्तेजित करना। ३. जगाना।

उद्बोधिता–संज्ञा० स्त्री० [सं०] वह परकीया नायिका जो उपपति के चतुराई द्वारा प्रकट किये हुए प्रेम को समझकर प्रेम करे।

उद्भट–वि० [सं०] [संज्ञा उद्भटता] १. प्रबल। प्रचंड। श्रेष्ठ। २. उच्चाशय।

उद्भव–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उद्भूत] १. उत्पत्ति। जन्म। २. वृद्धि। बढ़ती।

उद्भावना–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कल्पना। मन की उपज। २. उत्पत्ति।

उद्भास–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उद्भासनीय, उद्भासित, उद्भासुर] १. प्रकाश। दीप्ति। आभा। २. हृदय में किसी बात का उदय। प्रतीति।

उद्भासित–वि० [सं०] १. उत्तेजित। उद्दीप्त २. प्रकाशित। प्रकट। ३. विदित।

उद्भिज–संज्ञा पुं० दे० "उद्भिज"।

उद्भिज्ज–संज्ञा पुं० [सं०] वृक्ष, लता, गुल्म आदि जो भूमि फोड़कर निकलते हैं। वनस्पति। पेड़-पौधे।

उद्भिद–संज्ञा पुं० दे० "उद्भिज्ज"।

उद्भूत–वि० [सं०] उत्पन्न।

उद्भेद–संज्ञा पुं० [सं०] १. फोड़कर निक-

लना। (पौधा के समान)। २ प्रकाश। उद्घाटन। ३ प्राचीनों के मत से एक काव्यालंकार जिसमे कौशल से छिपाई हुई किसी बात का किसी हेतु से प्रकाशित या लक्षित होना वर्णन किया जाय।

उद्भेदन–सज्ञा पु० [स० उद्भेदनीय, उद्भिन्न] १ तोडना। फोडना। २ फोडकर निकलना। छेदकर पार जाना।

उद्भ्रात–वि० [स०] १ घूमता हुआ। चक्कर मारता हुआ। २ भूला हुआ। भटका हुआ। ३ चकित। भौचक्का। सज्ञा पु० तलवार के ३२ हाथो मे से एक।

उद्यत–वि० [स०] १ तैयार। तत्पर। प्रस्तुत। मुस्तैद। २ उठाया हुआ। ताना हुआ।

उद्यम–सज्ञा पु० [स०] [वि० उद्यमी, उद्यत] १ प्रयास। प्रयत्न। उद्योग। मेहनत। २ काम धधा। रोजगार।

उद्यमी–वि० [स० उद्यमिन्] उद्यम करने-वाला। उद्योगी। प्रयत्नशील।

उद्यान–सज्ञा पु० [स०] बगीचा। बाग।

उद्यापन–सज्ञा पु० [स०] किसी व्रत की समाप्ति पर किया जानेवाला कृत्य। जैसे हवन, गोदान इत्यादि।

उद्युक्त–वि० [स०] उद्योग मे रत। तत्पर।

उद्योग–सज्ञा पु० [स०] [वि० उद्योगी, उद्युक्त] १ प्रयत्न। प्रयास। कोशिश। मेहनत। २ उद्यम। काम धधा।

उद्योगी–वि० [स० उद्योगिन्] [स्त्री० उद्योगिनी] उद्योग करनेवाला। मेहनती।

उद्योत–सज्ञा पु० [स०] १ प्रकाश। उजाला। २ चमक। झलक। आभा।

उद्रेक–सज्ञा पु० [स०] [वि० उद्रिक्त] १ वृद्धि। बढती। अधिकता। ज्यादती। २ एक काव्यालकार जिसमे वस्तु के कई गुणो या दोषो का किसी एक गुण या दोष के आगे मद पड जाना वर्णन किया जाता है।

उद्वह–सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० उद्वहा] १ पुत्र। बेटा। जैसे, रघूद्वह। २ सात वायुओ मे से एक जो तृतीय स्कध पर है।

उद्वहन–सज्ञा पु० [स०] १ ऊपर खिचना। उठना। २ विवाह।

उद्वासन–सज्ञा पु० [स०] [वि० उद्वासनीय, उद्वासित, उद्वासित, उद्वास्य] १ स्थान छुडाना। भगाना। खदेडना। २ उजाडना। वासस्थान नष्ट करना। ३ मारना। वध।

उद्वाह–सज्ञा पु० [स०] विवाह।

उद्वाहन–सज्ञा पु० [स०] [वि० उद्वाहनीय, उद्वाही, उद्वाहित, उद्वाह्य] १ ऊपर ले जाना। उठाना। २ ले जाना। हटाना। ३ विवाह।

उद्विग्न–वि० [स०] १ उद्वेगयुक्त। आकुल। घबराया हुआ। २ व्यग्र।

उद्विग्नता–सज्ञा स्त्री० [स०] १ आकुलता। घबराहट। २ व्यग्रता।

उद्वेग–सज्ञा पु० [स०] [वि० उद्विग्न] १ चित्त की आकुलता। घबराहट। (सचारी भावो म से एक) २ मनोवेग। चित्त की तीव्र वृत्ति। आवेश। जोश। ३ झोक।

उघडना–क्रि० अ० [स० उद्घरण] १ खुलना। उखडना। २ सिला, जमा या लगा न रहना। ३ उजडना।

उधर–क्रि० वि० [स० उत्तर अथवा पु० हि० ऊ (वह) + धर (प्रत्य०)] उस ओर। उस तरफ। दूसरी तरफ।

उधरना*–क्रि० स० [स० उद्धरण] १ मुक्त होना। २ दे० "उघडना"। क्रि० स० उद्धार या मुक्त करना।

उधराना–क्रि० अ० [स० उद्धरण] १ हवा के कारण छितराना। तितर बितर होना। २ ऊधम मचाना।

उधार–सज्ञा पु० [स० उद्धार] १ कर्ज। ऋण।
मुहा०–उधार खाए बैठना = १ किसी भारी आसरे पर दिन काटते रहना। २ हर समय तैयार रहना।
२ किसी एक की वस्तु का दूसरे के पास केवल कुछ दिनो के व्यवहार के लिये जाना। मँगनी। *३ उद्धार। छुटकारा।

उधारक*–वि० दे० "उद्धारक"।

उधारना–क्रि० स० [स० उद्धरण] उद्धार

करना। मुक्त करना।

उघारी*–वि० [सं० उद्धारिन्] [स्त्री० उद्धारिणी] उद्धार करनेवाला।

उघेड़ना–क्रि० स० [सं० उद्धरण] १. मिली हुई पर्त को अलग अलग करना। उचाड़ना। २. टाँका खोलना। सिलाई खोलना। ३. छितराना। बिखराना।

उधेड़बुन–संज्ञा स्त्री०[हिं०उधेड़ना + बुनना] १. सोच-विचार। ऊहा-पोह। २. युक्ति बाँधना।

उनंत*–वि० [सं० अवनत] झुका हुआ।

उन–सर्व० "उस" का बहुवचन।

उनका–संज्ञा पुं० [अ०] एक कल्पित पक्षी जिसे आज तक किसी ने नहीं देखा है।

उनचास–वि० [सं० एकोनपंचाशत्] चालीस और नौ।

संज्ञा पुं० चालीस और नौ की संख्या। ४९।

उनतीस–वि० [सं० एकोनत्रिंशत्] एक कम तीस। बीस और नौ।

संज्ञा पुं० बीस और नौ की संख्या। २९।

उनदा*–वि० दे० "उनींदा"।

उनदौहाँ–वि० दे० "उनींदा"।

उनमद*–वि० [सं० उद् + मत] उन्मत्त।

उनमना*–वि० दे० "अनमना"।

उनमाथना*–क्रि०स० [सं० उन्मथन] [वि० उन्माथी] मथना। विलोड़न करना।

उनमाथी*–वि० [हिं० उनमाथना] मथनेवाला। विलोड़न करनेवाला।

उनमान*–संज्ञा पुं० दे० "अनुमान"।

संज्ञा पुं० [सं० उद् + मान] १. परिमाण। नाप। तौल। थाह। २. शक्ति। सामर्थ्य।

वि० तुल्य। समान।

उनमानना–क्रि० स० [हिं० उनमान] अनुमान करना। ख्याल करना।

उनमुना*–वि०[हिं०अनमना][स्त्री०उनमुनी] मौन। चुपचाप।

उनमूलना*–क्रि० स० [सं० उन्मूलन] उखाड़ना।

उनमेख*–संज्ञा पुं० [सं० उन्मेष] १. आँख का खुलना। २. फूल खिलना। ३. प्रकाश।

उनमेखना*–क्रि० स० [सं० उन्मेष] १. आँख का खुलना। उन्मीलित होना। २. विकसित होना (फूल आदि का)।

उनरना*–क्रि० अ० [सं० उन्नरण = ऊपर जाना] १. उठना। उभड़ना। २. कूदते हुए चलना।

उनवना*–क्रि० अ० [सं० उन्नमन] १. झुकना। लटकना। २. छाना। घिर आना। ३. टूटना। ऊपर पड़ना।

उनवान*–संज्ञा पुं० दे० "अनुमान"।

उनसठ*–वि० [सं० एकोनषष्ठि] पचास और नौ।

संज्ञा पुं० पचास और नौ की संख्या या अंक। ५९।

उनहत्तर–वि० [सं० एकोनसप्तति] साठ और नौ।

संज्ञा पुं० साठ और नौ की संख्या या अंक। ६९।

उनहानि*–संज्ञा स्त्री० [हिं० अनुहारि] समता। बराबरी।

उनहार*–वि० [सं० अनुसार] सदृश। समान।

उनहारि*–संज्ञा स्त्री० [सं० अनुसार] समानता। सादृश्य। एकरूपता।

उनाना*†–क्रि० स० [सं० उन्नमन] १. झुकाना। २. लगाना। प्रवृत्त करना।

क्रि० अ० आज्ञा मानना।

उनींदा–वि० [सं० उन्निद्र] [स्त्री० उनींदी] बहुत जागने के कारण अलसाया हुआ। नींद से भरा हुआ। ऊँघता हुआ।

उन्नइस*†–क्रि० दे० "उन्नीस"।

उन्नत–वि० [सं०] १. ऊँचा। ऊपर उठा हुआ। २. बढ़ा हुआ। समृद्ध। ३. श्रेष्ठ।

उन्नति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ऊँचाई। चढ़ाव। २. वृद्धि। समृद्धि। तरक्की।

उन्नतोदर–संज्ञा पुं० [सं०] १. चाप या वृत्तखंड के ऊपर का तल। २. वह वस्तु जिसका वृत्तखंड ऊपर को उठा हो।

उन्नाब–संज्ञा पुं० [अ०] एक प्रकार का

पेर जो हकीमी नुसखों में पड़ता है।
उन्नाबी–वि० [अ० उन्नाब] उन्नाब के रंग का लालपन लिए हुए स्याह।
उन्नायक–वि० [सं०] [स्त्री० उन्नायिका] १. ऊँचा करनेवाला। उन्नत करनेवाला। २. बढ़ानेवाला।
उन्नासी–वि० [सं० ऊनाशीति] सत्तर और नौ। एक कम अस्सी।
संज्ञा पुं० सत्तर और नौ की संख्या या अंक। ७९।
उन्निद्र–वि० [सं०] १. निद्रारहित। जैसे—उन्निद्र-रोग। २ जिसे नींद न आई हो। ३. विकसित। खिला हुआ।
उन्नीस–वि० [सं० एकोनविंशति] एक कम बीस। दस और नौ।
संज्ञा पुं० दस और नौ की संख्या या अंक। १९।
मुहा०—उन्नीस बिस्वे=१. अधिकतर। २. अधिकांश। प्राय.। उन्नीस होना=१. मात्रा में कुछ कम होना। थोड़ा घटना। २. गुण मे घटकर होना। (दो वस्तुओं का परस्पर) उन्नीस-बीस होना=एक का दूसरी से कुछ अच्छा होना।
उन्मत्त–वि० [सं०] [संज्ञा उन्मत्तता] १. मतवाला। मदांध। २. जो आपे में न हो। बेसुध। ३. पागल। बावला।
उन्मत्तता–संज्ञा स्त्री० [सं०] मतवालापन। पागलपन।
उन्माद–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उन्मादक, उन्मादी] १. वह रोग जिसमें मन और बुद्धि का कार्यक्रम बिगड़ जाता है। पागलपन। विक्षिप्तता। चित्त-विभ्रम। २. रस के ३३ संचारी भावों में से एक जिनमें वियोग आदि के कारण चित्त ठिकाने नहीं रहता।
उन्मादक–वि० [सं०] १. पागल करनेवाला। २. नशा करनेवाला।
उन्मादन–संज्ञा पुं० [सं०] १. उन्मत्त या मतवाला करने की क्रिया। २. कामदेव के पाँच बाणों में से एक।
उन्मादी–वि० [सं० उन्मादिन्] [स्त्री० उन्मादिनी] उन्मत्त। पागल। बावला।
उन्मार्ग–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उन्मार्गी] १. कुमार्ग। बुरा रास्ता। २. बुरा ढंग।
उन्मीलन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उन्मीलक, उन्मीलनीय, उन्मीलित] १. खुलना (नेत्र का)। २. विकसित होना। खिलना।
उन्मीलना*–क्रि० स० [सं० उन्मीलन] खोलना।
उन्मीलित–वि० [सं०] खुला हुआ।
संज्ञा पुं० एक काव्यालंकार जिसमें दो वस्तुओं के बीच इतना अधिक सादृश्य वर्णन किया जाय कि केवल एक ही बात के कारण उनमें भेद दिखाई पड़े।
उन्मुख–वि० [सं०] [स्त्री० उन्मुखा] १. ऊपर मुँह किए। २. उत्कंठित। उत्सुक। ३. उद्यत। तैयार।
उन्मूलक–वि० [सं०] समूल नष्ट करनेवाला। बर्बाद करनेवाला।
उन्मूलन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उन्मूलनीय, उन्मूलित] १. जड़ से उखाड़ना। २. समूल नष्ट करना।
उन्मेष–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उन्मिषित] १. खुलना (आँख का)। २. विकास। खिलना। ३. थोड़ा प्रकाश।
उप–उप० [सं०] एक उपसर्ग। यह जिन शब्दों के पहले लगता है, उनमें इन अर्थों की विशेषता करता है, समीपता। जैसे–उपकूल, उपनयन। सामर्थ्य (वास्तव में आधिक्य); जैसे–उपकार। गौणता या न्यूनता; जैसे–उपमंत्री, उपसभापति। व्याप्ति; जैसे—उपकीर्ण।
उपकरण–संज्ञा पुं० [सं०] १. सामग्री। २. राजाओं के छत्र, चँवर आदि राजचिह्न।
उपकरना*–क्रि० स० [सं० उपकार] उपकार करना। भलाई करना।
उपकर्ता–संज्ञा पुं० दे० "उपकारक"।
उपकार–संज्ञा पुं० [सं०] १. हितसाधन। भलाई। नेकी। २. लाभ। फायदा।
उपकारक–वि० [सं०] [स्त्री० उपकारिका]

उपकार करनेवाला। भलाई करनेवाला।
उपकारिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] भलाई।
उपकारी–वि० [सं० उपकारिन्] [स्त्री० उपकारिणी] १. उपकार करनेवाला। भलाई करनेवाला। २. लाभ पहुँचानेवाला।
उपकृत–वि० [सं०] १. जिसके साथ उपकार किया गया हो। २. कृतज्ञ।
उपकृति–संज्ञा स्त्री० [सं०] उपकार।
उपक्रम–संज्ञा पुं० [सं०] १. कार्य्यारंभ की पहली अवस्था। अनुष्ठान। उठान। २. किसी कार्य्य को आरंभ करने के पहले का आयोजन। तैयारी। ३. भूमिका।
उपक्रमणिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी पुस्तक के आदि में दी हुई विषय-सूची।
उपक्षेप–संज्ञा पुं० [सं०] १. अभिनय के आरंभ में नाटक के समस्त वृत्तांत का संक्षेप में कथन। २. आक्षेप।
उपखान*–संज्ञा पुं० दे० "उपाख्यान"।
उपगत–वि० [सं०] १. प्राप्त। उपस्थित। २. ज्ञात। जाना हुआ। ३. स्वीकृत।
उपगति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्राप्ति। स्वीकार। २. ज्ञान।
उपगीत–संज्ञा स्त्री० [सं०] आर्य्या छंद का एक भेद।
उपग्रह–संज्ञा पुं० [सं०] १. गिरफ़्तारी। २. क़ैद। ३. बँधुआ। क़ैदी। ४. अप्रधान ग्रह। छोटा ग्रह। ५. राहु और केतु। ६. वह छोटा ग्रह जो अपने बड़े ग्रह के चारों ओर घूमता है। जैसे—पृथ्वी का उपग्रह चंद्रमा है। (आधुनिक)
उपघात–संज्ञा पुं० [सं०] १. नाश करने की क्रिया। २. इंद्रियों का अपने अपने काम में असमर्थ होना। अशक्ति। ३. रोग। व्याधि। ४. इन पाँच पातकों का समूह- उपपातक, जातिभ्रंशीकरण, संकरीकरण, अपात्रीकरण, मलिनीकरण। (स्मृति)
उपचय–संज्ञा पुं० [सं०] १. वृद्धि। उन्नति। बढ़ती। २. संचय। जमा करना।
उपचार–संज्ञा पुं० [सं०] १. व्यवहार। प्रयोग। विधान। २. चिकित्सा। दवा। इलाज। ३. सेवा। तीमारदारी। ४. धर्म्मानुष्ठान। ५. पूजन के अंग या विधान जो प्रधानतः सोलह माने गये हैं। जैसे, षोडशोपचार। ६. खुशामद। ७. घूस। रिशवत। ८. एक प्रकार की संधि जिसमें विसर्ग के स्थान पर श या स हो जाता है। जैसे, निःछल से निश्छल।
उपचारक–वि० [सं०] [स्त्री० उपचारिका] १. उपचार या सेवा करनेवाला। २. विधान करनेवाला। ३. चिकित्सा करनेवाला।
उपचारछल–संज्ञा पुं० [सं०] वादी के कहे वाक्य में जान-बूझकर अभिप्रेत अर्थ से भिन्न अर्थ की कल्पना करके दूषण निकालना।
उपचारना*–क्रि० स० [सं० उपचार] १. व्यवहार में लाना। २. विधान करना।
उपचारी–वि० [सं० उपचारिन्] [स्त्री० उपचारिणी] उपचार करनेवाला।
उपचित्र–संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्णार्द्ध समवृत्त।
उपचित्रा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १६ मात्राओं का एक छंद।
उपज–संज्ञा स्त्री० [हिं० उपजना] १. उत्पत्ति। उद्भव। पैदावार। जैसे, खेत की उपज। २. नई उक्ति। उद्भावना। सूझ। ३. मन-गढ़ंत बात। गाने में राग की सुंदरता के लिये उसमें बँधी हुई तानों के सिवा कुछ तानें अपनी ओर से मिला देना।
उपजना–क्रि० अ० [सं० उत्पद्यते, प्रा० उप्पज्जते] उत्पन्न होना। पैदा होना। उगना।
उपजाऊ–वि० [हिं० उपज + आऊ (प्रत्य०)] जिसमें अच्छी उपज हो। उर्वर। (भूमि)
उपजाति–संज्ञा स्त्री० [सं०] वे वृत्त जो इंद्रवज्रा और उपेंद्रवज्रा तथा इंद्रवंशा और वंशस्थ के मेल से बनते हैं।
उपजाना–क्रि० स० [हिं० उपजना का स० रूप] उत्पन्न करना। पैदा करना।
उपजीवन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उपजीवी, उपजीवक] १. जीविका। रोजी। २. निर्वाह के लिये दूसरे का अवलंबन।

उपजीवी–वि० [सं० उपजीविन्] [स्त्री० उपजीविनी] दूसरे के सहारे पर गुजर करनेवाला।

उपटन–संज्ञा पु० दे० "उबटन"।

संज्ञा पु० [सं०उत्पतन = ऊपर उठना] आघात या चिह्न का आघात, दबने या लगने से पड़ जाय। निशान। सोट।

उपटना–क्रि० अ० [सं०उपट = पट के ऊपर] १ आघात, दाब या निशान का चिह्न पड़ना। निशान पड़ना। २ उखड़ना।

उपटाना*–क्रि० स० [हिं० उबटना का प्रे० रूप] उबटन लगवाना।

क्रि० स० [सं० उत्पाटन] १ उखड़वाना। २ उखाड़ना।

उपटारना*–क्रि० स० [सं० उत्पाटन] उच्चाटन करना। उठाना। हटाना।

उपड़ना–क्रि० अ० [सं० उत्पटन] १ उखड़ना। २ उपटना। अंकित होना।

उपत्यका–संज्ञा स्त्री० [सं०] पर्वत के पास की भूमि। तराई।

उपदंश–संज्ञा पु० [सं०] १ एक रोग जिसमें दाँत या नाखून लगने के कारण लिंगेंद्रिय पर घाव हो जाता है। २ गरमी। आतशक। फिरंग रोग। ३ गजक। चाट।

उपदिशा–संज्ञा स्त्री० [सं०] दो दिशाओं के बीच की दिशा। कोण। विदिशा।

उपदिष्ट–वि० [सं०] १ जिसे उपदेश दिया गया हो। २ जिसके विषय में उपदेश दिया गया हो। ज्ञापित।

उपदेश–संज्ञा पु० [सं०] १ हित की बात का कथन। शिक्षा। सीख। नसीहत। २ दीक्षा। गुरुमंत्र।

उपदेशक–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० उपदेशिका] उपदेश करनेवाला। शिक्षा देनेवाला।

उपदेश्य–वि० [सं०] १ उपदेश के योग्य। २ सिखाने योग्य (बात)।

उपदेष्टा–संज्ञा पु० [सं० उपदेष्टृ] [स्त्री० उपदेष्ट्री] उपदेश देनेवाला। शिक्षक।

उपदेसना–क्रि० स० [सं० उपदेश + ना (प्रत्य०)] उपदेश करना।

उपद्रव–संज्ञा पु० [सं०] [वि० उपद्रवी] १ उत्पात। ऊधम। विप्लव। २ ऊधम। दंगा-फसाद। ३ किसी प्रधान रोग के बीच में होनेवाले दूसरे विकार या पीड़ाएँ।

उपद्रवी–वि० [सं० उपद्रविन्] १ उपद्रव या ऊधम मचानेवाला। २ नटखट।

उपधरना*–क्रि० अ० [सं० उपधरण] अंगीकार करना। अपनाना।

उपधा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ छल। कपट। २. व्याकरण में किसी शब्द के अंतिम अक्षर के पहले का अक्षर। ३ उपाधि।

उपधातु–संज्ञा स्त्री० [सं०] अप्रधान धातु, जो या तो लोहे, ताँबे आदि धातुओं के योग से बनती है अथवा खानों से निकलती है। जैसे, काँसा, सोनामक्खी।

उपधान–संज्ञा पु० [सं०] [वि० उपधृत] १. ऊपर रखना या ठहराना। २ सहारे की चीज। ३ तकिया। गेंडुआ। ४ विशेषता।

उपनना*–क्रि० अ० [सं०] पैदा होना।

उपनय–संज्ञा पु० [सं०] १ समीप ले जाना। २ बालक को गुरु के पास ले जाना। ३ उपनयन-संस्कार। ४ तर्क में कोई उदाहरण देकर उस उदाहरण के धर्म को फिर उपसंहार रूप से साध्य में घटाना।

उपनयन–संज्ञा पु० [सं०] [वि० उपनीत, उपनेता, उपनेतव्य] यज्ञोपवीत संस्कार।

उपनागरिका–संज्ञा स्त्री [सं०] अलंकार में वृत्ति अनुप्रास का एक भेद जिसमें कान को मधुर लगनेवाले वर्ण आते हैं।

उपनाम–संज्ञा पु० [सं०] १ दूसरा नाम। प्रचलित नाम। २ पदवी। तखल्लुस।

उपनायक–संज्ञा पु० [सं०] नाटकों में प्रधान नायक का साथी या सहकारी।

उपनिधि–संज्ञा स्त्री० [सं०] धरोहर। अमानत। थाती।

उपनिविष्ट–वि० [सं०] दूसरे स्थान से आकर बसा हुआ।

उपनिवेश–संज्ञा पु० [सं०] १ एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा बसना। २ अन्य स्थान से आए हुए लोगों की बस्ती।

उपनिषद्-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पास बैठना। २. ब्रह्म-विद्या की प्राप्ति के लिये गुरु के पास बैठना। ३. वेद की शाखाओं के ब्राह्मणों के वे अंतिम भाग जिनमें आत्मा, परमात्मा आदि का निरूपण है।

उपनीत-वि० [सं०] १. लाया हुआ। २. जिसका उपनयन संस्कार हो गया हो।

उपनेता-संज्ञा पुं० [सं० उपनेतृ] [स्त्री० उपनेत्री] १. लानेवाला। पहुँचानेवाला। २. उपनयन करानेवाला। आचार्य्य। गुरु।

उपन्यास-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उपन्यस्त] १. वाक्य का उपक्रम। बंधान। २. कल्पित आख्यायिका। कथा। नावेल।

उपपति-संज्ञा पुं० [सं०] वह पुरुष जिससे किसी दूसरे की स्त्री प्रेम करे। जार। यार। आशना।

उपपत्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हेतु द्वारा किसी वस्तु की स्थिति का निश्चय। २. चरितार्थ होना। मेल मिलना। सगति। ३. युक्ति। हेतु।

उपपत्तिसम-संज्ञा पुं० [सं०] विना वादी के कारण और निगमन आदि का खंडन किए हुए प्रतिवादी का अन्य कारण उपस्थित करके विरुद्ध विषय का प्रतिपादन।

उपपन्न-वि० [सं०] १. पास या शरण में आया हुआ। २. प्राप्त। मिला हुआ। ३. युक्त। संपन्न। ४. उपयुक्त।

उपपातक-संज्ञा पुं० [सं०] छोटा पाप। जैसे, परस्त्रीगमन।

उपपादन-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उपपादित, उपपन्न, उपपादनीय, उपपाद्य] १. सिद्ध करना। साबित करना। ठहराना। २. कार्य्य को पूरा करना। संपादन।

उपपुराण-संज्ञा पुं० [सं०] १८ मुख्य पुराणों के अतिरिक्त और छोटे पुराण। ये भी संख्या में १८ हैं।

उपभुक्त-वि० [सं०] १. काम में लाया हुआ। २. जूठा। उच्छिष्ट।

उपभोक्ता-वि० [सं० उपभोक्तृ] [स्त्री० उपभोक्त्री] उपभोग करनेवाला।

उपभोग-संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी वस्तु के व्यवहार का सुख। मजा लेना। २. काम में लाना। बर्तना। ३. सुख की सामग्री।

उपमंत्री-संज्ञा पुं० [सं०] वह मंत्री जो प्रधान मंत्री के नीचे हो।

उपमा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. किसी वस्तु, व्यापार या गुण को दूसरी वस्तु, व्यापार या गुण के समान प्रकट करने की क्रिया। तुलना। मिलान। जोड़। मुशाबहत। २. एक अर्थालंकार जिसमें दो वस्तुओं (उपमेय और उपमान) के बीच भेद रहते हुए भी उन्हें समान बतलाया जाता है।

उपमाता-संज्ञा पुं० [सं० उपमातृ] [स्त्री० उपमात्री] उपमा देनेवाला।

संज्ञा स्त्री० [उप+माता] दूध पिलानेवाली धाई।

उपमान-संज्ञा पुं० [सं०] १. वह वस्तु जिससे उपमा दी जाय। वह जिसके समान कोई दूसरी वस्तु बतलाई जाय। २. न्याय में चार प्रकार के प्रमाणों में से एक। किसी प्रसिद्ध पदार्थ के साधर्म्य से साध्य का साधन। ३. २३ मात्राओं का एक छंद।

उपमित-वि० [सं०] जिसकी उपमा दी गई हो।

संज्ञा पुं० कर्मधारय के अंतर्गत एक समास जो दो शब्दों के बीच उपमावाचक शब्द का लोप करके बनता है। जैसे—पुरुषसिंह।

उपमिति-संज्ञा स्त्री० [सं०] उपमा या सादृश्य से होनेवाला ज्ञान।

उपमेय-वि० [सं०] जिसकी उपमा दी जाय। वर्ण्य। वर्णनीय।

उपमेयोपमा-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह उपमा अलंकार जिसमें उपमेय की उपमा उपमान हो और उपमान की उपमेय।

उपयना*-क्रि० अ० [सं० उत्प्रयाण] चला जाना। न रह जाना। उड़ जाना।

उपयुक्त-वि० [सं०] योग्य। उचित। वाजिब। मुनासिब।

उपयुक्तता-संज्ञा स्त्री० [सं०] ठीक उतरने या

होने का भाव। यथार्थता। औचित्य।

उपयोग–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उपयोगी, उपयुक्त] १ काम। व्यवहार। इस्तेमाल। प्रयोग। २ योग्यता। ३ फायदा। लाभ। ४ प्रयोजन। आवश्यकता।

उपयोगिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] काम मे आने की योग्यता। लाभकारिता।

उपयोगी–वि० [सं० उपयोगिन्] [स्त्री० उपयोगिनी] १ काम में आनेवाला। प्रयो-जनीय। मसरफ का। २ लाभकारी। फायदेमंद। ३ अनुकूल। मुवाफिक।

उपरत–वि० [सं०] १ विरक्त। उदासीन। २ मरा हुआ।

उपरति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विषय से विराग। विरति। त्याग। २ उदासीनता। उदासी। ३ मृत्यु। मौत।

उपरत्न–संज्ञा पुं० [सं०] कम दाम के रत्न। घटिया रत्न। जैसे, सीप, मरकत मणि।

उपरना–संज्ञा पुं० [हिं० ऊपर+ना (प्रत्य०)] दुपट्टा। चद्दर। उत्तरीय।

†क्रि० अ० [सं० उत्पटन] उखड़ना।

उपरफट,उपरफट्टू–वि० [सं० उपरि+स्फुट] १ ऊपरी। बालाई। नियमित के अति-रिक्त। २ बे ठिकाने का। व्यर्थ का।

उपरस–संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक में पारे के समान गुण करनेवाले पदार्थ। जैसे, गंधक।

उपरांत–क्रि० वि० [सं०] अनंतर। बाद।

उपराग–संज्ञा पुं० [सं०] १ रंग। २ किसी वस्तु पर उसके पास की वस्तु का आभास। ३ विषय में अनुरक्ति। वासना। ४ चंद्र या सूर्य्य-ग्रहण।

उपरा-चढ़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० ऊपर+चढ़ना] चढ़ा ऊपरी। प्रतिद्वंद्विता। स्पर्द्धा।

उपराज–संज्ञा पुं० [सं०] राजप्रतिनिधि। वाइसराय। गवर्नर-जनरल।

*संज्ञा स्त्री० दे० 'उपज'।

उपराजना*–क्रि० स० [सं० उपार्जन] १ पैदा करना। उत्पन्न करना। २ रचना। बनाना। ३ उपार्जन करना। कमाना।

उपराना†–क्रि० अ० [सं० उपरि] १ ऊपर आना। २ प्रकट होना। ३ उतराना। क्रि० स० ऊपर करना। उठाना।

उपराला*–संज्ञा पुं० [हिं० ऊपर+ला (प्रत्य०)] पक्ष-ग्रहण। सहायता। रक्षा।

उपरावटा*–वि० [सं० उपरि+आवर्त्त] जो गर्व से सिर ऊँचा किए हो।

उपराहना*–क्रि० अ० [?] प्रशंसा करना।

उपराही*–क्रि० वि० दे० "ऊपर"। वि० बढ़कर। श्रेष्ठ।

उपरि–क्रि० वि० [सं०] ऊपर।

उपरी-उपरा–संज्ञा पुं० [हिं० ऊपर] प्रति-द्वंद्विता। चढ़ा-ऊपरी।

उपरूपक–संज्ञा पुं० [सं०] छोटा नाटक जिसके १८ भेद हैं।

उपरैना*–संज्ञा पुं० दे० "उपरना"।

उपरैनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० उपरना] ओढ़नी।

उपरोक्त–वि० [हिं० ऊपर+सं० उक्त] ऊपर कहा हुआ। पहले कहा हुआ। (शुद्ध रूप "उपर्युक्त")

उपरोध–संज्ञा पुं० [सं०] १ अटकाव रुकावट। २ आच्छादन। ढकना।

उपरोधक–संज्ञा पुं० [सं०] १ रोकने या बाधा डालनेवाला। २ भीतर की कोठरी

उपरौटा–संज्ञा पुं० [हिं० ऊपर+पट (किसी वस्तु के) ऊपर का पल्ला।

उपर्युक्त–वि० [सं०] ऊपर कहा हुआ।

उपल–संज्ञा पुं० [सं०] १ पत्थर। २ ओला। ३ रत्न। ४ मेघ। बादल।

उपलक्षक–वि० [सं०] अनुमान करने-वाला। ताड़नेवाला।

संज्ञा पुं० वह शब्द जो उपादान लक्षणा से अपने वाच्यार्थ-द्वारा निर्दिष्ट वस्तु के अति-रिक्त प्रायः उसी कोटि की और और वस्तुओं का भी बोध करावे।

उपलक्षण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उपलक्षक, उपलक्षित] १ बोध करानेवाला चिह्न। संकेत। २ शब्द की वह शक्ति जिससे उसके अर्थ से निर्दिष्ट वस्तु के अतिरिक्त प्रायः उसी की कोटि की और और वस्तुओं

का भी बोध होता है।
उपलक्ष्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. संकेत। चिह्न। २. दृष्टि। उद्देश्य।
यौ०—उपलक्ष्य में=दृष्टि से। विचार से।
उपलब्ध–वि० [सं०] १. पाया हुआ। प्राप्त। २. जाना हुआ।
उपलब्धि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्राप्ति। २. बुद्धि। ज्ञान।
उपला–संज्ञा पुं० [सं० उत्पल] [स्त्री०, अल्पा० उपली] ईंधन के लिये गोबर का सुखाया हुआ टुकड़ा। कंडा। गोहरा।
उपलेप–संज्ञा पुं० [सं०] १. लेप लगाना। लीपना। २. वह वस्तु जिससे लेप करें।
उपलेपन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उपलेपित, उपलेप्य, उपलिप्त] लीपने या लेप लगाने का कार्य्य।
उपल्ला–संज्ञा पुं० [हिं० ऊपर+ला (प्रत्य०)] [स्त्री०, अल्पा० उपल्ली] किसी वस्तु का ऊपरवाला भाग, पर्त्त या तह।
उपवन–संज्ञा पुं० [सं०] १. बाग। बगीचा। फुलवारी। २. छोटा जंगल।
उपवना*–क्रि० अ० [सं० उत्प्रयाण] १. गायब होना। २. उदय होना।
उपवसथ–संज्ञा पुं० [सं०] १. गाँव। बस्ती। २. यज्ञ करने के पहले का दिन जिसमें व्रत आदि करने का विधान है।
उपवास–संज्ञा पुं० [सं०] १. भोजन का छुटना। फ़ाका। २. वह व्रत जिसमें भोजन छोड़ दिया जाता है।
उपवासी–वि० [सं० उपवासिन्] [स्त्री० उपवासिनी] उपवास करनेवाला।
उपविष–संज्ञा पुं० [सं०] [illegible] कम तेज जहर। जैसे, अफ़ीम या धतूरा।
उपविस्ट–वि० [सं०] बैठा हुआ।
उपवीत–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उपवीती] १. जनेऊ। यज्ञसूत्र। २. उपनयन।
उपवेद–संज्ञा पुं० [सं०] वे विद्याएँ जो वेदों से निकली हुई कही जाती है। [illegible] वेद, आयुर्वेद।
उपवेशन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उपवेशी, उपवेश्य, उपविष्ट] १. बैठना। २. स्थित होना। जमना।
उपशम–संज्ञा पुं० [सं०] १. वासनाओं को दबाना। इंद्रिय-निग्रह। २. निवृत्ति। शांति। ३. निवारण का उपाय। इलाज।
उपशमन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उपशमनीय, उपशमित, उपशाम्य] १. शांत रखना। दबाना। २. उपाय से दूर करना। निवारण।
उपशिष्य–संज्ञा पुं० [सं०] शिष्य का शिष्य।
उपसंपादक–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० उपसंपादिका] किसी कार्य्य में मुख्य कर्त्ता का सहायक या उसकी अनुपस्थिति में उसका कार्य्य करनेवाला व्यक्ति।
उपसंहार–संज्ञा पुं० [सं०] १. हरण। परिहार। २. समाप्ति। खातमा। निराकरण। ३. किसी पुस्तक के अंत का अध्याय जिसमें उसका उद्देश्य या परिणाम संक्षेप मे बतलाया गया हो। ४. सारांश।
उपस†–संज्ञा स्त्री० [सं० उप+वास=महँक] दुर्गंध। बदबू।
उपसना†–क्रि० अ० [सं० उप+वास=महँक] १. दुर्गंधित होना। २. सड़ना।
उपसर्ग–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह शब्द या अव्यय जो किसी शब्द के पहले लगता है और उसमें किसी अर्थ की विशेषता करता है। जैसे, अनु, अव, उप, उद् इत्यादि। २. अशकुन। ३. दैवी उत्पात।
उपसागर–संज्ञा पुं० [सं०] छोटा समुद्र। समुद्र का एक भाग। खाड़ी।
उपसाना–क्रि० स० [हिं० उपसना] बासी
उपसुन्द–संज्ञा पुं० [सं०] सुंद नाम के दैत्य का छोटा भाई।
उपसेचन–संज्ञा पुं० [सं०] १. पानी से सींचना या भिगोना। पानी छिड़कना। २. गीली चीज। रसा। शोरवा।
[illegible] संज्ञा पुं० [सं०] १. तीखे या मध्य

वि० निकट बैठा हुआ।
उपस्थान–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उपस्थानीय, उपस्थित] १. निकट आना। सामने आना। २. अभ्यर्थना या पूजा के लिये निकट आना। ३. खड़े होकर स्तुति करना। ४. पूजा का स्थान। ५. सभा। समाज।
उपस्थित–वि० [सं०] १. समीप बैठा हुआ। सामने या पास आया हुआ। विद्यमान। मौजूद। हाजिर। २ ध्यान में आया हुआ। याद।
उपस्थिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्ण-वृत्ति।
उपस्थिति–संज्ञा स्त्री० [सं०] विद्यमानता। मौजूदगी। हाजिरी।
उपाकरव–संज्ञा पु० [सं०] जमीन या किसी जायदाद की आमदनी या हक।
उपहत–वि० [सं०] १. नष्ट या बरबाद किया हुआ। २. बिगाड़ा हुआ। दूषित। ३. संकट में पड़ा हुआ।
उपहसित (हास)–संज्ञा पु० [सं०] हास के छ. भेदों में से चौथा। नाक फुला-कर आँखें टेढ़ी करते और गर्दन हिलाते हुए हँसना।
उपहार–संज्ञा पुं० [सं०] १ भेंट। नजर। नजराना। २. शैवों की उपासना के छ. नियम—हसित, गीत, नृत्य, डुडुक्कार, नम-स्कार और जप।
उपहास–संज्ञा पु० [सं०] [वि० उपहास्य] १. हँसी। दिल्लगी। २. निंदा। बुराई।
उपहासास्पद–वि० [सं०] १. उपहास के योग्य। हँसी उडाने के लायक। २ निंद-नीय। खराब। बुरा।
उपहासी*–संज्ञा स्त्री० [सं० उपहास] हँसी। ठट्ठा। निन्दा।
उपहो*–संज्ञा पु० [हिं०ऊपर+हा (प्रत्य०)] अपरिचित, बाहरी या विदेशी आदमी।
उपांग–संज्ञा पुं० [सं०] १. अंग का भाग। अवयव। २. वह वस्तु जिससे किसी वस्तु के अंगों की पूर्ति हो। जैसे—वेद के उपांग। ३. तिलक। टीका।
उपांत–संज्ञा पु० [सं०] [वि० उपांत्य] १. अंत के समीप का भाग। २. आस-पास का हिस्सा। प्रांत भाग। ३. छोटा किनारा।
उपांत्य–वि० [सं०] अंतवाले के समीप-वाला। अंतिम से पहले का।
उपाउ*–संज्ञा पुं० दे० "उपाय"।
उपाख्यान–संज्ञा पुं० [सं०] १. पुरानी कथा। पुराना वृत्तांत। २. किसी कथा के अंतर्गत कोई और कथा। ३. वृत्तांत।
उपाटना*–क्रि० स० दे० "उखाड़ना"।
उपाति*–संज्ञा स्त्री० दे० "उत्पत्ति"।
उपादान–संज्ञा पु० [सं०] १. प्राप्ति। ग्रहण। स्वीकार। २. ज्ञान। बोध। ३ विषयों से इंद्रियों की निवृत्ति। ४. वह कारण जो स्वयं कार्य्यरूप में परिणत हो जाय। सामग्री जिससे कोई वस्तु तैयार हो। ५. सांख्य की चार आध्यात्मिक तुष्टियों में से एक जिसमें मनुष्य एक ही बात से पूरे फल की आशा करके और प्रयत्न छोड़ देता है।
उपादेय–वि० [सं०] १. ग्रहण करने योग्य। लेने योग्य। २. उत्तम। श्रेष्ठ।
उपाधि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. और वस्तु को और बतलाने का छल। कपट। २. वह जिसके संयोग से कोई वस्तु और की और अथवा किसी विशेष रूप में दिखाई दे। ३. उपद्रव। उत्पात। ४. कर्तव्य का विचार। धर्मचिंता। ५. प्रतिष्ठासूचक पद। खिताब।
उपाधी–वि० [सं० उपाधिन्] [स्त्री० उपा-धिनी] उपद्रवी। उत्पात करनेवाला।
उपाध्याय–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० उपा-ध्याया, उपाध्यायानी, उपाध्यायी] १. वेद वेदांग का पढ़ानेवाला। २. अध्यापक। शिक्षक। गुरु। ३. ब्राह्मणों का एक भेद।
उपाध्याया–संज्ञा स्त्री० [सं०] अध्यापिका।
उपाध्यायानी–संज्ञा स्त्री० [सं०] उपाध्याय की स्त्री। गुरुपत्नी।
उपाध्यायी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. उपाध्याय की स्त्री। गुरुपत्नी। २ अध्यापिका।

उपानह्–संज्ञा पुं० [सं०] जूता। पनही।
उपाना*–क्रि० स० [सं० उत्पन्न] १. उत्पन्न करना। पैदा करना। २. सोचना।
उपाय–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उपायी, उपेय] १. पास पहुँचना। निकट आना। २. वह जिससे अभीष्ट तक पहुँचें। साधन। युक्ति। तदबीर। ३. राजनीति में शत्रु पर विजय पाने की चार युक्तियाँ—साम, भेद, दंड, और दान। ४. शृंगार के दो साधन, नाम और दाम।
उपायन–संज्ञा पुं० [सं०] भेंट। उपहार।
उपारना*–क्रि० स० दे० "उखाड़ना"।
उपार्जन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उपार्जनीय, उपार्जित] लाभ करना। कमाना।
उपार्जित–वि० [सं०] कमाया हुआ। प्राप्त किया हुआ। संगृहीत।
उपालंभ–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उपालब्ध] ओलाहना। शिकायत। निंदा।
उपालभन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उपालंभनीय, उपालंभित, उपालभ्य, उपालब्ध] ओलाहना देना। निंदा करना।
उपाव*†–संज्ञा पुं० दे० "उपाय"।
उपास*†–संज्ञा पुं० दे० "उपवास"।
उपासक–वि० [सं०] [स्त्री० उपासिका] पूजा या आराधना करनेवाला। भक्त।
उपासना–संज्ञा स्त्री० [सं० उपासन] १. पास बैठने की क्रिया। २. आराधना। पूजा। टहल। परिचर्य्या।
*क्रि० स० [सं० उपवास] उपासना, पूजा या सेवा करना। भजना।
क्रि० अ० [सं० उपवास] १. उपवास करना। भूखा रहना। २. निराहार व्रत रहना।
उपासनीय–वि० [सं०] सेवा करने योग्य। आराधनीय। पूजनीय।
उपासी–वि० [सं० उपासिन्] [स्त्री० उपासिनी] उपासना करनेवाला। सेवक। भक्त।
उपास्य–वि० [सं०] पूजा के योग्य। जिसकी सेवा की जाती हो। आराध्य।
उपेंद्र–संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र के छोटे भाई, वामन या विष्णु भगवान्।
उपेंद्रवज्रा–संज्ञा स्त्री० [सं०] ग्यारह वर्णों की एक वृत्ति।
उपेक्षा–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उपेक्षणीय, उपेक्षित, उपेक्ष्य] १. विरक्त होना। उदासीन होना। किनारा खींचना। २. घृणा करना। तिरस्कार करना।
उपेक्षा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. उदासीनता। लापरवाही। विरक्ति। २. घृणा। तिरस्कार।
उपेक्षित–वि० [सं०] जिसकी उपेक्षा की गई हो। तिरस्कृत।
उपेक्ष्य–वि० [सं०] उपेक्षा के योग्य।
उपैन*–वि० [सं० उ + पल्लव] [स्त्री० उपैनी] खुला हुआ। नंगा।
क्रि० अ० [?] लुप्त हो जाना। उड़ना।
उपोद्‌घात–संज्ञा पुं० [सं०] १. पुस्तक के आरंभ का वक्तव्य। प्रस्तावना। भूमिका। २. सामान्य कथन से भिन्न विशेष वस्तु के विषय में कथन। (न्याय)।
उपोषण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उपोषणीय, उपोषित, उपोष्य] उपवास। निराहार व्रत।
उपोसथ–संज्ञा पुं० [सं० उपवसथ, प्रा० उपोसथ] निराहार व्रत। उपवास। (जैन, बौद्ध)
उफ़–अव्य० [अ०] आह। ओह। अफ़सोस।
उफड़ना*–क्रि० अ० [हिं० उफनना] उबलना। उफान खाना। जोश खाना।
उफनना*–क्रि० अ० [सं० उत् + फेन] १. उबलकर उठना। जोश खाना। (दूध आदि का)। २. उमड़ना।
उफनाना–क्रि० अ० [सं० उत् + फेन] १. उबलना। २. उमड़ना।
उफान–संज्ञा पुं० [सं० उत् + फेन] गरमी पाकर फेन के सहित ऊपर उठना। उबाल।
उबकना–क्रि० अ० [हिं० उबाक] कै करना।
उबकाई†*–[संज्ञा स्त्री०] [हिं० ओकाई] मतली। कै।
उबट*–संज्ञा पुं० [सं० उद्वाट] अटपट या बुरा रास्ता। विकट मार्ग।
वि० ऊबड़-खाबड़। ऊँचा-नीचा।
उबटन–संज्ञा पुं० [सं० उद्वर्त्तन] शरीर पर मलने के लिये सरसों, तिल और चिरौंजी

आदि का लेप। बटना। अभ्यंग।

उबटना–क्रि० स० [सं० उद्वर्तन] बटना लगाना। उबटन मलना।

उबना*–क्रि० अ० १. दे० "उगना"। २. दे० "ऊबना"।

उबरना–क्रि० अ० [सं० उद्वारण] १. उद्धार पाना। निस्तार पाना। मुक्त होना। छूटना। २. शेष रहना। बाकी बचना।

उबलना–क्रि० अ० [सं० उद्=ऊपर + वलन= जाना] १. आँच या गरमी पाकर तरल पदार्थों का फेन के साथ ऊपर उठना। उफनना। २. उमड़ना। वेग से निकलना।

उबहना*–क्रि० स० [सं० उद्वहन, पा० उव्वहन ऊपर उठना] १. हथियार खींचना। (हथियार) म्यान से निकालना। शस्त्र उठाना। २. पानी फेंकना। उलीचना। ३. ऊपर की ओर उठना। उभरना।

क्रि० स० [सं० उद्वहन] जोतना।

वि० [सं० उपाहन] बिना जूते का। नंगा।

उबाँत*†–संज्ञा स्त्री० [सं० उद्वांत] उलटी। वमन। कै।

उबार–संज्ञा पुं० [सं० उद्वारण] १. निस्तार। छुटकारा। उद्धार। २. ओहार।

उबारना–क्रि० स० [सं० उद्वारण] उद्धार करना। छुड़ाना। मुक्त करना। बचाना।

उबाल–संज्ञा पुं० [हिं० उबलना] १ आँच पाकर फेन के सहित ऊपर उठना। उफान। २. जोश। उद्वेग। क्षोभ।

उबालना–क्रि० स० [सं० उद्वालन] १ तरल पदार्थ को आग पर रखकर इतना गरम करना कि वह फेन के साथ ऊपर उठ आवे। खौलाना। चुराना। जोश देना। २. पानी के साथ आग पर चढ़ाकर गरम करना। जोश देना। उसिनना।

उबासी–संज्ञा स्त्री० [सं० उद्वास] जँभाई।

उबाहना*–क्रि० स० दे० "उबाहना"।

उबीठना–क्रि० स० [सं० अव+सं० इष्ट] जी भर जाने पर अच्छा न लगना।

क्रि० अ० ऊबना। घबराना।

उबीधना*–क्रि० अ० [सं० उद्विद्ध] १. फँसना। उलझना। २ धँसना। गड़ना।

उबीधा–वि० [सं० उद्विद्ध] [स्त्री० उबीधी] १. धँसा हुआ। गड़ा हुआ। २. काँटों से भरा हुआ। झाड़-झंखाड़वाला।

उबेना*†–वि० [हिं० उ=नहीं + सं० उपानह] नंगे पैर। बिना जूते का।

उबेरना*–क्रि० स० दे० "उबारना"।

उबेहना–क्रि० स० [सं० उद्वेष्टन] १. जड़ना। बैठाना। २. पिरोना।

उभरना†–क्रि० अ० [हिं० उभरना] १. अहंकार करना। शेखी करना। २ दे० "उमड़ना"।

उभड़ना–क्रि० अ० [सं० उद्भरण] १. किसी तल या सतह का आस-पास की सतह से कुछ ऊँचा होना। उकसना। फूलना। २. ऊपर निकलना। उठना। जैसे, अंकुर उभड़ना। ३. उत्पन्न होना। पैदा होना। ४. खुलना। प्रकाशित होना। ५. बढ़ना। अधिक या प्रबल होना। ६. चल देना। हट जाना। ७ जवानी पर आना। ८. गाय भैंस आदि का मस्त होना।

उभय–वि० [सं०] दोनों।

उभयतः–क्रि० वि० [सं०] दोनों ओर से।

उभयतोमुख–वि० [सं०] दोनों ओर मुँहवाला।

यौ०—उभयतोमुखी गौ=ब्याती हुई गाय जिसके गर्भ से बच्चे का मुँह बाहर निकल आया हो। (इसके दान का बड़ा माहात्म्य लिखा है)

उभयविपुला–संज्ञा स्त्री० [सं०] आर्या छंद का एक भेद।

उभरना*†–क्रि० अ० दे० "उभड़ना"

उभरौंहा*–वि० [हिं० उभरना + औंहा (प्रत्य०)] उभार पर आया हुआ। उभरा हुआ।

उभाड़–संज्ञा पुं० [सं० उद्भिदन] १. उठान। ऊँचापन। ऊँचाई। २ ओज। वृद्धि।

उभाड़ना–क्रि० स० [हिं० उभड़ना] १ भारी वस्तु को धीरे-धीरे उठाना। उकसाना। २ उत्तेजित करना। बहकाना।

उभाड़दार–वि० [हिं० उभाड़ + फा० दार]

१. उठा या उभरा हुआ। २. भड़कीला।
उभाना*–क्रि० अ० दे० "अभुआना"।
उभिटना*–क्रि० अ० [देश०] ठिठकना। हिचकना। भिटकना।
उभै*–वि० दे० "उभय"।
उमंग–संज्ञा स्त्री० [सं० उद् = ऊपर + मंग = चलना] १. चित्त का उभाड़। सुखदायक मनोवेग। मौज। लहर। उल्लास। २. उभाड़। ३. अधिकता। पूर्णता।
उमंगना*–क्रि० अ० दे० "उमगना"।
उमँड़ना–क्रि० अ० दे० "उमड़ना"।
उमग*–संज्ञा स्त्री० दे० "उमंग"।
उमगन*–संज्ञा स्त्री० दे० 'उमंग'।
उमगना–क्रि० अ० [हिं० उमंग + ना] १. उभड़ना। उमड़ना। भरकर ऊपर उठना। २. उल्लास में होना। हुलसना।
उमचना*–क्रि० अ० [सं० उन्मंच] १. किसी वस्तु पर तलवों से अधिक दाब पहुँचाने के लिये कूदना। हुमचना। २. चौकन्ना होना। सजग होना।
उमड़–संज्ञा स्त्री० [सं० उन्मडन] १. बाढ़। बढ़ाव। भराव। २ घिराव। ३ धावा।
उमड़ना–क्रि० अ० [हिं० उमंग] १. द्रव वस्तु का बहुतायत के कारण ऊपर उठना। उतराकर बह चलना। २. उठकर फैलना। छाना। घेरना। जैसे—बादल उमड़ना। यौ०—उमड़ना घुमड़ना = घूम-घूमकर फैलना या छाना। (बादल) ३. आवेश में भरना। जोश में आना।
उमड़ाना–क्रि० अ० दे० "उमड़ना"। क्रि० स० "उमड़ना" का प्रेरणार्थक रूप।
उमदना*–क्रि० अ० [सं० उन्मद] १. उमंग में भरना। मस्त होना। २. उमगना। उमड़ना।
उमदा–वि० दे० "उम्दा"।
उमदाना*–क्रि० अ० [सं० उन्मद] १. मतवाला होना। मद में भरना। मस्त होना। २. उमंग या आवेश में आना।
उमर–संज्ञा स्त्री० [अ० उम्र] १. अवस्था। वय। २. जीवनकाल। आयु।
उमरा–संज्ञा पुं० [अ०] अमीर का बहुवचन। प्रतिष्ठित लोग। सरदार।
उमराव*‡–संज्ञा पुं० दे० "उमरा"।
उमस–संज्ञा स्त्री० [सं० ऊष्म] वह गरमी जो हवा न चलने पर होती है।
उमहना*–क्रि० अ० दे० "उमड़ना"।
उमा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शिव की स्त्री, पार्वती। २. दुर्गा। ३. हलदी। ४. अलसी। ५. कीर्ति। ६. कांति।
उमाकना*–क्रि० अ० [सं० उ = नहीं + मंक] खोदकर फेंक देना। नष्ट करना।
उमाकिनी*†–वि० स्त्री० [हिं० उमाकना] उखाड़नेवाली। खोदकर फेंक देनेवाली।
उमाचना*†–क्रि० स० [सं० उन्मचन] १. उभाड़ना। ऊपर उठाना। २. निकालना।
उमाद*–संज्ञा पुं० दे० "उन्माद"।
उमापति–संज्ञा पुं० [सं०] शिव।
उमाह–संज्ञा पुं० [हिं० उमहना] उत्साह। उमंग। जोश। चित्त का उद्गार।
उमाहना*–क्रि० अ० दे० "उमड़ना"। क्रि० स० उमड़ाना। उमगाना।
उमाहल*–वि० [हिं० उमाह] उमंग में भरा हुआ। उत्साहित।
उमेठन–संज्ञा स्त्री० [सं० उद्वेष्टन] ऐंठन। मरोड़। पेंच। बल।
उमेठना–क्रि० स० [सं० उद्वेष्टन] ऐंठना। मरोड़ना।
उमेठवाँ–वि० [हिं० उमेठना] ऐंठदार। ऐंठनदार। घुमावदार।
उमेड़ना*–क्रि० स० दे० "उमेठना"।
उमेलना*–क्रि० स० [सं० उन्मीलन] १. खोलना। प्रकट करना। २. वर्णन करना।
उम्दगी–संज्ञा स्त्री० [फा०] अच्छापन। भलापन। खूबी।
उम्दा–वि० [अ०] अच्छा। भला।
उम्मत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. किसी मत के अनुयायियों की मंडली। २. जमाअत। समिति। समाज। ३ औलाद। संतान। (परिहास) ४. पैरोकार। अनुयायी।
उम्मीद, उम्मेद–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] आशा।

भरोसा। आसरा।

उम्मेदवार–संज्ञा पु० [फा०] १ आशा या आसरा रखनेवाला। २ काम सीखने या नौकरी पाने की आशा से किसी दफ्तर में बिना तनखाह काम करनेवाला आदमी। ३ किसी पद पर चुने जाने के लिये खड़ा होनेवाला आदमी।

उम्मेदवारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १ आशा। आसरा। २ काम सीखने या नौकरी पाने की आशा से बिना तनखाह काम करना।

उम्र–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ अवस्था। वयस। २ जीवनकाल। आयु।

उर–संज्ञा पु० [सं० उरस्] १ वक्षस्थल। छाती। २ हृदय। मन चित्त।

उरकना*–क्रि० अ० दे० "रुकना"।

उरग–संज्ञा पु० [सं०] साँप।

उरगना*–क्रि० स० [सं० उरगीकरण] १ स्वीकार करना। २ सहना।

उरगारि–संज्ञा पु० [सं०] गरुड़।

उरगिनी*–संज्ञा स्त्री० [सं० उरगी] सर्पिणी।

उरज, उरजात*–संज्ञा पु० दे० "उरोज"।

उरझना*–क्रि० अ० दे० "उलझना"।

उरण–संज्ञा पु० [सं०] १ भेंड़ा। मेढ़ा। २ युरेनस नामक ग्रह।

उरद–संज्ञा पु० [सं० ऋद्ध, पा० उद्ध] [स्त्री० अल्पा० उरदी] एक प्रकार का पौधा जिसकी फलियों के बीज या दाने की दाल होती है। माष।

उरध*–क्रि० वि० दे० "ऊर्ध्व"।

उरधारना–क्रि० स० दे० "उधेड़ना।

उरबसी–संज्ञा स्त्री० दे० "उर्वसी"।

उरबी*–संज्ञा स्त्री० दे० "उर्वी"।

उरमना*†–क्रि० अ० [सं० अवलंबन, प्रा० ओलंबन] लटकना।

उरमाना*†–क्रि० स० [हिं० उरमना] लटकाना।

उरमाल*–संज्ञा पु० [फा० रूमाल] रूमाल।

उरविज*–संज्ञा पु० [सं० उर्वी+ज= उत्पन्न] भौम। मंगल।

उरला–वि० [सं० अपर, अवर+हिं० ला (प्रत्य०)] पिछला। पीछे का। उत्तर। वि० [हिं० विरल] विरला। निराला।

उरस–वि० [सं० अरस] फीका। नीरस। संज्ञा पु० [सं० उरस्] १ छाती। वक्षस्थल। २ हृदय। चित्त।

उरसना*–क्रि० अ० [हिं० उटसना] ऊपर नीचे करना। उथल-पुथल करना।

उरसिज–संज्ञा पु० [सं०] स्तन।

उरहना*–संज्ञा पु० दे० "उलाहना"।

उरा*–संज्ञा स्त्री० [सं० उर्वी] पृथिवी।

उराय–संज्ञा पु० दे० "उराव"।

उरारा*–वि० [सं० उरु] विस्तृत। विशाल।

उराव–संज्ञा पु० [सं० उरस्+आव (प्रत्य०)] चाव। चाह। उमंग। उत्साह। हौसला।

उराहना–संज्ञा पु० दे० "उलाहना"।

उरिण, उरिन–वि० दे० "उऋण"।

उरु–वि० [सं०] १ विस्तीर्ण। लंबा चौड़ा। २ विशाल। बड़ा।

*संज्ञा पु० [सं० ऊरु] जंघा। जाँघ।

उरुवा*–संज्ञा पु० [सं० उलूक, प्रा० उलूअ] उल्लू की जाति की एक चिड़िया। रुआ।

उरूज–संज्ञा पु० [अ०] बढ़ती। वृद्धि।

उरे*†–क्रि० वि० [सं० अवर] १ परे। आगे। आगे। २ दूर।

उरेखना*–क्रि० स० दे० "अवरेखना"।

उरेह–संज्ञा पु० [सं० उल्लेख] चित्रकारी।

उरेहना–क्रि० स० [सं० उल्लेखन] खींचना। लिखना। रचना। (चित्र)

उरोज–संज्ञा पु० [सं०] स्तन। कुच।

उर्द–संज्ञा पु० दे० "उरद"।

उर्दपर्णी–संज्ञा स्त्री० [हिं० उर्द+सं० पर्णी] माषपर्णी। बन-उरदी।

उर्दू–संज्ञा स्त्री० [तु०] वह हिंदी जिसमें अरबी, फारसी के शब्द अधिक हों और जो फारसी लिपि में लिखी जाय।

उर्दू बाजार–संज्ञा पु० [हिं० उर्दू+बाजार] १ लशकर या छावनी का बाजार। २ वह बाजार जहाँ सब चीजें मिलें।

उर्ध*–वि० [सं०] ऊर्ध्व।

उर्फ़—संज्ञा पुं० [अ०] चलतू नाम। पुकारने का नाम। उपनाम।
उर्मि*—संज्ञा स्त्री० दे० "ऊर्मि"।
उर्मिला—संज्ञा स्त्री० [सं०ऊर्मिला] सीता जी की छोटी बहिन जो लक्ष्मण जी से ब्याही गई थी।
उर्वरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. उपजाऊ भूमि। २. पृथ्वी। भूमि। ३. एक अप्सरा। वि० स्त्री० उपजाऊ। जरखेज। (जमीन)
उर्वसी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अप्सरा।
उर्विजा*—संज्ञा स्त्री० दे० "उर्वीजा"।
उर्वी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी।
उर्वीजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी से उत्पन्न, सीता।
उर्वीधर—संज्ञा पुं० [सं०] १. शेष। २. पर्वत।
उर्स—संज्ञा पुं० [अ०] १. मुसलमानों में पीर आदि के मरने के दिन का कृत्य। २. मुसलमान साधुओं की निर्वाण-तिथि।
उलंग*—वि० [सं० उग्नग्न] नंगा।
उलघन*—संज्ञा पुं० दे० "उल्लंघन"।
उलघना, उलँघना*—क्रि० स० [सं० उल्लंघन] १. नाँघना। डाँकना। उल्लंघन करना। २. न मानना। अवज्ञा करना।
उलका*—संज्ञा स्त्री० दे० "उल्का"।
उलचना—क्रि० स० दे० "उलीचना"।
उलछना*†—क्रि०स० [हिं० उलचना] १.हाथ से छितराना। बिखराना। २. उलीचना।
उलझन—संज्ञा स्त्री० [सं० अवरुंधन] १. अटकाव। फँसान। गिरह। गाँठ। २. बाधा। ३. पेंच। फेर। चक्कर। समस्या। ४. व्यग्रता। चिंता। तरद्दुद।
उलझना—क्रि० अ० [सं० अवरुंधन] १. फँसना। अटकना। जैसे काँटे में उलझना। ('उलझना' का उलटा 'सुलझना' है।) २. लपेट में पड़ना। बहुत से घुमावों के कारण फँस जाना। ३. लिपटना। ४. काम में लिप्त या लीन होना। ५. तकरार करना। लड़ना-झगड़ना। ६. कठिनाई में पड़ना। अड़चन में पड़ना। ७. अटकना। रुकना। ८. बल खाना। टेढ़ा होना।
उलझा*—संज्ञा पुं० दे० "उलझन"।
उलझाना—क्रि० स० [हिं० उलझना] १. फँसाना। अटकाना। २. लगाए रखना। लिप्त रखना। ३. टेढ़ा करना।
*क्रि० अ० उलझना। फँसना।
उलझाव—संज्ञा पुं० [हिं० उलझना] १. अटकाव। फँसान। २. झगड़ा। बखेड़ा। ३. चक्कर। फेर।
उलझौंहाँ—वि० [हिं० उलझना] १. अटकाने या फँसानेवाला। २. लुभानेवाला।
उलटना—क्रि० अ० [सं० उल्लोठन] १. ऊपर का नीचे और नीचे का ऊपर होना। औंधा होना। पलटना। २. पीछे मुड़ना। घूमना। पलटना। ३. उमड़ना। टूट पड़ना। ४ अडबंड होना। अस्त-व्यस्त होना। ५ विपरीत होना। विरुद्ध होना। ६. क्रुद्ध होना। चिढ़ना। ७. बरबाद होना। नष्ट होना। ८. बेहोश होना। बेसुध होना। ९. गिरना। १०. घमंड करना। इतराना। ११. चौपायों का एक बार जोड़ा खाकर गर्भ धारण न करना और फिर जोड़ा खाना।
क्रि० स० १. नीचे का भाग ऊपर और ऊपर का भाग नीचे करना। औंधा करना। पलटना। फेरना। २. औंधा गिराना। ३. पटकना। गिरा देना। ४. लटकती हुई वस्तु को समेटकर ऊपर चढ़ाना। ५ अंडबंड करना। अस्तव्यस्त करना। ६. विपरीत करना। और का और करना। ७. उत्तर-प्रत्युत्तर करना। बात दोहराना। ८. खोदकर फेंकना। उखाड़ डालना। ९.बीज मारे जाने पर फिर से बोने के लिये खेत जोतना। १०. बेसुध करना। बेहोश करना। ११. कै करना। वमन करना। १२. उँडेलना। अच्छी तरह ढालना। १३. बरबाद करना। नष्ट करना। १४. रटना। जपना। बार बार कहना।
उलट पलट (पुलट)—संज्ञा स्त्री० [हिं०] अदल-बदल। अव्यवस्था। गड़बड़ी।
उलट फेर—संज्ञा पुं० [हिं० उलटना + फेर]

१. परिवर्त्तन। अदल-बदल। हेर-फेर।
२ जीवन की भली-बुरी दशा।

उलटा–वि० [हिं० उलटना] [स्त्री० उलटी] १ जिसके ऊपर का भाग नीचे और नीचे का भाग ऊपर हो। औंधा।
मुहा०—उलटी साँस चलना = साँस का जल्दी जल्दी बाहर निकलना। दम उखड़ना (मरने का लक्षण)। उलटी साँस लेना = जल्दी जल्दी साँस खींचना। मरने के निकट होना। उलटे मुँह गिरना = दूसरे को नीचा दिखाने के बदले स्वयं नीचा देखना।
२ जिसका आगे का भाग पीछे अथवा दाहिनी ओर का भाग बाईं ओर हो। इधर का उधर। क्रम-विरुद्ध।
मुहा०—उलटा फिरना या लौटना = तुरत लौट पड़ना। बिना क्षण भर ठहरे पलटना। उलटा हाथ = बायाँ हाथ। उलटी गंगा बहना = अनहोनी बात होना। उलटी माला फेरना = बुरा मनना। अहित चाहना। उलटे छुरे से मूड़ना = उल्लू बनाकर काम निकालना। भँसना। उलटे पाँव फिरना = तुरत लौट पड़ना। ३ कालक्रम में जो आगे का पीछे और पीछे का आगे हो। जो समय से आगे पीछे हो। ४ विरुद्ध। विपरीत। खिलाफ। ५ उचित के विरुद्ध। अंडबंड। अयुक्त।
मुहा०—उलटा जमाना = वह समय जब भली बात बुरी समझी जाय। अंधेर का समय। उलटा सीधा = बिना क्रम का। अंडबंड। अव्यवस्थित। उलटी खोपड़ी का = जड़। मूर्ख। उलटी सीधी सुनाना = खरी-खोटी सुनाना। भला-बुरा कहना। फटकारना।
क्रि० वि० १ विरुद्ध क्रम से। उलटे तौर से। बेठिकाने। अंडबंड। २ जैसा होना चाहिए उससे और ही प्रकार से।
संज्ञा पु० बेसन से बननेवाला एक पकवान।

उलटाना*–क्रि० स० [हिं० उलटना] १ पलटाना। लौटाना। पीछे फेरना। २ और का और करना या कहना। अन्यथा करना या कहना। ३ फेरना। दूसरे पक्ष में करना। ४ उलटा करना।

उलटा पलटा (पुलटा)–वि० [हिं० उलटा + पलटना] इधर का उधर। अटबट। बे सिर पैर का। बेतरतीब।

उलटा पलटी–संज्ञा स्त्री० [हिं० उलटना] फेरफार। अदल-बदल।

उलटाव–संज्ञा पु० [हिं० उलटना] १ पलटाव। फेर। २ घुमाव। चक्कर।

उलटी–संज्ञा स्त्री० [हिं० उलटना] १ वमन। कै। २ कलैया। कलाबाज़ी।

उलटी सरसों–संज्ञा स्त्री० [हिं० उलटी + सरसों] वह सरसों जिसकी कलियों का मुँह नीचे होता है। यह जादू, टोने के काम में आती है। टेगो।

उलटे–क्रि० वि० [हिं० उलटा] १ विरुद्ध क्रम से। बेठिकाने। २ विपरीत व्यवस्थानुसार। विरुद्ध न्याय से।

उलथना*–क्रि० अ० [सं० उद् = नहीं + स्थल = जमना] ऊपर-नीचे होना। उथल-पुथल होना। उलटना।
क्रि० स० ऊपर-नीचे करना। उलट-पुलट करना।

उलथा–संज्ञा पु० [हिं० उलथना] १ नाचने के समय ताल के अनुसार उछलना। २ कलाबाज़ी। कलैया। ३ कलाबाज़ी के साथ पानी में कूदना। उलटा। उड़ी। ४ करवट बदलना। (चौपायों के लिये)

उलद*–संज्ञा स्त्री० [हिं० उलदना] झड़ी। वर्षण।

उलदना*–क्रि० स० [हिं० उलटना] उँडेलना। उलटना। ढालना।
क्रि० अ० खूब बरसना।

उलमना†*–क्रि० अ० [सं० अवलम्बन] लटकना। झुकना।

उलरना*–क्रि० अ० [सं० उल्ललन] १ कूदना। उछलना। २ नीचे-ऊपर होना। ३ झपटना।

उललना*–क्रि० अ० [हिं० उड़लना] १ ढरकना। ढलना। २ इधर-उधर होना।

उलसना*–क्रि० अ० [सं० उल्लसन] शोभित

होना। सोहना।
उलहना–क्रि० अ० [सं० उल्लंभन] १. उभड़ना। निकलना। प्रस्फुटित होना। २. उमड़ना। हुलसना। फूलना।
संज्ञा पुं० दे० "उलाहना"।
उलाँघना|*–क्रि० अ० [सं० उल्लंघन] १. लाँघना। डाँकना। फाँदना। २. अवज्ञा करना। न मानना। ३. पहले पहल घोड़े पर चढ़ना। (चाबुक सवार)
उलाटना|–क्रि० अ० दे० "उलटना"।
उलार–वि० [हिं० ओलरना=लेटना] जो पीछे की ओर झुका हो। जिसके पीछे की ओर बोझ अधिक हो। (गाड़ी)
उलारना|–क्रि० स० [हिं० उलरना] उछालना। नीचे ऊपर फेकना।
क्रि० स० दे० "ओलारना"।
उलाहना–संज्ञा पुं० [सं० उपालंभन] १. किसी की भूल या अपराध को उसे दुःखपूर्वक जताना। शिकायत। गिला। २. किसी के दोष या अपराध को उससे संबंध रखनेवाले किसी और आदमी से कहना। शिकायत।
|*–क्रि० स० १. उलाहना देना। २. दोष देना। निंदा करना।
उलीचना–क्रि० स० [सं० उल्लुंचन] हाथ या बरतन से पानी उछालकर दूसरी ओर डालना।
उलूक–संज्ञा पुं० [सं०] १. उल्लू चिड़िया। २. इंद्र। ३. दुर्योधन का एक दूत। ४. कणाद मुनि का एक नाम।
यौ०—उलूकदर्शन=वैशेषिक दर्शन।
संज्ञा पुं० [सं० उल्का] लुक। लौ।
उलूखल–संज्ञा पुं० [सं०] १. ओखली। २. खल। खरल। खट्टू। ३. गुग्गुल।
उड़ेलना*–क्रि० स० [हिं० उड़ेलना] ढरकाना। उड़ेलना। ढालना।
उलेल*–संज्ञा स्त्री० [हिं० कुलेल] १. उमंग। जोश। तेज़ी। उछल-कूद। २. बाढ़।
वि० बेपरवाह। अल्हड़।
उल्का–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्रकाश। तेज। २. लुक। लुआठा। ३. मशाल। दस्ती। ४. दीया। चिराग। ५. एक प्रकार के चमकीले पिंड जो कभी कभी रात को आकाश में एक ओर से दूसरी ओर को वेग से जाते हुए अथवा पृथ्वी पर गिरते हुए दिखाई पड़ते हैं। इनके गिरने को "तारा टूटना" कहते हैं।
उल्कापात–संज्ञा पुं० [सं०] १. तारा टूटना। लुक गिरना। २. उत्पात। विघ्न।
उल्कापाती–वि० [सं० उल्कापातिन्] [स्त्री० उल्कापातिनी] दंगा मचानेवाला। उत्पाती।
उल्कामुख–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० उल्कामुखी] १. गीदड़। २. एक प्रकार का प्रेत जिसके मुँह से प्रकाश या आग निकलती है। अगिया-बैताल। ३. महादेव का एक नाम।
उल्था–संज्ञा पुं० [हिं० उलथना] भाषांतर। अनुवाद। तरजुमा।
उल्लंघन–संज्ञा पुं० [सं०] १. लाँघना। डाँकना। २. अतिक्रमण। ३. न मानना। पालन न करना।
उल्लंघना*–क्रि० स० दे० "उलंघना"।
उल्लसन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उल्लसित, उल्लासी] १. हर्ष करना। खुशी मनाना। २. रोमांच।
उल्लाप्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. उपरूपक का एक भेद। २. सात प्रकार के गीतों में से एक।
उल्लाल–संज्ञा पुं० [सं०] एक मात्रिक अर्द्धसम छंद।
उल्लाला–संज्ञा पुं० [सं० उल्लाल] एक मात्रिक छंद।
उल्लास–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उल्लासक, उल्लसित] १. प्रकाश। चमक। झलक। २. हर्ष। आनंद। ३. ग्रंथ का एक भाग। पर्व। ४. एक अलंकार जिसमें एक के गुण या दोष से दूसरे में गुण या दोष का होना दिखलाया जाता है।
उल्लासक–वि० [सं०] [स्त्री० उल्लासिका] आनंद करनेवाला। आनंदी।

उल्लासन–संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रकट करना। प्रकाशित करना। २ हर्षित होना। प्रसन्न होना।
उल्लासी–वि० [सं० उल्लासिन्] [स्त्री० उल्लासिनी] आनंदी। सुखी।
उल्लिखित–वि० [सं०] १ खोदा हुआ। उत्कीर्ण। २ छीला हुआ। खरादा हुआ। ३ ऊपर लिखा हुआ। ४ खींचा हुआ। चित्रित। ५ लिखा हुआ। लिखित।
उल्लू–संज्ञा पुं० [सं० उलूक] १ दिन में न देखनेवाला एक प्रसिद्ध पक्षी। खूसट। मुहा०—कहीं उल्लू बोलना = उजाड़ होना। २ बेवकूफ। मूर्ख।
उल्लेख–संज्ञा पुं० [सं०] १ लिखना। लेख। २ वर्णन। चर्चा। जिक्र। ३ चित्र खींचना। ४ एक काव्यालंकार जिसमें एक ही वस्तु का अनेक रूपों में दिखाई पड़ना वर्णन किया जाय।
उल्लेखन–संज्ञा पुं० [सं०] १ लिखना। २ चित्र खींचना।
उल्लेखनीय–वि० [सं०] लिखने योग्य। उल्लेख योग्य।
उल्व–संज्ञा पुं० [सं०] १ झिल्ली जिसमें बच्चा बँधा हुआ पैदा होता है। आँवल। अँवरी। २ गर्भाशय।
उवना*–क्रि० अ० दे० 'उगना'।
उशवा–संज्ञा पुं० [अ०] एक पेड़ जिसकी जड़ रक्तशोधक है।
उशीर–संज्ञा पुं० [सं०] गाँडर की जड़। खस।
उषा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रभात। तड़का। ब्राह्मवेला। २ अरुणोदय की लालिमा। ३ बाणासुर की कन्या जो अनिरुद्ध को ब्याही गई थी।
उषाकाल–संज्ञा पुं० [सं०] भोर। प्रभात। तड़का।
उषापति–संज्ञा पुं० [सं०] अनिरुद्ध।
उष्ट्र–संज्ञा पुं० [सं०] ऊँट।
उष्ण–वि० [सं०] १ तप्त। गरम। २ तासीर में गरम। ३ फुरतीला। तेज। संज्ञा पुं० १ ग्रीष्म ऋतु। २ प्याज। ३ एक नरक का नाम।
उष्णक–संज्ञा पुं० [सं०] १ ग्रीष्म काल। २ ज्वर। बुखार। ३ सूर्य्य। वि० १ गरम। तप्त। २ ज्वरयुक्त। ३ तेज। फुरतीला।
उष्ण कटिबंध–संज्ञा पुं० [सं०] पृथ्वी का वह भाग जो कर्क और मकर रेखाओं के बीच में पड़ता है।
उष्णता–संज्ञा स्त्री० [सं०] गरमी। ताप।
उष्णत्व–संज्ञा पुं० [सं०] गरमी।
उष्णीष–संज्ञा पुं० [सं०] १ पगड़ी। साफ़ा। २ मुकुट। ताज।
उष्म–संज्ञा पुं० [सं०] १ गरमी। ताप। २ धूप। ३ गरमी की ऋतु।
उष्मज–संज्ञा पुं० [सं०] छोटे कीड़े जो पसीने और मैल आदि में पैदा होते हैं। जैसे, खटमल, मच्छर।
उष्मा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गरमी। २. धूप। ३ गुस्सा। क्रोध। रिस।
उस–सर्व० उभ० [हिं० वह] 'वह' शब्द का वह रूप है जो विभक्ति लगने पर होता है। जैसे—उसने, उसको।
उसकन–संज्ञा पुं० [सं० उत्कषण] घास पात या पयाल का वह पोटा जिससे बरतन माँजते हैं। उबसन।
उसकना†–क्रि० अ० दे० 'उकसना'।
उसकाना†–क्रि० स० दे० 'उकसाना'।
उसनना–क्रि० स० [सं० उष्ण या खिन्न] १ उबालना। पानी के साथ आग पर चढ़ाकर गरम करना। २ पकाना।
उसनाना–क्रि० स० [हिं० उसनना का प्रे० रूप] उबलवाना। पकवाना।
उसनीस*–संज्ञा पुं० दे० 'उष्णीष'।
उसमा†–संज्ञा पुं० [अ० वसमा] उबटन। बटना।
उसरना–क्रि० अ० [सं० उद्+सरण = जाना] १ हटना। टलना। दूर होना। स्थानांतरित होना। २ बीतना। गुजरना। ३ भूलना। विस्मृत होना।

विसरना। ४. पूरा होना। बनकर खड़ा होना।
उसलना*–क्रि० अ० दे० "उसरना"।
उससना*–क्रि० स० [सं० उत्+सरण] खिसकना। टलना। स्थानांतरित होना। क्रि० स० [हिं० उसास] साँस लेना। दम लेना।
उसाँस*–संज्ञा पुं० दे० "उसास"।
उसारना*–क्रि० स० [हिं० उसारना] १. उखाड़ना। २. हटाना। टालना। ३. बनाकर खड़ा करना।
उसारा†–संज्ञा पुं० दे० "ओसारा"।
उसालना*–क्रि० स० [सं० उत्+सारण] १. उखाड़ना। २. हटाना। टालना। ३. भगाना।
उसास–संज्ञा स्त्री० [सं० उत्+श्वास] १. लंबी साँस। ऊपर को खींची हुई साँस। २. साँस। श्वास। ३. दुःख या शोक-सूचक श्वास। ठंडी साँस।
उसासी–संज्ञा स्त्री० [हिं० उसास] दम लेने की फुरसत। अवकाश। छुट्टी।
उसिनना†–क्रि० स० दे० "उसनना"।
उसीर–संज्ञा पुं० दे० "उशीर"।
उसीसा–संज्ञा पुं० [सं० उत्+शीर्ष] १. सिरहाना। २. तकिया।
उसूल–संज्ञा पुं० [अ०] सिद्धांत।
उस्तरा–संज्ञा पुं० दे० "उस्तुरा"।
उस्ताद–संज्ञा पुं० [फ़ा०] [स्त्री० उस्तानी] गुरु। शिक्षक। अध्यापक। वि० १. चालाक। छली। धूर्त। २. निपुण। प्रवीण। दक्ष।
उस्तादी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. शिक्षक की वृत्ति। गुरुआई। २. चतुराई। निपुणता। ३. विज्ञता। ४. चालाकी। धूर्तता।
उस्तानी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. गुरुआनी। गुरुपत्नी। २. वह स्त्री जो शिक्षा दे। ३. चालाक स्त्री। ठगिन।
उस्तुरा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] बाल मूँड़ने का औजार। छुरा। अस्तुरा।
उहदा†–संज्ञा पुं० दे० "ओहदा"।
उहवाँ†–क्रि० वि० दे० "वहाँ"।
उहाँ–क्रि० वि० दे० "वहाँ"।
उहै†–सर्व० दे० "वही"।

ऊ

ऊ–संस्कृत या हिंदी वर्णमाला का छठा अक्षर या वर्ण जिसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ है।
ऊँग–संज्ञा स्त्री० दे० "ऊँघ"।
ऊँगा–संज्ञा पुं० [सं० अपामार्ग] अपामार्ग। चिचड़ा।
ऊँघ–संज्ञा स्त्री० [सं० अवाङ्=नीचे मुँह] उँघाई। निद्रागम। झपकी। अर्द्ध-निद्रा।
ऊँघन–संज्ञा स्त्री० [हिं० ऊँघ] ऊँघ। झपकी।
ऊँघना–क्रि० अ० [सं० अवाङ्+नीचे मुँह] झपकी लेना। नींद में झूमना। निद्रालु होना।
ऊँच*†–वि० दे० "ऊँचा"। यौ०–ऊँच नीच=१. छोटा-बड़ा। आला-अदना। २. छोटी जाति का और बड़ी जाति का। ३ हानि और लाभ, भला और बुरा।
ऊँचा–वि० [सं० उच्च] [स्त्री० ऊँची] १. जो दूर तक ऊपर की ओर गया हो। उठा हुआ। उन्नत। बलंद। मुहा०—ऊँचा नीचा=१. ऊबड़-खाबड़। जो समथल न हो। २. भला-बुरा। हानि-लाभ। २. जिसका छोर बहुत नीचे तक न हो। जिसका लटकाव कम हो। जैसे, ऊँचा

पुरता। ३ श्रेष्ठ। बड़ा। महान्।
मुहा०—ऊँचा नीचा या ऊँची नीची सुनाना = खोटी-खरी सुनाना। भला-बुरा कहना।
४. जोर का (शब्द)। तीव्र (स्वर)।
मुहा०—ऊँचा सुनना = केवल जोर की आवाज सुनना। कम सुनना।
ऊँचाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० ऊँचा + ई(प्रत्य०)] १ ऊपर की ओर का विस्तार। उठान। उच्चता। बलंदी। २ गौरव। बड़ाई। श्रेष्ठता।
ऊँचे*—क्रि० वि० [हिं० ऊँचा] १ ऊँचे पर। ऊपर की ओर। २ जोर से (शब्द करना)।
मुहा०—ऊँच नीच पैर पड़ना = बुरे काम में फँसना।
ऊँछ—संज्ञा पु० [देश०] एक राग।
ऊँछना—क्रि० अ० [सं० उच्छन = बीनना] कंघी करना।
ऊँट—संज्ञा पु० [सं० उष्ट्र प्रा० उट्ट] [स्त्री० ऊँटनी] एक ऊँचा चौपाया जो सवारी ढोने और बोझ लादने के काम में आता है।
ऊँटकटारा—संज्ञा पु० [सं० उष्ट्रकट] एक कँटीली भाड़ी जो जमीन पर फैलती है।
ऊँटवान—संज्ञा पु० [हिं० ऊँट + वान(प्रत्य०)] ऊँट चलानेवाला।
ऊँड़*†—संज्ञा पु० [सं० कुंड] १ वह बरतन जिसमें धन रखकर भूमि में गाड़ दे। २ तहखाना।
वि० गहरा। गभीर।
ऊँदर†—संज्ञा पु० [सं० इंदुर] चूहा।
ऊँहूँ—अव्य० [अनु०] नहीं। कभी नहीं। हर्गिज नहीं। (उत्तर में)
ऊ—संज्ञा पु० [सं०] १ महादेव। २ चंद्रमा।
*†अव्य० भी।
*†सर्व० वह।
ऊअना*†—क्रि० अ० [सं० उदयन] उगना। उदय होना।
ऊआबाई—वि० [हिं० आव बाव] अंडबंड। निरर्थक। व्यर्थ।
ऊक*—संज्ञा पु० [सं० उल्का] १ उल्का। टूटता हुआ तारा। २ लूक। लुआठा। ३ दाह। जलन। ताप। तपन।
संज्ञा स्त्री० [हिं० चूक का अनु०] भूल। चूक। गलती।
ऊकना*†—क्रि० अ० [हिं० चूकना का अनु०] १ चूकना। खाली जाना। लक्ष्य पर न पहुँचना। २ भूल करना। गलती करना।
क्रि० स० १ भूल जाना। २ छोड़ देना। उपेक्षा करना।
क्रि० स० [हिं० ऊक] जलाना। दाहना। भस्म करना।
ऊख—संज्ञा पु० [सं० इक्षु] ईख। गन्ना।
*संज्ञा पु० [सं० ऊष्म] गरमी। उमस।
वि० तपा हुआ। गरमी से व्याकुल।
ऊखम—संज्ञा पु० दे० "ऊष्म"।
ऊखल—संज्ञा पु० [सं० उलूखल] काठ या पत्थर का गहरा बरतन जिसमें धान आदि की भूसी अलग करने के लिये मूसल से कूटते हैं। ओखली। काँडी।
ऊगना—क्रि० अ० दे० "उगना"।
ऊधम*—संज्ञा पु० [सं० उद्धन्] उपद्रव। ऊधम। ऊँधर।
ऊजड़—वि० दे० "उजाड़"।
ऊजर*—वि० दे० "उज्ज्वल"।
वि० [हिं० उजड़ना] उजाड़।
ऊजरा*—वि० दे० "उजला"।
ऊटक नाटक—संज्ञा पु० [सं० उत्कट + नाटक] १ व्यर्थ का काम। फजूल इधर-उधर करना। २ इधर-उधर का काम। जैसा हो, वैसा काम।
ऊटना*—क्रि० अ० [हिं० औटना] १ उत्साहित होना। हौसला करना। उमंग में आना। २ तर्क वितर्क करना। सोच-विचार करना।
ऊटपटांग—वि० [हिं० अटपट + अंग] १ अटपट। टेढ़ामेढ़ा। बेढंगा। बेमेल। २ निरर्थक। व्यर्थ। वाहियात।
ऊड़ना*—क्रि० स० दे० "ऊढ़ना"।
ऊड़ा—संज्ञा पु० [सं० ऊन] १ कमी।

टोटा। घाटा। २. गिरानी। अकाल। ३. नाश। लोप।
ऊड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० बूड़ना] डुब्बी। गोता।
ऊढ़–वि० [सं०] [स्त्री० ऊढ़ा] विवाहित।
ऊढ़ना*–क्रि० अ० [सं० ऊह] तर्क करना। सोच-विचार करना।
क्रि० अ० [सं० ऊढ़] विवाह करना। ब्याहना।
ऊढ़ा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विवाहिता स्त्री। २. वह ब्याही स्त्री जो अपने पति को छोड़कर दूसरे से प्रेम करे।
ऊत–वि० [सं० अपुत्र] १. बिना पुत्र का। निसंतान। निपूता। २. उजड्ड। बेवकूफ।
संज्ञा पु० वह जो निःसतान मरने के कारण पिंड आदि न पाकर भूत होता है।
ऊतर*–संज्ञा पु० दे० १. "उत्तर"। २ दे० "बहाना"।
ऊतला*–वि० [हिं० उतावला] चंचल। वेगवान्।
ऊतिम*†–वि० दे० "उत्तम"।
ऊद–संज्ञा पु० [अ०] अगर का पेड़ या लकड़ी।
संज्ञा पु० [सं० उद] ऊदबिलाव।
ऊदबत्ती–संज्ञा स्त्री० [अ० ऊद+हिं० बत्ती] अगर की बत्ती जिसे सुगंध के लिये जलाते हैं।
ऊदबिलाव–संज्ञा पु० [सं० उदबिडाल] नेवले के आकार का, पर उससे बड़ा, एक जंतु जो जल और स्थल दोनों मे रहता है।
ऊदल–संज्ञा पु० [उदयसिंह का संक्षिप्त रूप] महोबे के राजा परमाल के मुख्य सामंतों में से एक वीर।
ऊदा–वि० [अ० ऊद अथवा फा० कबूद] ललाई लिए हुए काले रंग का। बैंगनी।
संज्ञा पु० ऊदे रंग का घोड़ा।
ऊधम–संज्ञा पु० [सं० उद्धम] उपद्रव। उत्पात। धूम। हुल्लड़।
ऊधमी–वि० [हिं० ऊधम] [स्त्री० ऊधमिन] ऊधम करनेवाला। उत्पाती। उपद्रवी।
ऊधो–संज्ञा पुं० दे० "उद्धव"।
ऊन–संज्ञा पुं० [सं० ऊर्ण] भेड़ बकरी आदि का रोयाँ जिससे कंबल और पहनने के गरम कपड़े बनते हैं।
वि० [सं० ऊन] [स्त्री० ऊनी] १. कम। थोड़ा। छोटा। २. तुच्छ। नाचीज।
संज्ञा पुं० स्त्रियों के व्यवहार के लिये एक प्रकार की छोटी तलवार।
ऊनता–संज्ञा स्त्री० [सं० ऊन] कमी। न्यूनता।
ऊना–वि० [सं०] १. कम। न्यून। थोड़ा। २. तुच्छ। हीन। नाचीज।
संज्ञा पु० खेद। दुःख। रंज।
ऊनी–वि० [सं० ऊन] कम। न्यून।
संज्ञा स्त्री० उदासी। रंज। खेद।
वि० [हिं० ऊन+ई (प्रत्य०)] ऊन का बना हुआ वस्त्र आदि।
*संज्ञा स्त्री० दे० "ओप"।
ऊपर–क्रि० वि० [सं० उपरि] [वि० ऊपरी] १. ऊँचे स्थान में। ऊँचाई पर। आकाश की ओर। २. आधार पर। सहारे पर। ३. ऊँची श्रेणी में। उच्च कोटि में। ४. (लेख में) पहले। ५. अधिक। ज्यादा। ६. प्रकट में। देखने में। ७ तट पर। किनारे पर। ८. अतिरिक्त। परे। प्रतिकूल।
मुहा०–ऊपर ऊपर = बिना और किसी के जनाए। चुपके से। ऊपर की आमदनी = १. वह प्राप्ति जो नियत द्वार से नहीं। २. इधर उधर से फटकारी हुई रकम। ऊपर तले = १ ऊपर नीचे २. एक के पीछे एक। आगे पीछे। क्रमशः। ऊपर तले के = वे दो भाई या बहनें जिनके बीच में और कोई भाई या बहन न हुई हो। ऊपर लेना = (किसी कार्य्य का) जिम्मे लेना। हाथ में लेना। ऊपर से = १. बलंदी से। ऊँचे से। २. इसके अतिरिक्त। सिवा इसके। ३ वेतन से अधिक। घूस या रिश्वत के रूप में। ४. प्रत्यक्ष में। दिखाने के लिये। जाहिरी तौर पर।
ऊपरी–वि० [हिं० ऊपर] १. ऊपर का। २. बाहर का। बाहरी। ३. बँधे हुए के सिवा। ४. दिखौआ। नुमाइशी।

ऊब–संज्ञा स्त्री० [हि० ऊबना] बहुत देर तक एक ही अवस्था में रहने से चित्त की व्याकुलता। उद्वेग। घबराहट।
संज्ञा स्त्री० [हि० ऊभ] उत्साह। उमंग।
ऊबट–संज्ञा पु० [सं० उद् = बुरा + वर्त्म, प्रा० वट्ट = मार्ग] कठिन मार्ग। अटपट रास्ता।
वि० ऊबड़-खाबड़। ऊँचा-नीचा।
ऊबड़ खाबड़–वि० [अनु०] ऊँचा-नीचा। जो समथल न हो। अटपट।
ऊबना–क्रि० अ० [सं० उद्वेजन] उकताना। घबराना। अकुलाना।
ऊभ*–वि० [हि० ऊभना = खड़ा होना] ऊँचा। उभरा हुआ। उठा हुआ।
संज्ञा स्त्री० [हि० ऊब] १ व्याकुलता। २ उमस। गर्मी। ३ हौसला। उमंग।
ऊभना*–क्रि० अ० [सं० उद्भवन] उठना।
ऊमक*–संज्ञा स्त्री० [सं० उमंग] झोंक। उठान। वेग।
ऊरज–वि० संज्ञा पु० दे० "ऊर्ज"।
ऊरध*–वि० दे० "ऊर्ध्व"।
ऊरु–संज्ञा पु० [सं०] जाँघ। जंघा।
ऊरुस्तंभ–संज्ञा पु० [सं०] वात का एक रोग जिसमें पैर जकड़ जाते हैं।
ऊर्ज–वि० [सं०] बलवान्। शक्तिमान।
संज्ञा पु० [सं०] [वि० ऊर्जस्वल, ऊर्जस्वी] १. बल। शक्ति। २ कार्तिक मास।
३ एक काव्यालंकार जिसमें सहायक के घटने पर भी अहंकार का न छोड़ना वर्णन किया जाता है।
ऊर्जस्वी–वि० [सं०] १ बलवान्। शक्तिमान्। २ तेजवान्। ३ प्रतापी।
संज्ञा पु० [सं०] एक काव्यालंकार जो वहाँ माना जाता है जहाँ रसाभास या भावाभास स्थायी भाव का अथवा भाव का अंग हो।
ऊर्ण–संज्ञा पु० [सं०] भेड़ या बकरी के बाल। ऊन।
ऊर्ध्व–क्रि० वि० [सं०] ऊपर।
वि० १ ऊँचा। २ खड़ा।
[illegible]ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] मुक्ति।
ऊर्ध्वगामी–वि० [सं०] १. ऊपर को जानेवाला। २ मुक्त। निर्वाण-प्राप्त।
ऊर्ध्वचरण–संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार के तपस्वी जो सिर के बल खड़े होकर तप करते हैं।
ऊर्ध्वद्वार–संज्ञा पु० [सं०] ब्रह्मरंध्र।
ऊर्ध्वपुंड्र–संज्ञा पु० [सं०] खड़ा तिलक। वैष्णवी तिलक।
ऊर्ध्वबाहु–संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार के तपस्वी जो अपनी एक बाहु ऊपर की ओर उठाए रहते हैं।
ऊर्ध्वरेखा–संज्ञा स्त्री० [सं०] पुराणानुसार राम-कृष्ण आदि विष्णु के अवतारों के ४८ चरणचिह्नों में से एक चिह्न।
ऊर्ध्वरेता–वि० [सं०] जो अपने वीर्य्य को गिरने न दे। ब्रह्मचारी।
संज्ञा पु० १ महादेव। २ भीष्म पितामह। ३ हनुमान्। ४ सनकादि। ५ संन्यासी।
ऊर्ध्वलोक–संज्ञा पु० [सं०] १ आकाश। २ वैकुंठ। स्वर्ग।
ऊर्ध्वश्वास–संज्ञा पु० [सं०] १ ऊपर को चढ़ती हुई साँस। २ श्वास की कमी या तंगी।
ऊर्ध–क्रि० वि०, वि० दे० "ऊर्ध्व"।
ऊर्ध्व–क्रि० वि०, वि० दे० "उद्ध्व"।
ऊर्मि ऊर्मी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लहर। तरंग। २ पीड़ा। दुःख। ३ छः की संख्या। ४ शिकन। कपड़े की सलवट।
ऊलजलूल–वि० [देश०] १ असंबद्ध। बे सिर पैर का। अंडबंड। २ अनाड़ी। नासमझ। ३ बेअदब। अशिष्ट।
ऊषा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सवेरा। २ अरुणोदय। पौ फटने की लाली। ३ बाणासुर की कन्या जो अनिरुद्ध से ब्याही गई थी।
ऊषाकाल–संज्ञा पु० [सं०] सवेरा।
ऊष्म–संज्ञा पु० [सं०] १ गर्मी। २ भाप। ३ गर्मी का मौसिम।
वि० गरम।
ऊष्म वर्ण–संज्ञा पु० [सं०] "श, ष, स,

हु" ये अक्षर।

ऊष्मा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ग्रीष्म काल। २. तपन। गरमी। ३. भाप।

ऊसर–संज्ञा पुं० [सं० ऊसर] वह भूमि जिसमें रेह अधिक हो और कुछ उत्पन्न न हो।

ऊह–अव्य० [सं०] १. क्लेश या दुःख-सूचक शब्द। ओह। २. विस्मय-सूचक शब्द। संज्ञा पुं० [सं०] १. अनुमान। विचार। २. तर्क। दलील। ३. किंवदंती। अफ़वाह।

ऊहापोह–संज्ञा पुं० [सं० ऊह + अपोह] तर्क-वितर्क। सोच-विचार।

ऋ

ऋ–एक स्वर जो वर्णमाला का सातवाँ वर्ण है। इसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है। संज्ञा स्त्री० [सं०] १. देवमाता। अदिति। २. निंदा। बुराई।

ऋक्–संज्ञा स्त्री० [सं०] ऋचा। वेदमंत्र। संज्ञा पुं० दे० "ऋग्वेद"।

ऋक्ष–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० ऋक्षी] १. भालू। २. तारा। नक्षत्र। ३. मेष, वृष आदि राशियाँ।

ऋक्षपति–संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा। २. जांबवान्।

ऋक्षवान्–संज्ञा पुं० [सं०] ऋक्ष पर्वत जो नर्मदा के किनारे से गुजरात तक है।

ऋग्वेद–संज्ञा पुं० [सं०] चार वेदों में से एक।

ऋग्वेदी–वि० [सं० ऋग्वेदिन्] ऋग्वेद का जानने या पढ़नेवाला।

ऋचा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वेदमंत्र जो पद्य में हो। २. वेदमंत्र। कांडिका। ३. स्तोत्र।

ऋच्छ–संज्ञा पुं० दे० "ऋक्ष"।

ऋजु–वि० [सं०] [स्त्री० ऋज्वी] १. जो टेढ़ा न हो। सीधा। २. सरल। सुगम। सहज। ३. सरल चित्त का। सज्जन। ४. अनुकूल। प्रसन्न।

ऋजुता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सीधापन। २. सरलता। सुगमता। ३. सज्जनता।

ऋण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० ऋणी] किसी से कुछ समय के लिये कुछ द्रव्य लेना। क़र्ज़। उधार।

मुहा०—ऋण उतरना = कर्ज अदा होना। ऋण चढ़ाना = ज़िम्मे रुपया निकालना। ऋण-पटाना = उधार लिया हुआ रुपया चुकता करना।

ऋणी–वि० [सं० ऋणिन्] १. जिसने ऋण लिया हो। क़र्ज़दार। देनदार। अधमर्ण। २. उपकार माननेवाला। अनुगृहीत।

ऋतु–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्राकृतिक अवस्थाओं के अनुसार वर्ष के दो दो महीनों के विभाग जो ६ हैं—वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत, शिशिर। २. रजोदर्शन के उपरांत वह काल जिसमें स्त्रियाँ गर्भ-धारण के योग्य होती हैं।

ऋतुचर्य्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] ऋतुओं के अनुसार आहार-विहार की व्यवस्था।

ऋतुमती–वि० स्त्री० [सं०] १. रजस्वला। पुष्पवती। मासिक-धर्मयुक्ता। २. जिस (स्त्री) के रजोदर्शन के उपरांत के १६ दिन न बीते हों और जो गर्भाधान के योग्य हो।

ऋतुराज–संज्ञा पुं० [सं०] वसंत ऋतु।

ऋतुवती*–वि० स्त्री० दे० "ऋतुमती"।

ऋतुस्नान–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० स्त्री० ऋतुस्नाता] रजोदर्शन के चौथे दिन का स्त्रियों का स्नान।

ऋत्विज–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० आर्त्विजी] यज्ञ करनेवाला। वह जिसका यज्ञ में वरण किया जाय। इनकी संख्या १६ होती है जिनमें चार मुख्य हैं—(क) होता, (ख) अध्वर्य्यु, (ग) उद्गाता और (घ) ब्रह्मा।

ऋद्ध–वि० [सं०] संपन्न। समृद्ध।

ऋद्धि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक ओषधि या लता जिसका कंद दवा के काम में

आता है। २. समृद्धि। बढ़ती। ३ आर्या छंद का एक भेद।

ऋद्धि सिद्धि–संज्ञा स्त्री० [सं०] समृद्धि और सफलता, जो गणेशजी की दासियाँ मानी जाती हैं।

ऋनिया–वि० [सं० ऋणी] ऋणी।

ऋभु–संज्ञा पु० [सं०] १ एक गण-देवता। २ देवता।

ऋषभ–संज्ञा पु० [सं०] १ बैल। २ श्रेष्ठता-वाचक शब्द। ३ राम की सेना का एक बंदर। ४ बैल के आकार का दक्षिण का एक पर्वत। ५ संगीत के सात स्वरों में से दूसरा। ६ एक जड़ी जो हिमालय पर होती है।

ऋषि–संज्ञा पु० [सं०] १ वेद-मंत्रों का प्रकाश करनेवाला। मंत्र-द्रष्टा। २ आध्यात्मिक और भौतिक तत्त्वों का साक्षात्कार करनेवाला।

यौ०–ऋषिऋण = ऋषियों के प्रति कर्तव्य। वेद के पठन पाठन से इससे उद्धार होता है।

ऋष्यमूक–संज्ञा पु० [सं०] दक्षिण का एक पर्वत।

ऋष्यशृंग–संज्ञा पु० [सं०] एक ऋषि जो विभांडक ऋषि के पुत्र थे।

ए

ए–संस्कृत वर्णमाला का ग्यारहवाँ और नागरी वर्णमाला का आठवाँ स्वर वर्ण। यह अ और इ के योग से बना है, इसी लिये यह कंठतालव्य है।

ऐंच-पेंच–संज्ञा पु० [फा० पेच] १ उलझाव। उलझन। घुमाव। २ टेढ़ी चाल। घात।

एंजिन–संज्ञा पु० दे० "इंजन"।

ऍड़ा-बेंड़ा–वि० [हिं० बेंड़ा + अनु० ऍड़] उलटा-सीधा। अंडबंड।

ऍड़ी–संज्ञा स्त्री० [सं० एरंड] १ एक प्रकार का रेशम का कीड़ा जो अंडी के पत्ते खाता है। २ इस कीड़े का रेशम। अंडी। मूगा। संज्ञा स्त्री० दे० "एड़ी"।

ऍड़ुआ–संज्ञा पु० [हिं० ऐंड़ना] [स्त्री० अल्पा० ऍड़ुई] गोल मेंडरा जिसे गद्दी की तरह सिर पर रखकर बोझ उठाते हैं। बिड़ुआ। गेंड़ुरी।

ए–संज्ञा पु० [सं०] विष्णु।

अव्य० एक अव्यय जिसका प्रयोग संबोधन या बुलाने के लिये करते हैं।

० [सं० एष] यह।

एकंग–वि० [सं० एक + अंग] अकेला।

एकंगा–वि० [सं० एक + अंग] [स्त्री० एकंगी] एक ओर का। एकतरफा।

एकंत*–वि० दे० "एकांत"।

एक–वि० [सं०] १ इकाइयों में सबसे छोटी और पहली संख्या। २ अद्वितीय। बेजोड़। अनुपम। ३ कोई। अनिश्चित। ४ एक ही प्रकार का। समान। तुल्य।

मुहा०—एक अंक या आँक = १ एक ही बात। ध्रुव बात। पक्की बात। निश्चय २ एक बार। एक आध = थोड़ा। कम। इक्का-दुक्का। एक आँख से देखना = सबके साथ समान भाव रखना। एक आँख न भाना = तनिक भी अच्छा न लगना। एक एक = १ हर एक। प्रत्येक। सब। २ अलग अलग। पृथक् पृथक्। एक एक करके = एक के पीछे दूसरा। धीरे धीरे। एक-कलम = बिलकुल। सब। अपनी और किसी की जान एक करना = १ किसी की और अपनी दशा एक सी करना। २ मारना और मर जाना। एकटक = १. अनि-

मेष। स्थिर दृष्टि से। नजर गड़ाकर। २. लगातार देखते हुए। एकताक=समान। बरावर। तुल्य। एकतार=१. एक ही रूप-रंग का। समान। बराबर। २. समभाव से। बराबर। लगातार। एक तो=पहले तो। पहली बात तो यह कि। एक-दम=१. बिना रुके। लगातार। २. फ़ौरन। उसी समय। ३. एकबारगी। एक साथ। एक-दिल=१. खूब मिला जुला। २. एक ही विचार का। अभिन्न-हृदय। एक दूसरे का, को, पर, में, से= परस्पर। एक न चलना=कोई युक्ति सफल न होना। एक पेट के=एक ही माँ से उत्पन्न। सहोदर (भाई)। एक-ब-एक= अकस्मात्। अचानक। एकबारगी। एक बात=१. दृढ़ प्रतिज्ञा। २. ठीक बात। सच्ची बात। एक सा=समान। बराबर। एक से एक=एक से एक बढ़कर। एक स्वर से कहना या बोलना=एक मत होकर कहना। एक होना=१. मिलना-जुलना। मेल करना। २. तद्रूप होना।

एक-चक्र-संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य्य का रथ। २. सूर्य।

वि० चक्रवर्ती।

एकच्छत्र-वि० [सं०] बिना और किसी के आधिपत्य का (राज्य)। जिसमें कहीं और किसी का राज्य या अधिकार न हो।

क्रि० वि० एकाधिपत्य के साथ।

संज्ञा पुं० [सं०] वह राज्य-प्रणाली जिसमें देश के शासन का सारा अधिकार अकेले एक पुरुष को प्राप्त होता है।

एकज-संज्ञा पुं० [सं०] १. जो द्विज न हो। शूद्र। २. राजा।

वि० [सं० एक+एव] एक ही।

एकजद्दी-वि० [फ़ा०] जो एक ही पूर्वज से उत्पन्न हुए हों। सपिंड या सगोत्र।

एकजन्मा-संज्ञा पुं० [सं०] १. शूद्र। २. राजा।

एकड़-संज्ञा पुं० [अं०] पृथ्वी की एक माप जो १⅕ बीघे के बराबर होती है।

एकडाल-संज्ञा पुं० [हिं० एक+डाल] वह कटार या छुरा जिसका फल और बेंट एक ही लोहे का हो।

एकतः-क्रि० वि० [सं०] एक ओर से।

एकत*-क्रि० वि० दे० "एकत्र"।

एकतरफ़ा-वि० [फ़ा०] १. एक ओर का। एक पक्ष का। २. जिसमें तरफदारी की गई हो। पक्षपातग्रस्त। ३. एकरुखा। एक पार्श्व का।

मुहा०—एकतरफा डिगरी=वह डिगरी जो मुद्दालेह के हाजिर न होने के कारण मुद्दई को प्राप्त हो।

एकता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ऐक्य। मेल। २. समानता। बराबरी।

वि० [फ़ा०] अद्वितीय। बेजोड़। अनुपम।

एकतान-वि० [सं०] १. तन्मय। लीन। एकाग्र-चित्त। २. मिलकर एक।

एकतारा-संज्ञा पुं० [हिं० एक+तार] एक तार का सितार या बाजा।

एकतालीस-वि० [सं० एकचत्वारिंशत्] गिनती में चालीस और एक।

संज्ञा पुं० ४१ की संख्या का बोध करानेवाला अंक। ४१।

एकतीस-वि० [सं० एकत्रिंश] गिनती में तीस और एक।

संज्ञा पुं० ३१ की संख्या का बोधक अंक। ३१।

एकत्र-क्रि० वि० [सं०] इकट्ठा। एक जगह।

एकत्रित-वि० दे० "एकत्र"।

एकदंत-संज्ञा पुं० [सं०] गणेश।

एकदा-क्रि० वि० [सं०] एक बार।

एक-देशीय-वि० [सं०] जो एक ही अवसर या स्थल के लिये हो। जो सर्वत्र न घटे।

एकनयन-वि० [सं०] काना। एकाक्ष।

संज्ञा पुं० १. कौवा। २. कुबेर।

एकनिष्ठ-वि० [सं०] जिसकी निष्ठा एक में हो। एक ही पर श्रद्धा रखनेवाला।

एकन्नी-संज्ञा स्त्री० [हिं० एक+आना] निकल धातु का एक आने मूल्य का सिक्का।

एकपक्षीय-वि० [सं०] एक ओर का। एकतरफा।

एकपत्नी व्रत–वि० [स०] एक को छोड़ दूसरी स्त्री से विवाह या प्रेम संबंध न करनेवाला।
सज्ञा पु० एक ही पत्नी रखने का नियम।
एकबारगी–क्रि० वि० [फा०] १ एक ही दफे में। एक समय में। २ अचानक। अकस्मात्। ३ बिल्कुल। सारा।
एकबाल–सज्ञा पु० [अ०] १ प्रताप। २ भाग्य। सौभाग्य। ३ स्वीकार।
एकभुक्त–वि० [स०] जो रात दिन में केवल एक बार भोजन करे।
एकमत–वि० [स०] एक या समान मत रखनेवाले। एक राय के।
एकमात्रिक–वि० [स०] एक मात्रा का।
एकमुखी–वि० [स०] एक मुंहवाला।
यौ०–एकमुखी रुद्राक्ष=वह रुद्राक्ष जिसमें फाँकवाली लकीर एक ही हो।
एकरंग–वि० [हि० एक+रंग] १ समान। तुल्य। २ कपट शून्य। साफ दिल का। ३ जो चारों ओर एक सा हो।
एकरदन–सज्ञा पु० [स०] गणेश।
एकरस–वि० [स०] एक ढंग का। समान।
एकरार–सज्ञा पु० [अ०] १ स्वीकार। स्वीकृति। मजूरी। २ प्रतिज्ञा। वादा।
यौ०—एकरारनामा=वह पत्र जिसमें दो या अधिक पुरुष परस्पर कोई प्रतिज्ञा करें। प्रतिज्ञापत्र।
एकरूप–वि० [स०] १ समान आकृति का। एक ही रंग-ढंग का। २ ज्यों का त्यों। वैसा ही। कोरा।
एकरूपता–सज्ञा स्त्री० [स०] १ समानता। एकता। २ सायुज्य मुक्ति।
एकला*।–वि० दे० "अकेला"।
एकलिंग–सज्ञा पु० [स०] १ शिव का एक नाम। २ एक शिवलिंग जो मेवाड के गह-लौत राजपूतों के प्रधान कुलदेव हैं।
एकलौता–वि० [हि० एकला+पुत्र] [स्त्री० एकलौती] अपने माँ-बाप का एक ही (लड़का)। जिसके और भाई-बहन न हों।
एकवचन–सज्ञा पु० [स०] व्याकरण में वह वचन जिससे एक का बोध होता है।
एकवाँझ–सज्ञा स्त्री० [हि० एक+बाँझ] वह स्त्री जिसे एक बच्चे के पीछे और दूसरा बच्चा न हुआ हो। काकवंध्या।
एकवाक्यता–सज्ञा स्त्री० [स०] ऐकमत्य। लोगों के मत का परस्पर मिल जाना।
एकवेणी–वि० [स०] १ जो (स्त्री) एक ही चोटी बनाकर बालों को किसी प्रकार समेट ले। २ वियोगिनी। ३ विधवा।
एकसठ–वि० [स० एकषष्ठि] साठ और एक।
सज्ञा पु० वह अंक जिससे एकसठ की संख्या का बोध होता है। ६१।
एकसर*।–वि० [हि० एक+सर (प्रत्य०)] १ अकेला। २ एक पल्ले का।
वि० [फा०] बिल्कुल। तमाम।
एकसाँ–वि० [फा०] बराबर। समान।
एकहत्तर–वि० [स० एकसप्तति] सत्तर और एक।
सज्ञा पु० सत्तर और एक की संख्या का बोध करानेवाला अंक। ७१।
एकहत्था–वि० [हि० एक+हाथ] (काम या व्यवसाय) जो एक ही के हाथ में हो।
एकहरा–वि० [स० एक+हरा (प्रत्य०)] [स्त्री० एकहरी] १ एक परत का। जैसे एकहरा अंगा। २ एक लड़ी का।
यौ०–एकहरा बदन=दुबला-पतला शरीर।
एकांग–वि० [स०] जिसे एक ही अंग हो।
एकांगी–वि० [स०] १ एक पक्ष का। एक-तरफा। २ हठी। जिद्दी।
एकांत–वि० [स०] १ अत्यंत। बिल्कुल। २ अलग। अकेला। ३ निर्जन। सूना।
सज्ञा पु० [स०] निराला। सूना स्थान।
एकांत कैवल्य–सज्ञा पु० [स०] मुक्ति का एक भेद। जीवन मुक्ति।
एकांतता–सज्ञा स्त्री० [स०] अकेलापन।
एकांतवास–सज्ञा पु० [स०] [वि० एकांत-वासी] निर्जन स्थान या अकेले में रहना।
एकांतिक–वि० [स०] जो एक ही स्थल के लिये हो। जो सर्वत्र न घटे। एकदेशीय।
एकांती–सज्ञा पु० [स०] वह भक्त जो भग

वत्प्रेम को अपने अन्तःकरण में रखता है, प्रकट नहीं करता फिरता।

एका–संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।
संज्ञा पुं० [सं० एक] ऐक्य। एकता। मेल। अभिसंधि।

एकाई–संज्ञा स्त्री० [हि० एक + आई (प्रत्य०)] १. एक का भाव। एक का मान। २. वह मात्रा जिसके गुणन या विभाग से और दूसरी मात्राओं का मान ठहराया जाता है। ३. अंकों की गिनती में पहले अंक का स्थान। ४. उस स्थान पर लिखा जानेवाला अंक।

एकाएक–क्रि० वि० [हि० एक] अकस्मात्। अचानक। सहसा।

एकाएकी †*–क्रि० वि० दे० "एकाएक"।
वि० [सं० एकाकी] अकेला। तनहा।

एकाकार–संज्ञा पुं० [सं०] मिल-मिलाकर एक होने की दशा। एकमय होना।
वि० एक आकार का। समान।

एकाकी–वि० [सं० एकाकिन्] [स्त्री० एकाकिनी] अकेला। तनहा।

एकाक्ष–वि० [सं०] काना।
यौ०—एकाक्ष रुद्राक्ष = एकमुखी रुद्राक्ष।
संज्ञा पुं० १. कौआ। २. शुक्राचार्य्य।

एकाक्षरी–वि० [सं० एकाक्षरिन्] एक अक्षर का। जिसमें एक ही अक्षर हो।
यौ०—एकाक्षरी कोश = वह कोश जिसमें अक्षरों के अलग अलग अर्थ दिए हों। जैसे, "अ" से वासुदेव, "इ" से कामदेव इत्यादि।

एकाग्र–वि० [सं०] [संज्ञा एकाग्रता] १. एक ओर स्थिर। चंचलता-रहित। २. जिसका ध्यान एक ओर लगा हो।

एकाग्रचित्त–वि० [सं०] जिसका ध्यान बँधा हो। स्थिरचित्त।

एकाग्रता–संज्ञा स्त्री० [सं०] चित्त का स्थिर होना। अचंचलता।

एकात्मता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एकता। अभेद। २. मिल-मिलाकर एक होना।

एकादश–वि० [सं०] ग्यारह।

एकादशाह–संज्ञा पुं० [सं०] मरने के दिन से ग्यारहवें दिन का कृत्य। (हिंदू)

एकादशी–संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रत्येक चांद्र मास के शुक्ल और कृष्ण पक्ष की ग्यारहवीं तिथि जो व्रत का दिन है।

एकाधिपत्य–संज्ञा पुं० [सं०] एकमात्र अधिकार। पूर्ण प्रभुत्व।

एकार्थक–वि० [सं०] समानार्थक।

एकावली–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक अलंकार जिसमें पूर्व का और पूर्व के प्रति उत्तरोत्तर वस्तुओं का विशेषण भाव से स्थापन अथवा निषेध दिखलाया जाय। २. एक छंद। पंकज-वाटिका। ३. एक लड़ का हार।

एकाह–वि० [सं०] एक दिन में पूरा होनेवाला। जैसे—एकाह पाठ।

एकीकरण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० एकीकृत] मिलाकर एक करना।

एकीभूत–वि० [सं०] मिला हुआ। मिश्रित। जो मिलकर एक हो गया हो।

एकेंद्रिय–संज्ञा पुं० [सं०] १. सांख्य के अनुसार उचित और अनुचित दोनों प्रकार के विषयों से इंद्रियों को हटाकर उन्हें अपने मन में लीन करनेवाला। २. वह जीव जिसके केवल एक ही इंद्रिय अर्थात् त्वचा मात्र होती है। जैसे, जोंक, केंचुआ।

एकोतरसौ–वि० [सं० एकोत्तरशत] एक सौ एक।

एकोद्दिष्ट (श्राद्ध)–संज्ञा पुं० [सं०] वह श्राद्ध जो एक के उद्देश्य से किया जाय।

एकौझा*†–वि० [सं० एक] अकेला।

एक्का–वि० [हि० एक = का (प्रत्य०)] १. एक से संबंध रखनेवाला। २. अकेला।
यौ०—एक्का दुक्का = अकेला दुकेला।
संज्ञा पुं० १. वह पशु या पक्षी जो झुंड छोड़कर अकेला चरता या घूमता हो। २. एक प्रकार की दो पहिए की गाड़ी जिसमें एक बैल या घोड़ा जोता जाता है। ३. वह सिपाही जो अकेले बड़े बड़े काम कर सकता हो। ४. ताश या गंजीफे का वह पत्ता जिसमें एक ही बूटी हो। एक्की।

एक्कावान–संज्ञा पुं० [हि० एक्का + वान

ऐन–संज्ञा पु० दे० 'अयन'।
वि० [अ०] १ ठीक। उपयुक्त। सटीक। २. बिलकुल। पूरा पूरा।

ऐनक–संज्ञा स्त्री० [अ० ऐन = आँख] आँख मे लगाने का चश्मा।

ऐपन–संज्ञा पु० [सं० लेपन] हल्दी के साथ गीला पिसा चावल जिससे देवताओं की पूजा मे थापा लगाते है।

ऐब–संज्ञा पु० [अ०] [वि० ऐबी] १ दोष। दूषण। नुक्स। २ अवगुण। कलंक।

ऐबी–वि० [अ०] १ खोटा। बुरा। २ नट-खट। दुष्ट। ३. विकलांग, विशेषत. काना।

ऐया†–संज्ञा स्त्री० [सं०आर्य्या प्रा० अज्जा] १. बड़ी बूढ़ी स्त्री। २ दादी।

ऐयार–संज्ञा पु० [अ०] [स्त्री०ऐयारा] चालाक। धूर्त। उस्ताद। धोखेबाज। छली।

ऐयारी–संज्ञा स्त्री० [अ०] चालाकी। धूर्तता।

ऐयाश–वि० [अ०] [संज्ञा ऐयाशी] १. बहुत ऐश या आराम करनेवाला। २. विषयी। लंपट। इंद्रियलोलुप।

ऐयाशी–संज्ञा स्त्री० [अ०] विषयासक्ति। भोग-विलास।

ऐरा गैरा–वि० [अ०गैर] १ बेगाना। अजनबी (आदमी)। २ तुच्छ। हीन।

ऐराक–संज्ञा पु० दे० "एराक"।

ऐरापति*–संज्ञा पु० दे० "ऐरावत"।

ऐरावत–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० ऐरावती] १. बिजली से चमकता हुआ बादल। २. इंद्र-धनुष। ३ बिजली। ४ इंद्र का हाथी जो पूर्व दिशा का दिग्गज है।

ऐरावती–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ऐरावत हाथी की हथिनी। २ बिजली। ३ रावी नदी।

ऐल–संज्ञा पुं० [सं०] इला का पुत्र पुरूरवा।
*संज्ञा पु० [हिं० अहिला] १. बाढ़। बूड़ा। २. अधिकता। बहुतायत। ३. कोलाहल।

ऐश–संज्ञा पु० [अ०] आराम। चैन। भोग-विलास।

ऐश्वर्य–संज्ञा पु० [सं०] १ विभूति। धन-संपत्ति। २ अणिमादिक सिद्धियाँ। ३ प्रभुत्व। आधिपत्य।

ऐश्वर्य्यवान्–वि० [सं०] [स्त्री० ऐश्वर्यवती] वैभवशाली। संपत्तिवान्। संपन्न।

ऐस†–वि० दे० "ऐसा"।

ऐसा–वि० [सं० ईदृश] [स्त्री० ऐसी] इस प्रकार का। इस ढंग का। इसके समान। मुहा०—ऐसा तैसा या ऐसा वैसा = साधारण। तुच्छ। अदना।

ऐसे–क्रि० वि० [हिं० ऐसा] इस ढब से। इस ढंग से। इस तरह से।

ऐहिक–वि० [सं०] इस लोक से संबंध रखनेवाला। सांसारिक। दुनियावी।

ओ

ओ–संस्कृत वर्णमाला का तेरहवाँ और हिंदी वर्णमाला का दसवाँ स्वर-वर्ण जिसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ और कंठ है।

ओं–अव्य० [अनु०] १ अंगीकार या स्वीकृतिसूचक शब्द। हाँ। अच्छा। तथास्तु। २ परब्रह्म-वाचक शब्द जो प्रणव मंत्र कहलाता है।

ओइछना–क्रि० स० [सं० अवंचन] वारना। निछावर करना।

ओंकार–संज्ञा पु० [सं०] १ परमात्मा का सूचक "ओं" शब्द। २. सोहन चिड़िया।

ओंगना–क्रि० स० [सं० अंजन] गाड़ी की धुरी में चिकनाई लगाना जिससे पहिया आसानी से फिरे।

ओंठ–संज्ञा पु० [सं० ओष्ठ, प्रा० ओट्ठ] मुँह की बाहरी उभरी हुई कोर जिनसे दाँत ढके रहते हैं। लब। होंठ।
मुहा०–ओंठ चबाना–क्रोध और दुःख प्रकट

करना। ओंठ चाटना=किसी वस्तु को खा चुकने पर स्वाद के लालच से ओठों पर जीभ फेरना। ओंठ फडकना=क्रोध के कारण ओंठ काँपना।
ओंड़ा*–वि० [सं० कुंड] गहरा।
संज्ञा पुं० १. गड्ढा। गढ़ा। २. चोरों की खोदी हुई सेंध।
ओ–संज्ञा पुं० ब्रह्मा।
अव्य० १. एक संबोधन-सूचक शब्द। २. विस्मय या आश्चर्य-सूचक शब्द। ओह। ३. एक स्मरण-सूचक शब्द।
ओक–संज्ञा पुं० [सं०] १. घर। निवास-स्थान। २. आश्रय। ठिकाना। ३. नक्षत्रों या ग्रहों का समूह।
संज्ञा स्त्री० [अनु०] मतली। कै।
संज्ञा पुं० [हिं० बूक] अंजली।
ओकना–क्रि० अ० [अनु०] १. कै करना। २. भैंस की तरह चिल्लाना।
ओकपति–संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य्य। २. चंद्रमा।
ओकाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० ओकना] वमन। कै।
ओकारांत–वि० [सं०] जिसके अंत में "ओ" अक्षर हो। जैसे, फोटो।
ओखद†–संज्ञा पुं० दे० "औषध"।
ओखली–संज्ञा स्त्री० [सं० उलूखल] ऊखल। मुहा०—ओखली में सिर देना = कष्ट सहने पर उतारू होना।
ओखा*–संज्ञा पुं० [सं० ओख] मिस। बहाना। हीला।
वि० [सं० ओख = सूखना] १. रूखा-सूखा। २. कठिन। विकट। टेढ़ा। ३. खोटा। जो शुद्ध या खालिस न हो। 'चोखा' का उलटा। ४. झीना। विरल।
ओग*–संज्ञा पुं० [हिं० उगहना] कर। चंदा।
ओघ–संज्ञा पुं० [सं०] १. समूह। ढेर। २. किसी वस्तु का घनत्व। ३. बहाव। धारा। ४. "काल पाके सब काम आप ही हो जायगा" इस प्रकार संतोष। काल-तुष्टि। (सांख्य)
ओछा–वि० [सं० तुच्छ] १. जो गंभीर या उच्चाशय न हो। तुच्छ। क्षुद्र। छिछोरा। २. जो गहरा न हो। छिछला। ३. हलका। जोर का नहीं। ४. छोटा। कम।
ओछाई–संज्ञा स्त्री० दे० "ओछापन"।
ओछापन–संज्ञा पुं० [हिं० ओछा + पन (प्रत्य०)] नीचता। क्षुद्रता। छिछोरापन।
ओज–संज्ञा पुं० [सं० ओजस्] १. बल। प्रताप। तेज। २. उजाला। प्रकाश। ३. कविता का वह गुण जिससे सुननेवाले के चित्त में वीरता आदि का आवेश उत्पन्न हो। ४. शरीर के भीतर के रसों का सार भाग।
ओजस्विता–संज्ञा स्त्री० [सं०] तेज। कांति। दीप्ति। प्रभाव।
ओजस्वी–वि० [सं० ओजस्विन्] [स्त्री० ओजस्विनी] शक्तिवान्। प्रभावशाली।
ओझ–संज्ञा पुं० [सं० उदर, हिं० ओझल] १. पेट की थैली। पेट। २. आँत।
ओझर–संज्ञा पुं० [सं० उदर] पेट।
ओझल–संज्ञा पुं० [सं० अवरुंधन प्रा० ओरुज्झन] ओट। आड़।
ओझा–संज्ञा पुं० [सं० उपाध्याय] १. सरजूपारी, मैथिल और गुजराती ब्राह्मणों की एक जाति। २. भूत प्रेत झाड़नेवाला। सयाना।
ओझाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० ओझा] ओझा की वृत्ति। भूत प्रेत झाड़ने का काम।
ओट–संज्ञा स्त्री० [सं० उट = घास फूस] १. रोक जिससे सामने की वस्तु दिखाई न पड़े। व्यवधान। आड़। मुहा०—ओट में = बहाने से। हीले से। २. आड़ करनेवाली वस्तु। ३. शरण। पनाह। रक्षा।
ओटना–क्रि० स० [सं० आवर्तन] १. कपास को चरखी में दबाकर रूई और बिनौलों को अलग करना। २. अपनी ही बात कहते जाना।
क्रि० स० [हिं० ओट] अपने ऊपर सहना।
ओटनी, ओटा–संज्ञा स्त्री० [हिं० ओटना] कपास ओटने की चरखी। बेलनी।
ओठँगना†–क्रि० अ० [सं० अवस्थान + अंग] १. किसी वस्तु से टिककर बैठना। सहारा

(प्रत्य०)] एकरा होनेवाला।

एकरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० एक] १ वह बैल-गाड़ी जिसमें एक ही बैल जोता जाय। २ ताश या गंजीफे का वह पत्ता जिसमें एक ही बूटी हो। एक्का।

एक्यानबे–वि० [सं० एकनवति, प्रा० एक्का-णउइ] नब्बे और एक।
संज्ञा पुं० नब्बे और एक की संख्या का बोध करानेवाला अंक। ९१।

एक्यावन–वि० [सं० एकपंचाश, प्रा० एक्का-वन्न] पचास और एक।
संज्ञा पुं० पचास और एक की संख्या का बोधक अंक। ५१।

एक्यासी–वि० [सं० एकाशीति, प्रा० एक्कासि] अस्सी और एक।
संज्ञा पुं० एक और अस्सी की संख्या का बोधक अंक। ८१।

एखनी–संज्ञा स्त्री० [फा०] मांस का रसा या शोरबा।

एड़–संज्ञा स्त्री० [सं० एडूक] एड़ी।
मुहा०—एड़ करना = १ एड़ लगाना। २ चल देना। रवाना होना। एड़ देना या लगाना = १ लात मारना। २ घोड़े को आगे बढ़ाने के लिये एड़ से मारना। ३ उसकाना। उत्तेजित करना। ४ बाधा डालना।

एड़ी–संज्ञा स्त्री० [सं० एडूक = हड्डी] टखनी के पीछे पैर की गद्दी का निकला हुआ भाग। एड़।
मुहा०—एड़ी घिसना या रगड़ना = १ एड़ी को मल-मलकर धोना। २ बहुत दिनों से क्लेश या बीमारी में पड़े रहना।
एड़ी से चोटी तक = सिर से पैर तक।

एतद्–सर्व० [सं०] यह।

एतद्देशीय–वि० [सं०] इस देश से संबंध रखनेवाला। इस देश का।

एतबार–संज्ञा पुं० [अ०] विश्वास। प्रतीति।

एतराज़–संज्ञा पुं० [अ०] विरोध। आपत्ति।

एतवार–संज्ञा पुं० दे० "इतवार"।

एता*†–वि० [सं० इयत्] [स्त्री० एती] इस मात्रा का। इतना।

एतादृश–वि० [सं०] ऐसा।

एतिक*†–वि० स्त्री० [हिं० एती+एक] इतनी।

एमन–संज्ञा पुं० [सं० यवन, फा० यमन] संपूर्ण जाति का एक राग।

एरंड–संज्ञा पुं० [सं०] रेंड़। रेंड़ी।

एराक–संज्ञा पुं० [अ०] [वि० एराकी] अरब का एक प्रदेश जहाँ का घोड़ा अच्छा होता है।

एराकी–वि० [फा०] एराक का।
संज्ञा पुं० वह घोड़ा जिसकी नस्ल एराक देश की हो।

एलची–संज्ञा पुं० [तु०] वह जो एक राज्य का संदेशा लेकर दूसरे राज्य में जाता है। दूत। राजदूत।

एला–संज्ञा स्त्री० [सं०] इलायची।

एलुआ–संज्ञा पुं० [अ० एलो] मुसब्बर।

एवं–क्रि० वि० [सं०] ऐसा ही। इसी प्रकार।
यौ०—एवमस्तु = ऐसा ही हो।
अव्य० ऐसे ही और। इसी प्रकार और।

एव–अव्य० [सं०] १ एक निश्चयार्थक शब्द। ही। २. भी।

एवज़–संज्ञा पुं० [अ०] १ प्रतिफल। प्रतिकार। २ परिवर्त्तन। बदला। ३ दूसरे की जगह पर कुछ काल तक के लिये काम करनेवाला। स्थानापन्न पुरुष।

एवज़ी–संज्ञा स्त्री० [अ० एवज़] दूसरे की जगह पर कुछ काल के लिये काम करनेवाला। आदमी। स्थानापन्न पुरुष।

एहु*–सर्व० [सं० एष] यह।
वि० यह।

एहतियात–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ सावधानी। होशियारी। २ परहेज़।

एहसान–संज्ञा पुं० [अ०] उपकार। कृतज्ञता। निहोरा।

एहसानमंद–वि० [अ०] निहोरा या उपकार माननेवाला। कृतज्ञ।

एहि–सर्व० [हिं० एह] "एह" का वह रूप जो उसे विभक्ति के पहले प्राप्त होता है। इसको।

एहो–अव्य० संबोधन शब्द। हे। ऐ।

ऐ

ऐ–संस्कृत वर्णमाला का बारहवाँ और हिंदी या देवनागरी वर्णमाला का नवाँ स्वर-वर्ण जिसका उच्चारण-स्थान कंठ और तालु है।

ऐँ–अव्य० [अनु०] १. एक अव्यय जिसका प्रयोग अच्छी तरह न सुनी या समझी हुई बात को फिर से कहलाने के लिये होता है। २. एक आश्चर्य-सूचक अव्यय।

ऐँचन–क्रि० स० [हिं० खींचना] १. खींचना। तानना। २. दूसरे का क़र्ज़ अपने ज़िम्मे लेना। ओढ़ना।

ऐँचाताना–वि० [हिं० ऐंचना + तानना] जिसकी पुतली ताकने में दूसरी ओर को खिंचती हो। भेंगा।

ऐँचातानी–संज्ञा स्त्री० [हिं० ऐंचना + तानना] खींचा-खींची। अपने-अपने पक्ष का आग्रह।

ऐँछना*–क्रि० स० [सं० उच्छन् = चुनना] १. झाड़ना। साफ़ करना। २. (बालों में) कंघी करना। ऊँछना।

ऐँठ–संज्ञा स्त्री० [हिं० ऐंठन] १. अकड़। ठसक। २. गर्व। घमंड। ३. कुटिल भाव। द्वेष। विरोध। दुर्भाव।

ऐँठन–संज्ञा स्त्री० [सं० आवेष्टन] १. घुमाव। लपेट। पेच। मरोड़। बल। २. खिंचाव। अकड़ाव। तनाव।

ऐँठन–क्रि० स० [सं० आवेष्टन] १. घुमाव देना। बल देना। मरोड़ना। २. दबाव डालकर या धोखा देकर लेना। झँसना।

क्रि० अ० १. बल खाना। घुमाव के साथ तनना। २. तनना। खिंचना। अकड़ना। †३. मरना। ४. अकड़ दिखाना। घमंड करना। ५. टेढ़ी बातें करना। टर्राना।

ऐँठवाना–क्रि० स० [हिं० ऐंठना का प्रे० रूप] ऐंठने का काम दूसरे से करवाना।

ऐँड़–संज्ञा पुं० [हिं० ऐंठ] १. ऐंठ। ठसक। गर्व। २. पानी का भँवर।

वि० निकम्मा। नष्ट।

ऐँड़दार–वि० [हिं० ऐंड़ + फ़ा० दार] १. ठसकवाला। गर्वीला। घमंडी। २. शान-दार। बाँका तिरछा।

ऐँड़ना–क्रि० अ० [हिं० ऐंठना] १. ऐंठना। बल खाना। २. अँगड़ाना। अँगड़ाई लेना। ३. इतराना। घमंड करना।

क्रि० स० १. ऐंठना। बल देना। २. बदन तोड़ना। अँगड़ाना।

ऐँड़बेँड़*–वि० [हिं० बेंड़ी + ऐंड़ी (अनु०)] टेढ़ा। तिरछा। दे० "ऐंड़ा-बेंड़ा"।

ऐँड़ा–वि० [हिं० ऐंड़ना] [स्त्री० ऐंड़ी] टेढ़ा। ऐंठा हुआ।

मुहा०—अंग ऐंड़ा करना = ऐंठ दिखाना।

ऐँड़ाना–क्रि० अ० [हिं० ऐंड़ना] १. अँग-ड़ाना। अँगड़ाई लेना। बदन तोड़ना। २. ठठलाना। अकड़ दिखाना।

ऐंद्रजालिक–वि० [सं०] इंद्रजाल करने-वाला। मायावी।

ऐंद्री–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. इंद्राणी। शची। २. दुर्गा। ३. इंद्रवारुणी। ४. इलायची।

ऐ–संज्ञा पुं० [सं०] शिव।

अव्य० [सं० अयि या हे] एक संबोधन।

ऐक्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक का भाव। एकत्व। २. एका। मेल।

ऐगुन*†–संज्ञा पुं० दे० "अवगुण"।

ऐच्छिक–वि० [सं०] जो अपनी इच्छा पर हो।

ऐज़न–अव्य० [अ०] तथा। तथैव। वही।

ऐत*–वि० दे० "इतना"।

ऐतरेय–संज्ञा पुं० [सं०] १. ऋग्वेद का एक ब्राह्मण। २. एक आरण्यक।

ऐतिहासिक–वि० [सं०] १. इतिहास-संबंधी। जो इतिहास में हो। २. जो इतिहास जानता हो।

ऐतिह्य–संज्ञा पुं० [सं०] परंपरा-प्रसिद्ध प्रमाण। यह प्रमाण कि लोक में बराबर बहुत दिनों से ऐसा सुनते आए हैं।

लेना। टेव लगाना। २. थोड़ा आराम करना। कमर सीधी करना।
ओटँगाना†–क्रि० स० [हिं० ओटँगना] १. सहारे से टिकाना। भिड़ाना। २. किवाड़ बंद करना।
ओड़न*†–संज्ञा पु० [हिं० ओड़ना] १. ओड़ने की वस्तु। वार रोकने की चीज़। २. ढाल। फरी।
ओड़ना–क्रि० स० [हिं० ओट] १. रोकना। धारण करना। ऊपर लेना। २. (कुछ लेने के लिये) फैलाना। पसारना।
ओड़व–संज्ञा पु० [सं०] रागों की एक जाति। वह राग जिसमें पाँच ही स्वर हों।
ओड़ा–संज्ञा पु० १. दे० "ओड़"। २ बड़ा टोकरा। खाँचा।
संज्ञा पु० कमी। टोटा।
ओड्र–संज्ञा पु० [सं०] १. उड़ीसा देश। २ उस देश का निवासी।
ओढ़ना–क्रि० स० [सं० उपवेष्टन] १. शरीर के किसी भाग को वस्त्र आदि से आच्छादित करना। २ अपने सिर लेना। अपने ऊपर लेना। जिम्मे लेना।
संज्ञा पु० ओढ़ने का वस्त्र।
ओढ़नी–संज्ञा स्त्री० [हिं० ओढ़ना] स्त्रियों के ओढ़ने का वस्त्र। उपरेनी। फरिया।
ओढ़र*–संज्ञा पु० [हिं०ओढ़ना] बहाना।
ओढ़ाना–क्रि० स० [हिं० ओढ़ना] ढाँकना। कपड़े से आच्छादित करना।
ओत–संज्ञा स्त्री० [सं० अवधि] १. आराम। चैन। †२. आलस्य। ३ किफायत।
संज्ञा स्त्री० [हिं० आवत] प्राप्ति। लाभ।
वि० [सं०] बुना हुआ।
ओत-प्रोत–वि० [सं०] बहुत मिला-जुला। इतना मिला हुआ कि उसका अलग करना असंभव-सा हो।
संज्ञा पु० ताना-बाना।
ओता*†–वि० दे० "उत्ता"।
ओद–संज्ञा पु० [सं० आर्द्र] नमी। तरी। वि० गीला। तर। नम।
ओदन–संज्ञा पु० [सं०] पका हुआ चावल।
ओदरना†–क्रि० अ० [हिं० ओदारना] १. विदीर्ण होना। फटना। २. छिन्न-भिन्न होना। नष्ट होना।
ओदा–वि० [सं० उद–जल] गीला। नम।
ओदारना†–क्रि० स० [सं० अवदारण] १. विदीर्ण करना। फाड़ना। २. छिन्न-भिन्न करना। नष्ट करना।
ओनचन–संज्ञा स्त्री० [हिं० एंचना] वह रस्सी जो चारपाई के पायताने की ओर बुनावट को खींचकर कड़ा रखने के लिये लगी रहती है।
ओनचना–क्रि० स० [हिं० ऐंचना] चारपाई के पायताने की खाली जगह में लगी हुई रस्सी को बुनावट कड़ी रखने के लिए खींचना।
ओनवना*†–क्रि० अ० दे० "उनवना"।
ओना†–संज्ञा पु० [सं० उद्गमन] तालाबों में पानी के निकलने का मार्ग। निकास।
ओनामासी–संज्ञा स्त्री० [सं० ॐ नमः सिद्धम्] १. अक्षरारंभ। २ प्रारंभ। शुरू।
ओप–संज्ञा स्त्री० [हिं० ओपना] १ चमक। दीप्ति। आभा। कांति। शोभा। २. जिला। पालिश। माँजा।
ओपची–संज्ञा पु० [सं० ओप] कवचधारी योद्धा। रक्षक योद्धा।
ओपना–क्रि० स० [सं० आवपन] जिला देना। चमकाना। पालिश करना।
क्रि० अ० झलकना। चमकना।
ओफ–अव्य० [अनु] पीड़ा, खेद, शोक और आश्चर्यसूचक शब्द। ओह।
ओम्–संज्ञा पु० [सं०] प्रणव मंत्र। ओंकार।
ओर–संज्ञा स्त्री० [सं०अवार] १. किसी नियत स्थान के अतिरिक्त शेष विस्तार जिसे दाहिना, बाँया, ऊपर, नीचे आदि शब्दों से निश्चित करते हैं। तरफ। दिशा। २ पक्ष।
संज्ञा पु० १ सिरा। छोर। किनारा।
मुहा०—ओर निभाना या निवाहना = अंत तक अपना कर्त्तव्य पूरा करना।

२. आदि। आरंभ।
ओरहा–संज्ञा पुं० दे० "होरहा"।
ओराना†–क्रि०अ०[हि०ओर अंत+आना] समाप्त होना। खतम होना।
ओराहना†–संज्ञा पुं० दे० "उलाहना"।
ओरी†–संज्ञा स्त्री०[हि० ओरौता]ओलती।
ओलंदेज, ओलंदेजो–वि० [हालंड देश] हालैंड देश-संबंधी। हालैंड देश का।
ओलंबा, आलभा–संज्ञा पुं० [सं० उपालंभ] उलाहना। शिकायत। गिला।
ओल–संज्ञा पुं० [सं०] सूरन। जिमीकंद।
वि० गीला। ओदा।
संज्ञा स्त्री० [सं० क्रोड़] १. गोंद। २. आड़। ओट। ३. शरण। पनाह। ४ किसी वस्तु या प्राणी का किसी दूसरे के पास जमानत में उस समय तक के लिये रहना, जब तक उस दूसरे व्यक्ति को कुछ रुपया न दिया जाय या उसकी कोई शर्त न पूरी की जाय। जमानत। ५. वह वस्तु या व्यक्ति जो दूसरे के पास इस प्रकार जमानत में रहे। ६. बहाना। मिस।
ओलती–संज्ञा स्त्री० [हिं० ओलमना] ढालुवाँ छप्पर का वह किनारा जहाँ से वर्षा का पानी नीचे गिरता है। ओरी।
ओलना–क्रि० स० [हिं० ओल] १. परदा करना। ओट में करना। २. आड़ना। रोकना। ३. ऊपर लेना। सहना।
क्रि० स० [सं० शूल हिं० हूल] घुसाना।
ओला–संज्ञा पुं० [सं० उपल] १. गिरते हुए मेंह के जमे हुए गोले। पत्थर। बिनौली। २. मिस्री का बना हुआ लड्डू।
वि० ओले के ऐसा ठंढा। बहुत सर्द।
संज्ञा पुं० [हिं० ओल] १. परदा। ओट। २. भेद। गुप्त बात।
ओलियाना–क्रि० स० [हिं० ओल=गोद] गोद में भरना।
क्रि० स० [हिं० हूलना] घुसाना। ठूँसना।
ओली–संज्ञा स्त्री० [हिं० ओल] १. गोद। २. अंचल। पल्ला।
मुहा०–ओली ओड़ना=आँचल फैलाकर कुछ माँगना।
३. झोली।
ओषधि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वनस्पति। जड़ी-बूटी जो दवा में काम आवे। २. पौधे जो एक बार फलकर सूख जाते हैं।
ओषधिपति, ओषधीश–संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा। २. कपूर।
ओष्ठ–संज्ञा पुं० [सं०] होंठ। ओंठ। लब।
ओष्ठ्य–वि० [सं०] १. ओंठ-संबंधी। २. जिसका उच्चारण ओंठ से हो।
यौ०–ओष्ठ्यवर्ण उ, ऊ, प, फ, ब, भ, म।
ओस–संज्ञा स्त्री० [सं० अवश्याय] हवा में मिली हुई भाप जो रात को सरदी से जमकर जलबिंदु के रूप में पदार्थों पर लग जाती है। शीत। शबनम।
मुहा०–ओस पड़ना या पड़ जाना=१.कुम्हलाना। बे रौनक हो जाना। २. उमंग बुझ जाना। ३. *लज्जित होना। शरमाना।*
ओसाई†–संज्ञा स्त्री० [हिं० ओसाना] १. ओसाने का काम। २. ओसाने के काम की मजदूरी।
ओसाना–क्रि० स० [सं० आवर्पण] दाँए हुए ग़ल्ले को हवा में उड़ाना, जिससे दाना और भूसा अलग अलग हो जाय। बरसाना। डाली देना।
ओसार–संज्ञा पुं० [सं० अवसार=फैलाव] फैलाव। विस्तार। चौड़ाई।
ओसारा†–संज्ञा पुं० [सं०उपशाला] [स्त्री० अल्पा० ओसारी] १. दालान। बरामदा। २. ओसारे की छाजन। सायबान।
ओह–अव्य० [सं० अहह] आश्चर्य, दुःख या बेपरवाही का सूचक शब्द।
ओहट*–संज्ञा स्त्री० दे० "ओट"।
ओहदा–संज्ञा पुं० [अ०] पद। स्थान।
ओहदेदार–संज्ञा पुं० [फ़ा०] पदाधिकारी। हाकिम। अधिकारी।
ओहार–संज्ञा पुं० [सं० अवधार] रथ या पालकी के ऊपर पड़ा हुआ कपड़ा। परदा।
ओहो–अव्य० [सं० अहो] आश्चर्य या आनंद-सूचक शब्द।

ओ

ओ—संस्कृत वर्णमाला का चौदहवाँ और हिंदी वर्णमाला का ग्यारहवाँ स्वर-वर्ण। इसके उच्चारण का स्थान कंठ और ओष्ठ है। यह अ+ओ के संयोग से बना है।

औंगा—वि० [सं० अवाक्] गूँगा। मूक।

औंगी—संज्ञा स्त्री० [सं० अवाक्] चुप्पी। गूँगापन। खामोशी।

औंगना—क्रि० स० [सं० अंजन] गाड़ी के पहिए की धुरी में तेल देना।

औंघना, औंघाना†—क्रि० अ० [सं० अवाङ्] ऊँघना। झपकी लेना।

औंघाई†—संज्ञा स्त्री० [सं० अवाङ्=नीचे मुँह] हलकी नींद। झपकी। ऊँघ।

औंजना*†—क्रि० अ० [सं० आवेजन] ऊबना। व्याकुल होना। अकुलाना। क्रि० स० [देश०] ढालना। उँडेलना।

औंठ—संज्ञा स्त्री० [सं० ओष्ठ] उठा या उभड़ा हुआ किनारा। बारी।

औंड़*—संज्ञा पु० [सं० कुंड] मिट्टी खोदने या उठानेवाला। मजदूर। बेलदार।

औंड़ा—वि० [सं० कुंड] [स्त्री० औंड़ी] गहरा। गंभीर। वि० [हिं० उमड़ना] उमड़ा हुआ।

औंदना*†—क्रि० अ० [सं० उन्माद या उद्विग्न] १ उन्मत्त होना। बेसुध होना। २ व्याकुल होना। घबराना। अकुलाना।

औंदाना*—क्रि० अ० [सं० उद्विग्न] ऊबना। व्याकुल होना। दम घुटने के कारण घबराना।

औंधना—क्रि० अ० [हिं० औंधा] उलट जाना। उल्टा होना। क्रि० स० उल्टा कर देना।

औंधा—वि० [सं० अधोमुख] [स्त्री० औंधी] १. जिसका मुँह नीचे की ओर हो। उलटा। २ पेट के बल लेटा हुआ। पट।

मुहा०—औंधी खोपड़ी का=मूर्ख। जड़। औंधी समझ=उल्टी समझ। जड़बुद्धि। औंधे मुँह गिरना=बेतरह धोखा खाना। ३. नीचा।

संज्ञा पु० उल्टा या चिलड़ा नाम का पकवान।

औंधाना—क्रि० स० [सं० अध] १. उलटना। उलट देना। मुँह नीचे की ओर करना (बरतन)। २ नीचा करना। लटकाना।

औ*—अव्य० दे० "और"।

औकात—संज्ञा पु० बहु० [अ० वक्त का बहु०] समय। वक्त। संज्ञा स्त्री० एक०। १ वक्त। समय। २ हैसियत। बिसात। बिसारत। वित्त।

औगत*—संज्ञा स्त्री० [सं० अव+गति] दुर्दशा। दुर्गति। वि० दे० "अवगत"।

औगी—संज्ञा स्त्री० [देश०] १ रस्सी बटकर बनाया हुआ कोड़ा। २. बैल हाँकने की छड़ी। पैना। संज्ञा स्त्री० [सं० अवगर्त] जानवरों को फँसाने का गड्ढा जो घास-फूस से ढँका रहता है।

औगुन*†—संज्ञा पु० दे० "अवगुण"।

औघट*†—वि० दे० "अवघट"।

औघड़—संज्ञा पु० [सं० अघोर] [स्त्री० औघड़िन] १ अघोर मत का पुरुष। अघोरी। २. काम में सोच विचार न करनेवाला। वि० अंड बंड। उलटा-पलटा।

औघर—वि० [सं० अव+घट] १ अटपट। अनगढ़। अंड बंड। 'सुघर' का प्रतिकूल। २ अनोखा। विलक्षण।

औचक—क्रि० वि० [सं० अव+चक=भ्रांति] अचानक। एकाएक। सहसा।

औचट—संज्ञा स्त्री० [सं० अ=नहीं+हिं० उचटना] अड़स। संकट। कठिनता। क्रि० वि० १. अचानक। अकस्मात्। २ अनचीते में। भूल से।

औचित्य—संज्ञा पु० [सं०] उचित का भाव। उपयुक्तता।

औजार–संज्ञा पुं० [अ०] वे यंत्र जिनसे लोहार, बढ़ई आदि कारीगर अपना काम करते हैं। हथियार। राछ।
औझड़, औझर–क्रि० वि० [सं० अव + हिं० झड़ी] लगातार। निरंतर।
औटना–क्रि० स० [सं० आवर्त्तन] १. दूध या किसी पतली चीज को आँच पर चढ़ाकर गाढ़ा करना। खौलाना।* २. व्यर्थ घूमना।
क्रि० अ० किसी तरल वस्तु का आँच या गरमी खाकर गाढ़ा होना।
औटाना–क्रि० स० दे० "औटना"।
औठपाव–संज्ञा पुं० दे० "अठपाव"।
औढर–वि० [सं० अव + हिं० ढार या ढाल] जिस ओर मन में आवे, उसी ओर ढल पड़नेवाला। मनमौजी।
औतरना*–क्रि० अ० दे० "अवतरना"।
औतार*–संज्ञा पुं० दे० "अवतार"।
औत्सुक्य–संज्ञा पुं० [सं०] उत्सुकता।
औथरा*–वि० दे० "उथला"।
औदरिक–वि० [सं०] १. उदर-संबंधी। २. बहुत खानेवाला। पेटू।
औदसा*†–संज्ञा स्त्री० दे० "अवदशा"।
औदार्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. उदारता। २. सात्त्विक नायक का एक गुण।
औदुम्बर–वि० [सं०] १. उदुंबर या गूलर का बना हुआ। २. ताँबे का बना हुआ।
संज्ञा पुं० १. गूलर की लकड़ी का बना हुआ यज्ञपात्र। २. एक प्रकार के मुनि।
औद्धत्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. अक्खड़पन। उजड्डपन। २. धृष्टता। ढिठाई।
औद्योगिक–वि० [सं०] उद्योग-संबंधी।
औध*–संज्ञा पुं० दे० "अवध"।
संज्ञा स्त्री० दे० "अवधि"।
औधि*–संज्ञा स्त्री० दे० "अवधि"।
औनि*–संज्ञा स्त्री० दे० "अवनि"।
औना पौना–वि० [हिं० ऊन (कम) + पौना (¾ भाग)] आधा-तीहा। थोड़ा-बहुत।
क्रि० वि० कमती-बढ़ती पर।
मुहा०–औने पौने करना = जितना दाम मिले उतने पर बेच डालना।
औपचारिक–वि० [सं०] १. उपचार-संबंधी। २. जो केवल कहने सुनने के लिये हो। जो वास्तविक न हो।
औपनिवेशिक–वि० [सं० १. उपनिवेश-संबंधी। २. उपनिवेशों का सा।
औपनिषदिक–वि० [सं०] उपनिषद्-संबंधी या उपनिषद् के समान।
औपन्यासिक–वि० [सं०] १. उपन्यास-विषयक। उपन्यास-संबंधी। २. उपन्यास में वर्णन करने योग्य। ३. अद्भुत।
संज्ञा पुं० उपन्यास-लेखक।
औपपत्तिक शरीर–संज्ञा पुं० [सं०] देव-लोक और नरक के जीवों का नैसर्गिक या सहज शरीर। लिंग-शरीर।
औपसर्गिक–वि० [सं०] उपसर्ग-संबंधी।
औपश्लेषिक (आधार)–संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण में अधिकरण कारक के अंतर्गत वह आधार जिसके किसी अंश ही से दूसरी वस्तु का लगाव हो।
औम*–संज्ञा स्त्री० [सं० अवम] अवम तिथि।
और–अव्य [सं० अपर] एक संयोजक शब्द। दो शब्दों या वाक्यों को जोड़ने-वाला शब्द।
वि० १. दूसरा। अन्य। भिन्न।
मुहा०—और का और = कुछ का कुछ। विपरीत। अंडबंड। और क्या = हाँ। ऐसा ही है। (उत्तर में) उत्साहवर्द्धक वाक्य। और तो और = दूसरों का ऐसा करना तो उतने आश्चर्य की बात नहीं। और ही कुछ होना = सबसे निराला होना। विलक्षण होना। और तो क्या = और बातों का तो जिक्र ही क्या। २. अधिक। ज्यादा।
औरत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. स्त्री। २. जोरू।
औरस–संज्ञा पुं० [सं०] १२ प्रकार के पुत्रों में सबसे श्रेष्ठ। धर्मपत्नी से उत्पन्न पुत्र।
वि० जो अपनी विवाहिता स्त्री से उत्पन्न हो।
औरसना*–क्रि० अ० [सं० अव = बुरा + रस] विरस होना। अनखाना। रुष्ट होना।
औरेब–संज्ञा पुं० [सं० अव + रेब = गति] १.

वक्र गति। तिरछी चाल। २ कपड़े की तिरछी काट। ३ पेच। उलझन। ४. पेंच की बात। चाल की बात।

औलाद–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ संतान। संतति। २ वंश-परंपरा। नस्ल।

औला मौला–वि० [देश०] मनमौजी।

औलिया–संज्ञा पुं० [अ० वली का बहु०] मुसलमान मत के सिद्ध। पहुँचे हुए फकीर।

औवल–वि० [अ०] १ पहला। २ प्रधान। मुख्य। ३ सर्वश्रेष्ठ। सर्वोत्तम। संज्ञा पुं० आरंभ। शुरू।

औशि*–क्रि० वि० दे० "अवश्य"।

औषध–संज्ञा पुं० स्त्री० [सं०] रोग दूर करनेवाली वस्तु। दवा।

औसत–संज्ञा पुं० [अ०] बराबर का परता। समष्टि का सम-विभाग। सामान्य। वि० माध्यमिक। दरमियानी। साधारण।

औसना†–क्रि० अ० [हि० उमस+ना] १ गरमी पड़ना। उमस होना। २ खाने की चीजों का गरमी खाकर सड़ना। ३ गरमी से व्याकुल होना।

औसर*–संज्ञा पुं० दे० "अवसर"।

औसान–संज्ञा [सं० अवसान] १ अंत। २ परिणाम। संज्ञा पुं० [फा०] सुध-बुध। होश हवास।

क

क–हिंदी वर्णमाला का पहला व्यंजन वर्ण। इसका उच्चारण कंठ से होता है। इसे स्पर्श वर्ण भी कहते हैं।

क–संज्ञा पुं० [सं० कम्] १. जल। २ मस्तक। ३ सुख। ४ अग्नि। ५ काम।

कंक–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कंका, कंकी (हि०)] १ सफेद चील। काँक। २ एक प्रकार का बड़ा आम। ३ यम। ४. क्षत्रिय। ५ युधिष्ठिर का उस समय का कल्पित नाम जब वे विराट के यहाँ रहे थे।

कंकड़–संज्ञा पुं० [सं० कर्कर] [स्त्री० अल्पा० कंकड़ी] [वि० कँकड़ीला] १ चिकनी मिट्टी और चूने के योग से बने रोड़े जो सड़क बनाने के काम में आते हैं। २ पत्थर का छोटा टुकड़ा। ३ किसी वस्तु का वह टुकड़ा जो आसानी से न पिस सके। अँकड़ा। ४ सूखा या सेंका हुआ तमाकू।

कँकड़ीला–वि० [हि० कंकड़+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० कँकड़ीली] कंकड़ मिला हुआ।

कंकण–संज्ञा पुं० [सं०] १ कलाई में पहनने का एक आभूषण। कंगन। कड़ा। २ वह धागा जो विवाह के समय से पहले दुल्हे या दुलहिन के हाथ में रक्षार्थ बाँधते हैं।

कंकरीट–संज्ञा स्त्री० [अं० कांक्रीट] १ चूना, कंकड़, बालू इत्यादि से मिलकर बना हुआ गच बनाने का मसाला। छर्रा। बजरी। २ छोटी छोटी कंकड़ी जो सड़कों में बिछाई और कूटी जाती हैं।

कंकाल–संज्ञा पुं० [सं०] ठठरी। अस्थि-पंजर।

कंकोल–संज्ञा पुं० [सं०] शीतलचीनी के वृक्ष का एक भेद जिसके फल शीतलचीनी से बड़े और कड़े होते हैं।

कँखवारी–संज्ञा स्त्री० [हि० काँख+वारी] वह फोड़िया जो काँख में होती है।

कँखौरी–संज्ञा स्त्री० [हि० काँख] १ काँख। २ दे० "कँखवारी"।

कंगन–संज्ञा पुं० [सं० कंकण] १ कंकण। २ लोहे का चक्र जिसे अकाली सिख सिर पर बाँधते हैं।

कँगना–संज्ञा पुं० [सं० कंकण] [स्त्री० कँगनी] १ दे० "कंकण"। २ वह गीत जो कंकण बाँधते समय गाया जाता है।

कँगनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० कँ ना] १. छोटा कंगन। २. छत या छाजन के नीचे दीवार में उभड़ी हुई लकीर। जो खूबसूरती के लिये बनाई जाती है। बगर। कार्निस। ३. गोल चक्कर जिसके बाहरी किनारे पर दाँत या नुकीले कँगूरे हों।
संज्ञा स्त्री० [सं० कंगु] एक अन्न जिसके चावल खाए जाते हैं। काकुन। टाँगुन।
कँगला–वि० दे० "कंगाल"।
कंगाल–वि० [सं० कंकाल] १. भुक्खड़। अकाल का मारा। २. निर्धन। दरिद्र।
कंगाली–संज्ञा स्त्री०[हिं०कंगाल] निर्धनता।
कँगूरा–संज्ञा पुं० [फा०कुंगरा] [वि०कँगूरे-दार] १. शिखर। चोटी। २. क़िले की दीवार में थोड़ी थोड़ी दूर पर बने हुए ऊँचे स्थान जहाँ से सिपाही खड़े होकर लड़ते हैं। बुर्ज। ३. कँगूरे के आकार का छोटा रवा। (गहनों में)
कंघा–संज्ञा पुं० [सं० कंक] [स्त्री० अल्पा० कंघी] १. लकड़ी, सींग या धातु की बनी हुई चीज जिसमें लंबे-लंबे पतले दाँत होते हैं और जिससे सिर के बाल झाड़े या साफ किए जाते हैं। २. जुलाहों का एक औज़ार जिससे वे करघे में भरनी के तागों को कसते हैं। बय। बौला।
कंघी–संज्ञा स्त्री० [सं० कंकती] १. छोटा कंघा।
मुहा०–कंघी चोटी = बनाव-सिंगार।
२. जुलाहों का कंघी नामक औज़ार।
३. एक पौधा जिसकी जड़, पत्ती आदि दवा के काम में आती हैं। अतिबला।
कँघेरा–संज्ञा पुं०[हिं०कघा + एरा (प्रत्य०)] [स्त्री० कँघेरिन] कघा बनानेवाला।
कंचन–संज्ञा पुं० [सं० कांचन] १. सोना। सुवर्ण।
मुहा०–कंचन बरसना = (किसी स्थान का) समृद्धि और शोभा से युक्त होना।
२. धन। संपत्ति। ३. धतूरा। ४. एक प्रकार का कचनार। रक्त-कांचन। ५. [स्त्री० कंचनी] एक जाति का नाम जिसमें स्त्रियाँ प्रायः वेश्या का काम करती हैं।
वि० १. नीरोग। स्वस्थ। २. स्वच्छ।
कंचनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० कंचन] वेश्या।
कंचुक–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कंचुकी] १. जामा। चपकन। अचकन। २. चोली। अँगिया। ३. वस्त्र। ४. बक्तर। कवच। ५. केंचुल।
कंचुकी–संज्ञा स्त्री० [सं०] अँगिया। चोली।
संज्ञा पुं० [सं० कंचुकिन्] १. रनिवास के दास-दासियों का अध्यक्ष। अंतःपुर-रक्षक। २. द्वारपाल। नक़ीब। ३. साँप।
कंचुरि*–संज्ञा स्त्री० दे० "केंचुल", "केंचली"।
कँचेरा–संज्ञा पुं० [हिं० काँच] [स्त्री० कँचे-रिन] काँच का काम करनेवाला।
कंज–संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्रह्मा। २. कमल। ३. चरण की एक रेखा। कमल। पद्म। ४. अमृत। ५. सिर के बाल। केश।
कंजई–वि० [हिं० कंजा] कंजे के रंग का। धूएँ के रंग का। खाकी।
संज्ञा पुं० १. खाकी रंग। २. वह घोड़ा जिसकी आँख कंजई रंग की हो।
कंजड़–संज्ञा पुं० [देश० या कालंजर] [स्त्री० कंजड़िन] १. एक घूमनेवाली जाति। २. रस्सी बटने, सिरकी बनाने का काम करने-वाली एक जाति।
कंजा–संज्ञा पुं० [सं० करंज] एक कँटीली झाड़ी जिसकी फली के दाने औषध के काम में आते हैं। करंजुवा।
वि० [स्त्री० कंजी] १. कंजे के रंग का। गहरे खाकी रंग का। २. जिसकी आँख कंजे के रंग की हो।
कंजावलि–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त।
कंजूस–वि० [सं० कण + हिं०चूस] [संज्ञा कंजूसी] जो धन का भोग न करे। कृपण। सूम।
कंटक–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कंटकित] १. काँटा। २. सूई की नोक। ३. क्षुद्र शत्रु। ४. विघ्न। बाधा। बखेड़ा। ५. रोमांच। ६. बाधक। विघ्नकर्ता। ७. कवच।
कंटकारी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. भटकटैया। कटेरी। छोटी कटाई। २. सेमल।

कटकित–वि० [सं०] १ रोमांचित। पुलकित। २ काँटेदार।

कटकी–वि० [सं० कटकिन्] काँटेदार। संज्ञा स्त्री० [सं०] भटकटैया।

कटर–संज्ञा पुं० [अं० डिकैंटर] शीशे की बनी हुई सुंदर सुराही जिसमें शराब और सुगंध आदि रखे जाते हैं। करावा।

कठाइन–संज्ञा स्त्री० [सं० कात्यायनी] १. चुड़ैल। डाइन। २ लड़ाकी स्त्री।

कठाय–संज्ञा स्त्री० [हिं० काँटा] एक कँटीला पेड़ जिसकी लकड़ी के यज्ञपात्र बनते हैं।

कँटिया–संज्ञा स्त्री० [हिं० काँटी] १ काँटी। छोटी कील। २ मछली मारने की पतली नोकदार अँकुसी। ३ अँकुसियों का गुच्छा जिससे कुएँ में गिरी हुई चीजें निकालते हैं। ४ सिर पर का एक गहना।

कँटीला–वि० [हिं० काँटा + ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० कँटीली] काँटेदार। जिसमें काँटे हों।

कँटोप–संज्ञा पुं० [हिं० कान + तोपना] एक प्रकार की टोपी जिसमें सिर और कान ढके रहते हैं।

कंठ–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कंठ्य] १ गला। टेटुआ। २ गले की वे नलियाँ जिनसे भोजन पेट में उतरता है और आवाज निकलती है। घाँटी।

मुहा०—कंठ फूटना = १ वर्णों के स्पष्ट उच्चारण का आरंभ होना। २ मुँह से शब्द निकलना। ३ घाँटी फूटना। युवावस्था आरंभ होने पर आवाज का बदलना। कंठ करना या रखना = जबानी याद करना या रखना। ३ स्वर। आवाज। शब्द। ४ तोते पडुक आदि के गले की रेखा। हँसली। ५ किनारा। तट। तीर। काँठा।

कंठगत–वि० [सं०] गले में आया हुआ। गले में अटका हुआ।

मुहा०—प्राण कंठगत होना = प्राण निकलने पर होना। मृत्यु का निकट आना।

कंठतालव्य–वि० [सं०] (वर्ण) जिनका उच्चारण कंठ और तालु-स्थानों से मिल कर हो। 'ए' और 'ऐ' वर्ण।

कंठमाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] गले का एक रोग जिसमें रोगी के गले में लगातार छोटी छोटी फुड़ियाँ निकलती हैं।

कंठस्थ–वि० [सं०] १ गले में अटका हुआ। कंठगत। २ जबानी। कंठाग्र।

कंठा–संज्ञा पुं० [हिं० कंठ] [स्त्री० अल्पा० कंठी] १ वह भिन्न भिन्न रंगों की रेखा जो तोते आदि पक्षियों के गले के चारों ओर निकल आती है। हँसली। २ गले का एक गहना जिसमें बड़े बड़े मनके होते हैं। ३ कुरते या अँगरखे का वह अर्धचंद्राकार भाग जो गले पर रहता है।

कंठाग्र–वि० [सं०] कंठस्थ। जबानी।

कंठी–संज्ञा स्त्री० [हिं० कंठा का अल्पा० रूप] १ छोटी गुरियों का कंठा। २ तुलसी आदि की मनियों की माला जिसे वैष्णव लोग गले में बाँधते हैं।

मुहा०—कंठी देना या बाँधना = चेला करना या चेला बनाना। कंठी लेना = १ वैष्णव होना। भक्त होना। २ मद्य-मांस छोड़ना। ३ तोते आदि पक्षियों के गले की रेखा। हँसली। कंठी।

कंठोष्ठ्य–वि० [सं०] जो एक साथ कंठ और ओंठ के सहारे से बोला जाय। 'ओ' और 'औ' वर्ण।

कंठ्य–वि० [सं०] १ गले से उत्पन्न। २ जिसका उच्चारण कंठ से हो। ३ गले या स्वर के लिये हितकारी। संज्ञा पुं० १ वह वर्ण जिसका उच्चारण कंठ से होता है। अ, क, ख, ग, घ, ङ, ह और विसर्ग। २ गले के लिये उपकारी औषध।

कंडरा–संज्ञा स्त्री० [सं०] रक्त की मोटी नाड़ी।

कंडा–संज्ञा पुं० [सं० स्कंदन] [स्त्री० अल्पा० कंडी] १ सूखा गोबर जो ईंधन के काम में आता है।

मुहा०—कंडा होना = १ सूखना। दुबला हो जाना। २ मर जाना।

२ ढले आकार में पाया हुआ सूखा गोबर जो जलाने के काम में आता है। उपला।

३. सूखा मल। गोटा। सुद्दा।

कंडाल—संज्ञा पुं० [सं० करनाल] नर-सिंहा। तुरही। तूरी।
संज्ञा पुं० [सं० कंडोल] लोहे, पीतल आदि का बड़ा गहरा बरतन जिसमें पानी रखते हैं।

कंडी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कंडा] १. छोटा कंडा। गोहरी। उपली। २. सूखा मल। गोटा।

कंडील—संज्ञा स्त्री० [अ० कंदील] मिट्टी, अबरक या कागज की बनी हुई लालटेन जिसका मुँह ऊपर होता है।

कंडु—संज्ञा स्त्री० [सं०] खुजली। खाज।

कंडोरा—संज्ञा पुं० [हिं० कंडा + औरा (प्रत्य०)] वह स्थान जहाँ कंडा पाथा या रखा जाय।

कंत*—संज्ञा पुं० दे० "कांत"।

कंथा—संज्ञा स्त्री० [सं०] गुदड़ी। कथड़ी।

कंथी—संज्ञा पुं० [हिं० कथा] गुदड़ीवाला। जोगी। साधु।

कंद—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जड़ जो गूदेदार और बिना रेशे की हो; जैसे सूरन, शकरकंद इत्यादि। २. सूरन। ओल। ३. बादल। ४. तेरह अक्षरों का एक वर्ण-वृत्त। ५. छप्पय के ७१ भेदों में से एक।
संज्ञा पुं० [फा०] जमाई हुई चीनी। मिस्री।

कंदन—संज्ञा पुं० [सं०] नाश। ध्वंस।

कंदरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] गुफा। गुहा।

कंदर्प—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।

कंदला—संज्ञा पुं० [सं० कंदल = सोना] १. चाँदी की वह गुल्ली या लंबा छड़ जिससे तारकश तार बनाते हैं। पासा। रैनी। गुल्ली। २. सोने या चाँदी का पतला तार।

कंदा—संज्ञा पुं० [सं० कंद] १. दे० "कंद"। २. शकरकंद। गंजी। †३. घुइयाँ। अरुई।

कंदील—संज्ञा स्त्री० दे० "कंडील"।

कंदुक—संज्ञा पुं० [सं०] १. गेंद। २ गोल तकिया। गल-तकिया। गेंडुआ। ३. सुपारी। पुंगीफल। ४. एक वर्णवृत्त।

कंदेला—वि० [हिं० काँदो, पुं० हिं० काँदई + ला (प्रत्य०)] मलिन। गंदला। मलयुक्त।

कँडोरा—संज्ञा पुं० [हिं० कटि + डोरा] कमर में पहनने का एक तागा। करधनी।

कंध*—संज्ञा पुं० [सं० स्कंध] १. डाली। २. दे० "कंधा"।

कंधनी—संज्ञा स्त्री० [सं० कटिबंधनी] किंकिणी। मेखला। करधनी।

कंधर—संज्ञा पुं० [सं०] १. गरदन। ग्रीवा। २. बादल। ३. मुस्ता। मोथा।

कंधा—संज्ञा पुं० [सं० स्कंध] १. मनुष्य के शरीर का वह भाग जो गले और मोढ़े के बीच में होता है। २. बाहुमूल। मोढ़ा।

कंधारी—वि० [हिं० कंधार] जो कंधार देश में उत्पन्न हुआ हो। कंधार का।
संज्ञा पुं० घोड़े की एक जाति।

कँधावर—संज्ञा स्त्री० [हिं० कंधा + आवर (प्रत्य०)] १. जूए का वह भाग जो बैल के कंधे के ऊपर रहता है। २. वह चद्दर या दुपट्टा जो कंधे पर डाला जाता है।

कँधेला—संज्ञा पुं० [हिं० कंधा + एला (प्रत्य०)] स्त्रियों की साड़ी का वह भाग जो कंधे पर पड़ता है।

कंप—संज्ञा पुं० [सं०] कँपकँपी। काँपना। (सात्त्विक अनुभावों में से एक)
संज्ञा पुं० [अं० कैंप] पड़ाव। लश्कर।

कँपकँपी—संज्ञा स्त्री० [हिं० काँपना] थर-थराहट। काँपना। संचलन।

कंपन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कंपित] काँपना। थरथराहट। कँपकँपी।

कँपना—क्रि० अ० [सं० कंपन] १. हिलना। डोलना। काँपना। २. भयभीत होना।

कंपमान—वि० दे० "कंपायमान"।

कंपा—संज्ञा पुं० [हिं० कँपना] बाँस की पतली तीलियाँ जिनमें बहेलिए लासा लगाकर चिड़ियों को फँसाते हैं।

कँपाना—क्रि० स० [हिं० कँपना का प्रे०] १. हिलाना-डुलाना। २. भय दिखाना।

कंपायमान—वि० [सं०] हिलता हुआ।

कंपास—संज्ञा पुं० [अं०] १. एक यंत्र जिससे दिशाओं का ज्ञान होता है।

२ परवार।

कंपित–वि० [सं०] १ काँपता हुआ। चंचल। २ भयभीत। डरा हुआ।

कंपू–संज्ञा पु० [अं० कैंप] १ वह स्थान जहाँ फौज रहती या ठहरती हो। छावनी। पडाव। जनस्थान। २ डेरा। खेमा।

कंबल–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० अल्पा० कमली] १ ऊन का बना हुआ मोटा कपडा जिसे गरीब लोग ओढते हैं। २ एक बरसाती कीडा। कमला।

कंबु, कंबुक–संज्ञा पु० [सं०] १ शंख। २ शंख की चूडी। ३ घोघा। ४ हाथी।

कंबोज–संज्ञा पु० [सं०] [वि० काबोज] अफग़ानिस्तान के एक भाग का प्राचीन नाम जो गांधार के पास पडता था।

कँवल–संज्ञा पु० दे० "कमल"।

कँवलगट्टा–संज्ञा पु० [सं० कमल + हिं० गट्टा] कमल का बीज।

कंस–संज्ञा पु० [सं०] १ काँसा। २ प्याला। कटोरा। ३ सुराही। ४ मँजीरा। झाँझ। ५ काँसे का बना हुआ बर्तन या चीज। ६ मथुरा के राजा उग्रसेन का लडका जो श्रीकृष्ण का मामा था और जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था।

क–संज्ञा पु० [सं०] १ ब्रह्मा। २ विष्णु। ३ कामदेव। ४ सूर्य्य। ५ प्रकाश। ६ प्रजापति। ७ दक्ष। ८ अग्नि। ९ वायु। १० राजा। ११ यम। १२ आत्मा। १३ मन। १४ शरीर। १५ काल। १६ धन। १७ शब्द।

कई–वि० [सं० कति प्रा० कई] एक से अधिक। अनेक।

ककडी–संज्ञा स्त्री० [सं० कर्कटी] जमीन पर फैलनेवाली एक बेल जिसमें लंब-लंबे फल लगते हैं।

ककनू–संज्ञा पु० दे० "कुकनू"।

ककहरा–संज्ञा पु० [क + क – ह + रा (प्रत्य०)] 'क' से 'ह' तक वर्णमाला।

ककुद–संज्ञा पु० [सं०] १ बैल के कंधे का कुब्बड। डिल्ला। २ राज चिह्न।

ककुभ–संज्ञा पु० [सं०] १ अर्जुन का पेड। २ एक राग। ३ एक छंद। ४ दिशा।

ककुभा–संज्ञा स्त्री० [सं०] दिशा।

ककोडा–संज्ञा पु० दे० "खेखसा"।

कक्कड–संज्ञा पु० [सं० कर्कर] सूखी या सेंकी हुई सुरती का भुरभुरा चूर जिसे छोटी चिलम पर रखकर पीते हैं।

कक्का–संज्ञा पु० [सं० केकय] केकय देश। संज्ञा पु० [सं०] नगाडा। दुंदुभी। संज्ञा पु० दे० "काका"।

कक्ष–संज्ञा पु० [सं०] १ काँख। बगल। २ काछ। कछौटा। लाँग। ३ कछार। कच्छ। ४ कास। ५ जंगल। ६ सूखी घास। ७ सूखा वन। ८ भूमि। ९ घर। कमरा। कोठरी। १० पाप। दोष। ११ काँख का फोडा। कखरवार। १२ दर्जा। श्रेणी। १३ सेना के अगल बगल का भाग। १४ कमरबंद। पटुका।

कक्षा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ परिधि। २ ग्रह के भ्रमण करने का मार्ग। ३ तुलना। समता। बराबरी। ४ श्रेणी। दर्जा। ५ ड्योढी। देहली। ६ काँख। ७ कखवार। फोडा। ८ किसी घर की दीवार या पाख। ९ काँछ। कछौटा।

कखौरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० काँख] १ दे० "काँख"। २ काँख का फोडा।

कगर–संज्ञा पु० [सं० क = जल + अग्र] १ कुछ ऊँचा किनारा। २ बाढ। औंठ। बारी। ३ मेंड। डाँड। ४ छत या छाजन के नीचे दीवार में गोट सी उभडी हुई लकीर। कार्निस। कँगनी।

क्रि० वि० १ किनारे पर। २ समीप।

कगार–संज्ञा पु० [हिं० कगर] १ ऊँचा किनारा। २ नदी का करारा। ३ टीला।

कच–संज्ञा पु० [सं०] १ बाल। २ सूखा फोडा या जख्म। पपडी। ३ झुंड। ४ बादल। ५ बृहस्पति का पुत्र।

संज्ञा पु० [अनु०] १ धँसने या चुभने का शब्द। २ कुचले जाने का शब्द।

वि० 'कच्चा' का अल्पा० रूप जिसका व्यव-

हार समास में होता है; जैसे, कचलहू।
कचवा†-संज्ञा स्त्री० [हिं० कच] वह चोट जो दबने से लग। कुचल जान की चोट।
कचकच-संज्ञा स्त्री० [अनु०] बकवाद। भकभक। किचकिच।
कचकचाना-क्रि० अ० [अनु० कचकच] १. कचकच शब्द करना। २. दाँत पीसना।
कचकोल-संज्ञा पुं० [फ़ा०कशकोल] दरियाई नारियल का भिक्षापात्र। कपाल। कासा।
कचदिला-वि० [हिं० कच्चा + फ़ा० दिल] कच्चे दिल का। जिसे किसी प्रकार के कष्ट, पीड़ा आदि सहने का साहस न हो।
कचनार-संज्ञा पुं० [सं० काचनार] एक छोटा पेड़ जिसमे सुंदर फूल लगते हैं।
कचपच-संज्ञा पुं० [अनु०] १. थोड़े से स्थान मे बहुत सी चीज़ो या लोगों का भर जाना। गिचपिच। गुत्थम-गुत्था। २. दे० "कचकच"।
कचपची-संज्ञा स्त्री० [हिं० कचपच] १. कृत्तिका नक्षत्र। २. चमकीले बुंदे जिन्हें स्त्रियाँ माथे आदि पर चिपकाती हैं।
कचपेंदिया-वि० [हिं० कच्चा + पेंदी] १. पेंदी का कमज़ोर। २. अस्थिर विचार का। बात का कच्चा। ओछा।
कचर-कचर-संज्ञा पुं० [अनु०] १. कच्चे फल के खाने का शब्द। २. कचकच। बकवाद।
कचरकूट-संज्ञा पुं० [हिं० कचरना + कूटना] १. खूब पीटना और लतियाना। मारकूट। †२. खूब पेट भर भोजन। इच्छा भोजन।
कचरना*†-क्रि० स० [सं०कच्चरण] १. पैर से कुचलना। रौंदना। २. खूब खाना।
कचरा-संज्ञा पुं० [हिं० कच्चा] १. कच्चा खरबूज़ा। २. फूट का कच्चा फल। ककड़ी। ३. कूड़ा-करकट। रद्दी चीज। ४. उरद या चने की पीठी। ५. समुद्र का सेवार।
कचरी-संज्ञा स्त्री० [हिं० कच्चा] १. ककड़ी की जाति की एक बेल जिसके फल खाये जाते हैं। पेहँटा। २. कचरी या कच्चे पेहँटे के सुखाए हुए टुकड़े। ३. कचरी के फल के तले हुए टुकड़े। ४. काटकर सुखाए हुए फल मूल आदि जो तरकारी के लिये रख जाते हैं। ५. छिलकेदार दाल।
कचलोंदा-संज्ञा पुं० [हिं० कच्चा + लोंदा] कच्चे आटे का पेड़ा। लोई।
कचलोन-संज्ञा पुं० [हिं०काँच + लोन] एक प्रकार का लवण जो काँच की भट्ठियों में जमे हुए क्षार से बनता है।
कचलोहू-संज्ञा पुं० [हिं० कच्चा + लोहू] वह पनछा या पानी जो खुले ज़ख्म से थोड़ा थोड़ा निकलता है। रस धातु।
कचहरी-संज्ञा स्त्री० [हिं० कचकच = वाद-विवाद + हरी (प्रत्य०)] १. गोष्ठी। जमावड़ा। २. दरबार। राजसभा। ३. न्यायालय। अदालत। ४. दफ्तर।
कचाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० कच्चा + ई (प्रत्य०)] १.कच्चापन। २. ना-तजुर्बेकारी।
कचाना†-क्रि० अ० [हिं० कच्चा] १. पीछे हटना। हिम्मत हारना। २. डरना।
कचायँध-संज्ञा स्त्री० [हिं० कच्चा + गंध] कच्चेपन की महक।
कचारना†-क्रि०स० [हिं०पछारना] कपड़ा धोना।
कचालू-संज्ञा पुं० [हिं० कच्चा + आलू] १. एक प्रकार की अरुई। बंडा। २. एक प्रकार की चाट।
कचिया-संज्ञा पुं० दे० "काचलवण"।
कचीची*-संज्ञा स्त्री० [अनु० कच = कूचने का शब्द] जबड़ा। दाढ़।
मुहा०—कचीची बँधना = दाँत बैठना। (मरन का समय)
कचूमर-संज्ञा पुं० [हिं० कुचलना] १. कुचलकर बनाया हुआ अचार। कुचला। २. कुचली हुई वस्तु।
मुहा०—कचूमर करना या निकालना = १. खूब कूटना। चूर चूर करना। कुचलना। २. नष्ट करना। खूब पीटना।
कचूर-संज्ञा पुं० [सं० कर्चूर] हल्दी की जाति का एक पौधा जिसकी जड़ में कपूर की सी कड़ी महँक होती है। नर-कचूर।

कचाना–क्रि० स० [हिं० कच=धँसाने का शब्द] कचाना। धँसाना।

कचोरा*†–संज्ञा पुं० [हिं० काँसा+ओरा (प्रत्य०)] [स्त्री० कचोरी] कटोरा। प्याला।

कचौड़ी, कचौरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० कचरी] एक प्रकार की पूरी जिसके भीतर उरद आदि की पीठी भरी जाती है।

कच्चा–वि० [सं० कषण] १ जो पका न हो। हरा और बिना रस का। अपक्व। २ जो आँच पर पका न हो। जैसे—कच्चा घड़ा। ३ जो पुष्ट न हुआ हो। अपरिपुष्ट। ४ जिसके तैयार होने में कसर हो। ५ अदृढ़। कमजोर।

मुहा०—कच्चा जी या दिल=विचलित होनेवाला चित्त। धैर्यच्युत होनेवाला चित्त। कच्चा करना=डराना। भयभीत करना।

६ जो प्रमाणों से पुष्ट न हो। बेठीक।

मुहा०—कच्चा करना–१. अप्रामाणिक ठहराना। झूठा साबित करना। २ लज्जित करना। शरमाना। कच्चा पड़ना=१ अप्रामाणिक या झूठा ठहरना। २ सिटपिटाना। सकुचित होना। कच्ची पक्की = भली बुरी। उलटी-सीधी। दुर्वचन। गाली। कच्ची बात=अश्लील बात। लज्जाजनक बात। ७ जो प्रामाणिक तौल या माप से कम हो। जैसे, कच्चा सेर। ८ कच्ची या गीली मिट्टी का बना हुआ। ९ अपरिपक्व। अपटु। अनाड़ी।

संज्ञा पुं० १. वह दूर दूर पर पड़ा हुआ तागा या डोभ जिस पर दरजी बखिया करते हैं। २ ढाँचा। खाका। ढड्ढा। ३ मसविदा। ४ जबड़ा। दाढ़। ५ बहुत छोटा ताँबे का सिक्का जिसका चलन सब जगह न हो। कच्चा पैसा।

कच्चा चिट्ठा–संज्ञा पुं० [हिं० कच्चा+चिट्ठा] १ वह वृत्तांत जो ज्यों का त्यों कहा जाय। २ गुप्त भेद। रहस्य।

कच्चा माल–संज्ञा पुं० [हिं० कच्चा+माल] वह द्रव्य जिससे व्यवहार की चीजें बनती हों। सामग्री। जैसे, रुई, तिल।

कच्चा हाथ–संज्ञा पुं० वह हाथ जो किसी काम में बैठा न हो। अनभ्यस्त हाथ।

कच्ची–वि० "कच्चा" का स्त्रीलिंग। संज्ञा स्त्री० दे० "कच्ची रसोई"।

कच्ची चीनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० कच्ची+चीनी] वह चीनी जो खूब साफ न की गई हो।

कच्ची बही–संज्ञा स्त्री० [हिं० कच्ची+बही] वह बही जिसमें ऐसा हिसाब लिखा हो जो पूर्ण रूप से निश्चित न हो।

कच्ची रसोई–संज्ञा स्त्री० [हिं० कच्ची+रसोई] केवल पानी में पकाया हुआ अन्न। अन्न जो दूध या घी में न पकाया गया हो। जैसे, रोटी, दाल, भात।

कच्ची सड़क–संज्ञा स्त्री० [हिं० कच्ची+सड़क] वह सड़क जिसमें कङ्कड़ आदि न पिटा हो।

कच्ची सिलाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० कच्ची+सिलाई] दूर दूर पर पड़ा हुआ डोभ या टाँका और लगर। कोका।

कच्चू–संज्ञा पुं० [सं० कचु] १ अरुई। घुइयाँ। २ बंडा।

कच्चे पक्के दिन–संज्ञा पुं० १ चार या पाँच महीने का गर्भ-काल। २ दो ऋतुओं की संधि के दिन।

कच्चे बच्चे–संज्ञा पुं० [हिं० कच्चा+बच्चा] बहुत छोटे छोटे बच्चे। बहुत से लड़के-बाले।

कच्छ–संज्ञा पुं० [सं०] १ जलप्राय देश। अनूप देश। २ नदी आदि के किनारे की भूमि। कछार। ३ छप्पय का एक भेद। [वि० कच्छी] ४ गुजरात के समीप एक प्रदेश। ५ इस देश का घोड़ा। संज्ञा पुं० [सं० कक्ष] धोती की लाँग। *संज्ञा पुं० [सं० कच्छप] कछुआ।

कच्छप–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कच्छपी] १ कछुआ। २ विष्णु के २४ अवतारों में से एक। ३ कुबेर की नौ निधियों में से एक। ४ दोहे का एक भेद।

कच्छपी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कच्छप की स्त्री। कछुई। २ सरस्वती की वीणा।

कच्छा–संज्ञा पुं० [सं० कच्छ] १ दो पतवारों की बड़ी नाव जिसके छोर चिपटे और

बड़े होते हैं। २. कई नावों को मिलाकर बनाया हुआ बड़ा बेड़ा।

कच्छी–वि० [हिं० कच्छ] १. कच्छ देश का। २. कच्छ देश में उत्पन्न।
संज्ञा पुं० [हिं० कच्छ] घोड़े की एक जाति।

कच्छू†–संज्ञा पुं० [कच्छप] कछुआ।

कछनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० काछना] १. घुटने के ऊपर चढ़ाकर पहनी हुई धोती। २. छोटी धोती। ३. वह वस्तु जिससे कोई चीज काछी जाय।

कछवाहा–संज्ञा पुं० [सं० कच्छ] राजपूतों की एक जाति।

कछान, कछाना–संज्ञा पुं० [हिं० काछना] घुटने के ऊपर चढ़ाकर धोती पहनना।

कछार–संज्ञा पुं० [सं० कच्छ] समुद्र या नदी के किनारे की तर और नीची भूमि।

कछु*†–वि० दे० "कुछ"।

कछुआ–संज्ञा पुं० [सं० कच्छप] [स्त्री० कछुई] एक जल-जंतु जिसके ऊपर बड़ी कड़ी ढाल की तरह खोपड़ी होती है।

कछुक*–वि० [हिं० कछु + एक] कुछ।

कछोटा, कछौटा–संज्ञा पुं० [हिं० काछ] [स्त्री० अल्पा० कछोटी] १. स्त्रियों के धोती पहनने का वह ढंग जिसमें पीछे लाँग खोंसी जाती है। २. कछनी।

कज–संज्ञा पुं० [फा०] १. टेढ़ापन। २. कसर। दोष। ऐब।

कजरा†–संज्ञा पुं० [हिं० काजल] १. दे० "काजल"। २. काली आँखोंवाला बैल।

कजराई*–संज्ञा स्त्री० [हिं० काजल] काला-पन।

कजरारा–वि० [हिं० काजर + आरा (प्रत्य०)] [स्त्री० कजरारी] १. काजल-वाला। जिसमें काजल लगा हो। अंजन-युक्त। २. काजल के समान काला। स्याह।

कजरौटा†–संज्ञा पुं० दे० "कजलौटा"।

कजलाना–क्रि० अ० [हिं० काजल] १. काला पड़ना। २. आग का बुझना।
क्रि० स० काजल लगाना। आँजना।

कजली–संज्ञा स्त्री० [हिं० काजल] १. कालिख। २. एक साथ पिसे हुए पारे और गंधक की बुकनी। ३. रस फूँकने में धातु का वह अंश जो आँच से ऊपर चढ़ कर पात्र में लग जाता है। ४. गन्ने की एक जाति। ५. वह गाय जिसकी आँखों के किनारे काला घेरा हो। ६. एक बरसाती त्योहार। ७. एक प्रकार का गीत जो बर-सात में गाया जाता है।

कजलौटा–संज्ञा पुं० [हिं० काजल + औटा (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० कजलौटी] काजल रखने की लोहे की डंडीदार डिबिया।

क़ज़ा–संज्ञा स्त्री० [अ०] मौत। मृत्यु।

कज़ाक*–संज्ञा पुं० [तु०] लुटेरा। डाकू।

कज़ाकी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. लुटेरापन। लूट मार। २. छल-कपट। धोखेबाजी।

कजावा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] ऊँट की काठी।

कजिया–संज्ञा पुं० [अ०] झगड़ा। लड़ाई।

कजी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. टेढ़ापन। टेढ़ाई। २. दोष। ऐब। कसर।

कज्जल–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कज्जलित] १. अंजन। काजल। २. सुरमा। ३. कालिख। ४. बादल। ५. एक छंद।

कज्जाक–संज्ञा पुं० दे० "कजाक"।

कट–संज्ञा पुं० [सं०] १. हाथी का गंड-स्थल। २. गंडस्थल। ३. नरसल। नर-कट। ४. नरकट की चटाई। दरमा। ५. टट्टी। ६. खस, सरकंडा आदि घास। ७. दाव। लाश। ८. अरथी। ९. श्मशान।
संज्ञा पुं० [हिं० कटना] १. एक प्रकार का काला रंग। २. 'काट' का संक्षिप्त रूप जिसका व्यवहार यौगिक शब्दों में होता है। जैसे, कटखना कुत्ता।

कटक–संज्ञा पुं० [सं०] १. सेना। फ़ौज। २. राज-शिविर। ३. कंकण। कड़ा। ४. पर्वत का मध्य भाग। ५. नितंब। चूतड़। ६. घास-फूस की चटाई। गोंदरी। सथरी। ७. हाथी के दाँतों पर जड़े हुए पीतल के बंद या सामी। ८. समू[illegible]।

कटकई*–संज्ञा स्त्री० [सं० कटक + ई (प्रत्य०)] कटक। फ़ौज। लश्कर।

कटकट–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. दाँतों के बजने का शब्द। २ लड़ाई-झगड़ा।

कटकटाना–क्रि० अ० [हिं० कटकट] दाँत पीसना।

कटकाई*–संज्ञा स्त्री० [हिं० कटक+आई (प्रत्य०)] सेना। फौज।

कटखना–वि० [हिं० काटना+खाना] काट खानेवाला। दाँत से काटनेवाला। संज्ञा पु० युक्ति। चाल। हथकंडा।

कटघरा–संज्ञा पु० [हिं० काठ+घर] १ काठ का वह घर जिसमें जँगला लगा हो। २ बड़ा भारी पिंजड़ा।

कटड़ा–संज्ञा पु० [सं० कटार] भैंस का पँड़वा।

कटती–संज्ञा स्त्री० [हिं० कटना] बिक्री।

कटना–क्रि० अ० [सं० कर्त्तन] १ किसी धारदार चीज की दाब से दो टुकड़े होना। मुहा०—कटती कहना=मर्मभेदी बात कहना। २ पिसना। महीन चूर होना। ३ किसी धारदार चीज से घाव होना। ४ किसी भाग का अलग हो जाना। ५ लड़ाई में मरना। ६ कतरा जाना। ब्योंता जाना। ७ छीजना। नष्ट होना। ८ समय का बीतना। ९ रास्ता खतम होना। १० धोखा देकर साथ छोड़ देना। खिसक जाना। ११ लज्जित होना। झेंपना। १२ जलना। डाह करना। १३ मोहित होना। आसक्त होना। १४ बिकना। खपना। १५ प्राप्ति होना। आय होना। जैसे—माल कटना। १६ कलम की लकीर से किसी लिखावट का रद होना। मिटना। खारिज होना। १७ एक संख्या के साथ दूसरी संख्या का ऐसा भाग लगना कि शेष कुछ न बचे।

कटनास|–संज्ञा पु० [देश०, या सं० कीट+नाश] नीलकंठ। चाष पक्षी।

कटनि*–संज्ञा स्त्री० [हिं० कटना] १ काट। २ प्रीति। आसक्ति। रीझ।

कटनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० कटना] १ काटने के औजार। २ काटने का काम।

कटर|–संज्ञा पु० [अं०] १ एक प्रकार की बड़ी नाव जो चरखियों के सहारे चलती है। २ पनसुइया। छोटी नाव।

कटरा–संज्ञा पु० [हिं० कटहरा] छोटा चौकोर बाजार। संज्ञा पु० [सं० कटाह] भैंस का नर बच्चा।

कटवाँ–वि० [हिं० कटना+वाँ (प्रत्य०)] जो काटकर बना हो। कटा हुआ।

कटसरैया–संज्ञा स्त्री० [सं० कटसारिका] अड़ूसे की तरह का एक काँटेदार पौधा।

कटहर*–संज्ञा पु० दे० "कटहल"।

कटहरा–संज्ञा पु० दे० "कटघरा"।

कटहल–संज्ञा पु० [सं० कंटकिफल] १ एक सदाबहार घना पेड़ जिसमें हाथ सवा हाथ के मोटे और भारी फल लगते हैं। २ इस पेड़ का फल जो खाया जाता है।

कटहा*–वि० [हिं० काटना+हा (प्रत्य०)] [स्त्री० कटही] काट खानेवाला।

कटा*–संज्ञा पु० [हिं० काटना] मार-काट। वध। हत्या। कत्लआम।

कटाइक*–वि० [हिं० काटना] काटनेवाला।

कटाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० काटना] १ काटने का काम। २ फसल काटने का काम। ३ फसल काटने की मजदूरी।

कटाकट–संज्ञा पु० [हिं० कट] १ कटकट शब्द। २ लड़ाई।

कटाकटी–संज्ञा स्त्री० [हिं० काटना] मार-काट।

कटाक्ष–संज्ञा पु० [सं०] १ तिरछी चितवन। तिरछी नजर। २ व्यंग्य। आक्षेप।

कटाग्नि–संज्ञा स्त्री० [सं०] घास फूस की आग जिसमें लोग जल मरते थे।

कटाछनी–संज्ञा स्त्री० दे० "कटाकटी"।

कटान–संज्ञा स्त्री० [हिं० काटना] काटने की क्रिया, भाव या ढंग।

कटाना–क्रि० स० [हिं० काटना का प्रे० रूप] काटने का काम दूसरे से कराना।

कटायक*–वि० [हिं० काटना] काटने-

वाला।

कटार–संज्ञा स्त्री० [सं० कट्टार] [स्त्री० अल्पा० कटारी] एक बालिश्त का छोटा तिकोना और दुधारा हथियार।

कटाव–संज्ञा पुं० [हिं० काटना] १. काट। काट-छाँट। कतर-ब्योंत। २. काटकर बनाए हुए बेल-बूटे।

कटावदार–वि० [हिं० कटाव + दार (प्रत्य०)] जिसपर खोद या काटकर चित्र और बेल-बूटे बनाए गए हों।

कटावन†–संज्ञा पुं० [हिं० कटना] १. कटाई करने का काम। २. किसी वस्तु का कटा हुआ टुकड़ा। कतरन।

कटास–संज्ञा पुं० [हिं० काटना] एक प्रकार का वनबिलाव। कटार। खीखर।

कटाह–संज्ञा पुं० [सं०] १. कड़ाह। बड़ी कड़ाही। २. कछुए की खोपड़ी। ३. कुआँ। ४. नरक। ५. झोंपड़ी। ६. भैंस का बच्चा। ७. ढूह। ऊँचा टीला।

कटि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शरीर का मध्य भाग जो पेट और पीठ के नीचे पड़ता है। कमर। २. हाथी का गंडस्थल।

कटिजेब–संज्ञा स्त्री०[सं० कटि + हिं० जेब = रस्सी] किंकिणी। करधनी।

कटिबंध–संज्ञा पुं० [सं०] १. कमरबंद। २ गरमी-सरदी के विचार से किए हुए पृथ्वी के पाँच भागों में से कोई एक।

कटिबद्ध–वि० [सं०] १. कमर बाँधे हुए। २. तैयार। तत्पर। उद्यत।

कटियाना*–क्रि० अ० [हिं० काँटा] रोओं का खड़ा हो जाना। कंटकित होना।

कटिसूत्र–संज्ञा पुं० [सं०] कमर में पहनने का डोरा। मेखला। सूत की करधनी।

कटीला–वि० [हिं० काटना] [स्त्री० कटीली] १. काट करनेवाला। तीक्ष्ण। चोखा। २. बहुत तीव्र प्रभाव डालनेवाला। ३. मोहित करनेवाला। ४. नोक-झोंक का। वि० [हिं० काँटा] १. काँटेदार। काँटों से भरा हुआ। २. नुकीला। तेज।

कटु–वि० [सं०] १. छः रसों में से एक। चरपरा। कड़ुआ। २. बुरा लगनेवाला। अनिष्ट। ३. काव्य में रस के विरुद्ध वर्णों की योजना।

कटुता–संज्ञा स्त्री० [सं०] कड़ुवापन।

कटुत्व–संज्ञा पुं० [सं०] कड़ुवापन।

कटूक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] अप्रिय बात।

कटेरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० काँटा] भटकटैया।

कटैया†–संज्ञा पुं० [हिं० काटना] काटनेवाला। जो काट डाले।

कटोरदान–संज्ञा पुं० [हिं० कटोरा + दान (प्रत्य०)] पीतल का एक ढक्कनदार बरतन जिसमें तैयार भोजन आदि रखते हैं।

कटोरा–संज्ञा पुं० [हिं० काँसा + ओरा (प्रत्य०) = कँसोरा] खुले मुँह, नीची दीवार और चौड़ी पेंदी का एक छोटा बरतन।

कटोरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० कटोरा का अल्पा०] १. छोटा कटोरा। बेलिया। प्याली। २. अँगिया का वह जुड़ा हुआ भाग जिसके भीतर स्तन रहते हैं। ३. तलवार की मूठ के ऊपर का गोल भाग। ४. फूल के सीके का चौड़ा सिरा जिसपर दल रहते हैं।

कटौती–संज्ञा स्त्री० [हिं० कटना] किसी रक़म को देते हुए उसमें से कुछ बँधा हक़ या धर्मार्थ द्रव्य निकाल लेना।

कट्टर–वि० [हिं० काटना] १. काट खानेवाला। कटहा। २. अपने विश्वास के प्रतिकूल बात को न सहनेवाला। अंधविश्वासी। ३. हठी। दुराग्रही।

कट्टहा–संज्ञा पुं० [सं० कट = शव + हा (प्रत्य०)] महाब्राह्मण। कटिया। महापात्र।

कट्टा–वि० [हिं० काठ] १. मोटा-ताज़ा। हट्टा-कट्टा। २. बलवान्। बली। संज्ञा पुं० जबड़ा। कल्ला।

मुहा०—कट्टे लगना = किसी दूसरे के कारण अपनी वस्तु का नष्ट होना या उस दूसरे के हाथ लगना।

कट्ठा–संज्ञा पुं० [हिं० काठ] १. जमीन की एक नाप जो पाँच हाथ चार अंगुल की होती है। २. मोटा या ख़राब गेहूँ।

कठ–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक ऋषि।

२. एक यजुर्वेदीय उपनिषद्। ३. कृष्ण यजुर्वेद की एक शाखा।

सज्ञा पुं० [सं० काष्ठ] १. (केवल समस्त पदों में) काठ। लकड़ी। जैसे, कठपुतली, कठकीली। २ (समस्त पदों में फल आदि के लिये) जगली। निकृष्ट जाति का। जैसे, कठकेला, कठजामुन।

कठकेला—सज्ञा पु० [हिं० काठ+केला] एक प्रकार का केला जिसका फल रूखा और फीका होता है।

कठताल—सज्ञा पु० दे० "करताल"।

कठपुतली—सज्ञा स्त्री० [हिं० काठ+पुतली] १. काठ की गुड़िया या मूर्ति जिसको तार द्वारा नचाते हैं। २ वह व्यक्ति जो केवल दूसरे के कहने पर काम करे।

कठड़ा—सज्ञा पु० [हिं० कठघरा] १. कठघरा। कटहरा। २ काठ का बड़ा सदूक। ३. काठ का बड़ा बरतन। कठौता।

कठफोड़वा—सज्ञा पु० [हिं० काठ+फोड़ना] खाकी रग की एक चिड़िया जो पेड़ों की छाल को छेदती रहती है।

कठबंधन—सज्ञा पु० [हिं० काठ+बधन] काठ की वह बेड़ी जो हाथी के पैर मे डाली जाती है। अँदुआ।

कठबाप—सज्ञा पु० [हिं० काठ+बाप] सौतेला बाप।

कठमलिया—सज्ञा पु० [हिं० काठ+माला] १. काठ की माला या कठी पहननेवाला वैष्णव। २ झूठ-मूठ कठी पहननेवाला। बनावटी साधु। झूठा सत।

कठमस्त—वि० [हिं० कठ फा० + मस्त] १ सड-मुसड। २ व्यभिचारी।

कठमस्ती—सज्ञा स्त्री० [हिं० कठमस्त] मुस-डापन। मस्ती।

कठरा—सज्ञा पु० [हिं० काठ+करा] १. दे० "कठहरा" या "कठघरा"। २ काठ का सदूक। ३ काठ का बरतन। कठौता।

कठला—सज्ञा पु० [सं० कठ+ला (प्रत्य०)] एक प्रकार की माला जो बच्चो को पहनाई जाती है।

कठवल्ली—सज्ञा पु० [सं०] कृष्ण यजुर्वेद की कठशाखा का एक उपनिषद्।

कठिन—वि० [सं०] १ कड़ा। सख्त। कठोर। २. मुश्किल। दुष्कर। दुःसाध्य।

कठिनता—सज्ञा स्त्री० [सं० कठिन] १ कठोरता। कड़ाई। कड़ापन। सख्ती। २ मुश्किल। असाध्यता। ३ निर्दयता। बेरहमी। ४. मजबूती। दृढ़ता।

कठिनाई—सज्ञा स्त्री० [सं० कठिन+आई (प्रत्य०)] १. कठोरता। सख्ती। २ मुश्किल। क्लिष्टता। ३. असाध्यता।

कठिया—वि० [हिं० काठ] जिसका छिलका मोटा और कड़ा हो। जैसे कठिया बादाम।

कठियाना—क्रि० अ० [हिं० काठ+आना (प्रत्य०)] सूखकर कड़ा हो जाना।

कठुआना—क्रि० अ० [हिं० काठ+आना (प्रत्य०)] १. सूखकर काठ की तरह कड़ा होना। २ ठढक से हाथ-पैर ठिठुरना।

कठूमर—सज्ञा पु० [हिं० काठ+ऊमर] जगली गूलर।

कठेठ, कठैठा—वि० [सं० काठ+एठ (प्रत्य०)] [स्त्री० कठैठी] १. कड़ा। कठोर। कठिन। दृढ़। सख्त। २. कटु। अप्रिय। अधिक कल्लेवाला। तगड़ा।

कठोर—वि० [सं०] १. कठिन। सख्त। कड़ा। २. निर्दय। निष्ठुर। निठुर। बेरहम।

कठोरता—सज्ञा स्त्री० [सं०] १. कड़ाई। सख्ती। २. निर्दयता। बेरहमी।

कठोरपन—सज्ञा पु० [हिं० कठोर+पन (प्रत्य०)] १. कठोरता। कड़ापन। सख्ती। २ निर्दयता। निष्ठुरता।

कठौता—सज्ञा पु० [हिं० कठौत] काठ का एक बड़ा और चौड़ा बरतन।

कड़क—सज्ञा स्त्री० [हिं० कड़कड़] १ कड़-कड़ाहट का शब्द। कठोर शब्द। २ तड़प। दपट। ३ गाज। वज्र। ४. घोड़े की सर-पट चाल। ५ कसक। दर्द जो रुक रुक-कर हो। ६ रुक रुककर और जलन के साथ पेशाब उतरने का रोग।

कड़कड़—सज्ञा पु० [अनु०] १. दो वस्तुओं

के आघात का कठोर शब्द। घोर शब्द। २. कड़ी वस्तु के टूटने या फूटने का शब्द।
कड़कड़ाता–वि० [हिं० कड़कड़] [स्त्री० कड़कड़ाती] १. कड़कड़ शब्द करता हुआ। २. कड़ाके का। बहुत तेज़। घोर। प्रचंड।
कड़कड़ाना–क्रि० अ० [सं० कड़] १. कड़कड़ शब्द होना। २. 'कड़कड़' शब्द के साथ टूटना। ३. घी, तेल आदि का आँच पर बहुत तपकर कड़कड़ बोलना। क्रि० स० १. कड़कड़ शब्द के साथ तोड़ना। २. घी, तेल आदि को खूब तपाना।
कड़कड़ाहट–संज्ञा स्त्री० [हिं० कड़कड़] कड़कड़ शब्द। गरज। घोर नाद।
कड़कना–क्रि० अ० [हिं० कड़कड़] १. कड़कड़ शब्द होना। २. चिटकने का शब्द होना। ३. दपटना। डाँटना। ४. चिटकना। फटना। दरकना।
कड़कनाल–संज्ञा स्त्री० [हिं० कड़क + नाल] चौड़े मुँह की तोप।
कड़क बिजली–संज्ञा स्त्री० [हिं० कड़क + बिजली] १. कान का एक गहना। चाँदवाला। २. तोड़ेदार बंदूक।
कड़खा–संज्ञा पुं० [हिं० कड़क] लड़ाई के समय गाया जानेवाला गीत।
कड़खैत–संज्ञा पुं० [हिं० कड़खा + ऐत (प्रत्य०)] १. कड़खा गानेवाला। २. भाट। चारण।
कड़बड़ा–वि० [सं० कर्बर = कबरा] जिसके कुछ बाल सफ़ेद और कुछ काले हों।
कड़बी–संज्ञा स्त्री० [सं० कांड, हिं० कांडा] ज्वार का पेड़ जिसके भुट्टे काट लिए गए हों और जो चारे के लिये छोड़ा हो।
कड़ा–संज्ञा पुं० [सं० कटक] [स्त्री० कड़ी] १. हाथ या पाँव में पहनने का चूड़ा। २. लोहे या और किसी धातु का छल्ला या कुंडा। ३. एक प्रकार का कबूतर। वि० [सं० कट्ठ] [स्त्री० कड़ी] १. जो दबाने से जल्दी न दबे। कठोर। कठिन। सख्त। ठोस। २. जिसकी प्रकृति कोमल न हो। रूखा। ३. उग्र। दृढ़। ४. कसा हुआ। चुस्त। ५. जो गीला न हो। कम गीला। ६. हृष्ट-पुष्ट। तगड़ा। दृढ़। ७. जोर का। प्रचंड। तेज़। जैसे—कड़ी चोट। ८. सहनेवाला। झेलनेवाला। धीर। ९. दुष्कर। दुःसाध्य। मुश्किल। १०. तीव्र प्रभाव डालनेवाला। तेज़। ११. असह्य। बुरा लगनेवाला। १२. कर्कश।
कड़ाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० कड़ा का भाव०] कठोरता। कड़ापन। सख्ती।
कड़ाका–संज्ञा पुं० [हिं० कड़कड़] १. किसी कड़ी वस्तु के टूटने का शब्द। मुहा०—कड़ाके का = ज़ोर का। तेज़। २. उपवास। लंघन। फ़ाक़ा।
कड़ाबीन–संज्ञा स्त्री० [तु० कराबीन] १. चौड़े मुँह की बंदूक। २. छोटी बंदूक।
कड़ाहा–संज्ञा पुं० [सं० कटाह, प्रा० कडाह] [स्त्री० अल्पा० कड़ाही] आँच पर चढ़ाने का लोहे का बड़ा गोल बरतन।
कड़ाही–संज्ञा स्त्री० [हिं० कड़ाह] छोटा कड़ाहा।
कड़ियल–वि० [हिं० कड़ा] कड़ा।
कड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० कड़ा] १. ज़ंजीर या सिकड़ी की लड़ी का एक छल्ला। २. छोटा छल्ला जो किसी वस्तु को अटकाने या लटकाने के लिये लगाया जाय। ३. लगाम। ४. गीत का एक पद। संज्ञा स्त्री० [सं० कांड] छोटी धरन। संज्ञा स्त्री० [हिं० कड़ा = कठिन] अंडस। संकट। दुःख। मुसीबत।
कड़ीदार–वि० [हिं० कड़ी + दार (प्रत्य०)] जिसमें कड़ी हो। छल्लेदार।
कड़ुआ–वि० [सं० कटुक] [स्त्री० कड़ुई] १. स्वाद में उग्र और अप्रिय। कटु। जैसे—नीम, चिरायता आदि का। २. तीखी प्रकृति का। गुस्सैल। अक्खड़। ३. अप्रिय। जो भला न मालूम हो। मुहा०—कड़ुआ करना = १. धन बिगाड़ना। रुपए लगाना। २. कुछ दाम खड़ा करना। कड़ुआ मुँह = वह मुँह जिससे कटु शब्द निकले। कड़ुआ होना = बुरा बनना।

४ विकट। टेढ़ा। कठिन।
मुहा०—कडुए कसैले दिन=१ बुरे दिन। कष्ट के दिन। २ दो-रसे दिन जिनमे रोग फैलता है। कडुआ घूँट=कठिन काम।
कडुआ तेल—संज्ञा पु० [हिं० कडुआ+तेल] सरसो का तेल जिसमे बहुत झाल होती है।
कडुआना—क्रि० अ० [हिं० कडुआ] १ कडुआ लगना। २ बिगडना। खीझना। ३ आँख में किरकिरी पडने का-सा दर्द होना।
कडुआहट—संज्ञा स्त्री० [हिं० कडुआ+हट (प्रत्य०)] कडुआपन।
कढ़ना—क्रि० अ० [सं० कर्षण] १ निकलना। बाहर आना। खिचना। २ उदय होना। ३ बढ़ जाना। ४ (प्रतिद्वंद्विता मे) आगे निकल जाना। ५ स्त्री का उपपति के साथ घर छोडकर चला जाना।
क्रि० अ० [हिं० गाढा] दूध का औटाया जाकर गाढा होना।
कढ़लाना*†—क्रि० स० [सं० काढ़ना+लाना] घसीटना। घसीटकर बाहर करना।
कढ़ाई—संज्ञा स्त्री० दे० "कडाही"।
संज्ञा स्त्री० [हिं० काढ़ना] काढ़ने की क्रिया।
कढ़ाना, कढ़वाना—क्रि० स० [हिं० काढ़ना का प्रे० रूप] निकलवाना। बाहर कराना।
कढ़ार—संज्ञा पु० [हिं० काढना] १ बूटे कसीदे का काम। २ बेलबूटा का उभार।
कढ़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कढना=गाढ़ा होना] एक प्रकार का सालन जो पानी में घोले हुए बेसन को आँच पर गाढ़ा करने से बनता है।
मुहा०—कढ़ी का सा उबाल=शीघ्र ही पद जानेवाला जोश।
कढ़ैया†—संज्ञा स्त्री० दे० "कडाही"।
†संज्ञा पु० [हिं० काढ़ना] १ निकालनेवाला। २ उद्धार करनेवाला। बचानेवाला।
कढ़ोरना*—क्रि० स० [सं० कर्षण] खींचना। घसीटना।
कण—संज्ञा पु० [सं०] १ तिनका। रवा। जर्रा। अत्यंत छोटा टुकडा। २ चावल का बारीक टुकडा। कना। ३ अन्न के कुछ दाने। ४ भिक्षा।
कणाद—संज्ञा पु० [सं०] वैशेषिक शास्त्र के रचयिता एक मुनि। उलूक मुनि।
कणिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] तिनका। टुकडा
कण्व—संज्ञा पु० [सं०] १ एक मंत्रकार ऋषि। २ कश्यप गोत्र में उत्पन्न एक ऋषि जिन्होंने शकुंतला को पाला था।
कत—संज्ञा पु० [अ०] देशी कलम की नोक की आडी काट।
†*अव्य० [सं० कुत पा० कुतो] क्यों। किस लिये। काहे को।
कतई—अव्य० [अ०] बिल्कुल। एकदम।
कतना—क्रि० अ० [हिं० कातना] काता जाना।
कतरन—संज्ञा स्त्री० [हिं० कतरना] कपडे, कागज आदि के वे छोटे रद्दी टुकडे जो काट छाँट के पीछे बच रहते हैं।
कतरना—क्रि० स० [सं० कर्त्तन] कैंची या किसी औजार से काटना।
कतरनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कतरना] १ बाल, कपडे आदि काटने का एक औजार। कैंची। मिकराज। २ धातुओं की चद्दर आदि काटने का, सँडसी के आकार का, एक औजार। काती।
कतरब्योंत—संज्ञा स्त्री० [हिं० कतरना+ब्योंत] १ काट-छाँट। २ उलट फेर। इधर का उधर करना। ३ उधेडबुन। सोच-विचार। ४ दूसरे के सौदे-सुल्फ में से कुछ रकम अपने लिये निकाल लेना। ५ युक्ति। जोड तोड। ढंग। ढर्रा।
कतरवाना—क्रि० स० दे० "कतराना"।
कतरा—संज्ञा पु० [हिं० कतरना] कटा हुआ टुकडा। खंड।
संज्ञा पु० [अ०] बूँद। बिंदु।
कतराई—संज्ञा स्त्री० [हिं० कतराना] १ कतरने का काम। २ कतरने की मजदूरी।
कतराना—संज्ञा स्त्री० [हिं० कतरना] किसी वस्तु या व्यक्ति को बचाकर किनारे से

निकल जाना।
क्रि० स० [हिं० कतरना का प्रे० रूप] कटाना। कटवाना। छँटवाना।
कतरी-संज्ञा स्त्री० [सं० कर्त्तरी =चक्र] १. कोल्हू का पाट जिसपर आदमी बैठकर बैलों को हाँकता है। कातर। २. हाथ में पहनने का पीतल का एक जेवर।
कतल-संज्ञा पुं० [अ० क़त्ल] वध। हत्या।
कतलबाज-संज्ञा पुं०[अ० क़त्ल + फ़ा० बाज़] वधिक। जल्लाद।
कतलाम-संज्ञा पुं० [अ० क़त्ले-आम] सर्व-साधारण का वध। सर्वसंहार।
कतली-संज्ञा स्त्री० [फा० क़तरा] मिठाई आदि का चौकोर टुकड़ा।
कतवाना-क्रि० स० [हिं० कातना का प्रे० रूप] दूसरे से कातने का काम लेना।
कतवार-संज्ञा पुं० [हिं० पतवार =पताई] कूड़ा-करकट। बेकाम घास-फूस।
यौ०-कतवारखाना =कूड़ा फेंकने की जगह।
*†संज्ञा पुं० [हिं० कातना] कातनेवाला।
कतहुँ, कतहूँ*†-अव्य० [हिं० कत + हूँ] कहीं। किसी स्थान पर। किसी जगह।
कता-संज्ञा स्त्री० [अ० कतअ] १. बनावट। आकार। २. ढंग। वजा। ३. कपड़े की काट-छाँट।
कताई-संज्ञा स्त्री० [हिं० कातना] १. कातने की क्रिया। २. कातने की मजदूरी।
कतान-संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. अलसी की छाल का बना एक बढ़िया कपड़ा जो पहले बनता था। २. बढ़िया बुनावट का एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।
कताना-क्रि० स० [हिं० कातना का प्रे० रूप] किसी अन्य से कातने का काम कराना।
क़तार-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. पंक्ति। पाँति। श्रेणी। २. समूह। झुंड।
कतारा-संज्ञा पुं० [सं० कांतार] [स्त्री० अल्पा० कतारी] लाल रंग का मोटा गन्ना।
कतारी*†-संज्ञा स्त्री० दे० "कतार"।
संज्ञा स्त्री० [हिं० कतारा] कतारे की जाति की छोटी और पतली ईख।
कति*-वि० [सं०] १. (गिनती में) कितने। २. किस क़दर (तौल या माप में)। ३. कौन। ४. बहुत से। अगणित।
कतिक*†-वि० [सं० कति + एक] १. कितना। किस क़दर। २. बहुत। अनेक।
कतिपय-वि० [सं०] १. कितने ही। कई एक। २. कुछ थोड़े से।
कतीरा-संज्ञा पुं० [देश०] गूलू नामक वृक्ष का गोंद जो दवा के काम में आता है।
कतेक*†-वि० दे० "कितने"।
कतौना-संज्ञा स्त्री० [हिं० कातना] १. कातने का काम या मजदूरी। २. कोई काम करने के लिये देर तक बैठे रहना।
कत्ता-संज्ञा पुं० [सं० कर्त्तरी] १. बाँस चीरने का एक औज़ार। बाँका। बाँसा। २. छोटी टेढ़ी तलवार।
कत्ती-संज्ञा स्त्री० [सं० कर्त्तरी] १. चाकू। छुरी। २. छोटी तलवार। ३. कटारी। पेशकब्ज। ४. सोनारों की कतरनी। ५. वह पगड़ी जो बत्ती के समान बटकर बाँधी जाती है।
कत्थई-वि० [हिं० कत्था] खैर के रंग का।
कत्थक-संज्ञा पुं० [सं० कथक] एक जाति जिसका काम गाना-बजाना और नाचना है।
कत्था-संज्ञा पुं० [सं० क्वाथ] १. खैर की लकड़ियों को जमाकर सुखाया काढ़ा जो पान में खाया जाता है। २. खैर का पेड़।
कथंचित्-क्रि० वि० [सं०] शायद।
कथक-संज्ञा पुं० [सं०] १. कथा या किस्सा कहनेवाला। २. पुराण बाँचनेवाला। पौराणिक। ३. कत्थक।
कथकीकर-संज्ञा पुं० [हिं० कत्था + कीकर] खैर का पेड़।
कथक्कड़-संज्ञा पुं० [सं० कथा + क्कड़ (प्रत्य०)] बहुत कथा कहनेवाला।
कथन-संज्ञा पुं० [सं०] १. कथना। बयान। २. बात। उक्ति।
कथना*-क्रि० स० [सं० कथन] १. कहना। बोलना। २. निंदा करना। बुराई करना।
कथनी*-संज्ञा स्त्री० [सं० कथन + ई (प्रत्य०)] १. बात। कथन। २. हुज्जत। बकवाद।

कथनीय–वि० [सं०] १. कहने योग्य। वर्णनीय। २. निंदनीय। बुरा।
कथरी–संज्ञा स्त्री० [सं० कथा+री (प्रत्य०)] पुराने चिथड़ों को जोड़-जाड़कर बनाया हुआ बिछावन। गुदड़ी।
कथा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह जो कहा जाय। बात। २ धर्म-विषयक व्याख्यान। ३. बात। चर्चा। जिक्र। प्रसंग। ४ समाचार। हाल। ५ वाद-विवाद। कहा-सुनी। झगड़ा।
कथानक–संज्ञा पु० [सं०] १. कथा। २ छोटी कथा। कहानी।
कथामुख–संज्ञा पु० [सं०] आख्यान या कथा-ग्रंथ की प्रस्तावना।
कथावस्तु–संज्ञा स्त्री० [सं०] उपन्यास या कहानी का ढाँचा। प्लाट।
कथा वार्ता–संज्ञा स्त्री० [सं०] अनेक प्रकार की बात चीत।
कथित–वि० [सं०] कहा हुआ।
कथोद्घात–संज्ञा पु० [सं०] १ प्रस्तावना। कथा-प्रारंभ। २ (नाटक में) सूत्रधार की बात, अथवा उसके मर्म को लेकर पहले पहल पात्र का रंगभूमि में प्रवेश और अभिनय का आरंभ।
कथोपकथन–संज्ञा पु० [सं०] १ बातचीत। २ वाद-विवाद।
कदंब–संज्ञा पु० [सं०] १ एक प्रसिद्ध वृक्ष। कदम। समूह। ढेर। झुंड।
कद–संज्ञा स्त्री० [अ० कद्] [वि० कद्दी] १. द्वेष। शत्रुता। २ हठ। जिद। †अव्य० [सं० कदा] कब। किस समय।
कद–संज्ञा पु० [अ० कद] ऊँचाई। (प्राणियों के लिए)
यौ०—कद्दे आदम=मानव शरीर के बराबर ऊँचा।
कदध्व*–संज्ञा पु० [सं० कदध्वा] खोटा मार्ग। कुपथ। बुरा रास्ता।
कदन–संज्ञा पु० [सं०] १ मरण। विनाश। २ मारना। वध। हिंसा। ३ युद्ध। संग्राम। ४ पाप। ५ दुःख।
कदन्न–संज्ञा पु० [सं०] कुत्सित अन्न। बुरा अन्न। मोटा अन्न। जैसे, कोदो।
कदम–संज्ञा पु० [सं० कदंब] १. एक सदाबहार बड़ा पेड़ जिसमें बरसात में गोल फल लगते हैं। २ एक घास।
क़दम–संज्ञा पु० [अ०] १. पैर। पाँव। मुहा०—कदम उठाना=१ तेज चलना। २. उन्नति करना। कदम चूमना=अत्यंत आदर करना। कदम छूना=१ प्रणाम करना। २ शपथ खाना। कदम बढ़ाना या कदम आगे बढ़ाना=१ तेज चलना। २. उन्नति करना। कदम रखना=प्रवेश करना। दाखिल होना। आना। २ धूल या कीचड़ में बना हुआ पैर का चिह्न।
मुहा०—कदम पर कदम रखना=१ ठीक पीछे पीछे चलना। २ अनुकरण करना। ३. चलने में एक पैर से दूसरे पैर तक का अंतर। पैंड। पग। फाल। ४ घोड़े की एक चाल जिसमें केवल पैरों में गति होती है और बदन नहीं हिलता।
कदमबाज़–वि० [अ०] कदम की चाल चलनेवाला (घोड़ा)।
कदर–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ मान। मात्रा। मिकदार। २ मान। प्रतिष्ठा। बड़ाई।
कदरई*–संज्ञा स्त्री० [हिं० कादर] कायरता।
कदरज–संज्ञा पु० [सं० कदर्य] एक प्रसिद्ध पापी। वि० दे० "कदर्य"।
कदरदान–वि० [फा०] कदर करनेवाला। गुणग्राही। गुणग्राहक।
कदरदानी–संज्ञा स्त्री० [फा०] गुणग्राहकता।
कदरमस*–संज्ञा स्त्री० [सं० कदन+हिं० मस (प्रत्य०)] मार-पीट। लड़ाई।
कदराई–संज्ञा स्त्री० [हिं० कादर+ई (प्रत्य०)] कायरपन। भीरुता। कायरता।
कदराना*–क्रि० अ० [हिं० कादर] कायर होना। डरना। भयभीत होना।

कदरी–संज्ञा स्त्री० [सं० कद = बुरा + रव = शब्द] एक पक्षी जो डील-डौल में मैना के बराबर होता है।

कदर्य–संज्ञा पुं० [सं०] निकम्मी वस्तु। कूड़ा-करकट।

वि० कुत्सित। बुरा।

कदर्थना–संज्ञा स्त्री० [सं० कदर्थन] [वि० कदर्थित] दुर्गति। दुर्दशा। बुरी दशा।

कदर्थित–वि० [सं०] जिसकी दुर्दशा की गई हो। दुर्गति-प्राप्त।

कदर्य–वि० [सं०] [संज्ञा कदर्यता] कंजूस।

कदली–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. केला। २. एक पेड़ जिसकी लकड़ी जहाज बनाने में काम आती है। ३. एक तरह का हिरन।

कदा–क्रि० वि० [सं०] कब। किस समय।

मुहा०—यदा कदा = कभी कभी। जब तब।

कदाकार–वि० [सं०] बुरे आकार का। बदसूरत। बदशकल। भद्दा।

कदाच*–क्रि० वि० [स० कदाचन] शायद। कदाचित्।

कदाचार–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कदाचारी] बुरी चाल। बुरा आचरण। बदचलनी।

कदाचित्–क्रि० वि० [सं०] कभी। शायद।

कदापि–क्रि० वि० [सं०] कभी। किसी समय भी। हर्गिज।

कदी–वि० [अ० कद्द] हठी। जिद्दी।

कदीम–वि० [अ०] पुराना। प्राचीन।

कदीमी–वि० [अ० कदीम] पुराना। बहुत दिनों से चला आता हुआ।

कदुष्ण–वि० [सं०] थोड़ा गर्म। शीर-गर्म।

कदूरत–संज्ञा स्त्री० [अ०] रंजिश। मन-मोटाव। कीना।

क़द्दावर–वि० [फ़ा०] बड़े डील-डौल का।

कद्दी–वि० दे० "कदी"।

कद्रुज–संज्ञा पुं० [सं०] सर्प। साँप।

कद्दू–संज्ञा पुं० [फा० कद्दू] लौकी। घिया।

कद्दूकश–संज्ञा पुं० [फा०] लोहे, पीतल आदि की छेददार चौकी जिसपर कद्दू को रगड़कर उसके महीन टुकड़े करते हैं।

कद्दूदाना–संज्ञा पुं० [फा०] पेट के भीतर के छोटे छोटे सफ़ेद कीड़े जो मल के साथ गिरते हैं।

कधी–क्रि० वि० दे० "कभी"।

कन–संज्ञा पुं० [सं० कण] १. बहुत छोटा टुकड़ा। जर्रा। २. अन्न का एक दाना। ३. अनाज के दाने का टुकड़ा। ४. प्रसाद। जूठन। ५. भीख। भिक्षान्न। ६. चावलों की धूल। कना। ७. बालू या रेत के कण। ८. शारीरिक शक्ति।

संज्ञा पुं० 'कान' का संक्षिप्त रूप जो यौगिक शब्दों में आता है। जैसे—कनपटी।

कनई†–संज्ञा स्त्री० [सं० कांड या कंदल] कनखा। नई शाखा। कल्ला। कोंपल।

†संज्ञा स्त्री० [हिं० काँदव] गीली मिट्टी।

कनउड़*–वि० दे० "कनौड़ा"।

कनक–संज्ञा पुं० [सं०] १. सोना। सुवर्ण। २. धतूरा। ३. पलाश। टेसू। ढाक। ४. नागकेसर। ५. खजूर। ६. छप्पय छंद का एक भेद।

संज्ञा पुं० [सं० कणिक] गेहूँ।

कनककली–संज्ञा पुं० [सं० कनक + हिं० कली] कान में पहनने का फूल।

कनककशिपु–संज्ञा पुं० दे० "हिरण्यकशिपु"।

कनकचंपा–संज्ञा स्त्री० [सं० कनक + हिं० चंपा] मध्यम आकार का एक पेड़। कर्णिकार। कनियारी।

कनकटा–वि० [हिं० कान + कटना] १. जिसका कान कटा हो। बूचा। २. कान काट लेनेवाला।

कनकना–वि० [अनु०] जरा से आघात से टूटनेवाला। 'चीमड़' का उलटा।

कनकना–वि० [हिं० कनकनाना] [स्त्री० कनकनी] १. जिससे कनकनाहट उत्पन्न हो। २. चुनचुनानेवाला। ३. अरुचिकर। नागवार। चिड़चिड़ा।

कनकनाना–क्रि० अ० [हिं० काँद, पुं० हिं०

कान] [संज्ञा कनकनाहट] १ सूरन, अरवी आदि वस्तुओं के स्पर्श से अंगों में चुन-चुनाहट होना । चुनचुनाना। २ चुन-चुनाहट या कनकनाहट उत्पन्न करना। गला काटना । ३ अरुचिकर लगना । नागवार मालूम होना।

क्रि० अ० [हिं० कना] १ चौकन्ना होना। २ रोमांचित होना।

कनकनाहट–संज्ञा स्त्री० [हिं० कनकनाना] कनकनाने का भाव। कनकनी।

कनकफल–संज्ञा पु० [सं०] १ धतूरे का फल। २ जमालगोटा।

कनकाचल–संज्ञा पु० [सं०] १ सोने का पर्वत। २ सुमेरु पर्वत।

कनकानी–संज्ञा पु० [देश०] घोडे की एक जाति।

कनकी–संज्ञा स्त्री० [सं० कणिक] १ चावलों के टूटे हुए छोटे टुकडे । २ छोटा कण।

कनकूत–संज्ञा पु० [सं० कण + हिं० कूत] खेत में खड़ी फसल की उपज का अनुमान।

कनकौआ–संज्ञा पु० [हिं० कना + कौआ] कागज की बनी पतंग। गुड्डी।

कनखजूरा–संज्ञा पु० [हिं० कान + खर्जू = एक कीडा] एक जहरीला छोटा कीडा जिसके बहुत से पैर होते हैं। गोजर।

कनखा†–संज्ञा पु० [सं० काडक] कोंपल।

कनखियाना–क्रि० स० [हिं० कनखी] १ कनखी या तिरछी नजर से देखना। २ आँख से इशारा करना।

कनखी–संज्ञा स्त्री० [हिं० कोन + आँख] १ पुतली को आँख के कोने पर ले जाकर ताकने की मुद्रा । दूसरों की दृष्टि बचाकर देखना। २ आँख का इशारा।

मुहा०–कनखी मारना = आँख से इशारा या मना करना।

कनखैया*‡–संज्ञा स्त्री० दे० "कनखी"।

कनखोदनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० कान + खोदना] कान की मैल निकालने की सलाई।

कनगुरिया–संज्ञा स्त्री० [हिं० कानी + अंगुरी] सबसे छोटी उँगली।

कनछेदन–संज्ञा पु० [हिं० कान + छेदना] हिंदुओं का एक संस्कार जिसमें बच्चे का कान छेदा जाता है। कर्णवेध।

कनटोप–संज्ञा पु० [हिं० कान + टोप या तोपना] कानों को ढँकनेवाली टोपी।

कनतूतुर–संज्ञा पु० [हिं० कान तूतू शब्द] छोटी जाति का एक जहरीला मेढक।

कनधार*–संज्ञा पु० दे० "कर्णधार"।

कनपटी–संज्ञा स्त्री० [हिं० कान + सं० पट] कान और आँख के बीच का स्थान।

कनपेडा–संज्ञा पु० [हिं० कान + पेडा] एक रोग जिसमें कान की जड़ के पास चिपटी गिलटी निकल आती है।

कनफटा–संज्ञा पु० [हिं० कान + फटना] गोरखनाथ के अनुयायी योगी जो कानों को फडवाकर उनमें बिल्लौर की मुद्राएँ पहनते हैं।

कनफुँका–वि० [हिं० कान + फूँकना] [स्त्री० कनफुँकी] १ कान फूँकनेवाला। दीक्षा देनेवाला। २ जिसने दीक्षा ली हो।

कनफुसकी†–संज्ञा स्त्री० दे० "कानाफूसी"।

कनमनाना–क्रि० अ० [हिं० कान + मानना] १ सोए हुए प्राणी का कुछ आहट पाकर हिलना डोलना या सचेष्ट होना। २ किसी बात के विरुद्ध कुछ कहना या चेष्टा करना।

कनमैलिया–संज्ञा पु० [हिं० कान + मल] कान की मैल निकालनेवाला।

कनय*–संज्ञा पु० दे० "कनक"।

कनरस–संज्ञा पु० [हिं० कान + रस] १ गाना-बजाना सुनने का आनंद। २ गाना-बजाना या बात सुनने का व्यसन।

कनरसिया–संज्ञा पु० [हिं० कान + रसिया] गाना-बजाना सुनने का शौकीन।

कनसलाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० कान + हिं० सलाई] कनखजूरे की तरह का एक कीडा।

कनसाल–संज्ञा पु० [हिं० कोन + सालना] चारपाई के पायों में तिरछे पड़े छेद जिनके कारण चारपाई में कनव आ जाय।

कनसार–संज्ञा पुं० [सं० कांस्यकार] ताम्र-पत्र पर लेख खोदनेवाला।
कनसुई–संज्ञा स्त्री० [हिं० कान+सुनना] आहट। टोह।
मुहा०–कनसुई या कनसुइयाँ लेना=१. छिपकर किसी की बात सुनना। २. भेद लेना।
कनस्तर–संज्ञा पुं० [अं० कनिस्टर] टीन का चौखूंटा पीपा, जिसमें घी-तेल आदि रखा जाता है।
कनहार*–संज्ञा पुं० [सं० कर्णधार] मल्लाह।
कना–संज्ञा पुं० दे० "कन"।
कनाउड़ा*–वि० दे० "कनौड़ा"।
कनागत–संज्ञा पुं० [सं० कन्यागत] १. पितृपक्ष। २. श्राद्ध।
क़नात–संज्ञा स्त्री० [तु०] मोटे कपड़े की वह दीवार जिससे किसी स्थान को घेरकर आड़ करते हैं।
कनारी–संज्ञा स्त्री० [हिं० कनारा + ई (प्रत्य०)] १. मदरास प्रांत के कनारा नामक प्रदेश की भाषा। २. कनारा का निवासी।
कनावड़ा*–संज्ञा पुं० दे० "कनौड़ा"।
कनिआरी–संज्ञा स्त्री० [सं० कर्णिकार] कनक-चंपा का पेड़।
कनिका*–संज्ञा स्त्री० दे० "कणिका"।
कनिगर*–संज्ञा पुं० [हिं० कानि + फा० गर] अपनी मर्य्यादा का ध्यान रखनेवाला। नाम की लाज रखनेवाला।
कनियाँ*–संज्ञा स्त्री० [हिं० काँध] गोद। कोरा। उछंग।
कनियाना–क्रि० अ० [हिं० कोना] आँख बचाकर निकल जाना। कतराना।
क्रि० अ० [हिं० कन्नी, कन्ना] पतंग का किसी ओर भुक जाना। कन्नी खाना।
†क्रि० अ० [हिं० कनिया] गोद लेना। गोद में उठाना।
कनियार–संज्ञा पुं० [सं० कर्णिकार] कनकचंपा।
कनिष्ठ–वि० [सं०] [स्त्री० कनिष्ठा] १. बहुत छोटा। अत्यंत लघु। सबसे छोटा। २. जो पीछे उत्पन्न हुआ हो। ३. उमर में छोटा। ४. हीन। निकृष्ट।
कनिष्ठा–वि० स्त्री० [सं०] १. बहुत छोटी। सबसे छोटी। २. हीन। निकृष्ट। नीच। संज्ञा स्त्री० १. दो या कई स्त्रियों में सबसे छोटी या पीछे की विवाहिता स्त्री। २. नायिका-भेद के अनुसार दो या अधिक स्त्रियों में वह स्त्री जिसपर पति का प्रेम कम हो। ३. छोटी उँगली। छिगुनी।
कनिष्ठिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] सबसे छोटी उँगली। कानी उँगली। छिगुनी।
कनी–संज्ञा स्त्री० [सं० कण] १. छोटा टुकड़ा। २. हीरे का बहुत छोटा टुकड़ा।
मुहा०–कनी खाना या चाटना=हीरे की कनी निगलकर प्राण देना।
३. चावल के छोटे-छोटे टुकड़े। किनकी। ४. चावल का मध्य भाग जो कभी कभी नहीं गलता। ५. बूँद।
कनीनिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आँख की पुतली। तारा। २. कन्या।
कनै†–क्रि० वि० [सं० कर्णे=स्थान में] १. पास। निकट। समीप। २. ओर। तरफ़। ३. अधिकार में। क़ब्ज़े में।
कनैठा†–वि० [हिं० काना+एठा (प्रत्य०)] १. काना। २. भेंगा। ऐंचा-ताना।
कनैठी–संज्ञा स्त्री० [हिं० कान + ऐंठना] कान मरोड़ने की सजा। गोशमाली।
कनेर–संज्ञा पुं० [सं० कर्णेर] एक पेड़ जिसमें लाल या पीले सुंदर फूल लगते हैं।
कनेरिया–वि० [हिं० कनेर] कनेर के फूल के रंग का। कुछ श्यामता लिए लाल।
कनेव†–संज्ञा पुं० [हिं० कोन + एव] चारपाई का टेढ़ापन।
कनौजिया–वि० [हिं० कन्नौज + इया (प्रत्य०)] १. कन्नौज-निवासी। २. जिसके पूर्वज कन्नौज के रहनेवाले रहे हों। संज्ञा पुं० कान्यकुब्ज ब्राह्मण।
कनौड़ा–वि० [हिं० कान + औड़ा (प्रत्य०)] १. काना। २. जिसका कोई अंग खंडित हो। अपंग। खोंड़ा। ३. कलंकित। निंदित। ४. लज्जित। संकुचित।

...गशा पु०[हिं० कीनना = मोल लेना + औड़ा (प्रत्य०)] १ मोल लिया हुआ गुलाम। नीत दास। २. कृतज्ञ मनुष्य। एहसान-मंद आदमी। ३ तुच्छ मनुष्य।

कनौती—संज्ञा स्त्री० [हिं० कान + औती (प्रत्य०)] १. पशुओं के कान या उनके कानों की नोक। २. कानों के उठाने या उठाए रखने का ढंग। ३. कान में पहनने की बाली।

कन्ना—संज्ञा पु० [सं० कर्ण, प्रा० कण्ण] [स्त्री० कन्नी] १. पतंग का वह डोरा जिसका एक छोर काँप और ढड्ढे के मेल पर और दूसरा पुछल्ले के कुछ ऊपर बाँधा जाता है। २ किनारा। कोर। औठ।

संज्ञा पु० [सं० कण] चावल का कन।

संज्ञा पु० [सं० कर्णक] वनस्पति का एक रोग जिससे उसकी लकड़ी तथा फल आदि में कीड़े पड़ जाते हैं।

कन्नी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कन्ना] १ पतंग या कनकौवे के दोनों ओर के किनारे। २ वह धज्जी जो पतंग की कन्नी में इसलिये बाँधी जाती है कि वह सीधी उड़े। ३ किनारा। हाशिया।

संज्ञा पु० [सं० करण] राजगीरों का करनी नामक औजार।

कन्यका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कुवारी लड़की। २ पुत्री। बेटी।

कन्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अविवाहिता लड़की। कुवारी लड़की।

यौ०—पंचकन्या = पुराणों के अनुसार वे पाँच स्त्रियाँ जो बहुत पवित्र मानी गई हैं—अहल्या, द्रौपदी, कुन्ती, तारा और मंदोदरी।

२ पुत्री। बेटी। ३ बारह राशियों में से छठी राशि। ४ घीकुवार। ५ बड़ी इलायची। ६ एक वर्ण-वृत्त।

कन्याकुमारी—संज्ञा स्त्री० [सं० कन्या + कुमारी] भारत के दक्षिण में रामेश्वर के निकट का एक अंतरीप। रासकुमारी।

कन्यादान—संज्ञा पु० [सं०] विवाह में वर को कन्या देने की रीति।

कन्याधन—संज्ञा पु० [सं०] वह स्त्री धन जो स्त्री को अविवाहिता या कन्या-अवस्था में मिला हो।

कन्याराशी—वि० [सं० कन्याराशिन्] १ जिसके जन्म के समय चंद्रमा कन्या राशि में हो। २ चौपट। सत्यानाशी।

कन्यावानी—संज्ञा स्त्री० [सं० कन्या + हिं० पानी] कन्या के सूर्य्य के समय की वर्षा।

कन्हाई, कन्हैया—संज्ञा पु० [सं० कृष्ण] १ श्रीकृष्ण। २. अत्यंत प्यारा आदमी। प्रिय व्यक्ति। ३. बहुत सुंदर लड़का।

कपट—संज्ञा पु० [सं०] [वि० कपटी] १ अभिप्राय साधन के लिये हृदय की बात को छिपाने की वृत्ति। छल। दंभ। धोखा। २ दुराव। छिपाव।

कपटना—क्रि० स० [सं० कल्पन्] १ काट कर अलग करना। छाँटना। सोटना। २ काटकर अलग निकालना।

कपटी—वि० [सं०] कपट करनेवाला। छली। धोखेबाज। धूर्त।

कपड़छन, कपड़छान—संज्ञा पु० [हिं० कपड़ा + छानना] किसी पिसी हुई बुकनी को कपड़े में छानने का कार्य्य।

कपड़द्वार—संज्ञा पु० [हिं० कपड़ा द्वार] कपड़ों का भंडार। वस्त्रागार। तोशाखाना।

कपड़धूलि—संज्ञा स्त्री० [हिं० कपड़ा धूलि] एक प्रकार का बारीक रेशमी कपड़ा। करेब।

कपड़मिट्टी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कपड़ा + मिट्टी] धातु या ओषधि फूँकने के संपुट पर गीली मिट्टी के लेप के साथ कपड़ा लपेटने की क्रिया। कपड़ौटी। गिल हिकमत।

कपड़ा—संज्ञा पु० [सं० कर्पट] १ रूई, रेशम, ऊन या सन के तागों से बुना हुआ शरीर का आच्छादन। वस्त्र। पट।

मुहा०—कपड़ों से होना = मासिक धर्म में होना। रजस्वला होना। (स्त्री का)

२ पहनावा। पोशाक।

यौ०—कपड़ा लत्ता = पहनने का सामान।

कपड़ौटी—संज्ञा स्त्री० दे० "कपड़मिट्टी"।

कपद, कपर्दक—संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री०

कपर्दिका] १. (शिव का) जटाजूट। २. कौड़ी।
कपर्दिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] कौड़ी।
कपर्दिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।
कपर्दी—संज्ञा पुं० [सं० कपर्दिन्] [स्त्री० कपर्दिनी] १. शिव। २. ग्यारह रुद्रों में से एक।
कपाट—संज्ञा पुं० [सं०] किवाड़। पट।
कपाटबद्ध—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का चित्रकाव्य जिसके अक्षरों को विशेष रूप से लिखने से किवाड़ों का चित्र बन जाता है।
कपार*†—संज्ञा पुं० दे० "कपाल"।
कपाल—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कपाली, कपालिका] १. खोपड़ा। खोपड़ी। २. ललाट। मस्तक। ३. अदृष्ट। भाग्य। ४. घड़े आदि के नीचे या ऊपर का भाग। खपड़ा। खर्पर। ५. मिट्टी का भिक्षा-पात्र। खप्पर। ६. वह बर्तन जिसमें यज्ञों में देवताओं के लिये पुरोडाश पकाया जाता था।
कपालक*—वि० दे० "कापालिक"।
कपालक्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] मृतक-संस्कार के अंतर्गत एक कृत्य जिसमें जलते हुए शव की खोपड़ी को बाँस या लकड़ी से फोड़ देते हैं।
कपालिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] खोपड़ी। संज्ञा स्त्री० [सं० कापालिका] काली। रणचंडी।
कपालिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।
कपाली—संज्ञा पुं० [सं० कपालिन्] [स्त्री० कपालिनी] १. शिव। महादेव। २. भैरव। ३. ठीकरा लेकर भीख माँगनेवाला। ४. एक वर्णसंकर जाति। कपरिया।
कपास—संज्ञा स्त्री० [सं० कर्पास] [वि० कपासी] एक पौधा जिसके ढेंढ से रूई निकलती है।
कपासी—वि० [हिं० कपास] कपास के फूल के रंग का। बहुत हलके पीले रंग का। संज्ञा पुं० बहुत हलका पीला रंग।
कपिंजल—संज्ञा पुं० [सं०] १. चातक। पपीहा। २. गौरा पक्षी। ३. भरदूल। भरुही। ४. तीतर। ५. एक मुनि। २. वि० [सं०] पीले रंग का।
कपि—संज्ञा पुं० [सं०] १. बंदर। २. हाथी। ३. करंज। कंजा। ४. सूर्य्य।
कपिकच्छु—संज्ञा स्त्री० [सं०] केवाँच।
कपिकेतु—संज्ञा पुं० [सं०] अर्जुन।
कपिखेल*—संज्ञा पुं० दे० "कपिकच्छु"।
कपित्थ—संज्ञा पुं० [सं०] कैथ का पेड़ या फल।
कपिध्वज—संज्ञा पुं० [सं०] अर्जुन।
कपिल—वि० [सं०] १. भूरा। मटमैला। तामड़े रंग का। २. सफ़ेद। संज्ञा पुं० १. अग्नि। २. कुत्ता। ३. चूहा। ४. शिलाजीत। ५. महादेव। ६. सूर्य्य। ७. विष्णु। ८. एक मुनि जो सांख्य-शास्त्र के आदि-प्रवर्तक माने जाते हैं।
कपिलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] केवाँच।
कपिलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. भूरापन। २. ललाई। ३. पीलापन। ४. सफ़ेदी।
कपिलवस्तु—संज्ञा पुं० [सं०] गौतम बुद्ध का जन्मस्थान।
कपिला—वि० स्त्री० [सं०] १. भूरे रंग की। मटमैले रंग की। २. सफ़ेद रंग की। ३. जिसके शरीर में सफ़ेद दाग हों। ४. सीधी सादी। भोली भाली। संज्ञा स्त्री० १. सफेद रंग की गाय। २. सीधी गाय। ३. पुंडरीक नामक दिग्गज की पत्नी। ४. दक्ष की एक कन्या।
कपिस—वि० [सं०] १. काला और पीला रंग लिए भूरे रंग का। मटमैला। २. पीला-भूरा। लाल-भूरा।
कपिशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार का मद्य। २. एक नदी। कसाई। ३. कश्यप की एक स्त्री जिससे पिशाच उत्पन्न हुए थे।
कपीश—संज्ञा पुं० [सं०] वानरों का राजा। जैसे हनुमान्, सुग्रीव इत्यादि।
कपूत—संज्ञा पुं० [सं० कुपुत्र] बुरी चाल-चलन का पुत्र। बुरा लड़का।
कपूती—संज्ञा स्त्री० [हिं० कपूत] पुत्र के अयोग्य आचरण। नालायक़ी।
कपूर—संज्ञा पुं० [सं० कर्पूर] एक सफ़ेद रंग

या जमा हुआ सुगंधित द्रव्य जो दारचीनी की जाति के पेड़ों से निकलता है। काफूर।
कपूरकचरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० कपूर+कचरी] एक बेल जिसकी जड़ सुगंधित होती है और दवा के काम में आती है। सितरुी।
कपूरी–वि० [हिं० कपूर] १. कपूर का बना हुआ। २ हलके पीले रंग का। संज्ञा पु० १. कुछ हलका पीला रंग। २. एक प्रकार का कड़ुआ पान।
कपोत–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० कपोतिका, कपोती] १. कबूतर। २ परेवा। ३ पक्षी। चिड़िया। ४. भूरे रंग का कच्चा सुरमा।
कपोतव्रत–संज्ञा पु० [सं०] चुपचाप दूसरे के अत्याचारों को सहना।
कपोती–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कबूतरी। २ पेंडुकी। ३. कुमरी। वि० [सं०] कपोत के रंग का। धूमला रंग का।
कपोल–संज्ञा पु० [सं०] गाल।
कपोलकल्पना–संज्ञा स्त्री० [सं०] मनगढ़त या बनावटी बात। गप्प।
कपोलकल्पित–वि० [सं०] बनावटी। मनगढ़त। झूठ।
कपोलगेंडुआ–संज्ञा पु० [सं० कपोल+हिं० गद] गाल के नीचे रखने का तकिया। गल-तकिया।
कफ–संज्ञा पु० [सं०] १. वह गाढ़ी लसीली और अठेदार वस्तु जो खाँसने या थूकने से मुँह से बाहर आती है तथा नाक से भी निकलती है। श्लेष्मा। बलगम। २ वैद्यक के अनुसार शरीर के भीतर की एक धातु।
कफ–संज्ञा पु० [अं०] कमीज या कुर्ते की आस्तीन के आगे की दोहरी पट्टी जिसमें बटन लगते हैं।
संज्ञा पु० [फा०] झाग। फेन।
कफन–संज्ञा पु० [अ०] वह कपड़ा जिसमें मुर्दा लपेटकर गाड़ा या फूँका जाता है। मुहा०—कफन को कौड़ी न होना या न रखना=अत्यंत दरिद्र होना। कफन को कौड़ी न रखना=जो कमाना, वह सब खा लेना।
कफनखसोट–वि० [अ० कफन+हिं० खसोट] कंजूस। मक्खीचूस। अत्यंत लोभी।
कफनखसोटी–संज्ञा स्त्री० [हिं० कफन खसोटना] १. डोमों का कर जो वे श्मशान पर मुर्दों का कफन फाड़कर लेते हैं। २. इधर उधर से भले या बुरे ढंग से धन एकत्र करने की वृत्ति। ३. कंजूसी।
कफनाना–क्रि० स० [अ० कफन+हिं० आना (प्रत्य०)] गाड़ने या जलाने के लिये मुर्दे को कफन में लपेटना।
कफनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० कफन] १. वह कपड़ा जो मुर्दे के गले में डालते हैं। २ साधुओं के पहनने की मेखला।
कफस–संज्ञा पु० [अ०] १. पिंजरा। २. काबुक। दरबा। ३. बंदीगृह। कैदखाना। ४. बहुत तंग जगह।
कबंध–संज्ञा पु० [सं०] १. पीपा। कंडाल। २. बादल। मेघ। ३ पेट। उदर। ४. जल। ५ बिना सिर का धड़। रुंड। ६. एक राक्षस जिसे राम ने जीता ही भूमि में गाड़ दिया था। ७ राहु।
कब–क्रि० वि० [सं० कदा] १. किस समय? किस वक्त? (प्रश्नसूचक)। मुहा०—कब का, कब के, कब से=देर से। विलंब से। कब नहीं=बराबर। सदा। २. कभी नहीं। नहीं।
कबड्डी–संज्ञा स्त्री० [देश०] १. लड़कों का एक खेल जिसे वे दो दल बनाकर खेलते हैं। २ कोंपा। कपा।
कबर–संज्ञा स्त्री० दे० "कब्र"।
कबरा–वि० [सं० कर्बुर, पा० कब्बर] [स्त्री० कबरी] सफेद रंग पर काले, लाल, पीले आदि दागवाला। चितला। अबलक।
कबरिस्तान–संज्ञा पु० दे० "कब्रिस्तान"।
कबल–अव्य० [अ०] पहले। पेशतर।
कबा–संज्ञा पु० [अ०] एक प्रकार का लंबा ढीला पहनावा।
कबाड़–संज्ञा पु० [सं० कर्पट] [संज्ञा कबाड़ी] १ काम में न आनेवाली वस्तु,

अंगड़-खंगड़। २. अंड-बंड काम। व्यर्थ का व्यापार। ३. तुच्छ व्यवसाय।

कबाड़ा–संज्ञा पुं० [हिं० कबाड़] व्यर्थ की बात। झंझट। बखेड़ा।

कबाड़िया–संज्ञा पुं० [हिं० कबाड़] १. टूटी-फूटी, सड़ी-गली चीजें बेचनेवाला आदमी। २. तुच्छ व्यवसाय करनेवाला पुरुष। ३. झगड़ालू आदमी।

कबाड़ी–संज्ञा पुं० वि० दे० "*कबाड़िया*"।

कबाब–संज्ञा पुं० [अ०] सीखों पर भूना हुआ मांस।

कबाबचीनी–संज्ञा स्त्री० [अ० कबाब + हिं० चीनी] १. मिर्च की जाति की एक लिपटनेवाली झाड़ी जिसके गोल फल खाने में कड़ुए और ठंढे मालूम होते हैं। २. कबाबचीनी का गोल फल या दाना।

कबाबी–वि० [अ० कबाब] १. कबाब बेचनेवाला। २. मांसाहारी।

कबार–संज्ञा पुं० [हिं० कबाड़] १. व्यापार। रोजगार। व्यवसाय। २. दे० "कबाड़"।

कबारना–क्रि० स० [देश०] उखाड़ना।

कबाला–संज्ञा पुं० [अ०] वह दस्तावेज जिसके द्वारा कोई जायदाद दूसरे के अधिकार में चली जाय। जैसे—बयनामा।

कबाहत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. बुराई। खराबी। २. दिक्कत। तरद्दुद। अड़चन।

कबीर–संज्ञा पुं० [अ० कबीर बड़ा, श्रेष्ठ] १. एक प्रसिद्ध भक्त जो जुलाहे थे। २. एक प्रकार का अश्लील गीत या पद जो होली में गाया जाता है।

वि० श्रेष्ठ। बड़ा।

कबीरपंथी–वि० [हिं० कबीर + पंथ] कबीर के संप्रदाय का।

कबीला–संज्ञा स्त्री० [अ०] स्त्री। जोरू।

कबुलवाना, कबुलाना–क्रि० स० [हिं० कबूलना का प्रे० रूप] क़बूल कराना।

कबूतर–संज्ञा पुं० [फा०, मिलाओ सं० कपोत] [स्त्री० कबूतरी] झुंड में रहनेवाला परेवा की जाति का एक प्रसिद्ध पक्षी।

कबूतरखाना–संज्ञा पुं० [फ़ा०] पालतू कबूतरों के रहने का दरबा।

कबूतरबाज–वि० [फ़ा०] जिसे कबूतर पालने और उड़ाने की लत हो।

क़बूल–संज्ञा पुं० [अ०] स्वीकार। अंगीकार। मंजूर।

कबूलना–क्रि० स० [अ० क़बूल + ना (प्रत्य०)] स्वीकार करना। सकारना। मंजूर करना।

क़बूलियत–संज्ञा स्त्री० [अ०] वह दस्तावेज जो पट्टा लेनेवाला पट्टे की स्वीकृति में ठेका या पट्टा देनेवाले को लिख दे।

कबूली–संज्ञा स्त्री० [फा०] चने की दाल की खिचड़ी।

क़ब्ज़–संज्ञा पुं० [अ०] १. ग्रहण। पकड़। २. दस्त का साफ़ न होना। मलावरोध।

क़ब्ज़ा–संज्ञा पुं० [अ०] १. मूँठ। दस्ता। मुहा०—क़ब्ज़े पर हाथ डालना = तलवार खींचने के लिए मूँठ पर हाथ ले जाना। २. किवाड़ या सन्दूक़ में जड़े जानेवाले लोहे या पीतल की चद्दर के बने हुए दो चौखूँटे टुकड़े। नर-मादगी। पकड़। ३. दखल। अधिकार। वश। इख्तियार।

क़ब्ज़ादार–संज्ञा पुं० [फ़ा०] [भाव० संज्ञा क़ब्ज़ादारी] १. वह अधिकारी जिसका क़ब्ज़ा हो। २. दखीलकार असामी।

वि० जिसमें क़ब्ज़ा लगा हो।

क़ब्ज़ियत–संज्ञा स्त्री० [अ०] पाखाने का साफ न आना। मलावरोध।

क़ब्र–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. वह गड्ढा जिसमें मुसलमान, ईसाई आदि अपने मुर्दे गाड़ते हैं। २. वह चबूतरा जो ऐसे गड्ढे के ऊपर बनाया जाता है।

मुहा०—क़ब्र में पैर या पाँव लटकाना = मरने को होना। मरने के क़रीब होना।

क़ब्रिस्तान–संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह स्थान जहाँ मुर्दे गाड़े जाते हैं।

कभी–क्रि० वि० [हिं० कब + ही] किसी समय। किसी अवसर पर।

मुहा०—कभी का = बहुत देर से। कभी न कभी = आगे चलकर अवश्य किसी अवसर पर।

कभू*–क्रि० वि० दे० "*कभी*"।

कमंगर—संज्ञा पुं० [फा० कमानगर] १ कमान बनानेवाला। २ जोड़ की उखड़ी हुई हड्डी को असली जगह पर बैठानेवाला। ३ चितेरा। मुसौवर।
†वि० दक्ष। कुशल। निपुण।

कमंगरी—संज्ञा स्त्री० [फा० कमानगर] १ कमान बनाने का पेशा या हुनर। २ हड्डी बैठाने का काम। ३ मुसौवरी।

कमंडल—संज्ञा पुं० दे० 'कमंडलु'।

कमंडली—वि० [सं० कमंडलु+ई (प्रत्य०)] १ साधु। बैरागी। २ पाखंडी।

कमंडलु—संज्ञा पुं० [सं०] संन्यासियों का जलपात्र, जो धातु, मिट्टी, तमड़ी, दरियाई नारियल आदि का होता है।

कमंद*—संज्ञा पुं० दे० "कबंध"।
संज्ञा स्त्री० [फा०] १ वह फंददार रस्सी जिसे फेंककर जंगली पशु आदि फँसाए जाते हैं। फंदा। पाश। २ फंददार रस्सी जिसे फेंककर चोर ऊँचे मकानों पर चढ़ते हैं।

कम—वि० [फा०] १ थोड़ा। न्यून। अल्प। मुहा०—कम से कम = अधिक नहीं तो इतना अवश्य। और नहीं तो इतना जरूर। २ बुरा जैसे—कमबख्त।
क्रि० वि० प्राय नहीं। बहुधा नहीं।

कमअसल—वि० [फा० कम+अ० असल] वर्णसंकर। दोगला।

कमखाब—संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा जिसपर कलाबत्तू के बेल-बूटे बने होते हैं।

कमची—संज्ञा स्त्री० [तु०। सं० कंचिका] १ पतली लचीली टहनी जिससे टोकरी बनाई जाती है। तीली। २ पतली लचकदार छड़ी। ३ लकड़ी आदि की पतली फट्टी।

कमच्छा—संज्ञा स्त्री० दे० "कामाख्या"।

कमजोर—वि० [फा०] दुर्बल। अशक्त।

कमजोरी—संज्ञा स्त्री० [फा०] निर्बलता। दुर्बलता। नाताकती। अशक्तता।

कमठ—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कमठी] १. कछुआ। कच्छप। २ साधुओं का तुंबा। ३ बाँस।

कमठा—संज्ञा पुं० [कमठ] धनुष।

कमठी—संज्ञा पुं० [सं०] कछुई।
संज्ञा स्त्री० [सं० कमठ] बाँस की पतली लचीली धज्जी। फट्टी।

कमती—संज्ञा स्त्री० [फा० कम+ती (प्रत्य०)] कमी। घटती।
वि० कम। थोड़ा।

कमना*†—क्रि० अ० [फा० कम] कम होना। न्यून होना। घटना।

कमनीय—वि० [सं०] १ कामना करने योग्य। २ मनोहर। सुंदर।

कमनैत—संज्ञा पुं० [फा० कमान+हिं० ऐत (प्रत्य०)] कमान चलानेवाला। तीरंदाज।

कमनैती—संज्ञा स्त्री० [फा० कमान+हिं० ऐती (प्रत्य०)] तीर चलाने की विद्या।

कमबख्त—वि० [फा०] भाग्यहीन। अभागा।

कमबख्ती—संज्ञा स्त्री० [फा०] बदनसीबी। दुर्भाग्य। अभाग्य।

कमर—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ शरीर का मध्य भाग जो पेट और पीठ के नीचे और पेड़ू तथा चूतड़ के ऊपर होता है।
मुहा०—कमर कसना या बाँधना = १ तैयार होना। उद्यत होना। २ चलने की तैयारी करना। कमर टूटना = निराश होना। उत्साह का न रहना।
२ किसी लंबी वस्तु के बीच का पतला भाग। जैसे—कोल्हू की कमर। ३ अँगरखे या सलूके आदि का वह भाग जो कमर पर पड़ता है। लपेट।

कमरकोट, कमरकोटा—संज्ञा पुं० [फा० कमर+हिं० कोट] १ वह छोटी दीवार जो किले और चार-दीवारियों के ऊपर होती है और जिसमें कँगूरे और छेद होते हैं। २ रक्षा के लिये घेरी हुई दीवार।

कमरख—संज्ञा स्त्री० [सं० कर्मरंग, पा० कम्मरंग] १ एक पेड़ जिसके फाँकवाले लंबे लंबे फल खट्टे होते हैं और खाए जाते हैं। कर्मरंग। कमरंग। २ इस पेड़ का फल।

कमरखी—वि० [हिं० कमरख] जिसमें कम-

रस के ऐसी उभड़ी हुई फाँकें हों।

कमरबन्द–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. लंबा कपड़ा जिससे कमर बाँधते हैं। पटका। २. पेटी। ३. इजारबंद। नाड़ा।

वि० कमर कसे तैयार। मुस्तैद।

कमरबल्ला–संज्ञा पुं० [फ़ा० कमर + हिं० बल्ला] १. खपड़े की छाजन में वह लकड़ी जो तड़क के ऊपर और कोरों के नीचे लगाई जाती है। कमरबस्ता। २. कमरकोटा।

कमरा–संज्ञा पुं० [लैं० कैमेरा] १. कोठरी। २. फोटोग्राफी का वह औजार जिसके मुँह पर लेंस या प्रतिबिंब उतारने का गोल शीशा लगा रहता है।

*संज्ञा पुं० दे० "कंवल"।

कमरिया–संज्ञा पुं० [फ़ा० कमर] एक प्रकार का हाथी जो डील-डौल में छोटा पर बहुत जबर्दस्त होता है। बौना हाथी।

‡संज्ञा स्त्री० दे० "कमली"।

कमरी‡–संज्ञा स्त्री० दे० "कमली"।

कमल–संज्ञा पुं० [सं०] १. पानी में होनेवाला एक पौधा जो अपने सुंदर फूलों के लिये प्रसिद्ध है। २. इस पौधे का फूल। ३. कमल के आकार का एक मांस-पिंड जो पेट में दाहिनी ओर होता है। क्लोमा। ४. जल। पानी। ५. ताँबा। ६. [स्त्री० कमली] एक प्रकार का मृग। ७. सारस। ८. आँख का कोया। डेला। ९. योनि के भीतर कमलाकार एक गाँठ। फूल। धरन। १०. छः मात्राओं का एक छंद। ११. छप्पय के ७१ भेदों में से एक। १२. काँच का एक प्रकार का गिलास जिसमें मोमबत्ती जलाई जाती है। १३. एक प्रकार का पित्त रोग जिसमें आँखें पीली पड़ जाती हैं। पीलू। कमला। काँवर। १४. मूत्राशय। मसाना।

कमलगट्टा–संज्ञा पुं० [सं० कमल + हिं० गट्टा] कमल का बीज। पद्मबीज।

कमलज–संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा।

कमलनयन–वि० [सं०] [स्त्री० कमलनयनी] जिसकी आँखें कमल की पंखड़ी की तरह बड़ी और सुंदर हों।

संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. राम। ३. कृष्ण।

कमलनाभ–संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

कमलनाल–संज्ञा स्त्री० [सं०] कमल की डंडी जिसके ऊपर फूल रहता है। मृणाल।

कमलबंध–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का चित्रकाव्य।

कमलबाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० कमल + बाई] एक रोग जिसमें शरीर, विशेषकर आँख पीली पड़ जाती है।

कमलयोनि–संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा।

कमला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लक्ष्मी। २. धन। ऐश्वर्य। ३. एक प्रकार की बड़ी नारंगी। संतरा। ४. एक वर्ण-वृत्त। रतिपद।

संज्ञा पुं० [सं० कंबल] १. रोएँदार कीड़ा जिसके शरीर में छू जाने से खुजलाहट होती है। झाँझा। सूँड़ी। २. अनाज या सड़े फल आदि में पड़नेवाला लंबा सफ़ेद रंग का कीड़ा। ढोला।

कमलाकार–संज्ञा पुं० [सं०] छप्पय का एक भेद।

कमलाक्ष–संज्ञा पुं० [सं०] १. कमल का बीज। २. दे० "कमलनयन"।

कमलापति–संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

कमलालया–संज्ञा स्त्री० [सं०] लक्ष्मी।

कमलावती–संज्ञा स्त्री० [सं०] पद्मावती छंद।

कमलासन–संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्रह्मा। २. योग का एक आसन। पद्मासन।

कमलिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. छोटा कमल। २. वह तालाब जिसमें कमल हों।

कमली–संज्ञा पुं० [सं० कमलिन्] ब्रह्मा।

संज्ञा स्त्री० छोटा कंबल।

कमवाना–क्रि० स० [हिं० कमाना का प्रे० रूप] कमाने का काम दूसरे से कराना।

कमसिन–वि० [फ़ा०] [संज्ञा कमसिनी] कम उम्र का। छोटी अवस्था का।

कमसिनी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] लड़कपन।

कमाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० कमाना] १ कमाया हुआ धन। अर्जित द्रव्य। २. कमाने का काम। ३. व्यवसाय। उद्यम। धंधा।
कमाऊ–वि० [हिं० कमाना] कमानेवाला।
कमाच–संज्ञा पुं० [?] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।
कमाची–संज्ञा स्त्री० दे० "कमची"।
संज्ञा स्त्री० [फा० कमानचा] कमान की तरह झुकाई हुई तीली।
कमान–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. धनुष। मुहा०–कमान चढ़ना = १. दौरदौरा होना। २. त्योरी चढ़ना। क्रोध में होना।
२. इंद्रधनुष। ३. मेहराब। ४. तोप। ५. बंदूक।
संज्ञा स्त्री० [अं० कमांड] १. आज्ञा। हुक्म। २. फौजी काम की आज्ञा। ३. फौजी नौकरी।
मुहा०–कमान पर जाना = लड़ाई पर जाना। कमान बोलना = नौकरी या लड़ाई पर जाने की आज्ञा देना।
कमानगर–संज्ञा पुं० दे० "कमंगर"।
कमानचा–संज्ञा पुं० [फा०] १. छोटी कमान। २. सारंगी बजाने की कमानी। ३. मिहराब। डाट।
कमाना–क्रि० स० [हिं० काम] १. काम-काज करके रुपया पैदा करना। २ सुधारना या काम के योग्य बनाना।
यौ०–कमाई हुई हड्डी या देह = कसरत से बलिष्ठ किया हुआ शरीर। कमाया साँप = वह साँप जिसके विषैले दाँत उखाड़ लिए गए हों। ३. सेवा संबंधी छोटे छोटे काम करना। जैसे–पाखाना कमाना (उठाना)। ४. कर्म संचय करना। जैसे–पाप कमाना। क्रि० अ० १. मेहनत मजदूरी करना। २. कसब करना। खर्ची कमाना।
†क्रि० स० [हिं० कम] कम करना। घटाना।
कमानिया–संज्ञा पुं० [फा० कमान] धनुष चलानेवाला। तीरंदाज।
वि० धन्वाकार। मेहराबदार।
कमानी–संज्ञा स्त्री० [फा० कमान] [वि० कमानीदार] १. लोहे की तीली, तार अथवा इसी प्रकार की और कोई लचीली वस्तु जो इस प्रकार बैठाई हो कि दाब पड़ने से दब जाय और हटने पर फिर अपनी जगह पर आ जाय।
यौ०–बाल-कमानी घड़ी की एक बहुत पतली कमानी जिसके सहारे चक्कर घूमता है। २. झुकाई हुई लोहे की लचीली तीली। ३. एक प्रकार की चमड़े की पेटी जिसे आँत उतरनेवाले रोगी कमर में लगाते हैं। ४. कमान के आकार की कोई झुकी हुई लकड़ी जिसके दोनों सिरों के बीच में रस्सी, तार या बाल बँधा हो।
कमाल–संज्ञा पुं० [अ०] १. परिपूर्णता। पूरापन। २. निपुणता। कुशलता। ३ अद्भुत कर्म। अनोखा कार्य्य। ४. कारीगरी। ५. कबीरदास के बेटे का नाम।
वि० १. पूरा। संपूर्ण। सब। २. सर्वोत्तम। ३. अत्यंत। बहुत ज्यादा।
कमालियत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. परिपूर्णता। पूरापन। २. निपुणता। कुशलता।
कमासुत–वि० [हिं० कमाना+सुत] १ कमाई करनेवाला। २. उद्यमी।
कमी–संज्ञा स्त्री० [फा० कम] १. न्यूनता। कोताही। अल्पता। २. हानि। नुकसान।
कमीज–संज्ञा स्त्री० [अ० कमीस] एक प्रकार का कुर्ता जिसमें कली और चौबगले नहीं होते।
कमीना–वि० [फा०] [स्त्री० कमीनी] ओछा। नीच। क्षुद्र।
कमीनापन–संज्ञा पुं० [फा० कमीना+पन (प्रत्य०)] नीचता। ओछापन। क्षुद्रता।
कमीला–संज्ञा पुं० [सं० कपिल्ल] एक छोटा पेड़ जिसके फलों पर की लाल धूल रेशम रँगने के काम में आती है।
कमुँदर*†–संज्ञा पुं० [सं० कार्मुक+दर] धनुष तोड़नेवाले रामचंद्र।
कमेरा–संज्ञा पुं० [हिं० काम+एरा (प्रत्य०)] काम करनेवाला। मजदूर। नौकर।
कमेला–संज्ञा पुं० [हिं० काम+एला (प्रत्य०)]

वह जगह जहाँ पशु मारे जाते हैं। वध-स्थान।

कमोदिन *†–संज्ञा स्त्री० दे० "कुमुदिनी"।

कमोरा–संज्ञा पुं० [सं० कुंभ + ओरा (प्रत्य०)] [स्त्री० कमोरी, कमोरिया] चौड़े मुँह का मिट्टी का एक बरतन जिसमें दूध, दही या पानी रखा जाता है। घड़ा। कछरा।

कयपूती–संज्ञा स्त्री० [मला० कयु = पेड़ + पूती = सफेद] एक सदाबहार पेड़ जिसकी पत्तियों से कपूर की तरह उड़नेवाला सुगंधित तेल निकाला जाता है।

कया*–संज्ञा स्त्री० दे० "काया"।

कयाम–संज्ञा पुं० [अ०] १. ठहराव। टिकान २. ठहरने की जगह। विश्राम-स्थान। ३. ठौर-ठिकाना। निश्चय। स्थिरता।

क़यामत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मुसलमानों, ईसाइयों और यहूदियों के अनुसार सृष्टि का वह अंतिम दिन जब सब मुर्दे उठकर खड़े होंगे और ईश्वर के सामने उनके कर्मों का लेखा रखा जायगा। लेखे का अंतिम दिन। २. प्रलय। ३. हलचल। खलबली।

कयास–संज्ञा पुं० [अ०] [वि० कयासी] अनुमान। अटकल। सोच-विचार। ध्यान।

करंक–संज्ञा पुं० [सं०] १. मस्तक। २. कमंडलु। ३ नारियल की खोपड़ी। ४. पंजर। ठठरी।

करंज–संज्ञा पुं० [सं०] १. कंजा। २. एक छोटा जंगली पेड़। ३. एक प्रकार की आतिशबाज़ी।

संज्ञा पुं० [फा० कुलंग सं० कलिंग] मुर्गा।

करंजा–संज्ञा पुं० दे० "कंजा"।

करंजुवा–संज्ञा पुं० दे० "करंज"।

संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार के अंकुर जो बाँस या ऊख में होते और उनको हानि पहुँचाते हैं। घमोई।

वि० [सं० करंज] करंज के रंग का। खाकी।

सं० पुं० खाकी रंग। करंज का सा रंग।

करंड–संज्ञा पुं० [सं०] १. शहद का छत्ता। २. तलवार। ३. कारंडव नाम का हंस। ४. बाँस की टोकरी या पिटारी। डला।

संज्ञा पुं० [सं० कुरविंद] कुरुल पत्थर जिस पर रखकर हथियार तेज़ किए जाते हैं।

करंतीना–संज्ञा पुं० [अं० क्वारंटाइन] वह स्थान जहाँ ऐसे लोग कुछ दिन रखे जाते हैं जो किसी फैलनेवाली बीमारी के स्थान से आते हैं।

कर–संज्ञा पुं० [सं०] १. हाथ। २. हाथी की सूँड़। ३. सूर्य्य या चद्रमा की किरण। ४. ओला। पत्थर। ५. मालगुजारी। महसूल। ६. छल। युक्ति। पाखंड।

*†प्रत्य० [सं० कृत] संबंध कारक का चिह्न। का।

करक–संज्ञा पुं० [सं०] १. कमंडलु। करवा। २. दाड़िम। अनार। ३. कचनार। ४. पलास। ५. बकुल। मौलसिरी। ६. करील का पेड़।

संज्ञा स्त्री० [हिं० कड़क] १. रुक-रुककर होनेवाली पीड़ा। कसक। चिनक। २. रुक-रुककर और जलन के साथ पेशाब होने का रोग। ३. वह चिह्न जो शरीर पर किसी वस्तु की दाब, रगड़ या आघात से पड़ जाता है। साँट।

करकच–संज्ञा पुं० [देश०] समुद्री नमक।

करकट–संज्ञा पुं० [हिं० खर + सं० कट] कूड़ा। झाड़न। बहारन। कनवार।

यौ०—कूड़ा करकट।

करकना–क्रि० अ० दे० "कड़कना"।

*वि० [सं० कर्कर] [स्त्री० करकरी] जिसके कण उँगलियों में गड़ें। खुरखुरा।

करकराहट–संज्ञा स्त्री० [हिं० करकरा + आहट (प्रत्य०)] १. कड़ापन। खुरखुराहट। २. आँख में किरकिरी पड़ने की सी पीड़ा।

करकस*–वि० दे० "कर्कश"।

करखा–संज्ञा पुं० १. दे० "कड़खा"। २. एक प्रकार का छंद।

संज्ञा पुं० [सं० कर्ष] उत्तेजना। बढ़ावा।

नाव। संज्ञा पुं० दे० "कालिख"।

करगता–संज्ञा पुं० [सं० कटि + गता] सोने, चाँदी या सूत की करधन।

करगह–संज्ञा पुं० [फा० कारगाह] १. जुलाहों

पोर जिनपर उँगली रखकर माला में जप की गिनती करते हैं।
करमाली–संज्ञा पु० [सं०] सूर्य।
करमी–वि० [सं० कर्मी] १. कर्म करने-वाला। २ कर्मठ। ३ कर्मकांडी।
करमुहा*–वि० [हिं० काला + मुख] [स्त्री० करमुही] काले मुँहवाला। कलंकी।
करमुँहा–वि० [हिं० काला + मुँह] १ काले मुँहवाला। २ कलंकी।
करर–संज्ञा पु० [देश०] १ एक जहरीला कीडा जिसके शरीर में बहुत सी गाँठें होती हैं। २ रंग के अनुसार घोडे का एक भेद। ३ एक प्रकार का जगली कुसुम।
करराना, कर्राना*–क्रि० अ० [अनु०] १ १. चरमराकर टूटना। २ कर्कश शब्द करना।
करल*–संज्ञा पु० [सं० कटाह] कडाही।
करवट–संज्ञा स्त्री० [सं० करवर्त] हाथ के बल लेटने की मुद्रा। वह स्थिति जो पार्श्व के बल लेटने से हो।
मुहा०–करवट बदलना या लेना = १ दूसरी ओर घूमकर लेटना। २ पलटा खाना। और का और हो जाना। करवट खाना या होना = उलट जाना। फिर जाना। करवट न लेना = किसी कर्तव्य का ध्यान न रखना। सनाटा खींचना। करवट बदलना = बिस्तर पर बेचैन रहना। तडपना।
संज्ञा पु० [सं० करपत्र] १ करवत। आरा। २ वे प्राचीन आरे या चक्र जिनके नीचे लोग शुभ फल की आशा से प्राण देते थे।
करवत–संज्ञा पु० [सं० करपत्र] आरा।
करवर*†–संज्ञा स्त्री० [देश०] विपत्ति। आफत। सकट। मुसीबत।
करवरना*–क्रि० अ० [सं० कलरव] कल-रव करना। चहकना।
करवा–संज्ञा पु० [सं० करक] धातु या मिट्टी का टोंटीदार लोटा। बधना।
करवाचौथ–संज्ञा स्त्री० [सं० करका चतुर्थी] कातिक कृष्ण चतुर्थी। इस दिन स्त्रियाँ गौरी का व्रत करती हैं।
करवाना–क्रि० स० [हिं० करना का प्रे० रूप] दूसरे को करने में प्रवृत्त करना।
करवार*–संज्ञा स्त्री० [सं० करवाल] तलवार
करवाल–संज्ञा पु० [सं० करवाल] १ नख। नाखून। २ तलवार।
करवाली–संज्ञा स्त्री० [सं० करवाल] छोटी तलवार। करौली।
करवीर–संज्ञा पु० [सं०] १ कनेर का पेड। २ तलवार। खड्ग। ३. श्मशान।
करवैया†*–वि० [हिं० करना + वैया (प्रत्य०)] करनेवाला।
करशमा–संज्ञा पु० [फा०] चमत्कार। अद्भुत व्यापार। करामात।
करष–संज्ञा पु० [सं० कर्ष] १ खिचाव। मनमोटाव। अनबन। तनाव। द्रोह। २ ताव। लडाई का जोश।
करषना*–क्रि० स० [सं० १ कर्षण] १ खींचना। तानना। घसीटना। २ सोख लेना। सुखाना। ३ बुलाना। निमंत्रित करना। ४ आकर्षण करना। समेटना।
करसना*–क्रि० स० दे० "करषना"।
करसान*–संज्ञा पु० दे० "कृपाण"।
करसायर, करसायल–संज्ञा पु० [सं० कृष्णसार] काला मृग। काला हिरन।
करसी–संज्ञा स्त्री० [सं० करीष] १ उपले या कडे का टुकडा। २ कडा। उपला।
करहत–संज्ञा पु० दे० "करहस"।
करहस–संज्ञा पु० [सं०] एक वर्ण-वृत्त।
करह*–संज्ञा पु० [सं० करभ] ऊँट।
संज्ञा पु० [सं० कलि] फूल की कली।
करांकुल–संज्ञा पु० [सं० कलांकुर] पानी के किनारे की एक बडी चिडिया। कूंज।
करा*–संज्ञा स्त्री० दे० "कला"।
कराइत–संज्ञा पु० [हिं० काला] एक प्रकार का काला साँप जो बहुत विषैला होता है।
कराई–संज्ञा स्त्री० [हिं० केराना] उर्द, अरहर आदि के ऊपर की भूसी।
*संज्ञा स्त्री [हिं० काला] कालापन। श्यामता। संज्ञा स्त्री० [हिं० करना] करने या कराने का भाव।

करात—संज्ञा पुं० [अ० कीरात] चार जौ की एक तौल जो सोना, चाँदी या दवा तौलने के काम में आती है।
करावा—क्रि० स० [हिं० करना का प्रे० रूप] करने में लगाना।
करावा—संज्ञा पुं० [अ०] शीशे का बड़ा बरतन जिसमें अर्क आदि रखते हैं।
करामात—संज्ञा स्त्री० [अ० 'करामत' का बहु०] चमत्कार। अद्भुत व्यापार। करिश्मा।
करामाती—वि० [हिं० करामात + ई(प्रत्य०)] करामात या करिश्मा दिखानेवाला। सिद्ध।
करार—संज्ञा पुं० [अ०] १. स्थिरता। ठहराव। २. धैर्य्य। धीरज। तसल्ली। संतोष। ३. आराम। चैन। ४. वादा। प्रतिज्ञा।
करारना*—क्रि० अ० [अनु०] काँ काँ शब्द करना। कर्कश स्वर निकालना।
करारा—संज्ञा पुं० [सं० कराल] १. नदी का वह ऊँचा किनारा जो जल के काटने से बने। २. टीला। ढूह।
वि० [हिं० कड़ा, कर्रा] १. छूने में कठोर। कड़ा। २. दृढ़चित्त। ३. आँच पर इतना तला या सेंका हुआ कि तोड़ने में कुर कुर शब्द करे। ४. उग्र। तेज़। तीक्ष्ण। ५. चोखा। खरा। ६. अधिक गहरा। घोर। ७. हट्टा-कट्टा। बलवान्।
करारापन—संज्ञा पुं० [हिं० करारा + पन (प्रत्य०)] करारा होने का भाव। कड़ापन।
कराल—वि० [सं०] १. जिसके बड़े बड़े दाँत हों। २. डरावना। भयानक।
कराली—संज्ञा स्त्री० [सं०] अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।
वि० डरावनी। भयावनी।
कराव, करावा—संज्ञा पुं० [हिं० करना] एक प्रकार का विवाह या सगाई।
कराह—संज्ञा पुं० [हिं० करना + आह] कराहने का शब्द। पीड़ा का शब्द।
*संज्ञा पुं० दे० "कड़ाह"।
कराहना—क्रि० अ० [हिं० करना + आह] व्यथा-सूचक शब्द मुँह से निकालना। आह आह करना।
करिंद*—संज्ञा पुं० [सं० करींद्र] १. उत्तम या बड़ा हाथी। २. ऐरावत हाथी।
करि—संज्ञा पुं० [सं० करिन्] हाथी।
करिखा*†—संज्ञा पुं० दे० "कालिख"।
करिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] हथिनी।
करिया*—संज्ञा पुं० [सं० कर्ण] १. पतवार। कलवारी। २. माँझी। केवट। मल्लाह।
*†वि० काला। श्याम।
करिल—संज्ञा पुं० [सं० करीर] कोंपल।
वि० [हिं० कारा, काला] काला।
करिवदन—संज्ञा पुं० [सं०] गणेश।
करिहाँव†—संज्ञा स्त्री० [सं० कटिभाग] कमर।
करी—संज्ञा पुं० [सं० करिन्] हाथी।
संज्ञा स्त्री० [सं० कांड] १. छत पाटने का शहतीर। कड़ी।
*२. कली। ३. पंद्रह मात्राओं का एक छंद।
करीना*—संज्ञा पुं० दे० "केराना"।
क़रीना—संज्ञा पुं० [अ०] १. ढंग। तर्ज़। तरीका। चाल। २. क्रम। तरतीब। ३. शऊर। सलीका।
क़रीब—क्रि० वि० [अ०] १. समीप। पास। निकट। २. लगभग।
करीम—वि० [अ०] कृपालु। दयालु।
संज्ञा पुं० ईश्वर।
करीर—संज्ञा पुं० [सं०] १. बाँस का नया कल्ला। २. करील का पेड़। ३. घड़ा।
करील—संज्ञा पुं० [सं० करीर] एक कँटीली झाड़ी जिसमें पत्तियाँ नहीं होतीं।
करीश—संज्ञा पुं० [सं०] गजराज।
करीष—संज्ञा पुं० [सं०] सूखा गोबर जो जंगलों में मिलता है। अरना कंडा।
करुआ*†—वि० दे० "कड़ुआ"।
करुआई*—संज्ञा स्त्री० दे० "कड़ुआपन"।
करुण—संज्ञा पुं० [सं०] १. दे० "करुणा"। (यह काव्य के नौ रसों में से है।) २. एक बुद्ध का नाम। ३. परमेश्वर।
वि० करुणायुक्त। दयार्द्र।
करुणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह मनोविकार या दुःख जो दूसरों के दुःख के ज्ञान से

के कारखाने की वह नीची जगह जिसमें जुलाहे पैर लटकाकर बैठते हैं और कपड़ा बुनते हैं। २ कपड़ा बुनने का यंत्र।
करगहना–संज्ञा पु०[सं० कर+हिं० गहना] पत्थर या लकड़ी जिसे खिड़की या दरवाजा बनाने में चौखटे के ऊपर रखकर आगे जोड़ाई करते हैं। भरेठा।
करग्रह–संज्ञा पु० [सं०] ब्याह।
करघा–संज्ञा पु० दे० "करगह"।
करचंग–संज्ञा पु०[हिं० कर+चंग] १ ताल देने का एक बाजा। २ डफ।
करछा–संज्ञा पु०[सं० कर+रक्षा] [स्त्री० करछी] बड़ी करछी।
करछाल–संज्ञा स्त्री० [हिं० कर+उछाल] उछाल। छलाँग। कुदान।
करछी–संज्ञा स्त्री० दे० "कलछी"।
करज–संज्ञा पु० [सं०] १ नख। नाखून। २ उँगली। ३ नख नामक सुगंधित द्रव्य।
करजोड़ी–संज्ञा स्त्री० [सं० कर+हिं० जोड़ना] हत्थाजोड़ी नाम की ओषधि।
करटक–संज्ञा पु० [सं०] १ कौआ। २ हाथी की कनपटी। ३ कुसुम का पौधा।
करटी–संज्ञा पु० [सं०] हाथी।
करण–संज्ञा पु० [सं०] १. व्याकरण में वह कारक जिसके द्वारा कर्त्ता क्रिया को सिद्ध करता है और जिसका चिह्न 'से' है। २. हथियार। औजार। ३ इंद्रिय। ४ देह। ५. क्रिया। कार्य्य। ६ स्थान। ७ हेतु। ८ ज्योतिष में तिथियों का एक विभाग। ९ वह संख्या जिसका पूरा पूरा वर्गमूल न निकल सके। करणीगत संख्या। *संज्ञा पु० दे० "कर्ण"।
करणीय–वि० [सं०] करने योग्य।
करतब–संज्ञा पु० [सं० कर्त्तव्य] [वि० करतबी] १. कार्य। काम। २ कला। हुनर। ३ करामात। जादू।
करतबी–वि० [हिं० करतब] १. काम करनेवाला। पुरुषार्थी। २ निपुण। गुणी। ३. करामात दिखानेवाला। बाजीगर।
करतरी*–संज्ञा स्त्री० दे० "कर्त्तरी"।
करतल–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० करतली] १ हाथ की गदोरी। हथेली। २. चार मात्राओं के गण (टगण) का एक रूप।
करतली–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हथेली। २. हथेली का शब्द। ताली।
करता–संज्ञा पु० दे० "कर्त्ता"। †संज्ञा पु० १. वृत्त का नाम। २ उतनी दूरी जहाँ तक बंदूक की गोली जाय।
करतार–संज्ञा पु० [सं० कर्त्तार] ईश्वर। †संज्ञा पु० दे० "करताल"।
करतारी*–संज्ञा स्त्री० दे० "करताली"। वि० [सं० कर्त्तार] ईश्वरीय।
करताल–संज्ञा पु० [सं०] १ दोनों हथेलियों के परस्पर आघात का शब्द। ताली बजना। २ लकड़ी, काँसे आदि का एक बाजा जिसका एक एक जोड़ा हाथ में लेकर बजाते हैं। ३ झाँझ। मँजीरा।
करतूत–संज्ञा पु० [सं० कर्त्तृत्व] १. कर्म। करनी। काम। २ कला। गुण। हुनर।
करतूति–संज्ञा स्त्री० दे० "करतूत"।
करद–वि० [सं०] १. कर देनेवाला। अधीन। २ सहारा देनेवाला।
करदा–संज्ञा पु० [हिं० गर्द] १. बिक्री की वस्तु में मिला हुआ कूड़ा-करकट या खद-खाद। २ दाम में वह कमी जो किसी वस्तु में मिले कूड़े-करकट आदि का वजन निकाल देने के कारण की जाय। घट्टा। कटौती।
करधनी–संज्ञा स्त्री० [सं० किंकिणी] १. सोने या चाँदी का कमर में पहनने का एक गहना। २ कई लड़ों का सूत जो कमर में पहना जाता है।
करधर–संज्ञा पु०[सं० कर=वर्षोपल+धर] बादल। मेघ।
करन*–संज्ञा पु० दे० "कर्ण"।
करनधार*–संज्ञा पु० दे० "कर्णधार"।
करनफूल–संज्ञा पु० [सं० कर्ण+हिं० फूल] कान का एक गहना। तरौना। काँप।
करनबेध–संज्ञा पु० [सं० कर्णवेध] बच्चों

के कान छेदने का संस्कार या रीति।
करना—संज्ञा पुं० [सं० कर्ण] एक पौधा जिसमें सफ़ेद फूल लगते हैं। सुदर्शन। संज्ञा पुं० [सं० करुण] बिजौरे की तरह का एक बड़ा नीबू।
*संज्ञा पुं० [सं० करण] किया हुआ काम। करनी। करतूत।
क्रि० स० [सं० करण] १. किसी क्रिया को समाप्ति की ओर ले जाना। निबटाना। भुगताना। अंजाम देना। संपादित करना। २. पकाकर तैयार करना। राँधना। ३. ले जाना। पहुँचाना। ४. पति या पत्नी रूप से ग्रहण करना। ५. रोजगार खोलना। व्यवसाय खोलना। ६. सवारी ठहराना। भाडे पर सवारी लेना। ७. रोशनी बुझाना। ८. एक रूप से दूसरे रूप में लाना। बनाना। ९. कोई पद देना। १०. किसी वस्तु को पोतना। जैसे, रंग करना।
करनाई—संज्ञा स्त्री० [अ० करनाय] तुरही।
करनाटक—संज्ञा पुं० [सं० कर्णाटक] मद्रास प्रांत का एक भाग।
करनाटकी—संज्ञा पुं० [सं० कर्णाटकी] १. करनाटक प्रदेश का निवासी। २. कलाबाज़। कसरत दिखानेवाला मनुष्य। ३. जादूगर। इंद्रजाली।
करनाल—संज्ञा पुं० [अ० करनाय] १. सिंघा। नरसिंहा। भोंपा। धूतू। २. एक प्रकार का बड़ा ढोल। ३. एक प्रकार की तोप।
करनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० करना] १. कार्य। कर्म। करतूत। करतब। २. अंत्येष्टि कर्म। मृतकसंस्कार। ३. दीवार पर पलस्तर या गारा लगाने का औज़ार। कन्नी।
करपर*—संज्ञा स्त्री० [सं० कर्पर] खोपड़ी। वि० [सं० कृपण] कंजूस।
करपलई—संज्ञा स्त्री० दे० "करपल्लवी"।
करपल्लवी—संज्ञा स्त्री० [सं०] उँगलियों के संकेत से शब्दों को प्रकट करने की विद्या।
कर-पिचकी—संज्ञा स्त्री० [सं० कर + हिं० पिचकी] जलक्रीड़ा में पिचकारी की तरह पानी का छींटा छोड़ने के लिये दोनों हथेलियों से बनाया हुआ संपुट।
करपीड़न—संज्ञा पुं० [सं०] विवाह।
करपृष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] हथेली के पीछे का भाग।
करबरना—क्रि० अ० [अनु०] १. कुलबुलाना। २. कलरव करना। चहकना।
करबला—संज्ञा पुं० [अ०] १. अरब का वह उजाड़ मैदान जहाँ हुसैन मारे गए थे। २. वह स्थान जहाँ ताजिए दफ़न हों। ३. वह स्थान जहाँ पानी न मिले।
करबूस—संज्ञा पुं० [?] हथियार लटकाने के लिये घोड़े की जीन या चारजामे में टँकी हुई रस्सी या तसमा।
करभ—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० करभी] १. हथेली के पीछे का भाग। करपृष्ठ। २. ऊँट का बच्चा। ३. हाथी का बच्चा। ४. नख नाम की सुगंधित वस्तु। ५. कटि। कमर। ६. दोहे के सातवें भेद का नाम।
करभोरु—संज्ञा पुं० [सं०] हाथी की सूँड़ के ऐसा जंघा।
वि० सुंदर जाँघवाली।
करम—संज्ञा पुं० [सं० कर्म] १. कर्म। काम। यौ०—करम-भोग = वह दुःख जो अपने किए हुए कर्म्मों के कारण हो।
२. कर्म का फल। भाग्य। क़िस्मत। मुहा०—करम फूटना = भाग्य मंद होना। यौ०—करमरेख = वह बात जो क़िस्मत में लिखी हो।
संज्ञा पुं० [अ०] मिहरबानी। कृपा।
करमकल्ला—संज्ञा पुं० [अ० करम + हिं० कल्ला] एक प्रकार की गोभी जिसमें केवल कोमल कोमल पत्तों का बँधा हुआ संपुट होता है। बंद-गोभी। पातगोभी।
करमचन्द*‡—संज्ञा पुं० [सं० कर्म्म] कर्म्म।
करमट्ठा*—वि० [सं० कृपण] कंजूस।
करमठ*†—वि० [सं० कर्मठ] १. कर्मनिष्ठ। २. कर्मकांडी।
करमाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] उँगलियों के

उत्पन्न होना है और दूसरा के दुःख को दूर करने की प्रेरणा करता है। दया। रहम। नम। २ वह दुःख जो अपने प्रिय मित्रादि के वियोग से होता है। शोक।

करुणादृष्टि–संज्ञा स्त्री० [सं०] दयादृष्टि।

करुणानिधान, करुणानिधि–वि० [सं०] जिसका हृदय करुणा से भरा हो। बहुत बड़ा दयालु।

करुणामय–वि० [सं०] बहुत दयावान्।

करना*–संज्ञा स्त्री० दे० "करुणा"।

करुर*–वि० [सं० कटु] कड़ुआ।

करुवा*–संज्ञा पुं० दे० "करवा"।
संज्ञा पुं० दे० "कड़ुआ"।

करू*–वि० दे० "कड़ुआ"।

करूप–संज्ञा पुं० [सं०] एक देश का नाम जो रामायण के अनुसार गंगा के किनारे था।

करूला।–संज्ञा पुं० [हिं० कड़ा+ऊला (प्रत्य०)] हाथ में पहनने का कड़ा।

करेजा*।–संज्ञा पुं० दे० "कलेजा"।

करेणु–संज्ञा पुं० [सं०] हाथी।

करेणुका–संज्ञा स्त्री० [सं०] हथनी।

करेब–संज्ञा स्त्री० [अं० क्रेप] एक करारा झीना रेशमी कपड़ा।

करेमू–संज्ञा पुं० [सं० कलंबु] पानी में की एक घास जिसका साग खाया जाता है।

करेर*।–वि० [सं० कठोर] कठोर।

करेला–संज्ञा पुं० [सं० कारवेल्ल] १ एक छोटी बेल जिसके हरे कड़ुए फल तरकारी के काम में आते हैं। २ माला या हुमेल की लंबी गुरिया जो बड़े दानों के बीच में लगाई जाती है। हुरें।

करेली–संज्ञा स्त्री० [हिं० करेला] जंगली करेला जिसके फल छोटे होते हैं।

करैत–संज्ञा पुं० [हिं० कारा, काला] काला फनदार साँप जो बहुत विषैला होता है।

करैल–संज्ञा स्त्री० [हिं० कारा, काला] एक प्रकार की काली मिट्टी जो प्रायः तालों के किनारे मिलती है।
संज्ञा पुं० [सं० करीर] १ बाँस का नरम कल्ला। २ डोम-कौआ।

करैला–संज्ञा पुं० दे० "करेला"।

करैली मिट्टी–संज्ञा स्त्री० दे० "करैल"।

करोटन–संज्ञा पुं० [अं० क्रोटन] १ वनस्पति की एक जाति। २ एक प्रकार के पौधे जो अपने रंग-बिरंग और विलक्षण आकार के पत्तों के लिये लगाए जाते हैं।

करोटी*–संज्ञा स्त्री० दे० "करवट"।

करोड़–वि० [सं० कोटि] सौ लाख की संख्या, १०००००००।

करोड़पति–वि० [हिं० करोड़+सं० पति] वह जिसके पास करोड़ों रुपए हों। बहुत बड़ा धनी।

करोड़ी–संज्ञा पुं० [हिं० करोड़] १ रोकड़िया। तहवीलदार। २ मुसलमानी राज्य का एक अफसर जिसके जिम्मे कुछ तहसील रहती थी।

करोदना–क्रि० स० [सं० क्षुरण] खुरचना।

करोना।–क्रि० स० [सं० क्षुरण] खुरचना।

करोला*।–संज्ञा पुं० [हिं० करवा] करवा। गड़ुवा।

करौंछा*।–वि० [हिं० काला+औंछा(प्रत्य०)] [स्त्री० करौंछी] कुछ काला। श्याम।

करौंजी*–संज्ञा स्त्री० दे० "कलौंजी"।

करौंट*–संज्ञा स्त्री० दे० "करवट"।

करौंदा–संज्ञा पुं० [सं० करमर्द] १ एक कँटीला झाड़ जिसके बेर के से सुंदर छोटे फल खटाई के रूप में खाए जाते हैं। २ एक छोटी कँटीली जंगली झाड़ी जिसमें मटर के बराबर फल लगते हैं।

करौंदिया–वि० [हिं० करौंदा] करौंदे के समान हलकी स्याही लिए हुए सुर्ख। लाल।

करौत–संज्ञा पुं० [सं० करपत्र] [स्त्री० करौती] लकड़ी चीरने का आरा।
संज्ञा स्त्री० [हिं० करना] रखली स्त्री।

करौता–संज्ञा पुं० दे० "करौत"।
संज्ञा पुं० [हिं० करवा]। काँच का बड़ा बरतन या शीशी। करावा।

करौती–संज्ञा स्त्री० [हिं० करौता] लकड़ी चीरने का औजार। आरी।

संज्ञा स्त्री० [हिं० करवा] १. शीशे का छोटा बरतन। क़राबा। २. काँच की भट्टी।
करौला*—संज्ञा पुं० [हिं० रौला + शोर] हँकवा करनेवाला। शिकारी।
करौली—संज्ञा स्त्री० [सं० करवाली] एक प्रकार की सीधी छुरी।
कर्क—संज्ञा पुं० [सं०] १. केकड़ा। २. बारह राशियों में से चौथी राशि। ३. काकड़ासींगी। ४. अग्नि। ५. दर्पण।
कर्कट—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कर्कटी, कर्कटा] १. केकड़ा। २. कर्क राशि। ३. एक प्रकार का सारस। करकरा। करकटिया। ४. लौकी। घीआ। ५. कमल की मोटी जड़। भसीड़। ६. सँड़सा।
कर्कटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कछुई २. ककड़ी। ३. सेमर का फल। ४. साँप।
कर्कर—संज्ञा पुं० [सं०] १. कंकड़। २. कुरंज पत्थर जिसके चूर्ण की सान बनती है। वि० १. कड़ा। करारा। २. खुरखुरा।
कर्कश—संज्ञा पुं० [सं०] १. कमीले का पेड़। २. ऊख। ईख। ३. खड्ग। तलवार। वि० १. कठोर। कड़ा। जैसे कर्कश स्वर। २. खुरखुरा। काँटेदार। ३. तेज़। तीव्र। प्रचंड। ४. अधिक। क्रूर।
कर्कशता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कठोरता। कड़ापन। २. खुरखुरापन।
कर्कशा—वि० स्त्री० [सं०] झगड़ालू। झगड़ा करनेवाली। लड़ाकी।
कर्कोट—संज्ञा पुं० [सं०] १. बेल का पेड़। २. खेखसा। ककोड़ा।
कर्च्चूर—संज्ञा पुं० [सं०] १. सोना। सुवर्ण। २. कचूर। नरकचूर।
कर्ज़, क़र्ज़ा—संज्ञा पुं० [अ०] ऋण। उधार। मुहा०—कर्ज उतारना = क़र्ज़ चुकाना। उधार बेबाक करना। क़र्ज़ खाना = १. कर्ज़ लेना। २. उपकृत होना। वश में होना।
क़र्ज़दार—वि० [फ़ा०] उधार लेनेवाला।
कर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] १. कान। श्रवण-द्रिय। २. कुंती का सबसे बड़ा पुत्र जो बहुत दानी प्रसिद्ध है। मुहा०—कर्ण का पहरा = प्रभातकाल। दान-पुण्य का समय। ३. नाव की पतवार। ४. समकोण त्रिभुज में समकोण के सामने की रेखा। ५. पिंगल में डगण अर्थात् चार मात्रावाले गणों की संज्ञा।
कर्णकटु—वि० [सं०] कान को अप्रिय। जो सुनने में कर्कश लगे।
कर्णकुहर—संज्ञा पुं० [सं०] कान का छेद।
कर्णधार—संज्ञा पुं० [सं०] १. माझी। मल्लाह। २. पतवार। किलवारी।
कर्णनाद—संज्ञा पुं० [सं०] कान में सुनाई पड़ती हुई गूँज।
कर्णपिशाची—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक देवी जिसके सिद्ध होने पर कहा जाता है कि मनुष्य जो चाहे सो जान सकता है।
कर्णमूल—संज्ञा पुं० [सं०] कनपेड़ा रोग।
कर्णवेध—संज्ञा पुं० [सं०] बालकों के कान छेदने का संस्कार। कनछेदन।
कर्णाट—संज्ञा पुं० [सं०] १. दक्षिण का एक देश। २. संपूर्ण जाति का एक राग।
कर्णाटक—संज्ञा पुं० दे० "कर्णाट"।
कर्णाटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. संपूर्ण जाति की एक शुद्ध रागिनी। २. कर्णाट देश की स्त्री। ३. कर्णाट देश की भाषा। ४. शब्दालंकार की एक वृत्ति जिसमें केवल कवर्ग के ही अक्षर आते हैं।
कर्णिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कान का करनफूल। २. हाथ की बिचली उँगली। ३. हाथी की सूँड़ की नोक। ४. कमल का छत्ता। ५. सेवती। सफ़ेद गुलाब। ६. क़लम। लेखनी। ७. डंठल।
कर्णिकार—संज्ञा पुं० [सं०] कनियारी या कनकचंपा का पेड़।
कर्णी—संज्ञा पुं० [सं० कर्णिन्] बाण।
कर्त्तन—संज्ञा पुं० [सं०] १. काटना। कतरना। २. (सूत इत्यादि) कातना।
कर्त्तनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] कैंची।
कर्त्तरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कैंची। कतरनी। २. (सुनारों की) काती। ३.

छोटी तलवार। कटारी। ४ ताल देने का एक बाजा।
कर्त्तव्य-वि० [स०] करने के योग्य। संज्ञा पु० करने योग्य कार्य्य। धर्म। फर्ज। यौ०—कर्त्तव्याकर्त्तव्य = करने और न करने योग्य कर्म। उचित और अनुचित कर्म।
कर्त्तव्यता-संज्ञा स्त्री० [स०] १ कर्त्तव्य का भाव। यौ०—इतिकर्त्तव्यता = उद्योग या प्रयत्न की पराकाष्ठा। दौड़ की हद। २ सत्कर्म या कर्मकाड कराने की दक्षिणा।
कर्त्तव्यमूढ़-वि० [स०] १ जिसे यह न सुझाई दे कि क्या करना चाहिए। २ भौचक्का।
कर्त्ता-संज्ञा पु० [स०] [स्त्री० कर्त्री] १ करनेवाला। काम करनेवाला। २ रचनेवाला। बनानेवाला। ३ ईश्वर। ४ व्याकरण के छ कारको मे से पहला जिसमे क्रिया के करनेवाले का ग्रहण होता है।
कर्त्तार-संज्ञा पु० [स० 'कर्तृ' की प्रथमा का बहु०] १ करनेवाला। २ ईश्वर।
कर्तृक-वि० [स०] किया हुआ। संपादित।
कर्तृत्व-संज्ञा पु० [स०] कर्त्ता का भाव। कर्त्ता का धर्म।
कर्तृवाचक-वि० [स०] कर्त्ता का बोध करानेवाला। (व्या०)
कर्तृवाच्य क्रिया-संज्ञा स्त्री० [स०] वह क्रिया जिसमे कर्त्ता का बोध प्रधान रूप से हो, जैसे—खाना, पीना, मारना।
कर्दम-संज्ञा पु० [स०] १ कीचड़। कीच। चहला। २ मांस। ३ पाप। ४ स्वायंभुव मन्वंतर के एक प्रजापति।
कर्नैता-संज्ञा पु० [देश०] रग के अनुसार घोड़े का एक भेद।
कर्पट-संज्ञा पु० [स०] गूदड़। लत्ता।
कर्पटी-संज्ञा पु० [स० कर्पटिन्] [स्त्री० कर्पटिनी] चिथड़े-गुदड़ पहननेवाला भिखारी।
कर्पर-संज्ञा पु० [स०] १ कपाल। खोपड़ी। २ खप्पर। ३ कछुए की खोपड़ी। ४ एक शस्त्र। ५ कड़ाह। ६ गूलर।
कर्परी-संज्ञा स्त्री० [स०] खपरिया।
कर्पास-संज्ञा पु० [स०] कपास।
कर्पूर-संज्ञा पु० [स०] कपूर।
कर्बुर-संज्ञा पु० [स०] १ सोना। स्वर्ण। २ धतूरा। ३ जल। ४ पाप। ५ राक्षस। ६ जड़हन धान। ७ कचूर। वि० रग-बिरगा। चितकबरा।
कर्म-संज्ञा पु० [स० कर्मन् का प्रथमा रूप] १ वह जो क्रिया जाय। क्रिया। कार्य्य। काम। करनी। (वैशेषिक के छ पदार्थों मे से एक।) २ यज्ञ-याग आदि कर्म। (मीमांसा) ३ व्याकरण मे वह शब्द जिसके वाच्य पर कर्त्ता की क्रिया का प्रभाव पड़े। ४ वह कार्य्य या क्रिया जिसका करना कर्त्तव्य हो। जैसे—ब्राह्मणो के षट्कर्म। ५ भाग्य। प्रारब्ध। किस्मत। ६ मृतक-संस्कार। क्रिया-कर्म।
कर्मकर-संज्ञा पु० दे० "कमकर"।
कर्मकांड-संज्ञा पु० [स०] १ धर्म-संबंधी कृत्य। यज्ञादि कर्म। २ वह शास्त्र जिसमे यज्ञादि कर्मों का विधान हो।
कर्मकांडी-संज्ञा पु० [स०] यज्ञादि कर्म या धर्म-संबंधी कृत्य करानेवाला।
कर्मकार-संज्ञा पु० [स०] १ एक वर्णसंकर जाति। कमकर। २ लोहे या सोने का काम बनानेवाला। ३ बैल। ४ नौकर। सेवक। ५ बेगार।
कर्मक्षेत्र-संज्ञा पु० [स०] १ कार्य्य करने का स्थान। २ भारतवर्ष।
कर्मचारी-संज्ञा पु० [स० कर्मचारिन्] १ काम करनेवाला। कार्य्यकर्त्ता। २ वह जिसके अधीन राज्य-प्रबंध या और कोई कार्य्य हो। अमला।
कर्मठ-वि० [स०] १ काम मे चतुर। २ धर्म-संबंधी कृत्य करनेवाला। कर्मनिष्ठ। संज्ञा पु० अग्निहोत्र, संध्या आदि नित्य कर्मों को विधिपूर्वक करनेवाला व्यक्ति।
कर्मणा-क्रि० वि० [स० कर्मन् का तृतीया] कर्म से। कर्म-द्वारा। जैसे—मनसा, वाचा, कर्मणा।

कर्मण्य–वि० [सं०] खूब काम करनेवाला। उद्योगी। प्रयत्नशील।

कर्मण्यता–संज्ञा स्त्री० [सं०] कार्य्य-कुशलता।

कर्मधारय समास–संज्ञा पुं० [सं०] वह समास जिसमें विशेषण और विशेष्य का समान अधिकरण हो; जैसे—कमलहृद।

कर्मना*–क्रि० वि० दे० "कर्मणा"।

कर्मनाशा–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक नदी जो चौसा के पास गंगा में मिलती है।

कर्मनिष्ठ–वि० [सं०] संध्या, अग्निहोत्र आदि कर्त्तव्य करनेवाला। क्रियावान्।

कर्मभू–संज्ञा स्त्री० दे० "कर्मक्षेत्र"।

कर्मभोग–संज्ञा पुं० [सं०] १. कर्मफल। करनी का फल। २. पूर्व जन्म के कर्मों का परिणाम।

कर्ममास–संज्ञा पुं० [सं०] ३० सावन दिनों का महीना। सावन मास।

कर्मयुग–संज्ञा पुं० [सं०] कलियुग।

कर्मयोग–संज्ञा पुं० [सं०] १. चित्त शुद्ध करनेवाला शास्त्र-विहित कर्म्म। २. कर्तव्य कर्म्म का साधन जो सिद्धि और असिद्धि में समान भाव रखकर किया जाय।

कर्मरेख–संज्ञा स्त्री० [सं० कर्म + रेखा] कर्म की रेखा। भाग्य की लिखन। तकदीर।

कर्मवाच्य क्रिया–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह क्रिया जिसमें कर्म मुख्य होकर कर्ता के रूप से आया हो।

कर्मवाद–संज्ञा पुं० [सं०] १ मीमांसा, जिसमें कर्म प्रधान है। २. कर्मयोग।

कर्मवादी–संज्ञा पुं० [सं० कर्मवादिन्] कर्म-कांड को प्रधान माननेवाला। मीमांसक।

कर्मवान–वि० दे० "कर्मनिष्ठ"।

कर्मविपाक–संज्ञा पुं० [सं०] पूर्व जन्म के किए हुए शुभ और अशुभ कर्मों का भला और बुरा फल।

कर्मशील–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो फल की अभिलाषा छोड़कर स्वभावतः काम करे। कर्मवान्। २. यत्नवान्। उद्योगी।

कर्मशूर–संज्ञा पुं० [सं०] वह जो साहस और दृढ़ता के साथ कर्म करे। उद्योगी।

कर्मसंन्यास–संज्ञा पुं० [सं०] १. कर्म का त्याग। २. कर्म के फल का त्याग।

कर्मसाक्षी–वि० [सं० कर्मसाक्षिन्] जिसके सामने कोई काम हुआ हो।

संज्ञा पुं० वे देवता जो प्राणियों के कर्मों को देखते रहते हैं और उनके साक्षी रहते हैं; जैसे—सूर्य, चंद्र, अग्नि।

कर्महीन–वि० [सं०] १. जिससे शुभ कर्म न बन पड़े। २. अभागा। भाग्यहीन।

कर्मिष्ठ–वि० [सं०] १. कर्म करनेवाला। काम में चतुर। २. दे० "कर्म्मनिष्ठ"।

कर्मी–वि० [सं० कर्मिन्] [स्त्री० कर्मिणी] १. कर्म करनेवाला। २. फल की आकांक्षा से यज्ञादि कर्म करनेवाला।

कर्मेंद्रिय–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह अंग जिससे कोई क्रिया की जाती है। ये पाँच हैं—हाथ, पैर, वाणी, गुदा और उपस्थ।

वि० [हिं० कड़ा] १. कड़ा। सख्त। २. कठिन। मुश्किल।

करौना*†–क्रि० अ० [हिं० कर्रा] कड़ा होना। कठोर होना।

कर्ष–संज्ञा पुं० [सं०] १. सोलह माशे का एक मान। २. पुराना सिक्का। ३. खिंचाव। घसीटना। ४. जोताई। ५. (लकीर आदि) खींचना। ६. जोश।

कर्षक–संज्ञा पुं० [सं०] १. खींचनेवाला। २. हल जोतनेवाला।

कर्षण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कर्षित, कर्षक, कर्षणीय, कर्ष्य] १. खींचना। २. खरोंचकर लकीर डालना। ३. जोतना। ४. कृषिकर्म।

कर्षना*–क्रि० स० [सं० कर्षण] खींचना।

कलंक–संज्ञा पुं० [सं०] १. दाग। धब्बा। २. चंद्रमा पर का काला दाग। ३. कालिख। कजली। ४. लांछन। बदनामी। ५. ऐब। दोष।

कलंकित–वि० [सं०] जिसे कलंक लगा हो। लांछित। दोषयुक्त।

कलंकी–वि० [सं० कलंकिन्] [स्त्री० कलंकिनी] जिसे कलंक लगा हो। दोषी। अपराधी।

†संज्ञा पुं० [सं० कल्कि] कल्कि अवतार।

कलँगा—संज्ञा पुं० दे० "कलगा"।
कलंदर—संज्ञा पुं० [अ० कलंदर] १. एक प्रकार के मुसलमान साधु जो संसार से विरक्त होते हैं। २. रीछ और बंदर नचानेवाला। ३. दे० "कलंदरा"।
कलंदरा—संज्ञा पुं० [अ०] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा। गुदड़।
कलंब—संज्ञा पुं० [सं०] १. शर। २. शाक का डंठल। ३. कदंब।
कलंबिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] गले के पीछे की नाड़ी। मन्या।
कल—संज्ञा पुं० [सं०] १. अव्यक्त मधुर ध्वनि। जैसे—कोयल की कूक। २. वीर्य्य।
वि० १. सुंदर। २. मधुर।
संज्ञा स्त्री० [सं० कल्य] १. आरोग्य। तंदुरुस्ती। २. आराम। सुख।
मुहा०—कल से = १. चैन से। † २ धीरे धीरे। आहिस्ता आहिस्ता।
३. संतोष। तुष्टि।
क्रि० वि० [सं० कल्य] १. आगामी दूसरा दिन। आनेवाला दिन। २. भविष्य में। ३. गया दिन। बीता हुआ दिन।
मुहा०—कल का = थोड़े दिनों का।
संज्ञा स्त्री० [सं० कला] १. ओर। बल। पहलू। २. अंग। अवयव। पुरजा। ३ युक्ति। ढंग। ४. पेंचों और पुरजों से बनी हुई वस्तु जिससे काम लिया जाय। यंत्र।
यौ०—कलदार = (यंत्र से बना हुआ) रुपया। ५. पेंच। पुर्जा।
मुहा०—कल ऐंठना = किसी के चित्त को किसी ओर फेरना।
६. बंदूक का घोड़ा या चाप।
वि० [हिं०] "काला" शब्द का संक्षिप्त रूप। (यौगिक में।) जैसे—कलमुहाँ।
क़लई—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. राँगा। २. राँगे का पतला लेप जो बरतन इत्यादि पर लगाते हैं। मुलम्मा। ३ वह लेप जो रंग चढ़ाने या चमकाने के लिये किसी वस्तु पर लगाया जाता है। ४. बाहरी चमक-दमक। तड़क-भड़क।
मुहा०—कलई खुलना = असली भेद खुलना। वास्तविक रूप का प्रकट होना। कलई न लगना = युक्ति न चलना।
५. चूने का लेप। सफेदी।
क़लईदार—वि० [फ़ा०] जिसपर कलई या राँगे का लेप चढ़ा हो।
कलकंठ—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कलकंठी] [१. कोकिल। कोयल। २. पारावत। परेवा। ३ हंस।
वि० मीठी ध्वनि करनेवाला।
कलक—संज्ञा पुं० [अ० क़लक़] १. बेचैनी। घबराहट। २. रंज। दुःख। खेद।
संज्ञा पुं० दे० "कल्क"।
कलकना*—क्रि० अ० [हिं० कलकल] चिल्लाना। शोर करना। चीत्कार करना।
कलकल—संज्ञा पुं० [सं०] १. झरने आदि के जल के गिरने का शब्द। २. कोलाहल।
संज्ञा स्त्री० झगड़ा। वाद-विवाद।
कलकानि—संज्ञा स्त्री० [अ० कलक़] दिक्कत। हैरानी। दुःख।
कलकूजिका—वि० स्त्री० [सं०] मधुर ध्वनि करनेवाली।
कलगा—संज्ञा पुं० [तु० कलगी] मरसे की जाति का एक पौधा। जटाधारी। मुर्गकेश।
कलगी—संज्ञा स्त्री० [तु०] १. शुतुर्मुर्ग आदि चिड़ियों के सुंदर पंख जिन्हें पगड़ी या ताज पर लगाते हैं। २. मोती या सोने का बना हुआ सिर का एक गहना। ३ चिड़ियों के सिर पर की चोटी। ४ इमारत का शिखर। ५. लावनी का एक ढंग।
कलचुरि—संज्ञा पुं० [सं०] दक्षिण का एक प्राचीन राजवंश।
कलछा—संज्ञा पुं० [सं० कर + रक्षा] बड़ी डाँडी का चम्मच या बड़ी कलछी।
कलछी—संज्ञा स्त्री० [सं० कर + रक्षा] बड़ी डाँडी का चम्मच जिससे बटलोई की दाल आदि चलाते या निकालते हैं।
कलजिब्भा—वि० [हिं० काला + जीभ]

[स्त्री० कलजिब्भी] १. जिसकी जीभ काली हो। २. जिसके मुँह से निकली हुई अशुभ बातें प्रायः ठीक घटें।
कलजीहा–वि० दे० "कलजिब्भा"।
कलभँवाँ–वि० [हिं० काला + भाँईं] काले रंग का। साँवला।
कलत्र–संज्ञा पुं० [सं०] स्त्री। पत्नी।
कलदार–वि० [हिं० कल + दार] जिसमें कल लगी हो। पेंचदार।
संज्ञा पुं० सरकारी रुपया।
कलधूत–संज्ञा पुं० [सं०] चाँदी।
कलधौत–संज्ञा पुं० [सं०] १. सोना। २. चाँदी। ३. सुंदर ध्वनि।
कलन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कलित] १. उत्पन्न करना। बनाना। २. धारण करना। ३. आचरण। ४. लगाव। संबंध। ५. गणित की क्रिया। जैसे—संकलन, व्यवकलन। ६. ग्रास। कौर। ७. ग्रहण। ८. शुक्र और शोणित के संयोग का वह विकार जो गर्भ की प्रथम रात्रि में होता है और जिससे कलल बनता है।
कलप–संज्ञा पुं० [सं० कल्प] १. कलफ़। २. खिजाब। ३. दे० "कल्प"।
कलपना–क्रि० अ० [सं० कल्पन] १. विलाप करना। विलखना। *२. कल्पना करना।
क्रि० स० [सं० कल्पन] काटना। छाँटना।
*संज्ञा स्त्री० दे० "कल्पना"।
कलपाना–क्रि० स० [हिं० कलपना] दुःखी करना। जी दुखाना।
कलफ़–संज्ञा पुं० [सं० कल्प] १. पतली लेई जिसे कपड़ों पर उनकी तह कड़ी और बराबर करने के लिये लगाते हैं। माँडी। २. चेहरे पर का काला धब्बा। भाँईं।
कलबल–संज्ञा पुं० [सं० कला + बल] उपाय। दाँव-पेंच। जुगुत।
सं० पुं० [अनु०] शोर-गुल।
वि० अस्पष्ट (स्वर)।
कलबूत–संज्ञा पुं० [फा० कालबुद] १. ढाँचा। साँचा। २. लकड़ी का वह ढाँचा जिसपर चढ़ाकर जूता सिया जाता है। फ़रमा। ३. गुंबदनुमा ढाँचा जिसपर रखकर टोपी या पगड़ी आदि बनाई जाती है। गोलंबर। क़ालिब।
क़लम–संज्ञा पुं० स्त्री० [अ०, सं०] १. जीभ लगी हुई या कटी हुई लकड़ी का टुकड़ा जिसे स्याही में डुबाकर काग़ज पर लिखते हैं। लेखनी।
मुहा०—क़लम चलना = लिखाई होना। क़लम चलाना = लिखना। क़लम तोड़ना = लिखने की हद कर देना। अनूठी उक्ति करना। २. किसी पेड़ की टहनी जो दूसरी जगह बैठाने या दूसरे पेड़ में पैवंद लगाने के लिये काटी जाय।
मुहा०—कलम करना = काटना-छाँटना।
३. जड़हन धान। ४. वे बाल जो हजामत बनवाने में कनपटियों के पास छोड़ दिये जाते हैं। ५. बालों की कूची जिससे चित्रकार चित्र बनाते या रंग भरते हैं। ६. शीशे का कटा हुआ लंबा टुकड़ा जो झाड़ में लटकाया जाता है। ७. शोरे, नौसादर आदि का जमा हुआ छोटा लंबा टुकड़ा। रवा। ८. वह औजार जिससे महीन चीज़ काटी, खोदी या नकाशी जाय।
क़लम-क़साई–संज्ञा पुं० [अ०] वह जो कुछ लिख-पढ़कर लोगों की हानि करे।
कलमकारी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] क़लम से किया हुआ काम। जैसे—नक्काशी।
कलमल*–संज्ञा पुं० दे० "कल्मष"।
क़लमतराश–संज्ञा पुं० [फ़ा०] क़लम बनाने की छुरी। चाकू।
क़लमदान–संज्ञा पुं० [फा०] क़लम, दवात आदि रखने का डिब्बा या छोटा संदूक।
कलमना*–क्रि० स० [हिं० क़लम] काटना। दो टुकड़े करना।
कलमलना*–क्रि० अ० [अनु०] दाब में पड़ने के कारण अंगों का हिलना-डोलना। कुलबुलाना।

कलमा–संज्ञा पुं० [अ०] १ वाक्य। बात। २. वह वाक्य जो मुसलमान धर्म्म का मूल मंत्र है।

मुहा०—कलमा पढ़ना = मुसलमान होना।

कलमी–वि० [फा०] १ लिखा हुआ। लिखित। २ जो कलम लगाने से उत्पन्न हुआ हो। जैसे, कलमी आम। ३ जिसमें कलम या रवा हो। जैसे, कलमी शोरा।

कलमुहाँ–वि० [हिं० काला+मुँह] १ जिसका मुँह काला हो। २ कलंकित। लांछित। ३ अभागा। (गाली)

कलरव–संज्ञा पुं० [सं०] १ मधुर शब्द। २ कोकिल। ३ कबूतर।

कलल–संज्ञा पुं० [सं०] गर्भाशय में रज और वीर्य्य के संयोग की वह अवस्था जिसमें एक बुलबुला सा बन जाता है।

कलवरिया–संज्ञा स्त्री०[हिं०कलवार+इया (प्रत्य०)] कलवार की दूकान। शराब की दूकान।

कलवार–संज्ञा पुं० [सं० कल्यपाल] एक जाति जो शराब बनाती और बेचती है।

कलविंक–संज्ञा पुं० [सं०] १ चटक। गौरैया। २ तरबूज। ३ सफेद चँवर।

कलश–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अल्पा० कलशी] १ घड़ा। गगरा। २ मंदिर, चैत्य आदि का शिखर। ३ मंदिरों या मकानों के शिखर पर का कँगूरा। ४ एक मान जो द्रोण या ८ सेर के बराबर होता था। ५ चोटी। सिरा।

कलशी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गगरी। छोटा कलसा। २ मंदिर का छोटा कँगूरा।

कलस–संज्ञा पुं० दे० "कलश"।

कलसा–संज्ञा पुं० [सं० कलश] [स्त्री० अल्पा० कलसी] १ पानी रखने का बरतन। गगरा। घड़ा। २ मंदिर का शिखर।

कलसी–संज्ञा स्त्री० [सं० कलश] १ छोटा गगरा। २ छोटा शिखर या कँगूरा।

कलहंतरिता–संज्ञा स्त्री० दे० "कलहांतरिता"।

कलहंस–संज्ञा पुं० [सं०] १ हंस। २ राजहंस। ३ श्रेष्ठ राजा। ४ परमात्मा। ब्रह्म। ५ एक वर्णवृत्त। ६ क्षत्रियों की एक शाखा।

कलह–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कलहकारी, कलही] १. विवाद। झगड़ा। २ लड़ाई।

कलहकारी–वि० [सं० कलहकारिन्] [स्त्री० कलहकारिणी] झगड़ा करनेवाला।

कलहप्रिय–संज्ञा पुं० [सं०] नारद। वि० [स्त्री० कलहप्रिया] जिसे लड़ाई भली लगे। लड़ाका। झगड़ालू।

कलहांतरिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जो नायक या पति का अपमान करके पीछे पछताती है।

कलहारी*–वि० स्त्री०[सं०कलहकार] कलह करनेवाली। लड़ाकी। झगड़ालू। कर्कशा।

कलही–वि० [सं० कलहिन्] [स्त्री० कलहिनी] झगड़ालू। लड़ाका।

कला–वि० [फा०] बड़ा। दीर्घाकार।

कलाकुर–संज्ञा पुं० दे० "करांकुल"।

कला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अंश। भाग। २ चंद्रमा का सोलहवाँ भाग। ३ सूर्य्य का बारहवाँ भाग। ४ अग्नि-मंडल के दस भागों में से एक। ५ समय का एक विभाग जो तीस काष्ठा का होता है। ६ राशि के तीसवें अंश का ६० वाँ भाग। ७ वृत्त का १८०० वाँ भाग। राशि-चक्र के एक अंश का ६० वाँ भाग। ८ छंदशास्त्र या पिंगल में 'मात्रा'। ९ चिकित्सा शास्त्र के अनुसार शरीर की सात विशेष झिल्लियाँ। १० किसी कार्य्य को भली भाँति करने का कौशल। फन। हुनर। (काम-शास्त्र के अनुसार ६४ कलाएँ हैं।) ११ *मनुष्य के शरीर के आध्यात्मिक विभाग जो १६ हैं।* पाँच ज्ञानेंद्रियाँ, पाँच कर्मेंद्रियाँ, पाँच प्राण और मन। १२ वृद्धि। सूद। १३ जिह्वा। १४ माया (छल)। १५ स्त्री का रज। १६ विभूति। तेज। १७ शोभा। छटा। प्रभा। १८ तेज। १९ कौतुक। खेल। लीला। २० छल। कपट। धोखा।

२१. ढंग। युक्ति। करतब। २२. नटों की एक कसरत जिसमें खिलाड़ी सिर नीचे करके उलटता है। ढेकली। कलैया। २३. यंत्र। पेंच। २४. एक वर्णवृत्त।

कलाई–संज्ञा स्त्री० [सं० कलाची] हाथ के पहुँचे का वह भाग जहाँ हथेली का जोड़ रहता है। मणिबंध। गट्टा। प्रकोष्ठ। संज्ञा स्त्री० [सं० कलाप] १. सूत का लच्छा। करछा। कुकरी। २. हाथी के गले में बाँधने का कलावा।

कलाकंद–संज्ञा पुं० [फा०] खोए और मिश्री की बनी बरफी।

कलाकौशल–संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी कला की निपुणता। हुनर। दस्तकारी। कारीगरी। २. शिल्प।

कलादा*–संज्ञा पुं० [स० कलाप] हाथी की गर्दन पर वह स्थान जहाँ महावत बैठता है। कलावा। किलावा।

कलाधर–संज्ञा पुं० [स०] १. चद्रमा। २. दंडक छद का एक भेद। ३. शिव। ४. वह जो कलाओं का ज्ञाता हो।

कलानिधि–संज्ञा पु० [सं०] चद्रमा।

कलाप–संज्ञा पुं० [सं०] १. समूह। झुंड जैसे—क्रिया-कलाप। २. मोर की पूँछ। ३. पूला। मुट्ठा। ४. तूण। तरकश। ५. कमरबंद। पेटी। ६ करधनी। ७ चद्रमा। ८. कलावा। ९ कातन्त्र व्याकरण। १०. व्यापार। ११. आभरण। जेवर। भूषण।

कलापक–संज्ञा पुं० [स०] १. समूह। २. पूला। मुट्ठा। ३. हाथी के गले का रस्सा। ४. चार श्लोकों का समूह।

कलापिनी–संज्ञा स्त्री० [स०] १. रात्रि। २. मयूरी। मोरनी।

कलापी–संज्ञा पुं० [सं० कलापिन्] [स्त्री० कलापिनी] १. मोर। २. कोकिल। वि० १. तूणीर बाँधे हुए। तरकशबंद। २. झुंड में रहनेवाला।

कलाबत्तू–संज्ञा पु० [तु० कलाबतून] [वि० कलाबतूनी] १. सोने-चाँदी आदि का तार जो रेशम पर चढ़ाकर बटा जाय। २. सोने-चाँदी के कलाबत्तू का बना हुआ पतला फ़ीता जो कपड़ों पर टाँका जाता है।

कलाबाज–वि० [हिं० कला + फा० बाज] कलाबाजी या नट-क्रिया करनेवाला।

कलाबाजी–संज्ञा स्त्री० [हिं० कला + फ़ा० बाजी] सिर नीचे करके उलट जाना। ढेकली। कलैया।

कलाभृत्–संज्ञा पुं० [सं०] चद्रमा।

कलाम–संज्ञा पु० [अ०] १. वाक्य। वचन। २. बातचीत। कथन। ३. वादा। प्रतिज्ञा। ४. उज्र। एतराज।

कलार–संज्ञा पुं० दे० "कलवार"।

कलाल–संज्ञा पुं० [सं० कल्यपाल] [स्त्री० कलाली] कलवार। मद्य बेचनेवाला।

कलावंत–संज्ञा पुं० स्त्री० [सं० कलावान्] १. संगीत कला में निपुण व्यक्ति। गवैया। २. कलाबाजी करनेवाला। नट। वि० कलाओं का जाननेवाला।

कलावती–वि० स्त्री० [स०] १. जिसमें कला हो। २. शोभावाली। छविवाली।

कलावा–संज्ञा पु० [स० कलापक] [स्त्री० अल्पा० कलाई] १. सूत का लच्छा जो तकले पर लिपटा रहता है। २. लाल पीले सूत के तागों का लच्छा जिसे विवाह आदि शुभ अवसरों पर हाथ या घोड़ों पर बाँधते हैं। ३. हाथी की गरदन।

कलावान्–वि० [स०] [स्त्री० कलावती] कला-कुशल। गुणी।

कलिंग–संज्ञा पु० [स०] १. मटमैले रंग की एक चिड़िया। कुलंग। २. कुटज। कुरैया। ३. इंद्रजौ। ४. सिरिस का पेड़। ५. पाकर का पेड़। ६. तरबूज। ७. कलिंगड़ा राग। ८. एक समुद्रतटस्थ देश जिसका विस्तार गोदावरी और वैतरणी नदी के बीच में था। वि० कलिंग देश का।

कलिंगड़ा–संज्ञा पु० [स० कलिंग] एक राग जो दीपक राग का पुत्र माना जाता है।

कलिंद–संज्ञा पु० [सं०] १. बहेड़ा। २. सूर्य। ३. एक पर्वत जिससे यमुना नदी

निकली है।

कालिंदजा–संज्ञा स्त्री० [सं० कलिंद+जा] यमुना नदी।

कालिंदी*–संज्ञा स्त्री० दे० "कालिंदी"।

कलि–संज्ञा पुं० [सं०] १. बहेड़े का फल या बीज। २. कलह। विवाद। झगड़ा। ३. पाप। ४. चार युगों में से चौथा युग जिसमें पाप और अनीति की प्रधानता रहती है। ५. छंद में टगण का एक भेद। ६. सूरमा। वीर। जवाँमर्द। ७. क्लेश। दुःख। ८. संग्राम। युद्ध।

वि० [सं०] श्याम। काला।

कलिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बिना खिला फूल। कली। २. वीणा का मूल। ३. प्राचीन काल का एक बाजा। ४. एक छंद।

कलिकाल–संज्ञा पुं० [सं०] कलियुग।

कलित–वि० [सं०] १. विदित। ख्यात। उक्त। २. प्राप्त। गृहीत। ३. सजाया हुआ। सुसज्जित। ४. सुंदर। मधुर।

कलिमल–संज्ञा पुं० [सं०] पाप। कलुष।

कलिया–संज्ञा पुं० [अ०] भूनकर रसेदार पकाया हुआ मांस।

कलियाना–क्रि० अ० [हिं० कलि] १. कली लेना। कलियों से युक्त होना। २. चिड़ियों का नया पंख निकलना।

कलियारी–संज्ञा स्त्री० [सं० कलिहारी] एक पौधा जिसकी जड़ में विष होता है।

कलियुग–संज्ञा पुं० [सं०] चार युगों में से चौथा युग। वर्त्तमान युग।

कलियुगाद्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] माघ की पूर्णिमा जिससे कलियुग का आरंभ हुआ था।

कलियुगी–वि० [सं०] १. कलियुग का। २. कुप्रवृत्तिवाला।

कलिवर्ज्य–वि० [सं०] जिसका करना कलियुग में निषिद्ध हो। जैसे अश्वमेध।

कलिहारी–संज्ञा स्त्री० दे० "कलियारी"।

कलींदा–संज्ञा पुं० [सं० कालिंदी] तरबूज।

कली–संज्ञा स्त्री०[सं० कलिका] १. बिना खिला फूल। मुँह-बँधा फूल। बोंड़ी। कलिका।

मुहा०—दिल की कली खिलना=आनंदित होना। चित्त प्रसन्न होना।

२. चिड़ियों का नया निकला हुआ पर। ३. वह तिकोना कटा हुआ कपड़ा जो कुर्ते, अँगरखे आदि में लगाया जाता है। ४. हुक्के का नीचेवाला भाग।

संज्ञा स्त्री० [अ० कलई] पत्थर या सीप आदि का फुंका हुआ टुकड़ा जिससे चूना बनाया जाता है। जैसे—कली का चूना।

कलौंट*†–वि० [हिं० काला] काला कलूटा।

कलीरा–संज्ञा पुं० [देश०] कौड़ियों और छुहारों की माला जो विवाह आदि में दी जाती है।

कलील–संज्ञा पुं० [अ०] थोड़ा। कम।

कलीसिया–सं० पुं० [यू० इकलिसिया] ईसाइयों या यहूदियों की धर्ममंडली।

कलुख–संज्ञा पुं० दे० "कलुष"।

कलुवावीर–संज्ञा पुं० [हिं० काला+वीर] टोना-टामर का एक देवता जिसकी दुहाई मंत्रों में दी जाती है।

कलुष–संज्ञा पुं० [सं०][वि० कलुषित, कलुषी] १. मलिनता। २. पाप। ३. क्रोध।

वि० [स्त्री० कलुषा, कलुषी] १. मलिन। मैला। २. निंदित। ३. दोषी। पापी।

कलुषाई–संज्ञा स्त्री० [सं० कलुष+आई (प्रत्य०)] बुद्धि की मलिनता। चित्त का विकार।

कलुषित–वि० [सं०] १. दूषित। २. मलिन। मैला। ३. पापी। ४. दुःखित। ५. क्षुब्ध। ६. असमर्थ। ७. काला।

कलुषी–वि० स्त्री० [सं०] १. पापिनी। दोषी। २. मलिन। गंदी।

वि० पुं० [सं० कलुषिन्] १. मलिन। मैला। गंदा। २. पापी। दोषी।

कलूटा–वि० [हिं० काला+टा (प्रत्य०)] [स्त्री० कलूटी] काले रंग का। काला।

कलेऊ–संज्ञा पुं० दे० "कलेवा"।

कलेजा–संज्ञा पुं० [सं० यकृत्] १. प्राणियों का एक भीतरी अवयव जो छाती के भीतर बाईं ओर होता है और जिससे नाड़ियों

के सहारे शरीर में रक्त का संचार होता है। हृदय। दिल।
मुहा०—कलेजा उलटना = १. वमन करते करते जी घबराना। २.होश का जाता रहना। कलेजा काँपना = जी दहलना। डर लगना। कलेजा जलाना = दुःख देना। कलेजा टूक टूक होना = शोक से हृदय विदीर्ण होना। कलेजा ठंढा करना = संतोष देना। तुष्ट करना। कलेजा थामकर बैठ या रह जाना = शोक के वेग को दबाकर रह जाना। मन मसोसकर रह जाना। कलेजा धक धक करना = भय से व्याकुलता होना। कलेजा धड़कना = १. डर से जी काँपना। भय से व्याकुलता होना। २. चित्त में चिंता होना। जी में खटका होना। कलेजा निकालकर रखना = अत्यंत प्रिय वस्तु समर्पण करना। सर्वस्व दे देना। कलेजा पक जाना = दुःख सहते सहते तंग आ जाना। पत्थर का कलेजा = १. कड़ा जी। दुःख सहने में समर्थ हृदय। २. कठोर चित्त। कलेजा पत्थर का करना = भारी दुःख झेलने के लिये चित्त को दबाना। कलेजा फटना = किसी के दुःख को देखकर मन में अत्यंत कष्ट होना। कलेजा बाँसों, बल्लियों या हाथों उछलना = १. आनंद से चित्त प्रफुल्लित होना। २. भय या आशंका से जी धक धक करना। कलेजा बैठ जाना = क्षीणता के कारण शरीर और मन की शक्ति का मंद पड़ना। कलेजा मुँह को या मुँह तक आना = १. जी घबराना। जी उकताना। व्याकुलता होना। २. संताप होना। दुःख से व्याकुलता होना। कलेजा हिलना = कलेजा काँपना। अत्यंत भय होना। कलेजे पर साँप लोटना = चित्त में किसी बात के स्मरण आ जाने से एक बारगी शोक छा जाना।
२. छाती। वक्षःस्थल।
मुहा०—कलेजे से लगाना = छाती या गले से लगाना। आलिंगन करना।
३. जीवट। साहस। हिम्मत।
कलेजी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कलेजा] बकरे आदि के कलेजे का मांस।
कलेवर—संज्ञा पुं० [सं०] १.शरीर। देह। चोला।
मुहा०—कलेवर बदलना = १. एक शरीर त्यागकर दूसरा शरीर धारण करना। २. एक रूप से दूसरे रूप में जाना। ३. जगन्नाथ जी की पुरानी मूर्त्ति के स्थान पर नई मूर्त्ति का स्थापित होना।
२. ढाँचा।
कलेवा—संज्ञा पुं० [सं० कल्यवर्त] १. वह हलका भोजन जो सवेरे बासी मुँह किया जाता है। नहारी। जलपान।
मुहा०—कलेवा करना = १. निगल जाना। खा जाना। २. मार डालना।
२. वह भोजन जो यात्री घर से चलते समय बाँध लेते हैं। पाथेय। संबल। ३. विवाह के अंतर्गत एक रीति जिसमें वर ससुराल में भोजन करने जाता है। खिचड़ी। बासी।
कलेस*—संज्ञा पुं० दे० "क्लेश"।
कलैया—संज्ञा स्त्री० [सं० कला] सिर नीचे और पैर ऊपर करके उलट जाने की क्रिया। कलाबाजी।
कलोर—संज्ञा स्त्री० [सं० कल्या] वह जवान गाय जो बरदाई या ब्याई न हो।
कलोल—संज्ञा पुं० [सं० कल्लोल] आमोद-प्रमोद। क्रीड़ा। केलि।
कलोलना*—क्रि० अ० [हिं० कलोल] क्रीड़ा करना। आमोद-प्रमोद करना।
कलौंजी—संज्ञा स्त्री० [सं० कालाजाजी] १. एक पौधा। २. इसकी फलियों के महीन काले दाने जो मसाले के काम में आते हैं। मँगरैला। ३. एक प्रकार की तरकारी। भरगल।
कलौंस—वि० [हिं० काला + औंस (प्रत्य०)] कालापन लिए। सियाही-मायल।
संज्ञा पुं० १. कालापन। २. कलंक।
कल्क—संज्ञा पुं० [सं०] १. चूर्ण। बुकनी। २. पीठी। ३. गूदा। ४. दंभ। पाखंड। ५. शठता। ६. मैल। कीट। ७. विष्ठा। ८. पाप। ९. गोली या गिलोई हुई ओषधियों को बारीक पीसकर बनाई हुई चटनी। अवलेह। १०. बहेड़ा।
कल्कि—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु के दसवें

अवतार का नाम जो संभल (मुरादाबाद) में एक कुमारी कन्या के गर्भ से होगा।

कल्प—संज्ञा पुं० [सं०] १ विधान। विधि। कृत्य। जैसे, प्रथम कल्प। २ वेद के प्रधान छः अंगों में से एक जिसमें यज्ञादि के करने का विधान है। ३ प्रातःकाल। ४ वैद्यक के अनुसार रोगनिवृत्ति का एक उपाय या युक्ति। जैसे, केश-कल्प, काया-कल्प। ५ प्रकरण। विभाग। ६ काल का एक विभाग जिसे ब्रह्मा का एक दिन कहते हैं और जिसमें १४ मन्वंतर या ४३२००००००० वर्ष होते हैं।

वि० तुल्य। समान। जैसे, देवकल्प।

कल्पक—संज्ञा पुं० [सं०] १ नाई। २ कचूर। वि० १ रचनेवाला। २ काटनेवाला।

कल्पकार—संज्ञा पुं० [सं०] कल्प-शास्त्र का रचनेवाला व्यक्ति।

कल्पतरु—संज्ञा पुं० [सं०] कल्पवृक्ष।

कल्पद्रुम—संज्ञा पुं० [सं०] कल्पवृक्ष।

कल्पना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ रचना। बनावट। सजावट। २ वह शक्ति जो अंतःकरण में ऐसी वस्तुओं के स्वरूप उपस्थित करती है जो उस समय इंद्रियों के सम्मुख उपस्थित नहीं होतीं। उद्भावना। अनुमान। ३ किसी एक वस्तु में अन्य वस्तु का आरोप। अध्यारोप। ४ मान लेना। फर्ज करना। ५ मन-गढ़ंत बात।

कल्पवास—संज्ञा पुं० [सं०] माघ में महीने भर गंगा तट पर संयम के साथ रहना।

कल्पवृक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ पुराणानुसार देवलोक का एक अविनश्वर वृक्ष जो सब कुछ देनेवाला माना जाता है। २ एक वृक्ष जो सब पेड़ों से बड़ा और दीर्घजीवी होता है। गोरख इमली।

कल्पसूत्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह सूत्र-ग्रंथ जिसमें यज्ञादि कर्मों का विधान हो।

कल्पांत—संज्ञा पुं० [सं०] प्रलय।

कल्पित—वि० [सं०] १ जिसकी कल्पना की गई हो। २ मनमाना। मनगढ़ंत। फर्जी। ३ बनावटी। नकली।

कल्मष—संज्ञा पुं० [सं०] १ पाप। २ मैल। मल। †३ पीब। मवाद।

कल्माष—वि० [सं०] १ चितकबरा। चित्रवर्ण। २ काला।

कल्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ सबेरा। भोर। प्रातःकाल। २ मधु। शराब।

कल्यपाल—संज्ञा पुं० [सं०] कलवार।

कल्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] बरदाने के योग्य बछिया। कलोर।

कल्याण—संज्ञा पुं० [सं०] १ मंगल। शुभ। भलाई। २ सोना। ३ एक राग।

वि० [स्त्री० कल्याणी] अच्छा। भला।

कल्याणी—वि० [सं०] १ कल्याण करनेवाली। २ सुंदरी। संज्ञा स्त्री० [सं०] १ माषपर्णी। २ गाय।

कल्यान*†—संज्ञा पुं० दे० 'कल्याण'।

कल्लर—संज्ञा पुं० [देश०] १ नोनी मिट्टी। २ रेह। ३ ऊसर। बंजर।

कल्लांच—वि० [तु० कल्लाच] १ लुच्चा। शोहदा। गुंडा। २ दरिद्र। कंगाल।

कल्ला—संज्ञा पुं० [सं० करीर] १ अंकुर। कल्पा। किल्ला। गाभा। २ हरी निकली हुई टहनी। ३ लैंप का सिरा जिसमें बत्ती जलती है। बर्नर।

संज्ञा पुं० [फा०] १ गाल के भीतर का अंश। जबड़ा। २ जबड़े के नीचे गले तक का स्थान।

कल्लातोड़—वि० [हिं० कल्ला+तोड़] १ मुँहतोड़। प्रबल। २ जोड़-तोड़ का।

कल्लादराज—वि० [फा०] [संज्ञा कल्लादराजी] बढ़ बढ़कर बात करनेवाला। मुँहजोर।

कल्लाना—क्रि० अ० [सं० कड् या कल्] चमड़े के ऊपर ही ऊपर कुछ जलन लिए हुए एक प्रकार की पीड़ा होना।

कल्लोल—संज्ञा पुं० [सं०] १ पानी की लहर। तरंग। २ आमोद प्रमोद। क्रीड़ा।

कल्लोलिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी।

कल्हाँ—क्रि० वि० दे० "कल"।

कल्हरना*—क्रि० अ० [हिं० कड़ाह+ना (प्रत्य०)] कड़ाही में तला जाना। भुनना।

कल्हारना†—क्रि० स० [हिं० कड़ाह+ना (प्रत्य०)] कड़ाही में भूनना या तलना।

क्रि० अ० [सं० कल्ल-शोर करना] दुःख से कराहना, चिल्लाना।

कवच—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कवची] १. आवरण। छाल। छिलका। २. लोहे की कड़ियों के जाल का बना हुआ पहनावा जिसे योद्धा लड़ाई के समय पहनते थे। जिरह। बकतर। सँजोया। सन्नाह। ३. तंत्रशास्त्र का एक अंग जिसमें मंत्रों द्वारा शरीर के अंगों की रक्षा के लिये प्रार्थना की जाती है। ४. इस प्रकार रक्षा-मंत्र लिखा हुआ तावीज। ५. बड़ा नगाड़ा जो युद्ध में बजता है। पटह। डंका।

कवर—संज्ञा पुं० [सं० कवल] ग्रास। कौर। लुकमा। निवाला।

संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कवरी] १. केश-पाश। २. गुच्छा।

कवरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] चोटी। जूड़ा।

कवर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कवर्गीय] क से ङ तक के अक्षरों का समूह।

कवल—संज्ञा पुं० [सं०] १. उतनी वस्तु जितनी एक बार में खाने के लिये मुँह में रखी जाय। कौर। ग्रास। गस्सा। २. उतना पानी जितना मुँह साफ करने के लिये एक बार मुँह में लिया जाय। कुल्ली।

संज्ञा पुं० [देश०] [स्त्री० कवली] १. एक पक्षी। २. घोड़े की एक जाति।

कवलित—वि० [सं०] कौर किया हुआ। खाया हुआ। भक्षित।

क़वाम—संज्ञा पुं० [अ०] १. पकाकर शहद की तरह गाढ़ा किया हुआ रस। किवाम। २. चाशनी। शीरा।

क़वायद—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. नियम। व्यवस्था। २. व्याकरण। ३. सेना के युद्ध करने के नियम। ४. लड़नेवाले सिपाहियों की युद्ध-नियमों के अभ्यास की क्रिया।

कवि—संज्ञा पुं० [सं०] १. काव्य करनेवाला। कविता रचनेवाला। २. ऋषि। ३. ब्रह्मा। ४. शुक्राचार्य। ५. सूर्य।

कविका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लगाम। २. केवड़ा।

कविता—संज्ञा स्त्री० [सं०] मनोविकारों पर प्रभाव डालनेवाला रमणीय पद्यमय वर्णन। काव्य।

कविताई*—संज्ञा स्त्री० दे० "कविता"।

कवित्त—संज्ञा पुं० [सं० कवित्व] १. कविता। काव्य। २. दंडक के अंतर्गत ३१ अक्षरों का एक वृत्त।

कवित्व—संज्ञा पुं० [सं०] १. काव्य-रचना-शक्ति। २. काव्य का गुण।

कविनासा*—संज्ञा स्त्री० दे० "कर्मनाशा"।

कविराज—संज्ञा पुं० [सं०] १. श्रेष्ठ कवि। २. भाट। ३. बंगाली वैद्यों की उपाधि।

कविराय—संज्ञा पुं० दे० "कविराज"।

कविलास*—संज्ञा पुं० [सं० कैलास] १. कैलास। २. स्वर्ग।

कवेला—संज्ञा पुं० [हिं० कौआ+एला (प्रत्य०)] कौए का बच्चा।

कव्य—संज्ञा पुं० [सं०] वह अन्न या द्रव्य जिससे पिंड, पितृ-यज्ञादि किए जायँ।

कश—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कशा] चाबुक।

संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. खिंचाव। यौ०—कश-मकश। २. हुक्के या चिलम का दम। फूँक।

कशकोल—संज्ञा पुं० दे० "कजकोल"।

कश-मकश—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. खींचा-तानी। २. भीड़। धक्कम-धक्का। ३. आगा-पीछा। सोच-विचार।

कशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रस्सी। २. कोड़ा।

कशिश—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] आकर्षण।

कशीदा—संज्ञा पुं० [फ़ा०] कपड़े पर सूई और तागे से निकाले हुए बेल-बूटे।

कश्चित्—वि० [सं०] कोई। कोई-एक। सर्व० [सं०] कोई (व्यक्ति)।

कश्ती—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. नौका। नाव। २. पान, मिठाई या बायना बाँटने के लिये

धातु या काठ का बना हुआ एक छिछला बर्तन। ३. शतरंज का एक मोहरा।

कश्मीर–संज्ञा पु० [सं०] पंजाब के उत्तर हिमालय में घिरा हुआ एक पहाड़ी प्रदेश जो प्राकृतिक सौंदर्य और उर्वरता के लिये संसार में प्रसिद्ध है।

कश्मीरी–वि० [हिं० कश्मीर+ई (प्रत्य०)] कश्मीर का। कश्मीर देश में उत्पन्न।
संज्ञा स्त्री० कश्मीर देश की भाषा।
संज्ञा पु० [हिं० कश्मीर] [स्त्री० कश्मीरिन] १ कश्मीर देश का निवासी। २. कश्मीर देश का घोड़ा।

कश्यप–संज्ञा पु० [सं०] १. एक वैदिक-कालीन ऋषि। २. एक प्रजापति। ३. कछुआ। कच्छप। ४. सप्तर्षि मंडल का एक तारा।

कष–संज्ञा पु० [सं०] १. सान। २. कसौटी (पत्थर)। ३. परीक्षा। जाँच।

कषा–संज्ञा पु० दे० "कशा"।

कषाय–वि० [सं०] १. कसैला। बाकठ (छ. रसों में से एक)। २ सुगंधित। खुशबूदार। ३. रँगा हुआ। ४. गेरू के रंग का। गैरिक।
संज्ञा पु० [सं०] १. कसैली वस्तु। २ गोंद। ३. गाढ़ा रस। ४ क्रोध। लोभ आदि विकार (जैन)। ५ कलियुग।

कष्ट–संज्ञा पु० [सं०] १. क्लेश। पीड़ा। तकलीफ। २. संकट। आपत्ति। मुसीबत।

कष्टकल्पना–संज्ञा स्त्री० [सं०] बहुत खींच खाँच की और कठिनता से ठीक घटनेवाली युक्ति।

कष्टसाध्य–वि० [सं०] जिसका करना कठिन हो। मुश्किल से होनेवाला।

कष्टी–वि० [सं० कष्ट] पीड़ित। दुखी।

कस–संज्ञा पु० [सं० कष] १. परीक्षा। कसौटी। जाँच। २. तलवार की लचक जिससे उसकी उत्तमता की परख होती है।
संज्ञा पुं० १. बल। जोर। २. वश। काबू।
मुहा०–कस का = जिसपर अपना इख्तियार हो। कस में करना या रखना = वश में रखना। अधीन रखना।
३ रोक। अवरोध।
संज्ञा पु० [सं० कषाय] १. 'कसाव' का संक्षिप्त रूप। २. निकाला हुआ अर्क। ३. सार। तत्व।
*†–क्रि० वि० १. कैसे। २. क्यों।

कसक–संज्ञा स्त्री० [सं० कष्] १. हलका या मीठा दर्द। साल। टीस। २ बहुत दिन का मन में रखा हुआ द्वेष। पुराना वैर।
मुहा०–कसक निकालना = पुराने वैर का बदला लेना।
३. हौसला। अरमान। अभिलाषा। ४. हमदर्दी। सहानुभूति।

कसकना–क्रि० अ० [हिं० कसक] दर्द करना। सालना। टीसना।

कसकुट–संज्ञा पु० [हिं० काँस+कूट = टुकड़ा] एक मिश्रित धातु जो ताँबे और जस्ते के बराबर भाग मिलाकर बनाई जाती है। भरत। काँसा।

कसन–संज्ञा स्त्री० [हिं० कसना] १. कसने की क्रिया या ढंग। २. कसने की रस्सी।
संज्ञा स्त्री० [सं० कष] दुःख। क्लेश।

कसना–क्रि० स० [सं० कर्षण] १. बंधन को दृढ़ करने के लिये उसकी डोरी आदि को खींचना। २ बंधन को खींचकर बँधी हुई वस्तु को अधिक दबाना।
मुहा०–कसकर-१. जोर से। बलपूर्वक। २. पूरा पूरा। बहुत अधिक। कसा = पूरा पूरा। बहुत अधिक। जैसे—कसा दाम। ३ जकड़कर बाँधना। जकड़ना। ४. पुरजों को दृढ़ करके बैठाना। ५. साज रखकर सवारी के लिये तैयार करना।
मुहा०—कसा कसाया = चलने के लिये बिलकुल तैयार।
६. ठूस ठूसकर भरना।
क्रि० अ० १. बंधन का खिंचना जिससे वह अधिक जकड़ जाय। जकड़ जाना। २ किसी लपेटने या पहनने की वस्तु का तंग होना। ३. बँधना। ४. साज रखकर

सवारी का तैयार होना। ५. खूब भर जाना।
क्रि० स० [सं० कर्षण] १. परखने के लिये सोने आदि धातुओं को कसौटी पर घिसना। कसौटी पर चढ़ाना। २. परखना। जांचना। आज़माना। ३. तलवार को लचाकर उसके लोहे की परीक्षा करना। ४. दूध को गाढ़ा करके खोया बनाना।
क्रि० स० [स० कपण = कष्ट देना] क्लेश देना। कष्ट पहुँचाना।
कसनि*†–संज्ञा स्त्री० दे० "कसन"।
कसनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० कसना] १. रस्सी जिससे कोई वस्तु बाँधी जाय। २. बेठन। गिलाफ़। ३. कंचुकी। अँगिया। ४. कसौटी। ५. परीक्षा। परख। जाँच।
कसब–संज्ञा पु० [अ०] १. परिश्रम। मेहनत। २. पेशा। रोजगार। व्यवसाय। ३. वेश्यावृत्ति।
कसबल–संज्ञा पुं० [हिं० कस + बल] १. शक्ति। बल। २. साहस। हिम्मत।
कसबा–संज्ञा पुं० [अ०] [वि० कसबाती] साधारण गाँव से बड़ी और शहर से छोटी बस्ती। बड़ा गाँव।
कसबी–संज्ञा स्त्री० [अ० कसब] १. वेश्या। रंडी। पतुरिया। २. व्यभिचारिणी स्त्री।
क़सम–संज्ञा स्त्री० [अ०] शपथ। सौगंध।
मुहा०—क़सम उतारना = १. शपथ का प्रभाव दूर करना। २ किसी काम को नाम मात्र के लिये करना। क़सम लेना, दिलाना या रखाना = किसी को किसी शपथ द्वारा बाध्य करना। कसम लेना = कसम खिलाना। प्रतिज्ञा कराना। क़सम खाने को = नाम मात्र को।
कसमसाना–क्रि० अ० [अनु०] १. बहुत सी वस्तुओं या व्यक्तियों का एक दूसरे से रगड़ खाते हुए हिलना डोलना। खल-बलाना। कुलबुलाना। २. उकताकर हिलना-डोलना। ३. घबराना। बेचैन होना। ४. आगा-पीछा करना। हिचकना।
कसमसाहट–संज्ञा स्त्री० [हिं० कसमसाना] १. कुलबुलाहट। डोलाव। हिलाव। २. बेचैनी। घबराहट।
कसर–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. कमी। न्यूनता। २. द्वेष। वैर। मनमोटाव।
मुहा०—कसर निकालना = बदला लेना।
३. टोटा। घाटा। हानि। ४. नुक्स। दोष। विकार। ५. किसी वस्तु के सूखने या उसमें से कूड़ा-करकट निकलने से हो जानेवाली कमी।
कसरत–संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० कसरती] शरीर को पुष्ट और बलवान् बनाने के लिये दंड, बैठक आदि परिश्रम का काम। व्यायाम। मेहनत।
संज्ञा स्त्री० [अ०] अधिकता। ज़्यादती।
कसरती–वि० [अ० कसरत] १. कसरत करनेवाला। २. कसरत से पुष्ट और बल-वान् बनाया हुआ।
कसवाना–क्रि० स० [हिं० कसना का प्रे०] कसने का काम दूसरे से कराना।
क़साई–संज्ञा पुं० [अ० क़स्साब] [स्त्री० क़साइन] १. वधिक। घातक। २. बूचड़। वि० निर्दय। बेरहम। निष्ठुर।
कसाना–क्रि० अ० [हिं० कसाव] स्वाद में कसैला हो जाना। काँसे के योग से खट्टी चीज़ का बिगड़ जाना।
क्रि० स० दे० "कसवाना"।
कसार–संज्ञा पुं० [सं० कृसर] चीनी मिला हुआ भुना आटा या सूजी। पँजीरी।
कसाला–संज्ञा पुं० [सं० कष] १. कष्ट। तकलीफ़। २. कठिन परिश्रम। श्रम। मेहनत।
कसाव–संज्ञा पु० [सं० कषाय] कसैला-पन।
कसावट–संज्ञा स्त्री० [हिं० कसना] कसने का भाव। तनाव। खिंचावट।
कसीदा–संज्ञा पुं० दे० "कशीदा"।
क़सीदा–संज्ञा पुं० [अ०] उर्दू या फ़ारसी भाषा की एक प्रकार की कविता, जिसमें प्रायः स्तुति या निंदा की जाती है।
कसीस–संज्ञा पुं० [सं० कासीस] लोहे का एक विकार जो खानों में मिलता है।

कसूँभा–वि० [सं०] कुसुम के रंग का। लाल।
कसूर–संज्ञा पुं० [अ०] अपराध। दोष।
कसूरमंद, कसूरवार–वि० [फा०] दोषी। अपराधी।
कसेरा–संज्ञा पुं० [हिं० काँसा+एरा (प्रत्य०)] [स्त्री० कसेरिन] काँसे, फूल आदि के बरतन ढालने और बेचनेवाला।
कसेरू–संज्ञा पुं० [सं० कशेरु] एक प्रकार के मोथे की गँठीली जड़ जो मीठी होती है।
कसैया*†–संज्ञा पुं० [हिं० कसना] १ कसनेवाला। जकड़कर बाँधनेवाला। २ परखनेवाला। जाँचनेवाला।
कसैला–वि० [हिं० कसाव+ऐला (प्रत्य०)] [स्त्री० कसैली] कषाय स्वादवाला। जिसमें कसाव हो। जैसे आँवला, हड़ आदि।
कसैली†–संज्ञा स्त्री० [हिं० कसैला] सुपारी।
कसोरा–संज्ञा पुं० [हिं० काँसा+ओरा (प्रत्य०)] १ कटोरा। २ मिट्टी का प्याला।
कसौटी–संज्ञा स्त्री० [सं० कषपट्टी, प्रा० कसवट्टी] १ एक प्रकार का काला पत्थर जिस पर रगड़कर सोने की परख की जाती है। २ परीक्षा। जाँच। परख।
कस्तूर–संज्ञा पुं० [सं० कस्तूरी] कस्तूरी-मृग।
कस्तूरा–संज्ञा पुं० [सं० कस्तूरी] १ कस्तूरी मृग। २ लोमड़ी की तरह का एक पशु।
संज्ञा पुं० [देश०] १ वह सीप जिससे मोती निकलता है। २ एक ओषधि जो पोटब्लेयर की चट्टानों से खुरचकर निकाली जाती और बहुत मस्कारक होती है।
कस्तूरिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] कस्तूरी।
कस्तूरिया–संज्ञा पुं० [हिं० कस्तूरी] कस्तूरी-मृग।
वि० १ कस्तूरीवाला। कस्तूरी मिश्रित। २ कस्तूरी के रंग का। मुश्की।
कस्तूरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रसिद्ध सुगंधित द्रव्य जो एक प्रकार के मृग की नाभि से निकलता है।
कस्तूरी-मृग–संज्ञा पुं० [सं०] बहुत ठंढे पहाड़ी स्थानों में होनेवाला एक प्रकार का हिरन जिसकी नाभि से कस्तूरी निकलती है।
कहँ*–प्रत्य० [सं० कक्ष] कर्म और संप्रदान का चिह्न 'को'। के लिये। (अवधी)
*क्रि० वि० दे० "कहाँ"।
कहगिल–संज्ञा स्त्री० [फा० काह=घास+गिल=मिट्टी] दीवार में लगाने का मिट्टी या गारा।
कहत–संज्ञा पुं० [अ०] दुर्भिक्ष। अकाल।
यौ०—कहतसाली=दुर्भिक्ष का समय।
कहता–संज्ञा पुं० [हिं० कहना] कहनेवाला पुरुष।
कहन–संज्ञा स्त्री० [सं० कथन] १ कथन। उक्ति। २ वचन। बात। ३ कहावत। ४ कविता।
कहना–क्रि० स० [सं० कथन] १ बोलना। उच्चारण करना। वर्णन करना।
मुहा०—कह बदकर १ प्रतिज्ञा करके। दृढ़संकल्प करके। २ ललकारकर। दावे के साथ। कहना सुनना=बात-चीत करना। कहने को=१ नाम-मात्र को। २ भविष्य में स्मरण के लिये। कहने की बात=वह बात जो वास्तव में न हो।
२ प्रकट करना। खोलना। ज़ाहिर करना। ३ सूचना देना। खबर देना। ४ नाम रखना। पुकारना। ५ समझाना-बुझाना। कहना सुनना=समझाना। मनाना। ६ कविता करना।
संज्ञा पुं० कथन। आज्ञा। अनुरोध।
कहनाउत*–संज्ञा स्त्री० दे० "कहनावत"।
कहनावत–संज्ञा स्त्री० [हिं० कहना+आवत (प्रत्य०)] १ बात। कथन। २ कहावत।
कहनि*†–संज्ञा स्त्री० दे० "कहन"।
कहनूत†–संज्ञा स्त्री० [हिं० कहना+ऊत (प्रत्य०)] कहावत। मसल।
कहर–संज्ञा पुं० [अ०] विपत्ति। आफत।
वि० [अ० कह्हार] अपार। घोर। भयंकर।
कहरना†–क्रि० अ० दे० "कराहना"।
कहरवा–संज्ञा पुं० [हिं० कहार] १ पाँच मात्राओं का एक ताल। २ दादरा गीत जो कहरवा ताल पर गाया जाता है। ३

यह नाच जो कहरवा ताल पर होता है।

क़हरी–वि० [अ० क़हर] आफ़त ढानेवाला।

कहरुबा–संज्ञा पुं० [फ़ा० कहरुबा] एक प्रकार का गोंद जिसे कपड़े आदि पर रगड़कर यदि घास या तिनके के पास रखें तो उसे चुंबक की तरह पकड़ लेता है।

कहल*†–संज्ञा पुं० [देश०] १. ऊमस। ओस। २. ताप। ३. कष्ट।

कहलना*–क्रि० अ० [हिं० कहल] १. कसमसाना। अकुलाना। २. गरमी या ऊमस से व्याकुल होना। ३. दहलना।

कहलवाना–क्रि० स० दे० "कहलाना"।

कहलाना–क्रि० स० [कहना का प्रे० रूप] १. दूसरे के द्वारा कहने की क्रिया कराना। २. संदेशा भेजना। ३. पुकारा जाना।
क्रि० अ० [हिं० कहल] ऊमस या गरमी से व्याकुल या शिथिल होना।

कहवाँ*†–क्रि० वि० दे० "कहाँ"।

कहवा–संज्ञा पुं० [अ०] एक पेड़ का बीज जिसके चूर को चाय की तरह पीते हैं।

कहवाना*–क्रि० स० दे० "कहलाना"।

कहवैया*–वि० [हिं० कहना वैया (प्रत्य०)] कहनेवाला।

कहाँ–क्रि० वि० [वैदिक सं० कुहः] किस जगह? किस स्थान पर?
मुहा०—कहाँ का = १. न जाने कहाँ का। असाधारण। बड़ा भारी। २. कहीं का नहीं। नहीं है। कहाँ का कहाँ = बहुत दूर। कहाँ की बात = यह बात ठीक नहीं है। कहाँ यह, कहाँ वह = इनमें बड़ा अंतर है। कहाँ से = क्यों। व्यर्थ। नाहक।

कहा*†–संज्ञा पुं० [सं० कथन] कथन। बात। आज्ञा। उपदेश।
क्रि० वि० [सं० कथम्] कैसे। किस प्रकार।
*†सर्व० [सं० कः] क्या। (ब्रज)

कहाना–क्रि० स० दे० "कहलाना"।

कहानी–संज्ञा स्त्री० [सं० कथानिका] १. कथा। किस्सा। आख्यायिका। २. झूठी बात। गढ़ी बात।
यौ०—रामकहानी = लंबा-चौड़ा वृत्तांत।

कहार–संज्ञा पुं० [सं० क = जल + हार] एक जाति जो पानी भरने और डोली उठाने का काम करती है।

कहावत–संज्ञा स्त्री० [हिं० कहना] १. ऐसा बँधा वाक्य जिसमें कोई अनुभव की बात संक्षेप में चमत्कारिक ढंग से कही गई हो। कहनूत। लोकोक्ति। मसल। २. कही हुई बात। उक्ति।

कहा-सुना–संज्ञा पुं० [हिं० कहना + सुनना] अनुचित कथन और व्यवहार। भूल-चूक। जैसे—कहा-सुना माफ़ करो।

कहासुनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० कहना + सुनना] वाद-विवाद। झगड़ा-तकरार।

कहिया*†–क्रि० वि० [सं० कुहः] किस दिन। कब।

कहीं–क्रि० वि० [हिं० कहाँ] १. किसी अनिश्चित स्थान में। ऐसे स्थान में जिसका ठीक-ठिकाना न हो।
मुहा०—कहीं और = दूसरी जगह। अन्यत्र। कहीं का = १. न जाने कहाँ का। २. बड़ा भारी। कहीं का न रहना या होना = दो पक्षों में से किसी पक्ष के योग्य न रहना। किसी काम का न रहना। कहीं न कहीं = किसी स्थान पर अवश्य।
२. (प्रश्न रूप में और निषेधार्थक) नहीं। कभी नहीं। ३. कदाचित्। यदि। अगर (आशंका और इच्छा-सूचक)। ४. बहुत अधिक। बहुत बढ़कर।

कहुँ*–क्रि० वि० दे० "कहीं"।

कहूँ*–क्रि० वि० दे० "कहीं"।

काँइयाँ–वि० [अनु० काँव काँव] चालाक। धूर्त।

काँई*–अव्य० [सं० किम्] क्यों।
सर्व० [सं० कानि] क्या।

काँकर*†–संज्ञा पुं० दे० "कंकड़"।

काँकरी*†–संज्ञा स्त्री० [हिं० काँकर] छोटा कंकड़।
मुहा०—काँकरी चुनना = चिंता या वियोग के दुःख से किसी काम में मन न लगना।

कांक्षनीय–वि० [स०] इच्छा करने योग्य। चाहने लायक।

कांक्षा–सज्ञा स्त्री० [स०] [वि० कांक्षित] इच्छा। अभिलाषा। चाह।

कांक्षी–वि०[स०कांक्षित्] [स्त्री०कांक्षिणी] चाहनेवाला। इच्छा रखनेवाला।

कांख–सज्ञा स्त्री० [स० कक्ष] बाहुमूल के नीचे की ओर का गड्ढा। बगल।

कांखना–क्रि० अ० [अनु०] १ श्रम या पीडा से उँह-आँह आदि शब्द मुँह से निकालना। २ मल या मूत्र को निकालने के लिये पेट की वायु को दबाना।

कांखासोती–सज्ञा स्त्री० [हि० कांख+स० श्रोत्र] दाहिनी बगल के नीचे से ले जाकर बाएँ कंधे पर दुपट्टा डालने का ढग।

कांगडा–सज्ञा पु० [देश०] पजाब प्रात का एक पहाडी प्रदेश जिसम एक छोटा ज्वाला मुखी पर्वत है जो ज्वालामुखी देवी के नाम से प्रसिद्ध है।

कांगडी–सज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की छोटी अँगीठी जिसे जाडे म कश्मीरी लोग गले में लटकाए रहते हैं।

कांच–सज्ञा स्त्री० [स० कक्ष] १ धोती का वह छोर जिसे दोनो जाँघो के बीच से ले जाकर पीछे खोसते हैं। लाँग। २ गुदेंद्रिय के भीतर का भाग। गुदाचक्र।

मुहा०—कांच निकलना = किसी आघात या परिश्रम से बुरी दशा होना।

सज्ञा पु० [स० कांच] एक मिश्र धातु जो बालू और रेह या खारी मिट्टी को गलाने स बनती और पारदर्शक होती है। शीशा।

कांचन–सज्ञा पु० [स०] [वि० कांचनीय] १ सोना। २ कचनार। ३ चपा। ४ नागकेसर। ५ धतूरा।

कांचनशृंग–सज्ञा पु० [स० कांचनशृंग] हिमालय की एक चोटी।

कांचरी*–सज्ञा स्त्री० दे० 'कांचली''।

कांचली*–सज्ञा स्त्री० [स० कचुलिका] साँप की केंचुली।

कांचा*–वि० दे० "कच्चा।

कांची–सज्ञा स्त्री० [स०] १ मेखला। क्षुद्र-घटिका। करधनी। २ गोटा। पट्ठा। ३ गुजा। घुँघुची। ४ हिंदुओ की सात पुरियो में से एक पुरी। कांजीवरम्।

कांचीपुरी–सज्ञा स्त्री० स० कांची। कांजीवरम्

कांछा*|–सज्ञा स्त्री० दे० "कांक्षा"।

कांजी–सज्ञा स्त्री० [स० कांजिक] १ एक प्रकार का खट्टा रस जो पिसी हुई राई आदि को घोलकर रखने से बनता है। २ मट्ठ या दही का पानी। छाछ।

कांट*–सज्ञा पु० दे० "कांटा'।

कांटा–सज्ञा पु० [स० कटक] [वि० कँटीला] १ किसी किसी पेड की डालियो म निकले हुए सुई की तरह के नुकीले अकुर जो बहुत कडे हो जाते हैं। कटक।

मुहा०–कांटा निकलना = १ बाधा या कष्ट दूर होना। २ खटका मिटना। रास्ते में कांटा बिछाना = विघ्न करना। बाधा डालना कांटा बोना = १ बुराई करना। अनिष्ट करना। २ अडचन डालना। उपद्रव मचाना। कांटा सा खटकना = अच्छा न लगना। दु ख-दायी होना। कांटा होना = बहुत दुबला होना। कांटा म घसीटते हो = इतनी अधिक प्रशसा या आदर करते हो जिसके मैं योग्य नहीं। कांटा पर लोटना = दु ख म तडपना। बचैन होना। २ वह कांटा जो मोर मुर्गे, तीतर आदि पक्षियो की नर जातियो के पैरो म पजे के ऊपर निकलता है। खाँग। ३ वह कांटा जो मैना आदि पक्षियो के गले म रोग के रूप म निकलता है। ४ छोटी छोटी नुकीली और खुरखुरी फुसियाँ जो जीभ म निकलती हैं। ५ [स्त्री० अल्पा० कांटी] लोहे की बडी कील। ६ मछली पकडने की झुकी हुई नोकदार अँकुडी या कँटिया। ७ लोहे की झुकी हुई अकुडियो का गुच्छा जिसस कुएँ म गिरे बरतन निकालते हैं। ८ सूई या कील की तरह की कोई नुकीली वस्तु। जैसे, साही का कांटा। ९ तराजू की डाँडी पर वह सूई जिसमे दोनो पलडो के बराबर होने की सूचना मिलती है।

१०. वह लोहे की तराजू जिसकी डाँड़ी पर काँटा होता है।
मुहा०—काँटे की तौल = न कम, न बेश। ठीक ठीक। काँटे में तुलना = महँगा होना।
११. नाक में पहनने की कील। लौंग।
१२. पंजे के आकार का धातु का बना हुआ एक औजार जिससे अँगरेज लोग खाना खाते हैं। १३. घड़ी की सूई।
१४. गणित में गुणनफल के शुद्धाशुद्ध की जाँच की क्रिया।

काँटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० काँटा] १. छोटा काँटा। कील। २. वह छोटी तराजू जिसकी डाँड़ी पर काँटा लगा हो। ३. झुकी हुई छोटी कील। अँकुड़ी। ४. बेड़ी।

काँठा*—संज्ञा पुं० [सं० कंठ] १. गला। २. तोते आदि चिड़ियों के गले की रेखा। ३. किनारा। तट। ४. पार्श्व। बगल।

काँड—संज्ञा पुं० [सं०] १. बाँस या ईख आदि का वह अंश जो दो गाँठों के बीच में हो। पोर। गाँडा। गेंडा। २. शर। सरकंडा। ३. वृक्षों की पेड़ी। तना। ४. शाखा। डाली। डंठल। ५. गुच्छा। ६. किसी कार्य्य या विषय का विभाग। जैसे—कर्म्मकांड। ७. किसी ग्रंथ का वह विभाग जिसमें एक पूरा प्रसंग हो। ८. समूह। वृंद।

काँड़ना*†—क्रि० स० [सं० कंडन] १. रौंदना। कुचलना। २. चावल से भूसी अलग करना। कूटना। ३. खूब मारना।

काँडर्षि—संज्ञा पुं० [सं०] वह ऋषि जिसने वेद के किसी कांड (कर्म, ज्ञान, उपासना) पर विचार किया हो; जैसे—जैमिनि।

काँड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० कांड] १. लकड़ी का बड़ा डंडा। २. बाँस या लकड़ी का कुछ पतला सीधा लट्ठा।
मुहा०—काँड़ी कफन = मुरदे की रथी का सामान।

कांत—संज्ञा पुं० [सं०] १. पति। शौहर। २. श्रीकृष्णचंद्र। ३. चंद्रमा। ४. विष्णु। ५. शिव। ६. कार्त्तिकेय। ७. वसंत ऋतु। ८. कुंकुम। ९. एक प्रकार का बढ़िया लोहा। कांतसार।

कांतसार—संज्ञा पुं० [सं०] कांत लोहा।

कांता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्रिया। सुंदरी स्त्री। २. भार्य्या। पत्नी।

कांतार—संज्ञा पुं० [सं०] १. भयानक स्थान। २. दुर्भेद्य और गहन वन। ३. एक प्रकार की ईख। ४. बाँस। ५. छेद।

कांतासक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] भक्ति का एक भेद जिसमें भक्त ईश्वर को अपना पति मानकर पत्नी भाव से उसकी भक्ति करता है। माधुर्य्य भाव।

कांति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दीप्ति। प्रकाश। तेज। आभा। २. सौंदर्य्य। शोभा। छवि। ३. चंद्रमा की सोलह कलाओं में से एक। ४. चंद्रमा की एक स्त्री का नाम। ५. आर्य्या छंद का एक भेद।

काँथरि*—संज्ञा स्त्री० दे० "कथरी"।

काँदना*—क्रि० अ० [सं० क्रंदन] रोना।

काँदा—संज्ञा पुं० [सं० कंद] १. एक गुल्म जिसमें प्याज की तरह गाँठ पड़ती है। २. प्याज। ३. दे० "काँदो"।

काँदो*†—संज्ञा पुं० [सं० कर्दम] कीचड़।

काँध*†—संज्ञा पुं० दे० "कंधा"।

काँधना*—क्रि० वि० [हिं० काँध] १. उठाना। सिर पर लेना। सँभालना। २. ठानना। मचाना। ३. स्वीकार करना। अंगीकार करना। ४. भार लेना।

काँधर, काँधा*‡—संज्ञा पुं० दे० "कान्ह"।

काँप—संज्ञा स्त्री० [सं० कंपा] १. बाँस आदि की पतली लचीली तीली। २. पतंग या कनकौवे की धनुष की तरह झुकी हुई तीली। ३. सूअर का खाँग। ४. हाथी का दाँत। ५. कान में पहनने का एक गहना।

काँपना—क्रि० अ० [सं० कंपन] १. हिलना। थरथराना। २. डर से काँपना। थर्राना।

कांबोज—वि० [सं०] कंबोज देश का।

काँय काँय, काँव काँव—संज्ञा पुं० [अनु०] २. कौवे का शब्द। २. व्यर्थ का शोर।

काँवर—संज्ञा स्त्री० [हिं० काँध = आवर

(प्रत्य०)] वहँगी।

कांवरा†-वि० [प० घमला] घबराया हुआ।

कांवरिया-संज्ञा पु० [हिं० कांवरि] कांवर लेकर चलनेवाला तीर्थयात्री। कामार्थी।

कांवरू-संज्ञा पु० दे० "कामरूप"।

कांवार्थी-संज्ञा पु० [स० कामार्थी] वह जो किसी तीर्थ में किसी कामना से कांवर लेकर जाय।

कांस-संज्ञा पु० [स० कास] एक प्रकार की लंबी घास।

कांसा-संज्ञा पु० [स० कांस्य] [वि० कांसी] एक मिश्रित धातु जो तांबे और जस्ते के संयोग से बनती है। कसकुट। भरत।

संज्ञा पु० [फा० कासा] भीख मांगने का ठीकरा या खप्पर।

कांसागर-संज्ञा पु० [हिं० कांसा + फा० गर (प्रत्य०)] कांसे का काम करनेवाला।

कांस्य-संज्ञा पु० [स०] कांसा। कसकुट।

का-प्रत्य० [स० प्रत्य० क] संबंध या षष्ठी का चिह्न, जैसे—राम का घोड़ा।

काई-संज्ञा स्त्री० [स० कावार] १ जल या सीड़ में होनेवाली एक प्रकार की महीन घास या सूक्ष्म वनस्पति-जाल।

मुहा०—काई छुड़ाना = १ मैल दूर करना। २ दुःख दारिद्र्य दूर करना। काई सा फट जाना = तितर बितर हो जाना। छँट जाना। २ एक प्रकार का मुर्चा जो तांबे इत्यादि पर जम जाता है। ३ मल। मैल।

काऊ*†-क्रि० वि० [स० कदा] कभी। सर्व० [स० क] १ कोई। २ कुछ।

काक-संज्ञा पु० [स०] कौआ।

संज्ञा पु० [अ० कार्क] एक प्रकार की नर्म लकड़ी जिसकी डाट बोतलों में लगाई जाती है। काग।

काक-गोलक-संज्ञा पु० [स०] कौवे की आँख की पुतली, जो एक ही दाना आंखों में घूमती हुई कही जाती है।

काकजंघा-संज्ञा स्त्री० [स०] १ चकसेनी। मसी का पौधा। २ गुंजा। घुँघची। ३. मुगौन या मुगवन नाम की लता।

काकदासींगी-संज्ञा स्त्री० [स० कर्कटशृंगी] काकड़ा नामक पेड़ में लगी हुई एक प्रकार की लाही जो दवा के काम में आती है।

काकतालीय-वि० [स०] संयोगवश होनेवाला। इत्तफ़ाक़िया।

यौ०—काकतालीय न्याय।

काकदंत-संज्ञा पु० [स०] कोई असंभव बात।

काकपक्ष-संज्ञा पु० [स०] बालों के पट्टे जो दोनों ओर कानों और कनपटियों के ऊपर रहते हैं। कुल्ला। जुल्फ़।

काकपद-संज्ञा पु० [स०] वह चिह्न जो छूटे हुए शब्द का स्थान जताने के लिये पंक्ति के नीचे बनाया जाता है।

काकपच्छ*-संज्ञा पु० दे० "काकपक्ष"।

काकबंध्या-संज्ञा स्त्री० [स०] वह स्त्री जिसे एक संतति के उपरांत दूसरी न हुई हो।

काकबलि-संज्ञा स्त्री० [स०] श्राद्ध के समय भोजन का वह भाग जो कौओं को दिया जाता है। कागौर।

काकभुशुंडि-संज्ञा पु० [स०] एक ब्राह्मण जो लोमश के शाप से कौआ हो गए थे और राम के बड़े भक्त थे।

काकरी*-संज्ञा स्त्री० दे० "ककड़ी"।

काकरेजा-संज्ञा पु० [हिं० काक + रंजन] काकरेजी रंग का कपड़ा।

काकरेजी-संज्ञा पु० [फा०] एक रंग जो लाल और काले के मेल से बनता है। कोकची।

वि० काकरेजी रंग का।

काकली-संज्ञा स्त्री० [स०] १ मधुर ध्वनि। कलनाद। २ सेंध लगाने की सबरी।

काका-संज्ञा पु० [फा० काका = बड़ा भाई] [स्त्री० काकी] बाप का भाई। चाचा।

काका कौआ-संज्ञा पु० दे० "काकातूआ"।

काकाक्षिगोलक न्याय-संज्ञा पु० [स०] एक शब्द या वाक्य को उलट फेरकर दो भिन्न भिन्न अर्थों में लगाना।

काकातूआ-संज्ञा पु० [मला०] एक प्रकार का बड़ा तोता जिसके सिर पर कड़ी चोटी होती है।

काकिणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. घुंघची। गुंजा। २. पण का चतुर्थ भाग जो पाँच गंडे कौड़ियों का होता है। ३. माशे का चौथाई भाग। ४. कौड़ी।

काकी–संज्ञा स्त्री० [सं०] कौए की मादा। संज्ञा स्त्री० [हि० काका] चाची। चची।

काकु–संज्ञा पुं० [सं०] १. छिपी हुई चुटीली बात। व्यंग्य। तनज। ताना। २. अलंकार में वक्रोक्ति के दो भेदों में से एक जिसमें शब्दों के अन्यार्थ या अनेकार्थ से नहीं बल्कि ध्वनि ही से दूसरा अभिप्राय ग्रहण किया जाय।

काकुल–संज्ञा पुं० [फ़ा०] कनपटी पर लटकते हुए लंबे बाल। कुल्ले। जुल्फें।

काकोली–संज्ञा स्त्री० [सं०] सतावर की तरह की एक ओषधि जो अब नहीं मिलती।

काग–संज्ञा पुं० [सं० काक] कौआ। संज्ञा पुं० [अं० कार्क] १. बलूत की जाति का एक बड़ा पेड़ जो स्पेन, पुर्तगाल तथा अफ्रिका के उत्तरीय भागों में होता है। २. बोतल या शीशी की डाट जो इस पेड़ की छाल से बनती है।

कागज–संज्ञा पु० [अ०] [वि० कागजी] १. सन, रूई, पटुए आदि को सड़ाकर बनाया हुआ महीन पत्र जिसपर अक्षर लिखे या छापे जाते हैं।

यौ०—कागज पत्र = १. लिखे हुए कागज। २. प्रामाणिक लेख। दस्तावेज।

मुहा०—कागज काला करना या रँगना = व्यर्थ कुछ लिखना। कागज की नाव = क्षण-भगुर वस्तु। न टिकनेवाली चीज। कागजी घोड़े दौड़ाना = लिखा-पढ़ी करना। २. लिखा हुआ प्रामाणिक लेख। प्रमाण-पत्र। दस्तावेज। ३. समाचारपत्र। अखबार। ४. प्रामिसरी नोट।

कागजात–संज्ञा पु० [अ० कागज का बहु०] कागज पत्र।

कागजी–वि० [अ० कागज] १. कागज का बना हुआ। २. जिसका छिलका कागज की तरह पतला हो। जैसे—कागजी बादाम। ३. लिखा हुआ। लिखित।

कागद†–संज्ञा पुं० दे० "कागज"।

कागभुसुंड–संज्ञा पुं० दे० "काकभुसुंडि"।

कागर*–संज्ञा पुं० दे० "कागज"। संज्ञा पुं० [हि० काग ?] चिड़ियों के वे रूई के से मुलायम पर जो झड़ जाते हैं।

कागरी*–वि० [हि० कागज] तुच्छ।

कागावासी–संज्ञा स्त्री० [हि० काग + बासी] १. वह भाँग जो सवेरे कौआ बोलते समय छानी जाय। २. एक प्रकार का मोती जो कुछ काला होता है।

कागारोल–संज्ञा पुं० [हि० काग = कौआ + रोर = शोर] हल्ला। हुल्लड़। शोर गुल।

कागोर–संज्ञा पुं० दे० "काकबलि"।

काच लवण–संज्ञा पुं० [सं०] कचिया नोन। काला नोन।

काची*–संज्ञा स्त्री० [हि० कच्चा] १. दूध रखने की हँड़ी। २. तीखुर, सिंघाड़े आदि का हलुआ।

काछ–संज्ञा पु० [स० कक्ष] १. पेड़ू और जाँघ के जोड़ पर का तथा उसके नीचे तक का स्थान। २. धोती का वह भाग जो इस स्थान पर से होकर पीछे खोंसा जाता है। लाँग। ३. अभिनय के लिये नटों का वेश या बनाव।

मुहा०—काछ काछना = वेष बनाना।

काछना–क्रि० स० [स० कक्षा] १. कमर में लपेटे हुए वस्त्र के लटकते हुए भाग को जाँघों पर से ले जाकर पीछे कसकर बाँधना। २. बनाना। सँवारना। क्रि० स० [सं० कर्षण] हथेली या चम्मच आदि से तरल पदार्थ को किनारे की ओर खींचकर उठाना।

काछनी–संज्ञा स्त्री० [हि० काछना] १. कसकर और कुछ ऊपर चढ़ाकर पहनी हुई धोती जिसकी दोनों लाँगें पीछे खोंसी जाती हैं। कछनी। २. घाघरे की तरह का एक चुनन्दार आधे जाँघे तक का पहनावा।

काछा–संज्ञा पुं० [हि० काछना] कसकर और

पुछ ऊपर चढ़ाकर पहनी हुई धोती जिसकी दोनों लाँग पीछे खोंसी जाती हैं। कछनी।

काछी–संज्ञा पु० [कच्छ=जम्बाय देश] तरकारी बोने और बेचनेवाला आदमी।

काछे–क्रि० वि० [सं० कक्ष] निकट। पास।

काज–संज्ञा पु० [सं० कार्य्य] १ कार्य्य। मुहा०—के काज=के हेतु। निमित्त। २ व्यवसाय। पेशा। रोजगार। ३ प्रयोजन। मतलब। उद्देश्य। अर्थ। ४ विवाह। संज्ञा पु० [अ० काजा] वह छेद जिसमें बटन डालकर फँसाया जाता है। बटन का घर।

काजर†–संज्ञा पु० दे० "काजल"।

काजरी*–संज्ञा स्त्री० [सं० कज्जली] वह गाय जिसकी आँखों पर काला घेरा हो।

काजल–संज्ञा पु० [सं० कज्जल] वह कालिख जो दीपक के धुएँ के जमने से लग जाती है और आँखों में लगाई जाती है।

मुहा०—काजल घुलाना, डालना, देना या सारना=(आँखों में) काजल लगाना। काजल पारना=दीपक के धुएँ की कालिख को किसी बरतन में जमाना। काजल की कोठरी=ऐसा स्थान जहाँ जाने से मनुष्य को कलंक लगे।

क़ाज़ी–संज्ञा पु० [अ०] मुसलमानों के धर्म और रीति-नीति के अनुसार न्याय की व्यवस्था करनेवाला अधिकारी।

काजू–संज्ञा पु० [कोंक० काज्जु] १ एक पेड़ जिसके फलों की गिरी को भूनकर लोग खाते हैं। २ इस वृक्ष के फल की गुठली के भीतर की मींगी या गिरी।

काजू भोजू–वि० [हिं० काज+भोग] ऐसी दिखाऊ वस्तु जो अधिक दिनों तक काम न आ सके।

काट–संज्ञा स्त्री० [हिं० काटना] १ काटने की क्रिया या भाव।

यौ०—काट छाँट=१ मार-काट। लड़ाई। काटने से बचा-खुचा टुकड़ा। कतरन। ३ किसी वस्तु में कमी-बेशी। घटाव-बढ़ाव। मार-काट=तलवार आदि की लड़ाई।

२ काटने का ढंग। कटाव। तराश। ३. कटा हुआ स्थान। घाव। ज़ख्म। ४. कपट। चालबाज़ी। विश्वासघात। ५ कुश्ती में पेंच का तोड़।

काटना–क्रि० स० [सं० कर्त्तन] १. शस्त्र आदि की धार धँसाकर किसी वस्तु के दो खंड करना।

मुहा०—काटो तो खून नहीं=एकबारगी स्तब्ध हो जाना। बिल्कुल स्तब्ध हो जाना।

२ पीसना। महीन चूर करना। ३ घाव करना। ज़ख्म करना। ४ किसी वस्तु का कोई अंश निकालना। किसी भाग को कम करना। ५ युद्ध में मारना। वध करना। ६ कतरना। ब्योतना। ७ नष्ट करना। ८ समय बिताना। ९. रास्ता खतम करना। दूरी तै करना। १० अनुचित प्राप्ति करना। बुरे ढंग से आय करना। ११ कलम की लकीर से किसी लिखावट को रद करना। छेंकना। मिटाना। १२ ऐसे कामों को तैयार करना जो लकीर के रूप में कुछ दूर तक चले गए हों। जैसे, सड़क काटना, नहर काटना। १३ ऐसे कामों को तैयार करना जिनमें लकीरों द्वारा कई विभाग किए गए हों, जैसे—क्यारी काटना। १४. एक संख्या के साथ दूसरी संख्या का ऐसा भाग लगाना कि शेष न बचे। १५ जेलखाने में दिन बिताना। कैद भोगना। १६ विषैले जंतु का डंक मारना या दाँत धँसाना। डसना।

मुहा०—काटने दौड़ना=चिड़चिड़ाना। खीझना। १७ किसी तीक्ष्ण वस्तु का शरीर में लगकर जलन और छरछराहट पैदा करना। १८ एक रेखा का दूसरी रेखा के ऊपर से चार कोण बनाते हुए निकल जाना। १९. (किसी मत का) खंडन करना। अप्रमाणित करना। २० दुःखदायी लगना।

मुहा०—काटे खाना या काटने दौड़ना=१ बुरा मालूम होना। चित्त को व्यथित करना। २ सूना और उजाड़ लगना।

काटू–संज्ञा पु० [हिं० काटना] १ काटने-

वाला। २. काटाऊ। डरावना। भयानक।

काठ–संज्ञा पुं० [सं० काष्ठ] १. पेड़ का कोई स्थूल अंग जो आधार से अलग हो गया हो। लकड़ी।

यौ०—काठ कबाड़ = टूटा फूटा सामान।

मुहा०—काठ का उल्लू = जड़। बज्र मूर्ख। काठ होना = १. संज्ञाहीन होना। चेतनारहित होना। स्तब्ध होना। २. सूखकर कड़ा हो जाना। काठ की हाँड़ी = ऐसी दिखाऊ वस्तु जिसका धोखा एक बार से अधिक न चल सके।

२. ईंधन। जलाने की लकड़ी। ३. शहतीर। लक्कड़। ४. लकड़ी की बनी हुई बेड़ी। कलंदरा।

मुहा०—काठ मारना या काठ में पाँव देना = अपराधी को काठ की बेड़ी पहनाना।

काठड़ा–संज्ञा पुं० [हिं० काठ + ड़ा (प्रत्य०)] [स्त्री० काठड़ी] काठ का बड़ा बरतन। कठौता।

काठिन्य–संज्ञा पुं० दे० "कठिनता"।

काठी–संज्ञा स्त्री० [हिं० काठ] १. घोड़ों या ऊँट की पीठ पर कसने की जीन जिसमें नीचे काठ लगा रहता है। अँगरेजी जीन। २. शरीर की गठन। अँगलेट। ३. तलवार या कटार की म्यान।

वि० [काठियावाड़ देश] काठियावाड़ का।

काढ़ना–क्रि० स० [सं० कर्षण] १. किसी वस्तु के भीतर से कोई वस्तु बाहर करना। निकालना। २. किसी आवरण को हटाकर कोई वस्तु प्रत्यक्ष करना। खोलकर दिखाना। ३. किसी वस्तु को किसी वस्तु से अलग करना। ४. लकड़ी, पत्थर, कपड़े आदि पर बेल-बूटे बनाना। उरेहना। चित्रित करना। ५. उधार लेना। ऋण लेना। ६. कड़ाहे में से पकाकर निकालना। पकाना। छानना।

काढ़ा–संज्ञा पुं० [हिं० काढ़ना] ओषधियों को पानी में उबाल या औटाकर बनाया हुआ शरबत। क्वाथ। जोशाँदा।

कातंत्र–संज्ञा पुं० [सं०] कलाप व्याकरण।

कातना–क्रि० स० [सं० कर्तन] १. रुई को ऐंठ या बटकर तागा बनाना। २. चरखा चलाना।

कातर–वि० [सं०] १. अधीर। व्याकुल। चंचल। २. डरा हुआ। भयभीत। ३. डरपोक। बुजदिल। ४. आर्त्त। दुःखित।

संज्ञा स्त्री० [सं० कर्त्त] कोल्हू में लकड़ी का वह तख्ता जिसपर हाँकनेवाला बैठता है।

कातरता–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० कातर] १. अधीरता। चंचलता। २. दुःख की व्याकुलता। ३. डरपोकपन।

काता–संज्ञा पुं० [हिं० कातना] काता हुआ सूत। तागा। डोरा।

यौ०—बुढ़िया का काता = एक प्रकार की मिठाई जो बहुत महीन सूत की तरह होती है।

कातिक–संज्ञा पुं० [सं० कार्त्तिक] वह महीना जो क्वार के बाद पड़ता है। कार्त्तिक।

कातिब–संज्ञा पुं० [अ०] लिखनेवाला। लेखक।

क़ातिल–वि० [अ०] घातक। हत्यारा।

काती–संज्ञा स्त्री० [सं० कर्त्री] १. कैंची। २. सुनारों की कतरनी। ३. चाकू। छुरी। ४. छोटी तलवार। कत्ती।

कात्यायन–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कात्यायनी] १. कत ऋषि के गोत्र में उत्पन्न ऋषि जिसमें तीन प्रसिद्ध हैं—एक विश्वामित्र के वंशज, दूसरे गोभिल के पुत्र और तीसरे सोमदत्त के पुत्र वररुचि कात्यायन। २. पाली व्याकरण के कर्त्ता एक बौद्ध आचार्य।

कात्यायनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कत गोत्र में उत्पन्न स्त्री। २. कात्यायन ऋषि की पत्नी। ३. कषाय वस्त्र धारण करनेवाली अधेड़ विधवा स्त्री। ४. दुर्गा।

कादम्बरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कोकिल। कोयल। २. सरस्वती। वाणी। ३. मदिरा। शराब। ४. मैना। ५. बाणभट्ट की लिखी एक प्रसिद्ध आख्यायिका।

कादंबिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] मेघमाला।

कादर–वि० [सं० कातर] १. डरपोक। भीरु। २. अधीर। व्याकुल।

कादिरी–संज्ञा स्त्री० [अ०] एक प्रकार की

घोली। सीनावंद।

कान-संज्ञा पुं० [सं० कर्ण] १ वह इंद्रिय जिससे शब्द का ज्ञान होता है। सुनने की इंद्रिय। श्रवण। श्रुति। श्रोत्र।

मुहा०—कान उठाना = १ सुनने के लिये तैयार होना। आहट लेना। २ चौकन्ना होना। सचेत या सजग होना। कान उमेठना = १. दंड देने के हेतु किसी का कान मरोड़ देना। २ किसी काम के न करने की प्रतिज्ञा करना। कान करना = सुनना। ध्यान देना। कान काटना = मात करना। बढ़कर होना। कान का कच्चा = जो किसी के कहने पर बिना सोचे समझे विश्वास कर ले। कान खड़े करना = सचेत करना। होशियार करना। कान खाना या खा जाना = बहुत शोर गुल करना। बहुत बातें करना। कान गरम करना या कर देना = कान उमेठना। कान पूँछ दबाकर चल जाना = चुपचाप चला जाना। बिना विरोध किए टल जाना। (किसी बात पर) कान देना या धरना = ध्यान देना। ध्यान से सुनना। कान पकड़ना = १ कान उमेठना। २ अपनी भूल या छोटाई स्वीकार करना। (किसी बात से) कान पकड़ना = पछतावे के साथ किसी बात के फिर न करने की प्रतिज्ञा करना। कान पर जूँ न रेंगना = कुछ भी परवा न होना। कुछ भी ध्यान न होना। कान फुँकवाना = गुरुमंत्र लेना। दीक्षा लेना। कान फूँकना = १ दीक्षा देना। चेला बनाना। २ दे० 'कान भरना'। कान भरना = किसी के विरुद्ध किसी के मन में कोई बात बैठा देना। खयाल खराब करना। कान मलना = दे० "कान उमेठना"। कान में तेल डाले बैठना = बात सुनकर भी उस ओर कुछ ध्यान न देना। कान में डाल देना = सुना देना। कानोंकान खबर न होना = जरा भी खबर न होना। किसी के सुनने में न आना। कानों पर हाथ धरना या रखना = किसी बात के करने से एकबारगी इनकार करना।

२ सुनने की शक्ति। श्रवण शक्ति। ३ लकड़ी का एक टुकड़ा जो बूँड़ अधिक चौड़ी करने के लिये हल के अगले भाग में बाँध दिया जाता है। कन्ना। ४ सोने का एक गहना जो कान में पहना जाता है। ५ चारपाई का टेढ़ापन। कनेव। ६. किसी वस्तु का ऐसा निकला हुआ कोना जो भद्दा जान पड़े। ७ तराजू का पसंगा। ८ तोप या बंदूक में वह स्थान जहाँ रंजक रखी और बत्ती दी जाती है। पियाली। रंजकदानी। ९ नाव की पतवार। संज्ञा स्त्री० दे० "कानि"।

कानन-संज्ञा पुं० [सं०] १. जंगल। वन। २ घर।

काना-वि० [सं० काण] [स्त्री० कानी] जिसकी एक आँख फूट गई हो। एकाक्ष। वि० [सं० कर्णक] वे फल आदि जिनका कुछ भाग कीड़ों ने खा लिया हो। कन्ना। संज्ञा पुं० [सं० कर्ण] १ 'आ' की मात्रा जो किसी अक्षर के आगे लगाई जाती है और जिसका रूप (ा) है। २ पासे पर की बिंदी या चिह्न। जैसे, तीन काने। वि० [सं० कर्ण] जिसका कोई कोना या भाग निकला हो। तिरछा। टेढ़ा।

कानाकानी-संज्ञा स्त्री० [सं० कर्णाकर्णि] काना फूसी। चर्चा।

कानाफूसी-संज्ञा स्त्री० [हिं० कान + अनु० 'फुस-फुस'] वह बात जो कान के पास जाकर धीरे से कही जाय।

कानाबाती-संज्ञा स्त्री० दे० "कानाफूसी"।

कानि-संज्ञा स्त्री० [?] १ लोकलज्जा। मर्यादा का ध्यान। २ लिहाज। संकोच।

कानी-वि० स्त्री० [हिं० काना] एक आँखवाली। जिसकी एक आँख फूटी हो। मुहा०—कानी कौड़ी = फूटी या झंझी कौड़ी। वि० स्त्री० [सं० कनीनी] सबसे छोटी (उँगली)। जैसे—कानी उँगली।

कानीन-संज्ञा पुं० [सं०] वह जो किसी कुमारी कन्या से पैदा हुआ हो।

कानी हाउस-संज्ञा पुं० [अं० कांइन हाउस] वह घर जिसमें किसी की हानि करनेवाले पशु पकड़कर बंद किए जाते हैं।

क़ानून–संज्ञा पुं० [अ०, यू० केनान] [वि० क़ानूनी] राज्य में शांति रखने का नियम। राजनियम। आईन। विधि।

मुहा०—क़ानून छाँटना = क़ानूनी बहस करना। कुतर्क या हुज्जत करना।

क़ानूनगो–संज्ञा पुं० [फ़ा०] माल का एक कर्मचारी जो पटवारियों के कागजों की जांच करता है।

क़ानूनदाँ–संज्ञा पुं० [फ़ा०] कानून जाननेवाला। विधिज्ञ।

क़ानूनिया–वि० [अ० कानून] १. कानून जाननेवाला। २. हुज्जती।

क़ानूनी–वि० [अ० क़ानून] १. जो कानून जाने। २. क़ानून-संबंधी। अदालती। ३. जो क़ानून के मुताबिक हो। नियमानुकूल। ४. तकरार करनेवाला। हुज्जती।

कान्यकुब्ज–संज्ञा पुं० [सं०] १. प्राचीन समय का एक प्रांत जो वर्तमान समय के कन्नौज के आस-पास था। २. इस देश का निवासी। ३. इस देश का ब्राह्मण।

कान्ह*–संज्ञा पुं० [सं० कृष्ण] श्रीकृष्ण।

कान्हड़ा–संज्ञा पुं० [सं० कर्णाट] एक राग।

कान्हर*–संज्ञा पुं० [हिं० कान्ह] श्रीकृष्णजी।

कापर*–संज्ञा पुं० दे० "कपड़ा"।

कापालिक–संज्ञा पुं० [सं०] शैव मत के तांत्रिक साधु जो मनुष्य की खोपड़ी लिए रहते और मद्य मांसादि खाते हैं।

कापाली–संज्ञा पुं० [सं० कापालिन्] [स्त्री० कापालिनी] १. शिव। २. एक प्रकार का वर्णसंकर।

कापिल–वि० [सं०] १. कपिल-संबंधी। कपिल का। २. भूरा।

संज्ञा पुं० [सं०] १. सांख्य दर्शन। २. कपिल के दर्शन का अनुयायी। ३. भूरा रंग।

कापुरुष–संज्ञा पुं० [सं०] कायर। डरपोक।

क़ाफ़िया–संज्ञा पुं० [अ०] अंत्यानुप्रास। तुक। सज।

यौ०—क़ाफ़ियाबंदी = तुकबंदी। तुक जोड़ना।

मुहा०—क़ाफ़िया तंग करना = बहुत हैरान करना। नाकों दम करना।

काफ़िर–वि० [अ०] १. मुसलमानों के अनुसार उनसे भिन्न धर्म को माननेवाला। २. ईश्वर को न माननेवाला। ३. निर्दय। निष्ठुर। बेदर्द। ४. दुष्ट। बुरा। ५. काफ़िर देश का रहनेवाला।

संज्ञा पुं० [अ०] [वि० काफ़िरी] एक देश का नाम जो अफ़्रिका में है।

क़ाफ़िला–संज्ञा पुं० [अ०] यात्रियों का झुंड।

काफ़ी–वि० [अ०] जितना आवश्यक हो, उतना। पर्याप्त। पूरा।

काफ़ूर–संज्ञा पुं० [फ़ा० मि० सं० कर्पूर] [वि० काफ़ूरी] कपूर।

मुहा०—काफ़ूर होना = चंपत होना।

काफ़ूरी–वि० [हिं० काफ़ूर] १. काफ़ूर का। २. काफ़ूर के रंग का।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का बहुत हलका रंग जिसमें हरेपन की झलक रहती है।

काब–संज्ञा स्त्री० [तु०] बड़ी रिकाबी।

काबर–वि० [सं० कर्बुर प्रा० कब्बुर] कई रंगों का। चितकबरा।

काबा–संज्ञा पुं० [अ०] अरब के मक्के शहर का एक स्थान जहाँ मुसलमान लोग हज करने जाते हैं।

क़ाबिज़–वि० [अ०] १. अधिकार रखनेवाला। अधिकारी। २. मल का अवरोध करनेवाला। दस्त रोकनेवाला।

क़ाबिल–वि० [अ०] [संज्ञा क़ाबिलीयत] १. योग्य। लायक़। २. विद्वान्। पंडित।

क़ाबिलीयत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. योग्यता। लियाक़त। २. पांडित्य। विद्वत्ता।

काबिस–संज्ञा पुं० [सं० कपिश] एक रंग जिससे मिट्टी के कच्चे बर्तन रँगकर पकाए जाते हैं।

काबुक–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] कबूतरों का दरबा।

काबुल–संज्ञा पुं० [सं० कुभा] [वि० काबुली] १. एक नदी जो अफ़ग़ानिस्तान से आकर अटक के पास सिंध नदी में गिरती है।

२. अफ़गानिस्तान की राजधानी।

काबुली–वि० [हिं० काबुल] काबुल का। सज्ञा पु० काबुल का निवासी।

क़ाबू–सज्ञा पु० [तु०] वश। इख्तियार।

काम–सज्ञा पु० [स०] [वि० कामुक, कामी] १. इच्छा। मनोरथ। २. महादेव। ३. कामदेव। ४. इद्रियो की अपने अपने विषयो की ओर प्रवृत्ति (कामशास्त्र)। ५. सहवास या मैथुन की इच्छा। ६ चातुर्वर्ग या चार पदार्थों मे से एक।

सज्ञा पु० [स० कर्म्म, प्रा० कम्म] १. वह जो किया जाय। व्यापार। कार्य्य।

मुहा०–काम आना = लडाई में मारा जाना। काम करना = १. प्रभाव डालना। असर डालना। २. फल उत्पन्न करना। काम चलना = १. काम जारी रहना। २ क्रिया का सपादन होना। काम तमाम करना = १. काम पूरा करना। २. मार डालना। जान लेना। काम होना = १ मरना। प्राण जाना। २ अत्यत कष्ट पहुँचना।

२. कठिन शक्ति या कौशल का कार्य्य।

मुहा०–काम रखना है = बडा कठिन कार्य्य है। मुश्किल बात है।

३ प्रयोजन। अर्थ। मतलब।

मुहा०–काम निकलना = १. प्रयोजन सिद्ध होना। उद्देश्य पूरा होना। मतलब गँठना। २ कार्य्य निर्वाह होना। आवश्यकता पूरी होना। काम पडना = आवश्यकता होना।

४ गरज। वास्ता। सरोकार।

मुहा०–किसी के काम पडना = किसी से पाला पडना। किसी प्रकार का व्यवहार या सबध होना। काम से काम रखना = अपने प्रयोजन पर ध्यान रखना। व्यर्थ बातो मे न पडना। ५ उपयोग। व्यवहार। इस्तेमाल।

मुहा०–काम आना = १. व्यवहार में आना। उपयोगी होना। २. सहारा देना। सहायक होना। काम का = व्यवहार योग्य। उपयोगी (वस्तु)। काम देना = व्यवहार में आना। उपयोगी होना। काम में लाना = बर्तना। व्यवहार करना।

६ कारबार। व्यवसाय। रोज़गार। ७. कारीगरी। बनावट। रचना। ८ बेलबूटा या नक़्क़ाशी।

कामकला–सज्ञा स्त्री० [स०] १. मैथुन। रति। २ कामदेव की स्त्री। रति।

कामकाजी–वि० [हिं० काम + काज] काम करनेवाला। उद्योग-धधे में रहनेवाला।

कामगार–सज्ञा पु० दे० "कामदार"।

काम-चलाऊ–वि० [हिं० काम + चलाना] जिससे किसी प्रकार का काम निकल सके। जो बहुत से अशो मे काम दे जाय।

कामचारी–वि० [स०] १ जहाँ चाहे वहाँ विचरनेवाला। २. मनमाना काम करनेवाला। स्वेच्छाचारी। ३. कामुक।

कामचोर–वि० [हिं० काम + चोर] काम से जी चुरानेवाला। अकर्मण्य। आलसी।

कामज–वि० [स०] वासना से उत्पन्न।

कामजित्–वि० [स०] काम को जीतनेवाला।

सज्ञा पु० [स०] १. महादेव। शिव। २ कार्तिकेय। ३ जिन देव।

कामज्वर–सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का ज्वर जो स्त्रियो और पुरुषो को अखड ब्रह्मचर्य्य पालन करने से हो जाता है।

कामडिया–सज्ञा पु० [हिं० कामरी] रामदेव के मत के अनुयायी चमार साधु।

कामतरु–सज्ञा पु० दे० "कल्पवृक्ष"।

कामता*–सज्ञा पु० [स० कामद] चित्रकूट।

कामद–वि० [स०] [स्त्री० कामदा] मनोरथ पूरा करनेवाला। इच्छानुसार फल देनेवाला।

कामद मणि–सज्ञा पु० [स०] चितामणि।

कामदहन–सज्ञा पु० [स० काम + दहन] कामदेव को जलानेवाले, शिव।

कामदा–सज्ञा स्त्री० [स०] १. कामधेनु। २. दश अक्षरो की एक वर्णवृत्ति।

कामदानी–सज्ञा स्त्री० [हिं० काम + दानी (प्रत्य०)] बेल-बूटा जो बादले के तार या सलमे-सितारे से बनाया जाय।

कामदार–सज्ञा पु० [हिं० काम + दार (प्रत्य०)]

कारिंदा। अमला। प्रबंधकर्त्ता।
वि० जिसपर कलाबत्तू आदि के बेल-बूटे बने हों। जैसे, कामदार टोपी।
कामदुहा–संज्ञा स्त्री० [सं०] कामधेनु।
कामदेव–संज्ञा पुं० [सं०] १. स्त्री-पुरुष के संयोग की प्रेरणा करनेवाला देवता। २. वीर्य्य। ३. संभोग की इच्छा।
काम-धाम–संज्ञा पुं० [हिं० काम + धाम (अनु०)] काम-काज। धंधा।
कामधुक्*–संज्ञा स्त्री० [सं० कामदुघ] कामधेनु।
कामधेनु–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पुराणानुसार एक गाय जिससे जो कुछ माँगा जाय, वही मिलता है। सुरभी। २. वशिष्ठ की शवला या नंदिनी नाम की गाय जिसके कारण उनसे विश्वामित्र से युद्ध हुआ था।
कामना–संज्ञा स्त्री० [सं०] इच्छा। मनोरथ। ख्वाहिश।
कामबाण–संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव के बाण, जो पाँच हैं—मोहन, उन्मादन, संतपन, शोषण और निश्चेष्टकरण। बाणों को फूलों का मानने पर पाँच बाण ये हैं—लाल कमल, अशोक, आम की मंजरी, चमेली और नील कमल।
कामयाब–वि० [फा०] जिसका प्रयोजन सिद्ध हो गया हो। सफल। कृतकार्य्य।
कामयाबी–संज्ञा स्त्री० [फा०] सफलता।
कामरिपु–संज्ञा पुं० [सं०] शिव।
कामरी*–संज्ञा स्त्री० [सं० कंवल] कमली।
कामरुचि–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अस्त्र जिससे और अस्त्रों को व्यर्थ करते थे।
कामरू–संज्ञा पुं० दे० "कामरूप"।
कामरूप–संज्ञा पुं० [सं०] १. आसाम का एक जिला जहाँ कामाख्या देवी का स्थान है। २. एक प्राचीन अस्त्र जिससे शत्रु के फेंके हुए अस्त्र व्यर्थ किए जाते थे। ३. २६ मात्राओं का एक छंद। ४. देवता।
वि० मनमाना रूप बनानेवाला।
कामल–संज्ञा पुं० [सं०] कमल रोग।
कामला–संज्ञा पुं० दे० "कामल"।
कामली*–संज्ञा स्त्री० [सं० कंवल] कमली।
कामवती–संज्ञा स्त्री० [सं०] काम या संभोग की वासना रखनेवाली स्त्री।
कामवान्–वि० [सं०] [स्त्री० कामवती] काम या संभोग की इच्छा करनेवाला।
कामशर–संज्ञा पुं० दे० "कामबाण"।
कामशास्त्र–संज्ञा पुं० [सं०] वह विद्या या ग्रंथ जिसमें स्त्री-पुरुषों के परस्पर समागम आदि के व्यवहारों का वर्णन हो।
कामसखा–संज्ञा पुं० [सं० कामसख] वसंत।
कामा–संज्ञा स्त्री० [सं० काम] एक वृत्ति जिसमें दो गुरु होते हैं।
कामाक्षी–संज्ञा स्त्री० [सं०] तंत्र के अनुसार देवी की एक मूर्त्ति।
कामाख्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. देवी का एक अभिग्रह। २. कामरूप।
कामातुर–वि० [सं०] काम के वेग से व्याकुल। समागम की इच्छा से उद्विग्न।
कामारथी†–संज्ञा पुं० दे० "काँवारथी"।
कामावशायिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] सत्यसंकल्पता जो योगियों की आठ सिद्धियों या ऐश्वर्यों में से एक है।
कामिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कामवती स्त्री। २. स्त्री। सुंदरी। ३. मदिरा।
कामिनीमोहन–संज्ञा पुं० [सं० स्रग्विणी छंद का एक नाम।
कामिल–वि० [अ०] १. पूरा। पूर्ण। कुल। समूचा। २. योग्य। व्युत्पन्न।
कामी–वि० [सं० कामिन्] [स्त्री० कामिनी] १. कामना रखनेवाला। इच्छुक। २. विषयी। कामुक।
संज्ञा पुं० [सं०] १. चकवा। २. कबूतर। ३. चिड़ा। ४. सारस। ५. चंद्रमा।
कामुक–वि० [सं०] १. [स्त्री० कामुका] इच्छा करनेवाला। चाहनेवाला। २. [स्त्री० कामुकी] कामी। विषयी।
कामेश्वरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. तंत्र के अनुसार एक भैरवी। २. कामाख्या की पाँच मूर्त्तियों में से एक।
कामोद–संज्ञा पुं० [सं०] एक राग।

कामोद्दीपक–वि० [सं०] जिससे मनुष्य की सहवास की इच्छा अधिक हो।

कामोद्दीपन–संज्ञा पु० [सं०] सहवास की इच्छा या उत्तेजना।

काम्य–वि० [सं०] १ जिसकी इच्छा हो। २ जिससे कामना की सिद्धि हो।
संज्ञा पुं० [सं०] वह यज्ञ या कर्म जो किसी कामना की सिद्धि के लिये किया जाय। जैसे—पुत्रेष्टि।

काम्येष्टि–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह यज्ञ जो कामना की सिद्धि के लिये किया जाय।

काय–वि० [सं०] प्रजापति-संबंधी।
संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शरीर। देह। बदन। जिस्म। २ प्रजापति तीर्थ। कनिष्ठा उँगली के नीचे का भाग (स्मृति)। ३ प्रजापति का हवि। ४ प्राजापत्य विवाह। ५ मूल धन। पूँजी। ६ समुदाय। संघ।

कायचिकित्सा–संज्ञा स्त्री० [सं०] चिकित्सा का वह अंग जिसमें ज्वर, कुष्ठ, उन्माद आदि सर्वांगव्यापी रोगों के उपशमन का विधान है।

कायजा–संज्ञा पु० [अ० कायज़] घोड़े की लगाम की डोरी, जिसे पुछ तक ले जाकर बाँधते हैं।

कायथ–संज्ञा पु० दे० 'कायस्थ'।

क़ायदा–संज्ञा पु० [अ० कायद] १ नियम। २ चाल। दस्तूर। रीति। ढंग। ३ विधि। विधान। ४ क्रम। व्यवस्था।

कायफल–संज्ञा पु० [सं० कट्फल] एक वृक्ष जिसकी छाल दवा के काम में आती है।

क़ायम–वि० [अ०] १ ठहरा हुआ। स्थिर। २ स्थापित। ३ निर्धारित। निश्चित। मुकर्रर।

क़ायम-मुक़ाम–वि० [अ०] स्थानापन्न। एवजी।

कायर–वि० [सं० कातर] डरपोक। भीरु।

कायरता–संज्ञा स्त्री० [सं० कातरता] डरपोकपन। भीरुता।

कायल–वि० [अ०] जो तर्क वितर्क से सिद्ध बात को मान ले। क़बूल करनेवाला।

कायव्यूह–संज्ञा पु० [सं०] १ शरीर में वात, पित्त, कफ तथा त्वक्, रक्त, मांस आदि के स्थान और विभाग का क्रम। २ योगियों की अपने कर्मों के भोग के लिये चित्त में एक एक इंद्रिय और अंग की कल्पना की क्रिया। ३ सैनिक का घेरा।

कायस्थ–वि० [सं०] काय में स्थित। शरीर में रहनेवाला।
संज्ञा पुं० [सं०] १ जीवात्मा। २ परमात्मा। ३ एक जाति का नाम।

काया–संज्ञा स्त्री० [सं० काय] शरीर। तन।
मुहा०—काया पलट जाना = रूपांतर हो जाना। और से और हो जाना।

कायाकल्प–संज्ञा पु० [सं० कायाकल्प] औषध के प्रभाव से वृद्ध शरीर को पुनः तरुण और सशक्त करने की क्रिया।

काया-पलट–संज्ञा स्त्री० [हिं० काया + पलटना] १ भारी हेर-फेर। बहुत बड़ा परिवर्तन। २ एक शरीर या रूप का दूसरे शरीर या रूप में बदलना। और ही रंग रूप होना।

कायिक–वि० [सं०] १ शरीर-संबंधी। २ शरीर से किया हुआ या उत्पन्न। जैसे, कायिक पाप। ३ संघ-संबंधी। (बौद्ध)

कारंड, कारंडव–संज्ञा पु० [सं०] हंस या बत्तख की जाति का एक पक्षी।

कारकमी–संज्ञा पु० [सं०] रसायनी। किमियागर।

कार–संज्ञा पु० [सं०] १ क्रिया। कार्य्य। जैसे—उपकार स्वीकार। २ बनानेवाला। रचनेवाला। जैसे, कुंभकार, ग्रंथकार। ३ एक शब्द जो वर्णमाला के अक्षरों के आगे लगकर उनका स्वतंत्र बोध कराता है। जैसे—ककार, लकार। ४ एक शब्द जो अनुकृत ध्वनि के साथ लगकर उसका संज्ञावत् बोध कराता है। जैसे—चीत्कार।
संज्ञा पु० [फा०] काम। काम।
*–वि० दे० 'काला'।

कारक–वि० [सं०] [स्त्री० कारिका] करनेवाला। जैसे हानिकारक, सुखकारक।

संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण में संज्ञा या सर्वनाम शब्द की वह अवस्था जिसके द्वारा किसी वाक्य में उसका क्रिया के साथ संबंध प्रकट होता है।

कारकदीपक–संज्ञा पुं० [सं०] काव्य में वह अर्थालंकार जिसमें कई एक क्रियाओं का एक ही कर्त्ता वर्णन किया जाय।

कारकुन–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. इंतज़ाम करनेवाला। प्रबंधकर्त्ता। २. कारिंदा।

कारखाना–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. वह स्थान जहाँ व्यापार के लिए कोई वस्तु बनाई जाती है। २. कार-बार। व्यवसाय। ३. घटना। दृश्य। मामला। ४. क्रिया।

कारगर–वि० [फ़ा०] १. प्रभावजनक। असर करनेवाला। २. उपयोगी।

कारगुज़ार–वि० [फ़ा०] [संज्ञा कारगुज़ारी] अपना कर्त्तव्य अच्छी तरह पूरा करनेवाला।

कारगुज़ारी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. पूरी तरह और आज्ञा पर ध्यान देकर काम करना। कर्त्तव्यपालन। २. कार्य्यपटुता। होशियारी। ३. कर्मण्यता।

कारचोब–संज्ञा पुं० [फ़ा०] [वि० संज्ञा कारचोबी] १. लकड़ी का एक चौखठा जिस पर कपड़ा तानकर ज़रदोज़ी का काम बनाया जाता है। अड्डा। २. ज़रदोज़ी या कसीदे का काम करनेवाला। ज़रदोज़।

कारचोबी–वि० [फ़ा०] ज़रदोज़ी का। संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] ज़रदोज़ी। गुलकारी।

कारज*†–संज्ञा पुं० दे० "कार्य्य"।

कारटा*–संज्ञा पुं० [सं० करट] कौआ।

कारण–संज्ञा पुं० [सं०] १. हेतु। वजह। सबब। वह जिसके प्रभाव से कोई बात हो या जिसके विचार से कुछ किया जाय। २. वह जिससे दूसरे पदार्थ की संप्राप्ति हो। हेतु। निमित्त। प्रत्यय। ३. आदि। मूल। ४. साधन। ५. कर्म। ६. प्रमाण।

कारणमाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हेतुओं की श्रेणी। २. काव्य में एक अर्थालंकार जिसमें किसी कारण से उत्पन्न कार्य्य पुनः किसी अन्य कार्य्य का कारण होता हुआ वर्णन किया जाय।

कारणशरीर–संज्ञा पुं० [सं०] सुषुप्त अवस्था का वह कल्पित शरीर जिसमें इंद्रियों के विषय-व्यापार का तो अभाव रहता है, पर अहंकार आदि का संस्कार रह जाता है। (वेदांत)

कारतूस–संज्ञा पुं० [पुर्त० कार्टूश] गोली-बारूद भरी एक नली जिसे टोंटेवाली और रिवाल्वर बंदूकों में भरकर चलाते हैं।

कारन*–संज्ञा पुं० दे० "कारण"।

*संज्ञा स्त्री० [सं० कारुण्य] रोने का आर्त्त स्वर। कूक। करुण स्वर।

कारनिस–संज्ञा स्त्री० [अं०] दीवार की कँगनी। कगर।

कारनी–संज्ञा पुं० [सं० कारण] प्रेरक। संज्ञा पुं० [सं० कारीनि] भेद करानेवाला। भेदक। बुद्धि पलटनेवाला।

कारपरदाज़–वि० [फ़ा०] १. काम करनेवाला। कारकुन। २. प्रबंधकर्त्ता। कारिंदा।

कारपरदाज़ी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. दूसरे की ओर से किसी कार्य्य के प्रबंध करने का काम। २. कार्य्य करने की तत्परता।

कारबार–संज्ञा पुं० [फ़ा०] [वि० कारबारी] काम-काज। व्यापार। पेशा। व्यवसाय।

कारबारी–वि० [फ़ा०] कामकाजी। संज्ञा पुं० कारकुन। कारिंदा।

काररवाई–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. काम। कृत्य। करतूत। २. कार्य्य-तत्परता। कर्मण्यता। ३. गुप्त प्रयत्न। चाल।

कारवाँ–संज्ञा पुं० [फ़ा०] यात्रियों का झुंड।

कारसाज़–वि० [फ़ा०] [संज्ञा कारसाज़ी] बिगड़े काम को सँभालनेवाला। काम पूरा करने की युक्ति निकालनेवाला।

कारसाज़ी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. काम पूरा उतारने की युक्ति। २. गुप्त कार्रवाई। चालबाजी। कपट-प्रयत्न।

कारस्तानी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. कार-साज़ी। काररवाई। २. चालबाजी।

कारा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बंधन। क़ैद।

२ पीटा। मन्थन।
वि० *। दे० "काला"।
कारागार, कारागृह—सज्ञा पु० [स०] कैद-खाना। बदीगृह।
कारावास—सज्ञा पु० [स०] कैद।
कारिंदा—सज्ञा पु० [फा०] दूसरे की ओर से काम करनेवाला। कर्मचारी। गुमाश्ता।
कारिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ किसी सूत्र की श्लोकबद्ध व्याख्या। २ नट की स्त्री। नटी।
कारिख—सज्ञा स्त्री० दे० "कालिख"।
कारित—वि० [स०] कराया हुआ।
कारी—सज्ञा पु० [स० कारिन्] [स्त्री० कारिणी] करनेवाला। बनानेवाला।
वि० [फा०] घातक। मर्मभेदी।
कारीगर—सज्ञा पु० [फ़ा०] [सज्ञा कारीगरी] धातु, लकड़ी, पत्थर इत्यादि से सुदर वस्तुओं की रचना करनेवाला पुरुष। शिल्पकार।
वि० हाथ से काम बनाने में कुशल। निपुण। हुनरमद।
कारीगरी—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ अच्छे अच्छे काम बनाने की कला। निर्माणकला। २ सुदर बना हुआ काम। मनोहर रचना।
कारुणिक—वि० [स०] कृपालु। दयालु।
कारुण्य—सज्ञा पु० [स०] करुणा का भाव। दया। मेहरबानी।
कारूँ—सज्ञा पु० [अ०] हजरत मूसा का चचेरा भाई जो बड़ा धनी था, पर खैरात नही करता था।
यौ०—कारूँ का खजाना = अनत सपत्ति।
कारूरी—सज्ञा स्त्री० [?] घोड़ो की एक जाति।
कारूरा—सज्ञा पु० [अ०] १ कुप्पी शीशी जिसमें रोगी का मूत्र वैद्य को दिखाने के लिये रखा जाता है। २ मूत्र। पेशाब।
कारौछ—सज्ञा स्त्री० दे० "कालौछ"।
कारोबार—सज्ञा पु० दे० "कारबार"।
कार्तवीर्य—सज्ञा पु० [स०] कृतवीर्य का पुत्र सहस्रार्जुन।
कार्तिक—सज्ञा पु० [स०] एक चाद्र मास जो क्वार और अगहन के बीच में पड़ता है।
कार्तिकेय—सज्ञा पु० [स०] कृत्तिका नक्षत्र में उत्पन्न होनेवाले स्कदजी। षडानन।
कार्पण्य—सज्ञा पु० [स०] कृपणता। कजूसी।
कार्मण—सज्ञा पु० [स०] मत्र-तत्र आदि का प्रयोग।
कार्मना*—सज्ञा पु० [स० कार्मण] १ मत्र-तत्र का प्रयोग। कृत्या। २ मत्र। तत्र।
कार्मुक—सज्ञा पु० [स०] १ धनुष। २ परिधि का एक भाग। चाप। ३ इद्र-धनुष। ४ बाँस। ५ सफेद खैर। ६ बकायन। ७ धनु राशि। नवीं राशि।
कार्य—सज्ञा पु० [स०] १ काम। कृत्य। व्यापार। धधा। २ वह जो कारण का विकार हो अथवा जिसे लक्ष्य करके कर्ता किया करे। ३ फल। परिणाम।
कार्यकर्त्ता—सज्ञा पु० [स०] काम करने-वाला। कर्मचारी।
कार्य-कारण-भाव—सज्ञा पु० [स०] कार्य और कारण का सबध।
कार्यसम—सज्ञा पु० [स०] न्याय म चौबीस जातियो म से एक। इसमें प्रतिवादी, किसी कारण से उत्पन्न कार्य्य के सबध मे, वादी द्वारा कही हुई बात के खडन का प्रयत्न वैसे ही और कार्य्य बताकर करता है जिनमें वह बात नही पाई जाती।
कार्याधिकारी—सज्ञा पु० [स०] वह जिसके सुपुर्द किसी कार्य्य का प्रबध आदि हो।
कार्याध्यक्ष—सज्ञा पु० [स०] अफसर। मुख्य कार्य्यकर्त्ता।
कार्यार्थी—वि० [स०] कार्य की सिद्धि चाहनेवाला। कोई गरज रखनेवाला।
कार्यालय—सज्ञा पु० [स०] वह स्थान जहाँ कोई काम होता हो। दफ्तर। कारखाना।
कार्रवाई—सज्ञा स्त्री० दे० "काररवाई"।
कार्षापण—सज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन सिक्का।
काल—सज्ञा पु० [स०] १ वह सबध-सत्ता जिसके द्वारा भूत, भविष्य, वर्तमान आदि

की प्रतीति होती है। समय। वक्त। मुहा०—काल पाकर = कुछ दिनों के पीछे। २. अंतिम काल। नाश का समय। मृत्यु। ३. यमराज। यमदूत। ४. उपयुक्त समय। अवसर। मौका। ५. अकाल। महँगी। दुर्भिक्ष। ६. [स्त्री० काली] शिव का एक नाम। महाकाल।
वि० काला। काले रंग का।
*क्रि० वि० दे० "कल"।
कालकंठ—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव। महादेव। २. मोर। मयूर। ३. नीलकंठ पक्षी। ४. खंजन। सिड़रिच।
कालका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दक्ष प्रजापति की एक कन्या जो कश्यप को ब्याही थी।
कालकूट—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का अत्यंत भयंकर विष। काला बच्छ-नाग। २. सींगिया की जाति के एक पौधे की जड़ जिसपर चित्तियाँ होती हैं।
कालकेतु—संज्ञा पुं० [सं०] एक राक्षस।
कालकोठरी—संज्ञा स्त्री०[हिं०काल + कोठरी] १. जेलखाने की बहुत तंग और अँधेरी कोठरी जिसमें क़ैद-तनहाईवाले क़ैदी रखे जाते हैं। २. कलकत्ते के फ़ोर्ट विलियम नामक किले की एक तंग कोठरी जिसमें लोकापवाद के अनुसार सिराजुद्दौला ने बहुत से अँगरेज़ों को क़ैद किया था।
कालक्षेप—संज्ञा पुं० [सं०] १. दिन काटना। समय बिताना। व त। २. निर्वाह। गुज़र-बसर।
कालखंड—संज्ञा पुं० [सं०] परमेश्वर।
कालगंडेत—संज्ञा पुं० [हिं० काला + गंडा] वह विषधर साँप जिसके ऊपर काले गंडे या चित्तियाँ होती हैं।
कालचक्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. समय का हेर-फेर। ज़माने की गर्दिश। २. एक अस्त्र।
कालज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] १. समय के हेर-फेर को जाननेवाला। २. ज्योतिषी।
कालज्ञान—संज्ञा पुं० [सं०] १. स्थिति और अवस्था की जानकारी। २. मृ यु का समय जान लेना।
कालतुष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] सांख्य में एक तुष्टि। यह विचार कर संतुष्ट रहना कि जब समय आ जायगा, तब यह बात स्वयं हो जायगी।
कालदंड—संज्ञा पुं० [सं०] यमराज का दंड।
कालधर्म—संज्ञा पुं० [सं०] १. मृत्यु। विनाश। अवसान। २. वह व्यापार जिसका होना किसी विशेष समय पर स्वाभाविक हो। समयानुसार धर्म।
कालनिशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दिवाली की रात। २. अँधेरी भयावनी रात।
कालनेमि—संज्ञा पुं० [सं०] १. रावण का मामा एक राक्षस। २. एक दानव जिसने देवताओं को पराजित करके स्वर्ग पर अधिकार कर लिया था।
कालपाश—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह नियम जिसके कारण भूत-प्रेत कुछ समय तक के लिये कुछ अनिष्ट नहीं कर सकते। २. यमराज का बंधन। यमपाश।
कालपुरुष—संज्ञा पुं० [सं०] १. ईश्वर का विराट् रूप। २. काल।
कालबंजर—संज्ञा पुं० [सं० काल + हिं० बंजर] वह भूमि जो बहुत दिनों से बोई न गई हो।
कालबूत—संज्ञा पुं० [फ़ा० कालबुद] १. वह कच्चा भराव जिसपर मेहराब बनाई जाती है। छैना। २. चमारों का वह काठ का साँचा जिसपर चढ़ाकर वे जूता सीते हैं।
कालभैरव—संज्ञा पुं० [सं०] शिव के मुख्य गणों में से एक।
काल-यवन—संज्ञा पुं० [सं०] हरिवंश के अनुसार यवनों का एक राजा जिसने जरासंध के साथ मथुरा पर चढ़ाई की थी।
कालयापन—संज्ञा पुं० [सं०] कालक्षेप। दिन काटना। गुज़ारा करना।
कालराति*—संज्ञा स्त्री० दे० "कालरात्रि"।
कालरात्रि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अँधेरी और भयावनी रात। २. ब्रह्मा की रात्रि

जिसमें सारी सृष्टि लय को प्राप्त रहती है, केवल नारायण ही रहते हैं। प्रलय की रात। ३ मृत्यु की रात्रि। ४ दिवाली की अमावस्या। ५ दुर्गा की एक मूर्ति। ६ यमराज की बहिन जो सब प्राणियों का नाश करती है। ७ मनुष्य की आयु म वह रात जो सतहत्तरवें वर्ष के सातवें महीने के सातवें दिन पड़ती है और जिसके बाद वह नित्यकर्म आदि म मुक्त समझा जाता है।

कालवाचक, कालवाची–वि० [स०] समय का ज्ञान करानेवाला। जिसके द्वारा समय का ज्ञान हो।

काला–वि० [सं० काल] [स्त्री० काली] १ काजल या कोयले के रग का। स्याह। मुहा०—(अपना) मुँह काला करना = १.कुकर्म करना। पाप करना। २ व्यभिचार करना। अनुचित सह-गमन करना। ३ किसी बुरे आदमी का दूर होना। (दूसरे का) मुँह काला करना = १ किसी अरुचिकर या बुरी वस्तु अथवा व्यक्ति को दूर करना। व्यर्थ की झंझट दूर हटाना। २ कलंक का कारण होना। बदनामी का सबब होना। काला मुँह होना या मुँह काला होना = कलंकित होना। बदनाम होना। २ कलुषित। बुरा। ३ भारी। प्रचंड। मुहा०—काले कोसों = बहुत दूर।

संज्ञा पु० [स० काल] काला साँप।

काला कलूटा–वि० [हिं० काला + कलूटा] बहुत काला। अत्यत श्याम। (मनुष्य)

कालाक्षरी–वि० [स०] काले अक्षर मात्र का अर्थ बता देनेवाला। अत्यत विद्वान्।

कालाग्नि–संज्ञा पु० [स०] १ प्रलय काल की अग्नि। २ प्रलयाग्नि के अधिष्ठाता रुद्र।

काला चोर–संज्ञा पु० [स०] १ बहुत भारी चोर। २ बुरे से बुरा आदमी।

काला जीरा–संज्ञा पु० [हिं० काला + जीरा] स्याह जीरा। मीठा जीरा। पर्वत जीरा।

कालातीत–वि० [सं०] जिसका समय बीत गया हो।

संज्ञा पु० १ न्याय के पाँच प्रकार के हेत्वाभासों में से वह जिसमें अर्थ एक काल में ध्वंस से युक्त हो और इस कारण अगत् ठहरता हो। २ आधुनिक न्याय में एक प्रकार का बाध जिसमें साध्य के आधार में साध्य का अभाव निश्चित रहता है।

काला दाना–संज्ञा पु० [हिं० काला + दाना] १ एक प्रकार की लता जिसमें काले दाने निकलते हैं। २ इस लता का दाना या बीज जो अत्यत रेचक होता है।

काला नमक–संज्ञा पु० [हिं० काला + फा० नमक] सज्जी के योग से बना हुआ एक प्रकार का पाचक लवण। सोंचर।

काला नाग–संज्ञा पु० [हिं० काला + नाग] १ काला साँप। विषधर सर्प। २ अत्यत कुटिल या खोटा आदमी।

काला पहाड़–संज्ञा पु० [हिं० काला + पहाड़] १ बहुत भारी और भयानक। दुस्तर (वस्तु)। २ बहलोल लोदी का एक भांजा जो सिकंदर लोदी से लड़ा था। ३ मुरशिदाबाद के नवाब दाऊद का एक सेनापति जो बड़ा क्रूर और कट्टर मुसलमान था।

काला पानी–संज्ञा पु० [हिं० काला + पानी] १ बंगाल की खाड़ी के समुद्र में वह स्थान जहाँ का पानी अत्यत काला दिखाई पड़ता है। २ देश निकाले का दंड। जलावतनी की सजा। ३ एंडमन और निकोबार आदि द्वीप जहाँ देश निकाले के क़ैदी भेज जाते हैं। ४ शराब। मदिरा।

कालाभुजंग–वि० [हिं० काला + भुजंग] बहुत काला। घोर कृष्ण वर्ण का।

कालास्त्र–संज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का बाण जिसके प्रहार से शत्रु का निधन निश्चय समझा जाता था।

कालिंग–वि० [स० कलिंग] कलिंग देश का। संज्ञा पु० [स०] १ कलिंग देश का निवासी। २ कलिंग देश का राजा। ३ हाथी। ४ साँप। ५ तरबूज।

कालिंजर–संज्ञा पु० [स० कालंजर] एक पर्वत जो बाँदे से ३० मील पूर्व की ओर है और जिसका माहात्म्य पुराणों में है।

कालिंदी—सं० स्त्री० [सं०] १. कलिंद पर्वत से निकली हुई, यमुना नदी। २. कृष्ण की एक स्त्री। ३. एक वैष्णवसंप्रदाय।

कालि*—क्रि० वि० दे० "कल"।

कालिक—वि० [सं०] १. समय-संबंधी। समयोचित। २. जिसका कोई समय नियत हो।

कालिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. देवी की एक मूर्त्ति। चंडिका। काली। २. कालापन। कालिख। ३. बिछुआ नामक पौधा। ४. मेघ। घटा। ५. स्याही। मसि। ६. मदिरा। शराब। ७. आँख की काली पुतली। ८. रणचंडी।

कालिकापुराण—संज्ञा पुं० [सं०] एक उपपुराण जिसमें कालिका देवी के माहात्म्य आदि का वर्णन है।

कालिकाल*—क्रि० वि० [हिं० कालि + काल] कदाचित्। कभी। किसी समय।

कालिख—संज्ञा स्त्री० [सं० कालिका] वह काली बुकनी जो धुएँ के जमने से लग जाती है। कलौंछ। स्याही।

मुहा०—मुँह में कालिख लगना = बदनामी के कारण मुँह दिखलाने लायक न रहना।

कालिब—संज्ञा पुं० [अ०] १. टीन या लकड़ी का गोल ढाँचा जिसपर चढ़ाकर टोपियाँ दुरुस्त की जाती हैं। २. शरीर। देह।

कालिमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कालापन। २. कलौंछ। कालिख। ३. अँधेरा। ४. कलंक। दोष। लांछन।

कालिय—संज्ञा पुं० [सं०] एक सर्प जिसे कृष्ण ने वश में किया था।

काली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चंडी। कालिका। दुर्गा। २. पार्वती। गिरिजा। ३. दस महाविद्याओं में पहली महाविद्या।

कालीघटा—संज्ञा स्त्री० [हिं० काली + घटा] घने काले बादलों का समूह। कादंबिनी।

कालीजबान—संज्ञा स्त्री० [हिं० काली + फा० जबान] वह जबान जिससे निकली हुई अशुभ बातें सत्य घटा करें।

कालीजीरी—संज्ञा स्त्री० [सं० कर्णजीर, हिं० काला + जीरा] एक ओषधि जो एक पेड़ की बोंडी के झालदार बीज हैं।

कालीदह—संज्ञा पुं० [सं० कालिय + हिं० दह] वृंदावन में यमुना का एक दह या कुंड जिसमें काली नामक नाग रहा करता था।

कालीन—वि० [सं०] कालसंबंधी। जैसे—प्राक्कालीन, बहुकालीन।

कालीन—संज्ञा पुं० [अ०] मोटे तागों का बुना बहुत मोटा और भारी बिछावन जिसमें बेल-बूटे बने रहते हैं। गलीचा।

कालीमिर्च—संज्ञा स्त्री० [हिं० काली + मिर्च] गोल मिर्च।

कालीशीतला—संज्ञा स्त्री० [हिं० काली + सं० शीतला] एक प्रकार की शीतला या चेचक जिसमें काले दाने निकलते हैं।

कालौंछ—संज्ञा स्त्री० [हिं० काला + औंछ (प्रत्य०)] १. कालापन। स्याही। कालिख। २. धुएँ की कालिख। रहूँ।

काल्पनिक—संज्ञा पुं० [सं०] कल्पना करनेवाला।
वि० [सं०] कल्पित। मनगढ़ंत।

काल्ह†—क्रि० वि० दे० "कल"।

कावा—संज्ञा पुं० [फा०] घोड़े को एक वृत्त में चक्कर देने की क्रिया।

मुहा०—कावा काटना = १. वृत्त में दौड़ना। चक्कर खाना। २. आँख बचाकर दूसरी ओर निकल जाना। कावा देना = चक्कर देना।

काव्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह वाक्य या वाक्यरचना जिससे चित्त किसी रस या मनोवेग से पूर्ण हो। २. वह पुस्तक जिसमें कविता हो। काव्य का ग्रंथ। ३. रोला छंद का एक भेद।

काव्यलिंग—संज्ञा पुं० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें किसी कही हुई बात का कारण वाक्य के अर्थ द्वारा या पद के अर्थ द्वारा दिखाया जाय।

काव्यार्थापत्ति—संज्ञा पुं० [सं०] अर्थापत्ति अलंकार।

काश—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार की घास। काँस। २. खाँसी।

काशिका–वि० स्त्री० [सं०] १ प्रकाश करने-वाली। २ प्रकाशित। प्रदीप्त।
संज्ञा स्त्री० १ काशी पुरी। २ जयादित्य और वामन की बनाई हुई पाणिनीय व्याकरण पर एक वृत्ति।

काशी-करवट–संज्ञा पुं० [सं० काशी+सं० करपत्र] काशीस्थ एक तीर्थस्थान जहाँ प्राचीन काल में लोग आरे के नीचे कटकर अपना प्राण देना बहुत पुण्य समझते थे।

काशीफल–संज्ञा पुं० [सं० कोशफल] कुम्हड़ा।

काश्त–संज्ञा स्त्री० [फा०] १ खेती। कृषि। २ जमींदार को कुछ वार्षिक लगान देकर उसकी जमीन पर खेती करने का स्वत्व।

काश्तकार–संज्ञा स्त्री० [फा०] १ किसान। कृषक। खेतिहर। २ वह जिसने जमींदार को लगान देकर उसकी जमीन पर खेती करने का स्वत्व प्राप्त किया हो।

काश्तकारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १ खेती बारी। किसानी। २ काश्तकार का हक।

काश्मरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] गंभारी का पेड़।

काश्मीर–संज्ञा पुं० [सं०] १ एक देश का नाम। दे० 'कश्मीर'। २ कश्मीर का निवासी। ३ केसर।

काश्मीरा–संज्ञा पुं० [सं० काश्मीर] एक प्रकार का मोटा ऊनी कपड़ा।

काश्मीरी–वि० [सं० काश्मीर+ई (प्रत्य०)] १ कश्मीर देश-संबंधी। २ कश्मीर देश का निवासी।

काश्यप–वि० [सं०] कश्यप प्रजापति के वंश या गोत्र का। कश्यप-संबंधी।

काषाय–वि० [सं०] १ हड़ बहेड़े आदि कसैली वस्तुओं में रँगा हुआ। २ गेरुआ।

काष्ठ–संज्ञा पुं० [सं०] १ लकड़ी। काठ। २ इंधन।

काष्ठा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हद। अवधि। २ उच्चतम चोटी या ऊँचाई। उत्कर्ष। ३ अठारह पल का समय या एक कला का ३०वाँ भाग। ४ चंद्रमा की एक कला। ५ दिशा। ओर। तरफ।

कास–संज्ञा पुं० [सं०] खाँसी।
संज्ञा पुं० [सं० काश] काँस।

कासनी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १ एक पौधा जिसकी जड़, डंठल और बीज दवा के काम में आते हैं। २ कासनी का बीज। ३ एक प्रकार का नीला रंग जो कासनी के फूल के रंग के समान होता है।

कासा–संज्ञा पुं० [फा०] १ प्याला। कटोरा। २ आहार। भोजन। ३ दरियाई नारियल का बरतन जो फकीर रखते हैं।

कासार–संज्ञा पुं० [सं०] १ छोटा ताल। तालाव। २ २० रगण का एक दंडक वृत्त। ३ दे० 'कसार'।

कासिद–संज्ञा पुं० [अ०] सँदेसा ले जानेवाला। हरकारा। पत्रवाहक।

काहे*–प्रत्य० दे० 'कहँ'।

काह*–क्रि० वि० [सं० क, का] क्या? कौन वस्तु?

काहि*–सर्व० [हिं० (प्रत्य०)] १ किसको? किसे? २ किसने?

काहिल–वि० [अ०] आलसी। सुस्त।

काहिली–संज्ञा स्त्री० [अ०] सुस्ती। आलस्य।

काही–वि० [फा० काह या हिं० काई] घास के रंग का। कालापन लिए हुए हरा।

काहु*–सर्व० दे० 'काहू'।

काहू–सर्व० [हिं० का+हू (प्रत्य०)] किसी।
संज्ञा पुं० [फा०] गोभी की तरह का एक पौधा जिसके बीज दवा के काम आते हैं।

काहे*–क्रि० वि० [सं० कथ प्रा० कह] क्या? किस लिये?
यौ०—काहे को=किस लिये? क्यों?

किं–अव्य० दे० 'किम्'।

किंकर–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० किंकरी] १ दास। २ राक्षसों की एक जाति।

किं-कर्तव्य विमूढ़–वि० [सं०] जिसे यह न सूझ पड़े कि अब क्या करना चाहिए। हक्का-बक्का। भौचक्का। घबराया हुआ।

किंकिणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ क्षुद्रघंटिका। २ करधनी। जेहर। कमरकस।

किंगरी–संज्ञा स्त्री० [सं० किन्नरी] छोटा चिकारा। छोटी सारंगी जिसे बजाकर

जोगी भीख माँगते हैं।

किंचन–संज्ञा पुं० [सं०] थोड़ी वस्तु।

किंचित्–वि० [सं०] कुछ। थोड़ा। यौ०–किंचिन्मात्र=थोड़ा भी। थोड़ा ही। क्रि० वि० कुछ। थोड़ा।

किंजल्क–संज्ञा पुं० [सं०] १. पद्मकेसर। कमल का केसर। २. कमल। ३. कमल के फूल का पराग। ४ नागकेसर। वि० [सं०] कमल के केसर के रंग का।

किंतु–अव्य० [सं०] १. पर। लेकिन। परन्तु। २. वरन्। बल्कि।

किंपुरुष–संज्ञा पुं० [सं०] १. किन्नर। २. दोगला। वर्णसंकर। ३. प्राचीन काल की एक मनुष्य जाति।

किंवदंती–संज्ञा स्त्री० [सं०] अफ़वाह। उड़ती खबर। जनरव।

किंवा–अव्य० [सं०] या। या तो। अथवा।

किंशुक–संज्ञा पुं० [सं०] १. पलाश। ढाक। टेसू। २. तुन का पेड़।

कि–सर्व० [सं० किम्] क्या? किस प्रकार? अव्य० [सं० किम्। फा० कि] १. एक संयोजक शब्द जो कहना, देखना, इत्यादि कुछ क्रियाओं के बाद उनके विषय-वर्णन के पहले आता है। २. तत्क्षण। इतने में। ३. या। अथवा।

किकियाना–क्रि० अ० [अनु०] १. की की या के के का शब्द करना। २. रोना।

किचकिच–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. व्यर्थ का वाद-विवाद। बकवाद। २. झगड़ा।

किचकिचाना–क्रि० अ० [अनु०] १. (क्रोध से) दाँत पीसना। २. भरपूर बल लगाने के लिये दाँत पर दाँत रखकर दबाना। ३. दाँत पर दाँत रखकर दबाना।

किचकिचाहट–संज्ञा स्त्री० [हिं० किचकिचाना] किचकिचाने का भाव।

किचकिची–संज्ञा स्त्री० [हिं० किचकिचाना] किचकिचाहट। दाँत पीसने की अवस्था।

किचड़ाना–क्रि० अ० [हिं० कीचड़+आना (प्रत्य०)] (आँख का) कीचड़ से भरना।

किछु*†–वि० दे० "कुछ"।

किटकिट–संज्ञा स्त्री० [अनु०] किचकिच।

किटकिटाना–क्रि० अ० [सं० किटकिटाय। अनु०] १. क्रोध से दाँत पीसना। २. दाँत के नीचे कंकड़ की तरह कड़ा लगना।

किटकिना–संज्ञा पुं० [सं० कृतक] १. वह दस्तावेज जिसके द्वारा ठेकेदार अपने ठीके की चीज का ठेका दूसरे असामियों को देता है। २. चाल। चालाकी।

किटकिनादार–संज्ञा पुं० [हिं० किटकिना+फा० दार (प्रत्य०)] वह पुरुष जो किसी वस्तु को ठेकेदार से ठेके पर ले।

किट्ट–संज्ञा पुं० [सं०] १. धातु की मैल। २. तेल आदि में नीचे बैठी हुई मैल।

कित*†–क्रि० वि० [सं० कुत्र] १. कहाँ। २. किस ओर। किधर। ३. ओर। तरफ़।

कितक*†–वि०, क्रि० वि० [सं० कियत्] कितना। किस क़दर।

कितना–वि० [सं० कियत्] [स्त्री० कितनी] १. किस परिमाण, मात्रा या संख्या का? (प्रश्नवाचक)। २. अधिक। बहुत। क्रि० वि० १. किस परिमाण या मात्रा में? कहाँ तक? २. अधिक। बहुत ज्यादा।

कितव–संज्ञा पुं० [सं०] १. जुआरी। २. धूर्त। छली। ३. पागल। ४. दुष्ट।

किता–संज्ञा पुं० [अ०] १. सिलाई के लिये कपड़े की काट-छाँट। ब्योंत। २. ढंग। चाल। ३. संख्या। अदद। ४. विस्तार का एक भाग। सतह का हिस्सा। ५ प्रदेश। प्रांगण। भूभाग।

किताब–संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० किताबी] १. पुस्तक। ग्रंथ। २. रजिस्टर। बही। मुहा०–किताबी कीड़ा=वह व्यक्ति जो सदा पुस्तक पढ़ता रहता हो। किताबी चेहरा=वह चेहरा जिसकी आकृति लंबाई लिए हो।

किताबी–वि० [अ० किताब] किताब के आकार का।

कितिक*†–वि० दे० "कितक", "कितना"।

कितेक*†–वि० [सं० कियदेक] १. कितना। २. असंख्य। बहुत।

कितै†*–अव्य० दे० "कित"।
कितो*†–वि० [सं० कियत्] [स्त्री० कित्ती] कितना।
क्रि० वि० कितना।
कित्ति*–संज्ञा स्त्री० [सं० कीर्त्ति, प्रा० कित्ति] कीर्त्ति। यश।
किधर–क्रि० वि० [सं० कुत्र] किस ओर, किस तरफ?
किधौं*–अव्य० [सं० किम्] अथवा। या। या तो। न जाने।
किन–सर्व० 'किस' का बहुवचन।
क्रि० वि० [सं० किम् + न] क्यों न। चाहे।
संज्ञा पु० [सं० किण] चिह्न। दाग।
किनका–संज्ञा पुं० [सं० कणिक] [स्त्री० अल्पा० किनकी] १ अन्न का टूटा हुआ दाना। २. चावल आदि की खुद्दी।
किनकानी–संज्ञा स्त्री० [सं० कण + हिं० पानी] छोटी छोटी बूँदों की झड़ी। फुही।
किनहा†–वि० [सं० कर्णक, प्रा० कण्णअ + हा (प्रत्य०)] (फल) जिसमें कीड़े पड़े हों। कना।
किनार*–संज्ञा पु० दे० "किनारा"।
किनारदार–वि० [फा० किनारा + दार] (कपड़ा) जिसमें किनारा बना हो।
किनारा–संज्ञा पु० [फा०] १. अधिक लंबाई और कम चौड़ाईवाली वस्तु के वे दोनों भाग जहाँ से चौड़ाई समाप्त होती हो। लंबाई के बल की कोर। २ नदी या जलाशय का तट। तीर।
मुहा०–किनारे लगना = (किसी कार्य्य का) समाप्ति पर पहुँचना। समाप्त होना।
३ लंबाई चौड़ाईवाली वस्तु के चारों ओर का वह भाग जहाँ से उसके विस्तार का अंत होता हो। प्रांत। भाग। ४ [स्त्री० किनारी] कपड़े आदि में किनारे पर का वह भाग जो भिन्न रंग या बुनावट का होता है। हाशिया। गोट। ५ किसी ऐसी वस्तु का सिरा या छोर जिसमें चौड़ाई न हो। ६ पार्श्व। बगल।
मुहा०—किनारा खींचना = दूर होना। हटना। किनारे न जाना = अलग रहना। बचना। किनारे बैठना, रहना या होना = अलग होना। छोड़कर दूर हटना।
किनारी–संज्ञा स्त्री० [फा० किनारा] सुनहला या रुपहला पतला गोटा जो कपड़ों के किनारे पर लगाया जाता है।
किनारे–क्रि० वि० [हिं० किनारा] १. कोर या बाढ़ पर। २ तट पर। ३. अलग।
किन्नर–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० किन्नरी] १. एक प्रकार के देवता जिनका मुख घोड़े के समान होता है। २ गाने-बजाने का पेशा करनेवाली एक जाति।
किन्नरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ किन्नर की स्त्री। २ किन्नर जाति की स्त्री।
संज्ञा स्त्री० [सं० किन्नरी वीणा] १. एक प्रकार का तंबूरा। २ किंगरी। सारंगी।
किफायत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ काफी या अलम् होने का भाव। २ कमखर्ची। थोड़े में काम चलाना। ३ बचत।
किफायती–वि० [अ० किफायत] कम खर्च करनेवाला। सँभालकर खर्च करनेवाला।
किबला–संज्ञा पु० [अ०] १. पश्चिम दिशा जिस ओर मुख करके मुसलमान लोग नमाज पढ़ते हैं। २ मक्का। ३ पूज्य व्यक्ति। ४ पिता। बाप।
किबलानुमा–संज्ञा पु० [फा०] पश्चिम दिशा को बतानेवाला एक यंत्र जिसका व्यवहार जहाजों पर अरब के मल्लाह करते थे।
किम्–वि० सर्व० [सं०] १ क्या? २ कौन सा?
यौ०—किमपि = कोई भी। कुछ भी।
किमाछ–संज्ञा पु० दे० "केवाँच"।
किमाम–संज्ञा पु० [अ० किवाम] शहद के समान गाढ़ा किया हुआ शरबत। खमीर।
किमाश–संज्ञा पु० [अ०] १ तर्ज। ढंग। वजा। २ गंजीफे का एक रंग। ताज।
किमि*–क्रि० वि० [सं० किम्] कैसे? किस प्रकार? किस तरह?
किम्मत†–संज्ञा स्त्री० [अ० हिकमत] युक्ति। होशियारी।

कियत्–वि० [सं०] कितना।
कियारी–संज्ञा स्त्री० [सं० केदार] १. खेतों या बगीचों में थोड़े थोड़े अंतर पर पतली मेड़ों के बीच की भूमि जिसमें पौधे लगाए जाते हैं। क्यारी। २. खेतों के वे विभाग जो सिंचाई के लिये नालियों के द्वारा बनाये जाते हैं। ३. वह बड़ा कड़ाह जिसमें समुद्र का खारा पानी नमक नीचे बैठने के लिये भरते हैं।
कियाह–संज्ञा पुं० [सं०] लाल रंग का घोड़ा।
किरंटा–संज्ञा पुं० [अं० क्रिश्चियन] छोटे दरजे का क्रिस्तान। केरानी। (तुच्छ)
किरका–संज्ञा पुं० [सं० कर्कट=ककड़ी] छोटा टुकड़ा। कंकड़। किरकिरी।
किरकिरा–वि० [सं० कर्कट] कँकरीला। कंकड़दार। जिसमें महीन और कड़े रवे हों। मुहा०–किरकिरा हो जाना=रंग में भंग हो जाना। आनंद में विघ्न पड़ना।
किरकिराना–क्रि० अ० [हिं० किरकिरा] १. किरकिरी पड़ने की सी पीड़ा करना। २. दे० "किटकिटाना"।
किरकिराहट–संज्ञा स्त्री० [हिं० किरकिरा + हट (प्रत्य०)] १. आँख में किरकिरी पड़ जाने की सी पीड़ा। २. दाँत के नीचे कँकरीली वस्तु के पड़ने का शब्द। ३. किटकिटापन। कंकरीलापन।
किरकिरी–संज्ञा स्त्री० [सं० कर्कर] १. धूल या तिनके आदि का कण जो आँख में पड़कर पीड़ा उत्पन्न करता है। २. अपमान। हेटी।
किरकिल–संज्ञा पुं० [सं० कृकलास] गिरगिट। *संज्ञा स्त्री० दे० "कृकल"।
किरच–संज्ञा स्त्री०[सं० कृति=कैंची (अस्त्र)] १. एक प्रकार की सीधी तलवार जो नोक के बल सीधी भोंकी जाती है। २. छोटा नुकीला टुकड़ा (जैसे काँच आदि का)।
किरण–संज्ञा स्त्री० [सं०] किरन।
किरणमाली–संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य्य।
किरन–संज्ञा स्त्री० [सं० किरण] १. ज्योति की अति सूक्ष्म रेखाएँ जो प्रवाह के रूप में सूर्य्य, चंद्र, दीपक आदि प्रज्वलित पदार्थों से निकलकर फैलती हुई दिखाई पड़ती हैं। रोशनी की लकीर। मुहा०–किरन फूटना=सूर्योदय होना। २. कलावतून या बादले की बनी झालर।
किरपा*‡–संज्ञा स्त्री० दे० "कृपा"।
किरपान*–संज्ञा पुं० दे० "कृपाण"।
किरम–संज्ञा पुं० [सं० कृमि] १. दे० "किरिमदाना"। २. कीट। कीड़ा।
किरमाल*†–संज्ञा पुं० [सं० करवाल] तलवार। खड्ग।
किरमिच–संज्ञा पुं० [अं० कैनवस] एक प्रकार का महीन टाट सा मोटा विलायती कपड़ा जिससे परदे, जूते, बैग आदि बनते हैं।
किरमिज–संज्ञा पुं० [सं० कृमि + ज] [वि० किरमिजी] १. एक प्रकार का रंग। हिरमजी। दे० "किरिमदाना"। २. मटमैलापन लिए करौंदिया रंग का घोड़ा।
किरमिजी–वि० [सं० कृमिज] किरमिज के रंग का। मटमैलापन लिए हुए करौंदिया।
किरराना–क्रि० अ० [अनु०] १. क्रोध से दाँत पीसना। २. किर्रकिर्र शब्द करना।
किरवार*–संज्ञा पुं० दे० "करवाल"।
किरवारा*†–संज्ञा पुं० [सं० कृतमाल] अमलतास।
किरांची–संज्ञा स्त्री० [अं० कैरेज] १. वह बैलगाड़ी जिसपर अनाज, भूसा आदि लादा जाता है। २. माल-गाड़ी का डब्बा।
किरात–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० किरातिनी, किरातिन, किराती] १. एक प्राचीन जंगली जाति। २. हिमालय के पूर्वीय भाग तथा उसके आस-पास के देश का प्राचीन नाम।
किरात–संज्ञा स्त्री० [अ० केरात] जवाहरात की एक तौल जो लगभग ४ जौ के बराबर होती है।
किराना–संज्ञा पुं० दे० "केराना"। क्रि० स० दे० "केराना"।
किरानी–संज्ञा पुं० दे० "केरानी"।
किराया–संज्ञा पुं० [अ०] वह दाम जो

दूसरे की कोई वस्तु काम में लाने के बदले में उसके मालिक को दिया जाय। भाड़ा।
किरायेदार–संज्ञा पुं० [फा० किरायादार] कुछ दाम देकर किसी दूसरे की वस्तु कुछ काल तक काम में लानेवाला।
किरावल–संज्ञा पुं० [तु० करावल] १ वह सेना जो लड़ाई का मैदान ठीक करने के लिये आगे जाय। २ बंदूक से शिकार करनेवाला आदमी।
किरासन–संज्ञा पुं० [अं० केरोसिन] केरोसिन तेल। मिट्टी का तेल।
किरिच–संज्ञा स्त्री० दे० "किरच"।
किरिन†–संज्ञा स्त्री० दे० "किरण"।
किरिम–संज्ञा पुं० दे० "कृमि"।
किरिमदाना–संज्ञा पुं० [सं० कृमि + हिं० दाना] किरमिज नामक कीड़ा जो लाख की तरह थूहर के पेड़ लगता है और सुखा कर रँगने के काम में आता है।
किरिया*†–संज्ञा स्त्री० [सं० क्रिया] १ शपथ। सौगंध। कसम। २ कर्त्तव्य। काम। ३ मृत व्यक्ति के हेतु श्राद्धादि कर्म। मृतकर्म।
यौ०–किरिया करम=क्रियाकर्म। मृतकर्म।
किरीट–संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का शिरोभूषण जो माथे में बाँधा जाता था। २ आठ भगण का एक वर्ण-वृत्त या सवैया।
किरोलना–क्रि० स० [सं० कर्त्तन] करोदना। खुरचना।
किच*–संज्ञा स्त्री० दे० "किरच"।
किर्मिज–संज्ञा पुं० [सं० कृमिज] १ एक प्रकार का रंग। किरमिजी। दे० "किरिमदाना"। २ किरमिजी रंग का घोड़ा।
किल–अव्य० [सं०] निश्चय। सचमुच।
किलक–संज्ञा स्त्री० [हिं० किलकना] १ किलकने या हर्षध्वनि करने की क्रिया। २ हर्षध्वनि। किलकार।
संज्ञा स्त्री० [फा० किलक] एक प्रकार का नरकट जिसकी कलम बनती है।
किलकना–क्रि० अ० [सं० किलकिला] किलकार मारना। हर्षध्वनि करना।
किलकार–संज्ञा स्त्री० [हिं० किलक] हर्षध्वनि।
किलकारी–संज्ञा स्त्री० [हिं० किलक] हर्षध्वनि।
किलकिंचित–संज्ञा पुं० [सं०] संयोग शृंगार के ११ हावों में से एक जिसमें नायिका एक साथ कई भाव प्रकट करती है।
किलकिला–संज्ञा स्त्री० [सं०] हर्षध्वनि। आनंद-सूचक शब्द। किलकारी।
संज्ञा पुं० [सं० कृकल] मछली खानेवाली एक छोटी चिड़िया।
संज्ञा पुं० [अनु०] समुद्र का वह भाग जहाँ की लहर भयंकर शब्द करती हो।
किलकिलाना–क्रि० अ० [हिं० किलकिला] १ आनंद-सूचक शब्द करना। हर्षध्वनि करना। २ चिल्लाना। हल्लागुल्ला करना। ३ वाद विवाद करना। झगड़ा करना।
किलकिलाहट–संज्ञा स्त्री० [हिं० किलकिलाना] किलकिलाने का शब्द या भाव।
किलना–क्रि० अ० [हिं० कील] १ कीलन होना। कीला जाना। २ वश में किया जाना। ३ गति का अवरोध होना।
किलनी–संज्ञा स्त्री० [सं० कीट, हिं० कीड़ा] पशुओं के शरीर में चिमटनेवाला एक कीड़ा। किल्ली।
किलबिलाना–क्रि० अ० दे० "कुलबुलाना"।
किलवाँक–संज्ञा पुं० [देश०] काबुल देश का एक प्रकार का घोड़ा।
किलवाना–क्रि० स० [हिं० किलना का प्र० रूप] १ कील लगवाना या जड़वाना। २ तंत्र या मंत्र द्वारा किसी भूत प्रेत के विघ्नकारी कृत्य को रोकवा देना।
किलवारी†–संज्ञा स्त्री० [सं० कर्ण] १ पतवार। कन्ना। २ छोटा डाँड़ा।
किलहँटा–संज्ञा पुं० [देश०] सिरोही पक्षी।
किला–संज्ञा पुं० [अ०] लड़ाई के समय बचाव का एक सुदृढ़ स्थान। दुर्ग। गढ़।
यौ०–किलेदार = दुर्गपति। गढ़पति।
किलाना–क्रि० स० दे० 'किलवाना'।
किलाबंदी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १ दुर्ग-निर्माण। २ व्यूह-रचना।

किलावा–संज्ञा पुं० [फ़ा० कलावा] हाथी के गले में पड़ा हुआ रस्सा जिसमें पैर फँसा-कर महावत उसे चलाता है।
किलिक–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] एक प्रकार का नरकट जिसकी क़लम बनती है।
किलोल†–संज्ञा पुं० दे० "कलोल"।
किल्लत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. कमी। न्यूनता। २. संकोच। तंगी।
किल्ला–संज्ञा पुं० [हिं० कील] बहुत बड़ी कील या मेख। खूँटा।
किल्ली–संज्ञा स्त्री० [हिं० कील] १. कील। खूँटी। मेख। २. सिटकिनी। बिल्ली। ३. किसी कल या पेंच की मुठिया जिसे घुमाने से वह चले।
मुहा०–किसी की किल्ली किसी के हाथ में होना=किसी का वश किसी पर होना। किसी कीचाल किसीकेहाथमेंहोना। किल्लीघुमाना या ऐंठना = दाँव चलाना। युक्ति लगाना।
किल्विष–संज्ञा पुं० [सं०] १. पाप। अप-राध। दोष। २. रोग।
किवाँच–संज्ञा पुं० दे० "केवाँच"।
किवाड़–संज्ञा पुं० [सं० कपाट] [स्त्री० किवाडी] लकड़ी का पल्ला जो द्वार बंद करने के लिये चौखट में जड़ा रहता है। पट। कपाट।
किशमिश–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] [वि० किश-मिशी] सुखाया हुआ छोटा बेदाना अंगूर।
किशमिशी–वि० [फ़ा०] १. जिसमें किश-मिश हो। २. किशमिश के रंग का। संज्ञा पुं० एक प्रकार का अमौआ रंग।
किशलय–संज्ञा पुं० [सं०] नया निकला हुआ पत्ता। कोमल पत्ता। कल्ला।
किशोर–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० किशोरी] १. ग्यारह से १५ वर्ष तक की अवस्था का बालक। २. पुत्र। बेटा।
किश्त–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] शतरंज के खेल में बादशाह का किसी मोहरे के घात में पड़ना। शह।
किश्ती–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० क़श्ती] १. नाव। २. एक प्रकार की छिछली थाली या तश्तरी। ३. शतरंज का एक मोहरा। हाथी।
किश्तीनुमा–वि० [फ़ा०] नाव के आकार का। जिसके दोनों किनारे धन्वाकार होकर दोनों छोरों पर कोना डालते हुए मिलें।
किष्किंध–संज्ञा पुं० [सं०] मैसूर के आस-पास के देश का प्राचीन नाम।
किष्किंधा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. किष्किंध पर्वतश्रेणी। २. किष्किंधा पर्वत की गुफा।
किस–सर्व० [सं० कस्य] 'कौन' और 'क्या' का वह रूप जो उन्हें विभक्ति लगने के पहले प्राप्त होता है।
किसब*–संज्ञा पुं० दे० "कसब"।
किसबत–संज्ञा स्त्री० [अ०] वह थैली जिसमें नाई अपने उस्तरे, कैंची आदि रखते हैं।
किसमत–संज्ञा स्त्री० दे० "क़िस्मत"।
किसमी*–संज्ञा पुं० [अ० कसबी] श्रम-जीवी। कुली। मजदूरा।
किसलय–संज्ञा पुं० दे० "किशलय"।
किसान–संज्ञा पुं० [सं० कृषाण, प्रा० किसान] कृषि या खेती करनेवाला। खेतिहर।
किसानी–संज्ञा स्त्री० [हिं० किसान] खेती। कृषिकर्म। किसान का काम।
किसी–सर्व० वि० [हिं० किस + ही] "कोई" का वह रूप जो उसे विभक्ति लगने से पहले प्राप्त होता है। जैसे—किसी ने।
किसु*–सर्व० दे० "किसी"।
क़िस्त–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. कई बार करके ऋण या देना चुकाने का ढंग। २. किसी ऋण या देने का वह भाग जो किसी निश्चित समय पर दिया जाय।
क़िस्तबंदी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] थोड़ा थोड़ा करके रुपया अदा करने का ढंग।
क़िस्तवार–क्रि० वि० [फ़ा०] १. किस्त के ढंग से। किस्त करके। २. हर किस्त पर।
क़िस्म–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. प्रकार। भेद। भाँति। तरह। २. ढंग। तर्ज। चाल।
क़िस्मत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. प्रारब्ध। भाग्य। नसीब। करम। तकदीर।
मुहा०–किस्मत आजमाना=किसी कार्य को हाथ में लेकर देखना कि उसमें सफलता होती

कुजरी] १ हाथी।
मुहा०—कुजरा या नरो या, कुजरो नरा = हाथी या मनुष्य। दवे या कृष्ण। अनिश्चित या दुवधा की वात।
२ बाल। केश। ३ अजना के पिता और हनुमान् के नाना का नाम। ४ छप्पय के इक्कीसवे भेद का नाम। ५ पाँच मात्राओं के छदो के प्रस्तार म पहला प्रस्तार।
६ आठ की सख्या।
वि० श्रेष्ठ। उत्तम। जैसे–पुरुष-कुजर।
कुंजबिहारी–सज्ञा पु० [स०] श्रीकृष्ण।
कुंजी–सज्ञा स्त्री० [स० कुचिका] १ चाभी। ताली।
मुहा०—(किसी की) कुजी हाथ में होना = किसी का वस में होना।
२ वह पुस्तक जिससे किसी दूसरी पुस्तक का अर्थ खुले। टीका।
कुंठ–वि० [स०] १ जो चोखा या तीक्ष्ण न हो। कुठला। कुद। २ मूर्ख।
कुंठित–वि० [स०] १ जिसकी धार चोखी या तीक्ष्ण न हो। कुद। गुठला। २ मद। बकाम। निकम्मा।
कुंड–सज्ञा पु० [स०] १ चौडे मुँह का एक गहरा बर्तन। कुडा। २ प्राचीन काल का एक मान जिससे अनाज नापा जाता था। ३ बहुत छोटा तालाब। ४ पृथिवी म खोदा हुआ गड्ढा अथवा धातु आदि का बना हुआ पात्र, जिसमें आग जलाकर अग्निहोत्रादि करते हैं। ५ बटलोई। स्थाली। ६ ऐसी स्त्री का जारज लडका जिसका पति जीता हो। ७ पूला। गठठा। ८ लोहे का टोप। कूँड। खोद। ९ हौदा।
कुँडरा–सज्ञा पु० [स० कुड] कुडा। मटका।
कुडल–सज्ञा पु० [स०] १ सोने चाँदी आदि का बना हुआ कान का एक मडलाकार आभूषण। बाली। मुरकी। २ एक गोल आभूषण जिसे गोरखनाथ के अनुयायी कनफटे कानों म पहनते हैं। ३ कोई मडलाकार आभूषण। जैसे—कडा, चूडा आदि। ४ रस्सी आदि का गोल फंदा। ५ गोल या वह गोल मेंडरा जो मोट या चरस के मुँह पर लगाया जाता है। मगरा। मेंडरी। ६ किसी लबी लचीली वस्तु की कई गोल फेरों में सिमटने की स्थिति। फेंटी। मडल। ७ वह मडल जो कुहरे या बदली में चद्रमा या सूर्य के किनारे दिखाई पडता है। ८ छद म वह मात्रिक गण जिसमें दो मात्राएँ हो, पर एक ही अक्षर हो। ९ बाईस मात्राओ का एक छद।
कुडलाकार–वि० [स०] वर्तुलाकार। गोल। मडलाकार।
कुडलिका–सज्ञा स्त्री० [स०] १ मडलाकार रेखा। २ कुडलिया छद।
कुडलिनी–सज्ञा स्त्री० [स०] १ तत्र और उसके अनुयायी हठयोग के अनुसार एक कल्पित वस्तु जो मूलाधार में सुषुम्ना नाडी की जड के नीचे मानी गई है। २ जलेबी या इमरती नाम की मिठाई।
कुडलिया–सज्ञा स्त्री० [स० कुडलिका] एक मात्रिक छद जो दोहे और एक रोला के योग से बनता है।
कुडली–सज्ञा स्त्री० [स०] १ जलेबी। २ कुडलिनी। ३ गुडुचि। गिलोय। ४ जन्मकाल के ग्रहो की स्थिति बतानेवाला एक चक्र जिसम बारह घर होते है। ५ गेंडुरी। इँडुवा। ६ साँप के बैठने की मुद्रा।
सज्ञा पु० [स० कुडलिन्] १ साँप। २ वरुण। ३ मोर। ४ विष्णु।
कुडा–सज्ञा पु० [स० कुड] मिट्टी का चौडे मुँह का एक बहुत बडा गहरा बरतन। बडा मटका। कछरा।
सज्ञा पु० [स० कुडल] दरवाजे की चौखट में लगा हुआ कोढा जिसमें साँकल फँसाई जाती है और ताला लगाया जाता है।
कुडिनपुर–सज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन नगर जो विदर्भ देश मे था।
कुडी–सज्ञा स्त्री० [स० कुड] पत्थर या मिट्टी

का घटोरे के आकार का बरतन जिसमें दही, चटनी आदि रखते हैं।
संज्ञा स्त्री०[हिं०कुंडा] १. जंजीर की कड़ी। २ किवाड़ में लगी हुई साँकल।
कुंत–संज्ञा पुं०[सं०] १. गवेधुक। कोड़िल्ला २. भाला। बरछी। ३. जूँ। ४. क्रूर भाव। अनग।
कुंतल–संज्ञा पुं० [सं०] १. सिर के बाल। केश। २. प्याला। चुक्कड़। ३. जौ। ४. हल। ५. एक देश का नाम जो कोंकण और बरार के बीच में था। ६. वेष बदलनेवाला पुरुष। बहुरुपिया।
कुंता*†–संज्ञा स्त्री० दे० "कुंती"।
कुंतिभोज–संज्ञा पुं० [सं०] एक राजा जिसने कुंती या पृथा को गोद लिया था।
कुंती–संज्ञा स्त्री० [सं०] युधिष्ठिर, अर्जुन और भीम की माता। पृथा।
संज्ञा स्त्री० [सं० कुंत] बरछी। भाला।
कुंथना–क्रि० अ० [हिं० कूंथना] मारा पीटा जाना।
कुंद–संज्ञा पुं० [सं०] १. जूही की तरह का एक पौधा जिसमें सफ़ेद फूल लगते हैं। २. कनेर का पेड़। ३. कमल। ४. कुंदुर नाम का गोंद। ५. एक पर्वत का नाम। ६. कुबेर की नौ निधियों में से एक। ७. नौ की संख्या। ८. विष्णु।
वि० [फा०] १. कुंठित। गुठला। २. स्तब्ध। मंद।
यौ०—कुंदजेहन = मंदबुद्धि।
कुंदन–संज्ञा पुं० [सं० कुंद] १. बहुत अच्छे और साफ़ सोने का पतला पत्तर जिसे लगाकर जड़िए नगीने जड़ते हैं। २. बढ़िया या खालिस सोना।
वि० १. कुंदन के समान चोखा। खालिस। स्वच्छ। बढ़िया। २. नीरोग।
कुंदरू–संज्ञा पुं० [सं० मंडुर = करेला] एक बेल जिसमें चार पाँच अंगुल लंबे फल लगते हैं जिनकी तरकारी होती है। बिंबा।
कुंदलता–संज्ञा स्त्री० [सं०] छब्बीस अक्षरों की एक वर्णवृत्ति।
कुंदा–संज्ञा पुं० [फ़ा० मिलाओ सं० स्कंध] १. लकड़ी का बड़ा, मोटा और बिना चीरा हुआ टुकड़ा जो प्रायः जलाने के काम में आता है। लक्कड़। २. लकड़ी का वह टुकड़ा जिसपर रखकर बढ़ई लकड़ी गढ़ते, कुंदीगर कपड़े पर कुंदी करते और किसान घास काटते हैं। निहठा। निष्ठा। ३. बंदूक का चौड़ा पिछला भाग। ४. वह लकड़ी जिसमें अपराधी के पैर ठोंके जाते हैं। काठ। ५. दस्ता। मूठ। बेंट। ६. लकड़ी की बड़ी मुँगरी जिससे कपड़ों की कुंदी की जाती है।
संज्ञा पुं० [सं० स्कंद, हिं० कंधा] १. चिड़िया का पर। डैना। २. कुश्ती का एक पेंच।
संज्ञा पु० [सं० कदन] भुना हुआ दूध। खोवा, मावा।
कुंदी–संज्ञा स्त्री० [हिं० कुंदा] १. कपड़ों की सिकुड़न और रुखाई दूर करने तथा तह जमाने के लिये उसे मोंगरी से कूटने की क्रिया। २. खूब मारना। ठोंकपीट।
कुंदीगर–संज्ञा पुं०[हिं०कुंदी + गर(प्रत्य०)] कुंदी करनेवाला।
कुंदुर–संज्ञा पुं० [सं० अ०] एक प्रकार का पीला गोंद जो दवा के काम आता है।
कुंदेरना–क्रि० स० [सं० कुंजलन] खुरचना। खरादना।
कुंदेरा–संज्ञा पुं०[हिं०कुंदेरना+एरा(प्रत्य०)] [स्त्री० कुंदेरी] खरादनेवाला। कुनेरा।
कुंभ–संज्ञा पुं० [सं०] १. मिट्टी का घड़ा। घट। कलश। २. हाथी के सिर के दोनों ओर ऊपर उभड़े हुए भाग। ३. ज्योतिष मे दसवीं राशि। ४. दो द्रोण या ६४ सेर का एक प्राचीन मान या तौल। ५. प्राणायाम के तीन भागों में से एक। कुंभक। ६. एक पर्व जो प्रति बारहवें वर्ष पड़ता है। ७. प्रह्लाद का पुत्र एक दैत्य।
कुंभक–संज्ञा पुं० [सं०] प्राणायाम का एक अंग जिसमें साँस लेकर वायु को शरीर के भीतर रोक रखते हैं।
कुंभकर्ण–संज्ञा पुं० [सं०] एक राक्षस जो

है या नहीं। किस्मत चमकना या जागना = भाग्य प्रबल होना। बहुत भाग्यवान् होना। किस्मत फूटना = भाग्य बहुत मंद हो जाना। २ किसी प्रदेश का वह भाग जिसमें कई जिले हों। कमिश्नरी।

क़िस्मतवर–वि० [फा०] भाग्यवान्।

क़िस्सा–संज्ञा पु० [अ०] १ कहानी। कथा। आख्यान। २ वृत्तान्त। समाचार। हाल। ३ झगड़ा। झगड़ा। तकरार।

की–प्रत्य० [हिं० की] हिंदी विभक्ति "का" का स्त्रीलिंग रूप।

क्रि० स० [सं० कृत, प्रा० कि] हिं० "करना" के भूतकालिक रूप 'किया' का स्त्री०।

कीक–संज्ञा पु० [अनु०] चीत्कार। चीख।

कीकट–संज्ञा पु० [सं०] १ मगध देश का प्राचीन वैदिक नाम। २ घोड़ा। ३ [स्त्री० कीकटी] प्राचीन काल की एक अनार्य्य जाति जो कीकट देश में बसती थी।

कीकना–क्रि० अ० [अनु०] की की करके चिल्लना। चीत्कार करना।

कीकर–संज्ञा पु० [सं० किंकराल] बबूल।

कीकान–संज्ञा पु० [सं० केकाण] १ पश्चिमोत्तर का एक देश जो घोड़ों के लिये प्रसिद्ध था। २ इस देश का घोड़ा। ३ घोड़ा।

कीच–संज्ञा पु० [सं० कच्छ] कीचड़। कर्दम।

कीचक–संज्ञा पु० [सं०] १ बाँस जिसके छेद में घुसकर वायु हू हू शब्द करती है। २ राजा विराट का साला।

कीचड़–संज्ञा पु० [हिं० कीच + ड़ (प्रत्य०)] १ पानी मिली हुई धूल या मिट्टी। कर्दम। पंक। २ आँख का सफेद मल।

कीट–संज्ञा पु० [सं०] रेंगने या उड़नेवाला क्षुद्र जंतु। कीड़ा। मकोड़ा।

संज्ञा स्त्री० [सं० किट्ट] जमी हुई मैल। मल।

कीटभृङ्ग–संज्ञा पु० [सं०] एक न्याय जिसका प्रयोग उस समय होता है जब कई वस्तुएँ बिलकुल एकरूप हो जाती हैं।

[illegible]–संज्ञा पु० [सं० कीट, प्रा० कीड] १ छोटा उड़ने या रेंगनेवाला जंतु। मकोड़ा। २. कृमि। सूक्ष्म कीट।

मुहा०–कीड़े काटना = चंचलता होना। जी उकताना। कीड़े पड़ना = १. (वस्तु में) कीड़े उत्पन्न होना। २ दोष होना। ऐब होना। ३ साँप। ४. जूँ, खटमल आदि।

कीड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० कीड़ा] १ छोटा कीड़ा। २ चींटी। पिपीलिका।

कीनना‡–क्रि० स० [सं० क्रीणन] खरीदना। मोल लेना। क्रय करना।

कीना–संज्ञा पु० [फा०] द्वेष। वैर।

कीप–संज्ञा स्त्री० [अं० कीफ] वह चोंगी जिसे तंग मुँह के बरतन में इसलिये लगाते हैं जिसमें द्रव पदार्थ उसमें डालने समय बाहर न गिरे। छुच्छी।

क़ीमत–संज्ञा स्त्री० [अ०] दाम। मूल्य।

क़ीमती–वि० [अ०] अधिक दामों का। बहुमूल्य।

क़ीमा–संज्ञा पुं० [अ०] बहुत छोटे छोटे टुकड़ों में कटा हुआ गोश्त।

कीमिया–संज्ञा स्त्री० [फा०] रासायनिक क्रिया। रसायन।

कीमियागर–संज्ञा पु० [फा०] रसायन बनानेवाला। रासायनिक परिवर्त्तन में प्रवीण।

कीमुख्त–संज्ञा पु० [अ०] गधे या घोड़े का चमड़ा जो हरे रंग का और दानेदार होता है।

कीर–संज्ञा पु० [सं०] १ शुक। सुग्गा। तोता। २ व्याध। बहेलिया। ३ कश्मीर देश। ४ कश्मीर देशवासी।

कीरति*–संज्ञा स्त्री० दे० 'कीर्ति"।

कीर्त्तन–संज्ञा पु० [सं०] १ कथन। यशवर्णन। गुणकथन। २ कृष्णलीला संबंधी भजन और कथा आदि।

कीर्त्तनिया–संज्ञा पु० [सं० कीर्त्तन + इया (प्रत्य०)] कृष्णलीला-संबंधी भजन और कथा सुननेवाला। कीर्त्तन करनेवाला।

कीर्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पुण्य। २ ख्याति। बड़ाई। नामवरी। नेकनामी। यश। ३ राधा की माता का नाम। ४. आर्या छंद के भेदों में से एक। ५ दशाक्षरी वृत्तों में से एक। ६ एकादशाक्षरी

वृत्तों में से एक वृत्त। ७. प्रसाद।
कीर्त्तिमान्–वि० [सं०] यशस्वी। नेकनाम। मशहूर। विख्यात।
कीर्त्तिस्तंभ–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह स्तंभ जो किसी कीर्त्ति को स्मरण कराने के लिये बनाया जाय। २. वह कार्य्य या वस्तु जिससे किसी की कीर्त्ति स्थायी हो।
कील–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लोहे या काठ की मेख। काँटा। परेग। खूँटी। २. वह मूढ़ गर्भ जो योनि में अटक जाता है। ३. नाक में पहनने का एक छोटा आभूषण। लौंग। ४. मुहाँसे की मांस-कील। ५. जाँते के बीचोबीच का खूँटा। ६. वह खूँटी जिसपर कुम्हार का चाक घूमता है।
कीलक–संज्ञा पुं० [सं०] १. खूँटी। कील। २. तंत्र के अनुसार एक देवता। ३. वह मंत्र जिससे किसी अन्य मंत्र की शक्ति या उसका प्रभाव नष्ट कर दिया जाय।
कीलन–संज्ञा पुं० [सं०] १. बंधन। रोक। रुकावट। २. मंत्र को कीलने का काम।
कीलना–क्रि० स० [सं० कीलन] १. मेख जड़ना। कील लगाना। २. कील ठोककर मुँह बन्द करना (तोप आदि का)। ३. किसी मंत्र या युक्ति के प्रभाव को नष्ट करना। ४. साँप को ऐसा मोहित कर देना कि वह किसी को काट न सके। ५. अधीन करना। वश में करना।
कीला–संज्ञा पुं० [सं० कील] बड़ी कील।
कीलाक्षर–संज्ञा पुं० [सं० कील+अक्षर] बाबुल की एक बहुत प्राचीन लिपि जिसके अक्षर कील के आकार के होते थे।
कीलाल–संज्ञा पुं० [सं०] १. अमृत। २. जल। ३. रक्त। ४. मधु। ५. पशु।
कीलित–वि० [सं०] १. जिसमें कील जड़ी हो। २. मंत्र से स्तंभित। कीला हुआ।
कीली–संज्ञा स्त्री० [सं० कील] १. किसी चक्र के ठीक मध्य के छेद में पड़ी हुई वह कील जिसपर वह चक्र घूमता है। †२. दे० "कील" और "किल्ली"।
कीश–संज्ञा पुं० [सं०] १. बंदर। वानर।
यौ०—कीशध्वज = अर्जुन।
२. चिड़िया। ३. सूर्य्य।
कीसा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] थैली। खीसा।
कुँअर–संज्ञा पुं० [सं० कुमार] [स्त्री० कुँअरि] १. लड़का। पुत्र। बालक। २. राजपुत्र। राजकुमार।
कुँअर-विलास–संज्ञा पुं० [हिं० कुँअर+विलास] एक प्रकार का धान या चावल।
कुँअरेटा*‡–संज्ञा पुं० [हिं० कुँअर+एटा] [स्त्री० कुँअरेटी] लड़का। बालक।
कुँआरा–वि० [सं० कुमार] [स्त्री० कुँआरी] जिसका ब्याह न हुआ हो। बिन ब्याहा।
कुँई–संज्ञा स्त्री० दे० "कुमुदिनी"।
कुंकुम–संज्ञा पुं० [सं०] १. केसर। जाफ़रान। २. रोली जिसे स्त्रियाँ माथे में लगाती हैं। ३. कुंकुमा।
कुंकुमा–संज्ञा पुं० [सं० कुंकुम] झिल्ली की कुप्पी या ऐसा बना हुआ लाख का पोला गोला जिसके भीतर गुलाल भरकर होली के दिनों में दूसरों पर मारते हैं।
कुंचन–संज्ञा पुं० [सं०] सिकुड़ने या बटुरने की क्रिया। सिमटना।
कुंचित–वि० [सं०] १. घूमा हुआ। टेढ़ा। २. घुँघरवाले। छल्लेदार (बाल)।
कुंज–संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जो वृक्ष, लता आदि से मंडप की तरह ढका हो।
संज्ञा पुं० [फ़ा० कुंज = कोना] वे बूटे जो दुशाले के कोनों पर बनाए जाते हैं।
कुंजक*–संज्ञा पुं० [सं०] ड्योढ़ी पर का वह चोबदार जो अंतःपुर में आता जाता हो। कंचुकी। ख्वाजासरा।
कुंजकुटीर–संज्ञा स्त्री० [सं०] कुंजगृह। लताओं से घिरा हुआ घर।
कुंजगली–संज्ञा स्त्री० [हिं० कुंज+गली] १. बगीचों में लताओं से छाया हुआ पथ। २. पतली तंग गली।
कुंजड़ा–संज्ञा पुं० [सं० कुंज+ड़ा (प्रत्य०)] [स्त्री० कुँजड़ी, कुँजड़िन] एक जाति जो तरकारी बोती और बेचती है।
कुंजर–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कुंजरा,

रावण का भाई था।

कुंभकार–संज्ञा पुं० [सं०] १ मिट्टी के बरतन बनानेवाला। कुम्हार। २ मुर्गा।

कुंभज, कुंभजात–संज्ञा पुं० [सं०] १ घड़े से उत्पन्न पुरुष। २ अगस्त्य मुनि। ३ वशिष्ठ। ४ द्रोणाचार्य।

कुंभसंभव–संज्ञा पुं० [सं०] अगस्त्य मुनि।

कुंभिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कुंभी। जलकुंभी। २ वेश्या। ३ कायफल। ४ आँख की एक फुंसी। गुहांजनी। बिलनी। ५ परवल का पेड़। ६ सूख रोग।

कुंभिलाना*–क्रि० अ० दे० "कुम्हलाना"।

कुंभी–संज्ञा पुं० [सं०] १ हाथी। २ मगर। ३. गुग्गुल। ४ एक जहरीला कीड़ा। ५ एक राक्षस जो बच्चों को क्लेश देता है।

संज्ञा स्त्री० [सं०] १ छोटा घड़ा। २ कायफल का पेड़। ३ दंती का पेड़। दांती। ४ एक वनस्पति जो जलाशयों में होती है। जलकुंभी। ५ एक नरक का नाम। कुंभीपाक नरक।

कुंभीधान्य–संज्ञा पुं० [सं०] घड़ा या मटका भर अन्न जिसे कोई गृहस्थ या परिवार छ दिन या किसी किसी के मत से साल भर खा सके। (स्मृति)

कुंभीधान्यक–संज्ञा पुं० [सं०] उतना अन्न रखनेवाला जितना कोई गृहस्थ छ दिन या किसी किसी के मत से साल भर खा सके।

कुंभीनस–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कुंभीनसी] १ क्रूर साँप। २ एक प्रकार का जहरीला कीड़ा। ३ रावण।

कुंभीपाक–संज्ञा पुं० [सं०] १. पुराणानुसार एक नरक। २ एक प्रकार का सन्निपात जिसमें नाक से काला खून जाता है।

कुंभीर–संज्ञा पुं० [सं०] १ नक्र या नाक नामक जल-जन्तु। २ एक प्रकार का कीड़ा।

कुंवर–संज्ञा पुं० [सं० कुमार] [स्त्री० कुंवरि] १ लड़का। पुत्र। बेटा। २ राजपुत्र। राजा का लड़का।

कुंवरेटा–संज्ञा पुं० [हिं० कुंवर+एटा (प्रत्य०)] बालक। छोटा लड़का। बच्चा।

कुँवारा–वि० [सं० कुमार] [स्त्री० कुँवारी] जिसका ब्याह न हुआ हो। बिन ब्याहा।

कुँहकुँह*–संज्ञा पुं० [सं० कुंकुम] केसर।

कु–उप० [सं०] एक उपसर्ग जो संज्ञा के पहले लगकर उसके अर्थ में "नीच", "कुत्सित" आदि का भाव बढ़ाता है।

संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथिवी।

कुआँ–संज्ञा पुं० [सं० कूप, प्रा० कूव] पानी निकालने के लिये पृथिवी में खोदा हुआ गहरा गड्ढा। कूप। इँदारा।

मुहा०–(किसी के लिये) कुआँ खोदना = नाश करने या हानि पहुँचाने का प्रयत्न करना। कुआँ खोदना = जीविका के लिये परिश्रम करना। कुएँ में गिरना = आपत्ति में फँसना। विपत्ति में पड़ना। कुएँ में बाँस पड़ना = बहुत खोज होना। कुएँ में भाँग पड़ना = सबकी बुद्धि मारी जाना।

कुआर–संज्ञा पुं० [सं० कुमार, प्रा० कुँवार] [वि० कुआरी] हिंदुस्तानी सातवाँ महीना। शरद् ऋतु का पहला महीना। आश्विन।

कुइयाँ–संज्ञा स्त्री० [हिं० कुआँ] छोटा कुआँ।

यौ०—कठकुइयाँ = वह छोटा कुआँ जो काठ से बँधा हो।

कुई–संज्ञा स्त्री० दे० "कुइयाँ"।

संज्ञा स्त्री० [सं० कुव] कुमुदिनी।

कुकटी–संज्ञा स्त्री० [सं० कुक्कुटी = सेमल] कपास की एक जाति जिसकी रूई ललाई लिए होती है।

कुकड़ना–क्रि० अ० [हिं० सिकुड़ना] सिकुड़कर रह जाना। संकुचित हो जाना।

कुकड़ी–संज्ञा स्त्री० [सं० कुक्कुटी] १ कच्चे सूत का लपटा हुआ लच्छा जो कातकर तकले पर से उतारा जाता है। मुट्ठा। अंटी। २ दे० "ककड़ी"।

कुकनू–संज्ञा पुं० [यू०] एक कल्पित पक्षी जो गान में विलक्षण माना जाता है। कहा जाता है कि जब यह गाने लगता है, तब आग निकल पड़ती है जिसमें वह भस्म हो जाता है। आतशजन।

कुकरी*†–[सं० कुक्कुट] वन-मुर्गी।

कुकरौंधा–संज्ञा पुं० [सं० कुक्कुरद्रु] पालक से मिलता जुलता एक छोटा पौधा जिसकी पत्तियों से कड़ी गंध निकलती है।

कुकर्म–संज्ञा पुं० [सं०] बुरा या खोटा काम।

कुकर्मी–वि० [हिं० कुकर्म] बुरा काम करनेवाला। पापी।

कुकुभ–संज्ञा पुं० [सं०] एक मात्रिक छंद।

कुकुर–संज्ञा पुं० [सं०] १. यदुवंशी क्षत्रियों की एक शाखा। २. एक प्राचीन प्रदेश। ३. एक साँप का नाम। ४. कुत्ता।

कुकुरखाँसी–संज्ञा स्त्री० [हिं० कुक्कुर + खाँसी] वह सूखी खाँसी जिसमें कफ़ न गिरे। ढाँसी।

कुकुरदंत–संज्ञा पुं० [हिं० कुक्कुर + दंत] [वि० कुकुरदंता] वह दाँत जो किसी किसी को साधारण दाँतों के अतिरिक्त और उनसे कुछ नीचे आड़ा निकलता है तथा जिसके कारण होंठ कुछ उठ जाता है।

कुकुरमुत्ता–संज्ञा पुं० [हिं० कुक्कुर + मूत] एक प्रकार की खुमी जिसमें से बुरी गंध निकलती है। छत्राक।

कुकुही*†–संज्ञा स्त्री० [सं० कुक्कुभ] बनमुर्गी।

कुक्कुट–संज्ञा पुं० [सं०] १. मुर्गा। २. चिनगारी। ३. लुक। ४. जटाधारी पौधा।

कुक्कुर–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कुक्कुरी] १. कुत्ता। श्वान। २. यदुवंशियों की एक शाखा। कुकुर। ३. एक मुनि।

कुक्ष–संज्ञा पुं० [सं०] पेट। उदर।

कुक्षि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पेट। २. कोख। ३. किसी चीज़ के बीच का भाग। संज्ञा पुं० [सं०] १. एक दानव। २. राजा बलि। ३. एक प्राचीन देश।

कुखेत–संज्ञा पुं० [सं० कुक्षेत्र] बुरा स्थान। खराब जगह। कुठाँव।

कुख्यात–वि० [सं०] निंदित। बदनाम।

कुख्याति–संज्ञा स्त्री० [सं०] निंदा।

कुगति–संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गति। दुर्दशा।

कुगहनि*†–संज्ञा स्त्री० [सं० कु + ग्रहण] अनुचित आग्रह। हठ। ज़िद।

कुघा*–संज्ञा स्त्री० [सं० कुक्षि] दिशा। ओर। तरफ़।

कुघात–संज्ञा पुं० [हिं० कु + घात] १. कुअवसर। बेमौक़ा। २. बुरा दाँव। छल कपट।

कुच–संज्ञा पुं० [सं०] स्तन। छाती।

कुचकुचाना–क्रि० स० [अनु० कुचकुच] १. लगातार कोंचना। बार बार नुकीली चीज धँसाना या बींधना। २. थोड़ा कुचलना।

कुचना*–क्रि० अ० [सं० कुंचन] सिकुड़ना। सिमटना। (क्व०)

कुचक्र–संज्ञा पुं० [सं०] दूसरों को हानि पहुँचानेवाला गुप्त प्रयत्न। षड्यंत्र।

कुचक्री–संज्ञा पुं० [सं० कुचक्रिन्] षड्यंत्र रचनेवाला। गुप्त प्रयत्न करके दूसरों को हानि पहुँचानेवाला।

कुचर–संज्ञा पुं० [सं०] १. बुरे स्थानों में घूमनेवाला। आवारा। २. नीच कर्म करनेवाला। ३. वह जो पराई निंदा करता फिरे।

कुचलना–क्रि० स० [अनु०] १. किसी चीज पर सहसा ऐसी दाब पहुँचाना जिससे वह बहुत दब और विकृत हो जाय। मसलना। २. पैरों से रौंदना। मुहा०—सिर कुचलना = पराजित करना।

कुचला–संज्ञा पुं० [सं० कच्चीर] एक वृक्ष जिसके विषैले बीज औषध के काम में आते हैं।

कुचली–संज्ञा स्त्री० [हिं० कुचलना] वे दाँत जो डाढ़ों और राजदंत के बीच में होते हैं। कीला। सीता दाँत।

कुचाल–संज्ञा स्त्री० [सं० कु + हिं० चाल] १. बुरा आचरण। खराब चाल-चलन। २. दुष्टता। पाजीपन। बदमाशी।

कुचाली–संज्ञा पुं० [हिं० कुचाल] १. कुमार्गी। बुरे आचरणवाला। २. दुष्ट।

कुचाह*–संज्ञा स्त्री० [सं० कु + हिं० चाह] बुरी खबर। अशुभ बात।

कुचील*†–वि० [सं० कुचैल] मैले वस्त्रवाला। मैला कुचैला। मलिन।

कुचीला*†–वि० दे० "कुचैला"।

कुचेष्ट–वि० [सं०] बुरी चेष्टावाला।

कुचेष्टा–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० कुचेष्ट] १ बुरी चेष्टा। हानि पहुँचाने का यत्न। बुरी चाल। २ चेहरे का बुरा भाव।

कुचैन*–संज्ञा स्त्री० [सं० कु + हिं० चैन] कष्ट। दुःख। व्याकुलता।
वि० बेचैन। व्याकुल।

कुचला–वि० [सं० कुचैल] [स्त्री० कुचैली] १. जिसका कपड़ा मैला हो। मैले कपड़े-वाला। २ मैला। गंदा।

कुच्छित*–वि० दे० "कुत्सित"।

कुछ–वि० [सं० किंचित्] थोड़ी संख्या या मात्रा का। जरा। थोड़ा सा।
मुहा०—कुछ एक = थोड़ा सा। कुछ कुछ = थोड़ा। कुछ ऐसा = विलक्षण। असाधारण। कुछ न कुछ = थोड़ा बहुत। कम या ज्यादा।
सर्व० [सं० कश्चित्] १ कोई (वस्तु)।
कुछ का कुछ = और का और। उल्टा। कुछ कहना = कड़ी बात कहना। बिगड़ना। कुछ कर देना = जादू टोना कर देना। मंत्र प्रयोग कर देना। (किसी को) कुछ हो जाना = कोई रोग या भूत प्रेत की बाधा हो जाना। कुछ हो = चाहे जो हो।
२ बड़ी या अच्छी बात। ३ सार वस्तु। काम की वस्तु। ४ गण्यमान्य मनुष्य।
मुहा०—कुछ लगाना = (अपने को) बड़ा या श्रेष्ठ समझना। कुछ हो जाना = किसी योग्य हो जाना। गण्यमान्य हो जाना।

कुजंत्र*–संज्ञा पु० [सं० कुयंत्र] बुरा यंत्र। अभिचार। टोटका। टोना।

कुज–संज्ञा पु० [सं०] १ मंगल ग्रह। २ वृक्ष। पेड़। ३ नरकासुर जो पृथ्वी का पुत्र माना जाता था।

कुजा–संज्ञा स्त्री० [सं० कु = पृथ्वी + जा = जायमान] १ जानकी। २ कात्यायिनी।

कुजाति–संज्ञा स्त्री० [सं०] बुरी जाति। नीच जाति।
संज्ञा पु० १ बुरी जाति का आदमी। नीच पुरुष। २ पतित या अधम पुरुष।

कुजोग*†–संज्ञा पु० [सं० कुयोग] १ कुसंग। कुमेल। बुरा मेल। २ बुरा अवसर।

कुजोगी*–वि० [सं० कुयोगी] असंयमी।

कुटंत†–संज्ञा स्त्री० [हिं० कूटना + त (प्रत्य०)] १ कूटने का भाव। कुटाई। २ मार।

कुट–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० कुटी] १ घर। गृह। २ कोट। गढ़। ३ पत्थर।
संज्ञा स्त्री० [सं० कुष्ठ] एक बड़ी मोटी झाड़ी जिसकी जड़ सुगंधित होती है।
संज्ञा पु० [सं० कुट = कूटना] कटा हुआ टुकड़ा। छोटा टुकड़ा। जैसे, तिनकुट।

कुटका–संज्ञा पु० [हिं० काटना] [स्त्री० अल्पा० कुटकी] छोटा टुकड़ा।

कुटकी–संज्ञा स्त्री० [सं० कटुका] १ एक पहाड़ी पौधा जिसकी जड़ की गोल गाँठें दवा के काम में आती हैं। २ एक जड़ी।
†संज्ञा स्त्री० [हिं० कुटका] कँगनी। चेना।
संज्ञा स्त्री० [सं० कटु + काट] एक उड़ने-वाला छोटा कीड़ा जो कुत्ते, बिल्ली आदि के रोयों में घुसा रहता है।

कुटज–संज्ञा पु० [सं०] १ कुरैया। करची। कुड़ा। २ अगस्त्य मुनि।

कुटनपन–संज्ञा पु० [सं० कुट्टनी] १ कुटनी का काम। दूती-कर्म। २ झगड़ा लगाने का काम।

कुटनपेशा–संज्ञा पु० दे० "कुटनपन"।

कुटनहारी–संज्ञा स्त्री० [हिं० कूटना + हारी (प्रत्य०)] धान कूटनेवाली स्त्री।

कुटना–संज्ञा पु० [हिं० कुटनी] १ स्त्रियों को बहकाकर उन्हें पर-पुरुष से मिलाने-वाला। दूत। दाल। २ दो आदमियों में झगड़ा करानेवाला। चुगलखोर।
संज्ञा पु० [हिं० कूटना] वह हथियार जिससे कुटाई की जाय।
क्रि० अ० [हिं० कूटना] कूटा जाना।

कुटवाना–क्रि० स० [हिं० कुटना] किसी स्त्री को बहकाकर कुमार्ग पर ले जाना।

कुटनापा–संज्ञा पु० दे० "कुटनपन"।

कुटनी–संज्ञा स्त्री० [सं० कुट्टनी] १ स्त्रियों को बहकाकर उन्हें पर-पुरुष से मिलाने-वाली स्त्री। दूती। २ दो व्यक्तियों में झगड़ा करानेवाली।

कुटवाना—क्रि० स० [हिं० कूटना का प्रे०] कूटने की क्रिया दूसरे से कराना।

कुटाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० कूटना] १. कूटने का काम। २. कूटने की मज़दूरी।

कुटास—संज्ञा स्त्री० [हिं० कूटना] मार-पीट।

कुटिया—संज्ञा स्त्री० [सं० कुटी] झोपड़ी।

कुटिल—वि० [सं०] [स्त्री० कुटिला] १. वक्र। टेढ़ा। २. कुंचित। घूमा या बल खाया हुआ। ३. छल्लेदार। घुंघराला। ४. दगाबाज़। कपटी। छली।

संज्ञा पुं० [सं०] १. शठ। खल। २. वह जिसका रंग पीलापन लिए सफ़ेद और आँखें लाल हों। ३. चौदह अक्षरों का एक वर्ण-वृत्त।

कुटिलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. टेढ़ापन। २. खोटाई। छल। कपट।

कुटिलपन—संज्ञा पुं० दे० "कुटिलता"।

कुटिला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सरस्वती नदी। २. एक प्राचीन लिपि।

कुटिलाई*—संज्ञा स्त्री० दे० "कुटिलता"।

कुटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. घास फूस से बनाया हुआ छोटा घर। पर्णशाला। कुटिया। झोपड़ी। २. मुरा नामक गंध-द्रव्य। ३. श्वेत कुटज।

कुटीचक—संज्ञा पुं० [सं०] चार प्रकार के संन्यासियों में से पहला जो शिखा-सूत्र त्याग नहीं करता।

कुटीचर—संज्ञा पुं० दे० "कुटीचक"।

संज्ञा पुं० [सं० कुचर] कपटी। छली।

कुटीर—संज्ञा पुं० दे० "कुटी"।

कुटुंब—संज्ञा पुं० [सं०] परिवार। कुनबा। खानदान।

कुटुंबी—संज्ञा पुं० [सं० कुटुंबिन्] [स्त्री० कुटुंबिनी] १. परिवारवाला। कुनबेवाला। २. कुटुंब के लोग। संबंधी। नातेदार।

कुटुम*†—संज्ञा पुं० दे० "कुटुंब"।

कुटेक—संज्ञा स्त्री० [सं० कु + हिं० टेक] अनुचित हठ। बुरी ज़िद।

कुटेव—संज्ञा स्त्री० [सं० कु + हिं० टेव] खराब आदत। बुरी बान।

कुट्टनी—संज्ञा स्त्री० दे० "कुटनी"।

कुट्टमित—संज्ञा पुं० [सं०] संयोग के समय में स्त्रियों की मिथ्या दुःख-चेष्टा जो हावों में है।

कुट्टा—संज्ञा पुं० [हिं० कटना] १. पर-कटा कबूतर। २. पैर बाँधकर जाल में छोड़ा हुआ पक्षी जिसे देखकर और पक्षी आकर फँसते हैं।

कुट्टी—संज्ञा स्त्री० [हिं० काटना] १. चारे को छोटे छोटे टुकड़ों में काटने की क्रिया। २. गँड़ासे से बारीक काटा हुआ चारा। ३. कूटा और सड़ाया हुआ कागज़ जिससे क़लमदान इत्यादि बनते हैं। ४. लड़कों का एक शब्द जिसका प्रयोग वे मित्रता तोड़ने के समय दाँतों पर नाखून बुलाकर करते हैं। मैत्री-भंग। ५. परकटा कबूतर।

कुठला—संज्ञा पुं० [सं० कोष्ठ, प्रा० कोट्ठ + ला (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० कुठली] अनाज रखने का मिट्टी का बड़ा बरतन।

कुठाउँ—संज्ञा स्त्री० दे० "कुठाँव"।

कुठाँव*†—संज्ञा स्त्री० [सं० कु + हिं० ठाँव] बुरी ठौर। बुरी जगह।

मुहा०—कुठाँव मारना = ऐसे स्थान पर मारना जहाँ बहुत कष्ट या दुर्गति हो।

कुठाट—संज्ञा पुं० [सं० कु + हिं० ठाट] १. बुरा साज। बुरा सामान। २. बुरा प्रबंध। बुरा आयोजन। ३. खराब काम करने की बंदिश या तैयारी।

कुठार—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कुठारी] १. कुल्हाड़ी। २. परशु। फरसा। ३. नाश करनेवाला।

कुठाराघात—संज्ञा पुं० [सं०] १. कुल्हाड़ी का आघात। २. गहरी चोट।

कुठारी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कुल्हाड़ी। टाँगी। २. नाश करनेवाला।

कुठाली—संज्ञा स्त्री० [सं० कु + स्थाली] मिट्टी की घरिया जिसमें सोना चाँदी गलाते हैं।

कुठाहर*—संज्ञा पुं० [सं० कु + हिं० ठाहर] १. कुठौर। कुठाँव। बुरा स्थान। २. बे-मौक़ा। बुरा अवसर।

कुठौर-संज्ञा पुं० [सं० कु+हिं० ठौर] १ कुठाँव। बुरी जगह। २ बे-मौका।

कुड-संज्ञा पुं० [सं० कुष्ठ प्रा० कुट्ठ] कुट नाम की ओषधि।

कुड़कुड़ाना-क्रि० अ० [अनु०] मन ही मन कुढ़ना। कुड़बुड़ाना।

कुड़कुड़ी-संज्ञा स्त्री० [अनु०] भूख या अजीर्ण से होनेवाली पेट की गुड़गुड़ाहट।

मुहा०—कुड़कुड़ी होना=किसी बात को जानने के लिए आकुलता होना।

कुड़बुड़ाना-क्रि० अ० [अनु०] मन ही मन कुढ़ना। कुड़कुड़ाना।

कुडल-संज्ञा स्त्री० [सं० कुंचन] शरीर में एठन की पीड़ा जो रक्त की कमी या उसके ठंढे पड़ने से होती है। तशनुज।

कुडव-संज्ञा पुं० [सं०] अन्न नापने का एक पुराना मान जो चार अंगुल चौड़ा और उतना ही गहरा होता था।

कुड़ा-संज्ञा पुं० [सं० कुटज] इंद्र जौ का वृक्ष।

कुड़ुक-संज्ञा स्त्री० [फा० कुरक] १ अंडा न देनेवाली मुर्गी। २ व्यर्थ। खाली।

कुडौल-वि० [सं० कु+हिं० डौल] बे ढंगा। भद्दा।

कुढंग-संज्ञा पुं० [सं० कु+हिं० ढंग] बुरा ढंग। कुचाल। बुरी रीति।

वि० १ बुरे ढंग का। बढंगा। भद्दा। बुरा। २ बुरी तरह का। बद वजा। भुढंगा।

कुढंगा-वि० [हिं० कुढंग] [स्त्री० कुढंगी] १ बेढ़ाऊर। उजड्ड। २ बढंगा। भद्दा।

कुढंगी-वि० [हिं० कुढंग] कुमार्गी। बुरे चाल चलन का।

कुढ़न-संज्ञा स्त्री० [सं० क्रुद्ध] वह क्रोध या दुःख जो मन ही मन रहे। चिढ़।

कुढ़ना-क्रि० अ० [सं० क्रुद्ध] १ भीतर ही भीतर क्रोध करना। मन ही मन खीझना या चिढ़ना। बुरा मानना। २ डाह करना। जलना। ३ भीतर ही भीतर दुःखी होना। मसोसना।

कुढब-वि० [सं० कु+हिं० ढब] १ बुरे ढंग का। बेढब। २ कठिन। दुस्तर।

कुढ़ाना-क्रि० स० [हिं० कुढ़ना] १ क्रोध दिलाना। चिढ़ाना। खिझाना। २ दुःखी करना। कलपाना।

कुणप-संज्ञा पुं० [सं०] १ शव। लाश। २ दुर्गंधी। गंदगी। ३ रांगा। ४ बरछा।

कुणपाशी-संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का प्रेत जो मुर्दा खाता है। २ मुर्दा खानेवाला जंतु।

कुतका-संज्ञा पुं० [हिं० गतका] १ गतका। २ मोटा डंडा। सोटा। ३ भाँग घोटने का डंडा। भंग घोटना।

कुतना-क्रि० अ० [हिं० कूतना] कूतने का कार्य होना। कूता जाना।

कुतप-संज्ञा पुं० [सं०] १ दिन का आठवाँ मुहूर्त जो मध्याह्न-समय में होता है। २ श्राद्ध में आवश्यक वस्तुएँ, जैसे—मध्याह्न, गैंडे के चमड़े का पात्र, कुश, तिल आदि। ३ सूर्य्य। ४ अग्नि। ५ द्विज।

कुतरना-क्रि० स० [सं० कर्त्तन] १ दाँत से छोटा सा टुकड़ा काट लेना। २ बीच ही में से कुछ अंश उड़ा लेना।

कुतर्क-संज्ञा पुं० [सं०] बुरा तर्क। बेढंगी दलील। विवाद।

कुतर्की-संज्ञा पुं० [सं० कुतर्किन्] व्यर्थ तर्क करनेवाला। बकवादी। विवादवादी।

कुतवार*-संज्ञा पुं० दे० "कोतवाल"।

कुतवाल†-संज्ञा पुं० दे० "कोतवाल"।

कुतिया-संज्ञा स्त्री० [हिं० कुत्ती] कुत्ते की मादा। कूकरी। कुत्ती।

कुतुब-संज्ञा पुं० [अ०] ध्रुव तारा।

कुतुबनुमा-संज्ञा पुं० [अ०] वह यंत्र जिससे दिशा का ज्ञान होता है। दिग्दर्शक यंत्र।

कुतूहल-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कुतूहली] *१ किसी वस्तु के देखने या किसी बात के* सुनने की प्रबल इच्छा। विनोदपूर्ण उत्कंठा। २ वह वस्तु जिसके देखने की इच्छा हो। कौतुक। ३ क्रीड़ा। खिलवाड़। ४ आश्चर्य। अचंभा।

कुतूहली-वि० [सं० कुतूहलिन्] १ जिसे वस्तुओं को देखने या जानने की अधिक

उत्कंठा हो। २. कौतुकी। खिलवाड़ी।

कुत्ता—संज्ञा पुं० [देश०] [स्त्री० कुत्ती] १. भेड़िए, गीदड़, लोमड़ी आदि की जाति का एक पशु जो घर की रक्षा के लिए पाला जाता है। श्वान। कूकुर।
यौ०—कुत्ते-खसी = व्यर्थ और तुच्छ कार्य।
मुहा०—क्या कुत्ते ने काटा है ? = क्या पागल हुए हैं ? कुत्ते की मौत मरना = बहुत बुरी तरह से मरना। कुत्ते का दिमाग़ होना या कुत्ते का भेजा खाना = बहुत अधिक बक-वाद करने की शक्ति होना।
२. एक प्रकार की घास जिसकी बालें कपड़ों में लिपट जाती हैं। लपटौवाँ। ३. कल का वह पुरजा जो किसी चक्कर को उलटा या पीछे की ओर घूमने से रोकता है। ४. लकड़ी का एक छोटा चौकोर टुकड़ा जिसके नीचे गिरा देने पर दरवाजा नहीं खुल सकता। बिल्ली। ५. बंदूक का घोड़ा। ६. नीच या तुच्छ मनुष्य। क्षुद्र।

कुत्सा—संज्ञा स्त्री० [सं०] निंदा।

कुत्सित—वि० [सं०] १. नीच। अधम। २. निंदित। गर्हित। ख़राब।

कुदकना—क्रि० अ० दे० "कूदना"।

कुदक्का†—संज्ञा पुं० [हिं० कूदना] उछल-कूद।

क़ुदरत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. शक्ति। प्रभुत्व। इख्तियार। २. प्रकृति। माया। ईश्वरी शक्ति। ३ कारीगरी। रचना।

क़ुदरती—वि० [अ०] १. प्राकृतिक। स्वाभाविक। २. दैवी। ईश्वरीय।

कुदर्शन—वि० [सं०] कुरूप। बदसूरत।

कुदलाना*—क्रि० अ० [हिं० कूदना] कूदते हुए चलना। उछलना। कूदना।

कुदाँव—संज्ञा पुं० [सं० कु + हिं० दाँव] १. बुरा दाँव। कुघात। २. विश्वासघात। दगा। धोखा। †३. औघट। बुरी स्थिति। संकट की स्थिति। ४. बुरा स्थान। विकट स्थान। ५. मर्मस्थान।

कुदाई*—वि० [हिं० कुदाव] बुरे ढंग से दाँव घात करनेवाला। छली। विश्वासघाती।

कुदान—संज्ञा पुं० [सं०] १. बुरा दान (लेनेवाले के लिये) जैसे—शय्यादान, गजदान आदि। २. कुपात्र या अयोग्य आदि को दिया जानेवाला दान।
संज्ञा स्त्री० [हिं० कूदना] १. कूदने की क्रिया या भाव। २. बहुत पहुँचकर कहना। ३. उतनी दूरी जितनी एक बार कूदने में पार की जाय।

कुदाना—क्रि० स० [हिं० कूदना] कूदने का प्रेरणार्थक रूप। कूदने में प्रवृत्त करना।

कुदाम*—संज्ञा पुं० [सं० कु + हिं० दाम] खोटा सिक्का। खोटा रुपया।

कुदाय*—संज्ञा पुं० दे० "कुदाँव"।

कुदाल—संज्ञा स्त्री० [सं० कुद्दाल] [स्त्री० अल्पा० कुदाली] मिट्टी खोदने और खेत गोड़ने का एक औज़ार।

कुदिन—संज्ञा पुं० [सं०] १. आपत्ति का समय। खराब दिन। २. एक सूर्योदय से लेकर दूसरे सूर्योदय तक का समय। सावन दिन। ३. वह दिन जिसमें ऋतु-विरुद्ध या कष्ट देनेवाली घटनाएँ हों।

कुदिष्टि*—संज्ञा स्त्री० दे० "कुदृष्टि"।

कुदृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] बुरी नजर। पाप-दृष्टि। बद-निगाह।

कुदेव—संज्ञा पुं० [सं० कु = भूमि + देव] भूदेव। भूसुर। ब्राह्मण।
संज्ञा पुं० [सं० कु = बुरा + देव] राक्षस।

कुद्रव—संज्ञा पुं० [सं०] कोदो। (अन्न)।
संज्ञा पुं० [देश०] तलवार चलाने के ३२ हाथों या प्रकारों में से एक।

कुधर—संज्ञा पुं० [सं० कुध्र] १. पहाड़। पर्वत। २ शेषनाग।

कुधातु—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बुरी धातु। २. लोहा।

कुनकुना—वि० [सं० कदुष्ण] आधा गरम। कुछ गरम। गुनगुना।

कुनप—संज्ञा पुं० दे० "कुणप"।

कुनबा—संज्ञा पुं० [सं० कुटुंब] कुटुंब।

कुनबी—संज्ञा पुं० [सं० कुटुंब] हिंदुओं की एक जाति जो प्रायः खेती करती है। कुरमी। गृहस्थ।

कुनबा–संज्ञा पुं० [हिं० कुनना] बर्तन आदि खरादनेवाला। मनुष्य। खरादी।

कुनह–संज्ञा स्त्री० [फा० कीन.] [वि० कुनही] १ द्वेष। मनोमालिन्य। २ पुराना बैर।

कुनही–वि० [हिं० कुनह] द्वेष रखनेवाला।

कुनाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० कुनना] १. वह चूर या बुरनी जो किसी वस्तु को खरादने या खुरचने पर निकलती है। बुरादा। २. खरादने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

कुनाम–संज्ञा पुं० [सं०] बदनामी।

कुनित*–वि० दे० "क्वणित"।

कुनैन–संज्ञा स्त्री० [अं० क्विनिन] सिंकोना नामक पेड़ की छाल का सत जो अँगरेजी चिकित्सा में ज्वर के लिये अत्यंत उपकारी माना जाता है।

कुपथ–संज्ञा पुं० [सं० कुपथ] १ बुरा मार्ग। २. निषिद्ध आचरण। कुचाल। ३ बुरा मत। कुत्सित सिद्धांत या संप्रदाय।

कुपथी–वि० [हिं० कुपथ] बुरे आचरणवाला। कुमार्गी।

कुपढ़–वि० [सं० कु + हिं० पढ़ना] अनपढ़।

कुपथ–संज्ञा पुं० [सं०] १ बुरा रास्ता। २ निषिद्ध आचरण। बुरी चाल।

यौ०––कुपथगामी = निषिद्धआचरणवाला।

*संज्ञा पुं० [सं० कुपथ्य] वह भोजन जो स्वास्थ्य के लिये हानिकारक हो।

कुपथ्य–संज्ञा पुं० [सं०] वह आहार विहार जो स्वास्थ्य को हानिकारक हो। बदपरहेजी।

कुपना*–क्रि० अ० दे० "कोपना"।

कुपाठ–संज्ञा पुं० [सं०] बुरी सलाह।

कुपात्र–वि० [सं०] १ अनधिकारी। अयोग्य। नालायक। २ वह जिसे दान देना शास्त्र से निषिद्ध हो।

कुपार*–संज्ञा पुं० [सं० अकूपार] समुद्र।

कुपित–वि० [सं०] १ क्रुद्ध। क्रोधित। २ अप्रसन्न। नाराज।

कुपुत्र–संज्ञा पुं० [सं०] वह पुत्र जो कुपथगामी हो। कपूत। दुष्ट पुत्र।

कुप्पा–संज्ञा पुं० [सं० कूपक या कुतुप] [स्त्री० अल्पा० कुप्पी] चमड़े का बना हुआ घड़े के आकार का बर्तन जिसमें घी, तेल आदि रखे जाते हैं।

मुहा०––कुप्पा होना या हो जाना = १. फूल जाना। सूजना। २ मोटा होना। हृष्ट-पुष्ट होना। ३ रूठना। मुँह फुलाना।

कुप्पी–संज्ञा स्त्री० [हिं० कुप्पा] छोटा कुप्पा।

कुफर*†–संज्ञा पुं० दे० "कुफ्र"।

कुफेन*–संज्ञा स्त्री० [सं०] काबुल नदी का पुराना नाम।

कुफ्र–संज्ञा पुं० [अ०] १ मुसलमानी मत से भिन्न अन्य मत। २ मुसलमानी धर्म के विरुद्ध बात।

कुबंड–संज्ञा पुं० [सं० कोदंड] धनुष।
*वि० [कु + बंड = भाग] खोड़ा। विकृतांग।

कुबजा–संज्ञा स्त्री० दे० "कुब्जा" या "कुबरी"।

कुबड़ा–संज्ञा पुं० [सं० कुब्ज] [स्त्री० कुबड़ी] वह पुरुष जिसकी पीठ टेढ़ी हो गई या झुक गई हो।
वि० १ झुका हुआ। टेढ़ा। २ जिसकी पीठ झुकी हो।

कुबड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० कुबड़ा] १ दे० "कुबरी"। २ वह छड़ी जिसका सिरा झुका हुआ हो। टेढ़िया।

कुबत*†–संज्ञा स्त्री० [सं० कु + हिं० बात] १ बुरी बात। २ निंदा। ३ बुरी चाल।

कुबरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० कुबड़ा] १ कंस की एक कुबड़ी दासी जो कृष्णचंद्र पर अधिक प्रेम रखती थी। कुब्जा। २ वह छड़ी जिसका सिरा झुका हो। टेढ़िया।

कुबाक*–संज्ञा पुं० दे० "कुवाक्य"।

कुबानि–संज्ञा स्त्री० [सं० कु + हिं० बानि] बुरी आदत। बुरी लत। कुटेव।

कुबानी*–संज्ञा पुं० [सं० कुवाणिज्य] बुरा व्यापार।

कुबुद्धि–वि० [सं०] दुर्बुद्धि। मूर्ख।
संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मूर्खता। बेवकूफी। २ बुरी सलाह। कुमंत्रणा।

कुबेला–संज्ञा स्त्री० [सं० कुबेला] बुरा समय। अनुपयुक्त काल।
कुब्ज–वि० [सं०] [स्त्री० कुब्जा] जिसकी पीठ टेढ़ी हो। कुबड़ा।
संज्ञा पुं० [सं०] एक वायु रोग जिसमें छाती या पीठ टेढ़ी होकर ऊँची हो जाती है।
कुब्जा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कंस की एक कुबड़ी दासी जो कृष्णचंद्र से प्रेम रखती थी। कुबरी। २. कैकेयी की मंथरा नाम की एक दासी।
कुब्बा–संज्ञा पुं० दे० "कूबड़"।
कुभा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पृथ्वी की छाया। २. बुरी दीप्ति। ३. काबुल नदी।
कुमंठी*–संज्ञा स्त्री० [सं० कमठ = बाँस] पतली लचीली टहनी।
कुमक–संज्ञा स्त्री० [तु०] १. सहायता। मदद। २. पक्षपात। हिमायत। तरफ़दारी।
कुमकी–वि० [तु० कुमक] कुमक का। कुमक से संबंध रखनेवाला।
संज्ञा स्त्री० हाथियों के पकड़ने में सहायता करने के लिए सिखाई हुई हथिनी।
कुमकुम–संज्ञा पुं० [सं० कुंकुमः] १. केसर। २. कुमकुमा।
कुमकुमा–संज्ञा पुं० [तु० कुमकुमः] १. लाख का बना हुआ एक प्रकार का पोला गोला जिसमें अबीर और गुलाल भरकर होली में लोग एक दूसरे पर मारते हैं। २. एक प्रकार का तंग मुँह का छोटा लोटा। ३. काँच के बने हुए पोले छोटे गोले।
कुमरिया–संज्ञा पुं० [?] हाथियों की एक जाति।
कुमरी–संज्ञा स्त्री० [अ०] पंडुक की जाति की एक चिड़िया।
कुमाच–संज्ञा पुं० [अ० कुमाश] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।
संज्ञा स्त्री० दे० "कौंच"।
कुमार–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कुमारी] १. पाँच वर्ष की अवस्था का बालक। २. पुत्र। बेटा। ३. युवराज। ४. कार्तिकेय। ५. सिंधु नद। ६. तोता। सुग्गा। ७. खरा सोना। ८. सनक, सनंदन, सनत् और सुजात आदि कई ऋषि जो सदा बालक ही रहते हैं। ९. युवावस्था या उससे पहले की अवस्थावाला पुरुष। १०. एक ग्रह जिसका उपद्रव बालकों पर होता है।
वि० [सं०] बिना ब्याहा। कुँआरा।
कुमारग†–संज्ञा पुं० दे० "कुमार्ग"।
कुमारतंत्र–संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक का वह भाग जिसमें बच्चों के रोगों का निदान और चिकित्सा हो। बालतंत्र।
कुमारबाज–संज्ञा पुं० [अ० किमार + फा० बाज] जुआरी। जुआ खेलनेवाला।
कुमारभृत्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. गर्भिणी को सुख से प्रसव कराने की विद्या। २. गर्भिणी या नवप्रसूत बालकों के रोगों की चिकित्सा।
कुमारललिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] सात अक्षरों का एक वृत्त।
कुमारलसिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] आठ अक्षरों का एक वृत्त।
कुमारिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] कुमारी।
कुमारिल भट्ट–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध मीमांसक जिन्होंने जैनों और बौद्धों को परास्त करने में योग दिया था।
कुमारी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बारह वर्ष तक की अवस्था की कन्या। २. घीकुवार। ३. नवमल्लिका। ४. बड़ी इलायची। ५. सीता जी का एक नाम। ६. पार्वती। ७. दुर्गा। ८. एक अंतरीप, जो भारतवर्ष के दक्खिन में है। ९. पृथिवी का मध्य।
वि० स्त्री० बिना ब्याही।
कुमारीपूजन–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की देवी-पूजा जिसमें कुमारी बालिकाओं का पूजन किया जाता है।
कुमार्ग–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कुमार्गी] १. बुरा मार्ग। बुरी राह। २. अधर्म।
कुमार्गी–वि० [सं० कुमार्गिन्] [स्त्री० कुमार्गिनी] १. बदचलन। कुचाली। २. अधर्मी। धर्महीन।
कुमुख–वि० पुं० [सं०] [स्त्री० कुमुखी]

जिसका चेहरा देखने में अच्छा न हो।

कुमुद—संज्ञा पु० [सं०] १. कुईं। कोका। २. लाल कमल। ३. चाँदी। ४. विष्णु। ५. एक बंदर जो राम-रावण के युद्ध में लड़ा था। ६. कपूर। ७ दक्षिण-पश्चिम कोण का दिग्गज।

कुमुदबंधु—संज्ञा पु० [सं०] चंद्रमा।

कुमुदिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] कुईं। कोईं।

कुमुदिनीपति—संज्ञा पु० [सं०] चंद्रमा।

कुमेरु—संज्ञा पु० [सं०] दक्षिणी ध्रुव।

कुमोद*—संज्ञा पु० दे० "कुमुद"।

कुमोदिनी—संज्ञा स्त्री० दे० "कुमुदिनी"।

कुम्मैत—संज्ञा पु० [तु० कुमैत] १. घोड़े का एक रंग, जो स्याही लिए लाल होता है। लाखी। २ इस रंग का घोड़ा।

यौ०—आठों गाँठ कुम्मैत = अत्यंत चतुर। छँटा हुआ। चालाक। धूर्त्त।

कुम्मैद*—संज्ञा पु० दे० "कुम्मैत"।

कुम्हड़ा—संज्ञा पु० [सं० कूष्मांड] एक फैलनेवाली बेल जिसके फलों की तरकारी होती है।

मुहा०—कुम्हड़े की बतिया = १. कुम्हड़े का छोटा बच्चा फल। २ अशक्त और निर्बल मनुष्य।

कुम्हड़ौरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कुम्हड़ा+बरी] एक प्रकार की बरी जो पीठी में कुम्हड़े के टुकड़े मिलाकर बनाई जाती है। बरी।

कुम्हलाना—क्रि० अ० [सं० कु+म्लान] १ पौधे की ताजगी का जाता रहना। मुरझाना। २ सूखने पर होना। ३ कांति का मलिन पड़ना। प्रभाहीन होना।

कुम्हार—संज्ञा पु० [सं० कुंभकार] [स्त्री० कुम्हारिन्] मिट्टी के बरतन बनानेवाला।

कुम्ही*—संज्ञा स्त्री० [सं० कुंभी] जलकुंभी।

कुरंग—संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० कुरंगी] १ बादामी या तामड़े रंग का हिरन। २ मृग। हिरन। ३ बरवै छंद।

संज्ञा पु० [सं० कु+हिं० रंग] १ बुरा रंग-ढंग। बुरा लक्षण। २ घोड़े का एक रंग जो लोहे के समान होता है। नीला। कुम्मैत। लखौरी। ३. इस रंग का घोड़ा।

वि० बुरे रंग का। बदरंग।

कुरंगिन*—संज्ञा स्त्री० [सं० कुरंग] हिरनी।

कुरंटक—संज्ञा पु० [सं०] पीली कटसरैया।

कुरंड—संज्ञा पु० [सं० कुरुविंद] एक खनिज पदार्थ जिसके चूर्ण को लाख आदि में मिलाकर हथियार तेज करने की सान बनाते हैं।

कुरकी—संज्ञा स्त्री० दे० "कुर्की"।

कुरकुर—संज्ञा पु० [अनु०] खरी वस्तु के दबकर टूटने का शब्द।

कुरकुरा—वि० [हिं० कुरकुर] [स्त्री० कुरकुरी] खरा और करारा जिसे तोड़ने पर कुरकुर शब्द हो।

कुरकुरी—संज्ञा स्त्री० [अनु०] पतली मुलायम हड्डी। जैसे, कान की।

कुरता—संज्ञा पु० [तु०] [स्त्री० कुरती] एक पहनावा जो सिर डालकर पहना जाता है।

कुरना*।—क्रि० अ० दे० "कुरलना"।

कुरबान—वि० [अ०] जो निछावर या बलिदान किया गया हो।

मुहा०—कुरबान जाना = निछावर होना। बलि जाना।

कुरबानी—संज्ञा स्त्री० [अ०] बलिदान।

कुरर—संज्ञा पु० [सं०] १ गिद्ध की जाति का एक पक्षी। २ करांकुल। क्रौंच।

कुररा—संज्ञा पु० [सं० कुरर] [स्त्री० कुररी] १. करांकुल। क्रौंच। २ टिटिहरी।

कुररी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ आर्य्या छंद का एक भेद। २ 'कुररा' का स्त्रीलिंग।

कुरलना*—क्रि० अ० [सं० कलरव] मधुर स्वर से पक्षियों का बोलना।

कुरव—वि० [सं०] बुरी बोली बोलनेवाला।

कुरवना—क्रि० स० [हिं० कूरा] ढेर लगाना। राशि लगाना। एकबारगी बहुत सा रखना।

कुराबद—संज्ञा पु० दे० "कुरुविंद"।

कुरसी—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. एक प्रकार

की ऊँची चौकी जिसमें पीठ की ओर सहारे के लिये पटरी लगी रहती है।
यौ०—आराम-कुर्सी = एक प्रकार की बड़ी कुर्सी जिसपर आदमी लेट सकता है।
२. वह चबूतरा जिसके ऊपर इमारत बनाई जाती है। ३. पीढ़ी। पुश्त।

कुरसीनामा—संज्ञा पुं० [फा०] लिखी हुई वंश-परंपरा। वंशवृक्ष। शजरा। पुश्तनामा।

कुरा—संज्ञा पुं० [अ० कुर्रह] वह गाँठ जो पुराने जख्म में पड़ जाती है।
संज्ञा पुं० [सं० कुरव] कटसरैया।

कुराइ*—संज्ञा स्त्री० दे० "कुराय"।

कुरान—संज्ञा पुं० [अ०] अरबी भाषा की एक पुस्तक जो मुसलमानों का धर्मग्रंथ है।

कुराय*—संज्ञा स्त्री० [सं० कु + फा० राह] पानी से पोली जमीन में पड़ा हुआ गड्ढा।

कुराह—संज्ञा स्त्री० [सं० कु + फ़ा० राह] [वि० कुराही] १. कुमार्ग। बुरी राह। २. बुरी चाल। खोटा आचरण।

कुराहर*†—संज्ञा पुं० दे० "कोलाहल"।

कुराही—वि० [हिं० कुराह + ई (प्रत्य०)] कुमार्गी। बद-चलन।
संज्ञा स्त्री० बद-चलनी। दुराचार।

कुरिया†—संज्ञा स्त्री० [सं० कुटी] १. फूस की झोंपड़ी। कुटी। २. बहुत छोटा गाँव।

कुरियाल—संज्ञा स्त्री० [सं० कल्लोल] चिड़ियों का मौज में बैठकर पर खुजलाना।
मुहा०—कुरियाल में आना = १. चिड़ियों का आनंद में होना। २. मौज में आना।

कुरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कूरा] मिट्टी का छोटा धुस या टीला।
*संज्ञा स्त्री० [सं० कुल] वंश। घराना।
संज्ञा स्त्री० [हिं० कूरा] खंड। टुकड़ा।

कुरीति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बुरी रीति। कुप्रथा। २. कुचाल।

कुरु—संज्ञा पुं० [सं०] १. वैदिक आर्यों का एक कुल। २. हिमालय के उत्तर और दक्षिण का एक प्रदेश। ३. एक सोमवंशी राजा जिसके वंश में पांडु और धृतराष्ट्र हुए थे। ४. कुरु के वंश में उत्पन्न पुरुष।

कुरुई—संज्ञा स्त्री० [सं० कुडव] बाँस या मूँज की बनी हुई छोटी डलिया। मौनी।

कुरुक्षेत्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक बहुत प्राचीन तीर्थ जो अंबाले और दिल्ली के बीच में है। महाभारत का युद्ध यहीं हुआ था।

कुरुखेत†—संज्ञा पुं० "कुरुक्षेत्र"।

कुरुख—वि० [सं० कु + फ़ा० रुख] जिसके चेहरे से अप्रसन्नता झलकती हो। नाराज।

कुरुजांगल—संज्ञा पुं० [सं०] पांचाल देश के पश्चिम का एक देश।

कुरुम*—संज्ञा पुं० दे० "कूर्म"।

कुरुविंद—संज्ञा पुं० [सं०] १. मोथा। २. काच लवण। ३. उरद। ४. दर्पण।

कुरूप—वि० [सं०] [स्त्री० कुरूपा] बुरी शकल का। बदसूरत। बेडौल। बेढंगा।

कुरूपता—संज्ञा स्त्री० [सं०] बदसूरती।

कुरेदना—क्रि० स० [सं० कर्त्तन] १. खुरचना। खरोचना। करोदना। खोदना। २. राशि या ढेर को इधर-उधर चलाना।

कुरेर*†—संज्ञा स्त्री० दे० "कुलेल"।

कुरेलना—क्रि० स० दे० "कुरेदना"।

कुरैया—संज्ञा स्त्री० [सं० कुटज] सुंदर फूलों-वाला एक जंगली पेड़ जिसके बीज "इंद्र-जौ" कहलाते हैं।

कुरौना*‡—क्रि० स० [हिं० कूरा = ढेर] ढेर लगाना। कूरा लगाना।

कुर्क़—वि० [तु० कुर्क़] [संज्ञा कुर्क़ी] जब्त।

कुर्क़-अमीन—संज्ञा पुं० [तु० कुर्क़ + फ़ा० अमीन] वह सरकारी कर्मचारी जो अदालत के आज्ञानुसार जायदाद की कुर्क़ी करता है।

कुर्क़ी—संज्ञा स्त्री० [तु० कुर्क़ + ई (प्रत्य०)] कर्जदार या अपराधी की जायदाद का ऋण या जुरमाने की वसूली के लिए सरकार द्वारा जब्त किया जाना।

कुर्मी—संज्ञा पुं० दे० "कुनबी"।

कुर्री—संज्ञा स्त्री० [देश०] १. हेंगा। पटरा। २. कुरकुरी हड्डी। ३. गोल टिकिया।

कुलंग—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. एक पक्षी जिसका सिर लाल और बाकी शरीर

कुलह–संज्ञा स्त्री० [फा० कुलाह] १. टोपी। २. शिकारी चिड़ियों की आँखों पर का ढक्कन। अँधियारी।
कुलहा*†–संज्ञा पुं० दे० "कुलह"।
कुलही–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० कुलाह] बच्चों के सिर पर देने की टोपी। कनटोप।
कुलांगार–संज्ञा पुं० [सं०] कुल का नाश करनेवाला। सत्यानाशी।
कुलांच, कुलांट*–संज्ञा स्त्री० [तु० कुलाच] चौकड़ी। छलाँग। उछाल।
कुलाचल–संज्ञा पुं० दे० "कुलपर्वत"।
कुलाचार्य्य–संज्ञा पुं० [सं०] कुलगुरु।
कुलाबा–संज्ञा पुं० [अ०] १. लोहे का जमुरका जिसके द्वारा किवाड़ बाजू से जकड़ा रहता है। पायजा। २. मोरी।
कुलाल–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कुलाली] १. मिट्टी के बरतन बनानेवाला। कुम्हार। २. जंगली मुर्गा। ३. उल्लू।
कुलाह–संज्ञा पुं० [सं०] भूरे रंग का घोड़ा जिसके पैर गाँठ से सुमों तक काले हों। संज्ञा स्त्री० [फा०] एक प्रकार की टोपी जो अफगानिस्तान में पहनी जाती है।
कुलाहल*–संज्ञा पुं० दे० "कोलाहल"।
कुलिंग–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का पक्षी। २. चिड़ा। गौरा। ३. पक्षी।
कुलिक–संज्ञा पुं० [सं०] १. शिल्पकार। दस्तकार। कारीगर। २. उत्तम वंश में उत्पन्न पुरुष। ३. कुल का प्रधान पुरुष।
कुलिश–संज्ञा पुं० [सं०] १. हीरा। २. वज्र। बिजली। गाज। ३. राम, कृष्णादि के चरणों का एक चिह्न। ४. कुठार।
कुली–संज्ञा पुं० [तु०] बोझ ढोनेवाला। मजदूर।
यौ०–कुली कबारी छोटी जाति के लोग।
कुलीन–वि० [सं०] [संज्ञा कुलीनता] १. उत्तम कुल में उत्पन्न। अच्छे घराने का। खानदानी। २. पवित्र। शुद्ध। साफ।
कुलुफ†–संज्ञा पुं० [अ० कुफ़्ल] ताला।
कुलू–संज्ञा पुं० [सं० कुलूत] काँगड़े के पास का देश।
कुलूत–संज्ञा पुं० [सं०] कुलू देश।
कुलेल–संज्ञा स्त्री० [सं० कल्लोल] क्रीड़ा। कलोल।
कुलेलना*–क्रि० अ० [हिं० कुलेल] क्रीड़ा करना। आमोद-प्रमोद करना।
कुल्माष–संज्ञा पुं० [सं०] १. कुलथी। २. उर्द। माष। ३. बोरो धान। ४. वह अन्न जिसमें दो भाग हों। द्विदल अन्न।
कुल्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कृत्रिम नदी। नहर। २. छोटी नदी। ३. नाली।
कुल्ला–संज्ञा पुं० [सं० कवल] [स्त्री० कुल्ली] मुँह को साफ़ करने के लिये उसमें पानी लेकर फेंकने की क्रिया। गरारा। संज्ञा पुं० [?] १. घोड़े का एक रंग जिसमें पीठ की रीढ़ पर बराबर काली धारी होती है। २. इस रंग का घोड़ा। संज्ञा [फा० काकुल] जुल्फ़। काकुल।
कुल्ली–संज्ञा स्त्री० दे० "कुल्ला"।
कुल्हड़–संज्ञा पुं० [सं० कुल्हर] [स्त्री० कुल्हिया] पुरवा। चुक्कड़।
कुल्हाड़ा–संज्ञा पुं० [सं०] कुठार [स्त्री० अल्पा० कुल्हाड़ी] एक औजार जिससे पेड़ काटते और लकड़ी चीरते हैं। कुठार।
कुल्हाड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० कुल्हाड़ा का स्त्री० अल्पा०] छोटा कुल्हाड़ा। कुठारी। टाँगी।
कुल्हिया–संज्ञा स्त्री० [हिं० कुल्हड़] छोटा पुरवा या कुल्हड़। चुक्कड़।
मुहा०–कुल्हिया में गुड़ फोड़ना = इस प्रकार कोई कार्य्य करना जिसमें किसी को खबर न हो।
कुवलय–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कुवलयिनी] १. नीली कोईं। कोका। २. नील कमल। ३. भूमंडल। ४. एक प्रकार के असुर।
कुवलयापीड़–संज्ञा पुं० [सं०] कंस का एक हाथी जिसे कृष्णचंद्र ने मारा था।
कुवलयाश्व–संज्ञा पुं० [सं०] १. धुंधुमार राजा। २. ऋतुध्वज राजा। ३. एक घोड़ा जिसे, ऋषियों का यज्ञ विध्वंस करनेवाले पातालकेतु को मारने के लिये, सूर्य्य ने पृथ्वी पर भेजा था।
कुवाच्य–वि० [सं०] जो कहने योग्य न हो।

मटमैले रंग का होता है। २ मुर्गा। कुक्कुट।

कुलजन–संज्ञा पुं० [सं०] १ अदरक की तरह का एक पौधा जिसकी जड़ गरम और दीपन होती है। २ पान की जड़।

कुल–संज्ञा पुं० [सं०] १ वंश। घराना। खानदान। २ जाति। ३ समूह। समुदाय। झुंड। ४ घर। मकान। ५ वाम-मार्ग। कौल धर्म। ६ व्यापारियों का संघ।

वि० [अ०] समस्त। सब। सारा।

यौ०—कुल जमा=१ सब मिलाकर। २ केवल। मात्र।

कुलकना–क्रि० अ० [हिं० किलकना] आनंदित होना। खुशी से उछलना।

कुलकलंक–संज्ञा पुं० [सं०] अपने वंश की कीर्ति में धब्बा लगानेवाला।

कुलकानि–संज्ञा स्त्री० [सं० कुल+हिं० कान=मर्य्यादा] कुल की मर्य्यादा। कुल की लज्जा।

कुलकुलाना–क्रि० अ० [अनु०] कुलकुल शब्द करना।

मुहा०—आँतें कुलकुलाना=भूख लगना।

कुलक्षण–संज्ञा पुं० [सं० स्त्री० कुलक्षणी] १ बुरा लक्षण। २ कुचाल। बदचलनी।

वि० [सं०] [स्त्री० कुलक्षणा] १ बुरे लक्षणवाला। २ दुराचारी।

कुलच्छन–संज्ञा पुं० दे० "कुलक्षण"।

कुलच्छनी–संज्ञा स्त्री० दे० 'कुलक्षणी"।

कुलटा–वि० पुं० [सं०] [स्त्री० कुलटा] १ बहुत स्त्रियों से प्रेम रखनेवाला। व्यभिचारी। बदचलन। २ औरस के अतिरिक्त और प्रकार का पुत्र। जैसे, क्षेत्रज, दत्तक।

कुलटा–वि० स्त्री० [सं०] बहुत पुरुषों से प्रेम रखनेवाली। छिनाल। (स्त्री) संज्ञा स्त्री० [सं०] वह परकीया नायिका जो बहुत पुरुषों से प्रेम रखती हो।

कुलतारन–वि० [सं० कुल+हिं० तारना] [स्त्री० कुलतारनी] कुल को तारनेवाला।

कुलथी–संज्ञा स्त्री० [कुलथ या कुलत्थिका] एक प्रकार का मोटा अन्न।

कुलदेव–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कुलदेवी] वह देवता जिसकी पूजा किसी कुल में परंपरा से होती आई हो। कुलदेवता।

कुलदेवता–संज्ञा पुं० दे० "कुलदेव"।

कुलधर्म–संज्ञा पुं० [सं०] कुल-परंपरा से चला आता हुआ कर्त्तव्य।

कुलना–क्रि० अ० [हिं० कल्लाना] टीस मारना। दर्द करना।

कुलपति–संज्ञा पुं० [सं०] १ घर का मालिक। २ वह अध्यापक जो विद्यार्थियों का भरण-पोषण करता हुआ उन्हें शिक्षा दे। ३ वह ऋषि जो दस हजार ब्रह्मचारियों को अन्न और शिक्षा दे।

कुलपूज्य–वि० [सं०] जिसका मान कुल-परंपरा से होता आया हो। कुल का पूज्य।

कुलफ†–संज्ञा पुं० [अ० कुफ्ल] ताला।

कुलफत–संज्ञा स्त्री० [अ०] मानसिक दुःख। चिंता।

कुलफा–संज्ञा पुं० [फा० खुर्फा] एक साग। बड़ी जाति की अमलोनी।

कुलफी–संज्ञा स्त्री० [हिं० कुलफ] १ पेंच। २ टीन आदि का चोंगा जिसमें दूध आदि भरकर बर्फ जमाते हैं। ३ उपर्युक्त प्रकार से जमा हुआ दूध, मलाई या कोई शर्बत।

कुलबुल–संज्ञा पुं० [अनु०] [संज्ञा कुलबुलाहट] छोटे छोटे जीवों के हिलने-डोलने की आहट।

कुलबुलाना–क्रि० अ० [अनु० कुलबुल] १ बहुत से छोटे छोटे जीवों का एक साथ मिलकर हिलना डोलना। इधर उधर रेंगना। २ चंचल होना। आकुल होना।

कुलबोरना†–वि० [हिं० कुल+बोरना] वंश की मर्य्यादा भ्रष्ट करनेवाला। कुल में दाग लगानेवाला।

कुलवधू–संज्ञा स्त्री० [सं०] कुलवती स्त्री। मर्य्यादा से रहनेवाली स्त्री।

कुलवंत–वि० [सं०] [स्त्री० कुलवती] कुलीन।

कुलवान्–वि० [सं०] [स्त्री० कुलवती] कुलीन। अच्छे वंश का।

कुलह–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० कुलाह] १. टोपी। २. शिकारी चिड़ियों की आँखों पर का ढक्कन। अँधियारी।
कुलहा*†–संज्ञा पुं० दे० "कुलह"।
कुलही–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० कुलाह] बच्चों के सिर पर देने की टोपी। कनटोप।
कुलांगार–संज्ञा पुं० [सं०] कुल का नाश करनेवाला। सत्यानाशी।
कुलांच, कुलांट*–संज्ञा स्त्री० [तु० कुलाच] चौकड़ी। छलाँग। उछाल।
कुलाचल–संज्ञा पुं० दे० "कुलपर्वत"।
कुलाचार्य्य–संज्ञा पुं० [सं०] कुलगुरु।
कुलाबा–संज्ञा पुं० [अ०] १. लोहे का जमुरका जिसके द्वारा किवाड़ बाजू से जकड़ा रहता है। पायजा। २. मोरी।
कुलाल–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कुलाली] १. मिट्टी के बरतन बनानेवाला। कुम्हार। २. जंगली मुर्गा। ३. उल्लू।
कुलाह–संज्ञा पुं० [सं०] भूरे रंग का घोड़ा जिसके पैर गाँठ से सुमों तक काले हों।
संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] एक प्रकार की टोपी जो अफ़गानिस्तान में पहनी जाती है।
कुलाहल*–संज्ञा पुं० दे० "कोलाहल"।
कुलिंग–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का पक्षी। २. चिड़ा। गौरा। ३. पक्षी।
कुलिक–संज्ञा पुं० [सं०] १. शिल्पकार। दस्तकार। कारीगर। २. उत्तम वंश में उत्पन्न पुरुष। ३. कुल का प्रधान पुरुष।
कुलिश–संज्ञा पुं० [सं०] १. हीरा। २. वज्र। बिजली। गाज। ३. राम, कृष्णादि के चरणों का एक चिह्न। ४. कुठार।
कुली–संज्ञा पुं० [तु०] बोझ ढोनेवाला। मजदूर।
यौ०–*कुली कबारी* छोटी जाति के लोग।
कुलीन–वि० [सं०] [संज्ञा कुलीनता] १. उत्तम कुल में उत्पन्न। अच्छे घराने का। खानदानी। २. पवित्र। शुद्ध। साफ।
कुलुफ़†–संज्ञा पुं० [अ० कुफ़्ल] ताला।
कुलू–संज्ञा पुं० [सं० कुलूत] काँगड़े के पास का देश।
कुलूत–संज्ञा पुं० [सं०] कुलू देश।
कुलेल–संज्ञा स्त्री० [सं० कल्लोल] क्रीड़ा। कलोल।
कुलेलना*–क्रि० अ० [हिं० कुलेल] क्रीड़ा करना। आमोद-प्रमोद करना।
कुल्माष–संज्ञा पुं० [सं०] १. कुलथी। २. उर्द। माष। ३. बोरो धान। ४. वह अन्न जिसमें दो भाग हों। द्विदल अन्न।
कुल्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कृत्रिम नदी। नहर। २. छोटी नदी। ३. नाली।
कुल्ला–संज्ञा पुं० [सं० कवल] [स्त्री० कुल्ली] मुँह को साफ़ करने के लिये उसमें पानी लेकर फेंकने की क्रिया। गरारा।
संज्ञा पुं० [?] १. घोड़े का एक रंग जिसमें पीठ की रीढ़ पर बराबर काली धारी होती है। २. इस रंग का घोड़ा।
संज्ञा [फ़ा० काकुल] जुल्फ़। काकुल।
कुल्ली–संज्ञा स्त्री० दे० "कुल्ला"।
कुल्हड़–संज्ञा पुं० [सं० कुल्हर] [स्त्री० कुल्हिया] पुरवा। चुक्कड़।
कुल्हाड़ा–संज्ञा पुं० [सं० कुठार] [स्त्री० अल्पा० कुल्हाड़ी] एक औज़ार जिससे पेड़ काटते और लकड़ी चीरते हैं। कुठार।
कुल्हाड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० कुल्हाड़ा का स्त्री० अल्पा०] छोटा कुल्हाड़ा। कुठारी। टाँगी।
कुल्हिया–संज्ञा स्त्री० [हिं० कुल्हड़] छोटा पुरवा या कुल्हड़। चुक्कड़।
मुहा०–कुल्हिया में गुड़ फोड़ना = इस प्रकार कोई कार्य्य करना जिसमें किसी को खबर न हो।
कुवलय–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कुवलयिनी] १. नीली कोईं। कोका। २. नील कमल। ३. भूमंडल। ४. एक प्रकार के असुर।
कुवलयापीड़–संज्ञा पुं० [सं०] कंस का एक हाथी जिसे कृष्णचंद्र ने मारा था।
कुवलयाश्व–संज्ञा पुं० [सं०] १. धुंधुमार राजा। २. ऋतुध्वज राजा। ३. एक घोड़ा जिसे, ऋषियों का यज्ञ विध्वंस करनेवाले पातालकेतु को मारने के लिये, सूर्य्य ने पृथ्वी पर भेजा था।
कुवाच्य–वि० [सं०] जो कहने योग्य न हो।

गदा। कुरा।
राजा पु० दुर्योधन। गाली।

कुवार–संज्ञा पु० [सं० (अश्विनी) कुमार] [वि० कुवारी] आश्विन का महीना। असोज।

कुविचार–संज्ञा पु० [सं०] बुरा विचार।

कुविचारी–वि० [सं० कुविचारिन्] [स्त्री० कुविचारिणी] बुरे विचारवाला।

कुबेर–संज्ञा पु० [सं०] एक देवता जो यक्षों के राजा तथा इंद्र की नौ निधियों के भंडारी समझे जाते हैं।

कुश–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० कुशा, कुशी] १ कांस की तरह की एक घास जिसका यज्ञों में उपयोग होता था। २ जल। पानी। ३ रामचंद्र का एक पुत्र। ४ दे० "कुश-द्वीप"। ५ हल की फाल। कुसी।

कुशद्वीप–संज्ञा पु० [सं०] सात द्वीपों में से एक जो चारों ओर घृत समुद्र से घिरा है।

कुशध्वज–संज्ञा पु० [सं०] सीरध्वज। जनक के छोटे भाई जिनकी कन्याएँ भरत और शत्रुघ्न को ब्याही थीं।

कुशल–वि० [सं०] [स्त्री० कुशला] १ चतुर। दक्ष। प्रवीण। २ श्रेष्ठ। अच्छा। भला। ३ पुण्यशील। ४ क्षेम। मंगल। खैरियत। राजी। खुशी।

कुशल-क्षेम–संज्ञा पु० [सं०] राजी खुशी। खैर-आफियत।

कुशलता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चतुराई। चालाकी। २ योग्यता। प्रवीणता।

कुशलाई, कुशलात*–संज्ञा स्त्री० [हिं० कुशल] कल्याण। क्षेम। खैरियत।

कुशा–संज्ञा स्त्री० दे० 'कुश'। (१)।

कुशाग्र–वि० [सं०] कुश की नोक की तरह तीखा। तीव्र। तेज। जैसे—कुशाग्र-बुद्धि।

कुशादा–वि० [फा०] [संज्ञा कुशादगी] १ खुला हुआ। २ विस्तृत। लंबा चौड़ा।

कुशासन–संज्ञा पु० [सं० कुश+आसन] कुश का बना हुआ आसन।

कुशिक–संज्ञा पु० [सं०] १ एक प्राचीन आर्य्य वंश। विश्वामित्र जी इसी वंश के थे। २. एक राजा जो विश्वामित्र के पिता गाधि के पिता थे। ३. फाल।

कुशीद–संज्ञा पु० दे० "कुसीद"।

कुशीनार–संज्ञा पु० [सं० कुशनगर] वह स्थान जहाँ शाल वृक्ष के नीचे गौतम बुद्ध का निर्वाण हुआ था।

कुशीलव–संज्ञा पु० [सं०] १. कवि। चारण। २ नाटक खेलनेवाला। नट। ३ गवैया। ४ वाल्मीकि ऋषि।

कुशूलधान्यक–संज्ञा पु० [सं०] वह गृहस्थ जिसके पास तीन वर्ष तक के लिये खाने भर को अन्न संचित हो।

कुश्ता–संज्ञा पु० [फा०] वह भस्म जो धातुओं को रासायनिक क्रिया से फूँककर बनाया जाय। भस्म।

कुश्ती–संज्ञा स्त्री० [फा०] दो आदमियों का परस्पर एक दूसरे को बलपूर्वक पछाड़ने या पटकने के लिये लड़ना। मल्ल-युद्ध। पकड़।

मुहा०—कुश्ती मारना=कुश्ती में दूसरे को पछाड़ना। कुश्ती खाना=कुश्ती में हार जाना।

कुश्तीबाज–वि० [फा०] कुश्ती लड़नेवाला। लड़ता। पहलवान।

कुष्ठ–संज्ञा पु० [सं०] १ कोढ़। २ कुट नामक ओषधि। ३ कुड़ा नामक वृक्ष।

कुष्ठी–संज्ञा पु० [सं० कुष्ठिन्] [स्त्री० कुष्ठिनी] वह जिसे कोढ़ हुआ हो। कोढ़ी।

कुष्मांड–संज्ञा पु० [सं०] १ कुम्हड़ा। २ एक प्रकार के देवता जो शिव के अनुचर हैं।

कुसंग–संज्ञा पु० दे० "कुसंगति"।

कुसंगति–संज्ञा स्त्री० [सं०] बुरा का संग। बुरे लोगों के साथ उठना-बैठना।

कुसंस्कार–संज्ञा पु० [सं०] चित्त में बुरी बातों का जमना। बुरी वासना।

कुसगुन–संज्ञा पु० [सं० कु+हिं० सगुन] बुरा सगुन। असगुन। कुलक्षण।

कुसमय–संज्ञा पु० [सं०] १ बुरा समय। २ वह समय जो किसी कार्य्य के लिये ठीक न हो। अनुपयुक्त अवसर। ३ नियत से आगे या पीछे का समय। ४ संकट का समय। दुःख के दिन।

कुसल*|–वि० दे० 'कुशल'।

कुसलई*–संज्ञा स्त्री० [सं० कुशल+ई (प्रत्य०)] निपुणता। चतुराई।

कुसलाई*–संज्ञा स्त्री० [सं० कुशल+आई (प्रत्य०)] १. कुशलता। निपुणता। २. कुशल-क्षेम। खैरियत।

कुसलात*–संज्ञा स्त्री० दे० "कुशलात"।

कुसली*–वि० दे० "कुशली"।
†संज्ञा पुं० [हिं० कसैली] १. आम की गुठली। २. गोझा। पिराक।

कुसवारी–संज्ञा पुं० [सं० कोशकार] १. रेशम का जंगली कीड़ा। २. रेशम का कोया।

कुसाइत–संज्ञा स्त्री० [सं० कु+अ० सअत] १. बुरी साइत। बुरा मुहूर्त। कुसमय। २. अनुपयुक्त समय। बेमौका।

कुसीद–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कुसीदिक] १. सूद। ब्याज। वृद्धि। २. ब्याज पर दिया हुआ धन।

कुसुंब–संज्ञा पुं० [सं०] एक बड़ा वृक्ष जिसकी लकड़ी जाठ और गाड़ियाँ बनाने के काम में आती है।

कुसुभ–संज्ञा पुं० [सं०] १. कुसुम। बर्रे। २. केसर। कुमकुम।

कुसुभा–संज्ञा पुं० [सं० कुसुंभ] १. कुसुम का रंग। २. अफीम और भाँग के योग से बना हुआ एक मादक द्रव्य।

कुसुभी–वि० [सं० कुसुभ] कुसुम के रंग का। लाल।

कुसुम–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कुसुमित] १. फूल। पुष्प। २. वह गद्य जिसमें छोटे छोटे वाक्य हों। ३. आँख का एक रोग। ४. मासिक धर्म। रजोदर्शन। रज। ५. छंद में ठगण का छठा भेद।
संज्ञा पुं० दे० "कुसुंब"।
संज्ञा पुं० [सं० कुसुभ] एक पौधा जिसमें पीले फूल लगते हैं। बर्रे।

कुसुमपुर–संज्ञा पुं० [सं०] पटना नगर का एक प्राचीन नाम।

कुसुमबाण–संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।

कुसुमविचित्रा–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्ण-वृत्त।

कुसुमस्तवक–संज्ञा पुं० [सं०] दंडक छंद का एक भेद।

कुसुमशर–संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।

कुसुमांजलि–संज्ञा स्त्री० [सं०] देवता पर हाथ की अँजुली में फूल भरकर चढ़ाना। पुष्पांजलि।

कुसुमाकर–संज्ञा पुं० [सं०] १. वसंत। २. छप्पय का एक भेद।

कुसुमायुध–संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।

कुसुमावलि–संज्ञा स्त्री० [सं०] फूलों का गुच्छा। फूलों का समूह।

कुसुमित–वि० [सं०] फूला हुआ। पुष्पित।

कुसूत–संज्ञा पुं० [सं० कु+सूत्र, प्रा० सुत्त] १. बुरा सूत। २. कुप्रबंध। कुब्योंत।

कुसेसय*–संज्ञा पुं० दे० "कुशेशय"।

कुहक–संज्ञा पुं० [सं०] १. माया। धोखा। जाल। फरेब। २. धूर्त। मक्कार। ३. मुर्गे की कूक। ४. इंद्रजाल जाननेवाला।

कुहकना–क्रि० अ० [सं० कुहुक या कुहू] पक्षी का मधुर स्वर में बोलना। पीकना।

कुहनी–संज्ञा स्त्री० [सं० कफोणि] हाथ और बाहु के जोड़ की हड्डी।

कुहप–संज्ञा पुं० [सं० कुहू=अमावस्या+प] रजनीचर। राक्षस।

कुहर–संज्ञा पुं० [सं०] १. गड्ढा। बिल। छेद। सूराख। २. गले का छेद।

कुहरा–संज्ञा पुं० [सं० कुहेडी] जल के सूक्ष्म कणों का समूह जो ठंढक पाकर वायु की भाप में जमने से उत्पन्न होता है।

कुहराम–संज्ञा पुं० [अ० कहर+आम] १. विलाप। रोना पीटना। २. हलचल।

कुहाना*†–क्रि० अ० [हिं० कोह+ना (प्रत्य०)] रिसाना। नाराज होना। रूठना।

कुहारा*–संज्ञा पुं० दे० "कुल्हाड़ा"।

कुहासा†–संज्ञा पुं० दे० "कुहरा"।

कुही–संज्ञा स्त्री० [सं० कुधि=एक पक्षी] एक प्रकार की शिकारी चिड़िया। कुहर।
संज्ञा पुं० [फ़ा० कोही=पहाड़ी] घोड़े की एक जाति। टाँगन।

कुहुक–संज्ञा पुं० [अनु०] पक्षियों का मधुर

स्वर। चीख।

कुहुकना–क्रि० अ० [हिं० कुहुक + ना (प्रत्य०)] पक्षियों का मधुर स्वर में बोलना।

कुहुकबान–संज्ञा पु० [हिं० कुहुकना + बाण] एक प्रकार का बाण जिसके चलाते समय कुछ शब्द निकलता है।

कुहू–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अमावस्या, जिसमें चंद्रमा बिलकुल दिखलाई न दे। २ मोर या कोयल की बोली। (इस अर्थ में "कुहू" के साथ रट, पुकार आदि शब्द लगाने से क्रियावाची शब्द बनते हैं।)

कूँच–संज्ञा स्त्री० [सं० कुचिका = नली] मोटी नस जो एँड़ी के ऊपर या टखने के नीचे होती है। कूँ। घोड़ानस।

कूँचना†–क्रि० स० दे० "कुचलना"।

कूँचा–संज्ञा पु० [सं० कूर्च] [स्त्री० कूँची] झाड़ू। बोहारी।

कूँची–संज्ञा स्त्री० [हिं० कूँचा] १ छोटा कूँचा। छोटा झाड़ू। २ कूटी हुई मूँज या बालों का गुच्छा जिससे चीजों की मैल साफ करते या उनपर रंग फेरते हैं। ३ चित्रकार की रंग भरने की कलम।

कूँज–संज्ञा पु० [सं० क्रौंच] क्रौंच पक्षी।

कूँड़–संज्ञा पु० [सं० कुंड] १ लोहे की ऊँची टोपी जिसे लड़ाई के समय पहनते थे। खोद। २ मिट्टी या लोहे का गहरा बरतन, जिससे सिंचाई के लिये कुएँ से पानी निकालते हैं। ३ वह नाली जो खेत में हल जोतने से बन जाती है। कूड़।

कूँड़ा†–संज्ञा पु० [सं० कुंड] [स्त्री० कूँडी] १ पानी रखने का मिट्टी का गहरा बरतन। २ छोटे पौधे लगाने का बरतन। गमला। ३ रोशनी करने की बड़ी हाँडी। डोल। ४ मिट्टी या काठ का बड़ा बरतन। कठौता। मठौता।

कूँडी–संज्ञा स्त्री० [हिं० कूँडा] १ पत्थर की प्याली। पथरी। २ छोटी नाँद।

कूँथना*†–क्रि० अ० [सं० कुंथन] १ दुःख या श्रम से स्पष्ट शब्द मुँह से निकालना। काँखना। २ कबूतरों का गुटरगूँ करना।

क्रि० स० मारना। पीटना।

कूईं–संज्ञा स्त्री० [सं० कुव + ई (प्रत्य०)] जल में होनेवाला एक पौधा, जिसके फूल चाँदनी रात में खिलना प्रसिद्ध है। कुमुदिनी। कोकाबेली।

कूक–संज्ञा स्त्री० [सं० कूजन] १ लंबी सुरीली ध्वनि। २ मोर या कोयल की बोली।

संज्ञा स्त्री० [हिं० कुंजी] घड़ी या बाजे आदि में कुंजी देने की क्रिया।

कूकना–क्रि० अ० [सं० कूजन] कोयल या मोर का बोलना।

क्रि० स० [हिं० कुंजी] कमानी कसने के लिये घड़ी या बाजे में कुंजी भरना।

कूकर†–संज्ञा पु० [सं० कुक्कुर] [स्त्री० कूकरी] कुत्ता। श्वान।

कूकर-कौर–संज्ञा पु० [हिं० कूकर + कौर] १ वह जूठा भोजन जो कुत्ते के आगे डाला जाता है। टुकड़ा। २ तुच्छ वस्तु।

कूका–संज्ञा पु० [हिं० कूकना = चिल्लाना] सिक्खों का एक पंथ।

कूच–संज्ञा पु० [तु०] प्रस्थान। रवानगी। मुहा०—कूच कर जाना = मर जाना। (किसी के) देवता कूच कर जाना = होश हवास जाता रहना। भय या किसी और कारण से ठक हो जाना। कूच बोलना = प्रस्थान करना।

कूचा–संज्ञा पु० [फा०] १ छोटा रास्ता। गली। २ दे० "कूँचा"।

कूज–संज्ञा स्त्री० [हिं० कूजना] ध्वनि।

कूजन–संज्ञा पु० [सं०] [वि० कूजित] मधुर शब्द बोलना। (पक्षियों का)

कूजना–क्रि० अ० [सं० कूजन] कोमल और मधुर शब्द करना।

कूजा–संज्ञा पु० [फा० कूजा] १ मिट्टी का पुरवा। कुल्हड़। २ मिट्टी के पुरवे में जमाई हुई अर्द्धगोलाकार मिश्री। मिश्री की डली।

कूजित–वि० [सं०] १ जो बोला या कहा गया हो। ध्वनित। २ गूँजा हुआ या

ध्वनिपूर्ण (स्थान आदि)।
कूट-संज्ञा पुं० [सं०] १. पहाड़ की ऊँची चोटी। जैसे—हेमकूट। २. सींग। ३. (अनाज आदि की) ऊँची और बड़ी राशि। ढेरी। ४. छल। धोखा। फ़रेब। ५. मिथ्या। असत्य। झूठ। ६. गूढ़ भेद। गुप्त रहस्य। ७. वह जिसका अर्थ जल्दी न प्रकट हो। जैसे, सूर का कूट। ८. वह हास्य या व्यंग्य जिसका अर्थ गूढ़ हो।
वि० [सं०] १. झूठा। मिथ्यावादी। २. धोखा देनेवाला। छलिया। ३. कृत्रिम। बनावटी। नकली। ४. प्रधान। श्रेष्ठ।
संज्ञा स्त्री० [सं० कुष्ठ] कुट नाम की औषधि।
संज्ञा स्त्री० [हिं० काटना या कूटना] काटने, कूटने या पीटने आदि की क्रिया।
कूटता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कठिनाई। २. झुठाई। ३. छल। कपट।
कूटत्व-संज्ञा पुं० दे० "कूटता"।
कूटना-क्रि० स० [सं० कुट्टन] १. किसी चीज़ को तोड़ने आदि के लिये उसपर बार बार कोई चीज़ पटकना। जैसे, धान कूटना।
मुहा०—कूट कूटकर भरना=खूब कस कसकर भरना। ठसाठस भरना।
२. मारना। पीटना। ठोंकना। ३. सिल, चक्की आदि में टाँकी से छोटे छोटे गड्ढे करना। दाँत निकालना।
कूटनीति-संज्ञा स्त्री० [सं०] दाँव-पेंच की नीति या चाल। छिपी हुई चाल। घात।
कूटयुद्ध-संज्ञा पुं० [सं०] वह लड़ाई जिसमें शत्रु को धोखा दिया जाय।
कूटसाक्षी-संज्ञा पुं० [सं०] झूठा गवाह।
कूटस्थ-वि० [सं०] १. सर्वोपरि स्थित। आला दर्जे का। २. अटल। अचल। ३. अविनाशी। विनाश-रहित। ४. गुप्त। छिपा हुआ।
कूटू-संज्ञा पुं० [देश०] एक पौधा जिसके बीजों का आटा व्रत में फलाहार के रूप में खाया जाता है। काफर। कुल्टू। काठू। कोटू।
कूड़ा-संज्ञा पुं० [सं० कूट, प्रा० कूड़=ढेर] १. ज़मीन पर पड़ी हुई गर्द, खर पत्ते आदि जिन्हें साफ़ करने के लिये झाड़ू दिया जाता है। कतवार। २. निकम्मी चीज़।
कूड़ाखाना-संज्ञा पुं० [हिं० कूड़ा+फ़ा० खाना] वह स्थान जहाँ कूड़ा फेंका जाता हो। कतवारखाना।
कूढ़-संज्ञा पुं० [सं० कृष्टि] बोने की वह रीति जिसमें हल की गड़ारी में बीज डाला जाता है। छींटा का उलटा।
वि० [सं० कु+ऊह=कूह, प्रा० कूघ] नासमझ। अज्ञानी। बेवकूफ़।
कूढ़मग्ज़-वि० [हिं० कूढ़+फ़ा० मग्ज़] मंदबुद्धि। कुंदज़ेहन।
कूत-संज्ञा स्त्री० [सं० आकूत=आशय] १. वस्तु की संख्या, मूल्य या परिमाण का अनुमान। २. दे० "कनकूत"।
कूतना-क्रि० स० [हिं० कूत] १. अनुमान करना। अंदाज़ लगाना। २. बिना गिने, नापे या तौले संख्या, मूल्य या परिमाण आदि का अनुमान करना। ३. दे० "कनकूत"।
कूद-संज्ञा स्त्री० [सं०] कूदने की क्रिया या भाव।
यौ०—कूद-फाँद=कूदने या उछलने की क्रिया।
कूदना-क्रि० अ० [सं० स्कुदन] १. दोनों पैरों को पृथिवी पर से बलपूर्वक उठाकर शरीर को किसी ओर फेंकना। उछलना। फाँदना। २. जान-बूझकर ऊपर से नीचे की ओर गिरना। ३. बीच में सहसा आ मिलना या दखल देना। ४. क्रम-भंग करके एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँच जाना। ५. अत्यंत प्रसन्न होना। दे० "उछलना" ६. बढ़बढ़कर बातें करना।
मुहा०—किसी के बल पर कूदना=किसी का सहारा पाकर बहुत बढ़बढ़कर बोलना।
क्रि० स० उल्लंघन कर जाना। लाँघ जाना।
कूप-संज्ञा पुं० [सं०] १ कुआँ। इनारा। २. छेद। सूराख। ३. गहरा गड्ढा।
कूपमंडूक-संज्ञा पुं० [सं०] १. कुएँ में रहनेवाला मेढक। २. वह मनुष्य जो

अपना स्थान छोड़कर कहीं बाहर न गया हो। बहुत थोड़ी जानकारी का मनुष्य।

कूबड़–संज्ञा पु० [सं० कूबर] १. पीठ का टेढ़ापन। २ किसी चीज़ का टेढ़ापन।

कूबरी–संज्ञा स्त्री० दे० "कुबरी"।

क्रूर–वि० [सं० क्रूर] १. दया-रहित। निर्दय। २ भयंकर। डरावना। ३. मनहूस। असगुनिया। ४. दुष्ट। बुरा। ५. अकर्मण्य। निकम्मा। ६ मूर्ख। जड़।

क्रूरता–संज्ञा स्त्री० [हिं० क्रूर] १ निर्दयता। कठोरता। बेरहमी। २ जड़ता। मूर्खता। ३ अरसिकता। ४ कायरता। डरपोकपन। ५ खोटापन। बुराई।

क्रूरपन–संज्ञा पु० दे० "क्रूरता"।

कूरम*–संज्ञा पु० दे० "कूर्म"।

कूरा–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० कूरी] १ ढेर। राशि। २ भाग। अंश। हिस्सा।

कूर्चिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कूँची। २ कली। ३ कुंजी। ४ सूई।

कूर्म–संज्ञा पु० [सं०] १ कच्छप। कछुआ। २ पृथिवी। ३ प्रजापति का एक अवतार। ४ एक ऋषि। ५ वह वायु जिसके प्रभाव से पलकें खुलती और बंद होती है। ६ विष्णु का दूसरा अवतार।

कूर्मपुराण–संज्ञा पु० [सं०] अठारह मुख्य पुराणों में से एक।

कूल–संज्ञा पु० [सं०] १ किनारा। तट। तीर। २ सेना के पीछे का भाग। ३ समीप। पास। ४ बड़ा नाला। नहर। ५ तालाब।

कूल्हा–संज्ञा पु० [सं० क्रोड] कमर में पेड़ू के दोनों ओर निकली हुई हड्डियाँ।

क़ूवत–संज्ञा स्त्री० [अ०] शक्ति। बल।

कूबर–संज्ञा पु० [सं०] १ रथ का वह भाग जिसपर जूआ बाँधा जाता है। युगंधर। हरसा। २. रथ में रथी के बैठने का स्थान। ३ कुबड़ा।

कूष्मांड–संज्ञा पु० [सं०] १ कुम्हड़ा। २. पेठा। ३ वैदिक काल के एक ऋषि।

कूह*–संज्ञा स्त्री० [हिं० कूक] १ चिंघाड़। हाथी की चिग्घाड़। २. चीख। चिल्लाहट।

कृकर–संज्ञा पु० [सं०] मस्तक की वायु जिससे वेग से छींक आती है।

कृकलास–संज्ञा पु० [सं०] गिरगिट।

कृकाट, कृकाटक–संज्ञा पु० [सं०] गर्दन का जोड़। रीढ़ का एक भाग जो गर्दन को जोड़ता है।

कृच्छ्र–संज्ञा पु० [सं०] १. कष्ट। दुःख। २ पाप। ३ मूत्र-कृच्छ्र रोग। ४ कोई व्रत जिसमें पंचगव्य प्राशन कर दूसरे दिन उपवास किया जाय।
वि० कष्टसाध्य। मुश्किल।

कृत–वि० [सं०] १ किया हुआ। संपादित। २ बनाया हुआ। रचित।
संज्ञा पु० [सं०] १. चार युगों में से पहला युग। सतयुग। २. वह दास जिसने कुछ नियत काल तक सेवा करने की प्रतिज्ञा की हो। ३ चार की संख्या।

कृतकार्य–वि० [सं०] जिसका प्रयोजन सिद्ध हो चुका हो। सफल-मनोरथ।

कृतकृत्य–वि० [सं०] जिसका काम पूरा हो चुका हो। कृतार्थ। सफल-मनोरथ।

कृतघ्न–वि० [सं०] [संज्ञा कृतघ्नता] किए हुए उपकार को न माननेवाला। अकृतज्ञ।

कृतघ्नता–संज्ञा स्त्री० [सं०] किए हुए उपकार को न मानने का भाव। अकृतज्ञता।

कृतघ्नी*†–वि० दे० "कृतघ्न"।

कृतज्ञ–वि० [सं०] [संज्ञा कृतज्ञता] किए हुए उपकार का माननेवाला। एहसान माननेवाला।

कृतज्ञता–संज्ञा स्त्री० [सं०] किए हुए उपकार को मानना। एहसानमंदी।

कृतयुग–संज्ञा पु० [सं०] सतयुग।

कृतविद्य–वि० [सं०] जिसे किसी विद्या का अभ्यास हो। जानकार। पंडित।

कृतांत–संज्ञा पु० [सं०] १. समाप्त करनेवाला। अंत करनेवाला। २ यम। धर्मराज। ३ पूर्व जन्म में किए हुए शुभ और अशुभ कर्मों का फल। ४. मृत्यु।

५. पाप। ६. देवता। ७. दो की संख्या।
कृतात्यय–संज्ञा पुं० [सं०] सांख्य के अनुसार भोग द्वारा कर्मों का नाश।
कृतार्थ–वि० [सं०] १. जिसका काम सिद्ध हो चुका हो। कृतकृत्य। सफल-मनोरथ। २. संतुष्ट। ३. कुशल। निपुण। होशियार।
कृति–संज्ञा स्त्री० [स०] १. करतूत। करनी। २. कार्य। काम। ३. आघात। क्षति। ४. इंद्रजाल। जादू। ५. दो समान अंकों का घात। वर्गसंख्या (गणित)। ६. बीस की संख्या।
कृती–वि० [सं०] १. कुशल। निपुण। दक्ष। २. साधु। ३. पुण्यात्मा।
कृत्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मृगचर्म। २. चमड़ा। खाल। ३. भोजपत्र।
कृत्तिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सत्ताईस नक्षत्रों में से तीसरा नक्षत्र। २. छकड़ा।
कृत्तिवास–संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।
कृत्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. कर्त्तव्य-कर्म। वेद-विहित आवश्यक कार्य्य। जैसे—यज्ञ, संस्कार। २. करनी। करतूत। कम। ३. भूत, प्रेत, यक्षादि जिनका पूजन अभिचार के लिये होता है।
कृत्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक भयंकर राक्षसी जिसे तांत्रिक अपने अनुष्ठान से शत्रु को नष्ट करने के लिए भेजते हैं। २. अभिचार। ३. दुष्टा या कर्कशा स्त्री।
कृत्रिम–वि० [सं०] १. जो असली न हो। नकली। २. वह अनाथ बालक जिसे पालकर किसी ने अपना पुत्र बनाया हो।
कृदंत–संज्ञा पुं० [सं०] वह शब्द जो धातु में कृत् प्रत्यय लगाने से बने। जैसे— पाचक, नंदन।
कृपण–वि० [सं०] [संज्ञा स्त्री० कृपणता] १. कंजूस। सूम। २. क्षुद्र। नीच।
कृपणता–संज्ञा स्त्री० [सं०] कंजूसी।
कृपनाई*–संज्ञा स्त्री० दे० "कृपणता"।
कृपया–क्रि० वि० [सं०] कृपापूर्वक। अनुग्रहपूर्वक। मिहरबानी करके।
कृपा–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० कृपालु] १. विना किसी प्रतिकार की आशा के दूसरे की भलाई करने की इच्छा या वृत्ति। अनुग्रह। दया। २. क्षमा। माफ़ी।
कृपाण–संज्ञा पुं० [सं०] १. तलवार। २. कटार। ३. दंडक वृत्त का एक भेद।
कृपापात्र–संज्ञा पुं० [सं०] वह व्यक्ति जिस पर कृपा हो। कृपा का अधिकारी।
कृपायतन–संज्ञा पुं० [सं०] अत्यंत कृपालु।
कृपाल*†–वि० दे० "कृपालु"।
कृपालु–वि० [सं०] कृपा करनेवाला।
कृपालुता–संज्ञा स्त्री० [सं०] दया का भाव। मेहरबानी।
कृपिण*†–वि० दे० "कृपण"।
कृमि–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कृमिल] १. क्षुद्र कीट। छोटा कीड़ा। २. हिरमजी कीड़ा या मिट्टी। किरमिजी। ३. लाह।
कृमिज–वि० [सं०] कीड़ों से उत्पन्न। संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कृमिजा] १. रेशम। २. अगर। ३. किरमिजी। हिरमिजी।
कृमिरोग–संज्ञा पुं० [सं०] आमाशय और पक्वाशय में कीड़े उत्पन्न होने का रोग।
कृश–वि० [सं०] १. दुबला-पतला। क्षीण। २. अल्प। छोटा। सूक्ष्म।
कृशता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुबलापन। दुर्बलता। २. अल्पता। कमी।
कृशर–संज्ञा पुं० [स०] [स्त्री० कृशरा] १. तिल और चावल की खिचड़ी। २. खिचड़ी। ३. लोबिया मटर। केसारी। दुबिया।
कृशानु–संज्ञा पुं० [सं०] अग्नि।
कृशित–वि० [सं०] दुबला-पतला।
कृशोदरी–वि० स्त्री० [सं०] पतली कमरवाली (स्त्री)।
कृषक–संज्ञा पुं० [सं०] १. किसान। खेतिहर। काश्तकार। २. हल का फाल।
कृषि–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० कृष्य] खेती। कास्त। किसानी।
कृष्ण–वि० [सं०] १. श्याम। काला। स्याह। २. नीला या आसमानी। संज्ञा पुं० [स्त्री० कृष्णा] १. यदुवंशी वसुदेव के पुत्र जो विष्णु के प्रधान अवतारों,

में है। ७ एक असुर जिसे इंद्र ने मारा था। ३ एक मंत्रद्रष्टा ऋषि। ४ अथर्ववेद के अंतर्गत एक उपनिषद्। ५ छप्पय छंद का एक भेद। ६ चार अक्षरों का एक वृत्त। ७ वेदव्यास। ८ अर्जुन। ९ कायल। १० कौआ। ११. कदम का पेड़। १२ अँधेरा पक्ष। १३ कलियुग। १४. चंद्रमा का धब्बा।

कृष्णचंद्र—संज्ञा पुं० दे० "कृष्ण" (१)।

कृष्णद्वैपायन—संज्ञा पुं० [सं०] पराशर के पुत्र वेदव्यास। पाराशर्य।

कृष्णपक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] मास का वह पक्ष जिसमें चंद्रमा का ह्रास हो। अँधेरा पाख।

कृष्णसार—संज्ञा पुं० [सं०] १ काला हिरन। करसायल। २ सेंहुड़। थूहर।

कृष्णा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ द्रौपदी। २ पीपल। पिप्पली। ३ दक्षिण देश की एक नदी। ४ काली दाख। ५ काला जीरा। ६ काली (देवी)। ७ अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक। ८ काले पत्ते की तुलसी।

कृष्णाभिसारिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह अभिसारिका नायिका जो अँधेरी रात में अपने प्रेमी के पास संकेत-स्थान में जाय।

कृष्णाष्टमी—संज्ञा स्त्री० [सं०] भादों के कृष्ण पक्ष की अष्टमी, जिस दिन श्रीकृष्ण का जन्म हुआ था।

कृष्य—वि० [सं०] खेती करने योग्य (भूमि)।

कें कें—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ चिड़िया का कष्टसूचक शब्द। २ झगड़ा या असंतोष-सूचक शब्द।

केंचली—संज्ञा स्त्री० [सं० कंचुक] सर्प आदि के शरीर पर का झिल्लीदार चमड़ा जो हर साल गिर जाता है।

केंचुआ—संज्ञा पुं० [सं० किंचिलिक] १ सूत के आकार का एक बरसाती कीड़ा जो एक बालिश्त लंबा होता है। २ केंचुए के आकार का सफेद कीड़ा जो मल के साथ बाहर निकलता है।

केंचुली—संज्ञा स्त्री० दे० "केंचली"।

केंद्र—संज्ञा पुं० [सं० यू० केंद्रन] १ किसी वृत्त के अंदर का वह बिंदु जिससे परिधि तक खींची हुई सब रेखाएँ परस्पर बराबर हों। नाभि। ठीक मध्य का बिंदु। २ किसी निश्चित अंश से ९०, १८०, २७० और ३६० अंश के अंतर का स्थान। ३ मुख्य या प्रधान स्थान। ४ रहने का स्थान। ५ बीच का स्थान।

केंद्री—वि० [सं० केंद्रिन्] केंद्र में स्थित।

के—प्रत्य० [हिं० का] १ संबंधसूचक "का" विभक्ति का बहुवचन रूप। जैसे—राम के घोड़े। २ "का" विभक्ति का वह रूप जो उसे संबंधवान् के विभक्तियुक्त होने से प्राप्त होता है। जैसे—राम के घोड़े पर। |सर्व० [सं० "क"] कौन? (अवधी)

केउ†—सर्व० [हिं० के+उ] कोई।

केकड़ा—संज्ञा पुं० [सं० कर्कट] पानी का एक कीड़ा जिसे आठ टाँगें और दो पंजे होते हैं।

केकय—संज्ञा पुं० [सं०] १ व्यास और शाल्मली नदी की दूसरी ओर के देश का प्राचीन नाम (यह अब कश्मीर के अंतर्गत है और कक्का कहलाता है)। २ [स्त्री० केकयी] केकय देश का राजा या निवासी। ३ दशरथ के श्वशुर और कैकेयी के पिता।

केकयी—संज्ञा स्त्री० दे० "कैकेयी"।

केका—संज्ञा स्त्री० [सं०] मोर की बोली।

केकी—संज्ञा पुं० [सं० केकिन्] मोर। मयूर।

केचित्—सर्व० [सं०] कोई कोई।

केड़ा—संज्ञा पुं० [सं० काड] १ नया पौधा या अंकुर। कोंपल। २ नवयुवक।

केत—संज्ञा पुं० [सं०] १ घर। भवन। २ स्थान। जगह। बस्ती। ३ केतु। ध्वजा।

केतक—संज्ञा पुं० [सं०] केवड़ा। वि० [सं० कति+एक] १ कितने। किस कदर। २ बहुत। बहुत कुछ।

केतकर*—संज्ञा स्त्री० दे० "केतकी"।

केतकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक छोटा पौधा जिसमें काँड के चारों ओर तलवार के से लंबे काँटेदार पत्ते निकले होते हैं और कोश में बंद मंजरी के रूप में बहुत

सुगंधित फूल लगते हैं।

केतन–संज्ञा पुं० [सं०] १. निमंत्रण । २. ध्वजा । ३. चिह्न । ४. घर । ५. स्थान । जगह।

केता*†–वि० [सं० कियत्] [स्त्री० केति] कितना।

केतिक*†–वि० [सं० कति + एक] कितना। किस कदर।

केतु–संज्ञा पुं० [सं०] १. ज्ञान। २. दीप्ति। प्रकाश । ३. ध्वजा। पताका । ४. निशान । चिह्न । ५. पुराणानुसार एक राक्षस का कबंध। ६. एक प्रकार का तारा जिसके साथ प्रकाश की एक पूँछ सी दिखाई देती है। पुच्छल तारा। ७. नव-ग्रहों में से एक ग्रह (फलित) । ८. चंद्रकक्ष और क्रांतिरेखा के अधःपात का बिंदु। (गणित ज्योतिष)

केतुमती–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक वर्णार्द्ध समवृत्त । २. रावण की नानी अर्थात् सुमाली राक्षस की पत्नी।

केतुमान्–वि० [सं०] १. तेजवान् । तेजस्वी । २. ध्वजावाला। ३. बुद्धिमान्।

केतुवृक्ष–संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार मेरु के चारों ओर के पर्वतों पर के वृक्षों का नाम । ये चार हैं—कदंब, जामुन, पीपल और बरगद।

केतो*–वि०[सं० कति][स्त्री०केति] कितना।

केदली†–संज्ञा पुं० दे० "कदली"।

केदार–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह खेत जिसमें धान बोया या रोपा जाता हो। २. सिंचाई के लिये खेत में किया हुआ विभाग। क्यारी । ३. वृक्ष के नीचे का थाला। थाँवला । ४. दे० "केदारनाथ"।

केदारनाथ–संज्ञा पुं० [सं०] हिमालय के अंतर्गत एक पर्वत जिसके शिखर पर केदारनाथ नामक शिवलिंग है।

केन–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध उपनिषद् । तलवार का उपनिषद्।

केयूर–संज्ञा पुं० [सं०] बाँह में पहनने का बिजायठ । बजुल्ला । अंगद। बहूँटा। भुजबंद।

केयूरी–वि० [सं०] जो केयूर पहने हो। केयूरधारी।

केरा†–प्रत्य० [सं० कृत] [स्त्री० केरी] संबंध-सूचक विभक्ति । का (अवधी) ।

केरल–संज्ञा पुं० [सं०] १. दक्षिण भारत का एक देश। कनारा। २. [स्त्री० केरली] केरल देश-वासी पुरुष। ३. एक प्रकार का फलित ज्योतिष।

केराना†–संज्ञा पुं० [सं० क्रयण] नमक, मसाला, हलदी आदि चीजें जो पंसारियों के यहाँ मिलती हैं।

केरानी–संज्ञा पुं० [अं० क्रिश्चियन] १. वह जिसके माता-पिता में से कोई एक यूरोपियन और दूसरा हिन्दुस्तानी हो। किरंटा। युरेशियन। २. अँगरेजी दफ्तर में लिखने-पढ़ने का काम करनेवाला मुंशी । क्लर्क।

केराव†–संज्ञा पुं० [सं० कलाय] मटर।

केरि*–प्रत्य० [सं० कृत] दे० "केरी"। संज्ञा स्त्री० दे० "केलि"।

केरी*–प्रत्य० [सं० कृत] की। "के" विभक्ति का स्त्रीलिंग रूप। संज्ञा स्त्री० [देश०] आम का कच्चा और छोटा नया फल। अँबिया।

केरोसिन–संज्ञा पुं० [सं०] मिट्टी का तेल।

केला–संज्ञा पुं० [सं० कदल, प्रा० कयल] गरम जगहों में होनेवाला एक पेड़ जिसके पत्ते गज सवा गज लंबे और फल लंबे, गूदेदार और मीठे होते हैं।

केलि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. खेल । क्रीड़ा। २. रति । मैथुन । स्त्रीप्रसंग। ३. हँसी। ठट्टा । दिल्लगी। ४. पृथ्वी।

केलिकला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सरस्वती की वीणा। २. रति । समागम।

केवका–संज्ञा पुं० [सं० कवक = ग्रास] वह मसाला जो प्रसूता स्त्रियों को दिया जाता है।

केवट–संज्ञा पुं० [सं० कैवर्त्त] एक जाति जो आजकल नाव चलाने तथा मिट्टी खोदने का काम करती है।

केवटी दाल—संज्ञा स्त्री० [हिं० केवट=एक सकर जाति+दाल] दो या अधिक प्रकार की, एक में मिली हुई, दाल।

केवटी मोथा—संज्ञा पु० [स० कैवर्तमुस्तक] एक प्रकार का सुगंधित मोथा।

केवटई—वि० [हिं० केवटा+ई (प्रत्य०)] हलका पीला और हरा मिला हुआ सफेद। जैसा—केवटई रंग।

केवड़ा—संज्ञा पु० [सं० केविका] १ सफेद केतकी का पौधा जो केतकी से कुछ बड़ा होता है। २ इस पौधे का फूल। ३ इसके फूल से उतारा हुआ सुगंधित जल या आसव।

केवल—वि० [स०] १ एकमात्र। अकेला। २ शुद्ध। पवित्र। ३ उत्कृष्ट। उत्तम। श्रेष्ठ।

क्रि० वि० मात्र। सिर्फ।

संज्ञा पु० [वि० केवली] वह ज्ञान जो भ्रांति-शून्य और विशुद्ध हो।

केवलात्मा—संज्ञा पु० [स०] १ पाप और पुण्य से रहित, ईश्वर। २ शुद्ध स्वभाव-वाला मनुष्य।

केवली—संज्ञा पु० [स० केवल+ई (प्रत्य०)] मुक्ति का अधिकारी साधु। केवल ज्ञानी।

केवलव्यतिरेकी—संज्ञा पु० [स० केवलव्यति-रेकिन्] कार्य को प्रत्यक्ष देखकर कारण का अनुमान। जैसे—नदी का चढ़ाव देखकर वृष्टि होने का अनुमान। शेषवत्।

केवलान्वयी—संज्ञा पु० [स० केवलान्वयिन्] कारण द्वारा कार्य का अनुमान। जैसे—बादल देखकर पानी बरसने का अनुमान। पूर्ववत्।

केवाँच—संज्ञा स्त्री० दे० "कौंच"।

केवा—संज्ञा पु० [स० कुव=कमल] १ कमल। २ केतकी। केवड़ा।

संज्ञा पु० [स० किंवा] बहाना। मिस। टालमटूल।

केवाड़†—संज्ञा पु० दे० 'किवाड़"।

केश—संज्ञा पु० [स०] १ रश्मि। किरण। २ वरुण। ३ विश्व। ४ विष्णु। ५ सूर्य। ६ सिर का बाल।

केशकर्म—संज्ञा पु० [स०] १ बाल काढ़ने और गूँथने की कला। केश विन्यास। २ केशांत नामक संस्कार।

केशपाश—संज्ञा पु० [स०] बालों की लट। काकुल।

केशरंजन—संज्ञा पु० [स०] भँगरैया।

केशर—संज्ञा पु० दे० "केसर"।

केशराज—संज्ञा पु० [स०] १ एक प्रकार का भुजंगा पक्षी। २ भँगरैया। भृंगराज।

केशरी—संज्ञा पु० दे० "केसरी"।

केशव—संज्ञा पु० [स०] १ विष्णु। २ कृष्ण-चंद्र। ३ ब्रह्म। परमेश्वर। ४ विष्णु के २४ मूर्तिभेदों में से एक।

केशविन्यास—संज्ञा पु० [स०] बालों की सजावट। बालों का सँवारना।

केशांत—संज्ञा पु० [स०] १ सोलह संस्कारों में से एक जिसमें यज्ञोपवीत के पीछे सिर के बाल मूँड़े जाते थे। गोदान कर्म। २ मुंडन।

केशि—संज्ञा पु० [स०] एक राक्षस जिसे कृष्ण ने मारा था।

केशिनी—संज्ञा स्त्री० [स०] १ वह स्त्री जिसके सिर के बाल सुंदर और बड़े हों। २ एक अप्सरा। ३ पार्वती की एक सहचरी। ४ रावण की माता कैकसी का एक नाम।

केशी—संज्ञा पु० [स० केशिन्] [स्त्री० केशिनी] १ प्राचीन काल के एक गृहपति का नाम। २ एक असुर जिसे कृष्ण ने मारा था। ३ घोड़ा। ४ सिंह।

वि० १ किरण या प्रकाशवाला। २ अच्छे बालोंवाला।

केस—संज्ञा पु० दे० "केश"।

संज्ञा पु० [अ०] १ किसी चीज के रखने का खाना या घर। २ मुकदमा। ३ दुर्घटना।

केसर—संज्ञा पु० [स०] १ बाल की तरह पतले पतले सींके या सूत जो फूलों के बीच में रहते हैं। २ ठंढे देशों में होनेवाला एक पौधा जिसका केसर स्थायी सुगंध के

लिये प्रसिद्ध है। कुंकुम। ज़ाफ़रान। ३. घोड़े, सिंह आदि जानवरों की गरदन पर के बाल। अयाल। ४. नागकेसर। ५. वकुल। मौलसिरी। ६. स्वर्ग।
केसरिया-वि० [सं० केसर + इया (प्रत्य०)] १. केसर के रंग का। पीला। ज़र्द। २. केसर-मिश्रित।
केसरी-संज्ञा पुं० [सं० केसरिन्] १. सिंह। २. घोड़ा। ३. नागकेसर। ४. हनुमान्‌जी के पिता का नाम।
केसारी-संज्ञा स्त्री० [सं० कृसर] मटर की जाति का एक अन्न। दुबिया मटर।
केहरी*-संज्ञा पुं० [सं० केसरी] १. सिंह। शेर। २. घोड़ा।
केहा-संज्ञा पुं० [सं० केका] मोर। मयूर।
केहि*†-वि० [हिं० के + हि (विभक्ति)] किसको। (अवधी)
केहूँ*-क्रि० वि० [सं० कथम्] किसी प्रकार। किसी भाँति। किसी तरह।
केहू†-सर्व० [हिं० के] कोई।
कैंचा-वि० [हिं० काना + ऐंचा = कनैंचा] ऐंचाताना। भेंगा।
संज्ञा पुं० [तु० कैंची] बड़ी कैंची।
क़ैंची-संज्ञा स्त्री० [तु०] १. बाल, कपड़े आदि काटने या कतरने का एक औज़ार। कतरनी। २. दो सीधी तीलियाँ या लकड़ियाँ जो कैंची की तरह एक दूसरी के ऊपर तिरछी रखी या जड़ी हों।
कैंड़ा-संज्ञा पुं० [सं० कांड] १. वह यंत्र जिससे किसी चीज़ का नकशा ठीक किया जाता है। २. पैमाना। मान। नपना। ३. चाल। ढंग। तर्ज़। काट-छाँट। ४. चालबाज़ी। चतुराई।
कैं†-वि० [सं० कति, प्रा० कइ] कितना। किस कदर।
*अव्य० [सं० किम्] या। वा। अथवा।
संज्ञा स्त्री० [अ० कै] वमन। उलटी।
कैकस-संज्ञा पुं० [सं०] राक्षस।
कैकसी-संज्ञा स्त्री० [सं०] सुमाली राक्षस की कन्या और रावण की माता।
कैकेयी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. केकय गोत्र में उत्पन्न स्त्री। २. राजा दशरथ की वह रानी जिसने रामचंद्र को वनवास दिलवाया था।
कैटभ-संज्ञा पुं० [सं०] एक दैत्य जिसे विष्णु ने मारा था।
कैटभारि-संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।
कैतव-संज्ञा पुं० [सं०] १. धोखा। छल। कपट। २. जुआ। द्यूतक्रीड़ा। ३. वैदूर्य्य मणि। लहसुनियाँ।
वि० १. धोखेबाज़। छली। २. धूर्त। शठ। ३. जुआरी।
कैतवापह्नुति-संज्ञा स्त्री० [सं०] अपह्नुति अलंकार का एक भेद, जिसमें वास्तविक विषय का गोपन या निषेध स्पष्ट शब्दों में न करके व्याज से किया जाता है।
कैतून-संज्ञा स्त्री० [अ०] एक प्रकार की बारीक लैस जो कपड़ों में लगाई जाती है।
कैथ, कैथा-संज्ञा पुं० [सं० कपित्थ] एक कँटीला पेड़ जिसमें बेल के आकार के कसैले और खट्टे फल लगते हैं।
कैथिन†-संज्ञा स्त्री० [हिं० कायथ] कायस्थ जाति की स्त्री।
कैथी-संज्ञा स्त्री० [हिं० कायथ] एक पुरानी लिपि या लिखावट जो शीघ्र लिखी जाती है और जिसमें शीर्ष-रेखा नहीं होती।
क़ैद-संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० क़ैदी] १. बंधन। अवरोध। २. पहरे में बंद स्थान में रखना। कारावास।
मुहा०—क़ैद काटना = क़ैद में दिन बिताना।
३. किसी प्रकार की शर्त, अटक या प्रतिबंध जिसके पूरे होने पर ही कोई बात हो।
क़ैदक-संज्ञा स्त्री० [अ०] कागज का बंद या पट्टी जिसमें कागज आदि रखे जाते हैं।
क़ैदखाना-संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह स्थान जहाँ क़ैदी रखे जाते हों। कारागार। बंदीगृह। जेलखाना।
क़ैद तनहाई-संज्ञा स्त्री० [अ० + फ़ा०] वह क़ैद जिसमें क़ैदी को तंग कोठरी में अकेले रखा जाय। कालकोठरी।

कैदमहज़—संज्ञा स्त्री० [अ०] वह कैद जिसमें कैदी को किसी प्रकार का काम न करना पड़े। सादी कैद।
कैदसख्त—संज्ञा स्त्री० [अ० कैद+फा० सख्त] वह कैद जिसमें कैदी को कठिन परिश्रम करना पड़े। कड़ी कैद।
कैदी—संज्ञा पु० [अ०] वह जिसे कैद की सज़ा दी गई हो। बंदी। बँधुवा।
कैधौं*†—अव्य० [हिं० कै+धौं] या। वा। अथवा।
कैफ़—संज्ञा पु० [अ०] नशा। मद।
कैफ़ियत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ समाचार। हाल। वर्णन। २ विवरण। ब्योरा।
मुहा०—कैफ़ियत तलब करना = नियमानुसार विवरण माँगना। कारण पूछना।
३ आश्चर्यजनक या हर्षोत्पादक घटना।
कैफ़ी—वि० [अ०] १ मतवाला। मद-भरा। २ नशेबाज़।
कैबर—संज्ञा स्त्री० [देश०] तीर का फल।
कैबा‡—संज्ञा स्त्री० अव्ययवत् [हिं० कै = कितना+बार] १ कितनी बार। २ बहुत बार।
कैमुतिक न्याय—संज्ञा पु० [स०] एक न्याय या उक्ति जिसका प्रयोग यह दिखलाने के लिये होता है कि जब उतना बड़ा काम हो गया, तब यह क्या है।
कैरव—संज्ञा पु० [स०] [स्त्री० कैरवी] १ कुमुद। २ सफेद कमल। ३ शत्रु।
कैरा—संज्ञा पु० [स० कैरव] [स्त्री० कैरी] १ भूरा (रंग)। २ वह सफेदी जिसमें ललाई की झलक या आभा हो। ३ वह बैल जिसके सफेद रोओं के अंदर से चमड़े की ललाई झलकती हो। सोकना। सोकन।
वि० १ कैरे रंग का। २ जिसकी आँख भूरी हो। कंजा।
कैलास—संज्ञा पु० [स०] १ हिमालय की एक चोटी जो तिब्बत में रावणह्रद से उत्तर ओर है। (यहाँ शिव जी का निवास माना जाता है।) २ शिवलोक।
यौ०—कैलासनाथ, कैलासपति—शिव। कैलासवास = मरण। मृत्यु।
कैवर्त—संज्ञा पु० [स०] केवट।
कैवर्तमुस्तक—संज्ञा पु० [स०] केवटी मोथा।
कैवल्य—संज्ञा पु० [स०] १ शुद्धता। एकमात्रपन। निर्लिप्तता। एकता। २ मुक्ति। मोक्ष। निर्वाण। ३ एक उपनिषद्।
कैशिकी—संज्ञा स्त्री० [स०] नाटक की मुख्य चार वृत्तियों में से एक जिसमें नृत्य-गीत तथा भोग विलास आदि होते हैं।
कैसर—संज्ञा पु० [लैं० सीज़र] सम्राट्। बादशाह।
कैसा—वि० [स० कीदृश] [स्त्री० कैसी] १ किस प्रकार का? किस ढंग का? किस रूप या गुण का? २ (निषेधार्थक प्रश्न के रूप में) किसी प्रकार का नहीं। जैसे—जब हम उस मकान में रहते नहीं, तब किराया कैसा? ३ सदृश। समान। ऐसा।
कैसे—क्रि० वि० [हिं० कैसा] १ किस प्रकार से? किस ढंग से? २ किस हेतु? क्यों?
कैसो*†—वि० दे० "कैसा"।
कोंई*—संज्ञा स्त्री० दे० "कूँई"।
कोंकण—संज्ञा पु० [स०] १ दक्षिण भारत का एक प्रदेश। २ उक्त देश का निवासी।
कोंचना—क्रि० स० [स० कुच] चुभाना। गोदना। गड़ाना। धँसाना।
कोंचा—संज्ञा पु० दे० "कौंच"।
संज्ञा पु० [हिं० कोंचना] बहेलिया की वह लंबी छड़ जिसके सिरे पर वे चिड़ियाँ फँसाने का लासा लगाए रहते हैं।
कोंछना—क्रि० स० दे० "कोंछियाना"।
कोंछियाना—क्रि० स० [हिं० कोंछी] (स्त्रियों की) साड़ी का वह भाग चुनना जो पहनने में पेट के नीचे खोसा जाता है।
क्रि० स० [हिं० कोंछ] (स्त्रियों के) अंचल के कोने में कोई चीज़ भरकर कमर में खोंस लेना।
कोंढ़ा—संज्ञा पु० [स० कुंडल] [स्त्री० अल्पा० कोंढ़ी] धातु का वह छल्ला या कड़ा जिसमें कोई वस्तु अटकाई जाती है।
वि० [हिं० कोंढ़ा+हा (प्रत्य०)] जिसमें कोंढ़ा लगा हो। जैसे, कोंढ़ा रुपया।

कौंयना–क्रि० अ० दे० "कूँथना"।
कौंपर–संज्ञा पुं० [हिं० कोंपल] छोटा अध-पका या डाल का पका आम।
कौंपल†–संज्ञा स्त्री० [सं०कोमल या कुपल्लव] नई और मुलायम पत्ती। अंकुर। कल्ला।
कौंवर*†–वि०[सं० कोमल] नरम। मुलायम। नाजुक।
कौंहड़ा†–संज्ञा पुं० दे० "कुम्हड़ा"।
कौंहड़ौरी†–संज्ञा स्त्री० [हिं०कोंहड़ा + बरी] कुम्हड़े या पेठे की बनाई हुई बरी।
को*–सर्व० [सं० कः] कौन?
प्रत्य० कर्म और संप्रदान की विभक्ति। जैसे—साँप को मारो।
कोआ–संज्ञा पुं० [सं० कोश या हिं० कोसा] १. रेशम के कीड़े का घर। कुसियारी। २. टसर नामक रेशम का कीड़ा। ३. महुए का पका फल। कोलेंदा। गोलेंदा। ४. कटहल के गूदेदार पके हुए बीजकोष। ५. दे० "कोया"।
कोइरी–संज्ञा पुं०[हिं०कोमर] साग,तरकारी आदि बोने और बेचनेवाली जाति। काछी।
संज्ञा स्त्री० दे० "कोईलारी"।
कोइलो–संज्ञा स्त्री० [हिं० कोयल] १. वह कच्चा आम जिसमें काला दाग पड़ जाता है और एक विशेष प्रकार की सुगंध आती है। २. आम की गुठली।
कोई–सर्व०, वि० [सं० कोऽपि] १. ऐसा एक (मनुष्य या पदार्थ) जो अज्ञात हो। न जाने कौन एक।
मुहा०—कोई न कोई = एक नहीं तो दूसरा। यह न सही, वह।
२. बहुतों में से चाहे जो एक। अविशेष वस्तु या व्यक्ति। ३. एक भी (मनुष्य)।
क्रि० वि० लगभग। क़रीब क़रीब।
कोउ*†–सर्व० दे० "कोई"।
कोउ*†–सर्व० [हिं० कोउ = एक] कोई एक। कतिपय। कुछ लोग।
कोऊ†*–सर्व० दे० "कोई"।
कोक–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कोकी] १. चकवा पक्षी। चक्रवाक। सुरखाब। २. विष्णु। ३. मेंढक।
कोकई–वि० [तु० कोक] ऐसा नीला जिसमें गुलाबी की झलक हो। कौड़ियाला।
कोककला–संज्ञा स्त्री० [सं०] रति-विद्या। संभोग-संबंधी विद्या।
कोकदेव–संज्ञा पुं० कोकशास्त्र या रतिशास्त्र का रचयिता एक पंडित।
कोकनद–संज्ञा पुं० [सं०] १. लाल कमल। २. लाल कुमुद।
कोकनी–संज्ञा पुं० [तु० कोक = आसमानी] एक प्रकार का रंग।
वि० [देश०] १. छोटा। नन्हा। २. घटिया।
कोकशास्त्र–संज्ञा पुं० [सं०] कोक-कृत रतिशास्त्र। कामशास्त्र।
कोका–संज्ञा पुं० [अं०] दक्षिणी अमेरिका का एक वृक्ष जिसकी सुखाई हुई पत्तियाँ चाय या क़हवे की भाँति शक्ति-वर्द्धक समझी जाती हैं।
संज्ञा पुं० स्त्री० [तु०] धाय की संतान। दूध-भाई या दूध-बहिन।
संज्ञा स्त्री० दे० "कोकाबेली"।
कोकाबेरी, कोकाबेली–संज्ञा स्त्री० [सं० कोकनद + हिं० बेल] नीली कुमुदिनी।
कोकाह–संज्ञा पुं० [सं०] सफेद घोड़ा।
कोकिल–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कोयल चिड़िया। २. नीलम की एक छाया। ३. छप्पय का १९वाँ भेद। ४. कोयला।
कोकिला–संज्ञा स्त्री० [सं०] कोयल।
कोकीन, कोकेन–संज्ञा स्त्री० [अं०] कोका नामक वृक्ष की पत्तियों से तैयार की हुई एक प्रकार की मादक ओषधि या विष जिसे लगाने से शरीर सुन्न हो जाता है।
कोको–संज्ञा स्त्री० [अनु०] कौआ। लड़कों को बहकाने का शब्द।
कोख–संज्ञा स्त्री० [सं० कुक्षि] १. उदर। जठर। पेट। २. पेट के दोनों बगल का स्थान। ३. गर्भाशय।
मुहा०—कोख उजड़ जाना = १. संतान मर जाना। २. गर्भ गिर जाना। कोख बंद होना = वंध्या होना। कोख, या कोख

मांग से, ठढी या भरी पूरी रहना = वात्य, या, यात्ना और पति या सुख देखते रहना। (आसीस)।

कोगी–सज्ञा पु० [देश०] कुत्ते से मिलता जुलता एक शिकारी जानवर जो झुड में रहता है। सोहा।

कोच–सज्ञा पु० [अ०] १. एक प्रकार की चौपहिया बढ़िया घोड़ा-गाड़ी। २. गद्देदार बढ़िया पलग, वेंच या कुरसी।

कोचकी–सज्ञा पु० [?] एक रंग जो ललाई लिए भूरा होता है।

कोचबक्स–सज्ञा पु० [अ० कोच + बक्स] घोड़ा-गाड़ी आदि मे वह ऊँचा स्थान जिस पर हाँकनेवाला बैठता है।

कोचवान–सज्ञा पु० [अ० कोचमैन] घोड़ा-गाड़ी हाँकनेवाला।

कोचा–सज्ञा पु० [हि० कोचना] १ तलवार, कटार आदि का हल्का घाव जो पार न हुआ हो। २ लगती हुई बात। ताना।

कोजागर–सज्ञा पु० [स०] आश्विन मास की पूर्णिमा। शरद पूनो। (जागरण का उत्सव)

कोट–सज्ञा पु० [स०] १ दुर्ग। गढ। किला। २ शहरपनाह। प्राचीर। ३ महल। राजप्रासाद।

सज्ञा पु० [स० कोटि] समूह। यूथ।

सज्ञा पु० [अ०] अँगरेजी ढग का एक पहनावा।

कोटपाल–सज्ञा पु० [स०] दुर्ग की रक्षा करनेवाला। किलेदार।

कोटर–सज्ञा पु० [स०] १ पेड का खोखला भाग। २ दुर्ग के आस-पास का वह कृत्रिम वन जो रक्षा के लिये लगाया जाता है।

कोटि–सज्ञा स्त्री० [स०] १ धनुष का सिरा। २ अस्त्र की नोक या धार। ३ वर्ग। श्रेणी। दरजा। ४ किसी वाद विवाद का पूर्व पक्ष। ५ उत्कृष्टता। उत्तमता। ६ समूह। जत्था। ७ किसी ९० अंश के चाप के दो भागो म स एक। ८ किसी त्रिभुज या चतुर्भुज की भूमि और कर्ण से भिन्न रेखा।

वि० [स०] सौ लाख। करोड।

कोटिक–वि० [स० कोटि + क] १. करोड। २. अनगिनत। बहुत अधिक।

कोटिश–क्रि० वि० [स०] अनेक प्रकार से। बहुत तरह से।

वि० बहुत अधिक। अनेकानेक।

कोटू–सज्ञा पु० दे० "कूटू"।

कोठा–वि० [स० कुठ] खटाई के असर से जिसमें कोई वस्तु कूँची या चबाई न जा सके। कुठित। (दाँत)

कोठरी–सज्ञा स्त्री० [हि० कोठ + डी (री) (अल्पा० प्रत्य०)] (मकान आदि म) वह छोटा स्थान जो चारों ओर दीवारो स घिरा और छाया हुआ हो। छोटा कमरा।

कोठा–सज्ञा पु० [स० कोष्ठक] १ बडी कोठरी। चौडा कमरा। २ भडार। ३. मकान में छत या पाटन के ऊपर का कमरा। अटारी।

यौ०—कोठेवाली = वेश्या।

४ उदर। पेट। पक्वाशय।

मुहा०—कोठा बिगडना = अपच आदि रोग होना। कोठा साफ होना = साफ दस्त होना।

५ गर्भाशय। धरन। ६ खाना। घर। ७ किसी एक अक का पहाडा जो एक खाने म लिखा जाता है। ८ शरीर या मस्तिष्क का कोई भीतरी भाग जिसम कोई विशेष शक्ति या वृत्ति रहती हो।

कोठार–सज्ञा पु० [हि० कोठा] अन्न, धन आदि रखने का स्थान। भडार।

कोठारी–सज्ञा पु० [हि० कोठार + ई (प्रत्य०)] वह अधिकारी जो भडार का प्रबध करता हो। भडारी।

कोठिला–सज्ञा पु० दे० 'कुठला'।

कोठी–सज्ञा स्त्री० [हि० कोठा] १ बडा पक्का मकान। हवेली। २ अँगरेजों के रहने का मकान। बँगला। ३ वह मकान जिसमें रुपए का लेन-देन या कोई बडा कारबार हो। बडी दूकान। ४.

अनाज रखने का कुठला। बखार। गंज। ५. ईंट या पत्थर की वह जोड़ाई जो कुएँ की दीवार या पुल के खंभे में पानी के भीतर की जमीन तक होती है। ६. गर्भाशय। बच्चादान।
संज्ञा स्त्री० [सं० कोटि = समूह] उन बाँसों का समूह जो एक साथ मंडलाकार उगते हैं।

कोठीवाल–संज्ञा पुं० [हिं० कोठी + वाला] १. महाजन। साहूकार। २. बड़ा व्यापारी। ३. महाजनी अक्षर जो कई प्रकार के होते हैं। कोठीवाली। मुड़िया।

कोठीवाली–संज्ञा स्त्री० [हिं० कोठी] १. कोठी चलाने का काम। २. कोठीवाल अक्षर।

कोड़ना–क्रि० स० [सं० कुंड] १. खेत की मिट्टी को कुछ गहराई तक खोदकर उलट देना। गोड़ना। २. खोदना।

कोड़ा–संज्ञा पुं० [सं० कवर] १. डंडे में बँधा हुआ बटा सूत या चमड़े की डोर जिससे जानवरों को चलाने के लिये मारते हैं। चाबुक। साँटा। दुर्रा। २. उत्तेजक बात। मर्म्मस्पर्शी बात। ३. चेतावनी।

कोड़ी–संज्ञा स्त्री० [अं० स्कोर] बीस का समूह। बीसी।

कोढ़–संज्ञा पु० [सं० कुष्ठ] [वि० कोढ़ी] एक प्रकार का रक्त और त्वचा-संबंधी रोग जो संक्रामक और घिनौना होता है।
मुहा०—कोढ़ चूना या टपकना = कोढ़ के कारण अंगों का गल-गलकर गिरना। कोढ़ की खाज या कोढ़ में खाज = दुःख पर दुःख।

कोढ़ी–संज्ञा पुं० [हिं० कोढ़] [स्त्री० कोढ़िन] कोढ़ रोग से पीड़ित मनुष्य।

कोण–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक बिंदु पर मिलती या कटती हुई दो ऐसी रेखाओं के बीच का अंतर जो मिलकर एक न हो जाती हों। कोना। २. कोठरी या घर में वह स्थान जहाँ दो दीवारें मिली हों। कोना। गोशा। ३. दो दिशाओं के बीच की दिशा। विदिशा। कोण चार हैं—अग्नि, नैर्ऋति, ईशान और वायव्य।

कोत*–संज्ञा स्त्री० दे० "कुवत"।

कोतल–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. सजा-सजाया घोड़ा जिसपर कोई सवार न हो। जलूसी घोड़ा। २. स्वयं राजा की सवारी का घोड़ा। ३. वह घोड़ा जो ज़रूरत के वक्त के लिये साथ रखा जाता है।

कोतवाल–संज्ञा पुं० [सं० कोटपाल] १. पुलिस का एक प्रधान कर्म्मचारी। पुलिस का इंस्पेक्टर। २. पंडितों की सभा, बिरादरी की पंचायत अथवा साधुओं के अखाड़े की बैठक, भोज आदि का निमंत्रण देने और उनका ऊपरी प्रबंध करनेवाला।

कोतवाली–संज्ञा स्त्री० [हिं० कोतवाल + ई (प्रत्य०)] १. वह मकान जहाँ पुलिस के कोतवाल का कार्य्यालय हो। २. कोतवाल का पद या काम।

कोता*†–वि० [फ़ा० कोतह] [स्त्री० कोती] छोटा। कम। अल्प।

कोताह–वि० [फ़ा०] छोटा। कम।

कोताही–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] त्रुटि। क़मी।

कोति*–संज्ञा स्त्री० दे० "कोद"।

कोथला–संज्ञा पु० [हिं० गूथल अथवा कोठला] १. बड़ा थैला। २. पेट।

कोथली–संज्ञा स्त्री० [हिं० कोथला] रुपए पैसे रखने की एक प्रकार की लंबी थैली जिसे कमर में बाँधते हैं। हिमयानी।

कोदंड–संज्ञा पुं० [सं०] १. धनुष। कमान। २. धनु-राशि। ३. भौंह।

कोद*†–संज्ञा स्त्री० [सं० कोण अथवा कुत्र] १. दिशा। ओर। तरफ़। २. कोना।

कोदों, कोदो–संज्ञा पुं० [सं० कोद्रव] एक कदन्न जो प्रायः सारे भारतवर्ष में होता है।
मुहा०—कोदो देकर पढ़ना या सीखना = अधूरी या बेढंगी शिक्षा पाना। छाती पर कोदो दलना = किसी को दिखलाकर कोई ऐसा काम करना जो उसे बहुत बुरा लगे।

कोध*–संज्ञा स्त्री० दे० "कोद"।

कोना–संज्ञा पुं० [सं० कोण] १. बिंदु पर

मिलती हुई ऐसी दो रेखाओं के बीच का अंतर जो बिलकुल एक रेखा नहीं हो जाती। अंतराल। गोशा। २ नुकीला किनारा या छोर। नुकीला सिरा। ३. छोर का वह स्थान जहाँ लंबाई चौड़ाई मिलती हो। खूँट। ४. कोठरी या घर के अंदर की वह भीतरी जगह जहाँ लंबाई-चौड़ाई की दीवारें मिलती हैं। गोशा। ५ एकांत और छिपा हुआ स्थान।

मुहा०—कोना झाँकना = भय या लज्जा से जी चुराना या बचने का उपाय करना।

कोनिया–संज्ञा स्त्री० [हिं० कोना] दीवार के कोने पर चीजें रखने के लिये बैठाई हुई पटरी या पटिया। पटनी।

कोप–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कुपित] क्रोध। रिस। गुस्सा।

कोपना*–क्रि० अ० [सं० कोप] क्रोध करना। क्रुद्ध होना। नाराज होना।

कोपभवन–संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ कोई मनुष्य रूठकर जा रहे।

कोंबर†–संज्ञा पुं० [हिं० कोंपल] डाल का पका हुआ आम। टपका। सीकर।

कोपल–संज्ञा पुं० [सं० कोमल या कुपल्लव] वृक्ष आदि की नई मुलायम पत्ती। कल्ला।

कोपि–सर्व० [सं०] कोई।

कोपी–वि० [सं० कोपिन्] कोप करनेवाला। क्रोधी।

कोपीन–संज्ञा पुं० दे० "कौपीन"।

कोफ्ता–संज्ञा पुं० [फा०] कूटे हुए मांस का बना हुआ एक प्रकार का कबाब।

कोबी–संज्ञा स्त्री० दे० "गोभी"।

कोमल–वि० [सं०] १ मृदु। मुलायम। नरम। २ सुकुमार। नाजुक। ३ अपरिपक्व। कच्चा। ४ सुंदर। मनोहर। ५ स्वर का एक भेद। (संगीत)

कोमलता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मृदुलता। मुलायमत। नरमी। २ मधुरता।

कोमला–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वह वृत्ति या अक्षर-योजना जिसमें कोमल पद हों और प्रसाद गुण हो।

कोय*†–सर्व० दे० "कोई"।

कोयर–संज्ञा पुं० [सं० कोमल] १ सागपात। सब्जी तरकारी। २ हरा चारा।

कोयल–संज्ञा स्त्री० [सं० कोकिल] बहुत सुंदर बोलनेवाली काले रंग की एक छोटी चिड़िया।

संज्ञा स्त्री० एक लता जिसकी पत्तियाँ गुलाब की पत्तियों से मिलती-जुलती होती हैं। अपराजिता।

कोयला–संज्ञा पुं० [सं०कोकिल=अंगारा] १ जली हुई लकड़ी का बुझा हुआ अंगारा जो बहुत काला होता है। २ एक प्रकार का खनिज पदार्थ जो कोयले के रूप का होता है और जलाने के काम में आता है।

कोया–संज्ञा पुं० [सं० कोण] १ आँख का ढेला। २ आँख का कोना।

संज्ञा पुं० [सं० कोश] कटहल का गूदेदार बीजकोश जो खाया जाता है।

कोर–संज्ञा स्त्री० [सं० कोण] १ किनारा। सिरा। हाशिया। २ कोना। गोशा। ३ कपड़े आदि के छोर का कोना।

मुहा०—कोर दबना = किसी प्रकार के दबाव या वश में होना।

४ द्वेष। वैर। वैमनस्य। ५ दोष। ऐब। बुराई। ६ हथियार की धार। बाढ़। ७ पंक्ति। श्रेणी। कतार।

कोरक–संज्ञा पुं० [सं०] १ कली। मुकुल। २ फूल या कली के आधार के रूप में हरी पत्तियाँ। फूल की कटोरी। ३ कमल की नाल या डंडी। मृणाल।

कोर-कसर–संज्ञा स्त्री० [हिं० कोर+फा० कसर] १ दोष और त्रुटि। ऐब और कमी। २ अधिकता और न्यूनता। कमी-बेशी।

कोरमा–संज्ञा पुं० [तु०] भुना हुआ मांस जिसमें शोरबा बिलकुल नहीं होता।

कोरहन–संज्ञा पुं० [?] एक प्रकार का धान।

कोरा–वि० [सं० केवल] [स्त्री० कोरी] १ जो बर्ता न गया हो। नया। अछूता।

मुहा०—कोरी धार या बाढ़ = हथियार की धार जिसपर अभी सान रखी गई हो।

२. (कपड़ा या मिट्टी का बरतन) जो धोया न गया हो। ३. जिसपर कुछ लिखा या चित्रित न किया हो। सादा। मुहा०—कोरा जवाब=साफ़ इनकार। स्पष्ट शब्दों में अस्वीकार। ४. खाली। रहित। वंचित। विहीन। ५. आपत्ति या दोष से रक्षित। बेदाग। ६. मूर्ख। अपढ़। जड़। ७. धनहीन। अकिंचन। ८. केवल। सिर्फ़। संज्ञा पुं० बिना किनारे की रेशमी धोती। †संज्ञा पुं० [सं० क्रोड़] गोद। उछंग।

कोरापन–संज्ञा पुं० [हिं० कोरा+पन (प्रत्य०)] नवीनता। अछूतापन।

कोरि–वि० दे० "कोटि"।

कोरी–संज्ञा पुं० [सं० कोल+सुअर] [स्त्री० कोरिन] हिंदू जुलाहा।

कोल–संज्ञा पुं० [सं०] १. सूअर। शूकर। २. गोद। उत्संग। ३. बेर। बदरीफल। ४. तोले भर की एक तौल। ५. काली मिर्च। ६. दक्षिण के एक प्रदेश या राज्य का प्राचीन नाम। ७. एक जंगली जाति।

कोलाहल–संज्ञा पुं० [सं०] शोर। हौरा।

कोली–संज्ञा स्त्री० [सं० क्रोड] गोद। संज्ञा पुं० हिंदू जुलाहा। कोरी।

कोल्हू–संज्ञा पुं० [हिं० कूल्हा ?] दानों से तेल या गन्ने से रस निकालने का यंत्र। मुहा०—कोल्हू का बैल=बहुत कठिन परिश्रम करनेवाला। कोल्हू में डालकर पेरना=बहुत अधिक कष्ट पहुँचाना।

कोविद–वि० [सं०] [स्त्री० कोविदा] पंडित। विद्वान्। कृतविद्य।

कोविदार–संज्ञा पुं० [सं०] कचनार।

कोश–संज्ञा पुं० [सं०] १. अंड। अंडा। २. संपुट। डिब्बा। गोलक। ३. फूलों की बँधी कली। ४. पंचपात्र नामक पूजा का बरतन। ५. तलवार, कटार आदि का म्यान। ६. आवरण। खोल। ७. वेदांत में निरूपित। अन्नमय आदि पाँच आवरण जो प्राणियों में होते हैं। ८. थैली। ९. संचित धन। १०. वह ग्रंथ जिसमें अर्थ या पर्याय के सहित शब्द इकट्ठे किए गए हों। अभिधान। ११. समूह। १२. अंड-कोश। १३. रेशम का कोया। कुसियारी। १४. कटहल आदि फलों का कोया।

कोशकार–संज्ञा पुं० [सं०] १. म्यान बनाने-वाला। २. शब्द-कोश बनानेवाला। अर्थ-सहित शब्दों का क्रमानुसार संग्रह करने-वाला। ३. रेशम का कीड़ा।

कोशपान–संज्ञा पुं० [सं०] अपराध की एक प्राचीन परीक्षा-विधि जिसमें अभियुक्त को एक दिन उपवास करने के बाद कुछ प्रतिष्ठित लोगों के सामने तीन चुल्लू जल पीना पड़ता था।

कोशपाल–संज्ञा पुं० [सं०] खज़ाने की रक्षा करनेवाला।

कोशल–संज्ञा पुं० [सं०] १. सरयू या घाघरा नदी के दोनों तटों पर का देश। २. उपर्युक्त देश में बसनेवाली क्षत्रिय जाति। ३. अयोध्या नगर।

कोशवृद्धि–संज्ञा स्त्री० [सं०] अंडवृद्धि रोग।

कोशांबी–संज्ञा स्त्री० दे० "कौशांबी"।

कोशागार–संज्ञा पुं० [सं०] खजाना।

कोशिश–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] प्रयत्न। चेष्टा।

कोष–संज्ञा पुं० दे० "कोश"।

कोषाध्यक्ष–संज्ञा पुं० [सं०] खजानची।

कोष्ठ–संज्ञा पुं० [सं०] १. उदर का मध्य भाग। पेट का भीतरी हिस्सा। २. शरीर के भीतर का कोई भाग जिसके अंदर कोई विशेष शक्ति रहती हो। जैसे—पक्वाशय। गर्भाशय आदि। ३. कोठा। घर का भीतरी भाग। ४. वह स्थान जहाँ अन्न संग्रह किया जाय। गोला। ५. कोश। भंडार। खजाना। ६. प्राकार। शहरपनाह। चहारदीवारी। ७. वह स्थान जो लकीर, दीवार, बाड़ आदि से चारों ओर से घिरा हो।

कोष्ठक–संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी प्रकार की दीवार, लकीर या और किसी वस्तु से घिरा स्थान। खाना। कोठा। २. किसी प्रकार का चक्र जिसमें बहुत से खाने य

चाँदनी। जुन्हैया। २. कार्तिकी पूर्णिमा। ३. आश्विनी पूर्णिमा। ४. दीपोत्सव की तिथि। ५. कुमुदिनी। कोई।

कौमोदी, कौमोदकी–संज्ञा स्त्री० [सं०] विष्णु की गदा।

कौर–संज्ञा पुं० [सं० कवल] १. उतना भोजन जितना एक बार मुँह में डाला जाय। ग्रास। गस्सा। निवाला।
मुहा०—मुँह का कौर छीनना=देखते देखते किसी का अंश दबा बैठना।
२. उतना अन्न जितना एक बार चक्की में पीसने के लिये डाला जाय।

कौरना†–क्रि० स० [हिं० कौडा] थोड़ा भूनना। सेंकना।

कौरव–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कौरवी] कुरु राजा की संतान। कुरु-वंशज। वि० [सं०] [स्त्री० कौरवी] कुरु-संबंधी।

कौरवपति–संज्ञा पुं० [सं०] दुर्योधन।

कौरी–संज्ञा स्त्री० [सं० क्रोड] अँकवार। गोद।

कौलंज–संज्ञा पुं० [यू० कूलज] पसलियों के नीचे का दर्द। बायसूल।

कौल–संज्ञा पुं० [सं०] १. उत्तम कुल में उत्पन्न। अच्छे खानदान का। २ वाम-मार्गी।
संज्ञा पुं० [सं० कवल] कौर। ग्रास।

कौल–संज्ञा पुं० [अ०] १ कथन। उक्ति। वाक्य। २. प्रतिज्ञा। प्रण। वादा।
यौ०—कौल करार=परस्पर दृढ़ प्रतिज्ञा।

कौवा–संज्ञा पुं० [सं० काक] [स्त्री० कौवी] १. एक बड़ा काला पक्षी जो अपने कर्कश स्वर और चालाकी के लिये प्रसिद्ध है। काक।
यौ०—कौवा गुहार या कौवा रोर=१. बहुत अधिक चकचक। २. व्यर्थ शोर गुल।
२. बहुत धूर्त मनुष्य। काइयाँ। ३ वह लकड़ी जो बँडेरी के सहारे के लिये लगाई जाती है। कोहा। बहुँवाँ। ४ गले के अंदर, तालू को झालर के बीच का लटकता हुआ मांस या टुकड़ा। घाँटी। लगर। ललरी। ५. एक मछली जिसका मुँह बगले की चोंच सा होता है।

कौवाठोंठी–संज्ञा स्त्री० [सं० काकतुंडी] एक लता जिसके फूल सफेद और नीले रंग के तथा आकार में कौवे की चोंच के समान होते हैं। काकतुंडी। काकनासा।

कौवाल–संज्ञा पुं० [अ०] कौवाली गानेवाला।

कौवाली–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. एक प्रकार का भगवत्प्रेम-संबंधी गीत जो सूफियों की मजलिसों में होता है। २. इस धुन में गाई जानेवाली कोई गजल। ३. कौवाल का पेशा।

कौशल–संज्ञा पुं० [सं०] १. कुशलता। चतुराई। निपुणता। २. मंगल। ३. कोशल देश का निवासी।

कौशलेय–संज्ञा पुं० [सं०] रामचंद्र।

कौशल्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] कोशल के राजा दशरथ की प्रधान स्त्री और रामचंद्र की माता।

कौशांबी–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक बहुत प्राचीन नगरी जिसे कुश के पुत्र कौशांब ने बसाया था। वत्सपट्टन।

कौशिक–संज्ञा पुं० [सं०] १. इंद्र। २ कुशिक राजा के पुत्र गाधि। ३. विश्वामित्र। ४. कोशाध्यक्ष। ५. कोशकार। ६. रेशमी कपड़ा। ७ शृंगार रस। ८. एक उपपुराण। ९. हनुमत् के मत से छः रागों में से एक।

कौशिकी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चंडिका। २. राजा कुशिक की पोती और ऋचीक मुनि की स्त्री। ३. काव्य या नाटक में वह वृत्ति जिसमें करुण, हास्य और शृंगार रस का वर्णन हो और सरल वर्ण आवें।

कौशिल्य–संज्ञा पुं० [सं०] एक गोत्र-प्रवर्तक ऋषि।

कौशेय–वि० [सं०] रेशम का। रेशमी।

कौषिकी–संज्ञा स्त्री० दे० "कौशिकी"।

कौषीतकी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ऋग्वेद की एक शाखा। २ ऋग्वेद के अंतर्गत एक ब्राह्मण और उपनिषद्।

कौसल*–संज्ञा पुं० दे० "कौशल"।
कौसिक*–संज्ञा पुं० दे० "कौशिक"।
कौसिला*†–संज्ञा स्त्री० दे० "कौशल्या"।
कौस्तुभ–संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार समुद्र से निकला हुआ एक रत्न जिसे विष्णु अपने वक्षःस्थल पर पहने रहते हैं।
क्या–सर्व० [सं० किम्] एक प्रश्नवाचक शब्द जो प्रस्तुत या अभिप्रेत वस्तु की जिज्ञासा करता है। कौन वस्तु या बात? मुहा०—क्या कहना है या क्या खूब!—प्रशंसासूचक वाक्य। धन्य! वाह वा! बहुत अच्छा है! क्या कुछ, क्या क्या कुछ=सब कुछ। बहुत कुछ। क्या चीज है! =नाचीज है। तुच्छ है। क्या जाता है! = क्या नुकसान होता है? कुछ हानि नहीं। क्या जाने! =कुछ नहीं जानते। ज्ञात नहीं। मालूम नहीं। क्या पड़ी है?= क्या आवश्यकता है? कुछ जरूरत नहीं। कुछ गरज नहीं। और क्या=हाँ ऐसा ही है। वि० १. कितना? किस क़दर? २. बहुत अधिक। बहुतायत से। ३. अपूर्व। विचित्र। ४. बहुत अच्छा। कैसा उत्तम! क्रि० वि० क्यों? किस लिये? अव्य० केवल प्रश्नसूचक शब्द।
क्यारी–संज्ञा स्त्री० दे० "कियारी"।
क्यों–क्रि० वि० [सं० किम्] १. किसी व्यापार या घटना के कारण की जिज्ञासा करने का शब्द। किस कारण? किस लिये? किस वास्ते? यौ०—क्योंकि=इसलिये कि। इस कारण कि। मुहा०—क्योंकर=किस प्रकार? कैसे? क्यों नहीं! = १. ऐसा ही है। ठीक कहते हो। निःसंदेह। बेशक। २. हाँ। जरूर। ३. कभी नहीं। मैं ऐसा नहीं कर सकता। *२. किस भाँति? किस प्रकार?
क्रंदन–संज्ञा पुं० [सं०] १. रोना। विलाप। २. युद्ध के समय वीरों का आह्वान।
क्रकच–संज्ञा पुं० [सं०] १. ज्योतिष में एक अशुभ योग। २. करील का पेड़। ३. आरा। करवत। ४. एक नरक।
क्रतु–संज्ञा पुं० [सं०] १. निश्चय। संकल्प। २. इच्छा। अभिलाषा। ३. विवेक। प्रज्ञा। ४. इंद्रिय। ५. जीव। ६. विष्णु। ७. यज्ञ, विशेषतः अश्वमेध। यौ०—क्रतुपति=विष्णु। क्रतुफल=यज्ञ का फल, स्वर्ग आदि। ८. आषाढ़ मास। ९. ब्रह्मा के एक मानस पुत्र जो सप्तर्षियों में से हैं।
क्रतुध्वंसी–संज्ञा पुं० [सं०] (दक्ष प्रजापति का यज्ञ नष्ट करनेवाले) शिव।
क्रतुपशु–संज्ञा पुं० [सं०] घोड़ा।
क्रम–संज्ञा पुं० [सं०] १. पैर रखने या डग भरने की क्रिया। २. वस्तुओं या कार्य्यों के परस्पर आगे-पीछे आदि होने का नियम। पूर्वापर संबंधी व्यवस्था। शैली। तरतीब। सिलसिला। ३. कार्य्य को उचित रूप से धीरे धीरे करने की प्रणाली। मुहा०—क्रम क्रम करके=धीरे-धीरे। शनैः शनैः। क्रम से, क्रम क्रम से=धीरे-धीरे। ४. वेद-पाठ की एक प्रणाली। ५. किसी कृत्य के पीछे कौन सा कृत्य करना चाहिए, इसकी व्यवस्था। वैदिक विधान। कल्प। ६. वह काव्यालंकार जिसमें प्रथमोक्त वस्तुओं का वर्णन क्रम से किया जाय। *संज्ञा पुं० दे० "कर्म"।
क्रमनासा*–संज्ञा स्त्री० दे० "कर्मनाशा"।
क्रमशः–क्रि० वि० [सं०] १. क्रम से। सिलसिलेवार। २. धीरे-धीरे। थोड़ा थोड़ा करके।
क्रमसंन्यास–संज्ञा पुं० [सं०] वह संन्यास जो क्रम से ब्रह्मचर्य्य, गृहस्थ और वानप्रस्थ आश्रम के बाद लिया जाय।
क्रमागत–वि० [सं०] १. क्रमशः किसी रूप को प्राप्त। २. जो सदा से होता आया हो। परंपरागत।
क्रमानुकूल, क्रमानुसार–वि०, क्रि० वि० [सं०] श्रेणी के अनुसार। क्रम से। सिलसिलेवार। तरतीब से।
क्रमिक–क्रि० वि० [सं०] १. क्रम-युक्त। क्रमागत। २. परंपरागत।

घर हो। गारिणी। ३ लिखने में एक प्रकार के चिह्न या लकीरें जिनके अंदर कुछ वाक्य या अंक आदि लिखे जाते हैं। जैसे—[ ], { }, ( )।

कोष्ठबद्ध—संज्ञा पु० [सं०] पेट में मल का रुकना। कब्जियत।

कोष्ठी—संज्ञा स्त्री० [सं०] जन्मपत्री।

कोस—संज्ञा पु० [सं० क्रोश] दूरी की एक नाप जो प्राचीन काल से ४००० या ८००० हाथ की मानी जाती थी। आज-कल दो मील की दूरी।

मुहा०—कोसों या काले कोसों=बहुत दूर। कोसों दूर रहना=अलग रहना।

कोसना—क्रि० स० [सं० क्रोशन] शाप के रूप में गालियाँ देना।

मुहा०—पानी पी पीकर कोसना=बहुत अधिक कोसना। कोसना काटना=शाप और गाली देना।

कोसा—संज्ञा पु० [सं० कोश] एक प्रकार का रेशम।

संज्ञा पु० [सं० कोश=प्याला] [स्त्री० कोसिया] मिट्टी का बड़ा दीया। कसोरा।

कोसा-काटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कोसना+काटना] शाप के रूप में गाली। बद दुआ।

कोसिला†—संज्ञा स्त्री० दे० 'कौशल्या'।

कोहँडौरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कुम्हड़ा+बरी] उरद की पीठी और कुम्हड़े के गूदे से बनाई हुई बरी।

कोह—संज्ञा पु० [फा०] पर्वत। पहाड़।

†*—संज्ञा पु० [सं० क्रोध] क्रोध। गुस्सा।

संज्ञा पु० [सं० ककुभ] अर्जुन वृक्ष।

कोहनी—संज्ञा स्त्री० दे० 'कुहनी'।

कोहनूर—संज्ञा पु० [फा० कोह+अ० नूर] भारत की किसी खान से निकला हुआ एक बहुत बड़ा, प्राचीन और प्रसिद्ध हीरा।

कोहबर—संज्ञा पु० [सं० कोष्ठवर] वह स्थान या घर जहाँ विवाह के समय कुल-देवता स्थापित किए जाते हैं।

कोहल—संज्ञा पु० [सं०] एक मुनि जो नाट्यशास्त्र के प्रणेता कहे जाते हैं।

कोहान—संज्ञा पु० [फा०] ऊँट की पीठ पर का डिल्ला या कूबड़।

कोहाना*†—क्रि० अ० [हिं० कोह] १ रूठना। नाराज होना। मान करना। २ गुस्सा होना। क्रोध करना।

कोहिस्तान—संज्ञा पु० [फा०] पहाड़ी देश।

कोही—वि० [हिं० कोह] क्रोध करनेवाला।

वि० [फा० कोह] पहाड़ी।

कौंच—संज्ञा स्त्री० [सं० कच्छु] सेम की तरह की एक बेल जिसमें तरकारी के रूप में खाई जानेवाली फलियाँ लगती हैं। कपि-कच्छु। केवाँच।

कौंछ—संज्ञा स्त्री० दे० "कौंच"।

कौंतेय—संज्ञा पु० [सं०] १ कुंती के युधिष्ठिर आदि पुत्र। २ अर्जुन वृक्ष।

कौंध—संज्ञा स्त्री० [हिं० कौंधना] बिजली की चमक।

कौंधना—क्रि० अ० [सं० कनन=चमकना+अंध] बिजली का चमकना।

कौंला—संज्ञा पु० [सं० कमला] एक प्रकार का मीठा नीबू या संगतरा।

कौआ—संज्ञा पु० दे० 'कौवा'।

कौआना†—क्रि० अ० [हिं० कौआ] १ भौचक्का होना। चकपकाना। २ अचानक कुछ बड़बड़ा उठना।

कौटिल्य—संज्ञा पु० [सं०] १ टेढ़ापन। २ कपट। ३ चाणक्य का एक नाम।

कौटुंबिक—वि० [सं०] १ कुटुम्ब का। कुटुंब-संबंधी। २ परिवारवाला।

कौड़ा—संज्ञा पु० [सं० कपर्दक] बड़ी कौड़ी।

संज्ञा पु० [सं० कुंड] जाड़े के दिनों में तापने के लिए जलाई हुई आग। अलाव।

कौड़िया—वि० [हिं० कौड़ी] कौड़ी के रंग का। कुछ स्याही लिए हुए सफेद।

संज्ञा पु० कौड़िल्ला पक्षी। किलकिला।

कौड़ियाला—वि० [हिं० कौड़ी] कौड़ी के रंग का। ऐसा हलका नीला जिसमें गुलाबी की कुछ झलक हो। कोकई।

संज्ञा पु० १ कोकई रंग। २ एक प्रकार का विषैला साँप। ३ कृपण धनाढ्य।

कंजूस अमीर। ४. एक पौधा जिसमें छुच्छी के आकार के छोटे छोटे फूल लगते हैं। ५. कौड़िल्ला पक्षी। किलकिला।

कौड़ियाहो–संज्ञा स्त्री० [हिं० कौड़ी] मज-दूरी की एक रीति जिसमें प्रतिखेप कुछ कौड़ियाँ दी जाती हैं।

कौड़िल्ला–संज्ञा पुं० [हिं० कौड़ी] मछली खानेवाली एक चिड़िया। किलकिला।

कौड़ी–संज्ञा स्त्री० [सं० कपर्दिका] १. समुद्र का एक कीड़ा जो घोंघे की तरह एक अस्थि-कोश के अंदर रहता है और जिसका अस्थि-कोश सबसे कम मूल्य के सिक्के की तरह काम आता है। कपर्दिका। वराटिका।

मुहा०—कौड़ी काम का नहीं = निकम्मा। निकृष्ट। कौड़ी का, या, दो कौड़ी का = १. जिसका कुछ मूल्य न हो। तुच्छ। निकम्मा। २. निकृष्ट। खराब। कौड़ी के तीन तीन होना = १. बहुत सस्ता होना। २. तुच्छ होना। बेक़दर होना। ना-चीज होना। कौड़ी कौड़ी अदा करना,चुकाना या भरना = सब ऋण चुका देना। कुल बेबाक़ कर देना। कौड़ी कौड़ी जोड़ना = बहुत थोड़ा थोड़ा करके धन इकट्ठा करना। बड़े कष्ट से रुपया बटोरना। कौड़ी भर = बहुत थोड़ा सा। ज़रा सा। कानी या झंझी कौड़ी = १. वह कौड़ी जो टूटी हो। २. अत्यंत अल्प द्रव्य। चित्ती कौड़ी = वह कौड़ी जिसकी पीठ पर उभरी हुई गाँठें हों। (इसका व्यवहार जुए में होता है।)

२. धन। द्रव्य। रुपया-पैसा। ३. वह कर जो सम्राट् अपने अधीन राजाओं से लेता है। ४. आँख का डेला। ५. छाती के नीचे बीचोंबीच की वह छोटी हड्डी जिसपर सबसे नीचे की दोनों पस-लियाँ मिलती हैं। ६. जंघे, काँख या गले की गिल्टी। ७. कटार की नोक।

कौणप–संज्ञा पुं० [सं०] १. राक्षस। २. पापी। अधर्मी।

कौतिग*‡–संज्ञा पुं० दे० "कौतुक"।

कौतुक–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कौतुकी] १. कुतूहल। २. आश्चर्य। अचंभा। ३. विनोद। दिल्लगी। ४. आनंद। प्रसन्नता। ५. खेल-तमाशा।

कौतुकिया–संज्ञा पुं० [हिं० कौतुक + इया (प्रत्य०)] १. कौतुक करनेवाला। २. विवाह-संबंध करानेवाला, नाऊ या पुरोहित।

कौतुकी–वि० [सं०] १. कौतुक करनेवाला। विनोदशील। २. विवाह-संबंध करानेवाला। ३. खेल-तमाशा करनेवाला।

कौतूहल–संज्ञा पुं० दे० "कुतूहल"।

कौथा‡–संज्ञा स्त्री० [हिं० कौन + तिथि] १. कौन सी तिथि? कौन तारीख? २. कौन संबंध? कौन वास्ता?

कौथा‡–वि० [हिं० कौन + सं० स्था (स्थान)] किस संख्या का? गणना में किस स्थान का।

कौन–सर्व० [सं० कः, किम्] एक प्रश्न-वाचक सर्वनाम जो अभिप्रेत व्यक्ति या वस्तु की जिज्ञासा करता है।

मुहा०—कौन सा = कौन? कौन होना = १. क्या अधिकार रखना? क्या मतलब रखना २. कौन संबंधी होना? रिश्ते में क्या होना?

कौनप–संज्ञा पुं० दे० "कौणप"।

कौपीन–संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मचारियों और संन्यासियों आदि के पहनने की लँगोटी। चीर। कफ़नी। काछा।

क़ौम–संज्ञा स्त्री० [अ०] वर्ण। जाति।

कौमार–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कौमारी] १. कुमार अवस्था। जन्म से पाँच वर्ष तक की या (तंत्र के मत से) १६ वर्ष तक की अवस्था। २. कुमार।

कौमारभृत्य–संज्ञा पुं० [सं०] बालकों के लालन-पालन और चिकित्सा आदि की विद्या। धातृविद्या। दायागिरी।

कौमारी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. किसी पुरुष की पहली स्त्री। २. सात मातृकाओं में से एक। ३. पार्वती।

क़ौमी–वि० [अ० क़ौम] क़ौम का। जाति-संबंधी। जातीय।

कौमुदी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ज्योत्स्ना।

क्रमुक–संज्ञा पुं० [सं०] १ सुपारी। २ नागरमोथा। ३ एक प्राचीन देश।

क्रमेल, क्रमेलक–संज्ञा पुं० [सं०, यूना० क्रमेलस] ऊँट। शुतुर।

क्रय–संज्ञा पुं० [सं०] मोल लेने की क्रिया। खरीदने का काम।

यौ०—क्रय विक्रय = खरीदने और बेचने की क्रिया। व्यापार।

क्रयी–संज्ञा पुं० [सं० क्रयिन्] मोल लेनेवाला। खरीदनेवाला।

क्रय्य–वि० [सं०] जो बिक्री के लिये रखा जाय। जो चीज बेचने के लिये हो।

क्रव्य–संज्ञा पुं० [सं०] मांस।

क्रव्याद–संज्ञा पुं० [सं०] १ मांस खानेवाला जीव। २ चिता की आग।

क्रांत–वि० [सं०] १ दबा या ढका हुआ। २ जिसपर आक्रमण हुआ हो। ग्रस्त। ३ आगे बढ़ा हुआ। जैसे—सीमाक्रांत।

क्रांति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कदम रखना। गति। २ खगोल में वह कल्पित वृत्त, जिसपर सूर्य्य पृथ्वी के चारो ओर घूमता जान पड़ता है। अपक्रम। ३ एक दशा से दूसरी दशा में भारी परिवर्त्तन। फेरफार। उलटफेर। जैसे—राज्यक्रांति।

क्रांतिमंडल–संज्ञा पुं० [सं०] वह वृत्त जिसपर सूर्य्य पृथ्वी के चारो ओर घूमता हुआ जान पड़ता है।

क्रांतिवृत्त–संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य्य का मार्ग।

क्रिचयन†*–संज्ञा पुं० [सं० कृच्छ्रचांद्रायण] चांद्रायण व्रत।

क्रिमि–संज्ञा पुं० दे० "कृमि"।

क्रिमिजा–संज्ञा स्त्री० [सं०] लाह। लाख।

क्रियमाण–संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो किया जा रहा हो। २ वर्त्तमान कर्म जिनका फल आगे मिलेगा।

क्रिया–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ किसी काम का होना या किया जाना। कर्म। २ प्रयत्न। चेष्टा। ३ गति। हरकत। हिलना डोलना। ४ अनुष्ठान। आरंभ। ५ व्याकरण में शब्द का वह भेद जिससे किसी व्यापार का होना या करना पाया जाय। जैसे—आना, मारना। ६ शौच आदि कर्म। नित्यकर्म। ७ श्राद्ध आदि प्रेत कर्म। यौ०—क्रिया-कर्म = अंत्येष्टि क्रिया। ८ उपचार। चिकित्सा।

क्रियाचतुर–संज्ञा पुं० [सं०] क्रिया या घात में चतुर नायक।

क्रियातिपत्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह काव्यालंकार जिसमें प्रकृत से भिन्न, कल्पना करके, किसी विषय का वर्णन किया जाय। यह अतिशयोक्ति का एक भेद है।

क्रियानिष्ठ–वि० [सं०] संध्या, तर्पण आदि नित्य कर्म करनेवाला।

क्रियायोग–संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं की पूजा करना और मंदिर आदि बनवाना।

क्रियार्थ–संज्ञा पुं० [सं०] वेद में यज्ञादि कर्म का प्रतिपादक विधि-वाक्य।

क्रियावान्–वि० [सं०] कर्मनिष्ठ। कर्मठ।

क्रियाविदग्धा–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जो नायक पर किसी क्रिया द्वारा अपना भाव प्रकट करे।

क्रिया विशेषण–संज्ञा पुं० [सं०] आधुनिक व्याकरण के अनुसार वह शब्द जिससे क्रिया के किसी विशेष भाव या रीति से होने का बोध हो। जैसे—कैसे, धीरे, क्रमशः, अचानक इत्यादि।

क्रिस्तान–संज्ञा पुं० [अं० क्रिश्चियन्] ईसा के मत पर चलनेवाला। ईसाई।

क्रिस्तानी–वि० [हिं० क्रिस्तान + ई (प्रत्य०)] १ ईसाइयों का। २ ईसाई-मत के अनुसार।

क्रीट*†–संज्ञा पुं० दे० "किरीट"।

क्रीडा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ केलि। आमोद-प्रमोद। खेलकूद। २ एक छंद या वृत्त।

क्रीडाचक्र–संज्ञा पुं० [सं०] छ यगणों का एक वृत्त या छंद। महामोदकारी।

क्रीत–वि० [सं०] खरीदा हुआ। संज्ञा पुं० [सं०] १ दे० "क्रीतक"। २ पंद्रह प्रकार के दासों में से वह जो मोल लिया गया हो।

क्रीतक—संज्ञा पुं० [सं०] बारह प्रकार के पुत्रों में से एक, जो माता पिता को धन देकर उनसे खरीदा गया हो।

क्रुद्ध—वि० [सं०] कोपयुक्त। क्रोध में भरा हुआ।

क्रूर—वि०[सं०] [स्त्री०क्रूरा] १.पर-पीड़क। दूसरों को कष्ट पहुँचानेवाला। २. निर्दय। जालिम। ३. कठिन। ४. तीक्ष्ण।

क्रूरकर्मा—संज्ञा पुं० [सं०] क्रूर काम करनेवाला।

क्रूरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. निष्ठुरता। निर्दयता। कठोरता। २. दुष्टता।

क्रूरात्मा—वि० [सं०] दुष्ट प्रकृतिवाला।

क्रेता—संज्ञा पुं० [सं०] खरीदनेवाला। मोल लेनेवाला। खरीददार।

क्रोड़—संज्ञा पुं० [सं०] १. आलिंगन में दोनों बाँहों के बीच का भाग। भुजांतर। वक्षःस्थल। २. गोद। अँकवार। कोल।

क्रोड़पत्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह पत्र जो किसी पुस्तक या समाचारपत्र में उसकी पूर्त्ति के लिये ऊपर से लगाया जाय। परिशिष्ट। पूरक। जमीमा।

क्रोध—संज्ञा पुं० [सं०] चित्त का वह उग्र भाव जो कष्ट या हानि पहुँचानेवाले अथवा अनुचित काम करनेवाले के प्रति होता है। कोप। रोष। गुस्सा।

क्रोधित*—वि० [हिं० क्रोध] कुपित। क्रुद्ध।

क्रोधी—वि०[सं० क्रोधिन्] [स्त्री०क्रोधिनी] क्रोध करनेवाला। गुस्सावर।

क्रोश—संज्ञा पुं० [सं०] कोस।

क्रौंच—संज्ञा पुं० [सं०] १. करांकुल नामक पक्षी। २. हिमालय का एक पर्वत। ३. पुराणानुसार सात द्वीपों में से एक। ४. एक प्रकार का अस्त्र। ५. एक वर्णवृत्त।

क्लांत—वि० [सं०] थका हुआ। श्रांत।

क्लांति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. परिश्रम। २. थकावट।

क्लिष्ट—वि० [सं०] १. क्लेशयुक्त। दुखी। दुःख से पीड़ित। २. बेमेल (बात)। पूर्वापर विरुद्ध (वाक्य)। ३. कठिन। मुश्किल। ४. जो कठिनता से सिद्ध हो।

क्लिष्टता—संज्ञा स्त्री० [सं०] क्लिष्ट का भाव।

क्लिष्टत्व—संज्ञा पुं० [सं०] १. क्लिष्ट का भाव। कठिनता। क्लिष्टता। २. काव्य का वह दोष जिसके कारण उसका भाव समझने में कठिनता होती है।

क्लीव—वि० पुं० [सं०] १. षंढ। नपुंसक। नामर्द। २. डरपोक। कायर।

क्लीवता—संज्ञा स्त्री० [सं०] क्लीव का भाव।

क्लीवत्व—संज्ञा पुं० [सं०] नपुंसकता।

क्लेद—संज्ञा पुं० [सं०] १. गीलापन। आर्द्रता। २. पसीना।

क्लेदक—संज्ञा पुं० [सं०] १. पसीना लानेवाला। २. शरीर में एक प्रकार का कफ जिससे पसीना उत्पन्न होता है। ३. शरीर में की दस प्रकार की अग्नियों में से एक।

क्लेश—संज्ञा पुं० [सं०] १. दुःख। कष्ट। व्यथा। वेदना। † २. झगड़ा। लड़ाई।

क्लेशित—वि० [सं०] जिसे क्लेश हो। दुःखित। पीड़ित।

क्लैव्य—संज्ञा पुं० [सं०] क्लीवता।

क्लोम—संज्ञा पुं० [सं०] दाहिनी ओर का फेफड़ा। फुप्फुस।

क्वचित्—क्रि० वि० [सं०] कोई ही। शायद ही कोई। बहुत कम।

क्वणित—वि० [सं०] १. शब्द करता हुआ। गुंजार करता हुआ। २. बजता हुआ।

क्वाथ—संज्ञा पुं० [सं०] पानी में उबालकर ओषधियों का निकाला हुआ गाढ़ा रस। काढ़ा। जोशांदा।

क्वारपन—संज्ञा पुं० [हिं० क्वारा+पन (प्रत्य०)] क्वारापन। कुमारपन। क्वारा का भाव।

क्वारा—संज्ञा पुं०, वि० [सं० कुमार] [स्त्री० क्वारी] जिसका विवाह न हुआ हो। कुआरा। बिन ब्याहा।

क्वारापन—संज्ञा पुं० दे० "क्वारपन"।

क्वासि—वाक्य [सं०] तू कहाँ है? तू किस स्थान पर है?

क्षंतव्य–वि० [सं०] क्षमा करने के योग्य। क्षम्य।

क्षण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० क्षणिक] १. काल या समय का सबसे छोटा भाग। पल का चतुर्थांश।
मुहा०–क्षण मात्र = थोड़ी देर।
२. काल। ३. अवसर। मौक़ा। ४. समय। ५. उत्सव। पर्व का दिन।

क्षणप्रभा–संज्ञा स्त्री० [सं०] बिजली।

क्षणभंगुर–वि० [सं०] शीघ्र या क्षण भर में नष्ट होनेवाला। अनित्य।

क्षणिक–वि० [सं०] एक क्षण रहनेवाला। क्षणभंगुर। अनित्य।

क्षणिकवाद–संज्ञा पुं० [सं०] बौद्धों का एक सिद्धांत जिसमें प्रत्येक वस्तु उत्पत्ति से दूसरे क्षण में नष्ट हो जानेवाली मानी जाती है।

क्षत–वि० [सं०] जिसे क्षति या आघात पहुँचा हो। घाव लगा हुआ।
संज्ञा पुं० [सं०] १. घाव। ज़ख्म। २. व्रण। फोड़ा। ३. मारना। काटना। ४. क्षति या आघात पहुँचाना।

क्षतज–वि० [सं०] १. क्षत से उत्पन्न। जैसे—क्षतज शोथ। २. लाल। सुर्ख।
संज्ञा पुं० [सं०] रक्त। रुधिर। खून।

क्षतयोनि–वि० [सं०] (स्त्री) जिसका पुरुष के साथ समागम हो चुका हो।

क्षत-विक्षत–वि० [सं०] जिसे बहुत चोटें लगी हों। घायल। लहू-लुहान।

क्षतव्रण–संज्ञा पुं० [सं०] कटने या चोट लगने के बाद पका हुआ स्थान।

क्षता–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह कन्या जिसका विवाह से पहले ही किसी पुरुष से दूषित संबंध हो चुका हो।

क्षताशौच–संज्ञा पुं० [सं०] वह अशौच जो किसी मनुष्य को घायल या ज़ख्मी होने के कारण लगता है।

क्षति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हानि। नुक़सान। २. क्षय। नाश।

क्षत्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. बल। २. राष्ट्र। ३. धन। ४. शरीर। ५. जल।
[स्त्री० क्षत्राणी] क्षत्रिय।

क्षत्रकर्म–संज्ञा पुं० [सं०] क्षत्रियोचित कर्म।

क्षत्रधर्म–संज्ञा पुं० [सं०] क्षत्रियों का धर्म। यथा—अध्ययन, दान, यज्ञ और प्रजा-पालन करना आदि।

क्षत्रप–संज्ञा पुं० [सं० या पुं० फ़ा०] ईरान के प्राचीन मांडलिक राजाओं की उपाधि जो भारत के शक राजाओं ने ग्रहण की थी।

क्षत्रपति–संज्ञा पुं० [सं०] राजा।

क्षत्रयोग–संज्ञा पुं० [सं०] ज्योतिष में राजयोग।

क्षत्रवेद–संज्ञा पुं० [सं०] धनुर्वेद।

क्षत्रिय–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० क्षत्रिया, क्षत्राणी] १. हिंदुओं के चार वर्णों में से दूसरा वर्ण। इस वर्ण के लोगों का काम देश का शासन और शत्रुओं से उसकी रक्षा करना है। २. राजा।

क्षत्री–संज्ञा पुं० दे० "क्षत्रिय"।

क्षपणक–वि० [सं०] निर्लज्ज।
संज्ञा पुं० [सं०] १. नंगा रहनेवाला जैन यती। दिगंबर यती। २. बौद्ध संन्यासी।

क्षपा–संज्ञा स्त्री० [सं०] रात। रात्रि।

क्षपाकर–संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा। २. कपूर।

क्षपाचर–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० क्षपाचरी] निशाचर। राक्षस।

क्षपानाथ–संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

क्षम–वि० [सं०] सशक्त। योग्य। समर्थ। उपयुक्त। (यौगिक में) जैसे—कार्यक्षम।
संज्ञा पुं० [सं०] शक्ति। बल।

क्षमणीय–वि० [सं०] क्षमा करने योग्य।

क्षमता–संज्ञा स्त्री० [सं०] योग्यता। सामर्थ्य।

क्षमना*–क्रि० स० दे० "छमना"।

क्षमा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चित्त की एक वृत्ति जिससे मनुष्य दूसरे द्वारा पहुँचाए हुए कष्ट को चुपचाप सह लेता है और उसके प्रतिकार या दंड की इच्छा नहीं करता। शांति। मुआफ़ी। २. सहिष्णुता। सहनशीलता। ३. पृथ्वी। ४. एक की

संख्या। ५. दक्ष की एक कन्या। ६. दुर्गा। ७. तेरह अक्षरों की एक वर्ण-वृत्ति।
क्षमाई*–संज्ञा स्त्री० [हिं० क्षमा] क्षमा करने की क्रिया।
क्षमाना*–क्रि० स० दे० "छमाना"।
क्षमालु–वि० [सं०] क्षमाशील। क्षमावान्।
क्षमावान्–वि० पुं० [सं० क्षमावत्] [स्त्री० क्षमावती] १. क्षमा करनेवाला। माफ करनेवाला। २. सहनशील। ग़मखोर।
क्षमाशील–वि० [सं०] १. माफ़ करनेवाला। क्षमावान्। २. शांत-प्रकृति।
क्षमितव्य–वि० [सं०] क्षमा करने योग्य।
क्षमी–वि० [सं० क्षमा + ई (प्रत्य०)] १. क्षमाशील। माफ़ करनेवाला। २. शांत-प्रकृति।
वि० [सं० क्षम] समर्थ। सशक्त।
क्षम्य–वि० [सं०] माफ़ करने योग्य। जो क्षमा किया जाय।
क्षय–संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० क्षयित्व] १. धीरे धीरे घटना। ह्रास। अपचय। २. प्रलय। कल्पांत। ३. नाश। ४. घर। मकान। ५. यक्ष्मा नामक रोग। क्षयी। ६. अंत। समाप्ति। ७. ज्योतिष में बहुत दिनों पर पड़नेवाला एक मास या महीना जिसमें दो संक्रांतियाँ होती हैं और जिसके तीन मास पहले और तीन मास के पीछे एक एक अधिमास पड़ता है।
क्षयिष्णु–वि० [सं०] क्षय या नष्ट होनेवाला।
क्षयी–वि० [सं०] १. क्षय होनेवाला। नष्ट होनेवाला। २. जिसे क्षय या यक्ष्मा रोग हो।
संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।
संज्ञा स्त्री० [सं० क्षय] एक प्रसिद्ध असाध्य रोग जिसमें रोगी का फेफड़ा सड़ जाता और सारा शरीर धीरे धीरे गल जाता है। तपेदिक। यक्ष्मा।
क्षय्य–वि० [सं०] क्षय होने के योग्य।
क्षर–वि० [सं०] नाशवान्। नष्ट होनेवाला।
संज्ञा पुं० [सं०] १. जल। २. मेघ। ३. जीवात्मा। ४. शरीर। ५. अज्ञान।
क्षरण–संज्ञा पुं० [सं०] १. रस रसकर चूना। स्राव होना। रसना। २. झगड़ा। ३. नाश या क्षय होना। ४. छूटना।
क्षांत–वि० [सं०] [स्त्री० क्षांता] १. क्षमाशील। क्षमा करनेवाला। २. सहनशील।
क्षांति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सहिष्णुता। सहनशीलता। २. क्षमा।
क्षात्र–वि० [सं०] क्षत्रिय-संबंधी। क्षत्रियों का।
संज्ञा पुं० [सं०] क्षत्रियत्व। क्षत्रियपन।
क्षाम–वि० [सं०] [स्त्री० क्षमा] १. क्षीण। कृश। दुबला पतला।
यौ०–क्षामोदरी–पतली कमरवाली (स्त्री)।
२. दुर्बल। कमजोर। ३. अल्प। थोड़ा।
क्षार–संज्ञा पुं० [सं०] १. दाहक, जारक या विस्फोटक ओषधियों को जलाकर या खनिज पदार्थों को पानी में घोलकर रासायनिक क्रिया द्वारा साफ़ करके तैयार की हुई राख का नमक। खार। खारी। २. नमक। ३. सज्जी। खार। ४. शोरा। ५. सुहागा। ६. भस्म। राख।
वि० [सं०] १. क्षरणशील। २. खारा।
क्षारलवण–संज्ञा पुं० [सं०] खारी नमक।
क्षिति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पृथिवी। २. वासस्थान। जगह। ३. गोरोचन। ४. क्षय। ५. प्रलय-काल।
क्षितिज–संज्ञा पुं० [सं०] १. मंगल ग्रह। २. नरकासुर। ३. केंचुआ। ४. वृक्ष। पेड़। ५. खगोल में वह तिर्य्यग् वृत्त जिसकी दूरी आकाश के मध्य से ९० अंश हो। ६. दृष्टि की पहुँच पर वह वृत्ताकार स्थान जहाँ आकाश और पृथ्वी दोनों मिले हुए जान पड़ते हैं।
क्षिप्त–वि० [सं०] १. फेंका हुआ। त्यागा हुआ। २. विकीर्ण। ३. अवज्ञात। अपमानित। ४. पतित। ५. वात रोग से ग्रस्त। ६. उचटा हुआ। चंचल।
संज्ञा पुं० चित्त की पाँच अवस्थाओं में से एक। (योग)

क्षिप्र–क्रि० वि० [सं०] १. शीघ्र। जल्दी। २. तत्क्षण। तुरंत।
वि० [सं०] १. तेज। जल्द। २. चंचल।

क्षिप्रहस्त–वि० [सं०] शीघ्र या तेज काम करनेवाला।

क्षीण–वि० [सं०] १. दुबला-पतला। २. सूक्ष्म। ३. क्षयशील। ४. घटा हुआ। जो कम हो गया हो।

क्षीण चंद्र–संज्ञा पुं० [सं०] कृष्ण पक्ष की अष्टमी से शुक्ल पक्ष की अष्टमी तक का चंद्रमा।

क्षीणता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. निर्बलता। कमजोरी। २. दुबलापन। ३. सूक्ष्मता।

क्षीर–संज्ञा पुं० [सं०] १. दूध। पय।
यौ०—क्षीरसार=मक्खन।
२. द्रव या तरल पदार्थ। ३. जल। पानी। ४. पेड़ों का रस या दूध। ५. खीर।

क्षीरकाकोली–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की काकोली जड़ी जो अष्टवर्ग के अंतर्गत है।

क्षीरज–संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा। २. शंख। ३. कमल। ४. दही।

क्षीरजा–संज्ञा स्त्री० [सं०] लक्ष्मी।

क्षीरधि–संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।

क्षीरनिधि–संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।

क्षीरव्रत–संज्ञा पुं० [सं०] केवल दूध पीकर रहने का व्रत। पयाहार।

क्षीरसागर–संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार सात समुद्रों में से एक, जो दूध से भरा हुआ माना जाता है।

क्षीरिणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. क्षीर काकोली। २. खिरनी।

क्षीरोद–संज्ञा पुं० [सं०] क्षीर-समुद्र।
यौ०—क्षीरोद-तनया=लक्ष्मी।

क्षुण्ण–वि० [सं०] १. अभ्यस्त। २. दलित। ३. टुकड़े टुकड़े किया हुआ। ४. खंडित।

क्षुत–संज्ञा [सं०] भूख। क्षुधा।

क्षुद्र–वि० [सं०] १. कृपण। कंजूस। २. अधम। नीच। ३. अल्प। छोटा या थोड़ा। ४. क्रूर। खोटा। ५. दरिद्र।

क्षुद्रघंटिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. घुंघरूदार करधनी। २. घुंघरू।

क्षुद्रता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नीचता। कमीनापन। २. ओछापन।

क्षुद्रप्रकृति–वि० [सं०] ओछे या खोटे स्वभाववाला। नीच प्रकृति का।

क्षुद्रबुद्धि–वि० [सं०] १. दुष्ट या नीच बुद्धिवाला। २. नासमझ। मूर्ख।

क्षुद्रा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वेश्या। २. अमलोनी। लोनी। ३. मधुमक्खी।

क्षुद्रावली–संज्ञा स्त्री० [सं०] क्षुद्रघंटिका।

क्षुद्राशय–वि० [सं०] नीच-प्रकृति। कमीना। "महाशय" का उलटा।

क्षुधा–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० क्षुधित, क्षुधालु] भोजन करने की इच्छा। भूख।

क्षुधातुर–वि० [सं०] भूखा।

क्षुधावत–वि० दे० "क्षुधावान्"।

क्षुधावान्–वि० [सं०] [स्त्री० क्षुधावती] जिसे भूख लगी हो। भूखा।

क्षुधित–वि० [सं०] भूखा।

क्षुप–संज्ञा पुं० [सं०] छोटी डालियोंवाला वृक्ष। पौधा। झाड़ी।

क्षुब्ध–वि० [सं०] १. चंचल। अधीर २. व्याकुल। विह्वल। ३. भयभीत डरा हुआ। ४. कुपित। क्रुद्ध।

क्षुभित–वि० [सं०] क्षुब्ध।

क्षुर–संज्ञा पुं० [सं०] १. छुरा। उस्तरा। २. पशुओं के पाँव का खुर।

क्षुरधार–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक नरक। २. एक प्रकार का बाण।

क्षुरप्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का बाण। २. खुरपा।

क्षुरिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. छुरी। चाकू। २. एक यजुर्वेदीय उपनिषद्।

क्षुरी–संज्ञा पुं० [सं० क्षुरिन्] [स्त्री० क्षुरिनी] १. नाई। हज्जाम। २. वह पशु जिसके पाँव में खुर हों। संज्ञा स्त्री० [सं०] छुरी। चाकू।

क्षेत्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह स्थान जहाँ अन्न बोया जाता हो। खेत। २. समतल भूमि। ३. उत्पत्ति-स्थान। ४. स्थान।

प्रदेश। ५. तीर्थ-स्थान । ६. स्त्री । जोरू। ७. शरीर । बदन। ८. अंतःकरण। ९. वह स्थान जो रेखाओं से घिरा हुआ हो।

क्षेत्रगणित–संज्ञा पुं० [सं०] क्षेत्रों के नापने और उनका क्षेत्रफल निकालने की विधि बतानेवाला गणित ।

क्षेत्रज–वि० [सं०] जो क्षेत्र से उत्पन्न हो। संज्ञा पुं० [सं०] वह पुत्र जो किसी मृत या असमर्थ पुरुष की बिना संतानवाली स्त्री के गर्भ से दूसरे पुरुष द्वारा उत्पन्न हो।

क्षेत्रज्ञ–संज्ञा पुं० [सं०] १. जीवात्मा । २. परमात्मा । ३. किसान । खेतिहर। वि० [सं०] जानकार । ज्ञाता।

क्षेत्रपति–संज्ञा पुं० [सं०] १. खेतिहर। २. जीवात्मा । ३. परमात्मा।

क्षेत्रपाल–संज्ञा पुं० [सं०] १. खेत का रखवाला। क्षेत्ररक्षक। २. एक प्रकार के भैरव। ३. द्वारपाल । ४. किसी स्थान का प्रधान प्रबंधकर्त्ता । भूमिया।

क्षेत्रफल–संज्ञा पुं० [सं०] किसी क्षेत्र का वर्गात्मक परिमाण । रकबा।

क्षेत्रविद्–संज्ञा पुं० [सं०] जीवात्मा।

क्षेत्री–संज्ञा पुं० [सं० क्षेत्रिन्] १. खेत का मालिक । २. नियुक्ता स्त्री का विवाहित पति । ३. स्वामी।

क्षेप–संज्ञा पुं० [सं०] १. फेंकना । २. ठोकर। घात। ३. अक्षांश। शर । ४. निंदा । बदनामी । ५. दूरी । ६. बिताना। गुजारना । जैसे—कालक्षेप।

क्षेपक–वि० [सं०] १. फेंकनेवाला। २. मिलाया हुआ । मिश्रित। ३. निंदनीय। संज्ञा पुं० [सं०] ऊपर से या पीछे से मिलाया हुआ अंश।

क्षेपण–संज्ञा पुं० [सं०] १. फेंकना । २. गिराना । ३. बिताना । गुजारना।

क्षेमंकरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार की चील जिसका गला सफ़ेद होता है। २. एक देवी।

क्षेम–संज्ञा पुं० [सं०] १. प्राप्त वस्तु की रक्षा । सुरक्षा। हिफ़ाजत। २. कुशल । मंगल । ३. अभ्युदय। ४. सुख। आनंद। ५. मुक्ति। यौ०—योग-क्षेम।

क्षैण्य–संज्ञा पुं० [सं०] क्षीण का भाव।

क्षोणि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पृथ्वी। २. एक की संख्या।

क्षोणिप–संज्ञा पुं० [सं०] राजा।

क्षोणी–संज्ञा स्त्री० दे० "क्षोणि"।

क्षोभ–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० क्षुब्ध, क्षुभित] १. विचलता । खलबली । २. व्याकुलता । घबराहट। ३. भय । डर । ४. रंज । शोक । ५. क्रोध।

क्षोभण–वि० [सं०] क्षोभित करनेवाला। क्षोभक। संज्ञा पुं० [सं०] काम के पाँच बाणों में से एक।

क्षोभित*–वि० [सं० क्षोभ] १. घबराया हुआ । व्याकुल । २. विचलित । चलायमान। ३. डरा हुआ । भयभीत। ४. क्रुद्ध।

क्षोभी–वि० [सं० क्षोभिन्] उद्वेगशील। व्याकुल। चंचल।

क्षोम–संज्ञा पुं० दे० "क्षौम"।

क्षोणि, क्षोणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पृथ्वी। २. एक की संख्या।

क्षौद्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. क्षुद्र का भाव। क्षुद्रता । २. छोटी मक्खी का मधु। ३. जल।

क्षौम–संज्ञा पुं० [सं०] १. सन आदि के रेशों से बुना हुआ कपड़ा । २. वस्त्र। कपड़ा।

क्षौर–संज्ञा पुं० [सं०] हजामत।

क्षौरिक–संज्ञा पुं० [सं०] नाई । हज्जाम।

क्ष्मा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पृथ्वी । धरती। २. एक की संख्या।

क्ष्वेड़–संज्ञा पुं० [सं०] १. अव्यक्त शब्द या ध्वनि । २. विष । जहर । ३. शब्द। ध्वनि । वि० [सं०] १. छिछोरा। २. कपटी।

ख

ख–हिंदी वर्णमाला में स्पर्श व्यंजनों के अंतर्गत कवर्ग का दूसरा अक्षर।

खं–संज्ञा पु० [सं० खम्] १. शून्य स्थान। खाली जगह। २. बिल। छिद्र। ३. आकाश। ४. निकलने का मार्ग। ५ इंद्रिय। ६ बिंदु। शून्य। ७ स्वर्ग। ८. सुख। ९ ब्रह्मा। १० मोक्ष। निर्वाण।

खंख–वि० [सं० खक] १ छूछा। खाली। २ उजाड। वीरान।

खंखरा†–संज्ञा पु० [देश०] ताँबे का बडा देग जिसमें चावल आदि पकाया जाता है।
वि० [देश०] १ जिसमें बहुत से छेद हों। २ जिसकी बुनावट घनी या ठस न हो। झीना।

खँखार–संज्ञा पु० दे० "खखार"।

खंग–संज्ञा पु० [सं० खड्ग] १ तलवार। २ गैंडा।

खँगना†–क्रि० अ० [सं० क्षय] कम होना। घट जाना।

खँगहा–वि० [हिं० खाँग+हा (प्रत्य०)] जिसे खाँग या निकले हुए दाँत हों।
संज्ञा पु० गैंडा।

खँगालना–क्रि० स० [सं० क्षालन] १ हलका धोना। थोडा धोना। २ सब कुछ उठा ले जाना। खाली कर देना।

खँगी–संज्ञा स्त्री० [हिं० खँगना] कमी। घटी।

खँगारना–क्रि० स० दे० "खँगालना"।

खँचना†–क्रि० अ० [हिं० खाँचना] चिह्नित होना। निशान पडना।

खँचाना†–क्रि० स० [हिं० खाँचना] १. अंकित करना। चिह्न बनाना। २ जल्दी जल्दी लिखना। ३ दे० "खींचना"।

खँचिया–संज्ञा स्त्री० दे० "खाँची"।

खंज†–संज्ञा पु० [सं०] १ एक रोग जिसमें मनुष्य का पैर जकड जाता है। २ लँगडा। पंगु।
*संज्ञा पु० [सं० खंजन] खंजन पक्षी।

खँजडी–संज्ञा स्त्री० दे० "खँजरी"।

खंजन–संज्ञा पु० [सं०] १ एक प्रसिद्ध पक्षी जो शरत् से लेकर शीतकाल तक दिखाई देता है। खँडरिच। ममोला। २ खँडरिच के रंग का घोडा।

खंजर–संज्ञा पु० [फ़ा०] कटार।

खँजरी–संज्ञा स्त्री० [सं० खंजरीट=एक ताल] डफली की तरह का एक छोटा बाजा।
संज्ञा स्त्री० [फ़ा० खंजर] १. रंगीन कपडों की लहरिएदार धारी। २ धारीदार कपडा।

खंजरीट–संज्ञा पु० [सं०] ममोला। खंजन।

खंजा–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णार्द्ध सम वृत्त।

खंड–संज्ञा पु० [सं०] १ भाग। टुकडा। हिस्सा। २ देश। वर्ष। ३ नौ की संख्या। ४ समीकरण की एक क्रिया। (गणित)। ५ खाँड। चीनी। ६ दिशा। दिक्।
वि० १ खंडित। अपूर्ण। २ छोटा। लघु।
संज्ञा पु० [सं० खड्ग] खाँडा।

खंडकथा–संज्ञा स्त्री० [सं०] कथा का एक भेद जिसमें मंत्री अथवा ब्राह्मण नायक होता है और चार प्रकार का विरह रहता है।

खंडकाव्य–संज्ञा पु० [सं०] छोटा कथात्मक प्रबंधकाव्य। जैसे—मेघदूत।

खंडन–संज्ञा पु० [सं०] [वि० खंडनीय, खंडित] १ तोडने फोडने की क्रिया। भंजन। छेदन। २ किसी बात को अयथार्थ प्रमाणित करना। बात काटना। मंडन का उलटा।

खंडना*–क्रि० स० [सं० खंडन] १ टुकडे टुकडे करना। तोडना। २ बात काटना।

खंडनी–संज्ञा स्त्री० [सं० खंडन] मालगुजारी की किस्त। कर।

खंडनीय–वि० [सं०] १ तोडने फोडने लायक। २ खंडन करने योग्य। ३ जो अयुक्त ठहराया जा सके।

खंडपरशु-संज्ञा पुं० [सं०] १. महादेव। शिव। २. विष्णु। ३. परशुराम।
खंडपूरी-संज्ञा स्त्री० [हिं० खाँड़+पूरी] एक प्रकार की भरी हुई मीठी पूरी।
खंडप्रलय-संज्ञा पुं० [सं०] वह प्रलय जो एक चतुर्युगी बीत जाने पर होता है।
खंडवरा-संज्ञा पुं० [हिं० खाँड़+बरा] मीठा बड़ा। (पकवान)
खंडमेरु-संज्ञा पुं० [सं०] पिंगल में एक क्रिया।
खँडरा-संज्ञा पुं० [सं० खंड+हिं० बरा] बेसन का एक प्रकार का चौकोर बड़ा।
खँडरिच-संज्ञा पुं० [सं० खंजरीट] खंजन पक्षी।
खंडवानी-संज्ञा स्त्री० [हिं० खाँड+पानी] १. खाँड़ का रस। शरबत। २. कन्या पक्ष-वालों की ओर से बरातियों को जलपान या शरबत भेजने की क्रिया।
खँड़साल-संज्ञा स्त्री० [सं० खंड+शाला)] खाँड़ या शक्कर बनाने का कारखाना।
खँड़हर-संज्ञा पुं० [सं० खंड+हिं० घर] किसी टूटे या गिरे हुए मकान का बचा हुआ भाग।
खंडिल-वि० [सं०] १. टूटा हुआ। भग्न। २. जो पूरा न हो। अपूर्ण।
खंडिता-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जिसका नायक रात को किसी अन्य नायिका के पास रहकर सबेरे उसके पास आवे।
खँडिया-संज्ञा स्त्री० [सं० खंड] छोटा टुकड़ा।
खँडौरा†-संज्ञा पुं० [हिं० खाँड़+औरा (प्रत्य०)] मिसरी का लड्डू। ओला।
खंतरा-संज्ञा पुं० [सं० कांतर या हिं० अँतरा] १. दरार। खोंडरा। २. कोना। अँतरा।
खंता†-संज्ञा पुं० [सं० खनित्र] [स्त्री० अल्पा० खंती] १. कुदाल। २. फावड़ा।
खंदक-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. शहर या किले के चारों ओर की खाईं। २. बड़ा गड्ढा।
खंदा*†-संज्ञा पुं० [हिं० खनना] खोदनेवाला।
खँधवाना-क्रि० स० [हिं० खाली] खाली कराना।
खँधार*†-संज्ञा पुं० [सं० स्कंधावार] १. स्कंधावार। छावनी। २. डेरा। खेमा। संज्ञा पुं० [सं० खंडपाल] सामंत राजा। सरदार।
खँधियाना†-क्रि० स० [हिं० खाली] बाहर निकालना। खाली करना।
खंभ-संज्ञा पुं० दे० "खंभा"।
खंभा-संज्ञा पुं० [सं० स्कंभ या स्तंभ] [स्त्री० खँभिया] १. पत्थर या काठ का लंबा खड़ा टुकड़ा जिसके आधार पर छत या छाजन रहती है। स्तंभ। २. बड़ी लाट। पत्थर आदि का लंबा खड़ा टुकड़ा।
खँभार*†-संज्ञा पुं० [सं० क्षोभ, प्रा० खोभ] १. अंदेशा। चिंता। २. घबराहट। व्याकुलता। ३. डर। भय। ४. शोक।
खँभिया-संज्ञा स्त्री० [हिं० खंभा] छोटा पतला खंभा।
ख-संज्ञा पुं० [सं०] १. गड्ढा। गर्त। २. खाली स्थान। ३. निर्गम। निकास। ४. छेद। बिल। ५. इंद्रिय। ६. गले की वह नाली जिससे प्राणवायु आती जाती है। ७. कुआँ। ८. तीर का घाव। ९. आकाश। १०. स्वर्ग। ११. सुख। १२. कर्म। १३. बिंदु। सिफ़र। १४. ब्रह्म। १५. शब्द।
खई*†-संज्ञा स्त्री० [सं० क्षयी] १. क्षय। २. लड़ाई। युद्ध। ३. तकरार। झगड़ा।
खक्खा-संज्ञा पुं० [अ० क़हक़हा] १. जोर की हँसी। अट्टहास। क़हक़हा। २. अनुभवी पुरुष। ३. बड़ा और ऊँचा हाथी।
खखार-संज्ञा पुं० [अनु०] गाढ़ा थूक या कफ़ जो खखारने से निकले। कफ।
खखारना-क्रि० अ० [अनु०] थूक या कफ़ बाहर करने के लिये गले से शब्द सहित वायु निकालना।
खखेटना*-क्रि० स० [सं० आखेट] १. दबाना। २. भगाना। ३. घायल करना।
खग-संज्ञा पुं० [सं०] १. आकाश में चलनेवाली वस्तु या व्यक्ति। २. पक्षी। चिड़िया। ३. गंधर्व। ४. बाण। तीर।

५. ग्रह। तारा। ६. बादल। ७. देवता।
८. सूर्य्य। ९. चंद्रमा। १०. वायु।
खगना*†–क्रि० अ० [हिं० खाँग=काँटा]
१. चुभना। धँसना। २. चित्त में बैठना।
मन में धँसना। ३. लग जाना। लिप्त होना। ४. चिह्नित हो जाना। उपट आना। ५. अटक रहना। अड जाना।
खगपति–संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य्य। २. गरुड़।
खगेश–संज्ञा पुं० [सं०] गरुड़।
खगोल–संज्ञा पुं० [सं०] १. आकाशमंडल। २. खगोलविद्या।
खगोलविद्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह विद्या जिससे आकाश के नक्षत्रों, ग्रहों आदि का ज्ञान प्राप्त हो। ज्योतिष।
खग्ग*–संज्ञा पुं० [सं० खड्ग] तलवार।
खग्रास–संज्ञा पुं० [सं०] ऐसा ग्रहण जिसमें सूर्य्य या चंद्र का सारा मंडल ढँक जाय।
खचन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० खचित] १. बाँधने या जड़ने की क्रिया। २. अंकित करने या होने की क्रिया।
खचना*–क्रि० अ० [सं० खचन] १. जड़ा जाना। २. अंकित होना। चित्रित होना। ३. रम जाना। अड़ जाना। ४. अटक जाना। फँसना।
क्रि० स० १. जड़ना। २. अंकित करना।
खचर–संज्ञा पुं० [सं०] १ सूर्य्य। २. मेघ। ३. ग्रह। ४. नक्षत्र। ५ वायु। ६. पक्षी। ७. बाण। तीर।
वि० आकाश में चलनेवाला।
खचरा–वि० [हिं० खच्चर] १. वर्णसंकर। दोगला। २. दुष्ट। पाजी।
खचाखच–क्रि० वि० [अनु०] बहुत भरा हुआ। उसाठस।
खचित–वि० [सं०] खींचा हुआ। चित्रित या लिखित।
खच्चर–संज्ञा पुं० [देश०] गधे और घोड़ी के संयोग से उत्पन्न एक पशु।
खज*–वि० [सं० खाद्य, प्रा० खज्ज] खाने योग्य। जो खाया जा सके। भक्ष्य।
खजला–संज्ञा पुं० दे० "खाजा"।
खजहजा*–संज्ञा पुं० [सं० खाद्याद्य] खाने योग्य उत्तम फल या मेवा।
खजानची–संज्ञा पुं० [फा०] खजाने का अफसर। कोषाध्यक्ष।
खजाना–संज्ञा पुं० [अ०] १. वह स्थान जहाँ धन या और कोई चीज संग्रह करके रखी जाय। धनागार। २. राजस्व। कर।
खजुआ†–संज्ञा पुं० दे० "खाजा"।
खजुरा†–संज्ञा पुं० [हिं० खजूर] स्त्रियों के सिर की चोटी गूँथने की डोरी।
खजुली†–संज्ञा स्त्री० दे० "खुजली"।
संज्ञा स्त्री० [हिं० खाजा] खाजे की तरह की एक मिठाई।
खजूर–संज्ञा पुं० स्त्री० [सं० खर्जूर] १. ताड़ की जाति का एक पेड़ जिसके फल खाए जाते हैं। २. एक प्रकार की मिठाई।
खजूरी–वि० [हिं० खजूर] १. खजूर-संबंधी। खजूर का। २. खजूर के आकार का। ३ तीन लर का गूँथा हुआ।
खट–संज्ञा पुं० [अनु०] दो चीजों के टकराने या किसी कड़ी चीज के टूटने से उत्पन्न शब्द। ठोकने-पीटने की आवाज।
मुहा०—खट से=तुरन्त। तत्काल।
खटक–संज्ञा स्त्री० [अनु०] खटका। चिंता।
खटकना–क्रि० अ० [अनु०] १. 'खटखट' शब्द होना। टकराने या टूटने का सा शब्द होना। २. रह रहकर पीड़ा होना। ३ बुरा मालूम होना। खलना। ४. विरक्त होना। उचटना। ५. डरना। भय करना। ६. परस्पर झगड़ा होना। ७. अनिष्ट की भावना या आशंका होना। ८. ठीक न जान पड़ना। ९ मन में चिंता उत्पन्न करना।
खटका–संज्ञा पुं० [हिं० खटकना] १ 'खट-खट' शब्द। टकराने या पीटने का सा शब्द। २. डर। भय। आशंका। ३. चिंता। फिक्र। ४. किसी प्रकार का पेंच या कमानी, जिसके घुमाने, दबाने आदि से कोई वस्तु खुलती या बंद होती

हो। ५. किवाड़ की सिटकिनी। बिल्ली। ६. पेड़ में बँधा बाँस का वह टुकड़ा जिसे हिलाकर चिड़िया उड़ाते हैं।
खटकाना–क्रि० स० [हिं० खटकना] १. 'खटखट' शब्द करना। ठोंकना। हिलाना या बजाना। २. शंका उत्पन्न करना।
खटकीड़ा–संज्ञा पुं० दे० "खटमल"।
खटखट–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. ठोंकने-पीटने का शब्द। २. झंझट। झमेला। ३. लड़ाई। झगड़ा। रार।
खटखटाना–क्रि० स० [अनु०] 'खट खट' शब्द करना। खड़खड़ाना।
खटना–क्रि० स० [?] धन कमाना।
क्रि० अ० काम-धंधे में लगना।
खटपट–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. अनबन। लड़ाई। झगड़ा। २. ठोंकने-पीटने या टकराने का शब्द।
खटपद–संज्ञा पुं० दे० "षट्पद"।
खटपाटी–संज्ञा स्त्री० [हिं० खाट + पाटी] खाट की पाटी।
खटबुना–संज्ञा पुं० [हिं० खाट + बुनना] चारपाई आदि बुननेवाला।
खटमल–संज्ञा पुं० [हिं० खाट + मल = मैल] उन्नावी रंग का एक कीड़ा जो मैली खाटों, कुरसियों आदि में उत्पन्न होता है। खटकीड़ा।
खटमिट्ठा–वि० [हिं० खट्टा + मीठा] कुछ खट्टा और कुछ मीठा।
खटमुख–संज्ञा पुं० दे० "षट्मुख"।
खटराग–संज्ञा पुं० दे० "षट्राग"।
संज्ञा पुं० [सं० षट्राग] १. झंझट। बखेड़ा। २. व्यर्थ और अनावश्यक चीजें।
खटवाट–संज्ञा स्त्री० दे० "खटपाटी"।
खटाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० खट्टा] १. खट्टापन। तुरशी। २. खट्टी चीज।
मुहा०—खटाई में डालना = दुबिधा में डालना। कुछ निर्णय न करना।
खटाखट–संज्ञा पुं० [अनु०] ठोंकने, पीटने, चलने आदि का लगातार शब्द।
क्रि० वि० १. खटखट शब्द के साथ। २. जल्दी जल्दी। बिना रुकावट के।
खटाना–क्रि० अ० [हिं० खट्टा] किसी वस्तु में खट्टापन आ जाना। खट्टा होना।
क्रि० अ० [सं० स्कन्ध] १. निर्वाह होना। गुजारा होना। निभना। २. ठहरना। ३. जाँच में पूरा उतरना।
खटापटी–संज्ञा स्त्री० दे० "खटपट"।
खटाव–संज्ञा पुं० [हिं० खटाना] निर्वाह। गुजर।
खटास–संज्ञा पुं० [सं० खट्वास] गंध-बिलाव।
संज्ञा स्त्री० [हिं० खट्टा] खट्टापन। तुरशी।
खटिक–संज्ञा पुं० [सं० खट्टिक] [स्त्री० खटकिन] एक छोटी जाति जिसका काम फल, तरकारी आदि बेचना है।
खटिया–संज्ञा स्त्री० [हिं० खाट] छोटी चारपाई या खाट। खटोली।
खटेटी†–वि० [हिं० खाट + एटी (प्रत्य०)] जिस पर बिछौना न हो।
खटोलना–संज्ञा पुं० दे० "खटोला"।
खटोला–संज्ञा पुं० [हिं० खाट + ओला (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० खटोली] छोटी खाट
खट्टा–वि० [सं० कटु] कच्चे आम, इमली आदि के स्वाद का। तुर्श। अम्ल।
मुहा०—जी खट्टा होना = चित्त अप्रसन्न होना। दिल फिर जाना।
संज्ञा पुं० [हिं० खट्टा] नीबू की जाति का एक बहुत खट्टा फल। गलगल।
खट्टा मीठा–वि० दे० "खटमिट्ठा"।
खट्टी†–संज्ञा स्त्री० [हिं० खट्टा] खट्टा नीबू।
खट्टू–संज्ञा पुं० [हिं० खटना] कमानेवाला।
खट्वांग–संज्ञा पुं० [सं०] १. चारपाई का पाया या पाटी। २. शिव का एक अस्त्र। ३. वह पात्र जिसमें प्रायश्चित्त करते समय भिक्षा माँगी जाती है।
खट्वा–संज्ञा स्त्री० [सं०] खटिया। खाट।
खड़ंजा–संज्ञा पुं० [हिं० खड़ा + अंग] ईंटों की खड़ी चुनाई। (ऐसी जोड़ाई फ़र्श पर होती है।)
खड़क–संज्ञा स्त्री० दे० "खटक"।

खड़कना—क्रि० अ० दे० "खटकना"।
खड़खड़ा—संज्ञा पुं० [अनु०] १. दे० "खटखटा"। २. काठ का एक ढाँचा जिसमें जोतकर गाड़ी के लिये घोड़े सधाए जाते हैं।
खड़खड़ाना—क्रि० अ० [अनु०] कड़ी वस्तुओं का परस्पर शब्द के साथ टकराना।
क्रि० स० कई वस्तुओं को परस्पर टकराना।
खड़खड़िया—संज्ञा स्त्री० [हिं० खड़खड़ाना] पालकी। पीनस।
खड़ग*—संज्ञा पु० दे० "खड्ग"।
खड़गी*—वि० [स० खड्गिन] तलवार लिए हुए। तलवारवाला।
संज्ञा पु० [स० गड्ग] गैंडा।
खड़जी—संज्ञा पु० दे० "खड्गी"।
खड़बड़—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ खट खट शब्द। २ उलट-फेर। ३ हलचल।
खड़बड़ाना—क्रि० अ० [अनु०] १ विच लित होना। घबराना। २ बे-तरतीब होना।
वि० स० १ किसी वस्तु को उलट-पुलटकर "खड़बड़" शब्द उत्पन्न करना। २ उलट-फेर करना। ३ घबरा देना।
खड़बड़ाहट—संज्ञा स्त्री० [हिं० खड़बड़ाना] "खड़बड़ाना" का भाव।
खड़बड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० खड़बड़ाना] १ व्यतिक्रम। उलट-फेर। २ हलचल।
खड़बीहड़—वि० दे० "खड़बिड़ा"।
खड़मड़ल—संज्ञा पु० [स० खड+मडल] गड़बड़। घोटाला।
खड़ा—वि० [स० खडक=खभा, थूनी] [स्त्री० खड़ी] १ सीधा ऊपर को गया हुआ। ऊपर को उठा हुआ। जैसे—झडा खड़ा करना। २ पृथ्वी पर पैर रखकर टाँगों को सीधा करके अपने शरीर को ऊँचा किए। दडायमान। ३ ठहर या टिका हुआ। स्थिर। ४ प्रस्तुत। उपस्थित। तैयार। ५ सन्नद्ध। उद्यत। ६ आरभ। जारी। ७ (घर, दीवार आदि) स्थापित। निर्मित। उठा हुआ। ८ जो उखाड़ा या काटा न गया हो। जैसे—खड़ी फ़सल। ९ बिना पका। असिद्ध। कच्चा। १०. समूचा। पूरा। ११ ठहरा हुआ। स्थिर।
मुहा०—खड़े खड़े=तुरंत। झटपट। खड़ा जवाब=वह इनकार जो चटपट किया जाय। खड़ा होना=सहायता देना। मदद करना।
खड़ाऊँ—संज्ञा स्त्री० [हिं० काठ+पाँव या 'खटपट' अनु०] काठ के तले का खुला जूता। पादुका।
खड़िया—संज्ञा स्त्री० [स० खटिका] एक प्रकार की सफेद मिट्टी। खरिया। खड़ी।
खड़ी—संज्ञा स्त्री० दे० "खड़िया"।
खड़ीबोली—संज्ञा स्त्री० [हिं० खड़ी+बोली] पश्चिमी हिंदी का वह भेद जो दिल्ली के आस-पास बोला जाता है और जिसमें उर्दू और वर्तमान हिंदी गद्य लिखा जाता है।
खड्ग—संज्ञा पु० [स०] १ एक प्रकार की तलवार। खाँड़ा। २ गैंडा।
खड्गपत्र—संज्ञा पु० [स०] यमपुरी का वह पेड़ जिसमें तलवार के से पत्ते होते हैं।
खड्गी—संज्ञा पु० [स० खड्गिन्] १ वह जिसके पास खड्ग हो। खड्गधारी। २ गैंडा।
खड्ड, खड्डा—संज्ञा पु० [स० खात] गड्ढा।
खत—संज्ञा पु० [स० क्षत] घाव। जख्म।
खत—संज्ञा पु० [अ०] १ पत्र। चिट्ठी। २ लिखावट। ३ रेखा। लकीर। ४. दाढ़ी के बाल। हजामत।
खतखोट—संज्ञा स्त्री० [स० क्षत+हिं० खुट्ट] घाव के ऊपर की पपड़ी। खुरड।
खतना—संज्ञा पु० [अ०] लिंग के अगले भाग का बढ़ा हुआ चमड़ा काटने की मुसलमानी रस्म। सुन्नत। मुसलमानी।
खतम—वि० [अ० खत्म] पूर्ण। समाप्त।
मुहा०—खतम करना=मार डालना।
खतमी—संज्ञा स्त्री० [अ०] गुलखैरू की जाति का एक पौधा।
खतर, खतरा—संज्ञा पु० [अ०] १. डर।

भय। खौफ़। २. आशंका।
खतरेटा–संज्ञा पुं० दे० "खत्री"।
खता–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. क़सूर। अपराध। २. धोखा। ३. भूल। गलती।
खता*†–संज्ञा पुं० दे० "खत"।
खतावार–वि० [अ० खता+फ़ा० वार] दोषी। अपराधी।
खति*–संज्ञा स्त्री० दे० "क्षति"।
खतियाना–क्रि० स० [हिं० खाता] आय-व्यय और क्रय-विक्रय आदि को खाते में अलग अलग मद्द में लिखना।
खतियौनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० खतियाना] १. वह बही जिसमें अलग अलग हिसाब हो। खाता। २. खतियाने का काम।
खत्ता–संज्ञा पुं० [सं० खात] [स्त्री० खत्ती] १. गड्ढा। २. अन्न रखने का स्थान।
खत्म–वि० दे० "खतम"।
खत्री–संज्ञा पुं० [सं० क्षत्रिय] [स्त्री० खतरानी] हिंदुओं में एक जाति।
खदबदाना–क्रि० अ० [अनु०] उबलने का शब्द होना।
खदान–संज्ञा स्त्री० [हिं० खोदना या खान] वह गड्ढा जो कोई वस्तु निकालने के लिये खोदा जाय। खान।
खदिर–संज्ञा पुं० [सं०] १. खैर का पेड़। २. कत्था। ३. चंद्रमा। ४. इंद्र।
खदेरना–क्रि० स० [हिं० खेदना] दूर करना।
खद्दड़, खद्दर–संज्ञा पुं० [?] हाथ के काते हुए सूत का बुना कपड़ा। खादी। गाढ़ा।
खद्योत–संज्ञा पुं० [सं०] १. जुगनू। २. सूर्य्य।
खन*†–संज्ञा पुं० दे० "क्षण"।
संज्ञा पुं० [सं० खंड] (मकान का) खंड।
खनक–संज्ञा पुं० [सं०] १. जमीन खोदनेवाला। २. वह स्थान जहाँ सोना आदि निकलता हो। खान। ३. भूतत्त्व-शास्त्र जाननेवाला।
संज्ञा स्त्री० [अनु०] धातुखंडों के टकराने या बजने का शब्द।
खनकना–क्रि० अ० [अनु०] खनखनाना। धातुखंडों के टकराने का शब्द होना।
खनकाना–क्रि० स० [अनु०] धातुखंड आदि से शब्द उत्पन्न करना।
खनखनाना–क्रि० अ० [अनु०] खनकना।
क्रि० स० [अनु०] खनकाना।
खनना*†–क्रि० स० [सं० खनन] १. खोदना। २. फोड़ना।
खनिज–वि० [सं०] खान से खोदकर निकाला हुआ।
खनौना*†–क्रि० स० दे० "खनना"।
खपची–संज्ञा स्त्री० [तु० कमची] १. बाँस की पतली तीली। २. कमठी। बाँस की पतली पटरी।
खपड़ा–संज्ञा पुं० [सं० खर्पर] १. पटरी के आकार का मिट्टी का पका टुकड़ा जो मकान छाने के काम आता है। २. भीख माँगने का मिट्टी का बरतन। खप्पर। ३. मिट्टी के टूटे बरतन का टुकड़ा। ठीकरा। ४. कछुए की पीठ पर का कड़ा ढक्कन।
खपड़ी–संज्ञा स्त्री० [सं० खर्पर] १. नाँद की तरह का मिट्टी का छोटा बरतन। २. दे० "खोपड़ी"।
खपड़ैल–संज्ञा स्त्री० दे० "खपरैल"।
खपत, खपती–संज्ञा स्त्री० [हिं० खपना] १. समाई। गुंजाइश। २. माल की कटती या बिक्री।
खपना–क्रि० अ० [सं० क्षेपण] [संज्ञा खपत] १. किसी प्रकार व्यय होना। काम में आना। लगना। कटना। २. चल जाना। गुज़ारा होना। निभना। ३. नष्ट होना। ४. तंग होना। दिक़ होना।
खपरिया–संज्ञा स्त्री० [सं० खर्परी] भूरे रंग का एक खनिज पदार्थ। दर्विका। रसक।
खपरैल–संज्ञा स्त्री० [हिं० खपड़ा] खपड़े से छाई हुई छत।
खपाना–क्रि० स० [सं० क्षेपण] १. किसी प्रकार व्यय करना। काम में लाना।
मुहा०—माथा या सिर खपाना = सिर-पच्ची करना। सोचते सोचते हैरान होना।
२. निर्वाह करना। निभाना। ३. नष्ट

करना । समाप्त करना । ४. तंग करना ।

खपुर–संज्ञा पुं० [सं०] १. गंधर्वनगर। २. पुराणानुसार एक नगर जो आकाश में है। ३. राजा हरिश्चंद्र की पुरी जो आकाश में स्थित मानी जाती है।

खपुष्प–संज्ञा पुं० [सं०] १. आकाश-कुसुम। २. असंभव बात। अनहोनी घटना।

खप्पर–संज्ञा पुं० [सं० खर्पर] १. तसले के आकार का कोई पात्र।
मुहा०—खप्पर भरना = खप्पर में मदिरा आदि भरकर देवी पर चढ़ाना।
२. भिक्षापात्र। ३. खोपड़ी।

खफगी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. अप्रसन्नता। नाराजगी। २ क्रोध। कोप।

खफा–वि० [अ०] १ अप्रसन्न। नाराज। २. क्रुद्ध। रुष्ट।

खफीफ–वि० [अ०] १. थोड़ा। कम। २. हलका। ३ तुच्छ। क्षुद्र। ४. लज्जित।

खबर–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. समाचार। वृत्तांत। हाल।
मुहा०—खबर उड़ना = चर्चा फैलना। अफवाह होना। खबर लेना = १. सहायता करना। सहानुभूति दिखलाना। २ सजा देना।
२. सूचना। ज्ञान। जानकारी। ३. भेजा हुआ समाचार। संदेशा। ४ चेत। सुधि। संज्ञा। ५ पता। खोज।

खबरदार–वि० [फा०] होशियार। सजग।

खबरदारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] सावधानी। होशियारी।

खबीस–संज्ञा पुं० [अ०] वह जो दुष्ट और भयंकर हो।

खब्त–संज्ञा पुं० [अ०] [वि० खब्ती] पागलपन। सनक। झक।

खब्ती–वि० [अ०] सनकी। पागल।

खभरना*†–क्रि० स० [हिं० भरना] १. मिश्रित करना। २. उथल-पुथल मचाना।

खम–संज्ञा पुं० [फा०] टेढ़ापन। झुकाव।
मुहा०—खम खाना = १. मुड़ना। झुकना। दबना। २ हारना। पराजित होना। खम ठोंकना = १. लड़ने के लिये ताल ठोंकना। २. दृढ़ता दिखलाना। खम ठोंककर = दृढ़ता या निश्चयपूर्वक। जोर देकर।

खम दम–संज्ञा पुं० [फा० खम+दम] पुरुषार्थ। साहस।

खमसा–संज्ञा पुं० [अ० खमस = पाँच संबंधी] एक प्रकार की गजल।

खमा*–संज्ञा स्त्री० दे० "क्षमा"।

खमीर–संज्ञा पुं० [अ०] १. गूँधे हुए आटे का सड़ाव। २. गूँधकर उठाया हुआ आटा। माया। ३. कटहल, अनन्नास आदि का सड़ाव जो तमाकू में डाला जाता है। ४. स्वभाव। प्रकृति।

खमीरा–वि० पुं० [अ०] [स्त्री० खमीरी] १. खमीर उठाकर बनाया या खमीर मिलाया हुआ। २. शीरे में पकाकर बनाई हुई ओषधि। जैसे—खमीरा बनफ्शा।

खमोश–वि० दे० "खामोश"।

खम्माच–संज्ञा स्त्री० [हिं० खमावती] मालकोस राग की दूसरी रागिनी।

खय*†–संज्ञा स्त्री० दे० "क्षय"।

खया–संज्ञा पुं० दे० "खवा"।

खयानत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. धरोहर रखी हुई वस्तु न देना अथवा कम देना। गबन। २. चोरी या बेईमानी।

खयाल–संज्ञा पुं० दे० "ख्याल"।

खर–संज्ञा पुं० [सं०] १. गधा। २ खच्चर। ३ बगला। ४. कौवा। ५. एक राक्षस जो रावण का भाई था। ६. तृण। तिनका। घास। ७ साठ संवत्सरों में से एक। ८. छप्पय छंद का एक भेद। वि० [सं०] १. कड़ा। सख्त। २. तेज। तीक्ष्ण। ३. हानिकर। अमांगलिक। जैसे—खर मास। ४. तेज धार का।

खरक–संज्ञा पुं० [सं० खड़क] १. चौपायों को रखने के लिये लकड़ियाँ गाड़कर बनाया हुआ घेरा। बाड़ा। बाड़ा। २. पशुओं के चरने का स्थान। ३. बाँसों की फट्टियों का बेवाड़। टट्टर। संज्ञा स्त्री० दे० "खड़क"।

खरकना–क्रि० अ० [अनु०] १. दे० "खड़-

कना"। २. फाँस चुभने का सा दर्द होना। ३. सरकना। चल देना।

खरका–संज्ञा पुं० [हिं० खर] तिनका। मुहा०—खरका करना = भोजन के उपरांत तिनके से खोदकर दाँत साफ़ करना। संज्ञा पुं० दे० "खरक"।

खरखरा–वि० दे० "खुरखुरा"।

खरखशा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. झगड़ा। लड़ाई। २. भय। आशंका। डर। ३. झंझट। बखेड़ा।

खरखौकी*–संज्ञा स्त्री० [हिं० खर + खाना] खर, तृण आदि खानेवाली, अग्नि।

खरग–संज्ञा पुं० दे० "खड्ग"।

खरगोश–संज्ञा पुं० [फ़ा०] खरहा।

खरच–संज्ञा पुं० दे० "खर्च"।

खरचना–क्रि० स० [फ़ा० खर्च] १. व्यय करना। खर्च करना। २. व्यवहार में लाना।

खरचा–संज्ञा पुं० दे० १. "खरका"। २. दे० "खर्चा"।

खरता–वि० [सं०] अधिक तीक्ष्ण। बहुत तेज।

खरतल†–वि० [हिं० खरा] १. खरा। स्पष्टवादी। २. शुद्ध हृदयवाला। ३. मुरौवत न करनेवाला। ४. साफ़। स्पष्ट। ५. प्रचंड। उग्र।

खरदुक–संज्ञा पुं० [फ़ा० खुर्द ?] एक पुराना पहनावा।

खरदूषण–संज्ञा पुं० [सं०] खर और दूषण नामक राक्षस जो रावण के भाई थे।

खरधार–संज्ञा पुं० [सं०] तेज धारवाला अस्त्र।

खरब–संज्ञा पुं० [सं० खर्व] सौ अरब की संख्या।

खरबूजा–संज्ञा पुं० [फ़ा० खर्बुज़ा] ककड़ी की जाति का एक प्रसिद्ध गोल फल।

खरभर–संज्ञा पुं० [अनु०] १. शोर। गुल। २. हलचल। गड़बड़।

खरभराना–क्रि० अ० [हिं० खरभर] १. खरभर शब्द करना। २. शोर करना। ३. गड़बड़ या हलचल मचाना। ४. व्याकुल होना।

खरमस्ती–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] दुष्टता। पाजीपन। शरारत।

खरमास–संज्ञा पुं० दे० "खरवाँस"।

खरमिटाव†–संज्ञा पुं० [हिं० खर + मिटाना] जलपान। कलेवा।

खरल–संज्ञा पुं० [सं० खल] पत्थर की कूँड़ी जिसमें ओषधियाँ कूटी जाती हैं। खल।

खरवाँस–संज्ञा पुं० [हिं० खर + मास] पूस और चैत का महीना जब कि सूर्य्य धन और मीन का होता है। (इनमें मांगलिक कार्य्य करना वर्जित है।)

खरसा–संज्ञा पुं० [सं० षड्रस] एक प्रकार का पकवान।

खरसान–संज्ञा स्त्री० [हिं० खर + सान] एक प्रकार की सान जिसपर हथियार तेज किए जाते हैं।

खरहरा–संज्ञा पुं० [हिं० खरहरना] [स्त्री० अल्पा० खरहरी] १. अरहर के डंठलों से बना हुआ झाड़ू। झँखरा। २. घोड़े के रोएँ साफ़ करने के लिये दाँतीदार कंघी।

खरहा–संज्ञा पुं० [हिं० खर = घास + हा (प्रत्य०)] खरगोश जंतु।

खरा–वि० [सं० खर = तीक्ष्ण] १. तेज। तीखा। २. अच्छा। बढ़िया। विशुद्ध। बिना मिलावट का। ३. सेंककर कड़ा किया हुआ। करारा। ४. चीमड़। कड़ा। ५. जिसमें किसी प्रकार की बेईमानी या धोखा न हो। साफ़। छल-छिद्र-शून्य। ६. नगद (दाम)। मुहा०—रुपये खरे होना = रुपये मिलना या मिलने का निश्चय होना। ७. लगी-लिपटी न कहनेवाला। स्पष्टवक्ता। ८. (बात के लिये) यथातथ्य। सच्चा। †* ९. बहुत। अधिक। ज़्यादा।

खराई–संज्ञा स्त्री० [हिं० खरा + ई (प्रत्य०)] "खरा" का भाव। खरापन। संज्ञा स्त्री० [देश०] सबेरे अधिक देर तक जलपान या भोजन आदि न मिलने के

कारण सबीअत खराब होना।

खराद—संज्ञा पुं० [फ़ा० खर्राद] एक औजार जिसपर चढ़ाकर लकड़ी, धातु आदि की सतह चिकनी और सुडौल की जाती है। संज्ञा स्त्री० १. खरादने का भाव या क्रिया। २. बनावट। गढ़न।

खरादना—क्रि० स० [हिं० खराद] १. खराद पर चढ़ाकर किसी वस्तु को साफ़ और सुडौल करना। २. काट-छाँटकर सुडौल बनाना।

खरादी—संज्ञा पुं० [हिं० खराद] खरादनेवाला।

खरापन—संज्ञा पुं० [हिं० खरा+पन] १. खरा का भाव। २. सत्यता। सच्चाई।

खराब—वि० [अ०] १. बुरा। निकृष्ट। २. दुर्दशाग्रस्त। ३. पतित। मर्यादा-भ्रष्ट।

खराबी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. बुराई। दोष। अवगुण। २. दुर्दशा। दुरवस्था।

खरायँध—संज्ञा स्त्री० [सं० क्षार+गंध] १. क्षार की सी गंध। २. मूत्र की सी दुर्गंध।

खरारि—संज्ञा पुं० [सं०] १. रामचंद्र। २. विष्णु भगवान्। ३. कृष्णचंद्र।

खराश—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] खरोंच। छिलन।

खरिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० खर+इया (प्रत्य०)] १. घास, भूसा बाँधने की पतली रस्सी से बनी हुई जाली। पाँसी। २. झोली। संज्ञा स्त्री० दे० "खड़िया"।

खरियाना—क्रि० स० [हिं० खरिया=झोली] १. झोली में डालना। थैले में भरना। २. हस्तगत करना। ले लेना। ३. झोली में से गिराना।

खरिहान—संज्ञा पुं० दे० "खलियान"।

खरी—संज्ञा स्त्री० १. दे० "खड़िया"। २. "खली"।

खरीता—संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० अल्पा० खरीती] १. थैली। खीसा। २. जेब। ३. वह बड़ा लिफ़ाफ़ा जिसमें आज्ञापत्र आदि भेजे जायँ।

खरीद—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. मोल लेने की क्रिया। क्रय। २. खरीदी हुई चीज़।

खरीदना—क्रि० स० [फ़ा० खरीदन] मोल लेना। क्रय करना।

खरीदार—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. मोल लेनेवाला। ग्राहक। २. चाहनेवाला।

खरीफ़—संज्ञा स्त्री० [अ०] वह फ़सल जो आषाढ़ से अगहन तक में काटी जाय।

खरोंच—संज्ञा स्त्री० [सं० क्षुरण] १. छिलने का चिह्न। खराश। २. एक पकवान।

खरोंचना—क्रि० स० [सं० क्षुरण] खुरचना। करोना। छीलना।

खरोट—संज्ञा स्त्री० दे० "खरोंच"।

खरोष्ठी, खरोष्ठी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्राचीन लिपि जो फ़ारसी की तरह दाहिने से बाएँ को लिखी जाती थी। गांधार लिपि।

खरौंट—संज्ञा स्त्री० दे० "खरोंच"।

खरौंहा—वि० [हिं० खारा+औंहा] कुछ कुछ खारा। कुछ नमकीन।

खर्च—संज्ञा पुं० [अ० खर्ज] १. किसी काम में किसी वस्तु का लगना। व्यय। सरफ़ा। २. खपत। ३. वह धन जो किसी काम में लगाया जाय।

खर्चा—संज्ञा पुं० दे० "खर्च"।

खर्चीला—वि० [हिं० खर्च+ईला (प्रत्य०)] बहुत खर्च करनेवाला।

खर्जूर—संज्ञा पुं० [सं०] १. खजूर। २. चाँदी। ३. हरताल। ४. बिच्छू।

खर्पर—संज्ञा पुं० [सं०] १. तसले के आकार का मिट्टी का बरतन। २. काली देवी का वह पात्र जिसमें वे रुधिर पान करती हैं। ३. भिक्षापात्र। ४. खोपड़ा। ५. खपरिया नामक उपधातु।

खर्व—वि० [सं०] १. जिसका अंग भंग या अपूर्ण हो। न्यूनांग। २. छोटा। लघु। ३. वामन। बौना। संज्ञा पुं० [सं०] १. सौ अरब की संख्या। खरब। २. कुबेर की नौ निधियों में से एक।

खर्वीला—वि० दे० "खर्चीला"।

खर्रा—संज्ञा पुं० [खर खर से अनु०] १. वह लंबा कागज़ जिसमें कोई भारी हिसाब या

विवरण लिखा हो। २. पीठ पर छोटी छोटी फुंसियाँ निकलने का रोग।

खर्राटा–संज्ञा पुं० [अनु०] वह शब्द जो सोते समय नाक से निकलता है।

मुहा०—खर्राटा भरना, मारना या लेना = बेखबर सोना।

खल–वि० [सं०] १. क्रूर। २. नीच। अधम। ३. दुर्जन। दुष्ट।

संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य्य। २. तमाल का पेड़। ३. धतूरा। ४. खलियान। ५. पृथ्वी। ६. स्थान। ७. खरल।

खलक–संज्ञा पुं० [अ०] १. सृष्टि के प्राणी या जीवधारी। २. दुनिया। संसार।

खलड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "खाल"।

खलता–स० स्त्री० [सं०] दुष्टता। नीचता।

खलना–क्रि० अ० [सं० खर=तीक्ष्ण] बुरा लगना। अप्रिय होना।

खलबल–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. हलचल। २. शोर। हल्ला। ३. कुलबुलाहट।

खलबलाना–क्रि० अ० [हिं० खलबल] १. खलबल शब्द करना। २. खौलना। ३. हिलना डोलना। ४. विचलित होना।

खलबली–संज्ञा स्त्री० [हिं० खलबल] १. हलचल। २. घबराहट। व्याकुलता।

खलल–संज्ञा पुं० [अ०] रोक। बाधा।

खलाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० खल + आई (प्रत्य०)] खलता। दुष्टता।

खलाना*†–क्रि० स० [हिं० खाली] १. खाली करना। २. गड्ढा करना। ३. फूली हुई सतह को नीचे की ओर धँसाना। पिचकाना।

खलास–वि० [अ०] १. छूटा हुआ। मुक्त। २. समाप्त। ३. च्युत। गिरा हुआ।

खलासी–संज्ञा स्त्री० [हिं० खलास] मुक्ति। छुटकारा। छुट्टी।

संज्ञा पुं० [देश०] जहाज पर का नौकर।

खलाल–संज्ञा पुं० [अ०] दाँत खोदने का खरका।

खलित*–वि० [सं० स्खलित] १. चलायमान। चंचल। २. गिरा हुआ।

खलियान–संज्ञा पुं० [सं० खल + स्थान] १. वह स्थान जहाँ फ़सल काटकर रखी और बरसाई जाती है। २. राशि। ढेर।

खलियाना–क्रि० स० [हिं० खाल] खाल उतारना। चमड़ा अलग करना।

†क्रि० स० [हिं० खाली] खाली करना।

खलिश–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] कसक। पीड़ा।

खली–संज्ञा स्त्री० [सं० खल] तेल निकाल लेने पर तेलहन की बची हुई सीठी।

खलीता–संज्ञा पुं० दे० "खरीता"।

खलीफ़ा–संज्ञा पुं० [अ०] १. अध्यक्ष। अधिकारी। २. कोई बूढ़ा व्यक्ति। ३. खुर्रांट। ४. खानसामाँ। बावर्ची। ५. हज्जाम। नाई।

खलु–अव्य०, क्रि० वि० [सं०] १. शब्दालंकार। २. प्रश्न। ३. प्रार्थना। ४. नियम। ५. निषेध। ६. निश्चय।

खलेल–संज्ञा पुं० [हिं० खली तेल] खली आदि का वह अंश जो फुलेल में रह जाता है।

खल्लड़–संज्ञा पुं० [सं० खल्ल] १. चमड़े की मशक या थैला। २. ओषधि कूटने का खल। ३. चमड़ा।

खल्व–संज्ञा पुं० [सं०] वह रोग जिसके कारण सिर के बाल झड़ जाते हैं। गंज।

खल्वाट–संज्ञा पुं० [सं०] गंज रोग जिसमें सिर के बाल झड़ जाते हैं।

वि० [सं०] जिसके सिर के बाल झड़ गए हों। गंजा।

खवा–संज्ञा पुं० [सं० स्कंध] कंधा। भुजमूल।

खवाना*†–क्रि० स० दे० "खिलाना"।

खवास–संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० खवासिन] राजाओं और रईसों का खास खिदमतगार।

खवासी–संज्ञा स्त्री० [हिं० खवास + ई (प्रत्य०)] १. खवास का काम। खिदमतगारी। २. चाकरी। नौकरी। ३. हाथी के हौदे या गाड़ी आदि में पीछे की ओर वह स्थान जहाँ खवास बैठता है।

खवैया–संज्ञा पुं० [हिं० खाना + वैया (प्रत्य०)] खानेवाला।

खस–संज्ञा पुं० [सं०] १ वर्तमान गढ़वाल और उसके उत्तरवर्ती प्रांत का एक प्राचीन नाम। २ इस प्रदेश में रहनेवाली एक प्राचीन जाति।
संज्ञा स्त्री० [फा० खस] गाँडर नामक घास की प्रसिद्ध सुगंधित जड़।

खसकंत†–संज्ञा स्त्री० [हिं० खसकना + अंत (प्रत्य०)] खसकने का काम।

खसकना–क्रि० अ० [अनु०] धीरे धीरे एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना। सरकना।

खसकाना–क्रि० स० [हिं० खसकना] १ स्थानांतरित करना। हटाना। २ गुप्त रूप से कोई चीज हटाना।

खसखस–संज्ञा स्त्री० [सं० खस्खस] पोस्त का दाना।

खसखसा–वि० [अनु०] जिसके कण दबाने से अलग अलग हो जायें। भुरभुरा।
वि० [हिं० खसखस] बहुत छोटे (बाल)।

खसखाना–संज्ञा पुं० [फा०] खस की टट्टियों से घिरा हुआ घर या कोठरी।

खसखास–संज्ञा स्त्री० दे० "खसखस"।

खसखासी–वि० [हिं० खसखास] पोस्ते के फूल के रंग का। नीलापन लिए सफ़ेद।

खसना*–क्रि० अ० [हिं० खसकना] अपने स्थान से हटना। खसकना। गिरना।

खसम–संज्ञा पुं० [अ०] १ पति। खाविंद। २ स्वामी। मालिक।

खसरा–संज्ञा पुं० [अ०] १ पटवारी का एक कागज जिसमें प्रत्येक खेत का नंबर, रकबा आदि लिखा रहता है। २ हिसाब-किताब का कच्चा चिट्ठा।
संज्ञा पुं० [फा० खारिश] एक प्रकार की खुजली।

खसलत–संज्ञा स्त्री० [अ०] स्वभाव। आदत।

खसाना–क्रि० स० [हिं० खसना] नीचे की ओर ढकेलना या फेंकना। गिराना।

खसिया–वि० [अ० खस्सी] १ जिसके अंड-कोष निकाल लिए गए हों। बधिया। २ नपुंसक। हिजड़ा। ३ बकरा।

खसी–संज्ञा पुं० [अ० खस्सी] बकरा।

खसीस–वि० [अ०] कंजूस। सूम।

खसोट–संज्ञा स्त्री० [हिं० खसोटना] १ बुरी तरह उखाड़ने या नोचने की क्रिया। २ उचक्कने या छीनने की क्रिया।

खसोटना–क्रि० स० [सं० कृष्ट] १ बुरी तरह उखाड़ना या उचाड़ना। नोचना। २ बलपूर्वक लेना। छीनना।

खसोटी–संज्ञा स्त्री० दे० "खसोट"।

खस्ता–वि० [फा० खस्त] बहुत थोड़ी दाब से टूट जानेवाला। भुरभुरा।

खस्वस्तिक–संज्ञा पुं० [सं०] वह कल्पित बिंदु जो सिर के ऊपर आकाश में माना गया है। शीर्षबिंदु। पादबिंदु का उलटा।

खस्सी–संज्ञा पुं० [अ०] बकरा।
वि० [अ०] १ बधिया। २ हिजड़ा। नपुंसक।

खहर–संज्ञा पुं० [सं०] गणित में वह राशि जिसका हर शून्य हो।

खाँ–संज्ञा पुं० दे० "खान"।

खाँखर†–वि० [हिं० खाँख] १ जिसमें बहुत छेद हों। सूराखदार। २ जिसकी बनावट दूर दूर पर हो। ३ खोखला।

खाँग†–संज्ञा पुं० [सं० खड्ग, प्रा० खग्ग] १ काँटा। कंटक। २ वह काँटा जो तीतर, मुर्गे आदि पक्षियों के पैरों में निकलता है। ३ गैंडे के मुँह पर का सींग। ४ जंगली सूअर का मुँह के बाहर निकला हुआ दाँत।
†संज्ञा स्त्री० [हिं० खँगना] त्रुटि। कमी।

खाँगना†–क्रि० अ० [सं० खंज = लाँगड़ा] कम होना। घटना।

खाँगड़, खाँगड़ा–वि० [हिं० खाँग + ड़ (प्रत्य०)] १ जिसके खाँग हों। खाँगवाला। २ हथियारबंद। शस्त्रधारी। ३ बलवान्। ४ अक्खड़। उद्दंड।

खाँगी†–संज्ञा स्त्री० [हिं० खँगना] कमी। घाटा। त्रुटि।

खाँच†–संज्ञा स्त्री० [हिं० खाँचना] १ संधि। जोड़। २ खींचकर बनाया हुआ निशान।

३. गठन। गमन।

खाँचना*†–क्रि० स० [सं० कर्षण] [वि० खँचैया] १. अंकित करना। चिह्न बनाना। २. खींचना। जल्दी जल्दी लिखना।

खाँचा–संज्ञा पुं० [हिं० खाँचना] [स्त्री० खाँची] पतली टहनियों आदि का बना हुआ बड़े बड़े छेदों का टोकरा। झावा।

खाँड़–संज्ञा स्त्री० [सं० खंड] बिना साफ़ की हुई चीनी। कच्ची शक्कर।

खाँड़ना–क्रि० स० [सं० खंडन] १. तोड़ना। २. चबाना। कूचना।

खाँड़ा–संज्ञा पुं० [खड्ग] खड्ग (अस्त्र)। संज्ञा पुं० [सं० खंड] भाग। टुकड़ा।

खाँभ*†–संज्ञा पुं० [हिं० खंभा] खंभा।

खाँवाँ–संज्ञा पुं० [सं० खं] चौड़ी खाई।

खाँसना–क्रि० अ० [सं० कासन] कफ या और कोई अटकी हुई चीज निकालने के लिये वायु को शब्द के साथ कंठ से बाहर निकालना।

खाँसी–संज्ञा स्त्री० [सं० काश, कास] १. गले और श्वास की नलियों मे फँसे या जमे हुए कफ अथवा अन्य पदार्थ को बाहर फेंकने के लिये शब्द के साथ हवा निकालने की क्रिया। २. अधिक खाँसने का रोग। कास रोग। ३. खाँसने का शब्द।

खाई–संज्ञा स्त्री० [सं० खानि] वह नहर जो किसी गाँव या महल आदि के चारों ओर रक्षा के लिये खोदी गई हो। खंदक।

खाऊ–वि० [हिं० खाना (खा) + ऊ (प्रत्य०)] बहुत खानेवाला। पेटू।

ख़ाक–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. धूल। मिट्टी। मुहा०—(कहीं पर) ख़ाक उड़ना = बरबादी होना। उजाड़ होना। ख़ाक उड़ाना या छानना = मारा मारा फिरना। ख़ाक में मिलना = बिगड़ना। बरबाद होना। २. तुच्छ। अकिंचन। ३. कुछ नहीं। जैसे—वे ख़ाक पढ़ते लिखते हैं।

ख़ाकसीर–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० ख़ाकशीर] एक औषध जिसे खूबकलाँ भी कहते हैं।

ख़ाका–संज्ञा पुं० [फ़ा० ख़ाकः] १. चित्र आदि का डौल-ढाँचा। नक़शा। मुहा०—ख़ाका उड़ाना = उपहास करना। २. वह कागज जिसमें किसी काम के खर्च का अनुमान लिखा जाय। चिट्ठा। तख़मीना। तखमीना। तक़दमा। ३. मसौदा।

ख़ाकी–वि० [फ़ा०] १. मिट्टी के रंग का। भूरा। २. बिना सींची हुई भूमि।

खागना–क्रि० अ० [हिं० खाँग = काँटा] चुभना। गड़ना।

खाज–संज्ञा स्त्री० [सं० खर्जु] एक रोग जिसमें शरीर बहुत खुजलाता है। खुजली। मुहा०—कोढ़ की खाज = दुःख में दुःख बढ़ानेवाली वस्तु।

खाजा–संज्ञा पुं० [सं० खाद्य] १. भक्ष्य वस्तु। खाद्य। २. एक प्रकार की मिठाई।

खाजी*–संज्ञा स्त्री० [हिं० खाजा] खाद्य पदार्थ। भोजन की वस्तु। मुहा०—खाजी खाना = मुँह की खाना। बुरी तरह परास्त या अकृतकार्य्य होना।

खाट–संज्ञा स्त्री० [सं० खट्वा] चारपाई। पलँगड़ी। खटिया। माचा।

खाड़*–संज्ञा पुं० [सं० खात] गड्ढा। गर्त्त।

खाड़व–संज्ञा पुं० दे० "षाड़व"।

खाड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० खाड़] समुद्र का वह भाग जो तीन ओर स्थल से घिरा हो। आखात। ख़लीज।

खात–संज्ञा पुं० [सं०] १. खोदना। खोदाई। २. तालाब। पुष्करिणी। ३. कुआँ। ४. गड्ढा। ५. खाद, कूड़ा और मैला जमा करने का गड्ढा।

ख़ातमा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. अंत। समाप्ति। २. मृत्यु।

खाता–संज्ञा पुं० [सं० खात] अन्न रखने का गड्ढा। बखार। संज्ञा पुं० [हिं० खत] १. वह बही या किताब जिसमें मितिवार और ब्योरेवार हिसाब लिखा हो। मुहा०—खाता खोलना = नया व्यवहार करना। २. मद। विभाग।

ख़ातिर–संज्ञा स्त्री० [अ०] आदर। सम्मान।

†अव्य० [अ०] वास्ते। लिये।
खातिरख़ाह–अव्य० क्रि० वि० [फा०] जैसा चाहिए, वैसा। इच्छानुसार। यथेच्छ।
खातिरजमा–संज्ञा स्त्री० [अ०] संतोष। इतमीनान। तसल्ली।
खातिरदारी–संज्ञा स्त्री [फा०] सम्मान। आदर। आवभगत।
खातिरी–संज्ञा स्त्री० [फा० खातिर] १ सम्मान। आदर। आवभगत। २ तसल्ली। इतमीनान। संतोष।
खाती–संज्ञा स्त्री० [सं० खात] १ खोदी हुई भूमि। २ खती। जमीन खोदनेवाली एक जाति। खतिया। ३ बढ़ई।
खाद–संज्ञा स्त्री० [सं० खाद्य] वह पदार्थ जो खेत में उपज बढ़ाने के लिये डाला जाता है। पाँस।
खादक–वि० [सं०] खानेवाला। भक्षक।
खादन–संज्ञा पु० [सं०] [वि० खादित, खाद्य, खादनीय] भक्षण। भोजन। खाना।
खादर–संज्ञा पु० [हिं० खाड] नीची जमीन। बाँगर का उलटा। कछार।
खादित–वि० [सं०] खाया हुआ। भक्षित।
खादी–वि० [सं० खादिन्] १ खानेवाला। भक्षक। २ शत्रु का नाश करनेवाला। रक्षक। ३ कँटीला।
संज्ञा स्त्री० [देश०] १ गजी या और कोई मोटा कपड़ा। २ हाथ से काते हुए सूत से भारत का बना कपड़ा। खद्दर।
†वि० [हिं० खादि = दोष] १ दोष निकालनेवाला। छिद्रान्वेषी। २ दूषित।
खादुक–वि० [सं०] जिसकी प्रवृत्ति सदा हिंसा की ओर रहे। हिंसालु।
खाद्य–वि० [सं०] खाने योग्य।
संज्ञा पु० [सं०] भोजन। खाने की वस्तु।
खाधु*†–संज्ञा पु० [सं० खाद्य] भोज्य पदार्थ।
खान–संज्ञा पु० [हिं० खाना] १ खाने की क्रिया। भोजन। २ भोजन की सामग्री। ३ भोजन करने का ढंग या आचार।
संज्ञा स्त्री० [सं० खानि] १ वह स्थान जहाँ से धातु पत्थर आदि खोदकर निकाले जायें। खानि। आकर। मदान। २ जहाँ कोई वस्तु बहुत सी हो। खज़ाना।
खान पु० [तातार या मंगोल काँ = सरदार] १ सरदार। २ पठानों की उपाधि।
खानक–संज्ञा पु० [सं० खन] १ खान खोदनेवाला। २ बेलदार। ३ मेमार। राज।
खानकाह–संज्ञा स्त्री० [अ०] मुसलमान साधुओं के रहने का स्थान या मठ।
खानगी–वि० [फा०] निज का। आपस का। घरेलू। घरू।
संज्ञा स्त्री० [फा०] केवल कसब करानेवाली तुच्छ वेश्या। कसबी।
खानदान–संज्ञा पु० [फा०] वंश। कुल।
खानदानी–वि० [फा०] १ ऊँचे वंश का। अच्छे कुल का। २ वंश-परंपरागत। पैतृक। पुश्तैनी।
खान-पान–संज्ञा पु० [सं०] १ अन्न-पानी। आब-दाना। २ खाना-पीना। ३ खाने-पीने का आचार। ४ खाने-पीने का संबंध।
खानसामा–संज्ञा पु० [फा०] अँगरेज़ों, मुसलमानों आदि का भंडारी या रसोइया।
खाना–क्रि० स० [सं० खादन] १ भोजन करना। भक्षण करना। पेट में डालना।
मुहा०—खाता कमाता = खाने पीने भर को कमानेवाला। खाना कमाना = काम धंधा करके जीविका निर्वाह करना। खा-पका जाना या डालना = खर्च कर डालना। उड़ा डालना। खाना न पचना = चैन न पड़ना। जी न मानना। २ हिंसक जन्तुओं का शिकार पकड़ना और भक्षण करना।
मुहा०—खा जाना या कच्चा खा जाना = मार डालना। प्राण ले लेना। खाने दौड़ना = चिड़चिड़ाना। क्रुद्ध होना।
३ विषैले कीड़ों का काटना। डसना। ४ तंग करना। दिक करना। कष्ट देना। ५ नष्ट करना। बरबाद करना। ६ उड़ा देना। दूर कर देना। न रहने देना। ७ हज़म करना। मार लेना। हड़प जाना। ८ बेईमानी से रुपया पैदा करना। रिश्वत आदि लेना। ९ (आघात, प्रभाव

आदि) सहना। बर्दाश्त करना।
मुहा०—मुँह की खाना = १. नीचा देखना। २. पराजित होना। हार जाना।
खाना-संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. घर। मकान। जैसे—डाकखाना, दवाखाना। २. किसी चीज के रखने का घर। केस। ३. विभाग। कोठा। घर। ४. सारिणी या चक्र का विभाग। कोष्ठक।
खानातलाशी-संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] किसी खोई या चुराई हुई चीज के लिये मकान के अंदर छान-बीन करना।
खानापूरी-संज्ञा स्त्री० [हिं० खाना+पूरना] किसी चक्र या सारिणी के कोठों में यथा-स्थान संख्या या शब्द आदि लिखना। नक़शा भरना।
खानाबदोश-वि० [फ़ा०] जिसका घर-बार न हो।
खानि-संज्ञा स्त्री०[सं०खनि] १. दे० "खान" २. ओर। तरफ़। ३. प्रकार। तरह। ढंग।
खानिक*‡-संज्ञा स्त्री० दे० "खानि"।
खाब*‡-संज्ञा पुं० दे० "ख्वाब"।
खाम-संज्ञा पुं० [हिं० खामना] १. चिट्ठी का लिफ़ाफ़ा। २. संधि। जोड़। टाँका।
*†वि० [सं० क्षाम] घटा हुआ। क्षीण।
खामख़ाह, खामखाही-क्रि० वि० दे० "ख्वाहमख्वाह"।
खामना-क्रि० स० [सं० स्कंभन] १. गीली मिट्टी या आटे आदि से किसी पात्र का मुँह बन्द करना। २. चिट्ठी को लिफ़ाफ़े में बंद करना।
खामोश-वि० [फा०] चुप। मौन।
खामोशी-संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] मौन। चुप्पी।
खार-संज्ञा पुं० [सं० क्षार] १. दे० "क्षार"। २. सज्जी। ३. लोना। लोनी। कल्लर। रेह। ४. धूल। राख। ५. एक पौधा जिससे खार निकलता है।
खार-संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. काँटा। कंटक। फाँस। २. खाँग। ३. डाह। जलन।
मुहा०-खार खाना = डाह करना। जलना।
खारा-वि० पुं० [सं० क्षार] [स्त्री० खारी] १. क्षार या नमक के स्वाद का। २. कड़ुआ। अरुचिकर।
संज्ञा पुं० [सं० क्षारक] १. एक धारीदार कपड़ा। २. घास या सूखे पत्ते बाँधने के लिये जालदार बँधना। ३. जालीदार थैला। ४. झाबा। खाँचा।
खारिक*†-संज्ञा पुं० [सं०क्षारक] छोहारा।
खारिज-वि० [अ०] १. बाहर किया हुआ। निकाला हुआ। बहिष्कृत। २. भिन्न। अलग। ३. जिस (अभियोग) की सुनाई न हो।
खारिश-संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] खुजली।
खारी-संज्ञा स्त्री० [हिं० खारा] एक प्रकार का क्षार लवण।
वि० क्षार-युक्त। जिसमें खार हो।
खारुआँ-खारुवा-संज्ञा पुं० [सं० क्षारक] १. आल से बना हुआ एक प्रकार का रंग। २. इस रंग से रँगा हुआ मोटा कपड़ा।
खाल-संज्ञा स्त्री० [सं० क्षाल] १. मनुष्य, पशु आदि के शरीर का ऊपरी आवरण। चमड़ा। त्वचा।
मुहा०—खाल उधेड़ना या खींचना = बहुत मारना पीटना या कड़ा दंड देना।
२. आधा चरसा। अधौड़ी। ३. धौंकनी। भाथी। ४. मृत शरीर।
संज्ञा स्त्री० [सं० खात] १. नीची भूमि। २. खाड़ी। खलीज। ३. खाली जगह।
खालसा-वि० [अ० खालिस = शुद्ध] १. जिसपर केवल एक का अधिकार हो। २. राज्य का। सरकारी।
मुहा०—खालसा करना = १. स्वायत्त करना। जब्त करना। २. नष्ट करना।
संज्ञा पुं० सिक्खों की एक विशेष मंडली।
खाला-वि० [हिं० खाल] [स्त्री० खाली] नीचा। निम्न।
खाला-संज्ञा स्त्री० [अ०] माता की बहिन। मौसी।
मुहा०—खाला जी का घर = सहज काम।
खालिस-वि० [अ०] जिसमें कोई दूसरी

वस्तु न भिड़ी हो। शुद्ध।

खाली–वि० [अ०] १ जिसके भीतर या स्थान शून्य हो। जो भरा न हो। रीता। रिक्त। २ जिसपर कुछ न हो। ३ जिसमें कोई एक विशेष वस्तु न हो।

मुहा०—हाथ खाली होना=हाथ में रुपया-पैसा न होना। निर्धन होना। खाली पेट=बिना कुछ अन्न खाये हुए।

३ रहित। विहीन। ४ जिसे कुछ काम न हो। ५ जो व्यवहार में न हो। जिसका काम न हो (वस्तु)। ६ व्यर्थ। निष्फल।

मुहा०—निशाना या वार खाली जाना=ठीक न बैठना। लक्ष्य पर न पहुँचना। बात खाली जाना या पड़ना=वचन निष्फल होना। कहने के अनुसार कोई बात न होना।

क्रि० वि० केवल। सिर्फ।

खाविंद–संज्ञा पु० [फा०] १ पति। खसम। २ मालिक। स्वामी।

खास–वि० [अ०] १ विशेष। मुख्य। प्रधान। 'आम' का उलटा।

मुहा०—खासकर=विशेषतः। प्रधानतः।

२ निज का। आत्मीय। ३ स्वयं। खुद। ४ ठीक। ठेठ। विशुद्ध।

संज्ञा स्त्री० [अ० कीसा] गाढ़े कपड़े की थैली।

खासकलम–संज्ञा पु० [अ०] निज का मुंशी। प्राइवेट सेक्रेटरी।

खासगी–वि० [अ० खास+गी (प्रत्य०)] राजा या मालिक आदि का। निज का।

खासबरदार–संज्ञा पु० [फा०] वह सिपाही जो राजा की सवारी के ठीक आगे आगे चलता है।

खासा–संज्ञा पु० [अ०] १ राजा का भोजन। राजभोग। २ राजा की सवारी का घोड़ा या हाथी। ३ एक प्रकार का पतला सफेद सूती कपड़ा।

वि० पु० [देश०] [स्त्री० खासी] १ अच्छा। भला। उत्तम। २ स्वस्थ। तंदुरुस्त। नीरोग। ३ मध्यम श्रेणी का। ४ सुडौल। सुंदर। ५ भरपूर। पूरा पूरा। सर्वांगपूर्ण।

खासियत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ स्वभाव। प्रकृति। आदत। २ गुण। सिफत।

खिंचना–क्रि० अ० [सं० कर्षण] १ घसीटा जाना। २ किसी कोश, थैले आदि में से बाहर निकल जाना। ३ एक या दोनों छोरों या एक या दोनों ओर बढ़ना। तनना। ४ किसी ओर बढ़ना या जाना। आकर्षित होना। प्रवृत्त होना। ५ सोखा जाना। खपना। चूसना। ६ भभके से अर्क या शराब आदि तैयार होना। ७ गुण या तत्व का निकल जाना।

मुहा०—पीड़ा या दर्द खिंचना=(औषध आदि से) दर्द दूर होना।

८ कलम आदि से बनकर तैयार होना। चित्रित होना। ९ रुक रहना। रुकना।

मुहा०—हाथ खिंचना=देना बन्द होना।

१० माल की चलान होना। माल खपना। ११ अनुराग कम होना।

खिंचवाना–क्रि० स० [हिं० खींचना का प्रे०] खींचने का काम दूसरे से कराना।

खिंचाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० खिंचना] १ खींचने की क्रिया। २ खींचने की मजदूरी।

खिंचाना–क्रि० स० दे० 'खिंचवाना'।

खिंचाव–संज्ञा पु० [हिं० खिंचना] 'खिंचना' का भाव।

खिड़ाना†–क्रि० स० [सं० क्षिप्त] बिख-राना। छितराना।

खिचड़वार–संज्ञा पु० [हिं० खिचड़ी+वार] मकर संक्रांति।

खिचड़ी–संज्ञा स्त्री० [सं० कृसर] १ एक में मिलाया या पकाया हुआ दाल और चावल।

मुहा०—खिचड़ी पकाना=गुप्त भाव से कोई सलाह करना। ढाई चावल की खिचड़ी अलग पकाना=सबकी सम्मति के विरुद्ध या सबसे अलग होकर कोई कार्य करना।

२ विवाह की एक रसम जिसमें बरातियों को कच्ची रसोई खिलाई जाती है। ३ एक ही में मिले हुए दो या अधिक प्रकार के पदार्थ। ४ मकर संक्रांति।

वि० १. मिला-जुला। २. गड़बड़।
खिजलाना–क्रि० अ० [हिं० खीजना] झुंझ-लाना। चिढ़ना।
क्रि० स० [हिं० खीजना का प्रे०] दुखी करना। चिढ़ाना।
ख़िज़ाब–संज्ञा पुं० [अ०] सफेद बालों को काला करने की ओषधि। केश-कल्प।
खिझ*–संज्ञा स्त्री० दे० "खीझ", "खीज"।
खिझना–क्रि० अ० दे० "खीजना"।
खिझाना–क्रि० स० [हिं० खीझना] चिढ़ाना।
खिड़की–संज्ञा स्त्री० [सं० खटक्किका] छोटा दरवाजा। दरीचा। झरोखा।
ख़िताब–संज्ञा पु० [अ०] पदवी। उपाधि।
ख़ित्ता–संज्ञा पु० [अ०] प्रांत। देश।
ख़िदमत–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] सेवा। टहल।
ख़िदमतगार–संज्ञा पुं० [फ़ा०] खिदमत करनेवाला। सेवक। टहलुवा।
ख़िदमती–वि० [फ़ा० ख़िदमत] १. जो खूब सेवा करे। २. सेवा-संबंधी अथवा जो सेवा के बदले में प्राप्त हुआ हो।
खिन*†–संज्ञा पु० दे० "क्षण"।
खिन्न–वि० [सं०] १. उदासीन। चिंतित। २. अप्रसन्न। नाराज। ३. दीन-हीन। असहाय।
खिपना*–क्रि० अ० [सं० क्षिप] १. खपना। २. तल्लीन होना। निमग्न होना।
खियाना†–क्रि० अ० [सं० क्षय या हिं० खाना] रगड़ से घिस जाना।
†क्रि० वि० दे० "खिलाना"।
खिरनी–संज्ञा स्त्री० [सं० क्षीरिणी] एक ऊँचा पेड़ और उसके फल जो खाये जाते हैं।
ख़िराज–संज्ञा पुं० [अ०] राजस्व। कर।
खिरेंटी–संज्ञा स्त्री०[सं० खरयष्टिका] बला। बरियारा। बीजबंद।
खिरौरा–संज्ञा पुं० [हिं० खीर + औरा] एक प्रकार का लड्डू।
ख़िलअत–संज्ञा स्त्री० [अ०] वह वस्त्र आदि जो किसी राजा की ओर से सम्मान-सूच-नार्थ किसी को दिया जाता है।
ख़िलक़त–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. सृष्टि। संसार। २. बहुत से लोगों का समूह। भीड़।
खिलकौरी†–संज्ञा स्त्री० [हिं० खेल + कौरी (प्रत्य०)] खेल। खिलवाड़।
खिलखिलाना–क्रि० अ० [अनु०] खिल-खिल शब्द करके हँसना। ज़ोर से हँसना।
खिलत, खिलति*†–संज्ञा स्त्री० दे० "खिल-अत"।
खिलना–क्रि० अ० [सं० स्खल] १. कली से फूल होना। विकसित होना। २. प्रसन्न होना। ३. शोभित होना। ठीक या उचित जँचना। ४. बीच से फट जाना। ५. अलग अलग हो जाना।
ख़िलवत–संज्ञा स्त्री० [अ०] एकांत। शून्य या निर्जन स्थान।
ख़िलवतख़ाना–संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह स्थान जहाँ कोई गुप्त सलाह हो। एकांत मंत्रणा-स्थान।
खिलवाड़–संज्ञा पुं० दे० "खेलवाड़"।
खिलवाना–क्रि० स० [हिं० खाना] दूसरे से भोजन कराना।
क्रि० स० [हिं० खिलना का प्रे०] प्रफुल्लित कराना।
क्रि० स० दे० "खेलवाना"।
खिलाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० खाना] खाने या खिलाने का काम।
संज्ञा स्त्री० [हिं० खेलाना (खेल)] वह दाई या मजदूरनी जो बच्चों को खेलाती हो।
खिलाड़ी–संज्ञा पुं० [हिं० खेल + आड़ी (प्रत्य०)] [स्त्री० खिलाड़िन] १. खेल करनेवाला। खेलनेवाला। २. कुश्ती लड़ने, पटा बनेठी खेलने या इसी प्रकार के और काम करनेवाला। ३. जादूगर।
खिलाना–क्रि० स० [हिं० खेलना] किसी को खेल में नियोजित करना। खेल कराना।
क्रि० स० [हिं० खाना] 'खाना' का प्रेरणार्थक रूप। भोजन कराना।
क्रि० स० [हिं० खिलना] विकसित करना। फुलाना।
ख़िलाफ़–वि० [अ०] विरुद्ध। उलटा।

विपरीत।

खिलौना–संज्ञा पु० [हिं० खेल+औना (प्रत्य०)] कोई मूर्ति जिससे बालक खेलते हैं।

खिल्ली–संज्ञा स्त्री० [हिं० खिलना] हँसी। हास्य। दिल्लगी। मजाक।

यौ०—खिल्लीबाज = दिल्लगीबाज।

†संज्ञा स्त्री० [हिं० कील] १ पान का बीड़ा। गिलौरी। २ कील। काँटा।

खिसकना–क्रि० अ० दे० "सरकना"।

खिसाना*†–क्रि० अ० दे० "खिसियाना"।

खिसारा–संज्ञा पु० [फा०] घाटा। नुकसान। हानि।

खिसियाना–क्रि० अ० [हिं० खीस+दाँत] १ लजाना। लज्जित होना। शरमाना। २ खफा होना। क्रुद्ध होना। रिसाना।

खिसी*†–संज्ञा स्त्री० [हिं० खिसियाना] १ लज्जा। शरम। २ ढिठाई। धृष्टता।

खिसौहाँ*–वि० [हिं० खिसाना] १ लज्जित-सा। २ कुढ़ा या रिसाया सा।

खींच–संज्ञा स्त्री० [हिं० खींचना] खींचने का भाव।

खींच-तान–संज्ञा स्त्री० [हिं० खींच+तान] १ दो व्यक्तियों का एक दूसरे के विरुद्ध उद्योग। खींचाखींची। २ क्लिष्ट कल्पना द्वारा किसी शब्द या वाक्य आदि का अन्यथा अर्थ करना।

खींचना–क्रि० स० [स० कर्षण] [प्र० खिचवाना] १ घसीटना। २ किसी कोश, थैले आदि में से बाहर निकालना। ३ किसी वस्तु को छोर या बीच से पकड़कर अपनी ओर लाना। ४ बल-पूर्वक अपनी ओर बढ़ाना। तानना। ऐंचना। ५ आकर्षित करना। किसी ओर ले जाना।

मुहा०—चित्त खींचना = मन को मोहित करना।

६ सोखना। चूसना। ७ भभके से अर्क, शराब आदि टपकाना। ८ किसी वस्तु के गुण या तत्त्व को निकाल लेना।

मुहा०—पीड़ा या दर्द खींचना = (औषध आदि का) दर्द दूर करना।

९ कलम फेरकर लकीर आदि डालना। चित्रित करना। १० रोक रखना।

मुहा०—हाथ खींचना = देना या और कोई काम बंद करना।

खींचाखींची, खींचातानी–संज्ञा स्त्री० दे० "खींचतान"।

खीज–संज्ञा स्त्री० [हिं० खीजना] १ खीजने का भाव। झुँझलाहट। २ वह बात जिससे कोई चिढ़े।

खीजना–क्रि० अ० [स० खिद्यते] दुखी और क्रुद्ध होना। झुँझलाना। खिजलाना।

खीझ*†–संज्ञा स्त्री० दे० "खीज"।

खीझना*‡–क्रि० अ० दे० "खीजना"।

खीन*†–वि० [स० क्षीण] क्षीण।

खीर–संज्ञा स्त्री० [स० क्षीर] १ दूध में पकाया हुआ चावल।

मुहा०—खीर चटाना = बच्चे को पहले पहल अन्न खिलाना।

* २ दूध।

खीरा–संज्ञा पु० [स० क्षीरक] ककड़ी की जाति का एक लंबा फल।

खीरी–संज्ञा स्त्री० [स० क्षीर] चौपायों के थन के ऊपर का वह मांस जिसमें दूध रहता है। बाख।

खीरी–संज्ञा स्त्री० [स० क्षीरी] खिरनी।

खील–संज्ञा स्त्री० [हिं० खिलना] भूना हुआ धान। लावा।

†संज्ञा स्त्री० दे० "कील"।

खीला‡–संज्ञा पु० [हिं० कील] काँटा। मेख। कील।

खीली–संज्ञा स्त्री० [हिं० खील] पान का बीड़ा। खिल्ली।

खीवन, खीवनि–संज्ञा स्त्री० [स० क्षीवन] मतवालापन। मस्ती।

खीस*†–वि० [स० किष्क] नष्ट। बरबाद।

संज्ञा स्त्री० [हिं० खीज] १ अप्रसन्नता। नाराजगी। २ क्रोध। रोष। गुस्सा।

संज्ञा स्त्री० [हिं० खिसिआना] लज्जा। शरम।

संज्ञा स्त्री० [सं० कीश=बंदर] ओंठ से बाहर निकले हुए दाँत।

खीसा-संज्ञा पुं० [फ़ा० कीसा] [स्त्री० अल्पा० खीसी] १. थैला। थैली। २. जेब। पाकेट। खलीता।

खुँदाना-क्रि० स० [सं० क्षुण्ण=रौंदा हुआ] (घोड़ा) कुदाना।

खुई-संज्ञा स्त्री० दे० "खूँद"।

खुआर*-वि० दे० "ख्वार"।

खुक्ख-वि० [सं० शुष्क या तुच्छ] जिसके पास कुछ न हो। छूछा। खाली।

खुखड़ी-संज्ञा स्त्री० [देश०] १. तकुए पर चढ़ाकर लपेटा हुआ सूत या ऊन। कुकड़ी। २. नैपाली छुरी।

खुगीर-संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. वह ऊनी कपड़ा जो घोड़ों के चारजामे के नीचे लगाया जाता है। नमदा। २. चारजामा। जीन।

मुहा०—खुगीर की भरती=बहुत ही अनावश्यक और व्यर्थ के लोगों या पदार्थों का संग्रह।

खुचर, खुचुर-संज्ञा स्त्री० [सं० कुचर] झूठमूठ अवगुण दिखलाने का कार्य्य। ऐबजोई।

खुजलाना-क्रि० स० [सं० खर्जु] खुजली मिटाने के लिये नख आदि को अंग पर फेरना। सहलाना।

क्रि० अ० किसी अंग में सुरसुरी या खुजली मालूम होना।

खुजलाहट-संज्ञा स्त्री० [हिं० खुजलाना] सुरसुरी। खुजली।

खुजली-संज्ञा स्त्री० [हिं० खुजलाना] १. खुजलाहट। सुरसुरी। २. एक रोग जिसमें शरीर बहुत खुजलाता है।

खुजाना-क्रि० स०, क्रि० अ० दे० "खुजलाना"।

खुटक*†-संज्ञा स्त्री० [हिं० खटकना] खटका। आशंका। चिंता।

खुटकना-क्रि० स० [सं० खुड् या खुंड] किसी वस्तु को ऊपर ऊपर से तोड़ या नोच लेना।

खुटका-संज्ञा पुं० दे० "खटका"।

खुटचाल*-संज्ञा स्त्री० [हिं० खोटी+चाल] १. दुष्टता। पाजीपन। २. खराब चाल-चलन। ३. उपद्रव।

खुटचाली*-वि० [हिं० खुटचाल+ई (प्रत्य०)] १. दुष्ट। पाजी। २. दुराचारी। बदचलन।

खुटना*†-क्रि० अ० [सं० खुड़] खुलना। क्रि० अ० समाप्त होना।

खुटपन, खुटपना-संज्ञा पुं० [हिं० खोटा+पन, पना (प्रत्य०)] खोटापन। दोष। ऐब।

खुटाना†-क्रि० अ० [सं० खुड्=तोड़ना होना, या खोट] समाप्त होना। खतम होना। खुटना।

खुटाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० खोटाई] खोटा-पन। दोष।

खुटिला-संज्ञा पुं० [देश०] करनफूल नामक कान का गहना।

खुट्टी†-संज्ञा स्त्री० [खुट से अनु०] रेवड़ी नाम की मिठाई।

खुट्ठी-संज्ञा स्त्री० [?] घाव पर जमी हुई पपड़ी। खुरंड।

खुड़आ†-संज्ञा पुं० दे० "घोघी"।

खुड्डी, खुड्ढी-संज्ञा स्त्री० [हिं० गड्ढा] १. पाखाने में पैर रखने के पायदान। २. पाखाना फिरने का गड्ढा।

खुतबा-संज्ञा पुं० [अ०] १. तारीफ़। प्रशंसा। २. सामयिक राजा की प्रशंसा या घोषणा।

मुहा०—किसी के नाम का खुतबा पढ़ा जाना=सर्वसाधारण को सूचना देने के लिये किसी के सिंहासनासीन होने की घोषणा होना। (मुसल०)

खुत्थी, खुथी*†-संज्ञा स्त्री० [हिं० खूँटी] १. पौधों का वह भाग जो फ़सल काट लेने पर पृथ्वी पर गड़ा रह जाता है। खूँथी। खूँटी। २. थाती। धरोहर। अमानत। ३. वह पतली लंबी थैली जिसमें रुपया भरकर कमर में बाँधते हैं।

बर्गनी। हिमपानी। ४ धन। दौलत। सम्पत्ति।

खुद–अव्य० [फ़ा०] स्वय। आप।

मुहा०—खुद ब खुद=आपसे आप। बिना किसी दूसरे के प्रयास, यत्न या सहायता के।

खुदकाश्त–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] वह जमीन जिसे उसका मालिक स्वयं जोते बोए, पर वह सीर न हो।

खुदगरज–वि० [फ़ा०] अपना मतलब साधनेवाला। स्वार्थी।

खुदगरजी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] स्वार्थपरता।

खुदना–क्रि० अ० [हिं० खोदना] खोदा जाना।

खुदमुख़तार–वि० [फ़ा०] जिसपर किसी का दबाव न हो। अनिरुद्ध। स्वतन्त्र। स्वच्छंद।

खुदरा–संज्ञा पु० [सं० क्षुद्र] छोटी और साधारण वस्तु। फुटकर चीज।

खुदवाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० खुदवाना] खुदवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

खुदवाना–क्रि० स० [हिं० खोदना का प्रे०] खोदने का काम कराना।

ख़ुदा–संज्ञा पु० [फ़ा०] स्वयंभू। ईश्वर।

ख़ुदाई–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० खुदाई] १. ईश्वरता। २. सृष्टि।

खुदाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० खोदना] खोदने का भाव, काम या मजदूरी।

खुदावंद–संज्ञा पु० [फ़ा०] १. ईश्वर। २. मालिक। अन्नदाता। ३ हुजूर। जनाब। श्रीमान्।

खुदी–संज्ञा पु० [फ़ा०] १ अहकार। २ अभिमान। घमंड। शेखी।

खुद्दी–संज्ञा स्त्री० [सं० क्षुद्र] चावल, दाल आदि के बहुत छोटे छोटे टुकड़े।

खुनखुना–संज्ञा पु० [अनु०] घुनघुना। भुनभुना।

खुनस–संज्ञा स्त्री० [सं० खिन्नमनस्] [वि० खुनसी] क्रोध। गुस्सा। रिस।

खुनसाना†–क्रि० अ० [सं० खिन्नमनस्] क्रोध करना। गुस्सा होना।

खुनसी–वि० [हिं० खुनसाना] क्रोधी।

ख़ुफ़िया–वि० [फ़ा०] गुप्त। पोशीदा। छिपा हुआ।

ख़ुफ़िया पुलिस–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० खुफ़िया + अं० पुलीस] गुप्त पुलिस। भेदिया। जासूस।

खुभना–क्रि० स० [अनु०] चुभना। धुसना। धँसना।

खुभराना*†–क्रि० अ० [सं० क्षुब्ध] उपद्रव के लिये घूमना। इतराए फिरना।

खुभी–संज्ञा स्त्री० [हिं० खुभना] कान में पहनने का लौंग।

खुमान–वि० [सं० आयुष्मान्] बड़ी आयुवाला। दीर्घजीवी। (आशीर्वाद)

खुमार–संज्ञा पु० दे० "खुमारी"।

ख़ुमारी–संज्ञा स्त्री० [अ० खुमार] १. मद। नशा। २ नशा उतरने के समय की हलकी थकावट। ३ वह शिथिलता जो रात भर जागने से होती है।

खुमी–संज्ञा स्त्री० [अ० कुमा] पत्र-पुष्प-रहित क्षुद्र उद्भिद की एक जाति जिसके अंतर्गत भूफोड़, ढिंगरी, कुकुरमुत्ता और गगनधूल आदि हैं।

संज्ञा स्त्री० [हिं० खुभना] १ सोने की कील जिसे लोग दाँतों में जड़वाते हैं। २. धातु का पोला छल्ला जो हाथी के दाँत पर चढ़ाया जाता है।

खुरंड–संज्ञा स्त्री० [सं० क्षुर=खरोचना + अंड] सूखे घाव के ऊपर की पपड़ी।

खुर–संज्ञा पु० [सं०] सींगवाले चौपायों के पैर की कड़ी टाप जो बीच से फटी होती है।

खुरक†–संज्ञा स्त्री० [हिं० खुटक] सोच। खटका। अंदेशा।

खुरखुर–संज्ञा स्त्री० [अनु०] वह शब्द जो गले में कफ आदि रहने के कारण साँस लेते समय होता है। घरघर शब्द।

खुरखुरा–वि० [सं० क्षुर=खरोचना] जिसको छूने से हाथ में कण या रवे गड़ें। नाहमवार। खुरदरा।

खुरखुराना–क्रि० अ० [खुरखुर से अनु०]

गले में कफ़ के कारण घरघराहट होना। क्रि० अ० [हिं० खुरखुरा] खुरखुरा मालूम होना। कण या रवे आदि गड़ना।

खुरखुराहट–संज्ञा स्त्री० [हिं० खुरखुर] साँस लेते समय गले का शब्द। संज्ञा स्त्री० [हिं० खुरखुरा] खुरदरापन।

खुरचन–संज्ञा स्त्री० [हिं० खुरचना] वह वस्तु जो खुरचकर निकाली जाय।

खुरचना–क्रि० अ० [सं० क्षुरण] किसी जमी हुई वस्तु को कुरेदकर अलग कर लेना। करोचना। करोना।

खुरचाल–संज्ञा स्त्री० दे० "खुटचाल"।

खुरजी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] घोड़े, बैल आदि पर सामान रखने का झोला। बड़ा थैला।

खुरतार†–संज्ञा स्त्री० [हिं० खुर + ताड़ना] टाप या खुर की चोट। सुम का आघात।

खुरपका–संज्ञा पुं० [हिं० खुर + पकना] चौपायों का एक रोग जिसमें उनके मुँह और खुरों में दाने निकल आते हैं।

खुरपा–संज्ञा पुं० [सं० क्षुरप्र] [स्त्री० अल्पा० खुरपी] घास छीलने का औज़ार।

खुरमा–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. छोहारा। २. एक प्रकार का पकवान या मिठाई।

खुराक–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] भोजन। खाना।

खुराकी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] वह धन जो खुराक के लिये दिया जाय।

खुराफ़ात–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. बेहूदा और रद्दी बात। २. गाली-गलौज। ३. झगड़ा। बखेड़ा। उपद्रव।

खुरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० खुर] टाप का चिह्न।

खुरुक*–संज्ञा पुं० दे० "खुरक"।

खुर्द–वि० [फ़ा०] छोटा। लघु।

खुर्दबीन–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] वह यंत्र जिससे छोटी वस्तु बहुत बड़ी देख पड़ती है। सूक्ष्मदर्शक यंत्र।

खुर्द बुर्द–क्रि० वि० [फ़ा०] नष्ट भ्रष्ट।

खुर्दा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] छोटी मोटी चीज़।

खुर्राट–वि० [देश०] १. बूढ़ा। वृद्ध। २. अनुभवी। तजरबेकार। ३. चालाक। काइयाँ।

खुलना–क्रि० अ० [सं० खुड, खुल = भेदन] १. अवरोध या आवरण का दूर होना। बंद न रहना। जैसे—किवाड़ खुलना। मुहा०—खुलकर = बिना रुकावट* के। २. ऐसी वस्तु का हट जाना जो छाए या घेरे हो। ३. दरार होना। छेद होना। फटना। ४. बाँधने या जोड़नेवाली वस्तु का हटना। ५. जारी होना। ६. सड़क, नहर आदि तैयार होना। ७. किसी कारखाने, दूकान या दफ़्तर का नित्य का कार्य्य आरंभ होना। ८. किसी सवारी का रवाना हो जाना। ९. गुप्त या गूढ़ बात का प्रकट हो जाना। मुहा०—खुले आम, खुले खज़ाने, खुले मैदान = सबके सामने। छिपाकर नहीं। १०. मन की बात कहना। भेद बताना। ११. देखने में अच्छा लगना। सजना। मुहा०—खुलता रंग = हलका सोहावना रंग।

खुलवाना–क्रि० स० [हिं० खोलना का प्रे०] खोलने का काम दूसरे से कराना।

खुला–वि० पुं० [हिं० खुलना] १. बंधनरहित। जो बँधा न हो। २. जिसे कोई रुकावट न हो। अवरोधहीन। ३. जो छिपा न हो। स्पष्ट। प्रकट। ज़ाहिर।

खुलासा–संज्ञा पुं० [अ०] सारांश। वि० [हिं० खुलना] १. खुला हुआ। २. अवरोधरहित। ३. साफ़ साफ़। स्पष्ट।

खुल्लमखुल्ला–क्रि० वि० [हिं० खुलना] प्रकाश्य रूप में। खुले आम।

खुश–वि० [फ़ा०] १. प्रसन्न। मगन। आनंदित। २. अच्छा। (यौगिक में)।

खुशक़िस्मत–वि० [फ़ा०] भाग्यवान्।

खुशख़बरी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] प्रसन्न करनेवाला समाचार। अच्छी खबर।

खुशदिल–वि० [फ़ा०] १. सदा प्रसन्न रहनेवाला। २. हँसोड़। मसखरा।

खुशनसीब–वि० [फ़ा०] भाग्यवान्।

खुशबू–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] सुगंधि। सौरभ।

खुशबूदार–वि० [फ़ा०] उत्तम गंधवाला।

खुशहाल–वि० [फ़ा०] सुखी। संपन्न।

खुशामद—सज्ञा स्त्री० [फा०] प्रसन्न करने के लिये झूठी प्रशसा। चापलूसी।

खुशामदी—वि० [फा० खुशामद+ई (प्रत्य०)] खुशामद करनेवाला। चापलूस।

खुशामदी टट्टू—सज्ञा पु० [हिं० खुशामदी+टट्टू] वह जिसका काम खुशामद करना हो।

खुशी—सज्ञा स्त्री० [फा०] आनद। प्रसन्नता।

खुश्क—वि० [फा० मि० स० शुष्क] १. जो तर न हो। सूखा। २ जिसमें रसिकता न हो। रूखे स्वभाव का। ३. बिना किसी और आमदनी के। केवल। मात्र।

खुश्की—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ रूखापन। शुष्कता। नीरसता। २. स्थल या भूमि।

खुशाल, खुस्याल*—वि० [फा० खुशहाल] आनदित। मुदित। खुश।

खुसिया—सज्ञा पु० [अ०] अडकोश।

खूँखार—वि० [फा०] १. खून पीनेवाला। २ भयकर। डरावना। ३ क्रूर। निर्दय।

खूँट—सज्ञा पु० [स० खड] १. छोर। कोना। २ ओर। तरफ। ३ भाग। हिस्सा। सज्ञा स्त्री० [हिं० खोंट] कान की मैल।

खूँटना—क्रि० स० [स० खडन] १. पूछताछ करना। टोकना। २ छेड़-छाड़ करना। ३ कम होना। ४. दे० "खोटना"।

खूँटा—सज्ञा पु० [स० क्षोड] पशु बाँधने के लिये जमीन में गड़ी लकड़ी या मेख।

खूँटी—सज्ञा स्त्री० [हिं० खूँटा] १ छोटी मेख। छोटी गड़ी लकड़ी। २ अरहर, ज्वार आदि के पौधे की सूखी पेड़ी का अश जो फसल काट लेने पर खेत में खड़ा रह जाता है। ३ गुल्ली। अटी। ४. बालों के नए निकले हुए कड़े अकुर। ५ सीमा। हद। ६ मेख के आकार की लकड़ी या लोहा

खूँद—सज्ञा स्त्री० [हिं० खूँदना] थोड़ी जगह में घोड़े का इधर-उधर चलते या पैर पटकते रहना।

खूँदना—क्रि० अ० [स० खुडन=तोड़ना] १. पैर उठा उठाकर जल्दी जल्दी भूमि पर पटकना। उछल-कूद करना। २ पैरों से रौंदकर खराब करना। †३ कुचलना।

खूझ†—सज्ञा पु० [स० गुह्य, प्रा० गुज्झ] १. फल के अदर का निकम्मा रेशेदार भाग। २ उलझा हुआ रेशेदार लच्छा।

खूटना*†—क्रि० अ० [स० खुडन] १. रुक जाना। बद हो जाना। २ खतम होना। क्रि० स० छेड़ना। रोक टोक करना।

खूद, खूदड़, खूदर†—सज्ञा पु० [स० क्षुद्र] किसी वस्तु को छान लेने या साफ कर लेने पर निकम्मा बचा हुआ भाग। तल-छट। मैल।

खून—सज्ञा पु० [फा०] १. रक्त। रुधिर। मुहा०—खून उबलना या खौलना=क्रोध से शरीर लाल होना। गुस्सा चढ़ना। खून का प्यासा=वध का इच्छुक। खून सिर पर चढ़ना या सवार होना=किसी को मार डालने या किसी प्रकार का और कोई अनिष्ट करने पर उद्यत होना। खून पीना=१. मार डालना। २ बहुत तग करना। सताना। २. वध। हत्या। कतल।

खूनखराबी—सज्ञा पु० [हिं० खून+खराबी] मार-काट।

खूनी—वि० [फा०] १. मार डालनेवाला। हत्यारा। घातक। २. अत्याचारी।

खूब—वि० [फा०] [स० खूबी] अच्छा। भला। उमदा। उत्तम। क्रि० वि० [फा०] अच्छी तरह से।

खूबकलाँ—सज्ञा स्त्री० [फा०] फारस की एक घास के बीज। खाकसीर।

खूबसूरत—वि० [फा०] सुदर। रूपवान्।

खूबसूरती—सज्ञा स्त्री० [फा०] सुदरता।

खूबानी—सज्ञा स्त्री० [फा०] जरदालू।

खूबी—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ भलाई। अच्छाई। अच्छापन। २ गुण। विशेषता।

खूसट—सज्ञा पु० [स० कौशिक] उल्लू। वि० शुष्कहृदय। अरसिक। मनहूस।

खृष्टीय—वि० [हिं० ख्रीष्ट+स० ईय (प्रत्य०)] ईसासबधी। ईसा का। ईसाई

खेकसा, खेखसा—सज्ञा पु० [देश०] परवल के आकार का एक रोएँदार फल या

तरकारी। ककोड़ा।

खेचर–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो आसमान में चले। आकाशचारी। २. सूर्य चंद्र आदि ग्रह। ३. तारागण। ४. वायु। ५. देवता। ६. विमान। ७. पक्षी। ८. बादल। ९. भूत-प्रेत। १०. राक्षस।

खेचरी गुटिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] योगसिद्ध गोली जिसको मुंह में रखने से आकाश में उड़ने की शक्ति आ जाती है। (तंत्र)

खेचरी मुद्रा–संज्ञा स्त्री० [सं०] योगसाधन की एक मुद्रा जिसमें जीभ को उलटकर तालू से लगाते हैं और दृष्टि मस्तक पर।

खेटक–संज्ञा पुं० [सं०] १. खेड़ा। गाँव। २. सितारा। ३. बलदेवजी की गदा।

*संज्ञा पुं० [सं० आखेट] शिकार।

खेटकी–संज्ञा पुं० [सं०] भड्डरी। भड़रिया। भड्डर।

संज्ञा पुं० [सं० आखेट] १. शिकारी। अहेरी। २. वधिक।

खेड़ा†–संज्ञा पुं० [सं० खेट] छोटा गाँव।

खेड़ी–संज्ञा स्त्री० [देश०] १. एक प्रकार का देशी लोहा। भुरकुटिया लोहा। २. वह मांसखंड जो जरायुज जीवों के बच्चों की नाल के दूसरे छोर में लगा रहता है।

खेत–संज्ञा पुं० [सं० क्षेत्र] १. अनाज आदि की फ़सल उत्पन्न करने के योग्य जोतने-बोने की जमीन।

मुहा०—खेत करना = १. समथल करना। २. उदय के समय चंद्रमा का पहले पहल प्रकाश फैलाना। २. खेत में खड़ी हुई फ़सल। ३. किसी चीज़ के विशेषतः पशुओं आदि के उत्पन्न होने का स्थान या देश। ४. समर-भूमि।

मुहा०—खेत आना या रहना = युद्ध में मारा जाना। खेत रखना = समर में विजय प्राप्त करना। ५. तलवार का फल।

खेतिहर–संज्ञा पुं० [सं० क्षेत्रधर] खेती करने-वाला। कृषक। किसान।

खेती–संज्ञा स्त्री० [हिं० खेत+ई (प्रत्य०)] १. खेत में अनाज बोने का कार्य्य। कृषि। किसानी। २. खेत में बोई हुई फ़सल।

खेतीबारी–संज्ञा स्त्री० [हिं० खेती + बारी] किसानी। कृषि-कर्म।

खेद–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० खेदित, खिन्न] १. अप्रसन्नता। दुःख। रंज। २. शिथिलता। थकावट।

खेदना†–क्रि० स० [सं० खेट] १. मारकर हटाना। भगाना। खदेरना। २. शिकार के पीछे दौड़ना।

खेदा–संज्ञा पुं० [हिं० खेदना] १. किसी बनैले पशु को मारने या पकड़ने के लिये घेरकर एक उपयुक्त स्थान पर लाने का काम। २. शिकार। अहेर। आखेट।

खेदित–वि० [सं०] १. दुःखित। रंजीदा। २. थका हुआ। शिथिल।

खेना–क्रि० स० [सं० क्षेपण] १. नाव के डाँड़ों को चलाना जिसमें नाव चले। २. कालक्षेप करना। बिताना। काटना।

खेप–संज्ञा स्त्री० [सं० क्षेप] १. उतनी वस्तु जितनी एक बार में ले जाई जाय। लदान। २. गाड़ी आदि की एक बार की यात्रा।

खेपना–क्रि० स० [सं० क्षेपण] बिताना। काटना। गुज़ारना।

खेम*–संज्ञा पुं० दे० "क्षेम"।

खेमटा–संज्ञा पुं० [देश०] १. बारह मात्राओं का एक ताल। २. इस ताल पर होनेवाला गाना या नाच।

खेमा–संज्ञा पुं० [अ०] तंबू। डेरा।

खेल–संज्ञा पुं० [सं० केलि] १. मन बहलाने या व्यायाम के लिये इधर-उधर उछल-कूद, दौड़ धूप या और कोई मनोरंजक कृत्य, जिसमें कभी कभी हार जीत भी होती है। क्रीड़ा।

मुहा०—खेल खेलाना = बहुत तंग करना। २. मामला। बात। ३. बहुत हलका या तुच्छ काम। ४. अभिनय, तमाशा, स्वाँग या करतब आदि। ५. कोई अद्भुत बात। विचित्र लीला।

खेलक*–संज्ञा पुं० [हिं० खेलना] वह जो खेले। खेलाड़ी।

खेलना–क्रि० अ० [सं० केलि, केलन] [प्रे० -

खेलना] १. मन बहलाने या व्यायाम के लिये इधर-उधर उछलना, कूदना, दौड़ना आदि। क्रीड़ा करना। २. काम-क्रीड़ा करना। विहार करना। ३. भूत-प्रेत के प्रभाव से सिर और हाथ पैर आदि हिलाना। अभुआना। ४. विचरना। चलना। बढ़ना।
क्रि० स० १. मन बहलाव का काम करना। जैसे—गेंद खेलना, ताश खेलना।
मुहा०—जान या जी पर खेलना = ऐसा काम करना जिसमें मृत्यु का भय हो।
२ नाटक या अभिनय करना।
खेलवाड़—संज्ञा पु० [हिं० खेल + वाड़] खेल। क्रीड़ा। तमाशा। मनबहलाव। दिल्लगी।
खेलवाड़ी—वि० [हिं० खेल + वार(प्रत्य०)] १. बहुत खेलनेवाला। २ विनोदशील।
खेलाड़ी—वि० [हिं० खेल + आड़ी(प्रत्य०)] १ खेलनेवाला। क्रीड़ाशील। २ विनोदी।
संज्ञा पु० १. खेल में सम्मिलित होनेवाला व्यक्ति। वह जो खेले। २ तमाशा करने-वाला। ३ ईश्वर।
खेलाना—क्रि० स० [हिं० 'खेलना' का प्रे०] १ किसी दूसरे को खेल में लगाना। २ खेल में शामिल करना। ३ उलझाए रखना। बहलाना।
खेलार*†—संज्ञा पु० दे० "खेलाड़ी"।
खेवक*—संज्ञा पु० [सं० क्षेपक] नाव खेने-वाला। मल्लाह। केवट।
खेवट—संज्ञा पु० [हिं० खेत + बाँट] पटवारी का एक कागज जिसमें हर एक पट्टीदार का हिस्सा लिखा रहता है।
संज्ञा पु० [हिं० खेना] नाव खेनेवाला। मल्लाह। माँझी।
खेवा—संज्ञा पु० [हिं० खेना] १ नाव का किराया। २ नाव-द्वारा नदी पार करने का काम। ३ बार। दफा। काल। समय।
खेवाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० खेना] १ नाव खेने का काम। २ नाव खेने की मजदूरी।
खेस—संज्ञा पु० [देश०] बहुत मोटे सूत की लंबी चादर।

खेसारी—संज्ञा स्त्री० [सं० कृसर] एक प्रकार का मटर। दुबिया मटर। कसरी।
खेह—संज्ञा स्त्री० [सं० क्षार] धूल। राख।
मुहा०—खेह खाना = १ धूल फाँकना। व्यर्थ समय खोना। २ दुर्दशा-ग्रस्त होना।
खैंचना—क्रि० स० दे० "खींचना"।
खैर—संज्ञा पु० [सं० खदिर] १ एक प्रकार का बबूल। कथ-कीकर। सोन-कीकर। २ इस वृक्ष की लकड़ी का उबालकर निकाला और जमाया हुआ रस जो पान में खाया जाता है। कत्था। ३ एक पक्षी।
संज्ञा स्त्री० [फा० खैर] कुशल। क्षेम
अव्य० १ कुछ चिंता नहीं। कुछ परवा नहीं। २ अस्तु। अच्छा।
खैरआफियत—संज्ञा स्त्री० [फा०] कुशल-मंगल। क्षेम-कुशल।
खैरख्वाह—वि० [फा०] [संज्ञा खैरख्वाही] भलाई चाहनेवाला। शुभचिंतक।
खैरा—वि० [हिं० खैर] खैर के रंग का। कत्थई।
खैरात—संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० खैराती] दान। पुण्य।
खैरियत—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ कुशल-क्षेम। राजी-खुशी। २ भलाई। कल्याण।
खोंगाह—संज्ञा पु० [फा०] पीलापन लिए सफेद रंग का घोड़ा।
खोंच—संज्ञा स्त्री० [सं० कुंच] १ किसी नुकीली चीज से छिलने का आघात। खरोंट। २ काँटे आदि में फँसकर कपड़े का फट जाना।
खोंचा—संज्ञा पु० [सं० कुंच]। बहेलियों का चिड़िया फँसाने का लंबा बाँस।
खोंट—संज्ञा स्त्री० [हिं० खोंटना] १ खोंटने या नोचने की क्रिया। २ नोचने से पड़ा हुआ दाग। खरोंट।
खोंटना—क्रि० स० [सं० खुड] किसी वस्तु का ऊपरी भाग तोड़ना। चकटना।
खोंडा—वि० [सं० खुड] १ जिसका कोई अंग भंग हो। २ जिसके आगे के दो तीन दाँत टूटे हों।

खोंता–संज्ञा पुं० [देश०] चिड़ियों का घोंसला। नीड़।
खोंसना–क्रि० स० [सं० कोश+ना (प्रत्य०)] किसी वस्तु को कहीं स्थिर रखने के लिये उसका कुछ भाग किसी दूसरी वस्तु में घुसेड़ देना। अटकाना।
खोआ†–संज्ञा पुं० दे० "खोया"।
खोई–संज्ञा स्त्री० [सं० क्षुद्र] १. रस निकाले हुए गन्ने के टुकड़े। छोई। २. धान की खील। लाई। ३. कंबल की घोघी।
खोखला–वि० [हिं० खुक्ख=ला (प्रत्य०)] जिसके भीतर कुछ न हो। पोला।
खोगीर–संज्ञा पुं० दे० "खुगीर"।
खोज–संज्ञा स्त्री० [हिं० खोजना] १. अनुसंधान। तलाश। शोध। २. चिह्न। निशान। पता। ३. गाड़ी के पहिए की लीक अथवा पैर आदि का चिह्न।
खोजना–क्रि० स० [सं० खुज=चोराना] तलाश करना। पता लगाना। ढूंढना।
खोजवाना–क्रि० स० [हिं० खोजना का प्रे०] पता लगवाना। ढुंढवाना।
खोजा–संज्ञा पुं० [फा० ख्वाजा] १. वह नपुंसक जो मुसलमानी हरमों में सेवक की भाँति रहता है। २. सेवक। नौकर। ३. माननीय व्यक्ति। सरदार।
खोट–संज्ञा स्त्री० [सं० खोट] १. दोष। ऐब। बुराई। २. किसी उत्तम वस्तु में निकृष्ट वस्तु की मिलावट।
खोटा–वि० [सं० क्षुद्र] [स्त्री० खोटी] जिसमें कोई ऐब हो। बुरा। "खरा" का उलटा।
मुहा०—खोटी खरी सुनाना=डाँटना। फटकारना।
खोटाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० खोटा+ई (प्रत्य०)] १. बुराई। दुष्टता। क्षुद्रता। २. छल। कपट। ३. दोष। ऐब। नुक्स।
खोटापन–संज्ञा पुं० [हिं० खोटा+पन (प्रत्य०)] खोटा होने का भाव। क्षुद्रता।
खोड़रा–संज्ञा पुं० [सं० कोटर] पुराने पेड़ में खोखला भाग या गड्ढा।
खोद–संज्ञा पुं० [फ़ा० खोद] युद्ध में पहनने का लोहे का टोप। कूँड़। शिरस्त्राण।
खोदना–क्रि० स० [सं० खुद=भेदन करना] १. सतह की मिट्टी आदि हटाकर गहरा करना। गड्ढा करना। खनना। २. मिट्टी आदि उखाड़ना। ३. खोदकर उखाड़ना या गिराना। ४. नक्काशी करना। ५. उँगली, छड़ी आदि से छूना या दबाना। गड़ाना। ६. छेड़छाड़ करना। छेड़ना। ७. उत्तेजित करना। उसकाना। उभाड़ना।
खोदविनोद†–संज्ञा स्त्री० [हिं० खोद+बिनोद (अनु०)] छान-बीन। जाँच-पड़ताल।
खोदवाना–क्रि० स० [हिं० खोदना का प्रे०] खोदने का काम दूसरे से करवाना।
खोदाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० खोदना] १. खोदने का काम। २. खोदने की मजदूरी।
खोना–क्रि० स० [सं० क्षेपण] १. अपने पास की वस्तु को निकल जाने देना। गँवाना। २. भूल से किसी वस्तु को कहीं छोड़ आना। ३. खराब करना। बिगाड़ना। क्रि० अ० पास की वस्तु का निकल जाना। किसी वस्तु का कहीं भूल से छूट जाना।
खोन्चा–संज्ञा पुं० [फा० ख्वानचा] बड़ी परात या थाल जिसमें रखकर फेरीवाले मिठाई आदि बेचते हैं।
खोपड़ा–संज्ञा पुं० [सं० खर्पर] १. सिर की हड्डी। कपाल। २. सिर। ३. गरी का गोला। गरी। ४. नारियल।
खोपड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० खोपड़ा] १. सिर की हड्डी। कपाल। २. सिर।
मुहा०—अंधी या औंधी खोपड़ी का=नासमझ। मूर्ख। खोपड़ी खाना या चाट जाना=बहुत बातें करके दिक करना। खोपड़ी गंजी होना=मार से सिर के बाल झड़ जाना।
खोपा–संज्ञा पुं० [सं० खर्पर, हिं० खोपड़ा] १. छप्पर का कोना। २. मकान का कोना जो किसी रास्ते की ओर पड़े। ३. स्त्रियों की गुथी चोटी की तिकोनी बनावट। ४. जूड़ा। वेणी। ५. गरी का गोला।
खोम*–संज्ञा पुं० [अ० कौम] समूह।

खोम†–संज्ञा स्त्री० [फा० खू] आदत।

खोया–संज्ञा पु० [सं० क्षुद्र] आँच पर चढ़ाकर इतना गाढ़ा किया हुआ दूध कि उसकी पिंडी बाँध सकें। मावा। खोवा।

खोर–संज्ञा स्त्री० [हिं० खुर] १ सँकरी गली। कूचा। २ चौपायों को चारा देने की नाँद।

संज्ञा स्त्री० [हिं० खोरना] स्नान। नहान।

खोरना†–क्रि० अ० [सं० क्षालन] नहाना।

खोरा–संज्ञा पु० [सं० खोलक, फा० आबखोरा] [स्त्री० खोरिया] १ कटोरा। बेला। २ पानी पीने का बरतन। आबखोरा।

†* वि० [सं० खोर या खोट] लँगड़ा।

खोराक–संज्ञा पु० दे० "खुराक"।

खोरि*–संज्ञा स्त्री० [हिं० खुर] तंग गली।

संज्ञा स्त्री० [सं० खोट या खोर] १ ऐब। दोष। २ बुराई।

खोल–संज्ञा पु० [सं० खोल=कोश या आवरण] १ ऊपर से चढ़ा हुआ ढकना। गिलाफ। २ कीड़ों का ऊपरी चमड़ा जिसे समय समय पर वे बदला करते हैं। ३ मोटा चादर।

खोलना–क्रि० स० [सं० खुड, खुल=भेदन] १ छिपाने या रोकनेवाली वस्तु को हटाना। जैसे—किवाड़ खोलना। २ दरार करना। छेद करना। शिगाफ करना। ३ बाँधने या जोड़नेवाली वस्तु को अलग करना। बंधन तोड़ना। ४ किसी बँधी हुई वस्तु को मुक्त करना। ५ किसी क्रम को चलाना या जारी करना। ६ सड़क, नहर आदि तैयार करना। ७ दूकान, दफ्तर आदि का दैनिक कार्य आरंभ करना। ८ गुप्त या गूढ़ बात को प्रकट या स्पष्ट कर देना।

खोली–संज्ञा स्त्री० [हिं० खोल] आवरण। गिलाफ। जैसे—तकिए की खोली।

खोह–संज्ञा स्त्री० [सं० गोह] गुहा। गुफा। कंदरा।

खौं–संज्ञा स्त्री० [सं० खन्] १ खात। गड्ढा। २ अन्न रखने का गहरा गड्ढा।

खौंचा–संज्ञा पु० [सं० षट्+च] साढ़े छ का पहाड़।

खौफ–संज्ञा पु० [अ०] [वि० खौफनाक] डर। भय। भीति। दहशत।

खौर–संज्ञा स्त्री० [सं० क्षौर या क्षुर] १ चंदन का तिलक। टीका। २ स्त्रियों का सिर का एक गहना।

खौरना–क्रि० स० [हिं० खौर] खौर लगाना। चंदन का टीका लगाना।

खौरहा†–वि० [हिं० खौरा+हा (प्रत्य०)] [स्त्री० खौरही] १ जिसके सिर के बाल झड़ गए हों। २ जिसके शरीर में खौरा या खुजली का रोग हो। (पशु)

खौरा–संज्ञा पु० [सं० क्षौर। फा० बालखोरा] एक प्रकार की बड़ी खुजली।

वि० जिसे खौरा रोग हुआ हो।

खौलना–क्रि० अ० [सं० क्ष्वेल] (तरल पदार्थ का) उबलना। जोश खाना।

खौलाना–क्रि० स० [हिं० खौलना] जल, दूध आदि गरम करना।

ख्यात–वि० [सं०] प्रसिद्ध। विदित।

ख्याति–संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रसिद्धि। शोहरत।

ख्याल–संज्ञा पु० [अ०] [वि० ख्याली] १. ध्यान। मनोवृत्ति।

मुहा०—ख्याल रखना=ध्यान रखना। देखते भालते रहना। किसी के ख्याल पड़ना=किसी को दिक करने पर उतारू होना।

२ स्मरण। स्मृति। याद।

मुहा०—ख्याल से उतारना=भूल जाना। याद न रहना।

३ विचार। भाव। सम्मति। ४ आदर। ५ एक प्रकार का गाना।

*†संज्ञा पु० [हिं० खेल] खेल। क्रीड़ा।

ख्याली–वि० [हिं० ख्याल] कल्पित। फर्जी।

मुहा०—ख्याली पुलाव पकाना=असंभव बातें सोचना। मनोराज्य करना।

वि० [हिं० खेल] खेल या कौतुक करनेवाला।

ख्रिष्टान–संज्ञा पु० [हिं० ख्रिष्ट] ईसाई।

ख्रिष्टीय–वि० [अं० क्राइस्ट] १ ईसाई। २. ईसाई धर्म संबंधी।

ख्रीष्ट–संज्ञा [अं० क्राइस्ट] [वि० ख्रिष्टीय]

हज़रत ईसा मसीह।

ख्वाजा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. मालिक। २. सरदार। ३. ऊँचे दर्जे का मुसलमान फ़क़ीर। ४. रनिवास का नपुंसक भृत्य। ख्वाजासरा।

ख्वाब–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. सोने की अवस्था। नींद। २. स्वप्न।

ख्वार–वि० [फ़ा०] [संज्ञा ख्वारी] १. खराब। सत्यानाश। २. अनादृत। तिरस्कृत।

ख्वाह–अव्य० [फ़ा०] या। अथवा। या तो।

यौ०—ख्वाह-म-ख्वाह = १. चाहे कोई चाहे या न चाहे। जबरदस्ती। २. जरूर। अवश्य।

ख्वाहिश–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] [वि० ख्वाहिश-मंद] इच्छा। अभिलाषा। आकांक्षा।

ग

ग–व्यंजन में कवर्ग का तीसरा वर्ण जिसका उच्चारण-स्थान कंठ है।

गंग–संज्ञा पुं० [सं० गंगा] एक मात्रिक छंद। संज्ञा स्त्री० [सं० गंगा] गंगा नदी।

गंग-बरार–संज्ञा पुं० [हिं० गंगा+फ़ा० बरार] वह जमीन जो किसी नदी की धारा के हटने से निकल आती है।

गंग-शिकस्त–संज्ञा पुं० [हिं० गंगा + फ़ा० शिकस्त] वह जमीन जिसे कोई नदी काट ले गई हो।

गंगा–संज्ञा स्त्री० [सं०] भारतवर्ष की एक प्रधान और प्रसिद्ध नदी।

गंगा-जमनी–वि० [हिं० गंगा + जमुना] १. मिला-जुला। संकर। दो-रंगा। २. सोने-चाँदी, पीतल-ताँबे आदि दो धातुओं का बना हुआ। ३. काला-उजला। स्याह-सफ़ेद। अबलक।

गंगाजल–संज्ञा पुं० [सं०] १. गंगा का पानी। २. एक बारीक सफ़ेद कपड़ा।

गंगाजली–संज्ञा स्त्री० [सं० गंगाजल] १. वह सुराही या शीशी जिसमें यात्री गंगा-जल भर कर ले जाते हैं। २. धातु की सुराही।

गंगाधर–संज्ञा पुं० [सं०] शिव।

गंगापुत्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. भीष्म। २. एक प्रकार के ब्राह्मण जो नदियों के किनारों पर दान लेते हैं। ३. एक वर्णसंकर जाति।

गंगा यात्रा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मरणा-सन्न मनुष्य का गंगा के तट पर मरने के लिये गमन। २. मृत्यु।

गंगाल–संज्ञा पुं० [सं० गंगा + आलय] पानी रखने का बड़ा बरतन। कंडाल।

गंगालाभ–संज्ञा पुं० [सं०] मृत्यु।

गंगासागर–संज्ञा पुं० [हिं० गंगा + सागर] १. एक तीर्थ जो उस स्थान पर है जहाँ गंगा समुद्र में गिरती है। २. एक प्रकार की बड़ी टोंटीदार झारी।

गंगेरन–संज्ञा स्त्री० [सं० गांगेरुकी] एक पौधा जो चतुर्विध बला के अंतर्गत माना जाता है। नागबला।

गंगोदक–संज्ञा पुं० [सं०] १. गंगाजल। २. चौबीस अक्षरों का एक वर्ण-वृत्त।

गंज–संज्ञा पुं० [सं० कंज या खंज] १. सिर के बाल उड़ने का रोग। चाईं। चँदलाई। खल्वाट। २. सिर में छोटी छोटी फुनसियों का रोग। बालखोरा।

संज्ञा स्त्री० [फ़ा०। सं०] १. खजाना। कोष। २. ढेर। अंबार। राशि। अटाला। ३. समूह। झुंड। ४. गल्ले की मंडी। गोला। हाट। बाजार। ५. वह चीज़ जिसके भीतर बहुत सी काम की चीज़ें हों।

गंजन–संज्ञा पुं० [सं०] १. अवज्ञा। तिर-स्कार। २. पीड़ा। कष्ट। ३. नाश।

गंजना–क्रि० स० [सं० गंजन] १. अवज्ञा करना। निरादर करना। २. चूर चूर करना। नाश करना।

गंजा–संज्ञा पुं० [सं० खंज या कंज] गंज रोग। वि० जिसको गंज रोग हो। खल्वाट।

गजी–सज्ञा स्त्री० [हि० गज] १ ढेर। समूह। गाँज। †२ दावरदद। पदा।
सज्ञा स्त्री० [अ० गुएरजेसी = एक टापू] बुनी हुई छोटी कुरती या बडी जो बदन में चिपकी रहती है। बनियायन।
सज्ञा पु० दे० "गँजेडी"।

गजीफा–सज्ञा पु० [फा०] एक खेल जो आठ रग के ९६ पत्तो से खेला जाता है।

गँजेडी–वि० [हि० गाँजा + एडी (प्रत्य०)] गाँजा पीनेवाला।

गँठजोडा, गँठबधन–सज्ञा पु० [हि० गाँठ + बधन] विवाह की एक रीति जिसमे वर और वधू के वस्त्र को परस्पर बाँध देते हैं।

गड–सज्ञा पु० [स०] १ कपोल। गाल। २ कनपटी। ३ गडा जो गले में पहना जाता है। ४ फोडा। ५ चिह्न। लकीर। दाग। ६ गोल मडलाकार चिह्न या लकीर। गराडी। गड। ७ गाँठ। ८ वीथी नामक नाटक का एक अग।

गडक–सज्ञा पु० [स०] १ गले मे पहनने का जतर या गडा। २ गडकी नदी का तटस्थ देश तथा वहाँ के निवासी।
सज्ञा स्त्री० दे० "गडकी"।

गडकी–सज्ञा स्त्री० [स०] गगा मे गिरनेवाली उत्तर-भारत की एक नदी।

गडमाला–सज्ञा स्त्री० [स०] एक रोग जिसमे गले म छोटी छोटी बहुत सी फुडियाँ निकलती हैं। गलगड। कठमाला।

गंडस्थल–सज्ञा पु० [स०] कनपटी।

गडा–सज्ञा पु० [स० गडक] गाँठ।
सज्ञा पु० [स० गडक] मत्र पढकर गाँठ लगाया धागा जिसे लोग रोग और भूत-प्रेत की बाधा दूर करने के लिये गले मे बाँधते हैं।
मुहा०—गडा तावीज = मत्र-यत्र। टोटका।
सज्ञा पु० [स० गडक] पैसे, कौडी के गिनने म चार चार की सख्या का समूह।
सज्ञा पु० [स० गड = चिह्न] १ आडी लकीरो की पक्ति। २ तोते आदि चिडियो के गले की रगीन धारी। कठा। हँसली।

गँडासा–सज्ञा पु० [हि० गँडी + स० असि] [स्त्री० अल्पा० गँडासी] चौपायो के चारे या घास के टुकडे काटने का हथियार।

गँडेरी–सज्ञा स्त्री० [स० काड या गड] ईख या गन्ने का छोटा टुकडा।

गदगी–सज्ञा स्त्री० [फा०] १ मैलापन। मलिनता। २ अपवित्रता। अशुद्धता। नापाकी। ३ मैला। गलीज। मल।

गदना–सज्ञा पु० [स० गधन, या फा०] लह-सुन या प्याज की तरह का एक मसाला।

गँदला–वि० [हि० गदा + ला (प्रत्य०)] मैला-कुचैला। गदा। मलिन।

गंदा–वि० [फा०] [स्त्री० गदी] १ मैला। मलिन। २ नापाक। अशुद्ध। ३ घिनौना। घृणित।

गदुम–सज्ञा पु० [फा०] गेहूँ।

गदुमी–वि० [फा० गदुम] गेहूँ के रग का।

गंध–सज्ञा स्त्री० [स० गध] १ बास। महक। २ सुगन्ध। अच्छी महक। ३ सुगधित द्रव्य जो शरीर म लगाया जाय। ४ लेश। अणुमात्र। सस्कार। सबध।

गंधक–सज्ञा स्त्री० [स०] [वि० गधकी] एक पीला जलनेवाला खनिज पदार्थ।

गधकी–वि० [हि० गधक] गधक के रग का हलका पीला।

गधपत्र–सज्ञा पु० [स०] १ सफेद तुलसी। २ मरुवा। ३ नारगी। ४ बेल।

गंधबिलाव–सज्ञा पु० [हि० गध + बिलाव] नेवले की तरह का एक जतु जिसकी गिल्टी से सुगन्धित द्रव निकलता है।

गधमार्जार–सज्ञा पु० [स०] गधबिलाव।

गधमादन–सज्ञा पु० [स०] १ एक पुराण-प्रसिद्ध पर्वत। २ भौरा।

गधर्व–सज्ञा पु० [स०] [स० स्त्री० गधर्वी, हि० स्त्री० गधर्विन] १ देवताओ का एक भेद। ये गान म निपुण कहे गए हैं। विद्याधर। २ मृग। ३ घोडा। ४ वह आत्मा जिसने एक शरीर छोडकर दूसरा ग्रहण किया हो। प्रेत। ५ एक जाति जिसकी कन्याएँ गाने और वेश्यावृत्ति

करती हैं। ६. विधवा स्त्री का दूसरा पति।

गंधर्वनगर–संज्ञा पुं० [सं०] १. नगर, ग्राम आदि का वह मिथ्या आभास जो आकाश या स्थल में दृष्टि-दोष से दिखाई पड़ता है। २. मिथ्या ज्ञान। भ्रम। ३. चंद्रमा के किनारे का मंडल जो हलकी बदली में दिखाई पड़ता है। ४. संध्या के समय पश्चिम दिशा में रंग-बिरंगे बादलों के बीच फैली हुई लाली।

गंधर्वविद्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] संगीत।

गंधर्वविवाह–संज्ञा पुं० [सं०] आठ प्रकार के विवाहों में से एक। वह संबंध जो वर और वधू अपने मन से कर लेते हैं।

गंधर्ववेद–संज्ञा पुं० [सं०] संगीत शास्त्र जो चार उपवेदों में से एक है।

गंधाना–क्रि० स० [हिं० गंध] गंध देना। बसाना। दुर्गंध करना।

गंधाबिरोजा–संज्ञा पुं० [हिं० गंध + बिरोजा] चीर नामक वृक्ष का गोंद। चंद्रस।

गंधार–संज्ञा पुं० दे० "गांधार"।

गंधी–संज्ञा पुं० [सं० गंधिन्] [स्त्री गंधिनी, गंधिन] १. सुगंधित तेल और इत्र आदि बेचनेवाला। अत्तार। २. गँधिया घास। गांधी। ३. गँधिया कीड़ा।

गंभारी–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक बड़ा पेड़। काश्मरी।

गंभीर–वि० [सं०] १. जिसकी थाह जल्दी न मिले। नीचा। गहरा। २. घना। गहन। ३. जिसके अर्थ तक पहुँचना कठिन हो। गूढ़। जटिल। ४. घोर। भारी। ५. शांत। सौम्य।

गँवँ†–संज्ञा स्त्री० [सं० गम्य] १. घात। दाँव। २. मतलब। प्रयोजन। ३. अवसर। मौका। ४. ढंग। उपाय। युक्ति।

मुहा०—गँवँ से = ढंग से। युक्ति से। †* धीरे से। चुपके से।

गवई–संज्ञा स्त्री० [हिं० गाँव] [वि० गँवइयाँ] गाँव की बस्ती।

गँवर मसला–संज्ञा पुं० [हिं० गँवार + अ० मसल] गँवारों की कहावत या उक्ति।

गँवाना–क्रि० स० [सं० गमन] १. (समय) बिताना। काटना। २. पास की वस्तु को निकल जाने देना। खोना।

गँवार–वि० [हिं० गाँव + आर(प्रत्य०)] [स्त्री० गँवारिन। वि० गँवारू, गँवारी] १. गाँव का रहनेवाला। ग्रामीण। देहाती। असभ्य। २. बेवकूफ। मूर्ख। ३. अनाड़ी।

गँवारी–संज्ञा स्त्री० [हिं० गँवार] १. गँवारपन। देहातीपन। २. मूर्खता। बेवकूफी। ३. गँवार स्त्री।

वि० [हिं० गँवार + ई(प्रत्य०)] १. गँवार का सा। २. भद्दा। बदसूरत।

गँवारू–वि० दे० "गँवारी"।

गंस*–संज्ञा पुं० [सं० ग्रंथि] १. गाँठ। द्वेष। बैर। २. मन में चुभनेवाली बात। ताना। चुटकी।

संज्ञा स्त्री० [सं० कषा] तीर की नोक।

गँसना*†–क्रि० स० [सं० ग्रंथन] १. अच्छी तरह कसना। जकड़ना। गाँठना। २. बुनावट में सूतों को परस्पर खूब मिलाना।

क्रि० अ० १. बुनावट में सूतों का खूब पास पास होना। २. ठसाठस भरना।

गँसीला–वि० [हिं० गाँसी] [स्त्री० गँसीली] तीर के समान नोकदार। चुभनेवाला।

ग–संज्ञा पुं० [सं०] १. गीत। २. गंधर्व। ३. गुरु मात्रा। ४. गणेश। ५. गानेवाला। ६. जानेवाला।

गई करना*–क्रि० अ० [हिं० गई + करना] तरह देना। जाने देना। छोड़ देना।

गई बहोर–वि० [हिं० गया + बहुरि] खोई हुई वस्तु को पुनः देनें अथवा बिगड़े हुए काम को बनानेवाला।

गऊ–संज्ञा स्त्री० [सं० गो] गाय। गौ।

गगन–संज्ञा पु० [सं०] १. आकाश। २. शून्य स्थान। ३. छप्पय छंद का एक भेद।

गगनचर–संज्ञा पुं० [सं०] पक्षी।

गगनधूल–संज्ञा स्त्री० [सं० गगन + हिं० धूल] १. खुमी का एक भेद। एक प्रकार का कुकुरमुत्ता। २. केतकी के फूल की धूल।

गगनवाटिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] आकाश

की वाटिका। (असंभव बात)

गगनभेड़—संज्ञा स्त्री० [हिं० गगन+भेड़] करांकुल या कूँज नाम की चिड़िया।

गगनभेदी, गगनस्पर्शी—वि० [सं०] आकाश तक पहुँचनेवाला। बहुत ऊँचा।

गगनानग—संज्ञा पु० [सं०] पचीस मात्राओं का एक मात्रिक छंद।

गगरा—संज्ञा पु० [सं० गर्गर] [स्त्री० अल्पा० गगरी] धातु का बड़ा घड़ा। कलसा।

गच—संज्ञा पु० [अनु०] १ किसी नरम वस्तु में किसी कड़ी या पैनी वस्तु के धँसने का शब्द। २ चूने सुरखी का मसाला जिससे जमीन पक्की की जाती है। ३ चूने सुरखी से पिटी हुई जमीन। पक्का फर्श। लेट।

गचकारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गच+फा० कारी] गच का काम। चूने, सुरखी का काम।

गचना*—क्रि० स० [अनु० गच] १ बहुत अधिक या कसकर भरना। २ दे० 'गाँसना'।

गछना*‡—क्रि० अ० [सं० गच्छ=जाना] चलना। जाना।

क्रि० स० १ चलाना। निबाहना। २ अपने जिम्मे लेना। अपने ऊपर लेना।

गज—संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० गजी] १ हाथी। २ एक राक्षस। ३ राम की सेना का एक बंदर। ४ आठ की संख्या।

गज़—संज्ञा पु० [फा०] १ लंबाई नापने की एक माप जो सोलह गिरह या तीन फुट की होती है। २ लोहे या लकड़ी का वह छड़ जिससे पुराने ढंग की बंदूक भरी जाती है। ३ एक प्रकार का तीर।

गज़इलाही—संज्ञा पु० [फा० गज़+इलाही] अकबरी गज़ जो ४१ अंगुल का होता है।

गज़क—संज्ञा पु० [फा० गज़क] १ वह चीज़ जो शराब पीने के बाद मुँह का स्वाद बदलने के लिये खाई जाती है। चाट। जैसे—कबाब, पापड़। २ तिलपपड़ी। तिलशकरी। ३ नाश्ता। जलपान।

गजगति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हाथी की सी मंद चाल। २ एक वर्णवृत्त।

गजगमन—संज्ञा पु० [सं०] हाथी की सी मंद चाल।

गजगामिनी—वि० स्त्री० [सं०] हाथी के समान मंद गति से चलनेवाली।

गजग्राह—संज्ञा पु० [सं० गज+ग्राह] हाथी की झूल।

गजगौन*—संज्ञा पु० दे० 'गजगमन'।

गजदंत—संज्ञा पु० [सं०] १ हाथी का दाँत। २ दीवार में गड़ी खूँटी। ३ वह घोड़ा जिसके दाँत निकले हों। ४ दाँत के ऊपर निकला हुआ दाँत।

गजदान—संज्ञा पु० [सं०] हाथी का मद।

गजनाल—संज्ञा स्त्री० [सं०] बड़ी तोप जिसे हाथी खींचते थे।

गजपिप्पली—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक पौधा जिसकी मंजरी औषध में काम आती है।

गजपीपल—संज्ञा स्त्री० दे० 'गजपिप्पली'।

गजपुट—संज्ञा पु० [सं०] गड्ढे में धातु फूँकने की एक रीति। (वैद्यक)

ग़ज़ब—संज्ञा पु० [अ०] १ कोप। रोष। गुस्सा। २ आपत्ति। आफ़त। विपत्ति। ३ अंधेर। अन्याय। जुल्म। ४ विलक्षण बात।

मुहा०—ग़ज़ब का=विलक्षण। अपूर्व।

गजबाँक, गजबाग—संज्ञा पु० [सं० गज+बाँक या बाग] हाथी का अंकुश।

गजमुक्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्राचीनों के अनुसार एक मोती जिसका हाथी के मस्तक से निकलना प्रसिद्ध है।

गजमोती—संज्ञा पु० दे० 'गजमुक्ता'।

गजर—संज्ञा पु० [सं० गज, हिं० गरज] १ पहर पहर पर घंटा बजने का शब्द। पारा। २ सबेरे के समय का घंटा।

मुहा०—गजरदम=तड़के। सबेरे।

३ चार, आठ और बारह बजने पर उतनी ही बार जल्दी जल्दी फिर घंटा बजना।

गजरा—संज्ञा पु० [हिं० गज] १ फूलों की घनी गुथी हुई माला। २ एक गहना जो कलाई में पहना जाता है। ३ एक

रेशमी कपड़ा। मशरू।
गजराज–संज्ञा पुं० [सं०] बड़ा हाथी।
गजल–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] फ़ारसी और उर्दू में एक प्रकार की कविता।
गजवदन–संज्ञा पुं० [सं०] गणेश।
गजवान–संज्ञा पुं० [हिं० गज+वान (प्रत्य०)] महावत। हाथीवान।
गजशाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह घर जिसमें हाथी बाँधे जाते हैं। फ़ीलखाना। हथिसाल।
गजाधर–संज्ञा पुं० दे० "गदाधर"।
गजानन–संज्ञा पुं० [सं०] गणेश।
गजी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० गज़] एक प्रकार का मोटा देशी कपड़ा। गाढ़ा। सल्लम।
संज्ञा स्त्री० [सं०] हथिनी।
गजेन्द्र–संज्ञा पुं० [सं०] १.ऐरावत। २. बड़ा हाथी। गजराज।
गज्झा†–संज्ञा पुं० [सं० गज्ज=शब्द] दूध, पानी आदि के छोटे छोटे बुलबुलों का समूह। गाज।
†संज्ञा पुं० [सं० गंज] १. ढेर। गाँज। अंबार। २. खज़ाना। कोश। ३. धन।
गझिन†–वि० [हिं० गझना] १. सघन। घना। २. गाढ़ा। मोटा। ठस बुनावट का।
गटकना–क्रि० स० [गट से अनु०] १. खाना। निगलना। २. हड़पना। दबा लेना।
गटगट–संज्ञा पुं० [अनु०] निगलने या घूँट घूँट पीने में गले में उत्पन्न शब्द।
गटपट–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. बहुत अधिक मेल। घनिष्ठता। २. सहवास। प्रसंग।
गट्ट–संज्ञा पुं० [अनु०] किसी वस्तु के निगलने में गले मे उत्पन्न होनेवाला शब्द।
गट्टा–संज्ञा पुं० [सं० ग्रंथ, प्रा० गंठ, हिं० गाँठ] १. हथेली और पहुँचे के बीच का जोड़। कलाई। २. पैर की नली और तलुए के बीच की गाँठ। ३. गाँठ। ४. बीज। ५. एक प्रकार की मिठाई।
गट्ठर–संज्ञा पुं० [हिं० गाँठ] बड़ी गठरी।
गट्ठा–संज्ञा पुं० [हिं० गाँठ] [स्त्री० अल्पा० गट्ठी, गठिया] १. घास, लकड़ी आदि का बोझ। भार। गट्ठर। २. बड़ी गठरी। बुकचा। ३. प्याज या लहसुन की गाँठ।
गठन–संज्ञा स्त्री० [सं० ग्रंथन] बनावट।
गठना–क्रि० अ० [सं० ग्रंथन] १. दो वस्तुओं का मिलकर एक होना। जुड़ना। सटना। २. मोटी सिलाई होना। ३. बुनावट का दृढ़ होना।
यौ०–गठा बदन=हृष्टपुष्ट और कड़ा शरीर
४. किसी षट्चक्र या गुप्त विचार में सहमत या सम्मिलित होना। ५. दाँव पर चढ़ना। अनुकूल होना। सधना। ६. अच्छी तरह निर्मित होना। भली भाँति रचा जाना। ७. संभोग होना। विषय होना। ८. अधिक मेल-मिलाप होना।
गठरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० गट्ठर] १. कपड़े में गाँठ देकर बाँधा हुआ सामान। बड़ी पोटली। बुकची। २. जमा की हुई दौलत।
मुहा०–गठरी मारना=अनुचित रूप से किसी का धन ले लेना। ठगना।
गठवाँसी–संज्ञा स्त्री० [हिं० गट्ठा+अंश] गट्ठे या बिस्वे का बीसवाँ अंश। बिस्वांसी।
गठवाना–क्रि० स० [हिं० गाठना] १.गठाना। सिलवाना। २. जुड़वाना। जोड़ मिलवाना।
गठाव–संज्ञा पुं० दे० "गठन"।
गठित–वि० [सं० ग्रथित] गठा हुआ।
गठिबंध*–संज्ञा पुं० दे० "गठबंधन"।
गठिया–संज्ञा स्त्री० [हिं० गाँठ] १. बोझ लादने का बोरा या दोहरा थैला। खुरजी। २. बड़ी गठरी। ३. एक रोग जिसमें जोड़ों में सूजन और पीड़ा होती है।
गठियाना†–क्रि० स० [हिं० गाँठ] १. गाँठ देना। गाँठ लगाना। २. गाँठ में बाँधना।
गठिवन–संज्ञा स्त्री० [सं० ग्रथिपर्ण] मध्यम आकार का एक पेड़।
गठीला–वि० [हिं० गाँठ+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० गठीली] जिसमें बहुत-सी गाँठें हों।
वि० [हिं० गठना] १. गठा हुआ। चुस्त। सुडौल। २. मजबूत। दृढ़।
गठीत, गठीती–संज्ञा स्त्री० [हिं० गठना] १. मेल मिलाप। मित्रता। २. मिलकर पक्की की हुई बात। अभिसंधि।

गड़ंग†–संज्ञा पुं० [ग०गर्व] [वि० गड़ंगिया] १. घमंड। शेखी। ढींग। २. आत्म-प्रशंसा। बड़ाई।

गड़–संज्ञा पुं० [सं०] १. ओट। आड़। २. घेरा। चहारदीवारी। ३. गड्ढा।

गड़गड़–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. बादल गरजने या गाड़ी चलने का शब्द। २. पेट में भरी वायु के हिलने का शब्द।

गड़गड़ा–संज्ञा पुं० [अनु०] एक प्रकार का हुक्का।

गड़गड़ाना–क्रि० अ० [हिं० गड़गड़] गरजना। कड़कना।
क्रि० स० गड़गड़ शब्द उत्पन्न करना।

गड़गड़ाहट–संज्ञा स्त्री० [हिं० गड़गड़ाना] गड़गड़ाने का शब्द। गड़गड़।

गड़दार–संज्ञा पुं० [सं० गड=गँड़ासा+दार] वह नौकर जो मस्त हाथी के साथ साथ भाला लिए हुए चलता है।

गड़ना–क्रि० अ० [सं० गर्त] १. धँसना। घुसना। चुभना। २ शरीर में चुभने की सी पीड़ा पहुँचना। खुरखुरा लगना। ३. दर्द करना। दुखना। पीड़ित होना (आँख और पेट के लिये)। ४. मिट्टी आदि के नीचे दबना। दफन होना।
मुहा०—गड़े मुर्दे उखाड़ना=दबी दबाई या पुरानी बात उठाना।
५. समाना। पैठना।
मुहा०—गड़ जाना=झेंपना। लज्जित होना। ६ खड़ा होना। भूमि पर ठहरना। ७. जमना। स्थिर होना। डटना।

गड़प–संज्ञा स्त्री० [अनु०] पानी, कीचड़ आदि में किसी वस्तु के सहसा समाने का शब्द।

गड़पना–क्रि० स० [अ० गड़प] १. निग-लना। खा लेना। २. हजम करना। अनुचित अधिकार करना।

गड़प्पा–संज्ञा पुं० [हिं० गाड़] १. गड्ढा। २. धोखा खाने का स्थान।

गड़बड़–वि० [हिं० गड=गड्ढा+बड़=बड़ा ऊँचा] [वि०गड़बड़िया] १.ऊँचानीचा। असमतल। २ अस्त-व्यस्त। अटबड़।
संज्ञा पुं० १. क्रमभंग। अव्यवस्था। कुप्रबंध।
यौ०—गड़बड़झाला=गोलमाल।अव्यवस्था। गड़बड़ाध्याय=दे० "गड़बड़झाला"।
२. उपद्रव। दगा। ३. (रोग आदि का) उपद्रव। आपत्ति।

गड़बड़ाना–क्रि० अ० [हिं० गड़बड़] १. गड़बड़ी में पड़ना। चक्कर या भूल में पड़ना। २. क्रम-भ्रष्ट होना। अव्यवस्थित होना। ३. अस्तव्यस्त होना। बिगड़ना।
क्रि० स० १. गड़बड़ी में डालना। चक्कर में डालना। २. भ्रम में डालना। भुलवाना। ३. बिगाड़ना। खराब करना।

गड़बड़िया–वि० [हिं० गड़बड़] गड़बड़ करनेवाला। उपद्रव करनेवाला।

गड़बड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "गड़बड़"।

गड़रिया–संज्ञा पुं० [सं० गड्डरिक] [स्त्री० गड़ेरिन] एक जाति जो भेड़ें पालती और उनके ऊन से कंबल बुनती है।

गड़हा–संज्ञा पुं० दे० "गड्ढा"।

गड़ा–संज्ञा पुं० [सं० गण] ढेर। राशि।

गड़ाना–क्रि० स० [हिं० गड़ना] चुभाना। धँसाना। भोंकना।
क्रि० स० [हिं० 'गाड़ना' का प्रे० रूप] गाड़ने का काम कराना।

गड़ायत*–वि० [हिं० गड़ना] गड़नेवाला। चुभनेवाला।

गड़ारी–संज्ञा स्त्री० [सं० कुंडल] १. मंडला-कार रेखा। गोल लकीर। वृत्त। २. घेरा।
संज्ञा स्त्री० [सं० गड=चिह्न] लगातार पास पास आड़ी धारियाँ। गंडा।
संज्ञा स्त्री० [सं० कुंडली] गोल चरखी जिस पर रस्सी चढ़ाकर कुएँ से पानी खींचते हैं। घिरनी।

गड़ारीदार–वि० [हिं० गड़ारी+फा० दार] १. जिसपर गंडे या धारियाँ पड़ी हों। २. घेरदार। जैसे—गड़ारीदार पायजामा।

गड़ुई–संज्ञा स्त्री० [हिं० गड़ुवा] पानी पीने का टोंटीदार छोटा बरतन। झारी।

गड़ुआ–संज्ञा पुं०[हिं० गेरना=गिराना+

उवा (प्रत्य०)–गेरुवा] टोंटीदार लोटा। समहा।
गड़ेरिया–संज्ञा पुं० दे० "गड़रिया"।
गड़ोना–क्रि० स० दे० "गड़ाना"।
गड़ोना–संज्ञा पुं० [हिं० गाड़ना] एक प्रकार का पान।
गड्ड–संज्ञा पुं० [सं० गण] [स्त्री०गड्डी] एक ही आकार की ऐसी वस्तुओं का समूह जो एक के ऊपर एक जमाकर रखी हों। गज। †*संज्ञा पुं० [सं० गर्त] गड्ढा।
गड्डबड्ड गड्डमड्ड–संज्ञा पुं० [हिं० गड्ड] बेमेल की मिलावट। घालमेल। घपला। वि० बिना किसी क्रम के मिला-जुला। अडबंड।
गड्डरिक–संज्ञा पुं० [सं०] गड़ेरिया। वि० १. भेड का। भेड-संबंधी। २. भेड के ऐसा।
गड्डाम–वि० [अ० गाड+डयाम] नीच। लुच्चा। बदमाश। पाजी।
गड्डी–संज्ञा स्त्री० दे० "गड्ड"।
गड्ढा–संज्ञा पुं० [सं० गर्त प्रा० गड्ड] १. जमीन में गहरा स्थान। खाता। गड़हा। २. थोड़े घेरे की गहराई।
मुहा०—किसी के लिये गड्ढा खोदना=किसी के अनिष्ट का प्रयत्न करना। बुराई करना।
गढ़ंत–वि० [हिं० गढ़ना] कल्पित। बनावटी। (बात)
गढ़–संज्ञा पुं० [सं० गढ़=खाँई] [स्त्री० अल्पा० गढ़ी] १. खाँई। २. किला। कोट।
मुहा०—गढ़ जीतना या तोड़ना = १. किला जीतना। २. *बहुत कठिन काम करना।*
गढ़न–संज्ञा स्त्री० [हिं० गढ़ना] बनावट। गठन। आकृति।
गढ़ना–क्रि० स० [सं० घटन] १. काट छाँट-कर काम की वस्तु बनाना। सुघटित करना। रचना। २. सुडौल करना। दुरुस्त करना। ३. बात बनाना। कपोल-कल्पना करना। ४. मारना। पीटना। ठोंकना।
गढ़पति–संज्ञा पुं० [हिं० गढ़+पति] १. क़िलेदार। २. राजा। सरदार।
गढ़वई, गढ़वै*–संज्ञा पुं० दे० "गढ़पति"।
गढ़वाल–संज्ञा पुं० [हिं० गढ़+वाला] वह जिसके अधिकार में गढ़ हो। गढ़वाला। संज्ञा पुं० उत्तराखंड का एक प्रदेश।
गढ़ाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० गढ़ना] १. गढ़ने की क्रिया या भाव। २. गढ़ने की मजदूरी।
गढ़ाना–क्रि० स० [हिं० गढ़ना का प्रे० रूप] गढ़ने का काम कराना। गढ़वाना। क्रि० अ० [हिं० गाढ़=कठिन] कष्टकर प्रतीत होना। मुश्किल गुजरना। खलना।
गढ़िया–संज्ञा पुं० [हिं० गढ़ना] गढ़नेवाला।
गढ़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० गढ़] छोटा किला।
गढ़ैया–वि० [हिं० गढ़ना] गढ़नेवाला।
गढ़ोई*†–संज्ञा पुं० दे० "गढ़पति"।
गण–संज्ञा पुं० [सं०] १. समूह। झुंड। जत्था। २. श्रेणी। जाति। कोटि। ३. ऐसे मनुष्यों का समुदाय जिनमें किसी विषय में समानता हो। ४. सेना का वह भाग जिसमें तीन गुल्म हों। ५. छंदःशास्त्र में तीन वर्णों का समूह। लघु, गुरु के क्रम के अनुसार गण आठ माने गए हैं। ६. व्याकरण में धातुओं और शब्दों के वे समूह जिनमें समान लोप, आगम और वर्ण-विकारादि हों। ७. शिव के पारिषद्। प्रमथ। ८. दूत। सेवक। पारिषद। ९. परिचारक-वर्ग। अनुचरों का दल।
गणक–संज्ञा पुं० [सं०] ज्योतिषी।
गणदेवता–संज्ञा पुं० [सं०] समूह-चारी देवता। जैसे—विश्वेदेवा, रुद्र।
गणन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० गणनीय, *गणित, गण्य*] १. *गिनना।* २. *गिनती।*
गणना–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गिनती। शुमार। २. हिसाब। ३. संख्या।
गणनायक–संज्ञा पुं० [सं०] गणेश।
गणपति–संज्ञा पुं० [सं०] १. गणेश। २. शिव
गणराज्य–संज्ञा पुं० [सं०] वह राज्य जो चुने हुए मुखियों या सरदारों के द्वारा चलाया जाता हो।
गणाधिप–संज्ञा पुं० [सं०] १. गणेश। २. साधुओं या अधिपति या महंत।

गणिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या।

गणित—संज्ञा पु० [सं०] १. वह शास्त्र जिसमें मात्रा, संख्या और परिमाण का विचार हो। २. हिसाब।

गणितज्ञ—वि० [सं०] १ गणित शास्त्र जाननेवाला। हिसाबी। २ ज्योतिषी।

गणेश—संज्ञा पु० [सं०] हिंदुओं के एक प्रधान देवता जिनका सारा शरीर मनुष्य का-सा है पर सिर हाथी का-सा है।

गण्य—वि० [सं०] १ गिनने के योग्य। २ जिसे लोग कुछ समझें। प्रतिष्ठित।

यौ०—गण्यमान्य=प्रतिष्ठित।

गत—वि० [सं०] १ गया हुआ। बीता हुआ। २. मरा हुआ। ३ रहित। हीन।

संज्ञा स्त्री० [सं० गति] १ अवस्था। दशा।

मुहा०—गत बनाना=दुर्दशा करना।

२ रूप। रंग। वेष। ३ काम में लाना। सुगति। उपयोग। ४ दुर्गति। दुर्दशा। नाश। ५ बाजों के कुछ बोलों का क्रम-बद्ध मिलान। ६ नृत्य में शरीर का विशेष सचालन और मुद्रा। नाचने का ठाठ।

गतका—संज्ञा पु० [सं० गदा] १ लकड़ी खेलने का डंडा जिसके ऊपर चमड़े की खोल चढ़ी रहती है। २ वह खेल जो फरी और गतके से खेला जाता है।

गतांक—वि० [सं०] गया बीता। निकम्मा।

संज्ञा पु० समाचार-पत्र का पिछला अंक।

गति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक स्थान से दूसरे स्थान पर क्रमशः जाने की क्रिया। चाल। गमन। २ हिलने डोलने की क्रिया। हरकत। स्पंदन। ३ अवस्था। दशा। हालत। ४ रूप-रंग। वेष। ५ पहुँच। प्रवेश। पैठ। ६ प्रयत्न की सीमा। अंतिम उपाय। दौड़। तदबीर। ७ सहारा। अवलंब। शरण। ८ चेष्टा। प्रयत्न। ९ लीला। माया। १०. ढंग। रीति। ११. मृत्यु के उपरांत जीवात्मा की दशा। १२ मोक्ष। मुक्ति। १३ लड़नेवालों के पैर की चाल। पैंतरा।

गत्ता—संज्ञा पु० [देश०] कागज के कई परतों को सटाकर बनाई हुई दफ्ती। कुट।

गत्ताल खाता—संज्ञा पु० [सं० गर्त, प्रा० गत+हिं० खाता] बट्टाखाता। गई-बीती रकम का लेखा।

गथ*†—संज्ञा पु० [सं० ग्रंथ] १. पूंजी। जमा। २ माल। ३. झुंड।

गथना*—क्रि० स० [सं० ग्रथन] १. एक में एक जोड़ना। आपस में गूँथना। २. बात गढ़ना। बात बनाना।

गद—संज्ञा पु० [सं०] १. विष। २ रोग। ३. श्रीकृष्णचंद्र का छोटा भाई।

संज्ञा पु० [अनु०] वह शब्द जो किसी गुलगुली वस्तु पर या गुलगुली वस्तु का आघात लगने से होता है।

गदका†—संज्ञा पु० दे० "गतका"।

गदकारा—वि० पु० [अनु० गद+कारा (प्रत्य०)] [स्त्री० गदकारी] मुलायम और दब जानेवाला। गुलगुला। गुदगुदा।

गदगद*—वि० दे० "गद्गद"।

गदना*—क्रि० स० [सं० गदन] कहना।

गदर—संज्ञा पु० [अ०] १ हलचल। खलबली। उपद्रव। २ बलवा। बगावत।

गदराना—क्रि० अ० [अनु० गद] १ (फल आदि का) पकने पर होना। २ जवानी में अंगों का भरना। ३ आँख में कीचड़ आदि का आना।

क्रि० अ० [हिं० गदा] गँदला होना।

वि० गदराया हुआ।

गदहपचीसी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गदहा+पचीसी] १६ से २५ वर्ष तक की अवस्था जिसमें मनुष्य को अनुभव कम रहता है।

गदहपन—संज्ञा पु० [हिं० गदहा+पन (प्रत्य०)] मूर्खता। बेवकूफी।

गदहपूरना—संज्ञा स्त्री० [सं० गदह=रोग+पुनर्नवा] पुनर्नवा नाम का पौधा।

गदहा—संज्ञा पु० [सं०] रोग हरनेवाला। वैद्य। चिकित्सक।

संज्ञा पु० [सं० गर्दभ] [स्त्री० गदही] १. घोड़े के आकार का, पर उससे कुछ छोटा, एक प्रसिद्ध चौपाया। गधा। गर्दभ।

मुहा०—गदहे पर चढ़ाना = बहुत बेइज्जत या बदनाम करना। गदहे का हल चलना = बिलकुल उजड़ जाना। बरबाद हो जाना। २. मूर्ख। बेवकूफ़। नासमझ।

गदा–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्राचीन अस्त्र जिसमें एक छोटे डंडे के छोर पर भारी लट्टू रहता था।

संज्ञा पुं० [फ़ा०] फ़क़ीर। भिखमंगा। दरिद्र।

गदाई–वि० [फ़ा० गदा = फ़क़ीर + ई (प्र०)] १. तुच्छ। नीच। क्षुद्र। २. वाहियात। रद्दी।

गदाधर–संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु। नारायण।

गदेला–संज्ञा पुं० [हिं० गद्दा] मोटा ओढ़ना या बिछौना। गद्दा।

गदोरी†–संज्ञा स्त्री० [हिं० गद्दी] हथेली की हथेली।

गद्गद–वि० [सं०] १. अत्यधिक हर्ष, प्रेम, श्रद्धा आदि के आवेग से पूर्ण। २. अधिक हर्ष प्रेम आदि के कारण रुका हुआ, अस्पष्ट या असंबद्ध। ३. प्रसन्न।

गद्–संज्ञा पुं० [अनु०] १. मुलायम जगह पर किसी चीज़ के गिरने का शब्द। २. किसी गरिष्ठ या जल्दी न पचनेवाली चीज़ के कारण पेट का भारीपन।

गद्दर–वि० [देश०] १. जो अच्छी तरह पका न हो। अधपका। २. मोटा गद्दा।

गद्दा–संज्ञा पुं० [हिं० गद्द से अनु०] १. रूई, पयाल आदि भरा हुआ बहुत मोटा और गुदगुदा बिछौना। भारी तोशक। गदेला। २. घास, पयाल, रूई आदि मुलायम चीज़ों का बोझ। ३. किसी मुलायम चीज़ की मार।

गद्दी–संज्ञा स्त्री० [हिं० गद्दा का स्त्री० और अल्पा०] १. छोटा गद्दा। २. वह कपड़ा जो घोड़े, ऊँट आदि की पीठ पर ज़ीन आदि रखने के लिये डाला जाता है। ३. व्यवसायी आदि के बैठने का स्थान। ४. किसी बड़े अधिकारी का पद।

मुहा०—गद्दी पर बैठना = १. सिंहासनारूढ़ होना। २. उत्तराधिकारी होना।

५. किसी राजवंश की पीढ़ी या आचार्य्य की शिष्य-परंपरा। ६. हाथ या पैर की हथेली।

गद्दीनशीन–वि० [हिं० गद्दी + फ़ा० नशीन] १. सिंहासनारूढ़। जिसे राज्याधिकार मिला हो। २. उत्तराधिकारी।

गद्य–संज्ञा पुं० [सं०] वह लेख जिसमें मात्रा और वर्ण की संख्या और स्थान आदि का कोई नियम न हो। वार्तिक। वचनिका। पद्य का उलटा।

गधा–संज्ञा पुं० दे० "गदहा"।

गन*–संज्ञा पुं० दे० "गण"।

गनगन–संज्ञा स्त्री० [अनु०] काँपने या रोमांच होने की मुद्रा।

गनगनाना–क्रि० अ० [अनु० गनगन] शीत आदि से रोमांच या कंप होना।

गनगौर–संज्ञा स्त्री० [सं० गण + गौरी] चैत्र शुक्ल तृतीया। इस दिन स्त्रियाँ गणेश और गौरी की पूजा करती हैं।

गनना†–क्रि० स० दे० "गिनना"।

गनाना*–क्रि० स० दे० "गिनाना"।

क्रि० अ० गिना जाना।

गनियारी–संज्ञा स्त्री० [सं० गणिकारी] शमी की तरह का एक पौधा। छोटी अरनी।

ग़नीम–संज्ञा पुं० [अ०] १. लुटेरा। डाकू। २. वैरी। शत्रु।

ग़नीमत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. लूट का माल। २. वह माल जो बिना परिश्रम मिले। मुफ़्त का माल। ३. संतोष की बात।

गन्ना–संज्ञा पुं० [सं० कांड] ईख। ऊख।

गप–संज्ञा स्त्री० [सं० कल्प] [वि० गप्पी] १. इधर उधर की बात, जिसकी सत्यता का निश्चय न हो। २. वह बात जो केवल जी बहलाने के लिये की जाय। बकवाद।

यौ०—गपशप = इधर उधर की बातें।

३. झूठी खबर। मिथ्या संवाद। अफ़वाह। ४. वह झूठी बात जो बड़ाई प्रकट करने के लिये की जाय। डींग।

संज्ञा पुं० [अनु०] १. वह शब्द जो झट से निगलने, किसी नरम अथवा गीली वस्तु में धँसने आदि से होता है।

यौ०—गपागप = जल्दी जल्दी। झटपट।

२ निगलने या खाने की क्रिया। भक्षण।
गपकना–क्रि० स० [अनु० गप + हिं० करना] झटपट निगलना। झट से खा लेना।
गपड़चौथ–संज्ञा स्त्री० [हिं० गपोड़=बात + चौथ] व्यर्थ की गोष्ठी। व्यर्थ की बात।
वि० ऊल-जलूल। अंड-बंड।
गपना*–क्रि० स० [हिं० गप] गप मारना। बकवाद करना। बकना।
गपोड़ा–संज्ञा पु० [हिं० गप] मिथ्या बात। कपोल-कल्पना। गप।
गप्प–संज्ञा स्त्री० दे० "गप"।
गप्पा–संज्ञा पु० [अनु० गप] धोखा। छल।
गप्पी–वि० [हिं० गप] गप मारनेवाला। छोटी बात को बढ़ाकर कहनेवाला।
गफ्फा–संज्ञा पु० [अनु० गप] १ बहुत बड़ा ग्रास। बड़ा कौर। २ लाभ। फायदा।
गफ–वि० [स० ग्रप्स=गुच्छ] घना। ठस। गाढ़ा। घनी बुनावट का।
ग़फ़लत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ असावधानी। बेपरवाई। २ बेखबरी। चेत या सुध का अभाव। ३ भूल। चूक।
गबन–संज्ञा पु० [अ०] किसी दूसरे के सौंपे हुए माल को खा लेना। खयानत।
गबरू–वि० [फा० ख़ूबरू] १ उभड़ती जवानी का। जिसे रेख उठती हो। पट्ठा। २ भोला भाला। सीधा।
†संज्ञा पु० दूल्हा। पति।
गबरून–संज्ञा पु० [फा० गबरून] चारखाने की तरह का एक मोटा कपड़ा।
गब्बर–वि० [स० गर्व, प्रा० गब्ब] १ घमंडी। गर्वीला। अहंकारी। २ जल्दी काम न करने या बात का जल्दी उत्तर न देनेवाला। मट्ठर। मंद। ३ बहुमूल्य। कीमती। ४ मालदार। धनी।
गभस्ति–संज्ञा पु० [स०] १ किरण। २ सूर्य्य। ३ बाँह। हाथ।
संज्ञा स्त्री० अग्नि की स्त्री, स्वाहा।
गभस्तिमान–संज्ञा पु० [स० गभस्तिमत्] १ सूर्य्य। २ एक द्वीप। ३ एक पाताल।
गभीर*–वि० दे० "गंभीर"।
गभुआर–वि० [स० गर्भ + आर (प्रत्य०)] १ गर्भ का (बाल)। जन्म के समय का रखा हुआ (बाल)। २ जिसके सिर के जन्म के बाल न कटे हों। जिसका मुंडन न हुआ हो। ३ नादान। अनजान।
गम–संज्ञा स्त्री० [स० गम्य] (किसी वस्तु या विषय में) प्रवेश। पहुँच। गुजर।
ग़म–संज्ञा पु० [अ०] १ दुःख। शोक। मुहा०—ग़म खाना=क्षमा करना। ध्यान न देना। जाने देना। २ चिंता। फ़िक्र। ध्यान।
गमक–संज्ञा पु० [स०] १ जानेवाला। २ बोधक। सूचक। बतलानेवाला।
संज्ञा स्त्री० १ संगीत में एक श्रुति या स्वर पर से दूसरी श्रुति या स्वर पर जाने का एक ढंग। २ तबले की गंभीर आवाज़। ३ सुगंध।
गमकना–क्रि० अ० [हिं० गमक] महकना।
ग़मख़ोर–वि० [फा० ग़मख़्वार] [संज्ञा ग़मख़ोरी] सहिष्णु। सहनशील।
गमन–संज्ञा पु० [स०] [वि० गम्य] १ जाना। चलना। यात्रा करना। २ संभोग। जैसे—वेश्यागमन। ३ राह। रास्ता।
गमना*–क्रि० अ० [स० गमन] जाना। चलना।
*क्रि० अ० [अ० ग़म] १ सोच करना। रंज करना। २ ध्यान देना।
गमला–संज्ञा पु० [?] १ फूलों के पेड़ और पौधे लगाने का बरतन। २ कमोड। पाखाना फिरने का बरतन।
गमाना*–क्रि० स० दे० "गँवाना"।
ग़मी–संज्ञा स्त्री० [अ० ग़म] १ शोक की अवस्था या काल। २ वह शोक जो किसी मनुष्य के मरने पर उसके संबंधी करते हैं। सोग। ३ मृत्यु। मरनी।
गम्य–वि० [स०] १ जाने योग्य। गमन योग्य। २ प्राप्य। लभ्य। ३ संभोग करने योग्य। भोग्य। ४ साध्य।
गयंद*–संज्ञा पु० [स० गजेन्द्र] बड़ा हाथी।
गय–संज्ञा पु० [स०] १ घर। मकान।

२. अंतरिक्ष। आकाश। ३. धन। ४. प्राण। ५. पुत्र। अपत्य। ६. एक असुर। ७. गया नामक तीर्थ।
*संज्ञा पुं० [सं० गज] हाथी।
गयनाल–संज्ञा स्त्री० दे० "गजनाल"।
गयशिर–संज्ञा पुं० [सं०] १. अंतरिक्ष। आकाश। २. गया के पास का एक पर्वत।
गया–संज्ञा पुं० [सं०] १. बिहार या मगध का एक तीर्थ जहाँ हिंदू पिंडदान करते हैं। २. गया में होनेवाला पिंडदान।
क्रि० अ० [सं० गम] 'जाना' क्रिया का भूतकालिक रूप। प्रस्थानित हुआ।
मुहा०—गया गुजरा या गया बीता = बुरी दशा को पहुँचा हुआ। नष्ट। निकृष्ट।
गयावाल–संज्ञा पुं० [हिं० गया + वाल] गया तीर्थ का पंडा।
गर–संज्ञा पुं० [सं०] १. रोग। बीमारी। २. विष। जहर। ३. वत्सनाभ। बछनाग।
*† संज्ञा पुं० [हिं० गल] गला। गरदन।
प्रत्य० [फ़ा०] (किसी काम को) बनाने या करनेवाला। जैसे—बाजीगर, कलईगर।
गरक–वि० [अ० गर्क] १. डूबा हुआ। निमग्न। २. विलुप्त। नष्ट। बरबाद।
गरकाब–वि० [फ़ा०] पानी में डूबा हुआ।
गरकी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. डूबने की क्रिया या भाव। डूबना। २. बूड़ा। अनि-वृष्टि। बाढ़। ३. वह भूमि जो पानी के नीचे हो। ४. नीची भूमि। खलार।
गरगज–संज्ञा पुं० [हिं० गढ़ + गज] १. किले की दीवारों पर बना हुआ बुर्ज जिस पर तोपें रहती हैं। २. वह ढूह या टीला जहाँ से शत्रु की सेना का पता लगाया जाता है। ३. तख्तों से बनी हुई नाव की छत। ४. फाँसी की टिकठी।
वि० बहुत बड़ा। विशाल।
गरगरा–संज्ञा पुं० [अनु०] गराड़ी। घिरनी।
गरगाव–वि० दे० "गरकाब"।
गरज–संज्ञा स्त्री० [सं० गर्जन] १. बहुत गंभीर शब्द। २. बादल या सिंह का शब्द।
गरज–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. आशय। प्रयो-जन। मतलब। २. आवश्यकता। जरू-रत। ३. चाह। इच्छा।
अव्य० १. निदान। आखिरकार। अंततो-गत्वा। २. मतलब यह कि। सारांश यह कि।
गरजना–क्रि० अ० [सं० गर्जन] १. बहुत गंभीर और तुमुल शब्द करना। जैसे—बादल का गरजना। २. मोती का चट-कना। तड़कना। फूटना।
वि० गरजनेवाला।
गरजमंद–वि० [फ़ा०] [संज्ञा गरजमंदी] १. जिसे आवश्यकता हो। जरूरतवाला। २. इच्छुक। चाहनेवाला।
गरजी–वि० दे० "गरजमंद"।
गरजू†–वि० दे० "गरजमंद"।
गरट्ट–संज्ञा पुं० [सं० ग्रथ] समूह। झुंड।
गरद–संज्ञा स्त्री० दे० "गर्द"।
गरदन–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. धड़ और सिर को जोड़नेवाला अंग। ग्रीवा।
मुहा०—गरदन उठाना = विरोध करना। विद्रोह करना। गरदन काटना = १. धड़ से सिर अलग करना। मार डालना। २. बुराई करना। हानि पहुँचाना। गरदन पर = ऊपर। जिम्मे। (पाप के लिये) गरदन मारना = सिर काटना। मार डालना। गरदन में हाथ देना या डालना = गरदन पकड़कर निकाल बाहर करना। गरदनियाँ देना।
२. बरतन आदि का ऊपरी भाग।
गरदना†–संज्ञा पुं० [हिं० गरदन] १. मोटी गरदन। २. वह धौल जो गरदन पर लगे।
गरदनियाँ–संज्ञा स्त्री० [हिं० गरदन + इयाँ (प्रत्य०)] (किसी को किसी स्थान से) गरदन पकड़कर निकालने की क्रिया।
गरदा–संज्ञा पुं० [फ़ा० गर्द] धूल। गुबार। मिट्टी। खाक। गर्द।
गरदान–वि० [फ़ा०] घूम फिरकर एक ही स्थान पर आनेवाला।
संज्ञा पुं० १. शब्दों का रूप-साधन। २. वह कबूतर जो घूम फिरकर सदा अपने स्थान पर आता हो।

गरदानना–क्रि० स० [फा० गरदान] १ शब्दों का रूप साधना। २ बार बार कहना। उद्धरणी करना। ३ गिनना। समझना। मानना।

गरना*†–क्रि० अ० १ दे० "गलना"। २ दे० "गढ़ना"। क्रि० अ० [स० गरण] निचुडना।

गरनाल–सज्ञा स्त्री०[हिं० गर+नली] बहुत चौडे मुँह की तोप। घननाल। घननाद।

गरब*†–सज्ञा पु० [स० गर्व] १ दे० "गर्व"। २ हाथी का मद।

गरब-गहेला–वि० [हिं० गर्व+गहना] जिसने गर्व धारण किया हो। गर्वीला।

गरबना, गरबाना*†–क्रि० अ० [स० गर्व] घमड मे आना। अभिमान करना।

गरबीला–वि० [स० गर्व] जिसे गर्व हो। घमडी। अभिमानी।

गरभ–सज्ञा पु० दे० "गर्भ"।

गरभाना–क्रि० अ० [हिं० गर्भ] १ गर्भिणी होना। गर्भ से होना। २ धान, गहूँ आदि के पौधों मे बाल लगना।

गरम–वि० [फा० गर्म] १ जलता हुआ। तप्त। तत्ता। उष्ण।

यौ०—गरमागरम=तत्ता। उष्ण।

२ तीक्ष्ण। उग्र। खरा।

मुहा०—मिज़ाज गरम होना=१ क्रोध आना। २ पागल होना। गरम होना=आवेश मे आना। क्रुद्ध होना।

३ तेज़। प्रबल। प्रचड। जोर शोर का। ४ जिसके व्यवहार या सेवन से गरमी बढ़े।

यौ०—गरम कपडा=शरीर गरम रखनेवाला कपड़ा। ऊनी कपडा। गरम मसाला=धनियाँ, लौंग, बडी इलायची, जीरा, मिर्च इत्यादि मसाले। ५ उत्साहपूर्ण। जोश से भरा हुआ।

गरमागरमी–सज्ञा स्त्री० [हिं०गरमा+गरम] १ मुस्तैदी। जोश। २ कहा-सुनी।

गरमाना–क्रि० अ० [हिं० गरम] १ गरम पडना। उष्ण होना। २ उमग पर आना। मस्ताना। ३ आवेश में आना। क्रोध करना। झल्लाना। ४ कुछ देर लगातार १ दौडने या परिश्रम करने पर घोडे आदि पशुओं का तेज़ी पर आना। †क्रि० स० गरम करना। तपाना। औटाना।

गरमाहट–सज्ञा स्त्री० [हिं० गरम] गरमी।

गरमी–सज्ञा स्त्री० [फा०] १ उष्णता। ताप जलन। २ तेज़ी। उग्रता। प्रचडता।

मुहा०—गरमी निकालना=गर्व दूर करना।

३ आवेश। क्रोध। गुस्सा। ४ उमग। जोश। ५ ग्रीष्म ऋतु। कडी धूप के दिन। ६ एक रोग जो प्राय दुष्ट मैथुन से उत्पन्न होता है। आतशक। फिरग रोग।

गररा*–सज्ञा पु० दे० 'गर्रा'।

गरराना–क्रि० अ० [अनु०] भीषण ध्वनि करना। गभीर गरजना।

गरल–सज्ञा पु० [स०] १ विष। जहर। २ साँप का जहर।

गरहन*†–सज्ञा पु० दे० 'ग्रहण'।

गराँव–सज्ञा पु० [हिं० गर=गला] दोहरी रस्सी जो चौपायों के गले मे बाँधी जाती है।

गरा†–सज्ञा पु० दे० "गला"।

गराज*–सज्ञा स्त्री० [स० गर्जन] गरज।

गराडी–सज्ञा स्त्री० [अनु० गडगड या स० कुडली] काठ या लोहे का गोल चक्कर जिसके गड्ढे मे रस्सी डालकर कुएँ से घडा या पखा आदि खींचते हैं। चरखी। सज्ञा स्त्री० [सं० गड=चिह्न] रगड आदि से पडी हुई गहरी लकीर। सॉट।

गराना*–क्रि० स० दे० "गलाना"। क्रि० स० [हिं० गारना] १ गारने का काम कराना। २ गारना।

गरारा–वि० [स०गर्व+आर (प्रत्य०)] १ गर्वयुक्त। २ प्रबल। प्रचड। बलवान्। सज्ञा पु० [अ० गरगरा] १ कुल्ली। २ कुल्ली करने की दवा। सज्ञा पु० [हिं० घेरा] १ पायजामे की ढीली मोहरी। २ बहुत बडा थैला।

गरास*–सज्ञा पु० दे० "ग्रास"।

गरासना*–क्रि० स० दे० "ग्रसना"।

गरिमा–सज्ञा स्त्री०[स०गरिमन्] १ गुरुत्व। भारीपन। बोझ। २ महिमा। महत्त्व।

गौरव । ३. गर्व। अहंकार । घमंड। ४. आत्मश्लाघा। शेखी। ५. आठ सिद्धियों में से एक सिद्धि जिससे साधक अपना बोझ चाहे जितना भारी कर सकता है।

गरियाना†–क्रि० अ० [हि० गारी + आना (प्रत्य०)] गाली देना।

गरियार–वि० [हि० गड़ना = एक जगह रुक जाना] सुस्त। बोदा। मट्ठर। (चौपाया)

गरिष्ठ–वि० [सं०] १. अति गुरु। अत्यंत भारी। २. जो जल्दी न पचे।

गरी–संज्ञा स्त्री० [सं० गुलिका] १. नारियल के फल के भीतर का मुलायम खाने योग्य गोला। २. बीज के अंदर की गूदी। गिरी। मींगी।

ग़रीब–वि० [अ० गरीब] १. नम्र। दीन। हीन। २. दरिद्र। निर्धन। कंगाल।

ग़रीबनिवाज–वि० [फा० ग़रीब + निवाज] दीनों पर दया करनेवाला। दयालु।

ग़रीबपरवर–वि० [फा०] ग़रीबों को पालने-वाला। दीन-प्रतिपालक।

ग़रीबी–संज्ञा स्त्री० [अ० गरीब] १. दीनता। अधीनता। नम्रता। २. दरिद्रता। निर्धनता। कंगाली। मुहताजी।

गरीयस–वि० [सं०] [स्त्री० गरीयसी] १. बड़ा भारी। गुरु। २. महान्। प्रबल।

गरु, गरुआ*†–वि० [सं० गुरु] [स्त्री० गरुई] १. भारी। वजनी। २. गौरवशाली।

गरुआई–संज्ञा स्त्री० [हि० गरुआ] गुरुता।

गरुड़–संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु के वाहन जो पक्षियों के राजा माने जाते हैं। २. बहुतों के मत से उकाब पक्षी। †३. एक सफेद रंग का बड़ा जल-पक्षी। पेंड़वा ढेक। ४. सेना की एक प्रकार की व्यूह-रचना। ५. छप्पय छंद का एक भेद।

गरुड़गामी–संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु। २. श्रीकृष्ण।

गरुड़ध्वज–संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

गरुड़पुराण–संज्ञा पुं० [सं०] अठारह पुराणों में से एक।

गरुड़रुत–संज्ञा पुं० [सं०] सोलह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

गरुड़व्यूह–संज्ञा पुं० [सं०] रणस्थल में सेना के जमाव या स्थापन का एक प्रकार।

गरुवाई*†–संज्ञा स्त्री० दे० "गरुआई"।

गरू–वि० [सं० गुरु] भारी। वजनी।

ग़रूर–संज्ञा पुं० [अ०] घमंड। अभिमान।

ग़रूरी†–वि० [अ० गुरूरी] घमंडी। संज्ञा स्त्री० अभिमान। घमंड।

गरेबान–संज्ञा पुं० [फा०] अंगे, कुरते आदि में गले पर का भाग।

गरेरना–क्रि० स० [हि० घेरना] घेरना।

गरैयाँ–संज्ञा स्त्री० [हि० गला] गराँव।

गरोह–संज्ञा पुं० [फा०] झुंड। जत्था।

गर्ग–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक वैदिक ऋषि। २. बैल। साँड़। ३. एक पर्वत का नाम।

गर्ज–संज्ञा स्त्री० दे० "गरज"।

गर्जन–संज्ञा पुं० [सं०] भीषण ध्वनि। गरजना। गरज। गंभीर नाद।

यौ०—गर्जन-तर्जन १. तड़प। २. डाँट-डपट।

गर्जना–क्रि० अ० दे० "गरजना"।

गर्त्त–संज्ञा पुं० [सं०] १. गड्ढा। गड़हा। २. दरार। ३. घर। ४. रथ।

गर्द–संज्ञा स्त्री० [फा०] धूल। राख।

यौ०—गर्द गुबार = धूल-मिट्टी।

गर्दखोर*, गर्दखोरा–वि० [फा० गर्दखोर] जो गर्द या मिट्टी आदि पड़ने से जल्दी मैला या खराब न हो। संज्ञा पुं० पाँव पोंछने का टाट या कपड़ा।

गर्दभ–संज्ञा पुं० [सं०] गधा। गदहा।

गर्दिश–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. घुमाव। चक्कर। २. विपत्ति। आपत्ति।

गर्भ–संज्ञा पुं० [सं०] १. पेट के अंदर का बच्चा। हमल।

मुहा०—गर्भ गिरना = पेट के बच्चे का पूरी बाढ़ के पहले ही निकल जाना। गर्भपात।

२. स्त्री के पेट के अंदर का वह स्थान जिसमें बच्चा रहता है। गर्भाशय।

गर्भकेसर–संज्ञा पुं० [सं०] फूलों में वे पतले सूत जो गर्भनाल के अंदर होते हैं।

गर्भगृह–संज्ञा पुं० [सं०] १. मकान के

दीप की। कोठरी। मध्य का घर। २. घर का मध्य भाग। आँगन। ३ मंदिर में वह कोठरी जिसमें प्रतिमा रखी रहती है।

गर्भनाल–संज्ञा स्त्री० [सं०] फूलों के अंदर की वह पतली नाल जिसके सिरे पर गर्भ-केसर होता है।

गर्भपात–संज्ञा पु० [सं०] पेट में से बच्चे का पूरी बाढ़ के पहले निकल आना।

गर्भवती–वि० स्त्री० [सं०] जिसके पेट में बच्चा हो। गर्भिणी। गुर्विणी।

गर्भसंधि–संज्ञा स्त्री० [सं०] नाटक में पाँच प्रकार की संधियों में से एक।

गर्भस्थ–वि० [सं०] जो गर्भ में हो।

गर्भस्राव–संज्ञा पु० [सं०] चार महीने के अंदर का गर्भपात।

गर्भांक–संज्ञा पु० [सं०] १. नाटक के भीतर किसी नाटक का दृश्य। २ नाटक के अंक का एक भाग या दृश्य।

गर्भाधान–संज्ञा पु० [सं०] १. मनुष्य के सोलह संस्कारों में से पहला संस्कार जो गर्भ में आने के समय ही होता है। २. गर्भ की स्थिति। गर्भ-धारण।

गर्भाशय–संज्ञा पु० [सं०] स्त्रियों के पेट में वह स्थान जिसमें बच्चा रहता है।

गर्भिणी–वि० स्त्री० [सं०] जिसे गर्भ हो। गर्भवती। पेटवाली।

गर्भित–वि० [सं०] १. गर्भयुक्त। २ भरा हुआ। पूर्ण।

गर्रा–वि० [सं० गरहाधिक] लाख के रंग का। संज्ञा पु० १ लाही रंग। २. घोड़े का एक रंग जिसमें लाही बालों के साथ कुछ सफेद बाल मिले होते हैं। ३. इस रंग का घोड़ा। ४. लाही रंग का कबूतर।

गर्व–संज्ञा पु० [सं०] अहंकार। घमंड।

गर्वाना*–क्रि० अ० [सं० गर्व] गर्व करना।

गर्विता–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जिसे अपने रूप, गुण या पति के प्रेम का घमंड हो।

गर्वी–वि० [सं० गर्विन्] घमंडी। अहंकारी।

गर्वीला–वि० [सं० गर्व+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० गर्वीली] घमंड से भरा हुआ। अभिमान-युक्त। घमंडी।

गर्हण–संज्ञा पु० [सं०] निंदा। शिकायत।

गर्हित–वि० [सं०] जिसकी निंदा की जाय। निंदित। दूषित। बुरा।

गर्ह्य–वि० [सं०] गर्हणीय।

गल–संज्ञा पु० [सं०] गला। कंठ।

गलकंबल–संज्ञा पु० [सं०] गाय के गले के नीचे का वह भाग जो लटकता रहता है। झालर। लहर।

गलका–संज्ञा पु० [हिं० गलना] १ एक प्रकार का फोड़ा जो हाथ की उँगलियों में होता है। २ एक प्रकार का कोड़ा या चाबुक।

गलगज–संज्ञा पु० [हिं० गाल+गाजना] शोर-गुल। हल्ला। कोलाहल।

गलगर्जना–क्रि० अ० [हिं० गलगज] शोर करना। हल्ला करना।

गलगंड–संज्ञा पु० [सं०] एक रोग जिसमें गला सूजकर लटक आता है। घेघा।

गलगल–संज्ञा स्त्री० [देश०] १. मैना की जाति की एक चिड़िया। सिरगोटी। गलगलिया। २. एक प्रकार का बड़ा नीबू।

गलगाजना–क्रि० अ० [हिं० गाल+गाजना] गाल बजाना। बढ़बढ़कर बातें करना।

गलगुथना–वि० [हिं० गाल] जिसका बदन खूब भरा और गाल फूले हों। मोटा।

गलग्रह–संज्ञा पु० [सं०] १ मछली का काँटा। २ वह आपत्ति जो कठिनता से टले।

गलछट–संज्ञा स्त्री० दे० "गलफड़ा"।

गलजँदड़ा–संज्ञा पु० [सं० गल+यंत्र, प० जंदरा] १ वह जो कभी पिंड न छोड़े। गले का हार। २ कपड़े की पट्टी जो गले में चोट लगे हुए हाथ को सहारा देने के लिये बाँधी जाती है।

गलझप–संज्ञा पु० [हिं० गला+झाँपना] हाथी के गले में पहनाने की लोहे की झूल या जंजीर।

गलत–वि० [अ०] [संज्ञा स्त्री० गलती] १. अशुद्ध। भ्रममूलक। २ असत्य। मिथ्या। झूठ।

गलतकिया–संज्ञा पुं० [हिं० गाल + तकिया] छोटा, गोल और मुलायम तकिया जो गालों के नीचे रखा जाता है।
गलत-फ़हमी–संज्ञा स्त्री० [अ०] किसी बात को और का और समझना। भ्रम।
गलती–संज्ञा स्त्री० [अ० ग़लत + ई] १. भूल। चूक। धोखा। २. अशुद्धि। भूल।
गलथना–संज्ञा पुं० [सं० गलस्तन] वे थैलियाँ जो कुछ बकरियों की गरदन में दोनों ओर लटकती रहती हैं।
गलथैली–संज्ञा स्त्री० [हिं० गाल + थैली] बंदरों के गाल के नीचे की थैली, जिसमें वे खाने की वस्तु भर लेते हैं।
गलन–संज्ञा पुं० [सं०] १. गिरना। पतन। २. गलना।
गलना–क्रि० अ० [सं० गरण] १. किसी पदार्थ के घनत्व का कम या नष्ट होना। विकृत होकर द्रव या कोमल होना। २. बहुत जीर्ण होना। ३. शरीर का दुर्बल होना। बदन सूखना। ४. बहुत अधिक सरदी के कारण हाथ पैर का ठिठुरना। ५. वृथा या निष्फल होना। बेकाम होना।
गलफड़ा–संज्ञा पुं० [हिं० गाल + फटना] १. जल-जंतुओं का वह अवयव जिससे वे पानी में साँस लेते हैं। २. गाल का चमड़ा।
गलफाँसी–संज्ञा स्त्री० [हिं० गला + फाँसी] १. गले की फाँसी। २. कष्टदायक वस्तु या कार्य्य। जंजाल।
गलबाँही–संज्ञा स्त्री० [हिं० गला + बाँह] गले में बाँह डालना। कंठालिंगन।
गलमुंदरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० गाल + सं० मुद्रा] १. शिवजी के पूजन के समय गाल बजाने की मुद्रा। गलमुद्रा। २. गाल बजाना।
गलमुच्छा–संज्ञा पुं० [हिं० गाल + हिं० मूछ] गालों पर के बढ़ाए हुए बाल। गलगुच्छा।
गलमुद्रा–संज्ञा स्त्री० [सं० गल + मुद्रा] गलमुंदरी।
गलवाना–क्रि० स० [हिं० 'गलना' का प्रे० रूप] गलाने का काम दूसरे से कराना।
गलशुंडी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जीभ के आकार का मांस का छोटा टुकड़ा जो जीभ की जड़ के पास होता है। छोटी ज़बान या जीभ। जीभी। कौआ। २. एक रोग जिसमें तालू की जड़ सूज जाती है।
गलसुआ–संज्ञा पुं० [हिं० गाल + सूजना] एक रोग जिसमें गाल के नीचे का भाग सूज आता है।
गलसुई–संज्ञा स्त्री० दे० "गलतकिया"।
गलस्तन–संज्ञा पुं० [सं०] गलथना।
गला–संज्ञा पुं० [सं० गल] १. शरीर का वह अवयव जो सिर को धड़ से जोड़ता है। गरदन। कंठ। २. गले की नाली जिसमें शब्द निकलता और आहार भीतर जाता है।
मुहा०—गला काटना = १. धड़ से सिर जुदा करना। २. बहुत हानि पहुँचाना। ३. सूरन, बंडे आदि का गले के अंदर एक प्रकार की जलन और चुनचुनाहट उत्पन्न करना। कनकनाना। गला घुटना = दम रुकना। अच्छी तरह साँस न लिया जाना। गला घोंटना = १. गले को ऐसा दबाना कि साँस रुक जाय। टेटुआ दबाना। २. ज़बरदस्ती करना। जब्र करना। ३. मार डालना। गला दबाकर मार डालना। गला छूटना = पीछा छूटना। छुटकारा मिलना। गला दबाना = अनुचित दबाव डालना। गला फाड़ना = इतना चिल्लाना कि गला दुखने लगे। गला रेतना दे० "गला काटना"। गले का हार = १. इतना प्यारा (व्यक्ति या वस्तु) कि पास से कभी जुदा न किया जाय। अत्यंत प्रिय। चिर सहचर। २. पीछा न छोड़नेवाला। (बात) गले के नीचे उतरना या गले उतरना = (बात) मन में बैठना। जी में जँचना। ध्यान में आना। गले पड़ना = इच्छा के विरुद्ध प्राप्त होना। न चाहने पर भी मिलना। (दूसरे के) गले बाँधना या मढ़ना = दूसरे की इच्छा के विरुद्ध उसे देना। ज़बरदस्ती देना। गले लगाना = १. भेंटना। मिलना। आलिंगन करना। २. दूसरे की इच्छा के विरुद्ध उसे देना। ३. गले का स्वर। कंठस्वर। ४. अँगरखे, कुरते आदि की काट में गले पर का भाग।

गरेवान। ५ बरतन के मुँह के नीचे का पतला भाग। ६ चिमनी का गल्ला।

गलाना–क्रि० स० [हिं० गलना का सकर्मक रूप] १. किसी वस्तु के संयोजक अणुओं को पृथक् पृथक् करके उसे नरम, गीला या द्रव करना। नरम या मुलायम करना। पुलपुला करना। २ धीरे धीरे लुप्त करना। ३. (रुपया) खर्च कराना।

गलानि*–संज्ञा स्त्री० दे० "ग्लानि"।

गलित–वि० [सं०] १. गिरा हुआ। २. अधिक दिन का होने के कारण नरम पडा हुआ। ३. गला हुआ। ४. पुराना पडा हुआ। जीर्ण-शीर्ण। खंडित। ५ चुआ हुआ। च्युत। ६ नष्ट-भ्रष्ट। ७ परिपक्व।

गलित कुष्ठ–संज्ञा पु० [सं०] वह कोढ जिसमें अंग गल गलकर गिरने लगते हैं।

गलितयौवना–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसका यौवन ढल गया हो।

गली–संज्ञा स्त्री० [सं० गल] १ घरों की पंक्तियों के बीच से होकर गया हुआ तंग रास्ता। खोरी। कूचा।

मुहा०—गली गली मारे मारे फिरना = १ इधर-उधर व्यर्थ घूमना। २ जीविका के लिये इधर से उधर भटकना। ३ चारों ओर अधिकता से मिलना। सब जगह दिखाई पडना। २. महल्ला। महाल।

गलीचा–संज्ञा पु० [फा० गालीच.] एक प्रकार का खूब मोटा बुना हुआ बिछौना जिसपर रंग बिरंग के बेल-बूटे बने रहते हैं। कालीन।

गलीज–वि० [अ०] १ गँदला। मैला। २. नापाक। अशुद्ध। अपवित्र। संज्ञा पु० १ कूडा-करकट। गंदी वस्तु। मैला। गंदगी। २ पाखाना। मल।

गलीत*–[अ० गलीज] मैला कुचैला।

गलेबाज–वि० [हिं० गला+बाज] जिसका गला अच्छा हो। अच्छा गानेवाला।

गल्प–संज्ञा स्त्री० [सं० जल्प या कल्प] १. मिथ्या प्रलाप। गप्प। २. डींग। शेखी। ३. छोटी कहानी।

गल्ला–संज्ञा पु० [अ० गुल] शोर। हौरा। संज्ञा पु० [फा० गल्ला] झुंड। दल। (चौपायों के लिये)

गल्ला–संज्ञा पु० [अ०] [वि० गल्लई] १. फल, फूल आदि की उपज। फसल। पैदावार। २. अन्न। अनाज। ३ वह धन जो दूकान पर नित्य की बिक्री से मिलता है। गोलक।

गवँ–संज्ञा स्त्री० [सं० गम] १. प्रयोजनसिद्ध होने का अवसर। घात। २. मतलब।

मुहा०—गवँ से = १. घात देखकर। मौक़ा तजवीज कर। २ धीरे से। चुपचाप।

गवन*†–संज्ञा पु० [सं० गमन] १ प्रस्थान। प्रयाण। चलना। जाना। २ वधू का पहले पहल पति के घर जाना। गौना।

गवनचार–संज्ञा पु० [हिं० गवन+चार] वर के घर वधू के जाने की रस्म।

गवनना*–क्रि० अ० [सं० गमन] जाना।

गवना–संज्ञा पु० दे० "गौना"।

गवय–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० गवयी] १. नीलगाय। २. एक छंद।

गवाक्ष–संज्ञा पु० [सं०] छोटी खिडकी। गोखा। झरोखा।

गवाख*–संज्ञा पु० दे० "गवाक्ष"।

गवामयन–संज्ञा पु० [सं०] एक यज्ञ।

गवारा–वि० [फा०] १ मनभाता। अनुकूल। पसंद। २ सह्य। अंगीकार करने के योग्य।

गवाह–संज्ञा पु० [फा०] [संज्ञा गवाही] १. वह मनुष्य जिसने किसी घटना को साक्षात् देखा हो। २ वह जो किसी मामले के विषय में जानकारी रखता हो। साक्षी।

गवाही–संज्ञा स्त्री० [फा०] किसी घटना के विषय में ऐसे मनुष्य का कथन जिसने वह घटना देखी हो या जो उसके विषय में जानता हो। साक्षी का प्रमाण। साक्ष्य।

गवेजा–संज्ञा पु० [हिं० गप, गव] गप। बातचीत।

गवेधु, गवेधुक–संज्ञा पु० [सं०] कसेई। कौडिल्ला।

गवेल†–वि० [हिं० गाँव] देहाती।
गवेषणा–संज्ञा स्त्री० [सं०] खोज। अन्वेषण।
गवेषी–वि० [सं० गवेषिन्] [स्त्री० गवेषिणी] खोजनेवाला। ढूँढ़नेवाला।
गवैया–वि० [पु० हिं० गायब = गाना] गानेवाला। गायक।
गवैंहा–वि० [हिं० गाँव + ऐंहा (प्रत्य०)] गाँव का रहनेवाला। ग्रामीण। देहाती।
गव्य–वि० [सं०] गो से उत्पन्न। जो गाय से प्राप्त हो। जैसे—दूध, दही, घी।
संज्ञा पुं० १. गायों का झुंड। २. पंचगव्य।
ग़श–संज्ञा पुं० [अ० गशी से फ़ा०] मूर्च्छा। बेहोशी। असंज्ञा। ताँवर।
मुहा०—ग़श खाना = बेहोश होना।
गश्त–संज्ञा पुं० [फ़ा०] [वि० गश्ती] १. टहलना। घूमना। फिरना। भ्रमण। दौरा। चक्कर। २. पहरे के लिये किसी स्थान के चारों ओर या गली कूचों आदि में घूमना। रौंद। गिरदावरी। दौरा।
गश्ती–वि० [फ़ा०] घूमनेवाला। फिरनेवाला। चलता।
संज्ञा स्त्री० व्यभिचारिणी। कुलटा।
गसीला–वि० [हिं० गसना] [स्त्री० गसीली] १. जकड़ा हुआ। गठा हुआ। एक दूसरे से खूब मिला हुआ। गुथा हुआ। २. (कपड़ा आदि) जिसके सूत परस्पर खूब मिले हों। गफ़।
गस्सा–संज्ञा पुं० [सं० ग्रास] ग्रास। कौर।
गह–संज्ञा स्त्री० [सं० ग्रह] १. पकड़। पकड़ने की क्रिया या भाव। २. हथियार आदि थामने की जगह। मूठ। दस्ता।
मुहा०—गह बैठना = मूठ पर हाथ भरपूर जमना।
गहकना–क्रि० अ० [सं० गद्गद] १. चाह से भरना। लालसा से पूर्ण होना। ललकना। लहकना। २. उमंग से भरना।
गहगड्ड–वि० [सं० गह = गहरा + गड्ड = गड्ढा] गहरा। भारी। घोर। (नशे के लिये)
गहगह*–वि० [सं० गद्गद] प्रफुल्लित। प्रसन्नतापूर्ण। उमंग से भरा हुआ।
क्रि० वि० धमाधम। धूम के साथ। (बाजे के लिये)
गहगहा–वि० [सं० गद्गद] १. उमंग और आनंद से भरा हुआ। प्रफुल्लित। २. धमाधम। धूमधामवाला।
गहगहाना–क्रि० अ० [हिं० गहगहा] १. आनंद से फूलना। बहुत प्रसन्न होना। २. पौधों का लहलहाना।
गहगहे–क्रि० वि० [हिं० गहगहा] १. बड़ी प्रफुल्लता के साथ। २. धूम के साथ।
गहड़ोरना–क्रि० स० [देश०] पानी को मथकर या हिला-डुलाकर गँदला करना।
गहन–वि० [सं०] १. गंभीर। गहरा। अथाह। २. दुर्गम। घना। दुर्भेद्य। ३. कठिन। दुरूह। ४. निविड़। घना।
संज्ञा पुं० १. गहराई। थाह। २. दुर्गम स्थान। ३. वन या कानन में गुप्त स्थान।
†संज्ञा पुं० [सं० ग्रहण] १. ग्रहण। २. कलंक। दोष। ३. दुःख। कष्ट। विपत्ति। ४. बंधक। रेहन।
संज्ञा स्त्री० [हिं० गहना = पकड़ना] १. पकड़ने का भाव। पकड़। २. हठ। ज़िद।
गहना–संज्ञा पुं० [सं० ग्रहण = धारण करना] १. आभूषण। ज़ेवर। २. रेहन। बंधक।
क्रि० स० [सं० ग्रहण] पकड़ना। धरना।
गहनि*–संज्ञा स्त्री० [सं० ग्रहण] १. टेक। अड़। ज़िद। हठ। २. पकड़।
गहबर*†–वि० [सं० गह्वर] १. दुर्गम। विषम। २. व्याकुल। उद्विग्न। ३. आवेग से भरा हुआ। मनोवेग से आकुल।
गहबरना–क्रि० अ० [हिं० गहबर] १. आवेग से भरना। मनोवेग से आकुल होना। २. घबराना। उद्विग्न होना।
गहर–संज्ञा स्त्री० [?] देर। विलंब।
संज्ञा पुं० [सं० गह्वर] दुर्गम। गूढ़।
गहरना–क्रि० अ० [हिं० गहर = देर] देर लगाना। विलंब करना।
क्रि० अ० [सं० गह्वर] १. झगड़ना। उलझना। २. कुढ़ना। नाराज होना।
गहरवार–संज्ञा पुं० [गहिरदेव = एक राजा]

एक क्षत्रिय वंश।

गहरा–वि० [सं० गभीर] [स्त्री० गहरी] १ (पानी) जिसकी थाह बहुत नीचे हो। गंभीर। निम्न। अनन्तस्पर्श।

मुहा०—गहरा पेट = ऐसा पेट जिसमें सब बात पच जायँ। ऐसा हृदय जिसका भेद न मिले। २ जिसका विस्तार नीचे की ओर अधिक हो। ३ बहुत अधिक। ज्यादा। घोर।

मुहा०—गहरा असामी = १ भारी आदमी। २ बड़ा आदमी। गहरे लोग = चतुर लोग। भारी उस्ताद। घोर धूर्त्त। गहरा हाथ = हथियार का भरपूर वार जिससे खूब चोट लगे। ४ दृढ़। मजबूत। भारी। कठिन। ५ जो हलका या पतला न हो। गाढ़ा।

मुहा०—गहरी घुटना या छनना = १ खूब गाढ़ी भंग घुटना या पिसना। २ गाढ़ी मित्रता होना। बहुत अधिक हेल मेल होना।

गहराई–संज्ञा स्त्री० [हिं० गहरा + ई (प्रत्य०)] गहरा का भाव। गहरापन।

गहराना†–क्रि० अ० [हिं० गहरा] गहरा होना।

क्रि० स० [हिं० गहरा] गहरा करना।

क्रि० अ० दे० "गहरना"।

गहराव†–संज्ञा पु० [हिं० गहरा] गहराई।

गहरु*–संज्ञा स्त्री० दे० "गहर"।

गहलौत–संज्ञा पु० [?] राजपूताने के क्षत्रियों का एक वंश।

गहवाना–क्रि० स० [हिं० गहना का प्रे०] पकड़ने का काम कराना। पकड़ाना।

गहवारा–संज्ञा पु० [हिं० गहना] पालना। झूला। हिंडोला।

गहाई*†–संज्ञा स्त्री० [हिं० गहना] गहने का भाव। पकड़।

गहागड्ड–वि० दे० "गहगड्ड"।

गहाना–क्रि० स० [हिं० गहना का प्रे०] धराना। पकड़ाना।

गहीला–वि० [हिं० गहला] [स्त्री० गहीली] १ गर्वयुक्त। घमंडी। २ पागल।

गहेजुआ†–संज्ञा पु० [देश०] छछूँदर।

गहेला–वि० [हिं० गहना = पकड़ना + एला (प्रत्य०)] [स्त्री० गहेली] १ हठी। जिद्दी। २ अहंकारी। मानी। घमंडी। ३ पागल। ४ गँवार। अनजान। मूर्ख।

गहैया–वि० [हिं० गहना + ऐया (प्रत्य०)] १ पकड़नेवाला। ग्रहण करनेवाला। २ अंगीकार करनेवाला। स्वीकार करनेवाला।

गह्वर–संज्ञा पु० [सं०] १ अंधकारमय और गूढ़ स्थान। २ जमीन में छोटा सूराख। बिल। ३ विषम स्थान। दुर्गम स्थान। ४ गुफा। कंदरा। गुहा। ५ निकुंज। लतागृह। ६ झाड़ी। ७ जंगल। वन। वि० १ दुर्गम। विषम। २ गुप्त।

गांग–वि० [सं०] गंगा-संबंधी। गंगा का।

गांगेय–संज्ञा पु० [सं०] १ भीष्म। २ कार्तिकेय। ३ हल्सा मछली। ४ कसेरू।

गाँज–संज्ञा पु० [फा० गंज] राशि। ढेर।

गाँजना–क्रि० स० [हिं० गाँज, फा० गंज] राशि लगाना। ढेर करना।

गाँजा–संज्ञा पु० [सं० गंजा] भाँग की जाति का एक पौधा जिसकी कली का धूआँ पीते हैं।

गाँठ–संज्ञा स्त्री० [सं० ग्रंथ, पा० गंठि] [वि० गँठीली] १ रस्सी, डोरी, तागे आदि में पड़ी उभरी हुई उलझन जो खिंचकर कड़ी और दृढ़ हो जाती है। गिरह। ग्रंथि।

मुहा०—मन या हृदय की गाँठ खोलना = १ जी खोलकर कोई बात कहना। मन में रखी हुई बात कहना। २ अपनी भीतरी इच्छा प्रकट करना। ३ हौसला निकालना। लालसा पूरी करना। मन में गाँठ पड़ना = आपस के संबंध में भेद पड़ना। मनमोटाव होना।

२ अंचल, चद्दर या किसी कपड़े की खूँट में कोई वस्तु (जैसे, रुपया) लपेटकर लगाई हुई गाँठ।

मुहा०—गाँठ कतरना या काटना = गाँठ काटकर रुपया निकाल लेना। जेब कतरना। गाँठ का = पास का। पल्ले का। गाँठ का पूरा = धनी। मालदार। गाँठ जोड़ना = विवाह आदि के समय स्त्री पुरुष के कपड़ों के पल्ले को एक में बाँधना। गँठजोड़ा करना।

(कोई बात) गाँठ में बाँधना = अच्छी तरह याद रखना। स्मरण रखना। सदा ध्यान में रखना। गाँठ से = पास से। पल्ले से।
३. गठरी। बोरा। गट्ठा। ४. अंग का जोड़। बंद। जैसे—पैर की गाँठ। ५. ईख, बाँस आदि में थोड़े थोड़े अंतर पर कुछ उभरा हुआ मंडल। पोर। पर्व। जोड़। ६. गाँठ के आकार की जड़। अंटी। गुत्थी। ७. घास का बँधा हुआ बोझ। गट्ठा।

गाँठगोभी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गाँठ + गोभी] गोभी की एक जाति जिसकी जड़ में खरबूजे की सी गोल गाँठें होती हैं।

गाँठदार—वि० [हिं० गाँठ = दार (प्रत्य०)] जिसमें बहुत सी गाँठ हों। गठीला।

गाँठना—क्रि० स० [सं० ग्रंथन पा० गंठन] १. गाँठ लगाना। सीकर, मुर्री लगाकर या बाँधकर मिलाना। साटना। २. फटी हुई चीजों को टाँकना या उनमें चकती लगाना। मरम्मत करना। गूथना। ३. मिलाना। जोड़ना। ४. तरतीब देना।
मुहा०—मतलब गाँठना = काम निकालना।
५. अपनी ओर मिलाना। अनुकूल करना। पक्ष में करना। ६. गहरी पकड़ पकड़ना। ७. वश में करना। वशीभूत करना। ८. वार को रोकना।

गाँडर—संज्ञा स्त्री० [स० गंडाली] मूँज की तरह की एक घास। गडदूर्वा।

गाँडा—संज्ञा पुं० [सं० काड या खड] [स्त्री० गँडी] १. किसी पेड़, पौधे या डठल का छोटा कटा खंड। जैसे—ईख का गाँडा। २. ईख का छोटा कटा टुकड़ा। गँडेरी।

गांडीव—संज्ञा पुं० [सं०] अर्जुन का धनुष।

गाँती—संज्ञा स्त्री० दे० "गाती"।

गाँथना*—क्रि० स० [सं० ग्रथन] १. गूँथना। गूँधना। २. मोटी सिलाई करना।

गांधर्व—वि० [सं०] १. गंधर्वसंबंधी। २. गंधर्वदेशोत्पन्न। ३. गंधर्व जाति का। संज्ञा पुं० [सं०] १. सामवेद का उपवेद जिसमें सामगान के स्वर, तालादि का वर्णन है। गंधर्वविद्या। गंधर्ववेद। २. गान-विद्या। संगीत-शास्त्र। ३. आठ प्रकार के विवाहों में से एक जिसमें वर और कन्या परस्पर अपनी इच्छा से प्रेम-पूर्वक मिलकर पति-पत्नीवत् रहते हैं।

गांधर्ववेद—संज्ञा पुं० [सं०] १. सामवेद का उपवेद। २. संगीत-शास्त्र।

गांधार—संज्ञा पुं० [सं०] १. सिंधु नद के पश्चिम का देश। २. [स्त्री० गांधारी] गांधार देश का रहनेवाला। ३. संगीत में सात स्वरों में तीसरा स्वर।

गांधारी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गांधार देश की स्त्री या राजकन्या। २. धृतराष्ट्र की स्त्री और दुर्योधन की माता का नाम।

गांधी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हरे रंग का एक छोटा कीड़ा। २. एक घास। †३. हींग। ४. गंधी। ५. गुजराती वैश्यों की एक जाति।

गांभीर्य्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. गहराई। गंभीरता। २. स्थिरता। अचंचलता। ३. हर्ष, क्रोध, भय आदि मनोवेगों से चंचल न होने का गुण। शांति का भाव। धीरता। ४. गूढ़ता। गहनता।

गाँव गाँव—संज्ञा पुं० [सं०ग्राम] वह स्थान जहाँ पर बहुत से किसानों के घर हों। छोटी बस्ती। खेड़ा।

गाँस—संज्ञा स्त्री० [हिं० गाँसना] १. रोक टोक। बंधन। २. वैर। द्वेष। ईर्ष्या। ३. हृदय की गुप्त बात। भेद की बात। रहस्य। ४. गाँठ। फंदा। गठन। ५. तीर या बर्छी का फल। †६. वश। अधिकार। शासन। ७. देख-रेख। निगरानी। ८. अड़चन। कठिनता। संकट।

गाँसना—क्रि० स० [हिं० ग्रथन] १. एक दूसरे से लगाकर कसना। गूथना। २. सालना। छेदना। चुभोना। ३. ताने में कसना, जिससे बुनावट ठस हो।
मुहा०—बात को गाँसकर रखना = मन में बैठाकर रखना। हृदय में जमाना।
†४. वश में रखना। शासन में रखना। ५. पकड़ में करना। दबोचना।

६ दुराना। भरना। किसी चीज पर दाबकर जमाना। धँसाना। ४ गुप्त रखना। छिपाना।

गाँसी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गाँस] १. तीर या बरछी आदि का फल। हथियार की नोक। २ गाँठ। गिरह। ३ कपट। छल्छद। ४ मनोमालिन्य।

गाडर†—संज्ञा स्त्री० [सं० गड्डरी] भेड़।

गाड़ा*†—संज्ञा पु० [सं० शकट] गाड़ी। छकड़ा। बैलगाड़ी।

संज्ञा पु० [सं० गर्त प्रा० गड्ड] वह गड्ढा जिसमें आग लोग छिपकर बैठ रहते थे। और पशु, डाकू आदि का पता लेते थे।

गागर, गागरी†—संज्ञा स्त्री० दे० "गगरी"।

गाच—संज्ञा स्त्री० [अ० गाज] बहुत महीन जालीदार सूती कपड़ा जिसपर रेशमी बेल बूटे बने रहते हैं। फुलवर।

गाछ—संज्ञा पु० [सं० गच्छ] १ छोटा पेड़। पौधा। २ पेड़। वृक्ष।

गाज—संज्ञा स्त्री० [सं० गर्ज] १ गर्जन। गरज। शोर। २ बिजली गिरने का शब्द। वज्रपातध्वनि। ३ बिजली। वज्र।

मुहा०—किसी पर गाज पड़ना=आफत आना। ध्वस होना। नाश होना।

संज्ञा पु० [अनु० गजगज] फेन। झाग।

गाजना—क्रि० अ० [सं० गजन पा० गज्जन] १. शब्द करना। हुकार करना। गरजना। चिल्लाना। २ हर्षित होना। प्रसन्न होना।

मुहा०—गल गाजना=हर्षित होना।

गाजर—संज्ञा स्त्री० [सं० गृजन] एक पौधा जिसका कद मीठा होता है।

मुहा०—गाजर मूली समझना=तुच्छ समझना।

गाजा—संज्ञा पु० [फा०] मुँह पर मलने का एक प्रकार का रोगन।

गाजी—संज्ञा पु० [अ०] १ मुसलमानों में वह वीर पुरुष जो धर्म के लिये विधर्मियों से युद्ध करे। २ बहादुर। वीर।

गाड—संज्ञा स्त्री० [सं० गर्त] १ गड्हा। गड्ढा। २ वह गड्ढा जिसमें अन्न रखा जाता है। ३ कुएँ की ढाल। भगाड।

गाडना—क्रि० स० [हिं० गाड-गड्ढा] १ गड्ढा खोदकर किसी चीज को उसमें डालकर ऊपर से मिट्टी डाल देना। जमीन के अदर दफनाना। तोपना। २ गड्ढा खोदकर उसमें किसी लबी चीज का एक सिरा जमाकर खड़ा करना। जमाना। ३ किसी नुकीली चीज को नोक के बल

गाड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० शकट] एक स्थान से दूसरे स्थान पर माल असबाब या आदमियों को पहुँचाने के लिये एक यत्र। यान। शकट।

गाड़ीवान—संज्ञा पु०[हिं०गाड़ी+वान (प्रत्य०)] १ गाड़ी हाँकनेवाला। २ कोचवान

गाढ़—वि० [सं०] १ अधिक। बहुत अतिशय। २ दृढ़। मजबूत। ३ घना गाढ़ा। जो पानी की तरह पतला न हो ४ गहरा। अथाह। ५ विकट। कठिन दुरूह। दुर्गम। संज्ञा पु० कठिनाई। आपत्ति। सकट।

गाढ़ा—वि० [सं० गाढ] [स्त्री० गाढ़ी] १. जिसमें जल के अतिरिक्त ठोस अश भी मिला हो। २ जिसके सूत परस्पर खूब मिले हों। ठस। मोटा (कपड़े आदि के लिये)। ३ घनिष्ठ। गहरा। गूढ़। ४ बढ़ा चढ़ा। घोर। कठिन। विकट।

मुहा०—गाढ़े की कमाई=बहुत मेहनत से कमाया हुआ धन। गाढ़े का साथी या संगी=सकट के समय का मित्र। विपत्ति के समय सहारा देनेवाला। गाढ़े दिन=सकट के दिन।

संज्ञा पु०[सं०गाढ] १ एक प्रकार का मोटा सूती कपड़ा। गजी। २ मस्त हाथी।

गाढ़े*—क्रि० वि० [हिं० गाढ़ा] १ दृढ़ता से। जोर से। २ अच्छी तरह।

गाणपत—वि० [सं०] गणपति-सबधी।

संज्ञा पु० एक सप्रदाय जो गणेश की उपासना करता है।

गाणपत्य—संज्ञा पु०[सं०] गणेश का उपासक।

गात—संज्ञा पु० [सं० गात्र] शरीर। अग।

गाती—संज्ञा स्त्री० [सं० गात्री] १ वह चद्दर

जिसे गले में बाँधते हैं। २. चद्दर या अँगोछा लपेटने का एक ढंग।
गात्र–संज्ञा पुं० [सं०] अंग। देह। शरीर।
गाथ–संज्ञा पुं० [सं० गाथा] यश। प्रशंसा।
गाथा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. स्तुति। २. वह श्लोक जिसमें स्वर का नियम न हो। ३. प्राचीन काल की एक ऐतिहासिक रचना जिसमें लोगों के दान, यज्ञादि का वर्णन होता था। ४. आर्य्या नाम की वृत्ति। ५. एक प्रकार की प्राचीन भाषा। ६. श्लोक। ७. गीत। ८. कथा। वृत्तांत। ९. पारसियों के धर्म-ग्रंथ का एक भेद।
गाद†–संज्ञा स्त्री० [सं० गाध] १. तरल पदार्थ के नीचे बैठी हुई गाढ़ी चीज। तलछट। २. तेल की कीट। ३. गाढ़ी चीज।
गादड़, गादर†–वि० [सं० कातर या कदर्य, प्रा० कादर] कायर। डरपोक। भीरु। संज्ञा पुं० [स्त्री० गादड़ी] गीदड़। सियार।
गादा–संज्ञा पुं० [सं० गाधा=दलदल] १. खेत का वह अन्न जो अच्छी तरह न पका हो। अधपका अन्न। गद्दर। २. बे पकी फ़सल। कच्ची फ़सल।
गादी–संज्ञा स्त्री० [हिं० गद्दी] १. एक पकवान। †२. दे० "गद्दी"।
गाध–संज्ञा पुं० [सं०] १. स्थान। जगह। २. जल के नीचे का स्थल। थाह। ३. नदी का बहाव। कूल। ४. लोभ। वि० [स्त्री० गाधा] १. जिसे हलकर पार कर सकें। जो बहुत गहरा न हो। छिछला। पायाब। २. थोड़ा। स्वल्प।
गाधि–संज्ञा पुं० [सं०] विश्वामित्र के पिता का नाम।
गान–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० गेय, गेतव्य] १. गाने की क्रिया। संगीत। गाना। २. गाने की चीज। गीत।
गाना–क्रि० स० [सं० गान] १. ताल, स्वर के नियम के अनुसार शब्द उच्चारण करना। आलाप के साथ ध्वनि निकालना। २. मधुर ध्वनि करना। ३. वर्णन करना। विस्तार के साथ कहना। मुहा०—अपनी ही गाना=अपनी ही बात कहते जाना। अपना ही हाल कहना। ४. स्तुति करना। प्रशंसा करना। संज्ञा पुं० १. गाने की क्रिया। गान। २. गाने की चीज़। गीत।
ग़ाफ़िल–वि० [अ०] [संज्ञा ग़फ़लत] १. बेसुध। बेख़बर। २. असावधान।
गाभ–संज्ञा पुं० [सं० गर्भ पा० गब्भ] १. पशुओं का गर्भ। २. दे० "गाभा"।
गाभा–संज्ञा पुं० [सं० गर्भ] [वि० गाभिन] १. नया निकलता हुआ मुँहबँधा नरम पत्ता। नया कल्ला। कोंपल। २. केले आदि के डंठल के अंदर का भाग। ३. लिहाफ़, रजाई आदि के अंदर की निकाली हुई पुरानी रूई। गुद्दड़। ४. कच्चा अनाज। खड़ी खेती।
गाभिन, गाभिनी–वि० स्त्री० [सं० गर्भिणी] जिसके पेट में बच्चा हो। गर्भिणी। (चौपायों के लिये)
गाम–संज्ञा पुं० [सं० ग्राम] गाँव।
गामी–वि० [सं० गामिन्] [स्त्री० गामिनी] १. चलनेवाला। चालवाला। २. गमन करनेवाला। संभोग करनेवाला।
गाय–संज्ञा स्त्री० [सं० गो] १. सींगवाला एक मादा चौपाया जो दूध के लिये प्रसिद्ध है। २. बहुत सीधा मनुष्य। दीन मनुष्य।
गायक–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० गायकी] गानेवाला। गवैया।
गायत्री–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक वैदिक छंद। २. एक वैदिक मंत्र जो हिंदू धर्म में सबसे अधिक महत्त्व का माना जाता है। ३. खैर। ४. दुर्गा। ५. गंगा। ६. छः अक्षरों की एक वर्णवृत्ति।
गायन–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० गायिनी] १. गानेवाला। गवैया। गायक। २. गान। गाना। ३. कार्तिकेय।
ग़ायब–वि० [अ०] लुप्त। अंतर्धान।
गायिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गानेवाली स्त्री। २. एक मात्रिक छंद।
ग़ार–संज्ञा पुं० [अ०] १. गहरा गड्ढा।

२ गुफा। कंदरा।
संज्ञा स्त्री० दे० "गारी"।
गारत–वि० [अ०] नष्ट। बरबाद।
गारद–संज्ञा स्त्री० [अं० गार्ड] सिपाहियों का झुंड जो रक्षा के लिये नियत हो। पहरा। चौकी।
गारना–क्रि० स० [सं० गालन] १ दबाकर पानी या रस निकालना। निचोड़ना। २ पानी के साथ पिसना। जैसे—चंदन गारना। * ३ निकालना। त्यागना। *| क्रि० स० [सं० गल] १. गलाना।
मुहा०—तन या शरीर गारना=शरीर गलाना। शरीर को कष्ट देना। तप करना।
२ नष्ट करना। बरबाद करना।
गारा–संज्ञा पु० [हिं० गारना] मिट्टी अथवा चूने, सुर्खी आदि का लसदार लेप जिससे ईंटों की जोड़ाई होती है।
गारी*|–संज्ञा पु० स्त्री० दे० "गाली"।
गारुड–संज्ञा पु० [सं०] १ साँप का विष उतारने का मंत्र। २ सेना की एक व्यूह-रचना। ३ सुवर्ण। सोना।
वि० गरुडसंबंधी।
गारुडी–संज्ञा पु० [सं० गारुडिन्] मंत्र से साँप का विष उतारनेवाला।
गारो*–संज्ञा पु० [सं० गौरव, प्रा० गारव] १ गर्व। घमंड। अहंकार। २ महत्व का भाव। बड़प्पन। मान।
गार्गी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गर्ग गोत्र में उत्पन्न एक प्रसिद्ध ब्रह्मवादिनी स्त्री। २ दुर्गा। ३ याज्ञवल्क्य ऋषि की एक स्त्री।
गार्हपत्याग्नि–संज्ञा स्त्री० [सं०] छ प्रकार की अग्नियों म से पहली और प्रधान अग्नि जिसकी रक्षा शास्त्रानुसार प्रत्येक गृहस्थ को करनी चाहिए।
गार्हस्थ्य–संज्ञा पु० [सं०] १ गृहस्थाश्रम। २ गृहस्थ के मुख्य कृत्य। पंचमहायज्ञ।
गाल–संज्ञा पु० [सं० गड, गल्ल] १ मुंह के दोनों ओर ठुड्डी और कनपटी के बीच का कोमल भाग। गंड। कपोल।
मुहा०—गाल फुलाना=रूठकर न बोलना। रूठना। रिसाना। गाल बजाना या मारना=डींग मारना। बढ़ बढ़कर बात करना। काल के गाल म जाना=मृत्यु के मुख में पड़ना।
२ बकवाद करने की लत। मुंहजोरी।
मुहा०—गाल करना=१ मुंहजोरी करना। मुंह से अंडबंड निकालना। २ बढ़ बढ़कर बात करना। डींग मारना।
३. मध्य। बीच। ४ उतना अन्न जितना एक बार मुंह में डाला जाय। कौर। ग्रास।
गालगूल*|–संज्ञा पु० [हिं० गाल+अनु०] व्यर्थ बात। गपशप। अनाप शनाप।
गालमसूरी–संज्ञा स्त्री० [देश०] एक पकवान या मिठाई।
गालव–संज्ञा पु० [सं०] १ एक ऋषि का नाम। २ एक प्राचीन वैयाकरण। ३ लोध का पेड़। ४ स्मृतिकार।
गाला–संज्ञा पु० [हिं० गाल=ग्रास] धुनी हुई रुई का गोला जो चरखे म कातने के लिये बनाया जाता है। पूनी।
मुहा०—रुई का गाला=बहुत उज्ज्वल।
|संज्ञा पु० [हिं० गाल] १ बड़बड़ाने की लत। अंडबंड बकने का स्वभाव। मुंह-जोरी। कल्ले-दराजी। २ ग्रास।
ग़ालिब–वि० [अ०] जीतनेवाला। बढ़ जानेवाला। विजयी। श्रेष्ठ।
गालिम*–वि० दे० "ग़ालिब।"
गाली–संज्ञा स्त्री० [सं० गालि] १ निंदा या कलंक-सूचक वाक्य। दुर्वचन।
मुहा०—गाली खाना=दुर्वचन सुनना। गाली सहना। गाली देना=दुर्वचन कहना।
२ कलंक-सूचक आरोप।
गाली गलौज–संज्ञा स्त्री० [हिं० गाली+अनु० गलौज] परस्पर गालिप्रदान। तू तू मैं मैं। दुर्वचन।
गाली गुफ्ता–संज्ञा पु० दे० "गाली गलौज"।
गालना, गाल्हना*|–क्रि० अ० [सं० गल्प=बात] बात करना। बोलना।
गालू–वि० [हिं० गाल] १ गाल बजानेवाला। व्यर्थ डींग मारनेवाला।

२. बकवादी। गप्पी।
गाव–संज्ञा पुं० [सं० गो। फ़ा० गाव] गाय।
गावकुशी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०]. गोवध।
गावजबान–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०]. एक बूटी जो फ़ारस देश में होती है।
गावतकिया–संज्ञा पुं० [फ़ा०] बड़ा तकिया जिससे कमर लगाकर लोग फ़र्श पर बैठते हैं। मसनद।
गावदी–वि० [हिं० गाय। सं० धी] कुंठित बुद्धि का। अबोध। नासमझ। बेवक़ूफ़।
गावदुम–वि० [फ़ा०] १. जो ऊपर से बैल की पूँछ की तरह पतला होता आया हो। २. चढ़ाव-उतारवाला। ढालुवाँ।
गासिया–संज्ञा पुं० [अ० गाशिया] जीनपोश।
गाह–संज्ञा पुं० [स० ग्राह] १. ग्राहक। गाहक। २. पकड़। घात। ३. ग्राह। मगर।
गाहक–संज्ञा पुं० [सं०] अवगाहन करनेवाला।
*संज्ञा पुं० [स० ग्राहक] १. खरीददार। मोल लेनेवाला।
मुहा०—जी या प्राण का गाहक = १. प्राण लेनेवाला। मार डालने की ताक में रहनेवाला। २. दिक़ करनेवाला।
२. क़दर करनेवाला। चाहनेवाला।
गाहकी–संज्ञा स्त्री० [हिं० गाहक] १. बिक्री। २. गाहक।
गाहकताई*–संज्ञा स्त्री० [सं० ग्राहकता] कदरदानी। चाह।
गाहन–संज्ञा पुं० [स०] [वि० गाहित] गोता लगाना। विलोड़न। स्नान।
गाहना–क्रि० स० [सं० अवगाहन] १. डूबकर थाह लेना। अवगाहन करना। २. मथना। विलोडना। हलचल मचाना। ३. धान आदि के डंठल को झाड़ना जिसमें दाना नीचे झड़ जाय। ओहना।
गाहा–संज्ञा स्त्री० [सं० गाथा] १. कथा। वर्णन। चरित्र। वृत्तांत। २. आर्य्या छंद।
गाही–संज्ञा स्त्री० [हिं० गहना] फल आदि गिनने का पाँच पाँच का एक मान।
गाहू–संज्ञा स्त्री० [हिं० गना] उपगीति छंद।
गिंजना–क्रि० अ० [हिं० गींजना] किसी चीज़ (विशेषतः कपड़े) का उलटे पुलटे जाने के कारण खराब हो जाना। गींजा जाना।
गिंजाई–संज्ञा स्त्री० [सं० गुंजन] एक प्रकार का बरसाती कीड़ा।
संज्ञा स्त्री० [गीजना] गींजने का भाव।
गिंदौड़ा, गिंदौरा–संज्ञा पुं० [हिं० गेंद] मोटी रोटी के आकार में गलाकर ढाली हुई चीनी का कतरा।
गिउ*–संज्ञा पुं० [सं० ग्रीवा] गला। गरदन।
गिचपिच–वि० [अनु०] जो साफ या क्रम से न हो। अस्पष्ट।
गिचिर पिचिर–वि० दे० "गिचपिच"।
गिजगिजा–वि० [अनु०] १. ऐसा गीला और मुलायम जो खाने में अच्छा न मालूम हो। २. जो छूने में मांसल मालूम हो।
गिज़ा–संज्ञा स्त्री० [अ०] भोजन। खाद्य वस्तु। खुराक।
गिटकिरी–संज्ञा स्त्री० [अनु०] तान लेने में विशेष प्रकार से स्वर का काँपना।
गिटपिट–संज्ञा स्त्री० [अनु०] निरर्थक शब्द।
मुहा०—गिटपिट करना = टूटी फूटी या साधारण अँगरेज़ी भाषा बोलना।
गिट्टक–संज्ञा स्त्री० [हिं० गिट्टा] चिलम के नीचे रखने का कंकर। चुगल।
गिट्टी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गिट्टा] १. पत्थर के छोटे छोटे टुकड़े। २. गिट्टी के बरतन का टूटा हुआ छोटा टुकड़ा। ठीकरी। ३. चिलम की गिट्टक।
गिड़गिड़ाना–क्रि० अ० [अनु०] अत्यंत नम्र होकर कोई बात या प्रार्थना करना।
गिड़गिड़ाहट–संज्ञा स्त्री० [हिं० गिड़गिड़ाना] १. विनती। २. गिड़गिड़ाने का भाव।
गिद्ध–संज्ञा पुं० [सं० गृध्र] १. एक प्रकार का बड़ा मांसाहारी पक्षी। २. छप्पय छंद का ५२वाँ भेद।
गिद्धराज–संज्ञा पुं० [हिं० गिद्ध+राज] जटायु।
गिनती–संज्ञा स्त्री० [हिं० गिनना+ती

(प्रत्य०)] १. गन्या निश्चित करने की क्रिया। गणना। शुमार।
मुहा०—गिनती में आना या होना = पूछ महत्त्व का समझा जाना। गिनती गिनाने के लिये = नाम मात्र के लिये। कहने सुनने भर को। २. संख्या। तादाद।
मुहा०—गिनती में = बहुत थोड़े।
३. उपस्थिति की जाँच। हाजिरी। (सिपाही)। ४ एक से सौ तक की अंकमाला।
गिनना–क्रि० स० [स० गणन] १ गणना करना। शुमार करना। संख्या निश्चित करना।
मुहा०—दिन गिनना = १. आशा में समय बिताना। २ किसी प्रकार कालक्षेप करना।
२ गणित करना। हिसाब लगाना। ३ कुछ महत्त्व का समझना। खातिर में लाना।
गिनवाना–क्रि० स० दे० "गिनाना"।
गिनाना–क्रि० स० [हिं० गिनना का प्रे०] गिनने का काम दूसरे से कराना।
गिनी–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ सोने का एक सिक्का। २ एक विलायती घास।
गिन्नी†–संज्ञा स्त्री० दे० "गिनी"।
गिब्बन–संज्ञा पु० [अ०] एक प्रकार का बंदर।
गिमटी–संज्ञा स्त्री० [अ० डिमिटी] एक प्रकार का बूटीदार मजबूत कपड़ा।
गिय*–संज्ञा पु० दे० "गिउ"।
गियाह–संज्ञा पु० [?] एक प्रकार का घोड़ा।
गिर–संज्ञा पु० [स० गिरि] १ पहाड़। पर्वत। २ संन्यासियों के दस भेदों में से एक।
गिरई–संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मछली।
गिरगिट–संज्ञा पु० [स० कृकलास या गलगति] छिपकली की जाति का एक जंतु जो दिन में दो बार रंग बदलता है। गिरगिटान। गिर्दाना।
मुहा०—गिरगिट की तरह रंग बदलना = बहुत जल्दी सम्मति या सिद्धांत बदल देना।
गिरगिरी–संज्ञा स्त्री० [अनु०] लड़कों का एक खिलौना।
गिरजा–संज्ञा पु० [पुर्त० इग्रिजिया] ईसाइयों का प्रार्थना-मंदिर।
गिरदा†–संज्ञा पु० [फा० गिर्द] १. घेरा। चक्कर। २ तकिया। गेंडुआ। बालिश। ३ काठ की थाली जिसमें हलवाई मिठाई रखते हैं। ४ ढाल। फरी।
गिरदान†–संज्ञा पु० [हिं० गिरगिट] गिरगिट।
गिरदावर–संज्ञा पु० दे० "गिर्दावर"।
गिरना–क्रि० अ० [स० गलन] १ एकदम ऊपर से नीचे आ जाना। अपने स्थान से नीचे आ रहना। पतित होना। २ खड़ा न रह सकना। जमीन पर पड़ जाना। ३ अवनति या घटाव पर होना। बुरी दशा में होना। ४ किसी जलधारा का किसी बड़े जलाशय में जा मिलना। ५ शक्ति या मूल्य आदि का कम या मंदा होना। ६ बहुत चाव या तेजी से आगे बढ़ना। टूटना। ७ अपने स्थान से हट, निकल या झड़ जाना। ८. किसी ऐसे रोग का होना जिसका वेग ऊपर की ओर से नीचे का आता माना जाता है। जैसे—फालिज गिरना। ९ सहसा उपस्थित होना। प्राप्त होना। १० लड़ाई में मारा जाना।
गिरनार–संज्ञा पु० [स० गिरि+नार= नगर] [वि० गिरनारी] जैनियों का एक तीर्थ जो गुजरात में जूनागढ़ के निकट एक पर्वत पर है। रैवतक पर्वत।
गिरफ्त–संज्ञा स्त्री० [फा०] १ पकड़ने का भाव। पकड़। २ दोष का पता लगाने का ढंग।
गिरफ्तार–वि० [फा०] १ जो पकड़ा, कैद किया या बाँधा गया हो। २ ग्रसा हुआ। ग्रस्त।
गिरफ्तारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १ गिरफ्तार होने का भाव। २ गिरफ्तार होने की क्रिया।
गिरमिट–संज्ञा पु० [अ० गिमलेट] (लकड़ी में छेद करने का) बड़ा बरमा।

‡संज्ञा पुं० [अं० एग्रीमेंट = इकरारनामा] १. इकरारनामा। शर्तनामा। २. स्वीकृति या प्रतिज्ञा। इकरार।

गिरवान*†–संज्ञा पुं० दे० "गीर्वाण"। संज्ञा पुं० [फ़ा० गरेवान] १. अंगे या कुरते का वह गोल भाग जो गर्दन के चारों ओर रहता है। २. गर्दन। गला।

गिरवाना–क्रि० स० [हिं० गिराना का प्रे०] गिराने का काम दूसरे से कराना।

गिरवी–वि० [फ़ा०] गिरों रखा हुआ। बंधक। रेहन।

गिरवीदार–संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह व्यक्ति जिसके यहाँ कोई वस्तु बंधक रखी हो।

गिरह–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. गाँठ। ग्रंथि। २. जेब। कीसा। खरीता। ३. दो पोरों के जुड़ने का स्थान। ४. एक गज़ का सोलहवाँ भाग। ५. कलैया। उलटी। कलाबाज़ी।

गिरहकट–वि० [फ़ा० गिरह = गाँठ + हिं० काटना] जेब या गाँठ में बँधा हुआ माल काट लेनेवाला। चाईं।

गिरहबाज़–संज्ञा पुं० [फ़ा०] एक जाति का कबूतर जो उड़ते उड़ते उलटकर कलैया खा जाता है।

गिरही*†–संज्ञा पुं० दे० "गृही"।

गिराँ–वि० [फ़ा० गराँ] १. जिसका दाम अधिक हो। महँगा। २. भारी। हलका का उलटा। ३. जो भला न मालूम हो। अप्रिय।

गिरा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वाणी की शक्ति। बोलने की ताक़त। २. जिह्वा। जीभ। ज़बान। ३. वचन। वाणी। कलाम। ४. सरस्वती देवी।

गिराना–क्रि० स० [हिं० गिरना का स० रूप] १. अपने स्थान से नीचे डाल देना। पतन करना। २. खड़ा न रहने देकर ज़मीन पर डाल देना। ३. अवनत करना। घटाना। ४. किसी जलधारा या प्रवाह को किसी ढाल की ओर ले जाना। ५. शक्ति या स्थिति आदि में कम कर देना। ६. किसी चीज़ को उसके स्थान से हटा या निकाल देना। ७. कोई ऐसा रोग उत्पन्न करना जिसका वेग ऊपर से नीचे की ओर आता हुआ माना जाता हो। ८. सहसा उपस्थित करना। ९. लड़ाई में मार डालना।

गिरानी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. महँगापन। महँगी। २. अकाल। क़हत। ३. कमी। अभाव। टोटा। ४. पेट का भारीपन।

गिरापति–संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा।

गिरापितु*–संज्ञा पुं० [सं० गिरा + पितृ] सरस्वती के पिता, ब्रह्मा।

गिरावट–संज्ञा स्त्री० [हिं० गिरना] गिरने की क्रिया, भाव या ढंग।

गिरास*–संज्ञा पुं० "ग्रास"।

गिरासना†*–वि० स० दे० "ग्रसना"।

गिरि–संज्ञा पुं० [सं०] १. पर्वत। पहाड़। २. दसनामी संप्रदाय के अंतर्गत एक प्रकार के संन्यासी। ३. परिव्राजकों की एक उपाधि।

गिरिजा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पार्वती। गौरी। २. गंगा।

गिरिधर–संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

गिरिधारन*–दे० "गिरिधर"।

गिरिधारी–संज्ञा पुं० [सं० गिरिधारिन्] श्रीकृष्ण।

गिरिनंदिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पार्वती। २. गंगा। ३. नदी।

गिरिनाथ–संज्ञा पुं० [सं०] महादेव। शिव।

गिरिराज–संज्ञा पुं० [सं०] १. बड़ा पर्वत। २. हिमालय। ३. गोवर्द्धन पर्वत। ४. मेरु।

गिरिव्रज–संज्ञा पुं० [सं०] १. केकय देश की राजधानी। २. जरासंध की राजधानी जिसे पीछे राजगृह कहते थे।

गिरिसुत–संज्ञा पुं० [सं०] मैनाक पर्वत।

गिरिसुता–संज्ञा स्त्री० [सं०] पार्वती।

गिरींद्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. बड़ा पर्वत। २. हिमालय। ३. शिव।

गिरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गिरी] वह गूदा जो बीज को तोड़ने पर उसके अंदर से निकलता है।

गिरीश—संज्ञा पुं० [सं०] १. महादेव। शिव। २. हिमालय पर्वत। ३. सुमेरु पर्वत। ४. कैलाश पर्वत। ५. गोवर्द्धन पर्वत। ६. कोई बड़ा पहाड़।

गिरेयाँ|—संज्ञा स्त्री० [हिं० गेरॉव] छोटा या पतला गेरॉव।

गिरो—वि० [फा०] रेहन। बंधक। गिरवी।

गिर्द—अव्य० [फा०] आसपास। चारों ओर।

यौ०—इर्द गिर्द।

गिर्दावर—संज्ञा पुं० [फा०] १. घूमनेवाला। दौरा करनेवाला। २. घूम घूमकर काम की जाँच करनेवाला।

गिल—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. मिट्टी। २. गारा।

गिलकार—संज्ञा पुं० [फा०] गारा या पलस्तर करनेवाला व्यक्ति।

गिलकारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] गारा लगाने या पलस्तर करने का काम।

गिलगिलिया—संज्ञा स्त्री० [अनु०] सिरोही चिड़िया।

गिलगिली—संज्ञा पुं० [देश०] घोड़े की एक जाति।

गिलट—संज्ञा पुं० [अं० गिल्ड] १. सोना चढ़ाने का काम। २ चाँदी की सफेद बहुत हलकी और कम मूल्य की एक धातु।

गिलटी—संज्ञा स्त्री० [सं० ग्रंथि] १. चेप की गोल छोटी गाँठ जो शरीर के अंदर संधि-स्थान में रहती है। २. एक रोग जिसमें संधि-स्थान की गाँठें सूज जाती हैं।

गिलन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० गिलित] निगलना। लीलना।

गिलना—क्रि० स० [सं० गिरण] १. बिना दाँतों से तोड़े गले में उतार जाना। निगलना। २. मन ही मन में रखना। प्रकट न होने देना।

गिलबिलाना—क्रि० अ० [अनु०] अस्पष्ट उच्चारण से कुछ कहना।

गिलम—संज्ञा स्त्री० [फा० गिलीम = कंबल] १. नरम और चिकना ऊनी कालीन। २. मोटा मुलायम गद्दा या बिछौना। वि० कोमल। नरम।

गिलमिल—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का कपड़ा।

गिलहरा—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का धारीदार कपड़ा। दे० "बेलहरा"।

गिलहरी—संज्ञा स्त्री० [सं० गिरि = चुहिया] चूहे की तरह का मोटी रोएँदार पूँछ का जंतु जो पेड़ों पर रहता है। गिलाई। चेखुरा।

गिला—संज्ञा पुं० [फा०] १. उलाहना। २. शिकायत। निंदा।

गिलाफ—संज्ञा पुं० [अ०] १. कपड़े की बड़ी थैली जो तकिए, लिहाफ आदि के ऊपर चढ़ा दी जाती है। खोल। २. बड़ी रजाई। लिहाफ। ३. म्यान।

गिलावा|—संज्ञा पुं० [फा० गिल+आब] गीली मिट्टी जिसमें ईंट-पत्थर जोड़ते हैं। गारा।

गिलास—संज्ञा पुं० [अं० ग्लास] १. पानी पीने का एक गोल लंबोतरा बरतन। २. आलू-बालू या ओलची नाम का पेड़।

गिलिम—संज्ञा स्त्री० दे० "गिलम"।

गिली—संज्ञा स्त्री० दे० "गुल्ली"।

गिलोय—संज्ञा स्त्री० [फा०] गुरुच।

गिलोला—संज्ञा पुं० [फा० गुलेला] मिट्टी का छोटा गोला जो गुलेल से फेंका जाता है।

गिलौरी—संज्ञा स्त्री० [देश०] पानों का बीड़ा।

गिलौरीदान—संज्ञा पुं० [हिं० गिलौरी+फा० दान] पान रखने का डिब्बा। पानदान।

गिल्टी—संज्ञा स्त्री० दे० "गिलटी"।

गींजना—क्रि० स० [हिं० मींजना] किसी कोमल पदार्थ, विशेषतः कपड़े आदि, को इस प्रकार मलना कि वह खराब हो जाय।

गी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वाणी। बोलने की शक्ति। २ सरस्वती देवी।

गीउ*—संज्ञा स्त्री० दे० "ग्रीव"।

गीत—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह वाक्य, पद या छंद जो गाया जाता हो। गाने की

चीज। गाना।
मुहा०—गीत गाना = बड़ाई करना। प्रशंसा करना। अपना ही गीत गाना = अपनी ही बात कहना, दूसरे की न सुनना।
२. बड़ाई। यश।
गीता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह ज्ञानमय उपदेश जो किसी बड़े से माँगने पर मिले। २. भगवद्गीता। ३. २६ मात्रा का एक छंद। ४. वृत्तांत। कथा। हाल।
गीति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गान। गीत। २. आर्या छंद के भेदों में से एक।
गीतिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक मात्रिक छंद। २. गीत। गाना।
गीतिरूपक–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का रूपक जिसमें गद्य कम और पद्य अधिक होता है।
गीदड़–संज्ञा पुं० [सं० गृध्र, फा० गीदी] सियार। शृगाल।
यौ०—गीदड़-भभकी = मन में डरते हुए ऊपर से दिखाऊ साहस या क्रोध प्रकट करना।
वि० डरपोक। बुज़दिल।
गीदी–वि० [फ़ा०] डरपोक। कायर।
गीध–संज्ञा पुं० दे० "गिद्ध"।
गीधना*†–क्रि० अ० [सं० गृध्र = लुब्ध] एक बार कोई लाभ उठाकर सदा उसका इच्छुक रहना। परचना।
गीबत†–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. अनुपस्थिति। गैर-हाजिरी। २. पिशुनता। चुगुलखोरी।
गीर–संज्ञा स्त्री० [सं० गीः] वाणी।
गीर्दवी–संज्ञा स्त्री० [सं०] सरस्वती।
गीर्पति–संज्ञा पुं० [सं०] १. बृहस्पति। २. विद्वान्।
गीर्वाण–संज्ञा पुं० [सं०] देवता। सुर।
गीला–वि० [हिं० गलना] [स्त्री० गीली] भीगा हुआ। तर। नम। आर्द्र।
गीलापन–संज्ञा पुं० [हिं० गीला + पन (प्रत्य०)] गीला होने का भाव। नमी। तरी।
गीव*–संज्ञा स्त्री० दे० "ग्रीवा"।
गीस्पति–संज्ञा पुं० [सं०] १. बृहस्पति। २. विद्वान्। पंडित।
गुंगी–संज्ञा स्त्री० [हिं० गूँगा] दोमुहाँ साँप। चुकरैंड़।
गुंगुआना–क्रि० अ० [अनु०] १. धुआँ देना। अच्छी तरह न जलना। २. गूँ गूँ शब्द करना। गूँगे की तरह बोलना।
गुंचा–संज्ञा पुं० [अ०] १. कली। कोरक। २. नाच-रंग। विहार। जश्न।
गुंज–संज्ञा स्त्री० [सं० गुंज] १. भौंरों के भनभनाने का शब्द। गुंजार। २. आनंद-ध्वनि। कलरव। ३. दे० "गुंजा"।
गुंजन–संज्ञा स्त्री० [सं०] भौंरों के गूँजने की क्रिया। भनभनाहट। कोमल मधुर ध्वनि।
गुंजना–क्रि० अ० [सं० गुंज] भौंरों का भनभनाना। मधुर ध्वनि निकालना। गुनगुनाना।
गुंजनिकेतन–संज्ञा पुं० [सं० गुंज + निकेतन] भौंरा। मधुकर।
गुंजरना–क्रि० अ० [हिं० गुंजार] १. गुंजार करना। भौंरों का गूँजना। भन-भनाना। २. शब्द करना। गरजना।
गुंजा–संज्ञा स्त्री० [सं०] घुंघची नाम की लता।
गुंजाइश–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. अँटने की जगह। समाने भर को स्थान। अवकाश। २. समाई। सुबीता।
गुंजान–वि० [फा०] घना। अविरल। सघन।
गुंजायमान–वि० [सं०] गुंजारता हुआ। गूँजता हुआ।
गुंजार–संज्ञा पुं० [सं० गुंज + आर] भौंरों की गूँज। भनभनाहट।
गुंठा–संज्ञा पुं० [हिं० गठना] एक प्रकार का नाटे कद का घोड़ा। टाँगन।
†वि० [देश०] नाटा। बौना।
गुंडई†–संज्ञा स्त्री० [हिं० गुंडा] गुंडापन। बदमाशी।
गुंडली–संज्ञा स्त्री० [सं० कुंडली] १. फेंटा। कुंडली। २. गेडुरी। इँडुरी।
गुंडा–वि० [सं० गुंडक] [स्त्री० गुंडी]

१. बदचलन। कुमार्गी। बदमाश। २. छैला। मिर्रानिया।

गुंडापन—संज्ञा पु० [हिं० गुंडा + पन (प्रत्य०)] बदमाशी।

गुंथना—क्रि० अ० [सं० गुंफ, गुत्स=गुच्छा] १. तागों, बाल की लटों आदि का गुच्छेदार लड़ी के रूप में बँधना। २. एक में उलझकर मिलना। उलझकर बँधना। ३. मोटे तौर पर सिलना। नत्थी होना।

गुंदला—संज्ञा पु० [सं० गुडाला] नागरमोथा।

गुंधना—क्रि० अ० [सं० गुध=क्रीड़ा] पानी में सानकर मसला जाना। माड़ा जाना। †क्रि० अ० दे० "गुंथना"।

गुंधवाना—क्रि० स० [हिं० गूँधना का प्रे०] गूँधने का काम दूसरे से कराना।

गुंधाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० गूँधना] १. गूँधने या माड़ने की क्रिया या भाव। २ गूँधने या माड़ने की मजदूरी।

गुंधावट—संज्ञा स्त्री० [हिं० गूँधना] गूँधने या गूँथने की क्रिया या ढंग।

गुंफ—संज्ञा पु० [सं०] [वि० गुफित] १. उलझन। फँसाव। गुत्थमगुत्था। २ गुच्छा। ३. दाढ़ी। गलमुच्छा। ४. कारणमाला अलंकार।

गुंफन—संज्ञा पु० [सं०] [वि० गुफित] उलझाव। फँसाव। गुत्थमगुत्था। गूँथना। गाँछना।

गुंबज—संज्ञा पु० [फा० गुंबद] गोल और ऊँची छत।

गुंबजदार—वि० [फा० गुंबद + दार] जिस पर गुंबज हो।

गुंबद—संज्ञा पु० दे० "गुंबज"।

गुंबा—संज्ञा पु० [हिं० गोल + अब=आम] वह कड़ी गोल सूजन जो सिर पर चोट लगने से होती है। गुलमा।

गुंभी*—संज्ञा स्त्री० [सं० गुंफ] अंकुर। गाभ।

गुआ—संज्ञा पु० [सं० गुवाक] १ चिकनी सुपारी। २ सुपारी।

गुइयाँ—संज्ञा स्त्री० पु० [हिं० गोहन] १. साथी। सखा। (स्त्री०) २. सखी। सहचरी।

गुग्गुल—संज्ञा पु० [सं०] १. एक काँटेदार पेड़ जिसका गोंद सुगंध के लिये जलाते और दवा के काम में आते हैं। गूगल। २. सलई या पेड़ जिससे राल या धूप निकलती है।

गुच्ची—संज्ञा स्त्री० [अनु०] वह छोटा गड्ढा जो लड़के गोली या गुल्ली-डंडा खेलते समय बनाते हैं। वि० स्त्री० बहुत छोटी। नन्ही।

गुच्चीपारा, गुच्चीपाला—संज्ञा पु० [हिं० गुच्ची=गड्ढा + पारना=डालना] एक खेल जिसमें लड़के एक छोटा सा गड्ढा बनाकर उसमें कौड़ियाँ फेंकते हैं।

गुच्छ, गुच्छक—संज्ञा पु० [सं०] १. एक में बँधे हुए फूलों या पत्तियों का समूह। गुच्छा। २ घास की जूरी। ३ वह पौधा जिसमें केवल पत्तियाँ या पतली लचीली टहनियाँ फैलें। झाड़। ४ मोर की पूँछ।

गुच्छा—संज्ञा पु० [सं० गुच्छ] १ एक में लगे या बँधे कई पत्तों या फूलों का समूह। गुच्छा। २ एक में लगी या बँधी छोटी वस्तुओं का समूह। जैसे कुंजियों का गुच्छा। ३ फुँदना। झब्बा।

गुच्छी—संज्ञा स्त्री० [सं० गुच्छ] १. करंज। कंजा। २ रीठा। ३ एक तरकारी।

गुच्छेदार—वि० [हिं० गुच्छा + फा० दार (प्रत्य०)] जिसमें गुच्छा हो।

गुज़र—संज्ञा पु० [फा०] १ निकास। गति। २ पैठ। पहुँच। प्रवेश। ३ निर्वाह। कालक्षेप।

गुज़रना—क्रि० अ० [फा० गुज़र+ना (प्रत्य०)] १ समय व्यतीत होना। कटना। बीतना। मुहा०—किसी पर गुज़रना=किसी पर (संकट या विपत्ति) पड़ना। २. किसी स्थान से होकर आना या जाना। मुहा०—गुज़र जाना=मर जाना। ३ निर्वाह होना। निपटना। निभना।

गुज़र-बसर—संज्ञा पु० [फा०] निर्वाह। गुज़ारा। कालक्षेप।

गुजरात–संज्ञा पुं०[सं०गुर्जर + राष्ट्र] [वि० गुजराती] भारतवर्ष के दक्षिण-पश्चिम प्रांत का एक देश।

गुजराती–वि० [हिं० गुजरात] १. गुजरात का निवासी। गुजरात देश में उत्पन्न। २. गुजरात का बना हुआ।
संज्ञा स्त्री० १. गुजरात देश की भाषा। २. छोटी इलायची।

गुजरान–संज्ञा पुं० दे० "गुजर (३)"।

गुजरानाॱ*–क्रि० स० दे० "गुजारना"।

गुजरिया–संज्ञा स्त्री० [हिं० गूजर] गूजर जाति की स्त्री। ग्वालिन। गोपी।

गुजरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० गूजर] १. कलाई में पहनने की एक प्रकार की पहुँची। २. कान-कटा भेंड़। ३. दे० "गूजरी"।

गुजरेटी–संज्ञा स्त्री० [हिं० गूजर] १. गूजर जाति की कन्या। २. गूजरी। ग्वालिन।

गुजश्ता–वि० [फ़ा०] बीता हुआ। गत। व्यतीत। भूत (काल)।

गुजारना–क्रि० स० [फ़ा०] १. बिताना। काटना। २. पहुँचाना। पेश करना।

गुजारा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. गुजर। गुजरान। निर्वाह। २. वह वृत्ति जो जीवन-निर्वाह के लिये दी जाय। ३. महसूल लेने का स्थान।

गुजारिश–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] निवेदन।

गुज्जरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गूजरी। २. एक रागिनी।

गुझरौट*ॱ–संज्ञा पुं० [सं०गुह्य + सं०आवर्त्त] १. कपड़े की सिकुड़न। शिकन। सिलवट। २. स्त्रियों की नाभि के आसपास का भाग।

गुझिया–संज्ञा स्त्री० [सं० गुह्यक] १. एक प्रकार का पकवान। कुसली। पिराक। २. खोए की एक मिठाई।

गुझौटॱ*–संज्ञा पुं० दे० "गुझरौट"।

गुटकना–क्रि० अ० [अनु०] कबूतर की तरह गुटरगूँ करना।
ॱक्रि० स० १. निगलना। २. खा जाना।

गुटका–संज्ञा पुं० [सं० गुटिका] १. दे० "गुटिका"। २. छोटे आकार की पुस्तक। ३. लड्डू। ४. गुपचुप मिठाई।

गुटरगूँ–संज्ञा स्त्री० [अनु०] कबूतरों की बोली।

गुटिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वटिका। वटी। गोली। २. एक सिद्धि जिसके अनुसार एक गोली मुँह में रख लेने से जहाँ चाहे, वहाँ चले जायँ; कोई नहीं देख सकता।

गुट्ट–संज्ञा पुं० [सं० गोष्ठ] समूह। झुंड। दल। यूथ।

गुट्ठल–वि०[हिं० गुठली] १. (फल) जिसमें बड़ी गुठली हो। २. जड़। मूर्ख। कूढ़-मग़ज़। ३. गुठली के आकार का।
संज्ञा पुं० १. किसी वस्तु के इकट्ठा होकर जमने से बनी हुई गाँठ। गुलथी। २. गिलटी।

गुठली–संज्ञा स्त्री० [सं० गुटिका] ऐसे फल का बीज जिसमें एक ही बड़ा बीज होता हो। जैसे—आम की गुठली।

गुड़ंबा–संज्ञा पुं० [हिं० गुड़ + आँब, आम] उबालकर शीरे में डाला हुआ कच्चा आम।

गुड़–संज्ञा पुं० [सं०] पकाकर जमाया हुआ ऊख या खजूर का रस जो बट्टी या भेली के रूप में होता है।
मुहा०–कुल्हिया में गुड़ फूटना = गुप्त रीति से कोई कार्य्य होना। छिपे छिपे कोई सलाह होना।

गुड़गुड़–संज्ञा पुं० [अनु०] वह शब्द जो जल में नली आदि के द्वारा हवा फूँकने से होता है; जैसे हुक्के में।

गुड़गुड़ाना–क्रि० अ० [अनु०] गुड़गुड़ शब्द होना।
क्रि० स० [अनु०] हुक्का पीना।

गुड़गुड़ाहट–संज्ञा स्त्री० [हिं० गुड़गुड़ाना + हट (प्रत्य०)] गुड़गुड़ शब्द होने का भाव।

गुड़गुड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० गुड़गुड़ाना] एक प्रकार का हुक्का। पेचवान। फ़रशी।

गुड़धानी–संज्ञा स्त्री० [हिं०गुड़ + धान] वह लड्डू जो भुने हुए गेहूँ को गुड़ में पागकर बाँधे जाते हैं।

गुड़ड़—संज्ञा पुं० [देश०] एक चिड़िया। गड़ुरी।

गुड़हर—संज्ञा पुं० [हिं० गुड़+हर] १. अड़हुल का पेड़ या फूल। जपा। २ एक छोटा वृक्ष।

गुड़हल—संज्ञा पुं० दे० "गुड़हर"।

गुड़ाकू—संज्ञा पुं० [हिं० गुड़] गुड़ मिला हुआ पीने का तमाकू।

गुडाकेश—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव। महादेव। २ अर्जुन।

गुड़िया—संज्ञा स्त्री० [हिं० गुड़ या गुड्डा] कपड़े की बनी हुई पुतली जिससे लड़कियाँ खेलती हैं।

मुहा०—गुड़ियों का खेल=सहज काम।

गुड्डी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गुड्डी] पतंग। चंग। कनकौवा। गुड्डी।

गुडूची—संज्ञा स्त्री० [सं०] गुरुच। गिलोय।

गुड्डा—संज्ञा पुं० [सं० गुड=खेलने की गोली] गुड्डा। कपड़े का बना हुआ पुतला।

मुहा०—गुड्डा बाँधना=अपकीर्ति करते फिरना। निंदा करना।

संज्ञा पुं०† [हिं० गुड्डी] बड़ी पतंग।

गुड्डी—संज्ञा स्त्री० [सं० गुरु+उड्डीन] पतंग। कनकौवा। चंग।

संज्ञा स्त्री० [सं० गुटिका] १ घुटने की हड्डी। २ एक प्रकार का छोटा हुक्का।

गुढ़ा—संज्ञा पुं० [सं० गूढ़] १ छिपने की जगह। गुप्त स्थान। २ मवास।

गुण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० गुणी] १ किसी वस्तु में पाई जानेवाली वह बात जिसके द्वारा वह वस्तु दूसरी वस्तु से पहचानी जाय। धर्म। सिफ्त। २ प्रकृति के तीन भाव—सत्त्व, रज और तम। ३ निपुणता। प्रवीणता। ४ कोई कला या विद्या। हुनर। ५ असर। तासीर। प्रभाव। ६ अच्छा स्वभाव। शील। सद्वृत्ति।

मुहा०—गुण गाना=प्रशंसा करना। तारीफ करना। गुण मानना=एहसान मानना। कृतज्ञ होना।

७ विशेषता। खासियत। ८. तीन की संख्या। ९ प्रकृति। १० व्याकरण में 'अ', 'ए' और 'ओ'। ११ रस्सी या तागा। डोरा। सूत। १२ धनुष की प्रत्यंचा।

प्रत्य० एक प्रत्यय जो संख्यावाचक शब्दों के आगे लगकर उतनी ही बार और होना सूचित करता है। जैसे—द्विगुण, चतुर्गुण।

गुणक—संज्ञा पुं० [सं०] वह अंक जिससे किसी अंक को गुणा करें।

गुणकारक (कारी)—वि० [सं०] फायदा करनेवाला। लाभदायक।

गुणगौरि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पतिव्रता स्त्री। २ सोहागिन स्त्री। ३ स्त्रियों का एक व्रत।

गुणग्राहक—संज्ञा पुं० [सं०] गुणियों का आदर करनेवाला मनुष्य। क़दरदान।

गुणग्राही—वि० दे० "गुणग्राहक"।

गुणज्ञ—वि० [सं०] १. गुण को पहचाननेवाला। गुण का पारखी। २ गुणी।

गुणन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० गुण्य, गुणनीय, गुणित] १ गुणा करना। जरब देना। २ गिनना। तखमीना करना। ३ उद्धरणी करना। रटना। ४ मनन करना। सोचना-विचारना।

गुणनफल—संज्ञा पुं० [सं०] वह अंक या संख्या जो एक अंक को दूसरे अंक के साथ गुणा करने से आवे।

गुणना—क्रि० स० [सं० गुणन] जरब देना। गुणन करना।

गुणवत—वि० दे० "गुणवान्"।

गुणवाचक—वि० [सं०] जो गुण को प्रकट करे।

यौ०—गुणवाचक संज्ञा=व्याकरण में वह संज्ञा जिससे द्रव्य का गुण सूचित हो। विशेषण।

गुणवान्—वि० [सं० गुणवत्] [स्त्री० गुणवती] गुणवाला। गुणी।

गुणांक—संज्ञा पुं० [सं०] वह अंक जिसको गुणा करना हो।

गुणा-संज्ञा पुं० [सं० गुणन] [वि० गुण्य, गुणित] गणित की एक क्रिया। जरब।
गुणाढ्य-वि० [सं०] गुणपूर्ण। गुणी।
गुणानुवाद-संज्ञा पुं० [सं०] गुण-कथन। प्रशंसा। तारीफ़। बड़ाई।
गुणित-वि० [सं०] गुणा किया हुआ।
गुणी-वि० [सं० गुणिन्] गुणवाला। जिसमें कोई गुण हो।
संज्ञा पु० १. कला-कुशल पुरुष। हुनरमंद। २. झाड़-फूंक करनेवाला। ओझा।
गुणीभूत व्यंग्य-संज्ञा पुं० [सं०] काव्य में वह व्यंग्य जो प्रधान न हो।
गुण्य-संज्ञा पुं० [सं०] वह अंक जिसको गुणा करना हो।
गुत्थमगुत्था-संज्ञा पुं० [हिं० गुथना] १. उलझाव। फँसाव। २. हाथापाई। भिड़ंत।
गुत्थी-संज्ञा स्त्री० [हिं० गुथना] वह गाँठ जो कई वस्तुओं के एक में गुथने से बने। गिरह। उलझन।
गुथना-क्रि० अ० [सं० गुत्सन] १. एक लड़ी या गुच्छे मे नाथा जाना। २. टँकना। गाँथा जाना। ३. भद्दी सिलाई होना। टाँका लगना। ४. एक का दूसरे के साथ लड़ने के लिये खूब लिपट जाना।
गुथवाना-क्रि० स० [हिं० गुथना का प्रे०] गुथने का काम दूसरे से कराना।
गुथुवाँ-वि० [हिं० गुथना] जो गुँथकर बनाया गया हो।
गुदकार, गुदकारा-वि० [हिं० गूदा या गुदार] १. गूदेदार। जिसमें गूदा हो। २. गुदगुदा। मोटा। मासल।
गुदगुदा-वि० [हिं० गूदा] १. गूदेदार। मांस से भरा हुआ। २. मुलायम।
गुदगुदाना-क्रि० अ० [हिं० गुदगुदा] १. हँसाने या छेड़ने के लिये किसी के तलवे, काँख आदि को सहलाना। २. मन-बहलाव या विनोद के लिये छेड़ना। ३. किसी में उत्कंठा उत्पन्न करना।
गुदगुदी-संज्ञा स्त्री० [हिं० गुदगुदाना] १. वह मुरसुराहट या मीठी खुजली जो मांसल स्थानों पर उँगली आदि छू जाने से होती है। २. उत्कंठा। शौक़। ३. आह्लाद। उल्लास। उमंग।
गुदड़ी-संज्ञा स्त्री० [हिं० गूथना] फटे-पुराने टुकड़ों को जोड़कर बनाया हुआ कपड़ा। कंथा
मुहा०—गुदड़ी में लाल=तुच्छ स्थान में उत्तम वस्तु।
गुदड़ी बाजार-संज्ञा पुं० [हिं० गुदड़ी + फ़ा० बाजार] वह बाजार जहाँ फटे पुराने कपड़े या टूटी-फूटी चीजें बिकती हों।
गुदना-संज्ञा पुं० दे० "गोदना"।
क्रि० अ० [हिं० गोदना] चुभना। धँसना।
गुदभ्रंश-संज्ञा पुं० [सं०] काँच निकलने का रोग।
गुदरना*‡-क्रि० अ० [फ़ा० गुज़र + हिं० ना (प्रत्य०)] गुजरना। बीतना।
क्रि० स० निवेदन करना। पेश करना।
गुदरानना*‡-क्रि० स० [फ़ा० गुजरान + हिं० ना (प्रत्य०)] १. पेश करना। सामने रखना। २. निवेदन करना।
गुदरैन*†-संज्ञा स्त्री० [हिं० गुदरना] १. पढ़ा हुआ पाठ शुद्धतापूर्वक सुनाना। जायजा। २. परीक्षा। इम्तहान।
गुदा-संज्ञा स्त्री० [सं०] मलद्वार। गाँड़।
गुदाना-क्रि० स० [हिं० गोदना का प्रे०] गोदने की क्रिया कराना।
गुदार†-वि० [हिं० गूदा] गूदेदार।
गुदारा*†-संज्ञा पु० [फ़ा० गुज़ारा] १. नाव पर नदी पार करने की क्रिया। उतारा। २. दे० "गुजारा"।
गुद्दी†-संज्ञा पु० [हिं० गूदा] १. फल के बीज के भीतर का गूदा। मग्ज़। मींगी। गिरी। २. सिर का पिछला भाग। ३. हथेली का मांस।
गुन*†-संज्ञा पुं० दे० "गुण"।
गुनगुना-वि० दे० "कुनकुना"।
गुनगुनाना-क्रि० अ० [अनु०] १. गुन-गुन शब्द करना। २. नाक में बोलना। अस्पष्ट स्वर म गाना।
गुनना-क्रि० स० [सं० गुणन] १. गुणा

करना। जरब देना। २ गिनना। तश- गीना करना। ३ उद्धरणी करना। रटना। ४ सोचना। चिंता करना।

गुनहगार–वि० [फा०] १. पापी। २ दोषी। अपराधी।

गुनही†–सज्ञा पु० [फा० गुनाह] गुनहगार।

गुना–सज्ञा पु० [स० गुणन] १ एक प्रत्यय जो किसी सख्या म लगकर किसी वस्तु का उतनी ही बार और होना सूचित करता है। जैसे—पाँचगुना। २ *गुणा। (गणित)*

गुनाह–सज्ञा पु० [फा०] १ पाप। २ दोष। कसूर। अपराध।

गुनाही–सज्ञा पु० दे० "गुनहगार"।

गुनियां†–सज्ञा पु० [हि० गुणी] गुणवान्।

गुनी–वि० सज्ञा पु० दे० "गुणी"।

गुप–वि० दे० "घुप"।

गुपचुप–क्रि० वि० [हि० गुप्त+चुप] बहुत गुप्त रीति से। छिपाकर। चुपचाप। सज्ञा पु० एक प्रकार की मिठाई।

गुपाल–सज्ञा पु० दे० "गोपाल"।

गुपत*–वि० दे० "गुप्त"।

गुप्त–वि० [स०] १ छिपा हुआ। पोशीदा। २ गूढ। जिसके जानने म कठिनता हो। सज्ञा पु० [स०] वैश्यो का अल्ल।

गुप्तचर–सज्ञा पु० [स०] वह दूत जो किसी बात का चुपचाप भेद लेता हो। भेदिया। जासूस।

गुप्तदान–सज्ञा पु० [स०] वह दान जिसे देते समय दाता ही जाने और कोई न जाने।

गुप्ता–सज्ञा स्त्री० [स०] १ वह नायिका जो प्रेम छिपाने का उद्योग करती है। २ रखी हुई स्त्री। सुरैतिन। रखेली।

गुप्ति–सज्ञा स्त्री० [स०] १ छिपाने की क्रिया। २ रक्षा करने की क्रिया। ३ कारागार। कैदखाना। ४ गुफा। ५ अहिंसा आदि योग के अग। यम।

गुप्ती–सज्ञा स्त्री० [स० गुप्त] वह छडी जिसके अदर गुप्त रूप से किरच या पतली तलवार हो।

गुफा–सज्ञा स्त्री० [स० गुहा] वह गहरा अंधेरा गड्डा जो जमीन या पहाड के नीचे बहुत दूर तक चला गया हो। २ कदरा। गुहा।

गुबरैला–सज्ञा पु० [हि० गोबर+ऐला (प्रत्य०)] एक प्रकार का छोटा कीडा।

गुबार–सज्ञा पु० [अ०] १. गर्द। धूल। २ मन मे दबाया हुआ क्रोध, दुख या द्वेष। आदि।

गुबिंद*–सज्ञा पु० दे० "गोविंद"।

गुब्बारा–सज्ञा पु० [हि० कुप्पा] वह थैली जिसम गरम हवा या हल्की गैस भरकर आकाश म उडाते है।

गुम–सज्ञा पु० [फा०] १ गुप्त। छिपा हुआ। २ अप्रसिद्ध। ३ खोया हुआ।

गुमटा–सज्ञा पु० [स० गुबा+टा (प्रत्य०)] वह गोल सूजन जो मत्थे या सिर पर चोट लगने से होती है। गुल्मी।

गुमटी–सज्ञा स्त्री० [फा० गुबद] मकान के ऊपरी भाग म सीढी या कमरो आदि की छत जो सबसे ऊपर उठी हुई होती है।

गुमना†–क्रि० अ० [फा० गुम] गुम होना। खो जाना।

गुमनाम–वि० [फा०] १ अप्रसिद्ध। अज्ञात। २ जिसमें नाम न दिया हो।

गुमर–सज्ञा पु० [फा० गुमान] १ अभिमान। घमंड। शेखी। २ मन म छिपाया हुआ क्रोध या द्वेष आदि। गुबार। ३ धीरे धीरे की बातचीत। कानाफूसी।

गुमराह–वि० [फा०] १ बुरे मार्ग म चलनेवाला। २ भूला भटका हुआ।

गुमान–सज्ञा पु० [फा०] १ अनुमान। कयास। २ घमड। अहकार। गर्व। ३ लोगो की बुरी धारणा। बदगुमानी।

गुमाना†–क्रि० स० दे० "गँवाना"।

गुमानी–वि० [हि० गुमान] घमडी। अहकारी। गरूर करनेवाला।

गुमाश्ता–सज्ञा पु० [फा०] बडे व्यापारी की ओर के खरीदने और बेचने पर नियुक्त मनुष्य। एजेंट।

गुम्मट–संज्ञा पुं० [फ़ा० गुंबद] गुंबद। संज्ञा पुं० [सं० गुल्म] दे० "गुमटा"।
गुम्मा–वि० [फ़ा० गुम] चुप्पा। न बोलनेवाला।
गुर–संज्ञा पुं० [सं० गुरुमंत्र] वह साधन या क्रिया जिसके करते ही कोई काम तुरंत हो जाय। मूलमंत्र। भेद। युक्ति। †संज्ञा पुं० दे० "गुरु"।
गुरगा–संज्ञा पुं० [सं० गुरुग] [स्त्री० गुरगी] १. चेला। शिष्य। २. टहलुआ। नौकर। ३. गुप्तचर। जासूस।
गुरगाबी–संज्ञा पुं० [फ़ा०] मुंडा जूता।
गुरची†–संज्ञा स्त्री० [हिं० गुरुच] सिकुड़न। वट। बल।
गुरचों–संज्ञा स्त्री० [अनु०] परस्पर धीरे धीरे बातें करना। कानाफूसी।
गुरदा–संज्ञा पुं० [फ़ा० सं० गोर्द] १. रीढ़दार जीवों के अंदर का एक अंग जो कलेजे के निकट होता है। २. साहस। हिम्मत। ३. एक प्रकार की छोटी तोप।
गुरमुख–वि० [हिं० गुरु + मुख] जिसने गुरु से मंत्र लिया हो। दीक्षित।
गुराई†–संज्ञा स्त्री० दे० "गोराई"।
गुराब–संज्ञा पुं० [देश०] तोप लादने की गाड़ी।
गुरिद†*–संज्ञा पुं० [फ़ा० गुर्ज] गदा।
गुरिया–संज्ञा स्त्री० [सं० गुटिका] १. वह दाना या मनका जो माला का एक अंश हो। २. चौकोर या गोल कटा हुआ छोटा टुकड़ा। ३. मछली के मांस की बोटी।
गुरु–वि० [सं०] १. लंबे-चौड़े आकारवाला। बड़ा। २. भारी। वजनी। ३. कठिनता से पकने या पचनेवाला। (खाद्य) संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० गुरुआनी] १. देवताओं के आचार्य्य, बृहस्पति। २. बृहस्पति नामक ग्रह। ३. पुष्य नक्षत्र। ४. यज्ञोपवीत संस्कार में गायत्री मंत्र का उपदेष्टा। आचार्य्य। ५. किसी मंत्र का उपदेष्टा। ६. किसी विद्या या कला का शिक्षक। उस्ताद। ७. दो मात्राओं-वाला अक्षर। (पिंगल) ८. ब्रह्म। ९. विष्णु। १०. शिव।
गुरुआनी–संज्ञा स्त्री० [सं० गुरु + आनी (प्रत्य०)] १. गुरु की स्त्री। २. वह स्त्री जो शिक्षा देती हो।
गुरुआई–संज्ञा स्त्री० [सं० गुरु + आई (प्रत्य०)] १. गुरु का धर्म। २. गुरु का काम। ३. चालाकी। धूर्तता।
गुरुकुल–संज्ञा पुं० [सं०] गुरु, आचार्य्य या शिक्षक के रहने का स्थान जहाँ वह विद्यार्थियों को अपने साथ रखकर शिक्षा देता हो।
गुरुच–संज्ञा स्त्री० [सं० गुडूची] एक प्रकार की मोटी बेल जो पेड़ों पर चढ़ी मिलती है और दवा के काम में आती है। गिलोय।
गुरुजन–संज्ञा पुं० [सं०] बड़े लोग। माता-पिता, आचार्य्य आदि।
गुरुता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गुरुत्व। भारीपन। २. महत्त्व। बड़प्पन। ३. गुरु-पन। गुरुआई।
गुरुताई*–संज्ञा स्त्री० दे० "गुरुता"।
गुरुतोमर–संज्ञा पुं० [सं०] एक छंद।
गुरुत्व–संज्ञा पुं० [सं०] १. भारीपन। वज़न। बोझ। २. महत्त्व। बड़प्पन।
गुरुत्वकेंद्र–संज्ञा पुं० [सं०] किसी पदार्थ में वह विंदु जिसपर समस्त वस्तु का भार एकत्र हुआ और कार्य्य करता हुआ मान सकते हैं।
गुरुत्वाकर्षण–संज्ञा पुं० [सं०] वह आकर्षण जिसके द्वारा भारी वस्तुएँ पृथ्वी पर गिरती हैं।
गुरुदक्षिणा–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह दक्षिणा जो विद्या पढ़ने पर गुरु को दी जाय।
गुरुद्वारा–संज्ञा पुं० [सं० गुरु + द्वार] १. आचार्य्य या गुरु के रहने की जगह। २. सिक्खों का मंदिर।
गुरुभाई–संज्ञा पुं० [सं० गुरु + हिं० भाई] एक ही गुरु के शिष्य।
गुरुमुख–वि० [सं० गुरु + मुख] दीक्षित।

जिसने गुरु से मंत्र लिया हो।
गुरमुखी—संज्ञा स्त्री० [सं० गुरु+मुखी] गुरु नानक की चलाई हुई एक प्रकार की लिपि।
गुरुवार—संज्ञा पुं० [सं०] बृहस्पति का दिन। बृहस्पति। वीफै।
गुरू—संज्ञा पुं० [सं० गुरु] गुरु। अध्यापक।
यौ०—गुरू घंटाल = बड़ा भारी चालाक।
गुरेरना†—क्रि०स० [सं० गुरु = बड़ा + हेरना] आँखें फाड़कर देखना। घूरना।
गुरेरा*—संज्ञा पुं० दे० "गुलेला"।
गुर्ज—संज्ञा पुं० [फा०] गदा। सोटा।
यौ०—गुर्जबर्दार = गदाधारी सैनिक।
संज्ञा पुं० दे० "बुर्ज"।
गुर्जर—संज्ञा पुं० [सं०] १ गुजरात देश। २ गुजरात देश का निवासी। ३ गूजर।
गुर्जरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गुजरात देश की स्त्री। २ भैरव राग की स्त्री। (रागिनी)
गुर्राना—क्रि० अ० [अनु०] १ डराने के लिये घुर घुर की तरह गंभीर शब्द करना (जैसे कुत्ते, बिल्ली करते हैं)। २ क्रोध या अभिमान से कर्कश स्वर से बोलना।
गुर्विणी—वि० स्त्री० [सं०] गर्भवती।
गुल—संज्ञा पुं० [फा०] १ गुलाब का फूल। २ फूल। पुष्प।
मुहा०—गुल खिलना = १ विचित्र घटना होना। २ बखेड़ा खड़ा होना।
३ पशुओं के शरीर में फूल के आकार का भिन्न रंग का गोल दाग। ४ वह गड्ढा जो गालों में हँसने आदि के समय पड़ता है। ५ शरीर पर गरम धातु से दागने से पड़ा हुआ चिह्न। दाग। छाप। ६ दीपक में बत्ती का वह अंश जो जलकर उभर आता है।
मुहा०—(चिराग) गुल करना = (चिराग) बुझाना या ठंडा करना।
७ तमाकू का जला हुआ अंश। जट्ठा। ८ किसी चीज पर बना हुआ भिन्न रंग का कोई गोल निशान। ९. जलता हुआ कोयला।
संज्ञा पुं० कनपटी।

गुल—संज्ञा पुं० [फा०] शोर। हल्ला।
गुल अब्बास—संज्ञा पुं० [फा० गुल + अ० अब्बास] एक पौधा जिसमें बरसात के दिनों में लाल या पीले रंग के फूल लगते हैं। गुलाबाँस।
गुलकंद—संज्ञा पुं० [फा०] मिश्री या चीनी में मिलाकर धूप में सिझाई हुई गुलाब के फूलों की पँखड़ियाँ जिनका व्यवहार प्रायः दस्त साफ लाने के लिये होता है।
गुलकारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] बेल-बूटे का काम।
गुलकेश—संज्ञा पुं० [फा० गुल + केश] मुर्ग-केश का पौधा या फूल। जटाधारी।
गुलखैरू—संज्ञा पुं० [फा० गुल + खैरू] एक पौधा जिसमें नीले रंग के फूल लगते हैं।
गुलगपाड़ा—संज्ञा पुं० [अ० गुल + गप्प] बहुत अधिक चिल्लाहट। शोर। गुल।
गुलगुल—वि० [हिं० गुलगुला] नरम। मुलायम। कोमल।
गुलगुला—संज्ञा पुं० दे० "गुलगुल"।
संज्ञा पुं० [हिं० गोल + गोला] १ एक मीठा पकवान। २ कनपटी। गंडस्थल।
गुलगुलाना†—क्रि० स० [हिं० गुलगुल] गूदेदार चीज को दबा या मलकर मुलायम करना।
गुलगोथना—संज्ञा पुं० [हिं० गुलगुल + तन] ऐसा नाटा मोटा आदमी जिसके गाल आदि अंग खूब फूले हुए हों।
गुलचा—संज्ञा पुं० [हिं० गाल] धीरे से प्रेमपूर्वक गालों पर किया हुआ हाथ का आघात।
गुलचाना, गुलचियाना*—क्रि० स० [हिं० गुलचा + ना] गुलचा मारना।
गुलछर्रा—संज्ञा पुं० [हिं० गोली + छर्रा] वह भोग विलास या चैन जो बहुत स्वच्छंदतापूर्वक और अनुचित रीति से किया जाय।
गुलजार—संज्ञा पुं० [फा०] बाग। वाटिका।
वि० हरा भरा। आनंद और शोभा-युक्त।
गुलझटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गोल + सं० झट = जमाव] १ उलझन की गाँठ। २ सिकुड़न। शिकन।
गुलथी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गोल + सं० अस्थि [

१. पानी ऐसी पतली वस्तुओं के गाढ़े होकर स्थान स्थान पर जमने से बनी हुई गुठली या गोली। २. मांस की गाँठ।

गुलदस्ता–संज्ञा पुं० [फ़ा०] सुंदर फूलों और पत्तियों का एक में बँधा समूह। गुच्छा।

गुलदाऊदी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० गुल + दाऊदी] एक छोटा पौधा जो सुंदर गुच्छेदार फूलों के लिये लगाया जाता है।

गुलदान–संज्ञा पुं० [फा०] गुलदस्ता रखने का पात्र।

गुलदार–संज्ञा पुं० [फा०] १. एक प्रकार का सफ़ेद कबूतर। २. एक प्रकार का कशीदा।
वि० दे० "फूलदार"।

गुलदुपहरिया–संज्ञा पुं० [फ़ा० गुल + हिं० दुपहरिया] एक छोटा सीधा पौधा जिसमें कटोरे के आकार के गहरे लाल रंग के सुंदर फूल लगते हैं।

गुलनार–संज्ञा पुं० [फा०] १. अनार का फूल। २. अनार के फूल का सा गहरा लाल रंग।

गुलबकावली–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० गुल + सं० बकावली] हल्दी की जाति का एक पौधा जिसमें सुंदर सफेद सुगंधित फूल लगते हैं।

गुलबदन–संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का धारीदार रेशमी कपड़ा।

गुलमेंहदी–संज्ञा स्त्री० [फा० गुल + हिं० मेंहदी] एक प्रकार के फूल का पौधा।

गुलमेख–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] वह कील जिसका सिरा गोल होता है। फुलिया।

गुलल्लाला–संज्ञा पुं० [फा०] १. एक प्रकार का पौधा। २. इस पौधे का फूल।

गुलशन–संज्ञा पुं० [फा०] वाटिका। बाग।

गुलशब्बो–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] लहसुन से मिलता-जुलता एक छोटा पौधा। रजनी-गंधा। सुगंधरा। सुगंधिराज।

गुलहजारा–संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का गुलल्लाला।

गुलाब–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. एक झाड़ या कँटीला पौधा जिसमें बहुत सुंदर सुगंधित फूल लगते हैं। २. गुलाबजल।

गुलाबजामुन–संज्ञा पुं० [हिं० गुलाब + हिं० जामुन] १. एक मिठाई। २. एक पेड़ जिसका स्वादिष्ट फल नीबू के बराबर पर कुछ चपटा होता है।

गुलाबपाश–संज्ञा पुं० [हिं० गुलाब + फ़ा० पाश] झारी के आकार का एक लंबा पात्र जिसमें गुलाबजल भरकर छिड़कते हैं।

गुलाबबाड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० गुलाब + हिं० बाड़ी] वह आमोद या उत्सव जिसमें कोई स्थान गुलाब के फूलों से सजाया जाता है।

गुलाबी–वि० [फ़ा०] १. गुलाब के रंग का। २. गुलाब संबंधी। ३. गुलाबजल से बसाया हुआ। ४. थोड़ा या कम। हलका।
संज्ञा पुं० एक प्रकार का हलका लाल रंग।

गुलाम–संज्ञा पुं० [अ०] १. मोल लिया हुआ दास। खरीदा हुआ नौकर। २. साधारण सेवक। नौकर।

गुलामी–संज्ञा स्त्री० [अ० गुलाम+ई (प्रत्य०)] १. गुलाम का भाव। दासत्व। २. सेवा। नौकरी। ३. पराधीनता। परतंत्रता।

गुलाल–संज्ञा पुं० [फ़ा० गुल्लालः] एक प्रकार की लाल बुकनी या चूर्ण जिसे हिंदू होली के दिनों में एक दूसरे के चेहरों पर मलते हैं।

गुलाला–संज्ञा पुं० दे० "गुलल्लाला"।

गुलिस्ताँ–संज्ञा पुं० [फ़ा०] बाग। वाटिका।

गुलूबंद–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. लंबी और प्रायः एक बालिस्त चौड़ी पट्टी जो सरदी से बचने के लिये सिर, गले या कानों पर लपेटते हैं। २. गले का एक गहना।

गुलेनार–संज्ञा पुं० दे० "गुलनार"।

गुलेल–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० गिलूल] वह कमान या धनुष जिससे मिट्टी की गोलियाँ चलाई जाती हैं।

गुलेला–संज्ञा पुं० [फ़ा० गुलूला] १. मिट्टी की गोली जिसको गुलेल से फेंककर चिड़ियों का शिकार किया जाता है। २. गुलेल।

गुल्फ–संज्ञा पुं० [सं०] एँड़ी के ऊपर की गाँठ।

गुल्म-संज्ञा पु० [सं०] १ ऐसा पौधा जो एक जड़ से कई होकर निकले और जिसमें बड़ी लकड़ी या डंठल न हो। जैसे, ईख, शर, आदि। २ सेना का एक समुदाय जिसमें ९ हाथी, ९ रथ, २७ घोड़े और ४५ पैदल होते हैं। ३ पेट का एक रोग।

गुल्लर-संज्ञा स्त्री० दे० "गोरु"।

गुल्ला-संज्ञा पु० [हिं० गोला] मिट्टी की बनी हुई गोली जो गुलेल से फेंकते हैं।
संज्ञा पु० [अ० गुल] शोर। हल्ला।
संज्ञा पु० दे० "गुलेल"।

गुल्लाला-संज्ञा पु० [फा० गुले लाल] एक प्रकार का लाल फूल जिसका पौधा पोस्ते के पौधे के समान होता है।

गुल्ली-संज्ञा स्त्री० [सं० गुलिका=गुठली] १ फल की गुठली। २ महुए की गुठली। ३ किसी वस्तु का कोई लंबोतरा छोटा टुकड़ा जिसका पेटा गोल हो। ४. छत्ते में वह जगह जहाँ मधु होता है।

गुवाक-संज्ञा पु० [सं०] सुपारी।

गुवाल-संज्ञा पु० दे० "ग्वाल"।

गुविंद*|-संज्ञा पु० दे० "गोविंद"।

गुसाँई*-संज्ञा पु० दे० "गोसाई"।

गुसा*|-संज्ञा पु० दे० "गुस्सा"।

गुस्ताख-वि० [फा०] बड़ों का संकोच न रखनेवाला। धृष्ट। अशालीन। अशिष्ट।

गुस्ताखी-संज्ञा स्त्री० [फा०]. धृष्टता। ढिठाई। अशिष्टता। बेअदबी।

गुस्ल-संज्ञा पु० [अ०] स्नान। नहाना।

गुस्लखाना-संज्ञा पु० [अ० गुस्ल+फा० खाना] स्नानागार। नहाने का घर।

गुस्सा-संज्ञा पु० [अ०] [वि० गुस्सावर, गुस्सैल] क्रोध। कोप। रिस।
मुहा०—गुस्सा उतरना या निकलना= क्रोध शांत होना। (किसी पर) गुस्सा उतारना=क्रोध में जो इच्छा हो, उसे पूर्ण करना। अपने कोप का फल चखाना। गुस्सा चढ़ना=क्रोध का आवेश होना।

गुस्सैल-वि० [अ० गुस्सा+हिं० ऐल (प्रत्य०)] जिसे जल्दी क्रोध आवे। गुस्सावर।

गुह-संज्ञा पु० [सं०] १ कार्त्तिकेय। २ अश्व। घोड़ा। ३ विष्णु का एक नाम। ४ निषाद जाति का एक नायक जो राम का मित्र था। ५ गुफा। ६ हृदय।
†संज्ञा पु० [सं० गुह्य] गूह। मैला।

गुहना†-क्रि० स० दे० "गूँथना"।

गुहराना†-क्रि० स० [हिं० गुहार] पुकारना। चिल्लाकर बुलाना।

गुहवाना-क्रि० स० [हिं० गुहना का प्रे०] गुहने का काम कराना। गुंथवाना।

गुहांजनी-संज्ञा स्त्री०[सं० गुह्य+अंजन] आँख की पलक पर होनेवाली फुड़िया। बिलनी।

गुहा-संज्ञा स्त्री० [सं०] गुफा। कंदरा।

गुहाई-संज्ञा स्त्री०[हिं० गुहाना] १ गुहने की क्रिया, ढंग या भाव। २ गुहने की मजदूरी।

गुहार-संज्ञा स्त्री० [सं० गो+हार] रक्षा के लिये पुकार। दोहाई।

गुह्य-वि० [सं०] १ गुप्त। छिपा हुआ। पोशीदा। २ गोपनीय। छिपाने योग्य। ३ गूढ़। जिसका तात्पर्य सहज में न खुले।

गुह्यक-संज्ञा पु० [सं०] वे यक्ष जो कुबेर के खजाना की रक्षा करते हैं।

गुह्यपति-संज्ञा पु० [सं०] कुबेर।

गूँगा-वि० [फा० गूँग=जो बोल न सके] [स्त्री० गूँगी] जो बोल न सके। जिसे वाणी न हो। मूक।
मुहा०—गूँगे का गुड़=ऐसी बात जिसका अनुभव हो, पर वर्णन न हो सके।

गूँज-संज्ञा स्त्री० [सं० गुंज] १ भौंरों के गूँजने का शब्द। कलध्वनि। गुंजार २ प्रतिध्वनि। व्याप्तध्वनि। ३ लट्टू की कील। ४ कान की बालियों में लपेटा हुआ पतला तार।

गूँजना-क्रि० अ० [सं० गुंजन] १ भौंरों या मक्खियों का मधुर ध्वनि करना। गुंजारना। २ प्रतिध्वनित होना। शब्द से व्याप्त होना।

गूँथना-क्रि० स० दे० "गूँधना"।

गूँधना-क्रि० स० [सं० गुध=क्रीड़ा] पानी में सानकर हाथों से दबाना या मलना।

माड़ना। मसलना।
क्रि० स० [सं० गुंफन] गूँथना। पिरोना।
गूजर–संज्ञा पुं० [सं० गुर्जर] [स्त्री० गूजरी, गुजरिया] अहीरों की एक जाति। ग्वाला।
गूजरी–संज्ञा स्त्री० [सं० गुजरी] १. गूजर जाति की स्त्री। ग्वालिन। २. पैर में पहनने का एक जेवर। ३. एक रागिनी।
गूझा–संज्ञा पुं० [सं० गुह्यक] [स्त्री० गुझिया] १. गोझा। बड़ी पिराक। † २. फलों के भीतर का रेशा।
गूढ़–वि० [सं०] १. गुप्त। छिपा हुआ। २. जिसमें बहुत-सा अभिप्राय छिपा हो। अभिप्राय-गर्भित। गंभीर। ३. जिसका आशय जल्दी समझ में न आवे। कठिन।
गूढ़ता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गुप्तता। छिपाव। पोशीदगी। २. कठिनता।
गूढ़ोक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अलंकार जिसमें कोई गुप्त बात किसी दूसरे के ऊपर छोड़ किसी तीसरे के प्रति कही जाती है।
गूढ़ोत्तर–संज्ञा पुं० [सं०] वह काव्यालंकार जिसमें प्रश्न का उत्तर कोई गूढ़ अभिप्राय या मतलब लिए हुए दिया जाता है।
गूथना–क्रि० स० [सं० ग्रंथन] १. कई चीजों को एक गुच्छे या लड़ी में नाथना। पिरोना। २. सूई तागे से टाँकना।
गूदड़–संज्ञा पुं० [हिं० गूथना] [स्त्री० गूदड़ी] चिथड़ा। फटा पुराना कपड़ा।
गूदा–संज्ञा पुं० [सं० गुप्त] [स्त्री० गूदी] १. फल के भीतर का वह अंश जिसमें रस आदि रहता है। २. भेजा। मग्ज। खोपड़ी का सार भाग। ३. मींगी। गिरी।
गून–संज्ञा स्त्री० [सं० गुण] वह रस्सी जिससे नाव खींचते हैं।
गूमा–संज्ञा पुं० [सं० कुंभा] एक छोटा पौधा। द्रोणपुष्पी।
गूलर–संज्ञा पुं० [सं० उदुंबर ?] वटवर्ग का एक बड़ा पेड़ जिसमें लड्डू के से गोल फल लगते हैं। उदुंबर। ऊमर।
मुहा०–गूलर का फूल = वह जो कभी देखने में न आवे। दुर्लभ व्यक्ति या वस्तु।
गूह–संज्ञा पुं० [सं० गुह्य] गलीज। मल। मैला। विष्ठा।
गृध्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. गिद्ध। गीध। २. जटायु, संपाति आदि पौराणिक पक्षी।
गृह–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० गृही] १. घर। मकान। निवास-स्थान। २. कुटुंब। वंश।
गृहजात–संज्ञा पुं० [सं०] वह दास जो घर की दासी से पैदा हो। घर-जाया।
गृहप, गृहपति–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० गृहपत्नी] १. घर का मालिक। २. अग्नि।
गृहयुद्ध–संज्ञा पुं० [सं०] १. घर के भीतर का झगड़ा। २. किसी देश के भीतर ही आपस में होनेवाली लड़ाई।
गृहस्थ–संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्रह्मचर्य्य के उपरांत विवाह करके दूसरे आश्रम में रहने-वाला व्यक्ति। ज्येष्ठाश्रमी। २. घरबार-वाला। बालबच्चोंवाला आदमी। †३. वह जिसके यहाँ खेती होती हो।
गृहस्थाश्रम–संज्ञा पुं० [सं०] चार आश्रमों में से दूसरा आश्रम जिसमें लोग विवाह करके रहते और घर का काम-काज देखते हैं।
गृहस्थी–संज्ञा स्त्री० [सं० गृहस्थ+ई (प्रत्य०)] १. गृहस्थाश्रम। गृहस्थ का कर्त्तव्य। २. घरबार। गृह-व्यवस्था। ३. कुटुंब। लड़के-बाले। ४. घर का सामान। माल-असबाब। †५. खेती बारी।
गृहिणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. घर की मालिकिन। २. भार्य्या। स्त्री।
गृही–संज्ञा पुं० [सं० गृहिन्] [स्त्री० गृहिणी] गृहस्थ। गृहस्थाश्रमी।
गृह्य–वि० [सं०] गृह-संबंधी।
गृह्यसूत्र–संज्ञा पुं० [सं०] वह वैदिक पद्धति जिसके अनुसार गृहस्थ लोग मुंडन, यज्ञोपवीत, विवाह आदि संस्कार करते हैं।
गेंठी–संज्ञा स्त्री० [सं० गृष्टि] वाराही कंद।
गेंड़ा–संज्ञा पुं० [सं० कांड] ऊख के ऊपर का पत्ता। अगोरा।
गंज्ञा पुं० [सं० गोष्ठ] घेरा। अहाता।
गेंड़ना–क्रि० स० [हिं० गेंड] १. खेतों को

गड़े से घेरकर हद बाँधना। २ अन्न रखने के लिए गड्ढ बनाना। ३ घेरना। गाँठना।

गेंडली–संज्ञा स्त्री० [सं० कुण्डली] कुंडल। फेटा। जैसे—साँप की गेंडली।

गेंडा–संज्ञा पुं० [सं० काण्ड] १ ईख के ऊपर के पत्ते। अगौरी। २ ईख। गन्ना।

गेंडुआ†–संज्ञा पुं० [सं० गडुक=तकिया] १ तकिया। सिरहाना। २ बड़ा गेंद।

गेंडुरी–संज्ञा स्त्री० [सं० कुण्डली] १ रस्सी का बना हुआ मेंडरा जिसपर घड़ा रखते हैं। ईंडुरी। बिंडवा। २ फेंटा। कुंडली। ३ साँपों का कुंडलाकार बैठना।

गेंद–संज्ञा पुं० [सं० गेंडुक, गडुक] १ कपड़े रबर या चमड़े का गोला जिससे लड़के खेलते हैं। कंदुक। २ कालिब। कल्बूत।

गेंदवा†–संज्ञा पुं० [सं० गडुक] तकिया।

गेंदा–संज्ञा पुं० [हिं० गेंद] एक पौधा जिसमें पीले रंग के फूल लगते हैं।

गेंदुक*–संज्ञा पुं० [सं० गडुक] गेंद।

गेंदुवा–संज्ञा पुं० [सं० गडुक] गेंडुआ। उसीसा। तकिया। गोल तकिया।

गेंडना–क्रि० स० [सं० गड–चिह्न। हिं० गंडा।] १ लकीर से घेरना। २ परिक्रमा करना। चारों ओर घूमना।

गेय–वि० [सं०] गाने के लायक।

गेरना†–क्रि० स० [सं० गलन या गिरण] १ गिराना। नीचे डालना। २ ढालना। उँडेलना। ३ डालना।

गेरुआ–वि० [हिं० गेरू+आ (प्रत्य०)] १ गेरू के रंग का। मटमैलापन लिए लाल रंग का। २ गेरू में रँगा हुआ। गैरिक। जोगिया। भगवा।

गेरू–संज्ञा स्त्री० [सं० गवेरुक] एक प्रकार की लाल कड़ी मिट्टी जो खानों से निकलती है। गिरिमाटी। गैरिक।

गेह–संज्ञा पुं० [सं० गृह] घर। मकान।

गेहनी*–संज्ञा स्त्री० [हिं० गेह] घरवाली। गृहिणी।

गेही*–संज्ञा पुं० [हिं० गेह] गृहस्थ।

गेहुँअन–संज्ञा पुं० [हिं० गेहूँ] मटमैले रंग का एक अत्यंत जहरीला फनदार साँप।

गेहुँआ–वि० [हिं० गेहूँ] गेहूँ के रंग का। बादामी।

गेहूँ–संज्ञा पुं० [सं० गोधूम] एक प्रसिद्ध अनाज जिसके चूर्ण की रोटी बनती है।

गैंडा–संज्ञा पुं० [सं० गण्डक] भैंस के आकार का एक पशु जो प्रायः दलदलों और कछारों में रहता है जहाँ जंगल होता है।

गैन*–संज्ञा पुं० [सं० गमन] गैल। मार्ग। *संज्ञा पुं० दे० 'गगन'।

ग़ैब–संज्ञा पुं० [अ०] परोक्ष। वह जो सामने न हो।

ग़ैबी–वि० [अ० ग़ैब] १ गुप्त। छिपा हुआ। २ अजनबी। अज्ञात।

गैयर*–संज्ञा पुं० [सं० गजवर] हाथी।

गैया–संज्ञा स्त्री० [सं० गो] गाय।

ग़ैर–वि० [अ०] १ अन्य। दूसरा। २ अजनबी। अपने कुटुंब या अपने समाज से बाहर का (व्यक्ति)। पराया। ३ विरुद्ध अर्थवाचक या निषेध-वाचक शब्द जैसे—ग़ैरमुमकिन, ग़ैरहाज़िर।

ग़ैर–संज्ञा स्त्री० [अ०] अत्याचार। अंधेर।

ग़ैरत–संज्ञा स्त्री० [अ०] लज्जा। हया।

ग़ैरमन्कूला–वि० [अ०] जिसे एक स्थान से उठाकर दूसरे स्थान पर ले न जा सकें। स्थिर। अचल।

ग़ैरमामूली–वि० [अ०] असाधारण।

ग़ैरमुनासिब–वि० [अ०] अनुचित।

ग़ैरमुमकिन–वि० [अ०] असंभव।

ग़ैरवाजिब–वि० [अ०] अयोग्य। अनुचित।

ग़ैरहाज़िर–वि० [अ०] अनुपस्थित।

ग़ैरहाज़िरी–संज्ञा स्त्री० [अ०] अनुपस्थिति।

गैरिक–संज्ञा पुं० [सं०] १ गेरू। २ सोना।

गैल–संज्ञा स्त्री० [हिं० गली] मार्ग। रास्ता।

गोंठ–संज्ञा स्त्री० [सं० गोष्ठ] धोती की लपेट जो कमर पर रहती है। मुर्री।

गोंठना–क्रि० स० [सं० कुंठन] १ किसी वस्तु की नोक या कोर गुठली कर देना। २ गोभ या पुए की कोर को मोड़ मोड़कर उभड़ी हुई लड़ी के रूप में करना।

क्रि० स० [सं० गोष्ठ] चारों ओर से घेरना।

गोंड़–संज्ञा पुं० [सं० गोंड] १. एक असभ्य जाति जो मध्य प्रदेश में पाई जाती है। २. बंग और भुवनेश्वर के बीच का देश।

गोंडरा†–संज्ञा पुं० [सं० कुंडल] [स्त्री० गोंडरी] १. लोहे का मेंड़रा जिसपर मोट का चरसा लटकता है। २. कुंडल के आकार की वस्तु। मेंड़रा। ३. गोल घेरा।

गोंड़ा–संज्ञा पुं० [सं० गोष्ठ] १. बाड़ा। घेरा हुआ स्थान। (विशेषकर चौपायों के लिये।) २. पुरा। गाँव। खेड़ा।

गोंद–संज्ञा पुं० [सं० कुंदुरु या हिं० गूदा] पेड़ों के तने से निकला हुआ चिपचिपा या लसदार पसेव। लासा। निर्यास।

यौ०—*गोंददानी = वह बरतन जिसमें गोंद भिगोकर रखा रहे।*

गोंदपँजीरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० गोंद + पँजीरी] गोंद मिली हुई पँजीरी जिसे प्रसूता स्त्रियों को खिलाते हैं।

गोंदरी–संज्ञा स्त्री० [सं० गुंद्रा] १. पानी में होनेवाली एक घास। २. इस घास की बनी हुई चटाई।

गोंदी–संज्ञा स्त्री० [सं० गोवंदिनी = प्रियंगु] १. मौलसिरी की तरह का एक पेड़। २. इंगुदी। हिंगोट।

गो–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गाय। गऊ। २. किरण। ३. वृष राशि। ४. इंद्रिय। ५. बोलने की शक्ति। वाणी। ६. सरस्वती। ७. आँख। दृष्टि। ८. बिजली। ९. पृथ्वी। जमीन। १०. दिशा। ११. माता। जननी। १२. बकरी, भैंस, भेड़ी इत्यादि दूध देनेवाले पशु। १३. जीभ। जबान। संज्ञा पुं० [सं०] १. बैल। २. नंदी नामक शिवगण। ३. घोड़ा। ४. सूर्य। ५. चंद्रमा। ६. वाण। तीर। ७. आकाश। ८. स्वर्ग। ९. जल। १०. वज्र। ११. शब्द। १२. नौ का अंक।

अव्य० [फ़ा०] यद्यपि।

यौ०—*गोकि = यद्यपि। गो।*

प्रत्य० [फ़ा०] कहनेवाला। (यौ० में)

गोइँठा†–संज्ञा पुं० [सं० गो + विष्ठा] ईंधन के लिये सुखाया हुआ गोबर। उपला। कंडा। गोहरा।

गोइंदा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] गुप्त भेदिया। गुप्तचर। जासूस।

गोइ–संज्ञा पुं० दे० "गोय"।

गोइयाँ–संज्ञा पुं० स्त्री० [हिं० गोहनिया] साथ में रहनेवाला। साथी। सहचर।

गोई–संज्ञा स्त्री० दे० "गोइयाँ।

गोऊ*†–वि० [हिं० गोना + ऊ (प्रत्य०)] चुरानेवाला। छिपानेवाला।

गोकर्ण–संज्ञा पुं० [सं०] १. हिंदुओं का एक शैव क्षेत्र जो मलाबार में है। २. इस स्थान में स्थापित शिवमूर्ति।

वि० [सं०] *गऊ के से लंबे कानवाला।*

गोकर्णी–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक लता। मुरहरी। चुरनहार।

गोकुल–संज्ञा पुं० [सं०] १. गौओं का झुंड। गो-समूह। २. गोशाला। ३. एक प्राचीन गाँव जो वर्त्तमान मथुरा से पूर्व-दक्षिण की ओर है।

गोकोस–*संज्ञा पुं० [सं० गो + क्रोश]* १. उतनी दूरी जहाँ तक गाय के बोलने का शब्द सुन पड़े। २. छोटा कोस।

गोक्षुर–संज्ञा पुं० दे० "गोखरू"।

गोखरू–संज्ञा पुं० [सं० गोक्षुर] १. एक प्रकार का क्षुप जिसमें चने के आकार के कड़े और कँटीले फल लगते हैं। २. धातु के गोल कँटीले टुकड़े जो प्रायः हाथियों को पकड़ने के लिये उनके रास्ते में फैला दिए जाते हैं। ३. गोटे और बादले के तारों से गूँथकर बनाया हुआ एक साज। ४. कड़े के आकार का एक आभूषण।

गोखा–संज्ञा पुं० दे० "झरोखा"।

गोग्रास–संज्ञा पुं० [सं०] पके हुए अन्न का वह थोड़ा सा भाग जो भोजन या श्राद्धादिक के आरंभ में गौ के लिये निकाला जाता है।

गोचर–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह विषय जिसका ज्ञान इंद्रियों-द्वारा हो सके। २. गौओं के चरने का स्थान। चरागाह। चरी।

गोझ–संज्ञा पु० [प्रा०] अपान वायु। पाद।
गोजर–संज्ञा पु० [सं० गर्जू] कनखजूरा।
गोजी–संज्ञा स्त्री० [सं० गवाजन] १ गौ हाँकने की लकड़ी। २ बड़ी लाठी। लट्ठ।
गोझनवट†–संज्ञा स्त्री० [देश०] स्त्रियों की साड़ी का अंचल। पल्ला।
गोझा–संज्ञा पु० [सं० गुह्यक] [स्त्री० अल्पा० गोझिया, गुझिया] १ गुझिया नामक पकवान। पिराक। २ एक प्रकार की कँटीली घास। गुझा। ३ जेब। खलीता।
गोट–संज्ञा स्त्री० [सं० गोष्ठ] १ वह पट्टी या फीता जिसे किसी कपड़े के किनारे लगाते हैं। मगजी। २ किसी प्रकार का किनारा।
संज्ञा स्त्री० [सं० गोष्ठी] मंडली। गोष्ठी।
संज्ञा स्त्री० [सं० गुटक] चौपड़ की मोहरा। नरद। गोटी।
गोटा–संज्ञा पु० [हिं० गोट] १ बादले का बुना हुआ पतला फीता जो कपड़ों के किनारे पर लगाया जाता है। २ धनिया की सादी या भुनी हुई गिरी। ३ छोटे टुकड़ों में कतरी और एक में मिली इलायची सुपारी और खरबूजे बादाम की गिरी। ४ सूखा हुआ मल। कंडी। सुद्दा।
गोटी–संज्ञा स्त्री० [सं० गुटिका] १ कंकड़ गेरू पत्थर इत्यादि का छोटा गोल टुकड़ा जिससे लड़के अनेक प्रकार के खेल खेलते हैं। २ चौपड़ खेलने का मोहरा। नरद। ३ एक खेल जो गोटियों से खेला जाता है। ४ लाभ का आयोजन।
मुहा०—गोटी जमना या बैठना=१ युक्ति सफल होना। २ आमदनी की सूरत होना।
गोठ–संज्ञा स्त्री० [सं० गोष्ठ] १ गोशाला। गोस्थान। २ गोष्ठी। श्राद्ध। ३ सैर।
गोड़†–संज्ञा पु० [सं० गम गो] पैर।
गोड़इत–संज्ञा पु० [हिं० गोड़ैंड+एत (प्रत्य०)] गाँव में पहरा देनेवाला चौकीदार।
गोड़ना–क्रि० स० [हिं० कोड़ना] मिट्टी खोदना और उलट पुलट देना जिससे वह पोली और भुरभुरी हो जाय। गाड़ना।
गोड़ा†–संज्ञा पु० [हिं० गोड़] १ पलँग आदि का पाया। २ घोड़िया।
गोड़ाई–संज्ञा पु० [हिं० गोड़ना] गोड़ने की क्रिया या मजदूरी।
गोड़ाना–क्रि० स० [हिं० गोड़ना का प्रे०] गोड़ने का काम दूसरे से कराना।
गोड़ापाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० गोड़+पाई= जुलाहों का ढाँचा] बार बार आना-जाना।
गोड़ारी†–संज्ञा स्त्री० [हिं० गोड़=पैर+ आरी (प्रत्य०)] १ पलँग आदि का वह भाग जिधर पैर रहता है। पैताना। २ जूता।
गोड़िया–संज्ञा स्त्री० [हिं० गोड़] छोटा पैर।
गोणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ टाट का दोहरा बोरा। गोन। २ एक पुरानी माप।
गोत–संज्ञा पु० [सं० गोत्र] १ कुल। वंश। खानदान। २ समूह। जत्था। गरोह।
गोतम–संज्ञा पु० [सं०] एक ऋषि।
गोतमी–संज्ञा स्त्री० [सं०] गौतम ऋषि की स्त्री अहल्या।
गोता–संज्ञा पु० [अ०] डूबने की क्रिया। डुब्बी।
मुहा०—गोता खाना=धोखे में आना। फरेब में आना। गोता मारना=१ डुबकी लगाना। डूबना। २ बीच में अनुपस्थित रहना।
गोताखोर–संज्ञा पु० [अ०] डुबकी लगानेवाला। डुबकी मारनेवाला।
गोतिया–वि० दे० गोती।
गोती–वि० [सं० गोत्रीय] अपने गोत्र का। जिसके साथ शौचाशौच का संबंध हो। गोत्रीय। भाई-बंधु।
गोत्र–संज्ञा पु० [सं०] १ संतति। संतान। २ नाम। ३ क्षेत्र। वर्त्म। ४ राजा का छत्र। ५ समूह। जत्था। गरोह। ६ बंधु। भाई। ७ एक प्रकार का जाति विभाग। ८ वंश। कुल। खानदान। ९ कुल या वंश की संज्ञा जो उसके किसी मूल पुरुष के अनुसार होती है।
गोदंती–संज्ञा स्त्री० [सं० गोदंत] १ कच्ची मा

सफ़ेद हरताल। २. एक रत्न।

गोद–संज्ञा स्त्री० [सं० क्रोड़] १. वह स्थान जो वक्षस्थल के पास एक या दोनों हाथों का घेरा बनाने से बनता है और जिसमें प्रायः बालकों को लेते हैं। उत्संग। कोरा। मुहा०—गोद का = छोटा बालक। बच्चा। गोद बैठना = दत्तक बनना।
२. अंचल।
मुहा०—गोद पसारकर = अत्यंत अधीनता से। गोद भरना = १. सौभाग्यवती स्त्री के अंचल में नारियल आदि पदार्थ देना। २. संतान होना। औलाद होना।

गोदनहारी–संज्ञा स्त्री० [हिं० गोदना + हारी (प्रत्य०)] कंजड़ या नट जाति की स्त्री जो गोदना गोदने का काम करती है।

गोदना–क्रि० स० [हिं० खोदना] १. चुभाना गड़ाना। २. किसी कार्य्य के लिये बार बार जोर देना। ३. चुभती या लगती हुई बात कहना। ताना देना।
संज्ञा पुं० तिल के आकार का काला चिह्न जो शरीर में नील या कोयले के पानी में डूबी हुई सूइयों से पाछकर बनता है।

गोदा–संज्ञा पुं० [हिं० घौद] बड़, पीपल या पाकर के पक्के फल।

गोदान–संज्ञा पुं० [सं०] १. गौ को विधि-वत् संकल्प करके ब्राह्मण को दान करने की क्रिया। २. केशांत संस्कार।

गोदाम–संज्ञा पुं० [अं० गोडाउन] वह बड़ा स्थान जहाँ बहुत सा बिक्री का माल रखा जाता हो।

गोदावरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] दक्षिण भारत की एक नदी।

गोदी–संज्ञा स्त्री० दे० "गोद"।

गोधन–संज्ञा पुं० [सं०] १. गौओं का समूह। गौओं का झुंड। २. गौ रूपी संपत्ति। ३. एक प्रकार का तीर।
†*संज्ञा पुं० [सं० गोवर्द्धन] गोवर्द्धन पर्वत।

गोधा–संज्ञा स्त्री० [सं०] गोह नामक जंतु।

गोधूम–संज्ञा पुं० [सं०] गेहूँ।

गोधूलि, गोधूली–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह समय जब कि जंगल से चरकर लौटती हुई गौओं के खुरों से धूल उड़ने के कारण धुंधली छा जाय। संध्या का समय।

गोन–संज्ञा स्त्री० [सं० गोणी] १. टाट, कंबल, चमड़े आदि का बना दोहरा बोरा जो बैलों की पीठ पर लादा जाता है। २. साधारण बोरा। खास।
संज्ञा स्त्री० [सं० गुण] रस्सी जिसे नाव खींचने के लिये मस्तूल में बाँधते हैं।

गोनर्द–संज्ञा पुं० [सं०]. १. नागरमोथा। २. सारस पक्षी। ३. एक प्राचीन देश जहाँ महर्षि पतंजलि का जन्म हुआ था।

गोनस–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का साँप। २. वैक्रांत मणि।

गोना*–क्रि० स० [सं० गोपन] छिपाना।

गोनिया–संज्ञा स्त्री० [सं० कोण] दीवार या कोने आदि की सीध जाँचने का औजार।
संज्ञा पुं० [हिं० गोन = बोरा + इया (प्रत्य०)] स्वयं अपनी पीठ पर या बैलों पर लादकर बोरे ढोनेवाला।

गोनी–संज्ञा स्त्री० [सं० गोणी] १. टाट का थैला। बोरा। २. पटुआ। सन। पाट।

गोप–संज्ञा पुं० [सं०] १. गौ की रक्षा करनेवाला। २. ग्वाला। अहीर। ३. गोशाला का अध्यक्ष या प्रबंध करनेवाला। ४. भूपति। राजा। ५. गाँव का मुखिया।
संज्ञा पुं० [सं० गुंफ] गले में पहनने का एक आभूषण।

गोपन–संज्ञा पुं० [सं०] १. छिपाव। दुराव। २. छिपाना। लुकाना। ३. रक्षा।

गोपना*†–क्रि० स० [सं० गोपन] छिपाना।

गोपनीय–वि० [सं०] छिपाने के लायक।

गोपांगना–संज्ञा स्त्री० [सं०] गोप जाति की स्त्री।

गोपा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गाय पालनेवाली, अहीरिन। ग्वालिन। २. श्यामा लता। ३. महात्मा बुद्ध की स्त्री का नाम।

गोपाल–संज्ञा पुं० [सं०] १. गौ का पालन-पोषण करनेवाला। २. अहीर। ग्वाला। ३. श्रीकृष्ण। ४. एक छंद।

गोपालतापन, गोपालतापनीय–संज्ञा पुं० [सं०] एक उपनिषद्।

गोपाष्टमी–संज्ञा स्त्री० [सं०] कार्तिक शुक्ला अष्टमी।

गोपिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गोप की स्त्री। गोपी। २ अहीरिन। ग्वालिन।

गोपी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ग्वालिनी। गोपपत्नी। २ श्रीकृष्ण की प्रमिका व्रज की गोप-जातीय स्त्रियाँ।

गोपीचदन–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की पीली मिट्टी।

गोपीनाथ–संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

गोपुच्छ–संज्ञा पुं० [सं०] १ गौ की पूँछ। २ एक प्रकार का गावदुमा हार।

गोपुर–संज्ञा पुं० [सं०] १ नगर का द्वार। शहर का फाटक। २ किले का फाटक। ३ फाटक। दरवाजा। ४ स्वर्ग।

गोपेंद्र–संज्ञा पुं० [सं०] १ श्रीकृष्ण। २ गोपों में श्रेष्ठ, नद।

गोफन, गोफना–संज्ञा पुं० [सं० गोफण] छींके के आकार का एक जाल जिससे ढले आदि भरकर चलाते हैं। ढेलवाँस। फन्नी।

गोफा–संज्ञा पुं० [सं० गुफ] नया निकला हुआ मुँहबँधा पत्ता।

गोबर–संज्ञा पुं० [सं० गोमय] गाय की विष्ठा। गौ का मल।

गोबरगणेश–वि० [हिं० गोबर + गणेश] १ भद्दा। बदसूरत। २ मूर्ख। बेवकूफ।

गोबरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० गोबर + ई (प्रत्य०) १. कंडा। उपला। २ गोबर की लिपाई।

गोबरैला–संज्ञा पुं० दे० "गुबरैला"।

गोभिल–संज्ञा पुं० [सं०] सामवेदी गृह्य-सूत्र के रचयिता एक प्रसिद्ध ऋषि।

गोभी–संज्ञा स्त्री० [सं०गोजिह्वा या गुफ= गुच्छा] १ एक प्रकार की घास। गोजिया। वनगोभी। २ एक प्रकार का शाक।

गोमती–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक नदी। वाशिष्ठी। २ एक देवी। ३ ग्यारह मात्राओं का एक छद।

गोमय–संज्ञा पुं० [सं०] गौ का गू। गोबर।

गोमुख–संज्ञा पुं० [सं०] १ गौ का मुँह। मुहा०—गोमुख नाहर या व्याघ्र = वह मनुष्य जो देखने में बहुत ही सीधा, पर वास्तव में बड़ा क्रूर और अत्याचारी हो। २ वह छेद जिसका आकार गौ के मुँह के समान होता है। ३ नरसिंहा नाम का बाजा। ४. दे० 'गोमुखी'।

गोमुखी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक प्रकार की थैली जिसमें हाथ डालकर माला फेरते हैं। जपमाली। जप-गुथली। २ गौ के मुँह के आकार का गगोत्तरी का वह स्थान जहाँ से गगा निकलती है।

गोमूत्रिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का चित्रकाव्य।

गोमेद, गोमेदक–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध मणि या रत्न जो कुछ ललाई लिए पीला होता है। राहुरत्न।

गोमेध–संज्ञा पुं० [सं०] एक यज्ञ जिसमें गौ से हवन किया जाता था।

गोंद–संज्ञा पुं० [फा०] गेंद।

गोया–क्रि० वि० [फा०] मानो।

गोर–संज्ञा स्त्री० [फा०] वह गड्ढा जिसमें मृत शरीर गाड़ा जाय। कब्र।
†वि० [सं० गौर] गोरा।

गोरखइमली–संज्ञा स्त्री० [हिं० गोरख + इमली] एक बहुत बड़ा पेड़। कल्पवृक्ष।

गोरखधंधा–संज्ञा पुं० [हिं० गोरख + धंधा] १ कई तारों, कड़ियों या लकड़ी के टुकड़ों इत्यादि का समूह जिनको विशेष युक्ति से परस्पर जोड़ या अलग कर लेते हैं। २ कोई ऐसी चीज या काम जिसमें बहुत झगड़ा या उलझन हो।

गोरखनाथ–संज्ञा पुं० [हिं० गोरक्षनाथ] एक प्रसिद्ध अवधूत या हठयोगी।

गोरखपंथी–वि० [हिं०गोरखनाथ + पंथी] गोरखनाथ के चलाए हुए सप्रदायवाला।

गोरखमुंडी–संज्ञा स्त्री० [सं० मुण्डी] एक प्रकार की घास जिसमें घुंडी के समान गोल गुलाबी रग के फूल लगते हैं।

गोरखर–संज्ञा पुं० [फा०] गध की जाति

का एक जंगली पशु।
गोरखा-संज्ञा पुं० [हिं० गोरख] १. नैपाल के अंतर्गत एक प्रदेश। २. इस देश का निवासी।
गोरज-संज्ञा पुं० [सं०] गौ के खुरों से उड़ी हुई धूल।
गोरटा*-वि० पुं० [हिं० गोरा] [स्त्री० गोरटी] गोरे रंगवाला। गोरा।
गोरस-संज्ञा पुं० [सं०] १. दूध। दुग्ध। २. दधि। दही। ३. तक्र। मठा। छाछ। ४. इंद्रियों का सुख।
गोरसी-संज्ञा स्त्री० [सं० गोरस+ई (प्रत्य०)] दूध गरम करने की अँगीठी।
गोरा-वि० [सं० गौर] सफ़ेद और स्वच्छ वर्णवाला। जिसके शरीर का चमड़ा सफ़ेद और साफ़ हो। (मनुष्य)
संज्ञा पुं० युरोप, अमेरिका आदि देशों का निवासी। फिरंगी।
गोराई*†-संज्ञा स्त्री० [हिं० गोरा + ई या आई] १. गोरापन। २. सुंदरता। सौंदर्य्य।
गोरिल्ला-संज्ञा पुं० [अफ़्रिका] बहुत बड़े आकार का एक प्रकार का बनमानुस।
गोरी-संज्ञा स्त्री० [सं० गौरी] सुदर और गौर वर्ण की स्त्री। रूपवती स्त्री।
गोरू-संज्ञा पुं० [सं० गो] सींगवाला पशु। चौपाया। मवेशी।
गोरोचन-संज्ञा पुं० [सं०] पीले रंग का एक प्रकार का सुगंधित द्रव्य जो गौ के पित्त में से निकलता है।
गोलंदाज-संज्ञा पुं० [फ़ा०] तोप मे गोला रखकर चलानेवाला। तोपची।
गोलंबर-संज्ञा पुं० [हिं० गोल+अंबर] १. गुंबद। २. गुंबद के आकार का कोई गोल ऊँचा उठा हुआ पदार्थ। ३. गोलाई। ४. कलबूत। क़ालिब।
गोल-वि० [सं०] १. जिसका घेरा या परिधि वृत्ताकार हो। चक्र के आकार का। वृत्ताकार। २. ऐसे घनात्मक आकार का जिसके पृष्ठ का प्रत्येक बिंदु उसके भीतर के मध्य बिंदु से समान अंतर पर हो। सर्व-वर्त्तुल। गेंद आदि के आकार का।
मुहा०—गोल गोल = १. स्थूल रूप से। मोटे हिसाब से। २. अस्पष्ट रूप से। साफ़ साफ़ नहीं। गोल बात = ऐसी बात जिसका अर्थ स्पष्ट न हो।
संज्ञा पुं० [सं०] १. मंडलाकार क्षेत्र। वृत्त। २. गोलाकार पिंड। गोला। वटक।
संज्ञा पुं० [फ़ा० गोल] मंडली। झुंड।
गोलक-संज्ञा पुं० [सं०] १. गोलोक। २. गोल पिंड। ३. विधवा का जारज पुत्र। ४. मिट्टी का बड़ा कुंडा। ५. आँख का डेला। ६. आँख की पुतली। ७. गुंबद। ८. वह सदूक या थैली जिसमें धन संग्रह किया जाय। ९. गल्ला। गुल्लक। १०. वह धन जो किसी विशेष कार्य्य के लिये संग्रह करके रखा जाय। फंड।
गोलगप्पा-संज्ञा पुं० [हिं० गोल+अनु० गप] एक प्रकार की महीन और करारी घी में तली फुलकी।
गोलमाल-संज्ञा पुं० [सं० गोल (योग)] गड़बड़। अव्यवस्था।
गोल मिर्च-संज्ञा स्त्री० [हिं० गोल+सं० मरिच] काली मिर्च।
गोलयंत्र-संज्ञा पुं० [सं०] वह यंत्र जिससे ग्रहों, नक्षत्रों की गति और अयन-परिवर्त्तन आदि जाने जाते हों।
गोलयोग-संज्ञा पुं० [सं०] १. ज्योतिष में एक बुरा योग। २. गड़बड़। गोलमाल।
गोला-संज्ञा पुं० [हिं० गोल] १. किसी पदार्थ का बड़ा गोल पिंड। जैसे—लोहे का गोला। २. लोहे का वह गोल पिंड जिसे तोपों की सहायता से शत्रुओं पर फेंकते हैं। ३. वायु गोला। ४. जंगली कबूतर। ५. नारियल की गिरी का गोल पिंड। गरी का गोला। ६. वह बाजार या मंडी जहाँ अनाज या किराने की बड़ी दूकानें हों। ७. लकड़ी का लम्बा लट्ठा जो छाजन में लगाने तथा दूसरे कामों में आता है। कांड़ी। बल्ला। ८. रस्सी, सूत आदि की गोल लपेटी हुई पिंडी।
गोलाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० गोल+आई

(प्रत्य०)] गोल का भाव। गोलापन।
गोलाकार, गोलाकृति–वि० [सं०] जिसका आकार गोल हो। गोल आकारवाला।
गोलार्द्ध–संज्ञा पुं० [सं०] पृथ्वी का आधा भाग जो एक ध्रुव से दूसरे ध्रुव तक उसे बीचोंबीच काटने से बनता है।
गोली–संज्ञा स्त्री० [हिं० गोला का अल्पा०] १ छोटा गोलाकार पिंड। वटिका। बटिया। २ औषध की बटिका। बटी। ३ मिट्टी, काँच आदि का छोटा गोल पिंड जिससे बालक खेलते हैं। ४ गोली का खेल। ५ सीसे आदि का ढला हुआ छोटा गोल पिंड जो बंदूक में भरकर चलाया जाता है।
गोलोक–संज्ञा पुं० [सं०] कृष्ण का निवासस्थान जो सब लोकों से ऊपर माना जाता है।
गोवना*–क्रि० स० दे० "गोना"।
गोवर्द्धन–संज्ञा पुं० [सं०] वृंदावन का एक पवित्र पर्वत जिसे श्रीकृष्ण ने अपनी उँगली पर उठाया था।
गोविंद–संज्ञा पुं० [सं० गोवेंद, प्रा० गोविंद] १ श्रीकृष्ण। २ वेदांतवेत्ता। तत्त्वज्ञ।
गोश–संज्ञा पुं०[फा०] सुनने की इंद्रिय। कान।
गोशमाली–संज्ञा स्त्री० [फा०] १ कान उमेठना। २ ताड़ना। कड़ी चेतावनी।
गोशवारा–संज्ञा पुं० [फा०] १ खजन नामक पेड़ का गोंद। २ कान का बाला। कुंडल। ३ बड़ा मोती जो सीप में अकेला हो। ४ कलाबत्तू से बुना हुआ पगड़ी का आँचल। ५ तुर्रा। कलँगी। सिरपेच। ६ जोड़। मीजान। ७ वह संक्षिप्त लेखा जिसमें हर एक मद का आय व्यय अलग अलग दिखलाया गया हो।
गोशा–संज्ञा पुं० [फा०] १ कोना। अंतराल। २ एकांत स्थान। ३ तरफ। दिशा। ओर। ४ कमान की दोनों नोक। धनुष्कोटि।
गोशाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] गौओं के रहने का स्थान। गोष्ठ।
गोश्त–संज्ञा पुं० [फा०] मांस।
गोष्ठ–संज्ञा पुं० [सं०] १ गोशाला। २ परामर्श। सलाह। ३ दल। मंडली।
गोष्ठी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बहुत से लोगों का समूह। सभा। मंडली। २ वार्त्तालाप। बातचीत। ३ परामर्श। सलाह। ४ एक ही अंक का एक रूपक।
गोसमावल–संज्ञा पुं० दे० "गोशवारा"।
गोसाईं–संज्ञा पुं० [सं० गोस्वामी] १ गौओं का स्वामी या अधिकारी। २ ईश्वर। ३ संन्यासियों का एक संप्रदाय। ४ विरक्त साधु। अतीत। ५ मालिक। प्रभु।
गोसैयाँ†–संज्ञा पुं० दे० "गोसाईं"।
गोस्वामी–संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसने इंद्रियों को वश में कर लिया हो। जितेंद्रिय। २ वैष्णव संप्रदाय में आचार्यों के वंशधर या उनकी गद्दी के अधिकारी।
गोह–संज्ञा स्त्री० [सं० गोधा] छिपकली की जाति का एक जंगली जंतु।
गोहन*–संज्ञा पुं० [सं० गोधन] १ संग रहनेवाला। साथी। २ संग। साथ।
गोहरा–संज्ञा पुं०[सं०गो + ईल्ल या गोहल्ल] [स्त्री० अल्पा० गोहरी] सुखाया हुआ गोबर। कंडा। उपला।
गोहराना†–क्रि० अ० [हिं० गोहार] पुकारना। बुलाना। आवाज देना।
गोहार–संज्ञा स्त्री० [सं० गो + हार(हरण)] १ पुकार। दुहाई। रक्षा या सहायता के लिये चिल्लाना। २ हल्ला-गुल्ला। शोर।
गोहारी†–संज्ञा स्त्री० दे० 'गोहार'।
गोहीं*†–संज्ञा स्त्री० [सं० गोपन] १ दुराव। छिपाव। २ छिपी हुई बात। गुप्त वार्ता।
गौं–संज्ञा स्त्री० [सं० गम, प्रा० गवँ] १ प्रयोजन सिद्ध होने का स्थान या अवसर। सुयोग। मौका। घात।
यौ०–गौं घात=उपयुक्त अवसर या स्थिति। २ प्रयोजन। मतलब। गरज। अर्थ।
मुहा०—गौं का यार=मतलबी। स्वार्थी। गौं निकलना=काम निकलना। स्वार्थ साधन होना। गौं पड़ना=गरज होना।

३. ढंग। ढब। तर्ज। ४. पार्श्व। पक्ष।
गो—संज्ञा स्त्री० [सं०] गाय। गैया।
गोखा†—संज्ञा स्त्री० [सं० गवाक्ष] १. छोटी खिड़की। झरोखा। २. दालान या बरामदा।
गोखा†—संज्ञा पुं० दे० "गौख"।
संज्ञा पुं० [हिं० गौ=गाय+खाल] गाय का चमड़ा।
गौगा—संज्ञा पुं० [अ०] १. शोर। गुल-गपाड़ा। हल्ला। २. अफ़वाह। जनश्रुति।
गौचरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गौ+चरना] गाय चराने का कर।
गौड़—संज्ञा पुं० [सं०] १. वंग देश का एक प्राचीन विभाग। २. ब्राह्मणों का एक वर्ग जिसमें सारस्वत, कान्यकुब्ज, उत्कल, मैथिल और गौड़ सम्मिलित हैं। ३. ब्राह्मणों की एक जाति। ४. गौड़ देश का निवासी। ५. कायस्थों का एक भेद। ६. संपूर्ण जाति का एक राग।
गौड़िया†—वि० [सं० गौड़+इया (प्रत्य०)] गौड़ देश का। गौड़ देश-संबंधी।
गौड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गुड़ से बनी मदिरा। २. काव्य में एक रीति या वृत्ति जिसमें टवर्ग, संयुक्त अक्षर अथवा समास अधिक आते हैं। ३. संपूर्ण जाति की एक रागिनी।
गौण—वि० [सं०] १. जो प्रधान या मुख्य न हो। २. सहायक। सचारी।
गौणी—वि० स्त्री० [सं०] अप्रधान। साधारण। जो मुख्य न मानी जाय।
संज्ञा स्त्री० एक लक्षण जिसमें किसी एक वस्तु का गुण लेकर दूसरे में आरोपित किया जाता है।
गौतम—संज्ञा पुं० [सं०] १. गोतम ऋषि के वंशज ऋषि। २. न्यायशास्त्र के प्रसिद्ध आचार्य्य ऋषि। ३. बुद्धदेव। ४. सप्तर्षि-मंडल के तारों में से एक।
गौतमी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गौतम ऋषि की स्त्री, अहल्या। २. कृपाचार्य्य की स्त्री। ३. गोदावरी नदी। ४. दुर्गा।
गौदुमा—वि० दे० "गावदुम"।
गौन†—संज्ञा पुं० दे० "गमन"।
गौनहाई†—वि० स्त्री० [हिं० गौना+हाई (प्रत्य०)] जिसका गौना हाल में हुआ हो।
गौनहार—संज्ञा स्त्री० [हिं० गौना+हार (प्रत्य०)] १. वह स्त्री जो दुलहिन के साथ उसकी ससुराल जाय। २. दे० "गौनहारी"।
गौनहारिन, गौनहारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गावना+हार (प्रत्य०)] गाने का पेशा करनेवाली स्त्री।
गौना—संज्ञा पुं० [सं० गमन] विवाह के बाद की एक रसम जिसमें वर वधू को अपने साथ घर ले आता है। द्विरागमन। मुकलावा।
गौर—वि० [सं०] १. गोरे चमड़ेवाला। गोरा। २. श्वेत। उज्ज्वल। सफ़ेद।
संज्ञा पुं० [सं०] १. लाल रंग। २. पीला रंग। ३. चंद्रमा। ४. सोना। ५. केसर।
संज्ञा पुं० दे० "गौड़"।
गौर—संज्ञा पुं० [अ०] १. सोच-विचार। चिंतन। २. खयाल। ध्यान।
गौरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गोराई। गोरापन। २. सफ़ेदी।
गौरव—संज्ञा पुं० [सं०] १. बड़प्पन। महत्त्व। २. गुरुता। भारीपन। ३. सम्मान। आदर। इज्जत। ४. उत्कर्ष। ५. अभ्युत्थान।
गौरांग—संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु। २. श्रीकृष्ण। ३. चैतन्य महाप्रभु।
गौरा—संज्ञा स्त्री० [सं० गौर] १. गोरे रंग की स्त्री। २. पार्वती। गिरिजा। ३. हल्दी।
गौरिया—संज्ञा स्त्री० [?] १. काले रंग का एक जलपक्षी। २. मिट्टी का बना हुआ एक प्रकार का छोटा हुक्का।
गौरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गोरे रंग की स्त्री। २. पार्वती। गिरिजा। ३. आठ वर्ष की कन्या। ४. हल्दी। ५. तुलसी। ६. गोरोचन। ७. सफ़ेद रंग की गाय। ८. सफ़ेद दूब। ९. गंगा नदी। १०. पृथिवी।

गौरीशंकर—संज्ञा पुं० [सं०] १ महादेव। शिव। २. हिमालय पर्वत की सबसे ऊँची चोटी का नाम।

गौरैया†—संज्ञा स्त्री० दे० "गौरिया"।

गौस्तिक—संज्ञा पुं० [सं०] एक गुच्छ या ३० लड़ियों का नायक।

गौहर—संज्ञा पुं० [फा०] मोती।

ग्यान†—संज्ञा पुं० दे० "ज्ञान"।

ग्यारस—संज्ञा स्त्री० [हिं० ग्यारह] एकादशी तिथि।

ग्यारह—वि० [सं० एकादश, प्रा० एगारह] दस और एक।
संज्ञा पुं० दस और एक की सूचक संख्या ११।

ग्रंथ—संज्ञा पुं० [सं०] १ पुस्तक। किताब। २ गाँठ देना या लगाना। ग्रथन। ३ धन।

ग्रंथकर्त्ता, ग्रंथकार—संज्ञा पुं० [सं०] ग्रंथ की रचना करनेवाला।

ग्रंथचुंबक—संज्ञा पुं० [सं० ग्रंथ+चुंबक=चूमनेवाला] जो ग्रंथों का केवल पाठ मात्र कर गया हो। अल्पज्ञ।

ग्रंथचुंबन—संज्ञा पुं० [सं० ग्रंथ+चुंबन] किताब को सरसरी तौर पर पढ़ना।

ग्रथन—संज्ञा पुं० [सं०] १ गोंद लगाकर जोड़ना। २ जोड़ना। ३ गूँथना।

ग्रंथसंधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] ग्रंथ का विभाग। जैसे—सर्ग, अध्याय आदि।

ग्रंथ साहब—संज्ञा पुं० [हिं० ग्रंथ+साहब] सिक्खों की धर्म-पुस्तक।

ग्रंथि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गाँठ। २ बंधन। ३ मायाजाल। ४ एक रोग जिसमें गोल गाँठों की तरह सूजन हो जाती है।

ग्रथित—वि० [सं० ग्रथन] १ गूँथा हुआ। २ गाँठ दिया हुआ। जिसमें गाँठ लगी हो।

ग्रंथिपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] गाडर दूब।

ग्रंथिबंधन—संज्ञा पुं० [सं०] विवाह के समय वर और कन्या के कपड़ों के कोनों को परस्पर गाँठ देकर बाँधने की क्रिया। गँठबंधा।

ग्रंथिल—वि० [सं०] गाँठदार। गँठीला।

ग्रसन—संज्ञा पुं० [सं०] १. भक्षण। निगलना। २. पकड़। ग्रहण। ३. बुरी तरह पकड़ना। ४ ग्रास। ५. ग्रहण।

ग्रसना—क्रि० स० [सं० ग्रसन] १ बुरी तरह पकड़ना। २. सताना।

ग्रसित—वि० दे० "ग्रस्त"।

ग्रस्त—वि० [सं०] १. पकड़ा हुआ। २. पीड़ित। ३. खाया हुआ।

ग्रस्तास्त—संज्ञा पुं० [सं०] ग्रहण लगने पर चंद्रमा या सूर्य का बिना मोक्ष हुए अस्त होना।

ग्रस्तोदय—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा या सूर्य का उस अवस्था में उदय होना जब कि उनपर ग्रहण लगा हो।

ग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] १ वे तारे जिनकी गति, उदय और अस्तकाल आदि का पता प्राचीन ज्योतिषियों ने लगा लिया था। २ वह तारा जो अपने सौर जगत् में सूर्य्य की परिक्रमा करे। जैसे—पृथ्वी, मंगल, बुध। ३ नौ की संख्या। ४ ग्रहण करना। लेना। ५ अनुग्रह। कृपा। ६ चंद्रमा या सूर्य्य का ग्रहण। ७ राहु। ८ स्कंद, शकुनी आदि छोटे बच्चों के रोग।
मुहा०—अच्छे ग्रह होना=अच्छा समय होना। फलित के अनुसार शुभ या अनुकूल ग्रह होना। बुरे ग्रह होना=ग्रहों का प्रतिकूल होना।‡ वि० बुरी तरह से पकड़ने या तंग करनेवाला। दिक करनेवाला।

ग्रहण—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूर्य्य, चंद्र या किसी दूसरे आकाशचारी पिंड की ज्योति का आवरण जो दृष्टि और उस पिंड के मध्य में किसी दूसरे आकाशचारी पिंड के आ जाने या छाया पड़ने से होता है। उपराग। २ पकड़ने या लेने की क्रिया। ३ स्वीकार। मंजूरी।

ग्रहणीय—वि० [सं०] ग्रहण करने के योग्य।

ग्रहदशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गोचर ग्रहों

की स्थिति। २. ग्रहों की स्थिति के अनुसार किसी मनुष्य की भली या बुरी अवस्था। ३. अभाग्य। कमबख्ती।

ग्रहपति–संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य । २. शनि। ३. आक का पेड़।

ग्रहवेध–संज्ञा पुं० [सं०] ग्रह की स्थिति आदि का जानना।

ग्रांडील–वि० [अं० ग्रेंडियर] ऊँचे क़द का। बहुत बड़ा या ऊँचा।

ग्राम–संज्ञा पुं० [सं०] १. छोटी बस्ती। गाँव। २. मनुष्यों के रहने का स्थान। बस्ती। आबादी। जनपद। ३. समूह। ढेर। ४. शिव। ५. क्रम से सात स्वरों का समूह। सप्तक। (संगीत)

ग्रामणी–संज्ञा पुं० [सं०] १. गाँव का मालिक। २. प्रधान। अगुआ।

ग्रामदेवता–संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी एक गाँव में पूजा जानेवाला देवता। २. गाँव की रक्षा करनेवाला देवता। डीहराज।

ग्रामीण–वि० [सं०] देहाती। गँवार।

ग्राम्य–वि० [सं०] १. गाँव से संबंध रखनेवाला। ग्रामीण। २. बेवकूफ। मूढ़। ३. प्राकृत। असली।
संज्ञा पुं० १. काव्य में भद्दे या गँवारू शब्द आने का दोष। २. अश्लील शब्द या वाक्य। ३. मैथुन। स्त्री-प्रसंग।

ग्राम्यधर्म–संज्ञा पुं० [सं०] मैथुन। स्त्री-प्रसंग।

ग्रास–संज्ञा पुं० [सं०] १. उतना भोजन जितना एक बार मुँह में डाला जाय। गस्सा। कौर। निवाला। २. पकड़ने की क्रिया। पकड़। ३. ग्रहण लगना।

ग्रासक–वि० [सं०] १. पकड़नेवाला। २. निगलनेवाला। ३. छिपाने या दबानेवाला।

ग्रासना–क्रि० स० दे० "ग्रसना"।

ग्राह–संज्ञा पुं० [सं०] १. मगर। घड़ियाल। २. ग्रहण। उपराग। ३. पकड़ना। लेना।

ग्राहक–संज्ञा पुं० [सं०] १. ग्रहण करनेवाला। २. मोल लेनेवाला। खरीदनेवाला। खरीदार। ३. लेने या पाने की इच्छा रखनेवाला। चाहनेवाला। ४. वह ओषधि जिससे बँधा पैखाना होने लगे।

ग्राही–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० ग्राहिणी] १. वह जो ग्रहण करे। स्वीकार करनेवाला। २. मल रोकनेवाला पदार्थ।

ग्राह्य–वि० [सं०] १. लेने योग्य। २. स्वीकार करने योग्य। ३. जानने योग्य।

ग्रीखम*†–संज्ञा स्त्री० दे० "ग्रीष्म"।

ग्रीवा–संज्ञा स्त्री० [सं०] गर्दन। गला।

ग्रीषम*†–संज्ञा स्त्री० दे० "ग्रीष्म"।

ग्रीष्म–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गरमी की ऋतु। जेठ असाढ़ का समय। २. उष्ण। गरम।

ग्लानि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शारीरिक या मानसिक शिथिलता। अनुत्साह। खेद। २. अपनी दशा, कार्य्य की बुराई या दोष आदि को देखकर अनुत्साह, अरुचि और खिन्नता।

ग्वार–संज्ञा स्त्री० [सं० गोराणी] एक वार्षिक पौधा जिसकी फलियों की तरकारी और बीजों की दाल होती है। कौरी। खुरथी।

ग्वारनट, ग्वारनेट–संज्ञा स्त्री० [अ० गारनेट] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

ग्वारपाठा–संज्ञा पुं० [सं० कुमारी + पाठा] घीकुआँर।

ग्वारफली–संज्ञा स्त्री० [हिं० ग्वार + फली] ग्वार की फली जिसकी तरकारी बनती है।

ग्वारी–संज्ञा स्त्री० दे० "ग्वार"।

ग्वाल–संज्ञा पुं० [सं० गो + पाल, प्रा० गोवाल] १. अहीर। २. एक छंद का नाम।

ग्वाला–संज्ञा पुं० दे० "ग्वाल"।

ग्वालिन–संज्ञा स्त्री० [हिं० ग्वाल] १. ग्वाले की स्त्री। ग्वाल जाति की स्त्री। २. ग्वार।
संज्ञा स्त्री० [सं० गोपालिका] एक बरसाती कीड़ा। गिंजाई। घिनौरी।

ग्वैठना†*–क्रि० स० [सं० गुंठन, हिं० गुमेठना] मरोड़ना। ऐंठना। घुमाना।

ग्वैंड़ा†*–संज्ञा पुं० दे० "गोइँड़"।

घ

घ—हिंदी वर्णमाला के व्यंजनों में से कवर्ग का चौथा व्यंजन जिसका उच्चारण जिह्वा-मूल या कंठ से होता है।

घंघोलना—क्रि० स० [हिं० घन+घोलना] १ हिलाकर घोलना। पानी को हिलाकर उसमें कुछ मिलाना। २ पानी को हिलाकर मैला करना।

घंट—संज्ञा पु० [सं० घंट] १ घड़ा। २ मृतक की क्रिया में वह जलपात्र जो पीपल में बाँधा जाता है।

संज्ञा पु० दे० "घंटा"।

घंटा—संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० अल्पा० घंटी] १ धातु का एक बाजा। घड़ियाल। २ वह घड़ियाल जो समय की सूचना देने के लिये बजाया जाता है। ३ दिन रात का चौबीसवाँ भाग। साठ मिनट का समय।

घंटाघर—संज्ञा पु० [हिं० घंटा+घर] वह ऊँचा धौरहर जिसपर एक ऐसी बड़ी धमघड़ी लगी हो जो चारों ओर से दूर तक दिखाई देती हो और जिसका घंटा दूर तक सुनाई देता हो।

घंटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक बहुत छोटा घंटा। २ घुँघुरू।

घंटी—संज्ञा स्त्री० [सं० घंटिका] पीतल या फूल की छोटी लोटिया।

संज्ञा स्त्री० [सं० घंटा] १ बहुत छोटा घंटा। २ घंटी बजने का शब्द। ३ घुँघुरू। चौरासी। ४ गले की हड्डी की वह गुरिया जो अधिक निकली रहती है। ५ गले के अंदर मांस की वह छोटी पिंडी जो जीभ की जड़ के पास लटकती रहती है। कौआ।

घई*—संज्ञा स्त्री० [सं० गभीर] १ गंभीर भँवर। पानी का चक्कर। २ थूनी। टेक।

वि० [सं० गभीर] जिसकी थाह न लग सके। बहुत गहरा। अथाह।

घघरबेल—संज्ञा स्त्री० दे० "बंदाल"।

घघरा—संज्ञा पु० दे० "घाघरा"।

घट—संज्ञा पु० [सं०] १ घड़ा। जलपात्र। कलसा। २ पिंड। शरीर।

मुहा०—घट में बसना या बैठना = मन में बसना। ध्यान पर चढ़ा रहना।

वि० [हिं० घटना] घटा हुआ। कम।

घटक—संज्ञा पु० [सं०] १ बीच में पड़ने वाला। मध्यस्थ। २ विवाह संबंध तय करानेवाला। बरेखिया। ३ दलाल। ४ काम पूरा करनेवाला। चतुर व्यक्ति। ५ वंश-परंपरा बतलानेवाला। चारण।

घटकर्ण*—संज्ञा पु० दे० "कुंभकर्ण"।

घटका—संज्ञा पु० [सं० घट = शरीर] मरने के पहले की वह अवस्था जिसमें साँस रुक रुककर घरघराहट के साथ निकलती है। कफ छेकने की अवस्था। घर्रा।

घटती—संज्ञा स्त्री० [हिं० घटना] १ कमी। कसर। न्यूनता। २ हीनता। अप्रतिष्ठा।

घटन—संज्ञा पु० [सं०] [वि० घटनीय, घटित] १ गढ़ा जाना। २ उपस्थित होना।

घटना—क्रि० अ० [सं० घटन] १ उपस्थित होना। कार्य होना। हाना। २ लगना। सटीक बैठना। ३ ठीक उतरना।

क्रि० अ० [हिं० कटना] १ कम होना। क्षीण होना। २ काफी न रह जाना।

संज्ञा स्त्री० [सं०] कोई बात जो हो जाय। वाकया। वारदात।

घटबढ़—संज्ञा स्त्री० [हिं० घटना + बढ़ना] कमी-बेशी। न्यूनाधिकता।

घटयोनि—संज्ञा पुं० [सं०] अगस्त्य मुनि।

घटवाना—क्रि० स० [हिं० घटाना का प्रे०] घटाने का काम कराना। कम कराना।

घटवाई—संज्ञा पु० [हिं० घाट + वाई] घाट का कर लेनेवाला।

संज्ञा स्त्री० [हिं० घटना] कम करवाई।

घटवार—संज्ञा पुं० [हिं० घाट+पाल या वाला] १. घाट का महसूल लेनेवाला। २. मल्लाह। केवट। ३. घाट पर बैठकर दान लेनेवाला ब्राह्मण। घाटिया।

घटसंभव—संज्ञा पुं० [सं०] अगस्त्य मुनि।

घट-स्थापन—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी मंगल कार्य्य या पूजन आदि के पूर्व जल भरा घड़ा पूजन के स्थान पर रखना। २. नवरात्र का पहला दिन। (इस दिन से देवी की पूजा का आरंभ होता है।)

घटा—संज्ञा स्त्री० [सं०] मेघों का घना समूह। उमड़े हुए बादल। मेघमाला।

घटाई*—संज्ञा स्त्री० [हिं० घटना+ई (प्रत्य०)] हीनता। अप्रतिष्ठा। बेइज्जती।

घटाकाश—संज्ञा पुं० [सं०] घड़ों के अंदर की खाली जगह।

घटाटोप—संज्ञा पुं० [सं०] १. बादलों की घटा जो चारों ओर से घिरे हो। २. गाड़ी या बहली को ढक लेनेवाला ओहार।

घटाना—क्रि० स० [हिं० घटना] १. कम करना। क्षीण करना। २. बाकी निकालना। काटना। ३. अप्रतिष्ठा करना।

घटाव—संज्ञा पुं० [हिं० घटना] १. कम होने का भाव। न्यूनता। कमी। २. अवनति। तनज्जुली। ३. नदी के बाढ़ की कमी।

घटावना‡*—क्रि० स० दे० "घटाना"।

घटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. छोटा घड़ा या नाँद। २. घटी यंत्र। घड़ी। ३. एक घड़ी या २४ मिनट का समय।

घटित—वि० [सं०] बना हुआ। रचा हुआ। रचित। निर्मित।

घटिया—वि० [हिं० घट+इया (प्रत्य०)] १. जो अच्छे मेल का न हो। खराब। सस्ता। 'बढ़िया' का उलटा। २. अधम। तुच्छ।

घटिहा—वि० (हिं० घात+हा (प्रत्य०)] १. घात पाकर अपना स्वार्थ साधनेवाला। २. चालाक। मक्कार। ३. धोखेबाज। बेईमान। ४. व्यभिचारी। लंपट। ५. दुष्ट।

घटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चौबीस मिनट का समय। घड़ी। मुहूर्त्त। २. समयसूचक यंत्र। घड़ी।

संज्ञा स्त्री० [हिं० घटना] १. कमी। न्यूनता। २. हानि। क्षति। नुकसान। घाटा।

घटुका*—संज्ञा पुं० दे० "घटोत्कच"।

घटोत्कच—संज्ञा पुं० [सं०] हिडिंबा से उत्पन्न भीमसेन का पुत्र।

घट्ठा—संज्ञा पुं० [सं० घट्ट] शरीर पर वह उभड़ा हुआ कड़ा चिह्न जो किसी वस्तु की रगड़ लगते लगते पड़ जाता है।

घड़घड़ाना—क्रि० अ० [अनु०] गड़गड़ या घड़घड़ शब्द करना। गड़गड़ाना।

घड़घड़ाहट—संज्ञा स्त्री० [अनु० घड़घड़] घड़घड़ शब्द होने का भाव।

घड़ना—क्रि० स० दे० "गढ़ना"।

घड़नई, घड़नैल—संज्ञा स्त्री० [हिं० घड़ा+नैया (नाव)] बाँस में घड़े बाँधकर बनाया हुआ ढाँचा जिससे छोटी छोटी नदियाँ पार करते हैं।

घड़ा—संज्ञा पुं० [सं० घट] मिट्टी का पानी भरने का बरतन। जलपात्र। बड़ी गगरी।

मुहा०—घड़ों पानी पड़ जाना=अत्यंत *लज्जित होना। लज्जा के मारे गड़ जाना।*

घड़ाना—क्रि० स० दे० "गढ़ाना"।

घड़िया—संज्ञा स्त्री० [सं० घटिका] १. मिट्टी का बरतन जिसमें सोनार सोना, चाँदी गलाते हैं। २. मिट्टी का छोटा प्याला।

घड़ियाल—संज्ञा पुं० [सं० घटिकालि=घंटों का समूह] वह घंटा जो पूजा में या समय की सूचना के लिए बजाया जाता है।

संज्ञा पुं० [हिं० घड़ा+आल=वाला] एक बड़ा और हिंसक जल-जंतु। ग्राह।

घड़ियाली—संज्ञा पुं० [हिं० घड़ियाल] घंटा बजानेवाला।

घड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० घटी] १. दिन-रात का ३२वाँ भाग। २४ मिनट का समय।

मुहा०—घड़ी घड़ी=बार बार। थोड़ी थोड़ी देर पर। घड़ी गिनना=१. किसी बात का बड़ी उत्सुकता के साथ आसरा देखना। २. *मरने के निकट होना।*

२ समय । काल । ३ अवसर । उपयुक्त समय । ४ समय-सूचक यंत्र ।

घड़ीदिआ–संज्ञा पु० [हिं० घड़ी+दीआ=दीपक] वह घड़ा और दिया जो घर के किसी के मरने पर घर में रखा जाता है।

घड़ीसाज–संज्ञा पु० [हिं० घड़ी+फा० साज़] घड़ी की मरम्मत करनेवाला।

घड़ौंची–संज्ञा स्त्री० [सं० घटमंच, प्रा० घड़-मंच] पानी से भरा घड़ा रखने की तिपाई।

घतिया–संज्ञा पु० [हिं० घात+इया (प्रत्य०)] घात करनेवाला। धोखा देनेवाला।

घतियाना–क्रि० स० [हिं० घात] १ अपनी घात या दाँव में लाना। मतलब पर चढ़ाना। २ चुराना। छिपाना।

घन–संज्ञा पु० [सं०] १ मेघ। बादल। २ लोहारों का बड़ा हथौड़ा जिससे वे गरम लोहा पीटते हैं। ३ समूह। झुंड। ४ कपूर। ५ घंटा। घड़ियाल। ६ वह गुणनफल जो किसी अंक को उसी अंक से दो बार गुणन करने से लब्ध हो। ७ लंबाई, चौड़ाई और मोटाई (ऊँचाई या गहराई) तीनों का विस्तार। ८ ताल देने का बाजा। ९ पिंड। शरीर। वि० १ घना। गझिन। २ गठा हुआ। ठोस। ३ दृढ़। मजबूत। ४ बहुत अधिक। ज्यादा।

घनगरज–संज्ञा स्त्री० [हिं० घन+गर्जन] १ बादल के गरजने की ध्वनि। २ एक प्रकार की खुमी जो खाई जाती है। ढिंगरी। ३ एक प्रकार की तोप।

घनघनाना–क्रि० अ० [अनु०] घंटे की सी ध्वनि निकलना।
क्रि० स० [अनु०] घन घन शब्द करना।

घनघनाहट–संज्ञा स्त्री० [अनु०] घन घन शब्द निकलने का भाव या ध्वनि।

घनघोर–संज्ञा पु० [सं० घन+घोर] १ भीषण ध्वनि। २ बादल की गरज। वि० १ बहुत घना। गहरा। २ भीषण। यौ०–घनघोर घटा=बड़ी गहरी काली घटा।

घनचक्कर–संज्ञा पु० [सं० घन+चक्र] १ वह व्यक्ति जिसकी बुद्धि सदैव चंचल रहे। २ मूर्ख। बेवकूफ। मूढ़। ३ वह जो व्यर्थ इधर-उधर फिरा करे। आवारागर्द।

घनत्व–संज्ञा पु० [सं०] १ घना होने का भाव। घनापन। सघनता। २ लंबाई, चौड़ाई और मोटाई तीनों का भाव। ३ गठाव। ठोसपन।

घननाद–संज्ञा पु० [सं०] मेघनाद।

घनफल–संज्ञा पु० [सं०] १ लंबाई, चौड़ाई और मोटाई (गहराई या ऊँचाई) तीनों का गुणनफल। २ वह गुणनफल जो किसी संख्या को उस संख्या से दो बार गुणा करने से प्राप्त हो।

घनबान–संज्ञा पु० [हिं० घन+बाण] एक प्रकार का बाण जिससे बादल छा जाते थे।

घनबेल–वि० [हिं० घन+बेल] जिसमें बेल-बूटे हों। बेलबूटेदार।

घनमूल–संज्ञा पु० [सं०] गणित में किसी घन (राशि) का मूल अंक। जैसे—२७ का घनमूल ३ होगा।

घनश्याम–संज्ञा पु० [सं०] १ काला बादल। २ श्रीकृष्ण। ३ रामचंद्र।

घनसार–संज्ञा पु० [सं०] कपूर।

घना–वि० [सं० घन] [स्त्री० घनी] १ जिसके अवयव या अंश पास पास सटे हों। सघन। गझिन। गुंजान। २ घनिष्ठ। नजदीकी। निकट का। ३ बहुत।

घनाक्षरी–संज्ञा पु० [सं०] दंडक या मनहर छंद जिसे लोग कवित्त कहते हैं।

घनात्मक–वि० [सं०] १ जिसकी लंबाई, चौड़ाई और मोटाई (ऊँचाई या गहराई) बराबर हो। २ जो लंबाई, चौड़ाई और मोटाई को गुणा करने से निकला हो।

घनानंद–संज्ञा पु० [सं०] गद्य-काव्य का एक भेद।

घनिष्ठ–वि० [सं०] १ गाढ़ा। घना। २ पास का। निकटस्थ। (संबंध)

घने–वि० [सं० घन] बहुत से। अनेक।

घनेरा*†–वि० [हिं० घना+एरा (प्रत्य०)] [स्त्री० घनेरी] बहुत अधिक। अतिशय।

घपची–संज्ञा स्त्री० [हिं० घन + पंच] दोनों हाथों की मजबूत पकड़।

घपला–संज्ञा पुं० [अनु०] ऐसी मिलावट जिसमें एक से दूसरे को अलग करना कठिन हो। गड़बड़। गोलमाल।

घबराना–क्रि० अ० [सं० गह्वर या हिं० गड़-बड़ाना] १. व्याकुल होना। चंचल होना। उद्विग्न होना। २. भौचक्का होना। किं-कर्त्तव्य-विमूढ़ होना। ३. उतावली में होना। जल्दी मचाना। ४. जी न लगना। उचाट होना।

क्रि० स० १. व्याकुल करना। अधीर करना। २. भौचक्का करना। ३. जल्दी में डालना। गड़बड़ी डालना। ४. हैरान करना। ५. उचाट करना।

घबराहट–संज्ञा स्त्री० [हिं० घबराना] १. व्याकुलता। अधीरता। उद्विग्नता। २. किंकर्त्तव्य-विमूढ़ता। ३. उतावली।

घमंड–संज्ञा पुं० [सं० गर्व] १. अभिमान। शेखी। अहंकार। २. ज़ोर। भरोसा।

घमंडी–वि० [हिं० घमंड] [स्त्री० घमंडिन] अहंकारी। अभिमानी। मगरूर।

घमकना–क्रि० अ० [अनु० घम] 'घमघम' या और किसी प्रकार का गंभीर शब्द होना। घहराना। गरजना।

†क्रि० स० घूँसा मारना।

घमका–संज्ञा पुं० [अनु०] गदा या घूँसा पड़ने का शब्द। आघात की ध्वनि।

घमघमाना–क्रि० अ० [अनु०] घम घम शब्द होना।

क्रि० स० प्रहार करना। मारना।

घमर–संज्ञा पुं० [अनु०] नगाड़े, ढोल आदि का भारी शब्द। गंभीर ध्वनि।

घमसान–संज्ञा पुं० [अनु० घम + सान (प्रत्य०)] भयंकर युद्ध। घोर रण। गहरी लड़ाई।

घमाका–संज्ञा पुं० [अनु० घम] भारी आघात का शब्द।

घमाघम–संज्ञा स्त्री० [अनु० घम] १. घम घम की ध्वनि। २. धूम-धाम। चहल-पहल। क्रि० वि० घम घम शब्द के साथ।

घमाना†–क्रि० अ० [हिं० घाम] घाम लेना। गरम होने के लिये धूप में बैठना।

घमासान–संज्ञा पुं० दे० "घमसान"।

घमोय–संज्ञा स्त्री० [देश०] कँटीले पत्तों का एक पौधा। सत्यानाशी। भँड़भाँड़।

घर–संज्ञा पुं० [सं० गृह] [वि० घराऊ, घरू, घरेलू] १. मनुष्यों के रहने का स्थान जो दीवार आदि से घेरकर बनाया जाता है। निवासस्थान। आवास। मकान। मुहा०–घर करना = १. बसना। रहना। निवास करना। २. समाने या अँटने के लिये स्थान निकालना। ३. घुसना। धँसना। चित्त, मन या आँख में घर करना = इतना पसंद आना कि उसका ध्यान सदा बना रहे। जँचना। अत्यंत प्रिय होना। घर का = १. निज का। अपना। २. आपस का। संबंधियों या आत्मीय जनों के बीच का। घर का न घाट का = १. जिसके रहने का कोई निश्चित स्थान न हो। २. निकम्मा। बेकाम। घर के बाड़े = घर ही में बढ़ बढ़कर बातें करनेवाला। घर के घर रहना = न हानि उठाना न लाभ। बराबर रहना। घर घाट = १. रंग-ढंग। चाल-ढाल। गति और अवस्था। २. ढंग। ढब। प्रकृति। ३. ठौर-ठिकाना। घर-द्वार। स्थिति। घर घालना = १. घर बिगाड़ना। परिवार में अशांति या दुःख फैलाना। २. कुल में कलंक लगाना। ३. मोहित करके वश में करना। घर फोड़ना = परिवार में झगड़ा लगाना। घर बसना = १. घर आबाद होना। २. घर में धन-धान्य होना। ३. घर में स्त्री या बहू आना। ब्याह होना। घर बैठे = बिना कुछ काम किए। बिना हाथ-पैर डुलाए। बिना परिश्रम (किसी स्त्री का किसी पुरुष के) घर बैठना = किसी के घर पत्नी भाव से जाना। किसी को खसम बनाना। घर में = १. पास से। पल्ले से। २. पति। स्वामी। ३. स्त्री। पत्नी।

२. जन्मस्थान। जन्मभूमि। स्वदेश। ३. घराना। कुल। वंश। खानदान। ४. कार्य्यालय। कारखाना। ५. कोठरी। कमरा। ६. आड़ी खड़ी खींची हुई

रेखाओं से घिरा स्थान। कोठा। खाना। ७ कोई वस्तु रखने का डिब्बा। खाना। ८ पटरी आदि से घिरा हुआ स्थान। खाना। कोठा। ९ किसी वस्तु के अँटने या समाने का स्थान। छोटा गड्ढा। १०. छेद। बिल। ११ मूल कारण। उत्पन्न करनेवाला। १२ गृहस्थी।

घरघराना–क्रि० अ० [अनु०] कफ के कारण गले से साँस लेते समय शब्द निकलना। घर्र घर्र शब्द निकलना।

घरघाल–वि० दे० "घरघालन"।

घरघालन–वि० [हिं० घर+घालन] [स्त्री० घरघालिनी] १ घर बिगाड़नेवाला। २ कुल में कलंक लगानेवाला।

घरजाया–संज्ञा पु० [हिं० घर+जाया = पैदा] गृहजात दास। घर का गुलाम।

घरदासी–संज्ञा स्त्री० [हिं०घर+सं०दासी] गृहिणी। भार्य्या। पत्नी।

घरद्वार–संज्ञा पु० दे० "घरबार"।

घरनाल–संज्ञा स्त्री० [हिं० घड़ा+नाली] एक प्रकार की पुरानी तोप। रहकला।

घरनी–संज्ञा स्त्री० [सं०गृहिणी, प्रा० घरणी] घरवाली। भार्य्या। गृहिणी।

घरफोरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० घर+फोड़ना] परिवार में कलह फैलानेवाली।

घरबसा–संज्ञा पु० [हिं० घर+बसना] [स्त्री०घरबसी] १ उपपति। यार। २ पति।

घरबार–संज्ञा पु० [हिं० घर+बार=द्वार] [वि० घरबारी] १ रहने का स्थान। ठौर-ठिकाना। २ घर का जंजाल। गृहस्थी। ३ निज की सारी संपत्ति।

घरबारी–संज्ञा पु० [हिं०घर+बार] बाल-बच्चोंवाला। गृहस्थ। कुटुंबी।

घरबात*†–संज्ञा स्त्री० [हिं० घर+बात (प्रत्य०)] घर का सामान। गृहस्थी।

घरवाला–संज्ञा पु० [हिं०घर+वाला(प्रत्य०)] [स्त्री० घरवाली] १ घर का मालिक। २ पति। स्वामी।

घरसा*–संज्ञा पु० [सं० घर्ष] रगड़ा

घरहाई*†–संज्ञा स्त्री० [हिं० घर+हाई, हिं० घाई] १ घर में विरोध करानेवाली स्त्री। २ अपकीर्ति फैलानेवाली।

घराऊ–वि० [हिं० घर+आऊ (प्रत्य०)] १ घर से संबंध रखनेवाला। गृहस्थ संबंधी। २ आपस का। निज का।

घराती–संज्ञा पु० [हिं०घर+आती (प्रत्य०)] कन्या-पक्ष के लोग।

घराना–संज्ञा पु० [हिं० घर+आना (प्रत्य०)] खानदान। वंश। कुल।

घरिया–संज्ञा स्त्री० दे० "घड़िया"।

घरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० घर=कोठा, खाना] तह। परत। लपेट।

घरीक*†–क्रि० वि० [हिं० घड़ी+एक] एक घड़ी भर। थोड़ी देर।

घरू–वि० [हिं० घर+ऊ(प्रत्य०)] जिसका संबंध घर-गृहस्थी से हो। घर का।

घरेलू–वि० [हिं० घर+एलू(प्रत्य०)] १ जो घर में आदमियों के पास रहे। पालतू। पालू। २ घर का। निज का। घरू। खानगी। ३ घर का बना हुआ।

घरैया†–वि० [हिं० घर+ऐया (प्रत्य०)] घर या कुटुंब का। अत्यंत घनिष्ठ-संबंधी।

घरो*–संज्ञा पु० दे० "घड़ा"।

घरौंदा, घरौंधा–संज्ञा पु० [हिं० घर+औंदा (प्रत्य०)] १ कागज, मिट्टी आदि का बना हुआ छोटा घर जिससे छोटे बच्चे खेलते हैं। २ छोटा-मोटा घर।

घर्म–संज्ञा पु० [सं०] घाम। धूप।

घर्रा–संज्ञा पु० (अनु०) १ एक प्रकार का अंजन। २ गले की घरघराहट जो कफ के कारण होती है।

घर्राटा–संज्ञा पु० दे० "खर्राटा"।

घर्षण–संज्ञा पु० [सं०] रगड़। घिस्सा।

घलना†–क्रि० अ० [हिं० घालना] १ छूटकर गिर पड़ना। फेंका जाना। २ चढ़े हुए तीर या भरी हुई गोली का छूट पड़ना। ३ मारपीट हो जाना।

घलाघल, घलाघली–संज्ञा स्त्री० [हिं०

चलना] मार-पीट। आघात-प्रतिघात।

घलुआ†–संज्ञा पुं० [हिं० घाल] वह अधिक वस्तु जो खरीदार को उचित तौल के अतिरिक्त दी जाय। घेलौना। घाल।

घवरि*†–संज्ञा स्त्री० दे० "घौद"।

घसखुदा–संज्ञा पुं० [हिं० घास+खोदना] १. घास खोदनेवाला। २. अनाड़ी। मूर्ख।

घसना*†–क्रि० अ० दे० "घिसना"।

घसिटना–क्रि० अ० [सं० घर्षित+ना (प्रत्य०)] घसीटा जाना।

घसियारा–संज्ञा पुं० [हिं० घास+आरा (प्रत्य०)] [स्त्री० घसियारी या घसियारिन] घास बेचनेवाला। घास छीलकर लानेवाला।

घसीट–संज्ञा स्त्री० [हिं० घसीटना] १. जल्दी जल्दी लिखने का भाव। २. जल्दी का लिखा हुआ लेख। ३. घसीटने का भाव।

घसीटना–क्रि० स० [सं० घृष्ट, प्रा० घिष्ट+ना (प्रत्य०)] १. किसी वस्तु को इस प्रकार खींचना कि वह भूमि से रगड़ खाती हुई जाय। कढ़ोरना। २. जल्दी जल्दी लिखकर चलता करना। ३. किसी काम में जबरदस्ती शामिल करना।

घहनाना*†–क्रि० अ० [अनु०] घंटे आदि की ध्वनि निकालना। घहराना।

घहरना–क्रि० अ० [अनु०] गरजने का सा शब्द करना। गंभीर ध्वनि निकालना।

घहराना–क्रि० अ० [अनु०] गरजने का सा शब्द करना। गंभीर शब्द करना।

घहरानि†–संज्ञा स्त्री० [हिं० घहराना] गंभीर ध्वनि। तुमुल शब्द। गरज।

घहरारा*†–संज्ञा पुं० [हिं० घहराना] घोर शब्द। गंभीर ध्वनि। गरज।
वि० घोर शब्द करनेवाला।

घाँ*†–संज्ञा स्त्री० [सं० घ या घाट=ओर] १. दिशा। दिक्। २. ओर। तरफ।

घाँघरा–संज्ञा पुं० दे० "घाघरा"।

घाँटी†–संज्ञा स्त्री० [सं० घंटिका] १. गले के अन्दर की घंटी। कौआ। २. गला।

घाँटो–संज्ञा पुं० [हिं० घट] एक प्रकार का चलता गाना जो चैत में गाया जाता है।

घाँह†*–संज्ञा पुं० [हिं० घाँ] तरफ़। ओर।

घा*–संज्ञा स्त्री० [सं०] ओर। तरफ़।

घाइ*–संज्ञा पुं० दे० "घाव"।

घाइल†*–वि० दे० "घायल"।

घाई†*–संज्ञा स्त्री० [हिं० घाँ या घा] १. ओर। तरफ़। २. दो वस्तुओं के बीच का स्थान। संधि। ३. बार। दफा। ४. पानी में पड़नेवाला भँवर। गिरदाब।

घाई–संज्ञा स्त्री० [सं० गभस्ति=उँगली] दो उँगलियों के बीच की संधि। अंटी।
संज्ञा स्त्री० [हिं० घाव] १. चोट। आघात। प्रहार। वार। २. धोखा। चालबाज़ी।

घाऊघप–वि० [हिं० खाऊ+गप या घप] चुपचाप माल हजम करनेवाला।

घाएँ–अव्य० [हिं० घाँ] ओर। तरफ़।

घाघ–संज्ञा पुं० १. गोंडे के रहनेवाले एक बड़े चतुर और अनुभवी व्यक्ति जिनकी बहुत सी कहावतें उत्तरीय भारत में प्रसिद्ध हैं। २. गहरा चालाक। खुर्राट।

घाघरा–संज्ञा पुं० [सं० घर्घर=क्षुद्रघंटिका] [स्त्री० अल्पा० घाघरी] वह चुननदार और घेरदार पहनावा जिससे स्त्रियों का कमर से नीचे का अंग ढका रहता है। लहँगा।
संज्ञा स्त्री० [सं० घर्घर] सरजू नदी।

घाघस–संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की मुरगी।

घाट–संज्ञा पुं० [सं० घट्ट] १. किसी जलाशय का वह स्थान जहाँ लोग पानी भरते, नहाते-धोते या नाव पर चढ़ते हैं।
मुहा०—घाट घाट का पानी पीना=१. चारों ओर देश-देशांतर में घूमकर अनुभव प्राप्त करना। २. इधर-उधर मारे मारे फिरना।
२. चढ़ाव-उतार का पहाड़ी मार्ग। ३. पहाड़। ४. ओर। तरफ़। दिशा। ५. रंग-ढंग। चाल-ढाल। डौल। ढब। तौर-तरीक़ा। ६. तलवार की धार।
†संज्ञा स्त्री० [सं० घात या हिं० घट=कम] १. धोखा। छल। २. बुराई।
†वि० [हिं० घट] कम। थोड़ा।

घाटवाल–संज्ञा पुं० [हिं० घट+वाला

(प्रत्य०)] घाटिया। गंगापुत्र।
घाटा–संज्ञा पु० [हिं० घटना] घटी। हानि।
घाटारोह†*–संज्ञा पु० [हिं० घाट+सं० रोध] घाट रोकना। घाट से जाने न देना।
घाटि*†–वि० [हिं० घटना] कम। न्यून। घटकर।
संज्ञा स्त्री० [सं० घात] नीच कर्म। पाप।
घाटिया–संज्ञा पु० [सं० घाट+इया(प्रत्य०)] घाटवाल। गंगापुत्र।
घाटी–संज्ञा स्त्री० [हिं० घाट] पर्वतों के बीच का सकरा मार्ग। दर्रा।
घात–संज्ञा पु० [सं०] [वि० घाती] १ प्रहार। चोट। मार। धक्का। जरब। २ वध। हत्या। ३ अहित। बुराई। ४ (गणित में) गुणनफल।
संज्ञा स्त्री० १ कोई कार्य्य करने के लिये अनुकूल स्थिति। दाँव। सुयोग।
मुहा०—घात पर चढ़ना या घात में आना = अभिप्राय-साधन के अनुकूल होना। दाँव पर चढ़ना। हत्थे चढ़ना। घात लगना = मौका मिलना। घात लगाना = युक्ति भिड़ाना। २ किसी पर आक्रमण करने या किसी के विरुद्ध और कोई कार्य्य करने के लिये अनुकूल अवसर की खोज। ताक।
मुहा०—घात में = ताक में।
३ दाँव-पेंच। चाल। छल। चालबाजी। ४ रंग-ढंग। तौर-तरीका।
घातक–संज्ञा पु० [सं०] १ मार डालनेवाला। हत्यारा। २ हिंसक। वधिक।
घातकी–संज्ञा पु० दे० "घातक"।
घातिनी–वि० स्त्री० [सं०] मारनेवाली। वध करनेवाली।
घाती–वि० [सं० घातिन्] [स्त्री० घातिनी] १ घातक। संहारक। २ नाश करनेवाला।
घान–संज्ञा पु० [सं० घन = समूह] १ उतनी वस्तु जितनी एक बार डालकर कोल्हू में पेरी या चक्की में पीसी जाय। २ उतनी वस्तु जितनी एक बार में पकाई जाय।
संज्ञा पु० [हिं० घन] प्रहार। चोट।
घाना†*–क्रि० स० [सं० घात] मारना।
घानी–संज्ञा स्त्री० दे० "घान"।
घाम†–संज्ञा पु० [सं० घर्म] धूप। सूर्यातप।
घामड़–वि० [हिं० घाम] १ घाम या धूप से व्याकुल (चौपाया)। २ मूर्ख।
घाय†*–संज्ञा पु० दे० "घाव"।
घायक–वि० [हिं० घायल] विनाशक।
घायल–वि० [हिं० घाय] जिसको घाव लगा हो। चुटैल। जख्मी। आहत।
घाल†–संज्ञा पु० [हिं० घल्ला] दे० "घलुआ"
मुहा०—घाल न गिनना = तुच्छ समझना।
घालक–संज्ञा पु० [हिं० घालना] [स्त्री० घालिका] मारने या नाश करनेवाला।
घालना†–क्रि० स० [सं० घटन] १ भीतर या ऊपर रखना। डालना। रखना। २ फेंकना। चलाना। छोड़ना। ३ बिगाड़ना। नाश करना। ४ मार डालना।
घालमेल–संज्ञा पु० [हिं० घालना+मेल] १ कई भिन्न प्रकार की वस्तुओं की एक साथ मिलावट। गड्ड-बड्ड। २ मेल-जोल।
घाव–संज्ञा पु० [सं० घात, प्रा० घाअ] शरीर पर का वह स्थान जो कट या चिर गया हो। क्षत। जख्म।
मुहा०—घाव पर नमक या नोन छिड़कना = दुःख के समय और दुःख देना। शोक पर और शोक उत्पन्न करना। घाव पूजना या भरना = घाव का अच्छा होना।
घाव पत्ता–संज्ञा पु० [हिं० घाव+पत्ता] एक लता जिसके पान के से पत्ते घाव, फोड़े आदि पर लगाए जाते हैं।
घावरिय†*–संज्ञा पु० [हिं० घाव+वरिया (वाला)] घावों की चिकित्सा करनेवाला।
घास–संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी पर उगनेवाले छोटे छोटे उद्भिद् जिन्हें चौपाए चरते हैं। तृण। चारा।
यौ०—घास पात या घास-फूस = १ तृण और वनस्पति। २ खर-पतवार। कूड़ा-करकट।
मुहा०—घास काटना, खोदना या छीलना = १ तुच्छ काम करना। २ व्यर्थ काम करना।

घाह*†—संज्ञा स्त्री० दे० "घाई"।

घिग्घी—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. साँस लेने में वह रुकावट जो रोते रोते पड़ने लगती है। हिचकी। सुबकी। २. बोलने में वह रुकावट जो भय के मारे पड़ती है।

घिघियाना—क्रि० अ० [हिं० घिग्घी] १. करुण स्वर में प्रार्थना करना। गिड़गिड़ाना। †२. चिल्लाना।

घिचपिच—संज्ञा स्त्री० [सं० घृष्ट + पिष्ट] १. जगह की तंगी। सँकरापन। २. थोड़े स्थान में बहुत-सी वस्तुओं का समूह। वि० अस्पष्ट। *गिचपिच*।

घिन—संज्ञा स्त्री० [सं० घृणा] १. अरुचि। नफ़रत। घृणा। २. गंदी चीज देखकर जी मचलाने की सी अवस्था। जी बिगड़ना।

घिनाना—क्रि० अ० [हिं० घिन] घृणा करना। नफरत करना।

घिनावना—वि० दे० "घिनौना"।

घिनौना†—वि० [हिं० घिन] [स्त्री० घिनौनी] जिसे देखने से घिन लगे। घृणित। बुरा।

घिन्नी—संज्ञा स्त्री० १. दे० "घिरनी"। २. दे० "गिन्नी"।

घिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० घी] एक बेल जिसके फलों की तरकारी होती है। कद्दू।

घियाकश—संज्ञा पुं० दे० "कद्दूकश"।

घियातोरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० घिया + तोरी] एक बेल जिसके फलों की तरकारी होती है। नेनुवा।

घिरना—क्रि० अ० [सं० ग्रहण] १. सब ओर से छेंका जाना। आवृत्त होना। घेरे में आना। २. चारों ओर इकट्ठा आना।

घिरनी—संज्ञा स्त्री० [सं० घूर्णन] १. गराड़ी। चरखी। २. चक्कर। फेरा। ३. रस्सी बटने की चरखी। ४. दे० "गिन्नी"।

घिराई—संज्ञा स्त्री० [हिं० घेरना] १ घेरने की क्रिया या भाव। २. पशुओं को चराने का काम या मजदूरी।

घिराव—संज्ञा पुं० [हिं० घेरना] १. घेरने या घिरने की क्रिया या भाव। २. घेरा।

घिर्राना†—क्रि० स० [अनु० घिर घिर] १. घसीटना। २. गिड़गिड़ाना।

घिसघिस—संज्ञा स्त्री० [हिं० घिसना] १. कार्य्य में शिथिलता। अनुचित विलंब। अतत्परता। २. व्यर्थ का विलंब। अनिश्चय।

घिसना—क्रि० स० [सं० घर्षण] एक वस्तु को दूसरी वस्तु पर रखकर खूब दबाते हुए इधर-उधर फिराना। रगड़ना। क्रि० अ० रगड़ खाकर कम होना।

घिसपिस†—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. घिस-घिस। २. सट्टा-बट्टा। मेल-जोल।

घिसवाना—क्रि० स० [हिं० घिसना का प्रे०] घिसने का काम कराना। रगड़वाना।

घिसाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० घिसना] घिसने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

घिस्सा—संज्ञा पुं० [हिं० घिसना] १. रगड़ा। २. धक्का। ठोकर। ३. वह आघात जो पहलवान अपनी कुहनी और कलाई की हड्डी से देते हैं। कुंदा। रद्दा।

घी—संज्ञा पुं० [सं० घृत प्रा० घीअ] दूध का चिकना सार जिसमें से जल का अंश तपाकर निकाल दिया गया हो। तपाया हुआ मक्खन। घृत।

मुहा०—घी के दिए जलना = १. कामना पूरी होना। मनोरथ सफल होना। २. आनंद-मंगल होना। उत्सव होना। (किसी की) पाँचों उँगलियाँ घी में होना = खूब आराम चैन का मौका मिलना। खूब लाभ होना।

घीकुँवार—संज्ञा पुं० [सं० घृतकुमारी] ग्वारपाठा। गोंडपट्ठा।

घुँइयाँ—संज्ञा स्त्री० [देश०] अरवी कंद।

घुँघनी—संज्ञा स्त्री० [अनु०] भिगोकर तला हुआ चना, मटर या और कोई अन्न।

घुँघरारे†*—वि० दे० "घुँघराले"।

घुँघराले—वि० [हिं० घुमरना + वाले] [स्त्री० घुँघराली] घूमे हुए (बाल)। टेढ़े और बल खाए हुए (बाल)। छल्लेदार।

घुँघरू—संज्ञा पुं० [अनु० घुन घुन + सं० रव या रु] १. किसी धातु की बनी हुई गोल पोली गुरिया जिसके भीतर 'घन घन' बजने

के लिए कपड़े भर देते हैं। २ ऐसी गुरियों की लड़ी। घौगरी। मजीर। ३ ऐसी गुरियों का बना हुआ पैर का गहना। ४ गले का वह घुर घुर शब्द जो मरते समय कफ छेंकने के कारण निकलता है। घटका। घटुका।

घुंघुवारे-वि० दे० "घुंघराले"।

घुंडी-सज्ञा स्त्री० [सं० ग्रंथि] १ कपडे का गोल बटन। गोपक। २ हाथ पैर में पहनने के गहने के दोनो छोरो पर की गाँठ। ३ कोई गोल गाँठ।

घुग्घी-सज्ञा स्त्री० [देश०] तिकोना लपेटा हुआ कबल आदि जिसे किसान या गडरिये धूप, पानी और शीत से बचने के लिये सिर पर डालते है। घोघी। खुडुआ।

घुग्घू-सज्ञा पु० [स० घूक] उल्लू पक्षी।

घुघुआ-सज्ञा पु० दे० "घुग्घू"।

घुघुआना-क्रि० अ० [हिं० घुग्घू] १ उल्लू पक्षी का बोलना। २ बिल्ली का गुर्राना।

घुटकना-क्रि० स० [हिं० घूंट+करना] १ घूंट घूंट करके पीना। २ निगल जाना।

घुटना-सज्ञा पु० [स० घुटक] पाँव के मध्य का। टाँग और जाँघ के बीच की गाँठ।

क्रि० अ० [हिं० घूंटना या घोटना] १ साँस का भीतर ही दब जाना, बाहर न निकलना। रुकना। फँसना।

मुहा०—घुट घुटकर मरना=दम तोडते हुए साँसत से मरना।

२ उलझकर कडा पड जाना। फँसना। ३ गाँठ या बंधन का दृढ होना।

क्रि० अ० [हिं० घोटना] १ घोटा जाना।

मुहा०—घुटा हुआ=पक्का चालाक।

२ रगड खाकर चिकना होना। ३ घनिष्ठता होना। मेल-जोल होना।

घुटन्ना-सज्ञा पु० [हिं० घुटना] पायजामा।

घुटरूँ-सज्ञा पु० [स० घुट] घुटना।

घुटवाना-क्रि० स० [हिं० घोटना का प्रे०] १ घोटने का काम कराना। २. बाल मुँडाना।

घुटाई-सज्ञा स्त्री० [हिं० घुटना] घोटने या रगडने का भाव या क्रिया।

घुटाना-क्रि० स० [हिं० घोटना का प्रे०] घोटने का काम दूसरे से कराना।

घुट्टी-सज्ञा स्त्री० [हिं० घूंट] वह दवा जो छोटे बच्चों को पाचन के लिये पिलाई जाती है।

मुहा०—घुट्टी में पडना=स्वभाव में होना।

घुडकना-क्रि० स० [स० घुर] क्रुद्ध होकर डराने के लिये जोर से कोई बात कहना। बडबडकर बोलना। डाँटना।

घुड़की-सज्ञा स्त्री० [हिं० घुडकना] १ वह बात जो क्रोध में आकर डराने के लिये जोर से कही जाय। डाँट-डपट। फटकार। २. घुडकने की क्रिया।

यौ०—बदरघुडकी=झूठमूठ डर दिखाना।

घुड़चढ़ा-सज्ञा पु० [हिं० घोडा+चढना] सवार। असवार।

घुडचढ़ी-सज्ञा स्त्री० [हिं० घोडा+चढना] १. विवाह की एक रीति जिसमें दूल्हा घोडे पर चढकर दुलहिन के घर जाता है। २ एक प्रकार की तोप। घुडनाल।

घुडदौड-सज्ञा स्त्री० [हिं० घोडा+दौड] १. घोडों की दौड। २ एक प्रकार का जुए का खेल। ३ घोडे दौडाने का स्थान या सडक। ४ एक प्रकार की बडी नाव।

घुडनाल-सज्ञा स्त्री० [हिं० घोडा+नाल] एक प्रकार की तोप जो घोडो पर चलती है।

घुडबहल-सज्ञा स्त्री० [हिं० घोडा+बहल] वह रथ जिसमें घोडे जुतते हो।

घुडसाल-सज्ञा स्त्री० [हिं०घोडा+शाला] घोडों के बाँधने का स्थान। अस्तबल।

घुडिया-सज्ञा स्त्री० दे० "घोडिया"।

घुणाक्षरन्याय-सज्ञा पु० [स०] ऐसी कृति या रचना जो अनजान में उसी प्रकार हो जाय, जिस प्रकार घुनों के खाते खाते लकडी में अक्षर-से बन जाते हैं।

घुन-सज्ञा पु० [स० घुण] एक छोटा कीडा जो अनाज, लकडी आदि में लगता है।

मुहा०—घुन लगना=१ घुन का अनाज या लकडी को खाना। २ अदर ही अदर किसी

वस्तु का क्षीण होना।

घुनघुना–संज्ञा पुं० दे० "भुनभुना"।

घुनना–क्रि० अ० [हिं० घुन] १. घुन के द्वारा लकड़ी आदि का खाया जाना। २. दोष के कारण अंदर ही से छीजना।

घुन्ना–वि० [अनु० घुनघुनाना] [स्त्री० घुन्नी] जो अपने क्रोध, द्वेष आदि भावों को मन ही में रक्खे। चुप्पा।

घुप–वि० [सं० कूप या अनु०] गहरा (अँधेरा)। निविड़ (अंधकार)।

घुमक्कड़–वि० [हिं० घूमना + अक्कड़ (प्रत्य०)] बहुत घूमनेवाला।

घुमटा–संज्ञा पुं० [हिं० घूमना + टा (प्रत्य०)] सिर का चक्कर। जी घूमना।

घुमड़–संज्ञा स्त्री० [हिं० घुमड़ना] बरसने-वाले बादलों की घेरघार।

घुमड़ना–क्रि० अ० [घूम + अटना] १. बादलों का घूम घूमकर इकट्ठा होना। मेघों का छाना। २. इकट्ठा होना। छा जाना।

घुमरना–क्रि० अ० [अनु० घम घम] १. घोर शब्द करना। ऊँचे शब्द से बजना। २. दे० "घुमड़ना"। †३. घूमना।

घुमराना–क्रि० अ० दे० "घुमरना"।

घुमाना–क्रि० स० [हिं० घूमना] १. चक्कर देना। चारों ओर फिराना। २. इधर-उधर टहलाना। सैर कराना। ३. किसी विषय की ओर लगाना। प्रवृत्त करना।

घुमाव–संज्ञा पुं० [हिं० घुमाना] १. घूमने या घुमाने का भाव। २. फेर। चक्कर।
मुहा०—घुमाव-फिराव की बात = पेचीली बात। हेर फेर की बात।
३. रास्ते का मोड़।

घुमावदार–वि० [हिं० घुमाव + दार] जिसमें कुछ घुमाव-फिराव हो। चक्करदार।

घुम्मरना*–क्रि० अ० दे० "घुमरना"।

घुरघुरा–संज्ञा पुं० [देश०] झींगुर।

घुरघुराना–क्रि० अ० [अनु० घुरघुर] गले से घुर घुर शब्द निकलना।

घुरना*–क्रि० अ० दे० "घुलना"।
क्रि० अ० [सं० घुर] शब्द करना। बजना।

घुरबिनिया–संज्ञा स्त्री० [हिं० घूरा + बीनना] घूर पर से दाना इत्यादि बीन बीनकर एकत्र करने या गली-कूचों में से टूटी-फूटी चीज चुनकर एकत्र करने का काम।

घुर्मित–क्रि० वि० [सं० घूर्णित] घूमता हुआ।

घुलना–क्रि० अ० [सं० घूर्णन प्रा० घुलन] १. पानी, दूध आदि पतली चीजों में खूब हिल-मिल जाना। हल होना।
मुहा०—घुल घुलकर बातें करना = खूब मिल जुलकर बातें करना।
२. द्रवित होना। गलना। ३. पककर पिलपिला होना। ४. रोग आदि से शरीर का क्षीण होना। दुर्बल होना।
मुहा०—घुला हुआ = बुड्ढा। वृद्ध। घुल घुलकर काँटा होना = बहुत दुबला हो जाना। घुल घुलकर मरना = बहुत दिनों तक कष्ट भोगकर मरना।
५. (समय) बीतना। व्यतीत होना।

घुलवाना–क्रि० स० [हिं० घुलाना का प्रे०] १. गलवाना। द्रवित कराना। २. आँख में सुरमा लगवाना।
क्रि० स० [हिं० घोलना का प्रे०] किसी द्रव पदार्थ में मिश्रित कराना। हल कराना।

घुलाना–क्रि० स० [हिं० घुलना] १. गलाना। द्रवित करना। २. शरीर दुर्बल करना। ३. मुँह में रखकर धीरे धीरे रस चूसना। गलाना। चुभलाना। ४. गरमी या दाब पहुँचाकर नरम करना। ५. (सुरमा या काजल) लगाना। सारना। ६. (समय) बिताना। व्यतीत करना।

घुलावट–संज्ञा स्त्री० [हिं० घुलना] घुलने का भाव या क्रिया।

घुसड़ना†–क्रि० अ० दे० "घुसना"।

घुसना–क्रि० अ० [सं० कुश = आलिंगन करना अथवा घर्षण] १. अंदर पैठना। प्रवेश करना। भीतर जाना। २. धँसना। चुभना। गड़ना। ३. अनधिकार चर्चा या कार्य्य करना। ४. मनोनिवेश करना।

घुसपैठ–संज्ञा स्त्री० [हिं० घुसना + पैठना]

पहुँच। गति। प्रवेश। रसाई।

घुसाना–क्रि० स० [हिं० घुसना] १ भीतर घुसेड़ना। पैठाना। २ चुभाना। धँसाना।

घुसेड़ना–क्रि० स० द० "घुसाना"।

घूँघट–संज्ञा पु० [सं० गुंठ] १ वस्त्र का वह भाग जिससे कुलवधू का मुँह ढँका रहता है। २ परदे की वह दीवार जो बाहरी दरवाजे के सामने भीतर की ओर रहती है। गुलामगर्दिश। ओट।

घूँघर–संज्ञा पु० [हिं० घुमरना] बालों में पड़े हुए छल्ले या मरोड़।

घूँघरवाले–वि० [हिं० घूँघर] टेढ़े छल्लेदार। कुंचित। भवरीले। (बाल)

घूँट–संज्ञा पु० [अनु० घुट घुट] द्रव पदार्थ का उतना अंश जितना एक बार में गले से नीचे उतारा जाय। चुसकी।

घूँटना–क्रि० स० [हिं० घूँट] द्रव पदार्थ को गले के नीचे उतारना। पीना।

घूँटी–संज्ञा स्त्री० [हिं० घूँट] एक औषध जो छोटे बच्चों को नित्य पिलाई जाती है। मुहा०—जनम घूँटी=वह घूँटी जो बच्चे को उसका पेट साफ करने के लिए जन्म के दूसरे दिन दी जाती है।

घूँसा–संज्ञा पु० [हिं० घिस्सा] १ बँधी हुई मुट्ठी जो मारने के लिये उठाई जाय। मुक्का। ठुक। घमाका। २ बँधी हुई मुट्ठी का प्रहार।

घूआ–संज्ञा पु० [देश०] १ काँस, मूँज या सरकंडे आदि का रुई की तरह का फूल जो लंबे सींकों में लगता है। २ एक कीड़ा जिसे बुलबुल आदि पक्षी खाते हैं।

घूगस†–संज्ञा पु० [देश०] ऊँचा बुर्ज।

घूघ–संज्ञा स्त्री० [हिं० घोघी या फा० खोद] लोहे या पीतल की बनी टोपी।

घूम–संज्ञा स्त्री० [हिं० घूमना] घूमने का भाव।

घूमना–क्रि० अ० [सं० घूर्णन] १ चारों ओर फिरना। चक्कर खाना। २ सैर करना। टहलना। ३ देशांतर में भ्रमण करना। सफर करना। ४ वृत्त की परिधि में गमन करना। कावा काटना। मँडराना। ५ किसी ओर को मुड़ना। ६ वापस आना या जाना। लौटना। मुहा०—घूम पड़ना=सहसा क्रुद्ध हो जाना। *१७ उन्मत्त होना। मतवाला होना।

घूरना–क्रि० अ० [सं० घूर्णन] १ बार बार आँख गड़ाकर घुरे भाव से देखना। २ क्रोधपूर्वक एकटक देखना। †३ घूमना।

घूरा–संज्ञा पु० [सं० कूट, हिं० कूरा] १ कूड़े-करकट का ढेर। २ कतवारखाना।

घूस–संज्ञा स्त्री० [गुहाशय] चूहे के वर्ग का एक बड़ा जंतु।
संज्ञा स्त्री० [सं० गुह्याशय] वह द्रव्य जो किसी को अपने अनुकूल कोई कार्य्य कराने के लिये अनुचित रूप से दिया जाय। रिश्वत। उत्कोच। लाँच।
यौ०—घूसखोर=घूस खानेवाला।

घृणा–संज्ञा स्त्री० [सं०] घिन। नफरत।

घृणित–वि० [सं०] १ घृणा करने योग्य। २ जिसे देख या सुनकर घृणा पैदा हो।

घृत–संज्ञा पु० [सं०] घी।

घृतकुमारी–संज्ञा स्त्री० [सं०] घीकुवार।

घृताची–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अप्सरा।

घेघा–संज्ञा पु० [देश०] १ गले की नली जिससे भोजन या पानी पेट में जाता है। २ गले का एक रोग जिसमें गले में सूजन होकर बनौड़ा-सा निकल आता है।

घेर–संज्ञा पु० [हिं० घेरना] १ चारों ओर का फैलाव। घेरा। परिधि।

घेरघार–संज्ञा स्त्री० [हिं० घेरना] १ चारों ओर से घेरने या छा जाने की क्रिया। २ चारों ओर का फैलाव। विस्तार। ३ खुशामद। विनती।

घेरना–क्रि० स० [सं० ग्रहण] १ चारों ओर हो जाना। चारों ओर से छकना। बाँधना। २ चारों ओर से रोकना। आक्रांत करना। छेकना। ग्रसना। ३ गाय आदि चौपायों को चराना। ४ किसी स्थान को अपने अधिकार में रखना। ५ खुशामद करना।

घेरा–संज्ञा पु० [हिं० घेरना] १ चारों ओर की सीमा। लंबाई चौड़ाई आदि का

सारा विस्तार या फैलाव । परिधि । २: चारों ओर की सीमा की माप का जोड़ । परिधि का मान । ३. वह वस्तु जो किसी स्थान के चारों ओर हो (जैसे दीवार आदि) । ४. घिरा हुआ स्थान । हाता । मंडल । ५. सेना का किसी दुर्ग या गढ़ को चारों ओर से छेंकने का काम। मुहासरा।

घेवर—संज्ञा पुं० [हिं० घी + पूर] एक प्रकार की मिठाई।

घैया—संज्ञा पु० [हिं० घी या सं० घात] १. ताजे और बिना मथे हुए दूध के ऊपर उतराते हुए मक्खन को काछकर इकट्ठा करने की क्रिया । २. थन से छूटती हुई दूध की धार जो मुँह रोपकर पी जाय। संज्ञा स्त्री० [हिं० घाई या घा] ओर। तरफ।

घैर, घैरु, घैरो†*—संज्ञा पु० [देश०] १. निंदामय चर्चा। बदनामी । अपयश। २. चुगली। गुप्त शिकायत।

घोंघा—संज्ञा पु० [देश०] [स्त्री० घोंघी] शंख की तरह का एक कीड़ा । शंबुक। वि० १. जिसमें कुछ सार न हो। २. मूर्ख।

घोंटना—क्रि० स० [हिं० घूँट, पू० हिं० घोंट] १. घूँट घूँट करके पीना । हज़म करना। क्रि० स० दे० "घोटना"।

घोंपना—क्रि० स० [अनु० घप] १. धँसाना। चुभाना। गड़ाना। २ बुरी तरह सीना।

घोंसला—संज्ञा पु० [सं० कुशालय] घास, फूस आदि से बना हुआ वह स्थान जिसमें पक्षी रहते हैं। नीड़ । खोता।

घोंसुआ†*—संज्ञा पु० दे० "घोंसला"।

घोखना—क्रि० स० [सं० घुष] पाठ को बार बार आवृत्ति करना। रटना। घोटना।

घोघी†—संज्ञा स्त्री० दे० "घुग्घी"।

घोट, घोटक—संज्ञा पु० [सं० घोटक] घोड़ा।

घोटना—क्रि० स० [सं० घुट आवर्त्तन] १. चिकना या चमकीला करने के लिए धार बार रगड़ना। २. बारीक पीसने के लिये बार बार रगड़ना । ३. बट्टे आदि से रगड़कर परस्पर मिलाना । हल करना । ४. अभ्यास करना । मश्क़ करना । ५. डाँटना । फटकारना ६. (गला) इस प्रकार दबाना कि साँस रुक जाय। संज्ञा पुं० [स्त्री० घोटनी] घोटने का औज़ार।

घोटवाना—क्रि० स० [हिं० घोटना का प्रे०] घोटने का काम दूसरे से कराना।

घोटा—संज्ञा पुं० [हिं० घोटना] १. वह वस्तु जिसमें घोटा जाय । २. घुटा हुआ चमकीला कपड़ा । ३. रगड़ा । घुटाई।

घोटाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० घोटना + आई (प्रत्य०)] घोटने का काम या मजदूरी।

घोटाला—संज्ञा पुं० [देश०] घपला। गड़बड़।

घोड़साल—संज्ञा स्त्री० दे० "घुड़साल"।

घोड़ा—संज्ञा पु० [सं० घोटक, प्रा० घोड़ा] [स्त्री० घोड़ी] १. चार पैरों का एक प्रसिद्ध पशु जो सवारी और गाड़ी आदि खींचने के काम में आता है। अश्व। मुहा०—घोड़ा उठाना = घोड़े को तेज दौड़ाना। घोड़ा कसना = घोड़े पर सवारी के लिये जीन या चारजामा कसना। घोड़ा डालना = किसी ओर वेग से घोड़ा बढ़ाना। घोड़ा निकालना = घोड़े को सिखलाकर सवारी के योग्य बनाना। घोड़ा फेंकना = वेग से घोड़ा दौड़ाना। घोड़ा बेचकर सोना = खूब निश्चित होकर सोना। २. वह पेंच या खटका जिसके दबाने से बंदूक में गोली चलती है । ३. टोटा जो भार सँभालने के लिये दीवार में लगाया जाता है। ४. शतरंज का एक मोहरा।

घोड़ागाड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० घोड़ा + गाड़ी] वह गाड़ी जो घोड़े द्वारा चलाई जाती है।

घोड़ानस—संज्ञा स्त्री० [हिं० घोड़ा + नस] वह बड़ी मोटी नस जो एड़ी के पीछे ऊपर की जाती है।

घोड़ाबच—संज्ञा स्त्री० [हिं० घोड़ा + बच] खुरासानी बच।

घोड़िया—संज्ञा स्त्री० [हिं० घोड़ी + इया (प्रत्य०)] १. छोटी घोड़ी। २. दीवार में गड़ी हुई खूँटी। ३. छज्जे का भार सँभालनेवाली टोटी।

घोड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० घोड़ा] १. घोड़े की मादा। २. पायों पर खड़ी काठ की लंबी

पटरी। पाटा। ३ विवाह की वह रीति जिसमे दूल्हा घोडी पर चढकर दुल्हिन के घर जाता है। ४ विवाह के गीत।

घोर-वि० [सं०] १ भयकर। भयानक। डरावना। विकराल। २ सघन। घना। दुर्गम। ३ कठिन। बडा। ४ गहरा। गाढा। ५ बुरा। ६ बहुत ज्यादा।

सज्ञा स्त्री० [सं० घुर] शब्द। गर्जन। ध्वनि।

घोरना*-क्रि० अ० [सं० घोर] भारी शब्द करना। गरजना।

घोरिला*†-सज्ञा पु० [हिं० घोडी] लडको के खेलने का घोडा।

घोल-सज्ञा पु० [हिं० घोलना] वह जो घोलकर बनाया गया हो।

घोलना-क्रि० स० [हिं० घुलना] पानी या और किसी द्रव पदार्थ मे किसी वस्तु को हिलाकर मिलाना। हल करना।

घोष-सज्ञा पु० [सं०] १ अहीरो की बस्ती। २ अहीर। ३ गोशाला। ४ तट। किनारा। ५ शब्द। आवाज। नाद। ६ गरजने का शब्द। ७ शब्दो के उच्चारण मे एक प्रयत्न।

घोषणा-सज्ञा स्त्री० [सं०] १ उच्च स्वर से किसी बात की सूचना। २ राजाज्ञा आदि का प्रचार। मुनादी। डुग्गी। यौ०—घोषणापत्र = वह पत्र जिसमे सर्व-साधारण के सूचनार्थ राजाज्ञा आदि लिखी हो। ३ गर्जन। ध्वनि। शब्द। आवाज।

घोसी-सज्ञा पु० [सं० घोष] अहीर। ग्वाल।

घौद-सज्ञा पु० [देश०] फलो का गुच्छा। गौद।

घ्राण-सज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० घ्रेय] १ नाक। २ सूँघने की शक्ति। ३ सुगध।

ङ

ङ-व्यजन वर्ण का पाँचवाँ और कवर्ग का अतिम अक्षर। यह स्पर्श वर्ण है और इसका उच्चारण-स्थान कठ और नासिका है।

ङ-सज्ञा पु० [सं०] १ सूँघने की शक्ति। २ गध। सुगध। ३ भैरव।

च

च-संस्कृत या हिंदी वर्णमाला का २२ वाँ अक्षर और छठा व्यजन जिसका उच्चारण-स्थान तालु है।

चक-वि० [सं० चक्र] पूरा पूरा। समूचा। सारा। समस्त।

चक्रमण-सज्ञा पु० [सं०] इधर उधर घूमना। टहलना।

चंग-सज्ञा स्त्री० [फा०] डफ के आकार का एक छोटा बाजा।

सज्ञा पु० [?] गजीफे का एक रग।

सज्ञा स्त्री० [सं० च = चद्रमा] पतग। गुड्डी। मुहा०—चग चढना या उमहना = बढी-चढी बात होना। खूब जोर होना। चग पर चढाना = १ इधर-उधर की बात कहकर अपने अनुकूल करना। २ मिजाज बढा देना।

चंगना*-क्रि० स० [हिं० चगा या फा० तग] तग करना। कसना। खीचना।

चगा-वि० [सं० चग] [स्त्री० चगी] १ स्वस्थ। तदुरुस्त। नीरोग। २ अच्छा। भला। सुदर। ३ निर्मल। शुद्ध।

चंग*—संज्ञा पुं० [हिं० चौ = चार + अंगुल] १. चंगुल। पंजा। २. पकड़। वश।

चंगुल—संज्ञा पुं० [हिं० चौ = चार + अंगुल] १. चिड़ियों या पशुओं का टेढ़ा पंजा। २. हाथ के पंजों की वह स्थिति जो उँगलियों से किसी वस्तु को उठाने या लेने के समय होती है। बकोटा।
मुहा०—चंगुल में फँसना = वश या पकड़ में आना। क़ाबू में होना।

चँगेर, चँगेरी—संज्ञा स्त्री० [सं० चंगेरिका] १. बाँस की छिछली डलिया। बाँस की चौड़ी टोकरी। २. फूल रखने की डलिया। डगरी। ३. चमड़े का जलपात्र। मशक। पखाल। ४. रस्सी में बाँधकर लटकाई हुई टोकरी जिसमें बच्चों को सुलाकर पालना झुलाते हैं।

चँगेली—संज्ञा स्त्री० दे० "चँगेर"।

चंच*—संज्ञा पुं० दे० "चंचु"।

चंचरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. भ्रमरी। भँवरी। २. चाँचरि। होली में गाने का एक गीत। ३. हरिप्रिया छंद। ४. एक वर्णवृत्त। चचरी। चंचली। विबुधप्रिया। ५. छब्बीस मात्राओं का एक छंद।

चंचरीक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० चंचरीकी] भ्रमर। भौंरा।

चंचरीकावली—संज्ञा स्त्री० [सं०] तेरह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

चंचल—वि० [सं०] [स्त्री० चंचला] १. चलायमान। अस्थिर। हिलता-डोलता। २. अधीर। अव्यवस्थित। एकाग्र न रहनेवाला। ३. उद्विग्न। घबराया हुआ। ४. नटखट। चुलबुला।

चंचलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अस्थिरता। चपलता। २. नटखटी। शरारत।

चंचलताई*—संज्ञा स्त्री० दे० "चंचलता"।

चंचला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लक्ष्मी। २. बिजली। ३. पिप्पली। ४. एक वर्णवृत्त।

चंचलाई*—संज्ञा स्त्री० दे० "चंचलता"।

चंचु—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का शाक। चेंच। २. रेंड़ का पेड़। ३. मृग। हिरन। संज्ञा स्त्री० चिड़ियों की चोंच।

चंचोरना—क्रि० स० दे० "चचोड़ना"।

चंट—वि० [सं० चंड] १. चालाक। होशियार। सयाना। २. धूर्त। छँटा हुआ।

चंड—वि० [सं०] [स्त्री० चंडा] १. तेज। तीक्ष्ण। उग्र। प्रखर। २. बलवान्। दुर्दमनीय। ३. कठोर। कठिन। विकट। ४. उद्धत। क्रोधी। गुस्सावर।
संज्ञा पुं० [सं० चंड] १. ताप। गरमी। २. एक यमदूत। ३. एक दैत्य जिसे दुर्गा ने मारा था। ४. कार्तिकेय।

चंडकर—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।

चंडता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. उग्रता। प्रबलता। घोरता। २. बल। प्रताप।

चंड-मुंड—संज्ञा पुं० [सं०] दो राक्षसों के नाम जो देवी के हाथों से मारे गए थे।

चंडरसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्ण-वृत्त।

चंडवृष्टिप्रपात—संज्ञा पुं० [सं०] एक दंडक-वृत्त।

चंडांशु—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।

चँडाई*—संज्ञा स्त्री० [सं० चंड = तेज] १. शीघ्रता। जल्दी। फ़ुरती। उतावली। २. प्रबलता। जबरदस्ती। ऊधम। अत्याचार।

चंडाल—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० चंडालिन, चंडालिनी] चांडाल। श्वपच।

चंडालिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुर्गा। २. एक प्रकार की वीणा।

चंडालिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चंडाल वर्ण की स्त्री। २. दुष्टा स्त्री। पापिनी स्त्री। ३. एक प्रकार का दोहा छंद। (दूषित)।

चंडावल—संज्ञा पुं० [सं० चंड + आवलि] १. सेना के पीछे का भाग। 'हरावल' का उलटा। २. बहादुर सिपाही। ३. संतरी।

चंडिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुर्गा। २. लड़ाकी स्त्री। ३. गायत्री देवी।

चंडी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुर्गा का वह रूप जो उन्होंने महिषासुर के वध के लिये धारण किया था। २. कर्कशा और उग्र स्त्री। ३. तेरह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

चंडू—संज्ञा पुं० [सं० चंड = तीक्ष्ण ?] अफ़ीम

या मियाम जिसका धूआँ नली में लिये एक नली में डाला जाता है।

चंडूखाना–संज्ञा पुं० [हिं० चंडू+फा० खाना] वह घर जहाँ लोग चंडू पीते हैं। मुहा०—चंडूखाने की गप=मनचलों की झूठी बकवाद। बिलकुल झूठी बात।

चंडूबाज–संज्ञा पुं० [हिं० चंडू+फा० बाज (प्रत्य०)] चंडू पीनेवाला।

चंडूल–संज्ञा पुं० [देश०] खाकी रंग की एक छोटी चिड़िया।

चंडोल–संज्ञा पुं० [सं० चंद्र+दोल] एक प्रकार की पालकी।

चंद–संज्ञा पुं० [सं० चंद्र] १ दे० "चंद्र"। २ हिंदी के एक अत्यंत प्राचीन कवि जो दिल्ली के अंतिम हिंदू सम्राट् पृथ्वीराज चौहान की सभा में थे।

वि० [फा०] थोड़े से। कुछ।

चंदक–संज्ञा पुं० [सं० चंद्र] १ चंद्रमा। २ चाँदनी। ३ चाँद नाम की मछली। ४ माथे पर पहनने का एक अर्द्धचंद्राकार गहना। ५ नख में पान के आकार की बनावट।

चंदन–संज्ञा पुं० [सं०] १ एक पेड़ जिसके हीर की सुगंधित लकड़ी का व्यवहार देव पूजन आदि में होता है। श्रीखंड। मलय। २ चंदन की लकड़ी या टुकड़ा। ३ घिसे हुए चंदन का लेप। ४ छप्पय छंद का तेरहवाँ भेद।

चंदनगिरि–संज्ञा पुं० [सं०] मलयाचल।

चंदनहार–संज्ञा पुं० दे० 'चंद्रहार'।

चंदनौता–संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का लहँगा।

चंदबान–संज्ञा पुं० दे० "चंद्रबाण"।

चंदरानां†–क्रि० स० [सं० चंद्र (दिखलाना)] १ झुठलाना। बहकाना। बहलाना। २ जान-बूझकर अनजान बनना।

चँदला–वि० [हिं० चाँद=खोपड़ी] गंजा।

चँदवा–संज्ञा पुं० [सं० चंद्र या चंद्रोदय] एक प्रकार का छोटा मंडप। चँदोवा। संज्ञा पुं० [सं० चंद्रक] १ गोल आकार की चकती। मोर की पूँछ पर का अर्द्धचंद्राकार चिह्न।

चंदा–संज्ञा पुं० [सं० चंद या चंद्र] चंद्रमा। संज्ञा पुं० [फा० चंद=कई एक] १ वह थोड़ा थोड़ा धन जो कई आदमियों से किसी कार्य के लिये लिया जाय। बहरी। उगाही। २ किसी सामयिक पत्र या पुस्तक आदि का वार्षिक मूल्य।

चंदिका–संज्ञा स्त्री० दे० "चंद्रिका"।

चंदिनि, चंदिनी–संज्ञा स्त्री० [सं० चंद्र] चाँदनी। चंद्रिका।

चँदिया–संज्ञा स्त्री० [हिं० चाँद] खोपड़ी। सिर का मध्य भाग।

चंदिर–संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

चँदेरी–संज्ञा स्त्री० [सं० चेदि या हिं० चंदेल] एक प्राचीन नगर जो ग्वालियर राज्य में है। चेदि देश की राजधानी।

चँदेरीपति–संज्ञा पुं० [सं०] शिशुपाल।

चंदेल–संज्ञा पुं० [सं०] क्षत्रियों की एक शाखा जो किसी समय कालिंजर और महोबे में राज्य करती थी।

चंद्र–संज्ञा पुं० [सं०] १ चंद्रमा। २ एक की संख्या। ३ मोर की पूँछ की चंद्रिका। ४ कपूर। ५ जल। ६ सोना। सुवर्ण। ७ पौराणिक भूगोल के १८ उपद्वीपों में से एक। ८ वह बिंदी जो सानुनासिक वर्ण के ऊपर लगाई जाती है। ९ पिंगल में टगण का दसवाँ भेद, (।।ऽ।।)। १० हीरा। ११ कोई आनंददायक वस्तु।

वि० १ आनंददायक। २ सुंदर।

चंद्रक–संज्ञा पुं० [सं०] १ चंद्रमा। २ चंद्रमा के ऐसा मंडल या घेरा। ३ चंद्रिका। चाँदनी। ४ मोर की पूँछ की चंद्रिका। ५ नहँ। नाखून। ६ कपूर।

चंद्रकला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चंद्रमंडल का सोलहवाँ अंश। २ चंद्रमा की किरण या ज्योति। ३ एक वर्णवृत्त। ४ माथे पर पहनने का एक गहना।

चंद्रकांत–संज्ञा पुं० [सं०] एक मणि या रत्न जिसके विषय में प्रसिद्ध है कि वह चंद्रमा के सामने करने से पसीजता है।

चंद्रकांता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चन्द्रमा की स्त्री। २. रात्रि। रात। ३. पंद्रह अक्षरों की एक वर्णवृत्ति।

चंद्रगुप्त–संज्ञा पुं० [सं०] १. चित्रगुप्त। २. मगध देश का प्रथम मौर्यवंशी राजा। ३. गुप्तवंश का एक प्रसिद्ध राजा।

चंद्रग्रहण–संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा का ग्रहण।

चंद्रचूड़–संज्ञा पुं० [सं०] शिव।

चंद्रजात–संज्ञा स्त्री० [सं० चंद्र + ज्योति] चंद्रमा का प्रकाश। चाँदनी।

चंद्रधनु–संज्ञा पुं० [सं०] वह इंद्र-धनुष जो रात को चंद्रमा का प्रकाश पड़ने के कारण दिखाई पड़ता है।

चंद्रधर–संज्ञा पुं० [सं०] शिव।

चंद्रप्रभा–संज्ञा स्त्री० [सं०] चंद्रमा की ज्योति। चाँदनी। चंद्रिका।

चंद्रबिंदु–संज्ञा पुं० [सं०] अर्द्ध अनुस्वार की बिंदी। जिसका रूप यह ँ है।

चंद्रबिंब–संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा का मंडल।

चंद्रभागा–संज्ञा स्त्री० [सं०] पंजाब की चनाब नाम की नदी।

चंद्रभाल–संज्ञा पुं० [सं०] शिव।

चंद्रभूषण–संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।

चंद्रमणि–संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रकांत मणि। २. उल्लाला छंद।

चंद्रमा–संज्ञा पुं० [सं० चंद्रमस्] रात को प्रकाश देनेवाला एक उपग्रह जो महीने में एक बार पृथ्वी की प्रदक्षिणा करता है और सूर्य्य से प्रकाश पाकर चमकता है। चाँद। शशि। विधु।

चंद्रमाललाम–संज्ञा पुं० [सं० चंद्रमा + ललाम = भूषण] महादेव। शंकर। शिव।

चंद्रमाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] २८ मात्राओं का एक छंद।

चंद्रमौलि–संज्ञा पुं० [सं०] शिव।

चंद्ररेखा, चंद्रलेखा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चंद्रमा की कला। २. चंद्रमा की किरन। ३. द्वितीया का चंद्रमा। ४. एक वृत्त का नाम।

चंद्रलोक–संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा का लोक।

चंद्रवंश–संज्ञा पुं० [सं०] क्षत्रियों के दो आदिकुलों में से एक जो पुरुरवा से आरंभ हुआ था।

चंद्रवर्त्म–संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्णवृत्त।

चंद्रवार–संज्ञा पुं० [सं०] सोमवार।

चंद्रशेखर–संज्ञा पुं० [सं०] शिव।

चंद्रहार–संज्ञा पुं० [सं०] गले में पहनने की एक प्रकार की माला। नौलखा हार।

चंद्रहास–संज्ञा पुं० [सं०] १. खड्ग। तलवार। २. रावण की तलवार।

चंद्रा–संज्ञा स्त्री० [सं० चंद्र] मरने के समय की वह अवस्था जब टकटकी बँध जाती है।

चंद्रातप–संज्ञा पुं० [सं०] १. चाँदनी। चंद्रिका। २. चँदवा। वितान।

चंद्रावर्त्ता–संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्णवृत्त।

चंद्रिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चंद्रमा का प्रकाश। चाँदनी। कौमुदी। २. मोर की पूँछ के पर का गोल चिह्न। ३. इलायची। ४. जूही या चमेली। ५. एक देवी। ६. एक वर्ण-वृत्त। ७. माथे पर का एक भूषण। बेंदी। बेंदा।

चंद्रोदय–संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा का उदय। २. वैद्यक में एक रस। ३. चँदवा। चँदोवा। वितान।

चंपई–वि० [हिं० चंपा] चंपा के फूल के रंग का। पीले रंग का।

चंपक–संज्ञा पुं० [सं०] १. चंपा। २. चंपा-केला। ३. सांख्य में एक सिद्धि।

चंपकमाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त।

चंपत–वि० [देश०] चलता। गायब। अंतर्धान।

चंपना–क्रि० अ० [सं० चप्] १. बोझ से दबना। २. उपकार आदि से दबना।

चंपा–संज्ञा पुं० [सं० चंपक] १. मझोले कद का एक पेड़ जिसमें हलके पीले रंग के कड़ी महक के फूल लगते हैं। २. एक पुरी जो प्राचीन काल में अंग देश की राजधानी थी। ३. एक प्रकार का मीठा केला। ४. घोड़े की एक जाति। ५. रेशम का

गैंडा।

चंपावली—संज्ञा स्त्री० [हिं० चंपा+कली] गले में पहनने का स्त्रियों का एक गहना।

चंपारण्य—संज्ञा पुं० [सं०] एक स्थान जिसे आजकल चंपारन कहते हैं।

चंपू—संज्ञा पु० [सं०] वह काव्यग्रंथ जिसमें गद्य के बीच बीच में पद्य भी हों।

चंबल—संज्ञा स्त्री० [सं० चर्मण्वती] १ एक नदी। २ नालों के किनारे की वह लकड़ी जिससे सिंचाई के लिए पानी ऊपर चढ़ाते हैं। संज्ञा पु० पानी की बाढ़।

चँवर—संज्ञा पुं० [सं० चामर] [स्त्री० अल्पा० चँवरी] १ डाँड़ी में लगा हुआ सुरागाय की पूँछ के बालों का गुच्छा जो राजाओं या देवमूर्तियों के सिरपर डुलाया जाता है। मुहा०—चँवर ढलना=ऊपर चँवर हिलाया जाना।

२ घोड़ों और हाथियों के सिर पर लगाने की कलगी। ३ झालर। फुँदना।

चँवरढार—संज्ञा पु० [हिं० चँवर+ढारना] चँवर डुलानेवाला सेवक।

चसुर—संज्ञा पु० [सं० चंद्रसूर] हालों या हालिम नाम का पौधा।

च—संज्ञा पु० [सं०] १ कच्छप। कछुआ। २ चंद्रमा। ३ चोर। ४ दुर्जन।

चउहट्ट*—संज्ञा पु० दे० "चौहट्ट"।

चक—संज्ञा पु० [सं० चक्र] १ चकई नाम का खिलौना। २ चक्रवाक पक्षी। चकवा। ३ चक्र नामक अस्त्र। ४ चक्का। पहिया। ५ जमीन का बड़ा टुकड़ा। पट्टी। ६ छोटा गाँव। खेड़ा। पट्टी। पुरवा। ७ किसी बात की निरंतर अधिकता। ८ अधिकार। दखल।

वि० भरपूर। अधिक। ज्यादा।

वि० [सं०] चकपकाया हुआ। भ्रांत।

चकई—संज्ञा स्त्री० [हिं० चकवा] मादा चकवा। मादा सुरखाव।

संज्ञा स्त्री० [सं० चक्र] घिरनी या गड़ारी के आकार का एक खिलौना।

चकचकाना—क्रि० अ० [अनु०] १ किसी द्रव पदार्थ या सूक्ष्म कणों के रूप में किसी वस्तु में भीतर से निकलना। रस रसकर ऊपर आना। २ भीग जाना।

चकचाना*†—क्रि० अ० [अनु०] चौंधियाना। चकाचौंध लगना।

चकचाल*—संज्ञा पु० [सं० चक्र+हिं० चाल] चक्कर। भ्रमण। फेरा।

चकचाव†*—संज्ञा पु० [अनु०] चकाचौंध।

चकचून—वि० [सं० चक्र+चूर्ण] चूर किया हुआ। पिसा हुआ। चकनाचूर।

चकचौंध—संज्ञा स्त्री० दे० "चकाचौंध"।

चकचौंधना—क्रि० अ० [सं० चक्षुप्+अंध] आँख का अत्यन्त अधिक प्रकाश के सामने ठहर न सकना। चकाचौंध होना।

क्रि० स० चकाचौंधी उत्पन्न करना।

चकचौंह*—संज्ञा स्त्री० दे० "चकाचौंध"।

चकडोर—संज्ञा स्त्री० [हिं० चकई+डोर] चकई नामक खिलौने में लपेटा हुआ सूत।

चकती—संज्ञा स्त्री० [सं० चक्रवत्] १ चमड़े, कपड़े आदि में से काटा हुआ, गोल या चौकोर छोटा टुकड़ा। पट्टी। २ फटे-टूटे स्थान को बन्द करने के लिए लगी हुई पट्टी या धज्जी। थिगली।

मुहा०—बादल में चकती लगाना=अनहोनी बात करने का प्रयत्न करना।

चकत्ता—संज्ञा पु० [सं० चक्र+वर्त्त] १ रक्त-विकार आदि के कारण शरीर के ऊपर का गोल दाग। २ खुजलाने आदि के कारण चमड़े के ऊपर पड़ी हुई चिपटी सूजन। ददोरा। ३ दाँतों से काटने का चिह्न।

संज्ञा पु० [तु० चगताई] १ मोगल या तातार अमीर चगताई खाँ जिसके वंश में बाबर, अकबर आदि मुगल बादशाह थे। २ चगताई वंश का पुरुष।

चकना*—क्रि० अ० [सं० चक=भ्रांत] १ चकित होना। भौचक्का होना। चकपकाना। २ चौंकना। आशंकायुक्त होना।

चकनाचूर—वि० [हिं० चक=भरपूर+चूर] १ जिसके टूट-फूटकर बहुत से छोटे छोटे

टुकड़े हो गये हों। चूर चूर। खंड खंड। चूर्णित। २. बहुत थका हुआ।
चकपकाना—क्रि० अ० [सं० चक्र=भ्रांत] १. आश्चर्य से इधर-उधर ताकना। भौचक्का होना। चौंकना।
चकफेरी—संज्ञा स्त्री०[सं० चक्र, हिं० चक + हिं० फेरी] परिक्रमा। भँवरी।
चकबंदी—संज्ञा स्त्री०[हिं० चक + फ़ा० बंदी] भूमि को कई भागों में विभक्त करना।
चकमक—संज्ञा पुं० [तु०] एक प्रकार का कड़ा पत्थर जिसपर चोट पड़ने से बहुत जल्दी आग निकलती है।
चकमा—संज्ञा पुं० [सं० चक=भ्रांत] १. भुलावा। धोखा। २. हानि। नुक़सान।
चकरं†*—संज्ञा पुं० [सं० चक्र] चक्रवाक पक्षी। चकवा।
चकरबा—संज्ञा पुं० [सं० चक्रव्यूह] १. कठिन स्थिति। असमंजस। २. बखेड़ा।
चकराना—क्रि० अ० [सं० चक्र] १. (सिर का) चक्कर खाना। (सिर) घूमना। २. भ्रांत होना। चकित होना। ३. चकपकाना। चकित होना। घबराना। क्रि० स० आश्चर्य में डालना।
चकरी—संज्ञा स्त्री० [सं० चक्री] १. चक्की। २. चकई नाम का खिलौना। वि० चक्की के समान इधर-उधर घूमनेवाला। भ्रमित। अस्थिर। चंचल।
चकला—संज्ञा पुं० [सं० चक्र, हिं० चक + ला (प्रत्य०)] १. पत्थर या काठ का गोल पाटा जिसपर रोटी बेली जाती है। चौका। २. चक्की। ३. इलाका। जिला। ४. व्यभिचारिणी स्त्रियों का अड्डा। वि० [स्त्री० चकली] चौड़ा।
चकली—संज्ञा स्त्री० [सं० चक्र, हिं० चक] १. घिरनी। गड़ारी। २. छोटा चकला जिसपर चंदन घिसते हैं। होरसा।
चकलेदार—संज्ञा पुं० [देश०] किसी प्रदेश का शासक या कर संग्रह करनेवाला।
चकवँड़—संज्ञा पुं० [सं० चक्रमर्द] एक बरसाती पौधा। पमार। पवाड़।
चकवा—संज्ञा पुं० [सं० चक्रवाक] [स्त्री० चकई] एक जल-पक्षी जिसके संबंध में प्रवाद है कि रात को जोड़े से अलग पड़ जाता है। सुरखाब।
चकवाना†*—क्रि० अ०[देश०] चकपकाना।
चकवाह*—संज्ञा पुं० दे० "चकवा"।
चकहा†*—संज्ञा पुं० [सं० चक्र] पहिया।
चका†*—संज्ञा पुं० [सं० चक्र] १. पहिया। चक्का। चाक। २. चकवा पक्षी।
चकाचक—वि०[अनु०] तराबोर। लथ-पथ। क्रि० वि० खूब। भरपूर।
चकाचौंध—संज्ञा स्त्री०[सं० चक् = चमकना + चौ = चारों ओर + अंध] अत्यंत अधिक चमक के सामने आँखों की झपक। तिलमिलाहट। तिलमिली।
चकाना*—क्रि० अ० दे० "चकपकाना"।
चकाबू—संज्ञा पुं० [सं० चक्रव्यूह] १. एक के पीछे एक कई मंडलाकार पंक्तियों में सैनिकों की स्थिति। २. भूलभुलैयाँ।
चकित—वि० [सं०] १. चकपकाया हुआ। विस्मित। दंग। हक्काबक्का। २. हैरान। घबराया हुआ। ३. चौकन्ना। सशंकित। डरा हुआ। ४. डरपोक। कायर।
चकुला†*—संज्ञा पुं० [देश०] चिड़िया का बच्चा। चेटुवा।
चकृत*—वि० दे० "चकित।"
चकोटना—क्रि० स० [हिं० चिकोटी] चुटकी से मांस नोचना। चुटकी काटना।
चकोतरा—संज्ञा पुं० [सं० चक्र=गोला] एक प्रकार का बड़ा जंबीरी नीबू।
चकोर—संज्ञा पुं० [सं०][स्त्री० चकोरी] १. एक प्रकार का बड़ा पहाड़ी तीतर जो चंद्रमा का प्रेमी और अंगार खानेवाला प्रसिद्ध है। २. एक वर्णवृत्त का नाम।
चकौंध*—संज्ञा स्त्री० दे० "चकाचौंध"।
चक्क—संज्ञा पुं० [सं० चक्र] १. चक्रवाक। चकवा। २. कुम्हार का चाक।
चक्कर—संज्ञा पुं० [सं० चक्र] १. पहिए के आकार की कोई (विशेषतः घूमनेवाली) बड़ी गोल वस्तु। मंडलाकार पटल।

चाक। २ गोल या मडलाकार घेरा। मंडल। ३ मंडलाकार गति। परिभ्रमण। फेरा। ४ पहिए के ऐसा भ्रमण। अक्ष पर घूमना।

मुहा०—चक्कर काटना = परिक्रमा करना। मंडराना। चक्कर खाना = १ पहिए की तरह घूमना। २ घुमाव फिराव के साथ जाना। ३ भटकना। भ्रांत होना। हैरान होना।

५ चलने म अधिक घुमाव या दूरी। फेर। ६ हैरानी। असमंजस। ७ पेच। जटिलता। दुरूहता।

मुहा०—किसी के चक्कर म आना या पड़ना = किसी के धोखे म आना या पड़ना।

८ सिर घूमना। घुमरी। घुमटा। ९ पानी का भँवर। जंजाल।

चक्कवइ*–वि० दे० "चक्रवर्ती"।

चक्का–सज्ञा पु०[स० चक्र प्रा० चक्क] १ पहिया। चाका। २ पहिए के आकार की कोई गोल वस्तु। ३ बडा चिपटा टुकडा। बडा कतरा।

चक्की–सज्ञा स्त्री०[स० चक्री] आटा पीसने या दाल दलने का यंत्र। जाँता।

मुहा०—चक्की पीसना = बडा परिश्रम करना।

सज्ञा स्त्री०[स० चक्रिका] १ पैर के घुटने की गोल हड्डी। २ बिजली। वज्र।

चक्र–सज्ञा पु० [स०] १ पहिया। चाका। २ कुम्हार का चाक। ३ चक्की। जाँता। ४ तेल पेरने का कोल्हू। ५ पहिए के आकार की कोई गोल वस्तु। ६ लोहे के एक अस्त्र का नाम जो पहिए के आकार का होता है। ७ पानी का भँवर। ८ वातचक्र। बवडर। ९ समूह। समुदाय। मडली। १० एक प्रकार का व्यूह या सेना की स्थिति। ११ मडल। प्रदेश। राज्य। १२ एक समुद्र से दूसरे समुद्र तक फैला हुआ प्रदेश। आसमुद्रात भूमि। १३ चक्रवाक पक्षी। चकवा। १४ योग के अनुसार शरीरस्थ। ६ पद्म। १५ फेरा। घुमाव। भ्रमण। चक्कर। १६ दिशा। प्रान्त। १७ एक वर्णवृत्त।

चक्रतीर्थ–सज्ञा पु० [स०] १ दक्षिण में वह तीर्थ-स्थान जहाँ ऋष्यमूक पर्वतों के बीच तुंगभद्रा नदी घूमकर बहती है। २ नैमिषारण्य का एक कुड।

चक्रधर–वि० [स०] जो चक्र धारण करे। सज्ञा पु० १ विष्णु भगवान्। २ श्रीकृष्ण। ३ बाजीगर। इंद्रजाल करनेवाला। ४ कई ग्रामों या नगरों का अधिपति।

चक्रधारी–सज्ञा पु० दे० "चक्रधर"।

चक्रपाणि–सज्ञा पु० [स०] विष्णु।

चक्रपूजा–सज्ञा स्त्री० [स०] तांत्रिकों की एक पूजा विधि।

चक्रमर्द–सज्ञा पु० [स०] चकवँड।

चक्रमुद्रा–सज्ञा स्त्री० [स०] चक्र आदि विष्णु के आयुधों के चिह्न जो वैष्णव अपने बाहु तथा और अंगों पर छपाते हैं।

चक्रवर्ती–वि० [स० चक्रवर्त्तिन्] [स्त्री० चक्रवर्त्तिनी] आसमुद्रात भूमि पर राज्य करनेवाला। सार्वभौम।

चक्रवाक–सज्ञा पु० [स०] चकवा पक्षी।

यौ०—चक्रवाकबंधु = सूर्य्य।

चक्रवात–सज्ञा पु० [स०] वेग से चक्कर खाती हुई वायु। वातचक्र। बवडर।

चक्रवृद्धि–सज्ञा स्त्री० [स०] वह सूद या ब्याज जिसमे ब्याज पर भी ब्याज लगता जाता है। सूद दर सूद।

चक्रव्यूह–सज्ञा पु० [स०] प्राचीन काल के युद्ध म किसी व्यक्ति या वस्तु की रक्षा के लिए उसके चारो ओर कई घेरो म सेना की चक्करदार या कुंडलाकार स्थिति।

चक्रायुध–सज्ञा पु० [स०] विष्णु।

चक्रित*–वि० दे० "चकित"।

चक्री–सज्ञा पु० [स० चक्रिन्] १ वह जो चक्र धारण करे। २ विष्णु। ३ गाँव का पंडित या पुरोहित। ४ चक्रवाक। चकवा। ५ कुम्हार। ६ साँप। ७ जासूस। मुखबिर। चर। ८ तेली। ९ चक्रवर्ती। १० चक्रमर्द। चकवँड।

चक्षु–सज्ञा पु० [स० चक्षुष्] १ दर्शनेंद्रिय। आँख। २ एक नदी जिसे आजकल

आक्सस या जेहूँ कहते हैं। वंक्षु नद।
चक्षुरिंद्रिय–संज्ञा स्त्री० [सं०] आँख।
चक्षुष्य–वि० [सं०] १. जो नेत्रों को हितकारी हो (औषधि आदि)। २. सुंदर। प्रियदर्शन। ३. नेत्र-संबंधी।
चख*–संज्ञा पुं० [सं० चक्षुष्] आँख।
संज्ञा पुं० [फ़ा०] झगड़ा। तकरार। कलह।
यौ०—चख-चख = तकरार। कहा सुनी।
चखना–क्रि० स० [सं० चष] स्वाद लेना। स्वाद लेने के लिए मुँह में रखना।
चखाचखी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० चख = झगड़ा] लाग-डाँट। विरोध। बैर।
चखाना–क्रि० स० [हिं० चखना का प्रे०] खिलाना। स्वाद दिलाना।
चखु*–संज्ञा पुं० दे० "चक्षु"।
चखौड़ा*†–संज्ञा पुं० [हिं० चख + आड़] दिठौना। डिठौना।
चगड़–वि० [देश०] चतुर। चालाक।
चग़ताई–संज्ञा पुं० [तु०] तुर्कों का एक प्रसिद्ध वंश जो चग़ताईख़ाँ से चला था।
चचा–संज्ञा पुं० [सं० तात] [स्त्री० चची] बाप का भाई। पितृव्य।
चचिया–वि० [हिं० चचा] चाचा के बराबर का संबंध रखनेवाला।
यौ०—चचिया ससुर = पति या पत्नी का चाचा।
चचींडा†–संज्ञा पुं० [सं० चिचिंड] १. तोरई की तरह की एक तरकारी। २. चिचड़ा।
चचेरा–वि० [हिं० चचा] चाचा से उत्पन्न। चाचाजाद। जैसे—चचेरा भाई।
चचोड़ना–क्रि० स० [अनु० या देश०] दाँत से खींच खींच या दबा दबाकर चूसना।
चट–क्रि० वि० [सं० चटुल = चंचल] जल्दी से। झट। तुरंत। फौरन्। शीघ्र।
*†संज्ञा पुं० [सं० चित्र] १. दाग। धब्बा। २. घाव या चकत्ता।
संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. वह शब्द जो किसी कड़ी वस्तु के टूटने पर होता है। २. वह शब्द जो उँगलियों को मोड़कर दबाने से होता है।
वि० [हिं० चाटना] चाटपोंछकर खाया हुआ।
मुहा०—चट कर जाना = १. सब खा जाना। २. दूसरे की वस्तु लेकर न देना।
चटक–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० चटका] गौरा पक्षी। गौरवा। गौरैया। चिड़ा।
संज्ञा स्त्री० [सं० चटुल = सुंदर] चटकीलापन। चमक-दमक। कांति।
†वि० चटकीला। चमकीला।
संज्ञा स्त्री० [सं० चटुल] तेजी। फुरती।
क्रि० वि० चटपट। तेजी से।
वि० चटपटा। चटकारा। चरपरा।
चटकदार–वि० दे० "चटकीला"।
चटकना–क्रि० अ० [अनु० चट] 'चट' शब्द करके टूटना या फूटना। तड़कना। कड़कना। २. कोयले, गँठीली लकड़ी आदि का जलते समय चट चट करना। ३. चिड़चिड़ाना। झुँझलाना। ४. गरज पड़ना। स्थान स्थान पर फटना। ५. कलियों का फूटना या खिलना। प्रस्फुटित होना। ६. अनबन होना। खटकना।
संज्ञा पुं० [अनु० चट] तमाचा। थप्पड़।
चटकनी–संज्ञा स्त्री० [अनु० चट] सिटकिनी।
चटक-मटक–संज्ञा स्त्री० [हिं० चटक + मटक] बनाव-सिंगार। वेश-विन्यास और हाव-भाव। नाज़-नख़रा।
चटका†–संज्ञा पुं० [हिं० चट] फुरती।
चटकाना–क्रि० स० [अनु० चट] १. ऐसा करना जिसमें कोई वस्तु चटक जाय। तोड़ना। २. उँगलियों को खींचकर या मोड़ते हुए दबाकर चट चट शब्द निकालना। ३. बार बार टकराना जिससे चट चट शब्द निकले।
मुहा०—जूतियाँ चटकाना = जूता घसीटते हुए फिरना। मारा मारा फिरना।
४. अलग करना। दूर करना। ५. चिढ़ाना। कुपित करना।
चटकारा–वि० [सं० चटुल] १. चटकीला। चमकीला। २. चंचल। चपल। तेज।
वि० [अनु० चट] स्वाद से जीभ चटकाने का शब्द।

चटकाली—संज्ञा स्त्री० [सं० चटक + आलि] १. गौरों की पंक्ति। २ चिड़ियों की पंक्ति।
चटकीला—वि० [हि० चटक+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० चटकीली] १ जिसका रंग फीका न हो। खुलता। शोख। भड़कीला। २ चमकीला। चमकदार। आभायुक्त। ३ चरपरा। चटपटा। मज़ेदार।
चटखना—क्रि० स०, संज्ञा पु० दे० "चटकना"।
चट चट—संज्ञा स्त्री० [अनु०] चटकने का शब्द। चट चट शब्द।
चटचटाना—क्रि० अ० [सं० चट=भेदन] १ चटचट करते हुए टूटना या फूटना। २ लकड़ी कोयले आदि का चटचट शब्द करते हुए जलना।
चटनी—संज्ञा स्त्री० [हि० चाटना] १ चाटने की चीज़। अवलेह। २ वह गीली चरपरी वस्तु जो भोजन के साथ स्वाद बढ़ाने को खाई जाय।
चटपट—क्रि० वि० [अनु०] शीघ्र। जल्दी।
चटपटा—वि० [हि० चाट] [स्त्री० चटपटी] चरपरा। तीक्ष्ण स्वाद का। मज़ेदार।
चटपटी—संज्ञा स्त्री० [हि० चटपट] [वि० चटपटिया] १ आतुरता। उतावली। शीघ्रता। २ घबराहट। व्यग्रता।
चटवाना—क्रि० स० दे० "चटाना"।
चटशाला—संज्ञा स्त्री० दे० "चटसार"।
चटसार*†—संज्ञा स्त्री० [हि० चट्टा=चेला + सार=शाला] बच्चों के पढ़ने का स्थान। पाठशाला। मकतब।
चटाई—संज्ञा स्त्री० [सं० कट=चटाई ?] फूस, सींक, पतली फट्टियों आदि का बिछावन। तृण का डासन। साथरी।
संज्ञा स्त्री० [हि० चाटना] चाटने की क्रिया।
चटाका—संज्ञा पु० [अनु०] लकड़ी या और किसी बड़ी वस्तु के ज़ोर से टूटने का शब्द।
चटाना—क्रि० स० [हि० चाटा का प्रे०] १ चाटने का काम कराना। २ थोड़ा थोड़ा किसी दूसरे के मुँह में डालना। खिलाना। ३ घूस देना। रिश्वत देना। ४. छुरी, तलवार आदि पर सान रखवाना।
चटापटी—संज्ञा स्त्री० [हि० चटपट] शीघ्रता।
चटावन—संज्ञा पु० [हि० चटाना] बच्चे को पहले पहल अन्न चटाना। अन्नप्राशन।
चटिक*—क्रि० वि० [हि० चट] चटपट।
चटियल—वि० [देश०] जिसमें पेड़-पौधे न हों। निचाट। (मैदान)
चटी—संज्ञा स्त्री० दे० "चटसार"।
संज्ञा स्त्री० दे० "चट्टी"।
चटुल—वि० [सं०] १ चंचल। चपल। चालाक। २ सुंदर। प्रियदर्शन।
चटोरा—वि० [हि० चाट + ओरा (प्रत्य०)] १ जिसे अच्छी अच्छी चीज़ खाने की लत हो। स्वादलोलुप। २ लोलुप। लोभी।
चटोरापन—संज्ञा पु० [हि० चटोरा+पन (प्रत्य०)] अच्छी अच्छी चीज़ें खाने का व्यसन।
चट्ट†—वि० [हि० चाटना] १ चाट पोंछकर खाया हुआ। २ समाप्त। नष्ट। गायब।
चट्टा—संज्ञा पु० [देश०] चटियल मैदान।
संज्ञा पु० [हि० चकत्ता] शरीर पर कुष्ठ आदि के कारण निकला हुआ चकत्ता। दाग।
चट्टान—संज्ञा स्त्री० [हि० चट्टा] पहाड़ी भूमि के अंतर्गत पत्थर का चिपटा बड़ा टुकड़ा। विस्तृत शिलापटल। शिलाखंड।
चट्टा-बट्टा—संज्ञा पु० [हि० चट्टू + बट्टा = गोला] १ छोटे बच्चों के खेलने के लिए काठ के खिलौने का एक समूह। २. गोले और गोलियाँ जिन्हें बाज़ीगर एक थैली में से निकालकर लोगों को तमाशा दिखाते हैं।
मुहा०—एक ही थैली के चट्टे बट्टे=एक ही मेल के मनुष्य। चट्टे बट्टे लगाना=इधर की उधर लगाकर लड़ाई कराना।
चट्टी—संज्ञा स्त्री० [देश०] टिकान। पड़ाव।
संज्ञा स्त्री० [हि० चपटा या अनु० चटचट] एँड़ी की ओर खुला हुआ जूता। स्लिपर।
चट्टू—वि० [हि० चाट] स्वादलोलुप। चटोरा।
संज्ञा पु० [अनु०] पत्थर का बड़ा खरल।
चढ़त—संज्ञा स्त्री० [हि० चढ़ना] किसी देवता को चढ़ाई हुई वस्तु। देवता की भेंट।
चढ़ना—क्रि० अ० [सं० उच्चलन] १ नीचे से ऊपर को जाना। ऊँचाई पर जाना।

२. ऊपर उठना। उड़ना। ३. ऊपर की ओर सिमटना। ४. ऊपर से टँकना। मढ़ा जाना। ५. उन्नति करना।
मुहा०—चढ़ बनना=सुयोग मिलना।
६. (नदी या पानी का) बाढ़ पर आना। ७. धावा करना। चढ़ाई करना। ८. बहुत से लोगों का दल बाँधकर किसी काम के लिए जाना। ९. महँगा होना। भाव का बढ़ना। १०. सुर ऊँचा होना। ११. धारा या बहाव के विरुद्ध चलना। १२. ढोल, सितार आदि की डोरी या तार का कस जाना। तनना।
मुहा०—नस चढ़ना=नस का अपने स्थान से हट जाने के कारण तन जाना। १३. किसी देवता, महात्मा आदि को भेंट दिया जाना। देवार्पित होना। १४. सवारी पर बैठना। सवार होना। १५. वर्ष, मास, नक्षत्र आदि का आरम्भ होना। १६. ऋण होना। कर्ज होना। १७. बही या कागज आदि पर लिखा जाना। टकना। दर्ज होना। १८. किसी वस्तु का बुरा और उद्वेगजनक प्रभाव होना। १९. पकने या आँच खाने के लिए चूल्हे पर रखा जाना। २०. लेप होना। पोता जाना।
चढ़वाना—क्रि० स० [हिं० चढ़ाना का प्रे०] चढ़ाने का काम दूसरे से कराना।
चढ़ाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० चढ़ना] १. चढ़ने की क्रिया या भाव। २. ऊँचाई की ओर ले जानेवाली भूमि। ३. शत्रु से लड़ने के लिए प्रस्थान। धावा। आक्रमण।
चढ़ा-उतरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चढ़ना उतरना] बार बार चढ़ने-उतरने की क्रिया।
चढ़ा-ऊपरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चढ़ना + ऊपर] एक दूसरे के आगे होने या बढ़ने का प्रयत्न। लाग-डाँट। होड़।
चढ़ाचढ़ी—संज्ञा स्त्री० दे० "चढ़ा-ऊपरी"।
चढ़ाना—क्रि० स० [हिं० चढ़ना का प्रे०] १. चढ़ना का सकर्मक रूप। चढ़ने में प्रवृत्त करना। २. चढ़ने में सहायता देना। ऐसा काम करना जिससे चढ़े। ३. पी जाना।

चढ़ाव—संज्ञा पुं० [हिं० चढ़ना] १. चढ़ने की क्रिया या भाव।
यौ०—चढ़ाव-उतार=ऊँचा-नीचा स्थान।
२. बढ़ने का भाव। वृद्धि। बाढ़।
यौ०—चढ़ाव-उतार=एक सिरे पर मोटा और दूसरे सिरे की ओर क्रमशः पतला होते जाने का भाव। गावदुम आकृति।
३. दे० "चढ़ावा"। ४. वह दिशा जिधर से नदी की धारा आई हो। 'बहाव' का उलटा।
चढ़ावा—संज्ञा पुं० [हिं० चढ़ना] १. वह गहना जो दूल्हे की ओर से दुलहिन को विवाह के दिन पहनाया जाता है। २. वह सामग्री जो किसी देवता को चढ़ाई जाय। पुजापा। ३. बढ़ावा। दम।
मुहा०—चढ़ावा बढ़ावा देना=उत्साह बढ़ाना। उसकाना। उत्तेजित करना।
चणक—संज्ञा पुं० [सं०] चना।
चतुरंग—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह गाना जिसमें चार प्रकार के बोल गठे हों। २. सेना के चार अंग—हाथी, घोड़े, रथ, पैदल। ३. चतुरंगिणी सेना। ४. शतरंज।
चतुरंगिणी—वि० स्त्री० [सं०] चार अंगों-वाली (विशेषतः सेना)।
चतुर—वि० पुं० [सं०] [स्त्री० चतुरा] १. टेढ़ी चाल चलनेवाला। वक्रगामी। २. फुरतीला। तेज। ३ प्रवीण। होशियार। निपुण। ४ धूर्त। चालाक।
संज्ञा पुं० शृंगार रस में नायक का एक भेद।
चतुरई—संज्ञा स्त्री० दे० "चतुराई"।
चतुरता—संज्ञा स्त्री० [सं० चतुर + ता(प्रत्य०)] चतुराई। प्रवीणता। होशियारी।
चतुरपन†—संज्ञा पुं० दे० "चतुराई"।
चतुरस्र—वि० [सं०] चौकोर।
चतुरसम†—संज्ञा पुं० दे० "चतुस्सम"।
चतुराई—संज्ञा स्त्री० [सं० चतुर + आई (प्रत्य०)] १. होशियारी। निपुणता। दक्षता। २. धूर्तता। चालाकी।
चतुरानन—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा।
चतुरिंद्रिय—संज्ञा पुं० [सं०] चार इंद्रियोंवाले

जीव। जैसे—मक्खी, भौंरे, साँप आदि।

चतुर्गुण—वि० [स०] १ चौगुना। २ चार गुणोंवाला।

चतुर्थ—वि० [स०] चौथा।

चतुर्थांश—सज्ञा पु० [स०] चौथाई।

चतुर्थाश्रम—सज्ञा पु० [स०] सन्यास।

चतुर्थी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ किसी पक्ष की चौथी तिथि। चौथ। २ वह गंगा पूजन आदि कर्म्म जो विवाह के चौथे दिन होता है।

चतुर्दशी—सज्ञा स्त्री० [स०] किसी पक्ष की चौदहवीं तिथि। चौदस।

चतुर्दिक्—सज्ञा पु० [स०] चारों दिशायें। क्रि० वि० चारों ओर।

चतुर्भुज—वि० [स०] [स्त्री० चतुर्भुजा] चार भुजाओंवाला। जिसकी चार भुजाएँ हों। सज्ञा पु० १ विष्णु। २ वह क्षेत्र जिसमें चार भुजाएँ और चार कोण हों।

चतुर्भुजा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ एक देवी। २ गायत्री रूपधारिणी महाशक्ति।

चतुर्भुजी—सज्ञा पु० [स०] चतुर्भुज + ई (प्रत्य०)] एक वैष्णवसप्रदाय। वि० चार भुजाओंवाला।

चतुर्मास—सज्ञा पु० दे० "चातुर्मास"।

चतुर्मुख—सज्ञा पु० [स०] ब्रह्मा। वि० [स्त्री० चतुर्मुखी] चार मुखवाला। क्रि० वि० चारों ओर।

चतुर्युगी—सज्ञा स्त्री० [स०] चारों युगों का समय। ४३,२०,००० वर्ष का समय। चौयुगी। चौकड़ी।

चतुरंग—सज्ञा पु० [स०] अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष।

चतुर्वर्ण—सज्ञा पु० [स०] ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र।

चतुर्वेद—सज्ञा पु० [स०] १ परमेश्वर। ईश्वर। २ चारों वेद।

चतुर्वेदी—सज्ञा पु० [स० चतुर्वेदिन्] १ चारों वेदों का जाननेवाला पुरुष। २ ब्राह्मणों की एक जाति।

चतुर्व्यूह—सज्ञा पु० [स०] १ चार मनुष्यों अथवा पदार्थों का समूह। २ विष्णु।

चतुष्कल—वि० [स०] चार कलाओंवाला। जिसमें चार मात्रायें हों।

चतुष्कोण—वि० [स०] चार कोनोंवाला। चौकोर। चौकोना।

चतुष्टय—सज्ञा पु० [स०] १ चार की संख्या। २ चार चीजों का समूह।

चतुष्पथ—सज्ञा पु० [स०] चौराहा।

चतुष्पद—सज्ञा पु० [स०] चौपाया। वि० चार पदोंवाला।

चतुष्पदा—सज्ञा स्त्री० [स०] चौपैया छंद।

चतुष्पदी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ १५ मात्राओं का चौपाई छंद। २ चार पद का गीत।

चत्वर—सज्ञा पु० [स०] १ चौमुहानी। चौरास्ता। २ चबूतरा। वेदी।

चद्दर—सज्ञा स्त्री० [फा० चादर] १ चादर। २ किसी धातु का लंबा चौड़ा चौकोर पत्तर। ३ नदी आदि के तेज़ बहाव में वह अंश जिसकी सतह कभी कभी बिलकुल समतल हो जाती है।

चनकना†—क्रि० अ० दे० "चटकना"।

चनखना—क्रि० अ० [हिं० अनखना] खफ़ा होना। चिढ़ना। चिटकना।

चना—सज्ञा पु० [स० चणक] खेती फसल का एक प्रधान अन्न। बूट। छोला। मुहा०—नाकों चने चबवाना=बहुत तंग करना। बहुत दिक या हैरान करना। लोहे का चना=अत्यंत कठिन काम। विकट कार्य।

चपकन—सज्ञा स्त्री० [हिं० चपकना] १ एक प्रकार का अंगा। अँगरखा। २ किवाड़, संदूक आदि में लोहे या पीतल का वह साज जिसमें ताला लगाया जाता है।

चपकना—क्रि० अ० दे० "चिपकना"।

चपकुलिश—सज्ञा स्त्री० [तु०] १ कठिन स्थिति। अड़चन। फेर। कठिनाई। झंझट। अड़स। २ बहुत भीड़ भाड़।

चपटना†—क्रि० अ० दे० "चिपकना"।

चपटा†—वि० दे० "चिपटा"।

चपड़ा—सज्ञा पु० [हिं० चपटा] १ साफ की हुई लाख का पत्तर। २ लाल रंग

का एक कीड़ा या फतिंगा।

चपत–संज्ञा पुं० [सं० चर्पट] १. तमाचा। थप्पड़। २. धक्का। हानि।

चपना–क्रि० अ० [सं० चपन = कूटना, कुचलना] १. दबना। कुचल जाना। २. लज्जा से गड़ जाना। लज्जित होना।

चपनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० चपना] १. छिछला कटोरा। कटोरी। २. दरियाई नारियल का कमंडल। ३. हाँड़ी का ढक्कन।

चपरगट्टू–वि० [हिं० चौपट + गटपट] १. सत्यानाशी। चौपटा। २. आफ़त का मारा। अभागा। ३. गुत्थमगुत्थ। एक मे उलझा हुआ।

चपरना†*–क्रि० स० [अनु० चपचप] १. दे० "चुपड़ना"। २. परस्पर मिलाना।

चपरा–अव्य० [हिं० चपरना] झटपट।

चपरास–संज्ञा स्त्री० [हिं० चपरासी] दफ़्तर या मालिक का नाम खुदी हुई पीतल आदि की छोटी पट्टी जिसे पेटी या परतले में लगाकर चौकीदार, अरदली आदि पहनते हैं। बल्ला। बैज।

चपरासी–संज्ञा पुं० [फ़ा० चप = बाँया + रास्ता = दाहिना] वह नौकर जो चपरास पहने हो। प्यादा। अरदली।

चपरि*–क्रि० वि० [सं० चपल] फुरती से।

चपल–वि० [सं०] १. स्थिर न रहनेवाला। चंचल। चुलबुला। २. बहुत काल तक न रहनेवाला। क्षणिक। ३. उतावला। जल्दबाज़। ४. चालाक। धृष्ट।

चपलता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चंचलता। तेज़ी। जल्दी। २. धृष्टता। ढिठाई।

चपला–वि० स्त्री० [सं०] चंचला। फुरतीली। तेज़।
संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लक्ष्मी। २. बिजली। चंचला। ३. आर्य्या छंद का एक भेद। ४. पुंश्चली स्त्री। ५. जीभ। जिह्वा।

चपलाई*–संज्ञा स्त्री० दे० "चपलता"।

चपलाना*–क्रि० अ० [सं० चपल] चलना। हिलना। डोलना।
क्रि० स० चलाना। हिलाना।

चपली†–संज्ञा स्त्री० [हिं० चपटा] जूती।

चपाती–संज्ञा स्त्री० [सं० चर्पटी] वह पतली रोटी जो हाथ से बेलकर बढ़ाई जाती है।

चपाना–क्रि० स० [हिं० चपना] १. दबाने का काम कराना। दबवाना। २. लज्जित करना। झिपाना। शरमिंदा करना।

चपेट–संज्ञा स्त्री० [हिं० चपाना] १. झोंका। रगड़ा। धक्का। आघात। २. थप्पड़। झापड़। तमाचा। ३. दबाव। संकट।

चपेटना–क्रि० स० [हिं० चपेट] १. दबाना। दबोचना। २. बलपूर्वक भगाना। ३. फटकार बताना। डाँटना।

चपेटा–संज्ञा पुं० दे० "चपेट"।

चपेरना*–संज्ञा पुं० [हिं० चापना] दबाना।

चप्पड़–संज्ञा पुं० दे० "चिप्पड़"।

चप्पन–संज्ञा पुं० [हिं० चपना = दबाना] छिछला कटोरा।

चप्पल–संज्ञा पुं० [हिं० चपटा] वह जूता जिसकी एड़ी पर दीवार न हो।

चप्पा–संज्ञा पुं० [सं० चतुष्पाद] १. चतुर्थांश। चौथा भाग। २. थोड़ा भाग। ३. चार अंगुल जगह। ४. थोड़ी जगह।

चप्पी–संज्ञा स्त्री० [हिं० चपना दबना] धीरे धीरे हाथ-पैर दबाने की क्रिया। चरण-सेवा।

चप्पू–संज्ञा पुं० [हिं० चाँपना] एक प्रकार का डाँड़ जो पतवार का भी काम देता है। किलवारी।

चबवाना–क्रि० स० [हिं० चबाना का प्रे०] चबाने का काम कराना।

चबाना–क्रि० स० [सं० चर्वण] १. दाँतों से कुचलना। जुगालना।
मुहा०—चबा चबाकर बातें करना = एक एक शब्द धीरे धीरे बोलना। मठार मठारकर बातें करना। चबे को चबाना = किये हुए कामको फिर फिर करना। पिष्टपेषण करना।
†२. दाँत से काटना। दरदराना।

चबूतरा संज्ञा पुं० [सं० चत्वाल] १. बैठने के लिए चौरस बनाई हुई ऊँची जगह। चौतरा। †२. कोतवाली। बड़ा थाना।

चबेना–संज्ञा पु० [हिं० चबाना] चबाकर खाने के लिए भूना भुना हुआ अनाज। चर्वण। भूंजा।

चबेनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० चबाना] जलपान का सामान।

चभाना–क्रि० स० [हिं० चाभना का प्रे०] खिलाना। भोजन कराना।

चभोरना–क्रि० स० [हिं० चुभकी] १ डुबोना। गोता देना। २ तर करना।

चमक–संज्ञा स्त्री० [स० चमत्कृत] १. प्रकाश। ज्योति। रोशनी। २ कांति। दीप्ति। आभा। ३ कमर आदि का वह दर्द जो चोट लगने या एकबारगी अधिक बल पड़ने के कारण होता है। लचक। चिक।

चमक-दमक–संज्ञा स्त्री० [हिं० चमक + दमक अनु०] १ दीप्ति। आभा। २ तड़क-भड़क।

चमकदार–वि० [हिं० चमक + फा० दार] जिसमें चमक हो। चमकीला।

चमकना–क्रि० अ० [हिं० चमक] १ प्रकाश या ज्योति से युक्त दिखाई देना। प्रकाशित होना। जगमगाना। २ कांति या आभा से युक्त होना। दमकना। ३ श्री-सम्पन्न होना। उन्नति करना। ४ ज़ोर पर होना। बढ़ना। ५ चौंकना। भड़कना। ६ फुरती से खसक जाना। ७ एकबारगी दर्द हो उठना। ८ मटकना। उँगलियाँ आदि हिलाकर भाव बताना। ९ कमर में चिक आना। लचक आना।

चमकाना–क्रि० स० [हिं० चमकना] १ चमकीला करना। चमक लाना। झलकाना। २ उज्ज्वल करना। साफ करना। ३ भड़काना। चौंकाना। ४ चिढ़ाना। खिझाना। ५ घोड़े को चंचलता के साथ बढ़ाना। ६ भाव बताने के लिए उँगली आदि हिलाना। मटकाना।

चमकारी*–संज्ञा स्त्री० दे० "चमक"। वि० चमकीली।

चमकी–संज्ञा स्त्री० [हिं० चमक] कारचोबी में रुपहले या सुनहले तारों के छोटे छोटे गोल चिपटे टुकड़े। सितारे। तारे।

चमकीला–वि० [हिं० चमक + ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० चमकीली] १. जिसमें चमक हो। चमकनेवाला। २. भड़कीला। शानदार।

चमकौवल–संज्ञा स्त्री० [हिं० चमक + औवल (प्रत्य०)] १ चमकाने की क्रिया। २ मटकाने की क्रिया।

चमक्को–संज्ञा स्त्री० [हिं० चमकना] १ चमकने मटकानेवाली स्त्री। चंचल और निर्लज्ज स्त्री। २ कुल्टा स्त्री। ३ झगड़ालू स्त्री।

चमगादड़–संज्ञा पु० [स० चर्मचटक] एक उड़नेवाला बड़ा जंतु जिसके चारों पैर परदार होते हैं।

चमचम–संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की बँगला मिठाई। क्रि० वि० दे० "चमाचम"।

चमचमाना–क्रि० अ० [हिं० चमक] चमकना। प्रकाशमान होना। दमकना। क्रि० स० चमकाना। चमक लाना।

चमचा–संज्ञा पु० [फा० मि० स० चमस] [स्त्री० अल्पा० चमची] १. एक प्रकार की छोटी कलछी। चम्मच। डोई। २. चिमटा।

चमजूई–संज्ञा स्त्री० [सं० चमयूका] १. एक प्रकार की किल्नी। २ पीछा न छोड़नेवाली वस्तु।

चमड़ा–संज्ञा पु० [स० चर्म] १ प्राणियों के सारे शरीर का ऊपरी आवरण। चर्म। त्वचा। जिल्द।

मुहा०––चमड़ा उधेड़ना या खींचना = १ चमड़े को शरीर से अलग करना। २ बहुत मार मारना।

२ प्राणियों के मृत शरीर पर से उतारा हुआ चर्म जिससे जूते, बेग आदि चीजें बनती हैं। खाल। चरसा।

मुहा०––चमड़ा सिझाना = चमड़े को बबूल की छाल, सज्जी, नमक आदि के पानी में डालकर मुलायम करना।

३ छाल। छिलका।

चमड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "चमड़ा"।

चमत्कार–संज्ञा पु० [स०] [वि० चमत्कारी,

चमत्कृत] १. आश्चर्य। विस्मय। २. आश्चर्य का विषय या विचित्र घटना। करामात। ३. अनूठापन। विचित्रता।
चमत्कारी–वि०[सं०][स्त्री० चमत्कारिणी] १. जिसमें विलक्षणता हो। अद्भुत। २. चमत्कार या करामात दिखानेवाला।
चमत्कृत–वि०[सं०] आश्चर्यित। विस्मित।
चमत्कृति–संज्ञा स्त्री०[सं०] आश्चर्य।
चमन–संज्ञा पुं०[फ़ा०] १. हरी क्यारी। २. फुलवारी। छोटा बगीचा।
चमर–संज्ञा पुं०[सं०][स्त्री० चमरी] १. सुरागाय। २. सुरागाय की पूँछ का बना चँवर। चामर।
चमरख–संज्ञा स्त्री०[हिं० चाम+रक्षा] मूंज या चमड़े की बनी हुई चकती जिसमें से होकर चरखे का तकला घूमता है।
चमरशिखा–संज्ञा स्त्री०[सं० चाम+शिखा] घोड़ों की कलगी।
चमरी–संज्ञा स्त्री० दे० "चमर"।
चमरौधा–संज्ञा पुं० दे० "चमौवा"।
चमला–संज्ञा पुं०[देश०][स्त्री० अल्पा० चमली] भीख माँगने का ठीकरा या पात्र।
चमस–संज्ञा पुं०[सं०][स्त्री० अल्पा० चमसी] १. सोमपान करने का चम्मच के आकार का यज्ञपात्र। २. कलछा। चम्मच।
चमाऊ*–संज्ञा पुं०[सं० चामर] चँवर।
चमाचम–वि०[हिं० चमकना का अनु०] उज्ज्वल कांति के सहित। झलक के साथ।
चमार–संज्ञा पुं०[सं० चर्मकार][स्त्री० चमारिन, चमारी] एक नीच जाति जो चमड़े *का काम बनाती और झाड़ू देती है।*
चमारी–संज्ञा स्त्री०[हिं० चमार] १. चमार की स्त्री। २. चमार का काम।
चमू–संज्ञा स्त्री०[सं०] १. सेना। फौज। २. नियत संख्या की सेना जिसमें ७२९ हाथी, ७२९ रथ, २१८७ सवार और ३६४५ पैदल होते थे।
चमेली–संज्ञा स्त्री०[सं० चपक बेलि] १. एक झाड़ी या लता जो अपने सुगंधित फूलों के लिए प्रसिद्ध है। २. इस झाड़ी का फूल जो सफ़ेद, छोटा और सुगंधित होता है।
चमोटा–संज्ञा पुं०[हिं० चाम+ओटा (प्रत्य०)] मोटे चमड़े का टुकड़ा जिसपर रगड़कर नाई छुरे की धार तेज करते हैं।
चमोटी–संज्ञा स्त्री०[हिं० चाम+ओटी (प्रत्य०)] १. चाबुक। कोड़ा। २. पतली छड़ी। कमची। बेंत। ३. चमड़े का वह टुकड़ा जिसपर नाई छुरे की धार घिसते हैं।
चमौवा–संज्ञा पुं०[हिं० चाम] वह भद्दा जूता जिसका तला चमड़े से सिया गया हो। चमरौधा।
चम्मच–संज्ञा पुं०[फ़ा०। मि० सं० चमस्] एक प्रकार की छोटी हलकी कलछी।
चय–संज्ञा पुं०[सं०] १. समूह। ढेर। राशि। २. धुस्स। टीला। ढूह। ३. गढ़। किला। ४. धुस। कोट। चहारदीवारी। प्राकार। ५. बुनियाद। नींव। ६. चबूतरा। ७. चौकी। ऊँचा आसन।
चयन–संज्ञा पुं०[सं०] १. इकट्ठा करने का कार्य्य। संग्रह। संचय। २. चुनने का कार्य्य। चुनाई। ३. यज्ञ के लिए अग्नि का संस्कार। ४. क्रम से लगाना या चुनना। *†संज्ञा पुं० दे० "चैन"।
चर–संज्ञा पुं०[सं०] १ राजा की ओर से नियुक्त किया हुआ वह मनुष्य जिसका काम प्रकाश्य या गुप्त रूप से अपने अथवा पराये राज्यों की भीतरी दशा का पता लगाना हो। गूढ़ पुरुष। भेदिया। जासूस। २. किसी विशेष कार्य्य के लिए भेजा हुआ आदमी। दूत। क़ासिद। ३. वह जो चले। *जैसे—अनुचर, खेचर।* ४. खंजन पक्षी। ५. कौड़ी। कपर्दिका। ६ मंगल। भौम। ७ नदियों के किनारे या संगम-स्थान पर की वह गीली भूमि जो नदी के साथ बहकर आई हुई मिट्टी के जमने से बनती है। ८. दलदल। कीचड़। ९. नदियों के बीच में बालू का बना हुआ टापू। रेता।
वि०[सं०] १. आप से आप चलनेवाला। जंगम। २. एक स्थान पर न ठहरनेवाला। अस्थिर। ३. खानेवाला।

चरक—संज्ञा पुं० [सं०] १. दूत। कासिद। चर। २ गुप्तचर। भेदिया। जासूस। ३. वैद्यक के एक प्रधान आचार्य। ४ मुसाफिर। बटोही। पथिक। ५ दे० "चरक"।

चरकटा—संज्ञा पुं० [हिं० चारा + काटना] चारा काटकर लानेवाला आदमी।

चरका—संज्ञा पुं० [फा० चरक] १ हलका घाव। जख्म। २ गरम धातु से दागने का चिह्न। ३ हानि। ४ धोखा। छल।

चरख—संज्ञा पुं० [फा० चर्ख] १ घूमनेवाला गोल चक्कर। चाक। २ खराद। ३ सूत कातने का चरखा। ४ कुम्हार का चाक। ५ गोफन। ढेलवाँस। ६ वह गाडी जिसपर तोप चढी रहती है। ७ लकड-बग्घा। ८ एक शिकारी चिड़िया।

चरखपूजा—संज्ञा स्त्री० [सं० चरख=एक बौद्ध तांत्रिक संप्रदाय + पूजा] एक प्रकार की उग्र देवी पूजा जो चैत की संक्रांति को होती है।

चरखा—संज्ञा पुं० [फा० चर्ख] १ घूमनेवाला गोल चक्कर। चरख। २ लकडी का यंत्र जिसकी सहायता से ऊन, कपास या रेशम आदि को कातकर सूत बनाते हैं। रहट। ३ कुएँ से पानी निकालने का रहट। ४ सूत लपेटने की गराडी। चरखी। रील। ५ गराडी। घिरनी। ६ बडा या बेडौल पहिया। ७ गाडी का वह ढाँचा जिसमे जानकर नया घोडा निकालते हैं। खडखडिया। ८ झगड-बखेड या झंझट का काम।

चरखी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चरखा का स्त्री० अल्पा०] १ पहिए की तरह घूमनेवाली कोई वस्तु। २ छोटा चरखा। ३ कपास ओटने की चरखी। बेलनी। ओटनी। ४ सूत लपेटने की फिरकी। ५ कुएँ से पानी खींचने आदि की गराडी। घिरनी।

चरग—संज्ञा पुं० [फा० चरग] १ बाज की जाति की एक शिकारी चिड़िया। चरख। २ लकडबग्घा नामक जंतु।

चरचना—क्रि० स० [सं० चर्चन] १ देह मे चंदन आदि का लगाना। २ लेपना। पोतना। ३ भाँपना। अनुमान करना।

चरचराना—क्रि० अ० [अनु० चरचर] १ चर चर शब्द के साथ टूटना या जलना। २ घाव आदि का खुश्की से तनना और दर्द करना। चर्राना।

क्रि० स० चर चर शब्द के साथ (लकडी आदि) तोडना।

चरचा—संज्ञा स्त्री० दे० "चर्चा"।

चरचारी*—संज्ञा पुं० [हिं० चरचा] १ चर्चा चलानेवाला। २ निंदक।

चरजना*—क्रि० अ० [सं० चर्चन] १ बहकाना। भुलावा देना। घहाली देना। २ अनुमान करना। अंदाज लगाना।

चरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ पग। पैर। पाँव। कदम। २ बडो का सान्निध्य। बडो का संग। ३ किसी छंद या श्लोक आदि का एक पद। ४ किसी चीज का चौथाई भाग। ५ मूल। जड। ६ गोत्र। ७ क्रम। ८ आचार। ९ घूमने की जगह। १० सूर्य आदि की किरण। ११ अनुष्ठान। १२ गमन। जाना। १३ भक्षण। चरने का काम।

चरणगुप्त—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का चित्रकाव्य।

चरणचिह्न—संज्ञा पुं० [सं०] १ पैरो के तलुए की रेखा। २ पैर का निशान।

चरणदासी—संज्ञा स्त्री० [सं० चरण + दासी] १ स्त्री। पत्नी। २ जूता। पनही।

चरणपादुका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ खडाऊँ। पाँवडी। २ पत्थर आदि का बना हुआ चरण के आकार का पूजनीय चिह्न।

चरणपीठ—संज्ञा पुं० [सं०] चरणपादुका।

चरणसेवा—संज्ञा स्त्री० [सं० चरण + सेवा] १ पैर दबाना। २ बडो की सेवा।

चरणामृत—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह पानी जिसमे किसी महात्मा या बडे के चरण धोए गए हो। पादोदक। २ एक मे मिला हुआ दूध, दही, घी, शक्कर और शहद जिसमे किसी देवमूर्ति को स्नान कराया गया हो।

चरणोदक–संज्ञा पुं० [सं०] चरणामृत।

चरता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चर होने या चलने का भाव। २. पृथ्वी।

चरती–संज्ञा पुं० [हिं० चरना=खाना] व्रत के दिन उपवास न करनेवाला।

चरन–संज्ञा पु० दे० "चरण"।

चरना–क्रि० स० [सं० चर=चलना] पशुओं का घूम-घूमकर घास चारा आदि खाना। क्रि० अ० [सं० चर] घूमना फिरना। संज्ञा पुं० [सं० चरण=पैर] काछा।

चरनि*–संज्ञा स्त्री० [सं० चर+गमन] चाल।

चरनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० चरना] १. पशुओं के चरने का स्थान। चरी। चरागाह। २. वह नाद जिसमें पशुओं को खाने के लिए चारा दिया जाता है। ३. पशुओं का आहार, घास, चारा आदि।

चरपट–संज्ञा पु० [स० चर्पट] १. चपत। तमाचा। थप्पड़। २. चाईं। उचक्का। ३. एक छंद। चर्पट।

चरपरा–वि० [अनु०] [स्त्री० चरपरी] स्वाद में तीक्ष्ण। झालदार। तीता।

चरपराहट–संज्ञा स्त्री० [हिं० चरपरा] १. स्वाद की तीक्ष्णता। झाल। २. घाव आदि की जलन। ३. द्वेष। डाह। ईर्ष्या।

चरफराना†*–क्रि० अ० दे० "तड़पना"।

चरब–वि० [फ़ा० चर्ब] तेज। तीखा।

चरबन†–संज्ञा पु० दे० "चर्वना"।

चरबांक, चरबाक–वि० [स० चार्वाक] १. चतुर। चालाक। २. शोख। निडर।

चरबा–संज्ञा पुं० [फा० चरबः] प्रतिमूर्ति। नकल। खाका।

चरबी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] सफ़ेद या कुछ पीले रंग का एक चिकना गाढ़ा पदार्थ जो प्राणियों के शरीर में और बहुत से पौधों और वृक्षों में भी पाया जाता है। मेद। वसा। पीव।

मुहा०—चरबी चढ़ना=मोटा होना। चरबी छाना=१. बहुत मोटा हो जाना। शरीर में मेद बढ़ जाना। २. मदांध होना।

चरम–वि० [स०] अंतिम। सबसे बढ़ा हुआ। चोटी का।

चरमर–संज्ञा पुं० [अनु०] तनी या चीमड़ वस्तु (जैसे—जूता, चारपाई) के दबने या मुड़ने का शब्द।

चरमराना–क्रि० अ० [अनु०] चरमर शब्द होना। क्रि० स० चरमर शब्द उत्पन्न करना।

चरमवती†*संज्ञा स्त्री० दे० "चर्मण्वती"।

चरवाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० चराना] १. चराने का काम। २. चराने की मजदूरी।

चरवाना–क्रि० स० [हिं० चराना का प्रे०] चराने का काम दूसरे से कराना।

चरवाहा–संज्ञा पुं० [हिं० चरना + वाहा=वाहक] गाय, भैंस आदि चरानेवाला।

चरवाही–संज्ञा स्त्री० दे० "चरवाई"।

चरवैया‡–संज्ञा पुं० [हिं० चरना] १. चरनेवाला। २. चरानेवाला।

चरस–संज्ञा पुं० [स० चर्म] १. भैंस या बैल आदि के चमड़े का वह बहुत बड़ा डोल जिससे खेत सींचने के लिए पानी निकाला जाता है। चरसा। सरसा। पुर। मोट। २. भूमि नापने का एक परिमाण जो २१०० हाथ का होता है। गोचर्म। ३. गाँजे के पेड़ से निकला हुआ एक प्रकार का गोंद या चेप, जिसका धूआँ नशे के लिए चिलम पर पीते हैं। संज्ञा पु० [फ़ा० चर्ज] आसाम प्रांत में होनेवाला एक पक्षी। वन-मोर। चीनी मोर।

चरसा–संज्ञा पु० [हिं० चरस] १. भैंस, बैल आदि का चमड़ा। २. चमड़े का बना हुआ बड़ा थैला। ३. चरस। मोट।

चरसी–संज्ञा पु० [हिं०चरस+ई (प्रत्य०)] १. चरस द्वारा खेत सींचनेवाला। २. वह जो चरस पीता हो।

चराई–संज्ञा स्त्री० [हिं० चरना] १. चरने का काम। २. चराने का काम या मजदूरी।

चरागाह–संज्ञा पु० [फ़ा०] वह मैदान या भूमि जहाँ पशु चरते हों। चरनी। चरी।

चराचर–वि० [स०] १. चर और अचर। जड़ और चेतन। २. जगत्। संसार।

चराना–क्रि० स० [हि० चरना] १ पशुओं को घास चारा खिलाने के लिए खेतों या मैदानों में ले जाना। २ बातों में बहलाना।

चरावर†*–संज्ञा स्त्री० [देश०] व्यर्थ की बात। बकवाद।

चरिंदा–संज्ञा पु० [फा०] चरनेवाला जीव। पशु। हैवान।

चरित–संज्ञा पु० [स०] १ रहन-सहन। आचरण। २ काम। करनी। करतूत। कृत्य। ३ किसी के जीवन की विशेष घटनाओं या कार्यों आदि का वर्णन। जीवन चरित्र। जीवनी।

चरितनायक–संज्ञा पु० [स०] वह प्रधान पुरुष जिसके चरित्र का आधार लेकर कोई पुस्तक लिखी जाय।

चरितार्थ–वि० [स०] १ जिसके उद्देश्य या अभिप्राय की सिद्धि हो चुकी हो। कृत-कृत्य। कृतार्थ। २ जो ठीक ठीक घटे।

चरित्तर–संज्ञा पु० [स० चरित्र] १ धूर्तता की चाल। २ नखरेबाजी। नकल।

चरित्र–संज्ञा पु० [स०] १ स्वभाव। २ वह जो किया जाय। कार्य्य। ३ करनी। करतूत। ४ चरित।

चरित्रनायक–संज्ञा पु० दे० 'चरितनायक'।

चरित्रवान्–वि० [स०] [स्त्री० चरित्रवती] अच्छे चरित्रवाला। उत्तम आचरणवाला।

चरी–संज्ञा स्त्री० [स० चर या हि० चरा] १ पशुओं के चरने की जमीन। २ छोटी ज्वार के हरे पेड़ जो चारे के काम में आते हैं। कड़वी।

चरु–संज्ञा पु० [स०] [वि० चरव्य] १ हवन या यज्ञ की आहुति के लिए पकाया हुआ अन्न। हव्यान्न। हविष्यान्न। २ वह पात्र जिसमें उक्त अन्न पकाया जाय। ३ पशुओं के चरने की जमीन। ४ यज्ञ।

चरुखला‡–संज्ञा पु० [हि० चरखा] सूत कातने का चरखा।

चरुपात्र–संज्ञा पु० [स०] वह पात्र जिसमें हविष्यान्न रखा या पकाया जाय।

चरेरा–वि० [चरचर स अनु०] [स्त्री० चरेरी] कड़ा और खुरदुरा। २ कर्कश।

चरैया†–संज्ञा पु० [हि० चरना] १ चरानेवाला। २ चरनेवाला।

चर्चक–संज्ञा पु० [स०] चर्चा करनेवाला।

चर्चन–संज्ञा पु० [स०] १ चर्चा। २. लेपन।

चर्चरिका–संज्ञा स्त्री० [स०] नाटक में वह गान जो किसी एक विषय की समाप्ति और यवनिकापात होने पर होता है।

चर्चरी–संज्ञा स्त्री० [स०] १ एक प्रकार का गाना जो वसंत में गाया जाता है। फाग। चाँचर। २ होली की धूम-धाम या हुल्लड़। ३ एक वर्णवृत्त। ४ करतलध्वनि। ताली बजाने का शब्द। ५ चर्चरिका। ६ आमोद प्रमोद। क्रीड़ा।

चर्चा–संज्ञा स्त्री० [स०] १ ज़िक्र। वर्णन। बयान। २ वार्तालाप। बातचीत। ३ किंवदंती। अफवाह। ४ लेपन। पोतना। ५ गायत्रीरूपा महादेवी। दुर्गा।

चर्चिका–संज्ञा स्त्री० [स०] १ चर्चा। ज़िक्र। २ दुर्गा।

चर्चित–वि० [स०] १ लगा या लगाया हुआ। पोता हुआ। लेपित। २ जिसकी चर्चा हो।

चर्पट–संज्ञा पु० [स०] १ चपत। थप्पड़। २ हाथ की खुली हुई हथेली।

चर्म–संज्ञा पु० [स०] १ चमड़ा। २ ढाल। सिपर।

चर्मकषा, चर्मकषा–संज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का सुगंधि द्रव्य। चमरखा।

चर्मकार–संज्ञा पु० [स०] [स्त्री० चर्मकारी] चमड़े का काम करनेवाली जाति। चमार।

चर्मकील–संज्ञा स्त्री० [स०] १ बवासीर। २ एक रोग जिसमें शरीर में एक नुकीला मसा निकल आता है। न्यच्छ।

चर्मचक्षु–संज्ञा पु० [स०] साधारण चक्षु। ज्ञान चक्षु का उलटा।

चर्मण्वती–संज्ञा स्त्री० [स०] १ चंबल नदी। २ केले का पेड़।

चर्मदंड—संज्ञा पुं० [सं०] चमड़े का बना हुआ कोड़ा या चाबुक।
चर्मदृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] साधारण दृष्टि। आँख। ज्ञानदृष्टि का उलटा।
चर्मवसन—संज्ञा पुं० [सं०] शिव।
चर्य—वि० [सं०] जो करने योग्य हो।
चर्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह जो किया जाय। आचरण। २. आचार। चाल-चलन। ३. काम-काज। ४. वृत्ति। जीविका। ५. सेवा। ६. चलना। गमन।
चर्राना—क्रि० अ० [अनु०] १. लकड़ी आदि का टूटने या तड़कने के समय चर चर शब्द करना। २. घाव पर खुजली या सुरसुरी मिली हुई हल्की पीड़ा होना। ३. खुश्की और रुखाई के कारण किसी अंग में तनाव होना। ४. किसी बात की वेगपूर्ण इच्छा होना।
चर्री—संज्ञा स्त्री० [हिं० चर्राना] लगती हुई व्यंगपूर्ण बात। चुटीली बात।
चर्वण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० चर्व्य] १. चबाना। २. वह वस्तु जो चबाई जाय। ३. भूना हुआ दाना जो चबाकर खाया जाता है। चर्बना। बहुरा। दाना।
चर्वित—वि० [सं०] चबाया हुआ।
चर्वितचर्वण—संज्ञा पुं० [सं०] किसी किए हुए काम या कही हुई बात को फिर से करना या कहना। पिष्टपेषण।
चल—वि० [सं०] चंचल। अस्थिर। संज्ञा पुं० [सं०] १ पारा। २. दोहा छंद का एक भेद। ३ शिव। ४. विष्णु।
चलकना—क्रि० अ० दे० "चमकना"।
चलचलाव—संज्ञा पुं० [हिं० चलना] १. प्रस्थान। यात्रा। चलाचली। २. मृत्यु।
चलाचल—वि० [सं०] चल-विचल। चंचल।
चलचूक—संज्ञा स्त्री० [सं० चल = चंचल+चूक भूल] धोखा। छल। कपट।
चलता—वि० [हिं० चलना] [स्त्री० चलती] १. चलता हुआ। गमन करता हुआ। मुहा०—चलता करना = १. हटाना। भगाना। भेजना। २. किसी प्रकार निपटाना। चलता बनना = चल देना। २. जिसका क्रमभंग न हुआ हो। जो बराबर जारी हो। ३. जिसका रवाज बहुत हो। प्रचलित। ४. काम करने योग्य। जो अशक्त न हुआ हो। ५. चालाक। संज्ञा पुं० [देश०] १. एक प्रकार का बहुत बड़ा सदाबहार पेड़ जिसमें बेल के से फल लगते हैं। २. कवच। झिलम। संज्ञा स्त्री० [सं०] चल होने का भाव। चंचलता। अस्थिरता।
चलती—संज्ञा स्त्री० [हिं० चलना] मान-मर्यादा। प्रभाव। अधिकार।
चलदल—संज्ञा पुं० [सं०] पीपल का वृक्ष।
चलन—संज्ञा पुं० [हिं० चलना] १. चलने का भाव। गति। चाल। २. रिवाज। रस्म। रीति। ३. किसी चीज़ का व्यवहार, उपयोग या प्रचार। संज्ञा स्त्री० [सं०] ज्योतिष में विषुवत् की उस समय की गति, जब दिन और रात दोनों बराबर होते हैं। संज्ञा पुं० [सं०] गति। भ्रमण।
चलन कलन—संज्ञा पुं० [सं०] ज्योतिष में एक प्रकार का गणित जिससे दिन-रात के घटने-बढ़ने का हिसाब लगाया जाता है।
चलनसार—वि० [हिं० चलन+सार (प्रत्य०)] १. जिसका उपयोग या व्यवहार प्रचलित हो। २. जो अधिक दिनों तक काम में लाया जा सके। टिकाऊ।
चलना—क्रि० अ० [सं० चलन] १. एक स्थान से दूसरे स्थान को जाना। गमन करना। प्रस्थान करना। २. हिलना-डोलना। मुहा०—पेट चलना = १. दस्त आना। २. निर्वाह होना। गुजर होना। मन चलना = इच्छा होना। लालसा होना। चल बसना = मर जाना। अपने चलते = भरसक। यथाशक्ति ३. कार्य-निर्वाह में समर्थ होना। निभना। ४. प्रवाहित होना। बहना। ५. वृद्धि पर होना। बढ़ना। ६. किसी कार्य में अग्रसर होना। किसी युक्ति या काम में

चहल–संज्ञा स्त्री० [अनु०] कीचड़। कीच।
संज्ञा स्त्री० [हिं० चहचहाना] आनंद की धूम। आनंदोत्सव। रौनक।

चहलकदमी–संज्ञा स्त्री० [हिं० चहल + फा० कदम] धीरे धीरे टहलना या घूमना।

चहल-पहल–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ किसी स्थान पर बहुत से लोगों के आने-जाने की धूम। आबादानी। २ रौनक।

चहला†–संज्ञा पुं० [सं० चिकिल] कीचड़।

चहारदीवारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] किसी स्थान के चारों ओर की दीवार। प्राचीर।

चहारुम–वि० [फा०] किसी वस्तु के चार भागों में से एक भाग। चतुर्थांश।

चहुँ*–वि० [हिं० चार] चार। चारों।

चहुँआन–संज्ञा पुं० दे० "चौहान"।

चहूँ–वि० दे० 'चहुँ'।

चहूटना†–क्रि० अ० [हिं० चिमटना] सटना। लगना। मिलना।

चहेटना–क्रि० स० [?] १ गारना। निचोड़ना। २ दे० "चपटना"।

चहेता–वि० [हिं० चाहना+एता(प्रत्य०)] [स्त्री० चहेती] जिसे चाहा जाय। प्यारा।

चहोरना†–क्रि० अ० [देश०] १ पौधे को एक जगह से उखाड़कर दूसरी जगह लगाना। रोपना। बैठाना। २ सहेजना। सँभालना।

चाँई–वि० [देश०] १ ठग। उचक्का। २ होशियार। छली। चालाक।

चाँक–संज्ञा पुं० [हिं० चौ० = चार + अंक = चिह्न] काठ की वह थापी जिससे खलियान में अन्न की राशि पर ठप्पा लगाते हैं।

चाँकना–क्रि० स० [हिं० चाँक] १ खलियान में अनाज की राशि पर मिट्टी, राख या ठप्पे से छापा लगाना जिसमें यदि अनाज निकाला जाय, तो मालूम हो जाय। २ सीमा घेरना। हद खींचना। हद बाँधना। ३ पहचान के लिए किसी वस्तु पर चिह्न डालना।

चाँगला†–वि० [सं० चंग, हिं० चंगा] १ स्वस्थ। तंदुरुस्त। हृष्ट-पुष्ट। २ चतुर।
संज्ञा पुं० घोड़ों का एक रंग।

चाँचर, चाँचरि–संज्ञा स्त्री० [सं० चर्चरी] वसंत ऋतु में गाया जानेवाला एक प्रकार का राग। चर्चरी राग।

चाँचु*–संज्ञा पुं० दे० "चोंच"।

चाँटा†–संज्ञा पुं० [हिं० चिमटना] [स्त्री० चाँटी] बड़ी च्यूँटी। चिउँटा।
संज्ञा पुं० [अनु० चट] थप्पड़। तमाचा।

चाँटी–संज्ञा स्त्री० दे० "चींटी"।

चाँड़–वि० [सं० चंड] १ प्रबल। बलवान्। २ उग्र। उद्धत। शोख। ३ बढ़ा-चढ़ा। श्रेष्ठ। ४ तृप्त। संतुष्ट।
संज्ञा स्त्री० [सं० चंड = प्रबल] १ भार सँभालने का खंभा। टेक। थूनी। २ किसी अभावपूर्ति के निमित्त आकुलता। भारी जरूरत। गहरी चाह।
मुहा०—चाँड़ सरना = इच्छा पूरी होना।
३ दबाव। संकट। ४ प्रबलता। अधिकता। बढ़ती।

चाँड़ना–क्रि० स० [?] १ खोदना। खोदकर गिराना। २ उखाड़ना। उजाड़ना।

चांडाल–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० चांडाली, चांडालिन] १ एक अत्यंत नीच जाति। डोम। श्वपच। २ पतित मनुष्य। (गाली)

चाँड़िला†*–वि० [सं० चंड] [स्त्री० चाँड़िली] १ प्रचंड। प्रबल। उग्र। २ उद्धत। नटखट। शोख। ३ बहुत अधिक।

चाँद–संज्ञा पुं० [सं० चंद्र] १ चंद्रमा।
मुहा०—चाँद का टुकड़ा = अत्यंत सुन्दर मनुष्य। चाँद पर थूकना = किसी महात्मा पर कलंक लगाना, जिसके कारण स्वयं अपमानित होना पड़े। किधर चाँद निकला है? = आज क्या अनहोनी बात हुई जो आप दिखाई पड़े?
२ चांद्र मास। महीना। ३ द्वितीया के चंद्रमा के आकार का एक आभूषण। ४ चाँदमारी का काला दाग जिसपर निशाना लगाया जाता है।
संज्ञा स्त्री० खोपड़ी का मध्य भाग।

चाँदतारा–संज्ञा पुं० [हिं० चाँद+तारा]

१. एक प्रकार की बारीक मलमल जिस पर चमकीली बूटियाँ होती हैं। २. एक प्रकार की पतंग या कनकौआ।
चाँदना—संज्ञा पुं० [हिं० चाँद] १. प्रकाश। उजाला। २. चाँदनी।
चाँदनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चाँद] १. चंद्रमा का प्रकाश। चंद्रमा का उजाला। चंद्रिका।
मुहा०—चाँदनी का खेत = चंद्रमा का चारों ओर फैला हुआ प्रकाश। चार दिन की चाँदनी = थोड़े दिन रहनेवाला सुख या आनंद। २. बिछाने की बड़ी सफेद चद्दर। सफेद फ़र्श। ३. ऊपर तानने का सफेद कपड़ा।
चाँदबाला—संज्ञा पुं० [हिं० चाँद + बाला] कान में पहनने का एक गहना।
चाँदमारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चाँद + मारना] दीवार या कपड़े पर बने हुए चिह्नों को लक्ष्य करके गोली चलाने का अभ्यास।
चाँदी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चाँद] एक सफेद चमकीली धातु जिसके सिक्के, आभूषण और बरतन इत्यादि बनते हैं। रजत।
मुहा०—चाँदी का जूता = घूस। रिश्वत। चाँदी काटना = खूब रुपया पैदा करना।
चांद्र—वि० [सं०] चंद्रमा-संबंधी।
संज्ञा पुं० [सं०] १. चांद्रायण व्रत। २. चंद्रकांत मणि। ३. अदरख।
चांद्र मास—संज्ञा पुं० [सं०] उतना काल जितना चंद्रमा को पृथ्वी की एक परिक्रमा करने में लगता है। पूर्णिमा से पूर्णिमा या अमावस्या से अमावस्या तक का समय।
चांद्रायण—संज्ञा पुं० [सं०] १. महीने भर का एक कठिन व्रत जिसमें चंद्रमा के घटने-बढ़ने के अनुसार आहार घटाना-बढ़ाना पड़ता है। २. एक मात्रिक छंद।
चाँप—संज्ञा स्त्री० [हिं० चपना] १. चँप या दब जाने का भाव। दबाव। २. रेल-पेल। धक्का। ३. किसी बलवान् की प्रेरणा। ४. बंदूक का वह पुरजा जिसके द्वारा कुंदे से नली जुड़ी रहती है।
†*संज्ञा पुं० [हिं० चंपा] चंपा का फूल।
चाँपना—क्रि० स० [सं० चपन] दबाना।
चाँयँ चाँयँ—संज्ञा स्त्री० [अनु०] व्यर्थ की बकवाद। बकबक।
चाइ, चाउ*—संज्ञा पुं० दे० "चाव"।
चाक—संज्ञा पुं० [सं० चक्र] १. कील पर घूमता हुआ वह मंडलाकार पत्थर जिस पर मिट्टी का लोंदा रखकर कुम्हार बरतन बनाते हैं। कुलालचक्र। २. पहिया। ३. कुएँ से पानी खींचने की चरखी। गराड़ी। घिरनी। ४. थापा जिससे खलियान की राशि पर छापा लगाते हैं। ५. मंडलाकार चिह्न की रेखा।
संज्ञा पुं० [फ़ा०] दरार। चीड़।
वि० [तु० चाक] १ दृढ़। मजबूत। पुष्ट। २. हृष्ट-पुष्ट। तंदुरुस्त।
यौ०—चाक चौबंद १ हृष्ट-पुष्ट। तगड़ा २ चुस्त। चालाक। फुरतीला। तत्पर।
चाकचक—वि० [तु० चाक + अनु० चक] चारों ओर से सुरक्षित। दृढ़। मजबूत।
चाकचक्य—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चमक-दमक। चमचमाहट। उज्ज्वलता। २. शोभा। सुंदरता।
चाकना—क्रि० स० [हिं० चाक] १. सीमा बाँधने के लिए किसी वस्तु को रेखा या चिह्न खींचकर चारों ओर से घेरना। हद खींचना। २. खलियान में अनाज की राशि पर मिट्टी या राख से छापा लगाना जिसमें यदि अनाज निकाला जाय, तो मालूम हो जाय। ३ पहचान के लिए किसी वस्तु पर चिह्न डालना।
चाकर—संज्ञा पुं० [फ़ा०] [स्त्री० चाकरानी] दास। भृत्य। सेवक। नौकर।
चाकरी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] सेवा। नौकरी।
चाक्सू—संज्ञा पुं० [सं० चक्षुष्या] १. बन-कुलथी। २. निर्मली।
चाकी†—संज्ञा स्त्री० दे० "चक्की"।
संज्ञा स्त्री० [सं० चक्र] बिजली। वज्र।
चाकू—संज्ञा पुं० [तु०] छुरी।
चाक्षुष—वि० [सं०] १. चक्षु-संबंधी। २. जिसका बोध नेत्रों से हो। चक्षुर्ग्राह्य।

आना। ७ आरंभ होना। छिड़ना। ८ जारी रहना। क्रम या परंपरा का निर्वाह होना। ९ बराबर काम देना। टिकना। ठहरना। १० लेन देन के काम में आना। ११ प्रचलित होना। जारी होना। १२ प्रयुक्त होना। व्यवहृत होना। काम में लाया जाना। १३ तीर, गोली आदि का छूटना। १४ लड़ाई-झगड़ा होना। विरोध होना। १५ पढ़ा जाना। बाँचा जाना। १६. कारगर होना। उपाय लगना। वश चलना। १७ आचरण करना। व्यवहार करना। १८ निगला जाना। खाया जाना।

क्रि० स० शतरंज या चौसर आदि खेलों में किसी मोहरे या गोटी आदि को अपने स्थान से बढ़ाना या हटाना, अथवा ताश या गंजीफे आदि खेलों में किसी पत्ते को सब खेलनेवालों के सामने रखना।

संज्ञा पु० [हिं० चलनी] बड़ी चलनी।

चलनि*—संज्ञा स्त्री० दे० "चलन"।

चलनी†—संज्ञा स्त्री० दे० "छलनी"।

चलपत्र—संज्ञा पु० [सं०] पीपल का वृक्ष।

चलवाना—क्रि० स० [हिं० चलना का प्रे०] १ चलाने का कार्य्य दूसरे से कराना। २ चलाने का काम कराना।

चलविचल—वि० [सं० चल+विचल] १ जो ठीक जगह से इधर-उधर हो गया हो। उखड़ा-पुखड़ा। बेठिकाने। २ जिसके क्रम या नियम का उल्लंघन हुआ हो।

संज्ञा स्त्री० किसी नियम या क्रम का उल्लंघन।

चलवैया†—संज्ञा पु० [हिं० चलना] चलने-वाला।

चला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बिजली। २ पृथ्वी। भूमि। ३ लक्ष्मी।

चलाऊ—वि० [हिं० चलना] जो बहुत दिनों तक चले। मजबूत। टिकाऊ।

चलाका†*—संज्ञा स्त्री० [सं० चला] बिजली।

चलाचल*—संज्ञा स्त्री० [हिं० चलन] १ चलाचली। २ गति। चाल।

वि० [सं०] चंचल। चपल।

चलाचली—संज्ञा स्त्री० [हिं० चलना] १. चलने के समय की घबराहट, धूम या तैयारी। रवारवी। २ बहुत से लोगों का प्रस्थान। ३ चलने की तैयारी या समय।

वि० जो चलने के लिए तैयार हो।

चलान—संज्ञा स्त्री० [हिं० चलना] १ भेजे जाने या चलने की क्रिया। २ भेजने या चलाने की क्रिया। ३ किसी अपराधी का पकड़ा जाकर न्याय के लिए न्यायालय में भेजा जाना। ४ माल का एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजा जाना। ५ भेजा या आया हुआ माल। ६ वह कागज जिसमें किसी की सूचना के लिए भेजी हुई चीजों की सूची आदि हो। रवन्ना।

चलाना—क्रि० स० [हिं० चलना] १ किसी को चलने में लगाना। चलने के लिए प्रेरित करना। २ गति देना। हिलाना-डुलाना। हरकत देना।

मुहा०—किसी की चलाना=किसी के बारे में कुछ कहना। मुँह चलाना-खाना। भक्षण करना। हाथ चलाना=मारने के लिए हाथ उठाना। मारना पीटना।

३ कार्य्य-निर्वाह में समर्थ करना। निभाना। ४ प्रवाहित करना। बहाना। ५ वृद्धि करना। उन्नति करना। ६ किसी कार्य्य को अग्रसर करना। ७ आरंभ करना। छेड़ना। ८ जारी रखना। ९ बराबर काम में लाना। टिकाना। १० व्यवहार में लाना। लेन-देन के काम में लाना। ११ प्रचलित करना। प्रचार करना। १२ व्यवहृत करना। प्रयुक्त करना। १३ तीर, गोली आदि छोड़ना। १४ किसी चीज से मारना। १५ किसी व्यवसाय की वृद्धि करना।

चलायमान—वि० [सं०] १ चलनेवाला। जो चलता हो। २ चंचल। ३ विचलित।

चलाव†—संज्ञा पु० [हिं० चलना] १ चलन का भाव। २ यात्रा।

चलावा—संज्ञा पु० [हिं० चलना] १ रीति। रस्म। रवाज। २ आचरण। चाल-

चलन । ३. द्विरागमन । गौना । मुकलावा । ४. एक प्रकार का उतारा जो प्रायः गाँवों में भयंकर बीमारी फैलने के समय किया जाता है ।
चलित–वि० [सं०] १. अस्थिर । चलायमान । २. चलता हुआ ।
चलैया†–संज्ञा पुं० [हिं० चलना] चलनेवाला
चवन्नी–संज्ञा स्त्री० [हिं० चौ(चार का अल्पा० +आना+ई (प्रत्य०)] चार आने मूल्य का चाँदी या निकल का सिक्का ।
चवर्ग–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० चवर्गीय] च से ञ तक के अक्षरों का समूह ।
चवा*–संज्ञा स्त्री० [हिं० चौवाई] एक साथ सब दिशाओं से बहनेवाली वायु ।
चवाई–संज्ञा पुं० [हिं० चवाव] [स्त्री० चवाइन] १. बदनामी की चर्चा फैलानेवाला । निंदक । चुगलखोर ।
चवाव–संज्ञा पुं० [हिं० चौवाई] १. चारों ओर फैलनेवाली चर्चा । प्रवाद । अफवाह । २. बदनामी । निन्दा की चर्चा ।
चव्य–संज्ञा पुं० [सं०] चाव ओषधि ।
चश्म–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० चश्म] नेत्र । आँख ।
चश्मदीद–वि० [फ़ा०] जो आँखों से देखा हुआ हो ।
यौ०—चश्मदीद गवाह=वह साक्षी जो अपनी आँखों से देखी घटना कहे ।
चश्मा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. कमानी में जड़ा हुआ शीशे या पारदर्शी पत्थर के तालों का जोड़ा, जो आँखों पर दृष्टि बढ़ाने या ठढक रखने के लिये पहना जाता है । ऐनक । २. पानी का सोता । स्रोत ।
चष*–संज्ञा पुं० [सं० चक्षु] आँख ।
चषक–संज्ञा पुं० [सं०] १. मद्य पीने का पात्र । २. मधु । शहद ।
चषचोल*–संज्ञा पुं० [हिं० चष+चोल=वस्त्र] आँख की पलक ।
चसक–संज्ञा स्त्री० [देश०] हलका दर्द । *संज्ञा पुं० दे० "चषक" ।
चसकना–क्रि० अ० [हिं० चसक] हलकी पीड़ा होना । टीसना ।
चसका–संज्ञा पुं० [सं० चषण] १. किसी वस्तु या कार्य्य से मिला हुआ आनंद, जो उस चीज के पुनः पाने या उस काम के पुनः करने की इच्छा उत्पन्न करता है । शौक़ । चाट । २. आदत । लत ।
चसना–क्रि० अ० [हिं० चाशनी] दो चीजों का एक में सटना । लगना । चिपकना ।
चस्पाँ–वि० [फ़ा०] चिपकाया हुआ ।
चह–संज्ञा पुं० [सं० चय] नदी के किनारे नाव पर चढ़ने के लिए चबूतरा । पाट ।
*†–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० चाह] गड्ढा ।
चहक–संज्ञा स्त्री० [हिं० चहकना] पक्षियों का मधुर शब्द । चिड़ियों का चह चह ।
चहकना–क्रि० अ० [अनु०] १. पक्षियों का आनंदित होकर मधुर शब्द करना । चहचहाना । २. उमंग या प्रसन्नता से अधिक बोलना ।
चहकार–संज्ञा स्त्री० दे० "चहक" ।
चहकारना†–क्रि० अ० दे० "चहकना" ।
चहचहा–संज्ञा पुं० [हिं० चहचहाना] १. 'चहचहाना' का भाव । चहक । २. हँसी-दिल्लगी । ठट्ठा ।
वि० १. जिसमें चहचह शब्द हो । उल्लास। शब्द-युक्त । २. आनंद और उमंग उत्पन्न करनेवाला । बहुत मनोहर । ३. ताजा ।
चहचहाना–क्रि० अ० [अनु०] पक्षियों का चहचह शब्द करना । चहकना ।
चहनना†–क्रि० स० [अनु०] अच्छी तरह खाना ।
चहना*†–क्रि० स० दे० "चाहना" ।
चहनि†*–संज्ञा स्त्री० दे० "चाह" ।
चहबच्चा–संज्ञा पुं० [फ़ा० चाह=कुआँ+बच्चा] १. पानी भर रखने का छोटा गड्ढा या हौज़ । २. धन गाड़ने या छिपा रखने का छोटा तहखाना ।
चहल†*–संज्ञा स्त्री० [हिं० चहल] १. आनंद की धूम । रौनक । २. शोर-गुल । हल्ला ।
वि० १. बढ़िया । उत्तम । २. चुलबुला ।
चहरना†*–क्रि० अ० [हिं० चहल] आनंदित होना । प्रसन्न होना ।

संज्ञा पुं० १. न्याय में ऐसा प्रत्यक्ष प्रमाण जिसका बोध नेत्रों द्वारा हो। २. छठे मनु का नाम।

चाखना†–क्रि० स० दे० "चखना"।

चाचर, चाचरि–संज्ञा स्त्री० [सं० चर्चरी] १. होली में गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत। चर्चरी राग। २. होली में होनेवाले खेल-तमाशे। होली की धमार। ३. उपद्रव। दंगा। हलचल। हल्ला-गुल्ला।

चाचरी–संज्ञा स्त्री० [सं० चर्चरी] योग की एक मुद्रा।

चाचा–संज्ञा पुं० [सं० तात] [स्त्री० चाची] काका। पितृव्य। बाप का भाई।

चाट–संज्ञा स्त्री० [हिं० चाटना] १. चटपटी चीजों के खाने या चाटने की प्रबल इच्छा। २. एक बार किसी वस्तु का आनन्द लेकर फिर उसी का आनंद लेने की चाह। चसका। शौक। लालसा। ३. प्रबल इच्छा। बड़ी चाह। लोलुपता। ४. लत। आदत। बान। टेव। ५. चरपरी और नमकीन खाने की चीजें। गजक।

चाटना–क्रि० स० [अनु० चट चट] १. खाने या स्वाद लेने के लिये किसी वस्तु को जीभ से उठाना। जीभ लगाकर खाना। २. पोंछकर खा लेना। चट कर जाना। ३. (प्यार से) किसी वस्तु पर जीभ फेरना।

यौ०—चूमना चाटना=प्यार करना।

४. कीड़ों का किसी वस्तु को खा जाना।

चाटु–संज्ञा पुं० [सं०] १. मीठी बात। प्रिय बात। २. खुशामद। चापलूसी।

चाटुकार–संज्ञा पुं० [सं०] खुशामद करनेवाला। चापलूस। खुशामदी।

चाटुकारी–संज्ञा स्त्री० [सं० चाटुकार+ई (प्रत्य०)] झूठी प्रशंसा या खुशामद।

चाड़*–संज्ञा स्त्री० दे० "चोंड़"।

चाड़ा*†–संज्ञा पुं० [हिं० चाड] [स्त्री० चाड़ी] प्रेमपात्र। प्यारा। प्रिय।

चाणक्य–संज्ञा पुं० [सं०] राजनीति के आचार्य एक मुनि जो पाटलिपुत्र के सम्राट् चंद्रगुप्त के मंत्री थे और कौटिल्य नाम से भी प्रसिद्ध हैं।

चातक–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० चातकी] पपीहा नामक पक्षी।

चातर†–वि० दे० "चातुर"।

चातुर–वि० [सं०] १. नेत्रगोचर। २. चतुर। ३ खुशामदी। चापलूस।

चातुरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चतुरता। चतुराई। व्यवहार-दक्षता। २. चालाकी।

चातुर्भद्र, चातुर्भद्रक–संज्ञा पुं० [सं०] चार पदार्थ—अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष।

चातुर्मासिक–वि० [सं०] चार महीने में होनेवाला (*यज्ञ, कर्म आदि*)।

चातुर्मास्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. चार महीने में होनेवाला एक वैदिक यज्ञ। २. चार महीने का एक पौराणिक व्रत जो वर्षा-काल में होता है।

चातुर्य्य–संज्ञा पुं० [सं०] चतुराई।

चात्रिक*†–संज्ञा पुं० दे० "चातक"।

चादर–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. कपड़े का लंबा-चौड़ा टुकड़ा जो बिछाने या ओढ़ने के काम में आता है। २ हलका ओढ़ना। चौड़ा दुपट्टा। पिछौरी। ३. किसी धातु का बड़ा चौखूंटा पत्तर। चद्दर। ४. पानी की चौड़ी धार जो कुछ ऊपर से गिरती हो। ५. फूलों की राशि जो किसी पूज्य स्थान पर चढ़ाई जाती है। (मुसल०)

चानक*–क्रि० वि० दे० "अचानक"।

चाप–संज्ञा पुं० [सं०] १. धनुष। कमान। २ गणित में आधा वृत्तक्षेत्र। ३. वृत्त की परिधि का कोई भाग। ४. धनु राशि। संज्ञा स्त्री० [सं० चाप=धनुष] १. दबाव। २. पैर की आहट।

चापना†–क्रि० स० [सं० चाप=धनुष] दबाना

चापलता*–संज्ञा स्त्री० दे० "चपलता"।

चापलूस–वि० [फा०] खुशामदी। लल्लो-चप्पो करनेवाला। चाटुकार।

चापलूसी–संज्ञा स्त्री० [फा०] खुशामद।

चाब–संज्ञा स्त्री० [सं० चव्य] १ गजपिप्पली की जाति का एक पौधा जिसकी लकड़ी

और जड़ औषध के काम में आती है। चाब्य। २. इस पौधे का फल।

मंज्ञा स्त्री० [हिं० चावना] १. वे चौखूंटे दाँत जिनसे भोजन कुचलकर खाया जाता है। डाढ़। चौभड़। २. बच्चे के जन्मोत्सव की एक रीति।

चाबना–क्रि० स० [सं० चर्वण] १. चबाना। २. खूब भोजन करना। खाना।

चाबी–संज्ञा स्त्री० [हिं० चाप] कुंजी। ताली।

चाबुक–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. कोड़ा। हंटर। सोंटा। २. जोश दिलानेवाली बात।

चाबुकसवार–संज्ञा पुं० [फ़ा०] [संज्ञा चाबुकसवारी] घोड़े को चलना सिखानेवाला।

चाभना–क्रि० स० [हिं० चाबना] खाना।

चाभी–संज्ञा स्त्री० दे० "चाबी"।

चाम–संज्ञा पुं० [सं० चर्म] चमड़ा। खाल। मुहा०—चाम के दाम चलाना = अपनी चलती में अन्याय करना। अंधेर करना।

चामर–संज्ञा पुं० [सं०] १. चौर। चवर। चौरी। २. मोरछल। ३. एक वर्णवृत्त।

चामीकर–संज्ञा पुं० [सं०] १. सोना। स्वर्ण। २. धतूरा।

वि० स्वर्णमय। सुनहरा।

चामुंडा–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक देवी जिन्होंने शुंभ निशुंभ के चंड मुंड नामक दो सेनापति दैत्यों का वध किया था।

चाय–संज्ञा स्त्री० [चीनी चा] १. एक पौधा जिसकी पत्तियों का काढ़ा चीनी के साथ पीने की चाल अब प्रायः सर्वत्र है। २. चाय उबाला हुआ पानी।

यौ०—चाय पानी = जलपान।

*संज्ञा पुं० दे० "चाव"।

चायक*–संज्ञा पुं० [हिं० चाय] चाहनेवाला।

चार–वि० [सं० चतुर] १. जो गिनती में दो और दो हो। तीन से एक अधिक। मुहा०—चार आँखें होना = नजर से नजर मिलना। देखा-देखी होना। साक्षात्कार होना। चार चाँद लगना = १. चौगुनी प्रतिष्ठा होना। २. चौगुनी शोभा होना। सौंदर्य बढ़ना (स्त्री०)। चारों फूटना = चारों आँखें (दो हिए की, दो ऊपर की) फूटना। २. कई एक। बहुत से। ३. थोड़ा बहुत। कुछ।

संज्ञा पुं० चार का अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—४।

संज्ञा पुं० [सं०] [वि० चरित, चारी] १. गति। चाल। गमन। २. बंधन। कारागार। ३. गुप्त दूत। चर। जासूस। ४. दास। सेवक। ५. चिरौंजी का पेड़। पियार। अचार। ६. आचार। रीति। रस्म।

चार-आइना–संज्ञा पुं० [फ़ा०] एक प्रकार का कवच या बकतर।

चार काने–संज्ञा पुं० [हिं० चार + काना = गाना] चौसर या पासे का एक दाँव।

चारखाना–संज्ञा पुं० [फ़ा०] एक प्रकार का कपड़ा जिसमें रंगीन धारियों के द्वारा चौखूंटे घर बने रहते हैं।

चारजामा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] जीन। पलान।

चारण–संज्ञा पुं० [सं०] १. वंश की कीर्ति गानेवाला। भाट। बंदीजन। २. राजपूताने की एक जाति। ३. भ्रमणकारी।

चारदीवारी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. घेरा। हाता। २. शहर-पनाह। प्राचीर।

चारना*†–क्रि० स० [सं० चारण] चराना।

चारपाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० चार + पाया] छोटा पलंग। खाट। खटिया। मंजी। मुहा०—चारपाई धरना, पकड़ना या लेना = इतना बीमार होना कि चारपाई से न उठ सके। अत्यंत रुग्ण होना। चारपाई से लगना = बीमारी के कारण उठ न सकना।

चारबाग–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. चौखूंटा बगीचा। २. चार बराबर खानों में बँटा हुआ रुमाल।

चारयारी–संज्ञा स्त्री० [हिं० चार फ़ा० यार] १. चार मित्रों की मंडली। २. मुसलमानों में सुन्नी संप्रदाय की एक मंडली। ३. चाँदी का एक चौकोर सिक्का जिसपर खलीफाओं के नाम या कलमा लिखा रहता है।

चारा–संज्ञा पुं० [हिं० चरना] पशुओं के खाने की घास, पत्ती, डंठल आदि।

संज्ञा पु० [फा०] उपाय। तदबीर।

चाराजोई–संज्ञा स्त्री० [फा०] नालिश। फरियाद।

चारिणी–वि० स्त्री० [सं०] आचरण करने-वाली। चलनेवाली।

चारित–वि० [सं०] चलाया हुआ।

चारित्र–संज्ञा पु० [सं०] १ कुल-क्रमागत आचार। २ चाल-चलन। व्यवहार। स्वभाव। ३ सन्यास। (जैन)

चारित्र्य-संज्ञा पु० [सं०] चरित्र।

चारी–वि० [सं०चारिन्] [स्त्री० चारिणी] १ चलनेवाला। २ आचरण करनेवाला। संज्ञा पु० १ पदाति सैन्य। पैदल सिपाही। २ संचारी भाव।

चारु–वि० [सं०] सुंदर। मनोहर।

चारुता–संज्ञा स्त्री० [सं०] सुंदरता।

चारुहासिनी–वि० स्त्री० [सं०] सुंदर हँसनवाली। मनोहर मुसकानवाली। संज्ञा स्त्री० वैताली छंद का एक भेद।

चार्वाक–संज्ञा पु०[सं०] एक अनीश्वरवादी और नास्तिक तार्किक।

चाल–संज्ञा स्त्री० [हिं० चलना] १ गति। गमन। चलने की क्रिया। २ चलने का ढंग। गमन प्रकार। ३ आचरण। बर्त्ताव। व्यवहार। ४ आकार प्रकार। बनावट। गढ़न। ५ रीति। रवाज। रस्म। प्रथा। परिपाटी। ६ गमन-मुहूर्त्त। चलने की सायत। चाला। ७ कार्य्य करने की युक्ति। ढंग। तदबीर। ढब। ८ कपट। छल। धूर्त्तता। ९ ढंग। प्रकार। तरह। १० शतरंज, ताश आदि के खेल में गोटी को एक घर से दूसरे घर में ले जाने अथवा पत्ते या पासे का दाँव पर डालने की क्रिया। ११ हल-चल। धूम। आंदोलन। १२ हिलने डोलने का शब्द। आहट। खटका।

चालक–वि०[सं०] चलानेवाला। संचालक। संज्ञा पु० [हिं० चाल] धूर्त्त। छली।

चालचलन–संज्ञा पु० [हिं० चाल + चलन] आचरण। व्यवहार। चरित्र। शील।

चाल ढाल–संज्ञा स्त्री० [हिं०चाल + ढाल] १ आचरण। व्यवहार। २ तौर-तरीका।

चालन–संज्ञा पु० [सं०] १ चलाने की क्रिया। २ चलने की क्रिया। गति। संज्ञा पु० [हिं० चालना] भूसी या चोकर जो आटा चालने के पीछे रह जाता है।

चालना*†–क्रि० स० [सं० चालन] १ चलाना। परिचालित करना। २ एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जाना। ३ (बहू) बिदा कराके ले आना। ४ हिलना। डोलना। ५ कार्य्य निर्वाह करना। भुगताना। ६ बात उठाना। प्रसंग छेड़ना। ७ आटे को छलनी में रखकर छानना।

क्रि० अ० [सं० चालन] चलना।

चालबाज–वि० [हिं० चाल + फा० बाज़] धूर्त्त। छली।

चाला–संज्ञा पु० [हिं० चाल] १ प्रस्थान। कूच। रवानगी। २ नई बहू का पहले-पहल मायके से ससुराल या ससुराल से मायके जाना। ३ यात्रा का मुहूर्त्त।

चालाक–वि० [फा०] १ व्यवहार-कुशल। चतुर। दक्ष। २ धूर्त्त। चालबाज़।

चालाकी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १ चतुराई। व्यवहार-कुशलता। दक्षता। पटुता। २ धूर्त्तता। चालबाजी। ३ युक्ति।

चालान–संज्ञा पु० दे० "चालान"।

चालिया–वि० दे० "चालबाज"।

चाली–वि० [हिं० चाल] १ चालिया। धूर्त्त। चालबाज। २ चंचल। नटखट।

चालीस–वि० [सं०चत्वारिंशत्] जो गिनती में बीस और बीस हो। संज्ञा पु० बीस और बीस की संख्या या अंक।

चालीसा–संज्ञा पु० [हिं० चालीस] [स्त्री० चालीसी] १ चालीस वस्तुओं का समूह। २ चालीस दिन का समय। चिल्ला।

चाल्हा–संज्ञा स्त्री० [देश०] चेल्हवा मछली।

चावँ चावँ–संज्ञा स्त्री० दे० "चाँयँ चाँयँ"।

चाव–संज्ञा पु० [हिं०चाह] १ प्रबल इच्छा। अभिलाषा। लालसा। अरमान।

२. प्रेम। अनुराग। चाह। ३. शौक। उत्कंठा। ४. लाड़-प्यार। दुलार। नखरा। ५. उमंग। उत्साह। आनंद।

चावल–संज्ञा पुं० [सं० तडुल] १. एक प्रसिद्ध अन्न। धान के दाने की गुठली। तंडुल। २. पकाया चावल। भात। ३. चावल के आकार के दाने। ४. एक रत्ती का आठवाँ भाग या उसके बराबर की तौल।

चासनी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. चीनी, मिश्री या गुड़ को आँच पर चढ़ाकर गाढ़ा और मधु के समान लसीला किया हुआ रस। २. चसका। मजा। ३. नमूने का सोना जो सुनार को गहने बनाने के लिये सोना देनेवाला गाहक अपने पास रखता है।

चाप–संज्ञा पु० [सं०] १. नीलकंठ पक्षी। २. चाहा पक्षी।

चासा–संज्ञा पु० [देश०] १. हलवाहा। हल जोतनेवाला। २. किसान। खेतिहर।

चाह–संज्ञा स्त्री० [सं० इच्छा। अथवा सं० उत्साह] १. इच्छा। अभिलाषा। २. प्रेम। अनुराग। प्रीति। ३. पूछ। आदर। क़दर। ४. माँग। जरूरत। *सज्ञा स्त्री० [हिं० चाल=आहट] खबर। समाचार।

चाहक*–संज्ञा पुं० [हिं० चाहना] चाहनेवाला। प्रेम करनेवाला।

चाहत–संज्ञा स्त्री० [हिं० चाह] चाह। प्रेम।

चाहना–क्रि० स० [हिं० चाह] १. इच्छा करना। अभिलाषा करना। २. प्रेम करना। प्यार करना। ३. माँगना। ४. प्रयत्न करना। कोशिश करना। *५. देखना। ताकना। ६. ढूंढना। संज्ञा स्त्री० [हिं० चाहना] चाह। ज़रूरत।

चाहा–संज्ञा पु० [स० चाप] बगले की तरह का एक जल-पक्षी।

चाहि*–अव्य० [स० चैव=और भी ?] अपेक्षाकृत (अधिक)। बनिस्बत।

चाहिए–अव्य० [हिं० चाहना] उचित है। उपयुक्त है। मुनासिब है।

चाही–वि० स्त्री० [हिं० चाह] चहेती। प्यारी

चाहे–अव्य० [हिं० चाहना] १. जी चाहे। इच्छा हो। मन में आवे। २. यदि जी चाहे तो। जैसा जी चाहे। ३. होना चाहता हो। होनेवाला हो।

चिआँ–संज्ञा पुं० [सं० चिंचा] इमली का बीज

चिउँटा–संज्ञा पुं० [हिं० चिमटना] एक कीड़ा जो मीठे के पास बहुत जाता है।

चिउँटी–संज्ञा स्त्री० [हिं० चिमटाना] एक बहुत छोटा कीड़ा जो मीठे के पास बहुत जाता है। चींटी। पिपीलिका।

मुहा०–चिउँटी की चाल=बहुत सुस्त चाल। मंद गति। चिउँटी के पर निकलना=ऐसा काम करना जिससे मृत्यु हो। मरने पर होना

चिगना†–संज्ञा पुं० [देश०] १. किसी पक्षी का, विशेषतः मुरगी का, छोटा बच्चा। २. छोटा बालक। बच्चा।

चिंघाड़–संज्ञा स्त्री० [स० चीत्कार] १. चीख मारने का शब्द। २. किसी जंतु का घोर शब्द। चिल्लाहट। ३. हाथी की बोली।

चिंघाड़ना–क्रि० अ० [स० चीत्कार] १. चीखना। चिल्लाना। २. हाथी का बोलना या चिल्लाना।

चिंचिनी*–संज्ञा स्त्री० [सं० तितिड़ी] १. इमली का पेड़। २. इमली का फल।

चिंजा*†–संज्ञा पु० [सं० चिरजीव] [स्त्री० चिंजी] लड़का। पुत्र। बेटा।

चिंत–संज्ञा स्त्री० दे० "चिंता"।

चिंतक–वि० [सं०] १. चिंतन करनेवाला। ध्यान करनेवाला। २. सोचनेवाला।

चिंतन–संज्ञा पु० [स०] १. बार बार स्मरण। ध्यान। २. विचार। विवेचना। ग़ौर।

चिंतना*–क्रि० स० [सं० चिंतन] १. ध्यान करना। स्मरण करना। २. सोचना। संज्ञा स्त्री० [सं० चिंतन] १. ध्यान। स्मरण। भावना। २. चिंता। सोच।

चिंतनीय–वि० [स०] १. चिंतन या ध्यान करने योग्य। भावनीय। २. जिसकी फिक्र करना उचित हो। ३. विचार करने योग्य। ४. संदिग्ध।

चितवन*—संज्ञा पुं० दे० "चितन"।

चिंता—संज्ञा स्त्री०[सं०] १ ध्यान। भावना। २ सोच। फिक्र। खटका।

चिंतामणि—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक कल्पित रत्न जिसके विषय में प्रसिद्ध है कि उससे जो अभिलाषा की जाय, वह पूर्ण कर देता है। २ ब्रह्मा। ३ परमेश्वर। ४ सरस्वती का मंत्र जिसे विद्या आने के लिए लड़के की जीभ पर लिखते हैं।

चिंतित—वि० [सं०] जिसे चिंता हो। चिंतायुक्त। फिक्रमंद।

चिंत्य—वि० [सं०] १ भावनीय। विचारणीय। विचार करने योग्य। २ संदिग्ध।

चिंदी—संज्ञा स्त्री० [देश०] टुकड़ा।

मुहा०—हिंदी की चिंदी निकालना = अत्यंत तुच्छ भूल निकालना। कुतर्क करना।

चिउड़ा—संज्ञा पुं० दे० 'चिड़वा'।

चिक—संज्ञा स्त्री० [तु० चिक्] बाँस या सरकंडे की तीलियों का बना हुआ झँझरीदार परदा। चिलमन।

संज्ञा पुं० पशुओं को मारकर उनका मांस बेचनेवाला। बूचर। बकर-कसाई।

संज्ञा स्त्री० [देश०] कमर का वह दर्द जो एकबारगी अधिक बल पड़ने के कारण होता है। चमक। चिलक। झटका।

चिकट—वि०[सं० चिक्किट] १ चिकना और मैल से गंदा। मैला-कुचैला। २ लसीला।

चिकटना—क्रि० अ०[हिं० चिकट या चिक्कट] जमी हुई मैल के कारण चिपचिपा होना।

चिकन—संज्ञा पुं० [फा०] महीन सूती कपड़ा जिसपर उभड़े हुए बूटे बने रहते हैं।

चिकना—वि०[सं० चिक्कण][स्त्री० चिकनी] १ जो छूने में खुरदुरा न हो। जो साफ और बराबर हो। २ जिसपर पैर आदि फिसले। ३ जिसमें तेल लगा हो।

मुहा०—चिकना घड़ा = निर्लज्ज। बेहया।

४ साफ-सुथरा। सँवारा हुआ। सुंदर।

मुहा०—चिकनी चुपड़ी बातें = बनावटी स्नेह से भरी बातें। कृत्रिम मधुर भाषण।

५ लल्लो चप्पो करनेवाला। चाटुकार। खुशामदी। ६ स्नेही। अनुरागी। प्रेमी।

संज्ञा पुं० तेल, घी, चरबी आदि चिकने पदार्थ।

चिकनाई संज्ञा स्त्री०[हिं० चिकना+ई(प्रत्य०)] १ चिकना होने का भाव। चिकनापन। चिकनाहट। २ स्निग्धता। सरसता।

चिकनाना—क्रि० स० [हिं० चिकना + ना (प्रत्य०)] १ चिकना करना। स्निग्ध करना। २ साफ करना। सँवारना।

क्रि० अ० १ चिकना होना। २ स्निग्ध होना। ३ चरबी से युक्त होना। हृष्ट-पुष्ट होना। मोटाना। ४ स्नेह-युक्त होना।

चिकनापन—संज्ञा पुं० [हिं० चिकना + पन (प्रत्य०)] चिकना होने का भाव। चिकनाई। चिकनाहट।

चिकनाहट—संज्ञा स्त्री० दे० "चिकनापन"।

चिकनिया—वि० [हिं० चिकना] छैला। शौकीन। बाँका। बना-ठना।

चिकनी सुपारी—संज्ञा स्त्री०[सं० चिक्कणी] एक प्रकार की उबाली हुई सुपारी।

चिकरना—क्रि० अ० [सं० चीत्कार] चीत्कार करना। चिंघाड़ना। चीखना।

चिकार—संज्ञा पुं० दे० 'चिंघाड़'।

चिकारना—क्रि० अ० दे० 'चिंघाड़ना'।

चिकारा—संज्ञा पुं०[हिं० चिकार][स्त्री० अल्पा० चिकारी] १ सारंगी की तरह का एक बाजा २ हिरन की जाति का एक जानवर

चिकित्सक—संज्ञा पुं० [सं०] रोग दूर करने का उपाय करनेवाला। वैद्य।

चिकित्सा—संज्ञा स्त्री०[सं०][वि० चिकित्सक, चिकित्स्य] १ रोग दूर करने की युक्ति या क्रिया। इलाज। २ वैद्य का व्यवसाय या काम।

चिकित्सालय—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान। जहाँ रोगियों की दवा हो। शफाखाना।

चिकुटी*—संज्ञा स्त्री० दे० 'चिकोटी'।

चिकुर—संज्ञा पुं० [सं०] १ सिर के बाल। केश। २ पर्वत। ३ साँप आदि रेंगनेवाले जंतु। ४ छछूँदर। ५ गिलहरी।

चिकोटी†—संज्ञा स्त्री० दे० 'चुटकी'।

चिक्कट–संज्ञा पुं० [हिं० चिकना + कीट या काट] गर्द, तेल आदि की मैल जो कहीं जम गई हो। कीट।
वि० मैला-कुचैला। गंदा।
चिक्कण–वि० [सं०] चिकना।
चिक्करना–क्रि० अ० दे० "चिंघाड़ना"।
चिक्कार–संज्ञा पुं० दे० "चिग्घाड़"।
चिखुरी–संज्ञा स्त्री० दे० "गिलहरी"।
चिचड़ा–संज्ञा पुं० [देश०] १. डेढ़, दो हाथ ऊँचा एक पौधा जो दवा के काम में आता है। अपामार्ग। ओंगा। अंझा-झार। लटजीरा। २. दे० "चिचड़ी"।
चिचड़ी–संज्ञा स्त्री० [?] एक कीड़ा जो चौपायों के शरीर में चिमटा रहता है और उनका खून पीता है। किलनी। किल्ली।
चिचान*–संज्ञा पु० [सं० सचान] बाज पक्षी।
चिचिंडा–संज्ञा पु० दे० "चचीड़ा"।
चिचियाना†–क्रि० अ० दे० "चिल्लाना"।
चिचुकना–क्रि० अ० दे० "चुचुकना"।
चिचोड़ना†–क्रि० स० दे० "चचोड़ना"।
चिजारा–संज्ञा पुं० [फा० चीदन = चुनना] कारीगर। मेमार। राज।
चिट–संज्ञा स्त्री० [हिं० चीडना] १. कागज, कपड़े आदि का टुकड़ा। २. पुरजा। रुक्का। छोटा पत्र।
चिटकना–क्रि० अ० [अनु०] १. सूखकर जगह जगह पर फटना। २. लकड़ी का जलते समय 'चिट चिट' शब्द करना। ३. चिढ़ना।
चिटकाना–क्रि० स० [अनु०] १. किसी सूखी हुई चीज को तोड़ना या तड़काना। २. खिझाना। चिढ़ाना।
चितनवीस–संज्ञा पु० [हिं० चिट + फा० नवीस] लेखक। मुहर्रिर। कारिंदा।
चिट्टा–वि० [सं० सित] सफ़ेद। श्वेत।
संज्ञा पुं० [?] झूठा बढ़ावा।
चिट्ठा–संज्ञा पु० [हिं० चिट] १. हिसाब की बही। खाता। लेखा। २. वह कागज जिसपर वर्ष भर का हिसाब नफ़ा-नुकसान दिखाया जाता है। फ़र्द। ३. किसी रकम की सिलसिलेवार फिहरिस्त। सूची। ४. वह रुपया जो प्रतिदिन, प्रतिसप्ताह या प्रतिमास मज़-दूरी या तनख़्वाह के रूप में बाँटा जाय। ५. खर्च की फ़िहरिस्त।
मुहा०—कच्चा चिट्ठा ऐसा सविस्तर वृत्तांत जिसमें कोई बात छिपाई न गई हो।
चिट्ठी–संज्ञा स्त्री० [हिं० चिट] १. वह कागज जिसपर कहीं भेजने के लिए समाचार आदि लिखा हो। पत्र। खत। २. कोई छोटा पुरजा या कागज़ जिसपर कुछ लिखा हो। ३. एक क्रिया जिसके द्वारा यह निश्चय किया जाता है कि कौई माल पाने या कोई काम करने का अधिकारी कौन हो। ४. किसी बात का आज्ञापत्र।
चिट्ठी पत्री–संज्ञा स्त्री० [हिं० चिट्ठी + पत्री] १ पत्र। खत। २. पत्र-व्यवहार।
चिट्ठीरसाँ–संज्ञा पु० [हिं० चिट्ठी + फा० रसाँ] चिट्ठी बाँटनेवाला। डाकिया।
चिड़चिड़ा–संज्ञा पु० दे० "चिचड़ा"।
वि० [हिं० चिड़चिड़ाना] शीघ्र चिढ़नेवाला जल्दी अप्रसन्न हो जानेवाला।
चिड़चिड़ाना–क्रि० अ० [अनु०] १. जलने में चिड़चिड़ शब्द होना। २ सूखकर जगह जगह से फटना। खरा होकर दरक-ना। ३. चिढ़ना। बिगड़ना। झुँझलाना।
चिड़वा–संज्ञा पु० [सं० चिपिट] हरे, भिगोए या कुछ उबाले हुए धान को भाड़ में भून-कर और फिर कूटकर बनाया हुआ चिपटा दाना। चिउड़ा।
चिड़ा–संज्ञा पु० [सं० चटक] गौरा पक्षी।
चिड़िया–संज्ञा स्त्री० [सं० चटक] १. पक्षी। पखेरू। पंछी।
मुहा०—चिड़िया का दूध = अप्राप्य वस्तु। सोने की चिड़िया = धन देनेवाला असामी।
२. चिड़िया के आकार का गढ़ा या काटा हुआ टुकड़ा। ३. ताश का एक रंग।
चिड़ियाख़ाना–संज्ञा पु० [हिं० चिड़िया +

अनेक प्रकार के पक्षी और पशु देखने के लिए रखे जाते हैं।

चिड़िहार†*—संज्ञा पु० दे० "चिड़ीमार"।

चिड़ी—संज्ञा स्त्री० दे० "चिड़िया"।

चिड़ीमार—संज्ञा पु० [हिं० चिड़ी + मारना] चिड़िया पकड़नेवाला। बहेलिया।

चिढ़—संज्ञा स्त्री० [हिं० चिटचिड़ाना] १ चिढ़ने का भाव। अप्रसन्नता। कुढ़न। *खिजलाहट*। २ *नफरत*। घृणा।

चिढ़ना—क्रि० अ० [हिं० चिड़चिड़ाना] १ अप्रसन्न होना। नाराज होना। बिगड़ना। कुढ़ना। २ द्वेष रखना। बुरा मानना।

चिढ़ाना—क्रि० स० [हिं० चिढ़ना] १ अप्रसन्न करना। नाराज करना। खिझाना। कुढ़ाना। २ किसी को कुढ़ाने के लिए मुँह बनाना, या इसी प्रकार की और कोई चेष्टा करना। ३ उपहास करना।

चित्—संज्ञा स्त्री० [स०] चेतना। ज्ञान।

चित—संज्ञा पु० [स० चित्त] चित्त। मन। *संज्ञा पु० [हिं० चितवन] चितवन। दृष्टि। वि० [स० चित = ढेर किया हुआ] पीठ के बल पड़ा हुआ। 'पट' का उलटा।

चितकबरा—वि० [स० चित्र + कर्बुर] [स्त्री० चितकबरी] किसी एक रंग पर दूसरे रंग के दागवाला। रंग-बिरंगा। कबरा। चितला।

चितचोर—संज्ञा पु० [हिं० चित + चोर] चित्त को चुरानेवाला। प्यारा। प्रिय।

चितभंग—संज्ञा पु० [स० चित्त + भंग] १ ध्यान न लगना। उचाट। उदासी। २ होश का ठिकाने न रहना। मति-भ्रम।

चितरना*—क्रि० स० [स० चित्र] चित्रित करना। चित्र बनाना।

चितरोख—संज्ञा स्त्री० [स० चित्र+फा० रुख] एक प्रकार की चिड़िया। चितरवा।

चितला—वि० [स० चित्रल] कबरा। चितकबरा। रंग-बिरंगा। संज्ञा पु० १ लखनऊ का एक प्रकार का खरबूजा। २ एक प्रकार की बड़ी मछली।

चितवन—संज्ञा स्त्री० [हिं० चेतना] ताकने का भाव या ढंग। अवलोकन। दृष्टि।

चितवना†*—क्रि० स० [हिं० चेतना] देखना

चितवाना†*—क्रि० स० [हिं० चितवना का प्रे०] तकाना। दिखाना।

चिता—संज्ञा स्त्री० [स० चित्या] १ चुनकर रखी हुई लकड़ियों का ढेर जिसपर मुरदा जलाया जाता है। २ श्मशान। मरघट।

चिताना—क्रि० स० [हिं० चेतना] १ सावधान करना। होशियार करना। २ स्मरण कराना। याद दिलाना। ३ आत्मबोध कराना। ज्ञानोपदेश करना। ४. (आग) जलाना। सुलगाना।

चितावनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चिताना] १ चिताने की क्रिया। सतर्क या सावधान करने की क्रिया। २ वह बात जो सावधान करने के लिए कही जाय।

चिति—संज्ञा स्त्री० [स०] १ चिता। २ समूह। ढेर। ३ चुनने या इकट्ठा करने की क्रिया। चुनाई। ४ चैतन्य। ५ दुर्गा।

चितेरा—संज्ञा पु० [स० चित्रकार] [स्त्री० चितेरिन] चित्रकार। चित्र बनानेवाला।

चितौन—संज्ञा स्त्री० दे० "चितवन"।

चित्त—संज्ञा पु० [स०] १ अंतःकरण की अनुसंधानात्मक वृत्ति। २ अंतःकरण। जी। मन। दिल।

मुहा०—चित्त चढ़ना = दे० "चित्त पर चढ़ना"। चित्त चुराना = मन मोहना। मोहित करना। चित देना = ध्यान देना। मन लगाना। चित्त पर चढ़ना = १ मन में बसना। बार बार ध्यान में आना। २ स्मरण होना। याद पड़ना। चित्त बँटना = चित्त एकाग्र न रहना। चित्त में धँसना, जमना या बैठना = १ हृदय में दृढ़ होना। मन में धँसना। २ समझ में आना। असर करना। चित्त से उतरना = १ ध्यान में न रहना। भूल जाना। २ दृष्टि से गिरना।

चित्तभूमि—संज्ञा स्त्री० [स०] योग में चित्त की अवस्थाएँ जो पाँच हैं—क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध।

चित्तविक्षेप—संज्ञा पु० [स०] चित्त की चंचलता या अस्थिरता।

चित्तविभ्रम—संज्ञा पुं० [सं०] १. भ्रांति। भ्रम। भौचक्कापन। २. उन्माद।

चित्तवृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] चित्त की गति। चित्त की अवस्था।

चित्ती—संज्ञा स्त्री० [सं० चित्र] छोटा दाग या चिह्न। छोटा धब्बा। बुँदकी।
संज्ञा स्त्री० [हिं० चित] वह कौड़ी जिसकी पीठ चिपटी और खुरदरी होती है और जिससे जुए के दाँव फेंकते हैं। टैयाँ।

चित्तौर—संज्ञा पुं० [सं० चित्रकूट] एक इतिहास-प्रसिद्ध प्राचीन नगर जो उदयपुर के महाराणाओं की प्राचीन राजधानी था।

चित्र—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० चित्रित] १. चंदन आदि से माथे पर बनाया हुआ चिह्न। तिलक। २. किसी वस्तु का स्वरूप या आकार जो क़लम और रंग आदि के द्वारा बना हो। तसवीर।
मुहा०—चित्र उतारना = १. चित्र बनाना। तसवीर खींचना। २. वर्णन आदि के द्वारा ठीक ठीक दृश्य सामने उपस्थित कर देना।
३. काव्य के तीन भेदों में से एक जिसमें व्यंग्य की प्रधानता नहीं रहती। अलंकार। ४. काव्य में एक प्रकार की रचना जिसमें पद्यों के अक्षर इस क्रम से लिखे जाते हैं कि हाथी, घोड़े, खड्ग, रथ, कमल आदि के आकार बन जाते हैं। ५. एक वर्णवृत्त। ६. आकाश। ७. एक प्रकार का कोढ़ जिसमें शरीर में सफेद चित्तियाँ या दाग पड़ जाते हैं। ८. चित्रगुप्त। ९. चीते का पेड़। चित्रक।
वि० १. अद्भुत। विचित्र। २. चितकबरा। कबरा। ३. रंग-बिरंगा।

चित्रक—संज्ञा पुं० [सं०] १. तिलक। २. चीते का पेड़। ३. चीता। बाघ। ४. चिरायता। ५. चित्रकार।

चित्रकला—संज्ञा स्त्री० [सं०] चित्र बनाने की विद्या। तसवीर बनाने का हुनर।

चित्रकार—संज्ञा पुं० [सं०] चित्र बनानेवाला। चितेरा।

चित्रकारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चित्रकार + ई] चित्रविद्या। चित्र बनाने की कला।

चित्रकाव्य—संज्ञा पुं० दे० "चित्र"।

चित्रकूट—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रसिद्ध रमणीय पर्वत जहाँ बनवास के समय राम और सीता ने बहुत दिनों तक निवास किया था। २. चित्तौर।

चित्रगुप्त—संज्ञा पुं० [सं०] चौदह यमराजों में से एक जो प्राणियों के पाप और पुण्य का लेखा रखते हैं।

चित्रना*—क्रि० स० [सं० चित्रण] चित्रित करना। तसवीर बनाना।

चित्रपट—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह कपड़ा, कागज या पटरी जिस पर चित्र बनाया जाय। चित्राधार। २. छींट।

चित्रपदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक छंद।

चित्रमद—संज्ञा पुं० [सं०] नाटक आदि में किसी स्त्री का अपने प्रेमी का चित्र देखकर विरह-सूचक भाव दिखलाना।

चित्रमृग—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का चित्तीदार हिरन। चीतल।

चित्रयोग—संज्ञा पुं० [सं०] बुड्ढे को जवान और जवान को बुड्ढा या नपुंसक बना देने की विद्या या कला।

चित्ररथ—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य्य।

चित्रलेखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक वर्णवृत्त। २. चित्र बनाने की क़लम या कूँची।

चित्रविचित्र—वि० [सं०] १. रंग-बिरंगा। कई रंगों का। २. बेल-बूटेदार।

चित्रविद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] चित्र बनाने की विद्या।

चित्रशाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह घर जहाँ चित्र बनते हों। २. वह घर जहाँ चित्र रखे हों या रंग-बिरंग की सजावट हो।

चित्रसारी—संज्ञा स्त्री० [सं० चित्र + शाला] १. वह घर जहाँ चित्र टँगे हों या दीवार पर बने हों। २. सजा हुआ सोने का कमरा। विलास-भवन। रंगमहल।

चित्रहस्त—संज्ञा पुं० [सं०] वार या एक हाथ। हथियार चलाने का एक हाथ।

चित्रांग–वि०[स०][स्त्री०चित्रांगी] जिसके अग पर चित्तियाँ, धारियाँ आदि हों। सज्ञा पु० १ चित्रक। चीता। २ एक प्रकार का सर्प। चीतल। ३ ईंगुर।

चित्रा–सज्ञा स्त्री०[स०] १ सत्ताईस नक्षत्रो मे से चौदहवाँ नक्षत्र। २ मूषिकपर्णी। ३ ककड़ी या खीरा। ४ दंती वृक्ष। ५ गडदूर्वा। ६ मजीठ। ७ वायविडग। ८ मूगाकानी। आखुकर्णी। ९ अज-वाइन। १० एक रागिनी। ११ पद्रह अक्षरो की एक वर्णवृत्ति।

चित्रिणी–सज्ञा स्त्री० [स०] पद्मिनी आदि स्त्रियो के चार भेदो म से एक।

चित्रित–वि० [स०] १ चित्र म खीचा हुआ। चित्र द्वारा दिखाया हुआ। २ जिसपर बेल-बूटे आदि बने हो। ३ जिसपर चित्तियाँ या धारियाँ आदि हो।

चित्रोत्तर–सज्ञा पु० [स०] एक काव्या-लकार जिसमे प्रश्न ही के शब्दो मे उत्तर या कई प्रश्नो का एक ही उत्तर होता है।

चिथड़ा–सज्ञा पु० [स० चीर्ण या चीर] फटा पुराना कपडा। लत्ता। लुगरा।

चिथाड़ना–क्रि० स० [स० चीर्ण] १ चीरना। फाड़ना। २ अपमानित करना।

चिदात्मा–सज्ञा पु० [स०] ब्रह्म।

चिदानद–सज्ञा पु० [स०] ब्रह्म।

चिदाभास–सज्ञा पु० [स०] १ चैतन्य-स्वरूप परब्रह्म का आभास या प्रतिबिंब जो अत करण पर पडता है। २ जीवात्मा।

चिनक–सज्ञा स्त्री० [हि० चिनगी] जलन लिए हुए पीडा। चुनचुनाहट।

चिनगारी–सज्ञा स्त्री० [स० चूर्ण, हि० चून+ अगार] १ जलती हुई आग का छोटा कण या टुकडा। २ दहकती हुई आग म से फूट फूटकर उडनेवाला कण। अग्निकण।

मुहा०—आँखो से चिनगारी छूटना = क्रोध से आँख लाल लाल होना।

चिनगी–सज्ञा स्त्री० [हि० चुन + अग्नि] १ अग्निकण। चिनगारी। २ चुस्त और चालाक लडका। ३ वह लडका जो

चिनाना†*–क्रि० स० दे० "चुनवाना"।

चिनिया–वि० [हि० चीनी] १ चीनी के रग का। सफेद। २ चीन देश का।

चिनिया केला–सज्ञा पु० [हि० चिनिया + केला] छोटी जाति का एक केला।

चिनिया बदाम–सज्ञा पु० दे० "मूँगफली"।

चिन्मय–वि० [स०] ज्ञानमय। सज्ञा पु० परमेश्वर।

चिन्ह*‡–सज्ञा पु० दे० 'चिह्न"।

चिन्हवाना†–क्रि० स० दे० "चिन्हाना"।

चिन्हाना†–क्रि० स० [हि० "चीन्हना" का प्रे०] पहचनवाना। परिचित कराना।

चिन्हानी–सज्ञा स्त्री०[हि० चिह्न] १ चीन्हने की वस्तु। पहचान। लक्षण। २ स्मारक। यादगार। ३ रेखा। धारी। लकीर।

चिन्हारी†–सज्ञा स्त्री० [हि० चिह्न] जान-पहचान। परिचय।

चिपकना–क्रि० अ० [अनु० चिपचिप] किसी लसीली वस्तु के कारण दो वस्तुओ का परस्पर जुडना। सटना। चिमटना।

चिपकाना–क्रि० स० [हि० चिपकना] १ लसीली वस्तु को बीच म देकर दो वस्तुओ का परस्पर जोडना। चिमटाना। श्लिष्ट करना। चस्पाँ करना। २ लिपटाना।

चिपचिपा–वि० [अनु० चिपचिप] जिसे छूने से हाथ चिपकता हुआ जान पडे। लसदार। लसीला।

चिपचिपाना–क्रि० अ० [हि० चिपचिप] छूने म चिपचिपा जान पडना। लसदार मालूम होना।

चिपटना–क्रि० अ० दे० "चिपकना"।

चिपटा–वि० [स० चिपिट] जिसकी सतह दबी और बराबर फैली हुई हो। बैठा या धँसा हुआ।

चिपडी, चिपरी‡–सज्ञा स्त्री० [हि० चिप्पड़] गोबर के पाथे हुए चिपटे टुकडे। उपली।

चिप्पड़–सज्ञा पु० [स० चिपिट] १ छोटा चिपटा टुकडा। २ सूखी लकडी आदि के ऊपर की छूटी हुई छाल का टुकडा।

पपड़ी। ३. किसी वस्तु के ऊपर से छील-कर निकाला हुआ टुकड़ा।

चिप्पी–संज्ञा स्त्री० [हिं० चिप्पड़] १. छोटा चिप्पड़ या टुकड़ा। २. उपली। गोहँठी।

चिबुक–संज्ञा पु० [सं०] ठोड़ी।

चिमटना–क्रि० अ० [हिं० चिपटना] १. चिपकना। सटना। २. आलिंगन करना। लिपटना। ३. हाथ-पैर आदि सब अंगों को लगाकर दृढ़ता से पकड़ना। गुथना। ४. पीछा न छोड़ना। पिंड न छोड़ना।

चिमटा–संज्ञा पु० [हिं० चिमटना] [स्त्री० अल्पा० चिमटी] एक औजार जिससे उस स्थान पर की वस्तुओं को पकड़कर उठाते हैं, जहाँ हाथ नहीं ले जा सकते। दस्तपनाह।

चिमटाना–क्रि० स० [हिं० चिमटना] १. चिपकाना। सटाना। २. लिपटाना।

चिमटी–संज्ञा स्त्री० [हिं० चिमटा] बहुत छोटा चिमटा।

चिमड़ा–वि० दे० "चीमड़"।

चिरंजीव–वि० [सं०] १ चिरंजीवी। २. आशीर्वाद का शब्द।

चिरंतन–वि० [सं०] पुराना।

चिर–वि० [सं०] बहुत दिनों तक रहनेवाला क्रि० वि० बहुत दिनों तक। संज्ञा पु० तीन मात्राओं का ऐसा गण जिसका प्रथम वर्ण लघु हो।

चिरई†–संज्ञा स्त्री० दे० "चिड़िया"।

चिरकना–क्रि० अ० [अनु०] थोड़ा थोड़ा मल निकलना या हगना।

चिरकाल–संज्ञा पु० [सं०] दीर्घ काल। बहुत समय।

चिरकीन–वि० [फ़ा०] गंदा।

चिरकुट–संज्ञा पु० [सं० चिर+कुट्ट = काटना] फटा पुराना कपड़ा। चिथड़ा। गूदड़।

चिरचिटा–संज्ञा पु० [देश०] चिचड़ा। अपामार्ग

चिरजीवी–वि० [सं०] १. बहुत दिनों तक जीनेवाला। २ अमर। संज्ञा पु० १. विष्णु। २. कौवा। ३. मार्कंडेय ऋषि। ४. अश्वत्थामा, बलि, व्यास, हनुमान्, विभीषण, कृपाचार्य्य और परशुराम जो चिरजीवी माने गये हैं।

चिरना–क्रि० अ० [सं० चीर्ण] १. फटना। सीध में कटना। २. लकीर के रूप में घाव होना।

चिरमिटी–संज्ञा स्त्री० [देश०] गुंजा। घुँघची।

चिरवाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० चिरवाना] चिरवाने का भाव, कार्य या मजदूरी।

चिरवाना–क्रि० स० [हिं० चीरना का प्रे०] चीरने का काम कराना। फड़वाना।

चिरस्थायी–वि० [सं० चिरस्थायिन्] बहुत दिनों तक रहनेवाला।

चिरस्मरणीय–वि० [सं०] १. बहुत दिनों तक स्मरण रखने योग्य। २. पूजनीय।

चिरहटा†–संज्ञा पु० दे० "चिड़ीमार"।

चिराई–संज्ञा स्त्री० [हिं० चीरना] चीरने का भाव, क्रिया या मजदूरी।

चिराग़–संज्ञा पु० [फ़ा० चिराग़] दीपक। दीआ।

चिराना–क्रि० स० [हिं० चीरना] चीरने का काम दूसरे से कराना। फड़वाना। वि० [सं० चिरंतन] १. पुराना। २. जीर्ण।

चिरायँध–संज्ञा स्त्री० [सं० चर्म+गंध] वह दुर्गंध जो चमड़े, बाल, मांस आदि जलने से फैलती है।

चिरायता–संज्ञा पु० [सं० चिरतिक्त या चिरात्] एक पौधा जो बहुत कड़वा होता है और दवा के काम में आता है।

चिरायु–वि० [सं० चिरायुस्] बड़ी उम्रवाला। बहुत दिनों तक जीनेवाला। दीर्घायु।

चिरारी–संज्ञा स्त्री० दे० "चिरौंजी"।

चिरिया†*–संज्ञा स्त्री० दे० "चिड़िया"।

चिरिहार–संज्ञा पु० दे० "चिड़ीमार"।

चिरी*–संज्ञा स्त्री० दे० "चिड़िया"।

चिरौंजी–संज्ञा स्त्री० [सं० चार+बीज] पियाल वृक्ष के फलों के बीज की गिरी।

चिलक–संज्ञा स्त्री० [हिं० चिलकना] १. आभा। कांति। द्युति। २. रह-रहकर उठनेवाला दर्द। टीस। चमक।

चिलकना–क्रि० अ० [हिं० चिल्ली = बिजली,

या अनु०] १ रह रहकर चमकना। चमचमाना। २ रह रहकर दर्द उठना।
चिलकाना†–क्रि० स० [हिं० चिलक] चमचमाना। झलकाना।
चिलगोजा–संज्ञा पु० [फा०] एक प्रकार का मेवा। चीड़ या सनोबर का फल।
चिलड़ा–संज्ञा पु० [देश०] उलटा नाम का एक पकवान।
चिलता–संज्ञा पु० [फा० चिलत] एक प्रकार का कवच।
चिलबिला, चिलबिल्ला–वि० [सं० चल+बल] [स्त्री० चिलबिल्ली] चंचल। चपल।
चिलम–संज्ञा स्त्री० [फा०] कटोरी के आकार का नलीदार मिट्टी का एक बरतन जिसपर तंबाकू जलाकर धूआँ पीते हैं।
चिलमची–संज्ञा स्त्री० [फा०] देग के आकार का एक बरतन जिसमें हाथ धोते और कुल्ली आदि करते हैं।
चिलमन–संज्ञा स्त्री० [फा०] बाँस की फट्ठियों का परदा। चिक।
चिल्लड़–संज्ञा पु० [सं० चिल = वस्त्र] जूँ की तरह का एक बहुत छोटा सफेद कीड़ा।
चिल्लपों–संज्ञा स्त्री० [हिं० चिल्लाना+अनु० पों] चिल्लाना। शोर-गुल। पुकार।
चिल्लवाना–क्रि० स० [हिं० चिल्लाना का प्रे०] चिल्लाने में दूसरे को प्रवृत्त करना।
चिल्ला–संज्ञा पु० [फा०] १ चालीस दिन का समय।
मुहा०—चिल्ले का जाड़ा = बहुत कड़ी सरदी।
२ चालीस दिन का बंधेज या किसी पुण्य-कार्य्य का नियम। (मुसल०)
संज्ञा पु० [देश०] १ एक जंगली पेड़। २ उड़द या मूँग आदि की घी चुपड़कर सेंकी हुई रोटी। चीला। उलटा। ३ धनुष की डोरी। पतंचिका।
चिल्लाना–क्रि० अ० [हिं० चीत्कार] जोर से बोलना। शोर करना। हल्ला करना।
चिल्लाहट–संज्ञा स्त्री० [हिं० चिल्लाना] १ चिल्लाने का भाव। २. हल्ला। शोर।
चिल्ली–संज्ञा स्त्री० [सं०] झिल्ली (कीड़ा)।
संज्ञा स्त्री० [सं० चिरिका] बिजली। वज्र।
चिहुँकना*†–क्रि० अ० दे० "चौंकना"।
चिहुँटना*–क्रि० स० [सं० चिपिट, हिं० चिमटना] १ चुटकी काटना।
मुहा०—चित्त चिहुँटना = मर्म स्पर्श करना। चित्त में चुभना।
२ चिपटना। लिपटना।
चिहुँटी–संज्ञा स्त्री० [?] चुटकी। चिकोटी।
चिहुर*–संज्ञा पु० [सं० चिकुर] सिर के बाल। केश।
चिह्न–संज्ञा पु० [सं०] १ वह लक्षण जिससे किसी चीज की पहचान हो। निशान। २ पताका। झंडी। ३ दाग। धब्बा।
चिह्नित–वि० [सं०] चिह्न किया हुआ। जिसपर चिह्न हो।
चीं, चींचीं–संज्ञा स्त्री० [अनु०] पक्षियों अथवा छोटे बच्चों का बहुत महीन शब्द।
चीं चपड़–संज्ञा स्त्री० [अनु०] विरोध में कुछ बोलना।
चींटा–संज्ञा पु० दे० "चिउँटा"।
चीक–संज्ञा स्त्री० [सं० चीत्कार] बहुत जोर से चिल्लाने का शब्द। चिल्लाहट।
चीकट–संज्ञा पु० [हिं० कीचड़] १ तेल की मैल। तलछट। २ लसार मिट्टी।
संज्ञा पु० [देश०] चिकट नाम का कपड़ा।
वि० बहुत मैला या गंदा।
चीकना–क्रि० अ० [सं० चीत्कार] १ जोर से चिल्लाना। २ बहुत जोर से बोलना।
चीख–संज्ञा स्त्री० दे० "चीक"।
चीखना–क्रि० स० [सं० चषण] स्वाद जानने के लिए, थोड़ी मात्रा में खाना।
चीखर, चीखल–संज्ञा पु० दे० "कीचड़"।
चीज–संज्ञा स्त्री० [फा०] १ सत्तात्मक वस्तु। पदार्थ। वस्तु। द्रव्य। २ आभूषण। गहना। ३ गाने की चीज। गीत। ४ विलक्षण वस्तु। ५, महत्व की वस्तु।
चीठी†–संज्ञा स्त्री० दे० "चिट्ठी"।
चीड़–संज्ञा पु० [सं० चीडा] एक बहुत ऊँचा पेड़ जिसके गोंद से गंधाबिरोजा और

ताड़पीन तेल निकलता है।

चीत*—संज्ञा पुं० [सं० चित्रा] चित्रा नक्षत्र।

चीतना—क्रि० स० [सं० चेत] [वि० चीता] १. सोचना। विचारना। २. चैतन्य होना। ३. स्मरण करना।

क्रि० स० [सं० चित्र] चित्रित करना। तस-वीर या बेल-बूटे बनाना।

चीतल—संज्ञा पुं० [हिं० चित्ती] १. एक प्रकार का हिरन जिसके शरीर पर सफेद रंग की चित्तियाँ होती हैं। २. अजगर की जाति का एक प्रकार का चित्तीदार साँप।

चीता—संज्ञा पुं० [सं० चित्रक] १. बाघ की जाति का एक प्रसिद्ध हिंसक पशु। २. एक पेड़ जिसकी छाल और जड़ औषध के काम में आती है।

†संज्ञा पुं० [सं० चित्त] १. चित्त। हृदय। दिल। २. होश। संज्ञा।

वि० [हिं०चेतना] सोचा या विचारा हुआ।

चीत्कार—संज्ञा पुं० [सं०] चिल्लाहट। हल्ला। शोर। गुल।

चीथड़ा—संज्ञा पुं० दे० "चिथड़ा"।

चीथना—क्रि० स० [सं० चीर्ण] टुकड़े टुकड़े करना। चोंथना। फाड़ना।

चीन—संज्ञा पुं० [सं०] १. झंडी। पताका। २. सीसा नामक धातु। ३. तागा। सूत। ४. एक प्रकार का रेशमी कपड़ा। ५ एक प्रकार का हिरन। ६. एक प्रकार का साँवाँ। चेना। ७ एक प्रसिद्ध देश।

चीनना†—क्रि० स० दे० "चीन्हना"।

चीनांशुक—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार की लाल बनात जो पहले चीन से आती थी। २ चीन से आनेवाला रेशमी कपड़ा।

चीना—संज्ञा पुं० [हिं० चीन] १. चीन देश-वासी। २. एक तरह का साँवाँ। चेना। ३. चीनी कपूर।

वि० चीन देश का।

चीना बदाम—संज्ञा पुं० दे० "मूँगफली"।

चीनिया—वि० [देश०] चीन देश का।

चीनी—संज्ञा स्त्री०[चीन(देश०)+ई(प्रत्य०)] मिठाई या सार जो सफेद चूर्ण के रूप में होता है और ईख के रस, चुकंदर, खजूर आदि से निकाला जाता है। शक्कर।

वि० चीन देश का।

चीनी मिट्टी—संज्ञा स्त्री०[हिं०+चीनी(वि०)+ मिट्टी] एक प्रकार की सफ़ेद मिट्टी जिसपर पालिश बहुत अच्छी होती है और जिसके बरतन, खिलौने आदि बनते हैं।

चीन्हा†—संज्ञा पुं० दे० "चिह्न"।

चीन्हना—क्रि० स० [सं० चिह्न] पहचानना।

चीमड़—वि० [हिं० चमड़ा] जो खींचने, मोड़ने या झुकाने आदि से न फटे या टूटे।

चीयाँ—संज्ञा पुं० दे० "चियाँ"।

चीर—संज्ञा पुं० [सं०] १. वस्त्र। कपड़ा। २. वृक्ष की छाल। ३. चिथड़ा। लत्ता। ४. गौ का थन। ५. मुनियों, विशेषतः बौद्ध भिक्षुकों के पहनने का कपड़ा। ६. धूप का पेड़।

संज्ञा स्त्री० [हिं० चीरना] १. चीरने का भाव या क्रिया। २. चीरकर बनाया हुआ शिगाफ़ या दरार।

चीर-चरम‡*—संज्ञा पुं० [सं० चीरचर्म] बाघंबर। मृगचर्म। मृगछाला।

चीरना—क्रि० स० [सं० चीर्ण] विदीर्ण करना। फाड़ना।

मुहा०——माल (या रुपया आदि) चीरना = अनुचित रूप से बहुत धन कमाना।

चीरफाड़—संज्ञा स्त्री० [हिं० चीर+फाड़] १. चीरने-फाड़ने का काम या भाव। २. शस्त्र-चिकित्सा। जर्राही।

चीरा—संज्ञा पुं० [हिं० चीरना] १. एक प्रकार का लहरिएदार रंगीन कपड़ा जो पगड़ी बनाने के काम में आता है। २. गाँव की सीमा पर गाड़ा हुआ पत्थर या खंभा। ३. चीरकर बनाया हुआ क्षत या घाव।

चीरी†*—संज्ञा पुं० दे० "चिड़िया"।

चीर्ण—वि० [सं०] फाड़ा या चीरा हुआ।

चील—संज्ञा स्त्री० [सं० चिल्ल] गिद्ध की जाति की एक बड़ी चिड़िया।

चीलर—संज्ञा पुं० दे० "चिल्लड़"।

चीला—संज्ञा पुं० दे० "चिलड़ा"।

चील्ह–संज्ञा स्त्री० दे० "चील"।

चील्ही–संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का टोटका जो बालकों के कल्याणार्थ स्त्रियाँ करती हैं।

चीवर–संज्ञा पुं० [सं०] १. संन्यासियों या भिक्षुओं का फटा-पुराना कपड़ा। २ बौद्ध संन्यासियों के पहनने के वस्त्र का ऊपरी भाग।

चीवरी–संज्ञा पुं० [सं०] १ बौद्ध भिक्षुक। २ भिक्षुक। भिखमंगा।

चीस–संज्ञा स्त्री० दे० "टीस"।

चुंगल–संज्ञा पुं० [हिं० चौ+अंगुल] १ चिड़ियों या जानवरों का पंजा। चंगुल। २ मनुष्य के पंजे की वह स्थिति जो किसी वस्तु को पकड़ने में होती है। पंजा।

मुहा०—चंगुल में फँसना = वश में आना।

चुंगी–संज्ञा स्त्री० [हिं० चुंगल] १ चुंगल भर वस्तु। चुटकी भर चीज। २ वह महसूल जो शहर के भीतर आनेवाले बाहरी माल पर लगता हो।

चुंघाना–क्रि० स० [हिं० चुसाना] चुसाना।

चुंडा–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अल्पा० चुंडी] कुआँ। कूप।

चुंडित*–वि० [हिं० चुंडी] चुटियावाला। चुंडीवाला।

चुंदी–संज्ञा स्त्री० [सं० चूडा] बालों की शिखा जिसे हिंदू सिर पर रखते हैं। चुटैया।

चुंधलाना–क्रि० अ० [हिं० चौ=चार+अंध] चौंधना। चकाचौंध होना।

चुंधा–वि० [हिं० चौ=चार+अंध] [स्त्री० चुंधी] १ जिसे सुझाई न पड़े। २ छोटी छोटी आँखोंवाला।

चुंधियाना–क्रि० अ० दे० "चुंधलाना"।

चुंबक–संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो चुंबन करे। २ कामुक। कामी। ३ धूर्त मनुष्य। ४ ग्रंथों को केवल इधर-उधर उलटनेवाला। ५ एक प्रकार का पत्थर या धातु जिसमें लोहे को अपनी ओर आकर्षित करने की शक्ति होती है।

चुंबन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० चुंबनीय, चुंबित] प्रेम से होंठों से (किसी के) गाल आदि अंगों का स्पर्श। चुम्मा। बोसा।

चुंबना–क्रि० स० दे० "चूमना"।

चुंबित–वि० [सं०] १ चूमा हुआ। २ प्यार किया हुआ। ३ स्पर्श किया हुआ।

चुंबी–वि० [सं०] चूमनेवाला।

चुअना*–क्रि० अ० दे० "चूना"।

चुआई–संज्ञा स्त्री० [हिं० चुआना] चुआने या टपकाने की क्रिया या भाव।

चुआन–संज्ञा स्त्री० [हिं० चूना] १ खाईं। नहर। २ गड्ढा।

चुआना–क्रि० स० [हिं० चूना=टपकना] १ टपकाना। बूँद बूँद गिराना। *२ चुपड़ना। चिकनाना। रसमय करना। भबके से अर्क उतारना।

चुकंदर–संज्ञा पुं० [फा०] गाजर की तरह की एक जड़ जो तरकारी के काम में आती है।

चुक–संज्ञा पुं० दे० "चूक"।

चुकचुकाना–क्रि० अ० [हिं० चूना+टपकना] १ किसी द्रव पदार्थ का बहुत बारीक छेदों से होकर बाहर आना। २ पसीजना।

चुकता–वि० [हिं० चुकना] बेबाक। निःशेष अदा। (ऋण)

चुकती–वि० दे० "चुकता"।

चुकना–क्रि० अ० [सं० च्युत कृत] १ समाप्त होना। खतम होना। बाकी न रहना। २ बेबाक होना। अदा होना। चुकता होना। ३ तै होना। निबटना। *४ चूकना। भूल करना। त्रुटि करना। ५ *खाली जाना। व्यर्थ होना। ६ एक समाप्ति-सूचक संयोज्य क्रिया।

चुकाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० चुकता] चुकने या चुकता होने का भाव।

चुकाना–क्रि० स० [हिं० चुकना] १ किसी प्रकार का देना साफ करना। अदा करना। बेबाक करना। २ तै करना। ठहराना।

चुक्कड़–संज्ञा पुं० [सं० चषक] मिट्टी का गोल छोटा बरतन जिसमें पानी या शराब आदि पीते हैं। पुरवा।

चुक्र–संज्ञा पुं० [सं०] १ चूक नाम की

खटाई। चूक। महाम्ल। २. एक प्रकार का खट्टा साग। चूका। ३. काँजी।
चुग़द–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. उल्लू पक्षी। २. मूर्ख। बेवकूफ़।
चुगना–क्रि० स० [सं० चयन] चिड़ियों का चोंच से दाना उठाकर खाना।
चुग़लख़ोर–संज्ञा पुं० [फ़ा०] पीठ पीछे शिकायत करनेवाला। लुतरा।
चुग़लख़ोरी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] चुगली खाने का काम।
चुगली–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] दूसरे की निंदा जो उसकी अनुपस्थिति में की जाय।
चुगाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० चुगाना+ई (प्रत्य०)] चुगने या चुगाने का भाव या क्रिया।
चुगाना–क्रि० स० [हिं० चुगना] चिड़ियों को दाना या चारा डालना।
चुगुल*†–संज्ञा पुं० दे० "चुगल"।
चुचकारना–क्रि० स० [अनु०] चुमकारना।
चुचकारी–संज्ञा स्त्री० [अनु०] चुचकारने या चुमकारने की क्रिया या भाव।
चुचाना–क्रि० अ० [सं० च्यवन] चूना। टपकना। रसना। निचुड़ना।
चुचकना†–क्रि० अ० [सं० शुष्क+ना (प्रत्य०)] ऐसा सूखना जिसमें झुर्रियाँ पड़ जायँ।
चुटका†–संज्ञा पुं० [हिं० चोट] कोड़ा। चाबुक।
संज्ञा स्त्री० [अनु० चुट चुट] चुटकी।
चुटकना–क्रि० स० [हिं० चोट] कोड़ा या चाबुक मारना।
क्रि० स० [हिं० चुटकी] १. चुटकी से तोड़ना। २ साँप काटना।
चुटका–संज्ञा पुं० [हिं० चुटकी] १ बड़ी चुटकी। २ चुटकी भर अन्न।
चुटकी–संज्ञा स्त्री० [अनु० चुट चुट] १. किसी वस्तु को पकड़ने, दबाने या लेने आदि के लिए अँगूठे और पास की उँगली का मेल।
मुहा०—चुटकी बजाना = अँगूठे को बीच की उँगली पर रखकर जोर से छटकाकर शब्द निकालना। चुटकी बजाते = चटपट। देखते देखते। बात की बात में। चुटकी भर = बहुत थोड़ा। जरा सा। चुटकियों में = बहुत शीघ्र। चटपट। चुटकियों में या पर उड़ाना = अत्यंत तुच्छ या सहज समझना। कुछ न समझना। २. चुटकी भर आटा। थोड़ा आटा।
मुहा०—चुटकी माँगना = भिक्षा माँगना।
३. चुटकी बजने का शब्द। ४. अँगूठे और तर्जनी के संयोग से किसी प्राणी के चमड़े को दबाने या पीड़ित करने की क्रिया।
मुहा०—चुटकी भरना = १. चुटकी काटना। २. चुभती या लगती हुई बात कहना। चुटकी लेना = १. हँसी उड़ाना। दिल्लगी उड़ाना। २. चुभती या लगती हुई बात कहना।
५. अँगूठे और उँगली से मोड़कर बनाया हुआ गोखरू, गोटा या लचका। ६. बंदूक के प्याले का ढकना या घोड़ा।
चुटकुला–संज्ञा पुं० [हिं० चोट+कला] १. चमत्कारपूर्ण उक्ति। मजेदार बात।
मुहा०—चुटकुला छोड़ना = १. दिल्लगी की बात कहना। २. कोई ऐसी बात कहना जिससे एक नया मामला खड़ा हो जाय।
२. दवा का कोई छोटा नुसखा जो बहुत गुणकारक हो। लटका।
चुटफुट†–संज्ञा स्त्री० [हिं०] फुटकर वस्तु। फुटकर चीज।
चुटिया–संज्ञा स्त्री० [हिं० चोटी] बालों की वह लट जो सिर के बीचोबीच रखी जाती है। शिखा। चुंदी।
चुटीला–वि० [हिं० चोट] जिसे चोट या घाव लगा हो।
संज्ञा पुं० [हिं० चोटी] अगल बगल की पतली चोटी। मेंढ़ी।
वि० सिरे का। सबसे बढ़िया।
चुटैल–वि० [हिं० चोट] १. जिसे चोट लगी हो। घायल। †२. चोट या आक्रमण करनेवाला।
चुड़िहारा–संज्ञा पुं० [हिं० चूड़ी+हारा (प्रत्य०)] [स्त्री० चुड़िहारिन] चूड़ी बेचनेवाला।
चुड़ैल–संज्ञा स्त्री० [सं० चूडा+ऐल (प्रत्य०)] १. भूतनी। डायन। प्रेतनी। पिशाचिनी।

२ सुरूपा स्त्री। ३ क्रूरस्वभाव की स्त्री। दुष्टा

चुनचुना–वि० [हिं० चुनचुनाना] जिसके छूने या खाने से जलन लिए हुए पीड़ा हो। सज्ञा पु० सूत की तरह के महीन सफेद कीड़े जो पेट में मल के साथ निकलते हैं।

चुनचुनाना–क्रि० अ० [अनु०] कुछ जलन लिए हुए चुभने की सी पीड़ा होना।

चुनट–सज्ञा स्त्री० दे० 'चुनन'।

चुनन–सज्ञा स्त्री० [हिं० चुनना] वह सिकुड़न जो दाब पाकर कपड़े, कागज आदि पर पड़ती है। सिलवट। शिकन। चुनट।

चुनना–क्रि० स० [स० चयन] १ छोटी वस्तुओं को हाथ, चोंच आदि से एक एक करके उठाना। २ छाँट छाँटकर अलग करना। ३ बहुतों में से कुछ को पसन्द करके लेना। ४ तरतीब से लगाना। सजाना। ५ जोड़ाई करना। दीवार उठाना। *मुहा०—दीवार में चुनना किसी मनुष्य को खड़ा करके उसके ऊपर ईंटों की जोड़ाई करना।* ६ कपड़े में चुनन या सिकुड़न डालना।

चुनरी–सज्ञा स्त्री० [हिं० चुनना] १ वह रंगीन कपड़ा जिसके बीच बीच में बुंदकियाँ होती हैं। २ याकूत। चुन्नी।

चुनवाना–क्रि० स० दे० "चुनाना"।

चुनाई–सज्ञा स्त्री० [हिं० चुनना] १ चुनने की क्रिया या भाव। २ दीवार की जोड़ाई या उसका ढंग। ३ चुनने की मजदूरी।

चुनाना–क्रि० स० [हिं० चुनना का प्र०] चुनने का काम दूसरे से कराना।

चुनाव–सज्ञा पु० [हिं० चुनना] १ चुनने का काम। २ बहुतों में से कुछ को किसी कार्य के लिए पसद या नियुक्त करना।

चुनिंदा–वि० [हिं० चुनना+इंदा (प्रत्य०)] १ चुना हुआ। छँटा हुआ। २ बढ़िया।

चुनी–सज्ञा स्त्री० दे० 'चुन्नी'।

चुनौटी–सज्ञा स्त्री० [हिं० चूना+औटी (प्रत्य०)] चूना रखने की डिबिया।

चुनौती–सज्ञा स्त्री० [हिं० चुनचुनाना या चूना] १ उत्तेजना। बढ़ावा। चिट्टा। २ युद्ध के लिए आह्वान। ललकार। प्रचार।

चुन्नी–सज्ञा स्त्री० [स० चूर्ण] १ मानिक, याकूत या और किसी रत्न का बहुत छोटा टुकड़ा। बहुत छोटा नग। २ अनाज का चूर। ३ लकड़ी का बारीक चूर। बुनाई। ४ चमकी। सितारा।

चुप–वि० [स० चुप (चोपन) =मौन] जिसके मुह से शब्द न निकले। अवाक्। मौन। *यौ०—चुपचाप* = १ मौन। खामोश। २ शात भाव से। बिना चचलता के। ३ धीरे से। छिपे छिपे। ४ निरुद्योग। प्रयत्नहीन। ५ बिना विरोध में कुछ कहे। बिना चीं चपड़ के। सज्ञा स्त्री० मौनावलम्बन। न बोलना।

चुपका–वि० [हिं० चुप] [स्त्री० चुपकी] मौन। खामोश। *मुहा०—चुपके से* = १ बिना कुछ कहे सुने। २ गुप्त रूप से। धीरे से।

चुपड़ना–क्रि० स० [हिं० चिपचिपा] १ किसी गीली या चिपचिपी वस्तु का लेप करना। पोतना। जैसे—रोटी में घी चुपड़ना। २ किसी दोष का आरोप दूर करने के लिए इधर उधर की बात करना। ३ चिकनी चुपड़ी कहना। चापलूसी करना।

चुपाना*–क्रि० अ० [हिं० चुप] चुप हो रहना। मौन रहना।

चुप्पा–वि० [हिं० चुप] [स्त्री० चुप्पी] जो बहुत कम बोले। घुन्ना।

चुप्पी–सज्ञा स्त्री० [हिं० चुप] मौन।

चुबलाना–क्रि० स० [अनु०] स्वाद लेने के लिए मुह में रखकर इधर-उधर डुलाना।

चुभकना–क्रि० अ० [अनु०] गोता खाना।

चुभकी–सज्ञा स्त्री० [अनु०] डुब्बी। गोता।

चुभना–क्रि० अ० [अनु०] १ किसी नुकीली वस्तु का दबाव पाकर किसी नरम वस्तु के भीतर घुसना। गड़ना। धँसना। २ हृदय में खटकना। मन में व्यथा उत्पन्न करना। ३ मन में बैठना।

चुभलाना–क्रि० स० दे० 'चुबलाना'।

चुभाना, चुभोना–क्रि० स० [हिं० चुभना का प्र०] धँसाना। गड़ाना।

चुमकार—संज्ञा स्त्री० [हिं० चूमना + कार] चूमने का सा शब्द जो प्यार दिखाने के लिए निकालते हैं। पुचकार।
चुमकारना—क्रि० स० [हिं० चुमकार] प्यार दिखाने के लिए चूमने का सा शब्द निकालना। पुचकारना। दुलारना।
चुम्मा†—संज्ञा पुं० दे० "चूमा"।
चुर—संज्ञा पुं० [देश०] बाघ आदि के रहने का स्थान। माँद। बैठक।
* वि० [सं० प्रचुर] बहुत। अधिक।
चुरकना—क्रि० अ० [अनु०] १. चहकना। चीं चीं करना (व्यंग्य या तिरस्कार)। †२. चटकना। टूटना।
चुरकी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० चोटी] चुटिया।
चुरकुट, चुरकुस—वि० [हिं० चूर + कूटना] चकनाचूर। चूर चूर। चूर्णित।
चुरना†—क्रि० अ० [सं० चूर=जलना,पकना] १. आँच पर खौलते हुए पानी के साथ किसी वस्तु का पकना। सीझना। २. आपस में गुप्त मंत्रणा या बातचीत होना।
चुरमुर—संज्ञा पुं० [अनु०] खरी या कुरकुरी वस्तु के टूटने का शब्द।
चुरमुरा—वि० [अनु०] जो दबाने पर चुर चुर शब्द करके टूट जाय। करारा।
चुरमुराना—क्रि० अ० [अनु०] चुरमुर शब्द करके टूटना।
क्रि० स० [अनु०] १. चुरमुर शब्द करके तोड़ना। २. करारी या खरी चीज़ चबाना।
चुरवाना—क्रि० स० [हिं०चुराना = पकाना] पकाने का काम कराना।
क्रि० स० दे० "चोरवाना"।
चुरा*†—संज्ञा पुं० दे० "चूरा"।
चुराना—क्रि०स० [सं० चुर = चोरी करना] १. गुप्त रूप से पराई वस्तु हरण करना। चोरी करना।
मुहा०—चित्त चुराना=मन मोहित करना।
२. लोगों की दृष्टि से बचाना। छिपाना।
मुहा०—आँख चुराना = नज़र बचाना। सामने मुँह न करना।
३. काम के करने में कसर करना।
क्रि० स० [हिं० चुरना] खौलते पानी में पकाना। सिझाना।
चुरी*†—संज्ञा स्त्री० दे० "चूड़ी"।
चुरुट—संज्ञा पुं० [अं० शेरूट] तंबाकू के पत्ते या चूर की बत्ती जिसका धुआँ लोग पीते हैं। सिगार।
चुरू†*—संज्ञा पुं० दे० "चुल्लू"।
चुल—संज्ञा स्त्री० [सं० चल = चंचल] किसी अंग के मले या सहलाए जाने की इच्छा। खुजलाहट।
चुलचुलाना—क्रि० अ० [हिं० चुल] १. खुजलाहट होना। २. दे० "चुलबुलाना"।
चुलचुली—संज्ञा स्त्री० [हिं० चुलचुलाना] चुल। खुजलाहट।
चुलबुला—वि० [सं० चल + बल] [स्त्री० चुलबुली] १. चंचल। चपल। २. नटखट।
चुलबुलाना—क्रि० अ० [हिं० चुलबुल] १. चुलबुल करना। रह रहकर हिलना। २. चंचल होना। चपलता करना।
चुलबुलापन—संज्ञा पुं० [हिं० चुलबुला + पन (प्रत्य०)] चंचलता। चपलता। शोखी।
चुलबुलाहट—संज्ञा स्त्री० [देश०] चंचलता।
चुलाना—क्रि० स० दे० "चुवाना"।
चुलियाला—संज्ञा पुं० [?] एक मात्रिक छंद।
चुल्लू—संज्ञा पुं० [सं० चुलुक] गहरी की हुई हथेली जिसमें भरकर पानी आदि पी सकें।
मुहा०—चुल्लू भर पानी में डूब मरो = मुँह न दिखाओ। लज्जा के मारे मर जाओ।
चुवना*—क्रि० अ० दे० "चूना"।
चुवाना*—क्रि० स० [हिं० चूना का प्रे०] बूँद बूँद करके गिराना। टपकाना।
चुसकी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चूसना] ओंठ से लगाकर थोड़ा-थोड़ा करके पीने की क्रिया। सुड़क। घूँट। दम।
चुसना—क्रि० अ० [हिं० चूसना] १. चूसा जाना। २. निचुड़ जाना। निकल जाना। ३. सारहीन होना। ४. देते देते पास में कुछ न रह जाना।

चुसनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० चूसना] १ बच्चों का एक खिलौना जिसे वे मुँह में डालकर चूसते हैं। २ दूध पिलाने की शीशी।

चुसाना–क्रि० स० [हिं० चूसना का प्रे०] चूसने का काम दूसरे से कराना।

चुस्त–वि० [फा०] १ कसा हुआ। जो ढीला न हो। संकुचित। तंग। २ जिसमें आलस्य न हो। तत्पर। फुरतीला। चलता। ३ दृढ़। मजबूत।

चुस्ती–संज्ञा स्त्री० [फा०] १ फुरती। तेजी। २ कसावट। तंगी। ३ दृढ़ता। मजबूती।

चुहँटी–संज्ञा स्त्री० [देश०] चुटकी।

चुहचुहा–वि० [अनु०] [स्त्री० चुहचुही] १ चुहचुहाता हुआ। २ रसीला। शोख।

चुहचुहाता–वि० [हिं० चुहचुहाना] रसीला। सरस। रँगीला। मजेदार।

चुहचुहाना–क्रि० अ० [अनु०] १ रस टपकना। चटकीला लगना। २ चिड़िया का बोलना। चहचहाना।

चुहचुही–संज्ञा स्त्री० [अनु०] चमकीले काले रंग की एक बहुत छोटी चिड़िया। फुलचुही।

चुहटना–क्रि० स० [देश०] रौंदना। कुचलना

चुहल–संज्ञा स्त्री० [अनु० चुहचुह=चिड़ियों की बोली] हँसी। ठठोली। मनोरंजन।

चुहलबाज–वि० [हिं० चुहल+फा० बाज (प्रत्य०)] ठठोल। मसखरा। दिल्लगीबाज।

चुहिया–संज्ञा स्त्री० [हिं० चूहा] चूहा का स्त्री० और अल्पा० रूप।

चुहुँटना†*–क्रि० स० दे० "चिमटना"।

चुहुँटनी–संज्ञा स्त्री० दे० 'घिरमिटी'।

चूँ–संज्ञा पु० [अनु०] १ छोटी चिड़ियों के बोलने का शब्द। २ चूँ शब्द।

मुहा०—चूँ करना=१ कुछ कहना। २ प्रतिवाद करना। विरोध में कुछ कहना।

चूँकि–क्रि० वि० [फा०] इस कारण से कि। क्योंकि। इसलिए कि।

चूँदरी–संज्ञा स्त्री० दे० "चुनरी"।

चूक–संज्ञा स्त्री० [हिं० चूकना] १ भूल। गलती। २ कपट। धोखा। छल।

संज्ञा पु० [स० चूक] १ नीबू, इमली, अनार आदि खट्टे फलों के रस को गाढ़ा करके बनाया हुआ एक अत्यंत खट्टा पदार्थ। २ एक प्रकार का खट्टा साग।

वि० बहुत अधिक खट्टा।

चूकना–क्रि० अ० [स० च्युतक, प्रा० चुक्कि] १ भूल करना। गलती करना। २ लक्ष्य-भ्रष्ट होना। ३ सुअवसर खो देना।

चूका–संज्ञा पु० [स० चूक] एक खट्टा साग।

चूची–संज्ञा स्त्री० [स० चूचुक] स्तन। कुच।

चूजा–संज्ञा पु० [फा०] मुरगी का बच्चा।

चूड़ांत–वि० [स०] चरम सीमा।

क्रि० वि० अत्यंत। बहुत अधिक।

चूड़ा–संज्ञा स्त्री० [स०] १ चोटी। शिखा। चुरकी। २ मोर के सिर पर की चोटी। ३ कुआँ। ४ गुंजा। घुँघची। ५ बाँह में पहनने का एक अलंकार। ६ चूड़ाकरण नाम का संस्कार।

संज्ञा पु० [स० चूड़ा] १ कंकण। कड़ा। वलय। २ हाथीदाँत की चूड़ियाँ।

चूड़ाकरण–संज्ञा पु० [स०] बच्चे का पहले पहले सिर मुँड़वाकर चोटी रखवाने का संस्कार। मुंडन।

चूड़ाकर्म–संज्ञा पु० [स०] चूड़ाकरण।

चूड़ामणि–संज्ञा पु० [स०] १ सिर में पहनने का शीशफूल नाम का गहना। बीज। २ सर्वोत्कृष्ट। सबसे श्रेष्ठ।

चूड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० चूड़ा] १ कोई मंडलाकार पदार्थ। वृत्ताकार पदार्थ। २ हाथ में पहनने का एक वृत्ताकार गहना।

मुहा०—चूड़ियाँ ठंढी करना या तोड़ना=पति के मरने के समय स्त्री का अपनी चूड़ियाँ उतारना या तोड़ना। चूड़ियाँ पहनना=स्त्रियों का वेष धारण करना (व्यंग्य और हास्य)। ३ फोनोग्राफ या ग्रामोफोन बाजे का रेकार्ड जिसमें गाना भरा रहता है।

चूड़ीदार–वि० [हिं० चूड़ी+फा० दार] जिसमें चूड़ी या छल्ले अथवा इसी आकार के घेरे पड़े हों।

यौ०—चूड़ीदार पायजामा=एक प्रकार का चुस्त पायजामा।

चूत–संज्ञा पुं० [सं०] आम का पेड़।
संज्ञा स्त्री० [सं० च्युति] योनि। भग।
चूतड़–संज्ञा पुं० [हिं० चूत + तल] पीछे की ओर कमर के नीचे और जाँघ के ऊपर का मांसल भाग। नितंब।
चून–संज्ञा पुं० [सं० चूर्ण] आटा। पिसान।
चूनर, चूनरी–संज्ञा स्त्री० दे० "चूनरी"।
चूना–संज्ञा पुं० [सं० चूर्ण] एक प्रकार का तीक्ष्ण और सफ़ेद क्षारभस्म जो पत्थर, कंकड़, शंख, मोती आदि पदार्थों को भट्ठियों में फूँककर बनाया जाता है।
क्रि० अ० [सं०च्यवन] १. किसी द्रव पदार्थ का बूँद बूँद होकर नीचे गिरना। टपकना। २. किसी चीज़ का, विशेषतः फल आदि का, अचानक ऊपर से नीचे गिरना। ३. गर्भपात होना। ४. किसी चीज में ऐसा छेद या दरज हो जाना जिसमें से होकर कोई द्रव पदार्थ बूँद बूँद गिरे।
†वि० [हिं० चूना (क्रि० अ०)] जिसमें किसी चीज़ के चूने योग्य छेद या दरज हो।
चूनादानी–संज्ञा स्त्री०[हिं०चूना+फा०दान] चूना रखने की डिबिया। चुनौटी।
चूनी†–संज्ञा स्त्री० [सं० चूर्णिका] १. अन्न का छोटा टुकड़ा। अन्नकण। २. चुन्नी।
चूमना–क्रि० स० [सं० चुंबन] होठों से (किसी दूसरे के) गाल आदि अंगों को अथवा किसी और पदार्थ को स्पर्श करना या दबाना। चुम्मा लेना। बोसा लेना।
चूमा–संज्ञा पुं० [सं० चुंबन, हिं० चूमना] चूमने की क्रिया या भाव। चुंबन। चुम्मा।
चूर–संज्ञा पुं० [सं० चूर्ण] किसी पदार्थ के बहुत छोटे छोटे या महीन टुकड़े जो उसे तोड़ने, कूटने आदि से बनते हैं। बुकनी।
वि० १. तन्मय। निमग्न। तल्लीन। २. मद-विह्वल। नशे में बहुत बदमस्त।
चूरन–संज्ञा पुं० दे० "चूर्ण"।
चूरना†*–क्रि० स० [सं० चूर्णन] १. चूर करना। टुकड़े टुकड़े करना। २. तोड़ना।
चूरमा–संज्ञा पुं० [सं० चूर्ण] रोटी या पूरी को चूर चूर करके घी, चीनी मिलाया हुआ एक खाद्य पदार्थ।
चूरा–संज्ञा पुं० [सं० चूर्ण] चूर्ण। बुरादा।
चूर्ण–संज्ञा पुं० [सं०] १. सूखा पिसा हुआ अथवा बहुत ही छोटे छोटे टुकड़ों में किया हुआ पदार्थ। सफ़ूफ़। बुकनी। २. पाचक औषधों का बारीक सफ़ूफ़। चूरन।
वि० तोड़ा-फोड़ा या नष्ट-भ्रष्ट किया हुआ।
चूर्णक–संज्ञा पुं० [सं०] १. सत्तू। सतुआ। २. वह गद्य जिसमें छोटे छोटे शब्द हों, लंबे समासवाले शब्द न हों। ३. धान।
चूर्णा–संज्ञा स्त्री० [सं०] आर्या छंद का दसवाँ भेद।
चूर्णित–वि० [सं०] चूर्ण किया हुआ।
चूल–संज्ञा पुं० [सं०] १. शिखा। २. बाल।
संज्ञा स्त्री० [देश०] किसी लकड़ी का वह पतला सिरा जो किसी दूसरी लकड़ी के छेद में उसे जोड़ने के लिए ठोंका जाय।
चूलिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] नाटक में नेपथ्य से किसी घटना की सूचना।
चूल्हा–संज्ञा पुं० [सं० चुल्लि] मिट्टी, लोहे आदि का वह पात्र जिस पर, नीचे आग जलाकर, भोजन पकाया जाता है।
मुहा०—चूल्हा जलना = भोजन बनना। चूल्हा फूँकना = भोजन पकना। चूल्हे में जाय या पड़े = नष्ट-भ्रष्ट हो।
चूषण–संज्ञा पुं० [सं०] चूसने की क्रिया।
चूष्य–वि० [सं०] चूसने के योग्य।
चूसना–क्रि० स० [सं० चूषण] १. जीभ और होठ के संयोग से किसी पदार्थ का रस पीना। २. किसी चीज़ का सार भाग ले लेना। ३. धीरे धीरे धन आदि लेना।
चूहड़ा–संज्ञा पुं० [?] [स्त्री० चूहड़ी] भंगी या मेहतर। चांडाल। श्वपच।
चूहर–संज्ञा पुं० दे० "चूहड़ा"।
चूहा–संज्ञा पुं०[अनु०चूं+हा (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० चुहिया,चूही आदि] एकप्रसिद्ध छोटा जंतु जो प्रायः घरों या खेतों में बिल बनाकर रहता और अन्न आदि खाता है। मूसा।
चूहादंती–संज्ञा स्त्री० [हिं० चूहा + दाँत] स्त्रियों के पहनने की एक प्रकार की पहुँची।

चूहादान—संज्ञा पुं० [हिं० चूहा + फा० दान] चूहों को फँसाने का एक प्रकार का पिंजड़ा।
चें—संज्ञा स्त्री० [अनु०] चिड़िया के बोलने का शब्द। चें चें।
चेंच—संज्ञा पुं० [सं० चञ्चु] एक प्रकार का साग।
चें चें—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ चिड़ियों या बच्चों के बोलने का शब्द। चीं चीं। २ व्यर्थ की बकवाद। बकबक।
चेंटुआ†—संज्ञा पुं० [हिं० चिड़िया] चिड़िया का बच्चा।
चें पें—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ चिल्लाहट। २ असंतोष की पुकार। ३ बकबक।
चेकितान—संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।
चेचक—संज्ञा स्त्री० [फा०] शीतला रोग।
चेचकरू—संज्ञा पुं० [फा०] वह जिसके मुँह पर शीतला के दाग हों।
चेट—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० चेटी या चेटिका] १ दास। सेवक। नौकर। २ पति। खाविंद। ३ नायक और नायिका को मिलानेवाला। भँड़ुवा। ४ भाँड़।
चेटक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० चटकी] १ सेवक। दास। नौकर। २ चटक मटक। ३ दूत। ४. जादू या इन्द्रजाल की विद्या।
चेटकनी*—संज्ञा स्त्री० दे० "चटक"।
चेटकी—संज्ञा पुं० [सं०] १ इंद्रजाली। जादूगर। २ कौतुक करनेवाला। कौतुकी। संज्ञा स्त्री० 'चटक' का स्त्री०।
चेटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दासी।
चेत्—अव्य० [सं०] १ यदि। अगर। २ शायद। कदाचित्।
चेत—संज्ञा पुं० [सं० चेतस्] १ चित्त की वृत्ति। चेतना। संज्ञा। होश। २ ज्ञान। बोध। ३ सावधानी। चौकसी। ४ खयाल। स्मरण। सुध।
चेतन—वि० [सं०] जिसमें चेतना हो। संज्ञा पुं० १ आत्मा। जीव। २ मनुष्य। ३ प्राणी। जीवधारी। ४ परमेश्वर।
चेतनता—संज्ञा स्त्री० [सं०] चेतन का धर्म। चैतन्य। सज्ञानता।
चेतना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बुद्धि। २ मनोवृत्ति। ३ ज्ञानात्मक मनोवृत्ति। ४ स्मृति। सुधि। याद। ५ चेतनता। चैतन्य। संज्ञा। होश।
क्रि० अ० [हिं० चेत + ना (प्रत्य०)] १ संज्ञा में होना। होश में आना। २ सावधान होना। चौकस होना।
क्रि० स० विचारना। समझना।
चेतावनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चेतना] वह बात जो किसी को होशियार करने के लिए कही जाय। सतर्क होने की सूचना।
चेतिका†*—संज्ञा स्त्री० [सं० चिति] मुरदा जलाने की चिता। सरा।
चेदि—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक देश। २ इस देश का राजा। ३ इस देश का निवासी।
चेदिराज—संज्ञा पुं० [सं०] शिशुपाल।
चेना—संज्ञा पुं० [सं० चणक] १ कँगनी या साँवाँ की जाति का एक मोटा अन्न। २ एक प्रकार का साग।
चेप—संज्ञा पुं० [चिपचिप से अनु०] १ कोई गाढ़ा चिपचिपा या लसदार रस। २ चिड़ियों को फँसाने का लासा।
चेपदार—वि० [हिं० चेप+फा० दार] जिसमें चेप या लस हो। चिपचिपा।
चेर, चेरा†*—संज्ञा पुं० [सं० चेटक] [स्त्री० चेरी] १ नौकर। सेवक। २ चेला। शिष्य।
चेराई†*—संज्ञा स्त्री० [हिं० चेरा+ई] दासत्व। सेवा। नौकरी।
चेरी†*—संज्ञा स्त्री० "चेरा" का स्त्री०।
चेल—संज्ञा पुं० [सं०] कपड़ा।
चेलकाई†—संज्ञा स्त्री० [हिं० चेला] चेलहाई।
चेलहाई†—संज्ञा स्त्री० [हिं० चेला + हाई (प्रत्य०)] चेलों का समूह। शिष्यवर्ग।
चेला—संज्ञा पुं० [सं० चेटक] [स्त्री० चेलिन, चेली] १ वह जिसने कोई धार्मिक उपदेश ग्रहण किया हो। शिष्य। २ वह जिसने शिक्षा ली हो। शागिर्द। विद्यार्थी।
चेलिन, चेली—संज्ञा स्त्री० "चेला" का स्त्री० रूप।
चेल्हवा—संज्ञा स्त्री० [सं० चिल (मछली)] एक

तरह की छोटी मछली।

चेष्टा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शरीर के अंगों की गति। २. अंगो की गति या अवस्था जिससे मन का भाव प्रकट हो। ३. उद्योग। प्रयत्न। कोशिश। ४. कार्य्य। काम। ५. श्रम। परिश्रम। ६. इच्छा। कामना।

चेहरा—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. शरीर के ऊपरी गोल अंग का अगला भाग जिसमें मुँह, आँख, आदि रहते है। मुखड़ा। बदन। यौ०—चेहरा शाही वह रुपया जिस पर किसी बादशाह का चेहरा बना हो। प्रचलित रुपया मुहा०—चेहरा उतरना=लज्जा, शोक, चिंता या रोग आदि के कारण चेहरे का तेज जाता रहना। चेहरा होना=फ़ौज में नाम लिया जाना।
२. किसी चीज़ का अगला भाग। आगा।
३. देवता, दानव या पशु आदि की आकृति का वह साँचा जो लीला या स्वाँग आदि में चेहरे के ऊपर पहना या बाँधा जाता है।

चैं*—संज्ञा पुं० दे० "चय"।

चैत—संज्ञा पुं० [सं० चैत्र] फागुन के बाद और बैसाख से पहले का महीना। चैत्र।

चैतन्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. चित्स्वरूप आत्मा। चेतन आत्मा। २. ज्ञान। बोध। चेतना। ३. ब्रह्म। ४. परमेश्वर। ५. प्रकृति। ६. एक प्रसिद्ध बंगाली महात्मा।

चैती—संज्ञा स्त्री० [हिं० चैत + ई (प्रत्य०)] १. वह फ़सल जो चैत में काटी जाय। रब्बी। २. एक चलता गाना जो चैत मे गाया जाता है। वि० चैत-संबंधी। चैत का।

चैत्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. मकान। घर। २. मंदिर। देवालय। ३. वह स्थान जहाँ यज्ञ हो। यज्ञशाला। ४. गाँव मे वह पेड़ जिसके नीचे ग्राम-देवता की वेदी या चबूतरा हो। ५. किसी देवी देवता का चबूतरा। ६. बुद्ध की मूर्त्ति। ७. अश्वत्थ का पेड़। ८. बौद्ध सन्यासी या भिक्षुक। ९. बौद्ध संन्यासियों के रहने का मठ। विहार। १०. चिता।

चैत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. संवत् का प्रथम मास। चैत। २. बौद्ध भिक्षु। ३. यज्ञ-भूमि। ४. देवालय। मंदिर।

चैत्ररथ—संज्ञा पुं० [सं०] कुबेर के बाग़ का नाम।

चैन—संज्ञा पुं० [सं० शयन] आराम। सुख। मुहा०—चैन उड़ाना=आनंद करना। चैन पड़ना=शांति मिलना। सुख मिलना।

चैल—संज्ञा पुं० [सं०] कपड़ा। वस्त्र।

चैला—संज्ञा पुं० [हिं० छीलना] [स्त्री० अल्पा० चैली] कुल्हाड़ी से चीरी हुई लकड़ी का टुकड़ा जो जलाने के काम में आता है।

चोंक—संज्ञा स्त्री० [हिं० चोख] वह चिह्न जो चुंबन में दाँत लगने से पड़ता है।

चोंगा—संज्ञा पुं० [?] कोई वस्तु रखने के लिए खोखली नली। काग़ज टीन आदि की बनी हुई नली।

चोंथना*†—क्रि० स० दे० "चुगना"।

चोंच—संज्ञा स्त्री० [सं० चंचु] १. पक्षियों के मुँह का निकला हुआ अगला भाग। टोंट। तुंड। २. मुँह। (व्यंग्य)। मुहा०—दो दो चोंचें होना=कहा-सुनी होना। कुछ लड़ाई-झगड़ा होना।

चोंड़ा†—संज्ञा पुं० [सं० चूड़ा] स्त्रियों के सिर के बाल। झोंटा।

चोंडा—संज्ञा पुं० [सं० चुडा=छोटा कुआँ] सिंचाई के लिये खोदा हुआ छोटा कुआँ।

चोंथ—संज्ञा पुं० [अनु०] उतने गोबर का ढेर जितना एक बार गिरे।

चोंथना†—क्रि० स० [अनु०] किसी चीज में से उसका कुछ अंश बुरी तरह नोचना।

चोंधर—वि० [हिं० चौंधियाना] १. जिसकी आँख बहुत छोटी हों। २. मूर्ख।

चोआ—संज्ञा पुं० [हिं० चुआना] एक सुगंधित द्रव पदार्थ जो कई गंध-द्रव्यों के एक साथ मिलाकर उनका रस टपकाने से तैयार होता है।

चोकर—संज्ञा पुं० [हिं० चून=आटा + कराई=छिलका] गेहूँ, जौ आदि का छिलका जो आटा छानने के बाद बच जाता है।

चोका—संज्ञा पुं० [हिं० चुसकना] १. चूसने

की क्रिया या भाव। २ घूमने की वस्तु। चरना।

चोख*†–संज्ञा स्त्री० [हि० चोखा] तेज़ी।

चोखा–वि० [स० चोक्ष] १ जिसमें किसी प्रकार की मैल, खोट या मिलावट आदि न हो। जो शुद्ध और उत्तम हो। २ जो सच्चा और ईमानदार हो। खरा। ३ जिसकी धार तेज़ हो। पैना। धारदार। संज्ञा पु० उबाले या भूने हुए बैगन, आलू आदि को नमक मिर्च आदि के साथ मसल कर तैयार किया हुआ सालन। भरता।

चोगा–संज्ञा पु० [तु०] पैरों तक लटकता हुआ एक ढीला पहनावा। लबादा।

चोचला–संज्ञा पु० [अनु०] १ अंगों की वह गति या चेष्टा जो हृदय की किसी प्रकार की, विशेषत जवानी की, उमंग में की जाती है। हाव-भाव। २ नखरा। नाज़।

चोज–संज्ञा पु० [?] १ वह चमत्कार-पूर्ण उक्ति जिससे लोगों का मनोविनोद हो। सुभाषित। २ हँसी ठट्ठा, विशेषत व्यंग्य-पूर्ण उपहास।

चोट–संज्ञा स्त्री० [स० चुट=काटना] १ एक वस्तु पर किसी दूसरी वस्तु का वेग के साथ पतन या टक्कर। आघात। प्रहार। मुहा०—चोट खाना=आघात ऊपर लेना। २ शरीर पर आघात या प्रहार का प्रभाव। घाव। ज़ख्म। यौ०—चोट चपट=घाव। ज़ख्म। ३ किसी को मारने के लिए हथियार आदि चलाने की क्रिया। वार। आक्रमण। ४ किसी हिंसक पशु का आक्रमण। हमला। ५ हृदय पर का आघात। मानसिक व्यथा। ६ किसी के अनिष्ट के लिये चली हुई चाल। ७ आवाज़ा। बौछार। ताना। ८ विश्वासघात। धोखा। दगा। ९ बार। दफा। मरतबा।

चोटा–संज्ञा पु० [हि० चोआ] राब का पसेव जो छानने से निकलता है। चोआ।

चोटार†–वि० [हि० चोट + आर (प्रत्य०)] चोट खाया हुआ। चुटैल।

चोटारना†–क्रि० स० [हि० चोट] चोट करना।

चोटी–संज्ञा स्त्री० [स० चूडा] १ सिर के मध्य में के थोड़े से कुछ बड़े बाल जिन्हें प्राय हिंदू नहीं कटाते। शिखा। चुंदी। मुहा०—चोटी दबना=बेबस होना। लाचार होना। (किसी की) चोटी (किसी के) हाथ में होना=किसी प्रकार के दबाव में होना। २ एक में गुँथे हुए स्त्रियों के सिर के बाल। ३ सूत या ऊन आदि का डोरा जिससे स्त्रियाँ बाल बाँधती हैं। ४ जूड़े में पहनने का एक आभूषण। ५ कुछ पक्षियों के सिर के वे पर जो ऊपर उठे रहते हैं। कलगी। ६ शिखर। मुहा०—चोटी का=सर्वोत्तम

चोटीपोटी†–वि० स्त्री० [देश०] १ खुशामद से भरी हुई (बात)। २ झूठी या बनावटी (बात)।

चोट्टा–संज्ञा पु० [हि० चोर] [स्त्री० चोट्टी] वह जो चोरी करता हो। चोर।

चोड–संज्ञा पु० [स०] १ उत्तरीय वस्त्र। २ चोल नामक प्राचीन देश।

चोदक–वि० [स०] प्रेरणा करनेवाला।

चोदना–संज्ञा स्त्री० [स०] १ वह वाक्य जिसमें कोई काम करने का विधान हो। विधि-वाक्य। २ प्रेरणा। ३ योग आदि के संबंध का प्रयत्न।

चोप*–संज्ञा पु० [हि० चाव] १ गहरी चाह। इच्छा। ख्वाहिश। २ चाव। शौक। रुचि। ३ उत्साह। उमंग। ४ बढ़ावा।

चोपना*†–क्रि० अ० [हि० चोप] किसी वस्तु पर मोहित हो जाना। मुग्ध होना।

चोपी*–वि० [हि चोप] १ इच्छा रखने-वाला। २ उत्साही।

चोब–संज्ञा स्त्री० [फा०] १ शामियाना खड़ा करने का बड़ा खंभा। २ नगाड़ा या ताशा बजाने की लकड़ी। ३ सोने या चाँदी से मढ़ा हुआ डंडा। ४ छड़ी। सोंटा।

चोबचीनी–संज्ञा स्त्री० [फा०] एक काष्ठौषधि जो एक लता की जड़ है।

चोबदार–संज्ञा पु० [फा०] १ वह नौकर

जिसके पास चोव या आसा रहता है। आसा-बरदार। २. प्रतीहार। द्वारपाल।

चोर—संज्ञा पुं० [सं०] १. चुराने या चोरी करनेवाला। तस्कर।

मुहा०—मन में चोर पैठना = मन में किसी प्रकार का खटका या संदेह होना।

२. ऊपर से अच्छे हुए घाव में वह दूषित या विकृत अंश जो भीतर ही भीतर पकता और बढ़ता है। ३. यह छोटी संधि या छेद जिसमें से होकर कोई पदार्थ बह या निकल जाय या जिसके कारण कोई त्रुटि रह जाय। ४. खेल में वह लड़का जिससे दूसरे लड़के दाँव लेते हैं। ५. चोरक (गंधद्रव्य)। वि० जिसके वास्तविक स्वरूप का ऊपर से देखने से पता न चले।

चोरकट—संज्ञा पुं० [हिं० चोर + कट = काटनेवाला] चोर। उचक्का।

चोरटा—संज्ञा पुं० दे० "चोट्टा"।

चोर-दंत—संज्ञा पुं० [हिं० चोर + दंत] वह दाँत जो बत्तीस दाँतों के अतिरिक्त बहुत कष्ट के साथ निकलता है।

चोर दरवाजा—संज्ञा पुं० [हिं० चोर+दरवाजा] मकान के पीछे की ओर का गुप्त द्वार।

चोरपुष्पी—संज्ञा स्त्री० [सं०] अंधाहुली।

चोरमहल—संज्ञा पुं० [हिं० चोर + महल] वह महल जहाँ राजा और रईस अपनी अविवाहिता स्त्री रखते हैं।

चोरमिहीचनी†*—संज्ञा स्त्री० [हिं० चोर + मीचना=बंद करना] आँखमिचौली का खेल।

चोराचोरी*†—क्रि० वि० [हिं० चोर + चोरी] छिपे छिपे, चुपके चुपके।

चोरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चोर] १. छिपकर किसी दूसरे की वस्तु लेने का काम। चुराने की क्रिया। २. चुराने का भाव।

चोल—संज्ञा पुं० [सं०] १. दक्षिण के एक प्रदेश का प्राचीन नाम। २. उक्त देश का निवासी। ३. स्त्रियों के पहनने की चोली। ४. कुरते के ढंग का एक पहनावा। चोला। ५. कवच। जिरहबक्तर।

चोलना†—संज्ञा पुं० दे० "चोला"।

चोला—संज्ञा पुं० [सं० चोल] १. एक प्रकार का बहुत लंबा और ढीला-ढाला कुरता जो प्रायः साधु, फकीर पहनते हैं। २. एक रसम जिसमें नए जनमे हुए बालक को पहले पहल कपड़े पहनाए जाते हैं। ३. शरीर। बदन। जिस्म। तन।

मुहा०—चोला छोड़ना = मरना। प्राण त्यागना। चोला बदलना = एक शरीर परित्याग करके दूसरा शरीर धारण करना। (साधु)

चोली—संज्ञा स्त्री० [सं० चोल] अँगिया की तरह का स्त्रियों का पहनावा।

मुहा०—चोली दामन का साथ = बहुत अधिक साथ या घनिष्ठता।

चोषण—संज्ञा पुं० [सं०] चूसना।

चोष्य—वि० [सं०] जो चूसने के योग्य हो।

चौंक—संज्ञा स्त्री० [हिं० चौंकना] चौंकने की क्रिया का भाव।

चौंकना—क्रि० अ० [हिं० चौंक + ना (प्रत्य०)] १. एकाएक डर जाने या पीड़ा आदि अनुभव करने पर झट से काँप या हिल उठना। झिझकना। २. चौकन्ना होना। खबरदार होना। ३. चकित होना। भौचक्का होना। ४. भय या आशंका से हिचकना। भड़कना।

चौंकाना—क्रि० स० [हिं० चौंकना का प्रे०] किसी को चौंकने में प्रवृत्त करना। भड़काना

चौंध—संज्ञा स्त्री० [सं० चक् = चमकना] चकचौंध। तिलमिलाहट।

चौंधियाना—क्रि० अ० [हिं० चौंध] १. अत्यंत अधिक चमक या प्रकाश के सामने दृष्टि का स्थिर न रह सकना। चकचौंध होना। २. आँखों से सुझाई न पड़ना।

चौंधी—संज्ञा स्त्री० दे० "चकचौंध"।

चौंर—संज्ञा पुं० दे० "चँवर"।

चौंराना*—क्रि० स० [सं० चामर] १. चँवर डुलाना। चँवर करना। २. झाड़ देना।

चौंरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चौंर] १. काठ की डाँड़ी में लगा हुआ घोड़े की पूँछ के बालों का गुच्छा जो मक्खियाँ उड़ाने के काम में आता है। २. चोटी या वेणी बाँधने की डोरी।

३ सफेद पूँछवाली गाय।
चौ-वि० [सं० चतु] चार (संख्या)। (केवल यौगिक में) जैसे, चौपहल। संज्ञा पु० मोती तौलने का एक मान।
चौआ-संज्ञा पु० दे० "चौवा"।
चौआना†*-क्रि० अ० [हिं० चौंकना] १ चकपकाना। चकित होना। २ चौकन्ना होना।
चौक-संज्ञा पु० [सं० चतुष्क, प्रा० चउक्क] १ चौकोर भूमि। चौखूँटी खुली जमीन। २ घर के बीच की कोठरियों और बरामदों से घिरा हुआ चौखूँटा खुला स्थान। आँगन। सहन। ३ चौखूँटा चबूतरा। बड़ी वेदी। ४ मंगल अवसरों पर पूजन के लिए आटे, अबीर आदि की रेखाओं से बना हुआ चौखूँटा क्षेत्र। ५ शहर के बीच का बड़ा बाजार। ६ चौराहा। चौमुहानी। ७ चौसर खेलने का कपड़ा। बिसात। ८ सामने के चार दाँतों की पंक्ति।
चौकड़ा-संज्ञा पु० [हिं० चौ+कड़ा] कान में पहनने की वह बालियाँ जिनमें दो दो मोती हों।
चौकड़ी-संज्ञा स्त्री० [हिं० चौ=चार+सं० कला=अंग] १ हिरन की वह दौड़ जिसमें वह चारों पैर एक साथ फेंकता हुआ जाता है। चौफाल। कुदान। फलाँग। कुलाँच। मुहा०—चौकड़ी भूल जाना=बुद्धि का काम न करना। सिटपिटा जाना। घबरा जाना। २ चार आदमियों का गुट्ट। मंडली। यौ०—चंडालचौकड़ी=उपद्रवियों की मंडली। ३ एक प्रकार का गहना। ४ चार युगों का समूह। चतुर्युगी। ५ पलथी। संज्ञा स्त्री० [हिं० चौ+घोड़ी] चार घोड़ों की गाड़ी।
चौकन्ना-वि० [हिं० चौ=चारों ओर+कान] १ सावधान। होशियार। चौकस। सजग। २ चौंका हुआ। आशंकित।
चौकल-संज्ञा पु० [सं०] चार मात्राओं का समूह।
चौकस-वि० [हिं० चौ=चार+कस=कसा हुआ] १ सावधान। सचेत। होशियार। २ ठीक। दुरुस्त। पूरा।
चौकसाई*‡-संज्ञा स्त्री० दे० "चौकसी"।
चौकसी-संज्ञा स्त्री० [हिं० चौकस] सावधानी। होशियारी। खबरदारी।
चौका-संज्ञा पु० [सं० चतुष्क] १ पत्थर का चौकोर टुकड़ा। चौखूँटी सिल। २ काठ या पत्थर का पाटा जिस पर रोटी बेलते हैं। चकला। ३ सामने के चार दाँतों की पंक्ति। ४ सिर का एक गहना। सीसफूल। ५ वह लिपा पुता स्थान जहाँ हिंदू रसोई बनाते या खाते हैं। ६ मिट्टी या गोबर का लेप जो सफाई के लिए किसी स्थान पर किया जाय। मुहा०—चौका लगाना=१ लीप-पोतकर बराबर करना। २ सत्यानाश करना। ७ एक ही प्रकार की चार वस्तुओं का समूह। जैसे—मोतियों का चौका। ८ ताश का वह पत्ता जिसमें चार बूटियाँ हों।
चौकिया सोहागा-संज्ञा पु० [हिं० चौकी+सोहागा] छोटे छोटे चौकोर टुकड़ों में कटा हुआ सोहागा।
चौकी-संज्ञा स्त्री० [सं० चतुष्की] १ चौकोर आसन जिसमें चार पाए लगे हों। छोटा तख्त। २ कुरसी। ३ मंदिर में मंडप के खंभों के बीच का स्थान जिसमें से होकर मंडप में प्रवेश करते हैं। ४ पड़ाव। ठहरने की जगह। टिकान। अड्डा। ५ वह स्थान जहाँ आस-पास की रक्षा के लिए थोड़े से सिपाही आदि रहते हों। ६ पहरा। खबरदारी। रखवाली। ७ वह भेंट या पूजा जो किसी देवता या पीर आदि के स्थान पर चढ़ाई जाती है। ८ गले में पहनने का एक गहना। पटरी। ९ रोटी बेलने का छोटा चकला।
चौकीदार-संज्ञा पु० [हिं० चौकी+फा० दार] १ पहरा देनेवाला। २ गोड़ैत।
चौकीदारी-संज्ञा स्त्री० [हिं०] १ पहरा देने का काम। रखवाली। खबरदारी। २ चौकीदार का पद। ३ वह चंदा या कर

जो चौकीदार रखने के लिए लिया जाय।

चौकोना–वि० दे० "चौकोर"।

चौकोर–वि० [सं० चतुष्कोण] जिसके चार कोने हों। चौखूँटा। चतुष्कोण।

चौखट–संज्ञा स्त्री०[हिं०चौ=चार+काठ] १. लकड़ियों का वह ढाँचा जिसमें किवाड़ के पल्ले लगे रहते हैं। २. देहली। डेहरी।

चौखटा–संज्ञा पुं० [हिं० चौखट] चार लकड़ियों का ढाँचा जिसमें मुँह देखने का या तसवीर का शीशा जड़ा जाता है। फ्रेम।

चौखानि–संज्ञा स्त्री० [हिं० चौ=चार+ खानि=जाति] अंडज, पिंडज, स्वेदज, उद्भिज आदि चार प्रकार के जीव।

चौखूँट–संज्ञा पुं० [हिं०चौ+खूँट] १. चारों दिशाएँ। २. भूमंडल।

क्रि० वि० चारों ओर।

चौखूँटा–वि० दे० "चौकोर"।

चौगान–संज्ञा पु० [फ़ा०] १. एक खेल जिसमें लकड़ी के बल्ले से गेंद मारते हैं। २. चौगान खेलने का मैदान। ३. नगाड़ा बजाने की लकड़ी।

चौगिर्द–क्रि० वि० [हिं०चौ+फ़ा० गिर्द= तरफ़] चारों ओर। चारो तरफ़।

चौगुना–वि०[सं० चतुर्गुण] [स्त्री०चौगुनी] चार बार और उतना हो। चतुर्गुण।

चौगोड़िया–संज्ञा स्त्री० [हिं०चौ=चार+ गोड़=पैर] एक प्रकार की ऊँची चौकी।

चौगोशिया–वि० [फ़ा०] चार कोनवाला।

संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की टोपी।

संज्ञा पु० तुरकी घोड़ा।

चौघड़–संज्ञा पु० [हिं० चौ=चार+दाढ़] किनारे का वह चौड़ा चिपटा दाँत जो आहार कूचने या चबाने के काम में आता है। चौभर।

चौघड़ा–संज्ञा पुं० [हिं०चौ=चार+घर= खाना] १. पान, इलायची रखने का डिब्बा जिसमें चार खाने बने होते हैं। २. चार खानों का बरतन जिसमें मसाला आदि रखते हैं। ३. पत्ते की वह खोंगी जिसमें चार बीड़े पान हों।

चौघर†–वि० [देश०] घोड़ों की एक चाल। चौफाल। पोइया। सरपट।

चौघोड़ी*†–संज्ञा स्त्री० [हिं० चौ+घोड़ा] चार घोड़ों की गाड़ी। चौकड़ी।

चौचंद*†–संज्ञा पुं० [हिं० चौथ+चंद या चवाव+चंड] कलंक-सूचक अपवाद। बदनामी की चर्चा। निंदा।

चौचंदहाई*–वि०स्त्री०[हिं० चौचंद+हाई (प्रत्य०)] बदनामी करनेवाली।

चौड़ा–वि० [सं० चिपिट=चिपटा] [स्त्री० चौड़ी] लंबाई की ओर के दोनों किनारों के बीच विस्तृत। चकला। लंबा का उलटा।

चौड़ाई–संज्ञा स्त्री०[हिं०चौड़ा+ई(प्रत्य०)] चौड़ापन। फैलाव। अर्ज़।

चौड़ान–संज्ञा स्त्री० दे० "चौड़ाई"।

चौतनियाँ–संज्ञा स्त्री० दे० "चौतानी"।

चौतनी–संज्ञा स्त्री०[हिं०चौ=चार+तनी= बंद] बच्चों की वह टोपी जिसमें चार बंद लगे रहते हैं।

चौतरा†–संज्ञा पुं० दे० "चबूतरा"।

चौतही–संज्ञा स्त्री० [हिं० चौ+तह] खेस की बुनावट का एक मोटा कपड़ा।

चौताल–संज्ञा पु० [हिं० चौ+ताल] १. मृदंग का एक ताल। २. एक प्रकार का गीत जो होली में पाया जाता है।

चौतुका- वि० [हिं०चौ+तुक] जिसमें चार तुक हों।

संज्ञा पु० एक प्रकार का छंद जिसके चारो चरणों की तुक मिली होती है।

चौथ–संज्ञा स्त्री० [सं० चतुर्थी] १. पक्ष की चौथी तिथि। चतुर्थी।

मुहा०—चौथ का चाँद=भाद्र शुक्ल चतुर्थी का चंद्रमा जिसके विषय में प्रसिद्ध है कि यदि कोई देख ले तो उसे झूठा कलंक लगता है।

२. चतुर्थांश। चौथाई भाग। ३. मराठों का लगाया हुआ एक कर जिसमें आमदनी या तहसील का चतुर्थांश ले लिया जाता था।

*† वि० चौथा।

चौथपन*–संज्ञा पुं० [हिं० चौथा+पन]

जीवन की चौथी अवस्था। बुढ़ापा।

चौथा–वि०[सं० चतुर्थ][स्त्री० चौथी] क्रम में चार के स्थान पर पड़नेवाला।

चौथाई–संज्ञा पुं०[हिं० चौथा + ई(प्रत्य०)] चौथा भाग। चतुर्थांश। चहारुम।

चौथिया–संज्ञा पुं० [हिं० चौथा] १ वह ज्वर जो प्रति चौथे दिन आवे। २ चौथाई का हकदार।

चौथी–संज्ञा स्त्री० [हिं० चौथा] १ विवाह के चौथे दिन की एक रीति जिसमें वर-कन्या के हाथ के कंगन खोले जाते हैं। २ फसल की वह बाँट जिसमें जमींदार चौथाई लेता है।

चौदस–संज्ञा स्त्री० [सं० चतुर्दशी] पक्ष का चौदहवाँ दिन। चतुर्दशी।

चौदह–वि० [सं० चतुर्दश] जो गिनती में दस और चार हो।

संज्ञा पुं० दस और चार के जोड़ की संख्या। १४।

चौदंत†*–संज्ञा पुं०[हिं० चौ = चार + दाँत] दो हाथियों की लड़ाई। हाथियों की मुठभेड़।

चौधराई–संज्ञा स्त्री० [हिं० चौधरी] १ चौधरी का काम। २ चौधरी का पद।

चौधरी–संज्ञा पुं० [सं० चतुर + धर] किसी समाज या मंडली का मुखिया जिसका निर्णय उस समाजवाले मानते हैं। प्रधान।

चौपई–संज्ञा स्त्री० [सं० चतुष्पदी] १५ मात्राओं का एक छंद।

चौपट–वि०[हिं० चौ=चार + पट=किवाड़ा] चारों ओर से खुला हुआ। अरक्षित।

वि० नष्ट भ्रष्ट। तबाह। बरबाद।

चौपटा–वि० [हिं० चौपट] चौपट करनेवाला

चौपड़–संज्ञा स्त्री० दे० "चौसर"।

चौपत†–संज्ञा स्त्री० [हिं० चौ = चार + परत] कपड़े की तह या घड़ी।

चौपतिया–संज्ञा स्त्री० [हिं० चौ + पत्ती] १ एक प्रकार की घास। २ एक साग।

चौपथ–संज्ञा पुं० [सं० चतुष्पथ] चौराहा।

चौपद*†–संज्ञा पुं० दे० "चौपाया"।

चौपहल–वि० [हिं० चौ + फा० पहलू] जिसके चार पहल या पार्श्व हों। वर्गात्मक।

चौपाई–संज्ञा स्त्री० [सं० चतुष्पदी] १ १६ मात्राओं का एक छंद। †२ चारपाई।

चौपाया–संज्ञा पुं० [सं० चतुष्पद] चार पैरों-वाला पशु। गाय, बैल, भैंस आदि पशु।

चौपाल–संज्ञा पुं० [हिं० चौबार] १ बैठने उठने का वह स्थान जो ऊपर से छाया हो, पर चारों ओर खुला हो। २ बैठक। ३ दालान। ४ एक प्रकार की पालकी।

चौपैया–संज्ञा पुं० [सं० चतुष्पदी] १ एक प्रकार का छंद। †२ चारपाई। खाट।

चौबंदी–संज्ञा स्त्री० [हिं० चौ + बंद] एक प्रकार का छोटा चुस्त अंगा। बगलबंदी।

चौबरसा–संज्ञा पुं० [देश०] एक वर्णवृत्त।

चौबगला–संज्ञा पुं० [हिं० चौ + बगल] कुरते, अंगे इत्यादि में बगल के नीचे और कली के ऊपर का भाग।

वि० चारों ओर का।

चौबाई†–संज्ञा स्त्री० [हिं० चौ + बाई = हवा] १ चारों ओर से बहनेवाली हवा। २ अफवाह। किंवदंती। उड़ती खबर।

चौबारा–संज्ञा पुं० [हिं० चौ + बार] १ कोठे के ऊपर की खुली कोठरी। बँगला। बाला-खाना। २ खुली हुई बैठक।

क्रि० वि० [हिं० चौ = चार + बार = दफा] चौथी दफा। चौथी बार।

चौबे–संज्ञा पुं०[सं० चतुर्वेदी][स्त्री० चौबा-इन] ब्राह्मणों की एक जाति या शाखा।

चौबोला–संज्ञा पुं० [हिं० चौबोल] एक प्रकार का मात्रिक छंद।

चौमड़–संज्ञा स्त्री० दे० "चौघड़"।

चौमंजिला–वि० [हिं० चौ = चार + फा० मंजिल] चार मरातिब या खंडवाला (मकान आदि)।

चौमसिया–वि० [हिं० चौ + मास] वर्षा के चार महीनों में होनेवाला।

संज्ञा पुं० (हिं० चार + माशा] चार माशे का बाट।

चौमासा–संज्ञा पुं०[सं० चातुर्मास] १ वर्षा काल के चार महीने–आषाढ़, श्रावण,

भाद्रपद और आश्विन। चातुर्मास। २. वर्षा ऋतु के संबंध का कविता।
चौमुख–क्रि० वि० [हिं० चौ=चार+मुख =ओर] चारों ओर। चारों तरफ।
चौमुखा–वि० [हिं०चौ=चार+मुख] [स्त्री० चौमुखी] चारों ओर चार मुँहवाला।
चौमुहानी–संज्ञा स्त्री० [हिं० चौ=चार फा० मुहाना] चौराहा। चौरास्ता। चतुष्पथ।
चौरंग–संज्ञा पु० [हिं० चौ=चार+रंग= प्रकार] तलवार का एक हाथ।
वि० तलवार के चार से कटा हुआ।
चौरंगा–वि०[हिं०चौ+रंग] [स्त्री० चौरंगी] चार रंगों का। जिसमें चार रंग हों।
चौर–संज्ञा पु० [सं०] १. दूसरों की वस्तु चुरानेवाला। चोर। २. एक गंध द्रव्य।
चौरस–वि० [हिं० चौ=चार+(एक) रस= समान] १. जो ऊँचा नीचा न हो। सम-तल। बराबर। २. चौपहल। वर्गात्मक।
संज्ञा पु० एक प्रकार का वर्णवृत्त।
चौरस्ता–संज्ञा पु० दे० "चौराहा"।
चौरा–संज्ञा पु० [सं० चतुर] [स्त्री० अल्पा० चौरी] १. चबूतरा। वेदी। २. किसी देवता, सती, मृत महात्मा, भूत, प्रेत आदि का स्थान जहाँ वेदी या चबूतरा बना रहता है। †३. चौपाल। चौबारा। ४. लोबिया। बोड़ा। अरवा। रवाँस।
चौराई–संज्ञा स्त्री० दे० "चौलाई"।
चौरासी–वि० [सं० चतुरशीति] अस्सी से चार अधिक।
संज्ञा पु० १. अस्सी से चार अधिक की संख्या। ८४। २. चौरासी लक्ष योनि।
मुहा०–चौरासी में पड़ना या भरमना=निरंतर बारबार कई प्रकार के शरीर धारण करना। ३. नाचते समय पैर में बाँधने का घुँघरू।
चौराहा–संज्ञा पु० [हिं० चौ=चार+राह= रास्ता] चौरस्ता। चौमुहानी।
चौरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० चौरा] छोटा चबूतरा।
चौरेठा–संज्ञा पु० [हिं० चाउर+पीठा] पानी के साथ पीसा हुआ चावल।
चौर्य–संज्ञा पु० [सं०] चोरी।
चौलाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० चौ+राई=दाने] एक पौधा जिसका साग खाया जाता है।
चौलुक्य†–संज्ञा पु० दे० "चालुक्य"।
चौवा–संज्ञा पु० [हिं० चौ=चार] १. हाथ की चार उँगलियों का समूह। २. अँगूठे को छोड़ हाथ की बाक़ी उँगलियों की पंक्ति में लपेटा हुआ तागा। ३. चार अंगुल की माप। ४. ताश का वह पत्ता जिसमें चार बूटियाँ हों।
†संज्ञा पु० दे० "चौपाया"।
चौसर–संज्ञा पु० [सं० चतुस्सारि] १. एक खेल जो बिसात पर चार रंगों की चार चार गोटियों से खेला जाता है। चौपड़। नर्दबाज़ी। २. इस खेल की बिसात।
संज्ञा पु० [चतुरसृक] चार लड़ों का हार।
चौहट्ट†*–संज्ञा पु० दे० "चौहट्टा"।
चौहट्टा–संज्ञा पु० [हिं० चौ=चार+हाट] १. वह स्थान जिसके चारों ओर दूकानें हों। चौक। २. चौमुहानी। चौरस्ता।
चौहद्दी–संज्ञा स्त्री० [हिं० चौ+फ़ा० हद] चारों ओर की सीमा।
चौहरा–वि०[हिं०चौ=चार+हरा] १. जिसमें चार फेरे या तहें हों। चार परतवाला। †२. चौगुना। जो चार बार हो।
चौहान–संज्ञा पु० [?] क्षत्रियों की एक प्रसिद्ध शाखा।
चौहैं–क्रि० वि० [हिं० चौ] चारों ओर।
च्यवन–संज्ञा पु० [सं०] १. चूना। झरना। टपकना। २. एक ऋषि का नाम।
च्यवनप्राश–संज्ञा पु० [सं०] आयुर्वेद में एक प्रसिद्ध पौष्टिक अवलेह।
च्युत–वि० [सं०] १. गिरा हुआ। झड़ा हुआ। २. भ्रष्ट। ३. अपने स्थान से हटा हुआ। ४. विमुख। पराङ्मुख।
च्युति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. झड़ना। गिरना। २. गति। उपयुक्त स्थान से हटना। ३. चूक। कर्तव्य-विमुखता।

छ

छ–हिंदी वर्णमाला में चवर्ग का दूसरा व्यंजन जिसके उच्चारण का स्थान तालु है।
छग*–संज्ञा पु० दे० 'छग'।
छँछौरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० छाछ+बरी] एक पकवान जो छाछ में बनाया जाता है।
छँटना–क्रि० अ० [सं० चटन] १ कटकर अलग होना। छिन्न होना। २ अलग होना। दूर होना। ३ समूह से अलग होना। ४ चुनकर अलग कर लिया जाना।
मुहा०—छँटा हुआ=१ चुना हुआ। २ चालाक। चतुर। धूर्त।
५ साफ होना। मैल निकलना। ६ क्षीण होना। दुबला होना।
छँटवाना–क्रि० स० [हिं० छाँटना] १ कटवाना। २ चुनवाना। ३ छिलवाना।
छँटाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० छाँटना] छाँटने का काम भाव या मजदूरी।
छँड़ना*–क्रि० स० [हिं० छोड़ना] १ छोड़ना। त्यागना। २ अन्न को ओखली में डालकर कूटना। छाँटना।
छँड़ाना*†–क्रि० स० [हिं० छुड़ाना] छीनना। छुनाकर ले लेना।
छंद–संज्ञा पु० [सं० छंदस] १ वेदों के वाक्यों का वह भेद जो अक्षरों की गणना के अनुसार किया गया है। २ वेद। ३ वह वाक्य जिसमें वर्ण या मात्रा की गणना के अनुसार विराम आदि का नियम हो। पद्य। नज़्म। ४ वर्ण या मात्रा की गणना के अनुसार पद या वाक्य रखने की व्यवस्था। पद्यत्रय। बहर। ५ वह विद्या जिसमें छंदों के लक्षण आदि का विचार हो। ६ अभिलाषा। इच्छा। ७ स्वेच्छाचार। ८ बंधन। गाँठ। ९ जाल। संघात। समूह। १० कपट। छल।
यौ०—छल-छंद=कपट। धोखेबाजी।
११ चाल। युक्ति। १२ रंग ढंग। आकार। चेष्टा। १३ अभिप्राय। मनत्व।
संज्ञा पु० [सं० छंदक] एक आभूषण जो हाथ में पहना जाता है।
छंदोबद्ध–वि० [सं०] श्लोकबद्ध। जो पद्य के रूप में हो।
छंदोभंग–संज्ञा पु० [सं०] छंद रचना का एक दोष जो मात्रा, वर्ण आदि के नियम का पालन न होने के कारण होता है।
छ–वि० [सं० षट्, प्रा० छ] गिनती में पाँच से एक अधिक।
संज्ञा पु० १ वह संख्या जो पाँच से एक अधिक हो २ इस संख्या का सूचक अंक।
छ–संज्ञा पु० [सं०] १ काटना। २ ढाकना। आच्छादन। ३ घर। ४ खंड। टुकड़ा।
छकड़ा–संज्ञा पु० [सं० शकट] बोझ लादने की बैलगाड़ी। सग्गड़। लढ़ी।
छकड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० छ+कड़ी] १ छः का समूह। २ वह पालकी जिसे छः कहार उठाते हों। ३ छः घोड़ों की गाड़ी।
छकना–क्रि० अ० [सं० चक्न] [संज्ञा छाक] १ खा-पीकर अघाना। तृप्त होना। २ मद्य आदि पीकर नशे में चूर होना।
क्रि० अ० [सं० चक्र=भ्रांत] १ चकराना। अचंभे में आना। २ दिक होना।
छकाना–क्रि० स० [हिं० छकना] १ खिला पिलाकर तृप्त करना। २ मद्य आदि से उन्मत्त करना।
क्रि० स० [सं० चक्र=भ्रांत] १ अचंभे में डालना। २ दिक करना।
छक्का–संज्ञा पु० [सं० षट्क] १ छः का समूह या वह वस्तु जो छः अवयवों से बनी हो। २ जूए का एक दाँव जिसमें कौड़ी फेंकने से छः कौड़ियाँ चित्त पड़ें।
मुहा०—छक्का पंजा=चालबाजी।
३ जुआ। ४ वह ताश जिसमें छः बूटियाँ हों। ५ होश हवास। सुध। संज्ञा।

मुहा०—छक्के छूटना = १. होश-हवास जाता रहना। बुद्धि का काम न करना। २. हिम्मत हारना। साहस छूटना।
छगड़ा–संज्ञा पुं० [सं० छागल] बकरा।
छगन–संज्ञा पुं० [सं० छंगट = एक छोटी मछली] छोटा बच्चा। प्रिय बालक। वि० बच्चों के लिए एक प्यार का शब्द।
छगुनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० छोटी + उँगली] कनिष्ठिका। कानी उँगली।
छछिआ, छछिया–संज्ञा स्त्री० [हिं० छाछ] छाछ पीने या नापने का छोटा पात्र।
छछूँदर–संज्ञा पुं० [सं० छछुंदरी] १. चूहे की जाति का एक जंतु। २. एक प्रकार का यंत्र या तावीज। ३. एक आतिशबाजी।
छजना–क्रि० अ० [सं० सज्जन] १. शोभा देना। सजना। अच्छा लगना। २. उपयुक्त जान पड़ना। ठीक जँचना।
छज्जा–संज्ञा पुं० [हिं० छाजना या छाना] १. छाजन या छत का वह भाग जो दीवार के बाहर निकला रहता है। ओलती। २. कोठे या पाटन का वह भाग जो कुछ दूर तक दीवार के बाहर निकला रहता है।
छटकना–क्रि० अ० [अनु० या हिं० छूटना। १. किसी वस्तु का दाब या पकड़ से वेग के साथ निकल जाना। सटकना। २. दूर दूर रहना। अलग अलग फिरना। ३. वश में से निकल जाना। ४. कूदना।
छटकाना–क्रि० अ० [हिं० छटकना] १. दाब या पकड़ से बलपूर्वक निकल जाने देना। २. झटका देकर पकड़ या बंधन से छुड़ाना। ३. पकड़ या दबाव में रखनेवाली वस्तु को बलपूर्वक अलग करना।
छटपटाना–क्रि० अ० [अनु०] बंधन या पीड़ा के कारण हाथ-पैर फटकारना। तड़फड़ाना। २. बेचैन होना। व्याकुल होना। ३. किसी वस्तु के लिए व्याकुल होना।
छटपटी–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. घबराहट। बेचैनी। २. आकुलता। गहरी उत्कंठा।
छटाँक–संज्ञा स्त्री० [हिं० छ + टाँक] एक तौल जो सेर का सोलहवाँ भाग होती है।
छटा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दीप्ति। प्रकाश। २. शोभा। सौंदर्य। ३. बिजली।
छठ–संज्ञा स्त्री० [सं० षष्ठी] पक्ष की छठी तिथि।
छठा–वि० [सं० षष्ठ] [स्त्री० छठी] जो क्रम में पाँच और वस्तुओं के उपरान्त हो।
छठी–संज्ञा स्त्री० [सं० षष्ठी] जन्म से छठे दिन की पूजा या संस्कार।
मुहा०—छठी का दूध याद आना = सब सुख भूल जाना। बहुत हैरानी होना।
छड़–संज्ञा स्त्री० [सं० शर] धातु या लकड़ी आदि का लंबा पतला बड़ा टुकड़ा।
छड़ा–संज्ञा पुं० [हिं० छड़] पैर में पहनने का एक गहना।
वि० [हिं० छाँड़ना] अकेला। एकाएकी।
छड़िया–संज्ञा पुं० [हिं० छड़ी] दरबान।
छड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० छड़] १ सीधी पतली लकड़ी। पतली लाठी। २. झंडी जिसे मुसलमान पीरों की मजार पर चढ़ाते हैं।
छत–संज्ञा स्त्री० [सं० छत्र] १. घर की दीवारों के ऊपर चूने, कंकड़ से बनाया हुआ फ़र्श। पाटन। २. ऊपर का खुला हुआ कोठा। ३. छत के ऊपर तानने की चादर। चाँदनी।
*संज्ञा पुं० [सं० क्षत] घाव। ज़ख्म।
*क्रि० वि० [सं० सत्] होते हुए। रहते हुए। आछत।
छतगीर, छतगीरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० छत + फ़ा० गीर] ऊपर तानी हुई चाँदनी।
छतना*–संज्ञा पुं० [हिं० छाता] पत्तों का बना हुआ छाता।
छतनारा–वि० [हिं० छाता या छतना] [स्त्री० छतनारी] छाते की तरह फैला हुआ। दूर तक फैला हुआ। विस्तृत। (पेड़)
छतरी–संज्ञा स्त्री० [सं० छत्र] १. छाता। २. मंडप। ३. समाधि के स्थान पर बना हुआ छज्जेदार मंडप। ४. कबूतरों के बैठने के लिए बाँस की फट्टियों का टट्टर। ५. खुमी।
छतिया*†–संज्ञा स्त्री० दे० "छाती"।
छतियाना–क्रि० स० [हिं० छाती] १. छाती के पास ले जाना। २. बन्दूक छोड़ने के

समय शुद्ध घी छाती में पास लगाना।

छतिवन–संज्ञा पुं० [सं० सप्तपर्णी] एक पेड़। सप्तपर्णी।

छतीसा–वि० [हिं० छतीस] [स्त्री० छतीसी] १ चतुर। सयाना। २ धूर्त।

छतरई‡–संज्ञा पुं० १ दे० 'छत्र'। २ दे० "सत्र"।

छत्ता–संज्ञा पुं० [सं० छत्र]† १ छाता। छतरी। २ पटाव या छत जिसके नीचे से रास्ता चलता हो। ३ मधुमक्खियों, भिड़ आदि के रहने का घर। ४ छाते की तरह दूर तक फैली हुई वस्तु। छतनारी चीज। चकत्ता। ५ कमल का बीजकोश।

छत्र–संज्ञा पुं० [सं०] १ छाता। छतरी। २ राजाओं का रुपहला या सुनहरा छाता जो राजचिह्नों में से एक है।

यौ०—छत्रछाँह छत्रछाया = रक्षा। शरण। ३ कुमी। भफोड़। कुकुरमुत्ता।

छत्रक–संज्ञा पुं० [सं०] १ खुमी। कुकुरमुत्ता। छाता। २ तालमखाने की जाति का एक पौधा। ३ मंदिर। मंडप। देवमंदिर। ४ शहद का छत्ता।

छत्रधारी–वि० [सं० छत्रधारिन्] जो छत्र धारण करे। जैसे, छत्रधारी राजा।

छत्रपति–संज्ञा पुं० [सं०] राजा।

छत्रभंग–संज्ञा पुं० [सं०] १ राजा का नाश। २ ज्योतिष का एक योग जो राजा का नाशक माना गया है। ३ अराजकता।

छत्री–वि० [सं० छत्रिन्] छत्रयुक्त।
संज्ञा पुं० ‡ दे० 'क्षत्रिय'।

छद–संज्ञा पुं० [सं०] १ ढक लेनेवाली वस्तु। आवरण। जैसे—रदच्छद। २ पक्ष। चिड़िया का पंख। ३ पत्ता।

छदाम–संज्ञा पुं० [हिं० छ + दाम] पैसे का चौथाई भाग।

छद्म–संज्ञा पुं० [सं० छद्मन्] १ छिपाव। गोपन। २ व्याज। बहाना। हीला। ३ छल। कपट। जैसे—छद्मवेश।

छद्मवेश–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० छद्मवेशी] बदला हुआ वेश। कृत्रिम वेश।

छद्मी–वि० [सं० छद्मिन्] [स्त्री० छद्मिनी] १ बनावटी वेश धारण करनेवाला। २ छली। कपटी।

छन–संज्ञा पुं० दे० "क्षण"।

छनक–संज्ञा पुं० [अनु०] छन छन करने का शब्द। झनझनाहट। झनकार।
संज्ञा स्त्री० [अनु०] किसी आशंका से चौंककर भागने की क्रिया। भड़क।
* संज्ञा [हिं० छन + एक] एक क्षण।

छनकना–क्रि० अ० [अनु० छन + छन] १ किसी तपती हुई धातु पर से पानी आदि की बूँद का छन छन शब्द करके उड़ जाना। २ *झनकार करना। बजना।
क्रि० अ० [अनु०] चौकन्ना होकर भागना।

छनकाना–क्रि० स० [हिं० छनकना] छन छन शब्द करना।
क्रि० स० [हिं० छनकना] चौंकाना। चौकन्ना करना। भड़काना।

छनछनाना–क्रि० अ० [अनु०] १ किसी तपी हुई धातु पर पानी आदि पड़ने के कारण छन छन शब्द होना। २ खौलते हुए घी तेल आदि में किसी गीली वस्तु के पड़ने के कारण छन छन शब्द होना। ३ झनझनाना। झनकार होना।
क्रि० स० १ छन छन का शब्द उत्पन्न करना। २ झनकार करना।

छनछबि*–संज्ञा स्त्री० [सं० क्षणछवि] बिजली

छनदा*–संज्ञा स्त्री० दे० क्षणदा।

छनना–क्रि० अ० [सं० क्षरण] १ किसी पदार्थ का महीन छेदों में से इस प्रकार नीचे गिरना कि मैल सीठी आदि ऊपर रह जाय। छलनी से साफ होना। २ किसी नशे का पिया जाना।

मुहा०—गहरी छनना = १ खूब मेल-जोल होना। गाढ़ी मैत्री होना। २ लड़ाई होना। ३ बहुत से छेदों से युक्त होना। छलनी हो जाना। ४ बिंध जाना। अनेक स्थानों पर चोट खाना। ५ छानबीन होना। निर्णय होना। ६ कड़ाह में से पूरी पकवान आदि निकलना।

छनाना–क्रि० स० [हिं० छानना] किसी दूसरे से छानने का काम कराना।
छनिक*–वि० दे० "क्षणिक"।
* संज्ञा पुं० [हिं० छन + एक] क्षण भर।
छन्न–संज्ञा पुं० [अनु०] १. किसी तपी हुई चीज पर पानी आदि के पड़ने से उत्पन्न शब्द। २. झनकार। ठनकार।
छप–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. पानी में किसी वस्तु के एकबारगी ज़ोर से गिरने का शब्द। २. पानी के छींटों के ज़ोर से पड़ने का शब्द।
छपका–संज्ञा पुं० [हिं० चपकना] सिर में पहनने का एक गहना।
संज्ञा पुं० [अनु०] १. पानी का भरपूर छींटा। २. पानी में हाथ पैर मारने की क्रिया।
छपछपाना–क्रि० अ० [अनु०] पानी पर कोई वस्तु पटककर छपछप शब्द करना।
क्रि० स० [अनु०] पानी में छपछप शब्द उत्पन्न करना।
छपद–संज्ञा पुं० [सं० षट्पद] भौंरा।
छपन‡–वि० [हिं० छिपना] गुप्त। गायब। संज्ञा पुं० [सं० क्षपण] नाश। संहार।
छपना–क्रि० अ० [हिं० चपना = दबना] १. छापा जाना। चिह्न या दाब पड़ना। २. चिह्नित होना। अंकित होना। ३. यंत्रालय में किसी लेख आदि का मुद्रित होना। ४. शीतला का टीका लगना।
†क्रि० अ० दे० "छिपना"।
छपरखट, छपरखाट–संज्ञा स्त्री० [हिं० छप्पर + खाट] मसहरीदार पलंग।
छपरी*†–संज्ञा स्त्री० [हिं० छप्पर] झोपड़ी।
छपवाना–क्रि० स० दे० "छपाना"।
छपा*–संज्ञा स्त्री० दे० "क्षपा"।
छपाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० छापना] १. छापने का काम। मुद्रण। अंकन। २. छापने का ढंग। ३. छापने की मज़दूरी।
छपाका–संज्ञा पुं० [अनु०] १. पानी पर किसी वस्तु के ज़ोर से पड़ने का शब्द। २. ज़ोर से उछाला हुआ पानी का छींटा।
छपाना–क्रि० स० [हिं० छापना का प्रे०] छापने का काम दूसरे से कराना।
*क्रि० स० दे० "छिपाना"।
छप्पय–संज्ञा पुं० [सं० षट्पद] एक मात्रिक छंद जिसमें छः चरण होते हैं।
छप्पर–संज्ञा पुं० [हिं० छोपना] १. फूस आदि की छाजन जो मकान के ऊपर छाई जाती है। छाजन। छान।
मुहा०—छप्पर पर रखना = छोड़ देना। चर्चा न करना। जिक्र न करना। छप्पर फाड़कर देना = अनायास देना। अकस्मात् देना।
२. छोटा ताल या गड्ढा। पोखर।
छबतख़ती*–संज्ञा स्त्री० [हिं० छवि + अ० तक़तीअ] शरीर की सुंदर बनावट।
छबि–संज्ञा स्त्री० दे० "छवि"।
छबीला–वि० [हिं० छवि + ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० छबीली] शोभायुक्त। सुंदर।
छम–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. घुँघरू बजने का शब्द। २. पानी बरसने का शब्द।
*संज्ञा पुं० दे० "क्षम"।
छमकना–क्रि० अ० [हिं० छम + क] १. घुँघरू आदि बजाते हुए हिलना डोलना। २. गहनों की झनकार करना।
छमछम–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. नूपुर, पायल, घुँघरू आदि बजने का शब्द। २. पानी बरसने का शब्द।
क्रि० वि० छमछम शब्द के साथ।
छमछमाना–क्रि० अ० [अनु०] १. छमछम शब्द करना। २. छमछम शब्द करके चलना।
छमना†–क्रि० [सं० क्षमन्] क्षमा करना।
छमा†–संज्ञा स्त्री० दे० "क्षमा"।
छमाछमि–क्रि० वि० [अनु०] लगातार छमछम शब्द के साथ।
छमुख–संज्ञा पुं० [हिं० छः + मुख] षडानन।
छय*†–संज्ञा पुं० दे० "क्षय"।
छयना*–क्रि० अ० [हिं० छय + ना] क्षय को प्राप्त होना। छीजना। नष्ट होना।
छर–संज्ञा पुं० दे० "छल"।
संज्ञा पुं० दे० "क्षर"।
छरकना*–क्रि० अ० दे० "छलकना"।

छरछर–संज्ञा पुं० [हिं० छर] कणों या छर्रों के वेग से निकलने और गिरने का शब्द। २ पतली लचीली छड़ी के लगने का शब्द। सटसट।

छरछराना–क्रि० अ० [सं० क्षार] [संज्ञा छरछराहट] नमक आदि लगने से शरीर के घाव या छिले हुए स्थान में पीड़ा होना।

छरना–क्रि० अ० [सं० क्षरण] १ चूना। टपकना। २ चकचकाना। चुचुवाना।

†*क्रि० स० [हिं० छलना] १ छलना। धोखा देना। ठगना। २ मोहित करना।

छरभार*†–संज्ञा पुं० [सं० क्षार+भार] १ प्रबंध या कार्य का बोझ। कार्य भार। २ झंझट। बखेड़ा।

छरहरा–वि० [हिं० छड़+हरा (प्रत्य०)] [स्त्री० छरहरी] १ क्षीणांग। सुबुक। हलका। २ तेज। फुरतीला।

छरा–संज्ञा पुं० [सं० शर] १ छड़ा। २ लर। लड़ी। ३ रस्सी। ४ नारा। इजारबंद। नीवी।

छरी†*–संज्ञा स्त्री०, वि० १ दे० छड़ी। २ दे० छली।

छरीला–संज्ञा पुं० [सं० शैलेय] काई की तरह का एक पौधा। पथरफूल। बुढ़ना।

छर्दन–संज्ञा पुं० [सं०] वमन। कै करना।

छर्दि–संज्ञा स्त्री० [सं०] वमन। कै। उलटी।

छर्रा–संज्ञा पुं० [अनु० छरछर] १ छोटी कंकड़ी का कण। २ लोहे या सीसे के छोटे छोटे टुकड़े जो बंदूक में चलाए जाते हैं।

छल–संज्ञा पुं० [सं०] १ वह व्यवहार जो दूसरे को धोखा देने के लिए किया जाता है। २ व्याज। मिस। बहाना। ३ धूर्तता। वंचना। ठगपन। ४ कपट।

छलक, छलकन–संज्ञा स्त्री० [हिं० छलकना] छलकने की क्रिया या भाव।

छलकना–क्रि० अ० [अनु०] १ किसी तरल चीज का बरतन से उछलकर बाहर गिरना। २ उमड़ना। बाहर होना।

छलकाना–क्रि० स० [हिं० छलकना] किसी पात्र में भरे हुए जल आदि को हिलाकर उसे बाहर उछालना।

छलछंद–संज्ञा पुं० [हिं० छल+छंद] [वि० छलछंदी] कपट का जाल। चालबाजी।

छलछलाना–क्रि० अ० [अनु०] १ छल छल शब्द होना। २ पानी आदि थोड़ा थोड़ा करके गिरना। ३ जल से पूर्ण होना।

छलछिद्र–संज्ञा पुं० [सं०] कपट-व्यवहार। धूर्तता। धोखेबाजी।

छलना–क्रि० स० [सं० छलन] धोखा देना। भुलावे में डालना। प्रतारित करना। संज्ञा स्त्री० [सं०] धोखा। छल।

छलनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० चालना या सं० क्षरण] आटा चालने का बरतन। चलनी।

मुहा०—छलनी हो जाना = किसी वस्तु में बहुत से छेद हो जाना। कलेजा छलनी होना = दुःख सहते सहते हृदय जर्जर हो जाना।

छलहाई*†–वि० स्त्री० [सं० छल+हाई (प्रत्य०)] छली। कपटी। चालबाज।

छलाँग–संज्ञा स्त्री० [हिं० उछल+अंग] कुदान। फलाँग। चौकड़ी।

छला*†–संज्ञा पुं० दे० छल्ला।

छलाई*–संज्ञा स्त्री० [हिं० छल+आई (प्रत्य०)] छल का भाव। कपट।

छलाना–क्रि० स० [हिं० छलना का प्रे०] धोखा दिलाना। प्रतारित कराना।

छलावा–संज्ञा पुं० [हिं० छल] १ भूत प्रेत आदि की छाया जो एक बार दिखाई पड़कर फिर झट से अदृश्य हो जाती है। २ वह प्रकाश या लूक जो दलदलों के किनारे या जंगलों में रह रहकर दिखाई पड़ता और गायब हो जाता है। अगिया बैताल। उल्कामुख प्रेत। ३ चपल। चंचल। शोख। ४ इंद्रजाल। जादू।

छलिया, छली–वि० [सं० छलिन्] छल करनेवाला। कपटी। धोखेबाज।

छल्ला–संज्ञा पुं० [सं० छल्ली=लता] १ मुँदरी। २ कोई मंडलाकार वस्तु। कड़ा। वलय।

छल्लेदार–वि० [हिं० छल्ला+फा० दार] जिसमें मंडलाकार चिह्न या घेरे बने हों।

छवना†–संज्ञा पुं० [सं० शावक] [स्त्री० छवनी] १. बच्चा। २. सूअर का बच्चा।

छवा*†–संज्ञा पुं० [सं० शावक] किसी पशु का बच्चा। बछड़ा।
संज्ञा पुं० [देश०] एँड़ी।

छवाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० छाना] १. छाने का काम या भाव। २. छाने की मजदूरी।

छवाना–क्रि० स० [हिं० छाना का प्रे०] छाने का काम दूसरे से कराना।

छवि–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० छबीला] १. शोभा। सौंदर्य। २. कांति। प्रभा।

छहरना*–क्रि० अ० [सं० क्षरण] छितराना।

छहराना*–क्रि० अ० [सं० क्षरण] छितराना। बिखरना। चारों ओर फैलना।
क्रि० स० बिखराना। छितराना।

छहरीला†–वि० [हिं० छहरना] [स्त्री० छहरीली] छितरानेवाला। बिखरनेवाला।

छहियाँ†–संज्ञा स्त्री० दे० "छाँह"।

छाँगना–क्रि० स० [सं० छिन्न + करण] डाल टहनी आदि काटकर अलग करना।

छाँगुर–संज्ञा पुं० [हिं० छः + अंगुल] वह मनुष्य जिसके पंजे में छः उँगलियाँ हों।

छाँट–संज्ञा स्त्री० [हिं० छाँटना] १. छाँटने, काटने या कतरने की क्रिया या ढंग। २. कतरन। ३. अलग की हुई निकम्मी वस्तु।
†संज्ञा स्त्री० [सं० छर्दि] वमन। कै।

छाँटना–क्रि० स० [सं० खंडन] १. छिन्न करना। काटकर अलग करना। २. किसी वस्तु को किसी विशेष आकार में लाने के लिए काटना या कतरना। ३. अनाज में से कन या भूसी कूट फटकारकर अलग करना। ४. लेने के लिए चुनना या निकालने के लिए पृथक् करना। ५. दूर करना। हटाना। ६. साफ़ करना। ७. किसी वस्तु का कुछ अंश निकालकर उसे छोटा या संक्षिप्त करना। ८. हिंदी की चिंदी निकालना। ९. अलग या दूर रखना।

छाँड़ना*†–क्रि० स० दे० "छोड़ना"।

छाँद–संज्ञा स्त्री०[सं० छंद = बंधन] चौपायों के पैर बाँधने की रस्सी। नोई।

छाँदना–क्रि० स० [सं० छंदन] १. रस्सी आदि से बाँधना। जकड़ना। कसना। २. घोड़े या गधे के पिछले पैरों को एक दूसरे से सटाकर बाँध देना।

छांदोग्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. सामवेद का एक ब्राह्मण। २. छांदोग्य ब्राह्मण का उपनिषद्।

छाँवँ–संज्ञा स्त्री० देखो "छाँह"।

छाँवड़ा*–संज्ञा पुं० [सं० शावक] [स्त्री० छाँवड़ी, छौड़ी] १. जानवर का बच्चा। २. छोटा बच्चा। बालक।

छाँह–संज्ञा स्त्री० [सं० छाया] १. वह स्थान जहाँ आड़ या रोक के कारण धूप या चाँदनी न पड़ती हो। छाया। २. ऊपर से छाया हुआ स्थान। ३. बचाव या निर्वाह का स्थान। शरण। संरक्षा। ४. छाया। परछाईं।
मुहा०—छाँह न छूने देना = पास न फटकने देना। निकट तक न आने देना। छाँह बचाना = दूर दूर रहना। पास न जाना।
५. प्रतिबिंब। ६. भूत-प्रेत आदि का प्रभाव। आसेब। बाधा।

छाँहगीर–संज्ञा पुं० [हिं० छाँह + फ़ा० गीर] १. राजछत्र। २. दर्पण। आइना।

छाक–संज्ञा स्त्री० [हिं० छकना] १. तृप्ति। इच्छापूर्ति। २. वह भोजन जो काम करनेवाले दोपहर को करते हैं। दुपहरिया। कलेवा। ३. नशा। मस्ती।

छाकना†*–क्रि० अ० [हिं० छकना] १. खा-पीकर तृप्त होना। अघाना। अफरना। २. नशा पीकर मस्त होना।
क्रि० अ० [हिं० छकना] हैरान होना।

छाग–संज्ञा पुं० [सं०] बकरा।

छागल–संज्ञा पुं० [सं०] १. बकरा। २. बकरे की खाल की बनी हुई चीज।
संज्ञा स्त्री० [हिं० साँकल] पैर का एक गहना। झाँझन।

छाछ–संज्ञा स्त्री० [सं० छच्छिका] वह पनीला दही या दूध जिसका घी या मक्खन निकाल लिया गया हो। मट्ठा। मही।

छाज–संज्ञा पुं० [सं० छाद] १. अनाज फट-

बने या ग ा या बरतन। सूप। २ छाजन। छप्पर। ३ छज्जा।

छाजन–संज्ञा पु० [सं० छादन] आच्छादन। वस्त्र। कपडा।

यौ०—भोजन-छाजन=खाना-कपड़ा।

संज्ञा स्त्री० १ छप्पर। छान। खपरैल। २ छान का काम या ढंग। छवाई।

छाजना–क्रि० अ० [सं० छादन] [वि० छाजित] १ शोभा देना। अच्छा लगना। भला लगना। फबना। २ सुशोभित होना।

छाजा*†–संज्ञा पु० दे० "छज्जा"।

छात*–संज्ञा पु० दे० "छाता"।

छाता–संज्ञा पु० [सं० छत्र] १ बडी छतरी। मह, धूप आदि से बचने के लिए आच्छादन जिसे लेकर लोग चलते है। २ खुमी।

छाती–संज्ञा [सं० छादिन्] १ हड्डी की ठठरियों का पल्ला जो पट के ऊपर गर्दन तक होता है। सीना। वक्ष स्थल।

मुहा०–छाती पत्थर की करना=भारी दु ख सहने के लिए हृदय कठोर करना। छाती पर मूंग या कादो दलना=किसी के सामने ही ऐसी बात करना जिससे उसका जी दुखे। छाती पर पत्थर रखना=दु ख सहने के लिए हृदय कठोर करना। छाती पर साँप लोटना या फिरना= १ दु ख स कलेजा दहल जाना। मानसिक व्यथा होना। २ ईर्ष्या स हृदय व्यथित होना। जलन होना। छाती पीटना=दु ख या शोक से व्याकुल होकर छाती पर हाथ पटकना। छाती फटना=दु ख से हृदय व्यथित होना। अत्यन्त सताप होना। छाती से लगाना= आलिंगन करना। गले लगाना। वज्र की छाती-ऐसा कठोर हृदय जो दु ख सह सके। सहिष्णु हृदय। २ कलेजा। हृदय। मन। जी। कलेजा जल्दी जल्दी उछलना। जी दहलना। ३ स्तन। कुच। ४ हिम्मत। साहस।

मुहा०—छाती जलना=१ अजीर्ण आदि के कारण हृदय म जलन मालूम होना। २ शोक से हृदय व्यथित होना। सताप होना। ३ डाह होना। जलन होना। छाती जुडाना=दे० 'छाती ठढी करना'। छाती ठढी करना=चित्त शात और प्रफुल्लित करना। मन की अभिलाषा पूर्ण करना। छाती धडकना=खटके या डर से

छात्र–संज्ञा पु० [सं०] शिष्य। चेला।

छात्रवृत्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह वृत्ति या धन जो विद्यार्थी को विद्याभ्यास की दशा म सहायतार्थ मिला करे।

छात्रालय–संज्ञा पु० [सं०] विद्यार्थियों के रहने का स्थान। बोर्डिंग हाउस।

छादन–संज्ञा पु० [सं०] [वि० छादित] १ छाने या ढकने का काम। २ वह जिसस छाया या ढका जाय। आवरण। आच्छादन। ३ छिपाव। ४. वस्त्र।

छान–संज्ञा स्त्री० [सं० छादन] छप्पर।

छानना–क्रि० स० [सं० चालन या क्षरण] १ चूर्ण या तरल पदार्थ को महीन कपड या और किसी छेददार वस्तु के पार निकालना जिसम उसका कूडा-करकट निकल जाय। २ छाँटना। बिलगाना। ३ जाँचना। पडतालना। ४ ढूंढना। अनुसधान करना। तलाश करना। ५ भेदकर पार करना। ६ नशा पीना।

क्रि० स० दे० "छादना"।

छानबीन–संज्ञा स्त्री० [हिं० छानना+बीनना] १ पूर्ण अनुसधान या अन्वेषण। जाँच-पडताल। गहरी खोज। २ पूर्ण विवेचना। विस्तृत विचार।

छाना–क्रि० स० [सं० छादन] १ किसी वस्तु पर कोई दूसरी वस्तु इस प्रकार फैलाना जिसम वह पूरी ढक जाय। आच्छादित करना। २ पानी धूप आदि स बचाव के लिए किसी स्थान के ऊपर कोई वस्तु तानना या फैलाना। ३ बिछाना। फैलाना। ४ शरण म लेना।

क्रि० अ० १ फैलना। पसरना। बिछ जाना। २ डेरा डालना। रहना।

छाप–संज्ञा स्त्री० [हिं० छापना] १ वह चिह्न जो छापने स पडता है। २ मुहर का चिह्न। मुद्रा। ३ शख, चक्र आदि के चिह्न जिन्हें वैष्णव अपने अगों पर गरम धातु स अकित कराते है। मुद्रा। ४. वह

अँगूठी जिसमें अक्षर आदि खुदा हुआ ठप्पा रहता है। ५. कवियों का उपनाम।

छापना–क्रि० स० [सं० चपन] १. स्याही आदि पुती वस्तु को दूसरी वस्तु पर रखकर उसकी आकृति चिह्नित करना। २. किसी साँचे को दबाकर, उस पर के खुदे या उभरे हुए चिह्नों की, आकृति चिह्नित करना। ठप्पे से निशान डालना। मुद्रित करना। अंकित करना। ३. कागज आदि को छापे की कल में दबाकर उस पर अक्षर या चित्र अंकित करना। मुद्रित करना।

छापा–संज्ञा पुं० [हिं० छापना] १. साँचा जिस पर गीली स्याही आदि पोतकर उस पर खुदे चिह्नों की आकृति किसी वस्तु पर उतारते हैं। ठप्पा। २. मुहर। मुद्रा। ३. ठप्पे या मुहर से दबाकर डाला हुआ चिह्न या अक्षर। ४. पंजे का वह चिह्न जो शुभ अवसरों पर हलदी आदि से छापकर (दीवार, कपड़े आदि पर) डाला जाता है। ५. रात में बेखबर लोगों पर आक्रमण।

छापाखाना–संज्ञा पुं० [हिं० छापा + फ़ा० खाना] वह स्थान जहाँ पुस्तक आदि छापी जाती है। मुद्रालय। प्रेस।

छाम–वि० दे० "क्षाम"।

छामोदरी*–वि० स्त्री० दे० "क्षामोदरी"।

छाया–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. उजाला छेकनेवाली वस्तु पड़ आने के कारण उत्पन्न अंधकार या कालिमा। साया। २. आड़ या आच्छादन के कारण धूप, मेंह आदि का अभाव। साया। ३. वह स्थान जहाँ आड़ के कारण किसी आलोकप्रद वस्तु का उजाला न पड़ता हो। ४. परछाईं। ५. प्रतिबिंब। अक्स। ६. तद्रूप वस्तु। प्रतिकृति। अनुहार। पटतर। ७. अनुकरण। नकल। ८. सूर्य्य की एक पत्नी। ९. कांति। दीप्ति। १०. शरण। रक्षा। ११. अपकार। १२ आर्य्या छंद का एक भेद। १३. भूत का प्रभाव।

छायाग्राहिणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक राक्षसी जिसने समुद्र फाँदते हुए हनुमान जी की छाया पकड़कर उन्हें खींच लिया था।

छायादान–संज्ञा पुं० [सं०] घी या तेल से भरे काँसे के कटोरे में अपनी परछाईं देखकर दिया जानेवाला दान।

छायापथ–संज्ञा पुं० [सं०] १. आकाशगंगा। २. देवपथ।

छायापुरुष–संज्ञा पुं० [सं०] हठयोग के अनुसार मनुष्य की छायारूप आकृति जो आकाश की ओर स्थिर दृष्टि से बहुत देर तक देखते रहने से दिखाई पड़ती है।

छार–संज्ञा पुं० [सं० क्षार] १. जली हुई वनस्पतियों या रासायनिक क्रिया से घुली हुई धातुओं की राख का नमक। क्षार। २. खारी नमक। ३. खारी पदार्थ। ४. भस्म। राख। खाक।

यौ०–छार खार करना=नष्ट भ्रष्ट करना। ५. धूल। गर्द। रेणु।

छाल–संज्ञा स्त्री० [सं० छल्ल] पेड़ों के धड़ आदि के ऊपर का आवरण। वल्कल।

छालटी–संज्ञा स्त्री० [हिं० छाल + टी] छाल या सन का बना हुआ वस्त्र।

छालना–क्रि० अ० [सं० चालन] १. छानना। २. छलनी की तरह छिद्रमय करना।

छाला–संज्ञा पुं० [सं० छाल] १. छाल या चमड़ा। जिल्द। जैसे–मृगछाला। २. किसी अंग पर जलने, रगड़ खाने आदि से चमड़े की ऊपरी झिल्ली का उभार जिसके भीतर एक प्रकार का चेप रहता है। फफोला।

छालिया, छाली–संज्ञा स्त्री० [हिं० छाला] सुपारी

छावनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० छाना] १. छप्पर। छान। २. डेरा। पड़ाव। ३. सेना के ठहरने का स्थान।

छावरा*†–संज्ञा पुं० दे० "छौना"।

छावा–संज्ञा पुं० [सं० शावक] १. बच्चा। २. पुत्र। बेटा। ३. जवान हाथी।

छिउँकी–संज्ञा स्त्री० [हिं० चिउँटी] १. एक प्रकार की छोटी चींटी। २. एक छोटा उड़नेवाला कीड़ा। ३. चिकोटी।

छिः*–संज्ञा स्त्री० [अनु०] छींटा। धार।

छिड़ाना–क्रि० स० [हिं० छोड़ना] जबर-

छीनी ले लेना। छीनना।

छि–अव्य० [अनु०] घृणा, तिरस्कार या अरुचिसूचक शब्द।

छिकनी–संज्ञा स्त्री० [स० छिक्कनी] नकछिकनी घास जिसके फूल सूँघने से छींक आती है।

छिगुनी–संज्ञा स्त्री० [स० क्षुद्र+अँगुली] सबसे छोटी उँगली। कनिष्ठिका।

छिच्छ*–संज्ञा स्त्री० दे० "छिछ"।

छिछकारना‡–क्रि० स० दे० "छिड़कना"।

छिछड़ा–संज्ञा पु० दे० "छीछड़ा"।

छिछला–वि० [हि० छूछा+ला (प्रत्य०)] [स्त्री० छिछली] (पानी की सतह) जो गहरी न हो। उथला।

छिछोरपन, छिछोरापन–संज्ञा पु० [हि० छिछोरा] छिछोरा होने का भाव। क्षुद्रता। ओछापन। नीचता।

छिछोरा–वि० [हि० छिछला] [स्त्री० छिछोरी] क्षुद्र। ओछा।

छिटकना–क्रि० अ० [स० क्षिप्ति] १ इधर उधर पड़कर फैलना। चारों ओर बिखरना। २ प्रकाश की किरणों का चारों ओर फैलना।

छिटकाना–क्रि० स० [हि० छिटकना] चारों ओर फैलाना। बिखराना।

छिड़कना–क्रि० स० [हि० छींटा+करना] द्रव पदार्थ को इस प्रकार फेंकना कि उसके महीन महीन छींटे फैलकर इधर उधर पड़ें।

छिड़कवाना–क्रि० स० [हि० छिड़कना का प्रे०] छिड़कने का काम दूसरे से कराना।

छिड़काई–संज्ञा स्त्री० [हि० छिड़कना] १ छिड़कने की क्रिया या भाव। छिड़काव। २ छिड़कने की मजदूरी।

छिड़काव–संज्ञा पु० [हि० छिड़कना] पानी आदि छिड़कने की क्रिया।

छिड़ना–क्रि० अ० [हि० छेड़ना] आरंभ होना। शुरू होना। चल पड़ना।

छितराना–क्रि० अ० [स० क्षिप्त+करण] खंडों या कणों का गिरकर इधर-उधर फैलना। तितर बितर होना। बिखरना। क्रि० स० १. खंड या कणों को गिराकर इधर उधर फैलाना। बिखराना। छींटना। २ दूर दूर करना। विरल करना।

छिति*–संज्ञा स्त्री० दे० "क्षिति"।

छिदना–क्रि० अ० [हि० छेदना] १. छेद से युक्त होना। सूराखदार होना। २ घायल होना। जख्मी होना। ३ चुभना।

छिदाना–क्रि० स० [हि० छेदना] १. छेद कराना। २ चुभवाना। धँसवाना।

छिद्र–संज्ञा पु० [स०] [वि० छिद्रित] १. छेद। सूराख। २ गड्ढा। विवर। बिल। ३ अवकाश। जगह। ४. दोष। त्रुटि। ५ नौ की संख्या।

छिद्रान्वेषण–संज्ञा पु० [स०] [वि० छिद्रान्वेषी] दोष ढूँढ़ना। नुक्स निकालना।

छिद्रान्वेषी–वि० [स० छिद्रान्वेषिन्] [स्त्री० छिद्रान्वेषिणी] पराया दोष ढूँढ़नेवाला।

छिन*–संज्ञा पु० दे० "क्षण"।

छिनक*–क्रि० वि० [हि० छिन+एक] एक क्षण। दम भर। थोड़ी देर।

छिनकना–क्रि० स० [हि० छिड़कना] नाक का मल जोर से साँस बाहर करके निकालना।

छिनछबि*–संज्ञा स्त्री० [स० क्षण+छवि] बिजली।

छिनना–क्रि० अ० [हि० छिनना] छीन लिया जाना। हरण होना।

छिनवाना–क्रि० स० [हि० छीनना का प्रे०] छीनने का काम दूसरे से कराना।

छिनाना–क्रि० स० दे० "छिनवाना"। †क्रि० स० छीनना। हरण करना।

छिनाल–वि० स्त्री० [स० छिन्ना+नारी] व्यभिचारिणी। कुलटा। परपुरुषगामिनी।

छिनाला–संज्ञा पु० [हि० छिनाल] स्त्री-पुरुष का अनुचित सहवास। व्यभिचार।

छिन्न–वि० [स०] जो कटकर अलग हो गया हो। खंडित।

छिन्न भिन्न–वि० [स०] १ कटा-कुटा। खंडित। टूटा फूटा। २ नष्ट भ्रष्ट। ३ अस्त-व्यस्त। तितर-बितर।

छिन्नमस्ता–संज्ञा स्त्री० [स०] एक देवी जो

महाविद्याओं में छठी है।

छिपकली–संज्ञा स्त्री० [हिं० चिपकना] एक सरीसृप या जंतु जो दीवारों आदि पर प्रायः दिखाई पड़ता है। पल्ली। गृह-गोधिका। बिस्तुइया।

छिपना–क्रि० अ० [सं० क्षिप=डालना] ओट में होना। ऐसी स्थिति में होना जहाँ से दिखाई न पड़े।

छिपाना–क्रि० स० [सं० क्षिप=डालना] [संज्ञा छिपाव] १. आवरण या ओट में करना। दृष्टि से ओझल करना। २. प्रकट न करना। गुप्त रखना।

छिपाव–संज्ञा पुं० [हिं० छिपाना] छिपाने का भाव। गोपन। दुराव।

छिप्र*–क्रि० वि० दे० "क्षिप्र"।

छिमा*‡–संज्ञा स्त्री० दे० "क्षमा"।

छिया–संज्ञा स्त्री० [सं० क्षिम] १. घृणित वस्तु। घिनौनी चीज। २. मल। गलीज। मुहा०—छिया छरद करना=छी छी करना। घृणित समझना।

वि० मैला। मलिन। घृणित।

संज्ञा स्त्री० [हिं०बचिया] छोकरी। लड़की।

छिरकना*–क्रि० स० दे० "छिड़कना"।

छिरेटा–संज्ञा पुं० [स० छिर्लहिंड] एक प्रकार की छोटी बेल। पाताल-गारुड़ी।

छिलका–संज्ञा पुं० [हिं० छाल] एक परत की खोल जो फलों आदि पर होती है।

छिलना–क्रि० अ० [हिं० छीलना] १. छिलके का अलग होना। २. ऊपरी चमड़े का कुछ भाग कटकर अलग हो जाना।

छींक–संज्ञा स्त्री० [सं० छिक्का] नाक से शब्द के साथ सहसा निकलनेवाला वायु का झोंका या स्फोट।

छींकना–क्रि० अ० [हिं० छींक] नाक से वेग के साथ वायु निकालना।

छींट–संज्ञा स्त्री० [सं०क्षिप्त] १. महीन बूँद। जलकण। सीकर। २. वह कपड़ा जिस पर रंग-बिरंग के बेल-बूटे छपे हों।

छींटना–क्रि० स० दे० "छितराना"।

छींटा–संज्ञा पुं० [सं० क्षिप्त, प्रा० छिप्त] १. द्रव पदार्थ की महीन बूँद जो जोर से पड़ने से इधर-उधर गिरे। जलकण। सीकर। २. हलकी वृष्टि। ३. पड़ी हुई बूँद का चिह्न। ४. छोटा दाग। ५. मदक या चंडू की एक मात्रा। ५. व्यंग्यपूर्ण उक्ति।

छी–अव्य० [अनु०] घृणा-सूचक शब्द। मुहा०—छी छी करना=घिनाना। अरुचि या घृणा प्रकट करना।

छीका–संज्ञा पुं० [सं० शिक्य] १. रस्सियों का जाल जो छत में खाने-पीने की चीजें रखने के लिये लटकाया जाता है। सिकहर। २. जालीदार खिड़की या झरोखा। ३. बैलों के मुँह पर चढ़ाया जानेवाला रस्सियों का जाल। ४. रस्सियों का बना हुआ झूलनेवाला पुल। झूला।

छीछड़ा–संज्ञा पुं० [सं० तुच्छ, प्रा० छुच्छ] मांस का तुच्छ और निकम्मा टुकड़ा।

छीछालेदर–संज्ञा स्त्री० [हिं० छी छी] दुर्दशा। दुर्गति। खराबी।

छीज–संज्ञा स्त्री० [हिं० छीजना] घाटा। कमी।

छीजना–क्रि० अ० [सं० क्षयण] क्षीण होना। घटना। कम होना।

छीति*–संज्ञा स्त्री० [सं० क्षति] १. हानि। घाटा। २. बुराई।

छीती छान–वि० [सं० क्षति + छिन्न] छिन्न भिन्न। तितर-बितर।

छीन–वि० दे० "क्षीण"।

छीनना–क्रि०स०[सं० छिन्न + ना (प्रत्य०)] १. काटकर अलग करना। २. दूसरे की वस्तु जबरदस्ती ले लेना। हरण करना। ३. चक्की आदि को छेनी से खुरदुरा करना। कूटना। रेहना।

छीना झपटी–संज्ञा स्त्री० [हिं० छीनना + झपटना] छीनकर किसी वस्तु को ले लेना।

छीना‡–क्रि० स० दे० "छूना"।

छीप–वि० [सं० क्षिप्र] तेज। वेगवान्।

संज्ञा स्त्री० [हिं० छाप] १. छाप। चिह्न। दाग। २. सेहुआँ नामक रोग।

छीपी–संज्ञा पुं० [हिं० छाप] [स्त्री० छीपिन]

कपड़े पर बेलबूटे या छींट छापनेवाला।

छींबर–संज्ञा स्त्री० [हिं० छापना] मोटी छींट।

छीमी†–संज्ञा स्त्री० [सं० शिंबी] फली।

छीर–संज्ञा पुं० दे० "क्षीर"। संज्ञा स्त्री० [हिं० छोर] कपड़े का वह किनारा जहाँ लंबाई समाप्त हो। छोर।

छीलना–क्रि० अ० [हिं० छाल] १ छिलका या छाल उतारना। २ जमी हुई वस्तु को खुरचकर अलग करना।

छीलर–संज्ञा पुं० [हिं० छिछला] छिछला गड्ढा। तलैया।

छुँगना*–संज्ञा स्त्री० [हिं० छँगुनी] एक प्रकार की घुंघरूदार अँगूठी।

छुआना†–क्रि० स० दे० "छुलाना"।

छुआछूत–संज्ञा स्त्री० [हिं० छूना] १ अछूत को छूने की क्रिया। अस्पृश्य स्पर्श। २ स्पृश्य-अस्पृश्य का विचार। छूत-छात का विचार।

छुईमुई–संज्ञा स्त्री० [हिं० छूना + मुवना] लज्जालु। लज्जावती। लजाधुर।

छुगुना†–संज्ञा पुं० दे० "घुँघरू"।

छुच्छी–संज्ञा स्त्री० [हिं० छूछा] १ पतली पोली नली। २ नाक की कील। लौंग।

छुछ-मछली–संज्ञा स्त्री० [सं० सूक्ष्म, हिं० छूछम + मछली] अंडे से फूटा हुआ मेढक का बच्चा जिसका रूप मछली का सा होता है।

छुट*–अव्य० [हिं० छूटना] छोड़कर। सिवाय। अतिरिक्त।

छुटकाना*–क्रि० स० [हिं० छूटना] १ छोड़ना। अलग करना। २ साथ न लेना। ३ मुक्त करना। छुटकारा देना।

छुटकारा–संज्ञा पुं० [हिं० छुटकार] १ बंधन आदि से छूटने का भाव या क्रिया। मुक्ति। रिहाई। २ आपत्ति या चिंता आदि से रक्षा। निस्तार।

छुटना*–क्रि० अ० दे० "छूटना"।

छुटपन–संज्ञा पुं० [हिं० छोटा+पन (प्रत्य०)] १ छोटाई। लघुता। २ बचपन।

छुटाना†–क्रि० स० दे० "छुड़ाना"।

छुट्टा–वि० [हिं० छूटना] [स्त्री० छुट्टी] १ जो बँधा न हो। २ एकाकी। अकेला।

छुट्टी–संज्ञा स्त्री० [हिं० छूट] १ छुटकारा। मुक्ति। रिहाई। २ काम से खाली वक्त। अवकाश। फुरसत। ३ काम बंद रहने का दिन। तातील। ४ चलने की अनुमति। जाने की आज्ञा।

छुड़वाना–क्रि० स० [हिं० छोड़ना का प्रे०] छोड़ने का काम दूसरे से कराना।

छुड़ाना–क्रि० स० [हिं० छोड़ना] १ बँधी, फँसी, उलझी या लगी हुई वस्तु को पृथक् करना। २ दूसरे के अधिकार से अलग करना। ३ पुती हुई वस्तु को दूर करना। ४ कार्य या नौकरी से हटाना। बरखास्त करना। ५ किसी प्रवृत्ति या अभ्यास को दूर करना। ['छोड़ना' का प्र०] छोड़ने का काम कराना।

छुत्*–संज्ञा स्त्री० [सं० क्षुत्] भूख।

छुतिहा–वि० [हिं० छूत + हा (प्रत्य०)] १ छूतवाला। जो छूने योग्य न हो। अस्पृश्य। २ कलंकित। दूषित।

छुद्र–संज्ञा पुं० दे० "क्षुद्र"।

छुद्रावलि*–संज्ञा स्त्री० दे० "क्षुद्रघंटिका"।

छुधा–संज्ञा स्त्री० दे० "क्षुधा"।

छुपना–क्रि० अ० दे० "छिपना"।

छुभित*–वि० [सं० क्षुभित] १ विचलित। चलचित्त। २ घबराया हुआ।

छुभिराना*–क्रि० अ० [हिं० क्षोभ] क्षुब्ध होना। चंचल होना।

छुरधार*–संज्ञा स्त्री० [सं० क्षुरधार] छुरे की धार। पतली पैनी धार।

छुरा–संज्ञा पुं० [सं० क्षुर] [स्त्री० अल्पा० छुरी] १ बेंट में लगे हुए लंबे धारदार टुकड़े का एक हथियार। २ वह हथियार जिससे नाई बाल मूँड़ते हैं। उस्तरा।

छुरित–संज्ञा पुं० [सं०] १ लास्य नृत्य का एक भेद। २ बिजली की चमक।

छुरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० छुरा] १ चीज काटने या चीरने फाड़ने का एक बेंटदार छोटा हथियार। चाकू। २ आक्रमण करने का

एक धारदार हथियार।

छुलाना–क्रि० स० [हिं० छूना] छूना का प्रेरणार्थक रूप। स्पर्श कराना।

छुवाना†–क्रि० स० दे० "छुलाना"।

छुहना*–क्रि० अ० [हिं० छुवना] १. छू जाना। २. रँगा जाना। लिपना। क्रि० स० दे० "छूना"।

छुहारा–संज्ञा पुं० [सं० क्षुत + हार] १. एक प्रकार का खजूर। खुरमा। २. पिंडखजूर।

छूँछा–वि० [सं० तुच्छ] [स्त्री० छूँछी] १. खाली। रीता। रिक्त। जैसे—छूँछा घड़ा। २. जिसमें कुछ तत्त्व न हो। निःसार। ३. निर्धन। गरीब।

छू–संज्ञा पुं० [अनु०] मंत्र पढ़कर फूँक मारने का शब्द।

मुहा०—छू मंतर होना=चटपट दूर होना। गायब होना। जाता रहना।

छूट–संज्ञा स्त्री० [हिं० छूटना] १ छूटने का भाव। छुटकारा। मुक्ति। २. अव-काश। फ़ुरसत। ३. बाकी रुपया छोड़ देना। छुड़ौती। ४. किसी कार्य्य से संबंध रखनेवाली किसी बात पर ध्यान न जाने का भाव। ५. वह रुपया जो देन-दार से न लिया जाय। ६. स्वतंत्रता। आज़ादी। ७. गाली-गलौज।

छूटना–क्रि० अ० [स० छुट] १. बँधी, फँसी या पकड़ी हुई वस्तु का अलग होना। दूर होना।

मुहा०—शरीर छूटना=मृत्यु होना।

२. किसी बाँधने या पकड़नेवाली वस्तु का ढीला पड़ना या अलग होना। जैसे—बंधन छूटना। ३. किसी पुती या लगी हुई वस्तु का अलग या दूर होना। ४. बंधन से मुक्त होना। छुटकारा होना। ५. प्रस्थान करना। रवाना होना। ६. दूर पड़ जाना। वियुक्त होना। बिछुड़ना। ७. पीछे रह जाना। ८. दूर तक जानेवाले अस्त्र का चल पड़ना। ९. बराबर होती रहनेवाली बात का बंद होना। न रह जाना।

मुहा०—नाड़ी छूटना=नाड़ी का चलना बंद हो जाना।

१०. किसी नियम या परंपरा का भंग होना। जैसे—व्रत छूटना। ११. किसी वस्तु में से वेग के साथ निकलना। १२. रस रस-कर (पानी) निकलना। १३. ऐसी वस्तु का अपनी क्रिया में तत्पर होना जिसमें से कोई वस्तु कणों या छींटों के रूप में वेग से बाहर निकले। १४. शेष रहना। बाकी रहना। १५. किसी काम का या उसके किसी अंग का भूल से न किया जाना। १६. किसी कार्य्य से हटाया जाना। बर-खास्त होना। १७. रोज़ी या जीविका का न रह जाना।

छूत–संज्ञा स्त्री० [हिं० छूना] १. छूने का भाव। संसर्ग। छुवाव। २. गंदी, अशुचि या रोग-संचारक वस्तु का स्पर्श। अस्पृश्य का संसर्ग।

यौ०—छूत का रोग=वह रोग जो किसी रोगी से छू जाने से हो।

३. अशुचि वस्तु के छूने का दोष या दूषण। ४. अशुद्धि के कारण अस्पृश्यता। ऐसी अशुद्धि कि छूने से दोष लगे। ५. भूत आदि लगने का बुरा प्रभाव।

छूना–क्रि० अ० [सं० छुप] एक वस्तु का दूसरी के इतने पास पहुँचना कि दोनों एक दूसरी से सट जायँ। स्पर्श होना। क्रि० स० १. किसी वस्तु तक पहुँचकर उसके किसी अंग को अपने किसी अंग से सटाना या लगाना। स्पर्श करना।

मुहा०—आकाश छूना=बहुत ऊँचा होना।

२. हाथ बढ़ाकर उँगलियों के संसर्ग में लाना। हाथ लगाना। †३. दान के लिये किसी वस्तु को स्पर्श करना। ४. दौड़ की बाज़ी में किसी को पकड़ना। उन्नति की समान श्रेणी में पहुँचना। ६. बहुत कम काम में लाना। ७. पोतना।

छेंकना–क्रि० स० [सं० छेद] १. आच्छादित करना। स्थान घेरना। जगह लेना। २. रोकना। जाने न देना। ३. लकीरों से घेरना। ४. काटना। मिटाना।

छेक–संज्ञा पुं० [हिं० छेद] १ छेद। सूराख। २. कटाव। विभाग।

छेकानुप्रास–संज्ञा पुं० [सं०] वह अनुप्रास जिसमें वर्णों का सादृश्य एक ही बार हो।

छेकापह्नुति–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अलंकार जिसमें वास्तविक बात का अयथार्थ उक्ति से खंडन किया जाता है।

छेकोक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] अर्थांतर-गर्भित उक्ति।

छेटा†–संज्ञा स्त्री० [सं० क्षिप्त] बाधा।

छेड़–संज्ञा स्त्री० [हिं० छेड़] १ छू या खोदकर तंग करने की क्रिया। २ हँसी ठठोली करके कुढ़ाने का काम। चुटकी। ३ चिढ़ानेवाली बात। ४ रगड़ा। झगड़ा।

छेड़ना–क्रि० स० [हिं० छेदना] १ खोदना खादना। दबाना। कोंचना। २ छू या खोद खोदकर भड़काना या तंग करना। ३ किसी के विरुद्ध ऐसा कार्य्य करना जिससे वह बदला लेने के लिये तैयार हो। ४ हँसी-ठठोली करके कुढ़ाना। चुटकी लेना। ५ कोई बात या कार्य्य आरंभ करना। उठाना। ६ बजाने के लिये बाजे में हाथ लगाना। ७ नश्तर से फोड़ा चीरना।

छेड़वाना–क्रि० स० [हिं० 'छेड़ना' का प्रे०] छेड़ने का काम दूसरे से कराना।

छेत्र*†–संज्ञा पुं० दे० "क्षेत्र"।

छेद–संज्ञा पुं० [सं०] १ छेदन। काटने का काम। २ नाश। ध्वंस। ३ छेदन करनेवाला। ४ गणित में भाजक। संज्ञा पुं० [सं० छिद्र] १ सूराख। छिद्र। रंध्र। २ बिल। दरज। खोखला विवर। ३ दोष। दूषण। ऐब।

छेदक–वि० [सं०] १ छेदने या काटनेवाला। २ नाश करनेवाला। ३ विभाजक।

छेदन–संज्ञा पुं० [सं०] १ काटकर अलग करने का काम। चीर फाड़। २ नाश। ध्वंस। ३ काटने या छेदन का अस्त्र।

छेदना–क्रि० स० [सं० छेदन] १ कुछ चुभाकर किसी वस्तु को छिद्रयुक्त करना। बेधना। भेदना। २ क्षत करना। घाव करना। †३ काटना। छिन्न करना।

छेना–संज्ञा पुं० [सं० छेदन] खटाई से फाड़ा हुआ दूध जिसका पानी निचोड़ लिया गया हो। फटे दूध का खोया। पनीर।

छेनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० छेना] लोहे का वह औजार जिससे पत्थर आदि काटे या नक्काशे जाते हैं। टाँकी।

छेम*‡–संज्ञा पुं० दे० "क्षेम"।

छेमकरी*–संज्ञा स्त्री० दे० "क्षेमकरी"।

छेरी–संज्ञा स्त्री० [सं० छेलिका] बकरी।

छेव–संज्ञा पुं० [सं० छेद] १ जख्म। घाव। मुहा०—छल छेव = कपट व्यवहार। †२ आनेवाली आपत्ति। होनहार दुःख। संज्ञा स्त्री० दे० "टेव"।

छेवना*–संज्ञा स्त्री० [हिं० छेना] ताड़ी। क्रि० स० [सं० छेदन] १ काटना। छिन्न करना। २ चिह्न लगाना। *क्रि० स० [सं० क्षेपण] १ फेंकना। २ डालना। ऊपर डालना। मुहा०—जी पर छेवना = जी पर खेलना। जान संकट में डालना।

छेह*–संज्ञा पुं० [हिं० छेव] १ दे० "छेव"। २ खंडन। नाश। ३ परंपरा भंग। वि० १ टुकड़े टुकड़े किया हुआ। २ न्यून। कम। *संज्ञा स्त्री० दे० "खेह"।

छैं†–वि० दे० "छ"। *संज्ञा स्त्री० दे० "क्षय"।

छैयाँ†*–संज्ञा पुं० [हिं० छवना] बच्चा।

छैल*–संज्ञा पुं० दे० "छैला"।

छैल चिकनियाँ–संज्ञा पुं० [देश०] शौकीन। बना-ठना आदमी।

छैल छबीला–संज्ञा पुं० [देश०] १ सजा-धजा और युवा पुरुष। बाँका। २ छरीला नाम का पौधा।

छैला–संज्ञा पुं० [सं० छवि+इल्ल (प्रत्य०)] सुंदर और बना-ठना आदमी। सजीला। बाँका। शौकीन।

छोंडा*–संज्ञा पुं० [सं० क्ष्वे] दही मथने की

मथानी।

छोकड़ा–संज्ञा पुं० [सं० शावक] [स्त्री० छोकड़ी] लड़का। बालक। लौंडा। (बुरे भाव से)

छोकड़ापन–संज्ञा पुं० [हिं० छोकड़ा + पन (प्रत्य०)] १. लड़कपन। २. छिछोरापन।

छोकरा†–संज्ञा पुं० दे० "छोकड़ा"।

छोटा–वि० [सं० क्षुद्र] [स्त्री० छोटी] १. जो बड़ाई या विस्तार में कम हो। डील-डौल में कम।

यौ०—छोटा-मोटा = साधारण।

२. जो अवस्था में कम हो। थोड़ी उम्र का। ३. जो पद या प्रतिष्ठा में कम हो। ४. तुच्छ। सामान्य। ५. ओछा। क्षुद्र।

छोटाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० छोटा + ई (प्रत्य०)] १. छोटापन। लघुता। २. नीचता।

छोटापन–संज्ञा पुं० [हिं० छोटा + पन (प्रत्य०)] १. छोटा होने का भाव। छोटाई। लघुता। २. बचपन। लड़कपन।

छोटी इलायची–संज्ञा स्त्री० [हिं० छोटी + इलायची] सफ़ेद या गुजराती इलायची।

छोटी हाज़िरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० छोटी + हाज़िरी] यूरोपियनों का प्रातःकाल का कलेवा।

छोड़ना–क्रि० स० [सं० छोरण] १. पकड़ी हुई वस्तु को पकड़ से अलग करना। २. किसी लगी या चिपकी हुई वस्तु का अलग हो जाना। ३. बंधन आदि से मुक्त करना। छुटकारा देना। ४. अपराध क्षमा करना। मुआफ़ करना। ५. न ग्रहण करना। न लेना। ६. प्राप्य धन न लेना। देना। मुआफ़ करना। ७. परित्याग करना। पास न रखना। ८. पड़ा रहने देना। न उठाना या लेना। ९ प्रस्थान कराना। चलाना।

मुहा०—किसी पर किसी को छोड़ना = किसी को पकड़ने या चोट पहुँचाने के लिए उसके पीछे किसी को लगा देना।

१०. चलाना या फेंकना। क्षेपण करना। ११. किसी वस्तु, व्यक्ति या स्थान से आगे बढ़ जाना। १२. हाथ में लिए हुए कार्य्य को त्याग देना। १३. किसी रोग या व्याधि का दूर होना। १४. वेग के साथ बाहर निकालना। १५. ऐसी वस्तु को चलाना जिसमें से कोई वस्तु कणों या छींटों के रूप में वेग से बाहर निकले। १६. बचाना। शेष रखना।

मुहा०—छोड़कर = अतिरिक्त। सिवाय।

१७. किसी कार्य को या उसके किसी अंग को भूल से न करना। १८. ऊपर से गिराना।

छोड़वाना–क्रि० स० [हिं० छोड़ना का प्रे०] छोड़ने का काम दूसरे से कराना।

छोड़ाना–क्रि० स० दे० "छुड़ाना"।

छोनिप*–संज्ञा पुं० दे० "क्षोणिप"।

छोनी*–संज्ञा स्त्री० दे० "क्षोणी"।

छोप–संज्ञा पुं० [सं० क्षेप] १. गाढ़ी या गीली वस्तु की मोटी तह। मोटा लेप। २. लेप चढ़ाने का कार्य। ३. आघात। वार। प्रहार। ४. छिपाव। बचाव।

छोपना–क्रि० स० [हिं० छुपाना] १. गीली वस्तु को दूसरी वस्तु पर रखकर फैलाना। गाढ़ा लेप करना। २. गीली मिट्टी आदि का लोंदा ऊपर रखना या फैलाना। गिलावा लगाना। थोपना। ३. दबाकर चढ़ बैठना। धर दबाना। ग्रसना। ‡ ४. आच्छादित करना। ढकना। छेंकना। †५. किसी बुरी बात को छिपाना। परदा डालना। †६. वार या आघात से बचाना।

छोभ–संज्ञा पुं० दे० "क्षोभ"।

छोभना*–क्रि० अ० [हिं० छोभ + ना (प्रत्य०)] करुणा, शंका, लोभ आदि के कारण चित्त का चंचल होना। क्षुब्ध होना।

छोभित*–वि० दे० "क्षोभित"।

छोम*–वि० [सं० क्षोम] १. चिकना। २. कोमल।

छोर–संज्ञा पुं० [हिं०, छोड़ना] १. आयत विस्तार की सीमा। चौड़ाई का हाशिया।

यौ०—ओर छोर = आदि अंत।

२. विस्तार की सीमा। हद। ३. नोक।

छोराना†–क्रि० स० [सं० छोरण] १. बंधन आदि अलग करना। खोलना। २. [illegible]

से मुक्त करना। ३ हरण करना। छीनना।

छोरा†—सज्ञा पु० [स० शावक][स्त्री० छोरी] छोकड़ा। लड़का।

छोरा-छोरी†—सज्ञा स्त्री० [हि० छोरना] छीन खसोट। छीना छीनी।

छोलना†—क्रि० स० [हि० छाल] छीलना।

छोह—सज्ञा पु० [हि० क्षोभ] १. ममता। प्रेम। स्नेह। २ दया। अनुग्रह। कृपा।

छोहना*—क्रि० अ० [हि० छोह + ना (प्रत्य०)] १. विचलित, चचल या क्षुब्ध होना। २ प्रेम या दया करना।

छोहर.†*—सज्ञा पु० दे० "छोरा"।

छोहाना*—क्रि० अ० [हि० छोह] १ मुहब्बत करना। प्रेम दिखाना। २ अनुग्रह करना। दया करना।

छोहिनी*—सज्ञा स्त्री० दे० "अक्षौहिणी"।

छोही*†—वि० [हि० छोह] ममता रखनेवाला। प्रेमी। स्नेही। अनुरागी।

छौंक—सज्ञा स्त्री० [अनु०] बघार। तड़का

छौंकना—क्रि० स० [अनु० छायँ छायँ] १ वासने के लिए हींग, मिरचा आदि से मिले हुए कड़कड़ाते घी को दाल आदि में डालना। बघारना। २ मसाले मिले हुए कड़कड़ाते घी में कच्ची तरकारी आदि भूनने के लिए डालना। तड़का देना।

छौकना†—क्रि० अ० [स० चतुष्क] जानवर का कूदना या झपटना।

छौना—सज्ञा पु० [स० शावक] [स्त्री० छौनी] पशु का बच्चा। जैसे—मृग-छौना।

छौलदारी—सज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का छोटा खेमा। छोटा तबू।

छौवाना*—क्रि० स० दे० "छुआना"।

ज

ज—हिंदी वर्णमाला का एक व्यजन वर्ण जो चवर्ग का तीसरा अक्षर है।

जग—सज्ञा स्त्री० [फा०][वि० जगी] लड़ाई। युद्ध। समर।

जग—सज्ञा पु० [फा०] लोहे का मुर्चा।

जगम—वि० [स०] १ चलने-फिरनेवाला। चर। २ जो एक स्थल से दूसरे स्थल पर लाया जा सके। जैसे—जगम सपत्ति।

जगल—सज्ञा पु० [स०][वि० जगली] १ जल-शून्य भूमि। रेगिस्तान। २ वन।

जँगला—सज्ञा पु० [पुर्त० जेंगिला] १ खिड़की, दरवाजे, बरामदे आदि में लगी हुई लोहे के छड़ों की पक्ति। कटहरा। बाड़। २ चौखट या खिड़की जिसमें छड़ लगी हों।

जगली—वि० [हि० जगल] १. जगल में मिलने या होनेवाला। जगल-सबधी। २ बिना बोए या लगाए उगनेवाला पौधा। ३ जगल में रहनेवाला। वनैला।

जगार—सज्ञा पु० [फा०] [वि० जगारी] १ ताँबे का कसाव। तूतिया। २ एक रग जो ताँबे का कसाव है।

जगारी—वि० [फा० जगार] नीले रग का।

जगाल—सज्ञा पु० दे० "जगार"।

जगी—वि० [फा०] १ लड़ाई से सबध रखनेवाला। जैसे—जगी जहाज। २ फौजी। सैनिक। सेना-सबधी। ३ बड़ा। बहुत बड़ा। दीर्घकाय। ४ वीर। लड़ाका।

जघा—सज्ञा स्त्री० [स० जघ] १ पिंडली। २ जाँघ। रान। ऊरु।

जँचना—क्रि० अ० [हि० जाँचना] १ जाँचा जाना। देखा भाला जाना। २ जाँच में पूरा उतरना। उचित या अच्छा ठहरना। ३ जान पड़ना। प्रतीत होना।

जँचा—वि० [हि० जँचना] १ जाँचा हुआ। सुपरीक्षित। २ अव्यर्थ। अचूक।

जजल*†—वि० [स० जर्जर] पुराना और कमजोर। बेकाम।

जजाल—सज्ञा पु० [हि० जग + जाल] १ प्रपच। झझट। बखेड़ा। २ बधन। फँसाव। उलझन। ३ पानी का भँवर।

४. एक प्रकार की बड़ी पलीतेदार बंदूक। ५. बड़े मुँह की तोप। ६. बड़ा जाल।

जंजाली–वि० [हिं० जंजाल] झगड़ालू। बखेड़िया। फ़सादी।

जंजीर–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] [वि० जंजीरी] १. साँकल। सिकड़ी। कड़ियों की लड़ी। २. बेड़ी। ३. किवाड़ की कुंडी। सिकड़ी।

जंतर–संज्ञा पुं० [सं० यंत्र] १. कल। औजार। यंत्र। २. तांत्रिक यंत्र। ३. चौकोर या लंबी तावीज जिसमें यंत्र या कोई टोटके की वस्तु रहती है। ४. गले में पहनने का एक गहना। कठुला।

जंतर-मंतर–संज्ञा पुं० [हिं० यंत्र + मंत्र] १. यंत्र-मंत्र। टोना-टोटका। जादू-टोना। २. मानमंदिर जहाँ ज्योतिषी नक्षत्रों की गति आदि का निरीक्षण करते हैं। आकाश-लोचन। वेधशाला।

जंतरी–संज्ञा स्त्री० [सं० यंत्र] १. छोटा जंता जिसमें सोनार तार बढ़ाते हैं। २. पत्रा। तिथि-पत्र। ३. जादूगर। भानमती। ४. बाजा बजानेवाला।

जँतसार–संज्ञा स्त्री० [सं० यंत्रशाला] जाँता गाड़ने का स्थान।

जंता–संज्ञा पुं० [सं० यंत्र] [स्त्री० जंती, जंतरी] १. यंत्र। कल। जैसे—जंताघर। २. तार खींचने का औजार। वि० [सं० यंतृ = यंता] दंड देनेवाला। शासन करनेवाला।

जंती–संज्ञा स्त्री० [हिं० जंता] छोटा जंता। जंतरी।
†संज्ञा स्त्री० [हिं० जनना] माता। मा।

जंतु–संज्ञा पुं० [सं०] जन्म लेनेवाला जीव। प्राणी। जानवर।
यौ०—जीवजंतु = प्राणी। जानवर।

जंतुघ्न–वि० [सं०] जंतुनाशक। कृमिघ्न।

जंत्र–संज्ञा पुं० [सं० यंत्र] १. कल। औजार। २. तांत्रिक यंत्र। ३. ताला।

जंत्रना*–क्रि० स० [हिं० जंत्र] ताले के भीतर बंद करना। जकड़बंद करना।
संज्ञा स्त्री० दे० "यंत्रणा"।

जंत्र-मंत्र–संज्ञा पुं० दे० "जंतर-मंतर"।

जंत्रित–वि० [सं० यंत्रित] १. दे० "यंत्रित"। २. बंद। बँधा हुआ।

जंत्री–संज्ञा पुं० [सं० यंत्र] बाजा।

जंद–संज्ञा पुं० [फ़ा० जंद] १. पारसियों का अत्यंत प्राचीन धर्मग्रंथ। २. वह भाषा जिसमें पारसियों का उक्त धर्मग्रंथ है।

जंदरा–संज्ञा पुं० [सं० यंत्र] १. यंत्र। कल। २. जाँता। †३. ताला।

जंपना*–क्रि० स० [सं० जल्पन] बोलना। कहना।

जंबीर–संज्ञा पुं० [सं०] १. जँबीरी नीबू। २. मरुवा। वन-तुलसी।

जंबीरी नीबू–संज्ञा पुं० [सं० जंबीर] एक प्रकार का खट्टा नीबू।

जंबु–संज्ञा पुं० [सं०] जामुन। (फल)

जंबुक–संज्ञा पुं० [सं०] १. बड़ा जामुन। फरेंदा। २. केवड़ा। ३. शृगाल। गीदड़।

जंबुद्वीप–संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार सात द्वीपों में से एक जिसमें हिन्दुस्तान है।

जंबुमत्–संज्ञा पुं० दे० "जांबवान्"।

जंबू–संज्ञा पुं० [सं०] १. जामुन। २. काश्मीर राज्य का एक प्रसिद्ध नगर।

जंबूर–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. जबूरा। जमुरका। २. तोप की चर्ख। ३. पुरानी छोटी तोप जो प्रायः ऊँटों पर लादी जाती थी। जंबूरक।

जंबूरक–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. छोटी तोप। २. तोप की चर्ख। ३. भँवरकली।

जंबूरची–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. तोपची। तुपकची। २. बर्कंदाज। सिपाही।

जंबूरा–संज्ञा पुं० [फ़ा० जंबूर + भौंरा] १. चर्ख जिस पर तोप चढ़ाई जाती है। २. भँवरकड़ी। भँवरकली। ३. सुनारों का बारीक काम करने का एक औजार।

जंभ–संज्ञा पुं० [सं०] १. दाढ़। चौभड़। २. जबड़ा। ३. एक दैत्य। ४. जँबीरी नीबू। ५. जँभाई।

जँभाई–संज्ञा स्त्री० [सं० जृंभा] मुँह के खुलने की एक स्वाभाविक क्रिया जो निद्रा

या आलस्य मालूम पड़ने आदि के कारण होती है। उबासी।

जँभाना–क्रि० अ० [सं० जृम्भण] जँभाई लेना।

जभारि–संज्ञा पु० [सं०] १. इंद्र। २ अग्नि। ३ वज्र। ४ विष्णु।

ज–संज्ञा पु० [सं०] १ मृत्युंजय। २ जन्म। ३ पिता। ४ विष्णु। ५ छंद शास्त्रानुसार एक गण जिसके आदि और अंत के वर्ण लघु और मध्य का गुरु होता है (।ऽ।)।

वि० १ वेगवान्। तेज। २ जीतनेवाला। प्रत्य० उत्पन्न। जात। जैसे—देशज।

जई–संज्ञा स्त्री० [हिं० जौ] १ जौ की जाति का एक अन्न। २ जौ का छोटा अंकुर जो मंगल-द्रव्य के रूप में ब्राह्मण, पुरोहित भेंट करते हैं। ३ अंकुर। ४ उन फलों की बतिया जिनमें बतिया के साथ फूल भी रहता है। जैसे—कुम्हड़े की जई।

*वि० दे० "जयी"।

जईफ–वि० [अ०] बुड्ढा। वृद्ध।

जईफी–संज्ञा स्त्री० [फा०] बुढ़ापा।

जकंद*–संज्ञा स्त्री० [फा० जगंद] छलाँग। चौकड़ी। उछाल।

जकंदना*†–क्रि० अ० [हिं० जकंद] १ कूदना। उछलना। २ टूट पड़ना।

जक–संज्ञा पु० [सं० यक्ष] १ धन रक्षक भूत प्रेत। यक्ष। २ कंजूस आदमी।

संज्ञा स्त्री० [हिं० झक] [वि० झक्की] १ जिद्द। हठ। अड़। २ धुन। रट।

जक–संज्ञा स्त्री० [फा०] १ हार। पराजय। २ हानि। घाटा। ३ पराभव। लज्जा।

जकड़–संज्ञा स्त्री० [हिं० जकड़ना] जकड़ने का भाव। कसकर बाँधना।

मुहा०–जकड़बंद करना=१ खूब कसकर बाँधना। २ पूरी तरह अपने अधिकार में करना।

जकड़ना–क्रि० स० [सं० युक्त + करण] कसकर बाँधना। कड़ा बाँधना।

†क्रि० अ० तनाव आदि के कारण अंगों का हिलने डुलने के योग्य न रह जाना।

जकना†*–क्रि० अ० [हिं० जक या चक] १ भौचक्का होना। चकपकाना। २ जक में बोलना।

जकात–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. दान। खैरात। २ कर। महसूल।

जकित†*–वि० [हिं० चकित] चकित। विस्मित। स्तंभित।

जखम–संज्ञा पु० [फा० ज़ख्म] १ क्षत। घाव। २ मानसिक दुःख का आघात।

मुहा०—जख्म ताजा या हरा हो आना=बीते हुए कष्ट का फिर लौट या याद आना।

जखमी–वि० [फा० जख्मी] जिसे जख्म लगा हो। घायल।

जखीरा–संज्ञा पु० [अ०] १ वह स्थान जहाँ एक ही प्रकार की बहुत सी चीजों का संग्रह हो। कोष। खजाना। २ संग्रह। ढेर। समूह। ३ वह स्थान जहाँ तरह तरह के पौधे और बीज बिकते हों।

जख्म–संज्ञा पु० दे० "जखम"।

जग–संज्ञा पु० [सं० जगत्] १ संसार। विश्व। दुनिया। २ संसार के लोग। जनसमुदाय। लोक।

†*संज्ञा पु० दे० "यज्ञ"।

जगजग†–वि० [हिं० जगजगाना] चमकीला। प्रकाशित। जो जगमगाता हो।

जगजगाना†–क्रि० अ० [अनु०] चमकना। जगमगाना।

जगजोनि–संज्ञा पु० दे० "जगद्योनि"।

जगड़वाल–संज्ञा पु० [सं०] आडम्बर। व्यर्थ का आयोजन।

जगण–संज्ञा पु० [सं०] पिंगल में एक गण जिसमें मध्य का अक्षर गुरु और आदि और अंत के लघु होते हैं। जैसे—महेश।

जगत्–संज्ञा पु० [सं०] १ वायु। २ महादेव। ३ जंगम। ४ विश्व। संसार।

जगत–संज्ञा स्त्री० [सं० जगति=घर की कुर्सी] कुएँ के चारों ओर बना हुआ चबूतरा।

संज्ञा पु० दे० "जगत्"।

जगतसेठ–संज्ञा पु० [सं० जगत् + श्रेष्ठ] बहुत बड़ा धनी या महाजन।

जगती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. संसार। भुवन। २. पृथ्वी। ३. एक वैदिक छंद।
जगदंबा, जगदंबिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।
जगदाधार—संज्ञा पुं० [सं०] ईश्वर।
जगदीश—संज्ञा पुं० [सं०] १. परमेश्वर। २. विष्णु। ३. जगन्नाथ।
जगदीश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] परमेश्वर।
जगदीश्वरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] भगवती।
जगद्गुरु—संज्ञा पुं० [सं०] १. परमेश्वर। २. शिव। ३. नारद। ४. अत्यंत पूज्य या प्रतिष्ठित पुरुष।
जगद्धात—संज्ञा पुं० [सं० जगद्धातृ] [स्त्री० जगद्धात्री] १. ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. महादेव।
जगद्धात्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुर्गा की एक मूर्ति। २. सरस्वती।
जगद्योनि—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव। २. विष्णु। ३. ब्रह्मा। ४. परमेश्वर। ५. पृथ्वी।
जगद्वंद्य—वि० [सं०] जिसकी वंदना सारा संसार करे। संसार में पूज्य या श्रेष्ठ।
जगना—क्रि० अ० [सं० जागरण] १. नींद से उठना। निद्रा त्याग करना। २. सचेत होना। सावधान होना। ३. देवी-देवता या भूत-प्रेत आदि का अधिक प्रभाव दिखाना। ४. उत्तेजित होना। उमडना या उमड़ना। ५. (आग का) जलना। दहकना। ६. जगमगाना। चमकना।
जगन्नाथ—संज्ञा पुं० [सं०] १. ईश्वर। २. विष्णु। ३. विष्णु की एक प्रसिद्ध मूर्ति जो उड़ीसा के पुरी नामक स्थान में है।
जगन्नियंता—संज्ञा पुं० [सं० जगन्नियंतृ] परमात्मा। ईश्वर।
जगन्माता—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।
जगन्मोहिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुर्गा। २. महामाया।
जगवंद*—वि० दे० "जगद्वंद्य"।
जगमग, जगमगा—वि० [अनु०] १. प्रकाशित। जिस पर प्रकाश पड़ता हो। २. चमकीला। चमकदार।
जगमगाना—क्रि० अ० [अनु०] खूब चमकना। झलकना। दमकना।
जगमगाहट—संज्ञा स्त्री० [हिं० जगमग] जगमगाने का भाव। चमक।
जगर मगर—वि० दे० "जगमग"।
जगवाना—क्रि० स० [हिं० जगना] जगाने का काम दूसरे से कराना।
जगह—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० जायगाह] १. वह अवकाश जिसमें कोई चीज रह सके। स्थान। स्थल। २. मौका। स्थल। अवसर। ३. पद। ओहदा। नौकरी।
जगात†—संज्ञा पुं० [अ० ज़कात] १. दान। खैरात। २. महसूल। कर।
जगाती†—संज्ञा पुं० [हिं० जगात] १. वह जो कर वसूल करे। २. कर उगहने का काम।
जगाना—क्रि० स० [हिं० जागना] १. 'जागने' या 'जगने' का प्रेरणार्थक रूप। नींद त्यागने के लिए प्रेरणा करना। २. चेत में लाना। होश दिलाना। बोध कराना। †३. फिर से ठीक स्थिति में लाना। †४. आग को तेज करना। सुलगाना। †५. यंत्र-मंत्र आदि का साधन करना। जैसे—मंत्र जगाना।
जगार†—संज्ञा स्त्री० [हिं० जागना] जागरण। सबका जाग उठना।
जगीला†—वि० [हिं० जागना] जागने के कारण अलसाया हुआ। उनींदा।
जघन—संज्ञा पुं० [सं०] १. कटि के नीचे आगे का भाग। पेड़ू। २. नितंब। चूतड़।
जघनचपला—संज्ञा स्त्री० [सं०] आर्या छंद का एक भेद।
जघन्य—वि० [सं०] १. अंतिम। चरम। २. गर्हित। त्याज्य। अत्यंत बुरा। ३. नीच। निकृष्ट। संज्ञा पुं० १. शूद्र। २. नीच जाति।
जचना—क्रि० अ० दे० "जँचना"।
जच्चा—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० जच्चः] प्रसूता स्त्री। वह स्त्री जिसे हाल में बच्चा हुआ हो। यौ०—जच्चाखाना = सूतिकागृह। सौरी।
जच्छ†—संज्ञा पुं० दे० "यक्ष"।

जजमान–संज्ञा पुं० दे० "यजमान"।
जज़िया–संज्ञा पुं० [अ०] १ दंड। २ एक प्रकार का कर जो मुसलमानी राज्य-काल में अन्य धर्मवालों पर लगता था।
जज़ीरा–संज्ञा पुं० [फा०] टापू। द्वीप।
जटना–क्रि० स० [हिं० जाट] धोखा देकर कुछ लेना। ठगना।
*क्रि० स० [सं० जटन] जड़ना।
जटल–संज्ञा स्त्री० [सं० जटिल] व्यर्थ और झूठ बात। गप्प। बकवास।
जटा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक में उलझे हुए सिर के बहुत से बड़े बड़े बाल, जैसे साधुओं के होते हैं। २ जड़ के पतले पतले सूत। झकरा। ३ एक साथ बहुत से रेशे आदि। ४ शाखा। ५ जटामासी। ६ जूट। पाट। ७ कौंछ। केवाँच। ८ वेदपाठ का एक भेद।
जटाजूट–संज्ञा पुं० [सं०] १ बहुत से लंबे बालों का समूह। २ शिव की जटा।
जटाधर–संज्ञा पुं० [सं०] शिव। महादेव।
जटाधारी–वि० [सं०] जो जटा रखे हो।
संज्ञा पुं० १ शिव। महादेव। २ मरसे की जाति का एक पौधा। मुर्गकेश।
जटाना–क्रि० स० [हिं० जटना] जटने का काम दूसरे से कराना।
क्रि० अ० ठगा जाना।
जटामासी–संज्ञा स्त्री० [सं० जटामांसी] एक सुगंधित पदार्थ जो एक वनस्पति की जड़ है। बालछड़। बालूचर।
जटायु–संज्ञा पुं० [सं०] १ रामायण का एक प्रसिद्ध गिद्ध। २ गुग्गुल।
जटित–वि० [सं०] जड़ा हुआ।
जटिल–वि० [सं०] १ जटावाला। जटाधारी। २ अत्यंत कठिन। दुरूह। दुर्बोध। ३ क्रूर। दुष्ट।
जठर–संज्ञा पुं० [सं०] १ पेट। कुक्षि। २ एक उदर रोग। ३ शरीर।
वि० १ वृद्ध। बूढ़ा। २ कठिन।
जठराग्नि–संज्ञा स्त्री० [सं०] पेट की वह गरमी जिससे अन्न पचता है।
जड़–वि० [सं०] १ जिसमें चेतनता न हो। अचेतन। २ चेष्टाहीन। स्तब्ध। ३ नासमझ। मूर्ख। ४ ठिठुरा हुआ। ५ शीतल। ठंढा। ६ गूँगा। मूक। ७ बहरा। ८ जिसके मन में मोह हो।
संज्ञा स्त्री० [सं० जटा] १ वृक्षों और पौधों का वह भाग जो ज़मीन के अंदर दबा रहता है और जिसके द्वारा उन्हें जल और आहार पहुँचता है। मूल। सोर। २ नींव। बुनियाद।
मुहा०—जड़ उखाड़ना या खोदना = १ ऐसा नष्ट करना जिसमें फिर अपनी पूर्व स्थिति तक न पहुँच सके। २ बुराई करना। अहित करना। जड़ जमना = दृढ़ या स्थायी होना। जड़ पकड़ना = जमना। दृढ़ होना।
३. हेतु। कारण। सबब। ४ आधार।
जड़ता–संज्ञा स्त्री० [सं० जड़ का भाव] १ अचेतनता। २ मूर्खता। बेवकूफी। ३ स्तब्धता। चेष्टा न करने का भाव। साहित्य में एक संचारी भाव।
जड़त्व–संज्ञा पुं० [सं०] १ चेतनता का विपरीत भाव। अचेतन। स्वयं हिल डोल या किसी प्रकार की चेष्टा न कर सकने का भाव। २ अज्ञता। मूर्खता।
जड़ना–क्रि० स० [सं० जटन] १ एक चीज़ को दूसरी चीज़ में बैठाना। पच्चीकारी करना। २ एक चीज़ को दूसरी चीज़ में ठोककर बैठाना। जैसे—नाल जड़ना। ३ प्रहार करना। ४ चुगली खाना।
जड़भरत–संज्ञा पुं० [सं०] अंगिरस-गोत्री एक ब्राह्मण जो जड़वत् रहते थे।
जड़वाना–क्रि० स० [हिं० जड़ना] जड़ने का काम दूसरे से कराना।
जड़हन–संज्ञा पुं० [हिं० जड़ + हनन = गाड़ना] वह धान जिसके पौधे एक जगह से उखाड़कर दूसरी जगह बैठाए जाते हैं। शालि।
जड़ाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० जड़ना] १ जड़ने का काम या भाव। २ जड़ने की मज़दूरी।
जड़ाऊ–वि० [हिं० जड़ना] जिस पर नग या रत्न आदि जड़े हों।

जड़ाना–क्रि० स० दे० "जड़वाना"। †क्रि० अ० [हिं० जाड़ा] सरदी की बाधा होना। शीत लगना।
जड़ाव–संज्ञा पुं० [हिं० जड़ना] १. जड़ने का काम या भाव। २. जड़ाऊ काम।
जड़ावर–संज्ञा पुं० [हिं० जाड़ा] जाड़े में पहनने के कपड़े। गरम कपड़े।
जड़ित*–वि० [सं० जटित] १. जड़ा हुआ। २. जिसमें नग आदि जड़े हों।
जड़िया–संज्ञा पुं० [हिं० जड़ना] नगों के जड़ने का काम करनेवाला। कुंदनसाज।
जड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० जड़] वह वनस्पति जिसकी जड़ औषध के काम में लाई जाय। विरई।
यौ०—जड़ी-बूटी = जंगली ओषधि।
जड़ुआ–वि० दे० "जड़ाऊ"।
जड़ैया†–संज्ञा स्त्री० [हिं० जाड़ा + ऐया (प्रत्य०)] जूड़ी का बुखार।
जत†*–वि० [सं० यत्] जितना। जिस मात्रा का।
जतन*†–संज्ञा पुं० दे० "यत्न"।
जतनी–संज्ञा पुं० [सं० यत्न] १. यत्न करनेवाला। २. चतुर। चालाक।
जतलाना–क्रि० स० दे० "जताना"।
जताना–क्रि० स० [हिं० जानना] १. ज्ञात कराना। बतलाना। २. पहले से सूचना देना। आगाह करना।
जती–संज्ञा पुं० दे० "यती"।
जतु–संज्ञा पुं० [सं०] १. वृक्ष का निर्य्यास। गोंद। २. लाख। लाह। ३. शिलाजीत।
जतुक–संज्ञा पुं० [सं०] १. हींग। २. लाख। लाह। ३. शरीर के चमड़े पर का दाग जो जन्म से ही होता है। लच्छन।
जतुका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पहाड़ी नामक लता। २. चमगादड़।
जतुगृह–संज्ञा पुं० [सं०] घास फूस आदि का बना हुआ घर। कुटी।
जतेक†*–क्रि० वि० [हिं० जितना + एक] जितना। जिस मात्रा का।
जत्था–संज्ञा पुं० [सं० यूथ] १. बहुत से जीवों का समूह। झुंड। गरोह। २. वर्ग। फ़िरक़ा।
जथा*–क्रि० वि० दे० "यथा"। संज्ञा पुं० दे० "जत्था"। संज्ञा स्त्री० [सं० गथ] पूँजी। धन।
जद†–क्रि० वि० [सं० यदा] जब। जब कभी। अव्य० [सं० यदि] यदि। अगर।
जदपि–क्रि० वि० दे० "यद्यपि"।
जदवार–संज्ञा स्त्री० [अ०] निर्विषी।
जदुपति*–संज्ञा पुं० दे० "यदुपति"।
जद्द†*–वि० [अ० ज़्यादः] ज्यादा। वि० प्रचंड। प्रबल।
जद्यपि†*–क्रि० वि० दे० "यद्यपि"।
जन–संज्ञा पुं० [सं०] १. लोक। लोग। २. प्रजा। ३. गँवार। देहाती। ४. अनुयायी। अनुचर। दास। ५. समूह। समुदाय। ६. भवन। ७. मजदूरी। ८. सात लोकों में से पाँचवाँ लोक।
जनक–संज्ञा पुं० [सं०] १. जन्मदाता। उत्पादक। २. पिता। बाप। ३. मिथिला के प्राचीन राजवंश की उपाधि। ४. सीता के पिता।
जनकनंदिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] सीता।
जनकपुर–संज्ञा पुं० [सं०] मिथिला की प्राचीन राजधानी।
जनकौर–संज्ञा पुं० [सं० जनक + पुर] १. जनकपुर। २. जनक राजा के भाई-बंधु।
जनखा–वि० [फ़ा० ज़नकः] १. जिसके हाव-भाव आदि औरतों के से हों। २ हिजड़ा। नपुंसक।
जनता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जनन का भाव। २. जन-समूह। सर्वसाधारण।
जनन–संज्ञा पुं० [सं०] १. उत्पत्ति। उद्भव। २. जन्म। ३. आविर्भाव। ४. तंत्र के अनुसार मंत्रों के दस संस्कारों में से पहला। ५. यज्ञ आदि में दीक्षित व्यक्ति का एक संस्कार। ६. वंश। कुल। ७. पिता। ८. परमेश्वर।
जनना–क्रि० स० [सं० जनन] १. जन्म देना। पैदा करना। २. ब्याना।

जननि*–संज्ञा स्त्री० दे० "जननी"।
जननी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. उत्पन्न करने-वाली। २. माता। माँ। ३ पृथ्वी। ४. अलता। ५. दया। कृपा। ६. जनी नामक गंध-द्रव्य।
जननेंद्रिय–संज्ञा स्त्री० [सं०] भग। योनि।
जनपद–संज्ञा पुं० [सं०] १ आबाद देश। २ बस्ती।
जनप्रिय–वि० [सं०] सबसे प्रेम रखने-वाला। सर्व-प्रिय।
जनम–संज्ञा पुं० दे० "जन्म"।
जनमघूँटी–संज्ञा स्त्री० [हिं० जनम+घूँटी] वह घूँटी जो बच्चों को जन्मते समय से दो-तीन वर्ष तक दी जाती है। मुहा०—(किसी बात का) जनमघूँटी में पड़ना=जन्म से ही (किसी बात की) आदत पड़ना।
जनमना–क्रि० अ० [सं० जन्म] पैदा होना। जन्म लेना।
जनमसँघाती†*–संज्ञा पुं० [हिं० जन्म+सँघाती] १ वह जिसका साथ जन्म से ही हो। २ वह जिसका साथ जन्म भर रहे।
जनमाना–क्रि० स० [हिं० जनम] जनमने का काम कराना। प्रसव कराना।
जनमेजय–संज्ञा पुं० दे० "जन्मेजय"।
जनयिता–संज्ञा पुं० [सं० जनयितृ] पिता।
जनयित्री–संज्ञा स्त्री० [सं०] माता।
जनरव–संज्ञा पुं० [सं०] १ किंवदंती। अफवाह। २ लोकनिंदा। बदनामी। ३ कोलाहल। शोर।
जनलोक–संज्ञा पुं० [सं०] सात लोकों में से एक।
जनवाई–संज्ञा स्त्री० दे० "जनाई"।
जनवाना–क्रि० स० [हिं० जनना] प्रसव कराना। लड़का पैदा कराना।
†क्रि० स० [हिं० जानना] समाचार दिल-वाना। सूचित कराना।
जनवास–संज्ञा पुं० [सं० जन+वास] १ सर्वसाधारण के ठहरने या टिकने का स्थान। २ बरातियों के ठहरने का स्थान। ३ सभा। समाज।
जनवासा–संज्ञा पुं० दे० "जनवास"।
जनश्रुति–संज्ञा स्त्री० [सं०] अफवाह। किंवदंती।
जनसंख्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] बसनेवाले मनुष्यों की गिनती या तादाद। आबादी।
जनहरण–संज्ञा पुं० [सं०] एक दंडक वृत्त।
जनाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० जनना] १ जनाने-वाली। दाई। २ जनाने की मजदूरी।
जनाउ*†–संज्ञा पुं० दे० "जनाव"।
जनाजा–संज्ञा पुं० [अ०] १. शव। लाश। २ अरथी या वह संदूक जिसमें लाश को रखकर गाड़ने, जलाने आदि ले जाते हैं।
जनानखाना–संज्ञा पुं० [फा०] स्त्रियों के रहने का स्थान। अंतःपुर।
जनाना–क्रि० स० दे० "जताना"।
क्रि० स० [हिं० जनना] उत्पन्न कराना। जनने का काम कराना।
जनाना–वि० [फा०] [स्त्री० जनानी] १. स्त्रियों का। स्त्री-संबंधी। २ हीजड़ा। ३ निर्बल। डरपोक।
संज्ञा पुं० १ जनखा। मेहरा। २ अंतःपुर। जनानखाना। ३ पत्नी। जोरू।
जनानापन–संज्ञा पुं० [फा० जनाना+पन (प्रत्य०)] मेहरापन। स्त्रीत्व।
जनाब–संज्ञा पुं० [अ०] बड़ों के लिए आदरसूचक शब्द। महाशय।
जनार्दन–संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।
जनाव†–संज्ञा पुं० [हिं० जनाना] जनाने की क्रिया या भाव। सूचना। इत्तला।
जनि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ उत्पत्ति। जन्म। पैदाइश। २ नारी। स्त्री। ३ माता। ४ जनी नामक गंधद्रव्य। ५ भार्या। पत्नी। ६ जन्मभूमि।
*†अव्य० मत। नहीं। न।
जनित–वि० [सं०] उत्पन्न। जन्मा हुआ।
जनिता–संज्ञा पुं० [सं० जनितृ] [स्त्री० जनित्री] १ उत्पन्न करनेवाला। २ पिता।
जनियाँ*–संज्ञा स्त्री० [फा० जान] प्रिय-तमा। प्रिया। प्रेयसी।

जनी—संज्ञा स्त्री० [सं० जन] १. दासी। अनुचरी। २. स्त्री। ३. माता। ४. कन्या। पुत्री। ५. एक गंध-द्रव्य।
वि० स्त्री० उत्पन्न या पैदा की हुई।
जनु—क्रि० वि० [हिं० जानना] मानो। (उत्प्रेक्षावाचक)
जनेऊ—संज्ञा पुं० [सं० यज्ञ] १. यज्ञोपवीत। ब्रह्मसूत्र। २. यज्ञोपवीत संस्कार।
जनेत—संज्ञा स्त्री० [सं० जन + एत (प्रत्य०)] वरयात्रा। बरात।
जनेव—संज्ञा पुं० दे० "जनेऊ"।
जनैया—वि० [हिं० जनना + ऐया (प्रत्य०)] जाननेवाला। जानकार।
जनौ†—क्रि० वि० [हिं० जानना] मानो। गोया।
जन्म—संज्ञा पुं० [सं०] १. गर्भ में से निकलकर जीवन धारण करना। उत्पत्ति। पैदाइश।
मुहा०—जन्म लेना = पैदा होना।
२. अस्तित्व में आना। आविर्भाव। ३. जीवन। जिंदगी।
मुहा०—जन्म हारना = १. व्यर्थ जन्म खोना। २. दूसरे का दास होकर रहना।
४. आयु। जीवनकाल। जैसे—जन्म भर।
जन्मकुंडली—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह चक्र जिससे किसी के जन्म के समय में ग्रहों की स्थिति का पता चले। (फलित ज्योतिष)
जन्मतिथि—संज्ञा स्त्री० दे० "जन्मदिन"।
जन्मदिन—संज्ञा पुं० [सं०] जन्म का दिन। वर्षगाँठ।
जन्मना—क्रि०अ० [सं०जन्म + ना (प्रत्य०)] १. जन्म लेना। पैदा होना। २. अस्तित्व में आना।
जन्मपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] जन्मपत्री।
जन्मपत्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह पत्र या खर्रा जिसमें किसी की उत्पत्ति के समय के ग्रहों की स्थिति आदि का ब्योरा रहता है।
जन्मभूमि—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्थान या देश जहाँ किसी का जन्म हुआ हो।
जन्मस्थान—संज्ञा पुं० [सं०] जन्मभूमि।
जन्मांतर—संज्ञा पुं० [सं०] दूसरा जन्म।
जन्माना—क्रि० स० [हिं० जन्मना] उत्पन्न करना। जन्म देना।
जन्माष्टमी—संज्ञा स्त्री० [सं०] भादों की कृष्णाष्टमी, जिस दिन भगवान् श्रीकृष्णचंद्र का जन्म हुआ था।
जन्मेजय—संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु। २. राजा परीक्षित के पुत्र का नाम जिन्होंने सर्पयज्ञ किया था।
जन्मोत्सव—संज्ञा पुं० [सं०] किसी के जन्म के स्मरण का उत्सव तथा पूजन।
जन्य—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० जन्या] १. साधारण मनुष्य। जनसाधारण। २. किंवदंती। अफ़वाह। ३. राष्ट्र। किसी एक देश के वासी। ४. लड़ाई। युद्ध। ५. पुत्र। बेटा। ६. पिता। ७. जन्म।
वि० १. जन-संबंधी। २. किसी जाति, देश या राष्ट्र से संबंध रखनेवाला। ३. राष्ट्रीय। जातीय। ४. जो उत्पन्न हुआ हो। उद्भूत।
जप—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी मंत्र या वाक्य का बार-बार धीरे-धीरे पाठ करना। २. पूजा आदि में मंत्र का संख्यापूर्वक पाठ।
जप तप—संज्ञा पुं० [हिं० जप + तप] संध्या, पूजा, जप और पाठ आदि। पूजा-पाठ।
जपना—क्रि० स० [सं० जपन] १. किसी वाक्य या शब्द को धीरे-धीरे देर तक कहना या दोहराना। २. संध्या, यज्ञ या पूजा आदि के समय संख्यानुसार बार बार उच्चारण करना। ३. खा जाना। ले लेना।
जपनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० जपना] १. माला। २. गोमुखी। गुप्ती।
जपनीय—वि० [सं०] जप करने योग्य।
जपमाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह माला जिसे लेकर लोग जप करते हैं।
जपा—संज्ञा स्त्री० [सं०] जवा। अड़हुल। संज्ञा पुं० [सं० जापक] जपनेवाला।
जफ़ा—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] सख्ती। जुल्म।
जफील—संज्ञा स्त्री० [अ० ज़फ़ीर] १. सीटी का शब्द। २. वह जिससे सीटी बजाई

जाय। मोटो।

जब–क्रि० वि० [सं० यावत्] जिस समय। जिस वक्त।

मुहा०—जब जब=कभी। जिस जिस समय। जब तब=कभी-कभी। जब देखो तब=सदा। सर्वदा। हमेशा।

जबड़ा–संज्ञा पु० [सं० जम्भ] मुँह में दोनों ओर ऊपर नीचे की वे हड्डियाँ जिनमें डाढ़ें जड़ी रहती हैं। कल्ला।

जबर–वि० [फा० जबर] १ बलवान्। बली। ताकतवर। २ दृढ़। मजबूत।

जबरई–संज्ञा स्त्री० [हिं० जबर] अन्याययुक्त अत्याचार। सख्ती। ज्यादती।

जबरदस्त–वि० [फा०] [संज्ञा जबरदस्ती] १ बलवान्। बली। शक्तिवाला। २ दृढ़। मजबूत।

जबरदस्ती–संज्ञा स्त्री० [फा०] अत्याचार। सीनाजोरी। ज़ियादती। अन्याय।

क्रि० वि० बलपूर्वक। दबाव डालकर।

जबरन्–क्रि० वि० [अ० जब्रन्] बलात्। जबरदस्ती। बलपूर्वक।

जबरा–वि० [हिं० जबर] बलवान्। बली। संज्ञा पु० [अ० जेबरा] घोड़े और गदहे के मध्य का एक बहुत सुंदर जंगली जानवर।

जबह–संज्ञा पु० [अ०] गला काटकर प्राण लेने की क्रिया। हिंसा।

जबहा–संज्ञा पु० [हिं० जीव] जीवट। साहस।

ज़बान–संज्ञा स्त्री० [फा०] १ जीभ। जिह्वा।

मुहा०—ज़बान खींचना=धृष्टतापूर्ण बातें करने के लिए कठोर दंड देना। ज़बान पकड़ना=बोलने न देना। कहने से रोकना। ज़बान पर आना=मुँह से निकलना। ज़बान में लगाम न होना=सोच-समझकर बोलने के अयोग्य होना। ज़बान हिलाना=मुँह से शब्द निकालना। दबी ज़बान से बोलना या कहना=अस्पष्ट रूप से बोलना। साफ साफ न कहना।

यौ०—वर-ज़बान=कंठस्थ। उपस्थित। बेज़बान=बहुत सीधा।

२ बात। बोल। ३ प्रतिज्ञा। वादा। कौल। ४ भाषा। बोल चाल।

ज़बानदराज़–वि० [फा०] [सं० ज़बानदराज़ी] धृष्टता-पूर्वक अनुचित बातें करनेवाला।

ज़बानी–वि० [हिं० ज़बान] १. जो केवल ज़बान से कहा जाय, किया न जाय। मौखिक। २ जो लिखित न हो। मौखिक। मुँह से कहा हुआ।

जबाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] जाबाल ऋषि की माता जो एक दासी थी।

जबून–वि० [तु०] बुरा। खराब।

ज़ब्त–संज्ञा पु० [अ०] १ किसी अपराध में राज्य के द्वारा हरण किया हुआ। सरकार से छीना हुआ। जैसे—रियासत ज़ब्त होना। २ अपनाया हुआ।

ज़ब्ती–संज्ञा स्त्री० [अ० ज़ब्त] ज़ब्त होने की क्रिया।

जब्र–संज्ञा पु० [अ०] ज्यादती। सख्ती।

जमकात, जमकातर*–संज्ञा पु० [सं० यम + हिं० कातर] पानी का भँवर। संज्ञा स्त्री० [सं० यम + कर्त्तरी] १ यम का छुरा या खाँड़ा। २ खाँड़ा।

जमघट–संज्ञा पु० दे० "यमघट"।

जमघट–संज्ञा पु० [हिं० जमना+घट्ट] मनुष्यों की भीड़। ठट्ट। जमावड़ा।

जमडाढ़–संज्ञा स्त्री० [सं० यम+डाढ़] कटारी की तरह का एक हथियार।

जमदग्नि–संज्ञा पु० [सं०] एक प्राचीन ऋषि।

जमधर–संज्ञा पु० दे० "जमडाढ़"।

जमन*–संज्ञा पु० दे० "यवन"।

जमना–क्रि० अ० [सं० यमन] १ तरल पदार्थ का ठोस या गाढ़ा हो जाना। जैसे—बरफ जमना। २ दृढ़तापूर्वक बैठना। अच्छी तरह स्थित होना। ३ स्थिर होना। निश्चल होना। ४ एकत्र होना। इकट्ठा होना। ५ हाथ से होनेवाले काम का पूरा पूरा अभ्यास होना। ६ बहुत से आदमियों के सामने होनेवाले किसी काम का उत्तमता से होना। जैसे–गाना जमना। ७ किसी व्यवस्था या काम का अच्छी तरह चलने योग्य हो जाना।

क्रि० अ० [सं० जन्म + ना (प्रत्य०)] उगना। उपजना। उत्पन्न होना।
संज्ञा स्त्री० दे० "यमुना"।
जमवट–संज्ञा स्त्री० [हिं० जमना] लकड़ी का वह गोल चक्कर जो कुआँ बनाने में भगाड़ में रखा जाता है।
जमा–वि० [अ०] १. संग्रह किया हुआ। एकत्र। इकट्ठा। २. सब मिलाकर। ३. जो अमानत के तौर पर या किसी खाते में रखा गया हो।
संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मूलधन। पूँजी। २. धन। रुपया-पैसा। ३. भूमि-कर। मालगुजारी। लगान। ४. जोड़। (गणित)।
जमाई–संज्ञा पुं० [सं० जामातृ] दामाद। जँवाई। जामाता।
संज्ञा स्त्री० [हिं० जमना] जमने या जमाने की क्रिया या भाव।
जमा खर्च–संज्ञा पुं० [फ़ा० जमा + खर्च] आय और व्यय।
जमात–संज्ञा स्त्री० [अ० जमाअत] १. मनुष्यों का समूह। गरोह या जत्था। २. कक्षा। श्रेणी। दरजा।
जमादार–संज्ञा पुं० [फ़ा०] [संज्ञा जमादारी] सिपाहियों या पहरेदारों आदि का प्रधान।
जमानत–संज्ञा स्त्री० [अ०] वह जिम्मेदारी जो जबानी, कोई कागज लिखाकर अथवा कुछ रुपया जमा करके ली जाती है। जामिनी।
जमाना–क्रि० स० [हिं० जमना] "जमना" का सकर्मक। जमने में सहायक होना।
जमाना–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. समय। काल। वक्त। २. बहुत अधिक समय। मुद्दत। ३. प्रताप या सौभाग्य का समय। ४. दुनिया। संसार। जगत्।
जमानासाज–वि० [फ़ा०] जो लोगों का रंग-ढंग देखकर व्यवहार करता हो।
जमाबंदी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] पटवारी का एक कागज जिसमें असामियों के लगान की रकमें लिखी जाती हैं।
जमामार–वि० [हिं० जमा + मारना] दूसरों का धन दबा रखने या ले लेनेवाला।
जमालगोटा–संज्ञा पुं० [सं० जयपाल] एक पौधे का बीज जो अत्यंत रेचक होता है। जयपाल। दंतीफल।
जमाव–संज्ञा पुं० [हिं० जमाना] १. जमने का भाव। २. जमाने का भाव।
जमावट–संज्ञा स्त्री० [हिं० जमाना] जमने का भाव।
जमावड़ा–संज्ञा पुं० [हिं० जमना = एकत्र होना] बहुत से लोगों का समूह। भीड़।
जमींकंद–संज्ञा पुं० [फ़ा० जमीन + कंद] सूरन। ओल।
जमींदार–संज्ञा पुं० [फ़ा०] जमीन का मालिक। भूमि का स्वामी।
जमींदारी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. जमींदार की वह जमीन जिसका वह मालिक हो। २. जमींदार का पद।
जमीन–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. पृथ्वी (ग्रह)। २. पृथ्वी का वह ऊपरी ठोस भाग जिस पर लोग रहते हैं। भूमि। धरती।
मुहा०—जमीन आसमान एक करना = बहुत बड़े बड़े उपाय करना। जमीन आसमान का फ़रक़ = बहुत अधिक अंतर। बहुत बड़ा फ़रक। जमीन देखना = १. गिर पड़ना। पटका जाना। २. नीचा देखना।
३. कपड़े आदि की वह सतह जिस पर बेल-बूटे आदि बने हों। ४. वह सामग्री जिसका व्यवहार किसी द्रव्य के प्रस्तुत करने में आधार रूप से किया जाय। ५. डौल। भूमिका। आयोजन।
जमुकना†–क्रि० अ० [?] पास पास होना। सटना।
जमुर्रद–संज्ञा पुं० [फ़ा०] पन्ना (रत्न)।
जमुहाना†–क्रि० अ० दे० "जँभाना"।
जमूरक, जमूरा†–संज्ञा पुं० [फ़ा० जंबूरक] एक प्रकार की छोटी तोप।
जमोग†–संज्ञा पुं० [हिं० जमोगना] जमोगने अर्थात् स्वीकार कराने की क्रिया।
जमोगना†–क्रि० स० [अ० जमा + योग] १.

हिसाब किताब की जाँच करना। २ स्वय उत्तरदायित्व से मुक्त होने के लिए दूसरे को भार सौंपना। सरेखना। ३ तरादीर कराना। ४ बात की जाँच कराना।

जम्हाना–क्रि० अ० दे० "जँभाना"।

जयत–वि० [स०] [स्त्री० जयती] १. विजयी। २ बहुरूपिया।
संज्ञा पु० [स०] १ रुद्र। २ इंद्र के पुत्र उपद्र का नाम। ३ स्कद। कार्तिकेय।

जयती–सज्ञा स्त्री० [स०] १ विजय करने-वाली। विजयिनी। २ ध्वजा। पताका। ३ हलदी। ४ दुर्गा। ५ पार्वती। ६ किसी महात्मा की जन्मतिथि पर होने-वाला उत्सव। वर्षगाठ का उत्सव। ७ एक बडा पड। जैत या जैता। ८ बैजती का पौधा। ९ जौ के छोटे पौधे जिन्हें विजयादशमी के दिन ब्राह्मण यज-माना को भेंट करते हैं। जई।

जय–सज्ञा स्त्री० [स०] १ युद्ध, विवाद आदि मे विपक्षियो का पराभव। जीत।
मुहा०—जय मनाना=विजय की कामना करना। समृद्धि चाहना।
२ विष्णु के एक पार्षद का नाम। ३ महाभारत का पूर्व नाम। ४ जयती। जैत का पेड। ५ लाभ। ६ अयन।

जयकरी–सज्ञा स्त्री० [स०] चौपाई छद।

जयजीव*–सज्ञा पु० [हिं० जय+जी] एक प्रकार का अभिवादन या प्रणाम जिसका अर्थ है–जय हो और जिओ।

जयद्रथ–सज्ञा पु० [स०] सिंधु-सौवीर का राजा जो दुर्योधन का बहनोई था।

जयना*†–क्रि० अ० [स० जयन्] जीतना।

जयपत्र–सज्ञा पु० [स०] वह पत्र जो परा-जित पुरुप अपने पराजय के प्रमाण मे विजयी को लिख देता है। विजय-पत्र।

जयपाल–सज्ञा पु० [स०] १ जमालगोटा। २ विष्णु। ३ राजा।

जयमगल–सज्ञा पु० [स०] राजा की सवारी का हाथी।

जयमाल–सज्ञा स्त्री० [स० जयमाला] १ वह माला जो विजयी को विजय पाने पर पहनाई जाय। २ वह माला जिसे स्वय-वर के समय कन्या अपने वरे हुए पुरुष के गले में डालती थी।

जयस्तभ–सज्ञा पु० [स०] विजय का स्मारक स्तभ या कटहरा।

जया–सज्ञा स्त्री० [स०] १ दुर्गा। २ पार्वती। ३ हरी दूब। ४ अरणी वृक्ष। ५ जैत का पेड। ६ हरीतकी। हड। ७ पताका। ध्वजा। ८ गुड़हल या फूल। वि० जय दिलानेवाली। जयकारिणी।

जयी–वि० [स० जयिन्] विजयी। जयशील।

जर*–सज्ञा पु० [स० जरा] वृद्धावस्था।

जर–सज्ञा पु० [फा०] १ सोना। स्वर्ण। २ धन। दौलत। रुपया।

जरकटी–सज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का शिकारी पक्षी।

जरकस, जरकसी*–वि० [फा० जरकश] जिस पर सोने के तार आदि लगे हों।

जरखेज–वि० [फा०] उपजाऊ। उर्वरा। (जमीन)

जरठ–वि० [स०] १ कर्कश। कठिन। २ वृद्ध। बुड्ढा। ३ जीर्ण। पुराना।

जरतार*–सज्ञा पु० [फा० जर+हिं० तार] सोने या चाँदी आदि का तार। जरी।

जरतुश्त–सज्ञा पु० दे० "जरदुश्त"।

जरत–वि० [स०] [स्त्री० जरती] १ बुड्ढा। वृद्ध। २ पुराना। बहुत दिनों का।

जरत्कारु–सज्ञा पु० [स०] एक ऋषि।

जरद–वि० [फा० जर्द] पीला। पीत।

जरदा–सज्ञा पु० [फा०] १ चावलों का एक व्यजन। २ पान मे खाने की सुगधित सुरती। ३ पीले रग का घोड़ा।

जरदालू–सज्ञा पु० [फा०] खुबानी।

जरदी–सज्ञा स्त्री० [फा०] १ पिलाई। पीला-पन। २ अडे के भीतर का पीला चेप।

जरदुश्त–सज्ञा पु० [फा०] पारस देश के पारसी धर्म का प्रतिष्ठाता आचार्य।

जरदोज–सज्ञा पु० [फा०] जरदोजी का काम करनेवाला।

जरदोज़ी–संज्ञा स्त्री॰ [फ़ा॰] वह दस्तकारी जो कपड़ों पर सलमे-सितारे आदि से की जाती है।
जरन†*-संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "जलन"।
जरना†*-क्रि॰ अ॰ दे॰ "जलना"। क्रि॰ स॰ दे॰ "जड़ना"।
जरनि*-संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "जलन"।
जरब-संज्ञा स्त्री॰ [अ॰] १. आघात। चोट। मुहा॰—जरब देना=चोट लगाना। पीटना। २. गुणा। (गणित)
जरबफ़्त-संज्ञा पुं॰ [फ़ा॰] वह रेशमी कपड़ा जिसमें कलाबत्तू के बेल-बूटे हों।
जरबाफ़ी-वि॰ [फ़ा॰] जिस पर जरबाफ़ का काम बना हो। संज्ञा स्त्री॰ जरदोज़ी।
जरबीला*†-वि॰ [फ़ा॰ जरब+ईला (प्रत्य॰)] भड़कीला और सुंदर।
जरर-संज्ञा पुं॰ [अ॰] १. हानि। नुकसान। क्षति। २. आघात। चोट।
जरांकुश-संज्ञा पुं॰ [सं॰ यलकुश] मूँज के प्रकार की एक सुगंधित घास।
जरा-संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] बुढ़ापा।
जरा-वि॰ [अ॰ जर्रा] थोड़ा। कम। क्रि॰ वि॰ थोड़ा। कम।
जराग्रस्त-वि॰ [सं॰] बुड्ढा। वृद्ध।
जराना*-क्रि॰ स॰ दे॰ "जलाना"।
जरायु-संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. वह झिल्ली, जिसमें बच्चा बँधा हुआ उत्पन्न होता है। आँवल। खेड़ी। उल्व। २. गर्भाशय।
जरायुज-संज्ञा पुं॰ [सं॰] वह प्राणी जो आँवल या खेड़ी में लिपटा हुआ गर्भ से उत्पन्न हो। पिंडज का एक भेद।
जराव*†-वि॰ दे॰ "जड़ाऊ"।
जरासंध-संज्ञा पुं॰ [सं॰] मगध देश का एक प्राचीन प्रसिद्ध राजा।
जरिया*†-संज्ञा पुं॰ दे॰ "जड़िया"।
जरिया-संज्ञा पुं॰ [अ॰] १. संबंध। लगाव। द्वार। २. हेतु। कारण। सबब।
जरी-संज्ञा स्त्री॰ [फ़ा॰] १. ताश नामक कपड़ा जो बादले से बुना जाता है। २. सोने के तारों आदि से बना हुआ काम।
जरीब-संज्ञा स्त्री॰ [फ़ा॰] वह जंजीर जिससे भूमि नापी जाती है।
जरूर-क्रि॰ वि॰ [अ॰] अवश्य। निःसंदेह।
जरूरत-संज्ञा स्त्री॰ [अ॰] आवश्यकता। प्रयोजन।
जरूरी-वि॰ [फ़ा॰] १. जिसके बिना काम न चले। प्रयोजनीय। २. जो अवश्य होना चाहिए। आवश्यक।
जरौट†*-वि॰ [हिं॰ जड़ना] जड़ाऊ।
जर्क़ बर्क़-वि॰ [फ़ा॰] तड़क-भड़कवाला। भड़कीला। चमकीला। भड़कदार।
जर्जर-वि॰ [सं॰] १. जीर्ण। जो पुराना होने के कारण बेकाम हो गया हो। २. टूटा-फूटा। खंडित। ३. वृद्ध। बुड्ढा।
जर्द-वि॰ [फ़ा॰] पीला। पीत।
जर्दी-संज्ञा स्त्री॰ [फ़ा॰] पीलापन।
जर्रा-संज्ञा पुं॰ [अ॰] १. अणु। २. बहुत छोटा टुकड़ा या खंड।
जर्राह-संज्ञा पुं॰ [अ॰] [संज्ञा जर्राही] फोड़ों आदि को चीरकर चिकित्सा करनेवाला। शस्त्र-चिकित्सक।
जलंधर-संज्ञा पुं॰ [सं॰] एक राक्षस जिसका वध विष्णु के उसकी स्त्री को धोखा देने पर हुआ था। संज्ञा पुं॰ दे॰ "जलोदर"।
जल-संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. पानी। २. उशीर। खस। ३. पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र।
जल-अलि-संज्ञा पुं॰ [सं॰ जल+अलि] एक काला कीड़ा जो पानी पर तैरा करता है। पैरौवा। भौंतुवा।
जलकर-संज्ञा पुं॰ [हिं॰ जल+कर] १. जलाशयों की उपज। ताल में होनेवाला पदार्थ। जैसे—मछली, सिंघाड़ा आदि। २. इस प्रकार के पदार्थों पर का कर।
जलक्रीड़ा-संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] वह क्रीड़ा जो जलाशय में की जाय। जल-विहार।
जलखावा†-संज्ञा पुं॰ दे॰ "जलपान"।
जलघड़ी-संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ जल+घड़ी] समय जानने का एक प्राचीन यं—

गाँद में भरे जल के ऊपर एक महीन छेद की कटोरी पड़ी रहती थी।

जलचर—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० जलचरी] पानी में रहनेवाले जंतु।

जल-चादर—संज्ञा स्त्री० [हिं० जल + चादर] जल का फैला हुआ पतला प्रवाह।

जलचारी—संज्ञा पुं० दे० "जलचर"।

जलज—वि० [सं०] जो जल में उत्पन्न हो। संज्ञा पुं० [सं०] १ कमल। २ शंख। ३ मछली। ४ जल-जंतु। ५ मोती।

जलजला—संज्ञा पुं० [फा०] भूकंप।

जलजात—वि० दे० "जलज"। संज्ञा पुं० [सं०] पद्म। कमल।

जल-डमरूमध्य—संज्ञा पुं० [सं०] दो बड़े समुद्रों के बीच का उन्हें जोड़नेवाला पतला समुद्र। (भूगोल)

जलतरंग—सं० पुं० [सं०] एक बाजा जो जल से भरी कटोरियों को एक क्रम से रख-कर बजाया जाता है।

जलत्रास—संज्ञा पुं० [सं०] वह भय जो कुत्ते, शृगाल आदि जीवों के काटने पर जल देखने से उत्पन्न होता है। जलातंक।

जलथंभ—संज्ञा पुं० दे० 'जलस्तंभ"।

जलद—वि० [सं०] जल देनेवाला। संज्ञा पुं० [सं०] १ मेघ। बादल। २ मोथा। ३ कपूर।

जलधर—संज्ञा पुं० [सं०] १ बादल। २ मुस्ता। ३ समुद्र।

जलधरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह अर्घा जिसमें शिवलिंग रहता है। जलहरी।

जलधारा—संज्ञा स्त्री० [सं] १ पानी का प्रवाह। पानी की धार। २ जल-धारा के नीचे बैठे रहने की तपस्या। संज्ञा पुं० बादल। मेघ।

जलधि—संज्ञा पुं० [सं०] १ समुद्र। २ दस शंख की संख्या।

जलन—संज्ञा स्त्री० [हिं० जलना] १ जलने की पीड़ा या दुःख। दाह। २ बहुत अधिक ईर्ष्या। डाह।

जलना—क्रि० अ० [सं० ज्वलन] १ अग्नि के संयोग से अंगारे या लपट के रूप में हो जाना। दग्ध होना। बलना। २. आँच के कारण भाप या कोयले आदि के रूप में हो जाना। ३ आँच लगने के कारण किसी अंग का पीड़ित होना। झुलसना। मुहा०—जले पर नमक छिड़कना = किसी दुःखी या व्यथित मनुष्य को और दुःख देना। ४ ईर्ष्या या द्वेष आदि के कारण कुढ़ना। मुहा०—जली-कटी या जली-भुनी बात = लगती हुई बात। कटु बात जो द्वेष, डाह या क्रोध आदि के कारण कही जाय।

जलनिधि—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।

जलपक्षी—संज्ञा पुं० [सं० जलपक्षिन्] वह पक्षी जो जल के आस-पास रहता हो।

जलपाटल—संज्ञा पुं० [हिं० जल + पटल] काजल।

जलपान—संज्ञा पुं० [सं०] थोड़ा और हलका भोजन। कलेवा। नाश्ता।

जलपीपल—संज्ञा स्त्री० [सं० जलपिप्पली] पीपल के आकार की एक प्रकार की ओषधि।

जलप्रपात—संज्ञा पुं० [सं०] किसी नदी आदि का ऊँचे पहाड़ पर से नीचे गिरना।

जलप्रवाह—संज्ञा पुं० [सं०] १ पानी का बहाव। २ नदी में बहा देने की क्रिया।

जलप्लावन—संज्ञा पुं० [सं०] १ पानी की बाढ़ जिससे आस-पास की भूमि जल में डूब जाय। २ एक प्रकार का प्रलय।

जलबेंत—संज्ञा पुं० [सं० जलवेत्र] जलाशयों के पास होनेवाला बेंत।

जलभँवरा—संज्ञा पुं० [हिं० जल + भँवरा] एक काला कीड़ा जो पानी पर शीघ्रता से दौड़ता है। भौंतुवा।

जलमानुष—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० जलमानुषी] परीरु नामक कल्पित जलजन्तु जिसकी नाभि से ऊपर का भाग मनुष्य का सा और नीचे का मछली के ऐसा होता है।

जलयान—संज्ञा पुं० [सं०] वह सवारी जो जल में काम आती हो। जैसे—नाव।

जलराशि—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।

जलवर्त्त—संज्ञा पुं० दे० 'जलावर्त्त"।

जलवाना–क्रि० स० [हिं० जलाना] जलाने का काम दूसरे से कराना।

जलशायी–संज्ञा पुं० [सं० जलशायिन्] विष्णु।

जलसा–संज्ञा पुं० [अ०] १. आनंद या उत्सव का समारोह जिसमें खाना, पीना, गाना, बजाना आदि हो। २. सभा-समिति आदि का बड़ा अधिवेशन। बैठक।

जलसेना–संज्ञा स्त्री [सं०] समुद्र में जहाजों पर लड़नेवाली फ़ौज।

जलस्तम्भ–संज्ञा पुं० [सं०] एक दैवी घटना जिसमें जलाशयों या समुद्र के ऊपर एक मोटा स्तंभ-सा बन जाता है। सूँड़ी।

जलस्तम्भन–संज्ञा पुं० [सं०] मंत्रादि से जल की गति का अवरोध करना। पानी बाँधना।

जलहरण–संज्ञा पुं० [सं०] बत्तीस अक्षरों की एक वर्णवृत्ति या दंडक।

जलहरी–संज्ञा स्त्री० [सं० जलधरी] १. अर्घा जिसमें शिव-लिंग स्थापित किया जाता है। २. मिट्टी का जल भरा घड़ा जो छेद करके शिवलिंग के ऊपर टाँगा जाता है।

जलाजल–संज्ञा पुं० [हिं० झलाझल] गोटे आदि की झालर। झलाझल।

जलातंक–संज्ञा पुं० दे० "जलत्रास"।

जलातन–वि० [हिं० जलना + तन] १. क्रोधी। बिगड़ैल। बदमिज़ाज। २. ईर्ष्यालु। डाही।

जलाधिप–संज्ञा पुं० [सं०] वरुण।

जलाना–क्रि० स० [हिं० जलना] १. अग्नि के संयोग से अंगारे या लपट के रूप में कर देना। प्रज्वलित करना। भस्म करना। २. किसी पदार्थ को आँच से भाप या कोयले आदि के रूप में करना। ३. आँच के द्वारा विकृत या पीड़ित करना। झुलसाना। ४. किसी के मन में संताप या ईर्ष्या उत्पन्न करना।

जलापा–संज्ञा पुं० [हिं० जलना + आपा (प्रत्य०)] डाह या ईर्ष्या की जलन।

जलाल–संज्ञा पुं० [अ०] १. तेज। प्रकाश। २. प्रभाव। आतंक।

जलावन–संज्ञा पुं० [हिं० जलाना] १. ईंधन। २. किसी वस्तु का वह अंश जो तपाए या जलाए जाने पर जल जाता है। जलता।

जलाशय–संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ पानी जमा हो। जैसे—तालाब, नदी।

जलाहल–वि० [हिं० जल-जल] जलमय।

जलील–वि० [अ०] १. तुच्छ। बेकदर। २. जिसने नीचा देखा हो। अपमानित।

जलूस–संज्ञा पुं० [अ०] बहुत से लोगों का सज-धजकर किसी सवारी के साथ प्रस्थान। उत्सव-यात्रा।

जलेबी–संज्ञा स्त्री० [हिं० जलाव] १. एक प्रकार की मिठाई जो कुंडलाकार होती है। २. गोल घेरा। कुंडली। लपेट। ३. एक प्रकार की आतशबाज़ी।

जलेश–संज्ञा पुं० [सं०] १. वरुण। २. समुद्र। ३. जलाधिप।

जलोदर–संज्ञा पुं० [सं०] एक रोग जिसमें पेट के चमड़े के नीचे की तह में पानी एकत्र होने से पेट फूल जाता है।

जलौका–संज्ञा स्त्री० [सं०] जोंक।

जल्द–क्रि० वि० [अ०] [संज्ञा जल्दी] १. शीघ्र। चटपट। २. तेज़ी से।

जल्दबाज–वि० [फ़ा०] [संज्ञा जल्दबाज़ी] जो किसी काम में बहुत जल्दी करता हो।

जल्दी–संज्ञा स्त्री० [अ०] शीघ्रता। फुरती। †क्रि० वि० दे० "जल्द"।

जल्प–संज्ञा पुं० [सं०] १. कथन। कहना। २. बकवाद। व्यर्थ की बात। प्रलाप।

जल्पक–वि० [सं०] बकवादी। वाचाल।

जल्पन–संज्ञा पुं० [सं०] १. बकवाद। प्रलाप। व्यर्थ की बात। २. डींग।

जल्पना–क्रिया० अ० [सं० जल्पन्] व्यर्थ बकवाद करना। डींग मारना। शीटना।

जल्लाद–संज्ञा पुं० [अ०] १. प्राणदंड पाए हुए अपराधियों का वध करने पर नियुक्त पुरुष। घातक। बधुआ। २. क्रूर व्यक्ति।

जवनिका–संज्ञा स्त्री० दे० "यवनिका"।

जवाँमर्द–वि० [फ़ा०] [संज्ञा जवाँमर्दी] शूरवीर। बहादुर।

जवा—संज्ञा स्त्री दे० "जपा"।
†संज्ञा पु० [सं० यव] लहसुन का दाना।
जवाई†—संज्ञा स्त्री० [हिं० जाना] जाने की क्रिया या भाव। गमन।
जवाखार—संज्ञा पु० [सं० यवक्षार] एक नमक जो जौ के क्षार से बनता है।
जवान—वि० [फा०] १ युवा। तरुण। २ वीर। बहादुर।
†संज्ञा पु० १ मनुष्य। पुरुष। २ सिपाही।
जवानी—संज्ञा स्त्री० [सं०] अजवायन।
संज्ञा स्त्री० [फा०] यौवन। तरुणाई।
मुहा०—जवानी उतरना या ढलना = उमर ढलना। बुढ़ापा आना। जवानी चढ़ना = यौवन का आगमन होना।
जवाब—संज्ञा पु० [अ०] १ किसी प्रश्न या बात के समाधान के लिए कही हुई बात। उत्तर। २ वह बात जो किसी बात के बदले में की जाय। बदला। ३ मुकाबले की चीज़। जोड़। ४ नौकरी छूटने की आज्ञा। मौकूफी।
जवाबदावा—संज्ञा पु० [अ०] वह उत्तर जो वादी के निवेदन-पत्र के उत्तर में प्रतिवादी लिखकर अदालत में देता है।
जवाबदेह—वि० [फा०] [संज्ञा जवाबदेही] उत्तरदाता। ज़िम्मेदार।
जवाबी—वि० [फा०] जवाब का। जिसका जवाब देना हो।
जवार*—संज्ञा पु० दे० "जवाल"।
जवारा—संज्ञा पु० [हिं० जौ] जौ के हरे अंकुर। जई।
जवाल—संज्ञा पु० [अ० जवाल] १ अवनति। उतार। घटाव। २ जंजाल। आफ़त।
जवास, जवासा—संज्ञा पु० [सं० यवासक] एक प्रकार का कँटीला पौधा।
जवाहर—संज्ञा पु० [अ०] रत्न। मणि।
जवाहरात—संज्ञा पु० [अ०] रत्न-समूह।
जवाहिर—संज्ञा पु० दे० "जवाहर"।
जवैया†—वि० [हिं० जाना + ऐया (प्रत्य०)] जानेवाला। गमनशील।
. , पु० [फा०] १ उत्सव। जलसा। २ आनंद। हर्ष।
जस*‡—क्रि० वि० [सं० यथा] जैसा।
†संज्ञा पु० दे० "यश"।
जसोदा—संज्ञा स्त्री० दे० "यशोदा"।
जसोवै*—संज्ञा स्त्री० दे० "यशोदा"।
जस्ता—संज्ञा पु० [फा० जसद] खाकी रंग की एक प्रसिद्ध धातु।
जहँ—क्रि० वि० दे० "जहाँ"।
जहँडना, जहँडाना†—क्रि० अ० [सं० जहन] १ घाटा उठाना। २ धोखे में आना।
जहतिया†—संज्ञा पु० [हिं० जगात] जगात या लगान वसूल करनेवाला।
जहत्स्वार्था—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह लक्षणा जिसमें पद या वाक्य अपने वाच्यार्थ को बिलकुल छोड़े हुए हो। लक्षण-लक्षणा।
जहदना—क्रि० अ० [हिं० जहदा] १ कीचड़ होना। २ थक जाना।
जहदा—संज्ञा पु० [?] दलदल।
जहना*†—क्रि० अ० [सं० जहन] १. त्यागना। छोड़ना। २ नाश करना।
जहन्नुम—संज्ञा पु० [अ०] नरक। दोजख।
मुहा०—जहन्नुम में जाय = चूल्हे में जाय। हमसे कोई सम्बन्ध नहीं।
जहमत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ आपत्ति। मुसीबत। आफ़त। २ झंझट। बखेड़ा।
जहर—संज्ञा स्त्री० [अ० जह्र] १ विष। गरल।
मुहा०—ज़हर उगलना = मर्मभेदी या कटु बात कहना। ज़हर का घूँट पीना = किसी अनुचित बात को देखकर क्रोध को मन ही मन दबा रखना। ज़हर का बुझाया हुआ = बहुत अधिक उपद्रवी या दुष्ट।
२ अप्रिय बात या काम।
मुहा०—ज़हर करना या कर देना = बहुत अधिक अप्रिय या असह्य कर देना। ज़हर लगना = बहुत अप्रिय जान पड़ना।
वि० १ घातक। मार डालनेवाला। २ बहुत अधिक हानि पहुँचानेवाला।
जहरबाद—संज्ञा पु० [फा०] एक प्रकार का

बहुत भयंकर और विषैला फोड़ा।

जहरमोहरा–संज्ञा पुं० [फ़ा० ज़हमुहरा] १. एक काला पत्थर जिसमें साँप का विष दूर करने का गुण माना जाता है। २. हरे रंग का एक विषघ्न पत्थर।

जहरीला–वि० [अ० ज़हर + ईला (प्रत्य०)] जिसमें ज़हर हो। विषैला।

जहल्लक्षणा–संज्ञा स्त्री० दे० "जहत्स्वार्था"।

जहाँ–क्रि० वि० [सं० यत्र] जिस स्थान पर। जिस जगह।

मुहा०–जहाँ का तहाँ = जिस जगह पर हो, उसी जगह पर। जहाँ तहाँ = १. इतस्ततः। इधर-उधर। २. सब जगह। सब स्थानों पर।

जहाँगीरी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. हाथ में पहनने का एक जड़ाऊ गहना। २. एक प्रकार की चूड़ी।

जहाँपनाह–संज्ञा पुं० [फ़ा०] संसार का रक्षक। (बादशाहों का संबोधन)

जहाज़–संज्ञा पुं० [अ०] समुद्र में चलनेवाली बड़ी नाव।

मुहा०–जहाज़ का कौवा या काग = दे० "जहाजी कौआ"।

जहाजी–वि० [अ०] जहाज से संबंध रखनेवाला।

यौ०–जहाजी कौआ = १. वह कौआ जो किसी जहाज के छूटने के समय उसपर बैठ जाता है और जहाज के बहुत दूर समुद्र में निकल जाने पर और कहीं शरण न पाकर उड़-उड़कर फिर उसी जहाज पर आता है। २. ऐसा मनुष्य जिसे एक को छोड़कर दूसरा ठिकाना न हो।

जहान–संज्ञा पुं० [फ़ा०] संसार। लोक। जगत्।

जहालत–संज्ञा स्त्री० [अ०] अज्ञान।

जहिया*†–क्रि० वि० [सं० यद्] जिस समय। जब।

जहीं*†–अव्य० [सं० यत्र] जहाँ ही। जिस स्थान पर।

अव्य० दे० "ज्यों ही"।

जहीन–वि० [अ०] १. बुद्धिमान्। समझदार। २. धारणा शक्तिवाला।

जहेज़–संज्ञा पुं० [अ०] वह धन-संपत्ति जो विवाह में कन्यापक्ष की ओर से वर को दी जाती है। दहेज।

जह्नु–संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु। २. एक राजर्षि। जब भागीरथ गंगा को लेकर आ रहे थे, तब इन्होंने गंगा को पी लिया था और फिर कान से निकाल दिया था। तभी से गंगा का नाम जाह्नवी पड़ा।

जाँगड़ा–संज्ञा पुं० [देश०] भाट। बंदी।

जाँगर–संज्ञा पुं० [हिं० जान या जाँघ] शरीर का बल। बूता।

जाँगल–संज्ञा पुं० [सं०] १. तीतर। २. मांस। ३. ऊसर देश।

वि० जंगल-संबंधी। जंगली।

जाँगलू–वि० [फ़ा० जंगल] गँवार। जंगली।

जाँघ–संज्ञा स्त्री० [सं० जंघ = पिंडली] घुटने और कमर के बीच का अंग। ऊरु।

जाँघिया–संज्ञा पुं० [हिं० जाँघ + इया (प्रत्य०)] पायजामे की तरह का घुटने तक का एक पहनावा। काछा।

जाँच–संज्ञा स्त्री० [हिं० जाँचना] १. जाँचने की क्रिया या भाव। परीक्षा। परख। २. गवेषणा। तहकीकात।

जाँचक*†–संज्ञा पुं० दे० "जाचक"।

जाँचना–क्रि० स० [सं० याचन] १. सत्यासत्य आदि का अनुसंधान करना। परीक्षा करना। †२. प्रार्थना करना। माँगना।

जाँजरा*†–वि० दे० "जाजरा"।

जाँत, जाँता–संज्ञा पुं० [सं० यंत्र] १. आटा पीसने की बड़ी चक्की। २. दे० "जाँता"।

जाँब*†–संज्ञा पुं० दे० "जामुन"।

जांबवंत–संज्ञा पुं० दे० "जांबवान्"।

जांबवती–संज्ञा स्त्री० [सं० जांबवती] जांबवान् की कन्या जिसके साथ श्रीकृष्ण ने विवाह किया था।

जांबवान्–संज्ञा पुं० [सं०] सुग्रीव का मंत्री एक भालू जो राम की सेना में लड़ा था।

जांबुवान्–संज्ञा पुं० दे० "जांबवान्"।

जाँवर*†–संज्ञा पुं० [हिं० जाना] गमन।

जाता।
जा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ माता। मा। २ देवरानी। देवर की स्त्री।
वि० स्त्री० उत्पन्न। संभूत।
*|सर्व० [हिं० जो] जिस।
वि० [फा०] मुनासिब। उचित।
जाइ*|—वि० दे० "जाय"।
जाई—संज्ञा [सं० जा] बेटी। पुत्री।
जाकड़—संज्ञा पु० [हिं० जाकर] माल इस शर्त पर ले आना कि यदि वह पसंद न होगा, तो फेर दिया जायगा। पक्का का उल्टा।
जाखिनी—संज्ञा स्त्री० दे० "यक्षिणी"।
जाग—संज्ञा पु० [सं० यज्ञ] यज्ञ। मख।
‡संज्ञा स्त्री० [हिं० जगह] जगह। स्थान।
संज्ञा स्त्री० [हिं० जगह] जागने की क्रिया या भाव। जागरण।
[फा० जाग=] कौवा।
जागती जोत—संज्ञा स्त्री० [हिं० जागना + ज्योति] किसी देवता विशेषतः देवी की प्रत्यक्ष महिमा या चमत्कार।
जागना—क्रि० अ० [सं० जागरण] १ सोकर उठना। नींद त्यागना। २ निद्रा रहित रहना। जाग्रत अवस्था में होना। ३ सजग होना। सावधान होना। ४ उदित होना। चमक उठना।
मुहा०—जागता=१ प्रत्यक्ष। साक्षात्। २ प्रकाशित। भासमान।
५ समृद्ध होना। बढ़-चढ़कर होना। ६ प्रसिद्ध होना। विख्यात होना। जोर-शोर से उठना। ७ प्रज्वलित होना। जलना।
जागबलिक*|—संज्ञा पु० दे० "याज्ञवल्क्य"।
जागरण—संज्ञा पु० [सं०] १ निद्रा का अभाव। जागना। २ किसी पर्व के उपलक्ष में सारी रात जागना।
जागरित—संज्ञा पु० [सं०] १ नींद का न होना। जागरण। २ वह अवस्था जिसमें मनुष्य को इंद्रियों द्वारा सब प्रकार के कार्यों का अनुभव होता रहे।
जागरूक—संज्ञा पु० [सं०] वह जो जाग्रत अवस्था में हो।
जागर्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जागरण। जाग्रति। २ चेतनता।
जागी‡*—संज्ञा पु० [सं० यज्ञ] भाट।
जागीर—संज्ञा स्त्री० [फा०] राज्य की ओर से मिली भूमि या प्रदेश। सरकार से मिला तअल्लुका।
जागीरदार—संज्ञा पु० [फा०] १ वह जिसे जागीर मिली हो। जागीर का मालिक। २ अमीरी। रईसी।
जाग्रत—वि० [सं०] १ जो जागता हो। २ वह अवस्था जिसमें सब बातों का परिज्ञान हो।
जाग्रति—संज्ञा स्त्री० [सं० जाग्रत] जागरण। जागने की क्रिया।
जाचक*|—संज्ञा पु० [सं० याचक] १ माँगनेवाला। २ भीख माँगनेवाला। भिखमंगा।
जाचकता*|—संज्ञा स्त्री० [सं० याचकत्व] १ माँगने का भाव। २ भीख माँगने की क्रिया। भिखमंगी।
जाचना*|—क्रि० स० [सं० याचन] माँगना।
जाजरा*|—वि० [सं० जर्जर] जर्जर। जीर्ण।
जाजरूर—संज्ञा पु० [फा० जा + अ० जरूर] पाखाना। टट्टी।
जाजिम—संज्ञा स्त्री० [तु० जाजम] १ बिछाने की छपी हुई चादर या फर्श। २ गलीचा। कालीन।
जाज्वल्य—वि० [सं०] प्रज्वलित। प्रकाशयुक्त।
जाज्वल्यमान—वि० [सं०] १ प्रज्वलित। दीप्तिमान्। २ तेजस्वी। तेजवान्।
जाट—संज्ञा पु० [?] भारतवर्ष की एक प्रसिद्ध जाति जो पंजाब, सिंध और राजपूताने में फैली हुई है।
जाठ—संज्ञा पु० [सं० यष्टि] १ वह बड़ा लट्ठा जो कोल्हू की कूँडी के बीच में पड़ा रहता है। २ तालाब के बीच में गड़ा हुआ लट्ठा।

जाड़ा—संज्ञा पुं० [सं० जड़] १. वह ऋतु जिसमें बहुत ठंढक पड़ती है। शीतकाल। २. सरदी। शीत। पाला। ठंढ।

जाड्य—संज्ञा पुं० [सं०] जड़ता।

जात—संज्ञा पुं० [सं०] १. जन्म। २. पुत्र। बेटा। ३. जीव। प्राणी। वि० १. उत्पन्न। जन्मा हुआ। २. व्यक्त। प्रकट। ३. प्रशस्त। अच्छा। ४. जिसने जन्म लिया हो। पैदा। जैसे—नवजात। संज्ञा स्त्री० दे० "जाति"।

जात—संज्ञा स्त्री० [अ०] शरीर। देह। संज्ञा स्त्री० दे० "जाति"।

जातक—संज्ञा पुं० [सं०] १. बच्चा। २. बत्तख। ३. भिक्षु। ४. फलित ज्योतिष का एक भेद। ५. वे बौद्ध कथाएँ जिनमें महात्मा बुद्धदेव के पूर्व जन्मों की बातें हैं।

जातकर्म्म—संज्ञा पुं० [सं०] हिन्दुओं के दस संस्कारों में से चौथा संस्कार जो बालक के जन्म के समय होता है।

जातना*—संज्ञा स्त्री० दे० "यातना"।

जात पाँत—संज्ञा स्त्री० [सं० जाति + पंक्ति] जाति। बिरादरी।

जाता—संज्ञा स्त्री० [सं०] कन्या। पुत्री। वि० स्त्री० उत्पन्न।

जाति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जन्म। पैदाइश। २. हिंदुओं में समाज का वह विभाग जो पहले पहल कर्म्मानुसार किया गया था, पर पीछे से जन्मानुसार हो गया। ३. निवास-स्थान या वंशपरंपरा के विचार से मनुष्य-समाज का विभाग। ४. वह विभाग जो धर्म्म, आकृति आदि की समानता के विचार से किया जाय। कोटि। वर्ग। ५. सामान्य सत्ता। ६. वर्ण। ७. कुल। वंश। ८. गोत्र। ९. मात्रिक छंद।

जातिच्युत—वि० [सं०] जाति से गिरा या निकाला हुआ। जाति-बहिष्कृत।

जाति पाँति—संज्ञा स्त्री० [सं० जाति + हिं० पाँति (पंक्ति)] जाति या पंक्ति। वर्ण और उसके उपविभाग।

जाती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चमेली की जाति का एक फूल। जाही। जाई। २. छोटा आँवला। ३. मालती।

जाती—वि० [अ० जात] १. व्यक्तिगत। २. अपना। निज का।

जातीय—वि० [सं०] जाति-संबंधी।

जातीयता—संज्ञा स्त्री० [सं०] जाति का भाव। जाति की ममता। जातित्व।

जातुधान—संज्ञा पुं० [सं०] राक्षस।

जादव*†—संज्ञा पुं० दे० "यादव"।

जादवपति*†—संज्ञा पुं० [सं० यादवपति] श्रीकृष्णचंद्र।

जादसपति*†—संज्ञा पुं० [सं० यादसांपति] जल-जंतुओं का स्वामी, वरुण।

जादू—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. वह आश्चर्य-जनक कृत्य जिसे लोग अलौकिक और अमानवी समझते हों। इंद्रजाल। तिलस्म। २. वह अद्भुत खेल या कृत्य जो दर्शकों की दृष्टि और बुद्धि को धोखा देकर किया जाय। ३. टोना। टोटका। ४. दूसरे को मोहित करने की शक्ति। मोहिनी।

जादूगर—संज्ञा पुं० [फ़ा०] [स्त्री० जादूगरनी] वह जो जादू करता हो।

जादूगरी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] जादू करने की क्रिया। जादूगर का काम।

जादो*†—संज्ञा पुं० दे० "यादव"।

जादोराय*†—संज्ञा पुं० [सं० यादव] श्रीकृष्णचंद्र।

जान—संज्ञा स्त्री० [सं० ज्ञान] १. ज्ञान। जानकारी। २. खयाल। अनुमान। यौ०—जान पहचान=परिचय। वि० सुजान। जानकार। चतुर। संज्ञा पुं० दे० "यान"। संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. प्राण। जीव। प्राणवायु। दम। मुहा०—जान के लाले पड़ना=प्राण बचना कठिन दिखाई देना। जी पर आ बनना। जान को जान न समझना=अत्यंत अधिक कष्ट या परिश्रम सहना। जान खाना=तंग करना। बार बार घेरकर दिक़ करना।

जान छुड़ाना या बचाना=१ प्राण बचाना। २ किसी झंझट से छुटकारा करना। गाट टालना। (किसी पर) जान जाना= किसी पर अत्यंत अधिक प्रेम होना। जान जोखों=प्राणहानि की आशंका। प्राण जाने का डर। जान निकलना=१ प्राण निकलना। मरना। २ भय के मारे प्राण सूखना। जान पर खेलना=प्राणों को भय में डालना। जान को जोखों में डालना। जान से जाना=प्राण खोना। मरना। २ बल। शक्ति। बूता। सामर्थ्य। दम। ३ सार। तत्त्व। ४ अच्छा या सुन्दर करनेवाली वस्तु। शोभा बढ़ानेवाली वस्तु।

मुहा०—जान आना=शोभा बढ़ना।

जानकार–वि० [हिं० जानना+कार (प्रत्य०)] [संज्ञा जानकारी] १ जाननेवाला। अभिज्ञ। २ विज्ञ। चतुर।

जानकी–संज्ञा स्त्री० [सं०] जनक की पुत्री, सीता।

जानकी-जानि–संज्ञा पु० [सं०] रामचंद्र।

जानकी-जीवन–संज्ञा पु० [सं०] रामचंद्र।

जानकीनाथ–संज्ञा पु० [सं०] श्रीराम।

जानदार–वि० [फा०] जिसमें जान हो। सजीव। जीवधारी।

जानना–क्रि० स० [सं० ज्ञान] १ ज्ञानप्राप्त करना। अभिज्ञ होना। परिचित होना। मालूम करना। २ सूचना पाना। खबर रखना। ३ अनुमान करना। सोचना।

जानपद–संज्ञा पु० [सं०] १ जनपद-संबंधी वस्तु। २ जनपद का निवासी। लोक। मनुष्य। ३ देश। ४ मालगुजारी।

जानपना*†–संज्ञा पु० [हिं० जान+पन (प्रत्य०)] बुद्धिमत्ता। चतुराई।

जानपनी*–संज्ञा स्त्री० [हिं० जान+पन (प्रत्य०)] बुद्धिमानी। चतुराई।

जानमनि*–संज्ञा पु० [हिं० जान+मणि] ज्ञानियों में श्रेष्ठ। बड़ा ज्ञानी पुरुष।

जानराय–संज्ञा पु० [हिं० जान+राय] जानकारों में श्रेष्ठ। बड़ा बुद्धिमान्।

जानवर–संज्ञा पु० [फा०] १ प्राणी। जीव। २ पशु। जंतु। हैवान।

जानहु*†–अव्य० [हिं० जानना] मानो।

जाना–क्रि० अ० [सं० यान=जाना] १ एक स्थान से दूसरे स्थान पर प्राप्त होने के लिए गति में होना। गमन करना। चलना। २ हटना। प्रस्थान करना।

मुहा०—जाने दो–१ क्षमा करो। माफ करो। २ चर्चा छोड़ो। प्रसंग छोड़ो। किसी बात पर जाना=किसी बात के अनुसार कुछ अनुमान या निश्चय करना।

३ अलग होना। दूर होना। ४ हाथ या अधिकार से निकलना। हानि होना। ५ खो जाना। गायब होना। गुम होना। ६ बीतना। गुजरना। ७ नष्ट होना।

मुहा०—गया घर=दुर्दशाप्राप्त घराना। गया-बीता=१ दुर्दशाप्राप्त। २ निकृष्ट

८ बहना। जारी होना।

*†–क्रि० स० [सं० जनन] उत्पन्न करना। जन्म देना। पैदा करना।

जानि–संज्ञा स्त्री० [सं०] स्त्री। भार्या।

*वि० [सं० ज्ञानी] जानकार।

जानी–वि० [फा] जान से संबंध रखनेवाला।

यौ०—जानी दुश्मन=जान लेने को तैयार दुश्मन। जानी दोस्त=दिली दोस्त।

संज्ञा स्त्री० [फा० जान] प्राणप्यारी।

जानु–संज्ञा पु० [सं०] जाँघ और पिंडली के मध्य का भाग। घुटना।

संज्ञा पु० [फा० जानू] जाँघ। रान।

जानुपाणि–क्रि० वि० [सं०] घुटरवों। पैयाँ पैयाँ। घुटनों और हाथों के बल (जैसे बच्चे चलते हैं)।

जानो†–अव्य० [हिं० जानना] मानो। जैसे।

जाप–संज्ञा पु० [सं०] १ नाम आदि जपने की क्रिया। जप। २ जपने की थैली या माला।

जापक–संज्ञा पु० [सं०] जप करनेवाला।

जापा–संज्ञा पु० [सं० जनन] सौरी। प्रसूतिका-गृह।

जापी–संज्ञा पु० दे० "जापक"।

जाफ†–संज्ञा पु० [अ० जाफ] १ बेहोशी।

२. घुमरी । ३. मूर्च्छा । थकावट ।
जाफ़त–संज्ञा स्त्री० [अ० ज़ियाफ़त] भोज । दावत ।
जाफ़रान–संज्ञा पुं० [अ०] केसर ।
जाबाल–संज्ञा पुं० [सं०] एक मुनि जिनकी माता का नाम जाबाला था ।
जाबालि–संज्ञा पुं० [सं०] कश्यप-वंशीय एक ऋषि जो राजा दशरथ के गुरु थे ।
जाब्ता–संज्ञा पुं० [अ०] नियम । क़ायदा । व्यवस्था । क़ानून ।
यौ०–ज़ाब्ता दीवानी=सर्व साधारण के परस्पर आर्थिक व्यवहार से संबंध रखने-वाला क़ानून । ज़ाब्ता फ़ौजदारी=दंडनीय अपराधों से संबंध रखनेवाला क़ानून ।
जाम–संज्ञा पुं० [सं० याम] पहर । प्रहर । ७½ घड़ी या तीन घंटे का समय ।
संज्ञा पुं० [फ़ा०] प्याला । कटोरा ।
संज्ञा पुं० दे० "जामुन" ।
जामगी–संज्ञा पु० [?] बंदूक या तोप का फलीता ।
जामदानी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० जामःदानी] एक प्रकार का कढ़ा हुआ फूलदार कपड़ा ।
जामन–संज्ञा पुं० [हिं० जमाना] वह थोड़ा सा दही या खट्टा पदार्थ जो दूध में उसे जमाकर दही बनाने के लिए डाला जाता है ।
जामना–क्रि० अ० दे० "जमना" ।
जामनी–वि० दे० "यावनी" ।
जामवंत–संज्ञा पुं० दे० "जाबवान्" ।
जामा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. पहनावा । कपड़ा । वस्त्र । २. चुनवदार घेरे का एक प्रकार का पहनावा ।
मुहा०—जामे से बाहर होना=आपे से बाहर होना । अत्यंत क्रोध करना ।
जामातृ–संज्ञा पु० [सं० जामातृ] दामाद ।
जामिक*–संज्ञा पुं० [सं० यामिक] पहरुआ । पहरा देनेवाला । रक्षक ।
ज़ामिन, ज़ामिनदार–संज्ञा पु० [अ०] ज़मानत करनेवाला । जिम्मेदार । प्रतिभू ।
जामिनी–संज्ञा स्त्री० दे० "यामिनी" ।
संज्ञा स्त्री० दे० "ज़मानत" ।
जामुन–संज्ञा पुं० [सं० जंबु] एक सदा-बहार पेड़ जिसके फल बैंगनी या बहुत काले होते हैं और खाए जाते हैं ।
जामुनी–वि० [हिं० जामुन] जामुन के रंग का । बैंगनी या काला ।
जामेवार–संज्ञा पुं० [फ़ा० जामा+वार] १. एक प्रकार का दुशाला जिसकी सारी ज़मीन पर बूटे रहते हैं । २. इसी प्रकार की छींट ।
जाय*†–अव्य० [फ़ा० जा] वृथा । निष्फल । वि० उचित । वाजिब । ठीक ।
ज़ायक़ा–संज्ञा पुं० [अ०] [वि० ज़ायक़ेदार] खाने-पीने की चीज़ों का मज़ा । स्वाद ।
जायचा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] जन्मपत्री ।
जायज़–वि० [अ०] उचित । मुनासिब ।
जायज़ा–संज्ञा पुं० [अ०] १. जाँच । पड़ताल । २. हाज़िरी । गिनती ।
जायदाद–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] भूमि, धन या सामान आदि जिस पर किसी का अधिकार हो । संपत्ति ।
जायनमाज़–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] छोटी दरी या बिछौना जिस पर बैठकर मुसलमान नमाज़ पढ़ते हैं । मुसल्ला ।
जायपत्री–संज्ञा स्त्री० दे० "जावित्री" ।
जायफल–संज्ञा पुं० [सं० जातीफल] अखरोट की तरह का पर उससे छोटा एक सुगंधित फल जिसका व्यवहार औषध और मसाले आदि में होता है ।
जाया–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विवाहिता स्त्री । पत्नी । जोरू । २. उपजाति वृत्त का सातवाँ भेद ।
ज़ाया–वि० [फ़ा०] खराब । नष्ट ।
जार–संज्ञा पु० [सं०] पराई स्त्री से प्रेम करनेवाला पुरुष । उपपति । यार । आशना । वि० मारने या नाश करनेवाला ।
जारकर्म–संज्ञा पु० [सं०] व्यभिचार ।
जारज–संज्ञा पु० [सं०] किसी स्त्री की वह संतान जो उसके उपपति से उत्पन्न हुई हो ।
जारज योग–संज्ञा पुं० [सं०] फलित ज्यो-

तिष में एक योग जिसमें यह सिद्धान्त है कि बालक अपनी माता से जार या उपपति के वीर्य से उत्पन्न है।

जारण–संज्ञा पुं० [सं०] जलाना। भस्म करना।

जारन†–संज्ञा पु० [हिं० जलाना] १ ईंधन। २ जलाने की क्रिया या भाव।

जारना†–क्रि० स० दे० "जलाना"।

जारिणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] दुश्चरित्रा स्त्री। बदचलन औरत।

जारी–वि० [अ०] १ बहता हुआ। प्रवाहित। २ चलता हुआ। प्रचलित। संज्ञा स्त्री० [सं० जार+ई (प्रत्य०)] पर-स्त्री-गमन। छिनाला।

जालंधर–संज्ञा पु० दे० "जलंधर"।

जालंधरी विद्या–संज्ञा स्त्री० [सं० जालंधर (दैत्य)] मायिक विद्या। माया। इंद्रजाल।

जालध्र–संज्ञा पु० [सं०] झरोखे की जाली।

जाल–संज्ञा पु० [सं०] १ तार या सूत आदि का पट जिसका व्यवहार मछलियों और चिड़ियों आदि को पकड़ने में होता है। २ एक में ओतप्रोत बुने या गुथे हुए बहुत से तारों अथवा रेशों का समूह। ३ किसी को फँसाने या वश में करने की युक्ति। ४ मकड़ी का जाला। ५ समूह। ६ इंद्रजाल। ७ एक प्रकार की तोप। संज्ञा पु० [अ० जअल। मि० सं० जाल] फरेब। धोखा। झूठी कार्रवाई।

जालदार–वि० [सं०जाल+हिं०दार] जिसमें जाल की तरह पास-पास बहुत से छेद हों।

जालसाज–संज्ञा पु० [अ० जअल+फा० साज] वह जो दूसरों को धोखा देने के लिये किसी प्रकार की झूठी कार्रवाई करे।

जालसाजी–संज्ञा स्त्री० [फा०] फरेब या जाल करने का काम। दगाबाजी।

जाला–संज्ञा पु० [सं० जाल] १ मकड़ी का बुना हुआ पतले तारों का वह जाल जिसमें वह मक्खियाँ और कीड़े-मकोड़ों को फँसाती है। २ आँख का एक रोग जिसमें पुतली के ऊपर एक सफेद झिल्ली पड़ जाती है। ३ वह जाल जिसमें घास-भूसा आदि बाँधे जाते हैं। ४ पानी रखने का एक प्रकार का मिट्टी का बड़ा बरतन।

जालिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जाली। २ समूह। दल।

जालिम–वि० [अ०] जुल्म करनेवाला।

जालिया–वि० [हिं० जाल+इया (प्रत्य०)] जालसाज। फरेब करने या धोखा देनेवाला।

जाली–संज्ञा स्त्री० [हिं० जाल] १ लकड़ी, पत्थर या धातु की चादर आदि में बना हुआ बहुत से छोटे-छोटे छेदों का समूह। २. कसीदे का एक प्रकार का काम। भरना। ३ एक प्रकार का कपड़ा जिसमें केवल बहुत से छोटे-छोटे छेद ही होते हैं। ४ कच्चे आम के अंदर गुठली के ऊपर का तंतु-समूह। वि० [अ० जअल] नकली।

जावक*†–संज्ञा पु० [सं० यावक] लाह से बना हुआ पैरों में लगाने का लाल रंग। अलता। महावर।

जावन*†–संज्ञा पु० दे० "जामन"।

जावित्री–संज्ञा स्त्री० [सं० जातिपत्री] जायफल के ऊपर का सुगंधित छिलका जो औषध के काम में आता है।

जावनी*†–संज्ञा स्त्री० दे० "यक्षिणी"।

जासु†*–वि० [हिं० जो] जिसका।

जासूस–संज्ञा पु० [अ०] गुप्त रूप से किसी बात, विशेषतः अपराध आदि का पता लगानेवाला। भेदिया। मुखबिर।

जासूसी–संज्ञा स्त्री० [हिं० जासूस] गुप्त रूप से किसी बात का पता लगाना। जासूस का काम।

जाहिर–वि० [अ०] १. जो सबके सामने हो। प्रकट। प्रकाशित। खुला हुआ। २ विदित। जाना हुआ।

जाहिरदारी–संज्ञा स्त्री० [अ०] वह बात या काम जो केवल दिखावे के लिये हो।

जाहिरा–क्रि० वि० [अ०] देखने में। प्रकट रूप में। प्रत्यक्ष में।

जाहिल–वि० [अ०] १ मूर्ख। अज्ञान। नासमझ। २ अनपढ़। विद्याहीन।

जाही–संज्ञा स्त्री० [सं० जाति] चमेली की जाति का एक प्रकार का सुगंधित फूल।
जाह्नवी-संज्ञा स्त्री० [सं०] जह्नु ऋषि से उत्पन्न, गंगा।
जिंगनी, जिंगिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] जिंगिन का पेड़।
जिंद–संज्ञा पुं० [अ०] भूत। प्रेत। जिन।
जिंदगी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. जीवन। २. जीवन-काल। आयु।
मुहा०—जिंदगी के दिन पूरे करना या भरना=१. दिन काटना। जीवन बिताना। २. मरने को होना। आसन्न-मृत्यु होना।
जिंदा–वि० [फ़ा०] जीवित। जीता हुआ।
जिंदादिल–वि० [फ़ा०] [संज्ञा जिंदादिली] खुश-मिज़ाज। हँसोड़। दिल्लगीबाज़।
जिवाना†–क्रि० स० दे० "जिमाना"।
जिंस–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. प्रकार। क़िस्म। भाँति। २. चीज़। वस्तु। द्रव्य। ३. सामग्री। सामान। ४. अनाज। गल्ला। रसद।
जिंसवार–संज्ञा पुं० [फ़ा०] पटवारियों का वह कागज़ जिसमें वे खेत में बोए हुए अन्न का नाम लिखते हैं।
जिआना†*–क्रि० स० दे० "जिलाना"।
जिउ†–संज्ञा पुं० दे० "जीव"।
जिउका†–संज्ञा स्त्री० दे० "जीविका"।
जिउकिया–संज्ञा पुं० [हिं० जीविका] १. जीविका करनेवाला। रोजगारी। २. पहाड़ी लोग जो जंगलों से अनेक प्रकार की वस्तुएँ लाकर नगरों में बेचते हैं।
जिउतिया–संज्ञा स्त्री० दे० "जिताष्टमी"।
ज़िक्र–संज्ञा पुं० [अ०] चर्चा। प्रसंग।
जिगर–संज्ञा पुं० [फ़ा० मि० सं० यकृत्] [वि० जिगरी] १. कलेजा। २. चित्त। मन। जीव। ३. साहस। हिम्मत। ४. गूदा। सत्त। सार।
जिगरा–संज्ञा पुं० [हिं० जिगर] साहस। हिम्मत। जीवट।
जिगरी–वि० [फ़ा०] १. दिली। भीतरी। २. अत्यंत घनिष्ठ। अभिन्न-हृदय।
जिच, जिच्च–संज्ञा स्त्री० [?] १. बेबसी। तंगी। मजबूरी। २. शतरंज में खेल की वह अवस्था जिसमें किसी एक पक्ष को कोई मोहरा चलने की जगह न हो।
वि० विवश। मजबूर। तंग।
जिजिया–संज्ञा पुं० दे० "जजिया"।
जिज्ञासा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जानने की इच्छा। ज्ञान प्राप्त करने की कामना। २. पूछ-ताछ। प्रश्न। तहकीकात।
जिज्ञासु–वि० [सं०] जानने की इच्छा रखनेवाला। जो जिज्ञासा करे। खोजी।
जित्–वि० [सं०] जीतनेवाला। जेता।
जित–वि० [सं०] जीता हुआ।
संज्ञा पुं० [सं०] जीत। विजय।
*†–क्रि० वि० [सं० यत्र] जिधर। जिस ओर।
जितना–वि० [हिं० जिस+तना (प्रत्य०)] [स्त्री० जितनी] जिस मात्रा का। जिस परिमाण का।
क्रि० वि० जिस मात्रा में। जिस परिमाण में।
जितवना*†–क्रि० स० दे० "जताना"।
जितवाना–क्रि० स० दे० "जिताना"।
जितवार†–वि० [हिं० जीतना] जीतनेवाला।
जितवैया†–वि० [हिं० जीतना + वैया (पु० प्रत्य०)] जीतनेवाला।
जिताना–क्रि० स० [हिं० जीतना का प्रे०] जीतने में सहायता करना।
जिताष्टमी–संज्ञा स्त्री० [सं०] हिंदुओं का एक व्रत जिसे पुत्रवती स्त्रियाँ आश्विन कृष्णाष्टमी के दिन करती हैं। जिउतिया।
जितेंद्रिय–वि० [सं०] १. जिसने अपनी इंद्रियों को वश में कर लिया हो। २. सम वृत्तिवाला। शांत।
जिते*–वि० बहु० [हिं० जिस+ते] जितने। (संख्या-सूचक)।
जितै*–क्रि० वि० [सं० यत्र, प्रा० यत्त] जिधर। जिस ओर।
जितो*†–वि० [हिं० जिस] जितना (परिमाण-सूचक)।
क्रि० वि० जिस मात्रा में। जितना।
जित्वर–वि० [सं०] जेता। विजयी।
ज़िद–संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० ज़िद्दी] १.

बैर। शत्रुता। २ हठ। अड़। दुराग्रह।

ज़िद्दी–वि० [फा०] १ ज़िद करनेवाला। हठी। २ दूसरे की बात न माननेवाला। दुराग्रही।

जिधर–क्रि० वि० [हिं० जिस+धर(प्रत्य०)] जिस ओर। जहाँ।

जिन–संज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु। २ सूर्य्य। ३ बुद्ध। ४ जैनों के तीर्थंकर। वि० सर्व० [सं० यानि] "जिस" का बहु०। संज्ञा पुं० [अ०] मुसलमान भूत।

ज़िना–संज्ञा पुं० [अ०] व्यभिचार।

ज़िनाकार–वि० [फा०] [संज्ञा ज़िनाकारी] व्यभिचारी।

ज़िना बिल्जब्र–संज्ञा पुं० [अ०] किसी स्त्री के साथ उसकी इच्छा और सम्मति के विरुद्ध बलात् संभोग करना।

जिनि†–अव्य० [हिं० जनि] मत। नहीं।

जिनिस–संज्ञा स्त्री० दे० "जिंस"।

जिन्ह†*–सर्व० दे० "जिन"।

जिब्भा, जिभ्या*–संज्ञा स्त्री० दे० "जिह्वा"।

जिमाना–क्रि० स० [हिं० जीमना] खाना खिलाना। भोजन कराना।

जिमि*–क्रि० वि० [हिं० जिस+इमि] जिस प्रकार से। जैसे। यथा। ज्यों।

ज़िम्मा–संज्ञा पुं० [अ०] १ इस बात का भार-ग्रहण कि कोई बात या कोई काम अवश्य होगा, और यदि न होगा तो उसका दोष भार ग्रहण करनेवाले पर होगा। दायित्वपूर्ण प्रतिज्ञा। जवाबदिही।
मुहा०—किसी के ज़िम्मे रुपया आना, निकलना या होना=किसी के ऊपर रुपया ऋण-स्वरूप होना। देना ठहरना।
२ सपुर्दगी। देख रेख। संरक्षा।

ज़िम्मादार–संज्ञा पुं० दे० "ज़िम्मावार"।

ज़िम्मावार–संज्ञा पुं० [फा०] वह जो किसी बात के लिये ज़िम्मा ले। जवाबदेह। उत्तरदाता।

ज़िम्मावारी–संज्ञा स्त्री० [हिं० ज़िम्मावार] १ किसी बात के करने या किए जाने का भार। उत्तरदायित्व। जवाबदिही। २ सपुर्दगी। रक्षा।

ज़िम्मेवार–संज्ञा पुं० दे० "ज़िम्मावार"।

जिय†–संज्ञा पुं० [सं० जीव] मन। चित्त।

जियन–संज्ञा पुं० [हिं० जीवन] जीवन।

जियबधा–संज्ञा पुं० दे० "जल्लाद"।

जियरा*†–संज्ञा पुं० [हिं० जीव] जीव।

ज़ियान–संज्ञा पुं० [अ०] घाटा। टोटा।

जियाना†*–क्रि० स० [हिं० जीना] १ जिलाना। जीवित रखना। २ पालना।

ज़ियाफ़त–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ आतिथ्य। मेहमानदारी। २ भोज। दावत।

ज़ियारत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ दर्शन। २ तीर्थ दर्शन।
मुहा०—ज़ियारत लगना=भीड़ लगना।

ज़ियारी†*–संज्ञा स्त्री० [हिं० जीना] १ जीवन। ज़िंदगी। २ जीविका। ३ हृदय की दृढ़ता। जीवट। जिगरा।

जिरगा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १ झुंड। गरोह। २ मंडली। दल।

जिरह–संज्ञा स्त्री० [अ० जुरह] १ हुज्जत। चुचुर। २ ऐसी पूछ-ताछ जो किसी से उसकी कही हुई बातों की सत्यता की जाँच के लिये की जाय।

ज़िरह–संज्ञा स्त्री० [फा०] लोहे की कड़ियों से बना हुआ कवच। वर्म। बकतर।
यौ०—ज़िरह-पोश=जो बकतर पहने हो।

ज़िरही–वि० [हिं० जिरह] जो ज़िरह पहने हो। कवचधारी।

जिराफ़ा–संज्ञा पुं० दे० "जुराफा"।

जिला–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ चमक दमक।
मुहा०—जिला देना=माँजकर तथा रोग़न आदि चढ़ाकर चमकाना। सिकली करना।
यौ०—जिलाकार=सिकलीगर।
२ माँजकर या रोग़न आदि चढ़ाकर चमकाने का कार्य।

ज़िला–संज्ञा पुं० [अ०] १ प्रांत। प्रदेश। २ भारतवर्ष में किसी प्रांत का वह भाग जो एक कलक्टर या डिप्टी कमिश्नर के प्रबंध में हो। ३ किसी इलाके का छोटा विभाग या अंश।

ज़िलादार–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. वह अफ़सर जिसे ज़मींदार अपने इलाक़े के किसी भाग में लगान वसूल करने के लिये नियत करता है। २. वह अफ़सर जो नहर, अफ़ीम आदि संबंधी किसी हलके में काम करने के लिये नियत हो।

जिलाना–क्रि० स० [हिं० जीना का स०] १. जीवन देना। ज़िंदा करना। जीवित करना। †२. पालना। पोसना। ३. मरने से बचाना। प्राण-रक्षा करना।

जिलासाज़–संज्ञा पुं० [फ़ा०] हथियारों आदि पर ओप चढ़ानेवाला। सिकलीगर।

जिलाहू*–संज्ञा पुं० [अ०जल्लाद] अत्याचारी।

ज़िलेदार–संज्ञा पुं० दे० "ज़िलादार"।

जिल्द–संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० जिल्दी] १. खाल। चमड़ा। खलड़ी। २. ऊपर का चमड़ा। त्वचा। ३. वह पट्टा या दफ़्ती जो किसी किताब के ऊपर उसकी रक्षा के लिये लगाई जाती है। ४. पुस्तक की एक प्रति। ५. पुस्तक का वह भाग जो पृथक् सिला हो। भाग। खंड।

जिल्दबंद–संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह जो किताबों की जिल्द बाँधता हो। जिल्द बाँधनेवाला।

जिल्दसाज़–संज्ञा पुं० दे० "जिल्दबंद"।

ज़िल्लत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. अनादर। अपमान। तिरस्कार। बेइज़्ज़ती।

मुहा०—ज़िल्लत उठाना या पाना = १. अपमानित होना। २. तुच्छ ठहरना।

२. दुर्गति। दुर्दशा। हीन दशा।

जिव†–संज्ञा पु० दे० "जीव"।

जिवाना–क्रि० स० दे० "जिलाना"।

जिस–वि० [सं० यः, यस्] 'जो' का वह रूप जो उसे विभक्तियुक्त विशेष्य के साथ आने से प्राप्त होता है। जैसे—जिस पुरुष ने। सर्व० 'जो' का वह रूप जो उसे विभक्ति लगने के पहले प्राप्त होता है।

जिस्ता–संज्ञा पुं० १. दे० "जस्ता"। ‡२. दे० "दस्ता"।

जिस्म–संज्ञा पुं० [फा०] शरीर। देह।

जिह*†–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० ज़ह, सं० ज्या] धनुष का चिल्ला। रोदा। ज्या।

ज़िहन–संज्ञा पुं० [अ०] समझ। बुद्धि।

मुहा०—ज़िहन खुलना = बुद्धि का विकास होना। ज़िहन लड़ाना = खूब सोचना।

जिहाद–संज्ञा पुं० [अ०] मज़हबी लड़ाई। वह लड़ाई जो मुसलमान लोग अन्य धर्मावलंबियों से अपने धर्म्म के प्रचार आदि के लिये करते थे।

जिह्वा–संज्ञा स्त्री० [सं०] जीभ। ज़बान।

जिह्वाग्र–संज्ञा पुं० [सं०] जीभ की नोक।

मुहा०—जिह्वाग्र करना = कंठस्थ करना। ज़बानी याद करना।

जिह्वामूल–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० जिह्वामूलीय] जीभ की जड़ या पिछला स्थान।

जिह्वामूलीय–संज्ञा पुं० [सं०] वह वर्ण जिसका उच्चारण जिह्वामूल से हो। क और ख के पहले विसर्ग आने से वे जिह्वामूलीय हो जाते हैं। कोई कोई कवर्ग मात्र को जिह्वामूलीय मानते हैं।

जींगन†–संज्ञा पुं० [सं० जृंगण] जुगनू।

जी–संज्ञा पु० [सं० जीव] १. मन। दिल। तबीअत। चित्त। २. हिम्मत। दम। जीवट। ३. संकल्प। विचार।

मुहा०—जी अच्छा होना = चित्त स्वस्थ होना। नीरोग होना। किसी पर जी आना = किसी से प्रेम होना। जी उचटना = चित्त न लगना।, मन हटना। जी उड़ जाना=भय, आशंका आदि से चित्त सहसा व्यग्र हो जाना। जी करना=१. हिम्मत करना। साहस करना। २. इच्छा होना। जी का बुख़ार निकलना= क्रोध, शोक, दुःख आदि के वेग को रो-कलपकर या बक-झककर शांत करना। (किसी के) जी को जी समझना=किसी के विषय में यह समझना कि वह भी जीव है, उसे भी कष्ट होगा। जी खट्टा होना=मन फिर जाना या विरक्त होना। घृणा होना। जी खोलकर= १. बिना किसी संकोच के। बेधड़क। २. जितना जी चाहे। यथेष्ट। जी चलना=जी चाहना। इच्छा होना। जी चुराना=हीला हवाली करना। किसी काम से भागना। जी

छोटा करना=१. मन उदास करना। २. उदासता छोड़ना। कजूसी करना। जी टँगा रहना या होना=चित्त मे ध्यान या चिंता रहना। चित्त चिंतित रहना। जी डूबना=चित्त स्थिर न रहना। चित्त व्याकुल होना। जी दुखना=चित्त को कष्ट पहुँचना। जी देना=१ मरना। २. अत्यंत प्रेम करना। जी धँसा जाना=दे० "जी बैठा जाना"। जी धड़कना= भय या आशका से चित्त स्थिर न रहना। कलेजा धक-धक करना। जी निढाल होना= चित्त का स्थिर न रहना। चित्त ठिकाने न रहना। जी पर आ बनना=प्राण बचाना कठिन हो जाना। जी पर खेलना=जान को आफ़त में डालना। जान पर जोखों उठाना। जी बह-लना=चित्त का आनंदपूर्वक लीन होना। मनोरंजन होना। जी बिगड़ना=जी मचलाने के करने की इच्छा होना। (किसी की ओर से) जी बुरा करना=किसी के प्रति अच्छा भाव न रखना। किसी के प्रति घृणा या क्रोध करना. जी भरना (क्रि० अ०)=चित्त संतुष्ट होना। तृप्ति होना। जी भरना (क्रि० स०)=दूसरे का संदेह दूर करना। खटका मिटाना। जी भरकर=मनमाना। यथेष्ट। जी भर आना=चित्त मे दु:ख या करुणा का उद्रेक होना। दु:ख या दया उमड़ना। जी मच-लाना या मतलाना=उलटी या कै करने की इच्छा होना। वमन करने को जी चाहना। जी मे आना=चित्त म विचार उत्पन्न होना। जी चाहना। (किसी का) जी रखना=मन रखना। इच्छा पूरी करना। प्रसन्न करना। संतुष्ट करना। जी लगना= मन का किसी विषय में योग देना। चित्त प्रवृत्त होना। (किसी से) जी लगना=किसी से प्रेम होना। जी से=जी लगाकर। ध्यान देकर। जी से उतर जाना=दृष्टि से गिर जाना। भला न जँचना। जी से जाना=मर जाना।
अव्य०[स०जित्,या(श्री)युत] एक सम्मान-सूचक शब्द जो किसी के नाम के आगे लगाया जाता है अथवा किसी बड़े के कथन, प्रश्न या संबोधन के उत्तर में संक्षिप्त २. प्रति-संबोधन के रूप में प्रयुक्त होता है।
जीअ, जीउ*—संज्ञा पु० दे० "जी", "जीव"।
जीगन—संज्ञा पु० दे० "जुगनू"।
जीजा—संज्ञा पु० [हि० जीजी] बड़ी बहिन का पति। बड़ा बहनोई।
जीजी—संज्ञा स्त्री० [स० देवी] बड़ी बहिन।
जीत—संज्ञा स्त्री० [स० जिति] १ युद्ध या लड़ाई म विपक्षी के विरुद्ध सफलता। जय। विजय। फतह। २. किसी ऐसे कार्य्य मे सफलता जिसमें दो या अधिक विरुद्ध पक्ष हों। ३ लाभ। फायदा।
जीतना—क्रि० स० [हि०जीत+ना (प्रत्य०)] १ युद्ध या लड़ाई मे विपक्षी के विरुद्ध सफलता प्राप्त करना। विजय प्राप्त करना। २ किसी ऐसे कार्य में सफलता प्राप्त करना जिसमें दो या अधिक परस्पर विरुद्ध पक्ष हों।
जीता—वि० [हि० जीना] १ जीवित। जो मरा न हो। २ तौल या नाप में ठीक से कुछ बढ़ा हुआ।
जीन*—वि० [स० जीर्ण] १ जर्जर। कटा फटा। २ वृद्ध। बुड्ढा।
ज़ीन—संज्ञा पु० [फा०] १ घोड़े की पीठ पर रखने की गद्दी। चारजामा। काठी। २ पलान। कजावा। ३ एक प्रकार का बहुत मोटा सूती कपड़ा।
ज़ीनपोश—संज्ञा पु० [फा०] ज़ीन के ऊपर ढकने का कपड़ा।
ज़ीनसवारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] घोड़े पर ज़ीन रखकर चढ़ने का कार्य्य।
जीना—क्रि० अ० [स० जीवन] १ जीवित रहना। ज़िंदा रहना।
मुहा०—जीता-जागता = जीवित और सचेत। भला चंगा। जीती मक्खी निगलना = जान बूझकर कोई अन्याय या अनुचित कर्म करना। जीते जी मर जाना=जीवन में ही मृत्यु से बढ़कर कष्ट भोगना। जीना भारी हो जाना = जीवन का आनंद जाता रहना।
२ प्रसन्न होना। प्रफुल्लित होना।
संज्ञा पु० [फ़ा० ज़ीन] सीढ़ी।

जीभ–संज्ञा स्त्री० [सं० जिह्वा] १. मुँह के भीतर रहनेवाली लंबे चिपटे मांस-पिंड की वह इंद्रिय जिससे रसो का अनुभव और शब्दों का उच्चारण होता है। जबान। जिह्वा। रसना।
मुहा०–जीभ चलना=भिन्न भिन्न वस्तुओं का स्वाद लेने के लिये जीभ का हिलना डोलना। चटोरेपन की इच्छा होना। जीभ निकालना= जीभ खींचना। जीभ उखाड़ लेना। जीभ पकड़ना=बोलने न देना। बोलने से रोकना। जीभ बंद करना=बोलना बंद करना। चुप रहना। जीभ हिलाना=मुँह से कुछ बोलना। छोटी जीभ=गलशुंडी। किसी की जीभ के नीचे जीभ होना=किसी का अपनी कही हुई बात को बदल जाना।
२.जीभ के आकार की कोई वस्तु; जैसे–निब।
जीभी–संज्ञा स्त्री० [हिं० जीभ] १. धातु की बनी एक पतली धनुषाकार वस्तु जिससे जीभ छीलकर साफ़ करते हैं। २. निब। ३. छोटी जीभ। गलशुंडी।
जीमना–क्रि० स० [सं० मन] भोजन करना।
जीमूत–संज्ञा पुं० [सं०] १. पर्वत। २. बादल। ३. इंद्र। ४. सूर्य्य। ५. शाल्मली द्वीप के एक वर्ष का नाम। ६. एक प्रकार का दंडक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो नगण और ग्यारह रगण होते हैं। यह प्रचित के अंतर्गत है।
जीमूतवाहन–संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।
जीय†*–संज्ञा पुं० दे० "जी"।
जीयट–संज्ञा पुं० दे० "जीवट"।
जीयति†*–संज्ञा स्त्री० [हिं० जीना] जीवन।
जीयदान–संज्ञा पुं० [सं० जीवदान] प्राण-दान। जीवनदान। प्राणरक्षा।
जीर–संज्ञा पुं० [सं०] १. जीरा। २. फूल का जीरा। केसर। ३. खड्ग। तलवार।
*संज्ञा पुं० [फ़ा० जिरह] जिरह। कवच।
*वि० [सं० जीर्ण] जीर्ण। पुराना।
जीरण*–वि० दे० "जीर्ण"।
जीरा–संज्ञा पुं० [सं० जीरक] १. दो हाथ ऊँचा एक पौधा जिसके सुगंधित छोटे फूलों के गुच्छों को सुखाकर मसाले के काम में लाते हैं। इसके दो मुख्य भेद हैं—सफ़ेद और काला। २. जीरे के आकार के छोटे, महीन, लंबे बीज। ३. फूलों का केसर।
जीरी–संज्ञा पुं० [हिं० जीरा] एक प्रकार का अगहनी धान जो कई वर्षों तक रह सकता है।
जीर्ण–वि० [सं०] १. बुढ़ापे से जर्जर। २. टूटा फूटा और पुराना। बहुत दिनों का। यौ०—जीर्ण-शीर्ण=फटा पुराना। ३. पेट में अच्छी तरह पचा हुआ।
जीर्णज्वर–संज्ञा पुं० [सं०] वह ज्वर जिसे रहते बारह दिन से अधिक हो गये हों। पुराना बुखार।
जीर्णता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बुढ़ापा। बुढ़ाई। २. पुरानापन।
जीर्णोद्धार–संज्ञा पुं० [सं०] फटी पुरानी या टूटी फूटी वस्तुओं का फिर से सुधार। पुनः संस्कार। मरम्मत।
जीला†*–वि० [सं० झिल्ली] [स्त्री० जीली] १. झीना। पतला। २. महीन।
जीवंत–वि० [सं०] जीता-जागता।
जीवंती–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक लता जिसकी पत्तियाँ औषध के काम में आती हैं। २. एक लता जिसके फूलों में मीठा मधु या मकरंद होता है। ३. एक प्रकार की बढ़िया पीली हड़। ४. बाँदा। ५. गुडूची।
जीव–संज्ञा पुं० [सं०] १. प्राणियों का चेतन तत्त्व। जीवात्मा। आत्मा। २. प्राण। जीवनतत्त्व। जान। ३. प्राणी। जीवधारी। यौ०—जीवजंतु=१. जानवर। प्राणी। २. कीड़ा-मकोड़ा।
जीवक–संज्ञा पुं० [सं०] १. प्राण धारण करनेवाला। २. क्षपणक। ३. सँपेरा। ४. सेवक। ५. ब्याज लेकर जीविका करनेवाला। सूदखोर। ६. पीतसाल वृक्ष। ७. अपवर्ग के अंतर्गत एक जड़ी या पौधा।
जीवट–संज्ञा पुं० [सं० जीवथ] हृदय की दृढ़ता। जिगरा। साहस। हिम्मत।
जीवदान–संज्ञा पुं० [सं०] अपने वश में

आए हुए शत्रु या अपराधी को न मारने, या छोड़ देने का कार्य। प्राणदान। प्राणरक्षा।

जीवधारी—संज्ञा पुं० [सं०] प्राणी। जानवर।

जीवन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० जीवित] १ जन्म और मृत्यु के बीच का काल। जिंदगी। २ जीवित रहने का भाव। प्राण-धारण। ३ जीवित रखनेवाली वस्तु। ४ परमप्रिय। प्यारा। ५ जीविका। ६ पानी। ७ वायु।

जीवन-चरित—संज्ञा पुं० [सं०] जीवन में किए हुए कार्यों आदि का वर्णन। जिंदगी का हाल।

जीवनधन—संज्ञा पुं० [सं०] १ सबसे प्रिय वस्तु या व्यक्ति। २ प्राणाधार। प्राणप्रिय।

जीवनबूटी—संज्ञा स्त्री० [सं० जीवन + हिं० बूटी] एक पौधा या बूटी जिसके विषय में प्रसिद्ध है कि वह मरे हुए आदमी को भी जिला सकती है। संजीवनी।

जीवनमूरि—संज्ञा स्त्री० [सं० जीवन + मूल] १ जीवनबूटी। २ अत्यंत प्रिय वस्तु।

जीवनवृत्त—संज्ञा पुं० दे० "जीवनचरित"।

जीवना*—क्रि० अ० दे० "जीना"।

जीवनी—संज्ञा स्त्री० [जीवन + ई (प्रत्य०)] जीवन भर का वृत्तांत। जीवनचरित।

जीवनोपाय—संज्ञा पुं० [सं०] जीविका।

जीवन्मुक्त—वि० [सं०] जो जीवित दशा में ही आत्मज्ञान द्वारा सांसारिक मायाबंधन से छूट गया हो।

जीवन्मृत—वि० [सं०] जिसका जीवन सार्थक या सुखमय न हो।

जीवयोनि—संज्ञा स्त्री० [सं०] जीव-जंतु।

जीवरा*‡—संज्ञा पुं० [हिं० जीव] जीव। प्राण।

जीवरि‡—संज्ञा पुं० [सं० जीव या जीवन] जीवन। प्राण-धारण की शक्ति।

जीवलोक—संज्ञा पुं० [सं०] भूलोक। पृथ्वी।

जीवहत्या, जीवहिंसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्राणियों का वध। २ प्राणियों के वध का दोष।

जीवजून‡—संज्ञा पुं० [सं० जीवयोनि] पशु, पक्षी, कीट, पतंग आदि जीव।

जीवात्मा—संज्ञा पुं० [सं०] प्राणियों की चेतन वृत्ति का कारण-स्वरूप पदार्थ। जीव। आत्मा। प्रत्यगात्मा।

जीवानुज—संज्ञा पुं० [सं०] गर्गाचार्य मुनि जो बृहस्पति के वंश में हुए हैं।

जीविका—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह व्यापार जिससे जीवन का निर्वाह हो। जीवनोपाय। रोज़ी। वृत्ति।

जीवित—वि० [सं०] जीता हुआ। जिंदा।

जीवी—वि० [सं० जीविन्] १ जीनेवाला। प्राणधारी। २ जीविका करनेवाला। जैसे—श्रमजीवी।

जीवेश—संज्ञा पुं० [सं०] परमात्मा।

जीह*—संज्ञा स्त्री० दे० "जीभ"।

जुंबिश—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] चाल। गति। हरकत। हिलना-डोलना।

मुहा०—जुंबिश खाना = हिलना-डोलना।

जु*—वि०, क्रि० वि० दे० "जो"।

जुआँ—संज्ञा स्त्री० दे० "जूँ"।

जुआ—संज्ञा पुं० [सं० द्यूत] रुपए-पैसे की बाज़ी लगाकर खेला जानेवाला खेल।

जुआचोर—संज्ञा पुं० [हिं० जुआ + चोर] धोखेबाज़। ठग। वंचक।

जुआरी—संज्ञा पुं० [हिं० जुआ] जुआ खेलनेवाला।

जुईं—संज्ञा स्त्री० [हिं० जूँ] छोटी जुआँ।

जुकाम—संज्ञा पुं० [हिं० जड़+घाम ?] सरदी से होनेवाली एक बीमारी जिसमें नाक और मुँह से कफ निकलता है। सरदी।

मुहा०—मेंढकी को जुकाम होना = किसी छोटे मनुष्य का कोई बड़ा काम करना।

जुग—संज्ञा पुं० [सं० युग] १. युग। २ जोड़ा। युग्म। ३ चौसर के खेल में दो गोटियों का एक ही कोठे में इकट्ठा होना। ४ पुश्त। पीढ़ी।

जुगजुगाना—क्रि० अ० [हिं० जगना] १. मंद ज्योति से चमकना। टिमटिमाना। २ अवनत दशा में कुछ उन्नत दशा को प्राप्त होना। उभरना।

जुगत—संज्ञा स्त्री० [सं० युक्ति] १ युक्ति। उपाय। तदबीर। ढंग। २ व्यवहार-

कुशलता। चतुराई। हथकंडा।
जुगनी–संज्ञा स्त्री० दे० "जुगनू"।
जुगनू–संज्ञा पुं० [हिं० जुगजुगाना] १. एक बरसाती कीड़ा जिसका पिछला भाग चिनगारी की तरह चमकता है। खद्योत। पटबीजना। २. पान के आकार का गले का एक गहना। रामनामी।
जुगल–वि० दे० "युगल"।
जुगवना–क्रि० स० [सं० योग+अवना (प्रत्य०)] १. संचित रखना। एकत्र करना। २. हिफाजत से रखना।
जुगाना†–क्रि० स० दे० "जुगवना"।
जुगालना–क्रि० अ० [सं० उद्गिलन] चौपायों का पागुर करना।
जुगाली–संज्ञा स्त्री० [हिं० जुगालना] सींगवाले चौपायों की निगले हुए चारे को गले से थोड़ा थोड़ा निकालकर फिर से चबाने की क्रिया। पागुर। रोमंथ।
जुगुत–संज्ञा स्त्री० दे० "जुगत"।
जुगुप्सा–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० जुगुप्सित] १ निंदा। बुराई। २. अश्रद्धा। घृणा।
जुज–संज्ञा पुं० [फा० मि० स० युज्] कागज के ८ या १६ पृष्ठों का समूह। फारम।
जुजबी–वि० [फ़ा०] १. बहुतों में से कोई एक। बहुत कम। २. बहुत छोटे अंश का।
जुज्झ*†–संज्ञा स्त्री० दे० "युद्ध"।
जुझवाना*†–क्रि० स० [हिं० जूझना] लड़ा देना।
जुझाऊ–वि० [हिं० जूझ+आऊ (प्रत्य०)] लड़ाई में काम आनेवाला। युद्ध-संबंधी।
जुझार†*–वि० [हिं० जुज्झ+आर (प्रत्य०)] १. लड़ाका। वीर। २. युद्ध। लड़ाई।
जुट–संज्ञा स्त्री० [सं० युक्त] १. दो परस्पर मिली हुई वस्तुएँ। जोड़ी। जुग। २. जत्था। दल।
जुटना–क्रि० अ० [सं० युक्त+ना (प्रत्य०)] १. दो या अधिक वस्तुओं का इस प्रकार मिलना कि एक का कोई अंग दूसरी के किसी अंग के साथ दृढ़तापूर्वक लगा रहे। संबद्ध होना। संश्लिष्ट होना। जुड़ना। २. लिपटना। गुथना। ३. संभोग करना। ४. एकत्र होना। इकट्ठा होना। ५. एक कार्य में सम्मिलित होना। ६. मिलना।
जुटली–वि० [सं० जूट] जूड़ेवाला। लंबे बालों की लटवाला।
जुटाना–क्रि० स० [हिं० जुटना] जुटना का सकर्मक रूप। जुटने में प्रवृत्त करना।
जुट्टी–संज्ञा स्त्री० [हिं० जुटना] १. घास या टहनियों का छोटा पूला। थँटिया। जूरी। २. सूरन आदि के नए कल्ले जो बँधे हुए निकलते हैं। ३. तले-ऊपर रखी हुई वस्तुओं का समूह। गड्डी। वि० जुटी या मिली हुई।
जुठारना–क्रि० स० [हिं० जूठा] खाने-पीने की वस्तु को कुछ खाकर छोड़ देना। जूठा करना। उच्छिष्ट करना।
जुठिहारा–संज्ञा पुं० [हिं० जूठा+हारा] [स्त्री० जुठिहारी] जूठा खानेवाला।
जुड़ना–क्रि० अ० [हिं० जुटना] १. कई वस्तुओं का इस प्रकार मिलना कि एक का अंग दूसरी के साथ लगा रहे। संबद्ध होना। संयुक्त होना। २. संभोग करना। प्रसंग करना। † ३. इकट्ठा होना। ४. एकत्र होना। किसी कार्य में योग देने के लिये उपस्थित होना। ५. प्राप्त होना। मिलना। ६. दे० "जुलना"।
जुड़पित्ती–संज्ञा स्त्री० [हिं० जूड़+पित्त] एक रोग जिसमें शरीर में खुजली उठती है और बड़े बड़े चकत्ते पड़ जाते हैं।
जुड़वाँ–वि० [हिं० जुड़ना] गर्भ-काल से ही एक में सटे हुए। जुड़े हुए। यमल। जैसे—जुड़वाँ बच्चे। संज्ञा पुं० एक ही साथ उत्पन्न दो बच्चे।
जुड़वाना†–क्रि० स० [हिं० जूड़] १. ठंढा करना। २. शांत करना। खुशी करना। क्रि० स० दे० "जोड़वाना"।
जुड़ाई–संज्ञा स्त्री० दे० "जोड़ाई"।
जुड़ाना†–क्रि० अ० [हिं० जूड़] १. ठंढा होना। २. शांत होना। तृप्त होना। क्रि० स० १. ठंढा करना। शीतल करना।

२ शांत और संतुष्ट करना । तृप्त करना । समझ लिया है ।
जुड़ावना†–क्रि० स० दे० "जुड़ाना" ।
जुत*–वि० दे० "युक्त" ।
जुतना–क्रि० अ० [हिं० युक्त] १ बैल, घोड़े आदि का गाड़ी, हल आदि में लगना । नधना । २ किसी काम में परिश्रमपूर्वक लगना । ३ हल से जोता जाना ।
जुतवाना–क्रि० स० [हिं० जोतना] दूसरे से जोतने का काम कराना ।
जुताई–संज्ञा स्त्री० दे० "जोताई" ।
जुतियाना–क्रि० स० [हिं० जूता + इयाना (प्रत्य०)] १ जूता मारना । जूते लगाना । २ अत्यंत निरादर करना ।
जुत्थ*–संज्ञा पुं० दे० "यूथ" ।
जुदा–वि० [फा०] १ पृथक् । अलग । २ भिन्न । निराला ।
जुदाई–संज्ञा स्त्री० [फा०] जुदा होने का भाव । विछोह । वियोग ।
जुद्ध*–संज्ञा पुं० दे० "युद्ध" ।
जुन्हरी–संज्ञा स्त्री० [सं० यवनाल] ज्वार (अन्न) ।
जुन्हाई–संज्ञा स्त्री० [सं० ज्योत्स्ना, प्रा० जोन्हा] १ चाँदनी । चंद्रिका । २ चद्रमा ।
जुन्हैया†–संज्ञा स्त्री० दे० "जुन्हाई" ।
जुमला–वि० [फा०] सब । कुल । संज्ञा पुं० पूरा वाक्य ।
जुमा–संज्ञा पुं० [अ०] शुक्रवार ।
जुमिल–संज्ञा पुं० [?] एक प्रकार का घोड़ा ।
जुरअत–संज्ञा स्त्री० [फा०] साहस । हिम्मत ।
जुरझुरी–संज्ञा स्त्री० [सं० ज्वर या जूर्ति + हिं० झुरझुराना] १ ज्वरांश । हरारत । २ ज्वर के आदि की कँपकँपी ।
जुरना*†–क्रि० स० दे० "जुड़ना" ।
जुरमाना–संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह दंड जिसके अनुसार अपराधी को कुछ धन देना पड़े । अर्थ-दंड । धन-दंड ।
जुराफा–संज्ञा पुं० [अ० जुर्राफा] अफरीका का एक बहुत ऊँचा जंगली पशु जिसकी टाँगें और गर्दन ऊँट की सी लंबी होती है । हिन्दी कवियों ने इसे भूलकर पक्षी समझ लिया है ।
जुर्म–संज्ञा पुं० [अ०] वह कार्य जिसके दंड का विधान राजनियम में हो । अपराध ।
जुर्रा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] नर बाज ।
जुर्राब–संज्ञा स्त्री० [तु०] मोजा । पायताबा
जुल–संज्ञा पुं० [सं० छल ?] धोखा । दम ।
जुलाब–संज्ञा पुं० [फा०] १ रेचन । दस्त । २ रेचक औषध । दस्त लानेवाली दवा ।
जुलाहा–संज्ञा पुं० [फ़ा० जोलाह] १ कपड़ा बुननेवाला । तंतुवाय । तंतुकार । २ पानी पर तैरनेवाला एक कीड़ा ।
जुल्फ–संज्ञा स्त्री० [फ़ा] सिर के लंबे बाल जो पीछे की ओर लटकते हैं । पट्टा । कुल्ला ।
जुल्फी–संज्ञा स्त्री० दे० "जुल्फ" ।
जुल्म–संज्ञा पुं० [अ०] अत्याचार । अन्याय । मुहा०–जुल्म टूटना = आफत आ पड़ना । जुल्म ढाना = १ अत्याचार करना । २ कोई अद्भुत काम करना ।
जुलूस–संज्ञा पुं० [अ०] १ सिंहासनारोहण । २ किसी उत्सव या समारोह । ३ उत्सव और समारोह की यात्रा । धूमधाम की सवारी ।
जुल्लाब–संज्ञा पुं० दे० "जुलाब" ।
जुस्तजू–संज्ञा स्त्री० [फा०] तलाश । खोज ।
जुहाना†–क्रि० स० [सं० यूथ = आना- (प्रत्य०)] एकत्र करना । संचित करना ।
जुहार–संज्ञा स्त्री० [सं० अवहार ?] क्षत्रियों में प्रचलित एक प्रकार का प्रणाम । सलाम ।
जुहारना–क्रि० स० [सं० अवहार] १ सहायता माँगना । २ एहसान लेना ।
जुही–संज्ञा स्त्री० दे० "जूही" ।
जूँ–संज्ञा स्त्री० [सं० यूका] एक छोटा स्वेदज कीड़ा जो बालों में पड़ जाता है । मुहा०–कानों पर जूँ रेंगना = स्थिति का ज्ञान होना । होश होना ।
जू–अव्य० [सं० (श्री)युक्त] एक आदर-सूचक शब्द जो ब्रज, बुंदेलखंड आदि में बड़ों के नाम के साथ लगाया जाता है । जी ।
जूआ–संज्ञा पुं० [सं० युग] १ गाड़ी के आगे जड़ी हुई वह लकड़ी जो बैलों के

कंधे पर रहती है। † २. जुआठा। ३. चक्की में लगी हुई वह लकड़ी जिसे पकड़कर वह फिराई जाती है।
संज्ञा पुं० [सं० द्यूत, प्रा० जूआ] वह खेल जिससे जीतनेवाले को हारनेवाले से कुछ धन मिलता है। हार-जीत का खेल। द्यूत।
जूजू–संज्ञा पुं० [अनु०] एक कल्पित जीव जिसके नाम से लड़कों को डराते हैं। हाऊ।
जूझ*–संज्ञा स्त्री० [सं० युद्ध] लड़ाई।
जूझना†*–क्रि० अ० [सं० युद्ध] १. लड़ना। २. लड़कर मर जाना।
जूट–संज्ञा पुं० [सं०] १. जटा की गाँठ। जूड़ा। २. लट। जटा।
जूठन–संज्ञा स्त्री० [हिं० जूठा] १. वह खाने-पीने की वस्तु जिसे किसी ने खाकर छोड़ दिया हो। उच्छिष्ट भोजन। २. वह पदार्थ जिसका व्यवहार किसी ने एक-दो बार कर लिया हो। भुक्त पदार्थ।
जूठा–वि० [सं० जुष्ठ] [स्त्री० जूठी। क्रि० जुठारना] १. किसी के खाने से बचा हुआ। उच्छिष्ट। २. जिसे किसी ने भोग करके अपवित्र कर दिया हो। भुक्त।
संज्ञा पुं० दे० "जूठन"।
जूड़ा–संज्ञा पुं० [सं० जूट] १. सिर के बालों की वह गाँठ जिसे स्त्रियाँ बालों को एक साथ लपेटकर ऊपर बाँधती हैं। २. चोटी। कलगी। ३. मूँज आदि का पूला। ४. घड़े के नीचे रखने की गेंडुरी।
जूड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० जूड़] वह ज्वर जिसमें ज्वर आने के पहले रोगी को जाड़ा मालूम होता है।
जूता–संज्ञा पुं० [सं० युक्त] चमड़े आदि का बना हुआ वह ढाँचा जिसे लोग काँटे आदि से बचने के लिए पैरों में पहनते हैं। जोड़ा। पादत्राण। उपानह।
मुहा०–(किसी का) जूता उठाना = १. किसी का दासत्व करना। २. खुशामद करना। चापलूसी करना। जूता उछलना या चलना = मारपीट होना। झगड़ा होना। जूता खाना = १. जूतों की मार खाना। २. बुरा-भला सुनना। तिरस्कृत होना। जूते से खबर लेना या बात करना = जूते से मारना। जूतों दाल बँटना = आपस में लड़ाई-झगड़ा होना।
जूताखोर–वि० [हिं० जूता + फ़ा० खोर] जो मार या गाली की कुछ परवाह न करे। निर्लज्ज। बेहया।
जूती–संज्ञा स्त्री० [हिं० जूता] स्त्रियों का जूता।
जूती पैजार–संज्ञा स्त्री० [हिं० जूती + फ़ा० पैजार] १. जूतों की मार-पीट। २. लड़ाई। दंगा।
जूथ*–संज्ञा पुं० दे० "यूथ"।
जून†–संज्ञा पुं० [सं० द्युवन्] समय। काल।
संज्ञा पुं० [सं० जूर्ण] तृण। घास।
जूप–संज्ञा पुं० [सं० द्यूत] १. जूआ। द्यूत। २. विवाह में एक रीति जिसमें वर और वधू परस्पर जूआ खेलते हैं। पासा।
संज्ञा पुं० दे० "यूप"।
जूमना*†–क्रि० अ० [अ० जमा] इकट्ठा होना। जुटना। एकत्र होना।
जूर*–संज्ञा पुं० [हिं० जुरना] जोड़। संचय।
जूरना*–क्रि० स० दे० "जोड़ना"।
जूरा–संज्ञा पुं० दे० "जूड़ा"।
जूरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० जुरना] १. घास या पत्तों का छोटा पूला। जुट्टी। २. सूरन आदि के नए कल्ले जो बँधे हुए निकलते हैं। ३. एक प्रकार का पकवान।
जूस–संज्ञा पुं० [सं० जूष] १. पकी हुई दाल का पानी जो रोगियों को पथ्य रूप में दिया जाता है। २. उबाली हुई चीज का रस। रसा।
संज्ञा पुं० [फ़ा० जुफ़्त, सं० युक्त] युग्म संख्या। सम संख्या।
जूस ताक–संज्ञा पुं० [हिं० जूस + फ़ा० ताक] एक प्रकार का जूआ जिसमें कौड़ियाँ हाथ में लेकर पूछा जाता है कि ये जूस हैं या ताक।
जूसी–संज्ञा स्त्री० [हिं० जूस] वह गाढ़ा लसीला रस जो ईख के पकते हुए रस में से छूटता है। खाँड़ का पसेव। चोटा।

जूह*—संज्ञा पुं० दे० "यूथ"।
जूहर*—संज्ञा पुं० दे० "जौहर"।
जूही—संज्ञा स्त्री० [सं० यथी] १ एक प्रसिद्ध झाड़ या पौधा। इसके फूल चमेली से मिलते जुलते, पर छोटे होते है। २ एक प्रकार की आतशबाजी।
जूंभ—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० जूंभा। वि० जृंभक] १ जँभाई। २ आलस्य।
जृंभक—वि० [सं०] जँभाई लेनेवाला। संज्ञा पुं० १ रुद्रगणों में से एक। २ एक अस्त्र जिसके चलाने से शत्रु जँभाई लेने लगते थे, या सो जाते थे।
जृंभण—संज्ञा पुं० [सं०] जँभाई लेना।
जृंभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जँभाई। २ आलस्य या प्रमाद से उत्पन्न जडता।
जेंवन—संज्ञा पुं० [हिं० जेंवना] भोजन।
जेंवना—क्रि० स० [सं० जेमन] खाना।
जेंवाना†—क्रि० स० [हिं० जेवना] खिलाना।
जे*†—सर्व [सं० ये] 'जो' का बहुवचन।
जेइ, जेउ, जेऊ*†—सर्व० दे० 'जो'।
जेठ—संज्ञा पुं० [सं० ज्येष्ठ] १ ग्रीष्म ऋतु का वह मास जो बैसाख और असाढ के बीच में पड़ता है। ज्येष्ठ। २ [स्त्री० जेठानी] पति का बड़ा भाई। भसुर। वि० अग्रज। बड़ा।
जेठरा†—वि० दे० "जेठ"।
जेठा—वि० [सं० ज्येष्ठ] [स्त्री० जेठी] १ अग्रज। बड़ा। २ सबसे अच्छा।
जेठाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० जेठ] बड़ाई। जेठापन।
जेठानी—संज्ञा स्त्री० [हिं० जेठ] जेठ या पति के बड़े भाई की स्त्री।
जेठी—वि० [हिं० जेठ + ई (प्रत्य०)] जेठ संबंधी। जेठ का।
जेठीमधु—संज्ञा स्त्री० [सं० यष्टिमधु] मुलेठी।
जेठौत, जेठौता†—संज्ञा पुं० [सं० ज्येष्ठ + पुत्र] [स्त्री० जेठौती] जेठ या पति के बड़े भाई का पुत्र।
[illegible] पुं० [सं० जन्] १ जीमनेवाला। [illegible]। २ [illegible]।

वि० दे० "जितना"।
जेतिक*†—क्रि० वि० [सं० य] जितना।
जेते*†—वि० [सं० य, यत्] जितने।
जेतो*†—क्रि० वि० [सं० य, यत्] जितना।
जेब—संज्ञा पुं० [फा०] पहनने के कपड़े के बगल में या सामने की ओर लगी हुई वह छोटी थैली जिसमें चीज रखते हैं। खीसा। खरीता। पाकेट।
संज्ञा स्त्री० [फा० जेब] शोभा। सौंदर्य।
जेबकट—संज्ञा पुं० [फा० जेब+हिं० काटना] वह जो दूसरों के जेब में रुपया पैसा लेने के लिये जेब काटता हो। जेबकतरा। गिरहकट।
जेबखर्च—संज्ञा पुं० [फा०] वह धन जो किसी को निज के खर्च के लिये मिले।
जेबघड़ी—संज्ञा स्त्री० [फा० जेब+घड़ी] छोटी घड़ी जो जेब में रखी जाती है। जेबी घड़ी। वाच।
जेबी—वि० [फा०] १. जो जेब में रखा जा सके। २ बहुत छोटा।
जेय—वि० [सं०] जीतने योग्य।
जेर—संज्ञा स्त्री० [देश०] वह झिल्ली जिसमें गर्भगत बालक रहता है। आँवल।
वि० [फा० जेर] [संज्ञा जेरबारी] १ परास्त। पराजित। २ जो बहुत तंग किया जाय।
जेरपाई—संज्ञा स्त्री० [फा०] स्त्रियों की जूती।
जेरबार—वि० [फा०] १ जो किसी आपत्ति के कारण बहुत दुखी हो। २ जिसकी बहुत हानि हुई हो।
जेरबारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ आपत्ति या क्षति के कारण बहुत दुखी होना। तंगी। २ हैरानी। परेशानी।
जेरी—संज्ञा स्त्री० [?] १ दे० "जेर"। २ वह लाठी जो चरवाहे कँटीली झाड़ियाँ इत्यादि हटाने के लिये रखते हैं।
जेल—संज्ञा पुं० [अं०] वह स्थान जहाँ राज्य द्वारा दंडित अपराधी आदि निश्चित समय के लिये रखे जाते हैं। कारागार। बंदीगृह।
[illegible] संज्ञा पुं० [फा० [illegible]] [illegible]। हैरानी या

परेशानी का काम।

जेलखाना–संज्ञा पुं० [अ०+फ़ा०] कारागार।

जेवना–क्रि० स० दे० "जीमना"।

जेवनार–संज्ञा स्त्री० [हिं० जेवना] १. बहुत से मनुष्यों का एक साथ बैठकर भोजन करना। भोज। २. रसोई। भोजन।

जेवर–संज्ञा पुं० [फ़ा०] गहना। आभूषण।

जेवरी–संज्ञा स्त्री० [सं० जीवा] रस्सी।

जेह–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० जिह=चिल्ला] १. कमान की डोरी में वह स्थान जो आँख के पास लगाया जाता है और जिसकी सीध में निशान रहता है। चिल्ला। २. दीवार में नीचे की ओर पलस्तर आदि का मोटा और उभरा हुआ लेप।

जेहन–संज्ञा पुं० [अ०] [वि० जहीन] बुद्धि। धारणाशक्ति।

जेहर†–संज्ञा स्त्री० [?] पाजेब (जेवर)।

जेहल–संज्ञा पुं० दे० "जेल"।

जेहलखाना‡–संज्ञा पुं० दे० "जेल"।

जेहि*–सर्व० [सं० यस्] १. जिसको। २. जिससे

जैं–संज्ञा स्त्री० दे० "जय"।

†वि० [सं० यावत्] जितने। जिस कदर।

जैत†*–संज्ञा स्त्री० [सं० जयति] विजय। संज्ञा पुं० [सं० जयती] अगस्त की तरह का एक पेड़।

जैतपत्र*–संज्ञा पुं० [सं० जयति+पत्र] जयपत्र

जैतवार*†–संज्ञा पुं० [हिं० जैत+वार] जीतनेवाला। विजयी। विजेता।

जैतून–संज्ञा पुं० [अ०] एक ऊँचा सदा-बहार पेड़ जिसे पश्चिम की प्राचीन जातियाँ पवित्र मानती थीं। इसके फल और बीज दवा के काम में आते हैं।

जैन–संज्ञा पुं० [सं०] १. भारत का एक धर्म संप्रदाय जिसमें अहिंसा परम धर्म माना जाता है और कोई ईश्वर या सृष्टि-कर्त्ता नहीं माना जाता। २. जैनी।

जैनी–संज्ञा पुं० [हिं० जैन] जैन-मतावलंबी।

जैंनु†*–संज्ञा पुं० [हिं० जेवना] भोजन।

जैबो†–क्रि० अ० दे० "जाना"।

जैमिनि–संज्ञा पुं० [सं०] पूर्व मीमांसा के प्रवर्तक एक ऋषि जो व्यास जी के ४ मुख्य शिष्यों में से एक थे।

जैयद–वि० [अ० जद्=दादा] १. बड़ा भारी। बहुत बड़ा। २. बहुत धनी।

जैलदार–संज्ञा पुं० [अ० जैल+फ़ा० दार] वह सरकारी ओहदेदार जिसके अधिकार में कई गाँवों का प्रबंध हो।

जैसा–वि० [सं० यादृश] [स्त्री० जैसी] १. जिस प्रकार का। जिस रूप-रंग या गुण का। मुहा०–जैसे का तैसा = ज्यों का त्यों। जैसा पहले था, वैसा ही। जैसा चाहिए=उपयुक्त। २. जितना। जिस परिमाण या मात्रा का। (केवल विशेषण के साथ) † ३. समान। सदृश। तुल्य।

क्रि० वि० जितना। जिस परिमाण में।

जैसे–क्रि० वि० [हिं० जैसा] जिस प्रकार से। जिस ढंग से।

मुहा०–जैसे तैसे=किसी प्रकार। बड़ी कठिनता से

जैसो†–वि०, क्रि० वि० दे० "जैसा"।

जों†*–क्रि० वि० दे० "ज्यों"।

जोंक–संज्ञा स्त्री० [सं० जलौका] १. पानी में रहनेवाला एक प्रसिद्ध कीड़ा जो जीवों के शरीर में चिपटकर उनका रक्त चूसता है। २. वह मनुष्य जो अपना काम निकालने के लिये बेतरह पीछे पड़ जाय।

जोंधरी–संज्ञा स्त्री० [सं० जूर्ण] १. छोटी ज्वार। २. बाजरा। (क्वचित्)

जोंधैया–संज्ञा स्त्री० [सं० ज्योत्स्ना] चाँदनी। चंद्रिका।

जो–सर्व० [सं० यः] एक संबंधवाचक सर्वनाम जिसके द्वारा कही हुई संज्ञा या सर्वनाम के वर्णन में कुछ और वर्णन की योजना की जाती है। जैसे—जो घोड़ा आपने भेजा था, वह मर गया।

*अव्य० [सं० यद्] यदि। अगर।

जोअना*†–क्रि० स० दे० "जोवना"।

जोइ*†–संज्ञा स्त्री० [सं० जाया] जोरू। पत्नी। स्त्री।

†सर्व० दे० "जो"।

जोइसी*–संज्ञा पुं० दे० "ज्योतिषी"।

मुहा०—किसी के जोर पर कूदना=किसी की अपनी सहायता पर देखकर अपना बल दिखाना।
६ परिश्रम। मेहनत। ७ व्यायाम।
जोरदार–वि० [फा०] जिसमें बहुत जोर हो। जोरवाला।
जोरना†–क्रि० स० दे० "जोड़ना"।
जोर शोर–सज्ञा पु० [फा०] बहुत अधिक जोर।
जोरा जोरी†*–सज्ञा स्त्री० [फा० जोर] जबरदस्ती।
क्रि० वि० जबरदस्ती से। बलपूर्वक।
जोरावर–वि० [फ़ा०] [सज्ञा जोरावरी] बलवान्। ताकतवर।
जोरी†*–सज्ञा स्त्री० दे० "जोड़ी"।
सज्ञा स्त्री० [फा० जोर] जबरदस्ती।
जोरू–सज्ञा स्त्री० [हि० जोड़ा] स्त्री। पत्नी।
जोलाहल†*–सज्ञा स्त्री० [स० ज्वाला] ज्वाला। अग्नि। आग।
जोली†*–सज्ञा स्त्री० [हि० जोड़ी] बराबरी।
जोवना*–क्रि० स० [स० जुषण=सेवन] १ जोहना। देखना। २ ढूँढ़ना। तलाश करना। ३ आसरा देखना।
जोश–सज्ञा पु० [फा०] १ आँच या गरमी के कारण उबलना। उफान। उबाल।
मुहा०—जोश खाना=उबलना। उफनना। जोश देना=पानी के साथ उबालना।
२ चित्त की तीव्र वृत्ति। मनोवेग।
मुहा०—खून का जोश=प्रेम का वह वेग जो अपने वंश के किसी मनुष्य के लिये हो।
जोशन–सज्ञा पु० [फा०] भुजाओं पर पहनने का गहना। २ जिरह-बकतर। कवच।
जोशाँदा–सज्ञा पु० [फा०] पानी में उबाली हुई जड़ या पत्तियाँ आदि। क्वाथ। काढ़ा।
जोशीला–वि० [फा० जोश+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० जोशीली] जिसमें खूब जोश हो। आवेगपूर्ण।
जोष–सज्ञा स्त्री० [स० योषा] स्त्री। नारी।
सज्ञा स्त्री० दे० "जोख"।
जोषिता–सज्ञा स्त्री० [स०] स्त्री। नारी।
जोषी–सज्ञा पु० [स० ज्योतिषी] १ गुजराती, महाराष्ट्र और पहाड़ी ब्राह्मणों में एक जाति। २ ज्योतिषी। गणक। (क्व०)
जोह†*–सज्ञा स्त्री० [हि० जोहना] १ खोज। तलाश। २ इंतजार। प्रतीक्षा। खोज। ३ कृपा-दृष्टि।
जोहन†*–सज्ञा स्त्री० [हि० जोहना] १ देखने या जोहने की क्रिया। २ तलाश। ३ प्रतीक्षा। इंतजार।
जोहना–क्रि० स० [स० जुषण=सेवन] १ देखना। ताकना। २ ढूँढ़ना। पता लगाना। ३ प्रतीक्षा करना।
जोहार–सज्ञा स्त्री० [स० जुषण=सेवन] अभिवादन। वंदन। प्रणाम।
सज्ञा पु० दे० "जौहर"।
जौं†–अव्य० [स० यदि] यदि। जो।
क्रि० वि० दे० "ज्यों"।
जौंराभौंरा–सज्ञा पु० [हि० भुइँघर, भुइँहरा] किले या महलों का वह तहखाना जिसमें गुप्त खजाना आदि रहता है।
सज्ञा पु० [हि० जोड़ा+भौंरा] दो बालकों का जोड़ा।
जौ–सज्ञा पु० [स० यव] १ गेहूँ की तरह का एक प्रसिद्ध पौधा जिसके बीज या दाने की गिनती अनाजों में है। २ एक पौधा जिसकी लचीली टहनियों से टोकरे, झाड़ आदि बनते हैं। ३ छः राई (खरदल) के बराबर एक तौल।
†अव्य० [स० यद्] यदि, अगर।
*†क्रि० वि० जब।
जौख–सज्ञा पु० [तु० जूक] १ झुंड। जत्था। २ फौज। सेना। ३ पक्षियों की श्रेणी।
जौजा–सज्ञा स्त्री० [अ० जौज] जोरू।
जौधिक–सज्ञा पु० [स०] तलवार या खड्ग के ३२ हाथों में से एक।
जौन†*–सर्व० [स० य] जो।
वि० जो।

संज्ञा पुं० दे० "यवन"।

जौपै*†–अव्य० [हिं० जो+पै] अगर। यदि।

जौहर–संज्ञा पुं० [फ़ा० गौहर का अरबी रूप] १. रत्न। बहुमूल्य पत्थर। २. सार वस्तु। सारांश। तत्त्व। ३. हथियार की ओप। ४. विशेषता। उत्तमता। खूबी।

संज्ञा पुं० [हिं० जीव+हर] १. राजपूतों में युद्ध-समय की एक प्रथा जिसके अनुसार नगर या गढ़ में शत्रु-प्रवेश का निश्चय होने पर उनकी स्त्रियाँ और बच्चे दहकती हुई चिता में जल जाते थे। २. वह चिता जो दुर्ग में स्त्रियों के जलने के लिये बनाई जाती है। ३. आत्महत्या।

जौहरी–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. रत्न परखने या बेचनेवाला। रत्न-विक्रेता। २. किसी वस्तु के गुण-दोष की पहचान रखनेवाला। पारखी। जँचवैया।

ज्ञ–संज्ञा पुं० [सं०] १. ज् और ञ के सयोग से बना हुआ संयुक्त अक्षर। २. ज्ञान। बोध। ३. ज्ञानी। जाननेवाला। जैसे, शास्त्रज्ञ। ४. ब्रह्मा। ५. बुध ग्रह।

ज्ञप्त–वि० [सं०] जाना हुआ।

ज्ञप्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जानकारी। २. बुद्धि।

ज्ञात–वि० [सं०] जाना हुआ। विदित।

ज्ञात-यौवना–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह मुग्धा नायिका जिसे अपने यौवन का ज्ञान हो।

ज्ञातव्य–वि० [सं०] जो जाना जा सके। ज्ञेय। बोधगम्य।

ज्ञाता–वि० [सं० ज्ञातृ, ज्ञाता] [स्त्री० ज्ञात्री] जानने या ज्ञान रखनेवाला। जानकार।

ज्ञाति–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक ही गोत्र या वंश का मनुष्य। गोती। २. भाई-बंधु।

संज्ञा स्त्री० दे० "जाति"।

ज्ञान–संज्ञा पुं० [सं०] १. वस्तुओं और विषयों की वह भावना जो मन या आत्मा को हो। बोध। जानकारी। प्रतीति। २. यथार्थ या सम्यक् ज्ञान। तत्त्वज्ञान।

मुहा०—ज्ञान छाँटना=अपनी विद्या या जानकारी जताने के लिये लंबी-चौड़ी बातें करना।

ज्ञानकांड–संज्ञा पुं० [सं०] वेद का वह कांड या विभाग जिसमें ब्रह्म आदि सूक्ष्म विषयों का विचार है। जैसे—उपनिषद्।

ज्ञानगम्य–संज्ञा पुं० [सं०] जो जाना जा सके। ज्ञेय।

ज्ञानगोचर–वि० दे० "ज्ञानगम्य"।

ज्ञानयोग–संज्ञा पुं० [सं०] ज्ञान की प्राप्ति द्वारा मोक्ष का साधन।

ज्ञानवान्–वि० [सं०] ज्ञानी।

ज्ञानवृद्ध–वि० [सं०] जिसकी जानकारी अधिक हो।

ज्ञानी–वि० [सं० ज्ञानिन्] १. जिसे ज्ञान हो। ज्ञानवान्। जानकार। २. आत्मज्ञानी। ब्रह्मज्ञानी।

ज्ञानेंद्रिय–संज्ञा स्त्री० [सं०] वे पाँच इंद्रियाँ जिनसे जीवों को विषयों का बोध होता है। यथा—दर्शनेंद्रिय, श्रवणेंद्रिय; घ्राणेंद्रिय, रसना और स्पर्शेंद्रिय।

ज्ञापक–वि० [सं०] जतानेवाला। सूचक।

ज्ञापन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० ज्ञापित, ज्ञाप्य] जताने या बताने का कार्य।

ज्ञापित–वि० [सं०] जताया हुआ। सूचित।

ज्ञेय–वि० [सं०] १. जिसका जानना योग्य या कर्तव्य हो। जानने योग्य। २. जो जाना जा सके।

ज्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. धनुष की डोरी। २. वह रेखा जो किसी चाप के एक सिरे से दूसरे सिरे तक हो। ३. वह रेखा जो किसी चाप के एक सिरे से उस व्यास पर लंब-रूप से गिरी हो जो चाप के दूसरे सिरे से होकर गया हो। ४. पृथ्वी।

ज्यादती–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. अधिकता। बहुतायत। २. अत्याचार।

ज्यादा–वि० [फा०] अधिक। बहुत।

ज्याफ़त–संज्ञा स्त्री० [अ० ज़ियाफ़त] १. दावत। भोज। २. मेहमानी। आतिथ्य।

ज्यामिति–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह गणित विद्या जिससे भूमि के परिमाण तथा रेखा, कोण, तल आदि का विचार किया जाता

जोउ–सर्व० दे० "जो"।

जोखना–क्रि० स० [सं० जुप=जाँचना] १. तौलना। वजन करना। २. जाँचना।

जोखा–संज्ञा पुं० [हिं० जोखना] लेखा। हिसाब।

जोखिम–संज्ञा स्त्री० [हिं० झोंका] १. भारी अनिष्ट या विपत्ति की आशंका अथवा संभावना। झोंकी।

मुहा०—जोखिम उठाना या सहना=ऐसा काम करना जिसमें भारी अनिष्ट की आशंका हो। जान जोखिम होना=मरने का भय होना। २. वह पदार्थ जिसके कारण भारी विपत्ति आने की संभावना हो।

जोखों–संज्ञा स्त्री० दे० "जोखिम"।

जोगंधर–संज्ञा पुं० [सं० योगंधर] एक युक्ति जिसके द्वारा शत्रु के चलाए हुए अस्त्र से अपना बचाव किया जाता था।

जोग–संज्ञा पुं० दे० "योग"।

अव्य० [सं० योग्य] को। के निकट। के वास्ते। (पुरा० हिं०)

जोगड़ा–संज्ञा [हिं० जोग+डा (प्रत्य०)] बना हुआ योगी। पाखंडी।

जोगवना–क्रि० स० [सं० योग+अवना (प्रत्य०)] १. यत्न से रखना। रक्षित रखना। २. संचित करना। एकत्र करना। ३. लिहाज रखना। आदर करना। ४. जाने देना। ख्याल न करना। ५. पूरा करना।

जोगानल–संज्ञा स्त्री० [सं० योगानल] योग से उत्पन्न आग।

जोगिंद*†–संज्ञा पुं० दे० "जोगींद्र"।

[illegible]–संज्ञा स्त्री० [सं० योगिनी] १. जोगी की स्त्री। २. साधुनी। ३. पिशाचिनी।

जोगिनी–संज्ञा स्त्री० दे० "योगिनी"।

जोगिया–वि० [हिं० जोगी+इया (प्रत्य०)] १. जोगी-संबंधी। जोगी का। २. गेरू के रंग में रँगा हुआ। गैरिक।

जोगींद्र*†–संज्ञा पुं० [सं० योगींद्र] १. बड़ा योगी। २. शिव।

जोगी–संज्ञा पुं० [सं० योगी] १. वह जो योग करता हो। योगी। २. एक प्रकार के भिक्षुक जो सारंगी पर गाते फिरते हैं।

जोगीड़ा–संज्ञा पुं० [हिं० योगी+डा (प्रत्य०)] १. एक प्रकार का रंगीन या चलता गाना। २. गाने बजानेवालों का एक छोटा समाज।

जोगेश्वर–संज्ञा पुं० [सं० योगेश्वर] १. श्रीकृष्ण। २. शिव। ३. सिद्ध योगी।

जोजन*–संज्ञा पुं० दे० "योजन"।

जोटा*†–संज्ञा पुं० [सं० योटक] जोड़ा। युग।

जोटिंग–संज्ञा पुं० [सं०] शिव।

जोटी*†–संज्ञा स्त्री० [हिं० जोट] १. जोड़ी। युग्मक। २. बराबरी का। समान।

जोड़–संज्ञा पुं० [सं० योग] १. कई संख्याओं का योग। जोड़ने की क्रिया। २. वह संख्या जो कई संख्याओं को जोड़ने से निकले। मीज़ान। टीक। टोटल। ३. वह स्थान जहाँ दो या अधिक पदार्थ मिले हों। ४. वह टुकड़ा जो किसी चीज में जोड़ा जाय। ५. वह चिह्न जो दो चीजों के एक में मिलने के कारण संधि-स्थान पर पड़ता है। ६. शरीर के दो अवयवों का संधि-स्थान। गाँठ। ७. मेल-मिलाप। ८. एक ही तरह की अथवा साथ साथ काम में आनेवाली दो चीज़ें। जोड़ा। ९. बराबरी। समानता। १०. वह जो बराबरी का हो। जोड़ा। ११. पहनने के सब कपड़े। पूरी पोशाक। १२. छल। दाँव।

यौ०—जोड़-तोड़ १. दाँव-पेंच। छल-कपट। २. विशेष युक्ति। ढंग।

जोड़ती†–संज्ञा स्त्री० [हिं० जोड़+ती (प्रत्य०)] गणित में कई संख्याओं का योग। जोड़।

जोड़न–संज्ञा स्त्री० [हिं० जोड़] वह पदार्थ जो दही जमाने के लिये दूध में डाला जाता है। जावन। जामन।

जोड़ना–क्रि० स० [हिं० जुड़=बाँधना या सं० युक्त] १. दो वस्तुओं को किसी उपाय से एक करना। दो चीजों को मजबूती से एक करना। २. किसी टूटी हुई चीज के टुकड़ों को मिलाकर एक करना। ३. द्रव्य या सामग्री को क्रम से रखना या लगाना। ४. एकत्र करना। इकट्ठा करना। ५. कई

संख्याओं का योग-फल निकालना। मीज़ान लगाना। ६. वाक्यों या पदों आदि की योजना करना। ७. प्रज्वलित करना। जलाना। ८. संबंध स्थापित करना।
जोड़वाँ-वि० [हिं० जोड़ा + वाँ (प्रत्य०)] वे दो बच्चे जो एक ही गर्भ से साथ उत्पन्न हुए हों। यमज।
जोड़वाना-क्रि० स० [हिं० जोड़ना का प्रे०] जोड़ने का काम दूसरे से कराना।
जोड़ा-संज्ञा पुं० [हिं० जोड़ना] [स्त्री० जोड़ी] १. दो समान पदार्थ। एक ही सी दो चीज़ें। २. जूते। उपानह। ३. पहनने के सब कपड़े। पूरी पोशाक। ४. स्त्री और पुरुष या नर और मादा। ५. वह जो बराबरी का हो। जोड़।
जोड़ाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० जोड़ना + आई (प्रत्य०)] १. वस्तुओं को जोड़ने की क्रिया या भाव। २. जोड़ने की मजदूरी।
जोड़ी-संज्ञा स्त्री० [हिं० जोड़ा] १. एक ही सी दो चीज़ें। जोड़ा। २. दो घोड़ों या दो बैलों की गाड़ी। ३. दोनों मुगदर जिससे कसरत करते हैं। ४. मँजीरा।
जोत-संज्ञा स्त्री० [हिं० जोतना] १. चमड़े का तस्मा या रस्सी जिसका एक सिरा जोते जानेवाले जानवरों के गले में और दूसरा उस चीज़ में बँधा रहता है जिसमें वे जोते जाते हैं। २. वह रस्सी जिसमें तराज़ू के पल्ले लटकते रहते हैं।
†संज्ञा स्त्री० दे० "ज्योति"।
जोतना-क्रि० स० [सं० योजन या युक्त] १. गाड़ी, कोल्हू आदि को चलाने के लिये उसके आगे बैल, घोड़े आदि पशु बाँधना। २. किसी को ज़बरदस्ती किसी काम में लगाना। ३. खेती के लिये हल चलाना।
जोता-संज्ञा पुं० [हिं० जोतना] १. जुआठे में बँधी हुई वह पतली रस्सी जिसमें बैलों की गरदन फँसाई जाती है। २. बहुत बड़ी शहतीर। ३. वह जो हल जोतता हो।
जोताई-संज्ञा स्त्री० [हिं० जोतना + आई (प्रत्य०)] १. जोतने का काम या भाव। २. जोतने की मजदूरी।
जोति, जोती-संज्ञा स्त्री० [सं० ज्योति] १. घी का दीआ जो किसी देवी-देवता के आगे जलाया जाता है। २. दे० "ज्योति"।
*†-संज्ञा स्त्री० [हिं० जोतना] जोतने-बोने योग्य भूमि।
जोधा*†-संज्ञा पुं० दे० "योद्धा"।
जोनि*-संज्ञा स्त्री० दे० "योनि"।
जोन्ह, जोन्हाई*†-संज्ञा स्त्री० दे० "जुन्हाई"।
जोपै*-प्रत्य० [हिं० जो + पर] १. यदि। अगर। २. यद्यपि। अगरचे।
ज़ोफ़-संज्ञा पुं० [अ०] १. बुढ़ापा। वृद्धावस्था। २. निर्बलता। कमज़ोरी।
जोबन-संज्ञा पुं० [सं० यौवन] १. युवा होने का भाव। यौवन। २. सुंदरता। खूबसूरती। ३. रौनक़। बहार।
जोम-संज्ञा पुं० [अ०] १. उमंग। उत्साह। २. जोश। आवेश। ३. अभिमान।
जोय*†-संज्ञा स्त्री० [सं० जाया] जोरू। स्त्री। सर्व० पुं० जो। जिस।
जोयना*†-क्रि० स० [हिं० जोड़ना] बालना। जलाना।
क्रि० स० दे० "जोवना"।
जोयसी*†-संज्ञा पुं० दे० "ज्योतिषी"।
ज़ोर-संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. बल। शक्ति।
मुहा०—(किसी बात पर) ज़ोर देना = किसी बात को बहुत ही आवश्यक या महत्त्वपूर्ण बतलाना। (किसी बात के लिये) ज़ोर देना = किसी बात के लिये आग्रह करना। ज़ोर मारना या लगाना = १. बल का प्रयोग करना। २. बहुत प्रयत्न करना।
यौ०—ज़ोर-ज़ुल्म = अत्याचार।
२. प्रबलता। तेज़ी। बढ़ती।
मुहा०—ज़ोरों पर होना = १. पूरे बल पर होना। बहुत तेज होना। २. खूब उन्नत होना।
३. वश। अधिकार। क़ाबू। ४. वेग। आवेश। झोंक।
मुहा०—ज़ोरों पर = बड़े वेग से। तेज़ी से।
५. भरोसा। आसरा। सहारा।

है। क्षेत्रगणित। रेखागणित।

ज्यारना|*–क्रि० अ० दे० "जिलाना"।

ज्यावना|*–क्रि० स० दे० "जिलाना"।

ज्यूं|–अव्य० दे० "ज्यों"।

ज्येष्ठ–वि० [सं०] १. बड़ा। जेठा। २. वृद्ध। बड़ा-बूढ़ा।

संज्ञा पुं० १. जेठ का महीना। २. परमेश्वर।

ज्येष्ठता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ज्येष्ठ होने का भाव। बड़ाई। २. श्रेष्ठता।

ज्येष्ठा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अठारहवाँ नक्षत्र जो तीन तारों से बना और कुंडल के आकार का है। २. वह स्त्री जो औरों की अपेक्षा अपने पति को अधिक प्यारी हो। ३. छिपकली। ४. मध्यमा उँगली।

वि० स्त्री० बड़ी।

ज्यों*–क्रि० वि० [सं० य.+इव] १. जिस प्रकार। जैसे। जिस ढंग से।

मुहा०—ज्यों त्यों=किसी न किसी प्रकार। २. जिस क्षण। जैसे ही।

मुहा०—ज्यों ज्यों=१. जिस क्रम से। २. जिस मात्रा से। जितना।

ज्योतिःशिखा–संज्ञा स्त्री० [सं०] विषम वर्णवृत्तों का एक भेद जिसके पहले दल में ३२ लघु और दूसरे दल में १६ गुरु होते हैं।

ज्योति–संज्ञा स्त्री० [सं०ज्योतिस्] १.प्रकाश। उजाला। द्युति। २. लपट। लौ। ३. अग्नि। ४. सूर्य्य। ५. नक्षत्र। ६ आंख की पुतली के मध्य का बिंदु। ७. दृष्टि। ८. विष्णु। ९. परमात्मा।

ज्योतिक–संज्ञा पुं० दे० "ज्योतिषी"।

ज्योतिर्मय–वि० [सं०] प्रकाशमय। जग-मगाता हुआ।

ज्योतिर्लिंग–संज्ञा [सं०] १. महादेव। शिव। २. भारतवर्ष में प्रतिष्ठित शिव के प्रधान लिंग जो बारह हैं।

ज्योतिर्लोक–संज्ञा पुं० [सं०] ध्रुवलोक।

ज्योतिर्विद्–संज्ञा पुं० [सं०] ज्योतिषी।

ज्योतिर्विद्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] ज्योतिष।

ज्योतिश्चक्र–संज्ञा पुं० [सं०] नक्षत्रों और राशियों का मंडल।

ज्योतिष–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह विद्या जिससे अंतरिक्ष में स्थित ग्रहों, नक्षत्रों आदि की पारस्परिक दूरी, गति, परिमाण आदि का निश्चय किया जाता है। २. अस्त्रों का एक संहार या रोक।

ज्योतिषी–संज्ञा पुं० [सं० ज्योतिषिन्] ज्योतिष शास्त्र का जाननेवाला मनुष्य। ज्योतिर्विद्। दैवज्ञ। गणक।

ज्योतिष्क–संज्ञा पुं० [सं०] १. ग्रह, तारा, नक्षत्र आदि का समूह। २. मेथी। ३. चित्रक वृक्ष। चीता। ४. गनियारी।

ज्योतिष्टोम–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का यज्ञ।

ज्योतिष्पथ–संज्ञा पुं० [सं०] आकाश।

ज्योतिष्पुंज–संज्ञा पुं० [सं०] नक्षत्र-समूह।

ज्योतिष्मती–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. माल-कँगनी। २. रात्रि।

ज्योतिष्मान्–वि० [सं०] प्रकाशयुक्त।

संज्ञा पुं० सूर्य्य।

ज्योत्स्ना–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चंद्रमा का प्रकाश। चाँदनी। २. चाँदनी रात।

ज्योनार–संज्ञा स्त्री० [सं० जेमन=खाना] १. पका हुआ भोजन। रसोई। २. भोज। दावत। ज्याफत।

ज्योरी|–संज्ञा स्त्री० [सं० जीवा] रस्सी।

ज्योहत, ज्योहर*|–संज्ञा पुं० [सं० जीव+हत] आत्महत्या। जौहर।

ज्यौं–अव्य० [सं० यदि] जो। यदि।

ज्यौतिष–वि० [सं०] ज्योतिष-संबंधी।

ज्वर–संज्ञा पुं० [सं०] शरीर की वह गरमी जो अस्वस्थता प्रकट करे। ताप। बुखार।

ज्वरांकुश–संज्ञा पुं० [सं०] १. ज्वर की एक औषध। २. एक सुगंधित घास।

ज्वलत–वि० [सं०] १. प्रकाशमान। दीप्त। २. अत्यंत स्पष्ट।

ज्वलन–संज्ञा पुं० [सं०] १. जलने का कार्य्य या भाव। जलन। दाह। २. अग्नि। आग। ३. लपट। ज्वाला।

ज्वलित–वि० [सं०] १. जला हुआ। २. चमकता या झलकता हुआ। उज्ज्वल।
ज्वान†–वि० दे० "जवान"।
ज्वार–संज्ञा स्त्री० [सं० यवनाल] १. एक प्रकार की घास जिसकी बाल के दाने मोटे अनाजों में गिने जाते हैं। जोन्हरी। जुंडी। २. समुद्र के जल की तरंग का चढ़ाव। लहर की उठान। भाटा का उलटा।
ज्वार-भाटा–संज्ञा पुं० [हि० ज्वार + भाटा] समुद्र के जल का चढ़ाव उतार या लहर का चढ़ना और घटना जो चंद्रमा और सूर्य्य के आकर्षण से होता है। इसके चढ़ने को ज्वार और उतरने को भाटा कहते हैं।
ज्वाल–संज्ञा पुं० [सं०] लौ। लपट।
ज्वाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अग्निशिखा। लपट। २. विष आदि की गरमी। ३. गरमी। ताप। जलन।
ज्वालादेवी–संज्ञा स्त्री० [सं०] शारदा पीठ में स्थित एक देवी। इनका स्थान काँगड़ा जिले में है।
ज्वालामुखी पर्वत–संज्ञा पुं० [सं०] वह पर्वत जिसकी चोटी में से धुआँ, राख तथा पिघले या जले हुए पदार्थ बराबर अथवा समय-समय पर निकला करते हैं।

झ

झ–हिंदी व्यंजन-वर्णमाला का नवाँ और चवर्ग का चौथा वर्ण जिसका उच्चारण-स्थान तालू है।
झंकना–क्रि० अ० दे० "झींखना"।
झंकार–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. झनझनाहट का शब्द। झनकार। २. झींगुर आदि छोटे जानवरों के बोलने का शब्द। झनकार।
झंकारना–क्रि० स० [सं० झंकार] "झनझन" शब्द उत्पन्न करना।
क्रि० अ० "झनझन" शब्द होना।
झंखना–क्रि० अ० दे० "झींखना"।
झंखाड़–संज्ञा पुं० [हि० झाड़ का अनु०] १. घनी और काँटेदार झाड़ी या पौधा। २. वह वृक्ष जिसके पत्ते झड़ गए हों। ३. व्यर्थ की और रद्दी चीजों का समूह।
झंगा–संज्ञा पुं० दे० "झगा"।
झंगुली*†–संज्ञा स्त्री० दे० "झगा"।
झंझट–संज्ञा स्त्री० [अनु०] व्यर्थ का झगड़ा। टंटा। बखेड़ा। प्रपंच।
झंझनाना–क्रि० अ० [अनु०] झनझन शब्द होना। झंकारना।
क्रि० स० झनझन शब्द करना।
झंझर–संज्ञा स्त्री० दे० "झज्झर"।
झंझरा–वि० [अनु०] [स्त्री० झंझरी] जिसमें बहुत से छोटे-छोटे छेद हों।
झंझरी–संज्ञा स्त्री० [हि० झरझर से अनु०] १. किसी चीज में बहुत से छोटे छोटे छेदों का समूह। जाली। २. दीवारों आदि में बनी हुई छोटी जालीदार खिड़की।
झंझा–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह तेज आँधी जिसके साथ वर्षा भी हो। २. तेज आँधी।
झंझावात–संज्ञा पुं० दे० "झंझा"।
झंझी–संज्ञा स्त्री० [देश०] फूटी कौड़ी।
झंझोड़ना–क्रि० स० [सं० झर्भन] १. किसी चीज को बहुत वेग और झटके के साथ हिलाना जिसमें वह टूट-फूट जाय या नष्ट हो जाय। झकझोरना। २. किसी जानवर का अपने से छोटे जानवर को मार डालने के लिये दाँतों से पकड़कर खूब झटका देना।
झंडा–संज्ञा पुं० [सं० जयंत] [स्त्री० अल्पा० झंडी] १. तिकोने या चौकोर कपड़े का टुकड़ा जिसका एक सिरा लकड़ी आदि के डंडों में लगा रहता है और जिसका व्यवहार चिह्न प्रकट करने, संकेत करने और उत्सव आदि सूचित करने के लिये होता है। पताका। निशान। फरहरा। ध्वजा।
मुहा०—झंडा खड़ा करना = १. सैनिक

आधिपत्य प्रकट करने के लिये झंडा स्थापित करके गर्व प्रकट करना। २ आडंबर करना। झंडा गाड़ना या फहराना = १ किसी स्थान विशेषतः नगर या किले आदि पर अपना अधिकार करके उसमें चिह्न-स्वरूप झंडा स्थापित करना। २ पूर्ण रूप से अपना अधिकार जमाना। ३ ज्वार, बाजरे आदि पौधों के ऊपर का नर-फूल। जीरा।

झँडूला–वि० [हिं० झंड + ऊला (प्रत्य०)] १ जिसके सिर पर गर्भ के बाल हों। जिसका मुंडन संस्कार न हुआ हो। (बालक)। २ मुंडन संस्कार से पहले का। गर्भ का (बाल)। ३ घनी पत्तियोंवाला। सघन। (वृक्ष)।

झप–संज्ञा पुं० [सं०] उछाल। फलाँग। मुहा०—झप देना = कूदना।
संज्ञा पुं० [देश०] घोड़े के गले का एक आभूषण।

झँपना–क्रि० अ० [सं० झप] १ ढँकना। छिपना। आड़ में होना। २ उछलना। कूदना। लपकना। ३ टूट पड़ना। एकदम से आ पड़ना। ४ झेंपना। लज्जित होना।

झँपरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० झाँपना=ढकना] पालकी को ढाँकने की खोली। ओहार।

झपान–संज्ञा पुं० [सं० झप] पहाड़ी सवारी के लिये एक प्रकार की खटोली। झप्पान।

झँपोला–संज्ञा पुं० [हिं० झाँपा + ओला (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० झँपोली या झँपोलिया] छोटा झाँपा या झाबा। छाबड़ा।

झँवकारा*†–वि० [हिं० झाँवला + काला] झाँवले रंग का। काला।

झँवराना–क्रि० अ० [हिं० झाँवर] १ कुछ काला पड़ना। २ कुम्हलाना। फीका पड़ना।

झँवा–संज्ञा पुं० दे० "झाँवाँ"।

झँवाना–क्रि० अ० [हिं० झाँवा] १ झाँवे के रंग का हो जाना। कुछ काला पड़ जाना। २ अग्नि का मंद हो जाना। ३ घट जाना। ४. कुम्हलाना। मुरझाना। ५ झाँवें से रगड़ा जाना।
क्रि० स० १ झाँवे से रंग काला कर देना। कुछ काला कर देना। २ आग ठंढी करना। ३ घटाना। ४ कुम्हला देना। मुरझा देना। ५ झाँवे से रगड़ना या रगड़वाना।

झँसना–क्रि० स० [अनु०] १ सिर या तलुए आदि में कोई चिकना पदार्थ लगाकर हथेली से उसे बार बार रगड़ना। २ किसी को बहकाकर उसका धन आदि ले लेना।

झ–संज्ञा पुं० [सं०] १ झंझावात। वर्षा मिली हुई तेज आँधी। २ बृहस्पति। ३ दैत्यराज। ४ ध्वनि।

झई–संज्ञा स्त्री० दे० "झाँई"।

झउआ†–संज्ञा पुं० दे० "झाबा"।

झक–संज्ञा स्त्री० [अनु०] सनक। धुन।
संज्ञा स्त्री० दे० "झख"।
वि० चमकीला। साफ।

झकझक–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ व्यर्थ की हुज्जत। फजूल तकरार। २ बकवक।

झकझका–वि० [अनु०] चमकीला।

झकझकाहट–संज्ञा स्त्री० [अनु०] चमक।

झकझेलना–क्रि० स० दे० "झकझोरना"।

झकझोर–संज्ञा पुं० [अनु०] झटका।
वि० झोंकेदार। तेज।

झकझोरना–क्रि० स० [अनु०] किसी चीज को पकड़कर खूब हिलाना। झटका देना।

झकझोरा–संज्ञा पुं० [अनु०] झटका।

झकना†–क्रि० अ० [अनु०] १ बकवाद करना। व्यर्थ की बातें करना। २ क्रोध में आकर अनुचित वचन कहना।

झकाझक–वि० [अनु०] खूब साफ और चमकता हुआ। झलाझल। उज्ज्वल।

झकुराना†–क्रि०अ० [हिं० झकोरा] झूमना।
क्रि० स० झूमने में प्रवृत्त करना।

झकोर*†–संज्ञा पुं० [अनु०] १ हवा का झोंका। २ झटका। झोंका।

झकोरना–क्रि० अ० [अनु०] हवा का झोंका मारना।

झकोरा–संज्ञा पुं० [अनु०] हवा का झोंका।

झकोल*†–संज्ञा पुं० दे० "झकोर"।

झक्कड़–संज्ञा पुं० [अनु०] तेज आँधी।
वि० दे० "झक्की"।

झक्की–वि० [अनु०] १. बहुत बकबक करनेवाला। २. जो अपनी धुन के सामने किसी की न सुने। सनकी।

झखना*†–क्रि० अ० दे० "झींखना"।

झख–संज्ञा स्त्री० [हिं० झींखना] झींखने का भाव या क्रिया।
मुहा०—झख मारना=१. व्यर्थ समय नष्ट करना। २. अपनी मिट्टी खराब करना।

झखना*–क्रि० अ० दे० "झींखना"।

झखी*–संज्ञा स्त्री० [सं० झष] मछली।

झगड़ना–क्रि० अ० [हिं० झकझक से अनु०] परस्पर विवाद करना। झगड़ा करना।

झगड़ा–संज्ञा पुं० [हिं० झकझक से अनु०] परस्पर आवेशपूर्ण विवाद। लड़ाई। हुज्जत। तकरार।

झगड़ालू–वि० [हिं० झगड़ा+आलू (प्रत्य०)] जो बात बात में झगड़ा करता हो। कलहप्रिय।

झगड़ी*–संज्ञा स्त्री० दे० "झगड़ालू"।

झगर–संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की चिड़िया।

झगरा*†–संज्ञा पुं० दे० "झगड़ा"।

झगराऊ*†–वि० दे० "झगड़ालू"।

झगरी*†–संज्ञा स्त्री० दे० "झगड़ालू"।

झगला*†–संज्ञा पुं० दे० "झगा"।

झगा–संज्ञा पुं० [?] छोटे बच्चों के पहनने का कुछ ढीला कुरता।

झगुली*†–संज्ञा स्त्री० दे० "झगा"।

झज्झर–संज्ञा स्त्री० [सं० अलिंजर] कुछ चौड़े मुँह का पानी रखने का मिट्टी का एक प्रकार का बरतन।

झज्झी–संज्ञा स्त्री० [देश०] फूटी कौड़ी।

झझक–संज्ञा स्त्री० [हिं० झझकना] १. झझकने की क्रिया या भाव। भड़क। २. कुछ क्रोध से बोलने की क्रिया या भाव। झुँझलाहट। ३. रह रहकर निकलनेवाली अप्रिय गंध। ४. रह रहकर होनेवाला पागलपन का हलका दौरा।

झझकन*†–संज्ञा स्त्री० दे० "झझक"।

झझकना–क्रि० अ० [अनु०] १. भय की आशंका से अकस्मात् रुक जाना। अचानक डरकर ठिठकना। बिदकना। चमकना। भड़कना। २. झुँझलाना। खिजलाना। ३. चौंक पड़ना।

झझकाना–क्रि० स० [हिं० झझकना का प्रे०] १. भय की आशंका कराके किसी काम से रोक देना। भड़काना। २. चौंका देना।

झझकारना–क्रि० स० [अनु०] [सं० झझकार] १. डपटना। डाँटना। २. दुरदुराना। ३. तुच्छ समझना।

झट–क्रि० वि० [सं० झटिति] तुरंत। उसी समय।

झटकना–क्रि० स० [हिं० झट] १. किसी चीज को झोंके से हिलाना जिसमें उसपर पड़ी हुई दूसरी चीज गिर पड़े। झटका देना। २. जोर से हिलाना। झोंका देना।
मुहा०—झटककर=झोंके से। तेजी से। ३ चालाकी से या जबरदस्ती किसी की चीज लेना। ऐंठना।
क्रि० अ० रोग या दुःख से क्षीण होना।

झटका–संज्ञा पुं० [अनु०] १. झटकने की क्रिया। हलका धक्का। झोंका। २. झटके का भाव। ३. पशुवध का वह प्रकार जिसमें पशु हथियार के एक ही आघात से काट डाला जाता है। ४. आपत्ति, रोग या शोक आदि का आघात।

झटकारना–क्रि० स० दे० "झटकना"।

झटपट–अव्य० [हिं० + झट अनु० पट] अति शीघ्र। तुरत। फौरन।

झटिति *–क्रि० वि० [सं०] १. झट। चटपट। २. बिना समझे बूझे।

झड़–संज्ञा स्त्री० दे० "झड़ी"।

झड़न–संज्ञा स्त्री० [हिं० झड़ना] १. झड़ी हुई चीज। २. झड़ने की क्रिया या भाव।

झड़ना–क्रि० अ० [सं० क्षरण] १. किसी चीज से उसके छोटे-छोटे अंगों का टूटकर गिरना। २. अधिक मान या संख्या में गिरना। ३. झाड़ा या साफ किया जाना।

झड़प–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. मुठभेड़। लड़ाई। २. क्रोध। गुस्सा। ३ आवेश।
झड़पना–क्रि० अ० [अनु०] १ आक्रमण करना। वेग से किसी पर गिरना। २ लड़ना। झगड़ना। ३ जबरदस्ती किसी से कुछ छीन लेना। झटकना।
झड़बेरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० झाड़+बेर] जंगली बेर।
झड़वाना–क्रि० स० [हिं० झाड़ना का प्रे०] झाड़ने का काम दूसरे से कराना।
झड़ाझड़–क्रि० वि० [अनु०] लगातार।
झड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० झड़ना] १ लगातार झड़ने की क्रिया। २ छोटी बूँदों की लगातार वर्षा। ३ लगातार बहुत सी बात कहते जाना या चीजें रखते जाना। ४ ताले के भीतर का खटका।
झन–संज्ञा स्त्री० [अनु०] धातु के टुकड़े के बजने की ध्वनि।
झनक–संज्ञा स्त्री० [अनु०] झनझन शब्द।
झनकना–क्रि० अ० [अनु०] १ झनकार का शब्द करना। २ क्रोध आदि में हाथ पैर पटकना। ३ दे० "झींखना"।
झनकार–संज्ञा स्त्री० दे० "झंकार"।
झनझनाना–क्रि० अ० [अनु०] झनझन शब्द होना।
क्रि० स० झनझन शब्द उत्पन्न करना।
झनाझन–संज्ञा स्त्री० [अनु०] झंकार। झनझन शब्द।
क्रि० वि० झनझन शब्द सहित।
झनिया–वि० दे० "झीना"।
झन्नाहट–संज्ञा स्त्री० [अनु०] झनकार। झनझनाहट।
झप–क्रि० वि० [सं० झंप] जल्दी से। तुरत।
झपक–संज्ञा स्त्री० [हिं० झपकना] १ पलक गिरने भर का समय। बहुत थोड़ा समय। २ पलक का गिरना। ३ हलकी नींद। झपकी।
झपकना–क्रि० अ० [सं० झंप] १ पलक का गिरना। २ झपकी लेना। ऊँघना। (क्व०) ३ झपटना। ४ झेंपना।
झपकाना–क्रि० स० [अनु०] पलकों को बार बार बंद करना।
झपकी–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ हलकी नींद। २ आँख झपकने की क्रिया। ३ धोखा। चकमा। बहलावा।
झपकौंहा*†–वि० [हिं० झपकना] [स्त्री० झपकौंही] १ नींद से भरा हुआ (नेत्र)। झपकता हुआ। २ मस्त। नशे में चूर।
झपट–संज्ञा स्त्री० [सं० झंप] झपटने की क्रिया या भाव।
झपटना–क्रि० अ० [सं० झंप] आक्रमण करने के लिये वेग से बढ़ना। टूटना।
झपटाना–क्रि० स० [हिं० झपटना का प्रे०] किसी को झपटने में प्रवृत्त करना।
झपट्टा†–संज्ञा पु० दे० "झपट"।
झपताल–संज्ञा पु० [देश०] संगीत में एक ताल।
झपना–क्रि० अ० [अनु०] १ (पलकों का) गिरना। २ आँखें झपकना। ३ झुकना। ४ झपना।
झपस–संज्ञा स्त्री० [हिं० झपसना] गुंजान होने का भाव।
झपसना–क्रि० अ० [हिं० झँपना=ढँकना] लता या पेड़ की डालियों का खूब घना होकर फैलना।
झपाना–क्रि० स० [हिं० झपना] १ मूँदना। बंद करना (आँखों या पलकों का)। २ झुकाना।
झपित–वि० [हिं० झपना] १ झपा हुआ। मुँदा हुआ। २ जिसमें नींद भरी हो। उनींदा (नेत्र)। ३ लज्जित। लज्जायुक्त।
झपेट–संज्ञा स्त्री० दे० "झपट"।
झपेटना–क्रि० स० [अनु०] आक्रमण करके दबा लेना। दबोचना। छोप लेना।
झपेटा†–संज्ञा पु० [अनु०] १ चपट। झपट। २ भूत प्रेतादिकृत बाधा या आक्रमण।
झप्पान–संज्ञा पु० दे० "झंपान"।
झबरा–वि० [अनु०] [स्त्री० झबरी] जिसके बहुत लंबे लंबे बिखरे हुए बाल हों।
झबरीला–वि० [हिं० झबरा+ईला] कुछ

बड़ा, चारों तरफ बिखरा और घूमा हुआ (बाल)।

झबरैरा|*–वि० दे० "झबरीला"।

झबा–संज्ञा पुं० दे० "झब्बा"।

झबार, झबारि|–संज्ञा स्त्री० [अनु०] टंटा। बखेड़ा। झगड़ा।

झबिया|–संज्ञा स्त्री० [हिं० झब्बा] छोटा झब्बा। छोटा फुँदना।

झबुकना|–क्रि० अ० [अनु०] चमकना। भभकना। चौंकना।

झब्बा–संज्ञा पुं० [अनु०] १. तारों का गुच्छा जो कपड़ों या गहनों में शोभा के लिये लटकाया जाता है। २. एक में लगी हुई छोटी चीजों का समूह। गुच्छा।

झमक–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. चमक का अनुकरण। २. प्रकाश। उजेला। ३. झमझम शब्द। ४. नखरे की चाल।

झमकना–क्रि० अ० [हिं० झमक] १. रह रहकर चमकना। दमकना। २. भपकना। छाना। ३. झमझम शब्द होना। झनकार होना। ४. लड़ाई में हथियारों का चमकना और खनकना। ५. अकड़ दिखलाना। ६. झमझम शब्द करना।

झमकाना–क्रि० स० [हिं० झमकना का स० रूप] १. चमकाना। चमक पैदा करना। २. आभूषण या हथियार आदि बजाना और चमकाना।

झमकारा–वि० [हिं० झमझम] बरसनेवाला (बादल)।

झमझम–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. घुँघरुओं आदि के बजने का झमझम शब्द। छमछम। २. पानी बरसने का शब्द।
वि० जो खूब चमके। चमकता हुआ।
क्रि० वि० १. झमझम शब्द के साथ। २. चमक-दमक के साथ। झमाझम।

झमना–क्रि० अ० [अनु०] झुकना। दबना।

झमाका–संज्ञा पुं० [अनु०] १. पानी बरसने या गहनों के बजने का झमझम शब्द। २. ठसक। नखरा।

झमाझम–क्रि० वि० [अनु०] १. उज्ज्वल कांति के सहित। दमक के साथ। २. झमझम शब्द सहित।

झमाट–संज्ञा पुं० [अनु०] झुरमुट।

झमाना–क्रि० अ० [अनु०] छाना। घेरना।
क्रि० अ० दे० "झँवाना"।

झमेला–संज्ञा पुं० [अनु० झाँव झाँव] १. बखेड़ा। झंझट। २. भीड़भाड़।

झमेलिया–संज्ञा पुं० [हिं० झमेला + इया (प्रत्य०)] झमेला करनेवाला। झगड़ालू।

झर–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पानी गिरने का स्थान। निर्झर। २. झरना। सोता। चश्मा। ३. समूह। ४. तेजी। वेग। ५. झड़ी। लगातार वृष्टि। ६. * ताप।

झरकना*–क्रि० अ० १. दे० "झलकना"। २. दे० "झिड़कना"।

झरझर–संज्ञा स्त्री० [अनु०] जल के बहने, बरसने या हवा के चलने आदि का शब्द।

झरन–संज्ञा स्त्री० [हिं० झरना] १. झरने की क्रिया। २. वह जो कुछ झरकर निकला हो। ३. दे० "झड़न"।

झरना|*–क्रि० अ० [सं० क्षरण] १. दे० "झड़ना"। २. ऊँची जगह से सोते का गिरना।
संज्ञा पुं० [सं० झर] ऊँचे स्थान से गिरनेवाला जल-प्रवाह। सोता। चश्मा।
संज्ञा पुं० [सं० क्षरण] १. एक प्रकार की छलनी जिसमें रखकर अनाज छाना जाता है। २. लंबी डाँड़ी की छेददार चिपटी करछी। पौना।
वि० [स्त्री० झरनी] झरनेवाला। जो झरता हो।

झरनि*|–संज्ञा स्त्री० दे० "झरन"।

झरप|*–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. झोंका। झकोर। २. वेग। तेजी। ३. चाँड़। टेक। ४. चिक। चिलमन। परदा। ५. दे० "झड़प"।

झरपना*|–क्रि० अ० [अनु०] १. झोंका देना। बौछार मारना। २. दे० "झड़पना"।

झरहरना–क्रि० अ० [अनु०] झरझर शब्द करना।

झरहरा|–वि० दे० "झँझरा"।

झरहराना–क्रि० अ० [अनु०] हवा के झोंके से पत्तों का शब्द करना।
क्रि० स० झटकना। झाड़ना।

झराझर–क्रि० वि० [अनु०] १ झरझर शब्द सहित। २ लगातार। बराबर। ३ वेग सहित।

झरी–संज्ञा स्त्री० [हि० झरना] १ पानी का झरना। सोता। चश्मा। २ वह किराया या कर जो किसी बाजार या मंडी में जाकर सौदा बेचनेवाले से प्रतिदिन लिया जाता है। ३ दे० 'झड़ी'।

झरोखा–संज्ञा पु० [अनु० झरझर+गोख] हवा या रोशनी के लिए दीवारों में बनी हुई झँझरीदार छोटी खिड़की। गवाक्ष।

झल–संज्ञा पु० [सं० ज्वल=ताप] १ दाह। जलन। आँच। २ किसी विषय की उत्कट इच्छा। उग्र कामना। ३ क्रोध। गुस्सा। ४ समूह।

झलक–संज्ञा स्त्री० [सं० झल्लिका] १ चमक। दमक। आभा। २ आकृति का आभास। प्रतिबिंब।

झलकदार–वि० [हि० झलक+फा० दार] चमकीला।

झलकना–क्रि० अ० [सं० झल्लिका] १ चमकना। दमकना। २ कुछ कुछ प्रकट होना। आभास होना।

झलकनि*–संज्ञा स्त्री० दे० "झलक"।

झलका–संज्ञा पु० [सं० ज्वल=जलना] शरीर में पड़ा हुआ छाला। फफोला।

झलकाना–क्रि० स० [हि० झलकना का स०] १ चमकाना। दमकाना। २ दरसाना। कुछ आभास देना।

झलझल–संज्ञा स्त्री० [हि० झलकना] चमक। दमक।
क्रि० वि० रह रहकर निकलनेवाली आभा के साथ।

झलझलाना–क्रि० अ० [अनु०] चमकना।
क्रि० स० चमकाना। चमचमाना।

स्त्री० [अनु०] चमक।

झलना–क्रि० स० [हि० झलझल (हिलना)] हवा करने के लिए कोई चीज हिलाना।
क्रि० अ० १ इधर-उधर हिलना। †२ शेखी बघारना। डींग हाँकना। ३ "झालना" का अ० रूप। ४ दे० "झरना"।

झलमल–संज्ञा पु० [सं० ज्वल=दीप्ति] १ अँधेरे के बीच थोड़ा थोड़ा उजाला। २ चमक-दमक।
क्रि० वि० दे० 'झलमल'।

झलमला–वि० [हि० झलमलाना] चमकीला।

झलमलाना–क्रि० अ० [हि० झलमल] १ रह रहकर चमकना। चमचमाना। २ निकलते हुए प्रकाश का हिलना डोलना।
क्रि० स० किसी स्थिर ज्योति या लौ को हिलाना डुलाना।

झलरा†–संज्ञा पु० [हि० झालर] एक प्रकार का पकवान जिसे झालर भी कहते हैं।

झलराना*†–क्रि० अ० [हि० झालर] फैलकर छाना।

झलवाना–क्रि० स० [हि० झलना] झलने या झालने का काम दूसरे से कराना।

झला*†–संज्ञा पु० [हि० झड़] १ हलकी वर्षा। २ झालर, तोरण या बंदनवार आदि। ३ पंखा। बेना। ४ समूह।

झलाझल–वि० [अनु०] खूब चमचमाता हुआ। चमाचम।

झलाझली–वि० [अनु०] चमकदार।
संज्ञा स्त्री० झलाझल का भाव।

झलाबोर–संज्ञा पु० [हि० झलमल] १ कलाबत्तून का बुना हुआ साड़ी आदि का चौड़ा अंचल। २ कारचोबी।
वि० चमकीला। चमकदार।

झलामल†–संज्ञा स्त्री० [हि० झलमल=चमक] चमक। दमक।
वि० चमकीला।

झल्ल–संज्ञा स्त्री० [अनु०] पागलपन।

झल्ला–संज्ञा पु० [देश०] १ बड़ा टोकरा। २ वर्षा। वृष्टि। ३ बौछार।
†[हि० झल्लाना] १ पागल। २ बेवकूफ।

झल्लाना–क्रि० अ० [हि० झल] चिढ़ना।

खिजलाना।

क्रि० स० चिढ़ाना। खिझाना।

झप-संज्ञा पुं० [सं०] १. मत्स्य। मछली। २. मकर। मगर। ३. ताप। गरमी। ४. धन। ५. मीन राशि। ६. दे० "झरा"।

झपकेतु-संज्ञा पुं०[सं०झपकेतन] कामदेव।

झसना-क्रि० स० दे० "झँसना"।

झहनना*-क्रि० अ० [अनु०] १. झन्नाटे या सन्नाटे में आना। २. (रोएँ का) खड़ा होना। ३. झनझन शब्द होना।

झहनाना-क्रि० स० [अनु०] १. झहनना का सकर्मक रूप। २. झनकार करना।

झहरना*-क्रि० अ० [अनु०] १. झड़ने का सा या झरझर शब्द करना। २. शिथिल पड़ना। ढीला होना।

क्रि० स० झिड़कना। झल्लाना।

झहराना-क्रि० अ० [अनु०] १. शिथिल होकर या झरझर शब्द के साथ गिरना। २. झल्लाना। खिजलाना। ३. हिलाना।

झाँई-संज्ञा स्त्री० [सं० छाया] १. परछाईं। छाया। झलक। २. अंधकार। अँधेरा। ३. धोखा। छल।

मुहा०—झाँई बताना = धोखा देना।

४. प्रतिशब्द। प्रतिध्वनि। ५. एक प्रकार के हलके काले धब्बे जो रक्त-विकार से मनुष्यों के शरीर पर पड़ जाते हैं।

झाँक-संज्ञा स्त्री० [सं० झाँकना] झाँकने की क्रिया या भाव।

झाँकना-क्रि० अ० [सं० अध्यक्ष] १. ओट की बगल में से देखना। २. इधर-उधर झुककर देखना।

झाँकनी†*-संज्ञा स्त्री० दे० "झाँकी"।

झाँका-संज्ञा पुं० दे० "झरोखा"।

झाँकी-संज्ञा स्त्री० [हिं० झाँकना] १. झाँकने की क्रिया या भाव। दर्शन। अवलोकन। २. दृश्य। ३. झरोखा।

झाँख-संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का हिरन।

झाँखना*†-क्रि० अ० दे० "झींखना"।

झाँखर-संज्ञा पुं० दे० "झंखाड़"।

झाँगला-वि० [देश०] ढीला ढाला (कपड़ा)।

झाँगा‡-संज्ञा पुं० दे० "झगा"।

झाँझ-संज्ञा स्त्री० [झनझन से अनु०] १. मंजीरे की तरह के काँसे से ढले हुए दो बड़े गोलाकार टुकड़ों का जोड़ा जिन्हें पूजन आदि के समय बजाते हैं। झाल। २. क्रोध। गुस्सा। ३. पाजीपन। शरारत। ४. दे० "झाँझन"।

झाँझड़ी*†-संज्ञा स्त्री० दे० "झाँझन"।

झाँझन-संज्ञा स्त्री०[अनु०] पैर में पहनने का एक प्रकार का गहना। पैंजनी। पायल।

झाँझर*†-संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. झाँझन। २. पैंजनी। ३. छलनी।

वि० १. पुराना। जर्जर। २. छेदवाला।

झाँझरी-संज्ञा स्त्री० [देश०] १. झाँझ बाजा। झाल। २. झाँझन नामक गहना।

झाँप-संज्ञा स्त्री० [हिं० झाँपना] १. वह जिससे कोई चीज़ ढाँकी जाय। २. नींद। झपकी। ३. पर्दा। चिक।

संज्ञा पुं० [सं० झंप] उछल-कूद।

झाँपना-क्रि० स० [सं० उत्थापन] पकड़कर दबा लेना। छोप लेना।

झाँपना-क्रि० स० [स० उत्थापन] १. ढाँकना। आड़ में करना। २. झेंपना। लजाना। शरमाना।

झाँपी†-संज्ञा स्त्री० [हिं० झाँपना] १. ढाँकने की टोकरी। २. मूँज की पिटारी।

झाँवना-क्रि० स० [हिं० झाँवाँ] झाँवें से रगड़कर (हाथ पैर आदि) धोना।

झाँवराँ-वि० [सं० श्यामल] १. झाँवें के रंग का। कुछ काला। २. मलिन। ३. मुरझाया या कुम्हलाया हुआ। ४. शिथिल। मंद। सुस्त।

झाँवली-संज्ञा स्त्री० [हिं० छाँव=छाया] १. झलक। २. आँख की कनखी।

झाँवाँ-संज्ञा पुं० [सं० झामक] जली हुई ईंट जिससे रगड़कर मैल छुड़ाते हैं।

झाँसना-क्रि० स० [हिं० झाँसा] धोखा देना। ठगना।

झाँसा—संज्ञा पुं० [सं० अध्यास] बहकाने की क्रिया। धोखा-धड़ी। दम-बुत्ता।
यौ०—झाँसा-पट्टी = धोखा-धड़ी।
झा—संज्ञा पुं० [सं० उपाध्याय] मैथिल और गुजराती ब्राह्मणों की एक उपाधि।
झाऊ—संज्ञा पुं० [सं० झाबुक] एक प्रकार का छोटा झाड़।
झाग—संज्ञा पुं० [हिं० गाज] पानी आदि का फेन। गाज।
झागड़*†—संज्ञा पुं० दे० "झगड़ा"।
झाड़—संज्ञा पुं० [सं० झाट] १ वह छोटा पेड़ या पौधा जिसकी डालियाँ जड़ या जमीन के बहुत पास से निकलकर चारों ओर खूब छितराई हुई हों। २ झाड़ के आकार का वह रोशनी करने का सामान जो छत में लटकाया या जमीन पर बैठकी की तरह रखा जाता है।
यौ०—झाड़-फ़ानूस=शीशे के झाड़, हँडिया और गिलास आदि।
संज्ञा स्त्री० [हिं० झाड़ना] १ झाड़ने की क्रिया। २ फटकार। डाँट डपट। ३ मंत्र से झाड़ने की क्रिया।
यौ०—झाड़ फूँक = मंत्रोपचार।
झाड़खंड—संज्ञा पुं० [हिं० झाड़+खंड] जंगल। वन।
झाड़ झखाड़—संज्ञा पुं० [हिं० झाड़+झंखाड़] १ काँटेदार झाड़ियों का समूह। २ निकम्मी चीजें।
झाड़दार—वि० [हिं० झाड़+फा० दार] १ सघन। घना। २ कँटीला। काँटेदार।
झाड़न—संज्ञा स्त्री० [हिं० झाड़ना] १ वह जो झाड़ने पर निकले। २ वह कपड़ा जिससे कोई चीज झाड़ी जाय।
झाड़ना—क्रि० स० [सं० क्षरण या शातन] १ निकालना। दूर करना। हटाना। छुड़ाना। २ अपनी योग्यता दिखलाने के लिये गढ़ गढ़कर बातें करना।
क्रि० स० [सं० क्षरण] १ किसी चीज पर पड़ी हुई गर्द आदि साफ करने के लिये उसको उठाकर झटका देना। झटकारना। फटकारना। २ झटके से किसी चीज पर पड़ी या लगी हुई दूसरी चीज गिराना या हटाना। ३ बल या युक्ति-पूर्वक किसी से धन ऐंठना। झटकना। (बव०) ४ रोग या प्रेत बाधा आदि दूर करने के लिये किसी को मंत्र आदि से फूँकना। ५. फटकारना। डाँटना।
झाड़ फूँक—संज्ञा स्त्री० [हिं० झाड़ना+फूँकना] भूत-प्रेत आदि की बाधाओं अथवा रोगों को दूर करने के लिये मंत्र आदि पढ़कर झाड़ना फूँकना।
झाड़बुहार—संज्ञा स्त्री० [हिं० झाड़ना+बुहारना] झाड़ना और बुहारना। सफाई।
झाड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० झाड़ना] १ झाड़ फूँक। २ तलाशी। ३ मल। गुह। मैला। ४ पाखाना। टट्टी।
झाड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० झाड़] १ छोटा झाड़। पौधा। २ छोटे पेड़ों का समूह।
झाड़ू—संज्ञा पुं० [हिं० झाड़ना] १ लंबी सींकों आदि का समूह जिससे जमीन या फर्श झाड़ते हैं। कूँचा। बोहारी। सोहनी।
मुहा०—झाड़ू फिरना = कुछ न रहना। झाड़ू मारना = घृणा या निरादर करना।
२ पुच्छल तारा। केतु।
झापड़—संज्ञा पुं० [सं० चपट] थप्पड़। तमाचा।
झाबर—संज्ञा पुं० दे० "झावा"।
झाबा—संज्ञा पुं० [हिं० झाँपना] १ टोकरा। खाँचा। २ दे० "झब्बा"।
झाम†*—संज्ञा पुं० [देश०] १ झब्बा। गुच्छा। २ घुड़की। डाँट। डपट। ३ धोखा। छल।
झामी†—संज्ञा पुं० [हिं० झाम] धोखेबाज।
झायँ झायँ—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ झनकार। झन् झन् शब्द। २ वह शब्द जो किसी सुनसान स्थान में हो। हवा का शब्द।
झावँ झावँ—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ बकवाद। बकबक। २ हुज्जत। तकरार।
झार†—वि० [सं० सर्व] १ एक मात्र। निपट। केवल। २ कुल। सब। समस्त। संज्ञा पुं० समूह। झुंड।

संज्ञा स्त्री० [सं० झाला+ताप] दाह। १. जलन। २. ईर्ष्या। डाह। ३. ज्वाला। लपट। आँच। ४. झाल। चरपरापन।

झारखंड–संज्ञा पुं० [हिं० झाड़ + खंड] १. एक पहाड़ जो वैद्यनाथ से होता हुआ जगन्नाथपुरी तक चला गया है। २. दे० "झाड़खंड"।

झारना–क्रि० स० [सं० झर] १. बाल साफ करने के लिए कंघी करना। २. छाँटना। अलग करना। ३. दे० "झाड़ना"।

झारी–संज्ञा स्त्री० [हिं० झरना] एक प्रकार का लंबोतरा टोंटीदार पात्र।

झाल–संज्ञा पुं० [सं० झल्लक] झाँझ नामक बाजा।
संज्ञा पुं० [देश०] झालने की क्रिया या भाव।
संज्ञा स्त्री० [स० झाला] १. चरपराहट। तीखापन। तीक्ष्णता। २. तरंग। लहर।
संज्ञा स्त्री० [हिं० झड़] पानी की झड़ी।
वि०, संज्ञा स्त्री० दे० "झार"।

झालना–क्रि० स० [?] १. धातु की बनी हुई वस्तुओं में टाँका देकर जोड़ लगाना। २. पीने की चीज़ों को ठंढा करने के लिए बरफ़ या शोरे में रखना।

झालरा–संज्ञा पुं० [?] एक प्रकार का पकवान जिसे झलरा भी कहते हैं।

झालर–संज्ञा स्त्री० [सं० झल्लरी] १. किसी चीज़ के किनारे पर शोभा के लिए बनाया या लगाया हुआ वह हाशिया जो लटकता रहता है। २. झालर या किनारे के आकार की लटकती हुई कोई चीज़। ३. झाँझ।

झालरना–क्रि० अ० दे० "झलराना"।

झालि–संज्ञा स्त्री० [हिं० झड़] पानी की झड़ी।

झिगवा–संज्ञा स्त्री० [सं० चिगट] एक प्रकार की छोटी मछली।

झिगुली*†–संज्ञा स्त्री० दे० "झगा"।

झिझिया–संज्ञा स्त्री० [अनु०] छेदोंवाला वह घड़ा जिसमें दीआ बालकर कुआर के महीने में लड़कियाँ घुमाती हैं।

झिझोटी–संज्ञा स्त्री० [देश०] एक रागिनी।

झिझकना–क्रि० अ० दे० "झझकना"।

झिझकारना–क्रि० स० १. दे० "झझकारना"। २. दे० "झटकना"।

झिड़कना–क्रि० स० [अनु०] १. अवज्ञा या तिरस्कारपूर्वक बिगड़कर कोई बात कहना। २. अलग फेंक देना। झटकना।

झिड़की–संज्ञा स्त्री० [हिं० झिड़कना] वह बात जो झिड़ककर कही जाय। डाँट। फटकार।

झिनवा–संज्ञा पुं० [देश०] महीन चावल का धान।

झिपना–क्रि० अ० दे० "झेंपना"।

झिपाना–क्रि० स० [हिं० झेंपना का स० रूप] लज्जित करना। शरमिंदा करना।

झिरझिरा–वि० [हिं० झरना] झँझरा। झीना। पतला। बारीक (कपड़ा)।

झिरना*–क्रि० अ० दे० "झरना"।

झिराना–क्रि० अ० दे० "झुराना"।

झिलँगा–संज्ञा पु० [हिं० ढीला + अंग] ऐसी खाट जिसकी बुनावट ढीली पड़ गई हो।
संज्ञा पुं० दे० "झीगा।

झिलना–क्रि० अ० [?] १. बलपूर्वक प्रवेश करना। धँसना। घुसना। २. तृप्त होना। अघा जाना। ३. मग्न होना। तल्लीन होना। ४. झेला जाना। सहा जाना।

झिलम–संज्ञा स्त्री० [हिं० झिलमिला] लोहे का बना एक झँझरीदार पहनावा जो लड़ाई में सिर और मुँह पर पहना जाता था। टोप। खोद।

झिलमिल–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. हिलता हुआ प्रकाश। २. रह रहकर प्रकाश के घटने बढ़ने की क्रिया। ३. एक प्रकार का बढ़िया, बारीक और मुलायम कपड़ा। ४. युद्ध में पहनने का लोहे का कवच। झिलम।
वि० रह रहकर चमकता हुआ।

झिलमिला–वि० [अनु०] १. जो गफ या गाढ़ा न हो। झँझरा। झीना। २. चमकता हुआ। ३. जो बहुत स्पष्ट न हो।

झिलमिलाना–क्रि० अ० [अनु०] १. रह

रहकर चमकना। २ प्रकाश का हिलना। क्रि० स० १ कोई चीज इस प्रकार हिलाना कि वह रह रहकर चमके। २ हिलाना।
झिलमिली–संज्ञा स्त्री० [हिं० झिलमिल] १ बहुत सी आड़ी पटरियों का ढाँचा जो किवाड़ों आदि में प्रकाश या वायु आने के लिये जड़ा रहता है। खड़खड़िया। २ चिक। चिलमन।
झिल्लड़–वि० [हिं० झिल्ली] पतला और झँझरा। गफ का उलटा। (कपड़ा)
झिल्ली–संज्ञा पु० [सं०] झींगुर।
संज्ञा स्त्री० [सं० चैल] ऐसी पतली तह जिसके नीचे की चीज दिखाई पड़े।
झींकना–क्रि० अ० दे० "झीखना"।
झींका–संज्ञा पु० [देश०] उतना अन्न जितना एक बार चक्की में डाला जाता है।
झींखना–क्रि० अ० [हिं० खीजना] १ बहुत पछताना और कुढ़ना। खीजना। २ दुखड़ा रोना। विपत्ति का हाल सुनाना।
संज्ञा पु० १ झीखने की क्रिया या भाव। २ दुःख का वर्णन। दुखड़ा।
झींगा–संज्ञा पु० [सं० चिंगट] १ एक प्रकार की मछली। २ एक प्रकार का धान।
झींगुर–संज्ञा पु० [अनु० झीं + कर] एक प्रसिद्ध छोटा बरसाती कीड़ा जो अँधेरे घरों, खेतों और मैदानों में होता है। इसकी आवाज बहुत तेज झीं झीं होती है। घुरघुरा। जजीरा। झिल्ली।
झींसी–संज्ञा स्त्री० [अनु० या हिं० झीना] छोटी छोटी बूँदों की वर्षा। फुहार।
झीखना–क्रि० अ० दे० "झींखना"।
झीना–वि० [सं० क्षीण] १ बहुत महीन। बारीक। पतला। २ जिसमें बहुत से छेद हों। झँझरा। ३ दुबला। दुर्बल।
झील–संज्ञा स्त्री० [सं० क्षीर] १ किसी बड़े मैदान में बहुत बड़ा प्राकृतिक जलाशय। २ बहुत बड़ा तालाब। ताल। सर।
झीलर–संज्ञा पु० [हिं० झील] छोटी झील।
झीवर–संज्ञा पु० [सं० धीवर] मल्लाह।
झुँझलाना–क्रि० अ० [अनु०] खिजलाना। चिटचिटाना। चिड़चिड़ाना।
झुंड–संज्ञा पु० [सं० यूथ] बहुत से मनुष्यों या पशुओं आदि का समूह। वृंद। गरोह।
झुकना–क्रि० अ० [सं० युज्] १ ऊपरी भाग का नीचे की ओर लटकना। निहुरना। नवना।
मुहा०—झुक झुक पड़ना = नशे या नींद के कारण अच्छी तरह खड़ा न रह सकना।
२ किसी पदार्थ के एक या दोनों सिरों का किसी ओर प्रवृत्त होना। ३. किसी खड़े या सीधे पदार्थ का किसी ओर प्रवृत्त होना। ४ प्रवृत्त होना। दत्त-चित्त होना। ५ नम्र होना। विनीत होना। ६ क्रुद्ध होना। रिसाना।
झुकमुख–संज्ञा पु० दे० "झुटपुटा"।
झुकराना–क्रि० अ० [हिं० झोंका] झोंका खाना।
झुकवाना–क्रि० स० [हिं० झुकना] झुकाने का काम दूसरे से कराना।
झुकाना–क्रि० स० [हिं० झुकना] १ किसी खड़ी चीज के ऊपरी भाग को टेढ़ा करके नीचे की ओर लाना। निहुराना। नवाना। २ किसी पदार्थ के एक या दोनों सिरों को किसी ओर प्रवृत्त करना। ३ प्रवृत्त करना। रुजू करना। ४ नम्र करना। विनीत बनाना।
झुकामुखी–संज्ञा स्त्री० दे० "झुटपुटा"।
झुकाव–संज्ञा पु० [हिं० झुकना] १ किसी ओर लटकने, प्रवृत्त होने या झुकने की क्रिया या भाव। २ ढाल। उतार। ३ मन का किसी ओर लगना। प्रवृत्ति।
झुटपुटा–संज्ञा पु० [अनु०] ऐसा समय जब कि कुछ अन्धकार और कुछ प्रकाश हो। झकमुख।
झुट्टा–वि० [हिं० झोंटा] जिसके खड़े खड़े और बिखरे हुए बाल हों। झोंटेवाला।
झुठलाना–क्रि० स० [हिं० = झूठ + लाना (प्रत्य०)] १ झूठा ठहराना। झूठा बनाना। २ झूठ कहकर धोखा देना।

झुठाई*†-संज्ञा स्त्री० [हिं० झूठ+आई] झूठ का भाव। झूठापन। असत्यता।
झुठाना-क्रि०स०[हिं०झूठ+आना(प्रत्य०)] झूठा ठहराना।
झुनक-संज्ञा पुं० [अनु०] नूपुर का शब्द।
झुनकना-क्रि० अ० [अनु०] झुनझुन शब्द करना।
झुनकार‡-वि० [हिं०झीना] [स्त्री० झुनकारी] पतला। महीन। बारीक।
झुनझुन-संज्ञा पुं० [अनु०] नूपुर आदि के बजने का शब्द।
झुनझुना-संज्ञा पुं० [हिं०झुनझुन से अनु०] एक प्रकार का खिलौना जिसे हिलाने से झुनझुन शब्द होता है। घुनघुना।
झुनझुनाना-क्रि० अ० [अनु०] झुन झुन शब्द होना।
क्रि० स० झुन झुन शब्द उत्पन्न करना।
झुनझुनी-संज्ञा स्त्री० [हिं० झुनझुनाना] हाथ या पैर के बहुत देर तक एक स्थिति में रहने के कारण उसमें होनेवाली सनसनाहट।
झुपरी†-संज्ञा स्त्री० दे० "झोपड़ी"।
झुमका-संज्ञा पुं० [हिं० झूमना] छोटी गोल कटोरी के आकार का कान का एक गहना।
झुमाना-क्रि०स० [हिं०झूमना का स०रूप] किसी को झूमने में प्रवृत्त करना।
झुरझुरी-संज्ञा स्त्री० [अनु०] कँपकँपी।
झुरना-क्रि० अ० [हिं० धूल या चूर] १. सूखना। खुश्क होना। दे० "झुराना"। २. बहुत अधिक दुःखी होना या शोक करना। ३. अधिक चिंता, रोग या परिश्रम आदि के कारण दुर्बल होना। घुलना।
झुरमुट-संज्ञा पुं० [सं० झुट=झाड़ी] १. एक ही में मिले हुए या पास पास कई झाड़ या क्षुप। २. बहुत से लोगों का समूह। गरोह। ३. चादर आदि से शरीर को चारों ओर से ढक लेने की क्रिया।
झुरवाना-क्रि० स० [हिं० झुरना] सुखाने का काम दूसरे से कराना।
झुरसना*†-क्रि० अ० दे० "झुलसना"।
झुराना†-क्रि० स० [हिं० झुरना] सुखाना।
क्रि० अ० १. सूखना। २. दुःख या भय से घबरा जाना। ३. दुबला होना।
झुर्री-संज्ञा स्त्री० [हिं० झुरना] सिकुड़न। सिलवट। शिकन।
झुलना†-संज्ञा पुं० दे० "झूला"।
वि० [हिं० झूलना] झूलनेवाला।
झुलनी-संज्ञा स्त्री०[हिं० झूलना] १. तार में गुथा हुआ छोटे मोतियों का गुच्छा जिसे स्त्रियाँ नाक की नथ में लटकाती हैं। २. दे० "झूमर"।
झुलमुला†-वि० दे० "झिलमिल"।
झुलसना-क्रि० अ० [सं० ज्वल+अंश] १. ऊपरी भाग का इस प्रकार अंशतः जल जाना कि उसका रंग काला पड़ जाय। झौंसना। २. अधिक गरमी के कारण किसी चीज़ के ऊपरी भाग का सूखकर काला पड़ जाना।
क्रि० स० १. ऊपरी भाग या तल को इस प्रकार अंशतः जलाना कि उसका रंग काला पड़ जाय। झौंसना। २. किसी पदार्थ के ऊपरी भाग को सुखाकर अधजला कर देना।
झुलसवाना-क्रि० स० [हिं० झुलसना का प्रे०] झुलसने का काम दूसरे से कराना।
झुलसाना-क्रि० स० १. दे० "झुलसना"। २. दे० "झुलसवाना"।
झुलाना-क्रि० स० [हिं० झूलना] १. किसी को झूलने में प्रवृत्त करना। २. कोई चीज देने या कोई काम करने के लिये बहुत अधिक समय तक आसरे में रखना।
झुलावना*†-क्रि० स० दे० "झुलाना"।
झुहिरना†-क्रि० स० [?] लदना। लादा जाना।
झूँक*†-संज्ञा पुं० दे० "झोंका"।
संज्ञा स्त्री० दे० "झोक"।
झूँकना†-क्रि० स० १. दे० "झोंकना"। २. दे० "झखना"।
झूँखना*†-क्रि० अ० दे० "झीखना"।
झूँझल-संज्ञा स्त्री० दे० "झुँझलाहट"।
झूँसना†-क्रि०अ० और स० दे० "झुलसना"।

भूँगडी–सज्ञा स्त्री० [हिं० भूठ+मांडा] छोटी भाडी।
भूँजा*†–सज्ञा पु० दे० "भाँजा"।
भूझना–क्रि० अ० दे० "जूझना"।
भूठ–सज्ञा पु० [स० अयुक्त, प्रा० अयुत्त] वह बात जो यथार्थ न हो। सच का उलटा। मुहा०—भूठ सच कहना या लगाना=भूठी निंदा करना। शिकायत करना।
भूठमूठ–क्रि० वि० [हिं० भूठ+मूठ (अनु०)] बिना किसी वास्तविक आधार के। यो ही। व्यर्थ।
भूठा–वि० [हिं० भूठ] १ जो सत्य न हो। मिथ्या। असत्य। २ भूठ बोलनेवाला। मिथ्यावादी। ३ जो केवल रूप-रग आदि में असल चीज के समान हो, पर गुण आदि में नहीं। नकली। ४ जो (पुरजा या अग आदि) बिगड जाने के कारण ठीक ठीक काम न दे सके। वि० दे० "जूठा"।
भूठो–क्रि० वि० [हिं० भूठा] १ भूठ मूठ। यो ही। २ नाममात्र के लिये।
भूना†–वि० दे० "भीना"।
भूम–सज्ञा स्त्री० [हिं० भूमना] १ भूमने की क्रिया या भाव। २ ऊँघ। भपकी। (क्व०)
भूमक–सज्ञा पु० [हिं० भूमना] १ एक प्रकार का गीत जो होली के दिनो में स्त्रियाँ भूम भूमकर एक घेरे में नाचती हुई गाती है। भूमर। भूमकरा। २ इस गीत के साथ होनेवाला नृत्य। ३ भूमर नामक पूरबी गीत। ४ गुच्छा। ५ चाँदी, सोने आदि के छोटे भुमको या मोतियो आदि के गुच्छो की वह कतार जो साडी आदि में सिर पर पडनेवाले भाग में लगी रहती है। ६ दे० "भुमका"।
भूमकसाडी–सज्ञा स्त्री० [हिं० भूमक+साडी] वह साडी जिसमें भूमक या मोती आदि के गुच्छे टँके हो।
भूमका–सज्ञा पु० १ दे० "भुमका"। २ दे० "भूमक"।
भूमड–सज्ञा पु० दे० "भूमर"।
भूमड भामड–सज्ञा पु० [हिं० भूमड] ढकोसला। भूठा प्रपच।
भूमना–क्रि० अ० [स० भ्रम] १ बार बार आगे-पीछे, नीचे-ऊपर या इधर-उधर हिलना। भोके खाना। मुहा०—बादल भूमना=बादलो का एकत्र होकर भुकना।
२ सिर और धड को बार बार आगे-पीछे और इधर-उधर हिलाना। (मस्ती, प्रसन्नता, नींद या नशे में।)
भूमर–सज्ञा पु० [हिं० भूमना] १ सिर में पहनने का एक प्रकार का गहना। २ कान में पहनने का भुमका। ३ भूमक नाम का गीत। ४ इस गीत के साथ होनेवाला नाच। ५ बहुत से लोगो का साथ मिलकर गोल घेरे में घूम घूमकर नाचना। ६ भूमरा नामक ताल। ७ एक प्रकार का काठ का खिलौना।
भूर†–वि० [हिं० चूर] सूखा। खुश्क। वि० [हिं० भूठ] १ खाली। २ व्यर्थ। सज्ञा स्त्री० १ जलन। दाह। २ दुख।
भूरा†–वि० [हिं० भूर] १ सूखा। खुश्क। २ खाली। सज्ञा पु० १ जलवृष्टि का अभाव। अवर्षण। २ न्यूनता। कमी।
भूरें†–क्रि० वि० [हिं० भूर] व्यर्थ। निष्प्रयोजन। भूठमूठ। वि० दे० "भूर"।
भूल–सज्ञा स्त्री० [हिं० भूलना] १ वह कपडा जो शोभा के लिये चौपाया पर डाला जाता है। २ वह कपडा जो पहनने पर भद्दा जान पडे। (व्यग्य) * ३ दे० "भूला"।
भूलन–सज्ञा पु० [हिं० भूलना] वर्षा ऋतु का एक उत्सव जिसमें मूर्तियो को भूले पर बैठाकर भुलाते हैं। हिंडोला।
भूलना–क्रि० अ० [स० दोलन] १ किसी लटकी हुई वस्तु के सहारे नीचे की ओर लटककर बार बार आगे पीछे या इधर-उधर होना। लटककर बार बार इधर-

उधर हिलना। २. भूले पर बैठकर पेंग लेना। ३. किसी कार्य के होने की आशा में अधिक समय तक पड़े रहना।
वि० भूलनेवाला। जो भूलता हो।
संज्ञा पुं० १. एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में २६ मात्राएँ और अंत में गुरु लघु होते हैं। २. इसी छंद का दूसरा भेद जिसके प्रत्येक चरण में ३७ मात्राएँ और अंत में यगण होता है। ३. हिंडोला। भूला।

भूलरि—संज्ञा स्त्री० [हिं० भूलना] भूलता हुआ छोटा गुच्छा या भुमका।

भूला—संज्ञा पुं० [सं० दोला] १. पेड़ की डाल या छत आदि में लटकाई हुई दोहरी या चौहरी रस्सी आदि मे बंधी पटरी जिस पर बैठकर भूलते हैं। हिंडोला। २. बड़े रस्सों, जंजीरों या तारों आदि का बना हुआ भूलनेवाला पुल। ३. वह बिस्तर जिसके दोनों सिरे रस्सियों में बाँधकर दोनों ओर दो ऊँची खूँटियों आदि से बाँध दिए गए हों। ४. देहाती स्त्रियों का ढीला-ढाला कुरता। ५. झोंका। झटका।

झेंपना, झेपना—क्रि० अ० [हिं० झिपना] शरमाना। लजाना। लज्जित होना।

झेर*†—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० देर] १. विलंब। देर। २. बखेड़ा। झगड़ा।

झेरना*‡—क्रि० स० [हिं० झेलना] झेलना। क्रि० स० [हिं० छेड़ना] शुरू करना।

झेरा—संज्ञा पुं० [?] झंझट। बखेड़ा।

झेल—संज्ञा स्त्री० [हिं० झेलना] १. तैरने आदि में हाथ-पैर से पानी हटाने की क्रिया। २. हलका धक्का या हिलोरा। ३. झेलने की क्रिया या भाव।
संज्ञा स्त्री० विलंब। देर।

झेलना—क्रि० स० [सं० क्ष्वेल ?] १. ऊपर लेना। सहना। बरदाश्त करना। २. तैरने में हाथ-पैर से पानी हटाना। ३. पानी में पैठना। हेलना। ४. ठेलना। ढकेलना। † ५. पचाना। हजम करना। ६. ग्रहण करना। मानना।

झोंक—संज्ञा स्त्री० [हिं० भुकना] १. झुकाव। प्रवृत्ति। २. बोझ। भार। ३. प्रचंड गति। वेग। तेजी। रय। ४. किसी काम का धूमधाम से उठान। ५. ठाट। सजावट।
यौ०—झोक झाँक=१. ठाट-बाट। धूम-धाम २. प्रतिद्वंद्विता। विरोध।
६. पानी का हिलोरा। ७. दे० "झोंका"।

झोंकना—क्रि० स० [हिं० झोंक] १. किसी वस्तु को आग में फेंकना।
मुहा०—भाड़ झोंकना=तुच्छ काम करना। २. जबरदस्ती आगे की ओर बढ़ाना। ढकेलना। ठेलना। ३. अंधाधुंध खर्च करना। ४. आपत्ति, दुःख या भय के स्थान में कर देना। बुरी जगह ठेलना। ५. बहुत ज्यादा काम ऊपर डालना। ६. बिना विचारे दोष आदि मढ़ना।

झोंकवाना—क्रि० स० [हिं० झोंकना का प्रे०] झोंकने का काम दूसरे से कराना।

झोंका—संज्ञा पुं० [हिं० झोंक] १. झटका। धक्का। रेला। झपट्टा। २. हवा का झटका या धक्का। ३. हवा का बहाव। झकोरा। ४. पानी का हिलोरा। ५. इधर से उधर झुकने या हिलने की क्रिया। ६. ठाठ। सजावट।

झोंकाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० झोंकना] झोंकने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

झोंकी—संज्ञा स्त्री० [हिं० झोंक] १. उत्तर-दायित्व। जवाबदेही। २. अनिष्ट या हानि की आशंका। जोखों। जोखिम।

झोंझ—संज्ञा पुं० [देश०] १. खोंता। घोसला। २. कुछ पक्षियों (जैसे, ढेंक, गीध) के गले की थैली या लटकता हुआ मांस। ३. खुजली। सुरसुराहट।

झोंझल—संज्ञा स्त्री० [हिं० झुँझलाना] झुँझलाहट। क्रोध। कुढ़न।

झोंटा—संज्ञा पुं० [सं० जूट] १. बड़े-बड़े बालों का समूह। २. पतली लंबी वस्तुओं का वह समूह जो एक बार हाथ में आ सके। जुट्टा।

संज्ञा पु० [हिं० भारा] वह धावा जो भूले को इधर-उधर हिलाने के लिए दिया जाता है। भोंटा। पेंग।
भोंटी*†–संज्ञा स्त्री० दे० "भोंटा"।
भोंपड़ा–संज्ञा पु० [हिं० छोपना] [स्त्री० अल्पा० भोंपड़ी] वह बहुत छोटा सा घर जो गाँवों या जंगलों में कच्ची मिट्टी की छोटी दीवार उठाकर और घास-फूस से छाकर बना लेते हैं। कुटी। पर्णशाला।
मुहा०—अधा भोंपड़ा=पेट। उदर।
भोंपड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० भोंपड़ा] छोटा भोंपड़ा। कुटिया।
भोंपा–संज्ञा पु० [हिं० भब्बा] भब्बा। गुच्छा।
भोंटिंग–वि० [हिं० भोंटा] जिसके सिर पर घड़े बड़े और खड़े बाल हों। भोंटेवाला।
संज्ञा पु० भूत प्रेत या पिशाच आदि।
भोरई†–वि० [हिं० भोल] रसेदार। (तरकारी)
भोरना†–क्रि० स० [सं० दोलन] १ झटका देकर हिलाना या कँपाना। २ किसी चीज को इस प्रकार भटका देकर हिलाना जिसमें उसके साथ लगी हुई दूसरी चीज गिर पड़े। ३ इकट्ठा करना। एकत्र करना।
भोर*‡–संज्ञा स्त्री० दे० 'भोली"।
भोरी*†–संज्ञा स्त्री० [हिं० भोली] १ भोली। २ पट। भोभर। ओभर। ३ एक प्रकार की रोटी।
भोल–संज्ञा पु० [हिं० झालि] १ तरकारी आदि का गाढ़ा रसा। शोरबा। २ कढ़ी आदि की तरह पकाई हुई पतली लेई। ३ माँड। पीच। ४ धातु पर का मुलम्मा।
संज्ञा पु० [हिं० भूलना] १ पहनने या तानने हुए कपड़ों आदि में वह अंश जो ढीला होने के कारण भूल या लटक जाता है। २ इस प्रकार भूलने या लटकने का भाव या क्रिया। तनाव या कसाव का उलटा। ३ पल्ला। आँचल। ४ परदा। ओट। आड़।
वि० १ जो कसा या तना न हो। ढीला। २ निकम्मा। खराब। बुरा।
संज्ञा पु० गलती। भूल।
संज्ञा पु० [हिं० भिल्ली] १ वह भिल्ली या थैली जिसमें गर्भ से निकले हुए बच्चे या अंडे रहते हैं। २ गर्भ।
संज्ञा पु० [सं० ज्वाल] १ राख। भस्म। खाक। २ दाह। जलन।
भोलदार–वि० [हिं० भोल+फा० दार] १ जिसमें रसा हो। २ जिस पर गिलट या मुलम्मा किया हो। ३ भोल-सबंधी। ४ ढीला-ढाला।
भोला†–संज्ञा पु० [हिं० भूलना] भोंका। भकोरा। हिलोर।
संज्ञा पु० [हिं० भूलना] [स्त्री० अल्पा० भोली] १ कपड़े की बड़ी भोली या थैली। २ ढीला-ढाला गिलाफ। खोली। ३ साधुओं का ढीला कुरता। चोला। ४ वात का एक रोग जिसमें कोई अंग ढीला पड़कर बेकाम हो जाता है। लकवा। ५ पेड़ों का पाला, लू आदि के कारण एक-बारगी कुम्हला जाने या सूख जाने का रोग। ६ भटका। आघात। धक्का। ७ बाधा। आपत्ति। ८ संकेत। इशारा।
भोली–संज्ञा स्त्री० [हिं० भूलना] १ कपड़े को मोड़कर बनाई हुई थैली। थोकरी। २ घास बाँधने का जाल। ३ मोट। चरसा। पुर। ४ वह कपड़ा जिससे खलिहान में अनाज ओसाया जाता है। ५ कुश्ती का एक पेंच। बँवरा। ६ सफरी विस्तार जो चारों कोनों पर लगी हुई रस्सियों द्वारा खंभों में बाँधकर फैलाया जाता है।
संज्ञा स्त्री० [सं० ज्वाल] राख। भस्म।
मुहा०—भोली बुझाना=सब काम हो चुकने पर पीछे उसे करने चलना।
भोलना*–क्रि० स० [सं० ज्वालन] जलाना।
भौंद–संज्ञा पु० [हिं० भोंभ] पेट। उदर।
भौंर*–संज्ञा पु० [सं० युग्म, प्रा० जुम्म, हिं० भूमर] १ भुंड। समूह। २ पूला, पत्तियों या छोटे फलों का गुच्छा। ३ एक प्रकार का गहना। भब्बा। ४ पेड़ों या भाड़ियों का घना समूह। भापस। कुंज।
भौंरना–क्रि० अ० [अनु०] १ गूँजना।

गुंजारना। २. दे० "झौरना"।
झौराना*–क्रि० अ० [हिं० झूमना] इधर-उधर हिलना। झूमना।
क्रि० अ० [हिं० झाँवरा] १. झाँवले रंग का हो जाना। काला पड़ जाना। २. मुरझाना। कुम्हलाना।
झौंसना–क्रि० स० दे० "झुलसना"।
झौर–संज्ञा पुं० [अनु० झाँव झाँव] १. हुज्जत। तकरार। हौरा। विवाद। २. डाँट-फटकार। कहा-सुनी।
झौरना–क्रि० स० [हिं० झपटना] छोप लेना। दबा लेना। झपटकर पकड़ना।
झौरे–क्रि० वि० [हिं० धौरे] १. समीप। पास। निकट। २. साथ। संग।
झौवा‡–संज्ञा पुं० [हिं० झावा] रहठे की बनी हुई छोटी दौरी। खचिया।
झौंहाना–क्रि० अ० [अनु०] १. गुर्राना। २. जोर से चिड़चिड़ाना।

ञ

ञ–हिंदी वर्णमाला का दसवाँ व्यंजन जो चवर्ग का पाँचवाँ वर्ण है। इसका उच्चारण-स्थान तालू और नासिका है।

ट

ट–संस्कृत या हिंदी वर्णमाला मे ग्यारहवाँ व्यंजन जो टवर्ग का पहला वर्ण है। इसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है।
टंक–संज्ञा पुं० [सं०] १. चार माशे की एक तौल। २. सिक्का। ३. २१$\frac{1}{2}$ रत्ती की मोती की तौल। ४. पत्थर गढ़ने का औज़ार। टाँकी। छेनी। ५. कुल्हाड़ी। फरसा। ६. कुदाल। ७. तलवार। ८. टाँग। ९. कोष। १०. अभिमान। ११. सुहागा। १२. कोप।
टंकण–संज्ञा पुं० [सं०] १. सुहागा। २. धातु की चीज में टाँके से जोड़ लगाने का कार्य्य। ३. घोड़े की एक जाति। ४. एक प्राचीन देश जो कदाचित् दक्षिण में था।
टँकना–क्रि० अ० [सं० टंकण] १ टाँका जाना। २. सीकर अटकाया जाना। सिलना। ३. रेती के दाँतों का नुकीला होना। ४. लिखा जाना। दर्ज किया जाना। ५. सिल, चक्की आदि का खुरदुरा किया जाना। रेता जाना। कुटना।
टँकवाना–क्रि० स० दे० "टँकाना"।
टँकाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० टाँकना] टाँकने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
टँकाना–क्रि० स० [हिं० टाँकना] १. टाँकों से जोड़वाना या सिलवाना। २. सिलाकर लगवाना। ३. (सिल, जाँता, चक्की आदि को) खुरदुरा कराना। कुटाना।
टंकार–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. टन टन शब्द जो किसी कसे हुए तार आदि पर उँगली मारने से होता है। २. वह शब्द जो धनुष की कसी हुई डोरी पर बाण रखकर खींचने से होता है। ३. धातु-खंड पर आघात लगने का शब्द। ठनाका। झनकार।
टंकारना–क्रि० स० [सं० टंकार] धनुष की डोरी खींचकर शब्द करना। चिल्ला खींचकर बजाना।
टंकी–संज्ञा स्त्री० [सं० टंक=गड्ढा या गड्ढा] पानी भरने का बनाया हुआ छोटा सा

पुष्ट या बड़ा बरतन। टाँका।
टकोर–संज्ञा पु० दे० "टकार"।
टकोरना–क्रि० स० दे० "टकारना"।
टँगड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "टाँग"।
टँगना–क्रि० अ० [स० टगण] १ किसी वस्तु का किसी ऊँचे आधार पर इस प्रकार अटकना कि उसका प्राय सब भाग नीचे की ओर गया हो। लटकना। २ फाँसी पर चढ़ना या लटकना।
संज्ञा पु० वह रस्सी जिस पर कपड़े आदि टाँगे या रखे जाते हैं। अलगनी।
टँगारी†–संज्ञा स्त्री० [स० टग] कुल्हाड़ी।
टच‡–वि० [स० चट] १ सूम। कजूस। कृपण। २ कठोर-हृदय। निष्ठुर।
वि० [हिं० टिचन] तैयार। मुस्तैद।
टट घट–संज्ञा पु० [अनु० टन टन + घट] १ घड़ी-घंटा आदि बजाकर पूजा करने का मिथ्या प्रपच। २ ठाठ-बखाड़।
टटा–संज्ञा पु० [अनु० टन टन] १ लबी चौड़ी प्रक्रिया। आडबर। खटराग। २ उपद्रव। दगा। फसाद। ३ झगड़ा।
ट–संज्ञा पु० [स०] १ नारियल का खोपड़ा। २ वामन। ३ चौथाई भाग। ४ शब्द।
टक–संज्ञा स्त्री० [स० टक या नाटक] १ ऐसा ताकना जिसमें बड़ी देर तक पलक न गिरे। २ स्थिर दृष्टि।
मुहा०—टक बाँधना=स्थिर दृष्टि से देखना। टक टक देखना=बिना पलक गिराये लगातार कुछ काल तक देखते रहना। टक लगाना=आसरा देखते रहना।
टकटका*†–संज्ञा पु० [हिं० टक] [स्त्री० टकटकी] स्थिर दृष्टि। टकटकी।
वि० स्थिर या बँधी हुई (दृष्टि)।
टकटकाना†–क्रि० स० [हिं० टक] १ एकटक ताकना। स्थिर दृष्टि से देखना। २ टकटक शब्द उत्पन्न करना।
टकटकी–संज्ञा स्त्री० [हिं० टक] ऐसी तकाई जिसमें देर तक पलक न गिरे। अनिमेष या स्थिर दृष्टि। गड़ी हुई नज़र।
मुहा०—टकटकी बाँधना=स्थिर दृष्टि से देखना।
टकटोना, टकटोरना†–क्रि० स० [स० त्वक् + तोलन] १ टटोलना। २ ढूँढ़ना।
टकटोलना–क्रि० स० दे० "टटोलना"।
टकटोरन–संज्ञा पु० [हिं० टकटोना] टटोर-कर देखने की क्रिया।
टकटोहना*–क्रि० स० दे० "टटोलना"।
टकराना–क्रि० अ० [हिं० टक्कर] १ जोर से भिड़ना। धक्का या ठोकर लेना। २ मारा मारा फिरना। डाँवाडोल घूमना।
क्रि० स० एक वस्तु को दूसरी पर जोर से मारना। जोर से भिड़ाना। पटकना।
टकसाल–संज्ञा स्त्री० [स० टकशाला] १ वह स्थान जहाँ सिक्के बनाए जाते हैं।
मुहा०—टकसाल बाहर=१ (सिक्का) जिसका चलन न हो। २ (वाक्य या शब्द) जिसका प्रयोग शिष्ट न माना जाय।
२ ऊँची या प्रामाणिक वस्तु।
टकसाली–वि० [हिं० टकसाल] १ टकसाल का। टकसाल सबधी। २ खरा। चोखा। ३ अधिकारियों या विज्ञों द्वारा माना हुआ। सर्व-सम्मत। ४ ऊँचा हुआ।
संज्ञा पु० टकसाल का अधिकारी।
टका–संज्ञा पु० [स० टक] १ चाँदी का एक पुराना सिक्का। रुपया। २ ताँबे का एक सिक्का जो दो पैसों के बराबर होता है। अधन्ना। दो पैसे।
मुहा०—टका सा जवाब देना=साफ इनकार करना। कोरा जवाब देना। टका सा मुँह लेकर रह जाना=लज्जित हो जाना। खिसिया जाना। टके गज की चाल=मोटी चाल। थोड़े खर्च में निर्वाह।
३ धन। द्रव्य। रुपया पैसा। ४ तीन तोले की तौल। (वैद्यक)
टकासी–संज्ञा स्त्री० [हिं० टका] टके या दो पैसे फी रुपए का सूद।
टकुआ–संज्ञा पु० [स० तर्कुक] चरखे में का तकला जिस पर सूत काता जाता है।
टकैत वि० [हिं० टका] धनी। सपन्न।
टकोर–संज्ञा स्त्री० [स० टकार] १ हलकी

चोट। प्रहार। आघात। ठेस। थपेड़। २. नगाड़े पर का आघात। ३. डंके या नगाड़े की आवाज। ४. धनुष की डोरी खींचने का शब्द। टंकार। ५. दवा भरी हुई गरम पोटली को किसी अंग पर रह रहकर छुलाने की क्रिया। सेंक। ६. झाल। परपराहट।

टकोरना–क्रि० स० [हिं० टकोर] १. हलका आघात पहुँचाना। २. डंके आदि पर चोट लगाना। दवा भरी हुई गरम पोटली को किसी अंग पर रह रहकर भुलाना। सेंकना।

टक्कर–संज्ञा स्त्री० [अनु० ठक] १. वह आघात जो दो वस्तुओं के वेग के साथ एक दूसरी से भिड़ने से लगता है। ठोकर।

मुहा०—टक्कर खाना=१. किसी कड़ी वस्तु के साथ इतने वेग से भिड़ना या छू जाना कि गहरा आघात पहुँचे। २. मारा मारा फिरना। २. मुकाबिला। मुठभेड़। लड़ाई।

मुहा०—टक्कर का=बराबरी का। समान। तुल्य। टक्कर खाना=१. मुकाबिला करना। भिड़ना। २. समान होना। तुल्य होना। टक्कर लेना=वार सहना। चोट सहना।

३. जोर से सिर मारने का धक्का।

मुहा०—टक्कर मारना=ऐसा प्रयत्न करना जिसका फल शीघ्र दिखाई न दे। माथा मारना। टक्कर लड़ाना=दूसरे के सिर पर सिर मारकर लड़ना। ४. घाटा। हानि। नुकसान।

टखना–संज्ञा पु० [सं० टंक] एड़ी के ऊपर निकली हुई हड्डी की गाँठ। गुल्फ।

टगण–*संज्ञा पुं० [सं०] छः मात्राओं का एक गण।*

टघरना†–क्रि० अ० दे० "पिघलना"।

टचटच–क्रि० वि० [हिं० टचना] धाँय धाँय। धक धक। (आग की लपट का शब्द)

टटका–वि० [सं० तत्काल] १. तुरत का प्रस्तुत। हाल का। ताजा। २. नया। कोरा।

टटल बटल†–वि० [अनु०] अडबंड। ऊट-पटाँग।

टटीबा–संज्ञा पुं० [अनु०] घिरनी। चक्कर।

टटोरना†–क्रि० स० दे० "टटोलना"।

टटोल–संज्ञा स्त्री० [हिं० टटोलना] टटोलने का भाव या क्रिया। गूढ़ स्पर्श।

टटोलना–क्रि० स० [सं० त्वक्+तोलन] १. मालूम करने के लिये उँगलियों से छूना या दबाना। गूढ़ स्पर्श करना। २. ढूँढ़ने या पता लगाने के लिये इधर-उधर हाथ रखना। ३. बातों ही बातों में किसी के हृदय का भाव जानना। थाह लेना। थहाना। ४. जाँच करना। परखना।

टट्टर–संज्ञा पुं० [सं० तट या स्थाता] बाँस की फट्टियों, सरकंडों आदि को जोड़कर बनाया हुआ ढाँचा जो ओट या रक्षा के लिये दरवाजे आदि में लगाया जाता है।

टट्टी–संज्ञा स्त्री० [सं० तटी या स्थात्री] १. बाँस की फट्टियों आदि को जोड़कर आड़ या रक्षा के लिये बनाया हुआ ढाँचा।

मुहा०—टट्टी की आड़ (या ओट) में शिकार खेलना=१. किसी के विरुद्ध छिपकर कोई चाल चलना। २. छिपाकर बुरा काम करना। धोखे की टट्टी=ऐसी वस्तु या बात जिसके कारण लोग धोखा खाकर हानि उठावें। २. चिक। चिलमन। ३. पतली दीवार। ४. पाखाना। ५. बाँस की फट्टियों आदि की दीवार और छाजन जिस पर बेलें चढ़ाई जाती हैं।

टट्टू–संज्ञा पुं० [अनु०] छोटे क़द का घोड़ा। टाँगन।

मुहा०—भाड़े का टट्टू=रुपया लेकर दूसरे की ओर से काम करनेवाला आदमी।

टन–संज्ञा स्त्री० [अनु०] किसी धातुखंड पर आघात पड़ने से उत्पन्न शब्द। टनकार।

टनकना–क्रि० अ० [अनु० टन] १. टन टन बजना। २. धूप या गरमी लगने के कारण सिर में दर्द होना।

टनटन–संज्ञा स्त्री० [अनु०] घंटे का शब्द।

टनटनाना–क्रि० स० [हिं० टनाटन] धातुखंड पर आघात करके 'टनटन' शब्द निकालना। क्रि० अ० टनटन बजना।

टनमन–संज्ञा पुं० दे० "टोना"।

वि० दे० "टागाना"।

टनमना–वि० [स०तन्मनस्] जिसकी तबीअत ठीक हो। स्वस्थ। चंगा। 'अनमना' का उल्टा।

टनाका†–संज्ञा पु० [अनु० टन] घंटा बजने का शब्द।

वि० बहुत कड़ी (धूप)।

टनाटन–संज्ञा स्त्री० [अनु०] लगातार होनेवाला टनटन शब्द।

टप–संज्ञा पु० [हिं० टोप] १ गाड़ी गाड़िया में लगा हुआ ओहार या सायबान। कमंदरा। २ लटकानेवाले लप के ऊपर की छतरी।

संज्ञा पु० [अ० टब] १ नांद के आकार का पानी रखने का खुला बरतन। टाका। २ कान में पहनने का अँगरेजी ढंग का फूल।

संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ बूंद बूंद टपकने का शब्द। २ किसी वस्तु के एक-बारगी ऊपर से गिर पड़ने का शब्द।

टपक–संज्ञा स्त्री० [हिं० टपकना] १ टपकने का भाव। २ बूंद बूंद गिरने का शब्द। ३ रुक रुककर होनेवाला दर्द।

टपकना–क्रि० अ० [अनु० टप टप] १ बूंद बूंद गिरना। चूना। रसना। २ फल का पेड़ से गिरना। ३ ऊपर से सहसा आना। ४ अधिकता से कोई भाव प्रकट होना। जाहिर होना। झलकना। ५ घाव आदि के कारण रह रहकर दर्द करना। चिलकना। टीस मारना।

टपका–संज्ञा पु० [हिं० टपकना] १ बूंद बूंद गिरने का भाव। २ टपकी हुई वस्तु। रसाव। ३ पककर आपसे आप गिरा हुआ फल। ४ रह रहकर उठनेवाला दर्द। टीस।

टपका टपकी–संज्ञा स्त्री० [हिं० टपकना] १ बूंदा बूंदी। (मेंह की) हलकी झड़ी। फुहार। २ फलों का लगातार गिरना।

टपकाना–क्रि० स० [हिं० टपकना] १ बूंद बूंद करके गिराना। चुआना। २ भबके से अर्क खींचना। चुआना।

टपना–क्रि० अ० [हिं० तपना] १ बिना कुछ खाए पीए पड़ा रहना। २ व्यर्थ आसरे में बैठा रहना।

टपाटप–क्रि० वि० [अनु०] १ लगातार टप टप शब्द के साथ या बूंद बूंद करके (गिरना)। २ एक एक करके शीघ्रता से।

टपाना–क्रि० स० [हिं० तपाना] १ बिना खिलाए पिलाए पड़ा रहने देना। २ व्यर्थ आसरे में रखना।

क्रि० स० [हिं० टपना] फँदाना।

टप्पर†–संज्ञा पु० दे० 'छप्पर'।

टप्पा–संज्ञा पु० [हिं० टाप] १ उछल उछलकर जाती हुई वस्तु की बीच बीच में टिकान। २ उतनी दूरी जितनी दूरी पर कोई फेंकी हुई वस्तु जाकर पड़े। ३ उछाल। कूद। फलाँग। ४ नियत दूरी। मुकर्रर फासला। ५ दो स्थानों के बीच में पड़नेवाला मैदान। ६ जमीन का छोटा हिस्सा। ७ अंतर। बीच। फर्क। ८ एक प्रकार का चलता गाना जो पंजाब से चला है।

टब–संज्ञा पु० [अं०] पानी रखने के लिये नांद के आकार का एक खुला बड़ा बरतन।

संज्ञा पु० [हिं० टप] एक प्रकार का लप।

टमटम–संज्ञा स्त्री० [अं० टैंडम] दो ऊँचे ऊँचे पहियों की एक खुली हलकी गाड़ी।

टमटी–संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का बरतन।

टमाटर–संज्ञा पु० [अं० टोमैटो] एक प्रकार का खट्टा विलायती बैंगन।

टर–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ कर्कश या कणकटु शब्द। कड़ुई बोली।

मुहा०—टर टर करना या लगाना = ढिठाई से बोलते जाना। जबानदराजी करना।

२ मेढक की बोली। ३ अविनीत वचन और चेष्टा। ऐंठ। अकड़। ४ हठ। ज़िद।

टरकना–क्रि० अ० [हिं० टरना] १ खिसकना। २ टल जाना। हट जाना।

टरकाना–क्रि० स० [हिं० टरकना] १ हटाना। खिसकाना। २ टाल देना। चलता करना। धता बताना।

टरटराना—क्रि० अ० [हिं० टर] १. बक बक करना। २. ढिठाई से बोलना।
टरना†—क्रि० स० दे० "टलना"।
टरनि†—संज्ञा स्त्री० [हिं० टरना] टरने का भाव या ढंग।
टर्रा—वि० [अनु० टर टर] १. अविनीत और कठोर स्वर से उत्तर देनेवाला। टर्रानेवाला। २. धृष्ट। कटुवादी।
टर्राना—क्रि० अ० [अनु० टर] अविनीत और कठोर स्वर से उत्तर देना।
टर्रापन—संज्ञा पुं० [हिं० टर्रा] बात-चीत में अविनीत भाव। कटुवादिता।
टलना—क्रि० अ० [सं० टलन] १. हटना। खिसकना। सरकना।
मुहा०—अपनी बात से टलना = प्रतिज्ञा न पूरी करना। मुकरना।
२. मिटना। न रह जाना। ३. (किसी कार्य्य के लिये) निश्चित समय से और आगे का समय स्थिर होना। ४. (किसी बात का) अन्यथा होना। ठीक न ठहरना। ५. (किसी आदेश या अनुरोध का) न माना जाना। उल्लंघित होना। ६. समय व्यतीत होना। बीतना।
टल्हा†—वि० [देश०] खोटा। खराब।
टल्लेनवीसी—संज्ञा स्त्री० दे० "टिल्लेनवीसी"।
टवाई—संज्ञा स्त्री० [सं० अटन=घूमना] व्यर्थ घूमना। आवारगी।
टस—संज्ञा स्त्री० [अनु०] किसी भारी चीज के खिसकने या टसकने का शब्द।
मुहा०—टस से मस न होना = १. किसी भारी चीज का कुछ भी न खिसकना। २. कहने सुनने का कुछ भी प्रभाव अनुभव न करना।
टसक—संज्ञा स्त्री० [अनु० टसकना] रह रहकर उठनेवाली पीड़ा। कसक। टीस। चसक।
टसकना—क्रि० अ० [सं० तस + करण] १. जगह से हटना। खिसकना। २. रह रहकर दर्द करना। टीस मारना। ३. हृदय में कहने सुनने का प्रभाव अनुभव करना। बात मानने को तैयार होना।
टसकाना—क्रि० स० [हिं० टसकना] हटाना। खिसकाना। सरकाना।
टसर—संज्ञा पुं० [सं० त्रसर] एक प्रकार का घटिया, कड़ा और मोटा रेशम।
टसुआ—संज्ञा पुं० [हिं० अँसुआ] आँसू।
टहना—संज्ञा पुं० [सं० तनुः] वृक्ष की डाल।
टहनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० टहना] वृक्ष की पतली शाखा। डाली।
टहल—संज्ञा स्त्री० [हिं० टहलना] १. सेवा। शुश्रूषा। खिदमत।
यौ०—टहल टई या टहल टकोर = सेवा।
२. नौकरी-चाकरी। काम धंधा।
टहलना—क्रि० अ० [सं० तत् + चलन] १. धीरे धीरे चलना। मंद गति से चलना।
मुहा०—टहल जाना = खिसक जाना।
२. जी बहलाने के लिये धीरे धीरे चलना या घूमना। सैर करना। हवा खाना।
टहलनी—संज्ञा स्त्री० [सं० टहल] १. दासी। मजदूरनी। २. चिराग की बत्ती उकसानेवाली लकड़ी।
टहलाना—क्रि० स० [हिं० टहलना] १. धीरे धीरे चलाना। २. सैर कराना। घुमाना। फिराना। ३. दूर करना।
टहलुआ—संज्ञा पुं० [हिं० टहल] [स्त्री० टहलुई, टहलनी] सेवक। खिदमतगार।
टहलू—संज्ञा पुं० दे० "टहलुआ"।
टहो—संज्ञा स्त्री० [हिं० घाट, घात] मतलब निकालने की घात। प्रयोजन-सिद्धि का ढंग। जोड़ तोड़।
टहोका—संज्ञा पुं० [हिं० ठोकर] हाथ या पैर से दिया हुआ धक्का। झटका।
मुहा०—टहोका देना = झटकना। ढकेलना। टहोका खाना = धक्का खाना। ठोकर सहना।
टाँक—संज्ञा स्त्री० [सं० टंक] १. तीन या चार माशे की एक तौल। (जौहरी) २. कूत। अंदाज। आँक।
संज्ञा स्त्री० [हिं० टाँकना] १. लिखावट। लिखन। २. क़लम की नोक।
टाँकना—क्रि० स० [सं० टंकन] १. एक वस्तु के साथ दूसरी वस्तु को कील आदि जड़कर जोड़ना। २. सिलाई के द्वारा जोड़ना।

सीना। ३ सीकर अटकाना। ४ मिल, चमड़ी आदि को टाँकी से गढ़के करके खुरदुरा करना। कूटना। रेहना। ५ रेती तेज़ करना। ६ स्मरण रखने के लिये लिखना। दर्ज करना। चढ़ाना। † ७ लिखकर पेश करना। दाखिल करना। ८ चट कर जाना। उड़ा जाना। खाना। ९ अनुचित रूप से ले लेना। मार लेना।

टाँका—संज्ञा पु० [हि० टाँकना] १ जोड़ मिलानेवाली कील या काँटा। २ सिलाई का पृथक् अंश। डोभ। ३ सिलाई। सीवन। ४ टँकी हुई चकती। थिगली। चिप्पी। ५ शरीर पर के घाव की सिलाई। ६ धातुओं को जोड़ने का मसाला।

संज्ञा पु० [सं० टंक] [स्त्री० अल्पा० टाँकी] पत्थर काटने की चौड़ी छेनी।

संज्ञा पु० [सं० टंक] १ पानी इकट्ठा रखने का छोटा सा कुंड। हौज़। चहबच्चा। २ पानी रखने का बड़ा बरतन। कंडाल।

टाँकी—संज्ञा स्त्री० [सं० टंक] १ पत्थर गढ़ने का औज़ार। छेनी। २ काटकर बनाया हुआ छेद।

संज्ञा स्त्री० [सं० टंक] छोटा टाँका।

टाँग—संज्ञा स्त्री० [सं० टंग] शरीर का वह निचला भाग जिससे प्राणी चलते या दौड़ते हैं। जीवों के चलने का अवयव।

मुहा०—टाँग अड़ाना=१ बिना अधिकार के किसी काम में योग देना। फ़ज़ूल दख़ल देना। २ विघ्न डालना। टाँग तले से (या नीचे से) निकलना=हार मानना। परास्त होना। टाँग पसारकर सोना=निश्चित सोना।

टाँगन—संज्ञा पु० [सं० तुरंगम] छोटा घोड़ा। टट्टू।

टाँगना—क्रि० स० [हि० टँगना] १ किसी वस्तु को दूसरी वस्तु से इस प्रकार बाँधना या उस पर ठहराना कि उसका सब या बहुत सा भाग नीचे लटकता रहे। लटकाना। २ फाँसी पर चढ़ाना।

टाँगा—संज्ञा पु० [सं० टंग] बड़ी कुल्हाड़ी।

संज्ञा पु० [हि० टँगना] एक प्रकार की गाड़ी जिसका ढाँचा इतना ढीला होता है कि वह पीछे की ओर कुछ झुका रहता है।

टाँगी—संज्ञा स्त्री० [हि० टाँगा] कुल्हाड़ी।

टाँच—संज्ञा स्त्री० [हि० टाँकी] दूसरे का काम बिगाड़नेवाली बात या वचन। भाँजी।

संज्ञा स्त्री० [हि० टाँका] १ टाँका। सिलाई। २ टँकी हुई चकती। थिगली।

टाँचना—क्रि० स० [हि० टाँच] १ टाँकना। डोभ लगाना। २ काटना। तराशना।

टाँट—संज्ञा पु० [हि० टट्टर] खोपड़ी। कपाल।

टाँठ, टाँठा—वि० [अनु० ठनठन] १ करारा। कड़ा। कठोर। २ दृढ़। बली।

टाँड़—संज्ञा स्त्री० [सं० स्थाणु] १ लकड़ी के खंभा पर बनाई हुई पाटन जिस पर चीज़ असबाब रखते हैं। परछत्ती। २ मचान जिस पर बैठकर खेत की रखवाली करते हैं।

संज्ञा [सं० ताड] बाहु में पहनने का स्त्रियों का एक गहना। टँड़िया।

टाँड़ा—संज्ञा पु० [हि० टाँड=समूह] १ अन्न आदि व्यापार की वस्तुओं से लदे हुए पशुओं का झुंड जिसे व्यापारी लेकर चलते हैं। बरदी। २ बिक्री के माल का खेप। ३ बनजारों का झुंड। ४ कुटुंब। परिवार।

टाँड़ी—संज्ञा स्त्री० दे० "टिड्डी"।

टाँय टाँय—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ कर्कश शब्द। टें टें। २ बकवाद।

मुहा०—टाँय टाँय फिस=बकवाद बहुत, पर फल कुछ भी नहीं।

टाट—संज्ञा पु० [सं० तंतु] १ सन या पटुए की रस्सियों का बुना हुआ मोटा कपड़ा।

मुहा०—टाट में पाट की बखिया=चीज़ तो भद्दी और सस्ती, पर उसमें लगी हुई सामग्री बढ़िया और बहुमूल्य। बेमेल का साज। २ बिरादरी या उसका अंग। ३ महाजनी गद्दी।

मुहा०—टाट उलटना=दिवाला निकालना।

टाटर—संज्ञा पु० [सं० स्थातृ=जो खड़ा हो।] १ टट्टर। टट्टी। २ सिर की हड्डी। खोपड़ी। कपाल।

टाटिक, टाटी*-संज्ञा स्त्री० दे० "टट्टी"।
टान-संज्ञा स्त्री० [सं० तान] तनाव।
टानना-क्रि० स० दे० "तानना"।
टाप-संज्ञा स्त्री० [सं० स्थापन] १. घोड़े के पैर का सबसे निचला भाग जो जमीन पर पड़ता है। सुम। २. घोड़े के पैरों के जमीन पर पड़ने का शब्द। ३. मछली पकड़ने का झाबा। ४. मुरगियों के बंद करने का झाबा।
टापना-क्रि० अ० [हिं० टाप + ना (प्रत्य०)] १. घोड़ों का पैर पटकना। २. किसी वस्तु के लिए इधर-उधर हैरान फिरना। ३. उछलना। कूदना।
क्रि० स० कूदना। फांदना।
क्रि० अ० दे० "टपना"।
टापा-संज्ञा पुं० [सं० स्थापन] १. उजाड़ मैदान। २. उछाल। ३. किसी वस्तु को ढकने या बंद करने का टोकरा। झाबा।
टापू-संज्ञा पु० [हिं० टापा या टप्पा] १. स्थल का वह भाग जिसके चारो ओर जल हो। द्वीप। † २. टप्पा। टापा।
टाबर†-संज्ञा पुं० [पंजाबी टब्बर] १. बालक। लड़का। २. परिवार।
टामक†-संज्ञा पुं० [अनु०] डिमडिमी।
टामन-संज्ञा पुं० दे० "टोटका"।
टारना†-क्रि० स० दे० "टालना"।
टाल-संज्ञा स्त्री० [सं० अट्टाल] १. ऊँचा ढेर। भारी राशि। अटाला। गंज। २. लकड़ी, भुस आदि की दूकान।
संज्ञा स्त्री० [हिं० टालना] टालने का भाव।
संज्ञा पुं० [सं० टार] स्त्री और पुरुष का समागम करानेवाला। कुटना। भँड़आ।
टालटूल-संज्ञा स्त्री० दे० "टालमटूल"।
टालना-क्रि० स० [हिं० टलना] १. हटाना। खिसकाना। सरकाना। २. दूर करना। भगा देना। ३. मिटाना। न रहने देना। ४. किसी कार्य के लिये दूसरा समय स्थिर करना। मुलतवी करना। ५. समय बिताना। ६. (आदेश या अनुरोध) न मानना। ७. बहाना करके पीछा छुड़ाना। हीला-हवाली करना। ८. भूठा वादा करना। ९. धता बताना। टरकाना। १०. पलटना। फेरना। ११. इधर-उधर हिलाना। गति देना।
टालमटूल-संज्ञा स्त्री० [हिं० टालना] बहाना।
टाली-संज्ञा स्त्री० [देश०] १. गाय, बैल आदि के गले में बाँधने की घंटी। २. चंचल जवान गाय या बछिया।
टाहली†-संज्ञा पुं० दे० "टहलुआ"।
टिंड-संज्ञा स्त्री० [सं० टिंडिश] एक बेल जिसके गोल फलों की तरकारी होती है।
टिकट-संज्ञा पुं० [अं०] १. वह कागज का टुकड़ा जो किसी प्रकार का महसूल या फ़ीस चुकानेवाले को प्रमाण-पत्र के रूप में दिया जाय। २. वह कर या महसूल जो किसी काम के करनेवालों पर लगाया जाय।
टिकटिकी-संज्ञा स्त्री० दे० "टिकठी"।
टिकठी-संज्ञा स्त्री० [सं० त्रिकाष्ठ] १. तीन तिरछी खड़ी की हुई लकड़ियों का एक ढांचा जिससे अपराधियों के हाथ पैर बाँधकर उनके शरीर पर बेत या कोड़े लगाये जाते हैं या उनके गले में फांसी का फंदा लगाया जाता है। २. तिपाई। ३. वह रत्थी जिस पर शव ले जाते हैं।
टिकड़ा-संज्ञा पुं० [हिं० टिकिया] [स्त्री० अल्पा० टिकड़ी] १. कोई चिपटा गोल टुकड़ा। २. आंच पर सेंकी हुई रोटी। बाटी। अंगाकड़ी।
टिकना-क्रि० अ० [सं० स्थित] १. कुछ काल तक के लिये रहना। ठहरना। २. घुली हुई वस्तु का नीचे बैठना। तल में जमना। ३. कुछ दिनों तक काम देना। ४. स्थित रहना। अड़ा रहना।
टिकरी†-संज्ञा स्त्री० [हिं० टिकिया] १. एक प्रकार का नमकीन पकवान। २. टिकिया।
टिकली-संज्ञा स्त्री० [हिं० टिकिया] १. छोटी टिकिया। २. पन्नी या कांच की बहुत छोटी बिंदी। सितारा। चमकी।
टिकस-संज्ञा पुं० [अं० टैक्स] महसूल।
टिकाई†-संज्ञा पुं० [हिं० टीका] युवराज।
संज्ञा स्त्री० [हिं० टिकना] टिकने का भाव।

टिकाऊ–वि० [हिं० टिकना] टिकने या बहुत दिनों तक काम देनेवाला। मजबूत।

टिकान–संज्ञा स्त्री० [हिं० टिकना] १ टिकने या ठहरने का भाव। २ पड़ाव। चट्टी।

टिकाना–क्रि० स० [हिं० टिकना] १ रहने के लिये जगह देना। २ ठहराना। †३ बोझ उठाने में सहायता देना।

टिकाव–संज्ञा पु० [हिं० टिकना] १ स्थिति। ठहराव। २ स्थिरता। स्थायित्व। ३ ठहरने की जगह। पड़ाव।

टिकिया–संज्ञा स्त्री० [सं० वटिका] १ गोल और चिपटा छोटा टुकड़ा। जैसे दवा की टिकिया। २ कोयले की बुकनी से बनाया हुआ चिपटा गोल टुकड़ा जिसमें चिलम पर आग सुलगाते हैं। ३ उक्त आकार की एक गोल मिठाई।

टिकुली–संज्ञा स्त्री० दे० "टिकली"।

टिकैत–संज्ञा पु० [हिं० + टीका ऐत (प्रत्य०)] १ राजा का उत्तराधिकारी कुमार। युवराज। २ अधिष्ठाता। ३ सरदार।

टिकोरा–संज्ञा पु० [सं० वटिका, हिं० टिकिया] आम का छोटा और कच्चा फल।

टिक्कड़–संज्ञा पु० [हिं० टिकिया] १ बड़ी टिकिया। २ सेंकी हुई छोटी मोटी रोटी। बाटी। लिट्टी। अँगाकड़ी।

टिक्का–संज्ञा पु० दे० "टीका"।

टिक्की–संज्ञा स्त्री० [हिं० टिकिया] १ गोल और चिपटा छोटा टुकड़ा। टिकिया। २ अंगाकड़ी। बाटी।

संज्ञा स्त्री० [हिं० टीका] १ माथे पर की बिंदी। २ ताश की बूटी।

टिघलना–क्रि० अ० दे० "पिघलना"।

टिचन–वि० [अं० अटेंशन] १ तैयार। प्रस्तुत। दुरुस्त। २ उद्यत। मुस्तैद।

टिटकारना–क्रि० स० [अनु०] [संज्ञा टिटकारी] 'टिक टिक' कहकर हाँकना।

टिटिह, टिटिहा–संज्ञा पु० [सं० टिट्टिभ] टिटिहरी चिड़िया का नर।

टिटिहरी–संज्ञा स्त्री० [सं० टिट्टिभ, हिं० टिटिह] पानी के पास रहनेवाली एक छोटी चिड़िया। कुररी।

टिट्टिभ–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० टिट्टिभी] १ टिटिहरी। कुररी। २ टिड्डी।

टिड्डा–संज्ञा पु० [सं० टिट्टिभ] एक प्रकार का छोटा परदार कीड़ा।

टिड्डी–संज्ञा स्त्री० [सं० टिट्टिभ] एक प्रकार का उड़नेवाला कीड़ा जो बहुत भारी दल बाँधकर चलता और पेड़ पौधों को बड़ी हानि पहुँचाता है।

टिढ़बिड़गा–वि० [हिं० टेढ़ा + सं० वक्र] टेढ़ा मेढ़ा।

टिपका*†–संज्ञा पु० [हिं० टिपकना] बूँद।

टिप टिप–संज्ञा स्त्री० [अनु०] बूँद बूँद करके गिरने या टपकने का शब्द।

टिपवाना–क्रि० स० [हिं० टीपना] टीपने का काम दूसरे से कराना।

टिपारा–संज्ञा पु० [हिं० तीन + फा० पार: = टुकड़ा] मुकुट के आकार की एक टोपी।

टिप्पणी–संज्ञा स्त्री० दे० "टिप्पनी"।

टिप्पन–संज्ञा पु० [सं०] १ टीका। व्याख्या। २ जन्मकुंडली। जन्मपत्री।

टिप्पनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ किसी वाक्य या प्रसंग का अर्थ सूचित करनेवाला विवरण। २ टीका। व्याख्या।

टिमटिमाना–क्रि० अ० [सं० तिम = ठंढा होना] १ (दीपक का) मंद मंद जलना। क्षीण प्रकाश देना। २ बुझने पर हो होकर जलना। झिलमिलाना। ३ मरने के निकट होना।

टिर–संज्ञा स्त्री० दे० "टर"।

टिरकिस–संज्ञा स्त्री० [हिं० टिर + किस] बात न मानने की ढिठाई। चीं-चपड़। विरोध।

टिर्राना–क्रि० अ० दे० "टर्राना"।

टिल्ला–संज्ञा पु० [हिं० टेलना] धक्का।

टिल्लेनवीसी–संज्ञा स्त्री० [हिं० टिल्ला+फा० नवीसी] १ निठल्लापन। २ हीला-हवाली। बहाना। ३ कुटनापन।

टिसुआ†–संज्ञा पु० [सं० अश्रु] आँसू।

टिहुनी†–संज्ञा स्त्री० [सं० घुंठ, हिं० घुटना] १ घुटना। २ कोहनी।

टिहूका—संज्ञा स्त्री० [देश०] चौंकने की क्रिया या भाव। चौंक। झझक।

टींड़सी—संज्ञा स्त्री० दे० "टिंड"।

टीक—संज्ञा स्त्री० [सं० तिलक] १. गले में पहनने का एक गहना। २. माथे में पहनने का एक गहना।

टीकना—क्रि० स० [हिं० टीका] १. टीका या तिलक लगाना। २. चिह्न या रेखा बनाना।

टीका—संज्ञा पुं० [सं० तिलक] १. वह चिह्न जो चंदन, रोली, केसर आदि से मस्तक, बाहु आदि पर सांप्रदायिक संकेत के लिये लगाया जाता है। तिलक। २. विवाह स्थिर होने की एक रीति जिसमें कन्या-पक्ष के लोग वर के माथे में तिलक लगाते और वर-पक्ष के लोगों को द्रव्य देते हैं। तिलक। ३. दोनों भौंहों के बीच माथे का मध्य भाग। ४. (किसी समुदाय का) शिरोमणि। श्रेष्ठ पुरुष। ५. राजसिंहासन या गद्दी पर बैठने का कृत्य। राज्यतिलक। ६. राज्य का उत्त-राधिकारी। युवराज। ७. आधिपत्य का चिह्न। ८. एक गहना जिसे स्त्रियाँ माथे पर पहनती हैं। ९. धब्बा। दाग। चिह्न। १०. किसी रोग से बचाने के लिये उस रोग के चेप या रस को लेकर किसी के शरीर में सूइयों से चुभाकर प्रविष्ट करने की क्रिया। संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी पद या ग्रंथ का अर्थ स्पष्ट करनेवाला वाक्य या ग्रंथ। व्याख्या।

टीकाकार—संज्ञा पुं० [सं०] किसी ग्रंथ का अर्थ या टीका लिखनेवाला।

टीन—संज्ञा पुं० [अं० टिन] १. राँगा। २. राँगे की क़लई की हुई लोहे की पतली चद्दर। ३. इस चद्दर का बना डिब्बा।

टीप—संज्ञा स्त्री० [हिं० टीपना] १. दबाने या ठोकने की क्रिया या भाव। दबाव। दाब। २. गच कूटने का काम। ३. टंकार। घोर शब्द। ४. गाने में जोर की तान। ५. स्मरण के लिये किसी बात को झटपट लिख लेने की क्रिया। टाँक लेने का काम। ६. दस्तावेज। ७. जन्मपत्री। कुंडली।

टीपन—संज्ञा स्त्री० [हिं० टीपना] जन्मपत्री।

टीपना—क्रि० स० [सं० टेपन] १. दबाना। चाँपना। मसलना। २. धीरे धीरे ठोकना। क्रि० स० [सं० टिप्पनी] लिखना। टाँकना।

टीमटाम—संज्ञा स्त्री० [अनु०] बनाव-सिंगार।

टीला—संज्ञा पुं० [सं० अष्ठीला] १. पृथ्वी का कुछ उभरा हुआ भाग। डूह। भीटा। २. मिट्टी का ऊँचा ढेर। धुस। ३. पहाड़ी।

टीस—संज्ञा स्त्री० [अनु०] रह रहकर उठने-वाला दर्द। कसक। चमक।

टीसना—क्रि० अ० [हिं० टीस] रह रहकर दर्द उठना। कसक होना।

टुँटा, टुंडा—वि० [सं० तुंड] [स्त्री० टुंडी] १. जिसकी डाल या टहनी आदि कट गई हो। ठूँठा। २. जिसका हाथ कट गया हो। लूला। लुंजा।

टुइयाँ—संज्ञा स्त्री० [देश०] छोटी जाति का तोता। वि० ठेंगना। नाटा। बौना।

टुक—वि० [सं० स्तोक] थोड़ा। जरा।

टुकड़गदा—संज्ञा पुं० [हिं० टुकड़ा + फ़ा० गदा] भिखारी। मँगता। वि० १. तुच्छ। २. दरिद्र। कंगाल।

टुकड़गदाई—संज्ञा पुं० दे० "टुकड़गदा"। संज्ञा स्त्री० टुकड़ा माँगने का काम।

टुकड़तोड़—संज्ञा पु० [हिं० टुकड़ा तोड़ना] दूसरे का दिया हुआ टुकड़ा खाकर रहने-वाला आदमी।

टुकड़ा—संज्ञा पुं० [सं० स्तोक] [स्त्री० अल्पा० टुकड़ी] १. किसी वस्तु का वह भाग जो उससे कट-छँटकर अलग हो गया हो। खंड। २. चिह्न आदि के द्वारा विभक्त अंश। भाग। ३. रोटी का तोड़ा हुआ अंश।
मुहा०—(दूसरे का) टुकड़ा तोड़ना = दूसरे के दिए हुए भोजन पर निर्वाह करना। टुकड़ा माँगना = भीख माँगना। टुकड़ा-सा जवाब देना = झट और स्पष्ट शब्दों में अस्वीकार करना। कोरा जवाब देना।

टुकड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० टुकड़ा] १. छोटा टुकड़ा। खंड। २. समुदाय। मंडली।

दल। जत्था। ३ सेना का एक अश।
टुच्चा-वि० [स० तुच्छ] तुच्छ। ओछा।
टुटपुंजिया-वि० [हिं० टूटी + पूँजी] जिसके पास बहुत थोड़ी पूँजी हो।
टुटरूँ-सज्ञा पु० [अनु०] छोटी पडुकी।
टुटरूँ टूँ-सज्ञा स्त्री० [अनु०] पडुकी या फाख्ता के बोलने का शब्द।
वि० १ अकेला। २ दुबला-पतला।
टुनगा†-सज्ञा पु० [स० तनु + अग्र] [स्त्री० टुनगी] टहनी का अगला भाग।
टुपकना†-क्रि० अ० [अनु०] १ धीरे से काटना या डक मारना। २ चुगली खाना।
टुर्रा-सज्ञा पु० [?] डली। रवा। कण।
टूगना-क्रि० स० [हिं० टुनगा] थोड़ा-सा काटकर खाना।
टूँड-सज्ञा पु० [स० तुड] [स्त्री० अल्पा० टूँडी] १ कीडों के मुँह के आगे निकली हुई दो पतली नलियाँ जिन्हे धँसाकर वे रक्त आदि चूसते हैं। २ जौ, गेहूँ आदि की बाल में दाने के कोश के सिरे पर निकला हुआ नुकीला अवयव। सीग।
टूँडी-सज्ञा स्त्री० [स० तुड] १ छोटा तूँड। २ ढोढी। नाभि। ३ किसी वस्तु की दूर तक निकली हुई नोक।
टूक†-सज्ञा पु० [स० स्तोक] टुकडा।
टूकर†-सज्ञा पु० दे० "टुकडा"।
टूका†-सज्ञा पु० [हिं० टूक] १. टुकडा। खड। २ रोटी का चौथाई भाग। ३ भिक्षा। भीख।
टूट†-सज्ञा स्त्री० [हिं० टूटना, स० त्रुटि] १ खड। टूटन। टुकडा। २ टूटन का भाव। ३ लिखावट मे वह भूल से छूटा हुआ शब्द या वाक्य जो पीछे से किनारे पर लिखते है। ४ भूल। त्रुटि।
†सज्ञा पु० टोटा। घाटा।
टूटना-क्रि० अ० [स० त्रुट] १ टुकडे टुकडे होना। खडित होना। भग्न होना। २ किसी अग के जोड का उखड जाना। ३ लगातार चलनेवाली वस्तु का एक जाना। सिलसिला बद होना। ४ किसी ओर एकबारगी वेग से जाना। ५ एकबारगी बहुत-सा आ पडना। पिल पडना।
मुहा०—टूट टूटकर बरसना = मूसलधार बरसना।
६ एकबारगी धावा करना। ७ अनायास कहीं से आ जाना। ८ पृथक् होना। अलग होना। ९ सबध छूटना। लगाव न रह जाना। १० दुर्बल होना। क्षीण होना। ११ धनहीन होना। १२ चलता न रहना। बद हो जाना। १३ युद्ध में क़िले का ले लिया जाना। १४ घाटा होना। १५ शरीर में ऐंठन या तनाव लिए हुए पीडा होना।
टूटा-वि० [हिं० टूटना] १ खडित। भग्न।
मुहा०—टूटी फूटी बात या बोली। १ असबद्ध वाक्य। २ अस्पष्ट वाक्य।
२ दुबला या कमजोर। ३ निर्धन। सज्ञा पु० दे० "टोटा"।
टूठना*-क्रि० अ० [स० तुष्ट, प्रा० तुट्ठ] सतुष्ट होना।
टूठनि*-सज्ञा स्त्री० [हिं० टूठना] सतोष। तुष्टि।
टूम-सज्ञा स्त्री० [अनु० टुनटुन] १ गहना। आभूषण।
मुहा०—टूमटाम = १ गहना पाता। वस्त्राभूषण। २ बनाव-सिगार।
२ ताना। व्यग्य।
टूमना†-क्रि० स० [अनु०] १ धक्का देना। झटका देना। २ ताना मारना।
टें-सज्ञा स्त्री० [अनु०] तोते की बोली।
मुहा०—टें टें = व्यर्थ की बकवाद। हुज्जत। टें होना या बोलना = चटपट मर जाना।
टेंगना, टेंगरा-सज्ञा स्त्री० [स० तुड] एक प्रकार की मछली।
टेंट-सज्ञा स्त्री० [हिं० तट + ऐंठ] धोती की वह मडलाकार ऐंठन जो कमर पर पडती है। मुर्री।
सज्ञा स्त्री० [स० तुड] १ कपास का ढोडा। २. दे० "टेटर"।

टेंटर–संज्ञा पुं० [सं० तुंड] रोग या चोट के कारण आँख के ढेले पर का उभरा हुआ मांस। ढेंढर।

टेंटी–संज्ञा स्त्री० [हिं० टेंट] करील। संज्ञा पुं० [अनु० टेंटें] व्यर्थ झगड़ा करनेवाला। हुज्जती।

टेंटुवा–संज्ञा पुं० [देश०] १. गला। २. अँगूठा।

टेंटें–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. तोते की बोली। २. व्यर्थ की बकवाद।

टेंड़सी–संज्ञा स्त्री० दे० "टिंड"।

टेउकी–संज्ञा स्त्री० [हिं० टेक] किसी वस्तु को लुढ़कने या गिरने से बचाने के लिये उसके नीचे लगाई हुई वस्तु।

टेक–संज्ञा स्त्री० [हिं० टिकना] १. वह लकड़ी जो किसी भारी वस्तु को टिकाए रखने के लिये नीचे से लगाई जाती है। चाँड़। थूनी। थम। २. ढासना। सहारा। ३. आश्रय। अवलंब। ४. बैठने का स्थान। ५. ऊँचा टीला। ६. मन में ठानी हुई बात। हठ। जिद।

मुहा०—टेक निभना या रहना = प्रतिज्ञा पूरी होना। टेक पकड़ना या गहना = हठ करना। ७. बान। आदत। ८. गीत का पहला पद। स्थायी।

टेकना–क्रि० स० [हिं० टेक] १. सहारे के लिये किसी वस्तु को शरीर के साथ भिड़ाना। सहारा लेना। ढासना लेना। २. ठहराना या रखना।

मुहा०—माथा टेकना = प्रणाम करना।

३. सहारे के लिये पकड़ना। हाथ का सहारा लेना। *† ४. हठ करना। ५. बीच में रोकना या पकड़ना।

टेकरा–संज्ञा पुं० [हिं० टेक] [स्त्री० अल्पा० टेकरी] टीला। छोटी पहाड़ी।

टेकला†*–संज्ञा स्त्री० [हिं० टेक] धुन। रट।

टेकान–संज्ञा स्त्री० [हिं० टेकाना] १. गिरनेवाली छत आदि को सँभालने के लिये उसके नीचे खड़ी की हुई लकड़ी। टेक। चाँड़। २. वह चबूतरा जिस पर बोझ ढोनेवाले बोझ उतारकर सुस्ताते हैं।

टेकाना–क्रि० स० [हिं० टेकना] १. उठाकर ले जाने में सहारा देने के लिये थामना। २. उठने बैठने में सहायता के लिये पकड़ना।

टेकी–संज्ञा पुं० [हिं० टेक] १. प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहनेवाला। २. हठी। जिद्दी।

टेकुआ†–संज्ञा पुं० [सं० तर्कुक] चरखे का तकला।

टेकुरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० टेकुआ] १. सूत कातने या रस्सी बटने का तकला। २. चमारों का सूआ जिससे वे तागा खींचते हैं।

टेघरना†–क्रि० अ० दे० "पिघलना"।

टेटका–संज्ञा पुं० [सं० ताटंक] कान का एक गहना।
† वि० दे० "टेढ़ा"।

टेढ़बिड़ंगा–वि० [हिं० टेढ़ा + बेढंगा] टेढ़ा-मेढ़ा।

टेढ़ा–वि० [सं० तिरस् = टेढ़ा] [स्त्री० टेढ़ी] १. जो बीच में इधर-उधर झुका या घूमा हो। जो सीधा न हो। वक्र। कुटिल। २. जो समानांतर न गया हो। तिरछा। ३. कठिन। मुश्किल। पेचीला।

मुहा०—टेढ़ी खीर = मुश्किल काम।

४. उद्धत। उजड्ड। दुःशील।

मुहा०—टेढ़ा पड़ना या होना = १. उग्र रूप धारण करना। बिगड़ना। २. अकड़ना। इतराना। टेढ़ी सीधी सुनाना = भला बुरा कहना।

टेढ़ाई–संज्ञा स्त्री० दे० "टेढ़ापन"।

टेढ़ापन–संज्ञा पुं० [हिं० टेढ़ा + पन] टेढ़ा होने का भाव।

टेढ़े–क्रि० वि० [हिं० टेढ़ा] घुमाव-फिराव के साथ।

मुहा०—टेढ़े टेढ़े जाना = इतराना।

टेना–क्रि० स० [हिं० टेव + ना (प्रत्य०)] १. हथियार को तेज करने के लिये पत्थर आदि पर रगड़ना। २. मूँछ के बालों को खड़ा करने के लिये ऐंठना।

टेम–संज्ञा स्त्री० [हिं० टिमटिमाना] दीप-शिखा। दिए की लौ। लाट।

टेर–संज्ञा स्त्री० [सं० तार] १. गाने में ऊँचा

स्वर। तान। टीप। २ बुलाने का ऊँचा शब्द। पुकार। हाँक।

टेरना–क्रि० स० [हिं० टेर+ना (प्रत्य०)] १ ऊँचे स्वर से गाना। २ पुकारना।
क्रि० स० [सं० तीरण=तै करना] तै करना। बिताना। पूरा करना।

टेव–संज्ञा स्त्री० [हिं० टेक] आदत। बान।

टेवना†–क्रि० स० दे० "टेना"।

टेवा–संज्ञा पु० [सं० टिप्पन] १ जन्मपत्री। जन्मकुंडली। २ लग्नपत्र जिसमें विवाह की मिति, घड़ी आदि लिखी रहती है।

टेवैया†–संज्ञा पु० [हिं० टेवना] टेनेवाला। चोखा करनेवाला।

टेसू–संज्ञा पु० [सं० किंशुक] १ पलाश। ढाक। २ एक उत्सव जिसमें विजया-दशमी के दिन बहुत से लड़के गाते हुए घूमते हैं।

टैयाँ–संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की चिपटी छोटी कौड़ी। चित्ती।

टोंका†–संज्ञा पु० [सं० स्तोक=थोड़ा] १ सिरा। किनारा। २ नोक। कोना।

टोंचना–क्रि० स० [सं० टंकन] चुभाना।

टोंटा–संज्ञा पु० [सं० तुंड] [स्त्री० टोंटी] पानी आदि ढालने के लिये बरतन में लगी हुई नली। तुलतुली।

टोक†–संज्ञा स्त्री० [सं० स्तोक] १ टोकने की क्रिया या भाव।
यौ०—टोक-टाक=प्रश्न आदि द्वारा बाधा। रोक-टोक=मनाही। निषेध।
२ बुरी दृष्टि का प्रभाव। नजर। (स्त्री०)

टोकना–क्रि० स० [हिं० टोक] १ किसी को कोई काम करते हुए देखकर उसे कुछ कहकर रोकना या पूछ-ताछ करना। २ नजर लगाना।
संज्ञा पु० [?] [स्त्री० टोकनी] १ टोकरा। डला। २ एक प्रकार का हंडा।

टोकरा–संज्ञा पु० [?] [स्त्री० टोकरी] बाँस की पट्टियों या पतली टहनियों का बनाया हुआ गोल और गहरा बरतन। छाबड़ा। डला। भाबा। खाँचा।

टोकरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० टोकरा] १ छोटा टोकरा। २ देगची। बटलोई।

टोकारा–संज्ञा पु० [हिं० टोक] वह बात जो किसी को कुछ चिताने या स्मरण दिलाने के लिये कही जाय।

टोटका–संज्ञा पु० [सं० त्रोटक] कोई बाधा दूर करने या मनोरथ सिद्ध करने के लिये ऐसा प्रयोग जो किसी अलौकिक या दैवी शक्ति पर विश्वास करके किया जाय। टोना। यंत्र-मंत्र। लटका।
मुहा०—टोटका करने आना=आकर तुरत चला जाना।

टोटकेहाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० टोटका] टोटका, टोना या जादू करनेवाली।

टोटा–संज्ञा पु० [सं० तुंड] १ बचा या कटा हुआ टुकड़ा। २ कारतूस।
संज्ञा पु० [हिं० टूटना] १ घाटा। हानि। २ कमी। अभाव।

टोड़ी–संज्ञा स्त्री० [सं० त्रोटकी] संपूर्ण जाति की एक रागिनी।

टोनहा–वि० [हिं० टोना] [स्त्री० टोनही] टोना या जादू करनेवाला।

टोनहाया–संज्ञा पु० [हिं० टोना] [स्त्री० टोनहाई] टोना या जादू करनेवाला मनुष्य।

टोना–संज्ञा पु० [सं० तंत्र] १ मंत्र तंत्र का प्रयोग। जादू। २ विवाह का एक प्रकार का गीत।
संज्ञा पु० [देश०] एक शिकारी चिड़िया।
†क्रि० स० [सं० त्वच् + ना] हाथ से टटोलना। छूना।

टोप–संज्ञा पु० [हिं० तोपना=ढाँकना] १ बड़ी टोपी। २ लड़ाई में पहनने की लोहे की टोपी। शिरस्त्राण। खोद। कूँड। ३ खोल। गिलाफ।
†संज्ञा पु० [अनु० टप] बूँद। कतरा।

टोपा–संज्ञा पु० [हिं० टोप] बड़ी टोपी।
†संज्ञा पु० [हिं० तोपना] टोकरा।
†संज्ञा पु० [हिं० तोपना] टाँका। डोभ।

टोपी–संज्ञा स्त्री० [हिं० तोपना] १ सिर पर का पहनावा। २ राजमुकुट। ताज। ३

इस आकार की कोई गोल और गहरी वस्तु। ४. इस आकार का धातु का गहरा ढक्कन जिसे बंदूक पर चढ़ाकर घोड़ा गिराने से आग लगती है। बंदूक का पड़ाका। ५. वह थैली जो शिकारी जानवर के मुँह पर चढ़ाई रहती है।

टोभ–संज्ञा पुं० [हिं० डोभ] टाँका। तोपा।

टोरा†–संज्ञा स्त्री० [देश०] कटारी। कटार।

टोरना†–क्रि० स० [सं० त्रुट] तोड़ना।

मुहा०—आँख टोरना = लज्जा आदि से दृष्टि हटाना या अलग करना।

टोरी–संज्ञा पुं० [सं० तुवर] १. अरहर का छिलके सहित खड़ा दाना। २. रवा।

टोल–संज्ञा स्त्री० [सं० तोलिका] १. मंडली। जत्था। झुंड। २. चटसार। पाठशाला।

टोला–संज्ञा पुं० [सं० तोलिका=घेरा, बाड़ा] [स्त्री० टोलिका] १. आदमियों की घनी बस्ती का एक भाग। मुहल्ला। २. पत्थर या ईंट का टुकड़ा। रोड़ा।

टोली–संज्ञा स्त्री० [सं० तोलिका] १. छोटा मुहल्ला। बस्ती का छोटा भाग। २. समूह। झुंड। जत्था। मंडली। ३. पत्थर की चौकोर पटिया। सिल। ४. एक प्रकार का बाँस। नाल।

टोवना†–क्रि० स० दे० "टोना"।

टोह–संज्ञा स्त्री० [हिं० टोली] १. टटोल। खोज। ढूँढ़। २. खबर। देख-भाल।

टोही–संज्ञा स्त्री० [हिं टोह] पता लगानेवाला।

टौरना–क्रि० स० [हिं० टेरना ?] जाँच करना। परखना। थाह लेना। पता लगाना।

ठ

ठ–व्यंजनों में बारहवाँ व्यंजन जिसके उच्चारण का स्थान मूर्धा है।

ठंठ–वि० [सं० स्थाणु] ठूँठा। (पेड़)।

ठंठार–वि० [हिं० ठंठ] खाली। रीता।

ठंड–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठंडा] शीत। सरदी।

ठंडई–संज्ञा स्त्री० दे० "ठंढाई"।

ठंढक–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठढा] १. शीत। सरदी। जाड़ा। २. ताप या जलन की कमी। तरी। ३. संतोष। तृप्ति। प्रसन्नता। तसल्ली। ४. किसी उपद्रव या फैले हुए रोग आदि की शांति।

ठंढा–वि० [सं० स्तब्ध] [स्त्री० ठंढी] १. सर्द। शीतल।

मुहा०—ठंढी साँस = दुःख से भरी साँस। शोकोच्छ्वास। आह।

२. जो जलता या दहकता न हो। बुझा हुआ। ३. जिसमें आवेश न हो। शांत।

मुहा०—ठंढा करना = १. क्रोध शांत करना। २. ढारस देकर शोक कम करना। तसल्ली देना। ४. धीर। शांत। गंभीर। ५. जिसमें उत्साह या उमंग न हो। सुस्त। उदासीन। ६. जो कोई अनुचित बात होते देखकर कुछ न बोले। विरोध न करनेवाला।

मुहा०—ठंढे ठंढे = बिना विरोध या प्रतिवाद किए। चुपचाप।

७. तृप्त। प्रसन्न। खुश।

मुहा०—ठंढे ठंढे = हँसी खुशी से। ठंढा रखना = आराम-चैन से रखना।

८. निश्चेष्ट। जड़। ९. मृत। मरा हुआ।

मुहा०—ठंढा होना = मर जाना। ताज़िया ठंढा करना = ताज़िया दफन करना। (किसी पवित्र या प्रिय वस्तु को) ठंढा करना = फेंकना या तोड़ना फोड़ना।

ठंढाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठंढा] १. वह दवा या मसाला जिससे शरीर की गरमी शांत होती और ठंढक आती है। २. पिसी हुई भाँग।

ठ–संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव। २. महाध्वनि। ३. चंद्रमंडल। ४. शून्य।

ठक–संज्ञा स्त्री० [अनु०] ठोंकने का शब्द। वि० सन्नाटे में आया हुआ। भौचक्का।

ठकठक—संज्ञा स्त्री० [अनु०] बखेड़ा। टंटा। झंझट।

ठकठकाना—क्रि० स० [अनु०] १. खटखटाना। २ ठोंकना-पीटना।

ठकठकिया—वि० [अनु० ठक ठक] तकरार करनेवाला। हुज्जती। बखेड़िया।

ठकुरसुहाती—संज्ञा स्त्री० [हि० ठाकुर+सुहाना] लल्लोचप्पो। खुशामद।

ठकुराइन—संज्ञा स्त्री० [हि० ठाकुर] १ ठाकुर की स्त्री। स्वामिनी। मालकिन। २ क्षत्री की स्त्री। क्षत्राणी। ३ नाई की स्त्री। नाइन।

ठकुराई—संज्ञा स्त्री० [हि० ठाकुर] १ सरदारी। प्रधानता। २ ठाकुर का अधिकार। ३ वह प्रदेश जो किसी ठाकुर या सरदार के अधिकार में हो। रियासत। ४ बड़प्पन। महत्त्व। बड़ाई।

ठकुरानी—संज्ञा स्त्री० [हि० ठाकुर] १ ठाकुर या सरदार की स्त्री। २ रानी। ३ मालकिन। स्वामिनी।

ठकुराय-संज्ञा पु० [हि० ठाकुर] क्षत्रियों का एक भेद।

ठकुरायत—संज्ञा स्त्री० [हि० ठाकुर] १ आधिपत्य। प्रभुत्व। २- वह प्रदेश जो किसी ठाकुर या सरदार के अधीन हो। रियासत।

ठकोरी—संज्ञा स्त्री० [हि० टेकना+औरी] अड्डे के आकार की सहारा देने की वह लकड़ी जो साधु या पहाड़ी मजदूर अपने साथ रखते हैं। बैरागिन। जोगिन।

ठक्कर—संज्ञा स्त्री० दे० "टक्कर"।

ठग—संज्ञा पु० [सं० स्थग] [स्त्री० ठगनी, ठगिन] १ वह लुटेरा जो छल और धूर्तता से माल लूटता हो। २ छली। धूर्त। धोखेबाज।

ठगई†—संज्ञा स्त्री० दे० "ठगपना"।

ठगण—संज्ञा पु० [सं०] ५ मात्राओं का एक गण।

ठगना—क्रि० स० [हि० ठग] १ धोखा देकर माल लूटना। २ धोखा देना। छल करना। मुहा०—ठगा सा=आश्चर्य से स्तब्ध। चकित। भौंचक्का। ३ सौदा बेचने में बेईमानी करना। †क्रि० अ० १ धोखा खाना। प्रतारित होना। २ चक्कर में आना। चकित होना। दंग रहना।

ठगनी—संज्ञा स्त्री० [हि० ठग] १ ठग की स्त्री या ठगनेवाली स्त्री। २ कुटनी।

ठगपना—संज्ञा पु० [हि० ठग+पन] १ ठगने का भाव या काम। २ धूर्तता। छल। चालाकी।

ठगमूरी—संज्ञा स्त्री० [हि० ठग+मूरि] वह नशीली जड़ी बूटी जिसे ठग पथिकों को बेहोश करके उनका धन लूटने के लिये खिलाते थे।
मुहा०—ठगमूरी खाना=मतवाला होना।

ठगमोदक—संज्ञा पु० दे० "ठगलाड़ू"।

ठगलाड़ू—संज्ञा पु० [हि० ठग+लड्डू] ठगों का लड्डू जिसमें नशीली या बेहोश करनेवाली चीज मिली रहती थी।
मुहा०—ठगलाड़ू खाना=मतवाला होना। बेसुध होना।

ठगवाना—क्रि० स० [हि० ठगना का प्रे०] दूसरे से धोखा दिलवाना।

ठगविद्या—संज्ञा स्त्री० [हि० ठग+सं० विद्या] धूर्तता। धोखेबाजी।

ठगाना†—क्रि० अ० [हि० ठगना] धोखे में आकर हानि सहना। ठगा जाना।

ठगाही†—संज्ञा स्त्री० दे० "ठगपना"।

ठगिन, ठगिनी—संज्ञा स्त्री० [हि० ठग] १ धोखा देकर लूटनेवाली स्त्री। लुटेरिन। २ ठग की स्त्री।

ठगी—संज्ञा स्त्री० [हि० ठक] १. धोखा देकर माल लूटने का काम या भाव। २. धूर्तता। धोखेबाजी।

ठगोरी—संज्ञा स्त्री० [हि० ठग+बौरी] १ सुध-बुध भुलानेवाली शक्ति। २ टोना। जादू।

ठट—संज्ञा पु० [सं० स्थाता] १ एक स्थान पर स्थित बहुत सी वस्तुओं या व्यक्तियों का समूह। २ बनाव। रचना। सजावट।

ठटकीला–वि० [हिं० ठाट] सजा हुआ। ठाठदार।

ठटना–क्रि० स० [हिं० ठाढ़] १. ठहराना। निश्चित करना। २. सजाना। सज्जित करना।

क्रि० अ० १. खड़ा रहना। अड़ना। डटना। २. सजना। सुसज्जित होना।

क्रि० स० [हिं० ठाठ] आरंभ करना। (राग)

ठटनि–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठटना] बनाव। रचना।

ठटरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठाट] १. हड्डियों का ढाँचा। अस्थिपंजर। २. घास-भूसा आदि बाँधने का जाल। खरिया। ३. किसी वस्तु का ढाँचा। ४. मुरदा उठाने की रथी। अरथी।

ठट्ट–संज्ञा पुं० [हिं० ठाट] बनाव। रचना।

ठट्ट–संज्ञा पुं० दे० "ठट"।

ठट्टी–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठाट] ठटरी। पंजर।

ठट्ठा–संज्ञा पुं० [सं० अट्टहास] हँसी। दिल्लगी।

यौ०—ठट्ठेबाज = दिल्लगीबाज।

मुहा०—ठट्ठा उड़ाना = उपहास करना।

ठठ–संज्ञा पुं० दे० "ठट"।

ठठई*–संज्ञा स्त्री० दे० "ठट्ठा"।

ठठकना†*–क्रि० अ० [सं० स्थेष्ट + करण] १. एकबारगी रुक या ठहर जाना। ठिठकना। २. स्तंभित हो जाना। ठक रह जाना।

ठठना†–क्रि० अ० दे० "ठटना"।

ठठरी†–संज्ञा स्त्री० दे० "ठटरी"।

ठठाना–क्रि० स० [अनु० ठक ठक] मारना। पीटना।

क्रि० अ० [सं० अट्टहास] जोर से हँसना।

ठठिरिन†–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठठेरा] ठठेरे की स्त्री।

ठठेर-मंजारिका–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठठेरा + मार्जारिका] ठठेरे की बिल्ली जो ठक ठक शब्द से न डरे।

ठठेरा–संज्ञा पुं० [अनु० ठन ठन] [स्त्री० ठठेरिन, ठठेरी] बरतन बनानेवाला। कसेरा।

मुहा०—ठठेरे ठठेरे बदलाई = जैसे के साथ तैसा व्यवहार। ठठेरे की बिल्ली = ठठेरे की बिल्ली ऐसा मनुष्य जो कोई विकट बात देखकर न चौंके या घबराय।

ठठेरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठठेरा] १. ठठेरे की स्त्री। २. ठठेरे का काम।

यौ०—ठठेरी बाजार = कसेरों का बाजार।

ठठोल–संज्ञा पुं० [हिं० ठट्ठा] १. दिल्लगीबाज। मसखरा। २. दे० "ठठोली"।

ठठोली–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठट्ठा] हँसी। दि०।

ठड्ढा–वि० [हिं० स्थातृ] खड़ा। दंडायमान।

ठढ़ा†–वि० [सं० स्थातृ] खड़ा। दंडायमान।

ठन–संज्ञा स्त्री० [अनु०] धातु पर आघात पड़ने या उसके बजने का शब्द।

ठनक–संज्ञा स्त्री० [अनु० ठन ठन] १. चमड़े से मढ़े बाजे पर आघात पड़ने का शब्द। २. टीस। चसक।

ठनकना–क्रि० अ० [अनु० ठन ठन] १. ठन ठन शब्द करना। २. टीस मारना। चसकना।

मुहा०—माथा ठनकना = गहरा खटका पैदा होना।

ठनकाना–क्रि० स० [हिं० ठनकना] किसी धातुखंड या चमड़े से मढ़े बाजे पर आघात करके शब्द निकालना। बजाना।

ठनकार–संज्ञा स्त्री० [अनु०] ठनठन शब्द।

ठनगन–संज्ञा पुं० [हिं० ठनना] मंगल अवसरों पर नेगियों का अधिक पाने के लिये हठ।

ठनठन गोपाल–संज्ञा पुं० [अनु० ठनठन + गोपाल] १. छूँछी और निःसार वस्तु। २. निर्धन मनुष्य।

ठनठनाना–क्रि० स० [अनु०] ठनठन शब्द निकालना। बजाना।

क्रि० अ० ठनठन शब्द होना या बजना।

ठनना–क्रि० अ० [हिं० ठानना] १. (किसी कार्य्य का) तत्परता के साथ आरम्भ होना। अनुष्ठित होना। छिड़ना। २.

(मन में) ठहरना। पक्का होना। ३ ठहरना। लगना। जमना। ४ उद्यत होना। मुस्तैद होना।

ठनाका–संज्ञा पुं० [अनु०] ठन ठन शब्द। ठनकार।

ठनाठन–क्रि० वि० [अनु० ठन ठन] ठन ठन शब्द के साथ।

ठपका†–संज्ञा पुं० [देश०] धक्का। ठेस।

ठप्पा–संज्ञा पुं० [सं० स्थापन] १ लकड़ी, धातु आदि का खंड जिस पर कोई आकृति या बेल-बूटे आदि इस प्रकार खुदे हों कि उसे किसी दूसरी वस्तु पर रखकर दबाने से वे आकृतियाँ उभर आवें या बन जायँ। साँचा। २ साँचे के द्वारा बनाया हुआ बेल-बूटा आदि। छाप। नक्श। ३ एक प्रकार का गोटा।

ठमक–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठमकना] १ चलते चलते ठहर जाने का भाव। रुकावट। २ चलने की ठसक। लचक।

ठमकना–क्रि० अ० [सं० स्तम्भ] १ चलते चलते ठहर जाना। ठिठकना। रुकना। २. ठसक के साथ रुक रुककर या हाव-भाव दिखाते हुए चलना।

ठमकाना, ठमकारना–क्रि० स० [हिं० ठमकना] चलते चलते रोकना। ठहराना।

ठयना–क्रि० स० [सं० अनुष्ठान] १ दृढ़ संकल्प के साथ आरंभ करना। ठानना। २ कर चुकना। पूरी तरह से करना। ३ मन में ठहराना। निश्चित करना।
क्रि० अ० दे० "ठनना"।
क्रि० स० [सं० स्थापन] १ स्थापित करना। बैठाना। ठहराना। २ लगाना। प्रयुक्त करना।
क्रि० अ० १ स्थित होना। बैठना। जमना। २ प्रयुक्त होना। लगना।

ठरना–क्रि० अ० [सं० स्तब्ध] १ सर्दी से अकड़ना या सुन्न होना। २ बहुत अधिक ठंड पड़ना।

ठर्रा–संज्ञा पुं० [हिं० ठड़ा] १ बहुत मोटा सूत। २ बड़ी अधपक्की ईंट। ३ महुए की निकृष्ट शराब।

ठवना–क्रि० स० दे० "ठयना"।

ठवनि–संज्ञा स्त्री० [सं० स्थापन] १ बैठक। स्थिति। २ बैठने या खड़े होने का ढंग। आसन। मुद्रा।

ठस–वि० [सं० स्थास्नु] १. ठोस। कड़ा। २ जिसकी बुनावट घनी हो। गफ। ३ दृढ़। मजबूत। ४ भारी। वजनी। ५ सुस्त। आलसी। ६ (रुपया) जिसकी झनकार ठीक न हो। ७ कृपण। कंजूस।

ठसक–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठस] १ गर्वीली चेष्टा। नखरा। २ दर्प। शान।

ठसकदार–वि० [हिं० ठसक + फा० दार] १ घमंडी। अभिमानी। २ शानदार। तड़क-भड़कवाला।

ठसका–संज्ञा पुं० [अनु०] १ सूखी खाँसी जिसमें कफ न निकले। २ ठोकर। धक्का।

ठसाठस–क्रि० वि० [हिं० ठस] ठूँसकर या खूब कसकर भरा हुआ। खचाखच।

ठस्सा–संज्ञा पुं० [देश०] १ अभिमानपूर्ण हाव भाव। ठसक। २ घमंड। अहंकार। ३ ठाट-बाट। शान।

ठहना–क्रि० अ० [अनु०] १ घोड़े का हिनहिनाना। २ घनघनाना। घंटे का बजना।
†क्रि० अ० [सं० संस्था] बनाना। सँवारना।

ठहर†–संज्ञा पुं० [सं० स्थल] १ स्थान। जगह। २ रसोई का स्थान। चौका। लिपाई-पोताई।

ठहरना–क्रि० अ० [सं० स्थैर्य] १ चलना बंद करना। रुकना। थमना। २ डेरा डालना। टिकना। ३ एक स्थान पर बना रहना। स्थित रहना।
मुहा०—मन ठहरना = चित्त की आकुलता दूर होना।
४ नीचे न खिसकना या गिरना। अड़ा रहना, स्थित रहना। ५ नष्ट न होना। बना रहना। ६ कुछ दिन काम देने लायक

रहना। चलना। ७. घुली हुई वस्तु के नीचे बैठ जाने पर पानी का स्थिर और साफ़ होकर ऊपर रहना। थिराना। ८. धीरज रखना। ९. प्रतीक्षा करना। आसरा देखना। १०. निश्चित होना। पक्का होना।
मुहा०—किसी बात का ठहरना=किसी बात या संकल्प होना। ठहरा=है। जैसे, वह अपने संबंधी ठहरे।

ठहराई–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठहरना] १. ठहराने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २. कब्ज़ा। अधिकार।

ठहराना–क्रि० स० [हिं० ठहरना] १. चलने से रोकना। गति बंद करना। २. डेरा देना। टिकाना। ३. अड़ाना। टिकाना। ४. इधर-उधर न जाने देना। ५. किसी होते हुए काम को रोकना। ६. पक्का करना। तै करना।

ठहराव–संज्ञा पुं० [हिं० ठहरना] १. ठहरने का भाव। स्थिरता। २. निश्चय। निर्धारण।

ठहरौनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठहराना] विवाह में टीके, दहेज आदि के लेन-देन का क़रार।

ठहाका†–संज्ञा पुं० [अनु०] ज़ोर की हँसी। अट्टहास।

ठाँ–संज्ञा स्त्री०, पुं० दे० "ठाँव"।

ठाँई†–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठाँव] १. स्थान। जगह। २. तईं। प्रति। ३. समीप। पास। निकट।

ठाउँ–संज्ञा पुं०, स्त्री० दे० "ठाँयँ"।

ठाँठ–वि० [अनु० ठन ठन] १. जो सूखकर बिना रस का हो गया हो। नीरस। २. (गाय या भैंस) जो दूध न देती हो।

ठाँयँ–संज्ञा पुं०, स्त्री० [सं० स्थान] १. स्थान। जगह। २. समीप। निकट। पास।
संज्ञा पु० [अनु०] बंदूक छूटने का शब्द।

ठाँयँ ठाँयँ–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. बंदूक छूटने का शब्द।† २. झगड़ा।

ठाँव–संज्ञा पुं०, स्त्री० [सं० स्थान] स्थान। जगह। ठिकाना।

ठाँसना–क्रि० स० [सं० स्थास्नु] १. जोर से घुसाना या भरना। २. रोकना। मना करना।
क्रि० अ० ठन ठन शब्द के साथ खाँसना।

ठाकुर–संज्ञा पुं० [सं० ठक्कुर] [स्त्री० ठकुराइन, ठकुरानी] १. देवता। देव-मूर्ति। २. ईश्वर। भगवान्। ३. पूज्य व्यक्ति। ४. किसी प्रदेश का अधिपति। नायक। सरदार। ५. ज़मींदार। ६. क्षत्रियों की उपाधि। ७. मालिक। स्वामी। ८. नाइयों की उपाधि।

ठाकुरद्वारा–संज्ञा पुं० [हिं० ठाकुर+द्वार] मंदिर। देवालय। देवस्थान।

ठाकुरबाड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठाकुर+बाड़ी] देवालय। मंदिर।

ठाकुरसेवा–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठाकुर+सेवा] १. देवता का पूजन। २. मंदिर के नाम उत्सर्ग की हुई संपत्ति।

ठाकुरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठाकुर] स्वामित्व। आधिपत्य। शासन।

ठाट–संज्ञा पुं० [सं० स्थातृ] १. लकड़ी या बाँस की फट्टियों का बना हुआ परदा। २. मूल अंगों की योजना जिनके आधार पर शेष रचना होती है। ढाँचा। ढड्ढा। पंजर। ३. वेश-विन्यास। शृंगार। सजावट।
क्रि० प्र०—ठटना।—बनाना।
मुहा०—ठाट बदलना=१. वेश बदलना। २. झूठमूठ अधिकार या बड़प्पन जताना। रंग बाँधना।
४. आडम्बर। ऊपरी तड़क-भड़क। दिखावट। ५. ढंग। शैली। प्रकार। तर्ज़। ६. आयोजन। तैयारी। ७. सामान। सामग्री। ८. युक्ति। ढंग। उपाय।
संज्ञा पु० [हिं० ठाट] [स्त्री० ठाटी] १. समूह। झुंड।†२. बहुतायत। अधिकता।

ठाटना*†–क्रि० स० [हिं० ठाट] १. निर्मित करना। रचना। बनाना। २. अनुष्ठान या आयोजन करना। ठानना। ३. सजाना। सँवारना।

ठाट बाट—संज्ञा पुं० [हिं० ठाट] १ सजा-वट। सजधज। २ तड़क भड़क। आडंबर। ढंग।

ठाटर—संज्ञा पुं० [हिं० ठाट] १ ठाट। टट्टर। टट्टी। २ ठठरी। पंजर। ३. ढाँचा। ४ कबूतर आदि के बैठने की छतरी। ५ ठाट बाट। बनाव। सिंगार। सजावट।

ठाटी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० ठाट] ठट। समूह।

ठाठ†—संज्ञा पुं० दे० "ठाट"।

ठाढ़ा†*—वि० [सं० स्थातृ] १. खड़ा। दंडायमान। २ समूचा। साबित। ३ उत्पन्न। पैदा।

मुहा०—ठाढ़ा देना = ठहराना। टिकाना।

वि० हट्टा कट्टा। हृष्ट पुष्ट।

ठादर†—संज्ञा पुं० [देश०] झगड़ा। मुठ-भेड़।

ठान—संज्ञा स्त्री० [सं० अनुष्ठान] १ कार्य्य का आयोजन। काम का छिड़ना। अनुष्ठान। २ छेड़ा हुआ काम। ३ दृढ़ निश्चय। पक्का इरादा। ४ अंदाज। चेष्टा। मुद्रा।

ठानना†—क्रि० स० [सं० अनुष्ठान] १ (कार्य्य) तत्परता के साथ आरंभ करना। अनुष्ठित करना। छेड़ना। २ पक्का करना। ठहराना।

ठाना*†—क्रि० स० [सं० अनुष्ठान] १ ठानना। २ निश्चित करना। पक्का करना। ३ स्थापित करना। रखना।

ठाम†*—संज्ञा पुं०, स्त्री० [सं० स्थान] १ स्थान। जगह। २ संचालन का ढंग। ठवनि। मुद्रा।

ठार—संज्ञा पुं० [सं० स्तब्ध] १ गहरा जाड़ा। गहरी सरदी। २ पाला। हिम।

ठाला—संज्ञा पुं० [हिं० निठल्ला] १. रोजगार का न रहना। बेकारी। २ आमदनी का न होना।

वि० जिसे कुछ काम धंधा न हो। निठल्ला।

ठाली—वि० [हिं० निठल्ला] जिसे कुछ काम-धंधा न हो। निठल्ला। बेकाम। खाली।

ठावना*—क्रि० स० दे० "ठाना"।

ठाहर†—संज्ञा पुं० [सं० स्थान] १ स्थान। जगह। २ रहने या टिकने का स्थान।

ठिगना—वि० [हिं० हेठ + अंग] [स्त्री० ठिगनी] छोटे डील का। नाटा।

ठिकठैना†*—संज्ञा पुं० [हिं० ठीक + ठयना] ठीक-ठाक। प्रबंध। आयोजन।

ठिकना†—क्रि० अ० दे० "ठहरना"।

ठिकरा†—संज्ञा पुं० दे० "ठीकरा"।

ठिकाना—संज्ञा पुं० [हिं० टिकान] १ स्थान। जगह। ठौर। २ रहने या ठहरने की जगह। निवास-स्थान। ३ निर्वाह या आश्रय का स्थान।

मुहा०—ठिकाने आना = १ अपने स्थान पर पहुँचना। २ बहुत सोच विचार के उपरांत यथार्थ बात करना या समझना। ठिकाने की बात = १ ठीक या प्रामाणिक बात। २ समझदारी की बात। ठिकाने पहुँचाना या लगाना = १ ठीक जगह पर पहुँचाना। २ नष्ट कर देना। न रहने देना। ३ मार डालना।

४ निश्चित अस्तित्व। दृढ़ स्थिति। स्थिरता। ठहराव। ५ प्रबंध। आयोजन। बंदो-बस्त। ६ पारावार। अंत। हद।

† क्रि० स० [हिं० ठिकना] ठहराना।

ठिठकना—क्रि० अ० [सं० स्थित + करण] १ चलते चलते एकबारगी रुक जाना। २ स्तंभित होना। ठक रह जाना।

ठिठरना—क्रि० अ० [सं० स्थित] सरदी से ऐंठना या सिकुड़ना।

ठिठुरना†—क्रि० अ० दे० "ठिठरना"।

ठिनकना—क्रि० अ० [अनु०] बच्चा का बीच में रुक रुककर रोना।

ठिर—संज्ञा स्त्री० [सं० स्थिर] गहरी सरदी।

ठिरना—क्रि० स० [हिं० ठिर] सरदी से ठिठुरना। क्रि० अ० बहुत जाड़ा पड़ना।

ठिलना—क्रि० अ० [हिं० ठेलना] १ ठेला जाना। ढकेला जाना। २ बलपूर्वक बढ़ना। घुसना। धँसना।

ठिलाठिल†—क्रि० वि० [हिं० ठिलना] एक पर एक गिरते हुए। धक्कमधक्का करते हुए।

ठिलिया–संज्ञा स्त्री० [सं० स्थाली] छोटा घड़ा। गगरी।

ठिलुआ–वि० [हिं० निठल्ला] निठल्ला। निक० खखार।

ठिल्ला†–संज्ञा पुं० [हिं० ठिलिया] [स्त्री० ठिलिया, ठिल्ली] गगरी। घड़ा।

ठिहारी–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठहरना] ठहराव। निश्चय। इक़रार।

ठीक–वि० [हिं० ठिकाना] १. जैसा हो, वैसा। यथार्थ। सच। प्रामाणिक। २. उपयुक्त। उचित। मुनासिब। योग्य। ३. शुद्ध। सही। ४. दुरुस्त। अच्छा। ५. जो किसी स्थान पर अच्छी तरह बैठे या जमे। ६. सीधा। सुष्ठु। ७. जिसमें कुछ फ़र्क न पड़े। निर्दिष्ट। ८. ठहराया हुआ। निश्चित। स्थिर। पक्का।

क्रि० वि० जैसे चाहिए वैसे। उचित रीति से।

संज्ञा पुं० १. पक्की बात। निश्चय। ठिकाना।

मुहा०—ठीक देना = मन में पक्का करना।

२. स्थिर प्रबंध। पक्का आयोजन। ठहराव।

३. जोड़। मीज़ान। योग।

ठीक ठाक–संज्ञा पुं० [हिं० ठीक] १. निश्चित प्रबंध। बंदोबस्त। आयोजन। २. निश्चय। ठहराव। पक्की बात।

वि० अच्छी तरह दुरुस्त। प्रस्तुत।

ठीकरा–संज्ञा पुं० [हिं० टुकड़ा] [स्त्री० अल्पा० ठीकरी] १. मिट्टी के बरतन का फूटा टुकड़ा। सिटकी। २. पुराना या टूटा फूटा बरतन। ३. भीख माँगने का बरतन। भिक्षापात्र।

ठीकरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठीकरा] १. मिट्टी के बरतन का फूटा टुकड़ा। २. तुच्छ वस्तु।

ठीका–संज्ञा पुं० [हिं० ठीक] १. कुछ धन आदि के बदले में किसी के किसी काम को पूरा करने का जिम्मा। २. आमदनी की वस्तु को कुछ काल तक के लिये इस शर्त पर दूसरे के सुपुर्द करना कि वह आमदनी वसूल करके बराबर मालिक को देता जाय। इजारा। पट्टा।

ठीकेदार–संज्ञा पुं० [हिं० ठीका + फा० दार] ठीका लेनेवाला।

ठीलना†–क्रि० स० दे० "ठेलना"।

ठीवन*–संज्ञा पुं० [सं० ष्ठीवन] थूक। खखार।

ठीहँ–संज्ञा स्त्री० [अनु०] घोड़ों की हिनहिनाहट।

ठीहा–संज्ञा पुं० [सं० स्था] १. जमीन में गड़ा हुआ लकड़ी का कुंदा जिस पर वस्तुओं को रखकर लोहार, बढ़ई आदि उन्हें पीटते, छीलते या गढ़ते हैं। २. लकड़ी गढ़ने या चीरने का कुंदा। ३. बैठने के लिये कुछ ऊँचा किया हुआ स्थान। गद्दी। ४. हद। सीमा।

ठुंठ–संज्ञा पुं० [सं० स्थाणु] १. सूखा हुआ पेड़। २. कटे हुए हाथवाला जीव। लूला।

ठुकना–क्रि० अ० [अनु०] १. ताड़ित होना। ठोंका जाना। पिटना। २. धँसना। गड़ना। ३. मार खाना। मारा जाना। ४. हानि होना। नुकसान होना। ५. पैर में बेड़ी पहनना। क़ैद होना।

ठुकराना–क्रि० स० [हिं० ठोकर] १. ठोकर लगाना। लात मारना। २. तुच्छ समझकर दूर हटाना।

ठुकवाना–क्रि० स० [हिं० ठोकना का प्रे०] ठोकने का काम कराना। पिटवाना।

ठुड्डी–संज्ञा स्त्री० [सं० तुंड] चेहरे में होंठ के नीचे का भाग। चिबुक। ठोड़ी।

संज्ञा स्त्री० [हिं० ठड्डी] वह भूना हुआ दाना जो फूटकर खिला न हो। टोर्री

ठुमक–वि० [अनु०] जिसमें उमंग के कारण थोड़ी थोड़ी दूर पर पैर पटकते हुए चलते हैं। ठसक भरी (चाल)।

ठुमकना–क्रि० अ० [अनु०] १. बच्चों का उमंग में थोड़ी थोड़ी दूर पर पैर पटकते हुए चलना। २. नाचने में पैर पटककर चलना जिसमें घुँघरू बजे।

ठुमका†–वि० [अनु०] नाटा। ठेंगना।

ठुमकी–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. ठिठक। रुकावट। २. छोटी गर्री पूरी।

वि० स्त्री० नाटी। छोटे डील की।

ठुमरी–संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का

गीत जो केवल एक स्थायी और एक ही अंतरे में समाप्त होता है।

ठुर्री–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठढा = खड़ा] वह भुना हुआ दाना जो भूनने पर न खिले।

ठुसना–क्रि० अ० [हिं० ठूँसना] कसकर भरा जाना।

ठुसाना–क्रि० स० [हिं० ठूसना] १ कस-कर भरवाना। २ खूब पेट भर खिलाना। (अशिष्ट)।

ठूँग–संज्ञा स्त्री [सं० तुंड] १ चोंच। ठोर। २ चोंच से मारने की क्रिया।

ठूँठ–संज्ञा पु० [सं० स्थाणु] १ वह पेड़ जिसकी डाल, पत्तियाँ आदि कट गई हों। सूखा पेड़। २ कटा हुआ हाथ। ठुंड।

ठूँठा–वि० [सं० स्थाणु] १ बिना पत्तियों और टहनियों का (पेड़)। सूखा (पेड़)। २ बिना हाथ का। लूला।

ठूँसना–क्रि० स० दे० "ठूसना"।

ठूसना–क्रि० स० [हिं० ठस] १ खूब कस-कर भरना। २ घुसेड़ना। घुसाना। ३ खूब पेट भरकर खाना।

ठेंगना–वि० [हिं० हेठ+अंग] [स्त्री० ठेंगनी] छोटे डील का।

ठेंगा–संज्ञा पु० [हिं० अँगूठा] १ अँगूठा। ठोसा। २ सोंटा। डंडा।

ठेंठी–संज्ञा स्त्री० [देश०] १ कान की मैल। २ कान के छेद में उसे मूँदने के लिये लगाई हुई रुई आदि की डाट। ३ डाट। काग।

ठेंपी–संज्ञा स्त्री० दे० "ठेंठी"।

ठेक–संज्ञा स्त्री० [हिं० टिकना] १ टेक। चाँड़। २ पच्चड़। ३ पेंदा। तल। ४ घोड़े की एक चाल। ५ छड़ी या लाठी की सामी।

ठेकना–क्रि० स० [हिं० टिकना, टेक] १ सहारा लेना। आश्रय लेना। टेकना। २ टिकना। ठहरना। रहना।

ठेका–संज्ञा पु० [हिं० टिकना] १ सहारे की वस्तु। ठेक। २ ठहरने या रुकने की जगह। अड्डा। ३ तबला या ढोल बजाने की वह क्रिया जिसमें केवल ताल दिया जाय। ४ तबले में बायाँ। ५ ठोकर। धक्का। संज्ञा पु० दे० "ठीका"।

ठेकाई–संज्ञा स्त्री० [देश०] कपड़ों की छपाई में काले हाशिए की छपाई।

ठेकी–संज्ञा स्त्री० [हिं० टेक] टेक। सहारा।

ठेगना*–क्रि० स० [हिं० टेकना] १ टेकना। सहारा लेना। २ रोकना। मना करना।

ठेघा†–संज्ञा पु० [हिं० टेक] टेक। चाँड़।

ठेठ–वि० [देश०] १ निपट। निरा। बिल्कुल। २ जिसमें कुछ मेल जोल न हो। खालिस। ३ शुद्ध। निर्मल। निर्लिप्त। ४ आरंभ। शुरू।

संज्ञा स्त्री० वह बोली जिसमें लिखने पढ़ने की भाषा के शब्दों का मेल न हो। सीधी-सादी बोली।

ठेलना–क्रि० स० [हिं० टलना] धक्का देकर आगे बढ़ाना। रेलना। ढकेलना।

ठेला–संज्ञा पु० [हिं० ठेलना] १ धक्का। आघात। टक्कर। २ एक प्रकार की गाड़ी जिसे आदमी ठेल या ढकेलकर चलाते हैं। ३ भीड़भाड़। धक्कम धक्का।

ठेलाठेल–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठेलना] धक्कम-धक्का।

ठेस–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठस] आघात। चोट।

ठैना†*–संज्ञा स्त्री० [सं० स्थान] जगह। स्थान।

ठोंक–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठोकना] ठोंकने की क्रिया या भाव। प्रहार। आघात।

ठोकना–क्रि० स० [अनु० ठक ठक] १ ज़ोर से चोट मारना। प्रहार करना। पीटना। २ मारना-पीटना। ३ चोट लगाकर धँसाना। गाड़ना। ४ (नालिश, अरजी आदि) दाखिल करना। दायर करना। ५ काठ में डालना। बेड़ियों से जकड़ना। ६ हथेली से आघात पहुँचाना। थपथपाना।

मुहा०–ठोकना बजाना=जाँचना। परखना।

७ हाथ से मारकर बजाना।

ठोंग—संज्ञा स्त्री० [सं० तुंड] १. चोंच या उसकी मार। २. उँगली की ठोकर।

ठौ†—अव्य० [हिं० ठौर] एक शब्द जो संख्या-वाचक शब्दों के आगे लगाया जाता है। संख्या। अदद। (पूरबी)

ठोकर—संज्ञा स्त्री० [हिं० ठोकना] १. आघात जो चलने में कंकड़, पत्थर आदि के धक्के से पैर में लगे। ठेस।

मुहा०—ठोकर या ठोकरें खाना = १. किसी भूल के कारण दुःख सहना। २. धोखे में आना। चूक जाना। ३. दुर्गति सहना। कष्ट सहना।

ठोकर लेना = ठोकर खाना।

२. वह पत्थर या कंकड़ जिसमें पैर रुककर चोट खाता हो। ३. वह कड़ा आघात जो पैर या जूते के पंजे से किया जाय। ४ कड़ा आघात। धक्का। ५. जूते का अगला भाग।

ठोठरा†—वि० [हिं० ठूँट] खाली। पोपला।

ठोड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० तुंड] होंठ के नीचे का गोलाई लिए उभरा भाग। ठुड्डी। चिबुक। दाढ़ी।

ठोढ़ी†—संज्ञा स्त्री० दे० "ठोड़ी"।

ठोर—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का पकवान।

संज्ञा पुं० (सं० तुंड] चोंच। चंचु।

ठोस—वि० [हिं० ठस] १. जो पोला या खोखला न हो। २. दृढ़। मजबूत।

संज्ञा पुं० [देश०] कुढ़न। डाह।

ठोहना*†—क्रि० स० [हिं० ढूँढ़ना] पता लगाना। खोजना।

ठौनि*—संज्ञा स्त्री० दे० "ठवनि"।

ठौर—संज्ञा पुं० [हिं० ठाँव] १. जगह। स्थान।

मुहा०—ठौर कुठौर = १. बुरे ठिकाने। अनुपयुक्त स्थान पर। २. बेमौक़ा। बिना अवसर। ठौर न आना = समीप न आना। ठौर रखना = मार डालना। ठौर रहना = १. जहाँ का तहाँ पड़ रहना। २. मर जाना।

३. मौक़ा। अवसर।

ड

ड—व्यंजनों में तेरहवाँ और टवर्ग का तीसरा वर्ण।

डंक—संज्ञा पुं० [सं० दंश] १. बिच्छू, मधुमक्खी आदि कीड़ों के पीछे का जहरीला काँटा जिसे वे जीवों के शरीर में धँसाते हैं। २. डंक मारा हुआ स्थान। ३. कलम की जीभ। निब।

डंकना—क्रि० अ० [अनु०] भयानक शब्द करना। गरजना।

डंका—संज्ञा पुं० [सं० ढक्का] एक प्रकार का नगाड़ा।

मुहा०—डंके की चोट कहना = खुल्लमखुल्ला कहना। सबको सुनाकर कहना।

डंगर—संज्ञा पुं० [देश०] चौपाया।

डँगरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० डंगरा] लंबी ककड़ी।

संज्ञा स्त्री० [हिं० डाँगर] चुड़ैल। डाइन।

डंगू ज्वर—संज्ञा पुं० [अं० डेंगू] एक प्रकार का ज्वर जिसमें शरीर पर चकत्ते पड़ जाते हैं।

डँटैया—संज्ञा पुं० [हिं० डाँटना] डाँटनेवाला। घुड़कनेवाला। धमकानेवाला।

डंठल—संज्ञा पुं० [सं० दंड] छोटे पौधों की पेड़ी और शाखा।

डंठी†—संज्ञा स्त्री० [सं० दंड] डंठल।

डंड—संज्ञा पुं० [सं० दंड] १. डंडा। सोंटा। २. बाहुदंड। बाँह। ३. हाथ पैर के पंजों के बल पट पड़कर की जानेवाली एक प्रकार की कसरत।

मुहा०—डंड पेलना = खूब डंड करना।

४. दंड। सजा। ५. अर्थदंड। जुरमाना। ६. घाटा। हानि। नुकसान। ७ घड़ी। दंड।

डंडपेल—संज्ञा पुं० [हिं० डंड + पेलना] १. कसरती। पहलवान। २. बलवान् आदमी।

डँड़वारा—संज्ञा पुं० [हिं० डाँड़ + वार] [स्त्री० अल्पा० डँड़वारी] वह कम ऊँची दीवार जो

किसी स्थान को घेरने के लिये उठाई जाय।

डँडवी|*–सज्ञा पु० [हि० दड] दड या राजार देनेवाला। करद।

डडा सज्ञा पु० [स० दड] १ लकडी या बाँस का सीधा लबा टुकडा। २ मोटी छडी। सोटा। लाठी। ३ चारदीवारी। डाँड। डँडवारा।

डडाकरन*–सज्ञा पु० दे० "दडक वन"।

डँडिया–सज्ञा स्त्री०[हि० डाँडी = रेखा] १ वह साडी जिसके बीच मे गोटे टाँककर लकीरें बनी हो। छडीदार साडी। २ गेहूँ के पौधे की सीक जिसमे बाल रहती है।
सज्ञा पु०[हि० डाँड] कर उगाहनेवाला।

डडी–सज्ञा स्त्री०[हि० डडा] १ छोटी लबी पतली लकडी। २ हाथ में रहनेवाली वस्तु का वह लबा पतला भाग जो मुट्ठी में पकडा जाता है। दस्ता। हत्था। मुठिया। ३ तराजू की लकडी जिसमें पलडे बाँधे जाते हैं। डाँडी। ४ लबा डठल जिसमें फूल या फल लगा होता है। नाल। ५ आरसी नाम के गहने का वह छल्ला जो उँगली मे पडा रहता है। ६ भम्पान नाम की पहाडी सवारी। ७ दड धारण करनेवाला सन्यासी। दडी।
*वि० [स० द्वद्व] चुगलखोर।

डँडोरना–क्रि० स० [अनु०] ढूँढना। खोजना।

डबर–सज्ञा पु० [स०] १ आडबर। ढकोसला। २ विस्तार। ३ एक प्रकार का चँदवा। चदरछत।
यौ०–मेघडबर=बडा शामियाना। दलबादल। अबर डबर = वह लाली जो सध्या के समय आकाश में दिखाई पडती है।

डँवरुआ–सज्ञा पु० [स० डमर] वात का एक रोग। गठिया।

डँवाडोल–वि० दे० "डाँवाडोल"।

डस–सज्ञा पु० [स० दश] १ एक प्रकार का बडा जगली मच्छर। डाँस। २ वह स्थान जहाँ विषैले कीडे का दाँत या डक चुभा हो।

डक–सज्ञा पु० [अ० डाक] १ एक प्रकार का टाट जिससे जहाजों के पाल बनते हैं। २ एक प्रकार का मोटा कपडा।

डकराना–क्रि० अ० [अनु०] बैल या भैंसे का बोलना।

डकार–सज्ञा पु० [अनु०] १ पेट की वायु का कठ से शब्द के साथ निकल पडने का शारीरिक व्यापार जिससे पेट का भरना सूचित होता है।
मुहा०—डकार न लेना = किसी का धन चुपचाप हजम कर जाना।
२ बाघ, सिह आदि की गरज। दहाड।

डकारना–क्रि० अ० [हि० डकार+ना] १ पेट की वायु को मुँह से निकालना। डकार लेना। २ किसी का माल ले लेना। हजम करना। पचा जाना। [३ बाघ, सिह आदि का गरजना। दहाडना।

डकैत–सज्ञा पु० [हि० डाका + ऐत] डाका मारनेवाला। डाकू। लुटेरा।

डकैती–सज्ञा स्त्री०[हि० डकैत] डाका मारने का काम। छापा।

डग–सज्ञा पु० [हि० डाँकना] १ एक स्थान से पैर उठाकर दूसरे स्थान पर रखना। फाल। कदम।
मुहा०—डग देना = चलने में आगे की ओर पैर रखना। डग भरना या मारना = कदम बढाना। लबे पैर बढाना।
२ उतनी दूरी जितनी पर एक जगह से दूसरी जगह कदम पडे। पेंड।

डगडगाना–क्रि० अ० [अनु०] इधर से उधर हिलना। हिलना।

डगडोलना–क्रि० अ० दे० "डगमगाना"।

डगडौर–वि० दे० "डाँवाडोल"।

डगण–सज्ञा पु० [स०] पिंगल में चार मात्राओं का एक गण।

डगना|*–क्रि० अ० [हि० डग] १ हिलना। टसकना। खसकना। जगह छोडना। २ चूकना। भूल करना। डिगना। ३ डगमगाना। लडखडाना।

डगमगाना–क्रि० अ० [हि० डग+मग]

१. कभी इस बल, कभी उस बल झुकना। थरथराना। लड़खड़ाना। २. विचलित होना। दृढ़ न रहना।
डगर–संज्ञा स्त्री० [हिं० डग] मार्ग। रास्ता।
डगरना*†–क्रि० अ० [हिं० डगर] चलना। रास्ता लेना।
डगरा†–संज्ञा पुं० [हिं० डगर] रास्ता। मार्ग।
संज्ञा पुं० [देश०] बाँस की पतली फट्टियों का बना छिछला बर्तन। डलरा। छावड़ा।
डगा†–संज्ञा पुं० [हिं० डागा] नगाड़ा बजाने की लकड़ी। चोब। डागा।
डगाना–क्रि० स० दे० "डिगाना"।
डटना–क्रि० अ० [हिं० ठाढ़] १. जमकर खड़ा होना। अड़ना। ठहरा रहना। २. लग जाना। छू जाना।
*†क्रि० स० [सं० दृष्टि] देखना।
डटाना–क्रि० स० [हिं० डटना] १. एक वस्तु को दूसरी वस्तु से लगाना। सटाना। भिड़ाना। २. जोर से भिड़ाना। ३. जमाना। खड़ा करना।
डट्टा–संज्ञा पुं० [हिं० डाटना] १. हुक्के का नैचा। २. डाट। काग। ३. बड़ी मेख।
डड़ढार*†–वि० [हिं० डाढ़ी] १. बड़ी डाढ़ीवाला। २. वीर। बहादुर। ३. साहसी।
डढ़न*–संज्ञा स्त्री० [सं० दग्ध] जलन।
डढ़ना*–क्रि० अ० [सं० दग्ध] जलना।
डढ़ार, डढ़ारा–वि० [हिं० डाढ़] १. वह जिसके डाढ़ें हों। २. वह जिसे दाढ़ी हो।
डढ़ियल–वि० [हिं० डाढ़ी] डाढ़ीवाला। जिसे बड़ी डाढ़ी हो।
डढ़ना*–क्रि० स० [सं० दग्ध] जलाना।
डढ़ोरा*–वि० [हिं० डाढ़ी] डाढ़ीवाला।
डपट–संज्ञा स्त्री० [सं० दर्प] डाँट। झिड़की। घुड़की।
संज्ञा स्त्री० [हिं० रपट] घोड़े की तेज चाल।
डपटना–क्रि० स० [हिं० डपट] क्रोध में जोर से बोलना। डाँटना।
क्रि० स० [हिं० रपटना] तेजी से जाना।
डपोरसंख–संज्ञा पुं० [अनु० डपोर=बड़ा + शंख] १. जो कहे बहुत, पर कर कुछ न सके। डींग मारनेवाला। २. बड़े डील-डौल का, पर मूर्ख।
डफ–संज्ञा पुं० [अ० दफ] १. चमड़ा मढ़ा हुआ एक प्रकार का बड़ा बाजा जो प्रायः होली में बजाया जाता है। डफला। २. लावनीबाजों का बाजा। चंग।
डफला–संज्ञा पुं० दे० "डफ"।
डफली–संज्ञा स्त्री० [अ० दफ] छोटा डफ। खँजरी।
मुहा०—अपनी अपनी डफली, अपना अपना राग=जितने लोग, उतनी राय।
डफार†–संज्ञा स्त्री० [अनु०] जोर से रोने या चिल्लाने का शब्द। चिग्घाड़।
डफारना†–क्रि० अ० [अनु०] जोर से रोना या चिल्लाना। दहाड़ मारना।
डफाली–संज्ञा पुं० [हिं० डफला] डफला, ताशा, ढोल आदि बजानेवाला।
डफोरना†–क्रि० अ० [अनु०] हाँक देना। ललकारना।
डब–संज्ञा पुं० [हिं० डब्बा] जेब। थैला।
डबकना–क्रि० अ० [अनु०] पीड़ा करना। टपकना। टीस मारना।
डबकौंहाँ–वि० [अनु०] [स्त्री० डबकौंही] आँसू भरा हुआ। डबडबाया हुआ।
डबडबाना–क्रि० अ० [अनु०] आँसू से (आँखें) भर आना। अश्रुपूर्ण होना।
डबरा–संज्ञा पुं० [सं० दभ्र] [स्त्री० डबरी] छिछला गड्ढा जिसमें पानी जमा रहे। कुंड। हौज।
डबल–वि० [अं०] दोहरा।
संज्ञा पुं० अँगरेजी राज्य का पैसा।
डबल रोटी–संज्ञा स्त्री० [अं० डबल+हिं० रोटी] पावरोटी।
डबी†*–संज्ञा स्त्री० दे० "डब्बी"।
डबोना–क्रि० स० दे० "डुबाना"।
डब्बा–संज्ञा पुं० [सं० डिब] १. ढक्कनदार छोटा गहरा बरतन। संपुट। २. रेल-गाड़ी में की एक गाड़ी।
डब्बू–संज्ञा पुं० [हिं० डब्बा] व्यंजन परोसने

का एक प्रकार का कटोरा।

डभकना†–क्रि० अ० [अनु० डभडभ] १ पानी में डूबना उतराना। चुभकी लेना। २ आँखों में जल भर आना। डबडबाना।

डभकौरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० डभकना] उरद की पीठी की बरी। डुभकी।

डमरू–संज्ञा पुं० [सं० डमरु] १ चमड़ा मढ़ा एक बाजा जो बीच में पतला रहता और दोनों सिरों की ओर बराबर चौड़ा होता जाता है। २ इस आकार की कोई वस्तु। ३ ३२ लघु वर्णों का एक दंडक वृत्त।

डमरुमध्य–संज्ञा पुं० [सं० डमरु+मध्य] धरती का वह तंग या पतला भाग जो दो बड़े भूमि खंडों को मिलाता हो। यौ०—जल-डमरुमध्य=जल का वह तंग या पतला भाग जो जल के दो बड़े-बड़े भागों को मिलाता हो।

डमरूयंत्र–संज्ञा पुं० [सं० डमरु+यंत्र] एक प्रकार का यंत्र या पात्र जिसमें अर्क खींचे जाते तथा सिंगरफ या पारा, कपूर आदि उड़ाए जाते हैं।

डर–संज्ञा पुं० [सं० दर] १ वह मनोवेग जो किसी अनिष्ट की आशंका से उत्पन्न होता है। भय। भीति। खौफ। त्रास। २ अनिष्ट की संभावना का अनुमान। आशंका।

डरना–क्रि० अ० [हिं० डर+ना] १ अनिष्ट या हानि की आशंका से आकुल होना। भयभीत होना। खौफ करना। २ आशंका करना। अंदेशा करना।

डरपना†–क्रि० अ० दे० "डरना"।

डरपाना†–क्रि० स० दे० "डराना"।

डरपोक–वि० [हिं० डरना+पोकना] बहुत डरनेवाला। भीरु। कायर।

डरवाना–क्रि० स० दे० "डराना"।

डराडरी†–संज्ञा स्त्री० दे० "डर"।

डराना–क्रि० स० [हिं० डरना] डर दिखाना। भयभीत करना। खौफ दिलाना।

डरावना–वि० [हिं० डर] जिससे डर लगे। भयानक। भयंकर।

डरावा–संज्ञा पुं० [हिं० डराना] १ डराने के लिये कही हुई बात। २ वह लकड़ी जो पेड़ों में चिड़िया उड़ाने के लिये बँधी रहती और खटखट शब्द करती है। खटखटा। धड़का।

डरिया†–संज्ञा स्त्री० दे० "डाल"।

डरीला†–वि० [हिं० डार] डारवाला। शाखायुक्त। डालीदार।

डरैला†–वि० [हिं० डर] डरावना।

डल–संज्ञा पुं० [हिं० डला] टुकड़ा। खंड। संज्ञा स्त्री० [सं० तल्ल] झील।

डलना–क्रि० अ० [हिं० डालना] डाला जाना। पड़ना।

डलवाना–क्रि० स० [हिं० 'डालना' का प्रे०] डालने का काम दूसरे से कराना।

डला–संज्ञा पुं० [सं० दल] [स्त्री० डली] टुकड़ा। खंड। संज्ञा पुं० [सं० डलक] [स्त्री० डलिया] बाँस, बेंत आदि की पतली फट्टियों से बना हुआ बरतन। टोकरा। दौरा।

डलिया–संज्ञा स्त्री० [हिं० डला] छोटा डला या टोकरा। दौरी।

डली–संज्ञा स्त्री० [हिं० डला] १ छोटा टुकड़ा। छोटा ढेला। खंड। २ सुपारी। संज्ञा स्त्री० दे० "डलिया"।

डसन–संज्ञा स्त्री० [सं० दशन] डसने की क्रिया, भाव या ढंग।

डसना–क्रि० स० [सं० दशन] १ विषवाले कीड़े का दाँत से काटना। २ डंक मारना।

डसाना†–क्रि० स० [हिं० डसना का प्रे०] दाँत से कटवाना। डसवाना।

डहकना–क्रि० स० [हिं० डाका] १ छल करना। धोखा देना। ठगना। जटना। २ ललचाकर न देना। क्रि० अ० [हिं० दहाड़, धाड़] १ बिलखना। विलाप करना। २ दहाड़ मारना। *क्रि० अ० [देश०] छितराना। फैलना।

डहकाना–क्रि० स० [हिं० डाका] खोना।

गँवाना। नष्ट करना।
क्रि० अ० धोखे में आकर पास का कुछ खोना। ठगा जाना।
क्रि० स० १. धोखे से किसी की चीज़ ले लेना। ठगना। जटना। २. कोई वस्तु दिखाकर या ललचाकर न देना।
डहडहा-वि० [अनु०] [स्त्री० डहडही] १. जो सूखा या मुरझाया न हो। हरा-भरा। ताजा। २. प्रसन्न। आनंदित। ३. तुरंत का। ताजा।
डहडहाट†*-संज्ञा स्त्री० [हिं० डहडहा] १. हरापन। ताजगी। २. प्रफुल्लता। आनंद।
डहडहाना-क्रि० अ० [हिं० डहडहा] १. पेड़, पौधे का हरा-भरा या ताजा होना। २. प्रसन्न होना। आनंदित होना।
डहन-संज्ञा पुं० [सं० डयन] पर। पंख।
डहना-क्रि० अ० [सं० दहन] १. जलना। भस्म होना। २. द्वेष करना। बुरा मानना।
क्रि० स० १. जलाना। भस्म करना। २. संतप्त करना। दुःख पहुँचाना।
डहर†-संज्ञा स्त्री० [हिं० डगर] १. रास्ता। मार्ग। पथ। २. आकाशगंगा।
डहरना-क्रि० अ० [हिं० डहर] चलना।
डहराना†-क्रि० स० [हिं० डहरना] चलाना।
डहार-संज्ञा पुं० [हिं० डाहना] डाहने या तंग करनेवाला।
डाँक-संज्ञा स्त्री० [हिं० दमक] ताँबे या चाँदी का बहुत पतला पत्तर जो नगीनों के नीचे बैठाते हैं।
†संज्ञा स्त्री० [हिं० डाँकना] कै। वमन।
संज्ञा पुं० १. दे० "डंका"। २. दे० "डक"।
डाँकना†-क्रि० स० [सं० तक=चलना] १. कूदकर पार करना। फाँदना। २. वमन करना। कै करना।
डाँगर-वि० [देश०] १. गाय, भैंस आदि पशु। चौपाया। २. एक नीच जाति। वि० १. बहुत दुबला-पतला। २. मूर्ख।
डाँट-संज्ञा स्त्री० [सं० दांति] १. शासन। २. वश। दबाव। ३. घुड़की। डपट।
डाँटना-क्रि० स० [हिं० डाँट] डराने के लिये क्रोध-पूर्वक जोर से बोलना। घुड़कना।
डाँठ†-संज्ञा पुं० [सं० दंड] डंठल।
डाँड़-संज्ञा पुं० [सं० दंड] १. सीधी लकड़ी। डंडा। २. गदका। ३. नाव खेने का बल्ला। चप्पू। ४. सीधी लकीर। ५. दूर तक गई हुई ऊँची तंग ज़मीन। ऊँची मेंड़। ६. छोटा भीटा या टीला। ७ सीमा। हद। ८. अर्थदंड। जुरमाना। ९. नुकसान का बदला। हरजाना।
डाँड़ना-क्रि० अ० [हिं० डाँड़] अर्थ-दंड देना। जुरमाना करना।
डाँड़ा-संज्ञा पुं० [हिं० डाँड] १. छड। डंडा। २. गतका। ३. नाव खेने का डाँड़। ४. हद। सीमा। मेंड़।
डाँड़ा मेंड़ा-संज्ञा पुं० [हिं० डाँड़+मेंड़] १. परस्पर अत्यंत सामीप्य। लगाव। २. अनबन। झगड़ा।
डाँड़ी-संज्ञा स्त्री० [हिं० डाँड़] १. लंबी पतली लकड़ी। २. लंबा हत्था या दस्ता। ३. तराजू की डंडी। ४. पतली शाखा। टहनी। ५. हिंडोले में वे चार सीधी लकड़ियाँ या डोरी की लड़ें जिनमें बैठने की पटरी लटकती रहती है। ६. डाँड़ खेनेवाला आदमी। ७. सीधी लकीर। रेखा। ८. लीक। मर्यादा। ९. चिड़ियों के बैठने का अड्डा। १०. डंडे में बँधी हुई झोली के आकार की सवारी। झप्पान।
डाँवरा-संज्ञा पुं० [सं० डिंभ?] [स्त्री० डाँवरी] लड़का। बेटा। पुत्र।
डाँवाँडोल-वि० [हिं० डोलना] एक स्थिति में न रहनेवाला। चंचल। अस्थिर।
डाँस-संज्ञा पुं० [सं० दंश] १. बड़ा मच्छड़। दंश। २. एक प्रकार की मक्खी।
डाइन-संज्ञा स्त्री० [सं०-डाकिनी] १. भूतनी। चुड़ैल। २. वह स्त्री जिसकी दृष्टि आदि के प्रभाव से बच्चे मर जाते हों। टोनहाई। ३. कुरूपा और डरावनी स्त्री।
डाक-संज्ञा पुं० [हिं० टाँकना] १. सवारी का ऐसा प्रबंध जिसमें एक एक टिकान पर बराबर जानवर आदि बदले जाते हों।

मुहा०—डाक बैठाना या लगना=शीघ्र यात्रा के लिये स्थान स्थान पर सवारी बदलने की चौकी नियत करना।
यौ०—डाक चौकी=मार्ग में वह स्थान जहाँ यात्रा के घोड़े या हरकारे बदले जायें। २ राज्य की ओर से चिट्ठियों के आने-जाने की व्यवस्था। ३ कागज पत्र आदि जो डाक से आवे।
संज्ञा स्त्री० [अनु०] वमन। कै।
संज्ञा पु० [बग०] नीलाम की बोली।
डाकखाना–संज्ञा पु० [हिं० डाक+फा० खाना] वह सरकारी दफ्तर जहाँ लोग चिट्ठी पत्री आदि छोड़ते हैं और जहाँ से चिट्ठियाँ आदि बाँटी जाती हैं।
डाकगाड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० डाक+गाड़ी] डाक ले जानेवाली रेलगाड़ी जो और गाड़ियों से तेज चलती है।
डाकघर–संज्ञा पु० दे० "डाकखाना"।
डाकना–क्रि० अ० [हिं० डाक] कै करना। क्रि० स० [हिं० डाँक+ना] फाँदना। लाँघना।
डाक बँगला–[हिं० डाक+बँगला] वह मकान जो सरकार की ओर से परदेसियों के ठहरने के लिये बना हो।
डाका–संज्ञा पु० [हिं० डाकना या सं० दस्यु] माल-असबाब जबरदस्ती छीनने के लिये दल बाँधकर धावा। बटमारी।
डाकाजनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० डाका+फा० जनी] डाका मारने का काम। बटमारी।
डाकिन–संज्ञा स्त्री० दे० "डाकिनी"।
डाकिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक पिशाची जो काली के गणों में है। २ डाइन। चुड़ैल।
डाकू–संज्ञा पु० [हिं० डाकना, सं० दस्यु] डाका डालनेवाला। लुटेरा।
डाकोर–संज्ञा पु० [सं० ठक्कुर] ठाकुर। विष्णु भगवान्। (गुजरात)।
डाख–संज्ञा पु० दे० "ढाक"।
डागा–संज्ञा पु० [सं० दण्ड] नगाड़ा बजाने का डंडा। चोब।
डागुर–संज्ञा पु० [देश०] जाटों की एक जाति।
डाट–संज्ञा स्त्री० [सं० दांति] १ वह वस्तु जो बोझ को ठहराने या वस्तु को खड़ी रखने के लिये लगाई जाय। टेक। चाँड़। २ छेद बंद करने की वस्तु। ३ बोतल, शीशी आदि का मुँह बंद करने की वस्तु। ठेंठी। काग। गट्टा। ४ मेहराब को रोक रखने के लिये ईंटा आदि की भरती।
संज्ञा पु० दे० "डाँट"।
डाटना–क्रि० स० [हिं० डाट] १ एक वस्तु को दूसरी वस्तु पर कसकर दबाना। भिड़ाकर ठेलना। २ टेकना। चाँड़ लगाना। ३ छेद या मुँह बंद करना। ठेंठी लगाना। ४ कसकर या ठूसकर भरना। ५ खूब पेट भर खाना। ६ ठाट से कपड़ा-गहना आदि पहनना। ७ मिलाना। भिड़ाना।
डाढ़–संज्ञा स्त्री० [सं० दंष्ट्रा] चबाने के चौड़े दाँत। चौभड़। दाढ़।
डाढ़ना[*]–क्रि० स० [सं० दग्ध] जलाना।
डाढ़ा–संज्ञा स्त्री० [सं० दग्ध] १ दावानल। वन की आग। २ आग। ३ ताप। दाह। जलन।
डाढ़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० डाढ़] १ ओठ के नीचे का उभरा हुआ गोल भाग। ठोढ़ी। ठुड्डी। चिबुक। २ ठुड्डी और कनपटी पर के बाल। दाढ़ी।
डाबर–संज्ञा पु० [सं० दभ्र] १ नीची जमीन जहाँ पानी ठहरा रहे। २ गड़ही। पोखरी। तलैया। ३ हाथ धोने का पात्र। चिलमची। ४ मैला पानी।
डाबा–संज्ञा पु० दे० "डब्बा"।
डाभ–संज्ञा पु० [सं० दर्भ] १ एक प्रकार का कुश। २ कुश। ३ आम की मंजरी या मौर। ४ कच्चा नारियल।
डामर–संज्ञा पु० [सं०] १ शिव कथित माना जानेवाला एक तंत्र। २ हलचल। धूम। ३ आडंबर। ठाटबाट। ४ चमत्कार।
संज्ञा पु० [देश०] १ साल वृक्ष का गोंद। राल। २ कहरुवा नामक गोंद। ३ एक

प्रकार की मधुमक्खी जो राल बनाती है।

डामल–संज्ञा स्त्री० [अ० दायमुल हब्स] १. उम्र भर के लिये क़ैद। २. 'देशनिकाला' का दंड।

डायें डायें–क्रि० वि० [अनु०] व्यर्थ इधर से उधर (घूमना)।

डायन–संज्ञा स्त्री० [सं० डाकिनी] १.डाकिनी पिशाचिनी। चुड़ैल। २. कुरूपा स्त्री।

डार*†–संज्ञा स्त्री० दे० "डाल"।
संज्ञा स्त्री० [सं० डलक] डलिया। चँगेर।

डारना†*–क्रि० स० दे० "डालना"।

डाल–संज्ञा स्त्री० [सं० दारु] १. पेड़ के धड़ से निकली हुई वह लंबी लकड़ी जिसमें पत्तियाँ और कल्ले होते हैं। शाखा। शाख। २. फ़ानूस जलाने के लिये दीवार में लगी हुई एक प्रकार की खूँटी। ३. तलवार का फल।
संज्ञा स्त्री० [हिं० डला] १. डलिया। चँगेरी। २. कपड़ा और गहना जो डलिया में रखकर विवाह के समय वर की ओर से वधू को दिया जाता है।

डालना–क्रि० स० [सं० तलन] १. नीचे गिराना। छोड़ना। फेंकना।
मुहा०—डाल रखना = १. रख छोड़ना। २. रोक रखना। देर लगाना। भुलाना।
२. एक वस्तु को दूसरी वस्तु पर कुछ दूर से गिराना। छोड़ना। ३. रखना या मिलाना। ४. प्रविष्ट करना। घुसाना। ५. खोज खबर न लेना। भुला देना। ६. अंकित करना। चिह्नित करना। ७. फैलाकर रखना। ८. शरीर पर धारण करना। पहनना। ९. ज़िम्मे करना। भार देना। १०. गर्भपात करना। (चौपायों के लिये) ११. क़ै करना। उलटी करना। १२. (स्त्री को) पत्नी की तरह रखना। १३. लगाना। उपयोग करना। १४. घटित करना। मचाना। १५. बिछाना।

डाली–संज्ञा स्त्री० [हिं० डला] १. डलिया। चँगेरी। २. फल, फूल मेवे जो डलिया में सजाकर किसी के पास सम्मानार्थ भेजे जाते हैं।
संज्ञा स्त्री० दे० "डाल"।

डावरा–संज्ञा पुं० [सं० डिंब या मार० टावर ?] [स्त्री० डावरी] लड़का। बेटा।

डासन†–संज्ञा पुं० [हिं० डाभ+आसन] बिछावन। बिछौना। विस्तर।

डासना†–क्रि० स० [हिं० डासन] बिछाना। डालना। फैलाना।
*†–क्रि० स० [हिं० डसना] डसना।

डासनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० डासन] चारपाई।

डाह–संज्ञा स्त्री० [सं० दाह] जलन। ईर्ष्या।

डाहना–क्रि० स० [सं० दाहन] जलाना। सताना। तंग करना।

डिंगर–संज्ञा पुं० [सं०] १. मोटा आदमी। २. दुष्ट। बदमाश। ३. दास। गुलाम।
संज्ञा पुं० [देश०] वह काठ जो नटखट चौपायों के गले में बाँध दिया जाता है।

डिंगल–वि० [सं० डिंगर] नीच। दूषित।
संज्ञा स्त्री० राजपूताने की वह भाषा जिसमें भाट और चारण काव्य और वंशावली लिखते हैं।

डिड़सी–संज्ञा स्त्री० दे० "टिंडसी"।

डिंब–संज्ञा पुं० [सं०] १. बावेला। भय-ध्वनि। २. दंगा। लड़ाई। ३. अंडा। ४. फेफड़ा। ५. प्लीहा। पिलही। ६. कीड़े का छोटा बच्चा।

डिंभ–संज्ञा पुं० [सं०] १. छोटा बच्चा। २. मूर्ख।
†संज्ञा पुं० [सं० दंभ] १. आडंबर। पाखंड। २. अभिमान। घमंड।

डिगना–क्रि० अ० [सं० टिक] १. जगह छोड़ना। टलना। खसकना। २. किसी बात पर स्थिर न रहना। विचलित होना।

डिगलाना–क्रि० अ० दे० "डगमगाना"।

डिगाना–क्रि० स० [हिं० डिगना] १. जगह से टालना। सरकाना। खसकाना। २. बात पर स्थिर न रखना। विचलित करना।

डिग्गी–संज्ञा स्त्री० [सं० दीर्घिका] तालाब।

†गता स्त्री० [देश०] हिम्मत। साहस।

डिठार, डिठियार†—वि० [हिं० डीठ=नजर] जिसे सुझाई दे।

डिठौना—संज्ञा पुं० [हिं० डीठ] काजल का टीका जो लड़कों को नजर से बचाने के लिये लगाते है।

डिढ़्या†—संज्ञा स्त्री० [देश०] अत्यन्त लालच। लालसा। कामना। तृष्णा।

डिबिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० डिब्बा] छोटा ढक्कनदार बरतन। छोटा डिब्बा या संपुट।

डिब्बा—संज्ञा पुं० [सं० डिंब] १ एक प्रकार का ढक्कनदार छोटा बरतन। संपुट। २ रेलगाड़ी की एक गाड़ी। ३ बच्चों की पसली के दर्द की बीमारी। पसली।

डिभगाना—क्रि० स० [देश०] मोहित करना। छलना। बहकना।

डिम—संज्ञा पुं० [सं०] नाटक का एक भेद जिसमें माया इंद्रजाल, लड़ाई और क्रोध आदि का समावेश होता है।

डिमडिमी—संज्ञा स्त्री० [सं० डिंडिम] डुगडुगिया या डुग्गी नाम का बाजा।

डिल्ला—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में १६ मात्राएँ और अंत में भगण होता है। २ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो सगण होते हैं। तिलका। तिल्ला। तिल्लाना।

संज्ञा पुं० [हिं० टीला] बैलों के कंधे पर उठा हुआ कूबड़। कुब्जा। ककुद्म।

डींग—संज्ञा स्त्री० [सं० डीन] शेखी। सिट्ट।

डीठ—संज्ञा स्त्री० [सं० दृष्टि] १ दृष्टि। नजर। निगाह। २ देखने की शक्ति। ३ ज्ञान। समझ।

डीठना*†—क्रि० अ० [हिं० डीठ] दिखाई देना। दृष्टि में आना। क्रि० स० १ दिखाना। २ नजर लगाना।

डीठबंध—संज्ञा पुं० [सं० दृष्टिबंध] १ नजरबंदी। इंद्रजाल। २ इंद्रजाल करनेवाला। जादूगर।

डीठिमूठि*†—संज्ञा स्त्री० [हिं० डीठि+मूठ] नजर। टोना। जादू।

डीबुआ†—संज्ञा पुं० [देश०] पैसा।

डीमडाम—संज्ञा स्त्री० [सं० डिंब] १ ठाट। ऐंठ। तपाक। ठसक। २ ठाट-बाट।

डील—संज्ञा पुं० [हिं० टीला] १ प्राणियों के शरीर की ऊँचाई। कद। उठान। यौ०—डील डौल=१ देह की लंबाई-चौड़ाई। २ शरीर का ढाँचा। आकार। काठी। २ शरीर। जिस्म। देह। ३ व्यक्ति। मनुष्य।

डीह—संज्ञा पुं० [फा० देह] १ आबादी। बस्ती। २ उजड़े हुए गाँव का टीला। ३ ग्राम-देवता।

डुंगा†—संज्ञा पुं० [सं० तुंग] १ टर। अटाला। २ टीला। भीटा। पहाड़ी।

डुंडा—संज्ञा पुं० [सं० दंड] पेड़ की सूखी डाल। ठूँठ।

डुगडुगी—संज्ञा स्त्री० [अनु०] चमड़ा मढ़ा हुआ एक छोटा बाजा। डोंगी। डुग्गी।

डुग्गी—संज्ञा स्त्री० दे० "डुगडुगी"।

डुपटना—क्रि० स० [हिं० दो+पट] (कपड़ा) चुनना। चुनियाना।

डुबकी—संज्ञा स्त्री० [हिं० डूबना] १ पानी में डूबना। डुब्बी। गोता। बुड़की। २ पीठी की बनी हुई बिना तली बरी।

डुबाना—क्रि० स० [हिं० डूबना] १ पानी या किसी द्रव पदार्थ के भीतर डालना। गोता देना। २ चौपट या नष्ट करना। मुहा०—नाम डुबाना=नाम को कलंकित करना। मर्यादा खोना। लुटिया डुबाना=महत्त्व या प्रतिष्ठा नष्ट करना।

डुबाव—संज्ञा पुं० [हिं० डूबना] पानी की डूबने भर की गहराई।

डुबोना—क्रि० स० दे० "डुबाना"।

डुभकौरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० डुबकी+बरी] पीठी की बिना तली बरी।

डुलना*†—क्रि० अ० दे० "डोलना"।

डुलाना—क्रि० स० [हिं० डोलना] १ गति में लाना। हिलाना। चलाना। २ हटाना। भगाना। ३ फिराना। घुमाना। टहलाना।

डूँगर—संज्ञा पुं० [सं० तुंग] १ टीला।

भीटा। ढूह। २. छोटी पहाड़ी।

डूबना–क्रि० अ० [अनु० डुबडुब] १. पानी या और किसी द्रव पदार्थ के भीतर समाना। गोता खाना।

मुहा०—डूब मरना = शरम के मारे मुँह न दिखाना। चुल्लू भर पानी में डूब मरना = दे० "डूब मरना"। डूबना उतराना = चिंता में पड़ जाना। जी डूबना = १. चित्त व्याकुल होना। २. बेहोशी होना।

२. सूर्य्य, ग्रह, नक्षत्र आदि का अस्त होना। ३. चौपट होना। बरबाद होना।

मुहा०—नाम डूबना = प्रतिष्ठा नष्ट होना।

४. किसी व्यवसाय में लगाया हुआ या किसी को दिया हुआ धन नष्ट होना। ५. चिंतन में मग्न होना। ६. लीन होना। तन्मय होना। लिप्त होना।

डेंड़सी–संज्ञा स्त्री० [सं० टिंडिश] ककड़ी की तरह की एक तरकारी। टिंड। टिंडसी।

डेड़हा†–संज्ञा पुं० [सं० डुंडुभ] पानी का साँप।

डेढ़–वि० [सं० अध्यर्द्ध] एक पूरा और उसका आधा। जो गिनती में १½ हो।

मुहा०—डेढ़ ईंट की मसजिद बनाना = खरेपन या अक्खड़पन के कारण सबसे अलग काम करना। डेढ़ चावल की खिचड़ी पकाना = अपनी राय सबसे अलग रखना।

डेढ़ा–वि० दे० "डेवढ़ा"।

संज्ञा पुं० वह पहाड़ा जिसमें प्रत्येक संख्या की डेढ़गुनी संख्या बतलाई जाती है।

डेरा–संज्ञा पुं० [हिं० ठहरना] १. थोड़े दिनों के लिये रहना। टिकान। पड़ाव। २. ठहरने या रहने के लिये फैलाया हुआ सामान।

मुहा०—डेरा डालना = सामान फैलाकर टिकना। ठहरना। डेरा पड़ना = टिकान होना।

३. ठहरने का स्थान। ४. छावनी। खेमा। तंबू। शामियाना। ५. नाचने गानेवालों का दल। मंडली। गोल। ६. मकान। घर।

*†वि० [सं० दहर?] बायाँ। सव्य।

डेराना†–क्रि० अ० दे० "डरना"।

डेल–संज्ञा पुं० [सं० डुंडुल] उल्लू पक्षी।

संज्ञा पुं० [सं० दल] रोड़ा। ढेला।

संज्ञा पुं० पक्षियों को बंद करने का डला।

डेला–संज्ञा पुं० [सं० दल] आँख का सफ़ेद उभरा हुआ भाग जिसमें पुतली होती है। कोया। रोड़ा।

डेली†–संज्ञा स्त्री० [हिं० डला] डलिया। बाँस की झाँपी।

डेवढ़†–वि० [हिं० डेवढ़ा] डेढ़गुना। डेवढ़ा।

संज्ञा स्त्री० सिलसिला। क्रम। तार।

डेवढ़ा–वि०, संज्ञा पुं० दे० "ड्योढ़ा"।

डेवढ़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "ड्योढ़ी"।

डेहरी–संज्ञा स्त्री० दे० "दहलीज"।

डैना–संज्ञा पुं० [सं० डयन] चिड़ियों का पख। पक्ष। पर। बाजू।

डोंगर–संज्ञा पुं० [सं० तुंग] पहाड़ी। टीला।

डोंगा–संज्ञा पुं० [सं० द्रोण] १. बिना पाल की नाव। २. बड़ी नाव।

डोंगी–संज्ञा स्त्री० [हिं० डोंगा] छोटी नाव।

डोंड़ा–संज्ञा पुं० [सं० तुंड] १. बड़ी इलायची। २. टोंटा। कारतूस।

डोंड़ी–संज्ञा स्त्री० [सं० तुंड] १. पोस्ते का फल जिसमें से अफीम निकलती है। २. उभरा हुआ मुँह। टोंटी।

डोई–संज्ञा स्त्री० [हिं० डोकी] काठ की डाँड़ी की बड़ी करछी जिससे दूध, चाशनी आदि चलाते हैं।

डोकरा–संज्ञा पुं० [सं० दुष्कर] [स्त्री० डोकरी] १. अशक्त और वृद्ध मनुष्य। †२. पिता।

डोकिया, डोकी–संज्ञा स्त्री० [हिं० डोका] काठ का छोटा कटोरा जिसमें तेल, बटना आदि रखते हैं।

डोडो–संज्ञा पुं० [अं०] बतख के बराबर एक चिड़िया जो अब नहीं मिलती।

डोब, डोबा–संज्ञा पुं० [हिं० डूबना] डुबाने का भाव। गोता। डुबकी।

डोम–संज्ञा पुं० [सं० डोम] [स्त्री० डोमिनी, डोमनी] १. एक अस्पृश्य नीच जाति।

श्मशान पर शव को आग देना, मुर्दा-फूँक आदि बनने के कारण इनका नाम है। २ ढाढ़ी। मीरासी।

डोमकौआ—संज्ञा पुं० [हिं० डोम + कौआ] बड़ा और बहुत काला कौआ।

डोमड़ा—संज्ञा पुं० दे० "डोम"।

डोमनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० डोम] १ डोम जाति की स्त्री। २ ढाढ़ी या मीरासी की स्त्री।

डोमिन—संज्ञा स्त्री० [हिं० डोम] १ डोम जाति की स्त्री। २ ढाढ़ी, मीरासियों की स्त्री।

डोर—संज्ञा स्त्री० [सं०] डोरा। मोटा तागा।

मुहा०—डोर पर लगाना = प्रयोजन-सिद्धि के अनुकूल करना। ढब पर लाना।

डोरा—संज्ञा पुं० [सं० डोरक] १ रुई, रेशम आदि को बटकर बनाया हुआ बहुत लंबा और पतला खंड। मोटा सूत या तागा। धागा। २ धारी। लकीर। ३ आँखों की महीन लाल नसें जो नशे या उमंग की दशा में दिखाई पड़ती हैं। ४ तलवार की धार। ५ तपे घी की धार। ६ एक प्रकार की करछी। पली। ७ स्नेहसूत्र। प्रेम का बंधन।

मुहा०—डोरा डालना = प्रेमसूत्र में बद्ध करना। फँसाना।

८ वह वस्तु जिससे किसी वस्तु का पता लगे। सुराग। ९ काजल या सुरमे की रेखा।

डोरिया—संज्ञा पुं० [हिं० डोरा] १ वह कपड़ा जिसमें कुछ मोटे सूत की लंबी धारियाँ बनी हों। २ एक प्रकार का बगला।

डोरियाना—क्रि० स० [हिं० डोरी + आना (प्रत्य०)] पशुओं को रस्सी से बाँधकर ले चलना।

डोरिहार*—संज्ञा पुं० [हिं० डोरी + हारा] [स्त्री० डोरिहारिन] पटवा।

डोरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० डोरा] १ रस्सी। रज्जु। २ पाश। बंधन।

मुहा०—डोरी ढीली छोड़ना = देख रेख कम करना। चौकसी कम करना।

३ डाँड़ीदार कटोरा या कलछा। डोई।

डोरे*—क्रि० वि० [हिं० डोर] साथ लिए हुए। साथ साथ। संग संग।

डोल—संज्ञा पुं० [सं० दोल] १ लोहे का एक गोल बरतन। २ हिंडोला। झूला। ३ डोली। पालकी। ४ हलचल।

वि० [हिं० डोलना] चंचल।

डोलची—संज्ञा स्त्री० [हिं० डोल] छोटा डोल।

डोलडाल—संज्ञा पुं० [हिं० डोलना] १ चलना फिरना। २ पाखाने जाना।

डोलना—क्रि० स० [सं० दोलन] १ चलायमान होना। गति में होना। २ चलना। फिरना। ३ हटना। दूर होना। ४ (चित्त) विचलित होना। डिगना।

डोला—संज्ञा पुं० [सं० दोल] [स्त्री० डोली] १ स्त्रियों के बैठने की एक बंद सवारी जिसे कहार ढोते हैं। मियाना।

मुहा०—डोला देना = १ किसी राजा या सरदार को भेंट की तरह पर अपनी बेटी देना। २ अपनी बेटी को वर के घर पर ले जाकर ब्याहना।

२ झूले का झोंका। पेंग।

डोलाना—क्रि० स० [हिं० डोलना] १ हिलाना। चलाना। २ दूर करना। भगाना। हटाना।

डोली—संज्ञा स्त्री० [हिं० डोला] एक प्रकार की सवारी जिसे कहार लेकर चलते हैं।

डोहो—संज्ञा स्त्री० दे० 'डोई'।

डौंडी—संज्ञा स्त्री० [सं० डिंडिम] १ ढिंढोरा। डुगडुगिया।

मुहा०—डौंडी देना १ मुनादी करना। २ सबसे कहते फिरना। डौंडी बजना = १ घोषणा होना। २ जयजयकार होना।

२ घोषणा। मुनादी।

डौंरू—संज्ञा पुं० दे० "डमरू"।

डौआ—संज्ञा पुं० [देश०] काठ का चमचा।

डौल—संज्ञा पुं० [हिं० डोल?] १ ढाँचा। ढड्ढा।

मुहा०—डौल पर लाना = काट-छाँटकर सुडौल या दुरुस्त करना।

२ बनावट का ढंग। रचना-प्रकार। ढब। ३ तरह। प्रकार। ४ युक्ति। उपाय।

मुहा०—डौल पर लाना = अभिप्राय-साधन के अनुकूल करना। डौल बाँधना या लगाना = उपाय करना। युक्ति बैठाना। ५. रंग-ढंग। लक्षण। सामान।
डौलियाना†–क्रि० स० [हिं० डौल] १. प्रयोजन-सिद्धि के अनुकूल करना। ढग पर लाना। २. गढ़कर दुरुस्त करना।
ड्योढ़ा–वि० [हिं० डेढ़] किसी पदार्थ से उसका आधा और ज्यादा। डेढ़गुना। संज्ञा पुं० एक प्रकार का पहाड़ा जिसमें अंकों की डेढ़गुनी संख्या बतलाई जाती है।
ड्योढ़ी–संज्ञा स्त्री० [सं० देहली] १. फाटक। चौखट। दरवाजा। २. वह बाहरी कोठरी जो मकान में घुसने के पहले पड़ती है। पौरी।
ड्योढ़ीदार–संज्ञा पुं० दे० "ड्योढ़ीवान"।
ड्योढ़ीवान–संज्ञा पुं० [हिं० ड्योढ़ी + वान (प्रत्य०)] ड्योढ़ी पर रहनेवाला पहरेदार। द्वारपाल। दरबान।

ढ

ढ–हिंदी वर्णमाला का चौदहवाँ व्यंजन वर्ण और टवर्ग का चौथा अक्षर। इसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है।
ढंक*†–संज्ञा पुं० दे० "ढाक"।
ढंग–संज्ञा पुं० [सं० तंग (तंगन)] १. प्रणाली। शैली। ढब। रीति। २. प्रकार। तरह। किस्म। ३. रचना। बनावट। गढ़न। ४. युक्ति। उपाय। तदबीर।
मुहा०—ढग पर चढ़ना = अभिप्राय साधन के अनुकूल होना। ढग पर लाना = अभिप्राय साधन के अनुकूल करना।
५. चाल-ढाल। आचरण। व्यवहार। ६. बहाना। हीला। पाखंड। ७. लक्षण। आभास। आसार।
यौ०—रंग-ढंग = लक्षण। आसार।
८. दशा। अवस्था। स्थिति।
ढंगलाना†–क्रि० स० [हिं० ढाल] लुढ़काना।
ढंगी–वि० [हिं० ढंग] चालबाज़। चतुर। चालाक।
ढंढोर–संज्ञा पुं० [अनु० धायँ धायँ] आग की लपट। ज्वाला। लौ।
ढंढोरची–संज्ञा पुं० [हिं० ढंढोरा] ढंढोरा या मुनादी फेरनेवाला।
ढंढोरना†–क्रि० स० दे० "ढूँढ़ना"।
ढंढोरा–संज्ञा पुं० [अनु० ढम + ढोल] १. घोषणा करने का ढोल। डुगडुगी। डौंड़ी। २. वह घोषणा जो ढोल बजाकर की जाय। मुनादी।
ढंपना–क्रि० अ० दे० "ढकना"।
ढ–संज्ञा पुं० [सं०] १. बड़ा ढोल। २. कुत्ता। ३. ध्वनि। नाद।
ढई–संज्ञा स्त्री० [हिं० ढहना = गिरना] किसी के यहाँ किसी काम से पहुँचना और जब तक काम न हो जाय, तब तक वहाँ से न हटना। धरना देना।
ढकना–संज्ञा पुं० [सं० ढक = छिपना] [स्त्री० अल्पा० ढकनी] ढाँकने की वस्तु। ढक्कन। क्रि० अ० किसी वस्तु के नीचे पड़कर दिखाई न देना। छिपना। क्रि० स० दे० "ढाँकना"।
ढकनिया†–संज्ञा स्त्री० दे० "ढकनी"।
ढकनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० ढकना] ढाँकने की वस्तु। ढक्कन।
ढका*†–संज्ञा पुं० [सं० ढक्का] बड़ा ढोल। *संज्ञा पुं० [अनु०] धक्का। टक्कर।
ढकिल*†–संज्ञा स्त्री० [हिं० ढकेलना] वेग के साथ धावा। चढ़ाई। आक्रमण।
ढकेलना–क्रि० स० [हिं० धक्का] १. धक्के से गिराना। ठेलकर आगे की ओर गिराना। २. धक्के से हटाना। ठेलकर सरकाना।
ढकोसना–क्रि० स० [अनु० ढकढक] ए॰

मारना घूट सा पीना।

ढकोसला—संज्ञा पुं० [हिं० ढग+सं० कौशल] मतलब साधने का ढंग। आडंबर। पाखंड।

ढक्कन—संज्ञा पुं० [सं०] ढाँकने की वस्तु। ढकना।

ढक्का—संज्ञा स्त्री० [सं०] बड़ा ढोल।

ढगण—संज्ञा पुं० [सं०] एक मात्रिक गण जो तीन मात्राओं का होता है।

ढचर—संज्ञा पुं० [हिं० ढाँचा] १ टटा। बखेड़ा। २ आडंबर। ढकोसला।

ढड्ढा—वि० [देश०] बहुत बड़ा और बेढंगा। संज्ञा पुं० [हिं० ठाट] १ ढाँचा। २ भद्दा ठाट-बाट। आडंबर।

ढनमनाना†—क्रि० अ० [अनु०] लुढ़कना। दे० "ढरकाना"।

ढपना—संज्ञा पुं० [हिं० ढाँपना] ढाकने की वस्तु। ढक्कन।

क्रि० अ० [हिं० ढकना] ढका होना।

ढप्पू—वि० [देश०] बहुत बड़ा। ढड्ढा।

ढफ†—संज्ञा पुं० दे० "डफ"।

ढब—संज्ञा पुं० [सं० धव=गति] १ ढंग। रीति। तौर। तरीका। २ प्रकार। तरह। किस्म। ३ बनावट। गढ़न। ४ अभियुक्ति। उपाय। तदबीर।

मुहा०—ढब पर चढ़ना=किसी का ऐसी अवस्था में होना जिससे कुछ मतलब निकले। ढब पर लगाना या लाना=किसी को इस प्रकार प्रवृत्त करना कि उससे कुछ अर्थ सिद्ध हो। ५ प्रकृति। आदत। बान।

ढयना—क्रि० अ० [सं० ध्वंसन] दीवार, मकान आदि का गिरना। ध्वस्त होना।

ढरकना†—क्रि० अ० [हिं० ढार या ढाल] १ पानी आदि द्रव पदार्थ का नीचे गिर पड़ना। ढलना। २ लेटना। ३ नीचे की ओर जाना।

ढरका—संज्ञा पुं० [हिं० ढरकना] बाँस की नली जिससे चौपायों के गले में दवा उतारते हैं।

ढरकाना†—क्रि० स० [हिं० ढरकना] पानी आदि को आधार से नीचे गिराना। गिराकर बहाना।

ढरकी—संज्ञा स्त्री० [हिं० ढरकना] जुलाहों का एक औजार जिससे वे लोग बाने का सूत फेंकते हैं।

ढरना*—क्रि० अ० दे० "ढलना"।

ढरनि—संज्ञा स्त्री० [हिं० ढरना] १ गिरने या पड़ने की क्रिया। पतन। २ हिलने-डोलने की क्रिया। गति। ३ चित्त की प्रवृत्ति। झुकाव। ४ करुणा। दया-शीलता। कृपालुता।

ढरहरना*†—क्रि० अ० [हिं० ढरना] सरकना। सरकना। ढलना। झुकना।

ढरहरी†—संज्ञा स्त्री० [देश०] पकौड़ी।

ढराना—क्रि० स० १ दे० "ढलाना"। २

ढरारा—वि० [हिं० ढार] [स्त्री० ढरारी] १ गिरकर बह जानेवाला। २ लुढ़कनेवाला। ३ शीघ्र प्रवृत्त होनेवाला।

ढर्रा—संज्ञा पुं० [हिं० धरना] १ मार्ग। रास्ता। पथ। २ शैली। ढंग। तरीका। ३ युक्ति। उपाय। तदबीर। ४ आचरण पद्धति। चाल-चलन।

ढलकना—क्रि० अ० [हिं० ढाल] १ द्रव पदार्थ का आधार से नीचे गिर पड़ना। ढलना। २ लुढ़कना।

ढलका—संज्ञा पुं० [हिं० ढलकना] वह रोग जिसमें आँख से पानी बहा करता है।

ढलकाना—क्रि० स० [हिं० ढलकना] १ द्रव पदार्थ को आधार से नीचे गिराना। २ लुढ़काना।

ढलना—क्रि० अ० [हिं० ढाल] १ द्रव पदार्थ का नीचे की ओर सरक जाना। ढरकना। बहना।

मुहा०—दिन ढलना=संध्या होना। सूरज या चाँद ढलना=सूर्य या चंद्रमा का अस्त होना।

२ बीतना। गुजरना। ३ उँडेला जाना। ४ लुढ़कना। ५ लहर खाकर इधर-उधर डोलना। लहराना। ६ किसी ओर आकृष्ट होना। प्रवृत्त होना। ७ प्रसन्न होना। रीझना। ८ साँचे में

ढालकर बनाया जाना। ढाला जाना।
मुहा०—साँचे में ढला = बहुत सुंदर।
ढलवाँ–वि० [हिं० ढालना] जो साँचे में ढालकर बनाय गया हो।
ढलवाना–क्रि० स० [हिं० ढालना का प्रे०] ढालने का काम दूसरे से कराना।
ढलाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० ढालना] १. ढालने का भाव या काम। २. ढालने की मजदूरी।
ढलाना–क्रि० स० दे० "ढलवाना"।
ढवरी*†–संज्ञा स्त्री० [हिं० ढलना] धुन। ढोरी। लौ। लगन। रट।
ढहना–क्रि० अ० [सं० ध्वंसन] १. मकान आदि का गिर पड़ना। ध्वस्त होना। २. नष्ट होना। मिट जाना।
ढहरी†–संज्ञा स्त्री० दे० "डेहरी"।
संज्ञा स्त्री० [देश०] मिट्टी का मटका।
ढहवाना–क्रि० स० [हिं० ढहाना का प्रे०] ढहाने का काम कराना। गिरवाना।
ढहाना–क्रि० स० [सं० ध्वसन] दीवार, मकान आदि गिरवाना। ध्वस्त कराना।
ढाँकना–क्रि० स० [सं० ढक = छिपाना] १. ऊपर से कोई वस्तु फैला या डालकर (किसी वस्तु को) ओट में करना। २. इस प्रकार ऊपर फैलाना कि नीचे की वस्तु छिप जाय।
ढाँचा–संज्ञा पुं० [सं० स्थाता] १. किसी चीज को बनाने के पहले जोड़-जाड़कर बैठाए हुए उसके भिन्न-भिन्न भाग। ठाट। ठट्टर। डौल। २. इस प्रकार जोड़े हुए लकड़ी आदि के बल्ले कि उनके बीच में कोई वस्तु जमाई या जड़ी जा सके। ३. पंजर। ठटरी। ४. गढ़न। बनावट। ५. प्रकार। भाँति। तरह।
ढाँपना–क्रि० स० दे० "ढाँकना"।
ढाँसना–क्रि० अ० [हिं० ढाँस] सूखी खाँसी खाँसना।
ढाई–वि० [सं० अर्द्धद्वितीय, हिं० अढ़ाई] दो और आधा।
ढाक–संज्ञा पुं० [स० आषाढक] पलाश का पेड़। छिउला। छीउल।
मुहा०—ढाक के तीन पात = सदा एक सा।
संज्ञा पुं० [सं० ढक्का] लड़ाई का ढोल।
ढाड़–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. चिग्घाड़। गरज। दहाड़ (बाघ, सिंह आदि की)। २. चिल्लाहट।
मुहा०—ढाड़ मारना = चिल्लाकर रोना।
ढाढ़ना†–क्रि० स० दे० "दाढ़ना"।
ढाढ़स–संज्ञा पुं० [सं० दृढ़] १. धैर्य। आश्वासन। तसल्ली। २. दृढ़ता। साहस। हिम्मत।
ढाढ़ी–संज्ञा पुं० [देश०] [स्त्री० ढाढ़िन] एक प्रकार के मुसलमान गवैए।
ढाना–क्रि० स० [हिं० ढाहना] १. दीवार, मकान आदि को गिराना। ध्वस्त करना। २. गिराना।
ढाबर†–वि० [हिं० डाबर] मिट्टी मिला हुआ। मटमैला। गँदला। (पानी)।
ढामक–संज्ञा पु० [अनु०] ढोल आदि का शब्द।
ढार*–संज्ञा स्त्री० [सं० धार] १. ढाल। उतार। २. पथ। मार्ग। प्रणाली। ३. ढाँचा। रचना। बनावट।
ढारना†–क्रि० स० दे० "ढालना"।
ढारस–संज्ञा पुं० दे० "ढाढ़स"।
ढाल–संज्ञा स्त्री० [सं०] तलवार आदि का वार रोकने का गोल अस्त्र या धातु की फरी। चर्म। आड़। फलक।
संज्ञा स्त्री० [सं० धार] १. वह स्थान जो क्रमशः बराबर नीचा होता गया हो। उतार। २. ढंग। प्रकार। तौर। तरीका।
ढालना–क्रि० स० [सं० धार] १. पानी या और किसी द्रव पदार्थ को गिराना। उँड़ेलना। २. शराब पीना। ३. बेचना। ४. ताना छोड़ना। व्यंग्य बोलना। ५. साँचे में ढालकर कोई चीज बनाना।
ढालवाँ–वि० [हिं० ढाल] [स्त्री० ढालवी] जो बराबर नीचा होता गया हो। जिसमें ढाल हो। ढालू।
ढालू–वि० दे० "ढालवाँ"।
ढास†–संज्ञा पुं० [सं० दस्यु] लुटेरा। डाकू।
ढासना–संज्ञा पुं० [सं० धारण + आसन] १. वह ऊँची वस्तु जिस पर बैठने में पीठ टिक

गये। सहारा। टेक। २ नथिया।

डाहना†–क्रि० स० दे० "ढाना"।

ढिंढोरना–क्रि० स० [अनु०] १ मथना। बिलोड़ना। २ हाथ डालकर ढूँढ़ना।

ढिंढोरा–संज्ञा पु० [अनु० ढम+ढोल] १ वह ढोल जिसे बजाकर किसी बात की सूचना दी जाती है। डुगडुगिया। २ वह सूचना जो ढोल बजाकर दी जाय। घोषणा। मुनादी।

ढिग–क्रि० वि० [सं० दिक्] पास। निकट। संज्ञा स्त्री० १ पास। सामीप्य। २ तट। किनारा। छोर। ३ कपड़े का किनारा। कोर। हाशिया।

ढिठाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० ढीठ] १ गुरुजन के समक्ष व्यवहार की अनुचित स्वच्छंदता। धृष्टता। गुस्ताखी। २ निर्लज्जता। ३ अनुचित साहस।

ढिबरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० डिब्बी] वह डिबिया जिसके मुँह पर बत्ती लगाकर मिट्टी का तेल जलाते हैं। संज्ञा स्त्री० [हिं० ढपना] कसे जानेवाले पेच के सिरे पर का लोहे का छल्ला।

ढिमका–सर्व० [हिं० अमका का अनु०] [स्त्री० ढिमकी] अमुक। फलाँ। फलाना।

ढिलाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० ढीला] १ ढीला होने का भाव। २ शिथिलता। सुस्ती। संज्ञा स्त्री० [हिं० ढीलना] ढीलने की क्रिया या भाव।

ढिलाना–क्रि० स० [हिं० ढीलना का प्र०] १ ढीलने का काम कराना। २ ढीला कराना। *†क्रि० स० ढीला करना।

ढिसरना*†–क्रि० अ० [सं० ध्वसन] १ फिसल पड़ना। सरक पड़ना। २ प्रवृत्त होना। झुकना।

ढींगर†–संज्ञा पु० [सं० डिंगर] १ हट्टा-कट्टा आदमी। २ पति या उपपति।

ढींढा†–संज्ञा पु० [सं० ढुंढि=लंबोदर, गणेश] १ निकला हुआ पेट। २ गर्भ। हमल।

ढीट–संज्ञा स्त्री० [देश०] रेखा। लकीर।

ढीठ–वि० [सं० धृष्ट] १ बड़ों का संकोच या डर न रखनेवाला। धृष्ट। बेअदब। शोख। २ अनुचित साहस करनेवाला। निडर। ३ साहसी। हिम्मतवर।

ढीठता*†–संज्ञा स्त्री० दे० "ढिठाई"।

ढीठ्यौ–संज्ञा पु० दे० "ढीठ"।

ढीम†–संज्ञा पु० [देश०] १ पत्थर का बड़ा टुकड़ा या ढोंका। २ मिट्टी की पिंडी।

ढील–संज्ञा स्त्री० [हिं० ढीला] १ शिथिलता। अतत्परता। सुस्ती। २ बंधन को ढीला करने का भाव। †संज्ञा पु० बालों का कीड़ा। जूँ।

ढीलना–क्रि० स० [हिं० ढीला] १ कसा या तना हुआ न रखना। ढील करना। २ बंधन-मुक्त करना। छोड़ देना। ३ (रस्सी आदि) इस प्रकार छोड़ना जिसमें वह आगे की ओर बढ़ती जाय।

ढीला–वि० [सं० शिथिल] १ जो कसा या तना हुआ न हो। २ जो दृढ़ता से बँधा या लगा हुआ न हो। ३ जो खूब कसकर पकड़े हुए न हो। ४ खुला हुआ। फराख। कुशादा। ५ जो गाढ़ा न हो। बहुत गीला। ६ जो अपने संकल्प पर अड़ा न रहे। ७ धीमा। शांत। नरम। ८ मंद। सुस्त। शिथिल। मुहा०—ढीली आँख = मद भरी चितवन। ९ सुस्त। आलसी।

ढीलापन–संज्ञा पु० [हिं० ढीला+पन(प्रत्य०)] ढीला होने का भाव। शिथिलता।

ढुंढा†–संज्ञा पु० [हिं० ढूँढना] उचक्का। ठग।

ढुंढपाणि*–संज्ञा पु० [सं० दंडपाणि] १ शिव के एक गण। २ दंडपाणि भैरव।

ढुंढवाना–क्रि० स० [हिं० ढूँढना का प्रे०] ढूँढने का काम कराना। तलाश करना।

ढुंढा–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक राक्षसी जो हिरण्यकशिपु की बहिन थी।

ढुंढिराज–संज्ञा पु० [सं०] गणेश।

ढुंढी–संज्ञा स्त्री० [देश०] बाँह। भुजा।

मुहा०—ढुंढियाँ चढ़ाना = मुश्कें बाँधना।

ढुकना–क्रि० अ० [देश०] १. घुसना। प्रवेश करना। २. एकबारगी धावा करना। टूट पड़ना। ३. कोई बात सुनने या देखने के लिये आड़ में छिपना।

ढुनमुनिया† संज्ञा स्त्री० [हिं० ढनमनाना] लुढ़कने की क्रिया या भाव।

ढुरकना†–क्रि० अ० [हिं० ढार] १. फिसलकर गिरना। लुढ़कना। २ झुकना।

ढुरना–क्रि० अ० [हिं० ढार] १. गिरकर बहना। ढुरकना। लुढ़ना। २. कभी इधर कभी उधर होना। डगमगाना। ३. सूत या रस्सी के रूप की वस्तु का इधर-उधर हिलना। लहराना। ४. लुढकना। फिसल पड़ना। ५. प्रवृत्त होना। झुकना। ६. अनुकूल होना। प्रसन्न होना।

ढुरहुरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० ढुरना] १. लुढकने की क्रिया या भाव। २. पगडंडी।

ढुराना–क्रि० स० [हिं० ढुरना] १. गिराकर बहाना। ढुरकाना। ढुलकाना। २. इधर-उधर हिलाना। लहराना। ३. लुढकाना।

ढुर्री–संज्ञा स्त्री० [हिं० ढुरना] पगडंडी।

ढुलकना–क्रि० अ० [हिं० ढाल + कना (प्रत्य०)] ऊपर नीचे चक्कर खाते हुए गिरना। लुढकना।

ढुलकाना–क्रि० स० दे० "लुढ़काना"।

ढुलना–क्रि० अ० [हिं० ढाल] १. गिरकर बहना। लुढकना। २. प्रवृत्त होना। झुकना। ३. प्रसन्न होना। कृपालु होना। ४. इधर से उधर हिलना। लहराना।

ढुलवाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० ढोना] ढोने का काम, भाव या मजदूरी।
संज्ञा स्त्री० [हिं० ढुलना] ढुलाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

ढुलवाना–क्रि० स० [हिं० ढोना का प्रे०] ढोने का काम दूसरे से कराना।

ढुलाना–क्रि० स० [हिं० ढाल] १. गिराकर बहाना। ढरकाना। ढालना। २. नीचे ढालना। गिराना। ३. लुढ़काना। ढँगलाना। ४. प्रवृत्त करना। झुकाना। ५. अनुकूल करना। प्रसन्न करना। कृपालु करना। ६. इधर-उधर डुलाना। ७. चलाना। फिराना। ८. फेरना। पोतना।
क्रि० स० [हिं० ढोना] ढोने का काम कराना।

ढूँढ़–संज्ञा स्त्री० [हिं० ढूँढ़ना] खोज। तलाश।

ढूँढ़ना–क्रि० स० [सं० ढुंढन] खोजना। तलाश करना।

ढूसर–संज्ञा पुं० [देश०] बनियों की एक जाति। भार्गव।

ढूह, ढूहा†–संज्ञा पुं० [सं० स्तूप] १. ढेर। अटाला। २. टीला। भीटा।

ढेंक–संज्ञा स्त्री० [सं० ढेंक] पानी के किनारे रहनेवाली एक चिड़िया।

ढेंकली–संज्ञा स्त्री० [हिं० ढेंक (चिड़िया)] १. सिंचाई के लिये कुएँ से पानी निकालने का एक यंत्र। २. धान कूटने की लकड़ी का एक यंत्र। धन-कुट्टी। ढेंकी। ३. कलाबाजी। कलैया।

ढेंकी–संज्ञा स्त्री० [हिं० ढेंक + एक पक्षी] अनाज कूटने की ढेंकली।

ढेंढ़†–संज्ञा पुं० [देश०] १. कौवा। २. एक नीच जाति। ३. मूर्ख। मूढ़।
संज्ञा पुं० [सं० तुंड] कपास आदि का डोडा। ढोंढ।

ढेंढर–संज्ञा पुं० [हिं० ढेड] आँख के डेले का निकला हुआ विकृत मांस। टेंटर।

ढेपुनी†–संज्ञा स्त्री० [हिं० ढेप] १. पत्ते या फल का वह भाग जो टहनी से लगा रहता है। ढेप। २ दाने की तरह उभरी हुई नोक। टोंठ। ३. कुचाग्र।

ढेबुवा†–संज्ञा पुं० [देश०] पैसा।

ढेर–संज्ञा पुं० [हिं० धरना?] नीचे ऊपर रखी हुई बहुत सी वस्तुओं का ऊपर उठा हुआ समूह। राशि। अटाला। अंबार।
मुहा०—ढेर करना = मार डालना। ढेर हो रहना या जाना = १. गिरकर मर जाना। २. थककर चूर हो जाना।
†वि० बहुत। अधिक। ज्यादा।

ढेरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० ढेर] ढेर। राशि।

ढेलवाँस–संज्ञा स्त्री० [हिं० ढेल + सं० पाश]

रस्सी या यह फंदा जिससे ढेला फक्ते हैं। गोफना।

ढेला–संज्ञा पु० [सं० दल] १ ईंट, मकड़, पत्थर आदि का टुकड़ा। पथरा। २ टुकड़ा। खंड। ३ एक प्रकार का धान।

ढेला चौथ–संज्ञा स्त्री० [हिं० ढेला+चौथ] भादो सुदी चौथ। (लोग इस दिन दूसरा पर ढेले फेंकते हैं)।

ढैया–संज्ञा स्त्री० [हिं० ढाई] १ ढाई सेर तौलने का बटखरा। २ ढाई गुने का पहाड़ा।

ढोंग–संज्ञा पु० [हिं० ढग] ढकोसला। पाखंड।

ढोंगबाजी–संज्ञा स्त्री० [हिं० ढोंग+फा० बाजी] पाखंड। आडंबर।

ढोंगी–वि० [हिं० ढोंग] पाखंडी। ढकोसले-बाज।

ढोंढ़–संज्ञा पु० [सं० तुंड] १ कपास, पोस्ते आदि का डोंडा। २ कली।

ढोंढ़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० ढोंढ़] नाभि।

ढोटा–संज्ञा पु० [सं० दुहितृ=लड़की] [स्त्री० ढोटी] १ पुत्र। बेटा। २ लड़का।

ढोटौना†–संज्ञा पु० दे० "ढोटा"।

ढोना–क्रि० स० [सं० वोढ़] १ बोझ लादकर ले जाना। भार ले चलना। २ उठा ले जाना। ३ निर्वाह करना।

ढोर–संज्ञा पु० [हिं० ढुरना] गाय, बैल, भैंस आदि पशु। चौपाया। मवेशी।

ढोरना*†–क्रि० स० [हिं० ढारना] १ ढरकाना। ढालना। २ लुढ़काना।

ढोरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० ढोरना] १ ढालने या ढरकाने की क्रिया या भाव। २ रट। धुन। लौ। लगन।

ढोल–संज्ञा पु० [सं०] १ एक प्रकार का बाजा जिसके दोनों ओर चमड़ा मढ़ा होता है।

मुहा०—ढोल पीटना या बजाना=चारों ओर कहते या जताते फिरना।

२ कान का परदा।

ढोलक–संज्ञा स्त्री० [सं० ढोल] छोटा ढोल।

ढोलना–संज्ञा पु० [हिं० ढोल] १ ढोलक के आकार का छोटा जंतर। २ ढोल के आकार का बड़ा बेलन जिससे सड़क पीटते हैं।

†क्रि० स० [सं० दोलन] १ ढरकाना। ढालना। २ डुलाना।

ढोलनी–संज्ञा स्त्री० [सं० दोलन] बच्चों का झूला। पालना।

ढोला–संज्ञा पु० [हिं० ढोल] १ एक प्रकार का छोटा कीड़ा जो सड़ी हुई वस्तुओं में पड़ जाता है। २ हद का निशान। ३ पिंड। शरीर। देह। ४ प्यारा। प्रियतम। ५ एक प्रकार का गीत।

ढोलिनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० ढोलिया] ढोल बजानेवाली स्त्री। डफालिन।

ढोलिया–संज्ञा पु० [हिं० ढोल] [स्त्री० ढोलिनी] ढोल बजानेवाला।

ढोली–संज्ञा स्त्री० [हिं० ढोल] २०० पानों की गड्डी।

संज्ञा स्त्री० [हिं० ठठोली] हँसी। ठठोली।

ढोव–संज्ञा पु० [हिं० ढोवना] वह पदार्थ जो मंगल के अवसर पर लोग सरदार या राजा को भेंट करते हैं। डाली। नजर।

ढौंचा–संज्ञा पु० [सं० अर्द्ध+हिं० चार] साढ़े चार का पहाड़ा।

ढौंसना–क्रि० अ० [हिं० धौंस] आनंद-ध्वनि करना।

ढौरी*†–संज्ञा स्त्री० [देश०] रट। धुन।

ण

ण–हिंदी या संस्कृत वर्णमाला का पंद्रहवाँ व्यंजन। इसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है।

ण–संज्ञा पु० [सं०] १ बुद्ध। २ आभूषण।

३. निर्णय। ४. ज्ञान। ५. शिव। ६. णगण—संज्ञा पुं० [सं०] दो मात्राओं का
दान। ७. दे० "णगण"। एक गण।

त

त—संस्कृत या हिंदी वर्णमाला का बत्तीसवाँ व्यंजन वर्ण या १६वाँ और तवर्ग का पहला अक्षर जिसका उच्चारण-स्थान दंत है।

तं—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नाव। २. पुण्य।

तंग—संज्ञा पुं० [फा०] घोड़ों की जीन कसने का तस्मा। कसन।
वि० १. कसा। दृढ़। २. दिक। विकल। हैरान। ३. सिकुड़ा हुआ। संकुचित। ४. चुस्त। छोटा।
मुहा०—तंग आना या होना = घबरा जाना। दुःखी होना। तंग करना = सताना। दुःख देना। हाथ तंग होना = धनहीन होना।

तंगदस्त—वि० [फा०] [संज्ञा तंगदस्ती] १. कंजूस। २. गरीब।

तंगहाल—वि० [फा०] १. निर्धन। गरीब। २. विपद्ग्रस्त।

तंगा—संज्ञा पुं० [देश०] १. एक प्रकार का पेड़। २. अधन्ना। डबल पैसा।

तंगी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. तंग या सँकरे होने का भाव। संकीर्णता। संकोच। २. दुःख। तकलीफ़। ३. निर्धनता। गरीबी। ४. कमी।

तंजेब—संज्ञा स्त्री० [फा०] एक प्रकार की महीन और बढ़िया मलमल।

तंड—संज्ञा पुं० [सं० तांडव] नृत्य। नाच।

तंडव—संज्ञा पुं० दे० "तांडव"।

तंडुल—संज्ञा पुं० [सं०] चावल।

तंत*|—संज्ञा पुं० दे० "तंतु"।
संज्ञा स्त्री० [हिं० तुरत] आतुरता।
संज्ञा पुं० दे० "तत्व"।
संज्ञा पुं० [सं० तंत्र] १. वह बाजा जिसमें बजाने के लिये तार लगे हों। जैसे, सितार या सारंगी। २. क्रिया। ३. तर्क शास्त्र। ४. इच्छा। कामना। ५. दे० "तंत्र"।
वि० जो तौल में ठीक हो।

तंतमंत—संज्ञा पुं० दे० "तंत्रमंत्र"।

तंतरी*|—संज्ञा पुं० [सं० तंत्री] वह जो तारवाले बाजे बजाता हो।

तंतु—संज्ञा पुं० [सं० तन्तु] १. सूत। डोरा। तागा। २. ग्राह। ३. संतान। बाल-बच्चे। ४. विस्तार। फैलाव। ५. यज्ञ की परंपरा। ६. वंश-परंपरा। ७. ताँत। ८. मकड़ी का जाला।

तंतुवादक—संज्ञा पुं० [सं०] बीन आदि तार के बाजे बजानेवाला। तंत्री।

तंतुवाय—संज्ञा पुं० [सं०] कपड़े बुननेवाला। ताँती।

तंत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. तंतु। ताँत। २. सूत। ३. जुलाहा। ४. कपड़ा। वस्त्र। ५. कुटुंब का भरण-पोषण। ६. निश्चित सिद्धांत। ७. प्रमाण। ८. औषध। दवा। ९. झाड़ने फूँकने का मंत्र। १०. कार्य्य। ११. कारण। १२ राजकर्मचारी। १३. राज्य का प्रबंध। १४. सेना। फ़ौज। १५. धन। संपत्ति। १६. अधीनता। परवश्यता। १७. कुल। खानदान। १८. हिंदुओं का उपासना-संबंधी एक शास्त्र जो शिव-प्रणीत माना और गुप्त रखा जाता है।

तंत्रण—संज्ञा पुं० [सं०] शासन या प्रबंध आदि करने का काम।

तंत्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सितार आदि बाजों में लगा हुआ तार। २. गुरुच। ३. शरीर की नस। ४. रस्सी। ५. वह बाजा जिसमें बजाने के लिये तार लगे हों।

तत्र। ६ वीणा।
संज्ञा पु० [सं०] वह जो बाजा बजाता हो।

तंदरा*†–संज्ञा स्त्री० दे० "तंद्रा"।

तंदुरुस्त–वि० [फा०] जिसे कोई रोग या बीमारी न हो। नीरोग। स्वस्थ।

तंदुरुस्ती–संज्ञा स्त्री० [फा०] १ नीरोग होने की अवस्था या भाव। २ स्वास्थ्य।

तंदुल*†–संज्ञा पु० दे० "तंडुल"।

तंदूर–संज्ञा पु० [फा० तनूर] भट्ठी की तरह का रोटी पकाने का मिट्टी का बहुत बड़ा गोल पात्र।

तंदूरी–वि० [हिं० तंदूर] तंदूर में बना हुआ।

तंदेही–संज्ञा स्त्री० [फा० तनदिही] १ परिश्रम। मेहनत। २ प्रयत्न। कोशिश। ३ चेतावनी। ताकीद।

तंद्रा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह अवस्था जिसमें नींद मालूम पड़ने के कारण मनुष्य कुछ कुछ सो जाय। उँघाई। ऊँघ। २ हल्की बेहोशी।

तंद्रालु–वि० [सं०] जिसे तंद्रा आती हो।

तंबा–संज्ञा पु० [फा० तंबान] चौड़ी मोहरी का एक प्रकार का पायजामा।

तंबाकू–संज्ञा पु० दे० "तमाकू"।

तँबिया–संज्ञा पु० [हिं० ताँबा+इया (प्रत्य०)] ताँबे या और किसी चीज का बना हुआ छोटा तसला।

तँबियाना–क्रि० अ० [हिं० ताँबा] १ ताँबे के रंग का होना। २ ताँबे के बरतन में रहने के कारण किसी पदार्थ में ताँबे का स्वाद या गंध आ जाना।

तंबीह–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ नसीहत। शिक्षा। २ ताकीद।

तंबू–संज्ञा पु० [हिं० तनना] कपड़े, टाट आदि का बना हुआ बड़ा घर। खेमा। डेरा। शिविर। शामियाना।

तंबूरची–संज्ञा पु० [फा० तंबूर+ची (प्रत्य०)] तंबूरा बजानेवाला।

तंबूरा–संज्ञा पु० [हिं० तानपूरा] बीन या सितार की तरह का एक बाजा। तानपूरा।

तंबूल*†–संज्ञा पु० दे० "तांबूल"।

तंबोल–संज्ञा पु० [सं० तांबूल] १ दे० "तांबूल"। २ दे० "तमोल"।

तँबोली–संज्ञा पु० [हिं० तंबोल] वह जो पान बेचता हो। बरई।

तंभ, तंभन*–संज्ञा पु० [सं० स्तंभ] शृंगार रस में स्तंभ नामक भाव।

त–संज्ञा पु० [सं०] १ नाव। २ पुण्य। ३ चोर। ४. झूठ। ५ दुम। ६ गोद। ७ म्लेच्छ। ८ गर्भ। ९ रत्न। १० बुद्ध।
*†–क्रि० वि० [सं० तद्] तो।

तअज्जुब–संज्ञा पु० [अ०] आश्चर्य। विस्मय। अचंभा।

तअल्लुक–संज्ञा पु० [अ०] बहुत से मौजों की जमींदारी। बड़ा इलाका।

तअल्लुकदार–संज्ञा पु० [अ०] इलाकेदार। तअल्लुके का मालिक।

तअल्लुकदारी–संज्ञा स्त्री० [अ०] तअल्लुकदार का पद या भाव।

तअल्लुक–संज्ञा पु० [अ०] संबंध।

तअल्लुका–संज्ञा पु० दे० "तअल्लुक"।

तअस्सुब–संज्ञा पु० [अ०] धर्म या जाति-संबंधी पक्षपात।

तइसा†–वि० दे० "वैसा"।

तईं*–प्रत्य० [हिं० तें*] से।
प्रत्य० [प्रा० हुतो] प्रति। को। से।
*अव्य० [सं० तावत्] लिये। वास्ते।

तई–संज्ञा स्त्री० [हिं० तवा का स्त्री०] थाली के आकार की छिछली कड़ाही।

तउ*†–अव्य० १ दे० "तव"। २ दे० "त्यों"।

तऊ*†–अव्य० [हिं० तव+ऊ (प्रत्य०)] तो भी। तथापि। तिस पर भी।

तक–अव्य० [सं० अंत+क] एक विभक्ति जो किसी वस्तु या व्यापार की सीमा अथवा अवधि सूचित करती है। पर्यंत।
संज्ञा स्त्री० दे० "टक"।

तकदमा–संज्ञा पु० [अ० तखमीना] किसी चीज की तैयारी का वह हिसाब जो पहले से तैयार किया जाय। तखमीना। अंदाज।

तकदीर–संज्ञा स्त्री० [अ०] भाग्य। प्रारब्ध।

तक़दीरवर–वि० [अ० तक़दीर + फ़ा० वर] जिसका भाग्य अच्छा हो। भाग्यवान्।
तकन–संज्ञा स्त्री० [हिं० ताकना] ताकने की क्रिया या भाव। देखना। दृष्टि।
तकना*†–क्रि० अ० [हिं० ताकना] १. देखना। निहारना। अवलोकन करना। २. शरण लेना। पनाह लेना।
तकमा†–संज्ञा पुं० १. दे० "तमगा"। २. दे० "तुकमा"।
तकमील–संज्ञा स्त्री० [अ०] पूरा होने की क्रिया या भाव। पूर्णता।
तकरार–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. किसी बात को वार बार कहना। २. हुज्जत। विवाद। झगड़ा। टंटा।
तकरीर–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. बातचीत। २. वक्तृता। भाषण।
तकला–संज्ञा पुं० [सं० तर्कु] [स्त्री० अल्पा० तकली] १. चरखे में लोहे की वह सलाई जिस पर सूत लिपटता जाता है। टेकुआ। २. रस्सी बनाने की टिकुरी।
तकलीफ़–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. कष्ट। क्लेश। दुःख। २. विपत्ति। मुसीबत।
तकल्लुफ़–संज्ञा [अ०] केवल दिखाने के लिये कष्ट उठाकर कोई काम करना। शिष्टाचार।
तकसीम–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. बाँटने की क्रिया या भाव। बँटाई। २. गणित में वह क्रिया जिससे कोई संख्या कई भागों में बाँटी जाय। भाग।
तकाई–संज्ञा स्त्री०[हिं० ताकना + ई (प्रत्य०)] ताकने की क्रिया या भाव।
तक़ाज़ा–संज्ञा पुं० [अ०] १. ऐसी चीज माँगना जिसके पाने का अधिकार हो। तगादा। २. ऐसा काम करने के लिये कहना जिसके लिये वचन मिल चुका हो। ३. उत्तेजना। प्रेरणा।
तकाना–क्रि० स० [हिं० ताकना का प्रे०] दूसरे को ताकने में प्रवृत्त करना। दिखाना।
तकावी–संज्ञा स्त्री० [अ०] वह धन जो गरीब खेतिहरों को बीज खरीदने या कुआँ आदि बनवाने के लिये क़र्ज़ दिया जाय।
तकिया–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. कपड़े का वह थैला जिसमें रुई, पर आदि भरते हैं और जिसे लेटने के समय सिर के नीचे रखते हैं। बालिश। २. पत्थर की वह पटिया आदि जो रोक या सहारे के लिये लगाई जाती है। मुतक्का। ३. विश्राम करने का स्थान। ४. आश्रय। सहारा। आसरा। ५. वह स्थान जहाँ कोई मुसलमान फ़क़ीर रहता हो।
तकिया-कलाम–संज्ञा पुं० दे० "सखुन-तकिया"।
तकुआ–संज्ञा पुं० दे० "तकला"।
तक्र–संज्ञा पुं० [सं०] मट्ठा। छाछ।
तक्ष–संज्ञा पुं० [सं०] रामचन्द्र के भाई भरत का बड़ा पुत्र।
तक्षक–संज्ञा पुं० [सं०] १. पाताल के आठ नागों में से एक जिसने परीक्षित को काटा था। २. आज-कल के विद्वानों के अनुसार भारत में बसनेवाली एक प्राचीन अनार्य जाति। इनका जातीय चिह्न सर्प था। ३. साँप। सर्प। ४. विश्वकर्मा। ५. सूत्रधार। ६. एक संकर जाति।
तक्षण–संज्ञा पुं० [सं०] लकड़ी, पत्थर आदि गढ़कर मूर्तियाँ बनाना।
तक्षशिला–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक बहुत प्राचीन नगरी जो भरत के पुत्र तक्ष की राजधानी थी। हाल में यह नगर रावलपिंडी के पास ज़मीन खोदकर निकाला गया है। जनमेजय ने यहीं सर्प-यज्ञ किया था।
तख़फ़ीफ़–संज्ञा स्त्री० [अ०] कमी।
तख़मीनन्–क्रि० वि० [अ०] अंदाज से।
तख़मीना–संज्ञा पुं० [अ०] अंदाज। अनुमान। अटकल।
तख़्त–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. राजा के बैठने का आसन। सिंहासन। २. तख़्तों की बनी हुई बड़ी चौकी।
तख़्त-ताऊस–संज्ञा पुं० [फ़ा० + अ०] मोर के आकार का एक प्रसिद्ध राजसिंहासन जिसे शाहजहाँ ने बनवाया था।

तख्तनशीन-वि० [फा०] जो राजसिंहासन पर बैठा हो। सिंहासनारूढ़।
तख्तपोश-संज्ञा पुं० [फा०] १ तख्त या चौकी पर बिछाने की चादर। २ चौकी।
तख्तबंदी-संज्ञा स्त्री० [फा०] तख्तों की बनी हुई दीवार।
तख्ता-संज्ञा पुं० [फा० तख्त] १ लकड़ी का लंबा चौड़ा और चौकोर टुकड़ा। बड़ा पटरा। पल्ला।
मुहा०—तख्ता उलटना=बना-बनाया काम बिगाड़ना। तख्ता हो जाना=अकड़ जाना। २ लकड़ी की बड़ी चौकी। तख्त। ३ अरथी। टिकठी। ४ कागज का ताव। ५ बाग की कियारी।
तख्ती-संज्ञा स्त्री० [फा० तख्त] १ छोटा तख्ता। २ काठ की पटरी जिस पर लड़के लिखने का अभ्यास करते हैं। पटिया।
तगड़ा-वि० [हिं० तन+कड़ा] [स्त्री० तगड़ी] १ सबल। बलवान्। मजबूत। २ अच्छा और बड़ा।
तगण-संज्ञा पुं० [सं०] तीन वर्णों का वह समूह जिसमें पहले दो गुरु और तब एक लघु वर्ण होता है। (पिंगल)
तगदमा-दे० "तकदमा"।
तगमा-संज्ञा पुं० दे० "तमगा"।
तगर-संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का पेड़ जिसकी लकड़ी बहुत सुगंधित होती और औषध के काम में आती है।
तगला-संज्ञा पुं० दे० "तकला"।
तगा*†-संज्ञा पुं० दे० "तागा"।
तगाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० तागना] तागने का काम, भाव या मजदूरी।
तगादा-संज्ञा पुं० दे० "तकाजा"।
तगार, तगारी-संज्ञा स्त्री० [देश०] १ उखली गाड़ने का गड्ढा। २ चूना, गारा इत्यादि ढोने का तसला। ३ वह स्थान जहाँ चूना, गारा आदि बनाया जाय।
तगीर*-संज्ञा पुं० [अ० तगय्युर] बदलने की क्रिया या भाव। परिवर्तन।
तगीरी-संज्ञा स्त्री० [हिं० तगीर] परिवर्तन।
तचना†-क्रि० अ० दे० "तपना"।
तचा†-संज्ञा स्त्री० [सं० त्वचा] चमड़ा। खाल।
तचाना-क्रि० स० [हिं० तचना] १ तपाना। तप्त करना। २ संतप्त या दुखी करना।
तच्छिन*-क्रि० वि० [सं० तत्क्षण] उसी समय। तत्काल।
तज-संज्ञा पुं० [सं० त्वच] १ दारचीनी की जाति का मझोले कद का एक सदाबहार पेड़। बाजारों में मिलनेवाला तेजपत्ता इसका पत्ता और तज (लकड़ी) इसकी छाल है। २ इस पेड़ की सुगंधित छाल जो औषध के काम में आती है।
तजकिरा-संज्ञा पुं० [अ०] चर्चा। जिक्र।
तजन*†-संज्ञा पुं० [सं० त्यजन] तजने की क्रिया या भाव। त्याग। परित्याग।
संज्ञा पुं० [सं० तर्जन] कोड़ा। चाबुक।
तजना-क्रि० स० [सं० त्यजन] त्यागना।
तजरबा-संज्ञा पुं० [अ०] १ वह ज्ञान जो परीक्षा द्वारा प्राप्त किया जाय। अनुभव। २ वह परीक्षा जो ज्ञान प्राप्त करने के लिये की जाय।
तजरबाकार-संज्ञा पुं० [अ० तजरबा+फा० कार] जिसने तजरबा किया हो।
तजवीज-संज्ञा स्त्री० [अ०] १ सम्मति। राय। २ फैसला। निर्णय। ३ बंदोबस्त।
तज्ञ-वि० [सं०] १ तत्त्व का जाननेवाला। तत्त्वज्ञ। २ ज्ञानी।
तटंक-संज्ञा पुं० दे० "ताटंक"।
तट-संज्ञा पुं० [सं०] १ क्षेत्र। खेत। २ प्रदेश। ३ तीर। किनारा। कूल।
क्रि० वि० समीप। पास। निकट।
तटका-वि० दे० "टटका"।
तटनी*-सं० स्त्री० [सं० तटिनी] (तट-वाली) नदी। सरिता। दरिया।
तटस्थ-वि० [सं०] १ तट या किनारे पर रहनेवाला। २ निकट रहनेवाला। ३ अलग रहनेवाला। जो किसी का पक्ष ग्रहण न करे। उदासीन। निरपेक्ष।
तटिनी-संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी।

तड़–संज्ञा पुं० [सं० तट] एक ही जाति या समाज में होनेवाला विभाग। पक्ष।

संज्ञा पुं० [अनु०] १. कोई चीज पटकने से उत्पन्न होनेवाला शब्द। २. आमदनी की सूरत। (दलाल)

तड़क–संज्ञा स्त्री० [हिं० तड़कना] १. तड़कने की क्रिया या भाव। २. तड़कने के कारण किसी चीज पर पड़ा हुआ चिह्न।

तड़कना–क्रि० अ० [अनु० तड़] १. 'तड़' शब्द के साथ फटना, फूटना या टूटना। चटकना। कड़कना। २. किसी चीज का सूखने आदि के कारण फट जाना। ३. जोर का शब्द करना। ४. बिगड़ना। झुँझलाना। ५. उछलना। कूदना।

तड़का–संज्ञा पुं० [हिं० तड़कना] १. सवेरा। सुबह। प्रातःकाल। २. छौंक। बघार।

तड़काना–क्रि० स० [हिं० तड़कना का स० रूप] १. इस तरह से तोड़ना जिससे 'तड़' शब्द हो। २. जोर का शब्द उत्पन्न करना।

तड़क्का†–क्रि० वि० दे० "तड़ाका"।

तड़तड़ाना–क्रि० अ० [अनु०] तड़ तड़ शब्द होना।

क्रि० स० तड़ तड़ शब्द उत्पन्न करना।

तड़प–संज्ञा स्त्री० [हिं० तड़पना] १. तड़पने की क्रिया या भाव। २. चमक। भड़क।

तड़पना–क्रि० अ० [अनु०] १. अधिक वेदना के कारण व्याकुल होना। छटपटाना। तलमलाना। २. घोर शब्द करना। गरजना।

तड़पाना–क्रि० स० [हिं० तड़पना का स० रूप] दूसरे को तड़पने में प्रवृत्त करना।

तड़फना–क्रि० अ० दे० "तड़पना"।

तड़बंदी–संज्ञा स्त्री० [हिं० तड़ + फ़ा० बंदी] समाज या बिरादरी में अलग अलग तड़ या विभाग बनना।

तड़ाक–संज्ञा स्त्री० [अनु०] तड़ाके का शब्द।

क्रि० वि० 'तड़' या 'तड़ाक' शब्द के सहित। २. जल्दी से। चटपट। तुरत।

यौ०—तड़ाक पड़ाक = चटपट। तुरंत।

तड़ाका–संज्ञा पुं० [अनु०] "तड़" शब्द।

क्रि० वि० चटपट।

तड़ाग–संज्ञा पुं० [सं०] पद्मादियुक्त सर। तालाब। सरोवर। ताल। पुष्कर।

तड़ातड़–क्रि० वि० [अनु०] इस प्रकार जिसमें तड़ तड़ शब्द हो।

तड़ाना–क्रि० स० [हिं० ताड़ना का प्रे०] किसी दूसरे को ताड़ने में प्रवृत्त करना। भँपाना।

तड़ावा–संज्ञा पुं० [हिं० तड़ाना] १. ऊपरी तड़क भड़क। २. धोखा। छल। (क्व०)

तड़ित–संज्ञा स्त्री० [सं० तड़ित्] बिजली।

तड़िता–संज्ञा स्त्री० दे० "तड़ित"।

तड़ी–संज्ञा स्त्री० [तड़ से अनु०] १. चपत। धौल। २. धोखा। छल। (दलाल) ३. बहाना। हीला।

तत्–संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्रह्म। परमात्मा। २. वायु। हवा।

सर्व० उस। जैसे—तत्काल, तत्क्षण।

तत–संज्ञा पुं० [सं०] १. वायु। २. विस्तार। ३. पिता। ४. पुत्र। ५. वह बाजा जिसमें बजाने के लिये तार लगे हों। जैसे—सारंगी, सितार आदि।

*†–वि० [सं० तप्त] तपा हुआ। गरम।

*†–संज्ञा पुं० दे० "तत्त्व"।

तततथेई–संज्ञा स्त्री० [अनु०] नृत्य का शब्द। नाच के बोल।

ततबाउ*†–संज्ञा पुं० दे० "तंतुवाय"।

ततबीर*†–संज्ञा स्त्री० दे० "तदबीर"।

ततसार*†–संज्ञा स्त्री० [सं० तप्तशाला] आँच देने या तपाने की जगह।

तताई*†–संज्ञा स्त्री० [हिं० तता] गरमी।

ततारना–क्रि० स० [हिं० तता] १. गरम जल से धोना। २. तरेरा देकर धोना।

तति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. श्रेणी। पंक्ति। ताँता। २. समूह। ३. विस्तार।

ततुवाऊ*†–संज्ञा पुं० दे० "तंतुवाय"।

ततैया–संज्ञा स्त्री० [सं० तिक्त] बर्रे। भिड़।

तत्काल–क्रि० वि० [सं०] तुरत। फ़ौरन।

तत्कालीन–वि० [सं०] उस समय का।

तत्क्षण–क्रि० वि० [स०] उसी समय। तुरत। फौरन।
तत*†–संज्ञा पु० दे० "तत्त्व"।
तत्ता*–वि० [स० तप्त] गरम। उष्ण।
तत्तो थंबो–संज्ञा पु० [हिं० तत्ता = गरम + थामना] १ दम-दिलासा। बहलावा। २ लड़ते हुए आदमियों को समझाकर शांत करना। बीच-बचाव।
तत्त्व–संज्ञा पु० [स०] १ वास्तविक स्थिति। यथार्थता। असलियत। २ जगत् का मूल कारण। सांख्य में २५ तत्त्व माने गये हैं। ३ पंचभूत। पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश। ४ परमात्मा। ब्रह्म। ५ सार वस्तु। साराश।
तत्त्वज्ञ–संज्ञा पु० [स०] १ तत्त्वज्ञानी। ब्रह्मज्ञानी। २ दार्शनिक।
तत्त्वज्ञान–संज्ञा पु० [स०] ब्रह्म, आत्मा और सृष्टि आदि के संबंध का यथार्थ ज्ञान। ब्रह्म-ज्ञान।
तत्त्वज्ञानी–संज्ञा पु० दे० "तत्त्वज्ञ"।
तत्त्वता–संज्ञा स्त्री० [स०] १ तत्त्व होने का भाव या गुण। २ यथार्थता।
तत्त्वदर्शी–संज्ञा पु० दे० "तत्त्वज्ञ"।
तत्त्वदृष्टि–संज्ञा स्त्री० [स०] ज्ञानचक्षु। दिव्य-दृष्टि।
तत्त्ववाद–संज्ञा पुं० [स०] दर्शनशास्त्र-संबंधी विचार।
तत्त्ववादी–संज्ञा पु० [स०] १ तत्त्ववाद का ज्ञाता और समर्थक। २ यथार्थ और स्पष्ट बात करनेवाला।
तत्त्वविद्–संज्ञा पु० [स०] तत्त्ववेत्ता।
तत्त्वविद्या–संज्ञा स्त्री० [स०] दर्शनशास्त्र।
तत्त्ववेत्ता–संज्ञा पुं० [स०] १ तत्त्वज्ञ। २ दार्शनिक।
तत्त्वशास्त्र–संज्ञा पु० दे० "दर्शनशास्त्र"।
तत्त्वावधान–संज्ञा पु० [स०] जाँच-पड़ताल। देख-रेख।
तत्थ†–वि० [स० तत्त्व] मुख्य। प्रधान। संज्ञा पु० १ शक्ति। बल। २ तत्त्व।
तत्पर–वि० [स०] [संज्ञा तत्परता] १ उद्यत। मुस्तैद। सन्नद्ध। २ निपुण। ३ चतुर। होशियार।
तत्परता–संज्ञा स्त्री० [स०] १ सन्नद्धता। मुस्तैदी। २ दक्षता। निपुणता। ३ होशियारी।
तत्पुरुष–संज्ञा पु० [स०] १ ईश्वर। परमेश्वर। २ एक रुद्र का नाम। ३ एक प्रकार का समास जिसमें पहले पद में कर्त्ता कारक की विभक्ति को छोड़कर दूसरे कारकों की विभक्ति लुप्त हो और पिछले पद का अर्थ प्रधान हो। जैसे—जलचर।
तत्र–क्रि० वि० [स०] उस जगह। वहाँ।
तत्रभवान्–संज्ञा पु० [स०] माननीय। पूज्य।
तत्रापि–अव्य० [स०] तथापि।
तत्सम–संज्ञा पु० [स०] संस्कृत का वह शब्द जिसका व्यवहार भाषा में उसके शुद्ध रूप में या ज्यों का त्यों हो।
तथा–अव्य० [स०] १ और। वा। २ इसी तरह। ऐसे ही।
यौ०—तथास्तु = ऐसा ही हो। एवमस्तु।
तथागत–संज्ञा पु० [स०] गौतम बुद्ध।
तथापि–अव्य० [स०] तो भी। तब भी।
तथैव–अव्य० [स०] वैसा ही। उसी प्रकार।
तथ्य–वि० [स०] सचाई। यथार्थता।
तद्–वि० [स०] वह। (यौगिक में)
†क्रि० वि० [स० तदा] उस समय। तब।
तदंतर, तदनंतर–क्रि० वि० [स०] उसके पीछे। उसके बाद। उसके उपरांत।
तदनुरूप–वि० [स०] उसी के रूप का। उसी के समान।
तदनुसार–वि० [स०] उसके मुताबिक। उसके अनुकूल।
तदपि–अव्य० [स०] तो भी। तथापि।
तदबीर–संज्ञा स्त्री० [अ०] अभीष्ट सिद्ध करने का साधन। उपाय। युक्ति। तरकीब।
तदा–क्रि० वि० [स०] उस समय। तब।
तदाकार–वि० [स०] १ वैसा ही। उसी आकार का। तद्रूप। २ तन्मय।
तदारक–संज्ञा पु० [अ०] १ भाग हुए

अपराधी आदि की खोज या किसी दुर्घटना के संबंध में जाँच। २. दुर्घटना को रोकने के लिये पहले से किया हुआ प्रबंध। पेश-बंदी। ३. सजा। दंड।

तदीय–सर्व० [सं०] उससे संबंध रखने-वाला। उसका।

तदुपरांत–क्रि० वि० [सं०] उसके पीछे। उसके बाद।

तद्गत–वि० [सं०] १. उससे संबंध रखने-वाला। २. उसके अंतर्गत। उसमें व्याप्त।

तद्गुण–संज्ञा पुं० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें किसी एक वस्तु का अपना गुण त्याग करके समीपवर्ती किसी दूसरे उत्तम पदार्थ का गुण ग्रहण कर लेना वर्णित होता है।

तद्धित–संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण में एक प्रकार का प्रत्यय जिसे संज्ञा के अंत में लगाकर शब्द बनाते हैं। जैसे—'मित्र' से 'मित्रता'।

तद्भव–संज्ञा पुं० [सं०] संस्कृत का वह शब्द जिसका रूप भाषा में कुछ परिवर्तित हो गया हो। संस्कृत के शब्द का अपभ्रंश रूप। जैसे—'अश्रु' का 'आँसू'।

तद्यपि–अव्य० [सं०] तथापि। तो भी।

तद्रूप–वि० [सं०] समान। सदृश।

तद्रूपता–संज्ञा स्त्री० [सं०] सादृश्य। समानता।

तद्वत्–वि० [सं०] उसी के जैसा। उसके समान। ज्यों का त्यों।

तन–संज्ञा पुं०[सं०तनु] शरीर। देह। गात। मुहा०—तन को लगना = १. हृदय पर प्रभाव पड़ना। जी में बैठना। २. (खाद्य पदार्थ का) शरीर को पुष्ट करना। तन देना = ध्यान देना। मन लगाना। तन मन मारना = इंद्रियों को वश में रखना। क्रि० वि० तरफ। ओर। *वि० दे० "तनिक"।

तनकीह–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. जाँच। तहकीकात। २. अदालत का किसी मुकदमे की उन बातों का पता लगाना जिनका फ़ैसला होना जरूरी हो।

तनख़ाह–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० तनख़्वाह] वेतन। तलब।

तनगना†*–क्रि० अ० दे० "तिनकना"।

तनज़ेब–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] एक प्रकार की बहुत महीन और बढ़िया मलमल।

तनज्जुल–वि० [अ०] उन्नत का उलटा। अवनत। उतारा या घटाया हुआ।

तनज्जुली–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] अवनति।

तनतनाना–क्रि० अ० [अ० तनूतन:] १. शान दिखाना। २. क्रोध करना।

तनत्राण–संज्ञा पुं० दे० "तनुत्राण"।

तनधर–संज्ञा पुं० दे० "तनुधारी"।

तनना–क्रि० अ० [सं० तन या तनु] १. खिंचाव या खुश्की आदि के कारण किसी पदार्थ का विस्तार बढ़ना। २. आकर्षित या प्रवृत्त होना। ३. अकड़कर सीधा खड़ा होना। ४. कुछ अभिमानपूर्वक रुष्ट या उदासीन होना। ऐंठना।

तनपात–संज्ञा पुं० दे० "तनुपात"।

तनमय–वि० दे० "तन्मय"।

तनय–संज्ञा पुं० [सं०] बेटा। पुत्र।

तनया–संज्ञा स्त्री० [सं०] बेटी। पुत्री।

तनराग–संज्ञा पुं० दे० "तनुराग"।

तनरुह*†–संज्ञा पुं० दे० "तनूरुह"।

तनवाना–क्रि० स० [हिं० तानना का प्रे०] तानने का काम दूसरे से कराना। तनाना।

तनसुख–संज्ञा पुं० [हिं० तन + सुख] एक प्रकार का बढ़िया फूलदार कपड़ा।

तनहा–वि० [फ़ा०] जिसके संग कोई न हो। अकेला। एकाकी। क्रि० वि० बिना किसी साथी के। अकेले।

तनहाई–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. तनहा होने की दशा या भाव। अकेलापन। २. एकांत।

तना–संज्ञा पुं० [फ़ा०] वृक्ष का ज़मीन से ऊपर निकला हुआ वह भाग जिसमें डालियाँ न निकली हों। पेड़ का धड़। मदंड। क्रि० वि० [हिं० तन] ओर। तरफ।

तनाकु*†–क्रि० वि० दे० "तनिक"।

तनाज़ा–संज्ञा पुं० [अ०] १. बखेड़ा।

झगड़ा। २ शत्रुता। वैर।

तनाना–क्रि० स० दे० "तनवाना"।

तनाव†–संज्ञा स्त्री० [अ० तिनाव] रस्से की रस्सी।

तनाव–संज्ञा पु० [हिं० तनना] १ तनने का भाव या क्रिया। २ रस्सी। डोरी।

तनि, तनिक–वि० [स० तनु=अल्प] १ थोड़ा। कम। २ छोटा।
क्रि० वि० जरा। टुक।

तनिया†–संज्ञा स्त्री०[हिं०तनी] १ लँगोटी। कौपीन। २ कछनी। जाघिया। ३ चोली।

तनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० तानना] १ डोरी की तरह बटा हुआ वह कपड़ा जो अँगरखे आदि में उसका पल्ला बाँधने के लिये लगाया जाता है। बंद। बंधन। २ दे० "तनिया"।
†क्रि० वि० दे० "तनिक"।

तनु–वि० [स०] १ दुबला-पतला। २ थोड़ा। कम। ३ कोमल। नाजुक। ४ सुंदर। बढ़िया।
संज्ञा स्त्री० [स०] १ शरीर। देह। बदन। २ चमड़ा। खाल। ३ स्त्री। औरत।

तनुक*†–क्रि० वि० दे० "तनिक"।
संज्ञा पु० दे० "तनु"।

तनुज–संज्ञा पु० [स०] बेटा। पुत्र।

तनुजा–संज्ञा स्त्री० [स०] लड़की। बेटी।

तनुता–संज्ञा स्त्री० [स०] १ लघुता। छोटाई। २ दुर्बलता। दुबलापन।

तनुत्राण–संज्ञा पु० [स०] कवच। बखतर।

तनुधारी–वि० [स०] शरीर धारण करने-वाला। देहधारी।

तनुमध्या–संज्ञा स्त्री० [स०] चौरस नाम का वर्णवृत्त।

तनुराग–संज्ञा पु० [स०] केसर, चंदन आदि मिला सुगंधित उबटन। बटना।

तनूज*–संज्ञा पु० दे० "तनुज"।

तनेना–वि० [हिं० तनना+एना (प्रत्य०)] [स्त्री० तनेनी] १ खिंचा हुआ। टेढ़ा। तिरछा। २ क्रुद्ध। नाराज।

तनै*–संज्ञा पु० दे० "तनय"।

तनैया*†–संज्ञा स्त्री० [स० तनया] बेटी।

तनोज*–संज्ञा पु० [स० तनुज] १. रोम। लोम। रोआँ। २ लड़का। बेटा।

तनोरुह*–संज्ञा पु० दे० "तनूरुह"।

तन्नाना–क्रि० अ० [हिं० तनना] अकड़ना। ऐंठना। अकड़ दिखाना।

तन्नी–संज्ञा स्त्री० [स० तनिका] वह रस्सी जिसमें तराजू के पल्ले लटकते हैं। जोती।
संज्ञा स्त्री० दे० "तरनी"।

तन्मय–वि० [स०] जो किसी काम में बहुत मग्न हो। लवलीन। लगा हुआ। दत्तचित्त।

तन्मयता–संज्ञा स्त्री० [स०] लिप्तता। एकाग्रता। लीनता। लगन।

तन्मात्र–संज्ञा पु० [स०] सांख्य के अनुसार पंचभूतों का आदि, अमिश्र और सूक्ष्म रूप। ये संख्या में पाँच हैं—शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध।

तन्मात्रा–संज्ञा स्त्री० दे० "तन्मात्र"।

तन्वी-संज्ञा स्त्री० [स०] एक वर्णवृत्त।
वि० दुबले या कोमल अंगोंवाली।

तप–संज्ञा पु०[स० तपस] १ शरीर को कष्ट देनेवाले वे कार्य्य जो चित्त को विषयों से निवृत्त करने के लिये किये जायँ। तपस्या। २ शरीर या इंद्रिय को वश में रखने का धर्म्म। ३ नियम। ४ अग्नि।
संज्ञा पु० [स०] १ ताप। गरमी। २ ग्रीष्म ऋतु। ३ बुखार। ज्वर।

तपकना*–क्रि० अ० [हिं० टपकना] १. धड़कना। उछलना। २ दे० "टपकना"।

तपती–संज्ञा स्त्री० [स०] सूर्य की कन्या।

तपन–संज्ञा पु० [स०] १ तपने की क्रिया या भाव। ताप। जलन। आँच। दाह। २ सूर्य। रवि। ३ सूर्यकांत मणि। ४ ग्रीष्म। गरमी। ५ एक प्रकार की अग्नि। ६ धूप। ७ वह क्रिया या हाव-भाव आदि जो नायक के वियोग में नायिका करे या दिखलावे।
संज्ञा स्त्री० [हिं० तपना] ताप। गरमी।

तपना–क्रि० अ० [स० तपन] १ अधिक गर्मी आदि के कारण खूब गरम होना।

तप्त होना। २. संतप्त होना। कष्ट सहना। ३. गरमी या ताप फैलाना। ४. प्रभुत्व या प्रताप दिखलाना। आतंक फैलाना। ५. तपस्या करना। तप करना। ६. बुरे कामों में अंधाधुंध खर्च करना।
तपनि*†–संज्ञा स्त्री० दे० "तपन"।
तपनी†–संज्ञा स्त्री० [हिं० तपना] १. वह स्थान जहाँ बैठकर आग तापते हों। कौड़ा। अलाव। २. तपस्या। तप।
तपश्चर्य्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] तपस्या।
तपसा–संज्ञा स्त्री०[सं०तपस्या] १.तपस्या। तप। २. तापती नदी।
तपसाली–संज्ञा पुं०[सं०तपःशालिन्] तपस्वी।
तपसी–संज्ञा पुं० [सं० तपस्वी] तपस्वी।
तपस्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] तप। व्रतचर्या।
तपस्विता–संज्ञा स्त्री० [सं०] तपस्वी होने की अवस्था या भाव।
तपस्विनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. तपस्या करनेवाली स्त्री। २. तपस्वी की स्त्री। ३. पतिव्रता या सती स्त्री।
तपस्वी–संज्ञा पुं० [सं० तपस्विन्] [स्त्री० तपस्विनी] १. वह जो तप करता हो। तपस्या करनेवाला। २. दीन। ३. दया करने योग्य।
तपा–संज्ञा पुं० [हिं० तप] तपस्वी।
तपाक–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. आवेश। जोश। २. वेग। तेज़ी।
तपाना–क्रि० स० [हिं० तपना] १. गरम करना। तप्त करना। २. दुःख देना।
तपावंत–संज्ञा पुं० [हिं० तप+वत (प्रत्य०)] वह जो तपस्या करता हो। तपस्वी।
तपित*†–वि० [सं०] तपा हुआ। गरम।
तपिश–संज्ञा स्त्री० [फा०] गरमी। तपन।
तपी–संज्ञा पुं० [हिं० तप] तपस्वी।
तपेदिक़–संज्ञा पुं० [फा० तप + अ० दिक़] राजयक्ष्मा। क्षयी रोग।
तपोधन–संज्ञा पुं० [सं०] बड़ा तपस्वी।
तपोबल–संज्ञा पुं० [सं०] तप का प्रभाव या शक्ति।
तपोभूमि–संज्ञा स्त्री० [सं०] तप करने का स्थान। तपोवन।
तपोलोक–संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार ऊपर के सात लोकों में से छठा लोक।
तपोवन–संज्ञा पुं० [सं०] तपस्वियों के रहने या तपस्या करने के योग्य वन।
तपोवृद्ध–वि० [सं०] जो तपस्या द्वारा श्रेष्ठ हो।
तप्त–वि० [सं०] १. तपाया या तपा हुआ। गरम। उष्ण। २. दुःखित। पीड़ित।
तप्तकुंड–संज्ञा पुं० [सं०] वह प्राकृतिक जल-धारा जिसका पानी गरम हो।
तप्तकृच्छ्र–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का व्रत जो प्रायश्चित्त-स्वरूप किया जाता है।
तप्तमाष–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की परीक्षा जिससे अपराध आदि के संबंध में किसी के कथन की सत्यता जानी जाती थी।
तप्तमुद्रा–संज्ञा स्त्री० [सं०] शंख, चक्रादि के छापे जो तपाकर वैष्णव लोग अपने अंगों पर दाग लेते हैं।
तप्प*†–संज्ञा पुं० दे० "तप"।
तफ़रीह–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. खुशी। प्रसन्नता। २. दिल्लगी। हँसी। ठट्ठा। ३. हवाखोरी। सैर।
तफ़सील–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. विस्तृत वर्णन। २. टीका। तशरीह। ३. कैफ़ियत। ब्योरा।
तफ़ावत–संज्ञा पुं० [अ०] १. अंतर। फ़र्क़। २. दूरी। फ़ासिला।
तब–अव्य० [सं० तदा] १. उस समय। उस वक़्त। २. इस कारण। इस वजह से।
तबक़–संज्ञा पुं० [अ०] १. आकाश के वे खंड जो पृथ्वी के ऊपर और नीचे माने जाते हैं। लोक। तल। २. परत। तह। ३. चाँदी, सोने के पत्तरों को पीटकर कागज़ की तरह बनाया हुआ पतला वरक़। ४. चौड़ी और छिछली थाली।
तबक़गर–संज्ञा पुं० [अ० तबक़ + फा० गर] सोने, चाँदी के तबक़ बनानेवाला। तबक़िया।
तबक़ा–संज्ञा पुं० [अ० तबक़ः] १. खंड। विभाग। २. तह। परत। ३. लोक। तल।

४ आदमियों का गरोह।
तबक्रिया-संज्ञा पु० दे० "तबक्कार"।
तबदील-वि० [अ०] [संज्ञा तबदीली] जो बदला गया हो। परिवर्तित।
तबर-संज्ञा पु० [फा०] १ कुल्हाड़ा। २ कुल्हाड़ी की तरह का एक हथियार।
तबल-संज्ञा पु० [फा०] १ बड़ा ढोल। २ नगाड़ा। डंका।
तबलची-संज्ञा पु० [अ० तबल] वह जो तबला बजाता हो। तबलिया।
तबला-संज्ञा पु० [अ० तबल] ताल देने का एक प्रसिद्ध बाजा। यह बाजा इसी तरह के और दूसरे बाजों के साथ बजाया जाता है जिसे "बायाँ", 'ठेका' या "डुग्गी" कहते हैं।
तबलिया-संज्ञा पु० दे० "तबलची"।
तबाशीर-संज्ञा पु० [स० तवक्षीर] वंसलोचन।
तबाह-वि० [फा०] [संज्ञा तबाही] जो बिलकुल खराब हो गया हो। नष्ट। बरबाद।
तबाही-संज्ञा स्त्री० [फा०] नाश। बरबादी।
तबीअत-संज्ञा स्त्री० [अ०] १ चित्त। मन। जी।
मुहा०—(किसी पर) तबीअत आना = (किसी पर) प्रेम होना। आशिक होना। तबीअत फड़क उठना=चित्त का उत्साहपूर्ण और प्रसन्न हो जाना। तबीअत लगना = १ मन में अनुराग उत्पन्न होना। २ ध्यान लगा रहना।
२ बुद्धि। समझ। ज्ञान।
तबीअतदार-वि० [अ० तबीअत+फा० दार] १ समझदार। २ भावुक। रसिक।
तबीब-संज्ञा पु० [अ०] वैद्य। हकीम।
तभी-अव्य० [हिं० तब+ही] १ उसी समय। उसी वक्त। उसी घड़ी। २ इसी कारण। इसी वजह से।
तमचा-संज्ञा पु० [फा०] १ छोटी बंदूक। पिस्तौल। २ वह लंबा पत्थर जो दरवाजे की बगल में लगाया जाता है।
तम-संज्ञा पु० [स० तमस्] १ अंधकार। अँधेरा। २ राहु। ३ बराह। सूअर। ४ पाप। ५ क्रोध। ६ अज्ञान। ७ कालिख। कालिमा। ८ नरक। ९ मोह। १० सांख्य में प्रकृति का तीसरा गुण जिससे काम, क्रोध और हिंसा आदि होते हैं।
तमक-संज्ञा पु० [हिं० तमकना] १ जोश। उद्वेग। २ तेजी। तीव्रता। ३ क्रोध।
तमकना-क्रि० अ० [अनु०] १ क्रोध का आवेश दिखलाना। २ दे० "तमतमाना"।
तमगा-संज्ञा पु० [तु०] पदक।
तमचर-संज्ञा पु० [स० तमीचर] १ राक्षस। निशाचर। २ उल्लू।
तमचुर*†-संज्ञा पु० [स० ताम्रचूड़] मुरगा। कुक्कुट।
तमचोर*†-संज्ञा पु० दे० "तमचुर"।
तमतमाना-क्रि० अ० [स० ताम्र] धूप या क्रोध आदि के कारण चेहरा लाल होना।
तमता-संज्ञा स्त्री० [स०] १ तम का भाव। २ अँधेरा। अंधकार।
तमस-संज्ञा पु० [स०] १ अंधकार। २ अज्ञान का अंधकार। ३ पाप। ४ तमसा नदी। टौंस।
तमसा-संज्ञा स्त्री० [स०] टौंस नदी।
तमस्सुक-संज्ञा पु० [अ०] वह कागज जो ऋण लेनेवाला ऋण के प्रमाण-स्वरूप लिखकर महाजन को देता है। दस्तावेज।
तमहीद-संज्ञा स्त्री० [अ०] भूमिका।
तमा-संज्ञा पु० [स० तमस्] राहु।
संज्ञा स्त्री० रात। रात्रि। रजनी।
*संज्ञा स्त्री० [अ० तमअ] लोभ।
तमाकू-संज्ञा पु० [पुर्त० टुबैको] १ एक प्रसिद्ध पौधा जिसके पत्ते अनेक रूपों में काम में लाए जाते हैं। २ इस पौधे का पत्ता जिसका व्यवहार लोग अनेक प्रकार से नशे के लिये करते हैं। सुरती। ३ इन पत्तों से तैयार की हुई एक प्रकार की गीली पिंडी जिसे चिलम पर जलाकर मुँह से धुआँ खींचते हैं।
तमाखू-संज्ञा पु० दे० "तमाकू"।
तमाचा-संज्ञा पु० [फा० तबानच] हथेली और उँगलियों से गाल पर किया हुआ

प्रहार। थप्पड़। झापड़।

तमादी-संज्ञा स्त्री० [अ०] किसी बात की मुद्दत या मियाद गुज़र जाना।

तमाम-वि० [अ०] १. पूरा। संपूर्ण। कुल। २. समाप्त। खतम।

तमामी-संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] एक प्रकार का देशी रेशमी कपड़ा।

तमारि-संज्ञा पुं० [हिं० तम+अरि] सूर्य। संज्ञा स्त्री० दे० "तँवार"।

तमाल-संज्ञा पुं० [सं०] १. एक बहुत ऊँचा सुंदर सदाबहार वृक्ष। २. तेजपत्ता। ३. काले खैर का वृक्ष। ४. वरुण वृक्ष। ५. एक प्रकार की तलवार।

तमाशबीन-संज्ञा पुं० [अ० तमाशः+फ़ा० बीन] १. तमाशा देखनेवाला। २. वेश्या-गामी। ऐयाश।

तमाशा-संज्ञा पुं० [अ०] १. वह दृश्य जिसके देखने से मनोरंजन हो। चित्त को प्रसन्न करनेवाला दृश्य। २. अद्भुत व्यापार। अनोखी बात।

तमिस्र-संज्ञा पुं० [सं०] १. अंधकार। अँधेरा। २. क्रोध। गुस्सा।

तमी-संज्ञा स्त्री० [सं०] रात।

तमीचर-संज्ञा पुं० [सं०] राक्षस।

तमीज़-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. भले और बुरे को पहचानने की शक्ति। विवेक। २. पहचान। ३. ज्ञान। बुद्धि। ४. अदब। कायदा।

तमीश-संज्ञा पुं० [सं० तमी+ईश] चंद्रमा।

तमोगुण-संज्ञा पुं० [सं०] प्रकृति के तीन भावों में से एक जो भारी और रोकनेवाला तथा निकृष्ट माना गया है। निकृष्ट कर्म इसी के कारण होते हैं।

तमोगुणी-वि० [सं०] जिसकी वृत्ति में तमोगुण हो। अधम वृत्तिवाला।

तमोघ्न-संज्ञा पुं० [सं०] १. अग्नि। २. चंद्रमा। ३. सूर्य। ४. बुद्ध। ५. विष्णु। ६. शिव। ७. ज्ञान। ८. दीपक। दीआ। वि० जिससे अँधेरा दूर हो।

तमोमय-वि० [सं०] १. तमोगुणयुक्त। २. अज्ञानी। ३. क्रोधी।

तमोर*†-संज्ञा पुं० [सं० तांबूल] पान।

तमोरी*†-संज्ञा पुं० दे० "तँबोली"।

तमोल*†-संज्ञा पुं० [सं० तांबूल] १. पान का बीड़ा। २. दे० "तंबोल"।

तमोली-संज्ञा पुं० दे० "तँबोली"।

तमोहर-संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा। २. सूर्य। ३. अग्नि। आग। ४. ज्ञान। वि० [सं०] १. अंधकार दूर करनेवाला। २. अज्ञान दूर करनेवाला।

तय-वि० [अ०] १. पूरा किया हुआ। निबटाया हुआ। समाप्त। २. निश्चित। ठहराया हुआ। मुकर्रर। ३. निबटाया हुआ। निर्णीत। फ़ैसल।

तयना*†-क्रि० अ० दे० "तपना"।

तयार‡*-वि० दे० "तैयार"।

तरंग-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पानी की लहर। हिलोर। मौज। २. संगीत में स्वरों का चढ़ाव-उतार। स्वरलहरी। ३. चित्त की उमंग। मन की मौज।

तरंगवती-संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी।

तरंगिणी-संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी। वि० स्त्री० तरंगवाली।

तरंगित-वि० [सं०] हिलोर मारता या लहराता हुआ। नीचे ऊपर उठता हुआ।

तरंगी-वि० [सं० तरंगिन्] [स्त्री० तरंगिणी] १. तरंग-युक्त। जिसमें लहर हो। २. मनमौजी।

तर-वि० [फ़ा०] १. भीगा हुआ। आर्द्र। गीला। २. शीतल। ठंढा। ३. जो सूखा न हो। हरा। ४. मालदार।

†क्रि० वि० [सं० तल] तले। नीचे।

प्रत्य० [सं०] एक प्रत्यय जो गुणवाचक शब्दों में लगकर दूसरे की अपेक्षा आधिक्य (गुण में) सूचित करता है। जैसे—अधिकतर, श्रेष्ठतर।

तरई‡-संज्ञा स्त्री० [सं० तारा] नक्षत्र।

तरक-संज्ञा स्त्री० [हिं० तड़कना] दे० "तड़क" संज्ञा पुं० [सं० तर्क] १. सोच-विचार। उधेड़-बुन। ऊहापोह। २. सुंदर उक्ति।

चतुराई का पचा। भोज की घात।
संज्ञा स्त्री० [सं० तर=पर ?] यह शब्द जो पृष्ठ समाप्त होने पर उसके नीचे किनारे की ओर आगे के पृष्ठ के आरंभ का शब्द सूचित करने के लिये लिखा जाता है।
तरकना[*]-क्रि० अ० दे० 'तड़कना"।
क्रि० अ० [सं० तर्क] तर्क करना। सोच-विचार करना।
क्रि० अ० [अनु०] उछलना। कूदना।
तरकश-संज्ञा पु० [फ़ा०] तीर रखने का चोगा। भाथा। तूणीर।
तरकशी-संज्ञा स्त्री० [फ़ा० तरकश] छोटा तरकस। तूणीर।
तरका-संज्ञा पु० [अ०] वह जायदाद जो किसी मरे हुए आदमी के वारिस को मिले।
तरकारी-संज्ञा स्त्री० [फ़ा०तर = सब्ज़ी + कारी] १ वह पौधा जिसकी पत्ती, डंठल, फल आदि पकाकर खाने के काम आते हैं। भाजी। सब्ज़ी। २ खाने के लिये पकाया हुआ फल फल, पत्ता आदि। शाक। भाजी। ३ खाने योग्य मांस। (पू०)
तरकी-संज्ञा स्त्री० [सं० ताडकी] कान में पहनने का फूल के आकार का एक गहना।
तरकीब-संज्ञा स्त्री० [अ०] १ मिलान। २ बनावट। रचना। ३ युक्ति। उपाय। ढंग। ढब। ४ रचना प्रणाली।
तरकुली-संज्ञा स्त्री० दे० "तरकी"।
तरक्की-संज्ञा स्त्री० [अ०] वृद्धि। उन्नति।
तरखा[†]-संज्ञा पु० [सं० तरंग] जल का तेज़ बहाव। तीव्र प्रवाह।
तरखान-संज्ञा पु० [सं० तक्षण] बढ़ई।
तरछाना[*][†]-क्रि० अ० [हिं०तिरछा] तिरछी आँख से इशारा करना। इंगित करना।
तरजना-क्रि० अ० [सं० तर्जन] १ ताड़न करना। डाँटना। डपटना। २ भला-बुरा कहना। बिगड़ना।
तरजनी-संज्ञा स्त्री० दे० "तर्जनी"।
संज्ञा स्त्री० [सं० तर्जन] भय। डर।
तरजुमा-संज्ञा पु० [अ०] अनुवाद। भाषांतर। उल्था।

तरणि-संज्ञा पु० [सं०] १ नदी आदि पार करना। २ निस्तार। उद्धार।
संज्ञा स्त्री० दे० "तरणी"।
तरणिजा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सूर्य की कन्या, यमुना। २ एक वर्ण-वृत्त।
तरणितनूजा-संज्ञा स्त्री० [सं०] सूर्य की पुत्री, यमुना।
तरणिसुत-संज्ञा पु० [सं०] १ सूर्य का पुत्र। २ यम। ३ शनि। ४ कर्ण।
तरणी-संज्ञा स्त्री० [सं०] नौका। नाव।
तरतराना[*]-क्रि० अ० [अनु०] तड़ तड़ शब्द करना। तड़तड़ाना।
तरतीब-संज्ञा स्त्री० [अ०] वस्तुओं का अपने ठीक स्थानों पर लगाया जाना। क्रम। सिलसिला।
तरदीद-संज्ञा स्त्री० [अ०] १ काटने या रद करने की क्रिया। मसूखी। २ खंडन। प्रत्युत्तर।
तरद्दुद-संज्ञा पु० [अ०] सोच। फिक्र। अंदेशा। चिंता। खटका।
तरन[*]-संज्ञा पु० दे० 'तरण"।
संज्ञा पु दे० "तरौना"।
तरनतार-संज्ञा पु० [सं० तरण] निस्तार। मोक्ष। मुक्ति।
तरनतारन-संज्ञा पु० [सं०तरण हिं०+तरना] १ उद्धार। निस्तार। मोक्ष। २ भव-सागर से पार करनेवाला।
तरना-क्रि० स० [सं० तरण] पार करना।
क्रि०अ० मुक्त होना। सद्गति प्राप्त करना।
[*]क्रि० अ० दे० 'तलना'।
तरनि-संज्ञा स्त्री० दे० "तरणि"।
तरनी-संज्ञा स्त्री० [सं० तरणि] १ नाव। नौका। २ मिठाई का थाल या खाचा रखने का छोटा मोढ़ा। तन्नी।
तरपत-संज्ञा पु० [सं० तृप्ति] १ सुबीता। २ आराम।
तरपना-क्रि० अ० दे० "तड़पना"।
तरपर-क्रि० वि० [हिं० तर-पर] १ नीचे ऊपर। २ एक के पीछे दूसरा।
तरफ-संज्ञा स्त्री० [अ०] १ ओर। दिशा।

अलंग। २. किनारा। पार्श्व। बगल।
३. पक्ष। पासदारी।
तरफ़दार-वि० [अ० तरफ़+फ़ा० दार] [संज्ञा तरफ़दारी] पक्ष में रहनेवाला। पक्ष-पाती। हिमायती।
तरफराना-क्रि० अ० दे० "तड़फड़ाना"।
तर-बतर-वि० [फ़ा०] भीगा हुआ। आर्द्र।
तरबूज़-संज्ञा पुं० [फ़ा० तर्बुज] १. एक प्रकार की बेल। २. इस बेल के बड़े गोल फल जो खाने के काम में आते हैं।
तरमीम-संज्ञा स्त्री० [अ०] संशोधन।
तरल-वि० [सं०] १. हिलता-डोलता। चलायमान। चंचल। २. क्षणभंगुर। ३. बहनेवाला। द्रव। ४. चमकीला।
तरलता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चंचलता। २. द्रवत्व।
तरलनयन-संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्णवृत्त।
तरलाई*-संज्ञा स्त्री० [सं० तरल+आई (प्रत्य०)] १. चंचलता। चपलता। २. द्रवत्व।
तरवन-संज्ञा पुं० [हिं० ताड़+बनना] १. कान में पहनने की तरकी। २. कर्णफूल।
तरवर-संज्ञा पुं० दे० "तरुवर"।
तरवा-संज्ञा पुं० दे० "तलवा"।
तरवार-संज्ञा स्त्री० दे० "तलवार"।
संज्ञा पुं० दे० "तरवर"।
तरस-संज्ञा पुं० [सं० त्रस] दया। रहम।
मुहा०—(किसी पर) तरस खाना=दयार्द्र होना। दया करना। रहम करना।
तरसना-क्रि० अ० [सं० तर्पण] (किसी वस्तु को) न पाकर बेचैन रहना।
तरसाना-क्रि० स० [हिं० तरसना] १. कोई वस्तु न देकर उसके लिये बेचैन करना। २. व्यर्थ ललचाना।
तरह-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. प्रकार। भाँति। किस्म। २. रचना-प्रकार। ढाँचा। डौल। बनावट। रूप-रंग। ३. ढब। तर्ज। प्रणाली। रीति। ढंग। ४. युक्ति। उपाय।
मुहा०—तरह देना=खयाल न करना। बचा जाना। जाने देना।
५. हाल। दशा। अवस्था।
तरहटी-संज्ञा स्त्री० [हिं० तर] १. नीची भूमि। २. पहाड़ की तराई।
तरहदार-वि० [फ़ा०] [संज्ञा तरहदारी] १. सुंदर बनावट का। २. शौकीन।
तरहर†-क्रि० वि० [हिं० तर+हर (प्रत्य०)] तले। नीचे।
वि० १. नीचे का। २. निकृष्ट। बुरा।
तरहेल†-वि० [हिं० तर+हेल (प्रत्य०)] १. अधीन। निम्नस्थ। २. वश में आया हुआ। पराजित।
तराई-संज्ञा स्त्री० [हिं० तर=नीचे] १. पहाड़ के नीचे का सीड़वाला मैदान। २. पहाड़ की घाटी।
तराज़ू-संज्ञा पुं० [फ़ा०] सीधी डाँड़ी के छोरों से बँधे हुए दो पलड़े जिनमें वस्तुओं की तौल मालूम करते हैं। तुला। तकड़ी।
तराना-संज्ञा पुं० [फ़ा०] एक प्रकार का चलता गाना।
तराप*†-संज्ञा स्त्री० [अनु०] बंदूक, तोप आदि का तड़ाक शब्द।
तरापा†-संज्ञा पुं० [अनु०] हाहाकार। कुहराम। त्राहि त्राहि।
तराबोर-वि० [फ़ा० तर+हिं० बोरना] खूब भीगा हुआ। शराबोर।
तरामीरा-संज्ञा पुं० [देश०] एक पौधा जिसके बीजों से तेल निकलता है।
तरारा-संज्ञा पुं० [?] १. उछाल। छलाँग। कुलाँच। २. पानी की धार जो बराबर किसी वस्तु पर गिरे।
तरावट-संज्ञा स्त्री० [फ़ा० तर+आवट (प्रत्य०)] १. गीलापन। नमी। २. ठंढक। शीतलता। ३. शरीर की गरमी शांत करनेवाला आहार आदि। ४. स्निग्ध भोजन।
तराश-संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. काटने का ढंग या भाव। काट। २. काट-छाँट। बनावट। रचना-प्रकार। ३. ढंग। तर्ज।
तराशना-क्रि० स० [फ़ा०] काटना। कतरना।
तरिका†-संज्ञा पुं० [सं० ताडंक] कान का एक गहना। तरकी। तरौना।

*संज्ञा स्त्री० [सं० तडित्] बिजली।

तरियाना†-क्रि० स० [हि० तरे=नीचे] १ नीचे कर देना। तह में बैठा देना। २ छिपाना। ढाँकना।

क्रि० अ० तह में बैठ जाना। तह में जमना।

तरिवन-संज्ञा पुं० [हि० ताड़] १ कान में पहनने की तरकी। २ कर्णफूल।

तरिवर*-संज्ञा पुं० दे० "तरुवर"।

तरिहँत†-क्रि० वि० [हि० तर+हँत (प्रत्य०)] नीचे। तले।

तरी-संज्ञा स्त्री० [सं०] नाव। नौका।

संज्ञा स्त्री० [फा० तर] १ गीलापन। आर्द्रता। २ ठंढक। शीतलता। ३ वह नीची भूमि जहाँ बरसात का पानी इकट्ठा रहता हो। कछार। ४ तराई। तलहटी।

*संज्ञा स्त्री० [हि० ताड़] कान का एक गहना। तरिवन। कर्णफूल।

तरीका-संज्ञा पुं० [अ०] १ ढंग। विधि। रीति। २ चाल। व्यवहार। ३ उपाय। तदबीर।

तरु-संज्ञा पुं० [सं०] १ वृक्ष। पेड़। २ एक प्रकार का चीड़।

तरुण-वि० [सं०] [स्त्री० तरुणी] १ युवा। जवान। २ नया। नूतन।

तरुणाई*-संज्ञा स्त्री० [सं० तरुण+आई (प्रत्य०)] युवावस्था। जवानी।

तरुणाना*-क्रि० अ० [सं० तरुण+आना (प्रत्य०)] जवानी पर आना।

तरुणी-संज्ञा स्त्री० [सं०] युवती। जवान स्त्री।

तरुन*†-संज्ञा पुं० दे० "तरुण"।

तरुनई, तरुनाई*-संज्ञा स्त्री० [सं० तरुण+आई (प्रत्य०)] तरुणावस्था। जवानी।

तरुनापा*-संज्ञा पुं० दे० "तरुनाई"।

तरुबाँही*-संज्ञा स्त्री० [सं० तरु+हि० बाँह] पेड़ की भुजा। शाखा। डाल।

तरेंदा-संज्ञा पुं० [सं० तरंड] पानी में तैरता हुआ काठ। बेड़ा।

तरे†-क्रि० वि० [सं० तल] नीचे। तले।

तरेटी-संज्ञा स्त्री० दे० "तराई"।

तरेरना-क्रि० स० [सं० तर्ज+हि० एरना] १ दृष्टि से असम्मति या असंतोष प्रकट करना। २ क्रोधपूर्वक देखना।

तरोई-संज्ञा स्त्री० दे० "तुरई"।

तरोवर*-संज्ञा पुं० दे० "तरुवर"।

तरौंस*-संज्ञा पुं० [हि० तर+औंस (प्रत्य०)] तट। तीर। किनारा।

तरौना-संज्ञा पुं० [हि० ताड़+पनना] १ कान में पहनने का एक गहना। तरकी। ताटंक। २ कर्णफूल।

तर्क-संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी वस्तु के विषय में अज्ञात तत्व को कारणोपपत्ति द्वारा निश्चित करनेवाली उक्ति या विचार। हेतुपूर्ण युक्ति। विवेचना। दलील। २ चमत्कार-पूर्ण उक्ति। चुहल या चोज की बात। ३ व्यंग्य। ताना।

संज्ञा पुं० [अ०] त्याग। छोड़ना।

तर्कना*†-क्रि० अ० [सं० तर्क] तर्क करना।

तर्क वितर्क-संज्ञा पुं० [सं०] १ ऊहापोह। सोच-विचार। २ वाद-विवाद। बहस।

तर्कश-संज्ञा पुं० [फा०] तीर रखने का चोंगा। भाथा। तूणीर।

तर्कशास्त्र-संज्ञा पुं० [सं०] १ विवेचना करने के नियम और सिद्धांतों के खंडन मंडन की शैली बतलानेवाली विद्या या शास्त्र। २ न्यायशास्त्र।

तर्काभास-संज्ञा पुं० [सं०] ऐसा तर्क जो ठीक न हो। कुतर्क।

तर्की-संज्ञा पुं० [सं० तर्किन्] [स्त्री० तर्किनी] तर्क करनेवाला।

तर्कु-संज्ञा पुं० [सं०] तकला। टेकुआ।

तर्क्य-वि० [सं०] जिस पर कुछ सोच विचार करना आवश्यक हो। विचार्य। चिंत्य।

तर्ज-संज्ञा पुं० [अ०] १ प्रकार। किस्म। तरह। २ रीति। शैली। ढंग। ढब। ३ रचना-प्रकार। बनावट।

तर्जन-संज्ञा पुं० [सं० तर्जन] [वि० तर्जित] १ धमकाने का कार्य। भय प्रदर्शन। २ क्रोध। ३ फटकार। डाँट-डपट।

यौ०—तर्जन-गर्जन = क्रोध-प्रदर्शन।

तर्जना—क्रि० अ० [सं० तर्जन] डाँटना। धमकाना। डपटना।

तर्जनी—संज्ञा स्त्री० [सं० तर्ज्जनी] अँगूठे और मध्यमा के बीच की उँगली।

तर्जुमा—संज्ञा पुं० [अ०] भाषांतर। उल्था। अनुवाद।

तर्पण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० तर्पणीय, तर्पित, तर्पी] १. तृप्त या संतुष्ट करने की क्रिया। २. कर्मकांड की एक क्रिया जिसमें देवों, ऋषियों और पितरों को तुष्ट करने के लिए हाथ या अरघे से पानी देते हैं।

तरघौना*—संज्ञा पुं० दे० "तरौना"।

तल—संज्ञा पुं० [सं०] १. नीचे का भाग। २. पेंदा। तला। ३. जल के नीचे की भूमि। ४. वह स्थान जो किसी वस्तु के नीचे पड़ता हो। ५. पैर का तलवा। ६. हथेली। ७. किसी वस्तु का बाहरी फैलाव। पृष्ठ देश। सतह। ८. घर की छत। पाटन। ९. सप्त पातालों में से पहला।

तलक‡—अव्य० [हिं० तक] तक। पर्यंत।

तलकर—संज्ञा पुं० [सं०] वह कर या लगान जो जमींदार ताल की वस्तुओं पर लगाता है।

तलछट—संज्ञा स्त्री० [हिं० तल + छँटना] द्रव पदार्थ के नीचे बैठी हुई मैल। तलौछ।

तलना—क्रि० स० [सं० तरण + सिराना] कड़कड़ाते हुए घी या तेल में डालकर पकाना।

तलप*—संज्ञा पुं० दे० "तल्प"।

तलपट—वि० [देश०] बरबाद। चौपट।

तलफ़—वि० [अ०] नष्ट। बरबाद।

तलफना—क्रि० अ० दे० "तड़पना"।

तलब—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. खोज। तलाश। २. चाह। पाने की इच्छा। ३. आवश्यकता। माँग। ४. बुलावा। बुलाहट। ५. तनखाह। वेतन।

तलबगार—वि० [फ़ा०] चाहनेवाला।

तलबाना—संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह खर्च जो गवाहों को तलब करने के लिये अदालत में दाखिल किया जाता है।

तलबी—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. बुलाहट। २. माँग।

तलबेली—संज्ञा स्त्री० [हिं० तलफना] घोर उत्कंठा। आतुरता। बेचैनी। छटपटी।

तलमलाना‡—क्रि० अ० दे० "तिलमलाना"।

तलवकार—संज्ञा पुं० [सं०] १. सामवेद की एक शाखा। २. एक उपनिषद्।

तलवा—संज्ञा पुं० [सं० तल] एँड़ी और पंजों के बीच में पैर के नीचे की ओर का भाग। पादतल।

मुहा०—तलवा खुजलाना = तलवे में खुजली होना जिससे यात्रा का शकुन समझा जाता है। तलवे चाटना=बहुत खुशामद करना। तलवे छलनी होना=चलते चलते शिथिल हो जाना। तलवे धो धोकर पीना = अत्यंत सेवा-शुश्रूषा करना। तलवों से आग लगना = अत्यंत क्रोध चढ़ना।

तलवार—संज्ञा स्त्री० [सं० तरवारि] लोहे का एक लम्बा धारदार हथियार। खड्ग। असि। कृपाण।

मुहा०—तलवार का खेत=लड़ाई का मैदान। युद्धक्षेत्र। तलवार का घाट=तलवार में वह स्थान जहाँ से उसका टेढ़ापन आरंभ होता है। तलवार का पानी=तलवार की आभा या दमक। तलवारों की छाँह में=ऐसे स्थान में जहाँ अपने ऊपर चारों ओर तलवार ही तलवार दिखाई देती हो। रणक्षेत्र में। तलवार खींचना = आघात करने के लिये म्यान से तलवार बाहर करना। तलवार सौंतना=वार करने के लिये तलवार खींचना।

तलहटी—संज्ञा स्त्री० [सं० तल घट्ट] पहाड़ के नीचे की भूमि। तराई।

तला—संज्ञा पुं० [सं० तल] १. किसी वस्तु के नीचे की सतह। पेंदा। २. जूते के नीचे का चमड़ा।

तलाक—संज्ञा पुं० [अ०] पति-पत्नी का विधानपूर्वक संबंध-त्याग।

तलातल—संज्ञा पुं० [सं०] सात पातालों में से एक।

तलाव‡—संज्ञा पु० [सं०तल्ल] ताल। तालाब।

तलाश—संज्ञा स्त्री० [तु०] १. खोज। ढूँढ़-ढाँढ़। अन्वेषण। अनुसंधान। २ आवश्यकता। चाह।

तलाशना‡—क्रि० स० [फ़ा० तलाश] ढूँढ़ना। खोजना।

तलाशी—संज्ञा स्त्री० [फा०] गुम हुई या छिपाई हुई वस्तु को पाने के लिये देख-भाल।

मुहा०—तलाशी लेना=गुम या छिपाई हुई वस्तु को निकालने के लिये संदिग्ध मनुष्य के घरबार आदि की देखभाल करना।

तली—संज्ञा स्त्री० [सं० तल] १. नीचे की सतह। पेंदी। २ तलछट। तलौंछ। † ३. हाथ या पैर की हथेली या तलवा।

तले—क्रि० वि० [सं० तल] नीचे। ऊपर का उलटा।

मुहा०—तले ऊपर=१ एक के ऊपर दूसरा। २ उलट-पलट किया हुआ। गड्ड-मड्ड। तले ऊपर के=ऐसे दो जिनमें से एक दूसरे के उपरान्त हुआ हो।

तलेटी—संज्ञा स्त्री० [सं० तल] १ पेंदी। २ पहाड़ के नीचे की भूमि। तलहटी।

तलैया—संज्ञा स्त्री० [हिं० ताल] छोटा ताल।

तलौंछ—संज्ञा स्त्री० [सं०तल=नीचे] नीचे जमी हुई मैल आदि। तलछट।

तल्ख—वि० [फ़ा०] [संज्ञा तल्खी] १ कड़ुआ। कटु। २ बुरे स्वाद का।

तल्प—संज्ञा पु० [सं०] १ शय्या। पलँग। सेज। २ अट्टालिका। अटारी।

तल्ला—संज्ञा पु० [सं० तल] १ तले की परत। अस्तर। भितल्ला। २ ढिग। पास। सामीप्य।

तव—सर्व० [सं०] तुम्हारा।

तवक्षीर—संज्ञा पु० [सं० मि० फा० तबाशीर] तबाशीर। तीखुर।

तवज्जह—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ ध्यान। रुख। २ कृपादृष्टि।

तवना—क्रि० अ० [सं० तपन] १. तपना। गरम होना। २ ताप या दुःख से पीड़ित होना। ३. प्रताप फैलाना। तेज पसारना। ४ गुस्से से लाल होना। कुढ़ जाना।

तवा—संज्ञा पु० [हिं० तवना=जलना] १. लोहे का वह छिछला गोल बरतन जिस पर रोटी सेंकते हैं।

मुहा०—तवे की बूँद=१ क्षणस्थायी। देर तक न टिकनेवाला। २ जिससे कुछ भी तृप्ति न हो। २ मिट्टी या खपड़े का गोल ठिकरा जिसे चिलम पर रखकर तमाकू पीते हैं।

तवाजा—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ आदर। मान। आवभगत। २ मेहमानदारी। दावत।

तवायफ—संज्ञा स्त्री० [अ०] वेश्या। रंडी।

तवारा—संज्ञा पुं० [सं० ताप, हिं० ताव] जलन। दाह। ताप।

तवारीख—संज्ञा स्त्री० [अ०] इतिहास।

तवालत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ लंबाई। दीर्घत्व। २ अधिकता। अधिकाई। ३ बखेड़ा। झंझट।

तवेला—संज्ञा पु० [अ०तवेल:] अश्वशाला। घुड़साल। अस्तबल।

तशख़ीस—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ ठहराव। निश्चय। २ मर्ज की पहचान। रोग का निदान।

तशरीफ—संज्ञा स्त्री० [अ०] बुजुर्गी। इज्जत। महत्त्व। बड़प्पन।

मुहा०—तशरीफ रखना=विराजना। बैठना (आदर)। तशरीफ लाना—पदार्पण करना। आना। (आदर)।

तश्तरी—संज्ञा स्त्री० [फा०] थाली के आकार का छिछला हलका बरतन। रिकाबी।

तष्टा—संज्ञा पु० [सं०] १ छील-छालकर गढ़नेवाला। २ विश्वकर्मा।

संज्ञा पु० [फ़ा० तश्त] ताँबे की छोटी तश्तरी।

तस—वि० [सं० तादृश] तैसा। वैसा।

क्रि० वि० तैसा। वैसा।

तसकीन—संज्ञा स्त्री० [अ०]तसल्ली। ढारस।

तसदीक—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ सचाई। २ सचाई की परीक्षा या निश्चय। प्रमाणों के द्वारा पुष्टि। समर्थन। ३. साक्ष्य।

गवाही।

तसदीह*†–संज्ञा स्त्री० [अ० तसदीअ] १. सिर का दर्द। २. तकलीफ़। दुःख।

तसबीह–संज्ञा स्त्री० [अ०] सुमिरनी। जप-माला। (मुसल०)

तसमा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] चमड़े का चौड़ा फ़ीता।

तसला–संज्ञा पुं० [फ़ा० तश्त] [स्त्री० तसली] कटोरे के आकार का पर उससे बड़ा और गहरा बरतन।

तसलीम–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. सलाम। प्रणाम। २. किसी बात की स्वीकृति। हामी।

तसल्ली–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. ढारस। सांत्वना। आश्वासन। २. शांति। धैर्य। धीरज।

तसवीर–संज्ञा स्त्री० [अ०] वस्तुओं की आकृति जो रंग आदि के द्वारा कागज, पटरी आदि पर बनी हो। चित्र।

वि० चित्र सा सुंदर। मनोहर।

तसू–संज्ञा पुं० [सं० त्रि+शूक] इमारती गज का २४ वाँ अंश जो १⅛ इंच के लगभग होता है।

तस्कर–संज्ञा पुं० [सं०] १. चोर। २. श्रवण। कान। ३. चोर नामक गंध-द्रव्य।

तस्करता–संज्ञा स्त्री० [सं०] चोरी।

तस्करी–संज्ञा स्त्री० [सं० तस्कर] १. चोरी। २. चोर की स्त्री। ३. चोर स्त्री।

तस्मात्–अव्य [सं०] इसलिए।

तस्य–सर्व० [सं०] उसका।

तस्सू–संज्ञा पुं० दे० "तसू"।

तहँ, तहँवा‡–क्रि० वि० दे० "तहाँ"।

तह–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. किसी वस्तु की मोटाई का फैलाव जो किसी दूसरी वस्तु के ऊपर हो। परत।

मुहा०—तह करना या लगाना=किसी फैली हुई वस्तु के भागों को कई ओर से मोड़कर समेटना। तह कर रखो=रहने दो। नहीं चाहिए। तह तोड़ना=१.झगड़ा निबटाना। २. कूएँ का सब पानी निकाल देना जिससे ज़मीन दिखाई देने लगे। (किसी चीज की) तह देना=१. हलकी परत चढ़ाना। २. हलका रंग चढ़ाना।

२. किसी वस्तु के नीचे का विस्तार। तल। पेंदा।

मुहा०—तह की बात=छिपी हुई बात। गुप्त रहस्य। (किसी बात की) तह तक पहुँचना=यथार्थ रहस्य जान लेना। असली बात समझ जाना।

३. पानी के नीचे की ज़मीन। तल। थाह। ४. महीन पटल। वरक़। झिल्ली।

तहक़ीक़–संज्ञा स्त्री० दे० "तहक़ीक़ात"।

तहक़ीक़ात–संज्ञा स्त्री० [अ० तहक़ीक़ का बहु०] किसी विषय या घटना की ठीक ठीक बातों की खोज। अनुसंधान। जाँच।

तहख़ाना–संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह कोठरी या घर जो ज़मीन के नीचे बना हो। भुइँघरा। तलगृह।

तहज़ीब–संज्ञा स्त्री० [अ०] सभ्यता।

तहपेंच–संज्ञा पुं० [फ़ा०] पगड़ी के नीचे का कपड़ा।

तहमत–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० तहमद] कमर में लपेटा हुआ कपड़ा या अँगोछा। लुंगी। अँचला।

तहरी–संज्ञा स्त्री० [देश०] १. पेठे की बरी और चावल की खिचड़ी। २. मटर की खिचड़ी।

तहरीर–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. लिखावट। लेख। २. लेख शैली। ३. लिखी हुई बात। ४. लिखा हुआ प्रमाण-पत्र। ५. लिखने की उजरत। लिखाई।

तहरीरी–वि० [फ़ा०] लिखा हुआ। लिखित।

तहलका–संज्ञा पुं० [अ०] १ मौत। मृत्यु। २. बरबादी। नाश। ३. खलबली। धूम। हलचल।

तहवील–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. सुपुर्दगी। २. अमानत। धरोहर। ३. खज़ाना। जमा।

तहवीलदार–संज्ञा पुं० [अ० तहवील+फ़ा० दार] कोषाध्यक्ष। खज़ानची।

तहस-नहस–वि० [देश०] बरबाद। नष्ट-भ्रष्ट।

तहसील–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ लोगों से रुपया वसूल करने की क्रिया। वसूली। उगाही। २ वह आमदनी जो लगान वसूल करने से इकट्ठी हो। ३ तहसील-दार का दफ्तर या कचहरी।

तहसीलदार–संज्ञा पुं० [अ० तहसील+फा० दार] १. कर वसूल करनेवाला। २ वह अफसर जो जमींदारों से सरकारी माल-गुजारी वसूल करता और माल के छोटे मुकदमों का फैसला करता है।

तहसीलदारी–संज्ञा स्त्री० [अ० तहसील+फा० दार+ई] १ तहसीलदार का पद। २ तहसीलदार की कचहरी।

तहसीलना–क्रि० स० [अ० तहसील] उगाहना। वसूल करना (कर, लगान, चंदा आदि।

तहाँ–क्रि० वि० [सं० तत्+सं० स्थान] उस स्थान पर। उस जगह। वहाँ।

तहाना–क्रि० स० [हिं० तह] तह करना। लपेटना।

तहियाँ†–क्रि० वि० [सं० तदाहि] तब। उस समय।

तहियाना†–क्रि० स० दे० "तहाना"।

तहीं†–क्रि० वि० [हिं० तहाँ] उसी जगह। उसी स्थान पर। वहीं।

ता–प्रत्य० [सं०] एक भाववाचक प्रत्यय जो विशेषण और संज्ञा शब्दों के आगे लगता है।
अव्य० [फा०] तक। पर्यंत।
*†–सर्व० [सं० तद्] उस।
*†–वि० उस।

ताँई–क्रि० वि० दे० "ताइ"।

ताँगा–संज्ञा पुं० दे० "टाँगा"।

तांडव–संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव का नृत्य। २ पुरुष का नृत्य। (पुरुषों के नृत्य को तांडव और स्त्रियों के नृत्य को लास्य कहते हैं।) ३ वह नाच जिसमें बहुत उछल-कूद हो। उद्धत नृत्य।

ताँत–संज्ञा स्त्री० [सं० तंतु] १ भेड़, बकरी की अँतड़ी, या चौपायों के पुट्ठों को बटकर बनाया हुआ सूत। २ धनुष की डोरी। ३ डोरी। सूत। ४ सारंगी आदि का तार। ५ जुलाहों की गाछ।

ताँता–संज्ञा पुं० [सं० तति=श्रेणी] श्रेणी। पंक्ति। कतार।
मुहा०—ताँता लगना=एक पर एक बरा-बर चला चलना।

ताँति†–संज्ञा स्त्री० दे० "ताँत"।

ताँती–संज्ञा स्त्री० [हिं० ताँता] १ पंक्ति। कतार। २ बाल-बच्चे। औलाद।
संज्ञा पुं० जुलाहा। कपड़ा बुननेवाला।

तांत्रिक–वि० [सं०] [स्त्री० तांत्रिकी] तंत्र संबंधी।
संज्ञा पुं० तंत्रशास्त्र का जाननेवाला। यंत्र मंत्र आदि करनेवाला।

ताँबा–संज्ञा पुं० [सं० ताम्र] लाल रंग की एक प्रसिद्ध धातु। यह पीटने से बढ़ सकती है और इसका तार भी खींचा जा सकता है।

ताँबिया–संज्ञा स्त्री० दे० "ताँबी"।

ताँबी–संज्ञा स्त्री० [हिं० ताँबा] १ चौड़े मुँह का ताँबे का एक छोटा बरतन। २ ताँबे की करछी।

तांबूल–संज्ञा पुं० [सं०] १ पान या उसका बीड़ा। २ सुपारी।

ताँसना†–क्रि० स० [सं० त्रास] १ डाँटना। धमकाना। आँख दिखाना। २ दुःखी करना। सताना।

ताई–अव्य [सं० तावत् या फा० ता] तक। पर्यंत। २ पास। ताक समीप। निकट। ३ (किसी के) प्रति। समक्ष। लक्ष्य करके। ४ लिये। वास्ते। निमित्त।
क्रि० दे० "तई"।

ताई–संज्ञा स्त्री० [हिं० ताऊ] बाप के बड़े भाई की स्त्री। जेठी चाची।
संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की छिछली कड़ाही।

ताईद–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ पक्षपात। तरफ-दारी। २ अनुमोदन। समर्थन।

ताऊ–संज्ञा पुं० [सं० तात] बाप का बड़ा भाई। बड़ा चाचा। ताया।

मुहा०—वछिया के ताऊ = मूर्ख।

ताऊन—संज्ञा पुं० [अ०] प्लेग का रोग।

ताऊस—संज्ञा पुं० [अ०] १. मोर। मयूर। यौ०—तख्त ताऊस = शाहजहाँ का बहुमूल्य रत्नजटित राजसिंहासन जो मोर के आकार का था। २. सारंगी से मिलता-जुलता एक वाजा।

ताक—संज्ञा स्त्री० [हिं० ताकना] १. ताकने की क्रिया या भाव। अवलोकन। २. स्थिर दृष्टि। टकटकी। ३. किसी अवसर की प्रतीक्षा। मौक़ा देखते रहना। घात। मुहा०—ताक में रहना = मौक़ा देखते रहना। ताक रखना या लगाना = घात में रहना। मौक़ा देखते रहना। ४. खोज। तलाश।

ताक़—संज्ञा पुं० [अ०] चीज, वस्तु रखने के लिये दीवार में बना हुआ गड्ढा या खाली स्थान। आला। ताखा। मुहा०—ताक़ पर धरना या रखना = पड़ा रहने देना। काम में न लाना। वि० १. जो बिना खंडित हुए दो बराबर भागों में न बँट सके। विषम। जैसे—तीन, पाँच। २. जिसके जोड़ का दूसरा न हो। अद्वितीय। अनुपम।

ताक-झाँक—संज्ञा स्त्री० [हिं० ताकना + झाँकना] १. रह रहकर बार बार देखने की क्रिया। २. छिपकर देखने की क्रिया।

ताक़त—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. जोर। बल। शक्ति। २. सामर्थ्य।

ताक़तवर—वि० [फ़ा०] १. बलवान्। बलिष्ठ। २. शक्तिमान्। सामर्थ्यवान्।

ताकना—क्रि० स० [सं० तर्कण] १. सोचना। विचारना। २. अवलोकन करना। देखना। ३. ताड़ना। समझ जाना। ४. पहले से देखकर स्थिर करना। तजवीज करना। ५. दृष्टि रखना। रखवाली करना।

ताकि†—अव्य० [फ़ा०] जिसमें। इसलिए कि। जिसमें।

ताकीद—संज्ञा स्त्री० [अ०] जोर के साथ किसी बात की आज्ञा या अनुरोध। खूब चेता-कर कही हुई बात।

तागड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० ताग + कड़ी] १. कमर में पहनने का एक गहना। करधनी। किंकिणी। २. कमर में पहनने का रंगीन डोरा। कटिसूत्र। करगता।

तागना—क्रि० स० [हिं० तागा] दूर दूर पर मोटी सिलाई करना। डोभ या लगर डालना।

ताग-पाट—संज्ञा पुं० [हिं० तागा + पाट = रेशम] एक प्रकार का गहना जो विवाह में काम आता है।

तागा—संज्ञा पुं० [सं० तार्कव] १. रूई, रेशम आदि का वह अंश जो बटने से लंबी रेखा के रूप में निकलता है। डोरा। धागा। २. वह कर या महसूल जो प्रति मनुष्य के हिसाब से लगे।

ताज—संज्ञा पुं० [अ०] १. बादशाह की टोपी। राजमुकुट। २. कलगी। तुर्रा। ३. मोर, मुर्गे आदि के सिर की चोटी। शिखा। ४. दीवार की कँगनी या छज्जा। ५. मकान के सिरे पर शोभा के लिये बनाई हुई बुर्जी। ६. गंजीफ़े के एक रंग का नाम। ७. आगरे का ताजमहल।

ताजक—संज्ञा पुं० [फ़ा०] एक ईरानी जाति जो बलोचिस्तान में "देहवार" कहलाती है।

ताजगी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. ताजापन। हरापन। २. प्रफुल्लता। स्वस्थता। ३. नयापन।

ताजदार—संज्ञा पुं० [फ़ा०] बादशाह।

ताजन—संज्ञा पुं० [फ़ा० ताजियाना] कोड़ा। चाबुक।

ताजपोशी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] राजमुकुट धारण करने या राजसिंहासन पर बैठने का उत्सव।

ताजमहल—संज्ञा पुं० [अ०] आगरे का प्रसिद्ध मकबरा जिसे शाहजहाँ बादशाह ने अपनी प्रिय बेगम मुमताज़ महल के लिए बनवाया था।

ताजा—वि० [फ़ा०] [स्त्री० ताजी] १. जो सूखा या कुम्हलाया न हो। हरा भरा।

२ (फल आदि) जिसे पेड़ से अलग हुए बहुत देर न हुई हो। ३ जो थका माँदा न हो। स्वस्थ। प्रफुल्लित।
यौ०—मोटा-ताजा = हृष्ट-पुष्ट।
४ तुरत का बना। सद्य प्रस्तुत। ५ जो व्यवहार के लिए अभी निकाला गया हो। ६ जो बहुत दिनों का न हो। नया।

ताजिया—सज्ञा पु० [अ०] बाँस की कमचियों आदि का मकबरे के आकार का मडप जिसमें इमाम हुसैन की कब्र होती है। मुहर्रम में शीया मुसलमान इसकी आराधना करते और तब इसे दफन करते हैं।

ताजी—वि० [फा०] अरब का।
सज्ञा पु० [फा०] १ अरब का घोड़ा। २ शिकारी कुत्ता।

ताजीम—सज्ञा स्त्री० [अ०] बड़े के सामने उसके आदर के लिये उठकर खड़े हो जाना, झुककर सलाम करना इत्यादि। सम्मान प्रदर्शन।

ताजीमी सरदार—सज्ञा पु० [फा० ताजीम + अ० सरदार] वह सरदार जिसके आने पर राजा या बादशाह उठकर खड़े हो जायँ।

ताटक—सज्ञा पु० [स०] १ कान में पहनने का करनफूल। तरकी। २ छप्पय के २४वें भेद का नाम। ३ एक छद जिसके प्रत्येक चरण में ३० मात्राएँ और अत में मगण होता है।

ताडक—सज्ञा पु० [स०] कान की तरकी। करनफूल।

ताड—सज्ञा पु० [स०] १ शाखा-रहित एक बड़ा और प्रसिद्ध पेड़ जो खभे के रूप में ऊपर की ओर बढ़ता चला जाता है और केवल सिरे पर पत्ते धारण करता है। २ ताडन। प्रहार। ३ शब्द। ध्वनि। ४ अनाज के डठल आदि की अँटिया जो मुट्ठी में आ जाय। जुट्टी। ५ हाथ का एक गहना।

ताडका—सज्ञा स्त्री० [स०] एक राक्षसी जिसे श्रीरामचद्र ने मारा था।

ताडन—सज्ञा पु० [स०] १ मार। प्रहार। आघात। २ डाँट-डपट। घुड़की। ३ शासन। दड।

ताडना—सज्ञा स्त्री० [स०] १ प्रहार। मार। २ डाँट डपट। शासन। दड। धमकी। ३ उत्पीड़न। कष्ट।
क्रि० स० १ मारना। पीटना। २ डाँटना-डपटना।
क्रि० स० [स० तर्कण] १ किसी ऐसी बात को जान लेना जो छिपाई गई हो। लक्षण से समझ लेना। भाँपना। लख लेना। २ मार-पीटकर भगाना। हटा देना।

ताडित—वि० [स०] १ जिस पर प्रहार पड़ा हो। २ जो डाँटा गया हो। ३ दडित। ४ मारकर भगाया हुआ।

ताडी—सज्ञा स्त्री० [हि० ताड] ताड के डठलों से निकाला हुआ नशीला रस जिसका व्यवहार मद्य के रूप में होता है।

तात—सज्ञा पु० [स०] १ पिता। बाप। २ पूज्य व्यक्ति। गुरु। ३ प्यार का एक शब्द या सबोधन जो भाई या मित्र और विशेषत छोटे के लिये व्यवहृत होता है।
वि० [स० तप्त] तपा हुआ। गरम। उष्ण।

ताता—वि० [स० तप्त] [स्त्री० ताती] तपा हुआ। गरम। उष्ण।

तातायेई—सज्ञा स्त्री० [अनु०] नाचने में पैर के गिरने आदि का अनुकरण शब्द।

तातार—सज्ञा पु० [फा०] मध्य एशिया का एक देश जो हिंदुस्तान और फारस के उत्तर में कैस्पियन सागर से लेकर चीन के उत्तर प्रात तक है।

तातारी—वि० [फा०] तातार देश-सबधी। तातार देश का।
सज्ञा पु० तातार देश का निवासी।

तातील—सज्ञा स्त्री० [अ०] छुट्टी का दिन।

तात्कालिक—वि० [स०] तत्काल या तुरत का।

तात्पर्य्य—सज्ञा पु० [स०] १ अर्थ। आशय। मतलब। अभिप्राय। २ तत्परता।

तात्त्विक—वि० [स०] १ तत्त्व-सबधी। २ तत्त्व ज्ञान युक्त। ३ यथार्थ।

तायेई–संज्ञा स्त्री० दे० "तातायेई"।

तादात्म्य–संज्ञा पुं० [सं०] एक वस्तु का मिलकर दूसरी वस्तु के रूप में हो जाना।

तादाद–संज्ञा स्त्री० [अ०] संख्या। गिनती।

तादृश–वि० [सं०] [स्त्री० तादृशी] उसके समान। वैसा।

ताधा–संज्ञा स्त्री० दे० "तातायेई"।

तान–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. तानने का भाव या क्रिया। खींच। फैलाव। विस्तार। २. अनेक विभाग करके सुर का खींचना। लय का विस्तार। आलाप।

मुहा०—तान उड़ाना = गीत गाना। किसी पर तान तोड़ना=किसी पर आक्षेप करना। ३. ऐसा पदार्थ जिसका बोध इंद्रियों आदि को हो। ज्ञान का विषय।

तानना–क्रि० स० [सं० तान] १. फैलाने के लिये जोर से खींचना।

मुहा०—तानकर=बलपूर्वक। जोर से। २. किसी सिमटी या लिपटी हुई वस्तु को खींचकर फैलाना।

मुहा०—तानकर सोना = १. आराम से सोना। २. निश्चिन्त रहना।

३. परदे की सी वस्तु को ऊपर फैलाकर बाँधना। ४. एक ऊँचे स्थान से दूसरे ऊँचे स्थान तक ले जाकर बाँधना। ५. मारने के लिए हाथ या कोई हथियार उठाना। ६. किसी को हानि पहुँचाने के अभिप्राय से कोई बात उपस्थित कर देना। ७. क़ैद-खाने भेजना।

तानपूरा–संज्ञा पुं० [सं० तान + हिं० पूरा] सितार के आकार का एक बाजा। तंबूरा।

तानबाना‡*–संज्ञा पुं० दे० "ताना-बाना"।

तानसेन–संज्ञा पुं० अकबर बादशाह के समय का एक प्रसिद्ध और बहुत बड़ा गवैया। यह पहले ब्राह्मण था, पर पीछे मुसलमान हो गया था।

ताना–संज्ञा पुं० [हिं० तानना] १. कपड़े की बुनावट में लंबाई के बल के सूत। २. दरी या क़ालीन बुनने का करघा।

क्रि० स० [हिं० ताव + ना (प्रत्य०)] १. ताव देना। तपाना। गरम करना। २. पिघलाना। ३. तपाकर परीक्षा करना। (सोना आदि धातु।) ४. जाँचना। आजमाना।

†क्रि० स० [हिं० तवा] गीली मिट्टी आदि से बरतन का मुँह बंद करना। मूँदना।

संज्ञा पुं० [अ०] आक्षेप-वाक्य। बोली-ठोली। व्यंग्य।

ताना-बाना–संज्ञा पुं० [हिं० ताना + बाना] कपड़ा बुनने में लंबाई और चौड़ाई के बल फैलाए हुए सूत।

ताना रीरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० तान + अनु० री री] साधारण गाना। राग। अलाप।

तानी‡–संज्ञा स्त्री० [हिं० ताना] कपड़े की बुनावट में लंबाई के बल के सूत।

ताप–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्राकृतिक शक्ति जिसका प्रभाव पदार्थों के पिघलने, भाप बनने आदि में देखा जाता है और जिसका अनुभव अग्नि, सूर्य्य की किरण आदि के रूप में होता है। उष्णता। गरमी। २. आँच। लपट। ३. ज्वर। बुखार। ४. कष्ट। दुःख। पीड़ा। ताप तीन प्रकार का माना गया है—आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक। ५. मानसिक कष्ट। हृदय का दुःख।

तापक–संज्ञा पुं० [सं०] १. ताप उत्पन्न करनेवाला। २. रजोगुण। ३. ज्वर।

तापतिल्ली–संज्ञा स्त्री० [हिं० ताप+तिल्ली] पिलही बढ़ने का रोग। प्लीहा रोग।

तापती–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सूर्य्य की कन्या तापी। एक पवित्र नदी जो सतपुड़ा पहाड़ से निकलकर खंभात की खाड़ी में गिरती है।

तापत्रय–संज्ञा पुं० [सं०] तीन प्रकार के ताप। आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक।

तापन–संज्ञा पुं० [सं०] १. ताप देनेवाला। २. सूर्य्य। ३. कामदेव के पाँच बाणों में से एक। ४. सूर्य्यकांत मणि। ५. मदार। ६. एक प्रकार का प्रयोग जिससे शत्रु को

पीड़ा होती है। (नत्र)

तापना–क्रि० अ० [स० तापन] आग की आँच से अपने को गरम करना।

क्रि० स० १. गरम करने के लिये जलाना। फूँकना। २ नष्ट करना।

*क्रि० स० तपाना। गरम करना।

तापमान यत्र–संज्ञा पुं० [स०] उष्णता की मात्रा मापने का यत्र। थरमामीटर।

तापस–संज्ञा पु० [स०] [स्त्री० तापसी] १ तप करनेवाला। तपस्वी। २ तेजपत्ता।

तापसतरु, तापसद्रुम–संज्ञा पुं० [स०] इगुदी वृक्ष। हिंगोट।

तापसी–संज्ञा स्त्री० [स०] १ तपस्या करनेवाली स्त्री। २ तपस्वी की स्त्री।

तापस्वेद–संज्ञा पु० [स०] उष्णता पहुँचाकर उत्पन्न किया हुआ पसीना।

तापा–संज्ञा पु० [हिं० तोपना ?] मुर्गी का दरबा।

तापित–वि० [स०] १ जो तपाया गया हो। २ दुःखित। पीड़ित।

तापी–वि० [स० तापिन्] १ ताप देनेवाला। २ जिसमें ताप हो।

संज्ञा पु० बुद्धदेव।

संज्ञा स्त्री० १ सूर्य्य की एक कन्या। २ तापती नदी। ३ यमुना नदी।

तापेंद्र–संज्ञा पु० [स०] सूर्य्य।

ताफ्ता–संज्ञा पु० [फा०] एक प्रकार का चमकदार रेशमी कपड़ा।

ताब–संज्ञा स्त्री० [फा०] १ ताप। गरमी। २ चमक। आभा। दीप्ति। ३ शक्ति। सामर्थ्य। ४ मन को वश में रखने की शक्ति। धैर्य।

ताबड़तोड़–क्रि० वि० [अनु०] अनवच्छिन्न क्रम से। लगातार। बराबर।

ताबा–वि० दे० 'ताबे"।

ताबूत–संज्ञा पु० [अ०] वह सदूक जिसमें लाश रखकर गाड़ने को ले जाते हैं।

ताबे–वि० [अ० ताबअ] १ वशीभूत। अधीन। मातहत। २ आज्ञानुवर्ती। हुक्म का पाबद।

ताबेदार–वि० [अ० ताबअ+फा० दार] [संज्ञा ताबेदारी] आज्ञाकारी। हुक्म का पाबद।

ताम–संज्ञा पु० [स०] १ दोष। विकार। २ व्याकुलता। बेचैनी। ३ दुःख। क्लेश।

वि० १ भीषण। डरावना। भयकर। २ व्याकुल। हैरान।

संज्ञा पु० [स० तामस] १ क्रोध। रोष। गुस्सा। २ अधकार। अँधेरा।

तामजान–संज्ञा पु० [हिं० थामना+स०यान] एक प्रकार की छोटी खुली पालकी।

तामड़ा–वि० [हिं० ताँबा+डा (प्रत्य०)] ताँबे के रग का। ललाई लिए हुए भूरा।

तामरस–संज्ञा पु० [स०] १ कमल। २ सोना। ३ ताँबा। ४ धतूरा। ५ एक नगण, दो जगण और एक यगण का एक वर्णवृत्त।

तामलूक–संज्ञा पु० [स० ताम्रलिप्त] बग देश का एक भूभाग जो मेदिनीपुर जिले में है। ताम्रलिप्त।

तामलेट–संज्ञा पु० [अ० टवलर] टीन का गिलास या बरतन जिस पर रोगन या लुक फेरा रहता है।

तामस–वि० [स०] [स्त्री० तामसी] तमोगुण से युक्त।

संज्ञा पु० १ सर्प। साँप। २ खल। ३ उल्लू। ४ क्रोध। गुस्सा। ५ अधकार। अँधेरा। ६ अज्ञान। मोह।

तामसी–वि० स्त्री० [स०] तमोगुणवाली।

संज्ञा स्त्री० [स०] १ अँधेरी रात। २ महाकाली। ३ एक प्रकार की माया विद्या।

तामिल–संज्ञा स्त्री० [देश०] १ भारत के दक्षिण प्रांत की एक जाति जो आधुनिक मदरास प्रात के अधिकांश भाग में निवास करती है। २ द्राविड भाषा। तामिल लोगों की भाषा।

तामिस्र–संज्ञा पु० [स०] १ एक अँधेरा नरक। २ क्रोध। ३ द्वेष। ४ एक अविद्या का नाम।

तामील–संज्ञा स्त्री० [अ०] (आज्ञा का) पालन।
ताम्र–संज्ञा पुं० [सं०] ताँबा।
ताम्रचूड़–संज्ञा पुं० [सं०] मुर्गा।
ताम्रपत्र–संज्ञा पुं० [सं०] ताँबे की चद्दर का वह टुकड़ा जिस पर प्राचीन काल में अक्षर खुदवाकर दानपत्र आदि लिखते थे।
ताम्रपर्णी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बावली। तालाव। २. मदरास की एक छोटी नदी।
ताम्रलिप्त–संज्ञा पुं० [सं०] मेदिनीपुर (बंगाल) जिले के तमलूक नामक स्थान का प्राचीन नाम।
ताय*|–संज्ञा पुं० [सं० ताप] १. ताप। गरमी। २. जलन। ३. धूप।
सर्व० दे० "ताहि"।
तायदाद‡–संज्ञा स्त्री० दे० "तादाद"।
तायफ़ा–संज्ञा पुं०, स्त्री० [फ़ा०] १. वेश्याओं और समाजियों की मंडली। २. वेश्या।
तायना*|–क्रि० स० [हिं० ताव] तपाना।
ताया–संज्ञा पुं० [सं० तात] [स्त्री० ताई] बाप का बड़ा भाई। बड़ा चाचा।
तार–संज्ञा पुं० [सं०] १. रूपा। चाँदी। २. तपी हुई धातु को पीट और खींचकर बनाया हुआ तागा। धातु-तंतु। ३. धातु का वह तार या डोरी जिसके द्वारा बिजली की सहायता से एक स्थान से दूसरे स्थान पर समाचार भेजा जाता है। टेलिग्राफ। ४. तार से आई हुई खबर। ५ सूत। तागा।
मुहा०–तार तार करना=नोचकर सूत सूत अलग करना।
६. बराबर चलता हुआ क्रम। अखंड परंपरा। सिलसिला।
मुहा०–तार बँधना=किसी काम का बराबर चला चलना। सिलसिला जारी होना।
७. ब्योंत। सुबीता। व्यवस्था।
मुहा०—तार जमना, बैठना या बँधना= ब्योंत होना। कार्यसिद्धि का सुबीता होना।
†८. ठीक माप। ९. कार्य्यसिद्धि का योग। युक्ति। ढब। १०. प्रणव। ओंकार। ११. संगीत में एक सप्तक। १२. अठारह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।
*संज्ञा पुं० [सं० ताल] १. ताल। मजीरा। २. करताल नामक बाजा।
संज्ञा पुं० [सं० तल] तल। सतह।
*संज्ञा पुं० [हिं० ताड़] कान का एक गहना। ताटंक। तरौना।
वि० [सं०] निर्मल। स्वच्छ।
तारक–संज्ञा पुं० [सं०] १. नक्षत्र। तारा। २. आँख। ३. आँख की पुतली। ४. एक असुर जिसे कार्त्तिकेय ने मारा था। दे० "तारकासुर"। ५. राम का षडक्षर मंत्र। 'ओं रामाय नमः' का मंत्र। ६. वह जो पार उतारे। ७. भवसागर से पार करनेवाला। ८. एक प्रकार का वर्णवृत्त।
तारकश–संज्ञा पुं० [हिं० तार + फ़ा० कश] धातु का तार खींचनेवाला।
तारका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नक्षत्र। तारा। २. आँख की पुतली। ३. नाराच नामक छंद। ४. बालि की स्त्री तारा।
*संज्ञा स्त्री० दे० "ताड़का"।
तारकाक्ष–संज्ञा पुं० [सं०] तारकासुर का बड़ा लड़का। यह उन तीन भाइयों में से एक था जो तीन पुर (त्रिपुर) बसाकर रहते थे।
तारकासुर–संज्ञा पुं० [सं०] एक असुर जिसको मारने के लिये शिव को पार्वती से विवाह करके कार्त्तिकेय को उत्पन्न करना पड़ा था।
तारकेश्वर–संज्ञा पुं० [सं०] शिव।
तारघर–संज्ञा पुं० [हिं० तार + घर] वह स्थान जहाँ से तार की खबर भेजी जाय।
तार-घाट–संज्ञा पुं० [हिं० तार + घात] मतलब निकलने का सुबीता। व्यवस्था। आयोजन।
तारण–संज्ञा पुं० [सं०] १. पार उतारने का काम। २. उद्धार। निस्तार। ३. उद्धार करनेवाला। तारनेवाला। ४. विष्णु।
तारतम्य–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० तारतम्यिक] १. एक दूसरे से कमी-बेशी का हिसाब। न्यूनाधिक्य। २. कमी-बेशी के हिसाब

से सम्बन्धीय। ३ गुण, परिमाण आदि का परस्पर मिलान।

तारन-संज्ञा पुं० दे० "तारण"।

तारना-क्रि० स० [सं० तारण] १ पार लगाना। पार करना। २ संसार से क्लेश आदि से छुड़ाना। सद्गति देना।

तारपीन-संज्ञा पुं० [अं० टरपेंटाइन] चीड़ के पेड़ से निकला हुआ तेल जो प्राय औषध के काम में आता है।

तारबर्की-संज्ञा पुं० [हिं० तार+फा० बर्क] बिजली की शक्ति द्वारा समाचार पहुँचाने-वाला तार।

तारल्य-संज्ञा पुं० [सं०] १ तरल या प्रवाह-शील होने का धर्म। द्रवत्व। २ चंचलता।

तारा-संज्ञा पुं० [सं०] १ नक्षत्र। सितारा।
मुहा०-तारे गिनना=चिंता या आसरे में बेचैनी से रात काटना। तारा टूटना=चमकते हुए पिंड का आकाश से पृथ्वी पर गिरते हुए दिखाई पड़ना। उल्कापात होना। तारा डूबना=शुक्र का अस्त होना। तारे तोड़ लाना=कोई बहुत ही कठिन या चालाकी का काम करना। तारों की छाँह=बड़े सवेरे। तड़के।
२ आँख की पुतली। ३ सितारा। भाग्य। किस्मत।
संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दस महाविद्याओं में से एक। २ बृहस्पति की स्त्री जिसे चंद्रमा ने उसके इच्छानुसार रख लिया था और जिससे बुध उत्पन्न हुआ था। ३ बालि नामक बंदर की स्त्री और सुषेण की कन्या। यह पंचकन्याओं में मानी जाती है।
*संज्ञा पुं० दे० "ताला"।

ताराग्रह-संज्ञा पुं० [सं०] मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि ये पाँच ग्रह।

ताराज-संज्ञा पुं० [फा०] १ लूट-पाट। २ नाश। ध्वंस। बरबादी।

ताराधिप-संज्ञा पुं० [सं०] १ चंद्रमा। २ शिव। ३ बृहस्पति। ४ बालि। ५ सुग्रीव।

तारापीड़-संज्ञा पुं० दे० "ताराधिप"।

[illegible]रापथ-संज्ञा पुं० [सं०] आकाश।

तारामंडल-संज्ञा पुं० [सं०] नक्षत्रों का समूह या घेरा।

तारिका*-संज्ञा स्त्री० दे० "तारका"।

तारिणी-वि० स्त्री० [सं०] तारनेवाली। उद्धार करनेवाली।
संज्ञा स्त्री० तारा देवी।

तारी*†-संज्ञा स्त्री० दे० "ताली"।
*† संज्ञा स्त्री० दे० "ताड़ी"।

तारीक-वि० [फा०] [संज्ञा तारीकी] १ स्याह। काला। २ धुँधला। अँधेरा।

तारीख-संज्ञा स्त्री० [फा०] १ महीने का हर एक दिन (२४ घंटे का)। तिथि। २ वह तिथि जिसमें पूर्व-काल के किसी वर्ष में कोई विशेष घटना हुई हो। ३ नियत तिथि। किसी काम के लिये ठह-राया हुआ दिन।
मुहा०-तारीख डालना=तारीख मुकर्रर करना। दिन नियत करना।

तारीफ-संज्ञा स्त्री० [अ०] १ लक्षण। परि-भाषा। २ वर्णन। विवरण। ३ बखान। प्रशंसा। श्लाघा। ४ विशेषता। गुण। सिफत।

तारुण्य-संज्ञा पुं० [सं०] जवानी।

तार्किक-संज्ञा पुं० [सं०] १ तर्कशास्त्र का जाननेवाला। २ तत्त्ववेत्ता। दार्शनिक।

ताल-संज्ञा पुं० [सं०] १ करतल। हथेली। २ वह शब्द जो दोनों हथेलियों को एक दूसरी पर मारने से उत्पन्न होता है। कर-तलध्वनि। ताली। ३ नाचने गाने में उसके मध्यवर्ती काल और क्रिया का परि-माण।
मुहा०-ताल बेताल=१ जिसका ताल ठिकाने से न हो। २ अवसर या बिना अवसर।
४ जंघे या बाहु पर जोर से हथेली मार-कर उत्पन्न किया हुआ शब्द। (कुश्ती)
मुहा०-ताल ठोकना=लड़ने के लिये लल-कारना।
५ मँजीरा। झाँझ। ६ चश्मे के पत्थर या काँच का एक पल्ला। ७ हरताल। ८ ताड़ का पेड़ या फल। ९ ताला।

१०. तलवार की मूठ। ११. पिंगल में ढगण का दूसरा भेद।
संज्ञा पुं० [सं० तल्ल] तालाब।
तालक*†-संज्ञा पुं० दे० "तअल्लुक"।
तालकेतु-संज्ञा पुं० [सं०] १. भीष्म। २. बलराम।
तालजंघ-संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्राचीन देश। २. इस देश का निवासी।
तालध्वज-संज्ञा पुं० दे० "तालकेतु"।
तालपर्णी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सौंफ। २. कपूर कचरी। ३. तालमूली। मुसली।
ताल-बैताल-संज्ञा पुं० [सं० ताल + वेताल] दो देवता या यक्ष। ऐसा प्रसिद्ध है कि राजा विक्रमादित्य ने इन्हें सिद्ध किया था।
ताल मखाना-संज्ञा पुं० [हिं० ताल+मक्खन] १. एक पौधा जिसके बीज दवा के काम आते हैं। २. दे० "मखाना"।
तालमूली-संज्ञा स्त्री० [सं०] मुसली।
तालमेल-संज्ञा पुं० [हिं० ताल + मेल] १. ताल-सुर का मिलान। २. उपयुक्त योजना। ठीक ठीक संयोग। ३. उपयुक्त अवसर।
तालरस-संज्ञा पुं० [सं०] ताड़ के पेड़ का मद्य। ताड़ी।
तालवन-संज्ञा पु० [सं०] १. ताड़ के पेड़ों का जंगल। २. ब्रज का एक वन।
तालव्य-वि० [सं०] १. तालू संबंधी। २. तालु से उच्चारण किया जानेवाला वर्ण। जैसे-इ, ई, च, छ, य, श आदि।
ताला-संज्ञा पुं० [सं० तलक] लोहे, पीतल आदि की वह कल जिसे बंद किवाड़, संदूक आदि की कुंडी में फँसा देने से वह बिना कुंजी के नहीं खुल सकता। कुल्फ।
मुहा०-ताला तोड़ना=किसी दूसरे की वस्तु को चुराने के लिये उसके ताले को तोड़ना।
ताला कुंजी-संज्ञा स्त्री० [हिं० ताला+कुंजी] १. किवाड़, संदूक आदि बंद करने का यंत्र। २. लड़कों का एक खेल।
तालाब-संज्ञा पुं० [हिं० ताल + फ़ा० आब] जलाशय। सरोवर। पोखरा।
तालिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ताली। कुंजी। २. नत्थी या तागा जिससे तालपत्र या कागज बँधे हों। ३. सूची। फ़ेहरिस्त।
तालिब-संज्ञा पुं० [अ०] १. ढूँढ़नेवाला। तलाश करनेवाला। २. चाहनेवाला।
तालिबइल्म-संज्ञा पुं० [अ०] विद्यार्थी।
तालिम*†-संज्ञा स्त्री० [सं० तल्प] बिस्तर।
ताली-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लोहे की वह कील जिससे ताला खोला और बंद किया जाता है। कुंजी। चाबी। २. ताड़ी। ताड़ का मद्य। ३. तालमूली। मुसली। ४. एक वर्णवृत्त। ५. मेहराब के बीचो-बीच का पत्थर या ईंट।
संज्ञा स्त्री० [सं० ताल] १. दोनों फैली हुई हथेलियों को एक दूसरी पर मारने की क्रिया। थपोड़ी।
मुहा०--ताली पीटना या बजाना=हँसी उड़ाना। उपहास करना।
२. दोनों हथेलियों को फैलाकर एक दूसरी पर मारने से उत्पन्न शब्द। करतल-ध्वनि।
संज्ञा स्त्री० [हिं० ताल] छोटा ताल। तलैया। गड़ही।
तालीम-संज्ञा स्त्री० [अ०] अभ्यासार्थ उपदेश। शिक्षा।
तालीशपत्र-संज्ञा पुं० [सं०] १. तमाल या तेजपत्ते की जाति का एक पेड़। २. भूआँवला की जाति का एक पौधा। इसकी सूखी पत्तियाँ दवा के काम में आती हैं। पनियाँ आँवला।
तालु-संज्ञा पुं० [सं०] तालू।
तालुका-संज्ञा पुं० दे० "तअल्लुका"।
तालू-संज्ञा पुं० [सं० तालु] १. मुँह के भीतर की ऊपरी छत।
मुहा०--तालू में दाँत जमना=अदृष्ट आना। बुरे दिन आना। तालू से जीभ न लगना=चुपचाप न रहा जाना। बके जाना।
२. खोपड़ी के नीचे का भाग। दिमाग।
तालेवर-वि० [अ० तालः + वर] धनी।
ताल्लुक-संज्ञा पुं० दे० "तअल्लुक"।
ताव-संज्ञा पुं० [सं० ताप] १. वह गरमी जो किसी वस्तु को तपाने या पकाने के

लिये पहुँचाई जाय।

मुहा०—(किसी वस्तु में) ताव आना = जितना चाहिए, उतना गरम हो जाना। ताव खाना = आँच पर गरम होना। ताव देना = आँच पर रखना। गरम करना। मूँछों पर ताव देना = पराक्रम, यश आदि के घमंड में मूँछों पर हाथ फेरना।

२ अधिकार मिले हुए क्रोध का आवेग। मुहा०—ताव दिखाना = अभिमान मिला हुआ क्रोध प्रकट करना। ताव में आना = अभिमान मिले हुए क्रोध के आवेग में होना।

३ शेखी की झोंक। ४ ऐसी इच्छा जिसमें उतावलापन हो।

मुहा०-ताव चढ़ना = प्रबल इच्छा होना।

सज्ञा पु० [फा० ता] कागज का तख्ता।

तावत्–क्रि० वि० [स०] १ उतनी देर तक। तब तक। २ उतनी दूर तक। वहाँ तक। "यावत्" का सबधपूरक।

तावना*†–क्रि० स० [स० तापन] १ तपाना। गरम करना। २ जलाना। ३ दुःख पहुँचाना।

ताव भाव- सज्ञा पु० [हि० ताव भाव] उपयुक्त अवसर। मौका। परिस्थिति।

तावरी–सज्ञा स्त्री० [स० ताप] १ ताप। दाह। जलन। २ धूप। घाम। ३ बुखार। ज्वर। हरारत। ४ गरमी से आया हुआ चक्कर। मूर्च्छा।

तावरो*†–सज्ञा पु० दे० "तावरी"।

तावान–सज्ञा पु० [फा०] वह चीज जो नुकसान भरने के लिये दी या ली जाय। दंड। डाँड।

तावीज–सज्ञा पु० [अ० तअवीज] १ यंत्र, मंत्र या कवच जो किसी संपुट के भीतर रखकर पहना जाय। २ धातु का चौकोर या अठपहला संपुट जिसे तागे में लगाकर गले या बाँह पर पहनते हैं। जंतर।

ताश–सज्ञा पु० [अ० तास] १ एक प्रकार का जरदोजी कपड़ा। जरबफ्त। २ खेलने के लिये मोटे कागज के चौखूँटे टुकड़े जिन पर रंगों की बूटियाँ या तसवीरें बनी रहती हैं। ३ छोटी दफ्ती जिस पर सीने या तागा लपेटा रहता है।

तास–सज्ञा पु० [अ० तास] चमड़ा मढ़ा हुआ एक प्रकार का बाजा।

तासीर–सज्ञा स्त्री० [अ०] असर। प्रभाव।

तासु*–सर्व० [हि० ता] उसका।

तासों†–सर्व० दे० "तासों"।

तासों†*–सर्व० [हि० ता] उससे।

ताहम–अव्य० [फा०] तो भी।

ताहि*†–सर्व० [हि० ता] उसको। उसे।

ताहीं†–अव्य० दे० "ताईं", "तईं"।

तितिड़ी–सज्ञा स्त्री० [स०] इमली।

तिआ–सज्ञा स्त्री० दे० "तिया"।

तिआह†–सज्ञा पु० [स० त्रिविवाह] १ तीसरा विवाह। २ वह पुरुष जिसका तीसरा ब्याह हो रहा हो।

तिकड़ी–सज्ञा स्त्री० [हि० तीन + कड़ी] १ तीन कड़ियोंवाला। २ चारपाई की वह बुनावट जिसमें तीन रस्सियाँ एक साथ हों।

तिकोन*–वि० दे० "तिकोना"।

तिकोना–वि० [स० त्रिकोण] जिसमें तीन कोन हों। तीन कोना का। सज्ञा पु० समोसा नाम का पकवान।

तिकोनिया–वि० दे० "तिकोना"।

तिक्का†–सज्ञा पु० (फा० तिक] मांस की बोटी। लोथ।

तिक्की–सज्ञा स्त्री० [स० त्रि] गंजीफे या ताश का वह पत्ता जिस पर तीन बूटियाँ हों।

तिक्ख*–वि० [स० तीक्ष्ण] १ तीखा। चोखा। तेज। २ तीव्रबुद्धि। चालाक।

तिक्त–वि० [स०] जिसका स्वाद नीम या चिरायते आदि का सा हो। तीता। कड़ुआ।

तिक्तता–सज्ञा स्त्री० [स०] तिताई। कड़आपन।

तिक्ष*†–वि० [स० तीक्ष्ण] १ तीक्ष्ण। तेज। २ चोखा। पैना।

तिक्षता*–सज्ञा स्त्री० [स० तीक्ष्णता] तेजी।

तिखटी*†–सज्ञा स्त्री० दे० "टिकठी"।

तिखाई–सज्ञा स्त्री० [हि० तीखा] तीखापन।

तिखारना–†क्रि०अ०[सं०त्रि+हिं० आखर] कोई बात पक्की करने के लिये कई बार कहना या कहलाना।
तिखूँटा–वि० [हिं० तीन + खूँट] जिसमें तीन कोने हों। तिकोना।
तिगुना–वि० [सं० त्रिगुण] तीन बार अधिक। तीन गुना।
तिग्म–वि० [सं०] तीक्ष्ण। तेज।
संज्ञा पुं० १. वज्र। २. पिप्पली।
तिग्मता–संज्ञा स्त्री० [सं०] तीक्ष्णता।
तिच्छ*–वि० दे० "तीक्ष्ण"।
तिच्छन*–वि० दे० "तीक्ष्ण"।
तिजरा–संज्ञा पुं० दे० "तिजारी"।
तिजारत–संज्ञा स्त्री० [अ०] वाणिज्य। व्यापार। रोजगार। सौदागरी।
तिजारी–संज्ञा स्त्री० [हिं० तिजार] हर तीसरे दिन जाड़ा देकर आनेवाला ज्वर।
तिड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "तिक्की"।
तिड़ी बिड़ी†–वि० [देश०] तितर-बितर। छितराया हुआ।
तित*–क्रि० वि० [सं० तत्र] १. तहाँ। वहाँ। २. उधर। उस ओर।
तितना†–क्रि० वि० दे० "उतना"।
तितर बितर–वि०[हिं०तिधर + अनु०] १. जो एकत्र न हो। छितराया हुआ। बिखरा हुआ। २. अव्यवस्थित। अस्त-व्यस्त।
तितली–संज्ञा स्त्री० [हिं० तीतर] १. एक उड़नेवाला सुंदर कीड़ा या फतिंगा जो प्रायः फूलों पर बैठा हुआ दिखाई पड़ता है। २. एक प्रकार की घास।
तितलौकी†–संज्ञास्त्री०[हिं०तीता + लौआ] कटुतुंबी। कड़ुवा कद्दू।
तितारा–संज्ञा पुं० [सं० त्रि + हिं० तार] सितार की तरह का एक बाजा जिसमे तीन तार लगे रहते हैं।
वि० जिसमें तीन तार हों।
तितिंबा–संज्ञापुं०[अ० तितिम्मः] १.ढकोसला। २. शेष। ३. पुस्तक का परिशिष्ट। उपसंहार।
तितिक्ष–वि० [सं०] सहनशील।
तितिक्षा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सरदी, गरमी आदि सहने की सामर्थ्य। सहिष्णुता। २. क्षमा। क्षांति।
तितिक्षु–वि० [सं०] क्षमाशील।
तितिम्मा–संज्ञा पुं० [अ०] १. बचा हुआ भाग। २. परिशिष्ट। उपसंहार।
तिते*†–वि० [सं० तति] उतने।
तितेक*†–वि० [हिं०तितो + एक] उतना।
तितै†*–क्रि०वि०[हिं०तितो + ऐ (प्रत्य०)] १. वहाँ या वहीं। २. उधर।
तितो*†–वि०,क्रि०वि०[सं०तति] उतना।
तित्तिरि–संज्ञा पुं० [सं०] १. तीतर पक्षी। २. यजुर्वेद की एक शाखा। तैत्तिरीय। ३. यास्क मुनि के शिष्य जिन्होंने तैत्तिरीय शाखा चलाई थी।
तिथि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चांद्र मास के अलग अलग दिन जिनके नाम संख्या के अनुसार होते हैं। मिति। तारीख। (प्रत्येक पक्ष में १५ तिथियाँ होती हैं।) २. पंद्रह की संख्या।
तिथिक्षय–संज्ञा पुं० [सं०] किसी तिथि का गिनती में न आना। (ज्यो०)
तिथिपत्र–संज्ञा पुं० [सं०] पचांग। जंत्री।
तिदरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० तीन+फा० दर] वह कोठरी जिसमे तीन दरवाजे या खिड़कियाँ हों।
तिधर†–क्रि० वि० दे० "उधर"।
तिधारा–संज्ञा पुं० [सं० त्रिधार] बिना पत्तों का एक प्रकार का थूहर (सेंहुड़)।
तिन†–सर्व० [सं० तेन] 'तिस' का बहु०।
संज्ञा पुं० [सं० तृण] तिनका। तृण।
तिनकना–क्रि० अ० [अनु०] चिड़चिड़ाना। चिढ़ना। झल्लाना।
तिनका–संज्ञा पुं० [सं० तृण] सूखी घास या डाँठी का टुकड़ा। तृण।
मुहा०–तिनका दाँतों मे पकड़ना या लेना = क्षमा या कृपा के लिये दीनतापूर्वक विनय करना। गिड़गिड़ाना। तिनका तोड़ना = १. सबंध तोड़ना। २. बलैया लेना। तिनके का सहारा=थोड़ा सा सहारा। तिनके को पहाड़

गरना = छोटी बात को बड़ी कर डालना। मरा निय था।

तिनगना–क्रि० अ० दे० "तिनकना"।

तिनगरी–संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का पकवान।

तिनपहला–वि० [हिं० तीन + पहल] जिसमें तीन पहल या पार्श्व हों।

तिनिश–संज्ञा पु० [सं०] शीसम की जाति का एक पेड़। तिनास। तिनसुना।

तिनुका*†–संज्ञा पुं० दे० "तिनका"।

तिन्ना–संज्ञा पु० [सं०] १ सती नामक वर्णवृत्त। २ रोटी के साथ खाने की रसे-दार वस्तु। ३ तिन्नी धान।

तिन्नी–संज्ञा स्त्री० [सं० तृण] एक प्रकार का जंगली धान जो तालों में होता है।
संज्ञा स्त्री० [देश०] नीवी। फुफुंदी।

तिन्ह†–सर्व दे० "तिन"।

तिपति*‡–संज्ञा स्त्री० दे० "तृप्ति"।

तिपल्ला–वि०[हिं०तीन + पल्ला] १ जिसमें तीन पल्ले हों। २ जिसमें तीन तागे हों।

तिपाई–संज्ञा स्त्री०[हिं०तीन + पाया] तीन पायों की बैठने या घड़ा आदि रखने की छोटी ऊँची चौकी। टिकठी। तिगोडिया।

तिपाड–संज्ञा पु०[हिं०तीन + पाट] १ जो तीन पाट जोड़कर बना हो। २ जिसमें तीन पल्ले हों।

तिबारा–वि० [हिं० तीन + बार] तीसरी बार।
संज्ञा पु० तीन बार खींचा हुआ मद्य।
संज्ञा पु०[हिं०तीन + बार=दरवाजा] वह घर या कोठरी जिसमें तीन द्वार हों।

तिबासी–वि० [हिं० तीन + बासी] तीन दिन का बासी (खाद्य पदार्थ)।

तिब्बत–संज्ञा पु०[सं०त्रि + भोट] एक देश जो हिमालय के उत्तर है। भोट देश।

तिब्बती–वि० [हिं० तिब्बत] भोट देशी। तिब्बत का। तिब्बत में उत्पन्न।
संज्ञा स्त्री० तिब्बत की भाषा।
संज्ञा पु० तिब्बत का रहनेवाला।

तिमंजिला–वि०[हिं० तीन + अ० मंजिल] [स्त्री० तिमंजिली] तीन खंडों का। तीन मरातिब का।

तिमिंगिल–संज्ञा पु० [सं०] १. समुद्र में रहनेवाला मत्स्य के आकार का एक बड़ा भारी जंतु। २ एक द्वीप का नाम।

तिमि–संज्ञा पु० [सं०] १ समुद्र में रहने-वाला मछली के आकार का एक बड़ा भारी जंतु। २ समुद्र। ३ रतौंधी का रोग जिसमें रात को दिखाई नहीं देना।
*अव्य० [सं० तद् + इमि] उस प्रकार। वैसे।

तिमिर–संज्ञा पु० [सं०] १ अंधकार। अँधेरा। २ आँखों से धुँधला दिखाई पड़ना, रात को न दिखाई पड़ना आदि आँखों के दोष।

तिमिरहर–संज्ञा पु० [सं०] सूर्य्य।

तिमिरारि–संज्ञा पु० [सं०] सूर्य्य।

तिमिरारी*–संज्ञा स्त्री० [सं० तिमिराली] अंधकार का समूह। अँधेरा।

तिमिरावलि–संज्ञा स्त्री० [सं०] अंधकार का समूह।

तिमुहानी–संज्ञा स्त्री० [हिं० तीन + फा मुहाना] वह स्थान जहाँ तीन ओर जाने को तीन मार्ग हों। तिरमुहानी।

तिय*–संज्ञा स्त्री० [सं० स्त्री] १ स्त्री। औरत। २ पत्नी। जोरू।

तियला–संज्ञा पु० [हिं०तिय + ला] स्त्रियों का एक पहनावा।

तिया–संज्ञा पु० [सं० त्रि] तिक्की। तिड्डी।
*संज्ञा स्त्री० दे० "तिय"।

तिरकुटा–संज्ञा पु० [सं० त्रिकटु] सोंठ, मिर्च, पीपल, इन तीन कड़ुई ओषधियों का समूह।

तिरखा*‡–संज्ञा स्त्री० दे० "तृषा"।

तिरखित*–वि० दे० 'तृषित'।

तिरखूँटा–वि० [सं० त्रि + हिं०खूँट] जिसमें तीन खूँट या कोने हों। तिरखोना।

तिरछई†–संज्ञा स्त्री० [हिं० तिरछा] तिर-छापन।

तिरछा–वि० [सं० तिरश्चीन] १ जो ठीक सामने की ओर न जाकर इधर-उधर हट-

कर गया हो।
यौ०—बाँका तिरछा = छबीला।
मुहा०—तिरछी चितवन या नजर = बिना सिर फेरे हुए बगल की ओर दृष्टि। तिरछी बात या वचन = कटु वाक्य। अप्रिय शब्द। २. एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।
तिरछाई|-संज्ञा स्त्री० [हिं० तिरछा] तिरछापन।
तिरछाना-क्रि० अ० [हिं० तिरछा] तिरछा होना।
तिरछापन-संज्ञा पुं० [हिं० तिरछा + पन] तिरछा होने का भाव।
तिरछौहाँ-वि० [हिं० तिरछा + औहाँ] जो कुछ तिरछापन लिए हो।
तिरछौहें-क्रि० वि० [हिं० तिरछौहाँ] तिरछेपन के साथ। वक्रता से।
तिरना-क्रि० अ० [सं० तरण] १. पानी में न डूबकर सतह के ऊपर रहना। उतराना। २. तैरना। पैरना। ३. पार होना। ४. तरना। मुक्त होना।
तिरनी-संज्ञा स्त्री० [?] १. घाघरी बाँधने की डोरी। नीवी। तिन्नी। फुबती। २. स्त्रियों के घाघरे या धोती का वह भाग जो नाभि के नीचे पड़ता है।
तिरप-संज्ञा [सं० त्रि] नृत्य में एक प्रकार की गति। त्रिसा। तिहाई।
तिरपट|-वि० [देश०] १. तिरछा। टेढ़ा। २. मुश्किल। कठिन।
तिरपाई-संज्ञा स्त्री० [सं० त्रिपाद] तीन पायों की ऊँची चौकी। स्टूल।
तिरपाल-संज्ञा पुं० [सं० तृण हिं० पातना = बिछाना] फूस या सरकंडों के लंबे पूले जो छाजन में खपड़ों के नीचे दिए जाते हैं। मुट्ठा।
संज्ञा पुं० [अं० टारपालिन] रोगन चढ़ा हुआ कनवास या टाट।
तिरपित*‡-वि० दे० "तृप्त"।
तिरपौलिया-संज्ञा पुं० [सं० त्रि हिं० पोल] वह स्थान जहाँ बराबर में ऐसे तीन बड़े फाटक हों जिनसे होकर हाथी, ऊँट इत्यादि सवारियाँ निकल सकें।
तिरबेनी-संज्ञा स्त्री० दे० "त्रिवेणी"।
तिरमिरा-संज्ञा पुं० [सं० तिमिर] १. दुर्बलता के कारण होनेवाला दृष्टि का एक दोष जिसमें कभी अँधेरा और कभी अनेक प्रकार के रंग या तारे दिखाई पड़ते हैं। २. तेज रोशनी या चमक में नजर का न ठहरना। चकाचौंध।
तिरमिराना-क्रि० अ० [हिं० तिरमिरा] तेज रोशनी या चमक के सामने (आँखों का) झपना। चौंधना। चौंधियाना।
तिरलोक‡-संज्ञा पुं० दे० "त्रिलोक"।
तिरशूल‡-संज्ञा पुं० दे० "त्रिशूल"।
तिरस्कार-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० तिरस्कृत] १. अनादर। अपमान। २. भर्त्सना। फटकार। ३. अनादरपूर्वक त्याग।
तिरस्कृत-वि० [सं०] १. जिसका तिरस्कार किया गया हो। अनादृत। २. अनादरपूर्वक त्याग किया हुआ। ३. परदे में छिपा हुआ।
तिरहुत-संज्ञा पुं० [सं० तीरभुक्ति] मिथिला प्रदेश जिसके अंतर्गत आजकल मुजफ़्फ़रपुर और दरभंगा है।
तिरहुतिया-वि० [हिं० तिरहुत] तिरहुत का।
संज्ञा पुं० तिरहुत का रहनेवाला।
संज्ञा स्त्री० तिरहुत की बोली।
तिराना-क्रि० स० [हिं० तिरना] १. पानी के ऊपर ठहराना या चलाना। तैराना। २. पार करना। ३. उबारना। निस्तार करना। भयभीत करना।
तिराहा-संज्ञा पुं० [हिं० तीन + फ़ा० राह] वह स्थान जहाँ से तीन रास्ते तीन ओर गए हों। तिरमुहानी।
तिरिन‡*-संज्ञा पुं० दे० "तृण"।
तिरिया-संज्ञा स्त्री० [सं० स्त्री] स्त्री। औरत।
यौ०—तिरिया चरित्तर = स्त्रियों की चालाकी या कौशल।
तिरीछा*‡-वि० दे० "तिरछा"।
तिरेंदा-संज्ञा पुं० [सं० तरंड] १. समुद्र में

तैरता हुआ पीपा जो संकेत के लिये किसी ऐसे स्थान पर रखा जाता है जहाँ पानी छिछला होता है या चट्टान होती है। २ मछली मारने की बंसी में की लकड़ी जिसके डूबने से मछली के फँसने का पता लगता है। तरदा।

तिरोधान–संज्ञा पु० [सं०] अंतर्धान।

तिरोभाव–संज्ञा पु० [सं०] १ अंतर्धान। अदर्शन। २ गोपन। छिपाव।

तिरोहित, तिरोभूत–वि० [सं०] छिपा हुआ। अंतर्हित। गायब।

तिरौंछा–वि० दे० 'तिरछा'।

तिर्यक–वि० [सं०] तिरछा। टेढ़ा।
संज्ञा पु० पशु, पक्षी आदि जीव।

तिर्यक्ता–संज्ञा स्त्री० [सं०] तिरछापन।

तिर्यग्गति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ तिरछी या टेढ़ी चाल। २ पशु-योनि की प्राप्ति।

तिर्यग्योनि–संज्ञा स्त्री० [सं०] पशु पक्षी आदि जीव।

तिलंगा–संज्ञा पु० [सं० तैलंग] अँगरेज़ी फौज का देशी सिपाही।
संज्ञा पु०[हिं०तीन+लंग] एक प्रकार का कनकौवा।

तिलंगाना–संज्ञा पु० [सं० तैलंग] तैलंग देश।

तिलंगी–वि० [सं० तैलंग] तिलंगाने का निवासी।
संज्ञा स्त्री० [हिं० तीन+लंग] एक प्रकार की पतंग।

तिल–संज्ञा पु० [सं०] १ एक पौधा जिसकी खेती तेलवाले बीजों के लिये होती है। तिल दो प्रकार का होता है— सफेद और काला।
मुहा०–*तिल की ओट पहाड़=किसी छोटी बात के भीतर बड़ी भारी बात।* तिल का ताड़ करना=किसी छोटी बात को बहुत बढ़ा देना। तिल तिल=थोड़ा थोड़ा। तिल धरने की जगह न होना=जरा सी भी जगह खाली न रहना। तिल भर=जरा सा। थोड़ा सा।
२ काले रंग का बहुत छोटा दाग जो शरीर पर होता है। ३ काली बिंदी के आकार का गोदना। ४ आँख की पुतली के बीचोबीच की गोल बिंदी।

तिलक–संज्ञा पु० [सं०] १ वह चिह्न जो चंदन, केसर आदि से मस्तक, बाहु आदि पर सांप्रदायिक संकेत या शोभा के लिये लगाते हैं। टीका। २ राज्याभिषेक। राजगद्दी। राजतिलक। ३ विवाह संबंध स्थिर करने की एक रीति। टीका। ४ माथे पर पहनने का स्त्रियों का एक गहना। टीका। ५ शिरोमणि। श्रेष्ठ व्यक्ति। ६ पुन्नाग की जाति का एक सुंदर पेड़। ७ घोड़े का एक भेद। ८ झिल्ली जो पेट के भीतर होती है। क्लोम। ९ किसी ग्रंथ की अर्थसूचक व्याख्या। टीका।
संज्ञा पु० [तु० तिरलीक] १ एक प्रकार का जनाना कुरता। २ खिलअत।

तिलकना–क्रि० अ० [हिं० तड़कना] १ गीली मिट्टी का सूखकर स्थान स्थान पर दरकना या फटना। २ फिसलना।

तिलक मुद्रा–संज्ञा स्त्री० [सं०] चंदन आदि का टीका और शंख, चक्र आदि का छापा जो भक्त लोग लगाते हैं।

तिलकहार–संज्ञा पु० [हिं० तिलक+हार] वह लोग जो कन्या पक्ष से वर को तिलक चढ़ाने के लिये भेजे जाते हैं।

तिलका–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त। तिल्ला। तिल्लाना। डिल्ला।

तिलकुट–संज्ञा पु० [सं० तिलक] कूटे हुए तिल जो खाँड़ की चाशनी में पगे हों।

तिलचटा–संज्ञा पु० [हिं० तिल+चाटना] एक प्रकार का झींगुर। चपड़ा।

तिलछना–क्रि० अ० [अनु०]* विकल रहना। छटपटाना। बेचैन रहना।

तिलड़ा–वि० [हिं० तीन+लड़] जिसमें तीन लड़ें हों।

तिलड़ी–संज्ञा स्त्री०[हिं०तीन+लड़] तीन लड़ों की माला जिसके बीच में जुगनी होती है।

तिलदानी-संज्ञा स्त्री० [हिं० तिल्ला + सं० आधान] वह थैली जिसमें दरज़ी सूई, तागा आदि रखते हैं।
तिलपट्टी-संज्ञा स्त्री० [हिं० तिल + पट्टी] खाँड़ में पगे हुए तिलों का जमाया हुआ कतरा।
तिलपपड़ी-संज्ञा स्त्री० दे० "तिलपट्टी"।
तिलपुष्प-संज्ञा पुं० [सं०] १. तिल का फूल। २. व्याघ्रनख। बघनखी।
तिलभुग्गा-संज्ञा पुं० दे० "तिलकुट"।
तिलमिल-संज्ञा स्त्री० [हिं० तिरमिर] चकाचौंध। तिरमिराहट।
तिलमिलाना-क्रि० अ० दे० "तिरमिराना"।
तिलवा-संज्ञा पुं० [हिं० तिल] तिलों का लड्डू।
तिलस्म-संज्ञा पुं० [यू० टेलिस्मा] १. जादू। इंद्रजाल। २. अद्भुत या अलौकिक व्यापार। करामात। चमत्कार।
तिलस्मी-वि० [हिं० तिलस्म] तिलस्म-संबंधी।
तिलहन-संज्ञा पुं० [हिं० तेल+धान्य] वे पौधे जिनके बीजों से तेल निकलता है।
तिलांजली-संज्ञा स्त्री० [सं०] मृतक-संस्कार की एक क्रिया जिसमें अँजुली में जल और तिल लेकर मृतक के नाम से छोड़ते हैं। मुहा०—तिलांजली देना = बिलकुल त्याग देना। जरा भी संबंध न रखना।
तिलाक-संज्ञा पुं० [अ० तलाक़] पति-पत्नी के नाते का टूटना।
तिली†-संज्ञा स्त्री० १. दे० "तिल"। २. दे० "तिल्ली"।
तिलैदानी-संज्ञा स्त्री० दे० "तिलदानी"।
तिलैगू-संज्ञा स्त्री० दे० "तेलगू"।
तिलोक-संज्ञा पुं० दे० "त्रिलोक"।
तिलोकपति-संज्ञा पुं० [सं० त्रिलोकपति] विष्णु।
तिलोकी-संज्ञा पुं० [सं० त्रिलोकी] इक्कीस मात्राओं का एक उपजाति छंद।
तिलोचन-संज्ञा पुं० दे० "त्रिलोचन"।
तिलोत्तमा-संज्ञा स्त्री० [सं०] पुराणानुसार एक परम रूपवती अप्सरा जिसे ब्रह्मा ने संसार भर के सब उत्तम पदार्थों में से एक एक तिल अंश लेकर बनाया था।
तिलोदक-संज्ञा पुं० दे० "तिलांजली"।
तिलोरी-संज्ञा स्त्री० [देश०] १. तेलिया मैना। २. दे० "तिलौरी"।
तिलौंछना-क्रि० स० [हिं० तेल + औंछना] थोड़ा तेल लगाकर चिकना करना।
तिलौंछा-वि० [हिं० तिल + औछा] जिसमें तेल का सा स्वाद या रंग हो।
तिलौरी-संज्ञा स्त्री० [हिं० तिल + बरी] वह बरी जिसमें तिल भी मिला हो।
तिल्ला-संज्ञा पुं० [अ० तिला] १. कलाबत्तू या बादले आदि का काम। २. दुपट्टे या साड़ी आदि का वह अंचल जिसमें कलाबत्तू आदि का काम किया हो।
संज्ञा पुं० दे० "तिलका" (वर्णवृत्त)।
तिल्लाना-संज्ञा पुं० दे० "तराना" (१)।
तिल्ली-संज्ञा स्त्री० [सं० तिलक] पेट के भीतर का पोली गुठली के आकार का एक छोटा अवयव जो पसलियों के नीचे बाँई ओर होता है। इसका संबंध पाकाशय से होता है। प्लीहा। पिलही।
संज्ञा स्त्री० [सं० तिल] तिल नाम का अन्न।
तिवाड़ी, तिवारी-संज्ञा पुं० दे० "त्रिपाठी"।
तिवास†-संज्ञा पुं० [सं० त्रिवासर] तीन दिन
तिशना-संज्ञा पुं० [फा० तशनीय] ताना। मेहना। व्यंग्य वचन।
*संज्ञा स्त्री० दे० "तृष्णा"।
तिष्ठना*-क्रि० अ० [सं० तिष्ठ] ठहरना।
तिष्न*-वि० दे० "तीक्ष्ण"।
तिस†-सर्व० [सं० तस्मिन्] 'ता' का एक रूप जो उसे विभक्ति लगने के पूर्व प्राप्त होता है।
मुहा०—तिस पर = इतना होने पर। ऐसी अवस्था में।
तिसना*-संज्ञा स्त्री० दे० "तृष्णा"।
तिसरायत-संज्ञा स्त्री० [हिं० तीसरा] तीसरा या गैर होने का भाव।
तिसरैत-संज्ञा पुं० [हिं० तीसरा] १. झगड़ा

करनेवालों से अलग एक तीसरा मनुष्य। तटस्थ। २ तीसरे हिस्से का मालिक।

तिसाना*–क्रि० अ० [सं० तृषा] प्यासा होना।

तिहरा–वि० दे० "तेहरा"।

तिहराना–क्रि० स० [हिं० तेहरा] दो बार करके एक बार फिर और करना।

तिहवार–संज्ञा पुं० दे० "त्योहार"।

तिहाई–संज्ञा स्त्री० [सं० त्रि+भाग] तीसरा भाग या हिस्सा। तृतीयांश।
संज्ञा स्त्री० खेत की उपज। फसल।

तिहायत–संज्ञा पुं० दे० "निमरैन"।

तिहारा, तिहारो*†–सर्व० दे० "तुम्हारा"।

तिहाव†–संज्ञा पुं० [हिं० तेह] १ क्रोध। कोप। २ बिगाड़। झगड़ा।

तिहि–सर्व० दे० "तेहि"।

तिहूँ†–वि० [हिं० तीन] तीनों।

तिहैया–संज्ञा पुं० [हिं० तिहाई] १ तीसरा भाग। तृतीयांश। २ तबले, मृदंग आदि की वे तीन थापें जिनमें से अंतिम थाप ठीक सम पर पड़ती है।

ती*–संज्ञा स्त्री० [सं० स्त्री] १ स्त्री। औरत। २ जोरू। पत्नी। ३ मनोहरण छंद। भ्रमरावली। नलिनी।

तीक्षण, तीक्षन*–वि० दे० "तीक्ष्ण"।

तीक्ष्ण–वि० [सं०] १ तेज नोक या धार-वाला। २ तेज। प्रखर। तीव्र। ३ उग्र। प्रचंड। तीखा। ४ जिसका स्वाद बहुत चरपरा हो। ५ जो सुनने में अप्रिय हो। कर्ण-कटु। ६ जो सहन न हो। असह्य।

तीक्ष्णता–संज्ञा स्त्री० [सं०] तीक्ष्ण होने का भाव। तीव्रता। तेजी।

तीक्ष्णदृष्टि–वि० [सं०] जिसकी दृष्टि सूक्ष्म से सूक्ष्म बात पर पड़ती हो। सूक्ष्म-दृष्टि।

तीक्ष्णधार–संज्ञा पुं० [सं०] खड्ग।
वि० जिसकी धार बहुत तेज हो।

तीक्ष्णबुद्धि–वि० [सं०] जिसकी बुद्धि बहुत तेज हो। बुद्धिमान्।

तीख*†–वि० दे० "तीखा"।

तीखन*†–वि० दे० "तीक्ष्ण"।

तीखा–वि० [सं० तीक्ष्ण] १ जिसकी धार या नोक बहुत तेज हो। तीक्ष्ण। २ तेज। तीव्र। प्रखर। ३ उग्र। प्रचंड। ४ जिसका स्वभाव बहुत उग्र हो। ५ जिसका स्वाद बहुत तेज या चरपरा हो। ६ जो सुनने में अप्रिय हो। ७ चोखा। बढ़िया।

तीखुर–संज्ञा पुं० [सं० तवक्षीर] हल्दी की जाति का एक प्रकार का पौधा। इसकी जड़ के सत्त का व्यवहार कई तरह की मिठाइयाँ आदि बनाने में होता है।

तीछन*†–वि० दे० "तीक्ष्ण"।

तीज–संज्ञा स्त्री० [सं० तृतीया] १. पक्ष की तीसरी तिथि। २ भादों सुदी तीज।
वि० दे० "हरतालिका"।

तीजा–वि० [हिं० तीन] [स्त्री० तीजी] तीसरा। तृतीय।

तीत*‡–वि० दे० "तीता"।

तीतर–संज्ञा पुं० [सं० तित्तिर] एक प्रसिद्ध चंचल और तेज दौड़नेवाला पक्षी जो लड़ाने के लिये पाला जाता है।

तीता–वि० [सं० तिक्त] १ जिसका स्वाद तीखा और चरपरा हो। तिक्त। जैसे—मिर्च। २ कड़आ। कटु।

तीतुरी*†–संज्ञा स्त्री० दे० "तितली"।

तीतुल*–संज्ञा पुं० दे० "तीतर"।

तीन–वि० [सं० त्रीणि] जो दो और एक हो।
संज्ञा पुं० दो और एक का जोड़।
मुहा०—तीन पाँच करना = घुमाव फिराव या हुज्जत की बात करना।
संज्ञा पुं० सरजूपारी ब्राह्मणों में तीन उत्तम गोत्रों का एक वर्ग।
मुहा०—तीन तेरह करना = तितर-बितर करना। अलग अलग करना। न तीन में, न तेरह में = जो किसी गिनती में न हो।

तीनि*†–संज्ञा पुं० और वि० दे० "तीन"।

तीमारदारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] रोगियों की सेवा-शुश्रूषा का काम।

तीय–संज्ञा स्त्री० [सं० स्त्री] स्त्री। औरत।

तीया*–संज्ञा स्त्री० दे० "तीय"।

संज्ञा पुं० दे० "तिक्की" या "तिड़ी"।

तीरंदाज–संज्ञा पुं० [फ़ा०] तीर चलाने-वाला।

तीरंदाजी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] तीर चलाने की विद्या या क्रिया।

तीर–संज्ञा पुं० [सं०] १. नदी का किनारा। कूल। तट। २. पास। निकट। समीप।

संज्ञा पुं० [फ़ा०] बाण। शर।

मुहा०—तीर चलाना या फेंकना=युक्ति भिड़ाना। रंग-ढंग लगाना।

तीरथ–संज्ञा पुं० दे० "तीर्थ"।

तीरभुक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] तिरहुत देश।

तीरवर्ती–वि० [सं०] १. तट या किनारे पर रहनेवाला। २. पास रहनेवाला। पड़ोसी।

तीरस्थ–संज्ञा पुं० [सं०] नदी के तीर पर पहुँचाया हुआ मरणासन्न व्यक्ति।

तीरा*†–संज्ञा पुं० दे० "तीर"।

तीर्णा–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त। सती। तिन्न। तरणिजा।

तीर्थंकर–संज्ञा पुं० [सं०] जैनियों के उपास्य देव जो सब देवताओं से भी श्रेष्ठ और सब प्रकार के दोषों से रहित और मुक्तिदाता माने जाते हैं। इनकी संख्या २४ है।

तीर्थ–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह पवित्र या पुण्य स्थान जहाँ धर्म-भाव से लोग यात्रा, पूजा या स्नान आदि के लिये जाते हों। २. कोई पवित्र स्थान। ३. हाथ में के कुछ विशिष्ट स्थान। ४. शास्त्र। ५. यज्ञ। ६. स्थान। स्थल। ७. उपाय। ८. अव-सर। ९. अवतार। १०. उपाध्याय। गुरु। ११. दर्शन। १२. ब्राह्मण। १३. अग्नि। १४. संन्यासियों की एक उपाधि। १५. तारनेवाला। १६. ईश्वर। १७. माता-पिता।

तीर्थपति–संज्ञा पुं० दे० "तीर्थराज"।

तीर्थयात्रा–संज्ञा स्त्री० [सं०] पवित्र स्थानों में दर्शन, स्नानादि के लिये जाना। तीर्था-टन।

तीर्थराज–संज्ञा पुं० [सं०] प्रयाग।

तीर्थराजी–संज्ञा स्त्री० [सं०] काशी।

तीर्थाटन–संज्ञा पुं० [सं०] तीर्थयात्रा।

तीर्थिक–संज्ञा पुं० [सं०] १. तीर्थ का ब्राह्मण, पंडा। २. बौद्ध धर्म का विद्वेषी ब्राह्मण। (बौद्ध) ३. तीर्थंकर।

तीली–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० तीर] १. बड़ा तिनका। सींक। २. धातु आदि का पतला, पर कड़ा तार।

तीवर–संज्ञा पुं० [सं०] १. समुद्र। २. व्याधा। शिकारी। ३. मछुआ। ४. एक वर्ण-संकर अंत्यज जाति।

तीव्र–वि० [सं०] १. अतिशय। अत्यंत। २. तीक्ष्ण। तेज। ३. बहुत गरम। ४. नितांत। बेहद। ५. कटु। कड़वा। ६. न सहने योग्य। असह्य। ७. प्रचंड। ८. तीखा। ९. वेग-युक्त। तेज। १०. कुछ ऊँचा और अपने स्थान से बढ़ा हुआ (स्वर)। (संगीत)।

तीव्रता–संज्ञा स्त्री० [सं०] तीव्र होने का भाव। तीक्ष्णता। तेजी। तीखापन।

तीस–वि० [सं० त्रिंशति] दस का तिगुना। बीस और दस।

यौ०—तीसों दिन या तीस दिन=सदा। हमेशः। तीसमारखाँ=बड़ा बहादुर (व्यंग्य)।

संज्ञा पुं० दस की तिगुनी संख्या।

तीसरा–वि० [हिं० तीन] १. क्रम में तीन के स्थान पर पड़नेवाला। २. जिसका प्रस्तुत विषय से कोई संबंध न हो। गैर।

तीसी–संज्ञा स्त्री० दे० "अलसी"।

संज्ञा स्त्री० [हिं० तीस] फल आदि गिनने का तीस गाहियों अर्थात् एक सौ पचास का एक मान।

संज्ञा पुं० दे० "तिहाई"।

तुंग–वि० [सं०] १. उन्नत। ऊँचा। २. उग्र। प्रचंड। ३. प्रधान। मुख्य।

संज्ञा पुं० १. पुन्नाग वृक्ष। २. पर्वत। पहाड़। ३. नारियल। ४. कमल का केसर। ५. शिव। ६. दो नगण और दो गुरु का एक

वर्णवृत्त।

तुंगता–संज्ञा स्त्री० [सं०] ऊँचाई।

तुंगनाथ–संज्ञा पुं० [सं०] हिमालय पर एक शिवलिंग और तीर्थस्थान।

तुंगबाहु–संज्ञा पुं० [सं०] तलवार के ३२ हाथों में से एक।

तुंगभद्र–संज्ञा पुं० [सं०] मतवाला हाथी।

तुंगभद्रा–संज्ञा स्त्री० [सं०] दक्षिण भारत की एक नदी।

तुंगारण्य–संज्ञा पुं० [सं०] झाँसी के पास बेतवा के किनारे का एक जंगल।

तुंगारन*† संज्ञा पुं० दे० "तुंगारण्य"।

तुंड–संज्ञा पुं० [सं०] १ मुख। मुँह। २ चंचु। चोंच। ३ निकला हुआ मुँह। थूथन। ४ तलवार का अगला हिस्सा। ५ शिव। महादेव।

तुंडि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मुँह। २ चोंच। ३ नाभि।

तुंडी–वि० [सं० तुंडिन्] मुँह, चोंच, थूथन या मुँडवाला।

संज्ञा पुं० गणेश।

संज्ञा स्त्री० नाभि। ढोंढी।

तुंद–संज्ञा पुं० [सं०] पेट। उदर।

वि० [फ़ा०] तेज। प्रचंड। घोर।

तुंदिल–वि० [सं०] तोंदवाला। बड़े पेटवाला।

तुंदैला–वि० [सं० तुंदिल] तोंद या बड़े पेटवाला।

तुंबडी–संज्ञा स्त्री० दे० "तूँबड़ी"।

तुंबर*–संज्ञा पुं० दे० "तुंबुरु"।

तुंबा–संज्ञा पुं० दे० "तूँबा"।

तुंबुरु–संज्ञा पुं० [सं०] १ धनिया। २ एक प्रकार के पौधे का बीज जो धनिया के आकार का होता है। ३ एक गंधर्व जो चैत के महीने में सूर्य के रथ पर रहते हैं।

तुअ*‡–सर्व० दे० "तुव", "तव"।

तुअना*†–क्रि० अ० [हिं० चूना] १ चूना। टपकना। २ खड़ा न रह सकना। गिर पड़ना। ३ गर्भपात होना।

तुक–संज्ञा स्त्री० [हिं० टेक] १ किसी पद्य या गीत का कोई खंड। कड़ी। २ पद्य के दोनों चरणों के अंतिम अक्षरों का मेल। अक्षर-मैत्री। अंत्यानुप्रास। काफिया।

मुहा०–तुक जोड़ना=भद्दी कविता करना।

तुकबंदी–संज्ञा स्त्री० [हिं० तुक+फ़ा० बंदी] १ केवल तुक जोड़ने या भद्दी कविता करने की क्रिया। २ भद्दी कविता जिसमें काव्य के गुण न हों।

तुक्मा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] घुंडी फँसाने का फंदा। मुद्धी।

तुकांत–संज्ञा पुं० [हिं० तुक+सं० अंत] पद्य के दो चरणों के अंतिम अक्षरों का मेल। अंत्यानुप्रास। काफिया।

तुका–संज्ञा पुं० दे० "तुक्का"।

तुकार–संज्ञा स्त्री० [हिं० तू+सं० कार] 'तू' का प्रयोग जो अपमान-जनक समझा जाता है। अशिष्ट संबोधन।

तुकारना–क्रि० स० [हिं० तुकार] तू तू करके या अशिष्ट संबोधन करना।

तुक्कल–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० तुका] बड़ी पतंग।

तुक्का–संज्ञा पुं० [फ़ा० तुका] वह तीर जिसमें गाँसी की जगह घुंडी सी बनी होती है।

तुख–संज्ञा पुं० [सं० तुष] १ भूसी। छिलका। २ अंडे के ऊपर का छिलका।

तुखार–संज्ञा पुं० [सं०] १ एक देश का प्राचीन नाम जिसकी स्थिति हिमालय के उत्तर-पश्चिम होनी चाहिए। यहाँ के घोड़े बहुत अच्छे माने जाते थे। २ इस देश का निवासी। ३ इस देश का घोड़ा।

संज्ञा पुं० दे० "तुषार"।

तुख्म–संज्ञा पुं० [अ०] बीज।

तुच्छ–वि० [सं०] १ हीन। क्षुद्र। नाचीज। २ ओछा। नीच। ३ अल्प। थोड़ा।

तुच्छता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हीनता। नीचता। २ ओछापन। क्षुद्रता। ३ अल्पता।

तुच्छत्व–संज्ञा पुं० दे० "तुच्छता"।

तुच्छातितुच्छ–वि० [सं०] छोटे से छोटा। अत्यंत हीन। अत्यंत क्षुद्र।

तुझ–सर्व० [सं० तुभ्यम्] 'तू' शब्द का

वह रूप जो उसे प्रथमा और षष्ठी के अतिरिक्त और विभक्तियाँ लगने के पहले प्राप्त होता है।

तुभे–सर्व० [हिं० तुभ] 'तू' का कर्म और संप्रदान रूप। तुझको।

तुट*–वि० [सं० त्रुट] लेश मात्र। जरा सा।

तुदठना*–क्रि० स० [सं० तुष्ट] तुष्ट करना। प्रसन्न करना। राजी करना।
क्रि० अ० तुष्ट होना। प्रसन्न होना।

तुड़वाना–क्रि० स० दे० "तुड़ाना"।

तुड़ाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० तुड़ाना] १. तुड़ाने की क्रिया या भाव। २. तोड़ने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

तुड़ाना–क्रि० स० [हिं० तोडने का प्रे०] १. तोड़ने का काम कराना। तुड़वाना। २. अलग करना। संबंध न रखना। ३. बड़े सिक्के को बराबर मूल्य के कई छोटे छोटे सिक्कों से बदलना। भुनाना।

तुतरा*†–वि० दे० "तोतला"।

तुतराना*†–क्रि० अ० दे० "तुतलाना"।

तुतरौहाँ*†–वि० दे० "तोतला"।

तुतलाना–क्रि० अ० [अनु०] शब्दों और वर्णों का अस्पष्ट उच्चारण करना। रुक रुककर टूटे-फूटे शब्द बोलना।

तुत्थ–संज्ञा पुं० [सं०] तूतिया।

तुदन–संज्ञा पुं० [सं०] १. व्यथा देने की क्रिया। पीड़न। २. व्यथा। पीड़ा।

तुन–संज्ञा पुं० [सं० तुन्न] एक बहुत बड़ा पेड़ जिसके फूलों से एक प्रकार का पीला बसंती रंग निकलता है।

तुनीर–संज्ञा पुं० दे० "तूणीर"।

तुपक–संज्ञा स्त्री० [तु० तोप] १. छोटी तोप। २. बंदूक। कड़ाबीन।

तुफंग–संज्ञा स्त्री० [तु० तोप] १. हवाई बंदूक। २. वह लंबी नली जिसमें मिट्टी की गोलियाँ आदि डालकर फूँक के जोर से चलाते हैं।

तुभना–क्रि० अ० [सं० स्तोभन] स्तब्ध रहना। ठक रह जाना। चकित रह जाना।

तुम–सर्व० [सं० त्वम्] 'तू' शब्द का बहुवचन रूप। वह सर्वनाम जिसका व्यवहार उस पुरुष के लिये होता है, जिससे कुछ कहा जाता है।

तुमड़ी–संज्ञा स्त्री० [सं० तुंबिनी] १. छोटा तूँबा। तुंबी। २. सूखे कद्दू का बना हुआ एक बाजा। महुवर।

तुमरा–सर्व० दे० "तुम्हारा"।

तुमरू–संज्ञा पुं० दे० "तुंबुरु"।

तुमल*–संज्ञा पुं०, वि० दे० "तुमुल"।

तुमुर*–संज्ञा पुं० दे० "तुमुल"।

तुमुल–संज्ञा पुं० [सं०] १. सेना का कोलाहल या धूम। लड़ाई की हलचल। २. सेना की गहरी मुठभेड़।

तुम्हें–सर्व० दे० "तुम"।

तुम्हारा–सर्व० [हिं० तुम] 'तुम' का संबंधकारक का रूप।

तुम्ह–सर्व० [हिं० तुम] 'तुम' का वह विभक्ति-युक्त रूप जो उसे कर्म और संप्रदान में प्राप्त होता है। तुमको।

तुरंग–संज्ञा पुं० [सं०] १. घोड़ा। २. चित्त। ३. सात की संख्या।

तुरंगक–संज्ञा पुं० [सं०] बड़ी तोरई।

तुरंगम–संज्ञा पुं० [सं०] १. घोड़ा। २. चित्त। ३. दो नगण और दो गुरु का एक वृत्त। तुंग। तुंगा।

तुरंज–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. चकोतरा नीबू। २. बिजौरा नीबू। खट्टी।

तुरंजबीन–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. एक प्रकार की चीनी जो ऊँटकटारे के पौधों पर जमती है। २. नीबू के रस का शरबत।

तुरंत–क्रि० वि० [सं० तुर] जल्दी से। अत्यंत शीघ्र। झटपट। फ़ौरन।

तुरई–संज्ञा स्त्री० [सं० तूर] एक बेल जिसके लंबे फलों की तरकारी बनाई जाती है।

तुरक–संज्ञा पुं० दे० "तुर्क"।

तुरकटा–संज्ञा पुं० [फ़ा० तुर्क + हिं० टा (प्रत्य०)] मुसलमान। (उपेक्षासूचक शब्द)

तुरकाना–संज्ञा पुं० [फ़ा० तुर्क] [स्त्री० तुरकानी] १. तुरकों का सा। २. तुर्कों का.

देश या वस्ती।
तुरकिन–सज्ञा स्त्री० [फा० तुर्क] १ तुर्क जाति की स्त्री। †२ मुसलमान की स्त्री।
तुरकी–वि० [फा०] तुर्क देश का।
सज्ञा स्त्री० [फा०] तुर्किस्तान की भाषा।
तुरग–सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० तुरगी] १ घोडा। २ चित्त।
तुरत–अव्य० [स० तुर] शीघ्र। चटपट।
तुरपन–सज्ञा स्त्री० [हिं० तुरपना] एक प्रकार की सिलाई। वखिया का उलटा।
तुरपना–क्रि० स० [हिं० तुरप + ना] तुरपन की सिलाई करना। लुढियाना।
तुरय*–सज्ञा पु० [स० तुरग] घोडा।
तुरही–सज्ञा स्त्री० [स० तूर] फूंककर बजाने का एक बाजा जो मुँह की ओर पतला और पीछे की ओर चौडा होता है।
तुरा*–सज्ञा स्त्री० दे० "त्वरा"।
सज्ञा पु० [स० तुरग] घोडा।
तुराई|*–सज्ञा स्त्री० [स० तूलिका] गद्दा।
तुराना*–क्रि० अ० [स० तुर] घबराना। आतुर होना।
क्रि० स० दे० "तुडाना"।
तुरावती–वि० स्त्री० [स० त्वरावती] वेगवाली। झोक के साथ बहनेवाली।
तुरिया*–सज्ञा स्त्री० दे० "तुरीय"।
तुरीय–वि० [स०] चतुर्थ। चौथा।
सज्ञा स्त्री० १ वेद म वाणी या वाक् के चार भेदो में द्वितीय। वैखरी। वह अवस्था जब वाणी मुँह म आकर उच्चरित होती है। २ प्राणियो की चार अवस्थाओ मे से अतिम।
तुरुष्क–सज्ञा पु० [स०] १ तुर्क जाति। तुर्किस्तान का रहनेवाला मनुष्य। २ इस जाति या देश। तुर्किस्तान। ३ तुर्किस्तान का घोडा।
तुरुही–सज्ञा स्त्री० दे० "तुरही"।
तुर्क–सज्ञा पु० [स० तुरुष्क] १. तुर्किस्तान का निवासी। २ रूम या टर्की का रहनेवाला।
तुर्कमान–सज्ञा पु० [फा० तुर्क] १ तुर्क जाति का मनुष्य। २ तुर्की घोडा।
तुर्की–वि० [फा० तुर्क] तुर्किस्तान का। सज्ञा स्त्री० १ तुर्किस्तान की भाषा। २ तुर्किस्तान का घोडा। ३ तुर्कों की सी ऐंठ। अकड। गर्व।
तुर्रा–सज्ञा पु० [अ०] १ घुँघराले बालो की लट जो माथे पर हो। काकुल। २ पर या फुँदना जो पगडी मे लगाया या *खोसा जाता है। कलगी। गोशवारा।*
मुहा०–तुर्रा यह कि = उस पर भी इतना और। सबके उपरात इतना यह भी।
३ फूलो की लडियो का गुच्छा जो दूल्हे के कान के पास लटकता रहता है। ४ टोपी आदि मे लगा हुआ फुँदना। ५ पक्षियो के सिर पर निकले हुए परो का गुच्छा। चोटी। शिखा। ६ कोडा। चाबुक। वि० [फा०] अनोखा। अद्भुत।
तुर्वसु–सज्ञा पु० [स०] देवयानी के गर्भ से उत्पन्न राजा ययाति का एक पुत्र।
तुर्श–वि० [फा०] खट्टा। अम्ल।
तुर्शी–सज्ञा स्त्री० [फा०] खटाई। अम्लता।
तुल*–वि० दे० "तुल्य"।
तुलना–क्रि० अ० [स० तुल] १ तौला जाना। तराजू पर अदाजा जाना। २ तौल या मान में बराबर उतरना। तुल्य होना। ३ आधार पर इस प्रकार ठहरना कि आधार के बाहर निकला हुआ कोई भाग अधिक बोझ के कारण किसी ओर को झुका न हो। ४ किसी अस्त्र आदि का इस प्रकार चलाया जाना कि वह ठीक लक्ष्य पर पहुँचे। सधना। ५ नियमित होना। बँधना। ६ गाडी के पहिए का औंगा जाना। ७ उद्यत होना।
सज्ञा स्त्री० [स०] १ दो या अधिक वस्तुओ के गुण, मान आदि के एक दूसरी से घट बढ होने का विचार। मिलान। तारतम्य। २ सादृश्य। समता। ३ उपमा।
तुलवाई–सज्ञा स्त्री० [हिं० तौलना] १ तौलने की मजदूरी। २ पहिए को औंगने की मजदूरी।

तुलवाना–क्रि० स० [हिं० तौलना] [संज्ञा तुलवाई] १. तौल कराना। वजन कराना। २. गाड़ी के पहिए की धुरी में घी, तेल आदि दिलाना। औंगवाना।

तुलसी–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक छोटा झाड़ या पौधा जिसकी पत्तियों से एक प्रकार की तीक्ष्ण गंध निकलती है। इसको हिंदू अत्यन्त पवित्र मानते हैं।

तुलसीदल–संज्ञा पुं० [सं०] तुलसी के पौधे का पत्ता जिसे अत्यंत पवित्र मानते हैं।

तुलसीदास–संज्ञा पुं० उत्तरीय भारत के सर्वप्रधान भक्त कवि जिनके 'रामचरितमानस' का प्रचार भारत में घर घर है।

तुलसीपत्र–संज्ञा पुं० [सं०] तुलसी की पत्ती।

तुला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सादृश्य। तुलना। मिलान। २. गुरुत्व नापने का यंत्र। तराजू। काँटा। ३. मान। तौल। ४. ज्योतिष की बारह राशियों में से सातवीं राशि जिसका आकार तराजू लिए हुए मनुष्य का सा माना जाता है।

तुलाई–संज्ञा स्त्री० [सं० तूल] रूई से भरा दोहरा कपड़ा जो ओढ़ने के काम में आता है। दुलाई।

संज्ञा स्त्री० [हिं० तुलना] १. तौलने का काम या भाव। २. तौलने की मजदूरी।

तुलादान–संज्ञा पुं० [सं०] सोलह महादानों में से एक प्रकार का दान जिसमें किसी मनुष्य की तौल के बराबर द्रव्य या पदार्थ का दान होता है।

तुलाधार–संज्ञा पुं० [सं०] १. तुला राशि। २. बनियाँ। वणिक्। ३. काशी का रहनेवाला एक वणिक् जिसने महर्षि जाजलि को उपदेश दिया था। ४. काशीनिवासी एक व्याध जो सदा माता-पिता की सेवा में तत्पर रहता था।

तुलाना*–क्रि० अ० [हिं० तुलना] १. आ पहुँचना। समीप आना। निकट आना। २. बराबर होना। पूरा उतरना।

क्रि० स० [हिं० तुलना] गाड़ी के पहियों की धुरी में चिकना दिलाना।

तुला-परीक्षा–संज्ञा स्त्री० [सं०] अभियुक्तों की एक दिव्य परीक्षा। इसमें अभियुक्त को दो बार तौलते थे और दोनों बार तौल बराबर होने पर निर्दोष मानते थे।

तुलायंत्र–संज्ञा पुं० [सं०] तराजू।

तुल्य–वि० [सं०] १. समान। बराबर। २. सदृश।

तुल्यता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बराबरी। समता। २. सादृश्य।

तुल्ययोगिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अलंकार जिसमें कई प्रस्तुतों या अप्रस्तुतों का अर्थात् बहुत से उपमेयों या उपमानों का एक ही धर्म बतलाया जाता है।

तुव–सर्व० दे० "तव"।

तुवर–संज्ञा पुं० [सं०] १. कसैला रस। २. अरहर।

तुष–संज्ञा पुं० [सं०] १. अन्न का छिलका। भूसी। २. अंडे का छिलका।

तुषानल–संज्ञा पुं० [सं०] १. भूसी या घास-फूस की आग। २. ऐसी आग में भस्म होने की क्रिया जो प्रायश्चित्त के लिये की जाती है।

तुषार–संज्ञा पुं० [सं०] १. हवा में मिली भाप जो सरदी से जमकर गिरती है। पाला। २. हिम। बरफ़। ३. हिमालय के उत्तर का एक देश जहाँ के घोड़े प्रसिद्ध थे। ४. तुषार देश में बसनेवाली जाति जो शक जाति की एक शाखा थी।

वि० छूने में बरफ़ की तरह ठंढा।

तुष्ट–वि० [सं०] १. तोषप्राप्त। तृप्त। २. राजी। प्रसन्न। खुश।

तुष्टता–संज्ञा स्त्री० [सं०] संतोष।

तुष्टना*–क्रि० अ० [सं० तुष्ट] प्रसन्न होना।

तुष्टि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. संतोष। तृप्ति। २. प्रसन्नता। (सांख्य में नौ प्रकार की तुष्टियाँ मानी गई हैं, चार आध्यात्मिक और पाँच बाह्य।) ३. कंस के आठ भाइयों में से एक।

तुसी–संज्ञा स्त्री० [सं० तुष] अन्न के ऊपर

या छिल्का। भूसी।
तुहारा—सर्व० दे० "तुम्हारा"।
तुहि—सर्व० [हि० तू] तुमको।
तुहिन—संज्ञा पु० [सं०] १ पाला। कुहरा। तुषार। २ हिम। बरफ। ३ चाँदनी। ४ शीतलता। ठंढक।
तूँ—सर्व० दे० "तू"।
तूँबा—संज्ञा पु० [सं० तुंबक] १ कड़ुआ गोल कद्दू। तितलौकी। २ कद्दू को खोखला करके बनाया हुआ बरतन जिसे प्राय साधु अपने साथ रखते हैं। कमंडल। तुंबा।
तूँबी—संज्ञा स्त्री० [हि० तूँबा] १ कड़ुआ गोल कद्दू। २ कद्दू को खोखला करके बनाया हुआ बरतन।
तू—सर्व० [सं० त्वम्] मध्यम पुरुष एकवचन सर्वनाम। जैसे, तू यहाँ से चला जा। यह शब्द अशिष्ट समझा जाता है।
मुहा०—तू-तड़ाक, तू पुकार, या तू तू मैं मैं करना=अशिष्ट शब्दों में विवाद करना।
तूख—संज्ञा पु० [सं० तुष] तिनके का टुकड़ा। सींक। खरका।
तूठना*—क्रि० अ० [सं० तुष्ट] १ संतुष्ट होना। तृप्त होना। २ प्रसन्न होना।
तूण—संज्ञा पु० [सं०] १ तीर रखने का चोंगा। तरकश। २ मानर नामक वृत्त।
तूणीर—संज्ञा पु० [सं०] तूण। तरकश।
तूत—संज्ञा पु० [फा०] मझोले आकार का एक पेड़ जिसके फल खाए जाते हैं। शहतूत।
तूतिया—संज्ञा पु० दे० "नीला थोथा"।
तूती—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ छोटी जाति का तोता। २ कनरी नाम की छोटी सुंदर चिड़िया। ३ मटमैले रंग की एक छोटी चिड़िया जो बहुत सुंदर बोलती है।
मुहा०—किसी की तूती बोलना=किसी की खूब चलती होना या प्रभाव जमना। नक्कारखाने में तूती की आवाज कौन सुनता है=१ भीड़ भाड़ या शोर-गुल में कही हुई बात नहीं सुनाई पड़ती। २ बड़े लोगों के सामने छोटों की बात कोई नहीं सुनता। ४ मुँह से बजाने का एक छोटा बाजा।
तूदा—संज्ञा पु० [फा०] ढेर। २ राशि। २ सीमा का चिह्न। हदबंदी। ३ मिट्टी का वह टीला जिस पर निशाना लगाना सीखा जाता है।
तून—संज्ञा पु० [सं० तुन्नक] १ तुन का पेड़। २ तूल नाम का लाल कपड़ा।
*संज्ञा पु० दे० "तूण"।
तूना—क्रि० अ० दे० "तुअना"।
तूनीर—संज्ञा पु० दे० "तूणीर"।
तूफान—संज्ञा पु० [अ०] १ डुबानेवाली बाढ़। २ ऐसा अंधड़ जिसमें खूब धूल उड़े, पानी बरसे, तथा इसी प्रकार के और उत्पात हों। आँधी। ३ आपत्ति। आफत। ४ हल्ला गुल्ला। ५ झगड़ा। बखेड़ा। दंगा। ६ झूठा दोषारोपण। तोहमत।
तूफानी—वि० [फा०] १ बखेड़ा करनेवाला। उपद्रवी। फसादी। २ झूठा कलंक लगानेवाला। ३ उग्र। प्रचण्ड।
तूमड़ी—संज्ञा स्त्री० [दे० तूँबा] १ तूँबी। २ तूँबी का बना हुआ एक प्रकार का बाजा जिसे सँपेरे बजाया करते हैं।
तूमतड़ाक—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ तड़कभड़क। शान-शौकत। २ ठसक। बनावट।
तूमना—क्रि० स० [सं० स्तोम] १ रूई के गाले के सटे हुए रेशों को कुछ अलग अलग करना। उधेड़ना। २ धज्जी धज्जी करना। ३ हाथ से मसलना।
तूमार—संज्ञा पु० [अ०] बात का व्यर्थ विस्तार। बात का बतंगड़।
तूर—संज्ञा पु० [सं०] १ नगाड़ा। २ तुरही।
तूरज*—संज्ञा पु० दे० "तूर्य"।
तूरण, तूरन*—क्रि० वि० दे० "तूर्ण"।
तूरना—क्रि० स० दे० "तोड़ना"।
*|—संज्ञा पु० [सं० तूर] तुरही।
तूरान—संज्ञा पु० [फा०] फारस के उत्तर-पूर्व पड़नेवाला मध्य एशिया का सारा भू भाग जो तुर्क, तातारी, मुगल आदि जातियों का निवासस्थान है।

तूरानी–वि० [फ़ा०] तूरान देश का। संज्ञा पुं० तूरान देश का निवासी।
तूर्ण–क्रि० वि० [सं०] शीघ्र। जल्दी।
तूल–संज्ञा पुं० [सं०] १. आकाश। २. शहतूत। ३. कपास, मदार, सेमर आदि के डोंड़े के भीतर का धूआ। संज्ञा पुं० [हिं० तून] १. चटकीले लाल रंग का सूती कपड़ा। २. गहरा लाल रंग। *वि० [सं० तुल्य] तुल्य। समान।
तूलना–क्रि० स० [हिं० तुलना] पहिए की धुरी में तेल या चिकना देना।
तूला–संज्ञा स्त्री० [सं०] कपास।
तूलिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] तसवीर बनाने-वालों की क़लम या कूँची।
तूष्णी–वि० [सं० तूष्णीम्] मौन। चुप। संज्ञा स्त्री० मौन। खामोशी। चुप्पी।
तूस–संज्ञा पुं० [सं० तुष] भूसी। भूसा। संज्ञा पुं० [तिब्बती थोश] १. एक प्रकार का बहुत उत्तम ऊन जिससे दुशाले बनते हैं। पशम। पशमीना। २. तूस के ऊन का जमाया हुआ कंबल या नमदा।
तूसदान–संज्ञा पुं० [पुर्त० कारटूश + दान] कारतूस।
तूसना*–क्रि० स० [सं० तुष्ट] १. संतुष्ट करना। तृप्त करना। २. प्रसन्न करना। क्रि० अ० संतुष्ट या तृप्त होना।
तूखा–संज्ञा स्त्री० दे० "तृषा"।
तृजग*–वि० दे० "तिर्य्यक्"।
तृण–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह उद्भिद् जिसकी पेड़ी में छिलके और हीर का भेद नहीं होता और जिसकी पत्तियों के भीतर केवल लंबाई के बल नसें होती हैं। जैसे—कुश, दूब, सरपत, बाँस, घास। २. प्यास।
मुहा०–तृण गहना या पकड़ना=हीनता प्रकट करना। गिड़गिड़ाना। (किसी वस्तु पर) तृण टूटना=किसी वस्तु का इतना सुंदर होना कि उसे नजर से बचाने के लिये उपाय करना पड़े। तृणवत्=अत्यंत तुच्छ। कुछ भी नहीं। तृण तोड़ना=किसी सुंदर वस्तु को देखकर उसे नजर से बचाने के लिये उपाय करना। तृण तोड़ना=संबंध तोड़ना।
तृणधान्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. तिन्नी का चावल। मुन्यन्न। २. सावाँ।
तृणमय–वि० [सं०] घास का बना हुआ।
तृणशय्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] चटाई।
तृणारणि न्याय–संज्ञा पुं० [सं०] तृण और अरणी से अग्नि उत्पन्न होने की भाँति स्वतंत्र या अलग अलग कारणों की व्यवस्था।
तृणावर्त्त–संज्ञा पुं० [सं०] १. चक्रवात। बवंडर। २. एक दैत्य जिसे कृष्ण ने मार डाला था।
तृतीय–वि० [सं०] तीसरा।
तृतीयांश–संज्ञा पुं० [सं०] तीसरा भाग।
तृतीया–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्रत्येक पक्ष का तीसरा दिन। तीज। २. व्याकरण में करण कारक।
तृन*–संज्ञा पुं० दे० "तृण"।
तृपति‡*–संज्ञा स्त्री० दे० "तृप्ति"।
तृपित‡*–वि० दे० "तृप्त"।
तृप्त–वि० [सं०] १. जिसकी इच्छा पूरी हो गई हो। तुष्ट। अघाया हुआ। २. प्रसन्न। खुश।
तृप्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. इच्छा पूरी होने से प्राप्त शांति और आनंद। संतोष। २. प्रसन्नता। खुशी।
तृषा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्यास। २. इच्छा। अभिलाषा। ३. लोभ। लालच।
तृषावंत–वि० [सं० तृषावान्] प्यासा।
तृषित–वि० [सं०] १. प्यासा। २. अभिलाषी। इच्छुक।
तृष्णा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्राप्ति के लिये आकुल करनेवाली इच्छा। लोभ। लालच।
तै*†–प्रत्य० [सं० तस् (प्रत्य०)] १. से। (किसी वस्तु द्वारा। २. से (अधिक)। ३. (किसी काल या स्थान) से।
तेंदुआ–संज्ञा पुं० [देश०] बिल्ली या चीते की जाति का एक बड़ा हिंसक पशु।
तेंदू–संज्ञा पुं० [सं० तिंदुक] १. मझोले आकार का एक वृक्ष। इसकी लकड़ी आब-

नूस के नाम से बिकती है। २. इस पेड का फल जो खाया जाता है।

ते–अव्य० दे० "ते"।
†सर्व० [सं० ते] वे। वे लोग।

तेखना*†–क्रि० अ० [हिं० तेहा] बिग-डना। क्रुद्ध होना। नाराज होना।

तेग़–संज्ञा स्त्री० [अ०] तलवार। खड्ग।

तेगा–संज्ञा पुं० [अ० तेग़] १ खाँडा। खड्ग। (अस्त्र) २ दरवाजे को पत्थर, मिट्टी इत्यादि से बंद करने की क्रिया।

तेज–संज्ञा पुं० [सं० तेजस्] १. दीप्ति। कांति। चमक। आभा। २ पराक्रम। ज़ोर। बल। ३ वीर्य। ४ सार भाग। तत्त्व। ५ ताप। गर्मी। ६ पित्त। ७ सोना। ८ तेज़ी। प्रचंडता। ९ प्रताप। रोब-दाब। १० सत्त्व गुण से उत्पन्न लिंग-शरीर। ११ पाँच महाभूतों में से तीसरा भूत जिसमें ताप और प्रकाश होता है। अग्नि।

तेज़–वि० [फ़ा०] १ तीक्ष्ण धार का। जिसकी धार पैनी हो। २ चलने में शीघ्र-गामी। ३ चटपट काम करनेवाला। फुरतीला। ४ तीक्ष्ण। तीखा। झालदार। ५ महँगा। गराँ। ६ उग्र। प्रचंड। ७ चटपट अधिक प्रभाव डालनेवाला। ८ जिसकी बुद्धि बहुत तीक्ष्ण हो।

तेजपत्ता–संज्ञा पुं० [सं० तेजपत्र] दारचीनी की जाति का एक पेड। इसकी पत्तियाँ सुगंधित होने के कारण दाल, तरकारी आदि में मसाले की तरह डाली जाती हैं।

तेजपत्र–संज्ञा पुं० दे० "तेजपत्ता"।

तेजपात–संज्ञा पुं० दे० "तेजपत्ता"।

तेजवंत–वि० दे० "तेजवान्"।

तेजवान्–वि० [सं० तेजोवान] १ जिसमें तेज हो। तेजस्वी। २ वीर्यवान्। ३ बली। ताक़तवाला। ४ चमकीला।

तेजस्–संज्ञा पुं० दे० "तेज"।

तेजसी*–वि० [हिं० तेजस्वी] तेज-युक्त।

तेजस्विता–संज्ञा स्त्री० [सं०] तेजस्वी होने का भाव।

तेजस्वी–वि० [सं० तेजस्विन्] १ कांति-मान्। तेजयुक्त। जिसमें तेज हो। २ प्रतापी। प्रभावशाली।

तेज़ाब–संज्ञा पुं० [फ़ा०] [वि० तेज़ाबी] औषध के काम के लिए किसी क्षार पदार्थ का तरल या रवे के रूप में तैयार किया हुआ अम्ल-सार जो द्रावक होता है।

तेज़ी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] तेज होने का भाव। २ तीव्रता। प्रबलता। ३ उग्रता। प्रचंडता। ४ शीघ्रता। जल्दी। ५ महँगी। मंदी का उलटा।

तेजोमंडल–संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य्य, चंद्रमा आदि आकाशीय पिंडों के चारों ओर का मंडल। छटा-मंडल।

तेजोमय–वि० [सं०] बहुत आभा, कांति या ज्योतिवाला।

तेतना†–वि० दे० "तितना"।

तेता†–वि० पुं० [सं० तावत्] [स्त्री० तेती] उतना। उसी कदर। उसी प्रमाण का।

तेतिक*†–वि० [हिं० तेता] उतना।

तेतो*†–वि० दे० "तेता"।

तेरस–संज्ञा स्त्री० [सं० त्रयोदशी] किसी पक्ष की तेरहवीं तिथि। त्रयोदशी।

तेरहीं–संज्ञा स्त्री० [हिं० तेरह] किसी के मरने के दिन से तेरहवीं तिथि, जिसमें पिंडदान और ब्राह्मण भोजन करके दाह करनेवाला और मृतक के घर के लोग शुद्ध होते हैं।

तेरा–सर्व० [सं० तव] [स्त्री० तेरी] मध्यम पुरुष एकवचन संबंधकारक सर्वनाम। तू का संबंधकारक रूप।

मुहा०–तेरी सी=तेरे लाभ या मतलब की बात। तेरे अनुकूल बात।

तेरुस–संज्ञा पुं० दे० "त्यौरुस"।
संज्ञा स्त्री० दे० "तेरस"।

तेरे†–अव्य० [हिं० ते] से।

तेरो*–सर्व० दे० "तेरा"।

तेल–संज्ञा पुं० [सं० तैल] १ वह चिकना तरल पदार्थ जो बीजों या वनस्पतियों आदि से निकाला जाता है अथवा आप से आप निकलता है। चिकना। रोगन। २

विवाह से कुछ पहले की एक रस्म जिसमें वर और वधू को हल्दी मिला हुआ तेल लगाया जाता है।

मुहा०–तेल उठना या चढ़ना = विवाह से पहले तेल की रस्म पूरी होना।

तेलगू–संज्ञा पुं० [सं० तैलंग] तैलंग देश की भाषा।

तेलहन–संज्ञा पुं० [हिं० तेल] वे बीज जिनसे तेल निकलता है। जैसे, सरसों।

तेलहा†–वि० पुं० [हिं० तेल] १. तेल-युक्त। जिसमें तेल हो। २. तेल संबंधी।

तेला–संज्ञा पुं० [?] तीन दिन-रात का उपवास।

तेलिन–संज्ञा स्त्री० [हिं० तेली का स्त्री०] १. तेली जाति की स्त्री। २. एक बरसाती कीड़ा जिसके छूने से शरीर में छाले पड़ जाते हैं।

तेलिया–वि० [हिं० तेल] १. तेल की तरह चिकना और चमकीला। २. तेल के से रंगवाला।

संज्ञा पुं० १. काला, चिकना और चमकीला रंग। २. इस रंग का घोड़ा। ३. एक प्रकार का बबूल। ४. सीगिया नामक विष।

तेलिया कंद–संज्ञा पुं० [सं० तैलकंद] एक प्रकार का कंद। यह जहाँ होता है, वहाँ भूमि तेल से सींची हुई जान पड़ती है।

तेलिया कुमैत–संज्ञा पुं० [हिं० तेलिया+कुमैत] घोड़े का एक रंग जो अधिक काला या कुमैत होता है।

तेलिया सुरंग–संज्ञा पुं० दे० "तेलिया कुमैत"।

तेली–संज्ञा पुं० [हिं० तेल] [स्त्री० तेलिन] हिंदुओं की एक जाति जिसकी गणना शूद्रों में होती है। इस जाति के लोग सरसों आदि पेरकर तेल निकालने का व्यवसाय करते हैं।

मुहा०–तेली का बैल = हर समय काम में लगा रहनेवाला व्यक्ति।

तेवन†*–संज्ञा पुं० [सं० अंतेवन] १. नजरबाग। पाईं बाग। २. आमोद-प्रमोद और क्रीड़ा का स्थान या वन। ३. क्रीड़ा।

तेवर–संज्ञा पुं० [हिं० तेह=क्रोध] १. कुपित दृष्टि। क्रोध भरी चितवन।

मुहा०–तेवर चढ़ना = दृष्टि का ऐसा हो जाना जिससे क्रोध प्रकट हो। तेवर बदलना या बिगड़ना = १. बेमुरौवत हो जाना। २. खफ़ा हो जाना।

२. भौंह। भृकुटी।

तेवाना*†–क्रि० अ० [देश०] सोचना। चिंता करना।

तेह*†–संज्ञा पुं० [हिं० तेखना] १. क्रोध। गुस्सा। २. अहंकार। घमंड। ताव। ३. तेज़ी। प्रचंडता।

तेहरा–वि० पुं० [हिं० तीन+हरा] १. तीन परत किया हुआ। तीन लपेट का। २. जो एक साथ तीन तीन हों। ३. जो दो बार होकर फिर तीसरी बार किया गया हो। ४. तिगुना। (क्व०)

तेहराना–क्रि० स० [हिं० तेहरा] किसी काम को बिलकुल ठीक करने के लिये तीसरी बार करना।

तेहवार–संज्ञा पुं० दे० "त्योहार"।

तेहा–संज्ञा पुं० [हिं० तेह] १. क्रोध। गुस्सा। २. अहंकार। शेखी। घमंड।

तेहिं*†–सर्व० [सं० ते] उसको। उसे।

तेही–संज्ञा पुं० [हिं० तेह + ई (प्रत्य०)] १. गुस्सा करनेवाला। क्रोधी। २. अभिमानी। घमंडी।

तैं†*–क्रि० वि० [हिं० से] से।

वि० दे० "तैं"।

सर्व० [सं० त्वम्] तू।

तैं†–क्रि० वि० [सं० तत्] उतना। उस कदर। उस मात्रा का।

संज्ञा पुं० [अ०] १. निबटेरा। फैसला।

यौ०–तै-तमाम = अंत। समाप्ति।

२. पूर्ति। पूरा करना।

वि० १. जिसका निबटेरा या फ़ैसला हो चुका हो। २. जो पूरा हो चुका हो।

तैजस–संज्ञा पुं० [सं०] १. कोई चमकीला

पदार्थ। २ घी। ३ पराक्रम। ४ भग-वान्। ५ वह शारीरिक शक्ति जो आहार को रस तथा रस को धातु में परिणत करती है। ६ राजस अवस्था में प्राप्त अहंकार।
वि० [सं०] तेज से उत्पन्न। तेज संबंधी।
तैत्तर–संज्ञा पुं० [सं०] तीतर। गैंडा।
तैत्तिरि–संज्ञा पुं० [सं०] कृष्ण-यजुर्वेद के प्रवर्तक एक ऋषि का नाम।
तैत्तिरीय–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कृष्ण यजुर्वेद की छियासी शाखाओं में से एक, जो तित्तिरि नामक ऋषि प्रोक्त है। २ इस शाखा का उपनिषद्।
तैत्तिरीयारण्यक–संज्ञा पुं० [सं०] तैत्तिरीय शाखा का आरण्यक अंश जिसमें वान-प्रस्थों के लिये उपदेश है।
तैनात–वि० [अ० तअय्युन] [संज्ञा तैनाती] किसी काम पर लगाया या नियत किया हुआ। मुकर्रर। नियत। नियुक्त।
तैयार–वि० [अ०] १ जो काम में आने के लिये बिलकुल उपयुक्त हो गया हो। दुरुस्त। ठीक। लैस।
मुहा०—हाथ तैयार होना = कला आदि में हाथ का बहुत अभ्यस्त और कुशल होना।
२ उद्यत। तत्पर। मुस्तैद। ३ प्रस्तुत। उपस्थित। मौजूद। ४ हृष्ट-पुष्ट। मोटा-ताज़ा।
तैयारी–संज्ञा स्त्री० [हिं० तैयार+ई (प्रत्य०)] १ तैयार होने की क्रिया या भाव। दुरुस्ती। २ तत्परता। मुस्तैदी। ३ शरीर की पुष्टता। मोटाई। ४ प्रबंध आदि के संबंध की धूम धाम। ५ सजावट।
तैयौ†–क्रि० वि० दे० "तऊ"।
तैरना–क्रि० अ० [सं० तरण] १ पानी के ऊपर ठहरना। उतराना। २ हाथ पैर या और कोई अंग हिलाकर पानी पर चलना। पैरना। तरना।
तैराई–संज्ञा स्त्री० [हिं० तैरना + आई (प्रत्य०)] तैरने की क्रिया या भाव।
तैराक–वि० [हिं० तैरना + आक (प्रत्य०)] जो अच्छी तरह तैरना जानता हो।
तैराना–क्रि० स० [हिं० तैरना का प्रे०] १ दूसरे को तैरने में प्रवृत्त करना। २ घुसाना।
तैलंग–संज्ञा पुं० [सं० त्रिकलिंग] दक्षिण भारत का एक प्राचीन देश। इस देश की भाषा तेलगू कहलाती है।
तैलंगी–संज्ञा पुं० [हिं० तैलंग + ई (प्रत्य०)] तैलंग देशवासी।
संज्ञा स्त्री० तैलंग देश की भाषा।
तैल–संज्ञा पुं० [सं०] चिकना।
तैलत्व–संज्ञा पुं० [सं०] तेल का भाव या गुण।
तैलावत–वि० [सं०] जिसमें तेल लगा हो।
तैलाभ्यंग–संज्ञा पुं० [सं०] शरीर में तेल मलने की क्रिया। तेल की मालिश।
तैश–संज्ञा पुं० [अ०] आवेश। क्रोध।
तैसा–वि० [सं० तादृश] उस प्रकार का। "वैसा" का पुराना रूप।
तैसे–क्रि० वि० दे० "वैसे"।
तों*†–क्रि० वि० दे० "त्यों"।
तोंअर*†–संज्ञा पुं० दे० 'तोमर"।
तोंद–संज्ञा स्त्री० [सं० तुंड] पेट के आगे का बढ़ा हुआ भाग। पेट का फैलाव।
तोंदल–वि० [हिं० तोंद+ल (प्रत्य०)] जिसका पेट आगे को बढ़ा हो। तोंदवाला।
तो*–सर्व० [सं० तव] तेरा।
अव्य० [सं० तद्] उस दशा में। तब।
अव्य० [सं० तु०] एक अव्यय जिसका व्यवहार किसी शब्द पर जोर देने के लिये अथवा कभी कभी यों ही किया जाता है।
*†सर्व० [सं० तव] तू का वह रूप जो उसे विभक्ति लगने के समय प्राप्त होता है। तुझ। (ब्रज०)।
*क्रि० अ० [हिं० हतो=था] था। (ब्रज०)
तोइ*†–संज्ञा पुं० [सं० तोय] पानी। जल।
तोख*†–संज्ञा पुं० दे० "तोष"।
तोटक–संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्णवृत्त।
तोटका–संज्ञा पुं० दे० "टोटका"।
तोड़–संज्ञा पुं० [हिं० तोड़ना] १ तोड़ने की

क्रिया या भाव। (क्व०) २. नदी आदि के जल का तेज बहाव। ३. कुश्ती में किसी दाँव से बचने के लिये किया हुआ दाँव या पेंच। ४. किसी प्रभाव आदि को नष्ट करनेवाला पदार्थ या कार्य। प्रतिकार। मारक। ५. बार। दफ़ा। झोंक।

तोड़ना–क्रि० स० [हिं० टूटना] १. आघात या झटके से किसी पदार्थ के खंड करना। टुकड़े करना। २. किसी वस्तु के अंग को अथवा उसमें लगी हुई किसी दूसरी वस्तु को किसी प्रकार अलग करना। ३. किसी वस्तु का कोई अंग किसी प्रकार खंडित, भग्न या बेकाम करना। ४. खेत में हल जोतना। ५. सेंध लगाना। ६. क्षीण, दुर्बल या अशक्त करना। ७. किसी संघटन, व्यवस्था या कार्य्य-क्षेत्र आदि को न रहने देना अथवा नष्ट कर देना। ८. निश्चय के विरुद्ध आचरण करना अथवा नियम का उल्लंघन करना। ९. मिटा देना। बना न रहने देना।

तोड़वाना–क्रि० स० दे० "तुड़वाना"।

तोड़ा–संज्ञा पुं० [हिं० तोड़ना] १. सोने, चाँदी आदि की लच्छेदार और चौड़ी जंजीर या सिकरी जो हाथों या गले में पहनी जाती है। २. रुपये रखने की टाट आदि की थैली जिसमें १०००) आते हैं।
मुहा०—तोड़े उलटना या गिनना = बहुत सा द्रव्य देना।
३. नदी का किनारा। तट। ४. नदी के संगम पर बालू, मिट्टी आदि का मैदान। ५. घाटा। घटी। टोटा।
संज्ञा पुं० [सं० तुंड या हिं० टोंटा] नारियल की जटा की वह रस्सी जिससे पुरानी चाल की तोड़ेदार बंदूक छोड़ी जाती थी। पलीता।
यौ०—तोड़ेदार बंदूक = वह बंदूक जो तोड़ा या पलीता दागकर छोड़ी जाय।
संज्ञा पुं० [देश०] वह लोहा जिसे चकमक पर मारने से आग निकलती है।

तोण*†–संज्ञा पुं० [सं० तूण] तरकश।

तोद†–संज्ञा पुं० [फ़ा० तोदः] ढेर। समूह।

तोतई–वि० [हिं० तोता + ई (प्रत्य०)] तोते के रंग का सा। धानी।

तोतराना*–क्रि० अ० दे० "तुतलाना"।

तोतला–वि० [हिं० तुतलाना] १. वह जो तुतलाकर बोलता हो। अस्पष्ट बोलनेवाला। २. जिसमें उच्चारण स्पष्ट न हो।

तोता–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. एक प्रसिद्ध पक्षी जिसके शरीर का रंग हरा और चोंच लाल होती है। ये आदमियों की बोली की बहुत अच्छी तरह नक़ल करते हैं, इसलिये लोग इन्हें पालते हैं। कीर। सुआ।
मुहा०—हाथों के तोते उड़ जाना = बहुत घबरा जाना। सिटपिटा जाना। तोते की तरह आँखें फेरना या बदलना = बहुत बे-मुरौवत होना। तोता पालना = किसी दोष, दुर्व्यसन या रोग को जान-बूझकर बढ़ाना।
२. बंदूक का घोड़ा।

तोताचश्म–संज्ञा पुं० [फ़ा०] तोते की तरह आँखें फेर लेनेवाला। बे-मुरौवत।

तोदन–संज्ञा पुं० [सं०] १. चाबुक, कोड़ा, चमोटी आदि। तोत्र। २. व्यथा। पीड़ा।

तोदरी–संज्ञा पुं० [फ़ा०] फ़ारस में होनेवाला एक प्रकार का बड़ा कँटीला पेड़ जिसके बीज औषध के काम में आते हैं।

तोप–संज्ञा स्त्री० [तु०] एक प्रकार का बहुत बड़ा अस्त्र जो प्रायः दो या चार पहियों की गाड़ी पर रखा रहता है और जिसमें गोले रखकर युद्ध के समय शत्रुओं पर चलाए जाते हैं।
मुहा०—तोप कीलना = तोप की नाली में लकड़ी का कुंदा खूब कसकर ठोंक देना जिसमें उसमें से गोला न चलाया जा सके। तोप की सलामी उतारना = किसी प्रसिद्ध पुरुष के आगमन पर अथवा किसी महत्त्वपूर्ण घटना के समय बिना गोले के बारूद भरकर शब्द करना।

तोपख़ाना–संज्ञा पुं० [अ० तोप + फ़ा० ख़ाना] १. वह स्थान जहाँ तोपें और उनका कुल सामान रहता हो। २. युद्ध के लिये सुसज्जित चार से आठ तोपों तक का समूह।

तोपची–संज्ञा पुं० [अ० तोप + ची (प्रत्य०)]

२ किसी बात को छोड़ने की क्रिया। ३ ममता या लगाव न रखने की क्रिया। ४. विरक्ति आदि के कारण सांसारिक विषयों और पदार्थों आदि को छोड़ने की क्रिया।

त्यागना–क्रि० स० [स० त्याग] छोड़ना। तजना। पृथक् करना। त्याग करना।

त्यागपत्र–संज्ञा पु० [स०] १ वह पत्र जिसमें किसी प्रकार के त्याग का उल्लेख हो। २ इस्तीफा।

त्यागी–वि० [स० त्यागिन] स्वार्थ या सांसारिक सुखों को छोड़नेवाला। विरक्त।

त्याज्य–वि० [स०] त्यागने योग्य।

त्यार†–वि० दे० "तैयार"।

त्यूं†–क्रि० वि० दे० "त्यों"।

त्यों–क्रि० वि० [स० तत्+एवम्] १ उस प्रकार। उस तरह। उस भाँति। २ उसी समय। तत्काल।

त्योरुस†–संज्ञा पु० [हि० ति (तीन)+वरस] १ पिछला तीसरा वर्ष। वह वर्ष जिसे बीते दो बरस हो चुके हों। २ आगामी तीसरा वर्ष।

त्योरी–संज्ञा स्त्री० [हि० त्रिकुटी] अवलोकन। चितवन। दृष्टि। निगाह।

मुहा०—त्योरी चढ़ना या बदलना = दृष्टि का ऐसी अवस्था में हो जाना जिससे कुछ क्रोध झलके। आँखें चढ़ना। त्योरी म बल पड़ना = त्योरी चढ़ना।

त्योहार–संज्ञा पु० [स० तिथि+वार] वह दिन जिसम कोई बड़ा धार्मिक या जातीय उत्सव मनाया जाय। पर्व दिन।

त्योहारी–संज्ञा स्त्री० [हि० त्योहार] वह धन जो किसी त्योहार के उपलक्ष म छोटों, लड़कों, आश्रितों या नौकरों आदि को दिया जाता है।

त्यौं–क्रि० वि० दे० "त्यों"।

त्यौनार–संज्ञा पु० [हि० तेवर] ढंग। तर्ज।

त्यौर–संज्ञा पु० दे० "त्योरी"।

त्रपा–संज्ञा स्त्री० [स०] [वि० त्रपमान] १ लज्जा। लाज। शर्म। हया। २ छिनाल स्त्री। पुंश्चली। ३ कीर्ति। यश।

वि० [स०] लज्जित। शर्मिंदा।

त्रय–वि० [स०] १. तीन। २. तीसरा।

त्रयी–संज्ञा स्त्री० [स०] तीन वस्तुओं का समूह। तिगुड्ड।

त्रयोदशी–संज्ञा स्त्री० [स०] किसी पक्ष की तेरहवीं तिथि। तेरस।

त्रष्टा–संज्ञा पु० दे० "तष्टा"। (तश्तरी)

त्रसन–संज्ञा पु० [स०] १. भय। डर। २ उद्वेग।

त्रसना*†–क्रि० अ० [स० त्रसन] भय से काँप उठना। डरना। खौफ़ खाना।

त्रसरेणु–संज्ञा पु० [स०] वह चमकता हुआ कण जो छेद म से आती हुई धूप म नाचता या घूमता दिखाई देता है। सूक्ष्म कण।

त्रसाना*†–क्रि० स० [हि० त्रसना] डराना। धमकाना। भय दिखाना।

त्रसित*–वि० [स० त्रस्त] १ भयभीत। डरा हुआ। २ पीड़ित। सताया हुआ।

त्रस्त–वि० [स०] १ भयभीत। डरा हुआ। २ जिसे कष्ट पहुँचा हो। पीड़ित।

त्राण–संज्ञा पु० [स०] [वि० त्रातक] १ रक्षा। बचाव। हिफाजत। २ रक्षा का साधन। ३ कवच।

त्राता, त्रातार–संज्ञा पु० [स० त्रातृ] रक्षक। बचानेवाला।

त्रायमाण–संज्ञा पु० [स०] बनफ्शे की तरह की एक लता।
वि० रक्षक। रक्षा करनेवाला।

त्रास–संज्ञा पु० [स०] १ डर। भय। २ कष्ट। तकलीफ।

त्रासक–संज्ञा पु० [स०] १ डरानेवाला। भयभीत करनेवाला। २ निवारक। दूर करनेवाला।

त्रासना*†–क्रि० स० [स० त्रासन] डराना। भय दिखाना। त्रास देना।

त्रासित–वि० दे० "त्रस्त"।

त्राहि–अव्य० [स०] बचाओ। रक्षा करो।

त्रि–वि० [स०] तीन। जैसे, त्रिकाल।

त्रिकंटक–वि० [स०] जिसम तीन काँटे हों।

त्रिक–संज्ञा पु० [स०] १. तीन का समूह। २

रीढ़ के नीचे का वह भाग जहाँ कूल्हे की हड्डियाँ मिलती हैं। ३. कमर। ४. त्रिफला।
त्रिककुद्–संज्ञा पुं० [सं०] १. त्रिकूट पर्वत। २. विष्णु।
वि० जिसके तीन शृंग हों।
त्रिकटु, त्रिकटुक–संज्ञा पुं० [सं०] सोंठ, मिर्च और पीपल ये तीन कटु वस्तुएँ।
त्रिकल–संज्ञा पुं० [सं०] १. तीन मात्राओं का शब्द। प्लुत। २. दोहे का एक भेद।
वि० जिसमें तीन कलाएँ हों।
त्रिकांड–संज्ञा पुं० [सं०] १. अमरकोष का दूसरा नाम। २. निरुक्त का दूसरा नाम।
वि० जिसमें तीन कांड हों।
त्रिकाल–संज्ञा पुं० [सं०] १. तीनों समय-भूत, वर्तमान और भविष्य। २. तीनों समय—प्रातः, मध्याह्न और सायं।
त्रिकालज्ञ–संज्ञा पुं० [सं०] सर्वज्ञ।
त्रिकालदर्शक–वि० दे० "त्रिकालज्ञ"।
त्रिकालदर्शी–संज्ञा पुं० [सं० त्रिकालदर्शिन्] तीनों कालों की बातों को जाननेवाला व्यक्ति। त्रिकालज्ञ।
त्रिकुटी–संज्ञा स्त्री० [सं० त्रिकूट] दोनों भौहों के बीच के कुछ ऊपर का स्थान।
त्रिकूट–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह पर्वत जिसकी तीन चोटियाँ हों। २. वह पर्वत जिस पर लंका बसी हुई मानी जाती है। ३. एक कल्पित पर्वत जो सुमेरु पर्वत का पुत्र माना जाता है। ४. योग में मस्तक के छः चक्रों में से पहला चक्र।
त्रिकोण–संज्ञा पु० [स०] १. तीन कोने का क्षेत्र। त्रिभुज क्षेत्र। २. तीन कोनेवाली कोई वस्तु।
त्रिकोणमिति–संज्ञा स्त्री० [सं०] गणित-शास्त्र का वह विभाग जिसमें त्रिभुज के कोण, बाहु, वर्ग-विस्तार आदि का मान निकालने की रीति बतलाई जाती है।
त्रिखा*–संज्ञा स्त्री० दे० "तृषा"।
त्रिगर्त्त–संज्ञा पु० [सं०] उत्तर भारत के उस प्रांत का प्राचीन नाम जिसमें आज-कल जालंधर और कांगड़ा आदि नगर हैं।
त्रिगुण–संज्ञा पुं० [सं०] सत्व, रज और तम इन तीनों गुणों का समूह।
वि० [सं०] तीन गुना। तिगुना।
त्रिगुणात्मक–वि० पुं० [सं०] [स्त्री० त्रिगुणात्मिका] सत्व, रज और तम तीनों गुणों से युक्त।
त्रिजग*‡–संज्ञा पुं० [सं० तिर्यक्] पशु तथा कीड़े-मकोड़े। तिर्य्यक्।
संज्ञा पुं० [सं० त्रिजगत्] तीनों लोक–स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल।
त्रिजट–संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।
त्रिजटा–संज्ञा स्त्री० [सं०] विभीषण की बहिन जो अशोक वाटिका में जानकी जी के पास रहा करती थी।
त्रिजामा*†–संज्ञा स्त्री० [सं० त्रियामा] रात्रि।
त्रिज्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] वृत्त के केंद्र से परिधि तक की रेखा। व्यास की आधी रेखा।
त्रिण*–संज्ञा पुं० दे० "तृण"।
त्रिदंड–संज्ञा पुं० [सं०] संन्यास आश्रम का चिह्न, बाँस का एक डंडा जिसके सिरे पर दो छोटी लकड़ियाँ बाँधी होती हैं।
त्रिदंडी–संज्ञा पुं० [सं०] संन्यासी।
त्रिदश–संज्ञा पुं० [सं०] देवता।
त्रिदशालय–संज्ञा पुं० [सं०] १. स्वर्ग। २. सुमेरु पर्वत।
त्रिदिनस्पृश–संज्ञा पुं० [सं०] वह तिथि जिसका थोड़ा बहुत अंश तीन दिनों में पड़ता हो।
त्रिदेव–संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा, विष्णु और महेश ये तीनों देवता।
त्रिदोष–संज्ञा पु० [सं०] १. वात, पित्त और कफ ये तीनों दोष। २. सन्निपात रोग।
त्रिदोषना*†–क्रि० अ० [सं० त्रिदोष] १. तीनों दोषों के कोप में पड़ना। २. काम, क्रोध और लोभ के फंदों में पड़ना।
त्रिधा–क्रि० वि० [सं०] तीन तरह से।
वि० [सं०] तीन तरह का।

तोप चलानेवाला। गोलदाज।
तोपना†–क्रि० स० [स० छोपन] ढाँकना।
तोपा–संज्ञा पु० [हिं० तुरपना] एक टाँके में की हुई सिलाई।
तोफा†–वि०, संज्ञा पु० दे० "तोहफा"।
तोबड़ा–संज्ञा पु० [फा० तोबरा] चमड़े या टाट आदि की वह थैली जिसमें दाना भर-कर घोड़े को खिलाते हैं।
मुहा०–तोबड़ा चढ़ाना = बोलने से रोकना।
तोबा–संज्ञा स्त्री० [अ० तौब] किसी अनु-चित कार्य्य को भविष्य में न करने की शपथपूर्वक दृढ़ प्रतिज्ञा।
मुहा०–तोबा तिल्ला करना या मचाना = रोते, चिल्लाते या दीनता दिखलाते हुए तोबा करना। तोबा बुलवाना = पूर्ण रूप से परास्त करना।
तोम–संज्ञा पु० [स० स्तोम] समूह। ढेर।
तोमर–संज्ञा पु० [स०] १ एक प्रकार का पुराना अस्त्र जिसमें लकड़ी के डंडे में आगे की ओर लोहे का बड़ा फल लगा रहता था। शर्पला। शापला। २ एक प्रकार का छंद। ३ एक प्राचीन देश का नाम। ४ इस देश का निवासी। ५ राजपूत क्षत्रियों का एक प्राचीन राजवंश।
तोय–संज्ञा पु० [स०] जल। पानी।
तोयधर, तोयधार–संज्ञा पु० [स०] १ मेघ। २ मोथा।
तोयधि–संज्ञा पु० [स०] समुद्र।
तोयनिधि–संज्ञा पु० [स०] समुद्र।
तोर*†–संज्ञा पु० दे० 'तोड़'।
*†–वि० दे० "तेरा"।
तोरई–संज्ञा स्त्री० दे० "तुरई"।
तोरण–संज्ञा पु० [स०] १ घर या नगर का बाहरी फाटक। २ वे मालाएँ आदि जो सजावट के लिये खंभों और दीवारों में लटकाई जाती हैं। बंदनवार।
तोरन*†–संज्ञा पु० दे० "तोरण"।
तोरना–क्रि० स० दे० "तोड़ना"।
तोरा*†–सर्व० दे० 'तेरा"।
[illegible]–क्रि० स० दे० "तुड़ाना"।
तोरावान्*†–वि० [सं० त्वरावान्] [स्त्री० तोरावती] वेगवान्। तेज।
तोरी–संज्ञा स्त्री० दे० "तुरई"।
तोल†–संज्ञा स्त्री० दे० "तौल"।
तोलन–संज्ञा पु० [स०] १ तौलने की क्रिया। २ उठाने की क्रिया।
तोलना–क्रि० स० दे० "तौलना"।
तोला–संज्ञा पु० [स० तोलक] १ बारह माशे की तौल। २ इस तौल का बाट।
तोशक–संज्ञा स्त्री० [तु०] खोल में रूई आदि भरकर बनाया हुआ गुदगुदा बिछौना। हलका गद्दा।
तोशदान–संज्ञा पु० [फा० तोशःदान] १ वह थैली आदि जिसमें मार्ग के लिये जलपान आदि या दूसरी आवश्यक चीजें रखते हैं। २ चमड़े की वह थैली जिसमें सिपाहियों का कारतूस रहता है।
तोशा–संज्ञा पु० [फा०] १ वह खाद्य पदार्थ जो यात्री मार्ग के लिये अपने साथ रख लेता है। पाथेय। २ साधारण खाने-पीने की चीज।
तोशाखाना–संज्ञा पु० [तु० तोशक + फा० खाना] वह बड़ा कमरा या स्थान जहाँ राजाओं और अमीरों के पहनने के बढ़िया कपड़े और गहने आदि रहते हैं।
तोष–संज्ञा पु० [स०] १ अघाने या मन भरने का भाव। तुष्टि। संतोष। तृप्ति। २ प्रसन्नता। आनंद।
वि० अल्प। थोड़ा। (अनेकार्थ)
तोषक–वि० [सं०] संतुष्ट करनेवाला।
तोषण–संज्ञा पु० [स०] १ तृप्ति। संतोष। २ संतुष्ट करने की क्रिया या भाव।
तोषना*–क्रि० स० [सं० तोष] संतुष्ट करना। तृप्त करना।
क्रि० अ० संतुष्ट होना। तृप्त होना।
तोषल–संज्ञा पु० [स०] १ कंस के एक असुर मल्ल का नाम जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था। २ मूसल।
तोषित–वि० [स०] जिसका तोष हो गया हो। तुष्ट। तृप्त।

तोस*–संज्ञा पुं० दे० "तोष"।
तोसल*†–संज्ञा पुं० दे० "तोपल"।
तोसा*†–संज्ञा पुं० दे० "तोशा"।
तोसागार*†–संज्ञा पुं० दे० "तोशा-खाना"।
तोहफ़गी–संज्ञा स्त्री० [अ० तोहफ़ा] उत्तमता अच्छापन। उम्दगी।
तोहफ़ा–संज्ञा पुं० [अ०] सौगात। उपहार। वि० अच्छा। उत्तम। बढ़िया।
तोहमत–संज्ञा स्त्री० [अ०] वृथा लगाया हुआ दोष। झूठा कलंक।
तोहरा–सर्व० दे० "तुम्हारा"।
तोहि–सर्व० [हिं० तू या तैं] तुझको। तुझे।
तौंस†–संज्ञा स्त्री० [हिं० ताव + ऊमस] वह प्यास जो धूप खा जाने के कारण लगे और किसी भाँति न बुझे।
तौंसना–क्रि० अ० [हिं० तौंस] गरमी से झुलस जाना। गरमी से संतप्त होना।
तौंसा–संज्ञा पुं० [हिं० ताव + ऊमस] अधिक ताप। कड़ी गरमी।
तौ†*–क्रि० वि० दे० "तो"। क्रि० अ० [हिं० हतो] था।
तौक़–संज्ञा पुं० [अ०] १. हँसुली के आकार का गले में पहनने का एक गहना। २. इसी आकार की बहुत भारी वृत्ताकार पटरी या मँडरा जिसे अपराधी या पागल के गले में पहना देते हैं। ३. इसी आकार का वह प्राकृतिक चिह्न जो पक्षियों आदि के गले में होता है। हँसुली। ४. पट्टा। नगरास। ५. कोई गोल घेरा या पदार्थ।
तौन‡–सर्व० [सं० ते] वह। जो।
तौनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० तवा का स्त्री० अल्पा०] रोटी सेंकने का छोटा तवा। तई। तवी।
तौबा–संज्ञा स्त्री० दे० "तोबा"।
तौर–संज्ञा पुं० [अ०] १. चाल-ढाल। चाल-चलन।
यौ०—तौर-तरीक़ा = चाल-चलन।
२. हालत। दशा। अवस्था। ३. तरीक़ा। तर्ज। ढंग। ४. प्रकार। भाँति। तरह।
तौरात–संज्ञा पुं० दे० "तौरेत"।
तौरि*†–संज्ञा स्त्री० [हिं० तौंवरि] घुमेर। घुमरी। चक्कर।
तौरेत–संज्ञा पुं० [इब्रा०] यहूदियों का प्रधान धर्म्म-ग्रंथ जो हज़रत मूसा पर प्रकट हुआ था।
तौल–संज्ञा पुं० [सं०] १. तराजू। २. तुलाराशि। संज्ञा स्त्री० १. किसी पदार्थ के गुरुत्व का परिमाण। भार का मान। वज़न। २. तौलने की क्रिया या भाव।
तौलना–क्रि० स० [सं० तोलन] १. किसी पदार्थ के गुरुत्व का परिमाण जानने के लिये उसे तराजू या काँटे आदि पर रखना। वजन करना। जोखना। २. किसी अस्त्र आदि को चलाने के लिये हाथ को इस प्रकार ठीक करना कि वह अस्त्र अपने लक्ष्य पर पहुँच जाय। साधना। ३. तारतम्य जानना। मिलान करना। ४. गाड़ी के पहिए में तेल देना। औंगना।
तौलवाना†–क्रि० स० [हिं० तौलना का प्रे०] तौलने का काम दूसरे से कराना। तौलाना।
तौला–संज्ञा पुं० [हिं० तौलना] १. अनाज तौलनेवाला मनुष्य। बया। २. तंबिया।
तौलाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० तौल + आई (प्रत्य)] तौलने की क्रिया, भाव या मज़दूरी।
तौलाना–क्रि० स० [हिं० तौलना का प्रे०] तौलने का काम दूसरे से कराना।
तौलिया–संज्ञा स्त्री०, पुं० [अं० टावेल] एक विशेष प्रकार का मोटा अँगोछा।
तौसना†–क्रि० अ० [हिं० तौस] गरमी से बहुत व्याकुल होना। क्रि० स० गरमी पहुँचाकर व्याकुल करना।
तौहीन–संज्ञा स्त्री० [अ०] अपमान। अप्रतिष्ठा। बेइज़्ज़ती।
तौहीनी†*–संज्ञा स्त्री० दे० "तौहीन"।
त्यक्त–वि० [सं०] [वि० त्यक्तव्य] छोड़ा हुआ। त्यागा हुआ। जिसका त्याग हो।
त्यजन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० त्यजनीय] छोड़ने का काम। त्याग।
त्याग–संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी पदार्थ पर से अपना स्वत्व हटा लेने अथवा उसे अपने पास से अलग करने की क्रिया। उत्सर्ग।

त्रिधारा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. तीन धारा-वाला सेहुड़। तिधारा। २. गंगा।
त्रिन*†—संज्ञा पुं० दे० "तृण"।
त्रिनयन—संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।
त्रिनेत्र—संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।
त्रिपथ—संज्ञा पुं० [सं०] कर्म, ज्ञान और उपासना इन तीनों मार्गों का समूह।
त्रिपथगा, त्रिपथगामिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा।
त्रिपद—संज्ञा पुं० [सं०] १. तिपाई। २. त्रिभुज। ३ वह जिसके तीन पद हों।
त्रिपदी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हंसपदी। २. तिपाई। ३ गायत्री।
त्रिपाठी—संज्ञा पुं० [सं० त्रिपाठिन्] १ तीन वेदों का जाननेवाला पुरुष। त्रिवेदी। २ ब्राह्मणों की एक जाति। त्रिवेदी। तिवारी।
त्रिपिटक—संज्ञा पुं० [सं०] भगवान् बुद्ध के उपदेशों का संग्रह जिसे बौद्ध लोग अपना प्रधान धर्मग्रंथ मानते हैं। यह तीन भागों में है—सूत्रपिटक, विनयपिटक और अभिधर्म्मपिटक।
त्रिपिताना†—क्रि० अ० [सं० तृप्ति+आना (प्रत्य०)] तृप्त होना। अघा जाना। क्रि० स० तृप्त या संतुष्ट करना।
त्रिपुंड—संज्ञा पुं० [सं० त्रिपुंड्र] भस्म की तीन आड़ी रेखाओं का तिलक जो शैव लोग लगाते हैं।
त्रिपुर—संज्ञा पुं० [सं०] १ बाणासुर का एक नाम। २. तीनों लोक। ३ चंदेरी नगर। ४ वे तीनों नगर जो तारकासुर के तारकाक्ष, कमलाक्ष और विद्युन्माली नाम के तीनों पुत्रों ने मय दानव से अपने लिये बनवाये थे।
त्रिपुरदहन—संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।
त्रिपुरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] कामाख्या देवी की एक मूर्ति।
त्रिपुरारि—संज्ञा पुं० [सं०] शिव।
त्रिपुरासुर—संज्ञा पुं० दे० "त्रिपुर" (१)।
त्रिफला—संज्ञा स्त्री० [सं०] आँवले, हड़ और बहेड़े का समूह।
त्रिबली—संज्ञा स्त्री० [सं०] वे तीन बल जो पेट पर पड़ते हैं। इनकी गणना स्त्री के सौंदर्य में होती है।
त्रिभंग—वि० [सं०] जिसमें तीन जगह बल पड़ते हों। संज्ञा पुं० खड़े होने की एक मुद्रा जिसमें पेट, कमर और गरदन में कुछ टेढ़ापन रहता है।
त्रिभंगी—वि० [सं०] त्रिभंग। संज्ञा पुं० [सं०] १. एक मात्रिक छंद। २. गणनात्मक दंडक का एक भेद।
त्रिभुज—संज्ञा पुं० [सं०] वह धरातल जो तीन भुजाओं या रेखाओं से घिरा हो।
त्रिभुवन—संज्ञा पुं० [सं०] तीनों लोक अर्थात् स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल।
त्रिमात्रिक—वि० [सं०] जिसमें तीन मात्राएँ हों। प्लुत।
त्रिमूर्त्ति—संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्रह्मा, विष्णु और शिव ये तीनों देवता। २ सूर्य्य।
त्रिया*†—संज्ञा स्त्री० [सं० स्त्री] औरत। यौ०—त्रियाचरित्र=स्त्रियों का छल-कपट जिसे पुरुष सहज में नहीं समझ सकते।
त्रियामा—संज्ञा स्त्री० [सं०] रात्रि।
त्रियुग—संज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु। २. सत्ययुग, द्वापर और त्रेता ये तीनों युग।
त्रिलोक—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल ये तीनों लोक।
त्रिलोकनाथ—संज्ञा पुं० [सं०] १ ईश्वर। २ राम। ३ कृष्ण।
त्रिलोकपति—संज्ञा पुं० दे० "त्रिलोकनाथ"।
त्रिलोकी—संज्ञा स्त्री० दे० "त्रिलोक"।
त्रिलोचन—संज्ञा पुं० [सं०] शिव। महादेव।
त्रिवर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] १. अर्थ, धर्म और काम। २ त्रिफला। ३ त्रिकुटा। ४ वृद्धि, स्थिति और क्षय। ५ सत्त्व, रज और तम ये तीनों गुण। ६ ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य ये तीनों प्रधान जातियाँ।
त्रिविध—वि० [सं०] तीन प्रकार का। क्रि० वि० [सं०] तीन प्रकार से।
त्रिवृत्करण—संज्ञा पुं० [सं०] अग्नि, जल

और पृथ्वी इन तीनों तत्वों में से प्रत्येक में शेष दोनों तत्त्वों का समावेश करके प्रत्येक को अलग अलग तीन भागों में विभक्त करने की क्रिया।

त्रिवेणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. तीन नदियों का संगम। २. गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम-स्थान जो प्रयाग में है। ३. इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना इन तीनों नाड़ियों का संगम-स्थान। (हठ योग)

त्रिवेद–संज्ञा पुं० [सं०] ऋक्, यजुः और साम ये तीनों वेद।

त्रिवेदी–संज्ञा पुं० [सं० त्रिवेदिन्] १. ऋक्, यजुः और साम इन तीनो वेदों का जाननेवाला। २. ब्राह्मणों का एक भेद। त्रिपाठी।

त्रिवेनी–संज्ञा स्त्री० दे० "त्रिवेणी"।

त्रिशंकु–संज्ञा पुं० [सं०] १. बिल्ली। २. जुगनूँ। ३. एक पहाड़ का नाम। ४. पपीहा। ५. एक प्रसिद्ध सूर्य्यवंशी राजा जिन्होंने सशरीर स्वर्ग जाने की कामना से यज्ञ किया था, पर जो देवताओं के विरोध करने के कारण स्वर्ग न पहुँच सके थे और बीच आकाश में रुक गए थे। ६. एक तारा जिसके विषय में प्रसिद्ध है कि यह वही त्रिशंकु है जो इंद्र के ढकेलने पर आकाश से गिर रहे थे और जिन्हें मार्ग में ही विश्वामित्र ने रोक दिया था।

त्रिशक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. इच्छा, ज्ञान और क्रिया रूपी तीनों ईश्वरीय शक्तियाँ। २. महत्तत्त्व जो त्रिगुणात्मक है। बुद्धितत्त्व। ३. गायत्री।

त्रिशिर–संज्ञा पु० [सं० त्रिशिरस्] १. रावण का एक भाई। २. कुबेर।

वि० जिसके तीन सिर हों।

त्रिशूल–संज्ञा पु० [सं०] १. एक प्रकार का अस्त्र जिसके सिरे पर तीन फल होते हैं (महादेव जी का अस्त्र)। २. दैहिक, दैविक और भौतिक दुःख।

त्रिषित*–वि० दे० "तृषित"।

त्रिष्टुभ–संज्ञा पु० [सं०] एक वैदिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में ग्यारह अक्षर होते हैं।

त्रिसंगम–संज्ञा पुं० [सं०] तीन नदियों का संगम। त्रिवेणी। फगुनियाँ।

त्रिसंध्य–संज्ञा पुं० [सं०] प्रातः, मध्याह्न और सायं ये तीनों काल।

त्रिसंध्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रातः मध्याह्न और सायं ये तीनों संध्याएँ।

त्रिस्थली–संज्ञा स्त्री० [सं०] काशी, गया और प्रयाग ये तीन पुण्य-स्थान।

त्रिस्रोता–संज्ञा स्त्री० [सं० त्रिस्रोतस्] गंगा।

त्रुटि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कमी। कसर। न्यूनता। २. अभाव। ३. भूल। चूक। ४. वचन-भंग।

त्रुटी–संज्ञा स्त्री० दे० "त्रुटि"।

त्रेतायुग–संज्ञा पु० [सं०] चार युगों में से दूसरा युग जो १२९६००० वर्ष का होता है। इसका आरंभ कार्तिक शुक्ल नवमी को हुआ था।

त्रै–वि० [सं० त्रय] तीन।

त्रैकालिक–संज्ञा पुं० [सं०] तीनों कालों में या सदा होनेवाला।

त्रैगुण्य–संज्ञा पुं० [सं०] सत्त्व, रज और तम इन तीनों गुणों का धर्म्म या भाव।

त्रैमातुर–संज्ञा पुं० [सं०] लक्ष्मण।

त्रैमासिक–वि० [सं०] हर तीसरे महीने होनेवाला। जो हर तीसरे महीने हो।

त्रैराशिक–संज्ञा पुं० [सं०] गणित की एक क्रिया जिसमें तीन ज्ञात राशियों की सहायता से चौथी अज्ञात राशि का पता लगाया जाता है।

त्रैलोक्य–संज्ञा पु० [सं०] १. स्वर्ग, मर्त्य और पाताल ये तीनों लोक। २. २१ मात्राओं का कोई छंद।

त्रैवार्षिक–वि० [सं०] जो हर तीसरे वर्ष हो। तीन वर्ष संबंधी।

त्रोटक–संज्ञा पु० [सं०] नाटक का एक भेद जिसमें ५, ७, ८ या ९ अंक होते हैं।

त्र्यंबक–संज्ञा पुं० [सं०] शिव। महादेव।

त्र्यंबका–संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।

त्वक्–संज्ञा पुं० [सं०] १. छिलका। छाल। २. त्वचा। चमड़ा। खाल। ३. पाँच ज्ञान-

द्रियों में से एक जो सारे शरीर के ऊपर है।

त्वचा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चमड़ा। २ छाल। वल्कल। ३ साँप की केंचुली।

त्वदीय–सर्व० [सं०] तुम्हारा।

त्वरा–संज्ञा स्त्री० [सं०] शीघ्रता। जल्दी।

त्वरावान्–वि० [सं० त्वरावत्] शीघ्रता करनेवाला। जल्दबाज़।

त्वरित–वि० [सं०] तेज़। क्रि० वि० शीघ्रता से।

त्वरितगति–संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्णवृत्त। अमृतगति।

त्वष्टा–संज्ञा पुं० [सं० त्वष्टृ] १ विश्वकर्मा। २ महादेव। शिव। ३ एक प्रजापति का नाम। ४ बढ़ई। ५ बारह आदित्यों में से ग्यारहवें आदित्य। ६ एक वैदिक देवता।

थ

थ–हिंदी वर्णमाला का सत्रहवाँ व्यंजन वर्ण और त-वर्ग का दूसरा अक्षर। इसका उच्चारण-स्थान दंत है।

थंब, थंभ–संज्ञा पुं० [सं० स्तंभ] [स्त्री० थंबी] १ खंभा। स्तंभ। २ सहारा। टेक।

थंभन–संज्ञा पुं० [सं० स्तंभन] १ रुकावट। ठहराव। २ दे० 'स्तंभन'।

थँभना‡–क्रि० अ० दे० "थमना"।

थंभित*–वि० [सं० स्तंभित] १ रुका या ठहरा हुआ। २ अचल। स्थिर। ३ भय या आश्चर्य से निश्चल। ठक।

थ–संज्ञा पुं० [सं०] १ रक्षण। २ मंगल। ३ भय। ४ पर्वत। ५ भक्षण। आहार।

थकना–क्रि० अ० [सं० स्था+कृ] १ परिश्रम करते करते हार जाना। शिथिल होना। क्लांत होना। २ ऊब जाना। हैरान हो जाना। ३ बुढ़ापे से अशक्त होना। ४ ढीला होना या रुक जाना। चलता न रहना। ५ मोहित होना। मुग्ध होना।

थकान–संज्ञा स्त्री० [हिं० थकना] थकने का भाव। थकावट। शिथिलता।

थकाना क्रि० स० [हिं० थकना] श्रांत या शिथिल करना। परिश्रम से अशक्त करना।

थका-माँदा–वि० [हिं० थकना+माँदा] परिश्रम करते करते अशक्त। श्रांत। श्रमित।

थकावट, थकाहट–संज्ञा स्त्री० [हिं० थकना] थकने का भाव। शिथिलता।

थकित–वि० [हिं० थकना] १ थका हुआ। श्रांत। शिथिल। २ मोहित। मुग्ध।

थकौहाँ‡–वि० [हिं० थकना] [स्त्री० थकौहीं] कुछ थका हुआ। थका-माँदा। शिथिल।

थक्का–संज्ञा पुं० [सं० स्था+कृ] [स्त्री० थक्की, थकिया] गाढ़ी चीज की जमी हुई मोटी तह। जमा हुआ कतरा।

थगित–वि० [हिं० थकित] १ ठहरा हुआ। रुका हुआ। शिथिल। ढीला। २ मंद।

थति‡*–संज्ञा स्त्री० दे० "थाती"।

थन–संज्ञा पुं० [सं० स्तन] गाय, भैंस, बकरी इत्यादि चौपायों का स्तन। चौपायों की चूची।

थनी–संज्ञा स्त्री० [सं० स्तन] स्तन के आकार की दो थैलियाँ जो बकरियों के गले के नीचे लटकती हैं। गल-थना।

थनैला–संज्ञा पुं० [हिं० थन+ऐला (प्रत्यय०)] एक प्रकार का फोड़ा जो स्त्रियों के स्तन पर होता है।

थनैत–संज्ञा पुं० [हिं० थान] १ गाँव का मुखिया। २ वह आदमी जो जमींदार की ओर से गाँव का लगान वसूल करे।

थपकना–क्रि० स० [अनु० थप थप] १ प्यार से या आराम पहुँचाने के लिये किसी के शरीर पर धीरे धीरे हाथ मारना। २ धीरे धीरे ठोंकना। ३ पुचकारना या दम-दिलासा देना।

थपकी–संज्ञा स्त्री० [हिं० थपकना] १ किसी के शरीर पर (प्यार से आराम पहुँचाने के लिये) हथेली से धीरे धीरे पहुँचाया

हुआ आघात। २. हाथ से धीरे धीरे ठोंकने की क्रिया।
थपथपी–संज्ञा स्त्री० दे० "थपकी"।
थपन*–संज्ञा पुं० [सं० स्थापन] ठहरने या जमाने का काम। स्थापन।
थपना*–क्रि० स० [सं० स्थापन] स्थापित करना। बैठाना। जमाना।
क्रि० अ० स्थापित होना। जमना।
थपेड़ा–संज्ञा पुं० [अनु० थप थप] १. थप्पड़। २. आघात। धक्का। टक्कर।
थप्पड़–संज्ञा पुं० [अनु० थप थप] १. हथेली से किया हुआ आघात। तमाचा। झापड़। २. आघात। धक्का।
थमकारी*–वि० [सं० स्तंभन] स्तंभन करनेवाला। रोकनेवाला।
थमना–क्रि० अ० [सं० स्तंभन] १. चलता न रहना। रुकना। ठहरना। २. जारी न रहना। बंद हो जाना। ३. धीरज धरना। सब्र करना। ठहरा रहना।
थर–संज्ञा स्त्री० [सं० स्तर] तह। परत।
संज्ञा पुं० [सं० स्थल] १. दे० "थल"। २. बाघ की माँद।
थरकना†*–क्रि० अ० [अनु० थर थर] डर से काँपना। थर्राना।
थरथर–संज्ञा स्त्री० [अनु०] डर से काँपने की मुद्रा।
क्रि० वि० काँपने की पूरी मुद्रा से।
थरथराना–क्रि० अ० [अनु० थर थर] १. डर के मारे काँपना। २. काँपना।
थरथरी–संज्ञा स्त्री०[अनु० थरथर] कँपकपी।
थर्राना–क्रि० अ० [अनु० थर थर] डर के मारे काँपना। दहलना।
थल–संज्ञा पुं० [सं० स्थल] १. स्थान। जगह। ठिकाना। २. वह जमीन जिस पर पानी न हो। सूखी धरती। जल का उलटा। ३. थल का मार्ग। ४. वह स्थान जहाँ बहुत-सी रेत पड़ गई हो। भूड़। थली। रेगिस्तान। ५. बाघ की माँद। चुर।
थलकना–क्रि० अ० [सं० स्थूल] १. झोल पड़ने के कारण ऊपर-नीचे हिलना। २. मोटाई के कारण शरीर के मांस का हिलने-डोलने में हिलना।
थलचर–संज्ञा पुं० [सं० स्थलचर] पृथ्वी पर रहनेवाले जीव।
थलथल–वि० [सं० स्थूल] मोटाई के कारण झूलता या हिलता हुआ।
थलथलाना–क्रि० अ० [हिं० थूला] मोटाई के कारण शरीर के मांस का झूलकर हिलना।
थलरुह*–वि० [सं० स्थलरुह] धरती पर उत्पन्न होनेवाले जंतु, वृक्ष आदि।
थली–संज्ञा स्त्री० [सं० स्थली] १. स्थान। जगह। २. जल के नीचे का थल। ३. ठहरने या बैठने की जगह। बैठक। ४. बालू का मैदान।
थवई–संज्ञा पुं० [स्थपति] मकान बनानेवाला कारीगर। राज। मेमार।
थहना*–क्रि० स० [हिं० थाह] थाह लेना।
थहराना†–क्रि०अ०[अनु०थरथर] काँपना।
थहाना–क्रि० स० [हिं० थाह] १. गहराई का पता लगाना। थाह लेना। २. किसी की विद्या, बुद्धि या भीतरी अभिप्राय आदि का पता लगाना।
थाँग–संज्ञा स्त्री० [हिं० थान] १. चोरों या डाकुओं का गुप्त स्थान। २. खोज। पता। सुराग।
थाँगी–संज्ञा पुं० [हिं० थाँग] १. चोरी का माल मोल लेने या अपने पास रखनेवाला आदमी। २. चोरों को चोरी के लिये ठिकाने आदि का पता देनेवाला मनुष्य। ३. जासूस। ४. चोरों के गोल का सरदार।
थाँवला–संज्ञा पुं० [सं० स्थल] वह घेरा या गड्ढा जिसमें कोई पौधा लगा हो। थाला। आल-बाल।
था–क्रि० अ० [सं० स्था] 'है' शब्द का भूतकालिक रूप। रहा।
थाक–संज्ञा पुं० [सं० स्था] १. गाँव की सीमा। २. ढेर। समूह। राशि।

थाकना†-क्रि० अ० दे० "थकना"।

थात*-वि० [सं० स्थाता] जो बैठा या ठहरा हो। स्थित।

थाति-संज्ञा स्त्री० [हिं० थात] १ स्थिरता। ठहराव। टिकान। रहन। २ दे० "थाती"।

थाती-संज्ञा स्त्री० [हिं० थात] १ समय पर काम आने के लिये रखी हुई वस्तु। २ जमा। पूँजी। गथ। ३ धरोहर। अमानत।

थान-संज्ञा पुं० [सं० स्थान] १ जगह। ठौर। ठिकाना। २ डेरा। निवासस्थान। ३ किसी देवी या देवता का स्थान। ४ वह स्थान जहाँ घोड़े या चौपाये बाँधे जायँ। ५ कपड़े, गोटे आदि का पूरा टुकड़ा जिसकी लंबाई बँधी हुई होती है। ६ संख्या। अदद।

थाना-संज्ञा पुं० [सं० स्थान] १ टिकने या बैठने का स्थान। अड्डा। २ वह स्थान जहाँ अपराधों की सूचना दी जाती है और कुछ सरकारी सिपाही रहते हैं। पुलिस की बड़ी चौकी।

थानेदार-संज्ञा पुं० [हिं० थाना + फा० दार] थाने का प्रधान अफसर।

थानैत-संज्ञा पुं० [हिं० थान + ऐत (प्रत्य०)] १ किसी चौकी या अड्डे का मालिक। २ किसी स्थान का देवता। ग्राम-देवता।

थाप-संज्ञा स्त्री० [सं० स्थापन] १ तबले, मृदंग आदि पर पूरे पंजे का आघात। थपकी। ठोक। २ थप्पड़। तमाचा। ३ निशान। छाप। ४ स्थिति। जमाव। ५ प्रतिष्ठा। मर्य्यादा। धाक। ६ मान। कदर। प्रमाण। ७ पंचायत। ८ शपथ। सौगंध। कसम।

थापन-संज्ञा पुं० [सं० स्थापन] १ स्थापित करने, जमाने या बैठाने की क्रिया। २ किसी स्थान पर प्रतिष्ठित करना। रखना।

थापना-क्रि० स० [सं० स्थापन] १ स्थापित करना। जमाना। बैठाना। २ किसी गीली सामग्री को हाथ या साँचे से पीट अथवा दबाकर कुछ बनाना। संज्ञा स्त्री० [सं० स्थापना] १. स्थापन। प्रतिष्ठा। २ नवरात्र में दुर्गा-पूजा के लिये घट-स्थापना।

थापा-संज्ञा पुं० [हिं० थाप] १ पंजे का छापा। २ खलियान में अनाज की राशि पर गीली मिट्टी या गोबर से डाला हुआ चिह्न। चौकी। ३ वह साँचा जिसमें रंग आदि पोतकर कोई चिह्न अंकित किया जाय। छापा। ४ ढेर। राशि।

थापी-संज्ञा स्त्री० [हिं० थापना] वह चिपटी मुगरी जिससे राज या कारीगर गच पीटते हैं।

थाम-संज्ञा पुं० [सं० स्तंभ] १ खंभा। स्तंभ। २ मस्तूल। संज्ञा स्त्री० [हिं० थामना] थामने की क्रिया या ढंग। पकड़।

थामना-क्रि० स० [सं० स्तंभन] १ किसी चलती हुई वस्तु को रोकना। गति या वेग अवरुद्ध करना। २ गिरने, पड़ने या लुढ़कने आदि न देना। ३ ग्रहण करना। हाथ में लेना। पकड़ना। ४ सहारा देना। मदद देना। सँभालना। ५ अपने ऊपर कार्य्य का भार लेना।

थायी*-वि० दे० "स्थायी"।

थाल-संज्ञा पुं० [हिं० थाली] बड़ी थाली।

थाला-संज्ञा पुं० [सं० स्थल, हिं० थल] वह घेरा या गड्ढा जिसके भीतर पौधा लगाया जाता है। थावँला। आलवाल।

थाली-संज्ञा स्त्री० [सं० स्थाली] वह बड़ा छिछला बरतन जिसमें खाने के लिये भोजन रखा जाता है। बड़ी तश्तरी।

मुहा०—*थाली का बैंगन* = लाभ और हानि देखकभी इस पक्ष में कभी उस पक्ष में होनेवाला

थाह-संज्ञा स्त्री० [सं० स्थान] १ धरती का वह तल जिस पर पानी हो। गहराई का अंत या हद। २ कम गहरा पानी जिसकी थाह मिल सके। ३ गहराई का पता। गहराई का अंदाज। ४ अंत। पार। सीमा। हद। ५ कोई वस्तु कितनी

या कहाँ तक है, इसका पता लेना।
थाहना–क्रि० स० [हिं० थाह] थाह लेना। अंदाज लेना। पता लगाना।
थाहरा*†–वि० [हिं० थाह] जिसमें जल गहरा न हो। छिछला।
थिगली–संज्ञा स्त्री० [हिं० टिकली] वह टुकड़ा जो किसी फटे हुए कपड़े आदि का छेद बंद करने के लिये लगाया जाय। चकती। पैवंद।
मुहा०—बादल में थिगली लगाना = अत्यंत कठिन काम करना।
थित*–वि० [सं० स्थित] १. ठहरा हुआ। २. स्थापित। रखा हुआ।
थिति–संज्ञा स्त्री० [सं० स्थिति] १. ठहराव। स्थायित्व। २. ठहरने का स्थान। ३. रहाइश। रहन। ४. बने रहने का भाव। रक्षा। ५. अवस्था। दशा।
थिर–वि० [सं० स्थिर] १. स्थिर। ठहरा हुआ। अचल। २. शांत। धीर। ३. स्थायी। दृढ़। टिकाऊ।
थिरक–संज्ञा पु० [हिं० थिरकना] नृत्य में चरणों की चंचल गति।
थिरकना–क्रि० अ० [सं० अस्थिर + करण] १. नाचने में पैरों को क्षण क्षण पर उठाना और रखना। २. अंग मटका कर नाचना।
थिरजीह*- संज्ञा पुं० [सं० स्थिरजिह्व] मछली।
थिरता*–संज्ञा स्त्री० [सं० स्थिरता] १. ठहराव। अचलत्व। २. स्थायित्व। ३. शांति। धीरता।
थिरताई*–संज्ञा स्त्री० दे० "थिरता"।
थिरना–क्रि० अ० [सं० स्थिर] १. पानी या और किसी द्रव पदार्थ का हिलना-डोलना बंद होना। २. जल के स्थिर होने के कारण उसमें घुली हुई वस्तु का तल में बैठना। ३. मैल आदि के नीचे बैठ जाने के कारण साफ चीज का जल के ऊपर रह जाना। निथरना।
थिरा*–संज्ञा स्त्री० [सं० स्थिरा] पृथ्वी।
थिराना–क्रि० स० [हिं० थिरना] १. क्षुब्ध जल को स्थिर होने देना। २. जल को स्थिर करके उसमें घुली हुई वस्तु को नीचे बैठने देना। ३. किसी वस्तु को जल में घोलकर और उसकी मैल आदि को नीचे बैठाकर साफ़ करना। नियारना।
†क्रि० अ० दे० "थिरना"।
थीता*–संज्ञा पुं० [सं० स्थित] १. स्थिरता। शांति। २. कल। चैन।
थुकाना–क्रि० स० [हिं० थूकना का प्रे०] १. थूकने की क्रिया दूसरे से कराना। २. मुँह में ली हुई वस्तु को गिरवाना। उगलवाना। ३. थुड़ी थुड़ी कराना। निंदा कराना।
थुक्का फ़जीहत–संज्ञा स्त्री० [हिं० थूक+अ० फ़जीहत] १. निंदा और तिरस्कार। थुड़ी-थुड़ी। २. लड़ाई-झगड़ा।
थुड़ी–संज्ञा स्त्री० [अनु० थू थू] घृणा और तिरस्कार-सूचक शब्द। धिक्कार। लानत।
मुहा०—थुड़ी थुड़ी करना = धिक्कारना।
थुनी–संज्ञा स्त्री० दे० "थूनी"।
थुरहथा–वि० [हिं० थोड़ा + हाथ] [स्त्री० थुरहथी] १. जिसके हाथ छोटे हों। जिसकी हथेली में कम चीज आवे। २. किफ़ायत करनेवाला।
थू–अव्य० [अनु०] १. थूकने का शब्द। २. घृणा और तिरस्कार-सूचक शब्द। धिक्। छिः।
मुहा०—थू थू करना = धिक्कारना।
थूक–संज्ञा पुं० [अनु० थू थू] वह गाढ़ा और कुछ कुछ लसीला रस जो मुँह के भीतर जीभ तथा मांस की झिल्लियों से छूटता है। ष्ठीवन। खखार। लार।
मुहा०—थूकों सत्तू सानना = बहुत थोड़ी सामग्री लगाकर बड़ा कार्य पूरा करने चलना।
थूकना–क्रि० अ० [हिं० थूक] मुँह से थूक निकालना या फेंकना।
मुहा०—किसी (व्यक्ति या वस्तु) पर न थूकना=अत्यंत तुच्छ समझकर ध्यान तक न देना। थूककर चाटना = १. कहकर मुकर जाना। २. किसी दी हुई वस्तु को लौटा लेना।
क्रि० स० १. मुँह में ली हुई वस्तु को गिराना। उगलना।

मुहा०—थूक देना=तिरस्कार कर देना। २ बुरा कहना। धिक्कारना। निंदा करना।

थूथन–संज्ञा पु० [देश०] लंबा निकला हुआ मुँह। जैसे, सूअर या ऊँट का।

थून–संज्ञा स्त्री० [सं० स्थूणा] थूनी। चाँड।

थूनी–संज्ञा स्त्री० [सं० स्थूणा] १ खंभा। स्तंभ। थम। २. वह खंभा जो किसी बोझ को रोकने के लिये नीचे से लगाया जाय। चाँड।

थूरना†–क्रि० स० [सं० थूर्वण] १. कूटना। दलित करना। २ मारना। पीटना। ३ ठूँसना। कसकर भरना।

थूल*–वि० [सं० स्थूल] १ मोटा। भारी। २. भद्दा।

थूला–वि० [सं० स्थूल] [स्त्री० थूली] मोटा। मोटा-ताज़ा।

थूवा–संज्ञा पु० [सं० स्तूप] १ ढूह। २ पिंडा। लौंदा। ३ सीमा-सूचक स्तूप।

थूहर–संज्ञा पु० [सं० स्थूण] एक छोटा पेड जिसमें गाँठों पर से डंडे के आकार के डंठल निकलते हैं। इसका दूध विषैला होता हैं और औषध के काम में आता हैं। सेंहुड़।

थेई थेई–वि० [अनु०] थिरक थिरककर नाचने की मुद्रा और ताल।

थेगली–संज्ञा स्त्री० दे० "थिगली"।

थैला–संज्ञा पु० [सं० स्थल] [स्त्री० अल्पा० थैली] १ कपडे आदि को सीकर बनाया हुआ पात्र जिसमें कोई वस्तु भरकर बंद कर सकें। थडा बटुआ। बडा कीसा। २ रुपयों से भरा हुआ थैला। तोडा।

थैली–संज्ञा स्त्री० [हिं० थैला] १ छोटा थैला। कोश। कीसा। बटुआ। २ रुपयों से भरी हुई थैली। तोडा।

मुहा०—थैली खोलना=थैली में से निकालकर रुपया देना।

थोक–संज्ञा पु० [सं० स्तोमक] १ ढेर। राशि। २ समूह। झुंड।

मुहा०—थोक करना=इकट्ठा करना। जमा करना।

३ इकट्ठा बेचने की चीज़। खुदरा का उलटा। ४ इकट्ठी वस्तु। कुल।

थोडा–वि० [सं० स्तोक] [स्त्री० थोडी] जो मात्रा या परिमाण में अधिक न हो। न्यून। अल्प। कम। ज़रा सा।

यौ०—थोडा-बहुत=कुछ कुछ। किसी कदर।

क्रि० वि० अल्प परिमाण या मात्रा में। ज़रा। तनिक।

मुहा०—थोडा ही=नहीं। बिलकुल नहीं।

थोथरा–वि० दे० "थोथा"।

थोथा–वि० [देश०] [स्त्री० थोथी] १. जिसके भीतर कुछ सार न हो। खोखला। खाली। पोला। २ जिसकी धार तेज न हो। कुंठित। गुठला। ३ व्यर्थ का। निकम्मा।

थोपडी–संज्ञा स्त्री० [हिं० थोपना] चपत। धौल।

थोपना–क्रि० स० [सं० स्थापन] १ किसी गीली वस्तु का लौंदा यों ही ऊपर डाल देना या जमा देना। छोपना। २ मोटा लेप चढाना। ३ मत्थे मढना। लगाना। ४ आक्रमण आदि से रक्षा करना। बचाना। ५ दे० "छोपना"।

थोबडा–संज्ञा पु० [देश०] जानवरों का थूथन।

थोर, थोरा*†–वि० दे० "थोडा"।

थोरिक*†–वि० [हिं० थोडा] थोडा सा। तनिक सा।

थ्यावल†–संज्ञा पु० [सं० स्थेयस] १ स्थिरता। ठहराव। २ धीरता। धैर्य।

द

द-संस्कृत या हिंदी वर्णमाला में अठारहवाँ व्यंजन जो त-वर्ग का तीसरा वर्ण है। दंतमूल में जिह्वा के अगले भाग के स्पर्श से इसका उच्चारण होता है।

दंग-वि० [फा०] विस्मित। चकित। आश्चर्यान्वित। स्तब्ध। संज्ञा पुं० १. घबराहट। भय। डर। २. दे० "दंगा"।

दंगई-वि० [हिं० दंगा] १. दंगा करनेवाला। उपद्रवी। झगड़ालू। २. प्रचंड। उग्र।

दंगल-संज्ञा पुं० [फा०] १. पहलवानों की वह कुश्ती जो जोड़ बदकर हो और जिसमें जीतनेवाले को इनाम आदि मिले। २. अखाड़ा। मल्लयुद्ध का स्थान। ३. जमावड़ा। समूह। जमात। दल। ४. बहुत मोटा गद्दा या तोशक।

दंगा-संज्ञा पुं० [फा० दंगल] १. झगड़ा। बखेड़ा। उपद्रव। २. गुल-गपाड़ा। हुल्लड़। शोर-गुल।

दंड-संज्ञा पुं० [सं०] १. डंडा। सोंटा। लाठी। स्मृतियों में आश्रम और वर्ण के अनुसार दंड धारण करने की व्यवस्था है। २. डंडे के आकार की कोई वस्तु। जैसे, भुजदंड, मेरुदंड। ३. एक प्रकार की कसरत जो हाथ-पैर के पंजो के बल औंधे होकर की जाती है। ४. भूमि पर औंधे लेटकर किया हुआ प्रणाम। दंडवत्। ५. किसी अपराध के प्रतिकार में अपराधी को पहुँचाई हुई पीड़ा या हानि। सजा। तदारुक। ६. अर्थदंड। जुरमाना। डाँड़। मुहा०-दंड भरना=१. जुरमाना देना। २. दूसरे के नुकसान को पूरा करना। दंड भोगना या भुगतना=सजा अपने ऊपर लेना। दंड सहना=नुकसान उठाना। घाटा सहना। ७. दमन। शासन। वश। शमन। ८. ध्वजा या पताका का बाँस। ९. तराजू की डंडी। डाँड़ी। १०. किसी वस्तु (जैसे-- करछी, चम्मच आदि) की डंडी। ११. लंबाई की एक माप जो चार हाथ की होती थी। १२. (दंड देनेवाले) यम। १३. साठ पल का काल। २४ मिनट का समय। घड़ी।

दंडक-संज्ञा पुं० [सं०] १. डंडा। २. दंड देनेवाला पुरुष। शासक। ३. वह छंद जिसमें वर्णों की संख्या २६ से अधिक हो। यह दो प्रकार का होता है। एक गणात्मक जिसमें गणों का बंधन या नियम होता है; और दूसरा मुक्त जिसमें केवल अक्षरों की गिनती होती है। ४. दंडकारण्य।

दंडकला-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का मात्रिक छंद।

दंडकारण्य-संज्ञा पुं० [सं०] वह प्राचीन वन जो विंध्य पर्वत से लेकर गोदावरी के किनारे तक फैला था।

दंडदास-संज्ञा पुं० [सं०] वह जो दंड का रुपया न दे सकने के कारण दास हुआ हो।

दंडधर-संज्ञा पुं० [सं०] १. यमराज। २. शासनकर्ता। ३. संन्यासी।

दंडधार-संज्ञा पुं० [सं०] १. यमराज। २. राजा।

दंडन-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० दंडनीय, दंडित, दंड्य] दंड देने की क्रिया। शासन।

दंडना-क्रि० स० [सं० दंडन] दंड देना। शासित करना। सजा देना।

दंडनायक-संज्ञा पुं० [सं०] १. सेनापति। २. दंड-विधान करनेवाला राजा या हाकिम।

दंडनीति-संज्ञा स्त्री० [सं०] दंड देकर अर्थात् पीड़ित करके शासन में रखने की राजाओं की नीति।

दंडनीय-वि० [सं०] दंड देने योग्य।

दंडपाणि-संज्ञा पुं० [सं०] १. यमराज। २. भैरव की एक मूर्त्ति।

दंडप्रणाम-संज्ञा पुं० [सं०] दंडवत्। सादर अभिवादन।

दंडवत्-संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी पर लेटकर किया हुआ नमस्कार। साष्टांग प्रणाम।

दंडविधि-संज्ञा स्त्री० [सं०] अपराधों के

दंड से संबंध रखनेवाला नियम व्यवस्था।

दंडायमान–वि० [सं०] डंडे की तरह सीधा खड़ा। खड़ा।

दंडालय–संज्ञा पुं० [सं०] १. न्यायालय। २ वह स्थान जहाँ दंड दिया जाय। ३ एक छंद। दंडकला।

दंडिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] बीस अक्षरों की वर्णवृत्ति।

दंडित–वि० पुं० [सं०] जिसे दंड मिला हो। सज़ायाफ्ता।

दंडी–संज्ञा पुं० [सं० दंडिन्] १ दंड धारण करनेवाला व्यक्ति। २ यमराज। ३ राजा। ४ द्वारपाल। ५ वह संन्यासी जो दंड और कमंडलु धारण करे। ६ जिन-देव। ७ शिव। महादेव। ८ संस्कृत के एक प्रसिद्ध कवि जिनके बनाये हुए दो ग्रंथ मिलते हैं—'दशकुमारचरित' और 'काव्यादर्श'।

दंड्य–वि० [सं०] दंड पाने योग्य।

दंत–संज्ञा पुं० [सं०] १ दाँत। २ ३२ की संख्या।

दंतकथा–संज्ञा स्त्री० [सं०] ऐसी बात जिसे बहुत दिनों से लोग एक दूसरे से सुनते चले आए हों, और जिसका कोई पुष्ट प्रमाण न हो। सुनी-सुनाई परंपरागत बात।

दंतच्छद–संज्ञा पुं० [सं०] ओष्ठ। ओठ।

दंतधावन–संज्ञा पुं० [सं०] १ दाँत धोने या साफ करने का काम। दातुन करने की क्रिया। २ दतौन। दातुन।

दंतमूलीय–वि० [सं०] दंतमूल से उच्चारण किया जानेवाला (वर्ण)। जैसे तवर्ग।

दँतिया–संज्ञा स्त्री०[हिं०दाँत+इया(प्रत्य०)] छोटे छोटे दाँत।

दंती–संज्ञा स्त्री० [सं०] अंडी की जाति का एक पेड़। यह दो प्रकार की होती है—लघु-दंती और बृहद्दंती।

दँतुरियाँ*–संज्ञा स्त्री० दे० "दँतिया"।

दँतुला–वि० [सं० दंतुल] [स्त्री० दँतुली]

या बड़े बड़े दाँतोंवाला।

दंतोष्ठ्य–वि० [सं०] (वर्ण) जिसका उच्चारण दाँत और ओठ से हो। ऐसा वर्ण "व" है।

दंत्य–वि० [सं०] १ दंत-संबंधी। २ (वर्ण) जिसका उच्चारण दाँत की सहायता से हो। जैसे तवर्ग।

दँद–संज्ञा स्त्री० [सं० दहन] किसी स्थान से निकलती हुई गरमी।
संज्ञा पुं० [सं० द्वंद्व] १ लड़ाई-झगड़ा। उपद्रव। २ शोर-गुल।

दंदाना–संज्ञा पुं० [फ़ा०] [वि० दंदानेदार] दाँत के आकार की उभरी हुई वस्तुओं की पंक्ति। जैसी कंघी या आरे आदि की।

दंदानेदार–वि० [फ़ा०] जिसमें दाँत की तरह निकले हुए कँगूरों की पंक्ति हो।

दंदी–वि० [हिं० दंद] झगड़ालू। उपद्रवी।

दंपति, दंपती–संज्ञा पुं० [सं०] स्त्री पुरुष का जोड़ा। पति-पत्नी का जोड़ा।

दंपा*–संज्ञा स्त्री० [हिं० दमकना] बिजली।

दंभ–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० दंभी] १ महत्त्व दिखाने या प्रयोजन सिद्ध करने के लिये झूठा आडंबर। २ झूठी ठसक। अभिमान। घमंड।

दंभी–वि० [सं० दंभिन्] १ पाखंडी। ढकोसलेबाज़। २ अभिमानी। घमंडी।

दंभोलि–संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रास्त्र। वज्र।

दँवरी–संज्ञा स्त्री० [सं० दमन, हिं० दाँवना] अनाज के सूखे डंठलों में से दाने झाड़ने के लिये उसे बैलों से रौंदवाने का काम।

दंश–संज्ञा पुं० [सं०] १ वह घाव जो दाँत काटने से हुआ हो। दंत-क्षत। २ दाँत काटने की क्रिया। दंशन। ३ दाँत। ४ विषैले जंतुओं का डंक। ५ डाँस नामक विषैली मक्खी।

दंशक–संज्ञा पुं० [सं०] दाँत से काटनेवाला।

दंशन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० दंशित, दंशी] १ दाँत से काटना। डसना। २ वर्म। बकतर।

दंष्ट्र–संज्ञा पुं० [सं०] दाँत।

दंस*–संज्ञा पुं० दे० "दंश"।
द–संज्ञा पुं० [सं०] १. पर्वत। पहाड़। २. दांत। ३. दाता। (यौगिक में)। जैसे, करद।
संज्ञा स्त्री० १. भार्या। स्त्री। २. रक्षा। ३. खंडन।
दइत–संज्ञा पुं० दे० "दैत्य"।
दई–संज्ञा पुं० [सं० दैव] १. ईश्वर। विधाता।
मुहा०–दई का घाला=ईश्वर का मारा हुआ। अभागा। कमबख्त। दई दई=हे दैव, हे दैव! (रक्षा के लिये ईश्वर की पुकार।) २. दैव-संयोग। अदृष्ट। प्रारब्ध।
दईमारा–वि० [हिं० दई+मारना] [स्त्री० दईमारी] जिस पर ईश्वर का कोप हो। अभागा। कमबख्त।
दक़ीका–संज्ञा पुं० [अ०] १. कोई बारीक बात। २. युक्ति। उपाय।
मुहा०–कोई दक़ीका बाकी न रखना=कोई उपाय बाकी न रखना। सब उपाय कर चुकना।
दक्खिन–संज्ञा पुं० [सं० दक्षिण] [वि० दक्खिनी] १. वह दिशा जो सूर्य्य की ओर मुँह करके खड़े होने से दहिने हाथ की ओर पड़ती है। उत्तर के सामने की दिशा। २. भारत का वह भाग जो दक्षिण में है।
दक्खिनी–वि० [हिं० दक्खिन] १. दक्खिन का। २. जो दक्षिण के देश का हो।
संज्ञा पुं० दक्षिण देश का निवासी।
दक्ष–वि० [सं०] १. निपुण। कुशल। चतुर। होशियार। २. दक्षिण। दाहिना।
संज्ञा पुं० १. एक प्रजापति का नाम जिनसे देवता उत्पन्न हुए थे। ये सृष्टि के उत्पादक, पालक और पोषक कहे गए हैं। पुराणानुसार शिव की पत्नी सती इन्हीं की कन्या थीं। २. अत्रि ऋषि। ३ महेश्वर।
दक्षकन्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] सती, जो शिव की पत्नी थीं।
दक्षता–संज्ञा स्त्री० [सं०] निपुणता। योग्यता। कमाल।
दक्षिण–वि० [सं०] १. बायाँ का उलटा। दाहिना। अपसव्य। २. इस प्रकार प्रवृत्त जिससे किसी का कार्य सिद्ध हो। अनुकूल। ३. उस ओर का जिधर सूर्य्य की ओर मुँह करके खड़े होने से दाहिना हाथ पड़े। ४. निपुण। दक्ष। चतुर।
संज्ञा पुं० १. उत्तर के सामने की दिशा। २. वह नायक जिसका अनुराग अपनी सब नायिकाओं पर समान हो। ३. प्रदक्षिण। ४. तंत्रोक्त एक आचार या मार्ग।
दक्षिणा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दक्षिण दिशा। २. वह दान जो किसी शुभ कार्य आदि के समय ब्राह्मणों को दिया जाय। ३. पुरस्कार। भेंट। ४. वह नायिका जो नायक के अन्य स्त्रियों से संबंध करने पर भी उससे बराबर वैसी ही प्रीति रखती हो।
दक्षिणापथ–संज्ञा पुं० [सं०] विंध्य पर्वत के दक्षिण ओर का वह प्रदेश जहाँ से दक्षिण भारत के लिये रास्ते जाते हैं।
दक्षिणायन–वि० [सं०] भूमध्य रेखा से दक्षिण की ओर। जैसे, दक्षिणायन सूर्य।
संज्ञा पुं० १. सूर्य्य की कर्क रेखा से दक्षिण मकर रेखा की ओर गति। २. २१ जून से २२ दिसंबर तक वह छः महीने का समय जिसमें सूर्य्य कर्क रेखा से चलकर बराबर दक्षिण की ओर बढ़ता रहता है।
दक्षिणावर्त्त–वि० [सं०] जो दाहिनी ओर को घूमा हुआ हो।
संज्ञा पुं० एक प्रकार का शंख जिसका घुमाव दाहिनी ओर को होता है।
वि० दक्षिण देश का।
दक्षिणीय–वि० [सं०] १. दक्षिण का। २. जो दक्षिणा का पात्र हो।
दखमा–संज्ञा पुं० [?] वह स्थान जहाँ पारसी अपने मुरदे रखते हैं।
दखल–संज्ञा पुं० [अ०] १. अधिकार। कब्जा। २. हस्तक्षेप। हाथ डालना। ३. पहुँच। प्रवेश।
दखिन–संज्ञा पुं० दे० "दक्षिण"।
दखिनहा†–वि० [हिं० दक्खिन+हा (प्रत्य०)] दक्षिण का। दक्षिणी।
दख़ील–वि० [अ०] जिसका दखल या

कब्जा हो। अधिकार रखनेवाला।

दखीलकार–संज्ञा पुं० [अ० दखील+फा० कार] वह असामी जिसने किसी जमींदार के खेत या जमीन पर कम से कम बारह वर्ष तक अपना दखल रखा हो।

दगड–संज्ञा पुं० [?] लडाई मे बजाया जानेवाला बडा ढोल।

दगदगा–संज्ञा पुं० [अ०] १. डर। भय। २ सदेह। ३ एक प्रकार की कडील।

दगदगाना–क्रि० अ० [हिं० दगना] दमदमाना। चमकना।
क्रि० स० चमकाना। चमक उत्पन्न करना।

दगदगी–संज्ञा स्त्री० दे० "दगदगा"।

दगध†–संज्ञा पुं० दे० "दाह"।
वि० दे० "दग्ध"।

दगधना*–क्रि० अ० [सं० दग्ध] जलना।
क्रि० स० १. जलाना। २. दुःख देना।

दगना–क्रि०अ० [सं० दग्ध+ना (प्रत्य०)] १ (बदूक या तोप आदि का) छूटना। चलना। २ जलना। झुलस जाना। ३ दागा जाना। दागना का अकर्मक। ४ प्रसिद्ध होना। मशहूर होना।
क्रि० स० दे० "दागना"।

दगर, दगरा†–संज्ञा पुं० [?] १ देर। विलब। २ डगर। रास्ता।

दगल–संज्ञा पुं० दे० "दगला"।

दगला–संज्ञा पुं० [?] मोटे वस्त्र का बना हुआ या रूईदार अँगरखा। भारी लबादा।

दगवाना–क्रि० स० [हिं० दागना का प्रे०] दागने का काम दूसरे से कराना।

दगहा–वि० [हिं० दाग] जिसमें दाग हो।
वि० [हिं० दाह=प्रेतकर्म+हा (प्रत्य०)] जिसने प्रेत-क्रिया की हो। दाह-कर्म करनेवाला।
वि० [हिं० दगना+हा (प्रत्य०)] जो दागा हुआ हो। दग्ध किया हुआ।

दगा–संज्ञा स्त्री० [अ०] छल-कपट। धोखा।

दगादार–वि० दे० "दगाबाज"।

दगाबाज–वि० [फा०] धोखा देनेवाला। छली। कपटी।

दगाबाजी–संज्ञा स्त्री० [फा०] छल। कपट।

दगैल–वि० [अ० दाग+ऐल (प्रत्य०)] १ दागदार। जिसमें दाग हो। २. जिसमें कुछ खोट या दोष हो।
संज्ञा पुं० [अ० दगा] दगाबाज। छली।

दग्ध–वि० [सं०] १ जला या जलाया हुआ। २ दुःखित। जिसे कष्ट पहुँचा हो।

दग्धा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पश्चिम दिशा। २ कुछ विशिष्ट राशियों से युक्त कुछ विशिष्ट तिथियाँ (अशुभ)।

दग्धाक्षर–संज्ञा पुं० [सं०] पिंगल के अनुसार झ, ह, र, भ और ष ये पाँचो अक्षर जिनका छद मे आरभ में रखना वर्जित है।

दचकना–क्रि० अ० [अनु०] [संज्ञा दचका] १. ठोकर या धक्का खाना। २. दब जाना। ३ झटका खाना।
क्रि० स० १. ठोकर या धक्का लगाना। २. दबाना। ३ झटका देना।

दचना–क्रि० अ० [अनु०] गिरना।

दच्छ–संज्ञा पुं० दे० "दक्ष"।

दच्छकुमारी*–संज्ञा स्त्री० [सं० दक्ष+कुमारी] दक्ष प्रजापति की कन्या, सती।

दच्छना–संज्ञा स्त्री० दे० "दक्षिणा"।

दच्छसुता–संज्ञा स्त्री० [सं० दक्ष+सुता] दक्ष की कन्या, सती।

दच्छिन–वि० दे० "दक्षिण"।

दढ़ियल–वि० [हिं० दाढ़ी+इयल (प्रत्य०)] दाढ़ीवाला। जो दाढ़ी रखे हो।

दतवन–संज्ञा स्त्री० दे० "दतुअन"।

दतिया–संज्ञा स्त्री० [हिं० दाँत का अल्पा० स्त्री०] दाँत का स्त्रीलिंग और अल्पार्थक रूप। छोटा दाँत।

दतुअन, दतुवन–संज्ञा स्त्री० [हिं० दात+अवन (प्रत्य०)] १. नीम या बबूल आदि की छोटी टहनी जिससे दाँत साफ करते हैं। दातुन। २ दाँत साफ करने और मुँह धोने की क्रिया।

दतौन–संज्ञा स्त्री० दे० "दतुवन"।

दत्त–संज्ञा पुं० [सं०] १ दत्तात्रेय। २ जैनियो के नौ वासुदेवो म से एक। ३

दान। ४. दत्तक।
यौ०—दत्तविधान=दत्तक पुत्र लेना।
वि० दिया हुआ।
दत्तक—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो वास्तव में पुत्र न हो, पर शास्त्र-विधि से बनाकर पुत्र मान लिया गया हो। गोद लिया हुआ लड़का। मुतबन्ना।
दत्तचित्त—वि० [सं०] जिसने किसी काम में खूब जी लगाया हो।
दत्तात्मा—संज्ञा पुं० [सं० दत्तात्मन्] वह जो स्वयं किसी के पास जाकर उसका दत्तक पुत्र बने।
दत्तात्रेय—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध प्राचीन ऋषि जो पुराणानुसार विष्णु के चौबीस अवतारों में से एक माने जाते हैं।
दत्तोपनिषद्—संज्ञा पु० [सं०] एक उपनिषद्।
ददा—संज्ञा पुं० दे० "दादा"।
ददिया ससुर—संज्ञा पुं० [हिं० दादा+ससुर] [स्त्री० ददिया+सास] पत्नी या पति का दादा। श्वसुर का पिता।
ददिहाल—संज्ञा पुं० [हिं० दादा+आलय] १. दादा का कुल। २. दादा का घर।
ददोरा—संज्ञा पुं० [हिं० दाद] मच्छड, बर्रे आदि के काटने या खुजलाने आदि के कारण चमड़े के ऊपर होनेवाली चकत्ती की तरह थोड़ी सी सूजन। चकता।
दद्रु—संज्ञा पु० [स०] दाद रोग।
दधा*—संज्ञा पु० दे० "दधि"।
दधसार*—संज्ञा पुं० दे० "दधिसार"।
दधि—संज्ञा पु० [सं०] १. जमाया हुआ दूध। दही। २. वस्त्र। कपड़ा।
*संज्ञा पु० [सं० उदधि] समुद्र। सागर।
दधिकाँदो—संज्ञा पुं० [स० दधि+हिं० काँदो=कीचड़] जन्माष्टमी के समय होनेवाला एक प्रकार का उत्सव जिसमे लोग हलदी मिला हुआ दही एक दूसरे पर फेंकते हैं।
दधिजात—संज्ञा पुं० [सं०] मक्खन।
संज्ञा पुं० [सं० उदधि+जात] चंद्रमा।
दधिसुत—संज्ञा पुं० [सं० उदधि-सुत] १. कमल। २. मुक्ता। मोती। ३. चद्रमा। ४. जालंधर दैत्य। ५. विष। जहर।
संज्ञा पुं० [सं०] मक्खन। नवनीत।
दधिसुता—संज्ञा स्त्री० [सं० उदधिसुता] सीप।
दधीचि—संज्ञा पुं० [सं०] एक वैदिक ऋषि जो यास्क के मत से अथर्व के पुत्र थे और इसी लिये दधीचि कहलाते थे। एक बार वृत्रासुर के उपद्रव करने पर इंद्र ने अस्त्र बनाने के लिये दधीचि से उनकी हड्डियाँ माँगी। दधीचि ने इसके लिये अपने प्राण त्याग दिए। तभी से ये बड़े भारी दानी प्रसिद्ध हैं।
दनदनाना—क्रि० अ० [अनु०] १. दनदन शब्द करना। २. आनंद करना।
दनादन—क्रि० वि० [अनु०] दनदन शब्द के साथ।
दनु—संज्ञा स्त्री० [सं०] दक्ष की एक कन्या जो कश्यप को ब्याही थी। इसके चालीस पुत्र हुए थे जो सब दानव कहलाते हैं।
दनुज—संज्ञा पुं० [सं०] असुर। राक्षस।
दनुजदलनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।
दनुजराय—संज्ञा पु० [सं० दनुज+हिं० राय] दानवों का राजा हिरण्यकशिपु।
दनुजेंद्र—संज्ञा पुं० [स०] रावण।
दन्न—संज्ञा पु० [अनु०] "दन्न" शब्द जो तोप आदि के छूटने से होता है।
दपटना—क्रि० अ० [हिं० डाँटना के साथ अनु०] [संज्ञा दपट] डाँटना। घुड़कना।
दप्—संज्ञा पु० [सं० दर्प] दर्प। शेखी।
दपेट—संज्ञा स्त्री० दे० "दपट"।
दफ़तर—संज्ञा पुं० दे० "दफ़्तर"।
दफ़्ती—संज्ञा स्त्री० [अ० दफ़्तीन] कागज के कई तख्तों को एक में साटकर बनाया हुआ गत्ता। कुट। वसली।
दफ़न—संज्ञा पु० [अ०] किसी चीज को विशेषतः मुरदे को जमीन में गाड़ने की क्रिया।
दफ़नाना—क्रि० स० [अ० दफन+आना] जमीन में दबाना। गाड़ना।
दफ़ा—संज्ञा स्त्री० [अ० दफ़अः] १. बार। बेर। २. किसी क़ानूनी किताब का वह

एक अंश जिसमें किसी एक अपराध के संबंध में व्यवस्था हो। धारा।

मुहा०—दफा लगाना=अभियुक्त पर किसी दफा के नियम को घटाना।

वि० [अ० दफ़अ] दूर किया हुआ। हटाया हुआ। तिरस्कृत।

दफ़ादार–संज्ञा पुं० [अ० दफ़अ =समूह+फा० दार] फौज का वह कर्मचारी जिसकी अधीनता में कुछ सिपाही हों।

दफ़ीना–संज्ञा पुं० [अ०] गड़ा हुआ धन या खजाना।

दफ्तर–संज्ञा पुं० [फा०] १ वह स्थान जहाँ किसी कारखाने आदि के संबंध की कुल लिखा-पढ़ी और लेन-देन आदि हो। आफिस। कार्यालय। २ लंबी चौड़ी चिट्ठी। ३ सविस्तर वृत्तांत। चिट्ठा।

दफ्तरी–संज्ञा पुं० [फा०] १ वह कर्मचारी जो दफ्तर के कागज आदि दुरुस्त करता और रजिस्टर आदि पर रूल खींचता हो। २ किताबों की जिल्द बाँधनेवाला। जिल्दसाज। जिल्दबंद।

दबंग–वि० [हिं० दबाव या दबाना] प्रभावशाली। दबाववाला।

दबक–संज्ञा स्त्री० [हिं० दबकना] १ दबने या छिपने की क्रिया या भाव। २ सिकुड़न।

दबकगर–संज्ञा पुं० [हिं० दबक+गर (प्रत्य०)] दबका (तार) बनानेवाला। दबकैया।

दबकना–क्रि० अ० [हिं० दबाना] १ भय के कारण छिपना। २ लुकना। छिपना। क्रि० स० धातु को हथौड़ी से पीटकर बढ़ाना।

दबका–संज्ञा पुं० [हिं० दबकना=तार आदि पीटना] कामदानी का सुनहला तार।

दबकाना–क्रि० स० [हिं० दबकना का स० रूप] छिपाना। आड़ में करना।

दबकैया–संज्ञा पुं० दे० दबकगर।

दबगर–संज्ञा पुं० [देश०] १ ढाल बनानेवाला। २ चमड़े के कुप्पे बनानेवाला।

दबदबा–संज्ञा पुं० [अ०] रोब दाब।

दबना–क्रि० अ० [सं० दमन] १ भार के नीचे आना। बोझ के नीचे पड़ना। २ ऐसी अवस्था में होना जिसमें किसी भार से बहुत जोर पड़े। ३ किसी भारी शक्ति के सामने अपने स्थान पर न ठहर सकना। पीछे हटना। ४ दबाव में पड़कर किसी के इच्छानुसार काम करने के लिए विवश होना। ५ किसी के मुकाबले में ठीक या अच्छा न जँचना। ६ किसी बात का जहाँ का तहाँ रह जाना। ७ उमड़ न सकना। शांत रहना। ८ अपनी चीज का अनुचित रूप से किसी दूसरे के अधिकार में चला जाना। ९ ऐसी अवस्था में आ जाना जिसमें कुछ बस न चल सके। १० धीमा पड़ना। मंद पड़ना।

मुहा०—दबी जबान से कहना=साफ साफ न कहना बल्कि इस प्रकार कहना जिससे केवल कुछ ध्वनि व्यक्त हो।

११ संकोच करना। झेंपना।

दबवाना–क्रि० स० [हिं० दबना का प्र०] दबाने का काम दूसरे से कराना।

दबाना–क्रि० स० [सं० दमन] [संज्ञा दाब, दबाव] १ ऊपर से भार रखना (जिसमें कोई चीज नीचे की ओर धँस जाय अथवा इधर उधर हट न सके)। २ किसी पदार्थ पर किसी ओर से बहुत जोर पहुँचाना। ३ पीछे हटाना। ४ जमीन के नीचे गाड़ना। दफन करना। ५ किसी पर इतना आतंक जमाना कि वह कुछ कह न सके। जोर डालकर विवश करना। ६ दूसरे को मंद या मात कर देना। ७ किसी बात को उठने या फैलने न देना। ८ दमन करना। शांत करना। ९ किसी दूसरे की चीज पर अनुचित अधिकार करना। १० झोंक के साथ बढ़कर किसी चीज को पकड़ लेना। ११ ऐसी अवस्था में ले आना जिसमें मनुष्य असहाय दीन या विवश हो जाय।

दबाव–संज्ञा पुं० [हिं० दबाना] १ दबाने की क्रिया। चाँप। २ दबाने का भाव। चाँप। ३ रोब।

दबीज–वि० [फा०] जिसका दल मोटा

हो। गाढ़ा। संगीन।

दबैल–वि० [हिं० दबाना + ऐल (प्रत्य०)] १. जिस पर किसी का प्रभाव या दबाव हो। २. जो बहुत दबता या डरता हो।

दबोचना–क्रि० स० [हिं० दबाना] १. किसी को सहसा पकड़कर दबा लेना। धर दबाना। २. छिपाना।

दबोरना†*–क्रि० स० [हिं० दबाना] अपने सामने ठहरने न देना। दबाना।

दम–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह दंड जो दमन करने के लिये दिया जाता है। सज़ा। २. इंद्रियों को वश में रखना और चित्त को बुरे कामों में प्रवृत्त न होने देना। ३. कीचड़। ४. घर। ५. पुराणानुसार मरुत राजा के पौत्र जो बभ्रु की कन्या इंद्रसेना के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। ६. बुद्ध का एक नाम। ७. विष्णु। ८. दबाव।

संज्ञा पुं० [फा०] १. साँस। श्वास। मुहा०—दम अटकना या उखड़ना = साँस रुकना, विशेषतः मरने के समय साँस रुकना। दम खींचना=१. चुप रह जाना। २. साँस ऊपर चढ़ाना। दम घटना=हवा की कमी के कारण साँस रुकना। दम घोंटकर मारना= १ गला दबाकर मारना। २. बहुत कष्ट देना। दम तोड़ना=अंतिम साँस लेना। दम फूलना= १. अधिक परिश्रम के कारण साँस का जल्दी जल्दी चलना। हाँफना। २. दमे के रोग का दौरा होना। दम भरना=१. किसी के प्रेम अथवा मित्रता आदि का पक्का भरोसा रखना और अभिमानपूर्वक उसका वर्णन करना। २. परिश्रम के कारण थक जाना। दम मारना = १. विश्राम करना। सुस्ताना। २. बोलना। कुछ कहना। चूं करना। दम लेना=विश्राम करना। सुस्ताना। दम साधना = १. श्वास की गति को रोकना। २. चुप होना। मौन रहना। २. नशे आदि के लिये साँस के साथ धूआँ खींचने की क्रिया। मुहा०—दम मारना या लगाना = गाँजे आदि को चिलम पर रखकर उसका धूआँ खींचना। ३. साँस खींचकर जोर से बाहर फेंकने या फूंकने की क्रिया। ४. उतना समय जितना एक बार साँस लेने में लगता है। लहमा। पल। मुहा०—दम के दम=क्षण भर। थोड़ी देर। दम पर दम=बहुत थोड़ी थोड़ी देर पर। ५. प्राण। जान। जी। मुहा०–दम खुश्क होना=दे० "दम सूखना"। दम नाक में या नाक में दम आना = बहुत तंग या परेशान होना। दम निकलना = मृत्यु होना। मरना। दम सूखना=बहुत डर के कारण साँस तक न लेना। प्राण सूखना। ६. वह शक्ति जिससे कोई पदार्थ अपना अस्तित्व बनाए रखता और काम देता है। जीवनी-शक्ति। ७. व्यक्तित्व। मुहा०—(किसी का) दम गनीमत होना= (किसी के) जीवित रहने के कारण कुछ न कुछ अच्छी बातों का होता रहना।

८. खाद्य पदार्थ को बरतन में रखकर और उसका मुँह बंद करके आग पर पकाने की क्रिया। ९. धोखा। छल। फरेब। यौ०—दम-झाँसा=छल-कपट। दमदिलासा या दम-पट्टी=वह बात जो केवल फुसलाने के लिये कही जाय। झूठी आशा। मुहा०—दम देना=बहकाना। धोखा देना। १०. तलवार या छुरी आदि की धार।

दमक–संज्ञा स्त्री० [हिं० चमक का अनु०] चमक। चमचमाहट। द्युति। आभा।

दमकना–क्रि० अ० [हिं० चमकना का अनु०] चमकना। चमचमाना।

दमकल–संज्ञा स्त्री० [हिं० दम+कल] १. वह यंत्र जिसमें ऐसे नल लगे हों, जिनके द्वारा कोई तरल पदार्थ हवा के दबाव से, ऊपर अथवा और किसी ओर झोंके से फेंका जा सके। पंप। २. वह यंत्र जिसकी सहायता से मकानों में लगी हुई आग बुझाई जाती है। पंप। ३. वह यंत्र जिसकी सहायता से कूएँ से पानी निकालते हैं। पंप। ४. दे० "दम + कला"।

दमकला–संज्ञा पुं० [हिं० दम+कल] १. वह बड़ा पात्र जिसमें लगी हुई पिचकारी के

द्वारा महफिलों में गुलाब-जल अथवा रंग आदि छिड़का जाता है। २ दे० "दमकल"।

दमखम–संज्ञा पु० [फ़ा०] १ दृढ़ता। मज-बूती। २ जीवनी-शक्ति। प्राण। ३ तलवार की धार और उसका झुकाव।

दम-चूल्हा–संज्ञा पु० [हिं० दम+चूल्हा] एक प्रकार का लोहे का गोल चूल्हा।

दमड़ी–संज्ञा स्त्री० [सं० द्रविण=धन] पैसे का आठवाँ भाग।

दमदमा–संज्ञा पु० [फ़ा०] वह किलेबंदी जो लड़ाई के समय थैलों में बालू भरकर की जाती है। मोरचा। धुस।

दमदार–वि० [फ़ा०] १ जिसमें जीवनी-शक्ति यथेष्ट हो। २ दृढ़। मजबूत। ३ जिसमें दम या साँस अधिक समय तक रह सके। ४ जिसकी धार तेज हो। चोखा।

दमन–संज्ञा पु० [सं०] १ दबाने या रोकने की क्रिया। २ दंड। सजा। ३ इंद्रियों की चंचलता रोकना। निग्रह। दम। ४ विष्णु। ५ महादेव। शिव। ६ एक ऋषि का नाम। दमयंती इन्हीं के यहाँ उत्पन्न हुई थी। ७ एक राक्षस। संज्ञा स्त्री० दे० "दमयंती"।

दमनक–संज्ञा पु० [सं०] १ एक प्रकार का छंद। २ दौना नामक पौधा।

दमनशील–वि० [सं०] जिसकी प्रकृति दमन करने की हो। दमन करनेवाला।

दमनीय–वि० [सं०] १ जो दमन किया जा सके। २ जो दबाया जा सके।

दमबाज़–वि० [फ़ा० दम+बाज़] दम देने वाला। फुसलानेवाला।

दमयंती–संज्ञा स्त्री० [सं०] राजा नल की स्त्री जो विदर्भ देश के राजा भीमसेन की कन्या थी।

दमा–संज्ञा पु० [फ़ा०] एक प्रसिद्ध रोग जिसमें साँस लेने में बहुत कष्ट होता है, खाँसी आती है और कफ बड़ी कठिनता से निकलता है। साँस।

दमाद–संज्ञा पु० [सं० जामातृ] कन्या का पति। जवाई। जामाता।

दमानक–संज्ञा स्त्री० [देश०] तोपों की बाढ़।

दमामा–संज्ञा पु० [फ़ा०] नगाड़ा। डंका।

दमारि*†–संज्ञा पु० [सं० दावानल] जंगल की आग। वन की आग।

दमावति–संज्ञा स्त्री० दे० "दमयंती"।

दमैया*†–वि० [हिं० दमन+ऐया (प्रत्य०)] दमन करनेवाला।

दयंत‡–संज्ञा पु० दे० "दैत्य"।

दया–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मन का दुःखपूर्ण वेग जो दूसरे के कष्ट को देखकर उत्पन्न होना और उस कष्ट को दूर करने की प्रेरणा करता है। करुणा। रहम। २ दक्ष प्रजा-पति की कन्या जो धर्म को ब्याही गई थी।

दयादृष्टि–संज्ञा स्त्री० [सं०] करुणा या अनु-ग्रह का भाव। मेहरबानी की नजर।

दयानत–संज्ञा स्त्री० [अ०] सत्यनिष्ठा। ईमान

दयानतदार–वि० [अ० दयानत+फ़ा० दार] ईमानदार। सच्चा।

दयाना*–क्रि० अ० [हिं० दया+ना (प्रत्य०)] दयालु होना। कृपालु होना।

दयानिधान–संज्ञा पु० [सं०] वह जिसमें बहुत अधिक दया हो। बहुत दयालु।

दयानिधि–संज्ञा पु० [सं०] १ बहुत दयालु पुरुष। २ ईश्वर।

दयापात्र–संज्ञा पु० [सं०] वह जो दया के योग्य हो।

दयामय–संज्ञा पु० [सं०] १ दया से पूर्ण। दयालु। २ ईश्वर।

दयार–संज्ञा पु० [अ०] प्रांत। प्रदेश।

दयार्द्र–वि० [सं०] दया-पूर्ण। दयालु।

दयाल–वि० दे० 'दयालु'।

दयालु–वि० [सं०] बहुत दया करनेवाला।

दयालुता–संज्ञा स्त्री० [सं०] दयालु होने का भाव।

दयावंत–वि० दे० "दयालु"।

दयावना*–वि० पु० [हिं० दया+आवना] [स्त्री० दयावनी] दया के योग्य। दीन।

दयावान्–वि० [सं०] [स्त्री० दयावती] जिसके चित्त में दया हो। दयालु।

दयाशील–वि० [सं०] दयालु।

दयासागर–संज्ञा पुं० [सं०] जिसके चित्त में बहुत दया हो।

दर–संज्ञा पुं० [सं०] १. शंख। २. गड्ढा। दरार। ३. गुफा। कंदरा। ४. फाड़ने की क्रिया। विदारण। ५. डर। भय। संज्ञा पुं० [सं० दल] समूह। दल। संज्ञा पुं० [फा०] द्वार। दरवाजा। मुहा०—दर दर मारा मारा फिरना = दुर्दशाग्रस्त होकर घूमना। संज्ञा स्त्री० १. भाव। निर्ख। २. प्रमाण। ठीक-ठिकाना। ३. क़दर। प्रतिष्ठा। संज्ञा स्त्री० [सं० दारु] ईख। ऊख।

दरकना–क्रि० अ० [सं० दर = फाड़ना] दाब पड़ने से फटना। चिरना।

दरका–संज्ञा पुं० [हिं० दरकना] १. शिगाफ़। दरार। २. वह चोट जिससे कोई वस्तु दरक या फट जाय।

दरकाना–क्रि० स० [हिं० दरकना] फाड़ना। क्रि० अ० फटना।

दरकार–वि० [फा०] आवश्यक। अपेक्षित। जरूरी।

दर-किनार–क्रि० वि० [फा०] अलग। अलहदा। एक ओर। दूर।

दरकूच–क्रि० वि० [फा०] बराबर यात्रा करता हुआ। मंजिल दर मंजिल।

दरखत*†–संज्ञा पुं० दे० "दरख्त"।

दरख़ास्त–संज्ञा स्त्री० [फा०] दरख्वास्त १. किसी बात के लिये प्रार्थना। २. निवेदन। प्रार्थनापत्र। निवेदनपत्र।

दरख़्त–संज्ञा पुं० [फा०] पेड़। वृक्ष।

दरगाह–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. चौखट। देहरी। २. दरबार। कचहरी। ३. किसी सिद्ध पुरुष का समाधि-स्थान। मकबरा।

दर-गुज़र–वि० [फा०] १. अलग। वंचित। २. मुआफ़। क्षमा-प्राप्त।

दरज–संज्ञा स्त्री० [सं० दर = दरार] शिगाफ़। दराज। दरारा।

दरजन–संज्ञा पुं० दे० "दर्जन"।

दरजा–संज्ञा पुं० दे० "दर्जा"।

दरजी–संज्ञा पुं० दे० "दर्जी"।

दरण–संज्ञा पुं० [सं०] १. दलने या पीसने की क्रिया। २. ध्वंस। विनाश।

दरद–संज्ञा पुं० [फा० दर्द] १. पीड़ा। व्यथा। २. दया। करुणा। संज्ञा पुं० १. काश्मीर और हिंदूकुश पर्वत के बीच के प्रदेश का प्राचीन नाम। २. एक म्लेच्छ जाति जिसका उल्लेख मनुस्मृति, हरिवंश आदि में है। ३. ईंगुर। शिंगरफ़।

दर दर–क्रि० वि० [फा० दर] द्वार द्वार। स्थान स्थान पर।

दरदरा–वि० [सं० दरण = दलना] [स्त्री० दरदरी] जिसके कण स्थूल हों। जिसके रवे महीन न हों, मोटे हों।

दरदराना–क्रि० स० [सं० दरण] इस प्रकार पीसना या रगड़ना कि मोटे मोटे रवे या टुकड़े हो जायँ। थोड़ा पीसना।

दरदवंत, दरदवंद–वि० [फा० दर्द + वंत (प्रत्य०)] १. सहानुभूति रखनेवाला। कृपालु। दयालु। २. जिसको पीड़ा हो। पीड़ित। दुखी।

दरद्द–संज्ञा पुं० दे० "दरद" या "दर्द"।

दरना†–क्रि० स० [सं० दरण] १. दरदरा दलना। मोटा चूर्ण करना। २. नष्ट करना।

दरप*†–संज्ञा पुं० दे० "दर्प"।

दरपन*–संज्ञा पुं० दे० "दर्पण"।

दरपना*–क्रि० अ० [सं० दर्पण] १. ताव में आना। क्रोध करना। २. घमंड करना।

दरपनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० दरपन] मुँह देखने का छोटा शीशा।

दरपेश–क्रि० वि० [फा०] आगे। सामने।

दरब–संज्ञा पुं० [सं० द्रव्य] धन। दौलत।

दरबा–संज्ञा पुं० [फा० दर] कबूतरों, मुर-गियों आदि के रहने के लिये काठ का खानेदार संदूक।

दरबान–संज्ञा पुं० [फा०, मि० सं० द्वारवान्] ड्योढ़ीदार। द्वारपाल।

दरबार–संज्ञा पुं० [फा०] [वि० दरबारी] १. वह स्थान जहाँ राजा या सरदार मुसा-हबों के साथ बैठते हैं। २. राजसभा। मुहा०—दरबार खुलना = दरबार में आने की

आज्ञा मिलना। दरबार बंद होना=दरबार में जाने की रोक होना।
३ महाराज। राजा। (रजवाड़ों में) ४ दरवाज़ा। द्वार।
दरबारदारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] किसी के यहाँ बार बार जाकर बैठना और खुशामद करना।
दरबार-विलासी*–संज्ञा पुं० [फा० दरबार+ सं० विलासी] द्वारपाल। दरबान।
दरबारी–संज्ञा पुं० [फा०] दरबार में बैठने-वाला आदमी।
वि० दरबार का। दरबार के योग्य।
दरभ–संज्ञा पुं० दे० "दर्भ"।
संज्ञा पुं० [?] बदर।
दरमा–संज्ञा पुं० [देश०] बाँस की चटाई।
दरमान–संज्ञा पुं० [फा०] औषध। दवा।
दरमाहा–संज्ञा पुं० [फा०] मासिक वेतन।
दरमियान–संज्ञा पुं० [फा०] मध्य। बीच।
क्रि० वि० बीच में। मध्य में।
दरमियानी–वि० [फा०] बीच का।
संज्ञा पुं० [फा०] दो आदमियों के बीच के झगड़े का निबटेरा करनेवाला मनुष्य।
दरवाज़ा–संज्ञा पुं० [फा०] १ द्वार। मुहाना। २ किवाड़। कपाट।
दरवी–संज्ञा स्त्री० [सं० दर्वी] १ साँप का फन।
यौ०—दरवीकर=साँप।
२ करछुल। पौना।
दरवेश–संज्ञा पुं० [फा०] फकीर। साधु।
दरशन–संज्ञा पुं० दे० 'दर्शन'।
दरशाना–क्रि० अ०, स० दे० "दरसाना"।
दरस–संज्ञा पुं० [सं० दर्श] १ देखा-देखी। दर्शन। दीदार। २ भेंट। मुलाकात। ३ रूप। छवि। सुंदरता।
दरसन–संज्ञा पुं० दे० 'दर्शन'।
दरसना*–क्रि० अ० [सं० दर्शन] दिखाई पड़ना। देखने में आना।
क्रि० स० [सं० दर्शन] देखना। लखना।
दरसनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] दर्शन। दर्पण। शीशा।
दरसनी हुंडी–संज्ञा स्त्री० [सं० दर्शन] वह हुंडी जिसके भुगतान की मिति को दस दिन या उससे कम बाकी हों।
दरसाना–क्रि० स० [सं० दर्शन] १ दिखलाना। दृष्टिगोचर कराना। २ प्रकट करना। स्पष्ट करना। समझाना।
*†–क्रि० अ० दिखाई पड़ना।
दरसावना–क्रि० स० दे० "दरसाना"।
दराज़–वि० [फा०] बड़ा भारी। दीर्घ।
क्रि० वि० [फा०] बहुत। अधिक।
संज्ञा स्त्री० [हिं० दरार] दरज। दरार।
संज्ञा स्त्री० [अं० ड्राअर] मेज में लगा हुआ संदूकनुमा खाना।
दरार–संज्ञा स्त्री० [सं० दर] वह खाली जगह जो किसी चीज़ के फटने पर पड़ जाती है। शिगाफ। दरज।
दरारना–क्रि० अ० [हिं० दरार+ना (प्रत्य०)] फटना। विदीर्ण होना।
दरारा–संज्ञा पुं० [हिं० दरना] दरेरा। धक्का।
दरिंदा–संज्ञा पुं० [फा०] फाड़ खानेवाला जंतु। मांस भक्षक वन-जंतु।
दरिद्र–वि० [सं०] [स्त्री० दरिद्रा] जिसके पास धन न हो। निर्धन। कंगाल।
दरिद्रता–संज्ञा स्त्री० [सं०] कंगाली। निर्धनता। गरीबी।
दरिद्री–वि० दे० "दरिद्र"।
दरिया–संज्ञा पुं० [फा०] १ नदी। २ समुद्र। सिंधु।
दरियाई–वि० [फा०] १ नदी संबंधी। २ नदी के निकट का। ३ समुद्र संबंधी।
संज्ञा स्त्री० [फा० दाराई] एक प्रकार की रेशमी पतली साटन।
दरियाई घोड़ा–संज्ञा पुं० [फा० दरियाई+ हिं० घोड़ा] गैंड़े की तरह का एक जानवर जो अफ्रिका में नदियों के किनारे रहता है।
दरियाई नारियल–संज्ञा पुं० [फा० दरियाई+ हिं० नारियल] एक प्रकार का बड़ा नारियल जिसके खोपड़े का पात्र बनता है जिसे

संन्यासी या फ़कीर अपने पास रखते हैं।

दरियादासी–संज्ञा पुं० निर्गुण उपासक साधुओं का एक संप्रदाय जिसे दरिया साहब नामक एक व्यक्ति ने चलाया था।

दरिया-दिल–वि० [फ़ा०] [स्त्री० दरिया-दिली] उदार। दानी। फ़ैयाज़।

दरियाफ़्त–वि० [फ़ा०] जिसका पता लगा हो। ज्ञात। मालूम।

दरिया-बरार–संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह भूमि जो किसी नदी की धारा हट जाने से निकले।

दरियाबुर्द–संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह भूमि जिसे कोई नदी काटकर बहा दे।

दरियाव–संज्ञा पुं० दे० "दरिया"।

दरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गुफा। खोह। २. पहाड़ के बीच का वह नीचा स्थान जहाँ कोई नदी गिरती हो।

संज्ञा स्त्री० [सं० स्तर] मोटे सूतों का बुना हुआ मोटे दल का बिछौना। शतरंजी।

दरीखाना–संज्ञा पुं० [फ़ा० दर+खाना] वह घर जिसमें बहुत से द्वार हों। बारहदरी।

दरीचा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] [स्त्री० दरीची] १. खिड़की। झरोखा। २. खिड़की के पास बैठने की जगह।

दरीबा–संज्ञा पुं० [?] पान का बाजार।

दरेग–संज्ञा पुं० [अ० दरेग] कमी। कसर।

दरेरना–क्रि० स० [सं० दरण] १. रगड़ना। पीसना। २. रगड़ते हुए धक्का देना।

दरेरा–संज्ञा पुं० [सं० दरण] १. रगड़ा। धक्का। २. बहाव का जोर। तोड़।

दरेस–संज्ञा स्त्री० [अं० ड्रेस] फूलदार छपा हुआ एक प्रकार का महीन कपड़ा।

वि० तैयार। बना बनाया।

दरैया†–संज्ञा पुं० [सं० दरण] १. दलने-वाला। जो दले। २. घातक। विनाशक।

दरोग–संज्ञा पुं० [अ०] झूठ। असत्य।

दरोगहलफ़ी–संज्ञा स्त्री० [अ०] सच बोलने की कसम खाकर भी झूठ बोलना।

दर्ज–संज्ञा स्त्री० दे० "दरज"।

वि० [फ़ा०] कागज़ पर लिखा हुआ।

दर्जन–संज्ञा पुं० [अं० डज़न] बारह का समूह। इकट्ठी बारह वस्तुएँ।

दर्जा–संज्ञा पुं० [अ०] १. ऊँचाई निचाई के क्रम के विचार से निश्चित स्थान। श्रेणी। कोटि। वर्ग। २. पढ़ाई के क्रम में ऊँचा नीचा स्थान। ३. पद। ओहदा। ४. किसी वस्तु का वह विभाग जो ऊपर नीचे के क्रम से हो। खंड।

क्रि० वि० गुणित। गुना।

दर्ज़ी–संज्ञा पुं० [फ़ा०] [स्त्री० दर्जिन] १. वह जो कपड़े सीने का व्यवसाय करे। २. कपड़ा सीनेवाली जाति का पुरुष।

दर्द–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. पीड़ा। व्यथा। २. दुःख। तकलीफ़। ३. करुणा। दया। मुहा०—दर्द खाना=दया करना। ४. हाथ से निकल जाने का कष्ट।

दर्दमंद–वि० [फ़ा०] १. पीड़ित। दुःखी। २. दयावान्।

दर्दी–वि० दे० "दर्दमंद"।

दर्दुर–संज्ञा पुं० [सं०] १. मेढक। २. बादल। ३. अभ्रक। अबरक।

दद्रु–संज्ञा पुं० [सं०] दाद नामक रोग।

दर्प–संज्ञा पुं० [सं०] १. घमंड। अहंकार। अभिमान। गर्व। २. अहंकार के कारण किसी के प्रति कोप। मान। ३. उद्दंडता। अक्खड़पन। ४. आतंक। रोब।

दर्पण–संज्ञा पुं० [सं०] १. मुँह देखने का शीशा। आइना। आरसी। २. आँख।

दर्ब*†–संज्ञा पुं० [सं० द्रव्य] १. द्रव्य। धन। २. धातु। (सोना, चाँदी इत्यादि)

दर्भ–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का कुश। डाभ। २. कुश। ३. कुशासन।

दर्भासन–संज्ञा पुं० [सं०] कुश का बना हुआ बिछावन। कुशासन।

दर्रा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] पहाड़ों के बीच का सँकरा मार्ग। घाटी।

दर्राना–क्रि० अ० [अनु० दड़ दड़] धड़-धड़ाना। बेधड़क चला जाना।

दर्व–संज्ञा पुं० [सं०] १. हिंसा करनेवाला मनुष्य। २. राक्षस। ३. पंजाब के उत्तर की एक प्राचीन जाति। ४. इस जाति का

उत्त देश।
दर्वी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ करछी। चमचा। २ साँप का फन।
दर्वीकर—सज्ञा पु० [स०] फनवाला साँप।
दर्श—सज्ञा पु० [स०] १ दर्शन। २ अमावास्या तिथि। ३ द्वितीया तिथि। ४ वह यज्ञ या कृत्य जो अमावास्या के दिन हो।
दर्शक—सज्ञा पु० [स०] १ दर्शन करनेवाला। देखनेवाला। २ दिखानेवाला।
दर्शन—सज्ञा पु० [स०] १ वह बोध जो दृष्टि के द्वारा हो। साक्षात्कार। अवलोकन। २ भेंट। मुलाकात। ३ तत्त्वज्ञान सबधी विद्या या शास्त्र जिसमें प्रकृति, आत्मा, परमात्मा, जगत् के नियामक धर्म और जीवन के अतिम लक्ष्य आदि का निरूपण होता है। ४ नेत्र। आँख। ५ स्वप्न। ६ बुद्धि। ७ धर्म्म। ८ दपण।
दर्शनी हुडी—सज्ञा स्त्री० दे० "दरशनी हुडी"।
दर्शनीय—वि० [स०] १ देखने योग्य। देखने लायक। २ सुदर। मनोहर।
दर्शाना—क्रि० स० दे० "दरसाना"।
दर्शी—वि० [स० दर्शिन] देखनेवाला।
दल—सज्ञा पु० [स०] १ किसी वस्तु के उन दो सम खडो में से एक जो एक दूसरे से स्वभावत जुडे हुए हो, पर ज़रा सा दबाव पडने से अलग हो जायें। जैसे, दाल के दो दल। २ पौधों का पत्ता। पत्र। ३ तमालपत्र। ४ फूल की पखडी। ५ समूह। झुड। गरोह। ६ मडली। गुट्ट। ७ सेना। फौज। ८ परत की तरह फैली हुई चीज़ की मोटाई।
दलक—सज्ञा स्त्री० [अ० दल्क़] गुदडी। सज्ञा स्त्री० [हिं० दलकना] १ आघात से उत्पन्न कप। थरथराहट। धमक। २ रह रहकर उठनेवाला दर्द। टीस। चमक।
दलकन—सज्ञा स्त्री० [हिं० दलक] १ दलकने की क्रिया या भाव। २ आघात।
दलकना—क्रि० अ० [स० दलन] १ फट जाना। दरार खाना। चिर जाना। २ थर्राना। काँपना। ३ चौंकना। ४ उद्विग्न हो उठना।
क्रि० स० [स० दलन] डराना। भयभीत कर देना।
दलगजन—वि० [स०] भारी वीर।
दलदल—सज्ञा स्त्री० [स० दलाढ्य] १ कीचड। पाँक। चहला। २ वह गीली ज़मीन जिसमे पैर नीचे को धँसता हो।
मुहा०—दलदल में फँसना = १ मुश्किल या दिक्कत में पडना। २ जल्दी खतम या तै न होना। खटाई में पडना।
दलदला—वि० [हिं० दलदल] [स्त्री० दलदली] जिसमे दलदल हो। दलदलवाला।
दलदार—वि० [हिं० दल + फा० दार] जिसका दल, तह या परत मोटी हो।
दलन—सज्ञा पु० [स०] [वि० दलित] १ पीसकर टुकडे टुकडे करना। २ सहार।
दलना—क्रि० स० [स० दलन] १ रगड या पीसकर टुकडे टुकडे करना। चूर्ण करना। २ रौंदना। कुचलना। ३ दबाना। मसलना। मीडना। ४ चक्की में डालकर अनाज आदि के दानो को दो दलो या कई टुकडो म करना। ५ नष्ट करना। ध्वस्त करना। ६ झटके से खडित करना। तोडना।
दलनि†—सज्ञा स्त्री० [हिं० दलना] दलने की क्रिया या ढग।
दलपति—सज्ञा पु० [स०] १ मुखिया। अगुआ। सरदार। २ सेनापति।
दल-बल—सज्ञा पुं० [स०] लाव-लश्कर। फौज।
दल-बादल—सज्ञा पु० [हिं० दल + बादल] १ बादलो का समूह। २ भारी सेना। ३ बहुत बडा शामियाना।
दलमलना—क्रि० स० [हिं० दलना + मलना] १ मसल डालना। मीड डालना। २ रौंदना। कुचलना। ३ नष्ट करना।
दलवाना—क्रि० स० [हिं० दलना का प्रे०] दलने का काम दूसरे से करवाना।
दलवाल*†—सज्ञा पु० [स० दलपाल] सेनापति।
दलहन—सज्ञा पु० [हिं० दाल + अन्न] वह

अन्न जिसकी दाल बनाई जाती है।
दलान†-संज्ञा पुं० दे० "दालान"।
दलाल-संज्ञा पुं० [अ०] [संज्ञा दलाली] १. वह व्यक्ति जो सौदा मोल लेने या बेचने में सहायता दे। मध्यस्थ। २. कुटना।
दलाली-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. दलाल का काम। २. वह द्रव्य जो दलाल को मिलता है।
दलित-वि० [सं०] १. मसला हुआ। मर्दित। २. दबाया, रौंदा या कुचला हुआ। ३. खंडित। ४. विनष्ट किया हुआ।
दलिया-संज्ञा पुं० [हिं० दलना] दलकर कई टुकड़े किया हुआ अनाज।
दलील-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. तर्क। युक्ति। २. बहस। वाद-विवाद।
दलेल-संज्ञा स्त्री० [अं० ड्रिल] सिपाहियों की वह क़वायद जो सजा की तरह पर हो।
दवँगरा-संज्ञा पुं० [सं० दव+अंगार?] वर्षा के आरंभ में होनेवाली झड़ी।
दव-संज्ञा पुं० [सं०] १. वन। जंगल। २. वह आग जो वन में आप से आप लग जाती है। दवाग्नि। दवारि। दावा। ३. अग्नि। आग।
दवन*-संज्ञा पुं० [सं० दमन] नाश।
संज्ञा पुं० [सं० दमनक] दौना पौधा।
दवना*-संज्ञा पुं० दे० "दौना"।
क्रि० स० [सं० दव] जलना।
दवनी-संज्ञा स्त्री० [सं० दमन] फ़सल के सूखे डंठलों को बैलों से रौंदवाकर दाना झाड़ने का काम। दँवरी। मिसाई।
दवरिया‡-संज्ञा स्त्री० दे० "दवारि"।
दवा-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. वह वस्तु जिससे कोई रोग या व्यथा दूर हो। औषध। २. रोग दूर करने का उपाय। उपचार। चिकित्सा। ३. दूर करने की युक्ति। मिटाने का उपाय। ४. दुरुस्त करने की तदवीर।
*†संज्ञा स्त्री० [सं० दव] १. वन में लगने-वाली आग। वनाग्नि। २. अग्नि। आग।
दवाख़ाना-संज्ञा पुं० [फा०] १. वह जगह जहाँ दवा मिलती हो। २. औषधालय।
दवागिन*-संज्ञा स्त्री० दे० "दवाग्नि"।
दवाग्नि-संज्ञा स्त्री० [सं०] वन में लगने-वाली आग। दावानल।
दवात-संज्ञा स्त्री० [अ० दावात] लिखने की स्याही रखने का बरतन। मसिपात्र।
दवानल-संज्ञा पुं० [सं०] दवाग्नि।
दवामी-वि० [अ०] जो चिरकाल तक के लिये हो। स्थायी।
दवामी बंदोबस्त-संज्ञा पुं० [फा०] जमीन का वह बंदोबस्त जिसमें सरकारी माल-गुजारी एक ही बार सदा के लिये मुक़र्रर हो।
दवारि-संज्ञा स्त्री० [सं० दवाग्नि] दवाग्नि।
दशकंठ-संज्ञा पुं० [सं०] रावण।
दशकंठजहा-संज्ञा पुं० [सं०] श्रीरामचंद्र।
दशकंधर-संज्ञा पुं० [सं०] रावण।
दशगात्र-संज्ञा पुं० [सं०] मृतक-संबंधी एक कर्म जो उसके मरने के पीछे दस दिनों तक होता रहता है।
दशन-संज्ञा पुं० [सं०] १. दाँत। २. कवच।
दशनाम-संज्ञा पुं० [सं०] संन्यासियों के दस भेद जो ये हैं—तीर्थ, आश्रम, वन, अरण्य, गिरि, पर्वत, सागर, सरस्वती, भारती और पुरी।
दशनामी-संज्ञा पुं० [हिं० दश+नाम] संन्यासियों का एक वर्ग जो अद्वैतवादी शंकराचार्य के शिष्यों से चला है।
दशमलव-संज्ञा पुं० [सं०] वह भिन्न जिसके हर में दस या उसका कोई घात हो। (गणित)
दशमी-संज्ञा स्त्री० [सं०] चांद्र मास के किसी पक्ष की दसवीं तिथि।
दशमुख-संज्ञा पुं० [सं०] रावण।
दशमूल-संज्ञा पुं० [सं०] विशिष्ट दस पेड़ों की छाल या जड़। (वैद्यक)
दशरथ-संज्ञा पुं० [सं०] अयोध्या के इक्ष्वाकु-वंशीय एक प्राचीन राजा जिनके पुत्र श्रीरामचंद्र थे।
दशशीश*-संज्ञा पुं० [सं० दशशीर्ष] रावण।
दशहरा-संज्ञा पुं० [सं०] १. ज्येष्ठ शुक्ला दशमी तिथि जिसे गंगा दशहरा भी कहते हैं। २. विजया दशमी।

दशांग—संज्ञा पुं० [सं०] पूजन में सुगंध के निमित्त जलाने का एक धूप जो दस सुगंध-द्रव्यों के मेल से बनता है।

दशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अवस्था। स्थिति प्रकार। हालत। २ मनुष्य के जीवन की अवस्था। ३ साहित्य में रस के अंतर्गत विरही की अवस्था। ४ फलित ज्योतिष के अनुसार मनुष्य के जीवन में प्रत्येक ग्रह का नियत भोग-काल।

दशानन—संज्ञा पुं० [सं०] रावण।

दशार्ण—संज्ञा पुं० [सं०] १ विंध्य पर्वत के पूर्व-दक्षिण की ओर स्थित उस प्रदेश का प्राचीन नाम जिससे होकर धसान नदी बहती है। २ उक्त देश का निवासी या राजा। ३ तंत्र का एक दशाक्षर मंत्र।

दशार्णा—संज्ञा स्त्री० [सं०] धसान नदी जो विंध्याचल से निकलकर यमुना में मिलती है।

दशाश्वमेध—संज्ञा पुं० [सं०] १ काशी के अंतर्गत एक तीर्थ। २ प्रयाग के अंतर्गत त्रिवेणी के पास एक पवित्र घाट, जहाँ से यात्री जल भरते हैं।

दशाह—संज्ञा पुं० [सं०] १ दस दिन। २ मृतक के कृत्य का दसवाँ दिन।

दस—वि० [सं० दश] १ जो गिनती में नौ से एक अधिक हो। २ कई। बहुत से। संज्ञा पुं० पाँच की दूनी संख्या।

दसखत‡—संज्ञा पुं० दे० "दस्तखत"।

दसन*—संज्ञा पुं० दे० 'दशन'।

दसना—क्रि० अ० [हिं० डासना] बिछाया जाना। बिछना। फैलना।
क्रि० स० बिछाना। बिस्तर फैलाना।
संज्ञा पुं० बिछौना। बिस्तर।

दसमाथ*—संज्ञा पुं० [हिं० दस+माथ] रावण।

दसमी—संज्ञा स्त्री० दे० 'दशमी'।

दसा—संज्ञा स्त्री० दे० 'दशा'।

दसारन—संज्ञा पुं० दे० 'दशार्ण'।

दसी—संज्ञा स्त्री० [सं० दशा] १ कपड़े के छोर पर का सूत। छोर। २ थान का आँचल।

दसौंधी—संज्ञा पुं० [सं० दास+बंदी=भाट] बंदियों या चारणों की एक जाति जो अपने को ब्राह्मण कहती है। ब्रह्मभट्ट। भाट।

दस्तदराजी—संज्ञा स्त्री० [फा०] हस्तक्षेप।

दस्त—संज्ञा पुं० [फा०] १ पतला पाखाना। विरेचन। २ हाथ।

दस्तक—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ हाथ से खट खट शब्द उत्पन्न करने या खटखटाने की क्रिया। २ बुलाने के लिये दरवाजे की कुंडी खटखटाने की क्रिया। ३ माल-गुजारी वसूल करने के लिये गिरफ्तारी या वसूली का परवाना। ४ माल आदि ले जाने का परवाना। ५ कर। महसूल।

दस्तकार—संज्ञा पुं० [फा०] हाथ से कारीगरी का काम करनेवाला आदमी।

दस्तकारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] हाथ की कारीगरी। शिल्प।

दस्तखत—संज्ञा पुं० [फा०] अपने हाथ का लिखा हुआ अपना नाम। हस्ताक्षर।

दस्त-बरदार—वि० [फा०] जो किसी वस्तु पर से अपना हाथ या अधिकार उठा ले।

दस्तयाब—वि० [फा०] हस्तगत। प्राप्त।

दस्तरखान—संज्ञा पुं० [फा०] वह चादर, जिस पर खाना रखा जाता है। (मुसल०)

दस्ता—संज्ञा पुं० [फा० दस्त] १ वह जो हाथ में आवे या रहे। २ किसी औजार आदि का वह हिस्सा जो हाथ से पकड़ा जाता है। मूठ। बेंट। ३ फूलों का गुच्छा। गुलदस्ता। ४ सिपाहियों का छोटा दल। गारद। ५ किसी वस्तु का उतना गड्डा या पूला जितना हाथ में आ सके। ६ कागज के चौबीस या पचीस तावों की गड्डी।

दस्ताना—संज्ञा पुं० [फा० दस्तान] पंजे और हथेली में पहनने का बुना हुआ कपड़ा। हाथ का मोजा।

दस्तावर—वि० [फा०] जिससे दस्त आवे। विरेचक।

दस्तावेज—संज्ञा स्त्री० [फा०] वह कागज

जिसमें कुछ आदमियों के बीच के व्यवहार की बात लिखी हो और जिस पर व्यवहार करनेवालों के दस्तखत हों। व्यवहार-संबंधी लेख।

दस्ती–वि० [फा० दस्त=हाथ] हाथ का। संज्ञा स्त्री० १. हाथ में लेकर चलने की बत्ती। मशाल। २. छोटी मूठ। छोटा बेंट। ३. छोटा क़लमदान।

दस्तूर–संज्ञा पुं० [फा०] १. रीत। रस्म। रवाज। चाल। प्रथा। २. नियम। क़ायदा। विधि। ३. पारसियों का पुरोहित जो कर्म-कांड कराता है।

दस्तूरी–संज्ञा स्त्री० [फा० दस्तूर] वह द्रव्य जो नौकर अपने मालिक का सौदा लेने में दूकानदारों से हक़ के तौर पर पाते हैं।

दस्यु–संज्ञा पुं० [सं०] १. डाकू। चोर। २. असुर। ३. अनार्य्य। म्लेच्छ। ४. दास।

दस्युता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लुटेरापन। डकैती। २. दुष्टता। क्रूर स्वभाव।

दस्युवृत्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. डकैती। लुटेरापन। २. चोरी।

दह–संज्ञा पुं० [सं० ह्रद] १. नदी में वह स्थान जहाँ पानी बहुत गहरा हो। पाल। २. कुंड। हौज।
संज्ञा स्त्री० [सं० दहन] ज्वाला। लपट।

दहक–संज्ञा स्त्री० [सं० दहन] १. आग दहकने की क्रिया। धधक। दाह। २. ज्वाला। लपट।

दहकना–क्रि० अ० [सं० दहन] १. लौ के साथ बलना। धधकना। भड़कना। २. शरीर का गरम होना। तपना।

दहकाना–क्रि० स० [हिं० दहकना] १. ऐसा जलाना कि लौ ऊपर उठे। २. धधकाना। ३. भड़काना। क्रोध दिलाना।

दहड़ दहड़–क्रि० वि० [सं० दहन या अनु०] लपट फेंकते हुए। धायँ धायँ।

दहन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० दहनीय, दह्यमान] १. जलने की क्रिया या भाव। दाह। २. अग्नि। आग। ३. कृत्तिका नक्षत्र। ४. तीन की संख्या। ५. एक रुद्र।

दहना–क्रि० अ० [सं० दहन] १. जलना। बलना। भस्म होना। २. क्रोध से संतप्त होना। कुढ़ना।
क्रि० स० १. जलाना। भस्म करना। २. संतप्त करना। दुःखी करना। कष्ट पहुँचाना। ३. क्रोध दिलाना। कुढ़ाना।
क्रि० अ० [हिं० दह] धँसना। नीचे बैठना।
वि० दे० "दहिना"।

दहनि†–संज्ञा स्त्री० [हिं० दहना] जलने की क्रिया। जलन।

दहपट–वि० [फा० दह=दस + पट=समतल] १. ढाया हुआ। ध्वस्त। चौपट। नष्ट। २. रौंदा हुआ। कुचला हुआ। दलित।

दहपटना–क्रि० स० [हिं० दहपट] १. ध्वस्त करना। चौपट करना। नष्ट करना। २. रौंदना। कुचलना।

दहर–संज्ञा पुं० [सं० ह्रद] १. नदी में गहरा स्थान। दह। २. कुंड। हौज़।

दहरना*–क्रि० अ० दे० "दहलना"।
क्रि० स० दे० "दहलाना"।

दहल–संज्ञा स्त्री० [हिं० दहलना] डर से एकबारगी काँप उठने की क्रिया।

दहलना–क्रि० अ० [सं० दर=डर + हिं० हिलना] डर से एकबारगी काँप उठना। भय से स्तंभित होना।

दहला–संज्ञा पुं० [फा० दह=दस] ताश या गंजीफे का वह पत्ता जिसमें दस बूटियाँ हों।
†संज्ञा पुं० [सं० थल] थाला। थाँवला।

दहलाना–क्रि० स० [हिं० दहलना] डर से कँपाना। भयभीत करना।

दहलीज़–संज्ञा स्त्री० [फा०] द्वार के चौखट की नीचेवाली लकड़ी जो ज़मीन पर रहती है। देहली। डेहरी।

दहशत–संज्ञा स्त्री० [फा०] डर। भय।

दहा–संज्ञा पुं० [फा० दह] १. मुहर्रम का महीना। २. मुहर्रम की १ से १० तारीख तक का समय। ३. ताज़िया।

दहाई–संज्ञा स्त्री० [फा० दह=दस] १. दस का मान या भाव। २. अंकों के स्थानों की गिनती में दूसरा स्थान जिस पर जो

अंक लिखा होता है, उससे उतने ही गुने दस का बोध होता है।

दहाड़–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. किसी भयंकर जंतु का घोर शब्द। गरज। २. चिल्लाकर रोने की ध्वनि। आर्तनाद।

मुहा०—दहाड़ मारना, या दहाड़ मारकर रोना = चिल्ला चिल्लाकर रोना।

दहाड़ना–क्रि० अ० [अनु०] १. घोर शब्द करना। गरजना। २. चिल्लाकर रोना।

दहाना–संज्ञा पुं० [फा०] १ चौड़ा मुंह। द्वार। २. वह स्थान जहाँ एक नदी दूसरी नदी या समुद्र में गिरती है। मुहाना। ३ मोरी।

दहिना–वि० [सं० दक्षिण] [स्त्री० दहिनी] शरीर के दो पार्श्वों में से उस पार्श्व का नाम जिधर के अंगों या पेशियों में अधिक बल होता है। बायाँ का उलटा। अपसव्य।

दहिनावर्त्त†–वि० दे० "दक्षिणावर्त्त"।

दहिने–क्रि० वि० [हिं० दहिना] दहिनी ओर को।

मुहा०—दहिने होना = अनुकूल होना। प्रसन्न होना। दहिने बाएँ = इधर-उधर। दोनो ओर।

दही–संज्ञा पु० [सं० दधि] खटाई के द्वारा जमाया हुआ दूध।

मुहा०–दही दही करना = किसी चीज़ को मोल लेने के लिये लोगों से कहते फिरना।

दहु*–अव्य० [सं० अथवा] १. अथवा। या। किंवा। २. स्यात्। कदाचित्।

दहेंड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० दही + हंडी] दही रखने का मिट्टी का बरतन।

दहेज–संज्ञा पु० [अ० जहेज़] वह धन और सामान जो विवाह के समय कन्या-पक्ष की ओर से वर-पक्ष को दिया जाता है। दायजा। यौतुक।

दहेला–वि० [हिं० दहला + एला (प्रत्य०)] [स्त्री० दहेली] १. जला हुआ। दग्ध। २. संतप्त। दुखी।

वि० [हिं० दहलना] [स्त्री० दहेली] भीगा हुआ। ठिठुरा हुआ।

दाँ–संज्ञा पु० [सं० दाच् (प्रत्य०) जैसे, एकदा] दफा। बार। बारी।

संज्ञा पु० [फा०] ज्ञाता। जाननेवाला।

दाँक–संज्ञा स्त्री० [सं० द्राक्ष] दहाड़। गरज।

दाँकना–क्रि० अ० [हिं० दाँक+ना (प्रत्य०)] गरजना। दहाड़ना।

दाँग–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. छः रत्ती की तौल। २. दिशा। तरफ। ओर।

संज्ञा पु० [हिं० डंका] नगाड़ा। डंका।

संज्ञा पु० [हिं० डूंगर] टीला। छोटी पहाड़ी।

दाँज†–संज्ञा स्त्री० [सं० उदाहार्य्य] बराबरी। समता। जोड़। तुलना।

दाँत–संज्ञा पु० [सं० दंत] १. अंकुर के रूप में निकली हुई हड्डी जो जीवों के मुँह, तालू, गले या पेट में होती है और आहार चबाने, तोड़ने तथा आक्रमण करने, ज़मीन खोदने इत्यादि के काम में आती है। दंत। रद। दशन।

मुहा०—दाँतों उँगली काटना = दे० "दाँत तले उँगली दबाना"। दाँत काटी रोटी = अत्यंत घनिष्ठ मित्रता। गहरी दोस्ती। दाँत खट्टे करना = १. खूब हैरान करना। २. प्रतिद्वंद्विता या लड़ाई में परास्त करना। पस्त करना। दाँत चबाना = क्रोध से दाँत पीसना। कोप प्रकट करना। दाँत तले उँगली दबाना = १. अचरज में आना। चकित होना। दंग रहना। २. खेद प्रकट करना। अफसोस करना। दाँत तोड़ना = परास्त करना। हैरान करना। दाँत पीसना = (क्रोध में) दाँत पर दाँत रखकर हिलाना। दाँत किटकिटाना। दाँत बजना = सरदी से दाँत के हिलने या काँपने के कारण दाँत पर दाँत पड़ना। दाँत बैठ जाना = दाँत की ऊपर नीचेवाली पंक्तियों का परस्पर इस प्रकार मिल जाना कि मुँह जल्दी न खुल सके। दाँतों में तिनका लेना = दया के लिये बहुत विनती करना। हा हा खाना। (किसी वस्तु पर) दाँत रखना या लगाना = १. लेने की गहरी चाह रखना। २ बैर लेने का विचार रखना। (किसी के) तालू में दाँत जमना = बुरे दिन आना। शामत आना।

२. दाँत के आकार की निकली हुई वस्तु। दंदाना। दाँता।

दांत–वि० [सं०] १. जिसका दमन किया गया हो। दबाया हुआ। २. जिसने इंद्रियों को वश में कर लिया हो। संयमी। ३. दाँत का। दाँत-संबंधी।

दाँता–संज्ञा पुं० [हिं० दाँत] दाँत के आकार का कँगूरा। रवा। दंदाना।

दाँताकिटकिट–संज्ञा स्त्री० [हिं० दाँत + किटकिट (अनु०)] १. कहा-सुनी। झगड़ा। २. गाली-गलौज।

दांति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. इंद्रिय-निग्रह। इंद्रियों का दमन। २. अधीनता। ३. विनय। नम्रता।

दाँती–संज्ञा स्त्री० [सं० दात्री] १. हँसिया जिससे घास या फ़सल काटते हैं। २. काली भिड़।
संज्ञा स्त्री० [हिं० दाँत] १. दाँतों की पंक्ति। दंतावलि। बत्तीसी। २. दो पहाड़ों के बीच की सँकरी जगह। दर्रा।

दाँना–क्रि० स० [सं० दमन] पक्की फसल के डंठलों को बैलों से इसलिये रौंदवाना जिसमें डंठल से दाना अलग हो जाय।

दांपत्य–वि० [सं०] पति-पत्नी संबंधी। स्त्री-पुरुष का सा।
संज्ञा पुं० स्त्री-पुरुष के बीच का प्रेम या व्यवहार।

दांभिक–वि० [सं०] १. पाखंडी। आडंबर रचनेवाला। धोखेबाज। २. अहंकारी। घमंडी।

दाँय–संज्ञा स्त्री० दे० "दँवरी"।

दाँवनी–संज्ञा स्त्री० [सं० दामिनी] दामिनी नाम का सिर का गहना।

दाँवरी–संज्ञा स्त्री० [सं० दाम] रस्सी। डोरी।

दाइँ*–संज्ञा पुं० दे० "दाय" और "दाँव"।

दाईं–वि० स्त्री० [हिं० दायाँ] दाहिनी।
संज्ञा स्त्री० [सं० दान् (प्रत्य०), हिं० दाँ (प्रत्य०)] बारी। दफ़ा। बार।

दाई–संज्ञा स्त्री० [सं० धात्री, मि० फा० दायः] दूसरे के बच्चे को अपना दूध पिलानेवाली स्त्री। धाय। २. बच्चे की देख-रेख रखनेवाली दासी। ३. प्रसूता के उपचार के लिये नियुक्त स्त्री।
मुहा०—दाई से पेट छिपाना = जाननेवाले से कोई बात छिपाना।
*वि० दे० "दायी"।

दाउँ–संज्ञा पुं० दे० "दाँव"।

दाऊ–संज्ञा पुं० [सं० देव] १. बड़ा भाई। २. कृष्ण के बड़े भाई बलदेव।

दाऊदखानी–संज्ञा पुं० [फा०] १. एक प्रकार का चावल। २. उत्तम प्रकार का सफ़ेद गेहूँ। दाऊदी गेहूँ।

दाऊदी–संज्ञा पुं० [अ० दाऊद] एक प्रकार का बढ़िया गेहूँ।

दाक्षायण–वि० [सं०] १. दक्ष से उत्पन्न। २. दक्ष का। दक्ष-संबंधी।

दाक्षायणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दक्ष की कन्या। २. अश्विनी आदि नक्षत्र। ३. दुर्गा। ४. कश्यप की स्त्री, अदिति।

दाक्षिणात्य–वि० [सं०] दक्खिनी। दक्षिण का।
संज्ञा पुं० भारतवर्ष का वह भाग जो विंध्याचल के दक्षिण पड़ता है। २. दक्षिण देश का निवासी।

दाक्षिण्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. अनुकूलता। प्रसन्नता। २. उदारता। सुशीलता। ३. दूसरे को प्रसन्न करने का भाव। ४. नाटक में वाक्य या चेष्टा द्वारा दूसरे के उदासीन या अप्रसन्न चित्त को फेरकर प्रसन्न करना।
वि० १. दक्षिण का। दक्षिण संबंधी। २. दक्षिणा संबंधी।

दाख–संज्ञा स्त्री० [सं० द्राक्षा] १. अंगूर। २. मुनक्का। ३. किशमिश।

दाखिल–वि० [फा०] १. प्रविष्ट। घुसा हुआ। पैठा हुआ।
मुहा०—दाखिल करना = भर देना। जमा करना।
२. शरीक। मिला हुआ। ३. पहुँचा हुआ।

दाखिल खारिज–संज्ञा पुं० [फा०] किसी

सरकारी कागज पर से किसी जायदाद के पुराने हकदार का नाम काटकर उस पर उसके वारिस या दूसरे हकदार का नाम लिखना।

दाखिल-दफ्तर–वि० [फा०] दफ्तर में इस प्रकार डाल रखा हुआ (कागज) जिस पर कुछ विचार न किया जाय।

दाखिला–संज्ञा पुं० [फा०] १ प्रवेश। पैठ। २ संस्था आदि में सम्मिलित किए जाने का कार्य्य।

दाग–संज्ञा पुं० [सं० दग्ध] १ जलाने का काम। दाह। २ मुर्दा जलाने की क्रिया। मुहा०–दाग देना=मुरदे का क्रिया-कर्म करना। ३ जलन। दाह। ४ जलन का चिह्न।

दाग–संज्ञा पुं० [फा०] [वि० दागी] १ धब्बा। चित्ती। मुहा०–सफेद दाग=एक प्रकार का कोढ जिससे शरीर पर सफेद धब्बे पड जाते है। फूल। २ निशान। चिह्न। अंक। ३ फल आदि पर पडा हुआ सडने का चिह्न। ४ कलंक। ऐब। दोष। लांछन। ५ जलने का चिह्न।

दागदार–वि० [फा०] जिस पर दाग या धब्बा लगा हो।

दागना–क्रि० स० [हिं० दाग] १ जलाना। दग्ध करना। २ तपे लोहे से किसी के अंग को ऐसा जलाना कि चिह्न पड जाय। ३ धातु के तपे हुए साँचे को छुलाकर अंग पर उसका चिह्न डालना। तप्त मुद्रा से अंकित करना। ४ फोडे आदि पर ऐसी तेज दवा लगाना जिससे वह जल या सूख जाय। ५ भरी हुई बंदूक में बत्ती देना। तोप, बंदूक आदि छोडना। क्रि० स० [फा० दाग] रंग आदि से चिह्न या दाग लगाना। अंकित करना।

दागबेल–संज्ञा स्त्री० [फा० दाग+हिं० बेलि] भूमि पर फावडे या कुदाल से बनाए हुए चिह्न जो सडक बनाने, नींव खोदने आदि के लिये डाले जाते हैं।

दागी–वि० [फा० दाग] १ जिस पर दाग या धब्बा हो। २ जिस पर सडने का चिह्न हो। ३ कलंकित। दोषयुक्त। लांछित। ४ जिसको सजा मिल चुकी हो।

दाघ–संज्ञा पुं० [सं०] १ गरमी। ताप। २ दाह। जलन।

दाजन†*–संज्ञा स्त्री० दे० "दाझन"।

दाजना*–क्रि० अ० [सं० दग्ध या दाहन] १ जलना। २ ईर्ष्या करना। डाह करना। क्रि० स० जलाना।

दाझन*–संज्ञा स्त्री० [सं० दहन] जलन।

दाझना*–क्रि० अ० [सं० दाहन] जलना। संतप्त होना। क्रि० स० जलाना।

दाडिम–संज्ञा पुं० [सं०] अनार।

दाढ–संज्ञा स्त्री० [सं० दंष्ट्रा या दाडक] जबडे के भीतर के मोटे चौडे दाँत। चौभर। संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ भीषण शब्द। गरज। दहाड। २ चिल्लाहट। मुहा०–दाढ मारकर रोना=खूब चिल्ला चिल्लाकर रोना।

दाढना*–क्रि० स० [सं० दाहन] १ जलाना। आग में भस्म करना। २ संतप्त करना। दुःखी करना।

दाढा†–संज्ञा पुं० दे० "दाढ"। संज्ञा पुं० [हिं० दाढ] १ वन की आग। दावानल। २ आग। अग्नि। ३ दाह। जलन।

दाढी–संज्ञा स्त्री० [हिं० दाढ] १ चिबुक। २ ठुड्डी और दाढ पर के बाल। श्मश्रु। दे० "दाढी"।

दाढीजार–संज्ञा पुं० [हिं० दाढी+जलना] एक गाली, जिसे स्त्रियाँ कुपित होने पर पुरुषों को देती है।

दात*–संज्ञा पुं० [सं० दातव्य] दान। संज्ञा पुं० दे० "दाता"।

दातव्य–वि० [सं०] देने योग्य। संज्ञा पुं० १ देने का काम। दान। २ दानशीलता। उदारता।

दाता–संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो दान दे।

दानशील। २. देनेवाला।

दातार–संज्ञा पुं० [सं० दाता का बहु०] दाता। देनेवाला।

दाती*–संज्ञा स्त्री० [सं० दात्री] देनेवाली।

दातुन–संज्ञा स्त्री० दे० "दतुवन"।

दातृत्व–संज्ञा पुं० [सं०] दानशीलता। देने की प्रवृत्ति।

दातौन–संज्ञा स्त्री० दे० "दतुवन"।

दात्यूह–संज्ञा पुं० [सं०] १. पपीहा। चातक। २. मेघ। बादल।

दात्री–संज्ञा स्त्री० [सं०] देनेवाली। संज्ञा स्त्री० [सं०] हँसिया। दाँती।

दाद–संज्ञा स्त्री० [सं० दद्रु] एक चर्मरोग जिसमें शरीर पर उभरे हुए ऐसे चकत्ते पड़ जाते हैं जिनमें बहुत खुजली होती है। दिनाई। संज्ञा स्त्री० [फा०] इंसाफ़। न्याय। मुहा०—दाद चाहना=किसी अत्याचार के प्रतीकार की प्रार्थना करना। दाद देना=१. न्याय करना। २. प्रशंसा करना। सराहना।

दादनी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. वह रकम जिसे चुकाना हो। २. वह रकम जो किसी काम के लिये पेशगी दी जाय। अगता।

दादरा–संज्ञा पुं० [?] १. एक प्रकार का चलता गाना। २. दो अर्द्ध मात्राओं का एक ताल।

दादा–संज्ञा पुं० [सं० तात] [स्त्री० दादी] १. पितामह। पिता का पिता। आजा। २. बड़ा भाई। ३. बड़े-बूढ़ों के लिये आदर-सूचक शब्द।

दादि*†–संज्ञा स्त्री० [फा० दाद] न्याय। इंसाफ़।

दादी–संज्ञा स्त्री० [हिं दादा] पिता की माता। दादा की स्त्री। संज्ञा पुं० [फा० दाद] दाद चाहनेवाला। न्याय का प्रार्थी। फ़रियादी।

दादु*†–संज्ञा स्त्री० [सं० दद्रु] दाद। दिनाई।

दादुर*–संज्ञा पुं० [सं० दर्दुर] मेढ़क।

दादू†–संज्ञा पुं० [अनु० दादा] १. दादा के लिये संबोधन या प्यार का शब्द। २. 'भाई' आदि के समान एक साधारण संबोधन। ३. एक साधु जिनके नाम पर एक पंथ चला है। ये जाति के धुनिया कहे जाते हैं। इनका जन्मस्थान अहमदाबाद था। ये अकबर के समय में हुए थे।

दादूदयाल–संज्ञा पुं० दे० "दादू" (३)।

दादूपंथी–संज्ञा पुं० [हिं० दादू+पंथी] दादू नामक साधु या उनके पंथ का अनुयायी।

दाध*–संज्ञा स्त्री० [सं० दाद] जलन। दाह।

दाधना*–क्रि० स० [सं० दग्ध] जलाना। भस्म करना।

दान–संज्ञा पुं० [सं०] १. देने का कार्य। २. वह धर्मार्थ कर्म जिसमें श्रद्धा या दया-पूर्वक दूसरे को धन आदि दिया जाता है। खैरात। ३. वह वस्तु जो दान में दी जाय। ४. कर। महसूल। चुंगी। ५. राजनीति में कुछ देकर शत्रु के विरुद्ध कार्य-साधन की नीति। ६. हाथी का मद। ७. छेदन। ८. शुद्धि।

दानधर्म्म–संज्ञा पुं० [सं०] दान देने का धर्म्म। दान-पुण्य।

दानपत्र–संज्ञा पुं० [सं०] वह लेख या पत्र जिसके द्वारा कोई संपत्ति किसी को प्रदान की जाय।

दानपात्र–संज्ञा पुं० [सं०] वह व्यक्ति जो दान पाने के उपयुक्त हो।

दानलीला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कृष्ण की वह लीला जिसमें उन्होंने ग्वालिनों से गोरस बेचने का कर वसूल किया था। २. वह ग्रंथ जिसमें इस लीला का वर्णन किया गया हो।

दानव–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० दानवी] कश्यप के वे पुत्र जो 'दनु' नाम्नी पत्नी से उत्पन्न हुए थे। असुर। राक्षस।

दान-वारि–संज्ञा पुं० [सं०] हाथी का मद।

दानवी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दानव की स्त्री। २. दानव जाति की स्त्री। राक्षसी। वि० [सं० दानवीय] दानवों का। दानव-संबंधी।

दानवीर–संज्ञा पुं० [सं०] वह जो दान देने से न हटे। अत्यंत दानी।

दानवेंद्र–संज्ञा पु० [सं०] राजा बलि।
दानशील–वि० [सं०] [संज्ञा दानशीलता] दान करनेवाला। दानी।
दाना–संज्ञा पु० [फा० दान] १ अनाज का एक बीज। अन्न का एक कण। कन।
मुहा०–दाने दाने को तरसना = अन्न का कष्ट सहना। भोजन न पाना। दाने दाने को मुहताज = अत्यंत दरिद्र।
२ अनाज। अन्न। ३ भूना हुआ अन्न। चबेना। चर्वण। ४ कोई छोटा बीज जो बाल, फली या गुच्छे में लगे। ५ फल या उसका बीज। ६ कोई छोटी गोल वस्तु। जैसे—मोती का दाना। घुँघरू का दाना। ७ माला की गुरिया। मनका। ८ छोटी गोल वस्तुओं के लिए संख्या के स्थान पर आनेवाला शब्द। अदद। ९ रवा। कण। कणिका। १० किसी सतह पर के छोटे छोटे उभार जो टटोलने से अलग अलग मालूम हों।
वि० [फा० दाना] बुद्धिमान्। अक्लमंद।
दानाई–संज्ञा स्त्री० [फा०] अक्लमंदी।
दानाध्यक्ष–संज्ञा पु० [सं०] राजाओं के यहाँ दान का प्रबंध करनेवाला कर्मचारी।
दाना-पानी–संज्ञा पु० [फा० दाना + हिं० पानी] १ खान-पान। अन्न-जल।
मुहा०—दाना-पानी छोड़ना = अन्न जल ग्रहण न करना। उपवास करना।
२ भरण-पोषण का आयोजन। जीविका। ३ रहने का संयोग।
दानी–वि० [सं० दानिन्] [स्त्री० दानिनी] जो दान करे। उदार।
संज्ञा पु० दान करनेवाला व्यक्ति। दाता।
संज्ञा पु० [सं० दानीय] १ कर संग्रह करनेवाला। महसूल उगाहनेवाला। २ दान लेनेवाला।
दानेदार–वि० [फा०] जिसमें दाने या रवे हों। रवादार।
दानो‡*–संज्ञा पु० दे० "दानव"।
दाप–संज्ञा पु० [सं० दर्प, प्रा० दप्प] १ अहंकार। घमंड। अभिमान। २ शक्ति। बल। जोर। ३. उत्साह। उमंग। ४ रोब। दबदबा। आतंक। ५ आँच। ६ जलन। ताप।
दापक–संज्ञा पु० [सं० दर्पक] दबानेवाला।
दापना*–क्रि० स० [हिं० दाप] १ दबाना। २ मना करना। रोकना।
दाब–संज्ञा स्त्री० [हिं० दाप] १ दबने या दबाने का भाव। २ किसी वस्तु का वह भार जो नीचे की वस्तु पर पड़े। भार। बोझ। ३ आतंक। रोब। आधिपत्य। शासन।
दाबदार–वि० [हिं० दाब + फा० दार] आतंक रखनेवाला। रोबदार।
दाबना–क्रि० स० दे० "दबाना"।
दाभ–संज्ञा पु० [सं० दर्भ] कुश। डाभ।
दाम–संज्ञा पु० [सं०] १ रस्सी। रज्जु। २ माला। हार। लड़ी। ३ समूह। राशि। ४ लोक। विश्व।
संज्ञा पु० [फा० मिलाओ सं०] जाल। फंदा। पाश।
संज्ञा पु० [हिं० दमड़ी] १ पैसे का चौबीसवाँ या पचीसवाँ भाग।
मुहा०—दाम दाम भर देना = कौड़ी कौड़ी चुका देना। कुछ (ऋण) बाकी न रखना।
२ वह धन जो किसी वस्तु के बदले में बेचनेवाले को दिया जाय। मूल्य। कीमत।
मुहा०—दाम खड़ा करना = कीमत वसूल करना। दाम चुकाना = १ मूल्य दे देना। २ कीमत ठहराना। मोल भाव तै करना। दाम भरना = नुकसानी देना। डाँड देना।
३ धन। रुपया-पैसा। ४ सिक्का। रुपया।
मुहा०—चाम के दाम चलाना = अधिकार या अवसर पाकर मनमाना अंधेर करना।
५ राजनीति की एक चाल जिसमें शत्रु को धन द्वारा वश में करते हैं। दान-नीति।
दामन–संज्ञा पु० [फा०] १ अंगे, कोट, कुरते इत्यादि का निचला भाग। पल्ला। २ पहाड़ों के नीचे की भूमि।
दामरी–संज्ञा स्त्री० [सं० दाम] रस्सी। रज्जु।
दामा*–संज्ञा स्त्री० [सं० दावा] दावानल।

दामाद–संज्ञा पुं० [फा० मिलाओ सं० जामातृ] पुत्री का पति। जवाई। जामाता।
दामिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बिजली। विद्युत्। २. स्त्रियों का एक शिरोभूषण। बेंदी। बिंदिया। दाँवनी।
दामी–संज्ञा स्त्री० [हिं० दाम] कर। माल-गुज़ारी।
वि० मूल्यवान्। क़ीमती।
दामोदर–संज्ञा पुं० [सं०] १. श्रीकृष्ण। २. विष्णु। ३. एक जैन तीर्थंकर।
दाय*–संज्ञा पुं० दे० "दावँ"।
संज्ञा स्त्री० [?] बराबरी। दे० "दाँज"।
दाय–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह धन जो किसी को देने को हो। २. दायजे, दान आदि में दिया जानेवाला धन। ३. वह पैतृक या संबंधी का धन जिसका उत्तराधिकारियों में विभाग हो सके। ४. दान।
*संज्ञा पुं० दे० "दाव"।
दायक–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० दायिका] देनेवाला। दाता।
दायज, दायजा–संज्ञा पुं० [सं० दाय] वह धन जो विवाह में वर-पक्ष को दिया जाय। यौतुक। दहेज।
दायभाग–संज्ञा पुं० [सं०] १. पैतृक धन का विभाग। २. बाप-दादे या संबंधी की संपत्ति के पुत्रों, पौत्रों या संबंधियों में बाँटे जाने की व्यवस्था। यह हिंदू धर्म-शास्त्र का एक प्रधान विषय है। इसके दो प्रधान पक्ष हैं—मिताक्षरा और दायभाग।
दायमुलहब्स–संज्ञा पुं० [अ०] जीवन भर के लिए क़ैद। काले पानी की सजा।
दायर–वि० [फा०] १. फिरता या चलता हुआ। २. चलता। जारी।
मुहा०—दायर करना = मामले मुकदमे वगैरह को चलाने के लिए पेश करना।
दायरा–संज्ञा पुं० [अ०] १. गोल घेरा। कुंडल। मंडल। २. वृत्त। ३. कक्षा।
दायाँ–वि० [हिं० दाहिना] दाहिना।
दाया*†–संज्ञा स्त्री० दे० "दया"।
संज्ञा स्त्री० [फा०] दाई।
दायाद–वि० [सं०] [स्त्री० दायादा] जो दाय का अधिकारी हो। जिसे किसी की जायदाद में हिस्सा मिले।
संज्ञा पुं० १. वह जिसका संबंध के कारण किसी की जायदाद में हिस्सा हो। हिस्सेदार। २. पुत्र। बेटा। ३. सपिंड कुटुम्बी।
दायित्व–संज्ञा पुं० [सं०] १. देनदार होने का भाव। २. जिम्मेदारी। जवाबदेही।
दायी–वि० [सं० दायिन्] [स्त्री० दायिनी] देनेवाला। जैसे—सुखदायी। वरदायी।
दायें–क्रि० वि० [हिं० दायाँ] दाहिनी ओर को।
मुहा०—दायें होना = अनुकूल या प्रसन्न होना।
दार–संज्ञा स्त्री० [सं०] पत्नी। भार्य्या।
*संज्ञा पुं० दे० "दारु"।
प्रत्य० [फा०] रखनेवाला।
दारक–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० दारिका] १. बच्चा। लड़का। २. पुत्र। बेटा।
दारकर्म–संज्ञा पुं० [सं०] विवाह।
दारचीनी–संज्ञा स्त्री० [सं० दारु + चीन (देश)] १. एक प्रकार का तज जो दक्षिण-भारत और सिंहल में होता है। २. इस पेड़ की सुगंधित छाल जो दवा और मसाले के काम में आती है।
दारण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० दारित] १. चीरने-फाड़ने का काम। चीर-फाड़। २. चीरने-फाड़ने का औजार। ३. फोड़ा आदि चीरने का काम।
दारना*–क्रि० स० [सं० दारण] १. फाड़ना। विदीर्ण करना। २. नष्ट करना।
दारपरिग्रह–संज्ञा पुं० [सं०] विवाह।
दार-मदार–संज्ञा पुं० [फा०] १. आश्रय। ठहराव। २. किसी कार्य्य का किसी पर अवलंबित रहना।
दारा–संज्ञा स्त्री० [सं० दार] पत्नी। भार्य्या।
दारि*†–संज्ञा स्त्री० दे० "दाल"।
दारिउँ*–संज्ञा पुं० दे० "दाड़िम"।
दारिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बालिका। कन्या। २. बेटी। पुत्री।

दारिद*—संज्ञा पु० [सं० दारिद्र्य] दरिद्रता।
दारिद्र*—संज्ञा पु० दे० "दारिद्र्य"।
दारिद्र्य—संज्ञा पु० [सं०] दरिद्रता। निर्धनता। गरीबी।
दारी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दराई। दरार। संज्ञा स्त्री० [सं० दारिका] वह लौंडी जिसे लड़ाई में जीतकर लाए हों।
दारीजार—संज्ञा पु० [हिं० दारी + सं० जार] १ लौंडी का पति। (गाली) २ दासीपुत्र।
दारु—संज्ञा पु० [सं०] १ काठ। लकड़ी। २ देवदार। ३ बढ़ई। ४ कारीगर।
दारुक—संज्ञा पु० [सं०] १ देवदार। २ श्रीकृष्ण के सारथी का नाम।
दारुजोषित*—संज्ञा स्त्री० दे० "दारु-योषित"।
दारुण—वि० [सं०] १ भयंकर। भीषण। घोर। २ कठिन। प्रचंड। विकट। संज्ञा पु० १ चीते का पेड़। २ भयानक रस। ३ विष्णु। ४ शिव। ५ एक नरक का नाम। ६ राक्षस।
दारुन*—वि० दे० "दारुण"।
दारुयोषित—संज्ञा स्त्री० [सं०] कठपुतली।
दारुहलदी—संज्ञा स्त्री० [सं० दारुहरिद्रा] झाड़ की जाति का एक सदाबहार झाड़। इसकी जड़ और डंठल दवा के काम में आते हैं।
दारू—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ दवा। औषध। २ मद्य। शराब। ३ बारूद।
दारों*—संज्ञा पु० दे० "दारयो"।
दारोगा—संज्ञा पु० [फा०] १ देख भाल रखनेवाला या प्रबंध करनेवाला व्यक्ति। २ पुलिस का वह अफसर जो किसी थाने पर अधिकारी हो। थानेदार।
दारयो*—संज्ञा पु० [सं० दाडिम] अनार।
दार्व—संज्ञा पु० [सं०] एक प्राचीन प्रदेश जो आधुनिक काश्मीर के अंतर्गत पड़ता था।
दार्शनिक—वि० [सं०] १ दर्शन जाननेवाला। तत्त्वज्ञानी। २ दर्शनशास्त्र-संबंधी।
दाल—संज्ञा स्त्री० [सं० दालि] १ दली हुई अरहर, मूँग आदि जिसे सालन की तरह खाते हैं। २ मसाले के साथ पानी में उबाला हुआ दला अन्न जो रोटी, भात आदि के साथ खाया जाता है।

मुहा०—(किसी की) दाल गलना = (किसी का) प्रयोजन सिद्ध होना। मतलब निकलना। दाल दलिया = रूखा-सूखा भोजन। गरीबों का सा खाना। दाल में कुछ काला होना = कुछ खटके या संदेह की बात होना। किसी बुरी बात का लक्षण दिखाई पड़ना। दाल रोटी = सादा खाना। सामान्य भोजन। जूतियों दाल बँटना = आपस में खूब लड़ाई-झगड़ा होना।

३ दाल के आकार की कोई वस्तु। ४ चेचक, फोड़े, फुंसी आदि के ऊपर का चमड़ा जो सूखकर छूट जाता है। खुरंड।
दालचीनी—संज्ञा स्त्री० दे० "दारचीनी"।
दालमोठ—संज्ञा स्त्री० [हिं० दाल + मोठ=एक अन्न] घी, तेल आदि में नमक, मिर्च के साथ तली हुई दाल।
दालान—संज्ञा पु० [फा०] मकान में वह छाई हुई जगह जो एक, दो या तीन ओर खुली हो। बरामदा। ओसारा।
दालिम—संज्ञा पु० दे० "दाड़िम"।
दावँ—संज्ञा पु० [सं० प्रत्य० दा (दाच्) जैसे एकदा] १ बार। दफा। मरतबा। २ किसी बात का समय जो कई आदमियों में एक दूसरे के पीछे क्रम से आवे। बारी। पारी। ३ उपयुक्त समय। अनुकूल संयोग। अवसर। मौका।

मुहा०—दावँ करना = घात लगाना। घात में बैठना। दावँ लगाना = अनुकूल संयोग मिलना मौका मिलना। दावँ लेना = बदला लेना।

४ कार्य्य-साधन की युक्ति। उपाय। चाल।

मुहा०—दावँ पर चढ़ना = इस प्रकार वश में होना कि दूसरा अपना मतलब निकाल ले।

५ कुश्ती या लड़ाई जीतने के लिए काम में लाई जानेवाली युक्ति। चाल। पेंच। बंद। ६ कार्य्य-साधन की कुटिल युक्ति। छल। कपट। ७ खेल में प्रत्येक खेलाड़ी के खेलने का समय जो एक दूसरे के पीछे क्रम से आता है। खेलने की बारी। चाल।

मुहा०—दावँ पर रखना या लगाना रुपया-पैसा या कोई वस्तु बाज़ी पर लगाना। ८. पाँसे, जुए की कौड़ी आदि का इस प्रकार पड़ना जिससे जीत हो।

मुहा०—दावँ देना = खेल में हारने पर नियत दंड भोगना या परिश्रम करना। (लड़के) †९. स्थान। ठौर। जगह।

दावँना-क्रि० स० [सं० दमन] दाना और भूसा अलग करने के लिए कटी हुई फ़सल के सूखे डंठलों को बैलों से रौंदवाना।

दावँनी-संज्ञा स्त्री० [सं० दामिनी] माथे पर पहनने का स्त्रियों का एक गहना। बंदी।

दावँरी-संज्ञा स्त्री० [सं० दाम] रस्सी। रज्जु।

दाव-संज्ञा पुं० [सं०] १. वन। जंगल। २. वन की आग। ३. आग। अग्नि। ४. जलन। ताप।

संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का हथियार।

दावत-संज्ञा स्त्री० [अ० दअवत] १. ज्योनार। भोज। २. खाने का बुलावा। निमंत्रण।

दावन-संज्ञा पु० [सं० दमन] १. दमन। नाश। २. हँसिया। ३. एक प्रकार का टेढ़ा छुरा। खुखड़ी।

दावना-क्रि० स० दे० "दावँना"।

क्रि० स० [हिं० दावन] दमन करना।

दावनी-संज्ञा स्त्री० दे० "दावँनी"।

दावा-संज्ञा स्त्री० [सं० दाव] वन में लगनेवाली आग जो पेड़ों की डालियों के एक दूसरी से रगड़ खाने से उत्पन्न होती है।

संज्ञा पुं० [अ०] १. किसी वस्तु पर अधिकार प्रकट करने का कार्य्य। किसी चीज़ पर हक़ ज़ाहिर करना। २. स्वत्व। हक़। ३. किसी जायदाद या रुपये-पैसे के लिये चलाया हुआ मुकदमा। ४. नालिश। अभियोग। ५. अधिकार। ज़ोर। ६. कोई बात कहने में वह साहस जो उसकी यथार्थता के निश्चय से उत्पन्न होता है। दृढ़ता। ७. दृढ़तापूर्वक कथन।

दावागीर-संज्ञा पु० [अ० दावा + फ़ा० गीर] दावा करनेवाला। अपना हक़ जतानेवाला।

दावाग्नि-संज्ञा स्त्री० दे० "दावानल"।

दावात-संज्ञा स्त्री० [अ०] स्याही रखने का बरतन। मसिपात्र।

दावादार-संज्ञा पुं० [अ० दावा + फ़ा० दार] दावा करनेवाला। अपना हक़ जतानेवाला।

दावानल-संज्ञा पुं० [सं०] वनाग्नि। दावा।

दावनी*-संज्ञा स्त्री० [सं० दामिनी] १. बिजली। २. दावनी नाम का गहना।

दाशरथि-संज्ञा पुं० [सं०] दशरथ के पुत्र श्रीरामचन्द्र आदि।

दास-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० दासी] १. वह जो अपने को दूसरे की सेवा के लिए समर्पित कर दे। सेवक। चाकर। नौकर। मनुस्मृति में सात प्रकार के और याज्ञवल्क्य, नारद आदि में पंद्रह प्रकार के दास कहे गए हैं। २. शूद्र। ३. धीवर। ४. एक उपाधि जो शूद्रों के नामों के आगे लगाई जाती है। ५. दस्यु। ६. वृत्रासुर।

†*संज्ञा पु० दे० "डासन"

दासता-संज्ञा स्त्री० [सं०] दास का कर्म। दासत्व। सेवावृत्ति।

दासत्व-संज्ञा पु० दे० "दासता"।

दासन-सं० पुं० दे० "डासन"।

दासपन-संज्ञा पुं० दे० "दासता"।

दासा-सं० पुं० [सं० दासी = वेदी] १. दीवार से सटाकर उठाया हुआ पुश्ता जो कुछ ऊँचाई तक हो और जिस पर चीज़-वस्तु भी रख सकें। २. आँगन के चारों ओर दीवार से सटाकर उठाया हुआ चबूतरा। ३. वह लकड़ी या पत्थर जो दरवाजे पर दीवार के आर-पार रहता है।

दासानुदास-संज्ञा पु० [सं०] सेवक का सेवक। अत्यंत तुच्छ सेवक। (नम्रता)

दासी-संज्ञा स्त्री० [सं०] सेवा करनेवाली टहलनी। लौंडी।

दास्तान-संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. वृत्तांत। हाल। २ कथा। किस्सा। ३. वर्णन।

दास्य-संज्ञा पु० [सं०] १. दासत्व। दासपन। सेवा। २. भक्ति के नौ भेदों में से एक जिसमें उपास्य देवता को स्वामी और अपने आपको उनका दास समझते हैं।

दाह–संज्ञा पुं० [सं०] १ जलने की क्रिया या भाव। भस्मीकरण। २ शव जलाने की क्रिया। मुर्दा फूँकने का कर्म। ३. जलन। ताप। ४ एक रोग जिसमें शरीर में जलन मालूम होती है, प्यास लगती है और कंठ सूखता है। ५ शोक। संताप। अत्यंत दुःख। ६ डाह। ईर्ष्या।

दाहक–वि० [सं०] जलानेवाला। संज्ञा पुं० १ चित्रक वृक्ष। २ अग्नि।

दाहकता–संज्ञा स्त्री० [सं०] जलने का भाव या गुण।

दाहकर्म†–संज्ञा पुं० [सं०] शवदाह-कर्म। मुर्दा फूँकने का काम।

दाहक्रिया–संज्ञा स्त्री० [सं०] मृतक को जलाने का संस्कार। शवदाह-कर्म।

दाहन–संज्ञा पुं० [सं०] १ जलाने का काम। २ जलवाने या भस्म कराने की क्रिया।

दाहना–क्रि० स० [सं० दाह] १ भस्म करना। २ जलाना। दुःख पहुँचाना। वि० दे० "दाहिना"।

दाहिना–वि० [सं० दक्षिण] [स्त्री० दाहिनी] १ उस पार्श्व का जिसके अंगों की पेशियों में अधिक बल होता है। 'बायाँ' का उलटा। दक्षिण। अपसव्य।

मुहा०–दाहिनी देना = दक्षिणावर्त्त परिक्रमा करना। दाहिनी लाना = प्रदक्षिणा करना। (किसी का) दाहिना हाथ होना = बड़ा भारी सहायक होना।

२ उधर पड़नेवाला जिधर दाहिना हाथ हो। ३ अनुकूल। प्रसन्न।

दाहिनावर्त्त*–वि० दे० "दक्षिणावर्त्त"।

दाहिने–क्रि० वि० [हिं० दाहिना] उस तरफ जिस तरफ दाहिना हाथ हो। दाहिने हाथ की दिशा में।

दाही–वि० [सं० दाहिन्] [स्त्री० दाहिनी] जलानेवाला। भस्म करनेवाला।

दिंडी–संज्ञा पुं० [सं०] उन्नीस मात्राओं का एक छंद जिसके अंत में दो गुरु होते हैं।

दिअली–संज्ञा स्त्री० [हिं० दीया का स्त्री० अल्पा०] १ मिट्टी का बना हुआ बहुत छोटा दीया या कसोरा। २. दे० "दिउली"।

दिआ–संज्ञा पुं० दे० "दीया"।

दिआना–क्रि० स० दे० "दिलाना"।

दिउली†–संज्ञा स्त्री० [हिं० दिअली] १ छोटे घाव के ऊपर की पपड़ी। खुरंड। २ दे० "दिअली"। ३ मछली के ऊपर से छूटनेवाला छिलका। सेहरा।

दिक्–संज्ञा स्त्री० [सं०] दिशा। ओर।

दिक़–वि० [अ०] १ जिसे बहुत कष्ट पहुँचाया गया हो। हैरान। तंग। २ अस्वस्थ। बीमार। ('तबीयत' शब्द के साथ) संज्ञा पुं० क्षयी रोग। तपेदिक।

दिक्दाह–संज्ञा पुं० दे० "दिग्दाह"।

दिक्क–वि०, संज्ञा पुं० दे० "दिक़"।

दिक्कत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ दिक़ का भाव। परेशानी। तकलीफ। तंगी। कष्ट। २ कठिनता। मुश्किल।

दिक्कन्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] दिशा-रूपी कन्या। (पुराणों में दसों दिशाएँ ब्रह्मा की कन्याएँ मानी गई हैं)।

दिक्करी–संज्ञा पुं० दे० "दिग्गज"।

दिक्कांता–संज्ञा स्त्री० [सं०] दिक्कन्या।

दिक्पाल–संज्ञा पुं० [सं०] १ पुराणानुसार दसों दिशाओं के पालन करनेवाले देवता। यथा—पूर्व के इंद्र, दक्षिण के यम आदि। २ चौबीस मात्राओं का एक छंद। उर्दू का रेखता यही है।

दिक्शूल–संज्ञा पुं० [सं०] फलित ज्योतिष के अनुसार कुछ विशिष्ट दिनों में कुछ विशिष्ट दिशाओं में काल का वास। जिस दिन जिस दिशा में दिक्शूल माना जाता है, उस दिन उस दिशा की ओर यात्रा करना बहुत ही अशुभ माना जाता है।

दिक्साधन–संज्ञा पुं० [सं०] वह उपाय या विधि जिससे दिशाओं का ज्ञान हो।

दिक्सुंदरी–संज्ञा स्त्री० दे० "दिक्कन्या"।

दिखना†–क्रि० अ० [हिं० देखना] दिखाई देना। देखने में आना।

दिखराना*–क्रि० स० दे० "दिखलाना"।

दिखरावना*–क्रि० स० दे० "दिखलाना"।

दिखरावनी*†–संज्ञा स्त्री० [हिं० दिखलाना] दिखाने का भाव या क्रिया।

दिखलवाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० दिखलाना] १. वह धन जो दिखलवाने के बदले में दिया जाय। २. दे० "दिखलाई"।

दिखलवाना–क्रि० स० [हिं० दिखलाना का प्रे०] दिखलाने का काम दूसरे से कराना।

दिखलाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० दिखलाना] १. दिखलवाने की क्रिया या भाव। २. वह धन जो दिखलाने के बदले में दिया जाय।

दिखलाना–क्रि० स० [हिं० देखना का प्रे० रूप] १. दूसरे को देखने में प्रवृत्त करना। दृष्टिगोचर कराना। दिखाना। २. अनुभव कराना। मालूम कराना। जताना।

दिखहार*†–संज्ञा पुं० [हिं० देखना + हार (प्रत्य०)] देखनेवाला।

दिखाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० दिखाना + आई (प्रत्य०)] १. देखने या दिखाने का काम। २. वह धन जो देखने या दिखाने के बदले में दिया जाय।

दिखाऊ†–वि० [हिं० देखना+आऊ(प्रत्य०)] १. देखने योग्य। दर्शनीय। २. जो केवल देखने योग्य हो, पर काम में न आ सके। ३. दिखौआ। बनावटी।

दिखादिखी–संज्ञा स्त्री० दे० "देखादेखी"।

दिखाना–क्रि० स० दे० "दिखलाना"।

दिखाव–संज्ञा पुं० [हिं० देखना + आव (प्रत्य०)] १. देखने का भाव या क्रिया। २. दृश्य। नजारा।

दिखावटी–वि० दे० "दिखौआ"।

दिखावा–संज्ञा पुं० [हिं० देखना + आवा (प्रत्य०)] ऊपरी तड़क-भड़क। आडंबर।

दिखैया*†–संज्ञा पुं० [हिं० देखना + ऐया (प्रत्य०)] दिखलाने या देखनेवाला।

दिखौआ–वि० [हिं० देखना+औआ(प्रत्य०)] वह जो केवल देखने योग्य हो, पर काम में न आ सके। बनावटी।

दिगंत–संज्ञा पुं० [सं०] १. दिशा का छोर। दिशा का अंत। २. आकाश का छोर। क्षितिज। ३. सब दिशाएँ।
संज्ञा पुं० [सं० दृग् + अंत] आँख का कोना।

दिगंतर–संज्ञा पुं० [सं०] दो दिशाओं के बीच का स्थान।

दिगंबर–संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव। महादेव। २. नंगा रहनेवाला जैन यति। दिगंबर यति। क्षपणक। ३. अंधकार। तम। वि० नंगा। नग्न।

दिगंबरता–संज्ञा स्त्री० [सं०] नंगापन।

दिगंश–संज्ञा पुं० [सं०] क्षितिज वृत्त का ३६०वाँ अंश।

दिगंश यंत्र–संज्ञा पुं० [सं०] वह यंत्र जिससे किसी ग्रह या नक्षत्र का दिगंश जाना जाय।

दिग्–संज्ञा स्त्री० दे० "दिक्"।

दिग्दंति*†–संज्ञा पुं० दे० "दिग्गज"।

दिग्पाल–संज्ञा पुं० दे० "दिक्पाल"।

दिग्गज–संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार वे आठों हाथी जो आठों दिशाओं में पृथ्वी को दबाए रखने और उन दिशाओं की रक्षा करने के लिए स्थापित हैं। वि० बहुत बड़ा। बहुत भारी।

दिग्घ*†–वि० [सं० दीर्घ] १. लंबा। २. बड़ा।

दिग्दर्शक यंत्र–संज्ञा पुं० [सं०] डिबिया के आकार का एक प्रकार का यंत्र जिससे दिशाओं का ज्ञान होता है। कुतुबनुमा।

दिग्दर्शन–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो कुछ उदाहरण-स्वरूप दिखलाया जाय। नमूना। २. नमूना दिखाने का काम। ३. अभिज्ञता। जानकारी।

दिग्दाह–संज्ञा पुं० [सं०] एक दैवी घटना जिसमें सूर्यास्त होने पर भी दिशाएँ लाल और जलती हुई सी दिखलाई पड़ती हैं। (अशुभ)

दिग्देवता–संज्ञा पुं० दे० "दिक्पाल"।

दिग्पट–संज्ञा पुं० [सं० दिक्पट] १. दिशारूपी वस्त्र। २. नंगा। दिगंबर।

दिग्पति–संज्ञा पुं० दे० "दिक्पाल"।

दिग्भ्रम–संज्ञा पु० [सं०] दिशाओं का भ्रम होना। दिशा भूल जाना।
दिग्मंडल–संज्ञा पु० [सं०] दिशाओं का समूह। संपूर्ण दिशाएँ।
दिग्राज–संज्ञा पुं० दे० "दिक्पाल"।
दिग्वस्त्र–संज्ञा पुं० [सं०] १ महादेव। शिव। २ नंगा रहनेवाला जैन यति।
दिग्वास–संज्ञा पु० दे० "दिग्वस्त्र"।
दिग्विजय–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ राजाओं का अपनी वीरता दिखलाने और महत्त्व स्थापित करने के लिए देश-देशांतरों में अपनी सेना के साथ जाकर युद्ध करना और विजय प्राप्त करना। २ अपने गुण, विद्या या बुद्धि आदि के द्वारा देश-देशांतरों में अपना महत्त्व स्थापित करना।
दिग्विजयी–वि० पु० [सं० स्त्री० दिग्विजयिनी] जिसने दिग्विजय किया हो।
दिग्विभाग–संज्ञा पु० [सं०] दिशा। ओर।
दिग्व्यापी–वि० [सं०] [स्त्री० दिग्व्यापिनी] जो सब दिशाओं में व्याप्त हो।
दिग्शूल–संज्ञा पु० दे० "दिक्शूल"।
दिङ्नाग–संज्ञा पु० [सं०] १ दिग्गज। २ एक बौद्ध नैयायिक और आचार्य्य, जो मल्लिनाथ के अनुसार कालिदास के समय में हुए थे और उनके बड़े भारी प्रतिद्वन्द्वी थे।
दिङ्मंडल–संज्ञा पु० [सं०] दिशाओं का समूह।
दिच्छित*†–संज्ञा पु०, वि० दे० "दीक्षित"।
दिजराज*†–संज्ञा पु० दे० "द्विजराज"।
दिठवन–संज्ञा स्त्री० दे० 'देवोत्थान"।
दिठादिठी–संज्ञा स्त्री० दे० "देखा-देखी"।
दिठाना–क्रि० अ० [हिं० दीठ] बुरी दृष्टि लगना।
क्रि० स० बुरी दृष्टि लगाना।
दिठौना†–संज्ञा पु० [हिं० दीठ=दृष्टि+औना (प्रत्य०)] काजल की वह बिंदी जो बालक को नजर से बचाने के लिए लगाते हैं।
दिढ़*†–वि० दे० "दृढ़"।
दिढ़ाना*†–क्रि० स० [सं० दृढ़+आना (प्रत्य०)] १ पक्का करना। मजबूत करना। २ निश्चित करना।
दिति–संज्ञा स्त्री० [सं०] कश्यप ऋषि की एक स्त्री जो दक्ष प्रजापति की एक कन्या और दैत्यों की माता थी।
दितिसुत–संज्ञा पु० [सं०] दैत्य। राक्षस।
दिदार–संज्ञा पु० दे० "दीदार"।
दिन–संज्ञा पु० [सं०] १ सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक का समय।
मुहा०—दिन को तारे दिखाई देना=इतना अधिक मानसिक कष्ट पहुँचना कि बुद्धि ठिकाने न रहे। दिन को दिन, रात को रात न जानना या समझना=अपने सुख या विश्राम आदि का कुछ भी ध्यान न रखना। दिन चढ़ना=सूर्योदय होना। दिन छिपना या डूबना=संध्या होना। दिन ढलना=संध्या का समय निकट आना। दिन दहाड़े या दिन दिहाड़े=बिलकुल दिन के समय। दिन दूना रात चौगुना होना या बढ़ना=बहुत जल्दी जल्दी और बहुत अधिक बढ़ना। खूब उन्नति पर होना। दिन निकलना=सूर्योदय होना।
यौ०—दिन रात=सदा। हर वक्त।
२ उतना समय जितने में पृथ्वी एक बार अपने अक्ष पर घूमती है। आठ पहर या चौबीस घंटे का समय।
मुहा०—दिन दिन या दिन पर दिन=नित्य प्रति। सदा। हर रोज।
३ समय। काल। वक्त।
मुहा०—दिन काटना या पूरे करना=निर्वाह करना। समय बिताना। दिन बिगड़ना=बुरे दिन होना।
४ नियत या उपयुक्त काल। निश्चित या उचित समय।
मुहा०—दिन धरना=दिन निश्चित करना।
५ वह समय जिसके बीच में कोई विशेष बात हो। जैसे—गर्भ के दिन, बुरे दिन।
मुहा०—दिन चढ़ना=किसी स्त्री का गर्भवती होना। दिन फिरना=बुरे दिनों के बाद अच्छे दिन आना। दिन भरना=बुरे दिन काटना।
क्रि० वि० सदा। हमेशा।
दिनअर*–संज्ञा पु० दे० 'दिनकर"।

दिनकंत*†–संज्ञा पुं० [सं० दिन + हिं० कंत (कांत)] सूर्य्य।
दिनकर–संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य्य।
दिनचर्य्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] दिन भर का काम-धंधा। दिन भर का कर्तव्य कर्म्म।
दिनदानी*†–संज्ञा पुं० [सं० दिन + दानी] प्रति दिन दान करनेवाला।
दिननाथ–संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य्य।
दिनपति–संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।
दिनमणि–संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य। रवि।
दिनमान–संज्ञा पुं० [सं०] सूर्योदय से लेकर सूर्य्यास्त तक के समय का मान। दिन का प्रमाण।
दिनराइ*–संज्ञा पुं० दे० "दिनराज"।
दिनराज–संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य्य।
दिनांध–संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसे दिन को न सूझे।
दिनाइ†–संज्ञा पुं० [देश०] दाद नामक रोग।
दिनाई*–संज्ञा स्त्री० [सं० दिन, हिं० आना] कोई ऐसी विषाक्त वस्तु जिसके खाने से थोड़े ही समय में मृत्यु हो जाय।
दिनियर*†–संज्ञा पुं० [सं० दिनकर] सूर्य्य।
दिनी–वि० [हिं० दिन + ई (प्रत्य०)] बहुत दिनों का। पुराना। प्राचीन।
दिनेर–संज्ञा पुं० [सं० दिनकर] सूर्य।
दिनेश–संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य। २. दिन के अधिपति ग्रह।
दिनौंधी–संज्ञा स्त्री० [हिं० दिन + अंध + ई (प्रत्य०)] एक रोग जिसमें दिन के समय सूर्य की तेज किरणों के कारण बहुत कम दिखाई देता है।
दिपति*†–संज्ञा स्त्री० दे० "दीप्ति"।
दिपना*–क्रि० अ० [सं० दीप्ति] प्रकाशमान होना। चमकना।
दिपाना–क्रि० अ० दे० "दिपना"।
दिब*–संज्ञा पुं० दे० "दिव्य"।
दिमाक–संज्ञा पुं० दे० "दिमाग"।
दिमाग़–संज्ञा पुं० [अ०] १. सिर का गूदा। मस्तिष्क। भेजा।
मुहा०—दिमाग़ खाना या चाटना = व्यर्थ की बातें कहना। बहुत बकवाद करना। दिमाग़ खाली करना = ऐसा काम करना जिसमें मानसिक शक्ति का बहुत अधिक व्यय हो। मगजपच्ची करना। दिमाग़ चढ़ना या आस्मान पर होना = बहुत अधिक घमंड होना।
२. मानसिक शक्ति। बुद्धि। समझ।
मुहा०—दिमाग लड़ाना = बहुत अच्छी तरह विचार करना। खूब सोचना।
३. अभिमान। घमंड। शेखी।
दिमाग़दार–वि० [अ० दिमाग + फ़ा० दार (प्रत्य०)] १. जिसकी मानसिक शक्ति बहुत अच्छी हो। बहुत बड़ा समझदार। २. अभिमानी। घमंडी।
दिमाग़ी–वि० दे० "दिमाग़दार"।
वि० दिमाग-संबंधी।
दिमात*†–संज्ञा पुं०, वि० [सं० द्विमातृ] दो माताओंवाला। वह जिसकी दो माताएँ हों।
वि०, संज्ञा पुं० [सं० द्विमात्रा] वह जिसमें दो मात्राएँ हों। दो मात्राओंवाला।
दिमाना*†–वि० दे० "दीवाना"।
दियना‡–संज्ञा पुं० दे० "दीआ"।
क्रि० अ० [सं० दीप्त] चमकना।
दियरा–संज्ञा पुं० [हिं० दीआ+रा (प्रत्य०)] १. एक प्रकार का पकवान। २. वह लुक जो शिकारी हिरनों को आकर्षित करने के लिए जलाते हैं। ३. दे० "दीया"।
दिया–संज्ञा पुं० दे० "दीया"।
दियारा–संज्ञा पुं० [फ़ा० दयार=प्रदेश] १. नदी के किनारे की वह जमीन जो नदी के हट जाने पर निकल आती है। कछार। खादर। दरिया-बरार। २. प्रदेश। प्रांत।
दियासलाई–संज्ञा स्त्री० दे० "दीयासलाई"।
दिरद*–संज्ञा पुं० दे० "द्विरद"।
दिरम–संज्ञा पुं० [अ० दरहम] १. मिस्र देश का चाँदी का एक सिक्का। दिरहम। २. साढ़े तीन माशे की एक तौल।
दिरमान†–संज्ञा पुं० [फ़ा० दरमानः] चिकित्सा इलाज।
दिरमानी–संज्ञा पुं० [फ़ा० दरमान + ई (प्रत्य०)] इलाज करनेवाला। चिकित्सक।

दिरिस*†–संज्ञा पु० दे० "हृदय"।
दिल–संज्ञा पु० [फा०] १ कलेजा। हृदय। २ मन। चित्त। हृदय। जी।
मुहा०–दिल कड़ा करना = हिम्मत बाँधना। साहस करना। दिल का कँवल खिलना = चित्त प्रसन्न होना। मन में आनंद होना। दिल गवाही देना = मन में किसी बात की संभावना या औचित्य का निश्चय होना। दिल का बादशाह = १ बहुत बड़ा उदार। २ मनमौजी लहरी। दिल के फफोले फोड़ना = भली-बुरी सुनाकर अपना जी ठंढा करना। दिल जमना = १ किसी काम में चित्त लगना। ध्यान या जी लगना। २ संतुष्ट होना। जी भरना। दिल ठिकाने होना = मन में शांति, संतोष या धैर्य होना। चित्त स्थिर होना। दिल देना = आशिक होना। प्रेम करना। दिल बुझना = चित्त में किसी प्रकार का उत्साह या उमंग न रह जाना। दिल में फरक आना = सद्भाव में अंतर पड़ना। मन-मोटाव होना। दिल से = १ जी लगाकर। अच्छी तरह। ध्यान देकर। २ अपने मन से। अपनी इच्छा से। दिल से दूर करना = भुला देना। विस्मरण करना। ध्यान छोड़ देना। दिल ही दिल में = चुपके चुपके। मन ही मन।
(शेष मुहावरों के लिए देखो 'जी' और "कलेजा" के मुहावरे।)
३ साहस। दम। ४ प्रवृत्ति। इच्छा।
दिलगीर–वि० [फा०] [संज्ञा दिलगीरी] १ उदास। २ दुखी।
दिलचला–वि० [फा० दिल + हिं० चलना] १ साहसी। हिम्मतवाला। दिलेर। २ वीर। बहादुर।
दिलचस्प–वि० [फा०] [संज्ञा दिलचस्पी] जिसमें जी लगे। मनोहर। चित्ताकर्षक।
दिलजमई–संज्ञा स्त्री० [फा० दिल + अ० जमअ + ई (प्रत्य०)] इतमीनान। तसल्ली।
दिलजला–वि० [फा० दिल + हिं० जलना] जिसके चित्त को बहुत कष्ट पहुँचा हो।
दिलदार–वि० [फा०] [संज्ञा दिलदारी] १ उदार। दाता। २ रसिक। ३ प्रेमी। प्रिय।
दिलबर–वि० [फा०] प्यारा। प्रिय।
दिलरुबा–संज्ञा पु० [फा०] वह जिससे प्रेम किया जाय। प्यारा।
दिलवाना–क्रि० स० दे० "दिलाना"।
दिलहा–संज्ञा पु० दे० "दिल्ली"।
दिलाना–क्रि० स० [हिं० देना का प्रे०] दूसरे को देने में प्रवृत्त करना। दिलवाना।
दिलावर–वि० [फा०] [संज्ञा दिलावरी] १ शूर। बहादुर। २ उत्साही। साहसी।
दिलासा–संज्ञा पु० [फा० दिल + हिं० आसा] तसल्ली। ढारस। आश्वासन। धैर्य।
यौ०—दम-दिलासा = १ तसल्ली। धैर्य। २ दम-बुत्ता। धोखा। फरेब।
दिली–वि० [फा० दिल + ई (प्रत्य०)] १ हृदय या दिल संबंधी। हार्दिक। २ अत्यंत घनिष्ठ। अभिन्नहृदय। जिगरी।
दिलीप–संज्ञा पु० [सं०] इक्ष्वाकुवंशी एक राजा जो वाल्मीकि के अनुसार राजा सगर के परपोते, भगीरथ के पिता और रघु के परदादा थे, किंतु रघुवंश के अनुसार इन्हीं राजा दिलीप की स्त्री सुदक्षिणा के गर्भ से राजा रघु उत्पन्न हुए थे।
दिलेर–वि० [फा०] [संज्ञा दिलेरी] १ बहादुर। शूर। वीर। २ साहसी।
दिल्लगी–संज्ञा स्त्री० [फा० दिल + हिं० लगना] १ दिल लगाने की क्रिया या भाव। २ केवल चित्त विनोद या हँसने हँसाने की बात। ठट्ठा। ठठोली। मजाक। मखौल।
मुहा० किसी बात की दिल्लगी उड़ाना = (किसी बात को) असमीचीन और मिथ्या ठहराने के लिए (उसे) हँसी में उड़ा देना। उपहास करना।
दिल्लगीबाज–संज्ञा पु० [हिं० दिल्लगी + फा० बाज] हँसी दिल्लगी करनेवाला। मसखरा।
दिल्ला–संज्ञा पु० [देश०] किवाड़ के पल्ले में लकड़ी का वह चौखटा जो शोभा के लिए बना या जड़ दिया जाता है। आईना।
दिव–संज्ञा पु० [सं०] १ स्वर्ग। २ आकाश। ३ वन। ४ दिन।
दिवराज–संज्ञा पु० [सं०] इंद्र।
दिवस–संज्ञा पु० [सं०] दिन। रोज।

दिवस-अंध*–संज्ञा पुं० दे० "दिवांध"।
दिवस्पति–संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।
दिवांध–वि० [सं०] जिसे दिन में न सूझे। जिसे दिनौंधी हो।
संज्ञा पुं० १. दिनौंधी का रोग। २. उल्लू।
दिवा–संज्ञा पुं० [सं०] १. दिन। दिवस। २. बाईस अक्षरों का एक वर्णवृत्त। मालिनी।
दिवाकर–संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।
दिवाना†–संज्ञा पुं० दे० "दीवाना"।
*‡क्रि० स० दे० "दिलाना"।
दिवाभिसारिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जो दिन के समय अपने प्रेमी से मिलने के लिये संकेत-स्थान में जाय।
दिवाल–वि० [हिं० देना + वाल (प्रत्य०)] जो देता हो। देनेवाला।
†संज्ञा स्त्री० दे० "दीवार"।
दिवाला–संज्ञा पुं० [हिं० दिया + बालना = जलाना] १. वह अवस्था जिसमें मनुष्य के पास अपना ऋण चुकाने के लिये कुछ न रह जाय। टाट उलटना।
मुहा०—दिवाला निकलना = दिवाला होना। दिवाला मारना = दिवालिया बन जाना। ऋण चुकाने में असमर्थ हो जाना।
२. किसी पदार्थ का बिलकुल न रह जाना।
दिवालिया–वि० [हिं० दिवाला + इया (प्रत्य०)] जिसके पास ऋण चुकाने के लिये कुछ न बच गया हो।
दिवाली–संज्ञा स्त्री० दे० "दीवाली"।
दिवैया–वि० [हिं० देना + वैया (प्रत्य०)] देनेवाला। जो देता हो।
दिवोदास–संज्ञा पुं० चंद्रवंशी राजा भीमरथ के एक पुत्र जो काशी के राजा थे और धन्वंतरि के अवतार माने जाते हैं।
दिवोल्का–संज्ञा स्त्री० [सं०] दिन के समय आकाश से गिरनेवाला पिंड या उल्का।
दिवौका–संज्ञा पुं० [सं० दिवौकस्] १. वह जो स्वर्ग में रहता हो। २. देवता।
दिव्य–वि० [सं०] १. स्वर्ग से संबंध रखनेवाला। स्वर्गीय। २. आकाश से संबंध रखनेवाला। अलौकिक। ३. प्रकाशमान। चमकीला। ४. खूब साफ़ या सुंदर।
संज्ञा पुं० [सं०] १. यव। जौ। २. तत्त्ववेत्ता। ३. तीन प्रकार के केतुओं में से एक। ४. आकाश में होनेवाला एक प्रकार का उत्पात। ५. तीन प्रकार के नायकों में से एक। वह नायक जो स्वर्गीय या अलौकिक हो। जैसे—इंद्र, राम। ६. व्यवहार या न्यायालय में प्राचीन काल की एक प्रकार की परीक्षा जिससे किसी मनुष्य का अपराधी या निरपराध होना सिद्ध होता था। ये परीक्षाएँ नौ प्रकार की होती थीं—घट, अग्नि, उदक, विष, कोष, तंडुल, तप्तमाषक, फूल तथा धर्मज। ७. शपथ, विशेषतः देवताओं आदि की शपथ। सौगंध। क़सम।
दिव्यचक्षु–संज्ञा पुं० [सं० दिव्यचक्षुस्] १. ज्ञानचक्षु। २. अंधा। ३. चश्मा। ऐनक।
दिव्यता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दिव्य का भाव। २. देवभाव। ३. सुंदरता। उत्तमता।
दिव्यदृष्टि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अलौकिक दृष्टि जिससे गुप्त, परोक्ष अथवा अंतरिक्ष पदार्थ दिखाई दें। २. ज्ञान-दृष्टि।
दिव्यरथ–संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं का विमान।
दिव्यसूरि–संज्ञा पुं० [सं०] रामानुज संप्रदाय के बारह आचार्य जिनके नाम ये हैं—कसार, भूत, महत्, भक्तिसार, शठारि, कुलशेखर, विष्णुचित्त, भक्तांघ्रिरेणु, मुनिवाह, चतुष्कविंद्र, रामानुज और गोदा देवा या मधुकर कवि।
दिव्यांगना–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. देववधू। २. अप्सरा।
दिव्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] तीन प्रकार की नायिकाओं में से एक। स्वर्गीय या अलौकिक नायिका। जैसे—पार्वती, सीता आदि।
दिव्यादिव्य–संज्ञा पुं० [सं०] तीन प्रकार के नायकों में से एक। वह मनुष्य या इहलौकिक नायक जिसमें देवताओं के भी गुण हों। जैसे—नल, अभिमन्यु।
दिव्यादिव्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] तीन प्रकार

की नायिकाओं में से एक। वह इहलौकिक नायिका जिसमें स्वर्गीय स्त्रियों के भी गुण हों। जैसे—दमयंती, उर्वशी आदि।
दिव्यास्त्र–संज्ञा पु० [सं०] १ देवताओं का दिया हुआ हथियार। २ मंत्र द्वारा चलनेवाला हथियार।
दिव्योदक–संज्ञा पु० [सं०] वर्षा या जल। पानी।
दिश्–संज्ञा स्त्री० [सं०] दिशा। दिक्।
दिशा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नियत स्थान के अतिरिक्त शेष विस्तार। ओर। तरफ। २ क्षितिज वृत्त के किए हुए चार कल्पित विभागों में से किसी एक विभाग की ओर का विस्तार। ये चार विभाग पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण कहलाते हैं। प्रत्येक दो दिशाओं के बीच में एक कोण भी होता है। इनके सिवा एक ऊर्ध्व या सिर के ऊपर की ओर दूसरी अध या पैर के नीचे की ओर भी मानी जाती है। ३ दस की संख्या।
दिशाभ्रम–संज्ञा पु० [सं०] दिशाओं के संबंध में भ्रम होना। दिक्भ्रम।
दिशाशूल–संज्ञा पु० दे० 'दिक्शूल"।
दिशि–संज्ञा स्त्री० दे० 'दिशा"।
दिष्ट–संज्ञा पु० [सं०] १ भाग्य। २ उपदेश। ३ दारुहलदी। ४ काल।
दिष्टबंधक–संज्ञा पु० [सं० दृष्टि+बंधक] वह रेहन जिसमें चीज पर रुपये देनेवाले का कोई कब्जा न हो, उसे सिर्फ सूद मिलता रहे।
दिष्टि*–संज्ञा स्त्री० दे० "दृष्टि"।
दिसंतर*†–संज्ञा पु० [सं० देशांतर] देशांतर। विदेश। परदेश।
क्रि० वि० बहुत दूर तक।
दिस*†–संज्ञा स्त्री० दे० 'दिशा"।
दिसना*†–क्रि० अ० दे० "दिखना"।
दिसा–संज्ञा स्त्री० दे० 'दिशा'।
†संज्ञा स्त्री० [सं० दिशा=ओर] मल त्याग। पैखाना। झाड़ा फिरना।
दिसादाह*†–संज्ञा पु० दे० 'दिग्दाह'।
दिसावर–संज्ञा पु० [सं० देशांतर] दूसरा देश। परदेस। विदेश।
दिसावरी–वि० [हिं० दिसावर+ई (प्रत्य०)] विदेश से आया हुआ। बाहरी। (माल)
दिसि*†–संज्ञा स्त्री० दे० "दिशा"।
दिसिटि*†–संज्ञा स्त्री० दे० "दृष्टि"।
दिसिदुरद*†–संज्ञा पु० दे० "दिग्गज"।
दिसिनायक*†–संज्ञा पु० दे० "दिक्पाल"।
दिसिप*–संज्ञा पु० दे० "दिक्पाल"।
दिसिराज*–संज्ञा पु० दे० "दिक्पाल"।
दिसैया*†–वि० [हिं० दिसना+ऐया (प्रत्य०)] १ देखनेवाला। २ दिखानेवाला।
दिस्टी*–संज्ञा स्त्री० दे० "दृष्टि"।
दिस्टीबंध–संज्ञा पु० [सं० दृष्टिबंधन] नजरबंद। जादू। इंद्रजाल।
दिस्ता–संज्ञा पु० दे० "दस्ता"।
दिहंदा–वि० [फ़ा०] दाता। देनेवाला।
दिहाड़ा–संज्ञा पु० [हिं० दि+हाड़ा (प्रत्य०)] १ दुर्गत। बुरी हालत। २ दिन।
दिहात–संज्ञा स्त्री० दे० "देहात"।
दीआ–संज्ञा पु० दे० "दीया"।
दीक्षक–संज्ञा पु० [सं०] १ दीक्षा देनेवाला गुरु। २ शिक्षक।
दीक्षण–संज्ञा पु० [सं०] [वि० दीक्षित] दीक्षा देने की क्रिया।
दीक्षांत–संज्ञा पु० [सं०] वह अवभृथ यज्ञ जो किसी यज्ञ के समाप्त होने में उसकी त्रुटि आदि के दोष की शांति के लिये हो।
दीक्षा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सोमयागादि का संकल्पपूर्वक अनुष्ठान। यजन। २ गुरु या आचार्य्य का नियमपूर्वक मंत्रोपदेश। मंत्र की शिक्षा जो गुरु दे और शिष्य ग्रहण करे। ३ उपनयन-संस्कार जिसमें आचार्य्य गायत्री मंत्र का उपदेश देता है। ४ वह मंत्र जिसका उपदेश गुरु करे। गुरुमंत्र।
दीक्षागुरु–संज्ञा पु० [सं०] मंत्रोपदेष्टा गुरु।
दीक्षित–वि० [सं०] १ जिसने सोमयागादि का संकल्पपूर्वक अनुष्ठान किया हो। २ जिसने आचार्य से दीक्षा या गुरु से मंत्र

लिया हो।
संज्ञा पुं० ब्राह्मणों का एक भेद।
दीखना–क्रि० अ० [हिं० देखना] दिखाई देना। देखने में आना। दृष्टिगोचर होना।
दीघी–संज्ञा स्त्री० [सं० दीर्घिका] बावली। पोखरा। तालाब।
दीच्छा*–संज्ञा स्त्री० दे० "दीक्षा"।
दीठ–संज्ञा स्त्री० [सं० दृष्टि] १. देखने की वृत्ति या शक्ति। दृष्टि। २. टक। दृक्-पात। नजर। निगाह।
(मुहावरे के लिये दे० "दृष्टि" के मुहावरे।) ३. आँख की ज्योति का प्रसार जिससे वस्तुओं के रूप, रंग आदि का बोध होता है। दृक्पथ। ४. अच्छी वस्तु पर ऐसी दृष्टि जिसका प्रभाव बुरा पड़े। नजर। मुहा०—दीठ उतारना या झाड़ना=मंत्र के द्वारा बुरी दृष्टि का प्रभाव दूर करना। दीठ खा जाना=किसी की बुरी दृष्टि के सामने पड़ जाना। टोक में आना। दीठ जलाना=नजर उतारने के लिये राई-नोन या कपड़ा जलाना। ५. देखने के लिये खुली हुई आँख। ६. देख-भाल। देख-रेख। निगरानी। ७. परख। पहचान। तमीज़। ८. कृपा-दृष्टि। मिहरबानी की नजर। ९. आशा की दृष्टि। उम्मीद। १०. विचार। संकल्प।
दीठबंदी–संज्ञा स्त्री० [हिं० दीठ+बंध] इंद्रजाल की ऐसी माया जिससे लोगों की ओर का और दिखाई दे। नजरबंदी। जादू।
दीठवंत–वि० [सं० दृष्टि+वंत] जिसे दिखाई दे। सुझाखा।
दीदा–संज्ञा पुं० [फ़ा० दीदः] १. दृष्टि। नजर। २. आँख। नेत्र।
मुहा०—दीदा लगना=जी लगना। ध्यान जमना। दीदे का पानी ढल जाना=निर्लज्ज हो जाना। दीदे निकालना=क्रोध की दृष्टि से देखना। दीदे फाड़कर देखना=अच्छी तरह आँख खोलकर देखना।
३. अनुचित साहस। ढिठाई।
दीदार–संज्ञा पुं० [फ़ा०] दर्शन। देखा-देखी।
दीदी–संज्ञा स्त्री० [पुं० हिं० दादा=बड़ा भाई] बड़ी बहिन को पुकारने का शब्द।
दीधिति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सूर्य्य, चंद्रमा आदि की किरण। २. उँगली।
दीन–वि० [सं०] १. जिसकी दशा हीन हो। दरिद्र। ग़रीब। २. दुःखित। संतप्त। कातर। ३. जिसका मन मरा हुआ हो। उदास। खिन्न। ४. दुःख या भय से अधीनता प्रकट करनेवाला। नम्र। विनीत।
संज्ञा पुं० [अ०] मत। मजहब।
दीनता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दरिद्रता। ग़रीबी। २. नम्रता। विनीत भाव।
दीनताई*–संज्ञा स्त्री० दे० "दीनता"।
दीनत्व–संज्ञा पुं० [सं०] दीनता।
दीनदयालु–वि० [सं०] दीनों पर दया करनेवाला।
संज्ञा पुं० ईश्वर का एक नाम।
दीनदार–वि० [अ० दीन+फ़ा० दार] [संज्ञा दीनदारी] अपने धर्म पर विश्वास रखनेवाला। धार्मिक।
दीन-दुनिया–संज्ञा स्त्री० [अ० दीन + दुनिया] यह लोक और परलोक।
दीनबंधु–संज्ञा पुं० [सं०] १. दुखियों का सहायक। २. ईश्वर का एक नाम।
दीनानाथ–संज्ञा पुं० [सं० दीन + नाथ] १. दीनों का स्वामी या रक्षक। २. ईश्वर।
दीनार–संज्ञा पुं० [सं०] १. स्वर्ण-भूषण। सोने का गहना। २. निष्क की तौल। ३. स्वर्णमुद्रा। मोहर।
दीप–संज्ञा पुं० [सं०] १. दीया। चिराग़। २. दस मात्राओं का एक छंद।
संज्ञा पुं० दे० "द्वीप"।
दीपक–संज्ञा पुं० [सं०] १. दीया। चिराग़। यौ०—कुलदीपक=वंश को उजाला करनेवाला। २. एक अर्थालंकार जिसमें प्रस्तुत (जो वर्णन का विषय हो) और अप्रस्तुत (जो वर्णन का उपस्थित विषय न हो और उपमान आदि हो) का एक ही धर्म्म कहा जाता है अथवा बहुत सी क्रियाओं का एक ही कारक होता है। ३. संगीत में छः रागों

में से दूसरा राग। ४. केसर। कुकुम। विo [सo][स्त्रीo दीपिका] १. प्रकाश करनेवाला। उजाला फैलानेवाला। २. पाचन की अग्नि को तेज करनेवाला। ३. शरीर में वेग या उमग लानेवाला। उत्तेजक।

दीपकमाला–सज्ञा स्त्रीo [सo] १. एक वर्ण-वृत्त। २. दीपक अलकार का एक भेद, जिसमें कई दीपक एक साथ आते हैं।

दीपकवृक्ष–सज्ञा पुंo [सo] १. वह घड़ी दीयट जिसमें दीए रखने के लिये कई शाखाएँ हों। २. झाड़।

दीपकावृत्ति–सज्ञा स्त्रीo [सo] दीपक अलकार का एक भेद।

दीपत*–सज्ञा स्त्रीo [सo दीप्ति] १. काति। चमक। प्रभा। २. शोभा। ३. कीर्ति।

दीपदान–सज्ञा पुo [सo] १. किसी देवता के सामने दीपक जलाने का काम, जो पूजन का एक अग समझा जाता है। २. एक कृत्य जिसमें मरणासन्न व्यक्ति के हाथ से आटे के जलते हुए दीए का सकल्प कराया जाता है।

दीपध्वज–सज्ञा पुo [सo] काजल।

दीपन–सज्ञा पुo [सo][विo दीपनीय, दीपित, दीप्ति, दीप्य] १. प्रकाश के लिये जलाने का काम। प्रकाशन। २. भूख को उभारना। ३ आवेग उत्पन्न करना। उत्तेजन। विo दीपन करनेवाला। जठराग्नि-वर्द्धक। सज्ञा पुo मत्र के उन दस सस्कारों में से एक जिनके बिना मत्र सिद्ध नहीं होता।

दीपना*–क्रिo अo [सo दीपन] प्रकाशित होना। चमकना। जगमगाना। क्रिo सo प्रकाशित करना। चमकाना।

दीपमाला–सज्ञा स्त्रीo [सo] १. जलते हुए दीपों की पंक्ति। २. दीपदान या आरती के लिये जलाई हुई वत्तियों का समूह।

दीपमालिका–सज्ञा स्त्रीo [सo] १. दीप-दान, आरती या शोभा के लिये दीयों की पक्ति। २. दीवाली।

दीपमाली–सज्ञा स्त्रीo देo "दीवाली"।

दीपशिखा–सज्ञा स्त्रीo [सo] दीये की टेम। चिराग की लौ। प्रदीपज्वाला।

दीपावलि–सज्ञा स्त्रीo देo "दीपमालिका"।

दीपिका–सज्ञा स्त्रीo [सo] छोटा दीया। विo स्त्रीo उजाला फैलानेवाली।

दीपित–विo [सo] १. प्रकाशित। प्रज्वलित। २. चमकता या जगमगाता हुआ। ३. उत्तेजित।

दीपोत्सव–सज्ञा पुo [सo] दीवाली।

दीप्त–विo [सo] १. प्रज्वलित। जलता हुआ। २. जगमगाता हुआ। चमकीला।

दीप्ति–सज्ञा स्त्रीo [सo] १. प्रकाश। उजाला। रोशनी। २. प्रभा। आभा। चमक। द्युति। ३. काति। शोभा। छवि। ४. ज्ञान का प्रकाश।

दीप्तिमान्–विo [सo दीप्तिमत्][स्त्रीo दीप्तिमती] १. दीप्तियुक्त। चमकता हुआ। २. कातियुक्त। शोभायुक्त।

दीप्य–विo [सo] १. जो जलाया जाने को हो। २. जो जलाने योग्य हो।

दीप्यमान–विo [सo] चमकता हुआ।

दीबो–सज्ञा पुo देo "देना"।

दीमक–सज्ञा स्त्रीo [फाo] चींटी की तरह का एक छोटा सफेद कीड़ा। यह लकड़ी, कागज आदि में लगकर उसे खोखला और नष्ट कर देता है। बल्मीक।

दीयट–सज्ञा पुo देo "दीवट"।

दीया–सज्ञा पुo [सo दीपक] १. उजाले के लिये जलाई हुई बत्ती। चिराग। दीपक। मुहाo—दीया ठढा करना=दीया बुझाना। (किसी के घर का) दीया ठढा होना=किसी के मरने से कुल में अधकार छा जाना। दीया बढ़ाना = दीया बुझाना। दीया-बत्ती करना=रोशनी का सामान करना। चिराग जलाना। दीया लेकर ढूँढ़ना=चारों ओर हैरान होकर ढूँढ़ना। बड़ी छान-बीन से खोजना। २. [स्त्रीo अल्पाo दिवली, दियली] बत्ती जलाने का छोटा कसोरा।

दीयासलाई–सज्ञा स्त्रीo [हिंo दीया+सलाई] लकड़ी की छोटी सलाई या सींक जिसका एक सिरा गधक आदि लगी रहने के

कारण रगड़ने से जल उठता है।

दीरघ*–वि० दे० "दीर्घ"।

दीर्घ–वि० [सं०] १. आयत। लंबा। २. बड़ा। (देश और काल दोनों के लिये) संज्ञा पुं० गुरु या द्विमात्रिक वर्ण। ह्रस्व का उलटा। जैसे—आ, ई, ऊ।

दीर्घकाय–वि० [सं०] बड़े डील-डौल का।

दीर्घजीवी–वि० [सं० दीर्घजीविन्] जो बहुत दिनों तक जीए। बहुत काल तक जीनेवाला।

दीर्घतमा–संज्ञा पुं० [सं० दीर्घतमस्] एक जन्मांध ऋषि जो उतथ्य के पुत्र थे। इन्हीं ने अपनी स्त्री के अनुचित व्यवहार से अप्रसन्न होकर यह मर्यादा बाँधी थी कि कोई स्त्री एक के बाद दूसरा पति न कर सकेगी।

दीर्घदर्शिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] परिणाम आदि का विचार करनेवाली बुद्धि। दूरदर्शिता।

दीर्घदर्शी–वि० [सं० दीर्घदर्शिन्] दूर तक की बात सोचनेवाला। दूरदर्शी।

दीर्घदृष्टि–वि० दे० "दीर्घदर्शी"।

दीर्घनिद्रा–संज्ञा स्त्री० [सं०] मृत्यु। मौत।

दीर्घनिःश्वास–संज्ञा पुं० [सं०] लंबी साँस जो दुःख के आवेग के कारण ली जाती है।

दीर्घबाहु–वि० [सं०] जिसकी भुजाएँ लंबी हों।

दीर्घलोचन–वि० [सं०] बड़ी आँखोंवाला।

दीर्घश्रुत–वि० [सं०] १. जो दूर तक सुनाई पड़े। २. जिसका नाम दूर तक विख्यात हो।

दीर्घसूत्र–वि० दे० "दीर्घसूत्री"।

दीर्घसूत्रता–संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रत्येक कार्य में विलंब करने का स्वभाव।

दीर्घसूत्री–वि० [सं० दीर्घसूत्रिन्] हर एक काम में जरूरत से ज्यादा देर लगानेवाला।

दीर्घस्वर–संज्ञा पुं० [सं०] द्विमात्रिक स्वर।

दीर्घायु–वि० [सं०] बहुत दिनों तक जीनेवाला। दीर्घजीवी। चिरजीवी।

दीर्घिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] बावली। छोटा जलाशय। छोटा तालाव।

दीवट–संज्ञा स्त्री० [सं० दीपस्थ] पीतल, लकड़ी आदि का आधार जिस पर दीया रखा जाता है। दीपकाधार। चिरागदान।

दीवा–संज्ञा पुं० [सं० दीपक] दीया।

दीवान–संज्ञा पुं० [अ०] १. राजा या बादशाह के बैठने की जगह। राजसभा। कचहरी। २. राज्य का प्रबंध करनेवाला मंत्री। वजीर। प्रधान। ३. गजलों का संग्रह।

दीवानआम–संज्ञा पुं० [अ०] १. ऐसा दरबार जिसमें राजा या बादशाह से सब लोग मिल सकते हों। २. वह स्थान जहाँ आम दरबार लगता हो।

दीवानखाना–संज्ञा पुं० [फा०] घर का वह बाहरी हिस्सा जहाँ बड़े आदमी बैठते और सब लोगों से मिलते हैं। बैठक।

दीवानखास–संज्ञा पुं० [फा० + अ०] १. ऐसी सभा जिसमें राजा या बादशाह मंत्रियों तथा चुने हुए प्रधान लोगों के साथ बैठता है। खास दरबार। २. वह जगह जहाँ खास दरबार होता हो।

दीवाना वि० [फ़ा०] [स्त्री० दीवानी] पागल

दीवानापन–संज्ञा पुं० [फा० दीवाना + पन (प्रत्य०)] पागलपन। सिड़ीपन। विक्षिप्तता।

दीवानी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. दीवान का पद। २. वह न्यायालय जो संपत्ति आदि संबंधी स्वत्वों का निर्णय करे।

दीवार–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. पत्थर, ईंट, मिट्टी आदि को नीचे ऊपर रखकर उठाया हुआ परदा जिससे किसी स्थान को घेरकर मकान आदि बनाते हैं। भीत। २. किसी वस्तु का घेरा जो ऊपर उठा हो।

दीवारगीर–संज्ञा पुं० [फा०] दीया आदि रखने का आधार जो दीवार में लगाया जाता है।

दीवाल–संज्ञा स्त्री० दे० "दीवार"।

दीवाली–संज्ञा स्त्री० [सं० दीपावली] कातिक की अमावास्या को होनेवाला एक उत्सव जिसमें संध्या के समय घर में भीतर-बाहर बहुत से दीपक जलाकर पंक्तियों में रखे जाते हैं और लक्ष्मी का पूजन होता है। इस दिन लोग जूआ भी खेलते हैं।

दीसना–क्रि० अ० [सं० दृश = देखना]

दिखाई पड़ना। दृष्टिगोचर होना।
दीह*–वि० [सं० दीर्घ] लंबा। बड़ा।
दुंद–संज्ञा पुं० [सं० द्वंद्व] १ दो मनुष्यों के बीच में होनेवाला युद्ध या झगड़ा। २. उत्पात। उपद्रव। ३ जोड़ा। युग्म।
संज्ञा पुं० [सं० दुंदुभि] नगाड़ा।
दुंदुभि–संज्ञा पुं० [सं०] १ वरुण। २ विष। ३ एक राक्षस जिसे बालि ने मारकर ऋष्यमूक पर्वत पर फेंका था।
संज्ञा स्त्री० [सं०] नगाड़ा। धौंसा।
दुंदुभी–संज्ञा स्त्री० दे० "दुंदुभि"।
दुंदुह*–संज्ञा पुं० [सं० डुंडुभ] पानी का साँप। डेंडहा।
दुंबा–संज्ञा पुं० [फा० दुंबाल] एक प्रकार का मेढ़ा, जिसकी दुम चक्की के पाट की तरह गोल और भारी होती है।
दुःकंत*–संज्ञा पुं० दे० "दुष्यंत"।
दुःख–संज्ञा पुं० [सं०] १ ऐसी अवस्था जिससे छुटकारा पाने की इच्छा प्राणियों में स्वाभाविक हो। सुख का विपरीत भाव। तकलीफ। कष्ट। क्लेश। (सांख्य में दुःख तीन प्रकार के माने गए हैं–आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक।)
मुहा०—दुःख उठाना, पाना या भोगना = कष्ट सहना। तकलीफ सहना। दुःख देना या पहुँचाना = कष्ट पहुँचाना। दुःख बँटाना = सहानुभूति करना। कष्ट या संकट के समय साथ देना। दुःख भरना = कष्ट या संकट के दिन काटना।
२ संकट। आपत्ति। विपत्ति। ३ मानसिक कष्ट। खेद। रंज। ४ पीड़ा। व्यथा। दर्द। ५ व्याधि। रोग। बीमारी।
दुःखद, दुःखदाता–वि० [सं० दुःखदातृ] दुःख पहुँचानेवाला।
दुःखदायक–वि०[सं०] [स्त्री०दुःखदायिका] दुःख या कष्ट पहुँचानेवाला।
दुःखदायी–वि० दे० "दुःखदायक"।
दुःखप्रद–संज्ञा पुं० [सं०] दुःखद।
दुःखमय–वि० [सं०] क्लेश से भरा हुआ।
दुःखांत–वि० [सं०] १ जिसके अंत में दुःख हो। २ जिसके अंत में दुःख का वर्णन हो। जैसे, दुःखांत नाटक।
संज्ञा पुं० १ दुःख का अंत। क्लेश की समाप्ति। २ दुःख की पराकाष्ठा।
दुःखित–वि० [सं०] जिसे कष्ट या तकलीफ हो। पीड़ित। क्लेशित।
दुःखिनी–वि० स्त्री० [सं०] जिस पर दुःख पड़ा हो। दुखिया।
दुःखी–वि०[सं० दुःखिन्] [स्त्री० दुःखिनी] जिसे दुःख हो। जो कष्ट में हो।
दुःशला–संज्ञा स्त्री० [सं०] गांधारी के गर्भ से उत्पन्न धृतराष्ट्र की कन्या, जो सिंधु देश के राजा जयद्रथ को ब्याही थी।
दुःशासन–वि० [सं०] जिस पर शासन करना कठिन हो।
संज्ञा पुं० धृतराष्ट्र के सौ लड़कों में से एक, जो दुर्योधन का अत्यंत प्रेमपात्र और मंत्री था। यह अत्यंत क्रूर स्वभाव का था। पांडव लोग जब जूए में हार गये थे, तब यही द्रौपदी को पकड़कर सभास्थल में लाया था।
दुःशील–वि० [सं०] बुरे स्वभाव का।
दुःशीलता–संज्ञा स्त्री० [सं०] दुष्टता।
दुःसंधान–संज्ञा पुं० [सं०] केशवदास के अनुसार काव्य में एक रस, जो उस स्थल पर होता है, जहाँ एक तो अनुकूल होता है और दूसरा प्रतिकूल, एक तो मेल की बात करता है, दूसरा बिगाड़ की।
दुःसह–वि० [सं०] जिसका सहन करना कठिन हो। जो कष्ट से सहा जाय।
दुःसाध्य–वि० [सं०] १ जिसका करना कठिन हो। २ जिसका उपाय कठिन हो।
दुःसाहस–संज्ञा पुं० [सं०] १ ऐसा साहस जिसका परिणाम कुछ न हो, या बुरा हो। व्यर्थ का साहस। २ ऐसी बात करने की हिम्मत जो अच्छी न समझी जाती हो या हो न सकती हो। अनुचित साहस। ढिठाई। धृष्टता।
दुःसाहसी–वि० [सं०] दुःसाहस करनेवाला।
दुःस्वप्न–संज्ञा पुं० [सं०] ऐसा सपना

जिसका फल बुरा माना जाता हो।
दुःस्वभाव–संज्ञा पुं० [सं०] बुरा स्वभाव। दुःशीलता। बदमिजाजी।
वि० दुःशील। दुष्ट स्वभाव का।
दु–वि० [हिं० दो] "दो" शब्द का संक्षिप्त रूप जो समास बनाने के काम में आता है। जैसे—दुविधा, दुचित्ता।
दुअन–संज्ञा पुं० दे० "दुवन"।
दुआ–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. प्रार्थना। दरख्वास्त। विनती। याचना।
मुहा०—दुआ माँगना = प्रार्थना करना।
२. आशीर्वाद। असीस।
मुहा०—दुआ लगना = आशीर्वाद का फलीभूत होना।
दुआदस*‡–संज्ञा पुं० दे० "द्वादश"।
दुआबा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] दो नदियों के बीच का प्रदेश।
दुआर†–संज्ञा पुं० [सं० द्वार] द्वार।
दुआरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० दुआर] छोटा दरवाजा।
दुआल–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. चमड़ा। २. चमड़े का तसमा। ३. रिकाब का तसमा।
दुआली–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०,दुवाल=तसमा] चमड़े का वह तसमा जिससे कमेरे और बढ़ई खराद घुमाते हैं।
दुइ†–वि० दे० "दो"।
दुइज†*–संज्ञा स्त्री० [सं० द्वितीय] पाख की दूसरी तिथि। द्वितीया। दूज।
संज्ञा पुं० [सं० द्विज] दूज का चाँद। द्वितीया का चंद्रमा।
दुऊ*–वि० दे० "दोनों"।
दुकड़ा–संज्ञा पुं० [सं० द्विक्+ड़ा (प्रत्य०)] [स्त्री० दुकड़ी] १. वह वस्तु जो एक साथ या एक में लगी हुई दो दो हों। जोड़ा। २. वह जिसमें कोई वस्तु दो दो हो या जिसमें किसी वस्तु का जोड़ा हो। ३. एक पैसे का चौथाई भाग। दो दमड़ी। छदाम।
दुकड़ी–वि० स्त्री० [हिं० दुकड़ा] जिसमें कोई वस्तु दो दो हो।
संज्ञा स्त्री० १. चारपाई की वह बुनावट जिसमें दो दो बाध एक साथ बुने जाते हैं। २. दो बूटियोंवाला ताश का पत्ता। दुक्की। ३. दो घोड़ों की बग्घी।
दुकान–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] वह स्थान जहाँ बेचने के लिये चीजें रखी हों और जहाँ ग्राहक जाकर उन्हें खरीदते हों। सौदा बिकने का स्थान। हट्ट। हट्टी।
मुहा०—दुकान बढ़ाना = दुकान बंद करना। दुकान लगाना=१.दुकान का असबाब फैलाकर यथास्थान बिक्री के लिये रखना। २. बहुत सी चीजों को इधर-उधर फैलाकर रख देना।
दुकानदार–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. दुकान पर बैठकर सौदा बेचनेवाला। दुकानवाला। २. वह जिसने अपनी आय के लिये कोई ढोंग रच रखा हो।
दुकानदारी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. दुकान या बिक्री-बट्टे का काम। दुकान पर माल बेचने का काम। २. ढोंग रचकर रुपया पैदा करने का काम।
दुकाल–संज्ञा पुं० [सं० दुष्काल] अन्न-कष्ट का समय। अकाल। दुर्भिक्ष।
दुकूल–संज्ञा पुं० [सं०] १. सन या तीसी के रेशे का बना कपड़ा। क्षौम वस्त्र। २. महीन कपड़ा। बारीक कपड़ा। ३. वस्त्र। कपड़ा।
दुकेला–[हिं०दुक्का+एला (प्रत्य०)][स्त्री० दुकेली] जिसके साथ कोई दूसरा भी हो। जो अकेला न हो।
यौ०—अकेला दुकेला = जिसके साथ कोई न हो या एक ही दो आदमी हों।
दुकेले–क्रि० वि० [हिं० दुकेला] किसी के साथ। दूसरे आदमी को साथ लिए हुए।
दुक्कड़–संज्ञा पुं० [हिं० दो+कूँड़] १. तबले की तरह का एक बाजा जो शहनाई के साथ बजाया जाता है। २. एक में जुटी हुई या साथ पटी हुई दो नावों का जोड़ा।
दुक्का–वि० [सं० द्विक] [स्त्री० दुक्की] १. जो एक साथ दो हों। जिसके साथ कोई दूसरा भी हो।
यौ०—इक्का-दुक्का = अकेला-दुकेला।

२. जो जोड़े में हो। जो एक साथ दो हो। (वस्तु)
संज्ञा-पुं० दे० "दुक्की"।

दुक्की-संज्ञा स्त्री० [हिं० दुक्का] ताश का वह पत्ता जिस पर दो बूटियाँ बनी हों।

दुखंडा-वि० [हिं० दो+खंड] जिसमें दो खंड हों। दो मरातिब का। दो-तल्ला।

दुखंत*-संज्ञा पुं० दे० "दुष्यंत"।

दुख-संज्ञा पुं० दे० "दुःख"।

दुखड़ा-संज्ञा पुं० [हिं० दुख+ड़ा (प्रत्य०)] १ वह कथा जिसमें किसी के कष्ट या शोक का वर्णन हो। तकलीफ का हाल।
मुहा०-दुखड़ा रोना = अपने दुःख का वृत्तांत कहना।
२ कष्ट। विपत्ति। मुसीबत।

दुखदाई, दुखदानि*-वि० दे० "दुःखदायी"।

दुखद्वंद*-संज्ञा पुं० [सं० दुःखद्वंद्व] दुःख या उपद्रव। दुःख और आपत्ति।

दुखना-क्रि० अ० [सं० दुःख] (किसी अंग का) पीड़ित होना। दर्द करना। पीड़ा-युक्त होना।

दुखरा*-संज्ञा पुं० दे० "दुखड़ा"।

दुखवना†-क्रि० स० दे० 'दुखाना'।

दुखहाया-वि० दे० "दुःखित"।

दुखाना-क्रि० स० [सं० दुःख] १. पीड़ा देना। कष्ट पहुँचाना। व्यथित करना।
मुहा०-जी दुखाना = मानसिक कष्ट पहुँचाना। मन में दुःख उत्पन्न करना।
२ किसी के मर्मस्थान या पके घाव इत्यादि को छू देना, जिससे उसमें पीड़ा हो।

दुखारा, दुखारी-वि० [हिं० दुख+आर (प्रत्य०)] दुखी। पीड़ित।

दुखार*-वि० दे० 'दुखारा'।

दुखित*-वि० दे० 'दुःखित'।

दुखिया-वि० [हिं० दुख+इया (प्रत्य०)] जिसे किसी प्रकार का दुःख या कष्ट हो। दुखी।

दुखियारा-वि० [हिं० दुखिया] [स्त्री० दुखियारी] १ जिसे किसी बात का दुःख हो। दुखिया। २ रोगी।

दुखी-वि० [सं० दुःखिन्, दुःखी] १. जिसे दुःख हो। जो कष्ट या दुःख में हो। २ जिसके चित्त में खेद उत्पन्न हुआ हो। जिसके दिल में रंज हो। ३ रोगी। बीमार।

दुखीला†-वि० हिं० [दुख+ईला (प्रत्य०)] दुःख अनुभव करनेवाला। दुःखपूर्ण।

दुखौहाँ*-वि० [हिं० दुख+औहाँ] [स्त्री० दुखौहीं] दुःखदायी। दुःख देनेवाला।

दुगई-संज्ञा स्त्री० [देश०] ओसारा। बरामदा।

दुगदुगी-संज्ञा स्त्री० [अनु० धुकधुक] १. वह गड्ढा जो छाती के ऊपर बीचोबीच होता है। धुकधुकी। २ गले में पहनने का एक गहना।

दुगना-वि० [सं० द्विगुण] [स्त्री० दुगनी] किसी वस्तु से उतना और अधिक, जितनी कि वह हो। द्विगुण। दूना।

दुगाड़ा-संज्ञा पुं० [हिं० दो+गाड़=गड्ढा] १ दुनाली बंदूक। २ दोहरी गोली।

दुगासरा-संज्ञा पुं० [सं० दुर्ग+आश्रय] किसी दुर्ग के नीचे या चारों ओर बसा हुआ गाँव।

दुगुण*-वि० दे० "द्विगुण"।

दुगुन*†-वि० दे० "दुगना"।

दुग्ग*-संज्ञा पुं० दे० "दुर्ग"।

दुग्ध-वि० [सं०] १ दुहा हुआ। २. भरा हुआ।
संज्ञा पुं० दूध। पय।

दुग्धी-संज्ञा स्त्री० [सं०] दुधिया नाम की घास। दुद्धी।
वि० [दुग्धिन्] दूधवाला। जिसमें दूध हो।

दुघड़िया-वि० [हिं० दो+घड़ी] दो घड़ी का। जैसे—दुघड़िया मुहूर्त।

दुघड़िया मुहूर्त-संज्ञा पुं० [हिं० दो घड़ी+सं० मुहूर्त] दो दो घड़ियों के अनुसार निकाला हुआ मुहूर्त। द्विघटिका मुहूर्त। (ऐसा मुहूर्त बहुत जल्दी या आवश्यकता के समय निकाला जाता है, और इसमें

वार आदि का विचार नहीं होता।)

दुघरी†–संज्ञा स्त्री० [हिं० दो + घड़ी] दुघड़िया, मुहूर्त।

दुचंद–वि० [फ़ा० दोचंद] दूना। दुगना।

दुचित*–वि० [हिं० दो + चित्त] १. जिसका चित्त एक बात पर स्थिर न हो। अस्थिर चित्त। २. चिंतित। फ़िक्रमंद।

दुचितई†*–संज्ञा स्त्री० [हिं० दुचित] १. चित्त की अस्थिरता। दुबधा। २. खटका। आशंका। चिन्ता।

दुचिताई†*–संज्ञा स्त्री० [हिं० दुचित] १. चित्त की अस्थिरता। दुबधा। सदेह। २. खटका। चिंता। आशंका।

दुचित्ता–वि० [हिं० दो + चित्त] [स्त्री० दुचित्ती] १. जिसका चित्त एक बात पर स्थिर न हो। जो दुबधे में हो। अस्थिर-चित्त। २. संदेह में पड़ा हुआ। ३. जिसके चित्त में खटका हो। चिंतित।

दुज*–संज्ञा पु० दे० "द्विज"।

दुजन्मा*–संज्ञा पु० दे० "द्विजन्मा"।

दुजपति*–संज्ञा पु० दे० "द्विजपति"।

दुजानू–क्रि० वि० [हिं० दो + फ़ा० ज़ानू] दोनों घुटनों के बल। (बैठना)

दुजीह*–संज्ञा पु० दे० "द्विजिह्व"।

दुजेश–संज्ञा पुं० दे० "द्विजेश"।

दुटूक–वि० [हिं० दो + टूक] दो टुकड़ों में किया हुआ। खंडित।

मुहा०—दुटूक बात = थोड़े में कही हुई साफ़ बात। बिना घुमाव-फिराव की स्पष्ट बात। खरी बात।

दुत्–अव्य० [अनु०] १.एक शब्द जो तिरस्कार-पूर्वक हटाने के समय बोला जाता है। दूर हो। २.घृणा या तिरस्कार सूचक शब्द।

दुतकार–संज्ञा स्त्री० [अनु० दुत् + कार] वचन द्वारा किया हुआ अपमान। तिरस्कार। धिक्कार। फटकार।

दुतकारना–क्रि० स० [हिं० दुतकार] १.दुत् दुत् शब्द करके किसी को अपने पास से हटाना। २. तिरस्कृत करना। धिक्कारना।

दुतर्फ़ा–वि० [हिं० दो + अ० तरफ़] [स्त्री० दुतर्फ़ी] दोनों ओर का। जो दोनों ओर हो।

दुतारा–संज्ञा पुं० [हिं० दो + तार] एक बाजा जिसमें दो तार होते हैं।

दुति–संज्ञा स्त्री० दे० "द्युति"।

दुतिमान*–वि० दे० "द्युतिमान्"।

दुतिय*–वि० दे० "द्वितीय"।

दुतिया–संज्ञा स्त्री० [सं० द्वितीया] पक्ष की दूसरी तिथि। दूज।

दुतिवंत*–वि० [हिं० दुति + वंत (प्रत्य०)] १. आभायुक्त। चमकीला। २. सुन्दर।

दुतीय*–वि० दे० "द्वितीय"।

दुतीया*‡–संज्ञा स्त्री० दे० "द्वितीया"।

दुदल–संज्ञा पुं० [सं० द्विदल] १. दाल। २. एक पौधा जिसकी जड़ ओषध के काम में आती है। कानफूल। बरन।

दुदलाना†–क्रि० स० दे० "दुतकारना"।

दुदामी–संज्ञा स्त्री० [हिं० दो + दाम] एक प्रकार का सूती कपड़ा जो मालवे में बनता था।

दुदिला–वि० [हिं० दो + फ़ा० दिल] १. दुबधे में पड़ा हुआ। दुचित्ता। २. खटके में पड़ा हुआ। चिंतित। व्यग्र। घबराया हुआ।

दुद्धी–संज्ञा स्त्री० [सं० दुग्धी] १. जमीन पर फैलनेवाली एक घास जिसके डंठलों में थोड़ी-थोड़ी दूर पर गाँठें होती हैं। इसका व्यवहार औषध में होता है। २. थूहर की जाति का एक छोटा पौधा।

संज्ञा स्त्री० [हिं० दूध] १. खड़िया मिट्टी। २. सारिवा लता। ३. जंगली नील।

दुधमुख*†–वि० [हिं० दूध + मुख] दूध-पीता। दुधमुहाँ।

दुधमुँहाँ–वि० दे० "दुधमुहाँ"।

दुधहाँड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० दूध + हाँड़ी] मिट्टी का वह छोटा बरतन जिसमें दूध रखा या गरम किया जाता है।

दुधाँड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "दुधहाँड़ी"।

दुधार–वि० [हिं० दूध + आर (प्रत्य०)] १. दूध देनेवाली। जो दूध देती हो। २.

जिसमें दूध हो।
वि०, संज्ञा पुं० दे० "दुधारा"।
दुधारा–वि० [हिं० दो + धार] (तलवार, छुरी आदि) जिसमें दोनों ओर धार हो।
संज्ञा पुं० एक प्रकार का खाँड़ा।
दुधारी–वि०स्त्री०[हिं० दूध + आर (प्रत्य०) दूध देनेवाली। जो दूध देती हो।
वि० स्त्री०[हिं० दो + धार] जिसमें दोनों ओर धार हो।
दुधारू†–वि० दे० "दुधार"।
दुधिया–वि०[हिं० दूध + इया (प्रत्य०)] १. दूध मिला हुआ। जिसमें दूध पड़ा हो। २. जिसमें दूध होता हो। ३. दूध की तरह सफेद। सफेद रंग का।
संज्ञा स्त्री०[सं० दुग्धिका] १. दुद्धी नाम की घास। २ एक प्रकार की ज्वार या चरी। ३. खड़िया मिट्टी। ४. कलियारी की जाति का एक विष।
दुधिया पत्थर–संज्ञा पुं० [हिं० दुधिया + पत्थर] १. एक प्रकार का मुलायम सफेद पत्थर जिसके प्याले आदि बनते हैं। २. एक प्रकार का नग या रत्न।
दुधिया विष–संज्ञा पुं०[हिं० दुधिया + विष] कलियारी की जाति का एक विष जिसके सुन्दर पौधे काश्मीर और हिमालय के पश्चिमी भाग में मिलते हैं। इसकी जड़ में विष होता है। तेलिया विष। मीठा जहर।
दुधैल–वि० [हिं० दूध + ऐल (प्रत्य०)] बहुत दूध देनेवाली। दुधार।
दुनवना†*–क्रि० अ०[हिं० दो + नवना = झुकना] लचकर प्रायः दोहरा हो जाना।
क्रि० स० लचाकर दोहरा करना।
दुनाली–वि० स्त्री० [हिं० दो + नाल] दो नलोंवाली। जैसे दुनाली बंदूक।
संज्ञा स्त्री० वह बंदूक जिसमें दो दो गोलियाँ एक साथ भरी जायँ। दुनाली बंदूक।
दुनियाँ–संज्ञा स्त्री०[अ० दुनिया] १ संसार। जगत्।
यौ०—दीन-दुनिया = लोक-परलोक।
मुहा०—दुनिया के परदे पर = सारे संसार में। दुनिया की हवा लगना = सांसारिक अनुभव होना। संसारी विषयों का अनुभव होना। दुनिया भर का = बहुत या बहुत अधिक।
२. संसार के लोग। लोक। जनता। ३. संसार का जंजाल। जगत् का प्रपंच।
दुनियाई–वि० [अ० दुनिया + हिं० ई (प्रत्य०)] सांसारिक।
संज्ञा स्त्री० संसार।
दुनियादार–संज्ञा पुं० [फा०] सांसारिक प्रपंच में फँसा हुआ मनुष्य। गृहस्थ।
वि० १. ढंग रचकर अपना काम निकालनेवाला। २. व्यवहार-कुशल।
दुनियादारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. दुनिया का कारबार। गृहस्थी का जंजाल। २. वह व्यवहार जिसमें अपना प्रयोजन सिद्ध हो। स्वार्थसाधन। ३. बनावटी व्यवहार।
दुनियासाज–वि०[फा०] [संज्ञा दुनियासाजी] १. ढंग रचकर अपना काम निकालनेवाला। २. स्वार्थसाधक। ३. चापलूस।
दुनी*–संज्ञा स्त्री० [अ० दुनिया] संसार।
दुपटा†*–संज्ञा पुं० दे० "दुपट्टा"।
दुपट्टा–संज्ञा पुं० [हिं० दो + पाट] [स्त्री० अल्पा० दुपट्टी] १. ओढ़ने का वह कपड़ा जो दो पाटों को जोड़कर बना हो। दो पाट की चद्दर। चादर।
मुहा०—दुपट्टा तानकर सोना = निश्चिंत होकर सोना। बेखटके सोना।
२. कंधे या गले पर डालने का लंबा कपड़ा।
दुपट्टी†*–संज्ञा स्त्री० दे० "दुपट्टा"।
दुपहर–संज्ञा स्त्री० दे० "दोपहर"।
दुपहरिया–संज्ञा स्त्री०[हिं० दो + पहर] १ मध्याह्न का समय। दोपहर। २. एक छोटा पौधा जो फूलों के लिए लगाया जाता है।
दुपहरी–संज्ञा स्त्री० दे० "दुपहरिया"।
दुफसली–वि० [हिं० दो + अ० फस्ल] वह चीज जो रबी और खरीफ दोनों में हो।
वि० स्त्री० दुबधा की। अनिश्चित। (बात)
दुबधा–संज्ञा स्त्री० [सं० द्विविधा] १ दो में

से किसी एक बात पर चित्त के न जमने की क्रिया या भाव। अनिश्चय। चित्त की अस्थिरता। २. संशय। संदेह। ३. असमंजस। आगा-पीछा। पसोपेश। ४. खटका। चिंता।

दुबरा†–वि० दे० "दुबला"।

दुबराना*†–क्रि० अ० [हिं० दुबरा + ना] दुबला होना। शरीर से क्षीण होना।

दुबला–वि० [सं० दुर्बल] [स्त्री० दुबली] १. जिसका बदन हलका और पतला हो। क्षीण शरीर का। कृश। २. अशक्त।

दुबलापन–संज्ञा पुं० [हिं० दुबला + पन] कृशता। क्षीणता।

दुबारा–क्रि० वि० दे० "दोबारा"।

दुबाला–वि० दे० "दोबाला"।

दुबिद*–संज्ञा पुं० दे० "द्विविद"।

दुबिध, दुबिधा*–संज्ञा स्त्री० दे० "दुबधा"।

दुबे–संज्ञा पुं० [सं० द्विवेदी] [स्त्री० दुबाइन] ब्राह्मणों का एक भेद। दूबे। द्विवेदी।

दुभाखी–संज्ञा पुं० दे० "दुभाषिया"।

दुभाषिया–संज्ञा पुं० [सं० द्विभाषी] दो भाषाओं का जाननेवाला ऐसा मनुष्य जो उन भाषाओं के बोलनेवाले दो मनुष्यों को एक दूसरे का अभिप्राय समझावे।

दुमंजिला–वि० [फ़ा०] [स्त्री० दुमंजिली] दो मरातिब का। दोखंडा।

दुम–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. पूँछ। पुच्छ। मुहा०–दुम दबाकर भागना = डरपोक कुत्ते की तरह डरकर भागना। दुम हिलाना = कुत्ते का दुम हिलाकर प्रसन्नता प्रकट करना। २. पूँछ की तरह पीछे लगी या बँधी हुई वस्तु। ३. पीछे पीछे लगा रहनेवाला आदमी। पिछलगू। ४. किसी काम का सबसे अंतिम थोड़ा सा अंश।

दुमची–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] घोड़े के साज में वह तसमा जो पूँछ के नीचे दबा रहता है।

दुमदार–वि० [फा०] १. पूँछवाला। २. जिसके पीछे पूँछ की सी कोई वस्तु हो।

दुमाता–वि० [सं० दुर्मातृ] १. बुरी माता। २. सौतेली माँ।

दुमुहाँ–वि० दे० "दोमुहाँ"।

दुरंगा–वि० [हिं० दो + रंग] [स्त्री० दुरंगी] १. दो रंगों का। जिसमें दो रंग हों। २. दो तरह का। ३. दोहरी चाल चलनेवाला।

दुरंगी–वि० स्त्री० दे० "दुरंगा"। संज्ञा स्त्री० कुछ इस पक्ष का, कुछ उस पक्ष का अवलंबन। द्विविधा।

दुरंत–वि० [सं०] १. अपार। बड़ा भारी। २. दुर्गम। दुस्तर। कठिन। ३. घोर। प्रचंड। भीषण। ४. जिसका परिणाम बुरा हो। अशुभ। ५. दुष्ट। खल।

दुरंधा*–वि० [सं० द्विरंध्र] १. दो छिद्रोंवाला। २. आर-पार छेदा हुआ।

दुर्–अव्य० या उप० [सं०] एक अव्यय जिसका प्रयोग इन अर्थों में होता है—१. दूषण। (बुरा अर्थ) जैसे—दुरात्मा। २. निषेध। जैसे—दुर्बल। ३. दुःख।

दुर–अव्य० [हिं० दूर] एक शब्द जिसका प्रयोग तिरस्कारपूर्वक हटाने के लिए होता है और जिसका अर्थ है "दूर हो"। मुहा०—दुर दुर करना = तिरस्कारपूर्वक हटाना। कुत्ते की तरह भगाना। संज्ञा पुं० [फा०] १. मोती। मुक्ता। २. मोती का वह लटकन जो नाक में पहना जाता है। लोलक। ३. छोटी बाली।

दुरजन*–संज्ञा पुं० दे० "दुर्जन"।

दुरजोधन*–संज्ञा पुं० दे० "दुर्योधन"।

दुरतिक्रम–वि० [सं०] १. जिसका अतिक्रमण या उल्लंघन न हो सके। २. प्रबल। ३. जिसका पार पाना कठिन हो। अपार।

दुरद*–संज्ञा पुं० दे० "द्विरद"।

दुरदाम*–वि० [सं० दुर्दम] कष्टसाध्य।

दुरदाल*–संज्ञा पुं० [सं० द्विरद] हाथी।

दुरदुराना–क्रि० स० [हिं० दुरदुर] तिरस्कारपूर्वक दूर करना। अपमान के साथ भगाना।

दुरना†*–क्रि० अ० [हिं० दूर] १. आँखों के आगे से दूर होना। आड़ में जाना। २. न दिखलाई पड़ना। छिपना।

दुरपदी‡*–संज्ञा स्त्री० दे० "द्रौपदी"।

दुरभिसंधि–संज्ञा स्त्री० [सं०] बुरे अभिप्राय

से गुट बाँधकर की हुई सलाह।

दुरभेव†–संज्ञा पुं० [सं० दुर्भाव या दुर्भेद] बुरा भाव। मनमोटाव। मनोमालिन्य। कपट। छल।

दुरमुस–संज्ञा पुं० [सं० दुर (प्रत्य०) + मुस = कूटना] गदा के आकार का डंडा, जिससे कंकड़ या मिट्टी पीटकर बैठाई जाती है।

दुरवस्था–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बुरी दशा। खराब हालत। २. दुःख, कष्ट या दरिद्रता की दशा। हीन दशा।

दुराउ†*–संज्ञा पुं० दे० "दुराव"।

दुरागमन–संज्ञा पुं० दे० "द्विरागमन"।

दुराग्रह–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० दुराग्रही] १. किसी बात पर बुरे ढंग से अड़ना। हठ। जिद। २. अपने मत के ठीक न सिद्ध होने पर भी उस पर स्थिर रहने का काम।

दुराचरण–संज्ञा पुं० [सं०] बुरा चाल-चलन। खोटा व्यवहार।

दुराचार–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० दुराचारी] दुष्ट आचरण। बुरा चाल-चलन।

दुराज–संज्ञा पुं० [सं० दुर् + राज्य] बुरा राज्य। बुरा शासन।

संज्ञा पुं० [हिं० दो+राज्य] १. एक ही स्थान पर दो राजाओं का राज्य या शासन। २. वह स्थान जहाँ दो राजाओं का राज्य हो।

दुराजी–वि० [हिं० दुराज्य] दो राजाओं का।

दुरात्मा–वि० [सं० दुरात्मन्] दुष्टात्मा। नीचाशय। खोटा।

दुरादुरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० दुरना = छिपना] छिपाव। गोपन।

मुहा०—दुरादुरी करके = छिपे छिपे।

दुराधर्ष–वि० [सं०] जिसका दमन करना कठिन हो। प्रचंड। प्रबल।

दुराना–क्रि० अ० [हिं० दूर] १. दूर होना। हटना। टलना। भागना। २. छिपना। क्रि० स० १. दूर करना। हटाना। २. छोड़ना। त्यागना। ३. छिपाना। गुप्त रखना।

दुरालभा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जवासा। धमासा। हिंगुवा। २ कपास।

दुराव–संज्ञा पुं० [हिं० दुराना] १. अविश्वास या भय के कारण किसी से बात गुप्त रखने का भाव। छिपाव। भेदभाव। २.

दुराशय–संज्ञा पुं० [सं०] दुष्ट आशय। बुरी नीयत।

वि० जिसका आशय बुरा हो। खोटा।

दुराशा–संज्ञा स्त्री० [सं०] ऐसी आशा जो पूरी होनेवाली न हो। व्यर्थ की आशा।

दुरासा*–संज्ञा स्त्री० दे० "दुराशा"।

दुरित–संज्ञा पुं० [सं०] १. पाप। पातक। २. उपपातक। छोटा पाप।

वि० पापी। पातकी। अघी।

दुरुखा–वि० [हिं० दो + फ़ा० रुख] १. जिसके दोनों ओर मुँह हो। २. जिसके दोनों ओर कोई चिह्न या विशेष वस्तु हो। ३. जिसके दोनों ओर दो रंग हों।

दुरुपयोग–संज्ञा पुं० [सं०] किसी वस्तु को बुरी तरह से काम में लाना। बुरा उपयोग।

दुरुस्त–वि० [फ़ा०] १. जो अच्छी दशा में हो। जो टूटा-फूटा या बिगड़ा न हो। ठीक। २. जिसमें दोष या त्रुटि न हो। ३. उचित। मुनासिब। ४. यथार्थ।

दुरुस्ती–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] सुधार। संशोधन।

दुरूह–वि० [सं०] जल्दी समझ में न आने योग्य। गूढ़। कठिन।

दुरेफ–संज्ञा पुं० दे० "द्विरेफ"।

दुर्कुल*–संज्ञा पुं० दे० "दुष्कुल"।

दुर्गंध–संज्ञा स्त्री० [सं०] बुरी गंध या महक। बदबू। कुबास।

दुर्ग–वि० [सं०] जिसमें पहुँचना कठिन हो। दुर्गम।

संज्ञा पुं० १. पत्थर आदि की चौड़ी और पुष्ट दीवारों से घिरा हुआ वह स्थान जिसके भीतर राजा, सरदार और सेना के सिपाही आदि रहते हैं। गढ़। कोट। क़िला। २. एक असुर का नाम जिसे मारने के कारण देवी का नाम दुर्गा पड़ा।

दुर्गत–वि० [सं०] १. जिसकी बुरी गति हुई हो। दुर्दशा-ग्रस्त। २. दरिद्र।

संज्ञा स्त्री० दे० "दुर्गति"।

दुर्गति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बुरी गति। दुर्दशा। बुरा हाल। ज़िल्लत। २. वह दुर्दशा जो परलोक में हो। नरक-भोग।

दुर्गपाल-संज्ञा पुं० [सं०] गढ़ का रक्षक। क़िलेदार।

दुर्गम-वि० [सं०] १. जहाँ जाना कठिन हो। औघट। २. जिसे जानना कठिन हो। दुर्ज्ञेय। ३. दुस्तर। कठिन। विकट।

संज्ञा पुं० १. गढ़। दुर्ग। क़िला। २. विष्णु। ३. वन। ४. संकट का स्थान।

दुर्गरक्षक-संज्ञा पुं० [सं०] क़िलेदार।

दुर्गा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आदि शक्ति। देवी। वैदिक काल में यह अंबिका देवी के रूप में स्मरण की जाती थीं और रुद्र की बहन मानी जाती थीं। देवी भागवत के अनुसार ये विष्णु की माया थीं जो दक्ष प्रजापति की कन्या सती के रूप में प्रकट हुई थीं, जिन्होंने तप करके शिव को पति रूप में प्राप्त किया। इनका अनेक असुरों को मारना प्रसिद्ध है। गौरी, काली, रौद्री, भवानी, चंडी, अन्नपूर्णा आदि इन्हीं के नाम और रूप हैं। २. नील का पौधा। ३. अपराजिता। कौवा-ठोंठी। ४. श्यामा पक्षी। ५. नौ वर्ष की कन्या। ६. एक संकर रागिनी।

दुर्गाध्यक्ष-संज्ञा पुं० [सं०] गढ़ का प्रधान। क़िलेदार।

दुर्गुण-संज्ञा पुं० [सं०] बुरा गुण। दोष। ऐब। बुराई।

दुर्गोत्सव-संज्ञा पुं० [सं०] दुर्गा-पूजा का उत्सव जो नवरात्र में होता है।

दुर्घट-वि० [सं०] जिसका होना कठिन हो। कष्टसाध्य।

दुर्घटना-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ऐसी बात जिसके होने से बहुत कष्ट, पीड़ा या शोक हो। अशुभ घटना। बुरा संयोग। वारदात। २. विपद। आफ़त।

दुर्जन-संज्ञा पुं० [सं०] दुष्ट जन। खोटा आदमी। खल।

दुर्जनता-संज्ञा स्त्री० [सं०] दुष्टता।

दुर्जय-वि० [सं०] जिसे जीतना बहुत कठिन हो। जो जल्दी जीता न जा सके।

दुर्ज्ञेय-वि० [सं०] जो जल्दी समझ में न आ सके। दुर्बोध।

दुर्दमनीय-वि० [सं०] १. जिसका दमन करना बहुत कठिन हो। २. प्रचंड। प्रबल।

दुर्दम्य-वि० दे० "दुर्दमनीय"।

दुर्दशा-संज्ञा स्त्री० [सं०] बुरी दशा। मंद अवस्था। दुर्गति। खराब हालत।

दुर्दिन-संज्ञा पुं० [सं०] १. बुरा दिन। २. ऐसा दिन जिसमें बादल छाए हों और पानी बरसता हो। मेघाच्छन्न दिन। ३. दुर्दशा, दुःख और कष्ट का समय।

दुर्दैव-संज्ञा पुं० [सं०] १. दुर्भाग्य। बुरी किस्मत। २. दिनों का बुरा फेर।

दुर्द्धर-वि० [सं०] १. जिसे कठिनता से पकड़ सकें। २. प्रबल। प्रचंड। ३. जो कठिनता से समझ में आवे।

दुर्द्धर्ष-वि० [सं०] १. जिसका दमन करना कठिन हो। २. प्रबल। प्रचंड। उग्र।

दुर्नाम-संज्ञा पुं० [सं० दुर्नामन्] १. बुरा नाम। कुख्याति। बदनामी। २. गाली। बुरा वचन। ३. बवासीर। ४. सीप।

दुर्निवार्य्य-वि० [सं०] १. जिसका निवारण करना कठिन हो। जो जल्दी रोका न जा सके। २. जो जल्दी हटाया न जा सके। ३. जिसका होना निश्चित हो।

दुर्नीति-संज्ञा स्त्री० [सं०] कुनीति। कुचाल। अन्याय। अयुक्त आचरण।

दुर्बल-वि० [सं०] १. जिसे बल न हो। कमजोर। अशक्त। २. दुबला-पतला।

दुर्बलता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बल की कमी। कमजोरी। २. कृशता। दुबलापन।

दुर्बोध-वि० [सं०] जो जल्दी समझ में न आवे। गूढ़। क्लिष्ट। कठिन।

दुर्भाग्य-संज्ञा पुं० [सं०] मंद भाग्य। बुरा अदृष्ट। खोटी किस्मत।

दुर्भाव-संज्ञा पुं० [सं०] १. बुरा भाव। २. द्वेष। मनमोटाव। मनोमालिन्य।

दुर्भावना-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बुरी

दुष्टता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दोष। नुक्स। ऐब। २ बुराई। खराबी। ३ बदमाशी।
दुष्टपना-संज्ञा पु० दे० "दुष्टता"।
दुष्टाचार-संज्ञा पु० [सं०] कुचाल। कुकर्म।
दुष्टात्मा-वि० [सं०] जिसका अंतःकरण बुरा हो। खोटी प्रकृति का। दुराशय।
दुष्प्राप्य-वि० [सं०] जो सहज में न मिल सके। जिसका मिलना कठिन हो।
दुष्मंत-संज्ञा पु० दे० "दुष्यंत"।
दुष्यंत-संज्ञा पु० [सं०] पुरुवंशी एक राजा जो ऐलि नामक राजा के पुत्र थे। इन्होंने कण्व मुनि के आश्रम में शकुंतला के साथ गांधर्व विवाह किया था। इसी से शकुंतला के गर्भ से सर्वदमन या भरत नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था जिसके नाम पर यह देश भारत कहलाया।
दुसराना*-क्रि० स० दे० "दोहराना"।
दुसरिहा*†-वि० [हिं० दूसर+हा (प्रत्य०)] १. साथी। संगी। २ प्रतिद्वंद्वी।
दुसह*-वि० [सं० दुःसह] जो सहा न जाय। असह्य। कठिन।
दुसही†-वि० [हिं० दुःसह+ई (प्रत्य०)] १. जो कठिनता से सह सके। २ ईर्ष्यालु।
दुसाखा-संज्ञा पु० [हिं० दो+शाखा] एक प्रकार का शमादान, जिसमें दो कनखे निकले होते हैं।
दुसाध-संज्ञा पु० [सं० दोषाद] हिंदुओं में एक नीच जाति जो सूअर पालती है।
दुसार-संज्ञा पु० [हिं० दो+सालना] आर-पार किया हुआ छेद।
क्रि० वि० एक पार से दूसरे पार तक।
दुसाल-संज्ञा पु० [हिं० दो+साल] आर-पार छेद।
दुसासन*-संज्ञा पु० दे० "दुःशासन"।
दुसूती-संज्ञा स्त्री० [हिं० दो+सूत] एक प्रकार की मोटी चादर।
दुसेजा-संज्ञा पु० [हिं० दो+सेज] बड़ी खाट। पलंग।
दुस्तर-वि० [सं०] १ जिसे पार करना कठिन हो। २ विकट। कठिन।
दुस्सह-वि० दे० "दुःसह"।
दुहता-संज्ञा पु० [सं० दौहित्र] [स्त्री० दुहती] बेटी का बेटा। नाती।
दुहत्था-वि० [हिं० दो+हाथ] [स्त्री० दुहत्थी] दोनों हाथों से किया हुआ।
दुहना-क्रि० स० [सं० दोहन] १ स्तन से दूध निचोड़कर निकालना। ('दूध' और 'दूधवाला पशु' दोनों इसके कर्म हो सकते हैं।) २ निचोड़ना। तत्त्व या सार खींचना।
मुहा०-दुह लेना=१. सार खींच लेना। २ धन हर लेना। लूटना।
दुहनी-संज्ञा स्त्री० [सं० दोहनी] वह बरतन जिसमें दूध दुहा जाता है। दोहनी।
दुहाई-संज्ञा स्त्री० [सं० द्वि+आह्वाय] १ उच्च स्वर से किसी बात की सूचना, जो चारों ओर दी जाय। मुनादी। घोषणा।
मुहा०—(किसी की) दुहाई फिरना=१ राजा के सिंहासन पर बैठने पर उसके नाम की घोषणा होना। २ प्रताप का डंका पिटना।
२ शपथ। कसम। सौगंध। ३ बचाव या रक्षा के लिये किसी का नाम लेकर चिल्लाना।
मुहा०—दुहाई देना=अपने बचाव के लिये किसी का नाम लेकर चिल्लाना।
संज्ञा स्त्री० [हिं० दुहना] १ गाय, भैंस आदि को दुहने का काम। २ दुहने की मजदूरी।
दुहाग-संज्ञा पु० [सं० दुर्भाग्य] १ दुर्भाग्य। २ वैधव्य। रँडापा।
दुहागिन†-संज्ञा स्त्री० [हिं० दुहागी] सुहागिन का उलटा। विधवा।
दुहागी†-वि० [सं० दुर्भागिन्] [स्त्री० दुहागिन] दुर्भागी। अभागा। बदकिस्मत।
दुहाना-क्रि० स० [हिं० दुहना का प्रे०] दुहने का काम दूसरे से कराना।
दुहावनी-संज्ञा स्त्री० [हिं० दुहाना] दूध दुहने की मजदूरी। दुहाई।
दुहिता-संज्ञा स्त्री० [सं० दुहितृ] कन्या। लड़की।
दुहिन*-संज्ञा पु० [सं० द्रुहण] ब्रह्मा।
दुहेला-वि० [सं० दुर्हेल] [स्त्री० दुहेली] १

दुःखदायी। दुःसाध्य। कठिन। २. दुःखी। संज्ञा पुं० विकट या दुःखदायक कार्य।
दुहोतरा*–वि० [सं० द्वि, द्वि + उत्तर] दो अधिक। दो ऊपर।
दुह्य–वि० [सं०] [स्त्री० दुह्या] दुहने योग्य।
दूइज†–संज्ञा, स्त्री० दे० "दूज"।
दूक*–वि० [सं० द्वैक] दो एक। कुछ।
दूकान–संज्ञा पुं० दे० "दुकान"।
दूखना*†–क्रि० स० [सं० दूषण + ना(प्रत्य०)] दोष लगाना। ऐब लगाना।
दूज–संज्ञा स्त्री० [सं० द्वितीया] किसी पक्ष की दूसरी तिथि। दुइज। द्वितीया।
मुहा०—दूज का चाँद होना = बहुत दिनों पर दिखाई पड़ना। कम दर्शन देना।
दूजा*†–वि० [सं० द्वितीया] दूसरा।
दूत–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० दूती] १. वह जो किसी विशेष कार्य के लिए कहीं भेजा जाय। चर। बसीठ। २. प्रेमी और प्रेमिका का सँदेसा एक-दूसरे तक पहुँचानेवाला मनुष्य।
दूतकर्म–संज्ञा पुं० [सं०] सँदेसा या खबर पहुँचाना। दूत का काम। दूतत्व।
दूतता–संज्ञा स्त्री० [सं०] दूतत्व।
दूतत्व–संज्ञा पुं० [सं०] दूत का काम। दूतता।
दूतपन–संज्ञा पुं० दे० "दूतत्व"।
दूतर*†–वि० दे० "दुस्तर"।
दूतिका, दूती–संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रेमी और प्रेमिका का सँदेसा एक-दूसरे तक पहुँचानेवाली स्त्री। कुटनी। संचारिका। सारिका।
दूध–संज्ञा पुं० [सं० दुग्ध] १. सफ़ेद रंग का वह प्रसिद्ध तरल पदार्थ जो स्तनपायी जीवों की मादा के स्तनों में रहता है और जिससे उनके बच्चों का बहुत दिनों तक पोषण होता है। पय। दुग्ध।
मुहा०—दूध उतरना = छातियों में दूध भर जाना। दूध का दूध और पानी का पानी करना = ऐसा न्याय करना जिसमें किसी पक्ष के साथ तनिक भी अन्याय न हो। दूध की मक्खी की तरह निकालना या निकालकर फेंक देना = किसी मनुष्य को बिलकुल तुच्छ समझकर अपने साथ से एकदम अलग कर देना। दूध के दाँत न टूटना = अभी तक बचपन रहना। दूधों नहाओ, पूतों फलो = धन और संतान की वृद्धि हो (आशीर्वाद)। दूध फटना = खटाई आदि पड़ने के कारण दूध का जल अलग और सार भाग या छेना अलग हो जाना। दूध बिगड़ना। (स्तनों में) दूध भर आना = बच्चे की ममता या स्नेह के कारण माता के स्तनों में दूध उतर आना।
२. अनाज के हरे बीजों का रस। ३. वह सफ़ेद तरल पदार्थ जो अनेक प्रकार के पौधों की पत्तियों और डंठलों को तोड़ने पर निकलता है।
दूधपिलाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० दूध + पिलाना] १. दूध पिलानेवाली दाई। २. ब्याह की एक रसम जिसमें बरात के समय माता, वर को दूध पिलाने की सी मुद्रा करती है।
दूध-पूत–संज्ञा पुं० [हिं० दूध + पूत] धन और संतति।
दूधमुँहा–वि० [हिं० दूध + मुँह] जो अभी तक माता का दूध पीता हो। छोटा बच्चा।
दूधमुख–वि० [हिं० दूध + सं० मुख] छोटा बच्चा। बालक। दुधमुँहा।
दूधिया–वि० [हिं० दूध + इया (प्रत्य०)] १. जिसमें दूध मिला हो अथवा जो दूध से बना हो। २. दूध के रंग का। सफ़ेद। संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का सफ़ेद और चमकीला पत्थर या रत्न। २. एक प्रकार का सफ़ेद घटिया मुलायम पत्थर जिसकी प्यालियाँ आदि बनती हैं।
दून–संज्ञा स्त्री० [हिं० दूना] १. दूने का भाव।
मुहा०—दून की लेना या हाँकना = बहुत बढ़-चढ़कर बातें करना। डींग मारना।
२. जितना समय लगाकर गाना या बजाना आरंभ किया जाय, उसके आधे समय में गाना या बजाना।
संज्ञा पुं० [देश०] तराई। घाटी।
दूनर†*–वि० [सं० द्विनम्र] जो लचकर दोहरा हो गया हो।

भावना। २ घटा। चिंता। अदया।

दुर्भिक्ष–संज्ञा पु० [सं०] ऐसा समय जिसमें भिक्षा या भोजन कठिनता से मिले। अकाल। कहत।

दुर्भिच्छ*–संज्ञा पु० दे० "दुर्भिक्ष"।

दुर्भेद–वि० [सं०] १ जो जल्दी भेदा या छेदा न जा सके। २ जिसे जल्दी पार न कर सकें।

दुर्भेद्य–वि० दे० "दुर्भेद"।

दुर्मति–संज्ञा स्त्री० [सं०] बुरी बुद्धि। वि० १ जिसकी समझ ठीक न हो। दुर्बुद्धि। कमअक्ल। २ खल। दुष्ट।

दुर्मल्लिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] दृश्य काव्य के अंतर्गत चार अंकों का एक उपरूपक जिसमें हास्य रस प्रधान होता है।

दुर्मिल–संज्ञा पु० [सं०] १ एक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में ३२ मात्राएँ होती हैं। अंत में एक सगण और दो गुरु होते हैं। २ एक प्रकार का सवैया जिसके प्रत्येक चरण में आठ सगण होते हैं।

दुर्मुख–संज्ञा पु० [सं०] १ घोड़ा। २ राम की सेना का एक बंदर। ३ रामचन्द्रजी का एक गुप्तचर जिसके द्वारा उन्होंने सीता के विषय में लोकापवाद सुना था। वि० [स्त्री० दुर्मुखी] १ जिसका मुख बुरा हो। २ कटुभाषी। अप्रियवादी।

दुर्योधन–संज्ञा पु० [सं०] कुरुवंशीय राजा धृतराष्ट्र का ज्येष्ठ पुत्र जो अपने चचेरे भाई पांडवों से बहुत बुरा मानता था। इसी के साथ जूआ खेलकर युधिष्ठिर अपना सारा राज्य और धन, यहाँ तक कि द्रौपदी को भी, हार गए और उन्हें सब भाइयों सहित १२ वर्ष तक वनवास और १ वर्ष तक अज्ञातवास करना पड़ा। जब वे अज्ञातवास से लौटे तब दुर्योधन ने उनका राज्य उन्हें नहीं लौटाया जिसके कारण महाभारत का प्रसिद्ध युद्ध हुआ।

दुर्रा–संज्ञा पु० [फा०] कोड़ा। चाबुक।

दुर्रानी–संज्ञा पु० [फ़ा०] अफगानों की एक जाति।

दुर्लंघ्य–वि० [सं०] जिसे जल्दी लाँघ न सकें।

दुर्लक्ष्य–वि० [सं०] जो कठिनता से दिखाई पड़े। जो प्राय अदृश्य हो।

दुर्लभ–वि० [सं०] १ जिसे पाना सहज न हो। दुष्प्राप्य। २ अनोखा। बहुत बढ़िया। ३ प्रिय।

दुर्वचन–संज्ञा पु० [सं०] दुर्वाक्य। गाली।

दुर्वह–वि० [सं०] जिसका वहन करना कठिन हो।

दुर्वाद–संज्ञा पु० [सं०] १ अपवाद। निंदा। २ स्तुतिपूर्वक कहा हुआ अप्रिय वाक्य।

दुर्वासा–संज्ञा पु० [सं० दुर्वासस्] एक मुनि जो अत्रि के पुत्र थे। ये अत्यंत क्रोधी थे।

दुर्विनीत–वि० [सं०] अविनीत। अशिष्ट। उद्धत। अक्खड़।

दुर्विपाक–संज्ञा पु० [सं०] १ बुरा परिणाम। २ बुरा संयोग। दुर्घटना।

दुर्वृत्त–वि० [सं०] दुश्चरित्र। दुराचारी।

दुर्व्यवस्था–संज्ञा स्त्री० [सं०] कुप्रबंध।

दुर्व्यवहार–संज्ञा पु० [सं०] १ बुरा व्यवहार। बुरा बर्ताव। २ दुष्ट आचरण।

दुर्व्यसन–संज्ञा पु० [सं०] किसी ऐसी बात का अभ्यास जिससे कोई हानि हो। बुरी लत। खराब आदत।

दुर्व्यसनी–वि० [सं०] बुरी लतवाला।

दुलकी–संज्ञा स्त्री० [हिं० दलकना] घोड़े की एक चाल जिसमें वह चारों पैर अलग अलग उठाकर कुछ उछलता हुआ चलता है।

दुलखना–क्रि० स० [हिं० दो+लक्षण] बार बार कहना या बतलाना।

दुलड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० दो+लड़] दो लड़ों की माला।

दुलत्ती–संज्ञा स्त्री० [हिं० दो+लात] घोड़े आदि चौपायों का पिछले दोनों पैरों को उठाकर मारना।

दुलदुल–संज्ञा पु० [अ०] वह खच्चरी जो इसकंदरिया (मिस्र) के हाकिम ने मुहम्मद साहब को नजर में दी थी। साधारण लोग इसे घोड़ा समझते हैं और मुहर्रम के

दिनों में इसकी नक़ल निकालते हैं।
दुलना–क्रि० अ० दे० "डुलना"।
दुलभ*–वि० दे० "दुर्लभ"।
दुलराना*†–क्रि०स०[हिं०दुलारना] बच्चों को बहलाकर प्यार करना। लाड़ करना।
क्रि० अ० दुलारे बच्चों की सी चेष्टा करना।
दुलरी–संज्ञा स्त्री० दे० "दुलड़ी"।
दुलहन–संज्ञा स्त्री० [हिं० दुलहा] नवविवाहिता वधू। नई ब्याही हुई स्त्री।
दुलहा–संज्ञा पुं० दे० "दूल्हा"।
दुलहिया, दुलही‡–संज्ञा स्त्री० दे० "दुलहन"।
दुलहेटा–संज्ञा पुं०[प्रा० दुल्लह + हिं० बेटा] लाड़ला बेटा। दुलारा लड़का।
दुलाई–संज्ञा स्त्री० [सं० तूल] ओढ़ने का दोहरा कपड़ा जिसके भीतर रूई भरी हो।
दुलाना*–क्रि० स० दे० "डुलाना"।
दुलार–संज्ञा पुं०[हिं० दुलारना] प्रसन्न करने की वह चेष्टा जो प्रेम के कारण लोग बच्चों या प्रेमपात्रों के साथ करते हैं। लाड़-प्यार।
दुलारना–क्रि० स० [सं० दुर्लालन] प्रेम के कारण बच्चों या प्रेमपात्रों को प्रसन्न करने के लिये उनके साथ अनेक प्रकार की चेष्टाएँ करना। लाड़ करना।
दुलारा–वि०[हिं० दुलार][स्त्री० दुलारी] जिसका बहुत दुलार या लाड़-प्यार हो। लाडला।
दुलोही–संज्ञा स्त्री० [हिं० दो + लोहा] एक प्रकार की तलवार।
दुल्लभ*–वि० दे० "दुर्लभ"।
दुव–वि० [सं० द्वि] दो।
दुवन–संज्ञा पुं० [सं० दुर्मनस्] १. खल। दुर्जन। बुरा आदमी। २. शत्रु। वैरी। दुश्मन। ३. राक्षस। दैत्य।
दुवाज–संज्ञा पुं०[?] एक प्रकार का घोड़ा।
दुवादस*‡–वि० दे० "द्वादश"।
दुवादस बानी*–वि० [सं० द्वादश = सूर्य + वर्ण] बारह बानी का। सूर्य के समान दमकता हुआ। आभायुक्त। खरा। (विशेषतः सोने के लिये)
दुवार†–संज्ञा पुं० दे० "द्वार"।
दुवाल–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] रिकाब में लगा हुआ चमड़े का चौड़ा फ़ीता।
दुवाली–संज्ञा स्त्री० [देश०] रँगे या छपे हुए कपड़ों पर चमक लाने के लिये घोंटने का औजार। घोंटा।
संज्ञा स्त्री०[फा० दुवाल] चमड़े का परतला या पेटी जिसमें बंदूक़, तलवार आदि लटकाते हैं।
दुविधा†–संज्ञा स्त्री० दे० "दुबधा"।
दुवो*†–वि० [हिं० दुव = दो] दोनों।
दुशवार–वि० [फ़ा०][संज्ञा दुशवारी] १. कठिन। दुरूह। मुश्किल। २. दुःसह।
दुशाला–संज्ञा पुं०[सं० द्विशाट, फा० दोशाला] पशमीने की चादरों का जोड़ा जिनके किनारे पर पशमीने की बेलें बनी रहती हैं।
दुशासन*–संज्ञा पुं० दे० "दुःशासन"।
दुश्चरित्त–वि० [सं०] १. बुरे आचरण का। बदचलन। २. कठिन।
संज्ञा पुं० बुरा आचरण। कुचाल।
दुश्चरित्र–वि० [सं०][स्त्री० दुश्चरित्रा] बुरे चरित्रवाला। बदचलन।
संज्ञा पुं० बुरी चाल। दुराचार।
दुश्चेष्टा–संज्ञा स्त्री० [सं०][वि० दुश्चेष्टित] बुरा काम। कुचेष्टा।
दुश्मन–संज्ञा पुं० [फ़ा०] शत्रु। वैरी।
दुश्मनी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] वैर। शत्रुता।
दुष्कर–वि० [सं०] जिसे करना कठिन हो। जो मुश्किल से हो सके। दुःसाध्य।
दुष्कर्म–संज्ञा पुं० [सं० दुष्कर्मन्] [वि० दुष्कर्मा] बुरा काम। कुकर्म। पाप।
दुष्कर्मा–वि०[सं० दुष्कर्मन्] पापी। कुकर्मी।
दुष्कर्मी–वि० [सं० दुष्कर्म + ई (प्रत्य०)] बुरा काम करनेवाला। पापी। दुराचारी।
दुष्काल–संज्ञा पुं० [सं०] १. बुरा वक्त। कुसमय। २. दुर्भिक्ष। अकाल।
दुष्ट–वि०[सं०] [स्त्री० दुष्टा] १. जिसमें दोष या ऐब हो। दूषित। दोष-ग्रस्त। २. पित्त आदि दोष से युक्त। ३. दुर्जन। खल। दुराचारी। पाजी।

दुष्टता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दोष। नुक्स। ऐब। २ बुराई। खराबी। ३ बदमाशी।
दुष्टपना—संज्ञा पु० दे० "दुष्टता"।
दुष्टाचार—संज्ञा पु० [सं०] कुचाल। कुकर्म।
दुष्टात्मा—वि० [सं०] जिसका अंतःकरण बुरा हो। खोटी प्रकृति का। दुराशय।
दुष्प्राप्य—वि० [सं०] जो सहज में न मिल सके। जिसका मिलना कठिन हो।
दुष्मंत—संज्ञा पु० दे० "दुष्यंत"।
दुष्यंत—संज्ञा पु० [सं०] पुरुवंशी एक राजा जो ऐलि नामक राजा के पुत्र थे। इन्होंने कण्व मुनि के आश्रम में शकुंतला के साथ गांधर्व विवाह किया था। इसी से शकुंतला के गर्भ से सर्वदमन या भरत नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था जिसके नाम पर यह देश भारत कहलाया।
दुसराना*—क्रि० स० दे० "दोहराना"।
दुसरिहा*†—वि० [हिं० दूसर+हा (प्रत्य०)] १ साथी। संगी। २ प्रतिद्वंद्वी।
दुसह*—वि० [सं० दुःसह] जो सहा न जाय। असह्य। कठिन।
दुसही†—वि० [हिं० दुःसह+ई (प्रत्य०)] १ जो कठिनता से सह सके। २ ईर्ष्यालु।
दुसाखा—संज्ञा पु० [हिं० दो+शाखा] एक प्रकार का शमादान, जिसमें दो कनखे निकले होते हैं।
दुसाध—संज्ञा पु० [सं० दोषाद] हिंदुओं में एक नीच जाति जो सूअर पालती है।
दुसार—संज्ञा पु० [हिं० दो+सालना] आर-पार किया हुआ छेद।
क्रि० वि० एक पार से दूसरे पार तक।
दुसाल—संज्ञा पु० [हिं० दो+शाल] आर-पार छेद।
दुसासन*—संज्ञा पु० दे० "दुःशासन"।
दुसूती—संज्ञा स्त्री० [हिं० दो+सूत] एक प्रकार की मोटी चादर।
दुसेजा—संज्ञा पु० [हिं० दो+सेज] बड़ी खाट। पलंग।
दुस्तर—वि० [सं०] १ जिसे पार करना कठिन हो। २ विकट। कठिन।
दुस्सह—वि० दे० "दुःसह"।
दुहता—संज्ञा पु० [सं० दौहित्र] [स्त्री० दुहती] बेटी का बेटा। नाती।
दुहत्था—वि० [हिं० दो+हाथ] [स्त्री० दुहत्थी] दोनों हाथों से किया हुआ।
दुहना—क्रि० स० [सं० दोहन] १ स्तन में दूध निचोड़कर निकालना। ('दूध' और 'दूधवाला पशु' दोनों इसके कर्म हो सकते हैं।) २ निचोड़ना। तत्व या सार खींचना।
मुहा०—दुह लेना = १ सार खींच लेना। २ धन हर लेना। लूटना।
दुहनी—संज्ञा स्त्री० [सं० दोहनी] वह बरतन जिसमें दूध दुहा जाता है। दोहनी।
दुहाई—संज्ञा स्त्री० [सं० द्वि+आह्वाय] १ उच्च स्वर से किसी बात की सूचना, जो चारों ओर दी जाय। मुनादी। घोषणा।
मुहा०—(किसी की) दुहाई फिरना = १ राजा के सिंहासन पर बैठने पर उसके नाम की घोषणा होना। २ प्रताप का डंका पिटना।
२ शपथ। कसम। सौगंध। ३ बचाव या रक्षा के लिये किसी का नाम लेकर चिल्लाना।
मुहा०—दुहाई देना=अपने बचाव के लिये किसी का नाम लेकर चिल्लाना।
संज्ञा स्त्री० [हिं० दुहना] १ गाय, भैंस आदि को दुहने का काम। २ दुहने की मजदूरी।
दुहाग—संज्ञा पु० [सं० दुर्भाग्य] १ दुर्भाग्य। २ वैधव्य। रँड़ापा।
दुहागिन—संज्ञा स्त्री० [हिं० दुहागी] सुहागिन का उलटा। विधवा।
दुहागी—वि० [सं० दुर्भागिन्] [स्त्री० दुहागिन] दुर्भागी। अभागा। बदकिस्मत।
दुहाना—क्रि० स० [हिं० दुहना का प्रे०] दुहने का काम दूसरे से कराना।
दुहावनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० दुहाना] दूध दुहने की मजदूरी। दुहाई।
दुहिता—संज्ञा स्त्री० [सं० दुहितृ] कन्या। लड़की।
दुहिन*—संज्ञा पु० [सं० द्रुहण] ब्रह्मा।
दुहेला—वि० [सं० दुहेल] [स्त्री० दुहेली] १

दुःखदायी। दुःसाध्य। कठिन। २. दुःखी। संज्ञा पुं० विकट या दुःखदायक कार्य।
दुहोतरा*–वि० [सं० दु, द्वि+उत्तर] दो अधिक। दो ऊपर।
दुह्य–वि० [सं०] [स्त्री० दुह्या] दुहने योग्य
दूइज†–संज्ञा स्त्री० दे० "दूज"।
दूक*–वि० [सं० द्विक] दो एक। कुछ।
दूकान–संज्ञा पुं० दे० "दुकान"।
दूखना*†–क्रि० स० [सं० दूषण+ना(प्रत्य०)] दोष लगाना। ऐब लगाना।
दूज–संज्ञा स्त्री० [सं० द्वितीया] किसी पक्ष की दूसरी तिथि। दुइज। द्वितीया।
मुहा०—दूज का चाँद होना=बहुत दिनों पर दिखाई पड़ना। कम दर्शन देना।
दूजा*†–वि० [सं० द्वितीया] दूसरा।
दूत–संज्ञा पुं० [सं०][स्त्री० दूती] १. वह जो किसी विशेष कार्य के लिए कहीं भेजा जाय। चर। बसीठ। २. प्रेमी और प्रेमिका का सँदेसा एक-दूसरे तक पहुँचानेवाला मनुष्य।
दूतकर्म–संज्ञा पुं० [सं०] सँदेसा या खबर पहुँचाना। दूत का काम। दूतत्व।
दूतता–संज्ञा स्त्री० [सं०] दूतत्व।
दूतत्व–संज्ञा पुं० [सं०] दूत का काम। दूतता।
दूतपन–संज्ञा पुं० दे० "दूतत्व"।
दूतर*†–वि० दे० "दुस्तर"।
दूतिका, दूती–संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रेमी और प्रेमिका का सँदेसा एक-दूसरे तक पहुँचानेवाली स्त्री। कुटनी। संचारिका। सारिका।
दूध–संज्ञा पुं० [सं० दुग्ध] १. सफेद रंग का वह प्रसिद्ध तरल पदार्थ जो स्तनपायी जीवों की मादा के स्तनों में रहता है और जिससे उनके बच्चों का बहुत दिनों तक पोषण होता है। पय। दुग्ध।
मुहा०—दूध उतरना=छातियों में दूध भर जाना। दूध का दूध और पानी का पानी करना=ऐसा न्याय करना जिसमें किसी पक्ष के साथ तनिक भी अन्याय न हो। दूध की मक्खी की तरह निकालना या निकालकर फेंक देना=किसी मनुष्य को बिलकुल तुच्छ समझकर अपने साथ से एकदम अलग कर देना। दूध के दाँत न टूटना=अभी तक बचपन रहना। दूधों नहाओ, पूतों फलो=धन और संतान की वृद्धि हो (आशीर्वाद)। दूध फटना=खटाई आदि पड़ने के कारण दूध का जल अलग और सार भाग या छेना अलग हो जाना। दूध बिगड़ना। (स्तनों में) दूध भर आना=बच्चे की ममता या स्नेह के कारण माता के स्तनों में दूध उतर आना।
२. अनाज के हरे बीजों का रस। ३. वह सफेद तरल पदार्थ जो अनेक प्रकार के पौधों की पत्तियों और डंठलों को तोड़ने पर निकलता है।
दूधपिलाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० दूध+पिलाना] १. दूध पिलानेवाली दाई। २. व्याह की एक रसम जिसमें बरात के समय माता, वर को दूध पिलाने की रीति मुद्रा करती है।
दूध-पूत–संज्ञा पुं० [हिं० दूध+पूत] धन और संतति।
दूधमुँहा–वि० [हिं० दूध+मुँह] जो अभी तक माता का दूध पीता हो। छोटा बच्चा।
दूधमुख–वि० [हिं० दूध+सं० मुख] छोटा बच्चा। बालक। दूधमुँहा।
दूधिया–वि० [हिं० दूध+इया (प्रत्य०)] १. जिसमें दूध मिला हो अथवा जो दूध से बना हो। २. दूध के रंग का। सफेद। संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का सफेद और चमकीला पत्थर या रत्न। २. एक प्रकार का सफेद घटिया मुलायम पत्थर जिसकी प्यालियाँ आदि बनती हैं।
दून–संज्ञा स्त्री० [हिं० दूना] १. दूने का भाव। मुहा०—दून की लेना या हाँकना=बहुत बढ़-चढ़कर बातें करना। डींग मारना। २. जितना समय लगाकर गाना या बजाना आरंभ किया जाय, उसके आधे समय में गाना या बजाना।
संज्ञा पुं० [देश०] तराई। घाटी।
दूनर†*–वि० [सं० द्विनम्र] जो लचकर दोहरा हो गया हो।

दूतावास–संज्ञा पु० [सं०] दूसरे राज्य में दूत के रहने का स्थान।

दूना–वि० [सं० द्विगुण] दुगुना। दोचंद। दो बार उतना ही।

दूनौं*†–वि० दे० "दोनों"।

दूब–संज्ञा स्त्री० [सं० दूर्वा] एक बहुत प्रसिद्ध घास। यह तीन प्रकार की होती है; हरी, सफेद और गाँडर। वि० दे० "गाँडर"।

दू-बदू–क्रि० वि० [हिं० दो या फा० रूबरू] आमने-सामने। मुकाबले में।

दूबरा*†–वि० दे० "दुबला"।

दूबे–संज्ञा पु० [सं० द्विवेदी] द्विवेदी ब्राह्मण।

दूभर–वि० [सं० दुर्भर] कठिन। मुश्किल।

दूमना†*–क्रि० अ० [सं० द्रुम] हिलना।

दूरंदेश–वि० [फा०] [संज्ञा दूरंदेशी] दूर तक की बात विचारनेवाला। दूरदर्शी।

दूर–क्रि० वि० [सं०] देश, काल या संबंध आदि के विचार से बहुत अंतर पर। बहुत फासले पर। पास या निकट का उलटा। मुहा०—दूर करना=१ अलग करना। जुदा करना। २ न रहने देना। मिटाना। दूर भागना या रहना=बहुत बचना। पास न जाना। दूर होना=१. हट जाना। अलग हो जाना। २ मिट जाना। नष्ट होना। दूर की बात=१ बारीक बात। २ कठिन बात। वि० जो दूर या फासले पर हो।

दूरता–संज्ञा स्त्री० दे० "दूरत्व"।

दूरत्व–संज्ञा पु० [सं०] दूर होने का भाव। अंतर। दूरी। फासला।

दूरदर्शक–वि० [सं०] दूर तक देखनेवाला।

दूरदर्शक यंत्र–संज्ञा पु० [सं०] दूरबीन।

दूरदर्शिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] दूर की बात सोचने का गुण। दूरदेशी।

दूरदर्शी–वि० [सं०] बहुत दूर तक की बात सोचनेवाला। अग्रशोची। दूरंदेश।

। स्त्री० [फा०] गोल नल के आकार का एक यंत्र जिससे दूर की चीजें बहुत पास, स्पष्ट या बड़ी दिखाई देती हैं।

दूरवर्ती–वि० [सं०] दूर का। जो दूर हो।

।–संज्ञा पु० [सं०] दूरबीन।

दूरस्थ–वि० [सं०] दूर का।

दूरी–संज्ञा स्त्री० [सं० दूर+ई (प्रत्य०)] दो वस्तुओं के मध्य का स्थान। दूरत्व। अंतर। फासला।

दूर्वा–संज्ञा स्त्री० [सं०] दूब नाम की घास।

दूलन*–संज्ञा पु० दे० "दोलन"।

दूलह–संज्ञा पु० [सं० दुर्लभ] १ दुलहा। वर। नौशा। २ पति। स्वामी।

दूल्हा–संज्ञा पु० दे० "दूलह"।

दूषक–संज्ञा पु० [सं०] १. वह जो किसी पर दोषारोपण करे। २. दोष उत्पन्न करनेवाला पदार्थ।

दूषण–संज्ञा पु०[सं०] १. दोष। ऐब। बुराई। अवगुण। २. दोष लगाने की क्रिया या भाव। ऐब लगाना। ३ रावण का भाई, एक राक्षस।

दूषणीय–वि० [सं०] दोष लगाने योग्य। जिसमें ऐब लगाया जा सके।

दूषना*†–क्रि० स० [सं० दूषण] दोष लगाना। कलंकित करना।

दूषित–वि० [सं०] जिसमें दोष हो। खराब। बुरा। दोषयुक्त।

दूष्य–वि० [सं०] १ दोष लगाने योग्य। जिसमें दोष लगाया जा सके। २ निंदनीय। निंदा करने योग्य। ३ तुच्छ।

दूसना–क्रि० स० दे० "दूषना"।

दूसरा–वि० [हिं० दो] १ जो क्रम में दो के स्थान पर हो। पहले के बाद का। द्वितीय। २ जिसका प्रस्तुत विषय या व्यक्ति से संबंध न हो। अन्य। अपर।

दूहना–क्रि० स० दे० "दुहना"।

दूहा*†–संज्ञा पु० दे० "दोहा"।

दृक्–संज्ञा पु० [सं०] छिद्र। छेद।

दृक्क्षेप–संज्ञा पु० [सं०] दृष्टिपात।

दृक्पथ–संज्ञा पु० [सं०] दृष्टि का मार्ग। दृष्टि की पहुँच।

दृक्पात–संज्ञा पु० [सं०] दृष्टिपात।

दृक्शक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रकाश-रूप। चैतन्य। २ आत्मा।

दृगंचल–संज्ञा पु० [सं०] पलक।

दृग*–संज्ञा पुं० [सं० दृश्] १. आँख। मुहा०—दृग डालना या देना=देखना।
२. देखने की शक्ति। दृष्टि। ३. दो की संख्या।
दृगमिचाव–संज्ञा पुं० [हिं० दृग + मीचना] आँख-मिचौली का खेल।
दृगोचर–वि० [सं०] जो आँख से दिखाई दे।
दृढ़–वि० [सं०] १. जो खूब कसकर बँधा या मिला हो। प्रगाढ़। २. पुष्ट। मज़बूत। कड़ा। ठोस। ३. बलवान्। बलिष्ठ। हृष्ट-पुष्ट। ४. जो जल्दी नष्ट या विचलित न हो। स्थायी। ५. निश्चित। ध्रुव। पक्का। ६. निडर। ढीठ। कड़े दिल का।
दृढ़ता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दृढ़ होने का भाव। दृढ़त्व। २. मजबूती। ३. स्थिरता।
दृढ़त्व–संज्ञा पुं० [सं०] दृढ़ता।
दृढ़पद–संज्ञा पुं० [सं०] तेईस मात्राओं का एक छंद। उपमान।
दृढ़प्रतिज्ञ–वि० [सं०] जो अपनी प्रतिज्ञा से न टले।
दृढ़ांग–वि० [सं०] जिसके अंग दृढ़ हों। कड़े बदन का। हृष्ट-पुष्ट।
दृढ़ाई†*–संज्ञा स्त्री० दे० "दृढ़ता"।
दृढ़ाना–क्रि० स० [सं० दृढ़ + आना (प्रत्य०)] दृढ़ करना। पक्का या मजबूत करना। क्रि० अ० १. कड़ा, पुष्ट या मजबूत होना। २. स्थिर या पक्का होना।
दृश्–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० दृश्य] १. देखना। दर्शन। २. दिखानेवाला। प्रदर्शक। ३. देखनेवाला।
संज्ञा स्त्री० १. दृष्टि। २. आँख। ३. दो की संख्या। ४. ज्ञान।
दृशद्वती–संज्ञा स्त्री० दे० "दृषद्वती"।
दृश्य–वि० [सं०] १. जो देखने में आ सके। जिसे देख सकें। दृग्गोचर। २. जो देखने योग्य हो। दर्शनीय। ३. मनोरम। सुन्दर। ४. जानने योग्य। ज्ञेय।
संज्ञा पुं० १. वह पदार्थ जो आँखों के सामने हो। देखने की वस्तु। २. तमाशा। ३. वह काव्य जो अभिनय द्वारा दर्शकों को दिखाया जाय। नाटक। ४. गणित में ज्ञात या दी हुई संख्या।
दृश्यमान–वि० [सं०] १. जो दिखाई पड़ रहा हो। २. चमकीला। ३. सुन्दर।
दृषद्वती–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक नदी जिसका नाम ऋग्वेद में आया है। इसे आजकल घग्घर और राखी कहते हैं।
दृष्ट–वि० [सं०] १. देखा हुआ। २. जाना हुआ। ज्ञात। प्रकट। ३. लौकिक और गोचर। प्रत्यक्ष।
संज्ञा पुं० १. दर्शन। २. साक्षात्कार। ३. प्रत्यक्ष प्रमाण। (सांख्य)
दृष्टकूट–संज्ञा पुं० [सं०] १. पहेली। २. वह कविता जिसका अर्थ शब्दों के वाचकार्थ से न समझा जा सके, बल्कि प्रसंग या रूढ़ अर्थों से जाना जाय।
दृष्टमान*–वि० [सं० दृश्यमान] प्रकट।
दृष्टवाद–संज्ञा पुं० [सं०] वह दार्शनिक सिद्धांत जो केवल प्रत्यक्ष ही को मानता है।
दृष्टांत–संज्ञा पुं० [सं०] १. अज्ञात वस्तुओं या व्यापारों का धर्म्म आदि समझाने के लिए समान धर्मवाली किसी प्रसिद्ध या ज्ञात वस्तु या व्यापार का कथन। उदाहरण। मिसाल। २. एक अर्थालंकार जिसमें एक ओर तो उपमेय और उसके साधारण धर्म्म का वर्णन और दूसरी ओर बिंब-प्रतिबिंब-भाव से उपमान और उसके साधारण धर्म्म का वर्णन होता है। ३. शास्त्र।
दृष्टार्थ–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह शब्द जिसका अर्थ स्पष्ट हो। २. वह शब्द जिसके श्रवण से श्रोता को किसी ऐसे अर्थ का बोध हो, जिसका प्रत्यक्ष इस संसार में होता हो।
दृष्टि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. देखने की वृत्ति या शक्ति। आँख की ज्योति। २. आँख की पुतली के किसी वस्तु की सीध में होने की स्थिति। अवलोकन। नज़र। निगाह। ३. आँख की ज्योति का प्रसार, जिससे वस्तुओं के रूप, रंग आदि का बोध होता है। दृक्पथ। ४. देखने के लिए खुली

हुई ओर।
मुहा०—(किसी से) दृष्टि जुड़ना=देखा-देखी होना। साक्षात्कार होना। (किसी से) दृष्टि जोड़ना=आँख मिलाना। साक्षात्कार करना। दृष्टि मिलाना=दे० "दृष्टि जोड़ना"। दृष्टि रखना=देख-रेख में रखना।
५ परख। पहचान। तमीज़। ६ कृपादृष्टि। हित का ध्यान। मिहरबानी की नज़र। ७ आशा की दृष्टि। आस। उम्मीद। ८ ध्यान। विचार। अनुमान। ९. उद्देश्य।

दृष्टिगत–वि० [स०] जो दिखाई पड़ता हो।

दृष्टिगोचर–वि० [स०] नेत्रेंद्रिय द्वारा जिसका बोध हो। जो देखने में आ सके।

दृष्टिपथ–सज्ञा पु० [स०] दृष्टि का फैलाव। नज़र की पहुँच।

दृष्टिपात–सज्ञा पु० [स०] दृष्टि डालने की क्रिया या भाव। ताकना। देखना।

दृष्टिबंध–सज्ञा पु० [स०] १. दीठबंदी। इद्रजाल। माया। जादू। २. हाथ की सफाई या चालाकी। हस्त-लाघव।

दृष्टिवंत–वि० [स० दृष्टि+वत (प्रत्य०)] १ दृष्टिवाला। २ ज्ञानी। ज्ञानवान्।

दृष्टिवाद–सज्ञा पु० [स०] वह सिद्धात जिसमें दृष्टि या प्रत्यक्ष प्रमाण ही की प्रधानता हो।

दे–सज्ञा स्त्री० [स० देवी] स्त्रियों के लिये एक आदर सूचक शब्द। देवी।

देई–सज्ञा स्त्री० [स० देवी] १. देवी। २ स्त्रियों के लिये एक आदर-सूचक शब्द।

देख–सज्ञा स्त्री० [हि० देखना] देखने की क्रिया या भाव। जैसे, देख-रेख, देख-माल।

देखन*†–सज्ञा स्त्री० [हि० देखना] देखने की क्रिया, भाव या ढग।

देखनहारा*†–सज्ञा पु० [हि० देखना] [स्त्री० देखनहारी] देखनेवाला।

क्रि० स० [स० दृश्] १. किसी वस्तु के अस्तित्व या उसके रूप-रग आदि का ज्ञान नेत्रों द्वारा प्राप्त करना। अवलोकन करना।
मुहा०—देखना-सुनना=जानकारी प्राप्त करना। पता लगाना। देखने में=१. बाह्य लक्षणों के अनुसार। साधारण व्यवहार में। २ रूप-रग में। देखते देखते=१ आँखों के सामने। २ तुरत। फौरन। चटपट। देखते रह जाना=हक्का-बक्का रह जाना। चकित हो जाना। देखा जायगा=१. फिर विचार किया जायगा। २. पीछे जो कुछ करना होगा, किया जायगा।
२. जाँच करना। मुआयना करना। ३. ढूँढ़ना। खोजना। तलाश करना। पता लगाना। ४. परीक्षा करना। आज़माना। परखना। ५ निगरानी रखना। ताकते रहना। ६ समझना। सोचना। विचारना। ७ अनुभव करना। भोगना। ८. पढ़ना। बाँचना। ९ गुण, दोष का पता लगाना। परीक्षा करना। जाँच। १०. ठीक करना।

देख-भाल–सज्ञा स्त्री० [हि० देखना+भालना] १ जाँच-पड़ताल। निरीक्षण। निगरानी। २. देखा-देखी। साक्षात्कार।

देखराना*†–क्रि० स० दे० "दिखलाना"।

देखरावना*†–क्रि० स० दे० "दिखलाना"।

देख-रेख–सज्ञा स्त्री० [हि० देखना+स० प्रेक्षण] देख-भाल। निरीक्षण। निगरानी।

देखाऊ–वि० [हि० देखना] १. जो केवल देखने में सुदर हो, काम का न हो। झूठी तड़क-भड़कवाला। २ जो ऊपर से दिखाने के लिये हो, वास्तविक न हो। बनावटी।

देखा-देखी–सज्ञा स्त्री० [हि० देखना] आँखों से देखने की दशा या भाव। दर्शन। साक्षात्कार।
क्रि० वि० दूसरों को करते देखकर। दूसरों के अनुकरण पर।

देखाना*†–क्रि० स० दे० "दिखाना"।

देखाव–सज्ञा पु० [हि० देखना] १ दृष्टि की सीमा। नज़र की पहुँच। २ ठाट-बाट। तड़क-भड़क।

देखावट–सज्ञा स्त्री० [हि० दिखाना] १. रूप-रग दिखाने की क्रिया या भाव। बनाव। २ ठाट-बाट। तड़क-भड़क।

देखावना–क्रि० स० दे० "दिखाना"।

देग–संज्ञा पुं० [फ़ा०] खाना पकाने का चौड़े मुँह और चौड़े पेट का बड़ा बरतन।

देगचा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] [स्त्री० अल्पा० देगची] छोटा देग।

देदीप्यमान–वि० [सं०] अत्यंत प्रकाश-युक्त। चमकता हुआ। दमकता हुआ।

देन–संज्ञा स्त्री० [हिं० देना] १. देने की क्रिया या भाव। दान। २. दी हुई चीज। प्रदत्त वस्तु।

देनदार–संज्ञा पुं० [हिं० देना + फ़ा० दार] ऋणी। क़र्ज़दार।

देनहारा*†–वि० [हिं० देना + हार (प्रत्य०)] देनेवाला।

देना–क्रि० स० [सं० दान] १. अपने अधिकार से दूसरे के अधिकार में करना। प्रदान करना। २. सौंपना। हवाले करना। ३. हाथ पर या पास रखना। थमाना। ४. रखना, लगाना या डालना। ५. मारना। प्रहार करना। ६. अनुभव कराना। भोगाना। ७. उत्पन्न करना। निकालना। ८. बंद करना। ९. भिड़ाना। (इस क्रिया का प्रयोग बहुत सी सकर्मक क्रियाओं के साथ संयो० क्रि० के रूप में होता है। जैसे—कर देना, गिरा देना।) संज्ञा पुं० उधार लिया हुआ रुपया। क़र्ज़।

देमान‡*–संज्ञा पुं० दे० "दीवान"।

देय–वि० [सं०] देने योग्य। दातव्य।

देर–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. नियमित, उचित या आवश्यक से अधिक समय। अतिकाल। विलंब। २. समय। वक़्त।

देरी‡–संज्ञा स्त्री० दे० "देर"।

देव–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० देवी] १. देवता सुर। २. पूज्य व्यक्ति। ३. ब्राह्मणों तथा बड़ों के लिये एक आदर-सूचक शब्द। संज्ञा पुं० [फ़ा०] दैत्य। राक्षस।

देवऋण–संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं के लिये कर्त्तव्य, यज्ञादि।

देवऋषि–संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं के लोक में रहनेवाले नारद, अत्रि, मरीचि, भरद्वाज, पुलस्त्य आदि ऋषि।

देवकन्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] देवता की पुत्री। देवी।

देवकार्य्य–संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं को प्रसन्न करने के लिये किया हुआ कर्म। होम, पूजा आदि।

देवकी–संज्ञा स्त्री० [सं०] वसुदेव की स्त्री और श्रीकृष्ण की माता का नाम।

देवकीनंदन–संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

देवगण–संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं के अलग अलग समूह। देवताओं का वर्ग।

देवगति–संज्ञा स्त्री० [सं०] मरने के उपरांत उत्तम गति। स्वर्गलाभ।

देवगिरि–संज्ञा पुं० [सं०] १. रैवतक पर्वत जो गुजरात में है। गिरनार। २. दक्षिण का एक प्राचीन नगर, जो आजकल दौलताबाद कहलाता है।

देवगुरु–संज्ञा पुं० [सं०] बृहस्पति।

देवठान–संज्ञा पुं० [सं० देवोत्थान] कार्तिक शुक्ला एकादशी। इस दिन विष्णु भगवान् सोकर उठते हैं। दिठवन।

देवतर्पण–संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा, विष्णु आदि देवताओं के नाम ले लेकर पानी देना।

देवता–संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग में रहनेवाला अमर प्राणी। सुर।

देवत्व–संज्ञा पुं० [सं०] देवता होने का भाव या धर्म।

देवदत्त–वि० [सं०] १. देवता का दिया हुआ। २. देवता के निमित्त दिया हुआ। संज्ञा पुं० १. देवता के निमित्त दान की हुई संपत्ति। २. शरीर की पाँच वायुओं में से एक, जिससे जँभाई आती है। ३. अर्जुन के शंख का नाम।

देवदार–संज्ञा पुं० [सं० देवदारु] एक बहुत ऊँचा और सीधा पेड़। इसकी अनेक जातियाँ संसार के अनेक स्थानों में पाई जाती हैं। इससे एक प्रकार का अलकतरा और तारपीन की तरह का तेल भी निकलता है।

देवदाली–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक लता जो देखने में तरई की बेल से मिलती-जुलती

होती है। पथर बेल। बदाल।

देवदासी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वेश्या। २ मंदिरों में रहनेवाली दासी या नर्तकी।

देवदेव—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

देवधुनि—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा नदी।

देवनदी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गंगा। २ सरस्वती और दृषद्वती नदियाँ।

देवनागरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] भारतवर्ष की प्रधान लिपि, जिसमें संस्कृत तथा हिंदी, मराठी आदि देशी भाषाएँ लिखी जाती हैं। यह प्राचीन ब्राह्मी लिपि का विकसित रूप है।

देवपथ—संज्ञा पुं० [सं०] आकाश।

देवभाषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] संस्कृत भाषा।

देवभूमि—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वर्ग।

देवमंदिर—संज्ञा पुं० [सं०] वह घर, जिसमें किसी देवता की मूर्ति स्थापित हो। देवालय।

देवमाया—संज्ञा स्त्री० [सं०] परमेश्वर की माया जो अविद्या रूप होकर जीवों को बंधन में डालती है।

देवमुनि—संज्ञा पुं० [सं०] नारद ऋषि।

देवयज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] होमादि कर्म जो पंचयज्ञों में से एक है।

देवयान—संज्ञा पुं० [सं०] उपनिषदों के अनुसार शरीर से अलग होने के उपरांत जीवात्मा के जाने के लिये दो मार्गों में से वह मार्ग जिससे वह ब्रह्मलोक को जाता है।

देवयानी—संज्ञा स्त्री० [सं०] शुक्राचार्य की कन्या, जो पहले अपने पिता के शिष्य कच पर आसक्त हुई थी। पीछे राजा ययाति के साथ इसका विवाह हुआ था।

देवयोनि—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वर्ग, अंतरिक्ष आदि में रहनेवाले उन जीवों की सृष्टि, जो देवताओं के अंतर्गत माने जाते हैं। जैसे—अप्सरा, यक्ष, पिशाच आदि।

देवर—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० देवरानी] १ पति का छोटा भाई। २ पति का भाई।

देवरा—संज्ञा पुं० [सं० देव] [स्त्री० देवरी] छोटा-मोटा देवता।

देवराज—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

देवराज्य—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग।

देवरानी—संज्ञा स्त्री० [हिं० देवर] देवर की स्त्री। पति के छोटे भाई की स्त्री। संज्ञा स्त्री० [हिं० देव + रानी] देवराज इंद्र की पत्नी, शची। इंद्राणी।

देवराय—संज्ञा पुं० दे० "देवराज"।

देवर्षि—संज्ञा पुं० [सं०] नारद, अत्रि, मरीचि, भरद्वाज, पुलस्त्य, भृगु इत्यादि जो देवताओं में ऋषि माने जाते हैं।

देवल—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो देवताओं की पूजा करके जीविका निर्वाह करे। पुजारी। पंडा। २ धार्मिक पुरुष। ३ नारद मुनि। ४ एक प्रकार का चावल। संज्ञा पुं० [सं० देवालय] देवालय। देवमंदिर

देवलोक—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग।

देववधू—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. देवता की स्त्री। २ देवी। ३. अप्सरा।

देववाणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ संस्कृत भाषा २ किसी अदृश्य देवता का वचन जो अंतरिक्ष में सुनाई पड़े। आकाशवाणी।

देवव्रत—संज्ञा पुं० [सं०] भीष्म पितामह।

देवशुनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवलोक की कुतिया, सरमा। विशेष—दे० "सरमा"।

देवसभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ देवताओं का समाज। २ राजसभा। ३ सुधर्म्मा नामक सभा, जिसे मय ने अर्जुन या युधिष्ठिर के लिये बनाया था।

देवसेना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ देवताओं की सेना। २ प्रजापति की कन्या, जो सावित्री के गर्भ से उत्पन्न हुई थी। षष्ठी।

देवस्थान—संज्ञा पुं० [सं०] १ देवताओं के रहने की जगह। २ देवालय। मंदिर।

देवहूति—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वायंभुव मनु की तीन कन्याओं में से एक, जो कर्दम मुनि को ब्याही थी। सांख्यशास्त्र के कर्त्ता कपिल इन्हीं के पुत्र थे।

देवांगना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ देवताओं की स्त्री। स्वर्ग की स्त्री। २ अप्सरा।

देवा†—वि० [हिं० देना] १ देनेवाला। जैसे—

पानी-देवा। † २. देनदार। ऋणी।
देवान†–संज्ञा पुं० [फ़ा० दीवान] १. दरबार। कचहरी। राजसभा। २. अमात्य। मंत्री। वजीर। ३. प्रबंध-कर्त्ता।
देवानां-प्रिय–संज्ञा पुं० [सं०] १. देवताओं को प्रिय। २. बकरा। ३. मूर्ख।
देवापि–संज्ञा पुं० [सं०] एक राजा जो ऋष्टिषेण के पुत्र और शांतनु के बड़े भाई थे।
देयारी–संज्ञा स्त्री० दे० "दीवाली"।
देवार्पण–संज्ञा पुं० [सं०] देवता के निमित्त किसी वस्तु का दान।
देवाल†–वि० [हिं० देना] देनेवाला। दाता।
देवालय–संज्ञा पुं० [सं०] १. स्वर्ग। २. वह घर जिसमें किसी देवता की मूर्त्ति रखी जाय। मंदिर। ·
देवी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. देवता की स्त्री। देवपत्नी। २. दुर्गा। ३. वह रानी जिसका राजा के साथ अभिषेक हुआ हो। पटरानी। ४. ब्राह्मण स्त्रियों की एक उपाधि। ५. सुशीला और सदाचारिणी स्त्री।
देवीपुराण–संज्ञा पुं० [सं०] एक उपपुराण जिसमें देवी का माहात्म्य आदि वर्णित है।
देवीभागवत–संज्ञा पुं० [सं०] एक पुराण, जिसकी गणना बहुत से लोग उपपुराणों में और कुछ लोग पुराणों में करते हैं। श्रीमद्भागवत के समान, इस पुराण में बारह स्कंध और १८००० श्लोक हैं। अतः इसका निर्णय कठिन है कि दोनों में कौन पुराण है और कौन उपपुराण।
देवेंद्र–संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।
देवैया†–वि० [हिं० देना+ऐया प्रत्य०] देनेवाला
देवोत्तर–संज्ञा पुं० [सं०] देवता को अर्पित किया हुआ धन या संपत्ति।
देवोत्थान–संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु का शेष की शय्या पर से उठना, जो कार्तिक शुक्ला एकादशी को होता है।
देवोद्यान–संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं के बगीचे, जो चार हैं—नंदन, चैत्ररथ, वैभ्राज और सर्वतोभद्र।
देवोन्माद–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का उन्माद, जिसमें रोगी पवित्र रहता, सुगंधित फूलों की माला पहनता और संस्कृत बोलता है।
देश–संज्ञा पुं० [सं०] १. विस्तार, जिसके भीतर सब कुछ है। दिक्। स्थान। २. पृथ्वी का वह विभाग जिसका कोई अलग नाम हो, और जिसके अंतर्गत कई प्रांत, नगर आदि हों। जनपद। ३. वह भूभाग जो एक ही राजा या शासक के अधीन अथवा एक शासन-पद्धति के अंतर्गत हो। राष्ट्र। ४. स्थान। जगह। ५. शरीर का कोई भाग। अंग।
देशज–वि० [सं०] देश में उत्पन्न। संज्ञा पुं० वह शब्द जो न संस्कृत हो, न संस्कृत का अपभ्रंश हो, बल्कि किसी प्रदेश में लोगों की बोल-चाल से यों ही उत्पन्न हो गया हो।
देशनिकाला–संज्ञा पुं० [हिं० देश+निकाला] देश से निकाल दिए जाने का दंड।
देशभाषा–संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी देश-विशेष की भाषा। जैसे—बँगला, मराठी, गुजराती आदि।
देशांतर–संज्ञा पुं० [सं०] १. अन्य देश। विदेश। परदेश। २. भूगोल में ध्रुवों से होकर उत्तर-दक्षिण गई हुई किसी सर्वमान्य मध्य रेखा से पूर्व या पश्चिम की दूरी। लंबांश।
देशाटन–संज्ञा पुं० [सं०] भिन्न भिन्न देशों की यात्रा। देश-भ्रमण।
देशी–वि० [सं० देशीय] १. देश का। देश-संबंधी। २. स्वदेश का। अपने देश में उत्पन्न या बना हुआ।
देशीय–वि० दे० "देशी"।
देस–संज्ञा पुं० दे० "देश"।
देसवाल–वि० [हिं० देश+वाला] स्वदेश का। दूसरे देश का नहीं। (मनुष्य)
देसावर–संज्ञा पुं० [सं० देश + अपर] अन्य देश। विदेश। परदेस। देशांतर।
देसी–वि० [सं० देशीय] स्वदेश का। दूसरे देश का नहीं।

देह—सज्ञा स्त्री० [स०] [वि० देही] १. शरीर। तन। बदन। वि० दे० "शरीर"।
मुहा०—देह छूटना = जीवन समाप्त होना। मृत्यु होना। देह छोड़ना = मरना। देह धरना = शरीर धारण करना। जन्म लेना।
२ शरीर का कोई अग। ३ जीवन। ज़िदगी।
सज्ञा पु० [फा०] गाँव। खेडा। मौजा।
देहत्याग—सज्ञा पु० [स०] मृत्यु। मौत।
देहधारण—सज्ञा पु० [स०] १. शरीररक्षा। जीवनरक्षा। २ जन्म।
देहधारी—सज्ञा पु० [स० देहधारिन्] [स्त्री० देहधारिणी] शरीर धारण करनेवाला। शरीरी।
देहपात—सज्ञा पु० [स०] मृत्यु। मौत।
देहरा—सज्ञा पु० [हि० देव+घर] देवालय।
सज्ञा पु० [हि० देह] मनुष्य का शरीर।
देहरी†*—सज्ञा स्त्री० दे० "देहली"।
देहली—सज्ञा स्त्री० [स०] द्वार की चौखट की वह लकडी जो नीचे होती है। दहलीज।
देहलीदीपक—सज्ञा पु० [स०] १. देहली पर रखा हुआ दीपक जो भीतर बाहर दोनो ओर प्रकाश फैलाता है।
यौ०—देहलीदीपक न्याय=देहली पर रखे हुए दोनो ओर प्रकाश फैलानेवाले दीपक के समान दोनो ओर लगनेवाली बात।
२ एक अर्थालकार जिसमे किसी एक मध्यस्थ शब्द का अर्थ दोनो ओर लगाया जाता है।
देहवत—वि० [स० देहवान् का बहु०] जिसके देह हो। जो तनुधारी हो।
सज्ञा पु० व्यक्ति। प्राणी। शरीरी।
देहवान्—वि० [स०] शरीरधारी।
देहात—सज्ञा पु० [स०] मृत्यु। मौत।
देहात—सज्ञा पु० [फ़ा०] [वि० देहाती] गाँव। गँवई। ग्राम।
देहाती—वि० [फ़ा० देहात] १ गाँव का। २ गाँव में रहनेवाला। ग्रामीण। ३ गँवार।
देही—सज्ञा पु० [स० देहिन्] आत्मा।
दैउ*†—सज्ञा पु० दे० "दैव"।
दैत्य—सज्ञा पु० [स०] १ कश्यप के वे पुत्र जो दिति नाम्नी स्त्री से पैदा हुए थे। असुर। राक्षस। २. बड़े डील या असाधारण बल का मनुष्य। ३ अति करनेवाला आदमी।
दैत्यगुरु—सज्ञा पु० [स०] शुक्राचार्य्य।
दैनदिन—वि० [स०] नित्य का।
क्रि० वि० १. प्रति दिन। रोज रोज। २. दिना दिन।
सज्ञा पु० एक प्रकार का प्रलय।
दैन—वि० [हि० देना] देनेवाला। दायक। (यौगिक में)
दैनिक—वि० [स०] १. प्रति दिन का। रोज का। २. जो रोज रोज हो। नित्य होनेवाला। ३ जो एक दिन में हो। ४. दिन सबधी।
दैन्य—सज्ञा पु० [स०] १. दीनता। विनीत भाव। २ काव्य के सचारी भावो में से एक जिसमें दुःख आदि से चित्त अति नम्र हो जाता है। कातरता।
दैयत†—सज्ञा पु० [स० दैत्य] दैत्य।
दैया*‡—सज्ञा पु० [हि० दई] दई। दैव।
मुहा०—दैयत कै = दई दई करके। किसी प्रकार। कठिनता से।
अव्य० आश्चर्य, भय या दुःखसूचक शब्द जिसे स्त्रियाँ बोलती हैं। हे दई! हे परमेश्वर!
दैर्घ्य—सज्ञा पु० [स०] दीर्घता। लबाई।
दैव—वि० [स०] [वि० दैवी] १ देवता-सबधी। २ देवता के द्वारा होनेवाला।
सज्ञा पु० १. प्रारब्ध। अदृष्ट। भाग्य। २ होनेवाली बात। होनी। ३ विधाता। ईश्वर। ४. आकाश। आसमान।
मुहा०—दैव बरसना = पानी बरसना।
दैवगति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ ईश्वरीय बात। दैवी घटना। २. भाग्य। प्रारब्ध।
दैवज्ञ—सज्ञा पु० [स०] ज्योतिषी। गणक।
दैवत—वि० [स०] देवता सबधी।
सज्ञा पु० १ देवता की प्रतिमा आदि। २. देवता।
दैवयोग—सज्ञा पु० [स०] सयोग। इत्तिफ़ाक़।

दैववश–क्रि० वि० [सं०] संयोग से। दैव-योग से। अकस्मात्।
दैववशात्–क्रि० वि० दे० "दैववश"।
दैववाणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आकाश-वाणी। २. संस्कृत।
दैववादी–संज्ञा पुं० [सं०] १. भाग्य के भरोसे रहनेवाला। २. आलसी। निरुद्योगी।
दैवविवाह–संज्ञा पुं० [सं०] आठ प्रकार के विवाहों में से एक जिसमें यज्ञ करनेवाला व्यक्ति ऋत्विज या पुरोहित को अपनी कन्या देता है।
दैवागत–वि० [सं०] दैवी। आकस्मिक।
दैवात्–क्रि० वि० [सं०] अकस्मात्। दैव-योग से। इत्तिफ़ाक़ से।
दैविक–वि० [सं०] १. देवता-संबंधी। देवताओं का। २. देवताओं का किया हुआ।
दैवी–वि० [सं०] १. देवता-संबंधिनी। २. देवताओं की की हुई। देवकृत। प्रारब्ध या संयोग से होनेवाली। ३. आकस्मिक। ४. सात्त्विक।
दैवी गति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ईश्वर की की हुई बात। २. भावी। होनहार। अदृष्ट।
दैहिक–वि० [सं०] १. देह-संबंधी। शारीरिक। २. देह से उत्पन्न।
दोंचना†–क्रि० स० [हिं० दोंचन] दबाव में डालना।
दो–वि० [सं० द्वि] एक और एक।
मुहा०—दो-एक या दो-चार = कुछ। थोड़े। दो-चार होना = भेंट होना। मुलाक़ात होना। आँखें दो-चार होना = सामना होना। दो दिन का = बहुत ही थोड़े समय का।
दोआतशा–वि० [फ़ा०] जो दो बार भभके में खींचा या चुआया गया हो।
दोआब–संज्ञा पुं० [फ़ा०] किसी देश का वह भाग जो दो नदियों के बीच में हो।
दोइ†–संज्ञा पुं०, वि० दे० "दो"।
दोउ, दोऊ*†–वि० [हिं० दो] दोनों।
दोख*†–संज्ञा पुं० दे० "दोष"।
दोखना*†–क्रि० स० [हिं० दोष + ना (प्रत्य०)] दोष लगाना। ऐब लगाना।
दोखी*†–संज्ञा पुं० दे० "दोषी"।
दोगला–संज्ञा पुं० [फ़ा० दोगल:] [स्त्री० दोगली] १. वह मनुष्य जो अपनी माता के यार से उत्पन्न हुआ हो। जारज। २. वह जीव जिसके माता-पिता भिन्न भिन्न जातियों के हों।
दोगा–संज्ञा पुं० [हिं० दुबका] १. एक प्रकार का लिहाफ़ का कपड़ा। २. पानी में घोला हुआ चूना जिससे सफ़ेदी की जाती है।
दोच–संज्ञा स्त्री० [हिं० दबोच] १. दुबधा। असमंजस। २. कष्ट। दुःख। ३. दबाव। दबाए जाने का भाव।
दोचन–संज्ञा स्त्री० [हिं० दबोचन] १. दुबधा। असमंजस। २. दबाव। ३. कष्ट। दुःख।
दोचना–क्रि० स० [हिं० दोच] कोई काम करने के लिए बहुत जोर देना। दबाव डालना।
दोचित्ता–वि० [हिं० दो + चित्त] [स्त्री० दोचित्ती] जिसका चित्त दो कामों या बातों में बँटा हो। उद्विग्न-चित्त।
दोचित्ती–संज्ञा स्त्री० [हिं० दो + चित्त] "दोचित्ता" होने का भाव। चित्त की उद्विग्नता।
दोज‡–संज्ञा स्त्री० [हिं० दो] किसी पक्ष की द्वितीया तिथि। दूज।
दोजख–संज्ञा पुं० [फ़ा०] मुसलमानों के अनुसार नरक जिसके सात विभाग हैं।
दोज़खी–वि० [फ़ा०] १. दोज़ख-संबंधी। दोज़ख का। २. बहुत बड़ा अपराधी या पापी। नारकी।
दोतरफ़ा–वि० [फ़ा०] दोनों तरफ़ का। दोनों ओर संबंधी।
क्रि० वि० दोनों तरफ़। दोनों ओर।
दोतला, दोतल्ला–वि० [हिं० दो + तल] दो खंड का। दो-मंजिला। जैसे—दोतल्ला मकान।
दोतारा–संज्ञा पुं० [हिं० दो + तार (धातु)] एक तारे की तरह का एक प्रकार का बाजा।

दोदना†–क्रि० स० [हिं० दो(दोहराना)] प्रत्यक्ष कही हुई बात से इनकार करना। प्रत्यक्ष बात से मुकरना।
दोधक–संज्ञा पु० [सं०] एक वर्णवृत्त। मधु।
दोधारा–वि० [हिं० दो+धार] [स्त्री० दोधारी] जिसमें दोनों ओर धार या बाढ़ हो।
संज्ञा पु० एक प्रकार का थूहर।
दोन–संज्ञा पु० [हिं० दो] दो पहाड़ों के बीच की नीची जमीन।
संज्ञा पु० [हिं० दो+नद] १ दो नदियों के बीच की जमीन। दोआबा। २ दो नदियों का संगम-स्थान। ३ दो वस्तुओं की संधि या मेल।
दोनला–वि० [हिं० दो+नल] जिसमें दो नाले हों। जैसे--दोनली बंदूक।
दोना–संज्ञा पु० [सं० द्रोण] [स्त्री० दोनी] पत्तों का बना हुआ कटोरे के आकार का छोटा गहरा पात्र।
दोनिया, दोनी†–संज्ञा स्त्री० [हिं० दोना का स्त्री० अल्पा०] छोटा दोना।
दोनों–वि० [हिं० दो+नों (प्रत्य०)] ऐसे विशिष्ट दो (मनुष्य या पदार्थ) जिनका पहले वर्णन हो चुका हो और जिनमें से कोई छोड़ा न जा सकता हो। एक और दूसरा। उभय।
दोपल्लिया†–वि०, संज्ञा स्त्री० दे० "दोपल्ली"
दोपल्ली–वि० [हिं० दो+पल्ला+ई(प्रत्य०)] दो पल्लेवाला। जिसमें दो पल्ले हों।
संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की टोपी जिसमें कपड़े के दो टुकड़े एक साथ सिले होते हैं।
दोपहर–संज्ञा स्त्री० [हिं० दो+पहर] वह समय जब कि सूर्य्य मध्य आकाश में रहता है। मध्याह्न-काल।
दोपहरिया†–संज्ञा स्त्री० दे० "दोपहर"।
दोपीठा–वि० [हिं० दो+पीठ] दोनों ओर समान रंग-रूप का। दोरुखा।
दोफसली–वि० [हिं० दो+अ० फसल] १ दोनों फसलों से संबंध का। २ जो दोनों ओर लग सके। दोनों ओर काम देने योग्य।
दोबरा–संज्ञा पु० [?] दोष। अपराध।
दोबारा–क्रि० वि० [फा०] एक बार हो चुकने के उपरांत फिर एक बार। दूसरी बार।
दोभाषिया–संज्ञा पु० दे० "दुभाषिया"।
दोमंज़िला–वि० [फा०] जिसमें दो खंड या मंज़िलें हों। (मकान)
दोमहला–वि० दे० "दोमंज़िला"।
दोमुँहा–वि० [हिं० दो+मुँह] १ जिसे दो मुँह हों। २ दोहरी चाल चलने या बात करनेवाला। कपटी।
दोमुँहा साँप–संज्ञा पु० [हिं० दो+मुँहा+साँप] १ एक प्रकार का साँप जिसकी दुम मोटी होने के कारण मुँह के समान ही जान पड़ती है। २ कुटिल। कपटी।
दोय*†–क्रि०, संज्ञा पु० १ दे० "दो"। २ दे० "दोनों"।
दोरंगा–वि० [हिं० दो+रंग] १ दो रंग का। जिसमें दो रंग हों। २ जो दोनों ओर लग या चल सके।
दोरंगी–संज्ञा स्त्री० [हिं० दो+रंग+ई (प्रत्य०)] १ दोरंगे या दोमुँहे होने का भाव। २ छल। कपट।
दोरदंड*†–वि० दे० "दुर्दंड"।
दोरसा–वि० [हिं० दो+रस] दो प्रकार के स्वाद या रसवाला। जिसमें दो तरह के रस या स्वाद हों।
यौ०—दोरसे दिन = गर्भावस्था के दिन।
संज्ञा पु० एक प्रकार का पीने का तमाकू।
दोराहा–संज्ञा पु० [हिं० दो+राह] वह स्थान जहाँ से आगे की ओर दो मार्ग जाते हों।
दोरुखा–वि० [फा०] १ जिसके दोनों ओर समान रंग या बेल-बूटे हों। २ जिसके एक ओर एक रंग और दूसरी ओर दूसरा रंग हो।
दोल–संज्ञा पु० [सं०] १ झूला। हिंडोला। २ डोली। चंडोल।
दोला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हिंडोला। झूला। २ डोली या चंडोल।
दोलायंत्र–संज्ञा पु० [सं०] वैद्यों का एक

यंत्र जिसकी सहायता से वे ओपधियों के अर्क उतारते हैं।

दोलायमान–वि० [सं०] हिलता हुआ।

दोशाखा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] शमादान या दीवारगीर जिसमें दो बत्तियाँ हों।

दोष–संज्ञा पुं० [सं०] १. बुरापन। खराबी। अवगुण। ऐब। नुक्स।

मुहा०—दोष लगाना = किसी के संबंध में यह कहना कि उसमें अमुक दोष है।

२. लगाया हुआ अपराध। अभियोग। लांछन। कलंक।

यौ०—दोषारोपण = दोष देना या लगाना।

३. अपराध। क़ुसूर। जुर्म। ४. पाप। पातक। ५. शरीर में के वात, पित्त और कफ जिनके कुपित होने से शरीर में व्याधि उत्पन्न होती है। ६. वह मानसिक भाव जो मिथ्या ज्ञान से उत्पन्न होता है और जिसकी प्रेरणा से मनुष्य भले या बुरे कामों में प्रवृत्त होता है। अतिव्याप्ति। (न्याय) ७. साहित्य में वे बातें जिनसे काव्य के गुण में कमी हो जाती है। यह पाँच प्रकार का होता है—पद-दोष, पदांश-दोष, वाक्य-दोष, अर्थ-दोष और रस-दोष। ८. प्रदोष। संज्ञा पुं० [सं० द्वेष] द्वेष। शत्रुता।

दोषता–संज्ञा स्त्री० [सं०] दोष का भाव।

दोषन*†–संज्ञा पुं० [सं० दूषण] दोष। दूषण। अपराध।

दोषना*†–क्रि० स० [सं० दूषण + ना (प्रत्य०)] दोष लगाना। अपराध लगाना।

दोषिन†–संज्ञा स्त्री० [हिं० दोषी] १. अपराधिनी। २. पाप करनेवाली स्त्री।

दोषी–संज्ञा पुं० [सं० दोषिन्] १. अपराधी। क़ुसूरवार। २. पापी। ३. मुजरिम। अभियुक्त। ४. जिसमें दोष हो।

दोस*†–संज्ञा पुं० दे० "दोष"।

दोसदारी*†–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० दोस्तदारी] मित्रता। दोस्ती।

दोसाला†–वि० [हिं० दो + साल = वर्ष] दो वर्ष का। दो वर्ष का पुराना।

दोसूती–संज्ञा स्त्री० [हिं० दो + सूत] दोतही या दोसूती नाम की बिछाने की मोटी चादर।

दोस्त–संज्ञा पुं० [फ़ा०] मित्र। स्नेही।

दोस्ताना–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. दोस्ती। मित्रता। २. मित्रता का व्यवहार। वि० दोस्ती का। मित्रता का।

दोस्ती–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] मित्रता। स्नेह।

दोह*†–संज्ञा पुं० दे० "द्रोह"।

दोहगा†–संज्ञा स्त्री० [सं० दुर्भगा] रखनी। सुरैतिन। उपपत्नी।

दोहता–संज्ञा पुं० [सं० दौहित्र] [स्त्री० दोहती] लड़की का लड़का। नाती। नवासा।

दोहत्थड़–संज्ञा पुं० [हिं० दो + हाथ] दोनों हाथों से मारा हुआ थप्पड़।

दोहत्था–क्रि० वि० [हिं० दो + हाथ] दोनों हाथों से। दोनों हाथों के द्वारा। वि० जो दोनों हाथों से हो।

दोहद–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गर्भवाली स्त्री की इच्छा। उकौना। २. गर्भवती स्त्री की मतली इत्यादि। ३. गर्भावस्था। ४. गर्भ का चिह्न। ५. गर्भ। ६. एक प्राचीन विश्वास जिसके अनुसार सुन्दर स्त्री के स्पर्श से प्रियंगु, पान की पीक थूकने से मौलसिरी, चरणाघात से अशोक, दृष्टिपात से तिलक, मधुर गान से आम और नाचने से कचनार इत्यादि वृक्ष फूलते हैं।

दोहदवती–संज्ञा स्त्री० [सं०] गर्भवती स्त्री।

दोहन–संज्ञा पुं० [सं०] १. गाय, भैंस इत्यादि के स्तनों से दूध निकालना। दुहना। २. दोहनी।

दोहना*–क्रि० स० [सं० दूषण] १. दोष लगाना। २. तुच्छ ठहराना।

दोहनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मिट्टी का वह बरतन जिसमें दूध दुहते हैं। २. दूध दुहने का काम।

दोहर–संज्ञा स्त्री० [हिं० दो + धड़ी = तह] एक प्रकार की चादर जो कपड़े की दो परतों को एक में सीकर बनाई जाती है।

दोहरना–क्रि० अ० [हिं० दोहरा] १. दो बार होना। दूसरी आवृत्ति होना। २. दोतही या दोहरा होना।

क्रि० स० दोहरा करना।
दोहरा–वि० पु० [हिं० दो + हरा (प्रत्य०)] [स्त्री० दोहरी] १ दो परत या तह का। २ दुगना।
संज्ञा पु० १ एक ही पत्ते में लपेटे हुए पान के दो बीड़े। (तमोली) २ दोहा नाम का छंद।
दोहराना–क्रि० स० [हिं० दोहरा] १ किसी बात को दूसरी बार कहना या करना। पुनरावृत्ति करना। † २ किसी कपड़े या कागज आदि की दो तहें करना। दोहरा करना।
दोहा–संज्ञा पु० [हिं० दो + हा (प्रत्य०)] एक प्रसिद्ध हिंदी छंद। इसी को उलट देने से सोरठा हो जाता है।
दोहाई–संज्ञा स्त्री० दे० "दुहाई"।
दोहाग, दोहाग*†–संज्ञा पु० [स० दौर्भाग्य] दुर्भाग्य। बदकिस्मती। अभाग्य।
दोहागा†–संज्ञा पु० [हिं० दोहाग] [स्त्री० दोहागिन] अभागा। बदकिस्मत।
दोहित†–संज्ञा पु० [स० दौहित्र] बेटी का बेटा। नाती।
दोही–संज्ञा पु० [हिं० दो] दोहे की तरह का एक छंद।
संज्ञा पु० [स० दोहिन्] १ दूध दुहनेवाला। २ ग्वाला।
दोह्य–वि० [स०] दूहने योग्य।
दौं*–अव्य० [स० अथवा] या। अथवा। दे० "धौं"।
दौंकना*–क्रि० अ० दे० "दमकना"।
दौंचना*†–क्रि० स० [हिं० दबोचना] १ दबाव डालकर लेना। २ लेने के लिए अड़ना।
दौंरी†–संज्ञा स्त्री० [हिं० दाँना या दाँवना] १ बैलों का झुंड जो कटी हुई फ़सल के डंठलों पर दाना झाड़ने के लिए फिराया जाता है। २ वह रस्सी जिससे बैल बँधे होते हैं। ३ फसल के डंठलों से दाने झाड़ने की क्रिया। ४. झुंड।
दौ*–संज्ञा स्त्री० [स० दव] १ जंगल की आग। २ संताप। ताप। जलन।
दौड़–संज्ञा स्त्री० [हिं० दौड़ना] १. दौड़ने की क्रिया या भाव। द्रुतगमन। धावा।
मुहा०—दौड़ मारना या लगाना = १ वेग से साथ जाना। २ दूर तक पहुँचना। लंबी यात्रा करना।
२ वेगपूर्वक आक्रमण। धावा। चढ़ाई। ३ उद्योग में इधर-उधर फिरने की क्रिया। प्रयत्न। ४ द्रुतगति। वेग।
मुहा०—मन की दौड़ = चित्त की सूझ। कल्पना।
५ गति की सीमा। पहुँच। ६ उद्योग की सीमा। प्रयत्नों की पहुँच। ७ बुद्धि की गति। अक्ल की पहुँच। ८ विस्तार। लंबाई। आयतन। ९ सिपाहियों का दल जो अपराधियों को एकबारगी वहीं पकड़ने के लिए जाय।
दौड़-धूप–संज्ञा स्त्री० [हिं० दौड़ + धूप] परिश्रम। प्रयत्न। उद्योग।
दौड़ना–क्रि० अ० [स० धोरण] १. मामूली चलने से ज्यादा तेज़ चलना।
मुहा०—चढ़ दौड़ना = चढ़ाई करना। आक्रमण करना। दौड़ दौड़कर आना = जल्दी जल्दी या बार बार आना।
२ सहसा प्रवृत्त होना। झुक पड़ना। ३ किसी प्रयत्न में इधर-उधर फिरना। ४ फैलना। व्याप्त होना। छा जाना।
दौड़ादौड़–क्रि० वि० [हिं० दौड़ + दौड़] [संज्ञा दौड़ादौड़ी] बिना कहीं रुके हुए। अविश्रांत। बेतहाशा।
दौड़ादौड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० दौड़ना] १ दौड़धूप। २ बहुत से लोगों के साथ इधर-उधर दौड़ने की क्रिया। ३ आतुरता। हड़बड़ी।
दौड़ान–संज्ञा स्त्री० [हिं० दौड़ना] १ दौड़ने की क्रिया या भाव। द्रुतगमन। २ वेग। झोंक। ३ सिलसिला।
दौड़ाना–क्रि० स० [हिं० दौड़ना का सकर्मक रूप] १. दौड़ने की क्रिया कराना। जल्द जल्द चलाना। २. बार बार आने-जाने के लिए कहना या विवश करना। ३

किसी वस्तु को एक जगह से खींचकर दूसरी जगह ले जाना। ४. फैलाना। पोतना। ५. चलाना। जैसे—क़लम दौड़ाना।

दौत्य*-संज्ञा पुं० [सं०] दूत का काम।

दौन*-संज्ञा पुं० दे० "दमन"।

दौना-संज्ञा पुं० [सं० दमनक] एक पौधा जिसकी पत्तियों में तेज, पर कुछ कड़ुई सुगंध आती है।
†संज्ञा पुं० दे० "दोना"।
*क्रि० स० [सं० दमन] दमन करना।

दौनागिरि-संज्ञा पुं० दे० "द्रोणगिरि"।

दौर-संज्ञा पुं० [अ०] १. चक्कर। भ्रमण। फेरा। २. दिनों का फेर। कालचक्र। ३. अभ्युदय-काल। बढ़ती का समय।
यौ०—दौरदौरा=प्रधानता। प्रबलता।
४. प्रताप। प्रभाव। हुकूमत। ५. बारी। पारी। ६. बार। दफ़ा। ७. दे० "दौरा"।

दौरना*†-क्रि० अ० दे० "दौड़ना"।

दौरा-संज्ञा पुं० [अ० दौर] १. चक्कर। भ्रमण। २. इधर-उधर जाने या घूमने की क्रिया। फेरा। गश्त। ३. अफ़सर का इलाक़े में जाँच-पड़ताल के लिए घूमना।
मुहा०—(असामी या मुकदमा) दौरा सुपुर्द करना=(असामी या मुकदमे को) फ़ैसले के लिए सेशन-जज के पास भेजना।
४. सामयिक आगमन। फेरा। ५. किसी ऐसे रोग का लक्षण प्रकट होना जो समय समय पर होता हो। आवर्तन।
†संज्ञा पुं० [सं० द्रोण] [स्त्री० अल्पा० दौरी] बाँस की फट्टियों या मूँज आदि का टोकरा।

दौरात्म्य-संज्ञा पुं० [सं०] १. दुरात्मा का भाव। दुर्जनता। २. दुष्टता।

दौरान-संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. दौरा। चक्र। २. दिनों का फेर। ३. फेरा। पारी।

दौराना†*-क्रि० स० दे० "दौड़ाना"।

दौरी†-संज्ञा स्त्री० [हि० दौरा] घास या मूँज की छोटी टोकरी। चँगेरी। डलिया।

दौर्जन्य-संज्ञा पुं० [सं०] दुर्जनता।

दौर्बल्य-संज्ञा पुं० [सं०] दुर्बलता।

दौर्मनस्य-संज्ञा पुं० [सं०] 'दुर्मनस्' होने का भाव। दुर्जनता।

दौर्य-संज्ञा पुं० [सं०] दूरी।

दौलत-संज्ञा स्त्री० [अ०] धन। संपत्ति।

दौलतख़ाना-संज्ञा पुं० [फ़ा०] निवास-स्थान। घर। (आदरार्थ)

दौलतमंद-वि० [फ़ा०] धनी। संपन्न।

दौवारिक-संज्ञा पुं० [सं०] द्वारपाल।

दौहित्र-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० दौहित्री] लड़की का लड़का। नाती।

द्यु-संज्ञा पुं० [सं०] १. दिन। २. आकाश। ३. स्वर्ग। ४. अग्नि। ५. सूर्य्यलोक।

द्युति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दीप्ति। कांति। चमक। २. शोभा। छवि। ३. लावण्य। ४. रश्मि। किरण।

द्युतिमंत-वि० दे० "द्युतिमान्"।

द्युतिमा-संज्ञा स्त्री० [सं० द्युति+मा (प्रत्य०)] प्रकाश। तेज।

द्युतिमान्-वि० [सं० द्युतिमत्] [स्त्री० द्युतिमती] जिसमें चमक या आभा हो।

द्युमणि-संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य्य।

द्युमत्सेन-संज्ञा पुं० [सं०] शाल्व देश के एक राजा जो सत्यवान् के पिता थे।

द्युलोक-संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्गलोक।

द्यूत-संज्ञा पुं० [सं०] वह खेल जिसमें दाँव बदकर हार-जीत की जाय। जूआ।

द्योतक-वि० [सं०] १. प्रकाश करनेवाला। प्रकाशक। २. बतलानेवाला।

द्योतन-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० द्योतित] १. दर्शन। २. प्रकाशित करने या जलाने का काम। ३. दिखाने का काम।

द्योहरा*-संज्ञा पुं० दे० "देवघरा"।

द्यौस*-संज्ञा पुं० [सं० दिवस] दिन।

द्रम्म-संज्ञा पुं० [सं० मि० फ़ा० दिरम] सोलह पण मूल्य की एक मुद्रा। (लीलावती)

द्रव-संज्ञा पुं० [सं०] १. द्रवण। २. बहाव। ३. पलायन। दौड़। ४. वेग। ५. आसव। ६. रस। ७. द्रवत्व।
वि० १. पानी की तरह पतला। तरल। २. गीला। ३. पिघला हुआ।

द्रवण-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० द्रवित] १.

गमन। गति। २ क्षरण। बहाव। ३ पिघलने या पसीजने की क्रिया या भाव। ४ चित्त के कोमल होने की वृत्ति।

द्रवता—सज्ञा स्त्री० [स०] द्रवत्व।

द्रवत्व—सज्ञा पु० [स०] पानी की तरह पतला होने या बहने का भाव।

द्रवना*—क्रि० अ० [स० द्रवण] १ प्रवाहित होना। बहना। २ पिघलना। ३ पसीजना। दयार्द्र होना।

द्रविड—सज्ञा पु० [स० तिरमिल] १ दक्षिण भारत का एक देश। २ इस देश का रहने-वाला। ३ ब्राह्मणो का एक वर्ग जिसके अतर्गत पाँच विभाग है—आध्र, कर्णाटक, गुर्जर, द्रविड और महाराष्ट्र।

द्रवीभूत—वि० [स०] १ जो पानी की तरह पतला या द्रव हो गया हो। २ पिघला हुआ। ३ दयार्द्र। दयालु।

द्रव्य—सज्ञा पु० [स०] १ वस्तु। पदार्थ। चीज। २ वह पदार्थ जिसमे केवल गुण और क्रिया अथवा केवल गुण हो और जो समवायि कारण हो। वैशेषिक मे द्रव्य नौ कहे गए है—पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा और मन। वास्तव मे द्रव्य उस मूल तत्त्व को कहते है जिसमे और कोई द्रव्य न मिला हो। वैज्ञानिको ने पता लगाया है कि जल और वायु आदि कई और मूल द्रव्यो के योग से बने है। उन्होने लगभग ७५ ऐसे मूल द्रव्य या तत्त्व ढूँढ निकाले है जिनके योग से भिन्न भिन्न पदार्थ बने है। ३ सामग्री। सामान। उपादान। ४ धन। दौलत।

द्रव्यत्व—सज्ञा पु० [स०] द्रव्य का भाव।

द्रव्यवान्—वि० [स० द्रव्यवत्] [स्त्री० द्रव्यवती] धनवान्। धनी।

द्रष्टव्य—वि० [स०] १ देखने योग्य। दर्शनीय। २ जो दिखाया जानेवाला हो।

द्रष्टा—वि० [स०] १ देखनेवाला। २ साक्षात् करनेवाला। ३ दर्शक। प्रकाशक। सज्ञा पु० साख्य के अनुसार पुरुष, और योग के अनुसार आत्मा।

द्राक्षा—सज्ञा स्त्री० [स०] दाख। अगूर।

द्राघिमा—सज्ञा पु० [स० द्राघिमन्] १ दीर्घता। लबाई। २ अक्षाश सूचित करनेवाली वे कल्पित रेखाएँ जो भूमध्य रेखा के समानातर पूर्व-पश्चिम को मानी गई है।

द्राव—सज्ञा पु० [स०] १ गमन। २ क्षरण। ३ बहने या पसीजने की क्रिया।

द्रावक—वि० [स०] १ ठोस चीज को पानी की तरह पतला करनेवाला। २ बहाने-वाला। ३ गलानेवाला। ४ पिघलाने-वाला। ५ हृदय पर प्रभाव डालनेवाला।

द्रावण—सज्ञा पु० [स०] गलाने या पिघलाने की क्रिया या भाव।

द्राविड—वि० [स०] [स्त्री० द्राविडी] द्रविड देशवासी।

द्राविडी—वि० [स०] द्रविड-सबधी। मुहा०—द्राविडी प्राणायाम=कोई सीधी तरह होनेवाली बात घुमाव-फिराव के साथ करना।

द्रुत—वि० [स०] १ द्रवीभूत। गला हुआ। २ शीघ्रगामी। तेज। ३ भागा हुआ। सज्ञा पु० १ वृक्ष। २ ताल की एक मात्रा का आधा। बिंदु। व्यजन। ३ वह लय जो मध्यम से कुछ तेज हो। दून।

द्रुतगामी—वि० [स० द्रुतगामिन्] [स्त्री० द्रुतगामिनी] शीघ्रगामी। तेज चलनेवाला।

द्रुतपद—सज्ञा पु० [स०] बारह अक्षरो का एक छद।

द्रुतमध्या—सज्ञा स्त्री० [स०] एक अर्द्धसम वृत्ति।

द्रुतविलबित—सज्ञा पु० [स०] एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे एक नगण, दो भगण और एक रगण होता है। सुदरी।

द्रुति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ द्रव। २ गति।

द्रुपद—सज्ञा पु० [स०] उत्तर पाचाल के एक राजा जो महाभारत के युद्ध मे मारे गए थे। धृष्टद्युम्न और शिखडी इनके पुत्र और कृष्णा इनकी कन्या थी।

द्रुम—सज्ञा पु० [स०] वृक्ष।

द्रुमिला—सज्ञा स्त्री० [स०] एक छद जिसके

प्रत्येक चरण में ३२ मात्राएँ होती हैं।

द्रुह्यु–संज्ञा पुं० [सं०] १. प्राचीन आर्य्यों का एक वंश या जनसमूह। २. शर्म्मिष्ठा के गर्भ से उत्पन्न ययाति राजा का ज्येष्ठ पुत्र जिसने ययाति का बुढ़ापा लेना अस्वीकृत किया था।

द्रोण–संज्ञा पुं० [सं०] १. लकड़ी का एक बरतन जिसमें वैदिक काल में सोम रखा जाता था। २. जल आदि रखने का लकड़ी का बरतन। कठवत। ३. चार आढक या १६ सेर की एक प्राचीन माप। ४. पत्तों का दोना। ५. नाव। डोंगा। ६. अरणी की लकड़ी। ७. लकड़ी का रथ। ८. डोम कौआ। काला कौआ। ९. द्रोणगिरि नाम का पहाड़। १०. दे० "द्रोणाचार्य्य"।

द्रोणकाक–संज्ञा पुं० [सं०] डोम कौआ।

द्रोणगिरि–संज्ञा पुं० [सं०] एक पर्वत जिसे वाल्मीकीय रामायण में क्षीरोद समुद्र लिखा है।

द्रोणाचार्य्य–संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत में प्रसिद्ध ब्राह्मण वीर जो भरद्वाज ऋषि के पुत्र थे। शरद्वान् की कन्या कृपी के साथ इनका विवाह हुआ था जिससे अश्वत्थामा नामक वीर पुत्र उत्पन्न हुआ था।

द्रोणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. डोंगी। २. छोटा दोना। ३. काठ का प्याला। कठवत। डोकिया। ४. दो पर्वतों के बीच की भूमि। दून। ५. दर्रा। ६. द्रोण की स्त्री, कृपी। ७. एक परिमाण जो दो सूर्प या १२८ सेर का होता था।

द्रोन*‡–संज्ञा पुं० दे० "द्रोण"।

द्रोह–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० द्रोही] दूसरे का अहितचिंतन। वैर। द्वेष।

द्रोही–वि० [सं० द्रोहिन्] [स्त्री० द्रोहिणी] द्रोह करनेवाला। बुराई चाहनेवाला।

द्रौपदी–संज्ञा स्त्री० [सं०] राजा द्रुपद की कन्या कृष्णा जो पाँचों पांडवों को व्याही गई थी। जूए में युधिष्ठिर का सर्वस्व जीत लेने पर दुर्योधन ने दुःशासन द्वारा इसे भरी सभा में बुलवाकर इसका वस्त्र खिंचवाना चाहा था; पर वह वस्त्र न खिंच सका। इसी पर भीम ने बदला चुकाने के लिये दुःशासन के कलेजे का रक्त-पान करने की प्रतिज्ञा की थी जो उन्होंने कुरुक्षेत्र के युद्ध में पूरी की थी।

द्वंद–संज्ञा पुं० [सं०] १. युग्म। मिथुन। जोड़ा। २. जोड़। प्रतिद्वंद्वी। ३. दो आदमियों की परस्पर लड़ाई। द्वंद्व-युद्ध। ४. झगड़ा। कलह। बखेड़ा। ५. दो परस्पर विरुद्ध वस्तुओं का जोड़ा। जैसे—राग-द्वेष, सुख-दुःख इत्यादि। ६. उलझन। झंझट। जंजाल। ७. कष्ट। दुःख। ८. उपद्रव। झगड़ा। ऊधम। ९. दुबधा। संशय।

संज्ञा स्त्री० [सं० दुंदुभि] दुंदुभी।

द्वंदर*–वि० [सं० द्वंद्वालु] झगड़ालू।

द्वंद्व–संज्ञा पुं० [सं०] १. दो वस्तुएँ जो एक साथ हों। युग्म। जोड़ा। २. स्त्री-पुरुष या नर-मादा का जोड़ा। ३. दो परस्पर विरुद्ध वस्तुओं का जोड़ा। ४. गुप्त बात। रहस्य। ५. दो आदमियों की लड़ाई। ६. झगड़ा। बखेड़ा। कलह। ७. एक प्रकार का समास जिसमें मिलनेवाले सब पद प्रधान रहते हैं और उनका अन्वय एक ही क्रिया के साथ होता है। जैसे—रोटी-दाल पकाओ।

द्वंद्वयुद्ध–संज्ञा पुं० [सं०] वह लड़ाई जो दो पुरुषों के बीच में हो। कुश्ती।

द्वय–वि० [सं०] दो।

द्वादश–वि० [सं०] १. जो संख्या में दस और दो हो। बारह। २. बारहवाँ।

संज्ञा पुं० बारह की संख्या या अंक। १२।

द्वादशाक्षर–संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु का एक मंत्र जिसमें बारह अक्षर हैं। वह मंत्र यह है—"ओं नमो भगवते वासुदेवाय"।

द्वादशाह–संज्ञा पुं० [सं०] १. बारह दिनों का समुदाय। २. वह श्राद्ध जो किसी के निमित्त उसके मरने से बारहवें दिन हो।

द्वादशी–संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी पक्ष की

बारहवीं तिथि।
द्वादसबानी*–वि० दे० "बारहबानी"।
द्वापर–संज्ञा पु० [सं०] चार युगों में से तीसरा युग। पुराणों में यह युग ८६४००० वर्ष का माना गया है।
द्वार–संज्ञा पु० [सं०] १ दीवार, परदे आदि में वह खुला स्थान जिससे होकर कोई वस्तु भीतर-बाहर आ जा सके। मुंह। मुहाना। मुहड़ा। २ घर में आने-जाने के लिये दीवार में खुला हुआ स्थान। दरवाजा। ३ इंद्रियों के मार्ग या छेद, जैसे—आंख, कान, नाक। ४ उपाय। साधन।
द्वारका–संज्ञा स्त्री० [सं०] काठियावाड़-गुजरात की एक प्राचीन नगरी। यह सात पुरियों में से एक है। कुशस्थली। द्वारावती।
द्वारकाधीश–संज्ञा पु० [सं०] १ श्रीकृष्ण। २ कृष्ण की वह मूर्ति जो द्वारका में है।
द्वारकानाथ–संज्ञा पु० दे० 'द्वारकाधीश'।
द्वारपाल–संज्ञा पु० [सं०] वह जो दरवाजे पर रक्षा के लिये नियुक्त हो। दरबान।
द्वारपूजा–संज्ञा स्त्री० [सं०] विवाह में एक कृत्य जो कन्यावाले के द्वार पर उस समय होता है जब बारात के साथ वर आता है।
द्वारवती–संज्ञा स्त्री० [सं०] द्वारका।
द्वारसमुद्र–संज्ञा पु० [सं०] दक्षिण का एक पुराना नगर जहाँ कर्नाटक के राजाओं की राजधानी थी।
द्वारा–संज्ञा पु० [सं० द्वार] १ द्वार। दरवाजा। फाटक। २ मार्ग। राह। अव्य० [सं० द्वारात्] जरिए से। साधन से।
द्वारावती–संज्ञा स्त्री० [सं०] द्वारका।
द्वारिका–संज्ञा स्त्री० दे० 'द्वारका'।
द्वारी*–संज्ञा स्त्री० [सं० द्वार+ई (प्रत्य०)] छोटा द्वार। दरवाजा।
द्वि–वि० [सं०] दो।
द्विक–वि० [सं०] १ जिसमें दो अवयव हों। २ दोहरा।
द्विकर्मक–वि० [सं०] (क्रिया) जिसके दो कर्म हों।
द्विकल–संज्ञा पु० [हिं० द्वि+कला] छंद-शास्त्र में दो मात्राओं का समूह।
द्विगु–संज्ञा पु० [सं०] वह कर्मधारय समास जिसका पूर्वपद संख्यावाचक हो। पाणिनि ने इसे कर्मधारय के अंतर्गत रखा है, पर और लोग इसे स्वतंत्र समास मानते हैं।
द्विगुण–वि० [सं०] दुगना। दूना।
द्विगुणित–वि० [सं०] १ दो से गुणा किया हुआ। २ दूना। दुगना।
द्विज–संज्ञा पु० [सं०] जिसका जन्म दो बार हुआ हो।
संज्ञा पु० [सं०] १ अंडज प्राणी। २ पक्षी। ३ ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य वर्ण के पुरुष जिनको यज्ञोपवीत धारण करने का अधिकार है। ४ ब्राह्मण। ५ चंद्रमा। ६ दांत।
द्विजन्मा–वि० [सं० द्विजन्मन्] जिसका दो बार जन्म हुआ हो।
संज्ञा पु० द्विज।
द्विजपति, द्विजराज–संज्ञा पु० [सं०] १ ब्राह्मण। २ चंद्र। ३ कपूर। ४ गरुड।
द्विजाति–संज्ञा पु० [सं०] १ ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य, जिनको यज्ञोपवीत धारण करने का अधिकार है। द्विज। २ ब्राह्मण। ३ अंडज। ४ पक्षी। ५ दांत।
द्विजिह्व–वि० [सं०] १ जिसे दो जीभ हों। २ चुगलखोर। ३ खल। दुष्ट।
संज्ञा पु० सांप।
द्विजेंद्र, द्विजेश–संज्ञा पु० दे० "द्विजपति"।
द्वितीय–वि० [सं०] [स्त्री० द्वितीया] दूसरा।
द्वितीया–संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रत्येक पक्ष की दूसरी तिथि। दूज।
द्वित्व–संज्ञा पु० [सं०] १ दो का भाव। २ दोहरे होने का भाव।
द्विदल–वि० [सं०] १ जिसमें दो दल या पिंड हों। २ जिसमें दो पटल हों।
संज्ञा पु० वह अन्न जिसमें दो दल हों। दाल।
द्विधा–क्रि० वि० [सं०] १ दो प्रकार से। दो तरह से। २ दो खंडों या टुकड़ों में।
द्विपदी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह छंद या वृत्ति जिसमें दो पद हों। २ दो पदों का

गीत। ३. एक प्रकार का चित्रकाव्य जिसमें किसी दोहे आदि को कोष्ठों की तीन पंक्तियों में लिखते हैं।

द्विपाद–वि० [सं०] १. दो पैरोंवाला (पशु) २. जिसमें दो पद या चरण हों।

द्विभाषी–संज्ञा पुं० [सं० द्विभाषिन्] [स्त्री० द्विभाषिणी] वह पुरुष जो दो भाषाएँ जानता हो। दुभाषिया।

द्विमुखी–वि० स्त्री० [सं०] दो मुँहवाली। संज्ञा स्त्री० वह गाय जो बच्चा दे रही हो। (ऐसी गाय के दान का बड़ा माहात्म्य समझा जाता है।)

द्विरद–संज्ञा पुं० [सं०] हाथी। वि० दो दाँतोंवाला।

द्विरागमन–संज्ञा पुं० [सं०] वधू का अपने पति के घर दूसरी बार आना। दोंगा।

द्विरुक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] दो बार कथन।

द्विरेफ–संज्ञा पुं० [सं०] भ्रमर। भौंरा।

द्विविध–वि० [सं०] दो प्रकार का। क्रि० वि० दो प्रकार से।

द्विविधा*–संज्ञा पुं० [सं० द्विविध] दुबधा।

द्विवेदी–संज्ञा पुं० [सं० द्विवेदिन्] ब्राह्मणों की एक उपजाति। दूबे।

द्विशिर–वि० [सं० द्वि+शिर] दो सिरोंवाला। जिसके दो सिर हों।

मुहा०—कौन द्विशिर है? = किसे फालतू सिर है? *किसे अपने मरने का भय नहीं है?*

द्वींद्रिय–संज्ञा पुं० [सं०] वह जंतु जिसके दो ही इंद्रियाँ हों।

द्वीप–संज्ञा पुं० [सं०] १. स्थल का वह भाग जो चारो ओर जल से घिरा हो। टापू। जज़ीरा। (बहुत बड़े द्वीप को महाद्वीप और छोटे छोटे द्वीपों के समूह को द्वीपपुंज या द्वीपमाला कहते हैं।) २. पुराणानुसार पृथ्वी के सात बड़े विभाग जिनके नाम ये हैं—जंबूद्वीप, लंकाद्वीप, शाल्मलिद्वीप, कुशद्वीप, क्रौंचद्वीप, शाकद्वीप और पुष्करद्वीप।

द्वेष–संज्ञा पुं० [सं०] चित्त को अप्रिय लगने की वृत्ति। चिढ़। शत्रुता। वैर।

द्वेषी–वि० [सं० द्वेषिन्] [स्त्री० द्वेषिणी] विरोधी। वैरी। चिढ़ रखनेवाला।

द्वेष्टा–वि० दे० "द्वेषी"।

द्वै*†–वि० [सं० द्वय] दो। दोनों।

द्वैज*–संज्ञा स्त्री० [सं० द्वितीय] द्वितीया। दूज।

द्वैत–संज्ञा पुं० [सं०] १. दो का भाव। युग्म। युगल। २. अपने और पराए का भाव। भेद। अंतर। भेद-भाव। ३. दुबधा। भ्रम। ४. अज्ञान।

द्वैतवाद–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह दार्शनिक सिद्धांत जिसमें आत्मा और परमात्मा अर्थात् जीव और ईश्वर दो भिन्न पदार्थ मानकर विचार किया जाता है। वेदांत को छोड़कर शेष पाँचों दर्शन द्वैतवादी माने जाते हैं। २. वह दार्शनिक सिद्धांत जिसमें भूत और चित् शक्ति अथवा शरीर और आत्मा दो भिन्न पदार्थ माने जाते हैं।

द्वैतवादी–वि० [सं० द्वैतवादिन्] [स्त्री० द्वैतवादिनी] द्वैतवाद को माननेवाला।

द्वैध–संज्ञा पुं० [सं०] १. विरोध। २. राजनीति के षड्गुणों में से एक जिसमें मुख्य उद्देश्य गुप्त रखकर दूसरा उद्देश्य प्रकट किया जाता है। ३. आधुनिक राजनीति में वह शासन-प्रणाली जिसमें कुछ विभाग सरकार के हाथ में और कुछ प्रजा के प्रतिनिधियों के हाथ में हों।

द्वैपायन–संज्ञा पुं० [सं०] १. व्यास जी का एक नाम। २. एक ह्रद या ताल जिसमें कुरुक्षेत्र के युद्ध में दुर्योधन भागकर छिपा था।

द्वैमातुर–वि० [सं०] जिसकी दो माँ हों। संज्ञा पुं० १. गणेश। २. जरासंध।

द्वौ*–वि० [हिं० दो+ऊ, दोउ] दोनों। वि० दे० "द्वय"।

ध

ध–हिंदी या संस्कृत वर्णमाला का उन्नीसवाँ व्यंजन और तवर्ग का चौथा वर्ण जिसका उच्चारण-स्थान दंतमूल है।

धंधक–संज्ञा पुं० [हिं० धंधा] काम-धंधे का आडंबर। जंजाल। बखेड़ा।

धंधकधोरी–संज्ञा पुं० [हिं० धंधक + धोरी] हर घड़ी काम में जुता रहनेवाला।

धंधरक—संज्ञा पुं० दे० "धंधक"।

धँधला–संज्ञा पुं० [हिं० धंधा] १. कपट का आडंबर। झूठा ढोंग। छल-छंद। . २ हीला। बहाना।

धँधलाना–क्रि० अ० [हिं० धँधला] छल-छंद करना। ढंग रचना।

धंधा–संज्ञा पुं० [सं० धनधान्य] १. धन या जीविका के लिये उद्योग। काम-काज। २ उद्यम। व्यवसाय। कारबार।

धँधार–संज्ञा स्त्री० [हिं० धूआँ] ज्वाला। लपट।

धंधारी–संज्ञा स्त्री० [हिं० धंधा] गोरखधंधा।

धँधोर–संज्ञा पुं० [अनु० धायँ धायँ = आग दहकने की ध्वनि] १ होलिका। होली। २ आग की लपट। ज्वाला।

धँसन–संज्ञा स्त्री० [हिं० धँसना] १ धँसने की क्रिया या ढंग। २ घुसने या पैठने का ढंग। ३ गति। चाल।

धँसना–क्रि० अ० [सं० दंशन] १. किसी कड़ी वस्तु का किसी नरम वस्तु के भीतर दाब पाकर घुसना। गड़ना।
मुहा०—जी या मन में धँसना = चित्त में प्रभाव उत्पन्न करना। दिल में असर करना।
२ अपने लिये जगह करते हुए घुसना। *†३ नीचे की ओर धीरे धीरे जाना। नीचे खसकना। उतरना। ४ तल के किसी अंश का दवाव आदि पाकर नीचे हो जाना जिससे गड्ढा सा पड़ जाय। ५ किसी खड़ी वस्तु का जमीन में और नीचे तक चला जाना। बैठ जाना। *क्रि० अ० [सं० ध्वंसन] नष्ट होना।

धँसान–संज्ञा स्त्री० [हिं० धँसना] १. धँसने की क्रिया या ढंग। २ दलदल।

धँसाना–क्रि० स० [हिं० धँसना] १. नरम चीज में घुसाना। गड़ाना। चुभाना। २ पैठाना। प्रवेश कराना। ३. तल या सतह को दबाकर नीचे की ओर करना।

धँसाव–संज्ञा पुं० दे० "धँसान"।

धक–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ हृदय के जल्दी जल्दी चलने का भाव या शब्द।
मुहा०—जी धकधक करना = भय या उद्वेग से जी धड़कना। जी धक हो जाना = १. डर से जी दहल जाना। २ चौंक उठना।
२ उमंग। उद्वेग। चोप।
क्रि० वि० अचानक। एकबारगी।
संज्ञा स्त्री० [देश०] छोटी जूँ।

धकधकाना–क्रि० अ० [अनु० धक] १. भय, उद्वेग आदि के कारण हृदय का जोर जोर से या जल्दी जल्दी चलना। † २ (आग का) दहकना। भभकना।

धकधकी–संज्ञा स्त्री० [अनु० धक] १ जी धक धक करने की क्रिया या भाव। जी की धड़कन। २ गले और छाती के बीच का गड्ढा जिसमें स्पंदन मालूम होता है। धुकधुकी। दुगदुगी।
मुहा०—धुकधुकी धड़कना = अकस्मात् आशंका या खटका होना। छाती धड़कना।

धकधक–संज्ञा स्त्री० [अनु०] धकधकी।
क्रि० वि० दहलते हुए। डरते हुए।

धकपकाना–क्रि० अ० [अनु० धक] जी में दहलना। दहशत खाना। डरना।

धकपेल*–संज्ञा स्त्री० [अनु० धक + पेलना] धक्कमधक्का। रेलापेल।

धका†*–संज्ञा पुं० दे० "धक्का"।

धकाना†–क्रि० स० [हिं० दहकाना] दहकाना। सुलगाना।

धकारा†–संज्ञा पुं० [अनु० धक] आशंका।

खटका।

धकियाना†-क्रि० स० [हिं० धक्का] धक्का देना। ढकेलना।

धकेलना-क्रि० स० दे० "ढकेलना"।

धकैत-वि० [हिं० धक्का + ऐत (प्रत्य०)] धक्कम-धक्का करनेवाला।

धक्कमधक्का-संज्ञा पुं० [हिं० धक्का] १. बार बार, बहुत अधिक या बहुत से आदमियों का परस्पर धक्का देने का काम। धकापेल। २. ऐसी भीड़ जिसमें लोगों के शरीर एक दूसरे से रगड़ खाते हों।

धक्का-संज्ञा पुं० [सं० धम, हिं० धमक] १. एक वस्तु का दूसरी वस्तु के साथ ऐसा वेग-युक्त स्पर्श जिससे एक या दोनों पर एक बारगी भारी दबाव पड़ जाय। टक्कर। रेला। झोंका। २. ढकेलने की क्रिया। झोंका। थपेट। ३. ऐसी भारी भीड़ जिसमें लोगों के शरीर एक दूसरे से रगड़ खाते हों। कसमकस। ४. शोक या दुःख का आघात। संताप। ५. विपत्ति। आफ़त। ६. हानि। टोटा। नुकसान।

धक्कामुक्की-संज्ञा स्त्री० [हिं० धक्का+मुक्का] ऐसी लड़ाई जिसमें एक दूसरे को ढकेले और घूसों से मारें। मुठभेड़। मारपीट।

धगड़ा-संज्ञा पुं० [सं० धव = पति] यार। उपपति।

धगधगाना*†-क्रि० अ० [अनु०] धकधकाना। धड़कना (छाती या जी का)।

धगड़ी-वि० [हिं० धगड़ा = पति या यार] १. पति की दुलारी। २. कुलटा।

धगा*†-संज्ञा पुं० दे० "धागा"।

धचका-संज्ञा पुं० [अनु०] धक्का। झटका।

धज-संज्ञा स्त्री० [सं० ध्वज] १. सजावट। बनाव। सुंदर रचना।

यौ०—सजधज = तैयारी। साज-सामान।

२. मोहित करनेवाली चाल। सुंदर ढंग। ३. बैठने-उठने का ढंग। ठवन। ४. ठसक। नखरा। ५. रूप-रंग। शोभा।

धजा-संज्ञा स्त्री० दे० "ध्वजा"।

धजीला-वि० [हिं० धज + ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० धजीली] सजीला। तरहदार। सुंदर।

धज्जी-संज्ञा स्त्री० [सं० धटी] १. कपड़, कागज आदि की कटी हुई लंबी पतली पट्टी। २. लोहे की चद्दर या लकड़ी के पतले तख्ते की अलग की हुई लंबी पट्टी।

मुहा०—धज्जियाँ उड़ाना = १. टुकड़े-टुकड़े करना। विदीर्ण करना। २. (किसी की) खूब दुर्गति करना।

धड़ंग-वि० [हिं० धड़ + अंग] नंगा।

धड़-संज्ञा पुं० [सं० धर] १. शरीर का स्थूल मध्यभाग जिसके अंतर्गत छाती, पीठ और पेट होते हैं। २. पेड़ का वह सबसे मोटा कटा भाग जिससे निकलकर डालियाँ इधर-उधर फैली रहती हैं। पेड़ी। तना। संज्ञा स्त्री० [अनु०] वह शब्द जो किसी वस्तु के एकबारगी गिरने आदि से होता है।

धड़क-संज्ञा स्त्री० [अनु० धड़] १. दिल के चलने या उछलने की क्रिया। हृदय का स्पंदन। २. हृदय के स्पंदन का शब्द। तड़प। तपाक। ३. भय, आशंका आदि के कारण हृदय का अधिक स्पंदन। जी धक धक करने की क्रिया। ४. आशंका। खटका। अंदेशा। भय।

यौ०—बे-धड़क = बिना किसी संकोच के।

धड़कन-संज्ञा स्त्री० [हिं० धड़क] हृदय का स्पंदन। दिल का धक धक करना।

धड़कना-क्रि० अ० [हिं० धड़क] १. हृदय का स्पंदन करना। दिल का उछलना या धक धक करना।

मुहा०—छाती, जी या दिल धड़कना = भय या आशंका से हृदय का ज़ोर ज़ोर से और जल्दी जल्दी चलना।

२. किसी भारी वस्तु के गिरने का सा धड़-धड़ शब्द होना।

धड़का-संज्ञा पुं० [अनु० धड़] १. दिल की धड़कन। २. दिल धड़कने का शब्द। ३. खटका। अंदेशा। भय। ४. पयाल का पुतला या डंडे पर रखी हुई काली हाँड़ी आदि जिसे चिड़ियों को डराने के लिए खेतों में रखते हैं। धोखा।

धड़काना–क्रि० स० [हिं० धड़क] १ दिल में धड़क पैदा करना। जी धक धक कराना। २ जी दहलाना। डराना। ३ धड़धड़ शब्द उत्पन्न कराना।

धड़धड़ाना–क्रि० अ० [अनु० धड़धड़] धड़ धड़ शब्द करना। भारी चीज के गिरने-पड़ने की सी आवाज करना।

मुहा०—धड़धड़ाता हुआ = १ धड़ धड़ शब्द और वेग के साथ। २ बिना किसी प्रकार के खटके या संकोच के। बेधड़क।

धड़ल्ला–संज्ञा पु० [अनु० धड़] धड़ाका।

मुहा०—धड़ल्ले से या धड़ल्ले के साथ = १ बिना किसी रुकावट के। झाव से। २ बिना किसी प्रकार के भय या संकोच के। बेधड़क।

धड़ा–संज्ञा पु० [सं० धट] १ वह बोझ जो बँधी हुई तौल का होता है और जिसे तराजू के एक पलड़े पर रखकर दूसरे पलड़े पर उसी के बराबर चीज रखकर तौलते हैं। बाट। बटखरा।

मुहा०—धड़ा करना = कोई वस्तु रखकर तौलने के पहले तराजू के दोनों पलड़ों को बराबर कर लेना। धड़ा बाँधना = १ दे० "धड़ा करना"। २ दोषारोपण करना। कलंक लगाना।

२ चार सेर की एक तौल। ३ तराजू।

धड़ाका–संज्ञा पु० [अनु० धड़] 'धड़' 'धड़' शब्द। धमाके या गड़गड़ाहट का शब्द।

मुहा०—धड़ाके से = जल्दी से। चटपट।

धड़ाधड़–क्रि० वि० [अनु० धड़] १ लगातार 'धड़' 'धड़' शब्द के साथ। २ लगातार। बराबर। जल्दी जल्दी।

धड़ाम–संज्ञा पु० [अनु० धड़] ऊपर से एक बारगी कूदने या गिरने का शब्द।

धड़ी–संज्ञा स्त्री० [सं० घटिका, घटी] १ चार या पाँच सेर की एक तौल। २ वह लकीर जो मिस्सी लगाने या पान खाने से ओठों पर पड़ जाती है।

धत्–अव्य० [अनु०] दुतकारने का शब्द। तिरस्कार के साथ हटाने का शब्द।

धत–संज्ञा स्त्री० [सं० रत, हिं० लत] खराब आदत। कुटेव। लत।

धतकारना–क्रि० स० [अनु० धत्] २ दुतकारना। दुरदुराना। २ लानत-मलामत करना। धिक्कारना।

धता–वि० [अनु० धत्] जो दूर हो गया हो या किया गया हो। चलता। हटा हुआ।

मुहा०—धता करना या बताना = चलता करना। हटाना। भगाना। टालना।

धतूर–संज्ञा पु० [अनु० धू + सं० तूर] नरसिंहा नाम का बाजा। तुरही। सिंहा।

धतूरा–संज्ञा पु० [सं० धुस्तूर] दो-तीन हाथ ऊँचा एक पौधा। इसके फलों के बीज बहुत विषैले होते हैं।

मुहा०—धतूरा खाए फिरना = उन्मत्त के समान घूमना।

धत्ता–संज्ञा पु० [देश०] एक मात्रिक छंद।

धत्तानंद–संज्ञा पु० [सं०] एक छंद जिसकी प्रत्येक पंक्ति में ३१ मात्राएँ और अंत में नगण होता है।

धधक–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ आग की लपट के ऊपर उठने की क्रिया या भाव। आग की भभक। २ आँच। लपट। लौ।

धधकना–क्रि० अ० [हिं० धधक] आग का लपट के साथ जलना। दहकना। भड़कना।

धधकाना–क्रि० स० [हिं० धधकना] आग दहकाना। प्रज्वलित करना।

धधाना–क्रि० अ० दे० "धधकाना"।

धनंजय–संज्ञा पु० [सं०] १ अग्नि। २ चित्रक वृक्ष। चीता। ३ अर्जुन का एक नाम। ४ अर्जुन वृक्ष। ५ विष्णु। ६ शरीरस्थ पाँच वायुओं में से एक।

धन–संज्ञा पु० [सं०] १ रुपया-पैसा, जमीन-जायदाद इत्यादि। संपत्ति। द्रव्य। दौलत। २ चौपायों का झुण्ड जो किसी के पास हो। गाय, भैंस आदि। गोधन। ३ स्नेह-पात्र। अत्यंत प्रिय व्यक्ति। जीवनसर्वस्व। ४ गणित में जोड़ी जानेवाली संख्या या जोड़ का चिह्न। ऋण या क्षय का उलटा। ५ मूल। पूँजी।

*संज्ञा स्त्री० [सं० धनी] युवती स्त्री। वधू। ‡वि० दे० 'धन्य'।

धनक–संज्ञा पुं० [सं० धनु] १. धनुष। २. एक प्रकार की ओढ़नी।
धनकुबेर–संज्ञा पुं० [सं०] वह जो धन में कुबेर के समान हो। अत्यंत धनी।
धनतेरस–संज्ञा स्त्री० [हिं० धन+तेरस] कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी। इस दिन रात को लक्ष्मी की पूजा होती है।
धनद–वि० [सं०] धन देनेवाला। दाता। संज्ञा पुं० १. कुबेर। २. धनपति वायु।
धनधान्य–संज्ञा पुं० [सं०] धन और अन्न आदि। सामग्री और संपत्ति।
धनधाम–संज्ञा पुं० [सं०] घर-बार और रुपया-पैसा।
धनधारी–संज्ञा पुं० [सं० धन+धारी] १ कुबेर। २. बहुत बड़ा अमीर।
धनपति–संज्ञा पुं० [सं०] कुबेर।
धनवंत–वि० दे० "धनवान्"।
धनवान्–वि० [सं०] [स्त्री० धनवती] जिसके पास धन हो। धनी। दौलतमंद।
धनहीन–वि० [सं०] निर्धन। दरिद्र।
धना*–संज्ञा स्त्री०[सं०धनिका, हिं०धनिया=युवती] युवती। वधू। (गीत या कविता)
धनाढ्य–वि० [सं०] धनवान्। अमीर।
धनाश्री–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक रागिनी।
धनि*–संज्ञा स्त्री० [सं० धनी] युवती। वधू। वि० दे० "धन्य"।
धनिक–वि० [सं०] धनी। संज्ञा पुं० १. धनी मनुष्य। २. पति।
धनिया–संज्ञा पुं० [सं० धन्याक, धनिका] एक छोटा पौधा जिसके सुगंधित फल मसाले के काम में आते हैं।
* संज्ञा स्त्री० [सं०धनिका] युवती स्त्री।
धनिष्ठा–संज्ञा स्त्री० [सं०] सत्ताईस नक्षत्रों में से तेईसवाँ नक्षत्र जिसमें पाँच तारे हैं।
धनी–वि० [सं० धनिन्] १. जिसके पास धन हो।
यौ०—धनी धोरी = १. धन और मर्यादा-वाला। २. मालिक या रक्षक।
मुहा०—बात का धनी = बात का सच्चा।
२. जिसके पास कोई गुण आदि हो। संज्ञा पुं० १. धनवान् पुरुष। मालदार आदमी। २. वह जिसके अधिकार में कोई हो। अधिपति। मालिक। स्वामी। ३. पति। शौहर।
संज्ञा स्त्री० [सं०] युवती स्त्री। वधू।
धनु–संज्ञा पुं० दे० "धनुस्"।
धनुआ–संज्ञा पुं० [सं० धन्वन्, धन्वा] १. धनुष्। कमान। २. रूई धुनने की धुनकी।
धनुई†–संज्ञा स्त्री०[सं० धनु+ई (प्रत्य०)] छोटा धनुस्।
धनुक–संज्ञा पुं० १. दे० "धनुस्"। २. दे० "इन्द्रधनुष"।
धनुकबाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० धनुक+बाई] लकवे की तरह का एक वायु-रोग।
धनुर्द्धर–संज्ञा पुं० [सं०] धनुष धारण करने-वाला पुरुष। कमनैत। तीरंदाज।
धनुर्द्धारी–संज्ञा पुं० दे० "धनुर्धर"।
धनुर्यज्ञ–संज्ञा पुं० [सं०] एक यज्ञ जिसमें धनुस् का पूजन तथा उसके चलाने आदि की परीक्षा भी होती थी।
धनुर्वात–संज्ञा पुं० [सं०] धनुकबाई रोग।
धनुर्विद्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] धनुस् चलाने की विद्या। तीरंदाज़ी का हुनर।
धनुर्वेद–संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें धनुस् चलाने की विद्या का निरूपण है। यह यजुर्वेद का उपवेद माना जाता है।
धनुष–संज्ञा पुं० दे० "धनुस्"।
धनुस्–संज्ञा पुं० [सं०] १. फलदार तीर फेंकने का वह अस्त्र जो बाँस या लोहे के लचीले डंडे को झुकाकर और उसके दोनों छोरों के बीच डोरी बाँधकर बनाया जाता है। कमान। २. ज्योतिष में धनुराशि। ३. एक लग्न। ४. चार हाथ की एक माप।
धनुहाई*–संज्ञा स्त्री० [हिं० धनु+हाई (प्रत्य०)] धनुस् की लड़ाई।
धनुही†–संज्ञा स्त्री०[हिं० धनु+ही (प्रत्य०)] लड़कों के खेलने की कमान।
धनेस–संज्ञा पुं० [सं० धनस्?] बगले के आकार की एक चिड़िया।
धन्ना*–वि० दे० "धन्य"।

घन्नासेठ—संज्ञा पु० [हिं० धन + सेठ] बहुत धनी आदमी। प्रसिद्ध धनाढ्य।

घन्नी—संज्ञा स्त्री० [सं० (गो) धन] १ गायों और बैलों की एक जाति। २ घोड़े की एक जाति।

धन्य—वि० [सं०] प्रशंसा या बड़ाई के योग्य। पुण्यवान्। सुकृती। श्लाघ्य।

धन्यवाद—संज्ञा पु० [सं०] १ साधुवाद। शाबाशी। प्रशंसा। २ किसी उपकार या अनुग्रह के बदले में प्रशंसा। कृतज्ञता-सूचक शब्द। शुक्रिया।

धन्वन्तरि—संज्ञा पु० [सं०] देवताओं के वैद्य जो पुराणानुसार समुद्र मथने के समय और सब वस्तुओं के साथ समुद्र से निकले थे। ये आयुर्वेद के सबसे प्रधान आचार्य और सबसे बड़े चिकित्सक माने जाते हैं।

धन्वा—संज्ञा पु० [सं० धन्वन्] १ धनुस्। कमान। २ जलहीन देश। मरुभूमि।

धन्वाकार—वि० [सं०] धनुस् या कमान के आकार का। गोलाई के साथ झुका हुआ। टेढ़ा।

धन्वी—वि० [सं० धन्विन्] १ धनुर्धर। कमनैत। २ निपुण। चतुर।

धप—संज्ञा स्त्री० [अनु०] किसी भारी और मुलायम चीज के गिरने का शब्द।

संज्ञा पु० धौल। थप्पड़। तमाचा।

धपना—क्रि० अ० [सं० धावन, या हिं० धाप] १ जोर से चलना। दौड़ना। २ झपटना। लपकना। ३ मारना। पीटना।

धप्पा—संज्ञा पु० [अनु० धप] १ थप्पड़। तमाचा। २ घाटा। नुकसान।

धब्बा—संज्ञा पु० [देश०] १ किसी सतह के ऊपर पड़ा हुआ ऐसा चिह्न जो देखने में बुरा लगे। दाग। निशान। २ कलंक।

मुहा०—नाम में धब्बा लगाना = कीर्ति को मिटानेवाला काम करना।

धम—संज्ञा स्त्री० [अनु०] भारी चीज के गिरने का शब्द। धमाका।

धमक—संज्ञा स्त्री० [अनु० धम] १ भारी वस्तु के गिरने का शब्द। आघात का शब्द। २ पैर रखने की आवाज या आहट। ३ आघात आदि से उत्पन्न कंप या विकलता। ४. आघात। चोट।

धमकना—क्रि० अ० [हिं० धमक] १ 'धम' शब्द के साथ गिरना। धमाका करना।

मुहा०—आ धमकना = आ पहुँचना।

२ दर्द करना। व्यथित होना। (सिर)

धमकाना—क्रि० स० [हिं० धमक] १ डराना। भय दिखाना। २ डाँटना। घुड़कना।

धमकी—संज्ञा स्त्री० [हिं०] १ दंड देने या अनिष्ट करने का विचार जो भय दिखाने के लिए प्रकट किया जाय। त्रास दिखाने की क्रिया। २ घुड़की। डाँट-डपट।

मुहा०—धमकी में आना = डराने से डरकर कोई काम कर बैठना।

धमधमाना—क्रि० अ० [अनु० धम] 'धम धम' शब्द करना।

धमनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शरीर के भीतर की वह छोटी या बड़ी नली जिसमें रक्त आदि का संचार होता रहता है। इनकी संख्या सुश्रुत के अनुसार २४ है। इनकी सहस्रों शाखाएँ सारे शरीर में फैली हुई हैं। २ वह नली जिसमें शुद्ध लाल रक्त हृदय के स्पंदन द्वारा क्षण-क्षण पर जाकर सारे शरीर में फैलता रहता है। नाड़ी। (आधुनिक)

धमाका—संज्ञा पु० [अनु०] १ भारी वस्तु के गिरने का शब्द। २ बंदूक का शब्द। ३ आघात। धक्का। ४ पथरकला बंदूक। ५ हाथी पर लादने की तोप।

धमाचौकड़ी—संज्ञा स्त्री० [अनु० धम + हिं० चौकड़ी] १ उछल-कूद। उपद्रव। ऊधम। २ धींगाधींगी। मार-पीट।

धमाधम—क्रि० वि० [अनु० धम] १ लगातार कई बार 'धम', 'धम' शब्द के साथ। २ लगातार कई प्रहार-शब्दों के साथ।

संज्ञा स्त्री० १ कई बार गिरने से उत्पन्न लगातार धम धम शब्द। २ मार-पीट।

धमार—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ उछल-कूद। उपद्रव। उत्पात। धमाचौकड़ी। २ नटों

की उछल-कूद। कलाबाजी। ३. विशेष प्रकार के साधुओं की दहकती आग पर कूदने की क्रिया।
संज्ञा पुं० होली में गाने का एक गीत।
धरंता*†-वि० [हि० धरना] पकड़नेवाला। धारण करनेवाला।
धर-वि० [सं०] १. धारण करनेवाला। ऊपर लेनेवाला। २. ग्रहण करनेवाला।
संज्ञा पुं० १. पर्वत। पहाड़। २. कच्छप जो पृथ्वी को ऊपर लिए है। कूर्मराज। ३. विष्णु। ४. श्रीकृष्ण। ५. पृथ्वी।
संज्ञा स्त्री० [हि० धरना] धरने या पकड़ने की क्रिया।
यौ०—धर-पकड़ = भागते हुए आदमियों को पकड़ने का व्यापार। गिरफ्तारी।
धरक†*-संज्ञा स्त्री० दे० "धड़क"।
धरकना-क्रि० अ० दे० "धड़कना"।
धरण-संज्ञा पुं० दे० "धारणा"।
धरणि-संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी।
धरणिधर-संज्ञा पुं० [सं०] १. पृथ्वी को धारण करनेवाला। २. कच्छप। ३. पर्वत। ४. विष्णु। शिव। ६. शेषनाग।
धरणी-संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी।
धरणीसुता-संज्ञा स्त्री० [सं०] सीता।
धरता-संज्ञा पुं० [हि० धरना या वैदिक धर्त्तृ] १. किसी का रुपया धरनेवाला। देनदार। ऋणी। कर्जदार। २. कोई कार्य आदि अपने ऊपर लेनेवाला। धारण करनेवाला।
यौ०—कर्त्ता धरता = सब कुछ करनेवाला।
धरती-संज्ञा स्त्री० [सं० धरित्री] पृथ्वी।
धरधर*-संज्ञा पुं० दे० "धराधर"।
संज्ञा स्त्री० दे० "धड़ धड़"।
धरधरा*†-संज्ञा पुं० [अनु०] धड़कन।
धरधराना*†-क्रि० अ० दे० "धड़धड़ाना"।
धरन-संज्ञा स्त्री० [हि० धरना] १. धरने की क्रिया, भाव या ढंग। २. वह लंबा लट्ठा जो दीवारों या लट्ठों पर इसलिए आड़ा रखा जाता है जिसमें उसके ऊपर पाटन (छत आदि) या कोई बोझ ठहर सके। कड़ी। धरनी। ३. वह नस जो गर्भाशय को दृढ़ता से जकड़े रहती है। गर्भाशय का आधार। ४. गर्भाशय। ५. टेक। हठ।
संज्ञा पुं० दे० "धरना"।
†संज्ञा स्त्री० [सं० धरणि] धरती। जमीन
धरनहार*-वि० [हि० धरना+हार (प्रत्य०)]
धरना-क्रि० स० [सं० धरण] १. किसी वस्तु को दृढ़ता से हाथ में लेना। पकड़ना। थामना। ग्रहण करना।
मुहा०—धर-पकड़कर = जबरदस्ती। बलात्।
२. स्थापित करना। स्थित करना। रखना। ठहराना। ३. पास या रक्षा में रखना।
मुहा०—धरा रह जाना = काम न आना।
४. धारण करना। देह पर रखना। पहनना। ५. अवलंबन करना। अंगीकार करना। ६. व्यवहार के लिए हाथ में लेना। ग्रहण करना। ७. पल्ला पकड़ना। आश्रय ग्रहण करना। ८. किसी फैलनेवाली वस्तु का किसी दूसरी वस्तु में लगना या छू जाना। ९. किसी स्त्री को रखना। रखेली की तरह रखना। १०. गिरवी रखना। रेहन रखना। बंधक रखना।
संज्ञा पुं० कोई काम कराने के लिए किसी के पास अड़कर बैठना और जब तक काम न हो, तब तक अन्न न ग्रहण करना।
धरनी-संज्ञा स्त्री० दे० "धरणी"।
संज्ञा स्त्री० [हि० धरना] हठ। टेक।
धरम*‡-संज्ञा पुं० दे० "धर्म"।
धरवाना-क्रि० स० [हि० धरना का प्रे०] धरने का काम दूसरे से कराना।
धरषना*-क्रि० स० [सं० धर्षण] दबाना। मर्दन करना।
धरसना-क्रि० अ० [सं० धर्षण] १. दब जाना। २. डर जाना। सहम जाना।
क्रि० स० १. दबाना। २. अपमानित करना।
धरसनी*-संज्ञा स्त्री० दे० "धर्षणी"।
धरहर†-संज्ञा स्त्री० [हि० धरना + हर (प्रत्य)] १. गिरफ्तारी। धर-पकड़। २. लड़नेवालों को धर-पकड़कर लड़ाई बंद करने का कार्य्य। बीच-बिचाव। ३. बचाव। रक्षा। ४. धैर्य्य। धीरज।

धरहरना*–क्रि० अ० [अनु०] धड़ धड़ शब्द करना। धड़धड़ाना।
धरहरा–संज्ञा पुं० [हिं० धुर=ऊपर+घर] खंभे की तरह बहुत ऊँचा मकान या भाग जिस पर चढ़ने के लिए भीतर ही भीतर सीढ़ियाँ बनी हों। धौरहर। मीनार।
धरहरिया†–संज्ञा पुं० [हिं० धरहरि] बीच-बिचाव करानेवाला। रक्षक।
धरा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पृथ्वी। जमीन। २. संसार। दुनिया। ३. एक वर्णवृत्त।
धराऊ–वि० [हिं० धरना+आऊ (प्रत्य०)] १. जो साधारण से अधिक अच्छा होने के कारण कभी कभी केवल विशेष अवसरों पर निकाला जाय। बहुमूल्य। २. बहुत दिनों का रखा हुआ। पुराना।
धराक*‡–संज्ञा पुं० दे० "धड़ाक"।
धरातल–संज्ञा पुं० [सं०] १. पृथ्वी। धरती। २. केवल लंबाई-चौड़ाई का गुणन-फल जिसमें मोटाई, गहराई या ऊँचाई का कुछ विचार न किया जाय। सतह। ३ लंबाई और चौड़ाई का गुणनफल। रकबा।
धराधर–संज्ञा पुं० [सं०] १ शेषनाग। २. पर्वत। ३ विष्णु।
धराधरन*–संज्ञा पुं० दे० "धराधर"।
धराधार–संज्ञा पुं० [सं०] शेषनाग।
धराधीश–संज्ञा पुं० [सं०] राजा।
धराना–क्रि० स० [हिं० 'धरना' का प्रे०] १. पकड़ाना। थमाना। २. स्थिर कराना। रखाना। ३. स्थिर करना। ठहराना। निश्चित कराना। मुकर्रर कराना।
धरापुत्र–संज्ञा पुं० [सं०] मंगल ग्रह।
धरासुर†–संज्ञा पुं० [सं०] ब्राह्मण।
धराहर–संज्ञा पुं० दे० "धरहरा"।
धरित्री–संज्ञा स्त्री० [सं०] धरती। पृथ्वी।
धरैया†–संज्ञा पुं० [हिं० धरना] धरनेवाला।
धरोहर–संज्ञा स्त्री० [हिं० धरना] वह वस्तु या द्रव्य जो किसी के पास इस विश्वास पर रखा हो कि उसका स्वामी जब माँगेगा, तब वह दे दिया जायगा। थाती। अमानत।
धर्त्ता–संज्ञा पुं० [सं० धर्तृ] १. धारण करनेवाला। २ कोई काम ऊपर लेनेवाला।
यौ०—धर्त्ता-धर्त्ता=जिसे सब कुछ करने-धरने का अधिकार हो।
धर्म–संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी वस्तु या व्यक्ति की वह वृत्ति जो उसमें सदा रहे, उससे कभी अलग न हो। प्रकृति। स्वभाव। नित्य नियम। २. अलंकार शास्त्र में वह गुण या वृत्ति जो उपमेय और उपमान में समान रूप से हो जैसे—'कमल के ऐसे कोमल और लाल चरण'। इस उदाहरण में कोमलता और ललाई दोनों के साधारण धर्म हैं। ३. वह कृत्य या विधान जिसका फल शुभ (स्वर्ग या उत्तम लोक की प्राप्ति आदि) बताया गया हो। ४ किसी जाति, कुल, वर्ग, पद इत्यादि के लिए उचित ठहराया हुआ व्यवसाय या व्यवहार। कर्त्तव्य। फर्ज। जैसे—ब्राह्मण का धर्म, पुत्र का धर्म। ५. कल्याणकारी कर्म। सुकृत। सदाचार। श्रेय। पुण्य। सत्कर्म।
मुहा०—धर्म कमाना=धर्म करके उसका फल संचित करना। धर्म बिगाड़ना = १. धर्म के विरुद्ध आचरण करना। धर्म भ्रष्ट करना। २ स्त्री का सतीत्व नष्ट करना। धर्म-लगती कहना=ठीक ठीक कहना। सत्य या उचित बात कहना। धर्म से कहना=सत्य सत्य कहना।
६ किसी आचार्य या महात्मा द्वारा प्रवर्तित ईश्वर, परलोक आदि के संबंध में विशेष रूप का विश्वास और आराधना की विशेष प्रणाली। उपासना-भेद। मत। संप्रदाय। पंथ। मजहब। ७ नीति। न्याय-व्यवस्था। कायदा। कानून। जैसे—हिंदू-धर्मशास्त्र। ८. विवेक। ईमान।
धर्म-कर्म–संज्ञा पुं० [सं०] वह कर्म या विधान जिसका करना किसी धर्म-ग्रंथ में आवश्यक ठहराया गया हो।
धर्मक्षेत्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. कुरुक्षेत्र। २. भारतवर्ष जो धर्म के संचय के लिए कर्म-

भूमि माना गया है।

धर्मग्रंथ—संज्ञा पुं० [सं०] वह ग्रंथ या पुस्तक जिसमें किसी जन-समाज के आचार-व्यवहार और उपासना आदि के संबंध में शिक्षा हो।

धर्मघड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० धर्म + हिं० घड़ी] वड़ी घड़ी जो ऐसे स्थान पर लगी हो जिसे सब लोग देख सकें।

धर्मचक्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. धर्म का समूह। २. बुद्ध की धर्मशिक्षा जिसका आरंभ काशी से हुआ था।

धर्मचर्य्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] धर्म का आचरण।

धर्मचारी—वि० [सं० धर्मचारिन्] [स्त्री० धर्मचारिणी] धर्म का आचरण करनेवाला।

धर्मज्ञ—वि० [सं०] धर्म्म जाननेवाला।

धर्मपुत्र युधिष्ठिर।

धर्मतः—अव्य० [सं०] धर्म का ध्यान रखते हुए। सत्य सत्य।

धर्मधक्का—संज्ञा पुं० [सं० धर्म + हिं० धक्का] १. वह हानि या कठिनाई जो धर्म या परोपकार आदि के लिए सहनी पड़े। २. व्यर्थ का कष्ट।

धर्मध्वज—संज्ञा पुं० [सं०] १. धर्म का आडंबर खड़ा करके स्वार्थ साधनेवाला मनुष्य। पाखंडी। २. मिथिला के एक जनकवंशीय राजा जो सन्यास-धर्म और मोक्ष-धर्म के जाननेवाले परम ब्रह्मज्ञानी थे।

धर्मध्वजी—संज्ञा पुं० [सं० धर्मध्वजिन्] पाखंडी।

धर्मनिष्ठ—वि० [सं०] धर्म में जिसकी आस्था हो। धार्मिक। धर्मपरायण।

धर्मनिष्ठा—संज्ञा स्त्री० [सं०] धर्म में आस्था। धर्म में श्रद्धा, भक्ति और प्रवृत्ति।

धर्मपत्नी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसके साथ धर्मशास्त्र की रीति से विवाह हुआ हो। विवाहिता स्त्री।

धर्मबुद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] धर्म-अधर्म का विवेक। भले-बुरे का विचार।

धर्मभीरु—वि० [सं०] जिसे धर्म का भय हो। जो अधर्म करते हुए बहुत डरता हो।

धर्मयुग—संज्ञा पुं० [सं०] सत्ययुग।

धर्मयुद्ध—संज्ञा पुं० [सं०] वह युद्ध जिसमें किसी प्रकार का नियम भंग न हो।

धर्मरक्षित—संज्ञा पुं० [सं०] योग (यवन) देशीय एक बौद्ध धर्मोपदेशक या स्थविर जिसे महाराज अशोक ने अपरांतक (बलोचिस्तान) देश में उपदेश देने भेजा था।

धर्मराइ*—संज्ञा पुं० दे० "धर्मराज"।

धर्मराज—संज्ञा पुं० [सं०] १. धर्म का पालन करनेवाला राजा। २. युधिष्ठिर। ३. यमराज। ४. न्यायाधीश। न्यायकर्त्ता।

धर्मराय*—संज्ञा पुं० दे० "धर्मराज"।

धर्मलुप्ता उपमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह उपमा जिसमें धर्म अर्थात् उपमान और उपमेय में समान रूप से पाई जानेवाली बात का कथन न हो।

धर्मवीर—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो धर्म करने में साहसी हो।

धर्मव्याध—संज्ञा पुं० [सं०] मिथिलापुरनिवासी एक व्याध जिसने कौशिक नामक एक तपस्वी वेदाध्यायी ब्राह्मण को धर्म का तत्व समझाया था।

धर्मशाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह मकान जो पथिकों या यात्रियों के टिकने के लिए धर्मार्थ बना हो। २. अन्नसत्र।

धर्मशास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह ग्रंथ जिसमें समाज के शासन के निमित्त नीति और सदाचार-संबंधी नियम हों।

धर्मशास्त्री—संज्ञा पुं० [सं०] धर्मशास्त्र के अनुसार व्यवस्था देनेवाला। धर्मशास्त्र जाननेवाला पंडित।

धर्मशील—वि० [सं०] [संज्ञा धर्म्मशीलता] धर्म के अनुसार आचरण करनेवाला। धार्मिक।

धर्मसभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] न्यायालय। कचहरी। अदालत।

धर्मसारी*†—संज्ञा स्त्री० दे० "धर्मशाला"।

धर्मांशु—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य्य।

धर्माचार्य—संज्ञा पुं० [सं०] धर्म की शिक्षा देनेवाला गुरु।

धर्मात्मा—वि० [धर्मात्मन्] धर्मशील। धार्मिक।

धर्माधिकरण—संज्ञा पुं० [सं०] न्यायालय।

धर्माधिकारी—संज्ञा पुं० [सं०] १. धर्म-अधर्म की व्यवस्था देनेवाला। विचारक। न्यायाधीश। २ वह जो किसी राजा की ओर से धर्मार्थ द्रव्य बाँटने आदि का प्रबंध करता है। दानाध्यक्ष।

धर्माध्यक्ष—संज्ञा पुं० दे० "धर्माधिकारी"।

धर्मार्थ—क्रि० वि० [सं०] केवल धर्म या पुण्य के उद्देश्य से। परोपकार के लिए।

धर्मावतार—संज्ञा पुं० [सं०] १ साक्षात् धर्मस्वरूप। अत्यंत धर्मात्मा। २ न्यायाधीश। ३ युधिष्ठिर।

धर्मासन—संज्ञा पुं० [सं०] वह आसन या चौकी जिस पर न्यायाधीश बैठता है।

धर्मिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पत्नी।
वि० धर्म करनेवाली।

धर्मिष्ठ—वि० [सं०] धार्मिक। पुण्यात्मा।

धर्मी—वि० [सं० धर्मिन्] [स्त्री० धर्मिणी] १ जिसमें धर्म या गुण हो। २ धार्मिक। पुण्यात्मा। ३ मत या धर्म को माननेवाला।
संज्ञा पुं० १. धर्म का आधार। गुण या धर्म का आश्रय। २. धर्मात्मा मनुष्य।

धर्मोपदेशक—संज्ञा पुं० [सं०] धर्म का उपदेश देनेवाला।

धर्ष—संज्ञा पुं० दे० "धर्षण"।

धर्षक—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो धर्षण करे।

धर्षण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० धर्षणीय, धर्षित] १ अनादर। अपमान। २ दबोचना। आक्रमण। ३ दबाने या दमन करने का कार्य्य। ४ असहनशीलता।

धर्षणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अवज्ञा। अपमान। हतक। २ दबाने या हराने का कार्य्य। ३. सतीत्वहरण।

धर्षी—वि० [सं० धर्षिन्] [स्त्री० धर्षिणी] १. धर्षण करनेवाला। २ आक्रमण करनेवाला। दबोचनेवाला। ३ हरानेवाला। ४ नीचा दिखाने या अपमान करनेवाला।

धव—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक जंगली पेड़ जिसके गोंद, अंगो या ओषधि के रूप में व्यवहार होता है। २ पति। स्वामी। जैसे—माधव। ३ पुरुष। मर्द।

धवनी—संज्ञा स्त्री० दे० "धौंकनी"।

†*वि० [सं० धवल] सफेद। उजला।

धवरा†—वि० [सं० धवल] [स्त्री० धवरी] उजला। सफेद।

धवरी—वि० स्त्री० [हिं० धवरा] सफेद।
संज्ञा स्त्री० सफेद रंग की गाय।

धवल—वि० [सं०] १. श्वेत। उजला। सफेद। २ निर्मल। झकाझक। ३ सुन्दर।
संज्ञा पुं० छप्पय छंद का ४५वाँ भेद।

धवलगिरि—संज्ञा पुं० दे० "धवलागिरि"।

धवलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेदी।

धवलना—क्रि० स० [सं० धवल] उज्ज्वल करना। चमकाना। प्रकाशित करना।

धवला—वि० स्त्री० [सं०] सफेद। उजली।
संज्ञा स्त्री० सफेद गाय।

धवलाई*†—संज्ञा स्त्री० [सं० धवल+आई (प्रत्य०)] सफेदी। उजलापन।

धवलागिरि—संज्ञा पुं० [सं० धवल+गिरि] हिमालय पहाड़ की एक प्रख्यात चोटी।

धवली—संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेद गाय।

धवाना—क्रि० स० [हिं० धाना का प्रे०] दौड़ाना।

धस—संज्ञा पुं० [हिं० धँसना=पैठना] जल आदि में प्रवेश। डुबकी। गोता।

धसक—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ ठन ठन शब्द जो सूखी खाँसी में गले से निकलता है। २ सूखी खाँसी। ठसक।
संज्ञा स्त्री० [हिं० धसकना] १. डाह। ईर्ष्या। २ धसकने की क्रिया या भाव।

धसकना—क्रि० अ० [हिं० धँसना] १ नीचे को धँसना या दब जाना। बैठ जाना। २ डाह करना। ईर्ष्या करना। ३ डरना।

धसना*—क्रि० अ० [सं० ध्वंसन] ध्वस्त होना। नष्ट होना। मिटना।
‡क्रि० अ० दे० "धँसना"।

धसनि—संज्ञा स्त्री० दे० "धँसनि"।

धसमसाना*†—क्रि० अ० दे० "धँसना"।

धसान–संज्ञा स्त्री० दे० "धँसान"।
संज्ञा स्त्री० [सं० दशार्ण] पूरबी मालवा और बुंदेलखण्ड की एक छोटी नदी।
धाँगड़–संज्ञा पुं० [देश०] १. अनार्य जंगली जाति। २. एक जाति जो कुएँ और तालाब खोदने का काम करती है।
धाँधना–क्रि० स० [देश०] १. बंद करना। भेड़ना। २. बहुत अधिक खा लेना।
धाँधल–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. ऊधम। उपद्रव। नटखटी। २. फरेब। धोखा। दगा। ३. बहुत अधिक जल्दी।
धाँधलपन–संज्ञा पुं० [हिं० धाँधल+पन (प्रत्य०)] १. पाजीपन। शरारत। २ धोखेबाजी। दगाबाजी।
धाँधली–संज्ञा स्त्री० [हिं० धाँधल+ई (प्रत्य०)] १. उपद्रवी। शरीर। पाजी। नटखट। २. धोखेबाज। दगाबाज। ३. बहुत अधिक जल्दी। धाँधल। ४. स्वेच्छाचारिता। मनमानी।
धाँस–संज्ञा स्त्री० [अनु०] सूखे तंबाकू या मिर्च आदि की तेज गंध।
धाँसना–क्रि० अ० [अनु०] पशुओं का खाँसना।
धा–वि० [सं०] धारण करनेवाला। धारक। प्रत्य० तरह। भाँति। जैसे—नवधा भक्ति। संज्ञा पुं० [सं० धैवत] संगीत में "धैवत" शब्द या स्वर का संकेत। ध।
धाउ–संज्ञा पुं० [सं० धाव] नाच का एक भेद।
धाऊ†–संज्ञा पुं० [सं० धावन] वह आदमी जो आवश्यक कामों के लिए दौड़ाया जाय। हरकारा।
धाक–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. रोब। आतंक। मुहा०—धाक बँधना = रोब या दबदबा होना। आतंक छाना। धाक बाँधना = रोब जमाना। २. प्रसिद्धि। शोहरत। शोर।
धाकना–क्रि० अ० [हिं० धाक] धाक जमाना। रोब जमाना।
धागा†–संज्ञा पुं० [हिं० तागा] बटा हुआ सूत। डोरा। तागा।
धाड़†–संज्ञा स्त्री० १. दे० "डाढ़"। २. दे० "दहाड़"। ३. दे० "ढ़ाड़"।
संज्ञा स्त्री० [हिं० धार] १. डाकुओं का आक्रमण। २. जत्था। झुंड। गरोह।
धात–संज्ञा स्त्री० दे० "धातु"।
धातकी–संज्ञा स्त्री० [सं०] धव का फूल।
धाता–संज्ञा पुं० [सं० धातृ] १. ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. शिव। महादेव। ४. ४९ वायुओं में से एक। ५. शेषनाग। ६. १२ सूर्यों में से एक। ७. ब्रह्मा के एक पुत्र का नाम। ८. विधाता। विधि। ९. टगण के आठवें भेद की संज्ञा।
वि० १. पालनेवाला। पालक। २. रक्षा करनेवाला। रक्षक। ३. धारण करनेवाला।
धातु–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह खनिज मूल द्रव्य जो अपारदर्शक हो, जिसमें एक विशेष प्रकार की चमक और गुरुत्व हो, जिसमें से होकर ताप और विद्युत् का संचार हो सके तथा जो पीटने अथवा तार के रूप में खींचने से खंडित न हो। प्रसिद्ध धातुएँ ये हैं—सोना, चाँदी, ताँबा, लोहा, सीसा और राँगा। २. शरीर को बनाए रखनेवाले पदार्थ। वैद्यक में शरीरस्थ सात धातु, मानी गई हैं—रस, रक्त, मांस, मेद, धातुएँ, मज्जा और शुक्र। ३. बुद्ध या किसी महात्मा की अस्थि आदि जिसे बौद्ध लोग डिब्बे में बंद करके स्थापित करते थे। ४. शुक्र। वीर्य।
संज्ञा पुं० १. भूत। तत्त्व। २. शब्द का वह मूल जिससे क्रियाएँ बनी या बनती हैं। जैसे—संस्कृत में भू, कृ, घृ इत्यादि।
धातुपुष्ट–वि० [सं०] (औषधि) जिससे वीर्य गाढ़ा होकर बढ़े।
धातुमर्म–संज्ञा पुं० [सं०] कच्ची धातु को साफ करना, जो ६४ कलाओं में है।
धातुवर्द्धक–वि० [सं०] वीर्य को बढ़ानेवाला। जिससे वीर्य बढ़े।
धातुवाद–संज्ञा पुं० [सं०] १. चौंसठ कलाओं में से एक, जिसमें कच्ची धातु को साफ करते तथा एक में मिली हुई अनेक धातुओं को अलग अलग करते हैं। २. रसायन

बनाने का काम। ३ तांबे में सोना बनाना। कीमियागरी।

धात्री–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ माता। माँ। २ वह स्त्री जो किसी शिशु को दूध पिलावे और उसका लालन-पालन करे। धाय। दाई। ३ गायत्री-स्वरूपिणी भगवती। ४ गंगा। ५ आँवला। ६ भूमि। पृथ्वी। ७ गाय। ८ आर्या छंद का एक भेद।

धात्रीविद्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] लड़का जनाने और उसे पालने आदि की विद्या।

धात्वर्थ–संज्ञा पु० [सं०] धातु से निकलनेवाला (किसी शब्द का) अर्थ। मूल और पहला अर्थ।

धाधि–संज्ञा स्त्री० [हिं० धधकना] ज्वाला।

धान–संज्ञा पु० [सं० धान्य] तृण जाति का एक पौधा जिसके बीजों की गिनती अच्छे अन्नों में है। इन्हीं बीजों को कूटकर उनका छिलका निकालने से चावल बनते हैं। शालि। व्रीहि।

धानक–संज्ञा पु० [सं० धानुष्क] १ धनुष चलानेवाला। धनुर्द्धारी। तीरंदाज। कमनैत। २ रुई धुननेवाला। धुनिया। ३ पूरब की एक पहाड़ी जाति।

धानकी–संज्ञा पु० [हिं० धानुक] धनुर्द्धर।

धानपान–वि० [हिं० धान+पान] दुबला-पतला। नाजुक।

धानमाली–संज्ञा पु० [सं०] किसी दूसरे के चलाए हुए अस्त्र को रोकने की एक क्रिया।

धाना*†–क्रि० अ० [सं० धावन] १ तेजी से चलना। दौड़ना। भागना। २ कोशिश करना। प्रयत्न करना।

धानी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह जो धारण करे। वह जिसमें कोई वस्तु रखी जाय। २ स्थान। जगह। जैसे—राजधानी।
संज्ञा स्त्री० [हिं० धान+ई (प्रत्य०)] धान की पत्ती के रंग का सा हलका हरा रंग।
वि० हलके हरे रंग का।
संज्ञा स्त्री० [सं० धाना] भूना हुआ जौ या गेहूँ।
संज्ञा स्त्री० *† दे० "धान्य"।

धानुष्क–संज्ञा पु० दे० "धानक"।

धान्य–संज्ञा पु० [सं०] १ चार तिल का एक परिमाण या तौल। २ धनिया। ३ छिलके समेत चावल। धान। ४ अन्न मात्र। ५ एक प्राचीन अस्त्र।

धाप–संज्ञा पु० [हिं० टप्पा] १ दूरी की एक नाप जो प्राय एक मील की और कहीं दो मील की मानी जाती है। २ लंबा-चौड़ा मैदान। ३ खेत की नाप।
संज्ञा स्त्री० [हिं० धापना] तृप्ति। संतोष।

धापना*–क्रि० अ० [सं० तर्पण] संतुष्ट होना। तृप्त होना। अघाना। जी भरना।
क्रि० स० संतुष्ट करना। तृप्त करना।
क्रि० अ० [सं० धावन] दौड़ना। भागना।

धाबा–संज्ञा पु० [देश०] १ छत के ऊपर का कमरा। अटारी। २ वह स्थान जहाँ पर कच्ची या पक्की रसोई (मोल) मिलती हो।

धा-भाई संज्ञा पु० [हिं० धा=धाय+भाई] दूधभाई।

धाम–संज्ञा पु० [सं० धामन्] १ घर। मकान। २ देह। शरीर। ३ बागडोर। लगाम। ४ शोभा। ५ प्रभाव। ६ देवस्थान या पुण्यस्थान। जैसे—चारो धाम आदि। ७ जन्म। ८ विष्णु। ९ ज्योति। १० ब्रह्म। ११ स्वर्ग।

धामक धूमक–संज्ञा स्त्री० दे० "धूमधाम"।

धामिन–संज्ञा स्त्री० [हिं० धाना=दौड़ना] एक प्रकार का बहुत लंबा और तेज दौड़नेवाला साँप।

धायँ–संज्ञा स्त्री० [अनु०] किसी पदार्थ के जोर से गिरने या तोप, बंदूक आदि छूटने का शब्द।

धाय–संज्ञा स्त्री० [सं० धात्री] वह स्त्री जो किसी दूसरे के बालक को दूध पिलाने और उसका पालन-पोषण करने के लिए नियुक्त हो। धात्री। दाई।
संज्ञा पुं० [सं० धातकी] धव का पेड़।

धायना*–क्रि० अ० [हिं० धाना] दौड़ना।

धार–संज्ञा पु० [सं०] १ जोर से पानी बरसना। जोर की वर्षा। २ इकट्ठा

किया हुआ वर्षा का जल जो वैद्यक और डाक्टरी में बहुत उपयोगी माना जाता है। ३. ऋण। उधार। क़र्ज़। ४. प्रांत। प्रदेश।
संज्ञा स्त्री० [सं० धारा] १. द्रव पदार्थ की गति-परंपरा। पानी आदि के गिरने या बहने का तार। अखंड प्रवाह।
मुहा०—धार चढ़ाना=किसी देवी, देवता या पवित्र नदी आदि पर दूध, जल आदि चढ़ाना। धार देना=दूध देना। धार निकालना=दूध दूहना। धार मारना=पेशाब करना।
२. पानी का सोता। चश्मा। ३. किसी काटनेवाले हथियार का वह तेज सिरा या किनारा जिससे कोई चीज काटते हैं। बाढ़।
मुहा०—धार बाँधना=यंत्र आदि के बल से किसी हथियार की धार को निकम्मा कर देना। ४. किनारा। सिरा। छोर। ५. सेना। फ़ौज। ६. किसी प्रकार का डाका, आक्रमण या हल्ला। ७. ओर। तरफ़। दिशा।

धारक—वि० [सं०] १. धारण करनेवाला। २. रोकनेवाला। ३. ऋण लेनेवाला।

धारण—संज्ञा पुं० [सं०] १. थामना, लेना या अपने ऊपर ठहराना। २. पहनना। ३. सेवन करना। खाना या पीना। ४ अंगीकार करना। ग्रहण करना। ५. ऋण लेना। उधार लेना।

धारणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. धारण करने की क्रिया या भाव। २. वह शक्ति जिससे कोई बात मन में धारण की जाती है। बुद्धि। अक़्ल। समझ। ३. दृढ़ निश्चय। पक्का विचार। ४. मर्य्यादा। ५. याद। स्मृति। ६. योग में मन की वह स्थिति जिसमें केवल ब्रह्म का ही ध्यान रहता है।

धारणीय—वि० [सं०] धारण करने योग्य।

धारना*—क्रि० स० [सं० धारण] १. धारण करना। अपने ऊपर लेना। २. ऋण करना। उधार लेना।
क्रि० स० दे० "ढारना"।

धारा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. घोड़े की चाल। घोड़े का चलना। २. पानी आदि का बहाव या गिराव। अखंड प्रवाह। धार। ३. लगातार गिरता या बहता हुआ कोई द्रव पदार्थ। ४. पानी का झरना। सोता। चश्मा। ५. काटनेवाले हथियार का तेज सिरा। बाढ़। धार। ६. बहुत अधिक वर्षा। ७. समूह। झुंड। ८. प्राचीन काल की एक नगरी का नाम जो दक्षिण देश में थी। ९. लकीर। रेखा। १०. मालवा की प्राचीन राजधानी।

धाराधर—संज्ञा पुं० [सं०] बादल।

धारावाही—वि० [सं०] धारा के रूप में बिना रोक-टोक बढ़ने या चलनेवाला।

धारि*—संज्ञा स्त्री० [सं० धारा] १. दे० "धार"। २. समूह। झुंड। ३. एक वर्णवृत्त।

धारिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] धरणी। पृथ्वी।
वि० स्त्री० धारण करनेवाली।

धारी—वि० [सं० धारिन्] [स्त्री० धारिणी] धारण करनेवाला। जो धारण करे।
संज्ञा पुं० धारि नामक वर्णवृत्त।
संज्ञा स्त्री० [सं० धारा] १. सेना। फ़ौज। २. समूह। झुंड। ३. रेखा। लकीर।

धारीदार—वि० [हिं० धारी + फ़ा० दार] जिसमें लंबी लंबी धारियाँ या लकीरें हों।

धारोष्ण—संज्ञा पुं० [सं०] थन से निकला हुआ ताज़ा दूध जो प्रायः कुछ गरम होता है और बहुत गुणकारक माना जाता है।

धार्मिक—वि० [सं०] १. धर्मशील। धर्मात्मा। पुण्यात्मा। २. धर्म्म-संबंधी।

धार्मिकता—संज्ञा स्त्री० [सं०] धार्मिक होने का भाव। धर्मशीलता।

धार्य—वि० [सं०] धारण करने के योग्य।

धावक—संज्ञा पुं० [सं०] हरकारा।

धावन—संज्ञा पुं० [सं०] १. बहुत जल्दी या दौड़कर जाना। २. चिट्ठी या सँदेशा पहुँचानेवाला। दूत। हरकारा। ३. धोने या साफ़ करने का काम। ४. वह चीज जिससे कोई चीज धोई या साफ़ की जाय।

धावना*†—क्रि० अ० [सं० धावन] जल्दी जल्दी जाना। दौड़ना। भागना।

धावनि*†—संज्ञा स्त्री० [सं० धावन=गमन] १. जल्दी जल्दी चलने की क्रिया या भाव।

२ धावा। चढ़ाई।
धावरी*†–संज्ञा स्त्री० [सं० धवल] सफेद गाय। धौरी।
वि० सफेद। उज्ज्वल।
धावा–संज्ञा पुं० [सं० धावन] १ शत्रु से लड़ने के लिए दल बल सहित तैयार होकर जाना। आक्रमण। हमला। चढ़ाई। २ जल्दी जल्दी जाना। दौड़।
मुहा०—धावा मारना = जल्दी जल्दी चलना
धाह*–संज्ञा स्त्री० [अनु०] ज़ोर से चिल्ला-कर रोना। धाड़।
धाही*†–संज्ञा स्त्री० दे० "धाय"।
धिंग–संज्ञा स्त्री० [सं० दृढांग या धींगाधींगी अनु०] धींगाधींगी। ऊधम। उपद्रव।
धिंगा†–संज्ञा पुं० [सं० दृढांग] १ बद-माश। शरीर २ बेशर्म। निर्लज्ज।
धिंगाई–संज्ञा स्त्री० [सं० दृढांगी] १ शरा-रत। ऊधम। बदमाशी। २ बेशर्मी।
धिंगाना–क्रि० स० [हिं० धिंग] धींगाधींगी करना। उपद्रव या ऊधम मचाना।
धिआ–संज्ञा स्त्री० दे० "धिय"।
धिआन*‡–संज्ञा पुं० दे० "ध्यान"।
धिआना†*–क्रि० स० दे० "ध्यावना"।
धिक्–अव्य० [सं०] १ तिरस्कार, अनादर या घृणासूचक एक शब्द। लानत। २ निंदा। शिकायत।
धिक–अव्य० [सं० धिक्] धिक्। लानत।
धिकना†–क्रि० अ० [सं० दग्ध] गरम होना। तप्त होना।
धिकाना†–क्रि० स० [सं० दग्ध या हिं० दहकना] खूब गरम करना। तपाना।
धिक्कार–संज्ञा स्त्री० [सं०] तिरस्कार, अना-दर या घृणाव्यंजक शब्द। लानत।
धिक्कारना–क्रि० स० [सं० धिक्] "धिक्" कहकर बहुत तिरस्कार करना। लानत-मलामत करना। फटकारना।
... –अव्य० दे० "धिक्"।
धिय*–संज्ञा स्त्री० [सं० दुहिता] १ कन्या। बेटी। २ लड़की। बालिका।
... –संज्ञा स्त्री० दे० 'धिक्कार'।
धिरवना*†–क्रि० स० [सं० धर्षण] धम-काना।
धिराना*†–क्रि० स० [हिं० धिरवना] डराना। धमकाना। भय दिखाना।
क्रि० अ० [सं० धीर] १ धीमा होना। मंद पड़ना। २ धैर्य धारण करना।
धींग–संज्ञा पुं० [सं० डिंगर] हट्टा-कट्टा। दढांग मनुष्य।
वि० १ मजबूत। ज़ोरावर। २ शरीर। बदमाश। ३ कुमार्गी। पापी।
धींगरा–संज्ञा पुं० [सं० डिंगर] [स्त्री० धींगरी] १ हट्टा-कट्टा। मुसंड। मोटा-ताजा। २ शठ। बदमाश।
धींगा–संज्ञा पुं० [सं० डिंगर = शठ] शरीर। बदमाश। उपद्रवी। पाजी।
धींगाधींगी–संज्ञा स्त्री० [हिं० धींग] १ शरारत। बदमाशी। २ जबरदस्ती।
धींगामुश्ती–संज्ञा स्त्री० दे० "धींगाधींगी"।
धींगड़, धींगड़ा†–वि० [सं० डिंगर] [स्त्री० धींगड़ी] १ पाजी। बदमाश। दुष्ट। २ हट्टा कट्टा। हृष्ट-पुष्ट। ३ वर्ण-संकर। दोगला।
धींद्रिय–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह इंद्रिय जिससे किसी बात का ज्ञान हो। जैसे—मन, आँख, कान। ज्ञानेंद्रिय।
धींवर–संज्ञा पुं० दे० "धीमर"।
धी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बुद्धि। अक्ल। २ मन। ३ कर्म।
संज्ञा स्त्री० [सं० दुहिता] लड़की। बेटी।
धीजना–क्रि० स० [सं० धृ, धार्य्य, धैर्य्य] १ ग्रहण करना। स्वीकार करना। अंगीकार करना। २ धीरज धरना। धैर्ययुक्त होना। ३ प्रसन्न या संतुष्ट होना।
धीम*†–वि० दे० 'धीमा"।
धीमर–संज्ञा पुं० दे० "धीवर"।
धीमा–वि० [सं० मध्यम] [स्त्री० धीमी] १. जिसकी चाल में बहुत तेज़ी न हो। जो आहिस्ते चले। २ जो अधिक प्रचंड, तीव्र या उग्र न हो। हलका। ३ कुछ नीचा और साधारण से कम (स्वर)। ४

जिसकी तेज़ी कम हो गई हो।
धीमान्–संज्ञा पुं० [सं० धीमत्] [स्त्री० धीमती] १. बृहस्पति। २. बुद्धिमान्।
धीम†–संज्ञा स्त्री० दे० "धी"।
धीया–संज्ञा स्त्री० [सं० दुहिता] लड़की।
धीर–वि० [सं०] १. जिसमें धैर्य हो। दृढ़ और शांत चित्तवाला। २. बलवान्। ताक़तवर। ३. विनीत। नम्र। ४. गंभीर। ५. मनोहर। सुंदर। ६. मंद। धीमा।
*†संज्ञा पुं० [सं० धैर्य] १. धैर्य। धीरज। ढारस। २. संतोष। सब्र।
धीरज†*–संज्ञा पुं० दे० "धैर्य"।
धीरता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चित्त की स्थिरता। मन की दृढ़ता। धैर्य। २. स्थिरता। संतोष। सब्र।
धीरललित–संज्ञा पुं० [सं०] वह नायक जो सदा खूब बना-ठना और प्रसन्नचित्त रहता हो।
धीरशांत–संज्ञा पुं० [सं०] वह नायक जो सुशील, दयावान्, गुणवान् और पुण्यवान् हो।
धीरा–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जो अपने नायक के शरीर पर पर-स्त्री-रमण के चिह्न देखकर व्यंग्य से कोप प्रकाशित करे।
वि० [सं० धीर] मंद। धीमा।
संज्ञा पुं० [सं० धैर्य] धीरज। धैर्य।
धीराधीरा–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जो अपने नायक के शरीर पर पर-स्त्री-रमण के चिह्न देखकर कुछ गुप्त और कुछ प्रकट रूप से अपना क्रोध जतलावे।
धीरे–क्रि० वि० [हिं० धीर] १. आहिस्ते से। धीमी गति से। २. इस प्रकार जिसमें कोई सुन या देख न सके। चुपके से।
धीरोदात्त–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह नायक जो निरभिमान, दयालु, क्षमाशील, बलवान्, धीर, दृढ़ और योद्धा हो। २. वीर-रस-प्रधान नाटक का मुख्य नायक।
धीरोद्धत–संज्ञा पुं० [सं०] वह नायक जो बहुत प्रचंड और चंचल हो और सदा अपने ही गुणों का बखान किया करे।
*संज्ञा पुं० दे० "धैर्य"।
धीवर–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० धीवरी] एक जाति जो प्रायः मछली पकड़ने और बेचने का काम करती है। मछुवा। मल्लाह।
धुंकार–संज्ञा स्त्री० [सं० ध्वनि+कार] ज़ोर का शब्द। गरज। गड़गड़ाहट।
धुंगार–संज्ञा स्त्री० [सं० धूम्र + आधार] बघार। तड़का। छौंक।
धुंगारना–क्रि० स० [हिं० धुंगार] बघारना। छौंकना। तड़का देना।
धुंज†–वि० [हिं० धुंध] धुँधली। मंद दृष्टि।
धुंद–संज्ञा स्त्री० दे० "धुंध"।
धुंध–संज्ञा स्त्री० [सं० धूम्र + अंध] १. वह अँधेरा जो हवा में मिली धूल के कारण हो। २. हवा में उड़ती हुई धूल। ३. आँख का एक रोग जिसमें कोई वस्तु स्पष्ट नहीं दिखाई देती।
धुंधकार–संज्ञा पुं० [हिं० धुंकार] १. धुकार। गरज। गड़गड़ाहट। २. अंधकार।
धुंधमार–संज्ञा पुं० दे० "धुंधुमार"।
धुंधर†–संज्ञा स्त्री० [हिं० धुंध] १. हवा में उड़ती हुई धूल। २. अँधेरा। तारीकी।
धुंधराना–क्रि० अ० दे० "धुंधलाना"।
धुंधला–वि० [हिं० धुंध + ला] १. कुछ कुछ काला। धूएँ के रंग का। २. जो साफ दिखाई न दे। अस्पष्ट। ३. कुछ कुछ अँधेरा।
धुंधलाई*–संज्ञा स्त्री० दे० "धुँधलापन"।
धुंधलापन–संज्ञा पुं० [हिं० धुंधला + पन] १. धुंधले या अस्पष्ट होने का भाव। २. कम दिखाई देने का भाव।
धुंधु–संज्ञा पुं० [सं०] एक राक्षस जो मधु राक्षस का पुत्र था। यह जब साँस लेता था तब उसके साथ धूआँ और अंगारे निकलते थे और भूकंप होता था।
धुंधुकार–संज्ञा पुं० [हिं० धुंध + कार] १. अंधकार। अँधेरा। २. धुँधलापन। ३. नगाड़े का शब्द। धुंकार।
धुंधुमार–संज्ञा पुं० [सं०] १. राजा त्रिशंकु का पुत्र। २. कुवलयाश्व, जिसने धुंधु-

मार को मारा था।

धुंधुरि*†–संज्ञा स्त्री० [हिं० धुंध] गर्द-गुबार या धूएँ के कारण होनेवाला अँधेरा।

धुंधरित–वि० [हिं० धुंधुर] १ धुँधला किया हुआ। धूमिल। २ दृष्टिहीन। धुंधली दृष्टिवाला।

धुंधवाना*†–क्रि० अ० [सं० धूम्र, हिं० धूआँ] धूआँ देना। धूआँ दे देकर जलना।

धुंधरी–संज्ञा स्त्री० दे० "धुंधुरि"।

धुअ*–संज्ञा पु० दे० "ध्रुव"।

धुआँ–संज्ञा पु० [सं० धूम्र] १ जलती हुई चीजों से निकलनेवाली भाप जो कुछ कालापन लिए होती है। धूम।

मुहा०—धुएँ का धौरहर = थोड़े ही काल में नष्ट होनेवाली वस्तु या आयोजन। धुएँ के बादल उड़ाना = भारी गप हाँकना। धुआँ निकालना या काढ़ना = बढ़ बढ़कर बातें कहना।

२ घटाटोप उमड़ती हुई वस्तु। भारी समूह। ३ धुर्रा। धज्जी।

धुआँकश–संज्ञा पु० [हिं० धुआँ + फा० कश] भाप के ज़ोर से चलनेवाली नाव या जहाज। अग्निबोट। स्टीमर।

धुआँधार–वि० [हिं० धुआँ + धार] १ धुएँ से भरा। धूममय। २ गहरे रंग का। भड़कीला। भव्य। ३ काला। स्याह। ४ बड़े ज़ोर का। प्रचंड। घोर।

क्रि० वि० बहुत अधिक या बहुत ज़ोर से।

धुआँना–क्रि० अ० [हिं० धुआँ + ना (प्रत्य०)] अधिक धुएँ में रहने के कारण स्वाद और गंध में बिगड़ जाना। (पकवान आदि)

धुआँयँध–वि० [हिं० धुआँ + गंध] धुएँ की तरह महकनेवाला।

संज्ञा स्त्री० अन्न न पचने के कारण आनेवाली डकार। धूम।

धुआँस–संज्ञा स्त्री० दे० "धुवाँस"।

धुकड़ पुकड़–संज्ञा पु० [अनु०] १. भय आदि से होनेवाली चित्त की अस्थिरता। घबराहट। २ आगा-पीछा। पसोपेश।

धुकधुकी–संज्ञा स्त्री० [धुकधुक से अनु०] १ पेट और छाती के बीच का वह भाग जो कुछ गहरा सा होता है। २ कलेजा। हृदय। ३ कलेजे की धड़कन। धप। ४ डर। भय। खौफ। ५ पदिक या जुगनू नामक गहना।

धुकना*†–क्रि० अ० [हिं० झुकना] १ नीचे की ओर ढलना। झुकना। नवना। २ गिर पड़ना। ३ झपटना। टूट पड़ना।

धुकान†–संज्ञा स्त्री० [हिं० धमकाना] घोर शब्द। गड़गड़ाहट का शब्द।

धुकाना†*–क्रि० स० [हिं० धुकना] १ झुकाना। नवाना। २ गिराना। ढकेलना। ३ पछाड़ना। पटकना।

क्रि० स० [सं० धूम + करण] धूनी देना।

धुकार, धुकारी–संज्ञा स्त्री० [धु से अनु०] नगाड़े का शब्द।

धुक्कना*†–क्रि० अ० दे० "धुकना"।

धुज, धुजा*†–संज्ञा स्त्री० दे० "ध्वजा"।

धुजिनी*†–संज्ञा स्त्री० [सं० ध्वजा] सेना। फौज।

धुड़गा*†–वि० [हिं० धूर + अंगी] जिसके शरीर पर कोई वस्त्र न हो, केवल धूल हो।

धुतकार–संज्ञा स्त्री० दे० "दुतकार"।

धुताई*†–संज्ञा स्त्री० दे० "धूर्त्तता"।

धुधुकार–संज्ञा स्त्री० [धुधु से अनु०] १ धू धू शब्द का शोर। २ घोर शब्द। गरज।

धुधुकारी–संज्ञा स्त्री० दे० "धुधुकार"।

धुन–संज्ञा स्त्री० [हिं० धुनना] १. बिना आगा-पीछा सोचे कोई काम करते रहने की प्रवृत्ति। लगन।

यौ०—धुन का पक्का = वह जो आरंभ किए हुए काम को बिना पूरा किए न छोड़े।

२ मन की तरंग। मौज। ३ सोच। विचार। चिंता। खयाल।

संज्ञा स्त्री० [सं० ध्वनि] १ गीत गाने का ढंग। गाने का तर्ज़। २ दे० "ध्वनि"।

धुनकना–क्रि० स० दे० "धुनना"।

धुनकी–संज्ञा स्त्री० [सं० धनुस्] १ धुनियों का वह धनुस् के आकार का औज़ार जिससे वे रूई धुनते हैं। पिंजा। पटका। २. लड़कों के खेलने का छोटा धनुष।

धुनना–क्रि० स० [हिं० धुनकी] १. धुनकी से रूई साफ़ करना जिसमें उसके बिनौले निकल जायँ। २. खूब मारना-पीटना। ३. बार-बार कहना। कहते ही जाना। ४. कोई काम बिना रुके बराबर करना।
धुनवाना–क्रि० स० [हिं० धुनना का (प्रे०)] धुनने का काम दूसरे से कराना।
धुनि*–संज्ञा स्त्री० दे० "ध्वनि"।
धुनियाँ–संज्ञा पुं० [हिं० धुनना] वह जो रूई धुनने का काम करता हो। बेहना।
धुपना†–क्रि० अ० दे० "धुलना"।
धुमिला–वि० दे० "धूमिल"।
धुरंधर–वि० [सं०] १. भार उठानेवाला। २. जो सबमें बहुत बड़ा, भारी या बली हो। ३. श्रेष्ठ। प्रधान।
धुर–संज्ञा पुं० [सं० धुर्] १. गाड़ी या रथ आदि का धुरा। अक्ष। २. शीर्ष या प्रधान स्थान। ३. भार। बोझ। ४. आरंभ। शुरू। ५. जमीन की एक माप जो बिस्वे का बीसवाँ भाग होती है। बिस्वांसी।
अव्य० [सं० धुर] १. बिलकुल ठीक। सटीक। सीधे। २. एकदम दूर। बिलकुल दूर।
मुहा०—धुर सिर से=बिलकुल शुरू से।
वि० [सं० ध्रुव] पक्का। दृढ़।
धुरजटी*–संज्ञा पुं० दे० "धूर्जटी"।
धुरना*†–क्रि० स० [सं० धूर्वण] १. पीटना। मारना। २.बजाना।
धुरपद–संज्ञा पुं० दे० "ध्रुपद"।
धुरा–संज्ञा पुं० [सं० धुर] [स्त्री० अल्पा० धुरी] वह डंडा जिसमें पहिया पहनाया रहता है और जिस पर वह घूमता है। अक्ष।
धुरियाना†–क्रि० स० [हिं० धूर] १. किसी वस्तु पर धूल डालना। २. किसी ऐब को युक्ति से दबा देना।
क्रि० अ० १. किसी चीज का धूल से ढँका जाना। २. ऐब का दबाया जाना।
धुरिया मल्लार–संज्ञा पुं० [देश० धुरिया + मल्लार] मल्लार।
धुरीण–वि० [सं०] १. बोझ सँभालनेवाला। २. मुख्य। प्रधान। ३. धुरंधर।
धुरेटना*†–क्रि० स० [हिं० धुर + एटना (प्रत्य०)] धूल से लपेटना। धूल लगाना।
धुर्रा–संज्ञा पुं० [हिं० धूर] किसी चीज का अत्यंत छोटा भाग। कण। जर्रा। भुआ।
मुहा०—धुर्रे उड़ाना=१. किसी वस्तु के अत्यंत छोटे छोटे टुकड़े कर डालना। २. छिन्न-भिन्न कर डालना। ३. बहुत अधिक मारना।
धुलना–क्रि० अ० [हिं० धोना का अ० रूप] पानी की सहायता से साफ़ या स्वच्छ किया जाना। धोया जाना।
धुलवाना क्रि० स० दे० "धुलाना"।
धुलाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० धोना] १. धोने का काम या भाव। २. धोने की मजदूरी।
धुलाना–क्रि० स० [सं० धवल] धोने का काम दूसरे से कराना। धुलवाना।
धुलेंडी–संज्ञा स्त्री० [हिं० धूल + उड़ाना] हिंदुओं का एक त्योहार जो होली जलने के दूसरे दिन होता है। इस दिन लोग दूसरों पर अबीर-गुलाल डालते हैं।
धुव*†–संज्ञा पुं० दे० "ध्रुव"।
धुवाँ–संज्ञा पुं० दे० "धुआँ"।
धुवाँस–संज्ञा स्त्री० [हिं० धूर + माष; या धुमसी] उरद का आटा जिससे पापड़ या कचौड़ी बनती है।
धुवाना*–क्रि० स० दे० "धुलाना"।
धुस्स–संज्ञा पुं० [सं० ध्वंस] १. मिट्टी आदि का ऊँचा ढेर। टीला। २. नदी का बाँध। बंद।
धुस्सा–संज्ञा पुं० [सं० द्विशाट] मोटे ऊन की लोई जो ओढ़ने के काम में आती है।
धूँध–संज्ञा स्त्री० दे० "धुंध"।
धू*–वि० [सं० ध्रुव] स्थिर। अचल। संज्ञा पुं० १. ध्रुव तारा। २. राजा उत्तानपाद का पुत्र जो *भगवान्* का भक्त था। ३. धुरी।
धूआँ–संज्ञा पुं० दे० "धुआँ"।
धूजट*–संज्ञा पुं० [सं० धूर्जटि] शिव।
धूत–वि० [सं०] १. हिलता या काँपता हुआ। थरथराता हुआ। २. जो धमकाया

गया हो। २. स्यवा। छोटा हुआ।
†*वि० [स० धूर्त] धूर्त। दगाबाज।

धूतना*–क्रि० स० [हि० धूर्त] धूर्त्तता करना। धोखा देना। ठगना।

धूतपापा–संज्ञा स्त्री० [स०] काशी की एक पुरानी छोटी नदी।

धूती–संज्ञा स्त्री० [देश०] एक चिड़िया।

धूधू–संज्ञा पु० [अनु०] आग के दहकने या जोर से जलने का शब्द।

धूनना*–क्रि० स० [हि० धूनी] किसी वस्तु को जलाकर उसका धुआँ उठाना। धूनी देना। क्रि० स० दे० "धुनना"।

धूना–संज्ञा पु० [हि० धूनी] १. एक प्रकार का बड़ा पेड़। इसका गोंद भी धूप की तरह जलाया जाता है। २ वह सुगंधित वस्तु जो आग में जलाई जाय।

धूनी–संज्ञा स्त्री० [हि० धूईं] १. गुग्गुल, लोबान आदि गंध-द्रव्यों या और किसी वस्तु को जलाकर उठाया हुआ धुआँ। धूप। मुहा०–धूनी देना=गंध-मिश्रित या विशेष प्रकार का धुआँ उठाना या पहुँचाना।
२ साधुओ के तापने की आग।
मुहा०–धूनी जगाना या लगाना=१ साधुओं का अपने सामने आग जलाना। २. शरीर तपाना। तप करना। ३ साधु होना। विरक्त होना। धूनी रमाना = १ सामने आग जलाकर शरीर तपाने बैठना। २ तप करना। साधु या विरक्त हो जाना।

धूप–संज्ञा पु० [स०] देवपूजन में या सुगंध के लिए गंधद्रव्यों को जलाकर उठाया हुआ धुआँ। सुगंधित धूम।
संज्ञा स्त्री० १. गंधद्रव्य जिसे जलाने से सुगंधित धुआँ उठता है। जैसे—कस्तूरी, अगर की लकड़ी। २. कृत्रिम अर्थात् कई द्रव्यों के योग से बनाई हुई धूप। ३ सूर्य्य का प्रकाश और ताप। घाम।
मुहा०—धूप खाना=ऐसी स्थिति में होना कि धूप ऊपर पड़े। धूप चढ़ना या निकलना= सूर्योदय के पीछे प्रकाश का बढ़ना। दिन चढ़ना। धूप दिखाना=धूप में रखना। धूप लगने देना। धूप में बाल या चूँड़ा सफेद करना=बिना कुछ अनुभव प्राप्त किए जीवन का बहुत सा भाग बिता देना।

धूपघड़ी–संज्ञा स्त्री० [हि० धूप + घडी] एक यंत्र जिससे धूप में समय का ज्ञान होता है। इसमें एक गोल चक्कर के बीच में एक कील होती है। धूप में उसी कील की परछाँही से समय जाना जाता है।

धूपछाँह–संज्ञा स्त्री० [हि० धूप+छाँह] एक प्रकार का रंगीन कपड़ा जिसमें एक ही स्थान पर कभी एक रंग दिखाई पड़ता है और कभी दूसरा।

धूपदान–संज्ञा पु० [स० धूप+आधान] धूप या गंधद्रव्य जलाने का डिब्बा। अगियारी।

धूपदानी–संज्ञा स्त्री० दे० "धूपदान"।

धूपना*†–क्रि० अ० [स० धूपन] धूप देना। गंधद्रव्य जलाना।
क्रि० स० गंधद्रव्य जलाकर सुगंधित धुआँ पहुँचाना। सुगंधित धुएँ से बासना।
क्रि० स० [स० धूपन=श्रांत होना] दौड़ना। हैरान होना। जैसे—दौड़ना-धूपना।

धूपबत्ती–संज्ञा स्त्री० [हि० धूप + बत्ती] मसाला लगी हुई सीक या बत्ती जिसे जलाने से सुगंधित धुआँ उठकर फैलता है।

धूम–संज्ञा पु० [स०] १ धुआँ। २. अजीर्ण या अपच में उठनेवाली डकार। ३ धूमकेतु। ४ उल्कापात।
संज्ञा स्त्री० [स० धूम=धुआँ] १. बहुत से लोगों के इकट्ठे होने और शोर-गुल करने आदि का व्यापार। रेलपेल। हलचल। आंदोलन। २ उपद्रव। उत्पात। ऊधम।
मुहा०—धूम डालना=ऊधम करना।
३ ठाट-बाट। समारोह। भारी आयोजन। ४. कोलाहल। हल्ला। शोर। ५ जनरव। शोहरत। प्रसिद्धि।

धूमक धैया–संज्ञा स्त्री० [हि० धूम] उछल-कूद और हल्ला-गुल्ला। उपद्रव। उत्पात।

धूमकेतु–संज्ञा पु० [सं०] १ अग्नि। २. केतुग्रह। पुच्छल तारा। ३ शिव।

धूम धड़क्का–संज्ञा पु० दे० "धूमधाम"।

घूमधाम–संज्ञा स्त्री०[हिं०धूम+धाम(अनु०)] भारी तैयारी। ठाट-बाट। समारोह।
घूमपान–संज्ञा पुं० [सं०] १. विशेष प्रकार का धुआँ जो नल के द्वारा रोगी को सेवन कराया जाता है। २. तमाकू, चुरुट आदि पीने का कार्य्य।
घूमपोत–संज्ञा पुं० [सं०] धुआँकश।
घूमर*†-वि० दे० "धूमल"।
घूमल, घूमला–वि० [सं० धूमल] [स्त्री० घूमली] १. धूएँ के रंग का। ललाई लिए काला। २. जो चटकीला न हो। धुंधला। ३. जिसकी कांति मंद हो।
घूमावती–संज्ञा स्त्री० [सं०] दस महाविद्याओं में से एक देवी।
घूमिल†*–वि० [सं० धूमल] १. धुएँ के रंग का। २. धुंधला।
घूम्र–वि० [सं०] धुएँ के रंग का। संज्ञा पुं० १. ललाई लिए काला रंग। २. शिलारस नाम का गंधद्रव्य। ३. एक असुर। ४. शिव। महादेव। ५. मेढ़ा।
घूम्रवर्ण–वि० [सं०] धुएँ के रंग का।
घूर*†–संज्ञा स्त्री० दे० "धूल"।
घूरजटी†*–संज्ञा पुं० दे० "धूर्जटि"।
घूरत*†–वि० दे० "धूर्त"।
घूरधान–संज्ञा पुं० [हिं० धूर + धान] धूल की राशि। गर्द का ढेर।
घूरधानी–संज्ञा स्त्री० [हिं० धूरधान] १. गर्द की ढेरी। धूल की राशि। २. ध्वंस। विनाश। ३. पथरकला। बंदूक।
घूरा–संज्ञा पुं० [हिं० धूर] १. धूल। गर्द। २. चूर्ण। बुकनी। चूरा।
मुहा०–धूरा करना या देना=शीत से अंग सुन्न होने पर सोंठ की बुकनी आदि मलना।
घूरि*†–संज्ञा स्त्री० दे० "धूल"।
घूर्जटि–संज्ञा पुं० [सं०] शिव। महादेव।
घूर्त–वि० [सं०] १. मायावी। छली। चालबाज। २. धोखा देनेवाला। वंचक। संज्ञा पुं० १. साहित्य में शठ नायक का एक भेद। २. विट् लवण। ३. लोहे की मैल। ४. धतूरा। ५. दाँव-पेंच करनेवाला।
धूर्तता–संज्ञा स्त्री० [सं०] चालबाजी। वंचकता। ठगपना। चालाकी।
धूल–संज्ञा स्त्री० [सं० धूलि] १. मिट्टी, रेत आदि का महीन चूर। रेणु। रज। गर्द।
मुहा०–(कहीं) धूल उड़ना = १. बरबादी होना। तबाही आना। २. सन्नाटा होना। रौनक न रहना। (किसी की) धूल उड़ना=१. दोषों और त्रुटियों का उधेड़ा जाना। बदनामी होना। २. उपहास होना। दिल्लगी उड़ना। किसी की धूल उड़ाना=१. बुराइयों को प्रकट करना। बदनामी करना। २. उपहास करना। हँसी करना। धूल की रस्सी बटना=१. अनहोनी बात के पीछे पड़ना। २. केवल धूर्तता से काम निकालना। धूल चाटना = १. बहुत विनती करना। २. अत्यंत नम्रता दिखाना। (किसी बात पर) धूल डालना=१. फैलने न देना। दबाना। २. ध्यान न देना। धूल फाँकना=मारा मारा फिरना। धूल में मिलना= नष्ट होना। चौपट होना। पैर की धूल= अत्यंत तुच्छ वस्तु या व्यक्ति। नाचीज। सिर पर धूल डालना=पछताना। सिर धुनना। २. धूल के समान तुच्छ वस्तु।
मुहा०–धूल समझना = अत्यंत तुच्छ समझना। किसी गिनती में न लाना।
धूला–संज्ञा पुं० [देश०] टुकड़ा। खंड।
धूलि–संज्ञा स्त्री० [सं०] धूल। गर्द।
धूवाँ–संज्ञा पुं० दे० "धुआँ"।
धूसर–वि० [सं०] १. धूल के रंग का। खाकी। मटमैला। २. धूल लगा हुआ। जिसमें धूल लिपटी हो। धूल से भरा।
यौ०–धूल धूसर=धूल से भरा हुआ।
धूसरा–वि० दे० "धूसर"।
धूसरित–वि० [सं०] १. जो धूल से मटमैला हुआ हो। २. धूल से भरा हुआ।
धूसला–वि० दे० "धूसर"।
धृक, धृग*–अव्य० दे० "धिक्"।
धृत–वि० [सं०] १. धरा हुआ। पकड़ा हुआ। २. धारण किया हुआ। ग्रहण किया हुआ। ३. स्थिर किया हुआ। निश्चित। ४. पतित।

धृतराष्ट्र—सज्ञा पु० [स०] १ वह देश जो अच्छे राजा के शासन म हो । २ वह जिसका राज्य दृढ हो। ३ एक कौरव राजा जो दुर्योधन के पिता और विचित्र-वीर्य के पुत्र थ।

धृति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ धरने या पकडने की क्रिया। धारण। २ स्थिर रहने की क्रिया या भाव। ठहराव। ३ मन की दृढता। धैर्य्य। धीरता। ४ सोलह मातृकाओ म से एक। ५ अठारह अक्षरो के वृत्तो की सज्ञा। ६ दक्ष की एक कन्या और धर्म की पत्नी।

धृष्ट—वि० [स०] [स्त्री० धृष्टा] १ सकोच या लज्जा न करनेवाला। निर्लज्ज। बेहया। २ ढीठ। गुस्ताख। उद्धत।

धृष्टता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ अनुचित साहस। ढिठाई। गुस्ताखी। २ निर्लज्जता। बहयाई।

धृष्टद्युम्न—सज्ञा पुं० [स०] राजा द्रुपद का पुत्र और द्रौपदी का भाई। कुरुक्षेत्र के युद्ध मे जब द्रोणाचार्य्य अपने पुत्र अश्वत्थामा की मृत्यु की झूठी खबर सुनकर योग म मग्न हुए, तब इसी न उनका सिर काटा था।

धृष्य—वि० [स०] धर्पण योग्य। धर्पणीय।

धेन—सज्ञा स्त्री० दे० "धेनु"।

धेनु—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वह गाय जिसे बच्चा जने बहुत दिन न हुए हो। सवत्सा गो। २ गाय।

धेनुक—सज्ञा पु० [स०] एक राक्षस जिसे बलदेव जी न मारा था।

धेय—वि० [स०] १ धारण करने योग्य। धार्य्य। २ पोपण करने योग्य। पोष्य।

धेर—सज्ञा पु० [देश०] एक अनार्य्य जाति। इस जाति के लोग गाँव के बाहर रहते और मरे हुए चौपायो का मास खाते हैं।

धेलचा†, **धेला**—सज्ञा पुं० दे० "अधेला"।

धेली†—सज्ञा स्त्री० [हिं० अधेला] अठन्नी।

धेताल†—वि० [अनु० धे + हिं० ताल] १ चपल। चचल। २ उजड्ड। उद्धत।

धेना—सज्ञा स्त्री० [हिं० धरना या धधा] १ टेव। आदत। स्वभाव। २ काम धधा।

धैर्य्य—सज्ञा पु० [स०] १ सकट, बाधा आदि उपस्थित होने पर चित्त की स्थिरता। धीरता। धीरज। २ उतावला या आतुर न होने का भाव। सब्र। ३ चित्त में उद्वेग न उत्पन्न होने का भाव।

धैवत—सज्ञा पु० [स०] सगीत के सात स्वरो में से छठा स्वर जो मध्यम के बाद का है।

धोंधा—सज्ञा पु० [स० ढुढि + गणेश] १ लोंदा। बेडौल पिंड। २ भद्दा।
मुहा०—मिट्टी का धोंधा = १ मूर्ख। ना-समझ। जड। २ निकम्मा। आलसी।

धोई—सज्ञा स्त्री० [हिं० धोना] छिलका निकाली हुई उर्द या मूँग की दाल।
*सज्ञा पु० [हिं० धवई] राजगीर। थवई।

धोकड—वि० [देश०] हट्टा-कट्टा। मुस्टडा।

धोका—सज्ञा पु० दे० "धोखा"।

धोखा—सज्ञा पु० [स० धूर्त्तता] १ मिथ्या व्यवहार जिससे दूसरे के मन में मिथ्या प्रतीति उत्पन्न हो। भुलावा। छल। दगा। २ धूर्त्तता, चालाकी, झूठ बात आदि से उत्पन्न मिथ्या प्रतीति। डाला हुआ भ्रम। भुलावा।
मुहा०—धोखा खाना = ठगा जाना। प्रतारित होना। धोखा देना = १ भ्रम में डालना। छलना। २ अकस्मात् मरकर या नष्ट होकर दुःख पहुँचाना।
३ भ्रम। भ्रांति। भूल।
मुहा०—धोखा खाना = भ्रम म पडना।
४ भ्रम में डालनवाली वस्तु। माया।
मुहा०—धोखे की टट्टी = १ वह पर्दा या टट्टी जिसकी ओट म छिपकर शिकारी शिकार खेलते हैं। २ भ्रम म डालनवाली चीज। ३ दिखाऊ चीज। धोखा खडा करना या रचना = भ्रम में डालने के लिए आडबर करना। ५ जानकारी का अभाव। अज्ञान।
मुहा०—धोखे में या धोखे से = जान-बूझ-कर नहीं। भूल से।
६ अनिष्ट की सभावना। जोखों।
मुहा०—धोखा उठाना = भ्रम में पडकर

हानि या कष्ट उठाना। ७. अन्यथा होने की संभावना। संशय। मुहा०—धोखा पड़ना=जैसा समझा या कहा जाय, उसके विरुद्ध होना। अन्यथा होना। ८. भूल। चूक। प्रमाद। त्रुटि। मुहा०—धोखा लगना=त्रुटि होना। कमी होना। धोखा लगाना=चूक या कसर करना। ९. वह पुतला जिसे किसान चिड़ियों को डराने के लिए खेत में खड़ा करते हैं। बिजूखा। भुचकाक। १०. रस्सी लगी हुई लकड़ी जो फलदार पेड़ों पर इसलिए बाँधी जाती है कि रस्सी खींचने से खटखट शब्द हो और चिड़ियाँ दूर रहें। खटखटा। ११. बेसन का एक पकवान।

धोखेबाज–वि० [हिं० धोखा + फ़ा० बाज़] धोखा देनेवाला। छली। कपटी। धूर्त।

धोखेबाजी–संज्ञा स्त्री० [हिं० धोखेबाज] छल। कपट। धूर्तता।

धोटा–संज्ञा पुं० दे० "ढोटा"।

धोती–संज्ञा स्त्री०[सं० अधोवस्त्र] वह कपड़ा जो कटि से लेकर घुटनों के नीचे तक का शरीर और स्त्रियों का प्रायः सर्वांग ढकने के लिए कमर में लपेटकर ओढ़ा जाता है। मुहा०—धोती ढीली करना=डर जाना। भयभीत होना। डरकर भागना। संज्ञा स्त्री० [सं० धौती] १. योग की एक क्रिया। दे० "धौति"। २. कपड़े की वह धज्जी जिसे हठयोग की "धौति" क्रिया में मुँह से निगलते हैं।

धोना–क्रि० स० [सं० धावन] १. पानी से साफ करना। प्रक्षालित करना। पखारना। मुहा०—(किसी वस्तु से) हाथ धोना=खो देना। गँवा देना। वंचित रहना। हाथ धोकर पीछे पड़ना=सब छोड़कर लग जाना। २. दूर करना। हटाना। मिटाना। मुहा०—धो बहाना=न रहने देना।

धोप†*–संज्ञा स्त्री० [?] तलवार। खड्ग।

धोब–संज्ञा पुं० [हिं० धोवना] धोए जाने की क्रिया। धुलावट।

धोबिन–संज्ञा स्त्री० [हिं० धोबी] १. धोबी जाति की स्त्री। २. एक जल-पक्षी।

धोबी–संज्ञा पुं० [हिं० धोवना] [स्त्री० धोबिन] वह जो मैले कपड़ों को धो और साफ़ करके अपनी जीविका चलाता हो। कपड़ा धोनेवाला। रजक। मुहा०—धोबी का कुत्ता=व्यर्थ इधर-उधर फिरनेवाला। निकम्मा आदमी।

धोम–संज्ञा पुं० [सं० धूम्र] धूम्र। धूआँ।

धोर–संज्ञा पुं० [सं० धर=किनारा] १. पास। निकटता। २. किनारा। बाढ़।

धोरी–संज्ञा पुं० [सं० धौरेय] १. धुरे को उठानेवाला। भार उठानेवाला। २. बैल। वृषभ। ३. प्रधान। मुखिया। सरदार। ४. श्रेष्ठ पुरुष। बड़ा आदमी।

धोरे†*–क्रि० वि० [सं० धर] पास। निकट।

धोवती–संज्ञा स्त्री० [सं० अधोवस्त्र] धोती।

धोवन–संज्ञा स्त्री० [हिं० धोना] १. धोने का भाव। पछारने की क्रिया। २. वह पानी जिससे कोई वस्तु धोई गई हो।

धोवना*–क्रि० स० दे० "धोना"।

धोवा*–संज्ञा पुं० [हिं० धोना] १. धोवन। २. जल। अर्क।

धोवाना*†–क्रि० स० [हिं० धोना] धुलाना। क्रि० अ० धुलना। धोया जाना।

धौं*†–अव्य० [हिं० दैव, दहुँ] १. एक अव्यय जो ऐसे प्रश्नों के पहले लगाया जाता है जिनमें जिज्ञासा का भाव कम और संशय का भाव अधिक होता है। न जाने। मालूम नहीं। २. प्रश्न के रूप में आनेवाले दो विकल्प या संदेहसूचक वाक्यों में से दूसरे या दोनों के पहले लगनेवाला शब्द। कि। या। अथवा। ३. एक शब्द जिसका प्रयोग जोर देने के लिए ऐसे प्रश्नों के पहले 'तो' या 'भला' के अर्थ में होता है जिनका उत्तर काकु से 'नहीं' होता है। ४. किसी वाक्य के पूरे होने पर उससे मिले हुए प्रश्न वाक्य या आरंभ-सूचक शब्द जो 'कि' का अर्थ देता है। ५. विधि, आदेश आदि वाक्यों के पहले केवल जोर देने के लिए आनेवाला एक शब्द।

धौंक—संज्ञा स्त्री० [हिं० धौंकना] १. आग दहकाने के लिये भाथी को दबाकर निकाला हुआ हवा का झोंका। २ गरमी की लपट। ताप। लू।

धौंकना—क्रि० स० [सं० धम्=धौंकना] १ आग पर, उसे दहकाने के लिये, भाथी दबाकर हवा का झोंका पहुँचाना। २ ऊपर डालना। भार डालना या सहन कराना। ३ दंड आदि लगाना।

धौंकनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० धौंकना] १ बाँस या धातु की एक नली जिससे लोहार, सोनार आदि आग फूँकते हैं। २ भाथी।

धौंका†—संज्ञा स्त्री० [हिं० धौंकना] लू।

धौंकिया—संज्ञा पु० [हिं० धौंकना] १ भाथी चलानेवाला। आग फूँकनेवाला। २ एक प्रकार के व्यापारी जो भाथी आदि लिए घूमते और टूटे-फूटे बरतनों की मरम्मत करते हैं।

धौंकी—संज्ञा स्त्री० दे० "धौंकनी"।

धौंज—संज्ञा स्त्री० [हिं० धौंजना] १ दौड़-धूप। २ घबराहट। उद्विग्नता।

धौंजन—संज्ञा स्त्री० दे० "धौंज"।

धौंजना†—क्रि० स० [सं० ध्वजन] दौड़ना-धूपना। दौड़-धूप करना। क्रि० स० पैरों से रौंदना।

धौंताल—वि० [हिं० धुन+ताल] १ जिसे किसी बात की धुन लग जाय। २ फुरतीला। चुस्त। चालाक। ३ साहसी। दृढ़। ४ हट्टा-कट्टा। मजबूत। हेकड़। ५ निपुण। पटु।

धौंस—संज्ञा स्त्री० [सं० दंश] १ धमकी। घुड़की। डाँट। डपट। २ धाक। अधिकार। रोब-दाब। ३ झाँसा-पट्टी। भुलावा। धोखा। छल।

धौंसना—क्रि० स० [सं० ध्वंसन] १ दबाना। दमन करना। २ धमकी या घुड़की देना। डराना। ३ मारना-पीटना।

धौंस-पट्टी—संज्ञा स्त्री० [हिं० धौंस+पट्टी] भुलावा। झाँसा-पट्टी। दम दिलासा।

धौंसा—संज्ञा पु० [हिं० धौंसना] १ बड़ा नगारा। डंका। २ सामर्थ्य। शक्ति।

धौंसिया—संज्ञा पु० [हिं० धौंसना] १ धौंस या धमकी से काम चलानेवाला। २ झाँसा-पट्टी देनेवाला। ३ नगारा बजानेवाला।

धौ—संज्ञा पु० दे० "धव"।

धौत—वि० [सं०] १. धोया हुआ। साफ़। २ उजला। सफेद। ३ नहाया हुआ। संज्ञा पु० रूपा। चाँदी।

धौति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शुद्ध। २ हठयोग की एक क्रिया जो शरीर को भीतर और बाहर से शुद्ध करने के लिये की जाती है। ३ आँत साफ करने की योग की एक क्रिया जिसमें कपड़े की एक धज्जी मुँह से पेट के नीचे उतारते हैं, फिर पानी पीकर उसे धीरे धीरे बाहर निकालते हैं।

धौम्य—संज्ञा पु० [सं०] १ एक ऋषि जो देवल के भाई और पांडवों के पुरोहित थे। २ एक ऋषि जो महाभारत के अनुसार व्याघ्रपद नामक ऋषि के पुत्र और बड़े शिवभक्त थे। ३ एक ऋषि जो तारा रूप में पश्चिम दिशा में स्थित हैं।

धौरहर*—संज्ञा पु० दे० "धौराहर"।

धौरा—वि० [सं० धवल] [स्त्री० धौरी] १ श्वेत। सफेद। उजला। २ सफेद रंग का बैल। ३ धौ का पेड़। ४ एक प्रकार का पंडुक।

धौराहर—संज्ञा पु० [हिं० धुर=ऊपर+घर] ऊँची अटारी। धरहरा। मीनार। बुर्ज।

धौरिय*—संज्ञा पु० [सं० धौरेय] बैल।

धौरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० धौरा] १ सफेद रंग की गाय। कपिला। २ एक प्रकार की चिड़िया।

धौरे—क्रि० वि० दे० "धोरे"।

धौल—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ धप्पा। चाँटा। थप्पड़। २ नुकसान। हानि। टोटा। *वि० [सं० धवल] उजला। सफ़ेद। मुहा०—धौल धूर्त्त=गहरा धूर्त्त। संज्ञा पु० [हिं० धौराहर] धरहरा। धौराहर।

धौल-धक्का—संज्ञा पु० [हिं० धौल+धक्का] आघात। चोट।

धौल-धप्पड़–संज्ञा पुं० [हिं० धौल + धप्पा] १. मार-पीट। धक्का-मुक्का। २. उपद्रव।
धौलहर*–संज्ञा पुं० दे० "धौराहर"।
धौला–वि० [सं० धवल] [स्त्री० धौली] सफ़ेद। उजला। श्वेत।
धौलाई*–संज्ञा स्त्री० [हिं० धौल + आई (प्रत्य०)] सफ़ेदी। उजलापन।
धौलागिरि–संज्ञा पुं० दे० "धवलगिरि"।
ध्यात–वि० [सं०] विचारा हुआ। ध्यान किया हुआ। चिंतित।
ध्याता–वि० [सं० ध्यातृ] [स्त्री० ध्यात्री] १. ध्यान करनेवाला। २. विचार करनेवाला।
ध्यान–संज्ञा पुं० [सं०] १. अंतःकरण में उपस्थित करने की क्रिया या भाव। मानसिक प्रत्यक्ष। मुहा०–ध्यान में डूबना या मग्न होना=कोई बात इतना मन में लाना कि और सब बातें भूल जायँ। ध्यान धरना=मन में स्थापित करना। (किसी के) ध्यान में लगना = किसी का विचार मन में लाकर मग्न होना। २. सोच विचार। चिंतन। मनन। ३. भावना। प्रत्यय। विचार। खयाल। मुहा०–ध्यान आना = विचार उत्पन्न होना। ध्यान जमना = विचार स्थिर होना। ध्यान बँधना=लगातार खयाल बना रहना। ध्यान रखना=विचार बनाए रखना। न भूलना। ध्यान लगना=बराबर खयाल बना रहना। ४. चित्त की ग्रहण-वृत्ति। चित्त। मन। मुहा०—ध्यान में न लाना = १. चिंता न करना। परवाह न करना। २. न विचारना। ५. चेतना की प्रवृत्ति। चेत। खयाल। मुहा०–ध्यान जमना=चित्त एकाग्र होना। ध्यान जाना=चित्त का किसी ओर प्रवृत्त होना। ध्यान दिलाना=खयाल कराना, या जताना। चेताना। सुझाना। ध्यान देना=(अपना) चित्त प्रवृत्त करना। गौर करना। ध्यान पर चढ़ना=मन में स्थान कर लेना। चित्त से न हटना। ध्यान बँटना=चित्त एकाग्र न रहना। खयाल इधर-उधर होना। ध्यान बँधना = किसी ओर चित्त स्थिर या एकाग्र होना। ध्यान लगना = चित्त प्रवृत्त या एकाग्र होना। ६. बोध करनेवाली वृत्ति। समझ। बुद्धि। ७. धारणा। स्मृति। याद। मुहा०—ध्यान आना=स्मरण होना। याद होना। ध्यान दिलाना = स्मरण कराना। याद दिलाना। ध्यान पर चढ़ना = स्मरण होना। याद होना। ध्यान रखना = याद रखना। ध्यान से उतरना = भूलना। ८. चित्त को एकाग्र करके किसी ओर लगाने की क्रिया। यह योग के आठ अंगों में से सातवाँ अंग और धारणा तथा समाधि के बीच की अवस्था है। मुहा०—ध्यान छूटना=चित्त की एकाग्रता का नष्ट होना। चित्त इधर-उधर हो जाना। ध्यान करना=परमात्मचिंतन आदि के लिये चित्त को एकाग्र करके बैठना।
ध्यानना*–क्रि० स० [सं० ध्यान] ध्यान करना।
ध्यानयोग–संज्ञा पुं० [सं०] वह योग जिसमें ध्यान ही प्रधान अंग हो।
ध्याना*–क्रि० स० [सं० ध्यान] १. ध्यान करना। २. स्मरण करना। सुमरना।
ध्यानी–वि० [सं० ध्यानिन्] १. ध्यानयुक्त। समाधिस्थ। २. ध्यान करनेवाला।
ध्येय–वि० [सं०] १. ध्यान करने योग्य। २. जिसका ध्यान किया जाय।
ध्रुपद–संज्ञा पुं० [सं० ध्रुवपद] एक प्रकार का गीत जिसके द्वारा देवताओं की लीला या राजाओं के यज्ञादि का वर्णन गाया जाता है।
ध्रुव–वि० [सं०] १. सदा एक ही स्थान पर रहनेवाला। स्थिर। अचल। २. सदा एक ही अवस्था में रहनेवाला। नित्य। ३. निश्चित। दृढ़। ठीक। पक्का। संज्ञा पुं० १. आकाश। २. शंकु। कील। ३. पर्वत। ४. खंभा। थून। ५. वट। बरगद। ६. आठ वसुओं में से एक। ७. ध्रुपद। ८. विष्णु। ९. ध्रुव तारा। १०. पुराणों के अनुसार राजा उत्तानपाद के एक पुत्र जिनकी माता का नाम सुनीति था।

विष्णु भगवान् ने इनकी भक्ति से प्रसन्न होकर इन्हें वर दिया कि तुम सब लोकों, ग्रहों और नक्षत्रों के ऊपर उनके आधार-स्वरूप होकर अचल भाव से स्थित रहोगे। तब से ये आकाश में तारे के रूप में प्राय: एक ही स्थान पर स्थित हैं। ११ भूगोल विद्या में पृथ्वी के वे दोनों सिरे जिनसे होकर अक्षरेखा गई हुई मानी जाती है। १२ रगण का अठारहवाँ भेद जिसमें क्रमशः एक लघु, एक गुरु और तीन लघु होते हैं।

ध्रुवता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्थिरता। अचलता। २ दृढ़ता। पक्कापन। ३ निश्चय।

ध्रुव तारा–संज्ञा पु० [सं० ध्रुव+तारक, हिं० तारा] वह तारा जो सदा ध्रुव अर्थात् मेरु के ऊपर रहता है, कभी इधर-उधर नहीं होता। यह उत्तानपाद का पहला पुत्र ध्रुव माना जाता है।

ध्रुवदर्शक–संज्ञा पु० [सं०] १ सप्तर्षि-मंडल। २ कुतुबनुमा।

ध्रुवदर्शन–संज्ञा पु० [सं०] विवाह के संस्कार के अंतर्गत एक कृत्य जिसमें वर-वधू को ध्रुव तारा दिखाया जाता है।

ध्रुवलोक–संज्ञा पु० [सं०] पुराणानुसार एक लोक जो सत्यलोक के अंतर्गत है और जिसमें ध्रुव स्थित हैं।

ध्वंस–संज्ञा पु० [सं०] विनाश। नाश।

ध्वंसक–वि० [सं०] नाश करनेवाला।

ध्वंसन–संज्ञा पु० [सं०] [वि० ध्वंसनीय, ध्वंसित, ध्वस्त] १ नाश करने की क्रिया। २ नाश होने का भाव। क्षय। विनाश।

ध्वंसी–वि० [सं० ध्वंसिन्] [स्त्री० ध्वंसिनी] नाश करनेवाला। विनाशक।

ध्वज–संज्ञा पु० [सं०] १ चिह्न। निशान। २ वह लंबा या ऊँचा डंडा जिसके सिरे पर कोई चिह्न बना रहता है, या पताका बँधी रहती है। निशान। झंडा।

ध्वजभंग–संज्ञा पु० [सं०] नपुंसकता।

ध्वजा–संज्ञा स्त्री० [सं० ध्वज] १ पताका। झंडा। निशान। २ छंदशास्त्रानुसार ठगण का पहला भेद जिसमें पहले लघु फिर गुरु आता है।

ध्वजिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] सेना का एक भेद जिसका परिमाण कुछ लोग वाहिनी का दूना मानते हैं।

ध्वजी–वि० [सं० ध्वजिन्] [स्त्री० ध्वजिनी] १ ध्वजवाला। जो ध्वजा पताका लिए हो। २ चिह्नवाला। चिह्नयुक्त।

ध्वनि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह विषय जिसका ग्रहण श्रवणेंद्रिय से हो। शब्द। नाद। आवाज। २ शब्द का स्फोट। आवाज की गूँज। लय। ३ वह काव्य जिसमें वाच्यार्थ की अपेक्षा व्यंग्यार्थ अधिक विशेषतावाला हो। ४ आशय। गूढ़ अर्थ। मतलब।

ध्वनित–वि० [सं०] १ शब्दित। २ व्यंजित। प्रकट किया हुआ। ३ बजाया हुआ। वादित।

ध्वन्य–संज्ञा पु० [सं०] व्यंग्यार्थ।

ध्वन्यात्मक–वि० [सं०] १ ध्वनि-स्वरूप या ध्वनिमय। २ (काव्य) जिसमें व्यंग्य प्रधान हो।

ध्वन्यार्थ–संज्ञा पु० [सं० ध्वन्यर्थ] वह अर्थ जिसका बोध वाच्यार्थ से न होकर केवल ध्वनि या व्यंजना से हो।

ध्वस्त–वि० [सं०] १ च्युत। गिरा-पड़ा। २ खंडित। टूटा-फूटा। भग्न। ३ नष्ट। भ्रष्ट। ४ परास्त। पराजित।

ध्वांत–संज्ञा पु० [सं०] अंधकार। अँधेरा।

ध्वांतचर–संज्ञा पु० [सं०] राक्षस।

न

न–एक व्यंजन जो हिंदी या संस्कृत वर्णमाला का बीसवाँ और तवर्ग का पाँचवाँ

वर्ण है। इसका उच्चारण-स्थान दंत है।
नंग–संज्ञा पुं० [हिं० नंगा] १. नग्नता। नंगापन। नंगे होने का भाव। २. गुप्त अंग।
नंग-धड़ंग–वि० [हिं० नंगा + धड़ंग (अनु०)] बिलकुल नंगा। दिगंबर। विवस्त्र।
नंग-मुनंगा–वि० दे० "नंग-धड़ंग"।
नंगा–वि० [सं० नग्न] १. जो कोई कपड़ा न पहने हो। दिगंबर। विवस्त्र। वस्त्रहीन। यौ०—अलिफ़ नंगा या नंगा मादरजाद = बिलकुल नंगा।
२. निर्लज्ज। बेहया। ३. लुच्चा। पाजी। ४. जो किसी तरह ढँका न हो। खुला हुआ।
नंगा-झोली–संज्ञा स्त्री० [हिं० नंगा + झोरना] किसी के पहने हुए कपड़ों आदि को उतरवाकर अथवा योंही अच्छी तरह देखना जिसमें उसकी छिपाई हुई चीज का पता लग जाय। कपड़ों की तलाशी।
नंगाबुच्चा, नंगाबूचा–वि० [हिं० नंगा + बूचा = खाली] जिसके पास कुछ भी न हो। बहुत दरिद्र।
नंगा लुच्चा–वि० [हिं० नंगा + लुच्चा] नीच और दुष्ट। बदमाश।
नंगियाना–क्रि० स० [हिं० नंगा + इयाना (प्रत्य०)] १. नंगा करना। शरीर पर वस्त्र न रहने देना। २. सब कुछ छीन लेना।
नंद–संज्ञा पुं० [सं०] १. आनंद। हर्ष। २. परमेश्वर। ३. पुराणानुसार नौ निधियों में से एक। ४. विष्णु। ५. चार प्रकार की बाँसुरियों में से एक। ६. पिंगल में डगण के दूसरे भेद का नाम जिसमें एक गुरु और एक लघु होता है। ७. लड़का। बेटा। पुत्र। ८. गोकुल के गोपों के मुखिया जिनके यहाँ श्रीकृष्ण को, उनके जन्म के समय, वसुदेव जाकर रख आए थे। बाल्यावस्था में श्रीकृष्ण इन्हीं के यहाँ रहे थे। इनकी स्त्री का नाम यशोदा था। ९. महात्मा बुद्ध के सौतेले भाई।
नंदक–संज्ञा पुं० [सं०] १. श्रीकृष्ण का खड्ग। २. राजा नंद जिनके यहाँ कृष्ण बाल्यावस्था में रहते थे।
वि० १. आनंददायक। २. कुल-पालक। ३. संतोष देनेवाला।
नंदकिशोर–संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।
नंदकी–संज्ञा स्त्री० [सं०] विष्णु।
नंदकुमार–संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।
नंदगाँव–संज्ञा पुं० [सं० नंदग्राम] वृंदावन का एक गाँव जहाँ नंद गोप रहते थे।
नंदग्राम–संज्ञा पुं० [सं०] १. नंदीग्राम। २. अयोध्या के समीप का एक गाँव जहाँ बैठकर राम के वनवास-काल में भरत ने तपस्या की थी। नंदिग्राम।
नंदनंदन–संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।
नंदनंदिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] योगमाया।
नंदन–संज्ञा पुं० [सं०] १. इंद्र के उपवन का नाम जो स्वर्ग में माना जाता है। २. एक प्रकार का विष। ३. महादेव। शिव। ४. विष्णु। ५. लड़का। बेटा। जैसे नंदनंदन। ६. एक प्रकार का अस्त्र। ७. मेघ। बादल। ८. एक वर्णवृत्त।
वि० आनंददायक। प्रसन्न करनेवाला।
नंदनवन–संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र की वाटिका।
नंदना*–क्रि० अ० [सं० नंद] आनंदित होना।
संज्ञा स्त्री० [सं० नंद = बेटा] लड़की। बेटी।
नंदनी–संज्ञा स्त्री० दे० "नंदिनी"।
नंदरानी–संज्ञा स्त्री० (सं० नंद + हिं० रानी] नंद की स्त्री, यशोदा।
नंदलाल–संज्ञा पुं० [सं० नंद + हिं० लाल = बेटा] नंद के पुत्र, श्रीकृष्ण।
नंदा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुर्गा। २. गौरी। ३. एक प्रकार की कामधेनु। ४. एक मातृका या बाल-ग्रह। ५. संपत्ति। संपदा। ६. पति की बहन। ननद। ७. बरवै छंद का एक नाम। ८. प्रसन्नता।
वि० १. आनंद देनेवाली। २. शुभ।
नंदि–संज्ञा पुं० [सं०] १. आनंद। २. वह जो आनंदमय हो। ३. परमेश्वर। ४. शिव का द्वारपाल बैल। नंदिकेश्वर।
नंदिकेश्वर–संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव के द्वारपाल बैल का नाम। २. एक उपपुराण जिसे नंदिपुराण भी कहते हैं।

नंदिघोष—संज्ञा पुं० [सं०] १ अर्जुन का रथ। २ बंदीजनों की घोषणा।

नंदित—वि० [सं०] आनंदित। सुखी।
*वि० [हिं० नादना] बजता हुआ।

नंदिन*—संज्ञा स्त्री० [सं० नंद=बेटा] लड़की।

नंदिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पुत्री। बेटी। २ रेणुका नामक गंध-द्रव्य। ३ उमा। ४ गंगा। ५ पति की बहन। ननद। ६ दुर्गा। ७ तेरह अक्षरों का एक वर्ण-वृत्त। कलहंस। सिंहनाद। ८ वसिष्ठ की कामधेनु जो सुरभि की कन्या थी। राजा दिलीप ने इसी गौ की सिंह से रक्षा की थी और इसी की आराधना करके उन्होंने रघु नामक पुत्र प्राप्त किया था। ९ पत्नी। स्त्री। जोरू।

नंदिवर्द्धन—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव। २ पुत्र। बेटा। ३ मित्र। दोस्त। ४ प्राचीन काल का एक प्रकार का विमान।
वि० आनंद बढ़ानेवाला।

नंदी—संज्ञा पुं० [सं० नंदिन्] १ धव का पेड़। २ बरगद का पेड़। ३ शिव के एक प्रकार के गण। ४ शिव का द्वारपाल, बैल। ५ शिव के नाम पर दाग कर उत्सर्ग किया हुआ कोई बैल। ६ वह बैल जिसके शरीर पर गाँठ हो। ऐसा बैल खेती के काम के लिए अच्छा नहीं होता। ७ विष्णु।
वि० आनंदयुक्त। जो प्रसन्न हो।

नंदीगण—संज्ञा पुं० [हिं० नंदी+गण] १ शिव के द्वारपाल, बैल। २ दागकर उत्सर्ग किया हुआ बैल। साँड़।

नंदीमुख—संज्ञा पुं० दे० "नांदीमुख"।

नंदीश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव। २ शिव का एक गण।

नंदेऊ*†—संज्ञा पुं० दे० "नंदोई"।

नंदोई—संज्ञा पुं० [हिं० ननद+ओई (प्रत्य०)] ननद का पति। पति का बहनोई।

नंबर—वि० [अ०] संख्या। अदद।
संज्ञा पुं० १ गिनती। गणना। २ सामयिक पत्र की कोई संख्या। अंक। ३ कपड़ा नापने का ३६ इंच का एक गज।

नंबरदार—संज्ञा पुं० [अ० नंबर+फा० दार] गाँव का वह जमींदार जो अपनी पट्टी के और हिस्सेदारों से मालगुजारी आदि वसूल करने में सहायता दे।

नंबरवार—क्रि० वि० [अ० नंबर+फा० वार] सिलसिलेवार। एक एक करके। क्रमशः।

नंबरी—वि० [अ० नंबर+ई (प्रत्य०)] १ नंबरवाला। जिस पर नंबर लगा हो। २ प्रसिद्ध। मशहूर।

नंबरी गज—संज्ञा पुं० दे० "नंबर (३)"।

नंबरी सेर—संज्ञा पुं० [हिं० नंबरी+सेर] तौलने का सेर जो अँगरेजी रुपयों से ८० भर का होता है।

नंस*—वि० [सं० नाश] नष्ट। बरबाद।

न—संज्ञा पुं० [सं०] १ उपमा। २ रत्न। ३ सोना। ४ बुद्ध। ५ बंध।
अव्य० १ निषेध-वाचक शब्द। नहीं। मत। २ या नहीं। जैसे—तुम वहाँ जाओगे न?

नई*—वि० [सं० नय] नीतिज्ञ।
वि० स्त्री० [सं० नव] 'नया' का स्त्री० रूप। *† संज्ञा स्त्री० दे० "नदी"।

नउँजी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० लीची] लीची नामक फल।

नउ*†—वि० १ दे० "नव"। २ दे० "नौ"।

नउआ†—संज्ञा पुं० दे० "नाऊ"।

नउका*†—संज्ञा स्त्री० दे० "नौका"।

नउत*†—वि० [हिं० नवना] नीचे की ओर झुका हुआ।

नउलि*†—वि० [सं० नवल] नया।

नओढ़*†—संज्ञा स्त्री० दे० "नवोढ़ा"।

नककटा—वि० [हिं० नाक+कटना] [स्त्री० नककटी] १ जिसकी नाक कटी हो। २ जिसकी बहुत दुर्दशा, अप्रतिष्ठा या बदनामी हुई हो। ३ निर्लज्ज। बेहया।

नकघिसनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० नाक+घिसना] १ जमीन पर नाक रगड़ने की क्रिया। २ बहुत अधिक दीनता। आजिजी।

नकचढ़ा—संज्ञा पुं० [हिं० नाक+चढ़ना] [स्त्री० नकचढ़ी] चिड़चिड़ा। बद-मिजाज।

नकछिकनी—संज्ञा स्त्री० [सं० छिक्कनी] एक

प्रकार की घास जिसके फूल सूँघने से छींकें आने लगती हैं।

नकटा–संज्ञा पुं० [हिं० नाक+कटना] [स्त्री० नकटी] १. वह जिसकी नाक कट गई हो। २. एक प्रकार का गीत जो स्त्रियाँ विवाह के समय गाती हैं।

वि० १.जिसकी नाक कटी हो। २.निर्लज्ज।

नकतोड़ा–संज्ञा पुं० [हिं० नाक+तोड़=गति] अभिमान-पूर्वक नाक-भौं चढ़ाकर नखरा करना अथवा कोई बात कहना।

नक़द–संज्ञा पुं० [अ०] वह धन जो सिक्कों के रूप में हो। रुपया-पैसा।

वि० १. (रुपया)जो तैयार हो। (धन) जो तुरंत काम में लाया जा सके। २. खास। ३. दे० "नगद"।

क्रि० वि० तुरत दिए हुए रुपये के बदले में। 'उधार' का उलटा।

नक़दी–संज्ञा स्त्री० दे० "नक़द"।

नकना*†–क्रि० स० [हिं० नाकना] १. उल्लंघन करना। लाँघना। डाँकना। फाँदना। २. चलना। ३. त्यागना।

क्रि० अ० [हिं० नकियाना] नाक में दम होना। हैरान होना।

क्रि० स० नाक में दम करना।

नकफूल–संज्ञा पुं० [हिं० नाक+फूल] नाक में पहनने का लौंग या कील।

नकब–संज्ञा स्त्री० [अ०] चोरी करने के लिए दीवार में किया हुआ छेद। सेंध।

नकबानी*†–संज्ञा स्त्री० [हिं० नाक+बानी] नाक में दम। हैरानी।

नकबेसर–संज्ञा स्त्री० [हिं० नाक+बेसर] नाक में पहनने की छोटी नथ। बेसर।

नकमोती–संज्ञा पुं० [हिं० नाक+मोती] नाक में पहनने का मोती। लटकन।

नक़ल–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. वह जो किसी दूसरे के ढंग पर या उसकी तरह तैयार किया गया हो। अनुकृति। कापी। २. एक के अनुरूप दूसरी वस्तु बनाने का कार्य्य। अनुकरण। ३. लेख आदि की अक्षरशः प्रतिलिपि। कापी। ४. किसी के वेष, हाव-भाव या बात-चीत आदि का पूरा पूरा अनुकरण। स्वाँग। ५. अद्भुत और हास्यजनक आकृति। ६. हास्य-रस की कोई छोटी-मोटी कहानी। चुटकुला।

नक़लनवीस–संज्ञा पुं० [अ० नक़ल+फ़ा० नवीस] वह आदमी, विशेषतः अदालत का मुहर्रिर, जिसका काम केवल दूसरों के लेखों की नक़ल करना होता है।

नक़ली–वि० [अ०] १. जो नक़ल करके बनाया गया हो। कृत्रिम। बनावटी। २. खोटा। जाली। झूठा।

नकश–संज्ञा पुं० [अ०नक्श] १.दे०"नक्श"। २. ताश से खेला जानेवाला एक जूआ।

नकशा–संज्ञा पुं० दे० "नक्शा"।

नकसीर–संज्ञा स्त्री०[हिं०नाक+सं०क्षीर=जल] आप से आप नाक से रक्त बहना।

मुहा०—नकसीर भी न फूटना=ज़रा भी तकलीफ या नुकसान न होना।

नकाना*†–क्रि० अ० [हिं० नकियाना] नाक में दम होना। बहुत परेशान होना।

क्रि० स० [हिं० नकियाना] नाक में दम करना। बहुत परेशान करना।

नक़ाब–संज्ञा स्त्री०,पुं०[अ०] १. वह कपड़ा जो मुँह छिपाने के लिए सिर पर से गले तक डाल लिया जाता है। (मुसलमान)

यौ०—नक़ाबपोश=चेहरे पर नकाब डाले हुआ।

२. साड़ी या चादर का वह भाग जिससे स्त्रियों का मुँह ढँका रहता है। घूँघट।

नकार–संज्ञा पुं० [सं०] १. न या नहीं का बोधक शब्द या वाक्य। नहीं। २. इनकार। अस्वीकृति। ३. "न" अक्षर।

नकारना–क्रि० अ० [हिं० नकार+ना (प्रत्य०)] इनकार करना। अस्वीकृत करना।

नकारा‡–वि० [फ़ा० नाकारः] जो किसी काम का न हो। खराब। निकम्मा।

नकाशना†–क्रि० स० [अ० नक्क़ाशी] धातु, पत्थर आदि पर खोदकर चित्र, फूल, पत्ती आदि बनाना।

नकाशी–संज्ञा स्त्री० दे० "नक्क़ाशी"।

नकियाना†–क्रि० अ० [हिं० नाक + आना (प्रत्य०)] १ शब्दों का अनुनासिक-वत् उच्चारण करना। २ बहुत दुःखी या हैरान होना।
क्रि० स० बहुत परेशान या तंग करना।
नकीब–संज्ञा पु० [अ०] १ चारण। बंदी-जन। भाट। २ कड़खा गानेवाला पुरुष। मसखरा।
नकुल–संज्ञा पु० [स०] १ नेवला नामक जंतु। २ पांडु राजा के चौथे पुत्र का नाम जो अश्विनीकुमार द्वारा माद्री के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। ३ बेटा। पुत्र।
नकेल–संज्ञा स्त्री० [हिं० नाक+एल (प्रत्य०)] ऊँट की नाक में बँधी हुई रस्सी जो लगाम का काम देती है। मुहरा।
मुहा०–किसी की नकेल हाथ में होना = किसी पर सब प्रकार का अधिकार होना।
नक्का–संज्ञा पु० [हिं० नाक] सूई का वह छेद जिसमें डोरा पहनाया जाता है। नाका।
नक्कारखाना–संज्ञा पु० [फा०] वह स्थान जहाँ पर नक्कारा बजता है। नौबतखाना।
मुहा०—नक्कारखाने में तूती की आवाज कौन सुनता है = बड़े बड़े लोगों के सामने छोटे आदमियों की बात कोई नहीं सुनता।
नक्कारची–संज्ञा पु० [फा०] नगाड़ा बजाने-वाला।
नक्कारा–संज्ञा पु० [फा०] नगाड़ा। डंका। नौबत। दुंदुभी।
नक्काल–संज्ञा पु० [अ०] १ अनुकरण करने-वाला। नकल करनेवाला। २ भाँड।
नक्काश–संज्ञा पु० [अ०] वह जो नक्काशी करता हो।
नक्काशी–संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० नक्काशी-दार] १ धातु आदि पर खोदकर बेल-बूटे आदि बनाने का काम या विद्या। २ वे बेल-बूटे जो इस प्रकार बनाए गए हों।
नक्कू–वि० [हिं० नाक] १ जिसकी नाक बड़ी हो। २ अपने आपको बहुत प्रति-ष्ठित समझनेवाला। ३ सबसे अलग और उलटा काम करनेवाला।
नक्त–संज्ञा पु० [स०] १ बिल्कुल संध्या का समय। २ रात। ३ एक प्रकार का व्रत। इसमें रात को तारे देखकर भोजन किया जाता है। ४ शिव।
नक्र–संज्ञा पु० [स०] १. नाक नामक जल-जंतु। २ मगर। ३ घड़ियाल। कुंभीर। ४ नाक। नासिका।
नक्ल–संज्ञा स्त्री० दे० 'नकल"।
नक्श–वि० [अ०] जो अंकित या चित्रित किया गया हो। बनाया या लिखा हुआ।
मुहा०—मन में नक्श करना या कराना = किसी के मन में कोई बात अच्छी तरह बैठाना। संज्ञा पु० [अ०] १ तसवीर। चित्र। २ खोदकर या कलम से बनाया हुआ बेल-बूटा। ३ मोहर। छाप।
मुहा०—नक्श बैठना = अधिकार जमना।
४ वह यंत्र जो रोगों आदि को दूर करने के लिये कागज आदि पर लिखकर बाँह या गले में पहनाया जाता है। तावीज। ५ जादू। टोना। ६ दे० "नक्श (२)"।
नक्शा–संज्ञा पु० [अ०] १ रेखाओं द्वारा आकार आदि का निर्देश। चित्र। प्रति-मूर्ति। तसवीर। २ आकृति। शक्ल। ढाँचा। गढ़न। ३ किसी पदार्थ का स्वरूप। आकृति। ४ चाल-ढाल। तर्ज। ढंग। ५ अवस्था। दशा। ६ ढाँचा। ठप्पा। ७ किसी धरातल पर बना हुआ वह चित्र जिसमें पृथ्वी या खगोल का कोई भाग अपनी स्थिति के अनुसार अथवा और किसी विचार से चित्रित हो। ऐसे चित्रों में प्रायः देश, पर्वत, समुद्र, नदियाँ और नगर आदि दिखलाए जाते हैं।
नक्शानवीस–संज्ञा पु० [अ० नक्शा+फा० नवीस] नक्शा लिखने या बनानेवाला।
नक्शी–वि० [अ० नक्श+ई (प्रत्य०)] जिस पर बेल-बूटे बने हों। नक्काशीदार।
नक्षत्र–संज्ञा पु० [स०] चंद्रमा के पथ में पड़नेवाले तारों का वह समूह या गुच्छ जिसकी पहचान के लिये आकार निर्दिष्ट करके कोई नाम रखा गया हो। ये सब

२७ नक्षत्रों में विभक्त हैं।
नक्षत्रनाथ–संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।
नक्षत्रपथ–संज्ञा पुं० [सं०] नक्षत्रों के चलने का मार्ग।
नक्षत्रराज–संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।
नक्षत्रलोक–संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार वह लोक जिसमें नक्षत्र हैं।
नक्षत्रवृष्टि–संज्ञा स्त्री० [सं०] तारा टूटना। उल्कापात होना।
नक्षत्री–संज्ञा पुं० [सं० नक्षत्रिन्] चंद्रमा। वि० [सं० नक्षत्र+ई (प्रत्य०)] भाग्यवान्।
नख–संज्ञा पुं० [सं०] १. हाथ या पैर का नाखून। २. नाखून के आकार का एक प्रसिद्ध गंधद्रव्य जो घोंघे की जाति के एक जानवर के मुँह का ऊपरी आवरण होता है। ३. खंड। टुकड़ा।
संज्ञा स्त्री० [फ़ा० नख] गुड्डी उड़ाने के लिये पतला रेशमी या सूती तागा। डोर।
नखक्षत–संज्ञा पुं० [सं०] वह दाग या चिह्न जो नाखून के गड़ने के कारण बना हो।
नखच्छत*†–संज्ञा पुं० दे० "नखक्षत"।
नखछोलिया*†–संज्ञा पुं० दे० "नखक्षत"।
नखत, नखतर*‡–संज्ञा पुं० दे० "नक्षत्र"।
नखना–क्रि० अ० [हिं० नाखना] उल्लंघन होना। डाँका जाना।
क्रि० स० उल्लंघन करना। पार करना।
क्रि० स० [सं० नष्ट] नष्ट करना।
नखरा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. वह चुलबुलापन या चेष्टा जो जवानी की उमंग में अथवा प्रिय को रिझाने के लिये हो। चोचला। नाज। २. चंचलता। चुलबुलापन।
नखरा-तिल्ला–संज्ञा पुं० [फ़ा० नखरा + हिं० तिल्ला (अनु०)] नखरा। चोचला।
नखरीला†–वि० [फ़ा० नखरा] नखरा करनेवाला।
नखरेखा–संज्ञा स्त्री० [सं०] नखक्षत।
नखरेबाज़–वि० [फ़ा०] [संज्ञा नखरेबाज़ी] जो बहुत नखरा करे। नखरा करनेवाला।
नखरौट–संज्ञा स्त्री० दे० "नखक्षत"।
नखबिंदु–संज्ञा पुं० [सं०] वह गोल या चंद्राकार चिह्न जो स्त्रियाँ नाखून के ऊपर मेहँदी या महावर से बनाती हैं।
नखशिख–संज्ञा पुं० [सं०] १. नख से लेकर शिख तक के सब अंग।
मुहा०—नखशिख से=सिर से पैर तक।
२. शरीर के सब अंगों का वर्णन।
नखांक–संज्ञा पुं० [सं०] १. नख नामक गंध-द्रव्य। २. नाखून गड़ने का चिह्न।
नखास–संज्ञा पुं० [अ० नख्खास] वह बाजार जिसमें पशु विशेषतः घोड़े बिकते हैं।
नखियाना*†–क्रि० स० [सं० नख + इयाना (प्रत्य०)] नाखून गड़ाना।
नखी–संज्ञा पुं० [सं० नखिन्] १. शेर। २. चीता। ३. वह जानवर जो नाखून से किसी पदार्थ को चीर या फाड़ सकता हो।
संज्ञा स्त्री० [सं०] नख नामक गंधद्रव्य।
नखोटना*†–क्रि० स० [सं० नख + ओटना (प्रत्य०)] नाखून से खरोचना या नोचना।
नग–संज्ञा पुं० [सं०] १. पर्वत। पहाड़। २. पेड़। वृक्ष। ३. सात की संख्या। ४. सर्प। साँप। ५. सूर्य।
संज्ञा पुं० [फ़ा० नगीना, सं० नग] १. दे० "नगीना"। २. अदद। संख्या।
नगज–संज्ञा पुं० [सं०] हाथी।
वि० जो पहाड़ से उत्पन्न हो।
नगजा–संज्ञा स्त्री० [सं०] पार्वती।
नगण–संज्ञा पुं० [सं०] पिंगल में तीन लघु अक्षरों का एक गण।
नगण्य–वि० [सं०] बहुत ही साधारण या गया-बीता। तुच्छ।
नगदंती–संज्ञा स्त्री० [सं०] विभीषण की स्त्री।
नगद–संज्ञा पुं० दे० "नक़द"।
नगधर–संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्णचन्द्र।
नगधरन*–संज्ञा पुं० दे० "नगधर"।
नगनंदिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] पार्वती।
नगन*†–वि० [सं० नग्न] जिसके शरीर पर कोई वस्त्र न हो। नंगा।
नगनिका–संज्ञा स्त्री० [?] क्रीड़ावृत्त। जिसमें एक यगण और एक गुरु होता है।

नगनी—संज्ञा स्त्री० [सं० नग्ना] १ कन्या। पुत्री। बेटी। २ नंगी स्त्री।

नगपति—संज्ञा पुं० [सं०] १ हिमालय पर्वत। २ चंद्रमा। ३ शिव। ४ सुमेरु।

नगर—संज्ञा पुं० [सं०] गाँव या कस्बे आदि से बड़ी मनुष्यों की वह बस्ती जिसमें अनेक जातियों के लोग रहते हों। शहर।

नगरकीर्तन—संज्ञा पुं० [सं०] वह गाना, बजाना या कीर्तन, जो नगर की गलियों और सड़कों में घूम घूमकर हो।

नगरनारि—संज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या।

नगरपाल—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसका काम नगर की रक्षा करना हो।

नगरवासी—संज्ञा पुं० [सं०] शहर में रहने-वाला। नागरिक। पुरवासी।

नगरहार—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन भारत का एक नगर जो वर्तमान जलालाबाद के निकट बसा था।

नगराई*†—संज्ञा स्त्री० [हिं० नगर+आई (प्रत्य०)] १ नागरिकता। शहरातीपन। २ चतुराई। चालाकी।

नगरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] नगर। शहर। संज्ञा पुं० [सं० नगरिन्] शहर में रहनेवाला।

नगस्वरूपिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का वर्णवृत्त। प्रमाणी। प्रमाणिका।

नगाड़ा—संज्ञा पुं० दे० "नगारा"।

नगाधिप—संज्ञा पुं० [सं०] १ हिमालय पर्वत। २ सुमेरु पर्वत।

नगारा—संज्ञा पुं० [फा०] डुगडुगी या बाएँ की तरह का एक प्रकार का बहुत बड़ा बाजा। नगाड़ा। डंका। धौंसा।

नगारि—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

नगी—संज्ञा स्त्री० [सं० नग=पर्वत+ई (प्रत्य०)] १ रत्न। मणि। नगीना। नग। २ पार्वती। ३ पहाड़ी स्त्री।

नगीच†—क्रि० वि० दे० "नजदीक"।

नगीना—संज्ञा पुं० [फा०] रत्न। मणि।

नगीनासाज़—संज्ञा पुं० [फा०] वह जो नगीना बनाता या जड़ता हो।

नगेंद्र, नगेश—संज्ञा पुं० [सं०] हिमालय।

नगेसरि*†—संज्ञा पुं० दे० "नागकेसर"।

नग्न—वि० [सं०] १ जिसके शरीर पर कोई वस्त्र न हो। नंगा। २ जिसके ऊपर किसी प्रकार का आवरण न हो।

नग्नता—संज्ञा स्त्री० [सं०] नंगे होने का भाव।

नग्र*†—संज्ञा पुं० दे० "नगर"।

नघना—क्रि० स० [सं० लंघन] लाँघना।

नघाना—क्रि० स० [सं० लंघन] लँघाना।

नचना*†—क्रि० अ० [हिं० नाचना] नाचना। वि० १ नाचनेवाला। २ बराबर इधर-उधर घूमनेवाला।

नचनि*†—संज्ञा स्त्री० [हिं० नाचना] नाच।

नचनिया†—संज्ञा पुं० [हिं० नाचना+इया (प्रत्य०)] नाचनेवाला। नृत्य करनेवाला।

नचनी—वि० स्त्री० [हिं० नाचना] १ नाचने-वाली। २ इधर-उधर घूमती रहनेवाली।

नचाना—क्रि० स० [हिं० नाचना का प्रे०] १ दूसरे को नाचने में प्रवृत्त करना। नृत्य कराना। २ किसी को बार बार उठने-बैठने या और कोई काम करने के लिये तंग करना। हैरान करना।

मुहा०—नाच नचाना=घूमने-फिरने या और कोई काम करने के लिये विवश करके तंग करना ३ इधर-उधर घुमाना या हिलाना।

मुहा०—आँखें (या नैन) नचाना=चंचलता-पूर्वक आँखों की पुतलियों को इधर उधर घुमाना। ४ व्यर्थ इधर-उधर दौड़ाना।

नचिकेता—संज्ञा पुं० [सं० नचिकेतस्] १ वाजश्रवा ऋषि का पुत्र जिसने मृत्यु से ब्रह्मज्ञान प्राप्त किया था। २ अग्नि।

नचौहाँ*†—वि० [हिं० नाचना+औहाँ (प्रत्य०)] जो सदा नाचता या इधर-उधर घूमता रहे।

नछत्र—संज्ञा पुं० दे० "नक्षत्र"।

नछत्री*†—वि० [सं० नक्षत्र+ई (प्रत्य०)] भाग्यवान्। भाग्यशाली।

नज़दीक—वि० [फ़ा०] [संज्ञा, वि० नज़दीकी] निकट। पास। क़रीब। समीप।

नज़्म—संज्ञा स्त्री० [अ० नज़्म] कविता।

नज़र—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ दृष्टि। निगाह।

मुहा०—नज़र आना=दिखाई देना। दिखाई

पड़ना। नज़र पर चढ़ना = पसंद आ जाना। भला मालूम होना। नज़र पड़ना = दिखाई देना। नज़र बाँधना = जादू या मंत्र आदि के ज़ोर से किसी को कुछ का कुछ कर दिखलाना। २. कृपादृष्टि। मेहरबानी से देखना। ३. निगरानी। देख-रेख। ४. ध्यान। खयाल। ५. परख। पहचान। शिनाख्त। ६. दृष्टि का वह कल्पित प्रभाव जो किसी सुन्दर मनुष्य या अच्छे पदार्थ आदि पर पड़कर उसे खराब कर देनेवाला माना जाता है। मुहा०—नज़र उतारना = बुरी दृष्टि के प्रभाव को किसी मंत्र या युक्ति से हटा देना। नज़र लगना = बुरी दृष्टि का प्रभाव पड़ना। संज्ञा स्त्री० [अ०] १. भेंट। उपहार। २. अधीनता सूचित करने की एक रस्म जिसमें राजाओं आदि के सामने प्रजावर्ग के या अधीनस्थ लोग आदि नक़द रुपया आदि हथेली में रखकर सामने लाते हैं।

नज़रना*–क्रि० अ० [अ० नजर + ना (प्रत्य०)] १. देखना। २. नजर लगाना।

नज़रबंद–वि० [अ० नजर + फा० बंद] जो किसी ऐसे स्थान पर कड़ी निगरानी में रखा जाय जहाँ से वह कहीं आ जा न सके। संज्ञा पुं० जादू या इंद्रजाल आदि का वह खेल जिसके विषय में लोगों का यह विश्वास रहता है कि वह लोगों की नजर बाँधकर किया जाता है।

नज़रबंदी–संज्ञा स्त्री० [अ० नजर + फ़ा० बंदी] १. राज्य की ओर से वह दंड जिसमें दंडित व्यक्ति किसी सुरक्षित या नियत स्थान पर रखा जाता है। २. नज़रबंद होने की दशा। ३. जादूगरी। बाजीगरी।

नज़रबाग़–संज्ञा पुं० [अ०] महलों या बड़े बड़े मकानों आदि के सामने या चारों ओर का बाग़।

नज़रहाया–वि० [अ० नजर+हाया (प्रत्य०)] [स्त्री० नज़रहाई] नजर लगानेवाला।

नज़रानना†*–क्रि० स० [हिं० नजर+ आनना (प्रत्य०)] १. उपहार-स्वरूप देना। २. नजर लगाना।

नज़राना–क्रि० अ० [हिं० नजर] नजर लग जाना। बुरी दृष्टि के प्रभाव में आना। क्रि० स० नजर लगाना। संज्ञा पुं० [अ०] भेंट। उपहार।

नज़रि*–संज्ञा स्त्री० दे० "नज़र"।

नज़ला–संज्ञा पुं० [अ०] १. एक प्रकार का रोग जिसमें गरमी के कारण सिर का विकार-युक्त पानी ढलकर भिन्न भिन्न अंगों की ओर प्रवृत्त होकर उन्हें खराब कर देता है। २. जुकाम। सरदी।

नज़ाकत–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] नाजुक होने का भाव। सुकुमारता। कोमलता।

नजात–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मुक्ति। मोक्ष। २. छुटकारा। रिहाई।

नज़ारा–संज्ञा पुं० [अ०] १. दृश्य। २. दृष्टि। नज़र। ३. प्रिय को लालसा या प्रेम की दृष्टि से देखना।

नजिकाना*†–क्रि० स० [हिं० नजीक (नजदीक) + आना (प्रत्य०)] निकट पहुँचना। नजदीक पहुँचना। पास पहुँचना।

नजीक†*क्रि० वि० [फा० नजदीक] निकट।

नज़ीर–संज्ञा स्त्री० [अ०] उदाहरण। दृष्टांत।

नजूम–संज्ञा पु० [अ०] ज्योतिष विद्या।

नजूमी–संज्ञा पु० [अ०] ज्योतिषी।

नज़ूल–संज्ञा पु० [अ०] शहर की वह जमीन जो सरकार के अधिकार में हो।

नट–संज्ञा पुं० [सं०] १. दृश्य-काव्य का अभिनय करनेवाला मनुष्य। वह जो नाट्य करता हो। २. प्राचीनकाल की एक संकर जाति। ३. एक नीच जाति जो प्रायः गा बजाकर और खेल-तमाशे करके निर्वाह करती है। ४. संपूर्ण जाति का एक राग।

नटई†–संज्ञा स्त्री० [देश०] १. गला। गरदन। २. गले की घंटी। घाँटी।

नटखट–वि० [हिं० नट + अनु० खट] १. ऊधमी। उपद्रवी। चंचल। शरीर। २. चालाक। धूर्त। मक्कार।

नटखटी–संज्ञा स्त्री० [हिं० नटखट] बदमाशी। शरारत। पाजीपन।

नटता—सज्ञा स्त्री० [स०] नट का भाव।

नटना—क्रि० अ० [स० नट] १ नाट्य करना। २ नाचना। नृत्य करना। ३ कहकर बदल जाना। मुकरना।

क्रि० स० [स० नष्ट] नष्ट करना।

क्रि० अ० नष्ट होना।

नटनारायण—सज्ञा पु० [स०] सपूर्ण जाति का एक राग।

नटनि*†—सज्ञा स्त्री० [स० नर्त्तन] नृत्य।

सज्ञा स्त्री० [हिं० नटना] इनकार।

नटनी—सज्ञा स्त्री० [स० नट+नी (प्रत्य०)] १ नट की स्त्री०। २ नट जाति की स्त्री।

नटवना*–क्रि० स० [स० नट] नाट्य करना। अभिनय करना।

नटवर—सज्ञा पु० [स०] १ नाट्यकला म प्रवीण मनुष्य। २ श्रीकृष्ण।

वि० बहुत चतुर। चालाक।

नटसार*†—सज्ञा स्त्री० दे० "नाट्यशाला"।

नटसाल—सज्ञा स्त्री० [?] १ काँटे का वह भाग जो निकाल लिए जाने पर भी टूटकर शरीर के भीतर रह जाता है। २ बाण की गाँसी जो शरीर के भीतर रह जाय। ३ कसक। पीडा।

नटिन—सज्ञा स्त्री० [हिं० नट] नट की स्त्री।

नटी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ नट जाति की स्त्री। २ नाचनवाली स्त्री। नर्त्तकी। ३ अभिनय करनवाली स्त्री। अभिनत्री।

नटुआ, नटुवा‡—सज्ञा पु० १ दे० "नट"। २ दे० "नटई"।

नटेश्वर—सज्ञा पु० [स०] महादेव।

नठना*†—क्रि० अ० [स० नष्ट] नष्ट होना।

क्रि० स० नष्ट करना।

नढ़ना†—क्रि० स० [हिं० नाथना] १ गूँथना। पिरोना। २ बाँधना। कसना।

नतपाल—सज्ञा पु० [स० नत+पालक] शरणागत का पालन करनवाला। प्रणतपाल।

नतर, नतरु*†—क्रि० वि० [हिं० न+तो] नहीं तो। अन्यथा।

नताश—सज्ञा पु० [स०] ग्रहों की स्थिति निश्चित करनवाला वह वृत्त जिसका कद्र भूकद्र पर होता है और जो विषुवत रेखा पर लव होता है।

नति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ झुकाव। उतार। २ नमस्कार। प्रणाम। ३ विनय। विनती। ४ नम्रता। खाकसारी।

नतिनी†—सज्ञा स्त्री० [हिं० नाती का स्त्री० रूप] लडकी की लडकी। नातिन।

नतीजा—सज्ञा पु० [फा०] परिणाम। फल।

नतु—क्रि० वि० [हिं० न+तो] नहीं तो।

नतैत†—सज्ञा पु० [हिं० नाता+एत (प्रत्य०)] सबधी। रिश्तेदार। नातेदार।

नत्थ†—सज्ञा स्त्री० दे० "नथ"।

नत्थी—सज्ञा स्त्री० [हिं० नथ या नाथना] १ कागज या कपड आदि के कई टुकडों को एक साथ मिलाकर सबको एक ही म बाँधना या फँसाना। २ इस प्रकार नाथे हुए कई कागज आदि। मिसल।

नथ—सज्ञा स्त्री० [हिं० नाथना] बाली की तरह का नाक का एक गहना।

नथना—सज्ञा पु० [स० नस्त] १ नाक का अगला भाग।

मुहा०—नथना फुलाना = क्रोध करना।

२ नाक का छद।

क्रि० अ० [हिं० नाथना का अ० रूप] १ किसी के साथ नत्थी होना। एक सूत्र म बँधना। २ छिदना। छदा जाना।

नथनी—सज्ञा स्त्री० [हिं० नथ] १ नाक म पहनने की छोटी नथ। २ बुलाक।

नथिया, नथुनी†—सज्ञा स्त्री० दे० "नथ"।

नद—सज्ञा पु० [स०] बडी नदी अथवा ऐसी नदी जिसका नाम पुलिंग-वाची हो।

नदना*†—क्रि० अ० [स० नदन=शब्द करना] १ पशुओं का शब्द करना। रँभाना। बँबाना। २ बजना। शब्द करना।

नदराज—सज्ञा पु० [स०] समुद्र।

नदान*†—वि० दे० "नादान"।

नदारद—वि० [फा०] जो मौजूद न हो। गायब। अप्रस्तुत। लुप्त।

नदिया*‡—सज्ञा स्त्री० दे० "नदी"।

नदी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ जल का वह

प्राकृतिक और भारी प्रवाह जो किसी बड़े पर्वत या जलाशय आदि से निकलकर किसी निश्चित मार्ग से होता हुआ प्रायः बारहों महीने बहता रहता हो। दरिया।
मुहा०—नदी नाव संयोग=ऐसा संयोग जो कभी इत्तिफ़ाक़ से हो जाय।
२. किसी तरल पदार्थ का बड़ा प्रवाह।

नदीगर्भ—संज्ञा पुं० [सं०] वह गड्ढा या तल जिसमें से होकर नदी का पानी बहता है।

नदीश—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।

नद्ना*†-क्रि० अ० दे० "नदना"।

नद्दी*†—संज्ञा स्त्री० दे० "नदी"।

नद्ध—वि० [सं०] बँधा हुआ। बद्ध।

नधना—क्रि० अ० [सं० नद्ध+ना (प्रत्य०)] १. बैल, घोड़े आदि का उस वस्तु के साथ जुड़ना या बँधना जिसे उन्हें खींचकर ले जाना हो। जुतना। २. जुड़ना। संबद्ध होना। ३. काम का ठनना।

ननकारना*†—क्रि० अ० [हिं० न+करना] अस्वीकार करना। मंजूर न करना।

ननँद, ननद—संज्ञा स्त्री० [सं० ननंदृ] पति की बहिन।

ननदोई—संज्ञा पुं० [हिं० ननद+ओई (प्रत्य०)] ननद का पति। पति का बहनोई।

ननसार—संज्ञा स्त्री० दे० "ननिहाल"।

ननिया ससुर—संज्ञा पुं० [हिं० नानी+इया (प्रत्य०)+हिं० ससुर] [स्त्री० ननिया सास] स्त्री या पति का नाना।

ननिहाल—संज्ञा पुं० [हिं० नाना+आलय] नाना का घर। ननसार।

नन्हा—वि० [सं० न्यंच या न्यून] [स्त्री० नन्ही] छोटा।

नन्हाई*—संज्ञा स्त्री० [हिं० नन्हा+ई (प्रत्य०)] १. छोटापन। छोटाई। २. अप्रतिष्ठा। हेठी।

नन्हैया*†—वि० दे० "नन्हा"।

नपाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० नाप+आई (प्रत्य०)] नापने का काम, भाव या मजदूरी।

नपाक*†—वि० [फा० नापाक] अपवित्र।

नपुंसक—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह पुरुष जिसमें कामेच्छा बहुत ही कम हो और किसी विशेष उपाय से जाग्रत हो। २. हिजड़ा।

नपुंसकता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नपुंसक होने का भाव। २. नामर्दी। हिजड़ापन।

नपुंसकत्व—संज्ञा पुं० [सं०] नामर्दी।

नपुत्री*†—वि० दे० "निपुत्री"।

नप्ता—संज्ञा स्त्री० [सं० नप्तृ] [स्त्री० नप्त्री] नाती या पोता।

नफर—संज्ञा पुं० [फा०] १. दास। सेवक। २. व्यक्ति।

नफ़रत—संज्ञा स्त्री० [अ०] घिन। घृणा।

नफ़री—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. एक मजदूर की एक दिन की मजदूरी या काम। २. मजदूरी का दिन।

नफा—संज्ञा पुं० [अ०] लाभ। फ़ायदा।

नफ़ासत—संज्ञा स्त्री० [अ०] नफ़ीस होने का भाव। उम्दापन।

नफ़ीरी—संज्ञा स्त्री० [फा०] तुरही।

नफ़ीस—वि० [अ०] १. उमदा। बढ़िया। २. साफ़। स्वच्छ। ३. सुंदर।

नबी—संज्ञा पुं० [अ०] ईश्वर का दूत। पैगंबर। रसूल।

नबेड़ना—क्रि० स० [सं० निवारण] १. निपटाना। तै करना। (झगड़ा आदि) समाप्त करना। २. चुनना। दे० "निबेरना"।

नबेड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० नबेड़ना] फैसला। न्याय। निपटारा।

नब्ज़—संज्ञा स्त्री० [अ०] हाथ की वह रक्तवहा नाली जिसकी चाल से रोग की पहचान की जाती है। नाड़ी।
मुहा०—नब्ज़ चलना=नाड़ी में गति होना। नब्ज़ छूटना=नाड़ी की गति या प्राण न रह जाना।

नभ—संज्ञा पुं० [सं० नभस्] १. पंच तत्त्व में से एक। आकाश। आसमान। गगन। व्योम। २. शून्य स्थान। आकाश। ३. शून्य। सुन्ना। सिफ़र। ४. सावन या भादों का महीना। ५. आश्रय। आधार। ६. पास। निकट। नजदीक। ७. शिव। ८. जल। ९. मेघ। बादल। १०. वर्षा।

नभगामी—संज्ञा पुं० [सं० नभोगामिन्] १.

चंद्रमा। (डिं०) २ पक्षी। ३ देवता। ४. सूर्य। ५ तारा।
नमचर–संज्ञा पुं० दे० "नमश्चर"।
नभयुज*–संज्ञा पुं० [सं० नभध्वज] मेघ।
नभश्चर–संज्ञा पुं० [सं०] १ पक्षी। २ बादल। ३ हवा। ४ देवता, गंधर्व और ग्रह आदि।
वि० आकाश में चलनेवाला।
नभस्थल–संज्ञा पुं० [सं०] आकाश।
नभस्थित–वि० [सं०] आकाश में स्थित।
नम–वि० [फा०] [संज्ञा नमी] भीगा हुआ। गीला। तर। आर्द्र।
संज्ञा पुं० [सं० नमस्] १ नमस्कार। २ त्याग। ३ अन्न। ४ वज्र। ५ यज्ञ।
नमक–संज्ञा पुं० [फा०] १. एक प्रसिद्ध क्षार पदार्थ जिसका व्यवहार भोज्य पदार्थों में एक प्रकार का स्वाद उत्पन्न करने के लिये थोड़े मान में होता है। लवण। नोन।
मुहा०–नमक अदा करना = अपने पालक या स्वामी के उपकार का बदला चुकाना। (किसी का) नमक खाना = (किसी के द्वारा) पालित होना। (किसी का) दिया खाना। नमक मिर्च मिलाना या लगाना = किसी बात को बहुत घटा-बढ़ाकर कहना। नमक फूटकर निकलना = नमक-हरामी की सजा मिलना। कृतघ्नता का दंड मिलना। कटे पर नमक छिड़कना = किसी दुखी को और भी दुःख देना।
२ कुछ विशेष प्रकार का सौंदर्य्य जो अधिक मनोहर या प्रिय हो। लावण्य।
नमकख्वार–वि० [फा०] नमक खानेवाला। पालित होनेवाला।
नमकसार–संज्ञा पुं० [फा०] वह स्थान जहाँ नमक निकलता या बनता हो।
नमकहराम–संज्ञा पुं० [फा० नमक+अ० हराम] [संज्ञा नमकहरामी] वह जो किसी का दिया हुआ अन्न खाकर उसी का द्रोह करे। कृतघ्न।
नमकहलाल–संज्ञा पुं० [फा० नमक+अ० हलाल] [संज्ञा नमकहलाली] वह जो अपने स्वामी या अन्नदाता का कार्य्य धर्मपूर्वक करे। स्वामिनिष्ठ। स्वामिभक्त।
नमकीन–वि० [फा०] १ जिसमें नमक का सा स्वाद हो। २ जिसमें नमक पड़ा हो। ३ सुंदर। खूबसूरत।
संज्ञा पुं० वह पकवान आदि जिसमें नमक पड़ा हो।
नमदा–संज्ञा पुं० [फा०] जमाया हुआ ऊनी कंबल या कपड़ा।
नमन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० नमनीय, नमित] १ प्रणाम। नमस्कार। २ झुकाव।
नमना*†–क्रि० अ० [सं० नमन] १ झुकना। २ प्रणाम करना। नमस्कार करना।
नमनीय–वि० [सं०] १ जिसे नमस्कार किया जाय। आदरणीय। पूजनीय। माननीय। २ जो झुक सके।
नमस्कार–संज्ञा पुं० [सं०] झुककर अभिवादन करना। प्रणाम।
नमस्ते–[सं०] एक वाक्य जिसका अर्थ है—आपको नमस्कार है।
नमाज–संज्ञा स्त्री० [फा० मि० सं० नमन] मुसलमानों की ईश्वर-प्रार्थना जो नित्य पाँच बार होती है।
नमाजी–संज्ञा पुं० [फा०] १. नमाज पढ़नेवाला। २ वह वस्त्र जिस पर खड़े होकर नमाज पढ़ी जाती है।
नमाना*†–क्रि० स० [सं० नमन] १ झुकाना। २ दबाकर अपने अधीन करना।
नमित–वि० [सं०] झुका हुआ।
नमिश–संज्ञा स्त्री० [फा० नमिश्क] विशेष प्रकार से तैयार किया हुआ दूध का फेन।
नमी–संज्ञा स्त्री० [फा०] गीलापन। आर्द्रता।
नमुचि–संज्ञा पुं० [सं०] १ एक ऋषि का नाम। २* एक दानव जो पहले इंद्र का सखा था, पर पीछे इंद्र द्वारा मारा गया था। ३ एक दैत्य जो शुंभ और निशुंभ का छोटा भाई था।
नमूना–संज्ञा पुं० [फा०] १ अधिक पदार्थ में से निकाला हुआ वह थोड़ा अंश जिसका उपयोग उस मूल पदार्थ के गुण और स्वरूप आदि का ज्ञान कराने के लिये होता

है। घानगी। २. ढाँचा। ठाट। साका।
नम्र-वि० [सं०] १. विनीत। जिसमें नम्रता हो। २. झुका हुआ।
नम्रता-संज्ञा स्त्री० [सं०] नम्र होने का भाव। विनय।
नय-संज्ञा पुं० [सं०] १. नीति। २. नम्रता।
* संज्ञा स्त्री० [सं० नद] नदी।
नयकारी*-संज्ञा पुं० [सं० नृत्यकारी] १. नाचनेवालों का मुखिया। २. नाचनेवाला। नचनिया।
नयन-संज्ञा पुं० [सं०] १. चक्षु। नेत्र। आँख। २. ले जाना।
नयनगोचर-वि० [सं०] जो आँखों के सामने हो। समक्ष।
नयनपट-संज्ञा पुं० [सं०] आँख की पलक।
नयना*†-क्रि० अ० [सं० नमन] १ नम्र होना। २. झुकना। लटकना।
‡ संज्ञा पुं० [सं० नयन] आँख। नेत्र।
नयनी-संज्ञा स्त्री० [सं०] आँख की पुतली।
वि० स्त्री० आँखवाली। जैसे—मृगनयनी।
नयनू-संज्ञा पुं० [सं० नवनीत] १. मक्खन। २. एक प्रकार की बूटीदार मलमल।
नयर*-संज्ञा पुं० [सं० नगर] नगर।
नयशील-वि० [सं०] १. नीतिज्ञ। २. विनीत।
नया-वि० [सं० नव। मि० फा० नौ] १. जो थोड़े समय से बना, चला या निकला हो। नवीन। हाल का।
मुहा०—नया करना=कोई नया फल या अनाज, मौसिम में पहले पहल खाना। नया पुराना करना=१. पुराना हिसाब साफ करके नया हिसाब चलाना। (महाजनी) २. पुराने को हटाकर उसके स्थान पर नया करना या रखना। २. जो थोड़े समय से मालूम हुआ हो या सामने आया हो। ३. जो पहले था, उसके स्थान पर आनेवाला दूसरा। ४. जिससे पहले किसी ने काम न लिया हो। ५. जिसका आरम्भ बहुत हाल में हुआ हो।
नयापन-संज्ञा पुं० [हिं० नया+पन (प्रत्य०)] नया होने का भाव। नवीनता। नूतनत्व।
नयाम-संज्ञा पुं० [फा०] तलवार की म्यान।
नर-संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु। २. शिव। महादेव। ३. अर्जुन। ४. एक देव-योनि। ५. पुरुष। मर्द। आदमी। ६. वह खूँटी जो छाया आदि जानने के लिये खड़े बल गाड़ी जाती है। शंकु। लंब। ७. सेवक। ८. दोहे का एक भेद जिसमें १५ गुरु और १८ लघु होते हैं। ९. छप्पय का एक भेद जिसमें १० गुरु और १३२ लघु होते हैं। १०. दे० "नर नारायण"।
वि० जो (प्राणी) पुरुष जाति का हो। मादा का उलटा।
संज्ञा पुं० [हिं० नल] पानी का नल।
नरकंत*-संज्ञा पुं० [सं० नरकांत] राजा।
नरक-संज्ञा पुं० [सं०] १. पुराणों और धर्मशास्त्रों आदि के अनुसार वह स्थान जहाँ पापी मनुष्यों की आत्मा पाप का फल भोगने के लिये भेजी जाती है। दोजख। जहन्नुम। २. बहुत ही गंदा स्थान। ३. वह स्थान जहाँ बहुत अधिक पीड़ा हो।
नरकगामी-वि० [सं०] नरक में जानेवाला।
नरक चतुर्दशी-संज्ञा स्त्री० [सं०] कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी जिस दिन घर का कूड़ा-कतवार निकालकर फेंका जाता है।
नरकचूर-संज्ञा पुं० दे० "कचूर"।
नरकट-संज्ञा पुं० [सं० नल] बेंत की तरह का एक प्रसिद्ध पौधा। इसके डंठल कलमें, निगालियाँ, दौरियाँ तथा चटाइयाँ आदि बनाने के काम में आते हैं।
नरकासुर-संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध और बहुत बली असुर, जो पृथ्वी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। विष्णु ने सुदर्शन चक्र से इसका सिर काटा था।
नरकी-वि० दे० "नारकी"।
नरकेसरी-संज्ञा पुं० [सं०] नृसिंह।
नरकेहरि-संज्ञा पुं० दे० "नरकेसरी"।
नरगिस-संज्ञा स्त्री० [फा०] प्याज की तरह का एक पौधा जिसमें कटोरी के आकार का सफ़ेद रंग का फूल लगता है। फ़ारसी के कवि इस फूल से आँख की उपमा देते हैं।
नरत्व-संज्ञा पुं० [सं०] नर होने का भाव।

नरद—संज्ञा स्त्री [फ़ा० नर्द] चौसर खेलने की गोटी।
संज्ञा स्त्री० [सं० नर्द] ध्वनि। नाद।
नरदन—संज्ञा स्त्री० [सं० नर्दन = नाद] नाद करना। गरजना।
नरदारा—संज्ञा पु० [सं० नर + सं० दारा] १ हिजड़ा। नपुंसक। २ डरपोक। कायर।
नरदेव—संज्ञा पु० [सं०] १ राजा। नृपति। २ ब्राह्मण।
नरनाथ—संज्ञा पु० [सं०] राजा।
नर-नारायण—संज्ञा पु० [सं०] नर और नारायण नाम के दो ऋषि जो विष्णु के अवतार माने जाते हैं।
नरनारि—संज्ञा स्त्री० [सं०] नर (अर्जुन) की स्त्री, द्रौपदी। पांचाली।
नरनाह*—संज्ञा पु० [सं० नरनाथ] राजा।
नरनाहर—संज्ञा पु० [सं० नर + हिं० नाहर] नृसिंह भगवान।
नरपति—संज्ञा पु० [सं०] राजा।
नरपाल—संज्ञा पु० [सं० नृपाल] राजा।
नरपिशाच—संज्ञा पु० [सं०] जो मनुष्य होकर भी पिशाचों का-सा काम करे।
नरबदा—संज्ञा स्त्री० दे० "नर्मदा"।
नरभक्षी—संज्ञा पु० [सं० नरभक्षिन्] राक्षस। असुर।
नरम—वि० [फ़ा० नर्म] १ मुलायम। कोमल। मृदु। २ लचकदार। लचीला। ३ तेज़ का उलटा। मंदा। ४ धीमा। मद्धिम। ५ सुस्त। आलसी। ६ जल्दी पचनेवाला। लघुपाक। ७ जिसमें पौरुष का अभाव या कमी हो।
नरमा—संज्ञा स्त्री० [हिं० नरम] १ एक प्रकार की कपास। मनवा। देवकपास। रामकपास। २ सेमर की रूई। ३ कान के नीचे का भाग। लौर। ४ एक प्रकार का रंगीन कपड़ा।
नरमाई*†—संज्ञा स्त्री० दे० 'नरमी'।
नरमाना—क्रि० स० [हिं० नरम + आना (प्रत्य०)] १ नरम करना। मुलायम करना। २ शांत करना। धीमा करना।
क्रि० अ० १ नरम होना। मुलायम होना। २ शांत होना। ठंढा होना।
नरमी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० नर्म] नरम होने का भाव। मुलायमियत। कोमलता।
नरमेध—संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का यज्ञ जिसमें प्राचीन काल में मनुष्य के मांस की आहुति दी जाती थी।
नरलोक—संज्ञा पु० [सं०] संसार।
नरवाई—संज्ञा स्त्री० दे० "नरई"।
नरसल—संज्ञा पु० दे० "नरकट"।
नरसिंघ—संज्ञा पु० दे० "नृसिंह"।
नरसिंघा—संज्ञा पु० [हिं० नर = बड़ा + सिंगा = सींग का बना बाजा] तुरही की तरह का एक प्रकार का नल के आकार का तांबे का बड़ा बाजा जो फूँककर बजाया जाता है।
नरसिंह—संज्ञा पु० दे० "नृसिंह"।
नरहरि—संज्ञा पु० [सं०] नृसिंह भगवान् जो दस अवतारों में से चौथे अवतार हैं।
नरहरी—संज्ञा पु० [सं०] एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में १९ मात्राएँ और अंत में एक नगण और एक गुरु होता है।
नरांतक—संज्ञा पु० [सं०] रावण का एक पुत्र जिसे अंगद ने मारा था।
नराच—संज्ञा पु० [सं० नाराच] १ तीर। बाण। २ पंचचामर या नागराज नामक वृत्त।
नराचिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] वितान वृत्त का एक भेद।
नराज—वि० दे० "नाराज"।
नराजना*—क्रि० स० [फ़ा० नाराज] अप्रसन्न करना। नाराज करना।
क्रि० अ० अप्रसन्न होना। नाराज होना।
नरराट*†—संज्ञा पु० [सं० नरराट्] राजा।
नराधिप—संज्ञा पु० [सं०] राजा।
नरिंद*†—संज्ञा पु० [सं० नरेंद्र] राजा।
नरियां†—संज्ञा पु० [हिं० नाली] एक प्रकार का अर्द्धवृत्ताकार और लंबा मिट्टी का खपड़ा।
नरी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १ सिझाया हुआ चमड़ा। मुलायम चमड़ा। २ ढरकी के भीतर की नली जिस पर तार लपटा रहता है। नार। (जुलाहा) ३ एक घास।
† संज्ञा स्त्री० [सं० नलिका] नली। नाली।

संज्ञा स्त्री० [सं० नर] स्त्री । नारी।
नरेंद्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. राजा। नृप। नरेश। २. वह जो साँप-बिच्छू आदि के काटने का इलाज करे। विषवैद्य। ३. २८ मात्राओं का एक छंद जिसके अंत में दो गुरु होते हैं।
नरेश–संज्ञा पुं० [सं०] राजा। नृप।
नरोत्तम–संज्ञा पुं० [सं०] ईश्वर।
नर्क*–संज्ञा पुं० दे० "नरक"।
नर्त्तक–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० नर्त्तकी] १. नाचनेवाला। नृत्य करनेवाला। नट। २. नरकट। ३. चारण। वंदीजन। ४.महादेव। ५. एक प्रकार की संकर जाति।
नर्त्तकी–संज्ञा स्त्री० [सं०] नाचनेवाली।
नर्त्तन–संज्ञा पुं० [सं०] नृत्य। नाच।
नर्त्तना*–क्रि० अ० [सं० नर्त्तन] नाचना।
नर्द–संज्ञा स्त्री० [फा०] चौसर की गोटी।
नर्दन–संज्ञा स्त्री० [सं०] भीषण ध्वनि।
नर्म–संज्ञा पुं० [सं० नर्मन्] १. परिहास। हँसी। ठट्ठा। दिल्लगी। २. हँसी-ठट्ठा करनेवाला। सखा।
वि० दे० "नरम"।
नर्मद–संज्ञा पुं० [सं०] मसखरा। भाँड़।
नर्मदा–संज्ञा स्त्री० [सं०] मध्य प्रदेश की एक नदी जो अमरकंटक से निकलकर भड़ौंच के पास खंभात की खाड़ी में गिरती है।
नर्मदेश्वर–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार के अंडाकार शिवलिंग जो नर्मदा नदी से निकलते हैं।
नर्मद्युति–संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रतिमुख संधि के १३ अंगों में से एक। (नाट्य०)
नर्मसचिव–संज्ञा पुं० [सं०] विदूषक।
नल–संज्ञा पुं० [सं०] १. नरकट। २. पद्म। कमल। ३. निषध देश के चंद्रवंशी राजा वीरसेन के पुत्र। विदर्भ देश के राजा भीम की कन्या दमयंती के साथ इनका विवाह हुआ था। नल और दमयंती घोर कष्ट भोगने के लिए प्रसिद्ध हैं। ४. राम की सेना का एक बंदर जो विश्वकर्मा का पुत्र माना जाता है। इसी ने पत्थरों को पानी पर तैराकर लंका-विजय के समय समुद्र पर पुल बाँधा था।
संज्ञा पुं० [सं० नाल] १. पोली लंबी चीज। २. धातु आदि का बना हुआ पोला गोल लंबा खंड। ३. वह मार्ग जिसमें से होकर गंदगी और मैला आदि बहता हो। पनाला। ४. पेड़ू के अंदर की वह नाली जिसमें होकर पेशाब नीचे उतरता है। नला।
नलकूबर–संज्ञा पुं० [सं०] कुबेर के एक पुत्र। कहते हैं कि ये और इनके भाई मणिग्रीव नारद के शाप से यमलार्जुन हुए थे। श्रीकृष्ण ने इन्हें स्पर्श करके शापमुक्त किया था।
नलसेतु–संज्ञा पुं० [सं०] रामेश्वर के निकट का समुद्र पर बँधा हुआ वह पुल जो रामचन्द्र ने नल-नील आदि से बनवाया था।
नला–संज्ञा पुं० [हिं० नल] १. पेड़ू के अंदर की वह नाली जिसमें से होकर पेशाब नीचे उतरता है। नल। २. हाथ या पैर की नली के आकार की लंबी हड्डी।
नलिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नल के आकार की कोई वस्तु। चोंगा। नली। २.मूँगे के आकार का एक प्रकार का गंध-द्रव्य। ३. प्राचीन काल का एक अस्त्र। नाल। ४. तरकश जिसमें तीर रखते हैं।
नलिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कमलिनी। कमल। २. वह देश जहाँ कमल अधिकता से होते हों। ३. पुराणानुसार गंगा की एक धारा का नाम। ४. नलिका नामक गंध-द्रव्य। ५. नदी। ६. एक वर्णवृत्त। मनहरण। भ्रमरावली।
नलिनीरुह–संज्ञा पुं० [सं०] १. मृणाल। कमल की नाल। २. ब्रह्मा।
नली–संज्ञा स्त्री० [हिं० नल का स्त्री० अल्पा०] १. छोटा या पतला नल। छोटा चोंगा। २. नल के आकार की भीतर से पोली हड्डी जिसमें मज्जा भी होती है। ३. घुटने से नीचे का भाग। पैर की पिंडली। ४. बंदूक की नली जिसमें होकर गोली गुजरती है।
नलुआ–संज्ञा पुं० [हिं० नल=नला] छोटा नल या चोंगा।
नव–वि० [सं०] नया। नवीन। नूतन।

वि० [सं० नवन्] नौ। आठ और एक।

नवक–संज्ञा पुं० [सं०] एक ही तरह की नौ चीजों का समूह।

नवकुमारी–संज्ञा स्त्री० [सं०] नवरात्र में पूजनीय नौ कुमारियाँ जिनमें नौ देवियों की भावना की जाती है।

नवग्रह–संज्ञा पुं० [सं०] फलित ज्योतिष में सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र शनि, राहु और केतु ये नौ ग्रह।

नवछावरि*†–संज्ञा स्त्री० दे० "न्योछावर"।

नवतन†*–वि० [सं० नवीन] नया।

नवदुर्गा–संज्ञा स्त्री० [सं०] पुराणानुसार नौ दुर्गाएँ जिनकी नवरात्र में नौ दिनों तक क्रमशः पूजा होती है। यथा—शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कूष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदा।

नवधा भक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] नौ प्रकार की भक्ति। यथा—श्रवण, कीर्त्तन, स्मरण पादसेवन, अर्चन, वंदन, सख्य, दास्य और आत्मनिवेदन।

नवन*–संज्ञा पुं० "नमन"।

नवना*†–क्रि० अ० [सं० नमन] १ झुकना। २ नम्र होना।

नवनि†*–संज्ञा स्त्री० [हिं० नवना] १ झुकने की क्रिया या भाव। २ नम्रता। दीनता।

नवनीत–संज्ञा पुं० [सं०] मक्खन।

नवपदी–संज्ञा स्त्री० [सं०] चौपाई या जयकरी छंद का एक नाम।

नवम–वि० [सं०] जो गिनती में नौ के स्थान पर हो। नवाँ।

नवमल्लिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चमेली। २ नेवारी।

नवमालिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नगण, जगण, भगण और यगण का एक वर्णवृत्त। नव मालिनी। २ नवारी का फूल।

नवमी–संज्ञा स्त्री० [सं०] चांद्र मास के किसी पक्ष की नवीं तिथि।

नवयुवक–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० नवयुवती] नौजवान। तरुण।

नवयुवा–संज्ञा पुं० दे० "नवयुवक"।

नवयौवना–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसके यौवन का आरंभ हो। नौजवान औरत।

नवरंग–वि० [सं० नव+हिं० रंग] १ सुंदर। रूपवान्। २ नए ढंग का। नवेला।

नवरंगी–वि० [हिं० नवरंग+ई (प्रत्य०)] १ नित्य नए आनंद करनेवाला। २ हँसमुख। खुशमिजाज।

नवरत्न–संज्ञा पुं० [सं०] १ मोती, पन्ना, मानिक, गोमेद, हीरा, मूँगा, लहसुनिया, पद्मराग और नीलम ये नौ रत्न या जवाहिर। २ राजा विक्रमादित्य की एक कल्पित सभा के नौ पंडित—धन्वंतरि, क्षपणक, अमरसिंह, शंकु, वेतालभट्ट, घटकर्पर, कालिदास, वराहमिहिर और वररुचि। ३ गले में पहनने का नौ रत्नों का हार।

नवरात्र–संज्ञा पुं० [सं०] चैत्र शुक्ला प्रतिपदा से नवमी तक और आश्विन शुक्ला प्रतिपदा से नवमी तक के नौ नौ दिन जिनमें लोग नवदुर्गा का व्रत, घटस्थापन तथा पूजन आदि करते हैं।

नवल–वि० [सं०] १ नवीन। नया। २ सुंदर। ३ जवान। युवा। ४ उज्ज्वल।

नवल-अनंगा–संज्ञा स्त्री० [सं०] मुग्धा नायिका के चार भेदों में से एक। (केशव)

नवलकिशोर–संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्णचंद्र।

नवल-वधू–संज्ञा स्त्री० [सं०] मुग्धा नायिका के चार भेदों में से एक। (केशव)

नवला–संज्ञा स्त्री० [सं०] युवती।

नवशिक्षित–संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसने अभी हाल में कुछ पढ़ा या सीखा हो। नौसिखुआ। २ वह जिसे आधुनिक ढंग की शिक्षा मिली हो।

नवसत*–संज्ञा पुं० [सं० नव+सत=सप्त] नव और सात सोलह शृंगार। वि० सोलह। षोडश।

नवसप्त–संज्ञा पुं० [सं०] नौ और सात, सोलह शृंगार।

नवसर–संज्ञा पुं० [हिं० नौ+सं० सृक] नौ लड़ का हार।

वि० [सं० नव + वत्सर] नवयुवक।
नवससि*–संज्ञा पुं० [सं० नवशशि] द्वितीया या दूज का चाँद। नया चाँद।
नवाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० नवना] विनीत होने का भाव।
†* वि० नया। नवीन।
नवागत–वि० [सं०] नया आया हुआ।
नवाज–वि० [फा०] कृपा करनेवाला।
नवाजना†*–क्रि० स० [फा० नवाज] कृपा करना। दया दिखलाना।
नवाड़ा–संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की नाव।
नवाना–क्रि० स० [सं० नवन] १. झुकाना। २. विनीत करना।
नवान्न–संज्ञा पुं० [सं०] १. फ़सल का नया अनाज। २. एक प्रकार का श्राद्ध।
नवाब–संज्ञा पुं० [अ० नव्वाब] १. मुगल सम्राटों के समय बादशाह का प्रतिनिधि जो किसी बड़े प्रदेश के शासन के लिये नियुक्त होता था। २. एक उपाधि जो आजकल छोटे-मोटे मुसलमानी राज्यों के मालिक अपने नाम के साथ लगाते हैं। ३. राजा की उपाधि के समान एक उपाधि जो भारतीय मुसल्मान अमीरों को अँगरेजी सरकार की ओर से मिलती है।
वि० बहुत शान-शौकत और अमीरी ढंग से रहने तथा खूब खर्च करनेवाला।
नवाबी–संज्ञा स्त्री० [हिं० नवाब + ई (प्रत्य०)] १. नवाब का पद। २. नवाब का काम। ३. नवाब होने की दशा। ४. नवाबों का राजत्व-काल। ५. नवाबों की सी हुकूमत। ६. बहुत अधिक अमीरी।
नवासा–संज्ञा पुं० [फा०] [स्त्री० नवासी] बेटी का बेटा। दौहित्र।
नवाह–संज्ञा पुं० [सं०] रामायण आदि का वह पाठ जो नौ दिन में समाप्त हो।
नवीन–वि० [सं०] १. हाल का। ताजा। नया। नूतन। २. विचित्र। अपूर्व। ३. [स्त्री० नवीना] नवयुवक। जवान।
नवीनता–संज्ञा स्त्री० [सं०] नवीन या नया होने का भाव। नूतनता।
नवीस–संज्ञा पुं० [फा०] लिखनेवाला। लेखक। क़ातिब।
नवीसी–संज्ञा स्त्री० [फा०] लिखने की क्रिया या भाव। लिखाई।
नवेद–संज्ञा पुं० [सं० निवेदन] १. निमंत्रण। न्योता। २. निमंत्रणपत्र।
नवेला–वि० [सं० नवल] [स्त्री० नवेली] १. नवीन। नया। २. तरुण। जवान।
नवोढ़ा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नवविवाहिता स्त्री। वधू। २. नवयौवना। युवती स्त्री। ३. साहित्य में मुग्धा के अंतर्गत ज्ञातयौवना नायिका का एक भेद। वह नायिका जो लज्जा और भय के कारण नायक के पास न जाना चाहती हो।
नव्य–वि० [सं०] नया। नूतन। नवीन।
नशना*–क्रि० अ० [सं० नाश] नष्ट होना।
नशा–संज्ञा पुं० [फा० या अ० ?] १. वह अवस्था जो शराब, अफीम या गाँजा आदि मादक द्रव्य खाने या पीने से होती है।
मुहा०—नशा किरकिरा हो जाना = किसी अप्रिय बात के होने के कारण नशे का मजा बीच में बिगड़ जाना। (आँखों में) नशा छाना = नशा चढ़ना। मस्ती चढ़ना। नशा जमना = अच्छी तरह नशा होना। नशा हिरन होना = किसी असंभावित घटना आदि के कारण नशे का बिलकुल उतर जाना।
२. वह चीज जिससे नशा हो। मादक द्रव्य।
यौ०—नशा-पानी = मादक द्रव्य और उसके सब सामग्री। नशे का सामान।
३. धन, विद्या, प्रभुत्व या रूप आदि का घमंड। अभिमान। मद। गर्व।
मुहा०—नशा उतारना = घमंड दूर करना।
नशाखोर–संज्ञा पुं० [फा०] वह जो नशे का सेवन करता हो। नशेबाज।
नशाना*–क्रि० स० [सं० नशा] नष्ट करना।
नशावन*†–वि० [सं० नाश] नाश करना।
नशीन–वि० [फा०] बैठनेवाला।

नशीनी—संज्ञा स्त्री० [फा०] बैठने की क्रिया या भाव।

नशीला—वि० [फा० नशा + ईला (प्रत्य०)] १ नशा उत्पन्न करनेवाला। मादक। २ जिस पर नशे का प्रभाव हो।

मुहा०—नशीली आँखें = वे आँखें जिनमें मस्ती छाई हो। मदमत्त आँखें।

नशेबाज—संज्ञा पुं० [फा०] वह जो बराबर किसी प्रकार के नशे का सेवन करता हो।

नशोहर†—वि० [सं० नाश + ओहर] नाशक।

नश्तर—संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का बहुत तेज छोटा चाकू। इसका व्यवहार फोड़े आदि चीरने में होता है।

नश्वर—वि० [सं०] जो नष्ट हो जाय या जो नष्ट हो जाने के योग्य हो।

नश्वरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] नश्वर का भाव।

नष*—संज्ञा पुं० दे० "नख"।

नषत*—संज्ञा पुं० दे० "नक्षत्र"।

नष्ट—वि० [सं०] १ जो अदृश्य हो। जो दिखाई न दे। २ जिसका नाश हो गया हो। जो बरबाद हो गया हो। ३ अधम। नीच। ४ निष्फल। व्यर्थ।

नष्टता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नष्ट होने का भाव। २ वाहियातपन। दुराचारिता।

नष्टबुद्धि—वि० [सं०] मूर्ख। मूढ़।

नष्ट-भ्रष्ट—वि० [सं०] जो बिलकुल टूट-फूट या नष्ट हो गया हो।

नष्टा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वेश्या। रंडी। २ व्यभिचारिणी। कुलटा।

नसंक*†—वि० [सं० निःशंक] निर्भय।

नस—संज्ञा स्त्री० [सं० स्नायु] १ शरीर के भीतर तंतुओं का वह बंध या लच्छा जो पेशियों के छोर पर उन्हें दूसरी पेशियों या अस्थि आदि कड़े स्थानों से जोड़ने के लिये होता है (जैसे, घोड़ानस)। साधारण बोलचाल में कोई शरीर-तंतु या रक्त-वाहिनी नली।

मुहा०—नस चढ़ना या नस पर नस चढ़ना = खिंचाव, दबाव या झटके आदि के कारण शरीर में किसी स्थान की नस का अपने स्थान से इधर-उधर हो जाना या बल खा जाना। नस नस में = सारे शरीर में। सर्वांग में। नस नस फड़क उठना = बहुत अधिक प्रसन्नता होना। २ वे पतले रेशे या तंतु जो पत्तों में बीच बीच में होते हैं।

नस-तरंग—संज्ञा पुं० [हिं० नस + तरंग] शहनाई के आकार का पीतल का एक बाजा जिसको गले की घंटी के पास की नसों पर रखकर गले से स्वर भरकर बजाते हैं।

नसतालीक—संज्ञा पुं० [अ०] १ फारसी या अरबी लिपि लिखने का वह ढंग जिसमें अक्षर खूब साफ और सुंदर होते हैं। 'घसीट' या 'शिकस्त' का उलटा। २ वह जिसका रंग-ढंग बहुत अच्छा और सुंदर हो।

नसना*†—क्रि० अ० [सं० नशन] १ नष्ट होना। बरबाद होना। २ बिगड़ जाना। क्रि० अ० [हिं० नटना] भागना।

नसल—संज्ञा स्त्री० [अ०] वंश।

नसवार—संज्ञा स्त्री० [हिं० नास + वार (प्रत्य०)] सूँघने के लिये तमाकू के पीसे हुए पत्ते। सुँघनी। नास।

नसाना*†—क्रि० अ० [सं० नाश] १ नष्ट हो जाना। २ बिगड़ जाना।

नसावना‡—क्रि० अ० दे० "नसाना"।

नसीनी†—संज्ञा स्त्री० [सं० निःश्रेणी] सीढ़ी।

नसीब—संज्ञा पुं० [अ०] भाग्य। प्रारब्ध।

मुहा०—नसीब होना = प्राप्त होना। मिलना।

नसीबवर—वि० [अ०] भाग्यवान।

नसीबा†—संज्ञा पुं० दे० "नसीब"।

नसीहत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ उपदेश। शिक्षा। सीख। २ अच्छी सम्मति।

नसेनी—संज्ञा स्त्री० [सं० श्रेणी] सीढ़ी।

नस्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ नास। सुँघनी। २ वह दवा या चूर्ण आदि जिसे नाक के रास्ते दिमाग में चढ़ाते हैं।

नस्वर*†—वि० दे० "नश्वर"।

नहँ‡—संज्ञा पुं० दे० "नाखून"।

नहछू—संज्ञा पुं० [सं० नखक्षौर] विवाह की एक रस्म जिसमें वर की हजामत बनती है, नाखून काटे जाते हैं और उसे मेहँदी आदि

लगाई जाती है।

नहन–संज्ञा पुं० [देश०] पुरवट खींचने की मोटी रस्सी। नार।

नहना*–क्रि० स० [हिं० नाधना] नाथना। काम में लगाना। जोतना।

नहर–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] वह कृत्रिम जल-मार्ग जो खेतों की सिंचाई या यात्रा आदि के लिये तैयार किया जाता है।

नहरनी–संज्ञा स्त्री० [सं० नखहरणी] हज्जामों का एक औज़ार जिससे नाखून काटे जाते हैं।

नहरुआ–संज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का रोग जिसमें एक घाव में से डोरी की तरह का कीड़ा धीरे-धीरे निकलता है।

नहलाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० नहलाना] नहलाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

नहलाना–क्रि० स० [हिं० नहाना का सं०] दूसरे को स्नान कराना। नहवाना।

नहसुत–क्रि० न० [स० नखसुत] नख की रेखा। नाखून का निशान।

नहान–संज्ञा पु० [सं० स्नान] १. नहाने की क्रिया। २. स्नान का पर्व।

नहाना–क्रि० अ० [सं० स्नान] १. शरीर को स्वच्छ करने या उसकी शिथिलता दूर करने के लिये उसे जल से धोना। स्नान करना।

मुहा०—दूधों नहाना पूतों फलना = धन और परिवार से पूर्ण होना। (आशीर्वाद)। २. किसी तरल पदार्थ से सारे शरीर का आप्लुत हो जाना। बिलकुल तर हो जाना।

नहार–वि० [फ़ा०, मि० स० निराहार] जिसने सवेरे से कुछ खाया न हो। बासी-मुँह।

नहारी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० नहार] जलपान।

नहि*–अव्य० दे० "नहीं"।

नहीं–अव्य० [स० नहि] एक अव्यय जिसका व्यवहार निषेध या अस्वीकृति प्रकट करने के लिये होता है।

मुहा०—नहीं तो = उस दशा में जब कि यह बात न हो। नहीं सही = यदि ऐसा न हो तो कोई परवा या हानि नहीं।

नहुष–संज्ञा पुं० [सं०] १. अयोध्या का एक प्राचीन इक्ष्वाकुवंशी राजा जो अंबरीष का पुत्र और ययाति का पिता था। २. एक नाग का नाम। ३. विष्णु।

नहूसत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मनहूस होने का भाव। उदासीनता। खिन्नता। मनहूसी। २. अशुभ लक्षण।

नाँउँ–संज्ञा पुं० दे० "नाम"।

नाँगा–वि० दे० "नंगा"।

संज्ञा पुं० [हिं० नंगा] एक प्रकार के साधु जो नंगे ही रहते हैं। नागा।

नाँघना*†–क्रि० स० [सं० लंघन] लाँघना। इस पार से उस पार उछलकर जाना।

नाँठना*–क्रि० अ० [सं० नष्ट] नष्ट होना।

नाँद–संज्ञा स्त्री० [स० नदक] मिट्टी का वह बड़ा और चौड़ा बरतन जिसमें पशुओं को चारा-पानी आदि दिया जाता है। हौदी।

नाँदना*–क्रि० अ० [स० नाद] १. शब्द करना। शोर करना। २. छींकना।

क्रि० अ० [स० नदन] १. आनंदित होना। २. दीपक का बुझने के पहले भभकना।

नांदी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अभ्युदय। समृद्धि। २. वह आशीर्वादात्मक श्लोक या पद्य जिसका सूत्रधार नाटक आरंभ करने के पहले पाठ करता है। मंगलाचरण।

नांदीमुख–संज्ञा पु० [स०] एक आभ्युदयिक श्राद्ध जो विवाह आदि मंगल अवसरों पर किया जाता है। वृद्धिश्राद्ध।

नांदीमुखी–संज्ञा स्त्री० [स०] दो नगण, दो तगण और दो गुरु का एक वर्णवृत्त।

नायँ*‡–संज्ञा पु० दे० "नाम"।

अव्य० दे० "नहीं"।

नावँ–संज्ञा पु० दे० "नाम"।

नाँह*–संज्ञा पुं० [सं० नाथ] स्वामी।

ना–अव्य० [स०] नहीं। न।

नाइक*–संज्ञा पु० दे० "नायक"।

नाइत्तिफ़ाकी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] मेल का अभाव। फूट। मतभेद। विरोध।

नाइन–संज्ञा स्त्री० [हिं० नाई] १. नाई जाति

की स्त्री। २ नाई की स्त्री।
नाइब*–संज्ञा पुं० दे० "नायब"।
नाई–संज्ञा स्त्री० [सं० न्याय] समान दशा। वि० स्त्री० समान। तुल्य।
नाई–संज्ञा पुं० [सं० नापित] नाऊ। हज्जाम।
नाउँ†*–संज्ञा पुं० दे० "नाम"।
नाउ*†–संज्ञा स्त्री० दे० "नाव"।
नाउन†–संज्ञा स्त्री० दे० "नाइन"।
नाउम्मेद–वि० [फा०] निराश।
नाउम्मेदी–संज्ञा स्त्री० [फा०] निराशा।
नाऊ†–संज्ञा पुं० दे० "नाई"।
नाकद–वि० [फा० ना+कद] बिना निकाला हुआ (घोड़ा आदि)। अल्हड़। अशिक्षित। बिना सिखाया हुआ।
नाक–संज्ञा स्त्री० [सं० नक्र] १ ओठों और आँखों के बीच की सूँघने और साँस लेने की इंद्रिय। नासा। नासिका।
यौ०—नाकघिसनी=विनती और गिड़गिड़ाहट।
मुहा०—नाक कटना=प्रतिष्ठा नष्ट होना। इज्जत जाना। नाक कान काटना=कड़ा दंड देना। (किसी की) नाक का बाल=सदा साथ रहनेवाला घनिष्ठ मित्र या मंत्री। नाक चढ़ना=क्रोध आना। त्योरी चढ़ना। नाकों चने चबवाना=खूब तंग करना। हैरान करना। नाक भौं चढ़ाना या नाक भौं सिकोड़ना= १ अरुचि और अप्रसन्नता प्रकट करना। २ घिनाना और चिढ़ना। नापसंद करना। नाक में दम करना या नाक में दम लाना=खूब तंग करना। बहुत हैरान करना। बहुत सताना। नाक रगड़ना=बहुत गिड़गिड़ाना और विनती करना। मिन्नत करना। नाकों आना=हैरान हो जाना। बहुत तंग होना। नाक सिकोड़ना= अरुचि या घृणा प्रकट करना। घिनाना। २ कपाल के कफ आदि का मल जो नाक से निकलता है। रेंट। नेटा।
यौ०—नाक सिनकना=जोर से हवा निकालकर नाक का मल बाहर फेंकना।
३ प्रतिष्ठा या शोभा की वस्तु। ४ प्रतिष्ठा। इज्जत। मान।
मुहा०—नाक रख लेना=प्रतिष्ठा की रक्षा कर लेना।
संज्ञा पुं० [सं० नक्र] मगर की जाति का एक प्रसिद्ध जलजंतु।
संज्ञा पुं० [सं०] १ स्वर्ग। २ अंतरिक्ष। आकाश। ३ शस्त्र का एक आघात।
नाकड़ा–संज्ञा पुं० [हिं० नाक+ड़ा (प्रत्य०)] एक रोग जिसमें नाक पक जाती है।
नाकदर–वि० [फा० ना+अ० कद्र] [संज्ञा नाकदरी] जिसकी कद्र या प्रतिष्ठा न हो।
नाकना†*–क्रि० स० [सं० लंघन] १ लाँघना। उल्लंघन करना। २ बढ़ जाना। मात कर देना।
नाकबुद्धि–वि० [हिं० नाक + बुद्धि] क्षुद्र बुद्धिवाला। ओछी समझ का।
नाका–संज्ञा पुं० [हिं० नाकना] १ रास्ते आदि का छोर। प्रवेश-द्वार। मुहाना। २ गली या रास्ते का आरंभ-स्थान। ३ नगर, दुर्ग आदि का प्रवेश-द्वार। फाटक।
मुहा०—नाका छेकना या बाँधना=आने-जाने का मार्ग रोकना।
४ वह प्रधान स्थान जहाँ निगरानी रखने, या महसूल आदि वसूल करने के लिये सिपाही तैनात हों। ५ सूई का छेद।
नाकाबंदी–संज्ञा स्त्री० [हिं० नाका+फा० बंदी] किसी रास्ते से कहीं जाने या घुसने की रुकावट।
नाकिस–वि० [अ०] बुरा। खराब।
नाकुली–संज्ञा स्त्री० [सं० नकुल] एक प्रकार का कंद जो सर्प के विष को दूर करता है।
नाकेदार–संज्ञा पुं० [हिं० नाका+फा० दार (प्रत्य०)] १ नाके या फाटक पर रहनेवाले सिपाही। २ वह अफसर जो आने जाने के प्रधान स्थानों पर किसी प्रकार का कर आदि वसूल करने के लिये तैनात हो। वि० जिसमें नाका या छेद हो।
नाकेबंदी–संज्ञा स्त्री० दे० "नाकाबंदी"।
नाक्षत्र–वि० [सं०] नक्षत्र-संबंधी।
नाखना*†–क्रि० स० [सं० नष्ट] १ नाश करना। बिगाड़ना। २ फेंकना। गिराना।

क्रि० स० [हिं० नाकना] उल्लंघन करना।

नाखुना–संज्ञा पुं० [फा०] आँख का एक रोग जिसमें एक लाल झिल्ली सी आँख की सफ़ेदी में पैदा होती है।

नाखुश–वि० [फा०] [संज्ञा नाखुशी] अप्रसन्न। नाराज।

नाखून–संज्ञा पुं० [फा० नाखुन] १. उँगलियों के छोर पर चिपटे किनारे या नोक की तरह निकली हुई कड़ी वस्तु। नख। नहँ। २. चौपायों की टाप या खुर का बढ़ा हुआ किनारा।

नाग–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० नागिन] १. सर्प। साँप।

मुहा०—नाग खेलाना = ऐसा कार्य करना जिसमें प्राण जाने का भय हो।

२. कद्रु से उत्पन्न कश्यप की संतान जिनका स्थान पाताल लिखा गया है। ३. एक देश का नाम जो हिमालय के उस पार था। ४. इस देश में बसनेवाली जाति जो शक जाति की एक शाखा मानी जाती है। ५ एक पर्वत। (महाभारत) ६. हाथी। हस्ति। ७. राँगा। ८. सीसा। (धातु) ९. नागकेसर। १०. पुन्नाग। ११. पान। तांबूल। १२. नागवायु। १३. बादल। १४. आठ की संख्या। १५. दुष्ट या क्रूर मनुष्य।

नागकन्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] नाग जाति की कन्या जो बहुत सुंदर मानी गई है।

नागकेसर–संज्ञा पुं० [सं० नागकेशर] एक सीधा सदाबहार पेड़। इसके सूखे फूल औषध, मसाले और रंग बनाने के काम मे आते हैं। नागचंपा।

नागझाग*–संज्ञा पुं० [हिं० नाग + झाग] अफ़ीम।

नागदमन–संज्ञा पुं० [सं०] नागदौन।

नागदौन–संज्ञा पुं० [सं० नागदमन] १. छोटे आकार का एक पहाड़ी पेड़। कहते हैं, इसकी लकड़ी के पास साँप नहीं आते। २. दे० "नागदौना"।

नागनग–संज्ञा पुं० [सं०] गजमुक्ता।

नागपंचमी–संज्ञा स्त्री० [सं०] सावन सुदी पंचमी।

नागपति–संज्ञा पुं० [सं०] १. सर्पों का राजा वासुकि। २. हाथियों का राजा ऐरावत।

नागपाश–संज्ञा पुं० [सं०] एक अस्त्र जिससे शत्रुओं को बाँध लेते थे।

नागफनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० नाग + फन] १. थूहर की जाति का एक पौधा जिसके चौड़े मोटे पत्तों पर जहरीले काँटे होते हैं। २. कान में पहनने का एक गहना।

नागफाँस–संज्ञा पुं० दे० "नागपाश"।

नागबला–संज्ञा स्त्री० [सं०] गँगेरन।

नागबेल–संज्ञा स्त्री० [सं० नागवल्ली] पान की बेल। पान।

नागर–वि० [सं०] [स्त्री० नागरी] १. नगर-संबंधी। २. नगर में रहनेवाला। संज्ञा पुं० १. नगर में रहनेवाला मनुष्य। २. चतुर आदमी। सभ्य, शिष्ट और निपुण व्यक्ति। ३. देवर। ४. गुजरात में रहनेवाले ब्राह्मणों की एक जाति।

नागरता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नागरिकता। शहरातीपन। २. नगर का रीति-व्यवहार। ३. चतुराई।

नागरबेल–संज्ञा स्त्री० [सं० नागवल्ली] पान।

नागरमुस्ता–संज्ञा स्त्री० [सं०] नागरमोथा।

नागरमोथा–संज्ञा पुं० [सं० नागरमुस्ता] एक प्रकार का तृण या घास जिसकी जड़ मसाले और औषध के काम में आती है।

नागराज–संज्ञा पुं० [सं०] १. शेषनाग। २. ऐरावत। ३. 'पंचामर' या 'नाराच' नामक छंद।

नागरिक–वि० [सं०] १. नगर-संबंधी। नगर का। २. नगर में रहनेवाला। शहराती। ३. चतुर। सभ्य।

नागरिकता–संज्ञा स्त्री० [सं०] नागरिक के अधिकारों से संपन्न होने की अवस्था।

नागरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नगर की रहनेवाली स्त्री। २. चतुर स्त्री। प्रवीण स्त्री। ३. भारतवर्ष की वह प्रधान लिपि जिसमें संस्कृत और हिंदी लिखी जाती है। देव-

नागरी।

नागलोक—संज्ञा पु० [सं०] पाताल।

नागवंश—संज्ञा पु० [सं०] क्षत्र जाति की एक शाखा, जिसका राज्य भारत के कई स्थानों और सिंहल में भी था।

नागवल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं०] पान।

नागवार—वि० [फा०] १ असह्य। २ जो अच्छा न लगे। अप्रिय।

नागा—संज्ञा पु० [सं० नग्न] उस संप्रदाय का शैव साधु जिसमें लोग नंगे रहते हैं। संज्ञा पु० [सं० नाग] १ आसाम के पूर्व की पहाड़ियों में बसनेवाली एक जंगली जाति। २ आसाम में वह पहाड़ जिसके आस-पास नागा जाति की बस्ती है। संज्ञा पु० [अ० नाग] किसी निरंतर या नियत समय पर होनेवाली बात का किसी दिन या किसी नियत अवसर पर न होना। अंतर। बीच।

नागार्जुन—संज्ञा पु० [सं०] एक प्राचीन बौद्ध महात्मा या बोधिसत्व जो माध्यमिक शाखा के प्रवर्तक थे।

नागाशन—संज्ञा पु० [सं०] १ गरुड़। २ मयूर। ३ सिंह।

नागिन—संज्ञा स्त्री० [हि० नाग] १ नाग की स्त्री। साँप की मादा। २ रोयों की लंबी भौंरी जो पीठ पर होती है। (अशुभ)

नागेंद्र—संज्ञा पु० [सं०] १ बड़ा सर्प। २ शेष, वासुकि आदि नाग। ३ ऐरावत।

नागेसर*—संज्ञा पु० दे० "नागकेसर"।

नागौर—संज्ञा पु० [हि० नव+नगर] मारवाड़ के अंतर्गत एक नगर।

नागौरी—वि० [हि० नागौर] नागौर का अच्छी जाति का (बैल, बछड़ा आदि)। वि० स्त्री० नागौर की। अच्छी जाति की (गाय)

नाच—संज्ञा पु० [सं० नाट्य] १ अंगों की वह गति जो हृदयोल्लास के कारण मन मानी अथवा संगीत के मेल में ताल-स्वर के अनुसार और हाव-भाव-युक्त हो। मुहा०—नाच काछना=नाचने के लिये तैयार होना। नाच दिखाना=१. उछलना, कूदना। हाथ-पैर हिलाना। २ विलक्षण आचरण करना। नाच नचाना=१ जैसा चाहना, वैसा काम कराना। २ दिक करना। २ नाट्य। खेल। ३ कृत्य। कर्म।

नाच-कूद—संज्ञा स्त्री० [हि० नाच+कूद] १ नाच-तमाशा। २ आयोजन। प्रयत्न। ३ गुण, योग्यता, बड़ाई आदि प्रकट करने का उद्योग। डींग। ४ क्रोध से उछलना।

नाचघर—संज्ञा पु० [हि० नाच+घर] वह स्थान जहाँ नाच हो। नृत्यशाला।

नाचना—क्रि० अ० [हि० नाच] १ चित्त की उमंग से उछलना, कूदना तथा इसी प्रकार की और चेष्टा करना। २ संगीत के मेल में ताल-स्वर के अनुसार हाव-भावपूर्वक कूदना, फिरना तथा इसी प्रकार की और चेष्टाएँ करना। थिरकना। नृत्य करना। ३ भ्रमण करना। चक्कर मारना। घूमना। मुहा०—सिर पर नाचना=१ घेरना। ग्रसना। २ पास आना। निकट आना। आँख के सामने नाचना=अंतःकरण में प्रत्यक्ष के समान प्रतीत होना। ४ उद्योग में इधर से उधर फिरना। दौड़ना-धूपना। ५. थर्राना। काँपना। ६ क्रोध में आकर उछलना-कूदना। बिगड़ना।

नाच-महल—संज्ञा पु० दे० "नाचघर"।

नाच-रंग—संज्ञा पु० [हि० नाच+रंग] आमोद-प्रमोद। जलसा।

नाचीज—वि० [फा०] तुच्छ। पोच।

नाज†—संज्ञा पु० [हि० अनाज] १ अन्न। अनाज। २ खाद्य द्रव्य। भोज्य सामग्री।

नाज—संज्ञा पु० [फा०] १ नखरा। चोचला। मुहा०—नाज उठाना=चोचला सहना। २ घमंड। गर्व।

नाजनी—संज्ञा स्त्री० [फा०] सुंदरी स्त्री।

नाजायज—वि० [अ०] जो जायज न हो। जो नियमविरुद्ध हो। अनुचित।

नाजिम—वि० [अ०] प्रबंधकर्त्ता। संज्ञा पु० [अ०] मुसलमानी राज्यकाल में वह प्रधान कर्मचारी जिस पर किसी देश के

प्रबंध का भार रहता था।

नाज़िर–संज्ञा पुं० [अ०] १. निरीक्षक। देखभाल करनेवाला। २. लेखकों का अफसर। ३. ख्वाजा। महलसरा। ४. वेश्याओं का दलाल।

नाज़ुक–वि० [फा०] १. कोमल। सुकुमार। २. पतला। महीन। बारीक। ३. सूक्ष्म। गूढ़। ४. ज़रा से झटके या धक्के में टूट-फूट जानेवाला।

यौ०—नाज़ुक मिज़ाज। जो थोड़ा सा कष्ट भी न सह सके।

५. जिसमें हानि या अनिष्ट की आशंका हो। जोखों का।

नाट–संज्ञा पुं० [सं०] १. नृत्य। नाच। २. नक़ल। स्वाँग। ३. एक देश जो कर्नाटक के पास था। ४. यहाँ का निवासी।

नाटक–संज्ञा पु० [सं०] १. नाट्य या अभिनय करनेवाला। नट। २. रंगशाला में नटों की आकृति, हाव-भाव, वेष और वचन आदि द्वारा घटनाओं का प्रदर्शन। अभिनय। ३. वह ग्रंथ या काव्य जिसमें स्वाँग के द्वारा दिखाया जानेवाला चरित्र हो। दृश्य-काव्य। अभिनय-ग्रंथ।

नाटकशाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह घर या स्थान जहाँ नाटक होता हो।

नाटकावतार–संज्ञा पु० [सं०] किसी नाटक के अभिनय के बीच दूसरे नाटक का अभिनय।

नाटकिया, नाटकी–वि० [हिं० नाटक] नाटक का अभिनय करनेवाला।

नाटकीय–वि० [सं०] नाटक-संबंधी।

नाटना–क्रि०अ० [सं० नाट्य=बहाना] प्रतिज्ञा आदि पर स्थिर न रहना। निकल जाना।

क्रि० स० अस्वीकार करना। इनकार करना।

नाटा–वि० [सं० नत=नीचा] [स्त्री० नाटी] जिसका डील ऊँचा न हो। छोटे क़द का।

नाटिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का दृश्य-काव्य जिसमें चार अंक होते हैं।

नाट्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. नटों का काम। नृत्य, गीत और वाद्य। २. स्वाँग के द्वारा चरित्र-प्रदर्शन। अभिनय। ३. स्वाँग।

नाट्यकार–संज्ञा पुं० [सं०] नाटक करनेवाला। नट।

नाट्यमंदिर–संज्ञा पुं० [सं०] नाट्यशाला।

नाट्यरासक–संज्ञा पु० [सं०] एक ही अंक का एक प्रकार का उपरूपक दृश्य-काव्य।

नाट्यशाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्थान जहाँ पर अभिनय किया जाय।

नाट्यशास्त्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. नृत्य, गीत और अभिनय की विद्या। २. भरत मुनि कृत एक प्राचीन ग्रंथ।

नाट्यालंकार–संज्ञा पु० [सं०] वह विशेष अलंकार जिसके आने से नाटक का सौंदर्य अधिक बढ़ जाता है।

नाट्योक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] वे विशेष विशेष संबोधन शब्द जो विशेष विशेष व्यक्तियों के लिए नाटकों में आते हैं—जैसे, ब्राह्मण के लिए आर्य्य।

नाठ*–संज्ञा पुं० [सं० नष्ट] १. नाश। ध्वंस। २. अभाव। अनस्तित्व।

नाठना*–क्रि० स० [सं० नष्ट] नष्ट करना। ध्वस्त करना।

क्रि० अ० नष्ट होना। ध्वस्त होना।

क्रि० अ० [हिं० नाटना] भागना। हटना।

नाठा–संज्ञा पु० [सं० नष्ट] वह जिसके आगे-पीछे कोई वारिस न हो।

नाड़–संज्ञा स्त्री० [सं० नाल] ग्रीवा। गर्दन।

नाड़ा–संज्ञा पु० [सं० नाड़ी] १. सूत की वह मोटी डोरी जिससे स्त्रियाँ घाँघरा या धोती बाँधती हैं। इज़ारबंद। नीवी। २. लाल या पीला रँगा हुआ गंडेदार सूत जो देवताओं को चढ़ाया जाता है।

नाड़ी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नली। २. साधारणतः शरीर के भीतर की वे नलियाँ जिनमें होकर रक्त बहता है। धमनी।

मुहा०—नाड़ी चलना = कलाई की नाड़ी में स्पंदन या गति होना। नाड़ी छूट जाना = १. नाड़ी का न चलना। २. प्राण न रह जाना। मृत्यु हो जाना। ३. मूर्च्छा आना। बेहोशी आना। नाड़ी देखना = कलाई की

नाडीदेखकर रोगी की अवस्था का पता लगाना। ३ हठयोग के अनुसार ज्ञानवाहिनी, चेतनवाहिनी और श्वास प्रश्वास-वाहिनी नाडियाँ। ४ व्रणरंध्र। नासूर का छेद। ५ बंदूक की नली। ६ काल का एक मान जो छ क्षण का होता है।

नाडीचक्र-संज्ञा पु० [सं०] हठयोग के अनुसार नाभिदेश म कल्पित एक अंडाकार गाँठ जिससे निकलकर सब नाडियाँ फैली हैं।

नाडीमंडल-संज्ञा पुं० [सं०] विषुवद्रेखा।

नाडीवलय-संज्ञा पु० [सं०] काल या समय निश्चित करने का एक यंत्र।

नात†-संज्ञा पु० [सं० ज्ञाति] १ नातेदार। संबंधी। २ नाता। संबंध।

नातरु*-अव्य० [हिं० न+तो+अरु] और नहीं तो। अन्यथा।

नाता-संज्ञा पु० [सं० ज्ञाति] १ दो या कई मनुष्यो के बीच वह लगाव जो एक ही कुल में उत्पन्न होने या विवाह आदि के कारण होता है। ज्ञाति-संबंध। रिश्ता। २ संबंध। लगाव।

नाताकत-वि० [फा० ना+अ० ताकत] जिसे ताकत या बल न हो। निर्बल।

नाती-संज्ञा पु० [सं० नप्तृ] [स्त्री० नतिनी, नातिन] लडकी या लडके का लडका। बेटी या बेटे का बेटा।

नाते-क्रि० वि० [हिं० नाता] १ संबंध से। २ हेतु। वास्ते। लिये।

नातेदार-वि० [हिं० नाता+फा० दार] [संज्ञा नातेदारी] संबंधी। रिश्तेदार। सगा।

नाथ-संज्ञा पु० [सं०] १ प्रभु। स्वामी। अधिपति। मालिक। २ पति। ३ वह रस्सी जिसे बैल, भैंसे आदि की नाक छेदकर उन्हें वश म करने के लिये डाल देते हैं। संज्ञा स्त्री० [हिं० नाथना] १ नाथने की क्रिया या भाव। २ जानवरो की नकेल।

नाथना-क्रि० स० [हिं० नाथ] १ बैल, भैंसे आदि की नाक छेदकर उसमें इसलिये रस्सी डालना जिसमें वे वश में रहें। नकेल डालना। २ किसी वस्तु को छेदकर उसमें रस्सी या तागा डालना। ३ नत्थी करना। ४ लडी के रूप में जोड़ना।

नाथद्वारा-संज्ञा पु० [सं० नाथद्वार] उदयपुर राज्य के अंतर्गत वल्लभ संप्रदाय के वैष्णवो का एक प्रसिद्ध स्थान जहाँ श्रीनाथ जी की मूर्ति स्थापित है।

नाद-संज्ञा पु० [सं०] १ शब्द। आवाज। २ वर्णों का अव्यक्त रूप। ३ वर्णों के उच्चारण में एक प्रयत्न जिसमें कंठ को न तो बहुत अधिक फैलाकर और न संकुचित करके वायु निकालनी पडती है। ४ सानुनासिक स्वर। अर्द्धचंद्र। ५ संगीत। यौ०—नादविद्या=संगीत शास्त्र।

नादना*-क्रि० स० [सं० नदन] बजाना। क्रि० अ० १ बजना। शब्द करना। २ चिल्लाना। गरजना। क्रि० अ० [सं० नदन] लहकना। लहलहाना। प्रफुल्लित होना।

नादली-संज्ञा स्त्री० [अ० नाद+अली] संग यशब नामक पत्थर की चौकोर टिकिया जिसे हृदय की रोग-बाधा दूर करने के लिए यंत्र की तरह पहनते हैं। हौलदिली।

नादान-वि० [फा०] [संज्ञा नादानी] ना समझ। अनजान। मूर्ख।

नादार-वि० [फा०] [संज्ञा नादारी] निधन।

नादिम-वि० [अ०] लज्जित।

नादिया-संज्ञा पु० [सं० नंदी] १ नंदी। २ वह बैल जिसे लेकर जोगी भीख माँगते हैं।

नादिर-वि० [फा०] अद्भुत। अनोखा।

नादिरशाही-संज्ञा स्त्री० [फा०] भारी अंधेर या अत्याचार। वि० बहुत कठोर और उग्र।

नादिहंद-वि० [फा०] न देनेवाला। जिससे रकम वसूल न हो।

नादी-वि० [सं० नादिन्] [स्त्री० नादिनी] १ शब्द करनेवाला। २ बजनेवाला।

नाधना-क्रि० स० [सं० नद्ध] १ रस्सी या तस्मे के द्वारा बैल, घोडे आदि को उस वस्तु के साथ बाँधना जिसे उन्हें खींचकर

ले जाना होता है। जोतना। २.जोड़ना। संबद्ध करना। ३. गूँथना। गुहना। ४. आरंभ करना। ठानना।

नान-संज्ञा स्त्री० [फा०] रोटी। चपाती।

नानक-संज्ञा पुं० पंजाब के एक प्रसिद्ध महात्मा जो सिख संप्रदाय के आदि-गुरु थे।

नानकपंथी-संज्ञा पु० [हिं० नानक+पंथ] गुरु नानक का अनुयायी। सिख।

नानकशाही-वि० [हिं० नानकशाह] १. गुरु नानक से संबंध रखनेवाला। २. नानक-शाह का शिष्य या अनुयायी। सिख।

नानकीन-संज्ञा पुं० [चीनी नानकिङ] एक प्रकार का सूती कपड़ा।

नानखताई-संज्ञा स्त्री० [फा०] टिकिया के आकार की एक सोंधी खस्ता मिठाई।

नानबाई-संज्ञा पुं० [फा० नानबा, नानबाफ़] रोटियाँ पकाकर बेचनेवाला।

नाना-वि० [सं०] १. अनेक प्रकार के। बहुत तरह के। २. अनेक। बहुत। संज्ञा पुं० [देश०] [स्त्री० नानी] माता का पिता। माँ का बाप। मातामह।

†क्रि० स० [सं० नमन] १. झुकाना। नम्र करना। २. नीचा करना। ३. डालना। फेंकना। ४. घुसाना। प्रविष्ट करना।

संज्ञा पुं० [अ०] पुदीना।

यौ०—अर्क़ नाना = सिरके के साथ भबके में उतारा हुआ पुदीने का अर्क़।

ननिहाल-संज्ञा पुं० [हिं० नानी+आल (आलय)] नाना-नानी का स्थान या घर।

नानी-संज्ञा स्त्री० [देश०] माँ की माँ। माता की माता। मातामही।

मुहा०—नानी याद आना या मर जाना = आपत्ति सी आ जाना। दुःख सा पड़ जाना।

ना-नुकर-संज्ञा पुं० [हिं० न+करना] नाहीं। इनकार।

नान्ह†-वि० [सं० न्यून] १. छोटा। लघु। २. नीच। क्षुद्र। ३. पतला। महीन।

मुहा०—नान्ह कातना = १. बहुत बारीक काम करना। २. कठिन या दुष्कर कार्य करना।

नान्हक-संज्ञा पुं० दे० "नानक"।

नान्हरिया]*-वि० [हिं० नान्ह] छोटा।

नान्हा†*-वि० दे० "नन्हा"।

नाप-संज्ञा स्त्री० [सं० मापन] १. किसी वस्तु की लम्बाई, चौड़ाई, ऊँचाई या गहराई जिसकी छोटाई-बड़ाई का निश्चय किसी निर्दिष्ट लंबाई के साथ मिलाने से किया जाय। परिमाण। माप। २. किसी वस्तु की लंबाई, चौड़ाई आदि कितनी है, इसको ठीक ठीक स्थिर करने के लिये की जानेवाली क्रिया। नापने का काम। ३. वह निर्दिष्ट लंबाई जिसे एक मानकर किसी वस्तु का विस्तार कितना है, यह स्थिर किया जाता है। मान। ४. नापने की वस्तु।

नाप-जोख, नाप-तौल-संज्ञा स्त्री० [हिं० नाप+जोख या तौल] १.नापने-जोखने या तौलने की क्रिया। २. परिमाण या मात्रा जो नाप या तौलकर स्थिर की जाय।

नापना-क्रि० स० [सं० मापन] १. किसी वस्तु की लंबाई, चौड़ाई, ऊँचाई या गहराई कितनी है, यह निश्चित करना। मापना।

मुहा०—सिर नापना = सिर काटना। २. कोई वस्तु कितनी है, इसका पता लगाना।

नापसंद-वि० [फा०] १. जो पसंद न हो। जो अच्छा न लगे। २. अप्रिय।

नापाक-वि० [फा०] [संज्ञा नापाकी] १. अशुद्ध। अपवित्र। २. मैला-कुचैला।

नापित-संज्ञा पुं० [सं०] वह जो सिर के बाल मूँड़ने या काटने आदि का काम करता हो। नाई। नाऊ। हज्जाम।

नाफा-संज्ञा पुं० [फा०] कस्तूरी की थैली जो कस्तूरी-मृगों की नाभि में होती है।

नाबदान-संज्ञा पुं० [फा० नाब=नाली] वह नाली जिससे मैला पानी आदि बहता है। पनाला। नरदा।

नाबालिग़-वि० [अ० +फा०] [संज्ञा नाबालिग़ी] जो पूरा जवान न हुआ हो। अप्राप्तवयस्क।

नाबूद–वि० [फा०] नष्ट। ध्वस्त।

नाभ–संज्ञा स्त्री० [सं० नाभि] १ नाभि। ढोंढी। धुन्नी। २ शिव का एक नाम। ३ एक सूर्यवंशी राजा जो भगीरथ के पुत्र थे। (भागवत) ४ अस्त्रों का एक संहार।

नाभा–संज्ञा पु० एक प्रसिद्ध भक्त जिनका नाम *नारायणदास था।* कहते हैं कि ये जाति के डोम थे और दक्षिण देश में उत्पन्न हुए थे। ये जन्मांध कहे जाते हैं। अपने गुरु अग्रदास की आज्ञा से इन्होंने 'भक्तमाल' बनाया था।

नाभाग–संज्ञा पु० [सं०] १ वाल्मीकि के अनुसार इक्ष्वाकुवंशीय एक राजा जो ययाति के पुत्र थे। इनके पुत्र अज और अज के दशरथ हुए। २ मार्कंडेय पुराण के अनुसार वास्तप वंश के एक राजा।

नाभि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चक्रमध्य। पहिए का मध्य भाग। नाह। २ जरायुज जंतुओं के पेट के बीचोबीच वह चिह्न या गड्ढा जहाँ गर्भावस्था में जरायुनाल जुड़ा रहता है। ढोंढी। धुन्नी। तुन्नी। तुंदी। ३ कस्तूरी।

संज्ञा पु० १ *प्रधान राजा।* २ *प्रधान* व्यक्ति या वस्तु। ३ गोत्र। ४ क्षत्रिय।

नामजूर–वि० [फा०+अ०] [संज्ञा नामंजूरी] जो मंजूर न हो। जो माना न गया हो।

नाम–संज्ञा पु० [सं० नामन्] [वि० नामी] १ वह शब्द जिससे किसी वस्तु, व्यक्ति या समूह का बोध हो। संज्ञा। आख्या। मुहा०—नाम उछालना = बदनामी कराना। चारों ओर निंदा कराना। नाम उठ जाना = चिह्न मिट जाना या चर्चा बंद हो जाना। (किसी बात का) नाम करना = कोई बात पूरी तरह से न करना, कहने भर के लिये थोड़ा-सा करना। नाम का = १ नामधारी। २ कहने-सुनने भर को, काम के लिये नहीं। नाम के लिये या नाम को = १ कहने सुनने भर के लिए। थोड़ा सा। २ काम के लिये नहीं। नाम चढ़ना = किसी नामावली में नाम लिखा जाना। नाम चलना = लोगों में नाम या स्मरण बना रहना। यादगार बनी रहना। नाम जपना = १ बार-बार नाम लेना। २ ईश्वर या देवता का नाम स्मरण करना। (किसी का) नाम धरना = १. बदनाम करना। दोष लगाना। २ दोष निकालना। ऐब बताना। नाम धराना = १ नामकरण कराना। २ बदनामी कराना। निंदा कराना। नाम न लेना = दूर रहना। बचना। *नाम निकल जाना = किसी बात के लिये मशहूर* या बदनाम हो जाना। किसी के नाम पर = किसी को अर्पित करके। किसी के निमित्त। किसी के नाम पड़ना = किसी के नाम के आगे लिखा जाना। जिम्मेदार रखा जाना। (किसी के) नाम पर मरना या मिटना = किसी के प्रेम में लीन होना। किसी के प्रेम में खपना। (किसी के) नाम पर बैठना = किसी के भरोसे संतोष करके स्थिर रहना। (किसी का) नाम बद करना = बदनाम करना। कलंक लगाना। नाम बाकी रहना = १ मरने या कहीं चले जाने पर भी कीर्ति का बना रहना। २ केवल नाम ही नाम रह जाना, और कुछ न रहना। नाम बिकना = नाम मशहूर होने से कदर होना। नाम मिटना = १ नाम न रहना। *स्मारक या कीर्ति का लोप होना।* २ नाम तक शेष न रहना। एकदम अभाव हो जाना। नाम-मात्र = नाम लेने भर को। बहुत थोड़ा। अत्यंत अल्प। (कोई) नाम रखना = नाम निश्चित करना। नामकरण करना। नाम लगाना = किसी दोष या अपराध के संबंध में नाम लेना। दोष मढ़ना। अपराध लगाना। (किसी के) नाम लिखना = किसी के नाम के आगे लिखना। किसी के जिम्मे लिखना या टाँकना। (किसी का) नाम लेकर = १ किसी प्रसिद्ध या बड़े आदमी के नाम से लोगों का ध्यान आकर्षित करके। नाम के प्रभाव से। २ (किसी देवता या पूज्य पुरुष का) स्मरण करके। नाम लेना = १ नाम का उच्चारण करना। नाम कहना। २ नाम जपना। नाम स्मरण करना। ३ गुण गाना। प्रशंसा करना। ४ चर्चा करना। जिक्र करना।

नाम व निशान=पता। खोज। (किसी) नाम और पता। पता ठिकाना। नामसे=शब्द द्वारा निर्दिष्ट होकर या करके। (किसी) के नाम से=१. चर्चा से। जिक्र से। २. (किसी का) संबंध बताकर। यह प्रकट करके कि कोई बात किसी की ओर से है। ३. (किसी को) हकदार या मालिक बनाकर। (किसी के) उपयोग या उपभोग के लिये। नाम से काँपना=नाम सुनते ही डर जाना। बहुत भय मानना। नाम होना=१.दोष मढ़ा जाना। कलंक लगना। २.नाम प्रसिद्ध होना। २. प्रसिद्धि। ख्याति। यश। कीर्ति।

मुहा०—नाम कमाना या करना=प्रसिद्धि प्राप्त करना। मशहूर होना। नाम को मरना= सुयश के लिये प्रयत्न करना। नाम जगाना= उज्ज्वल कीर्ति फैलाना। नाम डुबाना=यश और कीर्ति का नाश करना। नाम डूबना= यश और कीर्ति का नाश होना। नाम पर धब्बा लगाना=यश पर लांछन लगाना। बदनामी करना। नाम पाना=प्रसिद्धि प्राप्त करना। मशहूर होना। नाम रह जाना= कीर्ति की चर्चा रहना। यश बना रहना।

नामक-वि० [सं०] नाम से प्रसिद्ध। नाम धारण करनेवाला।

नामकरण—संज्ञा पुं० [सं०] १. नाम रखने का काम। २. हिंदुओं के सोलह संस्कारों में से पाँचवाँ जिसमें बच्चे का नाम रखा जाता है।

नामकर्म—संज्ञा पुं० [सं०] नामकरण।

नामकीर्तन—संज्ञा पुं० [सं०] ईश्वर के नाम का जप। भगवान् का भजन।

नामजद—वि० [फा०] १. जिसका नाम किसी बात के लिये निश्चित कर लिया गया हो। २. प्रसिद्ध। मशहूर।

नामदेव—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रसिद्ध कृष्ण-भक्त जिनकी कथा भक्तमाल में है। ये वामदेवजी के नाती (दौहित्र) थे। २. महाराष्ट्र देश के एक प्रसिद्ध कवि।

नामधराई—संज्ञा स्त्री० [हिं० नाम+धराना] बदनामी। निंदा। अपकीर्ति।

नाम-धाम—संज्ञा पुं० [हिं० नाम+धाम] नाम और पता। पता ठिकाना।

नामधारी–वि० [सं०] नामक।

नामधेय–संज्ञा पुं० [सं०] १. नाम। निदर्शक शब्द। २. नामकरण। वि० नामवाला। नाम का।

नामनिशान–संज्ञा पुं० [फा०] चिह्न। पता।

नामबोला–संज्ञा पुं० [हिं० नाम+बोलना] भक्तिपूर्वक नाम स्मरण करनेवाला।

नामर्द–वि० [फा०] [संज्ञा नामर्दी] १. नपुंसक। क्लीव। डरपोक। कायर।

नामलेवा–संज्ञा पुं० [हिं० नाम+लेना] १. नाम लेनेवाला। नाम स्मरण करनेवाला। २. उत्तराधिकारी। संतति। वारिस।

नामवर–वि० [फा०] [संज्ञा नामवरी] जिसका बड़ा नाम हो। नामी। प्रसिद्ध।

नामशेष–वि० [सं०] १. जिसका केवल नाम बाकी रह गया हो। नष्ट। ध्वस्त। २. मृत। गत। मरा हुआ।

नामांकित–वि० [सं०] जिस पर नाम लिखा या खुदा हो।

नामाकूल–वि० [फा० ना+अ० माकूल] १. अयोग्य। नालायक। २. अयुक्त। अनुचित।

नामावली–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नामों की पंक्ति। नामों की सूची। २. वह कपड़ा जिस पर चारों ओर भगवान् या किसी देवता का नाम छपा होता है। रामनामी।

नामी–वि० [हिं० नाम+ई (प्रत्य०) अथवा सं० नामिन्] १. नामधारी। नामवाला। २. प्रसिद्ध। विख्यात। मशहूर।

नामुनासिब–वि० [फा०] अनुचित।

नामुमकिन–वि० [फा०+अ०] असंभव।

नामूसी–संज्ञा स्त्री० [अ० नामूस=इज्जत] बेइज्जती। अप्रतिष्ठा। बदनामी।

नाम्ना–वि० [सं०] [स्त्री० नाम्नी] नामवाला।

नायँ†*–संज्ञा पुं० दे० "नाम"। अव्य० दे० "नहीं"।

नायक–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० नायिका] १. लोगों को अपने पीछे पर चलानेवाला आदमी। नेता। अगुआ। सरदार। २. अधिपति। स्वामी। मालिक। ३. श्रेष्ठ

पुरुष। जन-नायक। ४. साहित्य में शृंगार या आलंबन या साधक रूप-यौवन-संपन्न पुरुष अथवा वह पुरुष जिसका चरित्र किसी काव्य या नाटक आदि का मुख्य विषय हो। ५. संगीत-कला में निपुण पुरुष। कलावंत। ६. एक वर्णवृत्त का नाम।

नायका–संज्ञा स्त्री० [सं० नायिका] *१ दे० "नायिका"। २. वेश्या की माँ। ३ कुटनी। दूती।

नायन–संज्ञा स्त्री० [हिं० नाई] नाई की स्त्री।

नायब–संज्ञा पुं० [अ०] १. किसी की ओर से काम करनेवाला। मुनीब। मुख्तार। २. सहायक। सहकारी।

नायिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रूप-गुण-संपन्न स्त्री। २. वह स्त्री जो शृंगार रस का आलंबन हो अथवा किसी काव्य, नाटक आदि में जिसके चरित्र का वर्णन हो।

नारंग–संज्ञा पुं० [सं०] नारंगी।

नारंगी–संज्ञा स्त्री० [सं० नागरंग, अ० नारंज] १. नीबू की जाति का एक मझोला पेड़ जिसमें मीठे, सुगंधित और रसीले फल लगते हैं। २. नारंगी के छिलके का सा रंग। पीलापन लिए हुए लाल रंग। वि० पीलापन लिए हुए लाल रंग का।

नार–संज्ञा स्त्री० [सं० नाल] १. गरदन। ग्रीवा।

मुहा०—नार नवाना या नीचा करना = १. गरदन झुकाना। सिर नीचे की ओर करना। २. लज्जा, चिंता, संकोच और मान आदि के कारण सामने न ताकना। दृष्टि नीची करना। २. जुलाहों की ढरकी। नाल।

†संज्ञा पुं० १. आँवल नाल। दे० "नाल"। २. नाला। ३. बहुत मोटा रस्सा। ४. सूत की वह डोरी जिससे स्त्रियाँ घाँघरा कसती हैं। नारा। नाला। ५. जुआ जोड़ने की रस्सी या तसमा।

‡संज्ञा स्त्री० दे० "नारी"।

नारकी–वि० [सं० नारकिन्] नरक में जाने योग्य कर्म करनेवाला। पापी।

नारद–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध देवर्षि जो ब्रह्मा के पुत्र कहे जाते हैं। ये बहुत बड़े हरिभक्त प्रसिद्ध हैं और कलह-प्रिय भी कहे गए हैं। पर आजकल के विद्वानों का मत है कि नारद किसी एक आदमी का नाम नहीं था, बल्कि साधुओं का एक संप्रदाय था। २. विश्वामित्र के एक पुत्र। ४. एक प्रजापति। ३. झगड़ा करानेवाला आदमी।

नारद पुराण–संज्ञा पुं० [सं०] १. अठारह महापुराणों में से एक। इसमें तीर्थों और व्रतों का माहात्म्य है। २. बृहन्नारदीय नामक एक उपपुराण।

नारदीय–वि० [सं०] नारद संबंधी।

नारना–क्रि० स० [सं० ज्ञान] थाह लगाना।

नार-बेवार†–संज्ञा पुं० [हिं० नार + म० विवार = फैलाव] नाल और खेड़ी आदि। नारा-पोटी।

नारसिंह–संज्ञा पुं० [सं०] १. नरसिंह रूप-धारी विष्णु। २. एक तंत्र का नाम। ३. एक उपपुराण। नृसिंह-संबंधी।

नारा–संज्ञा पुं० [सं० नाल] १. इजारबंद। नीबी। दे० "नाड़ा"। २. लाल रँगा हुआ सूत जो पूजन में देवताओं को चढ़ाया जाता है। मौली। कुसुम-सूत्र ३. हल के जुवे में बँधी हुई रस्सी। †४. दे० "नाला"।

नाराच–संज्ञा पुं० [सं०] १. लोहे का बाण। २. दुर्दिन। ऐसा दिन जिसमें बादल घिरा हो, अंधड़ चले तथा इसी प्रकार के और उपद्रव हों। ३. एक प्रकार का वर्णवृत्त। महामालिनी। तारका। ४. २४ मात्राओं का एक छंद।

नाराज–वि० [फा०] [संज्ञा नाराजगी, नाराजी] अप्रसन्न। रुष्ट। नाखुश। खफा।

नारायण–संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु। भगवान्। ईश्वर। २. पूस का महीना। ३. 'अ' अक्षर का नाम। ४. कृष्ण यजुर्वेद के अंतर्गत एक उपनिषद्। ५. एक अस्त्र।

नारायणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुर्गा। २. लक्ष्मी। ३. गंगा। ४. श्रीकृष्ण की

सेना का नाम जिसे उन्होंने कुरुक्षेत्र के युद्ध में दुर्योधन की सहायता के लिये दिया था।
नारायणीय–वि० [सं०] नारायण संबंधी।
नाराशंस–वि० [सं०] जिसमें मनुष्यों की प्रशंसा हो। स्तुति-संबंधी।
संज्ञा पुं० १. वेदों के वे मंत्र जिनमें राजाओं आदि की प्रशंसा होती है। प्रशस्ति। २. वह चमचा जिसमें पितरों को सोमपान दिया जाता है। ३. पितर।
नाराशंसी–संज्ञा स्त्री० दे० "नाराशंस"।
नारि–संज्ञा स्त्री० दे० "नारी"।
नारिकेल–संज्ञा पुं० [सं०] नारियल।
नारियल–संज्ञा पुं० [सं० नारिकेल] १. खजूर की जाति का एक पेड़। इसके बड़े गोल फलों के ऊपर एक बहुत कड़ा रेशेदार छिलका होता है जिसके नीचे कड़ी गुठली और सफ़ेद गिरी होती है जो खाने मे मीठी होती है। २. नारियल का हुक्का।
नारियली–संज्ञा स्त्री० [हिं० नारियल] १. नारियल का खोपड़ा। २. नारियल का हुक्का।
नारी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. स्त्री। औरत। २. तीन गुरु वर्णों की एक वृत्ति।
*†संज्ञा स्त्री० १. दे० "नाड़ी"। २. दे० "नाली"।
नारू–संज्ञा पुं० [देश०] १. जूँ। ढील। २. नहरुआ नामक रोग।
नालंद–संज्ञा पुं० बौद्धों का एक प्राचीन क्षेत्र और विद्यापीठ जो मगध में पटने से तीस कोस दक्खिन था।
नाल–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कमल, कुमुद आदि फूलों की पोली लंबी डंडी। डाँड़ी। २. पौधे का डंठल। कांड। ३. गेहूँ, जौ आदि की वह पतली लंबी डंडी जिसमें बाल लगती है। ४. नली। नल। ५. बंदूक की नली। ६. सुनारों की फुकनी। ७. जुलाहों की नली। छूँछा।
संज्ञा पुं० १. रक्त की नलियों तथा एक प्रकार के मज्जातंतु से बनी हुई रस्सी के आकार की वस्तु जो एक ओर तो गर्भस्थ बच्चे की नाभि से और दूसरी ओर गर्भाशय की दीवार से मिली होती है। आँवल-नाल। उल्वनाल। नारा। २. लिंग। ३. हरताल। ४. जल बहने का स्थान।
संज्ञा पुं० [अ०] १. लोहे का वह अर्द्धचंद्राकार खंड जिसे घोड़ों की टाप के नीचे या जूतों की एँड़ी के नीचे उन्हें रगड़ से बचाने के लिये जड़ते हैं। २. तलवार आदि के म्यान की साम जो नोक पर मढ़ी होती है। ३. कुंडलाकार गढ़ा हुआ पत्थर का भारी टुकड़ा जिसके बीचोंबीच पकड़कर उठाने के लिये एक दस्ता रहता है। इसे अभ्यास के लिये कसरत करनेवाले उठाते हैं। ४. लकड़ी का वह चक्कर जिसे नीचे डालकर कूएँ की जोड़ाई की जाती है। ५. वह रुपया जो जुआरी जुए का अड्डा रखनेवाले को देता है।
नालकटाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० नाल + कटाई] तुरंत के जनमे हुए बच्चे की नाभि में लगे हुए नाल को काटने का काम।
नालकी–संज्ञा स्त्री० [सं० नाल=डंडा] इधर उधर से खुली पालकी जिस पर एक मिहरावदार छाजन होती है।
नालबंद–संज्ञा पुं० [अ० + फ़ा०] जूते की एँड़ी या घोड़े की टाप में नाल जड़नेवाला।
नाला–संज्ञा पुं० [सं० नाल] [स्त्री० अल्पा० नाली] १. लकीर के रूप में दूर तक गया हुआ वह गड्ढा जिससे होकर बरसाती पानी किसी नदी आदि मे जाता है। जल-प्रणाली। २. उक्त मार्ग से बहता हुआ जल। जल-प्रवाह। ३. दे० "नाड़ी"।
नालायक़–वि० [फ़ा० + अ०] [संज्ञा नालायक़ी] अयोग्य। निकम्मा। मूर्ख।
नालिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. छोटी नाल या डंठल। २. नाली। ३. एक प्रकार का गंधद्रव्य।
नालिश–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] किसी के द्वारा पहुँचे हुए दुःख या हानि का ऐसे मनुष्य के निकट निवेदन जो उसका प्रतिकार कर सकता हो। फ़रियाद।
नाली–संज्ञा स्त्री० [हिं० नाला] १. जल

बहने का पतला मार्ग। जल-प्रवाह-पथ। २ गलीज आदि बहने का मार्ग। मोरी। ३ कोई गहरी लकीर। ४ घोड़े की पीठ का गड्ढा। ५ बैल आदि चौपायों को दवा पिलाने का चोंगा। ढरका।
संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नाड़ी। धमनी। रक्त आदि बहने की नली। २ करेमू या साग। ३ घड़ी। ४ कमल।
नार्वें*†-संज्ञा पु० दे० "नाम"।
नाव-संज्ञा स्त्री० [सं० नौका] लकड़ी, लोहे आदि की बनी हुई जल के ऊपर चलने-वाली सवारी। नौका। किश्ती।
नावक-संज्ञा पु० [फा०] १ एक प्रकार का छोटा बाण। २ मधुमक्खी का डंक।
संज्ञा पु० [सं० नाविक] केवट। मल्लाह।
नावना†-क्रि० स० [सं० नामन] १ झुकाना। नवाना। २ डालना। फेंकना। गिराना। ३ प्रविष्ट करना। घुसाना।
नावर*†-संज्ञा स्त्री० [हिं० नाव] १ नाव। नौका। २ नाव की एक क्रीड़ा जिसमें उसे बीच में ले जाकर चक्कर देते हैं।
नाविक-संज्ञा पु० [सं०] मल्लाह। केवट।
नाश-संज्ञा पु० [सं०] १ न रह जाना। लोप। ध्वंस। बरबादी। २ गायब होना।
नाशक-वि० [सं०] १ नाश करनेवाला। ध्वंस करनेवाला। २ मारनेवाला। वध करनेवाला। ३ दूर करनेवाला।
नाशकारी-वि० [सं० नाशकारिन्] नाशक।
नाशना*-क्रि० स० दे० "नाशना"।
नाशपाती-संज्ञा स्त्री० [तु०] मझोले डील-डौल का एक पेड़ जिसके फल मेवों में गिने जाते हैं।
नाशवान्-वि० [सं०] नश्वर। अनित्य।
नाशी-वि० [सं० नाशिन्] [स्त्री० नाशिनी] १ नाश करनेवाला। नाशक। २ नश्वर।
नाश्ता-संज्ञा पु० [फा०] जलपान।
नास-संज्ञा स्त्री० [सं० नासा] १ वह औषध जो नाक से सूँघी जाय। २ सुँघनी।
नासदान-संज्ञा पु० [हिं० नास+दान (सं० आधार)] सुँघनी रखने की डिबिया।
नासना*-क्रि० स० [सं० नाशन] १ नष्ट करना। बरबाद करना। २ मार डालना।
नासमझ-वि० [हिं० ना+समझ] [संज्ञा नासमझी] जिसे समझ न हो। निर्बुद्धि। बेवकूफ।
नासा-संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० नास्य] १ नासिका। नाक। २ नाक का छेद। नथना।
नासापुट-संज्ञा पु० [सं०] नथना।
नासिक-संज्ञा स्त्री० [सं० नासिक्य] महाराष्ट्र देश में एक तीर्थ जो उस स्थान के निकट है जहाँ से गोदावरी निकलती है।
नासिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] नाक। नासा।
नासी*-वि० दे० "नाशी"।
नासूर-संज्ञा पु० [अ०] घाव, फोड़े आदि के भीतर दूर तक गया हुआ छेद जिससे बराबर मवाद निकला करता है और जिसके कारण घाव जल्दी अच्छा नहीं होता। नाड़ीव्रण।
नास्तिक-संज्ञा पु० [सं०] वह जो ईश्वर या परलोक आदि को न माने।
नास्तिकता-संज्ञा स्त्री० [सं०] नास्तिक होने का भाव। ईश्वर, परलोक आदि को न मानने की बुद्धि।
नास्तिवाद-संज्ञा पु० [सं०] नास्तिकों का तर्क या मत।
नाह*-संज्ञा पु० दे० 'नाथ'।
नाहक-क्रि० वि० [फा० ना+अ० हक] वृथा। व्यर्थ। बेफायदा। बे-मतलब।
नाह-नूह*-संज्ञा स्त्री० [हिं० नाहीं] नहीं नहीं शब्द। इनकार।
नाहर-संज्ञा पु० [सं० नरहरि] १ सिंह। २ बाघ।
संज्ञा पु० [?] टेसू का फूल।
नाहरू-संज्ञा पु० [देश०] नारू नाम का रोग। नहरुवा।
संज्ञा पु० दे० "नाहर"।
नाहिन*-वाक्य [हिं० नाहीं] नहीं है।
नाहीं-अव्य० दे० 'नहीं'।
नित*-क्रि० वि० दे० "नित्य"।

निंद*–वि० दे० "निंद्य"।
निंदक–संज्ञा पुं० [सं०] निंदा करनेवाला।
निंदन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० निंदनीय, निंदित, निंद्य] निंदा करने का काम।
निंदना†*–क्रि० स० [सं० निंदन] निंदा करना। बदनाम करना।
निंदनीय–वि० [सं०] १. निंदा करने योग्य। २. बुरा। गर्ह्य।
निंदरना–क्रि० स० दे० "निंदना"।
निंदरिया‡*–संज्ञा स्त्री० [सं० निद्रा] नींद।
निंदा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. (किसी व्यक्ति या वस्तु का) दोषकथन। बुराई का वर्णन। अपवाद। बदगोई। २. अपकीर्त्ति। बदनामी। कुख्याति।
निंदासा–वि० [हिं० नींद + आसा (प्रत्य०)] जिसे नींद आ रही हो। उनींदा।
निंदास्तुति–संज्ञा स्त्री० [सं०] निंदा के बहाने स्तुति। व्याज-स्तुति।
निंदित–वि० [सं०] जिसकी लोग निंदा करते हों। दूषित। बुरा।
निंदिया‡–संज्ञा स्त्री० [हिं० नींद] नींद।
निंद्य–वि० [सं०] १. निंदा करने योग्य। निंदनीय। २. दूषित। बुरा।
निंब–संज्ञा स्त्री० [सं०] नीम का पेड़।
निंबार्क–संज्ञा पुं० [सं०] १. अरुणि या निंबादित्य नामक आचार्य। २. इनका चलाया हुआ वैष्णव संप्रदाय।
निंबू–संज्ञा पुं० [सं०] नीबू।
निः–अव्य० [सं० निस्] एक उपसर्ग। दे० "नि"।
निःशंक–वि० [सं०] १. जिसे डर न हो। निडर। निर्भय। २. जिसे किसी प्रकार का खटका या हिचक न हो।
निःशब्द–वि० [सं०] शब्दरहित। जहाँ शब्द न हो या जो शब्द न करे।
निःशेष–वि० [सं०] १. जिसका कोई अंश न रह गया हो। समूचा। सब। २. समाप्त।
निःश्रेणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] सीढ़ी।
निःश्रेयस–वि० [सं०] १. मोक्ष। मुक्ति। २. कल्याण। ३. भक्ति। ४. विज्ञान।
निःश्वास–संज्ञा पुं० [सं०] प्राणवायु का नाक से निकलना या नाक से निकाली हुई वायु। साँस।
निःसंकोच–क्रि० वि० [सं०] बिना संकोच के। बेधड़क।
निःसंग–वि० [सं०] १. बिना मेल या लगाव का। २. निर्लिप्त। ३. जिसमें अपने मतलब का कुछ लगाव न हो।
निःसंतान–वि० [सं०] जिसके संतान न हो। निपूता या निपूती। लावल्द।
निःसंदेह–वि० [सं०] संदेह-रहित। जिसे या जिसमें कुछ संदेह न हो। अव्य० १. बिना किसी संदेह के। २. इसमें कोई संदेह नहीं। ठीक है। बेशक।
निःसंशय–वि० [सं०] संदेह रहित।
निःसत्त्व–वि० [सं०] जिसमें कुछ असलियत, तत्त्व या सार न हो।
निःसरण–संज्ञा पुं० [सं०] १. निकालना। २. निकलने का रास्ता। निकास। ३. निर्वाण। ४. मरण।
निःसीम–वि० [सं०] १. जिसकी सीमा न हो। बेहद। २. बहुत बड़ा या अधिक।
निःसृत–वि० [सं०] निकला हुआ।
निःस्पृह–वि० [सं०] १. इच्छारहित। जिसे किसी बात की आकांक्षा न हो। २. जिसे प्राप्ति की इच्छा न हो। निर्लोभ।
निःस्वार्थ–वि० [सं०] १. जो अपने लाभ, सुख या सुभीते का ध्यान न रखता हो। २. (कोई बात) जो अपने अर्थ-साधन के निमित्त न हो।
नि–अव्य० [सं०] एक उपसर्ग जिसके लगने से शब्दों में इन अर्थों की विशेषता होती है—संघ या समूह; जैसे, निकर। अधोभाव; जैसे, निपतित। अत्यंत; जैसे, निगृहीत। आदेश; जैसे, निदेश। नित्य, कौशल, बंधन, अंतर्भाव, समीप, दर्शन आदि। संज्ञा पुं० निषाद स्वर का संकेत।
निअर†*–अव्य० [सं० निकट] निकट। वि० समान। तुल्य।
निअराना†*–क्रि० स० [हिं० निअर] निकट

जाना। समीप पहुँचना।
क्रि० अ० निकट आना। पास होना।
निआउ‡*–संज्ञा पुं० दे० "न्याय"।
निआन*–संज्ञा पुं० [सं० निदान] अन्त। अव्य० अंत में। आखिर।
निआमत–संज्ञा स्त्री० [अ०] अच्छा और बहुमूल्य पदार्थ। अलभ्य पदार्थ।
निकंटक*–वि० दे० 'निष्कंटक'।
निकंदन–संज्ञा पुं० [सं० नि+कंदन=नाश, वध] नाश। विनाश।
निकट–वि० [सं०] १ पास का। समीप का। २ संबंध जिससे विशेष अंतर न हो। क्रि० वि० पास। समीप। नज़दीक।
मुहा०—किसी के निकट=१ किसी से। २ किसी के लेखे में। किसी की समझ में।
निकटता–संज्ञा स्त्री० [सं०] समीपता।
निकटवर्ती–वि० [सं० निकटवर्त्तिन्] [स्त्री० निकटवर्त्तिनी] पासवाला। समीपस्थ।
निकटस्थ–वि० [सं०] १ पास का। २ संबंध में जिससे बहुत अंतर न हो।
निकम्मा–वि० [सं० निष्कर्म्म] [स्त्री० निकम्मी] १ जो कोई काम-धंधा न करे। २ जो किसी काम का न हो। बेमसरफ़। बुरा।
निकर–संज्ञा पुं० [सं०] १ समूह। झुंड। २ राशि। ढेर। ३ निधि।
निकरना†*–क्रि० अ० दे० "निकलना"।
निकर्मा–वि० [सं० निष्कर्म्मा] आलसी।
निकलंक–वि० [सं० निष्कलंक] दोषरहित।
निकलंकी–संज्ञा पुं० [सं० निष्कलंक] विष्णु का दसवाँ अवतार। कल्कि अवतार।
निकल–संज्ञा स्त्री० [अं०] एक धातु जो कोयले, गंधक आदि के साथ मिली हुई खानों में मिलती है। साफ होने पर यह चाँदी की तरह चमकती है।
निकलना–क्रि० अ० [हिं० निकालना] १ भीतर से बाहर आना। निर्गत होना।
मुहा०—निकल जाना=१ चला जाना। आगे बढ़ जाना। २ न रह जाना। नष्ट हो जाना। ३ घट जाना। कम हो जाना। ४ न पकड़ा जाना। भाग जाना। (स्त्री का) निकल जाना=किसी पुरुष के साथ अनुचित संबंध करके घर छोड़कर चली जाना।
२ मिली हुई, लगी हुई या पैवस्त चीज का अलग होना। ३ पार होना। एक ओर से दूसरी ओर चला जाना।
मुहा०—निकल चलना=वित्त से बाहर काम करना। इतराना। अति करना।
४ किसी श्रेणी आदि से पार होना। उत्तीर्ण होना। ५ गमन करना। जाना। गुज़रना। ६ उदय होना। ७ प्रादुर्भूत होना। उत्पन्न होना। ८ उपस्थित होना। दिखाई पड़ना। ९ किसी ओर को बढ़ा हुआ होना। १० निश्चित होना। ठहराया जाना। ११ स्पष्ट होना। प्रकट होना। १२ छिड़ना। आरंभ होना। १३ सिद्ध होना। सरना। १४ हल होना। किसी प्रश्न या समस्या का ठीक उत्तर प्राप्त होना। १५ फैलाव होना। १६ प्रचलित होना। १७ छूटना। मुक्त होना। १८ आविष्कृत होना। १९ शरीर के ऊपर उत्पन्न होना। २० अपने को बचा जाना। बच जाना। २१ कहकर नहीं करना। मुकरना। नटना। २२ खपना। बिकना। २३ प्रस्तुत होकर सर्वसाधारण के सामने आना। प्रकाशित होना। २४ हिसाब किताब होने पर कोई रकम जिम्मे ठहरना। २५ फटकर अलग होना। उचड़ना। २६ जाता रहना। दूर होना। न रह जाना। २७ व्यतीत होना। बीतना। गुज़रना। २८ घोड़े, बैल आदि का सवारी लेकर चलना आदि सीखना।
निकलवाना–क्रि० स० [हिं० निकाल का प्र०] निकालने का काम दूसरे से कराना।
निकसना†–क्रि० अ० दे० "निकलना"।
निकाई*–संज्ञा पुं० दे० "निकाय"। संज्ञा स्त्री० [हिं० नीक] १ भलाई। अच्छापन। उम्दगी। २ खूबसूरती। सुंदरता।
निकाज–वि० [हिं० नि+काज] बेकाम। निकम्मा।

निकाम–वि० [हिं० नि + काम] १. निकम्मा। २. बुरा। खराब।
क्रि० वि० व्यर्थ। निष्प्रयोजन। फ़जूल।
निकाय–संज्ञा पुं० [सं०] १. समूह। झुंड। २. ढेर। राशि। ३. घर। ४. परमात्मा।
निकारना*†–क्रि० स० दे० "निकालना"।
निकालना–क्रि० स० [सं० निष्कासन] १. भीतर से बाहर लाना। निर्गत करना। २. मिली हुई, लगी हुई या पैवस्त चीज को अलग करना। ३. पार करना। अति-क्रमण कराना। ४. गमन कराना। ले जाना। ५. किसी ओर को बढ़ा हुआ करना। ६. निश्चित करना। ठहराना। ७. उपस्थित करना। मौजूद करना। ८. खोलना। स्पष्ट करना। ९. छेड़ना। आरंभ करना। चलाना। १०. सबके सामने लाना। देख में करना। ११. अलग करना। पृथक् करना। १२. घटाना। कम करना। १३. अलग करना। छुड़ाना। मुक्त करना। १४. नौकरी से छुड़ाना। बरखास्त करना। १५. दूर करना। हटाना। १६. बेचना। खपाना। १७. सिद्ध करना। प्राप्त करना। १८. निर्वाह करना। चलाना। १९. किसी प्रश्न या समस्या का ठीक उत्तर निश्चित करना। हल करना। २०. जारी करना। फैलाना। २१. आविष्कृत करना। ईजाद करना। २२. बचाव करना। निस्तार करना। उद्धार करना। २३. प्रचारित करना। प्रकाशित करना। २४. रक़म जिम्मे ठह-राना। ऊपर ऋण या देना निश्चित करना। २५. ढूँढ़कर पाना। बरामद करना। २६. घोड़े, बैल आदि को सवारी लेकर चलना या गाड़ी आदि खींचना सिखाना। शिक्षा देना। २७. सुई से बेल-बूटे बनाना।
निकाला–संज्ञा पुं० [हिं० निकालना] १. निकालने का काम। २. किसी स्थान से निकाले जाने का दंड। निष्कासन।
निकास–संज्ञा पुं० [हिं० निकसना] १. निकलने की क्रिया या भाव। २. निकालने की क्रिया या भाव। ३. निकलने के लिये खुला स्थान या छेद। ४. द्वार। दरवाजा। ५. बाहर का खुला स्थान। मैदान। ६. उद्गम। मूल-स्थान। ७. वंश का मूल। ८. रक्षा का उपाय। छुटकारे की तदबीर। ९. निर्वाह का ढंग। ढर्रा। वसीला। सिल-सिला। १०. प्राप्ति का ढंग। आमदनी का रास्ता। ११. आय। आमदनी। निकासी।
निकासी–संज्ञा स्त्री० [हिं० निकास] १. निकलने की क्रिया या भाव। प्रस्थान। रवानगी। २. वह धन जो सरकारी माल-गुजारी आदि देकर जमींदार को बचे। मुनाफ़ा। ३. आय। आमदनी। लाभ। ४. बिक्री के लिये माल की रवानगी। लदाई। भरती। ५. बिक्री। खपत। ६. चुंगी। ७. रवन्ना।
निकासना†–क्रि० स० दे० "निकालना"।
निकाह–संज्ञा पुं० [अ०] मुसलमानी पद्धति के अनुसार किया हुआ विवाह।
निकियाना–क्रि० स० [देश०] नोचकर धज्जी धज्जी अलग करना।
निकिष्ट*†–वि० दे० "निकृष्ट"।
निकुंज–संज्ञा पुं० [सं०] लता-गृह। ऐसा स्थान जो घनी लताओं से घिरा हो।
निकुंभ–संज्ञा पुं० [सं०] १. कुंभकर्ण का एक पुत्र। यह रावण का मंत्री था। २. एक विश्वेदेव। ३. महादेव का एक गण।
निकृष्ट–वि० [सं०] बुरा। अधम। नीच।
निकृष्टता–संज्ञा स्त्री० [सं०] बुराई। अधमता। नीचता। मंदता।
निकेत–संज्ञा पुं० [सं०] १. घर। मकान। २. स्थान। जगह।
निक्षिप्त–वि० [सं०] १. फेंका हुआ। २. छोड़ा हुआ। त्यक्त।
निक्षेप–संज्ञा पुं० [सं०] १. फेंकने या डालने की क्रिया या भाव। २. चलाने की क्रिया या भाव। ३. छोड़ने की क्रिया या भाव। त्याग। ४. पोंछने की क्रिया या भाव। ५. धरोहर। अमानत। थाती।

निक्षेपण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० निक्षिप्त, निक्षेप्य] १. फेंकना। डालना। २ छोड़ना। चलाना। ३. त्यागना।
निखंग*–संज्ञा पुं० दे० "निषंग"।
निखड्ड–वि० [सं० निस् + खड्] ठीक मध्य में। न थोड़ा इधर न उधर। सटीक। ठीक।
निखट्टू–वि० [हिं० उप० नि=नहीं+ खटना=कमाना] १. जो कुछ कमाई न करे। इधर-उधर मारा मारा फिरनेवाला। २ निकम्मा। आलसी।
निखरना–क्रि० अ० [सं० निक्षरण=छँटना] १. मैल छँटकर साफ होना। निर्मल होना। २ रंगत का खुला होना।
निखरवाना–क्रि० स० [हिं० निखारना] साफ कराना। धुलवाना।
निखरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० निखरना] पक्की या घी की पकी हुई रसोई। घृतपक्व। सखरी का उल्टा।
निखवख*–वि० [सं० न्यक्ष=सारा, सब] बिलकुल। सब। और बाकी कुछ नहीं।
निखाद–संज्ञा पुं० दे० "निषाद"।
निखार–संज्ञा पुं० [हिं० निखरना] १ निर्मलता। स्वच्छता। सफाई। २ शृंगार।
निखारना–क्रि० स० [हिं० निखरना] १ साफ करना। २ पवित्र करना।
निखालिस‡–वि० [हिं० नि+ अ० खालिस] विशुद्ध। जिसमें और किसी चीज का मेल न हो।
निखिल–वि० [सं०] संपूर्ण। सब।
निखेध*–संज्ञा पुं० दे० "निषेध"।
निखेधना*–क्रि० स० [सं० निषेध] मना करना,
निखोट–वि० [हिं० उप० नि+खोट] १ जिसमें कोई खोटाई या दोष न हो। निर्दोष। २ साफ। स्पष्ट या खुला हुआ। क्रि० वि० बिना संकोच के। बेधड़क।
निगदना–क्रि० स० [फा० निगंदः=बखिया] रजाई, दुलाई आदि रूई भरे कपड़ों में तागा डालना।
निगंध*–वि० [सं० निर्गंध] गंधहीन।
निगड़–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हाथी के पैर बाँधने की जंजीर। आँदू। २ बेड़ी।
निगम–संज्ञा पुं० [सं०] १ मार्ग। पथ। २ वेद। ३. हाट। बाजार। ४ मेला। ५ रोजगार। व्यापार। ६ निश्चय।
निगमन–संज्ञा पुं० [सं०] न्याय में अनुमान के पाँच अवयवों में से एक। साबित की जानेवाली बात साबित हो गई, यह जताने के लिये दलील वगैरह के पीछे उस बात को फिर कहना। नतीजा।
निगमागम–संज्ञा पुं० [सं०] वेदशास्त्र।
निगर–वि० संज्ञा पुं० दे० "निकर"।
निगरानी–संज्ञा स्त्री० [फा०] देख-रेख। निरीक्षण।
निगरू*–वि० [सं० नि+गुरु] हलका। जो भारी या वजनी न हो।
निगलना–क्रि० स० [सं० निगरण] १ लील जाना। गले के नीचे उतार लेना। २ दूसरे का धन आदि मार बैठना।
निगह–संज्ञा स्त्री० दे० "निगाह"।
निगहबान–संज्ञा पुं० [फा०] रक्षक।
निगहबानी–संज्ञा स्त्री० [फा०] रक्षा।
निगालिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] आठ अक्षरों की एक वर्णवृत्ति। नगस्वरूपिणी।
निगाली–संज्ञा स्त्री० [हिं० निगाल] हुक्के की नली जिसे मुँह में रखकर धुआँ खींचते हैं।
निगाह–संज्ञा स्त्री० [फा०] १ दृष्टि। नजर। २ देखने की क्रिया या ढंग। चितवन। तकाई। ३ कृपादृष्टि। मेहरबानी। ४ ध्यान। विचार। ५ परख। पहचान।
निगिध*–वि० [सं० निगृध्न] जिसका बहुत लोभ हो। बहुत प्यारा।
निगुण*–वि० दे० "निर्गुण"।
निगुनी*–वि० [हिं० उप० नि+गुनी] जो गुणी न हो। गुण-रहित।
निगुरा–वि० [हिं० उप० नि+गुरु] जिसने गुरु से मंत्र न लिया हो। अदीक्षित।
निगूढ़–वि० [सं०] अत्यंत गुप्त।
निगृहीत–वि० [सं०] १ घेरा हुआ। पकड़ा हुआ। २ जिस पर आक्रमण किया

गया हो। आक्रमित। आक्रांत। ३. पीड़ित। ४. दंडित।

निगोड़ा–वि० [हिं० निगुरा] [स्त्री० निगोड़ी] १. जिसके ऊपर कोई बड़ा न हो। २. जिसके आगे-पीछे कोई न हो। अभागा। ३. दुष्ट। बुरा। नीच। कमीना।

निग्रह–संज्ञा पुं० [सं०] १. रोक। अवरोध। २. दमन। ३. चिकित्सा। रोकने का उपाय। ४. दंड। ५. पीड़न। सताना। ६. बंधन। ७. भर्त्सन। डाँट। फटकार। ८. सीमा। हद।

निग्रहना*–क्रि० स० [सं० निग्रहण] १. पकड़ना। २. रोकना। ३. दंड देना।

निग्रहस्थान–संज्ञा पुं० [सं०] वाद-विवाद या शास्त्रार्थ में वह अवसर जहाँ दो शास्त्रार्थ करनेवालों में से कोई उलटी-पुलटी या नासमझी की बात कहने लगे और उसे चुप करके शास्त्रार्थ बंद कर देना पड़े। यह पराजय का स्थान है। न्याय में ऐसे निग्रह-स्थान २२ कहे गए हैं।

निग्रही–वि० [सं० निग्रहिन्] १. रोकनेवाला। दबानेवाला। २. दंड देनेवाला।

निघंटु–संज्ञा पुं० [सं०] १. वैदिक शब्दों का कोश। २. शब्द-संग्रह-मात्र।

निघटना*–क्रि० अ० दे० "घटना"।

निघर-घट–वि० [हिं० नि=नहीं + घर=घाट] १. जिसका कहीं घर-घाट न हो। जिसे कहीं ठिकाना न हो। २. निर्लज्ज। बेहया।

मुहा०—निघर-घट देना=बेहयाई से झूठी सफाई देना।

निघरा–वि० [हिं० नि + घर] जिसके घर-बार न हो। निगोड़ा। (गाली)

निचय–संज्ञा पुं० [सं०] १. समूह। २. निश्चय। ३. संचय।

निचल*–वि० दे० "निश्चल"।

निचला–वि० [हिं० नीचे + ला (प्रत्य०)] [स्त्री० निचली] नीचे का। नीचेवाला। वि० [सं० निश्चल] स्थिर। शांत।

निचाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० नीच] १. नीचा होने का भाव। नीचापन। २. नीचे की ओर दूरी या विस्तार। ३. कमीनापन।

निचान–संज्ञा स्त्री० [हिं० नीचा] १. नीचापन। २. ढाल। ढालुआँपन। ढलान।

निचिंत–वि० [सं० निश्चिंत] चिंतारहित। बेफ़िक्र। सुचित।

निचुड़ना–क्रि० अ० [सं० उप० नि + च्यवन=चूना] १. रस से भरी या गीली चीज का इस प्रकार दबना कि रस या पानी टपककर निकल जाय। गरना। २. छूटकर चूना। गरना। ३. रस या सार-हीन होना। ४. शरीर का रस या सार निकल जाने से दुबला होना।

निचै*–संज्ञा पुं० दे० "निचय"।

निचोड़–संज्ञा पुं० [हिं० निचोड़ना] १. निचोड़ने से निकला हुआ रस आदि। २. सार। सत। ३. सारांश। खुलासा।

निचोड़ना–क्रि० स० [हिं० निचुड़ना] १. गीली या रस भरी वस्तु को दबाकर या ऐंठकर उसका पानी या रस टपकाना। गारना। २. किसी वस्तु का सार-भाग निकाल लेना। ३. सर्वस्व हरण कर लेना।

निचोना*†–क्रि० स० दे० "निचोड़ना"।

निचोरना*†–क्रि० स० दे० "निचोड़ना"।

निचोल–संज्ञा पुं० [?] स्त्रियों की ओढ़नी या चादर।

निचोवना*†–क्रि० स० दे० "निचोड़ना"।

निचौहाँ–वि० [हिं० नीचा+औहाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० निचौहीं] नीचे की ओर किया हुआ या झुका हुआ। नमित।

निचौहैं–क्रि० वि० [हिं० निचौहाँ] नीचे की ओर।

निछक्का–संज्ञा पुं० [सं० निस + चक्र=मंडली] निराला। एकांत। निर्जन स्थान।

निछत्र–वि० [सं० निश्छत्र] १. छत्रहीन। बिना छत्र का। २. बिना राजचिह्न का। वि० [सं० निःक्षत्र] क्षत्रियों से हीन।

निछनियाँ†–क्रि० वि० दे० "निछान"।

निछल*–वि० [सं० निश्छल] छलहीन।

निछान†–वि० [हिं० उप० नि + छानना] खालिस। विशुद्ध।

क्रि० वि० एकदम। बिल्कुल।

निछावर–संज्ञा स्त्री० [सं० न्यासावर्त्त। मि० अ० निसार] १ एक उपचार या टोटका जिसमें किसी की रक्षा के लिये कोई वस्तु उसके सिर या सारे अंगों के ऊपर से घुमाकर दान कर देते या डाल देते हैं। उत्सर्ग। वारा-फेरा। उतारा।
मुहा०—(किसी का) किसी पर निछावर होना=किसी के लिये मर जाना।
२ वह द्रव्य या वस्तु जो ऊपर घुमाकर दान की जाय या छोड़ दी जाय। ३ इनाम। नेग।

निछोह, निछोही–वि० [हिं० उप० नि+छोह] १ जिसे छोह या प्रेम न हो। २ निर्दय।

निज–वि० [सं०] १ अपना। स्वकीय।
मुहा०—निज का=खास अपना।
२ खास। मुख्य। प्रधान। ३ ठीक। सही। सच्चा। यथार्थ।
अव्य० १ निश्चय। ठीक ठीक।
मुहा०—निज करके=१ निश्चय। अवश्य। २ खासकर। विशेष करके। मुख्यतः।

निजकाना‡–क्रि० अ० [फा० नजदीक] निकट पहुँचना। समीप आना।

निजाम–संज्ञा पु० [अ०] १ बंदोबस्त। इंतजाम। २ हैदराबाद के नव्वाबों का पदवीसूचक नाम।

निजु‡–वि० [हिं० निज] निज का।

निजोर‡*–वि० [हिं० नि+फा० जोर] निबल।

निझरना–क्रि० अ० [हिं० उप० नि+झरना] १ अच्छी तरह झड़ जाना। २ लगी हुई वस्तु के झड़ जाने से खाली हो जाना। ३ सार वस्तु से रहित हो जाना। खुक्ख हो जाना। ४ अपने को निर्दोष प्रमाणित करना। सफाई देना।

निटोल–संज्ञा पु० [हिं० उप० नि+टोला] टोला। महल्ला। पुरा। बस्ती।

निट्ठि*–क्रि० वि० दे० "नीठि"।

निठल्ला–वि० [हिं० उप० नि=नहीं+टहल=काम] १ जिसके पास कोई काम-धंधा न हो। खाली। २ बे-रोजगार। बेकार।

निठल्लू–वि० दे० "निठल्ला"।

निठाला–संज्ञा पु० [हिं० नि+टहल=काम] १ ऐसा समय जब कोई काम-धंधा न हो। खाली वक्त। २ वह वक्त या हालत जिसमें कुछ आमदनी न हो।

निठुर–वि० [सं० निष्ठुर] जो पराया कष्ट न समझे। निर्दय। क्रूर।

निठुरई*–संज्ञा स्त्री० दे० "निठुरता"।

निठुरता*–संज्ञा स्त्री० [सं० निष्ठुरता] निर्दयता। क्रूरता। हृदय की कठोरता।

निठुराई–संज्ञा स्त्री० दे० "निठुरता"।

निठौर–संज्ञा पु० [हिं० नि+ठौर] १ बुरी जगह। कुठाँव। २ बुरा दाँव। बुरी दशा।

निडर–वि० [हिं० उप० नि+डर] १ जिसे डर न हो। निःशंक। निर्भय। २ साहसी। हिम्मतवाला। ३ ढीठ। धृष्ट।

निडरपन, निडरपना–संज्ञा पु० [हिं० निडर+पन (प्रत्य०)] निर्भयता।

निडे*–क्रि० वि० [सं० निकट] निकट। पास।

निढाल–वि० [हिं० नि+ढाल=गिरा हुआ] १ शिथिल। थका-माँदा। अशक्त। २ सुस्त। उत्साहहीन।

निढिल*–वि० [हिं० नि+ढीला] १ कसा या तना हुआ। २ कड़ा।

नितत–क्रि० वि० दे० "नितांत"।

नितंब–संज्ञा पु० [सं०] १ कमर का पिछला उभरा हुआ भाग। चूतड़। (विशेषतः स्त्रियों का) २ स्कंध। कंधा।

नितंबिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] सुंदर नितंबों-वाली स्त्री। सुंदरी।

नित–अव्य० [सं०] १ प्रतिदिन। रोज।
यौ०—नित नित=प्रतिदिन। रोज रोज। नित नया=सब दिन नया रहनेवाला।
२ सदा। सर्वदा। हमेशा।

नितल–संज्ञा पु० [सं०] सात पातालों में से एक।

नितांत–वि० [सं०] १ बहुत अधिक। २ बिलकुल। सर्वथा। एकदम।

निति‡*–अव्य० दे० 'नित'।

नित्य-वि० [सं०] १. जो सब दिन रहे। शाश्वत। अविनाशी। त्रिकालव्यापी। २. प्रति दिन। रोज का।
अव्य० १. प्रति दिन। रोज-रोज। २. सदा। सर्वदा। हमेशा।

नित्यकर्म-संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रति दिन का काम। २. वह धर्म-संबंधी कर्म जिसका प्रति दिन करना आवश्यक ठहराया गया हो। नित्य की क्रिया।

नित्यक्रिया-संज्ञा स्त्री० [सं०] नित्यकर्म।

नित्यता-संज्ञा स्त्री० [सं०] नित्य होने का भाव। अनश्वरता।

नित्यत्व-संज्ञा पुं० [सं०] नित्यता।

नित्यनियम-संज्ञा पुं० [सं०] प्रति दिन का बँधा हुआ व्यापार। रोज का क़ायदा।

नित्यनैमित्तिक कर्म-संज्ञा पुं० [सं०] पर्व, श्राद्ध, प्रायश्चित्त आदि कर्म।

नित्यप्रति-अव्य० [सं०] हर रोज।

नित्यशः-अव्य० [सं०] १. प्रति दिन। रोज। २. सदा। सर्वदा।

नित्यसम-संज्ञा पुं० [सं०] न्याय में वह अयुक्त खंडन जो इस प्रकार किया जाय कि अनित्य वस्तुओं में भी अनित्यता नित्य है; अतः धर्म के नित्य होने से धर्मी भी नित्य हुआ।

निथंभ*-संज्ञा पुं० [सं० नि + स्तंभ] खभा।

निथरना-क्रि० अ० [हिं० नि + थिर + ना (प्रत्य०)] १. पानी या और किसी पतली चीज का स्थिर होना जिससे उसमें घुली हुई मैल आदि नीचे बैठ जाय। २. घुली हुई चीज के नीचे बैठ जाने से जल का अलग हो जाना।

निथार-संज्ञा पुं० [हिं० निथारना] १. घुली हुई चीज के बैठ जाने से अलग हुआ साफ पानी। २. पानी के स्थिर होने से उसके तल में बैठी हुई चीज।

निथारना-क्रि० स० [हिं० निथरना] १. पानी या और किसी पतली चीज को स्थिर करना जिससे उसमें घुली हुई मैल आदि नीचे बैठ जाय। २. घुली हुई चीज को नीचे बैठाकर खाली पानी अलग करना।

निदई*-वि० दे० "निर्दय"।

निदरना*-क्रि० स० [सं० निरादर] १. निरादर करना। अपमान करना। बेइज्जती करना। २. तिरस्कार करना। त्याग करना। ३. मात करना। बढ़कर निकलना।

निदर्शन-संज्ञा पुं० [सं०] १. दिखाने या प्रदर्शित करने का कार्य्य। २. उदाहरण।

निदर्शना-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें एक बात किसी दूसरी बात को ठीक ठीक कर दिखाती हुई कही जाती है।

निदलन*-संज्ञा पुं० दे० "निर्दलन"।

निदहना*-क्रि० स० [सं० निदहन] जलाना।

निदाघ-संज्ञा पुं० [सं०] १. गरमी। ताप। २. धूप। घाम। ३. ग्रीष्म काल। गरमी।

निदान-संज्ञा पुं० [सं०] १. आदि कारण। २. कारण। ३. रोग-निर्णय। रोग-लक्षण। रोग की पहचान। ४. अंत। अवसान। ५. तप के फल की चाह। ६. शुद्धि।
अव्य० अंत में। आखिर।
वि० अंतिम या निम्न श्रेणी का। निकृष्ट।

निदारुण-वि० [सं०] १. कठिन। घोर। भयानक। २. दुःसह। ३. निर्दय।

निदिध्यासन-संज्ञा पुं० [सं०] फिर फिर स्मरण। बार बार ध्यान में लाना।

निदेश-संज्ञा पुं० [सं०] १. शासन। २. आज्ञा। हुक्म। ३. कथन। ४. पास।

निदेस*-संज्ञा पुं० दे० "निदेश"।

निदोष*-वि० दे० "निर्दोष"।

निद्धि-संज्ञा स्त्री० दे० "निधि"।

निद्र-संज्ञा पुं० [सं०] एक उपसंहारक अस्त्र।

निद्रा-संज्ञा स्त्री० [सं०] सचेष्ट अवस्था के बीच बीच में होनेवाली प्राणियों की वह निश्चेष्ट अवस्था जिसमें उनकी चेतन वृत्तियाँ (और कुछ अचेतन वृत्तियाँ भी) रुकी रहती हैं और उसे विश्राम मिलता है। नींद। स्वप्न। सुप्ति।

निद्रायमान-वि० [सं०] जो नींद में हो।

निद्रालु-वि० [सं०] निद्राशील। सोनेवाला।

निद्रित-वि० [सं०] सोया हुआ।

निधड़क—क्रि० वि० [हिं० नि=नहीं+धड़क] १ बे खौफ। बिना किसी रुकावट के। २ बिना आगा-पीछा किए। ३ बेखटके।

निधन—संज्ञा पुं० [सं०] १ नाश। २ मरण। ३ कुल। खानदान। ४ कुल का अधिपति। ५ विष्णु।
वि० धनहीन। निर्धन। दरिद्र।

निधनी—वि० [हिं० नि+धनी] निर्धन।

निधान—संज्ञा पुं० [सं०] १ आधार। आश्रय। २ निधि। ३ वह स्थान जहाँ कोई वस्तु रखी हो। लयस्थान।

निधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गड़ा हुआ खजाना। खजाना। २ कुबेर के नौ प्रकार के रत्न—पद्म, महापद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुंद, कुंद, नील और खर्व। ३ समुद्र। ४ आधार। घर। जैसे, गुणनिधि। ५ विष्णु। ६ शिव। ७ नौ की संख्या।

निधिनाथ, निधिपति—संज्ञा पुं० [सं०] निधियों के स्वामी, कुबेर।

निनरा—वि० [सं० नि+निकट, प्रा० निनियड] न्यारा। अलग। जुदा। दूर।

निनाद—संज्ञा पुं० [सं०] शब्द। आवाज।

निनादी—वि० [सं० निनादिन्] [स्त्री० निनादिनी] शब्द करनेवाला।

निनान*—संज्ञा पुं० [सं० निदान] १ अंत। २ लक्षण।
क्रि० वि० अंत में। आखिर।
वि० १ परले सिरे का। बिल्कुल। एकदम। २ बुरा। निकृष्ट।

निनारा—वि० [सं० नि+निकट] १ अलग। जुदा। भिन्न। २ दूर। हटा हुआ।

निनावाँ—संज्ञा पुं० [हिं० नन्हा?] मुँह के भीतरी भागों में निकलनेवाले महीन महीन लाल दाने जिनमें छरछराहट होती है।

निनौना†—क्रि० स० [हिं० नवना+झुकना] नीचे करना। झुकाना। नवाना।

निन्नानबे—वि० [सं० नवनवति] नब्बे और नौ। संज्ञा पुं० नब्बे और नौ की संख्या। ९९।
मुहा०—निन्नानबे के फेर में आना या पड़ना=धन बढ़ाने की धुन में होना।

निन्यारा*—वि० दे० "निनारा"।

निपंग*—वि० [सं० नि+पंगु] जिसके हाथ पैर टूटे हों। अपाहिज। निकम्मा।

निपजना*†—क्रि० अ० [सं० निष्पद्यते] १ उपजना। उत्पन्न होना। उगना। २ बढ़ना। पुष्ट होना। पकना। ३ बनना।

निपजी*—संज्ञा स्त्री० [हिं० निपजना] १ लाभ। मुनाफा। २ उपज।

निपत्र—वि० [सं० निष्पत्र] पत्रहीन। ठूँठा।

निपट—अव्य० [हिं० नि+पट] १ निरा। विशुद्ध। केवल। एकमात्र। २ सरासर। एकदम। बिल्कुल।

निपटना—क्रि० अ० दे० "निबटना"।

निपतन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० निपतित] अधःपतन। गिरना। गिराव।

निपात—संज्ञा पुं० [सं०] १ पतन। गिराव। पात। २ अधःपतन। ३ विनाश। ४ मृत्यु। क्षय। नाश। ५ शाब्दिकों के मत में वह शब्द जो व्याकरण में दिए नियमों के अनुसार न बना हो।
वि० [हिं० नि+पत्ता] बिना पत्ता का।

निपातन—संज्ञा पुं० [सं०] १ गिराने का कार्य। २ नाश। ३ वध करने का कार्य।

निपातना*—क्रि० स० [हिं० निपातन] १ नीचे गिराना। २ नष्ट करना। काटकर गिराना। ३ मार गिराना। वध करना।

निपाती—वि० [सं० निपातिन्] १ गिरानेवाला। फेंकनेवाला। २ मारनेवाला।
संज्ञा पुं० शिव। महादेव।
*वि० [हिं० नि+पाती] बिना पत्ते का।

निपीड़न—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० निपीड़ित] १ पीड़ित करना। तकलीफ देना। २ मलना-दलना। ३ पेरना।

निपीड़ना*—क्रि० स० [सं० निपीड़न] १ दबाना। मलना-दलना। २ कष्ट पहुँचाना। पीड़ित करना।

निपुण—वि० [सं०] दक्ष। कुशल। प्रवीण।

निपुणता—संज्ञा स्त्री० [सं०] दक्षता। कुशलता।

निपुणाई*—संज्ञा स्त्री० दे० "निपुणता"।

निपुत्री—वि० [हिं० नि+पुत्री] निपूता।

निःसंतान।
निपुन*–वि० दे० "निपुण"।
निपुनई*–संज्ञा स्त्री० दे० "निपुणता"।
निपूत, निपूता*†–[हिं० नि + पूत] [स्त्री० निपूती] अपुत्र। पुत्रहीन।
निफन*–वि० [सं० निष्पन्न] पूर्ण। पूरा। क्रि० वि० पूर्ण रूप से। अच्छी तरह।
निफरना–क्रि० अ० [हिं० निफारना] चुभकर या धँसकर आर-पार होना। क्रि० अ० [सं० नि + स्फुट] खुलना। उद्घाटित होना। साफ़ होना।
निफल*–वि० [सं० निष्फल] निरर्थक।
निफ़ाक़–संज्ञा पुं० [अ०] १. विरोध। द्रोह। वैर। २. फूट। बिगाड़। अनबन।
निफ़ोट–वि० [सं० नि + स्फुट] स्पष्ट।
निबंध–संज्ञा पुं० [सं०] १. बंधन। २. वह व्याख्या जिसमें अनेक मतों का संग्रह हो। ३. लिखित प्रबंध। लेख। ४. गीत।
निबंधन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० निबद्ध] १. बंधन। २. व्यवस्था। नियम। बंधेज। ३. कर्तव्य। बंधन। ४. हेतु। कारण।
निबकौरी†–संज्ञा स्त्री० [हिं० नीम+कौड़ी] १. नीम का फल। २. नीम का बीज।
निबटना–क्रि० अ० [सं० निवर्त्तन] [संज्ञा निबटेरा, निबटाव] १. निवृत्त होना। छुट्टी पाना। फ़ुरसत पाना। २. समाप्त होना। पूरा होना। ३. निर्णीत होना। तै होना। ४. चुकना। खतम होना। ५. शौच आदि से निवृत्त होना।
निबटाना–क्रि० स० [हिं० निबटना] १. पूरा करना। समाप्त करना। ख़तम करना। २. चुकाना। बेबाक करना। ३. तै करना।
निबटाव–संज्ञा पुं० दे० "निबटेरा"।
निबटेरा–संज्ञा पुं० [हिं० निबटना] १. निबटने का भाव या क्रिया। छुट्टी। २. समाप्ति। ३. फ़ैसला। निश्चय।
निबड़ना*–क्रि० अ० दे० "निबटना"।
निबद्ध–वि० [सं०] १. बँधा हुआ। २. निरुद्ध। रुका हुआ। ३. ग्रथित। गुथा हुआ। ४. बैठाया या जड़ा हुआ।
निबर†–वि० दे० "निर्बल"।
निबरना–क्रि० अ० [सं० निवृत्त] १. बँधी या लगी वस्तु का अलग होना। छूटना। २. मुक्त होना। उद्धार पाना। ३. छुट्टी पाना। फ़ुरसत पाना। ४. (काम) पूरा होना। समाप्त होना। ५. निर्णय होना। फ़ैसल होना। ६. एक में मिली-जुली वस्तुओं का अलग होना। ७. उलझन दूर होना। सुलझना। ८. दूर होना।
निबल*–वि० [सं० निर्बल] दुर्बल।
निबह–संज्ञा पुं० [?] समूह। झुंड।
निबहना–क्रि० अ० [हिं० निबाहना] १. पार पाना। निकलना। छुट्टी पाना। २. निर्वाह होना। बराबर चला चलना। ३. पूरा होना। सपरना। ४. निरंतर व्यवहार होना। पालन होना।
निबहुर–संज्ञा पुं० [हिं० नि + बहुरना] जहाँ से कोई न लौटे। यमद्वार।
निबहुरा–वि० [हिं० नि+बहुरना] जो चला जाय और न लौटे। (गाली)
निबाह–संज्ञा पुं० [सं० निर्वाह] १. निबाहने की क्रिया या भाव। रहन। रहायस। गुजारा। २. किसी बात के अनुसार निरंतर व्यवहार। संबंध या परंपरा की रक्षा। ३. पूरा करने का कार्य्य। पालन। ४. छुटकारे का ढंग। बचाव का रास्ता।
निबाहना–क्रि० स० [सं० निर्वाहन] १. (किसी बात का) निर्वाह करना। बराबर चलाए चलना। जारी रखना। २. पालन करना। चरितार्थ करना। ३. बराबर करते जाना। सपराना।
निबिड़–वि० दे० "निविड़"।
निबुआ*–संज्ञा पुं० दे० "नीबू"।
निबुकना†*–क्रि० अ० [सं० निर्मुक्त] १. छुटकारा पाना। छूटना। २. बंधन खुलना।
निबेड़ना–क्रि० स० [सं० निवृत्त] १. (बंधन आदि) छुड़ाना। उन्मुक्त करना। २. बिलगाना। छाँटना। चुनना। ३. उलझन दूर करना। सुलझाना। ४. निर्णय करना। फ़ैसल करना। ५. दूर करना।

थग्ग करना। ६ पूरा करना। निपटाना।

निबेड़ा–संज्ञा पुं० [हिं० निबेरा] १ छुटकारा। मुक्ति। २ बचाव। उद्धार। ३ चिल्गाव। छाँट। चुनाव। ४ समभाने की क्रिया या भाव। ५ त्याग। ६ निपटेरा। समाप्ति। ७ निर्णय। फैसला।

निबेरना–क्रि० स० दे० "निबेड़ना"।

निबेरा–संज्ञा पुं० दे० "निबेड़ा"।

निबेहना*–क्रि० स० दे० "निबेरना"।

निबौरी, निबौली–संज्ञा स्त्री० [सं० निंब + वर्तुल] निबकौरी। नीम का फल।

निभ–संज्ञा पुं० [सं०] प्रकाश। प्रभा। वि० तुल्य। समान।

निभना–क्रि० अ० [हिं० निबहना] १ पार पाना। छुट्टी पाना। छुटकारा पाना। २ जारी रहना। लगातार बना रहना। ३ गुजारा होना। रहायस होना। ४ पूरा होना। सपरना। भुगतना। ५ पालन होना। चरितार्थ होना।

निभरम*–वि० [सं० निर्भ्रम] जिसे या जिसमें कोई शक न हो। भ्रमरहित। क्रि० वि० बेखटके। बेधड़क।

निभरोसी*†–वि० [हिं० नि=नहीं + भरोसा] १ जिसे कोई भरोसा न रह गया हो। निराश। हताश। २ जिसे किसी का आसरा भरोसा न हो। निराश्रय।

निभागा–वि० [हिं० नि + भाग्य] अभागा।

निभाना–क्रि० स० [हिं० निबाहना] १ (किसी बात का) निर्वाह करना। बराबर चलाए चलना। जारी रखना। २ चरितार्थ करना। पालन करना। ३ बराबर करते जाना। चलाना। भुगताना।

निभाव–संज्ञा पुं० दे० "निबाह"।

निभृत–वि० [सं०] १ रखा हुआ। २ निश्चल। अटल। ३ गुप्त। छिपा हुआ। ४ बंद किया हुआ। ५ निश्चित। स्थिर। ६ नम्र। विनीत। ७ शांत। धीर। ८ निर्जन। एकांत। ९ भरा हुआ। पूर्ण।

निभ्रांत*–वि० दे० "निर्भ्रांत"।

निमंत्रण–संज्ञा पुं० [सं०][वि० निमंत्रित] १ किसी कार्य्य के लिये नियत समय पर आने का अनुरोध करना। बुलावा। २ खाने का बुलावा। न्योता।

निमंत्रणपत्र–संज्ञा पुं० [सं०] वह पत्र जिसके द्वारा किसी को निमंत्रण दिया जाय।

निमंत्रना*–क्रि० स० [सं० निमंत्रण] न्योता देना।

निमंत्रित–वि० [सं०] जिसे न्योता दिया गया हो। आहूत।

निमक†–संज्ञा पुं० दे० "नमक"।

निमकी–संज्ञा स्त्री० [फा० नमक] १ नींबू का अचार। २ मैदे की मोयनदार नमकीन टिकिया।

निमकौड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "निबौली"।

निमग्न–वि० [सं०][स्त्री० निमग्ना] १ डूबा हुआ। मग्न। २ तन्मय।

निमज्जन–संज्ञा पुं० [सं०] डूबकर किया जानेवाला स्नान। अवगाहन।

निमज्जना*–क्रि० अ० [सं० निमज्जन] डूबना। गोता लगाना। अवगाहन करना।

निमज्जित–वि० [सं०] १ डूबा हुआ। मग्न। २ स्नात। नहाया हुआ।

निमटना–क्रि० अ० दे० "निपटना"।

निमता*–वि० [हिं० निम + माता] जो उन्मत्त न हो।

निमान*–संज्ञा पुं० [सं० निम्न] १ नीचा स्थान। गड्ढा। २ जलाशय।

निमाना–वि० [सं० निम्न][स्त्री० निमानी] १ नीचा। ढालुवाँ। नीचे की ओर गया हुआ। २ नम्र। विनीत। ३ दब्बू।

निमि–संज्ञा पुं० [सं०] १ महाभारत के अनुसार एक ऋषि जो दत्तात्रेय के पुत्र थे। २ राजा इक्ष्वाकु के एक पुत्र का नाम। इन्हीं से मिथिला का विदेह-वंश चला। ३ आँखों का मिचना। निमेष।

निमिख–संज्ञा पुं० दे० "निमिष"।

निमित्त–संज्ञा पुं० [सं०] १ हेतु। कारण। २ चिह्न। लक्षण। ३ उद्देश्य।

निमित्तक–वि० [सं०] किसी हेतु से होने-

वाला। जनित। उत्पन्न।

निमित्त कारण—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसकी सहायता या कर्तृत्व से कोई वस्तु बने। (न्याय)। विशेष—दे० "कारण"।

निमिराज*—संज्ञा पुं० [सं०] राजा जनक।

निमिष—संज्ञा पुं० दे० "निमेष"।

निमूद—वि० [हिं० मुदना] मुँदा हुआ। बंद।

निमेख—संज्ञा पुं० दे० "निमेष"।

निमेट—वि० [हिं० नि+मिटना] न मिटनेवाला

निमेष—संज्ञा पुं० [सं०] १. पलक का गिरना। आँख का झपकना। २. पलक मारने भर का समय। पल। क्षण।

निमोना—संज्ञा पुं० [सं० नवान्न] चने या मटर के पिसे हुए हरे दानों का बनाया हुआ रसेदार व्यंजन।

निम्न—वि० [सं०] नीचा।

निम्नगा—संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी।

नियंता—संज्ञा पुं० [सं० नियंतृ] [स्त्री० नियंत्री] १. नियम बाँधनेवाला। व्यवस्था करनेवाला। २. कार्य्य को चलानेवाला। ३. नियम पर चलानेवाला। शासक।

नियंत्रण—संज्ञा पुं० [सं०] नियम आदि में बाँधना या उसके अनुसार चलाना।

नियंत्रित—वि० [सं०] नियम से बँधा हुआ। क़ायदे का पाबंद। प्रतिबद्ध।

नियत—वि० [सं०] १. नियम द्वारा स्थिर। बँधा हुआ। परिमित। २. ठीक किया हुआ। निश्चित। मुक़र्रर। ३. नियोजित। स्थापित। तैनात।

संज्ञा स्त्री० दे० "नीयत"।

नियताप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] नाटक में अन्य उपायों को छोड़कर एक ही उपाय से फल-प्राप्ति का निश्चय।

नियति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नियत होने का भाव। बंधेज। २. स्थिरता। मुकर्ररी। ३. भाग्य। दैव। अदृष्ट। ४. बँधी हुई बात। अवश्य होनेवाली बात। ५. पूर्व-कृत कर्म का निश्चित परिणाम।

नियम—संज्ञा पुं० [सं०] १. विधि या निश्चय के अनुकूल प्रतिबंध। परिमिति। रोक। पाबंदी। २. दबाव। शासन। ३. बँधा हुआ क्रम। परंपरा। दस्तूर। ४. ठहराई हुई रीति। विधि। व्यवस्था। क़ानून। ज़ाब्ता। ५. शर्त। ६. संकल्प। प्रतिज्ञा। व्रत। ७. योग के आठ अंगों में से एक जिसमें शौच, संतोष, तपस्या, स्वाध्याय और ईश्वर-प्रणिधान किया जाता है। ८. एक अर्थालंकार जिसमें किसी बात का एक ही स्थान पर नियम कर दिया जाय; अर्थात् उसका होना एक ही स्थान पर बतलाया जाय। ९. विष्णु। १०. महादेव।

नियमन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० नियमित, नियम्य] १. नियमबद्ध करने का कार्य्य। कायदा बाँधना। २. शासन।

नियमबद्ध—वि० [सं०] नियमों से बँधा हुआ। क़ायदे का पाबंद।

नियमित—वि० [सं०] १. बँधा हुआ। क्रमबद्ध। २. कायदे या क़ानून के मुताबिक। नियमबद्ध।

नियर†—अव्य० [सं० निकट] समीप। पास।

नियराई†—संज्ञा स्त्री० [हिं० नियर+आई (प्रत्य०)] निकटता। सामीप्य।

नियराना†—क्रि० अ० [हिं० नियर+आना (प्रत्य०)] निकट पहुँचना। नज़दीक आना।

नियाई*—वि० दे० "न्यायी"।

नियान*—संज्ञा पुं० [सं० निदान] परिणाम। अव्य० अंत में। आख़िर।

नियामक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० नियामिका] १. नियम करनेवाला। २. व्यवस्था या विधान करनेवाला। ३. मारनेवाला।

नियामत—संज्ञा स्त्री० [अ० नेअमत] १. अलभ्य पदार्थ। दुर्लभ पदार्थ। २. स्वादिष्ट भोजन। उत्तम व्यंजन। ३. धन-दौलत।

नियार—संज्ञा पुं० [हिं० न्यारा ?] जौहरी या सुनारों की दूकान का कूड़ा-कतवार।

नियारा†—वि० [सं० निर्निकट] अलग। दूर।

नियारिया—संज्ञा पुं० [हिं० नियारा] १. सुनारों या जौहरियों की राख, कूड़ा-करकट आदि में से माल निकालनेवाला। २. चतुर मनुष्य। चालाक आदमी।

नियारे*†-अव्य० दे० "न्यारे"।
नियाय‡-संज्ञा पुं० दे० "न्याय"।
नियुक्त-वि० [सं०] १ नियोजित। लगाया हुआ। तैनात। मुक़र्रर। २ तत्पर किया हुआ। प्रेरित। ३ स्थिर किया हुआ।
नियुक्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] मुक़र्ररी। तैनाती।
नियुत-वि० [सं०] १ एक लाख। लक्ष। २ दस लाख।
नियुद्ध-संज्ञा पुं० [सं०] बाहुयुद्ध। कुश्ती।
नियोक्ता-संज्ञा पुं० [सं० नियोक्तृ] १ नियोजित करनेवाला। २ नियोग करनेवाला।
नियोग-संज्ञा पुं० [सं०] १ नियोजित करने का कार्य्य। तैनाती। मुकर्ररी। २ प्रेरण। ३ अवधारण। ४ प्राचीन आर्यों की एक प्रथा जिसके अनुसार यदि किसी स्त्री का पति न होता या उसे अपने पति से संतान न होती तो वह अपने देवर या पति के और किसी गोत्रज से संतान उत्पन्न करा लेती थी। (मनु)५ आज्ञा।
नियोजक-संज्ञा पुं० [सं०] काम में लगानेवाला। मुकर्रर करनेवाला।
नियोजन-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० नियोजित, *नियोज्य, नियुक्त*] किसी काम में लगाना। तैनात या मुकर्रर करना।
निरकार*-संज्ञा पुं० दे० 'निराकार"।
निरंकुश-वि० [सं०] जिसके लिये कोई अंकुश या प्रतिबंध न हो। बिना डर का।
निरंग-वि० [सं०] १ अंग-रहित। २ केवल खाली। जिसमें और कुछ न हो।
संज्ञा पुं० रूपक अलंकार का एक भेद।
वि० [हिं० उप० नि = नहीं + रंग] १ बेरंग बदरंग। विवर्ण। २ उदास। बेरौनक।
निरंजन-वि० [सं०] १ अंजन-रहित। बिना काजल का। जैसे, निरंजन नेत्र। २ कल्मष-शून्य। दोष-रहित। ३ माया से निर्लिप्त। (ईश्वर का एक विशेषण)
संज्ञा पुं० परमात्मा।
निरंतर-वि० [सं०] १ अंतर-रहित। जो बराबर चला गया हो। अविच्छिन्न। २ निबिड़। घना। गझिन। ३ लगातार या बराबर होनेवाला। ४ सदा रहनेवाला। अविचल। स्थायी।
क्रि० वि० बराबर। सदा। हमेशा।
निरंध-वि० [सं०] १ भारी अंधा। २ महामूर्ख। ३ बहुत अँधेरा।
निरंभ-वि० [सं० निरम्भस्] १. निर्जल। २ बिना पानी पिये रह जानेवाला।
निरंश-वि० [सं०] १. जिसे उसका भाग न मिला हो। २ बिना अक्षांश का।
निरकेवल†-वि० [सं० निस् + केवल] १ खालिस। बिना मेल का। २ स्वच्छ।
निरक्षदेश-संज्ञा पुं० [सं०] भूमध्य रेखा के आस-पास के देश जिनमें रात और दिन बराबर होते हैं।
निरक्षन*-संज्ञा पुं० दे० "निरीक्षण"।
निरक्षर-वि० [सं०] १ अक्षर-शून्य। २ अनपढ़। मूर्ख।
निरक्ष-रेखा-संज्ञा स्त्री० [सं०] नाड़ीमंडल। निरक्षवृत्त। क्रांतिवृत्त।
निरखना*-क्रि० स० [सं० निरीक्षण] देखना। ताकना। अवलोकन करना।
निरग*-संज्ञा पुं० दे० "नृग"।
निरगुन*-वि० दे० "निर्गुण"।
निरचू-वि० [सं० निश्चिंत] जिसे फुरसत मिल गई हो। निश्चित। खाली।
निरच्छ*-वि० [सं० निरक्षि] अंधा।
निरजर-वि० [हिं० नि + सं० जरा] जो कभी जीर्ण या पुराना न हो।
निरजोस-संज्ञा पुं० [सं० निर्यास] १ निचोड़। २ निर्णय।
निरजोसी-वि० [हिं० निरजोस] १ निचोड़ निकालनेवाला। २ निर्णय करनेवाला।
निरझर*-संज्ञा पुं० दे० "निर्झर"।
निरत-वि० [सं०] किसी काम में लगा हुआ। तत्पर। लीन। मशगूल।
*‡-संज्ञा पुं० दे० "नृत्य"।
निरतना*-क्रि० स० [सं० नर्त्तन] नाचना।
निरधातु-वि० [सं० निर्धातु] शक्तिहीन।
निरधार*-संज्ञा पुं० दे० 'निर्धार"।

निरधारना–क्रि० स० [सं० निर्धारण] १. निश्चय करना। स्थिर करना। २. मन में धारण करना। समझना।
निरनुनासिक–वि० [सं०] (वर्ण) जिसका उच्चारण नाक के संबंध से न हो।
निरन्न–वि० [सं०] १. अन्नरहित। २. निराहार। जो अन्न न खाए हो।
निरन्ना–वि० [सं० निरन्न] निराहार।
निरपना*–वि० [सं० निर + हिं० अपना] १. जो अपना न हो। २. बेगाना। गैर।
निरपराध–वि० [सं०] अपराध-रहित। बेक़सूर। निर्दोष।
क्रि० वि० बिना कोई क़सूर किए।
निरपराधी*–वि० दे० "निरपराध"।
निरपेक्ष–वि० [सं०] [संज्ञा निरपेक्षा, निरपेक्षी] १. जिसे किसी बात की अपेक्षा या चाह न हो। बेपरवा। २. जो किसी पर निर्भर न हो। ३. अलग। तटस्थ।
निरबंसी–वि० [सं० निर्वंश] जिसे वंश या संतान न हो।
निरबल*–वि० दे० "निर्बल"।
निरबहना*–क्रि० अ० दे० "निभना"।
निरबेद*–संज्ञा पुं० [सं० निर्वेद ?] १. वैराग्य। २. ताप।
निरबेरा*–संज्ञा पुं० दे० "निबेरा"।
निरभिमान–वि० [सं०] जिसे अभिमान न हो। अहंकार-शून्य।
निरभिलाष–वि० [सं०] अभिलाषा-रहित।
निरभ्र–वि० [सं०] बिना बादल का।
निरमना*–क्रि० स० [सं० निर्माण] निर्माण करना। बनाना।
निरमर, निरमल*–वि० दे० "निर्मल"।
निरमान*–संज्ञा पुं० दे० "निर्माण"।
निरमाना*–क्रि० स० [सं० निर्माण] बनाना। तैयार करना। रचना।
निरमायल*–संज्ञा पुं० दे० "निर्माल्य"।
निरमूलना*–क्रि० स० [सं० निर्मूलन] १. निर्मूल करना। २. नष्ट करना।
निरमोल–वि० [सं० निर + हिं० मोल] १. अनमोल। अमूल्य। २. बहुत बढ़िया।
निरमोही*–वि० दे० "निर्मोही"।
निरय–संज्ञा पुं० [सं०] नरक।
निरयण–संज्ञा पुं० [सं०] अयन-रहित गणना। ज्योतिष में गणना की एक रीति।
निरर्थक–वि० [सं०] १. अर्थशून्य। बे-मानी। २. न्याय में एक निग्रहस्थान। ३. बिना मतलब का। व्यर्थ। ४. निष्फल।
निरवयव–वि० [सं०] निराकार।
निरवलंब–वि० [सं०] १. अवलंब-हीन। आधार-रहित। बिना सहारे। २. निराश्रय। जिसका कोई सहायक न हो।
निरवार–संज्ञा पुं० [हिं० निरवारना] १. निस्तार। छुटकारा। बचाव। २. छुड़ाने या सुलझाने का काम। ३. निबटेरा।
निरवारना*–क्रि० स० [सं० निवारण] १. टालना। रोकनेवाली वस्तु को हटाना। २. मुक्त करना। छुड़ाना। ३. छोड़ना। त्यागना। ४. गाँठ आदि छुड़ाना। सुलझाना। ५. निर्णय करना। तै करना।
निरवाह‡*–संज्ञा पुं० दे० "निर्वाह"।
निरशन–संज्ञा पुं० [सं०] भोजन न करना। लंघन। उपवास।
निरसंक*‡–वि० दे० "निःशंक"।
निरस–वि० [सं०] १. जिसमें रस न हो। रसविहीन। २. बद-जायका। फीका। ३. असार। निस्तत्त्व। ४. रूखा-सूखा।
निरसन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० निरसनीय, निरस्य] १. फेंकना। दूर करना। हटाना। २. खारिज करना। रद करना। ३. निराकरण। परिहार। ४. निकालना। ५. नाश। ६. वध।
निरस्त्र–वि० [सं०] अस्त्रहीन। बिना हथियार का।
निरहंकार–वि० [सं०] अभिमान-रहित।
निरहेतु*–वि० दे० "निर्हेतु"।
निरा–वि० [सं० निराश्रय] [स्त्री० निरी] १. विशुद्ध। बिना मेल का। खालिस। २. जिसके साथ और कुछ न हो। केवल। ३. निपट। नितांत। एकदम। बिलकुल।
निराई–संज्ञा स्त्री० [हिं० निराना] १. फ़सल

के पौधों के आस-पास उगनेवाले तृण, घास आदि दूर करना। २ निराने की मजदूरी।

निराकरण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० निराकरणीय, निराकृत] १ छाँटना। अलग करना। २ हटाना। दूर करना। ३ मिटाना। रद करना। ४ शमन। निवारण। परिहार। ५ खंडन। युक्ति या दलील को काटने का काम।

निराकार–वि० [सं०] जिसका कोई आकार न हो। जिसके आकार की भावना न हो। संज्ञा पुं० १ ईश्वर। २ आकाश।

निराकुल–वि० [सं०] १ जो आकुल न हो। जो घबराया न हो। २ बहुत व्याकुल। बहुत घबराया हुआ।

निराखर*†–वि० [सं० निरक्षर] १ जिसमें अक्षर न हो। बिना अक्षर का। २ मौन। चुप। ३ अपढ़। मूढ़।

निराट–वि० [हिं० निराला] एकमात्र। निरा। बिल्कुल। निपट।

निरादर–संज्ञा पुं० [सं०] आदर का अभाव। अपमान। बेइज्जती।

निराधार–वि० [सं०] १ जिसे सहारा न हो या जो सहारे पर न हो। २ जो प्रमाणों से पुष्ट न हो। अयुक्त। मिथ्या। झूठ। ३ जिसे या जिसमें जीविका आदि का सहारा न हो। ४ जो बिना अन्न-जल आदि के हो।

निराना–क्रि० स० [सं० निराकरण] फसल के पौधों के आस-पास की घास खोदकर दूर करना जिसमें पौधों की बाढ़ न रुके। नींदना। निकाना।

निरापद–वि० [सं०] १ जिसे कोई आफत या डर न हो। सुरक्षित। २ जिससे हानि या अनर्थ की आशंका न हो। ३ जहाँ किसी बात का डर या खतरा न हो।

निरापन*–वि० [सं० नि+हिं० अपना] जो अपना न हो। पराया। बेगाना।

निरापुन*–वि० दे० "निरापन"।

निरामय–वि० [सं०] नीरोग। तंदुरुस्त।

निरामिष–वि० [सं०] १ जिसमें मांस न मिला हो। २ जो मांस न खाय।

निरार–वि० [हिं० निराला] अलग। पृथक्।

निरालंब–वि० [सं०] १ बिना आलंब या सहारे का। निराधार। २ निराश्रय।

निरालस्य–वि० [सं०] जिसमें आलस्य न हो। तत्पर। फुरतीला। चुस्त।

निराला–संज्ञा पुं० [सं० निरालय] [स्त्री० निराली] एकांत स्थान। ऐसा स्थान जहाँ कोई न हो। वि० १ जहाँ कोई मनुष्य या बस्ती न हो। एकांत। निर्जन। २ विलक्षण। सब से भिन्न। अद्भुत। अजीब। ३ अनूठा। बहुत अपूर्व। बहुत बढ़िया।

निरावना†–क्रि० स० दे० "निराना"।

निरावलंब–वि० [सं०] बिना सहारे का।

निराश–वि० [हिं० नि+आशा] आशाहीन। जिसे आशा न हो। नाउम्मीद।

निराशा–संज्ञा स्त्री० [सं०] नाउम्मेदी।

निराशी*–वि० [सं० निराश] १ हताश। नाउम्मीद। २ उदासीन। विरक्त।

निराश्रय–वि० [सं०] १ आश्रयरहित। बिना सहारे का। २ असहाय। अशरण।

निरास*–वि० दे० "निराश"।

निरासी*–वि० [सं० निराश] १ दे० "निराशी"। २ उदास। बेरौनक।

निराहार–वि० [सं०] १ आहार-रहित। जो बिना भोजन के हो। २ जिसके अनुष्ठान में भोजन न किया जाता हो।

निरिंद्रिय–वि० [सं०] इंद्रिय शून्य। जिसे कोई इंद्रिय न हो।

निरिच्छना*–क्रि० स० [सं० निरीक्षण] देखना।

निरीक्षक–संज्ञा पुं० [सं०] १ देखनेवाला। २ देख-रेख करनेवाला।

निरीक्षण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० निरीक्षित, निरीक्ष्य, निरीक्ष्यमाण] १ देखना। दर्शन। २ देख-रेख। निगरानी। ३ देखने की मुद्रा या ढंग। चितवन।

निरीक्षा–संज्ञा स्त्री० [सं०] देखना।

निरीश्वरवाद–संज्ञा पुं० [सं०] वह सिद्धांत

कि कोई ईश्वर नहीं है।
निरीश्वरवादी–संज्ञा पुं० [सं०] जो ईश्वर का अस्तित्व न माने। नास्तिक।
निरीह–वि० [सं०] १. जो किसी बात के लिये प्रयत्न न करे। २. जिसे किसी बात की चाह न हो। ३. उदासीन। विरक्त। ४. शांतिप्रिय।
निरुआर†–संज्ञा पुं० दे० "निरुवार"।
निरुक्त–वि० [सं०] १. निश्चय रूप से कहा हुआ। व्याख्या किया हुआ। २. नियुक्त। ठहराया हुआ।
संज्ञा पुं० छः वेदांगों में से एक जिसमें यास्क मुनि की दी हुई वैदिक शब्दों के निघंटु की व्याख्या है। वेद का चौथा अंग।
निरुक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. किसी पद या वाक्य की ऐसी व्याख्या जिसमें व्युत्पत्ति आदि का पूरा कथन हो। २. एक काव्यालंकार जिसमें किसी शब्द का मनमाना अर्थ किया जाय, परंतु वह अर्थ समुचित हो।
निरुज*–वि० दे० "नीरुज"।
निरुत्तर–वि० [सं०] १. जिसका कुछ उत्तर न हो। लाजवाब। २. जो उत्तर न दे सके।
निरुत्साह–वि० [सं०] उत्साहहीन।
निरुद्ध–वि० [सं०] रुका या बँधा हुआ। संज्ञा पुं० योग में चित्त की वह अवस्था जिसमें वह अपनी कारणीभूत प्रकृति को प्राप्त होकर निश्चेष्ट हो जाता है।
निरुद्यम–वि० [सं०] [संज्ञा निरुद्यमता] जिसके पास कोई उद्यम न हो। उद्योग-रहित। बेकाम।
निरुद्यमी–संज्ञा पुं० [सं० निरुद्यमिन्] जो उद्यम न करता हो। बेकार। निकम्मा।
निरुद्योग–वि० [सं०] उद्योग-रहित। बेकार।
निरुपद्रव–वि० [सं०] जिसमें कोई उपद्रव न हो।
निरुपद्रवी–संज्ञा पुं० [सं० निरुपद्रविन्] जो उपद्रव न करे। शांत।
निरुपम–वि० [सं०] जिसकी उपमा न हो। उपमा-रहित। बेजोड़।
निरुपयोगी–वि० [सं०] जो उपयोग में न आ सके। व्यर्थ। निरर्थक।
निरुपाधि–वि० [सं०] १. उपाधि-रहित। बाधा-रहित। २. माया-रहित। संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्म।
निरुपाय–वि० [सं०] १. जो कुछ उपाय न कर सके। २. जिसका कोई उपाय न हो।
निरुवरना*†–क्रि० अ० [सं० निवारण] कठिनता आदि का दूर होना। सुलझना।
निरुवार†–संज्ञा पुं० [सं० निवारण] १. छुड़ाने का काम। मोचन। २. छुटकारा। बचाव। ३. सुलझाने का काम। ४. तै करना। निबटाना। ५. निर्णय। फ़ैसला।
निरुवारना*–क्रि० स० [हिं० निरुवार] १. छुड़ाना। मुक्त करना। २. सुलझाना। उलझन मिटाना। ३. तै करना। निबटाना। ४. निर्णय करना। फ़ैसला करना।
निरूढ़–वि० [सं०] १. उत्पन्न। २. प्रसिद्ध। विख्यात। ३. अविवाहित। कुँआरा।
निरूढ़-लक्षणा–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह लक्षणा जिसमें शब्द का गृहीत अर्थ रूढ़ हो गया हो; अर्थात् वह केवल प्रसंग या प्रयोजन-वश ही न ग्रहण किया गया हो।
निरूढ़ा–संज्ञा स्त्री० दे० "निरूढ़-लक्षणा"।
निरूप–वि० [हिं० नि+रूप] १. रूप-रहित। निराकार। २. कुरूप। बदशकल।
निरूपक–वि० [सं०] किसी विषय का निरूपण करनेवाला।
निरूपण–संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रकाश। २. किसी विषय का विवेचनापूर्वक निर्णय। विचार। ३. निदर्शन।
निरूपना*–क्रि० अ० [सं० निरूपण] निर्णय करना। ठहराना। निश्चित करना।
निरूपित–वि० [सं०] जिसका निरूपण या निर्णय हो चुका हो।
निरेखना*–क्रि० स० दे० "निरखना"।
निरै*–संज्ञा पुं० [सं० निरय] नरक।
निरोग, निरोगी†–संज्ञा पुं० [सं० नीरोग] वह व्यक्ति जिसे कोई रोग न हो। स्वस्थ।
निरोध–संज्ञा पुं० [सं०] १. रोक।

रोध। रुकावट। बंधन। २. घेरा। घेर लेना। ३. नाश। ४. योग में चित्त की समस्त वृत्तियों को रोकना जिसमें अभ्यास और वैराग्य की आवश्यकता होती है।
निरोधक–वि० [सं०] रोकनेवाला।
निर्ख–संज्ञा पुं० [फ़ा०] भाव। दर।
निर्गंध–वि० [सं०] [संज्ञा निर्गंधता] जिसमें किसी प्रकार की गंध न हो। गंधहीन।
निर्गत–वि० [सं०] [स्त्री० निर्गता] निकला हुआ। बाहर आया हुआ।
निर्गम–संज्ञा पुं० [सं०] निकास।
निर्गमना–क्रि० अ० [सं० निर्गमन] निकलना।
निर्गुंडी–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का क्षुप जिसकी जड़ औषध के काम में आती है। सँभालू। सिंदुवार।
निर्गुण–संज्ञा पुं० [सं०] परमेश्वर।
वि० [सं०] [संज्ञा निर्गुणता] १. जो सत्व, रज और तम तीनों गुणों से परे हो। २. जिसमें कोई अच्छा गुण न हो। बुरा।
निर्गुणिया–वि० [सं० निर्गुण+इया (प्रत्य०)] वह जो निर्गुण ब्रह्म की उपासना करता हो।
निर्गुणी–वि० [सं० निर्गुण] मूर्ख।
निर्घंट–संज्ञा पुं० [सं०] शब्द या ग्रंथ-सूची।
निर्घृण–वि० [सं०] १. जिसे गंदी वस्तुओं में या बुरे कामों से घृणा या लज्जा न हो। २. अति नीच। निंदित। ३ निर्दय।
निर्घोष–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० निर्घोषित] शब्द। आवाज।
वि० [सं०] शब्द-रहित।
निर्छल*†–वि० दे० "निश्छल"।
निर्जन–वि० [सं०] वह स्थान जहाँ कोई मनुष्य न हो। सुनसान। एकांत।
निर्जल–वि० [सं०] १. बिना जल का। २. जिसमें जल पीने का विधान न हो।
निर्जला एकादशी–संज्ञा स्त्री० [सं०] जेठ सुदी एकादशी तिथि, जिस दिन लोग निर्जल व्रत रखते हैं।
निर्जीव–वि० [सं०] १. जीव-रहित। बेजान मृतक। २ अशक्त या उत्साहहीन।
निर्झर–संज्ञा पुं० [सं०] पानी का झरना। चश्मा।
निर्णय–संज्ञा पुं० [सं०] १. औचित्य और अनौचित्य आदि का विचार करके किसी विषय के दो पक्षों में से एक पक्ष को ठीक ठहराना। निश्चय। २. वादी और प्रतिवादी की बातों को सुनकर उनके सत्य अथवा असत्य होने के संबंध में कोई विचार स्थिर करना। फैसला। निबटारा।
निर्णयोपमा–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें उपमेय और उपमान के गुणों और दोषों की विवेचना की जाती है।
निर्णीत–वि० [सं०] निर्णय किया हुआ। जिसका निर्णय हो चुका हो।
निर्त*†–संज्ञा पुं० दे० "नृत्य"।
निर्तक*†–संज्ञा पुं० दे० "नर्तक"।
निर्तना*†–क्रि० अ० [सं० नृत्य] नाचना।
निर्दई*†–वि० दे० "निर्दय"।
निर्दय–वि० [सं०] निष्ठुर। बेरहम।
निर्दयता–संज्ञा स्त्री० [सं०] निर्दय होने की क्रिया या भाव। बेरहमी। निष्ठुरता।
निर्दयी*†–वि० दे० "निर्दय"।
निर्दहना*†–क्रि० स० [सं० दहन] जलाना।
निर्दिष्ट–वि० [सं०] १ जिसका निर्देश हो चुका हो। २ बतलाया या नियत किया हुआ। ठहराया हुआ।
निर्दूषण*†–वि० दे० 'निर्दोष"।
निर्देश–संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी पदार्थ को बतलाना। २ ठहराना या निश्चित करना। ३ आज्ञा। हुक्म। ४ कथन। ५ उल्लेख। ज़िक्र। ६ वर्णन। ७ नाम।
निर्दोष–वि० [सं०] १. जिसमें कोई दोष न हो। बे-ऐब। बे-दाग़। २ बे-क़सूर।
निर्दोषता–संज्ञा स्त्री० [सं० निर्दोष+ता (प्रत्य०)] निर्दोष होने की क्रिया या भाव।
निर्दोषी–वि० दे० "निर्दोष"।
निर्द्वंद, निर्द्वंद्व–वि० [सं०] १. जिसका कोई विरोध करनेवाला न हो। २. जो राग, द्वेष, मान, अपमान आदि द्वंद्वों से

रहित या परे हो। ३. स्वच्छंद।
निर्धन–वि० [सं०] धनहीन। गरीब।
निर्धनता–संज्ञा स्त्री० [सं०] ग़रीबी।
निर्धार, निर्धारण–संज्ञा पुं० [सं०] १. ठहराना या निश्चित करना। २. निश्चय। निर्णय। ३. न्याय के अनुसार किसी एक जाति के पदार्थों में से गुण या कर्म आदि के विचार से कुछ को अलग करना।
निर्धारना–क्रि० स० [सं० निर्धारण] निश्चित करना। निर्धारित करना। ठहराना।
निर्धारित–वि० [सं०] निश्चित किया हुआ।
निर्निमेष–क्रि० वि० [सं०] बिना पलक भपकाए। एकटक।
वि० १. जो पलक न गिरावे। २. जिसमें पलक न गिरे।
निर्बंध–संज्ञा पुं० [सं०] १. रुकावट। अड़चन। २. ज़िद। हठ। ३. आग्रह।
निर्बल–वि० [सं०] बलहीन। कमज़ोर।
निर्बलता–संज्ञा स्त्री० [सं०] कमज़ोरी।
निर्बहना–क्रि० अ० [सं० निर्वहन] १. पार होना। अलग होना। दूर होना। २. निर्वाह होना। ३. क्रम का चलना। निभना। पालन होना।
निर्बुद्धि–वि० [सं०] बेवक़ूफ़। मूर्ख।
निर्बोध–वि० [सं०] जिसे अच्छे बुरे का कुछ भी ज्ञान न हो। अज्ञान। अनजान।
निर्भय–वि० [सं०] जिसे कोई डर न हो। निडर। बेखौफ।
निर्भयता–संज्ञा स्त्री० [सं०] निडरपन। निडर होने का भाव या अवस्था।
निर्भर–वि० [सं०] १. पूर्ण। भरा हुआ। २. युक्त। मिला हुआ। ३. अवलंबित। आश्रित। मुनहसर।
निर्भीक–वि० [सं०] बेडर। निडर।
निर्भीकता–संज्ञा स्त्री० [सं०] निर्भीक होने की क्रिया या भाव।
निर्भ्रम–वि० [सं०] भ्रमरहित। शंकारहित। क्रि० वि० निधड़क। बेखटके।
निर्भ्रांत–वि० [सं०] १. भ्रम-रहित। जिसमें कोई संदेह न हो। २. जिसको कोई भ्रम न हो।

निर्मना*†–क्रि० स० दे० "निर्माना"।
निर्मम–वि० [सं०] जिसे ममता न हो। जिसको कोई वासना न हो।
निर्मल–वि० [सं०] १. मल-रहित। साफ़। स्वच्छ। २. पाप-रहित। शुद्ध। पवित्र। ३. निर्दोष। कलंकहीन।
निर्मलता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सफ़ाई। स्वच्छता। २. निष्कलंकता। ३. शुद्धता।
निर्मला–संज्ञा पुं० [सं० निर्मल] नानकपंथी एक साधु-सम्प्रदाय।
निर्मली–संज्ञा स्त्री० [सं० निर्मल] १. एक प्रकार का सदाबहार वृक्ष, जिसके पके हुए बीजों का औषध-रूप में तथा गँदला पानी साफ़ करने के लिये व्यवहार होता है। चाकसू। २. रीठे का वृक्ष या फल।
निर्माण–संज्ञा पुं० [सं०] १. रचना। बनावट। २. बनाने का काम।
निर्माता–संज्ञा पुं० [सं०] निर्माण करनेवाला। बनानेवाला। जो बनावे।
निर्मात्रिक–वि० [सं०] बिना मात्रा का।
निर्मान–वि० [हिं० नि+मान] बेहद। अपार। संज्ञा पुं० दे० "निर्माण"।
निर्माना*–क्रि० स० [सं० निर्माण] बनाना।
निर्मायल*–संज्ञा पुं० दे० "निर्माल्य"।
निर्माल्य–संज्ञा पुं० [सं०] वह पदार्थ जो किसी देवता पर चढ़ चुका हो।
निर्मित–वि० [सं०] बनाया हुआ। रचित।
निर्मूल–वि० [सं०] १. जिसमें जड़ न हो। बिना जड़ का। २. जड़ से उखाड़ा हुआ। ३. बे-बुनियाद। बे-जड़। ४. जो सर्वथा नष्ट हो गया हो।
निर्मूलन–संज्ञा पुं० [सं०] निर्मूल होना या करना। विनाश।
निर्मोक–संज्ञा पुं० [सं०] १. साँप की केंचुली। २. शरीर के ऊपर की खाल। ३. आकाश।
निर्मोल*†–वि० [सं० निः+हिं० मोल] जिसका मूल्य बहुत अधिक हो। अमूल्य।
निर्मोह–वि० [सं०] जिसके मन में मोह या ममता न हो।

निर्मोहिनी–वि० स्त्री० [हिं० निर्मोही+इनी (प्रत्य०)] जिसके चित्त में ममता या दया न हो। निर्दय।
निर्मोही–वि० [सं० निर्मोह] जिसके हृदय में मोह या ममता न हो। निर्दय।
निर्यातन–संज्ञा पुं० [सं०] १ बदला चुकाना। २ प्रतीकार। ३ मार डालना।
निर्यास–संज्ञा पुं० [सं०] १ वृक्षों या पौधों में से आप से आप अथवा उनका तना आदि चीरने से निकलनेवाला रस। २ गोंद। ३ बहना या भरना। क्षरण।
निर्लज्ज–वि० [सं०] बेशर्म। बेहया।
निर्लज्जता–संज्ञा स्त्री० [सं०] बेशर्मी। बेहयाई। निर्लज्ज होने का भाव।
निर्लिप्त वि० [सं०] १ जो किसी विषय में आसक्त न हो। २ जो लिप्त न हो।
निर्लोभ–वि० [सं०] जिसे लोभ न हो।
निर्वंश–वि० [सं०] [संज्ञा निर्वंशता] जिसका वंश नष्ट हो गया हो।
निर्वहण–संज्ञा पुं० [सं०] १ निबाह। गुज़र। निर्वाह। २ समाप्ति।
निर्वहना*†–क्रि० अ० [सं० निर्वहन] परंपरा का पालन होना। निभना। चलना। परंपरा का चला चलना। निबाह। २ किसी बात के अनुसार बराबर आचरण। पालन। ३ समाप्ति। पूरा होना।
निर्वाहना*–क्रि० अ० [सं० निर्वाह+ना (हिं० प्रत्य०)] निर्वाह करना।
निर्वाचक–संज्ञा पुं० [सं०] वह जो निर्वाचन करे या चुने। चुननेवाला।
निर्वाचन–संज्ञा पुं० [सं०] किसी काम के लिये बहुतों में से एक या अधिक को चुनना।
निर्वाचित–वि० [सं०] चुना हुआ।
निर्वाण–वि० [सं०] १ बुझा हुआ (दीपक, अग्नि आदि)। २ अस्त। डूबा हुआ। ३ शांत। धीमा पड़ा हुआ। ४ मृत।
संज्ञा पुं० १ बुझना। ठंडा होना। २ समाप्ति। न रह जाना। ३ अस्त। गमन। डूबना। ४ शांति। ५ मुक्ति।
निर्वासन–संज्ञा पुं० [सं०] १ मार डालना। वध। २ गाँव, शहर या देश आदि से दंड-स्वरूप बाहर निकाल देना। देश-निकाला। ३ निकालना।
निर्वाह–संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी क्रम या
निर्विकल्प–वि० [सं०] १ जो विकल्प, परिवर्त्तन या प्रभेदों आदि से रहित हो। २ स्थिर। निश्चित।
निर्विकल्प समाधि–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की समाधि जिसमें ज्ञेय, ज्ञान और ज्ञाता आदि का कोई भेद नहीं रह जाता।
निर्विकार–वि० [सं०] जिसमें किसी प्रकार का विकार या परिवर्त्तन न हो।
निर्विघ्न–वि० [सं०] विघ्न-बाधा-रहित।
क्रि० वि० बिना किसी प्रकार के विघ्न के।
निर्विवाद–वि० [सं०] जिसमें कोई विवाद न हो। बिना झगड़े का।
निर्विशेष–संज्ञा पुं० [सं०] परमात्मा।
निर्विषी–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक घास जिसकी जड़ का व्यवहार अनेक प्रकार के विषों का नाश करने के लिये होता है। जदवार।
निर्बीज–वि० [सं०] १ बीजरहित। जिसमें बीज न हो। २ जो कारण से रहित हो।
निर्वीर्य्य–वि० [सं०] वीर्य्यहीन। बल या तेजरहित। कमजोर। निस्तेज।
निर्व्यलीक–वि० [सं०] निष्कपट।
निर्व्याज–वि० [सं०] १ निष्कपट। छल-रहित। २ बाधा-रहित।
निर्हेतु–वि० [सं०] जिसमें कोई हेतु न हो।
निलज्ज†–वि० दे० "निर्लज्ज"।
निलज्जता*–संज्ञा स्त्री० [सं० निर्लज्जता] निर्लज्जता। बेशर्मी। बेहयाई।
निलज्जी*†–वि० स्त्री० [हिं० निर्लज्ज] निर्लज्जा। बेशरम। बेहया। (स्त्री)।
निलय–संज्ञा पुं० [सं०] १ मकान। घर। २ स्थान। जगह।
निलहा–वि० [हिं० नील] १ नीलवाला। जैसे—निलहा गोरा। २ नील संबंधी।
निवसन–संज्ञा पुं० [सं० नि+वसन] १ गाँव। २ घर। ३ वस्त्र।

निवसना–क्रि० अ० [सं० निवसन] रहना। निवास करना।
निवह–संज्ञा पुं० [सं०] १. समूह। यूथ। २. सात वायुओं में से एक वायु।
निवाई–वि० [सं० नव] १. नवीन। नया। २. अनोखा। विलक्षण।
निवाज–वि० [फ़ा०] कृपा करनेवाला।
निवाजना*†–क्रि० स० [फा० निवाज] अनुग्रह करना। कृपा करना।
निवाड़ा–संज्ञा पुं० [देश०] १. छोटी नाव। २. नाव की एक क्रीडा जिसमें उसे बीच में ले जाकर चक्कर देते हैं। नावर।
निवार–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० नवार] बहुत मोटे सूत की बुनी हुई चौड़ी पट्टी जिससे पलंग आदि बुने जाते हैं। निवाड़। नेवार। संज्ञा पुं० [सं० नीवार] तिन्नी धान।
निवारक–वि० [सं०] १. रोकनेवाला। रोधक। २. दूर करनेवाला। मिटानेवाला।
निवारण–संज्ञा पुं० [सं०] १. रोकने की क्रिया। २. हटाने या दूर करने की क्रिया। ३. निवृत्ति। छुटकारा।
निवारना*–क्रि० स० [सं० निवारण] १. रोकना। दूर करना। हटाना। २. बचाना। रक्षा के साथ काटना या बिताना। ३. निषेध करना। मना करना।
निवारी–संज्ञा स्त्री० [सं० नेपाली या नेमाली] १. जूही की जाति का एक फैलनेवाला झाड़ या पौधा। २. इस पौधे का फूल।
निवाला–संज्ञा पुं० [फा०] कौर। ग्रास।
निवास–संज्ञा पुं० [सं०] १. रहने की क्रिया या भाव। २. रहने का स्थान। ३. घर।
निवासस्थान–संज्ञा पुं० [सं०] १. रहने का स्थान। २. घर। मकान।
निवासी–संज्ञा पुं० [सं० निवासिन्] [स्त्री० निवासिनी] रहनेवाला। बसनेवाला। वासी।
निविड़–वि० [सं०] १. घना। घन। घोर। २. गहरा।
निविष्ट–वि० [सं०] १. जिसका चित्त एकाग्र हो। २. एकाग्र। ३. लपेटा हुआ। ४. घुसा या घुसाया हुआ। ५. बाँधा हुआ।
निवृत्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मुक्ति। छुटकारा। प्रवृत्ति का उलटा। २. मोक्ष।
निवेद*†–संज्ञा पुं० दे० "नैवेद्य"।
निवेदक–संज्ञा पुं० [सं०] निवेदन करनेवाला। प्रार्थी।
निवेदन–संज्ञा पुं० [सं०] १. विनय। विनती। प्रार्थना। २. समर्पण।
निवेदना*†–क्रि० स० [हिं० निवेदन] १. विनती करना। प्रार्थना करना। २. कुछ भोज्य पदार्थ आगे रखना। नैवेद्य चढ़ाना। ३. अर्पित करना।
निवेदित–वि० [सं०] १. अर्पित किया हुआ। २. निवेदन किया हुआ।
निवेरना*†–क्रि० स० दे० "निबटाना"।
निवेरा*–वि० [हिं० निबेरना] १. चुना हुआ। छाँटा हुआ। २. नवीन। अनोखा।
निवेश–संज्ञा पुं० [सं०] १. विवाह। २. डेरा। खेमा। ३. प्रवेश। ४. घर।
निशंक–वि० [सं० निःशंक] जिसे किसी बात की शंका या भय न हो। निर्भय। निडर।
निशंग–संज्ञा पुं० दे० "निषंग"।
निश–संज्ञा स्त्री० दे० "निशा"।
निशांत–संज्ञा पुं० [सं०] १. रात्रि का अंत। २. प्रभात। तड़का।
निशांध–वि० [सं०] जिसे रात को न सूझे।
निशा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रात्रि। रजनी। २. हरिद्रा। हलदी। ३. दारुहरिद्रा।
निशाकर–संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा। चाँद। २. कुक्कुट। मुरगा।
निशाखातिर–संज्ञा स्त्री० [अ० खातिर+फा० निशाँ (खातिरनिशाँ)] तसल्ली। दिलजमई।
निशाचर–संज्ञा पुं० [सं०] १. राक्षस। २. शृगाल। गीदड़। ३. उल्लू। ४. सर्प। ५. चक्रवाक। ६. भूत। ७. चोर। ८. वह जो रात को चले।
निशाचरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. राक्षसी। २. कुलटा। ३. अभिसारिका नायिका।
निशाधीश–संज्ञा पुं० दे० "निशापति"।
निशान–संज्ञा पुं० [फा०] १. लक्षण जिससे कोई चीज़ पहचानी जाय। चिह्न।

२. किसी पदार्थ से अंकित किया हुआ चिह्न। ३ शरीर अथवा और किसी पदार्थ पर बना हुआ स्वाभाविक या और किसी प्रकार का चिह्न, दाग या धब्बा। ४ वह चिह्न जो अपढ़ आदमी अपने हस्ताक्षर के बदले में किसी कागज आदि पर बनाता है। ५ वह लक्षण या चिह्न जिससे किसी प्राचीन या पहले की घटना अथवा पदार्थ का परिचय मिले।
यौ०—नाम निशान = १ किसी प्रकार का चिह्न या लक्षण। २ अस्तित्व या लेश। बचा हुआ थोड़ा अंश।
६ पता। ठिकाना।
मुहा०—निशान देना=असामी को सम्मन आदि तामील करने के लिये पहचनवाना।
७ समुद्र में या पहाड़ों आदि पर बना हुआ वह स्थान जहाँ लोगों को मार्ग आदि दिखाने के लिये कोई प्रयोग किया जाता हो। ८ दे० "लक्षण"। ९ दे० 'निशाना"। १० दे० "निशानी"।
११ ध्वजा। पताका। झंडा।
मुहा०—किसी बात का निशान उठाना या खड़ा करना=किसी काम में अगुआ या नेता बनकर लोगों को अपना अनुयायी बनाना।
निशानची—संज्ञा पु० [फा० निशान + ची (प्रत्य०)] वह जो किसी राजा, सेना या दल आदि के आगे झंडा लेकर चलता हो। निशान-बरदार।
निशानदेही—संज्ञा स्त्री० [फा० निशान+हिं० देना या फा० देह=देना] असामी को सम्मन आदि की तामील के लिये पहचनवाने की क्रिया।
निशापति—संज्ञा पु० [सं०] चद्रमा।
निशाना—संज्ञा पुं० [फा०] १ वह जिस पर ताककर किसी अस्त्र या शस्त्र आदि का वार किया जाय। लक्ष्य। २ किसी पदार्थ को लक्ष्य बनाकर उसकी ओर किसी प्रकार का वार करना।
मुहा०—निशाना बाँधना=वार करने के लिये अस्त्र आदि को इस प्रकार साधना जिसमें ठीक लक्ष्य पर वार हो। निशाना मारना या लगाना=ताककर अस्त्र आदि का वार करना। ३ वह जिस पर लक्ष्य करके कोई व्यंग्य या बात कही जाय।
निशानाथ—संज्ञा पु० [सं०] चद्रमा।
निशानी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ स्मृति के उद्देश्य से दिया अथवा रखा हुआ पदार्थ। यादगार। स्मृति चिह्न। २ वह चिह्न जिससे कोई चीज़ पहचानी जाय। निशान।
निशामणि—संज्ञा पु० [सं०] चद्रमा।
निशास्ता—संज्ञा पु० [फा०] १ गेहूँ को भिगोकर उसका निकाला और जमाया हुआ सत या गूदा। २ माड़ी। कलफ़।
निशि—संज्ञा स्त्री० [सं०] रात। रात्रि।
निशिकर—संज्ञा पु० [सं०] चद्रमा।
निशिचर—संज्ञा पु० दे० "निशाचर"।
निशिचरराज*—संज्ञा पु० [सं०] विभीषण।
निशिनाथ—संज्ञा पु० दे० "निशानाथ"।
निशिपाल—संज्ञा पु० [सं०] १. चद्रमा। २ एक प्रकार का छद।
निशिवासर*—संज्ञा पुं० [सं०] रात-दिन। सदा। सर्वदा। हमेशा।
निशीथ—संज्ञा पु० [सं०] रात।
निशीथिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] रात।
निशुंभ—संज्ञा पुं० [सं०] १ वध। २ हिंसा। ३ एक असुर जो शुभ तथा निमुचि का भाई था और दुर्गा के हाथ से मारा गया था।
निशुंभमर्दिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।
निश्चय—संज्ञा पुं० [सं०] १. ऐसी धारणा जिसमें कोई संदेह न हो। निश्चयात्मक ज्ञान। २ विश्वास। यकीन। ३ निर्णय। ४ पक्का विचार। दृढ़ संकल्प। पूरा इरादा। ५ एक अर्थालंकार जिसमें अन्य विषय का निषेध होकर प्रकृत या यथार्थ विषय का स्थापन होता है।
निश्चयात्मक—वि० [सं०] जो बिल्कुल निश्चित हो। ठीक-ठीक। असंदिग्ध।
निश्चल—वि० [सं०] १ जो अपने स्थान से न हटे। अचल। अटल। २ स्थिर।

निश्चलता–संज्ञा स्त्री० [सं०] निश्चल होने का भाव। स्थिरता। दृढ़ता।
निश्चित–वि० [सं०] जिसे कोई चिंता या फ़िक्र न हो। चितारहित। बे-फ़िक्र।
निश्चितई* †–संज्ञा स्त्री० दे० "निश्चिंतता"।
निश्चिंतता–संज्ञा स्त्री० [सं०] निश्चित होने का भाव। बे-फ़िक्री।
निश्चित–वि० [सं०] १. जिसके संबंध में निश्चय हो। तै किया हुआ। निर्णीत। २. जिसमें कोई फेर-बदल न हो सके। दृढ़। पक्का।
निश्चेष्ट–वि० [सं०] १. बेहोश। अचेत। चेष्टारहित। २. निश्चल। स्थिर।
निश्चै*–संज्ञा पुं० दे० "निश्चय"।
निश्छल–वि० [सं०] छलरहित। सीधा।
निश्रेणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सीढ़ी। जीना। २. मुक्ति।
निश्रेयस–संज्ञा पुं० [सं० निःश्रेयस्] १. मोक्ष। २. दुःख का अत्यंत अभाव। ३. कल्याण।
निश्वास–संज्ञा पुं० [सं०] नाक या मुँह के बाहर निकलनेवाला श्वास।
निश्शंक–वि० [सं०] १. निडर। निर्भय। २. संदेह-रहित। जिसमें शंका न हो।
निश्शेष–वि० [सं०] जिसमें से कुछ भी बाक़ी न बचा हो। जिसका कुछ भी अव-शिष्ट न हो।
निषंग–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० निषंगी] १. तूण। तूणीर। तरकश। २. खड्ग।
निषध–संज्ञा पुं० [सं०] १. पुराणानुसार एक पर्वत जो हरिवर्ष की सीमा पर है। २. हरिवंश के अनुसार रामचंद्र के प्रपौत्र और कुश के पौत्र का नाम। ३. पुराणा-नुसार एक देश का प्राचीन नाम जो विंध्याचल पर्वत पर था।
निषधाभास–संज्ञा पुं० [सं०] अलंकार के पाँच भेदों में से एक। आक्षेप।
निषाद–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक बहुत पुरानी अनार्य्य-जाति जो भारत में आर्य जाति के आने से पहले निवास करती थी। २. एक प्राचीन देश जो संभवतः शृंगवेर-पुर के चारों ओर था। ३. संगीत में सातवाँ और सबसे ऊँचा स्वर।
निषादी–संज्ञा पुं० [सं० निषादिन्] हाथी-वान। महावत।
निषिद्ध–वि० [सं०] १. जिसका निषेध किया गया हो। जिसके लिये मनाही हो। २. खराब। बुरा। दूषित।
निषेध–संज्ञा पुं० [सं०] १. वर्जन। मनाही। न करने का आदेश। २. बाधा। रुकावट।
निषेधक–संज्ञा पुं० [सं०] मना करनेवाला।
निषेधित–वि० दे० "निषिद्ध"।
निष्कंटक–वि० [सं०] जिसमें किसी प्रकार की बाधा, आपत्ति या झंझट आदि न हो। बिना खटके का। निर्विघ्न।
निष्क–संज्ञा पुं० [सं०] १. वैदिक काल का एक प्रकार का सोने का सिक्का या मोहर, भिन्न भिन्न समयों में जिसका मान भिन्न भिन्न था। २. प्राचीन काल में चाँदी की एक प्रकार की तौल जो चार सुवर्ण के बराबर होती थी। ३. वैद्यक में चार माशे की तौल। टंक। ४. सुवर्ण। ५. हीरा।
निष्कपट–वि० [सं०] निश्छल। छलरहित। सीधा। सरल।
निष्कपटता–संज्ञा स्त्री० [सं०] निष्कपट होने का भाव। सरलता। सीधापन।
निष्कर्म–वि० [सं० निष्कर्मन्] अकर्मा। जो कामों में लिप्त न हो।
निष्कर्ष–संज्ञा पुं० [सं०] १. निश्चय। २. खुलासा। तत्त्व। ३. निचोड़। सार।
निष्कलंक–वि० [सं०] निर्दोष। बे-ऐब।
निष्काम–वि० [सं०] [संज्ञा निष्कामता] १. (वह मनुष्य) जिसमें किसी प्रकार की कामना, आसक्ति या इच्छा न हो। २. (वह काम) जो बिना किसी प्रकार की कामना या इच्छा के किया जाय।
निष्कारण–वि० [सं०] १. बिना कारण। बे-सबब। २. व्यर्थ। वृथा।
निष्कासन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० निष्का-सित] निकालना। बाहर करना।
निष्क्रमण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० निष्क्रांत]

१ बाहर निकलना। २ एक संस्कार जिसमें जब बालक चार महीने का होना है, तब उसे घर से बाहर निकालकर सूर्य का दर्शन कराया जाता है।

निष्क्रय–संज्ञा पु० [सं०] १ वेतन। तनखाह। २ विनिमय। बदला। ३ बिक्री।

निष्क्रिय–वि० [सं०] जिसमें कोई क्रिया या व्यापार न हो। निश्चेष्ट।

यौ०—निष्क्रिय प्रतिरोध = किसी अनुचित कार्य या आज्ञा का वह विरोध जिसमें विरोध करनेवाला उचित काम करता रहता है और दंड की परवा नहीं करता।

निष्क्रियता–संज्ञा स्त्री० [सं०] निष्क्रिय होने का भाव या अवस्था।

निष्ठ–वि० [सं०] १ स्थित। ठहरा हुआ। २ तत्पर। लगा हुआ। ३ जिसमें किसी के प्रति श्रद्धा या भक्ति हो।

निष्ठा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्थिति। अवस्था। ठहराव। २ निर्वाह। ३ चित्त का जमना। ४ विश्वास। निश्चय। ५ धर्म्म, गुरु या बड़े आदि के प्रति श्रद्धा भक्ति। पूज्य बुद्धि। ६ नाश। ७ ज्ञान की वह चरमावस्था जिसमें आत्मा और ब्रह्म की एकता हो जाती है।

निष्ठावान्–वि० [सं० निष्ठावत्] जिसमें निष्ठा या श्रद्धा हो।

निष्ठीवन–संज्ञा पु० [सं०] थूक।

निष्ठुर–वि० [सं०] [स्त्री० निष्ठुरा] १ कठिन। कड़ा। सख्त। २ क्रूर। बेरहम।

निष्ठुरता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कड़ाई। सख्ती। कठोरता। २ निर्दयता। क्रूरता।

निष्णात–वि० [सं०] किसी बात का पूरा पंडित। विज्ञ। निपुण।

निष्पंद–वि० [सं०] जिसमें किसी प्रकार का कंप न हो।

निष्पक्ष–वि० [सं०] [संज्ञा निष्पक्षता] जो किसी के पक्ष में न हो। पक्षपात रहित।

निष्पत्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ समाप्ति। अंत। २ सिद्धि। परिपाक। ३ निर्वाह। ४ मीमांसा। ५ निश्चय। निर्धारण।

निष्पन्न–वि० [सं०] जो समाप्त या पूरा हो चुका हो।

निष्पीडन–संज्ञा पु० [सं०] निचोड़ना।

निष्प्रभ–वि० [सं०] जिसमें किसी प्रकार की प्रभा या चमक न हो। प्रभाशून्य।

निष्प्रयोजन–वि० [सं०] १ जिसमें कोई मतलब न हो। स्वार्थशून्य। २ व्यर्थ।
क्रि० वि० १ बिना अर्थ या मतलब के। २ व्यर्थ। फजूल।

निष्प्रेही*–वि० [सं० निस्पृह] निस्पृह।

निष्फल–वि० [सं०] जिसका कोई फल न हो। व्यर्थ। निरर्थक। बे फायदा।

निसंक†–वि० दे० "निश्शंक"।

निसँठ–वि० [हिं० नि+सँठ=पूँजी] गरीब।

निसंस*†–वि० [सं० नृशंस] क्रूर।
वि०[हिं० नि+साँस] मुरदा सा। मृतकवत्।

निससना*–क्रि० अ० [सं० निःश्वास] हाँफना। निःश्वास लेना।

निस*†–संज्ञा स्त्री० दे० "निशा"।

निसक–वि० [सं० निःशक्त] अशक्त। कमजोर। दुर्बल।

निसकर†*–संज्ञा पु० दे० "निशाकर"।

निसत*‡–वि० [सं० निःसत्य] असत्य।

निसतरना*†–क्रि० अ० [सं० निस्तार] निस्तार पाना। छुटकारा पाना।

निसतारना–क्रि० स० [सं० निस्तार] निस्तार करना। मुक्त करना।

निसद्योस*†–क्रि० वि० [सं० निशि+दिवस] रात दिन। नित्य। सदा।

निसनेहा*–संज्ञा स्त्री० दे० "निःस्नेह"।

निसबत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ संबंध। लगाव। ताल्लुक। २ मँगनी। विवाह-संबंध की बात। ३ तुलना। मुकाबला।

निसयाना*–वि०[हिं० नि+सयाना] जिसके होश-हवास ठिकाने न हों।

निसरना*–क्रि० अ० दे० "निकलना"।

निसर्ग–संज्ञा पु० [सं०] १ स्वभाव। प्रकृति। २ रूप। आकृति। ३ दान। ४ सृष्टि।

निसवादला‡*–वि० [सं० निःस्वाद] स्वाद-रहित। जिसमें कोई स्वाद न हो।

निसवासर*†–संज्ञा पुं० [सं० निशिवासर] रात और दिन।
क्रि० वि० नित्य। सदा। हमेशा।
निसस*†–वि० [सं० निःश्वास] श्वास-रहित। अचेत। बेहोश।
निसांक‡–वि० दे० "निःशंक"।
निसाँस, निसाँसा*†–संज्ञा पुं० [सं० निः+श्वास] ठंढी साँस। लंबी साँस।
वि० बेदम। मृतकप्राय।
निसा–संज्ञा स्त्री० [निशाखातिर ?] संतोष
मुहा०—निसा भर=जी भर के।
*संज्ञा स्त्री० दे० "निशा"।
निसान–संज्ञा पुं० [फा० निशान] १. दे० "निशान"। २. नगाड़ा। धौंसा।
निसानन*†–संज्ञा पुं० [सं० निशानन] संध्या का समय। प्रदोष-काल।
निसाफ*†–संज्ञा पुं० दे० "इनसाफ़"।
निसार–संज्ञा पुं० [अ०] निछावर। सदका।
*†वि० दे० "निस्सार"।
निसारना†–क्रि० स० दे० "निकालना"।
निसास*–संज्ञा पुं० [सं० निःश्वास] गहरी या ठंढी साँस।
वि० [हिं० निः+साँस] विगतश्वास। बे-दम।
निसासी*–वि० [सं० निःश्वास] जिसका श्वास न चलता हो। बे-दम।
निसि–संज्ञा स्त्री० [सं० निशि] १. दे० "निशि"। २. एक वर्णवृत्त।
निसिकर–संज्ञा पुं० दे० "निशिकर"।
निसिचर*†–संज्ञा पुं० दे० "निशाचर"।
निसिचारी*–संज्ञा पुं० दे० "निशाचर"।
निसिदिन*–क्रि० वि० [सं० निशिदिन] १. रातदिन। आठों पहर। २. सदा। सर्वदा।
निसि निसि–संज्ञा स्त्री० [सं० निशि निशि] अर्द्धरात्रि। निशीथ। आधी रात।
निसियर*–संज्ञा पुं० [सं० निशिकर] चंद्रमा।
निसिवासर*–क्रि० वि० [सं० निशि+वासर] रातदिन। सदा। सर्वदा। नित्य।
निसीठी–वि० [सं० निः+हिं० सीठी] निः-सार। नीरस। थोथा।
निसु*†–संज्ञा स्त्री० दे० "निशा"
निसुका*–वि० [सं० निस्वक] १. गरीब। २. निगोड़ा।
निसूदन–संज्ञा पुं० [सं०] हिंसा करना।
निसृष्ट–वि० [सं०] १. छोड़ा हुआ। २. मध्यस्थ। ३. भेजा हुआ। प्रेरित। ४. दिया हुआ। दत्त।
निसृष्टार्थ–संज्ञा पुं० [सं०] वह दूत जो दोनों पक्षों का अभिप्राय अच्छी तरह समझ कर स्वयं ही सब प्रश्नों का उत्तर दे देता और कार्य सिद्ध कर लेता है।
निसेनी†–संज्ञा स्त्री० [सं० निःश्रेणी] सीढ़ी।
निसेष*–वि० दे० "निःशेष"।
निसेस*–संज्ञा पुं० [सं० निशेश] चंद्रमा।
निसैनी–संज्ञा स्त्री० दे० "निसेनी"।
निसोग*†–वि० [सं० निःशोक] जिसे कोई शोक या चिंता न हो।
निसोच*–वि० [सं० निःशोच] चिंता-रहित।
निसोत–वि० [सं० निःसंयुक्त] जिसमें और किसी चीज का मेल न हो। शुद्ध। निरा।
निसोथ–संज्ञा स्त्री० [सं० निसृता] एक प्रकार की लता जिसकी जड़ और डंठल अच्छे रेचक समझे जाते हैं।
निसोधु*†–संज्ञा स्त्री० [हिं० सोध या सुध] १. सुध। खबर। २. संदेसा।
निस्केवल–वि० [सं० निष्केवल] बेमेल। शुद्ध। निर्मल। खालिस।
निस्तत्त्व–वि० [सं०] जिसमें कोई तत्व न हो। निस्सार।
निस्तब्ध–वि० [सं०] १. जो हिलता-डोलता न हो। २. जड़वत्। निश्चेष्ट।
निस्तब्धता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. स्तब्ध होने का भाव। खामोशी। २. सन्नाटा।
निस्तरण–संज्ञा पुं० दे० "निस्तार"।
निस्तरना*†–क्रि० अ० [सं० निस्तार] निस्तार पाना। मुक्त होना। छूट जाना।
निस्तार–संज्ञा पुं० [सं०] १. पार होने का भाव। २. छुटकारा। मोक्ष। उद्धार।
निस्तारण–संज्ञा पुं० [सं०] १. निस्तार करना। बचाना। छुड़ाना। २. पार करना।
निस्तारन*–वि० दे० "निस्तारण"।

'निस्तारना†*–क्रि० स० [सं० निस्तार+ना (प्रत्य०)] छुड़ाना। मुक्त करना। उद्धार।
'निस्तारा*–संज्ञा पुं० दे० "निस्तार"।
'निस्तीर्ण–वि० [सं०] १. जो तै या पार कर चुका हो। २. छूटा हुआ। मुक्त।
'निस्तेज–वि० [सं० निस्तेजस्] तेजरहित। जिसमें तेज न हो। अप्रभ। मलिन।
'निस्पृह–वि० [सं०] [संज्ञा निस्पृहता] जिसे किसी प्रकार का लोभ न हो। लालच या कामना आदि से रहित।
निस्फ–वि० [अ०] अर्द्ध। आधा।
'निस्संकोच–वि० [सं०] सकोचरहित। जिसमें सकोच या लज्जा न हो। बेधड़क।
निस्संतान–वि० [सं०] जिसे कोई संतान न हो। संतति-रहित।
निस्संदेह–क्रि० वि० [सं०] अवश्य। जरूर। वि० जिसमें संदेह न हो।
'निस्सरण–संज्ञा पुं० [सं०] १. निकलने का मार्ग। २ निकलने का भाव या क्रिया।
'निस्सार–वि० [सं०] १. सार-रहित। २. जिसमें कोई काम की वस्तु न हो।
'निस्सीम–वि० [सं०] १. असीम। अपार। २ बहुत अधिक।
निस्सृत–संज्ञा पुं० [सं०] तलवार के ३२ हाथों में से एक।
'निस्स्वार्थ–वि० [सं०] जिसमें स्वयं अपने लाभ या हित का कोई विचार न हो।
'निहंग–वि० [सं० निःसंग] १. एकाकी। अकेला। २. स्त्री आदि से संबंध न रखने-वाला (साधु)। ३ नंगा। ४. बेशरम।
'निहंग-लाडला–वि० [हिं० निहंग+लाडला] जो माता-पिता के दुलार के कारण बहुत ही उद्दंड और लापरवाह हो गया हो।
'निहंता–वि० [सं० निहंतृ] [स्त्री० निहंत्री] १. नाश करनेवाला। २ प्राण लेनेवाला।
'निहकाम*†–वि० दे० "निष्काम"।
'निहचय*†–संज्ञा पुं० दे० "निश्चय"।
'निहचल*†–वि० दे० "निश्चल"।
'निहत–वि० [सं०] १. फेंका हुआ। २. नष्ट। ३ जो मार डाला गया हो।
निहत्था–वि० [हिं० नि+हाथ] १. जिसके हाथ में कोई शस्त्र न हो। शस्त्रहीन। २ खाली हाथ। निर्धन। गरीब।
निहनना*†–क्रि० स० [सं० निहनन] मारना। मार डालना।
निहपाप†*–वि० दे० "निष्पाप"।
निहफल†*–वि० दे० "निष्फल"।
निहाई–संज्ञा स्त्री० [सं० निघाति, मि० फ़ा० निहाली] सोनारों और लोहारों का लोहे का एक चौकोर औजार जिस पर वे धातु को रखकर हथौड़े से कूटते या पीटते हैं।
निहाउ†*–संज्ञा पुं० दे० "निहाई"।
निहायत–वि० [अ०] अत्यंत। बहुत।
निहार–संज्ञा पुं० [सं०] १. कुहरा। पाला। २. ओस। ३. हिम। बरफ।
निहारना–क्रि० स० [सं० निभालन=देखना] ध्यानपूर्वक देखना। देखना। ताकना।
निहाल–वि० [फा०] जो सब प्रकार से संतुष्ट और प्रसन्न हो गया हो। पूर्णकाम।
निहाली–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. गद्दा। तोशक। २. निहाई।
निहित–वि० [सं०] स्थापित। रखा हुआ।
निहुरना†–क्रि० अ० [हिं० नि+होड़न] झुकना। नवना।
निहुराना–क्रि० स० [हिं० निहुरना का प्रे०] झुकाना। नवाना।
निहोरना–क्रि० स० [सं० मनोहार] १. प्रार्थना करना। विनय करना। २. मनाना। मनौती करना। ३. कृतज्ञ होना।
निहोरा†–संज्ञा पुं० [सं० मनोहार] १. अनुग्रह। एहसान। कृतज्ञता। उपकार। २. विनती। प्रार्थना। ३ भरोसा। आसरा। क्रि० वि० १. कारण से। बदौलत। द्वारा। २ के लिये। वास्ते। निमित्त।
नींद–संज्ञा स्त्री० [सं० निद्रा] जीवन की एक नित्यप्रति होनेवाली अवस्था जिसमें चेतन क्रियाएँ रुकी रहती हैं और शरीर तथा अंतःकरण दोनों विश्राम करते हैं। सोने की अवस्था। निद्रा। स्वप्न।
मुहा०––नींद उचटना=नींद का दूर होना।

नींद खुलना या टूटना = नींद का छूट जाना। जाग पड़ना। नींद पड़ना = नींद आना। निद्रा की अवस्था होना। नींद भर सोना = जितनी इच्छा हो, उतना सोना। इच्छा भर सोना। नींद लेना = सोना। नींद संचरना = नींद आना। नींद हराम होना = सोना छूट जाना।

नींदड़ी‡–संज्ञा स्त्री० दे० "नींद"।

नीक, नीका†*–वि० [सं० निक्त = स्वच्छ] [स्त्री० नीकी] अच्छा। सुन्दर। भला। संज्ञा पुं० अच्छाई। उत्तमता। अच्छापन।

नीके–क्रि० वि० [हिं० नीक] अच्छी तरह।

नीच–वि० [सं०] १. जाति, गुण, कर्म या और किसी बात में घटकर या न्यून। क्षुद्र। २. अधम। बुरा। निकृष्ट। तुच्छ। हेठा।

यौ०—नीच-ऊँच = १. अच्छा-बुरा। २. बुराई-भलाई। गुण-अवगुण। ३. अच्छा और बुरा परिणाम। हानि-लाभ। ४. सुख-दुःख।

नीचगामी–वि० [सं० नीचगामिन्] [स्त्री० नीचगामिनी] १. नीचे जानेवाला। २. ओछा।

नीचता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नीचे होने का भाव। २. अधमता। क्षुद्रता। कमीनापन।

नीचा–वि० [सं० नीच] [स्त्री० नीची] १. जो कुछ उतार या गहराई पर हो। गहरा। ऊँचा का उलटा। निम्न।

यौ०—नीचा-ऊँचा = कहीं गहरा और कहीं उठा हुआ। जो समतल न हो। ऊबड़-खाबड़। २. ऊँचाई में सामान्य की अपेक्षा कम। जो ऊपर की ओर दूर तक न गया हो। ३. जो ऊपर से जमीन की ओर दूर तक आया हो। अधिक लटका हुआ। ४. झुका हुआ। नत। ५. जो तीव्र या जोर का न हो। धीमा। मध्यम। ६. जो जाति, पद, गुण इत्यादि में न्यून या घटकर हो। ओछा। क्षुद्र। बुरा।

मुहा०—नीचा-ऊँचा = १. भला-बुरा। २. भलाई-बुराई। गुण-अवगुण। अच्छा और बुरा परिणाम। हानि-लाभ। ३. सपद-विपद। सुख-दुःख। नीचा खाना = १. तुच्छ बनना। अपमानित होना। २. हारना। परास्त होना। ३. लज्जित होना। झिपना। नीचा दिखाना = १. तुच्छ बनाना। अपमानित करना। २. मान-भंग करना। शेखी झाड़ना। ३. परास्त करना। हराना। ४. लज्जित करना। नीचा देखना = दे० "नीचा खाना"। नीची दृष्टि करना = सिर झुकाना। सामने न ताकना।

नीचाशय–वि० [सं०] क्षुद्र। ओछा।

नीचू†–क्रि० वि० दे० "नीचे"।

नीचे–क्रि० वि० [हिं० नीचा] १. नीचे की ओर। अधोभाग में। ऊपर का उलटा।

मुहा०—नीचे ऊपर = १. एक पर एक। तले-ऊपर। २. उलट-पलट। अस्त-व्यस्त। अव्यवस्थित। नीचे गिरना = १. प्रतिष्ठा खोना। मान-मर्यादा गँवाना। २. पतित होना। अवनत दशा को प्राप्त होना। ऊपर से नीचे तक = १. सब भागों में। सर्वत्र। २. सर्वांग में। सिर से पैर तक।

२. घटकर। कम। न्यून। ३. अधीनता में।

नीज्न*–संज्ञा पुं० [सं० निर्जन] निर्जन स्थान।

नीझर*–संज्ञा पुं० [सं० निर्झर] निर्झर। झरना। सोता।

नीठ–क्रि० वि० दे० "नीठि"।

नीठि–संज्ञा स्त्री० [सं० अनिष्टि] अरुचि। अनिच्छा।

क्रि० वि० १. ज्यों-त्यों करके। किसी न किसी प्रकार। २. मुश्किल से। कठिनता से।

नीठो*–वि० [सं० अनिष्ट] अनिष्ट। अप्रिय।

नीड़–संज्ञा पुं० [सं०] चिड़ियों का घोंसला।

नीत–वि० [सं०] १. लाया हुआ। पहुँचाया हुआ। २. स्थापित। ३. प्राप्त।

नीति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ले जाने या ले चलने की क्रिया, भाव या ढंग। २. व्यवहार की रीति। आचार-पद्धति। ३. व्यवहार की वह रीति जिससे अपना कल्याण हो और समाज को भी कोई बाधा न पहुँचे। ४. लोक या समाज के कल्याण के लिए उचित ठहराया हुआ आचार-व्यवहार। सदाचार। अच्छी चाल। नय। ५. राजा और प्रजा की रक्षा के लिए निर्धारित व्यवस्था। राजविद्या। ६. राज्य की रक्षा के

लिये काम में लाई जानेवाली युक्ति। ७ किसी कार्य्य की सिद्धि के लिये चली जानेवाली चाल। युक्ति। उपाय। हिकमत।

नीतिज्ञ–वि० [स०] नीति का जाननेवाला। नीतिकुशल।

नीतिमान्–वि० [स० नीतिमत्] [स्त्री० नीतिमती] नीतिपरायण। सदाचारी।

नीतिशास्त्र–संज्ञा पु० [स०] १ वह शास्त्र जिसमें देश, काल और पात्र के अनुसार बरतने के नियम हों। २ वह शास्त्र जिसमें मनुष्य-समाज के हित के लिये आचार, व्यवहार और शासन का विधान हो।

नीदना*–क्रि०स०[स०निंदन] निंदा करना।

नीधना†*–वि० [स० निर्धन] दरिद्र।

नीबी*–संज्ञा स्त्री० दे० "नीवी"।

नीबू–संज्ञा पु० [स० निंबूक, अ० लेमूं] मध्यम आकार का एक पेड़ या झाड़ जिसका फल गोल, छोटा और खट्टा होता है और खाया जाता है। मीठे नीबू भी कई प्रकार के होते हैं। खट्टे नीबू के मुख्य भेद ये हैं–कागजी, जंबीरी, बिजौरा, चकोतरा।

मुहा०—नीबू निचोड़=भारी कंजूस।

नीम–संज्ञा पु० [स० निंब] पत्ती झाड़ने-वाला एक पेड़ जिसका प्रत्येक भाग कड़ुवा होता है।

वि० [फा० । मि० स० नेम] आधा। अर्द्ध।

नीमन†–वि० [स० निर्मल] १ नीरोग। चंगा। २ दुरुस्त। ठीक। ३ बढ़िया।

नीमरजा–वि० [फा०] १ थोड़ी-बहुत रजामंदी। २ कुछ तोष या प्रसन्नता।

नीमा–संज्ञा पु० [फा०] एक पहनावा जो जामे के नीचे पहना जाता है।

नीमावत–संज्ञा पु० [हिं० निंब] निंबार्का-चार्य्य का अनुयायी वैष्णव।

नीमास्तीन–संज्ञा स्त्री० [फा०नीम+आस्तीन] आधी आस्तीन की एक प्रकार की कुरती।

नीयत–संज्ञा स्त्री० [अ०] आंतरिक लक्ष्य। उद्देश्य। आशय। संकल्प। इच्छा। मंशा।

मुहा०—नीयत डिगना या बद होना=अच्छा या उचित संकल्प दृढ़ न रहना। बुरा संकल्प होना। नीयत बदल जाना=१ संकल्प या विचार और का और होना। इरादा दूसरा हो जाना। २ बुरा विचार होना। अनुचित या बुरी बात की ओर प्रवृत्ति होना। नीयत बाँधना=संकल्प करना। इरादा करना। नीयत भरना=जी भरना। इच्छा पूरी होना। नीयत में फर्क आना=बेईमानी या बुराई सूझना। नीयत लगी रहना=इच्छा बनी रहना। जी ललचाया करना।

नीर–संज्ञा पु० [स०] १ पानी। जल।

मुहा०—नीर ढलना=मरते समय आँख से आँसू बहना। *किसी की आँख का नीर ढल जाना=निर्लज्ज या बेहया हो जाना।*

२ कोई द्रव पदार्थ या रस। ३ फफोले आदि के भीतर का चेप या रस।

नीरज–संज्ञा पु० [स०] १ जल में उत्पन्न वस्तु। २ कमल। ३ मोती। मुक्ता।

नीरद–संज्ञा पु० [स०] बादल।

वि० [स० निः+रद] बे-दाँत का। अदंत।

नीरधि–संज्ञा पु० [स०] समुद्र।

नीरस–वि० [स०] १ जिसमें रस या गीलापन न हो। रसहीन। २ सूखा। शुष्क। ३ जिसमें कोई स्वाद या मजा न हो। फीका। ४ जिसमें मन न लगे।

नीराजन–संज्ञा पु० [स०] १ देवता को दीपक दिखाने की विधि। दीपदान। आरती। २ हथियारों को चमकाने या साफ करने का काम।

नीरे*–क्रि० वि० दे० "नियरे"।

नीरोग–वि० [स०] जिसे रोग न हो। स्वस्थ। चंगा। तंदुरुस्त।

नील–वि० [स०] नीले रंग का।

संज्ञा पु० [स०] १ नीला रंग। गहरा आसमानी रंग। २ एक प्रसिद्ध पौधा जिससे नीला रंग निकाला जाता है।

मुहा०—नील का टीका लगाना=कलंक लेना। बदनामी उठाना। नील की सलाई फिरवा देना=आँखें फोड़वा डालना। अंधा कर देना।

३ चोट का नीले या काले रंग का दाग जो शरीर पर पड़ जाता है। ४ लांछन।

कलंक। ५. राम की सेना का एक बंदर। ६. इलावृत खंड का एक पर्वत। ७. नव निधियों में से एक। ८. नीलाम। ९. एक वर्णवृत्त। १०. सौ अरब की संख्या।

नीलकंठ–वि० [सं०] जिसका कंठ नीला हो। संज्ञा पुं० १. मोर। मयूर। २. एक प्रकार की चिड़िया जिसका कंठ और डैने नीले होते हैं। चाष पक्षी। ३. महादेव। ४. गौरा पक्षी। चटक।

नीलकांत–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक पहाड़ी चिड़िया। २. विष्णु। ३. नीलम मणि।

नीलकांता–संज्ञा स्त्री० [सं०] विष्णुकांता लता जिसमें बड़े बड़े नीले फूल लगते हैं।

नीलगाय–संज्ञा स्त्री० [हिं० नील + गाय] नीलापन लिए भूरे रंग का एक बड़ा हिरन जो गाय के बराबर होता है। गवय।

नीलचक्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. जगन्नाथजी के मंदिर के शिखर पर माना जानेवाला चक्र। २. ३० अक्षरों का एक दंडक वृत्त।

नीलता–संज्ञा स्त्री० [सं०] नीलापन।

नीलम–संज्ञा पुं० [फ़ा०। मि०सं० नीलमणि] नीलमणि। नीले रंग का रत्न। इंद्रनील।

नीलमणि–संज्ञा पुं० [सं०] नीलम।

नीलमोर–संज्ञा पुं० [हिं० नील + मोर] कुररी नामक पक्षी।

नीललोहित–वि० [सं०] नीलापन लिए लाल। बैंगनी।
संज्ञा पुं० शिव का एक नाम।

नीलस्वरूप, नीलस्वरूपक–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का वर्णवृत्त।

नीलांजन–संज्ञा पुं० [सं०] १. नीला सुरमा। २. तूतिया। नीला थोथा।

नीलांबर–संज्ञा पुं० [सं०] नीले रंग का कपड़ा (विशेषतः रेशमी)।
वि० नीले कपड़े धारण करनेवाला।

नीलांबुज–संज्ञा पुं० [सं०] नील कमल।

नीला–वि० [सं० नील] आकाश के रंग का। नील के रंग का।
मुहा०–नीला-पीला होना = क्रोध दिखाना। क्रुद्ध होना। बिगड़ना। चेहरा नीला पड़ जाना = १. आकृति से भय, उद्विग्नता, लज्जा आदि प्रकट होना। २. सजीवता के लक्षण नष्ट होना।

नीलाथोथा–संज्ञा पुं० [सं० नीलतुत्थ] ताँबे का नीला क्षार या लवण। तूतिया।

नीलाम–संज्ञा पुं० [पुर्त० लीलाम] बिक्री का एक ढंग जिसमें माल उस आदमी को दिया जाता है जो सबसे अधिक दाम लगाता है। बोली बोलकर बेचना।

नीलावती–संज्ञा स्त्री० [सं० नीलवती] एक प्रकार का चावल।

नीलिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नीलबरी। २. नीली निर्गुंडी। नील सम्हालू वृक्ष। ३. आँख तिलमिलाने का रोग। ४. मुख पर का एक रोग जिसमें सरसों के बराबर छोटे छोटे कड़े काले दाने निकलते हैं। झल्ला।

नीलिमा–संज्ञा स्त्री० [सं० नीलिमन्] १. नीलापन। २. श्यामता। स्याही।

नीली घोड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं०नीली+घोड़ी] जामे के साथ सिली हुई कागज की घोड़ी जिसे पहन लेने से जान पड़ता है कि आदमी घोड़े पर सवार है। डफाली इसे पहनकर भीख माँगने निकलते हैं।

नीलोत्पल–संज्ञा पुं० [सं०] नील कमल।

नीलोफर–संज्ञा पुं० [फ़ा०। मि० सं० नीलोत्पल] १. नील कमल। २. कुईं। कुमुद।

नींव–संज्ञा स्त्री० [सं० नेमि, प्रा० नेइ] १. घर बनाने में गहरी नाली के रूप में खुदा हुआ गड्ढा जिसके भीतर से दीवार की जोड़ाई आरंभ होती है।
मुहा०–नींव देना = गड्ढा खोदकर दीवार खड़ी करने के लिए स्थान बनाना। (किसी बात की) नींव देना = कारण या आधार खड़ा करना। जड़ खड़ी करना। उपक्रम करना।
२ दीवार की जड़ या आधार। मूलभित्ति।
मुहा०—नींव जमाना, डालना या देना = दीवार उठाने के लिये नींव के गड्ढे में ईंट, पत्थर आदि जमाकर आधार खड़ा करना। दीवार की जड़ जमाना। (किसी बात की) नींव जमाना या डालना = आधार दृढ़ करना। स्थिर करना। स्थापित करना। (किसी वस्तु

या बात की) नींव पड़ना=१ पर की दीवार का आधार खड़ा होना। २ सूत्रपात होना। जड़ खड़ी होना या जमना।
३ जड़। मूल। स्थिति। आधार।
नींव–सज्ञा स्त्री० दे० "नींव"।
नीवि–सज्ञा स्त्री० [स०] १ कमर में लपेटी हुई धोती की वह गाँठ जिसे स्त्रियाँ पेट के नीचे सूत की डोरी से या योंही बाँधती हैं। २ सूत की डोरी जिससे स्त्रियाँ धोती या लहँगे की गाँठ बाँधती हैं। कटिवस्त्र-बंध। फुँफदी। ३ साड़ी। धोती।
नीवी–सज्ञा स्त्री० दे० "नीवि"।
नीसानी–सज्ञा स्त्री० [?] तेईस मात्राओं का एक छद। उपमान।
नीहँ†–सज्ञा स्त्री० दे० "नींव"।
नीहार–सज्ञा पु० [स०] १ कुहरा। २ पाला। हिम। तुषार। बर्फ।
नीहारिका–सज्ञा स्त्री० [स०] आकाश में धूएँ या कुहरे की तरह फैला हुआ क्षीण प्रकाशपुंज जो अँधेरी रात में सफेद धब्बे की तरह कहीं कहीं दिखाई पड़ता है।
नुक़ता–सज्ञा पु० [अ० नुक़्त] बिंदु। बिंदी।
सज्ञा पु० [अ० नुक़्त] १ चुटकुला। फबती। लगती हुई उक्ति। २ ऐब।
नुक़ताचीनी–सज्ञा स्त्री० [फ़ा०] छिद्रान्वेषण। दोष निकालने का काम।
नुकती–सज्ञा स्त्री० [फा० नखुदी] एक प्रकार की मिठाई। बेसन की महीन बुँदिया।
नुक़रा–सज्ञा पु० [अ०] १ चाँदी। २ घोड़ों का सफेद रग।
वि० सफ़ेद रग का (घोड़ा)।
नुक़सान–सज्ञा पु० [अ०] १ कमी। घटी। ह्रास। छीज। २ हानि। घाटा। क्षति।
मुहा०—नुक़सान उठाना=हानि सहना। क्षतिग्रस्त होना। नुक़सान पहुँचाना=हानि करना। क्षतिग्रस्त करना। नुक़सान भरना=हानि की पूर्ति करना। घाटा पूरा करना।
३ दोष। अवगुण। विकार।
मुहा०—(किसी को) नुक़सान करना=किसी दोष उत्पन्न करना। स्वास्थ्य के प्रतिकूल होना।
नुकीला–वि० [हिं० नोक+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० नुकीली] १ नोकदार। जिसमें नोक निकली हो। २ बाँका तिरछा।
नुक्कड़–सज्ञा पु० [हिं० नोक का अल्पा०] १ नोक। पतला सिरा। २ सिरा। छोर। अंत। ३ निकला हुआ कोना।
नुक्स–सज्ञा पु० [अ०] १ दोष। ऐब। खराबी। बुराई। २ त्रुटि। कसर।
नुचना–क्रि० अ० [स० लुचन] १ नोचा जाना। खिंचकर उखड़ना। उड़ना। २ खरोंचा जाना। नाखून आदि से छिलना।
नुचवाना–क्रि० स० [हिं० नोचना का प्रे०] नोचने का काम दूसरे से कराना।
नुत्फ़ा–सज्ञा पु० [अ०] १ वीर्य। शुक्र। २ सतति। औलाद।
नुनखरा, नुनखारा–वि० [हिं० नून+खारा] स्वाद में नमक का सा खारा। नमकीन।
नुनना–क्रि० स० [स० लवन, लून] लुनना। खेत काटना।
नुनाई*†–सज्ञा स्त्री० [हिं० नून] लावण्य। सुंदरता। सलोनापन।
नुनेरा–सज्ञा पु० [हिं० नून+एरा (प्रत्य०)] १ नोनी मिट्टी आदि से नमक निकालने वाला। २ लोनिया। नोनिया।
नुमाइश–सज्ञा स्त्री० [फा०] १ दिखावट। दिखावा। प्रदर्शन। २ तड़क-भड़क। ठाट-बाट। सजधज। ३ नाना प्रकार की वस्तुओं का कुतूहल और परिचय के लिये एक स्थान पर दिखाया जाना। प्रदर्शिनी।
नुमाइशी–वि० [फा० नुमाइश] जो केवल दिखावट के लिये हो, किसी प्रयोजन का न हो। दिखाऊ। दिखौआ।
नुसखा–सज्ञा पु० [अ०] १ लिखा हुआ कागज। २ कागज का वह चिट जिस पर हकीम या वैद्य रोगी के लिये औषध और सेवन विधि लिखते हैं।
नूत–वि० [स० नूतन] १. नया। नूतन। २ अनोखा। अनूठा।

नूतन–वि० [सं०] १. नया। नवीन। २. हाल का। ताजा। ३. अनोखा।
नूतनता–संज्ञा स्त्री० [सं०] नूतन का भाव। नवीनता। नयापन।
नून–संज्ञा पुं० [?] १. आल। २. आल की जाति की एक लता।
†संज्ञा पुं० [सं० लवण] नमक।
मुहा०—नून-तेल = गृहस्थी का सामान।
*वि० दे० "न्यून"।
नूनताई*–संज्ञा स्त्री० दे० "न्यूनता"।
नूपुर–संज्ञा पुं० [सं०] १. पैर में पहनने का स्त्रियों का एक गहना। पैजनी। घुँघरू। २. नगण के पहले भेद का नाम।
नूका–संज्ञा पुं० [?] १४ मात्राओं का एक छंद। कज्जल।
नूर–संज्ञा पुं० [अ०] १. ज्योति। प्रकाश। मुहा०—नूर का तड़का = प्रातःकाल। नूर बरसना = प्रभा का अधिकता से प्रकट होना। २. श्री। कांति। शोभा।
नूरा‡–वि० [अ० नूर] नूरवाला। तेजस्वी।
नूह–संज्ञा पुं० [अ०] (यहूदी, ईसाई और मुसलमान मतों के अनुसार) एक पैगंबर जिनके समय में बड़ा भारी तूफ़ान आया था।
नृ–संज्ञा पुं० [सं०] नर। मनुष्य।
नृकेशरी–संज्ञा पुं० [सं० नृकेशरिन्] १. नृसिंह अवतार। २. श्रेष्ठ पुरुष।
नृतक*–संज्ञा पुं० दे० "नर्त्तक"।
नृत्तना*–क्रि० अ० [सं० नृत्य] नाचना।
नृत्य–संज्ञा पुं० [सं०] संगीत के ताल और गति के अनुसार हाथ-पाँव हिलाने, उछलने-कूदने आदि का व्यापार। नाच। नर्त्तन।
नृत्यकी*†–संज्ञा स्त्री० दे० "नर्त्तकी"।
नृत्यशाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] नाचघर।
नृदेव, नृदेवता–संज्ञा पुं० [सं०] १. राजा। २. ब्राह्मण।
नृप–संज्ञा पुं० [सं०] नरपति। राजा।
नृपति, नृपाल–संज्ञा पुं० [सं०] राजा।
नृमेध–संज्ञा पुं० [सं०] नरमेध यज्ञ।
नृयज्ञ–संज्ञा पुं० [सं०] पंचयज्ञों में से एक जिसका करना गृहस्थ के लिये कर्त्तव्य है। अतिथिपूजा। अभ्यागत का सत्कार।
नृशंस–वि० [सं०] १. क्रूर। निर्दय। २. अपकारी। अत्याचारी। ज़ालिम।
नृशंसता–संज्ञा स्त्री० [सं०] निर्दयता।
नृसिंह–संज्ञा पुं० [सं०] १. सिंहरूपी भगवान् जो विष्णु के चौथे अवतार थे। इन्होंने हिरण्यकशिपु को मारकर प्रह्लाद की रक्षा की थी। २. श्रेष्ठ पुरुष।
नृहरि–संज्ञा पुं० [सं०] नृसिंह।
ने†–प्रत्य० [सं० प्रत्य० टा=एण] सकर्मक भूतकालिक क्रिया के कर्त्ता की विभक्ति।
नेक–वि० [फ़ा०] १. भला। उत्तम। २. शिष्ट। सज्जन।
*†वि० [हिं० न + एक] थोड़ा। तनिक। क्रि० वि० थोड़ा। ज़रा। तनिक।
नेकचलन–वि० [फ़ा० नेक + हिं० चलन] [संज्ञा नेकचलनी] अच्छे चालचलन का। सदाचारी।
नेकनाम–वि० [फ़ा०] [संज्ञा नेकनामी] जिसका अच्छा नाम हो। यशस्वी।
नेकनीयत–वि० [फ़ा० नेक + अ० नीयत] [संज्ञा नेकनीयती] १. अच्छे संकल्प का। शुभ संकल्पवाला। २. उत्तम विचार का।
नेकी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. भलाई। उत्तम व्यवहार। २. सज्जनता। भलमनसाहत। यौ०—नेकी बदी = भलाई-बुराई। पाप-पुण्य। ३. उपकार। हित।
नेकु*†–वि०, क्रि० वि० दे० "नेक"।
नेग–संज्ञा पुं० [सं० नैयमिक] १. विवाह आदि शुभ अवसरों पर संबंधियों, आश्रितों तथा कृत्य में योग देनेवाले लोगों को कुछ दिए जाने का नियम। २. वह वस्तु या धन जो इस प्रकार दिया जाता है।
नेगचार–संज्ञा पुं० दे० "नेग-जोग"।
नेग-जोग–संज्ञा पुं० [हिं० नेग+जोग] विवाह आदि मंगल अवसरों पर संबंधियों तथा काम करनेवालों को उनके प्रसन्नतार्थ कुछ दिए जाने का दस्तूर।
नेगटी†*–संज्ञा पुं० [हिं० नेग+टा (प्रत्य०)] नेग या रीति का पालन करनेवाला।

नेगी–सज्ञा पु० [हि० नेग] नेग पानेवाला। नेग पाने का हकदार।

नेगीजोगी–सज्ञा पु० [हि० नेगजोग] नेग पानेवाले। नेगी। जैसे, नाई, बारी।

नेछावर‡–सज्ञा स्त्री० दे० "निछावर"।

नेजा–सज्ञा पु० [फा०] १ भाला। बरछा। २ साँग। निशान।

नेजाबरदार–सज्ञा पु० [फा०] भाला या राजाओ का निशान लेकर चलनेवाला।

नेजाल‡*–सज्ञा पु० [फा० नेजा] भाला।

नेठना*–क्रि० अ० दे० "नाठना"।

नेडे†–क्रि०वि० [स०निकट] निकट। पास।

नेत–सज्ञा पु० [स० नियति] १ ठहराव। निर्धारण। २ निश्चय। सकल्प। इरादा। ३ व्यवस्था। प्रबंध। आयोजन। सज्ञा पु० [स० नेत्र] मथानी की रस्सी। सज्ञा स्त्री० [?] एक प्रकार की चादर। सज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का गहना। सज्ञा स्त्री० दे० "नीयत"।

नेता–सज्ञा पु० [स० नेतृ] [स्त्री० नेत्री] १ अगुआ। नायक। सरदार। २ स्वामी। मालिक। ३ काम को चलानेवाला। निर्वाहक। सज्ञा पु० [स० नेत्र] मथानी की रस्सी।

नेति–[स०] एक संस्कृत वाक्य (न इति) जिसका अर्थ है "इति नहीं" अर्थात् "अत नहीं है"।

नेती–सज्ञा स्त्री० [हि० नेता] वह रस्सी जो मथानी में लपेटी जाती है और जिसके खीचने से मथानी फिरती है।

नेती-धोती–सज्ञा स्त्री० [स०नेत्र, हि०नेता+ स० धौति] हठयोग की एक क्रिया जिसमे कपड़े की धज्जी पेट में डालकर आँत साफ करते हैं। धौति।

नेत्र–सज्ञा पु० [स०] १ आँख। २ मथानी की रस्सी। ३ एक प्रकार का वस्त्र। ४ वृक्षमूल। पेड की जड। ५ रथ। ६ दो की सख्या का सूचक शब्द।

नेत्रजल–सज्ञा पुं० [स०] आँसू।

नेत्रबाला–सज्ञा पुं० दे० "सुगधबाला"।

नेत्रमडल–सज्ञा पु० [स०] आँख का घेरा। आँख का डेला।

नेत्रस्राव–सज्ञा पु० [स०] आँखो स पानी बहना।

नेत्राभिष्यद–सज्ञा पु० [स०] आँख आने का रोग।

नेनुआ, नेनुवा–सज्ञा पु० [?] एक भाजी या तरकारी। घियातरोई।

नेपचून–सज्ञा पु० [फरासीसी] सूर्य की परिक्रमा करनेवाला एक ग्रह।

नेपथ्य–सज्ञा पु० [स०] १ वेश-भूषा। सजावट। २ नृत्य, अभिनय आदि में परदे के भीतर का वह स्थान जिसमें नट वेश सजते है। वेशस्थान।

नेपाल–सज्ञा पु० [देश०] हिंदुस्तान के उत्तर में एक प्रसिद्ध पहाडी देश।

नेपाली–वि० [हि० नेपाल] १ नेपाल में रहने या होनेवाला। २ नेपाल-सबधी।

नेफा–सज्ञा पु० [फा०] पायजामे या लहँगे के घेर में इजारबद पिरोने का स्थान।

नेब*–सज्ञा पु० [फा० नायब] १ सहायक। कार्य्य में सहायता देनेवाला। २ मंत्री।

नेम–सज्ञा पु० [स० नियम] १ नियम। कायदा। बधेज। २ बँधी हुई बात। ऐसी बात जो टलती न हो, बराबर होनी हो। ३ रीति। दस्तूर। ४ धर्म की दृष्टि से कुछ क्रियाओं का पालन।

यौ०–नेम धरम=पूजा-पाठ व्रत आदि।

नेमि–सज्ञा स्त्री० [स०] १ पहिये का घेरा या चक्कर। चक्रपरिधि। २ कूएँ की जगत। ३ कूएँ की जमवट। ४ प्रातभाग। सज्ञा पु० १ नेमिनाथ तीर्थंकर। २ वज्र।

नेमी–वि० [स० नियम] १ नियम का पालन करनेवाला। २ धर्म की दृष्टि से पूजापाठ, व्रत आदि करनेवाला।

नेरे†–क्रि०वि० [हि० नियर] निकट। पास।

नेव*–सज्ञा पुं० दे० "नेब"।

नेवग*–सज्ञा पुं० दे० "नेग"।

नेवज–सज्ञा पु० [स० नैवेद्य] खाने-पीने की चीज जो देवता को चढाई जाय। भोग।

नेवतना†–क्रि० स० [सं० निमंत्रण] निमंत्रित करना। नेवता भेजना।
नेवता–संज्ञा पुं० दे० "न्योता"।
नेवर–संज्ञा पुं० दे० "नूपुर"।
†वि० [सं० न + वर = अच्छा] बुरा।
नेवरना–क्रि० अ० [सं० निवारण] १. निवारण या दूर होना। २. समाप्त होना।
नेवला–संज्ञा पुं० [सं० नकुल] एक मांसाहारी पिंडज छोटा जंतु जो देखने में गिलहरी के आकार का पर उससे बड़ा और भूरा होता है। यह साँप को खा जाता है।
नेवाज–वि० दे० "निवाज"।
नेवारना*–क्रि० स० दे० "निवारना"।
नेवारी–संज्ञा स्त्री० [सं० नेपाली] जूही की जाति का एक पौधा। वनमल्लिका।
नेसुक*†–वि० [हिं० नेकु] तनिक। जरा।
क्रि० वि० थोड़ा-सा। जरा-सा। तनिक।
नेस्त–वि० [फ़ा०] जो न हो।
यौ०—नेस्त-नाबूद = नष्ट-भ्रष्ट।
नेस्ती–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. न होना। अनस्तित्व। २. आलस्य। ३. नाश।
नेह–संज्ञा पुं० [सं० स्नेह] १. स्नेह। प्रेम। प्रीति। २. चिकना। तेल या घी।
नेही*–वि० [हिं० नेह + ई (प्रत्य०)] स्नेह करनेवाला। प्रेमी।
नै–संज्ञा स्त्री० दे० "नय"।
संज्ञा स्त्री० [सं० नदी] नदी।
संज्ञा स्त्री० [फा०] १. बाँस की नली। २ हुक्के की निगाली। ३. बाँसुरी।
नैऋत*–वि० संज्ञा पुं० दे० "नैर्ऋत्य"।
नैक, नैकु–वि० दे० "नेक", "नेकु"।
नैकट्य–संज्ञा पुं० [सं०] निकटता।
नैगम–वि० [सं०] १. निगम-संबंधी। २. जिसमें ब्रह्म आदि का प्रतिपादन हो।
संज्ञा पुं० १. उपनिषद् भाग। २. नीति।
नैचा–संज्ञा पुं० [फा०] हुक्के की दोहरी नली जिसके एक सिरे पर चिलम रखी जाती है और दूसरे का छोर मुँह में रखकर धूआँ खींचते हैं।
नैतिक–वि० [सं०] नीति-संबंधी।
नैन*–संज्ञा पुं० दे० "नयन"।
संज्ञा पुं० [सं० नवनीत] मक्खन।
नैनसुख–संज्ञा पुं० [हिं० नैन = सुख] एक प्रकार का चिकना सूती कपड़ा।
नैनू–संज्ञा पुं० [हिं० नैन + आँख] एक प्रकार का उभरे हुए बेल-बूटे का कपड़ा।
†संज्ञा पुं० [सं० नवनीत] मक्खन।
नैपाल–वि० [सं०] १. नेपाल-संबंधी। २. नेपाल में होनेवाला।
संज्ञा पुं० दे० "नेपाल"।
नैपाली–वि० [हिं० नैपाल] १. नैपाल देश का। २. नैपाल में रहने या होनेवाला।
संज्ञा पुं० नैपाल का रहनेवाला आदमी।
नैपुण्य–संज्ञा पुं० [सं०] निपुणता। चतुराई। होशियारी। दक्षता। कमाल।
नैमित्तिक–वि० [सं०] जो निमित्त उपस्थित होने पर या किसी विशेष प्रयोजन की सिद्धि के लिये हो।
नैमिषारण्य–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन वन जो आजकल हिंदुओं का एक तीर्थ-स्थान माना जाता है। नीमखार।
नैया*‡–संज्ञा स्त्री० [हिं० नाव] नाव।
नैयायिक–वि० [सं०] न्यायशास्त्र का जाननेवाला। न्यायवेत्ता।
नैर*–संज्ञा पुं० [सं० नगर] १. शहर। २. देश। जनपद।
नैराश्य–संज्ञा पुं० [सं०] निराशा का भाव। नाउम्मेदी।
नैर्ऋत–वि० [सं०] नैर्ऋति-संबंधी।
संज्ञा पुं० १. राक्षस। २. पश्चिम-दक्षिण कोण का स्वामी।
नैर्ऋति–संज्ञा स्त्री० [सं०] दक्षिण और पश्चिम के मध्य की दिशा।
नैवेद्य–संज्ञा पुं० [सं०] वह भोजन की सामग्री जो देवता को चढ़ाई जाय। देव-बलि। भोग।
नैषध–वि० [सं०] निषध-देश संबंधी। निषध देश का।
संज्ञा पुं० १. नल जो निषध-देश के राजा थे। २. श्रीहर्ष-रचित एक संस्कृत काव्य।

नैष्ठिक–वि० [सं०] [स्त्री० नैष्ठिकी] निष्ठावान्। निष्ठायुक्त।

नैसर्गिक–वि० [सं०] स्वाभाविक। प्राकृतिक। स्वभावसिद्ध। कुदरती।

नैसा*–वि० [सं० अनिष्ट] बुरा। खराब।

नैहर–संज्ञा पुं० [सं० ज्ञाति=पिता+हिं० घर] स्त्री के पिता का घर। मायका। पीहर।

नोक–संज्ञा स्त्री० [फा०] [वि० नुकीला] १ उस ओर का सिरा जिस ओर कोई वस्तु बराबर पतली पड़ती गई हो। सूक्ष्म अग्र भाग। २ किसी वस्तु के निकले हुए भाग का पतला सिरा। ३ निकला हुआ कोना।

नोक झोक–संज्ञा स्त्री० [फा० नोक+हिं० झोंक] १ बनाव सिंगार। ठाठ-बाट। सजावट। २ तपाक। तेज। आतंक। दर्प। ३ चुभनेवाली बात। व्यंग्य। ताना। आवाजा। ४ छेड़छाड़।

नोकना–क्रि० स० [?] ललचना।

नोकदार–वि० [फा०] १ जिसमें नोक हो। २ चुभनेवाला। पैना। ३ चित्त में चुभनेवाला। ४ शानदार।

नोका झोकी–संज्ञा स्त्री० दे० "नोक-झोक"।

नोखा†–वि० दे० "अनोखा"।

नोच–संज्ञा स्त्री० [हिं० नोचना] १ नोचने की क्रिया या भाव। २ छीनना। लूट।

नोच-खसोट–संज्ञा स्त्री० [हिं० नोचना+खसोटना] जबरदस्ती खींच-खांच करके लेना। छीनाझपटी। लूट।

नोचना–क्रि० स० [सं० लुंचन] १ जमी या लगी हुई वस्तु को झटके से खींचकर अलग करना। उखाड़ना। २ नख आदि से विदीर्ण करना। ३ दुःखी और हैरान करके माँगना या लेना।

नोट–संज्ञा पुं० [अं०] १ टाँकने या लिखने का काम। ध्यान रखने के लिये लिख लेने का काम। २ लिखा हुआ परचा। पत्र। चिट्ठी। ३ आशय या अर्थ प्रकट करनेवाला लेख। टिप्पणी। ४ सरकार की ओर से जारी किया हुआ वह कागज जिस पर कुछ रुपयों की संख्या रहती है और यह लिखा रहता है कि सरकार से उतना रुपया मिल जायगा। सरकारी हुंडी।

नोदन–संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रेरणा। चलाने या हाँकने का काम। २ बैलों को हाँकने की छड़ी या कोड़ा। पैना। औंगी।

नोन†–संज्ञा पुं० दे० "नमक"।

नोना–संज्ञा पुं० [सं० लवण] [स्त्री० नोनी] १ नमक का वह अंश जो पुरानी दीवारों तथा सीड़ की जमीन में लगा मिलता है। २ लोनी मिट्टी।† ३ शरीफा। सीताफल।
‡वि० [स्त्री० नोनी] १ नमक मिला। खारा। २ लावण्यमय। सलोना। सुंदर।
क्रि० स० दे० "नोचना"।

नोना चमारी–संज्ञा स्त्री० एक प्रसिद्ध जादूगरनी जिसकी दुहाई मंत्रों में दी जाती है।

नोनिया–संज्ञा पुं० [हिं० नोना] लोनी मिट्टी से नमक निकालनेवाली एक जाति।
†संज्ञा स्त्री० [हिं० नोन] लोनिया। अमलोनी।

नोनी†–संज्ञा स्त्री० [सं० लवण] १ लोनी मिट्टी। २ लोनिया। अमलोनी का पौधा।

नोनो†*–वि० दे० 'नोना'।

नोर, नोल*–वि० दे० "नवल"।

नोवना†–क्रि० स० [सं० नद्ध] दुहते समय रस्सी से गाय के पैर बाँधना।

नोहर†–वि० [सं० नोपलभ्य] १ अलभ्य। दुर्लभ। जल्दी न मिलनेवाला। २ अनोखा। अद्भुत।

नौ–वि० [सं० नव] एक कम दस।
मुहा०—नौ दो ग्यारह होना=देखते देखते भाग जाना। चल देना।

नौकर–संज्ञा पुं० [फा०] [स्त्री० नौकरानी] १ भृत्य। चाकर। टहलुआ। खिदमतगार। २ कोई काम करने के लिये वेतन आदि पर नियुक्त मनुष्य। वैतनिक कर्मचारी।

नौकरशाही–संज्ञा स्त्री० [फा० नौकर+शाही] वह शासन-प्रणाली जिसमें सारी राजसत्ता केवल बड़े बड़े राजकर्मचारियों के हाथ में रहती है।

नौकरानी–संज्ञा स्त्री० [फा० नौकर+आनी

(प्रत्य०)] घर का काम धंधा करनेवाली स्त्री। दासी। मजदूरनी।

नौकरी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० नौकर+ई (प्रत्य०)] १. नौकर का काम। सेवा। टहल। खिदमत। २. कोई काम जिसके लिये तनखाह मिलती हो।

नौकरीपेशा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह जिसकी जीविका नौकरी से चलती हो।

नौका–संज्ञा स्त्री० [सं०] नाव। किश्ती।

नौछावर†–संज्ञा स्त्री० दे० "निछावर"।

नौज–अव्य० [सं० नवद्य, प्रा० नवज्ज] १. ऐसा न हो। ईश्वर न करे। (अनिच्छा-सूचक) २. न हो। न सही। (बेपरवाही) (स्त्रि०)

नौजवान–वि० [फ़ा०] नवयुवक।

नौजा–संज्ञा पुं० [फ़ा० लौज] १. बादाम। २. चिलगोजा।

नौतन*–वि० दे० "नूतन"।

नौतम*–वि० [सं० नवतम] १. अत्यंत नवीन। बिल्कुल नया। २. ताजा।
संज्ञा पुं० [हिं० नवना] नम्रता। विनय।

नौता–वि० [सं० नव] नया। ताज़ा।

नौधा*–वि० दे० "नवधा"।

नौनगा–संज्ञा पुं० [हिं० नौ+नग] बाहु पर पहनने का नौ नगों का एक गहना।

नौना–क्रि० अ० दे० "नवना"।

नौबढ़–वि० [सं० नया+हिं० बढ़ना] जिसे हीन दशा से अच्छी दशा में आए थोड़े ही दिन हुए हों। हाल में बढ़ा हुआ।

नौबत–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. बारी। पारी। २. गति। दशा। हालत। ३. उपस्थित दशा। संयोग। ४. वैभव या मंगलसूचक वाद्य, विशेषत: शहनाई और नगाड़ा जो देवमंदिरों या बड़े आदमियों के द्वार पर बजता है।
मुहा०—नौबत झड़ना=नौबत बजना। नौबत बजना=१. आनंद-उत्सव होना। २. प्रताप या ऐश्वर्य की घोषणा होना।

नौबतखाना–संज्ञा पुं० [फ़ा०] फाटक के ऊपर बना हुआ वह स्थान जहाँ बैठकर नौबत बजाई जाती है। नक्कारखाना।

नौबती–संज्ञा पुं० [फ़ा० नौबत+ई (प्रत्य०)] १. नौबत बजानेवाला। नक्कारची। २. फाटक पर पहरा देनेवाला। पहरेदार। ३. बिना सवार का सजा हुआ घोड़ा। ४. बड़ा खेमा या तंबू।

नौमि*–क्रि० स० [सं० नमामि] एक वाक्य जिसका अर्थ है "मैं नमस्कार करता हूँ"।

नौमी–संज्ञा स्त्री० [सं० नवमी] पक्ष की नवीं तिथि। नवमी।

नौरंग‡*–संज्ञा पुं० औरंग (औरंगजेब) का रूपांतर।

नौरंगी†–संज्ञा स्त्री० दे० "नारंगी"।

नौरतन–संज्ञा पुं० दे० "नवरत्न"।
संज्ञा पुं० [सं० नवरत्न] नौनगा गहना।
संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की चटनी।

नौरोज–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. पारसियों में नए वर्ष का पहला दिन। इस दिन बहुत आनंद-उत्सव मनाया जाता था। २. त्योहार।

नौल*–वि० दे० "नवल"।

नौलखा–वि० [हिं० नौ+लाख] जिसका मूल्य नौ लाख हो। जड़ाऊ और बहुमूल्य।

नौशा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] दूल्हा। वर।

नौसत–संज्ञा पुं० [हिं० नौ+सात] सोलहों शृंगार। सिंगार।

नौसादर–संज्ञा पुं० [फ़ा० नौशादर] एक तीक्ष्ण झालदार खार या नमक।

नौसिखिया, नौसिखुआ–वि० [सं० नवशिक्षित] जिसने कोई काम हाल में सीखा हो। जो दक्ष या कुशल न हुआ हो।

नौसेन–संज्ञा स्त्री० [सं०] जलसेना। जल में लड़नेवाली सेना।

नौहँड़–संज्ञा पुं० [सं० नव=नया+हिं० हाँडी] मिट्टी की नई हाँड़ी।

न्यग्रोध–संज्ञा पुं० [सं०] १. वट-वृक्ष। बरगद। २. शमी वृक्ष। ३. बाहु। ४. विष्णु। ५. महादेव।

न्यस्त–वि० [सं०] १. रखा हुआ। धरा हुआ। २. स्थापित। बैठाया या जमाया हुआ। ३. चुनकर [illegible] हुआ। ४.

डाला हुआ। फेंका हुआ। ५ त्यक्त। छोड़ा हुआ। ६. अमानत रखा हुआ।

न्याउ†–संज्ञा पु० दे० "न्याय"।

न्याति–संज्ञा स्त्री० [सं० ज्ञाति] जाति।*

न्याय–संज्ञा पुं० [सं०] १ उचित बात। नियम के अनुकूल बात। हक बात। इंसाफ। २. किसी मामले मुकदमे में दोषी और निर्दोष, अधिकारी और अनधिकारी आदि का निर्धारण। ३ वह शास्त्र जिसमें किसी वस्तु के यथार्थ ज्ञान के लिए विचारों की उचित योजना का निरूपण होता है। यह छः दर्शनों में है और इसके प्रवर्तक मिथिला के गौतम ऋषि कहे जाते हैं। ४. ऐसा दृष्टांत-वाक्य जिसका व्यवहार *लोक में कोई प्रसंग आ पड़ने पर होता है* और जो किसी उपस्थित बात पर घटती है। कहावत। जैसे—काकतालीय न्याय, काकाक्षिगोलक न्याय।

न्यायकर्त्ता–संज्ञा पु० [सं०] न्याय या फैसला करनेवाला हाकिम।

न्यायत–क्रि० वि० [सं०] १. न्याय से। ईमान से। २ ठीक-ठीक।

न्यायपरता–संज्ञा स्त्री० [सं०] न्यायशीलता। न्यायी होने का भाव।

न्यायवान्–संज्ञा पु० [सं० न्यायवत्] [स्त्री० न्यायवती] न्याय पर चलनेवाला। न्यायी।

न्यायाधीश–संज्ञा पु० [सं०] मुकदमे का फैसला करनेवाला अधिकारी। न्यायकर्त्ता।

न्यायालय–संज्ञा पु० [सं०] वह जगह जहाँ मुकदमों का फैसला होता हो। अदालत। कचहरी।

न्यायी–संज्ञा पु० [सं० न्यायिन्] न्याय पर चलनेवाला। उचित पक्ष ग्रहण करनेवाला।

न्याय्य–वि० [सं०] न्यायसंगत। उचित।

न्यारा–वि० [सं० निर्निकट] [स्त्री० न्यारी] १. जो पास न हो। दूर। २. अलग। पृथक्। जुदा। ३. और ही। अन्य। भिन्न। ४. निराला। अनोखा। विलक्षण।

न्यारिया–संज्ञा पु० [हिं० न्यारा] सुनारों के निआर (राख इत्यादि) को धोकर सोना-चाँदी एकत्र करनेवाला।

न्यारे–क्रि० वि० [हिं० न्यारा] १. पास नहीं। दूर २. अलग। पृथक्।

न्याव–संज्ञा पु० [सं० न्याय] १ नियम-नीति। आचरण-पद्धति। २. उचित पक्ष। वाजिब बात। ३. विवेक। ४. इंसाफ। न्याय।

न्यास–संज्ञा पु० [सं०] [वि० न्यस्त] १. स्थापन। रखना। २. धरोहर। थाती। ३ अर्पण। त्याग। ४. सन्यास। ५. देवता के भिन्न भिन्न अंगों का ध्यान करते हुए मंत्र पढ़कर उन पर विशेष वर्णों का स्थापन। (तंत्र)

न्यून–वि० [सं०] १. कम। थोड़ा। अल्प। २. घटकर। नीचा।

न्यूनता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कमी। २ हीनता।

न्योछावर–संज्ञा स्त्री० दे० "निछावर"।

न्योजी–संज्ञा स्त्री० [?] १. लीची नामक फल। २. चिलगोजा। नेजा।

न्योतना–क्रि० स० [हिं० न्योता+ना (प्रत्य०)] आनंद उत्सव आदि में सम्मिलित होने के लिए बंधु-बांधव आदि को बुलाना। निमंत्रित करना।

न्योतहरी–संज्ञा पु० [हिं० न्योता] निमंत्रित। न्योते में आया हुआ आदमी।

न्योता–संज्ञा पु० [सं० निमंत्रण] १. आनंद-उत्सव आदि में सम्मिलित होने के लिए बंधु-बांधव आदि का आह्वान। बुलावा। निमंत्रण। २ वह भोजन जो दूसरे को अपने यहाँ कराया जाय या दूसरे के यहाँ (उसकी प्रार्थना पर) किया जाय। दावत। ३ वह भेंट या धन जो इष्ट-मित्र या संबंधी इत्यादि के यहाँ किसी शुभ या अशुभ कार्य्य के समय भेजा जाता है।

न्योला–संज्ञा पु० दे० "नेवला"।

न्योली–संज्ञा स्त्री० [सं० नली] हठयोग की एक क्रिया जिसमें पेट के नलों को पानी से साफ करते हैं।

न्हाना†*–क्रि० अ० दे० "नहाना"।

प

प–हिंदी वर्णमाला में स्पर्श व्यंजनों के अंतिम वर्ग का पहला वर्ण। इसका उच्चारण ओठ से होता है।
पंक–संज्ञा पुं० [सं०] १. कीचड़। कीच। २. पानी के साथ मिला हुआ पोतने योग्य पदार्थ। लेप।
पंकज–संज्ञा पुं० [सं०] कमल।
पंकजराग–संज्ञा पुं० [सं०] पद्मराग मणि।
पंकजवाटिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] तेरह अक्षरों का एक वर्णवृत्त। एकावली।
पंकजात–संज्ञा पुं० [सं०] कमल।
पंकजासन–संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा।
पंकरुह–संज्ञा पुं० [सं०] कमल।
पंकिल–वि० [सं०] जिसमें कीचड़ हो।
पंक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ऐसा समूह जिसमें एक ही प्रकार की बहुत सी वस्तुएँ एक दूसरी के उपरांत एक सीध में हों। श्रेणी। पाँती। क़तार। २. चालीस अक्षरों का एक वैदिक छंद। ३. एक वर्ण-वृत्त। ४. दस की संख्या। ५. सेना में दस दस योद्धाओं की श्रेणी। ६. कुलीन ब्राह्मणों की श्रेणी। ७. भोज में एक साथ बैठकर खानेवालों की श्रेणी।
पंक्तिपावन–संज्ञा पुं० [सं०] वह ब्राह्मण जिसको यज्ञादि में बुलाना, भोजन कराना और दान देना श्रेष्ठ माना गया है।
पंक्तिबद्ध–वि० [सं०] श्रेणीबद्ध। क़तार में बँधा या रखा हुआ।
पंख–संज्ञा पुं० [सं० पक्ष] पर। डैना। मुहा०—पख जमना = १. न रहने का लक्षण उत्पन्न होना। २. बहकने या बुरे रास्ते पर जाने का रंग-ढंग दिखाई पड़ना। ३. प्राण खोने का लक्षण दिखाई देना। शामत आना। पंख लगना = पक्षी के समान वेगवान् होना।
पँखड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "पखड़ी"।
पंखा–संज्ञा पुं० [हिं० पंख] [स्त्री० अल्पा० पखी] वह वस्तु जिसे हिलाकर हवा का झोंका किसी ओर ले जाते हैं। बेना।
पंखा-कुली–संज्ञा पुं० [हिं० पंखा + कुली] वह कुली जो पंखा खींचता हो।
पंखापोश–संज्ञा पुं० [हिं० पंखा + फ़ा० पोश] पंखे के ऊपर का गिलाफ़।
पंखी–संज्ञा पुं० [सं० पक्षी] १. पक्षी। चिड़िया। २. पाँखी। फतिंगा। ३. एक प्रकार का ऊनी कपड़ा।
संज्ञा स्त्री० [हिं० पखा] छोटा पंखा।
पँखुड़ा†–संज्ञा पुं० [सं० पक्ष] कंधे और बाँह का जोड़। पखौरा।
पँखुड़ी*†–संज्ञा स्त्री० [हिं० पंख] फूल का दल। पखड़ी।
पंग–वि० [सं० पंगु] १. लँगड़ा। २. स्तब्ध।
संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का नमक।
पंगत, पंगति–संज्ञा स्त्री० [सं० पंक्ति] १. पाँती। पंक्ति। २. भोज के समय भोजन करनेवालों की पंक्ति। ३. भोज। ४. समाज। सभा।
पंगा–वि० [सं० पंगु] [स्त्री० पंगी] १. लँगड़ा। २. स्तब्ध। बेकाम।
पंगु–वि० [सं०] जो पैर से चल न सकता हो। लँगड़ा।
संज्ञा पुं० [सं०] १. शनैश्चर। २. एक वातरोग जो मनुष्य की जाँघों में होता है। इसमें रोगी चल-फिर नहीं सकता।
पंगुगति–संज्ञा स्त्री० [सं०] वर्णिक छंदों का एक दोष जो किसी वर्णिक छंद में लघु के स्थान में गुरु या गुरु के स्थान में लघु आ जाने से होता है।
पंगुल–वि० [सं० पंगु] पंगु। लँगड़ा।
पंच–वि० [सं०] जो संख्या में चार से एक अधिक हो। पाँच।
संज्ञा पुं० १. पाँच की संख्या या अंक। २. समुदाय। समाज। ३. जनता। लोक। मुहा०—पंच की भीख = सर्वसाधारण की कृपा। सबका आशीर्वाद। पच की दुहाई = सब लोगों से अन्याय दूर करने या सहायता करने की पुकार। पंच परमेश्वर = दस आदमियों का कहना ईश्वर-वाक्य के तुल्य है। ४. पाँच या अधिक आदमियों का समाज जो किसी झगड़े या मामले को निपटाने के लिए एकत्र हो। न्याय करनेवाली सभा।

मुहा०—(किसी को) पंच मानना या बदना = झगड़ा निपटाने के लिए किसी को नियत करना।
५ वह जो फौजदारी के दौरे में मुकदमे में दौरा जज की अदालत में फैसले में जज की सहायता के लिए नियत हो।

पंचक—संज्ञा पुं० [सं०] १. पाँच का समूह। पाँच का संग्रह। २ वह जिसके पाँच अवयव या भाग हों। ३ धनिष्ठा आदि पाँच नक्षत्र जिनमें किसी नये कार्य का आरंभ निषिद्ध है। पचखा। (फलित) ४ शकुनशास्त्र। ५ पंचायत।

पंचकन्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुराणानुसार अहल्या, द्रौपदी, कुंती, तारा और मंदोदरी ये पाँच स्त्रियाँ जो सदा कन्या ही रहीं अर्थात् विवाह आदि करने पर भी जिनका कौमार्य नष्ट नहीं हुआ।

पंचकल्याण—संज्ञा पुं० [सं०] वह घोड़ा जिसका सिर (माथा) और चारों पैर सफेद हों और शेष शरीर लाल या काला हो।

पंचकवल—संज्ञा पुं० [सं०] पाँच ग्रास अन्न जो स्मृति के अनुसार खाने के पूर्व कुत्ते, पतित, कोढ़ी, रोगी, कौए आदि के लिए अलग निकाल दिया जाता है। अग्रासन।

पंचकोण—वि० [सं०] जिसमें पाँच कोने हों।

पंचकोश—संज्ञा पुं० [सं०] उपनिषद् और वेदांत के अनुसार शरीर संघटित करनेवाले पाँच कोश (स्तर) जिनके नाम ये हैं—अन्नमय कोश, प्राणमय कोश, मनोमय कोश, विज्ञानमय कोश और आनंदमय कोश।

पंचकोस—संज्ञा पुं० [सं० पंचकोश] [संज्ञा पंचकोसी] पाँच कोस की लंबाई और चौड़ाई के बीच बसी हुई काशी की पवित्र भूमि।

पंचकोसी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पंचकोस] काशी की परिक्रमा।

पंचक्रोश—संज्ञा पुं० [सं०] पंचकोस। काशी।

पंचगंगा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पाँच नदियों का समूह—गंगा, यमुना, सरस्वती, किरणा और धूतपापा। पंचनद।

पंचगव्य—संज्ञा पुं० [सं०] गाय से प्राप्त होनेवाले पाँच द्रव्य—दूध, दही, घी, गोबर और गोमूत्र, जो बहुत पवित्र माने जाते और प्रायश्चित्त आदि में मिलाए जाते हैं।

पंचगौड़—संज्ञा पुं० [सं०] देशानुसार विंध्य के उत्तर बसनेवाले ब्राह्मणों के पाँच भेद—सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौड़, मैथिल और उत्कल।

पंचचामर—संज्ञा पुं० [सं०] एक छंद। नाराच। गिरिराज।

पंचजन—संज्ञा पुं० [सं०] १ पाँच या पाँच प्रकार के जनों का समूह। २ गंधर्व, पितर, देव, असुर और राक्षस। ३ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और निषाद। ४ मनुष्य। जन-समुदाय। ५ पुरुष। ६ मनुष्य, जीव और शरीर से संबंध रखनेवाले प्राण आदि।

पंचजन्य—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध शंख जिसे श्रीकृष्णचंद्र बजाया करते थे।

पंचतत्त्व—संज्ञा पुं० [सं०] पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश। पंचभूत।

पंचतन्मात्र—संज्ञा पुं० [सं०] सांख्य में पाँच स्थूल महाभूतों के कारण-रूप सूक्ष्म महाभूत जो अतींद्रिय माने गए हैं। इनके नाम हैं शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध।

पंचतपा—संज्ञा पुं० [सं० पंचतपस्] चारों ओर आग जलाकर धूप में बैठकर तप करनेवाला। पंचाग्नि तापनेवाला।

पंचता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पाँच का भाव। २ मृत्यु। विनाश।

पंचतिक्त—संज्ञा पुं० [सं०] आयुर्वेद में इन पाँच कड़ुई ओषधियों का समूह—गिलोय (गुरुच), कटकारि (भटकटैया), सोंठ, कुट और चिरायता (चक्ररत्न)।

पंचतोलिया—संज्ञा पुं० [हिं० पाँच + तोला ?] एक प्रकार का झीना महीन कपड़ा।

पंचत्व—संज्ञा पुं० [सं०] १. पाँच का भाव। २ मृत्यु। मरण। मौत।

पंचदेव—संज्ञा पुं० [सं०] पाँच प्रधान देवता जिनकी उपासना आजकल हिंदुओं में प्रचलित है—आदित्य, रुद्र, विष्णु गणेश

और देवी।

पंचद्रविड़–संज्ञा पुं० [सं०] उन ब्राह्मणों के पाँच भेद जो विंध्याचल के दक्षिण बसते हैं––महाराष्ट्र, तैलंग, कर्णाट, गुर्जर और द्रविड़।

पंचनद–संज्ञा पुं० [सं०] १. पंजाब की वे पाँच प्रधान नदियाँ जो सिंधु में मिलती हैं––सतलज, व्यास, रावी, चनाब और झेलम। २. पंजाब प्रदेश। ३. काशी के अंतर्गत एक तीर्थ जिसे पंचगंगा कहते हैं।

पंचनाथ–संज्ञा पुं० [सं० पंच+नाथ] बदरीनाथ, द्वारकानाथ, जगन्नाथ, रंगनाथ और *श्रीनाथ।*

पंचनामा–संज्ञा पुं० [हिं० पंच+फ़ा० नामा] वह कागज जिस पर पंच लोगों ने अपना निर्णय या फ़ैसला लिखा हो।

पंचपल्लव–संज्ञा पुं० [सं०] इन पाँच वृक्षों के पल्लव–आम, जामुन, कैथ, बिजौरा (बीजपूरक) और बेल।

पंचपात्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. गिलास के आकार का चौड़े मुँह का एक बरतन जो पूजा में काम आता है। २. पार्वण श्राद्ध।

पंचपीरिया–संज्ञा पुं० [हिं० पाँच + फ़ा० पीर] मुसलमानों के पाँचों पीरों की पूजा करनेवाला।

पंचप्राण–संज्ञा पुं० [सं०] पाँच प्राण या वायु––*प्राण, अपान, समान, व्यान और उदान।*

पंचभर्तारी–संज्ञा स्त्री० [सं० पंच + भर्तार] द्रौपदी।

पंचभूत–संज्ञा पुं० दे० "पंचतत्त्व"।

पंचम–वि० [सं०] [स्त्री० पंचमी] १. पाँचवाँ २. रुचिर। सुंदर। ३. दक्ष। निपुण।

संज्ञा पुं० [सं०] १. सात स्वरों में से पाँचवाँ स्वर। यह स्वर कोकिल के स्वर के अनुरूप माना गया है। २. एक राग जो छः प्रधान रागों में तीसरा है।

पंचमकार–संज्ञा पुं० [सं०] वाम-मार्ग में मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन।

पंचमहापातक–संज्ञा पुं० [सं०] मनुस्मृति के अनुसार ये पाँच महापातक हैं––*ब्रह्महत्या,* सुरापान, चोरी, गुरु की स्त्री से व्यभिचार और इन पातकों के करनेवालों का संसर्ग।

पंचमहायज्ञ–संज्ञा पुं० [सं०] स्मृतियों में अनुसार पाँच कृत्य जिनका नित्य करना गृहस्थों के लिये आवश्यक है। कृत्य ये हैं––१. *अध्यापन और संध्यावंदन।* २. पितृतर्पण या पितृयज्ञ। ३. होम या देवयज्ञ। ४. बलिवैश्वदेव या भूतयज्ञ। ५. अतिथिपूजन–*नृयज्ञ या मनुष्ययज्ञ।*

पंचमहाव्रत–संज्ञा पुं० [सं०] योगशास्त्र के अनुसार ये पाँच आचरण–*अहिंसा, सूनृता, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह।* इन्हें पतंजलिजी ने 'यम' माना है।

पंचमी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शुक्ल या कृष्ण पक्ष की पाँचवीं तिथि। २. द्रौपदी। ३. व्याकरण में अपादान कारक।

पंचमुखी–वि० [सं० पंचमुखिन्] पाँच मुखवाला।

पंचमूल–संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक में एक पाचन औषध जो पाँच ओषधियों की जड़ से बनती है।

पंचमेल–वि० [हिं० पाँच+मेल या मिलाना] १. जिसमें पाँच प्रकार की चीजें मिली हों। २. जिसमें सब प्रकार की चीजें मिली हों।

पँचरंग, पँचरंगा–वि० [हिं० पाँच + रंग] १. पाँच रंगों का। २. अनेक रंगों का।

पंचरत्न–संज्ञा पुं० [सं०] पाँच प्रकार के रत्न–सोना, हीरा, नीलम, लाल और मोती।

पंचराशिक–संज्ञा पुं० [सं०] गणित में एक प्रकार का हिसाब जिसमें चार ज्ञात राशियों के द्वारा पाँचवीं अज्ञात राशि का पता लगाया जाता है।

पँचलड़ा–वि० [हिं० पाँच+लड़] पाँच लड़ों का। जैसे, पँचलड़ा हार।

पंचलवण–संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक शास्त्रानुसार पाँच प्रकार के लवण––काँच, सेंधा, सामुद्र, बिट और सोंचर।

पंचवटी–संज्ञा स्त्री० [सं०] रामायण के अनुसार दंडकारण्य के अंतर्गत नासिक के

पास एक स्थान जहाँ रामचंद्रजी वनवास में रहे थे। सीताहरण यहीं हुआ था।

पंचवांसा–संज्ञा पु० [हिं० पाँच+मास] एक रीति जो गर्भ रहने से पाँचवें महीने में की जाती है।

पंचबाण–संज्ञा पु० [सं०] १ कामदेव के पाँच बाण जिनके नाम ये हैं—द्रवण, शोषण, तापन, मोहन और उन्माद। कामदेव के पाँच पुष्पबाणों के नाम ये हैं–कमल, अशोक, आम्र, नवमल्लिका और नीलोत्पल। २ कामदेव।

पंचवान–संज्ञा पु० [?] राजपूतों की एक जाति।

पंचशब्द–संज्ञा पु० [सं०] १ पाँच मंगल-सूचक बाजे जो मंगलकार्यों में बजाए जाते हैं—तंत्री, ताल, झाँझ, नगाड़ा और तुरही। २ व्याकरण के अनुसार सूत्र, वार्त्तिक, भाष्य, कोष और महाकवियों के प्रयोग।

पंचशर–संज्ञा पु० [सं०] १ कामदेव के पाँच बाण। २ कामदेव।

पंचशिख–संज्ञा पु० [सं०] १ सिंह राजा। २ एक मुनि जो कपिल के पुत्र थे।

पंचसूना–संज्ञा स्त्री० [सं०] मनु के अनुसार वे पाँच प्रकार की हिंसाएँ जो गृहस्थों से गृहकार्य करने में होती हैं—चूल्हा जलाना, आटा आदि पीसना, झाड़ू देना, कूटना और पानी का घड़ा रखना।

पंचहजारी–संज्ञा पु० दे० 'पंजहजारी'।

पंचांग–संज्ञा पु० [सं०] १ पाँच अंग या पाँच अंगों से युक्त वस्तु। २ वृक्ष के पाँच अंग—जड़, छाल, पत्ती, फूल और फल (वैद्यक)। ३ ज्योतिष के अनुसार वह तिथिपत्र, जिसमें किसी संवत् के वार, तिथि, नक्षत्र, योग और करण ब्योरेवार दिए गए हों। पत्रा। ४ प्रणाम का एक भेद जिसमें घुटना, हाथ और माथा पृथ्वी पर टेककर आँख देवता की ओर करके मुँह से प्रणामसूचक शब्द कहा जाता है।

पंचाक्षर–वि० [सं०] जिसमें पाँच अक्षर हों। संज्ञा पु० १ प्रतिष्ठा नामक वृत्ति। २ शिव का एक मंत्र जिसमें पाँच अक्षर हैं—ॐ नमः शिवाय।

पंचाग्नि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अन्वाहार्य्य, पचन, गार्हपत्य, आहवनीय, आवसथ्य और सभ्य नाम की पाँच अग्नियाँ। २ छांदोग्य उपनिषद् के अनुसार सूर्य, पर्जन्य, पृथ्वी, पुरुष और योषित्। ३ एक प्रकार का तप जिसमें तप करनेवाला अपने चारों ओर अग्नि जलाकर दिन में धूप में बैठा रहता है।

वि० १ पंचाग्नि की उपासना करनेवाला। २ पंचाग्नि विद्या जाननेवाला। ३ पंचाग्नि तापनेवाला।

पंचानन–वि० [सं०] जिसके पाँच मुँह हों। संज्ञा पु० १ शिव। २ सिंह।

पंचामृत–संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का द्रव्य जो दूध, दही, घी, चीनी और मधु मिलाकर देवताओं के स्नान के लिये बनाया जाता है।

पंचायत–संज्ञा स्त्री० [सं० पंचायतन] १ किसी विवाद या झगड़े पर विचार करने के लिये चुने हुए लोगों का समाज। पंचों की बैठक या सभा। कमेटी। २ एक साथ बहुत से लोगों की बकवाद।

पंचायतन–संज्ञा पु० [सं०] पाँच देवताओं की मूर्तियों का समूह। जैसे, राम-पंचायतन।

पंचायती–वि० [हिं० पंचायत] १ पंचायत का किया हुआ। पंचायत का। २ पंचायत संबंधी। ३ बहुत से लोगों का मिला-जुला। साझे का। ४ सब लोगों का।

पंचाल–संज्ञा पु० [सं०] १ एक देश का बहुत प्राचीन नाम। यह देश हिमालय और चंबल के बीच गंगा के दोनों ओर था। २ [स्त्री० पंचाली] पंचाल देशवासी। ३ पंचाल देश का राजा। ४ महादेव। शिव। ५ एक प्रकार का छंद।

पंचालिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पुतली। गुड़िया। २ नटी। नर्तकी।

पंचाली–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पुतली।

गुड़िया। २. द्रौपदी। ३. एक गीत।

पचीकरण—संज्ञा पुं० [सं०] वेदांत में पंच-भूतों का विभाग विशेष।

पंछा—संज्ञा पुं० [हिं० पानी+छाला] १. साव जो प्राणियों के शरीर से या पेड़ पौधों के अंगों से निकलता है। २. छाले आदि के भीतर भरा हुआ पानी।

पंछाला—संज्ञा पुं० [हिं० पानी + छाला] १. फफोला। २. फफोले का पानी।

पंछी—संज्ञा पुं० [सं० पक्षी] चिड़िया। पक्षी।

पंजर—संज्ञा पुं० [सं०] १. हड्डियों का ठट्टर या ढाँचा जो शरीर के कोमल भागों को अपने ऊपर ठहराए रहता है अथवा बद या रक्षित रखता है। ठटरी। अस्थि-समुच्चय। कंकाल। २. ऊपरी धड़ (छाती) का हड्डियों का घेरा। पार्श्व, वक्षःस्थल आदि की अस्थिपंक्ति। ३. शरीर। देह। ४. पिंजड़ा।

पंजहजारी—संज्ञा पुं० [फा०] एक उपाधि जो मुसलमान राजाओं के समय में सरदारों और दरबारियों को मिलती थी।

पंजा—संज्ञा पुं० [फा० मि० सं० पंचक] १. पाँच का समूह। गाही। २. हाथ या पैर की पाँचों उँगलियों का समूह।

मुहा०—पंजे झाड़कर पीछे पड़ना या चिमटना=हाथ धोकर पीछे पड़ना। जी-जान से लगना या तत्पर होना। पंजे में=१. पकड़ में। मुट्ठी में। ग्रहण में। २. अधिकार में।

३. पंजा लड़ाने की कसरत या बल-परीक्षा। ४. उँगलियों के सहित हथेली का संपुट। चंगुल। ५. जूते का अगला भाग जिसमें उँगलियाँ रहती हैं। ६. मनुष्य के पंजे के आकार का कटा हुआ किसी धातु का टुकड़ा जिसे लंबे बाँस आदि में बाँधकर झंडे या निशान की तरह ताजिये के साथ लेकर चलते हैं। ७. ताश का वह पत्ता जिसमें पाँच चिह्न या बूटियाँ हों।

मुहा०—छक्का-पंजा = दाँव-पेंच। चाल-बाजी।

पंजाब—संज्ञा पुं० [फ़ा०] [वि० पंजाबी] भारत के उत्तर-पश्चिम का प्रदेश जहाँ सतलज, व्यास, रावी, चनाब और झेलम नाम की पाँच नदियाँ बहती हैं। प्राचीन पंचनद।

पंजाबी—वि० [फ़ा०] पंजाब का।

संज्ञा पुं० [स्त्री० पंजाबिन] पंजाब निवासी।

पंजारा—संज्ञा पुं० [सं० पंजिकार] धुनिया।

पंजिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] पंचांग।

पँजीरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पाँच+जीरा] एक प्रकार की मिठाई जो आटे के चूर्ण को घी में भूनकर बनाई जाती है।

पँजेरा—संज्ञा पुं० [हिं० पाँजना] बरतन में टाँके आदि देकर जोड़ लगानेवाला।

पंडल—वि० [सं० पांडुर] पांडु वर्ण का। पीला।

संज्ञा पुं० [सं० पिंड] पिंड। शरीर।

पंडवा—संज्ञा पुं० [?] भैंस का बच्चा।

पंडा—संज्ञा पुं० [सं० पंडित] [स्त्री० पंडाइन] किसी तीर्थ या मंदिर का पुजारी। पुजारी।

पंडाल—संज्ञा पुं० [?] सभा के अधिवेशन के लिये बनाया हुआ मंडप।

पंडित—वि० [सं०] [स्त्री० पंडिता, पंडिताइन, पंडितानी] १. विद्वान्। शास्त्रज्ञ। ज्ञानी। २. कुशल। प्रवीण। चतुर।

संज्ञा पुं० शास्त्रज्ञ। २. ब्राह्मण।

पंडिताई—संज्ञा स्त्री० [हिं० पंडित + आई (प्रत्य०)] विद्वत्ता। पांडित्य।

पंडिताऊ—वि० [हिं० पंडित] पंडितों के ढंग का। जैसे, पंडिताऊ हिंदी।

पंडितानी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पंडित] १. पंडित की स्त्री। २. ब्राह्मणी।

पंडु—वि० [सं०] १. पीलापन लिए हुए मटमैला। २. श्वेत। सफ़ेद। ३. पीला।

पंडुक—संज्ञा पुं० [सं० पांडु] [स्त्री० पंडुकी] कपोत या कबूतर की जाति का एक प्रसिद्ध पक्षी। पिंडुक। पेंडुकी। फ़ाख्ता।

पंडुर—संज्ञा पुं० [देश०] पानी में रहनेवाला साँप। डेड़हा।

पँतीजना—क्रि० स० [सं० पिंजन] रूई ओटना। पींजना।

पँतीजी—संज्ञा स्त्री० [सं० पिंजक] रूई धुनने

की धुनकी।

पंथ–संज्ञा पु० [सं० पथ] १ मार्ग। रास्ता। राह। २ आचार-पद्धति। चाल। रीति।

मुहा०—पथ गहना = १. रास्ता पकड़ना। चलना। २. चाल पकड़ना। आचरण ग्रहण करना। पथ दिखाना = १ रास्ता बताना। २ उपदेश देना। पथ देखना या निहारना = प्रतीक्षा करना। इंतजार करना। पथ मे या पथ पर पाँव देना = १ चलना। २ आचरण ग्रहण करना। पथ पर लगना = १ रास्ते पर होना। २ चाल ग्रहण करना। किसी के पथ लगना = १ किसी के पीछे होना। अनुयायी होना। २ किसी के पीछे पड़ना। बराबर तंग करना। पथ सेना = बाट जोहना। आसरा देखना।

३ धर्ममार्ग। संप्रदाय। मत।

पंथान*–संज्ञा पु० [सं० पथ] मार्ग।

पंथी*–संज्ञा पु० [सं० पथिक] राही। पथिक। मुसाफिर।

पथिक*‡–संज्ञा पु० दे० "पथिक"।

पंथी–संज्ञा पु० [सं० पथिन्] १ राही। बटोही। पथिक। २ किसी संप्रदाय या पथ का अनुयायी। जैसे, कबीरपंथी।

पंद–संज्ञा स्त्री० [फा०] शिक्षा। उपदेश।

पंपा–संज्ञा स्त्री० [सं०] दक्षिण देश की एक नदी और उसी से लगा हुआ एक ताल और नगर जिसका उल्लेख रामायण में है।

पंपासर–संज्ञा पु० दे० "पंपा"।

पँवर–संज्ञा पु० [?] सामान। सामग्री।

पँवरना‡–क्रि० अ० [सं० प्लवन] १ तैरना। २ थाह लेना। पता लगाना।

पँवरि–संज्ञा स्त्री० [सं० पुर = घर] प्रवेश-द्वार या गृह। ड्योढ़ी।

पँवरिया–संज्ञा पु० [हिं० पँवरी, पौरि] १ द्वारपाल। दरबान। ड्योढ़ीदार। २ मंगल अवसर पर द्वार पर बैठकर मंगल गीत गानेवाला याचक।

पँवरी–संज्ञा स्त्री० दे० "पँवरि"। संज्ञा स्त्री० [हिं० पाँव] खड़ाऊँ। पाँवरी।

पँवाड़ा–संज्ञा पु० [सं० प्रवाद] १ ऐसी चौड़ी कथा जिसे सुनते सुनते जी ऊबे। दास्तान। २ व्यर्थ विस्तार के साथ कही हुई बात। ३ एक प्रकार का गीत।

पँवार–संज्ञा पु० दे० "परमार"।

पँवारना‡–क्रि० स० [सं० प्रवारण] हटाना। दूर करना। फेंकना।

पंसारी–संज्ञा पु० [सं० पण्यशाली] मसाले और जड़ी-बूटी बचनेवाला बनिया।

पंसासार–संज्ञा पु० [सं० पाशक + सं० सारि = गोटी] पासे का खेल।

पंसेरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० पाँच + सेर] पाँच सेर की तौल या बाट।

पइता–संज्ञा पु० [?] एक छंद जिसे पाईता भी कहते हैं।

पइसना‡–क्रि० अ० दे० "पैठना"।

पइसार‡–संज्ञा पु० [हिं० पइसना] पैठ। प्रवेश।

पउँरि, पउरी–संज्ञा स्त्री० दे० "पौरि"।

पकड़–संज्ञा स्त्री० [सं० प्रकृष्ट] १ पकड़ने की क्रिया या भाव। ग्रहण। २ पकड़ने का ढंग। ३ लड़ाई में एक एक बार आकर परस्पर गुथना। भिड़ंत। हाथा-पाई। ४ दोष, भूल आदि ढूँढ निकालना।

पकड़-धकड़–संज्ञा स्त्री० दे० "धर-पकड़"।

पकड़ना–क्रि० स० [सं० प्रकृष्ट] १ किसी वस्तु को इस प्रकार हाथ में लेना कि वह जल्दी छूट न सके। धरना। थामना। ग्रहण करना। २ काबू में करना। गिरफ्तार करना। ३ कुछ करने से रोक रखना। ठहराना। ४ ढूँढ निकालना। पता लगाना। ५ रोकना। टोकना। ६ दौड़ने, चलने या और किसी बात में बढ़े हुए के बराबर हो जाना। ७ किसी फैलनेवाली वस्तु में लगकर उसका अपने में संचार करना। ८ लगकर फैलना या मिलना। संचार करना। ९ अपने स्वभाव या वृत्ति के अंतर्गत करना। १०. आक्रांत करना। ग्रसना। घेरना।

पकड़वाना–क्रि० स० [हिं० पकड़ना का प्रे०] पकड़ने का काम दूसरे से कराना।

पकड़ाना–क्रि० स० [हिं० पकड़ना का प्रे०]

१. किसी के हाथ में देना या रखना। थमाना। २. पकड़ने का काम कराना।

पकना–क्रि० अ० [सं० पक्व] १. फल आदि का पुष्ट होकर खाने के योग्य होना।

मुहा०—बाल पकना = (बुढ़ापे के कारण) बाल सफ़ेद होना।

२. आँच खाकर गलना या तैयार होना। सिद्ध होना। रीझना।

मुहा०—कलेजा पकना = जी जलना। ३. फोड़े आदि का इस अवस्था में पहुँचना कि उसमें मवाद आ जाय। पीब से भरना। ४. पक्का होना।

पकरना†*–क्रि० स० दे० "पकड़ना"।

पकवान–संज्ञा पुं० [सं० पक्वान्न] घी में तलकर बनाई हुई खाने की वस्तु। जैसे, पूरी।

पकवाना–क्रि० स० [हि० पकाना का प्रे०] पकाने का काम दूसरे से कराना।

पकाई–संज्ञा स्त्री० [हि० पकाना] १ पकाने की क्रिया या भाव। २. पकाने की मज़दूरी।

पकाना–क्रि० स० [हि० पकना] १. फल आदि को पुष्ट और तैयार करना। २. आँच या गरमी के द्वारा गलाना या तैयार करना। रींधना। सिझाना। ३. फोड़े, फुन्सी, घाव आदि को इस अवस्था मे पहुँचाना कि उसमें पीब या मवाद आ जाय। ४. पक्का करना।

पकावन–संज्ञा पुं० दे० "पकवान"।

पकौड़ा–संज्ञा पुं० [हि० पका + बरी, बड़ी] [स्त्री० अल्पा० पकौड़ी] घी या तेल मे पकाकर फुलाई हुई बेसन या पीठी की बड़ी।

पक्का–वि० [सं० पक्व] [स्त्री० पक्की] १. अनाज या फल जो पुष्ट होकर खाने के योग्य हो गया हो। २. पका हुआ। जिसमें पूर्णता आ गई हो। पूरा। ३. जो अपनी पूरी बाढ़ या प्रौढ़ता को पहुँच गया हो। पुष्ट। ४. साफ़ और दुरुस्त। तैयार। ५. जो आँच पर कड़ा या मज़बूत हो गया हो। ६. जिसे अभ्यास हो। ७. जो अभ्यस्त या निपुण व्यक्ति के द्वारा बना हो। ८. तजरुबेकार। निपुण। होशियार। ९. आँच पर पका हुआ।

मुहा०—पक्का खाना या पक्की रसोई = घी में पका हुआ भोजन। पक्का पानी = १. औटाया हुआ पानी। २. स्वास्थ्यकर जल।

१०. दृढ़। मज़बूत। टिकाऊ। ११. स्थिर। दृढ़। न टलनेवाला। निश्चित। १२. प्रमाणों से पुष्ट। प्रामाणिक। नपा-तुला।

मुहा०—पक्का कागज़ = वह कागज़ जिस पर लिखी हुई बात क़ानून से दृढ़ समझी जाती है।

१३. जिसका मान प्रामाणिक हो।

पक्खर*–संज्ञा स्त्री० दे० "पाखर"।

वि० [सं० पक्व] पक्का। पुख्ता।

पक्व–वि० [सं०] १. पका हुआ। २. पक्का। ३. परिपुष्ट। दृढ़।

पक्वता–संज्ञा स्त्री० [सं०] पक्कापन।

पक्वान्न–संज्ञा पुं० [सं०] १. पका हुआ अन्न। २. घी, पानी आदि के साथ आग पर पकाकर बनाई हुई खाने की चीज़।

पक्वाशय–संज्ञा पुं० [सं०] पेट में वह स्थान जहाँ अन्न जाता है और यकृत् तथा क्लोम-ग्रंथियों से आए हुए रस से मिलता है।

पक्ष–संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी विशेष स्थिति से दाहिने और बाएँ पड़नेवाले भाग। ओर। पार्श्व। तरफ़। २. किसी विषय के दो या अधिक परस्पर भिन्न अंगों में से एक। पहलू। ३. वह बात जिसे कोई सिद्ध करना चाहता हो और जो किसी दूसरे की बात के विरुद्ध पड़ती हो।

मुहा०—पक्ष गिरना = मत का युक्तियों द्वारा सिद्ध न हो सकना।

४. अनुकूल मत या प्रवृत्ति। ५. झगड़ा या विवाद करनेवालों में से किसी के अनुकूल स्थिति।

मुहा०—(किसी का) पक्ष करना = दे० "पक्षपात करना"। (किसी का) पक्ष लेना = १. (झगड़े में) किसी की ओर होना। सहायक होना। २. पक्षपात करना। तरफ़दारी करना।

६. निमित्त। लगाव। संबंध। ७. वह वस्तु जिसमें साध्य की प्रतिज्ञा करते हैं। जैसे—"पर्वत वह्निमान् है"। यहाँ पर्वत

पक्ष है जिसमें साध्य वह्निमान की प्रतिज्ञा की गई है (न्याय)। ८ फौज। सेना। बल। ९ सहायकों या सवर्गों का दल। १० सहायक। सखा। साथी। ११ वादियों प्रतिवादियों के अलग अलग समूह। १२ चिड़ियों का डैना। पंख। पर। १३ शरपक्ष। तीर में लगा हुआ पर। १४ चांद्र मास के पंद्रह पंद्रह दिनों के दो विभाग। पाख। १५ गृह। घर।

पक्षपात–संज्ञा पु० [सं०] बिना उचित अनुचित के विचार के किसी के अनुकूल प्रवृत्ति या स्थिति। तरफदारी।

पक्षपाती–संज्ञा पु० [सं०] तरफदार।

पक्षाघात–संज्ञा पु० [सं०] अर्धांग रोग जिसमें शरीर के दहिने या बाएँ किसी पार्श्व के सब अंग क्रियाहीन हो जाते हैं। आधे अंग का लकवा। फालिज।

पक्षिराज–संज्ञा पु० [सं०] १ गरुड़। २ जटायु। ३ एक प्रकार का धान।

पक्षी–संज्ञा पु० [सं०] १ चिड़िया। २ तरफदार।

पखंडी–संज्ञा पु० [हिं० पाखंडी] १ पाखंडी। २ वह जो कठपुतलियाँ नचाता हो।

पख–संज्ञा स्त्री० [सं० पक्ष] १ ऊपर से व्यर्थ बढ़ाई हुई बात। तुर्रा। २ ऊपर से बढ़ाई हुई शर्त। बाधक नियम। अड़ंगा। ३ झगड़ा। बखेड़ा। ४ दोष। त्रुटि।

पखड़ी–संज्ञा स्त्री० [सं० पक्ष्म] फूलों का रंगीन पटल जो खिलने के पहले गर्भ या परागकेसर को चारों ओर से बंद किए रहता है और खिलने पर फैला रहता है। पुष्पदल।

पखराना–क्रि० स० [हिं० पखारना का प्र०] धुलवाना। पखारने का काम कराना।

पखरी†–संज्ञा स्त्री० १ दे० "पाखर"। २ दे० "पखड़ी"।

पखरैत–संज्ञा पु० [हिं० पाखर+ऐत (प्रत्य०)] वह घोड़ा, बैल या हाथी जिस पर लोहे की पाखर पड़ी हो।

पखवाड़ा†–संज्ञा पुं० दे० "पखवारा"।

पखवारा–संज्ञा पु० [सं० पक्ष+वार] १ महीने के पंद्रह पंद्रह दिनों के दो विभागों में से कोई एक। २ पंद्रह दिन का काल।

पखान*–संज्ञा पु० दे० "पाषाण"।

पखाना–संज्ञा पु० [सं० उपाख्यान] कहावत। कहनूत। कथा। मसल।

‡संज्ञा पु० दे० "पाखाना"।

पखारना–क्रि० स० [सं० प्रक्षालन] पानी से धोकर साफ करना। धोना।

पखाल–संज्ञा स्त्री० [सं० पय=पानी+हिं० खाल] १ बैल के चमड़े की बनी हुई बड़ी मशक जिसमें पानी भरा जाता है। २ धौंकनी।

पखावज–संज्ञा स्त्री० [सं० पक्ष+वाद्य] एक बाजा जो मृदंग से कुछ छोटा होता है।

पखावजी–संज्ञा पु० [हिं० पखावज+ई] पखावज बजानेवाला।

पखी, पखीरी*–संज्ञा पु० दे० "पक्षी"।

पखुरी–संज्ञा स्त्री० दे० "पखड़ी"।

पखेरू–संज्ञा पु० [सं० पक्षालु] पक्षी। चिड़िया।

पखौटा–संज्ञा पु० [हिं० पख] १ डैना। पर। २ मछली का पर।

पग–संज्ञा पुं० [सं० पदक] १ पैर। पाँव। २ चलने में एक स्थान से दूसरे स्थान पर पैर रखने की क्रिया की समाप्ति। डग। फाल।

पगडंडी–संज्ञा स्त्री० [हिं० पग+डंडी] जंगल या मैदान में वह पतला रास्ता जो लोगों के चलते चलते बन गया हो।

पगड़ी–संज्ञा स्त्री० [सं० पटक] वह लंबा कपड़ा जो सिर पर लपेटकर बाँधा जाता है। पाग। चीरा। साफा। उष्णीष।

मुहा०–(किसी से) पगड़ी अटकना=बराबरी होना। मुकाबला होना। पगड़ी उछालना=१ बेइज्जती करना। दुर्दशा करना। २ उपहास करना। हँसी उड़ाना। पगड़ी उतारना=१ मान या प्रतिष्ठा भंग करना। बेइज्जती करना। २ वस्त्र मोचन करना। ठगना। लूटना। (किसी को) पगड़ी बँधना=१ उत्तराधिकार मिलना। वरासत मिलना। २

उच्च पद या स्थान प्राप्त होना। ३. प्रतिष्ठा मिलना। सम्मान प्राप्त होना। (किसी के साथ) पगड़ी बदलना=भाई-चारे का नाता जोड़ना। मैत्री करना।

पगतरी†- संज्ञा स्त्री० [हिं० पग+तल] जूता।

पगदासी–संज्ञा स्त्री० [हिं० पग + दासी] १. जूता। २. खड़ाऊँ।

पगना–क्रि० अ० [सं० पाक] १. शरबत या शीरे में इस प्रकार पकना कि शरबत या शीरा चारों ओर लिपट और घुस जाय। २. रस आदि के साथ ओत प्रोत होना। सनना। ३. किसी के प्रेम में डूबना।

पगनियाँ†–संज्ञा स्त्री० [सं० पग] जूती।

पगरा*†–संज्ञा पुं० [हिं० पग + रा (प्रत्य०)] पग। डग। क़दम।
संज्ञा पुं० [फ़ा० पगाह] यात्रा आरंभ करने का समय। प्रभात। सवेरा। तड़का।

पगला–वि० पुं० दे० "पागल"।

पगहा†–संज्ञा पुं० [सं० प्रग्रह] [स्त्री० पगही] वह रस्सी जिससे पशु बाँधा जाता है। गिराँव। पघा।

पगा†–संज्ञा पुं० [हिं० पाग] दुपट्टा।
संज्ञा पुं० दे० "पघा"।

पगाना–क्रि० स० [सं० पक्व या पाक] १. पागने का काम कराना। २. अनुरक्त करना। मग्न करना।

पगार*–संज्ञा पुं० [सं० प्रकार] चहारदीवारी।
संज्ञा पुं० [हिं० पग + गारना] १ पैरों से कुचली हुई मिट्टी, कीचड़ या गारा। २. ऐसी वस्तु जिसे पैरों से कुचल सकें। ३. वह पानी या नदी जिसे पैदल चलकर पार कर सकें। पायाब।

पगाह–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] यात्रा आरंभ करने का समय। प्रभात। भोर। तड़का।

पगिआना*†–क्रि० स० दे० "पगाना"।

पगिया*†–संज्ञा स्त्री० दे० "पगड़ी"।

पगुराना†–क्रि० अ० [हिं० पागुर] १. पागुर या जुगाली करना। २. हजम करना।

पघा–संज्ञा पुं० [सं० प्रग्रह] ढोरों को बाँधने की मोटी रस्सी। पगहा।

पचकना–क्रि० अ० दे० "पिचकना"।

पचकल्यान–संज्ञा पुं० दे० "पंचकल्याण"।

पचखा‡–संज्ञा पुं० दे० "पंचक"।

पचगना–वि० [सं० पंचगुण] पाँच बार अधिक। पाँच गुना।

पचड़ा–संज्ञा पुं० [हिं० पाँच (प्रपंच) + डा (प्रत्य०)] १. झंझट। बखेड़ा। पँवाड़ा। प्रपंच। २. एक प्रकार का गीत जिसे प्रायः ओझा लोग देवी आदि के सामने गाते हैं। ३. लावनी के ढंग का एक गीत।

पचन–संज्ञा पुं० [सं०] १. पचाने की क्रिया या भाव। पाक। २. पकने की क्रिया या भाव। ३. अग्नि।

पचना–क्रि० अ० [सं० पचन] १. खाई हुई वस्तु का जठराग्नि की सहायता से रसादि में परिणत होना। हजम होना। २. क्षय होना। समाप्त या नष्ट होना। ३. पराया माल इस प्रकार अपने हाथ में आ जाना कि फिर वापस न हो सके। हजम हो जाना। ४. ऐसा परिश्रम होना जिससे शरीर क्षीण हो। बहुत हैरान होना।
मुहा०—पच मरना = किसी काम के लिये बहुत अधिक परिश्रम करना। हैरान होना।
५. एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ में पूर्ण रूप से लीन होना। खपना।

पचमेल–वि० दे० "पँचमेल"।

पचरंग–संज्ञा पुं० [हिं० पाँच + रंग] चौक पूरने की सामग्री—मेहँदी का चूरा, अबीर-बुक्का, हल्दी और सुरवारी के बीज।

पचरंगा–वि० [हिं० पाँच + रंग] [स्त्री० पचरंगी] १. जिसमें भिन्न भिन्न पाँच रंग हों। २. कई रंगों से रंजित।
संज्ञा पुं० नवग्रह आदि की पूजा के निमित्त पूरा जानेवाला चौक।

पचलड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० पाँच + लड़ी] माला की तरह का एक आभूषण।

पचलोना–संज्ञा पुं० [हिं० पाँच + लोन (लवण)] १. जिसमें पाँच प्रकार के नमक मिले हों। २. दे० "पचलवण"।

पचहरा–वि० [हिं० पाँच + हरा] १. पाँच

को पोषण करना। पनसारना।

पटपारी–वि० पु० [सं०] जो कपड़ा पहने हो।

पटना–क्रि० अ० [हिं० पट = जमीन की सतह के बराबर] १ किसी गड्ढे या नीचे स्थान का नगर आसपास की सतह के बराबर हो जाना। समतल होना। २ किसी स्थान में किसी वस्तु की इतनी अधिकता होना कि उसमें शून्य स्थान न दिखाई पड़े। परिपूर्ण होना। ३ मकान, कूएँ आदि के ऊपर कच्ची या पक्की छत बनाना। ४ सींचा जाना। सेराब होना। ५ दो मनुष्यों के विचार या स्वभाव में समानता होना। मन मिलना। बनना। ६ लेन-देन आदि में उभय पक्ष का मूल्य या शर्तों आदि पर सहमत हो जाना। तै हो जाना। ७ (ऋण) चुकना।
संज्ञा पु० दे० "पाटलिपुत्र"।

पटनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० पटना = तै होना] वह जमीन जो किसी को इस्तमरारी पट्टे के द्वारा मिली हो।

पटपट–संज्ञा स्त्री० [अनु० पट] हलकी वस्तु के गिरने से उत्पन्न शब्द की आवृत्ति।
क्रि० वि० बराबर पट पट ध्वनि करता हुआ।

पटपटाना–क्रि० अ० [हिं० पटकना] १ भूख-प्यास या सरदी-गरमी के मारे बहुत कष्ट पाना। २ किसी चीज से पटपट ध्वनि निकलना।
क्रि० स० १ 'पटपट' शब्द उत्पन्न करना। २ खेद करना। शोक करना।

पटपर–वि० [हिं० पट + अनु० पर] समतल। बराबर। चौरस। हमवार।
संज्ञा पु० १ नदी के आस-पास की वह भूमि जो बरसात के दिनों में प्रायः सदा डूबी रहती है। २ अत्यंत उजाड़ स्थान।

पटबधक–संज्ञा पु० [हिं० पटना+सं० बंधक] एक प्रकार का रेहन जिसमें रेहनदार रेहन रखी हुई संपत्ति के लाभ में से सूद लेने के बाद बचा हुआ धन मूल ऋण में मिनहा करता जाता है।

पटबीजना†–संज्ञा पु० दे० "जुगनूँ"।

पटमंजरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक रागिनी।

पटमंडप–संज्ञा पु० [सं०] तंबू। खेमा।

पटरा–संज्ञा पु० [सं० पटल] [स्त्री० अल्पा० पटरी] १ काठ का लंबा चौकोर और चौरस टुकड़ा। तख्ता। पल्ला।
मुहा०—पटरा कर देना = १ मार-काटकर गिरा देना या बिछा देना। २ चौपट कर देना।
२ धोबी का पाट। ३ हेंगा। पाटा।

पटरानी–संज्ञा स्त्री० [सं० पट्ट + रानी] वह रानी जो राजा के साथ सिंहासन पर बैठने की अधिकारिणी हो। पाटमहिषी।

पटरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० पटरा] १ काठ का पतला और लंबोतरा तख्ता।
मुहा०—पटरी जमना या बैठना = मन मिलना। मेल होना। पटना।
२ लिखने की तख्ती। पटिया। ३ सड़क के दोनों किनारों का वह भाग जो पैदल चलनेवालों के लिए होता है। ४ बगीचे में क्यारियों के इधर-उधर के पतले पतले रास्ते। रविश। ५ सुनहरे या रुपहले तारों से बना हुआ वह फीता जिसे कपड़े की कोर पर लगाते हैं। ६ हाथ में पहनने की एक प्रकार की चूड़ी।

पटल–संज्ञा पु० [सं०] १ छप्पर। छान। छत। २ आवरण। पर्दा। ३ परत। तह। तबक। ४ पहल। पार्श्व। ५ आँख की बनावट की तहें। आँख के पर्दे। ६ लकड़ी आदि का चौरस टुकड़ा। पटरा। तख्ता। ७ पुस्तक का भाग या अंश विशेष। परिच्छेद। ८ तिलक। टीका। ९ समूह। ढेर। अंबार।

पटलता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पटल का भाव या धर्म। २ अधिकता।

पटवा–संज्ञा पु० [सं० पाट + वाह (प्रत्य०)] [स्त्री० पटइन] १ रेशम या सूत में गहने गूथनेवाला। पटहार। २ पटसन। पाट।

पटवाना–क्रि० स० [हिं० पाटना का प्रे०] पटन या पाटन का काम दूसरे से कराना।

पटवारगरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० पटवारी + फ़ा० गरी] पटवारी का काम या पद।

पटवारी—संज्ञा पुं० [सं० पट्ट+हिं० वार] गाँव की जमीन और उसके लगान का हिसाब-किताब रखनेवाला एक छोटा सरकारी कर्मचारी।

संज्ञा स्त्री० [सं० पट+वारी (प्रत्य०)] कपड़े पहनानेवाली दासी।

पटवास—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिविर। तंबू। २. वह वस्तु जिससे वस्त्र सुगंधित किया जाय। ३. लहँगा।

पटसन—संज्ञा पुं० [सं० पाट+हिं० सन] १. एक प्रसिद्ध पौधा जिसके रेशे से रस्सी, बोरे, टाट और वस्त्र बनाए जाते हैं। २. पटसन के रेशे। पाट। जूट।

पटहा—संज्ञा पुं० [सं०] दुंदुभी। नगाड़ा।

पटहार—संज्ञा पुं० [स्त्री० पटहारिन] दे० "पटवा"।

पटा—संज्ञा पुं० [सं० पट] लोहे की वह फट्टी जिससे तलवार की काट और बचाव सीखे जाते हैं।

*संज्ञा पुं० [सं० पट्ट] पीढ़ा। पटरा।

मुहा०—पटा-फेर=विवाह की एक रस्म जिसमें वर-वधू के आसन परस्पर बदल दिए जाते हैं। पटा बाँधना=पटरानी बनाना।

संज्ञा पुं०* [सं० पट्ट] अधिकारपत्र। सनद।

पट्टा। संज्ञा पुं०* [हिं० पटना] १. लेन-देन। क्रय-विक्रय। सौदा। २. चौड़ी लकीर। धारी। ३. दे० "पट्टा"।

पटाई†—संज्ञा स्त्री० [हिं० पटाना] पाटने या पटाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

पटाक—[अनु०] किसी छोटी चीज के गिरने का शब्द। जैसे, वह पटाक से गिरा।

पटाका—संज्ञा पुं० [हिं० पट (अनु०)] १. पट या पटाक शब्द। २. पट या पटाक शब्द करके छूटनेवाली एक प्रकार की आतशबाजी। ३. कोड़े या पटाके की आवाज। ४. तमाचा। थप्पड़।

पटाना—क्रि० स० [हिं० पट=समतल] १. पाटने का काम कराना। २. छत को पीटकर बराबर कराना। ३. पाटन बनवाना। छत बनवाना। ४. ऋण चुका देना। ५. मूल्य दे कर लेना।

† क्रि० अ० शांत होकर बैठना।

पटापट—क्रि० वि० [अनु० पट] लगातार बार बार 'पट' ध्वनि के साथ।

संज्ञा स्त्री० निरंतर पटपट शब्द की आवृत्ति।

पटापटी—संज्ञा स्त्री० [अनु०] वह वस्तु जिसमें अनेक रंगों के फूल-पत्ते बने हों।

पटाव—संज्ञा पुं० [हिं० पाटना] १. पाटने की क्रिया या भाव। २. पाटकर चौरस किया हुआ स्थान। ३. छत की पाटन।

पटिया†—संज्ञा स्त्री० [सं० पट्टिका] १. पत्थर का प्रायः चौकोर और चौरस कटा हुआ टुकड़ा। फलक। २. खाट या पलंग की पट्टी। पाटी। †३. माँग। पट्टी। ४. हेंगा। पाटा। ५. लिखने की पट्टी। तख्ती।

पटी—संज्ञा स्त्री० [सं० पट] १. * कपड़े का पतला लंबा टुकड़ा। पट्टी। २. पटका। कमरबंद। ३. नाटक का पर्दा।

पटीर—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का चंदन। २. खैर का वृक्ष। ३. वटवृक्ष।

पटीलना—क्रि० अ० [हिं० पटाना] १. किसी को उलटी सीधी बातें समझा बुझाकर अपने अनुकूल करना। ढंग पर लाना। २. अर्जित करना। कमाना। ३. ठगना। छलना। ४. सफलतापूर्वक किसी काम को समाप्त करना।

पटु—वि० [सं०] १. प्रवीण। निपुण। कुशल। दक्ष। २. चतुर। चालाक। होशियार। ३. अत्यंत कठोर हृदयवाला। ४. तंदुरुस्त। स्वस्थ। ५. तीक्ष्ण। तीखा। तेज। ६. उग्र। प्रचंड।

पटुआ—संज्ञा पुं० दे० "पटुवा"।

पटुका—संज्ञा पुं० [सं० पटिका] १. दे० "पटका"। २. चादर।

पटुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] पटु होने का भाव। निपुणता। होशियारी।

पटुत्व—संज्ञा पुं० [सं०] पटुता।

पटुली—संज्ञा स्त्री० [सं० पट्ट] १. काठ की पटरी जो झूले के रस्सों पर रखी जाती है। २. चौकी। पीढ़ी।

को चौरस करना। पनारना।

पटपारी-वि०पु०[सं०] जो पगारा पर्ते हो।

पटना-क्रि० स०[हिं० पट = जमीन की सतह के बराबर] १ किसी गड्ढे या नीचे स्थान या अंतर आसपास की सतह के बराबर हो जाना। समतल होना। २ किसी स्थान में किसी वस्तु की इतनी अधिकता होना कि उससे शून्य स्थान न दिखाई पड़े। परिपूर्ण होना। ३ मकान, कूएँ आदि के ऊपर पच्ची या पक्की छत बनना। ४ † सींचा जाना। सेराब होना। ५ दो मनुष्यों के विचार या स्वभाव में समानता होना। मन मिलना। बनना। ६ लेन-देन आदि में उभय पक्ष का मूल्य या शर्तों आदि पर सहमत हो जाना। ७ (ऋण) चुकता हो जाना।

संज्ञा पु० दे० "पाटलिपुत्र"।

पटनी-संज्ञा स्त्री०[हिं० पटना = तै होना] वह जमीन जो किसी को इस्तमरारी पट्टे के द्वारा मिली हो।

पटपट-संज्ञा स्त्री०[अनु० पट] हल्की वस्तु के गिरने से उत्पन्न शब्द की आवृत्ति।

क्रि० वि० बराबर पट पट ध्वनि करता हुआ।

पटपटाना-क्रि० अ०[हिं० पटकना] १ भूख-प्यास या सरदी-गरमी के मारे बहुत कष्ट पाना। २ किसी चीज से पटपट ध्वनि निकलना।

क्रि० स० १ 'पटपट' शब्द उत्पन्न करना। २ खेद करना। शोक करना।

पटपर-वि०[हिं० पट + अनु० पर] समतल। बराबर। चौरस। हमवार।

संज्ञा पु० १ नदी के आस-पास की वह भूमि जो बरसात के दिनों में प्राय सदा डूबी रहती है। २ अत्यंत उजाड़ स्थान।

पटबंधक-संज्ञा पु०[हिं० पटना + सं० बंधक] एक प्रकार का रेहन जिसमें रेहनदार रेहन रखी हुई संपत्ति के लाभ में से सूद लेने के बाद बचा हुआ ... मिनहा ... जाता है।

पटमंजरी-संज्ञा स्त्री०[सं०] एक रागिनी।

पटमंडप-संज्ञा पु० [सं०] तंबू। खेमा।

पटरा-संज्ञा पु०[सं० पटल][स्त्री० अल्पा० पटरी] १ काठ का लंबा चौकोर और चौरस टुकड़ा। तख्ता। पल्ला।

मुहा०—पटरा कर देना = १ मार-काटकर फैला देना या बिछा देना। २ चौपट कर देना।

२ धोबी का पाट। ३ हेंगा। पाटा।

पटरानी-संज्ञा स्त्री०[सं० पट्ट + रानी] वह रानी जो राजा के साथ सिंहासन पर बैठने की अधिकारिणी हो। पाटमहिषी।

पटरी-संज्ञा स्त्री०[हिं० पटरा] १ काठ का पतला और लंबोतरा तख्ता।

मुहा०—पटरी जमना या बैठना = मन मिलना। मेल होना। पटना।

२ लिखने की तख्ती। पटिया। ३ सड़क के दोनों किनारों का वह भाग जो पैदल चलनेवालों के लिए होता है। ४ बगीचे में क्यारियों के इधर-उधर के पतले पतले रास्ते। रविश। ५ सुनहरे या रुपहले तारों से बना हुआ वह फीता जिसे कपड़े की कोर पर लगाते हैं। ६ हाथ में पहनने की एक प्रकार की चूड़ी।

पटल-संज्ञा पु०[सं०] १ छप्पर। छान। छत। २ आवरण। पर्दा। ३ परत। तह। तबक। ४ पहल। पार्श्व। ५ आँख की बनावट की तहें। आँख के पर्दे। ६ लकड़ी आदि का चौरस टुकड़ा। पटरा। तख्ता। ७ पुस्तक का भाग या अंश विशेष। परिच्छेद। ८ तिलक। टीका। ९ समूह। ढेर। अंबार।

पटलता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पटल का भाव या धर्म। २ अधिकता।

पटवा-संज्ञा पु०[सं० पाट + वाह (प्रत्य०)] [स्त्री० पटइन] १ रेशम या सूत में गहने गूथनेवाला। पटहार। २ पटसन। पाट।

पटवाना-क्रि० स०[हिं० पाटना का प्रे०] पटन या पाटन का काम दूसरे से कराना।

पटवारगरी-संज्ञा स्त्री० [हिं० पटवारी + फ़ा० गरी] पटवारी का काम या पद।

पटवारी—संज्ञा पुं० [सं० पट्ट + हिं० वार] गाँव की जमीन और उसके लगान का हिसाब-किताब रखनेवाला एक छोटा सर-कारी कर्मचारी।
संज्ञा स्त्री० [सं० पट + वारी (प्रत्य०)] कपड़े पहनानेवाली दासी।
पटवास—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिविर। तंबू। २. वह वस्तु जिससे वस्त्र सुगंधित किया जाय। ३. लहँगा।
पटसन—संज्ञा पुं० [सं० पाट + हिं० सन] १. एक प्रसिद्ध पौधा जिसके रेशे से रस्सी, बोरे, टाट और वस्त्र बनाए जाते हैं। २. पटसन के रेशे। पाट। जूट।
पटहा—संज्ञा पुं० [सं०] दुंदुभी। नगाड़ा।
पटहार—संज्ञा पुं० [स्त्री० पटहारिन] दे० "पटवा"।
पटा—संज्ञा पुं० [सं० पट] लोहे की वह फट्टी जिससे तलवार की काट और बचाव सीखे जाते हैं।
*संज्ञा पुं० [सं० पट्ट] पीढ़ा। पटरा।
मुहा०—पटा-फेर = विवाह की एक रस्म जिसमें वर-वधू के आसन परस्पर बदल दिए जाते हैं। पटा बाँधना = पटरानी बनाना।
संज्ञा पुं०* [सं० पट्ट] अधिकारपत्र। सनद। पट्टा। संज्ञा पुं०* [हिं० पटना] १. लेन-देन। क्रय-विक्रय। सौदा। २. चौड़ी लकीर। धारी। ३. दे० "पट्टा"।
पटाई†—संज्ञा स्त्री० [हिं० पटाना] पाटने या पटाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
पटाक—[अनु०] किसी छोटी चीज के गिरने का शब्द। जैसे, वह पटाक से गिरा।
पटाका—संज्ञा पुं० [हिं० पट (अनु०)] १. पट या पटाक शब्द। २. पट या पटाक शब्द करके छूटनेवाली एक प्रकार की आतशबाजी। ३. कोड़े या पटाके की आवाज। ४. तमाचा। थप्पड़।
पटाना—क्रि० स० [हिं० पट = समतल] १. पाटने का काम कराना। २. छत को पीटकर बराबर कराना। ३. पाटन बन-वाना। छत बनवाना। ४. ऋण चुका देना। ५. मूल्य दे कर लेना। † क्रि० अ० शांत होकर बैठना।
पटापट—क्रि० वि० [अनु० पट] लगातार बार बार 'पट' ध्वनि के साथ।
संज्ञा स्त्री० निरंतर पटपट शब्द की आवृत्ति।
पटापटी—संज्ञा स्त्री० [अनु०] वह वस्तु जिसमें अनेक रंगों के फूल-पत्ते बने हों।
पटाव—संज्ञा पुं० [हिं० पाटना] १. पाटने की क्रिया या भाव। २. पाटकर चौरस किया हुआ स्थान। ३. छत की पाटन।
पटिया†—संज्ञा स्त्री० [सं० पट्टिका] १. पत्थर का प्रायः चौकोर और चौरस कटा हुआ टुकड़ा। फलक। २. खाट या पलंग की पट्टी। पाटी। †३. माँग। पट्टी। ४. हेंगा। पाटा। ५. लिखने की पट्टी। तख्ती।
पटी—संज्ञा स्त्री० [सं० पट] १. * कपड़े का पतला लंबा टुकड़ा। पट्टी। २. पटका। कमरबंद। ३. नाटक का पर्दा।
पटीर—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का चदन। २. खैर का वृक्ष। ३. वटवृक्ष।
पटोलना—क्रि० अ० [हिं० पटाना] १. किसी को उल्टी सीधी बातें समझा बुझाकर अपने अनुकूल करना। ढंग पर लाना। २. अर्जित करना। कमाना। ३. ठगना। छलना। ४. सफलतापूर्वक किसी काम को समाप्त करना।
पटु—वि० [सं०] १. प्रवीण। निपुण। कुशल। दक्ष। २. चतुर। चालाक। होशियार। ३. अत्यंत कठोर हृदयवाला। ४. तंदुरुस्त। स्वस्थ। ५. तीक्ष्ण। तीखा। तेज़। ६. उग्र। प्रचंड।
पटुआ—संज्ञा पुं० दे० "पटुवा"।
पटुका—संज्ञा पुं० [सं० पटिका] १. दे० "पटका"। २. चादर।
पटुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] पटु होने का भाव। निपुणता। होशियारी।
पटुत्व—संज्ञा पुं० [सं०] पटुता।
पटुली—संज्ञा स्त्री० [सं० पट्ट] १. काठ की पटरी जो झूले के रस्सों पर रखी जाती है। २. चौकी। पीढ़ी।

पछारना*–क्रि० स० दे० "पछाड़ना"।

पछावरि*†–संज्ञा स्त्री० [देश०] १. एक प्रकार का सिखरन या शरबत। २. छाँछ का बना एक पेय पदार्थ।

पछाहीं–वि० [हिं० पछाहँ] पछाहँ का।

पछिआना†–क्रि० स० [हिं० पीछे+आना] पीछे पीछे चलना। पीछा करना।

पछिताव–संज्ञा पुं० दे० "पछतावा"।

पछुवाँ–वि० [हिं० पच्छिम] पच्छिम की (हवा)।

पछेली†–संज्ञा स्त्री० [हिं० पीछे+एली (प्रत्य०)] हाथ में पहनने का स्त्रियों का एक प्रकार का कड़ा।

पछोड़ना†–क्रि० स० [सं० प्रक्षालन] सूप आदि में रखकर (अन्न आदि के दानों को) साफ़ करना। फटकना।

पछयावर†–संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का सिखरन या शरबत।

पजरना*–क्रि० अ० [सं० प्रज्वलन] जलना।

पजारना*–क्रि० स० [हिं० पजरना] जलाना।

पजावा–संज्ञा पुं० [फ़ा० पजावः] आवाँ। ईंट पकाने का भट्ठा।

पज्ज–संज्ञा पुं० [सं० पद्य] शूद्र।

पज्झटिका–संज्ञा स्त्री० [सं० पद्धटिका] १६ मात्राओं का एक प्रकार का छंद।

पटंबर*†–संज्ञा पुं० [सं० पाट+अंबर] रेशमी कपड़ा। कौषेय।

पट–संज्ञा पुं० [सं०] १. वस्त्र। कपड़ा। २. कोई आड़ करनेवाली वस्तु। पर्दा। चिक। बंद। ३. धातु आदि का वह चिपटा टुकड़ा या पट्टी जिस पर कोई चित्र या लेख खुदा हुआ हो। ४. कागज का वह टुकड़ा जिस पर चित्र खींचा या उतारा जाय। चित्रपट। ५. वह चित्र जो जगन्नाथ, बदरिकाश्रम आदि मंदिरों से दर्शनप्राप्त यात्रियों को मिलता है। ६. छप्पर। छान। ७. कपास।

संज्ञा पुं० [सं० पट्ट] १. साधारण दरवाजों के किवाड़।

मुहा०–पट उघड़ना या खुलना=मंदिर का दरवाज़ा इसलिये खुलना कि लोग दर्शन करें। २. पालकी के दरवाज़े के किवाड़ जो सरकाने से खुलते और बंद होते हैं। ३. सिंहासन। ४. चिपटी और चौरस भूमि। वि० ऐसी स्थिति जिसमें पेट भूमि की ओर हो। चित का उलटा। औंधा।

मुहा०–पट पड़ना=मंद पड़ना। न चलना।

क्रि० वि० चट का अनुकरण। तुरंत।

पटकन*–संज्ञा स्त्री० [हिं० पटकना] १. पटकने की क्रिया या भाव। २. चपत। तमाचा। ३. छोटा डंडा। छड़ी।

पटकना–क्रि० स० [सं० पतन+करण] १. झोंके के साथ नीचे की ओर गिराना। २. किसी खड़े या बैठे हुए व्यक्ति को उठाकर जोर से नीचे गिराना। दे मारना।

मुहा०–(किसी पर) पटकना=कोई ऐसा काम किसी के सुपुर्द करना जिसे करने की उसकी इच्छा न हो।

३. कुश्ती में प्रतिद्वंद्वी को पछाड़ना।

†क्रि० अ० १. सूजन बैठना या पचकना। २. पट शब्द के साथ किसी चीज का दरक या फट जाना।

पटकनिया, पटकनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० पटकना] १. पटकने या पटके जाने की क्रिया या भाव। २. भूमि पर गिरकर लोटने या पछाड़ खाने की क्रिया या अवस्था।

पटका–संज्ञा पुं० [सं० पट्टक] वह दुपट्टा या रूमाल जिससे कमर बाँधी जाय। कमर-बंद। कमरपेच।

पटकान–संज्ञा स्त्री० दे० "पटकनी"।

पटतर*–संज्ञा पुं० [सं० पट्ट+तल] १. समता। बराबरी। समानता। २. उपमा। तशबीह।

†वि० चौरस। समतल। बराबर।

पटतरना–क्रि० अ० [हिं० पटतर] उपमा देना।

पटतारना–क्रि० स० [हिं० पटा+तारना=अंदाजना] खाँड़े, भाले आदि शस्त्रों को किसी पर चलाने के लिये पकड़ना या खींचना। सँभालना।

क्रि० स० [हिं० पटतर] ऊँची-नीची जमीन

पटुवा–संज्ञा पुं० [सं० पाट] १. पटसन। जूट। २. करेमू।
पटूका*†–संज्ञा पुं० दे० "पटका"।
पटेबाज–संज्ञा पुं० [हिं० पटा+फ़ा० बाज] १. पटा खेलनेवाला। पटे से लड़नेवाला। पटैत। २. व्यभिचारी और धूर्त।
पटेर–संज्ञा पुं० [सं० पटेरक] पानी में होनेवाली एक घास। गोंदपटेर।
पटेल–संज्ञा पुं० [हिं० पट्टा+वाला] १. गाँव का नंबरदार। (म० प्र०) २. गाँव का मुखिया। गाँव का चौधरी। ३. एक प्रकार की उपाधि। (दक्षिण भारत)
पटेला–संज्ञा पुं० [हिं० पाटना] [स्त्री० अल्पा० पटेली] १. वह नाव जिसका मध्य भाग पटा हो। २. दे० "पटेर"। ३. हेंगा। ४. सिल। पटिया।
पटैत–संज्ञा पुं० दे० "पटेबाज"।
पटैला–संज्ञा पुं० [हिं० पटरा] १. किवाड़ बंद करने का डंडा। ब्योंड़ा। २. दे० "पटेला"।
पटोर–संज्ञा पुं० [सं० पटोल] १. पटोल। परवल। २. कोई रेशमी कपड़ा।
पटोरी–संज्ञा स्त्री० [सं० पाट+ओरी (प्रत्य०)] रेशमी साड़ी या धोती।
पटोल–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का रेशमी कपड़ा। २. परवल।
पट्ट–संज्ञा पुं० [सं०] १. पीढ़ा। पाटा। २. पट्टी। तख्ती। लिखने की पटिया। ३. तांबे आदि धातुओं की वह चिपटी पट्टी जिस पर राजकीय आज्ञा या दान आदि की सनद खोदी जाती थी। ४. किसी वस्तु का चिपटा या चौरस तल या भाग। ५. शिला। पटिया। ६. वह भूमि-संबंधी अधिकारपत्र जो भूमिस्वामी की ओर से असामी को दिया जाता है। पट्टा। ७ ढाल। ८. पगड़ी। ९. दुपट्टा। १०. नगर। ११. चौराहा। १२. राजसिंहासन। १३. रेशम। १४. पटसन। वि० [सं०] मुख्य। प्रधान। वि० अनु० दे० "पट"।
पट्टदेवी–संज्ञा स्त्री० [सं०] पटरानी।
पट्टन–संज्ञा पुं० [सं०] नगर।
पट्टमहिषी–संज्ञा स्त्री० [सं०] पटरानी।
पट्टा–संज्ञा पुं० [सं० पट्ट] १. किसी स्थावर संपत्ति विशेषत: भूमि के उपयोग का अधिकारपत्र जो स्वामी की ओर से असामी या ठेकेदार को दिया जाय। २. कोई अधिकारपत्र। सनद। ३. चमड़े या बनात आदि की बद्धी जो कुत्तों, बिल्लियों के गले में पहनाई जाती है। ४. पीढ़ा। ५. पुरुषों के सिर के बाल जो पीछे की ओर गिरे और बराबर कटे होते हैं। ६. चपरास। ७. चमड़े का कमरबंद। पट्टी। ८. एक प्रकार की तलवार।
पट्टिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. छोटी तख्ती। पटिया। २. कपड़े की छोटी पट्टी।
पट्टी–संज्ञा स्त्री० [सं० पट्टिका] १. लकड़ी की वह चौरस और चिपटी पटरी जिस पर आरम्भिक छात्रों को लिखना सिखाया जाता है। पाटी। पटिया। तख्ती। २. पाठ। सबक। ३. उपदेश। शिक्षा। सिखावन। ४. वह शिक्षा जो बुरी नीयत से दी जाय। बहकावा। भुलावा। ५. लकड़ी की वह बल्ली जो खाट के ढाँचे की लंबाई में लगाई जाती है। पाटी। ६. धातु, कागज या कपड़े की धज्जी। ७ लकड़ी की लंबी बल्ली जो छत या छाजन के ठाठ में लगाई जाती है। ८. सन की बनी हुई धज्जियाँ जिनके जोड़ने से ठाठ तैयार होते हैं। ९. कपड़े की कोर या किनारी। १०. एक प्रकार की मिठाई। ११. कपड़े की धज्जी जिसे सर्दी और थकावट से बचने के लिए टाँगों में बाँधते हैं। १२. पंक्ति। पाँती। कतार। १३. माँग के दोनों ओर के, कंघी से खूब बैठाए हुए, बाल जो पट्टी से दिखाई पड़ते हैं। पाटी। पटिया। १४. किसी वस्तु विशेषत. किसी संपत्ति का एक भाग। हिस्सा। भाग। विभाग। पत्ती। १५ *वह अतिरिक्त कर जो जमींदार किसी

विशेष प्रयोजन के लिये असामियों पर लगाता है। नेग। अबवाब।

पट्टीदार-संज्ञा पुं० [हिं० पट्टी + फ़ा० दार] १. वह व्यक्ति जिसका किसी संपत्ति में हिस्सा हो। हिस्सेदार। २. बराबर का अधिकारी।

पट्टीदारी-संज्ञा स्त्री० [हिं० पट्टीदार] १. पट्टी होने का भाव। बहुत से हिस्से होना। २. पट्टीदार होने का भाव। मुहा०—पट्टीदारी करना=१. किसी के बराबर अधिकार जताना। २. बराबरी करना। ३. वह जमींदारी जिसके बहुत से मालिक होने पर भी जो अविभक्त संपत्ति समझी जाती हो। भाई-चारा।

पट्टू-संज्ञा पुं० [हिं० पट्टी] एक खूब गरम ऊनी वस्त्र जो पट्टी के रूप में होता है।

पठमान*-वि०[सं० पठ्यमान] पढ़ने योग्य।

पट्ठा-संज्ञा पुं० [सं० पुष्ट, प्रा० पुट्ठ] [स्त्री० पठिया] १. जवान। तरुण। पाठा। २. कुश्तीबाज। लड़ाका। ३. ऐसा पत्ता जो लंबा, दलदार या मोटा हो। ४. वे तंतु जो मांसपेशियों को परस्पर और हड्डियों के साथ बाँधे रखते हैं। मोटी नस। स्नायु। मुहा०—पट्ठा चढ़ना=किसी नस का तन जाना। नस पर नस चढ़ना। ५. एक प्रकार का चौड़ा गोटा। ६. पेड़ू के नीचे कमर और जाँघ के जोड़ का वह स्थान जहाँ छूने से गिल्टियाँ मालूम होती हैं।

पट्ठी-संज्ञा स्त्री० दे० "पठिया"।

पठन-संज्ञा पुं० [सं०] पढ़ना।

पठनीय-वि० [सं०] पढ़ने योग्य।

पठनेटा-संज्ञा पुं० [हिं० पठान + एटा=बेटा (प्रत्य०)] पठान का लड़का।

पठवना*-क्रि० स० [सं० प्रस्थान] भेजना।

पठवाना*-क्रि० स० [हिं० पठाना का प्रे०] भेजने का काम दूसरे से कराना। भेजवाना।

पठान-संज्ञा पुं० [पश्तो० पुख्ताना] एक मुसलमान जाति जो अफ़ग़ानिस्तान के अधिकांश और भारत के सीमांत प्रदेश आदि में बसती है।

पठाना*-क्रि० स० [सं० प्रस्थान] भेजना।

पठानी-संज्ञा स्त्री० [हिं० पठान] १. पठान जाति की स्त्री। २. पठान होने का भाव। ३. क्रूरता, शूरता, रक्तपात-प्रियता आदि पठानों के गुण। पठानपन।

वि० [हिं० पठान] पठानों का।

पठानी लोध-संज्ञा स्त्री० [सं० पट्टिका लोध्र] एक जंगली वृक्ष जिसकी लकड़ी और फूल औषध के काम में आते हैं।

पठावन†-संज्ञा पुं० [हिं० पठाना] दूत।

पठावनि, पठावनी-संज्ञा स्त्री० [हिं० पठाना] १. किसी को कहीं कोई वस्तु या संदेश पहुँचाने के लिये भेजना। २. इस प्रकार भेजने की मजदूरी।

पठित-वि० [सं०] १. पढ़ा हुआ। (ग्रंथ)। जिसे पढ़ चुके हों। अधीत। २. पढ़ा-लिखा। शिक्षित। (यह अर्थ ठीक नहीं है)

पठिया-संज्ञा स्त्री० [हिं० पट्ठा + इया (प्रत्य०)] जवान और तगड़ी स्त्री।

पठौनी†-संज्ञा स्त्री० दे० "पठावनी"।

पठ्यमान-वि० [सं० पाठ्य+मान (प्रत्य०)] पढ़ा जाने के योग्य। सुपाठ्य।

पड़छती, पड़छत्ती-संज्ञा स्त्री० [सं० पट-च्छदि] १. भीत की रक्षा के लिये लगाया जानेवाला छप्पर या टट्टी। २. कमरे आदि के बीच की पाटन जिस पर चीज़ असबाब रखते हैं। टाँड़।

पड़त*-संज्ञा स्त्री० दे० "पड़ता"।

पड़ता-संज्ञा पुं० [हिं० पड़ना] १. किसी वस्तु की खरीद या तैयारी का दाम। सर्फ़ की क़ीमत। लागत। मुहा०—पड़ता खाना या पड़ना=लागत और अभीष्ट लाभ मिल जाना। खर्च और मुनाफ़ा निकल आना। पड़ता फैलाना या बैठाना=किसी चीज के तैयार करने, खरीदने और मँगाने आदि में जो खर्च पड़ा हो, उसे देखते हुए उसका मूल्य निश्चित करना। २. दर। शरह। ३. भू-कर की दर। लगान की शरह। ४. सामान्य दर। औसत।

पड़ताल-संज्ञा स्त्री० [सं० परितोलन] १.

पड़तालने की क्रिया या भाव। किसी वस्तु की सूक्ष्म छान-बीन। अन्वीक्षण। अनु-संधान। २ गाँव अथवा शहर के पटवारी द्वारा खेतों की एक प्रकार की जाँच।

पड़तालना–क्रि० स० [हिं० पड़ताल+ना (प्रत्य०)] पड़ताल करना। जाँचना।

पड़ती–संज्ञा स्त्री० [हिं० पड़ना] वह भूमि जिस पर कुछ काल से खेती न की गई हो।

मुहा०–पड़ती उठना=पड़ती का जोता जाना। पड़ती पर खेती होना। पड़ती छोड़ना=किसी खेत को कुछ समय तक यों ही छोड़ना, उसे जोतना नहीं, जिसमें उसकी उर्वरा शक्ति बढ़े।

पड़ना–क्रि० अ० [सं० पतन] १ प्रायः ऊँचे स्थान से नीचे आना। गिरना। पतित होना। २ (दुखद घटना) घटित होना। जैसे—मुसीबत पड़ना।

मुहा०–(किसी पर) पड़ना=विपत्ति या मुसीबत आना। संकट या कठिनाई प्राप्त होना। ३ बिछाया जाना। फैलाया जाना। ४ पहुँचना या पहुँचाया जाना। दाखिल होना। प्रविष्ट होना। ५ हस्तक्षेप करना। दखल देना। ६ ठहरना। टिकना।

मुहा०—पड़ा होना=१ एक स्थान में कुछ समय तक स्थित रहना। एक ही जगह पर बने रहना। २ रखा रहना। धरा रहना। ३ बाकी रहना। शेष रहना।

७ विश्राम के लिये सोना या लेटना। आराम करना।

मुहा०—पड़े रहना या पड़ा रहना=बिना कुछ काम किए लेटे रहना। निकम्मे रहना।

८ बीमार होना। खाट पर पड़ना। ९ मिलना। प्राप्त होना। १० पड़ता खाना। ११ आय, प्राप्ति आदि की औसत होना। पड़ता होना। १२ रास्ते में मिलना। मार्ग में मिलना। १३ उत्पन्न होना। पैदा होना। १४ स्थित होना। १५ संयोगवश होना। उपस्थित होना। १६ जाँच या विचार करने पर ठहरना। पाया जाना। १७ देशांतर या अवस्थांतर होना। १८ अत्यंत इच्छा होना। धुन होना।

मुहा०—क्या पड़ी है=क्या मतलब है।

पड़पड़ाना–क्रि० अ० [अनु०] १ पड़पड़ शब्द होना। २ अत्यंत कड़वे पदार्थ के भक्षण या स्पर्श से जीभ पर किंचित् दुःखद तीक्ष्ण अनुभूति होना। चरपराना।

पड़पोता–संज्ञा पु० [सं० प्रपौत्र][स्त्री० पड़पोती] पुत्र का पोता। पोते का पुत्र।

पड़वा–संज्ञा स्त्री० [सं० प्रतिपदा, प्रा० पडिवआ] प्रत्येक पक्ष की प्रथम तिथि।

पड़ाना–क्रि० स० [हिं० पड़ना का सक०] गिराना। झुकाना।

पड़ाव–संज्ञा पु०[हिं० पड़ना+आव (प्रत्य०)] १ यात्री-समूह का यात्रा के बीच में अव-स्थान। २ वह स्थान जहाँ यात्री ठहरते हों।

पड़िया–संज्ञा स्त्री० [हिं० पँड़वा, पड़वा] भैंस का मादा बच्चा।

पड़िवा†–संज्ञा स्त्री० दे० "पड़वा"।

पड़ोस–संज्ञा पु० [सं० प्रतिवेश या प्रतिवास] १ किसी के घर के आस-पास के घर।

यौ०—पास पड़ोस=समीपवर्ती स्थान।

मुहा०—पड़ोस करना=पड़ोस में बसना। २ किसी स्थान के आस-पास के स्थान।

पड़ोसी–संज्ञा पु०[हिं० पड़ोस+ई(प्रत्य०)] [स्त्री० पड़ोसिन] वह मनुष्य जिसका घर पड़ोस में हो। पड़ोस में रहनेवाला।

पढ़त–संज्ञा स्त्री० [हिं० पढ़ना] १ पढ़ने की क्रिया या भाव। २ निरंतर पढ़ना।

पढ़ता–वि० [हिं० पढ़ना] पढ़नेवाला।

पढ़ंत–संज्ञा स्त्री०[हिं० पढ़ना+अंत(प्रत्य०)] १ पढ़ने की क्रिया या भाव। २ मंत्र।

पढ़ना–क्रि० स० [सं० पठन] १ किसी पुस्तक, लेख आदि को इस प्रकार देखना कि उसमें लिखी बात मालूम हो जाय। २ किसी लिखावट के शब्दों का उच्चारण करना। बाँचना। ३ उच्चारण करना। मध्यम या धीमे स्वर से कहना। ४ स्मरण रखने के लिये किसी विषय का बार बार उच्चारण करना। रटना। ५ मंत्र फूँकना। जादू करना। ६ तोते, मैना आदि का मनुष्यों के सिखाए हुए शब्द

उच्चारण करना। ७. विद्या पढ़ना। शिक्षा प्राप्त करना। अध्ययन करना।
यौ०—पढ़ना-लिखना=शिक्षा पाना। पढ़ना-पढ़ाना। पढ़ा-लिखा=शिक्षित।

पढ़वाना—क्रि० स० [हिं० पढ़ना तथा पढ़ाना का प्रे०] १. किसी को पढ़ने में प्रवृत्त करना। बँचवाना। २. किसी के द्वारा किसी को शिक्षा दिलाना।

पढ़ाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० पढ़ना+आई(प्रत्य०)] १. पढ़ने का काम। विद्याभ्यास। अध्ययन। पठन। २. पढ़ने का भाव।
संज्ञा स्त्री० [हिं० पढ़ाना+आई (प्रत्य०)] १. पढ़ाने का काम। अध्यापन। पाठन। पढ़ौनी। २. पढ़ाने का भाव। ३. पढ़ाने का ढंग। अध्यापन-शैली।

पढ़ाना—क्रि० स० [हिं० पढ़ना का प्रे०] १. शिक्षा देना। अध्यापन करना। २. कोई कला या हुनर सिखाना। ३. तोते, मैना आदि पक्षियों को बोलना सिखाना। ४. सिखाना। समझाना।

पढ़िना—संज्ञा पुं० [सं० पाठीन] एक प्रकार की बिना सेहरे की बड़ी मछली। पहिना।

पण—संज्ञा पुं० [सं०] १. कोई कार्य जिसमें बाजी बदी गई हो। जूआ। द्यूत। २. प्रतिज्ञा। शर्त्त। मुआहिदा। ३. वह वस्तु जिसके देने का करार या शर्त्त हो। जैसे, किराया। ४. मोल। कीमत। मूल्य। ५. फ़ीस। शुल्क। ६. धन। संपत्ति। जायदाद। ७. क्रय-विक्रय की वस्तु। सौदा। ८. व्यवहार। व्यापार। व्यवसाय। ९. स्तुति। प्रशंसा। १०. प्राचीन काल का ताँबे का टुकड़ा जिसका व्यवहार सिक्के की भाँति किया जाता था। ११. प्राचीन काल की एक विशेष नाप।

पणव—संज्ञा पुं० [सं०] १. छोटा नगाड़ा या ढोल। २. चौपाई की तरह का एक वर्णवृत्त।

पण्य—वि० [सं०] १. खरीदने या बेचने योग्य। २. प्रशंसा करने योग्य।
संज्ञा पुं० १. सौदा। माल। २. व्यापार। रोजगार। ३. बाजार। ४. दूकान।

पण्यभूमि—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्थान जहाँ माल या सौदा जमा किया जाता हो। कोठी। गोदाम। गोला।

पण्यशाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] दूकान।

पतंग—संज्ञा पुं० [सं०] १. पक्षी। चिड़िया। २. शलभ। टिड्डी। ३. भुनगा। फतिंगा। ४. उड़नेवाला कीड़ा। ५. सूर्य। ६. एक प्रकार का धान। जड़हन। ७. जल-महुआ। ८. कंदुक। गेंद। ९. शरीर। (अने०) १०. नौका। नाव। (अने०)
संज्ञा पुं० [सं० पत्रांग] एक प्रकार का बड़ा वृक्ष। इसकी लकड़ी से बहुत बढ़िया लाल रंग निकलता है।
संज्ञा पुं० [सं० पतंग=उड़नेवाला] हवा में ऊपर उड़ाने का एक खिलौना जो बाँस की तीलियों के ढाँचे पर चौकोना कागज़ मढ़कर बनाया जाता है। गुड्डी। कनकौवा।

पतंगबाज़—संज्ञा पुं० [हिं० पतंग+फ़ा० बाज़] वह जिसको पतंग उड़ाने का व्यसन हो।

पतंगबाज़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पतंगबाज़] पतंग उड़ाने की कला, क्रिया या भाव।

पतंगसुत—संज्ञा पुं० [सं०] अश्विनीकुमार।

पतंगा—संज्ञा पुं० [सं० पतंग] १. पतंग। कोई उड़नेवाला कीड़ा-मकोड़ा। २. एक कीड़ा जो घासों अथवा वृक्ष की पत्तियों पर होता है। फतिंगा। ३. चिनगारी।

पतंचिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] धनुष की डोरी। कमान की ताँत। चिल्ला।

पतंजलि—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रसिद्ध ऋषि जिन्होंने योग-शास्त्र की रचना की। २. एक प्रसिद्ध मुनि जिन्होंने पाणिनीय सूत्रों और कात्यायन-कृत उनके वार्त्तिक पर 'महाभाष्य' की रचना की थी।

पत*†—संज्ञा पुं० [सं० पति] १. पति। खसम। २. मालिक। स्वामी।
संज्ञा स्त्री० [सं० प्रतिष्ठा ?] १. लाज। लज्जा। आबरू। २. प्रतिष्ठा। इज्ज़त।
यौ०—पत-पानी=लज्जा। आबरू।
मुहा०—पत उतारना या लेना=बेइज़्ज़ती

करना। पत रखना = इज्जत बचाना।

पतभड़—संज्ञा स्त्री० [हिं० पत=पत्ता+झड़ना] १ वह ऋतु जिसमें पेड़ों की पत्तियाँ झड़ जाती हैं। शिशिर ऋतु। माघ और फाल्गुन के महीने। २ अवनति-काल।

पतझार†—संज्ञा स्त्री० दे० "पतझड़"।

पतत्प्रकर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] काव्य में एक प्रकार का रस-दोष।

पतन—संज्ञा पुं० [सं०] १ गिरने या नीचे आने की क्रिया या भाव। गिरना। २ बैठना या डूबना। ३ अवनति। अधोगति। जवाल। तबाही। ४ नाश। मृत्यु। ५ पाप। पातक। ६ जातिच्युति। जाति से बहिष्कृत होना। ७ उड़ान। उड़ना।

पतनशील—वि० [सं०] जो बिना गिरे न रह सके। गिरनेवाला।

पतनीय—वि० [सं०] गिरनेवाला।

पतनोन्मुख—वि० [सं०] जो गिरने की ओर प्रवृत्त हो। जिसका पतन, अधोगति या विनाश निकट आता जाता हो।

पत-पानी—संज्ञा पुं० [हिं० पत+पानी] १ प्रतिष्ठा। मान। इज्जत। २ लाज। आबरू।

पतर*†—वि० [सं० पत्र] १ पतला। कृश। २ पत्ता। पर्ण। ३ पत्तल।

पतरा†—वि० दे० "पतला"।

पतरी†—संज्ञा स्त्री० दे० "पत्तल"।

पतला—वि० [सं० पात्रट] [स्त्री० पतली] १ जिसका घेरा, लपेट अथवा चौड़ाई कम हो। जो मोटा न हो। २ जिसकी देह का घेरा कम हो। जो स्थूल या मोटा न हो। कृश। ३ जिसका दल मोटा न हो। झीना। हलका। ४ गाढ़े का उलटा। अधिक तरल। ५ असक्त। असमर्थ।

मुहा०—पतला पड़ना = दुर्दशाग्रस्त होना। पतला हाल=दुःख और कष्ट की अवस्था।

पतलापन—संज्ञा पुं० [हिं० पतला+पन (प्रत्य०)] पतला होने का भाव।

पतलून—संज्ञा पुं० [अं० पैंटलून] वह पाजामा जिसमें मियानी नहीं लगाई जाती और पायँचा सीधा गिरता है। अँगरेजी पाजामा।

पतली—संज्ञा स्त्री० [देश०] सरकंडा। सरपत

पतवर†—क्रि० वि० [सं० पंक्ति] पंक्तिवार। पंक्तिक्रम से। बराबर बराबर।

पतवार, पतवारी—संज्ञा स्त्री० [सं० पात्रपाल] नाव का वह त्रिकोणाकार मुख्य अंग जो पीछे की ओर आधा जल में और आधा बाहर होता है। इसी के द्वारा नाव मोड़ी या घुमाई जाती है। कन्हर। कण।

पता—संज्ञा पुं० [सं० प्रत्यय] १ किसी का स्थान सूचित करनेवाली बात जिससे उसको पा सकें।

यौ०—पता-ठिकाना = किसी वस्तु या स्थान और उसका परिचय।

२ खोज। अनुसंधान। सुराग। टोह।

यौ०—पता-निशान = १ वे बातें जिनसे किसी के संबंध में कुछ जान सकें। २ अस्तित्वसूचक चिह्न। नाम निशान।

३ अभिज्ञता। जानकारी। खबर। ४ गूढ़ तत्त्व। रहस्य। भेद।

मुहा०—पते की या पते की बात=भेद प्रकट करनेवाली बात। रहस्य खोलनेवाला कथन।

पताई—संज्ञा स्त्री० [सं० पत्र] झड़ी हुई पत्तियों का ढेर।

पताका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लकड़ी आदि के डंडे के एक सिरे पर पहनाया हुआ तिकोना या चौकोना कपड़ा। झंडा। झंडी। फरहरा।

मुहा०—(किसी स्थान में अथवा किसी स्थान पर) पताका उड़ना = १ अधिकार होना। राज्य होना। २ सर्वप्रधान होना। सबसे श्रेष्ठ माना जाना। (किसी वस्तु की) पताका उड़ना=प्रसिद्धि होना। धूम होना। पताका उड़ाना=अधिकार करना। विजयी होना। पताका गिरना=हार होना। पराजय होना। विजय की पताका=विजयसूचक पताका।

२ वह डंडा जिसमें पताका पहनाई हुई होती है। ध्वज। ३ सौभाग्य। ४ दस खर्व की संख्या। ५ नाटक में वह स्थल जहाँ एक पात्र एक विषय में कोई बात सोच रहा हो और दूसरा पात्र आकर दूसरे

के संबंध में कोई बात कहे। ६. पिंगल के नौ प्रत्ययों में से आठवाँ जिसके द्वारा किसी निश्चित गुरु-लघु वर्ण के छंद का स्थान जाना जाय।

पताका-स्थान–संज्ञा पुं० दे० "पताका" ५।

पताकिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] सेना।

पतार* †–संज्ञा पुं० [सं० पाताल] १. दे० "पाताल"। २. जंगल। सघन वन।

पताल–संज्ञा पुं० दे० "पाताल"।

पताल आँवला–संज्ञा पुं० [सं० पाताल आमलकी] औषध के काम में आनेवाला एक पौधा या क्षुप।

पताल कुम्हड़ा–संज्ञा पुं० [हिं० पताल + कुम्हड़ा] एक प्रकार का जंगली पौधा जिसकी गाँठों से शकरकंद की तरह कंद फूटते हैं।

पतिंग–संज्ञा पुं० [सं० पतंग] पतंग। फतिंगा।

पतिंवरा–वि० स्त्री० [सं०] जो अपना पति स्वयं चुने। स्वयंवरा। (स्त्री)

पति–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० पत्नी] १. मालिक। स्वामी। अधिपति। २. स्त्री विशेष का विवाहित पुरुष। दूल्हा। शौहर। खाविंद। ३. शिव या ईश्वर। ४. मर्यादा। प्रतिष्ठा।

पतिआना †–क्रि० स० [सं० प्रत्यय + आना (प्रत्य०)] विश्वास या एतबार करना।

पतिआर* †–संज्ञा पुं० [हिं० पतिआना] १. विश्वास। साख। एतबार। २. विश्वसनीय।

पतित–वि० [सं०] १. गिरा हुआ। ऊपर से नीचे आया हुआ। २. आचार, नीति या धर्म से गिरा हुआ। नीतिभ्रष्ट। ३. महापापी। अति पातकी। ४. जाति से निकाला हुआ। समाज-बहिष्कृत। ५. अत्यंत मलीन। महा अपावन। ६. अति नीच। अधम।

पतित-उधारन*–वि० [सं० पतित + हिं० उधारना] जो पतित का उद्धार करे। संज्ञा पुं० ईश्वर या उनका अवतार।

पतितता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पतित होने का भाव। २. नीचता।

पतितपावन–वि० [सं०] [स्त्री० पतितपावनी] पतित को पवित्र करनेवाला। संज्ञा पुं० १. ईश्वर। २. सगुण ईश्वर।

पतित्व–संज्ञा पुं० [सं०] १. स्वामी, प्रभु या मालिक होने का भाव। स्वामित्व। प्रभुत्व। २. पति होने का भाव।

पतिदेवा–संज्ञा स्त्री० [सं०] पतिव्रता।

पतिनी*–संज्ञा स्त्री० दे० "पत्नी"।

पतियाना †–क्रि० स० [सं० प्रत्यय + हिं० आना (प्रत्य०)] विश्वास करना।

पतियारा*–संज्ञा पुं० [हिं० पतियाना] पतियाने का भाव। विश्वास। एतबार।

पतिलोक–संज्ञा पुं० [सं०] पतिव्रता स्त्री को मिलनेवाला वह स्वर्ग जिसमें उसका पति रहता है।

पतिवती–वि० स्त्री० [सं० पति + वती (प्रत्य०)] सधवा। सौभाग्यवती। (स्त्री)

पतिव्रत–संज्ञा पुं० [सं०] पति में (स्त्री की) अनन्य प्रीति और भक्ति। पातिव्रत्य।

पतिव्रता–वि० [सं०] पति में अनन्य अनुराग रखनेवाली और यथाविधि पतिसेवा करनेवाली। सती। साध्वी। (स्त्री)

पतीजन, पतीजना*–क्रि० अ० [हिं० प्रतीत + ना (प्रत्य०)] पतिआना। एतबार करना।

पतील‡–वि० दे० "पतला"।

पतीली–संज्ञा स्त्री० [सं० पातिली=हाँड़ी] ताँबे या पीतल की एक प्रकार की बटलोई।

पतुरिया–संज्ञा स्त्री० [सं० पातिली] वेश्या।

पतोखा–संज्ञा पुं० [हिं० पत्ता] [अल्पा० पतोखी] पत्ते का बना पात्र। दोना। ३. संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का बगला।

पतोखी–संज्ञा स्त्री० [हिं० पतोखा] १. एक पत्ते का दोना। छोटा दोना। २. पत्तों का बना छोटा छाता। घोघी।

पतोह, पतोहू †–संज्ञा स्त्री० [सं० पुत्रवधू] बेटे की स्त्री। पुत्रवधू।

पतौआ* ‡–संज्ञा पुं० [सं० पत्र] पत्ता। पर्ण।

पत्तन–संज्ञा पुं० [सं०] नगर। शहर।

पत्तर–संज्ञा पुं० [सं० पत्र] धातु का ऐसा चिपटा लंबोतरा टुकड़ा जो पीटकर तैयार किया गया हो। धातु की चादर।

पत्तल—संज्ञा स्त्री० [स० पत्र] १ पत्तों को जोड़कर बनाया हुआ एक पात्र जिसमें खाना या भोजन लिया जाता है।
मुहा०—एक पत्तल में खानेवाले=परस्पर रोटी-बेटी का व्यवहार करनेवाले। किसी की पत्तल में खाना=किसी के साथ खान पान आदि का संबंध करना या रखना। जिस पत्तल में खाना, उसी में छेद करना=जिससे लाभ उठाना, उसी की हानि करना। कृतघ्नता करना। २ पत्तल में परसी हुई भोजन-सामग्री। ३ एक आदमी के खाने भर भोजन-सामग्री।

पत्ता—संज्ञा पु० [स० पत्र] [स्त्री० पत्ती] १ पेड़ या पौधे के शरीर का वह हरे रंग का फैला हुआ अवयव जो कांड या टहनी से निकलता है। पलास। पत्रक। पर्ण।
मुहा०—पत्ता खड़कना=कुछ खटका या आशंका होना। पत्ता न हिलना=हवा का बिलकुल बंद होना। हब्स होना।
२ कान में पहनने का एक गहना। ३ मोटे कागज का गोल या चौकोर खंड।

पत्ति—संज्ञा पु० [स०] १ पैदल सिपाही। प्यादा। पदातिक। २ शूरवीर पुरुष। योद्धा। बहादुर। ३ प्राचीन काल में सेना का सबसे छोटा विभाग जिसमें १ रथ, १ हाथी, ३ घोड़े और ५ पैदल होते थे।

पत्तिक—संज्ञा पु० [स०] १ प्राचीन काल में सेना का एक विशेष विभाग जिसमें १० घोड़े, १० हाथी, १० रथ और १० प्यादे होते थे। २ उपर्युक्त विभाग का अफसर। वि० पैदल चलनेवाला।

पत्ती—संज्ञा स्त्री० [हिं० पत्ता+ई (प्रत्य०)] १ छोटा पत्ता। २ भाग। हिस्सा। साझे का अंश। ३ फूल की पँखड़ी। दल। ४ भाँग। ५ पत्ती के आकार की लकड़ी, धातु आदि का कटा हुआ कोई टुकड़ा। पट्टी। संज्ञा स्त्री० [?] राजपूतों की एक जाति।

पत्तीदार—संज्ञा पु० [हिं० पत्ती + फा० दार] साझीदार। हिस्सेदार।

पत्थ*—संज्ञा पु० दे० "पथ्य"।

पत्थर—संज्ञा पु० [स० प्रस्तर] [वि०पथरीली, हि० पथराना] १. पृथ्वी के कड़े स्तर का पिंड या खंड। भूद्रव्य का कड़ा पिंड।
मुहा०—पत्थर का कलेजा, दिल या हृदय=वह हृदय जिसमें दया, करुणा आदि कोमल वृत्तियों का स्थान न हो। पत्थर की छाती=बलवान् और दृढ़ हृदय। मजबूत दिल। पक्की तबीयत। पत्थर की लकीर=सदा सर्वदा बनी रहनेवाली (वस्तु)। शाश्वत। स्थिर। अमिट। पक्की। स्थायी। पत्थर चटाना=पत्थर पर घिसकर धार तेज करना। पत्थर तले हाथ आना या दबना=ऐसे संकट में फँस जाना। जिससे छूटने का उपाय न दिखाई पड़ता हो। बुरी तरह फँस जाना। पत्थर तले से हाथ निकालना=संकट या मुसीबत से छूटना। पत्थर पर दूब जमना=अनहोनी बात या असंभव काम होना। पत्थर पसीजना या पिघलना=अत्यंत कठोर चित्त में नरमी या कृपण के मन में दानेच्छा आदि होना। पत्थर से सिर फोड़ना या मारना=असंभव बात के लिये प्रयत्न करना।
२ सड़क की नाप सूचित करनेवाला पत्थर। मील का पत्थर। ३ ओला। बिनौली। इंद्रोपल।
मुहा०—पत्थर पड़ना=चौपट हो जाना। नष्ट-भ्रष्ट हो जाना। पत्थर-पानी=आँधी-पानी आदि का काल। तूफानी समय।
४ रत्न। जवाहिर। हीरा, लाल, पन्ना आदि। ५ पत्थर की तरह कठोर, भारी अथवा हटने, गलने आदि के अयोग्य वस्तु। ६ कुछ नहीं। बिलकुल नहीं। खाक। (तिरस्कार के साथ अभाव का सूचक)

पत्थरकला—संज्ञा पु० [हिं० पत्थर+कल] पुरानी चाल की बंदूक जिसमें बारूद सुलगाने के लिये चकमक पत्थर लगा रहता था। तोड़ेदार या पलीतेदार बंदूक।

पत्थरचटा—संज्ञा पु० [हिं० पत्थर+हिं० चाटना] १ एक प्रकार की घास। २ एक प्रकार का साँप। ३ एक प्रकार की मछली। ४ कंजूस। मक्खीचूस।

पत्थरफूल—संज्ञा पु० [हिं० पत्थर+फूल] छरीला। शैलाख्य।

पत्थरफोड़–संज्ञा पुं० [हिं० पत्थर + फोड़ना] पत्थरों की संधि में होनेवाली एक वनस्पति।
पत्नी–संज्ञा स्त्री० [सं०] विधिपूर्वक विवाहिता स्त्री। भार्या। वधू। सहधर्मिणी।
पत्नीव्रत–संज्ञा पुं० [सं०] अपनी विवाहिता स्त्री के अतिरिक्त और किसी स्त्री से गमन न करने का संकल्प या नियम।
पत्य–संज्ञा पुं० [सं०] पति होने का भाव।
पत्याना*†–क्रि० स० दे० "पतिआना"।
पत्यारा–संज्ञा पुं० दे० "पतिआरा"।
पत्यारी*–संज्ञा स्त्री० [सं० पंक्ति] पंक्ति।
पत्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी वृक्ष का पत्ता। पत्ती। दल। पर्ण। २. वह वस्तु जिस पर कुछ लिखा हो। लिखा हुआ कागज। ३. वह कागज जिस पर किसी खास मामले की सनद या सबूत के लिए कुछ लिखा हो। ४. वसीका, पट्टा या दस्तावेज। ५. चिट्ठी। पत्री। खत। ६. समाचार-पत्र। खबर का कागज। अखबार। ७. पुस्तक या लेख का एक पन्ना। पृष्ठ। वर्क़ा। पन्ना। ८. धातु की चद्दर। वरक। ९. तीर या पक्षी के पंख। पक्ष।
पत्रकार–संज्ञा पुं० [सं०] समाचार पत्र का संपादक।
पत्रकृच्छ्र–संज्ञा पुं० [सं०] एक व्रत जिसमें पत्तों का काढ़ा पीकर रहा जाता है।
पत्र-पुष्प–संज्ञा पुं० [सं०] १. सत्कार या पूजा की बहुत मामूली सामग्री। २. लघु उपहार।
पत्रभंग–संज्ञा पुं० [सं०] चित्र या रेखाएँ जो सौंदर्य-वृद्धि के लिए स्त्रियाँ भाल, कपोल आदि पर बनाती हैं।
पत्रवाहक–संज्ञा पुं० [सं०] पत्र ले जानेवाला। चिट्ठीरसाँ। हरकारा।
पत्र-व्यवहार–संज्ञा पुं० [सं०] चिट्ठी आने-जाने का क्रम। लिखा-पढ़ी। खत-किताबत।
पत्रा–संज्ञा पुं० [सं० पत्र] १. तिथिपत्र। जंत्री। पंचांग। २. पन्ना। वर्क़। पृष्ठ।
पत्रावली–संज्ञा स्त्री० दे० "पत्रभंग"।
पत्रिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चिट्ठी। खत। २. कोई छोटा लेख या लिपि। ३. कोई सामयिक पत्र या पुस्तक। समाचारपत्र।
पत्री–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चिट्ठी। खत। २. कोई छोटा लेख या लिपिपत्रिका। वि० [सं० पत्रिन्] जिसमें पत्ते हों। संज्ञा पुं० १. बाण। तीर। २. पक्षी। चिड़िया। ३. श्येन। बाज़। ४. वृक्ष। पेड़।
पथ–संज्ञा पुं० [सं०] १. मार्ग। रास्ता। राह। २. व्यवहार आदि की रीति। संज्ञा पुं० दे० "पथ्य"।
पथगामी–संज्ञा पुं० [सं० पथगामिन्] पथिक।
पथदर्शक, पथप्रदर्शक–संज्ञा पुं० [सं०] मार्गदर्शक। रास्ता दिखानेवाला।
पथरकला–संज्ञा पुं० [हिं० पत्थर या पथरी + कल] एक प्रकार की बंदूक या कड़ाबीन जो चकमक पत्थर के द्वारा अग्नि उत्पन्न करके चलाई जाती थी।
पथरचटा–संज्ञा पुं० [हिं० पत्थर + चाटना] पाषाणभेद या पखानभेद नाम की ओषधि।
पथराना–क्रि० अ० [हिं० पत्थर + आना (प्रत्य०)] १. सूखकर पत्थर की तरह कड़ा हो जाना। २. ताजगी न रहना। नीरस और कठोर हो जाना। ३. स्तब्ध हो जाना। सजीव न रहना।
पथरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० पत्थर + ई (प्रत्य०)] १. कटोरे या कटोरी के आकार का पत्थर का बना हुआ कोई पात्र। २. एक प्रकार का रोग जिसमें मूत्राशय में पत्थर के छोटे-बड़े कई टुकड़े उत्पन्न हो जाते हैं। ३. चकमक पत्थर। ४. पत्थर का वह टुकड़ा, जिस पर रगड़कर उस्तरे आदि की धार तेज करते हैं। सिल्ली। ५. कुरंड पत्थर जिससे औजार तेज करने की सान बनाते हैं।
पथरीला–वि० [हिं० पत्थर + ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० पथरीली] पत्थरों से युक्त।
पथिक–संज्ञा पुं० [सं०] मार्ग चलनेवाला। यात्री। मुसाफ़िर। राहगीर।
पथी–संज्ञा पुं० [सं० पथिन्] यात्री। पथिक।
पथु*†–संज्ञा पुं० [सं० पथ] पथ। मार्ग।

पद्यात्मक—वि० [सं०] जो छंदोबद्ध हो।

पधरना—क्रि० अ० [हिं० पधारना] किसी बड़े, प्रतिष्ठित या पूज्य का आगमन।

पधराना—क्रि० स० [सं० प्र०+धारण] १ आदरपूर्वक ले जाना। इज्जत से बैठाना। २ प्रतिष्ठित करना। स्थापित करना।

पधरावनी—सज्ञा स्त्री० [हिं० पधराना] १ किसी देवता की स्थापना। २ किसी को आदरपूर्वक ले जाकर बैठाने की क्रिया।

पधारना—क्रि० अ० [हिं० पग+धारना] १ जाना। चला जाना। गमन करना। २ आ पहुँचना। आना। ३ चलना। क्रि० स० आदरपूर्वक बैठाना। पधराना।

पन—सज्ञा पु० [सं० पण] प्रतिज्ञा। सकल्प। सज्ञा पु० [सं० पर्वन्=विशेष अवस्था] आयु के चार भागों में से एक। प्रत्य० एक प्रत्यय जिसे नामवाचक या गुणवाचक सज्ञाओं में लगाकर भाववाचक सज्ञा बनाते हैं। जैसे, लड़कपन।

पनकपड़ा—सज्ञा पु० [हिं० पानी+कपड़ा] वह गीला कपड़ा जो शरीर के किसी अग में चोट लगने पर बाँधा जाता है।

पनघट—सज्ञा पु० [हिं० पानी+घाट] वह घाट जहाँ से लोग पानी भरते हों।

पनच—सज्ञा स्त्री० [सं० पतंचिका] धनुष का रोदा या डोरी। प्रत्यचा।

पनचक्की—सज्ञा स्त्री० [हिं० पानी+चक्की] पानी के जोर से चलनेवाली चक्की या कल।

पनडुब्बा—सज्ञा पु० [हिं० पानी+डूबना] १ पानी में गोता लगानेवाला। गोताखोर। २ वह पक्षी जो पानी में गोता लगाकर मछलियाँ पकड़ता हो। ३ मुरगाबी। ४ एक प्रकार का कल्पित भूत।

पनडुब्बी—सज्ञा स्त्री० [हिं० पानी+डूबना] एक प्रकार की नाव जो प्रायः पानी के अदर डूबकर चलती है। सब-मेरीन।

पनपना—क्रि० अ० [सं० पर्णय=हरा होना] १ पानी पाने के कारण फिर से हरा हो जाना। २ फिर से तंदुरुस्त होना।

पनबट्टा—संज्ञा पुं० [हिं० पान+बट्टा (डिब्बा)] पान रखने का छोटा डिब्बा।

पनभरा—सज्ञा पु० दे० "पनहरा"।

पनव*—सज्ञा पु० दे० "प्रणव"।

पनवाड़ी—सज्ञा पु० [हिं० पान+वाला] पान बेचनेवाला। तमोली।

पनवारा—सज्ञा पु० [हिं० पान+वार (प्रत्य०)] १ पत्तों की बनी हुई पत्तल। २ एक पत्तल भर भोजन जो एक मनुष्य के खाने भर को हो।

पनस—सज्ञा पु० [सं०] कटहल।

पनसाखा—सज्ञा पु० [हिं० पाँच+शाखा] एक प्रकार की मशाल जिसमें तीन या पाँच बत्तियाँ एक साथ जलती हैं।

पनसारी—सज्ञा पु० दे० "पसारी"।

पनसाल—सज्ञा स्त्री० [हिं० पानी+शाला] वह स्थान जहाँ सब-साधारण को पानी पिलाया जाता हो। पौसरा। सज्ञा स्त्री० पानी की गहराई नापने का उपकरण।

पनसुइया—सज्ञा स्त्री० [हिं० पानी+सूई] एक प्रकार की छोटी नाव।

पनसेरी—सज्ञा स्त्री० दे० "पसेरी"।

पनहरा—सज्ञा पु० [हिं०पानी+हारा(प्रत्य०)] [स्त्री०पनहारन,पनहारिन,पनहारी] वह जो पानी भरने का काम करता हो। पनभरा।

पनहा—सज्ञा पु० [सं० परिणाह] १ कपड़े या दीवार आदि की चौड़ाई। २ गूढ़ आशय या तात्पर्य। मर्म। भेद। सज्ञा पु० [सं० पण] चोरी का पता लगानेवाला।

पनहारा—सज्ञा पु० दे० "पनहरा"।

पनहियाभद्र—सज्ञा पु० [हिं० पनही+भद्र=मुडन] सिर पर इतने जूते पड़ना कि बाल उड़ जायें।

पनही†—सज्ञा स्त्री० [सं० उपानह] जूता।

पना—संज्ञा पु० [सं०प्रपानक या पानीय] आम, इमली आदि के रस से बनाया जानेवाला एक प्रकार का शरबत। प्रपानक। पन्ना।

पनाती—सज्ञा पुं० [सं०प्रनप्तृ] [स्त्री० पनातिन] पोते अथवा नाती का पुत्र।

पनाला–संज्ञा पुं० दे० "परनाला"।

पनासना†–क्रि० स० [सं० पानाशन] पोषण करना। परवरिश करना।

पनाह–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. शत्रु, संकट या कष्ट से बचाव या रक्षा पाने की क्रिया या भाव। त्राण। बचाव।
मुहा०—(किसी से) पनाह माँगना = किसी से बहुत बचने की इच्छा करना।
२. रक्षा पाने का स्थान। शरण। आड़।

पनिच*–संज्ञा पुं० दे० "पनच"।

पनियाँ†–वि० दे० "पनिहा"।

पनिया सोत†–वि० [हिं० पानी + सोत] (तालाब, खाईं आदि) जिसमें पानी का सोता निकला हो। अत्यंत गहरा।

पनिहा–वि० [हिं० पानी + हा (प्रत्य०)] १. पानी में रहनेवाला। २. जिसमें पानी मिला हो। ३. पानी-संबंधी।
संज्ञा पुं० भेदिया। जासूस।

पनी†*–संज्ञा पुं० [सं० पण] प्रण करनेवाला। प्रतिज्ञा करनेवाला।

पनीर–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. फाड़कर जमाया हुआ दूध। छेना। २. वह दही जिसका पानी निचोड़ लिया गया हो।

पनीरी–संज्ञा स्त्री० [देश०] १. फूल-पत्तों के वे छोटे पौधे जो दूसरी जगह ले जाकर रोपने के लिए उगाए गए हों। फूल-पत्तों के बेहन। २. वह क्यारी जिसमें पनीरी जमाई गई हो। बेहन की क्यारी।

पनीला–वि० [हिं० पानी + इला (प्रत्य०)] पानी मिला हुआ। जलयुक्त।

पनुआँ†–वि० [हिं० पानी] फीका। नीरस।

पनेला–संज्ञा पुं० [हिं० पनीला = एक प्रकार का सन] एक प्रकार का गाढ़ा चिकना और चमकीला कपड़ा। बेलहरा।

पन्न–वि० [सं०] १. गिरा हुआ। पड़ा हुआ। जैसे, शरणापन्न। २. नष्ट। गत।

पन्नग–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० पन्नगी] १. सर्प। साँप। २. पद्माख।
*[हिं० पन्ना] पन्ना। मरकत।

पन्नगपति–संज्ञा पुं० [सं०] शेषनाग।

पन्नगारि–संज्ञा पुं० [सं०] गरुड़।

पन्ना–संज्ञा पुं० [सं० पर्ण ?] फिरोजे की जाति का हरे रंग का एक रत्न। मरकत।
संज्ञा पुं० [हिं० पान] पृष्ठ। वरक़। पत्र।

पन्नी–संज्ञा स्त्री० [हिं० पन्ना = पत्रा] १. राँगे या पीतल के कागज की तरह पतले पत्तर जिन्हें शोभा के लिए अन्य वस्तुओं पर चिपकाते हैं। २. सोने या चाँदी के पानी में रँगा हुआ कागज या चमड़ा।
संज्ञा स्त्री० [हिं० पना] एक भोज्य पदार्थ।
संज्ञा स्त्री० [देश०] बारूद की एक तौल।

पन्नीसाज–संज्ञा पुं० [हिं० पन्नी + फ़ा० साज] पन्नी बनाने का काम करनेवाला।

पन्हाना‡–क्रि० अ० दे० "पिन्हाना"।
क्रि० स० १. दे० "पिन्हाना"। २. दे० "पहनाना"।

पपड़ा–संज्ञा पुं० [सं० पर्पट] [स्त्री० अल्पा० पपड़ी] १. लकड़ी का रूखा करकरा और पतला छिलका। २. रोटी का छिलका।

पपड़ियाना–क्रि० अ० [हिं० पपड़ी + आना (प्रत्य०)] १. किसी चीज की परत का सूखकर सिकुड़ जाना। २. इतना सूख जाना कि ऊपर पपड़ी जम जाय।

पपड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० पपड़ा का अल्पा०] किसी वस्तु की ऊपरी परत जो तरी या चिकनाई के अभाव के कारण कड़ी और सिकुड़कर जगह-जगह से चिटक गई हो। २. घाव के ऊपर मवाद के सूख जाने से बना हुआ आवरण या परत। खुरंड। ३. सोहन पपड़ी नामक मिठाई।

पपीहा–संज्ञा पुं० [देश०] एक पक्षी जो वसंत और वर्षा में बड़ी सुरीली ध्वनि में बोलता है। चातक।

पपीता–संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रसिद्ध वृक्ष जिसके पक्के फल खाए जाते हैं। पपैया। अंड खरबूजा।

पपोटा–संज्ञा पुं० [सं० प्र + पट] आँख के ऊपर का चमड़े का पर्दा। पलक। दृगंचल।

पपोरना†–क्रि० स० [देश०] बाँहें ऐंठना

पथ्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह हल्का और जल्दी पचनेवाला खाना जो रोगी के लिए लाभदायक हो। उपयुक्त आहार। मुहा०—पथ्य से रहना=संयम से रहना। २ हित। मंगल। कल्याण।

पथ्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] आर्य्या छंद का भेद।

पद—संज्ञा पुं० [सं०] १ व्यवसाय। काम। २ त्राण। रक्षा। ३ योग्यता के अनुसार नियत स्थान। दर्जा। ४ चिह्न। निशान। ५ पैर। पाँव। ६ वस्तु। चीज। ७ शब्द। ८ प्रदेश। ९ पैर का निशान। १० श्लोक या किसी छंद का चतुर्थांश। श्लोकपाद। ११ उपाधि। १२ मोक्ष। निर्वाण। १३ ईश्वर-भक्ति संबंधी गीत। भजन। १४ पुराणानुसार दान के लिए जूते, छाते, कपड़े, अँगूठी, कमंडलु, आसन, बरतन और भोजन का समूह।

पदक—संज्ञा पुं० [सं०] १ पूजन आदि के लिए किसी देवता के पैरों के बनाए हुए चिह्न। २ सोने, चाँदी या किसी और धातु का बना हुआ सिक्के की तरह का गोल या चौकोर टुकड़ा जो किसी व्यक्ति अथवा जनसमूह को कोई विशेष अच्छा कार्य करने के उपलक्ष में दिया जाता है। तमगा।

पदचतुरर्द्ध—संज्ञा पुं० [सं०] विषम वृत्तों का एक भेद।

पदचर—संज्ञा पुं० [सं०] पैदल।

पदच्छेद—संज्ञा पुं० [सं०] संधि और समास-युक्त किसी वाक्य के प्रत्येक पद को व्याकरण के नियमों के अनुसार अलग करने की क्रिया।

पदच्युत—वि० [सं०] [संज्ञा पदच्युति] जो अपने पद या स्थान से हट गया हो।

पदतल—संज्ञा पुं० [सं०] पैर का तलवा।

पदत्राण—संज्ञा पुं० [सं०] जूता।

पददलित—वि० [सं०] १ पैरों से रौंदा हुआ। २ जो दबाकर बहुत हीन कर दिया गया हो।

पदन्यास—संज्ञा पुं० [सं०] १ पैर रखना। चलना। गमन करना। २ पद रखने की एक मुद्रा। ३ यत्न। ढंग। ४ पद रखने का काम।

पदम—संज्ञा पुं० दे० "पद्म"।

संज्ञा पुं० [सं० पद्मकाष्ठ] बादाम की जाति का एक जंगली पेड़। पद्माख।

पदमैत्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] अनुप्रास।

पदयोजना—संज्ञा स्त्री० [सं०] कविता के लिए पदों का जोड़ना।

पदरिपु—संज्ञा पुं० [सं० पद+रिपु] काँटा।

पदवी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पथ। रास्ता। २ पद्धति। परिपाटी। तरीका। ३ वह प्रतिष्ठा या मानसूचक पद जो राज्य अथवा किसी संस्था आदि की ओर से किसी योग्य व्यक्ति को मिलता है। उपाधि। खिताब। ४ ओहदा। दरजा।

पदाति, पदातिक—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो पैदल चलता हो। प्यादा। २ पैदल सिपाही। ३ नौकर। सेवक।

पदाधिकारी—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो किसी पद पर नियुक्त हो। ओहदेदार।

पदाना—क्रि० स० [हिं० पादना का प्रे०] बहुत अधिक दिक करना। तंग करना।

पदार—संज्ञा पुं० [सं०] पैरों की धूल।

पदार्थ—संज्ञा पुं० [सं०] १ पद का अर्थ। शब्द का विषय। वह जिसका कोई नाम हो और जिसका ज्ञान प्राप्त किया जा सके। २ उन विषयों में कोई विषय जिनका किसी दर्शन में प्रतिपादन हो और जिनके संबंध में यह माना जाता हो कि उनके ज्ञान द्वारा मोक्ष की प्राप्ति होती है। ३ पुराणानुसार धर्म्म, अर्थ, काम और मोक्ष। ४ वैद्यक में रस, गुण, वीर्य्य, विपाक और शक्ति। ५ चीज। वस्तु।

पदार्थवाद—संज्ञा पुं० [सं०] वह सिद्धांत जिसमें भौतिक पदार्थों को ही सब कुछ माना जाता हो और आत्मा अथवा ईश्वर का अस्तित्व स्वीकार न होता हो।

पदार्थविज्ञान—संज्ञा पुं० [सं०] वह विद्या जिसके द्वारा भौतिक पदार्थों और व्यापारों का ज्ञान हो। विज्ञान शास्त्र।

पदार्थविद्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह विद्या जिसमें विशिष्ट संज्ञाओं द्वारा सूचित पदार्थों का तत्त्व बतलाया गया हो।

पदार्पण–संज्ञा पुं० [सं०] किसी स्थान में पैर रखने या जाने की क्रिया। (प्रतिष्ठित व्यक्तियों के संबंध में)।

पदावली–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वाक्यों की श्रेणी। २. भजनों का संग्रह।

पदिक–संज्ञा पुं० [सं०] पैदल सेना।

*संज्ञा पुं० [सं० पदक] १. गले में पहनने का जुगनूँ नाम का गहना। २. हीरा।

यौ०—पदिकहार = रत्नहार। मणिमाल।

पदी*–संज्ञा पुं० [सं० पद] पैदल। प्यादा।

पद्धटिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक मातृक छंद। पद्धरि। पज्झटिका।

पद्धति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. राह। पथ। मार्ग। सड़क। २. पंक्ति। क़तार। ३. रीति। रस्म। रवाज। ४. कर्म या संस्कार विधि की पोथी। ५. वह पुस्तक जिससे किसी दूसरी पुस्तक का अर्थ या तात्पर्य समझा जाय। ६. ढंग। तरीक़ा। ७. कार्य-प्रणाली। विधि। विधान।

पद्धरी–संज्ञा पुं० दे० "पद्धटिका"।

पद्म–संज्ञा पुं० [सं०] १. कमल का फूल या पौधा। २. सामुद्रिक के अनुसार पैर में या एक विशेष आकार का चिह्न जो भाग्य-सूचक माना जाता है। ३. विष्णु का एक आयुध। ४. कुबेर की नौ निधियों में से एक। ५. शरीर पर के सफ़ेद दाग। ६. पदम या पद्माख वृक्ष। ७. गणित में सोलहवें स्थान की संख्या (१०० नील)। ८. पुराणानुसार एक नरक का नाम। ९. पुराणानुसार जंबू द्वीप के दक्षिण-पश्चिम का एक देश। १०. एक पुराण का नाम। ११. एक वर्णवृत्त।

पद्मकंद–संज्ञा पुं० [सं०] कमल की जड़। मुरार। भिस्सा। भसीड़।

पद्मनाभ–संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

पद्मपाणि–संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्रह्मा। २. बुद्ध की एक विशेष मूर्ति। ३. सूर्य्य।

पद्मबंध–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का चित्रकाव्य जिसमें अक्षरों को ऐसे क्रम से लिखते हैं जिससे एक पद्म या कमल का आकार बन जाता है।

पद्मयोनि–संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा।

पद्मराग–संज्ञा पुं० [सं०] मानिक। लाल।

पद्मबीज–संज्ञा पुं० [सं०] कमलगट्टा।

पद्मव्यूह–संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल में युद्ध के समय किसी वस्तु या व्यक्ति की रक्षा के लिए सेना रखने की एक स्थिति।

पद्मा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लक्ष्मी। २. भादों सुदी एकादशी तिथि।

पद्माकर–संज्ञा पुं० [सं०] बड़ा तालाब या झील जिसमें कमल पैदा होते हों।

पद्माख–संज्ञा पुं० दे० "पदम"।

पद्मालय–संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा।

पद्मालया–संज्ञा स्त्री० [सं०] लक्ष्मी।

पद्मावती–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पटना नगर का प्राचीन नाम। २. पन्ना नगर का प्राचीन नाम। ३. उज्जयिनी का एक प्राचीन नाम। ४. एक मात्रिक छंद। ५. मनसादेवी। ६. लोकप्रचलित कथा के अनुसार सिंहल की एक राजकुमारी जिससे चित्तौर के राजा रत्नसेन ब्याहे थे।

पद्मासन–संज्ञा पुं० [सं०] १. योगसाधन का एक आसन जिसमें पालथी मारकर सीधे बैठते हैं। २. ब्रह्मा। ३. शिव।

पद्मिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कमलिनी। छोटा कमल।

यौ०—पद्मिनीवल्लभ = सूर्य्य।

२. वह तालाब या जलाशय जिसमें कमल हों। ३. कोकशास्त्र के अनुसार स्त्रियों की चार जातियों में से सर्वोत्तम जाति। ४. लक्ष्मी।

पद्य–वि० [सं०] १. जिसका संबंध पैरों से हो। २. जिसमें कविता के पद हों।

संज्ञा पुं० [सं०] पिंगल के नियमों के अनुसार नियमित मात्रा या वर्ण का चार चरणोंवाला छंद। कविता। गद्य का उलटा।

और उनका भराव या पुष्टता देखना। (बलाभिमान का सूचक)

पव्वय*—संज्ञा पु० [सं० पर्वत] पहाड़।

पमार—संज्ञा पु० दे० "परमार"।

पय—संज्ञा पु० [सं० पयस्] १ दूध। २ जल। पानी। ३ अन्न।

पयद*—संज्ञा पु० दे० "पयोद"।

पयधि*—संज्ञा पु० दे० "पयोधि"।

पयनिधि*—संज्ञा पु० दे० "पयोनिधि"।

पयस्विनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दूध देनेवाली गाय। २ बकरी। ३ नदी।

पयस्वी—वि० [सं० पयस्विन्] [स्त्री० पयस्विनी] पानीवाला। जिसमें जल हो।

पयहारी—संज्ञा पु० [सं० पयस्+आहारी] दूध पीकर रह जानेवाला तपस्वी या साधु।

पयान—संज्ञा पु० [सं० प्रयाण] गमन। जाना।

पयार, पयाल—संज्ञा पु० [सं० पलाल] धान, कोदो आदि के सूखे डंठल जिनके दाने झाड़ लिए गए हों। पुआल।

मुहा०—पयाल गाहना या झाड़ना=व्यर्थ मिहनत या सेवा करना।

पयोज—संज्ञा पु० [सं०] कमल।

पयोद—संज्ञा पु० [सं०] बादल। मेघ।

पयोधर—संज्ञा पु० [सं०] १ स्तन। २ बादल। ३ नागरमोथा। ४ कसेरू। ५ तालाब। तड़ाग। ६ गाय का अयन। ७ पर्वत। पहाड़। ८ दोहा छंद का ११ वाँ भेद। ९ छप्पय छंद का २७ वाँ भेद।

पयोधि—संज्ञा पु० [सं०] समुद्र।

पयोनिधि—संज्ञा पु० [सं०] समुद्र।

परंच—अव्य० [सं०] १ और भी। २ तो भी। परंतु। लेकिन।

परंतप—वि० [सं०] १ वैरियों को दुःख देनेवाला। २ जितेंद्रिय।

परंतु—अव्य० [सं० पर+तु] पर। तो भी। किन्तु। लेकिन। मगर।

परंपरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक के पीछे दूसरा, ऐसा क्रम [विशेषत कालक्रम] अनुक्रम पूर्वापरक्रम। २ वंशपरंपरा। संतति। औलाद

परंपरागत—वि० [सं०] परंपरा से चला आता हुआ। जो सदा से होता हो।

पर—वि० [सं०] १ अपने को छोड़कर शेष। गैर। दूसरा। अन्य। और। २ पराया। दूसरे का। ३ भिन्न। जुदा। अतिरिक्त। ४ पीछे का। बाद का। ५ दूर। अलग। तटस्थ। ६ सबके ऊपर। श्रेष्ठ। ७ प्रवृत्त। लीन। तत्पर। (समास में)

प्रत्य० [सं० उपरि] सप्तमी या अधिकरण का चिह्न। जैसे, उस पर। तुम पर।*

अव्य० [सं० परम्] १ पश्चात्। पीछे। २ परंतु। किंतु। लेकिन। तो भी।

संज्ञा पु० [फा०] चिड़ियों का डैना और उस पर के धुए या रोएँ। पंख। पक्ष।

मुहा०—पर कट जाना=शक्ति या बल का आधार न रह जाना। अशक्त हो जाना। पर जमना=१ पर निकलना। २ जो पहले सीधा-सादा रहा हो, उसे शरारत सूझना। (कहीं जाते हुए) पर जलना=१ हिम्मत न होना। साहस न होना। २ गति न होना। पहुँच न होना। पर न मारना=पैर न रख सकना।

परई—संज्ञा स्त्री० [सं० पार=कटोरा, प्याला] दीए के आकार का पर उससे बड़ा मिट्टी का एक बरतन।

परकटा*—वि० [फ़ा० पर+हिं० कटना] जिसके पर या पंख कट हों।

परकना*†—क्रि० अ० [हिं० परचना] १ परचना। हिलना। मिलना। २ धड़क खुलना। अभ्यास पड़ना। चसका लगना।

परकसना*—क्रि० अ० [हिं० परकासना] १ प्रकाशित होना। जगमगाना। २ प्रकट होना।

परकाजी—वि० [हिं० पर+काज] परोपकारी।

परकाना†—क्रि० स० [हिं० परकना] १ परचाना। २ चसका लगाना।

परकार—संज्ञा पु० [फा०] वृत्त या गोलाई खींचने का एक औजार।

*†—संज्ञा पु० दे० "प्रकार"।

परकारना—क्रि० स० [हिं० परकार] १ परकार से वृत्त बनाना। २ चारों ओर फेरना।

परकाल—संज्ञा पु० दे० 'परकार'।

परकाला—संज्ञा पु० [सं० प्राकार या प्रकोष्ठ]

१. सीढ़ी। जीना। २. चौखट। देहलीज़।
संज्ञा पुं० [फ़ा० परगालः] १. टुकड़ा। खंड।
२. शीशे का टुकड़ा। ३. चिनगारी।
मुहा०—आफ़त का परकाला=ग़ज़ब करनेवाला। प्रचंड या भयंकर मनुष्य।
परकास–संज्ञा पुं० दे० "प्रकाश"।
परकासना*–क्रि० स० [सं० प्रकाशन] १. प्रकाशित करना। २. प्रकट करना।
परकिति*‡–संज्ञा स्त्री० दे० "प्रकृति"।
परकीय–वि० [सं०] पराया। दूसरे का।
परकीया–संज्ञा स्त्री० [सं०] पति को छोड़ दूसरे पुरुष से प्रीति-संबंध रखनेवाली स्त्री।
परकोटा–संज्ञा पुं० [सं० परिकोट] १. किसी गढ़ या स्थान की रक्षा के लिए चारों ओर उठाई हुई दीवार। २. धुस। बाँध। चह।
परख–संज्ञा स्त्री० [सं० परीक्षा] १. गुण-दोष स्थिर करने के लिए *अच्छी तरह* देख-भाल। जाँच। परीक्षा। २. गुण-दोष का ठीक पता लगानेवाली दृष्टि। पहचान।
परखना–क्रि० स० [सं० परीक्षण] १. गुण-दोष स्थिर करने के लिए अच्छी तरह देखना-भालना। परीक्षा करना। जाँच करना। २. भला और बुरा पहचानना।
क्रि० स० [हिं० परेखना] प्रतीक्षा करना। इंतज़ार करना। आसरा देखना।
परखवैया–संज्ञा पुं० [हिं० परख + वैया (प्रत्य०)] परखनेवाला। जाँचनेवाला।
परखाना–क्रि० स० [हिं० 'परखना' का प्रे०] १. परखने का काम दूसरे से कराना। परीक्षा कराना। जँचवाना। २. सहेजवाना। सँभलवाना।
परखैया–संज्ञा पुं० दे० "परखवैया"।
परग–संज्ञा पुं० [सं० पदक] पग। क़दम।
परगटना*–क्रि० अ० [हिं० प्रगट] प्रकट होना। खुलना। ज़ाहिर होना।
क्रि० स० प्रकट या ज़ाहिर करना।
परगन–संज्ञा पुं० दे० "परगना"।
परगना–संज्ञा पुं० [फ़ा० । मि० सं० परिगण=घर] वह भूभाग जिसके अंतर्गत बहुत से ग्राम हों।

परगसना*–क्रि० अ० [सं० प्रकाशन] प्रकाशित होना। प्रकट होना।
परगाछा–संज्ञा पुं० [हिं० पर=दूसरा + गाछ=पेड़] एक प्रकार के पौधे जो *प्रायः गरम* देशों में दूसरे पेड़ों पर उगते हैं।
परगास*–संज्ञा पुं० दे० "प्रकाश"।
परघट*†–वि० दे० "प्रकट"।
परचंड*–वि० दे० "प्रचंड"।
परचत*†–संज्ञा स्त्री० [सं० परिचित] जान-पहचान। जानकारी।
परचना–क्रि० अ० [सं० परिचयन] १. हिलना-मिलना। घनिष्ठता प्राप्त करना। २. चसका लगना। धड़क खुलना।
परचा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. कागज़ का टुकड़ा। चिट। कागज़। पत्र। २. पुरजा। खत। चिट्ठी। ३. परीक्षा में *आनेवाला प्रश्न-पत्र*।
संज्ञा पुं० [सं० परिचय] १. परिचय। जानकारी। २. परख। परीक्षा। जाँच। ३. प्रमाण। सबूत।
परचाना–क्रि० स० [हिं० परचना] १. हिलाना-मिलना। आकर्षित करना। २. धड़क खोलना। चसका लगाना। टेव डालना।
क्रि० स० [सं० प्रज्वलन] जलाना।
परचार*–संज्ञा पुं० दे० "प्रचार"।
परचारना*–क्रि० स० दे० "प्रचारना"।
परचून–संज्ञा पुं० [सं० पर + चूर्ण] आटा, दाल, मसाला आदि भोजन का सामान।
परचूनी–संज्ञा पुं० [हिं० परचून] आटा, दाल आदि बेचनेवाला बनिया। मोदी।
परछत्ती–संज्ञा स्त्री० [सं० परि + छत] १. घर या कोठरी के भीतर दीवार से लगाकर कुछ दूर तक बनाई हुई पाटन जिस पर सामान रखते हैं। टाँड़। पाटा। २. फूस आदि की छाजन।
परछन–संज्ञा स्त्री० [सं० परि + अर्चन] विवाह की एक रीति जिसमें बारात द्वार पर आने पर कन्या-पक्ष की स्त्रियाँ वर की आरती करतीं तथा उसके ऊपर से मूसल, बट्टा आदि घुमाती हैं।

परछना–क्रि० स० [हिं० परछन] परछन की क्रिया करना।

परछाईं–संज्ञा स्त्री० [सं० प्रतिच्छाया] १. किसी वस्तु की आकृति के अनुरूप छाया जो प्रकाश के अवरोध के कारण पड़ती है। छायाकृति।

मुहा०—परछाईं से डरना या भागना = १. बहुत डरना। अत्यंत भयभीत होना। २. पास तक आने से डरना।

२ जल, दर्पण आदि पर पड़ा हुआ किसी पदार्थ का पूरा प्रतिरूप। प्रतिबिंब। अक्स।

परछालना*–क्रि०स० [सं०प्रक्षालन] धोना।

परज–संज्ञा स्त्री० [सं० पराजिका] एक संकर रागिनी।

वि० [सं०] पर-जात। दूसरे से उत्पन्न।

परजन*–संज्ञा पु० दे० "परिजन"।

परजन्य*–संज्ञा पु० दे० "पर्जन्य"।

परजरना*–क्रि० अ० [सं० प्रज्वलन] १ जलना। दहकना। सुलगना। २ क्रुद्ध होना। कुढ़ना। ३ डाह करना।

परजा–संज्ञा स्त्री० [सं० प्रजा] १ प्रजा। रैयत। २ आश्रित जन। काम-धंधा करनेवाला। ३ जमींदार की जमीन् पर खेती आदि करनेवाला। असामी।

परजाता–संज्ञा पु० [सं०पारिजात] मझोले आकार का एक पेड़ जिसमें गुच्छों में फूल लगते है। परिजात।

परजाय*–संज्ञा पु० दे० "पर्याय"।

परजौट–संज्ञा पु० [हिं० परजा + औत (प्रत्य०)] घर बनाने के लिए सालाना किराए पर जमीन लेने-देने का नियम।

परणना*–क्रि० स० [सं० परिणयन] ब्याहना। विवाह करना।

परतचा–संज्ञा स्त्री० दे० "पतचिका"।

परतंत्र–वि० [सं०] पराधीन। परवश।

परतंत्रता–संज्ञा स्त्री० [सं०] पराधीनता।

परत–अव्य० [सं० परतस्] १ दूसरे से। अन्य से। २ पश्चात्। पीछे। ३. परे। आगे।

परत–संज्ञा स्त्री० [सं० पत्र] १. मोटाई या फैलाव जो किसी सतह के ऊपर हो। स्तर। तह। २. लपेटी जा सकनेवाली फैलाव की वस्तुओं या इस प्रकार का मोड़ जिससे उनके भिन्न भिन्न भाग ऊपर-नीचे हो जायें। तह।

परतच्छ*–वि० दे० "प्रत्यक्ष"।

परतल–संज्ञा पु० [सं० पट = वस्त्र + तल = नीचे] लादनेवाले घोड़ों की पीठ पर रखने का बोरा या गून।

परतला–संज्ञा पु० [सं० परितन] चमड़े या मोटे कपड़े की चौड़ी पट्टी जो कंधे से कमर तक छाती और पीठ पर से तिरछी होती हुई आती है और जिसमें तलवार या चपरास आदि लटकाई जाती है।

परता–संज्ञा पु० दे० "पड़ता"।

परताप*–संज्ञा पु० दे० "प्रताप"।

परतिंचा*–संज्ञा स्त्री० दे० "पतचिका"।

परती–संज्ञा स्त्री० [हिं० परना=पड़ना] वह खेत या जमीन जो बिना जोती हुई छोड़ दी गई हो।

परतीत*–संज्ञा स्त्री० दे० "प्रतीति"।

परतेजना*–क्रि० स० [सं० परित्यजन] परित्याग करना। छोड़ना।

परत्व–संज्ञा पु० [सं०] पर होने का भाव। पहले या पूर्व होने का भाव।

परथन†–संज्ञा पु० दे० "पलेथन"।

परदच्छिना*‡–संज्ञा स्त्री० दे० "प्रदक्षिणा"।

परदा–संज्ञा पु० [सं०] १ आड़ करने के काम में आनेवाला कपड़ा, चिक आदि। पट।

मुहा०—परदा उठाना या खोलना = छिपी बात प्रकट करना। भेद का उद्घाटन करना। परदा डालना या रखना = छिपाना। प्रकट न होने देना। आँख पर परदा पड़ना = सुझाई न देना। ढँका परदा = १ छिपा हुआ दोष या कलंक। २ बनी हुई प्रतिष्ठा या मर्य्यादा।

२ आड़ करनेवाली कोई वस्तु। व्यवधान। ३ लोगों की दृष्टि के सामने न होने की स्थिति। आड़। ओट। छिपाव।

मुहा०—परदा रखना = १. परदे के भीतर रहना। सामने न होना। २. छिपाव रखना।

दुराव रखना। परदा होना = १. स्त्रियों को सामने न होने देने का नियम होना। २. छिपाव होना। दुराव होना। परदे में रखना=१. स्त्रियों को घर के भीतर रखना, बाहर लोगों के सामने न होने देना। २. छिपा रखना। प्रकट न होने देना। ४. स्त्रियों को बाहर निकलकर लोगों के सामने न होने देने की चाल। ५. वह दीवार जो विभाग करने या ओट करने के लिए उठाई जाय। ६. तह। परत। तल। ७. वह झिल्ली या चमड़ा आदि जो कहीं पर आड़ या व्यवधान के रूप में हो।

परदादा–संज्ञा पुं० [सं० प्र० + हिं० दादा] [स्त्री० परदादी] प्रपितामह। दादा का बाप।

परदानशीन–वि० [फ़ा०] परदे में रहने-वाली। अंतःपुरवासिनी। (स्त्री)

परदुम्न*–संज्ञा पुं० दे० "प्रद्युम्न"।

परदेश–संज्ञा पुं० [सं०] विदेश। दूसरा देश। पराया शहर।

परदेशी–वि० [सं०] विदेशी। दूसरे देश का। अन्य देशनिवासी।

परदोस*–संज्ञा पुं० दे० "प्रदोष"।

परधान*–वि० दे० "प्रधान"।
संज्ञा पुं० दे० "परिधान"।

परधाम–संज्ञा पुं० [सं०] वैकुंठ धाम।

परन–संज्ञा पुं० [सं० प्रण] प्रतिज्ञा। टेक।
संज्ञा स्त्री० [हिं० पड़ना] बान। आदत।
* संज्ञा पुं० दे० "पर्ण"।

परना*†–क्रि० अ० दे० "पड़ना"।

परनाना–संज्ञा पुं० [सं० पर + हिं० नाना] [स्त्री० परनानी] नाना का बाप।

परनाम–संज्ञा पुं० दे० "प्रणाम"।

परनाला–संज्ञा पुं० [सं० प्रणाली] [स्त्री० अल्पा० परनाली] पनाला। नाबदान। मोरी।

परनि*–संज्ञा स्त्री० [हिं० पड़ना] बान। आदत। टेव।

परनौत*–संज्ञा स्त्री० [हिं० परनवना] प्रणाम।

परपंच*†–संज्ञा पुं० दे० "प्रपंच"।

परपंचक*–वि० दे० "परपंची"।

परपंची*†–वि० [सं० प्रपंच] १. बखेड़िया। फ़सादी। २. धूर्त। मायावी।

परपट–संज्ञा पुं० [हिं० पर + सं० पट = चादर] चौरस मैदान। समतल भूमि।

परपराना–क्रि० अ० [देश०] मिर्च आदि कड़ुई चीजों का जीभ में विशेष प्रकार का उग्र संवेदन उत्पन्न करना। चुनचुनाना।

परपार–संज्ञा पुं० [सं०] उस ओर का तट। दूसरी तरफ़ का किनारा।

परपीड़क–संज्ञा पुं० [सं०] १. दूसरे को पीड़ा या दुःख पहुँचानेवाला। २. पराई पीड़ा को समझनेवाला।

परपूठा*–वि० [सं० परिपुष्ट] पक्का।

परपोता–संज्ञा पुं० [सं० प्रपौत्र] पोते का बेटा। पुत्र के पुत्र का पुत्र।

परफुल्ल*–वि० दे० "प्रफुल्ल"।

परब–संज्ञा पुं० दे० "पर्व"।

परबत–संज्ञा पुं० दे० "पर्वत"।

परबसताई*–संज्ञा स्त्री० [सं० परवश्यता] पराधीनता। परतंत्रता।

परबाल–संज्ञा पुं० [हिं० पर=दूसरा+बाल=रोयाँ] आँख की पलक पर का वह फालतू बाल जिसके कारण बहुत पीड़ा होती है।
*संज्ञा पुं० दे० "प्रवाल"।

परबीन*–वि० दे० "प्रवीण"।

परबेस*–संज्ञा पुं० दे० "प्रवेश"।

परबोध–संज्ञा पुं० दे० "प्रबोध"।

परबोधना*–क्रि० स० [सं० प्रबोधन] १. जगाना। २. ज्ञानोपदेश करना। ३. दिलासा देना। तसल्ली देना।

परब्रह्म–संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्म जो जगत् से परे है। निर्गुण और निरुपाधि ब्रह्म।

परभाइ*–संज्ञा पुं० दे० "प्रभाव"।

परभात*–संज्ञा पुं० दे० "प्रभात"।

परभाव*–संज्ञा पुं० दे० "प्रभाव"।

परम–वि० [सं०] १. सबसे बढ़ा-चढ़ा। अत्यंत। २. जो बढ़-चढ़कर हो। उत्कृष्ट। ३. प्रधान। मुख्य। ४. आद्य। आदिम।
संज्ञा पुं० १. शिव। २. विष्णु।

परमगति–संज्ञा स्त्री० [सं०] मोक्ष। मुक्ति

परम तत्त्व–संज्ञा पुं० [सं०] मूल तत्त्व जिससे संपूर्ण विश्व का विकास है।

परम धाम—संज्ञा पु० [सं०] बैकुंठ।
परम पद—संज्ञा पु० [सं०] मोक्ष। मुक्ति।
परमभट्टारक—संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० परमभट्टारिका] एकछत्र राजाओं की एक प्राचीन उपाधि।
परमल—संज्ञा पु० [सं० परिमल] ज्वार या गेहूँ या एक प्रकार का भुना हुआ दाना।
परमहंस—संज्ञा पु० [सं०] १ वह संन्यासी जो ज्ञान की परमावस्था को पहुँच गया हो। २ परमात्मा।
परमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] शोभा। छवि।
परमाणु—संज्ञा पु० [सं०] पृथ्वी, जल, तेज और वायु इन चार भूतों का वह छोटे से छोटा भाग जिसके फिर और विभाग नहीं हो सकते। अत्यंत सूक्ष्म अणु।
परमाणुवाद—संज्ञा पु० [सं०] न्याय और वैशेषिक का यह सिद्धांत कि परमाणुओं से जगत् की सृष्टि हुई है।
परमात्मा—संज्ञा पु० [सं० परमात्मन्] ईश्वर।
परमानंद—संज्ञा पु० [सं०] १ ब्रह्म के अनुभव का सुख। ब्रह्मानंद। २ आनंद-स्वरूप ब्रह्म।
परमान†—संज्ञा पु० [सं० प्रमाण] १ प्रमाण। सबूत। २ यथार्थ बात। सत्य बात। ३ सीमा। अवधि। हद।
परमानना*—क्रि० स० [सं० प्रमाण] १ प्रमाण मानना। ठीक समझना। २ स्वीकार करना।
परमायु—संज्ञा स्त्री० [सं० परमायुस्] अधिक से अधिक आयु। जीवित काल की सीमा जो १०० अथवा १२० वर्ष मानी जाती है।
परमार—संज्ञा पु० [सं० पर=शत्रु+हिं० मारना] राजपूतों का एक कुल जो अग्नि कुल के अंतर्गत है। पँवार।
परमारथ*—संज्ञा पु० दे० "परमार्थ"।
परमार्थ—संज्ञा पु० [सं०] १ सबसे बढ़कर वस्तु। २ वास्तव सत्ता। नाम, रूपादि से परे यथार्थ तत्व। ३ मोक्ष।
परमार्थवादी—संज्ञा पु० [सं० परमार्थवादिन्] ज्ञानी। वेदांती। तत्वज्ञ।
परमार्थी—वि० [सं० परमार्थिन्] १ यथार्थ तत्व को ढूँढ़नेवाला। तत्व-जिज्ञासु। २ मोक्ष चाहनेवाला। मुमुक्षु।
परमुख*—वि० [सं० पराङ्मुख] १ विमुख। पीछे फिरा हुआ। २ जो प्रतिकूल आचरण करे।
परमेश, परमेश्वर—संज्ञा पु० [सं०] १ संसार का कर्त्ता और परिचालक सगुण ब्रह्म। २ विष्णु। ३ शिव।
परमेश्वरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।
परमेष्ठी—संज्ञा पु० [सं० परमेष्ठिन्] १ ब्रह्मा, अग्नि आदि देवता। २ विष्णु। ३ शिव।
परमेसर*‡—संज्ञा पु० दे० "परमेश्वर"।
परमोद*—संज्ञा पु० दे० "प्रमोद"।
परयंक*—संज्ञा पु० दे० "पर्यंक"।
परलउ, परलय*—संज्ञा स्त्री० [सं० प्रलय] सृष्टि का नाश या अंत। प्रलय।
परला—वि० [सं० पर=उधर+ला (प्रत्य०)] [स्त्री० परली] उस ओर का। उधर का।
मुहा०—परले दरजे या सिरे का=हद दरजे का। अत्यंत। बहुत अधिक।
परलै*—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रलय"।
परलोक—संज्ञा पु० [सं०] १ वह स्थान जो शरीर छोड़ने पर आत्मा को प्राप्त होता है। जैसे, स्वर्ग, बैकुंठ आदि।
यौ०—परलोकवासी=मृत। मरा हुआ।
मुहा०—परलोक सिधारना=मरना।
२ मृत्यु के उपरांत आत्मा की दूसरी स्थिति की प्राप्ति।
परलोकगमन—संज्ञा पु० [सं०] मृत्यु।
परवर*—संज्ञा पु० [सं० पटोल] परवल।
परवरदिगार—संज्ञा पु० [फ़ा०] ईश्वर।
परवरिश—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] पालन-पोषण।
परवल—संज्ञा पु० [सं० पटोल] एक लता जिसके फलों की तरकारी होती है।
परवश, परवश्य—वि० [सं०] पराधीन।
परवश्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] पराधीनता।
परवस्ती*‡—संज्ञा स्त्री० दे० "परवरिश"।
परवा—संज्ञा स्त्री० [सं० प्रतिपदा] पक्ष की पहली तिथि। पड़वा। परिवा।
संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १ चिंता। खटका।

आसंका। २. ध्यान। खयाल। ३. आसरा।

परवाई*–संज्ञा स्त्री० दे० "परवाह"।

परवान*–संज्ञा पुं० [सं० प्रमाण] १. प्रमाण। सबूत। २. यथार्थ बात। सत्य बात। ३. सीमा। मिति। अवधि। हद।

परवानगी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] इजाजत। आज्ञा। अनुमति।

परवानना*–क्रि० स० [सं० प्रमाण] ठीक समझना।

परवाना–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. आज्ञापत्र। २. फतिंगा। पंखी। पतंग।

परवाल*–संज्ञा पुं० दे० "प्रवाल"।

परवाय–संज्ञा पुं० [सं० बाढ़] आच्छादन।

परवाह–संज्ञा स्त्री० दे० "परवा"। संज्ञा पुं० दे० "प्रवाह"।

परवी–संज्ञा स्त्री० [सं० पर्व] पर्व-काल।

परवीन*–वि० दे० "प्रवीण"।

परवेख*–संज्ञा पुं० [सं० परिवेष] हलकी बदली के बीच दिखाई पड़नेवाला चद्रमा के चारों ओर का घेरा। चाँद की अयाई। मंडल।

परवेश*–संज्ञा पुं० दे० "प्रवेश"।

परश–संज्ञा पुं० [सं०] पारस पत्थर। संज्ञा पुं० [सं० स्पर्श] स्पर्श। छूना।

परशु–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की कुल्हाड़ी जो लड़ाई में काम आती थी। तबर। भलुआ।

परशुराम–संज्ञा पुं० [सं०] जमदग्नि ऋषि के एक पुत्र जिन्होंने २१ बार क्षत्रियों का नाश किया था।

परसंग*–संज्ञा पुं० दे० "प्रसंग"।

परसंसा*–संज्ञा स्त्री० दे० "प्रशंसा"।

परस–संज्ञा पुं० [सं० स्पर्श] छूना। स्पर्श। संज्ञा पुं० [सं० परश] पारस पत्थर।

परसन*–संज्ञा पुं० [सं० स्पर्शन] १. छूना। छूने का काम। २. छूने का भाव। वि० [सं० प्रसन्न] प्रसन्न। खुश।

परसना*–क्रि० स० [सं० स्पर्शन] १. छूना। स्पर्श करना। २. स्पर्श कराना। क्रि० स० [सं० परिवेषण] परोसना।

परसन्न*–वि० दे० "प्रसन्न"।

परस पखान–संज्ञा पुं० दे० "पारस"।

परसा–संज्ञा पुं० [हिं० परसना] एक मनुष्य के खाने भर का भोजन। पत्तल।

परसाद*‡–संज्ञा पुं० दे० "प्रसाद"।

परसाना*–क्रि० स० [हिं० परसना] छुलाना। क्रि० स० [हिं० परसना] भोजन बँटवाना।

परसाल–अव्य० [सं० पर + फ़ा० साल] १. गत वर्ष। पिछले साल। २. आगामी वर्ष।

परसिद्ध*–वि० दे० "प्रसिद्ध"।

परसु*–संज्ञा पुं० दे० "परशु"।

परसूत*‡–वि०, संज्ञा पुं० दे० "प्रसूत"।

परसेद*–संज्ञा पुं० दे० "प्रस्वेद"।

परसों–अव्य० [सं० परश्वः] १. गत दिन से पहले का दिन। बीते हुए कल से एक दिन पहले। २. आगामी दिन के बाद का दिन।

परसोतम*‡–संज्ञा पुं० दे० "पुरुषोत्तम"।

परसौहाँ–वि० [सं० स्पर्श] छूनेवाला।

परस्पर–क्रि० वि० [सं०] एक दूसरे के साथ। आपस में।

परस्परोपमा–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें उपमान की उपमा उपमेय को और उपमेय की उपमा उपमान को दी जाती है। उपमेयोपमा।

परहरना*–क्रि० स० [सं० परि + हरण] त्यागना।

परहार‡–संज्ञा पुं० १. दे० "प्रहार"। २. दे० "परिहार"।

परहेज–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. स्वास्थ्य को हानि पहुँचानेवाली बातों से बचना। खाने पीने आदि का संयम। २. दोषों और बुराइयों से दूर रहना।

परहेजगार–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. परहेज करनेवाला। संयमी। २. दोषों से दूर रहनेवाला।

परहेलना*–क्रि० स० [सं० प्रहेलन] निरादर करना। तिरस्कार करना।

परांठा–संज्ञा पुं० [हिं० पलटना] घी लगाकर तवे पर सेंकी हुई चपाती। परौठा।

परा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चार प्रकार की

वाणियों में पहली वाणी। २. वह विद्या जो ऐसी वस्तु या ज्ञान कराती है जो सब गोचर पदार्थों से परे हो। ब्रह्मविद्या। उपनिषद् विद्या।

संज्ञा पु० [?] पंक्ति। कतार।

पराकाष्ठा–संज्ञा स्त्री० [सं०] चरम सीमा। सीमांत। हद। अंत।

पराक्रम–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० पराक्रमी] १ बल। २ शक्ति। पुरुषार्थ। उद्योग।

पराक्रमी–वि०[सं०पराक्रमिन्] १ बलवान्। बलिष्ठ। २ बहादुर। ३ उद्योगी।

पराग–संज्ञा पु० [सं०] १ वह रज या धूलि जो फूलों के बीच लंबे केसरों पर जमा रहती है। पुष्परज। २ धूलि। रज। ३ एक प्रकार का सुगंधित चूर्ण जिसे लगाकर स्नान किया जाता है। ४ चंदन। ५ उपराग।

पराग-केसर–संज्ञा पु० [सं०] फूलों के बीच में वे पतले लंबे सूत जिनकी नोक पर पराग लगा रहता है।

परागना*–क्रि० अ० [सं० उपराग] अनुरक्त होना।

पराङ् मुख–वि० [सं०] १ मुँह फेरे हुए। विमुख। २ जो ध्यान न दे। उदासीन। ३ विरुद्ध।

पराजय–संज्ञा स्त्री० [सं०] विजय का उलटा। हार। शिकस्त।

पराजित–वि० [सं०] परास्त। हारा हुआ।

परात–संज्ञा स्त्री० [सं० पात्र] थाली के आकार का एक बड़ा बरतन।

परात्पर–वि० [सं०] सर्वश्रेष्ठ।

संज्ञा पुं० १ परमात्मा। २ विष्णु।

पराधीन–वि० [सं०] परवश। जो दूसरे के अधीन हो। परतंत्र। परवश।

पराधीनता–संज्ञा स्त्री० [सं०] परतंत्रता। दूसरे की अधीनता।

परान–संज्ञा पु० दे० "प्राण"।

पराना*†–क्रि०अ० [सं० पलायन] भागना।

परान्न–संज्ञा पु० [सं०] पराया अन्न। दूसरे का दिया हुआ भोजन।

पराभव–संज्ञा पु० [सं०] १ पराजय। हार। २ तिरस्कार। मानध्वंस। ३ विनाश।

पराभूत–वि० [सं०] १. पराजित। हारा हुआ। २ ध्वस्त। नष्ट।

परामर्श–संज्ञा पु० [सं०] १ पकड़ना। खींचना। २ विवेचन। विचार। ३ युक्ति। ४ सलाह। मंत्रणा।

परायण–वि० [सं०] १ गत। गया हुआ। २ प्रवृत्त। तत्पर। लगा हुआ।

पराया–वि० पु० [सं० पर] [स्त्री० पराई] १ दूसरे का। अन्य का। २ जो आत्मीय न हो। गैर। बिराना।

परार*–वि० दे० "पराया"।

परारध*—संज्ञा पु० दे० "परार्द्ध"।

परार्थ–वि० [सं०] दूसरे का काम। दूसरे का उपकार।

वि० जो दूसरे के अर्थ हो। पर-निमित्तक।

परार्द्ध–संज्ञा पु० [सं०] १ एक शंख की संख्या। २ ब्रह्मा की आयु का आधा काल।

परावन–संज्ञा पु० [हिं० पराना] एक साथ बहुत से लोगों का भागना। भगदड़।

संज्ञा पु० [सं० पर्व] पुण्यकाल। पर्व।

परावर्तन–संज्ञा पु० [सं०] [वि० परावर्तित] पलटना। लौटना। पीछे फिरना।

परावह–संज्ञा पु० [सं०] वायु के सात भेदों में से एक।

परावा–संज्ञा पु० दे० "पराया"।

पराशर–संज्ञा पु० [सं०] १ एक गोत्रकार ऋषि जो पुराणानुसार वसिष्ठ और शक्ति के पुत्र थे। २ एक प्रसिद्ध स्मृतिकार।

परास*†–संज्ञा पु० दे० "पलाश"।

परास्त–वि० [सं०] १ पराजित। हारा। हुआ। २ विजित। ध्वस्त।

पराह्न–वि० [सं०] अपराह्न। दोपहर के बाद का समय। तीसरा पहर।

परि–उप० [सं०] एक संस्कृत उपसर्ग जिसके लगने से शब्द में इन अर्थों की वृद्धि होती है–चारों ओर–जैसे, परिक्रमण। अच्छी तरह। जैसे, परिपूर्ण। अतिशय–जैसे, परिवर्द्धन। पूर्णता–जैसे, परित्याग।

दोषास्थान—जैसे, परिहास। नियम, क्रम—जैसे, परिच्छेद।

परिकर—संज्ञा पुं० [सं०] १. पर्यंक। पलँग। २. परिवार। ३. वृन्द। समूह। ४. अनुयायियों का दल। अनुचरवर्ग। ५. समारंभ। तैयारी। ६. एक अर्थालंकार जिसमें अभिप्राय भरे हुए विशेषणों के साथ विशेष्य आता है।

परिकरमा*—संज्ञा स्त्री० दे० "परिक्रमा"।

परिकरांकुर—संज्ञा पुं० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें किसी विशेष्य या शब्द का प्रयोग विशेष अभिप्राय लिए हुए होता है।

परिक्रमण—संज्ञा पुं० [सं०] १. टहलना। मन बहलाने के लिये घूमना। २. परिक्रमा।

परिक्रमा—संज्ञा स्त्री० [सं० परिक्रम] १. चारों ओर घूमना। फेरी। चक्कर। २. किसी तीर्थ या मंदिर के चारों ओर घूमने के लिये बना हुआ मार्ग।

परिक्षा—संज्ञा स्त्री० दे० "परीक्षा"।

परिक्षित—संज्ञा पुं० दे० "परीक्षित"।

परिखन—वि० [हिं० परिखना] रखवाली करनेवाला। रक्षक।

परिखना†—क्रि० स० दे० "परखना"। क्रि० अ० [सं० प्रतीक्षा] आसरा देखना।

परिखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] खंदक। खाई।

परिख्यात—वि० [सं०] प्रसिद्ध। मशहूर।

परिगणन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० परिगणित, परिगणनीय, परिगण्य] गणना करना, गिनना।

परिगणित—वि० [सं०] गिना हुआ।

परिगत—वि० [सं०] १. बीता हुआ। गत। २. मरा हुआ। मृत। ३. भूला हुआ। विस्मृत। ४. जाना हुआ। ज्ञात।

परिगह—संज्ञा पुं० [सं० परिग्रह] संगी-साथी या आश्रित जन।

परिगृहीत—वि० [सं०] १. मंजूर किया हुआ। स्वीकृत। २. लिया हुआ।

परिग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० परिग्राह्य] १. प्रतिग्रह। दान लेना। २. पाना। ३. धनादि का संग्रह। ४. आदरपूर्वक कोई वस्तु लेना। ५. विवाह। ६. पत्नी। भार्या। ७. परिवार।

परिघ—संज्ञा पुं० [सं०] १. अर्गला। अगडी। २. भाला। बर्छी। ३. घोड़ा। ४. फाटक। ५. घर। ६. तीर। ७. बाधा। प्रतिबंध।

परिचय—संज्ञा पुं० [सं०] १. जानकारी। ज्ञान। अभिज्ञता। २. प्रमाण। लक्षण। ३. किसी व्यक्ति के नाम-धाम या गुण-कर्म आदि के संबंध की जानकारी। ४. जान-पहचान।

परिचर—संज्ञा पुं० [सं०] १. सेवक। खिदमतगार। २. रोगी की सेवा करनेवाला।

परिचरजा*—संज्ञा स्त्री० दे० "परिचर्या"।

परिचरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दासी।

परिचर्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सेवा। टहल। २. रोगी की सेवा-शुश्रूषा।

परिचायक—संज्ञा पुं० [सं०] १. परिचय या जान-पहचान करानेवाला। २. सूचित करनेवाला। सूचक।

परिचार—संज्ञा पुं० [सं०] १. सेवा। टहल। २. टहलने या घूमने फिरने का स्थान।

परिचारक—संज्ञा पुं० [सं०] १. सेवक। नौकर। २. रोगी की सेवा करनेवाला।

परिचारण—संज्ञा पुं० [सं०] १. सेवा करना। खिदमत करना। २ संग करना या रहना।

परिचारना*—क्रि० स० [सं० परिचारण] सेवा करना। खिदमत करना।

परिचारिक—संज्ञा पुं० [सं०] सेवक।

परिचारिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दासी।

परिचालक—संज्ञा पुं० [सं०] चलानेवाला।

परिचालन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० परिचालित] १. चलने के लिये प्रेरित करना। चलाना। २. कार्य्यक्रम को जारी रखना। ३. हिलाना। गति देना।

परिचालित—वि० [सं०] १. चलाया हुआ। २. बराबर जारी देखा हुआ। ३. हिलाया हुआ।

परिचित—वि० [सं०] १. जाना-बूझा। ज्ञात। मालूम। २ जिसका परिचय हो चुका हो। अभिज्ञ। वाकिफ। ३. जान-पहचान रखनेवाला। मुलाकाती।

परिचिति-संज्ञा स्त्री० दे० "परिचय"।
परिचो†-संज्ञा पु० दे० "परिचय"।
परिच्छद-संज्ञा पु० [सं०] १ ढकने का कपड़ा। आच्छादन। पट। २ पहनावा। पोशाक। ३. राजचिह्न। ४ राजा का अनुचर। ५ परिवार। कुटुंब।
परिच्छन्न-वि० [सं०] १ ढका हुआ। छिपा हुआ। २ जो कपड़े पहने हो। वस्त्रयुक्त। ३ साफ किया हुआ।
परिच्छिन्न-वि० [सं०] १ सीमायुक्त। परिमित। मर्यादित। २ विभक्त।
परिच्छेद-संज्ञा पु० [सं०] १ खंड या टुकड़े करना। विभाजन। २ ग्रंथ या कोई स्वतंत्र विभाग। अध्याय। प्रकरण।
परिछन-संज्ञा पु० दे० "परछन"।
परिछाहीं-संज्ञा स्त्री० दे० "परछाईं"।
परिजंक*-संज्ञा पु० दे० "पर्यंक"।
परिजन-संज्ञा पुं० १ [सं०] आश्रित या पोष्य वर्ग। परिवार। २ सदा साथ रहने-वाले सेवक।
परिज्ञा-संज्ञा स्त्री० [सं०] ज्ञान।
परिज्ञात-वि० [सं०] जाना हुआ।
परिज्ञान-संज्ञा पु० [सं०] पूर्ण ज्ञान।
परिणत-वि० [सं०] [संज्ञा परिणति] १ झुका हुआ। २ बदला हुआ। रूपांत-रित। ३ पका हुआ। ४ पचा हुआ।
परिणति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बदलना। रूपांतर होना। २ पकना या पचना। परिपाक। ३ प्रौढ़ता। पुष्टि। ४ अंत।
परिणय-संज्ञा पु० [सं०] ब्याह। विवाह।
परिणयन-संज्ञा पु० [सं०] ब्याहना।
परिणाम-संज्ञा पु० [सं०] १ बदलने का भाव या कार्य। बदलना। रूपांतर-प्राप्ति। २ स्वाभाविक रीति से रूप-परिवर्तन या अवस्थांतर प्राप्ति। (सांख्य) ३ विकृति। विकार। रूपांतर। ४ एक स्थिति से दूसरी स्थिति में प्राप्ति। (योग) ५ एक अर्थालंकार जिसमें उपमेय के कार्य का उपमान द्वारा किया जाना अथवा अप्रकृत (उपमान) का प्रकृत (उपमेय) से एक-रूप होकर कोई कार्य करना कहा जाता है। ६ विकास। वृद्धि। परिपुष्टि। ७ समाप्ति। ८ नतीजा। फल।
परिणामदर्शी-वि० [सं० परिणामदर्शिन्] परिणाम या फल को सोचकर कार्य करने-वाला। सूक्ष्मदर्शी। दूरदर्शी।
परिणामदृष्टि-संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी कार्य के परिणाम को जान लेने की शक्ति।
परिणामवाद-संज्ञा पु० [सं०] सांख्य मत जिसमें जगत् की उत्पत्ति, नाश आदि नित्य परिणाम के रूप में माने जाते हैं।
परिणामी-वि० [सं० परिणामिन्] [स्त्री० परिणामिनी] जो बराबर बदलता रहे।
परिणीत-वि० [सं०] १ जिसका ब्याह हो चुका हो। विवाहित। २ समाप्त। पूर्ण।
परितच्छ*-संज्ञा पु० दे० "प्रत्यक्ष"।
परिताप-संज्ञा पु० [सं०] १ गरमी। आँच। ताव। २ दुःख। क्लेश। पीड़ा। ३ संताप। रंज। ४ पश्चात्ताप। पछतावा।
परितापी-वि० [सं० परितापिन्] १ जिसको परिताप हो। दुःखित या व्यथित। २ पीड़ा देनेवाला। सतानेवाला।
परितुष्ट-वि० [सं०] [संज्ञा परितुष्टि] १ खूब संतुष्ट। २ प्रसन्न। खुश।
परितोष-संज्ञा पु० [सं०] १ संतोष। तृप्ति। २ प्रसन्नता। खुशी।
परितोस*-संज्ञा पु० दे० "परितोष"।
परित्यक्त-वि० [सं०] [स्त्री० परित्यक्ता] छोड़ा, फेंका या दूर किया हुआ।
परित्याग-संज्ञा पु० [सं०] [वि० परित्यागी] निकालना। अलग कर देना। छोड़ना।
परित्याज्य-वि० [सं०] छोड़ने या त्यागने योग्य।
परित्राण-संज्ञा पु० [सं०] बचाव। हिफा-जत। रक्षा।
परिध-संज्ञा पु० दे० "परिधि"।
परिधन*-संज्ञा पु० [सं० परिधान] नीचे का पहनने का कपड़ा। धोती आदि।
परिधान-संज्ञा पु० [सं०] १ शरीर को कपड़े से लपेटना। कपड़ा पहनना। २

वस्त्र। कपड़ा। पोशाक।
परिधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह रेखा जो किसी गोल पदार्थ के चारों ओर खींचने से बने। घेरा। २. सूर्य, चंद्र आदि के आस-पास देख पड़नेवाला घेरा। परिवेश। मंडल। ३. बाड़ा, रूँधान या चहार-दीवारी। ४. नियत या नियमित मार्ग। कक्षा। ५. कपड़ा। वस्त्र। पोशाक।
परिधेय—वि० [सं०] पहनने योग्य। संज्ञा पुं० वस्त्र। कपड़ा।
परिनय*—संज्ञा पुं० दे० "परिणय"।
परिनिर्वाण—संज्ञा पुं० [सं०] पूर्ण निर्वाण।
परिन्यास—संज्ञा पुं० [सं०] १. काव्य में वह स्थल जहाँ कोई विशेष अर्थ पूरा हो। २. नाटक में मुख्य कथा की मूल-भूत घटना को संकेत से सूचना करना।
परिपक्व—वि० [सं०] [संज्ञा परिपक्वता] १. अच्छी तरह पका हुआ। पूर्ण पक्व। २. जो बिलकुल हजम हो गया हो। ३. पूर्ण विकसित। प्रौढ़। ४. बहुदर्शी। तजरबेकार। ५. निपुण। कुशल। प्रवीण।
परिपाक—संज्ञा पुं० [सं०] १. पकना या पकाया जाना। २. पचना। ३. प्रौढ़ता। पूर्णता। ४. बहुदर्शिता। तजुर्बेकारी। ५. कुशलता। निपुणता।
परिपाटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. क्रम। श्रेणी। सिलसिला। २. प्रणाली। शैली। ढंग। ३. अंकगणित। ४. पद्धति। रीति।
परिपार—संज्ञा पुं० [सं० पालि] मर्य्यादा।
परिपालन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० परिपाल्य] १. रक्षा करना। बचाना। २. रक्षा। बचाव।
परिपुष्ट—वि० [सं०] १. जिसका पोषण भली भाँति किया गया हो। २. पूर्ण पुष्ट।
परिपूरक—वि० [सं०] परिपूर्ण करनेवाला।
परिपूरन—वि० दे० "परिपूर्ण"।
परिपूर्ण—वि० [सं०] [वि० परिपूरित] १. खूब भरा हुआ। २. पूर्ण तृप्त। अघाया हुआ। ३. समाप्त किया हुआ।
परिपोषण—संज्ञा पुं० [सं०] १. -पालन। परवरिश करना। २. पुष्ट करना।
परिप्लव—संज्ञा पुं० [सं०] १. तैरना। २. बाढ़। ३. अत्याचार। जुल्म। ४. नाव।
परिप्लुत—वि० [सं०] १. प्लावित। डूबा हुआ। २. गीला। भीगा हुआ। आर्द्र।
परिभव, परिभाव—संज्ञा पुं० [सं०] अना-दर। तिरस्कार। अपमान।
परिभावना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चिंता। सोच। फ़िक्र। २. साहित्य में वह वाक्य या पद जिससे कुतूहल या उत्सुकता सूचित अथवा उत्पन्न हो।
परिभाषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. स्पष्ट कथन। संशय-रहित कथन या बात। २. किसी शब्द का इस प्रकार अर्थ करना जिसमें उसकी विशेषता और व्याप्ति पूर्ण रीति से निश्चित हो जाय। लक्षण। तारीफ़। ३. ऐसा शब्द जो शास्त्र-विशेष में किसी निर्दिष्ट अर्थ या भाव का संकेत मान लिया गया हो। जैसे, गणित की परिभाषा। ४. ऐसी बोल-चाल जिसमें वक्ता अपना आशय पारिभाषिक शब्दों में प्रकट करे।
परिभाषित—वि० [सं०] १. जो अच्छी तरह कहा गया हो। २. (वह शब्द) जिसकी परिभाषा की गई हो।
परिभू—संज्ञा पुं० [सं०] ईश्वर।
परिभूत—वि० [सं०] १. हारा या हराया हुआ। पराजित। २. अपमानित।
परिभ्रमण—संज्ञा पुं० [सं०] १. घूमना। चक्कर खाना। २. परिधि। घेरा। ३. टहलना। घूमना-फिरना।
परिभ्रष्ट—वि० [सं०] गिरा हुआ। पतित।
परिमंडल—संज्ञा पुं० [सं०] चक्कर। घेरा।
परिमल—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० परिमलित] १. सुवास। उत्तम गंध। खुशबू। २. मलना। उबटना। ३. मैथुन। संभोग।
परिमाण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० परिमित, परिमेय] १. वह मान जो नाप या तौल के द्वारा जाना जाय। २. घेरा।
परिमार्जक—संज्ञा पुं० [सं०] धोने या माँजनेवाला। परिशोधक। परिष्कारक।

परिमार्जन–संज्ञा पु०[सं०][वि० परिमार्जित परिमृज्य, परिमृष्ट] १. धोने या मांजने का कार्य। २. परिशोधन। परिष्करण।

परिमार्जित–वि० [सं०] १. धोया या मांजा हुआ। २. साफ किया हुआ।

परिमित–वि० [सं०] १. जिसकी नाप, तौल की गई हो या मालूम हो। सीमा, संख्या आदि से बद्ध। २. न अधिक न कम। उचित परिमाण में। ३. कम। थोड़ा।

परिमिति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नाप, तौल, सीमा आदि। २. मर्यादा। इज्जत।

परिमेय–वि० [सं०] १. जो नापा या तौला जा सके। २. ससीम। सकुचित। ३. जिसे नापना या तोलना हो।

परिमोक्ष–संज्ञा पु० [सं०] १. पूर्ण मोक्ष। निर्वाण। २ परित्याग। छोड़ना।

परिमोक्षण–संज्ञा पु० [सं०] १. मुक्त करना या होना। २ परित्याग करना।

परियंक*–संज्ञा पु० दे० "पर्यंक"।

परियंत*–अव्य० दे० "पर्यंत"।

परिया–संज्ञा पु० [तामिल परैयान] दक्षिण भारत की एक अस्पृश्य जाति।

परिरंभ, परिरंभण–संज्ञा पु० [सं०][वि० परिरम्य, परिरंभी] गले या छाती से लगाकर मिलना। आलिंगन।

परिरंभना–क्रि० स० [सं० परिरंभ+ना (प्रत्य०)] आलिंगन करना। गले लगाना।

परिलंबन–संज्ञा पु० [सं०] भाचक्र का २७° विषुवद्रेखा से एक ओर हिंडोले की तरह जाकर फिर लौट आना और इसी प्रकार दूसरी ओर २७° तक पेंग लेकर पुनः अपने स्थान पर चला आना।

परिलेख–संज्ञा पु० [सं०] १. चित्र का स्थूल रूप जिसमें केवल रेखाएँ हों। ढांचा। खाका। २ चित्र। तसवीर। ३ कूँची या कलम जिससे रेखा या चित्र खींचा जाय। ४. उल्लेख। वर्णन।

परिलेखन–संज्ञा पु० [सं०] किसी वस्तु के चारों ओर रेखाएँ बनाना।

परिलेखना–क्रि० स० [सं० परिलेख+ना (प्रत्य०)] समझना। मानना।

परिवर्त–संज्ञा पु० [सं०] १. फेरा। घुमाव। चक्कर। २. बदला। विनिमय। ३. जो बदले में लिया या दिया जाय। बदल।

परिवर्तक–संज्ञा पु० [सं०] १. घूमने, फिरने या चक्कर खानेवाला। २. घुमाने, फिराने या चक्कर देनेवाला। उलटने पलटनेवाला। ३ बदलनेवाला। ४. जो बदला जा सके।

परिवर्तन–संज्ञा पु०[सं०][वि० परिवर्तनीय, परिवर्तित, परिवर्ती] १. घुमाव। फेरा। चक्कर। आवर्तन। २. दो वस्तुओं का परस्पर अदल-बदल। विनिमय। तबादला। ३ जो किसी वस्तु के बदले में लिया या दिया जाय। ४. रूपांतर।

परिवर्तित–वि० [सं०] १. बदला हुआ। रूपांतरित। २ जो बदले में मिला हुआ हो।

परिवर्ती–वि० [सं० परिवर्तिन्] १. परिवर्तनशील। बार बार बदलनेवाला। २. बदला करनेवाला। ३ जो बराबर घूमे।

परिवर्द्धन–संज्ञा पु० [सं०] [वि० परिवर्धित] संख्या, गुण आदि में किसी वस्तु की खूब बढ़ती होना। परिवृद्धि।

परिवर्द्धित–वि० [सं०] बढ़ाया हुआ।

परिवह–संज्ञा पु० [सं०] १. सात पवनों में से छठा पवन। २ अग्नि की एक जीभ।

परिवा–संज्ञा स्त्री० [सं० प्रतिपदा] किसी पक्ष की पहली तिथि। पड़िवा।

परिवाद–संज्ञा पु० [सं०] निंदा। अपवाद।

परिवादी–वि० [सं०] निंदा करनेवाला।

परिवार–संज्ञा पु० [सं०] १. ढकनेवाली चीज। आवरण। २. म्यान। कोष। तलवार की खोली। ३. वे लोग जो किसी राजा या रईस की सवारी में उसके पीछे उसे घेरे हुए चलते हैं। परिषद। ४. कुटुम्ब। कुनबा। खानदान। ५. एक स्वभाव या धर्म की वस्तुओं का समूह। कुल।

परिवास–संज्ञा पु० [सं०] १. ठहरना। टिकना। २. घर। मकान। ३ सुगंध।

परिवाह–संज्ञा पु० [सं०] जल का बाँध,

मेंड़ या दीवार के ऊपर से उछलकर बहना।
परिवृत–वि० [सं०] ढका, छिपाया या घिरा हुआ। वेष्टित। आवृत।
परिवृति–संज्ञा स्त्री० [सं०] ढकने, घेरने या छिपानेवाली वस्तु। वेष्टन।
परिवृत्त–वि० [सं०] १. उलटा पलटा हुआ। २. घेरा हुआ। वेष्टित। ३. समाप्त।
परिवृत्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. घुमाव। चक्कर। गरदिश। २. घेरा। वेष्टन। ३. विनिमय। तबादला। ४. समाप्ति। अंत। ५. ऐसा शब्द-परिवर्तन जिसमें अर्थ में कोई अंतर न आने पावे। (व्याकरण) संज्ञा पुं० एक अर्थालंकार जिसमें एक वस्तु को देकर दूसरी के लेने अर्थात् लेन-देन या अदल-बदल का कथन होता है।
परिवृद्धि–संज्ञा स्त्री० दे० "परिवर्द्धन"।
परिवेद–संज्ञा पुं० [सं०] पूरा ज्ञान।
परिवेदन–संज्ञा पुं० [सं०] १. पूरा ज्ञान। सम्यक् ज्ञान। २. विचरण। ३. लाभ। ४. विद्यमानता। ५. बहस। ६. भारी दुःख या कष्ट। ७. बड़े भाई के पहले छोटे भाई का ब्याह होना।
परिवेश–संज्ञा पुं० [सं०] घेरा।
परिवेष, परिवेषण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० परिवेष्टव्य, परिवेष्य] १. (खाना) परसना। परोसना। २. घेरा। परिधि। वेष्टन। ३. सूर्य्य या चंद्र आदि के चारों ओर का मंडल। ४. परकोटा। कोट। शहर-पनाह।
परिवेष्टन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० परिवेष्टित] १. चारों ओर से घेरना या वेष्टन करना। २. आच्छादन। आवरण। ३. परिधि। घेरा। दायरा।
परिव्रज्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. इधर-उधर भ्रमण। २. तपस्या। ३. भिक्षुक की भाँति जीवन बिताना।
परिव्राज, परिव्राजक–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह संन्यासी जो सदा भ्रमण करता रहे। २. संन्यासी। यती। परमहंस।
परिव्राट–संज्ञा पुं० दे० "परिव्राज"।
परिशिष्ट–वि० [सं०] बचा हुआ। संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी पुस्तक या लेख का वह भाग जिसमें वे बातें दी गई हों जो किसी कारण यथास्थान न आ सकी हों और जिनके पुस्तक में न आने से वह अपूर्ण रह जाती हो। २. किसी पुस्तक का वह अतिरिक्त अंश जिसमें कुछ ऐसी बातें दी गई हों जिनसे उसकी उपयोगिता या महत्त्व बढ़ता हो। जमीमा।
परिशीलन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० परिशीलित] १. विषय को खूब सोचते हुए पढ़ना। मननपूर्वक अध्ययन। २. स्पर्श।
परिशेष–वि० [सं०] बचा हुआ। संज्ञा पुं० १. जो कुछ बच रहा हो। २. परिशिष्ट। ३. समाप्ति। अंत।
परिशोध–संज्ञा पुं० [सं०] १. पूर्ण शुद्धि। पूरी सफ़ाई। २. ऋण की बेबाकी। चुकता।
परिशोधन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० परिशुद्ध, परिशोधनीय, परिशोधित] १. पूरी तरह साफ या शुद्ध करना। २. ऋण या क़र्ज़ की बेबाक़ी। चुकता।
परिश्रम–संज्ञा पुं० [सं०] १. उद्यम। आयास। श्रम। क्लेश। मेहनत। मशक्कत। २. थकावट। श्रांति। माँदगी।
परिश्रमी–वि० [सं० परिश्रमिन्] जो बहुत श्रम करे। उद्यमी। मेहनती।
परिश्रय–संज्ञा पुं० [सं०] १. आश्रय। पनाह की जगह। २. सभा। परिषद्।
परिश्रांत–वि० [सं०] थका हुआ।
परिश्रुत–वि० [सं०] विख्यात। प्रसिद्ध।
परिषत्–संज्ञा स्त्री० दे० "परिषद्"।
परिषद्–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्राचीन काल की विद्वान् ब्राह्मणों की वह सभा जिसे राजा किसी विषय पर व्यवस्था देने के लिए बुलाता था और जिसका निर्णय सर्व-मान्य होता था। २. सभा। मजलिस। ३. समूह। समाज। भीड़।
परिषद–संज्ञा पुं० [सं०] १. दे० "परिषद्"। २. सदस्य। सभासद। ३. मुसाहब। दरबारी।

परोल–संज्ञा पु॰ [अं॰ पेरोल] सैनिकों का सकेत या शब्द जिसके बोलने से पहरे पर के सिपाही बोलनेवाले को आने या जाने से नहीं रोकते।
परोसना†–क्रि॰ स॰ दे॰ "परसना"।
परोसा†–संज्ञा पु॰ [हिं॰ परोसना] एक मनुष्य के खाने भर का भोजन जो कहीं भेजा जाता है।
परोहन–संज्ञा पु॰ [स॰ प्ररोहण] वह जिस पर कोई सवार हो, या कोई चीज लादी जाय।
पर्जंक*†–संज्ञा पु॰ दे॰ "पर्यंक"।
पर्जन्य–संज्ञा पु॰ [स॰] १ बादल। मेघ। २ विष्णु। ३ इंद्र।
पर्ण–संज्ञा पु॰ [सं॰] वृक्ष का पत्ता।
पर्णकुटी–संज्ञा स्त्री॰ [स॰] केवल पत्तों की बनी हुई कुटी। पर्णशाला। झोपडी।
पर्णशाला–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "पर्णकुटी"।
पर्णी–संज्ञा पु॰ [स॰ पर्णिन्] वृक्ष। पेड। संज्ञा स्त्री॰ एक प्रकार की अप्सराएँ।
पर्त–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "परत"।
पर्दा–संज्ञा पु॰ दे॰ "परदा"।
पर्पट–संज्ञा पु॰ [स॰] १ पित्तपापडा। २ पापड।
पर्पटी–संज्ञा स्त्री॰ [स॰] १ सौराष्ट्र देश की मिट्टी। गोपीचंदन। २ पानडी। ३ पपडी। ४ स्वर्ण पर्पटी नामक औषध।
पर्पटी रस–संज्ञा पु॰ [स॰] वैद्यक में एक प्रकार का रस।
पर्यंक–संज्ञा पु॰ [सं॰] पलँग।
पर्यंत–अव्य॰ [स॰] तक। लौं।
पर्यटन–संज्ञा पु॰ [स॰] भ्रमण। घूमना फिरना।
पर्यवसान–संज्ञा पु॰ [स॰] [वि॰ पर्यवसित] १ अंत। समाप्ति। २ शामिल हो जाना। ३ ठीक ठीक अर्थ निश्चित करना।
पर्यस्तापह्नुति–संज्ञा स्त्री॰ [स॰] वह अर्थालंकार जिसमें वस्तु का गुण गोपन करके उस गुण का किसी दूसरे में आरोपित किया जाना वर्णन किया जाय।
पर्याप्त–वि॰ [स॰] १ पूरा। काफी। यथेष्ट। २ प्राप्त। मिला हुआ। ३ समर्थ।
पर्याय–संज्ञा पु॰ [स॰] १ समानार्थवाची शब्द। जैसे, 'विष' का पर्याय 'हलाहल' है। २ क्रम। सिलसिला। ३ वह अर्थालंकार जिसमें एक वस्तु का क्रम से अनेक आश्रय लेना वर्णित हो या अनेक वस्तुओं का एक ही के आश्रित होने का वर्णन हो।
पर्यायोक्ति–संज्ञा स्त्री॰ [स॰] वह शब्दालंकार जिसमें कोई बात साफ न कहकर घुमाव फिराव से कही जाय, अथवा जिसमें किसी रमणीय मिस या व्याज से कार्य साधन किए जाने का वर्णन हो।
पर्यालोचना–संज्ञा स्त्री॰ [स॰] पूरी जाँच पडताल। समीक्षा।
पर्युपासक–संज्ञा पु॰ [स॰] सेवक। दास।
पर्युपासन–संज्ञा पु॰ [स॰] सेवा।
पर्व–संज्ञा पु॰ [स॰ पर्वन्] १ धर्म, पुण्य कार्य अथवा उत्सव आदि करने का समय। पुण्यकाल। २ चातुर्मास्य। ३ प्रतिपदा से लेकर पूर्णिमा अथवा अमावस्या तक का समय। पक्ष। ४ दिन। ५ क्षण। ६ अवसर। मौका। ७ उत्सव। ८ संधि स्थान। ९ भाग। टुकडा। हिस्सा।
पर्व-काल–संज्ञा पु॰ [स॰] वह समय जब कि कोई पर्व हो। पुण्य-काल।
पर्वणी–संज्ञा स्त्री॰ [स॰] पूर्णिमा।
पर्वत–संज्ञा पु॰ [स॰] १ जमीन के ऊपर आस पास की जमीन से बहुत अधिक उठा हुआ प्राकृतिक भाग जो प्राय पत्थर ही होता है। पहाड। २ किसी चीज का बहुत ऊँचा ढेर। ३ वृक्ष। पेड। ४ दशनामी संप्रदाय के एक प्रकार के संन्यासी।
पर्वतनंदिनी–संज्ञा स्त्री॰ [स॰] पार्वती।
पर्वतराज–संज्ञा पु॰ [स॰] १ बहुत बडा पहाड। २ हिमालय पर्वत।
पर्वतारि–संज्ञा पु॰ [स॰] इंद्र।
पर्वतास्त्र–संज्ञा पु॰ [सं॰] प्राचीन काल का एक अस्त्र जिसके फेंकते ही शत्रु की

सेना पर बड़े बड़े पत्थर बरसने लगते थे, अथवा अपनी सेना के चारों ओर पहाड़ खड़े हो जाते थे।

पर्वती–वि० दे० "पर्वतीय"।

पर्वतीय–वि० [सं०] १. पहाड़ी। पहाड़-संबंधी। २. पहाड़ पर रहने, होने या बसनेवाला।

पर्वतेश्वर–संज्ञा पुं० [सं०] हिमालय।

पर्वर–संज्ञा पुं० दे० "परवल"। वि० दे० "परवर"।

पर्वरिश–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] पालन-पोषण। पालना-पोसना।

पर्वसंधि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पूर्णिमा अथवा अमावस्या और प्रतिपदा के बीच का समय। २. सूर्य्य अथवा चंद्रमा को ग्रहण लगने का समय।

पर्वाह–संज्ञा स्त्री० दे० "परवाह"।

पर्विणी–संज्ञा स्त्री० दे० "पर्व"।

पर्हेज–संज्ञा पुं० [फ़ा] १. रोग आदि के समय अपथ्य वस्तु का त्याग। २. अलग रहना। दूर रहना।

पलंका‡–संज्ञा स्त्री० [हिं० पर+लंका] बहुत दूर का स्थान।

पलंग–संज्ञा पुं० [सं० पल्यक] [स्त्री० अल्पा० पलँगड़ी] अच्छी और बड़ी चारपाई। पर्यंक।

पलंगपोश–संज्ञा पुं० [हिं० पलंग+फ़ा० पोश] पलंग पर बिछाने की चादर।

पलँगिया†–संज्ञा स्त्री० [हिं० पलंग+इया (प्रत्य०)] छोटा पलंग। खटिया।

पल–संज्ञा पुं० [सं०] १. समय का एक प्राचीन विभाग जो ⅖ मिनट या २४ सेकंड के बराबर होता है। घड़ी या दंड का ६०वाँ भाग। २. चार कर्ष की एक तौल। ३. मांस। ४. धान का पयाल। ५. धोखे-बाजी। प्रतारणा। ६. तराजू। तुला। संज्ञा पुं० [सं० पलक] १. पलक। दृगंचल। मुहा०—पल मारते या पल मारने में=बहुत ही जल्दी। आँख झपकते। तुरंत। २. समय का अत्यंत छोटा विभाग। क्षण। लम्हा। मुहा०—पल के पल में=बहुत ही अल्प-काल में। क्षण भर में।

पलक–संज्ञा स्त्री० [सं० पल+क] १. क्षण। पल। लहमा। २. आँख के ऊपर का चमड़े का परदा। पपोटा तथा बरौनी। मुहा०—पलक झपकते=अत्यंत अल्प समय में। बात कहते। किसी के रास्ते में या किसी के लिये पलक बिछाना=किसी का अत्यंत प्रेम से स्वागत करना। पलक भाँजना=पलक गिराना या हिलाना। पलक मारना=१. आँखों से संकेत या इशारा करना। २. पलक झपकाना या गिराना। पलक लगना=१. आँखें मुँदना। पलक झपकना। २. नींद आना। पलक से पलक न लगना=१. टकटकी बँधी रहना। २. नींद न आना।

पलक-दरिया†–वि० [हिं० पलक+फ़ा० दरिया] बहुत बड़ा दानी। अति उदार।

पलकनेवाज†–वि० दे० "पलक-दरिया"।

पलका*–संज्ञा पुं० [सं० पर्यंक] [स्त्री० पलकी] पलंग। चारपाई।

पलचर–संज्ञा पुं० [सं० पल+चर] एक उपदेवता जिसका वर्णन राजपूतों की कथाओं में है।

पलटन–संज्ञा स्त्री० [अं० बटालियन या प्लैटून] १. अँगरेजी पैदल सेना का एक विभाग जिसमें २०० के लगभग सैनिक होते हैं। २. दल। समुदाय। झुंड।

पलटना–क्रि० अ० [सं० प्रलोठन] १. उलट जाना। (क्व०) २. अवस्था या दशा बदलना। परिवर्तन होना। काया-पलट हो जाना। ३. अच्छी स्थिति या दशा प्राप्त होना। ४. मुड़ना। घूमना। पीछे फिरना। ५. लौटना। वापस होना। क्रि० स० १. उलटना। औंधाना। २. अवनत को उन्नत या उन्नत को अवनत करना। काया पलट देना। ३. फेरना। बार बार उलटना। ४. बदलना। एक वस्तु को त्यागकर दूसरी को ग्रहण करना। ५. बदले में लेना। बदला करना। (अप्रयुक्त) ६. एक बात से मुकरकर दूसरी कहना।* ७

*परिष्कार—संज्ञा पु० [सं०] १ संस्कार। शुद्धि। सफाई। २ स्वच्छता। निर्मलता। ३ गहना। जेवर। ४ शोभा। ५ सजावट। सिंगार।

*परिष्क्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शुद्ध करना। शोधन। २ माँजना धोना। ३ सँवारना। सजाना।

परिष्कृत—वि० [सं०] १ साफ या शुद्ध किया हुआ। २ माँजा या धोया हुआ। ३ सँवारा या सजाया हुआ।

परिसंख्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गणना। गिनती। २ एक अर्थालंकार जिसमें पूछी या बिना पूछी हुई बात उसी के सदृश दूसरी बात को व्यंग्य या वाच्य से वर्जित करने के अभिप्राय से कही जाय। यह दो प्रकार का होता है—प्रश्नपूर्वक और बिना प्रश्न का।

परिसर्प—संज्ञा पु० [सं०] १ परिक्रिया। परिक्रमण। २ घूमना फिरना। ३ किसी की खोज में जाना। ४ साहित्यदर्पण के अनुसार नाटक में किसी का किसी की खोज में मार्ग के चिह्नों के सहारे भटकना। ५ सुश्रुत के अनुसार ११ क्षुद्र कुष्ठों में से एक।

*परिस्तान—संज्ञा पु० [फा] १ वह कल्पित लोक या स्थान जहाँ परियाँ रहती हों। २ वह स्थान जहाँ सुंदर मनुष्यों विशेषत स्त्रियों का जमघट हो।

परिस्फुट—वि० [सं०] १ बिलकुल प्रकट या खुला हुआ। २ व्यक्त। प्रकाशित। प्रकट। ३ खूब खिला हुआ।

परिस्पंद—संज्ञा पु० [सं०] भरना। क्षरण।

परिहँस—संज्ञा पु० दे० 'परिहस'।

परिहत—वि० [सं०] मृत। मरा हुआ।

परिहरण—संज्ञा पु० [सं०] [वि० परिहरणीय, परिहर्त्तव्य, परिहृत] १ जबरदस्ती ले लेना। छीन लेना। २ परित्याग। छोड़ना। तजना। ३ दोष, अनिष्टादि का उपचार या उपाय करना। निवारण। निराकरण।

परिहरना—क्रि० स० [सं० परिहरण] त्यागना। छोड़ना। तज देना।

परिहस*—संज्ञा पु० [सं० परिहास] १ परिहास। हँसी। दिल्लगी। २ ईर्ष्या। डाह। ३ संज्ञा पु० रंज। खेद। दुख।

परिहा—संज्ञा पु० [?] एक प्रकार का छंद।

परिहार—संज्ञा पु० [सं०] [वि० परिहारर] १ दोष, अनिष्ट, खराबी आदि का निवारण या निराकरण। २ दोषादि के दूर करने की युक्ति या उपाय। इलाज। उपचार। ३ परित्याग। तजने या त्यागने का कार्य। ४ पशुओं के चरने के लिए परती छोड़ी हुई सार्वजनिक भूमि। चरहा। ५ लड़ाई में जीता हुआ धनादि। ६ कर या लगान की माफी। छूट। ७ खंडन। तरदीद। ८ नाटक में किसी अनुचित या अविधेय कर्म का प्रायश्चित्त करना। (साहित्यदर्पण) ९ तिरस्कार। १० उपेक्षा। संज्ञा पु० [सं०] राजपूतों का एक वंश जो अग्निकुल के अंतर्गत माना जाता है।

परिहारना*—क्रि० स० [सं० प्रहार] प्रहार करना

परिहारी—संज्ञा पु० [सं० परिहारिन्] निवारण, त्याग, दोषक्षालन, हरण या गोपन करनेवाला।

परिहार्य—वि० [सं०] १ जिसका परिहार किया जा सके। जिससे बचा जा सके। जो दूर किया जा सके। २ जिसका निवारण, त्याग या उपचार करना उचित हो।

परिहास—संज्ञा पु० [सं०] १ हँसी। दिल्लगी। मजाक। २ क्रीड़ा। खेल।

परिहित—वि० [सं०] १ चारों ओर से छिपा या ढँका हुआ। २ पहना हुआ।

परी—संज्ञा स्त्री० [फा] १ फारस की प्राचीन कथाओं के अनुसार काफ नामक पहाड़ पर बसनेवाली कल्पित सुंदरी और परवाली स्त्रियाँ। २ परम सुंदरी। अत्यंत रूपवती।

परीक्षक—संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० परीक्षिका] परीक्षा करने या लेनेवाला। इम्तहान करने या लेनेवाला।

परीक्षण—संज्ञा पु० दे० "परीक्षा"।

परीक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गुण, दोष

आदि जानने के लिये अच्छी तरह से देखने-भालने का कार्य। समीक्षा। समालोचना। २. वह कार्य जिससे किसी की योग्यता, सामर्थ्य आदि जाने जायँ। इम्तहान। ३. आज़माइश। अनुभवार्थ प्रयोग। ४. निरीक्षण। जाँच-पड़ताल। ५. वह विधान जिससे प्राचीन न्यायालय किसी अभियुक्त अथवा साक्षी के सच्चे या झूठे होने का निश्चय करते थे।

परीक्षित—वि० [सं०] जिसकी परीक्षा या जाँच की गई हो।
संज्ञा पुं० अर्जुन के पोते और अभिमन्यु के पुत्र, पांडु-कुल के एक प्रसिद्ध राजा। कहते हैं कि जब तक्षक के काटने से इनकी मृत्यु हो गई, तब कलियुग का आरंभ हुआ था।

परीक्ष्य—वि० [सं०] परीक्षा करने योग्य।

परीखना*—क्रि० स० दे० "परखना"।

परीछत*—संज्ञा पुं० दे० "परीक्षित"।

परीछा—संज्ञा स्त्री० दे० "परीक्षा"।

परीछित*—क्रि०वि०[सं०परीक्षित]अवश्य ही।

परीज़ाद—वि० [फ़ा०] अत्यंत सुंदर।

परीत*—संज्ञा पुं० दे० "प्रेत"।

परीषह—संज्ञा पुं० [सं०] जैन शास्त्रों के अनुसार त्याग या सहन। ये २२ प्रकार के कहे गये हैं।

परुख*—वि० दे० "परुष"।

परुखाई*—संज्ञा स्त्री० [हिं० परुख + आई (प्रत्य०)] परुषता। कठोरता।

परुष—वि० [सं०] [स्त्री० परुषा] १. कठोर। कड़ा। सख्त। २. बुरा लगनेवाला (शब्द, वचन, आदि)। ३. निष्ठुर। निर्दय। बेरहम।

परुषता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कठोरता। कड़ाई। २. (वचन या शब्द की) कर्कशता। ३. निर्दयता।

परुषत्व—संज्ञा पुं० [सं०] परुषता।

परुषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. काव्य में वह वृत्ति, रीति या शब्दयोजना की प्रणाली जिसमें टवर्गीय, द्वित्त, संयुक्त, रेफ और श, ष आदि वर्ण तथा लंबे लंबे समास अधिक आए हों। २. रावी नदी।

परे—अव्य० [सं० पर] १. उस ओर। उधर। २. बाहर। अलग। ३. ऊपर। बढ़कर। ४. बाद। पीछे।

परेई—संज्ञा स्त्री० [हिं० परेवा] १. पंडुकी। फ़ाख़ता। २. मादा कबूतर।

परेखना—क्रि० स० [सं० प्रेक्षण] १. परखना। जाँचना। २. आसरा देखना।

परेखा*—संज्ञा पुं० [सं० परीक्षा] १. परीक्षा। जाँच। २. विश्वास। प्रतीति। ३. पछतावा। अफ़सोस। खेद।

परेग—संज्ञा स्त्री० [अं० पेग] छोटा काँटा।

परेत—संज्ञा पुं० दे० "प्रेत"।

परेता—संज्ञा पुं० [सं० परितः] १. जुलाहों का एक औज़ार जिस पर वे सूत लपेटते हैं। २. पतंग की डोर लपेटने का बेलन।

परेर†—संज्ञा पुं० [सं० पर = दूर, ऊँचा + एर] आकाश। आसमान।

परेवा—संज्ञा पुं० [सं० पारावत] [स्त्री० परेई] १. पंडुक पक्षी। पेंडुकी। फ़ाख़ता। २. कबूतर। ३. तेज उड़नेवाला पक्षी। ४. चिट्ठीरसाँ। हरकारा।

परेश—संज्ञा पुं० [सं०] ईश्वर।

परेशान—वि० [फ़ा०] व्यग्र। व्याकुल। उद्विग्न।

परेशानी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] व्याकुलता। उद्विग्नता। व्यग्रता।

परों*†—क्रि० वि० दे० "परसों"।

परोक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १. अनुपस्थिति। अभाव। गैरहाज़िरी। २. परम ज्ञानी।
वि० [सं०] १. जो देख न पड़े। २. गुप्त। छिपा हुआ।

परोजन—संज्ञा पुं० दे० "प्रयोजन"।

परोपकार—संज्ञा पुं० [सं०] वह काम जिससे दूसरों का भला हो। दूसरे के हित का काम।

परोपकारी—संज्ञा पुं० [सं० परोपकारिन्] [स्त्री० परोपकारिणी] दूसरों की भलाई करनेवाला।

परोरना†—क्रि० स० [?] मंत्र पढ़कर फूँकना।

लौटाना। फेरना। वापस करना।

पलटनिया–संज्ञा पुं० [हिं० पलटन] पल्टन में काम करनेवाला। सिपाही। सैनिक।

पलटा–संज्ञा पुं० [हिं० पलटना] १. पलटने की क्रिया या भाव। परिवर्तन।

मुहा०—पलटा खाना=दशा या स्थिति का उलट जाना।

२. बदला। प्रतिफल। ३ गाने में जल्दी जल्दी थोड़े से स्वरों पर चक्कर लगाना या उनका उच्चारण करना।

पलटाना–क्रि० स० [हिं० पलटना] १ लौटाना। फेरना। वापस करना। २ बदलना। (क्व०)

पलटे†–क्रि० वि० [हिं० पलटा] बदले में। एवज में। प्रतिफल-स्वरूप।

पलड़ा†–संज्ञा पुं० [सं० पटल] तराजू का पल्ला। तुलापट।

पलथी†–संज्ञा स्त्री० [सं० पर्य्यस्त] वह आसन जिसमें दाहिने पैर का पंजा बाएँ और बाएँ पैर का पंजा दाहिने पट्ठे के नीचे दबाकर बैठते हैं। स्वस्तिकासन। पालथी।

पलना–क्रि० अ० [सं० पालन] १ पालने का अकर्मक रूप। परवरिश पाना। पाला-पोसा जाना। २ खा-पीकर हृष्ट-पुष्ट होना। तैयार होना।

*†संज्ञा पुं० दे० "पालना"।

पलनाना†*–क्रि० स० [हिं० पलान=जीन+ना (प्रत्य०)] घोड़े पर जीन कसकर उसे चलने के लिए तैयार करना।

पलवा*†–संज्ञा पुं० [सं० पल्लव] अँजुली। चुल्लू।

पलवाना–क्रि० स० [हिं० पालना का प्रेरणा० रूप] किसी से पालन कराना।

पलवैया–संज्ञा पुं० [हिं० पालना+वैया (प्रत्य०)] पालन करनेवाला। पालक।

पलस्तर–संज्ञा पुं० [अं० प्लास्टर] दीवार आदि पर का मिट्टी, चूने आदि के गारे का लेप। लेट।

मुहा०—पलस्तर ढीला होना, बिगड़ना या बिगड़ जाना=बहुत परेशान होना। नसें ढीली हो जाना।

पलहना*–क्रि० अ० [सं० पल्लव] पल्लवित होना। पल्लव फूटना। पनपना। लहलहाना।

पलहा*–संज्ञा पुं० [सं० पल्लव] कोमल पत्ते। कोंपल।

पलांडु–संज्ञा पुं० [सं०] प्याज।

पला–संज्ञा पुं० [सं० पल] पल। निमिष।

*संज्ञा पुं० [सं० पटल] १ तराजू का पलड़ा। पल्ला। *२ पल्ला। आँचल। ३ पार्श्व। किनारा।

पलाद–संज्ञा पुं० [सं०] राक्षस।

पलान–संज्ञा पुं० [सं० पल्याण मि० फ़ा० पालान] वह गद्दी या चारजामा जो जानवरों की पीठ पर लादने या चढ़ने के लिए कसा जाता है।

पलानना*–क्रि० स० [हिं० पलान+ना (प्रत्य०)] १ घोड़े आदि पर पलान कसना। २ चढ़ाई की तैयारी करना।

पलाना*†–क्रि० अ० [सं० पलायन] भागना। पलायन करना।

क्रि० स० पलायन कराना। भगाना।

पलानी–संज्ञा स्त्री० [हिं० पलान] १ छप्पर। २ दे० "पलान"।

पलायक–संज्ञा पुं० [सं०] भागनेवाला। भगू।

पलायन–संज्ञा पुं० [सं०] भागने की क्रिया या भाव। भागना।

पलायमान–वि० [सं०] भागता हुआ।

पलायित–वि० [सं०] भागा हुआ।

पलाश–संज्ञा पुं० [सं०] १ पलास। ढाक। टेसू। २ पत्र। पत्ता। ३ राक्षस। ४ कचूर। ५ मगध देश।

वि० १ मांसाहारी। २ निर्दय।

पलाशी–वि० [सं० पलाशिन्] १ मांसाहारी। २ पत्र विशिष्ट। पत्रयुक्त।

संज्ञा पुं० राक्षस।

पलास–संज्ञा पुं० [सं० पलाश] १ एक प्रसिद्ध वृक्ष जो तीन रूपों में पाया जाता है—वृक्ष रूप में, क्षुप रूप में और लता रूप में। इसके फूल को प्रायः टेसू कहते

है। पलास। ढाक। टेसू। केसू। २. गीध की जाति का एक मांसाहारी पक्षी।
पलित–वि० [सं०] [स्त्री० पलिता] १. वृद्ध। बुड्ढा। २. पका हुआ या सफ़ेद (बाल)।
संज्ञा पुं० १. सिर के बालों का उजला होना। बाल पकना। २. ताप। गरमी।
पली–संज्ञा स्त्री० [सं० पलिघ] तेल, घी आदि द्रव पदार्थों को बड़े बरतन से निकालने का लोहे का एक उपकरण।
मुहा०—पली पली जोड़ना = थोड़ा थोड़ा करके संचय या संग्रह करना।
पलीता–संज्ञा पुं० [फ़ा० फलीतः] [स्त्री० अल्पा० पलीती] १. बत्ती के आकार में लपेटा हुआ वह कागज़ जिस पर कोई यंत्र लिखा हो। २. वह बत्ती जिससे बंदूक या तोप के रंजक में आग लगाई जाती है। ३. कपड़े की वह बत्ती जिसे पनशाखे पर रखकर जलाते हैं।
वि० बहुत क्रुद्ध। आग-बबूला।
पलीद–वि० [फ़ा] १. अपवित्र। गंदा। २. घृणास्पद। ३. नीच। दुष्ट।
संज्ञा पु० [हिं० पलीत] भूत। प्रेत।
पलुआ†–संज्ञा पुं० [हिं० पलना] पालतू। पाला हुआ।
पलुहना*†–क्रि० अ० [सं० पल्लव] पल्लवित होना। हरा-भरा होना।
पलुहाना*†–क्रि० स० [हिं० पलुहना] पल्लवित करना। हरा-भरा करना।
पलेड़ना*†–क्रि० स० [सं० प्रेरण] ढकेलना। धक्का देना।
पलेथन–संज्ञा पुं० [सं० परिस्तरण] १. वह सूखा आटा जिसे रोटी बेलने के समय लोई पर लपेटते हैं। परथन।
मुहा०—पलेथन निकालना = १. खूब मार पड़ना या खाना। २. परेशान होना। तंग होना। २. किसी हानि या अपकार के पश्चात् उसी के संबंध से होनेवाला अनावश्यक व्यय।
पलोटना–क्रि० स० [सं० प्रलोठन] १. पैर दबाना। २. दे० "पलटना"।
क्रि० अ० [हिं० पलटना] कष्ट से लोटना-पोटना। तड़फड़ाना।
पलोथन–संज्ञा पुं० दे० "पलेथन"।
पलोवना*–क्रि० स० [सं० प्रलोठन] १. पैर दबाना। पैर मलना। २. सेवा करना।
पलोसना*–क्रि० स० [हिं० परसना] १. धोना। २. मीठी मीठी बातें करके ढंग पर लाना।
पल्लव–संज्ञा पुं० [सं०] १. नए निकले हुए कोमल पत्तों का समूह या गुच्छा। कोंपल। कल्ला। २. हाथ में पहनने का कड़ा या कंकण। ३. विस्तार। ४. बल। ५. पह्लव देश। ६. दक्षिण का एक प्राचीन राजवंश जिसका राज्य उड़ीसा से तुंगभद्रा नदी तक था।
पल्लवना*–क्रि० अ० [सं० पल्लव + ना (प्रत्य०)] पल्लवित होना। पत्ते फेंकना। पनपना
पल्लवित–वि० [सं०] १. जिसमें नए नए पत्ते हों। २. हरा-भरा। ३. लंबा-चौड़ा। ४. जिसके रोंगटे खड़े हों।
पल्ला–क्रि० वि० [सं० पर या पार] दूर।
संज्ञा पुं० दूरी।
संज्ञा पुं० [?] १. कपड़े का छोर। आँचल। दामन।
मुहा०—पल्ला छूटना = पीछा छूटना। छुटकारा मिलना। पल्ला पसारना = किसी से कुछ माँगना। पल्ले पड़ना = प्राप्त होना। मिलना। (किसी के) पल्ले बाँधना = जिम्मे किया जाना। २. दूरी। ३. † पास। अधिकार में। ४. तरफ़।
संज्ञा पुं० [सं० पटल] १. दुपल्ली टोपी का आधा भाग। २. किवाड़। पटल। ३. पहल। ४. तीन मन का बोझ।
संज्ञा पुं० [सं० पल] तराज़ू में एक ओर का टोकरा या डलिया। पलड़ा।
मुहा०—पल्ला झुकना या भारी होना = पक्ष बलवान् होना।
संज्ञा पुं० [सं० फल] क़ैंची के दो भागों में से एक भाग।
वि० दे० "परला"।

पल्ली–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ छोटा गाँव। पुरवा। खेड़ा। २ कुटी।

पल्लू†–संज्ञा पुं० [हिं० पल्ला] १ आँचल। छोर। दामन। २ चौड़ी गोट। पट्टा।

पल्ले†*–वि० दे० १ "परले"। २ दे० "पल्ला"।

पल्लेदार–संज्ञा पुं० [हिं० पल्ला+फ़ा० दार] १ अनाज ढोनेवाला मजदूर। २ गल्ला तौलनेवाला आदमी। बया।

पल्लेदारी–संज्ञा स्त्री० [हिं० पल्लेदार+ई (प्रत्य०)] पल्लेदार का काम।

पल्लौ†–संज्ञा पुं० [सं० पल्लव] पल्लव। संज्ञा पुं० वह चद्दर या गोन जिसमें अनाज बाँधते हैं। पल्ला।

पवमा–संज्ञा पुं० [?] एक प्रकार का छंद।

पवन–संज्ञा पुं० [सं०] १ वायु। हवा। मुहा०–पवन का भूसा होना = उड़ जाना। कुछ न रहना। २ कुम्हार का आँवाँ। ३ जल। पानी। ४ श्वास। साँस। ५ प्राण-वायु। *संज्ञा पुं० दे० "पावन"।

पवन-अस्त्र–संज्ञा पुं० दे० "पवनास्त्र"।

पवन-कुमार–संज्ञा पुं० [सं०] १ हनुमान्। २ भीमसेन।

पवन-चक्की–संज्ञा स्त्री० [सं० पवन+हिं० चक्की] वह चक्की या कल जो हवा के जोर से चलती हो।

पवन-चक्र–संज्ञा पुं० [सं०] बवंडर।

पवन-तनय–संज्ञा पुं० [सं०] १ हनुमान्। २ भीमसेन।

पवन-पति–संज्ञा पुं० [सं०] वायु के अधिष्ठाता देवता।

पवन-परीक्षा–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक क्रिया जिसके अनुसार आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा के दिन वायु की दिशा को देखकर ऋतु का भविष्य कहते हैं।

पवन-पुत्र–संज्ञा पुं० [सं०] १ हनुमान्। २ भीमसेन।

पवन-बाण–संज्ञा पुं० [सं०] वह बाण जिसके चलाने से हवा वेग से चलने लगे।

पवन-सुत–संज्ञा पुं० [सं०] १ हनुमान्। २ भीमसेन।

पवनाशन–संज्ञा पुं० [सं०] साँप।

पवनाशी–संज्ञा पुं० [सं० पवनाशिन्] १ वह जो हवा खाकर रहता हो। २ साँप।

पवनास्त्र–संज्ञा पुं० [सं०] एक अस्त्र। कहते हैं कि इसके चलाने से तेज हवा चलने लगती थी।

पवनी†–संज्ञा स्त्री० [हिं० पाना=प्राप्त करना] गाँवों में रहनेवाली वह छोटी प्रजा जो अपने निर्वाह के लिए गाँववालों से कुछ पाती है। जैसे नाऊ, बारी, धोबी।

पवर, पवरी†–संज्ञा स्त्री० दे० "पँवरि"।

पवर्ग–संज्ञा पुं० [सं०] वर्णमाला का पाँचवाँ वर्ग जिसमें प, फ, ब, भ, म ये पाँच अक्षर हैं।

पवाँर–संज्ञा पुं० दे० "परमार"।

पवाँरना†–क्रि० स० [सं० प्रवारण] फेंकना। गिराना।

पवाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० पाँव] १ एक पैर का जूता। २ चक्की का एक पाट।

पवाड़ा–संज्ञा पुं० दे० "पँवाड़ा"।

पवाना†–क्रि० स० [हिं० पाना, भोजन करना का सकर्मक] खिलाना। भोजन कराना।

पवि–संज्ञा पुं० [सं०] १ वज्र। २ बिजली। गाज। ३ वाक्य।

पविताई*–वि० स्त्री० दे० "पवित्रता"।

पवित्तर‡–वि० दे० "पवित्र"।

पवित्र–वि० [सं०] जो गंदा, मैला या खराब न हो। शुद्ध। निर्मल। साफ। संज्ञा पुं० [सं०] १ मेंह। बारिश। वर्षा। २ कुश। ३ ताँबा। ४ जल। ५ दूध। ६ यज्ञोपवीत। जनेऊ। ७ घी। ८ शहद। ९ कुश की बनी हुई पवित्री जिसे श्राद्धादि में उँगलियों में पहनते हैं। १० विष्णु। ११ महादेव।

पवित्रता–संज्ञा स्त्री० [सं०] पवित्र या शुद्ध होने का भाव। स्वच्छता। सफाई।

पवित्रा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ तुलसी। २ हल्दी। ३ पीपल। ४ रेशमी माला जो

कुछ धार्मिक कृत्यों के समय पहनी जाती है।

पवित्रात्मा–वि० [सं० पवित्रात्मन्] जिसकी आत्मा पवित्र हो। शुद्ध अंतःकरणवाला।

पवित्रित–वि० [सं०] शुद्ध या निर्मल किया हुआ।

पवित्री–संज्ञा स्त्री० [सं० पवित्र] कुश का बना छल्ला जो कर्मकांड के समय अनामिका में पहना जाता है।

पशम–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० पश्म] १. बढ़िया मुलायम ऊन जिससे दुशाले और पशमीने आदि बनते हैं। २. उपस्थ पर के बाल। शाष्प। ३. बहुत ही तुच्छ वस्तु।

पशमीना–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. पशम। २. पशम का बना हुआ कपड़ा।

पशु–संज्ञा पुं० [सं०] १. चार पैरों से चलने-वाला कोई जंतु जिसके शरीर का भार खड़े होने पर पैरों पर रहता हो। जैसे, कुत्ता, बिल्ली, घोड़ा इत्यादि। २. जीव-मात्र। प्राणी। ३. देवता।

पशुता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पशु का भाव। जानवरपन। २. मूर्खता और औद्धत्य।

पशुत्व–संज्ञा पुं० दे० "पशुता"।

पशुधर्म–संज्ञा पुं० [सं०] पशुओं का सा आचरण। मनुष्य के लिये निंद्य व्यवहार।

पशुपतास्त्र–संज्ञा पुं० [सं०] महादेव का शूलास्त्र।

पशुपति–संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव। महा-देव। २. अग्नि। ३. ओषधि।

पशुपाल–संज्ञा पुं० [सं०] पशुओं को पालने-वाला। पशुओं का रक्षक।

पशुभाव–संज्ञा पुं० [सं०] १. पशुत्व। जानवरपन। २. तंत्र में मंत्र के साधन के तीन प्रकारों में से एक।

पशुराज–संज्ञा पुं० [सं०] सिंह।

पश्चात्–अव्य० [सं०] पीछे। पीछे से। बाद। फिर। अनंतर।

पश्चाताप–संज्ञा पुं० [सं०] अनुताप। अफ़सोस। पछतावा।

पश्चात्तापी–संज्ञा पुं० [सं० पश्चात्तापिन्] पछतावा करनेवाला।

पश्चानुताप–संज्ञा पुं० [सं०] पश्चात्ताप।

पश्चिम–संज्ञा पुं० [सं०] वह दिशा जिसमें सूर्य्य अस्त होता है। प्रतीची। पच्छिम।

पश्चिमवाहिनी–वि० [सं०] पश्चिम की ओर बहनेवाली। (नदी आदि)

पश्चिमा–संज्ञा स्त्री० [सं०] पच्छिम दिशा।

पश्चिमाचल–संज्ञा पुं० [सं०] अस्ताचल।

पश्चिमी–वि० [सं०] १. पश्चिम की ओर का। २. पश्चिम-संबंधी। पश्चिम का।

पश्चिमोत्तर–संज्ञा पुं० [सं०] पश्चिम और उत्तर के बीच का कोना। वायुकोण।

पश्तो–संज्ञा स्त्री० [देश०] पश्चिमोत्तर-भारत की एक आर्य्य भाषा जिसमें फ़ारसी आदि के बहुत से शब्द मिल गए हैं।

पश्म–संज्ञा स्त्री० दे० "पशम"।

पश्मीना–संज्ञा पुं० दे० "पशमीना"।

पश्यंती–संज्ञा स्त्री० [सं०] नाद की दूसरी अवस्था या स्वरूप जब कि वह मूलाधार से उठकर हृदय में जाता है।

पश्यतोहर–संज्ञा पुं० [सं०] वह जो आँखों के सामने से चीज चुरा ले। जैसे, सुनार आदि।

पश्वाचार–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० पश्वा-चारी] तांत्रिकों के अनुसार कामना और संकल्पपूर्वक वैदिक रीति से देवों का पूजन। वैदिकाचार।

पष*†–संज्ञा पुं० [सं० पक्ष] १. पंख। डैना। २. तरफ़। ओर। ३. पक्ष। पास।

पषा–संज्ञा पुं० [सं० पक्ष] दाढ़ी। श्मश्रु।

पषान–संज्ञा पुं० दे० "पाषाण"।

पषारना*†–क्रि० स० [सं० प्रक्षालन] धोना।

पसंघा†–संज्ञा पुं० [फ़ा० पासंग] वह बोझ जिसे तराज़ू के पल्लों का बोझ बराबर करने के लिये हलके पल्ले की तरफ बाँध देते हैं। पासंग।

वि० बहुत ही थोड़ा या कम।

मुहा०–पसंघा भी न होना = कुछ भी न होना। बहुत ही तुच्छ होना।

पसंती*–संज्ञा स्त्री० दे० "पश्यंती"।

पसंद–वि० [फ़ा०] रुचि के अनुकूल।

मनोनीत। जो अच्छा लगे।
संज्ञा स्त्री० अच्छा लगने की वृत्ति। अभिरुचि।

पसनी†–संज्ञा स्त्री० [सं० प्राशन] अन्नप्राशन नामक संस्कार।

पसर–संज्ञा पुं० [सं० प्रसर] गहरी की हुई हथेली। करतलपुट। आधी अंजली। †संज्ञा पुं० [सं० प्रसार] विस्तार। फैलाव।

पसरना–क्रि० अ० [सं० प्रसरण] १. आगे की ओर बढ़ना। फैलना। २. विस्तृत होना। बढ़ना। ३. पैर फैलाकर लेटना।

पसरहट्टा–संज्ञा पुं० [हिं० पसारी+हाट] वह बाजार जिसमें पसारियों आदि की दूकानें हों।

पसराना–क्रि० स० [सं० प्रसारण] दूसरे को पसारने में प्रवृत्त करना।

पसरौंहाँ*†–वि० [हिं० पसरना+औंहाँ (प्रत्य०)] जो पसरता हो। फैलनेवाला।

पसली–संज्ञा स्त्री० [सं० पर्शुका] मनुष्यों और पशुओं आदि के शरीर में छाती पर के पंजर की आड़ी और गोलाकार हड्डियों में से कोई हड्डी।
मुहा०–पसली फड़कना या फड़क उठना = मन में उत्साह होना। जोश आना। हड्डी-पसली तोड़ना = बहुत मारना-पीटना।

पसाउ†*–संज्ञा पुं० [सं० प्रसाद] प्रसाद। प्रसन्नता। कृपा।

पसाना–क्रि० स० [सं० प्रस्रावण] १. भात में से माँड़ निकालना। २. पसेव निकालना या गिराना।
†*क्रि० अ० [सं० प्रसन्न] प्रसन्न होना।

पसार–संज्ञा पुं० [सं० प्रसार] १ पसरने की क्रिया या भाव। प्रसार। फैलाव। २. विस्तार। लंबाई-चौड़ाई।

पसारना–क्रि० स० [सं० प्रसारण] आगे की ओर बढ़ाना। फैलाना।

पसारी–संज्ञा पुं० दे० "पंसारी"।

पसाव–संज्ञा पुं० [हिं० पसाना] पसाने पर निकलनेवाला पदार्थ। माँड़। पीच।

पसावन–संज्ञा पुं० दे० "पसाव"।

पसीजना–क्रि० अ० [सं० प्र+स्विद्] १. घन पदार्थ में मिले हुए द्रव अंश का रस रसकर बाहर निकलना। रसना। २ चित्त में दया उत्पन्न होना। दयार्द्र होना।

पसीना–संज्ञा पुं० [सं० प्रस्वेदन] वह जल जो परिश्रम करने अथवा गरमी लगने पर शरीर से निकलने लगता है। प्रस्वेद। स्वेद। श्रमवारि।

पसुरी*†–संज्ञा स्त्री० दे० "पसली"।

पसूज–संज्ञा स्त्री० [देश०] वह सिलाई जिसमें सीधे तोपे भरे जाते हैं।

पसूजना–क्रि० स० [देश०] सीना। सिलाई करना।

पसेउ†–संज्ञा पुं० दे० "पसेव"।

पसेरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० पाँच+सेर+ई (प्रत्य०)] पाँच सेर का बाट। पसेरी।

पसेव–संज्ञा पुं० [सं० प्रस्राव] १. किसी चीज में से रसकर निकला हुआ जल। २. पसीना।

पसोपेश–संज्ञा पुं० [फा० पस व पेश] १. आगा-पीछा। सोच-विचार। हिचक। दुविधा। २. हानि-लाभ। ऊँच-नीच।

पस्त–वि० [फा०] १. हारा हुआ। २. थका हुआ। ३. दबा हुआ।

पस्तहिम्मत–वि० [फा०] भीरु। डरपोक। कायर।

पस्ती बबूल–संज्ञा पुं० [पस्ती ?+हिं० बबूल] एक प्रकार का पहाड़ी बबूल।

पहँ*–अव्य० [सं० पार्श्व] १. निकट। पास। २ से।

पहँसुल–संज्ञा स्त्री० [सं० प्रह्व = झुका हुआ+शूल] हँसिया के आकार का तरकारी काटने का एक औजार।

पह*†–संज्ञा स्त्री० दे० "पौ"।

पहचनवाना–क्रि० स० [हिं० पहचानना का प्रे०] पहचानने का काम कराना।

पहचान–संज्ञा स्त्री० [सं० प्रत्यभिज्ञान] १. पहचानने की क्रिया या भाव। २ किसी का गुण, मूल्य या योग्यता जानने की क्रिया या भाव। ३. लक्षण। निशानी।

४. पहचानने या भेद समझने की शक्ति। ५. जान-पहचान। परिचय। (क्व०)

पहचानना–क्रि० स० [हिं० पहचान] १. देखते ही जान लेना कि यह कौन व्यक्ति, या क्या वस्तु है। चीन्हना। २. किसी वस्तु के रूप-रंग या शक्ल-सूरत से परिचित होना। ३. अंतर समझना या करना। बिलगाना। ४. योग्यता या विशेषता से अभिज्ञ होना।

पहटना†–क्रि० स० [सं० प्रखेट] पीछा करना। खदेड़ना।

पहन*–संज्ञा पुं० दे० "पाहन"।

पहनना–क्रि० स० [सं० परिधान] शरीर पर धारण करना। परिधान करना।

पहनवाना–क्रि० स० [हिं० 'पहनना' का प्रे०] किसी और के द्वारा किसी को कुछ पहनाना।

पहनाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० पहनना] १. पहनने की क्रिया या भाव। २. पहनाने की मजदूरी या उजरत।

पहनाना–क्रि० स० [हिं० पहनना] दूसरे को कपड़े, आभूषण आदि धारण कराना।

पहनावा–संज्ञा पुं० [हिं० पहनना] १. पहनने के मुख्य मुख्य कपड़े। परिच्छद। परिधेय। पोशाक। २. विशेष अवस्था, स्थान अथवा समाज में ऊपर पहने जाने-वाले कपड़े। ३. कपड़े पहनने का ढंग या चाल।

पहपट–संज्ञा स्त्री० [देश०] १. एक प्रकार का गीत जो स्त्रियाँ गाया करती हैं। २ शोर-गुल। हल्ला। कोलाहल। ३. बदनामी या अपवाद का शोर। ४. छल। धोखा। फरेब।

पहपटबाज–संज्ञा पुं० [हिं० पहपट+फा० बाज] [संज्ञा पहपटबाजी] १. शरारती। झगड़ालू। २. ठग। धोखेबाज।

पहपटहाई†–संज्ञा स्त्री० [हिं० पहपट+हाई (प्रत्य०)] झगड़ा कराने या लगानेवाली।

पहर–संज्ञा पुं० [सं० प्रहर] १. एक दिन का चतुर्थांश। तीन घंटे का समय। २. समय। जमाना। युग।

पहरना†–क्रि० स० दे० "पहनना"।

पहरा–संज्ञा पुं० [हिं० पहर] १. किसी वस्तु या व्यक्ति के लिये आदमियों का यह देखने के लिये बैठना कि वह निर्दिष्ट स्थान से हटने या भागने न पावे। रक्षक-नियुक्ति। रक्षा अथवा निगहबानी का प्रबंध। चौकी। मुहा०—पहरा बदलना=नया रक्षक नियुक्त करके पुराने को छुट्टी देना। रक्षक बदलना। पहरा बैठना=किसी वस्तु या व्यक्ति के आस-पास रक्षक बैठाया जाना।
२. किसी व्यक्ति या वस्तु के संबंध में यह देखते रहने की क्रिया कि वह निर्दिष्ट स्थान से हट न सके। रखवाली। हिफाजत। निगहबानी।
मुहा०—पहरा देना=रखवाली करना।
३ उतना समय जितने में एक रक्षक अथवा रक्षक-दल को रक्षाकार्य्य करना पड़ता है। तैनाती। नियुक्ति। ४. वे रक्षक या चौकी-दार जो एक समय में काम कर रहे हों। रक्षकदल। गारद। (क्व०) ५. चौकी-दार का गश्त या फेरा। ६. चौकीदार की आवाज। ७. पहरे में रहने की स्थिति। हिरासत। हवालात। नजरबंदी।
मुहा०—पहरे में देना या रखना=हिरासत में देना। हवालात भेजना। पहरे में होना =हिरासत में होना। नजरबंद होना।
*†८. समय। युग। जमाना।
संज्ञा पुं० [हिं० पाँव+रा, पौरा] आ जाने का शुभ या अशुभ प्रभाव। पौरा।

पहराना†–क्रि० स० दे० "पहनाना"।

पहरावनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० पहरावना] वह पोशाक जो कोई बड़ा छोटे को दे। खिलअत।

पहरी–संज्ञा पुं० [सं० प्रहरी] पहरेदार। चौकीदार। रक्षक। पहरा देनेवाला।

पहरुआ†–संज्ञा पुं० दे० "पहरू"।

पहरू–संज्ञा पुं० [हिं० पहरा+ऊ (प्रत्य०)] पहरा देनेवाला। चौकीदार। रक्षक।

पहल–संज्ञा पुं० [फ़ा० पहलू, मि० सं० पटल] १. किसी घन पदार्थ के तीन या अधिक कोरों

अथवा दोनों के बीच की समतल भूमि। बगल। पहलू। बाजू। तरफ। २. जमी हुई रूई अथवा ऊन। ३. रजाई, तोशक आदि से निकाली हुई पुरानी रूई। *४ तह। परत।
संज्ञा पु० [हिं० पहला] किसी कार्य्य का आरंभ। छेड़।
पहलदार–वि० [हिं० पहल+फा० दार] जिसमें पहल हों। पहलूदार।
पहलवान–संज्ञा पु० [फा०] [संज्ञा पहलवानी] १ कुश्ती लड़नेवाला बली पुरुष। कुश्तीबाज। मल्ल। २ बलवान् तथा डील-डौलवाला।
पहलवानी–संज्ञा स्त्री० [फा०] पहलवान होने का भाव, काम या पेशा।
पहलवी–संज्ञा पु० दे० "पह्लवी"।
पहला–वि० [सं० प्रथम] [स्त्री० पहली] जो क्रम के विचार से आदि में हो। आरंभ का। प्रथम। अव्वल।
पहलू–संज्ञा पु० [फा०] १. बगल और कमर के बीच का वह भाग जहाँ पसलियाँ होती हैं। पार्श्व। पाँजर। २ दायाँ अथवा बायाँ भाग। पार्श्व भाग। बाजू। बगल। ३ करवट। बल। दिशा। तरफ। ४ [वि० पहलूदार] किसी वस्तु के पृष्ठदेश पर का समतल कटाव। पहल। ५ गुण, दोष आदि की दृष्टि से किसी वस्तु के भिन्न भिन्न अंग। पक्ष।
पहले–अव्य० [हिं० पहला] १ आरंभ में। सर्व-प्रथम। आदि में। शुरू में। २ देश-क्रम में प्रथम। स्थिति में पूर्व। ३ आगे। पेश्तर। ४ बीते समय में। पूर्व काल में।
पहले-पहल–अव्य० [हिं० पहले] पहली बार। सबसे पहले। सर्व-प्रथम।
पहलौठा–वि० [हिं० पहल+औठा (प्रत्य०)] [स्त्री० पहलौठी] पहली बार के गर्भ से उत्पन्न। (लड़का)
पहलौठी–संज्ञा स्त्री० [हिं० पहलौठा] पहले-पहल बच्चा जनना। प्रथम प्रसव।
पहाड़–संज्ञा पु० [सं० पाषाण] [स्त्री० अल्पा० पहाड़ी] १. पत्थर, चूने, मिट्टी आदि की चट्टानों का ऊँचा और बड़ा समूह जो प्राकृतिक रीति से बना हो। पर्वत। गिरि। मुहा०–पहाड़ उठाना = भारी काम सिर पर लेना। पहाड़ टूटना या टूट पड़ना = अचानक कोई भारी आपत्ति आ पड़ना। महान् संकट उपस्थित होना। पहाड़ से टक्कर लेना = जबरदस्त से मुकाबिला करना। २ बहुत भारी ढेर। ऊँची राशि। ३. बहुत भारी चीज। ४ वह जिसको समाप्त या शेष न कर सकें। ५ अति कठिन कार्य्य। दुष्कर काम।
पहाड़ा–संज्ञा पु० [सं० प्रस्तार] किसी अंक के गुणनफलों की क्रमागत सूची या नकशा। गुणन-सूची।
पहाड़ी–वि० [हिं० पहाड़+ई (प्रत्य०)] १. जो पहाड़ पर रहता या होता हो। २. जिसका संबंध पहाड़ से हो।
संज्ञा स्त्री० [हिं० पहाड़+ई (प्रत्य०)] १. छोटा पहाड़। २ पहाड़ के लोगों की गाने की एक धुन।
पहारू–†संज्ञा पु० [हिं० पहरा] पहरेदार।
पहिचान–संज्ञा स्त्री० दे० "पहचान"।
पहित, पहिती*†–संज्ञा स्त्री० [सं० पहित] पकी हुई दाल।
पहिनना–क्रि० स० दे० "पहनना"।
पहियाँ*‡–अव्य० दे० "पहँ"।
पहिया–संज्ञा पु०[सं० परिधि?] गाड़ी अथवा कल में लगा हुआ वह चक्कर जो अपनी धुरी पर घूमता है और जिसके घूमने पर गाड़ी या कल भी चलती है। चक्का। चक्र। चक्कर।
पहिरना†–क्रि० स० दे० "पहनना"।
पहिरावनी–संज्ञा स्त्री० दे० "पहनावा"।
पहिला–वि० [हिं० पहला] [स्त्री० पहिली] १ दे० "पहला"। २. प्रथम प्रसूता। पहले पहल ब्याई हुई।
पहिले–अव्य० दे० "पहले"।
पहीति*†–संज्ञा स्त्री० दे० "पहिती"।
पहुँच–संज्ञा स्त्री० [सं० प्रभूत] १. किसी

स्थान तक अपने को ले जाने कि क्रिया या शक्ति। २. किसी स्थान तक लगातार फैलाव। ३. गुजर। पैठ। प्रवेश। रसाई। ४. पहुँचने की सूचना। रसीद। ५. किसी विषय को समझने या ग्रहण करने की शक्ति। पकड़। दौड़। ६. अभिज्ञता की सीमा। परिचय। प्रवेश। दखल।

पहुँचना–क्रि० अ० [सं० प्रभूत] १. एक स्थान से चलकर दूसरे स्थान में प्रस्तुत या प्राप्त होना।

मुहा०—पहुँचा हुआ = ईश्वर के निकट पहुँचा हुआ। सिद्ध।

२. किसी स्थान तक लगातार फैलना। ३. एक हालत से दूसरी हालत में जाना। ४. घुसना। पैठना। प्रविष्ट होना। ५. किसी के अभिप्राय या आशय को जान लेना। ताड़ना। समझना। ६. समझने में समर्थ होना।

मुहा०—पहुँचनेवाला = जानकार। भेद या रहस्य जानने में समर्थ। पहुँचा हुआ = १. जिसे सब कुछ मालूम हो। अभिज्ञ। पता रखनेवाला। २. दक्ष। निपुण। उस्ताद।

७. आई अथवा भेजी हुई चीज किसी को मिलना। प्राप्त होना। मिलना। ८. अनुभव में आना। अनुभूत होना। ९ समकक्ष होना। तुल्य होना।

पहुँचा–संज्ञा पुं० [सं० प्रकोष्ठ] हाथ की कुहनी के नीचे का भाग। कलाई। गट्टा। मणिबंध।

पहुँचाना–क्रि०स०[हिं०पहुँचना का सकर्मक] १. किसी वस्तु या व्यक्ति को एक स्थान से ले जाकर दूसरे स्थान पर प्राप्त या प्रस्तुत कराना। घुसाना। उपस्थित कराना। ले जाना। २. किसी के साथ इसलिए जाना जिसमें वह अकेला न पड़े। ३. किसी को विशेष अवस्था तक ले जाना। ४. प्रविष्ट कराना। ५. कोई चीज लाकर या ले जाकर किसी को प्राप्त कराना। ६. अनुभव कराना। ७. समान बना देना।

पहुँची–संज्ञा स्त्री०[हिं० पहुँचा] १.कलाईपर पहनने का एक आभूषण। २. युद्ध में कलाई पर पहना जानेवाला एक आवरण।

पहुना †–संज्ञा पुं० दे० "पाहुना"।

पहुनाई–संज्ञा स्त्री०[हिं० पहुना+ई(प्रत्य०)] १. पाहुना होने का भाव। अतिथि-रूप में कहीं जाना या आना। २ अतिथि-सत्कार। मेहमानदारी।

पहुप* †–संज्ञा पुं० दे० "पुष्प"।

पहुमी–संज्ञा स्त्री० दे० "पुहमी"।

पहूला–संज्ञा पुं० [सं० प्रफुल्ला] कुमुदिनी।

पहेली–संज्ञा स्त्री० [सं० प्रहेलिका] १. किसी वस्तु या विषय का ऐसा वर्णन जो दूसरी वस्तु या विषय का वर्णन जान पड़े और बहुत सोच-विचार से उस पर घटाया जा सके। बुझौवल। २. घुमाव-फिराव की बात। समस्या।

मुहा०—पहेली बुझाना = अपने मतलब को घुमा-फिराकर कहना। चक्करदार बात करना।

पह्लव–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्राचीन जाति। प्रायः प्राचीन पारसी या ईरानी। २. एक प्राचीन देश जो पह्लव जाति का निवास-स्थान था। वर्तमान पारस या ईरान का अधिकांश।

पह्लवी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० अथवा सं० पह्लव] अति प्राचीन पारसी या जेंद अवस्ता की भाषा और आधुनिक फारस के मध्यवर्ती काल की फारस की भाषा।

पाँ, पाँइ*–संज्ञा पुं० [सं० पाद] पाँव।

पाँइता*–संज्ञा पुं० दे० "पाँयता"।

पाँईबाग–संज्ञा पुं० [फ़ा०] महलों के चारों ओर का छोटा बाग जिसमें राजमहल की स्त्रियाँ सैर करने जाती हैं।

पाँउँ* †–संज्ञा पुं० [सं० पाद] पाँव। पैर।

पाँक–संज्ञा पुं० [सं० पंक] कीचड़। पंक।

पाँख †–संज्ञा पुं० [सं० पक्ष] पंख। पर।

पाँखड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "पँखड़ी"।

पाँखी* †–संज्ञा स्त्री०[सं०पक्षी] १. पतिंगा। २. पक्षी। चिड़िया।

पाँखुरी †–संज्ञा स्त्री० दे० "पँखड़ी"।

पाँगा, पाँगा नोन–संज्ञा पुं० [सं० पंक]

सामुद्री नोन।

पांच–वि० [सं० पंच] जो गिनती में चार और एक हो।

मुहा०—पांचों उँगलियाँ घी में होना= सब तरह का लाभ या आराम होना। खूब बन जाना। पांचों सवारों में नाम लिखाना= औरों के साथ अपने को भी श्रेष्ठ गिनाना। संज्ञा पु० [सं० पंच] १. पांच की संख्या या अंक। ५। २ कई एक आदमी। बहुत से लोग। ३ जाति या बिरादरी के मुखिया लोग। पंच।

पांचजन्य–संज्ञा पु० [सं०] १ कृष्ण के बजाने का शंख। २ विष्णु के शंख का नाम। ३ अग्नि।

पांचभौतिक–संज्ञा पु० [सं०] पांचों भूतों या तत्त्वों से बना हुआ शरीर।

पांचाल–संज्ञा पु० दे० "पंचाल"। वि० [सं०] १ पांचाल देश का रहनेवाला। २ पांचाल देश संबंधी।

पांचाली–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गुड़िया। कपड़े की पुतली। २ साहित्य में एक प्रकार की रीति या वाक्य-रचना-प्रणाली जिसमें बड़े बड़े पांच-छ समासों से युक्त और कांतिपूर्ण पदावली होती है। ३ पांडवों की स्त्री द्रौपदी।

पांचैं†–संज्ञा स्त्री० [हिं० पंचमी] किसी पक्ष की पाँचवीं तिथि। पंचमी।

पांजना–क्रि० स० [सं० प्रणद्ध] धातु के टुकड़ों को टाँके लगाकर जोड़ना। झालना। टाँका लगाना।

पांजर–संज्ञा पु० [सं० पंजर] १. बगल और कमर के बीच का वह भाग जिसमें पसलियाँ होती हैं। २ पसली। ३ पार्श्व। पास। बगल।

पांजी–संज्ञा स्त्री० [सं० पदाति ?] नदी का इतना सूख जाना कि उसे हलकर पार कर सकें।

पांझ–वि० दे० "पांजी"।

पांडव–संज्ञा पु० [सं०] १ कुंती और माद्री के गर्भ से उत्पन्न राजा पांडु के पाँच पुत्र—युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव। २ एक प्राचीन प्रदेश जो वितस्ता (झेलम) नदी के तीर पर था।

पांडवनगर–संज्ञा पु० [सं०] दिल्ली।

पांडित्य–संज्ञा पु० [सं०] पंडित होने का भाव। विद्वत्ता। पंडिताई।

पांडु–संज्ञा पु० [सं०] १ पांडुफली। परवली। २ परमल। ३ कुछ लाली लिए पीला रंग। ४ सफेद हाथी। ५ सफेद रंग। ६ एक रोग का नाम जिसमें रक्त के दूषित हो जाने से शरीर का चमड़ा पीले रंग का हो जाता है। ७ प्राचीन काल के एक राजा का नाम जो पांडव वंश के आदि पुरुष थे। युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव इनके पुत्र थे जो पांडव कहलाए।

पांडुता–संज्ञा स्त्री० [सं०] पांडु होने का भाव, धर्म या क्रिया। पांडुत्व। पीलापन।

पांडुर–वि० [सं०] १ पीला। २ सफेद। संज्ञा पु० [सं०] १ घी का पेड़। २ कबूतर। ३ बगला। ४ सफेद खड़िया। ५ कामला रोग। ६ सफेद कोढ़।

पांडुलिपि–संज्ञा स्त्री० [सं०] लेख आदि का वह पहला रूप जो घटाने-बढ़ाने आदि के लिये तैयार किया जाय। मसौदा।

पांडुलेख–संज्ञा पु० दे० "पांडुलिपि"।

पांडे–संज्ञा पु० [सं० पंडित] १ सरयूपारी, कान्यकुब्ज और गुजराती आदि ब्राह्मणों की एक शाखा। २ कायस्थों की एक शाखा। ३ पंडित। विद्वान्।

पांडेय–संज्ञा पु० दे० "पांडे"।

पांति–संज्ञा स्त्री० [सं० पंक्ति] १ कतार। पांत। २ समूह। ३ एक साथ भोजन करनेवाले बिरादरी के लोग।

पांथ–वि० [सं०] १ पथिक। २ वियोगी। विरही।

पांथनिवास–संज्ञा पु० [सं०] सराय। चट्टी।

पांथशाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] सराय। चट्टी।

पांयँ*†–संज्ञा पु० [पाद] चरण। पैर।

पांयंचा–संज्ञा पु० [फा०] १ पाजामे में बना हुआ वह स्थान जिस पर

पैर रखकर शौच से निवृत्त होने के लिये बैठते हैं। २. पायजामे की मोहरी जिससे पैर ढका जाता है।

पाँयँता–संज्ञा पुं० [हिं० पायँ + तल] पलँग, खाट या बिस्तर का वह भाग जिसकी ओर पैर किए जाते हैं। पैताना।

पाँवर*†–वि० दे० "पामर"।

पाँवरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० पाँव+री (प्रत्य०)] १. दे० "पाँवड़ी । २. सोपान। सीढ़ी। ३. पैर रखने का स्थान। ४. जूता।

संज्ञा स्त्री० [हिं० पौरि] १. पौरी। ड्योढ़ी। २. बैठक। दालान।

पांशु–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. धूलि। रज। २. बालू। ३. गोबर की खाद।

पांशुज–संज्ञा पुं० [सं०] नोनी मिट्टी से निकाला हुआ नमक।

पांशुल–वि० [सं०] [स्त्री० पांशुला] १. लंपट। व्यभिचारी। २. मलिन। मैला।

पाँस–संज्ञा स्त्री० [सं० पांशु] १. सड़ी गली चीजें जो खेतों को उपजाऊ करने के लिये उनमें डाली जाती हैं। खाद। २. किसी वस्तु को सड़ाने पर उठा हुआ खमीर।

पाँसना†–क्रि० स० [हिं० पाँस + ना (प्रत्य०)] खेत में खाद देना।

पाँसा–संज्ञा पुं० [सं० पाशक] चार-पाँच अंगुल लंबे बत्ती के आकार के चौपहल टुकड़े जिनसे चौसर का खेल खेलते हैं।

मुहा०—पाँसा उलटना = किसी प्रयत्न का उलटा फल होना।

पाँसुरी†–संज्ञा स्त्री० दे० "पसली"।

पाँहीं*†–क्रि० वि० [हिं० पँह] निकट। पास। समीप।

पाइ*–संज्ञा पुं० दे० "पाद"।

पाइक*–संज्ञा पुं० दे० "पायक"।

पाइतरी*†–संज्ञा स्त्री० [सं० पादस्थली] पलंग का वह भाग जहाँ सोनेवाले के पैर रहते हैं। पैताना।

पाइल*–संज्ञा स्त्री० दे० "पायल"।

पाई–संज्ञा स्त्री० [सं० पाद, हिं० पाय] १. एक ही घेरे में नाचने या चलने की क्रिया। मंडल। घूमना। २. एक छोटा सिक्का जो एक पैसे का तीसरा भाग होता है। ३. एक पैसा। (क्व०) ४. वह छोटी सीधी लकीर जो किसी संख्या के आगे लगाने से एकाई का चतुर्थांश प्रकट करती है। जैसे, ४।, अर्थात् सवा चार। ५. दीर्घ आकार-सूचक मात्रा। पूर्ण विराम सूचित करने-वाली खड़ी रेखा।

संज्ञा स्त्री० [हिं० पापा=पाई, कीड़ा] एक छोटा लंबा कीड़ा जो धान को खराब कर देता है।

पाउँ*†–संज्ञा पुं० दे० "पाँव"।

पाक–संज्ञा पुं० [सं०] १. पकाने की क्रिया। रींधना। २. पकने या पकाने की क्रिया या भाव। ३. रसोई। पकवान। ४. वह औषध जो चाशनी में मिलाकर बनाई जाय। ५. खाए हुए पदार्थ के पचने की क्रिया। पचन। ६. वह खीर जो श्राद्ध में पिंडदान के लिये पकाई जाती है।

वि० [फ़ा०] १. पवित्र। शुद्ध। २. पाप-रहित। निर्मल। निर्दोष। ३. समाप्त।

मुहा०—झगड़ा पाक करना = १. किसी भारी कार्य को समाप्त कर डालना। २. झगड़ा तै करना। बाधा दूर करना। ३. मार डालना। ४. साफ़। शुद्ध।

पाकठ†–वि० [हिं० पकना] १. पका हुआ। २. तजरबेकार। ३. बली। मजबूत।

पाकड़–संज्ञा पुं० दे० "पाकर"।

पाकदामन–वि० [फ़ा०] [संज्ञा पाकदामनी] पतिव्रता। सती।

पाकना–क्रि० अ० दे० "पकना"।

पाकयज्ञ–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० पाकयाज्ञिक] १. गृहप्रतिष्ठा आदि के समय किया जानेवाला होम जिसमें खीर की आहुति दी जाती है। २. पंच महायज्ञों में ब्रह्मयज्ञ के अतिरिक्त अन्य चार यज्ञ—वैश्वदेव होम, बलि-कर्म, नित्य श्राद्ध और अतिथि-भोजन।

पाकर–संज्ञा पुं० [सं० पर्कटी] एक प्रसिद्ध वृक्ष जो पंचवटी में माना जाता है। पाखर। पलखन।

पाकशाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] रसोई बनाने का घर। बावरचीखाना।
पाकशासन–संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।
पाकस्थली–संज्ञा स्त्री० दे० "पक्वाशय"।
पाका†–वि० दे० "पक्का"।
पाकागार–संज्ञा पुं० [सं०] रसोई-घर।
पाक्य–वि० [सं०] पचने योग्य।
पाक्षिक–वि० [सं०] १. पक्ष या पखवाड़े से संबंध रखनेवाला। २. पक्षपाती। तरफ़दार। ३. दो मात्राओं का (छंद)।
पाखंड–संज्ञा पुं० [सं० पाषंड] १. वेद-विरुद्ध आचार। २. ढोंग। आडंबर। ढकोसला। ३. छल। धोखा। ४ नीचता। शरारत।
मुहा०—पाखंड फैलाना = किसी को ठगने के लिये उपाय रचना। मकर फैलाना।
पाखंडी–वि० [सं० पाषंडिन्] १. वेद-विरुद्ध आचार करनेवाला। २. बनावटी धार्मिकता दिखानेवाला। कपटाचारी। बगला भगत। ३ धोखेबाज। धूर्त।
पाख–संज्ञा पुं० [सं० पक्ष] १. पंद्रह दिन। पखवाड़ा। २. मकान की चौड़ाई की दीवारों के वे भाग जो लंबाई की दीवारों से त्रिकोण के आकार में अधिक ऊँचे होते हैं और जिन पर 'बँड़ेर' रखते हैं। ३ पक्ष। पर।
पाखर–संज्ञा स्त्री० [सं० प्रखर] लोहे की वह झूल जो लड़ाई में हाथी या घोड़े पर डाली जाती है। चार आईना।
संज्ञा पुं० दे० "पाकर"।
पाखा–संज्ञा पुं० [सं० पक्ष] १. कोना। छोर। २. दे० "पाख" (२)।
पाखान*†–संज्ञा पुं० दे० "पाषाण"।
पाखाना–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. वह स्थान जहाँ मल त्याग किया जाय। २. मल। गू। गलीज। पुरीष।
पाग–संज्ञा स्त्री० [हिं० पग] पगड़ी।
संज्ञा पुं० [सं० पाक] १. दे० "पाक"। २. वह शीरा या चाशनी जिसमें मिठाइयाँ डुबाकर रखी जाती हैं। ३. चीनी के शीरे में पकाया हुआ फल आदि। ४. वह दवा या पुष्टई जो शीरे में पकाकर बनाई जाय।
पागना–क्रि० स० [सं० पाक] मीठी चाशनी में सानना या लपेटना।
क्रि० अ० अत्यंत अनुरक्त होना।
पागल–वि० [?] [स्त्री० पगली] १. जिसका दिमाग़ ठीक न हो। बावला। सिड़ी। विक्षिप्त। २. जिसके होश-हवास दुरुस्त न हों। आपे से बाहर। ३. मूर्ख। बेवकूफ़।
पागलखाना–संज्ञा पुं० [हिं० पागल + फ़ा० खाना] वह स्थान जहाँ पागलों का इलाज किया जाता है।
पागलपन–संज्ञा पुं० [हिं० पागल + पन (प्रत्य०)] १. वह मानसिक रोग जिसमें मनुष्य की बुद्धि और इच्छा-शक्ति आदि में अनेक प्रकार के विकार होते हैं। उन्माद। विक्षिप्तता। चित्त-विभ्रम। २. मूर्खता।
पागुर†–संज्ञा पुं० दे० "जुगाली"।
पाचक–वि० [सं०] पचाने या पकानेवाला।
संज्ञा पुं० [सं०] १. वह औषध जो पाचन-शक्ति को बढ़ाने के लिये खाई जाती है। २. [स्त्री० पाचिका] रसोइया। बावर्ची। ३. पाँच प्रकार के पित्तों में से एक पित्त। ४. पाचक पित्त में रहनेवाली अग्नि।
पाचन–संज्ञा पुं० [सं०] १. पचाना या पकाना २. खाए हुए आहार का पेट में जाकर शरीर की धातुओं के रूप में परिवर्तन। ३. वह औषधि जो आम अथवा अपक्व दोष को पचावे। ४. प्रायश्चित्त। ५ खट्टा रस। ६. अग्नि।
वि० पचानेवाला। हाज़िम।
पाचनशक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह शक्ति जो भोजन को पचावे। हाज़मा।
पाचना*–क्रि० स० [सं० पाचन] अच्छी तरह पकाना। परिपक्व करना।
पाचनीय–वि० [सं०] पचाने या पकाने योग्य। पाच्य।
पाचिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] रसोईदारिन। रसोई करनेवाली।

पाच्छाह†–संज्ञा पुं० दे० "बादशाह"।

पाच्य–वि० [सं०] पचाने या पकाने योग्य। पचनीय।

पाछ–संज्ञा स्त्री० [हिं० पाछना] १. जंतु या पौधे के शरीर पर छुरी की धार आदि मारकर किया हुआ हलका घाव। २. पोस्ते के ढोंडे पर नहरनी से लगाया हुआ चीरा जिससे अफीम निकलती है। ३. किसी वृक्ष पर उसका रस निकालने के लिये लगाया हुआ चीरा।

‡संज्ञा पुं० [सं० पश्चात्] पीछा। पिछला भाग। क्रि० वि० पीछे।

पाछना–क्रि० स० [हिं० पंछा] छुरे या नहरनी आदि से रक्त, पंछा या रस निकालने के लिये हलका चीरा लगाना। चीरना।

पाछल–वि० दे० "पिछला"।

पाछा*–संज्ञा पुं० दे० "पीछा"।

पाछिल*–वि० दे० "पिछला"।

पाछी, पाछें*–क्रि० वि० दे० "पीछे"।

पाज–संज्ञा पुं० [सं० पाजस्य] पाँजर।

पाजामा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] पैर में पहनने का एक प्रकार का सिला हुआ वस्त्र जिससे टखने से कमर तक का भाग ढँका रहता है। इसके कई भेद हैं—सुथना, तमान, इजार, चूड़ीदार, अरबी, कलीदार, पेशा-वरी, नैपाली आदि।

पाजी*–संज्ञा पुं० [सं० पदाति] १. पैदल सेना का सिपाही। प्यादा। २. रक्षक। चौकीदार।

वि० [सं० पाय्य] दुष्ट। लुच्चा।

पाजीपन–संज्ञा पुं० [हिं० पाजी+पन(प्रत्य०)] दुष्टता। कमीनापन। नीचता।

पाजेब–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] स्त्रियों का एक गहना जो पैरों में पहना जाता है। मंजीर। नूपुर।

पाटंबर–संज्ञा पुं० [सं०] रेशमी वस्त्र।

पाट–संज्ञा पुं० [सं० पट्ट] १. रेशम। २. बटा हुआ रेशम। नख। ३. रेशम के कीड़े का एक भेद। ४. पटसन के रेशे। ५. राज्यासन। सिंहासन। गद्दी। ६. चौड़ाई। फैलाव। ७. पल्ला। पीढ़ा। ८. वह शिला जिस पर धोबी कपड़ा धोता है। ९. चक्की के एक ओर का भाग। १०. वस्त्र। कपड़ा।

पाटन–संज्ञा स्त्री० [हिं० पाटना] १. पाटने की क्रिया या भाव। पटाव। २. वह जो पाटकर बनाया जाय। ३. मकान की पहली मंजिल से ऊपर की मंजिलें। ४. सर्प का विष उतारने का एक मंत्र जो रोगी के कान के पास चिल्लाकर पढ़ा जाता है।

पाटना–क्रि० स० [हिं० पाट] १. किसी गहराई को मिट्टी, कूड़े आदि से भर देना। २. दो दीवारों के बीच में या किसी गहरे स्थान के आर-पार बल्ले आदि बिछाकर आधार बनाना। छत बनाना। ३. तृप्त करना। सींचना।

पाटमहिषी–संज्ञा स्त्री० दे० "पटरानी"।

पाटरानी–संज्ञा स्त्री० दे० "पटरानी"।

पाटल–संज्ञा पुं० [सं०] पाडर या पाढर का पेड़।

पाटला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पाडर का वृक्ष। २. लाल लोध। ३. दुर्गा।

संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का बढ़िया सोना।

पाटलिपुत्र, पाटलीपुत्र–संज्ञा पुं० [सं०] मगध का एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर जो इस समय भी बिहार का मुख्य नगर है। पटना।

पाटली–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पाडर। २. पांडुफली। ३. पटने की अधिष्ठात्री देवी।

पाटव–संज्ञा पुं० [सं०] १. पटुता। कुशलता। २. दृढ़ता। मजबूती। ३. आरोग्य।

पाटवी–वि० [हिं० पाट] १. पटरानी से उत्पन्न (राजकुमार)। २. रेशमी। कौषेय। (वस्त्र)

पाटसन–संज्ञा पुं० दे० "पटसन"।

पाटा–संज्ञा पुं० [हिं० पाट] लकड़ी का पीढ़ा।

पाटी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. परिपाटी। अनुक्रम। रीति। २. जोड़, बाकी, गुणा आदि का क्रम। ३. श्रेणी। पंक्ति।

संज्ञा पुं० हिं० [सं० पाट] १. लकड़ी की वह पट्टी जिस पर छात्र लिखने का अभ्यास करते हैं। तख्ती। पटिया। २. पाठ। सबक। मुहा०—पाटी पढ़ना = पाठ पढ़ना। शिक्षा पाना।
३. माँग के दोनों ओर कंघी द्वारा बैठाए हुए बाल। पट्टी। पटिया। ४. चारपाई के ढाँचे में लंबाई की ओर की पट्टी। ५ चटाई। ६. शिला। चट्टान। ७. खपरैल की नरिया का प्रत्येक आधा भाग।

पाठ—संज्ञा पुं० [सं०] १. पढ़ने की क्रिया या भाव। पढ़ाई। २. किसी पुस्तक विशेषत धर्मपुस्तक को नियमपूर्वक पढ़ने की क्रिया या भाव। ३ वह जो कुछ पढ़ा या पढ़ाया जाय। ४. उतना अंश जो एक बार पढ़ा जाय। सबक। सथा।
मुहा०—पाठ पढ़ाना = अपने मतलब के लिये किसी को बहकाना। पट्टी पढ़ाना। उलटा पाठ पढ़ाना = कुछ का कुछ समझा देना। बहका देना।
५. परिच्छेद। अध्याय। ६. शब्दों या वाक्यों का क्रम या योजना।

पाठक—संज्ञा पुं० [सं०] १. पढ़नेवाला। वाचक। २. पढ़ानेवाला। अध्यापक। ३ धर्मोपदेशक। ४. गौड, सारस्वत, सरयूपारीण, गुजराती आदि ब्राह्मणों का एक वर्ग।

पाठदोष—संज्ञा पुं० [सं०] पढ़ने का वह ढंग जो निंद्य और वर्जित है। जैसे कठोर स्वर से पढ़ना, ठहर ठहरकर उच्चारण करना।

पाठन—संज्ञा पुं० [सं०] पढ़ाने की क्रिया या भाव। पढ़ाना। अध्यापन।

पाठना*—क्रि० स० दे० "पढ़ाना"।

पाठभेद—संज्ञा पुं० दे० "पाठांतर"।

पाठशाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्थान जहाँ पढ़ाया जाय। मदरसा। विद्यालय। चटसाल।

पाठांतर—संज्ञा पुं० [सं०] एक ही पुस्तक की दो प्रतियों के लेख में किसी विशेष स्थल पर भिन्न शब्द, वाक्य अथवा क्रम। [illegible] पाठ। पाठभेद।

पाठा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पाढ़ नाम की लता। यह दो प्रकार की होती है—छोटी और बड़ी।
संज्ञा पुं० [सं० पुष्ट] [स्त्री० पाठी] १. जवान और परिपुष्ट। हृष्ट-पुष्ट। मोटा-तगड़ा। २. जवान बैल, भैंसा या बकरा।

पाठालय—संज्ञा पुं० [सं०] पाठशाला।

पाठी—संज्ञा पुं० [सं० पाठिन] १. पाठ करनेवाला। पाठक। पढ़नेवाला। २. चीता। चित्रक वृक्ष।

पाठ्य—वि० [सं०] १. पढ़ने योग्य। पठनीय। २. जो पढ़ाया जाय।

पाड़—संज्ञा पुं० [हिं० पाट] १. धोती आदि का किनारा। २. मचान। पायठ। ३. वह जाली जो कूएँ के मुँह पर रखी रहती है। कटकर। चह। ४. बाँध। पुश्ता। ५. वह तख्ता जिस पर खड़ा करके फाँसी दी जाती है। टिकठी।

पाड़र—संज्ञा स्त्री० [सं० पाटल] पाटल नामक वृक्ष।

पाड़ा—संज्ञा पुं० [सं० पट्टन] महल्ला।

पाढ़—संज्ञा पुं० [सं० पाट] १. पाटा। २. वह मचान जिस पर फसल की रखवाली के लिये खेतवाला बैठता है।

पाढ़त*—संज्ञा स्त्री० [हिं० पढ़ना] १. जो कुछ पढ़ा जाय। २ मंत्र। जादू। ३ पढ़ने की क्रिया या भाव।

पाढर, पाढल—संज्ञा पुं० [सं० पाटल] पाडर का पेड़।

पाढ़ा—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का हिरन। चित्रमृग।
संज्ञा स्त्री० दे० "पाठा"।

पाणि—संज्ञा पुं० [सं०] हाथ। कर।

पाणिग्रहण—संज्ञा पुं० [सं०] १. विवाह की एक रीति जिसमें कन्या का पिता उसका हाथ वर के हाथ में देता है। २. विवाह। ब्याह।

पाणिग्राहक—संज्ञा पुं० [सं०] पति।

पाणिज—संज्ञा पुं० [सं०] १. उँगली। २. नख। नाखून।

पाणिनि—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध मुनि

जो ईसा से प्रायः तीन चार सौ वर्ष पूर्व हुए थे और जिन्होंने अष्टाध्यायी नामक प्रसिद्ध व्याकरण ग्रंथ की रचना की थी।
पाणिनीय–वि० [सं०] १. पाणिनि-कृत (ग्रंथ आदि)। २. पाणिनि का कहा हुआ।
पाणिनीय दर्शन–संज्ञा पुं० [सं०] पाणिनि का अष्टाध्यायी व्याकरण।
पाणिपीड़न–संज्ञा पुं० [सं०] १. पाणि-ग्रहण। विवाह। २. क्रोध, पश्चात्ताप आदि के कारण हाथ मलना।
पाणी–संज्ञा पुं० दे० "पाणि"।
पातंजल–वि० [सं०] पतंजलि का बनाया हुआ (योगसूत्र या व्याकरण महाभाष्य)। संज्ञा पुं० १. पतंजलि-कृत योगसूत्र। २. पतंजलि-प्रणीत महाभाष्य।
पातंजल दर्शन–संज्ञा पुं० [सं०] योगदर्शन।
पातंजल भाष्य–संज्ञा पुं० [सं०] महाभाष्य नामक प्रसिद्ध व्याकरण ग्रंथ।
पातंजल-सूत्र–संज्ञा पुं० [सं०] योगसूत्र।
पात–संज्ञा पुं० [सं०] १. गिरने या गिराने की क्रिया या भाव। पतन। २. नाश। ध्वंस। मृत्यु। ३. पड़ना। जा लगना। ४. खगोल में वह स्थान जहाँ नक्षत्रों की कक्षाएँ क्रांतिवृत्त को काटकर ऊपर चढ़ती या नीचे आती हैं। ५. राहु।
*संज्ञा पुं० [सं० पत्र] पत्ता। पत्र।
पातक–संज्ञा पुं० [सं०] वह कर्म जिसके करने से नरक जाना पड़े। पाप। गुनाह।
पातकी–वि० [सं० पातकिन्] पातक करने-वाला। पापी। कुकर्म्मी।
पातन–संज्ञा पुं० [सं०] गिराने की क्रिया।
पातर*†–संज्ञा स्त्री० [सं० पत्र] पत्तल। संज्ञा स्त्री० [सं० पातली] वेश्या। रंडी। *†–वि० [सं० पात्रट=पतला] १. पतला। सूक्ष्म। २. क्षीण। बारीक।
पातल–संज्ञा स्त्री० दे० "पातर"।
पातव्य–वि० [सं०] १. रक्षा करने योग्य। २. पीने योग्य।
पातशाह–संज्ञा पुं० दे० "बादशाह"।
पाता*–संज्ञा पुं० दे० "पत्ता"।
पातावा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] पैरों में पहनने का मोजा।
पातार*–संज्ञा पुं० दे० "पाताल"।
पाताल–संज्ञा पुं० [सं०] १. पुराणानुसार पृथ्वी के नीचे के सात लोकों में से सातवाँ। २. पृथ्वी से नीचे के लोक। अधोलोक। नागलोक। ३. विवर। गुफा। बिल। ४. वड़वानल। छंदःशास्त्र में वह चक्र जिसके द्वारा मात्रिक छंद की संख्या, लघु, गुरु, कला आदि का ज्ञान होता है।
पाताल-यंत्र–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का यंत्र जिसके द्वारा कड़ी ओषधियाँ पिघलाई जाती हैं या उनका तेल बनाया जाता है।
पाताखत†–संज्ञा पुं० [हिं० पात + आखत] पत्र और अक्षत। तुच्छ भेंट।
पाति†–संज्ञा स्त्री० [सं० पत्र] १. पत्ती। दल। २. चिट्ठी। पत्र।
पातित्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. पतित होने का भाव। गिरावट। २. अधःपतन।
पातिव्रत, पातिव्रत्य–संज्ञा पुं० [सं०] पतिव्रता होने का भाव।
पातिसाहि–संज्ञा पुं० दे० "बादशाह"।
पाती*–संज्ञा स्त्री० [सं० पत्री] १. चिट्ठी। पत्र। २. वृक्ष के पत्ते। संज्ञा स्त्री० [हिं० पति] इज्जत। प्रतिष्ठा।
पातुर†–संज्ञा स्त्री० [सं० पातली] वेश्या।
पात्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. जिसमें कुछ रखा जा सके। आधार। बरतन। भाजन। २. वह जो किसी विषय का अधिकारी हो। जैसे, दानपात्र। ३. नाटक के नायक, नायिका आदि। ४. अभिनेता। नट। ५. पत्ता। पत्र।
पात्रता–संज्ञा स्त्री० [सं०] पात्र होने का भाव। योग्यता।
पात्रत्व–संज्ञा पुं० दे० "पात्रता"।
पात्रदुष्ट रस–संज्ञा पुं० [सं०] केशवदास के मत से एक प्रकार का रस-दोष जिसमें कवि जिस वस्तु को जैसा समझता है, रचना में उसके विरुद्ध कह जाता है।

पात्री–संज्ञा स्त्री० [सं०] छोटा बरतन।

पात्रीय–वि० [सं०] पात्र-संबंधी। पात्र का।

पाथ–संज्ञा पुं० [सं० पाथस्] १. जल। २. सूर्य। ३ अग्नि। ४ अन्न। ५ आकाश। ६ वायु।

संज्ञा पुं० [सं० पथ] मार्ग। राह।

पाथना–क्रि० स० [सं० प्रथन] १ गढ़ना। मारना। गढ़ना। बनाना। २ थोप, पीट या दबाकर बड़ी बड़ी टिकिया या पटरी बनाना। ३ पीटना। ठोकना। मारना।

पाथनिधि–संज्ञा पुं० दे० "पाथोनिधि"।

पाथर*†–संज्ञा पुं० दे० "पत्थर"।

पाथेय–संज्ञा पुं० [सं०] १ रास्ते का कलेवा। २ पथिक का राहखर्च। संबल। राहखर्च।

पाथोज–संज्ञा पुं० [सं०] कमल।

पाथोधि–संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।

पाद–संज्ञा पुं० [सं०] १ चरण। पैर। पाँव। २ श्लोक या पद्य का चतुर्थांश। पद। चरण। ३ चौथा भाग। चौथाई। ४ पुस्तक का विशेष अंश। ५ वृक्ष का मूल। ६ नीचे का भाग। तल। ७ बड़े पर्वत के समीप में छोटा पर्वत। ८ चलना। गमन।

संज्ञा पुं० [सं० पर्द] वह वायु जो गुदा के मार्ग से निकले। अपान वायु। अधोवायु। गोज।

पादक–वि० [सं०] चलनेवाला। २ चौथाई। चतुर्थांश।

पादग्रहण–संज्ञा पुं० [सं०] पैर छूकर प्रणाम करना।

पादटीका–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह टिप्पणी जो किसी ग्रंथ के पृष्ठ के नीचे लिखी गई हो। फुटनोट।

पादतल–संज्ञा पुं० [सं०] पैर का तलवा।

पादत्र, पादत्राण–संज्ञा पुं० [सं०] १ खड़ाऊँ। २ जूता।

पादना–क्रि० अ० [हिं० पाद] वायु छोड़ना। अपान वायु का त्याग करना। गोज करना।

पादप–संज्ञा पुं० [सं०] १ वृक्ष। पेड़। २ बैठने का पीढ़ा।

पादपीठ–संज्ञा पुं० [सं०] पीढ़ा।

पादपूरण–संज्ञा पुं० [सं०] १ श्लोक या कविता में किसी चरण को पूरा करना। २ वह अक्षर या शब्द जो किसी पद को पूरा करने के लिये उसमें रखा जाय।

पादप्रक्षालन–संज्ञा पुं० [सं०] पैर धोना।

पादप्रणाम–संज्ञा पुं० [सं०] साष्टांग दंडवत्। पाँव पड़ना।

पादप्रहार–संज्ञा पुं० [सं०] लात मारना। ठोकर मारना।

पादरक्ष, पादरक्षक–संज्ञा पुं० [सं०] वह जिससे पैरों की रक्षा हो। जैसे, जूता।

पादरी–संज्ञा पुं० [पुर्त० पैड्रे] ईसाई धर्म का पुरोहित जो अन्य ईसाइयों का जातकर्म आदि संस्कार और उपासना कराता है।

पादवंदन–संज्ञा पुं० [सं०] पैर पकड़कर प्रणाम करना।

पादशाह–संज्ञा पुं० दे० "बादशाह"।

पादहीन–वि० [सं०] १ जिसके तीन ही चरण हों। २ जिसके चरण न हों।

पादाकुलक–संज्ञा पुं० [सं०] चौपाई।

पादाक्रांत–वि० [सं०] पददलित। पैर से कुचला हुआ। पामाल।

पादाति, पादातिक–संज्ञा पुं० [सं०] पैदल सिपाही।

पादारघ*–संज्ञा पुं० दे० "पाद्यार्घ"।

पादी–संज्ञा पुं० [सं० पादिन्] पैरवाले जल जंतु। जैसे–गोह, घड़ियाल आदि।

पादीय–वि० [सं०] पदवाला। मर्यादावाला। जैसे, कुमारपादीय।

पादुका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ खड़ाऊँ। २ जूता।

पादोदक–संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जल जिसमें पैर धोया गया हो। २ चरणामृत।

पाद्य–संज्ञा पुं० [सं०] वह जल जिससे पूजनीय व्यक्ति या देवता के पैर धोए जायँ।

पाद्यक–संज्ञा पुं० [सं०] पाद्य देने का एक भेद।

पाद्यार्घ–संज्ञा पुं० [सं०] १ पैर तथा हाथ धोने या धुलाने का जल। २ पूजा की सामग्री। ३ पूजा में भेंट या नजर।

पाधा–संज्ञा पुं० [सं० उपाध्याय] १ आचार्य

उपाध्याय। २. पंडित।

पान—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी द्रव पदार्थ को गले के नीचे घूंट घूंट करके उतारना। पीना। २. मद्यपान। शराब पीना। ३. पीने का पदार्थ। पेय द्रव्य। ४. मद्य। ५. पानी। ६. कटोरा। प्याला। *संज्ञा पुं० [सं० प्राण] प्राण। संज्ञा पुं० [सं० पर्ण] १. पत्ता। २. एक प्रसिद्ध लता जिसके पत्तों का बीड़ा बनाकर खाते हैं। तांबूल-वल्ली। मुहा०—पान देना = दे० "बीड़ा देना"। पान-पत्ता = १. लगा या बना हुआ पान। २. तुच्छ पूजा या भेंट। पान फूल। पान फूल=१.सामान्य उपहार या भेंट।२.अत्यंत कोमल वस्तु।पान बनाना=१. पान में चूना, कत्था,सुपारी आदि रखकर बीड़ा तैयार करना। २. पान लगाना। पान लेना = दे० "बीड़ा लेना"।३.पत्ते के आकार की कोई चीज।४. ताश के पत्तों के चार भेदों में से एक। *संज्ञा पुं० दे० "पाणि"।

पानगोष्ठी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह सभा या मंडली जो शराब पीने के लिए बैठी हो।

पानड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पान+ड़ी (प्रत्य०)] एक प्रकार की सुगंधित पत्ती।

पानदान—संज्ञा पुं० [हिं० पान + फ़ा० दान (प्रत्य०)] वह डिब्बा जिसमें पान और उसके लगाने की सामग्री रखी जाती है। पनडब्बा।

पानरा†—संज्ञा पुं० दे० "पनारा"।

पानही†—संज्ञा स्त्री० दे० "पनही"।

पाना—क्रि० स० [सं० प्रापण] १. अपने पास या अधिकार में करना। उपलब्ध करना। प्राप्त करना। हासिल करना। २. भला या बुरा परिणाम भोगना। ३. दी या खोई हुई चीज वापस मिलना। ४. पता पाना। भेद पाना। समझना। ५. कुछ सुन या जान लेना। ६. देखना। साक्षात् करना। ७. अनुभव करना। भोगना। उठाना। ८. समर्थ होना। सकना। (संयोज्य क्रिया में) ९. पास तक पहुँचना। १०. किसी बात में किसी के बराबर पहुँचना। बराबर होना। ११. भोजन करना। खाना। (साधु) १२. जानना। समझना। वि० जिसे पाने का हक हो। प्राप्तव्य। पावना।

पानागार—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ बहुत से लोग मिलकर शराब पीते हों।

पानात्यय—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का रोग जो बहुत मद्य पीने से होता है।

पानि‡—संज्ञा पुं० [सं० पाणि] हाथ। * संज्ञा पुं० दे० "पानी"।

पानिग्रहण*—संज्ञा पुं० दे० "पाणिग्रहण"।

पानिप—संज्ञा पुं० [हिं० पानी+प (प्रत्य०)] १. ओप। द्युति। कांति। चमक। आब। २. पानी।

पानी—संज्ञा पुं० [सं० पानीय] १. एक प्रसिद्ध यौगिक द्रव द्रव्य जो पीने, स्नान करने और खेत आदि सींचने के काम आता है। यह समुद्रों, नदियों और कुओं में मिलता है और आकाश से बरसता है। जल। अंबु। तोय। मुहा०—पानी का बतासा या बुलबुला = क्षणभंगुर वस्तु।पानी की तरह बहाना=अंधाधुंध खर्च करना।उड़ाना या लुटाना।पानी के मोल=बहुत सस्ता। पानी टूटना = कुएँ,ताल आदि में इतना कम पानी रह जाना कि निकाला न जा सके। पानी देना = १.पानी से भरना। सींचना। २. पितरों के नाम अंजलि में लेकर गिराना। तर्पण करना। पानी पढ़ना = मंत्र पढ़कर पानी फूंकना। पानी परोरना = पानी पढ़ना या फूंकना।पानी पानी होना = लज्जित होना। लज्जा से कट जाना। पानी फूंकना = मंत्र पढ़कर पानी पर फूंक मारना। (किसी पर) पानी फेरना या फेर देना = चौपट कर देना। मटियामेट कर देना। (किसी के सामने) पानी भरना = (किसी से तुलना में) अत्यंत तुच्छ प्रतीत होना। फीका पड़ना। पानी भरी खाल = अनित्य या क्षणभंगुर शरीर। पानी में आग लगाना = जहाँ झगड़ा होना असंभव हो, वहाँ झगड़ा करा देना। पानी में फेंकना या

बहाना नष्ट करना। बरबाद करना। मुँह में पानी में डूबना = भ्रम में पड़ना। धोखा खाना। मुँह में पानी आना या छूटना = १ स्वाद लेने का गहरा लालच होना। २. गहरा लोभ होना।
२. वह पानी का सा पदार्थ जो जीभ, आँख, त्वचा, घाव आदि से रसकर निकले। ३. मेंह। वर्षा। वृष्टि। ४. पानी जैसी पतली वस्तु। ५. किसी वस्तु का सार अंश जो जल के रूप में हो। रस। अर्क। जूस। ६. चमक। आब। कांति। छवि। ७. धारदार हथियारों के लोहे की वह हलका स्याह रंग जिससे उसकी उत्तमता की पहचान होती है। आब। जौहर। ८. मान। प्रतिष्ठा। इज्जत। आबरू।
मुहा०—पानी उतारना=अपमानित करना। इज्जत उतारना। पानी जाना=प्रतिष्ठा नष्ट होना। इज्जत जाना।
९. वर्ष। साल। जैसे, पाँच पानी का सूअर। १०. मुलम्मा। ११. मरदानगी। जीवट। हिम्मत। १२. पशुओं की वंशगत विशेषता या कुलीनता। १३. पानी की तरह ठंढा पदार्थ।
मुहा०—पानी करना या कर देना = किसी के चित्त को ठंडा कर देना। किसी का गुस्सा उतार देना।
१४. पानी की तरह फीका या स्वादहीन पदार्थ। १५. लड़ाई या द्वंद्वयुद्ध। १६. बार। बेर। दफा। १७ जल-वायु। आब-हवा।
मुहा०—पानी लगना=स्थान विशेष में जलवायु के कारण स्वास्थ्य बिगड़ना या रोग होना।
*संज्ञा पुं० दे० "पाणि"।
पानीदार—वि० [हिं० पानी + फा० दार (प्रत्य०)] १. आबदार। चमकदार। २ इज्जतदार। माननीय। ३ जीवटवाला। मरदाना। साहसी।
पानीदेवा—वि० [हिं० पानी + देवा=देनेवाला] तर्पण या पिंडदान करनेवाला। वंशज।
पानीफल—संज्ञा पुं० [हिं० पानी + सं० फल] सिंघाड़ा।
पानीय—संज्ञा पुं० [सं०] जल।
वि० १. पीने योग्य। जो पीया जा सके। २. रक्षा करने योग्य। रक्षा-संबंधी।
पानूस*—संज्ञा पुं० दे० "फ़ानूस"।
पानौरा†—संज्ञा पुं० [हिं० पान + बरा] पान के पत्ते की पकौड़ी।
पाप—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह कर्म जिसका फल इस लोक और परलोक में अशुभ हो। धर्म या पुण्य का उलटा। बुरा काम। गुनाह। अघ। पातक।
मुहा०—पाप उदय होना = संचित पाप का फल मिलना। पिछले जन्मों के पाप का बदला मिलना। पाप कटना = पाप का नाश होना। पाप कमाना या बटोरना = पाप कर्म करना। पाप लगना = पाप होना। दोष होना।
२. अपराध। कसूर। जुर्म। ३. वध। हत्या। ४. पापबुद्धि। बुरी नियत। बुराई। ५. अनिष्ट। अहित। खराबी। ६. झंझट। जंजाल।
मुहा०—पाप कटना = झगड़ा दूर होना। जंजाल छूटना। पाप मोल लेना=जान बूझकर किसी बखेड़े के काम में फँसना। पाप पड़ना*= मुश्किल पड़ जाना। कठिन हो जाना।
७. पापग्रह। अशुभ ग्रह।
पापकर्म—संज्ञा पुं० [सं०] वह काम जिसके करने में पाप हो।
पापकर्मा—वि० दे० "पापी"।
पापगण—संज्ञा पुं० [सं०] छंदःशास्त्र के अनुसार ठगण का आठवाँ भेद।
पापघ्न—वि० [सं०] जिससे पाप नष्ट हो।
पापाचारी—वि० [सं० पापचारिन्] [स्त्री० पापचारिणी] पापी। पाप करनेवाला।
पापड़—संज्ञा पुं० [सं० पर्पट] उर्द अथवा मूँग की धोई के आटे से बनाई हुई मसालेदार पतली चपाती।
मुहा०—पापड़ बेलना=१. बड़ी मिहनत करना। २ कठिनाई या दुख से दिन काटना। बहुत से पापड़ बेलना = बहुत तरह के काम कर चुकना।
पापड़ा—संज्ञा पुं० [सं० पर्पट] १. एक पेड़

जिसकी लकड़ी से कंघी और खराद की चीजें बनाई जाती हैं। २. दे० "पितपापड़ा"।
पापदृष्टि–वि० [सं०] १. जिसकी दृष्टि पापमय हो। २. जिसकी दृष्टि पड़ने से हानि पहुँचे।
पापनाशन–संज्ञा पु० [सं०] १. पाप का नाश करनेवाला। पापनाशी। २. प्रायश्चित्त। ३. विष्णु। ४. शिव।
पापयोनि–संज्ञा स्त्री० [सं०] पाप से प्राप्त होनेवाली मनुष्य के अतिरिक्त अन्य पशु, पक्षी, वृक्ष आदि की योनि।
पापरोग–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह रोग जो कोई विशेष पाप करने से होता है। धर्म-शास्त्रानुसार कुष्ठ, यक्ष्मा, पीनस, श्वेतकुष्ठ, मूकता, उन्माद, अपस्मार, अघत्व, काणत्व आदि रोग पापरोग माने गए हैं। २. वसंत रोग। छोटी माता।
पापलोक–संज्ञा पुं० [सं०] नरक।
पापहर–वि० पुं० [सं०] पापनाशक।
पापाचार–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० पापाचारी] पाप का आचरण। दुराचार।
पापात्मा–वि० [सं० पापात्मन्] पाप में अनु-रक्त। पापी। दुष्टात्मा।
पापिष्ठ–वि० [सं०] अतिशय पापी। बहुत बड़ा पापी।
पापी–वि० [सं० पापिन्] [स्त्री० पापिनी] १. पाप करनेवाला। अघी। पातकी। २. क्रूर। निर्दय। नृशंस। पर-पीड़क।
पापोश–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] जूता।
पाबंद–वि० [फ़ा०] [संज्ञा स्त्री० पाबंदी] १. बँधा हुआ। बद्ध। अस्वाधीन। क़ैद। २. किसी बात का नियमित रूप से अनुसरण करनेवाला। ३. नियम, प्रतिज्ञा, विधि, आदेश आदि का पालन करने के लिये विवश।
पाबंदी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] पाबंद होने का भाव।
पामड़ा–संज्ञा पुं० दे० "पाँवड़ा"।
पामर–वि० [सं०] १. खल। दुष्ट। कमीना। २. पापी। अधम। ३. नीच कुल या वंश में उत्पन्न। ४. मूर्ख। निर्बुद्धि।
पामरी–संज्ञा स्त्री० [सं०. प्रावार] दुपट्टा। संज्ञा स्त्री० दे० "पाँवड़ी"।
पामाल–वि० [फ़ा० पा + माल = रौंदना] [संज्ञा पामाली] १. पैर से मला या रौंदा हुआ। पद-दलित। २. तबाह। बरबाद। चौपट।
पायँ*†–संज्ञा पुं० दे० "पावँ"।
पायँजेहरि*–संज्ञा स्त्री० दे० "पाज़ेब"।
पायँता–संज्ञा पुं० [हिं० पायँ + सं० स्थान] पलँग या चारपाई का वह भाग जिधर पैर रहता है। सिरहाने का उलटा। पैताना।
पायती–संज्ञा स्त्री० दे० "पायँता"।
पायंदाज–संज्ञा पुं० [फ़ा०] पैर पोंछने का बिछावन।
पाय*–संज्ञा पुं० [सं० पाद] पैर। पाँव।
पायक–संज्ञा पुं० [सं० पादातिक, पायिक] १. धावन। दूत। हरकारा। २. दास। सेवक। अनुचर। ३. पैदल सिपाही।
पायताबा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] पैर का एक पहनावा जिससे उँगलियों से लेकर पूरी आधी टाँगें ढकी रहती हैं। मोज़ा। जुर्राब।
पायदार–वि० [फ़ा०] [संज्ञा पायदारी] बहुत दिनों तक टिकनेवाला। टिकाऊ। दृढ़। मजबूत।
पायमाल–वि० दे० "पामाल"।
पायरा–संज्ञा पुं० [हिं० पाय + रा] रकाब।
पायल–संज्ञा स्त्री० [हिं० पाय + ल (प्रत्य०)] १. नूपुर। पाज़ेब। २. तेज़ चलनेवाली हथनी। ३. वह बच्चा, जन्म के समय जिसके पैर पहले बाहर हों।
पायस–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. खीर। २. सरल-निर्यास। सलई का गोंद।
पायसा*†–संज्ञा पुं० [सं० पार्श्व] पड़ोस।
पाया–संज्ञा पुं० [सं० पाद] १. पलँग, चौकी आदि में खड़े डंडे या खंभे के आकार का वह भाग जिसके सहारे उसका ढाँचा ऊपर ठहरा रहता है। गोड़ा। पावा। २. खंभा। स्तंभ। ३. पद। दरजा। ओहदा। ४. सीढ़ी। जीना।
पायी–वि० [सं० पायिन्] पीनेवाला।

पारगत–वि० [सं०] १ पार गया हुआ। २ पूर्ण पंडित। पूरा जानकार।

पारंपर्य–संज्ञा पुं० [सं०] १ परंपरा का भाव। २ परंपराक्रम। ३ वंशपरंपरा।

पार–संज्ञा पुं० [सं०] १ नदी, झील आदि जलाशयों के आमने-सामने के दोनों किनारों में उस किनारे से भिन्न किनारा जहाँ (या जिसकी ओर) अपनी स्थिति हो। दूसरी ओर का किनारा।

यौ०—आर-पार=१ यह किनारा और वह किनारा। २ इस किनारे से उस किनारे तक।

मुहा०—पार उतरना=१ किसी काम से छुट्टी पाना। २ सिद्धि या सफलता प्राप्त करना। ३ समाप्त करना। ठिकाने लगाना। मार डालना। (नदी आदि) पार करना=१ जल आदि का मार्ग तै करना। २ पूरा करना। समाप्ति पर पहुँचाना। ३ निबाहना। बिताना। पार लगना=नदी आदि के बीच में होते हुए उसके दूसरे किनारे पर पहुँचना। किसी से पार लगना=पूरा हो सकना। हो सकना। पार लगाना=१ किसी वस्तु के बीच से ले जाकर उसके दूसरे किनारे पर पहुँचाना। २ कष्ट या दुःख से बाहर करना। उद्धार करना। ३ पूरा करना। खतम करना। पार होना=१ किसी दूर तक फैली हुई वस्तु के बीच से होते हुए उसके दूसरे किनारे पर पहुँचना। २ किसी काम को पूरा कर चुकना।

२ सामनेवाला दूसरा पार्श्व। दूसरी ओर। दूसरी तरफ। ३ आमने-सामने के दोनों किनारों में से एक दूसरे की अपेक्षा से कोई एक। ओर। तरफ। ४. छोर। अंत। अखीर। हद। परिमिति।

मुहा०—पार पाना=अंत तक पहुँचना। समाप्ति तक पहुँचना। (किसी से) पार पाना=किसी के विरुद्ध सफलता प्राप्त करना। जीतना। अव्य० परे। आगे। दूर।

पारई†–संज्ञा स्त्री० दे० "पारा"।

पारख*†–संज्ञा स्त्री० १. दे० "पारिख"। २ दे० "परख"। ३ दे० "पारखी"।

पारखद*–संज्ञा पुं० दे० "पार्षद"।

पारखी–संज्ञा पुं० [हिं० पारख+ई (प्रत्य०)] १ वह जिसे परख या पहचान हो। २ परखनेवाला। परीक्षक।

पारग–वि० [सं०] १ पार जानेवाला। २ काम को पूरा करनेवाला। समर्थ। ३ पूरा जानकार।

पारचा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १ टुकड़ा। खंड। धज्जी (विशेषतः कपड़े, कागज आदि की)। २ कपड़ा। पट। वस्त्र। ३ एक प्रकार का रेशमी कपड़ा। ४ पहनावा।

पारजात*–संज्ञा पुं० दे० "पारिजात"।

पारण–संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी व्रत या उपवास के दूसरे दिन किया जानेवाला पहला भोजन और तत्संबंधी कृत्य। २ तृप्त करने की क्रिया या भाव। ३ मेघ। बादल। ४. समाप्ति। खातमा।

पारतंत्र्य–संज्ञा पुं० [सं०] परतंत्रता।

पारथ–संज्ञा पुं० दे० "पार्थ"।

पारथिव–संज्ञा पुं० दे० "पार्थिव"।

पारद–संज्ञा पुं० [सं०] १ पारा। २ पारस देश की प्राचीन जाति।

पारदर्शक–वि० [सं०] जिसमें आर-पार दिखाई पड़े। जैसे—शीशा पारदर्शक पदार्थ है।

पारदर्शी–वि० [सं० पारदर्शिन्] १ उस पार तक देखनेवाला। २ दूरदर्शी। चतुर। बुद्धिमान्। ३ जो पूरा पूरा देख चुका हो।

पारधी–संज्ञा पुं० [सं० परिधान] १ बहे-लिया। व्याध। २ शिकारी। ३ हत्यारा।

पारन–संज्ञा पुं० दे० "पारण"।

पारना–क्रि० स० [हिं० पारना (पड़ना) का स० रूप] १ डालना। गिराना। २ जमीन पर लंबा डालना। ३ लेटाना। ४ कुश्ती या लड़ाई में गिराना। पछाड़ना। ५ किसी वस्तु को दूसरी वस्तु में रखने, ठहराने या मिलाने के लिये उसमें गिराना या रखना। ६ रखना।

यौ०—पिंडा पारना=पिंड-दान करना।

७ किसी के अंतर्गत करना। शामिल करना। ८ शरीर पर धारण करना। पह-नाना। ९. बुरी बात घटित करना। उत्पात

मचाना। १०. साँचे आदि में ढालकर या किसी वस्तु पर जमाकर कोई वस्तु तैयार करना।
*†क्रि० अ० [हिं० पार लगना] सकना। समर्थ होना।
*‡क्रि० स० दे० "पालना"।
पारमार्थिक–वि० [सं०] १. परमार्थ-संबंधी। जिससे परमार्थ सिद्ध हो। २ सदा ज्यों का त्यों रहनेवाला। वास्तविक।
पारलौकिक–वि० [सं०] १. परलोक-संबंधी। २. परलोक में शुभ फल देनेवाला।
पारवश्य–संज्ञा पुं० [सं०] परवशता।
पारशव–संज्ञा पुं० [सं०] १. पराई स्त्री से उत्पन्न पुरुष। २. एक वर्णसंकर जाति। ३. लोहा। ४. एक प्राचीन देश जहाँ मोती निकलते थे।
पारषद*–संज्ञा पुं० दे० "पार्षद"।
पारस–संज्ञा पुं० [सं० स्पर्श] १. एक कल्पित पत्थर जिसके विषय में प्रसिद्ध है कि यदि लोहा उससे छुलाया जाय तो सोना हो जाता है। स्पर्शमणि। २. अत्यंत लाभ-दायक और उपयोगी वस्तु। ३. वह जो दूसरे को अपने समान कर ले।
वि० १. पारस पत्थर के समान स्वच्छ और उत्तम। २. चंगा। नीरोग। तंदुरुस्त।
संज्ञा पुं० [हिं० परसना] १. खाने के लिये लगाया हुआ भोजन। परसा हुआ खाना। २. पत्तल जिसमें खाने के लिये पकवान, मिठाई आदि हो।
* संज्ञा पुं० [सं० पार्श्व] पास। निकट।
संज्ञा पुं० [सं० पारस्य] अफगानिस्तान के आगे का प्राचीन कांबोज और बाह्लीक के पश्चिम का देश।
पारसनाथ–संज्ञा पुं० दे० "पार्श्वनाथ"।
पारसव*–संज्ञा पुं० दे० "पारशव"।
पारसी–वि० [फ़ा० फ़ारस] पारस देश का। पारस देश-संबंधी।
संज्ञा पुं० १. पारस देश का रहनेवाला आदमी। २. हिंदुस्तान में बंबई और गुजरात की ओर हजारों वर्ष से बसे हुए वे फ़ारस-निवासी जिनके पूर्वज मुसलमान होने के डर से पारस छोड़कर यहाँ आए थे।
पारसीक–संज्ञा पुं० [सं०] १. पारस देश। २. पारस देश का निवासी। ३. पारस देश का घोड़ा।
पारस्कर–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक देश का प्राचीन नाम। २. एक गृह्यसूत्रकार मुनि।
पारस्परिक–वि० [सं०] परस्पर होने-वाला। आपस का।
पारस्य–संज्ञा पुं० [सं०] पारस देश।
पारा–संज्ञा पुं० [सं० पारद] चाँदी की तरह सफ़ेद और चमकीली एक धातु जो साधारण गरमी या सरदी में द्रव अवस्था में रहती है।
मुहा०–पारा पिलाना=किसी वस्तु को इतना भारी करना मानों उसमें पारा भरा हो।
संज्ञा पुं० [सं० पारि=प्याला] दीये के आकार का पर उससे बड़ा मिट्टी का बरतन। परई। संज्ञा पुं० [फ़ा० पारः] १. टुकड़ा। २. वह छोटी दीवार जो केवल पत्थरों के टुकड़े एक दूसरे पर रखकर बनाई गई हो।
पारायण–संज्ञा पुं० [सं०] १. पूरा करने का कार्य। समाप्ति। २. समय बाँधकर किसी ग्रंथ का आद्योपांत पाठ।
पारावत–संज्ञा पुं० [सं०] १. परेवा। पंडुक। २. कबूतर। कपोत। ३. बंदर। ४. गिरि। पर्वत।
पारावार–संज्ञा पुं० [सं०] १. आर-पार। दोनों तट। २. सीमा। हद। ३. समुद्र।
पाराशर–संज्ञा पुं० [सं०] १. पराशर का पुत्र या वंशज। २. व्यास।
वि० १. पराशर-संबंधी। २. पराशर का बनाया हुआ।
पारि*–संज्ञा स्त्री० [हिं० पार] १. हद। सीमा। २. ओर। तरफ़। दिशा। देश। ३. जलाशय का तट।
पारिख*†–संज्ञा स्त्री० दे० "परख"।
पारिजात–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक देववृक्ष जो स्वर्गलोक में इंद्र के नंदन कानन में है। यह समुद्र-मंथन के समय निकला

का। २ परमात्मा। ईश्वर। ३ पोषित-दार। सरदार। ४ पारिजात। फरहद।

पारितोषिक–संज्ञा पुं० [सं०] वह धन या वस्तु जो किसी पर परितुष्ट या प्रसन्न होकर उसे दी जाय। इनाम।

पारियात्र–संज्ञा पुं० [सं०] सप्त-कुलपर्वतों में से एक जो विन्ध्य के अंतर्गत है।

पारिपार्श्व–संज्ञा पुं० [सं०] पारिषद्। अनुचर। अरदली।

पारिपार्श्विक–संज्ञा पुं० [सं०] १ सेवक। पारिषद्। अरदली। २ नाटक के अभिनय में एक विशेष नट जो स्थापक का अनुचर होता है।

पारिजात–संज्ञा पुं० [सं०] १ फरहद का पेड़। २ देवदार।

पारिभाषिक–वि० [सं०] जिसका व्यवहार किसी विशेष अर्थ के संकेत के रूप में किया जाय। जैसे, पारिभाषिक शब्द।

पारिषद–संज्ञा पुं० [सं०] १ परिषद् में बैठनेवाला। सभासद। सभ्य। २ अनुयायिवर्ग। गण।

पारी–संज्ञा स्त्री० [हिं० बार, बारी] किसी बात का अवसर जो कुछ अंतर देकर क्रम से प्राप्त हो। बारी।

पारुष्य–संज्ञा पुं० [सं०] १ वचन की कठोरता। बात का कड़वापन। २ इंद्र का वन।

पार्थ–संज्ञा पुं० [सं०] १. पृथ्वीपति। २ (पृथा का पुत्र) अर्जुन। ३ युधिष्ठिर और भीम। ४ अर्जुन वृक्ष।

पार्थक्य–संज्ञा पुं० [सं०] १ पृथक होने का भाव। भेद। २ जुदाई। वियोग।

पार्थिव–वि० [सं०] १ पृथिवी-संबंधी। २ पृथिवी से उत्पन्न। मिट्टी आदि का बना हुआ। ३ राजा के योग्य। राजसी। संज्ञा पुं० मिट्टी का शिवलिंग जिसके पूजन का बड़ा फल माना जाता है।

पार्वण–संज्ञा पुं० [सं०] वह श्राद्ध जो किसी पर्व में किया जाय।

पार्वत–वि० [सं०] १ पर्वत संबंधी। २ पर्वत पर होनेवाला।

पार्वती–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हिमालय पर्वत की कन्या, शिव की अर्द्धांगिनी देवी जो गौरी, दुर्गा आदि अनेक नामों से पूजी जाती हैं। शिवा। भवानी। उमा। गिरिजा। गौरी। २ गोपीचंदन।

पार्वतीय–संज्ञा पुं० [सं०] पहाड़ का। पहाड़ी।

पार्वतेय–वि० [सं०] पर्वत पर होनेवाला।

पार्श्व–संज्ञा पुं० [सं०] १ छाती के दाहिने या बाएँ का भाग। बगल। २ अगल-बगल की जगह। पास। निकटता। समीपता।

यौ०—पार्श्ववर्ती = साथी या मुसाहिब।

पार्श्वग–संज्ञा पुं० [सं०] सहचर।

पार्श्वनाथ–संज्ञा पुं० [सं०] जैनों के तेईसवें तीर्थंकर जो वाराणसी के इक्ष्वाकुवंशीय राजा अश्वसेन के पुत्र थे।

पार्श्ववर्ती–संज्ञा पुं० [सं० पार्श्ववर्तिन्] [स्त्री० पार्श्ववर्तिनी] पास रहनेवाला। मुसाहब।

पार्श्वस्थ–वि० [सं०] पास खड़ा रहनेवाला। संज्ञा पुं० अभिनय के नटों में से एक।

पार्षद–संज्ञा पुं० [सं०] १ पास रहनेवाला सेवक। पारिषद। २ मुसाहब। मंत्री।

पालक–संज्ञा पुं० [सं० पल्यक] १ पालक साग। पालकी। २ बाज पक्षी। ३ एक रत्न जो काला, हरा और लाल होता है।

पालग–संज्ञा पुं० दे० "पलंग"।

पाल–संज्ञा पुं० [सं०]१ पालनकर्ता। पालक। २ चीते का पेड़। ३ बंगाल का एक प्रसिद्ध राजवंश जिसने साढ़े तीन सौ वर्ष तक बंग और मगध में राज्य किया था। संज्ञा स्त्री० [हिं० पालना] फलों को गरमी पहुँचाकर पकाने के लिए पत्ते बिछाकर रखने की विधि।

संज्ञा पुं० [सं० पट या पाट] १ वह लंबा-चौड़ा कपड़ा जिसे नाव के मस्तूल से लगाकर इसलिए तानते हैं जिसमें हवा भरे और नाव को ढकेले। २ तंबू। शामियाना। चँदोवा। ३ गाड़ी या पालकी आदि ढाँकने का कपड़ा। ओहार।

संज्ञा स्त्री० [सं० पालि] १ पानी को रोकनेवाला बाँध या किनारा। मेड़। २ ऊँचा

किनारा। कगार।

पालक—संज्ञा पुं० [सं०] १. पालनकर्त्ता। २. अश्वरक्षक। साईस। ३. पाला हुआ लड़का। दत्तक पुत्र।
संज्ञा पुं० [सं० पालक] एक प्रकार का साग।
संज्ञा पुं० [हिं० पलंग] पलंग। पर्यंक।

पालकी—संज्ञा स्त्री० [सं० पल्यंक] एकप्रकार की सवारी जिसे आदमी कंधे पर लेकर चलते हैं। म्याना। खड़खड़िया।
संज्ञा स्त्री० [सं० पालंक] पालक का साक।

पालकी गाड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पालकी + गाड़ी] वह गाड़ी जिस पर पालकी के समान छत हो।

पालट—संज्ञा पुं० [सं० पालन] दत्तक पुत्र।

पालतू—वि० [सं० पालना] पाला हुआ। पोसा हुआ।

पालथी—संज्ञा स्त्री० दे० "पलथी"।

पालन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० पालनीय, पालित, पाल्य] १. भोजन, वस्त्र आदि देकर जीवनरक्षा। भरण-पोषण। परवरिश। २. अनुकूल आचरण द्वारा किसी बात की रक्षा या निर्वाह। भंग न करना। न टालना।

पालना—क्रि० स० [सं० पालन] १. भोजन, वस्त्र आदि देकर जीवन-रक्षा करना। भरण-पोषण करना। परवरिश करना। २. पशु-पक्षी आदि को रखना। ३. भंग न करना। न टालना।
संज्ञा पुं० [सं० पल्यंक] एक प्रकार का झूला या हिंडोला। पिंगूरा। गहवारा।

पालव†—संज्ञा पुं० [सं० पल्लव] १ पल्लव। पत्ता। २. कोमल पत्ता।

पाला—संज्ञा पुं० [सं० प्रालेय] १. हवा में मिली हुई भाप के अत्यंत सूक्ष्म अणुओं की तह जो पृथ्वी के बहुत ठंडे हो जाने पर उस पर सफेद सफेद जम जाती है। हिम।
मुहा०—पाला मार जाना = पौधे या फ़सल का पाला गिरने से नष्ट हो जाना।
२. हिम। बर्फ। ३. ठंड। सरदी।
संज्ञा पुं० [हिं० पल्ला] व्यवहार करने का संयोग। वास्ता। साबिका।
मुहा०—(किसी से) पाला पड़ना = व्यवहार करने का संयोग होना। वास्ता पड़ना। काम पड़ना। (किसी के) पाले पड़ना = वश में होना। क़ाबू में आना। पकड़ में आना।
संज्ञा पुं० [सं० पट्ट, हिं० पाड़ा] १. प्रधान स्थान। सदर मुक़ाम। २. सीमा निर्दिष्ट करने के लिये मिट्टी की उठाई हुई मेड़ या छोटा भीटा। धुस। ३. अनाज भरने का बड़ा बरतन जो प्रायः कच्ची मिट्टी का गोल दीवार के रूप में होता है। डेहरी। ४. कुश्ती लड़ने या कसरत करने की जगह। अखाड़ा।

पालागन—संज्ञा स्त्री० [हिं० पाँय + लगना] प्रणाम। दंडवत्। नमस्कार।

पालि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कान की लौ। २. कोना। ३. पंक्ति। श्रेणी। क़तार। ४. किनारा। ५. सीमा। हद। ६. मेड़। बाँध। ७. करारा। कगार। भीटा। ८. अंक। गोद। ९. परिधि। १०. चिह्न।

पालिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] पालन करनेवाली।

पालित—वि० [सं०] पाला हुआ। रक्षित।

पालिनी—वि० स्त्री० [सं०] पालन करनेवाली।

पाली—वि० [सं० पालिन्] [स्त्री० पालिनी] १. पालन करनेवाला। पोषण करनेवाला। २. रखनेवाला। रक्षा करनेवाला।
संज्ञा स्त्री० [सं० पालि=पंक्ति] एक प्राचीन भाषा जिसमें बौद्धों के धर्मग्रंथ लिखे हुए हैं, और जिसका पठन-पाठन स्याम, बरमा, सिंहल आदि देशों में उसी प्रकार होता है जिस प्रकार भारतवर्ष में संस्कृत का।

पालू—वि० [हिं० पालना] पालतू।

पाल्य—वि० [सं०] पालन के योग्य।

पावँ—संज्ञा पुं० [सं० पाद] वह अंग जिससे चलते हैं। पैर।
मुहा०—(किसी काम या बात में) पावँ अड़ाना = किसी बात में व्यर्थ सम्मिलित होना। फ़जूल दख़ल देना। पावँ उखड़ जाना = ठहरने की शक्ति या साहस न रह जाना। लड़ाई में न ठहरना। पावँ उठाना = १. चलने के

लिये कदम बढ़ाना। २ जल्दी-जल्दी पैर आगे रखना। पावँ गिरना=चलते-चलते पैर फँसना। पावँ जमना = १ पैर ठहरना। स्थिर भाव से खड़ा होना। २ दृढ़ता रहना। हटने या विचलित होने की अवस्था न आना। पावँ तले की मिट्टी निकल जाना=(किसी भयंकर बात को सुनकर) सन्न या हक्का बक्का हो जाना। होश उड़ जाना। ठक हो जाना। पावँ तोड़ना = १ बहुत चलकर पैर थकाना। २ बहुत दौड़-धूप करना। इधर-उधर बहुत हैरान होना। बार बार प्रयत्न करना। पावँ तोड़कर बैठना=१ कहीं न जाना। अचल होना। स्थिर हो जाना। २ हारकर बैठना। किसी के पावँ धरना=१ पैर छूकर प्रणाम करना। २ दीनता से विनय करना। हा हा खाना। बुरे पथ पर पावँ धरना=बुरे मार्ग में प्रवृत्त होना। पावँ पकड़ना=१ विनती करके किसी को कहीं जाने से रोकना। २ पैर छूना। बड़ी दीनता और विनय करना। हा हा खाना। ३ पैर छूकर नमस्कार करना। पावँ पखारना = पैर धोना। पावँ पड़ना=१ पैरों पर गिरना। साष्टांग दंडवत करना। २ अत्यंत दीनता से विनय करना। पावँ पर गिरना=दे० "पाँव पड़ना"। पावँ पसारना = १ पैर फैलाना। २ आराम से पड़ना या सोना। ३ मरना। ४ आडंबर बढ़ाना। ठाट-बाट करना। पावँ पावँ चलना= पैरों से चलना। पैदल चलना। पावँ पूजना= १ बड़ा आदर-सत्कार करना। बहुत पूज्य मानना। २ विवाह में कन्यादान के समय कन्याकुल के लोगों का वर का पूजन करना और कन्यादान में योग देना। पावँ फूँक फूँक कर रखना=बहुत बचाकर काम करना। बहुत सावधानी से चलना। पावँ फैलाना=१ अधिक पाने के लिये हाथ बढ़ाना। मुँह बाना। पाकर भी अधिक का लोभ करना। २ बच्चों की तरह अड़ना। ज़िद करना। मचलना। पावँ बढ़ाना=१ चलने में पैर आगे रखना। २ अधिक बढ़ना। ३ अतिक्रमण करना। पावँ भर जाना=थकावट से पैर में बोझ सा मालूम होना। पैर थकना। पावँ भारी होना=गर्भ रहना। हमल होना। पावँ रोपना=प्रण करना। प्रतिज्ञा करना। पावँ लगना=१ प्रणाम करना। २ विनती करना। पावँ से पावँ बाँधकर रखना=१ बराबर अपने पास रखना। पास से अलग न होने देना। २ बड़ी चौकसी रखना। पाँव सो जाना १ पैर सुन्न हो जाना स्तब्ध हो जाना। २ पैर झनझना उठना। (किसी के) पाँव न होना=ठहरने की शक्ति या साहस न होना। दृढ़ता न होना। धरती पर पावँ न रखना= १ बहुत घमंड करना। २ फूले अंग न समाना।

पावँड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० पावँ+ड़ा (प्रत्य०)] वह कपड़ा या बिछौना जो आदर के लिये किसी के मार्ग में बिछाया जाता है। पायंदाज।

पावँड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पावँ+ड़ी (प्रत्य०)] १ पादत्राण। खड़ाऊँ। २ जूता।

पावर*—वि० [सं० पामर] १ तुच्छ। अल्प। नीच। दुष्ट। २ मूर्ख। निर्बुद्धि। संज्ञा पुं० दे० 'पावँटा'। संज्ञा स्त्री० दे० 'पावँड़ी'।

पाव—संज्ञा पुं० [सं० पाद] १ चौथाई। चतुर्थ भाग। २ एक सेर का चौथाई भाग। चार छटाँक का मान।

पावक—संज्ञा पुं० [सं०] १ अग्नि। आग। तेज। ताप। २ सदाचार। ३ अग्निमंथ वृक्ष। अगेथू का पेड़। ४ वरुण। ५ सूर्य। वि० शुद्ध या पवित्र करनेवाला।

पावकुलक—संज्ञा पुं० [सं० पादाकुलक] पादाकुलक छंद। चौपाई।

पावदान—संज्ञा पुं० [हिं० पाँव+दान (प्रत्य०)] १ पैर रखने के लिये बना हुआ स्थान या वस्तु। २ इक्के, गाड़ी आदि में लोहे की पटरी जिस पर पैर रखकर चढ़ते हैं।

पावन—वि० [सं०] [स्त्री० पावनी] १ पवित्र करनेवाला। २ पवित्र। शुद्ध। पाक। संज्ञा पुं० १ अग्नि। २ प्रायश्चित्त। शुद्धि। ३ जल। ४ गोबर। ५ रुद्राक्ष। ६ व्यास का एक नाम। ७ विष्णु।

पावनता—संज्ञा स्त्री० [सं०] पवित्रता।

पावना†*—क्रि० स० [सं० प्रापण] १ पाना।

प्राप्त करना। २. अनुभव करना। जानना। समझना। ३. भोजन करना। ४. दे० "पाना"।
संज्ञा पुं० १. दूसरे से रुपया आदि पाने का हक़। लहना। २. वह रुपया जो दूसरे से पाना हो।
पावस†–संज्ञा स्त्री० [सं० प्रावृष] वर्षा-काल। बरसात।
पावा†–संज्ञा पुं० दे० "पाया"।
संज्ञा पुं० [देश०] गोरखपुर जिले का एक प्राचीन गाँव जो वैशाली से पश्चिम है।
पाश–संज्ञा पुं० [सं०] १. रस्सी, तार आदि से सरकनेवाली गाँठों आदि के द्वारा बनाया हुआ घेरा जिसके बीच में पड़ने से जीव बँध जाता है और कभी कभी बंधन के अधिक कसकर बैठ जाने से मर भी जाता है। फंदा। फाँस। २. पशु-पक्षियों को फँसाने का जाल या फंदा। ३. बंधन। फँसानेवाली वस्तु।
पाशक–संज्ञा पुं० [सं०] पासा। चौपड़।
पाशकेरली–संज्ञा स्त्री० [सं० पाश + केरल (देश०)] ज्योतिष की एक गणना जो पासे फेंककर की जाती है।
पाशव–वि० [सं०] १. पशु-संबंधी। पशुओं का। २. पशुओं का जैसा।
पाशा–संज्ञा पुं० [तु०, फ़ा० पादशाह] तुर्की सरदारों की उपाधि।
पाशुपत–वि० [सं०] १. पशुपति-संबंधी। शिव-संबंधी। २. पशुपति का।
संज्ञा पुं० १. पशुपति या शिव का उपासक। एक प्रकार का शैव। २. शिव का कहा हुआ तंत्रशास्त्र। ३. अथर्व वेद का एक उपनिषद्।
पाशुपत दर्शन–संज्ञा पुं० [सं०] एक सांप्रदायिक दर्शन जिसका उल्लेख सर्वदर्शन-संग्रह में है। नकुलीश पाशुपत दर्शन।
पाशुपतास्त्र–संज्ञा पुं० [सं०] शिव का शूलास्त्र जो बड़ा प्रचंड था।
पाश्चात्य–वि० [सं०] १. पीछे का। पिछला। २. पश्चिम दिशा का। पश्चिम।
पाषंड–संज्ञा पुं० [सं०] १. वेदविरुद्ध आचरण करनेवाला। झूठा मत माननेवाला। २. लोगों को ठगने के लिये साधुओं का सा रूप-रंग बनानेवाला। धर्मध्वजी। ढोंगी।
पाषंडी–वि० [सं० पाषंडिन्] १. वेदविरुद्ध मत और आचरण ग्रहण करनेवाला। २. धर्म आदि का झूठा आडंबर खड़ा करनेवाला। ढोंगी। धूर्त।
पाषर–संज्ञा स्त्री० दे० "पाखर"।
पाषाण–संज्ञा पुं० [सं०] पत्थर। प्रस्तर।
पाषाणभेद–संज्ञा पुं० [सं०] एक पौधा जो अपनी पत्तियों की सुंदरता के लिये बगीचों में लगाया जाता है। पखानभेद। पथरचट।
पासंग–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. तराजू की डंडी को बराबर करने के लिये उठे हुए पलड़े पर रखा हुआ कोई बोझ। पसंघा।
मुहा०—(किसी का) पासंग भी न होना = किसी के मुकाबिले में बहुत कम होना।
२. तराजू की डाँड़ी बराबर न होना।
पास–संज्ञा पुं० [सं० पार्श्व] १. बगल। ओर। तरफ़। २. सामीप्य। निकटता। समीपता। ३. अधिकार। क़ब्ज़ा। रक्षा। पल्ला। (केवल 'के', 'में' और 'से' विभक्तियों के साथ।)
अव्य० १. निकट। समीप। नज़दीक।
यौ०–आस-पास = १. अगल-बगल। समीप। २. लगभग। करीब।
मुहा०—(किसी के) पास बैठना = संगत में रहना। पास फटकना = निकट जाना।
२. अधिकार में। कब्ज़े में। रक्षा में। पल्ले। ३. निकट जाकर, संबोधन करके। किसी के प्रति। किसी से।
* संज्ञा पुं० दे० "पाश"।
* संज्ञा पुं० दे० "पासा"।
पासनी†–संज्ञा स्त्री० [सं० प्राशन] बच्चे को पहले पहल अनाज चटाने की रीति। अन्नप्राशन।
पासमान*–संज्ञा पुं० [हिं० पास + मान (प्रत्य०)] पास रहनेवाला दास। पार्श्ववर्ती।
पासवर्ती*–वि० दे० "पार्श्ववर्ती"।

पासा–संज्ञा पुं० [सं० पाशक, प्रा० पासा] १. हाथीदाँत या हड्डी के छपहले टुकड़े जिनके पहलों पर बिंदियाँ बनी होती हैं और जिनसे चौसर खेलते हैं।

मुहा०—(किसी का) पासा पड़ना= भाग्य अनुकूल होना। क्रिसमत ज़ोर करना। पासा पलटना=१. अच्छे से मंद भाग्य होना। २. युक्ति या तदबीर का उलटा फल होना।
२. वह खेल जो पासों से खेला जाता है। चौसर का खेल। ३. मोटी बत्ती के आकार में लाई हुई वस्तु। कामी। गुल्ली।

पासी–संज्ञा पुं० [सं० पाशिन्] १. जाल या फंदा डालकर चिड़िया पकड़नेवाला। २. एक नीच और अस्पृश्य जाति।
संज्ञा स्त्री० [सं० पाश, हिं० पास+ई (प्रत्य०)] १. फंदा। फाँस। पाश। फाँसी। २. घोड़े के पैर बाँधने की रस्सी। पिछाड़ी।

पासुरी*–संज्ञा स्त्री० दे० "पसली"।

पाहँ*–अव्य० [सं० पार्श्व] १. निकट। समीप। पास। २. किसी के प्रति। किसी से।

पाहन*–संज्ञा पुं० [सं० पाषाण] पत्थर।

पाहरू*†–संज्ञा पुं० [हिं० पहरा] पहरा देनेवाला। पहरेदार।

पाहिं*–अव्य० [सं० पार्श्व] १. पास। निकट। समीप। २. किसी के प्रति। किसी से।

पाहि–एक संस्कृत पद जिसका अर्थ है 'रक्षा करो' या "बचाओ"।

पाहीं*–अव्य० दे० "पाहिं"।

पाहुँच†–संज्ञा स्त्री० दे० "पहुँच"।

पाहुना–संज्ञा पुं० [सं० प्राघूर्ण] [स्त्री० पाहुनी] १. अतिथि। मेहमान। अभ्यागत। २ दामाद। जामाता।

पाहुनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० पाहुना] १. स्त्री अतिथि। अभ्यागत स्त्री। मेहमान औरत। २. आतिथ्य। मेहमानदारी।

पाहुर†–संज्ञा पुं० [सं० प्राभृत] १. भेंट। नज़र। २. सौगात।

पिंग–वि० [सं०] १. पीला। पीलापन लिए भूरा। २. भूरापन लिए लाल। तामड़ा। ३. सुँघनी रंग का।

पिंगल–वि० [सं०] १. पीला। पीत। २. भूरापन लिए लाल। तामड़ा। ३. भूरापन लिए पीला। सुँघनी रंग का।
संज्ञा पुं० १. एक प्राचीन मुनि जो छंदःशास्त्र के आदि आचार्य माने जाते हैं। २. छंदशास्त्र। ३. साठ संवत्सरों में से एक। ४. एक निधि का नाम। ५. बंदर। कपि। ६. अग्नि। ७. पीतल। ८. उल्लू पक्षी।

पिंगला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हठ योग और तंत्र में जो तीन प्रधान नाड़ियाँ मानी गई हैं, उनमें से एक। २. लक्ष्मी का नाम। ३. गोरोचन। ४. शीशम का पेड़। ५. राजनीति। ६. दक्षिण के दिग्गज की स्त्री।

पिंजड़ा–संज्ञा पुं० दे० "पिंजरा"।

पिंजर–वि० [सं०] १. पीला। पीतवर्ण का। २. भूरापन लिए लाल रंग का।
संज्ञा पुं० १. पिंजड़ा। २. शरीर के भीतर का हड्डियों का ठट्ठर। पंजर। ३. सोना। ४. भूरापन लिए लाल रंग का घोड़ा।

पिंजरा–संज्ञा पुं० [सं० पंजर] लोहे, बाँस आदि की तीलियों का बना हुआ झाबा जिसमें पक्षी पाले जाते हैं।

पिंजरापोल–संज्ञा पुं० [हिं० पिंजरा + पोल= फाटक] वह स्थान जहाँ पालने के लिये गाय, बैल आदि चौपाये रखे जाते हों। पशुशाला। गोशाला।

पिंड–संज्ञा पुं० [सं०] १. गोल मटोल टुकड़ा। गोला। २. ठोस टुकड़ा। लुगदा। ३. ढेर। राशि। ४. पके हुए चावल आदि का गोल लोंदा जो श्राद्ध में पितरों को अर्पित किया जाता है। ५ भोजन। आहार। ६ शरीर। देह।

मुहा०—पिंड छोड़ना = साथ न लगा रहना या संबंध न रखना। तंग न करना।

पिंडखजूर–संज्ञा स्त्री० [सं० पिंडखर्जूर] एक प्रकार की खजूर जिसके फल मीठे होते हैं।

पिंडज–संज्ञा पुं० [सं०] गर्भ से सजीव निकलनेवाला जंतु। जैसे, मनुष्य, कुत्ता, बिल्ली।

पिंडदान–संज्ञा पुं० [सं०] पितरों को पिंड देने का कर्म जो श्राद्ध में किया जाता है।

पिंडरो*†–संज्ञा स्त्री० दे० "पिंडली"।
पिंडरोग–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह रोग जो शरीर में घर किए हो। २. कोढ़।
पिंडरोगी–वि० [सं०] रुग्ण शरीर का।
पिंडली–संज्ञा स्त्री० [सं० पिंड] टाँग का ऊपरी पिछला भाग जो मांसल होता है।
पिंडवाही–संज्ञा स्त्री० [?] एक प्रकार का कपड़ा।
पिंडा–संज्ञा पुं० [सं० पिंड] [स्त्री० अल्पा० पिंडी] १. ठोस या गीली वस्तु का टुकड़ा। २. गोल मटोल टुकड़ा। लुगदा। ३. मधु, तिली मिली हुई खीर आदि का गोल लोंदा जो श्राद्ध में पितरों को अर्पित किया जाता है। मुहा०—पिंडा पानी देना=श्राद्ध और तर्पण करना।
४. शरीर। देह।
पिंडारी–संज्ञा पुं० [देश०] दक्षिण की एक जाति जो पहले खेती करती थी, पीछे अवसर पाकर लूट-मार करने लगी और मुसलमान हो गई।
पिंडालू–संज्ञा स्त्री० [सं० पिंड+आलू] १. एक प्रकार का सकरकंद। सुथनी। पिंडिया। २. एक प्रकार का शफ़तालू या रतालू।
पिंडिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. छोटा पिंड। पिंडी। २. पिंडली। ३. वह पिंडी जिस पर देवमूर्त्ति स्थापित की जाती है। वेदी।
पिंडिया–संज्ञा स्त्री० [सं० पिंडिक] १. गीली भुरभुरी वस्तु का मुट्ठी से बाँधा हुआ लंबोतरा टुकड़ा। लंबोतरी पिंडी। २. गुड़ की लंबोतरी भेली। मुट्ठी। ३. लपेटे हुए सूत, सुतली या रस्सी का छोटा गोला।
पिंडी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. छोटा ढेला या लोंदा। लुगदी। २. गीली या भुरभुरी वस्तु का टुकड़ा। ३. घीया। कद्दू। ४. पिंड खजूर। ५. वेदी जिस पर बलिदान किया जाता है। ६. सूत, रस्सी आदि का गोल लच्छा।
पिंडुरी*†–संज्ञा स्त्री० दे० "पिंडली"।
पिअ–वि०, संज्ञा पुं० दे० "प्रिय"।
पिअराई*†–संज्ञा स्त्री० [सं० पीत] पीलापन।
पिअरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० पीली] हल्दी के रंग से रँगी हुई वह धोती जो विवाह के समय में वर या वधू को पहनाई जाती है; या स्त्रियाँ गंगा जी को चढ़ाती हैं।
वि० स्त्री० दे० "पीली"।
पिउ–संज्ञा पुं० [सं० प्रिय] पति।
पिक–संज्ञा पुं० [सं०] कोयल।
पिघलना–क्रि० अ० [सं० प्र+गलन] १. गरमी से किसी चीज का गलकर पानी सा हो जाना। द्रवीभूत होना। २. चित्त में दया उत्पन्न होना। पसीजना।
पिघलाना–क्रि० स० [हिं० पिघलना का प्रे०] १. किसी चीज को गरमी पहुँचाकर पानी के रूप में लाना। २. किसी के मन में दया उत्पन्न करना।
पिचकना–क्रि० अ० [सं० पिच्च=दबना] किसी फूले या उभरे हुए तल का दब जाना।
पिचकाना–क्रि० स० [हिं० पिचकना का प्रे०] फूले या उभरे हुए तल को दबाना।
पिचकारी–संज्ञा स्त्री० [हिं० पिचकना] एक प्रकार का नलदार यंत्र जिसका व्यवहार जल या किसी दूसरे तरल पदार्थ को जोर से किसी ओर फेंकने में होता है।
पिचकी*†–संज्ञा स्त्री० दे० "पिचकारी"।
पिचुक्का†–संज्ञा पुं० [हिं० पिचकाना] १. पिचकारी। २. गोलगप्पा।
पिच्चित–वि० [सं० पिच्च=दबना, पिचकना] पिचका हुआ। दबा हुआ।
पिच्ची–वि० दे० "पिच्चित"।
पिच्छ–संज्ञा पुं० [सं०] १. पशु की पूँछ। लांगूल। २. मोर की पूँछ। मयूरपुच्छ। ३. मोर की चोटी। चूड़ा।
पिच्छल–संज्ञा पुं० [सं०] १. मोचरस। २. अकासबेल। ३. शीशम।
वि० रपटनेवाला। चिकना।
वि० दे० "पिछला"।
पिच्छिल–वि० [सं०] [स्त्री० पिच्छिला] गीला और चिकना। २. फिसलनेवाला। जिस पर पड़ने से पैर रपटे। ३. चूड़ायुक्त (पक्षी)। ४. खट्टा, कोमल, फूला हुआ

और गफमारी (पदार्थ)।

पिछड़ना–क्रि० अ० [हिं० पिछाड़ी + ना (प्रत्य०)] पीछे रह जाना। साथ साथ, बराबर या आगे न रहना।

पिछलगा–संज्ञा पु० [हिं० पीछे + लगना] १. वह मनुष्य जो किसी के पीछे चले। अधीन। आश्रित। २ अनुवर्ती। अनुगामी। शिष्य। ३ सेवक। नौकर।

पिछलगी–संज्ञा स्त्री० [हिं० पिछलगा] पिछलगा होने का भाव। अनुयायी होना। अनुगमन करना।

पिछलगू†–संज्ञा पु० दे० "पिछलगा"।

पिछला–वि० [हिं० पीछा] [स्त्री० पिछली] १. पीछे की ओर का। "अगला" का उलटा। २. बाद का। अनंतर का। पहला का उलटा। ३. अंत की ओर का।

मुहा०––पिछला पहर = दो पहर या आधी रात के बाद का समय। पिछली रात = आधी रात के बाद का समय।

४ बीता हुआ। गत। पुराना। गुजरा हुआ। ५ गत बातों में से अंतिम।

पिछवाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० पीछा] पीछे की ओर लटकाने का परदा।

पिछवाड़ा–संज्ञा पु० [हिं० पीछा + वाड़ा (प्रत्य०)] १. किसी मकान का पीछे का भाग। घर का पृष्ठ भाग। २. घर के पीछे का स्थान या जमीन।

पिछाड़ी संज्ञा स्त्री० [हिं० पीछा] १ पिछला भाग। पीछे का हिस्सा। २ वह रस्सी जिसमें घोड़े के पिछले पैर बाँधते हैं।

पिछानना*–क्रि० स० दे० "पहचानना"।

पिछौंहैं*†–क्रि० वि० [हिं० पीछा] पीछे की ओर। पीछे की ओर से।

पिछौरा†–संज्ञा पु० [स० पक्षपट] [स्त्री० पिछौरी] ओढ़ने का दुपट्टा या चादर।

पिटत–संज्ञा स्त्री० [हिं० पीटना + अत (प्रत्य०)] पीटने की क्रिया या भाव।

पिटक–संज्ञा पु० [स०] १ पिटारा। २ फुड़िया। फुंसी। ३. किसी ग्रंथ का एक भाग। ग्रंथ-विभाग। खंड। हिस्सा।

पिटना–क्रि० अ० [हिं० पीटना] १. मार खाना। ठोका जाना। २ बजना। आघात पाकर आवाज करना।

†संज्ञा पु० [हिं० पीटना] चूने आदि की छत पीटने का ओजार। थापी।

पिटवाना–क्रि० स० [हिं० पीटना] पीटने का काम दूसरे से कराना।

पिटाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० पीटना] १ पीटने का काम या भाव। २ प्रहार। मार। ३ पीटने की मजदूरी।

पिटारा–संज्ञा पु० [स० पिटक] [स्त्री० अल्पा० पिटारी] बाँस, बेत, मूंज आदि के नरम छिलकों से बना हुआ एक प्रकार का बड़ा ढकनेदार पात्र।

पिट्ठू–संज्ञा पु० [हिं० पिठ + ऊ (प्रत्य०)] १. पीछे चलनेवाला। अनुयायी। २ सहायक। मददगार। हिमायती। ३ किसी खिलाड़ी का वह कल्पित साथी जिसकी बारी में वह स्वयं खेलता है।

पिठवन–संज्ञा स्त्री० [स० पृष्ठपर्णी] एक प्रसिद्ध लता जो औषध के काम आती है। पिठौनी। पृष्ठिपर्णी।

पिठौरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० पिट्ठी + औरी (प्रत्य०)] पीठी की बनी हुई बरी या पकौड़ी।

पितंबर–संज्ञा पु० दे० "पीतांबर"।

पितपापड़ा–संज्ञा पु० [स० पर्पट] एक झाड़ या क्षुप जिसका उपयोग औषध के रूप में होता है। दवनपापड़ा।

पितर–संज्ञा पु० [स० पितृ] मृत पूर्वपुरुष। मरे हुए पुरखे जिनका श्राद्ध किया जाता है।

पितरायँध†–संज्ञा स्त्री० [हिं० पीतल + गंध] खाद्य वस्तु में पीतल का कसाव।

पिता–संज्ञा पु० [स० पितृ का कर्त्ता०] जन्म देकर पालन-पोषण करनेवाला। बाप। जनक।

पितामह–संज्ञा पु० [स०] [स्त्री० पितामही] १ पिता का पिता। दादा। २ भीष्म। ३ ब्रह्मा। ४ शिव।

पितु*–संज्ञा पु० दे० "पिता"।

पितृ–संज्ञा पु० [स०] १ दे० "पिता"।

२ किसी व्यक्ति के मृत बाप, या दादा, परदादा आदि। ३. किसी व्यक्ति का ऐसा मृत पूर्वपुरुष जिसका प्रेतत्व छूट चुका हो। ४. एक प्रकार के देवता जो सब जीवों के आदि पूर्वज माने गए हैं।
पितृऋण—संज्ञा पुं० [सं०] धर्मशास्त्रानुसार मनुष्य के तीन ऋणों में से एक। पुत्र उत्पन्न करने से इस ऋण से मुक्ति होती है।
पितृकर्म—संज्ञा पुं० [सं० पितृकर्मन्] श्राद्ध, तर्पण आदि कर्म जो पितरों के उद्देश्य से होते हैं।
पितृकुल—संज्ञा पुं० [सं०] बाप, दादा या उनके भाई-बंधुओं आदि का कुल।
पितृगृह—संज्ञा पुं० [सं०] बाप का घर। (स्त्रियों के लिए) नैहर। मायका।
पितृतर्पण—संज्ञा पुं० [सं०] पितरों के उद्देश्य से किया जानेवाला जलदान। तर्पण।
पितृतीर्थ—संज्ञा पुं० [सं०] १. गया तीर्थ। २. अँगूठे और तर्जनी के बीच का भाग।
पितृत्व—संज्ञा पुं० [सं०] पिता या पितृ होने का भाव।
पितृपक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १. कुँआर की कृष्ण प्रतिपदा से अमावास्या तक का समय। २. पिता के संबंधी। पितृ-कुल।
पितृपद—संज्ञा पुं० [सं०] पितरों का लोक।
पितृमेध—संज्ञा पुं० [सं०] वैदिक काल के अंत्येष्टि कर्म का एक भेद जो श्राद्ध से भिन्न होता था।
पितृयज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] पितृतर्पण।
पितृयाण—संज्ञा पुं० [सं०] मृत्यु के अनंतर जीव के जाने का वह मार्ग जिससे वह चंद्रमा को प्राप्त होता है।
पितृलोक—संज्ञा पुं० [सं०] पितरों का लोक। वह स्थान जहाँ पितृगण रहते हैं।
पितृव्य—संज्ञा पुं० [सं०] चचा। चाचा।
पित्त—संज्ञा पुं० [सं०] एक तरल पदार्थ जो शरीर के अंतर्गत यकृत् में बनता है। यह चिकनाई के पाचन में सहायक होता है।
मुहा०—पित्त उबलना या खौलना=दे० "पित्त उबलना या खौलना"। पित्त गरम होना=शीघ्र क्रुद्ध होने का स्वभाव होना।
पित्तघ्न—वि० [सं०] पित्तनाशक।
पित्तज्वर—संज्ञा पुं० [सं०] वह ज्वर जो पित्त के प्रकोप से उत्पन्न हो। पैत्तिक ज्वर।
पित्तपापड़ा—संज्ञा पुं० दे० "पित्तपापड़ा"।
पित्तप्रकृति—वि० [सं०] जिसके शरीर में वात और कफ की अपेक्षा पित्त की अधिकता हो।
पित्तप्रकोपी—वि० [सं० पित्तप्रकोपिन्] (वस्तु) जिसके भोजन से पित्त की वृद्धि हो।
पित्तल—वि० [सं० पित्त] जिससे पित्तदोष बढ़े। पित्तकारी। (द्रव्य)
संज्ञा पुं० १. भोजपत्र। २. हरताल। ३. पीतल धातु।
पित्ता—संज्ञा पुं० [सं० पित्त] १. जिगर में वह थैली जिसमें पित्त रहता है। पित्ताशय।
मुहा०—पित्ता उबलना या खौलना=बड़ा क्रोध आना। मिजाज भड़क उठना। पित्ता निकालना†‡=बहुत अधिक परिश्रम का काम करना। पित्ता पानी करना=बहुत परिश्रम करना। जान लड़ाकर काम करना। पित्ता मरना=गुस्सा न रह जाना। पित्ता मारना=१. क्रोध दबाना। जब्त करना। २. कोई अरुचिकर या कठिन काम करने में न ऊबना।
२. हिम्मत। साहस। हौसला।
पित्ताशय—संज्ञा पुं० [सं०] पित्त की थैली जो जिगर में पीछे और नीचे की ओर होती है।
पित्ती—संज्ञा स्त्री० [सं० पित्त+ई] १. एक रोग जिसमें शरीर भर में छोटे-छोटे ददोरे पड़ जाते हैं। २. लाल महीन दाने जो गरमी के दिनों में शरीर पर निकल आते हैं। अँभौरी।
†‡ संज्ञा पुं० पितृव्य। चचा। काका।
पित्र्य—वि० [सं०] पितृ-संबंधी।
पिदड़ी—संज्ञा स्त्री० दे० "पिद्दी"।
पिद्दा—संज्ञा पुं० दे० "पिद्दी"।
पिद्दी—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. बया की जाति की एक सुन्दर छोटी चिड़िया। २. बहुत ही तुच्छ और नगण्य जीव।
पिधान—संज्ञा पुं० [सं०] १. आवरण। पर्दा। गिलाफ। २. ढक्कन। ढकना।

३. तलवार की म्यान। ४. किवाड़ा।

पिनकना–क्रि० अ० [हिं० पीनक] १. अफीम के नशे में सिर का झुक पड़ना। पीनक लेना। २. नींद में आगे को झुकना। ऊँघना।

पिनपिन†–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ बच्चों का अनुनासिक और अस्पष्ट स्वर में रोना। २ धीमी और अनुनासिक आवाज़ में रोना।

पिनपिनाना†–क्रि० अ० [हिं० पिनपिन] १. रोते समय नाक से स्वर निकालना। २. रोगी अथवा कमज़ोर बच्चे का रोना।

पिनाक–संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव का धनुष जिसे श्रीरामचन्द्र जी ने जनकपुर में तोड़ा था। अजगव। २ धनुष। ३ त्रिशूल।

पिनाकी–संज्ञा पुं० [सं० पिनाकिन्] शिव।

पिन्नी–संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मिठाई, जो आटे में चीनी मिलाकर बनाई जाती है।

पिन्हाना†–क्रि० स० दे० "पहनाना"।

पिपरामूल–संज्ञा पुं० [सं०] पिप्पलीमूल। पीपल की जड़।

पिपासा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. तृषा। प्यास। २. लालच। लोभ।

पिपासु–वि० [सं०] १. तृषित। प्यासा। २. उग्र इच्छा रखनेवाला। लालची।

पिपीलिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] च्यूँटी।

पिप्पल–संज्ञा पुं० [सं०] पीपल। अश्वत्थ।

पिप्पली–संज्ञा स्त्री० [सं०] पीपल।

पिप्पलीमूल–संज्ञा पुं० [सं०] पिपरामूल।

पिय*–संज्ञा पुं० [सं० प्रिय] पति। स्वामी।

पियराई†–संज्ञा स्त्री० [हिं० पीयर+आई (प्रत्य०)] पीलापन। ज़र्दी।

पियराना*†–क्रि० अ० [हिं० पियरा] पीला पड़ना। पीला होना।

पियरी†–वि० स्त्री० दे० "पीली"।
संज्ञा स्त्री० [हिं० पियर] १. पीली रँगी हुई धोती। पियरी। २ पीलापन।

पियल्ला‡ संज्ञा पुं० [हिं० पीना] दूध पीनेवाला बच्चा।

पिया*–संज्ञा पुं० दे० "प्रिय"।

पियार–संज्ञा पुं० [सं० पियाल] महुए की तरह का मझोले आकार का एक पेड़ जिसके बीजों की गिरी चिरौंजी कहलाती है।
†वि० दे० "प्यारा"।
†संज्ञा पुं० दे० "प्यार"।

पियाल–संज्ञा पुं० [सं०] चिरौंजी का पेड़। २ दे० "पियार"।

पियासाल–संज्ञा पुं० [सं० पीतसाल, प्रियसालक] बहेड़े की जाति का एक बड़ा पेड़।

पियूख*–संज्ञा पुं० दे० "पीयूष"।

पिरकी†–संज्ञा स्त्री० [सं० पिड़क] फोड़िया। फुंसी।

पिरथी‡*–संज्ञा स्त्री० दे० "पृथ्वी"।

पिराई‡*–संज्ञा स्त्री० दे० "पियराई"।

पिराक–संज्ञा पुं० [सं० पिष्टक] एक प्रकार का पकवान। गोझा। गोझिया।

पिराना†*–क्रि० अ० [सं० पीडन] १. पीड़ित होना। दर्द करना। दुखना। २. पीड़ा अनुभव करना। दुख समझना।

पिरारा‡*–संज्ञा पुं० दे० "पिंडारा"।

पिरीतम‡*–संज्ञा पुं० दे० "प्रियतम"।

पिरीता*–वि० [सं० प्रीत] प्रिय। प्यारा।

पिरोजा–संज्ञा पुं० दे० "फीरोज़ा"।

पिरोना–क्रि० स० [सं० प्रोत] १ छेद के सहारे सूत, तागे आदि में फँसाना। गूथना। पोहना। २ तागे आदि को छेद में डालना।

पिलना–क्रि० अ० [सं० पिल=प्रेरण] १ किसी ओर को एकबारगी टूट पड़ना। ढल पड़ना। झुक पड़ना। २ एकबारगी प्रवृत्त होना। लिपट जाना। भिड़ जाना। ३ पेरा जाना। तेल निकालने के लिए दबाया जाना।

पिलपिला–वि० [अनु०] भीतर से गीला और नरम।

पिलपिलाना–क्रि० स० [हिं० पिलपिला] रसदार या गूदेदार वस्तु को दबाना जिससे रस या गूदा ढीला होकर बाहर निकले।

पिलवाना–क्रि० स० [हिं० "पिलाना" का प्रे०] पिलाने का काम दूसरे से कराना।
क्रि० स० [हिं० पेलना] पेलने या पेरने का काम दूसरे से कराना। पेरवाना।

पिलाना—क्रि० स० [हिं० पीना] १. पीने का काम दूसरे से कराना। पान कराना। २. पीने को देना। ३. भीतर भरना।
पिल्ला—संज्ञा पुं० [देश०] कुत्ते का बच्चा।
पिल्लू—संज्ञा पुं० [सं० पीलू=कृमि] एक सफ़ेद लंबा कीड़ा जो सड़े हुए फल या घाव आदि में देखा जाता है। ढोला।
पिव*—संज्ञा पुं० दे० "पिय"।
पिशाना†—क्रि० स० दे० "पिलाना"।
पिशाच—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० पिशाची] एक हीन देवयोनि। भूत।
पिशुन—संज्ञा पुं० [सं०] चुगलखोर।
पिष्ट—वि० [सं०] पिसा हुआ।
पिष्टक—संज्ञा पुं० [सं०] १. पिष्ट। पीठी। पिट्ठी। २. कचौरी या पूआ। रोट।
पिष्टपेषण—संज्ञा पुं० [सं०] १. पिसे हुए को पीसना। २. कही हुई बात को फिर फिर कहना।
पिसनहारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पीसना + हारी (प्रत्य०)] वह स्त्री जिसकी जीविका आटा पीसने से चलती हो।
पिसना—क्रि० अ० [हिं० पीसना] १. चूर्ण होना। चूर होकर धूल सा हो जाना। २. पिसकर तैयार होना। ३. दब जाना। कुचला जाना। ४. घोर कष्ट, दुःख या हानि उठाना। पीड़ित होना। ५. थककर बेदम होना।
पिसवाना—क्रि० स० [हिं० पीसना का प्रे०] पीसने का काम दूसरे से कराना।
पिसाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० पीसना] १. पीसने की क्रिया या भाव। २. पीसने का काम या व्यवसाय। ३. पीसने की मजदूरी। ४ अत्यंत अधिक श्रम। बड़ी कड़ी मिहनत।
पिसाच*—संज्ञा पुं० दे० "पिशाच"।
पिसान†—संज्ञा पुं० [हिं० पिसना, पिसा + अन्न] अन्न का बारीक पिसा हुआ चूर्ण। आटा।
पिसुन*—संज्ञा पुं० दे० "पिशुन"।
पिसौनी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० पीसना] १. पीसने का काम। २. कठिन काम।
पिस्तई—वि० [फा० पिस्त:] पिस्ते के रंग का। पीलापन लिए हरा।
पिस्ता—संज्ञा पुं० [फ़ा० पिस्त:] एक छोटा पेड़ जिसके फल की गिरी अच्छे मेवों में है।
पिस्तौल—संज्ञा स्त्री० [अं० पिस्टल] तमंचा। छोटी बंदूक।
पिस्सू—संज्ञा पुं० [फ़ा० पश्श:] एक छोटा उड़नेवाला कीड़ा जो काटता और रक्त पीता है। कुटकी।
पिहकना—क्रि० अ० [अनु०] कोयल, पपीहे आदि पक्षियों का बोलना।
पिहित—वि० [सं०] छिपा हुआ।
संज्ञा पुं० एक अर्थालंकार जिसमें किसी के मन का कोई भाव जानकर क्रिया द्वारा अपना भाव प्रकट करना वर्णन किया जाय।
पींजना—क्रि० स० [सं० पिंजन] रूई धुनना।
पींजरा*—संज्ञा पुं० दे० "पिंजड़ा"।
पींड†—संज्ञा पुं० [सं० पिंड] १. शरीर। देह। पिंड। २. वृक्ष का धड़। तना। पेड़ी। ३. गीली वस्तु का गोला। पिंड। पिंडी। ४. दे० "पीड़"। ५. पिंड खजूर।
पी*—संज्ञा पुं० दे० "पिय"।
संज्ञा पुं० [अनु०] पपीहे की बोली।
पीक—संज्ञा स्त्री० [सं० पिच्च] थूक में मिला हुआ पान का रस।
पीकदान—संज्ञा पुं० [हिं० पीक + फ़ा० दान] एक विशेष प्रकार का बना हुआ बरतन जिसमें पान की पीक थूकी जाती है। उगालदान।
पीकना—क्रि० अ० [सं० पिक] पिहकना। पपीहे या कोयल का बोलना।
पीका†—संज्ञा पुं० [देश०] नया कोमल पत्ता। कोंपल। पल्लव।
पीच—संज्ञा स्त्री० [सं० पिच्च] माँड़।
पीछा—संज्ञा पुं० [सं० पश्चात्] १. किसी व्यक्ति या वस्तु के पीछे की ओर का भाग। पश्चात् भाग। पुश्त। "आगा" का उल्टा।
मुहा०—पीछा दिखाना = १. भागना। पीठ दिखाना। २. दे० "पीछा देना"। पीछा देना=किसी काम में पहले साथ देकर फिर किनारा करना। पीछे हट जाना।

२ किसी घटना के बाद का समय। ३ पीछे पीछे चलकर किसी के साथ लगे रहना। मुहा०—पीछा करना=१ किसी बात के लिये किसी का तंग या दिक करना। गले पड़ना। २ किसी को पकड़ने, मारने या भगाने आदि के लिये उसके पीछे पीछे चलना। खदेड़ना। पीछा छुड़ाना=१ पीछा करनेवाले व्यक्ति से जान छुड़ाना। २ अप्रिय या इच्छाविरुद्ध संबंध का अंत करना। पीछा छूटना=१ पीछा करनेवाले से छुटकारा मिलना पिंड छूटना। जान छूटना। २ अप्रिय कार्य या संबंध से छुटकारा मिलना। पीछा छोड़ना=१ तंग न करना। परेशान न करना। बंद करना। जिस बात में बहुत देर से लगे हों उसे छोड़ देना।

पीछू*†—क्रि० वि० दे० "पीछे"।

पीछे—अव्य०[हिं०पीछा] १ पीठ की ओर। आगे या सामने का उलटा। पश्चात। मुहा०—(किसी के) पीछे चलना=१ किसी विषय में किसी को पथदर्शक, नेता या गुरु मानना। २ अनुकरण करना। नकल करना। (किसी के) पीछे छोड़ना या भेजना=किसी का पीछा करने के लिये किसी को भेजना। (धन) पीछे डालना=आगे के लिये बटोरना। संचय करना। (किसी काम के) पीछे पड़ना=किसी काम को कर डालने पर तुल जाना। किसी कार्य के लिये अविराम उद्योग करना। (किसी व्यक्ति के) पीछे पड़ना= १ कोई काम करने के लिये किसी से बार बार कहना। घेरना। तंग करना। २ मौका या संधि ढूँढ़ ढूँढ़कर किसी की बुराई करते रहना। पीछे लगना=१ पीछे पीछे घूमना। पीछा करना। २ दु:खजनक वस्तु का साथ हो जाना। (अपने) पीछे लगाना=१ आश्रय देना। साथ कर लेना। २ अनिष्ट वस्तु से संबंध कर लेना। (किसी और के) पीछे लगाना=१ अनिष्ट या अप्रिय वस्तु से संबंध करा देना। मढ़ देना। २ भेद लेने या निगाह रखने के लिये किसी को साथ कर देना। २ पीछे की ओर कुछ दूर पर। मुहा०—पीछे छूटना, पड़ना या होना= १. किसी विषय में किसी व्यक्ति की अपेक्षा घटकर होना। पिछड़ा होना। २ किसी विषय में किसी ऐसे आदमी से घट जाना जिसमें किसी समय बराबरी रही हो। पिछड़ जाना। (किसी को) पीछे छोड़ना=१ किसी विषय में किसी से बढ़कर या अधिक होना। २ किसी विषय में किसी से आगे निकल जाना। ३ पश्चात्। उपरांत। अनंतर। ४ अंत में। आखिर में। (क्व०) ५ किसी की अनुपस्थिति या अभाव में। पीठ पीछे। ६ मर जाने पर। ७ लिये। वास्ते। ८ कारण। निमित्त। बदौलत।

पीटना—क्रि० स० [सं० पीडन] १ चोट पहुँचाना। मारना। मुहा०—छाती पीटना=दु:ख या शोक प्रकट करने के लिये छाती पर हाथ से आघात करना। किसी व्यक्ति को या के लिये पीटना= किसी के मरने पर छाती पीटना। मातम करना। २ चोट से चिपटा या चौड़ा करना। ३ मारना। करना प्रहार। ठोंकना। ४ भले या बुरे प्रकार से कर डालना। ५ किसी न किसी प्रकार प्राप्त कर लेना। फटकार लेना। संज्ञा पु० १ मृत्युशोक। मातम। २ मुसीबत। आफ़त।

पीठ—संज्ञा पु० [सं०] १. लकड़ी, पत्थर आदि का बैठने का आधार या आसन। पीढ़ा। चौकी। २ विद्यार्थियों आदि के बैठने का आसन। ३ किसी मूर्ति के नीचे का आधार-पिंड। ४ किसी वस्तु के रहने की जगह। अधिष्ठान। ५ सिंहासन। राजासन। तख्त। ६ वेदी। देवपीठ। ७ वह स्थान जहाँ पुराणानुसार दक्षपुत्री सती का कोई अंग या आभूषण विष्णु के चक्र से कटकर गिरा है। भिन्न भिन्न पुराणों में इनकी संख्या ५१,५३,७७ या १०८ मानी गई है। ८ प्रदेश। प्रांत। ९ बैठने का एक आसन। १० वृत्त के किसी अंश का पूरक।

संज्ञा स्त्री० [सं० पृष्ठ] १ पेट की दूसरी ओर

का भाग जो मनुष्य में पीछे की ओर और पशुओं, पक्षियों आदि के शरीर में ऊपर की ओर पड़ता है। पृष्ठ। पुश्त। मुहा०—पीठ का=दे० "पीठ पर का"। पीठ चारपाई से लग जाना=बीमारी के कारण अत्यंत दुबला और कमजोर हो जाना। पीठ ठोंकना=१. किसी कार्य की प्रशंसा करना। शाबाशी देना। २.हिम्मत बढ़ाना। प्रोत्साहित करना। पीठ दिखाना=युद्ध या मुकाबिले से भाग जाना। पीछा दिखाना। पीठ दिखाकर जाना=स्नेह तोड़कर या ममता छोड़कर जाना। पीठ देना=१.विदा होना। रुखसत होना। २. विमुख होना। मुँह मोड़ना। ३. भाग जाना। पीठ दिखाना। ४. लेटना। आराम करना। पीठ पर=एक ही माता द्वारा जन्मक्रम में पीछे। पीठ पर का=जन्मक्रम में अपने सहोदर के अनन्तर का। पीठ मीजना या पीठ पर हाथ फेरना=दे० "पीठ ठोंकना"। पीठ पर होना=मदद पर होना। हिमायत पर होना। पीठ पीछे=किसी के पीछे। अनुपस्थिति में। परोक्ष में। पीठ फेरना=१. विदा होना। चला जाना। २. भाग जाना। पीठ दिखाना। ३. मुँह फेर लेना। ४. अरुचि या अनिच्छा प्रकट करना। (घोड़े, बैल आदि की) पीठ लगना=पीठ पर घाव हो जाना। पीठ पक जाना। (चारपाई आदि से) पीठ लगाना=लेटना। सोना। पड़ना। २. किसी वस्तु की बनावट का ऊपरी भाग। पृष्ठ भाग।

पीठना*—क्रि० स० दे० "पीसना"।

पीठमर्द—संज्ञा पुं० [सं०] १. नायक के चार सखाओं में से एक जो वचन-चातुरी से नायिका का मान-मोचन करने में समर्थ हो। २. वह नायक जो कुपित नायिका को प्रसन्न कर सके।

पीठस्थान—संज्ञा पुं० दे० "पीठ (७)"

पीठा—संज्ञा पुं० दे० "पीढ़ा"।
संज्ञा पुं० [सं० पिष्टक] एक प्रकार का पकवान।

पीठि*—संज्ञा स्त्री० दे० "पीठ"।

पीठी—संज्ञा स्त्री० [सं० पिष्टक] पानी में भिगोकर पीसी हुई दाल।

पीड़—संज्ञा स्त्री० [सं० आपीड़] सिर या बालों पर बाँधा जानेवाला एक आभूषण।

पीड़क—संज्ञा पुं० [सं०] १. पीड़ा देनेवाला। दुःखदायी। २. सतानेवाला।

पीड़न—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० पीड़क, पीडनीय पीड़ित] १. दबाना। चापना। २. पेरना। पेलना। ३.दुःख देना। यंत्रणा पहुँचाना। ४.अत्याचार करना। ५. भली भाँति पकड़ना। दबोचना। ६. उच्छेद। नाश।

पीड़ा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वेदना। व्यथा। तकलीफ़। दर्द। २. रोग। व्याधि।

पीड़ित—वि० [सं०] १.पीड़ायुक्त। दुःखित। क्लेशयुक्त। २. रोगी। बीमार। ३. दबाया हुआ। ४. नष्ट किया हुआ।

पीड़री*—संज्ञा स्त्री० दे० "पिंडली"।

पीढ़ा†—संज्ञा पुं० [सं० पीठक] चौकी के आकार का छोटा और कम ऊँचा आसन। पाटा। पीठ। पीठक।

पीढ़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० पीठिका] १. कुल-परंपरा में किसी विशेष व्यक्ति से आरंभ करके बाप, दादे, परदादे आदि अथवा बेटे, पोते, परपोते आदि के क्रम से पहला दूसरा आदि कोई स्थान। पुश्त। २. किसी विशेष व्यक्ति अथवा प्राणी का संतति-समुदाय। ३. किसी विशेष समय में वर्ग-विशेष के व्यक्तियों की समष्टि। संतति। संतान। नस्ल।
†संज्ञा स्त्री० [हिं० पीढ़ा] छोटा पीढ़ा।

पीत—वि० [सं०] [स्त्री० पीता] १. पीला। पीतवर्ण-युक्त। २. भूरा। कपिल वर्ण।
वि० [सं० पान] पिया हुआ।
संज्ञा पुं० [सं०] १. पीला रंग। २. भूरा रंग। ३. हरताल। ४. हरिचंदन। ५. कुसुम। ६. पुखराज। ७. मूँगा।

पीतक—संज्ञा पुं० [सं०] १. हरताल। २. केसर। ३. अगर। ४. पीतल। ५. पीला चंदन। ६. शहद।
वि० पीला। पीले रंग का।

पीतचंदन—संज्ञा पुं० [सं०] द्रविड़देशीय पीले रंग का चंदन। हरिचंदन।

पीतता—संज्ञा स्त्री० [सं०] पीत का भाव।

पीलापन। जर्दी।
पीतधातु*–संज्ञा स्त्री० [सं० पीत + धातु] रामरज। गोपीचदन।
पीतपुष्प–संज्ञा पु० [सं०] १. कनेर। २ घिया-तरोई। ३ पीले फूल की कट-सरैया। ४ चपा।
पीतम*–वि० दे० "प्रियतम"।
पीतल–संज्ञा पु० [सं० पित्तल] एक प्रसिद्ध पीली उपधातु जो तांबे और जस्ते के सयोग से बनती है।
पीतवास–संज्ञा पु० [सं०] श्रीकृष्ण।
पीतशाल–संज्ञा पु० [सं०] विजयसार।
पीतसार–संज्ञा पु० [सं०] १ पीतचदन। हरिचदन। २ सफेद चदन। ३. गोमेद मणि। ४ शिलारस।
पीतांबर–संज्ञा पु० [सं०] १ पीला कपडा। २ मरदानी रेशमी धोती जिसे लोग पूजा पाठ आदि के समय पहनते है। ३ श्रीकृष्ण।
पीदड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "पिद्दी"।
पीन–वि० [सं०] १ स्थूल। मोटा। २ पुष्ट। प्रवृद्ध। ३ सपन्न। भरा-पूरा।
पीनक–संज्ञा स्त्री० [हि० पिनकना] १ नशे की हालत में अफीमची का आगे की ओर झुक झुक पडना। २ ऊँघना।
पीनता–संज्ञा स्त्री० [सं०] मोटाई।
पीनस–संज्ञा पु० [सं०] नाक का एक रोग जिसमें उसकी घ्राण-शक्ति नष्ट हो जाती है।
संज्ञा स्त्री० [फा० फीनस] पालकी।
पीना–क्रि० स० [सं० पान] १ तरल वस्तु को घूँट घूँट करके गले के नीचे उतारना। घूँटना। पान करना। २ किसी बात को दबा देना। उपेक्षा करना। ३ क्रोध या उत्तेजना न प्रकट करना। राह जाना। ४ किसी मनोविकार का भीतर ही भीतर दबा देना। मारना। ५ किसी मनोविकार या कुछ भी अनुभव न करना। ६ शराब पीना। ७ हुक्के, चुरुट आदि का धुआँ भीतर खींचना। धूम्रपान करना। ८ सोखना। शोषण।
पीप–संज्ञा स्त्री० [सं० पूय] फोडे या घाव के भीतर से निकलनेवाला सफेद लसदार पदार्थ। पीब। मवाद।
पीपर–संज्ञा पु० दे० "पीपल"।
पीपरपर्न*–संज्ञा पु० [हि० पीपल+पर्न = पत्ता] कान में पहनने का एक आभूषण।
पीपल–संज्ञा पु० [सं० पिप्पल] बरगद की जाति का एक प्रसिद्ध वृक्ष जो हिंदुओं में बहुत पवित्र माना जाता है।
संज्ञा स्त्री० [सं० पिप्पली] एक लता जिसकी कलियाँ प्रसिद्ध ओषधि हैं।
पीपलामूल–संज्ञा पु० [सं० पिप्पलीमूल] एक प्रसिद्ध ओषधि जो पीपल लता की जड है।
पीपा–संज्ञा पु० [?] बडे ढोल के आकार का काठ या लोहे का पात्र जिसमें मद्य, तेल आदि तरल पदार्थ रखे जाते हैं।
पीब–संज्ञा स्त्री० दे० "पीप"।
पीय*–संज्ञा पु० दे० "पिय"।
पीयूख–संज्ञा पु० दे० "पीयूष"।
पीयूष–संज्ञा पु० [सं०] १ अमृत। सुधा। २ दूध। ३ उस गाय का दूध जिसे ब्याए सात दिन से अधिक न हुआ हो।
पीयूषभानु–संज्ञा पु० [सं०] चद्रमा।
पीयूषवर्ष–संज्ञा पु० [सं०] १ चद्रमा। २ कपूर। ३ एक प्रकार का मात्रिक छद। आनद-वर्द्धक।
पीर–संज्ञा स्त्री० [सं० पीडा] १. पीडा। दुख। दर्द। २ सहानुभूति। हमदर्दी।
वि० [फा०] [संज्ञा पीरी] १. वृद्ध। बूढा। बडा। बुजुर्ग। २ महात्मा। सिद्ध।
पीरा‡–संज्ञा स्त्री० दे० "पीडा"।
वि० दे० "पीला"।
पीरी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १ बुढापा। वृद्धावस्था। २ चेला मूडने का धधा या पेशा। गुरुवाई। ३ इजारा। ठेका। हुकूमत।
पील–संज्ञा पु० [फा०] १. हाथी। गज। हस्ति। २ शतरज का एक मोहरा। फील। ऊँट।
पीलपाल*‡–संज्ञा पु० दे० "फीलवान"।
पीलपाँव–संज्ञा पु० [फा० फीलपा] एक प्रसिद्ध

रोग। फ़ीलपा। श्लीपद।

पीलवान–संज्ञा पुं० दे० "फ़ीलवान"।

पीलसाज–संज्ञा पुं० [फ़ा० फतीलसो] दीया जलाने की दीयट। चिराग़दान।

पीला–वि० [सं० पीत] [स्त्री० पीली] १. हल्दी, सोने या केसर के रंग का (पदार्थ)। ज़र्द। २. कांतिहीन। निस्तेज। मुहा०–पीला पड़ना या होना = १. बीमारी के कारण चेहरे या शरीर से रक्त का अभाव सूचित होना। २. भय से चेहरे पर सफ़ेदी आना। संज्ञा पुं० हल्दी या सोने के रंग से मिलता-जुलता एक प्रकार का रंग।

पीलापन–संज्ञा पुं० [हिं० पीला+पन (प्रत्य०)] पीला होने का भाव। पीतता। ज़र्दी।

पीलिया–संज्ञा पुं० [हिं० पीला] कमल रोग।

पीलु–संज्ञा पुं० [सं०] १. फलदार वृक्ष। पीलू। २. फूल। पुष्प। ३. परमाणु। ४. हाथी। ५. हड्डी का टुकड़ा। अस्थिखंड।

पीलू–संज्ञा पुं० [सं० पीलु] १. एक प्रकार का कांटेदार वृक्ष जिसका फल दवा के काम में आता है। २. वे सफ़ेद लंबे कीड़े जो सड़ने पर फलों आदि में पड़ जाते हैं। संज्ञा पुं० एक प्रकार का राग।

पीवना*–क्रि० स० दे० "पीना"।

पीव–संज्ञा पुं० [हिं० पिय] पिय। पति।

पीवर–वि० [सं०] [स्त्री० पीवरा] [संज्ञा पीवरता] १. मोटा। स्थूल। २. भारी। गुरु।

पीवरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सतावर। २. सरिवन। ३. युवती स्त्री। ४. गाय।

पीसना–क्रि० स० [सं० पेषण] १. किसी वस्तु को आटे, बुकनी या धूल के रूप में करना। २. किसी वस्तु को जल की सहायता से रगड़कर बारीक करना। ३. कुचल देना। दबाकर भुरकुस कर देना। मुहा०–किसी आदमी को पीसना = बहुत भारी अपकार करना या हानि पहुँचाना। नष्टप्राय कर देना। चौपट कर देना। ४. कड़ी मिहनत करना। जान लड़ाना। संज्ञा पुं० १. पीसी जानेवाली वस्तु। २. उतनी वस्तु जो किसी एक आदमी को पीसने को दी जाय।

पीहर–संज्ञा पुं० [सं० पितृ + गृह, हिं० घर] स्त्रियों का मायका। स्त्रियों के माता-पिता का घर। मैका।

पुंख–संज्ञा पुं० [सं०] बाण का पिछला भाग जिसमें पर खोंसे रहते थे।

पुंगव–संज्ञा पुं० [सं०] बैल। वृष। वि० श्रेष्ठ। उत्तम।

पुंगीफल–संज्ञा पुं० दे० "पूंगीफल"।

पुंछार*†–संज्ञा पुं० [हिं० पूंछ] मयूर। मोर।

पुछाला–संज्ञा पुं० दे० "पुछल्ला"।

पुंज–संज्ञा पुं० [सं०] समूह। ढेर।

पुंजी*–संज्ञा स्त्री० दे० "पूंजी"।

पुंड–संज्ञा पुं० [सं०] तिलक। टीका।

पुंडरी–संज्ञा पुं० [सं० पुंडरिन्] स्थलपद्म।

पुंडरीक–संज्ञा पुं० [सं०] १. श्वेत कमल। २. कमल। ३. रेशम का कीड़ा। ४. शेर। बाघ। ५. तिलक। ६. सफ़ेद रंग का हाथी। ७. श्वेत कुष्ठ। सफ़ेद कोढ़। ८. अग्निकोण के दिग्गज का नाम। ९. अग्नि। आग। १०. बाण। शर। (अनेकार्थ) ११. आकाश। (अनेकार्थ)।

पुंडरीकाक्ष–संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु। वि० जिसके नेत्र कमल के समान हों।

पुंड्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. गन्ना। पौंढ़ा। २. श्वेत कमल। ३. तिलक। टीका। ४. भारत के एक भाग का प्राचीन नाम।

पुंड्रवर्द्धन–संज्ञा पुं० [सं०] पुंड्र देश की प्राचीन राजधानी।

पुंलिंग–संज्ञा पुं० [सं०] १. पुरुष का चिह्न। २. शिश्न। ३. पुरुषवाचक शब्द। (व्या०)

पुंश्चली–वि० स्त्री० [सं०] व्यभिचारिणी। कुलटा। छिनाल।

पुंस*‡–संज्ञा पुं० [सं०] पुरुष। मर्द।

पुंसवन–संज्ञा पुं० [सं०] १. दुग्ध। दूध। २. द्विजातियों के सोलह संस्कारों में से दूसरा जो गर्भिणी को पुत्र प्रसव कराने के अभिप्राय से गर्भाधान से तीसरे महीने होता है। ३. वैष्णवों का एक व्रत।

पुंसत्व–संज्ञा पुं० [सं०] १. पुरुषत्व

पुरुष की स्त्री-सहवास की कामना। ३. शुक्र। वीर्य।

पुआ-संज्ञा पुं० [सं० पूप] मीठे के रस में सने हुए आटे की मोटी पूरी या टिकिया।

पुआल-संज्ञा पुं० दे० "पयाल"।

पुकार-संज्ञा स्त्री० [हिं० पुकारना] १. किसी का नाम लेकर बुलाने की क्रिया या भाव। हाँक। टेर। २. रक्षा या सहायता के लिये चिल्लाहट। दुहाई। ३. प्रतिकार के लिये चिल्लाहट। फरियाद। नालिश। ४. गहरी माँग।

पुकारना-क्रि० स० [सं० प्रक्रुश=पुकारना] १. नाम लेकर बुलाना। टेरना। आवाज लगाना। २. नाम का उच्चारण करना। रटना। धुन लगाना। ३. चिल्लाकर कहना। घोषित करना। ४. चिल्लाकर माँगना। ५. रक्षा के लिये चिल्लाना। गोहार लगाना। ६. फरियाद करना। नालिश करना।

पुक्कस-संज्ञा पुं० [सं०] १. चांडाल। २ अधम। नीच।

पुख†*-संज्ञा पुं० दे० "पुष्य"।

पुखर-संज्ञा पुं० [सं० पुष्कर] तालाब।

पुखराज-संज्ञा पुं० [सं० पुष्पराग] एक प्रकार का पीला रत्न।

पुख्य-संज्ञा पुं० दे० "पुष्य"।

पुगना-क्रि० अ० दे० "पूजना"।

पुगाना-क्रि० स० [हिं० पुजाना] पूरा करना।

पुचकार-संज्ञा स्त्री० [हिं० पुचकारना] दे० "पुचकारी"।

पुचकारना-क्रि० स० [अनु० पुच=से + हिं० कार+ना (प्रत्य०)] चूमने का सा शब्द निकालकर प्यार जताना। चुमकारना।

पुचकारी-संज्ञा स्त्री० [हिं० पुचकारना] प्यार जताने के लिये ओठों से निकाला हुआ चूमने का सा शब्द। चुमकार।

पुचारा-संज्ञा पुं० [अनु० पुचपुच या पुतारा] १. भीगे कपड़े से पोंछने का काम। २. पतला लेप करने का काम। ३. पोता। हलका लेप। ४. वह गीला कपड़ा जिससे पोतते या पुचारा देते हैं। ५. लेप करने या पोतने के लिये पानी में घोली हुई कोई वस्तु। ६. दगी हुई तोप या बंदूक की गरम नली को ठंढा करने के लिये उस पर गीला कपड़ा फेरने की क्रिया। ७. प्रसन्न करनेवाले वचन। ८. झूठी प्रशंसा। चापलूसी। खुशामद। ९. उत्साह बढ़ानेवाला वचन। बढ़ावा।

पुच्छ-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुम। पूँछ। २. किसी वस्तु का पिछला भाग।

पुच्छल-वि० [हिं० पुच्छ] दुमदार। पूँछदार। यौ०—पुच्छल तारा = दे० "केतु"।

पुछल्ला-संज्ञा पुं० [हिं० पूँछ+ला (प्रत्य०)] १. बड़ी पूँछ। लंबी दुम। २. पूँछ की तरह जोड़ी हुई वस्तु। ३. बराबर पीछे लगा रहनेवाला। साथ न छोड़नेवाला। ४. साथ में लगी हुई वस्तु या व्यक्ति जिसकी उतनी आवश्यकता न हो। ५ पिछलग्गू। चापलूस। आश्रित।

पुछार†*-संज्ञा पुं० [हिं० पूछना] आदर करनेवाला। पूछनेवाला।

पुजना-क्रि० अ० [हिं० पूजना] १. पूजा जाना। आराधना का विषय होना। २. सम्मानित होना।

पुजवना†*-क्रि० स० [हिं० पूजना] १. पुजाना। भरना। २. पूरा करना। ३ सफल करना।

पुजवाना-क्रि० स० [हिं० पूजना का प्रे०] १. पूजन कराना। पूजा करने में प्रवृत्त करना। २. अपनी पूजा कराना। ३. अपनी सेवा या सम्मान कराना।

पुजाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० पूजना] पूजने का भाव, क्रिया या पुरस्कार।

पुजाना-क्रि० स० [हिं० पूजना का प्रे०] १. पूजा में प्रवृत्त या नियुक्त करना। २. अपनी पूजा-प्रतिष्ठा कराना। भेंट चढ़वाना। ३. धन वसूल करना। क्रि० स० [हिं० पूजना = पूरा होना] १. भर देना। २. पूरा करना। पूर्ति करना। सफल करना।

पुजापा-संज्ञा पुं० [सं० पूजा + पात्र] देव-पूजन की सामग्री। पूजा का सामान।

पुजारी—संज्ञा पुं० [सं० पूजा+कारी] देवमूर्ति की पूजा करनेवाला।
पुजेरी—संज्ञा पुं० दे० "पुजारी"।
पुजैया†—संज्ञा पुं० [हिं० पूजना] पूजा करनेवाला।
संज्ञा पुं० [हिं० पूजना = भरना] पूरा करनेवाला। भरनेवाला।
संज्ञा स्त्री० दे० "पूजा"।
पुट—संज्ञा पुं० [अनु०] १. किसी वस्तु से तर करने या उसका हलका मेल करने के लिये डाला हुआ छींटा। हलका छिड़काव। २. रंग या हलका मेल देने के लिये घुले हुए रंग या और किसी पतली चीज़ में डुबाना। बोर। ३. बहुत हलका मेल। भावना।
संज्ञा पुं० [सं०] १. आच्छादन। ढाँकनेवाली वस्तु। २. गोल गहरा पात्र। कटोरा। ३. दोने के आकार की वस्तु। ४. औषध पकाने का मुँहबंद बरतन। ५. दो बराबर बरतनों को मुँह मिलाकर जोड़ने से बना हुआ बंद घेरा। संपुट। ६. घोड़े की टाप। ७. अंतःपट। अँतरौटा। ८. दो नगण, एक मगण और एक रगण का एक वर्णवृत्त।
पुटकी—संज्ञा स्त्री० [सं० पुटक] पोटली। गठरी।
संज्ञा स्त्री० [हिं० पटपटाना=मरना] १. आकस्मिक मृत्यु। २. दैवी आपत्ति। आफत।
संज्ञा स्त्री० [हिं० पुट=हलका मेल] बेसन या आटा जो तरकारी के रसे में उसे गाढ़ा करने के लिये मिलाते हैं। आलन।
पुटपाक—संज्ञा पुं० [सं०] १. पत्ते के दोने में रखकर औषध पकाने का विधान। (वैद्यक) २. मुँहबंद बरतन में दवा रखकर उसे गड्ढे के भीतर पकाने का विधान।
पुटी—संज्ञा स्त्री० [सं० पुट] १. छोटा दोना। छोटा कटोरा। २. खाली स्थान जिसमें कोई वस्तु रखी जा सके। ३. पुड़िया। ४. कौपीन। लँगोटी।
पुटीन—संज्ञा पुं० [अं० पुटी] किवाड़ों में शीशे बैठाने या लकड़ी के जोड़ आदि भरने में काम आनेवाला एक मसाला।
पुट्ठा—संज्ञा पुं० [सं० पुष्ट या पृष्ठ] १. चूतड़ का ऊपरी कुछ कड़ा भाग। २. चौपायों का विशेषतः घोड़ों का चूतड़। ३. घोड़ों की संख्या के लिये शब्द। ४. किसी पुस्तक की जिल्द का पिछला भाग।
पुठवार—क्रि० वि० [हिं० पुट्ठा] पीछे। बगल में।
पुठवाल—संज्ञा पुं० [हिं० पुट्ठा+वाला] मददगार। पृष्ठरक्षक।
पुड़ा—संज्ञा पुं० [सं० पुट] [स्त्री० अल्पा० पुड़िया] बड़ी पुड़िया या बंडल।
पुड़िया—संज्ञा स्त्री० [सं० पुटिका] १. मोड़ या लपेट कर संपुट के आकार का किया हुआ कागज जिसके भीतर कोई वस्तु रखी जाय। २. पुड़िया में लपेटी हुई दवा की एक खुराक या मात्रा। ३. आधार-स्थान। खान। भंडार। घर।
पुण्य—वि० [सं०] पवित्र। शुभ। अच्छा।
संज्ञा पुं० १. वह कर्म जिसका फल शुभ हो। धर्म का कार्य्य। २. शुभ कर्म का संचय।
पुण्यकाल—संज्ञा पुं० [सं०] १. दान-पुण्य करने का समय। २. पवित्र समय।
पुण्यक्षेत्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ जाने से पुण्य हो। तीर्थ।
पुण्यभूमि—संज्ञा स्त्री० [सं०] आर्यावर्त्त।
पुण्यवान्—वि० [सं० पुण्यवत्] [स्त्री० पुण्यवती] पुण्य करनेवाला। धर्मात्मा।
पुण्यश्लोक—वि० [सं०] [स्त्री० पुण्यश्लोका] पवित्र चरित्र या आचरणवाला।
पुण्यस्थान—संज्ञा पुं० [सं०] तीर्थ-स्थान।
पुण्याई—संज्ञा स्त्री० [हिं० पुण्य + आई (प्रत्य०)] पुण्य का फल या प्रभाव।
पुण्यात्मा—वि० [सं० पुण्यात्मन्] जिसकी प्रवृत्ति पुण्य की ओर हो। धर्मात्मा।
पुण्याहवाचन—संज्ञा पुं० [सं०] देवकार्य्य के अनुष्ठान के पहले मंगल के लिये 'पुण्याह' शब्द का तीन बार कथन।
पुतरी—संज्ञा स्त्री० दे० "पुतली"।
पुतला—संज्ञा पुं० [सं० पुत्रक] [स्त्री० पुतली]

लकड़ी, मिट्टी, कपड़े आदि का बना हुआ पुरुष का वह आकार या मूर्ति जो विनोद या क्रीड़ा (खेल) के लिये हो।

मुहा०—किसी का पुतला बाँधना = किसी की निंदा करते फिरना। बदनामी करना।

पुतली—संज्ञा स्त्री० [हिं० पुतला] १ लकड़ी, मिट्टी, धातु, कपड़े आदि की बनी हुई स्त्री की आकृति या मूर्ति जो विनोद या क्रीड़ा (खेल) के लिए हो। गुड़िया। २ आँख के बीच का काला भाग।

मुहा०—पुतली फिर जाना = आँखें पथरा जाना। नेत्र स्तब्ध होना। (मरण-चिह्न)

३ कपड़ा बुनने की कल या मशीन।

यौ०—पुतलीघर=कल-कारखाना, विशेषत कपड़ा बुनने का कारखाना।

पुताई—संज्ञा स्त्री० [हिं० पोतना + आई (प्रत्य०)] पोतने की क्रिया, भाव या मजदूरी

पुत्त*—संज्ञा पु० दे० "पुत्र"।

पुत्तरी*†—संज्ञा स्त्री० दे० "पुत्री"।

पुत्तलिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पुतली। २ गुड़िया।

पुत्र—संज्ञा पु०[सं०][स्त्री०पुत्री] लड़का। बेटा

पुत्रजीव—संज्ञा पु० [सं०] इगुदी से मिलता-जुलता एक बड़ा और सुंदर पेड़, जिसकी छाल और बीज दवा के काम आते हैं।

पुत्रवती—संज्ञा स्त्री० [सं०] जिसके पुत्र हो। पुत्रवाली। पूती। (स्त्री)

पुत्रवधू—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुत्र की स्त्री।

पुत्रिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लड़की। बेटी। २ पुत्र के स्थान पर मानी हुई कन्या। ३ गुड़िया। मूर्ति। पुतली। ४ आँख की पुतली। ५ स्त्री का चित्र।

पुत्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] कन्या। बेटी।

पुत्रेष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का यज्ञ जो पुत्र की इच्छा से किया जाता है।

पुदीना—संज्ञा पु० [फा० पोदीन] एक छोटा पौधा जिसकी पत्तियों में बहुत अच्छी गंध होती है। इससे लोग चटनी आदि बनाते हैं।

पुद्गल—संज्ञा पु० [सं०] १ स्पर्श, रस और गंधवाला पदार्थ। (जैन) २ शरीर। (बौद्ध) ३ परमाणु। ४. आत्मा।

पुन—अव्य० [सं० पुनर्] १ फिर। दोबारा। दूसरी बार। २ उपरांत। पीछे। अनंतर।

पुन*—संज्ञा पु० दे० "पुण्य"।

पुनरपि—क्रि० वि० [सं०] फिर भी।

पुनरबसु*‡—संज्ञा पु० दे० "पुनर्वसु"।

पुनरागमन—संज्ञा पु० [सं०] १ फिर से आना। दोबारा आना। २ फिर जन्म लेना।

पुनरावृत्ति—संज्ञा स्त्री०[सं०][वि० पुनरावृत्त] १ फिर से घूमना। फिर से घूमकर आना। २. किए हुए काम को फिर करना। दोहराना। ३ एक बार पढ़कर फिर पढ़ना।

पुनरुक्तवदाभास—संज्ञा पु० [सं०] वह शब्दालंकार जिसमें शब्द सुनने से पुनरुक्ति सी जान पड़े, परन्तु यथार्थ में न हो।

पुनरुक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० पुनरुक्त] एक बार कही हुई बात को फिर कहना। कहे हुए वचन को फिर कहना।

पुनर्जन्म—संज्ञा पु० [सं०] मरने के बाद फिर दूसरे शरीर में उत्पत्ति। एक शरीर छूटने पर दूसरा शरीर धारण।

पुनर्नवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक छोटा पौधा जो फूलों के रंग के भेद से तीन प्रकार का होता है—श्वेत, रक्त और नील। गदहपूरना।

पुनर्भू—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह विधवा स्त्री जिसका विवाह दूसरे पुरुष से हो।

पुनर्वसु—संज्ञा पु० [सं०] १ सत्ताईस नक्षत्रों में से सातवाँ नक्षत्र। २ विष्णु। ३ शिव। ४ वात्स्यायन मुनि। ५ एक लोक।

पुनि†*—क्रि० वि० [सं० पुन] फिर। फिर से। दोबारा।

पुनी*—संज्ञा पु० [सं० पुण्य] पुण्यात्मा। संज्ञा स्त्री० [सं० पूर्ण] पूर्णिमा। पूनो। क्रि० वि० [सं० पुन] पुन। फिर।

पुनीत—वि० [सं०] पवित्र। पाक।

पुन्न—संज्ञा पु० दे० "पुण्य"।

पुन्नाग—संज्ञा पु० [सं०] १ सुलताना चंपा। २ श्वेत कमल। ३ जायफल।

पुपली†–संज्ञा स्त्री० [हिं०पोपला] बाँस की पतली पोली नली।

पुमान्–संज्ञा पुं० [सं०] मर्द । नर।

पुरंदर–संज्ञा पुं० [सं०] १. पुर, नगर या घर को तोड़नेवाला। २. इंद्र। ३. विष्णु।

पुरः–अव्य० [सं० पुरस्] १. आगे। २. पहले।

पुरःसर–वि० [स०] १. अग्रगंता। अगुआ। २. संगी। साथी। ३. समन्वित। सहित।

पुर–सज्ञा पुं० [स०] [स्त्री०पुरी] १. नगर। शहर। क़सबा। २. आगार। घर। ३. कोठा। अटारी। ४. लोक। भुवन। ५. नक्षत्र। पुंज। राशि। ६. देह। शरीर। ७. दुर्ग। क़िला। गढ़।

वि० [अ०] पूर्ण। भरा हुआ।

संज्ञा पुं० [देश०] कूएँ से पानी निकालने का चमड़े का डोल। चरसा।

पुरइन*–सज्ञा स्त्री० [सं०पुटकिनी] १. कमल का पत्ता। २. कमल।

पुरखा–संज्ञा पुं० [स० पुरुष] [स्त्री० पुरखिन] १. पूर्वज। पूर्व-पुरुष। बाप, दादा, परदादा आदि।

मुहा०—पुरखे तर जाना = पूर्व-पुरुषों को (पुत्र आदि के कृत्य से) परलोक में उत्तम गति प्राप्त होना। बड़ा भारी पुण्य या फल होना।

२. घर का बड़ा-बूढ़ा।

पुरचक–संज्ञा स्त्री० [हिं० पुचकार] १ चुमकार। पुचकार। २. बढ़ावा। उत्साह-दान। ३. प्रेरणा। उसकावा। ४. समर्थन। हिमायत। तरफ़दारी।

पुरजा–सज्ञा पुं० [फ़ा०] १. टुकड़ा। खंड।

मुहा०—पुरजे पुरजे करना या उड़ाना = खंड खंड करना। टूक टूक करना।

२. कतरन। धज्जी। कटा टुकड़ा। कत्तल। ३. अवयव। अंग। अंश। भाग।

मुहा०—चलता पुरजा = चालाक आदमी।

पुरत्राण–संज्ञा पुं० [सं०] शहरपनाह। प्राकार। कोट। परकोटा।

पुरवला, पुरवुला†–वि० [स० पूर्व + ला (प्रत्य०)] [स्त्री० पुरवली, पुरवुली] १. पूर्व का पहले का। २. पूर्वजन्म का।

पुरबिया–वि० [हिं० पूरब] [स्त्री० पुरबिनी] पूर्वदेश में उत्पन्न या रहनेवाला। पूरब का।

पुरवट†–संज्ञा पुं० [सं० पूर] चमड़े का बहुत बड़ा डोल जिसे कूएँ में डालकर बैलों की सहायता से सिंचाई के लिए पानी खींचते हैं। चरसा। मोट।

पुरवना*†–क्रि० स० [हिं० पूरना] १. पूरना। भरना। पुजाना। २. पूरा करना।

मुहा०—साथ पुरवना = साथ देना।

क्रि० अ० १. पूरा होना। २. यथेष्ट होना। ३. उपयोग के योग्य होना।

पुरवा–संज्ञा पुं० [सं० पुर] छोटा गाँव। पुरा। खेड़ा।

सज्ञा पुं० [सं० पूर्व + वात] पूर्व दिशा से चलनेवाली वायु।

सज्ञा पुं० [सं० पुटक] मिट्टी का कुल्हड़।

पुरवाई, पुरवैया–सज्ञा स्त्री० [सं० पूर्व + वायु] वह वायु जो पूर्व से चलती है।

पुरश्चरण–सज्ञा पुं० [सं०] १. किसी कार्य की सिद्धि के लिए पहले से ही उपाय सोचना और अनुष्ठान करना। २. किसी मंत्र, स्तोत्र आदि को किसी अभीष्ट कार्य की सिद्धि के लिए नियमपूर्वक जपना। प्रयोग।

पुरषा–संज्ञा पुं० दे० "पुरखा"।

पुरसा–संज्ञा पुं० [सं० पुरुष] साढ़े चार या पाँच हाथ की एक नाप।

पुरस्कार–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० पुरस्कृत] १. आगे करने की क्रिया। २. आदर। पूजा। ३. प्रधानता। ४. स्वीकार। ५. पारितोषिक। उपहार। इनाम।

पुरस्कृत–वि० [सं०] १. आगे किया हुआ। २. आदृत। पूजित। ३. स्वीकृत। ४ जिसे इनाम या पुरस्कार मिला हो।

पुरहूत*–संज्ञा पुं० दे० "पुरुहूत"।

पुरा–अव्य० [स०] १. पुराने समय में। वि० २. प्राचीन। पुराना।

सज्ञा पुं० [सं० पुर] गाँव। बस्ती।

पुराकल्प–सज्ञा पुं० [सं०] १. पूर्वकल्प। पहले का कल्प। २. प्राचीन काल। ३.

एक प्रकार का अर्थवाद जिसमें प्राचीन काल का इतिहास कहकर किसी विधि के करने की ओर प्रवृत्त किया जाता है।

पुराकृत–वि० [सं०] १ पूर्वकाल में किया हुआ। २ पूर्व-जन्म में किया हुआ।

पुराण–वि० [सं०] पुरातन। प्राचीन। संज्ञा पुं० १ सृष्टि, मनुष्य, देवों, दानवों आदि के ऐसे वृत्तांत जो पुरुष-परंपरा से चले आते हों। २ हिंदुओं के धर्म-संबंधी आख्यान-ग्रंथ जिनमें सृष्टि, लय और प्राचीन ऋषियों आदि के वृत्तांत रहते हैं। ये अठारह हैं। ३ अठारह की संख्या। ४ शिव। ५ कार्षापण।

पुरातत्त्व–संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल संबंधी विद्या। प्रत्नशास्त्र।

पुरातन–वि० [सं०] प्राचीन। पुराना। संज्ञा पुं० विष्णु।

पुरान†–वि० दे० "पुराना"। संज्ञा पुं० दे० "पुराण"।

पुराना–वि० [सं० पुराण] [स्त्री० पुरानी] १ जिसे उत्पन्न हुए या बने बहुत काल हो गया हो। बहुत दिनों का। प्राचीन। पुरातन। २ जो बहुत दिनों का होने के कारण अच्छी दशा में न हो। जीर्ण। ३ जिसका अनुभव बहुत दिनों का हो। परिपक्व।

मुहा०—पुराना खुर्राट=१ बूढ़ा। २ बहुत दिनों का अनुभवी। पुराना घाव=गहरा घाव। ४ अगले समय का। प्राचीन। अतीत। ५ बहुत काल या समय का। ६ जिसका चलन अब न हो।

क्रि० स० [हिं० पूरना का प्रे०] १ पूरा कराना। पुजवाना। भराना। २ पालन कराना। अनुकूल कराना। ३ पूरा करना। भरना। ४ पालन करना। अनुसरण करना।

पुरारि–संज्ञा पुं० [सं०] शिव।

पुराल†*–संज्ञा पुं० दे० "पयाल"।

पुरावृत्त–संज्ञा पुं० [सं०] पुराना वृत्तांत। पुराना हाल। इतिहास।

पुरि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पुरी। २ नदी।

पुरिखा*–संज्ञा पुं० दे० "पुरखा"।

पुरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नगरी। शहर। २ जगन्नाथपुरी। पुरुषोत्तम धाम। संज्ञा पुं० दसनामी संन्यासियों में एक।

पुरीष–संज्ञा पुं० [सं०] विष्ठा। मल। गू।

पुरु–संज्ञा पुं० [सं०] १ देवलोक। २ दैत्य। ३ पराग। ४ शरीर। ५ एक प्राचीन राजा जो नहुष के पुत्र ययाति के पुत्र थे।

पुरुख*‡–संज्ञा पुं० दे० "पुरुष"।

पुरुष–संज्ञा पुं० [सं०] १ मनुष्य। आदमी। २ नर। ३ सांख्य में प्रकृति से भिन्न एक अपरिणामी, अकर्त्ता और असंग चेतन पदार्थ। आत्मा। ४ विष्णु। ५ सूर्य्य। ६ जीव। ७ शिव। ८ व्याकरण में सर्वनाम और तदनुसारिणी क्रिया के रूपों का वह भेद जिससे यह निश्चय होता है कि सर्वनाम या क्रियापद वाचक (कहनेवाले) के लिये प्रयुक्त हुआ है अथवा संबोध्य (जिससे कहा जाय) के लिये अथवा अन्य के लिये। जैसे—'मैं' उत्तम पुरुष हुआ, 'वह' प्रथम पुरुष और 'तुम' मध्यम पुरुष। ९ मनुष्य का शरीर या आत्मा। १० पूर्वज। ११ पति। स्वामी।

पुरुषत्व–संज्ञा पुं० [सं०] पुरुष होने का भाव। पुंसत्व। मरदानगी।

पुरुषपुर–संज्ञा पुं० [सं०] गांधार की प्राचीन राजधानी। आजकल का पेशावर।

पुरुषमेध–संज्ञा पुं० [सं०] एक वैदिक यज्ञ जिसमें नर बलि की जाती थी।

पुरुषसूक्त–संज्ञा पुं० [सं०] ऋग्वेद का एक प्रसिद्ध सूक्त जो 'सहस्रशीर्षा' से आरंभ होता है।

पुरुषानुक्रम–संज्ञा पुं० [सं०] पुरखों की चली आती हुई परंपरा।

पुरुषायित बंध–संज्ञा पुं० [सं०] काम शास्त्र के अनुसार विपरीत रति।

पुरुषारथ*–संज्ञा पुं० दे० "पुरुषार्थ"।

पुरुषार्थ–संज्ञा पुं० [सं०] १ पुरुष के उद्योग का विषय। पुरुष का लक्ष्य। २ पौरुष। उद्यम। पराक्रम। ३ शक्ति। सामर्थ्य। बल।

पुरुषार्थी–वि० [सं० पुरुषार्थिन्] १. पुरुषार्थ करनेवाला। २. उद्योगी। ३. परिश्रमी। ४. बली।

पुरुषोत्तम–संज्ञा पुं० [सं०] १. श्रेष्ठ पुरुष। २. विष्णु। ३. जगन्नाथ जिनका मंदिर उड़ीसा में है। ४. कृष्णचंद्र। ५. ईश्वर। नारायण। ६. मल-मास। अधिक मास।

पुरुहूत–संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

पुरूरवा–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्राचीन राजा जिसको ऋग्वेद में इला का पुत्र कहा गया है। इनकी पत्नी उर्वशी थी। २. विश्वेदेव।

पुरोडाश–संज्ञा पुं० [सं०] १. यव आदि के आटे की बनी हुई टिकिया जो यज्ञ के समय आहुति देने के लिये कपाल में पकाई जाती थी। २. हवि। ३. वह वस्तु जिसका यज्ञ में होम किया जाय। यज्ञभाग। ४. सोमरस।

पुरोधा–संज्ञा पुं० [सं० पुरोधस्] पुरोहित।

पुरोहित–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० पुरोहितानी] वह प्रधान याजक जो यजमान के यहाँ यज्ञादि गृहकर्म और संस्कार करे कराए। कर्मकांड करानेवाला।

पुरोहिताई–संज्ञा स्त्री० [सं० पुरोहित+आई (प्रत्य०)] पुरोहित का काम।

पुर्तगाल–संज्ञा पुं० [अं०] योरप के दक्षिण-पश्चिम कोने का एक छोटा प्रदेश।

पुर्तगाली–वि० [हिं० पुर्तगाल] १. पुर्तगाल संबंधी। २. पुर्तगाल का रहनेवाला।

पुर्तगीज–वि० [अं०] पुर्तगाली।

पुल–संज्ञा पुं० [फ़ा०] नदी, जलाशय आदि के आर-पार जाने का रास्ता जो नाव पाटकर या खंभों पर पटरियाँ आदि बिछाकर बनाया जाय। सेतु।

मुहा०—किसी बात का पुल बाँधना = झड़ी बाँधना। बहुत अधिकता कर देना। अतिशय करना। पुल टूटना = बहुतायत होना। अधिकता होना। अटाला या जमघट लगना।

पुलक–संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रेम, हर्ष आदि के उद्वेग से रोमकूपों (छिद्रों) का प्रफुल्ल होना। रोमांच। २. एक प्रकार का रत्न। याकूत। महताब।

पुलकना–क्रि० अ० [सं० पुलक+ना (प्रत्य०)] पुलकित होना। प्रेम, हर्ष आदि से प्रफुल्ल होना। गद्‌गद होना।

पुलकाई*–संज्ञा स्त्री० [हिं० पुलकना] पुलकित होने का भाव। गद्‌गद होना।

पुलकालि, पुलकावलि–संज्ञा स्त्री० [सं०] पुलकावलि। हर्ष से प्रफुल्ल रोमावली।

पुलकित–वि० [सं०] प्रेम या हर्ष के वेग से जिसके रोएँ उभर आए हों। गद्‌गद।

पुल्टा†–संज्ञा स्त्री० दे० "पलटा"।

पुलटिस–संज्ञा स्त्री० [अं० पोल्टिस] फोड़े, घाव आदि को पकाने के लिये उस पर चढ़ाया हुआ दवाओं का मोटा लेप।

पुलपुला–वि० [अनु०] जो भीतर इतना ढीला और मुलायम हो कि दबाने से धँसे।

पुलपुलाना–क्रि० स० [वि० पुलपुला] १. किसी मुलायम चीज को दबाना। २. मुँह में लेकर दबाना। चूसना।

पुलस्त्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक ऋषि जिनकी गिनती सप्तर्षियों और प्रजापतियों में है। ये ब्रह्मा के मानस-पुत्रों में थे। २. शिव।

पुलह–संज्ञा पुं० [सं०] १. सप्तर्षियों में एक ऋषि जो ब्रह्मा के मानस-पुत्र और प्रजापति थे। २. शिव।

पल्हना*–क्रि० अ० दे० "पलुहना"।

पुलाक–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक कदन्न। अँकरा। २. उबाला हुआ चावल। भात। ३. भात का माँड़। पीच। ४. पुलाव।

पुलाव–संज्ञा पुं० [सं० पुलाक। मि० फ़ा० पुलाव] एक व्यंजन जो मांस और चावल को एक साथ पकाने से बनता है। मांसोदन।

पुलिंद–संज्ञा पुं० [सं०] १. भारतवर्ष की एक प्राचीन असभ्य जाति। २. वह देश जहाँ पुलिंद जाति बसती थी।

पुलिंदा–संज्ञा पुं० [हिं० पूला] लपेटे हुए कपड़े, कागज आदि का छोटा मुट्ठा। गुड्डी। बंडल।

पुलिन–संज्ञा पुं० [सं०] १. पानी के भीतर से हाल की निकली हुई जमीन। चर। २.

तट। किनारा।

पुलिस—संज्ञा स्त्री० [अं०] प्रजा की जान और माल की हिफाजत के लिये मुकर्रर सिपाही या अफसर।

पुलिहोरा†—संज्ञा पु० [देश०] एक पकवान।

पुलोमजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] इंद्राणी। शची।

पुलोमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] भृगु की पत्नी का नाम।

पुवा†—संज्ञा पु० दे० "मालपुवा"।

पुश्त—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. पृष्ठ। पीठ। पीछा। २. वंश-परंपरा में कोई एक स्थान। पिता, पितामह, प्रपितामह आदि या पुत्र, पौत्र, प्रपौत्र आदि का पूर्वापर स्थान। पीढ़ी।
यौ०—पुश्त दर पुश्त=वंशपरंपरा में। पुश्तहा पुश्त=कई पीढ़ियों तक।

पुश्तक—संज्ञा स्त्री० [फा पुश्त] घोड़े, गधे आदि का पीछे के दोनों पैरों से लात मारना। दोलत्ती।

पुश्तनामा—संज्ञा पु० [फा०] वंशावली। पीढ़ीनामा। कुरसीनामा।

पुश्ता—संज्ञा पु० [फा० पुश्त] १. पानी की रोक या मजबूती के लिये किसी दीवार से लगातार कुछ ऊपर तक जमाया हुआ मिट्टी, ईंट, पत्थर आदि का ढालुवाँ टीला। २ बाँध। ऊँची मेंड़। ३. किताब की जिल्द के पीछे का चमड़ा। पुट्ठा।

पुश्ती—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ टेक। सहारा। आश्रय। थाम। २ सहायता। पृष्ठरक्षा। मदद। ३ पक्ष। तरफदारी। ४ बड़ा तकिया। गाव-तकिया।

पुश्तैनी—वि० [हिं० पुश्त] १ जो कई पुश्तों से चला आता हो। दादा, परदादा के समय का पुराना। २. आगे की पीढ़ियों तक चलनेवाला।

पुष्कर—संज्ञा पु० [सं०] १. जल। २. जलाशय। ताल। ३. कमल। ४. करछी या कटोरा। ५ हाथी की सूँड़ का अगला भाग। ६. आकाश। ७ बाण। तीर। ८ सर्प। ९. युद्ध। १०. भाग। अंश। ११. पुष्करमूल। १२. सूर्य्य। १३ एक दिग्गज। १४. सारस पक्षी। १५ विष्णु। १६. शिव। १७ बुद्ध। १८. पुराणों में कहे गए सात द्वीपों में से एक। १९. एक तीर्थ जो अजमेर के पास है।

पुष्करमूल—संज्ञा पु० [सं०] एक ओषधि का मूल या जड़ जो आजकल नहीं मिलती।

पुष्कल—संज्ञा पु० [सं०] १. चार ग्रास की भिक्षा। २. अनाज नापने का एक प्राचीन मान। ३ राम के भाई भरत के दो पुत्रों में से एक। ४. शिव। वि० १. बहुत। अधिक। ढेर सा। प्रचुर। २. भरा-पूरा। परिपूर्ण। ३. श्रेष्ठ। ४. उपस्थित। ५ पवित्र।

पुष्ट—वि० [सं०] १. पोषण किया हुआ। पाला हुआ। २. तैयार। मोटा-ताजा। बलिष्ठ। ३. मोटा-ताजा करनेवाला। बलवर्द्धक। ४ दृढ़। मजबूत। पक्का।

पुष्टई—संज्ञा स्त्री० [सं० पुष्ट+ई (प्रत्य०)] बलवीर्यवर्द्धक औषध। ताकत की दवा।

पुष्टता—संज्ञा स्त्री० [सं०] मजबूती। पोढ़ापन। दृढ़ता।

पुष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पोषण। २. मोटा-ताजापन। बलिष्ठता। ३. वृद्धि। संतति की बढ़ती। ४. दृढ़ता। मजबूती। ५ बात का समर्थन। पक्कापन।

पुष्टिकर, पुष्टिकारक—वि० [सं०] पुष्टि करनेवाला। बलवीर्यकारक।

पुष्टिमार्ग—संज्ञा पु० [सं०] वल्लभ संप्रदाय। वल्लभाचार्य्य के मतानुकूल वैष्णव भक्ति-मार्ग।

पुष्प—संज्ञा पु० [सं०] १. पौधों का फूल। २. ऋतुमती स्त्री का रज। ३. आँख का एक रोग। फूली। ४ कुबेर का विमान। पुष्पक। ५ मांस। (वाममार्गी)

पुष्पक—संज्ञा पु० [सं०] १ फूल। २. कुबेर का विमान जिसे उनसे रावण ने छीना था और राम ने रावण से छीनकर फिर कुबेर को दे दिया था। ३ आँख का एक रोग। फूला। फूली।

पुष्पदंत—संज्ञा पु० [सं०] १. वायुकोण का

दिग्गज। २. शिव का अनुचर एक गंधर्व।
पुष्पधन्वा–संज्ञा पुं० [सं० पुष्पधन्वन्] कामदेव
पुष्पध्वज–संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।
पुष्पपुर–संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन पाटलिपुत्र (पटना) का एक नाम।
पुष्पमित्र–संज्ञा पुं० दे० "पुष्यमित्र"।
पुष्परज–संज्ञा पुं० [सं० पुष्परजस्] पराग। फूलों की धूल।
पुष्पराग–संज्ञा पुं० [सं०] पुखराज।
पुष्परेणु–संज्ञा पुं० [सं०] पराग।
पुष्पवती–वि० स्त्री० [सं०] १. फूलवाली। फूली हुई। २. रजोवती। रजस्वला। ऋतुमती।
पुष्पवाटिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] फुलवारी। फूलों का बगीचा। उद्यान।
पुष्पबाण–संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।
पुष्पवृष्टि–संज्ञा स्त्री० [सं०] फूलों की वर्षा ऊपर से फूल गिरना या गिराना।
पुष्पशर–संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।
पुष्पांजलि–संज्ञा स्त्री० [सं०] फूलों से भरी अंजलि भरकर फूल जो किसी देवता या पूज्य पुरुष पर चढ़ाए जायँ।
पुष्पिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] अध्याय के अंत में वह वाक्य जिसमें कहे हुए प्रसंग की समाप्ति सूचित की जाती है और जो प्रायः "इति श्री" से आरंभ होता है।
पुष्पित–वि० [सं०] पुष्पों से युक्त। फूला हुआ।
पुष्पिताग्रा–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अर्द्ध-समवृत्त।
पुष्पोद्यान–संज्ञा पुं० [सं०] फुलवारी। पुष्पवाटिका।
पुष्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. पुष्टि। पोषण। २. मूल या सार वस्तु। ३. आठवाँ नक्षत्र जिसकी आकृति बाण की सी है। तिष्य। ४. पूस का महीना।
पुष्यमित्र–संज्ञा पुं० [सं०] मौर्यों के पीछे मगध में शुंग वंश का राज्य प्रतिष्ठित करनेवाला एक प्रतापी राजा।
पुसाना*†–क्रि० अ० [हिं० पोसना] १. पूरा पड़ना। बन पड़ना। २. अच्छा लगना। शोभा देना।
पुस्त*‡–संज्ञा स्त्री० दे० "पुश्त"।
पुस्तक–संज्ञा स्त्री० [सं०] पोथी। किताब।
पुस्तकाकार–वि० [सं०] पोथी के रूप का। पुस्तक के आकार का।
पुस्तकालय–संज्ञा पुं० [सं०] वह भवन या घर जिसमें पुस्तकों का संग्रह हो।
पुहकर*–संज्ञा पुं० दे० "पुष्कर"।
पुहुप, पुहुप–संज्ञा पुं० [सं० पुष्प] फूल।
पुहुमी*–संज्ञा स्त्री० [सं० भूमि] पृथ्वी।
पुहुरेनु*–संज्ञा पुं० [सं० पुष्परेणु] पराग।
पुहुवी*–संज्ञा स्त्री० [सं० पृथिवी] भूमि।
पूँछ–संज्ञा स्त्री० [सं० पुच्छ] १. जंतुओं, पक्षियों, कीड़ों आदि के शरीर में सबसे अंतिम या पिछला भाग। पुच्छ। लांगूल। दुम। २. किसी पदार्थ के पीछे का भाग। ३. पिछलग्गू। पुछल्ला।
पूँजी–संज्ञा स्त्री० [सं० पुंज] १. संचितधन। संपत्ति। जमा। २. वह धन जो किसी व्यापार में लगाया गया हो। ३. धन। रुपया-पैसा। ४. किसी विशेष विषय में किसी की योग्यता। ५. समूह। ढेर।
पूँजीदार–संज्ञा पुं० [हिं० पूँजी + फ़ा० दार] पूँजीपति।
पूँजीपति–संज्ञा पुं० [हिं० पूँजी + सं० पति] वह जिसके पास पूँजी हो या जो किसी काम में पूँजी लगाये। पूँजीदार।
पूँठ‡–संज्ञा स्त्री० [सं० पृष्ठ] पीठ।
पूआ–संज्ञा पुं० [सं० पूप, अपूप] एक प्रकार की पूरी जो आटे को गुड़ या चीनी के रस में घोलकर घी में छानी जाती है। मालपुआ।
पूखन*–संज्ञा पुं० दे० "पोषण"।
पूग–संज्ञा पुं० [सं०] १. सुपारी का पेड़ या फल। २. ढेरा। ३. छंद। ४. समूह। ढेर। ५. किसी विशेष कार्य्य के लिये बना हुआ संघ। कंपनी।
पूगना–क्रि० अ० [हिं० पूजना] पूरा होना। पूजना।
पूगी–संज्ञा स्त्री० [सं० पूगफल] सुपारी।

पूर्णता—संज्ञा स्त्री० [सं०] पूर्ण का भाव। पूर्ण होना।

पूर्णप्रज्ञ—वि० [सं०] पूर्ण ज्ञानी। संज्ञा पु० पूर्णप्रज्ञ दर्शन के कर्ता मध्वाचार्य।

पूर्णप्रज्ञ दर्शन—संज्ञा पु० [सं०] वेदांतसूत्र के आधार पर बना हुआ एक दर्शन।

पूर्णमासी—संज्ञा स्त्री० [सं०] चांद्र मास की अंतिम तिथि, जिसमें चंद्रमा अपनी सारी कलाओं से पूर्ण होता है। पूर्णिमा।

पूर्ण विराम—संज्ञा पु० [सं०] लिपि-प्रणाली में वह चिह्न जो वाक्य के पूर्ण हो जाने पर लगाया जाता है।

पूर्णायु—संज्ञा स्त्री० [सं० पूर्णायुस्] १ सौ वर्ष की आयु। २ पूरी आयु। वि० सौ वर्ष तक जीनेवाला।

पूर्णावतार—संज्ञा पु० [सं०] ईश्वर या किसी देवता का संपूर्ण कलाओं से युक्त अवतार।

पूर्णाहुति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह आहुति जिसे देकर होम समाप्त करते हैं। २ किसी कर्म की समाप्ति की क्रिया।

पूर्णिमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पूर्णमासी।

पूर्णोपमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] उपमा अलंकार का वह भेद जिसमें उसके चारों अंग—अर्थात् उपमेय, उपमान, वाचक और धर्म—प्रकट रूप से प्रस्तुत हों।

पूर्त—संज्ञा पु० [सं०] १ पालन। २ बावली, देवगृह, आराम (बगीचा), सड़क आदि बनाने का काम। वि० १ पूरित। २ ढका हुआ।

पूर्तविभाग—संज्ञा पु० [सं० पूर्त + विभाग] वह सरकारी महकमा जिसका काम सड़क, पुल आदि बनवाना है। तामीर का महकमा।

पूर्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ किसी आरंभ किए हुए कार्य की समाप्ति। २ पूर्णता। पूरापन। ३ किसी काम में जो वस्तु चाहिए, उसकी कमी को पूरा करने की क्रिया। ४ वापी, कूप या तड़ाग आदि का उत्सर्ग। ५ भरने का भाव। पूरण। ६ गुणा करने का भाव। गुणन।

पूर्व—संज्ञा पु० [सं०] वह दिशा जिस ओर सूर्य निकलता हुआ दिखलाई देता है। पश्चिम के सामने की दिशा। वि० [सं०] १. पहले का। २ आगे का। अगला। ३ पुराना। ४ पिछला। क्रि० वि० पहले। पेश्तर।

पूर्वक—क्रि० वि० [सं०] साथ। सहित।

पूर्वकालिक—वि० [सं०] १ जिसकी उत्पत्ति या जन्म पूर्वकाल में हुआ हो। २ पूर्वकालीन। पूर्वकाल-संबंधी।

पूर्वकालिक क्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह अपूर्ण क्रिया जिसका काल किसी दूसरी पूर्ण क्रिया के पहले पड़ता हो।

पूर्वज—संज्ञा पु० [सं०] १ बड़ा भाई। अग्रज। २ बाप, दादा, परदादा आदि पूर्व पुरुष। पुरखा।

पूर्वजन्म—संज्ञा पु० [सं० पूर्वजन्मन्] वर्तमान से पहले का जन्म। पिछला जन्म।

पूर्वपक्ष—संज्ञा पु० [सं०] १ शास्त्रीय विषय के संबंध में उठाई हुई बात, प्रश्न या शंका। २ कृष्ण पक्ष। ३ मुद्दई का दावा।

पूर्वपक्षी—संज्ञा पु० [सं० पूर्वपक्षिन्] १ वह जो पूर्वपक्ष उपस्थित करे। २ वह जो दावा दायर करे।

पूर्वफाल्गुनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] २७ नक्षत्रों में ग्यारहवाँ नक्षत्र।

पूर्वभाद्रपद—संज्ञा पु० [सं०] २७ नक्षत्रों में पचीसवाँ नक्षत्र।

पूर्वमीमांसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] हिंदुओं का जैमिनि-कृत एक दर्शन जिसमें कर्मकांड-संबंधी बातों का निर्णय किया गया है।

पूर्वरंग—संज्ञा पु० [सं०] वह संगीत या स्तुति आदि जो नाटक आरंभ होने से पहले विघ्नों की शांति या दर्शकों को सावधान करने के लिये होती है।

पूर्वराग—संज्ञा पु० [सं०] साहित्य में नायक अथवा नायिका की एक अवस्था जो दोनों का संयोग होने से पहले प्रेम के कारण होती है। प्रथमानुराग। पूर्वानुराग।

पूर्वरूप—संज्ञा पु० [सं०] १ वह आकार

जिसमें कोई वस्तु पहले रही हो। २. किसी वस्तु का वह चिह्न या लक्षण जो उस वस्तु के उपस्थित होने के पहले ही प्रकट हो। आगमसूचक लक्षण। आसार।
पूर्ववत्—क्रि० वि० [सं०] पहले की तरह। जैसा पहले था, वैसा ही।
संज्ञा पुं० किसी कार्य का वह अनुमान जो उसके कारण को देखकर उसके होने से पहले ही किया जाय।
पूर्ववर्ती—वि० [सं० पूर्ववर्तिन्] पहले का। जो पहले हो या रह चुका हो।
पूर्ववृत्त—संज्ञा पुं० [सं०] इतिहास।
पूर्वानुराग—संज्ञा पुं० [सं०] वह प्रेम जो किसी के गुण सुनकर अथवा उसका चित्र या रूप देखकर उत्पन्न होता है। पूर्वराग।
पूर्वापर—क्रि० वि० [सं०] आगे-पीछे।
वि० आगे का और पीछे का। अगला और पिछला।
पूर्वापर्य—संज्ञा पुं० [सं०] पूर्वापर का भाव।
पूर्वाफाल्गुनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] २७ नक्षत्रों में ग्यारहवाँ नक्षत्र।
पूर्वाभाद्रपद—संज्ञा पुं० [सं०] २७ नक्षत्रों में पचीसवाँ नक्षत्र।
पूर्वार्द्ध—संज्ञा पुं० [सं०] पहला आधा भाग। शुरू का आधा हिस्सा।
पूर्वाषाढ़ा—संज्ञा स्त्री० [सं०] २७ नक्षत्रों में बीसवाँ नक्षत्र जिसमें चार तारे हैं।
पूर्वाह्न—संज्ञा पुं० [सं०] सवेरे से दुपहर तक का समय।
पूर्वी—वि० [सं० पूर्वीय] पूर्व दिशा से संबंध रखनेवाला। पूरब का।
संज्ञा पुं० १. पूरब में होनेवाला एक प्रकार का चावल। २. एक प्रकार का दादरा जिसकी भाषा बिहारी होती है। ३. संपूर्ण जाति का एक राग।
पूर्वोक्त—वि० [सं०] पहले कहा हुआ। जिसका जिक्र पहले आ चुका हो।
पूला—संज्ञा पुं० [सं० पूलक] [स्त्री० अल्पा० पूली] मूँज आदि का बँधा हुआ मुट्ठा।
पूषण—संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य। २. पुराणानुसार बारह आदित्यों में से एक। ३. एक वैदिक देवता जो कहीं सूर्य के रूप में और कहीं पशुओं के पोषक के रूप में पाए जाते हैं।
पूषा—संज्ञा पुं० दे० "पूषण"।
पूस—संज्ञा पुं० [सं० पौष] वह चांद्र मास जो अगहन के बाद पड़ता है। पौष।
पृक्का—संज्ञा स्त्री० [सं०] असवरग।
पृच्छक—वि० [सं०] १. पूछनेवाला। प्रश्न करनेवाला। २. जिज्ञासु।
पृतना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सेना का एक विभाग जिसमें २४३ हाथी, २४३ रथ, ७२९ घुड़सवार और १२१५ पैदल सिपाही होते थे। २. सेना। फौज। ३. युद्ध।
पृथक्—वि० [सं०] [संज्ञा पृथक्ता] भिन्न। अलग। जुदा।
पृथक्करण—संज्ञा पुं० [सं०] अलग करने का काम।
पृथा—संज्ञा स्त्री० [सं०] कुंतिभोज की कन्या कुंती का दूसरा नाम।
पृथिवी—संज्ञा स्त्री० दे० "पृथ्वी"।
पृथु—वि० [सं०] १. चौड़ा। विस्तृत। २. बड़ा। महान्। ३. अगणित। असंख्य। ४. चतुर। प्रवीण।
संज्ञा पुं० [सं०] १. अग्नि। २. विष्णु। ३ शिव। ४. एक विश्वेदेव। ५. राजा वेणु के पुत्र का नाम।
वि० जिसकी कीर्ति बहुत अधिक हो।
पृथुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पृथु होने का भाव। २. विस्तार। फैलाव।
पृथ्वी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सौर-जगत् का वह ग्रह जिस पर हम सब लोग रहते हैं। अवनी। इला। धरा। २. पंच भूतों या तत्त्वों में से एक जिसका प्रधान गुण गंध है। ३. पृथ्वी का वह ऊपरी ठोस भाग जो मिट्टी और पत्थर आदि का है और जिस पर हम सब लोग चलते-फिरते हैं। भूमि। जमीन। धरती। (मुहा० के लिए दे० "जमीन")४. मिट्टी। ५. सत्रह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

पुगीफल—संज्ञा पुं० [सं०] सुपारी।
पूछ—संज्ञा स्त्री० [हिं० पूछना] १ पूछने का भाव। जिज्ञासा। २. खोज। चाह। जरूरत। तलब। ३ आदर। इज्जत।
पूछ-ताछ—संज्ञा स्त्री० [हिं० पूछना] किसी बात या पता लगाने के लिये बार बार पूछना। जिज्ञासा।
पूछना—क्रि० स० [सं० पृच्छण] १ कुछ जानने के लिये किसी से प्रश्न करना। दरियाफ्त करना। जिज्ञासा करना। २ खोज-खबर लेना। ३ किसी के प्रति सत्कार का भाव प्रकट करना।
मुहा०—बात न पूछना = १ तुच्छ जानकर ध्यान न देना। २ आदर न करना।
४ आदर करना। गुण या मूल्य मानना।
५ ध्यान देना। टोकना।
पूछ-पाछ—संज्ञा स्त्री० दे० "पूछ-ताछ"।
पूछरी*†—संज्ञा स्त्री० [हिं० पूंछ] १ दुम। पूंछ। २ पीछे का भाग।
पूछाताछी, पूछापाछी—संज्ञा स्त्री० दे० "पूछ-ताछ"।
पूजक—संज्ञा पुं० [सं०] पूजा करनेवाला।
पूजन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० पूज्क, पूजनीय, पूजितव्य, पूज्य] १ पूजा की क्रिया। देवता की सेवा और वंदना। अर्चना। आराधना। २ आदर। सम्मान।
पूजना—क्रि० स० [सं० पूजन] १ देवी देवता को प्रसन्न करने के लिये कोई अनुष्ठान या कर्म करना। अर्चना करना। आराधन करना। २ आदर सत्कार करना। ३ सिर झुकाना। सम्मान करना। ४ घूस देना। रिशवत देना।
क्रि० अ० [सं० पूर्यते] १ पूरा होना। भरना। २ गहराई का भरना या बरा बर हो जाना। ३ पटना। चुकता होना। ४ बीतना। समाप्त होना।
पूजनीय—वि० [सं०] १ पूजा के योग्य। अर्चनीय। २ आदरणीय। सम्मान योग्य।
पूजमान—वि० दे० "पूज्य"।
पूजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ईश्वर या देवी देवता के प्रति श्रद्धा और समर्पण का भाव प्रकट करनेवाला कार्य। अर्चना। आराधन। २ वह धार्मिक कृत्य जो जल, फूल आदि किसी देवी-देवता पर चढ़ाकर या उसके निमित्त रखकर किया जाता है। आराधन। अर्चा। ३ आदर सत्कार। खातिर। ४ किसी को प्रसन्न करने के लिये कुछ देना। ५ दंड। ताड़ना।
पूजित—वि० [सं०] [स्त्री० पूजिता] जिसकी पूजा की गई हो। आराधित। अर्चित।
पूज्य—वि० [सं०] [स्त्री० पूज्या] १ पूजा के योग्य। पूजनीय। २ आदर के योग्य।
पूज्यपाद—वि० [सं०] जिसके पैर पूजनीय हों। अत्यंत पूज्य। अत्यंत मान्य।
पूठि*‡—संज्ञा स्त्री० [सं० पृष्ठ] पीठ।
पूड़ा—संज्ञा पुं० दे० "पूआ"।
पूड़ी—संज्ञा स्त्री० दे० "पूरी"।
पूत—वि० [सं०] पवित्र। शुद्ध। शुचि।
संज्ञा पुं० [सं०] १ सत्य। २ शंख। ३ सफेद कुश। ४ पलास। ५ तिल वृक्ष।
संज्ञा पुं० [सं० पुत्र] बेटा। पुत्र।
पूतना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक दानवी जो कंस के भेजने से बालक श्रीकृष्ण को मारने के लिये गोकुल आई थी। से कृष्ण ने मार डाला था। २ एक प्रकार का बालग्रह या बालरोग।
पूतरा†—संज्ञा पुं० दे० "पुतला"।
संज्ञा पुं० [सं० पुत्र] बेटा। पुत्र।
पूति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पवित्रता। शुचिता। २ दुर्गंध। बदबू।
पूनी—संज्ञा स्त्री० [सं० पोन=गट्ठा] १ वह जड़ जो गाँठ के रूप में हो। २ ल्हसुन की गाँठ।
पून—संज्ञा पुं० दे० 'पुण्य'।
पूनना*—संज्ञा पुं० दे० "पूनो"।
पूनिउँ*—संज्ञा स्त्री० दे० 'पूनो'।
पूनी—संज्ञा स्त्री० [सं० पिंजिका] धुनी हुई रूई की वह बत्ती जो चरखे पर सूत कातने के लिये तैयार की जाती है।
पूनो†*—संज्ञा स्त्री० दे० 'पूर्णिमा'।

पूप–संज्ञा पुं० [सं०] पूआ। मालपूआ।
पूय–संज्ञा पुं० [सं०] पीप। मवाद।
पूर–वि० [सं० पूर्ण] १. दे० "पूर्ण"। २. वे मसाले या दूसरे पदार्थ जो किसी पकवान के भीतर भरे जाते हैं।
पूरक–वि० [सं०] पूरा करनेवाला।
संज्ञा पुं० [सं०] १. प्राणायाम विधि के तीन भागों में से पहला जिसमें श्वास को नाक से खींचते हुए भीतर की ओर ले जाते हैं। २. बिजौरा नीबू। ३. वे दस पिंड जो हिंदुओं में किसी के मरने पर उसके मरने की तिथि से दसवें दिन तक नित्य दिए जाते हैं। ४. वह अंक जिसके द्वारा गुणा किया जाता है। गुणक अंक।
पूरण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० पूरणीय] १. भरने की क्रिया। २. समाप्त या तमाम करना। ३. अकों का गुणा करना। अंक-गुणन। ४. पूरक पिंड। दशाह-पिंड। ५. मेह। वृष्टि। ६. समुद्र।
वि० [सं०] पूरक। पूरा करनेवाला।
पूरन*–वि० दे० "पूर्ण"।
पूरनपरब*†–संज्ञा पुं० दे० "पूर्णमासी"।
पूरनपूरी–संज्ञा स्त्री० [सं० पूर्ण+हिं० पूरी] एक प्रकार की मीठी कचौरी।
पूरनमासी–संज्ञा स्त्री० दे० "पूर्णमासी"।
पूरना†–क्रि० स० [सं० पूरण] १. कमी या त्रुटि को पूरा करना। पूर्त्ति करना। २ आच्छादित करना। ढाँकना। ३. (मनोरथ) सफल करना। सिद्ध करना। ४. मगल अवसरों पर आटे, अबीर आदि से देवताओं के पूजन आदि के लिये चौखूँटे क्षेत्र आदि बनाना। चौक बनाना। ५. बटना। जैसे, तागा पूरना। ६. फूंकना। बजाना।
क्रि० अ० पूर्ण होना। भर जाना।
पूरब–संज्ञा पुं० [सं० पूर्व] वह दिशा जिसमें सूर्य का उदय होता है। पूर्व। प्राची।
*†वि०, क्रि० वि० दे० "पूर्व"।
पूरबल*†–संज्ञा पुं० [हिं० पूरबला] १ पुराना जमाना। २. पूर्वजन्म।
पूरबला*–वि० पुं० [सं० पूर्व + हिं० ला (प्रत्य०)] [स्त्री० पूरबली] १. प्राचीन-काल का। पुराना। २. पहले जन्म का।
पूरबी–वि० दे० "पूर्वी"।
संज्ञा पुं० एक प्रकार का दादरा। (बिहार)
पूरा–वि० पुं० [सं० पूर्ण] [स्त्री० पूरी] १. जो खाली न हो। भरा। परिपूर्ण। २. समूचा। समग्र। समस्त। ३. जिसमें कोई कमी या कसर न हो। पूर्ण। कामिल। ४. भरपूर। यथेच्छ। काफ़ी। बहुत।
मुहा०–किसी बात का पूरा = १. जिसके पास कोई वस्तु यथेष्ट या प्रचुर हो। २. पक्का। दृढ़। मज़बूत। किसी का पूरा पड़ना = कार्य पूर्ण हो जाना। सामग्री न घटना।
५. संपन्न। पूर्ण संपादित। कृत।
मुहा०—(कोई काम) पूरा उतरना=अच्छी तरह होना। जैसा चाहिए, वैसा ही होना। बात पूरी उतरना=ठीक निकलना। सत्य ठहरना। दिन पूरे करना=समय बिताना। किसी प्रकार कालक्षेप करना। (दिन) पूरे होना=अंतिम समय निकट आना।
६. तुष्ट। पूर्ण।
पूरित–वि० [सं०] १. भरा हुआ। परिपूर्ण। २. तृप्त। ३. गुणा किया हुआ। गुणित।
पूरी–संज्ञा स्त्री० [सं० पूलिका] १. एक प्रसिद्ध पकवान जिसे रोटी की तरह बेलकर खौलते घी में छान लेते हैं। २. मृदंग, ढोल आदि के मुँह पर मढ़ा हुआ गोल चमड़ा।
पूर्ण–वि० [सं०] १. पूरा। भरा हुआ। परिपूर्ण। २. जिसे कोई इच्छा या अपेक्षा न हो। अभावशून्य। ३. जिसकी इच्छा पूर्ण हो गई हो। परितृप्त। ४. भरपूर। यथेष्ट। काफ़ी। ५. समूचा। अखंडित। सकल। ६. समस्त। सारा। ७. सिद्ध। सफल। ८. जो पूरा हो चुका हो। समाप्त।
पूर्णकाम–वि० [सं०] १. जिसकी सारी इच्छाएँ तृप्त हो चुकी हों। २. निष्काम। कामनाशून्य।
पूर्णचंद्र–संज्ञा पुं० [सं०] पूर्णिमा का चंद्रमा।
पूर्णतया, पूर्णतः–क्रि० वि० [सं०] पूरी तरह से। पूर्णरूप से।

पृथ्वीतल–संज्ञा पुं० [सं०] १. जमीन की सतह। वह धरातल जिस पर हम लोग चलते-फिरते हैं। २. संसार। दुनिया।
पृथ्वीनाथ–संज्ञा पुं० [सं०] राजा।
पृश्नि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सुतपा नामक राजा की रानी का नाम। २. चितले रंग की गाय। चितकबरी गाय। ३. पिठवन। ४. रश्मि। किरण।
पृष्ट–वि० [सं०] पूछा हुआ।
पृष्ठ–संज्ञा पुं० [सं०] १. पीठ। २. किसी वस्तु का ऊपरी तल। ३. पीछे का भाग। पीछा। ४ पुस्तक के पत्र के एक ओर का तल। ५. पुस्तक का पत्रा। पन्ना।
पृष्ठपोषक–संज्ञा पुं० [सं०] १. पीठ ठोंकनेवाला। २. सहायक। मददगार।
पृष्ठभाग–संज्ञा पुं० [सं०] १. पीठ। पुश्त। २. पिछला भाग।
पृष्ठवंश–संज्ञा पुं० [सं०] रीढ़।
पेंग–संज्ञा स्त्री० [हिं० पटंग] झूले या झूलते समय एक ओर से दूसरी ओर को जाना।
मुहा०—पेंग मारना = झूले पर झूलते समय उस पर इस प्रकार जोर पहुँचाना जिसमें उसका वेग बढ़ जाय और दोनों ओर वह दूर तक झूले।
पेंडुकी–संज्ञा स्त्री० [सं० पण्डुक] १. पंडुक पक्षी। फाख्ता। २. सुनारों की फुँकनी।
संज्ञा स्त्री० दे० "गुझिया"।
पेंदा–संज्ञा पुं० [सं० पिंड] [स्त्री० अल्पा० पेंदी] किसी वस्तु का निचला भाग जिसके आधार पर वह ठहरती हो। तला।
पेउसी†–संज्ञा स्त्री० [सं० पीयूष] १. दे० "पेवस"। २. एक प्रकार का पकवान। इंदर।
पेखक*–संज्ञा पुं० [सं० प्रेक्षक] देखनेवाला।
पेखना*†–क्रि० स० [सं० प्रेक्षण] देखना।
पेच–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. घुमाव। फिराव। चक्कर। २. उलझन। झंझट। बखेड़ा। ३. चालाकी। चालबाजी। धूर्तता। ४ पगड़ी की लपेट। ५ कल। यंत्र। मशीन। ६. मशीन का पुरजा।
मुहा०—पेच घुमाना = ऐसी युक्ति करना जिसमें किसी के विचार बदल जायँ।
७. वह कील या काँटा जिसके नुकीले आधे भाग पर चक्करदार गड़ारियाँ बनी होती हैं और जो घुमाकर जड़ा जाता है। स्क्रू। ८. पतंग लड़ने के समय दो या अधिक पतंगों की डोरों का एक दूसरी में फँस जाना। ९. कुश्ती में दूसरे को पछाड़ने की युक्ति। १० युक्ति। तरकीब। ११. एक प्रकार का आभूषण जो टोपी या पगड़ी में सामने की ओर खोसा या लगाया जाता है। सिर-पेच। १२. एक प्रकार का आभूषण जो कानों में पहना जाता है। गोशपेच।
पेचक–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. बटे हुए तागे की गोली या गुच्छी।
संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० पेचिका] १. उल्लू पक्षी। २. जूँ। ३. बादल। ४. पलंग।
पेचकस–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. बढ़इयों और लोहारों आदि का वह औजार जिससे वे लोग पेंच जड़ते अथवा निकालते हैं। २. लोहे का बना हुआ वह घुमावदार पेंच जिसकी सहायता से बोतल का काग निकाला जाता है।
पेच-ताब–संज्ञा पुं० [फ़ा] वह गुस्सा जो मन ही मन में रहे और निकाला न जा सके।
पेचदार–वि० [फ़ा०] १. जिसमें कोई पेच या कल हो। २. दे० "पेचीला"।
पेचवान–संज्ञा पुं० [फ़ा] १. बड़ी सटक जो फर्शी या गुड़गुड़ी में लगाई जाती है। २ बड़ा हुक्का।
पेचा†–संज्ञा पुं० [सं० पेचक] [स्त्री० पेची] उल्लू पक्षी।
पेचिश–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] पेट की वह पीड़ा जो आँव होने के कारण होती है। मरोड़।
पेचीदा–वि० [फ़ा०] [संज्ञा पेचीदगी] १ जिसमें पेच हो। पेचदार। २. जो टेढ़ा-मेढ़ा और कठिन हो। मुश्किल।
पेचीला–वि० दे० "पेचीदा"।
पेज–संज्ञा स्त्री० [सं० पेय] रबड़ी। बसौंधी।
पेट–संज्ञा पुं० [सं० पेट = थैला] १. शरीर में थैले के आकार का वह भाग जिसमें पहुँच

कर भोजन पचता है। उदर।
मुहा०—पेट काटना=जान-बूझकर कम खाना जिसमें कुछ बचत हो जाय। पेट का धंधा= रोजी-रोजगार ढूँढ़ने का प्रबंध। जीविका का उपाय। पेट का पानी न पचना=रहा न जाना। रह न सकना। पेट का हलका = क्षुद्र प्रकृति का। ओछे स्वभाव का। पेट की आग = भूख। पेट की बात=गुप्त भेद। भेद की बात। † पेट खलाना = १. अत्यंत दीनता दिख-लाना। २. भूखे होने का संकेत करना। पेट चलना = दस्त होना। बार बार पाखाना होना। पेट जलना = अत्यंत भूख लगना। † पेट देना = अपने मन की बात बतलाना। पेट पालना = जीवन निर्वाह करना। पेट फूलना = १. किसी बात के लिए बहुत अधिक उत्सुक होना। २. बहुत अधिक हँसने के कारण पेट में हवा भर जाना। ३. पेट में वायु का प्रकोप होना। पेट मारकर मर जाना = आत्मघात करना। पेट में दाढ़ी होना = बच-पन ही में बहुत चतुर होना। पेट में डालना = खा जाना। पेट में पाँव होना = अत्यंत छली या कपटी होना। चालबाज होना। कोई वस्तु) पेट में होना = गुप्त रूप से पास में होना। पेट से पाँव निकालना = १. कुमार्ग में लगना। २. बहुत इतराना।
२. गर्भ। हमल।
मुहा०—पेट गिरना = गर्भपात होना। पेट रहना=गर्भ रहना। हमल रहना। पेटवाली= गर्भवती। पेट से होना = गर्भवती होना।
३. पेट के अन्दर की वह थैली जिसमें खाद्य पदार्थ रहता और पचता है। पचौनी। ओझर। ४. अंतःकरण। मन। दिल।
मुहा०—पेट में घुसना या पैठना = रहस्य जानने के लिए मेल बढ़ाना। पेट में होना = मन में होना। ज्ञान में होना।
५. पोली वस्तु के बीच का या भीतरी भाग। ६. गुंजाइश। समाई।
पेटक–संज्ञा पुं० [सं०] १. पिटारा। मंजूषा। २. समूह। ढेर।
पेटकैया‡–क्रि० वि० [हिं० पेट+कैया(प्रत्य०)] पेट के बल।
पेटा–संज्ञा पुं० [हिं० पेट] १. किसी पदार्थ का मध्य भाग। बीच का हिस्सा। २. तफसील। ब्योरा। पूरा विवरण। ३. सीमा। हद। ४. घेरा। वृत्त।
पेटागि*–संज्ञा स्त्री० [सं० पेट+अग्नि] भूख।
पेटारा–संज्ञा पुं० दे० "पिटारा"।
पेटार्थी, पेटार्थू–वि० [सं० पेट + अर्थिन्] जो पेट भरने को ही सब कुछ समझता हो। भुक्खड़। पेटू।
पेटिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. संदूक। पेटी। २. छोटी पिटारी।
पेटी–संज्ञा स्त्री० [सं० पेटिका] १. संदूकची। छोटा संदूक। २. छाती और पेड़ू के बीच का स्थान।
मुहा०—पेटी पड़ना = तोंद निकलना।
३. कमर में बाँधने का चौड़ा तसमा। कमरबंद। ४. चपरास। ५. हज्जामों की किसबत जिसमें वे कैंची, छूरा आदि रखते हैं।
पेटू–वि० [हिं० पेट] जो बहुत अधिक खाता हो। भुक्खड़।
पेठा–संज्ञा पुं० [देश०] सफ़ेद कुम्हड़ा।
पेड़–संज्ञा पुं० [सं० पिंड] वृक्ष। दरख्त।
पेड़ा–संज्ञा पुं० [सं० पिंड] १. खोवे की एक प्रसिद्ध गोल और चिपटी मिठाई। २. गुँधे हुए आटे की लोई।
पेड़ी–संज्ञा स्त्री० [सं० पिंड] १. पेड़ का तना। धड़। कांड। २. मनुष्य का धड़। ३. पान का पुराना पौधा। ४. पुराने पौधे के पान। ५. वह कर जो प्रति वृक्ष पर लगाया जाय।
पेड़ू–संज्ञा पुं० [हिं० पेट] १. नाभि और मूत्रेंद्रिय के बीच का स्थान। उपस्थ। २. गर्भाशय।
पेन्हाना†–क्रि० स० दे० "पहनाना"।
क्रि० अ० [सं० पय:स्रवन] दुहते समय गाय, भैंस आदि के थन में दूध उतरना।
पेम*†–संज्ञा पुं० दे० "प्रेम"।
पेय–वि० [सं०] पीने योग्य।

संज्ञा पुं० [सं०] १. पीने की वस्तु। २ जल। पानी। ३ दूध।

पेरना–क्रि० स० [सं० पीडन] १. किसी वस्तु को इस प्रकार दबाना कि उसका रस निकल आवे। २ कष्ट देना। बहुत सताना। ३ किसी काम में बहुत देर लगाना।

क्रि० स० [सं० प्रेरण] १. प्रेरणा करना। चलाना। २. भेजना। पठाना।

पेलना–क्रि० स० [सं० पीडन] १ दबाकर भीतर घुसाना। धँसाना। दबाना। २. ढकेलना। धक्का देना। ३ टाल देना। अवज्ञा करना। ४ त्यागना। हटाना। फेंकना। ५ जबरदस्ती करना। बल-प्रयोग करना। ६ प्रविष्ट करना। घुसेड़ना। ७ दे० "पेरना"।

क्रि० स० [सं० प्रेरण] आक्रमण करने के लिये सामने छोडना। आगे बढाना।

पेल–सज्ञा पु० [हिं० पेलना] १ तकरार। झगडा। २ अपराध। कसूर। ३ आक्रमण। धावा। चढाई। ४ पेलने की क्रिया या भाव।

पेवँ–सज्ञा पु० [सं० प्रेम] प्रेम। स्नेह।

पेवस–सज्ञा पु० [सं० पीयूष] हाल की ब्याई गाय या भैंस का दूध जो रग में कुछ पीला और हानिकारक होता है।

पेश–क्रि० वि० [फा०] सामने। आगे। मुहा०–पेश आना=१ बर्ताव करना। व्यवहार करना। २ घटित होना। सामने आना। पेश करना=१ सामने रखना। दिखलाना। २ भेंट करना। नजर करना। पेश जाना या चलना =वश चलना। जोर चलना।

पेशकार–सज्ञा पु० [फा०] हाकिम के सामने कागज-पत्र पेश करनेवाला कर्म्मचारी।

पेशखेमा–सज्ञा पु० [फा०] १ फौज या वह सामान जो पहले से ही आगे भेज दिया जाय। २ फौज का अगला हिस्सा। हरावल। ३ किसी बात या घटना का पूर्व लक्षण।

पेशगी–सज्ञा स्त्री० [फा०] वह धन जो किसी को कोई काम करने के लिये पहले ही दे दिया जाय। अगौड़ी। अगाऊ।

पेशतर–क्रि० वि० [फा०] पहले। पूर्व।

पेशबदी–सज्ञा स्त्री० [फा०] पहले से किया हुआ प्रबंध या बचाव की युक्ति।

पेशराज–सज्ञा पु० [फा० पेश+हिं० राज=मकान बनानेवाला] पत्थर ढोनेवाला मजदूर।

पेशवा–सज्ञा पु० [फ़ा०] १ नेता। सरदार। अग्रगण्य। २ महाराष्ट्र साम्राज्य के प्रधान मत्रियों की उपाधि।

पेशवाई–सज्ञा स्त्री० [फा०] किसी माननीय पुरुष के आने पर कुछ दूर आगे चलकर उसका स्वागत करना। अगवानी।

संज्ञा स्त्री० [हिं० पेशवा+ई (प्रत्य०)] १ पेशवाओं की शासन-काल। २ पेशवा का पद या कार्य्य।

पेशवाज–सज्ञा स्त्री० [फा०] वेश्याओं या नर्तकियों का वह घाघरा जो वे नाचते समय पहनती हैं।

पेशा–सज्ञा पु० [फा०] वह कार्य्य जो जीविका उपार्जित करने के लिए किया जाय। कार्य्य। उद्यम। व्यवसाय।

पेशानी–सज्ञा स्त्री० [फा०] १ ललाट। माथा। २ किस्मत। भाग्य।

पेशाब–सज्ञा पु० [फा०] मूत। मूत्र। मुहा०–पेशाब करना=१ मूतना। २ अत्यत तुच्छ समझना। (किसी के) पेशाब से चिराग जलना =अत्यत प्रतापी होना।

पेशाबखाना–सज्ञा पु० [फा०] वह स्थान जहाँ लोग मूत्र त्याग करते हों।

पेशावर–सज्ञा पु० [फा०] किसी प्रकार का पेशा करनेवाला। व्यवसायी।

पेशी–सज्ञा स्त्री० [फा०] १. हाकिम के सामने किसी मुकदमे के पेश होने की क्रिया। मुकदमे की सुनवाई। २ सामने होने की क्रिया या भाव।

सज्ञा स्त्री० [सं०] १ वज्र। २ तलवार की म्यान। ३ चमडे की वह थैली जिसमें गर्भ रहता है। ४ शरीर के भीतर मास

की गुत्थी या गाँठ।

पेश्तर—क्रि० वि० [फ़ा०] पहले। पूर्व।

पेषण—संज्ञा पुं० [सं०] पीसना।

पेषना—क्रि० स० दे० "पेखना"।

पेस*—क्रि० वि० दे० "पेश"।

पेहँटा†—संज्ञा पुं० [देश०] कचरी नाम की लता का फल। कचरी।

पैंजनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पायँ+अनु० झन, झन] झन झन बजनेवाला एक गहना जो पैर में पहना जाता है।

पैंठ—संज्ञा स्त्री० [सं० पण्यस्थान] १. हाट। बाजार। २. दुकान। ३. वह दिन जिस दिन हाट लगती हो।

पैंठौर†—संज्ञा पुं० [हिं० पैंठ+ठौर] दुकान।

पैंड़—संज्ञा पुं० [हिं० पायँ+ड़ (प्रत्य०)] १. डग। क़दम। २. पथ। मार्ग। रास्ता।

पैंड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० पैंड] १. रास्ता।

मुहा०—पैंड़े परना=पीछे पड़ना। बार बार तंग करना।

२. घुड़साल। अस्तबल। ३. प्रणाली।

पैंत*†—संज्ञा स्त्री० [सं० पणकृत] दाँव। बाज़ी।

पैंती—संज्ञा स्त्री० [सं० पवित्र] कुश का छल्ला जो श्राद्धादि कर्म करते समय उँगली में पहनते हैं। पवित्री।

पैं*†—अव्य० [सं० पर] १. पर। परंतु। लेकिन। २. निश्चय। अवश्य। जरूर। ३. पीछे। अनंतर। बाद।

यौ०—जो पै=यदि। अगर। तो पै=तो। फिर। उस अवस्था में।

[हिं० पहँ] १. पास। समीप। निकट। २. प्रति। ओर। तरफ़।

प्रत्य० [सं० उपरि] १. अधिकरण-सूचक एक विभक्ति। पर। ऊपर। २. करण-सूचक विभक्ति। से। द्वारा।

संज्ञा स्त्री० [सं० आपत्ति] दोष। ऐब। नुक़्स। संज्ञा पुं० दे० "पय"।

पैकरमा*‡—संज्ञा स्त्री० दे० "परिक्रमा"।

पैकार—संज्ञा पुं० [फ़ा०] छोटा व्यापारी। फेरीवाला। फुटकर सौदा बेचनेवाला।

पैख़ाना—संज्ञा पुं० दे० "पाख़ाना"।

पैग़ंबर—संज्ञा पुं० [फ़ा०] मनुष्यों के पास ईश्वर का सँदेसा लेकर आनेवाला। जैसे, ईसा, मुहम्मद।

पैज*—संज्ञा स्त्री० [सं० प्रतिज्ञा] १. प्रतिज्ञा। प्रण। टेक। हठ। २. प्रतिद्वंद्विता। होड़।

पैजामा—संज्ञा पुं० दे० "पायजामा"।

पैज़ार—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] जूता। जोड़ा।

यौ०—जूती पैज़ार=१. जूते से मार-पीट। जूता चलना। २. लड़ाई-झगड़ा।

पैठ—संज्ञा स्त्री० [सं० प्रविष्ट] १. घुसने का भाव। प्रवेश। दख़ल। २. गति। पहुँच।

पैठना—क्रि० अ० [हिं० पैठ+ना (प्रत्य०)] घुसना। प्रविष्ट होना। प्रवेश करना।

पैठाना—क्रि० स० [हिं० पैठना] प्रवेश कराना। घुसाना। भीतर ले जाना।

पैठार†*—संज्ञा पुं० [हिं० पैठ+आर (प्रत्य०)] १. पैठ। प्रवेश। २. फाटक। दरवाज़ा।

पैठारी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० पैठार] १. पैठ। प्रवेश। २. गति। पहुँच।

पैड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पैर] सीढ़ी।

पैतरा—संज्ञा पुं० [सं० पदांतर] तलवार चलाने या कुश्ती लड़ने में घूम-फिरकर पैर रखने की मुद्रा। वार करने का ठाट।

पैतृक—वि० [सं०] पितृ-संबंधी। पुश्तैनी। पुरखों का।

पैदल—वि० [सं० पादतल] जो पाँवों से चले। पैरों से चलनेवाला।

क्रि० वि० पावँ पावँ। पैरों से।

संज्ञा पुं० १. पावँ पावँ चलना। पाद-चारण। २. पैदल सिपाही। पदाति।

पैदा—वि० [फ़ा०] १. उत्पन्न। जन्मा हुआ। प्रसूत। २. प्रकट। आविर्भूत। घटित। ३. प्राप्त। अर्जित। कमाया हुआ।

‡संज्ञा स्त्री० आय। आमदनी। लाभ।

पैदाइश—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] उत्पत्ति। जन्म।

पैदाइशी—वि० [फ़ा०] १. जन्म का। जब से जन्म हुआ, तभी का। २. स्वाभाविक। प्राकृतिक।

पैदावार—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] अन्न आदि जो खेत में बोने से प्राप्त हो। उपज। फ़सल।

पैना–वि० [सं० पैण] [स्त्री० पैनी] जिसकी धार बहुत पतली या काटनेवाली हो। धारदार। तेज।
संज्ञा पु० १. हलवाहों की बैल हाँकने की छोटी छड़ी। २. लोहे का नुकीला छड़।
पैमाइश–संज्ञा स्त्री० [फा०] मापने की क्रिया या भाव। माप।
पैमाना–संज्ञा पु० [फा०] मापने का औजार या साधन। मानदंड।
पैमाल*‡–वि० दे० "पामाल"।
पैयाँ‡–संज्ञा स्त्री० [हि० पायँ] पावँ। पैर।
पैया–संज्ञा पु०=[सं० पाय्य=निकृष्ट] १ बिना सत का अनाज का दाना। खोखला दाना। २ तुच्छ। दीन-हीन।
पैर–संज्ञा पु० [सं० पद+दंड] १ वह अंग जिससे प्राणी चलते-फिरते हैं। २. धूल आदि पर पड़ा हुआ पैर का चिह्न।
पैर-गाड़ी–संज्ञा स्त्री० [हि० पैर+गाड़ी] वह हलकी गाड़ी जो बैठे बैठे पैर दबाने से चलती है। जैसे, बाइसिकिल, ट्राइसिकिल।
पैरना–क्रि० अ० [सं० प्लवन] तैरना।
पैरवी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. अनुगमन। अनुसरण। २ आज्ञापालन। ३ पक्ष का मंडन। पक्ष लेना। ४ कोशिश। दौड़ धूप।
पैरवीकार–संज्ञा पु० [फा०] पैरवी करनेवाला।
पैरा–संज्ञा पु० [हि० पैर] १ पड़ हुए चरण। पौरा। २. किसी ऊँची जगह चढ़ने के लिए लकड़ियों के बल्ले आदि रखकर बनाया हुआ रास्ता।
पैराई–संज्ञा स्त्री० [हि० पैरना] पैरने या तैरने की क्रिया या भाव।
पैराक–संज्ञा पु० [हि० पैरना] तैरनेवाला। तैराक।
पैराव–संज्ञा पु० [हि० पैरना] इतना पानी जिसे केवल तैरकर ही पार कर सकें। डुबाव।
पैरेखना*‡–क्रि० स० दे० "परेखना"।
पैरोकार–संज्ञा पु० दे० "पैरवीकार"।
पैला†–संज्ञा पु० [सं० पातिली] [स्त्री० अल्पा० पैली] मिट्टी का वह बरतन जिससे दूध, दही ढाँकते हैं। बड़ी पैली।
पैवंद–संज्ञा पु० [फा०] १ कपड़े आदि का छेद बंद करने का छोटा टुकड़ा। थिगली। जोड़। २ किसी पेड़ की टहनी काटकर उसी जाति के दूसरे पेड़ की टहनी में जोड़कर बाँधना जिससे फल बढ़ जायँ या उनमें नया स्वाद आ जाय।
पैवंदी–वि० [फा०] पैवंद लगाकर पैदा किया हुआ। (फल आदि)
पैवस्त–वि० [फा० पैवस्त] (द्रव पदार्थ) जो भीतर घुसकर सब भागों में फैल गया हो। सोखा हुआ। समाया हुआ।
पैशाच–वि० [सं०] १ पिशाच-संबंधी। २ पिशाच देश का।
पैशाच विवाह–संज्ञा पु० [सं०] आठ प्रकार के विवाहों में से एक जो सोई हुई कन्या का हरण करके या मदोन्मत्त कन्या को फुसलाकर छल से किया गया हो।
पैशाचिक–वि० [सं०] पिशाचों का। राक्षसी। घोर और बीभत्स।
पैशाची–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की प्राकृत भाषा।
पैशुन्य–संज्ञा पु० [सं०] चुगलखोरी।
पैसना†*–क्रि० अ० [सं० प्रविश] घुसना। पठना। प्रवेश करना।
पैसरा–संज्ञा पु० [सं० परिश्रम] १ झंझट। बखेड़ा। २ प्रयत्न। व्यापार।
पैसा–संज्ञा पु० [सं० पाद या पणांश] १ ताँबे का सबसे अधिक चलता सिक्का जो आने का चौथा भाग होता है। २ धन।
पैसार†–संज्ञा पु० [हि० पैसना] पैठ। प्रवेश।
पैहारी–वि० [सं० पयस्+आहारी] केवल दूध पीकर रहनेवाला (साधु)।
पोंका–संज्ञा पु० [देश०] वह फतिंगा जो पौधों पर उड़ता फिरता है। बोंका।
पोंगा–संज्ञा पु० [सं० पुटक] [स्त्री० अल्पा० पोंगी] १ बाँस या धातु की नली। चोंगा। २ पांच की नली।

वि० १. पोला। २. मूर्ख।

पोंछ†–संज्ञा स्त्री० दे० "पूँछ"।

पोंछन–संज्ञा स्त्री० [हिं० पोंछना] लगी हुई वस्तु का वह बचा अंश जो पोंछने से निकले।

पोंछना–क्रि० स० [सं० प्रोञ्छन] १. लगी हुई वस्तु को जोर से हाथ आदि फेरकर उठाना या हटाना। काछना। २. रगड़कर साफ़ करना।

संज्ञा पुं० [स्त्री० पोंछनी] पोंछने का कपड़ा।

पोआ–संज्ञा पुं० [सं० पुत्रक] साँप का बच्चा।

पोआना–क्रि० स० [हिं० पोना का प्रे०] पोने का काम दूसरे से कराना।

पोइया–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० पोयः] घोड़े की दो दो पैर फेंकते हुए दौड़। सरपट चाल।

पोइस–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० पोय., हिं० पोइया] सरपट दौड़।

अव्य० [फ़ा० पोश] देखो। हटो। बचो।

पोई–संज्ञा स्त्री० [सं० पोदकी] एक बरसाती लता जिसकी पत्तियों का साग और पकौड़ियाँ बनती हैं।

पोख–संज्ञा पुं० दे० "पोस"।

पोखना*–क्रि० स० दे० "पोसना"।

पोखरा–संज्ञा पुं० [सं० पुष्कर] [स्त्री० अल्पा० पोखरी] वह जलाशय जो खोदकर बनाया गया हो। तालाब।

पोगंड–संज्ञा पुं० [सं०] १. पाँच से दस वर्ष तक की अवस्था का बालक। २. वह जिसका कोई अंग छोटा, बड़ा या अधिक हो।

पोच–वि० [फ़ा० पूच] १. तुच्छ। क्षुद्र। निकृष्ट। २. अशक्त। क्षीण। हीन।

पोची*–संज्ञा स्त्री० [हिं० पोच] निचाई। हेठापन। बुराई।

पोट–संज्ञा स्त्री० [सं० पोट] १. गठरी। पोटली। बकुचा। २. ढेर। अटाला।

पोटना*–क्रि० स० [हिं० पुट] १. समेटना। बटोरना। २. फुसलाना। बात में लाना।

पोटरी*†–संज्ञा स्त्री० दे० "पोटली"।

पोटली–संज्ञा स्त्री० [सं० पोटलिका] छोटी गठरी। छोटा बकुचा।

पोटा–संज्ञा पुं० [सं० पुट=थैली] [स्त्री० अल्पा० पोटी] १. पेट की थैली। उदराशय। २. साहस। सामर्थ्य। पित्ता। ३. समाई। औकात। बिसात। ४. आँख की पलक। ५. उँगली का छोर।

संज्ञा पुं० [सं० पोत] चिड़िया का बच्चा।

पोढ़ा–वि० [सं० प्रौढ़] [स्त्री० पोढ़ी] १. पुष्ट। दृढ़। मजबूत। २. कड़ा। कठिन। कठोर।

पोढ़ाना†–क्रि० अ० [हिं० पोढ़] १. दृढ़ होना। मजबूत होना। २. पक्का पड़ना।

क्रि० स० दृढ़ करना। पक्का करना।

पोत–संज्ञा पुं० [सं०] १. पशु, पक्षी आदि का छोटा बच्चा। २. छोटा पौधा। ३. गर्भस्थ पिंड जिस पर झिल्ली न चढ़ी हो। ४. कपड़े की बुनावट। ५. नौका। नाव।

संज्ञा स्त्री० [सं० प्रोता] १. माला या गुरिया का छोटा दाना। २. काँच की गुरिया।

संज्ञा पुं० [सं० प्रवृत्ति] १. ढंग। ढब। प्रवृत्ति। २. बारी। दाँव। पारी।

संज्ञा पुं० [फ़ा० फ़ोता] जमीन का लगान।

पोतदार–संज्ञा पुं० [हिं० पोत+दार] १. खजानची। २. पारखी। खजाने में रुपया परखनेवाला।

पोतना–क्रि० स० [सं० पोतन=पवित्र] १. गीली तह चढ़ाना। चुपड़ना। २. किसी पदार्थ को किसी वस्तु पर ऐसा लगाना कि वह उस पर जम जाय। ३. मिट्टी, गोबर, चूने आदि से लीपना।

संज्ञा पुं० वह कपड़ा जिससे कोई चीज पोती जाय। पोता।

पोतला–संज्ञा पुं० [हिं० पोतना] पराँठा।

पोता–संज्ञा पुं० [सं० पौत्र] बेटे का बेटा। पुत्र का पुत्र।

संज्ञा पुं० [फ़ा० फ़ोता] १. पोत। लगान। भूमिकर। २. अंडकोष।

संज्ञा पुं० दे० "पोटा"।

संज्ञा पुं० [हिं० पोतना] १. पोतने का कपड़ा। २. घुली हुई मिट्टी जिसका लेप दीवार पर

करते हैं।

पोती–संज्ञा स्त्री० [हिं० पोता] पुत्र की पुत्री।
संज्ञा स्त्री० [हिं० पोतना] पुतारा देने की क्रिया।

पोथा–संज्ञा पु० [हिं० पोथी] १ कागजों की गड्डी। २ बड़ी पोथी। बड़ी पुस्तक।

पोथी–संज्ञा स्त्री० [सं० पुस्तिका] पुस्तक।

पोदना–संज्ञा पु० [अनु० फुदकना] १ एक छोटी चिड़िया। २ नाटा आदमी।

पोद्दार–संज्ञा पु० दे० "पोतदार"।

पोना–क्रि० स० [हिं० पूवा+ना (प्रत्य०)] १ गीले आटे की लोई को हाथ से दबाकर घुमाते हुए रोटी के आकार में बढ़ाना। २ (रोटी) पकाना।
क्रि० स० [सं० प्रोत] पिरोना। गूथना।

पोपला–वि० [हिं० पुलपुला] १ पचका और सिकुड़ा हुआ। २ जिसमें दाँत न हों। ३ जिसके मुँह में दाँत न हों।

पोपलाना–क्रि० अ० [हिं० पोपला] पोपला होना।

पोया–संज्ञा पु० [सं० पोत] १ वृक्ष का नरम पौधा। २ बच्चा। ३ साँप का बच्चा।

पोर–संज्ञा स्त्री० [सं० पर्व] १ उँगली की गाँठ या जोड़ जहाँ से वह झुक सकती है। २ उँगली का वह भाग जो दो गाँठों के बीच हो। ३ ईख बाँस आदि का वह भाग जो दो गाँठों के बीच में हो। ४ रीढ़। पीठ।

पोल–संज्ञा पु० [हिं० पोला] १ शून्य स्थान। अवकाश। खाली जगह। २ खोखलापन। सारहीनता।
मुहा०—(किसी की) पोल खुलना = छिपा हुआ दोष या बुराई प्रकट हो जाना। भंडा फूटना।
संज्ञा पु० [सं० प्रतोली] १ फाटक। प्रवेश द्वार। २ आँगन। सहन।

पोला–वि० [सं० पोल = फुल्का] [स्त्री० पोली] १ जिसके भीतर खाली जगह हो। २ जो ठोस न हो। खोखला। निसार। तत्त्व हीन। खुक्ख। ३ जो भीतर से कड़ा न हो। पुलपुला।

पोलिया–संज्ञा पु० दे० "पौरिया"।

पोशाक–संज्ञा स्त्री० [फा० पोश] पहनने के कपड़े। वस्त्र। परिधान। पहनावा।

पोशीदा–वि० [फा०] गुप्त। छिपा हुआ।

पोष–संज्ञा पु० [सं०] १ पोषण। पुष्टि। २ अभ्युदय। उन्नति। ३ वृद्धि। बढ़ती। ४ धन। ५ तुष्टि। संतोष।

पोषक–वि० [सं०] १ पालक। पालनेवाला। २ वर्द्धक। बढ़ानेवाला। ३ सहायक।

पोषण–संज्ञा पु० [सं०] [वि० पोषित, पुष्ट, पोषणीय, पोष्य] १ पालन। २ वर्द्धन। बढ़ती। ३ पुष्टि। ४ सहायता।

पोषना–क्रि० स० [सं० पोषण] पालना।

पोषित–वि० [सं०] पाला हुआ।

पोष्य–वि० [सं०] पालने योग्य। पालनीय।

पोष्यपुत्र–संज्ञा पु० [सं०] १ पुत्र के समान पाला हुआ लड़का। पालक। २ दत्तक।

पोस–संज्ञा पु० [सं० पोषण] पालनेवाले के साथ प्रेम या हेल-मेल।

पोसन–संज्ञा पु० [सं० पोषण] पालन। रक्षा।

पोसना–क्रि० स० [सं० पोषण] १ पालना या रक्षा करना। २ दारण आदि देकर अपनी रक्षा में रखना।

पोस्त–संज्ञा पु० [फा०] १ छिलका। बकला। २ खाल। चमड़ा। ३ अफीम के पौधे का डोडा या ढोंढ़। ४ अफीम का पौधा। पोस्ता।

पोस्ता–संज्ञा पु० [फा० पोस्त] एक पौधा जिसमें से अफीम निकलती है।

पोस्ती–संज्ञा पु० [फा०] १ वह जो नशे के लिये पोस्ते के डोडे पीसकर पीता हो। २ आलसी आदमी।

पोस्तीन–संज्ञा पु० [फा०] १ गरम और मुलायम रोएँवाले समूर आदि कुछ जानवरों की खाल का बना हुआ पहनावा। २ खाल का बना हुआ कोट जिसमें नीचे की ओर बाल होते हैं।

पोहना–क्रि० स० [सं० प्रोत] १. पिरोना। गूँथना। २. छेदना। ३. लगाना। पोतना। ४. जड़ना। घुसाना। धँसाना। ५. पीसना। घिसना। ६. दे० "पोना"।
वि० [स्त्री० पोहनी] घुसनेवाला। भेदनेवाला।
पोहमी*–संज्ञा स्त्री० दे० "पुहमी"।
पौंचा–संज्ञा पुं० [सं० पौड्रक] साढ़े पाँच का पहाड़ा।
पौंडा–संज्ञा पुं० [सं० पौड्रक] एक प्रकार की बड़ी और मोटी जाति की ईख या गन्ना।
पौंड्रक–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का मोटा गन्ना। पौंडा। २. एक पतित जाति। पुंड। ३. पुंड्र देश का एक राजा जो जरासंध का संबंधी था और श्रीकृष्ण के हाथ से मारा गया था।
पौंढ़ना–क्रि० स० दे० "पौढ़ना"।
पौंरना†–क्रि० अ० [सं० प्लवन] तैरना।
पौंरि–संज्ञा स्त्री० दे० "पौरि", "पौरी"।
पौ–संज्ञा स्त्री० [सं० प्रपा, प्रा० पवा] पौसाला। पौसला। प्याऊ।
संज्ञा स्त्री० [सं० पाद] किरण-प्रकाश की रेखा। ज्योति।
मुहा०–पौ फटना = सवेरे का उजाला दिखाई पड़ना। सवेरा होना।
संज्ञा पुं० [सं० पाद] १. पैर। २. जड़।
संज्ञा स्त्री० [सं० पद] पाँसे की एक चाल या दावँ।
मुहा०–पौ बारह होना = १. जीत का दाँव पड़ना। २. बन आना। लाभ का अवसर मिलना।
पौआ–संज्ञा पुं० दे० "पौवा"।
पौगंड–संज्ञा पुं० [सं०] पाँच वर्ष से दस वर्ष तक की अवस्था।
पौढ़ना–क्रि० अ० [सं० प्लवन] झूलना। आगे-पीछे हिलना।
क्रि० अ० [सं० प्रलोठन ?] लेटना। सोना।
पौढ़ाना–क्रि० स० [हिं० पौढ़ना का प्रे०] १. झुलाना। झूलाना। इधर से उधर हिलाना। २. लेटाना। ३. सुलाना।
पौत्र–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० पौत्री] लड़के का लड़का। पोता।
पौद–संज्ञा स्त्री० [सं० पोत] १. छोटा पौधा। २. वह छोटा पौधा जो एक स्थान से उखाड़कर दूसरे स्थान पर लगाया जा सके।
संज्ञा स्त्री० दे० "पाँवड़ा"।
पौदर–संज्ञा स्त्री० [हिं० पाँव + डालना] १. पैर का चिह्न। २. पगडंडी।
पौधा–संज्ञा पुं० [सं० पोत] १. नया निकलता हुआ पेड़। २. छोटा पेड़। क्षुप।
पौधि–संज्ञा स्त्री० दे० "पौद"।
पौन–संज्ञा पुं० स्त्री० [सं० पवन] १. हवा। २. प्राण। जीवात्मा। ३. प्रेत। भूत।
वि० [सं० पाद + ऊन] एक में से चौथाई कम। तीन चौथाई।
संज्ञा पुं० ढगण का एक भेद।
पौना–संज्ञा पुं० [सं० पाद + ऊन] पौन का पहाड़ा।
संज्ञा पुं० [हिं० पोना] काठ या लोहे की एक प्रकार की बड़ी करछी।
पौनार–संज्ञा स्त्री० [सं० पद्मनाल] कमल के फूल की नाल या डंठल।
पौनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० पावना] नाई, बारी, धोबी आदि जो विवाह आदि उत्सवों पर इनाम पाते हैं।
संज्ञा स्त्री० [हिं० पौना] छोटा पौना।
पौने–वि० [हिं० पौन] किसी संख्या का तीन चौथाई।
पौमान–संज्ञा पुं० [सं० पवमान] १. दे० "पवमान"। २. जलाशय।
पौर–वि० [सं०] पुर-संबंधी। नगर का।
संज्ञा स्त्री० दे० "पौरि", "पौरी"।
पौरव–संज्ञा पुं० [सं०] १. पुरु का वंशज। पुरु की संतति। २. उत्तर-पूर्व का एक देश। (महाभारत)
पौरा†–संज्ञा पुं० [हिं० पैर] आया हुआ क़दम। पड़े हुए चरण। पैरा।
पौराणिक–वि० [सं०] [स्त्री० पौराणिकी] १. पुराणवेत्ता। २. पुराण-पाठी। ३. पुराण-संबंधी। ४. प्राचीन काल का।
संज्ञा पुं० अठारह मात्रा के छंदों की संज्ञा।
पौरि–संज्ञा स्त्री० दे० "पौरी"।

पौरिया–संज्ञा पु० [हिं० पौरि] द्वारपाल। दरबान।

पौरी–संज्ञा स्त्री० [सं० प्रतोली] ड्योढ़ी। संज्ञा स्त्री० [हिं० पैर] सीढ़ी। पैड़ी। संज्ञा स्त्री० [हिं० पावँरि] खड़ाऊँ।

पौरुष–संज्ञा पु० [सं०] १ पुरुष का भाव। पुरुषत्व। २. पुरुष का कर्म। पुरुषार्थ। ३. पराक्रम। साहस। ४ उद्योग। उद्यम। वि० पुरुष-संबंधी।

पौरुषेय–वि० [सं०] १. पुरुष-संबंधी। २ आदमी का किया हुआ। ३ आध्यात्मिक।

पौरोहित्य–संज्ञा पु० [सं०] पुरोहिताई। पुरोहित का कर्म।

पौर्णमास–संज्ञा पु० [सं०] एक याग।

पौर्णमासी–संज्ञा स्त्री० [सं०] पूर्णमासी।

पौलस्त्य–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० पौलस्त्यी] १ पुलस्त्य के वंश का पुरुष। २ कुबेर। ३ रावण, कुंभकर्ण और विभीषण। ४ चंद्र।

पौला†–संज्ञा पु० [हिं० पाव + ला (प्रत्य०)] एक प्रकार की खड़ाऊँ।

पौलिया–संज्ञा पु० दे० "पौरिया"।

पौली–संज्ञा स्त्री० [सं० प्रतोली] पौरी। ड्योढ़ी।

पौलोमी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ इंद्राणी। २ भृगु महर्षि की पत्नी का नाम।

पौवा†–संज्ञा पु० [सं० पाद] १. एक सेर का चौथाई भाग। २ वह बरतन जिसमें पाव भर पानी, दूध आदि आ जाय।

पौष–संज्ञा पु० [सं०] वह महीना जिसमें पूर्णमासी पुष्य नक्षत्र में हो। पूस।

पौष्टिक–वि० [सं०] पुष्टिकारक। बल-वीर्य्यदायक।

पौसरा, पौसला–संज्ञा पु० [सं० पय शाला] वह स्थान जहाँ पर लोगों को पानी पिलाया जाता है।

पौहारी–संज्ञा पु० [सं० पयस् = दूध + आहार] वह जो केवल दूध ही पीकर रहे (अन्न आदि न खाय)।

प्याऊ–संज्ञा पु० [सं० प्रपा] पौसला। सबील।

प्याज–संज्ञा पु० [फ़ा०] गोल गाँठ के आकार का एक प्रसिद्ध कंद। इसकी गंध बहुत उग्र और अप्रिय होती है।

प्याजी–वि० [फ़ा०] हलका गुलाबी रंग।

प्यादा–संज्ञा पु० [फ़ा०] १. पदाति। पैदल। २ दूत। हरकारा।

प्यार–संज्ञा पु० [सं० प्रीति] १ मुहब्बत। प्रेम। चाह। स्नेह। २ प्रेम जताने की क्रिया।

प्यारा–वि० [सं० प्रिय] [स्त्री० प्यारी] १. जिसे प्यार करें। प्रेमपात्र। प्रिय। २ जो भला मालूम हो।

प्याला–संज्ञा पु० [फ़ा०] [स्त्री० अल्पा० प्याली] १ एक प्रकार का छोटा कटोरा। बेला। जाम। २ तोप या बंदूक आदि में वह गड्ढा। जिसमें रंजक रखते हैं।

प्यावना†*–क्रि० स० दे० "पिलाना"।

प्यास–संज्ञा स्त्री० [सं० पिपासा] १ जल पीने की इच्छा। तृषा। तृष्णा। पिपासा। २ प्रबल कामना।

प्यासा–वि० [सं० पिपासित] जिसे प्यास लगी हो। तृषित। पिपासा-युक्त।

प्यो*†–संज्ञा पु० [हिं० पिय] पति। स्वामी।

प्योसर–संज्ञा पु० [सं० पीयूष] हाल की ब्याई हुई गौ का दूध।

प्योसार†–संज्ञा पु० [सं० पितृशाला] स्त्री के लिये पिता का गृह। पीहर। मायका।

प्यौर*–संज्ञा पु० [सं० प्रिय] १ पति। स्वामी। २ प्रियतम।

प्रकंप–संज्ञा पु० [सं०] कँपकँपी।

प्रकट–वि० [सं०] १ जो प्रत्यक्ष हुआ हो। जाहिर। २ उत्पन्न। आविर्भूत। ३. स्पष्ट। व्यक्त।

प्रकटित–वि० [सं०] प्रकट किया हुआ।

प्रकरण–संज्ञा पु० [सं०] १ उत्पन्न करना। २ जिक्र करना। वृत्तांत। ३ प्रसंग। विषय। ४ किसी ग्रंथ के छोटे छोटे भागों में से कोई भाग। अध्याय। ५ दृश्य काव्य के अंतर्गत रूपक का एक भेद।

प्रकरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक प्रकार का गान। २ नाटक में प्रयोजन-सिद्धि के पाँच साधनों में से एक। ३ वह कथा-वस्तु जो

थोड़े काल तक चलकर रुक जाय।

प्रकर्ष–संज्ञा पुं० [सं०] १. उत्कर्ष। उत्तमता। २. अधिकता। बहुतायत।

प्रकला–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक कला (समय) का साठवाँ भाग।

प्रकांड–वि० [सं०] १. बहुत बड़ा। २. बहुत विस्तृत।

प्रकार–संज्ञा पुं० [सं०] १. भेद। किस्म। २. तरह। भाँति।

*संज्ञा स्त्री० [सं० प्राकार] परकोटा। घेरा।

प्रकाश–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जिसके द्वारा वस्तुओं का रूप नेत्रों को गोचर होता है। दीप्ति। आलोक। ज्योति। २. विकाश। स्फुटन। अभिव्यक्ति। ३. प्रकट होना। गोचर होना। ४. प्रसिद्धि। ख्याति। ५. किसी ग्रंथ या पुस्तक का विभाग। ६. धूप। घाम।

प्रकाशक–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो प्रकाश करे। २. वह जो प्रकट करे। प्रसिद्ध करनेवाला।

प्रकाशधृष्ट–संज्ञा पुं० [सं०] वह धृष्ट नायक जो प्रकट रूप से धृष्टता करे।

प्रकाशन–संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु। २. प्रकाशित करने का काम।

प्रकाशमान–वि० [सं०] १. चमकता हुआ। चमकीला। २. प्रसिद्ध। मशहूर।

प्रकाश वियोग–संज्ञा पुं० [सं०] केशव के अनुसार वह वियोग जो सब पर प्रकट हो जाय।

प्रकाश संयोग–संज्ञा पुं० [सं०] केशव के अनुसार वह संयोग जो सब पर प्रकट हो जाय।

प्रकाशित–वि० [सं०] १. जिस पर या जिसमें प्रकाश हो। चमकता हुआ। २. प्रकट।

प्रकाश्य–वि० [सं०] प्रकट करने योग्य।
क्रि० वि० प्रकट रूप से। स्पष्टतया। "स्वगत" का उलटा। (नाटक)

प्रकास*–संज्ञा पुं० दे० "प्रकाश"।

प्रकासना*–क्रि० स० [सं० प्रकाश] प्रकट करना।

प्रकीर्णक–संज्ञा पुं० [सं०] १. अध्याय। प्रकरण। २. वह जिसमें तरह तरह की चीज़ें मिली हों। फुटकर।

प्रकुपित–वि० [सं०] जिसका प्रकोप बहुत बढ़ गया हो।

प्रकृत–वि० [सं०] [संज्ञा प्रकृतता, प्रकृतत्व] १. यथार्थ। असली। सच्चा। २. जिसमें किसी प्रकार का विकार न हुआ हो।
संज्ञा पुं० श्लेष अलंकार का एक भेद।

प्रकृति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मूल या प्रधान गुण। तासीर। स्वभाव। २. प्राणी की प्रधान प्रवृत्ति। स्वभाव। मिज़ाज। ३. वह मूल शक्ति, अनेक रूपात्मक जगत् जिसका विकाश है। कुदरत।

प्रकृति भाव–संज्ञा पुं० [सं०] १. स्वभाव। २. संधि का वह नियम जिसमें दो पदों के मिलने से कोई विकार नहीं होता।

प्रकृति शास्त्र–संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें प्राकृतिक बातों (जैसे, पशु, वनस्पति, भूगर्भ आदि) का विचार किया जाय।

प्रकृतिसिद्ध–वि० [सं०] स्वाभाविक। प्राकृतिक। नैसर्गिक।

प्रकृतिस्थ–वि० [सं०] १. जो अपनी प्राकृतिक अवस्था में हो। २. स्वाभाविक।

प्रकोप–संज्ञा पुं० [सं०] १. बहुत अधिक कोप। २. क्षोभ। ३. चंचलता। चपलता। ४. बीमारी का अधिक और तेज़ होना। ५. शरीर के वात, पित्त आदि का बिगड़ जाना जिससे रोग उत्पन्न होता है।

प्रकोष्ठ–संज्ञा पुं० [सं०] १. सदर फाटक के पास की कोठरी। २. बड़ा आँगन।

प्रक्रम–संज्ञा पुं० [सं०] १. क्रम। सिलसिला। २. उपक्रम।

प्रक्रमभंग–संज्ञा पुं० [सं०] साहित्य में एक दोष। किसी वर्णन में आरंभ किए हुए क्रम आदि का ठीक ठीक पालन न होना।

प्रक्रिया–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्रकरण। २. क्रिया। युक्ति। तरीका।

प्रक्ष*–वि० [स० पृच्छक] पूछनेवाला।

प्रक्षालन–संज्ञा पु० [स०] [वि० प्रक्षालित] जल से साफ करने की क्रिया। धोना।

प्रक्षिप्त–संज्ञा पु० [स०] १ फेंका हुआ। २ ऊपर से बढ़ाया हुआ। मिलाया हुआ।

प्रक्षेप, प्रक्षेपण–संज्ञा पु० [स०] १ फेंकना। डालना। २ छितराना। बिखराना। ३ मिलाना। बढ़ाना।

प्रखर–वि० [स०] [संज्ञा प्रखरता] १ प्रतीक्ष्ण। प्रचंड। २ धारदार। पैना।

प्रख्यात–वि० [स०] प्रसिद्ध। मशहूर।

प्रगट–वि० दे० "प्रकट"।

प्रगटना†–क्रि० अ० [स० प्रकटन] प्रकट होना। सामने आना। जाहिर होना।

प्रगटाना†–क्रि० स० [स० प्रकटन] प्रकट करना। जाहिर करना।

प्रगल्भ–वि० [स०] [संज्ञा प्रगल्भता] १ चतुर। होशियार। २ प्रतिभाशाली। ३ उत्साही। साहसी। ४ हाजिर-जवाब। ५ निर्भय। निडर। ६ उद्धत। उद्दंड।

प्रगल्भवचना–संज्ञा स्त्री० [स०] वह मध्या नायिका जो बातों ही बातों में अपना दुःख और क्रोध प्रकट करे।

प्रगसना*†–क्रि० अ० दे० "प्रगटना"।

प्रगाढ़–वि० [स०] १ बहुत अधिक। २ बहुत गाढ़ा या गहरा। ३ कड़ा। कठोर।

प्रग्रह–संज्ञा पु० [स०] ग्रहण करने या पकड़ने का भाव या ढंग। धारण।

प्रघट*–वि० दे० "प्रकट"।

प्रघटना*–क्रि० अ० दे० "प्रगटना"।

प्रघट्टक*†–वि० [स० प्रकट] प्रकट या प्रकाश करनेवाला। खोलनेवाला।

प्रचंड–वि० [स०] [संज्ञा प्रचंडता] १ बहुत अधिक तीव्र। बहुत तेज। उग्र। प्रखर। २ भयंकर। ३ कठिन। कठोर। ४ दुःसह। असह्य। ५ बड़ा। भारी।

प्रचंडा–संज्ञा स्त्री० [स०] दुर्गा। चंडी।

प्रचरना*†–क्रि० अ० [स० प्रचार] प्रचारित होना। चलना। फैलना।

प्रचलन–संज्ञा पु० [स०] प्रचार।

प्रचलित–वि० [स०] जारी। चलता हुआ। जिसका चलन हो।

प्रचार–संज्ञा पु० [स०] १ किसी वस्तु का पीछे से निरंतर व्यवहार या उपयोग। चलन। रवाज। २ प्रकाश।

प्रचारक–वि० [स०] [स्त्री० प्रचारिणी] फैलानेवाला। प्रचार करनेवाला।

प्रचारना*†–क्रि० स० [स० प्रचारण] १ प्रचार करना। फैलाना। २ सामना करने के लिये ललकारना।

प्रचारित–वि० [स०] फैलाया हुआ। प्रचार किया हुआ।

प्रचुर–वि० [स०] बहुत। अधिक।

प्रचुरता–संज्ञा स्त्री० [स०] प्रचुर होने का भाव। ज्यादती। अधिकता।

प्रचेता–संज्ञा पु० [स० प्रचेतस] १ एक प्राचीन ऋषि। २ वरुण। ३ पुराणानुसार पृथु के परपोते और प्राचीन बर्हि के दस पुत्र।

प्रचोदन–संज्ञा पु० [स०] १ प्रेरणा। उत्तेजना। २ आज्ञा। ३ कायदा।

प्रच्छक–वि० [स०] पूछनेवाला।

प्रच्छन्न–वि० [स०] ढका हुआ। लपेटा हुआ। छिपा हुआ।

प्रच्छादन–संज्ञा पु० [स०] [वि० प्रच्छादित] १ ढाँकना। २ छिपाना। ३ उत्तरीय वस्त्र।

प्रजंत*‡–अव्य० दे० "पर्यंत"।

प्रजनन–संज्ञा पु० [स०] १ संतान उत्पन्न करने का काम। २ जन्म। ३ दाई का काम। धात्री कर्म। (सुश्रुत)

प्रजरना*–क्रि० अ० [स० प्रत्य० प्र+हि० जरना] अच्छी तरह जलना।

प्रजा–संज्ञा स्त्री० [स०] १ संतान। औलाद। २ वह जनसमूह जो किसी एक राज्य में रहता हो। रिआया। रैयत।

प्रजातंत्र–संज्ञा पु० [स०] वह शासन-प्रणाली जिसमें कोई राजा नहीं होता, प्रजा ही समय समय पर अपना प्रधान शासक चुन लेती है।

प्रजापति–संज्ञा पुं० [सं०] १. सृष्टि को उत्पन्न करनेवाला। सृष्टिकर्त्ता। २. ब्रह्मा। ३. मनु। ४. राजा। ५. सूर्य्य। ६. आग। ७. पिता। बाप। ८. घर का मालिक या बड़ा। ९. दे० "प्राजापत्य"।

प्रजारना*†–क्रि० स० [सं० प्रत्य० प्र + हिं० जारना] अच्छी तरह जलाना।

प्रजासत्ता–संज्ञा स्त्री० दे० "प्रजातंत्र"।

प्रजुलित*–वि० दे० "प्रज्वलित"।

प्रजोग–संज्ञा पुं० दे० "प्रयोग"।

प्रज्झटिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १६ मात्राओं का एक छंद। पद्धरी। पद्धटिका।

प्रज्ञ–संज्ञा पुं० [सं०] विद्वान्। जानकार।

प्रज्ञप्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जताने का भाव। २. सूचना। ३. संकेत। इशारा।

प्रज्ञा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बुद्धि। ज्ञान। २. सरस्वती।

प्रज्ञाचक्षु–संज्ञा पुं० [सं० प्रज्ञा + चक्षुस्] १. धृतराष्ट्र। २. ज्ञानी। ३. अंधा। (व्यंग्य)

प्रज्वलन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रज्वलनीय, प्रज्वलित] जलने की क्रिया। जलना।

प्रज्वलित–वि० [सं०] १. जलता हुआ। धधकता हुआ। २. बहुत स्पष्ट।

प्रज्वलिया–संज्ञा पुं० दे० "प्रज्झटिका"।

प्रण–संज्ञा पुं० [सं० पण] अटल निश्चय। प्रतिज्ञा।

प्रणत–वि० [सं०] १. झुका हुआ। २. प्रणाम करता हुआ। ३. नम्र। दीन।

प्रणतपाल–संज्ञा पुं० [सं०] दीनों, दासों या भक्तजनों का पालन करनेवाला। दीनरक्षक।

प्रणति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्रणाम। दंडवत। २. नम्रता। ३. विनती।

प्रणमन–संज्ञा पुं० [सं०] १. झुकना। २. प्रणाम करना।

प्रणम्य–वि० [सं०] प्रणाम करने के योग्य।

प्रणय–संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रीतियुक्त प्रार्थना। २. प्रेम। ३. विश्वास। भरोसा। ४. निर्वाण। मोक्ष।

प्रणयन–संज्ञा पुं० [सं०] रचना। बनाना।

प्रणयिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्रियतमा। प्रेमिका। २. स्त्री०। पत्नी।

प्रणयी–संज्ञा पुं० [सं० प्रणयिन्] [स्त्री० प्रणयिनी] १. प्रेम करनेवाला। प्रेमी। २. स्वामी। पति।

प्रणव–संज्ञा पुं० [सं०] १. ओंकार। ओंकार मंत्र। २. परमेश्वर।

प्रणवना–क्रि० स० [सं० प्रणमन] प्रणाम करना। नमस्कार करना।

प्रणाली–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. निकलने का मार्ग। २. रीति। चाल। प्रथा। ३. ढंग। तरीका। क़ायदा। ४. वह छोटा जलमार्ग जो जल के दो बड़े भागों को मिलाता हो।

प्रणिधान–संज्ञा पुं० [सं०] १. रखा जाना। २. प्रयत्न। ३. समाधि। (योग) ४. अत्यंत भक्ति। ५. ध्यान। चित्त की एकाग्रता।

प्रणीत–संज्ञा पुं० [सं०] १. रचित। बनाया हुआ। २. सुधारा हुआ। संशोधित। ३. भेजा हुआ। लाया हुआ।

प्रणेता–संज्ञा पुं० [सं० प्रणेतृ] [स्त्री० प्रणेत्री] रचयिता। बनानेवाला। कर्त्ता।

प्रतंचा*†–संज्ञा स्त्री० दे० "प्रत्यंचा"।

प्रतच्छ*†–वि० दे० "प्रत्यक्ष"।

प्रतप्त–वि० [सं०] तपा हुआ।

प्रतर्दन–संज्ञा पुं० [सं०] १. काशी का एक प्रख्यात राजा जो राजा दिवोदास का पुत्र था। २. एक प्राचीन ऋषि। ३. विष्णु।

प्रतल–संज्ञा पुं० [सं०] पाताल के सातवें भाग का नाम।

प्रताप–संज्ञा पुं० [सं०] १. पौरुष। मरदानगी। वीरता। २. बल, पराक्रम आदि का ऐसा प्रभाव जिसके कारण विरोधी शांत रहें। तेज। इक़बाल। ३. ताप। गरमी।

प्रतापी–वि० [सं० प्रतापिन्] १. इक़बाल-मद। जिसका प्रताप हो। २. सतानेवाला।

प्रतारक–संज्ञा पुं० [सं०] १. वंचक। ठग। २. धूर्त। चालाक।

प्रतारणा–संज्ञा स्त्री० [सं०] वंचना। ठगी।

प्रतिचा—संज्ञा स्त्री० [सं० प्रत्यंचा] धनुष की डोरी। ज्या। चिल्ला।

प्रति—अव्य० [सं०] एक उपसर्ग जो शब्दों के आरंभ में लगकर नीचे लिखे अर्थ देता है— विपरीत, जैसे, प्रतिकूल। सामने, जैसे, प्रत्यक्ष। बदले में, जैसे, प्रत्युपकार। हर एक, जैसे, प्रत्येक। समान, जैसे, प्रतिनिधि। मुकाबले का, जैसे, प्रतिवादी। अव्य० १ सामने। मुकाबिले में। २ ओर। तरफ। संज्ञा स्त्री० [सं०] नकल। कापी।

प्रतिकार—संज्ञा पुं० [सं०] बदला। जवाब।

प्रतिकूल—वि० [सं०] [संज्ञा प्रतिकूलता] जो अनुकूल न हो। खिलाफ। उल्टा। विरुद्ध। विपरीत।

प्रतिकृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रतिमा। प्रतिमूर्ति। २ तसवीर। चित्र। ३ प्रतिबिंब। छाया। ४ बदला। प्रतिकार।

प्रतिक्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रतिकार। बदला। २ एक ओर कोई क्रिया होने पर परिणाम-स्वरूप दूसरी ओर होनेवाली क्रिया।

प्रतिगृहीता—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसका पाणिग्रहण किया गया हो। धर्म्मपत्नी।

प्रतिग्या*—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रतिज्ञा"।

प्रतिग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्वीकार। ग्रहण। २ उस दान का लेना जो ब्राह्मण को विधिपूर्वक दिया जाय। ३ पकड़ना। अधिकार में लाना। ४ पाणिग्रहण। विवाह। ५ ग्रहण। उपराग।

प्रतिघात—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह आघात जो किसी दूसरे के आघात के करने पर किया जाय। २ टक्कर। ३ रुकावट। बाधा।

प्रतिघाती—संज्ञा पुं० [सं० प्रतिघातिन्] [स्त्री० प्रतिघातिनी] १ शत्रु। वैरी। दुश्मन। २ मुकाबला करनेवाला।

प्रतिच्छा*†—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रतीक्षा"।

प्रतिच्छाया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चित्र। तसवीर। २ परछाईं। प्रतिबिंब।

प्रतिछाहीं—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रतिच्छाया २"।

प्रतिज्ञांतर—संज्ञा पुं० [सं०] तर्क में एक निग्रह-स्थान।

प्रतिज्ञा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कोई काम करने या न करने आदि के संबंध में दृढ़ निश्चय। प्रण। २ शपथ। सौगंद। कसम। ३ अभियोग। दावा। ४ न्याय में उस बात का कथन जिसे सिद्ध करना हो।

प्रतिज्ञापत्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह पत्र जिस पर कोई प्रतिज्ञा या शर्त लिखी हो। इकरारनामा।

प्रतिज्ञाहानि—संज्ञा स्त्री० [सं०] तर्क में एक प्रकार का निग्रह-स्थान।

प्रतिदान—संज्ञा पुं० [सं०] १ लौटाना। वापस करना। २ परिवर्तन। बदला।

प्रतिद्वंद्वी—संज्ञा पुं० [सं० प्रतिद्वंद्विन्] [भाव० प्रतिद्वंद्विता] मुकाबले का लड़नेवाला। शत्रु।

प्रतिध्वनि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अपनी उत्पत्ति के स्थान पर फिर से टकराकर सुनाई पड़नेवाला शब्द। प्रतिशब्द। गूँज। आवाज बाजगश्त। २ शब्द से व्याप्त होना। गूँजना। ३ दूसरों के विचारों आदि का दोहराया जाना।

प्रतिना—संज्ञा स्त्री० दे० "पृतना"।

प्रतिनायक—संज्ञा पुं० [सं०] नाटकों और काव्यों आदि में नायक का प्रतिद्वंद्वी पात्र।

प्रतिनिधि—संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० प्रतिनिधित्व] १ प्रतिमा। प्रतिमूर्ति। २ वह व्यक्ति जो किसी दूसरे की ओर से कोई काम करने के लिए नियुक्त हो।

प्रतिपक्षी—संज्ञा पुं० [सं० प्रतिपक्षिन्] विपक्षी। विरोधी। शत्रु।

प्रतिपत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्राप्ति। पाना। २ ज्ञान। ३ अनुमान। ४ देना। दान। ५ कार्य्यरूप में लाना। ६ प्रतिपादन। निरूपण। ७ जी में बैठाना। ८ मानना। स्वीकृति।

प्रतिपदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी पक्ष की

पहली तिथि। प्रतिपद्। परिवा।

प्रतिपन्न–वि० [सं०] १. अवगत। जाना हुआ। २. अंगीकृत। स्वीकृत। ३. प्रमाणित। ४. साबित। निश्चित। ५. भरा-पूरा। ६. शरणागत। ७. प्राप्त।

प्रतिपादक–संज्ञा पुं० [सं०] प्रतिपादन करनेवाला।

प्रतिपादन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रतिपादित] १. अच्छी तरह समझाना। प्रतिपत्ति। २. किसी बात का प्रमाणपूर्वक कथन। ३. प्रमाण। सबूत।

प्रतिपार*†–संज्ञा पुं० दे० "प्रतिपाल"।

प्रतिपाल, प्रतिपालक–संज्ञा पुं० [सं०] १. पालन-पोषण करनेवाला। पोषक। रक्षक। २. राजा।

प्रतिपालन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रतिपालित] १. पालन करने की क्रिया या भाव। २. रक्षण। निर्वाह। तामील।

प्रतिपालना*†–क्रि० स० [सं० प्रतिपालन] १. पालन करना। २. रक्षा करना। बचाना।

प्रतिफल–संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रतिबिंब। छाया। २. परिणाम। नतीजा।

प्रतिबंध–संज्ञा पुं० [सं०] १. रोक। रुकावट। अटकाव। २. विघ्न। बाधा।

प्रतिबंधक–संज्ञा पुं० [सं०] १. रोकनेवाला। २. बाधा डालनेवाला।

प्रतिबिंब–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रतिबिंबित] १. परछाईं। छाया। २. मूर्ति। प्रतिमा। ३. चित्र। तसवीर। ४. शीशा। दर्पण।

प्रतिबिंबवाद–संज्ञा पुं० [सं०] वेदांत का यह सिद्धांत कि जीव वास्तव में ईश्वर का प्रतिबिंब है।

प्रतिभा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बुद्धि। समझ। २. वह असाधारण मानसिक शक्ति जिसमें मनुष्य किसी काम में बहुत अधिक योग्यता प्राप्त कर लेता है। असाधारण बुद्धि-बल। ३. दीप्ति। चमक। (क्व०)

प्रतिभावान्, प्रतिभाशाली–वि० [सं०] जिसमें प्रतिभा हो। प्रतिभावाला।

प्रतिभू–संज्ञा पुं० [सं०] जमानत में पड़नेवाला। जामिन।

प्रतिम–अव्य० [सं०] समान। सदृश।

प्रतिमा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. किसी की आकृति के अनुसार बनाई हुई मूर्ति या चित्र आदि। अनुकृति। २. मिट्टी, पत्थर आदि की देवताओं की मूर्ति। ३. प्रतिबिंब। छाया। ४. एक अलंकार जिसमें किसी मुख्य पदार्थ या व्यक्ति के अभाव में उसी के सदृश किसी और पदार्थ या व्यक्ति की स्थापना का वर्णन होता है।

प्रतिमान–संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रतिबिंब। परछाहीं। २. समानता। बराबरी। ३. दृष्टांत। उदाहरण।

प्रतिमुख–संज्ञा पुं० [सं०] नाटक की पाँच अंग-संधियों में से एक।

प्रतिमूर्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रतिमा।

प्रतिमोक्षण–संज्ञा पुं० [सं०] मोक्ष की प्राप्ति।

प्रतियोग–संज्ञा पुं० [सं०] १. शत्रुता। विरोध। २. विरुद्ध संयोग।

प्रतियोगिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रतिद्वंद्विता। चढ़ा-ऊपरी। मुकाबला। विरोध।

प्रतियोगी–संज्ञा पुं० [सं०] १. हिस्सेदार। शरीक। २. शत्रु। विरोधी। वैरी। ३. सहायक। मददगार।

प्रतिरूप–संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रतिमा। मूर्ति। २. तसवीर। चित्र। ३. प्रतिनिधि।

प्रतिरोध–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रतिरोधक] १. विरोध। २. रुकावट। रोक। बाधा।

प्रतिलिपि–संज्ञा स्त्री० [सं०] लेख की नकल। किसी लिखी हुई चीज की नकल।

प्रतिलोम–वि० [सं०] १. प्रतिकूल। विपरीत। २. जो नीचे से ऊपर की ओर गया हो। उलटा। अनुलोम का उलटा।

प्रतिलोम विवाह–संज्ञा पुं० [सं०] वह विवाह जिसमें पुरुष नीच वर्ण का और स्त्री उच्च वर्ण की हो।

प्रतिवस्तूपमा–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह काव्यालंकार जिसमें उपमेय और उपमान के साधारण धर्म का वर्णन अलग अलग वाक्यों में किया जाय।

प्रतिवाद—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह कथन जो किसी मत को मिथ्या ठहराने के लिये हो। विरोध। खंडन। २ विवाद। बहस।

प्रतिवादी—संज्ञा पुं० [सं० प्रतिवादिन्] १ प्रतिवाद या खंडन करनेवाला। २ वह जो वादी की बात का उत्तर दे। प्रतिपक्षी।

प्रतिवास—संज्ञा पुं० [सं०] पड़ोस। समीप का निवास।

प्रतिवासी—संज्ञा पुं० [सं० प्रतिवासिन्] पड़ोस में रहनेवाला। पड़ोसी।

प्रतिवेश—संज्ञा पुं० [सं०] पड़ोस।

प्रतिवेशी—संज्ञा पुं० [सं० प्रतिवेशिन्] पड़ोस में रहनेवाला। पड़ोसी।

प्रतिशब्द—संज्ञा पुं० [सं०] प्रतिध्वनि।

प्रतिशोध—संज्ञा पुं० [सं० प्रति+शोध] वह काम जो किसी बात का बदला चुकाने के लिये किया जाय। बदला।

प्रतिश्याय—संज्ञा पुं० [सं०] जुकाम।

प्रतिषेध—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रतिषिद्ध, प्रतिषेधक] १ निषेध। मनाही। २ खंडन। ३ एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें किसी प्रसिद्ध निषेध या अन्तर का इस प्रकार उल्लेख किया जाय जिससे उसका कुछ विशेष अर्थ निकले।

प्रतिष्ठा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्थापना। रखा जाना। २ देवता की प्रतिमा की स्थापना। ३ मान मर्यादा। गौरव। ४ यश। कीर्ति। ५ आदर। सत्कार। इज्जत। ६ व्रत का उद्यापन। ७ एक प्रकार का छंद। ८ चार वर्णों का वृत्त।

प्रतिष्ठान—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्थापित या प्रतिष्ठित करना। रखना। बैठाना। २ देवमूर्ति की स्थापना। ३ प्रतिष्ठानपुर।

प्रतिष्ठानपुर—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्राचीन नगर जो गंगा-यमुना के संगम पर वर्तमान भूसी नामक स्थान के पास था। २ गोदावरी के तट का एक प्राचीन नगर।

प्रतिष्ठापत्र—संज्ञा पुं० [सं०] प्रतिष्ठा करने के लिये दिया जानेवाला पत्र। सम्मानपत्र।

प्रतिष्ठित—वि० [सं०] १ जिसकी प्रतिष्ठा हुई हो। आदर-प्राप्त। इज्जतदार। २ जो स्थापित किया गया हो।

प्रतिस्पर्द्धा—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी काम में दूसरे से बढ़ जाने का उद्योग। लाग-डाँट। चढ़ा-ऊपरी।

प्रतिस्पर्द्धी—संज्ञा पुं० [प्रतिस्पर्द्धिन्] वह जो प्रतिस्पर्द्धा करे। मुकाबला या बराबरी करनेवाला।

प्रतिहार—संज्ञा पुं० [सं०] १ द्वारपाल। दरबान। ड्योढ़ीदार। २ द्वार। दरवाजा। ३ प्राचीन काल का एक राजकर्मचारी जो राजाओं को समाचार आदि सुनाया करता था। ४ चोबदार। नकीब।

प्रतिहारी—संज्ञा पुं० [सं० प्रतिहारिन्] [स्त्री० प्रतिहारिणी] द्वारपाल। ड्योढ़ीदार।

प्रतिहिंसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वैर चुकाना। बदला लेना।

प्रतीक—संज्ञा पुं० [सं०] १ पता। चिह्न। निशान। २ मुख। मुँह। ३ आकृति। रूप। सूरत। ४ प्रतिरूप। स्थानापन्न वस्तु। ५ प्रतिमा। मूर्ति।

प्रतीकार—संज्ञा पुं० [सं०] प्रतिकार।

प्रतीकोपासना—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी विशेष पदार्थ में ब्रह्म की भावना करके उसे पूजना।

प्रतीक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी कार्य्य के होने या किसी के आने की आशा में रहना। आसरा। इंतजार। प्रत्याशा।

प्रतीची—संज्ञा स्त्री० [सं०] पश्चिम दिशा।

प्रतीच्य—वि० [सं०] पश्चिमी।

प्रतीत—वि० [सं०] १ ज्ञात। विदित। जाना हुआ। २ प्रसिद्ध। मशहूर। ३ आनंद। प्रसन्न। खुश।

प्रतीति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ज्ञान। जानकारी। २ विश्वास। ३ प्रसन्नता।

प्रतीप—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रतिकूल घटना। आशा के विरुद्ध फल। २ वह अर्थालंकार जिसमें उपमान को ही उपमेय के समान कहते हैं अथवा उपमेय द्वारा उपमान का तिरस्कार वर्णन करते हैं।

प्रतीयमान–वि० [सं०] जान पड़ता हुआ।
प्रतीहार–संज्ञा पुं० दे० "प्रतिहार"।
प्रतीहारी–संज्ञा पु० दे० "प्रतिहारी"।
प्रतुद–संज्ञा पुं० [सं०] वे पक्षी जो अपना भक्ष्य चोंच से तोड़कर खाते हैं।
प्रतोली–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चौड़ी सड़क। शाहराह। २. गली। कूचा। ३. दुर्ग का द्वार।
प्रत्न–वि० [सं०] पुराना। प्राचीन।
प्रत्नतत्त्व–संज्ञा पुं० दे० "पुरातत्त्व"।
प्रत्यंचा†–संज्ञा स्त्री० [सं० पतंचिका] धनुष की डोरी जिसमें लगाकर बाण छोड़ा जाता है। चिल्ला।
प्रत्यक्ष–वि० [सं०] [संज्ञा प्रत्यक्षता] १. जो देखा जा सके। जो आँखों के सामने हो। २. जिसका ज्ञान इंद्रियों से हो सके।
संज्ञा पुं० चार प्रकार के प्रमाणों में से एक।
क्रि० वि० आँखों के आगे। सामने।
प्रत्यक्षदर्शी–संज्ञा पुं० [सं० प्रत्यक्षदर्शिन्] १. वह जिसने प्रत्यक्ष रूप से कोई घटना देखी हो। २. साक्षी। गवाह।
प्रत्यक्षवादी–संज्ञा पुं० [सं० प्रत्यक्षवादिन्] [स्त्री० प्रत्यक्षवादिनी] वह व्यक्ति जो केवल प्रत्यक्ष प्रमाण माने, और कोई प्रमाण न माने।
प्रत्यनीक–संज्ञा पु० [सं०] १. वह अर्थालंकार जिसमें किसी के पक्ष में रहनेवाले या संबंधी के प्रति किसी हित या अहित का किया जाना वर्णन किया जाय। २ शत्रु। दुश्मन। ३. प्रतिपक्षी। विरोधी।
प्रत्यभिज्ञा–संज्ञा स्त्री० [सं०] स्मृति की सहायता से उत्पन्न होनेवाला ज्ञान।
प्रत्यभिज्ञा दर्शन–संज्ञा पुं० [सं०] माहेश्वर सम्प्रदाय का एक दर्शन जिसके अनुसार महेश्वर ही परमेश्वर माने जाते हैं।
प्रत्यभिज्ञान–संज्ञा पुं० [सं०] स्मृति की सहायता से होनेवाला ज्ञान।
प्रत्यय–संज्ञा पु० [सं०] १. विश्वास। एतबार। २. प्रमाण। सबूत। ३. विचार। खयाल। ४. बुद्धि। समझ। ५. व्याख्या। शरह। ६. कारण। हेतु। ७. आवश्यकता। जरूरत। ८. प्रख्याति। प्रसिद्धि। ९. चिह्न। लक्षण। १०. निर्णय। फ़ैसला। ११. सम्मति। राय। १२. वे नौ रीतियाँ *जिनके द्वारा छंदों के भेद और उनकी संख्या* जानी जाय। १३. व्याकरण में वह अक्षर या अक्षर-समूह जो किसी धातु या मूल शब्द के अंत में, उसके अर्थ में कोई विशेषता उत्पन्न करने के उद्देश्य से लगाया जाय। जैसे, मूर्खता में "ता" प्रत्यय है।
प्रत्याख्यान–संज्ञा पुं० [सं०] १. खंडन। २. निराकरण।
प्रत्यागत–वि० [सं०] जो लौट आया हो।
प्रत्यागमन–संज्ञा पुं० [सं०] १. लौट आना। वापसी। २. दोबारा आना।
प्रत्यालीढ़–संज्ञा पुं० [सं०] धनुष चलानेवालों के बैठने का एक प्रकार।
प्रत्यावर्त्तन–संज्ञा पुं० [सं०] लौट आना।
प्रत्याशा–संज्ञा स्त्री० [सं०] आशा। उम्मेद।
प्रत्याहार–संज्ञा पुं० [सं०] योग के आठ अंगों में से एक अंग जिसमें इंद्रियों को उनके विषयों से हटाकर चित्त का अनुसरण किया जाता है। इंद्रियनिग्रह।
प्रत्युत्–अव्य० [सं०] बल्कि। वरन्। इसके विरुद्ध।
प्रत्युत्तर–संज्ञा पु० [सं०] उत्तर मिलने पर दिया हुआ उत्तर। जवाब का जवाब।
प्रत्युत्पन्न–वि० [सं०] १. जो फिर से उत्पन्न हो। २. जो ठीक समय पर उत्पन्न हो।
यौ०—प्रत्युत्पन्नमति=जो तुरत ही कोई उपयुक्त बात या काम सोच ले। तत्परबुद्धिवाला।
प्रत्युपकार–संज्ञा पु० [सं०] वह उपकार जो किसी उपकार के बदले में किया जाय।
प्रत्यूष–संज्ञा पु० [सं०] प्रभात। तड़का।
प्रत्येक–वि० [सं०] समूह अथवा बहुतों में से हर एक। अलग अलग।
प्रथम–वि० [सं०] १. जो गिनती में सबसे पहले आवे। पहला। अव्वल। २. सर्वश्रेष्ठ। सबसे अच्छा।
क्रि० वि० [सं०] पहले। पेश्तर। आगे।

प्रथम कारक—संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण में "कर्त्ता" (कारक)।

प्रथम पुरुष—संज्ञा पुं० दे० "उत्तम पुरुष"।

प्रथमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मदिरा। शराब। (तांत्रिक) २ व्याकरण का कर्त्ता कारक।

प्रथमी‡—संज्ञा स्त्री० दे० "पृथ्वी"।

प्रथा—संज्ञा स्त्री० [सं०] रीति। रिवाज। चाल। प्रणाली। नियम।

प्रथी‡—संज्ञा स्त्री० दे० "पृथ्वी"।

प्रभु—संज्ञा पुं० दे० "पशु"।

प्रद—वि० [सं०] देनेवाला। जो दे। दाता। (यौगिक में) जैसे, आनंदप्रद।

प्रदक्षिण—संज्ञा पुं० [सं०] देवमूर्ति आदि के चारों ओर घूमना। परिक्रमा।

प्रदक्षिणा—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रदक्षिण"।

प्रदत्त—वि० [सं०] दिया हुआ।

प्रदर—संज्ञा पुं० [सं०] स्त्रियों का एक रोग जिसमें उनके गर्भाशय से सफेद या लाल रंग का लसीदार पानी सा बहता है।

प्रदर्शक—संज्ञा पुं० [सं०] १ दिखलानेवाला। वह जो कोई चीज दिखलावे। २ दर्शक।

प्रदर्शन—संज्ञा पुं० [सं०] १ दिखलाने का काम। २ दे० "प्रदर्शनी"।

प्रदर्शनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्थान जहाँ तरह तरह की चीज लोगों को दिखलाने के लिये रखी जायँ। नुमाइश।

प्रदर्शित—वि० [सं०] जो दिखलाया गया हो। दिखलाया हुआ।

प्रदाता—वि० [सं० प्रदातृ] दाता। देनेवाला।

प्रदान—संज्ञा पुं० [सं०] १ देने की क्रिया। २ दान। बखशिश। ३ विवाह। शादी।

प्रदायक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० प्रदायिका] देनेवाला। जो दे।

प्रदायी—संज्ञा पुं० दे० "प्रदायक"।

प्रदाह—संज्ञा पुं० [सं०] ज्वर आदि के कारण अथवा और किसी कारण शरीर में होनेवाली जलन। दाह।

प्रदीप—संज्ञा पुं० [सं०] १ दीपक। दीआ। चिराग। २ रोशनी। प्रकाश।

प्रदीपक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० प्रदीपिका] प्रकाश में लानेवाला। प्रकाशक।

प्रदीपति*†—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रदीप्ति"।

प्रदीपन—संज्ञा पुं० [सं०] १ उजाला करना। २ उज्ज्वल करना। चमकाना।

प्रदीप्त—वि० [सं०] १ जगमगाता हुआ। प्रकाशवान्। २ उज्ज्वल। चमकीला।

प्रदीप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ रोशनी। प्रकाश। २ चमक। आभा।

प्रदुमन*—संज्ञा पुं० दे० "प्रद्युम्न"।

प्रदेश—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी देश का वह बड़ा विभाग जिसकी भाषा, रीति व्यवहार, शासन-पद्धति आदि उसी देश के अन्य विभागों की इन सब बातों से भिन्न हो। प्रांत। सूबा। २ स्थान। जगह। मुकाम। ३ अंग। अवयव।

प्रदोष—संज्ञा पुं० [सं०] १ संध्या-काल। सूर्य्य के अस्त होने का समय। २ त्रयोदशी का व्रत जिसमें संध्या समय शिव का पूजन करके भोजन करते हैं। ३ बड़ा दोष। भारी अपराध।

प्रद्युम्न—संज्ञा पुं० [सं०] १ कामदेव। २ श्रीकृष्ण के बड़े पुत्र का नाम।

प्रद्योत—संज्ञा पुं० [सं०] १ किरण। रश्मि। २ दीप्ति। आभा। चमक।

प्रधान—वि० [सं०] मुख्य। खास।

संज्ञा पुं० [सं०] १ मुखिया। सरदार। २ सचिव। मंत्री। वजीर। ३ सभापति।

प्रधानता—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रधान होने का भाव, धर्म, कार्य्य या पद।

प्रधानी*†—संज्ञा स्त्री० [हिं० प्रधान+ई (प्रत्य०)] प्रधान का पद या कर्म्म।

प्रध्वंस—संज्ञा पुं० [सं०] नाश। विनाश।

प्रन*†—संज्ञा पुं० दे० "प्रण"।

प्रनति*†—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रणति"।

प्रनवना*†—क्रि० स० दे० "प्रणमना"।

प्रनामी*†—संज्ञा पुं० [सं० प्रणामिन्] प्रणाम करनेवाला। जो प्रणाम करे।

संज्ञा स्त्री० [सं० प्रणाम+ई (प्रत्य०)] वह दक्षिणा जो गुरु, ब्राह्मण आदि को भक्त लोग प्रणाम करने के समय देते हैं।

प्रनिपात*†—संज्ञा पुं० दे० "प्रणिपात"।

प्रपंच—संज्ञा पुं० [सं०] १. संसार। सृष्टि। भव-जाल। २. विस्तार। फैलाव। ३. दुनिया का जंजाल। ४. झगड़ा। झमेला। ५. आडंबर। ढोंग। ६. छल। धोखा।

प्रपंची—वि० [सं० प्रपंचिन्] १. प्रपंच रचनेवाला। २. छली। कपटी। ढोंगी।

प्रपत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] अनन्य शरणागत होने की भावना। अनन्य भक्ति।

प्रपन्न—वि० [सं०] १. प्राप्त। आया हुआ। २. शरणागत। आश्रित।

प्रपा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पौसरा। प्याऊ।

प्रपाठक—संज्ञा पुं० [सं०] वेद के अध्यायों और श्रौत ग्रंथों का एक अंश।

प्रपात—संज्ञा पुं० [सं०] १. पहाड़ या चट्टान का ऐसा किनारा जिसके नीचे कोई रोक न हो। २. एकबारगी नीचे गिरना। ३. ऊँचे से गिरती हुई जलधारा। झरना। दरी।

प्रपितामह—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० प्रपितामही] १. परदादा। दादा का बाप। २. परब्रह्म।

प्रपीड़न—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रपीड़ित] बहुत अधिक कष्ट देना।

प्रपुंज—संज्ञा पुं० [सं०] भारी झुंड।

प्रपुत्र—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० प्रपुत्री] पुत्र का पुत्र। पोता।

प्रपौत्र—संज्ञा पुं० [सं०] पड़पोता। पुत्र का पोता। पोते का पुत्र।

प्रफुड़ना—क्रि० अ० दे० "प्रफुलना"।

प्रफुलना*—क्रि० अ० [सं० प्रफुल्ल] फूलना।

प्रफुला*—संज्ञा स्त्री० [सं० प्रफुल्ल] १. कुमुदिनी। कुँई। २. कमलिनी।

प्रफुलित*—वि० [सं० प्रफुल्ल] १. खिला हुआ। कुसुमित। २. प्रफुल्ल।

प्रफुल्ल—वि० [सं०] १. खिला हुआ। विकसित। २. जिसमें फूल लगे हों। ३. खुला हुआ। ४. प्रसन्न। आनंदित।

प्रबंध—संज्ञा पुं० [सं०] १. बाँधने की डोरी आदि। २. बंधान। ३. बँधा हुआ सिलसिला। ४. लेख या अनेक संबद्ध पद्यों में पूरा होनेवाला काव्य। निबंध। ५. आयोजन। उपाय। ६. व्यवस्था। बंदोबस्त। इंतजाम।

प्रबंध कल्पना—संज्ञा स्त्री० [सं०] ऐसा प्रबंध जिसमें थोड़ी सी सत्य कथा में बहुत सी बातें ऊपर से मिलाई गई हों।

प्रबल—वि० [सं०] [स्त्री० प्रबला] १. बलवान्। २. जोर का। तेज। उग्र। ३. घोर। महान्।

प्रबला—संज्ञा स्त्री० [सं०] बहुत बलवती।

प्रबुद्ध—वि० [सं०] १. जागा हुआ। २. होश में आया हुआ। ३. पंडित। ज्ञानी। ४. खिला हुआ।

प्रबोध—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रबोधक] १. जागना। नींद का हटना। २. यथार्थ ज्ञान। पूर्णबोध। ३. ढारस। तसल्ली। दिलासा। ४. चेतावनी।

प्रबोधन—संज्ञा पुं० [सं०] १. जागरण। जागना। २. जगाना। नींद से उठाना। ३. यथार्थ ज्ञान। बोध। चेत। ४. जताना। ज्ञान देना। ५. सांत्वना।

प्रबोधना*—क्रि० स० [सं० प्रबोधन] १. जगाना। नींद से उठाना। २. सचेत करना। होशियार करना। ३. समझाना-बुझाना। ४. सिखाना। पाठ पढ़ाना। पट्टी पढ़ाना। ५. ढारस देना। तसल्ली देना।

प्रबोधिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्ति। सुनंदिनी। मंजुभाषिणी।

प्रबोधिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवोत्थान या कार्तिक शुक्ला एकादशी।

प्रभंजन—संज्ञा पुं० [सं०] १. तोड़-फोड़। नाश। २. प्रचंड वायु। आँधी।

प्रभद्रक—संज्ञा पुं० दे० "प्रभद्रिका"।

प्रभद्रिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्ति।

प्रभव—संज्ञा पुं० [सं०] १. उत्पत्ति-कारण। २. उत्पत्ति-स्थान। आकर। ३. जन्म। उत्पत्ति। ४. सृष्टि। संसार।

प्रभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्रकाश। आभा। चमक। २. सूर्य की एक पत्नी। ३. एक द्वादशाक्षरा वृत्ति। मंदाकिनी।

प्रभाउ*—संज्ञा पुं० दे० "प्रभाव"।

प्रभाकर–संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य्य। २. चंद्रमा। ३. अग्नि। ४. समुद्र।

प्रभात–संज्ञा पुं० [सं०] सवेरा। तड़का।

प्रभाती–संज्ञा स्त्री० [सं० प्रभात] एक प्रकार का गीत जो प्रातःकाल गाया जाता है।

प्रभाव–संज्ञा पुं० [सं०] १. उद्भव। प्रादुर्भाव। २. सामर्थ्य। शक्ति। ३. असर। ४. महिमा। माहात्म्य। ५. इतना मान या अधिकार कि जो बात चाहे, वह या करा सके। साख या दबाव।

प्रभावती–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सूर्य्य की पत्नी। २. तेरह अक्षरों का एक छंद। रुचिरा। वि० स्त्री० प्रभाववाली।

प्रभास–संज्ञा पुं० [सं०] १. दीप्ति। ज्योति। २. एक प्राचीन तीर्थ। सोमतीर्थ।

प्रभासना*–क्रि० अ० [सं० प्रभासन] भासित होना। दिखाई पड़ना।

प्रभु–संज्ञा पुं० [सं०] १. अधिपति। नायक। २. स्वामी। मालिक। ३. ईश्वर। भगवान्।

प्रभुता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बड़ाई। महत्त्व। २. हुकूमत। शासनाधिकार। ३. वैभव। ४. साहिबी। मालिकपन।

प्रभुताई–संज्ञा स्त्री० दे० "प्रभुता"।

प्रभुत्व–संज्ञा पुं० [सं०] प्रभुता।

प्रभू*–संज्ञा पुं० दे० "प्रभु"।

प्रभूत–वि० [सं०] १. निकला हुआ। उत्पन्न। २. उन्नत। ३. प्रचुर। बहुत। संज्ञा पुं० पंचभूत। तत्त्व।

प्रभृति–अव्य० [सं०] इत्यादि। वगैरह।

प्रभेद–संज्ञा पुं० [सं०] भेद। विभिन्नता।

प्रमत्त–वि० [सं०] [संज्ञा प्रमत्तता] १. मस्त। नशे में चूर। २. पागल। बावला। ३. जिसकी बुद्धि ठिकाने न हो।

प्रमथ–संज्ञा पुं० [सं०] १. मथन या पीड़ित करनेवाला। २. शिव के एक प्रकार के गण या पारिषद।

प्रमथन–संज्ञा पुं० [सं०] १. मथना। २. दुःख पहुँचाना। ३. वध या नाश करना।

प्रमद–संज्ञा पुं० [सं०] १. मतवालापन। २. हर्ष। आनंद। वि० मत्त। मतवाला।

प्रमदा–संज्ञा स्त्री० [सं०] युवती स्त्री।

प्रमर्दन–संज्ञा पुं० [सं०] १. अच्छी तरह मलना दलना। २. कुचलना। रौंदना। वि० खूब मर्दन करनेवाला।

प्रमा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शुद्ध बोध। यथार्थ ज्ञान। (न्याय) २. माप।

प्रमाण–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह बात जिससे कोई दूसरी बात सिद्ध हो। सबूत। २. एक अलंकार जिसमें आठ प्रमाणों में से किसी एक का कथन होता है। ३. सत्यता। सचाई। ४. निश्चय। प्रतीति। यक़ीन। ५. मर्य्यादा। मान। आदर। ६. प्रामाणिक बात या वस्तु। मानने की बात। ७. इयत्ता। हद। मान। ८. प्रमाणपत्र। वि० १. प्रमाणित। चरितार्थ। ठीक घटना हुआ। २. माना जानेवाला। ठीक। ३. बड़ाई आदि में बराबर। अव्य० पर्य्यंत। तक।

प्रमाणकोटि–संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रमाण मानी जानेवाली बातों या वस्तुओं का घेरा।

प्रमाणना–क्रि० स० दे० "प्रमानना"।

प्रमाणपत्र–संज्ञा पुं० [सं०] वह काग़ज़ जिस पर का लेख किसी बात का प्रमाण हो। सर्टिफ़िकेट।

प्रमाणिक–वि० दे० "प्रामाणिक"।

प्रमाणिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] नगस्वरूपिणी वृत्त का दूसरा नाम।

प्रमाणित–वि० [सं०] प्रमाण द्वारा सिद्ध। साबित। निश्चित।

प्रमाता–संज्ञा पुं० [सं० प्रमातृ] १. वह जिसे प्रमा का ज्ञान हो। २. ज्ञानकर्ता आत्मा या चेतन पुरुष। ३. द्रष्टा। साक्षी। संज्ञा स्त्री० [सं०] दादी। पिता की माता।

प्रमाद–संज्ञा पुं० [सं०] १. भूल। चूक। भ्रम। भ्रांति। २. अंतःकरण की दुर्बलता। ३ समाधि के साधनों की भावना न करना या उन्हें ठीक न समझना। (योग)

प्रमादी–वि० [सं० प्रमादिन्] [स्त्री० प्रमादिनी] प्रमादयुक्त। भूल-चूक करनेवाला।

प्रमान*—संज्ञा पुं० दे० "प्रमाण"।

प्रमानना*—क्रि० स० [सं० प्रमाण+ना (प्रत्य०)] १. प्रमाण मानना। ठीक समझना। २. प्रमाणित करना। साबित करना। ३. स्थिर करना। निश्चित करना।

प्रमानी*—वि० [सं० प्रामाणिक] मानने योग्य। प्रमाण योग्य। माननीय।

प्रमित—वि० [सं०] १. परिमित। २. निश्चित। ३. अल्प। थोड़ा।

प्रमिताक्षरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक द्वादशाक्षरा वर्णवृत्ति।

प्रमीला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. तंद्रा। २. थकावट। शैथिल्य। ग्लानि।

प्रमुख—वि० [सं०] १. प्रथम। पहला। २. प्रधान। श्रेष्ठ। ३. मान्य। प्रतिष्ठित। अव्य० इत्यादि। वगैरह।

प्रमुदित—वि० [सं०] हर्षित। प्रसन्न।

प्रमुदितवदना—संज्ञा स्त्री० [सं०] बारह अक्षरों की एक वर्णवृत्ति। मंदाकिनी।

प्रमेय—वि० [सं०] १. जो प्रमाण का विषय हो सके। २. जिसका नाम बताया जा सके। ३. जिसका निर्धारण कर सकें। संज्ञा पुं० वह जिसका बोध प्रमाण द्वारा करा सकें।

प्रमेह—संज्ञा पुं० [सं०] एक रोग जिसमें मूत्र मार्ग से शुक्र तथा शरीर की और धातुएँ निकला करती हैं।

प्रमोद—संज्ञा पुं० [सं०] १. हर्ष। आनंद। प्रसन्नता। २. सुख। ३. दे० "प्रमोदा"।

प्रमोदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सांख्य में आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक।

प्रयंक*—संज्ञा पुं० दे० "पर्यंक"।

प्रयंत*—अव्य० दे० "पर्यंत"।

प्रयत्न—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए की जानेवाली क्रिया। प्रयास। चेष्टा। कोशिश। २. प्राणियों की क्रिया। जीवों का व्यापार। (न्याय) ३. वर्णों के उच्चारण में होनेवाली क्रिया। (व्याकरण)

प्रयत्नवान्—वि० [सं० प्रयत्नवत्] [स्त्री० प्रयत्नवती] प्रयत्न में लगा हुआ।

प्रयाग—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध तीर्थ जो गंगा-जमुना के संगम पर है। इलाहाबाद।

प्रयागवाल—संज्ञा पुं० [हिं० प्रयाग+वाला (प्रत्य०)] प्रयाग तीर्थ का पंडा।

प्रयाण—संज्ञा पुं० [सं०] १. गमन। प्रस्थान। यात्रा। २. युद्धयात्रा। चढ़ाई।

प्रयास—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रयत्न। उद्योग। कोशिश। २. श्रम। मेहनत।

प्रयुक्त—वि० [सं०] १. अच्छी तरह जोड़ा या मिलाया हुआ। सम्मिलित। २. जो खूब काम में लाया गया हो।

प्रयुत—संज्ञा पुं० [सं०] दस लाख की संख्या।

प्रयोक्ता—संज्ञा पुं० [सं० प्रयोक्तृ] १. प्रयोग या व्यवहार करनेवाला। २. ऋण देनेवाला।

प्रयोग—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी काम में लगाना। आयोजन। साधन। २. व्यवहार। इस्तेमाल। बरता जाना। ३. क्रिया का साधन। विधान। अमल। ४. मारण, मोहन आदि तांत्रिक उपचार या साधन जो बारह कहे जाते हैं। ५. अभिनय। नाटक का खेल। ६. यज्ञादि कर्मों के अनुष्ठान का बोध करानेवाली विधि। पद्धति। ७. दृष्टांत। निदर्शन।

प्रयोगातिशय—संज्ञा पुं० [सं०] नाटक में प्रस्तावना का एक भेद।

प्रयोगी, प्रयोजक—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रयोगकर्त्ता। अनुष्ठान करनेवाला। २. काम में लगानेवाला। प्रेरक। ३. प्रदर्शक।

प्रयोजन—संज्ञा पुं० [सं०] १. कार्य्य। काम। अर्थ। २. उद्देश्य। अभिप्राय। मतलब। आशय। ३. उपयोग। व्यवहार।

प्रयोजनवती लक्षणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह लक्षणा जो प्रयोजन द्वारा वाच्यार्थ से भिन्न अर्थ प्रकट करे।

प्रयोजनीय—वि० [सं०] काम का। मतलब का।

प्रयोज्य—वि० [सं०] प्रयोग के योग्य। काम में लाने लायक।

प्ररोचना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चाह या रुचि उत्पन्न करना। २. उत्तेजना। बढ़ावा।

३ नाटक के अभिनय में प्रस्तावना के बीच में सूत्रधार, नट आदि का नाटक और नाटककार की प्रशंसा में कुछ कहना।

प्ररोहण—संज्ञा पुं० [सं०] १ आरोह। चढ़ाव। २ उगना। जमना।

प्रलंब—वि० [सं०] १ नीचे की ओर दूर तक लटकता हुआ। २ लंबा। ३ टँगा हुआ। टिका हुआ। ४ निकला हुआ।

प्रलंबन—संज्ञा पुं० [सं०] अवलंबन। सहारा।

प्रलंबी—वि० [सं० प्रलंबिन्] [स्त्री० प्रलंबिनी] १ दूर तक लटकनेवाला। २ सहारा लेनेवाला।

प्रलयकर—वि० [सं०] [स्त्री० प्रलयकरी] प्रलयकारी। सर्वनाशकारी।

प्रलय—संज्ञा पुं० [सं०] १ लय को प्राप्त होना। न रह जाना। २ जगत् के नाना रूपों का प्रकृति में लीन होकर मिट जाना। संसार का तिरोभाव। ३ साहित्य में एक सात्त्विक भाव जिसमें किसी वस्तु में तन्मय होने से पूर्व स्मृति का लोप हो जाता है। ४ मूर्च्छा। बेहोशी।

प्रलाप—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रलापी] १ कहना। बकना। २ व्यर्थ की बकवाद। पागलों की सी बड़बड़।

प्रलेप—संज्ञा पुं० [सं०] अंग पर कोई गीली दवा छोपना या रखना। लेप। पुल्टिस।

प्रलेपन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रलेपक, प्रलेप्य] लेप करने की क्रिया। पोतने का काम।

प्रलोभ, प्रलोभन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रलोभक] लोभ दिखाना। लालच दिखाना।

प्रवंचना—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० प्रवंचक] छल। ठगपना। धूर्तता।

प्रवक्ता—संज्ञा पुं० [सं० प्रवक्तृ] १ अच्छी तरह बोलने या कहनेवाला। २ वेदादि का उपदेश देनेवाला।

प्रवचन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रवचनीय] १ अच्छी तरह समझाकर कहना। २ व्याख्या। ३ वेदांग।

प्रवण—संज्ञा पुं० [सं०] १ क्रमशः नीची होती हुई भूमि। ढाल। उतार। २ चौराहा। ३ उदर। पेट। वि० १ ढालुवाँ। जो क्रमशः नीचा होता गया हो। २ झुका हुआ। नत। ३ प्रवृत्त। रत। ४ नम्र। विनीत। ५ उदार।

प्रवत्स्यत्पतिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जिसका पति विदेश जानेवाला हो।

प्रवत्स्यत्प्रेयसी, प्रवत्स्यद्भर्तृका—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रवत्स्यत्पतिका।

प्रवर—वि० [सं०] श्रेष्ठ। बड़ा। मुख्य। संज्ञा पुं० १ किसी गोत्र के अंतर्गत विशेष प्रवर्तक मुनि। २ संतति।

प्रवरललिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त।

प्रवर्त—संज्ञा पुं० [सं०] १ कार्य्यारंभ। ठानना। २ एक प्रकार के मेघ।

प्रवर्तक—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी काम को चलानेवाला। संचालक। २ आरंभ करनेवाला। जारी करनेवाला। ३ काम में लगानेवाला। प्रवृत्त करनेवाला। ४ उभारनेवाला। उकसानेवाला। ५ निकालनेवाला। ईजाद करनेवाला। ६ नाटक में प्रस्तावना का वह भेद जिसमें सूत्रधार वर्तमान समय का वर्णन करता हो और उसी का संबंध लिए पात्र का प्रवेश हो।

प्रवर्तन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रवर्तित, प्रवर्तनीय, प्रवर्त्य] १ कार्य्य आरंभ करना। ठानना। २ काम को चलाना। ३ प्रचार करना। जारी करना।

प्रवर्षण—संज्ञा पुं० [सं०] १ वर्षा। बारिश। २ किष्किंधा के समीप का एक पर्वत।

प्रवह—संज्ञा पुं० [सं०] १ खूब बहाव। २ सात वायुओं में से एक वायु।

प्रवाद—संज्ञा पुं० [सं०] १ बातचीत। २ जनश्रुति। जनरव। अफवाह। ३ झूठी बदनामी। अपवाद।

प्रवान*—संज्ञा पुं० दे० "प्रमाण"।

प्रवाल—संज्ञा पुं० [सं०] मूँगा। विद्रुम।

प्रवास—संज्ञा पुं० [सं०] १ अपना देश छोड़कर दूसरे देश में रहना। २ विदेश।

प्रवासी—वि० [सं० प्रवासिन्] परदेश में रहनेवाला। परदेसी।

प्रवाह–संज्ञा पुं० [सं०] १. जल का स्रोत। बहाव। २. बहता हुआ पानी। धारा। ३. काम का जारी रहना। ४. चलता हुआ क्रम। तार। सिलसिला।

प्रवाहित–वि० [सं०] बहता हुआ।

प्रवाही–वि० [सं० प्रवाहिन्] [स्त्री० प्रवाहिनी] १. बहानेवाला। २. बहनेवाला। ३. तरल। द्रव।

प्रविष्ट–वि० [सं०] घुसा हुआ।

प्रविसना–क्रि० अ० [सं० प्रविश] घुसना।

प्रवीण–वि०[सं०] [संज्ञा प्रवीणता] निपुण। कुशल। दक्ष। चतुर। होशियार।

प्रवीर–वि० [सं०] भारी योद्धा। बहादुर।

प्रवृत्त–वि० [सं०] १. किसी बात की ओर झुका हुआ। २. तत्पर। उद्यत। तैयार।

प्रवृत्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्रवाह। बहाव। २. मन का लगाव। लगन। ३. न्याय में एक यत्नविशेष। ४. प्रवर्तन। काम का चलना। ५. सांसारिक विषयों का ग्रहण। निवृत्ति का उलटा।

प्रवृद्ध–वि० [सं०] १. खूब बढ़ा हुआ। २. प्रौढ़। खूब पक्का। संज्ञा पुं० तलवार के ३२ हाथों में से एक।

प्रवेश–संज्ञा पुं० [सं०] १. भीतर जाना। घुसना। पैठना। २. गति। पहुँच। रसाई। ३. किसी विषय की जानकारी।

प्रवेशिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह पत्र या चिह्न जिसे दिखाकर कहीं प्रवेश करने पाएँ। २. प्रवेश के लिए दिया जानेवाला धन। दाखिला।

प्रव्रज्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] संन्यास।

प्रशंस*–संज्ञा स्त्री० दे० "प्रशंसा"। वि० [सं० प्रशंस्य] प्रशंसा के योग्य।

प्रशंसक–वि० [सं०] १. प्रशंसा करनेवाला। २. खुशामदी।

प्रशंसन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रशंसनीय, प्रशंसित, प्रशंस्य] गुण-कीर्त्तन। स्तुति करना। सराहना। तारीफ करना।

प्रशंसना*–क्रि० स० [सं० प्रशंसन] सराहना। गुणानुवाद करना। तारीफ करना।

प्रशंसनीय–वि० [सं०] प्रशंसा के योग्य। बहुत अच्छा।

प्रशंसा–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० प्रशंसित] गुण-वर्णन। स्तुति। बड़ाई। तारीफ़।

प्रशंसोपमा–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह उपमालंकार जिसमें उपमेय की अधिक प्रशंसा करके उपमान की प्रशंसा द्योतित की जाती है।

प्रशंस्य–वि० [सं०] प्रशंसनीय।

प्रशमन–संज्ञा पुं० [सं०] १. शमन। शांति। २. नाशन। ध्वंस करना। ३. मारण। वध।

प्रशस्त–वि० [सं०] १. प्रशंसनीय। सुन्दर। २. श्रेष्ठ। उत्तम। ३. भव्य।

प्रशस्तपाद–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन आचार्य्य जिनका वैशेषिक दर्शन पर पदार्थ-धर्म-संग्रह नामक ग्रंथ है।

प्रशस्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्रशंसा। स्तुति। २. राजा की ओर से एक प्रकार के आज्ञापत्र जो चट्टानों या ताम्रपत्रादि पर खोदे जाते थे। ३. प्राचीन पुस्तकों के आदि और अंत की कुछ पंक्तियाँ जिनसे पुस्तक के कर्ता, विषय, कालादि का परिचय मिलता हो।

प्रशांत–वि० [सं०] १. चंचलता-रहित। स्थिर। २. शांत। निश्चल वृत्तिवाला। संज्ञा पुं० एक महासागर जो एशिया और अमरीका के बीच में है।

प्रशाखा–संज्ञा स्त्री० [सं०] शाखा की शाखा। टहनी। पतली शाखा।

प्रश्न–संज्ञा पुं० [सं०] १. पूछताछ। जिज्ञासा। सवाल। २. पूछने की बात। ३. विचारणीय विषय। ४. एक उपनिषद्।

प्रश्नोत्तर–संज्ञा पुं० [सं०] १. सवाल-जवाब। प्रश्न और उत्तर। सवाद। २. वह काव्यालंकार जिसमें प्रश्न और उत्तर रहते हैं।

प्रश्रय–संज्ञा पुं० [सं०] १. आश्रयस्थान २. टेक। सहारा। आधार।

प्रश्वास–संज्ञा पुं० [सं०] वह वायु जो नथने से बाहर निकलती है।

प्रष्टव्य–वि० [सं०] १. पूछने योग्य। २

पूछते था। जिसे पूछता हो।

प्रसंग—संज्ञा पुं० [सं०] १ संबंध। लगाव। संगति। २ विषय का लगाव। अर्थ की संगति। ३ स्त्री-पुरुष का संयोग। ४ बात। वार्ता। विषय। ५ उपयुक्त संयोग। अवसर। मौका। ६ हेतु। कारण। ७ विषयानुक्रम। प्रस्ताव। प्रकरण। ८ विस्तार। फैलाव।

प्रसंसना*—क्रि० स० दे० 'प्रशंसना'।

प्रसन्न—वि० [सं०] १ संतुष्ट। तुष्ट। २ प्रफुल्ल। हर्षित। प्रमुदित। ३ अनुकूल। ‡वि० [फा० पसंद] मनोनीत। पसंद।

प्रसन्नता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ तुष्टि। संतोष। २ प्रफुल्लता। हर्ष। आनंद। ३ कृपा।

प्रसन्नित*‡—वि० दे० "प्रसन्न"।

प्रसरण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रसरणीय, प्रसरित] १ आगे बढ़ना। खिसकना। सरकना। २ फैलना। फैलाव। ३ व्याप्ति। ४ विस्तार।

प्रसव—संज्ञा पुं० [सं०] १ बच्चा जनने की क्रिया। जनन। प्रसूति। २ जन्म। उत्पत्ति। ३ बच्चा। संतान।

प्रसविनी—वि० स्त्री० [सं०] प्रसव करनेवाली। जननेवाली।

प्रसाद—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रसन्नता। २ अनुग्रह। कृपा। मिहरबानी। ३ वह वस्तु जो देवता को चढ़ाई जाय। ४ वह पदार्थ जिसे देवता या बड़े लोग प्रसन्न होकर अपने भक्तों या सेवकों को दें। ५ देवता, गुरुजन आदि को देने पर बची हुई वस्तु जो काम में लाई जाय। ६ भोजन। मुहा०—प्रसाद पाना = भोजन करना। ७ काव्य का एक गुण। जिसकी भाषा स्वच्छ और साफ हो और सुनने के साथ ही जिसका भाव समझ में आ जाय। ८ शब्दालंकार के अंतर्गत एक वृत्ति। कोमला वृत्ति। *†—९ दे० 'प्रासाद'।

प्रसादना*—क्रि० स० [सं० प्रसादन] प्रसन्न करना।

प्रसंसनीय*—वि० [सं०] प्रशंसा करने योग्य।

प्रसादी—संज्ञा स्त्री० [हिं० प्रसाद] १ देवताओं का चढ़ाया हुआ पदार्थ। २ नैवेद्य। ३ वह पदार्थ जो पूज्य और बड़े लोग छोटों को दें।

प्रसार—संज्ञा पुं० [सं०] १ विस्तार। फैलाव। पसार। २ संचार। ३ गमन। ४ निर्गम। निकास।

प्रसारण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रसारित, प्रसार्य] १ फैलाना। २ बढ़ाना।

प्रसारिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गंधप्रसारिणी लता। २ लजालू। लाजवंती।

प्रसारित—वि० [सं०] फैलाया हुआ।

प्रसिद्ध—वि० [सं०] १ भूषित। अलंकृत। २ ख्यात। विख्यात। मशहूर।

प्रसिद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ख्याति। शोहरत। २ भूषा। बनाव सिंगार।

प्रसुप्त—वि० [सं०] सोया हुआ।

प्रसुप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] नींद।

प्रसू—संज्ञा स्त्री० [सं०] जननेवाली। उत्पन्न करनेवाली।

प्रसूत—वि० [सं०] [स्त्री० प्रसूता] १ उत्पन्न। संजात। पैदा। २ उत्पादक। संज्ञा पुं० एक प्रकार का रोग जो स्त्रियों को प्रसव के पीछे होता है।

प्रसूता—संज्ञा स्त्री० [सं०] बच्चा जननेवाली स्त्री। जच्चा।

प्रसूति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रसव। जनन। २ उद्भव। ३ कारण। प्रकृति।

प्रसूतिका—संज्ञा स्त्री० दे० 'प्रसूता'।

प्रसून—संज्ञा पुं० [सं०] १ फूल। २ फल।

प्रसृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० प्रसृत] १ फैलाव। विस्तार। २ संतति। संतान।

प्रसेक—संज्ञा पुं० [सं०] १ सेचन। सींचना। २ निचोड़। ३ छिड़काव। ४ एक असाध्य रोग। जिरियान। (सुश्रुत)

प्रसेद*—संज्ञा पुं० [सं० प्रस्वेद] पसीना।

प्रस्तर—संज्ञा पुं० [सं०] १ पत्थर। २ बिछावन। ३ चौड़ी सतह। ४ प्रस्तार।

प्रस्तार—संज्ञा पुं० [सं०] १ फैलाव। विस्तार।

२. आधिक्य। वृद्धि। ३. परत। तह। ४. छंदःशास्त्र के अनुसार नौ प्रत्ययों में से पहला जिससे छंदों के भेद की संख्याओं और रूपों का ज्ञान होता है।

प्रस्ताव-संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रसंग। छिड़ी हुई बात। २. अवसर पर कही हुई बात। जिक्र। चर्चा। ३. सभा के सामने उपस्थित मंतव्य। (आधुनिक) ४. प्राक्कथन। भूमिका। विषय-परिचय।

प्रस्तावना-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आरंभ। २. प्राक्कथन। भूमिका। उपोद्घात। ३. नाटक में अभिनय के पूर्व विषय का परिचय देने के लिए उठाया हुआ प्रसंग।

प्रस्तावित-वि० [सं०] जिसके लिए प्रस्ताव किया गया हो।

प्रस्तुत-वि० [सं०] १. जिसकी स्तुति या प्रशंसा की गई हो। २. जो कहा गया हो। उक्त। कथित। ३. उपस्थित। सामने आया हुआ। ४. उद्यत। तैयार।

प्रस्तुतालंकार-संज्ञा पुं० [सं०] एक अलंकार जिसमें एक प्रस्तुत के संबंध में कोई बात कहकर उसका अभिप्राय दूसरे प्रस्तुत के प्रति घटाया जाता है।

प्रस्थ-संज्ञा पुं० [सं०] १. पहाड़ के ऊपर की चौरस-भूमि। २. प्राचीन काल का एक मान।

प्रस्थान-संज्ञा पुं० [सं०] १. गमन। यात्रा। रवानगी। २. पहनने के कपड़े आदि जिसे लोग यात्रा के मुहूर्त्त पर घर से निकालकर यात्रा की दिशा में कहीं पर रखवा देते हैं।

प्रस्थानी-वि० [हिं० प्रस्थान] जानेवाला।

प्रस्थापन-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रस्थापित, प्रस्थाप्य] १. प्रस्थान कराना। भेजना। २. प्रेरण। ३. स्थापन।

प्रस्थित-वि० [सं०] १. ठहराया हुआ। टिका हुआ। २. दृढ़। ३. जो गया हो। गत।

प्रस्फुरण-संज्ञा पुं० [सं०] १. निकलना। २. प्रकाशित होना।

प्रस्फोटन-संज्ञा पुं० [सं०] एकबारगी जोर से खुलना या फूटना। स्फोट।

प्रस्रवण-संज्ञा पुं० [सं०] १. जल आदि का टपक या गिर कर बहना। २. सोता। ३. प्रपात। झरना। निर्झर।

प्रस्वेद-संज्ञा पुं० [सं०] पसीना।

प्रहर-संज्ञा पुं० [सं०] दिन-रात के आठ सम भागों में से एक भाग। पहर।

प्रहरखना*-क्रि० अ० [सं० प्रहर्षण] हर्षित होना। आनंदित होना।

प्रहरणकलिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] चौदह अक्षरों की एक वर्णवृत्ति।

प्रहरी-वि० [सं० प्रहरिन्] १. पहर पहर पर घंटा बजानेवाला। घड़ियाली। २. पहरा देनेवाला।

प्रहर्ष-संज्ञा पुं० [सं०] हर्ष। आनंद।

प्रहर्षण-संज्ञा पुं० [सं०] १. आनंद। २. एक अलंकार जिसमें बिना उद्योग के अनायास किसी के वांछित पदार्थ की प्राप्ति का वर्णन होता है।

प्रहर्षिणी-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्ति।

प्रहसन-संज्ञा पुं० [सं०] १. हँसी। दिल्लगी। परिहास। २. चुहल। खिल्ली। ३. हास्य-रस-प्रधान एक प्रकार का काव्य-मिश्र नाट्य जो रूपक के दस भेदों में से है।

प्रहार-संज्ञा पुं० [सं०] आघात। वार। चोट। मार।

प्रहारना*-क्रि० स० [सं० प्रहार] १. मारना। आघात करना। २. मारने के लिये चलाना।

प्रहारित†*-वि० [सं० प्रहार] जिस पर प्रहार हो। प्रताड़ित।

प्रहारी-वि० [सं० प्रहारिन्] [स्त्री० प्रहारिणी] १. मारनेवाला। प्रहार करनेवाला। २. चलानेवाला। छोड़नेवाला। ३. नाशक।

प्रहेलिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] पहेली।

प्रह्लाद-संज्ञा पुं० [सं०] १. आमोद। आनंद। २. एक भक्त दैत्य जो राजा हिरण्यकशिपु का पुत्र था।

प्रांगण-संज्ञा पुं० [सं०] मकान के बीच का खुला हुआ भाग। आँगन। सहन।

प्रांजल—वि० [सं०] १. सरल। सीधा। २ सच्चा। ३. बराबर। समान।

प्रांत—संज्ञा पु० [सं०] [वि० प्रांतिक] १ अंत। मेंड़। सीमा। २. किनारा। छोर। सिरा। ३ ओर। दिशा। तरफ। ४. खंड। प्रदेश।

प्रांतीय, प्रांतिक—वि० [सं०] किसी एक प्रांत से संबंध रखनेवाला।

प्राकाम्य—संज्ञा पु० [सं०] आठ प्रकार के ऐश्वर्यों या सिद्धियों में से एक।

प्राकार—संज्ञा पु० दे० "प्राचीर"।

प्राकृत—वि० [सं०] १. प्रकृति से उत्पन्न या प्रकृति-संबंधी। २ स्वाभाविक। नैसर्गिक। ३ भौतिक। ४. सहज।
संज्ञा स्त्री० १. बोलचाल की भाषा जिसका प्रचार किसी समय किसी प्रांत में हो अथवा रहा हो। २. एक प्राचीन भारतीय भाषा। भारत की बोलचाल की आर्य्य भाषाएँ जो बोलचाल की प्राकृतों से बनी हैं।

प्राकृतिक—वि० [सं०] १ जो प्रकृति से उत्पन्न हुआ हो। २ प्रकृति-संबंधी। प्रकृति का। ३. स्वाभाविक। सहज।

प्राकृतिक भूगोल—संज्ञा पु० [सं०] भूगोल-विद्या का वह अंग जिसमें पृथ्वी की वर्त्तमान स्थिति तथा भिन्न भिन्न प्राकृतिक अवस्थाओं का वर्णन होता है।

प्राक्—वि० [सं०] पहले का। अगला।
संज्ञा पु० पूर्व। पूरब।

प्राखर्य—संज्ञा पु० [सं०] प्रखरता।

प्रागभाव—संज्ञा पु० [सं०] १ किसी विशेष समय के पूर्व न होना। २ वह पदार्थ जिसका आदि न हो, पर अंत हो।

प्राग्ज्योतिष—संज्ञा पु० [सं०] महाभारत आदि के अनुसार कामरूप देश।

प्राग्ज्योतिषपुर—संज्ञा पु० [सं०] प्राग्ज्योतिष देश की राजधानी। आधुनिक गोहाटी।

प्राङ्मुख—वि० [सं०] जिसका मुँह पूर्व दिशा की ओर हो। पूर्वाभिमुख।

प्राची—संज्ञा स्त्री० [सं०] पूर्व दिशा। पूरब।

प्राचीन—वि० [सं०] १. पूरब का। २ पिछले जमाने का। पुराना। पुरातन। ३ वृद्ध।
संज्ञा पु० दे० "प्राचीर"।

प्राचीनता—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्राचीन होने का भाव। पुरानापन।

प्राचीर—संज्ञा पु० [सं०] चहार-दीवारी। शहरपनाह। परकोटा।

प्राचुर्य—संज्ञा पु० [सं०] प्रचुर होने का भाव। अधिकता। बहुतायत।

प्राच्य—वि० [सं०] १. पूर्व देश या दिशा में उत्पन्न। पूर्व का। २ पूर्वीय। पूर्व-संबंधी। ३ पुराना। प्राचीन।

प्राच्यवृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] साहित्य में वैताली वृत्ति का एक भेद।

प्राजापत्य—वि० [सं०] १. प्रजापति-संबंधी २ प्रजापति से उत्पन्न।
संज्ञा पु० १ आठ प्रकार के विवाहों में से चौथा। इसमें कन्या का पिता वर और कन्या को एकत्र कर उनसे यह प्रतिज्ञा कराता है कि हम दोनों मिलकर गार्हस्थ्य धर्म का पालन करेंगे। २ यज्ञ।

प्राज्ञ—वि० [सं०] [स्त्री० प्राज्ञा, प्राज्ञी] १ बुद्धिमान्। समझदार। चतुर। २. पंडित। विद्वान्।

प्राड्विवाक—संज्ञा पु० [सं०] १ न्याय करनेवाला। न्यायाधीश। २ वकील।

प्राण—संज्ञा पु० [सं०] १ वायु। हवा। २ शरीर की वह वायु जिससे मनुष्य जीवित रहता है। ३ श्वास। साँस। ४ काल का वह विभाग जिसमें दस दीर्घ मात्राओं का उच्चारण हो सके। ५ बल। शक्ति। ६ जीवन। जान।

मुहा०—प्राण उड़ जाना = १. बहुत घबराहट हो जाना। हक्का-बक्का हो जाना। २ डर जाना। भयभीत होना। प्राण का गले तक आना = मरने पर होना। मरणासन्न होना। प्राण या प्राणों का मुँह को आना या चले आना = १ मरने पर होना। २. अत्यंत दुःख

होना। बहुत अधिक कष्ट होना। प्रान जाना, छूटना या निकलना = जीवन का अंत होना। मरना। प्रान डालना = जीवन प्रदान करना। प्रान त्यागना, तजना या छोड़ना = मरना। प्राण देना = मरना। किसी पर या किसी के ऊपर प्राण देना = १. किसी के किसी काम में बहुत दुखी या कष्ट होकर मरना। २. किसी को बहुत अधिक चाहना। प्राणों से भी बढ़कर चाहना। प्राण निकलना = १ मर जाना। मरना। २. बहुत घबरा जाना। भयभीत होना। प्रान पयान होना = प्राण निकलना। प्रान या प्राणों पर बीतना = १. जीवन संकट में पड़ना। २. मर जाना। प्राण रखना = १. जिलाना। जीवन देना। २. जान बचाना। जीवन की रक्षा करना। प्राण लेना या हरना = मार डालना। प्राण हारना = १. मर जाना। २. साहस टूट जाना। ७. परम प्रिय। ८. ब्रह्मा। ९. विष्णु। १०. अग्नि। आग।

प्राणअधार*†–संज्ञा पुं० [सं० प्राण+आधार] १. बहुत प्रिय व्यक्ति। २. पति। स्वामी।

प्राणघात–संज्ञा पुं० [सं०] हत्या। वध।

प्राणजीवन–संज्ञा पुं० [सं०] १. प्राणाधार। २. परम प्रिय व्यक्ति।

प्राणत्याग–संज्ञा पुं० [सं०] मर जाना।

प्राणदंड–संज्ञा पुं० [सं०] हत्या आदि अपराध के बदले में मार डालना।

प्राणद–वि० [सं०] १. जो प्राण दे। २ प्राणों की रक्षा करनेवाला।

प्राणदान–संज्ञा पुं० [सं०] किसी को मरने या मारे जाने से बचाना।

प्राणधन–वि० [सं०] अत्यंत प्रिय।

प्राणधारी–वि० [सं० प्राणधारिन्] १. जीवित प्राणयुक्त। २. जो साँस लेता हो। चेतन। संज्ञा पुं० प्राणी। जंतु। जीव।

प्राणनाथ–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० प्राणनाथा] १. प्रिय व्यक्ति। प्यारा। प्रियतम। २. पति। स्वामी। ३. एक संप्रदाय के प्रवर्तक आचार्य्य जो क्षत्रिय थे और औरंगजेब के समय में हुए थे।

प्राणनाथी–संज्ञा पुं० [सं० प्राणनाथ] १. प्राणनाथ के संप्रदाय का पुरुष। २. स्वामी प्राणनाथ का चलाया हुआ संप्रदाय।

प्राणनाश–संज्ञा पुं० [सं०] हत्या या मृत्यु।

प्राणपति–संज्ञा पुं० [सं०] १. पति। स्वामी। २. प्रिय व्यक्ति। प्यारा।

प्राणप्यारा–संज्ञा पुं० [हिं० प्राण + प्यारा] [स्त्री० प्राणप्यारी] १. प्रियतम। अत्यंत प्रिय व्यक्ति। २. पति। स्वामी।

प्राणप्रतिष्ठा–संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी नई मूर्ति को मंदिर आदि में स्थापित करते समय मंत्रों द्वारा उसमें प्राण का आरोप।

प्राणप्रद–वि० [सं०] १. प्राणदाता। जो प्राण दे। २. स्वास्थ्य-वर्धक।

प्राणप्रिय–वि० [सं०] [स्त्री० प्राणप्रिया] जो प्राण के समान प्रिय हो। प्रियतम।

प्राणमय–वि० [सं०] जिसमें प्राण हों।

प्राणमय कोश–संज्ञा पुं० [सं०] वेदांत के अनुसार पाँच कोशों में से दूसरा। यह पाँच प्राणों से बना हुआ माना जाता है।

प्राणवल्लभ–संज्ञा पुं० [सं०] १. अत्यंत प्रिय। २. स्वामी। पति।

प्राणवायु–संज्ञा स्त्री० [सं०] प्राण।

प्राणशरीर–संज्ञा पुं० [सं०] एक सूक्ष्म शरीर जो मनोमय माना गया है।

प्राणांत–संज्ञा पुं० [सं०] मरण। मृत्यु।

प्राणांतक–वि० [सं०] प्राण लेनेवाला। जान लेनेवाला। घातक।

प्राणाधार, प्राणाधिक–वि० [सं०] अत्यंत प्रिय। बहुत प्यारा। संज्ञा पुं० पति। स्वामी।

प्राणायाम–संज्ञा पुं० [सं०] योग शास्त्रानुसार योग के आठ अंगों में चौथा। श्वास और प्रश्वास। इन दोनों प्रकार की वायुओं की गतियों को धीरे धीरे कम करना।

प्राणिद्यूत–संज्ञा पुं० [सं०] वह बाजी जो मेंढ़े, तीतर आदि जीवों की लड़ाई आदि पर लगाई जाय।

प्राणी–वि० [सं० प्राणिन्] प्राणधारी संज्ञा पुं० १. जंतु। जीव। २. मनुष्य।

‡ संज्ञा स्त्री०, पुं० पुरुष या स्त्री०।
प्राणेश, प्राणेश्वर–संज्ञा पुं० [सं०][स्त्री० प्राणेश्वरी] १. पति। स्वामी। २. बहुत प्यारा।
प्रात–अव्य० [सं० प्रातः] सवेरे। तड़के। संज्ञा पुं० सवेरा। प्रातःकाल।
प्रातः–संज्ञा पुं०[सं० प्रातर्] सवेरा। प्रभात। काल।
प्रातःकर्म–संज्ञा पुं० [सं०] वह कर्म जो प्रातःकाल किया जाता हो; जैसे—स्नान।
प्रातःकाल–संज्ञा पुं० [सं०][वि० प्रातःकालीन] १. रात के अंत में सूर्योदय के पूर्व का काल। यह तीन मुहूर्त्त का माना गया है। २. सवेरे का समय।
प्रातःस्मरण–संज्ञा पुं० [सं०] सवेरे के समय ईश्वर का भजन करना।
प्रातःस्मरणीय–वि० [सं०] जो प्रातःकाल स्मरण करने के योग्य हो। श्रेष्ठ। पूज्य।
प्रातनाथ–संज्ञा पुं० [सं० प्रात+नाथ] सूर्य।
प्रातिपदिक–संज्ञा पुं० [सं०] १. अग्नि। २. संस्कृत व्याकरण के अनुसार वह अर्थवान् शब्द जो धातु न हो और न उसकी सिद्धि विभक्ति लगने से हुई हो। जैसे, पेड़, अच्छा आदि।
प्राथमिक–वि० [सं०] १. पहले का। २ प्रारंभिक। आदिम।
प्रादुर्भाव–संज्ञा पुं० [सं०] १ आविर्भाव। प्रकट होना। २ उत्पत्ति।
प्रादुर्भूत–वि० [सं०] १. जिसका प्रादुर्भाव हुआ हो। प्रकटित। २ उत्पन्न।
प्रादुर्भूतमनोभवा–संज्ञा स्त्री० [सं०] वैष्णव के अनुसार मध्या के चार भेदों में से एक।
प्रादेशिक–वि० [सं०] प्रदेश-संबंधी। किसी एक प्रदेश का। प्रांतिक। संज्ञा पुं० सामंत। जमींदार या सरदार।
प्राधान्य–संज्ञा पुं० [सं०] प्रधानता।
प्रान–संज्ञा पुं० दे० "प्राण"।
प्रापण–संज्ञा पुं० [सं०][वि० प्रापक, प्राप्य, प्राप्त] १ प्राप्ति। मिलना। २ प्रेरण।
प्रापति*†–संज्ञा स्त्री० दे० "प्राप्ति"।
प्रापना*†–क्रि० स० [सं० प्रापण] प्राप्त होना। मिलना।
प्राप्त–वि० [सं०] १. पाया हुआ। जो मिला हो। २. समुपस्थित।
प्राप्तकाल–संज्ञा पुं० [सं०] १. उपयुक्त काल। उचित समय। २. मरण योग्य वि० जिसका काल आ गया हो।
प्राप्तव्य–वि० दे० "प्राप्य"।
प्राप्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. उपलब्धि। मिलना। २. पहुँच। ३. अणिमादि आठ प्रकार के ऐश्वर्यों में से एक जिससे सब इच्छाएँ पूर्ण हो जाती हैं। ४. आय। ५ लाभ। फायदा। ६. नाटक का सुखद उपसंहार।
प्राप्तिसम–संज्ञा पुं० [सं०] न्याय में वह आपत्ति जो हेतु और साध्य को, ऐसी अवस्था में जब कि दोनों प्राप्य हों, अविशिष्ट बतलाकर की जाय।
प्राप्य–वि० [सं०] १. पाने योग्य। प्राप्त करने योग्य। प्राप्तव्य। २. गम्य। ३ जो मिल सके। मिलने योग्य।
प्राबल्य–संज्ञा पुं० [सं०] प्रबलता।
प्रामाणिक–वि० [सं०] १. जो प्रत्यक्ष आदि प्रमाणों द्वारा सिद्ध हो। २. माननीय। मानने योग्य। ३ ठीक। सत्य।
प्रामाण्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रमाण का भाव। २. मान-मर्यादा।
प्राय–संज्ञा पुं० [सं०] १. समान। तुल्य। जैसे, मृतप्राय। २ लगभग। जैसे, प्रायद्वीप।
प्रायः–वि० [सं०] १ विशेषकर। बहुत। अक्सर। २ लगभग। करीब करीब।
प्रायद्वीप–संज्ञा पुं० [सं० प्रायोद्वीप] स्थल का वह भाग जो तीन ओर पानी से घिरा हो।
प्रायशः–क्रि० वि० [सं०] प्रायः। बहुधा।
प्रायश्चित्त–संज्ञा पुं० [सं०] शास्त्रानुसार वह कृत्य जिसके करने से मनुष्य के पाप छूट जाते हैं।
प्रायश्चित्तिक–वि० [सं०] १. प्रायश्चित्त के योग्य। २. प्रायश्चित्त-संबंधी।

प्रायश्चित्ती–वि० [सं० प्रायश्चित्तिन्] १. प्रायश्चित्त के योग्य। २. प्रायश्चित्त करनेवाला।

प्रारंभ–संज्ञा पुं० [सं०] १. आरंभ। शुरू। २. आदि।

प्रारंभिक–वि० [सं०] १. प्रारंभ का। २. आदिम। ३. प्राथमिक।

प्रारब्ध–वि० [सं०] आरम्भ किया हुआ। संज्ञा पुं० १. तीन प्रकार के कर्म्मों में से वह जिसका फल-भोग आरंभ हो चुका हो। २. भाग्य। किस्मत।

प्रारब्धी–वि० [० प्रारब्धिन्] भाग्यवान्।

प्रार्थना–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. किसी से कुछ माँगना। याचना। २. विनती। विनय। निवेदन।

*क्रि० स० प्रार्थना या विनती करना।

प्रार्थनापत्र–संज्ञा पुं० [सं०] वह पत्र जिसमें किसी प्रकार की प्रार्थना लिखी हो। निवेदनपत्र। अर्जी।

प्रार्थनासमाज–संज्ञा पुं० [सं०] ब्राह्म समाज की तरह का एक नवीन समाज या सम्प्रदाय।

प्रार्थनीय–वि० [सं०] प्रार्थना करने योग्य।

प्रार्थी–वि० [सं० प्रार्थिन्] [स्त्री० प्रार्थिनी] प्रार्थना या निवेदन करनेवाला।

प्रालेय–संज्ञा पुं० [सं०] १. हिम। तुषार। २. बर्फ़।

प्रावृट–संज्ञा पुं० [सं०] वर्षा ऋतु।

प्राशन–संज्ञा पुं० [सं०] १. खाना। भोजन। २. चखना। जैसे, अन्नप्राशन।

प्राशी–वि० [सं० प्राशिन्] [स्त्री० प्राशिनी] प्राशन करनेवाला। खानेवाला। भक्षक।

प्रासंगिक–वि० [सं०] १. प्रसंग-संबंधी। प्रसंग का। २. प्रसंग द्वारा प्राप्त।

प्रासाद–संज्ञा पुं० [सं०] लंबा, चौड़ा, ऊँचा और कई भूमियों का पक्का या पत्थर का घर। विशाल भवन। महल।

प्रियंगु–संज्ञा स्त्री० [सं०] कँगनी नामक अन्न।

प्रियंवद–वि० [सं०] [स्त्री० प्रियंवदा] प्रिय वचन कहनेवाला। प्रियभाषी।

प्रियंवदा–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त।

प्रिय–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० प्रिया] स्वामी। पति।

वि० १. जिससे प्रेम हो। प्यारा। २. मनोहर। सुन्दर।

प्रियतम–वि० [सं०] [स्त्री० प्रियतमा] प्राणों से भी बढ़कर प्रिय।

संज्ञा पुं० स्वामी। पति।

प्रियदर्शन–वि० [सं०] [स्त्री० प्रियदर्शना] जो देखने में प्रिय लगे। सुन्दर।

प्रियदर्शी–वि० [सं०] सबको प्रिय समझने या सबसे स्नेह करनेवाला।

प्रियभाषी–वि० [सं० प्रियभाषिन्] [स्त्री० प्रियभाषिणी] मधुर वचन बोलनेवाला।

प्रियवर–वि० [सं०] अति प्रिय। सबसे प्यारा। (पत्रों आदि में संबोधन)

प्रियवादी–संज्ञा पुं० दे० "प्रियभाषी"।

प्रिया–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नारी। स्त्री। २. भार्या। पत्नी। जोरू। ३. प्रेमिका स्त्री। माशूका। ४. एक वृत्त का नाम। ५. सोलह मात्राओं का एक छंद।

प्रीत–वि० [सं०] प्रीतियुक्त।

*संज्ञा पुं० दे० "प्रीति"।

प्रीतम–संज्ञा पुं० [सं० प्रियतम] १. पति। भर्ता। स्वामी। २. प्यारा।

प्रीति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. संतोष। तृप्ति। २. हर्ष। आनंद। प्रसन्नता। ३. प्रेम। प्यार।

प्रीतिकर, प्रीतिकारक–वि० [सं०] प्रसन्नता उत्पन्न करनेवाला। प्रेमजनक।

प्रीतिपात्र–संज्ञा पुं० [सं०] जिसके साथ प्रीति की जाय। प्रेमभाजन। प्रेमी।

प्रीतिभोज–संज्ञा पुं० [सं०] वह खान-पान जिसमें मित्र, बंधु आदि प्रेमपूर्वक सम्मिलित हों।

प्रीत्यर्थ–अव्य० [सं०] १. प्रीति के कारण। प्रसन्न करने के वास्ते। २. लिए। वास्ते।

प्रूफ–संज्ञा पुं० [?] सीसे आदि का बना हुआ लट्टू के आकार का वह यंत्र जिसे समुद्र में डुबाकर उसकी गहराई नापते हैं।

प्रेंखण–संज्ञा पुं० [सं०] १. अच्छी तरह

हिलना या झूलना। २. अठारह प्रकार के उपरूपकों में से एक।

प्रेक्षक—संज्ञा पु० [सं०] देखनेवाला। दर्शक।

प्रेक्षण—संज्ञा पु० [सं०] १. आँख। २. देखने की क्रिया।

प्रेक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ देखना। २ नाच-तमाशा देखना। ३ दृष्टि। निगाह। ४. प्रज्ञा। बुद्धि।

प्रेक्षागार, प्रेक्षागृह—संज्ञा पु० [सं०] १ राजाओं आदि के मंत्रणा करने का स्थान। मंत्रणागृह। २ नाट्यशाला।

प्रेत—संज्ञा पु० [सं०] १. मरा हुआ मनुष्य। मृतक प्राणी। २ पुराणानुसार वह कल्पित शरीर जो मनुष्य को मरने के उपरांत प्राप्त होता है। ३. नरक में रहनेवाला प्राणी। ४ पिशाचों की तरह की एक कल्पित देवयोनि।

प्रेतकर्म—संज्ञा पु० [सं० प्रेतकर्म्मन्] हिंदुओं में मृतदाह आदि से लेकर सपिंडी तक का कर्म। प्रेतकार्य्य।

प्रेतकार्य—संज्ञा पु० दे० "प्रेतकर्म"।

प्रेतगृह—संज्ञा पु० [सं०] १ श्मशान। मरघट। २ कब्रिस्तान।

प्रेतगेह*—संज्ञा पु० दे० "प्रेतगृह"।

प्रेतत्व—संज्ञा पु० [सं०] प्रेत का भाव या धर्म्म। प्रेतता।

प्रेतदाह—संज्ञा पु० [सं०] मृतक को जलाने आदि का कार्य्य।

प्रेतदेह—संज्ञा पु० [सं०] मृतक का वह कल्पित शरीर जो उसके मरने के समय से सपिंडी तक उसकी आत्मा को प्राप्त रहता है।

प्रेतनी—संज्ञा स्त्री० [सं० प्रेत+नी (प्रत्य०)] भूतनी। चुड़ैल।

प्रेतयज्ञ—संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का यज्ञ जिसके करने से प्रेत-योनि प्राप्त होती है।

प्रेतलोक—संज्ञा पु० [सं०] यमपुर।

प्रेतविधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] मृतक का दाह आदि करना।

प्रेता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पिशाची। २. भगवती कात्यायिनी।

प्रेताशिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] भगवती।

प्रेताशौच—संज्ञा पु० [सं०] वह अशौच जो हिन्दुओं में किसी के मरने पर उसके संबंधियों आदि को होता है।

प्रेती—संज्ञा पु० [सं० प्रेत+ई (प्रत्य०)] प्रेत की उपासना करनेवाला। प्रेतपूजक।

प्रेतोन्माद—संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का उन्माद या पागलपन।

प्रेम—संज्ञा पु० [सं०] १. स्नेह। मुहब्बत। अनुराग। प्रीति। २ पारस्परिक स्नेह जो बहुधा रूप, गुण अथवा काम-वासना के कारण होता है। प्यार। मुहब्बत। प्रीति। ३ केशव के अनुसार एक अलंकार।

प्रेमगर्विता—संज्ञा स्त्री० [सं०] साहित्य में वह नायिका जो अपने पति के अनुराग का अहंकार रखती हो।

प्रेमपात्र—संज्ञा पु० [सं०] वह जिससे प्रेम किया जाय। माशूक।

प्रेमवारि—संज्ञा पु० दे० "प्रेमाम्बु"।

प्रेमा—संज्ञा पु० [सं० प्रेमन्] १. स्नेह। २. इंद्र। ३ उपजाति वृत्त का ग्यारहवाँ भेद।

प्रेमाक्षेप—संज्ञा पु० [सं०] केशव के अनुसार आक्षेप अलंकार का एक भेद जिसमें प्रेम का वर्णन करने में ही उसमें बाधा पड़ती हुई दिखाई जाती है।

प्रेमालाप—संज्ञा पु० [सं०] वह बातचीत जो प्रेमपूर्वक हो।

प्रेमालिंगन—संज्ञा पु० [सं०] प्रेमपूर्वक गले लगाना।

प्रेमाश्रु—संज्ञा पु० [सं०] वे आँसू जो प्रेम के कारण आँखों से निकलते हैं।

प्रेमिक—संज्ञा पु० दे० "प्रेमी"।

प्रेमी—संज्ञा पु० [सं० प्रेमिन्] १ प्रेम करनेवाला। २ आशिक। आसक्त।

प्रेय—संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का अलंकार जिसमें कोई भाव किसी दूसरे भाव अथवा स्थायी का अंग होता है।

प्रेयसी—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रेमिका।
प्रेरक—संज्ञा पुं० [सं०] किसी काम में प्रवृत्त या प्रेरणा करनेवाला।
प्रेरणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कार्य में प्रवृत्त या नियुक्त करना। उत्तेजना देना। २. दबाव। जोर।
प्रेरणार्थक क्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] क्रिया का वह रूप जिससे क्रिया के व्यापार के संबंध में यह सूचित होता है कि वह किसी की प्रेरणा से कर्ता के द्वारा हुआ है। जैसे, लिखना का प्रेरणार्थक लिखवाना।
प्रेरित—वि० [सं०] भेजा हुआ। प्रेषित।
प्रेषक—संज्ञा पुं० [सं०] भेजनेवाला।
प्रेषण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रेषित] १. प्रेरणा करना। २. भेजना। रवाना करना।
प्रोक्त—वि० [सं०] कहा हुआ। कथित।
प्रोक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] १. पानी छिड़कना। २. पानी का छींटा।
प्रोत—वि० [सं०] १. किसी में अच्छी तरह मिला हुआ। २. छिपा हुआ।
प्रोत्साह—संज्ञा पुं० [सं०] बहुत अधिक उत्साह या उमंग।
प्रोत्साहन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रोत्साहित] खूब उत्साह बढ़ाना। हिम्मत बँधाना।
प्रोत्साहित—वि० [सं०] (जिसका) उत्साह बढ़ाया गया हो। (जिसकी) हिम्मत खूब बँधाई गई हो।
प्रोषित—वि० [सं०] जो विदेश में गया हो। प्रवासी।
प्रोषित नायक या पति—संज्ञा पुं० [सं०] वह नायक जो विदेश में अपनी पत्नी के वियोग से विकल हो। विरही नायक।
प्रोषितपतिका (नायिका)—संज्ञा स्त्री० [सं०] (वह नायिका) जो अपने पति के परदेश में होने के कारण दुःखी हो। प्रवस्यप्रेयसी।
प्रोषितभर्तृका—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रोषितपतिका"।
प्रोषितभार्य्य—संज्ञा पुं० [सं०] वह नायक जो अपनी भार्या के विदेश जाने के कारण दुखी हो।
प्रौढ़—वि० [सं०] [स्त्री० प्रौढ़ा] १. अच्छी तरह बढ़ा हुआ। २. जिसकी युवावस्था समाप्ति पर हो। ३. पक्का। मजबूत। दृढ़। ४. गंभीर। गूढ़। ५. चतुर।
प्रौढ़ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रौढ़ होने का भाव। प्रौढ़त्व।
प्रौढ़ा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अधिक वयसवाली स्त्री०। २. साहित्य में वह नायिका जो काम-कला आदि अच्छी तरह जानती हो। साधारणतः ३० वर्ष से ५० वर्ष तक की अवस्थावाली स्त्री।
प्रौढ़ा अधीरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह प्रौढ़ा जिसमें अधीरा नायिका के लक्षण हों।
प्रौढ़ा धीरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] ताना देकर कोप प्रकट करनेवाली प्रौढ़ा।
प्रौढ़ा धीराधीरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह प्रौढ़ा जिसमें धीराधीरा के गुण हों।
प्रौढ़ोक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अलंकार जिसमें जिसके उत्कर्ष का जो हेतु नहीं है, वह हेतु कल्पित किया जाय।
प्लक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १. पाकर वृक्ष। पिलखन। २. पुराणानुसार सात कल्पित द्वीपों में से एक। ३. अश्वत्थ। पीपल।
प्लवंग—संज्ञा पुं० [सं०] १. वानर। बंदर। २. मृग। हिरन। ३. प्लक्ष। पाकर।
प्लवंगम—संज्ञा पुं० [सं०] एक मात्रिक छंद।
प्लवन—संज्ञा पुं० [सं०] १. उछलना। कूदना। २. तैरना।
प्लावन—संज्ञा पुं० [सं०] १. बाढ़। सैलाब। २. खूब अच्छी तरह धोना। ३. तैरना।
प्लावित—वि० [सं०] जो जल में डूब गया हो। पानी में डूबा हुआ।
प्लीहा—संज्ञा स्त्री० दे० "तिल्ली"।
प्लुत—संज्ञा पुं० [सं०] १. टेढ़ी चाल। उछाल। २. स्वर का एक भेद जो दीर्घ से भी बड़ा और तीन मात्राओं का होता है।

फ

फ—हिंदी वर्णमाला में बाईसवाँ व्यंजन और पवर्ग का दूसरा वर्ण। इसके उच्चारण का स्थान ओष्ठ है।

फंका*—संज्ञा पु० [हिं० फाँकना] [स्त्री० फंकी] १ उतनी मात्रा जितनी एक बार फाँकी जा सके। २. कतरा। टुकड़ा।

फंकी—संज्ञा स्त्री० [हिं० फंका] १ फाँकने की दवा। २. उतनी दवा जितनी एक बार में फाँकी जाय।

‡संज्ञा स्त्री० [हिं० फाँक] छोटी फाँक।

फंग*—संज्ञा पु० [सं० बंध] १ बंधन। फंदा। २. राग। अनुराग।

फंद—संज्ञा पु० [सं० बंध, हिं० फंदा] १. बंध। बंधन। २ फंदा। जाल। फाँस। ३. छल। धोखा। ४. रहस्य। मर्म। ५ दुःख। कष्ट। ६ नथ की काँटी फँसाने का फंदा। गूँज।

फँदना*—क्रि० अ० [सं० बंधन या फंदा] फंदे में पड़ना। फँसना।

क्रि० स० [हिं० फाँदना] फाँदना। लाँघना।

फँदवार—वि० [हिं० फंदा] फंदा लगानेवाला।

फंदा—संज्ञा पु० [सं० पाश या बंध] १ रस्सी, तागे आदि का वह घेरा जो किसी को फँसाने के लिये बनाया गया हो। फनी। फाँद। २ पाश। फाँस। जाल।

मुहा०—फंदा लगाना=१ किसी को फँसाने के लिये जाल लगाना। २ धोखा देना। फंदे में पड़ना=१ धोखे में पड़ना। २ किसी के वश में होना।

३. बंधन। ४. दुःख। कष्ट।

फँदाना—क्रि० स० [हिं० फँदना] फंदे में लाना। जाल में फँसाना।

क्रि० स० [सं० स्पंदन] फाँदने का काम दूसरे से कराना। कुदाना।

फँफाना†—क्रि० अ० [अनु०] शब्द-उच्चारण के समय जिह्वा का काँपना। हकलाना।

फँसना—क्रि० स० [हिं० फाँस] १. बंधन या फंदे में पड़ना। २ अटकना। उलझना।

मुहा०—बुरा फँसना=आपत्ति में पड़ना।

फँसाना—क्रि० स० [हिं० फँसना] १. फंदे में लाना या अटकाना। बझाना। २ वशीभूत करना। अपने जाल या वश में लाना। ३. अटकाना। बझाना।

फँसिहारा—वि० [हिं० फाँस+हारा (प्रत्य०)] [स्त्री० फँसिहारिन] फँसानेवाला।

फ—संज्ञा पु० [सं०] १ कटु वाक्य। रूखा वचन। २. फुफकार। फुपकार। ३ निष्फल भाषण।

फक—वि० [सं० स्फटिक] १. स्वच्छ। सफेद। २. बदरंग।

मुहा०—रंग फक हो जाना या फक पड़ जाना=घबरा जाना। चेहरे का रंग फीका पड़ जाना।

फकड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० फक्कड़+ई (प्रत्य०)] दुर्दशा। दुर्गति।

फकत—वि० [अ०] १. बस। अलम्। पर्याप्त। २ केवल। सिर्फ।

फकीर—संज्ञा पु० [अ०] [स्त्री० फकीरन फकीरनी] १. भीख माँगनेवाला। भिखमंगा। भिक्षुक। २ साधु। संसारत्यागी। ३ निर्धन मनुष्य।

फकीरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० फकीर+ई] १. भिखमंगापन। २ साधुता। ३ निर्धनता।

फक्किका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कूट प्रश्न। २ अनुचित व्यवहार। ३ धोखेबाजी।

फखर—संज्ञा पु० [फा० फख] गौरव। गर्व।

फग*—संज्ञा पु० दे० "फग"।

फगुआ—संज्ञा पु० [हिं० फागुन] १. होली। होलिकोत्सव का दिन। २. फागुन के महीने में लोगों का आमोद-प्रमोद। फाग।

मुहा०—फगुआ खेलना या मनाना=होली के उत्सव में रंग, गुलाल आदि एक दूसरे पर डालना।

३ फागुन में गाए जानेवाले अश्लील गीत। ४ फगुआ खेलने के उपलक्ष में दिया जानेवाला उपहार।

फगुनहट—संज्ञा स्त्री० [हिं० फागुन+हट (प्रत्य०)] फागुन में चलनेवाली तेज हवा।

फगुहारा—संज्ञा पु० [हिं० फगुआ+हारा

(प्रत्य०) [स्त्री० फगुहारी, फगुहारिन] वह जो फाग खेलने लिये होली में किसी के यहाँ जाय।

फजर—संज्ञा स्त्री० [अ०] सबेरा।

फ़ज़ल—संज्ञा पुं० [अ० फ़ज़्ल] अनुग्रह। कृपा

फज़ीलत—संज्ञा स्त्री० [अ०] उत्कृष्टता। श्रेष्ठता।

मुहा०—फ़ज़ीलत की पगड़ी=विद्वत्तासूचक पदक या चिह्न।

फ़ज़ीहत—संज्ञा स्त्री० [अ०] दुर्दशा। दुर्गति।

फ़ज़ूल—वि० [अ० फ़ुज़ूल] जो किसी काम का न हो। व्यर्थ। निरर्थक।

फ़ज़ूलख़र्च—वि० [फा०] [संज्ञा फ़ज़ूलखर्ची] अपव्ययी। बहुत खर्च करनेवाला।

फट—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. हलकी पतली चीज के हिलने या गिरने-पड़ने का शब्द। २. एक तांत्रिक मंत्र। अस्त्र-मंत्र।

फटक—संज्ञा पुं० [सं० स्फटिक] बिल्लौर। क्रि० वि० [अनु०] तत्क्षण। झट।

फटकन—संज्ञा स्त्री० [हिं० फटकना] वह भूसी जो अन्न को फटकने पर निकले।

फटकना—क्रि० स० [अनु० फट] १. हिलाकर फट फट शब्द करना। फटफटाना। २. पटकना। झटकना। ३. फेंकना। चलाना। मारना। ४. सूप पर अन्न आदि को हिलाकर साफ करना।

मुहा०—फटकना पछोरना = १. सूप या छाज पर हिलाकर साफ करना। २. अच्छी तरह जाँचना। परखना।

५. रूई आदि को फटके से धुनना।

क्रि० अ० [अनु०] १. जाना। पहुँचना। २. दूर होना। अलग होना। ३. तड़फड़ाना। हाथ-पैर पटकना। ४. श्रम करना। हाथ-पैर हिलाना।

फटका†—संज्ञा पुं० [अनु०] १. रूई धुनने की धुनकी। २. कोरी तुकबंदी। रस और गुण से हीन कविता।

संज्ञा पुं० दे० "फाटक"।

फटकाना†—क्रि० स० [हिं० फटकना] १. अलग करना। फेंकना। २. फटकने का काम दूसरे से कराना।

फटकार—संज्ञा स्त्री० [हिं० फटकारना] १. फटकारने की क्रिया या भाव। झिड़की। दुतकार। २. दे० "फिटकार"।

फटकारना—क्रि० स० [अनु०] १. (शस्त्र आदि) मारना। चलाना। २. बहुत सी चीजों को एक साथ झटका मारना जिसमें वे छितरा जायँ। ३. लेना। लाभ उठाना। ४. अच्छी तरह पटक पटककर धोना। ५. झटका देकर दूर फेंकना। ६. खरी और कड़ी बात कहकर चुप कराना।

फटना—क्रि० अ० [हिं० फाड़ना का अ० रूप] १. किसी पोली चीज में इस प्रकार दरार पड़ जाना जिसमें भीतर की चीज बाहर निकल पड़े अथवा दिखाई देने लगे।

मुहा०—छाती फटना=असह्य दुःख होना। बहुत अधिक दुःख पहुँचना। (किसी से) मन या चित्त फटना=विरक्ति होना। संबंध रखने को जी न चाहना।

२. किसी वस्तु का कोई भाग बीच से अलग हो जाना। बीच से कटकर छिन्न-भिन्न हो जाना। ३. अलग हो जाना। पृथक् हो जाना। ४. द्रव पदार्थ में ऐसा विकार होना जिससे उसका पानी और सार भाग दोनों अलग अलग हो जायँ। ५. किसी बात का बहुत अधिक होना।

मुहा०—फट पड़ना = अचानक आ पहुँचना।

६. बहुत अधिक पीड़ा होना।

फटफटाना—क्रि० स० [अनु०] १. व्यर्थ बकवाद करना। २. फटफट शब्द करना। फड़फड़ाना। ३. हाथ-पैर मारना। प्रयास करना। ४. इधर-उधर टक्कर मारना।

क्रि० अ० फट फट शब्द होना।

फटा—संज्ञा पुं० [हिं० फटना] छिद्र। छेद।

मुहा०—किसी के फटे में पाँव देना=दूसरे की आपत्ति अपने ऊपर लेना।

फटिक—संज्ञा पुं० [सं० स्फटिक] १. बिल्लौर। स्फटिक। २. मरमर पत्थर। संग-मरमर।

फट्टा—संज्ञा पुं० [हिं० फटना] [स्त्री० फट्टी] बाँस को चीरकर बनाया हुआ लट्ठा।

फन्टा ।

फड़–सज्ञा पु० [स० पण] १ जूए या दाँव जिस पर जुआरी बाज़ी लगाते हैं। दाँव। २ जूआखाना। जूए का अड्डा। ३ वह स्थान जहाँ दूकानदार बैठकर माल खरीदता या बेचता हो। ४ पक्ष। दल।

सज्ञा पु० [स० पटल या फल] वह गाडी जिस पर तोप चढ़ाई जाती है। चरख।

फडक, फडकन–सज्ञा स्त्री० [अनु०] फडकन की क्रिया या भाव।

फडकना–क्रि० अ० [अनु०] १ बार बार नीचे ऊपर या इधर-उधर हिलना। फडफडाना। उछलना।

मुहा०—फडक उठना या जाना=आनंदित होना। प्रसन्न होना। मुग्ध होना।

२ किसी अंग में अचानक स्फुरण होना। ३ हिलना डोलना। गति होना।

मुहा०-बोटी फडकना=अत्यंत चचलता होना।

४ चचल होना। किसी क्रिया के लिये उद्यत होना।

फडकाना–क्रि० स० [हिं० फडकना का प्रे०] दूसरे को फडकने में प्रवृत्त करना।

फडनवीस–सज्ञा पु० [फा० फर्दनवीस] मराठों के राजत्व काल का एक राज पद।

फडफडाना–क्रि० स०, अ० दे० फटफटाना।

फडबाज़–सज्ञा पु० [हिं० फड+फ़ा०बाज़] वह जो लोगों को अपने यहाँ जूआ खेलाता हो।

फण–सज्ञा पु० [स०] १ साँप का फन। २ रस्सी का फंदा। मुद्धी।

फणधर–सज्ञा पु० [स०] साँप।

फणिक–सज्ञा पु० [स० फणी] साँप। नाग।

फणिपाल–सज्ञा पु० दे० 'फणींद्र'।

फणिमुक्ता–सज्ञा स्त्री० [स०] साँप की मणि।

फणींद्र–सज्ञा पु० [स०] १ शेष। २ वासुकि। ३ बड़ा साँप।

फणी–सज्ञा पु० [स० फणिन्] साँप।

फणीश–सज्ञा पु० दे० "फणींद्र"।

फतवा–सज्ञा पु० [अ०] मुसल्मानों के धर्मशास्त्रानुसार व्यवस्था जो मौलवी आदि किसी कर्म के अनुकूल या प्रतिकूल होने के विषय में देते हैं।

फतह–सज्ञा स्त्री० [अ०] १ विजय। जीत। २ सफलता। कृतकार्य्यता।

फतिंगा–सज्ञा पु० [स० पतग] [स्त्री० फतिंगी] १ किसी प्रकार का उड़नेवाला कीडा। २ पतिंगा। पतंग।

फतीलसोज़–सज्ञा पु० [फा०] १ धातु की दीवट जिसमें एक या अनेक दीए ऊपर-नीचे बने होते हैं। चौमुखा। २ दीवट। चिराग़दान।

फतीला–सज्ञा पु० दे० "पलीता"।

फतूर–सज्ञा पु० [अ०] १ विकार। दोष। २ हानि। नुकसान। ३ विघ्न। बाधा। ४ उपद्रव। खुराफात।

फतूरिया–वि० [अ० फतूर+इया (प्रत्य०)] खुराफात करनेवाला। उपद्रवी।

फतूह–सज्ञा स्त्री० [अ० 'फतह" का बहु वचन] १ विजय। जीत। जय। २ वह धन जो लड़ाई या लूट में मिला हो।

फतूही–सज्ञा स्त्री० [अ०] १ बिना आस्तीन की एक प्रकार की पहनने की कुरती। सदरी। २ लड़ाई या लूट में मिला हुआ माल।

फते*–सज्ञा स्त्री० दे० 'फतह'।

फतेह–सज्ञा स्त्री० [अ० फतह] विजय। जीत।

फदकना–क्रि० अ० [अनु०] १ फद फद शब्द करना। २ दे० 'फुदकना'।

फन–सज्ञा पु० [स० फण] साँप का सिर उस समय जब वह उसे फैलाकर छत्र के आकार का बना लेता है। फण।

फन–सज्ञा पु० [फ़ा०] १ गुण। खूबी। २ विद्या। ३ दस्तकारी। ४ छल या ढंग। मक्र।

फनकना–क्रि० अ० [अनु०] हवा में फन सन करते हुए हिलना या चलना।

फनकार—संज्ञा स्त्री०[अनु०] साँप के फूँकने या बैल आदि के साँस लेने से उत्पन्न फनफन शब्द।

फनगा†—संज्ञा पुं० दे० "फतिंगा"।

फनफनाना—क्रि० अ० [अनु०] १. फन फन शब्द उत्पन्न करना। २. चंचलता के कारण हिलना।

फ़ना—संज्ञा स्त्री० [अ०] नाश। बरबादी।

फनिंग*—संज्ञा पुं० [सं० फणींद्र] साँप।

फनिंद*†—संज्ञा पुं० दे० "फणींद्र"।

फनि*—संज्ञा पुं० १. दे० "फणी"। २. दे० "फण"।

फनिग—संज्ञा पुं० दे० "फतिंगा"।

फ़निराज—संज्ञा पुं० दे० "फणींद्र"।

फनी*—संज्ञा पुं० दे० "फणी"।

फनूस*—संज्ञा पुं० दे० "फ़ानूस"।

फन्नी—संज्ञा स्त्री० [सं० फण] लकड़ी आदि का वह टुकड़ा जो किसी ढीली चीज की जड़ में उसे कसने के लिये ठोका जाता है। पच्चर।

फफूँदी*—संज्ञा स्त्री० [हिं० फुँदती] स्त्रियों की साड़ी का बंधन। नीवी।

संज्ञा स्त्री० [हिं०=रूई का फाहा] काई की तरह की, पर सफ़ेद, तह जो बरसात में फल, लकड़ी आदि पर लगती है। भुकड़ी।

फफोला—संज्ञा पुं० [सं० प्रस्फोट] चमड़े पर का पोला उभार जिसके भीतर पानी भरा रहता है। छाला। झलका।

मुहा०—दिल के फफोले फोड़ना=अपने दिल की जलन या क्रोध प्रकट करना।

फबती—संज्ञा स्त्री० [हिं० फबना] १. वह बात जो समय के अनुकूल हो। २. हँसी की बात जो किसी पर घटती हो। व्यंग्य। चुटकी।

मुहा०—फबती उड़ाना=हँसी उड़ाना। फबती कहना=चुभती हुई पर हँसी की बात कहना।

फबन—संज्ञा स्त्री० [हिं० फबना] फबने का भाव। शोभा। छवि। सुन्दरता।

फबना—क्रि० अ० [सं० प्रभवन] सुंदर या भला जान पड़ना। खिलना। सोहना।

फबाना—क्रि० स० [हिं० फबना का सक० रूप] ऐसी जगह लगाना जहाँ भला ...

फबि*†—संज्ञा स्त्री० दे० "फबन"।

फबीला—वि० [हिं० फबि + ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० फबीली] जो फबता या भला जान पड़ता हो। शोभा देनेवाला। सुन्दर।

फर*‡—संज्ञा पुं० दे० "फल"।

संज्ञा पुं० [?] १. सामना। मुक़ाबिला। २. बिछावन। बिछौना।

फरक—संज्ञा स्त्री० [हिं० फरकना] १. फरकने की क्रिया या भाव। २. फड़क।

फ़रक़—संज्ञा पुं० [अ० फ़र्क़] १. पार्थक्य। अलगाव। २. बीच का अंतर। दूरी।

मुहा०—फरक फरक होना='दूर हो' या 'राह छोड़ो' की आवाज होना। 'हटो बचो' होना। ३. भेद। अंतर। ४. दुराव। परायापन। अन्यता। ५. कमी। कसर।

फरकन—संज्ञा स्त्री० [हिं० फरकना] १. फड़कने की क्रिया या भाव। दे० "फड़क"। २. फरकने की क्रिया या भाव। फरक।

फरकना*†—क्रि० अ० [सं० स्फुरण] १. दे० "फड़कना"। २. आप से आप बाहर आना। उमड़ना। ३. उड़ना।

फरका—संज्ञा पुं० [सं० फलक] १. वह छप्पर जो अलग छा कर बँडेर पर चढ़ाया जाता है। २ बँडेर के एक ओर की छाजन। पल्ला। ३. दरवाजे का टट्टर।

फरकाना—क्रि० स० [हिं० फरकना] १. फरकने का सकर्मक रूप। हिलाना। सचालित करना। २. फड़फड़ाना।

क्रि० स० [हिं० फरक] अलग करना।

फरचा‡—वि० [सं० स्पृश्य] १. जो जूठा न हो। शुद्ध। पवित्र। २. साफ़-सुथरा।

फ़रजंद—संज्ञा पुं० [फा०] पुत्र। बेटा।

फ़रज़ी—संज्ञा पुं० [फा०] शतरंज का एक मोहरा जिसे रानी या वजीर भी कहते हैं। वि० नकली। बनावटी। कल्पित।

फ़रज़ीबंद—संज्ञा पुं० [फा०] शतरंज के खेल में एक योग।

फ़रद—संज्ञा स्त्री० [अ० फ़र्द] १. लेखा या वस्तुओं की सूची आदि जो स्मरणार्थ किसी ... लिखी गई हो। २. एक

ही तरह के अथवा एक साथ काम में आने-वाले कागज़ों के जोड़े में से एक कगड़ा। पल्ला। ३. रजाई या दुलाई का ऊपरी पल्ला। ४. दो पदों की कविता। वि० अनुपम। बेजोड़।

फरना*‡–क्रि० अ० [सं० फल] फलना।

फरफंद–संज्ञा पुं० [हिं० फर+अनु० फंदा (जाल)] १. दाँव-पेंच। छल-कपट। माया। २. नखरा। चोचला।

फरफर–संज्ञा पुं० [अनु०] किसी पदार्थ के उड़ने या फड़कने से उत्पन्न शब्द।

फरफराना–क्रि० स०, अ० दे० "फड़-फड़ाना"।

फरफुंदा*‡–संज्ञा पुं० दे० "फतिंगा"।

फरमा–संज्ञा पुं० [अं० फ्रेम] १. लकड़ी आदि का ढाँचा या साँचा जिस पर रखकर चमार जूता बनाते हैं। कालबूत। २. वह साँचा जिसमें कोई चीज़ ढाली जाय। संज्ञा पुं० [अं० फ़ार्म] कागज़ का पूरा तख़्ता जो एक बार प्रेस में छापा जाता है।

फ़रमाइश–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] आज्ञा, विशेषतः वह आज्ञा जो कोई चीज़ लाने या बनाने आदि के लिए दी जाय।

फ़रमाइशी–वि० [फ़ा०] विशेष रूप से आज्ञा देकर मँगाया या तैयार कराया हुआ।

फरमान–संज्ञा पुं० [फ़ा०] राजकीय आज्ञा-पत्र। अनुशासनपत्र।

फ़रमाना–क्रि० स० [फ़ा०] आज्ञा देना। कहना। (आदर-सूचक)

फरराना†–क्रि० अ० दे० "फहराना"।

फरवी–संज्ञा स्त्री० [सं० स्फुरण] एक प्रकार का भूना हुआ चावल। मुरमुरा। लाई।

फ़रश–संज्ञा पुं० [अ० फर्श] १. बैठने के लिए बिछाने का वस्त्र। बिछावन। २ धरातल। समतल भूमि। ३. पक्की बनी हुई ज़मीन। गच।

फ़रशबंद–संज्ञा पुं० दे० "फरश"।

फ़रशी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] धातु का वह बरतन जिस पर नैचा, सटक आदि लगाकर लोग तमाकू पीते हैं। गुड़गुड़ी। २. इस प्रकार बना हुआ हुक्का।

फरस*–संज्ञा पुं० दे० "फरसा"।

* संज्ञा पुं० दे० "फरमा"।

फरसा–संज्ञा पुं० [सं० परशु] १. पैनी और चौड़ी धार की कुल्हाड़ी। २. फावड़ा।

फरहद–संज्ञा पुं० [सं० पारिभद्र] एक प्रकार का पेड़ जिसकी छाल और फूलों से रंग निकलता है।

फरहरना†–क्रि० अ० [अनु० फरफर] १. फरफराना। फरकना। २. फहराना।

फरहरा–संज्ञा पुं० [हिं० फहराना] पताका। झंडा।

फराक*–संज्ञा पुं० [फ़ा० फ़राख़] मैदान। वि० लंबा-चौड़ा। विस्तृत।

फराकत–वि० [फ़ा० फराख़] लंबा-चौड़ा और समतल। विस्तृत। २. वि० संज्ञा पुं० दे० "फ़राग़त"।

फराख़–वि० [फ़ा०] लंबा-चौड़ा।

फराख़ी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १ चौड़ाई। विस्तार। २ आढ्यता। संपन्नता।

फराग़त–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. छुटकारा। छुट्टी। मुक्ति। २. निश्चिंतता। बेफ़िक्री। ३ मल-त्याग। पाख़ाना फिरना।

फरामोश–वि० [फ़ा०] भूला हुआ। विस्मृत।

फरार–वि० [अं०] भागा हुआ।

फरासीस–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. फ्रांस देश। २ फ्रांस का रहनेवाला। ३. एक प्रकार की लाल छींट।

फरासीसी–वि० [हिं० फरासीस] १. फ्रांस का रहनेवाला। २. फ्रांस का।

फरिया–संज्ञा स्त्री० [हिं० फरना] वह लहँगा जो सामने की ओर से मिला नहीं रहता।

फरियाद–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. दुख से बचाए जाने के लिए पुकार। शिकायत। नालिश। २. विनती। प्रार्थना।

फरियादी–वि० [फ़ा०] फरियाद करनेवाला।

फरियाना–क्रि० स० [सं० फलीकरण] १. छाँटकर अलग करना। २ साफ़ करना। ३. निपटाना। तै करना।

क्रि० अ० १. छँटकर अलग होना। २. साफ़ होना। ३. तै होना। निबटना। ४. समझ पड़ना।
फ़रिश्ता–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. ईश्वर का वह दूत जो उसकी आज्ञा के अनुसार कोई काम करता हो। (मुसल०)। २. देवता।
फरी†–संज्ञा स्त्री० [सं० फल] १. फाल। कुसी। २. गाड़ी का हरसा। फड़। ३. चमड़े की गोल छोटी ढाल जिससे गतके की मार रोकते हैं।
फ़रीक़–संज्ञा पुं० [अ०] १. मुक़ाबला करने वाला। प्रतिद्वंद्वी। विरोधी। विपक्षी। २. दो पक्षों में से किसी पक्ष का मनुष्य।
यौ०—फ़रीक़ सानी=प्रतिवादी। (क़ानून)
फरुहा†–संज्ञा स्त्री० [हिं० फावड़ा] १. छोटा फावड़ा। २. लकड़ी का एक औज़ार जिससे क्यारी बनाने के लिए खेत की मिट्टी हटाई जाती है। ३. मथानी।
संज्ञा स्त्री० दे० "फरुवी"।
फरेंदा†–संज्ञा पुं० [सं० फलेंद्र] [स्त्री० फरेंदी] एक प्रकार का बढ़िया जामुन।
फ़रेब–संज्ञा पुं० [फ़ा०] छल। कपट।
फ़रेबी–संज्ञा पुं० [फ़ा०] कपटी।
फरेरी†–संज्ञा स्त्री० [हिं० फल + री (प्रत्य०)] जंगल के फल। जंगली मेवा।
फ़रोख़्त–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] विक्रय। बिक्री।
फ़र्क़–संज्ञा पुं० दे० "फ़रक"
फ़र्ज़–संज्ञा पुं० [अ०] १. कर्तव्य कर्म। २. कल्पना। मान लेना।
फ़र्ज़ी–वि० [फ़ा०] १. कल्पित। माना हुआ। २. नाम मात्र का। सत्ताहीन।
संज्ञा पुं० दे० "फ़रज़ी"।
फ़र्द–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. कागज़ या कपड़े आदि का अलग टुकड़ा। २. कागज का वह टुकड़ा जिस पर किसी वस्तु का विवरण, लेखा, सूची आदि लिखी गई हो। ३. रज़ाई, शाल आदि का ऊपरी पल्ला जो अलग बनता है। चद्दर। पल्ला।
फर्राटा–संज्ञा पुं० [अनु०] १. वेग। तेज़ी। क्षिप्रता। २. दे० "खर्राटा"।
फ़र्राश–संज्ञा पुं० [अ०] १. वह नौकर जिसका काम डेरा गाड़ना, फ़र्श बिछाना और दीपक जलाना आदि होता है। २. नौकर। खिदमतगार।
फ़र्राशी–वि० [फ़ा०] फ़र्श या फ़र्राश के कामों से संबंध रखनेवाला।
यौ०—फ़र्राशी पंखा=बड़ा पंखा जिससे फ़र्श भर पर हवा की जा सकती हो।
संज्ञा स्त्री० फ़र्राश का काम या पद।
फ़र्श–संज्ञा पुं० [अ०] १. बिछावन। बिछाने का कपड़ा। २. दे० "फ़रस"
फ़र्शी–संज्ञा स्त्री० [अ०] एक प्रकार का बड़ा हुक्का।
वि० फ़र्श-संबंधी। फ़र्श का।
मुहा०—फ़र्शी सलाम=ज़मीन पर झुककर किया जानेवाला सलाम।
फलंक*–संज्ञा पुं० दे० "फलाँग"।
संज्ञा पुं० [फ़ा० फलक] आकाश।
फल–संज्ञा पुं० [सं०] १. वनस्पति में होनेवाला वह बीज या गूदे से परिपूर्ण बीज-कोश जो किसी विशिष्ट ऋतु में फूलों के आने के बाद उत्पन्न होता है। २. लाभ। ३. प्रयत्न या क्रिया का परिणाम। नतीजा। ४. धर्म या परलोक की दृष्टि से कर्म का परिणाम जो सुख और दुःख है। कर्मभोग। ५. गुण। प्रभाव। ६. शुभ कर्मों के परिणाम जो संख्या में चार माने जाते हैं—अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष। ७. प्रतिफल। बदला। प्रतीकार। ८. बाण, भाले, छुरी आदि का वह तेज़ अगला भाग जिससे आघात किया जाता है। ९. हल की फाल। १०. फलक। ११. ढाल। १२. उद्देश्य की सिद्धि। १३. न्यायशास्त्र के अनुसार वह अर्थ जो प्रवृत्ति और दोष से उत्पन्न होता है। १४. गणित की किसी क्रिया का परिणाम। १५. त्रैराशिक की तीसरी राशि या निष्पत्ति में प्रथम निष्पत्ति का द्वितीय पद। १६. फलित ज्योतिष में ग्रहों के योग का परिणाम जो सुख-दुःख आदि के रूप में

होना है।

फलक–संज्ञा पु० [सं०] १. पटल। तख्ता। २. पट्टी। २. चादर। ३. वरक। तबक। ४. पत्र। वरक। पृष्ठ। ५. हथेली। ६. फल।

फलक–संज्ञा पु० [अ०] १. आकाश। २ स्वर्ग।

फलकना–क्रि० अ० [अनु०] १. छलकना। उमगना। २ दे० "फरकना"।

फलकर–संज्ञा पु० [हिं० फल + कर] वह कर जो वृक्षों के फल पर लगाया जाय।

फलका–संज्ञा पु० [सं० स्फोटक] फफोला। छाला। झलका।

फलत–अव्य० [सं०] फल-स्वरूप। परिणामतः। इसलिए।

फलद–वि० [सं०] फल देनेवाला।

फलदान–संज्ञा पु० [हिं० फल + दान] हिंदुओं में विवाह पक्का करने की एक रीति। बरक्षा।

फलदार–वि० [हिं० फल + दार (फा० प्रत्य०)] १ जिसमें फल लगे हों। २ जिसमें फल लगें।

फलना–क्रि० अ० [सं० फलन] १. फल से युक्त होना। फल लाना। २ फल देना। लाभदायक होना।

मुहा०—फलना फूलना = सुखी और संपन्न होना।

३ शरीर में छोटे-छोटे दानों का निकल आना जिससे पीड़ा होती है।

फलयोग–संज्ञा पु० [सं०] नाटक में वह स्थान जिसमें फल की प्राप्ति या उसके नायक के उद्देश्य की सिद्धि होती है।

फललक्षणा–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की लक्षणा।

फलहरी†–संज्ञा स्त्री० [हिं० फल + हरी (प्रत्य०)] १. वन के वृक्षों के फल। मेवा। वनफल। २. फल। मेवा।

फलहार–संज्ञा पु० दे० "फलाहार"।

फलहारी–वि० [हिं० फलहार + ई (प्रत्य०)] जिसमें अन्न न पड़ा हो अथवा जो अन्न से न बना हो, बल्कि फलों से बना हो।

फलाँ–वि० [फा०] अमुक। फलाना।

फलाँग–संज्ञा स्त्री० [सं० प्रलंघन] १. एक स्थान से उछलकर दूसरे स्थान पर जाना। कुदान। चौकड़ी। २. वह दूरी जो फलाँग से तै की जाय।

फलाँगना–क्रि० अ० [हिं० फलाँग + ना (प्रत्य०)] एक स्थान से उछलकर दूसरे स्थान पर जाना। कूदना। फाँदना।

फलाश–संज्ञा पु० [सं०] तात्पर्य। साराश।

फलागम–संज्ञा पु० [सं०] १ फल लगने की ऋतु या मौसिम। २. शरद् ऋतु।

फलादेश–संज्ञा पु० [सं०] जन्मकुंडली आदि देखकर ग्रहों आदि का फल कहना। (ज्योतिष)

फलाना–संज्ञा पु० [अ० फलाँ + ना (प्रत्य०)] [स्त्री० फलानी] अमुक। कोई अनिश्चित।

† क्रि० स० [हिं० फलना का प्रेरणा०] किसी को फलने में प्रवृत्त करना।

फलालीन, फलालैन–संज्ञा पु० [अं० फ्लानेल] एक प्रकार का ऊनी वस्त्र।

फलार्थी–संज्ञा पु० [सं० फलार्थिन्] वह जो फल की कामना करे। फलकामी।

फलाहार–संज्ञा पु० [सं०] केवल फल खाना। फल-भोजन।

फलाहारी–संज्ञा पु० [सं० फलाहारिन्] [स्त्री० फलाहारिणी] जो फल खाकर निर्वाह करता हो।

वि० [हिं० फलाहार + ई (प्रत्य०)] फलाहार संबंधी। जो केवल फलों से बना हो।

फलित–वि० [सं०] १ फला हुआ। २ संपन्न। पूर्ण।

यौ०—फलित ज्योतिष = ज्योतिष का वह अंग जिसमें ग्रहों के योग से शुभाशुभ फल का निरूपण किया जाता है।

फली–संज्ञा स्त्री० [हिं० फल + ई (प्रत्य०)] छोटे पौधों में लगनेवाले लंबे और चिपटे फल जिनमें छोटे छोटे बीज होते हैं।

फलीता–संज्ञा पु० [अ० फतीला] १ बत्ती आदि के रेशों से बटी हुई रस्सी जिसमें तोड़ेदार बंदूक़ दागने के लिए आग लगा-

फर रगी जाती है। पलीता। २. बत्ती।

फलीभूत—वि० [सं०] फलदायक। जिसका फल या परिणाम निकले।

फलेंदा—संज्ञा पुं० [सं० फलेंद्र] एक प्रकार का जामुन। फरेंद।

फ़सल—संज्ञा स्त्री० [अ० फ़स्ल] १. ऋतु। मौसम। २. समय। काल। ३. सस्य। खेत की उपज। अन्न।

फ़सली—वि० [अ०] ऋतु का। संज्ञा पुं० १. अकबर का चलाया हुआ एक संवत्। इसका प्रचार उत्तरीय भारत में खेती-बारी आदि के कामों में होता है। २. हैजा।

फ़साद—संज्ञा पुं० [अ०] [वि० फ़सादी] १ बिगाड़। विकार। २. बलवा। विद्रोह। ३. ऊधम। उपद्रव। ४. झगड़ा। लड़ाई।

फ़सादी—वि० [फ़ा०] १. फसाद खड़ा करनेवाला। उपद्रवी। २. झगड़ालू।

फ़स्द—संज्ञा स्त्री० [अ०] नस को छेदकर शरीर का दूषित रक्त निकालने की क्रिया।

मुहा०—फ़स्द खुलवाना या लेना=१. शरीर का दूषित रक्त निकलवाना। २. होश की दवा कराना।

फ़हम—संज्ञा स्त्री० [अ०] ज्ञान। समझ।

फहरना—क्रि० अ० [सं० प्रसरण] फहराना का अकर्मक रूप। वायु में उड़ना।

फहरान—संज्ञा स्त्री० [हिं० फहराना] फहराने का भाव या क्रिया।

फहराना—क्रि० स० [सं० प्रसारण] कोई चीज इस प्रकार खुली छोड़ देना जिसमें वह हवा में हिले और उड़े। उड़ाना।
क्रि० अ० हवा में रह रहकर हिलना या उड़ना। फहरना।

फहरानि*—संज्ञा स्त्री० दे० "फहरान"।

फ़हश—वि० [अ० फ़ुहश] फूहड़। अश्लील।

फाँक—संज्ञा स्त्री० [सं० फलक] १. किसी गोल या पिंडाकार वस्तु का काटा या चीरा हुआ टुकड़ा। २. खंड। टुकड़ा।

फाँकना—क्रि० स० [हिं० फंकी] दाने या चुकनी के रूप की वस्तु को दूर से मुँह में डालना।

मुहा०—धूल फाँकना=दुर्दशा भोगना।

फाँग, फाँगी—संज्ञा स्त्री० [?] एक प्रकार का साग।

फाँड़ा†—संज्ञा पुं० [सं० फाँड़=पेट] दुपट्टे या धोती का कमर में बँधा हुआ हिस्सा।

फाँद—संज्ञा स्त्री० [हिं० फाँदना] उछलने या फाँदने का भाव। उछाल।
संज्ञा स्त्री०, पुं० [हिं० फंदा] फंदा। पाश।

फाँदना—क्रि० अ० [सं० फणन] एक स्थान से दूसरे स्थान पर कूदना। उछलना।
क्रि० स० कूदकर लाँघना।
क्रि० स० [हिं० फंदा] फंदे में फँसाना।

फाँफी—संज्ञा स्त्री० [सं० पर्पटी] १. बहुत महीन झिल्ली। २. माँड़ा। जाला। (रोग)

फाँस—संज्ञा स्त्री० [सं० पाश] १. पाश। बंधन। फंदा। २. वह फंदा जिसमें शिकारी लोग पशु-पक्षी फँसाते हैं।
संज्ञा स्त्री० [सं० पनस] १. बाँस, सूखी लकड़ी आदि का कड़ा तंतु जो शरीर में चुभ जाता है। २. पतली तीली या कमाची।

फाँसना—क्रि० स० [सं० पाश] १. पाश में बाँधना। जाल में फँसाना। २. धोखा देकर अपने अधिकार में करना।

फाँसी—संज्ञा स्त्री० [सं० पाश] १. फँसाने का फंदा। पाश। २. वह रस्सी का फंदा जिसमें गला फँसने से घुट जाता है और फँसनेवाला मर जाता है।

मुहा०—फाँसी चढ़ना=पाश द्वारा प्राणदंड पाना।

३. वह दंड जो अपराधी को फंदे के द्वारा मार कर दिया जाय।

मुहा०—फाँसी देना=गले में फंदा डालकर मार डालना।

फ़ाक़ा—संज्ञा पुं० [अ० फ़ाक़ः] उपवास।

फ़ाक़ामस्त, फ़ाक़ेमस्त—वि० [फ़ा०] जो खाने पीने का कष्ट उठाकर भी कुछ चिंता न करता हो।

फ़ाख़ता—संज्ञा स्त्री० [अ०] पंडुक। धवँरखा।

फाग—संज्ञा पुं० [हिं० फागुन] १. फागुन में होनेवाला उत्सव जिसमें एक दूसरे पर रंग या गुलाल डालते हैं। २. वह गीत जो फाग के उत्सव में गाया जाता है।

फागुन—संज्ञा पुं० [सं० फाल्गुन] माघ के बाद का महीना। फाल्गुन।

फ़ाज़िल—वि० [अ०] १. आवश्यकता से अधिक। २. विद्वान्।

फाटक—संज्ञा पु० [सं० कपाट] १. बड़ा द्वार। बड़ा दरवाज़ा। तोरण। २. ‡मवेशी-खाना। काँजी हौस।

संज्ञा पु० [हिं० फटकना] भूसी जो अनाज फटकने से बची हो। पछोड़न। फटकन।

फाटना—क्रि० अ० दे० "फटना"।

फाड़न—संज्ञा स्त्री० [हिं० फाड़ना] कागज़, कपड़े आदि का टुकड़ा जो फाड़ने से निकले।

फाड़ना—क्रि० स० [सं० स्फाटन] १. चीरना। विदीर्ण करना। २ टुकड़े करना। धज्जियाँ उड़ाना। ३. संधि या जोड़ फैलाकर खोलना। ४ किसी गाढ़े द्रव पदार्थ को इस प्रकार करना कि पानी और सार पदार्थ अलग अलग हो जायँ।

फातिहा—संज्ञा पु० [अ०] १. प्रार्थना। २ वह चढ़ावा जो मरे हुए लोगों के नाम पर दिया जाय। (मुसल०)

फानूस—संज्ञा पु० [फा०] १ एक प्रकार की बड़ी कंदील। २. एक दंड में लगे हुए शीशे के कमल या गिलास आदि जिनमें बत्तियाँ जलाई जाती हैं।

फाफर—संज्ञा पु० दे० "कूटू"।

फाब*—संज्ञा स्त्री० दे० "फबन"।

फाबना*†—क्रि० अ० दे० "फबना"।

फायदा—संज्ञा पु० [अ०] १ लाभ। नफा। प्राप्ति। २. प्रयोजन-सिद्धि। मतलब पूरा होना। ३. अच्छा फल। भला परिणाम। ४. उत्तम प्रभाव। अच्छा असर।

फायदेमंद—वि० [फा०] लाभदायक।

फार*†—संज्ञा पु० दे० "फाल"।

फारखती—संज्ञा स्त्री० [अ० फारिग़+खती] वह लेख जो इस बात का सबूत हो कि किसी के जिम्मे जो कुछ था, वह अदा हो गया। चुकती। बेबाकी।

फारना*†—क्रि० स० दे० "फाड़ना"।

फारस—संज्ञा पु० दे० "पारस"।

फारसी—संज्ञा स्त्री० [फा०] फारस देश की भाषा।

फारा†—संज्ञा पु० [सं० फाल] १. फाल। कतरा। कटी हुई फाँक। २. दे० "फाल"।

फाल—संज्ञा स्त्री० [सं०] लोहे का चौकोर लंबा छड़ जो हल के नीचे लगा रहता है। जमीन इसी से खुदती है। कुस। कुसी।

संज्ञा स्त्री० [सं० फलक] १. काटा या कतरा हुआ पतले दल का टुकड़ा। २ कटी हुई सुपारी। छालिया।

संज्ञा पु० [सं० प्लव] १. डग। फलाँग। मुहा०—फाल बाँधना = उछलकर लाँघना। २ कदम भर का फासला। पेंड़।

फालतू—वि० [हिं० फाल = टुकड़ा + तू (प्रत्य०)] १ आवश्यकता से अधिक। अतिरिक्त। २ व्यर्थ। निकम्मा।

फालसई—वि० [फा० फालसा] फालसे के रंग का। ललाई लिए हुए हलका ऊदा।

फालसा—संज्ञा पु० [फा०, सं० परुषक] एक छोटा पेड़ जिसमें मोती के दाने के बराबर छोटे छोटे खटमीठे फल लगते हैं।

फालिज—संज्ञा पु० [अ०] एक रोग जिसमें आधा अंग सुन्न हो जाता है। अर्धांग। पक्षाघात।

फालूदा—संज्ञा पु० [फा०] पीने के लिये गेहूँ के सत्त से बनाई हुई एक चीज। (मुसल०)

फाल्गुन—संज्ञा पु० [सं०] १. एक चांद्र-मास। दे० "फागुन"। २ अर्जुन का एक नाम।

फाल्गुनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पूर्वा फाल्गुनी और उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र।

फावड़ा—संज्ञा पु० [सं० फाल] [स्त्री० अल्पा० फावड़ी] मिट्टी खोदने और टालने का एक औजार। फरसा। करसी।

फाश—वि० [फा०] खुला। प्रकट।

फासला—संज्ञा पु० [अ०] दूरी। अंतर।

फाहा–संज्ञा पुं० [सं० फाल] तेल, घी या मरहम आदि में तर की हुई कपड़े की पट्टी या रूई। फ़ाया।
फ़ाहिशा–वि० स्त्री० छिनाल। पुंश्चली।
फिकरा–संज्ञा पुं० [अ०] १. वाक्य। २. भाँसा पट्टी। ३. व्यंग्य।
फिकैत–संज्ञा पुं० [हिं० फेंकना] वह जो फरी गदका चलाता हो।
फ़िक्र–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. चिंता। सोच। खटका। २. ध्यान। विचार। ३. उपाय का विचार। यत्न। तदबीर।
फिक्रमंद–वि० [अ० + फ़ा०] चिंताग्रस्त।
फिचकुर–संज्ञा पुं० [सं० पिछ = लार] फेन जो मूर्छा या वेहोशी आने पर मुंह से निकलता है।
फिट–अव्य० [अनु०] धिक्। छी। थुड़ी। (धिक्कारने का शब्द)
फिटकार–संज्ञा स्त्री० [हिं० फिट+कार] १. धिक्कार। लानत। २. शाप। कोसना। बद-दुआ।
फिटकिरी–संज्ञा स्त्री० [सं० स्फटिका] एक मिश्र खनिज पदार्थ जो स्फटिक के समान श्वेत होता है।
फिटन–संज्ञा स्त्री० [अं०] चार पहिये की एक प्रकार की खुली गाड़ी।
फिट्टा–वि० [हिं० फिट] फटकार खाया हुआ। अपमानित। श्रीहत।
फ़ितना–संज्ञा पुं० [अ०] १. झगड़ा। दंगा-फ़साद। २. एक प्रकार का इत्र।
फ़ितूर–संज्ञा पुं० [अ० फ़ुतूर] [वि० फ़ितूरी] १. विकार। विपर्य्यय। खराबी। २. झगड़ा। बखेड़ा। उपद्रव।
फ़िदवी–वि० [अ० फ़िदाई से फ़ा०] स्वामिभक्त। आज्ञाकारी।
संज्ञा पुं० [स्त्री० फ़िदविया] दास।
फिनिया–संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का गहना जो कान में पहना जाता है।
फिरंग–संज्ञा पुं० [अं० फ्रांक] १. युरोप का एक देश। गोरों का मुल्क। फिरंगिस्तान। २. गरमी। आतशक। (रोग)
फिरंगी–वि० [हिं० फिरंग] १. फिरंग देश में उत्पन्न। २. फिरंग देश में रहनेवाला। गोरा। ३. फिरंग देश का।
संज्ञा स्त्री० विलायती तलवार।
फिरंट–वि० [हिं० फिरना या अं० फ्रंट] १. फिरा हुआ। विरुद्ध। खिलाफ़। २. विरोध या लड़ाई पर उद्यत।
फिर–क्रि० वि० [हिं० फिरना] १. एक बार और। दोबारा। पुनः।
यौ०––फिर फिर = बार बार। कई दफ़ा। २. भविष्य में किसी समय। और वक़्त। ३. पीछे। अनंतर। उपरांत। ४. तब। उस अवस्था में।
मुहा०–फिर क्या है ! = तब क्या पूछना है ! *तब तो कोई अड़चन ही नहीं है।*
५. और चलकर। आगे और दूरी पर। ६. इसके अतिरिक्त।
फ़िरक़ा–संज्ञा पुं० [अ०] १. जाति। २. जत्था। ३. पंथ। संप्रदाय।
फिरकी–संज्ञा स्त्री० [हिं० फिरना] १. वह गोल या चक्राकार पदार्थ जो बीच की कीली को एक स्थान पर टिकाकर घूमता हो। २. लड़कों का एक खिलौना जिसे वे नचाते हैं। फिरहरी। ३. चकई नाम का खिलौना। ४. चमड़े का गोल टुकड़ा जो चरखे के तकले में लगाया जाता है।
फिरता–संज्ञा पुं० [हिं० फिरना] [स्त्री० फिरती] १. वापसी। २. अस्वीकार।
वि० वापस लौटाया हुआ।
फिरना–क्रि० अ० [हिं० फेरना का अकर्मक रूप] १. इधर-उधर चलना। भ्रमण करना। २. टहलना। विचरना। सैर करना। ३. चक्कर लगाना। बार बार फेरे खाना। ४. ऐंठा जाना। मरोड़ा जाना। ५. लौटना। वापस होना। ६. सामना। दूसरी तरफ़ हो जाना। ७. मुड़ना।
मुहा०-किसी ओर फिरना=प्रवृत्त होना। जी फिरना=चित्त उचट जाना। विरक्त हो जाना
८. लड़ने या मुकाबला करने के लिये तैयार हो जाना। ९. उलटा होना। विपरीत होना।

मुहा०—सिर फिरना=बुद्धि भ्रष्ट होना। १० बात पर दृढ़ न रहना। ११ मुड़ना। टेढ़ा होना। १२ चारो ओर प्रचारित होना। घोषित होना। १३ किसी वस्तु के ऊपर पोता जाना। चढ़ाया जाना।

फिरवाना—क्रि० स० [हिं० 'फेरना' का प्रे०] फेरने या फिराने का काम कराना।

फिराक—संज्ञा पु० [अ०] १ वियोग। बिछोह। २ चिंता। सोच। ३ खोज।

फिराना—क्रि० स० [हिं० फिरना] १ कभी इस ओर, कभी उस ओर ले जाना। २ टहलाना। ३ चक्कर देना। बार बार फेर खिलाना। ४ ऐंठना। मरोड़ना। ५ लौटाना। पलटाना। ६ सामना एक ओर से दूसरी ओर करना। ७ दे० "फेरना"।

फिरार—संज्ञा पु० [अ०] [वि० फ़िरारी] भागना। भाग जाना।

फिरि†*—क्रि० वि० दे० 'फिर"।

फिरियाद*‡—संज्ञा स्त्री० दे० "फरियाद"।

फिल्ली—संज्ञा स्त्री० [देश०] पिंडली। (अंग)

फिस—वि० [अनु०] कुछ नहीं। (हास्य) मुहा०—टांय टांय फिस=थी तो बड़ी धूम, पर हुआ कुछ नहीं।

फिसड्डी—वि० [अनु० फिस] १ जिससे कुछ करते-धरते न बने। २ जो काम में सबसे पीछे रहे।

फिसलन—संज्ञा स्त्री० [हिं० फिसलना] १ फिसलने की क्रिया या भाव। रपटन। २ चिकनी जगह जहाँ पैर फिसले।

फिसलना—क्रि० अ० [सं० प्र+सरण] १ चिकनाहट और गीलेपन के कारण पैर आदि का न जमना। रपटना। २ प्रवृत्त होना। झुकना।

फिहरिस्त—संज्ञा स्त्री०[फा०] तालिका। सूची

फी—अव्य० [अ०] प्रति एक। हर एक।

फीका—वि० [सं० अपक्व] १ स्वादहीन। सीठा। नीरस। बे-जायका। २ जो चट-कीला न हो। धूमला। मलिन। ३ बिना तेज का। कांतिहीन। बेरौनक। ४ प्रभावहीन। व्यर्थ। निष्फल।

फीता—संज्ञा पु० [फा०] पतली धज्जी, सूत आदि जो किसी वस्तु को लपेटने या बाँधने के काम में आता है।

फीरनी—संज्ञा स्त्री० [फा० फिरनी] एक प्रकार की खीर।

फीरोजा—संज्ञा पु० [फा०] हरापन लिए नीले रंग का एक नग या बहुमूल्य पत्थर।

फीरोजी—वि० [फा०] हरापन लिए नीला।

फील—संज्ञा पु० [फा०] हाथी।

फीलखाना—संज्ञा पु० [फा०] वह घर जहाँ हाथी बाँधा जाता हो। हस्तिशाला।

फीलपा—संज्ञा पु० [फा०] एक रोग जिसमें पैर या और कोई अंग फूलकर हाथी के पैर की तरह हो जाता है।

फीलवान—संज्ञा पु० [फा०] हाथीवान।

फीली—संज्ञा स्त्री० [सं० पिंड] पिंडली।

फुकना—क्रि० अ० [हिं० फूँकना] १ फूंकने का अकर्मक रूप। २ जलना। भस्म होना। ३ नष्ट होना। बरबाद होना। संज्ञा पु० १ दे० "फुंकनी"। २ प्राणियों के शरीर का वह अवयव जिसमें मूत्र रहता है।

फुंकनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० फूंकना] १ वह नली जिसे मुँह से फूँककर आग सुलगाते हैं। २ भाथी।

फुंकरना—क्रि० अ० [हिं० फुंकार] फूत्कार छोड़ना। फूं फूं शब्द करना।

फुंकवाना, फुंकाना—क्रि० स० [हिं० फूंकना' का प्रे०] फूंकने का काम दूसरे से कराना।

फुंकार—संज्ञा पु० दे० 'फूत्कार"।

फुंदना—संज्ञा पु० [हिं० फूल+फंद] फूल के आकार की गाँठ जो बंद, डोरी, झालर आदि के छोर पर शोभा के लिये बनाते हैं। फुलरा। झब्बा।

फुंदिया—संज्ञा स्त्री० दे० "फुंदना"।

फुंदी—संज्ञा स्त्री० [हिं० फंदा] फंदा। गाँठ। संज्ञा स्त्री० [हिं० बिंदी] बिंदी। टीका।

फुंसी—संज्ञा स्त्री० [सं० पनसिका] छोटी फोड़िया।

फुकना–क्रि० अ० दे० "फुँकना"।

फुचड़ा–संज्ञा पुं० [देश०] कपड़े आदि की बनी हुई वस्तुओं में बाहर निकला हुआ सूत या रेशा।

फुट–वि० [सं० स्फुट] १. जिसका जोड़ा न हो। एकाकी। अकेला। २. जो लगाव में न हो। पृथक्। अलग।
संज्ञा पु० [अं० फुट] लंबाई, चौड़ाई मापने की एक माप जो १२ इंच या ३६ जौ के बराबर होती है।

फुटकर, फुटकल–वि० [सं० स्फुट+कर (प्रत्य०)] १. विषम। फुट। एकाकी। अकेला। २. अलग। पृथक्। ३. कई प्रकार का। कई मेल का। ४. थोड़ा थोड़ा। इकट्ठा नहीं। थोक का उलटा।

फुटका–संज्ञा पुं० [सं० स्फोटक] फफोला।

फुटकी–संज्ञा स्त्री० [सं० पुटक] १. किसी वस्तु के जमे हुए कण जो पानी, दूध आदि में अलग अलग दिखाई पड़ते हैं। २. खून, पीब आदि का छींटा जो किसी वस्तु में दिखाई दे।

फुटेहरा–संज्ञा पु० [हि० फूटना+हरा=फल] मटर या चने का दाना जो भुनने से खिल गया हो।

फुट्ट–वि० दे० "फुट"।

फुट्टल–वि० [सं० स्फुट] जोड़े, झुंड या समूह से अलग।
वि० [हि० फूटना] फूटे भाग्य का। अभागा।

फुदकना–क्रि० अ० [अनु०] १. उछल-उछलकर कूदना। २. उमग में आना।

फुदकी–संज्ञा स्त्री० [हि० फुदकना] एक प्रकार की छोटी चिड़िया।

फुनंग–संज्ञा स्त्री० दे० "फुनगी"।

फुनगी–संज्ञा स्त्री० [स० पुलक] वृक्ष या पौधे की शाखाओं का अग्रभाग। अंकुर।

फुप्फुस–संज्ञा स्त्री० [सं०] फेफड़ा।

फुफँदी–संज्ञा स्त्री० [हि० फूल+फंद] लहँगे के इजारबंद या स्त्रियों की धोती कसने की डोरी की गाँठ। नीवी।

फुफकाना–क्रि० अ० दे० "फुफकारना"।

फुफकार–संज्ञा पुं० [अनु०] साँप के मुँह से निकली हुई हवा का शब्द। फुंकार।

फुफकारना–क्रि० अ० [हि० फुफकार] साँप का मुँह से फूँक निकालना। फूत्कार करना।

फुफू*†–संज्ञा स्त्री० दे० "फूफी"।

फुफेरा–वि० [हि० फूफा+रा] [स्त्री० फुफेरी] फूफा से उत्पन्न। जैसे, फुफेरा भाई।

फुर†–वि० [हि० फुरना] सत्य। सच्चा।
संज्ञा स्त्री० [अनु०] उड़ने में परों का शब्द।

फुरती–संज्ञा स्त्री० [सं० स्फूर्ति] शीघ्रता। तेजी।

फुरतीला–वि० [हि० फुरती+ईला] [स्त्री० फुरतीली] जिसमें फुरती हो। तेज।

फुरना*–क्रि० अ० [स० स्फुरण] १. निकलना। उद्भूत होना। प्रकट होना। २. प्रकाशित होना। चमक उठना। ३. फड़कना। फड़फड़ाना। ४. उच्चरित होना। मुँह से शब्द निकलना। ५. पूरा उतरना। सत्य ठहरना। ६. प्रभाव उत्पन्न करना।

फुरफुराना–क्रि० स० [अनु० फुरफुर] १. "फुर फुर" करना। उड़कर परों का शब्द करना। २. हवा में लहराना।
क्रि० अ० किसी हलकी वस्तु का हिलना जिससे फुरफुर शब्द हो।

फुरफुरी–संज्ञा स्त्री० [अनु० फुरफुर] 'फुर-फुर' शब्द होने या पंख फड़फड़ाने का भाव।

फुरमान–संज्ञा पुं० दे० "फ़रमान"।

फुरमाना‡–क्रि० स० दे० "फरमाना"।

फुरसत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. अवसर। समय। २. अवकाश। निवृत्ति। छुट्टी। ३. रोग से मुक्ति। आराम।

फुरहरना‡–क्रि० अ० [स० स्फुरण] स्फुरित होना। निकलना। प्रादुर्भूत होना।

फुरहरी–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. पर को फुलाकर फड़फड़ाना। २. फड़फड़ाहट। फड़कना। ३. कपड़े आदि के हवा में हिलने की क्रिया या शब्द। फरफराहट। ४. कँपकँपी। ५. दे० "फुरेरी"।

फुराना*–क्रि० स० [हि० फुर] १. सच्चा

ठहराना। ठीक उतारना। ३. प्रमाणित करना।
क्रि० अ० दे० "फुरना"।

फुरेरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० फुरफुराना] १ वह सींक जिसके सिरे पर रुई लपेटी हो, और जो इत्र, दवा आदि में डुबाकर काम में लाई जाय। २ रोमांच-युक्त कंप।
मुहा०—फुरेरी लेना = १ सरदी, भय आदि के कारण काँपना। थरथराना। २ फड़फड़ाना। फड़कना। हिलना।

फुलका—संज्ञा पु० [हिं० फूलना] १ फफोला। छाला। २ हल्की और पतली रोटी। चपाती।

फुलचुही—संज्ञा स्त्री० [हिं० फूल+चूसना] काले रंग की एक चमकती हुई चिड़िया।

फुलझड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० फूल+झड़ना] १ एक प्रकार की आतशबाजी। २ उपद्रव खड़ा करनेवाली बात।

फुलवर—संज्ञा पु० [हिं० फूल+वार] एक प्रकार का रेशमी बूटीदार कपड़ा।

फुलवाई*—संज्ञा स्त्री० दे० "फुलवारी"।

फुलवार—वि० [सं० फुल्ल] प्रफुल्ल। प्रसन्न।

फुलवारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० फूल+बारी] १ पुष्पवाटिका। उद्यान। बगीचा। २ कागज के बने हुए फूल और वृक्षादि जो बरात के साथ निकाले जाते हैं।

फुलहारा—संज्ञा पु० [हिं० फूल+हारा (प्रत्य०)] [स्त्री० फुलहारी] माली।

फुलाना—क्रि० स० [हिं० फूलना] १ किसी वस्तु के विस्तार को उसके भीतर वायु आदि का दबाव पहुँचाकर बढ़ाना।
मुहा०—मुँह फुलाना = मान करना। रूठना।
२ किसी को पल्लवित या आनंदित करना। ३ किसी में गर्व उत्पन्न करना। ४ कुसुमित करना। फूलों से युक्त करना।
क्रि० अ० दे० "फूलना"।

फुलायल*—संज्ञा पु० दे० "फुलेल"।

फुलाव—संज्ञा पु० [हिं० फूलना] फूलने की क्रिया या भाव। उभार या सूजन।

फुलिंग*—संज्ञा पु० [सं० स्फुलिंग] चिनगारी।

फुलिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० फूल] १ किसी कील या छड़ के आकार की वस्तु का फूल की तरह का गोल सिरा। २ वह कील या काँटा जिसका सिर फूल की तरह हो। ३ एक प्रकार का लौंग। (गहना)

फुलेल—संज्ञा पु० [हिं० फूल+तेल] फूलों की महक से बासा हुआ सिर में लगाने का तेल। सुगंधयुक्त तेल।

फुलेहरा†—संज्ञा पु० [हिं० फूल+हार] सूत, रेशम आदि के बंदनवार जो उत्सवों में द्वार पर लगाए जाते हैं।

फुलौरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० फूल+बरी] चने या मटर आदि के बेसन की पकौड़ी।

फुल्ल—वि० [सं०] फूला हुआ। विकसित।

फुल्लदाम—संज्ञा पु० [सं० फुल्लदामन्] उन्नीस वर्णों की एक वृत्ति।

फुस—संज्ञा स्त्री० [अनु०] धीमी आवाज।

फुसकारना*†—क्रि० अ० [अनु०] फूँक मारना। फूत्कार छोड़ना।

फुसफुसा—वि० [हिं० फूस या अनु० फुस] १ जो दबाने से बहुत जल्दी चूर चूर हो जाय। २ कमजोर। ३ मंदा। मद्धिम।

फुसफुसाना—क्रि० स० [अनु०] बहुत ही दबे हुए स्वर से बोलना।

फुसलाना—क्रि० स० [हिं० फिसलाना] अनुकूल या संतुष्ट करने के लिये मीठी मीठी बातें कहना। चकमा देना। बहकाना।

फुहार—संज्ञा स्त्री० [सं० फूत्कार] १ पानी का महीन छींटा। जलकण। २ महीन बूँदों की झड़ी। झींसी।

फुहारा—संज्ञा पु० [हिं० फुहार] १ जल का महीन छींटा। २ जल की वह टोंटी जिसमें से दबाव के कारण जल की महीन धार या छींटे वेग से ऊपर की ओर उठकर गिरा करते हैं। जलयंत्र।

फुही—संज्ञा स्त्री० दे० "फुहार"।

फूँक—संज्ञा स्त्री० [अनु० फू फू] १ मुँह को बंद करके वेग के साथ छोड़ी हुई हवा। २ साँस। मुँह की हवा।
मुहा०—फूँक निकल जाना = प्राण निकल

जाना।
३. मंत्र पढ़कर मुंह से छोड़ी हुई वायु।
यौ०—झाड़-फूंक = मंत्र-तंत्र का उपचार।

फूंकना—क्रि० स० [हिं० फूंक] १. मुंह को बटोरकर वेग के साथ हवा छोड़ना।
मुहा०—फूंक फूंककर पैर रखना या चलना=बहुत सावधानी से कोई काम करना।
२. मंत्र आदि पढ़कर किसी पर फूंक मारना। ३. शंख, बांसुरी आदि मुंह से बजाए जानेवाले बाजों को फूंककर बजाना। ४. फूंककर प्रज्वलित करना। ५. जलाना। भस्म करना। ६. फ़जूल खर्च कर देना। उड़ाना।
यौ०—फूंकना तापना=व्यर्थ खर्च कर देना।

फूंका—संज्ञा पु० [हिं० फूंक] १. बांस की नली में जलन पैदा करनेवाली ओषधियां भरकर और उन्हें स्तन में लगाकर फूंकना जिससे गायों का सारा दूध बाहर निकल आवे। २. बांस आदि की वह नली जिसमें फूंका मारा जाता है। ३. फफोला।

फूंद—संज्ञा स्त्री० दे० "फुंदना"।

फूंदा[*]†—संज्ञा पुं० १. दे० "फुंदना"।
यौ०—फूंद फुंदारा = फुंदनेवाला। २. फुफुंदी।

फूट—संज्ञा स्त्री० [हिं० फूटना] १. फूटने की क्रिया या भाव। २. बैर। विरोध। बिगाड़। ३. एक प्रकार की बड़ी ककड़ी।

फूटना—क्रि० अ० [स० स्फुटन] १. खरी या करारी वस्तुओं का आघात पाकर टूटना। करकना। दरकना। २. ऐसी वस्तुओं का फटना जिनके भीतर या तो पोली हो अथवा मुलायम या पतली चीज भरी हो। ३. नष्ट होना। बिगड़ना।
मुहा०—फूटी आंखों न भाना = तनिक भी न सुहाना। बहुत बुरा लगना। फूटी आंखों न देख सकना=बुरा मानना। जलना। कुढ़ना।
४. भीतर से झोंक के साथ बाहर आना। ५. शरीर पर दाने या घाव के रूप में प्रकट होना। ६. कली का खिलना। प्रस्फुटित होना। ७. अंकुर, शाखा आदि का निकलना। ८. शाखा के रूप में अलग होकर किसी सीध में जाना। ९. बिखरना। फैलना। व्याप्त होना। १०. पक्ष छोड़ना। दूसरे पक्ष में हो जाना। ११. शब्द का मुंह से निकलना।
मुहा०—फूट फूटकर रोना=विलाप करना।
१२. व्यक्त होना। प्रकट होना। प्रकाशित होना। १३. गुह्य बात का प्रकट हो जाना। १४. बांध, मेड़ आदि का टूट जाना। १५. जोड़ों में दर्द होना।

फूत्कार—संज्ञा पु० [स०] मुंह से हवा छोड़ने का शब्द। फूंक। फुफकार।

फूफा—संज्ञा पु० [हिं० फूफी] फूफी का पति। बाप का बहनोई।

फूफी—संज्ञा स्त्री० [अनु०] बाप की बहिन। बुआ।

फूल—संज्ञा पु० [सं० फुल्ल] १. गर्भाधानवाले पौधों में वह ग्रंथि जिसमें फल उत्पन्न करने की शक्ति होती है और जिसे उद्भिदों की जननेंद्रिय कह सकते हैं। पुष्प। कुसुम। सुमन।
मुहा०—फूल झड़ना = मुंह से प्रिय और मधुर बातें निकलना। फूल सा = अत्यंत सुकुमार, हलका या सुंदर। फूल सूंघकर रहना = बहुत कम खाना। (स्त्री० व्यंग्य) पान फूल सा = अत्यंत सुकुमार।
२. फूल के आकार के बेल-बूटे या नक्काशी। ३. फूल के आकार का कोई गहना। जैसे, करनफूल। सीसफूल। ४. पीतल आदि की गोल गांठ या घुंडी। फुलिया। ५. सफेद या लाल धब्बा जो कुष्ठ रोग के कारण शरीर पर पड़ जाता है। सफ़ेद दाग। श्वेत कुष्ठ। ६. स्त्रियों का मासिक रज। पुष्प। ७. वह हड्डी जो दाव जलाने के पीछे बच रहती है। (हिंदू) ८. एक मिश्रधातु जो तांबे और रांगे के मेल से बनती है।
संज्ञा स्त्री० [हिं० फूलना] १. फूलने की क्रिया या भाव। २. उत्साह। उमंग। ३. आनंद। प्रसन्नता।

फूलगोभी—संज्ञा स्त्री० [हिं० फूल + गोभी] गोभी की एक जाति जिसमें पत्तों का बँधा हुआ ठोस पिंड होता है। गाँठगोभी।
फूलदान—संज्ञा पुं० [हिं० फूल+दान (प्रत्य०)] गुलदस्ता रखने का काँच, पीतल आदि का गिलास के आकार का बरतन।
फूलदार—वि० [हिं० फूल + दार (प्रत्य०)] जिस पर फूल-पत्ते और बेल-बूटे बने हों।
फूलना—क्रि० अ० [हिं० फूल + ना (प्रत्य०)] १. फूलों से युक्त होना। पुष्पित होना। मुहा०—फूलना फलना = सुखी और सपन्न होना। उन्नति करना। फूलना फालना = उल्लास में रहना। प्रसन्न होना। २. फूल का संपुट खुलना जिससे उसकी पँखड़ियाँ फैल जायँ। विकसित होना। खिलना। ३. भीतर किसी वस्तु के भर जाने के कारण अधिक फैल या बढ़ जाना। ४. शरीर के किसी भाग का सूजना। ५ मोटा होना। स्थूल होना। ६ गर्व करना। घमंड करना। इतराना। ७ आनंदित होना। बहुत खुश होना। मुहा०—फूला फूला फिरना=प्रसन्न घूमना। आनंद में रहना। फूले अंग न समाना = अत्यंत आनंदित होना। ८ मुँह फुलाना। रूठना। मान करना।
फूलमती—संज्ञा स्त्री० [हिं० फूल + मती (प्रत्य०)] एक देवी का नाम।
फूली—संज्ञा स्त्री० [हिं० फूल] वह सफ़ेद दाग जो आँख की पुतली पर पड़ जाता है।
फूस—संज्ञा पुं० [सं० तुष] १. वह सूखी लंबी घास जो छप्पर आदि छाने के काम में आती है। २. सूखा तृण। खर। तिनका।
फूहड़—वि० [सं० पव=गोबर + घट=गढ़ना] १. जिसे कुछ करने का ढंग न हो। बे-शऊर। २. बेढंगा। भद्दा।
फूही—संज्ञा स्त्री० दे० "फुहार"।
फेंकना—क्रि० स० [सं० प्रेषण] १ झोंक के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान पर डालना। २ एक स्थान से ले जाकर और ..न पर डालना। ३. असावधानी या भूल से इधर-उधर छोड़ना, गिराना या रखना। ४. तिरस्कार के साथ त्यागना। छोड़ना। ५. अपव्यय करना। फजूल खर्च करना।
फेंकरना*†—क्रि० अ० [अनु० फें फें+करना] चिल्ला चिल्लाकर रोना।
फेंट—संज्ञा स्त्री० [हिं० पेट या पेटी] १. कमर का घेरा। कटि का मंडल। २. धोती का वह भाग जो कमर में लपेटकर बाँधा गया हो। ३. कमर में बाँधा हुआ कोई कपड़ा। पटुका। कमरबंद। मुहा०—फेंट धरना या पकड़ना=इस प्रकार पकड़ना कि भागने न पावे। फेंट कसना या बाँधना = कमर कसकर तैयार होना। ४. फेरा। लपेट। घुमाव।
संज्ञा स्त्री० [हिं० फेंटना] फेंटने की क्रिया या भाव।
फेंटना—क्रि० स० [सं० पिष्ट] १. गाढ़े द्रव पदार्थ को उँगली घुमा घुमाकर हिलाना। २ गड्डी के ताशों को उलट-पुलटकर अच्छी तरह से मिलाना।
फेंटा—संज्ञा पुं० [हिं० फेंट] १. दे० "फेंट"। २ छोटी पगड़ी।
फेकरना—क्रि० अ० [हिं० फेकारना] (सिर का) खुलना। नंगा होना।
क्रि० अ० दे० "फेंकरना"।
फेन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० फेनिल] महीन महीन बुलबुलों का गठा हुआ समूह। झाग।
फेनी—संज्ञा स्त्री० [सं० फेनिका] सूत के लच्छे के आकार की एक मिठाई।
फेफड़ा—संज्ञा पुं० [सं० फुप्फुस+ड़ा (प्रत्य०)] वक्षःस्थल के भीतर का वह अवयव जिसकी क्रिया से जीव साँस लेते हैं। फुप्फुस।
फेफड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पपड़ी] फाके या गरमी में सूखे हुए होंठ पर का चमड़ा। पपड़ी।
फेफरी—संज्ञा स्त्री० दे० "फेफड़ी"।
फेर—संज्ञा पुं० [हिं० फेरना] १. चक्कर। घुमाव। घूमने की क्रिया, दशा या भाव। मुहा०—फेर खाना=सीधा न जाकर इधर उधर घूमकर अधिक चलना।

२. मोड़। झुकाव। ३. परिवर्तन। उलट-पलट। रद्द-बदल।

मुहा०—दिनों का फेर = एक दशा से दूसरी दशा की प्राप्ति (विशेषतः अच्छी से बुरी दशा की)। कुफेर=बुरे दिन। बुरी दशा। सुफेर= १. अच्छी दशा। २. अच्छा अवसर।

४. अंतर। फ़र्क़। भेद। ५. असमंजस। उलझन। दुबधा।

मुहा०—फेर में पड़ना = असमंजस में होना।

६. भ्रम। संशय। धोखा। ७. षट्-चक्र। चालबाजी। ८. बखेड़ा। झंझट।

मुहा०—निन्नानवे का फेर = निन्नानवे रुपए पाकर सौ रुपए पूरे करने की धुन। रुपया बढ़ाने का चसका।

९. युक्ति। उपाय। ढंग। १०. अदला-बदला। एवज।

यौ०—हेर-फेर = लेन-देन। व्यवसाय।

११. हानि। टोटा। घाटा। १२. भूत-प्रेत का प्रभाव। *१३. ओर। दिशा। *अव्य० फिर। पुनः। एक बार और।

फेरना—क्रि० स० [सं० प्रेरण, प्रा० पेरन] १. एक ओर से दूसरी ओर ले जाना। घुमाना। मोड़ना। २. पीछे चलाना। लौटाना। वापस करना। ३. जिसने दिया हो, उसी को फिर देना। लौटाना। वापस करना। ४. वापस लेना। लौटा लेना। ५. चक्कर देना। घुमाना। ६ ऐंठना। मरोड़ना। ७. रखकर इधर-उधर स्पर्श कराना। ८. पोतना। तह चढ़ाना।

मुहा०—पानी फेरना = नष्ट करना।

९. उलट-पलट या इधर-उधर करना। १० चारों ओर सबके सामने ले जाना। घुमाना। ११. प्रचारित करना। घोषित करना। १२. घोड़े आदि को ठीक तरह से चलने की शिक्षा देना। निकालना।

फेरफार—संज्ञा पुं० [हिं० फेर] १. परिवर्तन। उलट-फेर। २. अंतर। फ़र्क़। ३. टाल-मटूल। बहाना। ४. घुमाव-फिराव। पेच। चक्कर।

फेरवट—संज्ञा स्त्री० [हिं० फेरना] १. फिरने का भाव। २. घुमाव-फिराव। पेच। चक्कर।

फेरा—संज्ञा पुं० [हिं० फेरना] १. कोली के चारों ओर गमन। परिक्रमण। चक्कर। २. लपेटने में एक एक बार का घुमाव। लपेट। मोड़। बल। ३. बार बार आना-जाना। ४. घूमते-फिरते आ जाना या जा पहुँचना। ५. लौटकर फिर आना। पलट-कर आना। ६. आवर्त्त। घेरा। मंडल।

फेरि*—अव्य० [हिं० फिर] फिर। पुनः।

फेरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० फेरना] १. दे० "फेरा"। २. दे० "फेर"। ३. परिक्रमा। प्रदक्षिणा। ४. योगी या फ़क़ीर का किसी बस्ती में भिक्षा के लिए बराबर आना। ५. कई बार आना-जाना। चक्कर।

फेरीवाला—संज्ञा पुं० [हिं० फेरी + वाला] घूमकर सौदा बेचनेवाला व्यापारी।

फेल—संज्ञा पुं० [अ०] कर्म्म। काम।

फ़ेहरिस्त—संज्ञा स्त्री० दे० "फ़िहरिस्त"।

फैल*‡—संज्ञा पुं० [अ० फ़ैल] १. काम। कार्य्य। २. क्रीड़ा। खेल। ३. नख़रा।

फैलना—क्रि० अ० [सं० प्रसृत] १. कुछ दूर तक स्थान घेरना। २. विस्तृत होना। पसरना। अधिक बड़ा या लंबा-चौड़ा होना। ३. मोटा होना। स्थूल होना। ४. बढ़ती होना। वृद्धि होना। ५. छित-राना। बिखरना। ६. तनकर किसी ओर बढ़ना। ७. प्रचार पाना। बहुतायत से मिलना। ८. प्रसिद्ध होना। मशहूर होना। ९. आग्रह करना। हठ करना। ज़िद करना। १०. भाग का ठीक ठीक लग जाना।

फैलसूफ़—वि० [यू० फिलसफ] फ़जूलखर्च।

फैलसूफ़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० फैलसूफ़] फ़जूल-खर्ची। अपव्यय।

फैलाना—क्रि० स० [हिं० फैलना] १. लगा-तार कुछ दूर तक स्थान घिरवाना। २. विस्तृत करना। पसारना। विस्तार बढ़ाना। ३. व्यापक करना। छा देना। भर देना। ४. बिखेरना। अलग अलग दूर तक कर देना। ५. बढ़ती करना।

वृद्धि करना। ६ तानकर किसी ओर बढ़ाना। ७ प्रचलित करना। जारी करना। ८ इधर-उधर दूर तक पहुँचाना। ९ प्रसिद्ध करना। चारों ओर प्रकट करना। १०. हिसाब किताब करना। लेखा लगाना। ११ गुणा-भाग के ठीक होने की परीक्षा करना।

फैलाव-संज्ञा पु० [हिं० फैलाना] १ विस्तार। प्रसार। २ प्रचार।

फैसला-संज्ञा पु० [अ०] १ दो पक्षों में से किसकी बात ठीक है, इसका निबटेरा। २ किसी मुकदमे में अदालत की आखिरी राय।

फोक-संज्ञा पु० [सं० पुंख] तीर के पीछे की नोक जिसके पास पर लगाये जाते हैं।

फोंदा*-संज्ञा पु० दे० "फुँदना"।

फोक-संज्ञा पु० [हिं० फोकला] १ सार निकल जाने पर बचा हुआ अंश। सीठी। २ भूसी। तुष। ३ फीकी या नीरस चीज।

फोकट-वि० [हिं० फोक] जिसका कुछ मूल्य न हो। निःसार। व्यर्थ।

मुहा०—फोकट में—मुफ्त में। यों ही।

फोकला‡-संज्ञा पु० [सं० वल्कल] छिलका।

फोट-संज्ञा पु० दे० "स्फोट"।

फोड़ना-क्रि० स० [सं० स्फोटन] १ खरी वस्तुओं को खंड खंड करना। भग्न करना। विदीर्ण करना। २ केवल आघात या दबाव से भेदन करना। ३ शरीर में ऐसा विकार उत्पन्न करना जिससे घाव या फोड़े हो जायँ। ४ अंकुर, कनखे, शाखा आदि निकालना। ५ शाखा के रूप में अलग होकर किसी सीध में जाना। ६ और दूसरे पक्ष से अलग करके अपने पक्ष में कर लेना। ७ भेदभाव उत्पन्न करना। ८ फूट डालकर अलग करना। ९ एकाएक गुप्त भेद खोलना।

फोड़ा-संज्ञा पु० [सं० स्फोटक] [स्त्री० अल्पा० फोड़िया] वह शोथ जो शरीर में कहीं पर कोई दोष संचित होने से उत्पन्न होता है और जिसमें रक्त सड़कर पीब के रूप में हो जाता है। व्रण।

फोड़िया-संज्ञा स्त्री० [हिं० फोड़ा] छोटा फोड़ा।

फोता-संज्ञा पु० [फा०] १ भूमिकर। पोत। २ थैली। कोष। थैला। ३ अंडकोष।

फोतेदार-संज्ञा पु० [फा] १ खजाची। कोषाध्यक्ष। २ रोकड़िया।

फोरना*†-क्रि० स० दे० "फोड़ना"।

फौआरा-संज्ञा पु० दे० "फुहारा"।

फौज-संज्ञा स्त्री० [अ०] १ झुंड। जत्था। २ सेना। लश्कर।

फौजदार-संज्ञा पु० [फा०] सेनापति।

फौजदारी-संज्ञा स्त्री० [फा०] १ लड़ाई-झगड़ा। मार-पीट। २ वह अदालत जहाँ ऐसे मुकदमों का निर्णय होता हो जिनमें अपराधी को दंड मिलता है।

फौजी-वि० [फा०] फौज संबंधी। सैनिक।

फौत-वि० [अ०] मृत। गत।

फौरन-क्रि० वि० [अ०] तुरंत। चटपट।

फौलाद-संज्ञा पु० [फा० पोलाद] एक प्रकार का कड़ा और अच्छा लोहा। खेड़ी।

फ्रांसीसी-वि० [फ्रांस] १ फ्रांस देश का। २ फ्रांस देशवासी।

ब

ब-हिंदी का तेईसवाँ व्यंजन और पवर्ग का तीसरा वर्ण। यह ओष्ठ्य वर्ण है।

बंक-वि० [सं० वक्र, वंक] १ टेढ़ा। तिरछा। २ पुरुषार्थी। विक्रमशाली। ३ दुर्गम। जिस तक पहुँच न हो सके।

—संज्ञा पु० [अं० बैंक] वह संस्था जो लोगों का रुपया अपने यहाँ जमा करती अथवा लोगों को ऋण देती है।

बंकराज-संज्ञा पु० [सं० वंकराज] एक प्रकार का सर्प।

बंका†-वि० [सं० वंक] १ टेढ़ा। तिरछा। २ बाँका। ३ पराक्रमी।

वंकाई†–संज्ञा स्त्री० दे० "वंकुरता"।

वंकुरता*–संज्ञा स्त्री० [सं० वक्रता] टेढ़ाई। टेढ़ापन।

वँगला–वि० [हिं० वंगाल] वंगाल देश का। वंगाल संवंधी।
संज्ञा पुं० १. वह चारों ओर से खुला हुआ एक मंज़िल का मकान जिसके चारों ओर वरामदे हों। २. वह छोटा हवादार कमरा जो प्रायः ऊपरवाली छत पर वनाया जाता है। ३. वंगाल देश का पान।
संज्ञा स्त्री० वंगाल देश की भाषा।

वंगाला–संज्ञा पुं० [हिं० वंगाल] वंगालप्रांत। संज्ञा स्त्री० वंगालिका नाम की रागिनी।

वंगाली–संज्ञा पुं० [हिं० वंगाल+ई (प्रत्य०)] वंगाल देश का निवासी।
संज्ञा स्त्री० [हिं० वंग] वंग देश की भाषा।

वंचक–संज्ञा पुं० [सं० वंचक] धूर्त्त। ठग।

वंचकता, वंचकताई*†–संज्ञा स्त्री० [सं० वंचकता] छल। धूर्त्तता। चालवाज़ी।

वंचनता–संज्ञा स्त्री० [सं० वंचकता] ठगी।

वंचना–संज्ञा स्त्री० [सं० वंचना] ठगी।
*†–क्रि० स० [सं० वंचन] ठगना। छलना।

वँचवाना–क्रि० स० [हिं० वाँचना] पढ़वाना

वंछना*†–क्रि० स० [सं० वांछा] अभिलाषा करना। इच्छा करना। चाहना।

वंछित*†–वि० दे० "वांछित"

वंज†–संज्ञा पुं० दे० "वनिज"।

वंजर–संज्ञा पुं० [सं० वन+ऊजड़] ऊसर।

वंजारा–संज्ञा पुं० दे० "वनजारा"।

वंझा–वि०, संज्ञा स्त्री० दे० "वाँझ"।

वँटना–क्रि० अ० [सं० वितरण] १. विभाग होना। अलग अलग हिस्सा होना। २. कई व्यक्तियों को अलग अलग दिया जाना।

वँटवाना–क्रि० स० [सं० वितरण] वाँटने का काम दूसरे से कराना।

वँटवारा–संज्ञा पुं० [हिं० वाँटना] वाँटने की क्रिया। विभाग। तक़सीम।

वंटा–संज्ञा पुं० [सं० वटक] [स्त्री० अल्पा० वंटी] गोल या चौकोर छोटा डब्बा।

वँटाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० वाँटना] १. वाँटने का काम या भाव। २. खेती का वह प्रकार जिसमें खेत जोतनेवाले से मालिक को लगान के रूप में फ़सल का कुछ अंश मिलता है।

वँटाना–क्रि० स० [हिं० वाँटना] १. वँटवाना। २. दूसरे का वोझ हलका करने के लिये शामिल होना।

वँटावन*†–वि० [हिं० वँटाना] वँटानेवाला।

वंडा–संज्ञा पुं० [हिं० वंटा] एक प्रकार का कच्चू या अरुई।

वंडी–संज्ञा स्त्री० [हिं० वाँड़ा = कटा हुआ] १. फतुही। कुरती। २. वगलवंदी।

वँडेरी–संज्ञा स्त्री० [सं० वरदंड] वह लकड़ी जो खपरैल की छाजन में मँगरे पर लगती है।

वंद–संज्ञा पुं० [फ़ा० मि० सं० वंध] १. वह पदार्थ जिससे कोई वस्तु वाँधी जाय। २. पुश्ता। मेड़। वाँध। ३. शरीर के अंगों का कोई जोड़। ४. फ़ीता। तनी। ५. कागज का लंवा और वहुत कम चौड़ा टुकड़ा। ६. वंधन। क़ैद।
वि० [फ़ा०] १. जिसके चारों ओर कोई अवरोध हो। २. जिसके मुँह अथवा मार्ग पर ढकना या ताला आदि लगा हो। ३. जो खुला न हो। ४. किवाड़, ढकना आदि जो ऐसी स्थिति में हो जिससे कोई वस्तु भीतर से वाहर न जा सके और वाहर की चीज़ अंदर न आ सके। ५. जिसका कार्य्य रुका हुआ या स्थगित हो। ६. रुका हुआ। थमा हुआ। ७. जो किसी तरह की क़ैद में हो।

वंदगी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. भक्तिपूर्वक ईश्वर की वंदना। २. सेवा। खिदमत। ३. आदाव। प्रणाम। सलाम।

वंदगोभी–संज्ञा स्त्री० [हिं० वंद+गोभी] करमकल्ला। पातगोभी।

वंदन–संज्ञा पुं० दे० "वंदन"।
संज्ञा पुं० [सं० वंदनीय = गोरोचन] १. रोचन। रोली। २. ईंगुर। सेंदुर।

बंदनता—संज्ञा स्त्री० [सं० वंदनता] वंद-नीयता। आदर या वंदना किए जाने की योग्यता।

बंदनवार—संज्ञा पुं० [सं० वंदनमाला] फूलों या पत्तों की झालर जो मंगल-सूचनार्थ दीवारों आदि में बाँधी जाती है। तोरण।

बंदना—संज्ञा स्त्री० दे० "वंदना"। क्रि० स० [सं० वंदन] प्रणाम करना।

बंदनी*—वि० दे० "वंदनीय"।

बंदनीमाल—संज्ञा स्त्री० [सं० वंदनमाल] वह लंबी माला जो गले से पैरों तक लटकती हो।

बंदर—संज्ञा पुं० [सं० वानर] एक प्रसिद्ध स्तनपायी चौपाया जो मनुष्य से बहुत मिलता-जुलता होता है। कपि। मर्कट। मुहा०—बंदर-घुड़की या बंदर-भभकी=ऐसी धमकी या डाँट-डपट जो केवल डराने या धमकाने के लिये ही हो। संज्ञा पुं० दे० "बंदरगाह"।

बंदरगाह—संज्ञा पुं० [फ़ा०] समुद्र के किनारे का वह स्थान जहाँ जहाज ठहरते हैं।

बंदवान—संज्ञा पुं० [सं० बंदी+वान] बंदी-गृह का रक्षक। कैदखाने का अफ़सर।

बंदसाल†—संज्ञा पुं० [सं० बंदीशाला] बंदखाना। जेल।

बंदा—संज्ञा पुं० [फ़ा०] सेवक। दास। संज्ञा पुं० [सं० बंदी] बंदी। कैदी।

बंदारु—वि० [सं० वंदारु] १ वंदनीय। २ पूजनीय। आदरणीय।

बंदाल—संज्ञा पुं० [?] देवदाली।

बंदि—संज्ञा स्त्री० [सं० बंदिन्] कैद।

बँदिया†—संज्ञा स्त्री० [हिं० बंदनी] बंदी। (आभूषण)

बंदिश—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १ बाँधने की क्रिया या भाव। २ प्रबंध। रचना। योजना। ३ षड्यंत्र।

बंदी—संज्ञा पुं० [सं०] एक जाति जो राजाओं का कीर्तिगान करती थी। भाट। चारण। संज्ञा स्त्री० [हिं० बंदनी] एक प्रकार का आभूषण जिसे स्त्रियाँ सिर पर पहनती हैं। संज्ञा पुं० [फ़ा०] कैदी।

बंदीखाना—संज्ञा पुं० [फ़ा०] कैदखाना।

बंदीछोर*†—संज्ञा पुं० [फ़ा० बंदी+हिं० छोर] कैद या बंधन से छुड़ानेवाला।

बंदीवान*—संज्ञा पुं० [सं० बंदिन्] कैदी।

बंदूक—संज्ञा स्त्री० [अ०] नली के रूप का एक प्रसिद्ध अस्त्र जिसमें गोली रखकर बारूद की सहायता से चलाई जाती है।

बंदूकची—संज्ञा पुं० [फ़ा०] बंदूक चलाने-वाला सिपाही।

बँदेरा*—संज्ञा पुं० [सं० बंदी] [स्त्री० बँदेरी] १ बंदी। कैदी। २ सेवक। दास।

बंदोबस्त—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १ प्रबंध। इंतज़ाम। २ खेती के लिये भूमि को नापकर उसका राजकर निर्धारित करने का काम। ३ वह महकमा या विभाग जिसके सुपुर्द खेतों आदि को नापकर उनका कर निश्चित करने का काम हो।

बंध—संज्ञा पुं० [सं०] १ बंधन। २ गाँठ। गिरह। ३ कैद। ४ पानी रोकने का धुस्स। बाँध। ५ कोकशास्त्र के अनुसार रति का आसन। ६ योग शास्त्र के अनुसार योग-साधन की कोई मुद्रा। ७ निबंध रचना। गद्य या पद्य लेख तैयार करना। ८ चित्रकाव्य में छंद की ऐसी रचना जिससे किसी विशेष प्रकार की आकृति या चित्र बन जाय। ९ वह जिससे कोई वस्तु बाँधी जाय। बंद। १० लगाव। फँसाव। ११ शरीर।

बंधक—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह वस्तु जो लिए हुए ऋण के बदले में धनी के यहाँ रख दी जाय। रेहन। २ बाँधनेवाला। संज्ञा पुं० [सं० बंध] स्त्री-संभोग का कोई आसन। बंध।

बंधन—संज्ञा पुं० [सं०] १ बाँधने की क्रिया। २ वह जिससे कोई चीज बाँधी जाय। ३ वह जो किसी की स्वतंत्रता आदि में बाधक हो। प्रतिबंध। ४ वध। हत्या। ५ रस्सी। ६ कारागार। कैदखाना। ७

शरीर का संधिस्थान। जोड़।

बँधना—क्रि० अ० [सं० बंधन] १. बंधन में आना। बद्ध होना। बाँधा जाना। २. क़ैद होना। बंदी होना। ३. प्रतिबंध में रहना। फँसना। अटकना। ४. प्रतिज्ञा या वचन आदि से बद्ध होना। ५. ठीक होना। दुरुस्त होना। ६. क्रम निर्धारित होना। स्थिर होना। ७. प्रेमपाश में बद्ध या मुग्ध होना। संज्ञा पुं० [सं० बंधन] वह वस्तु जिससे किसी चीज को बाँधें। बाँधने का साधन।

बँधनि†—संज्ञा स्त्री० [सं० बंधन, हिं० बँधना] १. बंधन। जिसमें कोई चीज़ बँधी हुई हो। २. उलझने या फँसानेवाली चीज़।

बँधवाना—क्रि० स० [हिं० बाँधना का प्रे०] बाँधने का काम दूसरे से कराना।

बँधान—संज्ञा पुं० [हिं० बँधना] १. लेन-देन या व्यवहार आदि की नियत परिपाटी। २. वह पदार्थ या धन जो इस परिपाटी के अनुसार दिया या लिया जाय। ३. पानी रोकने का धुस्स। बाँध। ४. ताल का सम। (संगीत)

बँधाना—क्रि० स० [हिं० बंधन] १. धारण कराना। २. दे० "बँधवाना"।

बंधी—संज्ञा पुं० [सं० बंधिन्] बँधा हुआ। †संज्ञा स्त्री० [हिं० बँधना=नियत होना] वह कार्यक्रम जिसका नित्य होना निश्चित हो। बंधेज।

बंधु—संज्ञा पुं० [सं०] १. भाई। भ्राता। २. सहायक। मददगार। ३. मित्र। दोस्त। ४. एक वर्णवृत्त। दोधक। ५. बंधूक पुष्प।

बँधुआ—संज्ञा पुं० [हिं० बँधना] क़ैदी। बंदी।

बंधुक—संज्ञा पुं० [सं०] दुपहरिया का फूल।

बंधुता—संज्ञा स्त्री० दे० "बंधुत्व"।

बंधुत्व—संज्ञा पुं० [सं०] १. बंधु होने का भाव। बंधुता। २. भाई-चारा। ३. मित्रता। दोस्ती।

बंधूक—संज्ञा पुं० [सं० बन्धु] १. दे० "बंधुक"। २. दोधक नामक वृत्त। बंधु।

बंधेज—संज्ञा पुं० [हिं० बँधना+एज (प्रत्य०)] १. नियत समय पर और नियत रूप से मिलने या दिया जानेवाला पदार्थ या द्रव्य। २. किसी वस्तु को रोकने या बाँधने की क्रिया या युक्ति। ३. रुकावट। प्रतिबंध।

बंध्या—वि० स्त्री० [सं०] (वह स्त्री) जो संतान न पैदा कर सके। बाँझ।

बंध्यापन—संज्ञा पुं० दे० "बाँझपन"।

बंध्यापुत्र—संज्ञा पुं० [सं०] ठीक वैसा ही असंभव भाव या पदार्थ जैसे बंध्या का पुत्र। कभी न होनेवाली चीज़।

बंपुलिस—संज्ञा स्त्री० [अनु० बं+अ० प्लेस] मलत्याग के लिये म्यूनिसिपैलिटी आदि का बनवाया हुआ सार्वजनिक स्थान।

बंब—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. युद्धारंभ में वीरों का उत्साहवर्द्धक नाद। रणनाद। हल्ला। २. नगारा। दुंदुभी। डंका।

बंबा—संज्ञा पुं० [अं० पंप] १. जल-कल। पानी की कल। पंप। २. सोता। स्रोत।

बँबाना—क्रि० अ० [अनु०] गौ आदि पशुओं का बाँ बाँ शब्द करना। रँभाना।

बंबू—संज्ञा पुं० [मलाया० बँबू=बाँस] चंडू पीने की बाँस की छोटी पतली नली।

बंस—संज्ञा पुं० दे० "वंश"।

बंसकार—संज्ञा पुं० [सं० वंश] बाँसुरी।

बंसलोचन—संज्ञा पुं० [सं० वंशलोचन] बाँस का सार भाग जो सफ़ेद रंग के छोटे टुकड़ों के रूप में पाया जाता है। बँसकपूर।

बंसी—संज्ञा स्त्री० [सं० वंशी] १. बाँस की नली का बना हुआ एक प्रकार का बाजा। बाँसुरी। वंशी। मुरली। २. मछली फँसाने का एक औज़ार। ३. विष्णु, कृष्ण और रामजी के चरणों का रेखा-चिह्न।

बंसीधर—संज्ञा पुं० [सं० वंशीधर] श्रीकृष्ण।

बँहगी—संज्ञा स्त्री० [सं० वह] भार ढोने का वह उपकरण जिसमें एक लंबे बाँस के दोनों सिरों पर रस्सियों के बड़े बड़े छींके लटका दिए जाते हैं।

ब—संज्ञा पुं० [सं०] १. वरुण। २. सिंधु। ३. जल। ४. सुगंधि।

बइठना*—क्रि० अ० दे० "बैठना"।

बउर†*–संज्ञा पुं० दे० "बौर" या "मौर"।
बउरा†*–वि० दे० "बावला"।
बक–संज्ञा पुं० [सं० बक] १ बगला। २ अगस्त्य नामक पुष्प का वृक्ष। ३ कुबेर। ४ बकासुर।
वि० बगले सा सफेद।
संज्ञा स्त्री० [हिं० बकना] प्रलाप। बकवाद।
बकतर–संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार की जिरह या कवच जिसे योद्धा लड़ाई में पहनते हैं। सन्नाह।
बकता*–वि० दे० "वक्ता"।
बकध्यान–संज्ञा पुं० [सं० बकध्यान] ऐसी चेष्टा या ढंग जो देखने में तो बहुत साधु जान पड़े पर जिसका वास्तविक उद्देश्य दुष्ट हो। बनावटी साधु भाव।
बकना–क्रि० स० [सं० वचन] १ ऊटपटाँग बात कहना। व्यर्थ बहुत बोलना। २ प्रलाप करना। बड़बड़ाना।
बकबक–संज्ञा स्त्री० [हिं० बकना] बकने की क्रिया या भाव।
बकमौन–संज्ञा पुं० [सं० बक+मौन] दुष्ट उद्देश्य सिद्ध करने के लिये बगले की तरह सीधे बनकर चुपचाप रहना।
वि० चुपचाप काम साधनेवाला।
बकर-कसाब–संज्ञा पुं० [हिं० बकरी+अ० कस्साब=कसाई] बकरों का मांस बेचनेवाला पुरुष। चिक।
बकरना–क्रि० स० [हिं० बकना] १ आपसे आप बकना। बड़बड़ाना। २ अपना दोष करतूत आपसे आप कहना।
बकरा–संज्ञा पुं० [सं० बर्कर] [स्त्री० बकरी] प्रसिद्ध चतुष्पाद पशु जिसके सींग पीछे झुके हुए, पूँछ छोटी और खुर फटे होते हैं।
बकलस–संज्ञा पुं० [अं० बकल्स] एक प्रकार की विलायती अँकुसी जो किसी बंधन के दो छोरों को मिलाए रखने या कसने के काम में आती है। बकसुआ।
बकला–संज्ञा पुं० [सं० वल्कल] १. पेड़ की छाल। २ फल का छिलका।
बकवाद–संज्ञा स्त्री० [हिं० बक+वाद] व्यर्थ की बात। बकबक।
बकवादी–वि० [हिं० बकवाद] बहुत बकवाद करनेवाला। बक्की।
बकवास–संज्ञा स्त्री० दे० "बकवाद"।
बकस–संज्ञा पुं० [अं० बाक्स] १ कपड़े आदि रखने का चौकोर संदूक। २ छोटा डिब्बा। खाना।
बकसना*–क्रि० स० [फा० बख्श+हिं० ना] १ कृपापूर्वक देना। प्रदान करना। २ क्षमा करना। माफ करना।
बकसाना*†–क्रि० स० [हिं० बकसना] ऐसी क्षमा कराना। माफ कराना।
बकसी*–संज्ञा पुं० दे० "बख्शी"।
बकसीस*–संज्ञा स्त्री० [फा० बख़्शिश] १ दान। २ इनाम। पारितोषिक।
बकसुआ–संज्ञा पुं० दे० "बकलस"।
बकाउर–संज्ञा स्त्री० दे० "बकावली"।
बकाना–क्रि० स० [हिं० बकना का प्रेरणा० रूप] १ बकबक कराना। २ रटाना।
बकायन–संज्ञा स्त्री० [हिं० बड़का+नीम ?] नीम की जाति का एक पेड़।
बकाया–संज्ञा पुं० [अ०] १ बचा हुआ। बाकी। २ बचत।
बकारी–संज्ञा स्त्री० [सं० 'व' कार या वाक्य] मुँह से निकलनेवाला शब्द।
बकावर–संज्ञा स्त्री० दे० "गुलबकावली"।
बकावली–संज्ञा स्त्री० दे० "गुलबकावली"।
बकासुर–संज्ञा पुं० [सं० बकासुर] एक दैत्य का नाम जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।
बकुचना*–क्रि० अ० [सं० विकुचन] सिमटना। सिकुड़ना। संकुचित होना।
बकुचा–संज्ञा पुं० [हिं० बकुचना] [स्त्री० बकुची] छोटी गठरी। बकचा।
बकुची–संज्ञा स्त्री० [सं० वाकुची] एक पौधा जो औषध के काम में आता है।
संज्ञा स्त्री० [हिं० बकुचा] छोटी गठरी।
बकुचौहाँ†–वि० [हिं० बकुचा+औहाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० बकुचौहीं] बकुचे की भाँति।
बकुल–संज्ञा पुं० [सं०] मौलसिरी।
बकुला†–संज्ञा पुं० दे० "बगुला"।

बकेन, बकेना†–संज्ञा स्त्री० [सं० वष्कयणी] वह गाय या भैंस जिसे बच्चा दिए साल भर से अधिक हो गया हो और जो दूध देती हो। लवाई का उलटा।
बकैयाँ–संज्ञा पुं० [सं० वक्र + ऐयाँ (प्रत्य०)] बच्चों का घुटनों के बल चलना।
बकोट–संज्ञा स्त्री० [सं० प्रकोष्ठ या अभिकोष्ठ] बकोटने की मुद्रा, क्रिया या भाव।
बकोटना–क्रि० स० [हिं० बकोट] नाखूनों से नोचना। पंजा मारना। निकोटना।
बकौरी*–संज्ञा स्त्री० दे० "गुलबकावली"।
बक्कम–संज्ञा पुं० [अ० बक़म] एक छोटा कँटीला वृक्ष। इसकी लकड़ी, छिलके और फलों से लाल रंग निकलता है। पतंग।
बक्कल–संज्ञा पुं० [सं० वल्कल] १. छिलका। २. छाल।
बक्काल–संज्ञा पुं० [अ०] वणिक्। बनिया।
बक्की–वि० [हिं० बकना] बहुत बोलने या बकबक करनेवाला।
संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का धान।
बक्खर–संज्ञा पुं० दे० "बाखर"।
बखस–संज्ञा पुं० दे० "बकस"।
बखतर–संज्ञा पुं० दे० "बकतर"।
बखर–संज्ञा पुं० १. दे० "बाखर"। २. दे० "बक्खर"।
बखरा–संज्ञा पुं० [फ़ा० बख़रः] १. भाग। हिस्सा। बाँट। २. दे० "बाखर"।
बखरी‡–संज्ञा स्त्री० [हिं० बखार] मिट्टी, ईंटों आदि का बना हुआ मकान। (गाँव)
बखसीस*†–संज्ञा स्त्री० दे० "बकसीस"।
बखान–संज्ञा पुं० [सं० व्याख्यान] १. वर्णन। कथन। २. प्रशंसा। स्तुति। बड़ाई।
बखानना–क्रि० स० [हिं० बखान + ना] १. वर्णन करना। कहना। २. प्रशंसा करना। सराहना। ३. गाली-गलौज देना।
बखार†–संज्ञा पुं० [सं० प्राकार][स्त्री० अल्पा० बखारी] दीवार आदि से घिरा हुआ गोल घेरा जिसमें गाँवों में अन्न रखा जाता है।
बखिया–संज्ञा पुं० [फ़ा०] एक प्रकार की महीन और मजबूत सिलाई।
बखियाना–क्रि० स० [हिं० बखिया] किसी चीज़ पर बखिया की सिलाई करना।
बखीर†–संज्ञा स्त्री० [हिं० खीर का अनु०] मीठे रस में उबाला हुआ चावल।
बखील–वि० [अ०] कृपण। सूम।
बखूबी–क्रि० वि० [फ़ा०] १. अच्छे प्रकार से। भली भाँति। २. पूर्ण रूप से।
बखेड़ा–संज्ञा पुं० [हिं० बखेरना] १. उलझाव। झंझट। उलझन। २. झगड़ा। टंटा। विवाद। ३. कठिनता। मुश्किल। ४. व्यर्थ विस्तार। आडंबर।
बखेड़िया–वि० हिं० [बखेड़ा + इया (प्रत्य०)] बखेड़ा करनेवाला। झगड़ालू।
बखेरना–क्रि० स० [सं० विकिरण] चीज़ों को इधर उधर या दूर दूर फैलाना। छितराना।
बखोरना‡–क्रि० स० [हिं० बक्कुर] छेड़ना।
बख्त–संज्ञा पुं० [फ़ा०] भाग्य। क़िस्मत।
बख्तर–संज्ञा पुं० दे० "बकतर"।
बख्शना–क्रि० स० [फ़ा० बख्श] १. देना। प्रदान करना। २. त्यागना। छोड़ना। ३. क्षमा करना। माफ़ करना।
बख्शवाना, बख्शाना–क्रि० स० [हिं० बख्शना का प्रे०। किसी को बख्शने में प्रवृत्त करना।
बख्शिश–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. उदारता। २. दान। ३. क्षमा।
बग†–संज्ञा पुं० [सं० बक] बगुला।
बगई‡–संज्ञा स्त्री० [देश०] १. एक प्रकार की मक्खी जो कुत्तों पर बहुत बैठती है। कुकुरमाछी। २. एक प्रकार की घास।
बगछुट, बगटुट–क्रि० वि० [हिं० बाग + छुटना या टूटना] सरपट। बेतहाशा। बड़े वेग से।
बगदना‡–क्रि० अ० [हिं० बिगड़ना] १. बिगड़ना। खराब होना। २. भ्रम में पड़ना। ३. लुढ़कना। गिरना।
बगदहा*‡–वि० [हिं० बगदना+हा (प्रत्य०)] [स्त्री० बगदही] चौंकने या बिगड़नेवाला। बिगड़ैल।

बगदाना†–क्रि० स० [हि० बगदना] १ बिगाड़ना। खराब करना। २. ठीक रास्ते से हटाना। ३ भुलाना। भटकाना।

बगना*†–क्रि० अ० [स० वक] घूमना फिरना

बगनी–सज्ञा स्त्री० [देश०] बगई। (घास)

बगमेल–सज्ञा पु० [हि० बाग + मेल] १ दूसरे के घोड़े के साथ बाग मिलाकर चलना। बराबर बराबर चलना। २ बराबरी। समानता। तुलना।

क्रि० वि० बाग मिलाए हुए। साथ साथ।

बगर*†–सज्ञा पु० [स० प्रघण] १ महल। प्रासाद। २ बड़ा मकान। घर। ३ कोठरी। ४ सहन। आँगन। ५ वह स्थान जहाँ गौएँ बाँधी जाती हैं। बगार। घाटी।

सज्ञा स्त्री० दे० "बगल"।

बगरना*†–क्रि० अ० [स० विकिरण] फैलना। बिखरना। छितराना।

बगराना†–क्रि० स० [हि० बगरना का सक० रूप] फैलाना। छितराना। छिटकाना।

क्रि० अ० बगरना। फैलना। बिखरना।

बगरी†–सज्ञा स्त्री० दे० "बखरी"।

बगरूरा*–सज्ञा पु० दे० "बगूला"।

बगल–सज्ञा स्त्री० [फा०] १ बाहु-मूल के नीचे की ओर का गड्ढा। काँख। २ छाती के दोनों किनारों का भाग। पार्श्व।

मुहा०—बगल में दबाना या धरना = अधिकार करना। ले लेना। बगलें बजाना = बहुत प्रसन्नता प्रकट करना। खूब खुशी मनाना। ३ इधर-उधर का भाग। किनारे का हिस्सा।

मुहा०—बगलें झाँकना=इधर-उधर भागने या यत्न करना।

४ कपड़े का वह टुकड़ा जो कुरते आदि में कंधे के जोड़ के नीचे लगाया जाता है। ५ समीप का स्थान। पास की जगह।

बगलगंध–सज्ञा पु० [हि० बगल + गंध] १. वह फोड़ा जो बगल में होता है। कँख-वार। २ एक प्रकार का रोग जिसमें बगल से बहुत बदबूदार पसीना निकलता है।

बगलबंदी–सज्ञा स्त्री० [हि० बगल + बंद] एक प्रकार की मिरजई या कुरती।

बगला–सज्ञा पु० [स० बक + ला (प्रत्य०)] [स्त्री० बगली] सफेद रंग का एक प्रसिद्ध पक्षी जिसकी टाँगें, चोंच और गला लंबा होता है।

मुहा०—बगला भगत = १ धर्मध्वजी। २. कपटी। धोखेबाज।

बगलामुखी–सज्ञा स्त्री० [देश०] तांत्रिकों की एक देवी।

बगलियाना–क्रि० अ० [हि० बगल + इयाना (प्रत्य०)] बगल से होकर जाना। अलग हटकर चलना या निकलना।

क्रि० स० १ अलग करना। २ बगल में लाना या करना।

बगली–वि० [हि० बगल + ई (प्रत्य०)] बगल से संबंध रखनेवाला। बगल का।

मुहा०—बगली घूँसा = वह वार जो आड़ में छिपकर या धोखे से किया जाय।

सज्ञा स्त्री० १. वह थैली जिसमें दर्जी सूई तागा रखते हैं। तिलादानी। २ कुरते आदि में कपड़े का वह टुकड़ा जो कंधे के नीचे लगाया जाता है। बगल।

बगलौहाँ‡–वि० [हि० बगल + औहाँ] [स्त्री० बगलौहीं] बगल की ओर झुका हुआ। तिरछा।

बगसना*‡–क्रि० स० दे० "बख्शना"।

बगा*†–सज्ञा पु० [हि० बागा] जामा। बागा।

*सज्ञा पु० [स० बक] बगला।

बगाना*‡–क्रि० स० [हि० बगना का प्रे०] टहलाना। सैर कराना। घुमाना। फिराना।

क्रि० अ० भागना। जल्दी जल्दी जाना।

बगार–सज्ञा पु० [देश०] वह स्थान जहाँ गाएँ बाँधी जाती हैं। घाटी।

बगारना–क्रि० स० [स० विकिरण, हि० बगरना] १. फैलाना। छितराना। बिखेरना। २ दे० "बगराना"।

बगावत–सज्ञा स्त्री० [अ०] १. बागी होने का भाव। २ बलवा। ३ राजद्रोह।

बगिया*†–सज्ञा स्त्री० [फा० बाग़ + हि० इया

(प्रत्य०)] बागीचा। उपवन। छोटा बाग।

बगीचा–संज्ञा पुं० [फ़ा० बागचा] [स्त्री० अल्पा० बगीची] वाटिका। छोटा बाग।

बगुला–संज्ञा पुं० दे० "बगला"।

बगूला–संज्ञा पुं० [हिं० वाउ+गोला] वह वायु जो एक ही स्थान पर भँवर सी घूमती हुई दिखाई देती है। बवंडर। वातचक्र।

बगेरी–संज्ञा स्त्री० [देश०] खाकी रंग की एक छोटी चिड़िया। बवेरी। भरही।

बग़ैर–अव्य० [अ०] बिना।

बग्गी, बग्घी–संज्ञा स्त्री० [अं० बोगी] चार पहियों की पाटनदार घोड़ा-गाड़ी।

बघंबर–संज्ञा पुं० [सं० व्याघ्रांबर] बाघ की खाल जिस पर साधु लोग बैठते हैं।

बघनहाँ†–संज्ञा पुं० [हिं० बाघ+नहँ=नाखून] [स्त्री० अल्पा० बघनही] १. एक प्रकार का हथियार जिसमें बाघ के नहँ के समान चिपटे टेढ़े काँटे निकले रहते हैं। शेरपंजा। २. एक आभूषण जिसमें बाघ के नाखून चाँदी या सोने में मढ़े होते हैं।

बघनहियाँ*†–संज्ञा स्त्री० दे० "बघनहाँ (२)"।

बघना*–संज्ञा पुं० दे० "बघनहाँ (२)"।

बघर्रा‡–संज्ञा पुं० दे० "बगूला"।

बघार–संज्ञा पुं० [हिं० बघारना] वह मसाला जो बघारते समय घी में डाला जाय। तड़का। छौंक।

बघारना–क्रि० स० [सं० अवधारण=बघारण] १. छौंकना। दागना। तड़का देना। २. अपनी योग्यता से अधिक बोलना।

बच*–संज्ञा पुं० [सं० वच] वचन। वाक्य। संज्ञा स्त्री० [सं० वचा] एक प्रकार का पौधा जिसकी जड़ और पत्तियाँ दवा के काम में आती हैं।

बचका–संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का पकवान।

बचकाना‡–वि० [हिं० बच्चा+काना (प्रत्य०)] [स्त्री० बचकानी] १. बच्चों के योग्य। २. बच्चों का सा।

बचत–संज्ञा स्त्री० [हिं० बचना] १. बचने का भाव। बचाव। रक्षा। २. बचा हुआ अंश। शेष। ३. लाभ। मुनाफ़ा।

बचन*†–संज्ञा पुं० [सं० वचन] १. वाणी। वाक्। २. वचन।

मुहा०–बचन डालना=माँगना। याचना करना। बचन तोड़ना या छोड़ना=प्रतिज्ञा से विचलित होना। कहकर न करना। प्रतिज्ञा भंग करना। बचन बाँधना=प्रतिज्ञा कराना। बचनबद्ध करना। बचन हारना=प्रतिज्ञाबद्ध होना। बात हारना।

बचना–क्रि० अ० [सं० वंचन=न पाना] १. कष्ट या विपत्ति आदि से अलग रहना। रक्षित रहना। २. किसी बुरी बात से अलग रहना। ३. छूट जाना। रह जाना। ४ काम में आने पर शेष रह जाना। बाकी रहना। ५. दूर या अलग रहना। क्रि० स० [सं० वचन] कहना।

बचपन–संज्ञा पुं० [हिं० बच्चा+पन (प्रत्य०)] १. लड़कपन। २. बच्चा होने का भाव।

बचवैया*‡–संज्ञा पुं० [हिं० बचाना+वैया प्रत्य०)] बचानेवाला। रक्षक।

बचा†*–संज्ञा पुं० [फा० बच्चः। सं० वत्स] [स्त्री० बच्ची] लड़का। बालक।

बचाना–क्रि० स० [हिं० बचना] १. आपत्ति या कष्ट आदि में न पड़ने देना। रक्षा करना। २. प्रभावित न होने देना। अलग रखना। ३. खर्च न होने देना। ४ छिपाना। चुराना। ५. अलग रखना। दूर रखना।

बचाव–संज्ञा पुं० [हिं० बचाना] बचने का भाव। रक्षा। त्राण।

बच्चा–संज्ञा पुं० [फ़ा०। मि० सं० वत्स] [स्त्री० बच्ची] १. किसी प्राणी का नवजात शिशु। २. लड़का। बालक।

मुहा०–बच्चों का खेल=सहज काम। वि० अज्ञान। अनजान।

बच्चादान–संज्ञा पुं० [फ़ा०] गर्भाशय।

बच्छ–संज्ञा पुं० [सं० वत्स] १ बच्चा। बेटा। २. गाय का बच्चा। बछड़ा।

बच्छल*†–वि० [सं० वत्सल] माता-पिता के समान प्यार करनेवाला। वत्सल।

स*†–संज्ञा पुं० [सं० वक्षस्] छाती।
छा†–संज्ञा पुं० [सं० वत्स] [स्त्री० बछिया] गाय का बच्चा। बछड़ा। बछवा।
*†–संज्ञा पुं० दे० "बछड़ा"।
ड़ा–संज्ञा पुं० [हिं० बच्छ+डा (प्रत्य०)] स्त्री० बछड़ी, बछिया] गाय का बच्चा।
नाग–संज्ञा पुं० [सं० वत्सनाभ] एक स्थावर विष। यह नेपाल में होनेवाले एक पौधे की जड़ है। सींगिया। तेलिया। मीठा विष।
रा*–संज्ञा पुं० दे० "बछड़ा"।
रू†–संज्ञा पुं० दे० "बछड़ा"।
ल*†–वि० दे० "वत्सल"।
वा‡–संज्ञा पुं० दे० "बछेड़ा"।
ड़ा–संज्ञा पुं० [सं० वत्स] घोड़े का बच्चा।
रू*–संज्ञा पुं० दे० "बछड़ा"।
नी–संज्ञा पुं० [हिं० बाजा] बाजा बजानेवाला। बजनियाँ।
ड़ा–संज्ञा पुं० दे० "बजरा"।
ना–क्रि० अ० [हिं० बाजा] १ किसी प्रकार के आघात या बाजे आदि में से शब्द उत्पन्न होना। बोलना। २ किसी वस्तु का दूसरी वस्तु पर इस प्रकार पड़ना कि शब्द उत्पन्न हो। ३ शस्त्र का चलना। अड़ना। हठ करना। जिद करना। प्रख्याति पाना। प्रसिद्ध होना।
नियाँ†–संज्ञा पुं० स्त्री० [हिं० बजाना + इया (प्रत्य०)] बाजा बजानेवाला।
नी–वि० [हिं० बजना] जो बजाता हो।
मारा*†–वि० [हिं० वज्र+मारा] [स्त्री० बजमारी] वज्र से मारा हुआ। जिस पर वज्र पड़ा हो।
रंग*–वि० [सं० वज्राङ्ग] वज्र के समान दृढ़ शरीरवाला।
रंगबली–संज्ञा पुं० [सं० वज्राङ्ग + बली] हनुमान्। महावीर।
र*†–संज्ञा पुं० दे० "वज्र"।
रबट्टू–संज्ञा पुं० [हिं० वज्र + बट्टा] एक वृक्ष के फल का दाना या बीज जिसकी माला बच्चों को नजर से बचाने के लिये पहनाते हैं।
बजरा–संज्ञा पुं० [सं० वज्रा] एक प्रकार की बड़ी और पटी हुई नाव।
संज्ञा पुं० दे० "बाजरा"।
बजरागि*–संज्ञा स्त्री० दे० "बिजली"।
बजरी†–संज्ञा स्त्री० [सं० वज्र] १ कंकड़ के छोटे टुकड़े। कंकड़ी। २ ओला। ३ किले आदि की दीवारों के ऊपर छोटा नुमायशी कँगूरा। ४ दे० "बाजरा"।
बजवाना–क्रि० स० [हिं० बजाना का प्रे०] किसी को बजाने में प्रवृत्त करना।
बजवैया†–वि० [हिं० बजाना] बजानेवाला। जो बजाता हो।
बजा–वि० [फा०] उचित। ठीक।
मुहा०—बजा लाना = १ पूरा करना। पालन करना। २ करना।
बजागि*‡–संज्ञा स्त्री० [हिं० वज्र + आगि] वज्र की आग। विद्युत्।
बजाज–संज्ञा पुं० [अ० बज्जाज] [स्त्री० बजाजिन] कपड़े का व्यापारी। कपड़ा बेचनेवाला।
बजाजा–संज्ञा पुं० [फा०] वह स्थान जहाँ बजाजों की दूकान हो।
बजाजी–संज्ञा स्त्री० [फा०] कपड़ा बेचने का व्यापार। बजाज का काम।
बजाना–क्रि० स० [हिं० बाजा] १ किसी बाजे आदि पर आघात पहुँचाकर अथवा हवा का जोर पहुँचाकर उससे शब्द उत्पन्न करना। २ चोट पहुँचाकर आवाज निकालना।
मुहा०—बजाकर=डंका पीटकर। खुल्लम-खुल्ला। ठोंकना बजाना=देख भालकर भली भाँति जाँचना।
३ किसी चीज से मारना। आघात पहुँचाना।
क्रि० स० पूरा करना।
बजाय–अव्य० [फा०] स्थान पर। बदले में।
बजार*‡–संज्ञा पुं० दे० "बाजार"।
बजूला–संज्ञा पुं० दे० "बिजूरा"।
बज्जर*†–संज्ञा पुं० दे० "वज्र"।

बझना*†–क्रि० अ० [सं० बद्ध] १. बंधन में पड़ना। बँधना। २. उलझना। फँसना। ३. हठ करना।

बझाना*‡–क्रि०स० [हिं० बझना का सकर्मक रूप] बंधन में लाना। उलझाना। फँसाना।

बझाव–संज्ञा पुं० [हिं० बझना] फँसने की क्रिया या भाव। उलझाव। अटकाव।

बझावट–संज्ञा स्त्री० दे० "बझाव"।

बझावना*†–क्रि० स० दे० "बझाना"।

बट–संज्ञा पुं० [सं० वट] १. दे० "वट"। २. बड़ा नाम का पकवान। बरा। ३. गोला। गोल वस्तु। ४. बट्टा। लोढ़िया। ५. बाट। बटखरा। ६. रस्सी की ऐंठन। बटाई। बल।

संज्ञा पुं० [हिं० बाट] मार्ग। रास्ता।

बटई–संज्ञा स्त्री० [सं० वर्तक] बटेर चिड़िया।

बटखरा–संज्ञा पुं० [सं० वटक] पत्थर, लोहे आदि का वह टुकड़ा जो वस्तुओं के तौलने के काम में आता है। बाट।

बटन–संज्ञा स्त्री० [हिं० बटना] बटने या ऐंठने की क्रिया या भाव। ऐंठन। बल।

संज्ञा पुं० [अं०] पहनने के कपड़ों में चिपटे आकार की कड़ी गोल घुड़ी।

बटना–क्रि० स० [सं० वट = बटना] कई तागों या तारों को एक साथ मिलाकर घुमाना जिसमें वे मिलकर एक हो जायँ।

क्रि० अ० [हिं० बट्टा] सिल पर रखकर पीसा जाना। पिसना।

संज्ञा पुं० [सं० उद्वर्त्तन, प्रा० उव्वटन] सरसों, चिरौंजी आदि का लेप जो शरीर पर मला जाता है। उबटन।

बटपरा†*–संज्ञा पुं० दे० "बटमार"।

बटपार–संज्ञा पु० दे० "बटमार"।

बटमार–संज्ञा पु० [हिं० बाट+मारना] मार्ग में मारकर छीन लेनेवाला। ठग। डाकू।

बटला–संज्ञा पु० [सं० वर्तुल] बड़ी बटलोई। देग। देगचा।

बटली, बटलोई–संज्ञा स्त्री० [हिं० बटला] दाल, चावल आदि पकाने का चौड़े मुँह का बरतन। देग। देगची। पतीली।

बटवार–संज्ञा पुं० [हिं० बाट + वाला] १. पहरेदार। २. रास्ते का कर उगाहनेवाला।

बटा*–संज्ञा पुं० [सं० वटक] [स्त्री० अल्पा० बटिया] १. गोला। वर्त्तुलाकार वस्तु। २. गेंद। ३. ढोंका। रोड़ा। ढेला। ४. बटोही। पथिक।

बटाऊ–संज्ञा पुं० [हिं० बाट+आऊ (प्रत्य०)] बाट चलनेवाला। पथिक। मुसाफिर। मुहा०—बटाऊ होना = चलता होना। चल देना।

बटाक‡*–वि० [हिं० बड़ा + क ?] बड़ा। ऊँचा।

बटाना†–क्रि० अ० [पू० हिं० पटाना=बंद होना] बंद हो जाना। जारी न रहना।

बटिया–संज्ञा स्त्री० [हिं० बटा=गोला] १. छोटा गोला। २. छोटा बट्टा। लोढ़िया।

बटी–संज्ञा स्त्री० [सं० वटी] १. गोली। २. बड़ी नाम का पकवान।

*संज्ञा स्त्री० [सं० वाटी] वाटिका। उपवन।

बटुआ–संज्ञा पुं० दे० "बटुवा"।

संज्ञा पु० [हिं० बटना] सिल आदि पर पीसा हुआ।

बटुरना†–क्रि० अ० [सं० वर्तुल+ना (प्रत्य०)] १. सिमटना। सरककर थोड़े स्थान में होना। २. इकट्ठा होना। एकत्र होना।

बटुवा–संज्ञा पु० [सं० वर्तुल] १. एक प्रकार की गोल थैली जिसके भीतर कई खाने होते हैं। २. बड़ी बटलोई या देग।

बटेर–संज्ञा स्त्री० [सं० वर्तक] तीतर या लवा की तरह की एक छोटी चिड़िया।

बटेरबाज–संज्ञा पुं० [हिं० बटेर+फ़ा० बाज] बटेर पालने या लड़ानेवाला।

बटोर–संज्ञा पु० [हिं० बटोरना] १. बहुत से आदमियों का इकट्ठा होना। जमावड़ा। २. वस्तुओं का ढेर।

बटोरना–क्रि० स० [हिं० बटुरना] १. बिखरी हुई वस्तुओं को समेटकर एक स्थान पर करना। समेटना। २. चुनकर एकत्र करना। जुटाना।

बटोही—संज्ञा पु० [हिं० बाट + वाह (प्रत्य०)] रास्ता चलनेवाला। पथिक। मुसाफिर।

बट्ट—संज्ञा पु० [हिं० बटा] १ बटा। गोला। २ गेंद।

बट्टा—संज्ञा पु० [सं० वार्त्त, प्रा० वाट्ट=बनियाई] १ वह कमी जो व्यवहार या लेन-देन में किसी वस्तु के मूल्य में हो जाती है। २ दलाली। दस्तूरी। ३ खोटे सिक्के, धातु आदि के बेचने में वह कमी जो उसके पूरे मूल्य में हो जाती है।
मुहा०—बट्टा लगना = दाग या कलंक लगना। ४. टोटा। घाटा। नुकसान। हानि।
संज्ञा पु० [सं० वटक] [स्त्री० अल्पा० बट्टी, बटिया] १ कूटने या पीसने का पत्थर। लोढ़ा। २ पत्थर आदि का गोल टुकड़ा। ३ छोटा गोल डिब्बा।

बट्टाखाता—संज्ञा पु० [हिं० बट्टा + खाता] डूबी हुई रकम का लेखा या बही।

बट्टाढाल—वि० [हिं० बट्टा + ढालना] खूब समतल और चिकना।

बट्टी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बट्टा] १ छोटा बट्टा। गोल छोटा टुकड़ा। २ कूटने-पीसने का पत्थर। लोढ़िया। ३ बड़ी टिकिया।

बट्टू—संज्ञा पु० दे० "बजरबट्टू"।
संज्ञा पु० [सं० वर्वट] बोड़ा। लोबिया।

बड—संज्ञा स्त्री० [अनु० बडबड] बकवाद।
संज्ञा पु० [सं० वट] बरगद का पेड़।
†वि० दे० "बडा"।

बडप्पन—संज्ञा पु० [हिं० बडा + पन] बडाई। श्रेष्ठ या बडा होने का भाव। महत्त्व।

बडबड—संज्ञा स्त्री० [अनु०] बकवाद। प्रलाप।

बडबडाना—क्रि० अ० [अनु० बडबड] १ बक बक करना। बकवाद करना। २ कोई बात बुरी लगने पर मुँह में ही कुछ बोलना। बुडबुडाना।

बडबेरी—संज्ञा स्त्री० दे० "झडबेरी"।

बडबोल, बडबोला—वि० [हिं० बडा + बोल] बढ़ बढ़कर बातें करनेवाला। सीटनेवाला।

बडभागी—वि० [हिं० बडा + भाग्य] बड़े भाग्यवाला। भाग्यवान्।

बडरा*—वि० [हिं० बडा] बडा। विशाल।

बडवाग्नि—संज्ञा पु० [सं०] समुद्राग्नि। समुद्र के भीतर की आग या ताप।

बडवानल—संज्ञा पु० दे० "वडवाग्नि"।

बडवार†—वि० दे० "बडा"।

बडहन†—संज्ञा पु० [हिं० बडी + धान] एक प्रकार का धान।

बडहल—संज्ञा पु० [हिं० बडा + फल] एक बडा पेड़ जिसके फल छोटे शरीफे के बराबर, पर बडे बेडौल होते हैं।

बडहार—संज्ञा पु० [हिं० बर + आहार] विवाह के पीछे बरातियों की ज्योनार।

बडा—वि० [सं० वर्द्धन] १ लंबा-चौडा। अधिक विस्तार का। विशाल। बृहत्। महान्।
मुहा०—बडा घर = बंदीखाना। कारागार।
२ जिसकी उम्र ज्यादा हो। अधिक वयस् का। ३ अधिक परिमाण, विस्तार या अवस्था का। मान, माप या वयस् का। ४ गुरु। श्रेष्ठ। बुजुर्ग। ५ महत्त्व का। भारी। ६ बढकर। ज्यादा।
संज्ञा पु० [सं० वटक] [स्त्री० अल्पा० बडी] एक पकवान जो मसाला मिली हुई उर्द की पीठी की गोल टिकिया को तलकर बनाया जाता है।

बडाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० बडा + ई (प्रत्य०)] १ बडे होने का भाव। परिमाण या विस्तार का आधिक्य। २ बडप्पन। श्रेष्ठता। बुजुर्गी। ३ परिमाण या विस्तार। ४ महिमा। प्रशंसा। तारीफ।
मुहा०—बडाई देना = आदर करना। सम्मान करना। बडाई मारना = शेखी हाँकना।

बडा दिन—संज्ञा पु० [हिं० बडा + दिन] २५ दिसंबर का दिन जो ईसाइयों का त्योहार है।

बडी—वि० स्त्री० दे० "बडा"।
संज्ञा स्त्री० [हिं० बडा] आलू, पेठा आदि मिली हुई पीठी की छोटी छोटी सुखाई हुई टिकिया। बरी। कुम्हडौरी।

बडी माता—संज्ञा स्त्री० [हिं० बडी + माता] शीतला। चेचक।

बडेरर—संज्ञा पु० [देश०] बवंडर। चक्रवात।

बड़ेरा†*—वि० [हिं० बड़ा + एरा (प्रत्य०)] [स्त्री० बड़ेरी] १. बड़ा। वृहत्। महान्। २. प्रधान। मुख्य।
सज्ञा पुं० [सं० वड़भि] [स्त्री० अल्पा० बड़ेरी] छाजन में बीच की लकड़ी।

बडोना†*—संज्ञा पुं० [हिं० बड़ापन] प्रशंसा।

बढ़ई—सज्ञा पुं० [सं० वर्द्धकि, प्रा० वड्ढइ] काठ को गढ़कर अनेक प्रकार के सामान बनानेवाला।

बढ़ती—संज्ञा स्त्री० [हिं० बढ़ना + ती (प्रत्य०)] १. तौल या गिनती में अधिकता। मात्रा का आधिक्य। २. धन-संपत्ति आदि का बढ़ना। उन्नति।

बढ़ना—क्रि० अ० [स० वर्द्धन] १. विस्तार या परिमाण में अधिक होना। वृद्धि को प्राप्त होना। २. गिनती या नाप-तौल मे ज्यादा होना। ३. मर्य्यादा, अधिकार, विद्या-बुद्धि, सुख-संपत्ति आदि मे अधिक होना। तरक्की करना।
मुहा०—बढ़कर चलना = इतराना। घमड करना।
४. किसी स्थान से आगे जाना। अग्रसर होना। चलना। ५. किसी से किसी बात में अधिक हो जाना। ६. लाभ होना। मुनाफ़े में मिलना। ७ दूकान आदि का समेटा जाना। बद होना। ८. चिराग का बुझना।

बढ़नी†—संज्ञा स्त्री० [सं० वर्द्धनी] झाड़ू।

बढ़ाना—क्रि० स० [हिं० बढ़ना] १. विस्तार या परिमाण मे अधिक करना। विस्तृत करना। २. गिनती या नाप-तौल आदि में ज्यादा करना। ३. फैलाना। लंबा करना। ४. अधिक व्यापक, प्रबल या तीव्र करना। ५. उन्नत करना। तरक्की देना। ६. आगे गमन कराना। चलाना। ७. सस्ता बेचना। ८. विस्तार करना। फैलाना। ९. दूकान आदि बन्द करना। १०. दीपक निर्वाप्त करना। चिराग बुझाना।
क्रि० अ० चुकना। समाप्त होना।

बढ़ाव—संज्ञा पुं० [हिं० बढ़ना + आव (प्रत्य०)] बढ़ने की क्रिया या भाव।

बढ़ावा—संज्ञा पुं० [हिं० बढ़ाव] १. किसी काम की ओर मन बढ़ानेवाली बात। प्रोत्साहन। उत्तेजना। २. साहस या हिम्मत दिलानेवाली बात।

बढ़िया—वि० [हिं० बढ़ना] उत्तम। अच्छा।

बढ़ैया†—वि० [हिं० बढ़ाना, बढ़ना] १. बढ़ानेवाला। २. बढ़नेवाला।
†संज्ञा पुं० दे० "बढ़ई"।

बढ़ोतरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बाढ़ + उत्तर] १. उत्तरोत्तर वृद्धि। बढ़ती। २. उन्नति।

बणिक्—संज्ञा पुं० [सं०] १. व्यापार, व्यवसाय करनेवाला। बनिया। सौदागर। २ बेचनेवाला। विक्रेता।

बणिज—सज्ञा पुं० दे० "बणिक्"।

बतकही—संज्ञा स्त्री० [हिं० बात + कहना] १. बातचीत। वार्त्तालाप। २. वाद-विवाद।

बतख़—सज्ञा स्त्री० [अ० बत] हंस की जाति की पानी की एक सफ़ेद प्रसिद्ध चिड़िया।

बतचल—वि० [हिं० बात + चलाना] बकवादी

बतबढ़ाव—सज्ञा पुं० [हिं० बात + बढ़ाव]। व्यर्थ बात बढ़ाना। झगड़ा-बखेड़ा बढ़ाना।

बतरस—सज्ञा पुं० [हिं० बात + रस] बातचीत का आनंद। बातों का मज़ा।

बतराना†—क्रि० अ० [हिं० बात + आना (प्रत्य०)] बातचीत करना।

बतरौहाँ*†—वि० [हिं० बात] [स्त्री० बतरौहीं] बातचीत की ओर प्रवृत्त। वार्त्तालाप का इच्छुक।

बतलाना—क्रि० स० दे० "बताना"।

बताना—क्रि० स० [हिं० बात + ना (प्रत्य०)] १. कहना। अभिज्ञ करना। जताना। २. समझाना बुझाना। हृदयंगम कराना। ३. निर्देश करना। दिखाना। प्रदर्शित करना। ४. नाचने-गाने में हाथ उठाकर भाव प्रकट करना। भाव बताना। ५. ठीक करना। मार-पीटकर दुरुस्त करना।

बताशा—सज्ञा पुं० दे० "बतासा"।

बतास‡—संज्ञा स्त्री० [सं० वातासह] १. बात का रोग। गठिया। २. वायु। हवा।

बताशा—संज्ञा पुं० [हिं० बतास=हवा] १ एक प्रकार की मिठाई जो चीनी की चाशनी को टपकाकर बनाई जाती है। २. एक प्रकार की आतशबाजी। ३ बुल-बुला। बुद्बुद।

बतिया—संज्ञा स्त्री० [सं० वर्तिका, प्रा० वत्तिआ=बत्ती] छोटा, कोमल और कच्चा फल।

बतियाना†—क्रि० अ० [हिं० बात] बात-चीत करना।

बतियार—संज्ञा स्त्री० [हिं० बात] बातचीत।

बतू—संज्ञा पुं० दे० "कलाबत्तू"।

बतौर—क्रि० वि० [अ०] १ तरह पर। रीति से। तरीके पर। २ सदृश। समान।

बत्तिस†—वि० दे० "बत्तीस"।

बत्ती—संज्ञा स्त्री० [सं० वर्ति, प्रा० वत्ति] १ चिराग जलाने के लिए रुई या सूत का बटा हुआ लच्छा। २ मोमबत्ती। ३ दीपक। चिराग। रोशनी। प्रकाश। ४ फलीता। पलीता। ५ पतले छड़ या सलाई के आकार में लाई हुई कोई वस्तु। ६. फूस का पूला जो छाजन में लगाते हैं। मूठा। ७ कपड़े की वह लम्बी धज्जी जो घाव में मवाद साफ करने के लिए भरते हैं।

बत्तीस—वि० [सं० द्वात्रिंशत, प्रा० वत्तीसा] जो गिनती में तीस से दो ज्यादा हो। संज्ञा पुं० तीस से दो अधिक की संख्या या अंक। ३२।

बत्तीसा—संज्ञा पुं० [हिं० बत्तीस] पुष्टई के बत्तीस मसालों का एक प्रकार का लड्डू।

बत्तीसी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बत्तीस] १ बत्तीस का समूह। २ मनुष्य के नीचे ऊपर के दाँतों की पंक्ति।

बथुआ—संज्ञा पुं० [सं० वास्तुक] एक छोटा पौधा जिसके पत्तों का साग खाते हैं।

बद—संज्ञा स्त्री० [सं० वर्ध्म=गिल्टी] गोहिया। बाघी रोग।
वि० [फा०] १. बुरा। खराब। निकृष्ट। २ दुष्ट। खल। नीच।
संज्ञा स्त्री० [सं० वर्त्त] पलटा। बदला।
मुहा०—बद में=एवज में। बदले में।

बद-अमली—संज्ञा स्त्री० [फा० बद+अ० अमल] राज्य का कुप्रबंध। अशांति। हलचल।

बदकार—वि० [फ़ा०] १ कुकर्मी। २ व्यभिचारी।

बदकिस्मत—वि० [फा० बद + अ० किस्मत] बुरी किस्मत का। मंदभाग्य। अभागा।

बदचलन—वि० [फा०] कुमार्गी। लंपट।

बदजात—वि० [फा० बद + अ० जात] खोटा। नीच।

बदतर—वि० [फा०] और भी बुरा। किसी की अपेक्षा बुरा।

बददुआ—संज्ञा स्त्री० [फा० + अ०] शाप।

बदन—संज्ञा पुं० [फा०] शरीर। देह।

बदनसीब—वि० [फा० + अ०] अभागा।

बदना*—क्रि० स० [सं० वद=कहना] १. कहना। वर्णन करना। २ मान लेना। स्वीकार करना। ३ नियत करना। ठह-राना। निश्चित करना।
मुहा०—बदा होना=भाग्य में लिखा होना। बदकर (कोई काम करना)=१ जान-बूझकर। पूरे हठ के साथ। २ ललकारकर। ४ बाजी लगाना। शर्त लगाना। ५ कुछ समझना। बड़ा या महत्त्व का मानना।

बदनाम—वि० [फ़ा०] जिसकी निंदा हो रही हो। कलंकित।

बदनामी—संज्ञा स्त्री० [फा०] लोकनिंदा।

बदबू—संज्ञा स्त्री० [फा०] दुर्गंध। बुरी गंध।

बदमाश—वि० [फा० बद + अ० मआश= जीविका] १ बुरे कर्म से जीविका करने-वाला। दुर्वृत्त। २ दुष्ट। पाजी। लुच्चा। ३ दुराचारी।

बदमाशी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० बद+अ० मआश] १ दुष्कर्म। खोटाई। २ दुष्टता। पाजीपन। ३ व्यभिचार।

बदमिजाज—वि० [फा०] दुःस्वभाव।

बदरंग—वि० [फा०] १ भद्दे रंग का। २ जिसका रंग बिगड़ गया हो। विवर्ण।

बदर—संज्ञा पुं० [सं०] बेर का पेड़ या फल।
क्रि० वि० [फा०] बाहर।

बदरा‡—संज्ञा पुं० [हिं०] बादल। मेघ।

बदराह–वि० [फ़ा०] १. कुमार्गी। बुरी राह पर चलनेवाला। २. दुष्ट। बुरा।
बदरि–संज्ञा पुं० [सं०] बेर का पौधा या फल।
बदरिकाश्रम–संज्ञा पुं० [सं०] तीर्थ-विशेष जो हिमालय पर है। यहाँ नर-नारायण तथा व्यास का आश्रम है।
बदरिया‡–संज्ञा स्त्री० दे० "बदली"।
बदरीनारायण–संज्ञा पुं० [सं०] बदरिकाश्रम के प्रधान देवता।
बदरौंह†–वि० [फ़ा० बद + रौ = चाल] कुमार्गी। बदचलन।
†संज्ञा पुं० [हिं० बादर + औंहें (प्रत्य०)] बदली का आभास।
बदल–संज्ञा पुं० [अ०] १. एक के स्थान पर दूसरा होना। परिवर्तन। हेर-फेर। २. पलटा। एवज। प्रतिकार।
बदलना–क्रि० अ० [अ० बदल+ना (प्रत्य०)] १. जैसा रहा हो, उससे भिन्न हो जाना। परिवर्तित होना। २. एक के स्थान पर दूसरा हो जाना। ३. एक जगह से दूसरी जगह तैनात होना।
क्रि० स० १. जैसा रहा हो, उससे भिन्न करना। परिवर्तित करना। २. एक वस्तु के स्थान की पूर्ति दूसरी वस्तु से करना।
मुहा०–बात बदलना = पहले एक बात कहकर फिर उससे विरुद्ध दूसरी बात कहना।
३. विनिमय करना।
बदलवाना–क्रि० स० [हिं० 'बदलना' का प्रे०] बदलने का काम कराना।
बदला–संज्ञा पुं० [हिं० बदलना] १. परस्पर लेने और देने का व्यवहार। विनिमय। २. एक वस्तु की हानि या स्थान की पूर्ति के लिये उपस्थित की हुई दूसरी वस्तु। पलटा। एवज। ३. एक पक्ष के किसी व्यवहार के उत्तर में दूसरे पक्ष का वैसा ही व्यवहार। पलटा। एवज। प्रतीकार।
मुहा०–बदला लेना = किसी के बुराई करने पर उसके साथ बुराई करना।
४. किसी कर्म का परिणाम। नतीजा।
बदलाना–क्रि० स० दे० "बदलवाना"।
बदली–संज्ञा स्त्री० [हिं० बादल का अल्पा०] फैलकर छाया हुआ बादल। घन-विस्तार।
संज्ञा स्त्री० [हिं० बदलना] १. एक के स्थान पर दूसरी वस्तु की उपस्थिति। २. एक स्थान से दूसरे स्थान पर नियुक्ति। तबदीली। तबादला।
बदलौवल–संज्ञा स्त्री० [हिं० बदलना] अदल-बदल। हेर-फेर।
बदस्तूर–क्रि० वि० [फ़ा०] जैसा था या रहता है, वैसा ही। जैसे का तैसा। ज्यों का त्यों।
बदहजमी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] अपच। अजीर्ण।
बदहवास–वि० [फ़ा०] १. बेहोश। अचेत। २. व्याकुल। विकल। उद्विग्न।
बदा–वि० [हिं० बदना] भाग्य में लिखा हुआ।
बदान–संज्ञा स्त्री० [हिं० बदना] बदे जाने की क्रिया या भाव।
बदाबदी–संज्ञा स्त्री० [हिं० बदना] दो पक्षों की एक दूसरे के विरुद्ध प्रतिज्ञा या हठ। लाग-डाँट।
बदाम–संज्ञा पुं० दे० "बादाम"।
बदि*†–संज्ञा स्त्री० [सं० वर्त] पलटा। बदला।
अव्य० १. बदले में। एवज में। २. लिये। वास्ते। खातिर।
बदी–संज्ञा स्त्री० [?] कृष्ण पक्ष। अँधेरा पाख।
संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] बुराई। अपकार। अहित
बदौलत–क्रि० वि० [फ़ा०] १. द्वारा। अवलंब से। कृपा से। २. कारण से।
बद्दर, बद्दल†–संज्ञा पुं० दे० "बादल"।
बद्ध–वि० [सं०] १. बँधा हुआ। जो बाँधा गया हो। २. संसार के बंधन में पड़ा हुआ। जो मुक्त न हो। ३. जिसके लिये कोई रोक हो। ४. जो किसी हद हिसाब के भीतर रखा गया हो। ५. निर्धारित। ठहराया हुआ।
बद्धकोष्ठ–संज्ञा पुं० [सं०] मल अच्छी तरह न निकलने का रोग। कब्ज। कब्जियत।

बद्धपरिकर—वि० [स०] कमर बाँधे हुए। तैयार।

बद्धी—संज्ञा स्त्री० [सं० बद्ध] १. वह जिससे कुछ कसें या बाँधें। डोरी। रस्सी। तसमा। २. चार लड़ों का एक गहना।

बध—संज्ञा पु० [स०] हनन। हत्या।

बधना—क्रि० स० [स० बध+ना (प्रत्य०)] मार डालना। बध करना। हत्या करना। संज्ञा पु० [सं० वर्द्धन=मिट्टी का गड्डुआ] मिट्टी या धातु का टोंटीदार लोटा।

बधाई—संज्ञा स्त्री० [स० वर्द्धन] १ वृद्धि। बढ़ती। २ मगल अवसर का गाना बजाना। मगलाचार। ३. आनंद। मंगल। उत्सव। ४. किसी शुभ अवसर पर आनंद प्रकट करनेवाला वचन या संदेसा। मुबारकबाद।

बधाना—क्रि० स० [हिं० 'बधना' का प्रे०] वध कराना। दूसरे से मरवाना।

बधाया—संज्ञा पु० दे० "बधाई"।

बधावा—संज्ञा पु० [हिं० बधाई] १. बधाई। २ वह उपहार जो संबंधियों या इष्ट-मित्रों के यहाँ से मगल अवसरों पर आता है।

बधिक—संज्ञा पु० [स० बधक] १ वध करनेवाला। हत्यारा। २ जल्लाद। ३ व्याध। बहेलिया।

बधिया—संज्ञा पु० [हिं० बध=मारना] वह बैल या और कोई पशु जो अंडकोश निकालकर षढ कर दिया गया हो। खस्सी। आखता।

बधिर—संज्ञा पु० [स०] जिसमे सुनने की शक्ति न हो। बहरा।

बधूटी—संज्ञा स्त्री० [स० वधूटी] १ पुत्र की स्त्री। पतोहू। २ सुहागिन स्त्री। ३ नई आई हुई बहू।

बधूरा†—संज्ञा पु० [हिं० बदूधूर] बगूला। बवडर।

बध्य—वि० [स०] मार डालने के योग्य।

बन—संज्ञा पु० [स० वन] १ जगल। कानन। अरण्य। २ समूह। ३ जल। पानी। ४ बगीचा। बाग। ५ कपास का पौधा। ६ दे० "वन"।

बनक*†—संज्ञा स्त्री० [हिं० बनना] १ सज-धज। सजावट। २. बाना। वेष। भेस।

बनकर—संज्ञा पु० [स० वनकर] जगल में होनेवाले पदार्थों अर्थात् लकड़ी या घास आदि की आमदनी।

बनखड—संज्ञा पु० [स० वनखड] जगली प्रदेश।

बनखंडी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बन+खड=टुकड़ा] १ वन का कोई भाग। २ छोटा सा वन। संज्ञा पु० वन में रहनेवाला।

बनचर—संज्ञा पु० [स० वनचर] १ जगल में रहनेवाला पशु। २ जगली आदमी।

बनचारी†—वि० [स० वनचारिन्] १ वन में घूमनेवाला। २ वन में रहनेवाला।

बनज—संज्ञा पु० [स० वनज] १. कमल। २ जल में होनेवाले पदार्थ। संज्ञा पु० [स० वाणिज्य] वाणिज्य। व्यापार।

बनजात—संज्ञा पु० [स० वनजात] कमल।

बनजारा—संज्ञा पु० [हिं० बनिज+हारा] १ वह व्यक्ति जो बैलों पर अन्न लादकर बेचने के लिये एक देश से दूसरे देश को जाता है। टाँडया। बजारा। २ व्यापारी।

बनजी*†—संज्ञा पु० [स० वाणिज्य] १. व्यापार। रोजगार। २ व्यापारी।

बनज्योत्स्ना—संज्ञा स्त्री० [स० वनज्योत्स्ना] माधवी लता।

बनत—संज्ञा स्त्री० [हिं० बनना+त (प्रत्य०)] १ रचना। बनावट। २ अनुकूलता। सामंजस्य। मेल।

बनताई*†—संज्ञा स्त्री० [हिं० बन+ताई (प्रत्य०)] वन की सघनता या भयकरता।

बनतुलसी—संज्ञा स्त्री० [स० वन+तुलसी] बबई नाम का पौधा। बर्बरी।

बनद*—संज्ञा पु० [स० वनद] बादल।

बनदाम—संज्ञा स्त्री० [स० वनदाम] वनमाला।

बनदेवी—संज्ञा स्त्री० [स० वनदेवी] किसी वन की अधिष्ठात्री देवी।

बनधातु—संज्ञा स्त्री० [स०] गेरू या और कोई रंगीन मिट्टी।

बनना—क्रि० अ० [सं० वर्णन] १. तैयार होना। रचा जाना।
मुहा०—बना रहना = १. जीता रहना। संसार में जीवित रहना। २. उपस्थित रहना।
२. काम में आने के योग्य होना। ३. जैसा चाहिए, वैसा होना। ४. किसी एक पदार्थ का रूप परिवर्त्तित करके दूसरा पदार्थ हो जाना। ५. किसी दूसरे प्रकार का भाव या संबंध रखनेवाला हो जाना। ६. कोई विशेष पद, मर्यादा या अधिकार प्राप्त करना। ७. अच्छी या उन्नत दशा में पहुँचना। ८. वसूल होना। प्राप्त होना। ९. मरम्मत होना। दुरुस्त होना। १०. संभव होना। हो सकना। ११. निभना। पटना। मित्रभाव होना। १२. अच्छा, सुंदर या स्वादिष्ठ होना। १३. सुयोग मिलना। सुअवसर मिलना। १४. स्वरूप धारण करना। १५. मूर्ख ठहरना। उपहासास्पद होना। १६. अपने आप को अधिक योग्य या गंभीर प्रमाणित करना।
मुहा०—बनकर = अच्छी तरह। भली भाँति।
१७. सजना। सजावट करना।

बननि*†—संज्ञा स्त्री० [हिं० बनना] १. बनावट। २. बनाव-सिंगार।

बनपट*—संज्ञा पुं० [सं० वन+पट] वृक्षों की छाल आदि से बनाया हुआ कपड़ा।

बनपाती*†—संज्ञा स्त्री० दे० "वनस्पति"।

बनफ्सा—संज्ञा पुं० [फ़ा०] एक प्रकार की वनस्पति जिसकी जड़, फूल और पत्तियाँ औषध के काम में आती हैं।

बनबास—संज्ञा पुं० [सं० वनवास] १. वन में बसने की क्रिया या अवस्था। २. प्राचीन काल का देशनिकाले का दंड।

बनबासी—संज्ञा पुं० [सं० वनवासिन्] १. वह जो वन में बसे। २. जंगली।

बनबाहन—संज्ञा पुं० [सं० वनवाहन] नाव।

बनबिलाव—संज्ञा पुं० [हिं० बन + बिलाव = बिल्ली] बिल्ली की जाति का, पर उससे कुछ बड़ा, एक जंगली जंतु।

बनमानुस—संज्ञा पुं० [हिं० बन + मानुष] मनुष्य से मिलता-जुलता कोई जंगली जंतु। जैसे—गोरिल्ला, चिंपैंजी आदि।

बनमाला—संज्ञा स्त्री० [सं० वनमाला] तुलसी, कुंद, मंदार, परजाता और कमल इन पाँच चीज़ों की बनी हुई माला।

बनमाली—संज्ञा पुं० [सं० वनमाली] १. वन-माला धारण करनेवाला। २. कृष्ण। ३. विष्णु। नारायण। ४. मेघ। बादल। ५. वह प्रदेश जिसमें घने वन हों।

बनर—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का अस्त्र।

बनरखा—संज्ञा पुं० [हिं० बन+रखना=रक्षा करना] १. जंगल की रखवाली करनेवाला। बन-रक्षक। २. बहेलियों की एक जाति।

बनरा*‡—संज्ञा पुं० दे० "बंदर"।
संज्ञा पुं० [हिं० बनना] १. वर। दूल्हा। २. *विवाह-समय का एक प्रकार का गीत।*

बनराज, बनराय*†—संज्ञा पुं० [सं० वनराज] १. सिंह। शेर। २. बहुत बड़ा पेड़।

बनरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बनरा का स्त्री०] नववधू। नई ब्याही हुई बधू।

बनरुह—संज्ञा पुं० [सं० वनरुह] १. जंगली पेड़। २. कमल।

बनवना*‡—क्रि० स० दे० "बनाना"।

बनबसन*—संज्ञा पुं० [सं० वनवसन] वृक्षों की छाल का बना हुआ कपड़ा।

बनवाना—क्रि० स० [हिं० बनाना का प्रे० रूप] दूसरे को बनाने में प्रवृत्त करना।

बनवारी—संज्ञा पुं० [सं० वनमाली] श्रीकृष्ण।

बनस्थली—संज्ञा स्त्री० [सं० वनस्थली] जंगल का कोई भाग। बनखंड।

बना—संज्ञा पुं० [हिं० बनना] [स्त्री० बनी] दूल्हा। वर।
संज्ञा पुं० [?] 'दंडकला' नामक छंद।

बनाइ (य)—क्रि० वि० [हिं० बनाकर=अच्छी तरह] १. बिलकुल। अत्यंत। नितांत। २. भली भाँति। अच्छी तरह।

बनाउरि*†—संज्ञा स्त्री० दे० "बाणावली"।

बनाग्नि—संज्ञा स्त्री० [सं० वनाग्नि] दावानल

बनात—संज्ञा स्त्री० [हिं० बाना] एक प्रकार का बढ़िया ऊनी कपड़ा।

बनाना–क्रि० स० [हिं० बनना का स० रूप] १. रूप या अस्तित्व देना। रचना। तैयार करना। मुहा०—बनाए रखना=खूब अच्छी तरह। भली भाँति। २. रूप परिवर्तित करके काम में आने लायक करना। ३. ठीक दशा या रूप में लाना। ४. एक पदार्थ के रूप को बदलकर दूसरा पदार्थ तैयार करना। ५. दूसरे प्रकार का भाव या संबंध रखने-वाला कर देना। ६. कोई विशेष पद, मर्यादा या शक्ति आदि प्रदान करना। ७ अच्छी या उन्नत दशा में पहुँचाना। ८. उपार्जित करना। वसूल करना। प्राप्त करना। ९. मरम्मत करना। दोष दूर करके ठीक करना। १०. मूर्ख ठहराना। उपहासास्पद करना।

बनाफर–संज्ञा पु० [स० वन्यफल] ? क्षत्रियों की एक जाति।

बनावंत, बनावनत*†–संज्ञा पु० [हिं० बनना + अबनना] विवाह करने के विचार से किसी लड़के और लड़की की जन्म-पत्रियों का मिलान।

बनाम–अव्य० [फा०] नाम पर। नाम से। किसी के प्रति।

बनाय†–क्रि० वि० [हिं० बनाकर = अच्छी तरह] १. बिलकुल। २ अच्छी तरह से।

बनार–संज्ञा पु० [?] एक प्राचीन राज्य जो वर्तमान काशी की उत्तर-सीमा पर था।

बनाव–संज्ञा पु० [हिं० बनना+आव (प्रत्य०)] १ बनावट। रचना। २. शृंगार। सजावट। ३. तरकीब। युक्ति। तदबीर।

बनावट–संज्ञा स्त्री० [हिं० बनाना + वट (प्रत्य०)] १. बनने या बनाने का भाव। रचना। गठन। २. ऊपरी दिखावा। आडंबर।

बनावटी–वि० [हिं० बनावट] बनाया हुआ। नकली। कृत्रिम।

बनावनहारा–संज्ञा पु० [हिं० बनाना + हारा (प्रत्य०)] १. बनानेवाला। रचयिता। २. वह जो बिगड़े हुए को बनावे।

बनावलि–संज्ञा स्त्री० [स० बाणावलि] बाणों की अवली या पंक्ति।

बनासपती–संज्ञा स्त्री० [स० वनस्पति] १. जड़ी, बूटी, पत्र, पुष्प इत्यादि। २. घास, पात-पात इत्यादि।

बनि*†–वि० [हिं० बनाना] समस्त। सब।

बनिज–संज्ञा पु० [स० वाणिज्य] १.व्यापार। रोजगार। २. व्यापार की वस्तु। सौदा।

बनिजना*†–क्रि० स० [सं० वाणिज्य] १. व्यापार करना। खरीदना और बेचना। २. अपने अधीन कर लेना।

बनिजारिन,बनिजारी*†–संज्ञा स्त्री० [हिं० बजारा] बनजारा जाति की स्त्री।

बनित*†–संज्ञा स्त्री० [हिं० बनना] बानक। वेष। साज-बाज।

बनिता–संज्ञा स्त्री० [स० वनिता] १. स्त्री। औरत। २. भार्या। पत्नी।

बनिया–संज्ञा पु० [स० वणिक्] [स्त्री० बनियाइन] १. व्यापार करनेवाला व्यक्ति। व्यापारी। वैश्य। २ आटा, दाल आदि बेचनेवाला। मोदी।

बनियाइन–संज्ञा स्त्री० [अ० बेनियन] जुर्राब की बुनावट की कुरती या बंडी जो शरीर से चिपकी रहती है। गंजी।

बनिस्बत–अव्य० [फा०] अपेक्षा। मुका-बले में।

बनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० बन] १. वनस्थली। वन का एक टुकड़ा। २ वाटिका। बाग। संज्ञा स्त्री० [हिं० बना] १. दुलहिन। २. स्त्री। नायिका। संज्ञा पु० [स० वणिक्] बनिया।

बनीनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० बनिया + ईनी] वैश्य जाति की स्त्री। बनिये की स्त्री।

बनीर*–संज्ञा पु० [स० वानीर] बेत।

बनैठी–संज्ञा स्त्री० [हिं० बन + स० यष्टि] पटेबाजों की वह लंबी लाठी जिसके दोनों सिरों पर गोल लट्टू लगे रहते हैं।

बनैला–वि० [हिं० बन + ऐला (प्रत्य०)] जंगली। वन्य।

बनौवास*†–संज्ञा पु० दे० "बनवास"।

बनौटी–वि० [हिं० बन + औटी (प्रत्य०)]

कपास के फूल का सा। कपासी।

बनौरी†–संज्ञा स्त्री० [सं० वन=जल+ओला] वर्षा के साथ गिरनेवाला ओला। पत्थर।

बनौवा–वि० दे० "बनावटी"।

बन्हि–संज्ञा स्त्री० दे० "वह्नि"।

बप*†–संज्ञा पुं० [सं० वप्र] बाप। पिता।

बपमार–वि० [हिं० बाप+मारना] १. वह जो अपने पिता की हत्या करे। २. सबके साथ धोखा करनेवाला।

बपतिस्मा–संज्ञा पुं० [अं० बैप्टिज्म] ईसाई संप्रदाय का एक मुख्य संस्कार जो किसी व्यक्ति को ईसाई बनाने के समय किया जाता है।

बपना*†–क्रि० स० [सं० वपन] बीज बोना।

बपु*–संज्ञा पुं० [सं० वपु] १. शरीर। देह। २. अवतार। ३. रूप।

बपुख*–संज्ञा पुं० [सं० वपुस्] शरीर। देह।

बपुरा†–वि० [सं० वराक ?] बेचारा। गरीब

बपौती–संज्ञा स्त्री० [हिं० बाप+औती (प्रत्य०)] बाप से पाई हुई जायदाद।

बप्पा†–संज्ञा पुं० [हिं० बाप] पिता। बाप।

बफारा–संज्ञा पुं० [हिं० भाप+आरा (प्रत्य०)] औषध-मिश्रित। जल की भाप से शरीर के किसी रोगी अंग को सेंकना।

बबर–संज्ञा पुं० [फा०] बर्बरी देश का शेर। बड़ा शेर। सिंह।

बबा–संज्ञा पुं० दे० "बाबा"।

बबुआ†–संज्ञा पुं० [हिं० बाबू] [स्त्री० बबुई] १. बेटे या दामाद के लिये प्यार का संबोधन शब्द। (पूरब) २. जमींदार। रईस।

बबूल–संज्ञा पुं० [सं० बब्बूर] मझोले कद का एक प्रसिद्ध काँटेदार पेड़।

बबूला–संज्ञा पुं० १. दे० "बगूला"। २. दे० "बुलबुला"।

बभूत–संज्ञा स्त्री० दे० "भभूत" या "विभूति"।

बम–संज्ञा पुं० [अं० बॉंब] विस्फोटक पदार्थों से भरा हुआ लोहे का बना वह गोला जो शत्रुओं पर फेंकने के लिये बनाया जाता है। संज्ञा पुं० [अनु०] शिव के उपासकों का "बम", "बम" शब्द।

मुहा०–बम बोलना या बोल जाना=शक्ति, धन आदि की समाप्ति हो जाना। कुछ न रह जाना। संज्ञा पुं० [कनाड़ी बंबू=बाँस] बग्गी, फिटन आदि में आगे की ओर लगा हुआ वह लंबा बाँस जिसके साथ घोड़े जोते जाते हैं।

बमकना–क्रि० अ० [अनु०] बहुत शेखी हाँकना। डींग हाँकना।

बमना*†–क्रि० स० [सं० वमन] मुँह से उगलना। वमन करना। कै करना।

बमपुलिस–संज्ञा पुं० दे० "बंपुलिस"।

बमूजिब–क्रि० वि० [फ़ा०] अनुसार। मुताबिक़।

बम्हनी–संज्ञा स्त्री० [सं० ब्राह्मण, हिं० बाम्हन] १. छिपकिली की तरह का एक पतला कीड़ा। २. आँख का एक रोग। बिलनी।

बयन*†–संज्ञा पुं० [सं० वचन] वाणी। बात

बयना*†–क्रि० स० [सं० वपन] बोना। बीज जमाना या लगाना। क्रि० स० [सं० वचन] वर्णन करना। कहना। संज्ञा पुं० दे० "बैना"।

बयनी*†–वि० [हिं० बयन] बोलनेवाली।

बयस–संज्ञा स्त्री० दे० "वय"।

बयस-सिरोमनि*†–संज्ञा पुं० [सं० वयस-शिरोमणि] युवावस्था। जवानी। यौवन।

बया–संज्ञा पुं० [सं० वयन=बुनना] गौरैया के आकार और रंग का एक प्रसिद्ध पक्षी। संज्ञा पुं० [अ० बायः=बेचनेवाला] वह जो अनाज तौलने का काम करता हो।

बयान–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. बखान। वर्णन। जिक्र। २. हाल। विवरण। वृत्तांत।

बयाना–संज्ञा पुं० [अ० बै+फ़ा० (प्रत्य०) आना] किसी काम के लिये दिए जानेवाले पुरस्कार का कुछ अंश जो बातचीत पक्की करने के लिये दिया जाय। पेशगी।

बयार, बयारि*†–संज्ञा स्त्री० [सं० वायु] हवा।

बयारी–संज्ञा स्त्री० दे० "ब्यालू", "बयारि"।

बयाला†–संज्ञा पुं० [सं० बाह्य+आला] १. दीवार में का वह छेद जिससे झाँककर बाहर की ओर की वस्तु देखी जा सके।

२. साग। आला। ३. गर्दी में वह स्थान करना। जहाँ सोर्ने लगी रहती हैं।
बर–संज्ञा पुं० [सं० वर] १. वह जिसका विवाह होता हो। दूल्हा। दे० "वर"। २. आशीर्वाद-सूचक वचन। दे० "वर"।
वि० श्रेष्ठ। अच्छा। उत्तम।
मुहा०—बर पड़ना=श्रेष्ठ होना।
संज्ञा पु० [सं० बल] बल। शक्ति।
संज्ञा पु० [सं० वट] वट वृक्ष। बरगद।
संज्ञा पु० [हिं० वल=सिकुड़न] रेखा। लकीर।
मुहा०—बर खींचना=१. किसी विषय में बहुत दृढ़ता सूचित करना। २. जिद करना।
अव्य० [फा०] ऊपर।
मुहा०—बर आना या पाना=बढ़कर निकलना। मुकाबले में अच्छा ठहरना।
वि० १. बढ़ा-चढ़ा। श्रेष्ठ। २. पूरा। पूर्ण। (आशा)
*अव्य० [सं० वर] वरन्। बल्कि।
बरई†–संज्ञा पु०[हिं०वाड़=क्यारी] [स्त्री० बरइन] पान पैदा करने या बेचनेवाला। तमोली।
बरकंदाज–संज्ञा पु० [अ०+फ़ा०] १. वह सिपाही जिसके पास बड़ी लाठी रहती हो। २ तोड़ेदार बंदूक रखनेवाला सिपाही।
बरकत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. किसी पदार्थ की बहुलता या आवश्यकता से अधिकता। बढ़ती। बहुतायत। २. लाभ। फायदा। ३. समाप्ति। अंत। ४. एक की संख्या। ५. धन-दौलत। ६. प्रसाद। कृपा।
बरकती–वि० [अ० बरकत+ई (प्रत्य०)] १. बरकतवाला। जिसमें बरकत हो। २ बरकत-संबंधी। बरकत का।
बरकना‡–क्रि० अ० [हिं० बरकाना] १. कोई बुरी बात न होने पाना। निवारण होना। २. हटना। दूर रहना।
बरकरार–वि० [फा० बर+अ० करार] १ कायम। स्थिर। २. उपस्थित। मौजूद।
बरकाज–संज्ञा पुं०[सं० वर+कार्य] विवाह।
बरकाना†–क्रि० अ० [सं० वारण, वारक] १. कोई बुरी बात न होने देना। निवारण करना। २. बहलाना। फुसलाना।
बरख*†–संज्ञा पु० [सं० वर्ष] बरस।
बरखना–क्रि० अ० दे० "बरसना"।
बरखा*–संज्ञा स्त्री० दे० "वर्षा"।
बरखास*†–वि० दे० "बरखास्त"।
बरखास्त–वि० [फा०] १. (सभा आदि) जिसका विसर्जन कर दिया गया हो। २ जो नौकरी से हटा या छुड़ा दिया गया हो। मौकूफ।
बरखिलाफ–क्रि० वि० [फा० बर+अ० खिलाफ़] प्रतिकूल। उलटा। विरुद्ध।
बरगद–संज्ञा पु० [सं० वट, हिं० बड़] पीपल की जाति का एक प्रसिद्ध बड़ा वृक्ष। इसकी छाया बहुत घनी और ठंढी होती है। बड़ या पेड़।
बरछा–संज्ञा पु०[सं०व्रश्चन=काटनेवाला ?] [स्त्री० बरछी] भाला नामक हथियार।
बरछैत–संज्ञा पु०[हिं०बरछा+ऐत (प्रत्य०)] बरछा चलानेवाला। भाला-बर्दार।
बरजन*†–क्रि० अ० [सं० वर्जन] मना करना। रोकना। निषेध करना।
बरजनि*†–संज्ञा स्त्री० [सं० वर्जन] १. मनाही। २ रुकावट। ३. रोक।
बरजबान–वि० [फा०] मुखाग्र। कंठस्थ।
बरजोर–वि० [हिं० बल+फा० जोर] १ प्रबल। बलवान्। जबरदस्त। २. अत्याचारी। बल प्रयोग करनेवाला।
क्रि० वि० जबरदस्ती। बलपूर्वक।
बरजोरी*†–संज्ञा स्त्री० [हिं० बरजोर] जबरदस्ती। बलप्रयोग।
क्रि० वि० जबरदस्ती से। बलपूर्वक।
बरणना–क्रि० स० दे० "बरनना"।
बरत–संज्ञा पु० दे० "व्रत"।
संज्ञा स्त्री० [हिं० बरना=बटना] १. रस्सी। २. नट की रस्सी जिस पर चढ़कर वह खेल करता है।
बरतन–संज्ञा पु० [सं० वर्त्तन] मिट्टी या धातु आदि की इस प्रकार बनी वस्तु कि उसमें खाने-पीने की वस्तु रख सकें। पात्र। भाँड़। भाँडा।

बरतना–क्रि० अ० [सं० वर्त्तन] व्यवहार करना। बरताव करना।
क्रि० स० काम में लाना। व्यवहार में लाना। इस्तेमाल करना।
बरतरफ़–वि० [फ़ा० बर + अ० तरफ़] १. किनारे। अलग। एक ओर। २. नौकरी से छुड़ाया हुआ। मौकूफ़। बरख़ास्त।
बरताना–क्रि० स० [सं० वर्त्तन या वितरण] वितरण करना। बाँटना।
बरताव–संज्ञा पुं० [हिं० बरतना का भाव] बरतने का ढंग। व्यवहार।
बरती–वि० [सं० व्रतिन, हिं० व्रती] जिसने उपवास किया या व्रत रखा हो।
बरतोर†–संज्ञा पुं० [हिं० बाल+तोड़ना] वह फुंसी या फोड़ा जो बाल उखड़ने से हो।
बरदाना†–क्रि० स० [हिं० बरधा=बैल] गौ, बकरी, घोड़ी आदि पशुओं का उनकी जाति के नर-पशुओं से संयोग कराना। जोड़ा खिलाना।
क्रि० अ० गौ, बकरी, घोड़ी आदि पशुओं का अपनी जाति के नर पशुओं से जोड़ा खाना।
बरदार–वि० [फ़ा०] १. वहन करनेवाला। ढोनेवाला। धारण करनेवाला। २. पालन करनेवाला। माननेवाला।
बरदाश्त–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] सहन करने की क्रिया या भाव। सहन।
बरधा–संज्ञा पुं० [सं० बलीवर्द] बैल।
बरधाना–क्रि० स० अ० दे० "बरदाना"।
बरन*–संज्ञा पुं० दे० "वर्ण"।
बरनन*†–संज्ञा पुं० दे० "वर्णन"।
बरनना*†–क्रि० स० [सं० वर्णन] वर्णन करना। बयान करना।
बरना–क्रि० स० [सं० वरण] १. वर या वधू के रूप में ग्रहण करना। ब्याहना। २. कोई काम करने के लिये किसी को चुनना या नियुक्त करना। ३. दान देना।
‡क्रि० अ० दे० "जलना"।
बरपा–वि० [फ़ा०] खड़ा हुआ। उठा हुआ। मचा हुआ। (झगड़ा, आफ़त)
बरफ़–संज्ञा स्त्री० दे० "बर्फ़"।
बरफ़ी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० बरफ़] एक प्रकार की प्रसिद्ध चौकोर मिठाई।
बरबंड*‡–वि० [सं० बलवंत] १. बलवान्। ताक़तवर। २. प्रतापशाली। ३. उद्दंड। उद्धत। ४. प्रचंड। प्रखर।
बरबट*–क्रि० वि० दे० "बरबस"।
बरबर†–संज्ञा स्त्री० [अनु०] बकबक।
संज्ञा पुं० दे० "बर्बर"।
बरबस–क्रि० वि० [सं० बल + वश] १. बलपूर्वक। जबरदस्ती। हठात्। २. व्यर्थ।
बरबाद–वि० [फ़ा०] नष्ट। चौपट।
बरबादी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] नाश। तबाही।
बरम*–संज्ञा पुं० [सं० वर्म] जिरह बक्तर। कवच। शरीर-त्राण।
बरमा–संज्ञा पुं० [देश०] [स्त्री० अल्पा० बरमी] लकड़ी आदि में छेद करने का, लोहे का एक प्रसिद्ध औजार।
बरमी–संज्ञा पुं० [हिं० बरमा + ई (प्रत्य०)] बरमा देश का निवासी।
संज्ञा स्त्री० बरमा देश की भाषा।
वि० बरमा-संबंधी। बरमा देश का।
बरम्हा–संज्ञा पुं० १. दे० "ब्रह्मा"। २. दे० "बरमा"।
बरम्हाना*†–क्रि० [सं० ब्रह्म] (ब्राह्मण का) आशीर्वाद देना।
बरम्हाव*†–संज्ञा पुं० [सं० ब्रह्म + आव (प्रत्य०)] १. ब्राह्मणत्व। २. ब्राह्मण का आशीर्वाद।
बरवट–संज्ञा स्त्री० दे० "तिल्ली" (रोग)।
बरवै–संज्ञा पुं० [देश०] १९ मात्राओं का एक छंद। ध्रुव। कुरंग।
बरषना*†–क्रि० अ० दे० "बरसना"।
बरषा*–संज्ञा स्त्री० [सं० वर्षा] १. पानी बरसना। वृष्टि। २. वर्षा-काल। बरसात।
बरषाना*†–क्रि० स० दे० "बरसाना"।
बरषासन*†–संज्ञा पुं० [सं० वर्षाशन] एक वर्ष की भोजन-सामग्री।
बरस–संज्ञा पुं० [सं० वर्ष] बारह महीनों या ३६५ दिनों का समूह। वर्ष। साल।

बरसगाँठ–संज्ञा स्त्री० [हिं० बरस+गाँठ] वह दिन जिसमें किसी का जन्म हुआ हो। जन्म दिन। सालगिरह।

बरसाना–क्रि० अ० [सं० वर्षण] १. वर्षा का जल गिरना। मेह पड़ना। २ वर्षा के जल की तरह ऊपर से गिरना। ३ बहुत अधिक मात्रा में चारों ओर से आना। मुहा०–बरस पड़ना=बहुत अधिक क्रुद्ध होकर डाँटने डपटने लगना। ४ बहुत अच्छी तरह झलकना। खूब प्रकट होना। ५ दाएँ हुए गल्ले का इस प्रकार हवा में उड़ाया जाना जिसमें दाना अलग और भूसा अलग हो जाय। ओसाया जाना।

बरसाइत†–संज्ञा स्त्री० [सं० वट+सावित्री] जेठ बदी अमावस, जिस दिन स्त्रियाँ वट-सावित्री का पूजन करती हैं।

बरसात–संज्ञा स्त्री० [सं० वर्षा] सावन भादों के दिन जब कि खूब वर्षा होती है। वर्षा-काल। वर्षा ऋतु।

बरसाती–वि० [सं० वर्षा] बरसात का। संज्ञा पु० [हिं० बरसात] एक प्रकार का ढीला कपड़ा जिसे वर्षा के समय पहनने से शरीर नहीं भीगता।

बरसाना–क्रि० स० [हिं० बरसना का प्र०] १ वर्षा करना। वृष्टि करना। २ वर्षा के जल की तरह लगातार बहुत सा गिराना। ३ बहुत अधिक संख्या या मात्रा में चारों ओर से प्राप्त कराना। ४ दाएँ हुए अनाज को इस प्रकार हवा में गिराना जिससे दाने अलग और भूसा अलग हो जाय। ओसाना। डाली देना।

बरसी–संज्ञा स्त्री० [हिं० बरस+ई (प्रत्य०)] मृतक के उद्देश्य से किया जानेवाला वार्षिक श्राद्ध।

बरसौहाँ–वि० [हिं० बरसना+औहाँ (प्रत्य०)] बरसनेवाला।

बरहा–संज्ञा पु० [हिं० बहा] [स्त्री० अल्पा० बरही] खेतों में सिंचाई के लिये बनी हुई छोटी नाली। संज्ञा पु० [देश०] मोटा रस्सा। संज्ञा पु० [सं० बर्हि] मोर। मयूर।

बरही–संज्ञा पु० [सं० बर्हि] १ मयूर। मोर। २ साही नाम का जंतु। ३ मुरगा। संज्ञा स्त्री० [हिं० बारह] १ प्रसूता का वह स्नान तथा अन्यान्य क्रियाएँ जो संतान उत्पन्न होने के बारहवें दिन होती हैं। संज्ञा स्त्री० [देश०] पत्थर आदि भारी बोझ उठाने का मोटा रस्सा। २ जलाने की लकड़ी आदि का भारी बोझ।

बरहीपीड़*†–संज्ञा पु० [सं० बर्हिपीड] मोर के परों का बना हुआ मुकुट। मोर-मुकुट।

बरहीमुख*†–संज्ञा पु० [सं० बर्हिमुख] देवता।

बरहोँ–संज्ञा पु० दे० "बरही"।

बरह्मंड–संज्ञा पु० दे० "ब्रह्मांड"।

बरह्मावना–क्रि० स० [सं० ब्रह्म+आपना] आशीर्वाद देना। असीस देना।

बरा–संज्ञा पु० [सं० वटी] उड़द की पीसी हुई दाल का बना हुआ एक प्रकार का पक्वान्न। बड़ा। संज्ञा पु० [?] भुजदंड पर पहनने का एक आभूषण। बहुँटा। टाँड़।

बराई–संज्ञा स्त्री० दे० "बड़ाई"।

बराक–संज्ञा पु० [सं० वराक] १ शिव। २ युद्ध। लड़ाई। वि० १ शोचनीय। २ नीच। अधम। ३ बापुरा। बेचारा।

बराट–संज्ञा स्त्री० [सं० वराटिका] कौड़ी।

बरात–संज्ञा स्त्री० [सं० वरयात्रा] वर पक्ष के लोग जो विवाह के समय वर के साथ कन्यावालों के यहाँ जाते हैं। जनेत।

बराती–संज्ञा पु० [हिं० बरात+ई (प्रत्य०)] बरात में वर के साथ कन्या के घर तक जानेवाला।

बराना–क्रि० अ० [सं० वारण] १ प्रसंग पड़ने पर भी कोई बात न कहना। बचाना। २ जान-बूझकर अलग करना। बचाना। ३ रक्षा करना। हिफाजत करना।

क्रि॰ स॰ [सं॰ वरण] बहुत सी चीजों में से कुछ चीज़ें चुनना। छाँटना।
†क्रि॰ स॰ दे॰ "बालना" (जलाना)।
बरावर–वि॰ [फ़ा॰ बर] १. मात्रा, गुण, मूल्य आदि के विचार से समान। तुल्य। एक सा। २. जिसकी सतह ऊँची-नीची न हो। समतल।
मुहा॰–बराबर करना = समाप्त कर देना।
क्रि॰ वि॰ १. लगातार। निरंतर। २. एक ही पंक्ति में। एक साथ। ३. साथ। (क्व॰) ४. सदा। हमेशा।
बराबरी–संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ बराबर + ई (प्रत्य॰)] १. बराबर होने की क्रिया या भाव। समानता। तुल्यता। २. सादृश्य। ३. मुकाबला। सामना।
बरामद–वि॰ [फ़ा॰] १. बाहर या सामने आया हुआ। २. खोई हुई, चोरी गई हुई या न मिलती हुई वस्तु जो कहीं से निकाली जाय।
संज्ञा स्त्री॰ १. दियारा। गंग-बरार। २. निकासी। आमदनी।
बरामदा–संज्ञा पु॰ [फ़ा॰] १. मकानों में वह छाया हुआ लंबा भाग जो मकान की सीमा के कुछ बाहर निकला रहता है। बारजा। छज्जा। २. दालान। ओसारा।
बराय–अव्य॰ [फ़ा॰] वास्ते। लिये।
बरायन–संज्ञा पुं॰[सं॰ वर+आयन (प्रत्य॰)] लोहे का वह छल्ला जो ब्याह के समय दूल्हे के हाथ में पहनाया जाता है।
बराव–संज्ञा पुं॰ [हिं॰ बराना+आव (प्रत्य॰)] 'बराना' का भाव। बचाव। परहेज।
बरास–संज्ञा पु॰ [सं॰पोतास ?] एक प्रकार का कपूर। भीमसेनी कपूर।
बराह–संज्ञा पुं॰ दे॰ "वराह"।
क्रि॰ वि॰ [फ़ा॰] १. के तौर पर। २. जरिये से। द्वारा।
बरिया*–वि॰ [सं॰ बलिन्] बलवान्।
बरियाई†–क्रि॰ वि॰ [सं॰ बलात्] बलपूर्वक। हठात्। जबरदस्ती।
संज्ञा स्त्री॰ बलवान् होने का भाव।

बरियारा–संज्ञा पुं॰ [सं॰ बला] एक छोटा झाड़दार छतनारा पौधा। खिरेंटी। बीजबध। बनमेथी।
बरिल†–संज्ञा पुं॰ [हिं॰ बड़ा, बरा] पकौड़ी या बड़े की तरह का एक पकवान।
बरिबंड*–वि॰ दे॰ "बरबंड"।
बरिषा*–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "वर्षा"।
बरिस†–संज्ञा पुं॰ [सं॰वर्ष] वर्ष। साल।
बरी–संज्ञा स्त्री॰[सं॰ वटी] १. गोल टिकिया। बटी। २ उर्द या मूँग की पीठी के सुखाये हुए छोटे छोटे गोल टुकड़े।
वि॰ [फ़ा॰] मुक्त। छूटा हुआ।
*‡वि॰ दे॰ "बली"।
बरीस‡–संज्ञा पु॰ दे॰ "वर्ष"।
बरीसना–क्रि॰ अ॰ दे॰ "बरसना"।
बरु†*–अव्य॰ [सं॰ वर=श्रेष्ठ, भला] भले ही। चाहे। कुछ हर्ज नहीं।
संज्ञा पुं॰ दे॰ "वर"।
बरुआ†–संज्ञा पुं॰ [सं॰ वटुक] १. वटु। ब्रह्मचारी। २. ब्राह्मणकुमार। ३. उपनयन।
बरुक†–अव्य॰ दे॰ "वरु"।
बरुनी–संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ वरण = ढाँकना] पलक के किनारे पर के बाल।
बरुथी–संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ वरुथ] एक नदी जो सई और गोमती के बीच में है।
बरेंड़ा–संज्ञा पुं॰ [सं॰ वरंडक] १. लकड़ी का वह मोटा गोल लट्ठा जो खपरैल या छाजन की लंबाई के बल रहता है। २. छाजन या खपरैल के बीचोबीच का सबसे ऊँचा भाग।
बरे*†–क्रि॰ वि॰ [सं॰ बल] १. जोर से। बलपूर्वक। २. जबरदस्ती से। ३. ऊँची आवाज से। ऊँचे स्वर से।
अव्य॰ [सं॰ वर्त्त] १. पलटे में। २. वास्ते।
बरेखी–संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ बाँह + रखना] स्त्रियों का भुजा पर पहनने का एक गहना।
संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ वर + देखना, बरदेखी] विवाह-संबंध के लिए वर या कन्या देखना। विवाह की ठहरौनी।
बरेषी–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "बरेखी"।

बरोक–संज्ञा पुं० [हिं० बर+रोक] वह द्रव्य जो कन्यापक्ष से वरपक्ष को संबंध पक्का करने के लिये दिया जाता है। वरच्छा। फलदान।
*संज्ञा पुं० [सं० बलौघ] सेना।
क्रि० वि० [सं० बलौघ] बलपूर्वक।
बरोठा–संज्ञा पुं० [सं० द्वार+कोष्ठ, हिं० बार+कोठा] १ ड्योढ़ी। पौरी। २ बैठक। दीवानखाना।
मुहा०—बरोठे का चार=द्वारपूजा।
बरोह*–वि० दे० "बरोक"।
बरोह–संज्ञा स्त्री० [सं० वट+रोह=उगने-वाला] बरगद के पेड़ के ऊपर की डालियों में टँगी हुई वह शाखा जो जमीन पर जाकर जम जाती है। बरगद की जटा।
बरौठा‡–संज्ञा पुं० दे० "बरोठा"।
बरौनी†–संज्ञा स्त्री० दे० "बरनी"।
बरौरी†–संज्ञा स्त्री० [हिं० बड़ी, बरी] बड़ी या बरी नाम का पकवान।
बर्क–संज्ञा स्त्री० [अ०] बिजली। विद्युत्।
वि० तेज। चालाक।
बर्ज–वि० दे० "वर्ज्य"।
बर्जना–क्रि० स० दे० "बरजना"।
बर्णना*–क्रि० स० [हिं० वर्णन] वर्णन करना। बयान करना।
बर्तना–क्रि० स० दे० "बरतना"।
बर्ण*–संज्ञा पुं० दे० "वर्ण"।
बर्फ–संज्ञा स्त्री० [फा०] १ हवा में मिली हुई भाप के अत्यन्त सूक्ष्म अणुओं की तह जो वातावरण की ठंढक के कारण जमीन पर गिरती है। २ बहुत अधिक ठंढक के कारण जमा हुआ पानी जो ठोस और पार-दर्शी होता है। ३ मशीनों आदि अथवा कृत्रिम उपायों से जमाया हुआ पानी जिससे पीने के लिए जल आदि ठंढा करते हैं। ४ कृत्रिम उपायों से जमाया हुआ दूध या फलों आदि का रस। ५ दे० "ओला"।
बर्फिस्तान–संज्ञा पुं० [फा०] वह स्थान जहाँ बर्फ ही बर्फ हो।
बर्फी–संज्ञा स्त्री० दे० "बरफी"।
बर्बर–संज्ञा पुं० [सं०] १ घुँघराले बाल। २ वर्णाश्रम-विहीन असभ्य मनुष्य। जंगली आदमी। ३ अस्त्रों की झनकार।
वि० १ जंगली। असभ्य। २ उद्दंड।
बर्बरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वनतुलसी। २ ईंगुर। ३ पीत चंदन।
बर्राक–वि० [अ०] १ चमकीला। जग-मगाता हुआ। २ तेज। तीव्र। ३ चतुर। चालाक। ४ बहुत उजला। धवल। सफेद। ५ पूर्ण रूप से अभ्यस्त।
बर्राना–क्रि० अ० [अनु० बरबर] १ व्यर्थ बोलना। फजूल बकना। २ नींद या बेहोशी में बकना।
बर्रे†–संज्ञा पुं० [सं० वरवट] भिड़ नाम का कीड़ा। तितैया।
बलद–वि० [फा०] [संज्ञा बलंदी] ऊँचा।
बल—संज्ञा पुं० [सं०] १ शक्ति। सामर्थ्य। ताकत। ज़ोर। बूता। २ भार उठाने की शक्ति। सभार। ३ आश्रय। सहारा। ४ आसरा। भरोसा। बिर्ता। ५ सेना। फौज। ६ पार्श्व। पहलू।
संज्ञा पुं० [सं० वलि] १ ऐंठन। मरोड़। २ फेरा। लपेट। ३ लहरदार घुमाव।
मुहा०—बल खाना=घुमाव के साथ टेढ़ा होना। कुंचित होना।
४ टेढ़ापन। कज। खम। ५ सिकुड़न। शिकन। गुलझट। ६ लचक। झुकाव।
मुहा०—बल खाना=लचकना। झुकना।
७ कसर। कमी। अंतर।
मुहा०—बल खाना=घाटा सहना। हानि सहना। बल पड़ना=अंतर होना। फ़र्क रहना।
बलकट–वि० [?] पेशगी। अगाऊ।
बलकना–क्रि० अ० [अनु०] १ उबलना। खौलना। २ उमगना। जोश में होना।
बलकारक–वि० [सं०] बलजनक।
बलकल*‡–संज्ञा पुं० दे० 'वल्कल'।
बलकाना†–क्रि० स० [हिं० बलकना] १ उबालना। खौलाना। २ उभारना। उमगाना। उत्तेजित करना।

बलग़म–संज्ञा पुं० [अ०] [वि० बलग़मी] श्लेष्मा। कफ।
बलद–संज्ञा पुं० [सं०] बैल।
बलदाऊ, बलदेव–संज्ञा पुं० दे० "बलराम"।
बलना–क्रि० अ० [सं० वर्हण या ज्वलन] जलना। लपट फेंककर जलना। दहकना।
बलबलाना–क्रि० अ० [अनु०] १. ऊँट का बोलना। २. व्यर्थ बकना।
बलबलाहट–संज्ञा स्त्री० [हिं० बलबलाना] १. ऊँट की बोली। २. व्यर्थ अहंकार।
बलबीर*–संज्ञा पुं० [हिं० बल=बलराम+बीर=भाई] बलराम के भाई श्रीकृष्ण।
बलभद्र–संज्ञा पुं० [सं०] बलदेवजी।
बलभी–संज्ञा स्त्री० [सं० वलभि] मकान में सबसे ऊपरवाली कोठरी। चौबारा।
बलम*–संज्ञा पुं० [सं० वल्लभ] पति। नायक।
बलय*–संज्ञा पुं० दे० "वलय"।
बलराम–संज्ञा पुं० [सं०] कृष्णचन्द्र के बड़े भाई जो रोहिणी से उत्पन्न हुए थे।
बलवंड*–वि० [सं० बलवंतः] बली।
बलवंत–वि० [सं० बलवंतः] बलवान्।
बलवा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. दंगा। हुल्लड़। खलबली। विप्लव। २. बगावत। विद्रोह।
बलवाई–संज्ञा पुं० [फ़ा० बलवा+ई (प्रत्य०)] १. बलवा करनेवाला। विद्रोही। २. उपद्रवी।
बलवान्–वि० [सं०] [स्त्री० बलवती] १. मजबूत। ताक़तवर। २. सामर्थ्यवान्।
बलशाली–वि० दे० "बलवान्"।
बलशील–वि० [सं०] बली। शक्तिवाला।
बला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ *बरियारा नामक* क्षुप। २. वैद्यक के अनुसार पौधों की एक जाति। ३. पृथिवी। ४. लक्ष्मी।
संज्ञा स्त्री० [अ०] १. आपत्ति। विपत्ति। आफ़त। २. दुःख। कष्ट। ३. भूत-प्रेत या उसकी बाधा। ४. रोग। व्याधि।
मुहा०—बला का = घोर। अत्यंत।
बलाइ*–संज्ञा स्त्री० दे० "बलाय"।
बलाक–संज्ञा पुं० [सं०] बक। बगला।
बलाका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बगली। २. बगलों की पंक्ति।
बलाग्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. सेनापति। २. सेना का अगला भाग।
वि० बलशाली। बली।
बलाढ्य–वि० [सं० बलवान्] बली।
बलात्–क्रि० वि० [सं०] १. बलपूर्वक। ज़बरदस्ती से। २. हठात्। हठ से।
बलात्कार–संज्ञा पुं० [सं०] १. ज़बरदस्ती कोई काम करना। २. किसी स्त्री के साथ उसकी इच्छा के विरुद्ध संभोग करना।
बलाध्यक्ष–संज्ञा पुं० [सं०] सेनापति।
बलाय–संज्ञा स्त्री० दे० "बला"।
बलाह–संज्ञा पुं० [सं० वोल्लाह] बुलाह (घोड़ा)
बलाहक–संज्ञा पुं० [सं०] १. मेघ। बादल। २. एक दैत्य। ३. एक नाग। ४. शाल्मलिद्वीप का एक पर्वत। ५. एक प्रकार का बगला।
बलि–संज्ञा पुं० [सं०] १. मालगुज़ारी। कर। राजकर। २. उपहार। भेंट। ३. पूजा की सामग्री या उपकरण। ४. पंच-महायज्ञों में चौथा। भूतयज्ञ। ५. किसी देवता को उत्सर्ग किया हुआ कोई खाद्य पदार्थ। ६. भक्ष्य। अन्न। खाने की वस्तु। ७. चढ़ावा। नैवेद्य। भोग। ८. वह पशु जो किसी देवता के उद्देश्य से मारा जाय।
मुहा०—बलि चढ़ना = मारा जाना। बलि चढ़ाना = देवता के उद्देश्य से घात करना। बलि जाना = निछावर होना। बलिहारी जाना। मुहा०—बलि जाऊँ या बलि! = मैं तुम पर निछावर हूँ।
९. प्रह्लाद का पौत्र जो दैत्यों का राजा था।
संज्ञा स्त्री० [सं० वला = छोटी बहिन] सखी।
बलित*–वि० [हिं० बलि] १. बलिदान चढ़ाया हुआ। २. मारा हुआ। हत।
बलिदान–संज्ञा पुं० [सं०] १. देवता के उद्देश्य से नैवेद्यादि पूजा की सामग्री चढ़ाना। २. बकरे आदि पशु देवता के उद्देश्य से मारना।
बलिपशु–संज्ञा पुं० [हिं० बलि+पशु] वह पशु जो किसी देवता के उद्देश्य से मारा जाय।
बलिप्रदान–संज्ञा पुं० [सं०] बलिदान।

बलिया–वि० [हिं० बल] बलवान्।

बलिवर्द–संज्ञा पुं० [सं०] १ साँड़। २. बैल।

बलिवैश्वदेव–संज्ञा पुं० [सं०] पाँच महायज्ञों में से चौथा महायज्ञ। इसमें गृहस्थ पके हुए अन्न में से एक एक ग्रास भिन्न भिन्न स्थानों पर रखता है।

बलिष्ठ–वि० [सं०] अधिक बलवान्।

बलिहारना*–क्रि० स० [हिं० बलि+हारना] निछावर कर देना। कुर्बान कर देना।

बलिहारी–संज्ञा स्त्री० [हिं० बलि+हारना] प्रेम, भक्ति, श्रद्धा आदि के कारण अपने को उत्सर्ग कर देना। निछावर। कुर्बान।

मुहा०—बलिहारी जाना = निछावर होना। कुर्बान जाना। बलैया लेना। बलिहारी लेना = बलैया लेना। प्रेम दिखाना।

बली–वि० [सं० बलिन्] बलवान्।

बलीमुख*–संज्ञा पुं० [सं० बलिमुख] बंदर।

बलु*–अव्य० "बरु"।

बलुआ–वि० [हिं० बालू] [स्त्री० बलुई] जिसमें बालू मिला हो। रेतीला।

बलूच–संज्ञा पुं० एक जाति जिसके नाम पर देश का नाम बलूचिस्तान पड़ा है।

बलूची–संज्ञा पुं० [देश०] बलूचिस्तान का निवासी।

बलूत–संज्ञा पुं० [अं०] माजूफल की जाति का एक पेड़।

बलैया–संज्ञा स्त्री० [अ० बला, हिं० बलाय] बला। बलाय।

मुहा०—(किसी की) बलैया लेना = अर्थात् किसी का रोग, दुःख अपने ऊपर लेना। मंगल-कामना करते हुए प्यार करना।

बल्कि–अव्य० [फा०] १ अन्यथा। इसके विरुद्ध। प्रत्युत। २ और अच्छा है। बेहतर है।

बल्लम–संज्ञा पुं० [सं० बल, हिं० बल्ला] १ छड़ बल्ला। २ सोटा। डंडा। ३ वह सुनहला या रुपहला डंडा जिसे चोबदार राजाओं के आगे लेकर चलते हैं। ४ बरछा।

बल्लमटेर–संज्ञा पुं० [अं० वालंटियर] १. स्वेच्छापूर्वक सेना में भरती होनेवाला। २. स्वेच्छा-सेवक। स्वयंसेवक।

बल्लमबर्दार–संज्ञा पुं० [हिं० बल्लम+फा० बर्दार] वह जो सवारी या बरात के साथ बल्लम लेकर चलता है।

बल्ला–संज्ञा पुं० [सं० बल] [स्त्री० अल्पा० बल्ली] १ लकड़ी का लंबा मोटा टुकड़ा। शहतीर या डंडा। २ मोटा डंडा। दंड। ३ वह डंडा जिससे नाव खेते हैं। डाँड़ा। ४ गेंद मारने का लकड़ी का डंडा। बैट।

बल्ली–संज्ञा स्त्री० [हिं० बल्ला] छोटा बल्ला। *संज्ञा स्त्री० दे० "बल्ली"।

बवँडरना†–क्रि० अ० [सं० व्यावर्त्तन] इधर-उधर घूमना। व्यर्थ फिरना।

बवंडर–संज्ञा पुं० [सं० वायु+मंडल] १ चक्र की तरह घूमती हुई वायु। चक्रवात। बगूला। २. आँधी। तूफान।

बवधूरा*–संज्ञा पुं० दे० "बवंडर"।

बवन*†–संज्ञा पुं० दे० "वमन"।

बवना*–क्रि० स० [सं० वपन] १ दे० "बोना"। २ छितराना। बिखराना। क्रि० अ० छितराना। बिखरना। संज्ञा पुं० दे० "वामन"।

बवरना–क्रि० अ० दे० "बौरना"।

बवासीर–संज्ञा स्त्री० [अ०] एक रोग जिसमें गुदेंद्रिय में मस्से उत्पन्न हो जाते हैं। अर्श।

बसंती–वि० [हिं० बसंत] १ बसंत का। बसंत-ऋतु-संबंधी। २ खुलते हुए पीले रंग का।

बसंदर–संज्ञा पुं० [सं० वैश्वानर] आग।

बस–वि० [फा०] प्रयोजन के लिए पूरा। पर्याप्त। भरपूर। बहुत। काफी। अव्य० १ पर्याप्त। काफी। अलम्। २ सिर्फ। केवल। इतना मात्र। संज्ञा पुं० दे० "वश"।

बसना–क्रि० अ० [सं० वसन] १ स्थायी रूप से स्थित होना। निवास करना। रहना। २ निवासियों से भरा पूरा होना। आबाद होना।

मुहा०—घर बसना = कुटुंब सहित सुखपूर्वक स्थिति होना। गृहस्थी का बनना। घर में बसना = सुखपूर्वक गृहस्थी में रहना।

३. टिकना। ठहरना। डेरा करना।
मुहा०—मन में बसना = ध्यान में बना रहना। स्मृति में रहना।
*४. बैठना।
क्रि० अ० [हिं० बासना] बासा जाना। सुगंधित होना। महक से भर जाना।
संज्ञा पुं० [सं० वसन=कपड़ा] १. वह कपड़ा जिसमें कोई वस्तु लपेटकर रखी जाय। वेष्टन। बेठन। २. थैली।
बसनि*‡–संज्ञा स्त्री० [हिं० बसना] रहन। निवास। वास।
बसवार–संज्ञा पुं० [हिं० बास] छौंक। बघार।
बसवास–संज्ञा पुं० [हिं० बसना + वास] १. निवास। रहना। २. रहने का ढंग। स्थिति। ३. रहने का सुभीता। निवास के योग्य परिस्थिति। ठिकाना।
बसर–संज्ञा पुं० [फ़ा०] गुजर। निर्वाह।
बसह–संज्ञा पुं० [सं० वृषभ] बैल।
बसा–संज्ञा स्त्री० दे० "वसा"।
संज्ञा स्त्री० [देश०] बर्रे। भिड़।
बसाना–क्रि० स० [हिं० बसना] १. बसने के लिए जगह देना। रहने को ठिकाना देना। २. जनपूर्ण करना। आबाद करना।
मुहा०—घर बसाना = गृहस्थी जमाना। सुख-पूर्वक कुटुंब के साथ रहने का ठिकाना करना।
३. टिकाना। ठहराना।
*क्रि० अ० १. बसना। ठहरना। रहना। २. दुर्गंध देना। बदबू करना।
क्रि० स० [सं० वेशन] १. बैठाना। २. रखना।
*क्रि० अ० [हिं० वश] वश या जोर चलना।
क्रि० अ० [हिं० बास] बास देना। महकना।
बसिऔरा–संज्ञा पुं० [हिं० बासी] १. वर्ष की कुछ तिथियाँ जिनमें स्त्रियाँ बासी भोजन खाती हैं। २. बासी भोजन।
बसीकत, बसीगत–संज्ञा स्त्री० [हिं० बसना] १. बस्ती। आबादी। २. बसने का भाव या क्रिया। रहन।
बसीकर–वि० [सं० वशीकर] वशीकर। वश में करनेवाला।
बसीकरन*–संज्ञा पुं० दे० "वशीकरण"।
बसीठ–संज्ञा पुं० [सं० अवसृष्ट] सँदेसा ले जानेवाला दूत।
बसीठी–संज्ञा स्त्री० [हिं० बसीठ] सँदेसा भुगताने का काम। दूतत्व।
बसौना†*–संज्ञा पुं० [हिं० बसना] रहायश। रहन।
बसूला–संज्ञा पुं० [सं० वासि+ल (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० बसूली] एक औजार जिससे बढ़ई लकड़ी छीलते और गढ़ते हैं।
बसेरा–वि० [हिं० बसना] बसनेवाला।
संज्ञा पुं० १. वह स्थान जहाँ रहकर यात्री रात बिताते हैं। टिकने की जगह। २. वह स्थान जहाँ पर चिड़ियाँ ठहरकर रात बिताती हैं।
मुहा०—बसेरा करना = १. डेरा करना। निवास करना। ठहरना। २ घर बनाना। बस जाना। बसेरा लेना = निवास करना। रहना। बसेरा देना = आश्रय देना।
३. टिकने या बसने का भाव। रहना।
बसेरी*–वि० [हिं० बसेरा] निवासी।
बसैया*†–वि० [हिं० बसना] बसनेवाला।
बसोबास–संज्ञा पुं० [हिं० वास + आवास] निवासस्थान। रहने की जगह।
बसौंधी–संज्ञा स्त्री० [हिं० बास+सौंधी] एक प्रकार की सुगंधित और लच्छेदार रबड़ी।
बस्ता–संज्ञा पुं० [फ़ा०] कपड़े का चौकोर टुकड़ा जिसमें कागज, वही या पुस्तकादि बाँधकर रखते हैं। बेठन।
बस्ती–संज्ञा स्त्री० [सं० वसति] १. बहुत से मनुष्यों का घर बनाकर रहने का भाव। आबादी। निवास। २. जनपद।
बस्साना–क्रि० अ० [हिं० बास] दुर्गंध देना।
बहँगी–संज्ञा स्त्री० [सं० विहंगिका] बोझ ले चलने के लिये तराजू के आकार का एक ढाँचा। काँवर।
बहकना–क्रि० अ० [हिं० बहना] १. भूल से ठीक रास्ते से दूसरी ओर जा पड़ना। मार्गभ्रष्ट होना। भटकना। २. ठीक

जा पड़ना। चूकना। ३ किसी की बात या भुलावे में आ जाना। ४ किसी बात में लग जाने के कारण शांत होना। बहलना (बच्चों के लिये)। ५ आपे में न रहना। रस या मद में चूर होना।
मुहा०—बहकी बहकी बातें करना = १ मदोन्मत्त की सी बातें करना। २ बहुत बढ़ी चढ़ी बातें करना।
बहकाना–क्रि० स० [हिं० बहकना] १ ठीक रास्ते से दूसरी ओर ले जाना या फेरना। रास्ता भुलवाना। भटकना। २ ठीक लक्ष्य या स्थान से दूसरी ओर कर देना। *लक्ष्यभ्रष्ट करना।* ३ भुलावा देना। भरमाना। बातों से फुसलाना। ४ (बातों से) शांत करना। बहलाना।
बहकावट–संज्ञा स्त्री० [हिं० बहकाना] बहकाने की क्रिया या भाव।
बहतोल*†–संज्ञा स्त्री० [हिं० बहता + ल (प्रत्य०)] जल बहाने की नाली। बरहा।
बहन–संज्ञा स्त्री० दे० "बहिन"।
संज्ञा स्त्री० [हिं० बहना] बहने की क्रिया या भाव।
बहना–क्रि० अ० [सं० वहन] १ द्रव वस्तुओं का किसी ओर चलना। प्रवाहित होना।
मुहा०—बहती गंगा में हाथ धोना = किसी ऐसी बात से लाभ उठाना जिससे सब लोग लाभ उठा रहे हों।
२ पानी की धारा में पड़कर जाना। ३ स्रवित होना। लगातार बूँद या धार के रूप में निकलकर चलना। ४ वायु का संचरित होना। हवा का चलना। ५ हट जाना। दूर होना। ६ ठीक लक्ष्य या स्थान से सरक जाना। फिसल जाना। ७ *मारा मारा फिरना*। ८ कुमार्गी होना। आवारा होना। बिगड़ना। ९ अधम या बुरा होना। १० गर्भपात होना। अड़ाना। (चौपाया के लिये) ११ बहुतायत से मिलना। सस्ता मिलना। १२ (रुपया आदि) डूब जाना। नष्ट हो जाना। १३ लादकर ले चलना। वहन करना। १४ खींचकर ले चलना। (गाड़ी आदि) १५ धारण करना। १६ उठना। चलना। १७ निर्वाह करना। निबाह करना।
बहनापा–संज्ञा पु० [हिं० बहिन + आपा (प्रत्य०)] बहिन का संबंध।
बहनी*–संज्ञा स्त्री० [सं० वह्नि] अग्नि। आग।
बहनु*–संज्ञा पु० [सं० वहन] सवारी।
बहनेली–संज्ञा स्त्री० [हिं० बहन] वह जिसके साथ बहन का संबंध स्थापित हो। (स्त्रियाँ)।
बहनोई–संज्ञा पु० [सं० भगिनीपति] बहिन का पति।
बहरा–वि० [सं० बधिर] [स्त्री० बहरी] जो कान से सुन न सके या कम सुने।
बहराना–क्रि० स० [हिं० भुराना] १ ऐसी बात कहना या करना जिससे दुःख की बात भूल जाय और चित्त प्रसन्न हो जाय। २ बहकाना। भगाना। फुसलाना।
बहरियाना†–क्रि० स० [हिं० बाहर + इयान (प्रत्य०)] १ बाहर की ओर करना। निकालना। २ अलग करना। जुदा करना।
क्रि० अ० १ बाहर की ओर होना। २ अलग होना। जुदा होना।
बहरी–संज्ञा स्त्री० [अ०] बाज की तरह की एक शिकारी चिड़िया।
बहल–संज्ञा स्त्री० दे० 'बहली'।
बहलना–क्रि० अ० [हिं० बहलाना] १ झंझट या दुःख की बात भूलना और चित्त का दूसरी ओर लगना। २ मनोरंजन होना। चित्त प्रसन्न होना।
बहलाना–क्रि० स० [फ़ा० बहाल] १ झंझट या दुःख की बात भुलवाकर चित्त दूसरी ओर ले जाना। २ मनोरंजन करना। चित्त प्रसन्न करना। ३ भुलावा देना। बातों में लगाना। बहकाना।
बहलाव–संज्ञा पु० [हिं० बहलना] बहलने की क्रिया या भाव। मनोरंजन। प्रसन्नता।
बहली–संज्ञा स्त्री० [सं० वहन] रथ के आकार की बैलगाड़ी। खड़खड़िया।
बहल्ला*–संज्ञा पु० [हिं० बहलना] आनंद।

बहस–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. वाद। दलील। तर्क। खंडन-मंडन की युक्ति। २. विवाद। झगड़ा। हुज्जत। ३. होड़। बाजी। बदाबदी।

बहसना*–क्रि० अ० [अ० बहस+ना] १. बहस करना। विवाद करना। तर्क-वितर्क करना। २. शर्त्त लगाना।

बहादुर–वि० [फ़ा०], [संज्ञा बहादुरी] १. उत्साही। साहसी। २. शूरवीर। पराक्रमी।

बहाना–क्रि० स० [हिं० बहना] १. द्रव पदार्थों को निम्नतल की ओर छोड़ना या गमन कराना। प्रवाहित करना। २. पानी की धारा में डालना। प्रवाह के साथ छोड़ना। ३. लगातार बूँद या धार के रूप में छोड़ना। ढालना। लुढ़ाना। ४. वायु संचालित करना। हवा चलाना। ५. व्यर्थ व्यय करना। खोना। गँवाना। †६. फेंकना। डालना। ७. सस्ता बेचना।
संज्ञा पुं० [फ़ा० बहानः] १. किसी बात से बचने या मतलब निकालने के लिए झूठ बात कहना। मिस। हीला। २. उक्त उद्देश्य से कही हुई झूठ बात। ३. कहने सुनने के लिए एक कारण। निमित्त।

बहार–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. वसंत ऋतु। २. मौज। आनंद। ३. यौवन का विकास। जवानी का रंग। ४. रमणीयता। सुहावनापन। रौनक़। ५. विकास। प्रफुल्लता। ६. मज़ा। तमाशा। कौतुक।

बहाल–वि० [फ़ा०] १. पूर्ववत् स्थित। ज्यों का त्यों। २. भला-चंगा। स्वस्थ। ३. प्रसन्न। खुश।

बहाली–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] पुनर्नियुक्ति। फिर उसी जगह पर मुकर्ररी।
†संज्ञा स्त्री० [बहलाना] बहाना। मिस।

बहाव–संज्ञा पुं० [हिं० बहना] १. बहने का भाव या क्रिया। प्रवाह। २. बहता हुआ जल आदि।

बहिः–अव्य० [सं० बहिस्] बाहर।

बहिक्रम*–संज्ञा पुं० [सं० वयःक्रम] अवस्था। उम्र।

बहित्र–संज्ञा पुं० [सं० वहित्र] नाव।

बहिन–संज्ञा स्त्री० [सं० भगिनी] माता की कन्या। भगिनी। बहना।

बहियाँ‡*–संज्ञा स्त्री० दे० "बाँह"।

बहिरंग–वि० [सं०] बाहरी। बाहरवाला। 'अंतरंग' का उलटा।

बहिर†*–वि० दे० "बहरा"।

बहिरत‡*–अव्य० [सं० बहिः] बाहर।

बहिर्गत–वि० [सं०] बाहर आया या निकला हुआ।

बहिर्भूमि–संज्ञा स्त्री० [सं०] बस्ती से बाहरवाली भूमि।

बहिर्मुख–वि० [सं०] विमुख। विरुद्ध।

बहिर्लापिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] काव्य-रचना में एक प्रकार की पहेली जिसमें उसके उत्तर का शब्द पहेली के शब्दों के बाहर रहता है, भीतर नहीं। अंतर्लापिका का उलटा।

बहिष्कार–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० बहिष्कृत] १. बाहर करना। निकालना। २. हटाना।

बहिष्कृत–वि० [सं०] बाहर किया हुआ। निकाला हुआ।

बही–संज्ञा स्त्री० [सं० बद्ध, हिं० बँधी?] हिसाब-किताब लिखने की पुस्तक।

बहीर–संज्ञा स्त्री० [हिं० भीड़] १. भीड़। जन-समूह। २. सेना के साथ साथ चलनेवाली भीड़ जिसमें साईस, सेवक, दूकानदार आदि रहते हैं। फ़ौज का लवाजमा। ३. सेना की सामग्री।
*‡अव्य० [सं० बहिस्] बाहर।

बहु–वि० [सं०] १. बहुत। अनेक। २. ज्यादा। अधिक।
संज्ञा स्त्री० दे० "बहू"।

बहुगुना–संज्ञा पुं० [हिं० बहु+गुण] चौड़े मुँह का एक गहरा बरतन।

बहुज्ञ–वि० [सं०] बहुत बातें जाननेवाला। अच्छा जानकार।

बहुटनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० बहुँटा] बाँह पर पहनने का एक गहना। छोटा बहुँटा।

बहुत–वि० [सं० बहुतर] १. एक दो से

अधिक। अनेक। २. जो मात्रा में अधिक हो। ३. यथेष्ट। बस। काफी।

मुहा०—बहुत अच्छा=स्वीकृति-सूचक वाक्य। बहुत करके=१. अधिकतर। ज्यादातर। बहुधा। प्रायः। २. अधिक संभव है। बीस बिस्वे। बहुत कुछ=कम नहीं। गिनती करने योग्य। बहुत खूब=१ वाह्। क्या कहना है! २ बहुत अच्छा।

क्रि० वि० अधिक परिमाण में। ज्यादा।

बहुतक†*–वि० [हि० बहुत+क] बहुत सा। बहुतेरे।

बहुता–संज्ञा स्त्री० [सं०] अधिकता। वि० बहुत। अधिक।

बहुताई–संज्ञा स्त्री० दे० "बहुतायत"।

बहुतात, बहुतायत–संज्ञा स्त्री० [हि० बहुत] अधिकता। ज्यादती।

बहुतेरा–वि० [हि० बहुत+एरा (प्रत्य०)] स्त्री० बहुतेरी] बहुत सा। अधिक। क्रि० वि० बहुत प्रकार से।

बहुतेरे–वि० [हि० बहुतेरा] संख्या में अधिक। बहुत से। अनेक।

बहुत्व–संज्ञा पुं० [सं०] अधिकता।

बहुदर्शिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] बहुत सी बातों की समझ। बहुज्ञता।

बहुदर्शी–संज्ञा पुं० [सं० बहुदर्शिन्] जिसने बहुत कुछ देखा हो। जानकार। बहुज्ञ।

बहुधा–क्रि० वि० [सं०] १ अनेक प्रकार से। २ बहुत करके। प्रायः। अक्सर।

बहुबाहु–संज्ञा पुं० [सं०] रावण।

बहुमत–संज्ञा पुं० [सं०] १. बहुत से लोगों की अलग अलग राय। २ बहुत से लोगों की मिलकर एक राय।

बहुमूत्र–संज्ञा पुं० [सं०] एक रोग जिसमें रोगी को मूत्र बहुत उतरता है।

बहुमूल्य–वि० [सं०] अधिक मूल्य का। कीमती। दामी।

बहुरंगा–वि० [हि० बहु+रंग] १ कई रंगों का। चित्र-विचित्र। २ बहुरूपधारी।

बहुरंगी–वि० [हि० बहुरंगा+ई] १ बहु-रूपिया। २ अनेक प्रकार के करतब या ठाट दिखलानेवाला।

बहुरना†–क्रि० अ० [सं० प्रघूर्णन] १. लौटना। वापस आना। २ फिर मिलना।

बहुरि*†–क्रि० वि० [हि० बहुरना] १. पुनः। फिर। २ इसके उपरान्त। पीछे।

बहुरिया†–संज्ञा स्त्री० [सं० वधूटी] नई बहू।

बहुरी†–संज्ञा स्त्री० [हि० भौरना=भूनना] भुना हुआ खड़ा अन्न। चर्वण। चबेना।

बहुरूपिया–संज्ञा पुं० [हि० बहु+रूप] वह जो तरह तरह के रूप बनाकर अपनी जीविका चलाता हो।

बहुल–वि० [सं०] अधिक। ज्यादा।

बहुलता–संज्ञा स्त्री० [सं०] अधिकता।

बहुली–संज्ञा स्त्री० [सं० बहुला] इलायची।

बहुवचन–संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण में वह शब्द जिससे एक से अधिक वस्तुओं के होने का बोध होता है। जमा।

बहुव्रीहि–संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण में छः प्रकार के समासों में से एक जिसमें दो या अधिक पदों के मिलने से जो समस्त पद बनता है, वह एक अन्य पद का विशेषण होता है।

बहुश्रुत–वि० [सं०] जिसने बहुत सी बातें सुनी हों। अनेक विषयों का जानकार।

बहुसंख्यक–वि० [सं०] गिनती में बहुत। अधिक।

बहूँटा–संज्ञा पुं० [सं० बाहुस्थ] [स्त्री० अल्पा० बहूँटी] बाँह पर पहनने का एक गहना।

बहू–संज्ञा स्त्री० [सं० वधू] १ पुत्रवधू। पतोहू। २ पत्नी। स्त्री। ३ दुलहिन।

बहूपमा–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह अर्थालंकार जिसमें एक उपमेय के एक ही धर्म से अनेक उपमान कहे जायँ।

बहेड़ा–संज्ञा पुं० [सं० विभीतक, प्रा० बहेडअ] एक बड़ा और ऊँचा जंगली पेड़ जिसके फल दवा के काम में आते हैं।

बहेतू–वि० [हि० बहना] इधर-उधर मारा मारा फिरनेवाला।

बहेरी*†–संज्ञा स्त्री० [हि० बहराना] बहाना। हीला।

बहेलिया–संज्ञा पुं० [सं० वध + हेला] पशु-पक्षियों को पकड़ने या मारने का व्यवसाय करनेवाला। व्याध। चिड़ीमार।
बहोर*†–संज्ञा पुं० [हि० बहुरना] फेरा। वापसी। पलटा।
क्रि० वि० दे० "बहोरि"।
बहोरना†–क्रि० स०[हि० बहुरना] लौटाना। वापस करना। फेरना।
बहोरि†*–अव्य० [हि० बहोर] पुनः। फिर।
बाँ–संज्ञा पु० [अनु०] गाय के बोलने का शब्द।
†संज्ञा पु० [हि० वेर] वार। दफा। वेर।
बाँक–संज्ञा स्त्री० [सं० वंक] १. भुजदंड पर पहनने का एक आभूषण। २. एक प्रकार का चाँदी का गहना जो पैरों में पहना जाता है। ३. हाथ में पहनने की एक प्रकार की पटरी या चौड़ी चूड़ी। ४. कमान। धनुष। ५. एक प्रकार की छुरी।
संज्ञा पु० टेढ़ापन। वक्रता।
वि० [सं० वक] १. टेढ़ा। घुमावदार। २. बाँका। तिरछा।
बाँकड़ी–संज्ञा स्त्री० [सं०वक + ड़ी (प्रत्य०)] बादले और कलाबत्तू का बना हुआ एक प्रकार का सुनहला या रुपहला फ़ीता।
बाँकडोरी–संज्ञा स्त्री० [हि० बाँक] एक प्रकार का शस्त्र।
बाँकना†–क्रि० स० [सं० वक] टेढ़ा करना।
†क्रि० अ० टेढ़ा होना।
बाँकपन–संज्ञा पु० [हि० बाँका+पन (प्रत्य०)] १. टेढ़ापन। तिरछापन। २. छैलापन। अलबेलापन। ३. छवि। शोभा।
बाँका–वि० [सं० वंक] १. टेढ़ा। तिरछा। २. बहादुर। वीर। ३. सुन्दर और बना ठना। छैला।
बाँकिया–संज्ञा पु० [सं० वक = टेढ़ा] नरसिंहा नाम का टेढा बाजा।
बाँकुर, बाँकुरा*†–वि० [हि० बाँका] १. बाँका। टेढ़ा। २. पैना। पतली धार का। ३. कुशल। चतुर।
बाँग–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. पुकार। चिल्लाहट २. वह ऊँचा शब्द या मंत्रोच्चारण जो नमाज़ का समय बताने के लिये मुल्ला मसजिद में करता है। अज़ान। ३. प्रातःकाल के समय मुर्गे के बोलने का शब्द।
बाँगड़–संज्ञा पुं० [देश०] हिसार, रोहतक और करनाल का प्रांत। हरियाना।
बाँगड़ू–संज्ञा स्त्री० [हि० बाँगड़] बाँगड़ प्रांत के जाटों की भाषा। जाटू। हरियानी।
बाँगुर–संज्ञा पु० [देश०] पशुओं या पक्षियों को फँसाने का जाल। फंदा।
बाँचना†–क्रि० स० [सं० वाचन] पढ़ना।
†क्रि० स० दे० "बचना"।
क्रि० स० [हि० बचाना] बचाना। छुड़ाना।
बाँछना†*–संज्ञा स्त्री० [सं० बांछा] इच्छा।
†क्रि० स० १. चाहना। इच्छा करना। २. चुनना। छाँटना।
बांछा*–संज्ञा स्त्री० [सं० वांछा] इच्छा।
बांछित*–वि० सं० वांछित] अभिलषित। इच्छित। जिसकी इच्छा की जाय।
बाँछी–संज्ञा पु० [सं० वांछिन्] अभिलाषा करनेवाला। चाहनेवाला।
बाँझ–संज्ञा स्त्री० [सं० बंध्या] वह स्त्री या मादा जिसे संतान होती ही न हो। बंध्या।
बाँझपन, बाँझपना–संज्ञा पु० [सं० बंध्या + पन (प्रत्य०)] बाँझ होने का भाव। बंध्यात्व।
बाँट–संज्ञा स्त्री० [हि० बाँटना का भाव] १. बाँटने की क्रिया या भाव। २. भाग।
मुहा०—बाँटे पड़ना = हिस्से में आना।
बाँटना–क्रि० स० [सं० वितरण] १. किसी चीज के कई भाग करके अलग अलग रखना। २. हिस्सा लगाना। विभाग करना। ३. थोड़ा थोड़ा सबको देना। वितरण करना।
बाँटा–संज्ञा पुं० [हि० बाँटना] १. बाँटने की क्रिया या भाव। २. भाग। हिस्सा।
बाँद†–संज्ञा पु० [फ़ा० बंदा] [स्त्री० बाँदी] सेवक। दास।

बाँदर–संज्ञा पुं० [सं० वानर] बंदर।

बाँदा–संज्ञा पुं० [सं० वंदाक] एक प्रकार की वनस्पति जो अन्य वृक्षों की शाखाओं पर उगकर पुष्ट होती है।

बाँदी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० बंदा] लौंडी। दासी

बाँदू–संज्ञा पुं० [सं० बंदी] बँधुवा। कैदी।

बाँध–संज्ञा पुं० [हिं० बाँधना=रोकना] नदी या जलाशय आदि के किनारे मिट्टी, पत्थर आदि का बना धुस्स। बंद।

बाँधना–क्रि० स० [सं० बंधन] १. कसने या जकड़ने के लिये किसी चीज़ के घेरे में लाकर गाँठ देना। २. कसने या जकड़ने के लिये रस्सी, कपड़ा आदि लपेटकर उसमें गाँठ लगाना। ३. कैद करना। पकड़कर बंद करना। ४. नियम, अधिकार, प्रतिज्ञा या शपथ आदि की सहायता से मर्य्यादित रखना। पाबंद करना। ५. मंत्र, तंत्र आदि की सहायता से शक्ति या गति आदि को रोकना। ६. प्रेम-पाश में बद्ध करना। ७ नियत करना। मुकर्रर करना। ८. पानी का बहाव रोकने के लिये बाँध आदि बनाना। ९. चूर्ण आदि को हाथों से दबाकर पिंड के रूप में लाना। १० मकान आदि बनाना। ११ उपक्रम करना। योजना करना। १२ क्रम या व्यवस्था आदि ठीक करना। १३. मन में बैठाना। स्थिर करना। १४. किसी प्रकार का अस्त्र या शस्त्र आदि साथ रखना।

बाँधनीपौरि*†–संज्ञा स्त्री० [हिं० बाँधना+पौरि] पशुओं के बाँधने का स्थान।

बाँधनूँ–संज्ञा पुं० [हिं० बाँधना] १. पहले से ठीक की हुई तरकीब या विचार। उपक्रम। मसूबा। २ कोई बात होनेवाली मानकर पहले से ही उसके संबंध में तरह तरह के विचार। ख़याली पुलाव। ३. झूठा दोष। तोहमत। कलंक। ४. मन से गढ़ी हुई बात। ५. कपड़े की रँगाई में वह बंधन जो रँगरेज़ चुनरी या लहरिएदार रँगाई आदि रँगने के लिये कपड़े में बाँधते हैं। ६. चुनरी या और कोई ऐसा वस्त्र जो इस प्रकार बाँधकर रँगा गया हो।

बांधव–संज्ञा पुं० [सं०] १. भाई। बंधु। २. नातेदार। रिश्तेदार। ३. मित्र। दोस्त।

बाँबी–संज्ञा स्त्री० [सं० वल्मीक] १. दीमकों का बनाया हुआ मिट्टी का भीटा। बँबीठा। २. साँप का बिल।

बाँवना*†–क्रि० स० [?] रखना।

बाँस–संज्ञा पुं० [सं० वंश] १. तृण जाति की एक प्रसिद्ध वनस्पति जिसके कांडों में थोड़ी थोड़ी दूर पर गाँठें होती हैं और गाँठों के बीच का स्थान प्रायः कुछ पोला होता है। इसकी छोटी-बड़ी अनेक जातियाँ होती हैं।

मुहा०—बाँस पर चढ़ना=बदनाम होना। बाँस पर चढ़ाना=१. बदनाम करना। २. बहुत बढ़ा देना। मिजाज बढ़ा देना। बहुत आदर करके धृष्ट या घमंडी बना देना। बाँसों उछलना=बहुत अधिक प्रसन्न होना।

२. एक नाप जो सवा तीन गज की होती है। लाठा। ३. नाव खेने की लग्गी। ४ पीठ के बीच की हड्डी। रीढ़।

बाँसपूर–संज्ञा पुं० [हिं० बाँस+पूरना] एक प्रकार का महीन कपड़ा।

बाँसली–संज्ञा स्त्री० हिं० बाँस+ली(प्रत्य०)] १. बाँसुरी। मुरली। २. जालीदार लंबी पतली थैली जिसमें रुपया-पैसा रखकर कमर में बाँधते हैं। हिमयानी।

बाँसा†–संज्ञा पुं० [सं० वंश=रीढ़] नाक के ऊपर की हड्डी जो दोनों नथनों के ऊपर बीचोबीच रहती है।

संज्ञा पुं० [सं० वंश] पीठ की रीढ़।

बाँसुरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० बाँस] बाँस का *बना हुआ प्रसिद्ध बाजा जो मुँह से फूँक*कर बजाया जाता है। बाँसुरी।

बाँह–संज्ञा स्त्री० [सं० बाहु] १. कंधे से निकलकर दंड के रूप में गया हुआ अंग जिसके छोर पर हथेली या पंजा होता है। भुजा। हाथ। बाहु।

मुहा०—बाँह गहना या पकड़ना=१.

किसी की सहायता करने के लिये हाथ बढ़ाना। सहारा देना। अपनाना। २. विवाह करना।
बाँह देना = सहारा देना।
यौ०—बाँह-बोल = रक्षा करने या सहायता देने का वचन।
२. बल। शक्ति। ३. सहायक।
मुहा०—बाँह टूटना = सहायक या रक्षक आदि का न रह जाना।
४. भरोसा। आसरा। सहारा। शरण।
५. एक प्रकार की कसरत जो दो आदमी मिलकर करते हैं। ६. कुरते, कोट आदि में वह मोहरीदार टुकड़ा जिसमें बाँह डाली जाती है। आस्तीन।
बा–संज्ञा पुं० [सं० वा = जल] जल। पानी।
संज्ञा पुं० [फ़ा० बार] बार। दफ़ा। मरतबा।
बाई–संज्ञा स्त्री० [सं० वायु] त्रिदोषों में से वात दोष। दे० "वात"।
मुहा०—बाई की झोंक = १. वायु का प्रकोप। २. आवेश। बाई चढ़ाना = १. वायु का प्रकोप होना। २. घमंड आदि के कारण व्यर्थ की बातें करना। बाई पचना = १. वायु का प्रकोप शांत होना। २. घमंड टूटना।
संज्ञा स्त्री० [हिं० बाबा, बाबी] १. स्त्रियों के लिये एक आदर-सूचक शब्द। २. एक शब्द जो उत्तरी प्रांतों में प्रायः वेश्याओं के नाम के साथ लगाया जाता है।
बाईस–संज्ञा पुं० [सं० द्वाविंशति] बीस और दो की संख्या या अंक। २२।
वि० जो बीस और दो हो।
बाईसी–संज्ञा स्त्री० [हिं० बाईस+ई (प्रत्य०)] बाईस वस्तुओं का समूह।
बाउ‡–संज्ञा पुं० [सं० वायु] हवा। पवन।
बाउर†–वि० [सं० वातुल] [स्त्री० बाउरी] १. बावला। पागल। २. सीधा-सादा। ३. मूर्ख। अज्ञान। ४. गूँगा।
बाएँ–क्रि० वि० [हिं० बायाँ] बाईं ओर। बाईं तरफ़।
बाकचाल†–वि० [सं० वाक् + चलना] बहुत अधिक बोलनेवाला। बक्की। बातूनी।
बाकना*‡–क्रि० अ० [सं० वाक्] बकना।
बाकल†–संज्ञा पुं० दे० "वल्कल"।
बाकला–संज्ञा पुं० [अ०] एक प्रकार की बड़ी मटर।
बाका*‡–संज्ञा स्त्री० [सं० वाक्] वाणी।
बाक़ी–वि० [अ०] जो बच रहा हो। अवशिष्ट। शेष।
संज्ञा स्त्री० १. गणित में दो संख्याओं या मानों का अंतर निकालने की रीति। २. घटाने के पीछे बची हुई संख्या या मान।
अव्य० लेकिन। मगर। परंतु।
संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का धान।
बाखरि*‡–संज्ञा स्त्री० दे० "बखरी"।
बाग़–संज्ञा पुं० [अ०] उद्यान। उपवन। वाटिका।
संज्ञा स्त्री० [सं० वल्गा] लगाम।
मुहा०—बाग मोड़ना = किसी ओर प्रवृत्त करना। किसी ओर घुमाना।
बागडोर–संज्ञा स्त्री० [हिं० बाग+डोर] लगाम।
बागना†–क्रि० अ० [सं० बक + चलना] चलना। फिरना। घूमना। टहलना।
‡क्रि० अ० [सं० वाक्] बोलना।
बाग़बान–संज्ञा पुं० [फ़ा०] माली।
बाग़बानी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] माली का काम।
बागर–संज्ञा पुं० [देश०] नदी-किनारे की वह ऊँची भूमि जहाँ तक नदी का पानी कभी पहुँचता ही नहीं।
बागल*†–संज्ञा पुं० [सं० बक] बगला। बक।
बागा–संज्ञा पुं० [फ़ा० बाग] अंगे की तरह का पुराने समय का एक पहनावा। जामा।
बाग़ी–संज्ञा पुं० [अ०] वह जो राज्य के विरुद्ध विद्रोह करे। राजद्रोही।
बागेसरी‡–संज्ञा स्त्री० [सं० वागीश्वरी] १. सरस्वती। २. एक प्रकार की रागिनी।
बाघंबर–संज्ञा पुं० [सं० व्याघ्रांबर] १. बाघ की खाल जिसे लोग बिछाने आदि के काम में लाते हैं। २. एक प्रकार का कंबल।
बाघ–संज्ञा पुं० [सं० व्याघ्र] शेर नाम का प्रसिद्ध हिंसक जंतु।
बाघी–संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की गिलटी जो अधिकतर गरमी के रोगियों के

पेड़ और जाँघ की सधि म होती है।

बाचना‡—क्रि० अ० [हि० बचना] बचना।
क्रि० स० बचाना। सुरक्षित रखना।

बाचा—सज्ञा स्त्री० [स० वाचा] १ बोलने की शक्ति। २ वचन। बातचीत। वाक्य। ३ प्रतिज्ञा। प्रण।

बाचाबध*—वि० [स० वाचा + बद्ध] जिसने किसी प्रकार का प्रण किया हो। प्रतिज्ञा-बद्ध।

बाछा—सज्ञा पु० [स० वत्स, प्रा० वच्छ] १ गाय का बच्चा। बछडा। २ लडका।

बाज—सज्ञा पु० [अ० बाज़] १ एक प्रसिद्ध शिकारी पक्षी। २ तीर में लगा हुआ पर।
प्रत्य० [फा०] एक प्रत्यय जो शब्दो के अत में लगकर रखने, खेलने, करने या शौक रखनेवाले आदि का अर्थ देता है। जैसे—दगाबाज, कबूतरबाज। नशेबाज।
वि० [फा०] वचित। रहित।
मुहा०—बाज आना = १ खोना। रहित होना। २ दूर होना। पास न जाना। बाज करना = रोकना। मना करना। बाज रखना = रोकना। मना करना।
वि० [अ० बअज] कोई कोई। कुछ। थोडे कुछ। विशिष्ट।
क्रि० वि० बगैर। बिना। (क्व०)
सज्ञा पु० [स० वाजिन्] घोडा।
सज्ञा पु० [स० वाद्य] १ वाद्य। बाजा। २ बजने या बाजे का शब्द।

बाजदावा—सज्ञा पु० [फा०] अपने दावे या स्वत्व से बाज आना।

बाजन*‡—सज्ञा पु० दे० "बाजा"।

बाजना—क्रि० अ० [हि० बजना] १ बाजे आदि का बजना। २ लडना। झगडना। ३ प्रसिद्ध होना। पुकारा जाना। ४ लगना। आघात पहुँचना।

बाजरा—सज्ञा पु० [स० वर्जरी] एक प्रकार की बडी घास जिसकी बालो के दानो की गिनती मोटे अन्नो में होती है। जोधरी।

बाजा—सज्ञा पु० [स० वाद्य] कोई ऐसा यत्र जो स्वर (विशेषत राग-रागिनी) उत्पन्न करने अथवा ताल देने के लिये बजाया जाता हो। बजाने का यत्र। वाद्य।
यौ०—बाजा-गाजा = अनेक प्रकार के बजते हुए बाजो का समूह।

बाजाब्ता—क्रि० वि० [फा०] जाब्ते के साथ। नियमानुकूल।
वि० जो नियमानुसार हो।

बाजार—सज्ञा पु० [फा०] १ वह स्थान जहाँ अनेक प्रकार के पदार्थों की दूकानें हों।
मुहा०—बाजार करना = चीज खरीदने के लिये बाजार जाना। बाजार गर्म होना = १ बाजार मे चीजों या ग्राहक आदि की अधिकता होना। २ खब काम चलना। बाजार तेज होना = १ बाजार म किसी चीज की माँग बहुत अधिक होना। २ किसी चीज का मूल्य वृद्धि पर होना। ३ काम जारो पर होना। खूब काम चलना। बाजार उतरना या मदा होना = १ बाजार म किसी चीज की माँग कम होना। २ दाम घटना। ३ कारबार कम चलना।
२ वह स्थान जहाँ किसी निश्चित समय या अवसर पर सब तरह की दूकान लगती हो। हाट। पैंठ।

बाजारी—वि० [फा०] १ बाजार-सबधी। बाजार का। २ मामूली। साधारण। ३ अशिष्ट।

बाजारू—वि० दे० "बाजारी"।

बाजि*‡—सज्ञा पु० [स० वाजिन्] १ घोडा। २ बाण। ३ पक्षी। ४ अडूसा।
वि० चलनेवाला।

बाजी—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ एसी शर्त जिसमें हार-जीत के अनुसार कुछ लेन-देन भी हो। शर्त। दाँव। बदान।
मुहा०—बाजी मारना = बाजी जीतना। दाँव जीतना। बाजी ले जाना = किसी बात में आगे बढ जाना। श्रेष्ठ ठहरना।
२ आदि से अत तक कोई ऐसा पूरा खेल जिसमें शर्त या दाँव लगा हो।
सज्ञा पु० [स० वाजिन्] घोडा।

बाजीगर—सज्ञा पु० [फा०] जादूगर।

बाजू—अव्य० स० वर्जन। मि० फा० बाज]

१. बिना। बगैर। २. अतिरिक्त। सिवा।
बाजू-संज्ञा पुं० [फ़ा० बाज़ू] १. भुजा। बाहु। बाँह। २. बाजूबंद नाम का गहना। ३. सेना का किसी ओर का एक पक्ष। ४. वह जो हर काम में बराबर साथ रहे और सहायता दे। ५. पक्षी का डैना।
बाजूबंद-संज्ञा पुं० [फ़ा०] बाँह पर पहनने का एक प्रकार का गहना। बाजू। बिजायठ। भुजबंद।
बाजूबीर†-संज्ञा पुं० दे० "बाजूबंद"।
बाझन*†-संज्ञा स्त्री० [हिं० बझना=फँसना] १. बझने या फसने का भाव। फसावट। २. उलझन। पेंच। ३, झंझट। बखेड़ा।
बाझना-क्रि० अ० दे० "बझना"।
बाट-संज्ञा पु० [सं० वाट] मार्ग। रास्ता। मुहा०—बाट करना = रास्ता खोलना। मार्ग बनाना। बाट जोहना। या देखना = प्रतीक्षा करना। आसरा देखना। बाट पड़ना = तंग करना। पीछे पड़ना। बाट पड़ना = डाका पड़ना। बाट पारना = डाका मारना। संज्ञा पु० [सं० वटक] १. बटखरा। २. पत्थर का वह टुकड़ा जिससे सिल पर कोई चीज़ पीसी जाय। बट्टा।
बाटना-क्रि० स० [हिं० बट्टा या बाट] सिल पर बट्टे आदि से पीसना। चूर्ण करना। क्रि० स० दे० "बटना"।
बाटिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बाग। फुलवारी। २. वह गद्य जिसमें कुसुम और गुच्छ गद्य मिला हो।
बाटी-संज्ञा स्त्री० [सं० बटी] १. गोली। पिंड। २. अंगारों या उपलों आदि पर सेंकी हुई एक प्रकार की रोटी। अँगा-कड़ी। लिट्टी। संज्ञा स्त्री० [सं० वर्तुल। मि० हिं० बटुआ] चौड़ा और कम गहरा कटोरा।
बाड़व-संज्ञा पुं० [सं०] बड़वाग्नि। वि० बड़वा-संबंधी।
बाड़वानल-संज्ञा पुं० दे० "बड़वानल"।
बाड़ा-संज्ञा पुं० [सं० वाट] १. चारों ओर से घिरा हुआ कुछ विस्तृत खाली स्थान। २. पशुशाला।
बाड़ी†-संज्ञा स्त्री० [सं० वारी] वाटिका।
बाढ़-संज्ञा स्त्री० [हिं० बढ़ना] १. बढ़ाव। वृद्धि। अधिकता। २. अधिक वर्षा आदि के कारण नदी या जलाशय के जल का बहुत अधिक मान में बढ़ना। जलप्लावन। सैलाब। ३. व्यापार आदि से होनेवाला लाभ। ४. बंदूक़ या तोप आदि का लगातार छूटना। मुहा०—बाढ़ दगना=तोप का लगातार छूटना। संज्ञा स्त्री० [सं० वाट] [हिं० बारी] तलवार छुरी आदि शस्त्रों की धार। सान।
बाढ़ना*†-क्रि० अ० दे० "बढ़ना"।
बाढ़ि*†-संज्ञा स्त्री० दे० "बाढ़"।
बाण-संज्ञा पु० [सं०] १. तीर। सायक। शर। २. गाय का थन। ३. आग। ४. निशाना। लक्ष्य। ५. पाँच की संख्या। ६. शर का अगला भाग।
बाणासुर-संज्ञा पु० [सं०] राजा बलि के सौ पुत्रों में सबसे बड़ा पुत्र जो बहुत गुणी और सहस्रबाहु था।
बाणिज्य-संज्ञा पुं० [सं०] व्यापार। रोज़गार। सौदागरी।
बात-संज्ञा स्त्री० [सं० वार्ता] १. सार्थक शब्द या वाक्य। कथन। वचन। वाणी। मुहा०—बात उठाना = १. कठोर वचन सहना। २. बात मानना। बात कहते = तुरत। झट। फौरन। बात काटना = १. किसी के बोलते समय बीच में बोल उठना। २. कथन का खंडन करना। बात की बात में = झट। फ़ौरन। तुरत। बात खाली जाना = प्रार्थना या कथन का निष्फल होना। बात टलना = कथन का अन्यथा होना। बात टालना = १. सुनी अनसुनी करना। २. कही हुई बात पर न चलना। बात न पूछना = कुछ भी कदर न करना। (किसी की) बात पर जाना = १. बात का ख़याल करना। बात पर ध्यान देना। २. कहने पर भरोसा करना। बात पूछना=१. खोज रखना। ख़बर लेना। २.कदर करना। बात बढ़ना=बात का विवाद

के रूप में हो जाना। झगड़ा होना। बात बढ़ाना= विवाद करना। झगड़ा करना। बात बनाना= झूठ बोलना। बहाना करना। बातें बनाना = १. झूठमूठ इधर-उधर की बातें कहना। २. बहाना करना। ३ खुशामद करना। बातों में उड़ाना=१. (किसी विषय को) हँसी में टालना। २. टालमटूल करना। बातों में लगाना=बातें कहकर उनमें लीन रखना।

२. चर्चा। जिक्र। प्रसंग।

मुहा०—बात उठाना=चर्चा चलाना। जिक्र करना। बात चलना या छिड़ना = प्रसंग आना। चर्चा छिड़ना। बात निकालना = बात चलाना। बात पड़ना = चर्चा छिड़ना।

३. खबर। अफवाह। किंवदन्ती। प्रवाद।

मुहा०—बात उड़ना = चारों ओर चर्चा फैलना। बात गहना=चारों ओर चर्चा फैलना।

४ माजरा। हाल। व्यवस्था।

मुहा०—बात का बतंगड़ करना=साधारण विषय या छोटे से मामले को व्यर्थ बहुत पेचीला या भारी बना देना। बात न पूछना = दशा पर ध्यान न देना। परवा न रखना। बात बढ़ना=किसी प्रसंग या घटना का घोर रूप धारण करना। बात बनना = १ काम बनना। प्रयोजन सिद्ध होना। २ अच्छी परिस्थिति होना बोल बाला होना। बात बनाना या सँवारना= काम बनाना। कार्य सिद्ध करना। बात बात पर या बात बात में=प्रत्येक प्रसंग पर। हर काम में। बात बिगड़ना=काम चौपट होना। मामला खराब होना। विफलता होना।

५ घटित होनेवाली अवस्था। प्राप्त संयोग। परिस्थिति। ६ संदेश। सँदेसा। पैगाम।

७ वार्त्तालाप। गप-शप। वाग्विलास।

मुहा०—बातों बातों में = बातचीत करते हुए। कथोपकथन के बीच में।

८ कोई मामला तै करने के लिये उसके संबंध में चर्चा।

मुहा०—बात ठहरना = १ विवाह संबंध स्थिर होना। २ किसी प्रकार का निश्चय होना। ९ फँसाने या धोखा देने के लिये कहे हुए शब्द या किए हुए व्यवहार।

मुहा०—बातों में आना या जाना = वचन या व्यवहार से धोखा खाना।

१०. झूठ या बनावटी कथन। मिस। बहाना। ११ वचन। प्रतिज्ञा। वादा।

मुहा०—बात का धनी पक्का या पूरा = प्रतिज्ञा का पालन करनेवाला। दृढ़प्रतिज्ञ। बात पक्की करना=१ दृढ़ निश्चय करना। २. प्रतिज्ञा या संकल्प पुष्ट करना। (अपनी) बात रखना=वचन पूरा करना। प्रतिज्ञा का पालन करना। बात हारना = वचन देना।

१२ साख। प्रतीति। विश्वास।

मुहा०—(किसी की) बात जाना = बात का प्रमाण न रहना (लोगों को)। एतबार न रह जाना। बात खोना = साख बिगाड़ना। बात बनना = साख रहना। विश्वास रहना।

१३ मान-मर्यादा। प्रतिष्ठा। इज्जत।

मुहा०—बात खोना=प्रतिष्ठा नष्ट करना। इज्जत गँवाना। बात जाना=इज्जत न रह जाना। बात बनना = प्रतिष्ठा प्राप्त होना।

१४ अपनी योग्यता, गुण इत्यादि के संबंध में कथन या वाक्य। १५ आदेश। उपदेश। सीख। नसीहत। १६ रहस्य। भेद। १७ तारीफ की बात। प्रशंसा का विषय। १८ चमत्कारपूर्ण कथन। उक्ति। १९ गूढ़ अर्थ। अभिप्राय। मानी।

मुहा०—बात पाना=छिपा हुआ अर्थ समझ जाना। गूढ़ार्थ जान जाना।

२० गुण या विशेषता। खूबी। २१ ढंग। ढब। तौर। २२ प्रश्न। सवाल। समस्या। २३ अभिप्राय। तात्पर्य्य। आशय। २४ कामना। इच्छा। चाह। २५ कथन का सार। तत्व। मर्म। २६ काम। कार्य्य। आचरण। व्यवहार। २७ संबंध। लगाव। तअल्लुक। २८. स्वभाव। गुण। प्रकृति। लक्षण। २९ वस्तु। पदार्थ। चीज़। विषय। ३० मूल्य। दाम। मोल। ३१ उचित पथ या उपाय। कर्त्तव्य।

संज्ञा पु० दे० "वात"।

बात-चीत—संज्ञा स्त्री० [हि० बात + चितन]

दो या कई मनुष्यों के बीच कथोपकथन। वार्त्तालाप।

बाती†–संज्ञा स्त्री० दे० "बत्ती"।

बातुल–वि० [सं० वातुल] पागल। सनकी।

बातूनिया, बातूनी–वि० [हिं० बात+ ऊनी (प्रत्य०)] बहुत बातें करनेवाला। बकवादी।

बाथ†–संज्ञा पुं० ?] गोद। अंक।

बाद–संज्ञा पुं० [सं० वाद] १. बहस। तर्क। २. विवाद। झगड़ा। हुज्जत। ३. झक-झक। तूल-कलामी। ४. शर्त्त। बाजी। मुहा०—बाद मेलना=बाजी लगाना। अव्य० [सं० वाद] व्यर्थ। निष्प्रयोजन। अव्य० [अ०] अनंतर। पीछे। वि० १. अलग किया या छोड़ा हुआ। २. दस्तूरी या कमीशन जो दाम में से काटा जाय। ३. अतिरिक्त। सिवाय। संज्ञा पुं० [फ़ा०] वात। हवा।

बादना–क्रि० अ० [सं० वाद+ना (प्रत्य०)] १.बकवाद करना। तर्क-वितर्क करना। २. हुज्जत करना। ३. ललकारना।

बादबान–संज्ञा पुं० [फ़ा०] पाल।

बादर†*–संज्ञा पुं० [सं० वारिद] बादल। मेघ। वि० [दिश०] आनंदित। प्रसन्न।

बादरायण–संज्ञा पुं० [सं०] वेदव्यास।

बादरिया†–संज्ञा स्त्री० दे० "बदली"।

बादल–संज्ञा पुं० [सं० वारिद, हिं० बादर] पृथ्वी पर के जल से उठी हुई वह भाप जो घनी होकर आकाश में छा जाती है और फिर पानी की बूंदों के रूप में गिरती है। मेघ। घन। मुहा०—बादल उठना या चढ़ना=बादलों का किसी ओर से समूह के रूप में बढ़ते हुए दिखाई पड़ना। बादल गरजना=मेघों के संघर्ष का घोर शब्द। बादल घिरना= मेघों का चारों ओर छाना। बादल छँटना= मेघों का खंड खंड होकर हट जाना।

बादला–संज्ञा पुं० [हिं० पतला ?] सोने या चाँदी का चिपटा चमकीला तार। कामदानी का तार।

बादशाह–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. राजा। शासक। २. सबसे श्रेष्ठ पुरुष। सरदार। ३. स्वतंत्र। मनमाना करनेवाला। ४. शतरंज का एक मुहरा। ५. ताश का एक पत्ता।

बादशाहत–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] राज्य। शासन।

बादशाही–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. राज्य। राज्याधिकार। २. शासन। हुकूमत। ३. मनमाना व्यवहार। वि० बादशाह-संबंधी।

बादहवाई–क्रि० वि० [फ़ा० बाद+अ० हवा] योंही। व्यर्थ। फ़जूल।

बादाम–संज्ञा पुं० [फ़ा०] मझोले आकार का एक वृक्ष जिसके छोटे फल मेवों में गिने जाते हैं।

बादामी–वि० [फ़ा० बादाम+ई (प्रत्य०)] १. बादाम के छिलके के रंग का। कुछ पीलापन लिए लाल। २. बादाम के आकार का। अंडाकार। संज्ञा पुं० १. एक प्रकार की छोटी डिबिया। २. किलकिला पक्षी। ३. बादाम के रंग का घोड़ा।

बादि–अव्य० [सं० वादि] व्यर्थ। फ़ज़ूल।

बादी–वि० [फ़ा०] १. वायु-संबंधी। २. वायुविकार-संबंधी। वायु या वात का विकार-उत्पन्न करनेवाला। संज्ञा स्त्री० वातविकार। वायु का दोष।

बाध–संज्ञा पुं० [सं०] १. बाधा। रुकावट। अड़चन। २. पीड़ा। कष्ट। ३. कठिनता। मुश्किल। ४. अर्थ की असंगति। व्याघात। ५. वह पक्ष जिसमें साध्य का अभाव सा हो। (न्याय) †संज्ञा पुं० [सं० बद्ध] मूंज की रस्सी।

बाधक–संज्ञा पुं० [सं०] १. रुकावट डालने-वाला। विघ्नकर्ता। २. दुःखदायी।

बाधकता–संज्ञा स्त्री० [सं०] बाधा।

बाधन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० बाधित, बाध-नीय, बाध्य] १. रुकावट या विघ्न डालना। २. कष्ट देना।

बाधना–क्रि० स० [सं० बाधन] बाधा

डालना। रुकावट डालना। रोकना।

बाधा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विघ्न। रुकावट। रोक। अड़चन। २ संकट। कष्ट।

बाधित—वि० [सं०] १ जो रोका गया हो। बाधायुक्त। २ जिसके साधन में रुकावट पड़ी हो। ३ जो तर्क से ठीक न हो। असंगत। ४ ग्रस्त। गृहीत।

बाध्य—वि० [सं०] १. जो रोका या दबाया जानेवाला हो। २. मजबूर होनेवाला।

बान—संज्ञा पु० [सं० बाण] १ बाण। तीर। २. एक प्रकार की आतशबाजी। ३ समुद्र या नदी की ऊँची लहर।
संज्ञा स्त्री० [हिं० बनना] १ बनावट। सजधज। वेश-विन्यास। २ आदत।
संज्ञा पु० [सं० वर्ण] आब। कांति।
संज्ञा पु० [सं० बाण] बाना। (हथियार)
संज्ञा पु० [?] गोला।

बानइत†—वि० दे० "बानैत"।
वि० [हिं० बाण] १ बाण चलानेवाला। २ योद्धा। वीर। बहादुर।

बानक—संज्ञा स्त्री० [हिं० बनाना] वेश। भेस। सज-धज।

बानगी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बयाना] नमूना।

बानर—संज्ञा पु० दे० "बंदर"।

बानरेंद्र—संज्ञा पु० [सं० वानरेंद्र] सुग्रीव।

बाना—संज्ञा पु० [हिं० बनाना] १ पहनावा। पोशाक। वेश-विन्यास। भेस। २ रीति। चाल। स्वभाव।
संज्ञा पु० [सं० बाण] १ तलवार के आकार का सीधा और दुधारा एक हथियार। २ साँग या भाले के आकार का एक हथियार।
संज्ञा पु० [सं० वयन=बुनना] १ बुनावट। बुनन। बुनाई। २ कपड़े की बुनावट जो ताने में की जाती है। ३ कपड़े की बुनावट में वह तागा जो आड़े बल ताने में जाता है। भरनी। ४ बारीक महीन सूत जिससे पतंग उड़ाई जाती है।
क्रि० स० [सं० व्यापन] किसी सिकुड़ने और फैलनेवाले छेद को फैलाना।

बानावरी*—संज्ञा स्त्री० [हिं० बान+आवरी (फा० प्रत्य०)] बाण चलाने की विद्या।

बानि—संज्ञा स्त्री० [हिं० बनना या बनाना] १ बनावट। सजधज। २ टेव। आदत।
संज्ञा स्त्री० [सं० वर्ण] चमक। आभा।
*संज्ञा स्त्री० [सं० वाणी] वाणी। वचन।

बानिक—संज्ञा स्त्री० [सं० वर्णक या हिं० बनना] वेश। भेस। सज-धज। बनाव-सिंगार।

बानिन—संज्ञा स्त्री० [हिं० बनिया] बनिये की स्त्री।

बानिया—संज्ञा पु० दे० "बनिया"।

बानी—संज्ञा स्त्री० [सं० वाणी] १ वचन। मुँह से निकला हुआ शब्द। २ मनौती। प्रतिज्ञा। ३ सरस्वती। ४ साधु-महात्मा का उपदेश। जैसे, कबीर की बानी। ५ बाना नामक हथियार। ६ गोला।
संज्ञा पु० [सं० वणिक्] बनिया।
संज्ञा स्त्री० सं० वर्ण] दमक। आभा।
संज्ञा पु० [अ०] चलानेवाला। प्रवर्त्तक।
संज्ञा स्त्री० दे० "वाणिज्य"।

बानैत—संज्ञा पु० [हिं० बाना+ऐत (प्रत्य०)] १ बाना फेरनेवाला। २ बाण चलानेवाला। तीरंदाज। ३. योद्धा। सैनिक।
संज्ञा पु० [हिं० बाना] बाना धारण करनेवाला।

बाप—संज्ञा पु० [सं० वाप=बीज बोनेवाला] पिता। जनक।
मुहा०—बाप-दादा=पूर्वज। पूर्व पुरुष। बाप-माँ=रक्षक। पालन करनेवाला।

बापिका*—संज्ञा स्त्री० दे० "वापिका"।

बापुरा—वि० [सं० बर्बर=तुच्छ] [स्त्री० बापुरी] १ जिसकी कोई गिनती न हो। तुच्छ। २ दीन। बेचारा।

बापू—संज्ञा पु० १ दे० "बाप"। २ दे० "बाबू"।

बाफ†—संज्ञा स्त्री० दे० "भाप"।

बाफ्ता—संज्ञा पु० [फा०] एक प्रकार का बूटीदार रेशमी कपड़ा।

बाब–संज्ञा पुं० [अ०] परिच्छेद। अध्याय।
बाबत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. संबंध। २. विषय।
बाबा–संज्ञा पुं० [तु०] १. पिता। २. पितामह। दादा। ३. साधु-संन्यासियों के लिये आदर-सूचक शब्द। ४. बूढ़ा पुरुष। संज्ञा पुं० [अ०] लड़कों के लिये प्यार का शब्द।
बाबी*†–संज्ञा स्त्री० [हिं० बाबा] १. साधु स्त्री। संन्यासिन। २. लड़कियों के लिये प्यार का शब्द।
बाबुल–संज्ञा पुं० [हिं० बाबू] बाबू।
बाबू–संज्ञा पुं० [हिं० बाबा] १. राजा के नीचे उनके बंधु-बांधवों या और क्षत्रिय जमींदारों के लिये प्रयुक्त शब्द। २. एक आदर-सूचक शब्द। भलामानुस। †३. पिता का संबोधन।
बाबूना–संज्ञा पुं० [फ़ा०] एक छोटा पौधा जिसके फूलों का तेल बनता है।
बाभन–संज्ञा पुं० दे० १. "ब्राह्मण"। २. दे० "भूमिहार"।
बाम–वि० दे० "वाम"।
संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. अटारी। कोठा। २. मकान के ऊपर की छत।
संज्ञा स्त्री० दे० "वामा"।
बायँ–वि० [सं० वाम] १. बायाँ। २. चूका हुआ। दावँ या लक्ष्य पर न बैठा हुआ।
मुहा०—बायँ देना = १. बचा जाना। छोड़ना। २.तरह देना। कुछ ध्यान न देना। ३. फेरा देना। चक्कर देना।
बाय†*–संज्ञा स्त्री० [सं० वायु] १. वायु। हवा। २. बाई। बात का कोप।
संज्ञा स्त्री० [सं० वापी] बावली। दहर।
बायक*–संज्ञा पुं० [सं० वाचक] १. कहनेवाला। बतलानेवाला। २. पढ़नेवाला। बाँचनेवाला। ३. दूत।
बायन*–संज्ञा पुं० [सं० वायन] १. वह मिठाई आदि जो उत्सवादि के उपलक्ष्य में इष्ट मित्रों के यहाँ भेजते हैं। २. भेंट। संज्ञा पुं० [अ० बयाना] बयाना। अगाऊ।
मुहा०—बायन देना = छेड़-छाड़ करना।
बायबिडंग–संज्ञा पुं० [सं० विडंग] एक लता जिसमें मटर के बराबर गोल फल लगते हैं जो औषध के काम आते हैं।
बायबी–वि० [सं० वायवीय] १. बाहरी। अपरिचित। अजनबी। २. नया आया हुआ।
बायाँ–वि० [सं० वाम] [स्त्री० बाईं] १. किसी प्राणी के शरीर के उस पार्श्व में पड़नेवाला जो उसके पूर्वाभिमुख खड़े होने पर उत्तर की ओर हो। 'दहिना' का उलटा।
मुहा०—बायाँ देना = १. किनारे से निकल जाना। बचा जाना। २.जान-बूझकर छोड़ना
२. उलटा। ३. विरुद्ध। खिलाफ़। अहित में प्रवृत्त।
संज्ञा पुं० वह तबला जो बायें हाथ से बजाया जाता है।
बायें–क्रि० वि० [हिं० बायाँ] १. बाईं ओर। २. विपरीत। विरुद्ध।
मुहा०—बायें होना = १. विरुद्ध होना। २. अप्रसन्न होना।
बारंबार–क्रि० वि० [सं० वारंवार] बारबार। पुनः पुनः। लगातार।
बार–संज्ञा पुं० [सं० द्वार] १. द्वार। दरवाजा। २. आश्रय-स्थान। ठिकाना। ३. दरबार।
संज्ञा स्त्री० [सं०] १. काल। समय। २. देर। बेर। विलंब। ३. दफ़ा। मरतबा।
मुहा०—बार बार = फिर फिर।
संज्ञा पुं० [सं० बाट] १. घेरा या रोक जो किसी स्थान के चारों ओर हो। बाढ़। २. किनारा। छोर। ३. धार। बाढ़।
†संज्ञा पुं० दे० "बाल"।
संज्ञा पुं० [फ़ा० मि० सं० भार] बोझ।
†वि० दे० "बाल" और "बाला"।
बारगह–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० बारगाह] १. डेवढ़ी। २. डेरा। खेमा। तंबू।
बारजा–संज्ञा पुं० [हिं० बार = द्वार] १. मकान के सामने दरवाजों के ऊपर पाटकर बढ़ाया हुआ बरामदा। २. कोठा। अटारी। ३. बरामदा। ४. कमरे के आगे का छोटा दालान।

बारतिय*—संज्ञा स्त्री० दे० "बार-स्त्री"।

बारदाना—संज्ञा पु० [फा०] १ व्यापार की चीजों के रखने का बरतन या थैला। २ फौज के खाने-पीने का सामान। रसद।

बारन*—संज्ञा पु० दे० "वारण"।

बारना—क्रि० अ० [सं० वारण] निवारण करना। मना करना। रोकना।

क्रि० स० [हिं० बरना] बालना। जलाना।

क्रि० स० दे० "वारना"।

बारवधू*—संज्ञा स्त्री० [सं० वारवधू] वेश्या।

बारबरदार—संज्ञा पु० [फा०] वह जो सामान ढोता हो। बोझ ढोनेवाला।

बारबरदारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] सामान ढोने का काम या मजदूरी।

बारमुखी—संज्ञा स्त्री० [सं० वारमुख्या] वेश्या।

बारह—वि० [सं० द्वादश] [वि० बारहवाँ] जो संख्या में दस और दो हो।

मुहा०—बारह बाट करना या घालना = तितर-बितर या छिन्न-भिन्न करना। इधर-उधर कर देना। बारह बाट जाना या होना = १ तितर बितर होना। २ नष्ट भ्रष्ट होना।

संज्ञा पु० बारह की संख्या या अंक। १२।

बारहखड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० द्वादश+अक्षरी] वर्णमाला का वह अंश जिसमें प्रत्येक व्यंजन में अ, आ, इ, ई उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं और अः इन बारह स्वरों को मात्रा के रूप में लगाकर, बोलने या लिखते हैं।

बारहदरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बारह+फा० दर] चारों ओर से खुली वह हवादार बैठक जिसमें बारह द्वार हों।

बारहवान—संज्ञा पु० [सं० द्वादशवर्ण] एक प्रकार का बहुत अच्छा सोना।

बारहबाना—वि० दे० "बारहबानी"।

बारहबानी—वि० [सं० द्वादश (आदित्य)+वर्ण, पा० बारस वण्ण] १ सूर्य के समान दमकवाला। २ खरा। चोखा। (सोने के लिये) ३ निर्दोष। सच्चा। ४ पूरा। पूर्ण। पक्का।

संज्ञा स्त्री० सूर्य की सी चमक।

बारहमासा—संज्ञा पु० [हिं० बारह+मास] वह पद्य या गीत जिसमें बारह महीनों की प्राकृतिक विशेषताओं का वर्णन किसी विरही के मुँह से कराया गया हो।

बारहमासी—वि० [हिं० बारह+मास] १ सब ऋतुओं में फलने या फूलनेवाला। सदाबहार। सदाफल। २ बारहों महीने होनेवाला।

बारहसिंगा—संज्ञा पु० [हिं० बारह+सींग] हिरन की जाति का एक प्रसिद्ध पशु।

बारहा—क्रि० वि० [फा० बार] बार बार। कई बार। अक्सर।

बारहों—संज्ञा स्त्री० [हिं० बारह] बच्चे के जन्म से बारहवाँ दिन, जिसमें उत्सव किया जाता है। बरही।

बारा—वि० [सं० बाल] बालक।

संज्ञा पु० बालक। लड़का।

बारात—संज्ञा स्त्री० [सं० वरयात्रा] किसी के विवाह में उसके घर के लोगों और इष्ट मित्रों का मिलकर वधू के घर जाना। वरयात्रा।

बारानी—वि० [फा०] बरसाती।

संज्ञा स्त्री० १ वह भूमि जिसमें केवल बरसात के पानी से फसल उत्पन्न होती हो। २ वह कपड़ा जो पानी से बचने के लिये बरसात में पहना या ओढ़ा जाता हो।

बारिगर*—संज्ञा पु० [हिं० बारी+गर] हथियारों पर बाढ़ रखनेवाला। सिकलीगर।

बारिधर—संज्ञा पु० [सं० वारिधर] १ बादल। वारिद। मेघ। २ एक वर्णवृत्त।

बारिश—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ वर्षा। वृष्टि। २ वर्षा ऋतु।

बारी—संज्ञा स्त्री० [सं० अवार] १ किनारा। तट। २ छोर पर का भाग। हाशिया। ३ बगीचे, खेत आदि के चारों ओर रोकने के लिये बनाया हुआ घेरा। बाड़। ४ बरतन के मुँह का घेरा। ओंठ। ५ पैनी वस्तु का किनारा। धार। बाढ़।

संज्ञा स्त्री० [सं० वाटी] १ वह स्थान जहाँ पेड़ लगाए गए हों। बगीचा। २ मेंड आदि से घिरा स्थान। क्यारी। ३ घर।

मकान। ४. खिड़की। झरोखा। ५. जहाजों के ठहरने का स्थान। बंदरगाह।
संज्ञा पुं० एक जाति जो अब पत्तल, दोने बनाती और सेवा करती है।
संज्ञा स्त्री० [हिं० बार] आगे पीछे के सिल-सिले के मुताबिक आनेवाला मौका। अव-सर। पारी।
मुहा०—बारी बारी से = काल-क्रम में एक के पीछे एक इस रीति से। बारी बँधना = आगे पीछे अलग अलग नियत समय होना।
संज्ञा स्त्री० [हिं० बार=छोटा] १. लड़की। कन्या। वह जो सयानी न हो। २. थोड़े वयस की स्त्री। नवयौवना।
†संज्ञा स्त्री० दे० "बाली"।
बारीक-वि० [फ़ा०] [संज्ञा बारीकी] १. महीन। पतला। २. बहुत ही छोटा। सूक्ष्म। ३. जिसके अणु बहुत ही छोटे या सूक्ष्म हों। ४. जिसकी रचना में दृष्टि की सूक्ष्मता और कला की निपुणता प्रकट हो। ५. जो बिना अच्छी तरह ध्यान से सोचे समझ में न आवे।
बारीकी-संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. महीनपन। पतलापन। २. गुण। विशेषता। खूबी।
बारू†-संज्ञा पुं० दे० "बालू"।
बारूद-संज्ञा स्त्री० [तु० बारूत] १. एक प्रकार का चूर्ण या बुकनी जिसमें आग लगने से तोप-बंदूक चलती है। दारू। २. एक प्रकार का धान।
मुहा०—गोली-बारूद = लड़ाई की सामग्री।
बारे-क्रि० वि० [फ़ा०] अंत को।
बारे में-अव्य० [फ़ा० बार: + हिं० में] प्रसंग में। विषय में। संबंध में।
बारोठा-संज्ञा पुं० [सं० द्वार] ब्याह की एक रस्म जो वर के द्वार पर आने पर होती है।
बाल-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० बाला] १. बालक। लड़का। २. नासमझ आदमी। ३. किसी पशु का बच्चा।
*संज्ञा स्त्री० दे० "बाला"।
वि० १. जो सयाना न हो। जो पूरी बाढ़ को न पहुँचा हो। २. जिसे उगे या निकले हुए थोड़ी ही देर हुई हो।
संज्ञा पुं० [सं०] सूत की सी वह वस्तु जो जंतुओं के चमड़े के ऊपर निकली रहती है और जो अधिकतर जंतुओं में इतनी अधिक होती है कि उनका चमड़ा ढका रहता है। लोम और केश।
मुहा०—बाल बाँका न होना = कुछ भी कष्ट या हानि न पहुँचना। बाल न बाँकना = बाल बाँका न होना। नहाते बाल न खिसकना=कुछ भी कष्ट या हानि न पहुँचना। (किसी काम में) बाल पकाना = (कोई काम करते करते) बुड्ढा हो जाना। बहुत दिनों का अनुभव प्राप्त करना। बाल बाल बचना =कोई आपत्ति पड़ने या हानि पहुँचने में बहुत थोड़ी कसर रह जाना।
संज्ञा स्त्री० [?] कुछ अनाजों के पौधों के डंठल का वह अग्रभाग जिसके चारों ओर दाने गुछे रहते हैं।
बालक-संज्ञा पुं० [सं०] १. लड़का। पुत्र। २. थोड़ी उम्र का बच्चा। शिशु। ३. अनजान आदमी। ४. हाथी या घोड़े का बच्चा। ५. बाल। केश।
बालकता-संज्ञा स्त्री० [सं०] लड़कपन।
बालकताई-संज्ञा स्त्री० [सं० बालकता + ई (प्रत्य०)] १. बाल्यावस्था। २. नासमझी।
बालकपन†-संज्ञा पुं० [सं० बालक + पन (प्रत्य०)] १. बालक होने का भाव। २. लड़कपन। नासमझी।
बालकृष्ण-संज्ञा पुं० [सं०] बाल्यावस्था के कृष्ण।
बालखिल्य-संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार ऋषियों का एक समूह जिसका प्रत्येक ऋषि अँगूठे के बराबर माना गया है।
बालगोविंद-संज्ञा पुं० दे० "बालकृष्ण"।
बालग्रह-संज्ञा पुं० [सं०] बालकों के प्राण-घातक नौ ग्रह।
बालछड़-संज्ञा स्त्री० [देश०] जटामासी।
बालटी-संज्ञा स्त्री० [अं० बकेट] एक प्रकार की डोलची जिसमें उठाने के लिये एक दस्ता लगा रहता है।

बालतंत्र–संज्ञा पु० [सं०] बालकों के लालन-पालन आदि की विद्या। कौमार-भृत्य। दायागिरी।
बालतोड़–संज्ञा पु० [हिं० बाल+तोड़ना] बाल टूटने के कारण होनेवाला फोड़ा।
बालधि–संज्ञा पु० [सं०] दुम। पूँछ।
बालना–क्रि० स० [सं० ज्वलन] १ जलाना। २. रोशन करना। प्रज्वलित करना।
बालपन–संज्ञा पु० [सं० बाल+पन (प्रत्य०)] १. बालक होने का भाव। २. लड़कपन।
बाल-बच्चे–संज्ञा पु० [सं० बाल+हिं० बच्चा] लड़के-बाले। संतान। औलाद।
बालबोध–संज्ञा स्त्री० [सं०] देवनागरी लिपि।
बालभोग–संज्ञा पु० [सं०] वह नैवेद्य जो देवताओं, विशेषत बालकृष्ण आदि की मूर्तियों के सामने प्रात काल रखा जाता है।
बालम–संज्ञा पु० [सं० वल्लभ] १ पति। स्वामी। २ प्रणयी। प्रेमी। जार।
बालम खीरा–संज्ञा पु० [हिं० बालम+खीरा] एक प्रकार का बड़ा खीरा।
बालमुकुंद–संज्ञा पु० [सं०] बाल्यावस्था के श्रीकृष्ण।
बाललीला–संज्ञा स्त्री० [सं०] बालकों के खेल। बालकों की क्रीड़ा।
बालविधु–संज्ञा पु० [सं०] शुक्ल पक्ष की द्वितीया का चंद्रमा।
बालसूर्य–संज्ञा पु० [सं०] प्रात काल के उगते हुए सूर्य।
बाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जवान स्त्री। बारह-तेरह वर्ष से सोलह-सत्रह वर्ष तक की अवस्था की स्त्री। २ पत्नी। भार्या। जोरू। ३ स्त्री। औरत। ४ दो वर्ष तक की अवस्था की लड़की। ५ पुत्री। कन्या। ६ हाथ में पहनने का कड़ा। ७ दस महाविद्याओं में से एक महाविद्या का नाम। ८ एक वर्णवृत्त।
वि० [फा०] जो ऊपर की ओर हो। ऊँचा।
मुहा०—बोल बाला रहना = सम्मान और आदर का सदा बढ़ा रहना।
संज्ञा पु० [हिं० बाल] जो बालकों के समान हो। अज्ञान। सरल। निश्छल।
यौ०—बाला भोला = बहुत ही सीधा सादा।
बालाई–संज्ञा स्त्री० दे० "मलाई"।
वि० [फा०] १ ऊपरी। ऊपर का। २. वेतन या नियत आय के अतिरिक्त।
बालाखाना–संज्ञा पु० [फा०] कोठे के ऊपर की बैठक। मकान के ऊपर का कमरा।
बालापन–संज्ञा पु० दे० "बालपन"।
बालाबर–संज्ञा पु० [फा०] एक प्रकार का अँगरखा।
बालार्क–संज्ञा पु० [सं०] १. प्रातःकाल का सूर्य। २ कन्या राशि में स्थित सूर्य।
बालि–संज्ञा पु० [सं०] पंपा, किष्किंधा का वानर राजा जो अंगद का पिता और सुग्रीव का बड़ा भाई था।
बालिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ छोटी लड़की। कन्या। २ पुत्री। बेटी।
बालिग–संज्ञा पु० [अ०] वह जो बाल्यावस्था को पार कर चुका हो। जवान। प्राप्त-वयस्क। नाबालिग का उलटा।
बालिश–संज्ञा स्त्री० [फा०] तकिया।
वि० [सं०] अबोध। अज्ञान। नासमझ।
बालिश्त–संज्ञा पु० दे० "बित्ता"।
बाली–संज्ञा स्त्री० [सं० बालिका] कान में पहनने का एक प्रसिद्ध आभूषण।
संज्ञा स्त्री० [हिं० बाल] जौ, गेहूँ आदि के पौधों की बाल।
संज्ञा पु० दे० "बालि"।
बालुका–संज्ञा स्त्री० [सं०] रेत। बालू।
बालू–संज्ञा पु० [सं० बालुका] चट्टानों आदि का वह बहुत ही महीन चूर्ण जो वर्षा के जल के साथ पहाड़ों पर से बह आता है और नदियों के किनारे पर, अथवा ऊसर जमीन या रेगिस्तानों में बहुत पाया जाता है। रेणुका। रेत।
मुहा०—बालू की भीत = ऐसी वस्तु जो शीघ्र ही नष्ट हो जाय अथवा जिसका भरोसा न हो।
बालूदानी–संज्ञा स्त्री० [हिं० बालू + फा० दानी] एक प्रकार की झँझरीदार डिबिया जिसमें लोग बालू रखते हैं। इस बालू से स्याही

सुखाने का काम लेते हैं।
बालूसाही—संज्ञा स्त्री० [हिं० बालू+शाही=अनुरूप] एक प्रकार की मिठाई।
बाल्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. बाल का भाव। लड़कपन। बचपन। २. बालक होने की अवस्था।
वि० १. बालक का। २. बचपन का।
बाल्यावस्था—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रायः सोलह सत्रह वर्ष तक की अवस्था। लड़कपन।
बाव—संज्ञा पुं० [सं० वायु] १. वायु। हवा। २. बाई। ३. अपान वायु। पाद।
बावड़ी—संज्ञा स्त्री० दे० "बावली"।
बावन—संज्ञा पुं० दे० "वामन"।
संज्ञा पुं० [सं० द्विपंचाशत] पचास और दो की संख्या। ५२।
वि० पचास और दो।
मुहा०—बावन तोले पाव रत्ती=जो हर तरह से बिलकुल ठीक हो। बिलकुल दुरुस्त। बावन बीर=बड़ा बहादुर और चालाक।
बावर*†—वि० दे० "बावला"।
संज्ञा पुं० [फ़ा०] यक़ीन। विश्वास।
बावरची—संज्ञा पुं० [फ़ा०] भोजन पकानेवाला। रसोइया। (मुसल०)
बावरचीख़ाना—संज्ञा पुं० [फ़ा०] भोजन पकने का स्थान। रसोईघर। (मुसल०)
बावरा—वि० दे० "बावला"।
बावला—वि० [सं० वातुल, प्रा० बाउल] १. पागल। विक्षिप्त। सनकी। २. मूर्ख।
बावलापन—संज्ञा पुं० [हिं० बावला+पन (प्रत्य०)] पागलपन। सिड़ीपन। झक।
बावली—संज्ञा स्त्री० [सं० वाप+ड़ी या ली (प्रत्य०)] १. चौड़े मुँह का कुआँ जिसमें पानी तक पहुँचने के लिये सीढ़ियाँ बनी हों। २. छोटा गहरा तालाब।
बावाँ*†—वि० [सं० वाम] १. बाईं ओर का। २. प्रतिकूल। विरुद्ध।
बाशिंदा—संज्ञा पुं० [फ़ा०] निवासी।
बाष्प—संज्ञा पुं० [सं० वाष्प] १. भाप। २. लोहा। ३. अश्रु। आँसू।
बासंतिक—वि० [सं०] १. वसंत ऋतु संबंधी। २. वसंत ऋतु में होनेवाला।
बास—संज्ञा पुं० [सं० वास] १. रहने की क्रिया या भाव। निवास। २. रहने का स्थान। निवास-स्थान। ३. बू। गंध। महक। ४. एक छंद का नाम। ५. वस्त्र। कपड़ा। पोशाक।
संज्ञा स्त्री० [सं० वासना] वासना। इच्छा।
संज्ञा पुं० [सं० वसन] छोटा कपड़ा।
संज्ञा स्त्री० [सं० वाशिः] १. अग्नि। आग। २. एक प्रकार का अस्त्र। ३. तेज धारवाली छुरी, चाकू, कैंची इत्यादि छोटे शस्त्र जो तोपों में भरकर फेंके जाते हैं।
बासकसज्जा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जो अपने पति या प्रियतम के आने के समय केलि-सामग्री सज्जित करे।
बासन—संज्ञा पुं० [?] बरतन। भाँड़ा।
बासना—संज्ञा स्त्री० दे० "वासना"।
[सं० वास] गंध। महक। बू।
क्रि० स० [सं० वास] सुगंधित करना। महकाना। सुवासित करना।
बासमती—संज्ञा पुं० [हिं० बास=महक+मती (प्रत्य०)] एक प्रकार का धान। इसका चावल पकने पर सुगंध देता है।
बासर—संज्ञा पुं० [सं० वासर] १. दिन। २. सबेरा। प्रातःकाल। सुबह। ३. वह राग जो सबेरे गाया जाता है।
बासव—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।
बाससी—संज्ञा पुं० [सं० वासस्] कपड़ा।
बासा—संज्ञा पुं० [सं० वास] वह स्थान जहाँ दाम देने पर पकी हुई रसोई मिलती है।
संज्ञा पुं० दे० "बास"।
बासी—वि० [सं० वास=गंध] १. देर का बना हुआ। जो ताजा न हो। (खाद्य पदार्थ) २. जो कुछ समय तक रखा रहा हो। ३. सूखा या कुम्हलाया हुआ।
मुहा०—बासी कढ़ी में उबाल आना=१. बुढ़ापे में जवानी की उमंग उठना। २. किसी बात का समय बिलकुल बीत जाने पर उसके संबंध में कोई वासना उत्पन्न होना।

बाहकी*–संज्ञा स्त्री० [सं० वाहक+ई(प्रत्य०)] पालकी ले चलनेवाली स्त्री। कहारिन।

बाहना–क्रि० स० [सं० वहन] १. ढोना, लादना या चढ़ाकर ले आना। २ चलाना। फेंकना। (हथियार) ३ गाड़ी, घोड़े आदि को हाँकना। ४ धारण करना। लेना। पकड़ना। ५ बहना। प्रवाहित होना। ६ खेत जोतना।

बाहनी*–संज्ञा स्त्री० [सं० वाहिनी] सेना।

बाहम–क्रि० वि० [फा] आपस में।

बाहर–क्रि० वि० [सं० बाह्य] १ किसी निश्चित अथवा कल्पित सीमा या मर्य्यादा से हटकर, अलग या निकला हुआ। भीतर या अंदर का उलटा।

मुहा०—बाहर आना या होना=सामने आना। प्रकट होना। बाहर करना=दूर करना। हटाना। बाहर बाहर=अलग या दूर से। बिना किसी को जताए।

२ किसी दूसरी जगह। अन्य नगर में।

मुहा०—बाहर का=बेगाना। पराया।

३ प्रभाव, अधिकार या संबंध आदि से अलग। ४ बगैर। सिवा। (क्व०)

बाहरजामी*†–संज्ञा पु० [सं० बाह्ययामी] ईश्वर का सगुण रूप। राम, कृष्ण इत्यादि।

बाहरी–वि० [हिं० बाहर+ई(प्रत्य०)] १ बाहर का। बाहरवाला। २ पराया। गैर। ३ जो आपस का न हो। अजनबी। ४ जो केवल बाहर से देखने भर को हो। ऊपरी।

बाहाँजोरी–क्रि० वि० [हिं० बाँह+जोड़ना] भुजा से भुजा मिलाकर। हाथ से हाथ मिलाकर।

बाहिज*–संज्ञा पु० [सं० बाह्य] ऊपर से। देखने में।

बाहिनी*–संज्ञा स्त्री० दे० "वाहिनी"।

बाहु–संज्ञा स्त्री० [सं०] भुजा। बाँह।

बाहुक–संज्ञा पु० [सं०] १ राजा नल का उस समय का नाम जब वे अयोध्या के राजा के सारथी बने थे। २ नकुल।

बाहुत्राण*–संज्ञा पु० [सं०] वह दस्ताना जो युद्ध में हाथों की रक्षा के लिये पहना जाता है।

बाहुबल–संज्ञा पु० [सं०] पराक्रम। बहादुरी।

बाहुमूल–संज्ञा पु० [सं०] कंधे और बाँह का जोड़।

बाहुयुद्ध–संज्ञा पु० [सं०] कुश्ती।

बाहुल्य–संज्ञा पु० [सं०] बहुतायत। अधिकता। ज्यादती।

बाहुहजार–संज्ञा पु० दे० "सहस्रबाहु"।

बाह्य–वि० [सं०] बाहरी। बाहर का। संज्ञा पु० [सं०] १ भार ढोनेवाला पशु। २ सवारी। यान।

बाह्लीक–संज्ञा पु० [सं०] काबोज के उत्तर प्रदेश का प्राचीन नाम। बलख।

बिंग*†–संज्ञा पु० दे० "व्यंग्य"।

बिंजन*†–संज्ञा पु० दे० "व्यंजन"।

बिंद*†–संज्ञा पु० [सं० बिंदु] १. पानी की बूँद। २ दोनों भवों के मध्य का स्थान। भ्रूमध्य। ३ वीर्य्य की बूँद। ४ बिंदी। माथे का गोल तिलक।

बिंदा–संज्ञा स्त्री० [सं० वृंदा] एक गोपी का नाम।

संज्ञा पु० [सं० बिंदु] माथे पर का गोल और बड़ा टीका। बेंदा। बुंदा।

बिंदी–संज्ञा स्त्री० [सं० बिंदु] १ सुन्ना। शून्य। सिफर। बिंदु। २ माथे पर का गोल छोटा टीका। बिंदुली। ३ इस आकार का कोई चिह्न।

बिंदुका–संज्ञा पु० दे० "बिंदी"।

बिंदुली–संज्ञा स्त्री० [सं० बिंदु] बिंदी। टिकुली।

बिंध†–संज्ञा पु० दे० "विन्ध्याचल"।

बिंधना–क्रि० अ० [सं० वेधन] १. बींधा जाना। छेदा जाना। २ फँसना।

बिंब–संज्ञा पु० [सं० बिंब] १ प्रतिबिंब। छाया। अक्स। २ कमडलु। ३ प्रतिमूर्ति। ४ कुँदरू नामक फल। ५ सूर्य्य या चन्द्रमा का मडल। ६ कोई मडल। ७ आभास। ८ एक प्रकार का छद।

संज्ञा पुं० दे० "बाँबी"।
बिंबा-संज्ञा पुं० [सं०] १. कुंदरू। २. बिंब। प्रतिच्छाया। ३. चंद्रमा या सूर्य का मंडल।
बिंबिसार-संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन राजा जो अजातशत्रु के पिता और गौतम बुद्ध के समकालीन थे।
बि*-वि० [सं० द्वि] दो। एक और एक।
बिअहुता‡-वि० [सं० विवाहित] १. जिसके साथ विवाह संबंध हुआ हो। २. विवाह-संबंधी। विवाह का।
बिआधि-संज्ञा स्त्री० दे० "व्याधि"।
बिआधु†-संज्ञा पुं० दे० "व्याध"।
बिआना-क्रि० स० [हिं० ब्याह] बच्चा देना। जनना (पशुओं के संबंध में)
बिकना-क्रि० अ० [सं० विक्रय] मूल्य लेकर दिया जाना। बेचा जाना। बिक्री होना।
मुहा०—किसी के हाथ बिकना = किसी का अनुचर, सेवक या दास होना।
बिकरम†-संज्ञा पुं० दे० "विक्रमादित्य"।
बिकरार‡-वि० [फ़ा० बेकरार] व्याकुल।
वि० [सं० विकराल] भयानक। डरावना।
बिकल†-वि० [सं० विकल] १. व्याकुल। घबराया हुआ। २. बेचैन।
बिकलाई†-संज्ञा स्त्री० [सं० विकल + आई (प्रत्य०)] व्याकुलता। बेचैनी।
बिकलाना†-क्रि० अ० [सं० विकल] व्याकुल होना। घबराना। बेचैन होना।
क्रि० स० व्याकुल करना। बेचैन करना।
बिकवाना-क्रि० स० [हिं० बिकना का प्रे०] बेचने का काम दूसरे से कराना।
बिकसना-क्रि० अ० [सं० विकसन] १. खिलना। फूलना। २. बहुत प्रसन्न होना।
बिकसाना-क्रि० अ० दे० "बिकसना"।
क्रि० स० १. विकसित करना। खिलाना। २. प्रसन्न करना।
बिकाऊ-वि० [हिं० बिकना+आऊ (प्रत्य०)] जो बिकने के लिये हो। बिकनेवाला।
बिकाना†-क्रि० अ० दे० "बिकना"।
बिकार*†-संज्ञा पुं० दे० "विकार"।
संज्ञा पुं० [सं० विकराल] विकट। भीषण।
बिकारी†-वि० [सं० विकार] १. जिसका रूप बिगड़कर और का और हो गया हो। २. बुरा। हानिकारक।
संज्ञा स्त्री० [सं० विकृत या वंक] एक प्रकार की टेढ़ी पाई जो अंकों आदि के आगे संख्या या मान सूचित करने के लिये लगाते हैं।
बिक्री-संज्ञा स्त्री० [सं० विक्रय] १. किसी पदार्थ के बेचे जाने की क्रिया या भाव। विक्रय। २ बेचने से मिलनेवाला धन।
बिख†-संज्ञा पुं० दे० "विष"।
बिखम-वि० दे० "विषम"।
बिखरना-क्रि० अ० [सं० विकीर्ण] छिन-राना। तितर-बितर हो जाना।
बिखराना-क्रि० स० दे० "बिखेरना"।
बिखेरना-क्रि० स० [हिं० बिखरना का स० रूप] इधर-उधर फैलाना। छितराना।
बिगड़ना-क्रि० अ० [सं० विकृत] १. किसी पदार्थ के गुण या रूप आदि में विकार होना। खराब हो जाना। २. किसी पदार्थ के बनते समय उसमें कोई ऐसा विकार होना जिससे वह ठीक न उतरे। ३. दुरवस्था को प्राप्त होना। खराब दशा में आना। ४. नीति-पथ से भ्रष्ट होना। बद-चलन होना। ५. क्रुद्ध होना। अप्रसन्नता प्रकट करना। ६. विरोधी होना। विद्रोह करना। ७. (पशुओं आदि का) अपने स्वामी या रक्षक के अधिकार से बाहर हो जाना। ८. परस्पर विरोध या वैमनस्य होना। ९. बेफ़ायदा खर्च होना।
बिगड़ैदिल-संज्ञा पुं० [हिं० बिगड़ना + फ़ा० दिल] १. हर बात में लड़ने-भगड़नेवाला। २. कुमार्ग पर चलनेवाला।
बिगड़ैल-वि० [हिं० बिगड़ना+ऐल (प्रत्य०) या बिगड़ैदिल] १. हर बात में बिगड़ने या क्रोध करनेवाला। २. हठी। जिद्दी।
बिगर†-क्रि० वि० दे० "बगैर"।
बिगरना-क्रि० अ० दे० "बिगड़ना"।
बिगराइल†-वि० दे० "बिगड़ैल"।
बिगसना*-क्रि० अ० दे० "बिकसना"।

बिगहा–संज्ञा पु० दे० "बीघा"।
बिगाड़–संज्ञा पुं० [हिं० बिगड़ना] १. बिगड़ने की क्रिया या भाव। २ खराबी। दोष। ३ वैमनस्य। झगड़ा। लड़ाई।
बिगाड़ना–क्रि० स० [सं० विकार] १ किसी वस्तु के स्वाभाविक गुण या रूप को नष्ट कर देना। २ किसी पदार्थ को बनाते समय उसमें ऐसा विकार उत्पन्न कर देना जिससे वह ठीक न उतरे। ३ दुरवस्था को प्राप्त कराना। बुरी दशा में लाना। ४. नीति या कुमार्ग में लगाना। ५ स्त्री का सतीत्व नष्ट करना। ६ बुरी आदत लगाना। ७ बहकाना। ८ व्यर्थ व्यय करना।
बिगाना†–वि० [फा०बेगाना] जिससे आपसदारी का कोई संबंध न हो। पराया। गैर।
बिगार†–संज्ञा पु० दे० "बिगाड़"।
बिगारि*†–संज्ञा स्त्री० दे० "बेगार"।
बिगारी–संज्ञा स्त्री० दे० "बेगारी"।
बिगास*†–संज्ञा पु० दे० "विकास"।
बिगासना–क्रि० स० [हिं० विकास] विकसित करना।
बिगिर*†–क्रि० वि० दे० "बगैर"।
बिगुन*†–वि० [सं० विगुण] जिसमें कोई गुण न हो। गुण-रहित।
बिगुर–वि० [हिं० वि+गुरु] जिसने किसी गुरु से शिक्षा न ली हो। निगुरा।
बिगुरचिन*†–संज्ञा स्त्री० दे० "बिगूचन"।
बिगुरदा*†–संज्ञा पु० [देश०] प्राचीन काल का एक प्रकार का हथियार।
बिगुल*†–संज्ञा पु० [अं०] अँगरेजी ढंग की एक प्रकार की तुरही जो प्राय सैनिकों को एकत्र करने के लिए बजाई जाती है।
बिगुलर*†–संज्ञा पु० [अं०] फौज में बिगुल बजानेवाला।
बिगूचन–संज्ञा स्त्री० [सं० विकुंचन अथवा विवेचन] १ वह अवस्था जिसमें मनुष्य किं-कर्त्तव्य विमूढ हो जाता है। असमंजस। अड़चन। २ कठिनता। दिक्कत।
बिगूचना–क्रि० अ० [सं० विकुंचन] १. अड़चन या असमंजस में पड़ना। २ दबाया जाना। पकड़ा जाना।
क्रि० स० [सं० विकुंचन] दबोचना। धर दबाना। छोप लेना।
बिगोना–क्रि० स० [सं० विगोपन] १ नष्ट करना। बिगाड़ना। २ छिपाना। दुराना। ३ तंग करना। दिक करना। ४ भ्रम में डालना। बहकाना। ५ बिताना।
बिग्गाहा–संज्ञा पु० [सं० विगाथा] आर्या छंद का एक भेद। उदगीति।
बिग्रह–संज्ञा पु० दे० "विग्रह"।
बिघटना–क्रि० स० [सं० विघटन] विनाश करना। बिगाड़ना। तोड़ना-फोड़ना।
बिघन–संज्ञा पु० दे० "विघ्न"।
बिघनहरन*†–वि० [सं०विघ्नहरण] विघ्न या बाधा को हटानेवाला।
संज्ञा पु० गणेश। गजानन।
बिच*†–क्रि० वि० दे० "बीच"।
बिचकाना–क्रि० अ० [अनु०] १ बिराना। चिढ़ाना। (मुँह) २ (मुँह को, स्वाद बिगड़ने के कारण) टेढ़ा करना। (मुँह) बनाना।
बिचच्छन*†–वि० दे० "विचक्षण"।
बिचरना–क्रि० अ० [सं० विचरण] १ इधर-उधर घूमना। चलना फिरना। २ यात्रा करना। सफर करना।
बिचलना–क्रि० अ० [सं० विचलन] १ विचलित होना। इधर-उधर हटना। २ हिम्मत हारना। ३ कहकर मुकरना।
बिचला–वि० [हिं० बीच+ला(प्रत्य०)] [स्त्री० बिचली] जो बीच में हो। बीच का।
बिचलाना*†–क्रि० स० [सं० विचलन] १ विचलित करना। डिगाना। २ हिला देना। ३ तितर-बितर करना।
बिचवान, बिचवानी–संज्ञा पु० [हिं० बीच+वान] बीच-बचाव करनेवाला। मध्यस्थ।
बिचहुत–संज्ञा पु० [हिं० बीच] अंतर। फरक। दुबधा। संदेह।
बिचारना*†–क्रि० अ० [सं० विचार+ना

(प्रत्य०)] १. विचार करना। सोचना। गौर करना। २. पूछना। प्रश्न करना।
बिचारमान–वि० [हिं० विचार] १. विचार करनेवाला। २. विचारने के योग्य।
बिचारा–वि० दे० "बेचारा"।
बिचारी*†–संज्ञा पुं०[सं०विचारिन्] विचार करनेवाला।
बिचाल*–संज्ञा पुं० [सं० विचाल] १. अलग करना। २. अंतर। फ़र्क।
बिचेत*†–वि० [सं० विचेतस्] १. मूर्च्छित। बेहोश। अचेत। २. बदहवास।
बिच्छित्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] शृंगार रस के ११ हावों में से एक जिसमें किंचित शृंगार से ही पुरुष को मोहित कर लिया जाना वर्णन किया जाता है।
बिच्छू–संज्ञा पु० [सं०वृश्चिक] १ एकप्रसिद्ध छोटा जहरीला जानवर। इसके अंतिम भाग में एक ज़हरीला डंक होता है। २ एक प्रकार की ज़हरीली घास।
बिच्छेप*†–संज्ञा पु० दे० "विक्षेप"।
बिछना–क्रि० अ० [सं० विस्तरण] बिछाना का अकर्मक रूप। बिछाया जाना।
बिछवाना–क्रि० स० [हिं० बिछाना का प्रे०] बिछाने का काम दूसरे से कराना।
बिछाना–क्रि० स० [सं० विस्तरण] १ (बिस्तर या कपड़े आदि को) ज़मीन पर उतनी दूर तक फैलाना, जितनी दूर तक फैल सके। २. किसी चीज़ को ज़मीन पर कुछ दूर तक फैला देना। बिखेरना। बिखराना। ३. (मार मारकर) ज़मीन पर गिरा या लेटा देना।
बिछावन†–संज्ञा पु० दे० "बिछौना"।
बिछिआ†–संज्ञा स्त्री० [हिं० बिच्छू + इया (प्रत्य०)] पैर की उँगलियों में पहनने का एक प्रकार का छल्ला।
बिछिप्त*†–वि० दे० "विक्षिप्त"।
बिछुआ–संज्ञा पुं० [हिं० बिच्छू] १. पैर में पहनने का एक गहना। २. एक प्रकार की छुरी। ३. एक प्रकार की करधनी।
बिछुड़न†–संज्ञा स्त्री० [हिं० बिछुड़ना] बिछुड़ने या अलग होने का भाव।
बिछुड़ना–क्रि० अ० [सं० विच्छेद] १. अलग होना। जुदा होना। २. प्रेमियों का एक दूसरे से अलग होना। वियोग होना।
बिछुरंता*†–संज्ञा पुं० [हिं० बिछुड़ना + अंता (प्रत्य०)] १. बिछुड़नेवाला। २. जो बिछुड़ गया हो।
बिछुरना*–क्रि० अ० दे० "बिछुड़ना"।
बिछूना*†–संज्ञा पुं० [हिं० बिछुड़ना] बिछड़ा हुआ। जो बिछड़ गया हो।
बिछोड़ा–संज्ञा पुं० [हिं० बिछड़ना] १. बिछड़ने की क्रिया या भाव। २. विरह।
बिछोय, बिछोह–संज्ञा पु० [हिं० बिछड़ना] बिछोड़ा। जुदाई। विरह। वियोग।
बिछौना–संज्ञा पु० [हिं० बिछाना] वह कपड़ा जो बिछाया जाता हो। बिछावन। बिस्तर।
बिजन*†–संज्ञा पु० [सं० व्यजन] छोटा पंखा। बेना।
वि० [सं० विजन] एकांत स्थान।
वि० जिसके साथ कोई न हो।
बिजयसार–संज्ञा पु० [सं० विजयसार] एक प्रकार का बहुत बड़ा जंगली पेड़।
बिजली–संज्ञा स्त्री० [सं० विद्युत्] १. एक प्रसिद्ध शक्ति जिसके कारण वस्तुओं में आकर्षण और अपकर्षण होता है और जिससे कभी कभी ताप और प्रकाश भी उत्पन्न होता है। विद्युत्। २. आकाश में सहसा उत्पन्न होनेवाला वह प्रकाश जो एक बादल से दूसरे बादल में जानेवाली वातावरण की बिजली के कारण उत्पन्न होता है। चपला।
मुहा०—बिजली गिरना या पड़ना = बिजली का आकाश से पृथ्वी की ओर बड़े वेग से आना और मार्ग में पड़नेवाली चीजों को जलाकर नष्ट करना। बिजली कड़कना = बिजली के विसर्जन के कारण आकाश में बहुत ज़ोर का शब्द होना।
३. आम की गुठली के अंदर की गिरी। ४.गले में पहनने का एक गहना। ५ कान में पहनने का एक गहना।

वि० १ बहुत अधिक चमक या तेज। २ बहुत अधिक चमकनेवाला।
बिजाती–वि० [सं० विजातीय] १ दूसरी जाति का। और जाति या तरह का। २ जाति से निकाला हुआ। अजाती।
बिजान*†–संज्ञा पु० [हिं० बि+ज्ञान] अज्ञान। अनजान।
बिजायठ–संज्ञा पु० [सं० विजय] बाँह पर पहनने का बाजूबंद। अंगद। भुजबंद। बाजू।
बिजुरी*†–संज्ञा स्त्री० दे० 'बिजली'।
बिजुखा, बिजखा‡–संज्ञा पु० [देश०] खेतों में पक्षियों आदि को डराकर दूर रखने के उद्देश्य से लकड़ी के ऊपर उलटी रखी हुई काली हाँडी।
बिजोग*†–संज्ञा पु० दे० 'वियोग'।
बिजोरा–वि० [सं० वि+फा० ज़ोर=ताकत] कमज़ोर। अशक्त। निर्बल।
बिजोहा–संज्ञा पु० दे० 'बिज्जुहा'।
बिजौरा–संज्ञा पु० [सं० बीजपूरक] नीबू की जाति का एक वृक्ष। इसके फल बड़ी नारंगी के बराबर होते हैं।
बिज्जु*‡–संज्ञा स्त्री० दे० 'बिजली'।
बिज्जुपात*‡–संज्ञा पु० [सं० विद्युत्पात] बिजली गिरना। वज्रपात।
बिज्जुल*‡–संज्ञा पु० [सं० बिज्जुल] त्वचा। छिलका।
संज्ञा स्त्री० [सं० विद्युत्] बिजली। दामिनी।
बिज्जू–संज्ञा पु० [देश०] बिल्ली के आकार प्रकार का एक जंगली जानवर। बीजू।
बिज्जुहा–संज्ञा पु० [?] एक वर्णिक वृत्त। बिमोहा। बिजोहा।
बिझुकना*–क्रि० अ० [हिं० भड़कना] १ भड़कना। २ डरना। भयभीत होना। ३ टेढ़ा होना। तनना।
बिझुकाना*–क्रि० स० [हिं० बिझुकना का स० रूप] १ भड़काना। २ डराना।
बिट–संज्ञा पु० [सं० विट] १ साहित्य में नायक का वह सखा जो सब कलाओं में निपुण हो। २ वैश्य। ३ नीच। खल।
बिटरना–क्रि० अ० [हिं० बिटारना का अ० रूप] १. घँघोला जाना। २ गंदा होना।
बिटारना–क्रि० स० [सं० विलोडन] १ घँघोलना। २ गंदा करना।
बिटिया‡–संज्ञा स्त्री० दे० "बेटी"।
बिटठल–संज्ञा पु० [सं० विष्णु] १ विष्णु का एक नाम। २ बंबई प्रांत में शोलापुर के अंतर्गत पंढरपुर की एक देवमूर्ति।
बिठाना–क्रि० स० दे० "बैठाना"।
बिडंब–संज्ञा पु० [सं० विडंब] आडंबर।
बिडंबना*–क्रि० अ० [सं० विडंबन] १ नकल। स्वरूप बनाना। २ उपहास। हँसी। निंदा।
बिड–संज्ञा पु० दे० 'विट्'।
बिडर–वि० [हिं० बिडरना] छितराया हुआ। अलग अलग। दूर दूर।
†वि० [हिं० बि=बिना+डर=भय] १ न डरनेवाला। निर्भय। २ ढीठ।
बिडरना–क्रि० अ० [सं० विट्] १ इधर-उधर होना। तितर बितर होना। २ पशुओं का भयभीत होना। बिचकना। ३ बरबाद होना। नष्ट होना।
बिडराना–क्रि० स० [सं० विट्] १ इधर-उधर या तितर बितर करना। २ भगाना।
बिडवना*†–क्रि० स० [सं० विट्] तोड़ना
बिडारना–क्रि० स० [हिं० बिडरना] १ भय-भीत करके भगाना। २ नष्ट करना।
बिडाल–संज्ञा पु० [सं०] १ बिल्ली। बिलाव। २ बिडालाक्ष नामक दैत्य जिसे दुर्गा ने मारा था। ३ दोहे का बीसवाँ भेद।
बिडौजा–संज्ञा पु० [सं०] इंद्र।
बिढती*†–संज्ञा पु० [हिं० बढ़ना=अधिक होना] कमाई। नफा। लाभ।
बिढवना*†–क्रि० स० [हिं० बढ़ाना] १ कमाना। २ संचय करना। इकट्ठा करना।
बिढाना*†–क्रि० स० दे० 'बिढवना'।
बित*†–संज्ञा पु० [सं० वित्त] १ धन। द्रव्य। २ सामर्थ्य। शक्ति। ३ कद। आकार।
बितताना–क्रि० अ० [हिं० बिलपना] बिल-खाना। व्याकुल होना। संतप्त होना।

क्रि० स० संतप्त करना। सताना।
बितना‡–संज्ञा पुं० दे० "बित्ता"।
बितरना*†–क्रि० स० [सं० वितरण] बाँटना।
बितवना*†–क्रि० स० दे० "बिताना"।
बिताना–क्रि० स० [सं० व्यतीत] (समय) व्यतीत करना। गुजारना। काटना।
बितावना*†–क्रि० स० दे० "बिताना"।
बितीतना–क्रि० अ० [सं० व्यतीत] व्यतीत होना। गुजरना।
क्रि० स० बिताना। गुजारना।
बितु*†–संज्ञा पुं० दे० "वित्त"।
बित्त–संज्ञा पुं० [सं० वित्त] १. धन। दौलत। २. हैसियत। औकात। ३. सामर्थ्य।
बित्ता–संज्ञा पुं० [?] हाथ की सब उँगलियाँ फैलाने पर अँगूठे के सिरे से कनिष्ठिका के सिरे तक की दूरी। बालिश्त।
बिथकना–क्रि० अ० [हिं० थकना] १. थकना। २. चकित होना। हैरान होना। ३. मोहित होना।
बिथरना, बिथुरना†–क्रि० अ० [सं० वितरण] १. छितराना। बिखरना। २. अलग अलग होना। खिल जाना।
बिथा*–संज्ञा स्त्री० दे० "व्यथा"।
बिथारना–क्रि० स० [हिं० बिथरना] छितराना। छिटकाना। बिखेरना।
बिथित*–वि० दे० "व्यथित"।
बिथोरना*–क्रि० स० दे० "बिथराना"।
बिदकना–क्रि० अ० [सं० विदारण] १. फटना। चिरना। २. घायल होना। जख्मी होना। ३. भड़कना।
बिदकाना–क्रि० स० [सं० विदारण] १. फाड़ना। विदीर्ण करना। २ घायल करना। जख्मी करना।
बिदर–संज्ञा पुं० [सं० विदर्भ] १. विदर्भ देश। बरार। २. एक प्रकार की उपधातु जो ताँबे और जस्ते के मेल से बनती है।
बिदरन*†–संज्ञा स्त्री० [सं० विदीर्ण] दरार। दरज। शिगाफ़।
वि० फाड़नेवाला। चीरनेवाला।
बिदरी–संज्ञा स्त्री० [सं० विदर्भ] १. जस्ते और ताँबे के मेल से बरतन आदि बनाने का काम जिसमें बीच बीच में सोने या चाँदी के तारों से नक्काशी की हुई होती है। २. बिदर की धातु का बना हुआ सामान।
बिदा–संज्ञा स्त्री० [अ० विदाअ] १. प्रस्थान। गमन। रवानगी। रुखसत। २. जाने की आज्ञा। ३. द्विरागमन। गौना।
बिदाई–संज्ञा स्त्री० [अ० विदाअ] १. विदा होने की क्रिया या भाव। २. बिदा होने की आज्ञा। ३. वह धन जो किसी को बिदा होने के समय दिया जाय।
बिदारना†–क्रि० स० [सं० विदारण] १. चीरना। फाड़ना। २. नष्ट करना।
बिदारीकंद–संज्ञा पुं० [सं० विदारीकंद] एक प्रकार का लाल कंद। बिलाईकंद।
बिदुराना*†–क्रि० अ० [सं० विदुर = चतुर] मुस्कराना। धीरे धीरे हँसना।
बिदुरानी*†–संज्ञा स्त्री० [हिं० बिदुराना] मुस्कराहट। मुसक्यान।
बिदूषना*†–क्रि० अ० [सं० विदूषण] दोष लगाना। कलंक लगाना। बिगाड़ना।
बिदेश–संज्ञा पुं० [सं० विदेश] परदेश।
बिदोख*†–संज्ञा पुं० [सं० विद्वेष] बैर। वैमनस्य।
बिद्दत–संज्ञा स्त्री० [अ० बिदअत] १. खराबी। बुराई। दोष। २. कष्ट। तकलीफ़। ३. विपत्ति। आफत। ४. अत्याचार। जुल्म। ५. दुर्दशा।
बिधंसना*†–क्रि० स० [सं० विध्वंसन] नाश करना। विध्वंस करना। नष्ट करना।
बिध–संज्ञा स्त्री० [सं० विधि] १. प्रकार। तरह। भाँति। २. ब्रह्मा।
संज्ञा स्त्री० [सं० विधा = लाभ] जमा-खर्च का हिसाब। आय-व्यय का लेखा।
मुहा०—बिध मिलाना = यह देखना कि आय और व्यय की सब मदें ठीक लिखी गई हैं।
बिधना–संज्ञा पुं० [सं० विधि] ब्रह्मा। विधि। विधाता।
क्रि० अ० दे० "बिंधना"।
बिधांसना*†–क्रि० स० [सं० विध्वंसन]

विध्वंस करना। नष्ट करना। नाश करना।
बिधाई*-संज्ञा पुं० [सं० विधायक] वह जो विधान करता हो। विधायक।
बिधाना-क्रि० अ० दे० "बिंधाना"।
बिधानी*†-संज्ञा पुं० [सं० विधान] विधान करनेवाला। बनानेवाला। रचनेवाला।
बिन*†-अव्य० दे० "बिना"।
बिनई*†-संज्ञा पुं० दे० "विनयी"।
बिनउ*†-संज्ञा स्त्री० दे० "विनय"।
बिनति, बिनती-संज्ञा स्त्री० [सं० विनय] प्रार्थना। निवेदन। अर्ज़।
बिनन-संज्ञा स्त्री० [हिं० बिनना=चुनना] १. बिनने या चुनने की क्रिया या भाव। २. वह कूड़ा-करकट आदि जो किसी चीज में से चुनकर निकाला जाय। चुनन।
बिनना-क्रि० स० [सं० वीक्षण] १. छोटी छोटी वस्तुओं को एक एक करके उठाना। चुनना। २ छाँट छाँटकर अलग करना।
क्रि० स० दे० "बुनना"।
बिनवना*†-क्रि० अ० [सं० विनय] विनय करना। मिन्नत करना। प्रार्थना करना।
बिनसना*†-क्रि० अ० [सं० विनाश] नष्ट होना। बरबाद होना।
क्रि० स० विनाश करना। नष्ट करना।
बिनसाना*-क्रि० स० [सं० विनाश] विनाश करना। बिगाड़ डालना। नष्ट कर देना।
क्रि० अ० विनष्ट होना।
बिना-अव्य० [सं० विना] छोड़कर। बग़ैर।
बिनाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० बिनना या बीनना] १ बीनने या चुनने की क्रिया या भाव। २ बुनने की क्रिया या भाव। बुनावट।
बिनाती†-संज्ञा स्त्री० दे० "बिनती"।
बिनानी-वि० [सं० विज्ञानी] १ अज्ञानी। अनजान। २ विज्ञानी।
संज्ञा स्त्री० [सं० विज्ञान] विशेष विचार। गौर।
बिनावट-संज्ञा स्त्री दे० "बुनावट"।
बिनाशना-क्रि० स० [सं० विनष्ट] विनष्ट करना। संहार करना। बरबाद करना।
बिनि, बिनु*-अव्य० दे० "बिना"।
बिनूठा*†-वि० [हिं० अनूठा] अनोखा।
बिनै*†-संज्ञा स्त्री० दे० "विनय"।
बिनौला-संज्ञा पुं० [?] कपास का बीज। बनौर। कुकटी।
बिपच्छ*†-संज्ञा पुं० [सं० विपक्ष] शत्रु। वि० १. अप्रसन्न। नाराज़। २ प्रतिकूल। विमुख। विरुद्ध।
बिपच्छी*†-संज्ञा पुं० [सं० विपक्षिन्] १ वह जो विपक्ष का हो। विरोधी। २ शत्रु। दुश्मन।
बिपत, बिपद*‡-संज्ञा स्त्री० दे० "विपत्ति"।
बिपर*†-संज्ञा पुं० [सं० विप्र] ब्राह्मण।
बिफर*†-वि० दे० "विफल"।
बिफरना*†-क्रि० अ० [सं० विप्लवन] १. बागी होना। विद्रोही होना। २ बिगड़ उठना। नाराज़ होना।
बिबछना*†-क्रि० अ० [सं० विपक्ष] १ विरोधी होना। २ उलझना। फँसना।
बिबरन*-वि० [सं० विवर्ण] १ जिसका रंग खराब हो गया हो। बदरंग। २ जिसके मुख की कांति नष्ट हो गई हो।
संज्ञा पुं० दे० "विवरण"।
बिबस*‡-वि० [सं० विवश] १ मजबूर। विवश। २ परतंत्र। पराधीन।
क्रि० वि० [सं० विवश] विवश होकर।
बिबहार*†-संज्ञा पुं० दे० "व्यवहार"।
बिवाई-संज्ञा स्त्री० [सं० विपादिका] एक रोग जिसमें पैरों के तलुए का चमड़ा फट जाता है।
बिबाक*-वि० दे० "बेबाक"।
बिबि-वि० [सं० द्वि] दो।
बिमन*†-वि० [सं० विमनस्] १ जिसे बहुत दुःख हो। २ उदास। सुस्त।
क्रि० वि० बिना मन के। अनमना होकर।
बिमानी*-वि० [सं० वि+मान] मान-रहित। निरभिमान।
बिमोहना-क्रि० स० [सं० विमोहन] मोहित करना। लुभाना। मोहना।
क्रि० अ० मोहित होना। लुभाना।
बियं*†-वि० [सं० द्वि] १. दो। युग्म। २ दूसरा।

*†–संज्ञा पुं० दे० "बीज"।
बियत–संज्ञा पुं० [सं० वियत्] आकाश।
बिया†–संज्ञा पुं० दे० "बीज"।
वि० [सं० द्वि] दूसरा। अन्य। अपर।
बियाधा*†–संज्ञा पुं० दे० "व्याधा"।
बियाधि*†–संज्ञा स्त्री० दे० "व्याधि"।
बियान†–संज्ञा पुं० दे० "व्यान"।
बियापना*†–क्रि० स० दे० "व्यापना"।
बियाबान–संज्ञा पुं० [फ़ा०] बहुत उजाड़ स्थान या जंगल।
बियारी, बियालू*†–संज्ञा स्त्री० दे० "ब्यालू"।
बियाह*†–संज्ञा पुं० दे० "विवाह"।
बियाहता‡–वि० स्त्री० [सं० विवाहित] जिसके साथ विवाह हुआ हो।
बिरंग–वि० [हिं० वि (प्रत्य०) + रंग] १. कई रंगों का। २. बिना रंग का।
बिरछ†*–संज्ञा पु० दे० "वृक्ष"।
बिरछिक*†–संज्ञा पु० दे० "वृश्चिक"।
बिरझना†–क्रि० अ० [सं० विरुद्ध] झगड़ना।
बिरतंत*†–संज्ञा पुं० दे० "वृत्तांत"।
बिरताना*†–क्रि० स० [सं० वर्त्तन] बाँटना।
बिरथा†–वि० दे० "व्यर्थ"।
बिरद†–संज्ञा पुं० दे० "विरद"।
बिरदैत–संज्ञा पुं० [हिं० बिरद+ऐत (प्रत्य०)] बहुत अधिक प्रसिद्ध वीर या योद्धा।
वि० नामी। प्रसिद्ध।
बिरध–वि० दे० "वृद्ध"।
बिरमना†–क्रि० अ० [सं० विलंबन] १. ठहरना। रुकना। २. सुस्ताना। आराम करना। ३. मोहित होकर फँस रहना।
बिरमाना†–क्रि० स० [हिं० बिरमना का स० रूप] १. ठहराना। रोक रखना। २. मोहित करके फँसा रखना। ३. बिताना।
बिरला–वि० [सं० विरल] बहुतों में से कोई एकाध। इक्का-दुक्का।
बिरही–संज्ञा पुं० [सं० विरहिन्] [स्त्री० बिरहिन, बिरहिनी] वह पुरुष जो अपनी प्रेमिका के विरह में दुःखित हो। विरही।
बिराजना–क्रि० अ० [सं० वि+रंजन] १. शोभित होना। २. बैठना।
बिरादर–संज्ञा पुं० [फ़ा०] भाई। भ्राता।
बिरादरी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. भाईचारा। २. एक ही जाति के लोगों का समूह।
बिरान, बिराना*–वि० दे० "बेगाना"।
बिराना, बिरावना†*–क्रि० स० [सं० विरव =शब्द] किसी को चिढ़ाने के हेतु मुँह की कोई विलक्षण मुद्रा बनाना। मुँह चिढ़ाना।
बिरिख*†–संज्ञा पु० १. दे० "वृष"। २. दे० "वृक्ष"।
बिरिछ*†–संज्ञा पुं० दे० "वृक्ष"।
बिरियाँ†–संज्ञा स्त्री० [हिं० वेला] समय। संज्ञा स्त्री० [सं० वार] बार। दफ़ा।
बिरी*†–संज्ञा स्त्री० १. दे० "बीड़ी"। २. दे० "बीड़ा"।
बिरुझना†–क्रि० अ० [सं० विरुद्ध] झगड़ना।
बिरोजा–संज्ञा पुं० दे० "गंधाबिरोजा"।
बिरोधना†–क्रि० अ० [सं० विरोध] विरोध करना। बैर करना। द्वेष करना।
बिलंद–वि० [फ़ा० बुलंद] १. ऊँचा। २. बड़ा। ३. जो विफल हो गया हो। (व्यंग्य)
बिलंबना*†–क्रि० अ० [सं० विलंब] १. विलंब करना। देर करना। २. ठहरना। रुकना।
बिल–संज्ञा पुं० [सं० बिल] १. छेद। दरज। विवर। २. ज़मीन के अंदर खोदकर बनाया हुआ कुछ जंगली जीवों के रहने का स्थान।
बिलकुल–क्रि० वि० [अ०] १. पूरा पूरा। सब। २. आदि से अंत तक। निरा। निपट। ३. सब। पूरा पूरा।
बिलखना–क्रि० अ० [सं० विलाप] १. विलाप करना। रोना। २. दुःखी होना। ३. सकुचित होना। सिकुड़ जाना।
बिलखाना–क्रि० स० [सं० विकल] बिलखना का सकर्मक रूप।
क्रि० अ० दे० "बिलखना"।
बिलग–वि० [हिं० वि (प्रत्य०) + लगना] अलग। पृथक्। जुदा।
संज्ञा पुं० [हिं० वि (प्रत्य०) + लगना] १. पार्थक्य। अलग होने का भाव। २. द्वेष या और कोई बुरा भाव। रंज।

बिलगाना–क्रि० अ० [हिं० बिलग+आना (प्रत्य०)] अलग होना। पृथक् होना। दूर होना।
क्रि० स० १. अलग करना। पृथक् करना। दूर करना। २ छाँटना। चुनना।
बिलच्छन–वि० दे० "विलक्षण"।
बिलछना*–क्रि० अ० [सं० लक्ष] लक्ष करना। ताड़ना।
बिलटी–सज्ञा स्त्री० [अ० बिलेट] रेल के द्वारा भेजे जानेवाले माल की रसीद।
बिलनी–सज्ञा स्त्री० [हिं० बिल] काली भौंरी जो दीवारों पर मिट्टी की बाँबी बनाती है। भ्रमरी।
सज्ञा स्त्री० आँख की पलक पर होनेवाली एक छोटी फुंसी। गुहाजनी।
बिलपना*†–क्रि० अ० [सं० विलाप] रोना।
बिलफेल–क्रि० वि० [अ०] इस समय।
बिलबिलाना–क्रि० अ० [अनु०] १ छोटे छोटे कीड़ों का इधर-उधर रेंगना। २ व्याकुल होकर बकना या रोना चिल्लाना।
बिलम*†–सज्ञा पु० दे० 'विलंब'।
बिलमना*†–क्रि० अ० [सं० विलंब] १ विलंब करना। देर करना। २ ठहर जाना। रुकना। ३ किसी के प्रेमपाश में फँसकर कहीं रुक रहना।
बिलमाना–क्रि० स० [हिं० बिलमना का सक० रूप] प्रेम के कारण रोक या ठहरा रखना।
बिललाना–क्रि० अ० दे० "बिलखना"।
बिलवाना†–क्रि० स० [सं० वि+लय] १ खो देना। नष्ट करना। बरबाद करना। २ दूसरे के द्वारा नष्ट कराना। बरबाद कराना। ३ छिपाना। ४ छिपवाना।
बिलसना*†–क्रि० अ० [सं० विलसन] शोभा देना। भला जान पड़ना।
क्रि० स० भोग करना। भोगना।
बिलसाना*†–क्रि० स० [हिं० बिलसना] १ भोग करना। बरतना। काम में लाना। २ दूसरे से भोगवाना।
बिलहरा–सज्ञा पु० [हिं० बेल ?] बाँस की तीलियों का एक प्रकार का सपुट जिसमें पान के बीड़े रखे जाते हैं।
बिला–अव्य० [अ०] बिना। बगैर।
बिलाई–सज्ञा स्त्री० [हिं० बिल्ली] १ बिल्ली। बिलारी। २ कुएँ में गिरा हुआ बरतन आदि निकालने का काँटा। ३ किवाड़ बंद करने की एक प्रकार की सिटकिनी।
बिलाईकंद–सज्ञा पु० दे० "विदारीकंद"।
बिलाना–क्रि० अ० [सं० विलयन] १ नष्ट होना। न रह जाना। २ अदृश्य होना।
बिलारी†–सज्ञा स्त्री० दे० 'बिल्ली'।
बिलारीकंद–सज्ञा पु० दे० "विदारीकंद"।
बिलावल–सज्ञा पु० [सं०] एक राग।
बिलासना–क्रि० स० [सं० विलसन] भोगना।
बिलैया‡–सज्ञा स्त्री० [हिं० बिल्ली] १ बिल्ली। २ कदूकश।
बिलोकना*–क्रि० स० [सं० विलोकन] १ देखना। २ जाँच करना। परीक्षा करना।
बिलोकनि*–सज्ञा स्त्री० [सं० विलोकन] १ देखने की क्रिया। २ दृष्टिपात। कटाक्ष।
बिलोड़ना*–क्रि० स० [सं० विलोडन] १ दूध आदि मथना। २ अस्त-व्यस्त करना।
बिलोन–वि० [सं० वि+लवण] १. बिना लवण का। २ कुरूप। बदसूरत।
बिलोना–क्रि० स० [सं० विलोडन] १ दूध आदि मथना। किसी वस्तु विशेषत पानी की सी वस्तु को खूब हिलाना। २ ढालना। गिराना।
बिलोरना*–क्रि० स० [सं० विलोडन] १ दे० "बिलोड़ना"। २ छिन्न-भिन्न करना।
बिलोलना–क्रि० स० [सं० विलोलन] हिलना।
बिलोवना†*–क्रि० स० दे० 'बिलोना"।
बिल्मुक्ता–वि० [अ०] जो घट बढ़ न सके।
सज्ञा पु० वह लगान जो घट बढ़ न सके।
बिल्ला–सज्ञा पु० [सं० विडाल] [स्त्री० बिल्ली] मार्जार। बिल्ली का नर।
सज्ञा पु० [सं० पटल, हिं० पल्ला, बल्ला] चपरास की तरह की पीतल की पतली पट्टी।
बिल्ली–सज्ञा स्त्री० [सं० विडाल, हिं० बिलार] १ एक प्रसिद्ध मांसाहारी पशु जो सिंह, व्याघ्र, चीते आदि की जाति का, पर इन

सब से छोटा होता है। २. एक प्रकार की किवाड़ की सिटकिनी। बिलैया।

बिल्लौर–संज्ञा पुं० [सं० वैदूर्य, मि० फा० बिल्लूर] १. एक प्रकार का स्वच्छ सफेद पारदर्शक पत्थर। स्फटिक। २. बहुत स्वच्छ शीशा।

बिल्लौरी–वि० [हि० बिल्लौर] बिल्लौर का।

बिवरना–क्रि० अ० दे० "ब्योरना"।

बिवराना–क्रि० स० [हि० बिवरना का प्रे०] १. बालों को खुलवाकर सुलझवाना। २. बाल सुलझाना।

बिसंच*–संज्ञा पुं० [सं० वि+संचय] १. संचय का अभाव। वस्तुओं की सँभाल न रखना। बेपरवाई। २. कार्य की हानि। बाधा। ३. भय। डर।

बिसंभर*†–संज्ञा पु० दे० "विश्वंभर"। *†वि० [सं० उप० वि+हि० सँभार] १. जिसे ठीक और व्यवस्थित न रख सकें। २. बेखबर। असावधान।

बिसँभार†–वि० [स० उप० वि+हि० सँभार] जिसे तन-बदन की खबर न हो। बेखबर।

बिस–संज्ञा पु० दे० "विष"।

बिसखपरा–संज्ञा पुं० [सं० विष+खर्पर] १. गोह की जाति का एक विषैला सरीसृप जंतु। २. एक प्रकार की जंगली बूटी।

बिसतरना*–क्रि० अ० [सं० विस्तरण] विस्तार करना। बढ़ाना। फैलाना।

बिसद*–वि० दे० "विशद"।

बिसन*–संज्ञा पु० दे० "व्यसन"।

बिसनी–वि० [स० व्यसन] १. जिसे किसी बात का व्यसन या शौक हो। शौकीन। २. छैला। चिकनिया। शौकीन।

बिसमउ†–संज्ञा पुं० दे० "विस्मय"।

बिसमरना*–क्रि० स० [सं० विस्मरण] भूल जाना। विस्मृत करना। ध्यान में न रखना।

बिसराम*–संज्ञा पुं० दे० "विश्राम"।

बिसरावना†*–क्रि० स० दे० "बिसराना"।

बिसवास*–संज्ञा पुं० दे० "विश्वास"।

बिसवासिनी–वि० स्त्री० [सं० विश्वासिन्] १. विश्वास करनेवाली। २. जिस पर विश्वास हो। *वि० स्त्री० [सं० अविश्वासिन्] १. जिस पर विश्वास न हो। २. विश्वासघातिनी।

बिसवासी–वि० [सं० विश्वासिन्] १. जो विश्वास करे। २. जिस पर विश्वास हो। वि० [सं० अविश्वासिन्] जिस पर विश्वास न किया जा सके। बेएतबार।

बिससना*–क्रि० स० [सं० विश्वसन] विश्वास करना। एतबार करना। क्रि० स० [सं० विशसन] १. वध करना। मारना। घात करना। २. शरीर काटना।

बिसहना*†–क्रि० स० [हि० बिसाह] १. मोल लेना। खरीदना। २. जान-बूझकर अपने साथ लगाना।

बिसहर*–संज्ञा पुं० [सं० विषधर] सर्प।

बिसायँध–वि० [सं० वसा = चरबी + गंध] जिसमें सड़ी मछली की-सी गंध हो। संज्ञा स्त्री० सड़े मांस की-सी गंध।

बिसाख*–संज्ञा स्त्री० दे० "विशाखा"।

बिसात–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. हैसियत। समाई। वित्त। औक़ात। २. जमा। पूंजी। ३. सामर्थ्य। हकीक़त। स्थिति। ४. शतरंज या चौपड़ आदि खेलने का कपड़ा जिस पर खाने बने होते हैं।

बिसाती–संज्ञा पु० [अ०] सूई, तागा, चूड़ी, खिलौने इत्यादि वस्तुओं का बेचनेवाला।

बिसाना–क्रि० अ० [सं० वश] वश चलना। बल चलना। क़ाबू चलना। †क्रि० अ० [हि० विष+ना (प्रत्य०)] विष का प्रभाव करना। जहर का असर करना।

बिसारद*–संज्ञा पुं० दे० "विशारद"।

बिसारना–क्रि० स० [हि० बिसरना] भुलाना। स्मरण न रखना। ध्यान में न रखना।

बिसारा*–वि० [सं० विषालु] [स्त्री बिसारी]

बिसमिल–वि० [फ़ा० बिस्मिल] घायल।

बिसयक*†–संज्ञा पु० [सं० विषय] १. देश। प्रदेश। २. रियासत।

बिसरना–क्रि० स० [सं० विस्मरण] भूलना।

बिसरात†*–संज्ञा पु० [सं० वेसरः] खच्चर।

बिसराना–क्रि० स० [हि० बिसरना] भुलाना।

विष भरा। विषाक्त। [ध्वंस।

बिसास*-संज्ञा पु० दे० 'विश्वास'।

बिसासिन-संज्ञा स्त्री० [सं० अविश्वासिनी] (स्त्री) जिस पर विश्वास न किया जा सके।

बिसासी*-वि० [सं० अविश्वासी] [स्त्री० बिसासिन] जिस पर विश्वास न किया जा सके। दगाबाज। छली। कपटी।

बिसाहना-क्रि० स० [हिं० बिसाह+ना (प्रत्य०)] १ खरीदना। मोल लेना। २ जान-बूझकर अपने पीछे लगाना। संज्ञा पु० १ मोल की चीज जिसे खरीदें। सौदा। २ मोल लेने की क्रिया। खरीद।

बिसाहनी-संज्ञा स्त्री० [हिं० बिसाहना] सौदा। वह वस्तु जो मोल ली जाय।

बिसाहा-संज्ञा पु० दे० 'बिसाहनी'।

बिसिख*-संज्ञा पु० दे० विशिख।

बिसियर*-वि० [सं० विषधर] विषैला।

बिसूरना-क्रि० अ० [सं० विसूरण=शोक] खेद करना। मन में दुःख मानना। संज्ञा स्त्री० चिंता। फिक्र। सोच।

बिसेस*-वि० दे० 'विशेष'।

बिसेखना*-क्रि० अ० [सं० विशेष] १ विशेष प्रकार से या ब्योरेवार वर्णन करना। २ निर्णय करना। निश्चित करना। ३ विशेष रूप से होना या प्रतीत होना।

। पु० [?] चिड़ियों की एक ।

*-संज्ञा पु० दे० 'विश्वेश्वर'।

। पु० [फा० सं० विस्तर] १ । बिछावन। २ विस्तार। फैलाव।

*-क्रि० अ० [सं० विस्तरण] ना। इधर उधर बढ़ना।

क्रि० स० १ फैलाना। बढ़ाना। २ बढ़ा कर वर्णन करना।

बिसारना-क्रि० स० [सं० विस्तारण] विस्तार करना। फैलाना।

बिसतुइया-संज्ञा स्त्री० [हिं० विष+तुना=टपकना] छिपकली। गृहगोधा।

बिस्वा-संज्ञा पु० [हिं० बीसवाँ] एक बीघे का बीसवाँ भाग।

मुहा०—बीस बिस्वा = निश्चय। निस्सन्देह।

बिस्वास-संज्ञा पु० दे० 'विश्वास'।

बिहग-संज्ञा पु० दे० 'विहग'।

बिहंडना-क्रि० स० [सं० विघटन प्रा० विहडन] १ खंड खंड कर डालना। तोड़ना। २ नष्ट कर देना। मार डालना।

बिहसना-क्रि० अ० [सं० विहसन] मुस्कराना।

बिहँसाना-क्रि० अ० [सं० विहसन] १ दे० बिहँसना। २ प्रफुल्लित होना। खिलना। (फूल का) क्रि० स० हँसाना। हर्षित करना।

बिहग*-संज्ञा पु० दे० 'विहग'।

बिहद*-वि० [फा० बेहद] असीम। परिमाण से बहुत। अधिक।

बिहबल*-वि० [सं० विह्वल] व्याकुल।

बिहरना-क्रि० अ० [सं० विहरण] घूमना फिरना। सैर करना। भ्रमण करना। †* क्रि० स० [सं० विघटन] १ फटना। विदीर्ण होना। २ टूटना फूटना।

बिहराना†*-क्रि० अ० [हिं० बिहरना] फटना।

बिहाग-संज्ञा पु० [?] एक प्रकार का राग।

बिहान-संज्ञा पु० [सं० विभात] १ सबेरा। २ आनेवाला दूसरा दिन। कल।

बिहाना*-क्रि० स० [सं० वि+हा=छोड़ना] छोड़ना। त्यागना। क्रि० अ० व्यतीत होना। गुजरना। बीतना।

बिहारना-क्रि० अ० [सं० विहरण] विहार करना। केलि या क्रीड़ा करना।

बिहाल-वि० [फा० बेहाल] व्याकुल। बेचैन।

बिहिश्त-संज्ञा पु० [फा०] स्वर्ग। बैकुंठ।

बिही-संज्ञा स्त्री० [फा०] एक पेड़ जिसके फल अमरूद से मिलते-जुलते होते हैं।

बिहीदाना-संज्ञा पु० [फा०] बिही नामक फल का बीज जो दवा के काम में आता है।

बिहीन-वि० [सं० विहीन] रहित। बिना।

बिहून-वि० [हिं० बिहीन] बिना। रहित।

बिहोरना-क्रि० अ० [हिं० बिहरना] बिछुड़ना।

बींड़ा-संज्ञा पु० [हिं० बींड़ी+आ (प्रत्य०)] १ टहनियों से बनाया हुआ लंबा लट्ठ जो

कच्चे कूएँ में इसलिए दिया जाता है कि उसका भगाड़ न गिरे। २. घास आदि को लपेटकर बनाई हुई गेंडुरी। ३. बाँस आदि को बाँधकर बनाया हुआ बोझ।

बींधना*–क्रि० अ० [सं० विद्ध] फँसना। क्रि० स० विद्ध करना। छेदना। बेधना।

बी–संज्ञा स्त्री० दे० "बीबी"।

बीका†–वि० [सं० वक्र] टेढ़ा।

बीख†*–संज्ञा पुं० [सं० बीखा] क़दम। डग।

बीग†–संज्ञा पुं० [सं० वृक] [स्त्री० बीगिन] भेड़िया।

बीगना‡–क्रि० स० [सं० विकीरण] १. छाँटना। छितराना। २. गिराना। फेंकना।

बीघा†–संज्ञा पुं० [सं० विग्रह] खेत नापने का बीस बिस्वे का एक वर्ग मान।

बीच†–संज्ञा पुं० [सं० विच=अलग करना] १. किसी पदार्थ का मध्य भाग। मध्य। मुहा०—बीच खेत = १. खुले मैदान। सबके सामने। २. अवश्य। ज़रूर। बीच बीच में= १. थोड़ी थोड़ी देर में। २. थोड़े थोड़े अंतर पर। २. भेद। अंतर। फ़रक।

मुहा०–बीच करना=१. लड़नेवालों को लड़ने से रोकने के लिए अलग अलग करना। २. झगड़ा निपटाना। झगड़ा मिटाना। बीच पड़ना=१. झगड़ा निपटाने के लिये पंच बनना। २. मध्यस्थ होना। बीच पारना या डालना = १. परिवर्तन करना। २. विभेद या पार्थक्य करना। बीच में पड़ना = १. मध्यस्थ होना। २. ज़िम्मेदार बनना। प्रतिभू बनना। बीच रखना=दुराव रखना। पराया समझना। बीच में कूदना = अनावश्यक हस्तक्षेप करना। व्यर्थ टाँग अड़ाना। (ईश्वर आदि को) बीच में रखकर कहना = (ईश्वर आदि की) शपथ खाना। क़सम खाना।

३. बीच का अंतर। अवकाश। ४. अवसर। मौक़ा। अवकाश।

क्रि० वि० दरमियान। अंदर। में।

संज्ञा स्त्री० [सं० वीचि] लहर। तरंग।

बीचु*†–संज्ञा पुं० [हिं० बीच] १. अवसर। मौक़ा। २. अंतर। फ़रक।

बीचोबीच–क्रि० वि० [हिं० बीच] बिलकुल बीच में। ठीक मध्य में।

बीछना*†–क्रि० स० [सं० विच या विचयन] चुनना। पसंद करके छाँटना।

बीछी*‡–संज्ञा स्त्री० [सं० वृश्चिक] बिच्छू।

बीछू*‡–संज्ञा पुं० १. दे० "बिच्छू"। २. दे० "बिछुआ"। (हथियार)

बीज–संज्ञा पुं० [सं०] १. फूलवाले वृक्षों का गर्भांड जिससे वृक्ष अंकुरित होकर उत्पन्न होता है। बीया। तुख्म। दाना। २. प्रधान कारण। मूल प्रकृति। ३. जड़। मूल। ४. हेतु। कारण। ५. शुक्र। वीर्य्य। ६. कोई अव्यक्त सांकेतिक वर्ण, समुदाय या शब्द। ७. दे० "बीजगणित"। ८. अव्यक्त-संख्या-सूचक संकेत। ९. वह अव्यक्त ध्वनि या शब्द जिसमें तंत्रानुसार किसी देवता को प्रसन्न करने की शक्ति मानी गई हो।

*संज्ञा स्त्री० दे० "बिजली"।

बीजक–संज्ञा पुं० [सं०] १ सूची। फ़िहरिस्त। २. वह सूची जिसमें माल का ब्योरा, दर और मूल्य आदि लिखा हो। ३. वह सूची जो किसी गड़े हुए धन की, उसके साथ, रहती है। ४. बीज। ५. कबीरदास के पदों के तीन संग्रहों में से एक।

बीजगणित–संज्ञा पुं० [सं०] गणित का वह भेद जिसके अक्षरों को संख्याओं का द्योतक मानकर निश्चित युक्तियों के द्वारा अज्ञात संख्याएँ आदि जानी जाती हैं।

बीजत्व–संज्ञा पुं० [सं०] बीज का भाव।

बीजदर्शक–संज्ञा पुं० [सं०] वह जो नाटक के अभिनय की व्यवस्था करता हो।

बीजन*–संज्ञा पुं० [सं० व्यजन] बेना। पंखा।

बीजपूर, बीजपूरक–संज्ञा पुं० [सं०] १. बिजौरा नीबू। २. चकोतरा।

बीजबंद–संज्ञा पुं० [हिं० बीज+बाँधना] खिरेंटी या बरियारे के बीज। बला।

बीजमंत्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी देवता के उद्देश्य से निश्चित मूलमंत्र। २. गुर।

बीजरी*†–संज्ञा स्त्री० दे० "बिजली"।

बीजा–वि० [सं० द्वितीय] दूसरा।
बीजाक्षर–संज्ञा पु० [सं०] किसी बीजमंत्र का पहला अक्षर।
बीजी–संज्ञा स्त्री० [सं० बीज+ई (प्रत्य०)] १. गिरी। मींगी। २ गुठली।
बीजु, बीजुरी–संज्ञा स्त्री० दे० "बिजली"।
बीजू–वि० [हिं० बीज+ऊ (प्रत्य०)] जो बीज बोने से उत्पन्न हो। कलमी का उल्टा। संज्ञा पु० दे० "बिज्जू"।
बीझना*†–क्रि० अ० [सं० विद्ध] लिप्त होना। फँसना।
बीझा*†–वि० [सं० विजन] निर्जन। एकांत।
बीट–संज्ञा स्त्री० [सं० विट्] पक्षियों की विष्ठा। चिड़ियों का गुह।
बीड़–संज्ञा स्त्री० [हिं० बीड़ा] एक के ऊपर एक रखे हुए रुपए जो साधारणतः गुल्ली का आकार धारण कर लेते हैं।
बीड़ा–संज्ञा पु० [सं० वीटक] पान की सादी गिलौरी। खीली।
मुहा०–बीड़ा उठाना=१ कोई काम करने का संकल्प करना या भार लेना। २ उद्यत होना।
बीड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० बीड़ा] १ दे० "बीड़ा"। २ गड्डी। दे० "बीड़"। ३ मिस्सी जिसे स्त्रियाँ दाँत रँगने के लिये मुँह में मलती हैं। ४ पत्ते में लपेटा हुआ सुरती का चूर जिसे लोग सिगरेट या चुरट आदि की तरह सुलगाकर पीते हैं।
बीतना–क्रि० अ० [सं० व्यतीत] १. समय का विगत होना। वक्त कटना। गुजरना। २ दूर होना। जाता रहना। छूट जाना। ३ सघटित होना। घटना। पड़ना।
बीथित*†–वि० [सं० व्यथित] दुःखित।
बीधना*†–क्रि० अ० [सं० विद्ध] फँसना। क्रि० स० दे० "बींधना"।
[illegible]न–संज्ञा स्त्री० [सं० वीणा] सितार की [illegible] पर उससे बड़ा एक प्रसिद्ध बाजा।
[illegible]
बीनना†–क्रि० स० [सं० विनयन] १. छोटी छोटी चीजों को उठाना। चुनना। २ [illegible] अलग करना। छाँटना।
क्रि० स० दे० "बींधना"।
क्रि० स० दे० "बुनना"।
बीफै संज्ञा पु० [सं० बृहस्पति] बृहस्पतिवार।
बीबी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. कुलवधू। कुलीन स्त्री। २ पत्नी। स्त्री।
बीभत्स–वि० [सं०] १ जिसे देखकर घृणा उत्पन्न हो। घृणित। २. क्रूर। ३. पापी। संज्ञा पु० काव्य के नौ रसों के अंतर्गत सातवाँ रस। इसमें रक्त मांस आदि ऐसी बातों का वर्णन होता है जिनसे अरुचि और घृणा उत्पन्न होती है।
बीमा–संज्ञा पु० [फा० बीम=भय] १ किसी प्रकार की विशेषतः आर्थिक हानि पूरी करने की जिम्मेदारी जो कुछ निश्चित धन लेकर उसके बदले में की जाती है। २ वह पत्र या पारसल आदि जिसका इस प्रकार बीमा हुआ हो।
बीमार–वि० [फा०] वह जिसे कोई बीमारी हुई हो। रोगग्रस्त। रोगी।
बीमारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १ रोग। व्याधि। २ झंझट। ३ बुरी आदत। (बोलचाल)
बीय*†–वि० दे० "बीजा"।
बीया*–वि० [सं० द्वितीय] दूसरा। संज्ञा पु० [सं० बीज] बीज। दाना।
बीर–वि० दे० "वीर"। संज्ञा पु० [सं० वीर] भाई। भ्राता। संज्ञा स्त्री० १ सखी। सहेली। २ कान का एक आभूषण। तरना। बीरी। ३ कलाई में पहनने का एक प्रकार का गहना। ४ पशुओं के चरने का स्थान। चरागाह।
बीरउ*†–संज्ञा पु० दे० "बिरवा"।
बीरज*–संज्ञा पु० दे० "वीर्य्य"।
बीरन–संज्ञा पु० [सं० वीर] भाई।
बीरबहूटी–संज्ञा स्त्री० [सं० वीर+वधूटी] गहरे लाल रंग का एक छोटा रेंगनेवाला बरसाती कीड़ा। इंद्रवधू।
बीरा*–संज्ञा पु० [हिं० बीड़ा] १ पान का बीड़ा। वि० दे० "बीड़ा"। २ वह फूल, फल आदि जो देवता के प्रसाद-स्वरूप भक्तों आदि को मिलता है।

बीरी†–संज्ञा स्त्री० [सं० वीरि या हिं०बीड़ा] १. पान का बीड़ा। २. कान में पहनने का एक गहना। तरना।
बीरो†–संज्ञा पुं० [हिं० बिरवा] वृक्ष। पेड़।
बीस–वि० [सं० विंशति] १. जो संख्या में उन्नीस से एक अधिक हो।
मुहा०—बीस बिस्वे = अधिक संभवतः। २. श्रेष्ठ। अच्छा। उत्तम।
संज्ञा स्त्री० बीस की संख्या या अंक—२०।
बीसी–संज्ञा स्त्री० [हिं० बीस] १. बीस चीजों का समूह। कोड़ी। २. ज्योतिष शास्त्र के अनुसार साठ संवत्सरों के तीन विभागों में से कोई विभाग।
बीह*–वि० [सं० विंशति] बीस।
बीहड़–वि० [सं० विकट] १. ऊँचा नीचा। विषम। ऊबड़ खाबड़। २. जो सरल या सम न हो। विकट।
वि० [सं० विलग] अलग। जुदा।
बुंद–संज्ञा स्त्री० दे० "बूँद"।
बुंदकी–संज्ञा स्त्री० [सं० विंदु + की (प्रत्य०)] १. छोटी गोल बिंदी। २. छोटा गोल दाग या धब्बा।
बुंदा–संज्ञा पुं० [सं० विंदु] १. बुलाक के आकार का कान में पहनने का एक गहना। लोलक। २. माथे पर लगाने की टिकली।
बुंदिया–संज्ञा स्त्री० दे० "बूंदी"।
बुंदीदार–वि० [हिं०बूंदी+फा०दार(प्रत्य०)] जिसमें छोटी छोटी बिंदियाँ हों।
बुंदेलखंड–संज्ञा पुं० [हिं० बुंदेला] संयुक्त प्रांत का वह अंश जिसमें जालौन, झाँसी, हमीरपुर और बाँदा के जिले पड़ते हैं।
बुंदेलखंडी–वि० [हिं०बुंदेलखंड+ई(प्रत्य०)] बुंदेलखंड-संबंधी। बुंदेलखंड का।
संज्ञा पुं० बुंदेलखंड का निवासी।
संज्ञा स्त्री० बुंदेलखंड की भाषा।
बुंदेला–संज्ञा पुं० [हिं० बूंद + एला (प्रत्य०)] १. क्षत्रियों का एक वंश जो गहरवार वंश की एक शाखा माना जाता है। २. बुंदेलखंड का निवासी।
बुंदौरी*†–संज्ञा स्त्री० [हिं०बूंद+औरी(प्रत्य०)] बुंदिया या बूंदी नाम की मिठाई।
बुआ–संज्ञा स्त्री० दे० "बूआ"।
बुक–संज्ञा स्त्री० [अ० बकरम] एक प्रकार का कलफ़ किया हुआ महीन कपड़ा।
बुकचा–संज्ञा पुं० [तु० बुकचः] गठरी।
बुकची–संज्ञा स्त्री० [हिं० बुकचा+ई(प्रत्य०)] १. छोटी गठरी। २. दर्जियों की वह थैली जिसमें वे सूई, डोरा रखते हैं।
बुकनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० बूकना + ई (प्रत्य०)] किसी चीज़ का महीन पीसा हुआ चूर्ण।
बुकुन†–संज्ञा पुं० [हिं० बुकना] १. बुकनी। २. किसी प्रकार का पाचक। चूर्ण।
बुक्का–संज्ञा पुं० [हिं० बूकना-पीसना] कूटे हुए अभ्रक का चूर्ण।
बुखार–संज्ञा पुं० [अ०] १. वाष्प। भाप। २. ज्वर। ताप। ३ शोक, क्रोध, दुःख आदि का आवेग।
बुज़दिल–वि० [फ़ा०] कायर। डरपोक।
बुज़ुर्ग–वि० [फ़ा०] वृद्ध। बड़ा।
संज्ञा पुं० बाप-दादा। पूर्वज। पुरखा।
बुझना–क्रि० अ० [?] १. अग्नि या अग्निशिखा का शांत होना। २. तपी हुई या गरम चीज़ का पानी में पड़कर ठंढा होना। ३. पानी का किसी गरम या तपाई हुई चीज से छौंका जाना। ४. पानी पड़ने या मिलने के कारण ठंढा होना। ५. चित्त का आवेग या उत्साह आदि मंद पड़ना।
बुझाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० बुझाना+ई(प्रत्य०)] बुझाने की क्रिया या भाव।
बुझाना–क्रि० स० [हिं० बुझना का सक० रूप] १. जलते हुए पदार्थ को ठंढा करना या अधिक जलने से रोक देना। अग्नि शांत करना। २. तपी हुई चीज को पानी में डालकर ठंढा करना।
मुहा०—ज़हर में बुझाना = छुरी, बरछी, तलवार आदि शस्त्रों के फलों को तपाकर किसी ज़हरीले तरल पदार्थ में बुझाना जिसमें वह फल भी ज़हरीला हो जाय।
३. पानी को छौंकना। ४. पानी डालकर ठंढा करना। ५. चित्त का आवेग या

उत्साह आदि शांत करना।
क्रि० स० [हिं० बुझना का प्रे०रूप] १. बूझने का काम दूसरे से कराना। २. बोध कराना। समझाना। ३. संतोष देना।
बुट*†–संज्ञा स्त्री० दे० "बूटी"।
बुटना*†–क्रि० अ० [?] भागना।
बुडना‡–क्रि० अ० दे० "बडना"।
बुड़बुड़ाना–क्रि० अ० [अनु०] मन ही मन कुढकर अस्पष्ट रूप से कुछ बोलना। बड़-बड करना।
बुड़ाना*†–क्रि० स० दे० "डुबाना"।
बुड्ढा†–वि० [सं० वृद्ध] ५०-६० वर्ष से अधिक अवस्थावाला। वृद्ध।
बुढ़वा‡–वि० दे० "बुड्ढा"।
बुढ़ाई–संज्ञा स्त्री० दे० "बुढ़ापा"।
बुढ़ाना–क्रि० अ० [हिं० बूढ़ा + ना(प्रत्य०)] वृद्धावस्था को प्राप्त होना। बुड्ढा होना।
बुढ़ापा–संज्ञा पु० [हिं० बूढ़ा + पा(प्रत्य०)] वृद्धावस्था। बुड्ढे होने की अवस्था।
बुढ़ौती†–संज्ञा स्त्री० दे० "बुढ़ापा"।
बुत–संज्ञा पु० [फा० मि० सं० बुद्ध] १. मूर्ति। प्रतिमा। पुतला। २. वह जिसके साथ प्रेम किया जाय। प्रियतम।
वि० मूर्त्ति की तरह चुपचाप बैठा रहनेवाला।
बुतना†–क्रि० अ० दे० "बुझना"।
बुतपरस्त–संज्ञा पु० [फा०] मूर्तिपूजक।
बुताना†–क्रि० अ० दे० "बुझना"।
क्रि० स० दे० "बुझाना"।
बुत्ता–संज्ञा पु० [देश०] १. धोखा। झाँसा। पट्टी। २. बहाना। हीला।
बुदबुद–संज्ञा पु० [सं०] बुलबुला। बुल्ला।
बुद्ध–वि० [सं०] १. जो जागा हुआ हो। जागरित। २. ज्ञानवान्। ज्ञानी। ३. पंडित। विद्वान्।
संज्ञा पुं० बौद्ध धर्म के प्रवर्त्तक एक बडे महात्मा जिनका जन्म ईसा से ५५० वर्ष पूर्व शाक्यवंशी राजा शुद्धोदन की रानी महामाया के गर्भ से नेपाल की तराई के लुंबिनी नामक स्थान में हुआ था।
बुद्धि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विवेक या निश्चय करने की शक्ति। अक्ल। समझ। २. उपजाति वृत्त का चौदहवाँ भेद। सिद्धि। ३. एक प्रकार का छंद। लक्ष्मी। ४. छप्पय का ४२वाँ भेद।
बुद्धिपर–वि० [सं०] जिस तक बुद्धि न पहुँच सके।
बुद्धिमत्ता–संज्ञा स्त्री० [सं०] बुद्धिमान् होने का भाव। समझदारी। अक्लमंदी।
बुद्धिमान्–वि० [सं०] वह जो बहुत समझदार हो। अक्लमंद।
बुद्धिमानी–संज्ञा स्त्री० दे० "बुद्धिमत्ता"।
बुद्धिवंत–वि० दे० "बुद्धिमान्"।
बुद्धिहीन–वि० [सं०] मूर्ख। बेवकूफ।
बुध–संज्ञा पु० [सं०] १. सौर जगत् का एक ग्रह जो सूर्य्य के सबसे अधिक समीप रहता है। २. भारतीय ज्योतिष के अनुसार नौ ग्रहों में से चौथा ग्रह। ३. देवता। ४. बुद्धिमान् अथवा विद्वान्।
बुधजामी–संज्ञा पु० [सं० बुध हिं० जन्म] बुध के पिता, चंद्रमा।
बुधवान*†–वि० दे० "बुद्धिमान्"।
बुधवार–संज्ञा पु० [सं०] सात वारों में से एक जो मंगलवार के बाद और बृहस्पतिवार से पहले पड़ता है।
बुधि*†–संज्ञा स्त्री० दे० "बुद्धि"।
बुनना–क्रि० स० [सं० वयन] १. जुलाहों की वह क्रिया जिससे वे सूतों या तारों की सहायता से कपड़ा तैयार करते हैं। बिनना। २. बहुत से सीधे और बेड़े सूतों को मिलाकर उनको कुछ के ऊपर और कुछ के नीचे से निकालकर कोई चीज बनाना।
बुनाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० बुनना + ई (प्रत्य०)] १. बुनने की क्रिया या भाव। बुनावट। २ बुनने की मजदूरी।
बुनावट–संज्ञा स्त्री० [हिं० बुनना + आवट] बुनने में सूतों की मिलावट या ढंग।
बुनियाद–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. जड़। मूल। नींव। २. असलियत। वास्तविकता।
बुबुकना–क्रि० अ० [अनु०] जोर जोर से

रोना। पुक्का फाड़ना। ढाड़ मारना।
बुबुकारी–संज्ञा स्त्री॰ [अनु॰ बुबुक+आरी (प्रत्य॰)] पुक्का फाड़कर रोना। जोर जोर से रोना।
बुभुक्षा–संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] क्षुधा। भूख।
बुभुक्षित–वि॰ [सं॰] भूखा। क्षुधित।
बुयाम–संज्ञा पुं॰ [अं॰?] चीनी मिट्टी का बना हुआ एक प्रकार का गोल और ऊँचा बड़ा पात्र। जार।
बुरकना–क्रि॰ स॰ [अनु॰] पिसी हुई या महीन चीज को किसी दूसरी चीज पर छिड़कना। भुरभुराना।
बुरका–संज्ञा पुं॰ [अ॰] मुसलमान स्त्रियों का एक प्रकार का पहनावा जिससे सिर से पैर तक सब अंग ढके रहते हैं।
बुरा–वि॰ [सं॰ विरूप] जो अच्छा या उत्तम न हो। खराब। निकृष्ट। मंदा।
मुहा॰—बुरा मानना=द्वेष रखना। खार खाना।
यौ॰—बुरा भला=१.हानि-लाभ।अच्छा और खराब। २.गाली-गलौज। लानत-मलामत।
बुराई–संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰बुरा+ई(प्रत्य॰)] १. बुरे होने का भाव। बुरापन। खराबी। २. खोटापन। नीचता। ३. अवगुण। दोष। दुर्गुण। ४. शिकायत। निंदा।
बुरादा–संज्ञा पुं॰ [फा॰] वह चूर्ण जो लकड़ी चीरने से निकलता है। कुनाई।
बुर्ज–संज्ञा पुं॰ [अ॰] १. किले आदि की दीवारों में उठा हुआ गोल या पहलदार भाग जिसके बीच में बैठने आदि के लिये थोड़ा सा स्थान होता है। गरगज। २. मीनार का ऊपरी भाग अथवा उसके आकार का इमारत का कोई अंग। ३. गुंबद।
बुर्द–संज्ञा स्त्री॰ [फ़ा॰] १.ऊपरी आमदनी। ऊपरी लाभ। नफ़ा। २. शर्त। होड़। बाजी। ३. शतरंज के खेल में वह अवस्था जब सब मोहरे मर जाते हैं और केवल बादशाह रह जाता है।
बुलंद–वि॰ [फ़ा॰ बलंद] [संज्ञा बुलंदी] १. भारी। उत्तंग। २. बहुत ऊँचा।
बुलबुल–संज्ञा स्त्री॰ [अ॰ फ़ा॰] एक प्रसिद्ध गानेवाली काली छोटी चिड़िया।
बुलबुला–संज्ञा पुं॰ [सं॰ बुद्‌बुद] पानी का बुल्ला। बुदबुदा।
बुलवाना–क्रि॰ स॰ [हिं॰ बुलाना का प्रे॰ रूप] बुलाने का काम दूसरे से कराना।
बुलाक–संज्ञा पुं॰, स्त्री॰ [तु॰] वह लंबोतरा या सुराहीदार मोती जिसे स्त्रियाँ प्रायः नथ में पहनती हैं।
बुलाकी–संज्ञा पुं॰ [तु॰ बुलाक] घोड़े की एक जाति।
बुलाना–क्रि॰स॰[हिं॰ बोलना का सक॰ रूप] १. आवाज देना। पुकारना। २. अपने पास आने के लिये कहना। ३. किसी को बोलने में प्रवृत्त करना।
बुलावा–संज्ञा पुं॰[हिं॰बुलाना+आवा(प्रत्य॰)] बुलाने की क्रिया या भाव। निमंत्रण।
बुलाह–संज्ञा पुं॰ [सं॰ बोल्लाह] वह घोड़ा जिसकी गर्दन और पूँछ के बाल पीले हों।
बुल्ला–संज्ञा पुं॰ दे॰ "बुलबुला"।
बुहारना–क्रि॰ स॰ [सं॰ बहुकर+ना(प्रत्य॰)] झाड़ू से जगह साफ़ करना। झाड़ना।
बुहारी–संज्ञा स्त्री॰[हिं॰ बुहारना+ई(प्रत्य॰)] झाड़ू। बढ़नी। सोहनी।
बूँद–संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ बिंदु] १. जल आदि का वह बहुत ही थोड़ा अंश जो गिरने आदि के समय प्रायः छोटी सी गोली का रूप धारण कर लेता है। क़तरा। टोप।
मुहा॰—बूँदें गिराना या पड़ना=धीमी वर्षा होना।
२. वीर्य्य। ३. एक प्रकार का कपड़ा।
बूँदाबाँदी–संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ बूँद+अनु॰ बाँद] हलकी या थोड़ी वर्षा।
बूँदी–संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ बूँद+ई (प्रत्य॰)] १. एक प्रकार की मिठाई। बुँदिया। २. वर्षा के जल की बूँद।
बू–संज्ञा स्त्री॰ [फ़ा॰] १. बास। गंध। महक। २. दुर्गंध। बदबू।
बूआ–संज्ञा स्त्री॰ [देश॰] १. पिता की बहन।

फपी। २ बड़ी बट्टा।
सज्ञा पु० [हिं० बकोटा] चंगुल। बकोटा।
बूकना–क्रि० स० [देश०] १ महीन पीसना। पीसकर चूर्ण करना। २ गढ़कर बातें करना। जैसे, अँगरेजी बूकना।
बूचड़–सज्ञा पु० [अ० बुचर] कसाई।
बूचड़खाना–सज्ञा पु० [हिं० बूचड़+फा० खाना] वह स्थान जहाँ पशुओं की हत्या होती है। कसाई-बाड़ा।
बूचा–वि० [स० बुस=विभाग करना] १ जिसके कान कटे हुए हो। कनकटा। २ जिसके ऐसे अग कट गए हो अथवा न हो, जिनके कारण वह कुरूप जान पड़ता हो।
बूजना–क्रि० स० [?] धोखा देना।
बूझ–सज्ञा स्त्री० [स० बुद्धि] १ समझ। बुद्धि। अक्ल। ज्ञान। २ पहेली।
बूझत*†–सज्ञा स्त्री० दे० "बूझ"।
बूझना–क्रि० स० [हिं० बूझ (बुद्धि)] १ समझना। जानना। २ पूछना।
बूट–सज्ञा पु० [स० विटप, हिं० बूटा] १ चने का हरा पौधा। २ चने का हरा दाना। ३. वृक्ष। पेड़। पौधा।
बूटनि*†–सज्ञा स्त्री० [हिं० बहूटी] बीरबहूटी नाम का कीड़ा।
बूटा–सज्ञा पु० [स० विटप] १ छोटा वृक्ष। पौधा। २ फूलो या वृक्षो आदि के आकार के चिह्न जो कपड़ो या दीवारो आदि पर बनाए जाते है। बड़ी बूटी।
बूटी–सज्ञा स्त्री० [हिं० बूटा का स्त्री० रूप] १ वनस्पति। वनौषधि। जड़ी। २ भाँग। भग। ३ फलो के छोटे चिह्न जो कपड़ो आदि पर बनाए जाते है। छोटा बूटा। ४ खेलने के ताश के पत्तो पर बनी हुई टिक्की।
बूड़ना†–क्रि० स० [स० ब्रुड=डूबना] १ डूबना। निमज्जित होना। २ लीन होना। निमग्न होना।
बूड़ा†–सज्ञा पु० [हिं० डूबना] वर्षा आदि के कारण होनेवाली जल की बाढ़।
बूढ़‡–वि० दे० "बुड्ढा"।
सज्ञा पु० [?] १. लाल रग। २ बीरबहूटी।
बूढ़ा–सज्ञा पु० दे० "बुड्ढा"।
बूता–सज्ञा पु० [हिं० वित्त] बल। शक्ति।
बूरना*†–क्रि० अ० दे० "डूबना"।
बूरा–सज्ञा पु० [हिं० भूरा] १ कच्ची चीनी जो भूरे रग की होती है। शक्कर। २ साफ की हुई चीनी। ३ सफूफ।
बृच्छ*†–सज्ञा पु० दे० "वृक्ष"।
बृहती–सज्ञा स्त्री० [स०] १ कटाई। वरहटा। बनभटा। २ विश्वावसु गधर्व की वीणा का नाम। ३ उत्तरीय वस्त्र। उपरना। ४ नौ अक्षरो का एक वर्णवृत्त।
बृहत्–वि० [स०] १ बहुत बड़ा। विशाल। २ दृढ। बलिष्ठ। ३ उच्च। ऊँचा। (स्वर आदि)
बृहदारण्यक–सज्ञा पु० [स०] शतपथ ब्राह्मण का एक प्रसिद्ध उपनिषद्।
बृहद–वि० दे० "बृहत्"।
बृहद्रथ–सज्ञा पु० [स०] १ इद्र। २ शतधन्वा के पुत्र का नाम। ३ जरासध के पिता का नाम।
बृहन्नल–सज्ञा पु० [स०] १ अर्जुन का एक नाम। २ बाहु।
बृहन्नला–सज्ञा स्त्री० [स०] अर्जुन का उस समय का नाम जिस समय वे अज्ञातवास में स्त्री के वेश में रहकर राजा विराट की कन्या को नाच-गाना सिखाते थे।
बृहस्पति–सज्ञा पु० [स०] १ एक प्रसिद्ध वैदिक देवता जो अगिरस के पुत्र और देवताओं के गुरु माने जाते हैं। २ सौर जगत् का पाँचवाँ ग्रह।
बेंग–सज्ञा पु० [स० भेक] मेंढक।
बेंट, बेंठ–सज्ञा स्त्री० [देश०] औजारो में लगा हुआ काठ का दस्ता। मूठ।
बेंड†–सज्ञा स्त्री० [हिं० बेड़ा] टेक। चाँड।
बेंड़ा†–वि० [हिं० आड़ा] १ आड़ा। तिरछा। २ कठिन। मुश्किल। टेढ़ा।
बेंत–सज्ञा पु० [स० वेतस] १ एक प्रसिद्ध लता जिसके डठल से छड़ियाँ और टोकरियाँ आदि बनती हैं। २ बेंत के डठल

की बनी हुई छड़ी।
मुहा०—बेंत की तरह काँपना = थर थर काँपना। बहुत अधिक डरना।
बेंदा–संज्ञा पुं० [सं० बिंदु] १. माथे पर लगाने का गोल तिलक। टीका। २. एक आभूषण। बंदी। बिंदी। ३. बड़ी गोल टिकली।
बेंदी–संज्ञा स्त्री० [सं० बिंदु, हिं० बिंदी] १. टिकली। बिंदी। २. शून्य। सुन्ना। ३. दावनी या बंदी नाम का गहना।
बेंवड़ा–संज्ञा पुं० [हिं० बेंड़ा = आड़ा] बंद किवाड़े के पीछे लगाने की लकड़ी। अरगल। गज। ब्योंड़ा।
बे–अव्य० [फा० बे मि० सं० वि] बिना। बग़ैर। जैसे, बेग़ैरत, बेइज्ज़त।
अव्य० [हिं० हे] छोटों के लिए संबोधन।
बेअंत*†–क्रि० वि० [हिं० बे + सं० अंत] जिसका कोई अंत न हो। अनंत। बेहद।
बेअकल–वि० [फ़ा० बे + अ० अक़्ल] मूर्ख।
बेअदब–वि० [फ़ा० बे + अ० अदब] [संज्ञा बेअदबी] जो बड़ों का आदर-सम्मान न करे।
बेआब–वि० [फ़ा० बे + अ० आब] १. जिसमें आब (चमक) न हो। २. तुच्छ।
बेआबरू–वि० [फ़ा०] बेइज्ज़त।
बेइज्जत–वि० [फा० बे + अ० इज्ज़त] [संज्ञा बेइज्ज़ती] १. जिसकी कोई प्रतिष्ठा न हो। अप्रतिष्ठित। २. अपमानित।
बेईल†–संज्ञा पुं० दे० "बेला"।
बेईमान–वि० [फ़ा०] [संज्ञा बेईमानी] १. जिसे धर्म्म का विचार न हो। अधर्म्मी। २. जो अन्याय, कपट या और किसी प्रकार का अनाचार करता हो।
बेउज्र–वि० [फ़ा० बे + अ० उज़्र] जो आज्ञा पालन करने में कोई आपत्ति न करे।
बेकदर–वि० [फ़ा०] बेइज्ज़त। अप्रतिष्ठित।
बेक़रार–वि० [फ़ा०] [संज्ञा बेक़रारी] जिसे शांति या चैन न हो। व्याकुल। विकल।
बेकल*†–वि० [सं० विकल] व्याकुल।
बेकली–संज्ञा स्त्री० [हिं० बेकल + ई (प्रत्य०)] घबराहट। बेचैनी। व्याकुलता।
बेकसूर–वि० [फ़ा० बे + अ० क़सूर] जिसका कोई दोष या क़सूर न हो। निरपराध।
बेकहा–वि० [हिं० बे + कहना] जो किसी का कहना न माने।
बेक़ाबू–वि० [फ़ा० बे + अ० क़ाबू] १. विवश। लाचार। २. जो किसी के वश में न हो।
बेकाम–वि० [हिं० बे + काम] १. जिसे कोई काम न हो। निकम्मा। निठल्ला। २. जो किसी काम में न आ सके।
बेक़ायदा–वि० [फा० बे + अ० कायदा] क़ायदे के खिलाफ़। नियमविरुद्ध।
बेकार–वि० [फ़ा०] [संज्ञा बेकारी] १. निकम्मा। निठल्ला। २. निरर्थक। व्यर्थ।
बेकारी*†–संज्ञा पुं० [हिं० बिकारी] बुलाने का शब्द। जैसे, अरे, हो आदि।
बे क़ुसूर–वि० [फा० बे + अ० कुसूर] जिसका कोई कुसूर न हो। निरपराध।
बेख*†–संज्ञा पुं० [सं० वेष] १. भेष। स्वरूप। २. सवाँग। नक़्ल।
बेखटके–क्रि० वि० [हिं० बे + हिं० खटका] बिना किसी प्रकार की रुकावट या असमंजस के। निस्संकोच।
बेख़बर–वि० [फ़ा०] १. अनजान। नावाकिफ़। बेहोश। बेसुध।
बेग–संज्ञा पुं० दे० "वेग"।
बेगम–संज्ञा स्त्री० [तु० बेग का स्त्री०] राज्ञी। रानी। राजपत्नी।
बेगरज़–वि० [फा० बे + अ० ग़रज़] जिसे कोई ग़रज़ या परवा न हो।
बेगवती–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णार्द्ध वृत्त।
बेगाना–वि० [फा०] १. ग़ैर। दूसरा। पराया। २. नावाकिफ़। अनजान।
बेगार–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. बिना मजदूरी का जबरदस्ती लिया हुआ काम। २. वह काम जो चित्त लगाकर न किया जाय।
मुहा०—बेगार टालना = बिना चित्त लगाए कोई काम करना।
बेगारी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] बेगार में काम करनेवाला आदमी।

बेगि*†–क्रि० वि० [सं० वेग] १ जल्दी से। शीघ्रतापूर्वक। २ चटपट। तुरत।
बेगुनाह–वि० [फा०] जिसने कोई गुनाह या अपराध न किया हो। बेकसूर। निर्दोष।
बेचना–क्रि० स० [सं० विक्रय] मूल्य लेकर कोई पदार्थ देना। विक्रय करना।
मुहा०—बेच खाना = खो देना। गँवा देना।
बेचवाना*†–क्रि० स० दे० "बिकवाना"।
बेचारा–वि० [फा०] [स्त्री० बेचारी] दीन और निस्सहाय। गरीब। दीन।
बेचैन–वि० [फा०] [संज्ञा बेचैनी] जिसे चैन न पड़ता हो। व्याकुल। विकल। बेकल।
बेजड़–वि० [फा० बे + हिं० जड़] जिसकी कोई जड़ या बुनियाद न हो।
बेजबान–वि० [फा०] १ जिसमें बातचीत करने की शक्ति न हो। गूँगा। मूक। २ दीन। गरीब।
बेजा–वि० [फा०] १ बेठिकाने। बेमौके। २ अनुचित। नामुनासिब। ३ खराब।
बेजान–वि० [फा०] १ मुरदा। मृतक। २ जिसमें कुछ भी दम न हो। ३ मुरझाया हुआ। कुम्हलाया हुआ। ४ निर्बल। कमजोर।
बेजाब्ता–वि० [फा० बे + अ० जाब्ता] कानून या नियम आदि के विरुद्ध।
बेजोड़–वि० [फा० बे + हिं० जोड़] १ जिसमें जोड़ न हो। अखंड। २ जिसकी समता न हो सके। अद्वितीय। निरुपम।
बेझना*–क्रि० स० दे० "बेधना"।
बेझा*†–संज्ञा पु० [सं० वेध] निशाना। लक्ष्य।
बेटकी*†–संज्ञा स्त्री० [हिं० बेटा] बेटी।
बेटला*†–संज्ञा पु० दे० 'बेटा'।
बेटा–संज्ञा पु० [सं० वटु = बालक] [स्त्री० बेटी] पुत्र। सुत। लड़का।
बेठन–संज्ञा पु० [सं० वेष्टन] वह कपड़ा जो किसी चीज को लपेटने के काम में आवे। बँधना।
बेठिकाने–वि० [फा० बे + हिं० ठिकाना] १ जो अपने उचित स्थान पर न हो। स्थान-च्युत। २ ऊल-जलूल। ३ व्यर्थ। निरर्थक।
बेड़–संज्ञा पु० [हिं० बाड़] वृक्ष के चारों ओर लगाई हुई बाड़। मेड़।
बेड़ना–क्रि० स० दे० "बेढ़ना"।
बेड़ा–संज्ञा पु० [सं० वेष्ट] १ बड़े बड़े लट्ठों या तख्तों आदि से बनाया हुआ ढाँचा जिस पर बैठकर नदी आदि पार करते हैं। तिरना।
मुहा०—बेड़ा पार करना या लगाना = किसी को संकट से पार लगाना या छुड़ाना।
२ बहुत सी नावों आदि का समूह।
वि० [हिं० आड़ा का अनु०] १ जो आँखों के समानांतर दाहिने बाएँ गया हो। आड़ा। २ कठिन। मुश्किल। विकट।
बेड़िन, बेड़िनी–संज्ञा स्त्री० [?] नट जाति की वह स्त्री जो नाचती-गाती हो।
बेड़ी–संज्ञा स्त्री० [सं० वलय] १ लोहे के कड़ों की जोड़ी या जंजीर जो कैदियों को इसलिए पहनाई जाती है, जिसमें वे भाग न सकें। निगड़। २ बाँस की एक प्रकार की टोकरी।
बेडौल–वि० [हिं० बे + डौल = रूप] १ जिसका डौल या रूप अच्छा न हो। भद्दा। २ दे० "बेढंगा"।
बेढंगा–वि० [हिं० बे + हिं० ढंग + आ (प्रत्य०)] [संज्ञा बेढंगापन] १ जिसका ढंग ठीक न हो। बुरे ढंगवाला। २ जो ठीक तरह से लगाया, रखा या सजाया न गया हो। बेतरतीब। ३ भद्दा। कुरूप।
बेढ़–संज्ञा पु० [?] नाश। बरबादी।
बेढ़ई–संज्ञा स्त्री० [हिं० बेढ़ना] कचौड़ी।
बेढ़ना–क्रि० स० [सं० वेष्टन] १ वृक्षों या खेतों आदि को, उनकी रक्षा के लिये, चारों ओर से किसी प्रकार घेरना। रूँधना। २ चौपायों को घेरकर हाँक ले जाना।
बेढब–वि० [हिं० बे + ढब] १ जिसका ढब अच्छा न हो। २ बेढंगा। भद्दा।
क्रि० वि० बुरी तरह से। बेतरह।
बेढ़ा–संज्ञा पु० [हिं० बेढ़ना = घेरना] १ हाथ में पहनने का एक प्रकार का कड़ा

(गहना)। २. घर के आस पास वह छोटा सा घेरा हुआ स्थान जिसमें तरकारियाँ आदि बोई जाती हों।
बेणीफूल–संज्ञा पुं० [सं० वेणी + हिं० फूल] फूल के आकार का सिर पर पहनने का एक गहना। सीसफूल।
बेतकल्लुफ़–वि० [फ़ा० बे + अ० तकल्लुफ] [संज्ञा बेतकल्लुफ़ी] १. जिसे तकल्लुफ की कोई परवा न हो। २. जो अपने हृदय की बात साफ़-साफ़ कह दे।
क्रि० वि० १. बिना किसी प्रकार के तकल्लुफ़ के। २. बेधड़क। निःसंकोच।
बेतना–क्रि० अ० [सं० वेतन] जान पड़ना।
बेतमीज–वि० [फ़ा० बे + अ० तमीज] जिसे शऊर या तमीज न हो। बेहूदा। उजड्ड।
बेतरह–क्रि० वि० [फ़ा० बे + अ० तरह] १. बुरी तरह से। अनुचित रूप से। २. असाधारण रूप से।
वि० बहुत अधिक। बहुत ज्यादा।
बेतरीक़ा–वि०,क्रि०वि०[फ़ा०बे+अ०तरीका] तरीक़े या नियम के विरुद्ध। अनुचित।
बेतहाशा–क्रि० वि० [फ़ा० बे + अ० तहाशा] १. बहुत अधिक तेजी से। २. बहुत घबराकर। ३. बिना सोचे समझे।
बेताब–वि० [फ़ा०] [संज्ञा बेताबी] १. दुर्बल। कमजोर। २. विकल। व्याकुल।
बेतार–वि० [हिं० बे + तार] बिना तार का। जिसमें तार न हो।
यौ०—बेतार का तार = विद्युत् की सहायता से भेजा हुआ वह समाचार जो साधारण तार की सहायता के बिना ही भेजा गया हो।
बेताल–संज्ञा पुं० दे० "वेताल"।
संज्ञा पुं० [सं० वैतालिक] भाट। बंदी।
बेतुका–वि० [फ़ा० बे + हिं० तुका] १. जिसमें सामंजस्य न हो। बेमेल। २. बेढंगा। बेढब।
बेतुका छंद–संज्ञा पुं० [हिं०बेतुका + सं०छंद] ऐसा छंद जिसके तुकांत आपस में न मिलते हों। अमित्राक्षर छंद।
बेदख़ल–वि० [फ़ा०] जिसका दख़ल, कब्जा या अधिकार न हो। अधिकार-च्युत।
बेदख़ली–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] संपत्ति पर से दखल या क़ब्ज़े का हटाया जाना अथवा न होना।
बेदम–वि० [फ़ा०] १. मृतक। मुरदा। २. मृतप्राय। अधमरा। ३. जर्जर। बोदा।
बेदमजनूँ–संज्ञा पुं० [फ़ा०] एक प्रकार का वृक्ष। इसकी छाल और फलों आदि का व्यवहार औषध में होता है।
बेदमुश्क–संज्ञा पुं० [फ़ा०] एक वृक्ष जिसमें कोमल और सुगंधित फूल लगते हैं।
बेदर्द–वि० [फ़ा०] [संज्ञा बेदर्दी] जो किसी की व्यथा को न समझे। कठोरहृदय।
बेदाग़–वि० [फ़ा०] १. जिसमें कोई दाग़ या धब्बा न हो। साफ़। २. निर्दोष। शुद्ध। ३. निरपराध। बेक़सूर।
बेदाना–संज्ञा पुं० [हिं० बिहीदाना] १. एक प्रकार का बढ़िया काबुली अनार। २. बिहीदाना नामक फल का बीज। दारुहल्दी। चित्रा।
वि० [हिं० बे (प्रत्य०) + फ़ा० दाना=बुद्धिमान्] मूर्ख। बेवकूफ़।
बेधड़क–क्रि० वि० [फ़ा० बे + हिं० धड़क] १. बिना किसी प्रकार के संकोच के। निःसंकोच। २. बे-खौफ़। निडर होकर। ३. बिना आगा पीछा किए।
वि० १. जिसे किसी प्रकार का संकोच या खटका न हो। निर्द्वंद्व। २. निर्भय।
बेधना–क्रि० स० [सं० वेधन] नुकीली चीज की सहायता से छेद करना। छेदना। भेदना।
बेधर्म–वि० [सं० विधर्म] जिसे अपने धर्म्म का ध्यान न हो। धर्मच्युत।
बेधिया†–संज्ञा पुं० [हिं० बेधना] अंकुश।
बेधीर*–वि० [फ़ा०बे + हिं०धीर] अधीर।
बेन†–संज्ञा पुं० [सं० वेणु] १. वंशी। मुरली। २. बाँसुरी। ३. सँपेरों के बजाने की तूमड़ी। महुवर। ४. बाँस।
बेनसीब–वि० [फ़ा० बे + अ० नसीब] अभागा। बदकिस्मत।

बेना†–संज्ञा पुं० [सं० वेणु] १ बाँस का बना हुआ छोटा पंखा। २ खस। उशीर। ३ बाँस।

बेनमून*–वि० [फ़ा० बे+नमूना] अद्वितीय। अनुपम।

बेनी–संज्ञा स्त्री० [सं० वेणी] १ स्त्रियों की चोटी। २ गंगा, सरस्वती और यमुना का संगम। त्रिवेणी। ३ किवाड़ा के पल्ले में लगी हुई एक छोटी लकड़ी जो दूसरे पल्ले को खुलने से रोकती है।

बेनु–संज्ञा पुं० [सं० वेणु] १ दे० "वेणु"। २ बंसी। मुरली। ३ बाँस।

बेपरद–वि० [फ़ा० बे+परदा] १ जिसके आगे कोई ओट न हो। अनावृत। २ नंगा। नग्न।

बेपरवा, बेपरवाह–वि० [फ़ा० बेपरवाह] [संज्ञा बेपरवाही] १ जिसे कोई परवा न हो। बेफिक्र। २ मन-मौजी। ३ उदार।

बेपाइ*†–वि० [हिं० बे+सं० उपाय] जिसे कोई उपाय न सूझे। भौचक। हक्का-बक्का।

बेपीर–वि० [फ़ा० बे+हिं० पीर=पीड़ा] १ दूसरों के कष्ट को कुछ न समझनेवाला। २ निर्दय। बेरहम।

बेपेंदी–वि० [हिं० बे+पेंदा] जिसमें पेंदा न हो।

मुहा०—बेपेंदी का लोटा=किसी के ज़रा से कहने पर अपना विचार बदलनेवाला आदमी।

बेफ़ायदा–वि०, क्रि० वि० [फ़ा०] व्यर्थ। निरर्थक।

बेफ़िक्र–वि० [फ़ा०] [संज्ञा बेफ़िक्री] जिसे कोई फ़िक्र न हो। निश्चिन्त। बेपरवा।

बेबस–वि० [सं० विवश] [संज्ञा बेबसी] १ जिसका कुछ वश न चले। लाचार। २ पराधीन। परवश।

बेबाक–वि० [फ़ा०] चुकता किया हुआ। चुकाया हुआ। (ऋण)

बेब्याहा–वि० [फ़ा० बे+हिं० ब्याहा] [स्त्री० बेब्याही] अविवाहित। कुँआरा।

बेभाव–क्रि० वि० [फ़ा० बे+हिं० भाव] जिसकी कोई गिनती न हो। बेहद।

बेमालूम–क्रि० वि० [फ़ा०] बिना किसी को पता लगे।

वि० जो मालूम न पड़ता हो।

बेमुरव्वत–वि० [फ़ा०] [संज्ञा बेमुरव्वती] जिसमें मुरव्वत न हो। तोता-चश्म।

बेमौक़ा–वि० [फ़ा०] जो अपने उपयुक्त अवसर पर न हो।

संज्ञा पुं० मौक़ा का न होना।

बेर–संज्ञा पुं० [सं० बदरी] १ एक प्रसिद्ध कँटीला वृक्ष जिसके कई भेद होते हैं। २ इस वृक्ष का फल।

संज्ञा स्त्री० [हिं० बार] १ बार। दफ़ा। २ विलंब। देर।

बेरजरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० बेर+झड़ी?] झड़बेरी।

बेरहम–वि० [फ़ा० बेरह्म] [संज्ञा बेरहमी] निर्दय। निठुर। दयाशून्य।

बेरा†–संज्ञा पुं० [सं० बेला] १ समय। वक्त। २ तड़का। प्रातःकाल।

बेरियाँ†–संज्ञा स्त्री० [हिं० बेर] समय। वक्त।

बेरी–संज्ञा स्त्री० १ दे० "बेर"। २ दे० "बेड़ी"।

बेरुख–वि० [फ़ा०] [संज्ञा बेरुखी] १. जो समय पड़ने पर रुख (मुँह) फेर ले। बेमुरव्वत। २ नाराज़। क्रुद्ध।

बेलद†–वि० [फ़ा० बलंद] १ ऊँचा। २ जो बुरी तरह विफल-मनोरथ हुआ हो।

बेलव*†–संज्ञा पुं० दे० "बिल्व"।

बेल–संज्ञा पुं० [सं० बिल्व] मँझोले आकार का एक प्रसिद्ध कँटीला वृक्ष। इसमें गोल फल लगते हैं। श्रीफल।

संज्ञा स्त्री० [सं० वल्ली] १ वे छोटे कोमल पौधे जो अपने बल पर ऊपर की ओर उठ कर नहीं बढ़ सकते। वल्ली। लता। लतर।

मुहा०—बेल मँढ़े चढ़ना=किसी कार्य का अंत तक ठीक ठीक पूरा उतरना।

२ संतान। वंश। ३ कपड़े या दीवार आदि पर बनी हुई फूल-पत्तियाँ आदि। ४. फीते आदि पर बनी हुई इसी प्रकार की फूल-पत्तियाँ। ५ नाव खेने का डाँड़।

संज्ञा पुं० [फ़ा० बेलच] १ एक प्रकार की

कुदाली। २. सड़क आदि बनाने में सीमा निर्धारित करने के लिये चूने आदि से ज़मीन पर डाली हुई लकीर।
*†संज्ञा पुं० बेले का फूल।
बेलच्चा—संज्ञा पुं० [फ़ा०] कुदाल। कुदारी।
बेलदार—संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह मजदूर जो फावड़ा चलाने का काम करता हो।
बेलन—संज्ञा पुं० [सं० वेलन] १.वह भारी,गोल और दंड के आकार का खंड जिसे लुढ़काकर किसी स्थान को समतल करते अथवा कंकड़-पत्थर आदि कूटकर सड़कें बनाते हैं। रोलर। २. किसी यंत्र आदि में लगा हुआ इस आकार का कोई बड़ा पुरज़ा। ३. कोल्हू का जाठ। ४. रूई धुनकने की मुठिया या हत्था। ५. दे० "बेलना"।
बेलना—संज्ञा पुं० [सं० वेलन] काठ का एक प्रकार का लंबा दस्ता जो रोटी, पूरी आदि की लोई बेलने के काम आता है।
क्रि० स० १. रोटी, पूरी आदि को चकले पर रखकर बेलने की सहायता से बढ़ाकर बड़ा और पतला करना। २. चौपट करना। नष्ट करना।
मुहा०—पापड़ बेलना = काम बिगाड़ना।
३. विनोद के लिये पानी के छींटे उड़ाना।
बेलपत्र—संज्ञा पुं० [सं० बिल्वपत्र] बेल के वृक्ष की पत्तियाँ जो शिवजी पर चढ़ाई जाती हैं।
बेलसना*†—क्रि० अ० [सं० विलास+ना (प्रत्य०)] भोग करना। सुख लूटना।
बेलहरा†—संज्ञा पुं० [हिं० बेल=पान+हरा (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० बेलहरी] लगे हुए पान रखने के लिये एक लंबोतरी पिटारी।
बेला—संज्ञा पुं० [सं० मल्लिका?] चमेली आदि की जाति का एक छोटा पौधा जिसमें सुगंधित सफ़ेद फूल लगते हैं।
संज्ञा पुं० [सं० बेला] १. लहर। २. चमड़े की एक प्रकार की छोटी कुल्हिया जिससे तेल दूसरे पात्र में भरते हैं। ३. कटोरा। ४. समुद्र का किनारा। ५. समय। वक्त।
बेलाग—वि० [फ़ा० बे+हिं० लाग=लगावट] १. बिलकुल अलग। २. साफ़। खरा।
बेली—संज्ञा पुं० [सं० वल] संगी। साथी।
बेलौस—वि० [हिं० बे+फ़ा० लौस] १. सच्चा। खरा। २. बेमुरव्वत। (क्व०)
बेवकूफ़—वि० [फ़ा०] [संज्ञा बेवकूफ़ी] मूर्ख। निर्बुद्धि। नासमझ।
बेवक्त—क्रि० वि० [फ़ा०] कुसमय में।
बेवपार*†—संज्ञा पुं० दे० "व्यापार"।
बेवफ़ा—वि० [फ़ा० बे+अ० वफ़ा] [संज्ञा बे-वफ़ाई] १. जो मित्रता आदि का निर्वाह न करे। २. बेमुरव्वत। दुःशील।
बेवरा*†—संज्ञा पुं० [हिं० ब्योरा] विवरण।
बेवरेवार—वि०[हिं० बेवरा+वार (प्रत्य०)] तफ़सीलवार। विवरण सहित।
बेवसाय†—संज्ञा पुं० दे० "व्यवसाय"।
बेवहरना*†—क्रि० अ० [सं० व्यवहार] व्यवहार करना। बरताव करना। बरतना।
बेवहरिया*†—संज्ञा पुं० [सं० व्यवहार+इया (प्रत्य०)] लेन-देन करनेवाला। महाजन।
बेवा—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] विधवा। राँड़।
बेवान*†—संज्ञा पुं० दे० "विमान"।
बेशक—क्रि० वि० [फ़ा० बे+अ० शक] अवश्य। निःसंदेह। ज़रूर।
बेशरम—वि० [फ़ा० बेशर्म] निर्लज्ज। बेहया।
बेशी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] अधिकता।
बेशुमार—वि० [फ़ा०] अगणित। असंख्य।
बेश्म—संज्ञा पुं० [सं० वेश्म] घर। गृह।
बेसंदर*†—संज्ञा पुं० [सं० वैश्वानर] अग्नि।
बेसँभर*†—वि० [फ़ा० बे+हिं० सँभाल] बेहोश।
बेसन—संज्ञा पुं० [देश०] चने की दाल का आटा। रेहन।
बेसनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बेसन] बेसन की बनी या भरी हुई पूरी।
बेसबरा—वि० [फ़ा० बे+अ० सब्र] जिसे सब्र या संतोष न हो। अधीर।
बेसर—संज्ञा पुं० [?] १. खच्चर। २. नाक में पहनने की नथ।
बेसरा—वि० [फ़ा० बे+सरा=ठहरने का स्थान] जिसे ठहरने का स्थान न हो। आश्रयहीन।

संज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का पक्षी।
बेसवा–संज्ञा स्त्री० [सं० वेश्या] रंडी।
बेसा*†–संज्ञा स्त्री० [सं० वेश्या] रंडी।
संज्ञा पु० दे० "भेष"।
बेसारा*†–वि० [हिं० बैठाना] १. बैठानेवाला। २ रखने या जमानेवाला।
बेसाहना†–क्रि० अ० [देश०] १ मोल लेना। खरीदना। २ जान-बूझकर अपने पीछे लगाना। (झगड़ा, विरोध आदि)
बेसाहनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० बेसाहना] माल लेने की क्रिया।
बेसाहा†–संज्ञा पु० [हिं० बेसाहना] खरीदी हुई चीज। सौदा। सामग्री।
बेसुध–वि० [हिं० बे+सुध=होश] १ अचेत। बेहोश। २ बेखबर। बदहवास।
बेसुर, बेसुरा–वि० [हिं० बे+सुर=स्वर] १ जो अपने नियत स्वर से हटा हुआ हो। (संगीत) २. बेमौका।
बेहंगम–वि० [सं० विहंगम] १ भद्दा। बेढंगा। २. बेढब। विकट।
बेहँसना*‡–क्रि० अ० [हिं० हँसना] ठठाकर हँसना। जोर से हँसना।
बेह*†–संज्ञा पु० [सं० वेध] छेद। छिद्र।
बेहड़–वि०, संज्ञा पु० दे० "बीहड़"।
बेहतर–वि० [फा०] किसी के मुकाबिले में अच्छा। किसी से बढ़कर।
अव्य० स्वीकृति-सूचक शब्द। अच्छा।
बेहतरी–संज्ञा स्त्री० [फा०] बेहतर का भाव। अच्छापन। भलाई।
बेहद–वि० [फा०] १ असीम। अपरिमित। अपार। २ बहुत अधिक।
बेहना†–संज्ञा पु० [देश०] १ जुलाहों की एक जाति। २ धुनिया।
बेहया–वि० [फा०] [संज्ञा बेहयाई] जिसे हया या लज्जा आदि बिलकुल न हो। निर्लज्ज। बेशर्म।
बेहर–वि० [देश०] १ अचर। स्थावर। २ अलग। पृथक्। जुदा।
बेहरा–वि० [देश०] अलग। पृथक्। जुदा।
बेहराना–क्रि० अ० [?] फटना।
बेहरी†–संज्ञा स्त्री० [?] बहुत से लोगों से चंदे के रूप में माँगकर एकत्र किया हुआ धन।
बेहला–संज्ञा पु० [अं० वायोलिन] सारंगी के आकार का एक प्रकार का अँगरेजी बाजा।
बेहाल–वि० [प्रा० बे+अ० हाल] [संज्ञा बेहाली] व्याकुल। विकल। बेचैन।
बेहिसाब–क्रि० वि० [प्रा० बे+अ० हिसाब] बहुत अधिक। बहुत ज्यादा। बेहद।
बेहुनरा–वि० [हिं० बे+फा० हुनर] जिसे कोई हुनर न आता हो। मूर्ख।
बेहूदा–वि० [फा०] [संज्ञा बेहूदगी] १ जो शिष्टता या सभ्यता न जानता हो। बदतमीज। २ अशिष्टतापूर्ण।
बेहूदापन–संज्ञा पु० [प्रा० बेहूदा+पन (प्रत्य०)] बेहूदगी। अशिष्टता। असभ्यता
बेहन*‡–क्रि० वि० [सं० विहीन] बिना। बगैर।
बेहंक–वि० [फा०] बफिक्र। चिंता-रहित।
बेहोश–वि० [फा०] मूर्च्छित। बेसुध।
बेहोशी–संज्ञा स्त्री० [फा०] मूर्च्छा। अचेतनता।
बैंगन–संज्ञा पु० [सं० वगण?] एक वार्षिक पौधा जिसके फल की तरकारी बनाई जाती है। भंटा।
बैंगनी, बैंजनी–वि० [हिं० बैंगन] जो ललाई लिए नीले रंग का हो।
बैंडा*–वि० दे० "बेंड़ा"।
बै–संज्ञा स्त्री० [सं० वाय] १ बैसर। कर्घा। (जुलाहे) २ दे० "वय"।
संज्ञा स्त्री० [अ०] बेचना। बिक्री।
बैकल†–वि० [सं० विकल] पागल। उन्मत्त।
बैकुंठ–संज्ञा पु० दे० "वैकुंठ"।
बैजंती–संज्ञा स्त्री० [सं० वैजयंती] १ एक प्रकार का पौधा, जिसके फूल लंबे होते और गुच्छों में लगते हैं। २ विष्णु की माला।
बैजनाथ–संज्ञा पु० दे० "वैद्यनाथ"।
बैजयंती–संज्ञा स्त्री० [सं० वैजयंती] बैजंती माला।
बैठक–संज्ञा स्त्री० [हिं० बैठना] १ बैठने का स्थान। २ वह स्थान जहाँ बहुत से लोग आकर बैठा करते हों। चौपाल। अथाई।

३. बैठने का आसन। पीठ। ४. किसी मूर्ति या खंभे आदि के नीचे की चौकी। आधार। पदस्तल। ५. बैठाई। जमा-वड़ा। ६. अधिवेशन। सभासदों का एकत्र होना। ७. बैठने की क्रिया या ढंग। ८. साथ उठना बैठना। संग। मेल। ९. दे० "बैठकी"।

बैठका–संज्ञा पुं० [हिं० बैठक] वह कमरा जहाँ लोग बैठते हों। बैठक।

बैठकी–संज्ञा स्त्री० [हिं० बैठक + ई (प्रत्य०)] १. बार बार बैठने और उठने की कसरत। बैठक। २. आसन। आधार। ३. धातु आदि का दीवट।

बैठन–संज्ञा स्त्री० [हिं० बैठना] १. बैठने की क्रिया, भाव, ढंग या दशा। २. बैठक। आसन।

बैठना–क्रि० अ० [सं० वेशन] १. स्थित होना। आसीन होना। आसन जमाना। मुहा०–बैठे बैठाए=१. अकारण। निरर्थक। २. अचानक। एकाएक। बैठे बैठे = १. निष्प्रयोजन। २. अचानक। ३. अकारण। बैठते उठते=सदा। सब अवस्था में। हर दम। २. किसी स्थान या अवकाश में ठीक रूप से जमना। ३. कंडे पर आना। अभ्यस्त होना। ४. जल आदि में घुली हुई वस्तु का नीचे आधार में जा लगना। ५. दबना। या डूबना। ६. पचक जाना। धँसना। ७. (कारबार) चलता न रहना। बिगड़ना। ८. तौल में ठहरना या परता पड़ना। ९. लागत लगना। खर्च होना। १०. लक्ष्य पर पड़ना। निशाने पर लगना। ११. पौधे का जमीन में गाड़ा जाना। लगना। १२. किसी स्त्री का किसी पुरुष के यहाँ पत्नी के समान रहना। घर में पड़ना। १३. पक्षियों का अंडे सेना। १४. काम से खाली रहना। बेरोजगार रहना।

बैठवाना–क्रि० स० [हिं० बैठाना का प्रेरणा०] बैठाने का काम दूसरे से कराना।

बैठाना–क्रि० स० [हिं० बैठना] १. स्थित करना। आसीन करना। उपविष्ट करना। २. आसन पर विराजने को कहना। ३. पद पर स्थापित करना। नियत करना। ४. ठीक जमाना। अड़ाना या टिकाना। ५. किसी काम को बार बार करके हाथ को अभ्यस्त करना। माँजना। ६. पानी आदि में घुली हुई वस्तु को तल में ले जाकर जमाना। ७. धँसाना या डुबाना। ८. पचकाना या धँसाना। ९. (कारबार) चलता न रहने देना। बिगाड़ना। १०. फेंक या चलाकर कोई चीज ठीक जगह पर पहुँचाना। लक्ष्य पर जमाना। ११. पौधे को पालने के लिये जमीन में गाड़ना। जमाना। १२. किसी स्त्री को पत्नी के रूप में रख लेना। घर में डालना।

बैठारना†*–क्रि० स० दे० "बैठाना"।

बैढ़ना†–क्रि० स० [हिं० बाड़ा, बेढ़ा] बंद करना। बेड़ना। (पशुओं को)

बैत–संज्ञा स्त्री० [अ०] पद्य। श्लोक।

बैतरनी–संज्ञा स्त्री० दे० "वैतरणी"।

बैताल–संज्ञा पुं० दे० "वैताल"।

बैद–संज्ञा पुं० [सं० वैद्य] [स्त्री० बैदिन] चिकित्सा-शास्त्र जाननेवाला पुरुष। वैद्य।

बैदगी†–संज्ञा स्त्री० [हिं० बैद] वैद्य की विद्या या व्यवसाय। वैद्य का काम।

बैदेही–संज्ञा स्त्री० दे० "वैदेही"।

बैन*–संज्ञा पुं० [सं० वचन] वचन। बात। मुहा०—बैन भरना = मुँह से बात निकलना।

बैना–संज्ञा पुं० [सं० वायन] वह मिठाई आदि जो विवाहादि में इष्ट-मित्रों के यहाँ भेजी जाती है।

*क्रि० स० [सं० वपन] बोना।

बैपार–संज्ञा पुं० [सं० व्यापार] व्यवसाय।

बैपारी–संज्ञा पुं० [सं० व्यापारी] रोजगारी।

बैयर*†–संज्ञा स्त्री० [सं० वधूवर] औरत। स्त्री।

बैया*‡–संज्ञा पुं० [सं० वाय] बै। बैसर।

बैर–संज्ञा पुं० [सं० वैर] १. शत्रुता। विरोध। अदावत। दुश्मनी। २. वैमनस्य। द्वेष। मुहा०–बैर काढ़ना या निकालना = बदला लेना। बैर ठानना = दुश्मनी मान लेना, दुर्भाव रखना आरंभ करना। बैर पड़ना =

शत्रु होकर कष्ट पहुँचाना। बैर बिसाहना या मोल लेना = किसी से दुश्मनी पैदा करना बैर लेना = बदला लेना। कसर निकालना। † संज्ञा पु० [सं० बदरी] बेर का फल।

बैरख–संज्ञा पुं० [तु० बैरक] सेना का झंडा। ध्वजा। पताका। निशान।

बैराग–संज्ञा पु० दे० "वैराग्य"।

बैरागी–संज्ञा पु०[सं०विरागी][स्त्री०बैरागिन] वैष्णव मत में साधुओं का एक भेद।

बैराना†–क्रि० अ० [हिं० वायु] वायु के प्रकोप से बिगड़ना।

बैरी–वि० [सं०वैरी] [स्त्री०बैरिन] १.बैर रखनेवाला। शत्रु। दुश्मन। २. विरोधी।

बैल–संज्ञा पु० [सं० बलद] [स्त्री० गाय] १. एक चौपाया जिसकी मादा को गाय कहते हैं। यह हल में जोता जाता, बोझ ढोता और गाड़ियों को खींचता है। २. मूर्ख।

बैसंदर*–संज्ञा पु० [सं० वैश्वानर] अग्नि।

बैस–संज्ञा स्त्री० [सं० वयस्] १. आयु। उम्र। २ यौवन। जवानी।

संज्ञा पु० क्षत्रियों की एक प्रसिद्ध शाखा।

बैसना*†–क्रि० स० [सं० वेशन] बैठना।

बैसर–संज्ञा स्त्री० [हिं० बय] जुलाहों का एक औजार जिससे वे कपड़ा बुनते समय बाने को बैठाते हैं। बघी। बय।

बैसवारा–संज्ञा पु० [हिं० बैस + वारा (प्रत्य०)] [वि० बैसवारी] अवध का पश्चिमी प्रांत।

बैसाख–संज्ञा पु० दे० "वैशाख"।

बैसाखी–संज्ञा स्त्री० [सं० विशाख] वह लाठी जिसके सिरे को कंधे के नीचे बगल में रख-कर लँगड़े लोग टेकते हुए चलते हैं।

बैसाना*–क्रि० स० [हिं० बैसना] बैठाना।

बैसारना*†–क्रि० स० दे० "बैठाना"।

बैसिक*†–संज्ञा पु० [सं० वैशिक] वेश्या से प्रीति करनेवाला। नायक।

बैहर*‡–वि० [सं० वैर = भयानक] भया-नक। क्रोधालु।

‡* संज्ञा स्त्री० [सं० वायु] वायु।

बोआई–संज्ञा स्त्री० [हिं० बोना] १. बोने का काम। २ बोने की मजदूरी।

बोक†–संज्ञा पु० [हिं० बकरा] बकरा।

बोज–संज्ञा पु० [देश०] घोड़े का एक भेद।

बोजा–संज्ञा स्त्री० [फा० बोज़ः] चावल से बना हुआ मद्य।

बोझ–संज्ञा [?] १. ऐसी राशि, गट्ठर या वस्तु जो उठाने या ले चलने में भारी जान पड़े। भार। २. भारीपन। गुरुत्व। वजन। ३. मुश्किल काम। कठिन बात। ४. किसी कार्य्य को करने में होनेवाला श्रम, कष्ट या व्यय। ५ वह व्यक्ति या वस्तु जिसके सम्बन्ध में कोई ऐसी बात करनी हो जो कठिन जान पड़े। ६. उतना ढेर जितना एक आदमी या पशु लादकर ले चल सके। गट्ठा।

बोझना–क्रि० स० [हिं० बोझ] बोझ लादना।

बोझल, बोझिल–वि० [हिं०बोझ] वज़नी। भारी। वज़नदार। गुरु।

बोझा–संज्ञा पु० दे० "बोझ"।

बोटी–संज्ञा स्त्री० [हिं० बोटा] मांस का छोटा टुकड़ा।

मुहा०–बोटी बोटी काटना = शरीर को काटकर खंड खंड करना।

बोड़ा–संज्ञा पु० [देश०] अजगर।

संज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार की पतली लंबी फली जिसकी तरकारी होती है। लोबिया।

बोड़ी–संज्ञा स्त्री० [?] १. दमड़ी। दमड़ी कौड़ी। २. अति अल्प धन।

संज्ञा स्त्री० दे० "बौंड़ी"।

बोत–संज्ञा पुं० [देश०] घोड़ों की एक जाति।

बोतल–संज्ञा स्त्री० [अं० बॉटल्] काँच का लंबी गरदन का एक गहरा बरतन।

बोदा–वि०[सं० अबोध] [भाव० बोदापन] १. मूर्ख। गावदी। २. सुस्त। मट्ठर। ३ जो दृढ़ या कड़ा न हो। फुसफुसा।

बोध–संज्ञा पु० [सं०] १. ज्ञान। जान-कारी। २. तसल्ली। धीरज। संतोष।

बोधक–संज्ञा पु० [सं०] १. ज्ञान कराने-वाला। जतानेवाला। २. शृंगार रस के हावों में से एक हाव जिसमें किसी संकेत या क्रिया द्वारा एक दूसरे को अपना मनो-

गत भाव जताया जाता है।

बोधगम्य–वि० सं०] समझ में आने योग्य।

बोधन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि०बोधनीय,बोध्य, बोधित] १. सूचित करना। २. जगाना।

बोधना*†–क्रि० स० [सं० बोधन] १. बोध देना। समझाना। २. ज्ञान देना।

बोधितरु, बोधिद्रुम–संज्ञा पुं० [सं०] गया मे स्थित पीपल का वह पेड़ जिसके नीचे बुद्ध भगवान् ने संबोधि (बुद्धत्व) प्राप्त की थी।

बोधिसत्त्व–संज्ञा पुं० [सं०] वह जो बुद्धत्व प्राप्त करने का अधिकारी हो गया हो।

बोना–क्रि० स० [सं० वपन] १.बीजकोजमने के लिये जुते हुए खेत या भुरभुरी की हुई जमीन में छितराना। २. बिखराना।

बोबा†–संज्ञा पुं० [देश०] [स्त्री० बोबी] १. स्तन। थन। चूँची। २. घर का साज-सामान। अंगड़-खंगड़। ३. गट्ठर। गठरी।

बोय‡–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० बू] गंध। बास।

बोर–संज्ञा पुं० [हिं० बोरना] डुबाने की क्रिया। डुबाव।

बोरना†–क्रि० स० [हिं० बूड़ना] १. जल या किसी और द्रव पदार्थ में निमग्न कर देना। डुबाना। २. कलंकित करना। बदनाम कर देना। ३. युक्त करना। योग देना या मिलाना। ४. घुले हुए रंग में डुबाकर रँगना।

बोरसी†–संज्ञा स्त्री० [हिं० गोरसी] अँगीठी।

बोरा–संज्ञा पुं० [सं० पुर = दोना या पत्र] टाट का बना हुआ थैला जिसमें अनाज आदि रखते हैं।

संज्ञा पुं० दे० "बोर"।

बोरिया–संज्ञा पुं० [फ़ा०] चटाई। बिस्तर।

मुहा०—बोरिया बधना उठाना=चलने की तैयारी करना। प्रस्थान करना।

बोरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० बोरा] टाट की छोटी थैली। छोटा बोरा।

बोरो–संज्ञा पुं० [हिं० बोरना] एक प्रकार का मोटा धान।

बोल–संज्ञा पुं० [हिं० बोलना] १. वचन। वाणी। २. ताना। व्यंग्य। लगती हुई बात। ३. बाजों का बँधा या गठा हुआ शब्द। ४. कथन या प्रतिज्ञा।

मुहा०—(किसी का) बोल बाला रहना या होना = १. बात की साख बनी रहना। २. मान-मर्यादा का बना रहना।

५. गीत का टुकड़ा। अंतरा।

बोल-चाल–संज्ञा स्त्री० [हिं० बोल + चाल] १. बातचीत। कथनोपकथन। २. मेल-मिलाप। परस्पर सद्भाव। ३. छेड़छाड़। ४. चलती भाषा। नित्य के व्यवहार की बोली।

बोलता–संज्ञा पु० [हिं० बोलना] १. ज्ञान कराने और बोलनेवाला तत्त्व। आत्मा। २. जीवन तत्त्व। प्राण।

वि० खूब बोलनेवाला। वाचाल।

बोलनहारा–संज्ञा पुं० [हिं० बोलना + हारा (प्रत्य०)] क्षुद्र आत्मा। बोलता।

बोलना–क्रि० अ० [सं० ब्रू ब्रूयते] १. मुख से शब्द उच्चारण करना।

यौ०—बोलना-चालना = बातचीत करना।

मुहा०—बोल जाना=१.मर जाना।(अशिष्ट) २.बाकी न रह जाना। चुक जाना। ३. व्यवहार के योग्य न रह जाना।

२. किसी चीज का आवाज निकालना।

क्रि० स० १. कुछ कहना। कथन करना। २. आज्ञा देकर कोई बात स्थिर करना। ठहराना। बदना। ३. रोक-टोक करना। ४. छेड़-छाड़ करना। *† ५. आवाज देना। बुलाना। पुकारना। *† ६. पास आने के लिये कहना या कहलाना।

मुहा०—*बोलि पठाना = बुला भेजना।

बोलवाना–क्रि० स० दे० "बुलवाना"।

बोलसर†–संज्ञा पुं० दे० "मौलसिरी"।

संज्ञा पुं० [?] एक प्रकार का घोड़ा।

बोलाचाली–संज्ञा स्त्री० दे० "बोलचाल"।

बोली–संज्ञा स्त्री० [हिं० बोलना] १. मुँह से निकली हुई आवाज। वाणी। २. अर्थ-युक्त शब्द या वाक्य। वचन। बात। ३.

नीलाम करनेवाले और लेनेवाले का जोर से दाम कहना। ४. वह शब्द-समूह जिसका व्यवहार किसी प्रदेश के निवासी अपने विचार प्रकट करने के लिये करते हैं। भाषा। ५ हँसी-दिल्लगी। ठठोली। मुहा०—बोली छोड़ना, बोलना या मारना=किसी को लक्ष्य करके उपहास या व्यंग्य के शब्द कहना।

बोल्लाह–संज्ञा पु० [देश०] घोड़ों की एक जाति।

बोवना†–क्रि० स० दे० "बोना"।

बोवाना–क्रि० स० [हिं० बोना का प्रे०] बोने का काम दूसरे से कराना।

बोह–संज्ञा स्त्री० [हिं० बोर] डुबकी। गोता।

बोहनी–संज्ञा स्त्री० [सं० बोधन=जगाना] किसी सौदे या दिन की पहली बिक्री।

बोहित*–संज्ञा पु० [सं० बोहित्थ] बड़ी नाव।

बौंड†–संज्ञा स्त्री० [सं० वोण्ट=टहनी] १ टहनी जो दूर तक गई हो। २ लता।

बौंडना†–क्रि० अ० [हिं० बौंड] लता की तरह बढ़ना। टहनी फेंकना।

बौंडर‡–संज्ञा पु० दे० "बवंडर"।

बौंडी–संज्ञा स्त्री० [हिं० बौंड] १ पौधों या लताओं के कच्चे फल। ढेंडी। ढाड। †२ फली। छीमी। ३ दमड़ी। छदाम।

बौआना†–क्रि० अ० [हिं० बाउ+आना (प्रत्य०)] १ स्वप्नावस्था का प्रलाप। २ पागल या बाई चढ़े मनुष्य की भाँति अट्ट-सट्ट बक उठना। बर्राना।

बौखल–वि० [हिं० बाउ] पागल।

बौखलाना–क्रि० अ० [हिं० बाउ+सं० स्खलन] कुछ कुछ सनक जाना।

बौछाड़–संज्ञा स्त्री० [सं० वायु+क्षरण] १ बूँदों की झड़ी जो हवा के झोंके के साथ कहीं जा पड़े। झटास। २ वर्षा की बूँदों के समान किसी वस्तु का बहुत अधिक संख्या में कहीं आकर पड़ना। ३ बहुत सा देते जाना या सामने रखते जाना। झड़ी। ४ किसी के प्रति कहे हुए वाक्यों का तार। ५ ताना। कटाक्ष। बोली-ठोली।

बौछार†–संज्ञा स्त्री० दे० "बौछाड़"।

बौड़हा–वि० दे० "बावला"।

बौद्ध–वि० [सं०] बुद्ध द्वारा प्रचारित। संज्ञा पु० गौतम बुद्ध का अनुयायी।

बौद्ध-धर्म–संज्ञा पु० [सं०] बुद्ध द्वारा प्रवर्तित धर्म। गौतम बुद्ध का चलाया मत। इसकी दो प्रधान शाखाएँ हैं—हीनयान और महायान।

बौना–संज्ञा पु० [सं० वामन] [स्त्री० बौनी] अत्यंत ठिगना या नाटा मनुष्य।

बौर†–संज्ञा पु० [सं० मुकुल] आम की मंजरी। मौर।

बौरना–क्रि० अ० [हिं० बौर+ना (प्रत्य०)] आम के पेड़ में मंजरी निकलना। मौरना।

बौरहा†–वि० दे० "बावला"।

बौरा–वि० [सं० वातुल] [स्त्री० बौरी] १. बावला। पागल। २. नादान। मूर्ख।

बौराई*†–संज्ञा स्त्री० [हिं० बौरा+ई] पागलपन।

बौराना†–क्रि० अ० [हिं० बौरा+ना (प्रत्य०)] १. पागल हो जाना। सनक जाना। २ विवेक या बुद्धि से रहित हो जाना। क्रि० स० किसी को ऐसा कर देना कि वह भला-बुरा न विचार सके।

बौराह*†–वि० [हिं० बौरा] बावला। पागल

बौरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० बौरा] बावली स्त्री।

बौलसिरी–संज्ञा स्त्री० दे० "मौलसिरी"।

ब्यतीतना*–क्रि० स० [सं० व्यतीत+हिं० ना (प्रत्य०)] गुजर जाना। बीत जाना।

ब्यवहर†–संज्ञा पु० [सं० व्यवहार] उधार।

ब्यवहरिया–संज्ञा पु० [हिं० व्यवहार] रुपए का लेन-देन करनेवाला। महाजन।

ब्यवहार–संज्ञा पु० [सं० व्यवहार] १ दे० "व्यवहार"। २ रुपए का लेन-देन। ३ रुपए के लेन-देन का संबंध। ४ सुख-दुःख में परस्पर सम्मिलित होने का संबंध।

ब्यवहारी–संज्ञा पु० [सं० व्यवहारिन्] १ कार्यकर्ता। मामला करनेवाला। २ लेन-देन करनेवाला। व्यापारी।

ब्याज–संज्ञा पु० [सं० व्याज] १ दे० "व्याज"। २ वृद्धि। सूद।

ब्याना–क्रि० स० [हिं० बिया + ना (प्रत्य०)] जनना। उत्पन्न करना। गर्भ से निकालना।
ब्यापना*†–क्रि० अ० [सं० व्यापन] १. किसी वस्तु या स्थान में इस प्रकार फैलना कि उसका कोई अंश बाक़ी न रह जाय। ओत-प्रोत होना। २. चारों ओर जाना। फैलना। ३. घेरना। ग्रसना। ४. प्रभाव करना।
ब्यारी–संज्ञा स्त्री० दे० "ब्यालू"।
ब्याल–संज्ञा पुं० दे० "व्याल"।
ब्याली–संज्ञा स्त्री० [सं० व्याला] सर्पिणी। वि० [सं० व्यालिन्] सर्प धारण करनेवाला।
ब्यालू–संज्ञा पुं० [सं० विहार?] रात का भोजन। ब्यारी।
ब्याह–संज्ञा पुं० [सं० विवाह] वह रीति या रस्म जिससे स्त्री और पुरुष में पति-पत्नी का संबंध स्थापित होता है। विवाह। परिणय। दारपरिग्रह। पाणिग्रहण।
ब्याहता–वि० [सं० विवाहित] जिसके साथ विवाह हुआ हो।
ब्याहना–क्रि० स० [सं० विवाह + ना (प्रत्य०)] [वि० ब्याहता] १. देश, काल और जाति की रीति के अनुसार पुरुष का किसी स्त्री को अपनी पत्नी या स्त्री का किसी पुरुष को अपना पति बनाना। २. किसी का किसी के साथ विवाह-संबंध कर देना।
ब्याहुला†–वि० [हिं० ब्याह] विवाह का।
ब्योंचना–क्रि० अ० [सं० विकुंचन] एकबारगी भंगि के साथ मुड़ जाने या टेढ़े हो जाने से नसों का स्थान से हट जाना, जिससे पीड़ा और सूजन होती है। मुरकना।
ब्योंत–संज्ञा स्त्री० [सं० व्यवस्था] १. व्यवस्था। मामला। माजरा। २. ढंग। तरीका। साधन-प्रणाली। ३. युक्ति। उपाय। ४. आयोजन। उपक्रम। तैयारी। ५. संयोग। अवसर। नौबत। ६. प्रबंध। इंतजाम। व्यवस्था। ७. काम पूरा उतारने का हिसाब-किताब। ८. साधन या सामग्री आदि की सीमा। समाई। ९. पहनावा बनाने के लिए कपड़े की काट-छाँट। तराश। किता।
ब्योंतना–क्रि० स० [हिं० ब्योंत] कोई पहनावा बनाने के लिये कपड़े को नापकर काटना-छाँटना।
ब्योंताना–क्रि० स० [हिं० ब्योंतना का प्रेरणा०] शरीर की नाप के अनुसार कपड़ा कटाना।
ब्योपार–संज्ञा पुं० दे० "व्यापार"।
ब्योरन–संज्ञा स्त्री० [हिं० ब्योरना] बालों को सँवारने की क्रिया या ढंग।
ब्योरना–क्रि० स० [सं० विवरण] गुथे या उलझे हुए बालों आदि को सुलझाना।
ब्योरा–संज्ञा पुं० [हिं० ब्योरना] १. किसी घटना के अंतर्गत एक एक बात का उल्लेख या कथन। विवरण। तफ़सील। यौ०—ब्योरेवार = विस्तार के साथ। २. किसी एक विषय के भीतर की सारी बात। ३. वृत्त। वृत्तांत। हाल। समाचार। ४. अंतर। भेद। फरक।
ब्योहर–संज्ञा पुं० [हिं० व्यवहार] लेन-देन का व्यापार। रुपया ऋण देना।
ब्योहरिया–संज्ञा पुं० [सं० व्यवहार] सूद पर रुपए के लेन-देन का व्यापार करनेवाला।
ब्योहार–संज्ञा पुं० दे० "व्यवहार"।
ब्रज–संज्ञा पुं० दे० "व्रज"।
ब्रजना*–क्रि० अ० [सं० व्रजन] चलना।
ब्रह्मंड–संज्ञा पुं० दे० "ब्रह्मांड"।
ब्रह्म–संज्ञा पुं० [सं० ब्रह्मन्] १. एक मात्र नित्य चेतन सत्ता जो जगत का कारण और सत्, चित्, आनंद-स्वरूप है। २. ईश्वर। परमात्मा। ३. आत्मा। चैतन्य। ४. ब्राह्मण (विशेषतः समस्त पदों में)। ५. ब्रह्मा (समास में)। ६. ब्राह्मण जो मरकर प्रेत हुआ हो। ब्रह्मराक्षस। ७. वेद। ८. एक की संख्या।
ब्रह्मगाँठ–संज्ञा स्त्री० दे० "ब्रह्मग्रंथि"।
ब्रह्मग्रंथि–संज्ञा स्त्री० [सं०] यज्ञोपवीत या जनेऊ की मुख्य गाँठ।
ब्रह्मघोष–संज्ञा पुं० [सं०] वेदध्वनि।
ब्रह्मचर्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. योग में एक प्रकार का यम। वीर्य को रक्षित रखने का प्रतिबंध। २. चार आश्रमों में पहला

आश्रम, जिसमे पुरुष को स्त्री-संभोग आदि व्यसनो से दूर रहकर केवल अध्ययन मे लगा रहना चाहिए।

ब्रह्मचारिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ब्रह्मचर्य का व्रत धारण करनेवाली स्त्री। २ दुर्गा। पार्वती। ३ सरस्वती।

ब्रह्मचारी—संज्ञा पु० [सं० ब्रह्मचारिन्] [स्त्री० ब्रह्मचारिणी] १ ब्रह्मचर्य का व्रत धारण करनेवाला। २. ब्रह्मचर्य आश्रम के अतर्गत व्यक्ति। प्रथमाश्रमी।

ब्रह्मज्ञान—संज्ञा पु० [सं०] ब्रह्म, पारमार्थिक सत्ता या अद्वैत सिद्धात का बोध।

ब्रह्मज्ञानी—वि० [सं० ब्रह्मज्ञानिन्] परमार्थ तत्त्व का बोध रखनेवाला। अद्वैतवादी।

ब्रह्मण्य—वि० [सं०] १. ब्राह्मणो पर श्रद्धा रखनेवाला। २ ब्रह्म या ब्रह्मा-सबधी।

ब्रह्मत्व—संज्ञा पु० [सं०] १ ब्रह्म का भाव। २ ब्राह्मणत्व।

ब्रह्मदिन—संज्ञा पु० [सं०] ब्रह्मा का एक दिन जो १०० चतुर्युगियो का माना जाता है।

ब्रह्मदोष—संज्ञा पु० [सं०] [वि० ब्रह्मदोषी] ब्राह्मण को मारने का दोष या पाप।

ब्रह्मद्रोही—वि० [सं०] ब्राह्मणो से वैर रखनेवाला।

ब्रह्मद्वार—संज्ञा पु० [सं०] ब्रह्मरध्र।

ब्रह्मनिष्ठ—वि० [सं०] १ ब्राह्मण-भक्त। २ ब्रह्मज्ञान-संपन्न।

ब्रह्मपद—संज्ञा पु० [सं०] १ ब्रह्मत्व। २ ब्राह्मणत्व। ३ मोक्ष। मुक्ति।

ब्रह्मपुत्र—संज्ञा पु० [सं०] १ ब्रह्मा का पुत्र। २ नारद। ३ वशिष्ठ। ४ मनु। ५ मरीचि। ६ सनकादिक। ७ एक नद जो मानसरोवर से निकलकर बगाल की खाडी मे गिरता है।

ब्रह्मपुराण—संज्ञा पु० [सं०] अठारह पुराणो में से एक। पुराणो म इसका नाम पहले आने से कुछ लोग इसे आदि पुराण भी कहते है।

ब्रह्मभट्ट—संज्ञा पु० [सं०] १ वेदो का ज्ञाता। २ ब्रह्मविद्। ३ एक प्रकार के ब्राह्मण।

ब्रह्मभोज—संज्ञा पु० [सं०] ब्राह्मण-भोजन।

ब्रह्ममुहूर्त्त—संज्ञा पु० [सं०] प्रभात। तड़का।

ब्रह्मयज्ञ—संज्ञा पु० [सं०] १ विधिपूर्वक वेदाभ्यास। २ वेदाध्ययन। वेद पढ़ाना।

ब्रह्मरंध्र—संज्ञा पु० [सं०] मस्तक के मध्य म माना गया गुप्त छेद जिससे होकर प्राण निकलने से ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है।

ब्रह्मराक्षस—संज्ञा पु० [सं०] वह ब्राह्मण जो मरकर भूत हुआ हो।

ब्रह्मरात्रि—संज्ञा स्त्री० [सं०] ब्रह्मा की एक रात जो एक कल्प की होती है।

ब्रह्मरूपक—संज्ञा पु० [सं०] १६ अक्षरो का एक छद। चचला। चित्र।

ब्रह्मरेख—संज्ञा स्त्री० दे० "ब्रह्मलेख"।

ब्रह्मलेख—संज्ञा पु० [सं०] भाग्य का लेख जो ब्रह्मा किसी जीव के गर्भ मे आते ही उसके मस्तक पर लिख देते है।

ब्रह्मर्षि—संज्ञा पु० [सं०] ब्राह्मण ऋषि।

ब्रह्मलोक—संज्ञा पु० [सं०] १ वह लोक जहाँ ब्रह्मा रहते है। २ मोक्ष का एक भेद।

ब्रह्मवाद—संज्ञा पु० [सं०] १ वेद का पढना-पढाना। वेदपाठ। २ अद्वैतवाद।

ब्रह्मवादी—वि० [सं० ब्रह्मवादिन्] [स्त्री० ब्रह्मवादिनी] वेदाती। अद्वैतवादी।

ब्रह्मविद्—वि० [सं०] १ ब्रह्म को जानने या समझनेवाला। २ वेदार्थज्ञाता।

ब्रह्मविद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] ब्रह्म को जानने की विद्या। उपनिषद् विद्या।

ब्रह्मवैवर्त्त—संज्ञा पु० [सं०] १ वह प्रतीति मात्र जो ब्रह्म के कारण हो, जैसे—जगत् की। २ ब्रह्म के कारण प्रतीत होनेवाला जगत्। ३ श्रीकृष्ण। ४ अठारह पुराणो म से एक पुराण जो कृष्ण-भक्ति-सबधी है।

ब्रह्मसमाज—संज्ञा पु० दे० "ब्राह्म-समाज"।

ब्रह्मसूत्र—संज्ञा पु० [सं०] १ जनेऊ। यज्ञोपवीत। २ व्यास-कृत शारीरिक सूत्र।

ब्रह्महत्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] ब्राह्मण-वध। ब्राह्मण को मार डालना। (महापाप)

ब्रह्मांड—संज्ञा पु० [सं०] १ चौदहो भुवना

का समूह। संपूर्ण विश्व, जिसके भीतर अनंत लोक हैं। २. खोपड़ी। कपाल।
ब्रह्मा–संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्रह्म के तीन सगुण रूपों में से सृष्टि की रचना करनेवाला रूप। विधाता। पितामह। २. यज्ञ का एक ऋत्विक्।
ब्रह्माणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ब्रह्मा की स्त्री या शक्ति। २. सरस्वती।
ब्रह्मानंद–संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्म के स्वरूप के अनुभव से होनेवाला आनंद।
ब्रह्मावर्त्त–संज्ञा पुं० [सं०] सरस्वती और दृषद्वती नदियों के बीच का प्रदेश।
ब्रह्मास्त्र–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का अस्त्र जो मंत्र से चलाया जाता था।
ब्रात*–संज्ञा पुं० दे० "व्रात्य"।
ब्राह्म–वि० [सं०] ब्रह्म-संबंधी।
संज्ञा पुं० विवाह का एक भेद।
ब्राह्मण–संज्ञा पुं० [सं०] स्त्री० ब्राह्मणी] १. चार वर्णों में सबसे श्रेष्ठ वर्ण या जाति जिसके प्रधान कर्म पठन-पाठन, यज्ञ, ज्ञानोपदेश आदि हैं। २ उक्त जाति या वर्ण का मनुष्य। ३. वेद का वह भाग जो मंत्र नहीं कहलाता। ४. विष्णु। ५. शिव।
ब्राह्मणत्व–संज्ञा पुं० [सं०] ब्राह्मण का भाव, अधिकार या धर्म। ब्राह्मणपन।
ब्राह्मणभोजन–संज्ञा पुं० [सं०] ब्राह्मणों का भोजन। ब्राह्मणों को खिलाना।
ब्राह्मण्य–संज्ञा पुं० दे० "ब्राह्मणत्व"।
ब्राह्ममुहूर्त्त–संज्ञा पुं० [सं०] सूर्योदय से पहले दो घड़ी तक का समय।
ब्राह्मसमाज–संज्ञा पुं० [सं०] एक नया संप्रदाय जिसमें एक मात्र ब्रह्म की ही उपासना की जाती है।
ब्राह्मी–संज्ञा स्त्री [सं०] १. दुर्गा। २. शिव की अष्टमातृकाओं में से एक। ३. भारतवर्ष की वह प्राचीन लिपि जिससे नागरी, बँगला आदि आधुनिक लिपियाँ निकली हैं। ४. एक प्रसिद्ध बूटी जो स्मरण-शक्ति और बुद्धि बढ़ानेवाली है।
ब्रीड़ना*–क्रि० अ० [सं० ब्रीडन] लज्जित होना। लजाना।

भ

भ–हिंदी वर्णमाला का चौबीसवाँ और पवर्ग का चौथा वर्ण। इसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ है।
भंकार*–संज्ञा पुं० [अनु०] विकट शब्द।
भंग–संज्ञा पुं० [सं०] १. तरंग। लहर। २ पराजय। हार। ३. खंड। टुकड़ा। ४. भेद। ५. कुटिलता। टेढ़ापन। ६. भय। ७. टूटने का भाव। विनाश। विध्वंस। ८. बाधा। अड़चन। रोक। ९ टेढ़े होने या झुकने का भाव।
संज्ञा स्त्री० दे० "भाँग"।
भंगड़–वि० [हिं० भाँग + अड़ (प्रत्य०)] बहुत भाँग पीनेवाला। भँगेड़ी।
भंगना†–क्रि० अ० [हिं० भंग] १. टूटना। २. दबना। हार मानना।
क्रि० स० १. तोड़ना। २. दबाना।
भँगरा–संज्ञा पुं० [हिं० भाँग + रा = का] भाँग के रेशे से बुना हुआ एक कपड़ा।
संज्ञा पुं० [सं० भृंगराज] एक प्रकार की वनस्पति जो औषध के काम में आती है। भँगरैया। भंगराज।
भंगराज–संज्ञा पुं० [सं० भृंगराज] १. काले रंग की एक चिड़िया। २. दे० "भँगरा"।
भँगरैया†–संज्ञा स्त्री० दे० "भँगरा"।
भँगार–संज्ञा पुं० [सं० भंग] १. वह गड्ढा जिसमें वर्षा का पानी समाता है। २. वह गड्ढा जो कुआँ बनाते समय खोदते हैं।
संज्ञा पुं० [हिं० भाँग] घास-फूस। कूड़ा।

भंगी—संज्ञा पुं० सं० भंगिन्] [स्त्री० भगिनी] १. भंगशील। नष्ट होनेवाला। २ भंग करनेवाला। भंगकारी।
संज्ञा पुं० [सं० भक्ति] [स्त्री० भंगिन] एक अस्पृश्य जाति जिसका काम मलमूत्र आदि उठाना है।
वि० [हिं० भांग] भांग पीनेवाला। भंगेड़ी।
भंगुर—वि० [सं०] १. भंग होनेवाला। नाशवान्। २. कुटिल। टेढ़ा।
भँगेड़ी—वि० दे० "भंगड़"।
भंजक—वि० [सं०] [स्त्री० भंजिका] भंगकारी। तोड़नेवाला।
भंजन—संज्ञा पुं० [सं०] १ तोड़ना। भंग करना। २. भंग। ध्वंस। ३ नाश।
वि० भंजक। नाशनेवाला।
भँजना—क्रि० अ० [सं० भंजन] १. टुकड़े टुकड़े होना। टूटना। २ किसी बड़े सिक्के का छोटे छोटे सिक्कों से बदला जाना। भुनना।
क्रि० अ० [हिं० भाँजना] १ बटा जाना। २. कागज के तख्तों या कई परतों में मोड़ा जाना। भाँजा जाना।
भँजाना*—क्रि० स० [सं० भंजन] तोड़ना।
भँजाना†—क्रि० स० [हिं० भँजना] १ भँजने का सकर्मक रूप। तुड़वाना। २ बड़ा सिक्का आदि देकर उतने ही मूल्य के छोटे सिक्के लेना। भुनाना।
क्रि० स० [हिं० भाँजना] दूसरे को भाँजने के लिये प्रेरणा करना या नियुक्त करना।
भंटा†—संज्ञा पुं० [सं० वृंताक] बैंगन।
भंड—संज्ञा पुं० दे० "भाँड"।
वि० [सं०] १ अश्लील या गंदी बातें बकनेवाला। २ धूर्त। पाखंडी।
भँड़ताल†—संज्ञा पुं० [हिं० भाँड+ताल] एक प्रकार का गाना और नाच जिसमें तालियाँ पीटते हैं। भँड़तिल्ला।
भँड़तिल्ला—संज्ञा पुं० दे० "भँड़ताल"।
भंडना—क्रि० स० [सं० भंडन] १ हानि पहुँचाना। बिगाड़ना। २ तोड़ना। ३ नष्ट-भ्रष्ट करना। ४ बदनाम करना।
भँड़फोड़†—संज्ञा पुं० [हिं० भाँड़ा+फोड़ना] १. मिट्टी के बरतन का गिराना या तोड़ना-फोड़ना। २ मिट्टी के बरतन का टूटना-फूटना। ३ रहस्योद्घाटन। भंडाफोड़।
भँड़भाँड़—संज्ञा पुं० [सं० भांडीर] एक कँटीला क्षुप जिसकी पत्तियाँ और जड़ दवा के काम आती हैं। भड़भांड़।
भँडरिया—संज्ञा पुं० [हिं० भड्डरि] एक जाति का नाम। इस जाति के लोग सामुद्रिक आदि की सहायता से लोगों को भविष्य बतलाकर निर्वाह करते हैं। भड्डर।
वि० १ पाखंडी। २ धूर्त। मक्कार।
संज्ञा स्त्री० [हिं० भंडारा+इया (प्रत्य०)] दीवारों में बना हुआ पल्लेदार ताख।
भँड़सार, भँड़साल†—संज्ञा स्त्री० [हिं० भाँड+साला] वह गोदाम जहाँ अन्न इकट्ठा किया जाता है। खत्ती। खत्ता।
भंडा—संज्ञा पुं० [सं० भांड] १. बरतन। पात्र। भाँड़ा। २ भंडारा। ३ भेद।
मुहा०—भंडा फूटना=भेद खुलना।
भँडाना—क्रि० स० [हिं० भांड] १ उछल-कूद मचाना। उपद्रव करना। २ तोड़ना-फोड़ना। नष्ट करना।
भंडार—संज्ञा पुं० [सं० भांडागार] १ कोष। खजाना। २ अन्नादि रखने का स्थान। कोठार। ३ पाकशाला। भंडारा। ४. पेट। उदर। ५ दे० "भंडारा"।
भंडारा—संज्ञा पुं० [हिं० भंडार] १ दे० "भंडार"। २ समूह। झुंड। ३ साधुओं का भोज। ४ पेट।
भंडारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० भंडार+ई (प्रत्य०)] १ छोटी कोठरी। २ कोश। खजाना।
संज्ञा पुं० [हिं० भंडार+ई (प्रत्य०)] १ खजानची। कोषाध्यक्ष। २ तोशाखान का दारोगा। भंडारे का प्रधान अध्यक्ष। ३ रसोइया। रसोईदार।
भँड़ौआ—संज्ञा पुं० [हिं० भांड] १ भाँडों के गाने का गीत। ऐसा गीत जो सभ्य समाज में गाने के योग्य न हो। २ हास्य आदि रसों की साधारण अथवा निम्न

कोटि की कविता।
भँभाना–क्रि० अ० दे० "रँभाना"।
भँभीरी–संज्ञा स्त्री० [अनु०] लाल रंग का एक बरसाती पतिंगा। जुलाहा।
भँभेरि*†–संज्ञा स्त्री० [हिं० भँभरना] भय।
भँवन*–संज्ञा स्त्री० [सं० भ्रमण] घूमना। फिरना।
भँवना–क्रि० अ० [सं० भ्रमर] १. घूमना। फिरना। २. चक्कर लगाना।
भँवर–संज्ञा पुं० [सं० भ्रमर] १. भौंरा। २. बहाव में वह स्थान जहाँ पानी की लहर एक केंद्र पर चक्राकार घूमती है। ३. गड्ढा। गर्त।
भँवरकली–संज्ञा स्त्री० [हिं० भँवर + कली] लोहे या पीतल की वह कड़ी जो कील में इस प्रकार जड़ी रहती है कि वह जिधर चाहे, उधर सहज में घूम सकती है।
भँवरजाल–संज्ञा पुं० [हिं० भँवर + जाल] सांसारिक झगड़े-बखेड़े। भ्रमजाल।
भँवरभीख–संज्ञा स्त्री० [हिं० भँवर + भीख] वह भीख जो भौंरे के समान घूम-फिरकर माँगी जाय।
भँवरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० भँवरा] १. पानी का चक्कर। भँवर। २. जंतुओं के शरीर के ऊपर वह स्थान जहाँ के रोएँ और बाल एक केंद्र पर घूमे हुए हों।
संज्ञा स्त्री० [हिं० भँवरना या भँवना] १. दे० "भाँवर"। २. बनियों का सौदा लेकर घूम घूमकर बेचना। ३. फेरी। गश्त।
भँवाना*–क्रि० स० [हिं० भँवना] १. घुमाना। चक्कर देना। २. भ्रम में डालना।
भँवारा†–वि० [हिं० भँवना आरा (प्रत्य०)] भ्रमणशील। घूमनेवाला। फिरनेवाला।
भँसना–क्रि० अ० [हिं० बहना] पानी में डाला या फेंका जाना।
भ–संज्ञा पुं० [सं०] १. नक्षत्र। २. ग्रह। ३. राशि। ४. शुक्राचार्य। ५. भ्रमर। भौंरा। ६. भूधर। पहाड़। ७. क्रांति। ८. दे० "भगण"।
भइया–संज्ञा पुं० [हिं० भाई+इया (प्रत्य०)] १. भाई। २. बराबरवालों के लिये आदर-सूचक शब्द।
भक–संज्ञा स्त्री० [अनु०] सहसा अथवा रह रहकर आग के जल उठने का शब्द।
भकाऊँ–संज्ञा पुं० [अनु०] हौवा।
भकुआ†–वि० [सं० भेक] मूर्ख। मूढ़।
भकुआना–क्रि० अ० [हिं० भकुआ] चकपका जाना। घबरा जाना।
क्रि० स० १. चकपका देना। घबरा देना। २. मूर्ख बनाना।
भकोसना–क्रि० स० [सं० भक्षण] जल्दी या भद्देपन से खाना। निगलना।
भक्त–वि० [सं०] १. भागों में बाँटा हुआ। २. बाँटकर दिया हुआ। प्रदत्त। ३. अलग किया हुआ। ४. अनुयायी। ५. सेवा करनेवाला। भक्ति करनेवाला।
भक्तता–संज्ञा स्त्री० [सं०] भक्ति।
भक्तवत्सल–वि० [सं०] [संज्ञा भक्तवत्सलता] १. जो भक्तों पर कृपा करता हो। २. विष्णु।
भक्ताई*‡–संज्ञा स्त्री० [हिं० भक्त] भक्ति।
भक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अनेक भागों में विभक्त करना। बाँटना। २. भाग। विभाग। ३. अंग। अवयव। ४. विभाग करनेवाली रेखा। ५. सेवा-शुश्रूषा। ६. पूजा। अर्चन। ७. श्रद्धा। ८. भक्ति-सूत्र के अनुसार ईश्वर में अत्यंत अनुराग का होना। इसके नौ प्रकार ये हैं—श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पाद-सेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य और आत्मनिवेदन। ९. एक वृत्त का नाम।
भक्तिसूत्र–संज्ञा पुं० [सं०] शांडिल्य मुनि कृत वैष्णव संप्रदाय का एक सूत्र-ग्रंथ।
भक्ष–संज्ञा पुं० दे० "भक्षण"।
भक्षक–वि० [सं०] [स्त्री० भक्षिका] खानेवाला। भोजन करनेवाला। खादक।
भक्षण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० भक्ष्य, भक्षित, भक्षणीय] १. भोजन करना। किसी वस्तु को दाँतों से काटकर खाना। २. भोजन।
भक्षना*–क्रि० स० [सं० भक्षण] खाना।

भक्षी–वि० [सं० भक्षिन्] [स्त्री० भक्षिणी] खानेवाला। भक्षक।

भक्ष्य–वि० [सं०] खाने के योग्य।
संज्ञा पुं० खाद्य। अन्न। आहार।

भख*–संज्ञा पुं० [सं० भक्ष] आहार। भोजन।

भखना*–क्रि० स० [सं० भक्षण] खाना।

भगंदर–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का फोड़ा जो गुदावर्त के किनारे होता है।

भग–संज्ञा पुं० [सं०] १ योनि। २ सूर्य्य। ३ बारह आदित्यों में से एक। ४ ऐश्वर्य। ५. सौभाग्य। ६ धन। ७ गुदा।

भगण–संज्ञा पुं० [सं०] १ खगोल में ग्रहों का पूरा चक्कर जो ३६० अंश का होता है। २. छंदशास्त्रानुसार एक गण जिसमें आदि का एक वर्ण गुरु और अंत के दो वर्ण लघु होते हैं।

भगत–वि० [सं० भक्त] [स्त्री० भगतिन] १ सेवक। उपासक। २ वह साधु जो मांस आदि न खाता हो। भक्त का उलटा।
संज्ञा पुं० १ वैष्णव या वह साधु जो तिलक लगाता और मांस आदि न खाता हो। २ दे० "भगतिया"। ३ होली में वह स्वाँग जो भगत का किया जाता है। ४ भूत-प्रेत उतारनेवाला पुरुष। ओझा।

भगतबछल*–वि० दे० "भक्तवत्सल"।

भगति*–संज्ञा स्त्री० दे० "भक्ति"।

भगतिया–संज्ञा पुं० [हिं० भक्त] [स्त्री० भगतिन] राजपूताने की एक जाति। इस जाति के लोग गाने-बजाने का काम करते हैं और इनकी कन्याएँ वेश्याओं की वृत्ति करती और भगतिन कहलाती हैं।

भगती–संज्ञा स्त्री० दे० "भक्ति"।

भगदर–संज्ञा स्त्री० [हिं० भागना] भागने की क्रिया या भाव।

भगन*–वि० दे० "भग्न"।

भगना†–क्रि० अ० दे० "भागना"।
संज्ञा पुं० दे० "भानजा"।

भगर*‡–संज्ञा पुं० [देश०] छल। फरेब।

भगल–संज्ञा पुं० [देश०] १ छल। कपट। ढोंग। २ जादू। इंद्रजाल।

भगली–संज्ञा पुं० [हिं० भगल + ई (प्रत्य०)] १ ढोंगी। छली। २ बाजीगर।

भगवंत*†–संज्ञा पुं० दे० "भगवत्"।

भगवती–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ देवी। २ गौरी। ३ सरस्वती। दुर्गा।

भगवत्–संज्ञा पुं० [सं०] १. ईश्वर। परमेश्वर। २ विष्णु। शिव।

भगवद्गीता–संज्ञा स्त्री० [सं०] महाभारत के भीष्मपर्व के अंतर्गत एक प्रसिद्ध सर्व-श्रेष्ठ प्रकरण। इसमें उन उपदेशों और प्रश्नोत्तरों का वर्णन है जो भगवान् कृष्ण-चंद्र ने अर्जुन का मोह छुड़ाने के लिए उनसे युद्धस्थल में किए थे।

भगवान, भगवान–वि० [सं० भगवत्] १ भगवत्। ऐश्वर्ययुक्त। २ पूज्य।
संज्ञा पुं० १ ईश्वर। परमेश्वर। २ विष्णु। ३ कोई पूज्य और आदरणीय व्यक्ति।

भगाना–क्रि० स० [सं० व्रज] १ किसी को भागने में प्रवृत्त करना। दौड़ाना। २ हटाना। दूर करना।
*क्रि० अ० दे० "भागना"।

भगिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] बहन।

भगीरथ–संज्ञा पुं० [सं०] अयोध्या के एक प्रसिद्ध सूर्य्यवंशी राजा जो राजा दिलीप के पुत्र थे। ये घोर तपस्या करके गंगा को पृथ्वी पर लाए थे।
वि० [सं०] भगीरथ की तपस्या के समान भारी। बहुत बड़ा।

भगोड़ा–वि० [हिं० भागना + ओड़ा (प्रत्य०)] १ भागा हुआ। २ भागनेवाला। कायर।

भगोल–संज्ञा पुं० दे० "खगोल"।

भगौती*†–संज्ञा स्त्री० दे० "भगवती"।

भगौहाँ–वि० [हिं० भागना + औहाँ (प्रत्य०)] १ भागने को उद्यत। २ कायर।
वि० [हिं० भगवा] भगवा। गेरुआ।

भग्गुल*‡–वि० [हिं० भागना] १ रण से भागा हुआ। २ भगोड़ा। भग्गू।

भग्गू†–वि० [हिं० भागना + ऊ (प्रत्य०)] जो विपत्ति देखकर भागता हो। कायर।

भग्न–वि० [सं०] १. टूटा हुआ। २. जो हारा या हराया गया हो। पराजित।
भग्नावशेष–संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी टूटे फूटे मकान या उजड़ी हुई बस्ती का बचा हुआ अंश। खँडहर। २. किसी टूटे हुए पदार्थ के बचे हुए टुकड़े।
भचक–संज्ञा स्त्री० [हिं० भचकना] भचककर चलने का भाव। लँगड़ापन।
भचकना–क्रि० अ० [हिं० भौचक] आश्चर्य मे निमग्न होकर रह जाना।
क्रि० अ० [अनु० भच] चलने के समय पैर का इस प्रकार टेढ़ा पड़ना कि देखने मे लँगड़ापन मालूम हो।
भचक्र–संज्ञा पु० [सं०] १. राशियो या ग्रहों के चलने का मार्ग। कक्षा। २. नक्षत्रों का समूह।
भच्छ*‡–संज्ञा पु० दे० "भक्ष्य"।
भच्छना*†–क्रि० स० [सं० भक्षण] खाना।
भजन–संज्ञा पु० [सं०] १. बार बार किसी पूज्य या देवता आदि का नाम लेना। स्मरण। जप। २ वह गीत जिसमे देवता आदि के गुणों का कीर्त्तन हो।
भजना–क्रि० स० [सं० भजन] १. सेवा करना। २. आश्रय लेना। आश्रित होना। ३. देवता आदि का नाम रटना। जपना।
क्रि०अ० [स०व्रजन, पा० वजन] १. भागना। भाग जाना। २. पहुँचना। प्राप्त होना।
भजनानंद–संज्ञा पु० [स०] भजन मे मिलनेवाला आनंद।
भजनानंदी–संज्ञा पुं० [स० भजनानद + ई] भजन गाकर सदा प्रसन्न रहनेवाला।
भजनी–संज्ञा पु० [हिं० भजन + ई (प्रत्य०)] भजन गानेवाला।
भजाना–क्रि० अ० [हिं० भजना = दौड़ना] दौड़ना। भागना।
क्रि० अ० [हिं० भजना का सक० रूप] भगाना। दूर कर देना।
भजियाउर†–संज्ञा स्त्री० [हिं० भाजी + चाउर (चावल)] चावल, दही, घीआ आदि एक साथ पकाकर बनाया हुआ भोजन। उभिया। भिजियाउर।
भट–संज्ञा पुं० [सं०] १. युद्ध करनेवाला। योद्धा। २. सिपाही। सैनिक।
भटकटाई, भटकटैया–संज्ञा स्त्री० [हिं० कटाई] एक छोटा और काँटेदार क्षुप।
भटकना–क्रि० अ० [सं० भ्रम ?] १. व्यर्थ इधर-उधर घूमते फिरना। २. रास्ता भूल जाने के कारण इधर-उधर घूमना। ३. भ्रम में पड़ना।
भटकाना–क्रि० स० [हिं० भटकना का स० रूप] १. गलत रास्ता बताना। २. भ्रम मे डालना।
भटकैया*‡–संज्ञा पुं० [हिं०भटकना + ऐया (प्रत्य०)] १.भटकनेवाला। २.भटकानेवाला।
भटकौहाँ*‡–वि० [हिं० भटकना + औहाँ (प्रत्य०)] भटकानेवाला।
भटनास–संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की लता। इसमें एक प्रकार की फलियाँ लगती हैं जिनके दानों की दाल बनती है।
भटभेरा*†–संज्ञा पु० [हिं० भट + भिड़ना] १. दो वीरों का मुकाबला। भिड़ंत। २. धक्का। टक्कर। ठोकर। ३. ऐसी भेंट जो अनायास हो जाय।
भटा†–संज्ञा पु० दे० "बैंगन"।
भटू†–संज्ञा स्त्री० [सं० वधू] स्त्रियों के संबोधन के लिये एक आदर-सूचक शब्द।
भट्ट–संज्ञा पु० [सं० भट] १. ब्राह्मणो की एक उपाधि। २ भाट। ३. योद्धा। सूर।
भट्ठा–संज्ञा पु० [सं० भ्राष्ट्र] १. बड़ी भट्ठी। २ ईंटे या खपड़े इत्यादि पकाने का पजावा।
भट्ठी–संज्ञा स्त्री० [स०भ्राष्ट्र, प्रा० भट्ठ] १ ईंटों आदि का बना हुआ बड़ा चूल्हा जिस पर हलवाई, लोहार और वैद्य आदि अनेक प्रकार के काम करते हैं। २ वह स्थान जहाँ देशी शराब बनती है।
भठियारपन–संज्ञा पु० [हिं० भठियारा + पन (प्रत्य०)] १ भठियारे का काम। २. भठियारों की तरह लड़ना और गालियाँ बकना।
भठियारा–संज्ञा पु० [हिं० भट्ठी+इयारा(प्रत्य०) [स्त्री० भठियारी या भठियारिन] सराय का

प्रबन्ध करनेवाला या रक्षक।

भड़ैया–सज्ञा पु० [सं० विटया] आडंबर।

भड़क–सज्ञा स्त्री०[अनु०] १ दिखाऊ चमक-दमक। चमकीलापन। - भड़कीले होने का भाव। २ भड़कने का भाव। सहम।

भड़कदार–वि० [हिं० भड़क + फा० दार] १. चमकीला। भड़कीला। २ रोबदार।

भड़कना–क्रि० अ० [भड़क (अनु०) + ना (प्रत्य०)] १ तेजी से जल उठना। २ भिभकना। चौंकना। डरकर पीछे हटना। (पशुओं के लिये) ३ क्रुद्ध होना।

भड़काना–क्रि० स० [हिं० भड़कना का स० रूप] १. प्रज्वलित करना। जलाना। २ उत्तेजित करना। उभारना। ३ भयभीत कर देना। चमकाना। (पशुओं के लिये)

भड़कीला–वि० दे० "भड़कदार"।

भड़भड़–सज्ञा स्त्री० [अनु०] १ भड़भड़ शब्द जो प्राय आघातों से होता है। २ भीड़। भव्भड़। ३ व्यर्थ की और बहुत अधिक बातचीत।

भड़भड़ाना–क्रि० स० [अनु०] भड़-भड़ शब्द करना।

भड़भड़िया–वि० [हिं० भड़भड़] बहुत अधिक और व्यर्थ की बातें करनेवाला।

भड़भाँड़–सज्ञा पु०[सं० भाण्डीर] एक कँटीला पौधा। सत्यानासी। घमोय।

भड़भूँजा–सज्ञा पु० [हिं० भाड़ + भूँजना] एक जाति जो भाड़ में अन्न भूनती है।

भड़ार*†–सज्ञा पु० दे० "भड़ार"।

भड़िहाई*†–क्रि० वि०[हिं० भड़िहा] चोरों की तरह। लुक छिप या दबकर।

भड़ी–सज्ञा स्त्री०[हिं०भड़काना] भूठा बढ़ावा।

भड़ुआ–सज्ञा पु० [हिं० भाँड़] १ वह जो वेश्याओं की दलाली करता हो। २ सफरदाई।

भड्डर–सज्ञा पु० [सं० भद्र] ब्राह्मणों में बहुत निम्न श्रेणी की एक जाति। भड़र।

भणना*†–क्रि० अ० [सं० भणन] कहना।

भणित–वि० [सं०] कहा हुआ।

भतार†–सज्ञा पु०[सं० भर्तार] पति। खसम।

भतीजा–सज्ञा पु०[सं०भ्रातृज] [स्त्री०भतीजी] भाई का पुत्र। भाई का लड़का।

भत्ता–सज्ञा पु० [सं० भरण] दैनिक व्यय जो किसी कर्मचारी को यात्रा के समय मिलता है।

भदई–सज्ञा स्त्री० [हिं० भादों] वह फसल जो भादों में तैयार होती है।

भदावर–सज्ञा पु० [सं० भद्रवर] एक प्रांत जो आजकल ग्वालियर राज्य में है।

भदेसिल†–वि० [हिं० भद्दा] भद्दा। भौंडा।

भदौंहाँ†–वि० [हिं० भादों] भादों मास में होनेवाला।

भदौरिया–वि० [हिं० भदावर] भदावर प्रांत का। भदावर संबंधी।

सज्ञा पु० [हिं० भदावर] क्षत्रियों की एक जाति।

भद्दा–वि० पु० [अनु० भद] [स्त्री० भद्दी] जो देखने में मनोहर न हो। कुरूप।

भद्दापन–सज्ञा पु०[हिं० भद्दा + पन (प्रत्य०)] भद्दे होने का भाव।

भद्र–वि० [सं०] १ सभ्य। सुशिक्षित। २ कल्याणकारी। ३ श्रेष्ठ। ४ साधु। सज्ञा पु० [सं०] १ महादेव। २ उत्तर दिशा के दिग्गज का नाम। ३ सुमेरु पर्वत। ४ सोना। स्वर्ण।

सज्ञा पु० [सं० भद्राकरण] सिर, दाढ़ी, मूछा आदि सबके बालों का मुंडन।

भद्रक–सज्ञा पु० [सं०] १ एक प्राचीन देश। २ एक वर्ण-वृत्त का नाम।

भद्रकाली–सज्ञा स्त्री० [सं०] १ दुर्गादेवी की एक मूर्ति। २ कात्यायिनी।

भद्रता–सज्ञा स्त्री०[सं०] भद्र होने का भाव। शिष्टता। सभ्यता। शराफत। भलमनसी।

भद्रा–सज्ञा स्त्री० [सं०] १. केकयराज की एक कन्या जो श्रीकृष्णजी को ब्याही थी। २ आकाशगंगा। ३ गाय। ४ दुर्गा। ५ पिंगल में उपजाति वृत्त का दसवाँ भेद। ६ पृथ्वी। ७ सुभद्रा का एक नाम। ८ फलित ज्योतिष के अनुसार एक अशुभ योग। ९ बाधा। (बोलचाल)

भद्रिका–सज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त।

भद्री–वि० [सं० भद्रिन्] भाग्यवान्।
भनक–संज्ञा स्त्री० [सं० भणन] १. धीमा शब्द। ध्वनि। २. उड़ती हुई खबर।
भनकना*†–क्रि० स० [सं० भणन] कहना।
भनना*–क्रि० सं० [सं० भणन] कहना।
भनभनाना–क्रि० अ० [अनु०] भनभन शब्द करना। गुंजारना।
भनभनाहट–संज्ञा स्त्री० [हिं० भनभनाना + आहट (प्रत्य०)] भनभनाने का शब्द। गुंजार
भनित*–वि० दे० "भणित"।
भबका–संज्ञा पुं० [हिं० भाप] अर्क आदि उतारने का एक प्रकार का बंद बड़ा घड़ा।
भभकना–क्रि० अ० [अनु०] १. उबलना। २. गरमी पाकर किसी चीज का फूटना। ३. जोर से जलना। भड़कना।
भभकी–संज्ञा स्त्री० [हिं० भभक] घुड़की।
भब्भड़, भभ्भड़–संज्ञा स्त्री० [हिं० भीड़] भीड़भाड़। अव्यवस्थित जन-समुदाय।
भभरना*†–क्रि० अ० [हिं० भय] १. भयभीत होना। डरना। २. घबरा जाना। ३. भ्रम में पड़ना।
भभूका–संज्ञा पुं० [हिं० भभक] ज्वाला।
भभूत–संज्ञा स्त्री० [सं० विभूति] भस्म जिसे शैव लोग भुजाओं आदि पर लगाते है।
भयंकर–वि० [सं०] जिसे देखने से भय लगता हो। डरावना। भयानक। भीषण।
भयंकरता–संज्ञा स्त्री० [सं०] भयंकर होने का भाव। डरावनापन। भीषणता।
भय–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध मनोविकार जो किसी आनेवाली भीषण आपत्ति की आशंका से उत्पन्न होता है। डर। खौफ। मुहा०—भय खाना = डरना।
*वि० दे० "हुआ"।
भयप्रद–वि० [सं०] दे० "भयानक"।
भयभीत–वि० [सं०] डरा हुआ।
भयवाद–संज्ञा पुं० [हिं० भाई+आद (प्रत्य०)] एक ही गोत्र या वंश के लोग। भाई-बंद।
भयहारी–वि० [सं० भयहारिन्] डर छुड़ाने-वाला। डर दूर करनेवाला।
भया*†–वि० दे० "हुआ"।
भयान*†–वि० [सं० भयानक] डरावना।
भयानक–वि० [सं०] जिसे देखने से भय लगता हो। भीषण। भयंकर। डरावना। संज्ञा पुं० साहित्य में नौ रसों में छठा रस जिसमें भीषण दृश्यों का वर्णन होता है।
भयाना*†–क्रि० अ० [सं० भय] डरना। क्रि० स० भयभीत करना। डराना।
भयावन†–वि० [हिं० भय] डरावना।
भयावह–वि० [सं०] भयंकर। डरावना।
भरंत*†–संज्ञा स्त्री० [सं० भ्रांति] संदेह।
भर–वि० [हिं० भरना] कुल। पूरा। सब। *†क्रि० वि० [हिं० भार] बल से। द्वारा। संज्ञा पुं० [सं० भार] १. भार। बोझ। वजन। २. पुष्टि। मोटाई। संज्ञा पुं० [सं० भरत] एक छोटी और अस्पृश्य जाति।
भरकना*†–क्रि० अ० दे० "भड़कना"।
भरण–संज्ञा पुं० [सं०] पालन। पोषण।
भरणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] सत्ताईस नक्षत्रों में दूसरा नक्षत्र। तीन तारों के कारण इसकी आकृति त्रिकोण सी है। वि० भरण या पालन करनेवाला।
भरत–संज्ञा पु० [सं०] १. कैकेयी के गर्भ से उत्पन्न राजा दशरथ के पुत्र और रामचंद्र के छोटे भाई जिनका विवाह मांडवी के साथ हुआ था। २. दे० "जड़ भरत"। ३. शकुंतला के गर्भ से उत्पन्न दुष्यंत के पुत्र जिनका जन्म कण्व ऋषि के आश्रम में हुआ था। इस देश का "भारतवर्ष" नाम इन्हीं के नाम से पड़ा है। ४. एक प्रसिद्ध मुनि जो नाट्यशास्त्र के प्रधान आचार्य माने जाते हैं। ५. संगीत शास्त्र के एक आचार्य्य का नाम। ६. वह जो नाटकों में अभिनय करता हो। नट। ७. प्राचीन काल का उत्तर भारत का एक देश जिसका उल्लेख वाल्मीकि-रामायण में है। संज्ञा पुं० [सं० भरद्वाज] लवा पक्षी का एक भेद। संज्ञा पुं० [देश०] १. कांसा नामक धातु। कसकुट। कांसा। †२. ठठेरा।

भरतखंड—संज्ञा पुं० [सं०] राजा भरत के लिए हुए पृथ्वी के नौ खंडों में से एक खंड। भारतवर्ष। हिंदुस्तान।

भरता—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का नमकीन सालन जो बैंगन, आलू आदि को भूनकर बनाया जाता है। चोखा।

भरतार—संज्ञा पुं० [सं० भर्ता] पति। खसम।

भरती—संज्ञा स्त्री० [हिं० भरना] १ किसी चीज में भरे जाने का भाव। भरा जाना। मुहा०—भरती करना = किसी के बीच में रखना, लगाना या बैठाना। भरती का = बहुत ही साधारण या रद्दी। २ दाखिल या प्रविष्ट होने का भाव।

भरथ*†—संज्ञा पुं० दे० "भरत"।

भरथरी—संज्ञा पुं० दे० "भर्तृहरि"।

भरदूल—संज्ञा पुं० दे० "भरत" (पक्षी)।

भरद्वाज—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक वैदिक ऋषि जो गोत्र-प्रवर्तक और मंत्रकार थे। ये राजा दिवोदास के पुरोहित और सप्तर्षियों में से भी एक माने जाते हैं। २ इन ऋषि के वंशज या गोत्रापत्य।

भरना—क्रि० स० [सं० भरण] १ खाली जगह को पूरा करने के लिये कोई चीज डालना। पूर्ण करना। २ उँडेलना। उलटना। डालना। ३ तोप या बंदूक आदि में गोली बारूद आदि डालना। ४ पद पर नियुक्त करना। रिक्त पद की पूर्ति करना। ५ ऋण का परिशोध या हानि की पूर्ति करना। चुकाना। देना। मुहा०—(किसी का) घर भरना = (किसी को) खूब धन देना। ६ गुप्त रूप से किसी की निंदा करना। ७ निर्वाह करना। निबाहना। ८ काटना। डसना। ९ सहना। झेलना। १० सारे शरीर में लगाना। पोतना। क्रि० अ० १ किसी रिक्त पात्र आदि का कोई और पदार्थ पड़ने के कारण पूर्ण होना। २ उँडेला या डाला जाना। ३ तोप या बंदूक आदि में गोली बारूद आदि का होना। ४ ऋण आदि का परिशोध होना। ५ मन में क्रोध होना। असंतुष्ट या अप्रसन्न रहना। ६ घाव में अंगूर आना। घाव का ठीक और बराबर होना। ७ किसी अंग का बहुत काम करने के कारण दर्द करने लगना। ८ शरीर का हृष्ट-पुष्ट होना। संज्ञा पुं० १ भरने की क्रिया या भाव। २ रिश्वत। घूस।

भरनि*†—संज्ञा स्त्री० [सं० भरण] पहनावा। पोशाक। कपड़े-लत्ते।

भरनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० भरना] करघे में की ढरकी। नार।

भरपाई—क्रि० वि० [हिं० भरना+पाना] पूर्ण रूप से। भली भाँति। संज्ञा स्त्री० जो कुछ बाकी हो वह पूरा पूरा पा जाना।

भरपूर—वि० [हिं० भरना+पूरा] १ पूरी तरह से भरा हुआ। पूरा पूरा। २ जिसमें कोई कमी न हो। परिपूर्ण। क्रि० वि० पूर्ण रूप से। अच्छी तरह।

भरभराना—क्रि० अ० [अनु०] १ (रोओं) खड़ा होना। २ घबराना।

भरभेंटा*†—संज्ञा पुं० [हिं० भर+भेटना] सामना। मुकाबला। मुठभेड़।

भरम*†—संज्ञा पुं० [सं० भ्रम] १ संशय। संदेह। धोखा। २ भेद। रहस्य। मुहा०—भरम गँवाना = भेद खोलना।

भरमना*†—क्रि० अ० [सं० भ्रमण] १ घूमना। चलना। फिरना। २ मारा मारा फिरना। भटकना। ३ धोखे में पड़ना। संज्ञा स्त्री० [सं० भ्रम] १ भूल। गलती। २ धोखा। भ्रांति। भ्रम।

भरमाना—क्रि० स० [हिं० भरमना का सक० रूप] १ भ्रम में डालना। बहकाना। २ भटकाना। व्यर्थ इधर-उधर घुमाना। क्रि० अ० चकित होना। हैरान होना।

भरमार—संज्ञा स्त्री० [हिं० भरना+मार = अधिकता] बहुत ज्यादती। अत्यंत अधिकता।

भरराना—क्रि० अ० [अनु०] १ भरर

शब्द के साथ गिरना। भरराना। २. टूट पड़ना।
भरवाना–क्रि० स० [हिं० भरना का प्रे० रूप] भरने का काम दूसरे से कराना।
भरसक–क्रि० वि० [हिं० भर=पूरा + सक= शक्ति] यथाशक्ति। जहाँ तक हो सके।
भरसन*†–संज्ञा स्त्री० दे० "भर्त्सना"।
भरसाईं–संज्ञा पु० दे० "भाड़"।
भरहरना–क्रि० अ० दे० "भरभराना"।
भरांति*–संज्ञा स्त्री० दे० "भ्रांति"।
भराई–संज्ञा स्त्री० [हिं० भरना] भरने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
भराव–संज्ञा पुं० [हिं० भरना=आव (प्रत्य०)] भरने का काम या भाव। भरत।
भरित–वि० [सं०] भरा हुआ।
भरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० भर] दस माशे या एक रुपए के बराबर एक तौल।
भरु*–संज्ञा पु० [सं० भार] बोझ। वजन।
भरुआ–संज्ञा पु० दे० "भड़ुआ"।
भरुहाना†–क्रि० अ० [हिं० भारी + होना (प्रत्य०)] घमंड करना। अभिमान करना।
क्रि० स० [हिं० भ्रम] १. बहकाना। धोखा देना। २. उत्तेजित करना। बढ़ावा देना।
भरैया†–वि० [सं० भरण] पालन करनेवाला। पालक। रक्षक।
वि० [हिं० भरना] भरनेवाला।
भरोसा–संज्ञा पु० [सं० वर + आशा] १. आश्रय। आसरा। २. सहारा। अवलंब। ३. आशा। उम्मेद। ४. दृढ़ विश्वास।
भर्ग–संज्ञा पु० [सं०] शिव। महादेव।
भर्त्ता–संज्ञा पु० [सं० भर्तृ] १ अधिपति। स्वामी। २ मालिक। खाविन्द। ३. विष्णु।
भर्त्तार–संज्ञा पु० [सं० भर्तृ] पति। स्वामी।
भर्तृहरि–संज्ञा पु० [सं०] एक प्रसिद्ध वैयाकरण और कवि जो उज्जयिनी के राजा विक्रमादित्य के छोटे भाई थे।
भर्त्सना–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. निंदा। शिकायत। २. डाँट-डपट। फटकार।
भर्म*†–संज्ञा पुं० दे० "भ्रम"।
भर्मन*†–संज्ञा पुं० दे० "भ्रमण"।
भर्राना–क्रि० अ० [भर से अनु०] भर्र भर्र शब्द होना।
भर्सन*†–संज्ञा स्त्री० दे० "भर्त्सना"।
भलपति–संज्ञा पु० [हिं० भाला + सं० पति] भाला रखनेवाला। नेजेबरदार।
भलमनसत, भलमनसी–संज्ञा स्त्री० [हिं० भला + मनुष्य] भलेमानस होने का भाव। सज्जनता। शराफ़त।
भला–वि० [सं० भद्र] १. अच्छा। उत्तम। श्रेष्ठ। २. बढ़िया। अच्छा।
यौ०—भला-बुरा=१. उलटी-सीधी बात। अनुचित बात। २ डाँट-फटकार।
संज्ञा पु० १. कल्याण। कुशल। भलाई। २. लाभ। नफ़ा।
यौ०—भला-बुरा=हानि और लाभ।
अव्य० १. अच्छा। खैर। अस्तु। २. "नहीं" का सूचक अव्यय जो प्रायः वाक्यों के आरंभ अथवा मध्य में रखा जाता है।
मुहा०——भले ही=ऐसा हुआ करे। इसमें कोई हानि नहीं। अच्छा ही है।
भलाई–संज्ञा स्त्री० हिं० भला + ई (प्रत्य०)] १. भले होने का भाव। भलापन। २. उपकार। नेकी।
भले–क्रि० वि० [हिं० भला] भली भाँति। अच्छी तरह। पूर्ण रूप से।
अव्य० खूब। वाह।
भलेरा*†–संज्ञा पु० दे० "भला"।
भवंग*–संज्ञा पु० [सं० भुजंग] साँप।
भवंत–वि० [सं० भवत्] भवत् का बहुवचन। आप लोगों का। आपका।
भव–संज्ञा पु० [सं०] १. उत्पत्ति। जन्म। २. शिव। ३. मेघ। बादल। ४. कुशल। ५. संसार। जगत्। ६ सत्ता। ७. कामदेव। ८. जन्म-मरण का दुःख।
वि० १. शुभ। २. उत्पन्न।
संज्ञा पु० [सं० भय] डर। भय।
भवदीय–सर्व० [सं०] आपका। तुम्हारा।
भवन–संज्ञा पु० [सं०] १. मकान। २.

गरम्य। ३ छप्पय का एक भेद।
भवन–सज्ञा पुं० [सं० भुवन] जगत्। ससार।
भवना*†–क्रि० अ० [सं० भ्रमण] घूमना।
भवनी–सज्ञा स्त्री० [सं० भवन] भार्या। स्त्री।
भवबंधन–सज्ञा पुं० [सं०] ससार की झंझट। सासारिक दुख और कष्ट।
भवभंजन–सज्ञा पुं० [सं०] परमेश्वर।
भवभय–सज्ञा पुं० [सं०] ससार में बार बार जन्म लेने और मरने का भय।
भवभामिनी–सज्ञा स्त्री० [सं०] पार्वती।
भवभूप*†–सज्ञा पुं० [सं०] ससार के भूषण।
भवमोचन–वि० [सं०] ससार के बधनो से छुड़ानेवाले, भगवान्।
भवविलास–सज्ञा पुं० [सं०] १ माया। २ ससार के सुख जो ज्ञान के अधकार से उदित होते हैं।
भवसभव–वि० [सं०] सासारिक।
भवां†–सज्ञा स्त्री० [हिं० भवना] फेरी। चक्कर।
भवांना†–क्रि० स० [सं० भ्रमण] घुमाना। फिराना।
भवानी–सज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।
भवितव्य–सज्ञा पुं० [सं०] होनहार।
भवितव्यता–सज्ञा स्त्री० [सं०] १ होनी। भावी। होनहार। २ भाग्य। किस्मत।
भविष्य–वि० [सं० भविष्यत्] वर्तमान काल के उपरात आनेवाला काल।
भविष्यगुप्ता–सज्ञा स्त्री० [सं०] वह गुप्त नायिका जो रति में प्रवृत्त होनेवाली हो और पहले से उसे छिपाने का उद्योग करे।
भविष्यत्–सज्ञा पुं० [सं०] भविष्य।
भविष्यद्वक्ता–सज्ञा पुं० [सं०] १ भविष्य द्वाणी करनेवाला। २ ज्योतिषी।
भविष्यद्वाणी–सज्ञा स्त्री० [सं०] भविष्य में होनेवाली वह बात जो पहले से ही कह दी गई हो।
भवीला*†–वि० [हिं० भाव+ईला (प्रत्य०)] १ भावयुक्त। भावपूर्ण। २ बाँका तिरछा।
भवेश–सज्ञा पुं० [सं०] महादेव। शिव।
भव्य–वि० [सं०] १ देखने में भारी और सुदर। शानदार। २. शुभ। मगल-सूचक। ३. सत्य। सच्चा। ४. भविष्य में होनेवाला।
भव्यता–सज्ञा स्त्री० [सं०] भव्य होने का भाव।
भष*–सज्ञा पुं० [सं० भक्ष्य] भोजन।
भषना†–क्रि० स० [सं० भक्षण] खाना।
भसना†–क्रि० अ० [बँ०] १ पानी के ऊपर तैरना। २ पानी में डूबना।
भसम–सज्ञा पुं० दे० "भस्म"।
भसमा–सज्ञा पुं० [फा० वस्मा का अनु०] एक प्रकार का खिजाब।
भसान†–सज्ञा पुं० [बँ० भसाना] काली आदि की मूर्ति को नदी में प्रवाहित करना।
भसाना†–क्रि० स० [बँ०] १ किसी चीज को पानी में तैरने के लिये छोड़ना। २ पानी में डालना।
भसींड़–सज्ञा स्त्री० [देश०] कमलनाल। मुरार। कमल की जड़।
भसुंड–सज्ञा पुं० [सं० भुशुंड] हाथी। गज।
भसुर–सज्ञा पुं० [हिं० ससुर का अनु०] पति का बड़ा भाई। जेठ।
भस्म–सज्ञा पुं० [सं० भस्मन्] १. लकड़ी आदि के जलने पर बची हुई राख। २ अग्निहोत्र की राख जिसे शिव के भक्त मस्तक तथा शरीर मे लगाते हैं।
वि० जो जलकर राख हो गया हो।
भस्मक–सज्ञा पुं० [सं०] एक रोग जिसमें भोजन तुरत पच जाता है।
भस्मता–सज्ञा स्त्री० [सं०] भस्म होने का धर्म्म या भाव।
भस्मासुर–सज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक प्रसिद्ध दैत्य।
भस्मीभूत–वि० [सं०] जो जलकर राख हो गया हो।
भहराना–क्रि० अ० [अनु०] १ टूट पड़ना। २ एकाएक गिरना।
भांउँ*–सज्ञा पुं० [सं० भाव] अभिप्राय।
भांउर–सज्ञा स्त्री० दे० "भाँवर"।
भांग–सज्ञा स्त्री० [सं० भृंगा या भृंगी] एक

प्रसिद्ध पौधा जिसकी पत्तियाँ मादक होती हैं। भंग। विजया। बूटी। पत्ती। मुहा०—भाँग खा जाना या पी जाना = नशे की सी या पागलपन की बातें करना। घर में भूँजी भाँग न होना = अत्यंत दरिद्र होना।
भाँज–संज्ञा स्त्री० [हिं० भाँजना] १. भाँजने या घुमाने की क्रिया या भाव। २. वह धन जो रुपया, नोट आदि भुनाने के बदले में दिया जाय। भुनाई।
भाँजना–क्रि० स० [सं० भंजन] १. तह करना। मोड़ना। २. मुगदर आदि घुमाना। (व्यायाम)
भाँजी†–संज्ञा स्त्री० [हिं० भाँजना = मोड़ना] वह बात जो किसी के होते हुए काम में बाधा डालने के लिये कही जाय। चुगली।
भाँटा†–संज्ञा पुं० दे० "बैंगन"।
भाँड़–संज्ञा पुं० [सं० भंड] १. विदूषक। मसखरा। २. एक प्रकार के पेशेवर जो महफ़िलों आदि में जाकर नाचते गाते और हास्यपूर्ण नक़लें उतारते हैं। ३. नंगा। बेहया। ४. सत्यानाश। बरबादी।
संज्ञा पुं० [सं० भांड] १. बरतन। भाँड़ा। २. भंडाफोड़। रहस्योद्घाटन। ३. उपद्रव। उत्पात।
भाँड़ना*†–क्रि० अ० [सं० भड] व्यर्थ इधर-उधर घूमना। मारे मारे फिरना। क्रि० स० १. किसी को बहुत बदनाम करते फिरना। २. नष्ट-भ्रष्ट करना। बिगाड़ना।
भाँड़ा–संज्ञा पुं० [सं० भांड] बरतन। पात्र। मुहा०—भाँड़े में जी देना = किसी पर दिल लगा होना। भाँड़े भरना = पश्चात्ताप करना।
भांडागार–संज्ञा पुं० [सं] भंडार। कोश।
भांडागारिक–संज्ञा पुं० [सं०] भंडारी।
भांडार–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह स्थान जहाँ काम में आनेवाली बहुत सी चीजें रखी जाती हों। भंडार। २. वह जिसमें एक ही तरह की बहुत सी चीजें या बातें हों। ३. खजाना। कोश।
भाँति, भाँति–संज्ञा स्त्री० [सं० भेद] तरह। किस्म। प्रकार। रीति।
भाँपना†–क्रि० स० [?] १. ताड़ना। पहचानना। २. देखना। (बाजारू)।
भायँ भायँ–संज्ञा पुं० [अनु०] नितांत एकांत स्थान या सन्नाटे में होनेवाला शब्द।
भाँरी‡–संज्ञा स्त्री० दे० "भाँवर"।
भाँवना†–क्रि० स० [सं० भ्रमण] १. खरादना। कुनना। २. अच्छी तरह गढ़कर सुंदरतापूर्वक बनाना।
भाँवर–संज्ञा स्त्री० [सं० भ्रमण] १. चारों ओर घूमना। परिक्रमा करना। २. अग्नि की वह परिक्रमा जो विवाह के समय वर और वधू करते हैं।
संज्ञा पुं० दे० "भौंरा"।
भा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दीप्ति। चमक। २. शोभा। छटा। ३. किरण। रश्मि। ४. बिजली। विद्युत्।
*† अव्य० चाहे। यदि इच्छा हो। वा।
भाइ*†–संज्ञा पुं० [सं० भाव] १. प्रेम। प्रीति। मुहब्बत। २. स्वभाव। भाव। ३. विचार।
संज्ञा स्त्री० [हिं० भाँति] १. भाँति। प्रकार। २. चाल-ढाल। रंग-ढंग।
भाइप*†–संज्ञा पुं० दे० "भाईचारा"।
भाई–संज्ञा पुं० [सं० भ्रातृ] १. बंधु। सहोदर। भ्राता। भैया। २. किसी वंश की किसी एक पीढ़ी के किसी व्यक्ति के लिये उसी पीढ़ी का दूसरा पुरुष। जैसे—चचेरा या ममेरा भाई। ३. बराबरवालों के लिये एक प्रकार का संबोधन।
भाईचारा–संज्ञा पुं० [हिं० भाई + चारा (प्रत्य०)] भाई के समान परम मित्र होने का भाव।
भाई दूज–संज्ञा स्त्री० [हिं० भाई + दूज] यमद्वितीया। कार्तिक शुक्ल द्वितीया। भैया दूज।
भाईबंद–संज्ञा पुं० [हिं० भाई + बंधु] भाई और मित्र-बंधु आदि।
भाईबिरादरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० भाई + बिरादरी] जाति या समाज के लोग।
भाउ*†–संज्ञा पुं० [सं० भाव] १. चित्त-

वृत्ति। विचार। २ भाव। ३. प्रेम। सत्ता पु० [सं० भव] उत्पत्ति। जन्म।
भाऊ*–संज्ञा पु० [सं० भाव] १. प्रेम। स्नेह। मुहब्बत। २. भावना। ३. स्वभाव। ४. हालत। अवस्था। ५ महत्त्व। महिमा। ६ दाउ। स्वरूप। ७ सत्ता। ८ वृत्ति। विचार।
भाएँ*†–क्रि० वि० [सं० भाव] समझ में। बुद्धि के अनुसार।
भाकर–संज्ञा पु० [सं०] सूर्य। भास्कर।
भाकसी–संज्ञा स्त्री० [सं० भस्त्री] भट्ठी।
भाख*†–संज्ञा पु० दे० "भाषण"।
भाखना*†–क्रि०स० [सं० भाषण] कहना।
भाखा†–संज्ञा स्त्री० दे० "भाषा"।
भाग–संज्ञा पु० [सं०] १ हिस्सा। खंड। अंश। २ पार्श्व। तरफ। ओर। ३. नसीब। भाग्य। किस्मत। ४ सौभाग्य। खुशनसीबी। ५. भाग्य का कल्पित स्थान, माथा। ललाट। ६ प्रातःकाल। भोर। ७ गणित में किसी राशि को अनेक अंशों या भागों में बाँटने की क्रिया।
भागड़–संज्ञा स्त्री० [हिं० भागना] बहुत से लोगों का एक साथ घबराकर भागना।
भागत्याग–संज्ञा पु० दे० "जहदजहल्लक्षणा"।
भागना–क्रि० अ० [सं० भाज्] १. किसी स्थान से हटने के लिये दौड़कर निकल जाना। पलायन करना।
मुहा०—सिर पर पैर रखकर भागना = बहुत तेजी से भागना।
२ टल जाना। हट जाना। कोई काम करने से बचना। पीछा छुड़ाना।
भागनेय–संज्ञा पु० [सं०] भानजा।
भागफल–संज्ञा पु० [सं०] वह संख्या जो भाज्य को भाजक से भाग देने पर प्राप्त हो। लब्धि।
भागवत†–वि० दे० "भाग्यवान्"।
भागवत–संज्ञा पु० [सं०] १ अठारह पुराणों में से एक जिसमें १२ स्कंध, ३१२ अध्याय और १८००० श्लोक हैं। यह वेदांत का तिलक-स्वरूप माना जाता है। श्रीमद्भागवत। २ देवी भागवत। ३. ईश्वर का भक्त। ४. १३ मात्राओं का एक छंद।
वि० भगवत्संबंधी।
भागिनेय–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० भागिनेयी] बहिन का लड़का। भानजा।
भागी–संज्ञा पु० [सं० भागिन्] १. हिस्सेदार। शरीक। २. अधिकारी। हकदार।
भागीरथ–संज्ञा पु० दे० "भगीरथ"।
भागीरथी–संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा नदी। जाह्नवी।
भाग्य–संज्ञा पु० [सं०] १. वह अवश्यभावी दैवी विधान जिसके अनुसार मनुष्य के सब कार्य पहले ही से निश्चित रहते हैं। २. तकदीर। किस्मत। नसीब।
वि० हिस्सा करने के लायक।
भाचक्र–संज्ञा पु० [सं०] क्रांतिवृत्त।
भाजक–वि० [सं०] विभाग करनेवाला।
संज्ञा पु० वह अंक जिससे किसी राशि को भाग दिया जाय। विभाजक। (गणित)
भाजन–संज्ञा पु० [सं०] १. बरतन। २. आधार। ३ योग्य। पात्र।
भाजना*–क्रि० अ० दे० "भागना"।
भाजी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ माँड। पीच। २ तरकारी, साग आदि।
भाज्य–संज्ञा पु० [सं०] वह अंक जिसे भाजक अंक से भाग दिया जाता है।
वि० विभाग करने के योग्य।
भाट–संज्ञा पु० [सं० भट्ट] [स्त्री० भाटिन] १ राजाओं का यश वर्णन करनेवाला। चारण। बंदी। २ खुशामदी।
भाटा–संज्ञा पु० [हिं० भाट] १ पानी का उतार की ओर जाना। २. समुद्र के चढ़ाव का उतरना। ज्वार का उलटा।
भाटयौ*†–संज्ञा पु० [हिं० भाट] भाट का काम। भटई। यशकीर्तन।
भाठी*†–संज्ञा स्त्री० दे० "भट्ठी"।
भाड़–संज्ञा पु० [सं० भ्राष्ट्र] भड़भूँजों की भट्ठी जिसमें वे अनाज भूनते हैं।
मुहा०—भाड़ झोंकना = तुच्छ या अयोग्य

काम। भाड़ में झोंकना या डालना=१. फेंकना। नष्ट करना। २. जाने देना।
भाड़ा–संज्ञा पुं० [सं० भाट] किराया।
मुहा०—भाड़े का टट्टू=१. जो स्थायी न हो। क्षणिक। २. निकम्मा।
भाण–संज्ञा पुं० [सं०] १. हास्य-रस का एक प्रकार का दृश्यकाव्य-रूपक जो एक अंक का होता है। २. व्याज। मिस।
भात–संज्ञा पुं० [सं० भक्त] १. पानी में उबाला हुआ चावल। २. विवाह की एक रस्म। इसमें कन्यावाला समधी को भात खिलाता है।
संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रभात। २. प्रकाश।
भाति–संज्ञा स्त्री० [सं०] शोभा। कांति।
भाथा–संज्ञा पुं० [सं० भस्त्रा, पा० भत्था] १. तरकश। तूणीर। २. बड़ी भाथी।
भाथी–संज्ञा स्त्री० [सं० भस्त्री] वह धौंकनी जिससे भट्ठी की आग सुलगाते हैं।
भादों–संज्ञा पुं० [सं० भाद्र, पा० भद्दो] सावन के बाद और क्वार के पहले का महीना। भाद्र। भाद्रपद।
भाद्र, भाद्रपद–संज्ञा पुं० दे० "भादों"।
भाद्रपदा–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक नक्षत्र-पुंज जिसके दो भाग हैं—पूर्वा भाद्रपदा और उत्तरा भाद्रपदा।
भान–संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रकाश। रोशनी। २. दीप्ति। चमक। ३ ज्ञान। ४. प्रतीति। आभास।
भानजा*†–संज्ञा पुं० [हिं० बहिन+जा] [स्त्री०भानजी] बहिन का लड़का। भागिनेय।
भानना*†–क्रि० स० [सं० भंजन] १. तोड़ना। भंग करना। २ नष्ट करना। मिटाना। ३. दूर करना। ४ काटना।
क्रि० स० [हिं० भान] समझना।
भानमती–संज्ञा स्त्री० [सं० भानुमती] जादूगरनी।
भानवी*–संज्ञा स्त्री० [सं० भानवीया] जमुना।
भाना*†–क्रि० अ० [सं० भान=ज्ञान] १ जान पड़ना। मालूम होना। २. अच्छा लगना। पसंद आना। ३. शोभा देना।
क्रि० स० [सं० भा=प्रकाश] चमकाना।
भानु–संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य। २. विष्णु। ३. किरण। ४. राजा।
भानुज–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० भानुजा] १. यम। २. शनिश्चर। ३. कर्ण।
भानुजा–संज्ञा स्त्री० [सं०] यमुना।
भानुतनया–संज्ञा स्त्री० [सं०] यमुना।
भानुमत्–वि० [सं०] प्रकाशमान।
संज्ञा पुं० सूर्य।
भानुसुत–संज्ञा पुं० [सं०] १. यम। २. मनु। ३. शनिश्चर। ४. कर्ण।
भानुसुता–संज्ञा स्त्री० [सं०] यमुना।
भाप–संज्ञा स्त्री० [सं० वाष्प, पा० वप्प] १. पानी के बहुत छोटे छोटे कण जो उसके खौलने की दशा में ऊपर को उठते दिखाई पड़ते है। वाष्प। २. भौतिक शास्त्रानुसार घनीभूत या द्रवीभूत पदार्थों की वह अवस्था जो उनके पर्याप्त ताप पाने पर प्राप्त होती है।
भाभर–संज्ञा पुं० [सं० वप्र] वह जंगल जो पहाड़ों के नीचे तराई में होते हैं।
भाभरा*†–वि० [हिं० भा+भरना] लाल।
भाभी–संज्ञा स्त्री० [हिं० भाई] भौजाई।
भाम–संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्णवृत्त।
*संज्ञा स्त्री० [सं० भामा] स्त्री।
भामा–संज्ञा स्त्री० [सं०] स्त्री। औरत।
भामिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] स्त्री। औरत।
भायः‡–संज्ञा पुं० [हिं० भाई] भाई।
*संज्ञा पुं० [सं० भाव] १. अंतःकरण की वृत्ति। भाव। २. परिमाण। ३. दर। भाव। ४. भांति। ढंग।
भायप–संज्ञा पुं० दे० "भाईचारा"।
भाया–वि० [हिं० भाना] प्रिय। प्यारा।
भारंगी–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का पौधा। इसकी पत्तियों का साग बनाकर खाते है। बँभनेटी। असबरग।
भार–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक परिमाण जो बीस पसेरी का होता है। २. बोझ। ३. वह बोझ जिसे बहँगी पर रखकर ले जाते है। ४. सँभाल। रक्षा। ५. किसी कर्त्तव्य

के पालन का उत्तरदायित्व।
मुहा०—भार उठाना = उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेना। भार उतरना = कर्त्तव्य के ऋण से मुक्त होना।
६ आश्रय। सहारा। ७ २० तुला या २००० पल का एक मान या तौल।
*†संज्ञा पु० दे० "भाड"।
भारत–संज्ञा पु० [सं०] १ महाभारत का पूर्व-रूप या मूल जो २४,००० श्लोकों का था। २ दे० "भारतवर्ष"। ३ भरत के गोत्र में उत्पन्न पुरुष। ४ लबी कथा। ५ घोर युद्ध। भारी लड़ाई।
भारतखंड–संज्ञा पु० दे० "भारतवर्ष"।
भारतवर्ष–संज्ञा पु० [सं०] वह देश जो *हिमालय के दक्षिण से लेकर कन्याकुमारी तक और सिंधु नदी से ब्रह्मपुत्र तक फैला हुआ है।* आर्यावर्त्त। हिंदुस्तान।
भारती–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वचन। वाणी। २ सरस्वती। ३ एक वृत्ति जिसके द्वारा रौद्र और बीभत्स रस का वर्णन किया जाता है। ४ ब्राह्मी। ५ दशनामी सन्यासियों में से एक।
भारतीय–वि० [सं०] भारत-संबंधी।
संज्ञा पु० भारत का निवासी।
भारथ†*–संज्ञा पु० [हिं० भारत] १ दे० "भारत"। २ युद्ध। संग्राम।
भारथी–संज्ञा पु० [सं० भारत] सैनिक।
भारद्वाज–संज्ञा पु० [सं०] १ भरद्वाज के कुल में उत्पन्न पुरुष। २ द्रोणाचार्य्य। ३ भरदूल पक्षी। ४ एक ऋषि जिनका रचा हुआ श्रौत सूत्र और गृह्य सूत्र है।
भारना*†–क्रि० स० [हिं० भार] १ बोझ लादना। भार डालना। २ दबाना।
भारवाहक–वि० [सं०] बोझ ढोनेवाला।
भारवि–संज्ञा पु० [सं०] एक प्राचीन कवि जो किरातार्जुनीय महाकाव्य के रचयिता थे।
भारा†–वि० दे० "भारी"।
भाराक्रांता–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णिक वृत्ति।
भारायलबरत्व–संज्ञा पु० [सं०] पदार्थों के परमाणुओं का पारस्परिक आकर्षण।
भारी–वि० [हिं० भार] १ जिसमें बोझ हो। गुरु। बोझिल। २ कठिन। कराल। भीषण। ३ विशाल। बड़ा।
मुहा०—भारी भरकम = बड़ा और भारी।
४ अधिक। अत्यंत। बहुत। ५ असह्य। दूभर। ६ सूजा हुआ। फूला हुआ। ७ प्रबल। ८ गंभीर। शांत।
भारीपन–संज्ञा पु० [हिं० भारी + पन(प्रत्य०)] भारी होने का भाव। गुरुत्व।
भार्गव–संज्ञा पु० [सं०] १ भृगु के वंश में उत्पन्न पुरुष। २ परशुराम। ३ शुक्राचार्य। ४ मार्कंडेय। ५ एक उपपुराण का नाम। ६ जमदग्नि। ७ एक जाति *जो मध्यप्रदेश के पश्चिम में पाई जाती है।*
वि० भृगु-संबंधी। भृगु का।
भार्गवेश–संज्ञा पु० [सं० भार्गव + ईश] परशुराम।
भार्य्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] पत्नी। जोरू। स्त्री।
भाल–संज्ञा पु० [सं०] कपाल। ललाट।
संज्ञा पु० [हिं० भाला] १ भाला। बरछा। २ तीर का फल। गाँसी।
संज्ञा पु० [सं० भल्लुक] रीछ। भालू।
भालचंद्र–संज्ञा पु० [सं०] १ महादेव। २ गणेश।
भालना–क्रि० स० [?] १ अच्छी तरह देखना। † २ ढूँढना। तलाश करना।
भाललोचन–संज्ञा [सं०] शिव।
भाला–संज्ञा पु० [सं० भल्ल] बरछा। नेजा।
भालाबरदार–संज्ञा पु० [हिं० भाला + फा० बरदार] बरछा चलानेवाला। बरछैत।
भालि*†–संज्ञा स्त्री० [हिं० भाला] १ बरछी। साँग। २ शूल। काँटा।
भाली–संज्ञा स्त्री० [हिं० भाला] १. भाले की गाँसी या नोक। २ शूल। काँटा।
भालुक–संज्ञा पु० [सं०] भालू। रीछ।
भालुनाथ–संज्ञा पु० दे० "जामवंत"।
भालू–संज्ञा पु० [सं० भल्लुक] एक प्रसिद्ध स्तनपायी भीषण चौपाया जो कई प्रकार का होता है। मदारी इसे पकड़कर

नाचना और खेल करना सिखाते हैं। रीछ।
भावंता*†–संज्ञा पुं० [हिं० भाना] प्रेम-पात्र। प्रिय। प्रीतम।
संज्ञा पुं० [सं० भावी] होनहार। भावी।
भाव–संज्ञा पुं० [सं०] १. सत्ता। अस्तित्व। अभाव का उलटा। २. मन में उत्पन्न होनेवाली प्रवृत्ति। विचार। खयाल। ३. अभिप्राय। तात्पर्य। मतलब। ४. मुख की आकृति या चेष्टा। ५. आत्मा। ६. जन्म। ७. चित्त। ८. पदार्थ। चीज। ९. प्रेम। मुहब्बत। १०. कल्पना। ११. प्रकृति। स्वभाव। १२. ढंग। तरीका। १३. प्रकार। तरह। १४. दशा। अवस्था। हालत। १५. भावना। १६. विश्वास। भरोसा। १७. आदर। प्रतिष्ठा। १८. बिक्री आदि का हिसाब। दर। निर्ख।
मुहा०—भाव उतरना या गिरना=किसी चीज का दाम घट जाना। भाव चढ़ना=दाम बढ़ जाना।
१९. ईश्वर, देवता आदि के प्रति होनेवाली श्रद्धा या भक्ति। २०. नायक आदि को देखने के कारण अथवा और किसी प्रकार नायिका के मन में उत्पन्न होनेवाला विकार। २१. गीत के विषय के अनुसार शरीर या अंगों का संचालन।
मुहा०—भाव देना=आकृति आदि से अथवा अंग संचालित करके मन का भाव प्रकट करना
२२. नाज। नखरा। चोचला।
भावइ*†–अव्य० [हिं० भाना] जी चाहे। इच्छा हो तो।
भावक*–क्रि० वि० [सं० भाव] किंचित्। थोड़ा सा। जरा सा। कुछ एक।
वि० [सं०] भाव से भरा। भावपूर्ण।
संज्ञा पुं० [सं०] १. भावना करनेवाला। २. भाव-संयुक्त। ३. भक्त। प्रेमी।
भावगति–संज्ञा स्त्री० [सं० भाव+गति] इरादा। इच्छा। विचार।
भावगम्य–वि० [सं०] भक्ति भाव से जानने योग्य।
भावग्राह्य–वि० [सं०] भक्ति से ग्रहण करने योग्य।
भावज–संज्ञा स्त्री० [सं० भ्रातृजाया] भाई की स्त्री। भाभी। भौजाई।
भावता–वि० [हिं० भावना] [स्त्री० भावती] जो भला लगे। प्रिय।
संज्ञा पुं० प्रेमपात्र। प्रियतम।
भाव-ताव–संज्ञा पुं० [हिं० भाव+ताव] किसी चीज का मूल्य या भाव आदि। निर्ख। दर।
भावन*†–वि० [हिं० भावना] अच्छा या प्रिय लगनेवाला। जो भला लगे।
भावना–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ध्यान। विचार। खयाल। २. चित्त का एक संस्कार जो अनुभव और स्मृति से उत्पन्न होता है। ३. इच्छा। चाह। ४. साधारण विचार या कल्पना। ५. वैद्यक के अनुसार किसी चूर्ण आदि को किसी प्रकार के तरल पदार्थ में मिलाकर घोटना जिसमें उस औषध में तरल पदार्थ के कुछ गुण आ जायँ। पुट।
*क्रि० अ० अच्छा लगना। पसंद आना।
वि० [हिं० भावना] प्रिय। प्यारा।
भावनि*†–संज्ञा स्त्री० [हिं० भाना] जो कुछ जी में आवे। इच्छानुसार बात।
भावनीय–वि० [सं०] भावना करने योग्य।
भावभक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं० भाव+भक्ति] १. भक्ति-भाव। २. आदर। सत्कार।
भावली–संज्ञा स्त्री० [देश०] जमींदार और असामी के बीच उपज की बँटाई।
भाववाचक–संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण में वह संज्ञा जिससे किसी पदार्थ का भाव या गुण सूचित हो। जैसे—सज्जनता।
भाववाच्य–संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण में क्रिया का वह रूप जिससे यह जाना जाय कि वाक्य का उद्देश्य केवल कोई भाव है। इसमें तृतीया की विभक्ति रहती है। जैसे—मुझसे बोला नहीं जाता।
भावसंधि–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का अलंकार जिसमें दो विरुद्ध भावों की संधि का वर्णन होता है।

भावशबलता–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का अलंकार जिसमें कई एक भावों का एक साथ वर्णन किया जाता है।

भावाभास–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का अलंकार।

भावार्थ–संज्ञा पुं० [सं०] १ वह अर्थ जिसमें मूल का केवल भाव आ जाय। २ अभिप्राय। तात्पर्य।

भावोत्कार–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का अलंकार।

भाविक–वि० [सं०] जाननेवाला। मर्मज्ञ।

भावी–संज्ञा स्त्री० [सं० भाविन्] १ भविष्यत काल। आनेवाला समय। २ भविष्य में अवश्य होनेवाली बात। भवितव्यता। ३ भाग्य। तकदीर।

भावुक–वि० [सं०] १ भावना करनेवाला। सोचनेवाला। २ जिस पर कोमल भावों का जल्दी प्रभाव पड़ता हो। ३ अच्छी बातें सोचनेवाला।

भावैं†–अव्य० [हिं० भाना] चाहे।

भाषण–संज्ञा पुं० [सं०] १ कथन। बात-चीत। कहना। २ व्याख्यान। वक्तृता।

भाषना*†–क्रि० अ० [सं० भाषण] बोलना। क्रि० अ० [सं० भक्षण] भोजन करना।

भाषांतर–संज्ञा पुं० [सं०] अनुवाद। उल्था।

भाषा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मुख से उच्चरित होनेवाले शब्दों और वाक्यों आदि का वह समूह जिसके द्वारा मन की बात बतलाई जाती है। बोली। जबान। वाणी। २ किसी विशेष जन-समुदाय में प्रचलित बातचीत करने का ढंग। बोली। ३ आधुनिक हिंदी। ४ वाक्य। ५ वाणी।

भाषाबद्ध–वि० [सं०] साधारण देशभाषा में बना हुआ।

भाषासम–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का शब्दालंकार। वाक्य में केवल ऐसे शब्दों की योजना जो कई भाषाओं में समान रूप से प्रयुक्त होते हों।

भाषित–वि० [सं०] कथित। कहा हुआ।

भाषी–संज्ञा पुं० [सं० भाषिन्] बोलनेवाला।

भाष्य–संज्ञा पुं० [सं०] १ सूत्रों की की हुई व्याख्या या टीका। २ किसी गूढ़ बात या वाक्य की विस्तृत व्याख्या।

भाष्यकार–संज्ञा पुं० [सं०] सूत्रों की व्याख्या करनेवाला। भाष्य बनानेवाला।

भास–संज्ञा पुं० [सं०] १ दीप्ति। प्रकाश। चमक। २ मयूख। किरण। ३ इच्छा।

भासना–क्रि० अ० [सं० भास] १ प्रकाशित होना। चमकना। २ मालूम होना। प्रतीत होना। ३ देख पड़ना। ४ फँसना। लिप्त होना।

*†क्रि० अ० [सं० भाषण] कहना।

भासमान–वि० [सं०] जान पड़ता हुआ। भासता हुआ। दिखाई देता हुआ।

भासित–वि० [सं०] चमकीला। प्रकाशित।

भास्कर–संज्ञा पुं० [सं०] १ सुवर्ण। सोना। २ सूर्य। ३ अग्नि। आग। ४ वीर। ५ महादेव। शिव। ६ पत्थर पर चित्र और बेल-बूटे आदि बनाना।

भास्वर–संज्ञा पुं० [सं०] १ दिन। २ सूर्य्य। वि० दीप्तियुक्त। चमकदार।

भिगाना–क्रि० स० दे० "भिगोना"।

भिजाना–क्रि० स० दे० "भिगाना"।

भिंडी–संज्ञा स्त्री० [सं० भिंडा] एक प्रकार की फली जिसकी तरकारी बनती है।

भिक्षा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ याचना। माँगना। २ दीनता दिखलाते हुए अपने उदर निर्वाह के लिए माँगने का काम। भीख। ३ इस प्रकार माँगने से मिली हुई वस्तु। भीख।

भिक्षापात्र–संज्ञा पुं० [सं०] वह पात्र जिसमें भिखमंगे भीख माँगते हैं।

भिक्षु–संज्ञा पुं० [सं०] १ भीख माँगनेवाला। भिखारी। २ संन्यासी। [स्त्री० भिक्षुणी] ३ बौद्ध संन्यासी।

भिक्षुक–संज्ञा पुं० [सं०] भिखमंगा।

भिखमंगा–संज्ञा पुं० [हिं० भीख+माँगना] जो भीख माँगे। भिखारी। भिक्षुक।

भिखारिणी–संज्ञा स्त्री० [हिं० भिखारी] वह स्त्री जो भिक्षा माँगे। भिखमंगिन।

भिखारिन–संज्ञा स्त्री० दे० "भिखारिणी"।
भिखारी–संज्ञा पुं० [हिं भीख + आरी (प्रत्य०)] [स्त्री० भिखारिन, भिखारिणी] भिक्षुक। भिखमंगा।
भिगाना–क्रि० स० दे० "भिगोना"।
भिगोना–क्रि० स० [सं० अभ्यंज] किसी चीज को पानी से तर करना। भिगाना।
भिच्छा–संज्ञा स्त्री० दे० "भिक्षा"।
भिच्छु–संज्ञा पुं० दे० "भिक्षु"।
भिजवना*†–क्रि० स० [हिं० भिगोना] भिगोने में दूसरे को प्रवृत्त करना।
भिजवाना–क्रि० स० [हिं० भेजना का प्रे०] किसी को भेजने में प्रवृत्त करना।
भिजाना–क्रि० स० [सं० अभ्यंज] भिगोना। क्रि० स० दे० "भिजवाना"।
भिजोना*†–क्रि० स० दे० "भिगोना"।
भिज्ञ–वि० [सं०] जानकार। वाकिफ।
भिड़–संज्ञा स्त्री० [हिं० वर्रे ?] वर्रे। ततैया।
भिड़ना–क्रि० अ० [हिं० भड़ अनु० ?] १. टक्कर खाना। टकराना। २. लड़ना-झगड़ना। लड़ाई करना। ३. सटना।
भितल्ला–संज्ञा पुं० [हिं० भीतर + तल] दोहरे कपड़े में भीतरी ओर का पल्ला। अस्तर। वि० भीतर का। अंदर का।
भिताना*†–क्रि० स० [सं० भीति] डरना।
भित्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दीवार। २. डर। भय। भीति। ३. वह पदार्थ जिस पर चित्र बनाया जाय।
भिद–संज्ञा पुं० [सं० भिद्] भेद। अंतर।
भिदना–क्रि० अ० [सं० भिद्] १. पैवस्त होना। घुस जाना। २. छेदा जाना। ३. घायल होना।
भिदुर–संज्ञा पुं० [सं० भिदिर] वज्र।
भिनकना–क्रि० अ० [अनु०] १. भिन भिन शब्द करना। (मक्खियों का) २. घृणा उत्पन्न होना।
भिनभिनाना–क्रि० अ० [अनु०] भिन भिन शब्द करना।
भिनसार†–संज्ञा पुं० [सं० विनिशा] सवेरा।
भिन्न–वि० [सं०] १. अलग। पृथक्। जुदा। २. इतर। दूसरा। अन्य। संज्ञा पुं० वह संख्या जो एकाई से कुछ कम हो। (गणित)
भिन्नता–संज्ञा स्त्री० [सं०] भिन्न होने का भाव। अलगाव। भेद। अंतर।
भियना*†–क्रि० अ० [सं० भीत] डरना।
भिरना*†–क्रि० स० दे० "भिड़ना"।
भिरिंग*†–संज्ञा पुं० दे० "भृंग"।
भिलनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० भील] भील जाति की स्त्री।
भिलावाँ–संज्ञा पुं० [सं० भल्लातक] एक प्रसिद्ध जंगली वृक्ष। इसका फल औषध के काम में आता है।
भिल्ल–संज्ञा पुं० दे० "भील"।
भिश्त*†–संज्ञा पुं० दे० "बिहिश्त"।
भिश्ती–संज्ञा पुं० [?] मशक द्वारा पानी ढोनेवाला व्यक्ति। सक्का।
भिषक्–संज्ञा पुं० [सं०] वैद्य।
भींगना–क्रि० अ० दे० "भीगना"।
भींचना†–क्रि० स० [हिं० खींचना] १. खींचना। कसना। २. दे० "मीचना"।
भींजना*†–क्रि० अ० [हिं० भीगना] १. गीला होना। तर होना। भीगना। २. पुलकित या गद्गद हो जाना। ३. मेल-मिलाप पैदा करना। ४. नहाना। ५. समा जाना।
भी–संज्ञा स्त्री० [सं०] भय। डर। अव्य० [हिं० ही] १. अवश्य। जरूर। २. अधिक। ज्यादा। ३. तक। लौं।
भीउँ*–संज्ञा पुं० [सं० *भीम*] *भीमसेन।*
भीख–संज्ञा स्त्री० दे० "भिक्षा"।
भीखन*–वि० दे० "भीषण"।
भीखम*†–संज्ञा पुं० दे० "भीष्म"।
भीगना–क्रि० अ० [सं० अभ्यंज] पानी या और किसी तरल पदार्थ के संयोग के कारण तर होना। आर्द्र होना।
भीजना†–क्रि० अ० दे० "भीगना"।
भींटा–संज्ञा पुं० [देश०] १. ऊँची या टीलेदार जमीन। २. वह बनाई हुई ऊँची जमीन जिस पर पान की खेती होती है।

भीड़—सज्ञा स्त्री० [हि० भिड़ना] १ आदमियो का जमाव। जन-समूह। ठट।
मुहा०—भीड़ छँटना = भीड़ के लोगो का इधर-उधर हो जाना। भीड़ न रह जाना।
२. सकट। आपत्ति। मुसीबत।

भीड़न*—सज्ञा स्त्री० [हि० भीड़ना] मलने, लगाने या भरने की क्रिया।

भीड़ना*†—क्रि० स० [हि० भिड़ाना] १ मिलाना। लगाना। २ मलना।

भीड़भड़क्का—सज्ञा पु० दे० "भीड़-भाड़"।

भीड़भाड़—सज्ञा स्त्री० [हि० भीड़ + भाड़ (अनु०)] मनुष्यो का जमाव। जन-समूह। भीड़।

भीड़ा†—वि० [हि० भिड़ना] सकुचित। तग।

भीत—सज्ञा स्त्री० [स० भित्ति] १ दीवार।
मुहा०—भीत में दौड़ना = अपनी सामर्थ्य से बाहर अथवा असभव कार्य करना। भीत के बिना चित्र बनाना = बे सिर पैर की बात करना। २ विभाग करनेवाला परदा। ३ चटाई। ४. छत। गच।
वि० [स०] [स्त्री० भीता] डरा हुआ।

भीतर—क्रि० वि० [?] अदर।
सज्ञा पु० १ अत करण। हृदय। २ रनिवास। जनानखाना।

भीतरी—वि० [हि० भीतर + ई (प्रत्य०)] १ भीतरवाला। अदर का। २ गुप्त।

भीति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ डर। भय। खौफ। २ कप।
सज्ञा स्त्री० [स० भित्ति] दीवार।

भीती*†—सज्ञा स्त्री० [स० भित्ति] दीवार।
सज्ञा स्त्री० [स० भीति] डर। भय।

भीन*†—सज्ञा पु० [हि० बिहान] सवेरा।

भीनना—क्रि० अ० [हि० भीगना] भर जाना। समा जाना। पैवस्त हो जाना।

भीम—सज्ञा पु० [स०] १ भयानक रस। २ शिव। ३ विष्णु। ४ महादेव की आठ मूर्त्तियो में से एक। ५ पाँचो पाडवो में से एक जो वायु के सयोग से कुती के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। ये बहुत बड़े वीर और बलवान् थे। भीमसेन।
मुहा०—भीम के हाथी = भीमसेन के फेंके हुए हाथी। (कहा जाता है कि एक बार भीमसेन ने सात हाथी आकाश में फेंक दिए थे जो आज तक वायुमडल में ही घूमते हैं।)
वि० १. भयानक। २ बहुत बड़ा।

भीमता—सज्ञा स्त्री० [स०] भयकरता।

भीमराज—सज्ञा पु० [स० भृगराज] काले रंग की एक प्रसिद्ध चिड़िया।

भीमसेन—सज्ञा पु० [स०] युधिष्ठिर के छोटे भाई। भीम।

भीमसेनी एकादशी—सज्ञा स्त्री० [हि० भीमसेनी + एकादशी] १ ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी। २ माघ शुक्ला एकादशी।

भीमसेनी कपूर—सज्ञा पु० [हि० भीमसेन + कपूर] एक प्रकार का बढ़िया कपूर। बरास।

भीमावली—सज्ञा पु० [देश०] घोड़े की एक जाति।

भीर*—सज्ञा स्त्री० [हि० भीड़] १ दे० "भीड़"। २ कष्ट। दुःख। तकलीफ। ३ विपत्ति। आफत।
*वि० [स० भीरु] १ डरा हुआ। भयभीत २ डरपोक। कायर।

भीरना*—क्रि० अ० [हि० भीरु] डरना।

भीरु—वि० [स०] डरपोक। कायर।

भीरुता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ डरपोकपन। कायरता। बुज़दिली। २ डर। भय।

भीरुताई*—सज्ञा स्त्री० दे० "भीरुता"।

भीरे*†—क्रि० वि० [हि० भिड़ना] समीप। नज़दीक। पास।

भील—सज्ञा, पु० [स० भिल्ल] [स्त्री० भीलनी] एक प्रसिद्ध जगली जाति।

भीव*—सज्ञा पु० [स० भीम] भीमसेन।

भीष*—सज्ञा स्त्री० [स० भिक्षा] भीख।

भीषज*†—सज्ञा पु० [स० भेषज] वैद्य।

भीषण—वि० [स०] १ देखने में बहुत भयानक। डरावना। २ उग्र या दुष्ट।
सज्ञा पु० [स०] भयानक रस।

भीषणता—सज्ञा स्त्री० [स०] भीषण होने का भाव। डरावनापन। भयकरता।

भीषन*—वि० दे० "भीषण"।

भीषम*–संज्ञा पुं० दे० "भीष्म"।
भीष्म–संज्ञा पुं० [सं०] १. भयानक रस। (साहित्य) २. शिव। महादेव। ३. राक्षस। ४. राजा शांतनु के पुत्र जो गंगा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। देवव्रत। गांगेय। वि० भीषण। भयंकर।
भीष्मक–संज्ञा पुं० [सं०] विदर्भ देश के एक राजा जो रुक्मिणी के पिता थे।
भीष्मपंचक–संज्ञा पुं० [सं०] कार्तिक शुक्ला एकादशी से पंचमी तक के पाँच दिन।
भीष्मपितामह–संज्ञा पुं० दे० "भीष्म"।
भीसम*–संज्ञा पुं० दे० "भीष्म"।
भुँइ–संज्ञा स्त्री० [सं० भूमि] पृथिवी। भूमि।
भुँइफोर–संज्ञा पुं० [हिं० भुइँ + फोड़ना] एक प्रकार की बरसाती खुभी। गरजुआ।
भुइँहरा–संज्ञा पुं० [हिं० भुइँ + घर] १. वह स्थान जो भूमि के नीचे खोदकर बनाया गया हो। २. तहखाना।
भुँजना†–क्रि० अ० दे० "भूनना"।
भुअंग*†–संज्ञा पुं० [सं० भुजंग] साँप।
भुअंगम*–संज्ञा पुं० [सं० भुजंगम] साँप।
भुअन*–संज्ञा पुं० दे० "भवन"।
भुआर*–संज्ञा पुं० दे० "भुआल"।
भुआल*–संज्ञा पुं० [सं० भूपाल] राजा।
भुइँ*–संज्ञा स्त्री० [सं० भूमि] भूमि। पृथ्वी।
भुइँआँवला–संज्ञा पुं० [सं० भूम्यामलक] एक घास जो ओषधि के काम में आती है।
भुइँपाल–संज्ञा पुं० दे० "भूकंप"।
भुइँडोल–संज्ञा पुं० दे० "भूकंप"।
भुइँहार–संज्ञा पुं० दे० "भूमिहार"।
भुक*–संज्ञा पुं० [सं० भुज्] १. भोजन। खाद्य। आहार। २ अग्नि। आग।
भुक्खड़–वि० [हिं० भूख + अड़ (प्रत्य०)] १. जिसे भूख लगी हो। भूखा। २. वह जो बहुत खाता हो। पेटू। ३. दरिद्र। कंगाल।
भुक्त–वि० [सं०] १. जो खाया गया हो। भक्षित। २. भोगा हुआ। उपभुक्त।
भुक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. भोजन। आहार। २. लौकिक सुख। ३. कब्जा।
भुखमरा–वि० [हिं० भूख + मरना] १. जो भूखों मरता हो। भुक्खड़। २. पेटू।
भुखाना†–क्रि० अ० [हिं० भूख] भूख से पीड़ित होना। भूखा होना।
भुखालू–वि० दे० "भूखा"।
भुगत*†–संज्ञा स्त्री० दे० "भुक्ति"।
भुगतना–क्रि० स० [सं० भुक्ति] सहना। झेलना। भोगना।
क्रि० अ० १. पूरा होना। निबटना। २. बीतना। चुकना।
भुगतान–संज्ञा पुं० [हिं० भुगतना] १. निपटारा। फैसला। २. मूल्य या देन चुकाना। बेबाकी। ३. देना। देन।
भुगताना–क्रि० स० [हिं० भुगतना का स० रूप] १. भुगतने का सकर्मक रूप। पूरा करना। संपादन करना। २. बिताना। लगाना। ३. चुकाना। बेबाक करना। ४. भुगतना का प्रेरणार्थक रूप। झेलना। भोग कराना। ५. दुःख देना।
भुगुति*–संज्ञा स्त्री० दे० "भुक्ति"।
भुच्चड़–वि० [हिं० भूत + चढ़ना] मूर्ख।
भुजंग–संज्ञा पुं० [सं०] साँप।
भुजंगप्रयात–संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्णिक वृत्त।
भुजंगविजृंभित–संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्णिक वृत्त।
भुजंगसंगता–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वृत्त।
भुजंगा–संज्ञा पुं० [हिं० भुजंग] १ काले रंग का एक पक्षी। भुजैटा। २. दे० "भुजंग"।
भुजंगिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गोपाल नामक छंद का दूसरा नाम। २ साँपिन।
भुजंगी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. साँपिन। नागिन। २. एक वर्णिक वृत्ति।
भुज–संज्ञा पुं० [सं०] १. बाहु। बाँह।
मुहा०—भुज में भरना = आलिंगन करना।
२. हाथ। ३. हाथी का सूँड़। ४. शाखा। डाली। ५. प्रांत। किनारा। ६. ज्यामिति में किसी क्षेत्र का किनारा या किनारे की रेखा। ७. त्रिभुज का आधार। ८. सम-कोणों का पूरक कोण। ९. दो की संख्या

या योधा शब्द या संकेत।
भुजग–संज्ञा पुं० [सं०] साँप।
भुजगनिसृता–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णिक वृत्ति।
भुजगशिशुभृता–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णिक वृत्ति। भुजगशिशुसुता।
भुजदंड–संज्ञा पुं० [सं०] बाहुदंड।
भुजपाश–संज्ञा पुं० [सं०] गलबाँही। गले में हाथ डालना।
भुजप्रतिभुज–संज्ञा पुं० [सं०] सरल क्षेत्र की आमने सामने की भुजाएँ।
भुजबंद–संज्ञा पुं० [सं० भुजबंद] बाजूबंद।
भुजबाँध*–संज्ञा पुं० [हिं० भुज+बाँधना] अँकवार।
भुजमूल–संज्ञा पुं० [सं०] १ खवा। पक्खा। मोढ़ा। २ काँख।
भुजा–संज्ञा स्त्री० [सं०] बाँह। हाथ।
मुहा०—भुजा उठाना या टेकना = प्रतिज्ञा करना।
भुजाली–संज्ञा स्त्री० [हिं० भुज+आली (प्रत्य०)] १ एक प्रकार की बड़ी टेढ़ी छुरी। कुकरी। खुखरी। २ छोटी बरछी।
भुजिया†–संज्ञा पुं० [हिं० भूजना = भनना] १ उबाले हुए धान का चावल। २ सूखी भूनी हुई तरकारी।
भुजैल–संज्ञा पुं० [सं० भुजग] भुजंगा पक्षी।
भुजौना‡–संज्ञा पुं० [हिं० भूजना] १ भुना हुआ अन्न। भूना। भूजा। भुजैना। २ भूनने या भुनाने की मजदूरी।
भुट्टा–संज्ञा पुं० [सं० भृष्ट, प्रा० भुट्टो] १ मक्के की हरी बाल। २ जुआर या बाजरे की बाल। ३ गुच्छा। घौद।
भुठौर–संज्ञा पुं० [हिं० भूड+ठौर] घोड़े की एक जाति।
भुन–संज्ञा पुं० [अनु०] मक्खी आदि का शब्द। अव्यक्त गुंजार का शब्द।
भुनगा–संज्ञा पुं० [अनु०] [स्त्री० भुनगी] १ एक छोटा उड़नेवाला कीड़ा। २ कीड़ा। पतिंगा।
भुनना–क्रि० अ० [हिं० भूनना] भूनने का अकर्मक रूप। भूना जाना।
क्रि० अ० भुनाने का अकर्मक रूप।
भुनभुनाना–क्रि० अ० [अनु०] १ भुन भुन शब्द करना। २ मन ही मन कुढ़कर अस्पष्ट स्वर में कुछ कहना। बड़बड़ाना।
भुनाना–क्रि० स० [हिं० भूनना] भूनने का प्रेरणार्थक रूप।
क्रि० स० [सं० भंजन] बड़े सिक्के आदि को छोटे सिक्कों आदि से बदलना।
भुवि*–संज्ञा स्त्री० [सं० भू] पृथ्वी। भूमि।
भुरकना–क्रि० अ० [सं० भुरण] १ सूख कर भुरभुरा हो जाना। २ भूलना।
क्रि० स० भुरभुराना। बुरकना।
भुरकाना–क्रि० स० [हिं० भुरकना] १ भुरभुरा करना। २ छिड़कना। भुरभुराना। ३ भुलवाना। बहकाना।
भुरकुस–संज्ञा पुं० [हिं० भुरकना] चूर्ण।
मुहा०—भुरकुस निकलना = १ चूर चूर होना। २ इतनी मार खाना कि हड्डी पसली चूर चूर हो जाय। ३ नष्ट होना।
भुरता–संज्ञा पुं० [भुरकना या भुरभुरा] १ दबकर विकृतावस्था को प्राप्त पदार्थ। २ चोखा या भरता नाम का सालन।
भुरभुरा–वि० [अनु०] [स्त्री० भुरभुरी] जिसके कण थोड़ा आघात लगने पर भी अलग हो जायँ। बलुआ।
भुरवना*†–क्रि० स० [सं० भ्रमण] भुलवाना। भ्रम में डालना। फुसलाना।
भुराई*†–संज्ञा स्त्री० [हिं० भोला] भोलापन। संज्ञा पुं० [हिं० भूरा] भूरापन।
भुराना*†–क्रि० स० [हिं० भुलाना] १ भूलना। २ दे० 'भुरवाना'।
भुलक्कड़–वि० [हिं० भूलना] जो बराबर भूल जाता हो। जिसका स्वभाव भूलने का हो।
भुलवाना–क्रि० स० [हिं० भूलना का प्रेर०] १ भूलना का प्रेरणार्थक रूप। भ्रम में डालना। २. दे० 'भुलाना'।
भुलसना–क्रि० स० [हिं० भुलभुला] गरम राख में झुलसना।

भुलाना–क्रि० स० [हिं० भूलना] १. भूलने का प्रेरणार्थक रूप। भ्रम में डालना। २. भूलना। विस्मृत करना।
*†क्रि० अ० १. भ्रम में पड़ना। २. भटकना। भरमना। राह भूलना। ३. भूल जाना। विस्मरण होना।
भुलावा–संज्ञा पुं० [हिं० भूलना] धोखा।
भुवंग–संज्ञा पुं० [सं० भुजंग] साँप।
भुवंगम–संज्ञा पुं० [सं० भुजंगम] साँप।
भुवः–संज्ञा पुं० [सं०] वह आकाश या लोक जो भूमि और सूर्य्य के अंतर्गत है। अंतरिक्ष लोक।
भुव–संज्ञा पुं० [सं०] अग्नि। आग।
संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी।
*संज्ञा स्त्री० [सं० भ्रू] भौंह। भ्रू।
भुवन–संज्ञा पुं० [सं०] १. जगत्। २. जल। ३. जन। लोग। ४. लोक। पुराणानुसार लोक चौदह हैं। भू, भुव, स्वः, महः, जनः, तपः और सत्य ये सात स्वर्ग लोक हैं और अतल, सुतल, वितल, गभस्तिमत, महातल, रसातल और पाताल ये सात पाताल हैं। ५. चौदह की संख्या का द्योतक शब्द संकेत। ६. सृष्टि।
भुवनकोश–संज्ञा पुं० [सं०] १. भूमंडल। पृथिवी। २. ब्रह्मांड।
भुवपाल*–संज्ञा पुं० दे० "भूपाल"।
भुवर्लोक–संज्ञा पुं० [सं०] सात लोकों में दूसरा लोक। अंतरिक्ष लोक।
भुवनपति–संज्ञा पुं० [सं०] भूपति। राजा।
भुवा–संज्ञा पुं० [हिं० घूआ] घूआ। रूई।
भुवार*–संज्ञा पुं० दे० "भुवाल"।
भुवाल*–संज्ञा पुं० [सं० भूपाल] राजा।
भुवि–संज्ञा स्त्री० [सं० भू] भूमि। पृथिवी।
भुसुंडी–संज्ञा पुं० दे० "काक भुसुंडी"।
संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्राचीन अस्त्र।
भुस–संज्ञा पुं० [सं० तुष] भूसा।
भुसी*–संज्ञा स्त्री० [हिं० भूसा] भूसी।
भूँकना–क्रि० अ० [अनु०] १. भूँ भूँ या भौं भौं शब्द करना (कुत्तों का)। (कुत्तों की बोली) २. व्यर्थ बकना।
भूँचाल–संज्ञा पुं० दे० "भूकंप"।
भूँजना†–क्रि० स० [हिं० भूनना] १. दे० "भूनना"। २. दुःख देना। सताना।
क्रि० स० [सं० भोग] भोगना।
भूँजा†–संज्ञा पुं० [हिं० भूनना] १. भूना हुआ। चबेना। २. भड़भूँजा।
भूँडोल–संज्ञा पुं० दे० "भूकंप"।
भू–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पृथ्वी। २. स्थान।
संज्ञा स्त्री० [सं० भ्रू] भौंह।
भूई–संज्ञा स्त्री० [हिं० घूआ] रूई के समान मुलायम छोटा टुकड़ा।
भूकंप–संज्ञा पुं० [सं०] पृथ्वी के ऊपरी भाग का सहसा कुछ प्राकृतिक कारणों से हिल उठना। भूचाल। भूडोल। जलजला।
भूख–संज्ञा स्त्री० [सं० बुभुक्षा] १. खाने की इच्छा। क्षुधा। २. आवश्यकता। जरूरत। (व्यापारी) ३. कामना।
भूखन*–संज्ञा पुं० दे० "भूषण"।
भूखना*†–क्रि० स० [सं० भूषण] सजाना।
भूखा–वि० पुं० [हिं० भूख] [स्त्री० भूखी] १. जिसे भूख लगी हो। क्षुधित। २. चाहनेवाला। इच्छुक। ३. दरिद्र। गरीब।
भूगर्भ–संज्ञा पुं० [सं०] १. पृथ्वी का भीतरी भाग। २. विष्णु।
भूगर्भशास्त्र–संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसके द्वारा इस बात का ज्ञान होता है कि पृथ्वी का ऊपरी और भीतरी भाग किन किन तत्त्वों का बना है और उसका वर्तमान रूप किन कारणों से हुआ है।
भूगोल–संज्ञा पुं० [सं०] १. पृथ्वी। २ वह शास्त्र जिसके द्वारा पृथ्वी के ऊपरी स्वरूप और उसके प्राकृतिक विभागों आदि का ज्ञान होता है। ३. वह ग्रंथ जिसमें पृथ्वी के प्राकृतिक विभागों आदि का वर्णन हो।
भूचर–संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव। महादेव। २. भूमि पर रहनेवाला प्राणी। ३. तंत्र के अनुसार एक प्रकार की सिद्धि।
भूचरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] योग में समाधि अंग की एक मुद्रा।

भूचाल—संज्ञा पुं० दे० "भूकंप"।
भूटान—संज्ञा पुं० [देश०] हिमालय का एक प्रदेश जो नेपाल के पूर्व में है।
भूटानी—वि० [हिं० भूटान+ई (प्रत्य०)] भूटान देश का। भूटान-संबंधी।
संज्ञा पुं० १ भूटान देश का निवासी। २ भूटान देश का घोड़ा।
संज्ञा स्त्री० भूटान देश की भाषा।
भूटिया बादाम—संज्ञा पुं० [हिं० भूटान+फा० बादाम] एक पहाड़ी वृक्ष। इस वृक्ष का फल खाया जाता है। कपासी।
भूडोल—संज्ञा पुं० दे० "भूकंप"।
भूत—संज्ञा पुं० [सं०] १ वे मूल द्रव्य जिनकी सहायता से सारी सृष्टि की रचना हुई है। द्रव्य। महाभूत। २ सृष्टि का कोई जड़ या चेतन, अचर या चर पदार्थ या प्राणी।
यौ०—भूतदया=जड़ और चेतन सबके साथ की जानेवाली दया।
३ प्राणी। जीव। ४ सत्य। ५ बीता हुआ समय। ६ व्याकरण के अनुसार क्रिया का वह रूप जिससे यह सूचित होता हो कि क्रिया का व्यापार समाप्त हो चुका। ७ पुराणानुसार एक प्रकार के पिशाच या देव जो रुद्र के अनुचर हैं। ८ मृत-शरीर। शव। ९ मृत प्राणी की आत्मा। १० प्रेत। जिन। शैतान।
मुहा०—भूत चढ़ना या सवार होना=१ बहुत अधिक आग्रह या हठ होना। २ बहुत अधिक क्रोध होना। भूत की मिठाई या पकवान=१ वह पदार्थ जो भ्रम से दिखाई दे, पर वास्तव में जिसका अस्तित्व न हो। २ सहज में मिला हुआ धन जो शीघ्र ही नष्ट हो जाय।
वि० १ गत। बीता हुआ। गुजरा हुआ। भूत काल। २ युक्त। मिला हुआ। ३ समान। सदृश। ४ जो हो चुका हो।
भूतत्व—संज्ञा पुं० [सं०] १ भूत होने का भाव। २ भूत का धर्म।
भूतत्वविद्या—संज्ञा स्त्री० दे० "भूगर्भशास्त्र"।
भूतनाथ—संज्ञा पुं० [सं०] शिव।
भूतपूर्व—वि० [सं०] वर्तमान से पहले का। इससे पहले का।
भूतभावन—संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।
भूत भाषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पैशाची भाषा।
भूत यज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] पंचयज्ञ में से एक यज्ञ। भूतबलि। बलिवैश्वदेव।
भूतल—संज्ञा पुं० [सं०] १ पृथ्वी का ऊपरी तल। २ संसार। दुनिया। ३ पाताल।
भूतांकुश—संज्ञा पुं० [सं०] १ कश्यप ऋषि। २ गावजुबान।
भूतात्मा—संज्ञा पुं० [सं० भूतात्मन्] १ शरीर। २ परमेश्वर। ३. शिव। ४ जीवात्मा।
भूति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वैभव। धन-संपत्ति। राज्य श्री। २ भस्म। राख। ३ उत्पत्ति। ४. वृद्धि। अधिकता। ५ अणिमा आदि आठ प्रकार की सिद्धियाँ।
भूतिनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० भूत] १ भूत योनि में प्राप्त स्त्री। २ शाकिनी, डाकिनी।
भूतृण—संज्ञा पुं० [सं०] रूसा घास।
भूतेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।
भूतोन्माद—संज्ञा पुं० [सं०] वह उन्माद जो पिशाचों के आक्रमण के कारण हो।
भूदेव—संज्ञा पुं० [सं०] ब्राह्मण।
भूधर—संज्ञा पुं० [सं०] १ पहाड़। २ शेषनाग। ३ विष्णु। ४ राजा।
भून*†—संज्ञा पुं० दे० "भ्रूण"।
भूनना—क्रि० स० [सं० भर्जन] १. आग पर रखकर या गरम बालू में डालकर पकाना। २ गरम घी या तेल आदि में डालकर कुछ देर तक चलाना। ३ तलना। ४ बहुत अधिक कष्ट देना।
भूप, भूपति—संज्ञा पुं० [सं०] राजा।
भूपाल—संज्ञा पुं० [सं०] राजा।
भूपाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक रागिनी।
भूभल—संज्ञा स्त्री० [सं० भू+भुर्ज या अनु० ?] गर्म राख या धूल। गर्म रेत। ततूरी।
भूभरि*—संज्ञा स्त्री० दे० "भूभल"।
भूमंडल—संज्ञा पुं० [सं०] पृथ्वी।
भूमि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पृथ्वी। जमीन।

मुहा०—भूमि होना=पृथ्वी पर गिर पड़ना। २. स्थान। जगह। ३. आधार। जड़। बुनियाद। ४. देश। प्रदेश। प्रांत। ५. योगशास्त्र के अनुसार वे अवस्थाएँ जो क्रम क्रम से योगी को प्राप्त होती है। ६. क्षेत्र।
भूमिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रचना। २. भेस बदलना। ३. किसी ग्रंथ के आरंभ की वह सूचना जिससे उस ग्रंथ के संबंध की आवश्यक और ज्ञातव्य बातों का पता चले। मुखबंध। दीबाचा। ४. वेदांत के अनुसार चित्त की ये पाँच अवस्थाएँ—क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध।
संज्ञा स्त्री० [सं० भूमि] पृथ्वी। जमीन।
भूमिज—वि० [सं०] भूमि से उत्पन्न।
भूमिजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सीता जी।
भूमिपुत्र—संज्ञा पुं० [सं०] मंगल ग्रह।
भूमिया—संज्ञा पुं० [सं० भूमि + इया(प्रत्य०)] १. जमींदार। २. ग्राम-देवता।
भूमिसुत—संज्ञा पुं० [सं०] मगल ग्रह।
भूमिसुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] जानकी जी।
भूमिहार—संज्ञा पुं० [सं०] एक जाति जो बिहार और संयुक्त प्रांत में पाई जाती है।
भूय—अव्य० [सं० भूयस्] पुनः। फिर।
भूर—वि० [सं० भूरि] बहुत। अधिक।
संज्ञा पु० [हिं० भुरभुरा] बालू।
भूरज—संज्ञा पुं० [सं० भूर्ज] भोजपत्र।
संज्ञा पु० [सं० भू + रज] धूल। गर्द। मिट्टी।
भूरजपत्र—संज्ञा पुं० दे० "भोजपत्र"।
भूरपूर*†—वि०, क्रि० वि० दे० "भरपूर"।
भूरसी दक्षिणा—संज्ञा स्त्री० [सं० भूयसी + दक्षिणा] वह दक्षिणा जो किसी धर्मकृत्य के अंत में उपस्थित ब्राह्मणों को दी जाती है।
भूरा—संज्ञा पु० [सं० वभ्रु] १. मिट्टी का सा रंग। खाकी रंग। २. कच्ची चीनी। ३. चीनी।
वि० मटमैले रंग का। खाकी।
भूरि—संज्ञा पु० [सं०] १. ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. शिव। ४. इंद्र। ५. स्वर्ण। सोना।
वि० [सं०] १. अधिक। बहुत। २. भारी।
भूरितेज—संज्ञा पुं० [सं० भूरितेजस्] १ अग्नि। २. सोना।
भूर्जपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] भोजपत्र।
भूल—संज्ञा स्त्री० [हिं० भूलना] १. भूलने का भाव। २. ग़लती। चूक। ३. कसूर। दोष। अपराध। ४. अशुद्धि। ग़लती।
भूलक*†—संज्ञा पुं० [हिं० भूल + क (प्रत्य०)] भूल करनेवाला। जिससे भूल होती हो।
भूलना—क्रि० स० [सं० विह्वल ?] १. विस्मरण करना। याद न रखना। २. ग़लती करना। ३. खो देना।
क्रि० अ० १. विस्मृत होना। याद न रहना। २ चूकना। गलती होना। ३. आसक्त होना। लुभाना। ४. घमंड में होना। इतराना। ५. खो जाना।
भूलभुलैयाँ—संज्ञा स्त्री० [हिं० भूल + भुलाना + ऐयाँ (प्रत्य०)] १. वह घुमावदार और चक्कर में डालनेवाली इमारत जिसमें जाकर आदमी इस प्रकार भूल जाता है कि फिर बाहर नहीं निकल सकता। २. चक्काव। ३. बहुत घुमाव-फिराव की बात या घटना।
भूलोक—संज्ञा पु० [सं०] संसार। जगत्।
भूवा—संज्ञा पु० [हिं० घुआ] रूई।
वि० उजला। सफेद।
भूशायी—वि० [सं० भूशायिन्] १. पृथ्वी पर सोनेवाला। २. पृथ्वी पर गिरा हुआ। ३. मृतक। मरा हुआ।
भूषण—संज्ञा पु० [सं०] १. अलंकार। गहना। जेवर। २. वह जिससे किसी चीज की शोभा बढ़ती हो।
भूषन*—संज्ञा पु० दे० "भूषण"।
भूषना*†—क्रि० स० [सं० भूषण] भूषित करना। अलंकृत करना। सजाना।
भूषा—संज्ञा स्त्री० [सं० भूषण] १. गहना। जेवर। २. सजाने की क्रिया।
भूषित—वि० [सं०] १. गहना पहने हुआ। अलंकृत। २. सजाया हुआ। सँवारा हुआ।
भूसन*†—संज्ञा पु० दे० "भूषण"।
भूसा—संज्ञा पु० [सं० तुष] गेहूँ, जौ आदि की बालों का महीन और टुकड़े टुकड़े किया हुआ छिलका।
भूसी—संज्ञा स्त्री० [हिं० भूसा] १. भूसा। २.

किसी अन्न या दाने के ऊपर का छिल्का।
भूसुता–संज्ञा स्त्री० [सं०] सीता।
भूसुर–संज्ञा पु० [सं०] ब्राह्मण।
भृंग–संज्ञा पु० [सं०] १ भौंरा। २ एक प्रकार का कीडा। बिजली।
भृंगराज–संज्ञा पु० [सं०] १ भँगरा नामक वनस्पति। भँगरैया। २ काले रंग का एक पक्षी। भीमराज।
भृंगी–संज्ञा पु० [सं० भृंगिन्] शिव जी का एक पारिषद या गण।
संज्ञा स्त्री० [सं०] १ भौंरी। २ बिल्नी।
भृकुटी–संज्ञा स्त्री० [सं०] भौंह।
भृगु–संज्ञा पु० [सं०] १ एक प्रसिद्ध मुनि। प्रसिद्ध है कि इन्होंने विष्णु की छाती में लात मारी थी। २ परशुराम। ३ शुक्राचार्य। ४ शुक्रवार। ५ शिव।
भृगुकच्छ–संज्ञा पु० [सं०] आधुनिक भडौच जो एक प्रसिद्ध तीर्थ था।
भृगुनाथ–संज्ञा पु० [सं०] परशुराम।
भृगुमुख्य–संज्ञा पु० [सं०] परशुराम।
भृगुरेखा–संज्ञा स्त्री० [सं०] विष्णु की छाती पर का वह चिह्न जो भृगु मुनि के लात मारने से हुआ था।
भृत–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० भृता] दास।
वि० [सं०] १ भरा हुआ। पूरित। २ पाला हुआ। पोषण किया हुआ।
भृति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नौकरी। २ मजदूरी। ३ वेतन। तनख्वाह। ४ मूल्य। दाम। ५ भरना। ६ *पालन करना।*
भृत्य–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० भृत्या] नौकर।
भृश–क्रि० वि० [सं०] बहुत। अधिक।
भेंगा–वि० [देश०] जिनकी आँखों की पुतलियाँ टेढी तिरछी रहती हों। ढेरा।
भेंट–संज्ञा स्त्री० [हिं० भेंटना] १ मिलना। मुलाकात। २ उपहार। नजराना।
भेंटना*†–क्रि० स० [हिं० भेंट] १ मुलाकात करना। २ गले लगाना।
भेंवना†–क्रि० स० [हिं० भिगोना] भिगोना।
भेउ*†–संज्ञा पु० [सं० भेद] भेद। रहस्य।
भेक–संज्ञा पु० दे० 'मेंढक'।
भेख–संज्ञा पु० दे० "वेष"।
भेखज*–संज्ञा पु० दे० "भेषज"।
भेजना–क्रि० स० [सं० व्रजन्] किसी वस्तु या व्यक्ति को एक स्थान से दूसरे स्थान के लिये रवाना करना।
भेजवाना–क्रि० स० [हिं० भेजना का प्रेर०] भेजने का काम दूसरे से कराना।
भेजा–संज्ञा पु० [?] खोपडी के भीतर का गूदा। मग्ज।
भेड–संज्ञा स्त्री० [सं० मेष] [पु० भेडा] बकरी की जाति का एक चौपाया। गाडर।
मुहा०—भेडिया धसान = बिना परिणाम सोचे समझे दूसरों का अनुसरण करना।
भेडा–संज्ञा पु० [हिं० भेड] भेड जाति का नर। मेढा। मेष।
भेडिया–संज्ञा पु० [हिं० भेड] कुत्ते की तरह का एक प्रसिद्ध जंगली मांसाहारी जंतु। सियार। शृगाल।
भेडी–संज्ञा स्त्री० दे० "भेड"।
भेद–संज्ञा पु० [सं०] १ भेदने या छेदने की क्रिया। २ शत्रु-पक्ष के लोगों को बहकाकर अपनी ओर मिलाना अथवा उनमें द्वेष उत्पन्न करना। ३ भीतरी छिपा हुआ हाल। रहस्य। ४ मर्म। तात्पर्य। ५ फर्क। ६ प्रकार। किस्म।
भेदक–वि० [सं०] १ छेदनेवाला। २ रेचक। दस्तावर। (वैद्यक)
भेदकातिशयोक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें 'औरै' 'और' शब्द द्वारा किसी वस्तु की अनिर्वचन की जाती है।
भेदडी–संज्ञा स्त्री० [देश०] रबडी। बसौंधी।
भेदन–संज्ञा पु० [सं०] [वि० भेदनीय, भेद्य] भेदने की क्रिया। छेदना। बेधना।
भेदभाव–संज्ञा पु० [सं०] अंतर। फरक।
भेदिया–संज्ञा पु० [सं० भेद + इया (प्रत्य०)] १ जासूस। गुप्तचर। २ गुप्त रहस्य जाननेवाला।
भेदी–संज्ञा पु० दे० "भेदिया"।
वि० [सं० भेदिन्] भेदन करनेवाला।
भेदीसार–संज्ञा पु० [सं०] बढ़इयों का

छेदने का औजार। बरमा।
भेद्य–वि० [सं०] जो भेदा या छेदा जा सके।
भेन†–संज्ञा स्त्री० [हिं० बहिन] बहिन।
भेना†–क्रि० स० दे० "भेवना"।
भेरा*†–संज्ञा पुं० दे० "बेड़ा"।
भेरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] बड़ा ढोल या नगाड़ा। ढक्का। दुंदुभी।
भेरीकार–संज्ञा पुं० [सं० भेरी + कार(प्रत्य०)] [स्त्री० भेरीकारी] भेरी बजानेवाला।
भेला*†–संज्ञा पुं० [हिं० भेंट] १. भिड़ंत। २. भेंट। मुलाक़ात।
संज्ञा पुं० दे० "भिलावाँ"।
संज्ञा पुं० [?] बड़ा गोला या पिंड।
भेली†–संज्ञा स्त्री० [?] गुड़ या और किसी चीज की गोल बट्टी या पिंडी।
भेव*†–संज्ञा पुं० [सं० भेद] १. मर्म की बात। भेद। रहस्य। २. बारी। पारी।
भेवना*†–क्रि० स० [हिं० भिगोना] भिगोना
भेष–संज्ञा पुं० दे० "वेष"।
भेषज–संज्ञा पुं० [सं०] औषध। दवा।
भेषना*–क्रि० स० [हिं० भेष] १. भेष बनाना। स्वाँग बनाना। २. पहनना।
भेस–संज्ञा पुं० [सं० वेष] १. बाहरी रूप-रंग और पहनावा आदि। वेष। २. कृत्रिम रूप और वस्त्र आदि।
भेसज*–संज्ञा पुं० दे० "भेषज"।
भेसना*†–क्रि० स० [सं० वेश, हिं० भेस] वेश धारण करना। वस्त्रादि पहनना।
भैंस–संज्ञा स्त्री० [सं० महिष] १. गाय की जाति और आकार-प्रकार का, पर उससे बड़ा, चौपाया (मादा) जिसे लोग दूध के लिये पालते हैं। २. एक प्रकार की मछली।
भैंसा–संज्ञा पुं० [हिं० भैंस] भैंस का नर।
भैंसासुर–संज्ञा पुं० दे० "महिषासुर"।
भै*–संज्ञा पुं० दे० "भय"।
भैक्ष–संज्ञा पुं० [सं०] १. भिक्षा माँगने की क्रिया या भाव। २. भीख।
भैक्षचर्या, भैक्षवृत्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] भिक्षा माँगने की क्रिया।
भैचक, भैचक्क*†–वि० [हिं० भय + चक = चकित] चकपकाया हुआ। चकित।
भैजन*–वि० [हिं० भय + जनक] भयप्रद।
भैदा*–वि० [सं० भय + दा (प्रत्य०)] भयप्रद
भैना–संज्ञा स्त्री० [हिं० बहिन] बहिन।
भैयंस†–संज्ञा पुं० [हिं० भाई + अंश] संपत्ति में भाइयों का हिस्सा या अंश।
भैया–संज्ञा पुं० [हिं० भाई] १. भाई। भ्राता। २. बराबरवालों या छोटों के लिये संबोधन शब्द।
भैयाचारी–संज्ञा स्त्री० दे० "भाईचारा"।
भैयादूज–संज्ञा स्त्री० [सं० भ्रातृ द्वितीया] कार्त्तिक शुक्ल द्वितीया। भाईदूज। इस दिन बहनें भाइयों को टीका लगाती हैं।
भैरव–वि० [सं०] १. देखने में भयंकर। भयानक। २. भीषण शब्दवाला।
संज्ञा पुं० [सं०] १. शंकर। महादेव। २. शिव के एक प्रकार के गण जो उन्हीं के अवतार माने जाते हैं। ३. साहित्य में भयानक रस। ४. एक राग जो छः रागों में से मुख्य है। ५. भयानक शब्द।
भैरवी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार की देवी जो महाविद्या की एक मूर्त्ति मानी जाती है। चामुंडा। (तंत्र) २. एक रागिनी जो सवेरे गाई जाती है।
भैरवी चक्र–संज्ञा पुं० [सं०] तांत्रिकों या वाममार्गियों का वह समूह जो कुछ विशिष्ट समयों में देवी का पूजन करने के लिये एकत्र होता है।
भैरवीयातना–संज्ञा स्त्री० [सं० भैरवी + यातना] पुराणानुसार वह यातना जो प्राणियों को मरते समय भैरवजी देते हैं।
भैषज–संज्ञा पुं० [सं०] औषध। दवा।
भैहा*†–संज्ञा पुं० [हिं० भय + हा (प्रत्य०)] १. भयभीत। डरा हुआ। २. जिस पर भूत या किसी देव का आवेश आता हो।
भोंकना–क्रि० स० [भक से अनु०] बरछी, तलवार आदि नुकीली चीज जोर से धँसाना। घुसेड़ना।
भोंड़ा–वि० [हिं० भद्दा या भौं से अनु०] [स्त्री० भोंड़ी] भद्दा। बदसूरत। कुरूप।

भोंडापन–संज्ञा पु० [हिं० भोंडा + पन (प्रत्य०)] १ भद्दापन। २ बेहूदगी।

भोंदू–वि० [हिं० बुद्धू] बेवकूफ। मूर्ख।

भोंपू–संज्ञा पु० [भों अनु० + पू (प्रत्य०)] एक प्रकार का बाजा जो फूँककर बजाते हैं।

भोंसले–संज्ञा पु० [देश०] महाराष्ट्रों के एक राजकुल की उपाधि। (महाराज शिवाजी और रघुनाथराव आदि इसी कुल में थे।)

भो*–क्रि० अ० [हिं० भया] भया। हुआ।

भोकस*†–वि० [हिं० भूख] भुक्खड़।
संज्ञा पु० [?] एक प्रकार का राक्षस।

भोकार–संज्ञा स्त्री० [भों से अनु० + कार (प्रत्य०)] जोर जोर से रोना।

भोक्ता–वि० [सं० भोक्तृ] [संज्ञा भोक्तृत्व] १ भोजन करनेवाला। २ भोग करनेवाला। भोगनेवाला। ३ ऐयाश।

भोग–संज्ञा पु० [सं०] १ सुख या दुःख आदि का अनुभव करना। २ सुख। विलास। ३ दुःख। कष्ट। ४ स्त्री-संभोग। विषय। ५ धन। ६ पालन। ७ भक्षण। आहार करना। ८ देह। ९ पाप या पुण्य का वह फल जो सहन किया या भोगा जाता है। प्रारब्ध। १० फल। अर्थ। ११ देवता आदि के आगे रखे जानेवाले खाद्य पदार्थ। नैवेद्य। १२ सूर्य्य आदि ग्रहों के राशियों में रहने का समय।

भोगना–क्रि० अ० [सं० भोग] १ सुख-दुःख या शुभाशुभ कर्मफलों का अनुभव करना। भुगतना। २ सहन करना। सहना।

भोगबंधक–संज्ञा पु० [सं० भोग्य + हिं० बंधक = रेहन] बंधक या रेहन रखने का वह प्रकार जिसमें ब्याज के बदले में रेहन रखी हुई भूमि या मकान आदि भोगने का अधिकार होता है। दृष्टबंधक का उलटा।

भोगली–संज्ञा स्त्री० [देश०] १ नाक में पहनने का लौंग। २ टेंढ़का या तरकी नाम का कान में पहनने का गहना। ३ वह छोटी पतली पोली कील जो लौंग या कान के फूल आदि को अटकाने के लिये उसमें लगाई जाती है।

भोगवना*–क्रि० अ० [सं० भोग] भोगना।

भोगवाना–क्रि० स० [हिं० भोगना का प्रेर० रूप] दूसरे से भोग कराना।

भोग-विलास–संज्ञा पु० [सं०] आमोद-प्रमोद। सुख-चैन।

भोगाना–क्रि० स० दे० "भोगवाना"।

भोगी–संज्ञा पु० [सं० भोगिन्] भोगनेवाला।
वि० १ सुखी। २ इंद्रियों का सुख चाहनेवाला। ३ भुगतनेवाला। ४ विषयासक्त। ५ आनंद करनेवाला।

भोग्य–वि० [सं०] भोगने योग्य। काम में लाने योग्य।

भोग्यमान वि० [सं०] जो भोगा जाने को हो, अभी भोगा न गया हो।

भोज–संज्ञा पु० [सं० भोजन] १ बहुत से लोगों का एक साथ बैठकर खाना-पीना। जेवनार। दावत। २ खाने की चीज।
संज्ञा पु० [सं०] १ भोजकट नामक देश जिसे आजकल भोजपुर कहते हैं। २ चंद्रवंशियों के एक वंश का नाम। ३ श्रीकृष्ण के सखा एक ग्वाल का नाम। ४ कान्यकुब्ज के एक प्रसिद्ध राजा जो महाराज रामभद्र देव के पुत्र थे। ५ मालवे के परमार-वंशी एक प्रसिद्ध राजा जो संस्कृत के बहुत बड़े विद्वान् कवि थे।

भोजक–संज्ञा पु० [सं०] १ भोग करनेवाला। भोगी। २ ऐयाश। विलासी।

भोजदेव–संज्ञा पु० [सं०] कान्यकुब्ज के महाराज भोज। वि० दे० "भोज" (५)।

भोजन–संज्ञा पु० [सं०] १ भक्षण करना। खाना। २ खाने की सामग्री।

भोजनखाना*–संज्ञा स्त्री० [सं० भोजन + हिं० खाना] पाकशाला। रसोईघर।

भोजनशाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] रसोईघर।

भोजनालय–संज्ञा पु० [सं०] रसोईघर।

भोजपत्र–संज्ञा पु० [सं० भूर्जपत्र] एक प्रकार का मँझोले आकार का वृक्ष। इसकी छाल प्राचीन काल में ग्रंथ और लेख आदि लिखने में बहुत काम आती थी।

भोजपुरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० भोजपुर+ई (प्रत्य०)] भोजपुर की भाषा।
संज्ञा पुं० भोजपुर का निवासी।
वि० भोजपुर का। भोजपुर-संबंधी।
भोजराज–संज्ञा पुं० दे० "भोज" (५)।
भोजविद्या–संज्ञा स्त्री० [सं० भोज+विद्या] इंद्रजाल। बाजीगरी।
भोजी–संज्ञा पुं० [सं० भोजन] खानेवाला।
भोजू*–संज्ञा पुं० [सं० भोजन] भोजन।
भोज्य–संज्ञा पुं० [सं०] खाद्य पदार्थ।
वि० खाने योग्य। जो खाया जा सके।
भोट–संज्ञा पुं० [सं० भोटग] १. भूटान देश। २. एक प्रकार का बड़ा पत्थर।
भोटिया–संज्ञा पुं० [हिं० भोट+इया (प्रत्य०)] भोट या भूटान देश का निवासी।
संज्ञा स्त्री० भूटान देश की भाषा।
वि० भूटान देश-संबंधी। भूटान का।
भोटिया बादाम–संज्ञा पुं० [हिं० भोटिया+फ़ा० बादाम] १. आलूबुखारा। २. मूँगफली।
भोडर†–संज्ञा पुं० [देश०] १. अभ्रक। अबरक। २. अभ्रक का चूर। बुक्का।
भोडल–संज्ञा पुं० दे० "अबरक"।
भोना*–क्रि० क० [हिं० भीनना] १. भीनना। संचरित होना। २. लिप्त होना। लीन होना। ३. आसक्त होना।
भोपा–संज्ञा पुं० [भों से अनु०] १. एक प्रकार की तुरही। भोंपू। २. मूर्ख।
भोर–संज्ञा पुं० [सं० विभावरी] तड़का।
*† संज्ञा पुं० [सं० भ्रम] धोखा। भ्रम।
वि० चकित। स्तंभित।
* वि० [हिं० भोला] भोला। सीधा।
भोरा*†–संज्ञा पुं० दे० "भोर"।
*† वि० भोला। सीधा। सरल।
भोराई*†–संज्ञा स्त्री० दे० "भोलापन"।
भोराना*–क्रि० स० [हिं० भोर+आना (प्रत्य०)] भ्रम में डालना। बहकाना।
क्रि० अ० धोखे में आना।
भोरानाथ*–संज्ञा पुं० [हिं० भोलानाथ] शिव।
भोरु*–संज्ञा पुं० दे० "भोर"।
भोला–वि० [हिं० भूलना] १. सीधा-सादा। सरल। २. मूर्ख। बेवकूफ़।
भोलानाथ–संज्ञा पुं० [हिं० भोला+सं० नाथ] महादेव। शिव।
भोलापन–संज्ञा पुं० [हिं० भोला+पन (प्रत्य०)] १. सिधाई। सरलता। सादगी। २. नादानी। मूर्खता।
भोला-भाला–वि० [हिं० भोला+अनु० भाला] सीधा-सादा। सरल चित्त का।
भौं–संज्ञा स्त्री० दे० "भौंह"।
भौंकना–क्रि० अ० [भौं भौं से अनु०] १. भौं भौं शब्द करना। कुत्तों का बोलना। भूँकना। २. बहुत बकवाद करना।
भौंचाल†–संज्ञा पुं० दे० "भूकंप"।
भौंतुवा–संज्ञा पुं० [हिं० भ्रमना=घूमना] १. काले रंग का एक कीड़ा जो प्रायः वर्षा ऋतु में जलाशयों आदि में जल-तल के ऊपर चक्कर काटता हुआ चलता है। २. एक प्रकार का रोग जिसमें बाँहदंड के नीचे एक गिलटी निकल आती है। ३. तेली का बैल जो सबेरे से ही कोल्हू में जोता जाता है और दिन भर घूमा करता है।
भौंर–संज्ञा पुं० [सं० भ्रमर] १. भौंरा। २. तेज बहते हुए पानी में पड़नेवाला चक्कर। आवर्त्त। नाँद। ३. मुश्की घोड़ा।
भौंरा–संज्ञा पुं० [सं० भ्रमर] [स्त्री० भँवरी] १. काले रंग का उड़नेवाला एक पतंगा जो देखने में बहुत दृढ़ांग प्रतीत होता है। २. बड़ी मधुमक्खी। सारंग। डंगर। ३. काली या लाल भिड़। ४. एक प्रकार का खिलौना। ५. हिंडोले की वह लकड़ी जिसमें डोरी बँधी रहती है। ६. वह कुत्ता जो गड़रियों की भेड़ों की रखवाली करता है।
संज्ञा पुं० [सं० भ्रमण] १. मकान के नीचे का घर। तहखाना। २. वह गड्ढा जिसमें अन्न रखा जाता है। खात। खत्ता।
भौंराना*–क्रि० स० [सं० भ्रमण] १. घुमाना। परिभ्रमण कराना। २. विवाह की भाँवर दिलाना।
क्रि० अ० घूमना। चक्कर काटना।

भौंरी—संज्ञा स्त्री० [सं० भ्रमण] १ पशुओं के शरीर में बालों के घुमाव से बना हुआ वह चक्र जिसके स्थान आदि के विचार से उनके गुण-दोष का निर्णय होता है। २ विवाह के समय वर-वधू का अग्नि की परिक्रमा करना। भाँवर। ३ तेज बहते हुए जल में पड़नेवाला चक्कर। आवर्त्त। ४ अंगाकड़ी। बाटी। (पकवान)

भौंह—संज्ञा स्त्री० [सं० भ्रू] आँख के ऊपर की हड्डी पर के रोएँ या बाल। भृकुटी। भौं। मुहा०—भौं चढ़ाना या तानना=१ नाराज होना। क्रुद्ध होना। २ त्योरी चढ़ाना विगड़ना। भौंह जोहना=खुशामद करना।

भौ*—संज्ञा पु० [सं० भव] संसार। जगत्। संज्ञा पु० [सं० भय] डर। खौफ। भय।

भौगिया*†—संज्ञा पु० [हिं० भोग+इया (प्रत्य०)] संसार के सुखों को भोगनेवाला।

भौगोलिक—वि० [सं०] भूगोल का।

भौचक—वि० [हिं० भय+चकित] हक्का-बक्का। चकपकाया हुआ। स्तंभित।

भौज*—संज्ञा स्त्री० दे० "भौजाई"।

भौजाई—संज्ञा स्त्री० [सं० भ्रातृजाया] भाई की भार्या। भ्रातृवधू। भावज। भाभी।

भौज्य—संज्ञा पु० [सं०] वह राज्य जो केवल सुख-भोग के विचार से होता हो, प्रजा-पालन के विचार से नहीं।

भौतिक—वि० [सं०] १ पंचभूत-संबंधी। २ पाँचों भूतों से बना हुआ। पार्थिव। ३ शरीर-संबंधी। शरीर का। ४ भूतयोनि का।

भौतिक विद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] भूत-प्रेतों को बुलाने और दूर करने की विद्या।

भौतिक सृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] आठ प्रकार की देव योनि, पाँच प्रकार की तिर्यग् योनि और मनुष्य योनि, इन सबकी समष्टि।

भौन*—संज्ञा पु० [सं० भवन] घर। मकान।

भौना*†—क्रि० अ० [सं० भ्रमण] घूमना।

भौम—वि० [सं०] १ भूमि-संबंधी। भूमि का। २ भूमि से उत्पन्न। पृथ्वी से उत्पन्न। संज्ञा पु० मंगल ग्रह।

भौमवार—संज्ञा पु० [सं०] मंगलवार।

भौमिक—संज्ञा पु० [सं०] जमींदार। वि० भूमि-संबंधी। भूमि का।

भौर*—संज्ञा पु० [सं० भ्रमर] १ दे० "भौंरा"। २ घोड़ों का एक भेद। ३ दे० "भँवर"।

भौलिया—संज्ञा स्त्री० [सं० बहुला] एक प्रकार की छायादार नाव।

भौसा—संज्ञा पु० [देश०] १ भीड़-भाड़। जन-समूह। २ हो-हुल्लड़। गड़बड़।

भ्रंश—संज्ञा पु० [सं०] १ अधःपतन। नीचे गिरना। २ नाश। ध्वंस। ३ भागना। वि० भ्रष्ट। खराब।

भ्रकुटि—संज्ञा स्त्री० [सं०] भृकुटी। भौंह।

भ्रम—संज्ञा पु० [सं०] १ किसी चीज या बात को कुछ का कुछ समझना। मिथ्या ज्ञान। भ्रांति। धोखा। २ संशय। संदेह। शक। ३ एक प्रकार का रोग जिसमें चक्कर आता है। ४ मूर्च्छा। बेहोशी। ५ भ्रमण। संज्ञा पु० [सं० सम्भ्रम] मान। प्रतिष्ठा। इज्जत

भ्रमण—संज्ञा पु० [सं०] १ घूमना फिरना। विचरण। २ आना-जाना। ३ यात्रा। सफर। ४ मंडल। चक्कर। फेरी।

भ्रमना—क्रि० अ० [सं० भ्रमण] घूमना। क्रि० अ० [सं० भ्रम] १ धोखा खाना। भूल करना। २ भटकना। भूलना।

भ्रममूलक—वि० [सं०] जो भ्रम के कारण उत्पन्न हुआ हो।

भ्रमर—संज्ञा पु० [सं०] १ भौंरा। यौ०—भ्रमर-गुफा=योगशास्त्र के अनुसार हृदय के अंदर का एक स्थान। २ उद्धव का एक नाम। यौ०—भ्रमरगीत=वह गीत या काव्य जिसमें उद्धव के प्रति ब्रज की गोपियों का उपालंभ हो। ३ दोहे का एक भेद। ४ छप्पय का तिरसठवाँ भेद।

भ्रमरविलासिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वृत्त।

भ्रमरावली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ भँवरों की श्रेणी। २ मनहरण वृत्त। नलिनी।

भ्रमवात—संज्ञा पु० [सं०] आकाश का वह वायुमंडल जो सर्वदा घूमा करता है।

भ्रमात्मक—वि० [सं०] जिससे अथवा

जिसके संबंध में भ्रम होता हो। संदिग्ध।

भ्रमाना*†–क्रि० स० [हिं० भ्रमना का स०] १. घुमाना। फिराना। २. बहकाना।

भ्रमी–वि० [सं० भ्रमित्] १. जिसे भ्रम हुआ हो। २. चकित। भौचक।

भ्रष्ट–वि० [सं०] १. गिरा हुआ। पतित। २. जो खराब हो गया हो। बहुत बिगड़ा हुआ। ३. दूषित। ४. बदचलन।

भ्रष्टा–संज्ञा स्त्री० [सं०] कुलटा। छिनाल।

भ्रांत–संज्ञा पुं० [सं०] तलवार के ३२ हाथों में से एक।

वि० [सं०] १. जिसे भ्रांति या भ्रम हुआ हो। भूला हुआ। २. व्याकुल। विकल। ३. उन्मत्त। ४ घुमाया हुआ।

भ्रांतापह्नुति–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक काव्यालंकार जिसमें किसी भ्रांति को दूर करने के लिये सत्य वस्तु का वर्णन होता है।

भ्रांति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. भ्रम। धोखा। २. संदेह। शक। ३. भ्रमण। ४. पागलपन। ५. भँवरी। घमेर। ६. भूल-चूक। ७. मोह। प्रमाद। ८. एक प्रकार का काव्यालंकार। इसमें किसी वस्तु को, दूसरी वस्तु के साथ उसकी समानता देखकर भ्रम से वह दूसरी वस्तु ही समझ लेना वर्णित होता है।

भ्राजना*–क्रि० अ० [सं० भ्राजन] शोभा पाना। शोभायमान होना।

भ्राजमान*–वि० [हिं० भ्राजना+मान (प्रत्य०)] शोभायमान।

भ्रात*–संज्ञा पुं० दे० "भ्राता"।

भ्राता–संज्ञा पुं० [सं० भ्रातृ] सगा भाई।

भ्रातृत्व–संज्ञा पुं० [सं०] भाई होने का भाव या धर्म। भाईपन।

भ्रातृद्वितीया–संज्ञा स्त्री० [सं०] कार्तिक शुक्ल द्वितीया। यमद्वितीया। भाई दूज।

भ्रातृपुत्र–संज्ञा पुं० [सं०] भतीजा।

भ्रातृभाव–संज्ञा पुं० [सं०] भाई का सा प्रेम या संबंध। भाई-चारा। भाईपन।

भ्रामक–वि० [सं०] १. भ्रम में डालनेवाला। बहकानेवाला। २. घुमानेवाला। चक्कर दिलानेवाला।

भ्रामर–संज्ञा पुं० [सं०] १. मधु। शहद। २. दोहे का दूसरा भेद।

वि० भ्रमर-संबंधी। भ्रमर का।

भ्रू–संज्ञा स्त्री० [सं०] भौं। भौंह।

भ्रूण–संज्ञा पुं० [सं०] १. स्त्री का गर्भ। २. बालक की वह अवस्था जब कि वह गर्भ में रहता है।

भ्रूणहत्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] गर्भ के बालक की हत्या।

भ्रूभंग–संज्ञा पुं० [सं०] त्यौरी चढ़ाना।

भ्वहरना*†–क्रि० अ० [हिं० भय+हरन (प्रत्य०)] भयभीत होना। डरना।

म

म–हिंदी वर्णमाला का पचीसवाँ व्यंजन और पवर्ग का अंतिम वर्ण। इसका उच्चारण-स्थान होंठ और नासिका है।

मंग–संज्ञा स्त्री० [हिं० माँग] स्त्रियों के सिर की माँग।

मंगता–संज्ञा पुं० [हिं० माँगना+ता (प्रत्य०)] भिखमंगा। भिक्षुक।

मंगन–संज्ञा पुं० [हिं० माँगना] भिक्षुक।

मँगनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० माँगना+ई (प्रत्य०)] १. वह पदार्थ जो किसी से इस शर्त पर माँगकर लिया जाय कि कुछ समय के उपरांत लौटा दिया जायगा। २. इस प्रकार माँगने की क्रिया या भाव। ३. विवाह के पहले की वह रस्म जिसमें वर और कन्या का संबंध निश्चित होता है।

मंगल–संज्ञा पुं० [सं०] १. अभीष्ट की सिद्धि। मनोकामना का पूर्ण होना। २. कल्याण। कुशल। भलाई। ३. सौर जगत् का एक प्रसिद्ध ग्रह जो पृथ्वी के उपरांत पहले-पहल पड़ता है और जो सूर्य्य से १४,१५,००,००० मील दूर है। भौम। कुज। ४. मंगलवार।

मंगलकलश (घट)–संज्ञा पुं० [सं०] जल से भरा हुआ वह घड़ा जो मंगल-अवसरों पर

पूजा के लिये रखा जाता है।
मंगलवार–संज्ञा पु० [सं०] वह वार जो सोमवार के उपरांत और बुधवार के पहले पड़ता है। भौमवार।
मंगलसूत्र–संज्ञा पु० [सं०] वह तागा जो किसी देवता के प्रसाद-रूप में कलाई में बाँधा जाता है।
मंगलस्नान–संज्ञा पु० [सं०] वह स्नान जो मंगल की कामना से किया जाता है।
मंगला–संज्ञा स्त्री० [सं०] पार्वती।
मंगलाचरण–संज्ञा पु० [सं०] वह श्लोक या पद आदि जो किसी शुभ कार्य के आरंभ में मंगल की कामना से पढ़ा, लिखा या कहा जाय।
मंगलामुखी–संज्ञा स्त्री० [सं० मंगल+मुखी] वेश्या। रंडी।
मंगली–वि० [सं० मंगल(ग्रह)] जिसकी जन्मकुंडली के चौथे, आठवें या बारहवें स्थान में मंगल ग्रह पड़ा हो। (अशुभ)
मँगवाना–क्रि० स० [हिं० माँगना का प्रेर०] १ माँगने का काम दूसरे से कराना। २ किसी को कोई चीज़ मोल खरीदकर या किसी से माँगकर लाने में प्रवृत्त करना।
मँगाना–क्रि० स० [हिं० माँगना का प्रेर०] १ दे० "मँगवाना"। २ मँगनी का संबंध कराना।
मँगेतर–वि० [हिं० मँगनी+एतर (प्रत्य०)] जिसकी किसी के साथ मँगनी हुई हो।
मंगोल–संज्ञा पु० [मंगोलिया प्रदेश से] मध्य एशिया और उसके पूरब की ओर(तातार, चीन, जापान में)बसनेवाली एक जाति।
मंच, मंचक–संज्ञा पु० [सं०] १ खाट। खटिया। २ छोटी पीढ़ी। मँचिया। ३ ऊँचा बना हुआ मंडप जिस पर बैठकर सर्वसाधारण के सामने किसी प्रकार का कार्य किया जाय।
मंजन–संज्ञा पु० [सं० मज्जन] १ दाँत साफ करने का चूर्ण। २ स्नान।
मँजना–क्रि० अ० [हिं० माँजना] १. माँजा जाना। २ अभ्यास होना। मश्क होना।
मंजरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नया निकला हुआ कल्ला। कोपल। २. कुछ विशिष्ट पौधों में फूलों या फलों के स्थान पर एक सींके में लगे हुए बहुत से दानों का समूह। ३ बेल। लता।
मँजाना–क्रि० स० [हिं० माँजना] १ माँजने का काम दूसरे से कराना। २ दे० "माँजना"।
मंजार–संज्ञा स्त्री० [सं० मार्जार] बिल्ली।
मंजिष्ठा–संज्ञा स्त्री० [सं०] मजीठ।
मंजिल–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ यात्रा में ठहरने का स्थान। पड़ाव। २ मकान का खंड। मरातिब।
मंजीर–संज्ञा पु० [सं०] नूपुर। घुँघरू।
मंजु–वि० [सं०] सुंदर। मनोहर।
मंजुघोष–संज्ञा पु० [सं०] एक प्रसिद्ध बौद्ध आचार्य्य। मंजुश्री।
मंजुल–वि० [सं०] सुंदर। मनोहर।
मंजुश्री–संज्ञा पु० दे० "मंजुघोष"।
मंज़ूर–वि० [अ०] जो मान लिया गया हो। स्वीकृत।
मंज़ूरी–संज्ञा स्त्री० [अ० मंज़ूर+ई(प्रत्य०)] मंज़ूर होने का भाव। स्वीकृति।
मंजूषा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ छोटा पिटारा या डिब्बा। पिटारी। २ पिंजड़ा।
मँझा*†–वि० [सं० मध्य] मध्य का।
संज्ञा पु० [सं० मंच] पलंग। खाट।
संज्ञा पु० दे० "माँझा"।
मँझार†–क्रि० वि० [सं० मध्य] बीच में।
मँझियार†–वि० [सं० मध्य] बीच का।
मंड–संज्ञा पु० [सं०] भात का पानी। माँड़।
मंडन–संज्ञा पु० [सं०] १ शृंगार करना। सजाना। सँवारना। २ प्रमाण आदि द्वारा कोई बात सिद्ध करना। 'खंडन' का उलटा।
मंडना*–क्रि० स० [सं० मंडन] १ भूषित करना। शृंगार करना। युक्ति आदि देकर सिद्ध या प्रतिपादित करना। ३ भरना।
क्रि० स० [सं० मर्दन] दलित करना।

मंडप–संज्ञा पुं० [सं०] १. विश्राम-स्थान। २. बारहदरी। ३. किसी उत्सव या समारोह के लिये बांस, फूस आदि से छाकर बनाया हुआ स्थान। ४. देवमंदिर के ऊपर का गोल या गावदुम हिस्सा। ५. चँदोवा। शामियाना।

मंडर*–संज्ञा पुं० दे० "मंडल"।

मँडरना–क्रि० अ० [सं० मंडल] मंडल बाँधकर छा जाना। चारों ओर से घेर लेना।

मँडराना–क्रि० अ० [सं० मंडल] १. किसी वस्तु के चारों ओर घूमते हुए उड़ना। २. किसी के चारों ओर घूमना। परिक्रमण करना। ३. किसी के आस-पास ही घूम-फिरकर रहना।

मंडल–संज्ञा पुं० [सं०] १. परिधि। चक्कर। गोलाई। वृत्त। २. गोल फैलाव। गोला। ३. चंद्रमा या सूर्य्य के चारों ओर पड़नेवाला घेरा। परिवेश। ४. क्षितिज। ५. समाज। समूह। समुदाय। ६. ग्रह के घूमने की कक्षा। ७. ऋग्वेद का एक खंड। ८. बारह राज्यों का समूह।

मंडलाकार–वि० [सं०] गोल।

मँडलाना–क्रि० अ० दे० "मँडराना"।

मंडली–संज्ञा स्त्री० [सं०] समूह। समाज। संज्ञा पुं० [सं० मंडलिन्] १. वट-वृक्ष। २. बिल्ली। विड़ाल। ३. सूर्य।

मंडलीक–संज्ञा पुं० [सं० माण्डलीक] एक मंडल या १२ राजाओं का अधिपति।

मंडलेश्वर–संज्ञा पुं० दे० "मंडलीक"।

मँड़वा–संज्ञा पुं० [सं० मंडप] मंडप।

मँडार†–संज्ञा पुं० [सं० मंडल] झाबा। डलिया।

मंडित–वि० [सं०] १. सजाया हुआ। २. छाया हुआ। ३. भरा हुआ।

मंडी–संज्ञा स्त्री० [सं० मंडप] बहुत भारी बाजार जहाँ व्यापार की चीजें बहुत आती हों। बड़ा हाट।

मँडुआ–संज्ञा पुं० [दिश०] एक प्रकार का कदन्न।

मंडूक–संज्ञा पुं० [सं०] १. मेंढक। २. एक ऋषि। ३. दोहा छंद का पाँचवाँ भेद।

मंडूर–संज्ञा पुं० [सं०] लोह-कीट। गलाए हुए लोहे की मैल। सिघान।

मंत*†–संज्ञा पुं० [सं० मंत्र] १. सलाह। यौ०—तंत-मंत=उद्योग। प्रयत्न। २. मंत्र।

मंतव्य–संज्ञा पुं० [सं०] विचार। मत।

मंत्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. गोप्य या रहस्य-पूर्ण बात। सलाह। परामर्श। २. देवाधिसाधन गायत्री आदि वैदिक वाक्य जिनके द्वारा यज्ञ आदि क्रिया करने का विधान हो। ३. वेदों का वह भाग जिसमें मंत्रों का संग्रह है। संहिता। ४. तंत्र में वे शब्द या वाक्य जिनका जप देवताओं की प्रसन्नता या कामनाओं की सिद्धि के लिये करने का विधान है। यौ०—मंत्रयंत्र या यंत्रमंत्र=जादू-टोना।

मंत्रकार–संज्ञा पुं० [सं०] मंत्र रचनेवाला ऋषि।

मंत्रणा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. परामर्श। सलाह। मशविरा। २. कई आदमियों की सलाह से स्थिर किया हुआ मत। मंतव्य।

मंत्रविद्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] तंत्रविद्या। भोजविद्या। मंत्रशास्त्र। तंत्र।

मंत्रसंहिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] वेदों का वह अंश जिसमें मंत्रों का संग्रह हो।

मंत्रित–वि० [सं०] मंत्र द्वारा संस्कृत। अभिमंत्रित।

मंत्रिता–संज्ञा स्त्री० दे० "मंत्रित्व"।

मंत्रित्व–संज्ञा पुं० [सं०] मंत्री का कार्य्य या पद। मंत्रिता। मंत्री-पन।

मंत्री–संज्ञा पुं० [सं० मंत्रिन्] १. परामर्श देनेवाला। सलाह देनेवाला। २. वह पुरुष जिसके परामर्श से राज्य के काम-काज होते हों। सचिव। अमात्य।

मंथ–संज्ञा पुं० [सं०] १. मथना। बिलोना। २. हिलाना। ३. मर्दन। मलना। ४. मारना। ध्वस्त करना। ५. मथानी।

मंथन–संज्ञा पुं० [सं०] १. मथना। बिलोना। २. खूब डूब डूबकर तत्वों का पता लगाना। ३. मथानी।

मंथर—संज्ञा पु० [सं०] १ मथानी। २ एक प्रकार का ज्वर। मथ ज्वर।
वि० १ मट्ठर। मंद। सुस्त। २ जड़। मंदबुद्धि। ३ भारी। ४ नीच।
मंथरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] कैकेयी की एक दासी। इसी के बहकाने पर कैकेयी ने रामचंद्र का वनवास और भरत को राज्य देने के लिए दशरथ से अनुरोध किया था।
मंथान—संज्ञा पु० [सं०] एक वर्णिक छंद।
मंद—वि० [सं०] १ धीमा। सुस्त। २ ढीला। शिथिल। ३ आलसी। ४ मूर्ख। कुबुद्धि। ५ खल। दुष्ट।
मंदभाग्य—वि० [सं०] दुर्भाग्य। अभाग्य।
मंदर—संज्ञा पु० [सं०] १ पुराणानुसार एक पर्वत जिससे देवताओं ने समुद्र को मथा था। २ मंदार। ३ स्वर्ग। ४ दर्पण। आईना। ५ एक वर्ण-वृत्त।
वि० मंद। धीमा।
मंदरगिरि—संज्ञा पु० [सं०] मंदराचल।
मँदरा—वि० [सं० मंदर] नाटा। ठिगना।
मंदरा—संज्ञा पु० [सं० मंडल] एक प्रकार का बाजा।
मंदा—वि० [सं० मंद] [स्त्री० मंदी] १ धीमा। मंद। २ ढीला। शिथिल। ३ जिसका दाम थोड़ा हो। सस्ता। ४ खराब। निकृष्ट।
मंदाकिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पुराणानुसार गंगा की वह धारा जो स्वर्ग में है। २ आकाश-गंगा। ३ एक नदी जो चित्रकूट के पास है। पयस्विनी। ४ बारह अक्षरों की एक वर्ण-वृत्ति।
मंदाक्रांता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सत्रह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।
मंदाग्नि—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक रोग जिसमें अन्न नहीं पचता। बदहजमी। अपच।
मंदार—संज्ञा पु० [सं०] १ स्वर्ग का एक देववृक्ष। २ आक। मदार। ३ स्वर्ग। ४ हाथी। ५ मंदराचल पर्वत।
मंदारमाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] बाईस अक्षरों की एक वर्णवृत्ति।
मंदिर—संज्ञा पु० [सं०] १ वासस्थान। २ घर। मकान। ३ देवालय।
मंदिल*‡—संज्ञा पु० दे० 'मंदिर'।
मंदी—संज्ञा स्त्री० [हिं० मंद] भाव का उतरना। महँगी का उलटा। सस्ती।
मंदोदरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] रावण की पटरानी का नाम। यह मय की कन्या थी।
मंद्र—संज्ञा पु० [सं०] १ गंभीर ध्वनि। २ संगीत में स्वरों के तीन भेदों में से एक।
वि० १ मनोहर। सुंदर। २ प्रसन्न। ३ गंभीर। ४ धीमा। (शब्द आदि)
मंसब—संज्ञा पु० [अ०] १ पद। स्थान। पदवी। २ काम। कर्त्तव्य। ३ अधिकार।
मंशा—संज्ञा स्त्री० [अ० मि० सं० मनस्] १ इच्छा। चाहना। अभिरुचि। २ आशय। अभिप्राय। मतलब।
मंसा—संज्ञा स्त्री० दे० 'मंशा'।
मंसूख—वि० [अ०] खारिज किया हुआ। काटा हुआ। रद।
म—संज्ञा पु० [सं०] १ शिव। २ चंद्रमा। ३ ब्रह्मा। ४ यम। ५ मधुसूदन।
मइँ‡—सर्व० दे० 'मैं'।
मइमंत*—वि० दे० 'मैमंत'।
मकई†—संज्ञा स्त्री० दे० 'ज्वार'। (अन्न)
मकड़ा—संज्ञा पु० [हिं० मकड़ी] बड़ी मकड़ी।
मकड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० मर्कटक] आठ पैरों और आठ आँखोंवाला एक प्रसिद्ध कीड़ा जिसकी सैकड़ों हजारों जातियाँ होती हैं।
मकतब—संज्ञा पु० [अ०] छोटे बालकों के पढ़ने का स्थान। पाठशाला। मदरसा।
मकदूर—संज्ञा पु० [अ०] सामर्थ्य। शक्ति।
मकबरा—संज्ञा पु० [अ०] वह इमारत जिसमें किसी की लाश गाड़ी गई हो। रौजा। मजार।
मकरंद—संज्ञा पु० [सं०] १ फूलों का रस जिसे मधुमक्खियाँ और भौंरे आदि चूसते हैं। २ एक वृत्त का नाम। माधवी। मंजरी। राम। ३ फूल का केसर।
मकर—संज्ञा पु० [सं०] १ मगर या घड़ि

याल नामक जलजंतु। २. बारह राशियों मे से दसवीं राशि। ३. फलित ज्योतिष के अनुसार एक लग्न। ४. सेना का एक प्रकार का व्यूह। ५. माघ मास। ६. मछली। ७. छप्पय के उनतालीसवें भेद का नाम।

संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. छल। कपट। फ़रेब। धोखा। २. नखरा।

मकरतार–संज्ञा पुं० [हिं० मुक्कैश] बादले का तार।

मकरध्वज–संज्ञा पुं० [सं०] १. कामदेव। कंदर्प। २. रस-सिंदूर। चंद्रोदय रस।

मकर संक्रांति–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह समय जब कि सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है।

मकरा–संज्ञा पुं०[सं०वरक]मड़ुवा नामक अन्न। संज्ञा पुं० [हिं० मकड़ा] एक प्रकार का कीड़ा।

मकराकृत–वि० [सं०] मकर या मछली के आकारवाला।

मकरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] मगर की मादा।

मकान–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. गृह। घर। २. निवासस्थान। रहने की जगह।

मकुंद–संज्ञा पु० दे० "मुकुंद"।

मकु–अव्य० [सं० म] १. चाहे। २. बल्कि। ३. कदाचित्। क्या जाने। शायद।

मकुना–संज्ञा पु० [सं० मनाक=हाथी] वह नर हाथी जिसके दाँत न हों।

मकुनी, मकूनी†–संज्ञा स्त्री० [देश०] आटे के भीतर बेसन भरकर बनाई हुई कचौरी। बेसनी रोटी।

मकोई–संज्ञा स्त्री० [हिं०मकोय] जंगली मकोय।

मकोड़ा–संज्ञा पुं० [हिं० कीड़ा का अनु०] कोई छोटा कीड़ा।

मकोय–संज्ञा स्त्री० [सं० काकमाता] १. एक क्षुप जो दो प्रकार का होता है। एक में लाल रंग के और दूसरे में काले रंग के बहुत छोटे छोटे फल लगते है। २. इस क्षुप का फल। ३. एक कँटीला पौधा या उमदा फल। रसभरी।

मकोरना*†–क्रि० स० दे० "मरोड़ना"।

मक्का–संज्ञा पुं० [अ०] अरब का एक प्रसिद्ध नगर जो मुसलमानों का सबसे बड़ा तीर्थ-स्थान है।

संज्ञा पुं० [देश०] ज्वार। मकई।

मक्कार–वि०[अ०][संज्ञा मक्कारी]फ़रेबी। कपटी। छली।

मक्खन–संज्ञा पुं० [सं० मंथज] दूध में का वह सार भाग जो दही या मठे को मथने पर निकलता है और जिसको तपाने से घी बनता है। नवनीत। नैनूं।

मुहा०–कलेजे पर मक्खन मला जाना =शत्रु की हानि देखकर प्रसन्नता होना।

मक्खी–संज्ञा स्त्री० [सं० मक्षिका] १. एक प्रसिद्ध छोटा कीड़ा जो साधारणतः सब जगह उड़ता फिरता है। मक्षिका।

मुहा०–जीती मक्खी निगलना = १. जान-बूझकर कोई ऐसा अनुचित कृत्य करना जिसके कारण पीछे से हानि हो। मक्खी की तरह निकाल या फेंक देना=किसी को किसी काम से बिलकुल अलग कर देना। मक्खी मारना या उड़ाना=बिलकुल निकम्मा रहना।

२. मधुमक्खी। मुमाखी।

मक्खीचूस–संज्ञा पु० [हिं० मक्खी + चूसना] बहुत अधिक कृपण। भारी कंजूस।

मक़दूर–संज्ञा पुं० [अ०] १. सामर्थ्य। शक्ति। २. वश। क़ाबू। ३. समाई। गुंजाइश।

मक्षिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] मक्खी।

मख–संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञ।

मखतूल–संज्ञा पु० [सं० महर्घ तूल] काला रेशम।

मखतूली–वि०[हिं० मखतूल + ई(प्रत्य०)] काले रेशम से बना हुआ। काले रेशम का।

मखन*–संज्ञा पुं० दे० "मक्खन"।

मखनिया†–संज्ञा पुं० [हिं० मक्खन + इया (प्रत्य०)] मक्खन बनाने या बेचनेवाला। वि० जिसमें से मक्खन निकाल लिया गया हो।

मखमल–संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० मखमली] एक प्रकार का बहुत बढ़िया रेशमी मुलायम कपड़ा।

मखशाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] यज्ञशाला।
मखाना–संज्ञा पु० दे० "तालमखाना"।
मखी*–संज्ञा स्त्री० दे० "मक्खी"।
मखौना†–संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का कपड़ा।
मखौल–संज्ञा पु० [देश०] हँसी ठट्ठा।
मग–संज्ञा पु० [सं० मार्ग] रास्ता। राह।
संज्ञा पु० [सं०] १ एक प्रकार के शाकद्वीपी ब्राह्मण। २ मगध देश। मगह।
मगज–संज्ञा पु० [अ० मग्ज] १ दिमाग। मस्तिष्क।
मुहा०—मगज खाना या चाटना=बकवक कर तंग करना। मगज खाली करना या पचाना =बहुत अधिक दिमाग लड़ाना। सिर खपाना। २ गिरी। मींगी। गूदा।
मगजपच्ची–संज्ञा स्त्री० [हिं० मगज+पचाना] किसी काम के लिये बहुत दिमाग लड़ाना। सिर खपाना।
मगजी–संज्ञा स्त्री० [देश०] कपड़े के किनारे पर लगी हुई पतली गोट।
मगण–संज्ञा पु० [सं०] कविता के आठ गणों में से एक जिसमें ३ गुरु वर्ण होते हैं।
मगदल–संज्ञा पु० [सं० मुद्ग] मूँग या उड़द का एक प्रकार का लड्डू।
मगदा–वि० [सं० मग+दा (प्रत्य०)] मार्ग-प्रदर्शक। रास्ता दिखलानेवाला।
–संज्ञा पु० दे० "मक्दूर"।
संज्ञा पु० [सं०] १ दक्षिणी विहार का प्राचीन नाम। कीकट। २ बंदीजन।
मगन–वि० [सं० मग्न] १ डूबा हुआ। समाया हुआ। २ प्रसन्न। ३ लीन।
मगना*†–क्रि० अ० [सं० मग्न] १ लीन होना। तन्मय होना। २ डूबना।
मगर–संज्ञा पु० [सं० मकर] १ घड़ियाल नामक प्रसिद्ध जलजंतु। २ मीन। मछली।
संज्ञा पु० [सं० मग] अराकान प्रदेश जहाँ मग जाति बसती है।
अव्य० लेकिन। परंतु। पर।
मगरमच्छ–संज्ञा पु० [हिं० मगर+मच्छ] १ मगर या घड़ियाल नामक जलजंतु। २ बड़ी मछली।
मगरूर–वि० [अ०] घमंडी। अभिमानी।
मगरूरी–संज्ञा स्त्री० [अ० मगरूर+ई (प्रत्य०)] घमंड। अभिमान।
मगह†–संज्ञा पु० [सं० मगध] मगध देश।
मगहपति*–संज्ञा पु० [सं० मगधपति] मगध देश का राजा, जरासंध।
मगहय*†–संज्ञा पु० [सं० मगध] मगध देश।
मगहर*†–संज्ञा पु० [सं० मगध] मगध देश।
मगही–वि० [सं० मगह+ई (प्रत्य०)] १ मगध-संबंधी। मगध देश का। २ मगह में उत्पन्न।
मगु, मग्ग*†–संज्ञा पु० [सं० मार्ग] रास्ता।
मग्ज–संज्ञा पु० [अ०] १ मस्तिष्क। दिमाग। भेजा। २ गिरी। मींगी। गूदा।
मग्न–वि० [सं०] १ डूबा हुआ। निमज्जित। २ तन्मय। लीन। लिप्त। ३ प्रसन्न। हर्षित। खुश। ४ नशे आदि में चूर।
मघवा–संज्ञा पु० [सं० मघवन्] इंद्र।
मघवाप्रस्थ–संज्ञा पु० [सं०] इंद्रप्रस्थ।
मघा–संज्ञा स्त्री० [सं०] सत्ताईस नक्षत्रों में से दसवाँ नक्षत्र जिसमें पाँच तारे हैं।
मघोनी*–संज्ञा स्त्री० [सं० मघवन] इंद्राणी।
मघौना–संज्ञा पु० [सं० मेघ+वर्ण] नीले रंग का कपड़ा।
मचक–संज्ञा स्त्री० [हिं० मचकना] दबाव।
मचकना–क्रि० स० [मच मच से अनु०] किसी पदार्थ को इस प्रकार जोर से दबाना कि मच मच शब्द निकले।
क्रि० अ० इस प्रकार दबना जिसमें मच मच शब्द हो। झटके से हिलना।
मचना–क्रि० अ० [अनु०] १ किसी ऐसे कार्य का आरंभ होना जिसमें शोर-गुल हो। २ छा जाना। फैलना।
क्रि० अ० दे० 'मचकना'।
मचलना–क्रि० अ० [अनु०] [संज्ञा मचल] किसी चीज के लिये जिद बाँधना। हठ करना। अड़ना।
मचला–वि० [हिं० मचलना मि० प० मचला] १ जो बोलने के अवसर पर जान-बूझकर

चुप रहे। २. मचलनेवाला।
मचलाना–क्रि० अ० [अनु०] के मालूम होना। जी मतलाना। ओकाई आना। क्रि० स० किसी को मचलने में प्रवृत्त करना। *†–क्रि० अ० दे० "मचलना"।
मचान–संज्ञा स्त्री० [सं० मंच+आन (प्रत्य०)] १. बाँस का टट्टर बाँधकर बनाया हुआ स्थान जिस पर बैठकर शिकार खेलते या खेत की रखवाली करते हैं। २. मंच। कोई ऊँची बैठक।
मचाना–क्रि० स० [हिं० मचना का स०] कोई ऐसा कार्य्य आरंभ करना जिसमें हुल्लड़ हो।
मचिया†–संज्ञा स्त्री० [सं० मंच+इया (प्रत्य०)] छोटी चारपाई। पलँगड़ी। पीढ़ी।
मचिलई*–संज्ञा स्त्री० [हिं० मचलना] १. मचलने का भाव। २. मचलापन।
मच्छ–संज्ञा पु० [सं० मत्स्य, प्रा० मच्छ] १ बड़ी मछली। २. दोहे का सोलहवाँ भेद।
मच्छड़, मच्छर–संज्ञा पु० [सं० मशक] एक प्रसिद्ध छोटा बरसाती पतिंगा। इसकी मादा काटती और डंक से रक्त चूसती है।
मच्छरता*–संज्ञा स्त्री० [सं० मत्सर+ता (प्रत्य०)] मत्सर। ईर्ष्या। द्वेष।
मच्छी–संज्ञा स्त्री० दे० "मछली"।
मच्छोदरी*–संज्ञा स्त्री० [सं० मत्स्योदरी] व्यास जी की माता और शांतनु की भार्या सत्यवती।
मछरंगा–संज्ञा पु० [हिं० अव्य०] एक प्रकार का जलपक्षी। रामचिड़िया।
मछली–संज्ञा स्त्री० [सं० मत्स्य] १. जल में रहनेवाला एक प्रसिद्ध जीव जिसकी छोटी बड़ी असंख्य जातियाँ होती हैं। मीन। २. मछली के आकार का कोई पदार्थ।
मछुआ, मछुवा–संज्ञा पुं० [हिं० मछली+उआ (प्रत्य०)] मछली मारनेवाला। मल्लाह
मजदूर–संज्ञा पु० [फ़ा०] [स्त्री० मजदूरनी, मजदूरिन] १. बोझ ढोनेवाला। मजूरा। कुली। मोटिया। २. कल-कारखानों में छोटा-मोटा काम करनेवाला आदमी।
मजदूरी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. मजदूर का काम। २. बोझ ढोने या और कोई छोटा-मोटा काम करने का पुरस्कार। ३. परिश्रम के बदले में मिला हुआ धन। उजरत। पारिश्रमिक।
मजना*†–क्रि०अ० [सं० मज्जन] १. डूबना। निमज्जित होना। २. अनुरक्त होना।
मजनूँ–संज्ञा पुं० [अ०] १. पागल। सिड़ी। बावला। २. अरब के एक प्रसिद्ध सरदार का लड़का जिसका वास्तविक नाम क़ैस था और जो लैला नाम की एक कन्या पर आसक्त होकर उसके लिये पागल हो गया था। ३. आशिक। प्रेमी। आसक्त। ४. एक प्रकार का वृक्ष। बेद मजनूं।
मजबूत–वि० [अ०] [संज्ञा मजबूती] १. दृढ़। पुष्ट। पक्का। २. बलवान्। सबल।
मजबूर–वि० [अ०] विवश। लाचार।
मजबूरी–संज्ञा स्त्री० [अ० मजबूर+ई (प्रत्य)] असमर्थता। लाचारी। बे-बसी।
मजमा–संज्ञा पुं० [अ०] बहुत से लोगों का जमाव। भीड़-भाड़। जमघट।
मजमून–संज्ञा पुं० [अ०] १. विषय, जिस पर कुछ कहा या लिखा जाय। २. लेख।
मजल†–संज्ञा स्त्री० दे० "मंजिल"।
मजलिस–संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० मजलिसी] १. सभा। समाज। जलसा। २. महफिल। नाच-रंग का स्थान।
मजहब–संज्ञा पु० [अ०] [वि० मजहबी] धार्मिक संप्रदाय। पंथ। मत।
मजा–संज्ञा पुं० [फा०] १. स्वाद। लज्जत।
मुहा०—मजा चखाना = किए हुए अपराध का दंड देना।
२. आनंद। सुख। ३. दिल्लगी। हँसी।
मुहा०—मजा आ जाना = परिहास का साधन प्रस्तुत होना। दिल्लगी का सामान होना।
मजाक़–संज्ञा पु० [अ०] हँसी। ठट्ठा।
मजार–संज्ञा पु० [अ०] १. समाधि। मक़बरा। २. क़ब्र।
मजारी–संज्ञा स्त्री० [सं० मार्जार] बिल्ली।
मजाल–संज्ञा स्त्री० [अ०] सामर्थ्य। शक्ति।

मजिल*†–संज्ञा स्त्री० दे० "मंज़िल"।
मजीठ–संज्ञा स्त्री० [सं० मंजिष्ठा] एक प्रकार की लता। इसकी जड़ और डंठलों से लाल रंग निकलता है।
मजीठी–संज्ञा पुं० [हिं० मजीठ] मजीठ के रंग का। लाल। सुर्ख।
मजीर*–संज्ञा स्त्री० [सं० मंजरी] मौर।
मजीरा–संज्ञा पुं० [सं० मंजीर] बजाने के लिये काँसे की छोटी-कटोरियों की जोड़ी। जोड़ी। ताल।
मजूर*–संज्ञा पुं० [सं० मयूर] मोर।
संज्ञा पुं० दे० "मज़दूर"।
मजूरी†–संज्ञा स्त्री० दे० "मज़दूरी"।
मजेज*†–वि० [फ़ा० मिजाज] अहंकार।
मज़ेदार–वि० [फ़ा०] १. स्वादिष्ट। जायकेदार। २. अच्छा। बढ़िया। ३. जिसमें आनंद आता हो।
मज्ज*–संज्ञा स्त्री० दे० "मज्जा"।
मज्जन–संज्ञा पुं० [सं०] स्नान। नहाना।
मज्जना*–क्रि० अ० [सं० मज्जन] १ गोता लगाना। नहाना। २. डूबना।
मज्जा–संज्ञा स्त्री० [सं०] नली की हड्डी के भीतर का गूदा।
मझ, मझ*–क्रि० वि० [सं० मध्य] बीच।
मझधार–संज्ञा स्त्री० [हिं० मझ=मध्य+धार] १ नदी के मध्य की धारा। २ किसी काम का मध्य।
[illegible]–वि० [सं० मध्य] बीच का।
[illegible]*†–क्रि० स० [सं० मध्य] प्रविष्ट [illegible]। बीच में धँसाना।
क्रि० अ० प्रविष्ट होना। पैठना।
मझार*†–क्रि० वि० [सं० मध्य] बीच में।
मझारना*†–क्रि० अ०, स० दे० "मझाना"।
मझियाना*†–क्रि० अ० [हिं० माझी] नाव खेना। मल्लाही करना।
क्रि० अ० [सं० मध्य+इयाना (प्रत्य०)] बीच से होकर निकलना।
मझियारा*†–वि० [सं० मध्य] बीच का।
मझोला–वि० [सं० मध्य] १. मझला। बीच का। मध्य का। २. जो न बहुत बड़ा हो और न बहुत छोटा। मध्यम आकार का।
मझोली–संज्ञा स्त्री० [हिं० मझोला] एक प्रकार की बैलगाड़ी।
मट†–संज्ञा पुं० [हिं० मटका] मटका। मटकी।
मटक–संज्ञा स्त्री० [सं० मट=चलना+क (प्रत्य०)] १. गति। चाल। २. मटकने की क्रिया या भाव।
मटकना–क्रि० अ० [सं० मट=चलना] १. अंग हिलाते हुए चलना। लचककर नखरे से चलना। २. अंगों का इस प्रकार संचालन जिसमें कुछ लचक या नखरा जान पड़े। ३ हटना। लौटना। फिरना। ४. विचलित होना। हिलना।
मटकनि*–संज्ञा स्त्री० [हिं० मटकना] १. दे० "मटक"। २. नाचना। नृत्य। ३. नखरा। मटक।
मटका–संज्ञा पुं० [हिं० मिट्टी+क (प्रत्य०)] मिट्टी का बड़ा घड़ा। मट। माट।
मटकाना–क्रि० स० [हिं० मटकना का स०] नखरे के साथ अंगों का संचालन करना। चमकाना।
क्रि० स० दूसरे को मटकने में प्रवृत्त करना।
मटकी–संज्ञा स्त्री० [हिं० मटका] छोटा मटका।
संज्ञा स्त्री० [हिं० मटकाना] मटकने या मटकाने का भाव। मटक।
मटकीला–वि० [हिं० मटकना+ईला (प्रत्य०)] मटकनेवाला। नखरे से हिलने डोलनेवाला।
मटकौअल–संज्ञा स्त्री० [हिं० मटकाना] मटकाने की क्रिया या भाव। मटक।
मटमैला–वि० [हिं० मिट्टी+मैल] मिट्टी के रंग का। खाकी। धूलिया।
मटर–संज्ञा पुं० [सं० मधुर] एक प्रसिद्ध मोटा अन्न। इसकी लंबी फलियों को छीमी या छीबी कहते हैं, जिनमें गोल दाने रहते हैं।
मटरगश्त–संज्ञा पुं० [हिं० मट्ठर = मंद+फ़ा० गश्त] १. टहलना। २. सैर-सपाटा।
मटिआना†–क्रि० स० [हिं० मिट्टी+आना

(प्रत्य०)] १. मिट्टी लगाकर मांजना। २. मिट्टी से ढांकना।

मटिया मसान–वि० [हिं० मटिया + मसान] गया बीता। नष्टप्राय।

मटियामेट–वि० दे० "मटियामेट"।

मटियाला–वि० दे० "मटमैला"।

मटुका–संज्ञा पुं० दे० "मटका"।

मटुकी*†–संज्ञा स्त्री० दे० "मटकी"।

मट्टी–संज्ञा स्त्री० दे० "मिट्टी"।

मट्ठर†–वि० [देश०] सुस्त। काहिल।

मट्ठा–संज्ञा पुं० [सं० मंथन] मथा हुआ दही जिसमें से नैनूं निकाल लिया गया हो। मही। छाछ। तक्र।

मट्ठी–संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का पकवान।

मठ–संज्ञा पु० [सं०] १ निवास-स्थान। रहने की जगह। २. वह मकान जिसमें साधु आदि रहते हों।

मठधारी–संज्ञा पुं० [सं० मठधारिन्] वह साधु या महंत जिसके अधिकार में कोई मठ हो। मठाधीश।

मठरी–संज्ञा स्त्री० दे० "मट्ठी"।

मठा–संज्ञा पु० दे० "मट्ठा"।

मठाधीश–संज्ञा पु० दे० "मठधारी"।

मठिया–संज्ञा स्त्री० [हिं०मठ+इया (प्रत्य०)] छोटी कुटी या मठ। संज्ञा स्त्री० [देश०] फूल (धातु) की बनी हुई चूड़ियाँ।

मठी–संज्ञा स्त्री० [हिं० मठ + ई (प्रत्य०)] १. छोटा मठ। २. मठ का महंत। मठधारी।

मठोर–संज्ञा स्त्री० [हिं० मट्ठा] दही मथने या मट्ठा रखने की मटकी।

मड़ई†–संज्ञा स्त्री० [सं० मंडप] १. छोटा मंडप। २. कुटिया। पर्णशाला।

मड़क–संज्ञा स्त्री० [अनु०] किसी बात का भीतरी रहस्य।

मड़वा–संज्ञा पुं० दे० "मंडप"।

मड़ाड़†–संज्ञा पुं० [देश०] छोटा कच्चा तालाब या गड्ढा।

मड़ुआ–संज्ञा पुं० [देश०] बाजरे की जाति का एक प्रकार का कदन्न।

मड़ैया†–संज्ञा स्त्री० दे० "मड़ई"।

मढ़–वि० [हिं० मट्ठर] अड़कर बैठनेवाला।

मढ़ना–क्रि० स० [सं० मंडन] १. आवेष्टित करना। चारों ओर से लपेट लेना। २. बाजे के मुँह पर चमड़ा लगाना। ३. किसी के गले लगाना। थोपना। †क्रि० अ० आरंभ होना। मचना। (क्व०)

मढ़वाना–क्रि० स० [हिं० मढ़ना का प्रेर०] मढ़ने का काम दूसरे से कराना।

मढ़ाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० मढ़ना] मढ़ने का भाव, काम या मजदूरी।

मढ़ाना–क्रि० स० दे० "मढ़वाना"।

मढ़ी–संज्ञा स्त्री० [सं० मठ] १. छोटा मठ। २. कुटी। झोंपड़ी। ३. छोटा घर।

मणि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बहुमूल्य रत्न। जवाहिर। २. सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति।

मणिगुण–संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्णिक वृत्त। शशिकला। शरभ।

मणिगुणनिकर–संज्ञा पुं० [सं०] मणिगुण नामक छंद का एक रूप। चंद्रावती।

मणिधर–संज्ञा पुं० [सं०] सर्प। साँप।

मणिपुर–संज्ञा पुं० [सं०] एक चक्र जो नाभि के पास माना जाता है। (तंत्र)

मणिबंध–संज्ञा पुं० [सं०] १. नवाक्षरी वृत्त। २. कलाई। गट्टा।

मणिमाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बारह अक्षरों का एक वृत्त। २. मणियों की माला।

मणी–संज्ञा पु० [सं० मणिन्] सर्प। संज्ञा स्त्री० दे० "मणि"।

मतंग–संज्ञा पु० [सं०] १. हाथी। २. बादल। ३. एक ऋषि जो शबरी के गुरु थे।

मतंगी–संज्ञा पु० [सं० मतंगिन्] हाथी का सवार।

मत–संज्ञा पु० [सं०] १. निश्चित सिद्धांत। सम्मति। राय।
मुहा०–*मत उपाना=सम्मति स्थिर करना। २. धर्म। पंथ। मजहब। संप्रदाय। ३. भाव। आशय।
क्रि० वि० [सं० मा] न। नहीं। (निषेध)

मतना*–क्रि० अ० [सं० मति+ना (प्रत्य०)] सम्मति निश्चित करना।
क्रि० अ० [सं० मत्त] मत्त होना।
मतरिया‡–संज्ञा स्त्री० दे० "माता"।
*वि० [सं० मंत्र] १ मंत्री। सलाहकार। २ मंत्र से प्रभावित। मंत्रित।
मतलब–संज्ञा पुं० [अ०] १. तात्पर्य। अभिप्राय। आशय। २ अर्थ। मानी। ३ अपना हित। स्वार्थ। ४ उद्देश्य। विचार। ५ संबंध। वास्ता।
मतलबी–वि० [अ० मतलब] स्वार्थी।
मतली–संज्ञा स्त्री० दे० "मिचली"।
मतवार, मतवारा*–वि० दे० "मतवाला"।
मतवाला–वि० पुं० [सं० मत्त+वाला (प्रत्य०)] [स्त्री० मतवाली] १ नशे आदि के कारण मस्त। मदमस्त। २ उन्मत्त। पागल। संज्ञा पुं० १ वह भारी पत्थर जो किले या पहाड़ पर से नीचे के शत्रुओं को मारने के लिये लुढ़काया जाता है। २ एक प्रकार का गावदुमा खिलौना।
मता†–संज्ञा पुं० दे० "मत"।
संज्ञा स्त्री० दे० "मति"।
मताधिकार–संज्ञा पुं० [सं०] मत या वोट देने का अधिकार।
मतानुयायी–संज्ञा पुं० [सं०] किसी के मत को माननेवाला। मतावलंबी।
मतारी†–संज्ञा स्त्री० दे० "महतारी"।
मतावलंबी–संज्ञा पुं० [सं० मतावलंबिन्] किसी एक मत या संप्रदाय का अवलंबन करनेवाला।
मति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बुद्धि। समझ। अक्ल। २ राय। सलाह। सम्मति।
*†क्रि० वि० दे० "मत"।
अव्य० [सं० मत] समान। सदृश।
मतिमंत–वि० [सं० मतिमत्] बुद्धिमान्।
मतिमान–वि० [सं०] बुद्धिमान्।
मतिमाह*–वि० दे० "मतिमान"।
मती–संज्ञा स्त्री० दे० "मति"।
क्रि० वि० दे० "मति"।
मतीरा–संज्ञा पुं० [सं० मेट] तरबूज। कलिंदा।
मतीस–संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का बाजा
मतेई*†–संज्ञा स्त्री० [सं० विमातृ] विमाता।
मत्कुण–संज्ञा पुं० [सं०] खटमल।
मत्त–वि० [सं०] १ मस्त। २ मतवाला। ३ उन्मत्त। पागल। ४. प्रसन्न। खुश।
*†–संज्ञा स्त्री० [सं० मात्रा] मात्रा।
मत्तकाशिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] अच्छी स्त्री।
मत्तगयंद–संज्ञा पुं० [सं०] सवैया छंद का एक भेद। मालती छंद।
मत्तता*–संज्ञा स्त्री० [सं०] मतवालापन।
मत्तताई*–संज्ञा स्त्री० दे० "मत्तता"।
मत्तमयूर–संज्ञा पुं० [सं०] पंद्रह अक्षरों का एक वृत्त।
मत्तमातंगलीलाकर–संज्ञा पुं० [सं०] एक दंडक वृत्त।
मत्तसमक–संज्ञा पुं० [सं०] चौपाई छंद का एक भेद।
मत्ता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बारह अक्षरों का एक वृत्त। २ मदिरा। शराब।
प्रत्य० भाववाचक प्रत्यय। पन। जैसे—बुद्धिमत्ता। नीतिमत्ता।
*†संज्ञा स्त्री० दे० "मात्रा"।
मत्ताक्रीडा–संज्ञा स्त्री० [सं०] तेईस अक्षरों का एक छंद।
मत्था†–संज्ञा पुं० दे० "माथा"।
मत्सर–संज्ञा पुं० [सं०] १ डाह। हसद। जलन। २ क्रोध। गुस्सा।
मत्सरता–संज्ञा स्त्री० [सं०] डाह। हसद।
मत्सरी–संज्ञा पुं० [सं० मत्सरिन्] मत्सर-पूर्ण व्यक्ति।
मत्स्य–संज्ञा पुं० [सं०] १ मछली। २ प्राचीन विराट् देश का नाम। ३ छप्पय छंद के २३वें भेद का नाम। ४ विष्णु के दस अवतारों में से पहला अवतार।
मत्स्यगंधा–संज्ञा स्त्री० [सं०] व्यास की माता सत्यवती का एक नाम।
मत्स्य पुराण–संज्ञा पुं० [सं०] अट्ठारह पुराणों में से एक महापुराण।
मत्स्यावतार–संज्ञा पुं० दे० "मत्स्य" (४)।
मत्स्येंद्रनाथ–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध साधु

और हठ-योगी जो गोरखनाथ के गुरु थे।
मथन-संज्ञा पुं० [सं०] १. मथने का भाव या क्रिया। बिलोना। २. एक अस्त्र। वि० मारनेवाला। नाशक।
मथना-क्रि० स० [सं० मथन] १. तरल पदार्थ को लकड़ी आदि से हिलाना या चलाना। बिलोना। रिड़कना। २. चलाकर मिलाना। ३. नष्ट करना। ध्वंस करना। ४. घूम घूमकर पता लगाना। ५. किसी कार्य्य को बहुत अधिक बार करना। संज्ञा पुं० मथानी। रई।
मथनियाँ*†-संज्ञा स्त्री० दे० "मथनी"।
मथनी-संज्ञा स्त्री० [हिं० मथना] १. वह मटका जिसमें दही मथा जाता है। २. दे० "मथानी"। ३. मथने की क्रिया।
मथवाह*-संज्ञा पुं० [हिं० माथा+वाह (प्रत्य०)] महावत।
मथानी-संज्ञा स्त्री० [हिं० मथना] काठ का एक प्रकार का दंड जिससे दही से मथकर मक्खन निकाला जाता है।
मुहा०—मथानी पड़ना या बहना = खलबली मचना।
मथुरा-संज्ञा स्त्री० [सं० मधुपुर = मथुरा] पुराणानुसार सात पुरियों में से एक पुरी जो ब्रज में यमुना के किनारे पर है।
मथुरिया-वि० [हिं०मथुरा+इया (प्रत्य०)] मथुरा से संबंध रखनेवाला। मथुरा का।
मथौरा-संज्ञा पुं० [हिं० मथना] एक प्रकार का भद्दा रंदा।
मथ्थ†-संज्ञा पुं० दे० "माथा"।
मदंध*-वि० दे० "मदांध"।
मद-संज्ञा पुं० [सं०] १. हर्ष। आनंद। २. वह गंधयुक्त द्रव जो मतवाले हाथियों की कनपटियों से बहता है। दान। ३. वीर्य्य। ४. कस्तूरी। ५. मद्य। ६. मतवालापन। नशा। ७. उन्मत्तता। पागलपन। ८. गर्व। अहंकार। घमंड। वि० मत्त। मतवाला। मस्त। संज्ञा स्त्री० [अ०] १. विभाग। सीगा। सरिश्ता। २. खाता।
मदक-संज्ञा स्त्री० [हिं० मद] एक प्रकार का मादक पदार्थ जो अफ़ीम के सत से बनता है। इसे निलम पर रखकर पीते हैं।
मदकची-वि० [हिं० मदक+ची (प्रत्य०)] जो मदक पीता हो। मदक पीनेवाला।
मदकल-वि० [सं०] मत्त। मतवाला।
मदगल-वि० [सं० मदकल] मत्त। मस्त।
मदद-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. सहायता। सहारा। २. मजदूर और राज आदि जो किसी काम के ऊपर लगाए जाते हैं।
मददगार-वि० [फ़ा०] मदद करनेवाला।
मदन-संज्ञा पुं० [सं०] १. कामदेव। २. काम-क्रीडा। ३. मैनफल। ४. भ्रमर। ५. मैना पक्षी। सारिका। ६. प्रेम। ७. रूपमाल छंद। ८. छप्पय का एक भेद।
मदनकदन-संज्ञा पुं० [सं०] शिव।
मदनगोपाल-संज्ञा पुं० [हिं० मदन+गोपाल] श्रीकृष्णचंद्र का एक नाम।
मदनफल-संज्ञा पुं० [सं०] मैनफल।
मदनबान-संज्ञा पुं० [हिं० मदन+बाण] एक प्रकार का बेला। (फूल)
मदनमनोरमा-संज्ञा स्त्री० [सं०] केशव के अनुसार सवैया का एक भेद। दुर्मिल।
मदनमनोहर-संज्ञा पुं० [सं०] दंडक का एक भेद। मनहर।
मदनमल्लिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] मल्लिका वृत्ति का एक नाम।
मदनमस्त-संज्ञा पुं० [हिं० मदन+मस्त] चंपे की जाति का एक प्रकार का फूल।
मदन-महोत्सव-संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल का एक उत्सव जो चैत्र शुक्ल द्वादशी से चतुर्दशी पर्य्यंत होता था।
मदनमोदक-संज्ञा पुं० [सं०] सवैया छंद का एक भेद। सुंदरी। (केशव)
मदनमोहन-संज्ञा पुं० [सं०] कृष्णचंद्र।
मदनललिता-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णिक वृत्ति।
मदनहरा-संज्ञा स्त्री० [सं०] चालीस मात्राओं का एक छंद।
मदनोत्सव-संज्ञा पुं० [सं०] मदनमहोत्सव।

मदमत्त-वि० [सं०] मस्त। मतवाला।
मदर*-सज्ञा पु० [सं० मडल] मँडराना।
मदरसा-सज्ञा पु० [अ०] पाठशाला।
मदलेखा-सज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णिक वृत्ति
मदांध-वि० [सं०] मदमस्त। मदोन्मत्त।
मदानि*-वि० [?] मगन्वारण।
मदार-सज्ञा पु० [सं० मदार] आक।
मदारी-सज्ञा पु० [अ० मदार] १. एक प्रकार के मुसलमान फकीर जो बदर, भालू आदि नचाते और आग में नहाते दिखाते हैं। मदारिया। कलदर। २ बाजीगर।
मदालसा-सज्ञा स्त्री० [सं०] पुराणानुसार विश्वावसु गधर्व की कन्या जिसे पातालकेतु दानव ने उठा ले जाकर पाताल में रखा था।
मदिया-सज्ञा स्त्री० दे० "मादा"।
मदिरा-सज्ञा स्त्री० [सं०] १. शराब। दारू। मद्य। २. बाईस अक्षरों का एक वर्णिक छद। मालिनी। उमा। दिवा।
मदीय-वि० [सं०] [स्त्री० मदीया] मेरा।
मदीला-वि० [हिं० मद] नशीला।
मदुकल-सज्ञा पु० [?] दोहे का एक भेद।
मदोन्मत्त-वि० [सं०] मद में पागल। मदांध।
मदोवै*-सज्ञा स्त्री० दे० "मदोदरी"।
मद्धिम*†-वि० [सं०] १ मध्यम। अपेक्षाकृत कम अच्छा। २ मदा।
मद्धे-अव्य० [सं० मध्ये] १. बीच में। में। २. विषय में। बाबत। सबध में। ३ लेखे में। बाबत।
मद्य-सज्ञा पु० [सं०] मदिरा। शराब।
मद्यप-वि० [सं०] मद पीनेवाला। शराबी।
मद्र-सज्ञा पु० [सं०] १ एक प्राचीन देश। उत्तर कुरु। २ पुराणानुसार रावी और झेलम नदियों के बीच का देश।
मध, मधि*-सज्ञा पु० दे० "मध्य"।
अव्य० [सं० मध्य] में।
मधिम*-वि० दे० "मध्यम"।
मधु-सज्ञा पु० [सं०] १ पानी। जल। २ शहद। ३. मदिरा। शराब। ४. फूल का रस। मकरद। ५ वसत ऋतु। ६. चैत्र मास। ७ एक दैत्य जिसे विष्णु ने मारा था। ८. दो लघु अक्षरों का एक छद। ९. शिव। महादेव। १०. मुलेठी। ११ अमृत।
वि० [सं०] १. मीठा। २. स्वादिष्ट।
मधुकर-सज्ञा पु० [सं०] भौंरा। भ्रमर।
मधुकरी-सज्ञा स्त्री० [सं० मधुकर] वह भिक्षा जिसमें केवल पका हुआ अन्न लिया जाता है। मधूकरी।
मधुकैटभ-सज्ञा पु० [सं०] पुराणानुसार मधु और कैटभ नाम के दो दैत्य जिन्हें विष्णु ने मारा था।
मधुचक्र-सज्ञा पु० [सं०] शहद की मक्खी का छत्ता।
मधुजा-सज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी।
मधुप-सज्ञा पु० [सं०] १. भौंरा। २. उद्धव।
मधुपति-सज्ञा पु० [सं०] श्रीकृष्ण।
मधुपर्क-सज्ञा पु० [सं०] दही, घी, जल, शहद और चीनी का समूह जो देवताओं को चढ़ाया जाता है।
मधुपुरी-सज्ञा स्त्री० [सं०] मथुरा नगरी।
मधुप्रमेह-सज्ञा पु० दे० "मधुमेह"।
मधुबन-सज्ञा पु० [सं०] व्रज का एक वन।
मधुभार-सज्ञा पु० [सं०] एक मात्रिक छद।
मधुमक्खी-सज्ञा स्त्री० [सं० मधुमक्षिका] एक प्रकार की प्रसिद्ध मक्खी जो फूलों का रस चूसकर शहद एकत्र करती है। मुमाखी।
मधुमक्षिका-सज्ञा स्त्री० दे० "मधुमक्खी"।
मधुमती-सज्ञा स्त्री० [सं०] दो नगण और एक गुरु का एक वर्णवृत्त।
मधुमालती-सज्ञा स्त्री० [सं०] मालती लता।
मधुमेह-सज्ञा पु० [सं०] प्रमेह का बढ़ा हुआ रूप जिसमें पेशाब बहुत अधिक और गाढ़ा आता है।
मधुयष्टि-सज्ञा स्त्री० [सं०] मुलेठी।
मधुर-वि० [सं०] १ जिसका स्वाद मधु के समान हो। मीठा। २ जो सुनने में भला जान पड़े। ३. सुदर। मनोरजक। ४. जो क्लेशप्रद न हो। हलका।
मधुरई*-सज्ञा स्त्री० दे० "मधुरता"।

मधुरता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मधुर होने का भाव। २. मिठास। ३. सौंदर्य। सुंदरता। ४. सुकुमारता। कोमलता।
मधुरा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मदरास प्रांत का एक प्राचीन नगर। मडुरा। मदूरा। २. मथुरा नगर।
मधुराई*–संज्ञा स्त्री० दे० "मधुरता"।
मधुराज–संज्ञा पुं० [सं०] भौंरा।
मधुरान्न–संज्ञा पुं० [सं०] मिठाई।
मधुराना*†–क्रि० अ० [हिं० मधुर+आना (प्रत्य०)] १. मीठा होना। २. सुंदर होना।
मधुरिमा–संज्ञा स्त्री० [सं० मधुरिमन्] १. मिठास। मीठापन। २. सुंदरता। सौंदर्य।
मधुरी*–संज्ञा स्त्री० [सं० माधुर्य] सौंदर्य।
मधुवन–संज्ञा पुं० [सं०] १. मथुरा के पास यमुना के किनारे का एक वन। २. किष्किंधा के पास का सुग्रीव का वन।
मधुवामन–संज्ञा पुं० [सं०] भौंरा।
मधुशर्करा–संज्ञा स्त्री० [सं०] शहद से बनाई हुई चीनी।
मधुसख–संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।
मधुसूदन–संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।
मधूक–संज्ञा पुं० [सं०] महुआ।
मधूकरी–संज्ञा स्त्री० दे० "मधुकरी"।
मध्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी पदार्थ के बीच का भाग। दरमियानी हिस्सा। २. कमर। कटि। ३. सुश्रुत के अनुसार १६ वर्ष से ७० वर्ष तक की अवस्था। ४. अंतर। भेद। फ़रक़।
मध्यता–संज्ञा स्त्री० [सं०] मध्य का भाव।
मध्यतापिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक उपनिषद्।
मध्य देश–संज्ञा पुं० [सं०] भारतवर्ष का वह प्रदेश जो हिमालय के दक्षिण, विंध्य-पर्वत के उत्तर, कुरुक्षेत्र के पूर्व और प्रयाग के पश्चिम में है।
मध्यम–वि० [सं०] न बहुत बड़ा और न बहुत छोटा। मध्य का। बीच का।
संज्ञा पुं० १. संगीत के सात स्वरों में से चौथा स्वर। २. वह उपपति जो नायिका के क्रोध करने पर अनुराग न प्रकट करे।
मध्यमपदलोपी–संज्ञा पुं० [सं० मध्यमपदलोपिन्] वह समास जिसमें पहले पद से दूसरे पद का संबंध बतलानेवाला शब्द लुप्त रहता है। लुप्त-पद समास। (व्या०)
मध्यम पुरुष–संज्ञा पुं० [सं०] वह पुरुष जिससे बात की जाय। (व्या०)
मध्यमा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बीच की उँगली। २. वह नायिका जो अपने प्रियतम के प्रेम या दोष के अनुसार उसका आदर-मान या अपमान करे।
मध्यवर्ती–वि० [सं०] बीच का।
मध्यस्थ–संज्ञा पुं० [सं०] १. बीच में पड़कर विवाद मिटानेवाला। २. तटस्थ।
मध्यस्थता–संज्ञा स्त्री० [सं०] मध्यस्थ होने का भाव या धर्म्म।
मध्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. काव्य में वह नायिका जिसमें लज्जा और काम समान हों। २. तीन अक्षरों का एक वर्णवृत्त।
मध्यान्ह–संज्ञा पुं० दे० "मध्याह्न"।
मध्याह्न–संज्ञा पुं० [सं०] ठीक दोपहर।
मध्ये–क्रि० वि० दे० "मद्धे"।
मध्वाचार्य्य–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य्य और माध्व या मध्वाचारि नामक संप्रदाय के प्रवर्तक जो बारहवीं शताब्दी में हुए थे।
मनःशिल–संज्ञा पुं० [सं०] मैनसिल।
मन–संज्ञा पुं० [सं० मनस्] १. प्राणियों में वह शक्ति जिससे उनमें वेदना, संकल्प, इच्छा और विचार आदि होते हैं। अंतःकरण। चित्त। २. अंतःकरण की चार वृत्तियों में से एक जिसमें संकल्प-विकल्प होता है।
मुहा०—किसी से मन अटकना या उलझना=प्रीति होना। प्रेम होना। मन टूटना=साहस छूटना। हताश होना। मन बढ़ना=साहस बढ़ना। उत्साह बढ़ना। किसी का मन बूझना=किसी के मन की थाह लेना। मन हरा होना=चित्त प्रसन्न रहना। मन

के लड्डू खाना = व्यर्थ की आशा पर प्रसन्न होना। मन चलना = इच्छा होना। प्रवृत्ति होना। किसी का मन टटोलना = किसी के मन की थाह लेना। मन डोलना = १ मन का चचल होना। २ लालच उत्पन्न होना। लोभ आना। मन देना = १. जी लगाना। मन लगाना। २ ध्यान देना। किसी पर मन धरना = ध्यान देना। मन लगाना। मन तोड़ना या हारना = साहस छोड़ना। मन फेरना = मन को किसी ओर से हटाना। मन बढ़ाना = साहस दिलाना। उत्साह बढ़ाना। मन में बसना = पसद आना। अच्छा लगना। रुचना। मन बहलाना = खिन्न या दुखी चित्त को किसी काम में लगाकर आनदित करना। मन भरना = १ निश्चय या विश्वास होना। २ सतोष होना। मन भर जाना = १. अघा जाना। तृप्ति होना। २ अधिक प्रवृत्ति न रह जाना। मन भाना = भला लगना। पसद होना। रुचना। मन मानना = १. सतोष होना। तसल्ली होना। २ निश्चय होना। प्रतीत होना। ३ अच्छा लगना। पसद आना। ४ स्नेह होना। अनुराग होना। मन में रखना = १ गुप्त रखना। प्रकट न करना। २ स्मरण रखना। मन में लाना = विचार करना। सोचना। मन मिलना = दो मनुष्यों की प्रकृति या प्रवृत्तियों का अनुकूल अथवा एक समान होना। मन मारना = १ खिन्न चित्त होना। उदास होना। २ इच्छा को दबाना। मन मैला करना = अप्रसन्न या असतुष्ट होना। मन मोटा होना = विराग होना। उदासीन होना। मन मोड़ना = प्रवृत्ति या विचार को दूसरी ओर लगाना। किसी का मन रखना = किसी की इच्छा पूर्ण करना। मन लगना = १ जी लगना। तबीयत लगना। २ चित्त-विनोद होना। मन लाना* = १ मन लगाना। जी लगाना। २ प्रेम करना। आसक्त होना। मन से उतरना = १. मन में आदर-भाव न रह जाना। २ याद न रहना। विस्मृत होना। मन ही मन = हृदय में। चुपचाप।
३ इच्छा। इरादा। विचार।

मुहा०—मनमाना = अपने मन के अनुसार। यथेच्छ।

*सज्ञा पु० [स० मणि] १. मणि। बहुमूल्य पत्थर। २. चालीस सेर की एक तौल।

मनई†—सज्ञा पु० [स० मानव] मनुष्य।

मनकना—क्रि० अ० [अनु०] हिलना डोलना।

मनकरा*—वि० [हि० मणि + कर] चमकदार।

मनका—सज्ञा पु० [स० मणिका] पत्थर, लकड़ी आदि का बेधा हुआ दाना जिसे पिरोकर माला बनाई जाती है। गुरिया। सज्ञा पु० [स० मन्यका] गरदन के पीछे की हड्डी जो रीढ़ के बिलकुल ऊपर होती है।

मुहा०—मनका ढलना या ढलकना = मरने के समय गरदन टेढ़ी हो जाना।

मनकामना—सज्ञा स्त्री० [हि० मन + कामना] इच्छा।

मनकूला—वि० स्त्री० [अ०] स्थिर या स्थावर का उलटा। चर।

यौ०—जायदाद मनकूला = चर सपत्ति। गैर मनकूला = स्थिर। स्थायी। स्थावर।

मन-गढ़त—वि० [हि० मन + गढ़ना] जिसकी वास्तविक सत्ता न हो, केवल कल्पना कर ली गई हो। कपोल-कल्पित। सज्ञा स्त्री० कोरी कल्पना। कपोल-कल्पना।

मनचला—वि० [हि० मन + चलना] १ धीर। निडर। २ साहसी। ३ रसिक।

मनचाहा—वि० [हि० मन + चाहना] इच्छित।

मनचीता—वि० [हि० मन + चेतना] [स्त्री० मनचीती] मनचाहा। मन में सोचा हुआ।

मनजात—सज्ञा पु० [हि० मन + स० जात] कामदेव।

मनन—सज्ञा पु० [स०] १ चिंतन। सोचना। २ भली भाँति अध्ययन करना।

मननशील—वि० [स० मनन + शील] विचार-शील। विचारवान्।

मननाना—क्रि० अ० [अनु०] गुजारना।

मनबांछित—वि० दे० "मनोवांछित"।

मनभाया—वि० [हि० मन + भाना] [स्त्री० मनभाई] जो मन को भावे। मनोनुकूल।

मनभावता—वि० [हि० मन + भाना] [स्त्री०

मनभावती] १. जो भला लगता हो। २. प्रिय। प्यारा।

मनभावन–वि० [हिं० मन+भाना] मन को अच्छा लगनेवाला।

मनमत*†–वि० दे० "मैमंत"।

मनमति–वि० [हिं० मन+मति] अपने मन का काम करनेवाला। स्वेच्छाचारी।

मनमथ–संज्ञा पुं० दे० "मन्मथ"।

मनमानता–वि० दे० "मनमाना"।

मनमाना–वि० [हिं० मन+मानना] [स्त्री० मनमानी] १. जो मन को अच्छा लगे। २. मन के अनुकूल। पसंद। ३. यथेच्छ।

मनमुखी†–वि० [हिं० मन+मुख्य] मन-माना काम करनेवाला। स्वेच्छाचारी।

मनमुटाव–संज्ञा पुं० [हिं० मन+मोटा] मन में भेद पड़ना। वैमनस्य होना।

मनमोदक–संज्ञा पुं० [हिं० मन+मोदक] अपनी प्रसन्नता के लिये मन में बनाई हुई असंभव बात। मन का लड्डू।

मनमोहन–वि० [हिं० मन+मोहन] [स्त्री० मनमोहिनी] १. मन को मोहनेवाला। चित्ताकर्षक। २. प्रिय। प्यारा।

संज्ञा पुं० १. श्रीकृष्ण। २. एक मात्रिक छंद।

मनमौजी–वि० [हिं० मन+मौज] मन की मौज के अनुसार काम करनेवाला।

मनरंज*–वि० दे० "मनोरंजक"।

मनरंजन–वि० संज्ञा पुं० दे० "मनोरंजन"।

मनरोचन–वि०[हिं० मन+रोचन] सुंदर।

मन-लाड़*–संज्ञा पुं० दे० "मनमोदक"।

मनवाना–क्रि० स० [हिं० मानना का प्रेर०] मानने का प्रेरणार्थक रूप। मनाना।

क्रि० स० [हिं० मनाना] दूसरे को मनाने में प्रवृत्त करना।

मनशा–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. इच्छा। विचार। इरादा। २. तात्पर्य। मतलब।

मनसना*–क्रि० स० [हिं० मानस] १. इच्छा करना। इरादा करना। २. संकल्प करना। दृढ़ निश्चय या विचार करना। ३. हाथ में जल लेकर संकल्प का मंत्र पढ़कर कोई चीज़ दान करना।

मनसब–संज्ञा पुं० [अ०] १. पद। स्थान ओहदा। २. कर्म। काम। ३. अधिकार।

मनसबदार–संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह जो किसी मनसब पर हो। ओहदेदार।

मनसा–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक देवी का नाम।

संज्ञा स्त्री० [अ० मनशा] १. कामना। इच्छा। २. संकल्प। इरादा। ३. अभिलाषा। मनोरथ। ४. मन। ५. बुद्धि। ६. अभिप्राय। तात्पर्य।

वि० १. मन से उत्पन्न। २. मन का।

क्रि० वि० मन से। मन के द्वारा।

मनसाकर–वि० [हिं० मनसा+कर] मनोरथ पूरा करनेवाला।

मनसाना–क्रि० अ० [हिं० मनसा] उमंग में आना। तरंग में आना।

क्रि० स० [हिं० मनसना का प्रेर०] मनसने का काम दूसरे से कराना।

मनसायन†–वि० [हिं० मानस] १. वह स्थान जहाँ मनबहलाव के लिये कुछ लोग हों। २. मनोरम स्थान। गुलज़ार।

मनसिज–संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।

मनसूख़–वि० [अ०] [संज्ञा मनसूखी] १. जो अप्रामाणिक ठहरा दिया गया हो। अतिवर्तित। २. परित्यक्त। त्यागा हुआ।

मनसूबा–संज्ञा पुं० [अ०] १. युक्ति। ढंग। महा०—मनसूबा बाँधना = युक्ति सोचना। २. इरादा। विचार।

मनस्क–संज्ञा पुं० [सं०] मन का अल्पार्थक रूप। (समस्त पदों में)

मनस्ताप–संज्ञा पुं० [सं०] १. मन-पीड़ा। आंतरिक दुःख। २. पश्चात्ताप। पछतावा।

मनस्वी–वि० [सं० मनस्विन्] [स्त्री० मनस्विनी] १. बुद्धिमान्। २. स्वेच्छाचारी।

मनहंस–संज्ञा पुं० [हिं० मन+हंस] पंद्रह अक्षरों का एक वर्णिक छंद। मानसहंस।

मनहर–वि० दे० "मनोहर"।

संज्ञा पुं० घनाक्षरी छंद का एक नाम।

मनहरण–संज्ञा पुं० [हिं० मन+हरण] १. मन हरने की क्रिया या भाव। २. पंद्रह अक्षरों का एक वर्णिक छंद। नलिनी।

भ्रमरावली।
वि० मनोहर। सुंदर।
मनहार, मनहारि–वि० दे० "मनोहारी"।
मनहुँ*–अव्य० [हिं० मानो] जैसे। यथा।
मनहूस–वि० [अ०] १ अशुभ। बुरा।
२. अप्रिय-दर्शन। देखने में बेरौनक।
मना–वि० [अ०] १ जिसके संबंध में निषेध हो। निषिद्ध। वर्जित। २ वारण किया हुआ। ३. अनुचित। नामुनासिब।
मनाक, मनाग–वि० [सं० मनाक्] थोड़ा।
मनाना–क्रि० स० [हिं० मानना का प्रेर०] १. स्वीकार कराना। सकरवाना। २ रूठे हुए को प्रसन्न करना या करने का प्रयत्न करना। राजी करना। ३ देवता आदि से किसी काम के होने के लिये प्रार्थना करना। ४. प्रार्थना करना। स्तुति करना।
मनावा†–संज्ञा पु० [हिं० मनाना] रूठे हुए को प्रसन्न करने का काम या भाव।
मनाही–संज्ञा स्त्री० [हिं० मना] न करने की आज्ञा। रोक। अवरोध। निषेध।
मनिधर*–संज्ञा पु० दे० "मणिधर"।
मनिया–संज्ञा स्त्री० [सं० माणिक्य] १. गुरिया। मनिका। दाना जो माला में पिरोया हो। २ कंठी। माला।
मनियार†*–वि० [हिं० मणि + आर (प्रत्य०)] १ उज्ज्वल। चमकीला। २ दर्शनीय। शोभायुक्त। सुहावना।
मनिहार–संज्ञा पु० [हिं० मणिकार] [स्त्री० मनिहारिन] चूड़ी बनानेवाला। चुड़िहारा।
मनी*–संज्ञा स्त्री० [हिं० मान] अहंकार।
*संज्ञा स्त्री० १ दे० "मणि"। २ वीर्य्य।
मनीषा–संज्ञा स्त्री० [सं०] बुद्धि। अक्ल।
मनीषि–वि० [सं०] १ पंडित। ज्ञानी।
२. बुद्धिमान्। मेधावी। अक़लमंद।
मनु–संज्ञा पु० [सं०] १. ब्रह्मा के चौदह पुत्र जो मनुष्यों के मूल पुरुष माने जाते हैं। यथा—स्वायंभुव, स्वारोचिष, उत्तम, तामस, रैवत, चाक्षुष, वैवस्वत, सावर्णि, दक्ष सावर्णि, ब्रह्म सावर्णि, धर्म सावर्णि, रुद्र सावर्णि, देव सावर्णि और इंद्र सावर्णि। २ विष्णु। ३ अंतःकरण। मन।
४. वैवस्वत मनु। ५ १४ की संख्या।
*अव्य० [हिं० मानना] मानो। जैसे।
मनुआँ†*–संज्ञा पु० [हिं० मन] मन।
संज्ञा पु० [हिं० मानव] मनुष्य।
मनुज–संज्ञा पु० [सं०] मनुष्य। आदमी।
मनुष*–संज्ञा पुं० [सं० मनुष्य] १ मनुष्य। आदमी। २ पति। खाविंद।
मनुष्य–संज्ञा पु० [सं०] एक स्तनपायी प्राणी जो अपने मस्तिष्क या बुद्धि-बल की अधिकता के कारण सब प्राणियों में श्रेष्ठ है। आदमी। नर।
मनुष्यता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मनुष्य का भाव। आदमीपन। २ दया-भाव। शील। ३ शिष्टता। तमीज़।
मनुष्यत्व–संज्ञा पु० [सं०] मनुष्यता।
मनुष्यलोक–संज्ञा पु० [सं०] मर्त्यलोक।
मनुसाई*†–संज्ञा स्त्री० [हिं० मनुस + आई] १. पुरुषार्थ। पराक्रम। बहादुरी। २ मनुष्यता। आदमीपन।
मनुस्मृति–संज्ञा स्त्री० [सं०] धर्मशास्त्र का एक प्रसिद्ध ग्रंथ जो मनु प्रणीत है। मानव-धर्मशास्त्र।
मनुहार–संज्ञा स्त्री० [हिं० मान + हरना] १. वह विनती जो किसी का मान छुड़ाने या उसे प्रसन्न करने के लिये की जाती है। मनौआ। खुशामद। २ विनय। प्रार्थना। ३ सत्कार। आदर। ४ शांति। तृप्ति।
मनुहारना*†–क्रि० स० [हिं० मान + हरना] १. मनाना। खुशामद करना। २ विनय करना। प्रार्थना करना। ३ सत्कार करना। आदर करना।
मनौं†–अव्य० [हिं० मानना] मानो।
मनोकामना–संज्ञा स्त्री० [हिं० मन + कामना] इच्छा। अभिलाषा।
मनोगत–वि० [सं०] जो मन में हो। दिली।
संज्ञा पु० कामदेव। मदन।
मनोगति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मन की गति। चित्त-वृत्ति। २ इच्छा। ख़ाहिश।
मनोज–संज्ञा पु० [सं०] कामदेव। मदन।

मनोजव–वि० [सं०] अत्यंत वेगवान्।
संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. वायु का एक पुत्र।
मनोज्ञ–वि० [सं०] मनोहर। सुंदर।
मनोदेवता–संज्ञा पुं० [सं०] विवेक।
मनोनिग्रह–संज्ञा पुं० [सं०] मन का निग्रह। मन को वश में रखना। मनोगुप्ति।
मनोनीत–वि० [सं०] १. जो मन के अनुकूल हो। पसंद। २. चुना हुआ।
मनोभूत–संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।
मनोमयकोश–संज्ञा पुं० [सं०] पाँच कोशों में से तीसरा। मन, अहंकार और कर्मेंद्रियाँ इसके अंतर्भूत मानी जाती हैं। (वेदांत)
मनोयोग–संज्ञा पुं० [सं०] मन को एकाग्र करके किसी एक पदार्थ पर लगाना।
मनोरंजक–वि० [सं०] चित्त को प्रसन्न करनेवाला।
मनोरंजन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० मनोरंजक] मन को प्रसन्न करने की क्रिया या भाव। मनोविनोद। दिल-बहलाव।
मनोरथ–संज्ञा पुं० [सं०] अभिलाषा।
मनोरम–वि० [सं०] [स्त्री० मनोरमा] मनोहर। सुंदर।
संज्ञा पुं० सखी छंद का एक भेद।
मनोरमा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गोरोचन। २. सात सरस्वतियों में से चौथी का नाम। ३. एक प्रकार का छंद। ४. चंद्रशेखर के अनुसार आर्य्या के ५७ भेदों में से एक वर्णिक वृत्त। ५. दस अक्षरों का एक वर्णिक वृत्त। ६. केशव के अनुसार चौदह अक्षरों का एक वर्णिक वृत्त। ७. केशव के मतानुसार दोधक छंद का एक नाम। ८. सूदन के अनुसार दस अक्षरों का एक वर्णिक वृत्त।
मनोरा–संज्ञा पुं० [सं० मनोहर] दीवार पर गोबर से बनाए हुए चित्र जो दिवाली के पीछे बनाकर पूजे जाते हैं। झिझिया।
यौ०—मनोरा भूमक = एक प्रकार का गीत।
मनोराज–संज्ञा पुं० [सं० मनोराज्य] मानसिक कल्पना। मन की कल्पना।
मनोवांछित–वि० [सं०] इच्छित। मन-माँगा।
मनोविकार–संज्ञा पुं० [सं०] मन की वह अवस्था जिसमें कोई भाव, विचार या विकार उत्पन्न होता है। जैसे क्रोध, दया।
मनोविज्ञान–संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें चित्त की वृत्तियों का विवेचन होता है।
मनोवृत्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] मनोविकार।
मनोवेग–संज्ञा पुं० [सं०] मनोविकार।
मनोव्यापार–संज्ञा पुं० [सं०] विचार।
मनोसर*–संज्ञा पुं० [सं० मन] मनोविकार।
मनोहर–वि० [सं०] [संज्ञा मनोहरता] १. मन को आकर्षित करनेवाला। २. सुंदर।
संज्ञा पुं० छप्पय छंद का एक भेद।
मनोहरता–संज्ञा स्त्री० [सं०] सुंदरता।
मनोहरताई*–संज्ञा स्त्री० दे० "मनोहरता"।
मनोहारी–वि० [स्त्री० मनोहारिणी] दे० "मनोहर"।
मनौती*†–संज्ञा स्त्री० दे० "मन्नत"।
मन्नत–संज्ञा स्त्री० [हिं० मानना] किसी देवता की पूजा करने की वह प्रतिज्ञा जो किसी कामना-विशेष की पूर्ति के लिये की जाती है। मानता। मनौती।
मुहा०—मन्नत उतारना या चढ़ाना = पूजा की प्रतिज्ञा पूरी करना। मन्नत मानना = यह प्रतिज्ञा करना कि अमुक कार्य्य के हो जाने पर अमुक पूजा की जायगी।
मन्वंतर–संज्ञा पुं० [सं०] इकहत्तर चतुर्युगी का काल। ब्रह्मा के एक दिन का चौदहवाँ भाग।
मम–सर्व० [सं० अहं का षष्ठी एक-वचन रूप] मेरा या मेरी।
ममता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. 'यह मेरा है' इस प्रकार का भाव। ममत्व। अपनापन। २. स्नेह। प्रेम। ३. वह स्नेह जो माता का पुत्र पर होता है। ४. मोह। लोभ।
ममत्व–संज्ञा पुं० "ममता"।
ममीरा–संज्ञा पुं० [अ० मामीरान] एक पौधे की जड़ जो आँख के रोगों की अपूर्व ओषधि है।
मयंक–संज्ञा पुं० [सं० मृगांक] चंद्रमा।
मयंद–संज्ञा पुं० [सं० मृगेंद्र] सिंह। शेर।
मय–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक देश का नाम।

२. पुराणानुसार एक प्रसिद्ध दानव जो बड़ा शिल्पी था। ३. अमेरिका देश के मेक्सिको नामक देश के प्राचीन अधिवासी। प्रत्य० [सं०] [स्त्री० मयी] एक प्रत्यय जो तद्रूप, विकार और प्राचुर्य्य के अर्थ में शब्दों के साथ लगाया जाता है।
संज्ञा स्त्री० अव्य० दे० "मैं"।
मयगल–संज्ञा पु० [सं० मदकल] मत हाथी।
मयन–संज्ञा पु० [सं० मदन] कामदेव।
मयमत, मयमत्त–वि० [सं० मदमत्त] मस्त।
मयसुता–संज्ञा स्त्री० दे० "मंदोदरी"।
मयस्सर–वि० [अ०] मिलता या मिला हुआ। प्राप्त। उपलब्ध। सुलभ।
मया*–संज्ञा स्त्री० दे० "माया"।
मयार–वि० [सं० माया] [स्त्री० मयारी] दयालु। कृपालु।
मयारी–संज्ञा स्त्री० [देश०] वह डंडा या बल्ला जिस पर हिंडोले की रस्सी लटकती है।
मयूख–संज्ञा पु० [सं०] १ किरण। रश्मि। २ दीप्ति। प्रकाश। ३ ज्वाला।
मयूर–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० मयूरी] मोर।
मयूरगति–संज्ञा स्त्री० [सं०] चौबीस अक्षरों की एक वृत्ति।
मयूरसारिणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] तेरह अक्षरों के एक छंद का नाम।
मरंद*–संज्ञा पु० [सं० मकरंद] मकरंद।
मरक–संज्ञा स्त्री० [हिं० मरकना दबाना] १. दबाकर संकेत करना। संकेत। २ दे० "मड़क"।
मरकट–संज्ञा पु० दे० "मर्कट"।
मरकत–संज्ञा पु० [सं०] पन्ना। (रत्न)
मरकना–क्रि० अ० [अनु०] १. दबाव के नीचे पड़कर टूटना। २ दे० "मुड़कना"।
मरकाना–क्रि० स० [हिं० मरकना] १ चूर करना। तोड़ना। २ दे० "मुड़काना"।
मरगजा*†–वि० [हिं० मलना + गाजना] मला-दला। मसला हुआ। गीजा हुआ।
मरघट–संज्ञा पु० [सं०] वह घाट या स्थान जहाँ मुर्दे फूँके जाते हैं। श्मशान।
मरज–संज्ञा पु० [अ० मर्ज] १ रोग। बीमारी २ बुरी लत। खराब आदत। कुटेव।
मरजाद, मरजादा*–संज्ञा स्त्री० [सं० मर्य्यादा] १. सीमा। हद। २ प्रतिष्ठा। आदर। महत्त्व। ३ रीति। परिपाटी। नियम।
मरजिया–वि० [हिं० मरना + जीना] १. मरकर जीनेवाला। जो मरने से बचा हो। २ जो मरने के समीप हो। मरणासन्न। ३. जो प्राण देने पर उतारू हो। ४ अधमरा। संज्ञा पु० समुद्र में डूबकर उसके भीतर से मोती आदि निकालनेवाला। जिवकिया।
मरज़ी–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. इच्छा। कामना। चाह। २. प्रसन्नता। खुशी। ३ आज्ञा। स्वीकृति।
मरजीवा–संज्ञा पु० दे० "मरजिया"।
मरण–संज्ञा पु० [सं०] मृत्यु। मौत।
मरत*–संज्ञा पु० [सं० मृत्यु] मृत्यु।
मरतबा–संज्ञा पु० [अ०] १. पद। पदवी। २ बार। दफा।
मरद*–संज्ञा पु० दे० "मर्द"।
मरदई‡–संज्ञा स्त्री० [हिं० मर्द + ई (प्रत्य०)] १ मनुष्यत्व। २ साहस। ३. वीरता।
मरदन*–संज्ञा पु० दे० "मर्दन"।
मरदना*–क्रि० स० [सं० मर्दन] १. मसलना। मर्दन करना। मलना। २ ध्वंस करना। ३. माँडना। गूँधना।
मरदनिया†–संज्ञा पु० [हिं० मर्दना] शरीर में तेल मलनेवाला सेवक।
मरदानगी–संज्ञा स्त्री० [फा] १ वीरता। शूरता। शौर्य्य। २ साहस।
मरदाना–वि० [फा०] १ पुरुष-संबंधी। २ पुरुषों का-सा। ३. वीरोचित।
मरदूद–वि० [अ०] १ तिरस्कृत। २ नीच।
मरना–क्रि० अ० [सं० मरण] १. प्राणियों या वनस्पतियों के शरीर में ऐसा विकार होना जिससे उनकी सब शारीरिक क्रियाएँ बंद हो जायें। मृत्यु को प्राप्त होना। मुहा०—मरना जीना=शादी-गमी। शुभाशुभ अवसर। सुख-दुःख।
२ बहुत अधिक कष्ट उठाना।
मुहा०—किसी पर मरना = लुब्ध होना। आसक्त होना। मर मिटना=श्रम करते करते

विनष्ट हो जाना। मरा जाना=व्याकुल होना। ३. मुरझाना। कुम्हलाना। सूखना। ४. लज्जा, संकोच आदि के कारण सिर न उठा सकना। ५. किसी काम का न रहना। मुहा०—पानी मरना = १. पानी का दीवार की नीव में धँसना। २. किसी के सिर कोई कलंक आना। ६. किसी वेग का शांत होना। दबना। ७. झनखना। पछताना। ८. हारना।

मरनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० मरना] १. मृत्यु। मौत। २. वह कृत्य या शोक जो किसी के मरने पर उसके संबंधियों को होता है। ३. कष्ट। हैरानी।

मरभुक्खा–वि० [हिं० मरना + भूखा] १. भुक्खड़। २. कंगाल। दरिद्र।

मरम–संज्ञा पुं० दे० "मर्म"।

मरमर–संज्ञा पुं० [यू०] एक प्रकार का चिकना और चमकीला पत्थर।

मरमराना–क्रि० अ० [अनु०] १. मरमर शब्द करना। २. अधिक दबाव पाकर लकड़ी आदि का मरमर शब्द करके दबना।

मरम्मत–संज्ञा स्त्री० [अ०] किसी वस्तु के टूटे-फूटे अंगों को ठीक करना। दुरुस्ती। जीर्णोद्धार।

मरवाना–क्रि० स० [हिं० मारना का प्रेर०] किसी को मारने के लिये प्रेरणा करना।

मरसा–संज्ञा पुं० [सं० मारिष] एक प्रकार का साग।

मरसिया–संज्ञा पुं० [अ०] १. उर्दू भाषा में शोकसूचक कविता जो किसी की मृत्यु के संबंध में बनाई जाती है। २. मरण-शोक। रोना-पीटना।

मरहट*†–संज्ञा पुं० [हिं० मरघट] मसान। *†संज्ञा स्त्री० [देश०] मोठ।

मरहटा–संज्ञा पुं० [सं० महाराष्ट्र] १. मरहठा। २. उनतीस मात्राओं का एक मात्रिक छंद।

मरहठा–संज्ञा पुं० [सं० महाराष्ट्र] [स्त्री० मरहठिन] महाराष्ट्र देश का रहनेवाला। महाराष्ट्र।

मरहठी–वि० [हिं० मरहठा] महाराष्ट्र या मरहठों से संबंध रखनेवाला। मरहठों का। संज्ञा स्त्री० मरहठों की बोली। दे० "मराठी"।

मरहम–संज्ञा पुं० [अ०] ओषधियों का वह गाढ़ा और चिकना लेप जो घाव या पीड़ित स्थानों पर लगाया जाता है।

मरहला–संज्ञा पुं० [अ०] १. टिकान। मंजिल। पड़ाव। २. मरातिब।

मुहा०—मरहला तय करना = झमेला निबटाना। कठिन काम पूरा करना।

मरहूम–वि० [अ०] स्वर्गवासी। मृत।

मरातिब–संज्ञा पुं० [अ०] १. दरजा। पद। २. उत्तरोत्तर आनेवाली अवस्थाएँ। ३. मकान का खंड। तल्ला। ४. ध्वजा। झंडा।

मराना–क्रि० स० [हिं० मारना का प्रेर०] मारने के लिये प्रेरणा करना। मरवाना।

मरायल*†–वि० [हिं० मारना + आयल (प्रत्य०)] १. जो कई बार मार खा चुका हो। पीटा हुआ। २. निःसत्व। सत्व-हीन। ३. निर्बल। निर्जीव। संज्ञा पुं० घाटा। टोटा।

मराल–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० मराली] १. एक प्रकार का बत्तख। २. घोड़ा। ३. हाथी। ४. हंस।

मरिंद*–संज्ञा पुं० १. दे० "मलिंद"। २. दे० "मरंद"।

मरिच–संज्ञा पुं० [सं०] मिरिच। मिर्च।

मरियम–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. कुमारी। २. ईसा मसीह की माता का नाम।

मरियल–वि० [हिं० मरना] बहुत दुर्बल।

मरी–संज्ञा स्त्री० [सं० मारी] वह संक्रामक रोग जिसमें एक साथ बहुत से लोग मरते हैं। महामारी।

मरीचि–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक ऋषि जिन्हें पुराणों में ब्रह्मा का मानसिक पुत्र, एक प्रजापति और सप्तर्षियों में माना है। २. एक मरुत् का नाम। ३. एक ऋषि जो भृगु के पुत्र और कश्यप के पिता थे। संज्ञा स्त्री० [सं०] १. किरण। २. प्रभा। कांति। ३. मरीचिका। मृगतृष्णा।

मरीचिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मृगतृष्णा।

सिरोह। २ किरण।
मरीची–संज्ञा पु० [सं० मरीचिन्] १. सूर्य्य। २ चंद्रमा।
मरीज़–वि० [अ०] रोगी। बीमार।
मरीना–संज्ञा पु० [स्पेनी० मेरिनो] एक प्रकार का मुलायम ऊनी पतला कपड़ा।
मरु–संज्ञा पु० [सं०] १ मरुस्थल। निर्जल स्थान। रेगिस्तान। २ मारवाड़ और उसके आस-पास के देश का नाम।
मरुआ–संज्ञा पु० [सं० मरुव] वन-तुलसी या बबंरी की जाति का एक पौधा।
संज्ञा पु० [सं० मेरु] १ मकान की छाजन में सबसे ऊपर की बल्ली। बँडेर। २ वह लकड़ी जिसमें हिंडोला लटकाया जाता है।
मरुत्–संज्ञा पु० [सं०] १ एक देवगण का नाम। वेदों में इन्हें रुद्र और वृश्नि का पुत्र लिखा है, पर पुराणों में इन्हें कश्यप और दिति का पुत्र लिखा है। २ वायु। हवा। ३ प्राण। ४ दे० "मरुत्वान्"।
मरुत्वान*–संज्ञा पु० दे० "मरुत्वान्"।
मरुत्वान्–संज्ञा पु० [सं० मरुत्वत्] १ इंद्र। २ देवताओं का एक गण जो धर्म के पुत्र माने जाते हैं। ३ हनुमान।
मरुथल–संज्ञा पु० दे० "मरुस्थल"।
मरुद्वीप–संज्ञा पु० [सं०] वह उपजाऊ और सजल हरा भरा स्थान जो मरुस्थल में हो।
मरुधर–संज्ञा पु० [सं०] मारवाड़ देश।
मरुभूमि–संज्ञा स्त्री० [सं०] बालू का निर्जल मैदान। रेगिस्तान।
मरुरना*–क्रि० अ० [हिं० मरोड़ना] 'मरोरना' का अकर्मक रूप। ऐंठना।
मरुस्थल–संज्ञा पु० दे० "मरुभूमि"।
मरू*–वि० [हिं० मरना] कठिन। दुरूह।
मुहा०—मरू करिके या मरू करि* = ज्यों त्यों करके। बहुत मुश्किल से।
मरूरा*†–संज्ञा पु० दे० "मरोड़"।
मरोड़–संज्ञा पु० [हिं० मरोड़ना] १ मरोड़ने का भाव या क्रिया।
मुहा०—मरोड़ खाना = चक्कर खाना। मन में मरोड़ करना = कपट करना। मरोड़ की बात = घुमाव फिराव की बात।
२ घुमाव। ऐंठन। बल। ३ व्यथा। क्षोभ।
मुहा०—मरोड़ खाना = उलझन में पड़ना।
४ पेट में ऐंठन और पीड़ा होना। ५ घमंड। गर्व। ६ क्रोध। गुस्सा।
मुहा०—मरोड़ गहना = क्रोध करना।
मरोड़ना–क्रि० स० [हिं० मोड़ना] १ बल डालना। ऐंठना।
मुहा०—अंग मरोड़ना = अँगड़ाई लेना। भौंह मरोड़ना या दृग (आदि) मरोड़ना = १ आँख से इशारा करना या कनखी मारना। २ नाक भौंह चढ़ाना। भौंह सिकोड़ना।
२ ऐंठकर नष्ट करना या मार डालना। ३ पीड़ा देना। दुःख देना। ४ मसलना।
मुहा०—हाथ मरोड़ना* = पछताना।
मरोड़फली–संज्ञा स्त्री० [हिं० मरोड़ + फली] एक प्रकार की फली। मुर्रा। अवतरनी।
मरोड़ा–संज्ञा पु० [हिं० मरोड़ना] १ ऐंठन। मरोड़। उमेठ। बल। २ पेट की वह पीड़ा जिसमें कुछ ऐंठन सी जान पड़ती हो।
मरोड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० मरोड़ना] ऐंठन।
मुहा०—मरोड़ी करना = खींचातानी करना
मर्कट–संज्ञा पु० [सं०] १ बंदर। वानर। २ मकड़ा। ३ दोहे के एक भेद का नाम। ४ छप्पय का आठवाँ भेद।
मर्कटी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वानरी। बँदरी। २ मकड़ी। ३ छंद के ९ प्रत्ययों में से अंतिम प्रत्यय। इसके द्वारा मात्रा के प्रस्तार में छंद के लघु, गुरु, कला और वर्णों की संख्या का ज्ञान होता है।
मर्कत*–संज्ञा पु० दे० "मरकत"।
मर्तबान–संज्ञा पु० [हिं० अमृतबान] रोगनी बर्तन जिसमें अचार, घी आदि रखा जाता है। अमृतबान।
मर्त्य–संज्ञा पु० [सं०] १ मनुष्य। २. भूलोक। ३ शरीर।
मर्त्यलोक–संज्ञा पु० [सं०] पृथ्वी।
मर्द–संज्ञा पु० [फा०, मि० सं० मर्त्त और मर्त्य] १ मनुष्य। आदमी। २ साहसी पुरुष। पुरुषार्थी। ३ वीर पुरुष। योद्धा।

४. पुरुष। नर। ५. पति। भर्ता।
मर्दना*–क्रि० स० [सं० मर्दन] १. मालिश करना। मलना। २. तोड़-फोड़ डालना। ३. नाश करना। ४. कुचलना। रौंदना।
मर्दुम–संज्ञा पुं० [फ़ा०] मनुष्य।
मर्दुमशुमारी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. किसी देश में रहनेवाले मनुष्यों की गणना। *मनुष्य-गणना*। २. जनसंख्या। आबादी।
मर्दुमी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] मरदानगी। पौरुष।
मर्दन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० मर्दित] १. कुचलना। रौंदना। २. मलना। मसलना। ३. तेल, उबटन आदि शरीर में लगाना। मलना। ४. द्वंद्व युद्ध में एक मल्ल का दूसरे मल्ल की गर्दन आदि पर हाथों से घस्सा लगाना। घस्सा। ५. ध्वंस। नाश। ६. पीसना। घोंटना। रगड़ना। वि० [स्त्री० मर्दिनी] नाशक। संहारकर्ता।
मर्दल–संज्ञा पुं० [सं०] मृदंग की तरह का एक बाजा। इसका प्रचार बंगाल में है।
मर्दित–वि० [सं०] जो मर्दन किया गया हो।
मर्म–संज्ञा पुं० [सं० मर्म्म] १. स्वरूप। २. रहस्य। तत्त्व। भेद। ३. संधिस्थान। ४. प्राणियों के शरीर में वह स्थान जहाँ आघात पहुँचने से अधिक वेदना होती है।
मर्मज्ञ–वि० [सं०] १. जो किसी बात का मर्म या गूढ़ रहस्य जानता हो। तत्त्वज्ञ। २. रहस्य जाननेवाला।
मर्मभेदक–वि० दे० "मर्मभेदी"।
मर्मभेदी–वि० [सं० मर्मभेदिन्] हृदय पर आघात पहुँचानेवाला। आंतरिक कष्ट देनेवाला।
मर्मर–संज्ञा पुं० दे० "मरमर"।
मर्मवचन–संज्ञा पुं० [हिं० मर्म + वचन] वह बात जिससे सुननेवाले को आतरिक कष्ट हो।
मर्मवाक्य–संज्ञा पुं० [सं०] रहस्य की बात। भेद की या गूढ़ बात।
मर्मविद्–वि० [सं०] मर्म्मज्ञ।
मर्मांतक–वि० [सं०] मन में चुभनेवाला। मर्मभेदक। हृदयस्पर्शी।
मर्मी–वि० [हिं० मर्म] तत्त्वज्ञ। मर्मज्ञ।
मर्य्याद–संज्ञा स्त्री० [सं० मर्य्यादा] १. दे० "मर्य्यादा"। २. रीति। रसम। प्रथा। ३. विवाह में बड़हार। बढ़ार।
मर्य्यादा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सीमा। हद। २. कूल। नदी का किनारा। ३. प्रतिज्ञा। मुआहिदा। क़रार। ४. नियम। ५. सदाचार। ६. मान। प्रतिष्ठा। ७. धर्म।
मलंग–संज्ञा पुं० [फ़ा०] *एक प्रकार के* मुसलमान साधु।
मल–संज्ञा पुं० [सं०] १. मैल। कीट। २. शरीर के अंगों से निकलनेवाली मैल या विकार। ३. विष्ठा। पुरीष। ४. दूषण। विकार। ५. पाप। ६. ऐब।
मलका–संज्ञा स्त्री० [अ० मलिकः] बादशाह की पटरानी। महारानी।
मलखंभ–संज्ञा पुं० दे० "मलखम"।
मलखम–संज्ञा पुं० [सं० मल्ल + हिं० खंभा] १. लकड़ी का एक प्रकार का खंभा जिस पर फुर्ती से चढ़ और उतरकर कसरत करते हैं। मालखंभ। २. वह कसरत जो मलखम पर की जाय।
मलखाना*†–वि० [हिं० मल + खाना] मल खानेवाला। संज्ञा पुं० [सं० मल्ल + सेन] पश्चिमी संयुक्त प्रांत में बसनेवाले एक प्रकार के राजपूत जो अब मुसलमान से हिंदू बन गए हैं।
मलगजा*–वि० [हिं० मलना + मीजना] मला-दला हुआ। मीजा हुआ। मरगजा। संज्ञा पुं० बेसन में लपेटकर तेल या घी में छाने हुए बैंगन के पतले टुकड़े।
मलगिरी–संज्ञा पुं० [हिं० मलयगिरि] एक प्रकार का हल्का कत्थई रंग।
मलद्वार–संज्ञा पुं० [सं०] १. शरीर की वे इंद्रियाँ जिनसे मल निकलते हैं। २. गुदा।
मलना–क्रि० स० [सं० मलन] १. हाथ या किसी और चीज से दबाते हुए घिसना। मर्दन। मींजना। मसलना।
मुहा०—दलना-मलना = १. चूर्ण करना। पीसकर टुकड़े टुकड़े करना। २. मसलना। घिसना। हाथ मलना = १. पछताना।

पश्चात्ताप करना। २. क्रोध प्रकट करना। ३ मालिश करना। ३ ममलना। मींजना। ४. मरोड़ना। ऐंठना। ५ हाथ से बार बार रगड़ना या दबाना।
मलवा–संज्ञा पु० [हिं० मल ?] १ कूड़ा-करकट। कतवार। २ टूटी या गिराई हुई इमारत की ईंट, पत्थर और चूना आदि।
मलमल–संज्ञा स्त्री० [स० मल्लमल्लक] एक प्रकार का प्रसिद्ध पतला कपड़ा।
मलमलाना–क्रि० स० [हिं० मलना] १. बार बार स्पर्श कराना। २ बार बार खोलना और ढकना। ३. पुन पुन आलिंगन करना। ४ पश्चात्ताप करना।
मलमास–संज्ञा पु० [स०] वह अमांत मास जिसमें संक्रांति न पड़ती हो। अधिक मास। पुरुषोत्तम। अधिमास।
मलय–संज्ञा पु० [स० मलय=पर्वत] १ पश्चिमी घाट का वह भाग जो मैसूर राज्य के दक्षिण और ट्रावकोर के पूर्व में है। २. मलावार देश। ३ मलावार देश के रहने-वाले मनुष्य। ४ सफेद चंदन। ५. नंदन वन। ६ छप्पय के एक भेद का नाम।
मलयगिरि–संज्ञा पु० [स०] १ मलय नामक पर्वत जो दक्षिण में है। २ मलयगिरि में उत्पन्न चंदन। ३ हिमालय पर्वत का वह देश जहाँ आसाम है।
मलयज–संज्ञा पु० [स०] चंदन।
मलयागिरि–संज्ञा पु० दे० "मलयगिरि"।
मलयाचल–संज्ञा पु० [स०] मलय पर्वत।
मलयानिल–संज्ञा पु० [स०] १ मलय पर्वत की ओर से आनेवाली वायु। २ सुगंधित वायु। ३. वसंत काल की वायु।
मलयाली–वि० [ता० मलयालम्] मलावार देश का। मलावार देश-संबंधी।
संज्ञा स्त्री० मलावार देश की भाषा।
मलयुग–संज्ञा पु० दे० "कलियुग"।
मलरुचि–वि० [स०] दूषित रुचि का। पापी।
मलवाना–क्रि० स० [हिं० मलना का प्रेर० रूप] मलने का काम दूसरे से कराना।
मलहम–संज्ञा पु० दे० "मरहम"।
मलाई–संज्ञा स्त्री० [देश०] १. बहुत गरम किए हुए दूध या उसकी सार भाग। दूध की साढ़ी। २. सार। तत्त्व। रस।
संज्ञा स्त्री० [हिं० मलना] मलने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
मलान*–वि० दे० "म्लान"।
मलानि*–संज्ञा स्त्री० दे० "म्लानि"।
मलामत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. लानत। फटकार। दुतकार।
यौ०—लानत-मलामत।
२ निकृष्ट या खराब अंश। गंदगी।
मलार–संज्ञा पु० [स० मल्लार] एक राग जो वर्षा ऋतु में गाया जाता है।
मुहा०—मलार गाना=बहुत प्रसन्न होकर कुछ कहना, विशेषत गाना।
मलाल–संज्ञा पु० [अ०] १ दु ख। रंज। २ उदासीनता। उदासी।
मलाह*–संज्ञा पु० दे० "मल्लाह"।
मलिंद–संज्ञा पु० [स० मिलिंद] भौंरा।
मलिक–संज्ञा पु० [अ०] [स्त्री० मलिका] १ राजा। २ अधीश्वर।
मलिछ, मलिच्छ*–संज्ञा पु० दे० "म्लेच्छ"।
मलिन–वि० [स०] [स्त्री० मलिना, मलिनी] १ मलयुक्त।, मैला। गँदला। २ दूषित। खराब। ३ मटमैला। धूमिल। बदरंग। ४ पापात्मा। पापी। ५ धीमा। फीका। ६ म्लान। उदासीन।
संज्ञा पु० एक प्रकार के साधु जो मैला कुचैला कपड़ा पहनते हैं।
मलिनता–संज्ञा स्त्री० [स०] मैलापन।
मलिनाई*–संज्ञा स्त्री० दे० "मलिनता"।
मलिनाना*–क्रि० अ० [हिं० मलिन] मैला होना।
मलिया†–संज्ञा स्त्री० [स० मल्लिका] १ तंग मुँह का मिट्टी का एक बर्तन। घेरा २ चक्कर।
मलियामेट–संज्ञा पु० [हिं० मलिया+मिटाना] सत्यानाश। तहस-नहस।
मलीदा–संज्ञा पु० [फा०] १ चूरमा। २.

एक प्रकार का बहुत मुलायम ऊनी वस्त्र।
मलीन–वि० [सं० मलिन] १. मैला। अस्वच्छ। २. उदास।
मलीनता–संज्ञा स्त्री० दे० "मलिनता"।
मलूक–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का कीड़ा। २. एक प्रकार का पक्षी। ३. दे० "अमलूक"।
वि० [देश०] सुंदर। मनोहर।
मलेच्छ–संज्ञा पुं० दे० "म्लेच्छ"।
मलोला–संज्ञा पुं० [अ० मलूल या वलवला] १. मानसिक व्यथा। दुःख। रंज।
मुहा०—मलोला या मलोले आना = दुःख होना। पछतावा होना। मलोले खाना = मानसिक व्यथा सहना।
२. वह इच्छा जो मानसिक व्याकुलता उत्पन्न करे। अरमान।
मल्ल–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्राचीन जाति। इस जाति के लोग द्वंद्व युद्ध में बड़े निपुण होते थे; इसी लिये कुश्ती लड़नेवाले का नाम मल्ल पड़ गया है। २. पहलवान। ३. एक प्राचीन देश जो विराट देश के पास था। ४. दीप-शिखा।
मल्लभूमि–संज्ञा स्त्री० [सं०] कुश्ती लड़ने की जगह। अखाड़ा।
मल्लयुद्ध–संज्ञा पुं० [सं०] परस्पर द्वंद्व युद्ध जो बिना शस्त्र के केवल हाथों से किया जाय। बाहुयुद्ध। कुश्ती।
मल्लविद्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] कुश्ती की विद्या।
मल्लशाला–संज्ञा स्त्री० दे० "मल्लभूमि"।
मल्लार–संज्ञा पुं० दे० "मलार"।
मल्लाह–संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० मल्लाहिन] एक अत्यंज जाति जो नाव चलाकर और मछलियाँ मारकर अपना निर्वाह करती है। केवट। धीवर। माझी।
मल्लिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार का बेला। मोतिया। २. आठ अक्षरों का एक वर्णिक छंद। ३. सुमुखी वृत्ति।
मल्लिनाथ–संज्ञा पुं० [सं०] जैनियों के उन्नीसवें तीर्थंकर का नाम।
मल्ली–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मल्लिका। २. सुंदरी वृत्ति का एक नाम।
मल्लू–संज्ञा पुं० [सं०] बंदर।
मल्हाना, मल्हारना†–क्रि० स० [सं० मल्ह = गोस्तन] चुमकारना। पुचकारना।
मवक्किल–संज्ञा पुं० [अ० मुवक्किल] मुकदमे में अपनी ओर से कचहरी में काम करने के लिये वकील नियत करनेवाला पुरुष।
मवाजिब–संज्ञा पुं० [अ०] नियमित समय पर मिलनेवाला पदार्थ; जैसे, वेतन।
मवाद–संज्ञा पुं० [अ०] पीब।
मवास–संज्ञा पुं० [सं०] १. रक्षा का स्थान। त्राणस्थल। आश्रय। शरण।
मुहा०—मवास करना = निवास करना।
२. किला। दुर्ग। गढ़। ३. वे पेड़ जो दुर्ग के प्राकार पर होते हैं।
मवासी–संज्ञा स्त्री० [हिं० मवास] छोटा गढ़। संज्ञा पुं० १. गढ़पति। क़िलेदार। २. प्रधान। मुखिया। अधिनायक।
मवेशी–संज्ञा पुं० [अ० मवाशी] पशु। ढोर।
मवेशीखाना–संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह बाड़ा जिसमें मवेशी रखे जाते हैं।
मशक–संज्ञा पुं० [सं०] १. मच्छड़। २. मसा नामक चर्म-रोग।
संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] चमड़े का बना हुआ वह थैला जिसमें पानी भरकर ले जाते हैं।
मशक्कत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मेहनत। श्रम। परिश्रम। २. वह परिश्रम जो जेलखाने के कैदियों को करना पड़ता है।
मशगूल–वि० [अ०] काम में लगा हुआ।
मशरू–संज्ञा पुं० [अ० मशरूअ] एक प्रकार का धारीदार कपड़ा।
मशविरा–संज्ञा पुं० [अ०] सलाह। परामर्श।
मशहूर–वि० [अ०] प्रख्यात। प्रसिद्ध।
मशाल–संज्ञा स्त्री० [अ०] डंडे में लगी हुई एक प्रकार की बहुत मोटी बत्ती।
मुहा०—मशाल लेकर या जलाकर ढूँढ़ना = अच्छी तरह ढूँढ़ना। बहुत ढूँढ़ना।
मशालची–संज्ञा पुं० [फ़ा०] [स्त्री० मशालचिन] मशाल हाथ में लेकर दिखलानेवाला।
मश्क–संज्ञा पुं० [अ०] अभ्यास।

मव-संज्ञा पु० दे० "मय"।
मष्ट-वि० [सं० मष्ट] १. संस्कार-शून्य। जो भूल गया हो। २ उदासीन। मौन।
मुहा०—मष्ट करना, धारना या मारना = चुप रहना। न बोलना।
मस*†-संज्ञा स्त्री० [सं० मसि] रोशनाई। संज्ञा स्त्री० [सं० श्मश्रु] मोछ निकलने से पहले उसके स्थान पर की रोमावली।
मुहा०—मस भीजना = मूछों का निकलना आरंभ होना।
मसक-संज्ञा पु० [सं० मशक] मसा। मच्छड़। संज्ञा स्त्री० [अनु०] मसकने की क्रिया।
मसकत*†-संज्ञा स्त्री० दे० "मशक्कत"।
मसकना-क्रि० स० [अनु०] १ कपड़े को इस प्रकार दबाना कि बुनावट के सब तंतु टूटकर अलग हो जायँ। २ इस प्रकार दबाना कि बीच में से फट जाय। ३ जोर से दबाना या मलना।
क्रि० अ० १ किसी पदार्थ का दबाव या खिचाव आदि के कारण बीच में से फट जाना। २ (चित्त का) चिंतित होना।
मसकरा-संज्ञा पु० दे० "मसखरा"।
मसक्ला-संज्ञा पु० [अ०] १ सिकलीगरों का एक औजार। इससे रगड़ने से धातुओं पर चमक आ जाती है। २ सैकल या सिकली करने की क्रिया।
मसकली-संज्ञा स्त्री० दे० "मसक्ला"।
मसका-संज्ञा पु० [फा०] १ नवनीत। मक्खन। नैनूं। २ ताजा निकला हुआ घी। ३ दही का पानी। ४ चूने की बरी का वह चूर्ण जो उस पर पानी छिड़कने से बने।
मसकीन*†-वि० [अ० मिसकीन] १ गरीब। दीन। बेचारा। २ साधु। ३ दरिद्र। ४ भोला। ५ सुशीला।
मसखरा-संज्ञा पु० [अ०] बहुत हँसी-मजाक करनेवाला। हँसोड़। ठट्ठेबाज।
मसखरापन-संज्ञा पु० [अ० मसखरा+पन (प्रत्य०)] दिल्लगी। ठठोली। हँसी। ठट्टा।
मसखरी-संज्ञा स्त्री० [फा० मसखरा+ई (प्रत्य०)] दिल्लगी। हँसी। मजाक।
मसखवा†-संज्ञा पु० [हिं० मास+खाना] वह जो मास खाता हो। मासाहारी।
मसजिद-संज्ञा स्त्री० [फा० मस्जिद] मुसलमानों के एकत्र होकर नमाज पढ़ने तथा ईश्वर-वंदना करने का स्थान या घर।
मसनद-संज्ञा स्त्री० [अ०] १ बड़ा तकिया। गाव तकिया। २ अमीरों के बैठने की गद्दी।
मसना†-क्रि० स० दे० "मसलना"।
मसमुंद*†-वि० [मस? + मूँदना=बंद होना] पशमकश। ठेलमठेल। धक्कमधक्का।
मसयारा*†-संज्ञा पु० [अ० मशअल] १ मशाल। २ मशालची।
मसरफ-संज्ञा पु० [अ०] व्यवहार में आना। काम में आना। उपयोग।
मसल-संज्ञा स्त्री० [अ०] कहावत। लोकोक्ति।
मसलन्-वि० [अ०] उदाहरणार्थ। यथा। जैसे।
मसलना-क्रि० स० [हिं० मलना] १ हाथ से दबाते हुए रगड़ना। मलना। २ जोर से दबाना। ३ आटा गूँधना।
मसलहत-संज्ञा स्त्री० [अ०] ऐसी गुप्त युक्ति या भलाई जो सहसा जानी न जा सके। अप्रकट शुभ हेतु।
मसला-संज्ञा पु० [अ०] १ कहावत। लोकोक्ति। २ विचारणीय विषय।
मसवासी-संज्ञा पु० [सं० मासवासी] वह साधु आदि जो एक मास से अधिक किसी स्थान में न रहे।
संज्ञा स्त्री० गणिका। वेश्या।
मसविदा-संज्ञा पु० दे० "मसौदा"।
मसहरी-संज्ञा स्त्री० [सं० मशहरी] १ पलंग के ऊपर और चारों ओर लटकाया जानेवाला वह जालीदार कपड़ा जिसका उपयोग मच्छड़ों आदि से बचने के लिये होता है। २ ऐसा पलंग जिसमें मसहरी लग सके।
मसहार*-संज्ञा पु० दे० 'मासाहारी"।
मसा-संज्ञा पु० [सं० मासकील] १ शरीर पर काले रंग का उभरा हुआ मास का छोटा दाना। २ बवासीर रोग में मास का दाना।

संज्ञा पुं० [सं० मशक] मच्छड़।
मसान–संज्ञा पुं० [सं०श्मशान] १. मरघट। मुहा०—मसान जगाना = तंत्रशास्त्र के अनुसार श्मशान पर बैठकर शव की सिद्धि करना। २. भूत, पिशाच आदि। ३. रणभूमि।
मसाना–संज्ञा पुं० [अ०] पेट की वह थैली जिसमें पेशाब रहता है। मूत्राशय। *संज्ञा पुं० दे० "मसान"।
मसानी–संज्ञा स्त्री० [सं० श्मशानी] श्मशान में रहनेवाली पिशाचिनी, डाकिनी इत्यादि।
मसाला–संज्ञा पुं० [फ़ा० मसाल्ह्] १. वे चीजें जिनकी सहायता से कोई चीज तैयार होती हो। २. ओषधियों अथवा रासायनिक द्रव्यों का योग या समूह। ३. साधन। ४. तेल। ५. आतिशबाजी।
मसालेदार–वि० [अ० मसाल्ह + फ़ा० दार] जिसमें किसी प्रकार का मसाला हो।
मसि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लिखने की स्याही। रोशनाई। २. काजल। ३. कालिख।
मसिदानी–संज्ञा स्त्री० [सं० मसि+फा० दानी] दावात। मसिपात्र।
मसिपात्र–संज्ञा पुं० [सं०] दावात।
मसिबुंदा–संज्ञा पुं० दे० "मसिबिंदु"।
मसिमुख वि० [सं०] जिसके मुँह में स्याही लगी हो। दुष्कर्म करनेवाला।
मसियर*–संज्ञा स्त्री० दे० "मशाल"।
मसियाना–क्रि० अ० [?] भली भाँति भर जाना। पूरा हो जाना।
मसियारा*–संज्ञा पुं० दे० "मशालची"।
मसिबिंदु–संज्ञा पुं० [सं०] काजल का बुंदा जो नजर से बचने के लिये बच्चों को लगाया जाता है। दिठौना।
मसी–संज्ञा स्त्री० दे० "मसि"।
मसीत, मसीद*†–संज्ञा स्त्री० दे० "मसजिद"।
मसीह, मसीहा–संज्ञा पुं० [अ०] [वि० मसीही] ईसाइयों के धर्मगुरु हजरत ईसा।
मसू*†–संज्ञा स्त्री० [हिं० मरू] कठिनाई। मुहा०—मसू करके = बहुत कठिनता से।
मसूड़ा–संज्ञा पुं० [सं० श्मश्रु] मुँह के अंदर का वह मांस जिस पर दाँत जमे होते हैं।
मसूर–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का द्विदल और चिपटा अन्न। मसूरी।
मसूरा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मसूर की दाल। २. मसूर की बनी हुई बरी।
मसूरिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शीतला। माता। चेचक। २. छोटी माता।
मसूरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. माता। चेचक। २. दे० "मसूर"।
मसूस, मसूसन–संज्ञा स्त्री० [हिं० मसूसना] मन मसूसने का भाव। आंतरिक व्यथा।
मसूसना–क्रि० अ० [फ़ा० अफ़सोस ?] १. किसी मनोवेग को रोकना। जब्त करना। २. मन ही मन रंज करना। कुढ़ना। ३. ऐंठना। मरोड़ना। ४. निचोड़ना।
मसृण–वि० [सं०] चिकना और मुलायम।
मसेवरा†–संज्ञा पुं० [हिं० मांस] मांस की बनी हुई खाने की चीजें।
मसोसना–क्रि० अ० दे० "मसूसना"।
मसौदा–संज्ञा पुं० [अ० मसविदा] १. काट-छाँट करने और साफ़ करने के उद्देश्य से पहली बार लिखा हुआ लेख। खर्रा। मसविदा। २. उपाय। युक्ति। तरकीब। मुहा०—मसौदा गाँठना या बाँधना = कोई काम करने की युक्ति या उपाय सोचना।
मसौदेबाज–संज्ञा पुं० [अ० मसौदा + फ़ा० बाज (प्रत्य०)] १. अच्छी युक्ति सोचनेवाला। २. धूर्त। चालाक।
मस्करा*–संज्ञा पुं० दे० "मसखरा"।
मस्त–वि० [फ़ा०, मि० सं० मत्त] १. जो नशे आदि के कारण मत्त हो। मतवाला। मदोन्मत्त। २. सदा प्रसन्न और निश्चिंत रहनेवाला। ३. यौवन मद से भरा हुआ। ४. जिसमें मद हो। मदपूर्ण। ५. परम प्रसन्न। मग्न। आनंदित।
मस्तक–संज्ञा पुं० [सं०] सिर।
मस्तगी–संज्ञा स्त्री० [अ० मस्तकी] एक प्रकार का बढ़िया गोंद।
मस्ताना–वि० [फ़ा० मस्तानः] १. मस्तों का

सा। मस्तों की तरह का। २ मस्त।
क्रि० अ० [फा० मस्त] मस्त होना।
क्रि० स० मस्ती पर लाना। मस्त करना।
मस्तिष्क–संज्ञा पु० [सं०] १ मस्तक के अदर का गूदा। भेजा। मगज। २ बुद्धि के रहने का स्थान। दिमाग।
मस्ती–संज्ञा स्त्री० [फा०] १ मस्त होने की क्रिया या भाव। मत्तता। मतवालापन २ वह स्राव जो कुछ विशिष्ट पशुओं के मस्तक, कान, आँख आदि के पास उनके मस्त होने के समय होता है। मद। ३ वह स्राव जो कुछ विशिष्ट वृक्षों अथवा पत्थरों आदि में से होता है।
मस्तूल–संज्ञा पु० [पुर्त०] बड़ी नावों आदि के बीच का वह बड़ा शहतीर जिसमें पाल बाँधते हैं।
मस्सा–संज्ञा पु० दे० "मसा"।
महँ*†–अव्य० [सं० मध्य] में।
महँई*†–वि० [सं० महा] महान। भारी। अव्य० दे० 'महँ'।
महँगा–वि० [सं० महार्घ] जिसका मूल्य साधारण या उचित की अपेक्षा अधिक हो।
महँगाई†–संज्ञा स्त्री० दे० "महँगी"।
महँगी–संज्ञा स्त्री० [हिं० महँगा+ई (प्रत्य०)] १ महँगे होने का भाव। महँगापन। २ महँगे होने की अवस्था। ३ दुर्भिक्ष। अकाल। कहत।
महंत–संज्ञा पु० [सं० महत्=बड़ा] साधु मंडली या मठ का अधिष्ठाता।
वि० श्रेष्ठ। प्रधान। मुखिया।
महंती–संज्ञा स्त्री० [हिं० महंत+ई (प्रत्य०)] १ महंत का भाव। २ महंत का पद।
मह–अव्य० दे० 'महँ'।
वि० [सं० महत्] १ महा। अति। बहुत। २ महत्। श्रेष्ठ। बड़ा।
महक–संज्ञा स्त्री० [हिं० गमक] गंध। बास।
महकना–क्रि० अ० [हिं० महक+ना (प्रत्य०)] गंध देना। बास देना।
महकमा–संज्ञा पु० [अ०] किसी विशिष्ट कार्य्य के लिये अलग किया हुआ विभाग।
सीगा। सरिश्ता।
महकार*–संज्ञा स्त्री० दे० "महक"।
महज–वि० [अ०] १ शुद्ध। खालिस। २ केवल। मात्र। सिर्फ।
महत्–वि० [सं०] १ महान्। बृहत्। बड़ा। २ सबसे बढ़कर। सर्वश्रेष्ठ।
संज्ञा पु० १ प्रकृति का पहला विकार, महत्तत्व। २ ब्रह्म।
महत–संज्ञा पु० दे० "महत्त्व"।
महता–संज्ञा पु० [सं० महत्] १ गाँव का मुखिया। महतो। २ मुहर्रिर। मुंशी। *संज्ञा स्त्री० [सं० महत्ता] अभिमान।
महताब–संज्ञा स्त्री० [फा०] १ चाँदनी। चंद्रिका। २ दे० "महताबी"।
संज्ञा पु० [फा०] चाँद। चंद्रमा।
महताबी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १ मोटी बत्ती के आकार की एक प्रकार की आतिश-बाजी। २ बाग आदि के बीच में बना हुआ गोल या चौकोर ऊँचा चबूतरा।
महतारी*†–संज्ञा स्त्री० [सं० माता] माँ। माता।
महती–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नारद की वीणा का नाम। २ महिमा। महत्त्व। बड़ाई।
महतु*†–संज्ञा पु० दे० "महत्त्व"।
महत्तत्त्व–संज्ञा पु० [सं०] १ सांख्य में प्रकृति का पहला कार्य्य या विकार जिससे अहंकार की उत्पत्ति होती है। बुद्धितत्त्व। २ जीवात्मा।
महत्तम–वि० [सं०] सबसे अधिक श्रेष्ठ।
महत्तर–वि० [सं०] दो पदार्थों में से बड़ा या श्रेष्ठ।
महत्त्व–संज्ञा पु० [सं०] १ महत् का भाव। बड़ाई। गुरुता। २ श्रेष्ठता। उत्तमता।
महन*†–संज्ञा पु० दे० 'मथन"।
महना*†–क्रि० स० दे० 'मथना"।
महनु*–संज्ञा पु० [सं० मथन] विनाशक।
महफिल–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ मजलिस। सभा। समाज। जलसा। २ नाच-गाना होने का स्थान।
महबूब–संज्ञा पु० [अ०] [स्त्री० महबूबा]

वह जिससे प्रेम किया जाय। प्रिय।
महमंत*–वि० [सं० महा+मत्त] मस्त। मदमत्त।
महमद*–संज्ञा पुं० दे० "मुहम्मद"।
महमह–क्रि० वि० [महकना] सुगंधि के साथ। खुशबू के साथ।
महमहा–वि० [हिं० मह मह] सुगंधित।
महमहाना–क्रि० अ० [हिं० मह मह अथवा महकना] गमकना। सुगंधि देना।
महमा*†–संज्ञा स्त्री० दे० "महिमा"।
महमेज–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] एक प्रकार की लोहे की नाल जो जूते में एँड़ी के पास लगाई जाती है और जिसकी सहायता से घोड़े के सवार उसे एड लगाते हैं।
महम्मद–संज्ञा पुं० दे० "मुहम्मद"।
महर–संज्ञा पुं० [सं० महत्] [स्त्री० महरि] १. एक आदरसूचक शब्द जिसका व्यवहार विशेषतः जमींदारों आदि के संबंध में होता है। (व्रज) २. एक प्रकार का पक्षी। ३. दे० "महरा"।
वि० [हिं० महक] महमहा। सुगंधित।
महरम–संज्ञा पुं० [अ०] १. मुसलमानों में किसी कन्या या स्त्री के लिये उसका कोई ऐसा बहुत पास का संबंधी जिसके साथ उसका विवाह न हो सकता हो। जैसे— पिता, चाचा, नाना, भाई, मामा आदि। २. भेद का जाननेवाला।
संज्ञा स्त्री० १. अँगिया की कटोरी। २. अँगिया।
महरा–संज्ञा पुं० [हिं० महता] [स्त्री० महरी] १. कहार। २. सरदार। नायक।
महराई*†–संज्ञा स्त्री० [हिं० महर+आई (प्रत्य०)] प्रधानता। श्रेष्ठता।
महराज–संज्ञा पुं० दे० "महाराज"।
महराना–संज्ञा पुं० [हिं० महर+आना (प्रत्य०)] महरों के रहने का स्थान।
महराब–संज्ञा स्त्री० दे० "मेहराब"।
महरि–संज्ञा स्त्री० [हिं० महर] १. एक प्रकार का आदरसूचक शब्द जिसका व्यवहार व्रज में प्रतिष्ठित स्त्रियों के संबंध में होता है। २. मालकिन। घरवाली। ३. ग्वालिन नामक पक्षी। दहिंगल।
महरूम–वि० [अ०] जिसे न मिले। वंचित।
महरेटा–संज्ञा पुं० [हिं० महर+एटा (प्रत्य०)] श्रीकृष्ण।
महरेटी–संज्ञा स्त्री० [हिं० महरेटा] श्री राधिका।
महर्लोक–संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार चौदह लोकों में से ऊपर का चौथा लोक।
महर्षि–संज्ञा पुं० [सं० महा+ऋषि] बहुत बड़ा और श्रेष्ठ ऋषि। ऋषीश्वर।
महल–संज्ञा पुं० [अ०] १. बहुत बड़ा और बढ़िया मकान। प्रासाद। २. रनिवास। अंतःपुर। ३. बड़ा कमरा। ४. अवसर।
महल्ला–संज्ञा पुं० [अ०] शहर का कोई विभाग या टुकड़ा जिसमें बहुत से मकान हों।
महसिल–संज्ञा पुं० [अ० मुहस्सिल] महसूल आदि वसूल करनेवाला। उगाहनेवाला।
महसूल–संज्ञा पुं० [अ०] १. वह धन जो राजा या कोई अधिकारी किसी विशिष्ट कार्य्य के लिये ले। कर। २. भाड़ा। किराया। ३. मालगुजारी। लगान।
महाँ*–अव्य० दे० "महँ"।
महा–वि० [सं०] १. अत्यंत। बहुत अधिक। २. सर्वश्रेष्ठ। सबसे बढ़कर। ३. बहुत बड़ा। भारी।
संज्ञा पुं० [हिं० महना] मट्ठा। छाछ।
महाअरंभ–वि० [सं० महा+रंभ] बहुत शोर।
महाई†–संज्ञा स्त्री० [हिं० महना+आई (प्रत्य०)] मथने का काम या मजदूरी।
महाउत*–संज्ञा पुं० दे० "महावत"।
महाउर–संज्ञा पुं० दे० "महावर"।
महाकल्प–संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार उतना काल जितने में एक ब्रह्मा की आयु पूरी होती है। ब्रह्म-कल्प।
महाकाल–संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।
महाकाली–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. महाकाल (शिव) की पत्नी। २. दुर्गा की एक मूर्ति।
महाकाव्य–संज्ञा पुं० [सं०] वह बहुत बड़ा सर्गबद्ध काव्य जिसमें प्रायः सभी रसों, ऋतुओं और प्राकृत दृश्यों तथा सामाजिक

कृत्यों आदि का वर्णन हो।
महाखर्व–संज्ञा पु० [सं०] सौ खर्व की संख्या या अंक।
महागौरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।
महाजन–संज्ञा पु० [सं०] १ बड़ा या श्रेष्ठ पुरुष। २ साधु। ३ धनवान। दौलतमंद। ४ रुपये-पैसे का लेन-देन करनेवाला। कोठीवाल। ५ बनिया। ६ भलामानुस।
महाजनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० महाजन+ई (प्रत्य०)] १ रुपये के लेने-देने का व्यवसाय। कोठीवाली। २ एक लिपि जो महाजनों के यहाँ बही-खाता लिखने में काम आती है। मुड़िया।
महाजल–संज्ञा पु० [सं०] समुद्र।
महातत्त्व–संज्ञा पु० दे० 'महत्तत्त्व'।
महातम*†–संज्ञा पु० दे० "माहात्म्य"।
महातल–संज्ञा पु० [सं०] चौदह भुवनों में से पृथ्वी के नीचे का पाँचवाँ भुवन या तल।
महात्मा–संज्ञा पु० [सं० महात्मन्] १ वह जिसकी आत्मा या आशय बहुत उच्च हो। महानुभाव। २ बहुत बड़ा साधु या संन्यासी।
महादंडधारी–संज्ञा पु० [सं०] यमराज।
महादान–संज्ञा पु० [सं०] १ वे बहुत बड़े दान जिनसे स्वर्ग की प्राप्ति होती है। २ वह दान जो ग्रहण आदि के समय छोटी जातियों को दिया जाता है।
महादेव–संज्ञा पु० [सं०] शंकर। शिव।
महादेवी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दुर्गा। २ राजा की प्रधान पत्नी या पटरानी।
महाद्वीप–संज्ञा पु० [सं०] पृथ्वी का वह बड़ा भाग जिसमें अनेक देश हों।
महार्घ–वि० [सं०] १ बहुमूल्य। अधिक मूल्य का। २ बहुत धनी।
महान्–वि० [सं०] बहुत बड़ा। विशाल।
महानंद–संज्ञा पु० [सं०] मगध देश का एक प्रतापी राजा जिसके डर से सिकंदर पंजाब ही से लौट गया था।
महानाटक–संज्ञा पु० [सं०] नाटक के लक्षणों से युक्त दस अंकोंवाला नाटक।
महानाभ–संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का मंत्र जिससे शत्रु के शस्त्र व्यर्थ जाते हैं।
महानिद्रा–संज्ञा स्त्री० [सं०] मृत्यु। मरण।
महानिधान–संज्ञा पु० [सं०] बुभुक्षित धातुभेदी पारा जिसे "बावन तोला पाव रत्ती" भी कहते हैं।
महानिर्वाण–संज्ञा पु० [सं०] परिनिर्वाण, जिसके अधिकारी केवल अर्हत या बुद्ध हैं।
महानिशा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ आधी रात। २ कल्पांत या प्रलय की रात्रि।
महानुभाव–संज्ञा पु० [सं०] कोई बड़ा और आदरणीय व्यक्ति। महापुरुष।
महानुभावता–संज्ञा स्त्री० [सं०] बड़प्पन।
महापथ–संज्ञा पु० [सं०] १ लंबा और चौड़ा रास्ता। राजपथ। २ मृत्यु।
महापद्म–संज्ञा पु० [सं०] १ नौ निधियों में से एक। २ सफेद कमल। ३ सौ पद्म की संख्या।
महापातक–संज्ञा पु० [सं०] पाँच बहुत बड़े पाप—ब्रह्महत्या, मद्यपान, चोरी, गुरु की पत्नी के साथ व्यभिचार और ये सब पाप करनेवालों का साथ करना।
महापातकी–संज्ञा पु० [सं० महापातकिन्] वह जिसने महापातक किया हो।
महापात्र–संज्ञा पु० [सं०] १ श्रेष्ठ ब्राह्मण। (प्राचीन) २ महाब्राह्मण या कट्टहा ब्राह्मण जो मृतक-कर्म का दान लेता है।
महापुरुष–संज्ञा पु० [सं०] १ नारायण। २ श्रेष्ठ पुरुष। महात्मा। महानुभाव।
महाप्रभु–संज्ञा पु० [सं०] १ वल्लभाचार्य जी की एक आदरसूचक पदवी। २ बंगाल के प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य चैतन्य *की एक आदरसूचक पदवी। ३ ईश्वर।*
महाप्रलय–संज्ञा पु० [सं०] वह काल जब संपूर्ण सृष्टि का विनाश हो जाता है और अनंत जल के अतिरिक्त कुछ भी नहीं रहता।
महाप्रसाद–संज्ञा पु० [सं०] १ ईश्वर या देवताओं का प्रसाद। २ जगन्नाथ जी का चढ़ा हुआ भात। ३ मांस (व्यंग्य)।

महाप्रस्थान-संज्ञा पुं० [सं०] १. शरीर त्यागने की कामना से हिमालय की ओर जाना। २. मरण। देहांत।
महाप्राण-संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण के अनुसार वह वर्ण जिसके उच्चारण में प्राण वायु का विशेष व्यवहार करना पड़ता है। हिंदी वर्णमाला में प्रत्येक वर्ग का दूसरा तथा चौथा अक्षर महाप्राण है।
महाबल-वि० [सं०] अत्यंत बलवान्।
महाबाहु-वि० [सं०] १. लंबी भुजावाला। २. बली। बलवान्।
महाब्राह्मण-संज्ञा पुं० दे० "महापात्र" (२)
महाभागवत-संज्ञा पुं० [सं०] १. २६ मात्राओं के छंदों की संज्ञा। २. परम वैष्णव। ३. दे० "भागवत" (पुराण)।
महाभारत-संज्ञा पु० [सं०] १. अठारह पर्वों का एक परम प्रसिद्ध प्राचीन ऐतिहासिक महाकाव्य जिसमें कौरवों और पांडवों के युद्ध का वर्णन है। २. कोई बहुत बड़ा ग्रंथ। ३. कौरवों और पांडवों का प्रसिद्ध युद्ध। ४. कोई बड़ा युद्ध।
महाभाष्य-संज्ञा पुं० [सं०] पाणिनि के व्याकरण पर पतंजलि का लिखा भाष्य।
महाभूत-संज्ञा पु० [सं०] पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश ये पंचतत्त्व।
महामंत्र-संज्ञा पु० [सं०] १. बहुत बड़ा और प्रभावशाली मंत्र। २. अच्छी सलाह।
महामंत्री-संज्ञा पु० [सं०] प्रधान मंत्री।
महामति-वि० [सं०] बड़ा बुद्धिमान्।
महामहोपाध्याय-संज्ञा पु० [सं०] १. गुरुओं का गुरु। २. एक प्रकार की उपाधि जो भारत में संस्कृत के विद्वानों को सरकार की ओर से मिलती है।
महामांस-संज्ञा पुं० [सं०] १. गोमांस। गौ का गोश्त। २. मनुष्य का मांस।
महामाई-संज्ञा स्त्री० [सं० महा + हिं० माई] १. दुर्गा। २. काली।
महामात्य-संज्ञा पु० [सं०] महामंत्री।
महामाया-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्रकृति। २. दुर्गा। ३. गंगा। ४. आर्या छंद का तेरहवाँ भेद।
महामारी-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह संक्रामक भीषण रोग जिससे एक साथ ही बहुत से लोग मरें। वबा। मरी। जैसे—प्लेग।
महामालिनी-संज्ञा स्त्री० [सं०] नाराच छंद।
महामृत्युंजय-संज्ञा पुं० [सं०] शिव।
महामेदा-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का कंद।
महामोदकारी-संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्णिक वृत्त। क्रीड़ाचक्र।
महाय*-वि० [सं० महा] महान्। बहुत।
महायज्ञ-संज्ञा पु० [सं०] धर्मशास्त्र के अनुसार नित्य किये जानेवाले कर्म। ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, भूतयज्ञ और नृयज्ञ।
महायात्रा-संज्ञा स्त्री० [सं०] मृत्यु। मौत।
महायान-संज्ञा पु० [सं०] बौद्धों के तीन मुख्य संप्रदायों में से एक संप्रदाय।
महायुग-संज्ञा पुं० [सं०] सत्य, त्रेता, द्वापर और कलि इन चारों युगों का समूह।
महायौगिक-संज्ञा पु० [सं०] २९ मात्राओं के छंदों की संज्ञा।
महारंभ-वि० [सं०] बहुत बड़ा।
महारथ-संज्ञा पु० [सं०] भारी योद्धा।
महारथी-संज्ञा पु० दे० "महारथ"।
महाराज-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० महारानी] १. बहुत बड़ा राजा। २. ब्राह्मण, गुरु आदि के लिये एक संबोधन।
महाराजाधिराज-संज्ञा पु० [सं०] बहुत बड़ा राजा।
महाराणा-संज्ञा पु० [सं० महा + हिं० राणा] मेवाड़, चित्तौर और उदयपुर के राजाओं की उपाधि।
महारात्रि-संज्ञा स्त्री० [सं०] महाप्रलयवाली रात, जब कि ब्रह्मा का लय हो जाता है और दूसरा महाकल्प होता है।
महारावण-संज्ञा पु० [सं०] पुराणानुसार वह रावण जिसके हजार मुख और दो हजार भुजाएँ थी।
महारावल-संज्ञा पु० [सं० महा + हिं० रावल] जैसलमेर, डूंगरपुर आदि राज्यों के राजाओं की उपाधि।

महाराष्ट्र–संज्ञा पु० [सं०] १ दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध प्रदेश। २ इस देश के निवासी। ३ बहुत बड़ा राष्ट्र।
महाराष्ट्री–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक प्रकार की प्राकृत भाषा। २ दे० "मराठी"।
महारुद्र–संज्ञा पु० [सं०] शिव।
महारोग–संज्ञा पु० [सं०] बहुत बड़ा रोग। जैसे–दमा, भगंदर आदि।
महारौरव–संज्ञा पु० [सं०] एक नरक।
महार्घ–वि० [सं०] १ बहुमूल्य। बहु मोल का। २ महँगा।
महाल–संज्ञा पु० [अ० महल का बहु०] १ मुहल्ला। टोला। पाड़ा। २ बन्दोबस्त में जमीन का एक भाग, जिसमें कई गाँव होते हैं। ३ भाग। पट्टी। हिस्सा।
महालक्ष्मी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लक्ष्मी देवी की एक मूर्ति। २ एक वर्णिक वृत्त।
महालय–संज्ञा पु० [सं०] पितृपक्ष।
महालया–संज्ञा स्त्री० [सं०] आश्विन कृष्ण अमावस्या, पितृविसर्जन की तिथि।
महावट–संज्ञा स्त्री० [हिं० माह=माघ+वट] पूस माघ की वर्षा। जाड़े की झड़ी।
महावत–संज्ञा पु० [सं० महामात्र] हाथी हाँकनेवाला। फीलवान। हाथीवान।
महावतारी–संज्ञा पु० [सं० महावतारिन्] २५ मात्राओं के छंदों की संज्ञा।
महावर–संज्ञा पु० [सं० महावर्ण?] एक प्रकार का लाल रंग जिससे सौभाग्यवती स्त्रियाँ पाँवों को चित्रित कराती हैं। यावक।
महावरी–संज्ञा पु० [हिं० महावर] महावर की बनी हुई गोली या टिकिया।
महावारुणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा-स्नान का एक योग।
महाविद्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ तंत्र में मानी हुई ये दस देवियाँ—काली, तारा, षोडशी, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, बगलामुखी, मातंगी और कमलात्मिका। २ दुर्गादेवी।
महावीर–संज्ञा पु० [सं०] १ हनुमानजी। २ गौतम बुद्ध। ३ जैनियों के चौबीसवें और अंतिम जिन या तीर्थंकर। वि० बहुत बड़ा बहादुर।
महाव्याहृति–संज्ञा स्त्री० [सं०] भू, भुव और स्व ये तीन ऊपर के लोक।
महाशंख–संज्ञा पु० [सं०] एक बहुत बड़ी संख्या का नाम। सौ शंख।
महाशक्ति–संज्ञा पु० [सं०] शिव।
महाशय–संज्ञा पु० [सं०] उच्च आशयवाला व्यक्ति। महानुभाव। महात्मा। सज्जन।
महाश्वेता–संज्ञा स्त्री० [सं०] सरस्वती।
महि*–अव्य० दे० "महँ"।
महि–संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी।
महिख*–संज्ञा पु० दे० "महिष"।
महिदेव–संज्ञा पु० [सं०] ब्राह्मण।
महिपाल*–संज्ञा पु० दे० "महीपाल"।
महिमा–संज्ञा स्त्री० [सं० महिमन्] १ महत्त्व। माहात्म्य। बड़ाई। गौरव। २ प्रभाव। प्रताप। ३ आठ प्रकार की सिद्धियों में से पाँचवीं जिससे सिद्ध योगी अपने आप को बहुत बड़ा बना लेता है।
महिम्न–संज्ञा पु० [सं०] शिव का एक प्रधान स्तोत्र।
महियाँ†*–अव्य० [सं० मध्य] में।
महियाउर†–संज्ञा पु० [मही=मट्ठा+चाउर] मट्ठे में पका हुआ चावल।
महिरावण–संज्ञा पु० [सं० महि+रावण] एक राक्षस जो रावण का लड़का था।
महिला–संज्ञा स्त्री० [सं०] भली स्त्री।
महिष–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० महिषी] १ भैंसा। २ वह राजा जिसका अभिषेक शास्त्रानुसार किया गया हो। ३ एक राक्षस का नाम जिसे दुर्गा ने मारा था।
महिषमर्दिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।
महिषासुर–संज्ञा पु० [सं०] एक असुर जो रंभ नामक दैत्य का पुत्र था। इसकी आकृति भैंसे की थी। इसे दुर्गाजी ने मारा था।
महिषी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ भैंस। २ रानी, विशेषत पटरानी। ३ सैरंध्री।
महिषेश–संज्ञा पु० [सं०] १ महिषासुर।

२. यमराज।
महिसुर–संज्ञा पुं० दे० "महीसुर"।
मही–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पृथ्वी। २. मिट्टी। ३. देश। स्थान। ४. नदी। ५. एक की संख्या। ६. एक लघु और एक गुरु मात्रा का एक छंद।
महीतल–संज्ञा पुं० [सं०] पृथ्वी। संसार।
महीधर–संज्ञा पुं० [सं०] १. पर्वत। २. शेषनाग। ३. एक वर्णिक वृत्त।
महीन–वि० [सं० महा + भीन (सं० क्षीण)] १. जिसकी मोटाई बहुत कम हो। "मोटा" का उलटा। पतला। २. बारीक। भीना। पतला। ३. कोमल। धीमा। मंद। (शब्द या स्वर)
महीना–संज्ञा पुं० [सं० मास] १. काल का एक परिमाण जो प्रायः साधारणतया तीस दिन का होता है। २. मासिक वेतन। दरमाहा। ३. स्त्रियों का मासिक धर्म।
महीप, महीपति–संज्ञा पुं० [सं०] राजा।
महीसुर–संज्ञा पुं० [सं०] ब्राह्मण।
महुँ*–अव्य० दे० "महँ"।
महुअर–संज्ञा पुं० [सं० मधुकर] १. एक प्रकार का बाजा। तुमड़ी। तूंबी। २. एक प्रकार का इन्द्रजाल का खेल जो महुअर बजाकर किया जाता है।
महुआ–संज्ञा पुं० [सं० मधूक, प्रा० महुआ] एक प्रकार का वृक्ष जिसके छोटे, मीठे, गोल फूलों से शराब बनती है।
महुर्छा*†–संज्ञा पुं० दे० "महोच्छव"।
महुवरि–संज्ञा स्त्री० दे० "महुअर"।
महूख*–संज्ञा पुं० [सं० मधूक] १. महुआ। २. जेठी मधु। मुलेठी।
महूरत*–संज्ञा पुं० दे० "मुहूर्त्त"।
महेंद्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु। २. इंद्र। ३. भारतवर्ष का एक पर्वत जो सात कुल-पर्वतों में गिना जाता है।
महेंद्रवारुणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] बड़ा इंद्रायण।
महेर†–संज्ञा पुं० दे० "महेरा"।
संज्ञा पुं० [देश०] झगड़ा। बखेड़ा।
महेरा–संज्ञा पुं० [हिं० महेर या मही] एक प्रकार का व्यंजन या खाद्य पदार्थ। मट्ठा*।
महेरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० महेरा] उबाली हुई ज्वार जिसे लोग नमक-मिर्च से खाते हैं।
वि० [हिं० महेर] अड़चन डालनेवाला।
महेश–संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव। २. ईश्वर।
महेशी–संज्ञा स्त्री० [सं० महेश] पार्वती।
महेश्वर–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० महेश्वरी] १. ईश्वर। २. परमेश्वर।
महेस*–संज्ञा पुं० दे० "महेश"।
महोखा–संज्ञा पुं० [सं० मधूक] एक पक्षी जो तेज दौड़ता है, पर उड़ नहीं सकता।
महोगनी–संज्ञा पुं० [अ०] एक प्रकार का बहुत बड़ा पेड़ जिसकी लकड़ी बहुत ही अच्छी, दृढ़ और टिकाऊ होती है।
महोच्छव, महोछा*†–संज्ञा पुं० [सं० महोत्सव] बड़ा उत्सव। महोत्सव।
महोत्सव–संज्ञा पुं० [सं०] बड़ा उत्सव।
महोदधि–संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।
महोदय–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० महोदया] १. आधिपत्य। २. स्वर्ग। ३. स्वामी। ४. कान्यकुब्ज देश। ५. महाशय।
महोला*†–संज्ञा पुं० [अ० मुहेल] १. हीला। बहाना। २. धोखा। चकमा।
माँ–संज्ञा स्त्री० [सं० अंबा या माता] जन्म देनेवाली माता।
यौ०—माँ-जाया = सगा भाई। सहोदर।
‡ अव्य० [सं० मध्य] में।
माँखना*†–क्रि० अ० दे० "माखना"।
माँखी*†–संज्ञा स्त्री० दे० "मक्खी"।
माँग–संज्ञा स्त्री० [हिं० माँगना] १. माँगने की क्रिया या भाव। २. बिक्री या खपत आदि के कारण किसी पदार्थ के लिये होनेवाली आवश्यकता या चाह।
संज्ञा स्त्री० [सं० मार्ग ?] सिर के बालों के बीच की रेखा जो बालों को विभक्त करके बनाई जाती है। सीमंत।
मुहा०—माँग-कोख से सुखी रहना या जुड़ाना = स्त्रियों का सौभाग्यवती और संतानवती

रहना। मांग-पट्टी करना = कंघी करना।
मांग-टीका—संज्ञा पु० [हिं० मांग+टीका] स्त्रियों का मांग पर का एक गहना।
मांगन*†—संज्ञा पु० [हिं० मांगना] १ मांगने की क्रिया या भाव। २. भिक्षुक।
मांगना—क्रि० स० [सं० मार्गण=याचना] १. किसी से यह कहना कि तुम अमुक पदार्थ मुझे दो। याचना करना। २ कोई आकांक्षा पूरी करने के लिये कहना।
मांगलिक—वि० [सं०] मंगल करनेवाला। संज्ञा पु० नाटक का वह पात्र जो मंगल-पाठ करता है।
मांगल्य—वि० [सं०] शुभ। मंगल-कारक। संज्ञा पु० मंगल का भाव।
मांचना*†—क्रि० अ० [हिं० मचना] १ आरंभ होना। जारी होना। २ प्रसिद्ध होना।
मांचा†—संज्ञा पु० [सं० मंच] [स्त्री० अल्पा० मांची] १ पलंग। खाट। मंभा। २ छोटी पीढ़ी। ३ मचान।
मांछ†—संज्ञा पु० [सं० मत्स्य] मछली।
मांजना—क्रि० स० [सं० मज्जन] १ किसी वस्तु से रगड़कर मैल छुड़ाना। २ सरेस और शीशे की बुकनी आदि लगाकर पतंग की डोर को दृढ़ करना। मांझा देना। क्रि० अ० अभ्यास करना।
मांजर*†—संज्ञा स्त्री० दे० "पंजर"।
मांजा—संज्ञा पु० [देश०] पहली वर्षा का फेन जो मछलियों के लिये मादक होता है।
मांझ*†—अव्य० [सं० मध्य] में। भीतर। *†संज्ञा पु० अंतर। फरक।
मांझा—संज्ञा पु० [सं० मध्य] १ नदी में का टापू। २ एक प्रकार का आभूषण जो पगड़ी पर पहना जाता है। ३ वृक्ष का तना। ४ वे पीले कपड़े जो वर और कन्या को हलदी चढ़ने पर पहनाए जाते हैं। संज्ञा पु० [हिं० मांजना] पतंग या गुड्डी के डोरे या नख पर चढ़ाया जानेवाला कलफ। संज्ञा पु० दे० "मंझा"।
मांझिल*†—क्रि० वि० [सं० मध्य] बीच का।
मांझी—संज्ञा पु० [सं० मध्य] १ नाव खेने-वाला। केवट। मल्लाह। २. भगड़ा या मामला तै करानेवाला।
मांट*†—संज्ञा पु० [सं० मट्टक] १. मटका। कुंडा। २ घर का ऊपरी भाग। अटारी।
मांठ—संज्ञा पु० [सं० मट्टक] मटका। कुंडा।
मांड—संज्ञा पु० [सं० मंड] पकाए हुए चावलों में से निकला हुआ लसदार पानी। पीच।
मांडना*†—क्रि० स० [सं० मंडन] १ मलना। सानना। गूंधना। २ पोतना। लेपन करना। ३ बनाना। सजाना। ४ अन्न की बाल में से दाने झाड़ना। ५ मचाना।
मांडनी—संज्ञा स्त्री० [सं० मंडन] मगजी। गोट।
मांड्यो*†—संज्ञा पु० [सं० मंडप] १ अतिथि-शाला। २ विवाह का मंडप। मंडवा।
मांडलिक—संज्ञा पु० [सं०] १. वह जो किसी मंडल या प्रांत की रक्षा अथवा शासन करता हो। २ वह छोटा राजा जो किसी बड़े राजा को कर देता हो।
मांडव—संज्ञा पु० [सं० मंडप] विवाह आदि शुभ कृत्यों के लिये छाया हुआ मंडप।
मांडवी—संज्ञा स्त्री० [सं० माण्डवी] राजा जनक के भाई कुशध्वज की कन्या जो भरत को ब्याही थी।
मांडव्य—संज्ञा पु० [सं० माण्डव्य] एक प्राचीन ऋषि जिन्होंने यमराज को शाप दिया था कि तुम शूद्र हो जाओ।
मांडा—संज्ञा पु० [सं० मंड] आंख का एक रोग जिसमें उसके अन्दर महीन झिल्ली सी पड़ जाती है।
संज्ञा पु० [सं० मंडप] मंडप। मंडवा।
संज्ञा पु० [हिं० मांडना=गूंधना] १ मैदे की एक प्रकार की बहुत पतली रोटी। लुचई। २ एक प्रकार की रोटी। परांठा। उलटा।
मांडी—संज्ञा स्त्री० [सं० मंड] १ भात का पसावन। पीच। मांड। २ कपड़े या सूत के ऊपर चढ़ाया जानेवाला कलफ।
मांडूक्य—संज्ञा पु० [सं०] एक उपनिषद्।
मांडो*†—संज्ञा पु० दे० "मांडव"।
मांढा—संज्ञा पु० दे० "मांडव"।

मांत*–वि० [सं० मत्त] उन्मत्त। मस्त। वि० [हिं० मात-मंद] बे-रौनक। उदास।
मांतना*†–क्रि० अ० [सं० मत्त+ना (प्रत्य०)] उन्मत्त होना। पागल होना।
मांता*†–वि० [सं० मत्त] मतवाला।
मांत्रिक–संज्ञा पुं० [सं०] वह जो तंत्र-मंत्र का काम करता हो।
मांद–वि० [सं० मंद] १. बेरौनक। उदास। २. किसी के मुकाबले में खराब या हलका। ३. पराजित। हारा हुआ। मात। संज्ञा स्त्री० [देश०] हिंसक जंतुओं के रहने का विवर। बिल। गुफा। चुर। खोह।
मांदगी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] बीमारी। रोग।
मांदर–संज्ञा पुं० [हिं० मर्दल] मर्दल। (बाजा)
मांदा–वि० [फ़ा० मांदः] १. थका हुआ। २. बचा हुआ। बाक़ी। ३. रोगी।
मांद्य–संज्ञा पुं० [सं०] मद होने का भाव।
मांधाता–संज्ञा पुं० [सं० मांधातृ] एक प्राचीन सूर्यवंशी राजा।
मांपना*†–क्रि० अ० [हिं० मांतना] नशे में चूर होना। उन्मत्त होना।
मांयँ–अव्य० [सं० मध्य] में। बीच। मध्य।
मांस–संज्ञा पुं० [सं०] १. शरीर का वह प्रसिद्ध, मुलायम, लचीला, लाल पदार्थ जो रेशेदार तथा चरबी मिला हुआ होता है। २. कुछ विशिष्ट पशुओं के शरीर का उक्त अंश जो प्रायः खाया जाता है। गोश्त।
मांसपेशी–संज्ञा स्त्री० [सं०] शरीर के अंदर होनेवाला मांस-पिंड।
मांसभक्षी–संज्ञा पुं० दे० "मांसाहारी"।
मांसल–वि० [सं०] [संज्ञा मांसलता] १. मांस से भरा हुआ। मांसपूर्ण। (अंग) २. मोटा-ताजा। पुष्ट। संज्ञा पुं० काव्य में गौड़ी रीति का एक गुण।
मांसाहारी–संज्ञा पुं० [सं० मांसाहारिन्] मांसभक्षी। मांस भोजन करनेवाला।
मांसु*–संज्ञा पुं० दे० "मांस"।
मांह*†–अव्य० [सं० मध्य] में। बीच। अंदर।
मांहा*†–अव्य० दे० "मांह"।
मांहि, मांहीं*†–अव्य० दे० "मांह"।

मा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लक्ष्मी। २. माता। ३ दीप्ति। प्रकाश।
माइँ माईं–संज्ञा स्त्री० [सं० मातृ] छोटा पूआ जिससे विवाह में मातृपूजन किया जाता है।
मुहा०–माइँन में थापना = पितरों के समान आदर करना।
संज्ञा स्त्री० [अनु०] पुत्री। लड़की।
माइ*†–संज्ञा स्त्री० दे० "माई"।
माइका–संज्ञा पुं० दे० "मायका"।
माई–संज्ञा स्त्री० [सं० मातृ] १. माता। माँ।
यौ०—माई का लाल=१. उदार चित्तवाला व्यक्ति। २. वीर। शूर। बली।
२. बूढ़ी या बड़ी स्त्री के लिए संबोधन।
माउल्लहम–संज्ञा पुं० [अ०] हिकमत में मांस का बना हुआ एक प्रकार का पुष्टि-कारक अरक।
माक़ूल–वि० [अ०] १. उचित। वाजिब। ठीक। २. लायक। योग्य। ३. अच्छा। बढ़िया। ४. जिसने वाद-विवाद में प्रतिपक्षी की बात मान ली हो।
माख*–संज्ञा पुं० [सं० मक्ष] १. अप्रसन्नता। नाराजगी। रिस। २. अभिमान। घमंड। ३. पछतावा। ४. अपने दोष को ढकना।
माखन–संज्ञा पुं० दे०, "मक्खन"।
यौ०—माखनचोर=श्रीकृष्ण।
माखना*†–क्रि० अ० [हिं० माख] अप्रसन्न होना। नाराज होना। क्रोध करना।
माखी*†–संज्ञा स्त्री० [सं० मक्षिका] १. मक्खी। २. सोनामक्खी।
मागध–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्राचीन जाति। इस जाति के लोग विरदावली का वर्णन करते है। भाट। २. जरासंध। वि० [सं० मगध] मगध देश का।
मागधी–संज्ञा स्त्री० [सं०] मगध देश की प्राचीन प्राकृत भाषा।
माघ–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह चांद्र मास जो पूस के बाद और फागुन से पहले पड़ता है। २. संस्कृत के एक प्रसिद्ध कवि का नाम। ३. उपर्युक्त कवि का बनाया

हुआ एक प्रसिद्ध काव्यग्रंथ।
संज्ञा पु० [सं० माध्य] कुंद या पुष्प।
माघी–संज्ञा स्त्री० [सं० माघ+ई] माघ मास की पूर्णिमा।
वि० माघ का। जैसे–माघी मिर्च।
माच*†–संज्ञा पु० दे० "मचान"।
माचना*†–क्रि० स० दे० "मचना"।
माचल*†–वि० [हिं० मचलना] १ मचलनेवाला। जिद्दी। हठी। २ मनवाला।
माचा†–संज्ञा पु० [सं० मंच] खाट की तरह की बैठने की पीढ़ी। बड़ी मचिया।
माची–संज्ञा स्त्री० [सं० मंच] छोटा माचा।
माछ†–संज्ञा पु० [सं० मत्स्य] मछली।
माछर*†–संज्ञा पु० दे० "मच्छड़"।
संज्ञा पु० [सं० मत्स्य] मछली।
माछी†–संज्ञा स्त्री० [सं० मक्षिका] मक्खी।
माजरा–संज्ञा पु० [अ०] १ हाल। वृत्तांत। २ घटना।
माजून–संज्ञा स्त्री० [अ०] औषध के रूप में काम आनेवाला कोई मीठा अवलेह।
माजूफल–संज्ञा पु० [फा० माजू+फल] माजू नामक झाड़ी का गोटा या गाद जो औषधि तथा रँगाई के काम में आता है।
माट–संज्ञा पु० [हिं० मटका] १ मिट्टी का वह बरतन जिसमें रँगरेज रंग बनाते हैं। मठोर। २ बड़ी मटकी।
माटी*†–संज्ञा स्त्री० [हिं० मिट्टी] १ दे० "मिट्टी"। २ शव। लाश। ३ शरीर। ४. पृथ्वी नामक तत्त्व। ५ धूल। रज।
माठ–संज्ञा पु० [हिं० मीठा] एक प्रकार की मिठाई।
माडना*†–क्रि० अ० [सं० मंडन] ठानना। मचाना। करना।
क्रि० स० [सं० मंडन] १ मंडित करना। भूषित करना। २ धारण करना। पहनना। ३. आदर करना। पूजना।
क्रि० स० [सं० मर्दन] १ पैर या हाथ से मसलना। मलना। २ घूमना। फिरना।
माढ़ा*†–संज्ञा पु० [सं० मंडप] अटारी पर का चौबारा।
माढ़ी*†–संज्ञा स्त्री० दे० "माड़ी"।
माणवक–संज्ञा पु० [सं०] १. सोलह वर्ष की अवस्थावाला युवक। २ विद्यार्थी। बटु। ३ निंदित या नीच आदमी।
माणिक–संज्ञा पु० दे० "माणिक्य"।
माणिक्य–संज्ञा पु० [सं०] लाल रंग का एक रत्न। लाल। पद्मराग। चुन्नी।
वि० सर्वश्रेष्ठ। परम आदरणीय।
मातंग–संज्ञा पु० [सं०] १ हाथी। २ श्वपच। चांडाल। ३ एक ऋषि जो शबरी के गुरु थे। ४ अश्वत्थ।
मातंगी–संज्ञा स्त्री० [सं०] दस महाविद्याओं में से नवीं महाविद्या। (तंत्र)
मात–संज्ञा स्त्री० दे० "माता"।
संज्ञा स्त्री० [अ०] पराजय। हार।
वि० [अ०] पराजित।
*वि० [सं० मत्त] मदमस्त। मतवाला।
मातदिल–वि० [अ० मोतदिल] जो गुण के विचार से न बहुत ठंडा हो, न बहुत गरम।
मातना*†–क्रि० अ० [सं० मत्त] मस्त होना। मदमत्त होना। नशे में हो जाना।
मातबर–वि० [अ० मोतबिर] विश्वसनीय।
मातबरी–संज्ञा स्त्री० [अ०] विश्वसनीयता।
मातम–संज्ञा पु० [अ०] वह रोना-पीटना आदि जो किसी के मरने पर होता है।
मातमपुर्सी–संज्ञा स्त्री० [फा०] मृतक के संबंधियों को सांत्वना देना।
मातमी–वि० [फा०] शोक-सूचक।
मातलि–संज्ञा पु० [सं०] इंद्र का सारथी।
मातलिसूत–संज्ञा पु० [सं०] इंद्र।
मातहत–वि० [अ०] [संज्ञा मातहती] किसी की अधीनता में काम करनेवाला।
माता–संज्ञा स्त्री० [सं० मातृ] १ जन्म देनेवाली स्त्री। जननी। २ कोई पूज्य या आदरणीय स्त्री। बड़ी स्त्री। ३ गौ। ४ भूमि। ५ लक्ष्मी। ६ शीतला। चेचक।
वि० [सं० मत्त] [स्त्री० माती] मतवाला।
मातामह–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० मातामही] माता का पिता। नाना।
मातु*–संज्ञा स्त्री० [सं० मातृ] माता। माँ।

मातुल-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० मातुला, मातुलानी] १. माता का भाई। मामा। २. धतूरा।
मातुली-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मामा की स्त्री। मामी। २. भाँग।
मातृ-संज्ञा स्त्री० दे० "माता"।
मातृक-वि० [सं०] माता-संबंधी।
मातृका-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दाई। धाय। २. माता। जननी। ३. तांत्रिकों की ये सात देवियाँ—ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, इंद्राणी और चामुंडा।
मातृपूजा-संज्ञा स्त्री० [सं० मातृपूजन] विवाह की एक रीति जिसमें पूर्वों से पितरों का पूजन किया जाता है। मातृकापूजन।
मातृभाषा-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह भाषा जो बालक माता की गोद में रहते हुए बोलना सीखता है। मादरी ज़बान।
मात्र-अव्य० [सं०] केवल। भर। सिर्फ़।
मात्रा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. परिमाण। मिकदार। २. एक बार खाने योग्य औषध। ३. उतना काल जितना एक ह्रस्व अक्षर का उच्चारण करने में लगता है। कल। कला। ४. वह स्वरसूचक रेखा जो अक्षर के ऊपर या आगे-पीछे लगाई जाती है।
मात्रासमक-संज्ञा पुं० [सं०] एक मात्रिक छंद।
मात्रिक-वि० [सं०] १. मात्रा-संबंधी। २. जिसमें मात्राओं की गणना की जाय।
मात्सर्य-संज्ञा पुं० [सं०] ईर्ष्या। डाह।
माथ*†-संज्ञा पुं० दे० "माथा"।
माथा-संज्ञा पुं० [सं० मस्तक] १. सिर का ऊपरी भाग। मस्तक।
मुहा०—माथा ठनकना=पहले से ही किसी दुर्घटना या विपरीत बात के होने की आशंका होना माथे चढ़ाना या धरना = शिरोधार्य करना। सादर स्वीकार करना। माथे पर बल पड़ना= आकृति से क्रोध, दुःख या असंतोष आदि प्रकट होना। माथे मानना=सादर स्वीकार करना।
यौ०—माथा-पच्ची=बहुत अधिक बकना या समझाना। सिर खपाना।
२. किसी पदार्थ का अगला या ऊपरी भाग।
माथुर-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० माथुरानी] १. मथुरा का निवासी। २. ब्राह्मणों की एक जाति। चौबे। ३. कायस्थों की एक जाति।
माथे-क्रि० वि० [हिं० माथा] १. मस्तक पर। सिर पर। २. भरोसे। सहारे पर।
मादक-वि० [सं०] नशा उत्पन्न करने-वाला। जिससे नशा हो। नशीला।
मादकता-संज्ञा स्त्री० [सं०] मादक होने का भाव। नशीलापन।
मादर-संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] माँ। माता।
मादरजाद-वि० [फ़ा०] १. जन्म का। पैदाइशी। २. सहोदर (भाई)। ३. बिलकुल नंगा। दिगम्बर।
मादरिया*-संज्ञा स्त्री० दे० "मादर"।
मादा-संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] स्त्री जाति का प्राणी। नर का उलटा। (जीवजंतु)
माद्दा-संज्ञा पुं० [अ०] १. मूल तत्त्व। २. योग्यता। ३. मवाद। पीब।
माद्री-संज्ञा स्त्री० [सं०] पांडु राजा की पत्नी और नकुल तथा सहदेव की माता।
माधव-संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु। नारायण। २. वैशाख मास। ३. वसंत ऋतु। ४. एक वृत्त। मुक्तहरा।
माधवी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्रसिद्ध लता जिसमें सुगंधित फूल लगते हैं। २. सवैया छंद का एक भेद। ३. एक प्रकार की शराब। ४. तुलसी। ५. दुर्गा। ६. माधव की पत्नी।
माधुरई*-संज्ञा स्त्री० [सं० माधुरी] मधुरता।
माधुरता*-संज्ञा स्त्री दे० "मधुरता"।
माधुरिया*-संज्ञा स्त्री० दे० "माधुरी"।
माधुरी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मिठास। २. शोभा। सुंदरता। ३. मद्य। शराब।
माधुर्य-संज्ञा पुं० [सं०] १. मधुरता। २. सुंदरता। ३. मिठास। मीठापन। ४. पांचाली रीति के अंतर्गत काव्य का एक गुण जिसके द्वारा चित्त बहुत प्रसन्न होता है।
माधैया*-संज्ञा पुं० दे० "माधव"।

माधो—संज्ञा पु० [सं० माधव] १ श्रीकृष्ण। २ श्री रामचन्द्रजी।
माध्यंदिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] शुक्ल यजुर्वेद की एक शाखा का नाम।
माध्यम—वि० [सं०] मध्य का। बीचवाला। संज्ञा पु० कार्यसिद्धि का उपाय या साधन।
माध्यमिक—संज्ञा पु० [सं०] १ बौद्धो का एक भेद। २ मध्य देश।
माध्याकर्षण—संज्ञा पु० [सं०] पृथ्वी के मध्य भाग का वह आकर्षण जो सदा सब पदार्थों को अपनी ओर खींचता रहता है।
माध्व—संज्ञा पु० [सं०] वैष्णवो के चार मुख्य संप्रदायो में से एक जो मध्वाचार्य का चलाया हुआ है।
माध्वी—संज्ञा स्त्री० [सं०] मदिरा। शराब।
मान—संज्ञा पु० [सं०] १ भार, तौल या नाप आदि। परिमाण। मिकदार। २ वह साधन जिसके द्वारा कोई चीज नापी या तौली जाय। पैमाना। ३ अभिमान। शेखी।
मुहा०—मान मथना=गर्व चूर्ण करना।
४ प्रतिष्ठा। इज्जत। सम्मान।
मुहा०—मान रखना=प्रतिष्ठा करना।
यौ०—मान-महत=आदर-सत्कार। प्रतिष्ठा। ५ मन का वह विकार जो अपने प्रिय व्यक्ति को कोई दोष या अपराध करते देखकर होता है। (साहित्य)
मुहा०—मान मनाना=रूठे हुए को मनाना। मान मोरना=मान छोड देना।
६ सामर्थ्य। शक्ति।
मानकंद—संज्ञा पु० [सं० माणक] १ एक प्रकार का मीठा कंद। २ सात्विक मिस्री।
मानकच्चू—संज्ञा पु० दे० 'मानकंद'।
मानक्रीडा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सूदन के अनुसार एक प्रकार का छंद।
मानगृह—संज्ञा पु० [सं०] कोप भवन।
मानचित्र—संज्ञा पु० [सं०] किसी स्थान का बना हुआ नक्शा।
मानता—संज्ञा स्त्री० दे० "मन्नत"।
मानना—क्रि० अ० [सं० मानन] १ अंगीकार करना। स्वीकार करना। २ कल्पना करना। फर्ज करना। समझना। ३ ध्यान में लाना। समझना। ४ ठीक मार्ग पर आना।
क्रि० स० १ स्वीकृत करना। मंजूर करना। २ किसी को पूज्य, आदरणीय या योग्य समझना। आदर करना। ३ पारंगत समझना। उस्ताद समझना। ४ धार्मिक दृष्टि से श्रद्धा या विश्वास करना। ५ देवता आदि की भेंट करने का प्रण करना। मन्नत करना। ६ ध्यान में लाना। समझना।
माननीय—वि० [सं०] [स्त्री० माननीया] जो मान करने के योग्य हो। पूजनीय।
मानमंदिर—संज्ञा पु० [सं०] १ कोपभवन। २ वह स्थान जिसमें ग्रहों आदि का वेध करने के यंत्र तथा सामग्री हो। वेधशाला।
मान मनौती—संज्ञा स्त्री० [हिं० मान + मनौती] १ मन्नत। मनौती। २ रूठन और मनाने की क्रिया।
मानमरोर*†—संज्ञा स्त्री० दे० 'मनमुटाव'।
मानमोचन—संज्ञा पु० [सं०] रूठे हुए प्रिय को मनाना।
मानव—संज्ञा पु० [सं०] १ मनुष्य। आदमी। २ १४ मात्राओं के छंदों की संज्ञा।
मानवशास्त्र—संज्ञा पु० [सं०] वह शास्त्र जिसमें मानवजाति की उत्पत्ति और विकास आदि का विवेचन होता है।
मानवी—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्त्री। नारी। वि० [सं० मानवीय] मानव संबंधी।
मानस—संज्ञा पु० [सं०] १ मन। हृदय। २ मानसरोवर। ३ कामदेव। ४ संकल्प विकल्प। ५ मनुष्य। ६ दूत। वि० १ मन से उत्पन्न। मनोभव। २ मन का विचारा हुआ।
क्रि० वि० मन के द्वारा।
मानसपुत्र—संज्ञा पु० [सं०] पुराणानुसार वह पुत्र जिसकी उत्पत्ति इच्छा मात्र से हो।
मानसर—संज्ञा पु० दे० 'मान सरोवर'।
मान सरोवर—संज्ञा पु० [सं० मानस + सरोवर]

हिमालय के उत्तर की एक प्रसिद्ध बड़ी झील।
मानसशास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] मनोविज्ञान।
मानस हंस—संज्ञा पु० [सं०] एक वृत्त का नाम। मानहंस। रणहंस।
मानसिक—वि० [सं०] १. मन की कल्पना से उत्पन्न। २. मन-संबंधी। मन का।
मानसी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह पूजा जो मन ही मन की जाय। २. एक विद्या देवी। वि० मन का। मन से उत्पन्न।
मानहंस—संज्ञा पुं० [सं०] मनहंस। वृत्त।
मानहानि—संज्ञा स्त्री० [सं०] अप्रतिष्ठा। अपमान। बेइज्जती। हतक इज्जत।
मानहुँ*—अव्य० दे० "मानो"।
माना—संज्ञा पुं० [इब०] एक प्रकार का मीठा रेचक निर्यास।
*†क्रि० स० [सं० मान] १. नापना। तौलना। २. जाँचना।
क्रि० अ० दे० "समाना" या "अमाना"।
मानिंद—वि० [फ़ा०] समान। तुल्य।
मानिक—संज्ञा पु० [सं० माणिक्य] लाल रंग का एक मणि। पद्मराग।
मानिकचंदी—संज्ञा स्त्री० [हिं० मानिकचंद] साधारण छोटी सुपारी।
मानिक रेत—संज्ञा स्त्री० [हिं० मानिक + रेत] मानिक का चूरा जिससे गहने साफ़ करते हैं।
मानित—वि० [सं०] सम्मानित। प्रतिष्ठित।
मानिनी—वि० स्त्री० [सं०] १. मानवती। गर्ववती। २. मान करनेवाली। रुष्टा। संज्ञा स्त्री० साहित्य में वह नायिका जो नायक का दोष देखकर उससे रूठ गई हो।
मानी—वि० [सं० मानिन्] [स्त्री० मानिनी] १. अहंकारी। घमंडी। २. सम्मानित। संज्ञा पुं० वह नायक जो नायिका से अपमानित होकर रूठ गया हो।
संज्ञा स्त्री० [अ०] अर्थ। मतलब। तात्पर्य।
मानुख*—संज्ञा पुं० दे० "मनुष्य"।
मानुष—वि० सं० [स्त्री० मानुषी] मनुष्य का। संज्ञा पुं० [सं०] मनुष्य। आदमी।
मानुषिक—वि० [सं०] मनुष्य का।
मानुषी—वि० [सं० मानुषीय] मनुष्य-संबंधी।
मानुस—संज्ञा पुं० [सं० मानुष] मनुष्य।
मानें—संज्ञा पुं० [अ० मानी] अर्थ। मतलब।
मानो—अव्य० [हिं० मानना] जैसे। गोया।
मान्य—वि० [सं०] [स्त्री० मान्या] १. मानने योग्य। माननीय। २. पूजनीय। पूज्य।
माप—संज्ञा स्त्री० [हिं० मापना] १. मापने की क्रिया या भाव। नाप। २. वह मान जिससे कोई पदार्थ मापा जाय। मान।
मापक—संज्ञा पुं० [सं०] १. मान। माप। पैमाना। २. वह जिससे कुछ मापा जाय। ३. वह जो मापता हो।
मापना—क्रि० स० [सं० मापन] १. किसी पदार्थ के विस्तार या घनत्व आदि का किसी नियत मान से परिमाण करना। नापना। २. किसी पदार्थ का परिमाण जानने के लिये कोई क्रिया करना। नापना। क्रि० अ० [सं० मत्त] मतवाला होना।
माफ़—वि० [अ०] जो क्षमा कर दिया गया हो। क्षमित।
माफ़कत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. अनुकूलता। २. मेल। मैत्री।
माफ़िक†—वि० [अ० मुआफ़िक] १. अनुकूल। अनुसार। २. योग्य।
माफ़ी—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. क्षमा। २. वह भूमि जिसका कर सरकार से माफ़ हो।
यौ०—माफ़ीदार=वह जिसकी भूमि की मालगुज़ारी सरकार ने माफ़ की हो।
माम*‡—संज्ञा पुं० [सं० माम्] १. ममता। अहंकार। २. शक्ति। अधिकार।
मामता—संज्ञा स्त्री० [सं० ममता] १. अपनापन। आत्मीयता। २. प्रेम। मुहब्बत।
मामलत, मामलति*†—संज्ञा स्त्री० [अ० मुआमिलत] १. मामला। व्यवहार की बात। २. विवादास्पद विषय।
मामला—संज्ञा पुं० [अ० मुआमिला] १. व्यापार। काम। धंधा। उद्यम। २. पारस्परिक व्यवहार। ३. व्यावहारिक, व्यापारिक या विवादास्पद विषय। ४. झगड़ा। विवाद। ५. मुकदमा।

मामा–संज्ञा पुं० [अनु०] [स्त्री० मामी] माता का भाई। माँ का भाई।
संज्ञा स्त्री० [फा०] १ माता। माँ। २ रोटी पकानेवाली स्त्री। ३ नौकरानी।
मामी–संज्ञा स्त्री० [स० मा=निषेधार्थक] अपने दोष पर ध्यान न देना।
मुहा०—मामी पीना=मुकर जाना।
मामूल–संज्ञा पुं० [अ०] रीति। रवाज।
मामूली–वि० [अ०] १ नियमित। नियत। २ सामान्य। साधारण।
माय*†–संज्ञा स्त्री० [स० मातृ] १ माता। माँ। जननी। २ बड़ी या आदरणीय स्त्री।
संज्ञा स्त्री० दे० "माया"।
अव्य० [स० मध्य] दे० 'माहिं'।
मायक–संज्ञा पुं० दे० 'मायावी'।
मायका–संज्ञा पुं० [स० मातृ] स्त्री के लिये उसके माता पिता का घर। नैहर। पीहर।
मायन*†–संज्ञा पुं० [स० मातृका+आनयन] १ वह दिन या तिथि जिसमें विवाह में मातृका-पूजन और पितृ निमंत्रण होता है। २ उपर्युक्त दिन का कृत्य।
मायनी†–संज्ञा स्त्री० दे० 'मायाविनी'।
मायल–वि० [फा] १ झुका हुआ। रुजू। प्रवृत्त। २ मिश्रित। मिला हुआ। (रंग)
माया–संज्ञा स्त्री० [स०] १ लक्ष्मी। २ द्रव्य। धन। संपत्ति। दौलत। ३ अविद्या। अज्ञानता। भ्रम। ४ छल, कपट। धोखा। ५ सृष्टि की उत्पत्ति का मुख्य कारण। प्रकृति। ६ ईश्वर की वह कल्पित शक्ति जो उसकी आज्ञा से सब काम करती हुई मानी गई है। ७ इंद्रजाल। जादू। ८ इंद्रवज्रा नामक वर्णवृत्त का एक उपभेद। ९ एक वर्ण-वृत्त। १० मय दानव की कन्या जिससे खर, दूषण, त्रिशिरा और शूर्पनखा पैदा हुए थे। ११ किसी देवता की माई लीला, शक्ति या प्रेरणा। १२ दुर्गा। १३ बुद्धदेव (गौतम) की माता का नाम।
†संज्ञा स्त्री० [हिं० माता] माँ। जननी।
*†संज्ञा स्त्री० [हिं० ममता] १ किसी को अपना समझने का भाव। ममत्व। २ कृपा। दया। अनुग्रह।
मायादेवी–संज्ञा स्त्री० [स०] बुद्ध की माता का नाम।
मायावाद–संज्ञा पुं० [स०] ईश्वर के अतिरिक्त सृष्टि की समस्त वस्तुओं को अनित्य और असत्य मानने का सिद्धांत।
मायावादी–संज्ञा पुं० [स० मायावादिन्] वह जो सारी सृष्टि को माया या भ्रम समझे।
मायाविनी–संज्ञा स्त्री० [स०] छल या कपट करनेवाली स्त्री। ठगिनी।
मायावी–संज्ञा पुं० [स० मायाविन्] [स्त्री० मायाविनी] १ बहुत बड़ा चालाक। धोखे-बाज। फरेबी। २ एक दानव जो मय का पुत्र था। परमात्मा। ३ जादूगर।
मायास्त्र–संज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का कल्पित अस्त्र। कहते हैं कि इसका प्रयोग विश्वामित्र ने श्रीरामचन्द्रजी को सिखाया था।
मायिक–वि० [स०] १ माया से बना हुआ। बनावटी। जाली। २ मायावी।
मार–संज्ञा पुं० [स०] १ कामदेव। २ विष। जहर। ३ धतूरा।
संज्ञा स्त्री० [हिं० मारना] १ मारने की क्रिया या भाव। २ आघात। चोट। ३ निशाना। ४ मार-पीट।
अव्य० [हिं० मारना] अत्यंत। बहुत।
*†संज्ञा स्त्री० [हिं० माला] माला।
मारकंडेय–सं० पुं० दे० 'मार्कंडेय'।
मारक–वि० [स०] १ मार डालनेवाला। संहारक। २ किसी के प्रभाव आदि को नष्ट करनेवाला।
मारका–संज्ञा पुं० [अ० मार्क] १ चिह्न। निशान। २ विशेषता-सूचक चिह्न।
संज्ञा पुं० [अ०] १ युद्ध। लड़ाई। २ बहुत बड़ी या महत्वपूर्ण घटना।
मार-काट–संज्ञा स्त्री० [हिं० मारना+काटना] १ युद्ध। लड़ाई। जंग। २ मारने काटने का काम या भाव।
मारकीन–संज्ञा पुं० [अ० नैनकिन्] एक प्रकार का मोटा कोरा कपड़ा।

मारग*|—संज्ञा पुं० [सं० मार्ग] रास्ता।
मुहा०—मारग मारना = रास्ते में पथिक को लूट लेना। मारग लगना = रास्ता लेना।
मारगन—संज्ञा पुं० [सं० मार्गण] १. वाण। तीर। २. भिक्षुक। भिखमंगा।
मारण—संज्ञा पुं० [सं०] १. मार डालना। हत्या करना। २. एक कल्पित तांत्रिक प्रयोग। प्रसिद्ध है कि जिस मनुष्य के मारने के लिये यह प्रयोग किया जाता है, वह मर जाता है।
मारतंड—संज्ञा पुं० दे० "मार्तंड"।
मारना—क्रि० स० [सं० मारण] १. वध करना। हनन करना। प्राण लेना। २. पीटना या आघात पहुँचाना। ३. ज़रब लगाना। ४. दुःख देना। सताना। ५. कुश्ती या मल्लयुद्ध में विपक्षी को पछाड़ देना। ६. बंद कर देना। ७. शस्त्र आदि चलाना। फेंकना।
मुहा०—गोली मारना = १. किसी पर बंदूक चलाना या छोड़ना। २. जाने देना।
८. किसी शारीरिक आवेग या मनोविकार आदि को रोकना। ९. नष्ट कर देना। न रहने देना। १०. शिकार करना। आखेट करना। ११. गुप्त रखना। छिपाना। १२. चलाना। संचालित करना।
मुहा०—कुछ पढ़कर मारना = मंत्र से फूंककर कोई चीज़ किसी पर फेंकना। जादू मारना = जादू का प्रयोग करना। मंत्र मारना = जादू करना।
१३. धातु आदि को जलाकर उसकी भस्म तैयार करना। १४. बिना परिश्रम के अथवा बहुत अधिक प्राप्ति करना। १५. विजय प्राप्त करना। जीतना। १६ अनुचित रूप से रख लेना। १७. बल या प्रभाव कम करना। १८ निर्जीव सा कर देना। १९. लगाना। देना।
मारपेच—संज्ञा पुं० [हिं० मारना+पेच] धूर्तता। चालबाज़ी।
मारफ़त—अव्य० [अ०] द्वारा। ज़रिये से।
मारवाड़—संज्ञा पुं० [हिं० मेवाड़] १. मेवाड़ राज्य। दे० "मेवाड़"। २. राजपूताने में मेवाड़ के आस-पास का प्रांत।
मारवाड़ी—संज्ञा पुं० [हिं० मारवाड़] [स्त्री० मारवाड़िन] मारवाड़ देश का निवासी। संज्ञा स्त्री० मारवाड़ देश की भाषा। वि० [हिं० मारना] मारवाड़ देश का।
मारा*—वि० [हिं० मारना] जो मार डाला गया हो। मारा हुआ। निहत।
मुहा०—मारा फिरना, मारा मारा फिरना = बुरी दशा में इधर-उधर घूमना।
मारामार—क्रि० वि० [हिं० मारना] अत्यंत शीघ्रता से। बहुत जल्दी।
मारिच*—संज्ञा पुं० दे० "मारीच"।
मारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० मारना] महामारी।
मारीच—संज्ञा पुं० [सं०] वह राक्षस जिसने सोने का हिरन बनकर रामचन्द्र को धोखा दिया था।
मारुत—संज्ञा पुं० [सं०] वायु। हवा।
मारुति—संज्ञा पुं० [सं०] १. हनुमान। २. भीम।
मारू—संज्ञा पुं० [हिं० मारना] १. एक राग जो युद्ध के समय बजाया और गाया जाता है। २. बहुत बड़ा डंका या धौंसा। संज्ञा पुं० [सं० मरुभूमि] मरुदेश-निवासी। वि० [हिं० मारना] १. मारनेवाला। २. हृदयवेधक। कटीला।
मारे—अव्य० [हिं० मारना] वजह से।
मार्कंडेय—संज्ञा पुं० [सं०] मृकंड ऋषि के पुत्र। कहते हैं कि ये अपने तपोबल से सदा जीवित रहते हैं और रहेंगे।
मार्का—संज्ञा पुं० दे० "मारका"।
मार्ग—संज्ञा पुं० [सं०] १. रास्ता। पंथ। २. अगहन का महीना। ३. मृगशिरा नक्षत्र।
मार्गण—संज्ञा पुं० [सं०] अन्वेषण। ढूँढ़ना।
मार्गन*—संज्ञा पुं० [सं० मार्गण] बाण।
मार्गशीर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] अगहन मास। कार्तिक के बाद का महीना।
मार्गी—संज्ञा पुं० [सं० मार्गिन्] मार्ग पर चलनेवाला व्यक्ति। यात्री। बटोही।

मार्जन–संज्ञा पु० दे० "मार्जना"।
मार्जना–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० मार्जनीय] १ सफाई। २ क्षमा। माफी।
मार्जनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] भाड़ू।
मार्जार–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० मार्जारी] बिल्ली।
मार्जित–वि० [सं०] साफ किया हुआ।
मार्तंड–संज्ञा पु० [सं०] सूर्य।
मार्दव–संज्ञा पु० [सं०] १ अहंकार का त्याग। २ दूसरे को दुखी देखकर दुखी होना। ३ सरलता।
मार्फत–अव्य० [अ०] द्वारा। जरिए से।
मार्मिक–वि० [सं०] जिसका प्रभाव मर्म पर पडे। विशेष प्रभावशाली।
मार्मिकता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मार्मिक होने का भाव। २ पूर्ण अभिज्ञता।
माल*–संज्ञा पु० [सं० मल्ल] पहलवान। कुश्ती लडनेवाला।
†संज्ञा स्त्री० [सं० माला] १ माला। हार। २ वह रस्सी या सूत की डोरी जो चरखे में टकुए को घुमाती है। ३ पंक्ति। पाँती।
संज्ञा पु० [अ०] १ संपत्ति। धन।
मुहा०—माल चीरना या मारना = पराया धन हड़पना। दूसरे की संपत्ति दबा बैठना।
२ सामग्री। सामान। असबाब।
यौ०—माल-टाल = धन-संपत्ति। माल-मता = माल-असबाब।
३ क्रय विक्रय का पदार्थ। ४ वह धन जो कर में मिलता है। ५ फसल की उपज। ६ उत्तम और सुस्वादु भोजन। ७ गणित में वर्ग का घात। वर्ग अंक। ८ वह द्रव्य जिससे कोई चीज बनी हो।
मालकँगनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० माल ?+कँगुनी] एक लता जिसके बीजों से तेल निकलता है।
मालकोश–संज्ञा पु० [सं०] संपूर्ण जाति का एक राग। कौशिक राग। हनुमत् ने इसे छः रागों में अंतर्गत माना है।
मालखाना–संज्ञा पु० [फा०] वह स्थान जहाँ माल-असबाब रहता हो। भंडार।
माल-गाड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० माल+गाड़ी] रेल में वह गाड़ी जिसमें केवल माल लादा जाता है।
मालगुजार–संज्ञा पु० [फा०] मालगुजारी देनेवाला पुरुष।
मालगुजारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १ वह भूमि-कर जो जमींदार से सरकार लेती है। २ लगान।
माल-गोदाम–संज्ञा पु० [हिं० माल + गोदाम] स्टेशन पर वह स्थान जहाँ पर रेल से आया हुआ माल रखा जाता है।
मालती–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक प्रसिद्ध लता जो बड़े वृक्षों पर घटाटोप फैलती है। २ छः अक्षरों की एक वर्णवृत्ति। ३ बारह अक्षरों की एक वर्णिक वृत्ति। ४ सवैया का मत्तगयंद नामक भेद। ५ चाँदनी। ज्योत्स्ना। ६ रात्रि। रात।
मालदार–वि० [फा०] धनी। संपन्न।
मालद्वीप–संज्ञा पु० [सं० मलयद्वीप] भारत-वर्ष के पश्चिम ओर का एक द्वीपपुंज।
मालपूआ–संज्ञा पु० [सं० पूप] पूरी की तरह का एक प्रसिद्ध मीठा पकवान।
मालव–संज्ञा पु० [सं०] १ मालवा देश। २ एक राग जिसे भैरव भी कहते हैं। ३ मालव देश-वासी या मालव का पुरुष। वि० मालव देश-सम्बन्धी। मालवे का।
मालवा–संज्ञा पु० [सं० मालव] एक प्राचीन देश जो अब मध्य भारत में है।
मालवीय–वि० [सं०] १ मालवे का। २ मालव देश का निवासी।
माला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पंक्ति। अवली। २ फूलों का हार। गजरा।
मुहा०—माला फेरना = जपना। भजना।
३ समूह। झुंड। ४ दूब। ५ उपजाति छंद का एक भेद।
मालादीपक–संज्ञा पु० [सं०] एक अलंकार जिसमें पूर्व-कथित वस्तु को उत्तरोत्तर वस्तु के उत्कर्ष का हेतु बतलाया जाता है।
मालाधर–संज्ञा पु० [सं०] सत्रह अक्षरों का एक वर्णिक वृत्त।

मालामाल–वि० [फ़ा०] बहुत संपन्न।
मालिक–संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० मालिका] १. ईश्वर। अधिपति। २. स्वामी। ३. पति। शौहर।
मालिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पंक्ति। २. माला। ३. मालिन।
मालिकाना–संज्ञा पुं० [फ़ा०] स्वामी का अधिकार या स्वत्व। मिल्कियत। स्वामित्व। क्रि० वि० मालिक की तरह।
मालिकी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० मालिक] १. मालिक होने का भाव। २. मालिक का स्वत्व।
मालिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मालिन। २. चंपा नगरी का एक नाम। ३. स्कंद की सात माताओं में से एक। ४. गौरी। ५. एक वर्णिक वृत्त। ६. मदिरा नाम की एक वृत्ति।
मालिन्य–संज्ञा पुं० [सं०] मलिनता। मैलापन।
मालियत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. कीमत। मूल्य। २. संपत्ति। ३. कीमती चीज।
मालिवान*–संज्ञा पु० दे० "माल्यवान्"।
मालिश–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] मलने का भाव या क्रिया। मलाई। मर्दन।
माली–संज्ञा पु०[स० मालिक][स्त्री० मालिन, मालन, मालिनी] १. बाग को सींचने और पौधों को ठीक स्थान पर लगानेवाला पुरुष। २. एक छोटी जाति। इस जाति के लोग बागों में फूल और फल के वृक्ष लगाते हैं।
वि० [सं० मालिन्] [स्त्री० मालिनी] जो माला धारण किए हो। माला पहने हुए।
संज्ञा पु० १. एक राक्षस जो माल्यवान् और सुमाली का भाई था। २. राजीवगण नामक छंद।
वि० [फ़ा०] आर्थिक। धन-संबंधी।
मालीदा–संज्ञा पुं० [फा०] १. मलीदा। चूरमा। २. एक प्रकार का बहुत कोमल और गरम ऊनी कपड़ा।
मालूम–वि० [अ०] जाना हुआ। ज्ञात।
मालोपमा–संज्ञा स्त्री० [सं०] का उपमालंकार जिसमें एक अनेक उपमान होते हैं और प्रत्येक के भिन्न भिन्न धर्म्म होते हैं।
माल्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. फूल। २. माला।
माल्यवंत–संज्ञा पुं० दे० "माल्यवान्"।
माल्यवान्–संज्ञा पुं० [सं०] १. पुराणानुसार एक पर्वत का नाम। २. एक राक्षस जो सुकेश का पुत्र था।
मावत*†–संज्ञा पुं० दे० "महावत"।
मावली–संज्ञा पु० [देश०] दक्षिण भारत की एक पहाड़ी वीर जाति का नाम।
मावस*–संज्ञा स्त्री० दे० "अमावस"।
मावा–संज्ञा पुं० [सं० मंड] १. मांड़। पीच। २. सत्त। निष्कर्ष। ३. प्रकृति। ४. खोया।
माशा–संज्ञा पुं० [सं० माष] ८ रत्ती का एक बाट या मान।
माशी–संज्ञा पुं० [हि० माष=उड़द] एक रंग जो कालापन लिए हरा होता है। वि० कालापन लिए हरे रंग का।
माष–संज्ञा पुं० [सं०] १. उड़द। २. माशा। ३. शरीर के ऊपर का काले रंग का मसा।
*संज्ञा स्त्री० दे० "माख"।
माषपर्णी–संज्ञा स्त्री० [सं०] जंगली उड़द।
मास–संज्ञा पुं० [सं०] काल का एक विभाग जो वर्ष के बारहवें भाग के बराबर या प्रायः ३० दिनों का होता है। महीना।
*संज्ञा पुं० दे० "मांस"।
मासना*†–क्रि० अ० [सं० मिश्रण] मिलना। क्रि० स० मिलाना।
मासांत–संज्ञा पु० [सं०] १. महीने का अंत। २. अमावस्या। ३. संक्रांति।
मासा–संज्ञा पु० दे० "माशा"।
मासिक–वि० [सं०] १. मास-संबंधी। महीने का। २. महीने में एक बार होनेवाला।
मासी–संज्ञा स्त्री० [सं० मातृष्वसा] माँ की

...हन। मौसी।

माहँ*–अव्य० [सं० मध्य] बीच। में।

माह*†–संज्ञा पुं० [सं० माघ] माघ मास। संज्ञा पुं० [सं० माष] माष। उड़द। संज्ञा पुं० [फा०] मास। महीना।

माहत*–संज्ञा स्त्री० [सं० महत्ता] महत्त्व।

माहताब–संज्ञा पुं० [फा०] चंद्रमा।

माहताबी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १ दे० "महताबी"। २ एक प्रकार का कपड़ा।

माहना*–क्रि० अ० दे० "उमाहना"।

माहली–संज्ञा पुं० [हिं० महल] १ अंतःपुर में जानेवाला सेवक। महली खोजा। २ सेवक। दास।

माहवार–क्रि० वि० [फा०] प्रति मास। वि० हर महीने का। मासिक।

माहवारी–वि० [फा०] हर महीने का।

माहाँ†–अव्य० दे० "महँ"।

माहात्म्य–संज्ञा पुं० [सं०] १ महिमा। गौरव। महत्त्व। बड़ाई। २ आदर। मान।

माहिँ*–अव्य० [सं० मध्य] १ भीतर। अंदर। २ अधिकरण कारक का चिह्न। 'में' या 'पर'।

माहिला*†–संज्ञा पुं० [अ० मल्लाह] माँझी।

माहिष्मती–संज्ञा स्त्री० [सं०] दक्षिण देश का एक प्रसिद्ध प्राचीन नगर।

माहीँ*–अव्य० दे० "माँहि"।

माही–संज्ञा स्त्री० [फा०] मछली।

माही मरातिब–संज्ञा पुं० [फा०] राजाओं के आगे हाथी पर चलनेवाले सात झंडे जिन पर मछली और ग्रहों आदि की आकृतियाँ बनी होती हैं।

माहुर–संज्ञा पुं० [सं० मधुर] विष। जहर।

माहेंद्र–संज्ञा पुं० [सं०] एक अस्त्र का नाम।

माहेश्वर–वि० [सं०] महेश्वर संबंधी। संज्ञा पुं० १ एक यज्ञ का नाम। २ एक उपपुराण का नाम। ३ पाणिनि के वे चौदह सूत्र जिनमें स्वर और व्यंजन वर्णों का संग्रह प्रत्याहारार्थ किया गया है। ४ शैव संप्रदाय का एक भेद। ५ एक अस्त्र।

माहेश्वरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दुर्गा। २ एक मातृका। ३ वैश्यों की एक जाति।

मिंड़ाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० मींड़ना] १ मींड़ने या मींजने की क्रिया या भाव। २ मींड़ने की मजदूरी। ३ देशी छींट की छपाई में एक क्रिया जिससे छींट का रंग पक्का और चमकदार हो जाता है।

मिक़दार–संज्ञा स्त्री० [अ०] परिमाण। मात्रा।

मिचकना†–क्रि० अ० [हिं० मिचना] (आँखों का) बार बार खुलना और बंद होना।

मिचकाना†–क्रि० स० [हिं० मिचना] बार बार (आँखें) खोलना और बंद करना।

मिचना–क्रि० अ० [हिं० मींचना का अक० रूप] (आँखों का) बंद होना।

मिचलाना–क्रि० अ० [हिं० मतलाना] कै आने को होना। मतली आना।

मिछा*†–वि० दे० "मिथ्या"।

मिजराब–संज्ञा स्त्री० [अ०] तार का एक प्रकार का छल्ला जिससे सितार आदि बजाते हैं। डंका। नाखुना।

मिज़ाज–संज्ञा पुं० [अ०] १ किसी पदार्थ का वह मूल गुण जो सदा बना रहे। तासीर। २ प्रवृत्ति। स्वभाव। प्रकृति। ३ शरीर या मन की दशा। तबीयत। दिल। मुहा०–मिज़ाज खराब होना=१ मन में अप्रसन्नता आदि उत्पन्न होना। २ अस्वस्थता होना। मिज़ाज बिगाड़ना=किसी के मन में क्रोध आदि मनोविकार उत्पन्न करना। मिज़ाज पाना=१ किसी के स्वभाव से परिचित होना। २ किसी को अनुकूल या प्रसन्न देखना। मिज़ाज पूछना=यह पूछना कि आपका शरीर तो अच्छा है। ४ अभिमान। घमंड। शेखी। मुहा०–मिज़ाज न मिलना=घमंड के कारण किसी से बात न करना।

मिज़ाजदार–वि० [अ० मिज़ाज+फा० दार (प्रत्य०)] जिसे बहुत अभिमान हो। घमंडी।

मिज़ाज शरीफ़?–[अ०] आप अच्छे तो हैं? आप सकुशल तो हैं?

मिटना–क्रि० अ० [सं० मृष्ट] १ किसी

अंकित चिह्न आदि का न रह जाना। २. खराब या नष्ट हो जाना। न रह जाना।

मिटाना–क्रि० स० [हिं० मिटना का सक० रूप] १. रेखा, दाग़, चिह्न आदि दूर करना। २. नष्ट करना। ३. खराब करना।

मिट्टी–संज्ञा स्त्री० [सं० मृत्तिका] १. पृथ्वी। भूमि। जमीन। २. वह भुरभुरा पदार्थ जो पृथ्वी के ऊपरी तल की प्रधान वस्तु है। खाक। धूल।

मुहा०—मिट्टी करना=नष्ट करना। खराब करना। मिट्टी के मोल=बहुत सस्ता। मिट्टी डालना=१. किसी बात को जाने देना। २. किसी के दोष को छिपाना। मिट्टी देना=१. मुसलमानों में किसी के मरने पर सब लोगों का उसकी क़ब्र में तीन-तीन मुट्ठी मिट्टी डालना। २. क़ब्र में गाड़ना। मिट्टी में मिलना=१. नष्ट होना। चौपट होना। २. मरना।

यौ०—मिट्टी का पुतला=मानव शरीर। मिट्टी खराबी=१. दुर्दशा। २. बरबादी। नाश। ३. राख। भस्म। ४. शरीर। बदन।

मुहा०—मिट्टी पलीद या बरबाद करना= दुर्दशा करना। खराबी करना।

५. शव। लाश। ६. शारीरिक गठन। बदन की बनावट। ७. चंदन की जमीन जो इत्र में दी जाती है।

मिट्टी का तेल–संज्ञा पुं० [हिं० मिट्टी + तेल] एक प्रसिद्ध खनिज तरल पदार्थ जिसका व्यवहार प्रायः दीपक आदि जलाने के लिये होता है।

मिट्ठी–संज्ञा स्त्री० [हिं० मीठा] चुबन। चुमा।

मिट्ठू–संज्ञा पुं० [हिं० मीठा + ऊ (प्रत्य०)] १. मीठा बोलनेवाला। २. तोता। वि० १. चुप रहनेवाला। न बोलनेवाला। २. प्रिय बोलनेवाला।

मिठ–वि० [हिं० मीठा] मीठा का संक्षिप्त रूप। (यौगिक में) जैसे—मिठबोला।

मिठबोला–संज्ञा पुं० [हिं० मीठा + बोलना] १. मधुर-भाषी। २. वह जो मन में कपट रखकर ऊपर से मीठी बातें करता हो।

मिठलोना–संज्ञा पुं० [हिं० मीठा=कम + नोन] थोड़े नमकवाला।

मिठाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० मीठा + आई (प्रत्य०)] १. मिठास। माधुरी। २. कोई मीठी खाने की चीज। ३. कोई अच्छा पदार्थ।

मिठास–संज्ञा स्त्री० [हिं० मीठा + आस (प्रत्य०)] मीठे होने का भाव। मीठापन। माधुर्य।

मितंग*–संज्ञा पुं० [सं० मितंगम] हाथी।

मित–वि० [सं०] १. जो सीमा के अंदर हो। परिमित। २. थोड़ा। कम।

मितभाषी–संज्ञा पुं० [सं० मितभाषिन्] कम या थोड़ा बोलनेवाला।

मितव्यय–संज्ञा पुं० [सं०] कम खर्च करना। किफायत।

मितव्ययता–संज्ञा स्त्री० [सं०] कम खर्च करने का भाव।

मितव्ययी–संज्ञा पुं० [सं० मितव्ययिन्] वह जो कम खर्च करता हो।

मिताई*–संज्ञा स्त्री० दे० "मित्रता"।

मिताक्षरा–संज्ञा स्त्री० [सं०] याज्ञवल्क्य स्मृति की विज्ञानेश्वर कृत टीका।

मितार्थ–संज्ञा पुं० [सं०] वह दूत जो थोड़ी बातें कहकर अपना काम पूरा करे।

मिति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मान। परिमाण। २. सीमा। हद। ३. काल की अवधि।

मिती–संज्ञा स्त्री० [सं० मिति] १. देशी महीने की तिथि या तारीख।

मुहा०—मिती पुगना या पूजना=हुंडी का नियत समय पूरा होना।

२. दिन। दिवस।

मित्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो अपना साथी, सहायक और शुभचिंतक हो। बंधु। सखा। दोस्त। २. सूर्य का एक नाम। ३. बारह आदित्यों में से पहला। ४. पुराणानुसार मरुद्गण में से पहला। ५. आर्यों के एक प्राचीन देवता। ६. भारतवर्ष का एक प्रसिद्ध प्राचीन राजवंश जिसका राज्य उदंबर और पांचाल आदि में था।

मित्रता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मित्र होने का भाव। दोस्ती। २. मित्र का धर्म।

मित्रत्व–संज्ञा पु० दे० "मित्रता"।
मित्रा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मित्र नामक देवता की स्त्री। २ शत्रुघ्न की माता सुमित्रा।
मित्राई*†–संज्ञा स्त्री० दे० "मित्रता"।
मित्राक्षर–संज्ञा पु० [सं०] छंद के रूप में बना हुआ पद।
मित्रावरुण–संज्ञा पु० [सं०] मित्र और वरुण नामक देवता।
मिथिला–संज्ञा स्त्री० [सं०] वर्तमान तिरहुत का प्राचीन नाम।
मिथुन–संज्ञा पु० [सं०] १ स्त्री और पुरुष का जोड़ा। २ संयोग। समागम। ३ मेष आदि राशियों में से तीसरी राशि।
मिथ्या–वि० [सं०] असत्य। झूठ।
मिथ्यात्व–संज्ञा पु० [सं०] १ मिथ्या होने का भाव। २ माया।
मिथ्याध्यवसिति–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें कोई एक असंभव या मिथ्या बात निश्चित करके तब कोई दूसरी बात कही जाती है।
मिथ्यायोग–संज्ञा पु० [सं०] वह कार्य्य जो रूप रस या प्रकृति आदि के विरुद्ध हो। (वैद्यक)
मिथ्यावादी–संज्ञा पु० [सं० मिथ्यावादिन्] [स्त्री०मिथ्यावादिनी] वह जो झूठ बोलता हो। झूठा।
मिथ्याहार–संज्ञा पु० [सं०] अनुचित या प्रकृति के विरुद्ध भोजन करना।
मिनती†–संज्ञा स्त्री० दे० 'विनति'।
मिनहा–वि० [अ०] जो काट या घटा लिया गया हो। मुजरा किया हुआ।
मिन्नत–संज्ञा स्त्री०[अ०] प्रार्थना। निवेदन।
मिमियाई†–संज्ञा स्त्री० दे० "मोमियाई"।
मिमियाना–क्रि० अ० [मिन मिन से अनु०] भेंड या बकरी का बोलना।
मियाँ–संज्ञा पु० [फा०] १ स्वामी। मालिक। २ पति। खसम। ३ महाशय। (मुसल०) ४ मुसल्मान।
मियाँमिट्ठू–संज्ञा पु० [हिं० मियाँ + मिट्ठू] १. मीठी बोली बोलनेवाला। मधुर-भाषी। मुहा०—अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना = अपने मुँह अपनी प्रशंसा करना। २ तोता। ३ मूर्ख। बेवकूफ।
मियान–संज्ञा स्त्री० दे० "म्यान"।
मियाना–वि० [फा०] मध्यम आकार का। संज्ञा पु० एक प्रकार की पालकी।
मिरग*†–संज्ञा पु० [सं० मृग] मृग। हरिन।
मिरगी–संज्ञा स्त्री० [सं० मृगी] एक प्रसिद्ध मानसिक रोग जिसमें रोगी प्रायः मूर्छित होकर गिर पड़ता है। अपस्मार रोग।
मिरचा–संज्ञा पु० [सं० मरिच] लाल मिर्च।
मिरजई–संज्ञा स्त्री० [फा० मिरज़ा] कमर तक का एक प्रकार का बंददार अंगा।
मिरजा–संज्ञा पु० [फा] १ मीर या अमीर का लड़का। अमीरज़ादा। २ राजकुमार। कुँवर। ३ मुगलों की एक उपाधि।
मिर्च–संज्ञा स्त्री० [सं० मरिच] १ कुछ प्रसिद्ध तिक्त फलों और फलियों का एक वर्ग जिसके अंतर्गत काली मिर्च, लाल मिर्च आदि हैं। २ इस वर्ग की एक प्रसिद्ध तिक्त फली जिसका व्यवहार व्यंजनों में मसाले के रूप में होता है। लाल मिर्च। मिरचा। ३ एक प्रसिद्ध तिक्त, काला, छोटा दाना जिसका व्यवहार व्यंजनों में मसाले के रूप में होता है। गोल मिर्च।
मिलक†–संज्ञा स्त्री० [अ०मिल्क] १ जमीन-जायदाद। ज़मींदारी। २ जागीर।
मिलकी†–संज्ञा स्त्री०[हिं०मिलक+ई(प्रत्य०)] १ जमींदार। २ दौलतमंद। अमीर।
मिलन–संज्ञा पु० [सं०] १ मिलने की क्रिया या भाव। मिलाप। भेंट। २ मिश्रण। मिलावट।
मिलनसार–वि०[हिं०मिलन+सार(प्रत्य०)] [संज्ञा मिलनसारी] सद्व्यवहार रखनेवाला और सुशील।
मिलना–क्रि० स० [सं० मिलन] १ सम्मिलित होना। मिश्रित होना। २ दो भिन्न भिन्न पदार्थों का एक होना। ३ समूह या समुदाय के भीतर होना।

यौ०—मिला-जुला = १. सम्मिलित। २. मिश्रित।
४. सटना। जुड़ना। चिपकना। ५. बिलकुल या बहुत कुछ बराबर होना। ६. आलिंगन करना। गले लगाना। ७. भेंट होना। मुलाक़ात होना। ८. मेल-मिलाप होना। ९. लाभ होना। नफ़ा होना। १०. प्राप्त होना।

मिलनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० मिलना + ई (प्रत्य०)] विवाह की एक रस्म। इसमें कन्या-पक्ष के लोग वर-पक्ष के लोगों से गले मिलते और उन्हें कुछ नकद देते हैं।

मिलवाना—क्रि० स० [हिं० मिलाना का प्रेर० रूप] मिलने का काम दूसरे से कराना।
संज्ञा स्त्री० [हिं० मिलाना + ई (प्रत्य०)] १. मिलाने की क्रिया या भाव। २. विवाह की मिलनी नामक रस्म।

मिलान—संज्ञा पु० [हिं० मिलाना] १. मिलाने की क्रिया या भाव। २. तुलना। मुकाबला। ३. ठीक होने की जाँच।

मिलाना—क्रि० स० [सं० मिलन] १. मिश्रण करना। २. दो भिन्न-भिन्न पदार्थों को एक करना। ३. सम्मिलित करना। एक करना। ४. सटाना। जोड़ना। चिपकाना। ५. तुलना करना। मुकाबला करना। ६. ठीक होने की जाँच करना। ७. भेंट या परिचय कराना। ८. सुलह या संधि कराना। ९. अपना भेदिया या साथी बनाना। साँटना। १०. बजाने से पहले बाजों का सुर ठीक करना।

मिलाप—संज्ञा पु० [हिं० मिलना + आप (प्रत्य०)] १. मिलने की क्रिया या भाव। २. मित्रता। ३. भेंट। मुलाक़ात।

मिलावट—संज्ञा स्त्री० [हिं० मिलाना + आवट (प्रत्य०)] १. मिलाये जाने का भाव। २. बढ़िया चीज़ में घटिया चीज़ का मेल। खोट।

मिलिक*†—संज्ञा स्त्री० [अ० मिल्क] १. जमींदारी। मिल्कियत। २. जागीर।

मिलित—वि० [सं०] मिला हुआ। युक्त।

मिलोना†—क्रि० स० [हिं० मिलाना] १. दे० "मिलाना"। २. गौ का दूध दुहना।

मिल्कियत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. ज़मींदारी। २. जागीर। माफ़ी। ३. धन-संपत्ति। जायदाद। ४. वह धन-संपत्ति जिस पर मालिकों का सा हक हो।

मिल्लत—संज्ञा स्त्री० [हिं० मिलन + त (प्रत्य०)] १. मेल-जोल। घनिष्ठता। मिलाप। २. मिलनसारी।
संज्ञा स्त्री० [अ०] मजहब। संप्रदाय। पंथ।

मिश्र—वि० [सं०] १. मिला या मिलाया हुआ। मिश्रित। संयुक्त। २. श्रेष्ठ। बड़ा। ३. जिसमें कई भिन्न-भिन्न प्रकार की रकमों की संख्या हो। (गणित)
संज्ञा पु० [सं०] सर्य्यूपारीण, कान्यकुब्ज और सारस्वत आदि ब्राह्मणों के एक वर्ग की उपाधि।

मिश्रण—संज्ञा पु० [सं०] [वि० मिश्रणीय] १. दो या अधिक पदार्थों को एक में मिलाने की क्रिया। मेल। मिलावट। २. जोड़ लगाने की क्रिया। जोड़ना। (गणित)

मिश्रित—वि० [सं०] एक में मिलाया हुआ।

मिष—संज्ञा पु० [सं०] १. छल। कपट। २. बहाना। हीला। मिस। ३. ईर्ष्या। डाह।

मिष्ट—वि० [सं०] मीठा। मधुर।

मिष्टभाषी—संज्ञा पु० [सं० मिष्टभाषिन्] वह जो मीठा बोलता हो। मधुरभाषी।

मिष्टान्न—संज्ञा पु० [सं०] मिठाई।

मिस—संज्ञा पु० [सं० मिष] १. बहाना। हीला। २. नकल। पापड़।

मिसकीन—वि० [अ० मिस्कीन] [संज्ञा मिसकीनी] १. बेचारा। दीन। २. गरीब। निर्धन।

मिसकीनता*—संज्ञा स्त्री० [अ० मिसकीन + ता (सं० प्रत्य०)] दीनता। गरीबी।

मिसना*—क्रि० अ० [सं० मिश्रण] मिश्रित होना। मिलना।
क्रि० अ० [हिं० मीसना का अक० रूप] मींजा या मला जाना। मीसा जाना।

मिसरा—संज्ञा पु० [अ० मिसरअ] उर्दू या

फारसी आदि की कविता का एक चरण। पद।

मिसरी–संज्ञा स्त्री० [मिस्र देश से] १. मिस्र देश का निवासी। २ मिस्र देश की भाषा। ३ दोबारा बहुत साफ करके जमाई हुई दानेदार या रवेदार चीनी।

मिसल–संज्ञा स्त्री० [अ० मिसिल] सिक्खों के अनेक समूह जो रणजीतसिंह के बाद स्वतंत्र हो गये थे।

मिसाल–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ उपमा। २ उदाहरण। नमूना। नजीर। ३ कहावत।

मिसिल–वि० दे० "मिस्ल"।
संज्ञा स्त्री० किसी एक मुकदमे या विषय से संबंध रखनेवाले कुल कागज-पत्र।

मिस्तर–संज्ञा पु० [हिं० मिस्तरी ?] काठ का वह औजार जिससे राज लोग छत पीटते हैं। पिटना।
संज्ञा पु० [अ०] डोरे से लपेटा हुआ दफ्ती का वह टुकडा जो लिखने के समय लकीर सीधी रखने के लिये लिखे जानेवाले कागज के नीचे रख लिया जाता है।
संज्ञा पु० दे० "मेहतर"।

मिस्तरी–संज्ञा पु० [अं० मास्टर] वह जो हाथ का बहुत अच्छा कारीगर हो।

मिस्तरीखाना–संज्ञा पु० [हिं० मिस्तरी + फा० खाना] वह स्थान जहाँ लोहार, बढई आदि काम करते हैं।

मिस्र–संज्ञा पु० [अ० = नगर] एक प्रसिद्ध देश जो अफ्रिका के उत्तर-पूर्वी भाग में समुद्र के तट पर है।

मिस्री–संज्ञा स्त्री० दे० 'मिसरी'।

मिस्ल–वि० [अ०] समान। तुल्य।

मिस्सा–संज्ञा पु० [हिं० मिसना] कई तरह की दालों आदि को पीसकर तैयार किया हुआ आटा।

मिस्सी–संज्ञा स्त्री० [फा० मिसी = ताँबे का] एक प्रकार का प्रसिद्ध मंजन जो सधवा स्त्रियाँ दाँतो में लगाती हैं।

मिहिर–संज्ञा पु० [सं०] १ सूर्य। २ आक का पौधा। ३ बादल। ४. चंद्रमा। ५ दे० "वराहमिहिर"।

मिहिरकुल–संज्ञा पु० [फा० मह्लगुल का सं० रूप] शाकल प्रदेश में प्रसिद्ध हूण राजा तोरमाण (तुन्मान) के पुत्र का नाम।

मींगी–संज्ञा स्त्री० [सं० मुद्ग = दाल] बीज के अंदर का गूदा। गिरी।

मींजना†–क्रि० स० [हिं० मीडना] १ हाथों से मलना। मसलना। २ मर्दन करना।

मींड–संज्ञा स्त्री० [सं० मीडम्] संगीत में एक स्वर से दूसरे स्वर पर जाते समय मध्य का अंश इस सुंदरता से कहना जिसमें दोनों स्वरों का संबंध स्पष्ट हो जाय। गमक।

मींडना†–क्रि० स० [हिं० मीडना] हाथों से मलना। मसलना।

मीआद–संज्ञा स्त्री० [अ०] किसी कार्य्य की समाप्ति आदि के लिये नियत समय। अवधि।

मीआदी–वि० [हिं० मीआद + ई (प्रत्य०)] जिसके लिये कोई अवधि नियत हो।

मीचना–क्रि० स० [सं० मिष = झपकना] (आँखें) बंद करना। मूँदना।

मीचु*†–संज्ञा स्त्री० [सं० मृत्यु] मृत्यु।

मीजान–संज्ञा स्त्री० [अ०] कुल संख्याओं का योग। जोड़। (गणित)

मीठा*–वि० [सं० मिष्ट] [स्त्री० मीठी] १ चीनी या शहद आदि के स्वादवाला। मधुर।
मुहा०—मीठा होना = किसी प्रकार के लाभ या आनंद आदि की प्राप्ति होना।
२ स्वादिष्ट। जायकेदार। ३ धीमा। सुस्त। ४ साधारण या मध्यम श्रेणी का। मामूली। ५ हलका। मद्धिम। मंद। ६ नामर्द। नपुंसक। ७ बहुत अधिक सीधा। ८ प्रिय। रुचिकर।
संज्ञा पु० १ मिठाई। २ गुड़।

मीठा जहर–संज्ञा पु० दे० "बछनाग"।

मीठा तेल–संज्ञा पु० [हिं० मीठा + तेल] तिल का तेल।

मीठा नीबू–संज्ञा पु० [हिं० मीठा + नीबू] जमीरी नीबू। चकोतरा।

मीठा पानी–संज्ञा पुं० [हिं० मीठा+पानी] नीबू का अँगरेजी सत मिला हुआ पानी। लेमनेड।

मीठी छुरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० मीठी+छुरी] १. वह जो देखने में मित्र, पर वास्तव में शत्रु हो। विश्वासघातक। २. कपटी।

मीन–संज्ञा पुं० [सं०] १. मछली। २. मेष आदि १२ राशियों में से अंतिम राशि।

मीनकेतन–संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।

मीना–संज्ञा पुं० [देश०] राजपूताने की एक प्रसिद्ध योद्धा जाति।

संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. एक प्रकार का नीले रंग का क़ीमती पत्थर। २. सोने, चाँदी आदि पर किया जानेवाला रंग-बिरंग का काम। ३. शराब रखने का कंटर।

मीनाकारी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] सोने या चाँदी पर होनेवाला रंगीन काम।

मीनार–संज्ञा स्त्री० [अ० मनार] वह इमारत जो प्रायः गोलाकार चलती है और ऊपर की ओर बहुत अधिक ऊँचाई तक चली जाती है। स्तंभ। लाठ।

मीमांसक–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो किसी बात की मीमांसा करता हो। २. वह जो मीमांसा शास्त्र का ज्ञाता हो।

मीमांसा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अनुमान। तर्क आदि द्वारा यह स्थिर करना कि कोई बात कैसी है। २. हिंदुओं के छः दर्शनों में से दो दर्शन जो पूर्व मीमांसा और उत्तर मीमांसा कहलाते है। ३. जैमिनि-कृत दर्शन जिसे पूर्व मीमासा कहते है।

मीमांस्य–वि० [सं०] मीमांसा करने के योग्य।

मीर–संज्ञा पु [फा०] १. सरदार। प्रधान। नेता। २. धार्म्मिक आचार्य्य। ३. सैयद जाति की उपाधि। ४. वह जो सबसे पहले कोई काम, विशेषतः प्रतियोगिता का काम, कर डाले।

मीर फ़र्श–संज्ञा पुं० [फ़ा०] वे बड़े बड़े पत्थर आदि जो फ़र्शों आदि के कोनों पर उन्हें उड़ने से रोकने के लिये रखे जाते हैं।

मीरास–संज्ञा स्त्री० [अ०] तरका। बपौती।

मीरासी–संज्ञा पुं० [अ० मीरास] [स्त्री० मीरासिन] एक प्रकार के मुसलमान जो प्रायः गाने-बजाने का काम या मसखरापन करते हैं।

मील–संज्ञा पुं० [अं० माइल] दूरी की एक नाप जो १७६० गज की होती है।

मीलन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० मीलनीय, मीलित] १. बंद करना। २. संकुचित करना।

मीलित–वि० [सं०] १. बंद किया हुआ। २. सिकोड़ा हुआ।

संज्ञा पुं० एक अलंकार जिसमें यह कहा जाता है कि एक होने के कारण उपमेय और उपमान में कोई भेद नही जान पड़ता।

मुँगरा–संज्ञा पुं० [सं० मुद्गर] [स्त्री० मुँगरी] हथौड़े के आकार का काठ का एक औज़ार।

संज्ञा पुं० [हिं० मोगरा] नमकीन बुँदिया।

मुँगौरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० मूँग+बरी] मूँग की बनी हुई बरी।

मुंड–संज्ञा पुं० [सं०] १. गरदन के ऊपर का अंग। सिर। २. शुंभ का सेनापति एक दैत्य जिसे दुर्गा ने मारा था। ३. राहु ग्रह। ४. वृक्ष का ठूँठ। ५. कटा हुआ सिर। ६. एक उपनिषद् का नाम।

वि० मुँडा हुआ। मुंडा।

मुंड़चिरा–संज्ञा पुं० [हिं० मूँड़+चीरना] १. एक प्रकार के फ़क़ीर जो प्रायः अपना सिर, आँख या नाक आदि नुकीले हथियार से घायल करके भिक्षा माँगते हैं। २. वह जो लेन-देन में बहुत हुज्जत और हठ करे।

मुंडन–संज्ञा पुं० [सं०] १. सिर को उस्तरे से मूँड़ने की क्रिया। २. द्विजातियों के १६ संस्कारों में से एक जिसमें बालक का सिर मूँ I जाता है।

मुँड़ना–क्रि० अ० [सं० मुंडन] १. मूँड़ा जाना। सिर के बालों की सफाई होना। २. लुटना। ३. ठगा जाना।

मुंडमाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] कटे हुए सिरों या खोपड़ियों की माला जो शिव या काली देवी के गले में होती है।

मुंडमालिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] काली देवी।

मुडमाली—सज्ञा पु० [स० मुडमालिन्] शिव।
मुडा—सज्ञा पु० [स० मुडी] [स्त्री० मुडी] १ वह जिसके सिर के बाल न हो या मुंडे हुए हो। २ वह जो किसी साधु या जोगी का शिष्य हो गया हो। ३ वह पशु जिसके सींग होने चाहिएँ, पर न हो। ४ वह जिसके ऊपरी अथवा इधर-उधर फैलनेवाले अग न हो। ५ एक प्रकार की लिपि जिसमें मात्राएँ आदि नही होती। कोठीवाली। ६ एक प्रकार का जूता। सज्ञा पु० [देश०] छोटा नागपुर में रहनेवाली एक असभ्य जाति।
मुंडाई—सज्ञा स्त्री० [हिं० मूंडना + आई(प्रत्य०)] मूंडने या मुंडाने की क्रिया या मजदूरी।
मुंडासा†—सज्ञा पु० [हिं० मुड=सिर + आसा (प्रत्य०)] सिर पर बाँधने का साफा।
मुंडिया—सज्ञा पु० [हिं० मूंडना + इया(प्रत्य०)] साधु या योगी आदि का शिष्य। सन्यासी।
मुडी—सज्ञा स्त्री० [हिं० मूंडना + ई(प्रत्य०)] १ वह स्त्री जिसका सिर मुंडा हो। २ विधवा। रॉड। (गाली)
सज्ञा स्त्री० [स०] गोरखमुडी।
मुंडेर—सज्ञा स्त्री० दे० "मुंडेरा"।
मुडेरा—सज्ञा पु० [हिं० मूड=सिर + एरा (प्रत्य०)] दीवार का वह ऊपरी उठा हुआ भाग जो सबसे ऊपर की छत पर होता है।
मुदना—क्रि० अ० [स० मुद्रण] १. खुली हुई वस्तु का ढक जाना। बद होना। २ लुप्त होना। छिपना। ३ छेद, बिल आदि बद होना।
मुंदरा—सज्ञा पु० [हिं० मुंदरी] १. एक प्रकार का कुडल जो जोगी लोग कान में पहनते है। २ कान का एक आभूषण।
मुंदरी—सज्ञा स्त्री० [स० मुद्रा] छल्ला। अँगूठी।
मुशी—सज्ञा पु० [अ०] निबध या लेख आदि लिखनेवाला। मुहर्रिर। लेखक।
मुसरिम—सज्ञा पु० [अ०] १ इतजाम करनेवाला। २ कचहरी का वह कर्मचारी जो दफ्तर का प्रधान होता है और जिसके सुपुर्द मिसलें आदि ठिकाने से रक्खना रहता है।
मुसिफ—सज्ञा पु० [अ०] १ इसाफ करनेवाला। २ दीवानी विभाग का एक न्यायाधीश।
मुसिफी—सज्ञा स्त्री० [अ० मुसिफ़ + ई(प्रत्य०)] १ न्याय करने का काम। २ मुसिफ का काम या पद। ३ मुसिफ की कचहरी।
मुंह—सज्ञा पु० [स० मुख] १ प्राणी का वह अग जिससे वह बोलता और भोजन करता है। मुख विवर। २ मनुष्य का मुख विवर।
मुहा०—मुँह आना = मुँह के अदर छाले पडना और चेहरा सूजना। (प्राय गरमी आदि के रोग में) मुँह खराब करना = जबान से गदी बातें कहना। मुँह खुलना = उद्दडतापूर्वक बातें करने की आदत पडना। मुँह चलना = १ भोजन होना। खाया जाना। २ मुँह से व्यर्थ की बात या दुर्वचन निकलना। मुँह चिढाना किसी की आकृति, हाव भाव या कथन की बहुत बिगाडकर नकल करना। मुँह छूना [सज्ञा मुँह-छुवाई] = नाममात्र के लिये कहना। मन से नही, बल्कि ऊपर से कहना। मुँह पर लाना = मुँह से कहना। वर्णन करना। मुँह पेट चलना = कै दस्त होना। हैजा होना। मुँह पाकर कहना = कहया बनकर जबान पर लाना। मुँह बाँधकर बैठना = चुपचाप बैठना। कुछ न बोलना। मुँह भरना = रिश्वत देना। घूस देना। मुँह मीठा करना = १ मिठाई खिलाना। २ देकर प्रसन्न करना। मुँह मे खून या लहू लगना = चसका पडना। चाट पडना। मुँह मे जबान होना = कहने की सामर्थ्य होना। मुँह में पानी भर आना = कोई पदार्थ प्राप्त करने के लिए ललचना। मुँह में लगाम न होना = जो मुँह में आवे, सो कह देना। (अपना) मुँह सीना = बोलने से रुकना। मुँह मे बात न निकालना। बिलकुल चुप रहना। मुँह सूखना — प्यास या रोग आदि के कारण गला खुश्क होना। गले और जबान मे काँटे पडना। मुँह से दूध टपकना = बहुत ही अनजान या

बालक होना। (परिहास) मुंह से निकालना = कहना। उच्चारण करना। मुंह से फूल झड़ना = मुंह से बहुत ही सुंदर और प्रिय बातें निकलना।
३ मनुष्य अथवा किसी और जीव के सिर का अगला भाग जिसमें माथा, आँखें, नाक, मुंह, कान ठोढ़ी और गाल आदि अंग होते हैं। चेहरा।
मुहा०—अपना सा मुँह लेकर रह जाना = लज्जित होकर रह जाना। (अपना) मुंह काला करना = १. व्यभिचार करना। २. अपनी बदनामी करना। (दूसरे का) मुंह काला करना = उपेक्षा से हटाना। त्यागना। मुंह की खाना = १. बेइज्जत होना। दुर्दशा कराना। २. मुँह-तोड़ उत्तर सुनना। मुंह के बल गिरना = ठोकर खाना। धोखा खाना। मुंह छिपाना = लज्जा के मारे सामने न होना। (किसी का) मुंह ताकना = १. किसी के मुंह की ओर, कुछ पाने आदि की आशा से, देखना। २. विवश या चकित होकर देखना। मुंह ताकना = अकर्मण्य होकर चुपचाप बैठे रहना। मुंह दिखाना = सामने आना। मुंह देखकर बात कहना = खुशामद करना। (किसी का) मुंह देखना = १. सामना करना। किसी के सामने जाना। २. चकित होकर देखना। मुंह धो रखना = किसी पदार्थ की प्राप्ति की ओर से निराश हो जाना। मुंह पर = सामने। प्रत्यक्ष। मुंह पर या से बरसना = आकृति से प्रकट होना। चेहरे से जाहिर होना। मुंह फुलाना या फुलाकर बैठना = आकृति से असंतोष या अप्रसन्नता प्रकट करना। मुंह फूंकना = १. मुंह में आग लगाना। मुंह झुलसना। (स्त्री० गाली) २. दाह-कर्म करना। (किसी के) मुंह लगना = १. किसी के सामने बढ़ बढ़कर बातें करना। उद्दंड बनना। २. जवाब सवाल करना। मुंह लगाना = सिर चढ़ाना। उद्दंड बनाना। मुंह सूखना = भय या लज्जा आदि से चेहरे का तेज जाता रहना।
४. किसी पदार्थ के ऊपरी भाग का विवर।
५. सूराख। छेद। छिद्र। ६. मुलाहजा। मुरव्वत। लिहाज।
मुहा०—मुंह देखे का = जो हार्दिक न हो, केवल ऊपरी या दिखौआ हो। मुंह पर जाना = किसी का ध्यान करना। लिहाज करना। मुंह मुलाहजे का = जान पहचान का। परिचित। मुंह रखना = किसी का लिहाज रखना।
७. योग्यता। सामर्थ्य। शक्ति। ८ साहस। हिम्मत।
मुहा०—मुंह पड़ना = साहस होना।
९. ऊपर की सतह या किनारा।
मुहा०—मुँह तक आना या भरना = पूरी तरह से भर जाना। लबालब होना।

मुंहअखरी*†–वि० [हिं० मुंह + अक्षर] जबानी। शाब्दिक।

मुंहकाला–संज्ञा पुं० [हिं० मुँह + काला] १. अप्रतिष्ठा। बेइज्जती। २. बदनामी।

मुंहजोर–वि० [हिं० मुंह + जोर] १. वह जो बहुत अधिक बोलता हो। बकवादी। २. दे० "मुंहफट"। ३. तेज। उद्दंड।

मुंहदिखाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० मुंह + दिखाना] १. नई वधू का मुंह देखने की रस्म। मुँह देखनी। २. वह धन जो मुंह देखने पर वधू को दिया जाय।

मुंहदेखा–वि० [हिं० मुंह + देखना] [स्त्री० मुंहदेखी] केवल सामना होने पर होनेवाला (काम या व्यवहार)।

मुंहनाल–संज्ञा स्त्री० [हिं० मुंह + नाल = नली] वह नली जो हुक्के की सटक या नैचे आदि में लगा देते हैं और जिसे मुँह में लगाकर धुआँ खींचते हैं।

मुंहफट–वि० [हिं० मुंह + फटना] ओछी या कटु बात कहने में संकोच न करनेवाला।

मुंहबोला–वि० [हिं० मुंह + बोलना] (संबंधी) जो वास्तविक न हो, केवल मुंह से कहकर बनाया गया हो।

मुंहभराई–संज्ञा स्त्री० [हिं० मुंह + भरना + आई (प्रत्य०)] १. मुंह भरने की क्रिया या भाव। २. रिश्वत। घूस।

मुंहमांगा–वि० [हिं० मुंह + माँगना] अपने

मांगने के अनुसार। मनोवांछ।
मुँहामुँह–क्रि॰ वि॰ [हि॰ मुँह+मुँह] मुँह तक। लबालब। भरपूर।
मुँहासा–संज्ञा पु॰ [हि॰मुँह+आसा (प्रत्य॰)] मुँह पर के वे दाने या फुंसियाँ जो युवावस्था में निकलती हैं।
मुअत्तल–वि॰ [अ॰] [संज्ञा मुअत्तली] जो काम से कुछ समय के लिए, दंड-स्वरूप, अलग कर दिया गया हो।
मुआफिक–वि॰ [अ॰] [संज्ञा मुआफिकत] १ जो विरुद्ध न हो। अनुकूल। २ सदृश। समान। ३ मनानुकूल।
मुआयना–संज्ञा पु॰ [अ॰] देख भाल करना। जाँच-पड़ताल। निरीक्षण।
मुआवजा–संज्ञा पु॰ [अ॰] १ बदला। पलटा। २ वह धन जो किसी काम्य अथवा हानि आदि के बदले में मिले।
मुकटा–संज्ञा पु॰ [देश॰] एक प्रकार की रेशमी धोती।
मुकता–संज्ञा पु॰ दे॰ "मुक्त"।
वि॰ [हि॰ (प्रत्य॰) अ+मुकता=समाप्त होना] [स्त्री॰ मुकती] बहुत अधिक। यथेष्ट।
मुक़दमा–संज्ञा पु॰ [अ॰] १ दो पक्षों के बीच का धन या अधिकार आदि से संबंध रखनेवाला अथवा किसी अपराध (जुर्म) का मामला जो विचार के लिये न्यायालय में जाय। अभियोग। २ दावा। नालिश।
मुक़दमेबाज–संज्ञा पु॰ [अ॰ मुकदमा+फा॰ बाज़ (प्रत्य॰)] [भाव॰ मुकदमेबाजी] वह जो प्रायः मुकदमे लड़ा करता हो।
मुकना–संज्ञा पु॰ दे॰ "मकुना"।
*† क्रि॰ अ॰ [सं॰ मुक्त] १ मुक्त होना। छूटना। २ खतम होना। चुकना।
मुकरना–क्रि॰ अ॰ सं॰ मा=नहीं+करना] कोई बात कहकर उससे फिर जाना। नटना।
मुकरनी–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ 'मुकरी'।
मुकरी–संज्ञा स्त्री॰ [हि॰ मुकरना+ई (प्रत्य॰)] एक प्रकार की कविता जिसमें कही हुई बात से मुकरते हुए कुछ और ही अभिप्राय प्रकट किया जाता है। कह-मुकरी।
मुकर्रर–क्रि॰ वि॰ [अ॰] दोबारा। फिर से।
मुकर्रर–वि॰ [अ॰] [संज्ञा मुकर्ररी] १ जिसका इकरार किया गया हो। निश्चित। २ तैनात। नियुक्त।
मुकाबला–संज्ञा पु॰ [अ॰] १ आमना-सामना। २ मुठभेड़। ३ बराबरी। समानता। ४ तुलना। ५ मिलान। ६ विरोध। स्पर्द्धा।
मुक़ाबिल–क्रि॰ वि॰ [अ॰] सम्मुख। सामने। संज्ञा पु॰ १ प्रतिद्वंद्वी। २ शत्रु। दुश्मन।
मुकाम–संज्ञा पु॰ [अ॰] १ ठहरने का स्थान। ठिकाना। पड़ाव। २ ठहरने की क्रिया। कूच का उलटा। विराम। ३ रहने का स्थान। घर। ४ अवसर।
मुकियाना–क्रि॰ स॰ [हि॰ मुक्की+इयाना (प्रत्य॰)] १ मुक्कियों से बार बार आघात करना। २ घूँसे लगाना।
मुकुंद–संज्ञा पु॰ [सं॰] विष्णु।
मुकुट–संज्ञा पु॰ [सं॰] एक प्रसिद्ध शिरोभूषण जो प्रायः राजा आदि धारण किया करते थे।
मुकुर–संज्ञा पु॰ [सं॰] १ शीशा। आईना। दर्पण। २ मौलसिरी। ३ कली।
मुकुल–संज्ञा पु॰ [सं॰] १ कली। २ शरीर। ३ आत्मा। ४ एक प्रकार का छंद।
मुकुलित–वि॰ [सं॰] १ जिसमें कलियाँ आई हों। २ कुछ खिली हुई। (कली) ३ आधा खुला, आधा बंद। ४ झपकता हुआ। (नेत्र)
मुक्का–संज्ञा पु॰ [सं॰ मुष्टिका] [स्त्री॰ अल्पा॰ मुक्की] बँधी मुट्ठी जो मारने के लिये उठाई जाय या जिससे मारा जाय।
मुक्की–संज्ञा पु॰ [हि॰ मुक्का+ई (प्रत्य॰)] १ मुक्का। घूसा। २ वह लड़ाई जिसमें मुक्कों की मार हो। ३ मुट्ठियाँ बाँधकर उससे किसी के शरीर पर धीरे धीरे आघात मारना, जिससे शरीर की शिथिलता और पीड़ा दूर होती है।
मुक्केबाजी–संज्ञा स्त्री॰ [हि॰ मुक्का+बाजी (प्रत्य॰)] मुक्कों की लड़ाई। घूसेबाजी।

मुक्त–वि० [सं०] १. जिसे मुक्ति मिल गई हो। २. जो बंधन से छूट गया हो। ३. चलने के लिये छूटा हुआ। फेंका हुआ।
मुक्तकंठ–वि० [सं०] १. चिल्लाकर बोलनेवाला। २. जिसे कहने में आगा-पीछा न हो।
मुक्तक–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का अस्त्र जो फेंककर मारा जाता था। २. वह कविता जिसमें कोई एक कथा या प्रसंग कुछ दूर तक न चले। फुटकर कविता। उद्भट। 'प्रबंध' का उलटा।
मुक्तता–संज्ञा स्त्री० दे० "मुक्ति"।
मुक्तहस्त–वि० [सं०] [संज्ञा मुक्तहस्तता] जो खुले हाथों दान करता हो।
मुक्ता–संज्ञा स्त्री० [सं०] मोती।
मुक्ताफल–संज्ञा पुं० [सं०] मोती।
मुक्तिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक उपनिषद्।
मुख–संज्ञा पुं० [सं०] १ मुँह। आनन। २. घर का द्वार। दरवाजा। ३. नाटक में एक प्रकार की संधि। ४. किसी पदार्थ का अगला या ऊपरी खुला भाग। ५. आदि। आरंभ। ६. किसी वस्तु से पहले पड़नेवाली वस्तु।
वि० प्रधान। मुख्य।
मुखचपला–संज्ञा स्त्री० [सं०] आर्य्या छंद का एक भेद।
मुखड़ा–संज्ञा पुं० [सं० मुख+ हिं० डा (प्रत्य०)] मुख। चेहरा। आनन।
मुख़तार–संज्ञा पु० [अ०] १. जिसे किसी ने अपना प्रतिनिधि बनाकर कोई काम करने का अधिकार दिया हो। २. एक प्रकार का कानूनी सलाहकार और काम करनेवाला।
मुख़तारनामा–संज्ञा पु० [अ० मुख़तार+ फा० नामा] वह अधिकार-पत्र जिसके द्वारा कोई व्यक्ति किसी की ओर से अदालती कार्रवाई करने के लिये मुख़्तार बनाया जाय।
मुख़तारी–संज्ञा स्त्री० [हिं० मुख़तार+ई (प्रत्य०)] १. मुख़तार होकर दूसरे के मुकदमे लड़ने का काम या पेशा। २. प्रतिनिधित्व।
मुखबंध–संज्ञा पुं० [सं०] ग्रंथ की प्रस्तावना या भूमिका।
मुख़बिर–संज्ञा पुं० [अ०] जासूस। गोइंदा।
मुख़बिरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० मुख़बिर+ई (प्रत्य०)] ख़बर देने का काम। मुख़बिर का काम।
मुखर–वि० [सं०] १. जो अप्रिय बोलता हो। कटुभाषी। २. बकवादी।
मुखशुद्धि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मुँह साफ़ करना। २. भोजन के उपरांत पान, सुपारी आदि खाकर मुँह शुद्ध करना।
मुखस्थ–वि० दे० "मुखाग्र"।
मुखाग्र–वि० [सं०] जो जबानी याद हो। कंठस्थ। बर-जबान।
मुखापेक्षा–संज्ञा स्त्री० [सं०] दूसरों का मुँह ताकना। दूसरों के आश्रित रहना।
मुखापेक्षी–संज्ञा पु० [सं० मुखापेक्षिन्] वह जो दूसरों का मुँह ताकता हो। आश्रित।
मुख़ालिफ़–वि० [अ०] [संज्ञा मुख़ालिफ़त] १. जो ख़िलाफ़ हो। विरोधी। २. शत्रु। दुश्मन। ३. प्रतिद्वंद्वी।
मुखिया–संज्ञा पु० [सं० मुख्य+इया (प्रत्य०)] १. नेता। प्रधान। सरदार। २. वह जो किसी काम में सबसे आगे हो। अगुआ।
मुख़्तसर–वि० [अ०] १. जो थोड़े में हो। संक्षिप्त। २. छोटा। ३. अल्प। थोड़ा।
मुख्य–वि० [सं०] [संज्ञा मुख्यता] सब में बड़ा। ऊपर या आगे रहनेवाला। प्रधान।
मुगदर–संज्ञा पु० [सं० मुद्गर] एक प्रकार की गावदुमी, भारी मुँगरी जिसका प्रायः जोड़ा होता है और जिसका उपयोग व्यायाम के लिये किया जाता है। जोड़ी।
मुग़ल–संज्ञा पुं० [फ़ा०] [स्त्री० मुग़लानी] १. मगोल देश का निवासी। २. तुर्कों का एक श्रेष्ठ वर्ग जो तातार देश का निवासी था। ३. मुसलमानों के चार वर्गों में से एक वर्ग।
मुग़लई–वि० [फ़ा० मुग़ल+ई (प्रत्य०)] मुग़लों का सा। मुग़लों की तरह का।
मुग़लाई–वि० दे० "मुग़लई"।
संज्ञा स्त्री० [फ़ा० मुग़ल+आई (प्रत्य०)]

मुगल होने का भाव। मुगलपन।

मुगवन–संज्ञा पु० [सं० वनमुद्ग] मोठ।

मुगालता–संज्ञा पु० [अ०] धोखा। छल।

मुघम–वि० [देश०] (बात) जो बहुत खोल-कर या स्पष्ट करके न कही जाय।

मुग्ध–वि० [सं०] [संज्ञा मुग्धता] १ मोह या भ्रम में पड़ा हुआ। मूढ़। २ सुंदर। खूबसूरत। ३ आसक्त। मोहित।

मुग्धा–संज्ञा स्त्री० [सं०] साहित्य में वह नायिका जो यौवन को तो प्राप्त हो चुकी हो, पर जिसमें कामचेष्टा न हो।

मुचकुंद–संज्ञा पु० [सं० मुचकुंद] एक बड़ा पेड़।

मुचलका–संज्ञा पु० [तु०] वह प्रतिज्ञापत्र जिसके द्वारा भविष्य में कोई अनुचित काम न करने अथवा किसी नियत समय पर अदालत में उपस्थित होने की प्रतिज्ञा हो।

मुछदर–संज्ञा पु० [हिं० मूछ] १ जिसकी मूछें बड़ी बड़ी हों। २ कुरूप और मूर्ख।

मुज़क्कर–वि० [अ०] पुल्लिंग।

मुजरा–संज्ञा पु० [अ०] १ वह जो जारी किया गया हो। २ वह रकम जो किसी रकम में से काट ली गई हो। ३ किसी बड़े या धनवान् के सामने जाकर उसे सलाम करना। अभिवादन। ४ वेश्या का बैठकर गाना।

मुजरिम–संज्ञा पु० [अ०] जिस पर अभियोग लगाया गया हो। अभियुक्त।

मुजावर–संज्ञा पु० [अ०] वह मुसलमान जो किसी रौजे पर रहकर वहाँ का चढ़ावा आदि लेता हो।

मुझ–सर्व० [हिं० मुझे] मैं का वह रूप जो उसे कर्ता और संबंध कारक को छोड़कर अन्य कारकों में, विभक्ति लगने से पहले, प्राप्त होता है। जैसे—मुझको, मुझसे।

मुझे–सर्व० [सं० मह्यम्] "मैं" का वह रूप जो उसे कर्म और संप्रदान कारक में प्राप्त होता है।

मुटकना†–वि० [हिं० मोटा+कना (प्रत्य०)] आकार में छोटा, पर सुंदर।

मुटका–संज्ञा पु० [हिं० मोटा ?] एक प्रकार की रेशमी धोती। मुकटा।

मुटाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० मोटा+ई (प्रत्य०)] १ मोटापन। स्थूलता। २ पुष्टि। ३ अहंकार। घमंड। शेखी।

मुटाना–क्रि० अ० [हिं० मोटा+आना (प्रत्य०)] १ मोटा हो जाना। २ अहंकारी हो जाना।

मुटासा–वि० [हिं० मोटा+आसा (प्रत्य०)] वह जो कुछ धन कमा लेने से बेपरवा और घमंडी हो गया हो।

मुटिया–संज्ञा पु० [हिं० मोट=गठरी+इया (प्रत्य०)] बोझ ढोनेवाला। मजदूर।

मुट्ठा–संज्ञा पु० [हिं० मूठ] १ घास, फूस, तृण या डंठल का उतना पूला जितना हाथ की मुट्ठी में आ सके। २ बगल भर वस्तु। ३ पुलिंदा। ४ शस्त्र या यंत्र आदि की बेंट। दस्ता।

मुट्ठी–संज्ञा स्त्री० [सं० मुष्टिका, प्रा० मुट्ठिआ] १ हाथ की वह मुद्रा जो उँगलियों को मोड़कर हथेली पर दबा लेने से बनती है। बँधी हुई हथेली। २ उतनी वस्तु जितनी उपर्युक्त मुद्रा के समय हाथ में आ सके। मुहा०–मुट्ठी में=कब्जे में। अधिकार में। मुट्ठी गरम करना=रुपया देना। धन देना। ३ बँधी हथेली के बराबर का विस्तार। ४ हाथों से किसी के अंगों को पकड़-पकड़कर दबाने की क्रिया जिससे शरीर की थकावट दूर होती है। चपी।

मुठभेड़–संज्ञा स्त्री० [हिं० मूठ+भिड़ना] १ टक्कर। भिड़ंत। लड़ाई। २ भेंट। सामना।

मुठिका*–संज्ञा स्त्री० [सं० मुष्टिक] १ मुट्ठी। २ घूँसा। मुक्का।

मुठिया–संज्ञा स्त्री० [सं० मुष्टिका] औजारों का दस्ता। बेंट।

संज्ञा स्त्री० भिखमंगों को मुट्ठी मुट्ठी भर अन्न बाँटने की क्रिया।

मुठी*†–संज्ञा स्त्री० दे० "मुट्ठी"।

मुड़कना–क्रि० अ० दे० "मुरकना"।

मुड़ना–क्रि० अ० [सं० मुरण] १ सीधी वस्तु

का कहीं से बल खाकर दूसरी ओर फिरना। घुमाव लेना। २. किसी धारदार किनारे या नोक का झुक जाना। ३. लकीर की तरह सीधे न जाकर घूमकर किसी ओर झुकना। ४. दाएँ अथवा बाएँ घूम जाना। ५. पलटना। लौटना।
क्रि० अ० दे० "मुँड़ना"।

मुड़ला*†–वि०[सं० मुंड] [स्त्री० मुड़ली] जिसके सिर पर बाल न हों। मुंडा।

मुड़वाना–क्रि० स० [हिं० मूँड़ना का प्रेर० रूप] किसी को मूँड़ने में प्रवृत्त करना। क्रि० स० [हिं० मुड़ना का प्रेर० रूप] मुड़ने या घूमने में प्रवृत्त करना।

मुँड़वारी†–संज्ञा स्त्री० [हिं० मूँड़ + वारी (प्रत्य०)] १. अटारी की दीवार का सिरा। मुँडेरा। २. सिरहाना।

मुड़हर†–संज्ञा पुं०[हिं० मूँड़ + हर(प्रत्य०)] स्त्रियों की साड़ी या चादर का वह भाग जो ठीक सिर पर रहता है।

मुड़ाना–क्रि० स० दे० "मुँड़ाना"।

मुँड़िया†–संज्ञा पु० [हिं० मूँड़ना + ईया (प्रत्य०)] वह जिसका सिर मुँड़ा हुआ हो।

मुतअल्लिक–वि० [अ०] १. संबंध रखने-वाला। संबद्ध। २. सम्मिलित। क्रि० वि० संबंध में। विषय में।

मुतक्का–संज्ञा पुं० [हिं० मुँड + टेक] १. कोठे के छज्जे या चौक के ऊपर पाटन के किनारे खड़ी की हुई पटिया या नीची दीवार। २. खंभा। ३. मीनार। लाट।

मुतबन्ना–संज्ञा पुं० [अ०] दत्तक पुत्र।

मुतलक़–क्रि० वि० [अ०] ज़रा भी। तनिक भी। रत्ती भर भी।
वि० बिलकुल। निरा। निपट।

मुतसद्दी–संज्ञा पुं० [अ०] १. लेखक। मुंशी। २. पेशकार। दीवान। ३. इंत-जाम करनेवाला। प्रबंधकर्ता। ४. मुनीम।

मुतसिरी*†–संज्ञा स्त्री० [हिं० मोती + सं० श्री] कंठ में पहनने की मोतियों की कंठी।

मुताबिक़–क्रि० वि० [अ०] अनुसार।
वि० अनुकूल।

मुतालबा–संज्ञा पुं० [अ०] उतना धन जितना पाना वाजिब हो। बाक़ी रुपया।

मुताह–संज्ञा पुं० [अ० मुताअ] मुसलमानों में एक प्रकार का अस्थायी विवाह।

मुतिलाडू*†–संज्ञा पुं० [हिं० मोती + लड्डू] मोतीचूर का लड्डू।

मुतेहरा*†–संज्ञा पुं० [हिं० मोती + हार] कलाई पर पहनने का एक आभूषण।

मुद–संज्ञा पुं० [सं०] हर्ष। आनंद।

मुदगर–संज्ञा पुं० दे० "मुगदर"।

मुदर्रिस–संज्ञा पुं० [अ०] अध्यापक।

मुदा*†–अव्य० [अ० मुद्आ = अभिप्राय] १. तात्पर्य यह कि। २. मगर। लेकिन।
संज्ञा स्त्री० [सं०] हर्ष। आनंद।

मुदाम–क्रि० वि० [फ़ा] १. सदा। हमेशा। सदैव। २. निरंतर। लगातार। †३. ठीक ठीक। हू-ब-हू। (क्व०)

मुदामी–वि० [फ़ा०] जो सदा होता रहे।

मुदित–वि० [सं०] प्रसन्न। खुश।

मुदिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. परकीया के अंतर्गत एक प्रकार की नायिका। २. हर्ष।

मुदिर–संज्ञा पुं० [सं०] बादल। मेघ।

मुद्ग–संज्ञा पुं० [सं०] मूँग नामक अन्न।

मुद्गर–संज्ञा पुं० [सं०] १. दे० "मुगदर"। २. प्राचीन काल का एक अस्त्र।

मुद्गल–संज्ञा पुं० [सं०] एक उपनिषद्।

मुद्दई–संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० मुद्दइया] १. दावा करनेवाला। दावादार। वादी। २. दुश्मन। बैरी। शत्रु।

मुद्दत–संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० मुद्दती] १. अवधि। २. बहुत दिन। अरसा।

मुद्दाअलेह, मुद्दालेह–संज्ञा पुं० [अ०] वह जिसके ऊपर कोई दावा किया जाय। प्रतिवादी।

मुद्ध*†–वि० दे० "मुग्ध"।

मुद्रक–संज्ञा पुं० [सं०] छापनेवाला।

मुद्रण–संज्ञा पुं० [सं०] किसी चीज पर अक्षर आदि अंकित करना। छपाई।

मुद्रांकित–वि० [सं०] १. मोहर किया हुआ। २. जिसके शरीर पर विष्णु के

आयुध के चिह्न गरम लोहे से दागकर बनाए गए हों। (वैष्णव)

मुद्रा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ किसी के नाम की छाप। मोहर। २ रुपया, अशरफी आदि। सिक्का। ३ अँगूठी। छाप। छल्ला। ४ टाइप से छपे हुए अक्षर। ५. गोरखपंथी साधुओं के पहनने का एक कर्णभूषण। ६ हाथ, पाँव, आँख, मुँह, गर्दन आदि की कोई स्थिति। ७ बैठने, लेटने या खड़े होने का कोई ढंग। ८ मुख की आकृति या चेष्टा। ९ विष्णु के आयुधों के चिह्न जो प्राय भक्त लोग अपने शरीर पर अंकित करते हैं या गरम लोहे से दगवाते हैं। छाप। १० हठयोग मे विशेष अगविन्यास। ये मुद्राएँ पाँच होती हैं—खेचरी, भूचरी, चाचरी, गोचरी और उन्मनी। ११ वह अलकार जिसमें प्रकृत या प्रस्तुत अर्थ के अतिरिक्त पद्य में कुछ और भी साभिप्राय नाम हो।

मुद्रातत्त्व–संज्ञा पु० [सं०] वह शास्त्र जिसके अनुसार किसी देश के पुराने सिक्कों आदि की सहायता से ऐतिहासिक बातें जानी जाती हैं।

मुद्रायंत्र–संज्ञा पु० [सं०] छापने या मुद्रण करने का यंत्र। छापे आदि की कल।

मुद्राविज्ञान–संज्ञा पु० दे० "मुद्रातत्त्व"।

मुद्राशास्त्र–संज्ञा पु० दे० "मुद्रातत्त्व"।

मुद्रिक–संज्ञा स्त्री० दे० "मुद्रिका"।

मुद्रिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अँगूठी। २ कुश की बनी हुई अँगूठी जो पितृ-कार्य में अनामिका में पहनी जाती है। पवित्री। पैंती। ३ मुद्रा। सिक्का। रुपया।

मुद्रित–वि० [सं०] १ मुद्रण या अंकित किया हुआ। छपा हुआ। २ मुँदा हुआ। बंद।

मुधा–क्रि० वि० [सं०] व्यर्थ। वृथा।
वि० १ व्यर्थ का। निष्प्रयोजन। २ असत्। मिथ्या। झूठ।
संज्ञा पु० असत्य। मिथ्या।

मुनक्का–संज्ञा पु० [अ० मि० सं० मृद्वीका] एक प्रकार की बड़ी किशमिश।

मुनादी–संज्ञा स्त्री० [अ०] वह घोषणा जो डुग्गी या ढोल आदि पीटते हुए सारे शहर में हो। ढिंढोरा। डुग्गी।

मुनाफा–संज्ञा पु० [अ०] लाभ। नफा।

मुनारा†–संज्ञा पु० दे० "मीनार"।

मुनासिब–वि० [अ०] उचित। वाजिब।

मुनि–संज्ञा पु० [सं०] १ ईश्वर, धर्म और सत्यासत्य आदि का सूक्ष्म विचार करनेवाला व्यक्ति। २ तपस्वी। त्यागी। ३ सात की संख्या।

मुनियाँ–संज्ञा स्त्री० [देश०] लाल नामक पक्षी की मादा।

मुनीब, मुनीम–संज्ञा पु० [अ० मुनीब] १ मददगार। सहायक। २ साहूकारों का हिसाब किताब लिखनेवाला।

मुनीश, मुनीश्वर–संज्ञा पु० [सं०] १ मुनियों में श्रेष्ठ। २ बुद्धदेव। ३ विष्णु।

मुन्ना–संज्ञा पु० [देश०] छोटों के लिए प्रेम-सूचक शब्द। प्रिय। प्यारा।

मुफलिस–वि० [अ०] निर्धन। दरिद्र।

मुफस्सल–वि० [अ०] ब्योरेवार। विस्तृत।
संज्ञा पु० किसी केंद्रस्थ नगर के चारों ओर के कुछ दूर के स्थान।

मुफीद–वि० [अ०] फायदेमंद। लाभकारी।

मुफ्त–वि० [अ०] जिसमें कुछ मूल्य न लगे। बिना दाम का। सेंत का।
यौ०—मुफ्तखोर = वह व्यक्ति जो दूसरे के धन पर सुख-भोग करे।
मुहा०—मुफ्त में = १ बिना मूल्य दिए या लिए। २ व्यर्थ। बेफायदा।

मुफ्ती–संज्ञा पु० [अ०] धर्म शास्त्री। (मुस०)
वि० [अ० मुफ्त + ई (प्रत्य०)] मुफ्त का।

मुबारक–वि० [अ०] १ जिसके कारण बरकत हो। २ शुभ। मंगलप्रद। नेक।

मुबारकबाद–संज्ञा पु० [अ० मुबारक + फा० बाद] कोई शुभ बात होने पर यह कहना कि "मुबारक हो"। बधाई। धन्यवाद।

मुबारकी–संज्ञा स्त्री० दे० "मुबारकबाद"।

मुमकिन–वि० [अ०] संभव।

मुमुक्षु–वि० [सं०] मुक्ति पाने का इच्छुक। जो मुक्ति की कामना करता हो।
मुमूर्षा–संज्ञा स्त्री० [सं०] मरने की इच्छा।
मुमूर्षु–वि० [सं०] जो मरने के समीप हो।
मुरंडा–संज्ञा पुं०[देश०] भूने हुए गरमागरम गेहूँ में गुड़ मिलाकर बनाया हुआ लड्डू। गुड़-धानी।
वि० सूखा हुआ। शुष्क।
मुर–संज्ञा पुं० [सं०] १. वेष्टन। बेठन। २. एक दैत्य जिसे विष्णु ने मारा था।
अव्य० फिर। दोबारा।
मुरक–संज्ञा स्त्री० [हिं० मुरकना] मुरकने की क्रिया या भाव।
मुरकना–क्रि० अ० [हिं० मुड़ना] १. लचक-कर किसी ओर झुकना। मुड़ना। २. फिरना। घूमना। ३. लौटना। वापस होना। ४. किसी अंग का किसी ओर इस प्रकार मुड़ जाना कि जल्दी सीधा न हो। मोच खाना। ५. हिचकना। रुकना। ६. विनष्ट होना। चौपट होना।
मुरकाना–क्रि० स० [हिं० मुरकना का स० रूप] १. फेरना। घुमाना। २. लौटाना। वापस करना। ३. किसी अंग में मोच लाना। ४. नष्ट करना। चौपट करना।
मुरखाई*†–संज्ञा स्त्री० दे० "मूर्खता"।
मुरगा–संज्ञा पुं० [फा० मुर्ग] [स्त्री० मुर्गी] एक प्रसिद्ध पक्षी जो कई रंगों का होता है। नर के सिर पर कलगी होती है।
मुरगाबी–संज्ञा स्त्री० [फा०] मुरगे की जाति का एक पक्षी।
मुरचंग–संज्ञा पुं० [हिं० मुंहचंग] मुंह से बजाने का एक प्रकार का बाजा। मुँहचंग।
मुरछना, मुरछाना*–क्रि० अ० [सं० मूर्च्छन्] १. शिथिल होना। २. अचेत होना।
मुरछावंत*–वि० [सं० मूर्च्छा+वंत (प्रत्य०)] मूर्छित। बेहोश। अचेत।
मुरछित*–वि० दे० "मूर्च्छित"।
मुरज–संज्ञा पुं० [सं०] मृदंग। पखावज।
मुरझाना–क्रि० अ० [सं० मूर्च्छन्] १. फूल या पत्ती आदि का कुम्हलाना। २. सुस्त या उदास होना।
मुरदर–संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।
मुरदा–संज्ञा पुं० [फ़ा० मि० सं० मृतक] वह जो मर गया हो। मरा हुआ प्राणी। मृत।
वि० १. मरा हुआ। मृत। २. जिसमें कुछ भी दम न हो। ३. मुरझाया हुआ।
मुरदार–वि० [फ़ा०] १. मरा हुआ। मृत। २. अपवित्र। ३. बेदम। बेजान।
मुरदासंख–संज्ञा पुं० [फ़ा० मुरदार संग] एक प्रकार का औषध जो फूँके हुए सीसे और सिंदूर से बनता है।
मुरदासन*–संज्ञा पुं० दे० "मुरदासंख"।
मुरधर–संज्ञा पुं० [सं० मरुधरा] मारवाड़।
मुरना*–क्रि० अ० दे० "मुड़ना"।
मुर-परेना†–संज्ञा पुं० [हिं० मूड़=सिर+पारना=रखना] फेरी करके सौदा बेचने-वालों का बकना।
मुरब्बा–संज्ञा पुं० [अ० मरब्बः] चीनी या मिसरी आदि की चाशनी में रक्षित किया हुआ फलों या मेवों आदि का पाक।
मुरमुराना–क्रि० अ० [मुरमुर से अनु०] चूर चूर हो जाना। चुरमुर होना।
मुररिपु–संज्ञा पुं० [सं०] मुरारि।
मुररिया†–संज्ञा स्त्री० दे० "मुर्री"।
मुरलिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] मुरली। वंशी।
मुरलिया†–संज्ञा स्त्री० दे० "मुरली"।
मुरली–संज्ञा स्त्री० [सं०] बाँसुरी। वंशी।
मुरलीधर–संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।
मुरलीमनोहर–संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।
मुरवा–संज्ञा पुं० [देश०] एड़ी के ऊपर की हड्डी के चारों ओर का घेरा।
†संज्ञा पुं० दे० "मोर"।
मुरवी*–संज्ञा स्त्री० [सं० मौर्वी] धनुष की डोरी। चिल्ला।
मुरशिद–संज्ञा पुं० [अ०] १. गुरु। पथ-दर्शक। २. पूज्य।
मुरसुत–संज्ञा पुं० [सं०] वत्सासुर।
मुरहा–संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।
†वि० [सं० मूल (नक्षत्र)+हा (प्रत्य०)] [स्त्री० मुरही] १. (बालक) जो मूल नक्षत्र में

उत्पन्न हुआ हो। २ अनाथ। यतीम। ३ नटखट। उपद्रवी।
मुरहारी–संज्ञा पु० [सं०] श्रीकृष्ण।
मुरा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक प्रसिद्ध गंध द्रव्य। एकांगी। ,मुरामासी। २ कथा-सरित्सागर के अनुसार उस नाइन का नाम जिसके गर्भ से महानंद का पुत्र चंद्रगुप्त उत्पन्न हुआ था।
मुराडा–संज्ञा पु० [देश०] जलती लकड़ी।
मुराद–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ अभिलाषा। मुहा०—मुराद पाना = मनोरथ पूर्ण होना। मुराद माँगना = मनोरथ पूरा होने की प्रार्थना करना।
२ अभिप्राय। आशय। मतलब।
मुराना*†–क्रि० स० [अनु० मुरमुर] मुँह में कोई चीज डालकर उसे मुलायम करना। चुभलाना।
*†क्रि० स० दे० 'मोड़ना'।
मुरार–संज्ञा पु० [सं० मृणाल] कमल की जड़। कमलनाल।
*संज्ञा पु० दे० 'मुरारि'।
मुरारि–संज्ञा पु० [सं०] १ श्रीकृष्ण। २ डगण के तीसरे भेद(।ऽ।)की संज्ञा।
मुरारी–संज्ञा पु० दे० "मुरारि"।
मुरारे–संज्ञा पु० [सं०] हे मुरारि! (संबो०)
मुरासा†–संज्ञा पु० [हिं० मुरना] कर्णफूल।
मुरीद–संज्ञा पु० [अ०] १ शिष्य। चेला। २ अनुगामी। अनुयायी।
मुरु*—संज्ञा पु० दे० 'मुर'।
मुरुआ†–संज्ञा पु० [देश०] एड़ी के ऊपर का घेरा। पैर का गट्टा।
मुरुख*†–वि० दे० 'मूर्ख'।
मुरुछना*–क्रि० अ० दे० 'मुरझाना'। संज्ञा स्त्री० दे० 'मूर्च्छना'।
मुरुझना*†–क्रि० अ० दे० 'मुरझाना'।
मुरेठा–संज्ञा पु० [हिं० मूँड़ = सिर + एठा (प्रत्य०)] पगड़ी। साफा।
मुरौवत–संज्ञा स्त्री० [अ० मुरुव्वत] १ शील। संकोच। लिहाज। २ भलमनसी।
मुर्ग–संज्ञा पु० दे० 'मुरगा'।
मुर्गकेश–संज्ञा पु० [फा० मुर्ग + केश (चोटी)] मरसे की जाति का एक पौधा। जटाधारी।
मुर्दनी–संज्ञा स्त्री० [फा० मुर्दन = मरना] १ मुख पर प्रकट होनेवाले मृत्यु के चिह्न। २ शव के साथ उसकी अंत्येष्टि-क्रिया के लिये जाना।
मुर्दावली–संज्ञा स्त्री० दे० 'मुर्दनी'। वि० मृतक के संबंध का। मुर्दे का।
मुर्रा–संज्ञा पु० [हिं० मरोड़ या मुड़ना] १ मरोड़फली। २ पेट में ऐंठन होकर बार बार दस्त होना। मरोड़।
मुर्री–संज्ञा स्त्री० [हिं० मरोड़ना] १ दो डोरों के सिरों को आपस में जोड़ने की एक क्रिया जिसमें दोनों सिरों को मिलाकर मरोड़ या बट देते हैं। २ कपड़े आदि में लपेटकर डाली हुई एंठन या बल। ३ कपड़े आदि को मरोड़कर बटी हुई बत्ती।
मुर्रीदार–वि० [हिं० मुर्री + फा० दार (प्रत्य०)] जिसमें मुर्री पड़ी हो। एंठनदार।
मुर्शिद–संज्ञा पु० [अ०] १ मार्गदर्शक। गुरु। २ श्रेष्ठ। बड़ा। ३ चतुर।
मुलकना*†–क्रि० अ० [सं० पुलकित?] पुलकित होना। नेत्रों में हँसी प्रकट करना।
मुलकित–वि० [सं० पुलकित?] मुस्कराता हुआ।
मुलकी–वि० [अ० मुल्क] १ शासन या व्यवस्था संबंधी। २ देशी। विलायती का उलटा।
मुलजिम–वि० [अ०] जिस पर कोई अभियोग हो। अभियुक्त।
मुलतवी–वि० [अ० मुल्तवी] जिसका समय टाल दिया गया हो। स्थगित।
मुलतानी–वि० [हिं० मुलतान (नगर)] मुलतान का। मुलतान-संबंधी।
संज्ञा स्त्री० १ एक रागिनी। २ एक प्रकार की बहुत कोमल और चिकनी मिट्टी।
मुलना†–संज्ञा पु० [अ० मौलाना] मौलवी।
मुलमची–संज्ञा पु० [हिं० मुलम्मा + ची (प्रत्य०)] गिलट करनेवाला। मुलम्मासाज।
मुलम्मा–संज्ञा पु० [अ०] १ किसी चीज पर चढ़ाई हुई सोने या चाँदी की पतली

तह। गिलट। क़लई।
यौ०—मुलम्मासाज़=मुलम्मा चढ़ानेवाला। मुलमची।
२. ऊपरी तड़क-भड़क।
मुलहा†–वि० [सं० मूल = नक्षत्र] १. जिसका जन्म मूल नक्षत्र में हुआ हो। २. उपद्रवी। शरारती।
मुलाँ†–संज्ञा पुं० [अ० मुल्ला] मौलवी।
मुलाक़ात–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. आपस में मिलना। भेंट। मिलन। २. मेल-मिलाप।
मुलाक़ाती–संज्ञा पुं० [अ० मुलाकात] वह जिससे जान-पहचान हो। परिचित।
मुलाज़िम–संज्ञा पुं० [अ०] नौकर। सेवक।
मुलायम–वि० [अ०] १. 'सख्त' का उलटा। जो कड़ा न हो। २. हलका। मंद। धीमा। ३. नाजुक। सुकुमार। ४. जिसमें किसी प्रकार की कठोरता या खिचाव न हो।
यौ०—मुलायम चारा = १. वह जो सहज में दूसरों की बातों में आ जाय। २. वह जो सहज में प्राप्त किया जा सके।
मुलायमियत–संज्ञा स्त्री० [अ० मुलायमत] १. मुलायम होने का भाव। नर्मी। २. नज़ाकत।
मुलायमी–संज्ञा स्त्री० दे० "मुलायमियत"।
मुलाहज़ा–संज्ञा पुं० [अ०] १. निरीक्षण। देख-भाल। २. संकोच। ३. रिआयत।
मुलेठी–संज्ञा स्त्री० [सं० मलयष्टी] घुंघची नाम की लता की जड़ जो औषध के काम में आती है। जेठी मधु। मुलट्ठी।
मुल्क–संज्ञा पुं० [अ०] [वि० मुल्की] १. देश। २. प्रांत। प्रदेश। ३. संसार।
मुल्ला–संज्ञा पुं० दे० "मौलवी"।
मुवक्किल–संज्ञा पुं० [अ०] वह जो अपने किसी काम के लिये कोई वकील नियुक्त करे।
मुवना*†–क्रि० अ० [सं० मृत] मरना।
मुवाना*†–क्रि० स० [हिं० मुवना का स० रूप] हत्या करना। मार डालना।
मुश्क–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. कस्तूरी। मृगमद। † २. गंध। बू।
संज्ञा स्त्री० [देश०] कंधे और कोहनी के बीच का भाग। भुजा। बाँह।
मुहा०—मुश्कें कसना या बाँधना = (अपराधी आदि की) दोनों भुजाओं को पीठ की ओर करके बाँध देना।
मुश्कदाना–संज्ञा पुं० [फ़ा०] एक प्रकार की लता का बीज जिससे कस्तूरी की सी सुगंध निकलती है।
मुश्कनाफ़ा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] कस्तूरी का नाफ़ा जिसके अंदर कस्तूरी रहती है।
मुश्कबिलाई–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० मुश्क + हिं० बिलाई = बिल्ली] एक प्रकार का जंगली बिलाव जिसके अंडकोशों का पसीना बहुत सुगंधित होता है। गंध-बिलाव।
मुश्किल–वि० [अ०] कठिन। दुष्कर।
संज्ञा स्त्री० १. कठिनता। दिक्कत। २. मुसीबत। विपत्ति।
मुश्की–वि० [फ़ा०] १. कस्तूरी के रंग का। काला। श्याम। २. जिसमें मुश्क या कस्तूरी पड़ी हो।
संज्ञा पुं० काले रंग का घोड़ा।
मुश्त–संज्ञा पुं० [फ़ा०] मुट्ठी।
यौ०—एकमुश्त=एक साथ। एक ही बार। (रुपयों के लेन-देन में)
मुषुर*†–संज्ञा स्त्री० [सं० मुखर] गूँजने का शब्द। गुंजार।
मुष्टि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मुट्ठी। २. मुक्का। घूँसा। ३. चोरी। ४. दुर्भिक्ष। अकाल। ५. मुष्टिक। मल्ल।
मुष्टिक–संज्ञा पुं० [सं०] १. राजा कंस के पहलवानों में से एक जिसे बलदेवजी ने मारा था। २. मुक्का। घूँसा। ३. चार अँगुल की नाप। ४. मुट्ठी।
मुष्टिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मुक्का। घूँसा। २. मुट्ठी।
मुष्टियुद्ध–संज्ञा पुं० [सं०] वह लड़ाई जिसमें मुक्कों से प्रहार हो। घूँसेबाजी।
मुष्टियोग–संज्ञा पुं० [सं०] १. हठ-योग की कुछ क्रियाएँ जो शरीर की रक्षा करने, बल बढ़ाने और रोग दूर करनेवाली मानी

जाती है। २ छोटा और सहज उपाय।
मुसकनि*†–संज्ञा स्त्री० दे० "मुसकराहट"।
मुसकनिया†–संज्ञा स्त्री० दे० "मुसकान"।
मुसकराना–क्रि० अ० [सं० स्मय + ई] बहुत ही मंद रूप से हँसना। मृदु हास।
मुसकराहट–संज्ञा स्त्री० [हिं० मुसकराना + आहट (प्रत्य०)] मुसकराने की क्रिया या भाव। मंद हास।
मुसकान–संज्ञा स्त्री० दे० 'मुसकराहट'।
मुसक्यान–संज्ञा स्त्री० दे० "मुसकराहट"।
मुसजर–संज्ञा पु० [अ० मुशज्जर] एक प्रकार का छपा कपड़ा।
मुसना–क्रि० अ० [सं० मूषण] मूसा जाना। चुराया जाना। (धन आदि)
मुसन्ना–संज्ञा पु० [अ०] १ असल कागज की दूसरी नकल। २ रसीद आदि का वह दूसरा भाग जो रसीद देनेवाले के पास रह जाता है।
मुसब्बर–संज्ञा पु० [अ०] जमाया हुआ घीकुवार का रस जिसका व्यवहार ओषधि के रूप में होता है।
मुसमुद, मुसमुध*†–वि० [देश०] ध्वस्त। नष्ट। बरबाद।
संज्ञा पु० नाश। ध्वंस। बरबादी।
मुसम्मात–वि० स्त्री० [अ० मुसम्मा का स्त्री० रूप] मुसम्मा शब्द का स्त्रीलिंग रूप। नाम्नी। नामधारिणी।
संज्ञा स्त्री० स्त्री। औरत।
मुसरा†–संज्ञा पु० [हिं० मूसल] पेड़ की जड़ जिसमें एक ही मोटा पिंड हो, इधर उधर शाखाएँ न हों।
मुसलधार–क्रि० वि० दे० 'मूसलधार'।
मुसलमान–संज्ञा पु० [फा०] [स्त्री० मुसलमानी] वह जो मुहम्मद साहब के चलाए हुए संप्रदाय में हो। महम्मदी।
मुसलमानी–वि० [फा०] मुसलमान संबंधी। मुसलमान का।
संज्ञा स्त्री० मुसलमानों की एक रसम जिसमें छोटे बालक की इंद्रिय पर का कुछ चमड़ा काट डाला जाता है। सुन्नत।
मुसल्लम–वि० [फा०] जिसके खंड न किए गए हों। साबुत। पूरा। अखंड।
संज्ञा पु० दे० "मुसलमान"।
मुसल्ला–संज्ञा पु० [अ०] नमाज पढ़ने की दरी या चटाई।
संज्ञा पु० दे० "मुसलमान"।
मुसव्विर–संज्ञा पु० [अ०] चित्रकार।
मुसहर–संज्ञा पु० [हिं० मूस = चूहा + हर (प्रत्य०)] एक जंगली जाति जिसका व्यवसाय जंगली जड़ी-बूटी आदि बेचना है।
मुसहिल–वि० [अ०] दस्तावर। रेचक।
मुसाफिर–संज्ञा पु० [अ०] यात्री। पथिक।
मुसाफिरखाना–संज्ञा पु० [अ० मुसाफिर + फा० खाना] १ यात्रियों के, विशेषतः रेल के यात्रियों के, ठहरने का स्थान। २ धर्मशाला। सराय।
मुसाफिरी–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ मुसाफिर होने की दशा। २ यात्रा। प्रवास।
मुसाहब–संज्ञा पु० [अ०] धनवान् या राजा आदि का पार्श्ववर्त्ती। सहवासी।
मुसाहबी–संज्ञा स्त्री० [अ० मुसाहब + ई (प्रत्य०)] मुसाहब का पद या काम।
मुसीबत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ तकलीफ। कष्ट। २ विपत्ति। संकट।
मुस्क्यान*†–संज्ञा स्त्री० दे० "मुसकराहट"।
मुस्टंडा–वि० [सं० पुष्ट] १. मोटा-ताजा। हृष्ट-पुष्ट। २ बदमाश। गुंडा।
मुस्तकिल–वि० [अ०] १ अटल। स्थिर। २ पक्का। मजबूत। दृढ़।
मुस्तैद–वि० [अ० मुस्तअद] १ तत्पर। सन्नद्ध। २ चालाक। तेज।
मुस्तैदी–संज्ञा स्त्री० [अ० मुस्तअद + ई (प्रत्य०)] १ सन्नद्धता। तत्परता। २ फुरती।
मुस्तौफी–संज्ञा पु० [अ०] हिसाब की जाँच पड़ताल करनेवाला। आय-व्यय परीक्षक।
मुहकम–वि० [अ०] दृढ़। पक्का।
मुहकमा–संज्ञा पु० [अ०] सरिश्ता। विभाग। सीगा।
मुहताज–वि० [अ०] १ दरिद्र। गरीब। कंगाल। २ चाहनेवाला। आकांक्षी।

मुहब्बत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. प्रीति। प्रेम। प्यार। चाह। २. दोस्ती। मित्रता। ३. इश्क। लगन। लौ।

मुहम्मद–संज्ञा पुं० [अ०] अरब के एक प्रसिद्ध धर्माचार्य्य जिन्होंने इस्लाम या मुसलमानी धर्म्म का प्रवर्त्तन किया था।

मुहम्मदी–संज्ञा पुं० [अ०] मुसलमान।

मुहर–संज्ञा स्त्री० दे० "मोहर"।

मुहरा–संज्ञा पुं० [हिं० मुँह + रा (प्रत्य०)] १. सामने का भाग। आगा। सामना। मुहा०—मुहरा लेना = मुकाबिला करना। २. निशाना। ३. मुँह की आकृति। ४. शतरंज की कोई गोटी। ५. घोड़े का एक साज जो उसके मुँह पर रहता है।

मुहर्रम–संज्ञा पुं० [अ०] अरबी वर्ष का पहला महीना जिसमें इमाम हुसेन शहीद हुए थे।

मुहर्रमी–वि० [अ० मुहर्रम + ई (प्रत्य०)] १. मुहर्रम संबंधी। मुहरम का। २. शोक-व्यंजक। ३. मनहूस।

मुहर्रिर–संज्ञा पुं० [अ०] लेखक। मुंशी।

मुहर्रिरी–संज्ञा स्त्री० [अ०] मुहर्रिर का काम। लिखने का काम।

मुहसिल–वि० [अ० महासिल] तहसील वसूल करनेवाला। उगाहनेवाला। संज्ञा पुं० प्यादा। फेरीदार।

मुहाफ़िज़–वि० [अ०] हिफाज़त करनेवाला। संरक्षक। रखवाला।

मुहाल–वि० [अ०] १. असम्भव। नामुमकिन। २. कठिन। दुष्कर। दुःसाध्य। संज्ञा पुं० १. दे० "महाल"। २. दे० "महल्ला"।

मुहाला–संज्ञा पुं० [हिं० मुँह+आला (प्रत्य०)] पीतल की वह चूड़ी जो हाथी के दाँत में शोभा के लिये चढ़ाई जाती है।

मुहावरा–संज्ञा पुं० [अ०] १. लक्षणा या व्यंजना द्वारा सिद्ध वाक्य या प्रयोग जो किसी एक ही भाषा में प्रचलित हो और जिसका अर्थ प्रत्यक्ष (अभिधेय) अर्थ से विलक्षण हो। रोज़मर्रा। बोलचाल। २. अभ्यास। आदत।

मुहासिब–संज्ञा पुं० [अ०] १. गणितज्ञ। २. जाँचने या हिसाब लेनेवाला।

मुहासिबा–संज्ञा पुं० [अ०] १. हिसाब। लेखा। २. पूछ-ताछ।

मुहासिरा–संज्ञा पुं० [अ०] किले या शत्रु-सेना को चारों ओर से घेरना। घेरा।

मुहासिल–संज्ञा पुं० [अ०] १. आय। आमदनी। २. लाभ। मुनाफा। नफ़ा।

मुहिं*–सर्व० दे० "मोहिं"।

मुहिम–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. कठिन या बड़ा काम। २. लड़ाई। युद्ध। ३. फ़ौज की चढ़ाई। आक्रमण।

मुहुः–अव्य० [सं०] बार बार।

मुहूर्त–संज्ञा पुं० [सं०] १. दिन-रात का तीसवाँ भाग। २. निर्दिष्ट क्षण या काल। ३. फलित ज्योतिष के अनुसार गणना करके निकाला हुआ कोई समय जिस पर कोई शुभ काम किया जाय।

मूँग–संज्ञा स्त्री० पुं० [सं० मुद्ग] एक अन्न जिसकी दाल बनती है।

मूँगफली–संज्ञा स्त्री० [हिं० मूँग + फली] १. एक प्रकार का क्षुप जिसकी खेती फलों के लिये की जाती है। २. इस वृक्ष का फल जो बादाम की तरह होता है। चिनिया बादाम।

मूँगा–संज्ञा पुं० [हिं० मूँग] समुद्र में रहनेवाले एक प्रकार के कृमियों की लाल ठठरी जिसकी गिनती रत्नों में की जाती है। प्रवाल। विद्रुम।

मूँगिया–वि० [हिं० मूँग+इया (प्रत्य०)] मूँग के रंग का। हरा। संज्ञा पुं० एक प्रकार का हरा रंग।

मूँछ–संज्ञा स्त्री० [सं० श्मश्रु] ऊपरी ओंठ के ऊपर के बाल जो केवल पुरुषों के उगते हैं। मुहा०—मूँछ उखाड़ना = घमंड चूर करना। मूँछों पर ताव देना = अभिमान से मूँछ मरोड़ना। मूँछें नीची होना = १. घमंड टूट जाना। २. अप्रतिष्ठा होना = बेइज्जती होना।

मूँछी–संज्ञा स्त्री० [देश०] बेसन की बनी हुई

एक प्रकार की घड़ी।
मूज–संज्ञा स्त्री० [सं० मुंज] एक प्रकार का तृण जिसमें टहनियाँ नहीं होतीं और बहुत पतली लंबी पत्तियाँ चारों ओर रहती हैं।
मूँड़†–संज्ञा पुं० [सं० मुंड] सिर।
मुहा०—मूँड़ मारना=बहुत हैरान होना। कोशिश करना। मूँड़ मुड़ाना=संन्यासी होना।
मूँडन–संज्ञा पुं० [सं० मुंडन] चूड़ाकरण संस्कार। मुंडन।
मूँड़ना–क्रि० स० [सं० मुंडन] १ सिर के बाल बनाना। हजामत करना। २ धोखा देकर माल उड़ाना। ठगना। ३ चेला बनाना।
मूँड़ी–संज्ञा स्त्री० [सं० मुंड] १ सिर। २ किसी वस्तु का मूँड़ के आकार का भाग।
मूँदना–क्रि० स० [सं० मुद्रण] १ ऊपर से कोई वस्तु फैलाकर छिपाना। आच्छादित करना। ढाँकना। २ द्वार, मुँह आदि पर कोई वस्तु रखकर उसे बंद करना।
मूक–वि० [सं०] १ गूँगा। अवाक। २ विवश। लाचार।
मूकता–संज्ञा स्त्री० [सं०] गूँगापन।
मूकना*†–क्रि स० [सं० मुक्त] १ दूर करना। छोड़ना। त्यागना। २ बंधन से छुड़ाना।
मूका†–संज्ञा पुं० [सं० मूषा=गवाक्ष] छोटा गोल झरोखा। मोखा।
संज्ञा पुं० दे० "मुक्का"।
मूखना*–क्रि० स० दे० "मूसना"।
मूचना*–क्रि० स० दे० "मोचना"।
मूजी–संज्ञा पुं० [अ०] १ कष्ट पहुँचानेवाला। २ दुष्ट। खल।
मूठ–संज्ञा स्त्री० [सं० मुष्टि] १ मुष्टि। मुट्ठी। २ किसी औजार या हथियार का वह भाग जो हाथ में रहता है। मुठिया। दस्ता। कब्जा। ३ उतनी वस्तु जितनी मुट्ठी में आ सके। ४ एक प्रकार का जुआ। ५ जादू। टोना।
मुहा०—मूठ चलाना या मारना=जादू करना। मूठ लगना=जादू का असर होना।
मूठना*–क्रि० अ० [सं० मुष्ट] नष्ट होना।
मूठी*†–संज्ञा स्त्री० दे० "मुट्ठी"।
मूड़–संज्ञा पुं० दे० "मूँड़"।
मूढ़–वि० [सं०] १ मूर्ख। जड़बुद्धि। बेवकूफ। २ ठक। स्तब्ध। ३ जिसे आगा-पीछा न सूझता हो। डगमगा।
मूढ़गर्भ–संज्ञा पुं० [सं०] गर्भ का बिगड़ना जिसमें गर्भ-स्राव आदि होता है।
मूढ़ता–संज्ञा स्त्री० [सं०] मूर्खता।
मूत–संज्ञा पुं० दे० "मूत्र"।
मूतना–क्रि० अ० [हिं० मूत+ना (प्रत्य०)] पेशाब करना।
मूत्र–संज्ञा पुं० [सं०] शरीर के विषैले पदार्थ को लेकर उपस्थ मार्ग से निकलनेवाला जल। पेशाब। मूत।
मूत्रकृच्छ्र–संज्ञा पुं० [सं०] एक रोग जिसमें पेशाब बहुत कष्ट से या रुक रुककर होता है।
मूत्राघात–संज्ञा पुं० [सं०] पेशाब बंद होने का रोग। मूत्र का रुक जाना।
मूत्राशय–संज्ञा पुं० [सं०] नाभि के नीचे का वह स्थान जिसमें मूत्र संचित रहता है। मसाना। फुकना।
मूना†–क्रि० अ० दे० "मुवना"।
मूर*†–संज्ञा पुं० [सं० मूल] १ मूल। जड़। २ जड़ी। ३ मूलधन। ४ मूल नक्षत्र।
मूरख*‡–वि० दे० "मूर्ख"।
मूरखताई*‡–संज्ञा स्त्री० दे० "मूर्खता"।
मूरचा–संज्ञा पुं० दे० "मोरचा"।
मूरछना*–संज्ञा स्त्री० १ दे० "मूर्च्छना"। २ दे० मूर्च्छा।
क्रि० अ० मूर्च्छित या बेहोश होना।
मूरछा‡*–संज्ञा स्त्री० दे० "मूर्च्छा"।
मूरत*‡–संज्ञा स्त्री० दे० "मूर्ति"।
मूरतिवंत*–वि० [सं० मूर्त्ति+वत् (प्रत्य०)] मूर्तिमान्। देहधारी। सशरीर।
मूरधा–संज्ञा पुं० दे० "मूर्द्धा"।
मूरि, मूरी*–संज्ञा स्त्री० [सं० मूल] १ मूल। जड़। २ जड़ी। बूटी।
मूरुख*‡–वि० दे० "मूर्ख"।
मूर्ख–वि० [सं०] बेवकूफ। अज्ञ। मूढ़।

मूर्खता-संज्ञा स्त्री० [सं०] मूढ़ता। नासमझी। बेवकूफ़ी।

मूर्खत्व-संज्ञा पुं० दे० "मूर्खता"।

मूर्खिनी*-संज्ञा स्त्री० [सं० मूर्ख] मूढ़ा स्त्री।

मूर्च्छन-संज्ञा [सं०] १. संज्ञा लोप होना या करना। बेहोश करना। २. मूर्च्छित करने का मंत्र या प्रयोग। ३. पारे का तीसरा संस्कार। ४. कामदेव का एक बाण।

मूर्च्छना-संज्ञा स्त्री० [सं०] संगीत में एक ग्राम से दूसरे ग्राम तक जाने में सातों स्वरों का आरोह-अवरोह।

मूर्च्छा-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह अवस्था जिसमें प्राणी निश्चेष्ट पड़ा रहता है। संज्ञा का लोप। अचेत होना। बेहोशी।

मूर्छित, मूर्च्छित-वि० [सं०] १. जिसे मूर्च्छा आई हो। बेसुध। बेहोश। अचेत। २. मारा हुआ। (पारा आदि धातुओं के लिये)

मूर्त-वि० [सं०] १. जिसका कुछ रूप या आकार हो। साकार। २. ठोस।

मूर्त्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शरीर। देह। २. आकृति। शकल। सूरत। ३. किसी के रूप या आकृति के सदृश गढ़ी हुई वस्तु। प्रतिमा। विग्रह। ४. चित्र। तसवीर।

मूर्त्तिकार-संज्ञा पुं० [सं०] १. मूर्त्ति बनानेवाला। २. तसवीर बनानेवाला।

मूर्त्तिपूजक-संज्ञा पुं० [सं०] वह जो मूर्त्ति या प्रतिमा की पूजा करता हो।

मूर्त्तिपूजा-संज्ञा स्त्री० [सं०] मूर्त्ति में ईश्वर या देवता की भावना करके उसकी पूजा करना।

मूर्त्तिमान्-वि० [सं०] [स्त्री० मूर्त्तिमती] १. जो रूप धारण किए हो। स-शरीर। २. साक्षात्। प्रत्यक्ष।

मूर्द्ध-संज्ञा पुं० [सं० मूर्द्धन्] सिर।

मूर्द्धकर्णी-संज्ञा स्त्री० [सं०] छाया आदि के लिये सिर पर रखी हुई वस्तु।

मूर्द्धकपारी*-संज्ञा स्त्री० दे० "मूर्द्धकर्णी"।

मूर्द्धन्य-वि० [सं०] १. मूर्द्धा से संबंध रखनेवाला। २. मस्तक में स्थित।

मूर्द्धन्य वर्ण-संज्ञा पुं० [सं०] वे वर्ण जिनका उच्चारण मूर्द्धा से होता है। यथा—ऋ, ॠ, ट, ठ, ड, ढ, ण, र और ष।

मूर्द्धा-संज्ञा पुं० [सं० मूर्द्धन्] सिर।

मूर्द्धाभिषेक-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० मूर्द्धाभिषिक्त] सिर पर अभिषेक या जल-सिंचन।

मूर्वा-संज्ञा स्त्री० [सं०] मरोड़फली।

मूल-संज्ञा पुं० [सं०] १. पेड़ों का वह भाग जो पृथ्वी के नीचे रहता है। जड़। २. खाने के योग्य मोटी जड़। कंद। ३. आदि। आरंभ। शुरू। ४. आदि कारण। उत्पत्ति का हेतु। ५. असल जमा या धन। पूंजी। ६. आरंभ का भाग। ७. नींव। बुनियाद। ८. ग्रंथकार का निज का वाक्य या लेख जिस पर टीका आदि की जाय। ९. उन्नीसवाँ नक्षत्र। वि० [सं०] मुख्य। प्रधान।

मूलक-संज्ञा पुं० [सं०] १. मूली। २. मूल स्वरूप। वि० उत्पन्न करनेवाला। जनक।

मूलद्रव्य-संज्ञा पुं० [सं०] आदिम द्रव्य या भूत जिनसे और द्रव्य बने हों।

मूलधन-संज्ञा पुं० [सं०] वह असल धन जो किसी व्यापार में लगाया जाय। पूंजी।

मूलपुरुष-संज्ञा पुं० [सं०] किसी वंश का आदि-पुरुष जिससे वंश चला हो।

मूलस्थली-संज्ञा स्त्री० [सं०] थाला। आलवाल।

मूलस्थान-संज्ञा पुं० [सं०] १. बाप-दादा की जगह। पूर्वजों का स्थान। २. प्रधान स्थान। ३. मुलतान नगर।

मूलाधार-संज्ञा पुं० [सं०] मानव शरीर के भीतर के छः चक्रों में से एक चक्र। (योग)

मूलिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] जड़ी।

मूली-संज्ञा स्त्री० [सं० मूलक] १. एक पौधा जिसकी जड़ मीठी, चरपरी और तीक्ष्ण होती और खाई जाती है।

मुहा०—(किसी को) मूली गाजर समझना=अति तुच्छ समझना।

२. जड़ी-बूटी। मूलिका।

मूल्य–संज्ञा पु० [स०] किसी वस्तु के बदले में मिलनेवाला धन। दाम। कीमत।
मूल्यवान–वि० [स०] जिसका दाम अधिक हो। बड़े दाम का। कीमती।
मूष, मूषक–संज्ञा पु० [स०] चूहा।
मूस–संज्ञा पु० [स० मूष] चूहा।
मूसदानी–संज्ञा स्त्री० [हिं०मूस + दानी (स० आधान)] चूहा फँसाने का पिंजड़ा।
मूसना–क्रि० स० [स० मूषण] चुराकर ले जाना।
मूसर, मूसल–संज्ञा पु० [स०मुशल] १ धान कूटने का लंबा मोटा डंडा। २ एक अस्त्र जिसे बलराम धारण करते थे।
मूसलधार–क्रि० वि० [हिं० मूसल + धार] मूसले के समान मोटी धार से। (वृष्टि)
मूसला–संज्ञा पु० [हिं० मूसल] मोटी और सीधी जड़ जिसमें इधर-उधर सूत या शाखाएँ न फूटी हों। झखरा का उलटा।
मूसली–संज्ञा स्त्री० [स० मुशली] एक पौधा जिसकी जड़ औषध के काम में आती है।
मूसा–संज्ञा पु० [स० मूषक] चूहा।
संज्ञा पु० [इबरानी] यहूदियों के एक पैगम्बर जिनको खुदा का नूर दिखाई पड़ा था।
मूसाकानी–संज्ञा स्त्री० [स० मूषाकर्णी] एक लता। इसके सब अंग औषधि के काम में आते हैं।
मृग–संज्ञा पु० [स०] [स्त्री० मृगी] १ पशु-मात्र, विशेषतः वन्य पशु। जंगली जानवर। २ हिरन। ३ हाथियों की एक जाति। ४ मार्गशीर्ष। अगहन का महीना। ५ मृगशिरा नक्षत्र। ६ मकर राशि। ७ कस्तूरी का नाफा। ८ पुरुष के चार भेदों में से एक। (कामशास्त्र)
मृगचर्म–संज्ञा पु० [स०] हिरन का चमड़ा जो पवित्र माना जाता है।
मृगछाला–संज्ञा स्त्री० दे० "मृगचर्म"।
[illegible]–संज्ञा पु० [स०] मृगतृष्णा की [illegible]।
मृगतृषा, मृगतृष्णा–संज्ञा स्त्री० [स०] जल की लहरों की वह मिथ्या प्रतीति जो कभी कभी ऊसर मैदानों में कड़ी धूप पड़ने के समय होती है। मृगमरीचिका।
मृगदाव–संज्ञा पु० [स० मृग + दाव = मृगों का वन] काशी के पास 'सारनाथ' नामक स्थान का प्राचीन नाम।
मृगनाथ–संज्ञा पु० [स०] सिंह।
मृगनाभि–संज्ञा पु० [स०] कस्तूरी।
मृगनैनी–संज्ञा स्त्री० दे० "मृगलोचनी"।
मृगभद्र–संज्ञा पु० [स०] हाथियों की एक जाति।
मृगमद–संज्ञा पु० [स०] कस्तूरी।
मृगमरीचिका–संज्ञा स्त्री० [स०] मृगतृष्णा।
मृगमित्र–संज्ञा पु० [स०] चंद्रमा।
मृगमेद–संज्ञा पु० [स०] कस्तूरी।
मृगया–संज्ञा पु० [स०] शिकार। आखेट।
मृगरोचन–संज्ञा पु० [स०] कस्तूरी।
मृगलोचना–वि० स्त्री० [स०] हरिण के समान सुंदर नेत्रोंवाली (स्त्री)।
मृगलोचनी–संज्ञा स्त्री० दे० "मृगलोचना"।
मृगवारि–संज्ञा पु० [स०] मृगतृष्णा का जल।
मृगशिरा–संज्ञा पु० [स०मृगशिरस्] सत्ताईस नक्षत्रों में से पाँचवाँ नक्षत्र।
मृगशीर्ष–संज्ञा पु० दे० "मृगशिरा"।
मृगांक–संज्ञा पु० [स०] १ चंद्रमा। २ वैद्यक में एक प्रकार का रस।
मृगाक्षी–वि० स्त्री० [स०] हरिण के से नेत्रोंवाली।
मृगाशन–संज्ञा पु० [स०] सिंह।
मृगिनी[*]–संज्ञा स्त्री० [स०मृग] हरिणी।
मृगी–संज्ञा स्त्री० [स०] १ हरिणी। हिरनी। २ एक वर्ण-वृत्त। प्रिय-वृत्त। ३ कश्यप ऋषि की दस कन्याओं में एक, जिससे मृगों की उत्पत्ति हुई है। ४. अपस्मार नामक रोग। ५ कस्तूरी।
मृगेंद्र–संज्ञा पु० [स०] सिंह।
मृडा, मृडानी–संज्ञा स्त्री० [स०] दुर्गा।
मृणाल–संज्ञा पु० [स०] १. कमल का डंठल। कमल-नाल। २ कमल की जड़। मुरार। भसीड़।
मृणालिका–संज्ञा स्त्री० दे० "मृणाल"।

मृणालिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कमलिनी। २. वह स्थान जहाँ कमल हों।
मृणाली–संज्ञा स्त्री० दे० "मृणाल"।
मृत–वि० [सं०] मरा हुआ। मुर्दा।
मृतक–संज्ञा पुं० [सं०] मरा हुआ प्राणी।
मृतक-कर्म–संज्ञा पुं० [सं०] मृतक पुरुष की शुद्ध गति के लिए किया जानेवाला कृत्य। प्रेतकर्म। अंत्येष्टि।
मृतकधूम–संज्ञा पुं० [सं०] राख। भस्म।
मृतजीवनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह विद्या जिससे मुर्दे को जिलाया जाता है।
मृतसंजीवनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक बूटी जिसके विषय में यह प्रसिद्ध है कि इसके खिलाने से मुर्दा भी जी उठता है।
मृताशौच–संज्ञा पुं० [सं०] वह अशौच जो किसी आत्मीय के मरने पर लगता है।
मृत्तिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] मिट्टी। खाक।
मृत्युंजय–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जिसने मृत्यु को जीता हो। २. शिव का एक रूप।
मृत्यु–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शरीर से जीवात्मा का वियोग। प्राण छूटना। मरण। मौत। २. यमराज।
मृत्युलोक–*संज्ञा पुं० [सं०] १. यमलोक।* ‡२. मर्त्यलोक।
मृथा*‡–क्रि० वि० १. दे० "वृथा"। २. दे० "मृषा"।
मृदंग–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का बाजा जो ढोलक से कुछ लंबा होता है।
मृदव–संज्ञा पुं० [सं०] गुण के साथ दोष के वैषम्य का प्रदर्शन। (नाट्यशास्त्र)
मृदु–वि० [सं०] [स्त्री० मृद्वी] *१. कोमल।* मुलायम। नरम। २. जो सुनने में कर्कश या अप्रिय न हो। ३. सुकुमार। नाजुक। ४. धीमा। मंद।
मृदुता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कोमलता। मुलायमियत। २. धीमापन। मंदता।
मृदुल–वि० [सं०] १. कोमल। नरम। २. कोमल-हृदय। दयामय। कृपालु। ३. नाजुक। सुकुमार।
मृनाल*–संज्ञा पुं० दे० "मृणाल"।
मृन्मय–वि० [सं०] मिट्टी का बना हुआ।
मृषा–अव्य० [सं०] झूठमूठ। व्यर्थ। वि० असत्य। झूठ।
मृषात्व–संज्ञा पुं० [सं०] मिथ्यात्व।
मृषाभाषी–वि० [सं० मृषाभाषिन्] झूठ बोलनेवाला। झूठा।
मृष्ट–वि० [सं०] शोधित।
मृष्टि–संज्ञा स्त्री० [सं०] शोधन।
में–अव्य० [सं० मध्य] अधिकरण कारक का चिह्न जो किसी शब्द के आगे लगकर उसके भीतर या चारों ओर होना सूचित करता है। आधार या अवस्थान-सूचक शब्द।
मेंगनी–संज्ञा स्त्री० [हि० मींगी ?] छोटी गोलियों के आकार की विष्ठा। लेंड़ी।
मेकल–संज्ञा पुं० [सं०] विंध्य पर्वत का एक भाग जिसमें अमरकंटक है।
मेख–संज्ञा पुं० दे० "मेष"। संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. गाड़ने के लिये एक ओर नुकीली गढ़ी हुई कील। खूँटी। २. कील। काँटा ३. लकड़ी का पच्चड़।
मेखल–संज्ञा स्त्री० दे० "मेखला"।
मेखला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह वस्तु जो किसी *दूसरी वस्तु के मध्य भाग में उसे चारों* ओर से घेरे हुए पड़ी हो। २. करधनी। तागड़ी। किंकिणी। ३. मंडल। मँडरा। ४. डंडे आदि के छोर पर लगा हुआ लोहे आदि का घेरदार बंद। सामी। मान। ५. पर्वत का मध्य भाग। ६. कपड़े का वह टुकड़ा जो साधु लोग गले में डाले रहते हैं। कफनी। अलफी।
मेखली–*संज्ञा स्त्री० [सं० मेखला] १. एक* पहनावा जिससे पेट और पीठ ढकी रहती है और दोनों हाथ खुले रहते हैं। २. करधनी। कटिबंध।
मेघ–संज्ञा पुं० [सं०] १. आकाश में घनीभूत जलवाष्प जिससे वर्षा होती है। बादल। २. संगीत में छः रागों में से एक।
मेघडंबर–संज्ञा पुं० [सं०] १. मेघगर्जन। २. बड़ा शामियाना। दल-बादल।
मेघनाद–संज्ञा पुं० [सं०] १. मेघ का गर्जन।

२ वरुण। ३ रावण का पुत्र इंद्रजित। ४ मयूर। मोर।

मेघपुष्प–संज्ञा पुं० [सं०] १ इंद्र का घोड़ा। २ श्रीकृष्ण के रथ का एक घोड़ा।

मेघमाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] बादलों की घटा। कादंबिनी।

मेघराज–संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

मेघवर्त्त–संज्ञा पुं० [सं०] प्रलय-काल के मेघों में से एक का नाम।

मेघवाई*‡–संज्ञा स्त्री० [हिं० मेघ+वाई (प्रत्य०)] बादलों की घटा।

मेघविस्फूर्जिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्ण वृत्त।

मेघा†–संज्ञा पुं० [सं० मेघ] मेढक।

मेघाच्छन्न, मेघाच्छादित–वि० [सं०] बादलों से ढका या छाया हुआ।

मेघावरि*‡–संज्ञा स्त्री० [सं० मेघावलि] बादलों की घटा।

मेचकता–संज्ञा स्त्री० [सं०] कालापन।

मेचकताई*–संज्ञा स्त्री० दे० 'मेचकता'।

मेज–संज्ञा स्त्री० [फा०] लंबी चौड़ी ऊँची चौकी जो खाना खाने या लिखने-पढ़ने के लिये रखी जाती है। टेबुल।

मेजबान–संज्ञा पुं० [फा०] आतिथ्य करने वाला। मेहमानदार।

मेजा†–संज्ञा पुं० [सं० मंडूक] मेढक। मंडूक।

मेट–संज्ञा पुं० [अं०] मजदूरों का अफसर या सरदार। टंडैल। जमादार।

मेटक*‡–संज्ञा पुं० [हिं० मेटना] नाशक। मिटानेवाला।

मेटनहारा*†–संज्ञा ० [हिं० मेटना + हार (प्रत्य०)] मिटानेवाला। दूर करनेवाला।

मेटना†–क्रि० स० दे० 'मिटाना'।

मेटिया†–संज्ञा स्त्री० दे० "मटकी"।

मेड़–संज्ञा पुं० [सं० भित्ति ?] १ मिट्टी डाल कर बनाया हुआ खेत या जमीन का घेरा। छोटा बाँध। २ दो खेतों के बीच में हद या सीमा के रूप में बना हुआ रास्ता।

मेड़रा†–संज्ञा पुं० [सं० मंडल हिं० मँडरा] [स्त्री० अल्पा० मेड़री] किसी गोल वस्तु का उभरा हुआ किनारा या ढाँचा।

मेड़िया–संज्ञा स्त्री० [सं० मंडप] मढ़ी।

मेढ़क–संज्ञा पुं० [सं० मंडूक] एक जल स्थलचारी जंतु जो एक बालिश्त तक लंबा होता है। मंडूक। दर्दुर।

मेढ़ा–संज्ञा पुं० [सं० मेढ्र=भेंड़ की तरह का] [स्त्री० मेढ़ी] सींगवाला एक चौपाया जो घने रोयों से ढका होता है।

मेढ़ासिंगी–संज्ञा स्त्री० [सं० मेढ़शृंगी] एक झाड़ीदार लता। इसकी जड़ ओषधि है।

मेढ़ी†–संज्ञा स्त्री० [सं० वेणी] तीन लड़ियों में गूँथी हुई चोटी।

मेथी–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक छोटा पौधा जिसकी पत्तियाँ साग की तरह खाई जाती है।

मेथौरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० मेथी + बरी] मेथी का साग मिलाकर बनाई हुई बरी।

मेद–संज्ञा पुं० [सं० मेदस मेद] १ शरीर के अंदर की वसा नामक धातु। चरबी। २ मोटाई या चरबी बढ़ना। ३ कस्तूरी।

मेदा–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रसिद्ध ओषधि। संज्ञा पुं० [अ०] पाकाशय। पट।

मेदिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी। धरती।

मेध–संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञ।

मेधा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बात को स्मरण रखने की मानसिक शक्ति। धारणावाली बुद्धि। २ षोडश मातृकाओं में से एक। ३ छप्पय छंद का एक भेद।

मेधावी–वि० [सं० मेधाविन्] स्त्री० मेधाविनी १ जिसकी धारणाशक्ति तीव्र हो। २ बुद्धिमान्। चतुर। ३ पंडित। विद्वान्।

मेनका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्वर्ग की एक अप्सरा। २ उमा या पार्वती की माता।

मेना–क्रि० स० [हिं० मोयन] पकवान में मोयन डालना।

मेम–संज्ञा स्त्री० [अं० मैडम का संक्षिप्त रूप] १ यूरोप या अमेरिका आदि की स्त्री। २ ताश का एक पत्ता। बीबी। रानी।

मेमना–संज्ञा पुं० [अनु० मे म] १ भेड़ का बच्चा। २ घोड़े की एक जाति।

मेमार–संज्ञा पुं० [अ०] इमारत बनानेवाला।

थवई। राजगीर।

मेय—वि० [सं०] जो नापा जा सके।

मेर*†—संज्ञा पुं० दे० "मेल"।

मेरवना†—क्रि०स० [सं० मेलन] १. मिश्रित करना। मिलाना। २. संयोग कराना।

मेरा—सर्व० [हिं० मैं+रा] [स्त्री० मेरी] "मैं" के संबंधकारक का रूप। मदीय। मम।

*†संज्ञा पुं० दे० "मेला"।

मेराउ, मेराव†—संज्ञा पुं० [हिं० मेर=मेल] मेल। मिलाप। समागम।

संज्ञा स्त्री० अहंकार।

मेरु—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक पुराणोक्त पर्वत जो सोने का कहा गया है। सुमेरु। हेमाद्रि। २. जपमाला के बीच का सबसे बड़ा दाना। सुमेरु। ३. छंदःशास्त्र की एक गणना जिससे यह पता लगता है कि कितने कितने लघु गुरु के कितने छंद हो सकते हैं।

मेरुदंड—संज्ञा पुं० [सं०] १. रीढ़। २. पृथ्वी के दोनों ध्रुवों के बीच गई हुई सीधी कल्पित रेखा।

मेरे—सर्व० [हिं० मेरा] १. 'मेरा' का बहुवचन। २. 'मेरा' का वह रूप जो उसे संबंधवान् शब्द के आगे विभक्ति लगने के कारण प्राप्त होता है।

मेल—संज्ञा पुं० [सं०] १. मिलने की क्रिया या भाव। संयोग। समागम मिलाप। २. एकता। सुलह। ३. मैत्री। मित्रता। दोस्ती। ४. उपयुक्तता। संगति।

मुहा०——मेल खाना, बैठना या मिलना = १. संगति का उपयुक्त होना। साथ निभना। २. दो चीज़ों का जोड़ ठीक बैठना।

५. जोड़। टक्कर। बराबरी। समता। ६. ढंग। प्रकार। चाल। तरह। ७. मिश्रण। मिलावट।

मेलना*†—क्रि० स० [हिं० मेल+ना (प्रत्य०)] १. मिलाना। २. डालना। रखना। ३. पहनाना।

क्रि० अ० इकट्ठा होना। एकत्र होना।

मेला—संज्ञा पुं० [सं० मेलक] १. भीड़-भाड़। २. देवदर्शन, उत्सव, तमाशे आदि के लिये बहुत से लोगों का जमावड़ा।

मेलाना†—क्रि० स० दे० "मिलाना"।

मेली—संज्ञा पुं० [हिं० मेल] मुलाकाती। वि० जल्दी हिल मिल जानेवाला।

मेल्हना†—क्रि० अ० [?] १. छटपटाना। बेचैन होना। २. आनाकानी करके समय बिताना।

मेव—संज्ञा पुं० [देश०] राजपूताने की ओर बसनेवाली एक लुटेरी जाति। मेवाती।

मेवा—संज्ञा पुं० [फ़ा०] किशमिश, बादाम, अखरोट आदि सुखाए हुए बढ़िया फल।

मेवाटी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० मेवा+बाटी] एक पकवान जिसके अंदर मेवे भरे रहते हैं।

मेवाड़—संज्ञा पुं० [देश०] राजपूताने का एक प्रांत जिसकी प्राचीन राजधानी चित्तौर थी।

मेवात—संज्ञा पुं० [सं०] राजपूताने और सिंध के बीच के प्रदेश का पुराना नाम।

मेवाती—संज्ञा पुं० [हिं० मेवात+ई (प्रत्य०)] मेवात का रहनेवाला।

मेवाफरोश—संज्ञा पुं० [फ़ा] मेवे बेचनेवाला।

मेवासा*†—संज्ञा पुं० [हिं० मवासा] १. क़िला। गढ़। २. रक्षा का स्थान। ३. घर।

मेवासी—संज्ञा पुं० [हिं० मेवासा] १. घर का मालिक। २. क़िले में रहनेवाला। ३. सुरक्षित और प्रबल।

मेष—संज्ञा पुं० [सं०] १. भेड़। २. बारह राशियों में से एक।

*मुहा०——मेष करना=आगा-पीछा करना।

मेषवृषण—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

मेषसंक्रांति—संज्ञा स्त्री० [सं०] मेष राशि पर सूर्य के आने का योग या काल। (पर्व)

मेहँदी—संज्ञा स्त्री० [सं० मेन्धी] एक झाड़ी। इसकी पत्तियों को पीसकर लगाने से लाल रंग आता है। इसी से स्त्रियाँ इसे हाथ-पैर में लगाती हैं।

मेह—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रस्राव। मूत्र। २. प्रमेह रोग।

संज्ञा पुं० [सं० मेघ] १. मेघ। बादल। २. वर्षा। झड़ी। मेंह।

मेहतर–संज्ञा पुं० [फा०] [स्त्री० मेहतरानी] मुसलमान भंगी। हलालखोर।
मेहनत–संज्ञा स्त्री० [अ०] श्रम। प्रयास।
मेहनताना–संज्ञा पु० [अ० + फा०] किसी काम का पारिश्रमिक या मजदूरी।
मेहनती–वि० [हिं० मेहनत] मेहनत करनेवाला। परिश्रमी।
मेहमान–संज्ञा पु० [फा०] अतिथि। पाहुना।
मेहमानदारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] अतिथि-सत्कार। आतिथ्य।
मेहमानी–संज्ञा स्त्री० [फा० मेहमान+ई(प्रत्य०)] १. आतिथ्य। अतिथि-सत्कार। पहुनाई। मुहा०—मेहमानी करना=खूब गत बनाना। मारना पीटना। दंड देना। व्यंग्य।
‡२. मेहमान बनकर रहने का भाव।
मेहर–संज्ञा स्त्री० [फा०] कृपा। दया।
संज्ञा स्त्री० दे० "मेहरी"।
मेहरबान–वि० [फा०] कृपालु। दयालु।
मेहरबानी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] दया। कृपा।
मेहरा–संज्ञा पु० [हिं० मेहरी] स्त्रियों की सी चेष्टावाला। जनखा।
मेहराब–संज्ञा स्त्री० [अ०] द्वार के ऊपर का अर्द्धमंडलाकार बनाया हुआ भाग।
मेहरी–संज्ञा स्त्री० [सं० मेहना] १. स्त्री। औरत। २. पत्नी। जोरू।
मैं–सर्व० [सं० अहं] सर्वनाम उत्तम पुरुष में कर्त्ता का रूप। स्वयं। खुद।
*अव्य० दे० "मैं"।
मैं*–अव्य० दे० "मय"।
मैंका–संज्ञा पु० दे० "मायका"।
मैंगल–संज्ञा पु० [सं० मदकल] मस्त हाथी।
वि० मस्त। (हाथी के लिये)
मैंजल*†–संज्ञा स्त्री० [अ० मंजिल] १. पड़ाव। मंजिल। २. सफर। यात्रा।
मैत्रायणि–संज्ञा पु० [सं०] एक उपनिषद्।
मैत्रावरुणि–संज्ञा पु० [सं०] मित्र और वरुण के पुत्र, अगस्त्य।
मैत्री–संज्ञा स्त्री० [सं०] मित्रता। दोस्ती।
मैत्रेय–संज्ञा पु० [सं०] १. एक बुद्ध जो अभी होनेवाले हैं। २. भागवत के अनुसार एक ऋषि। ३. सूर्य्य।
मैत्रेयी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. याज्ञवल्क्य की स्त्री। २. अहल्या।
मैथिल–वि० [सं०] १. मिथिला देश का। मिथिला-संबंधी।
संज्ञा पु० मिथिला देश का निवासी।
मैथिली–संज्ञा स्त्री० [सं०] जानकी। सीता।
मैथुन–संज्ञा पु० [सं०] स्त्री के साथ पुरुष का समागम। संभोग। रति-क्रीड़ा।
मैदा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] बहुत महीन आटा।
मैदान–संज्ञा पुं० [फा०] १. लंबा-चौड़ा समतल स्थान जिसमें पहाड़ी या घाटी आदि न हो। सपाट भूमि। २. वह लंबी चौड़ी भूमि जिसमें कोई खेल खेला जाय।
मुहा०—मैदान में आना=मुकाबले पर आना। मैदान साफ होना=मार्ग में कोई बाधा आदि न होना। मैदान मारना = खेल, बाजी आदि में जीतना।
३. युद्धक्षेत्र। रणक्षेत्र।
मुहा०—मैदान करना=लड़ना। युद्ध करना। मैदान मारना = विजय प्राप्त करना।
मैन–संज्ञा पु० [सं० मदन] १. कामदेव। मदन। २. मोम।
मैनफल–संज्ञा पु० [सं० मदनफल] १. मझोले आकार का एक कँटीला वृक्ष। २. इस वृक्ष का फल जो अखरोट की तरह होता है और औषध के काम में आता है।
मैनसिल–संज्ञा स्त्री० [सं० मनःशिला] एक प्रकार की पीली धातु।
मैना–संज्ञा स्त्री० [सं० मदना] काले रंग का एक प्रसिद्ध पक्षी जो सिखाने से मनुष्य की सी बोली बोलने लगता है। सारिका।
संज्ञा स्त्री० दे० "मेनका"।
संज्ञा पु० [देश०] एक जाति जो राजपूताने में पाई जाती और "मीना" कहलाती है।
मैनाक–संज्ञा पु० [सं०] १. एक पर्वत जो हिमालय का पुत्र माना जाता है। २. हिमालय की एक ऊँची चोटी।
मैनावली–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त।
मैमंत*†–वि० [सं० मदमत्त] १. मदोन्मत्त।

मतवाला। २. अहंकारी। अभिमानी।
मैया–संज्ञा स्त्री० [सं० मातृका] माता। माँ।
मैर†–संज्ञा स्त्री० [सं० मदर, प्रा० मिअर = क्षणिक] साँप के विष की लहर?
मैल–संज्ञा स्त्री० [सं० मलिन] १. गर्द, धूल आदि जिसके पड़ने या जमने से किसी वस्तु की चमक-दमक नष्ट हो जाती है। मल। गंदगी।
मुहा०—हाथ पैर की मैल = तुच्छ वस्तु।
२. दोष। विकार।
मैलखोरा–वि० [हिं० मैल+फ़ा० खोर] (रंग आदि) जिस पर जमी हुई मैल जल्दी दिखाई न दे।
मैला–वि० [सं० मलिन, प्रा० मइल] १. जिस पर मैल जमी हो। मलिन। अस्वच्छ। २. विकार-युक्त। दूषित। ३. गंदा। दुर्गंधयुक्त।
संज्ञा पुं० ग़लीज़। गू। कूड़ा-कर्कट।
मैला-कुचैला–वि० [हिं० मैला + सं० कुचैल= गंदा वस्त्र] १. जो बहुत मैले कपड़े पहने हुए हो। २. बहुत मैला। गंदा।
मैलापन–संज्ञा पुं० [हिं० मैला+पन (प्रत्य०)] मलिनता। गंदापन।
मों*†–अव्य० दे० "मैं"।
सर्व० दे० "मों"।
मोंगरा–संज्ञा पुं० १. दे० "मोगरा"। २. दे० "मुंगरा"।
मोंछ–संज्ञा स्त्री० दे० "मूंछ"।
मोंढ़ा–संज्ञा पुं० [सं० मूर्द्धा] १. बाँस आदि का बना हुआ एक प्रकार का ऊँचा गोलाकार आसन। २. कंधा।
मो*–सर्व० [सं० मम] १. मेरा। २. अवधी और ब्रजभाषा में "मैं" का वह रूप जो उसे कर्त्ता कारक के अतिरिक्त और किसी कारक-चिह्न लगने के पहले प्राप्त होता है।
मोकना*†–क्रि० स० [सं० मुक्त] १. छोड़ना। परित्याग करना। २. क्षिप्त करना। फेंकना।
मोकल*†–वि० [सं० मुक्त] छूटा हुआ। जो बँधा न हो। आज़ाद। स्वच्छंद।
मोकला†–वि० [हिं० मोकल] १. अधिक चौड़ा। कुशादा। २. छूटा हुआ। स्वच्छंद।
मोक्ष–संज्ञा पुं० [सं०] १. बंधन से छूट जाना। छुटकारा। २. शास्त्रों के अनुसार जीव का जन्म और मरण के बंधन से छूट जाना। मुक्ति। ३. मृत्यु। मौत।
मोक्षद–संज्ञा पुं० [सं०] मोक्ष देनेवाला।
मोख*†–संज्ञा पुं० दे० "मोक्ष"।
मोखा–संज्ञा पुं० [सं० मुख] बहुत छोटी खिड़की। झरोखा।
मोगरा–संज्ञा पुं० [सं० मुद्गर] १. एक प्रकार का बढ़िया बड़ा बेला (पुष्प)। २. दे० "मोंगरा"।
मोगल–संज्ञा पुं० दे० "मुगल"।
मोघ–वि० [सं०] निष्फल। चूकनेवाला।
मोच–संज्ञा स्त्री० [सं० मुच्] शरीर के किसी अंग के जोड़ की नस का अपने स्थान से इधर-उधर खिसक जाना।
मोचन–संज्ञा पुं० [सं०] १. बंधन आदि से छुड़ाना। मुक्त करना। २. दूर करना। हटाना। ३. रहित करना। ले लेना।
मोचना–क्रि० स० [सं० मोचन] १. छोड़ना। २. गिराना। बहाना। ३. छुड़ाना।
संज्ञा पुं० [सं० मोचन] हज्जामों का वह औज़ार जिससे वे बाल उखाड़ते हैं।
मोचरस–संज्ञा पुं० [सं०] सेमल का गोंद।
मोची–संज्ञा पुं० [सं० मोचन] वह जो जूते आदि बनाने का व्यवसाय करता हो।
वि० [सं० मोचिन्] [स्त्री० मोचिनी] १. छुड़ानेवाला। २. दूर करनेवाला।
मोच्छ*†–संज्ञा पुं० दे० "मोक्ष"।
मोछ–संज्ञा स्त्री० दे० "मूंछ"।
*†संज्ञा पुं० दे० "मोक्ष"।
मोज़ा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. पैरों में पहनने का एक प्रकार का बुना हुआ कपड़ा। पायताबा। जुर्राब। २. पैर में पिंडली के नीचे का भाग।
मोट–संज्ञा स्त्री० [हिं० मोटरी] गठरी। मोटरी।
संज्ञा पुं० चमड़े का बड़ा थैला जिससे खेत सींचने के लिये कूएँ से पानी निकालते हैं। चरसा। पुर।

*†वि० [हिं० मोटा] १ दे० "मोटा"। २ कम मोल का। साधारण।
मोटनक–संज्ञा पु० [सं०] एक वर्णवृत्त।
मोटरी–संज्ञा स्त्री० [तेलग० मूटा=गठरी] गठरी
मोटा–वि० [सं० मुष्ट] [स्त्री० मोटी] १ जिसका शरीर चरबी आदि के कारण बहुत फूल गया हो। दुबला का उलटा। स्थूल शरीरवाला। २ पतला का उलटा। दबीज। दलदार। गाढ़ा। ३ जिसका घेरा या मान आदि साधारण से अधिक हो। मुहा०—मोटा असामी = अमीर। मोटा भाग्य = सौभाग्य। खुशकिस्मती। ४ जिसके कण खूब महीन न हो गए हों। दरदरा। ५ घटिया। खराब। मुहा०—मोटी बात=साधारण बात। मामूली बात। मोटे हिसाब से=अंदाज से। अटकल से। ६ भारी या कठिन। मुहा०—मोटा दिखाई देना = आँख की ज्योति में कमी होना। कम दिखाई देना। ७ घमंडी। अहंकारी।
मोटाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० मोटा + ई (प्रत्य०)] १ मोटे होने का भाव। स्थूलता। पीवरता। २ शरारत। पाजीपन। मुहा०—मोटाई चढ़ना = बदमाश या घमंडी होना।
मोटाना–क्रि० अ० [हिं० मोटा + आना (प्रत्य०)] १ मोटा होना। स्थूलकाय हो जाना। २ अभिमानी होना। ३ धनवान् होना। क्रि० स० दूसरे को मोटा करना।
मोटापा–संज्ञा पु० दे० "मोटाई"।
मोटिया–संज्ञा पु० [हिं० मोटा + इया (प्रत्य०)] मोटा और खुरखुरा देशी कपड़ा। गाढ़ा। खद्दड़। खादी। संज्ञा पु० [हिं० मोट=बोझ] बोझ ढोनेवाला।
मोट्टायित–संज्ञा पु० [सं०] साहित्य में एक हाव जिसमें नायिका अपने आंतरिक प्रेम को कटु भाषण आदि द्वारा छिपाने की चेष्टा करने पर भी छिपा नहीं सकती।
मोठ–संज्ञा स्त्री० [सं० मकुष्ठ] मूँग की तरह का एक मोटा अन्न। मोट। मोथी। बन मूँग।
मोठस–वि० [?] मौन। चुप।
मोड़–संज्ञा पु० [हिं० मुड़ना] १. रास्ते आदि में घूम जाने का स्थान। २ घुमाव या मुड़ने की क्रिया या भाव।
मोड़ना–क्रि० स० [हिं० मुड़ना का प्रेर०] १ फेरना। लौटाना। मुहा०—मुँह मोड़ना = विमुख होना। २ किसी फैली हुई सतह का कुछ अंश समेटकर एक तह के ऊपर दूसरी तह करना। ३ धार भुथरी करना। कुंठित करना। जैसे—धार मोड़ना।
मोतियदाम–संज्ञा पु० [सं० मौक्तिकदाम] चार जगण का एक वर्णवृत्त।
मोतिया–संज्ञा पु० [हिं० मोती + इया (प्रत्य०)] १ एक प्रकार का बेला। २ एक प्रकार का सलमा। वि० १. हलका गुलाबी या पीले और गुलाबी रंग के मेल का (रंग)। २ छोटे गोल दानों का।
मोतियाबिंद–संज्ञा पु० [हिं० मोतिया + सं० बिंदु] आँख का एक रोग जिसमें उसके एक परदे में गोल झिल्ली सी पड़ जाती है।
मोती–संज्ञा पु० [सं० मौक्तिक, प्रा० मोत्तिअ] एक प्रसिद्ध बहुमूल्य रत्न जो छिछले समुद्रों में सीपी में से निकलता है। मुहा०—मोती गरजना=मोती चटकना या तड़क जाना। मोती रोलना=बिना परिश्रम अथवा थोड़े परिश्रम से बहुत अधिक धन कमाना या प्राप्त करना। मोतियों से मुँह भरना=बहुत अधिक धन-संपत्ति देना। संज्ञा स्त्री० बाली जिसमें मोती पड़े रहते हैं।
मोतीचूर–संज्ञा पु० [हिं० मोती + चूर] छोटी बूँदियों का लड्डू।
मोतीझिरा–संज्ञा पु० [हिं० मोती + झिरा ?] छोटी शीतला का रोग। मथ ज्वर।
मोती-बेल–संज्ञा स्त्री० [हिं० मोतिया + बेल] मोतिया बेला। (फूल)
मोती भात–संज्ञा पु० [हिं० मोती + भात] एक विशेष प्रकार का भात।
मोतीसिरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० मोती + सं० श्री]

मोतियों की कंठी। मोतियों की माला।

मोथा–संज्ञा पुं० [सं० मुस्तक] नागरमोथा नामक घास या उसकी जड़।

मोद–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० मोदी] १.आनंद। हर्ष। प्रसन्नता। खुशी। २. एक वर्ण-वृत्त। ३. सुगंध। महक। खुशबू।

मोदक–संज्ञा पुं० [सं०] १. लड्डू। मिठाई। २. औपध आदि का बना हुआ लड्डू। ३. गुड़। ४. चार नगण का एक वर्णवृत्त।

मोदकी–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की गदा

मोदना*–क्रि० अ० [सं० मोदन] १. प्रसन्न होना। खुश होना। २. सुगंधि फैलना। क्रि० स० प्रसन्न करना। खुश करना।

मोदी–संज्ञा पुं० [सं० मोदक=लड्डू] आटा, दाल, चावल आदि बेचनेवाला बनिया। परचूनिया।

मोदीखाना–संज्ञा पुं० [हिं० मोदी + फ़ा० खाना] अन्नादि रखने का घर। भंडारा।

मोधुक–संज्ञा पुं० [सं० मोदक = एक जाति] मछली पकड़नेवाला। धीवर। मछुआ।

मोघु†–वि० [सं० मुग्ध] बेवकूफ। मूर्ख।

मोन–संज्ञा पुं० दे० "मौना"।

मोना*†–क्रि० स० [हिं० मोयन] भिगोना। संज्ञा पुं० [सं० मौण] झाबा। पिटारा।

मोम–संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह चिकना नरम पदार्थ जिससे शहद की मक्खियाँ छत्ता बनाती हैं।

मोमजामा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह कपड़ा जिस पर मोम का रोगन चढ़ाया गया हो। तिरपाल।

मोमबत्ती–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० मोम + हिं० बत्ती] मोम या ऐसे ही किसी और पदार्थ की बत्ती जो प्रकाश के लिये जलाई जाती है।

मोमियाई–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] नकली शिला-जीत।

मोमी–वि० [फ़ा०] मोम का बना हुआ।

मोयन–संज्ञा पुं० [हिं० मैन=मोम] माँड़े हुए आटे में घी या चिकना देना जिसमें उससे बनी वस्तु खसखसी और मुलायम हो।

मोरंग–संज्ञा पुं० [देश०] नैपाल का पूर्वी भाग।

मोर–संज्ञा पुं० [सं० मयूर] [स्त्री० मोरनी] १. एक अत्यंत सुंदर प्रसिद्ध बड़ा पक्षी। २. नीलम की आभा।

*†सर्व० [स्त्री० मोरी] दे० "मेरा"।

मोरचंदा–संज्ञा पुं० दे० "मोरचंद्रिका"।

मोरचंद्रिका–संज्ञा स्त्री० [हिं० मोर + चंद्रिका] मोर-पंख पर की चंद्राकार बूटी।

मोरचा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. लोहे की सतह पर चढ़नेवाली वह लाल या पीले रंग की बुकनी की सी तह जो वायु और नमी के योग से रासायनिक विकार होने से उत्पन्न होती है। जंग। २. दर्पण पर जमी मैल। संज्ञा पुं० [फ़ा० मोरचाल] १ वह गड्ढा जो गढ़ के चारों ओर रक्षा के लिये खोदा जाता है। २. वह स्थान जहाँ से सेना, गढ़ या नगर आदि की रक्षा की जाती है।

मुहा०—मोरचाबंदी करना = गढ़ के चारों ओर यथास्थान सेना नियुक्त करना। मोरचा जीतना या मारना=शत्रु के मोरचे पर अधि-कार कर लेना। मोरचा बाँधना=दे० "मोरचा बंदी करना"। मोरचा लेना=युद्ध करना।

मोरछल–संज्ञा पुं० [हिं० मोर + छड़] मोर के परों से बनाया हुआ चँवर जो देवताओं और राजाओं आदि के मस्तक के पास डुलाया जाता है।

मोरछली–संज्ञा पुं० दे० "मौलसिरी"। संज्ञा पुं० [हिं० मोरछल + ई (प्रत्य०)] मोरछल हिलानेवाला।

मोरछाँह*–संज्ञा स्त्री० दे० "मोरछल"।

मोरजुटना–संज्ञा पुं० [हिं० मोर + जुटना] एक प्रकार का आभूषण।

मोरन*–संज्ञा स्त्री० [हिं० मोड़ना] मोड़ने की क्रिया या भाव। मोड़ना। संज्ञा स्त्री० [सं० मोरट] बिलोया हुआ दही जिसमें मिठाई और सुगंधित वस्तुएँ डाली गई हों। शिखरन।

मोरना*–क्रि० स० दे० "मोड़ना"। क्रि० स० [हिं० मोरन] दही को मथकर मक्खन निकालना।

मोरनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० मोर या स्त्री० रूप] १ मोर पक्षी की मादा। २ मोर के आकार का टिकड़ा जो नथ में पिरोया जाता है।
मोरपख–संज्ञा पु० [हिं० मोर+पंख] मोर का पर।
मोरपखी–संज्ञा स्त्री० [हिं० मोरपख+ई (प्रत्य०)] वह नाव जिसका एक सिरा मोर के पर की तरह बना और रँगा हुआ हो। संज्ञा पु० मोर के पर से मिलता-जुलता गहरा चमकीला नीला रंग।
वि० मोर के पंख के रंग का।
मोरपखा*†–संज्ञा पु० [हिं० मोरपख] १ मोर का पर। २ मोरपख की कलगी।
मोरमुकुट–संज्ञा पु० [हिं० मोर+मुकुट] मोर के पंखों का बना हुआ मुकुट।
मोरवा*†–संज्ञा पु० दे० "मोर"।
मोरशिखा–संज्ञा स्त्री० [सं०मयूर+शिखा] एक प्रकार की जड़ी।
मोरा*†–वि० दे० "मेरा"।
मोराना*†–क्रि० स० [हिं० मोड़ना का प्रे०] चारों ओर घुमाना। फिराना।
मोरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० मोहरी] वह नाली जिसमें गंदा और मैला पानी बहता हो। पनाली।
*†–संज्ञा स्त्री० [हिं० मोर] मोर की मादा।
मोल–संज्ञा पु० [सं० मूल्य] कीमत। दाम। मूल्य।
यौ०—मोल-चाल=१ अधिक मूल्य। २ किसी चीज का दाम घटा बढ़ाकर तै करना।
मोलना†–संज्ञा पु० [अ० मौलाना] मौलवी।
मोलाना*–क्रि० स० [हिं० मोल] मोल पूछना या तै करना।
मोवना*†–क्रि० स० दे० "मोना"।
मोष–संज्ञा पु० दे० "मोक्ष"।
मोषण–संज्ञा पु० [सं०] १ लूटना। २ चोरी करना। ३ वध करना।
मोह–संज्ञा पु० [सं०] १ अज्ञान। भ्रम। भ्रांति। २ शरीर और सांसारिक पदार्थों को अपना या सत्य समझने की दुःखदायिनी बुद्धि। ३ प्रेम। मुहब्बत। प्यार। ४ साहित्य में ३३ संचारी भावों में से एक। भय, दुःख, चिंता आदि से उत्पन्न चित्त की विकलता। ५ दुःख। कष्ट। ६ मूर्च्छा। बेहोशी। गश।
मोहक–वि० [सं०] १ मोह उत्पन्न करनेवाला। २ लुभानेवाला। मनोहर।
मोहटा–संज्ञा पु० [सं०] दस अक्षरों का एक वर्णवृत्त। बाला।
मोहड़ा–संज्ञा पु० [हिं० मुँह+डा (प्रत्य०)] १ किसी पात्र का मुँह या खुला भाग। २ किसी पदार्थ का अगला या ऊपरी भाग।
मोहताज–वि० दे० "मुहताज"।
मोहन–संज्ञा पु० [सं०] १ जिसे देखकर जी लुभा जाय। २ श्रीकृष्ण। ३ एक वर्णवृत्त। ४ एक प्रकार का तांत्रिक प्रयोग जिससे किसी को बेहोश या मूर्च्छित करते हैं। ५ एक अस्त्र जिससे शत्रु मूर्च्छित किया जाता था। ६ कामदेव के पाँच बाणों में से एक।
वि० [सं०] [स्त्री० मोहनी] मोह उत्पन्न करनेवाला।
मोहनभोग–संज्ञा पु० [हिं० मोहन+भोग] १ एक प्रकार का हलुआ। २ एक प्रकार का आम।
मोहनमाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] सोने की गुरियों या दानों की बनी हुई माला।
मोहना–क्रि० अ० [सं० मोहन] १ मोहित होना। रीझना। २ मूर्च्छित होना।
क्रि० स० [सं० मोहन] १ अपने ऊपर अनुरक्त करना। मोहित करना। लुभा लेना। २ भ्रम में डालना। धोखा देना।
मोहनास्त्र–संज्ञा पु० दे० 'मोहन' (५)।
मोहनी–संज्ञा स्त्री०[सं०] १ एक वर्णवृत्त। २ भगवान का वह स्त्री रूप जो उन्होंने समुद्र-मथन के उपरांत अमृत बाँटने समय धारण किया था। ३ वशीकरण का मंत्र।
मुहा०—मोहनी डालना या लाना=माया के वश करना। जादू करना। मोहनी लगना=मोहित होना। लुभाना।
४ माया।

वि० स्त्री० [सं०] मोहित करनेवाली। अत्यंत सुंदरी।

मोहर—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. अक्षर, चिह्न आदि दबाकर अंकित करने का ठप्पा। २. उपर्युक्त वस्तु की छाप जो कागज या कपड़े आदि पर ली गई हो। ३. अशरफ़ी।

मोहरा—संज्ञा पुं० [हिं० मुँह + रा (प्रत्य०)] [स्त्री० मोहरी] १. किसी बरतन का मुँह या खुला भाग। २. किसी पदार्थ का ऊपरी या अगला भाग। ३. सेना की अगली पंक्ति। ४. फ़ौज की चढ़ाई का रुख। मुहा०—मोहरा लेना = १. सेना का मुकाबला करना। २. भिड़ जाना। प्रतिद्वंद्विता करना। ५. कोई छेद या द्वार जिससे कोई वस्तु बाहर निकले। ६. चोली आदि की तनी। संज्ञा पुं० [फ़ा० मोहरः] १. शतरंज की कोई गोटी। २. मिट्टी का साँचा जिसमें चीजें ढालते हैं। ३. रेशमी वस्त्र घोटने का घोटना। ४. सिंगिया विष। ५. ज़हर-मोहरा।

मोहरात्रि—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह प्रलय जो ब्रह्मा के पचास वर्ष बीतने पर होता है।

मोहरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० मोहरा] १. बरतन आदि का छोटा मुँह। २. पाजामे का वह भाग जिसमें टाँग रहती है। ३. दे० "मोरी"।

मोहर्रिर—संज्ञा पुं० [अ०] लेखक। मुंशी।

मोहलत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. फुरसत। अवकाश। छुट्टी। २. अवधि।

मोहार†—संज्ञा पुं० [हिं० मुँह + आर (प्रत्य०)] १. द्वार। दरवाजा। २. मुँहड़ा।

मोहिं*—सर्व० [सं० मह्यं] मुझको। मुझे। (ब्रज और अवधी)

मोहित—वि० [सं०] १. मोह या भ्रम में पड़ा हुआ। मुग्ध। २. मोहा हुआ। आसक्त।

मोहिनी—वि० स्त्री० [सं०] मोहनेवाली। संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विष्णु के एक अवतार का नाम। २. माया। जादू। टोना। ३. एक अर्द्धसमवृत्ति। ४. पंद्रह अक्षरों का एक वर्णिक छंद।

मोही—वि० [सं० मोहिन्] मोहित करनेवाला। वि० [हिं० मोह + ई (प्रत्य०)] १. मोह करनेवाला। प्रेम करनेवाला। २. लोभी। लालची। ३. अज्ञानी।

मोहोपमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अलंकार जो केशवदास के अनुसार उपमा का एक भेद है, पर और आचार्य जिसे 'भ्रांति' अलंकार कहते हैं।

मौंगी*—संज्ञा स्त्री० [सं० मौन] मौन। चुप।

मौंड़ा*†—संज्ञा पुं० [सं० माणवक] [स्त्री० मौंड़ी] लड़का। बालक।

मौक़ा—संज्ञा पुं० [अ०] १. घटनास्थल। वारदात की जगह। २. देश। स्थान। जगह। ३. अवसर। समय।

मौक़ूफ़—वि० [अ०] [संज्ञा मौक़ूफ़ी] १. रोका हुआ। बंद किया हुआ। २. नौकरी से अलग किया गया। बरखास्त। ३. रद किया गया। ४. अवलंबित। निर्भर।

मौक्तिकदाम—संज्ञा पुं० [सं०] बारह अक्षरों का एक वर्णिक छंद।

मौक्तिकमाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] ग्यारह अक्षरों की एक वर्णिक वृत्ति।

मौख—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का मसाला।

मौखरी—संज्ञा पुं० [सं०] भारत का एक प्राचीन राजवंश।

मौखिक—वि० [सं०] १. मुख का। २. जबानी।

मौज—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. लहर। तरंग। २. मन की उमंग। उछंग। जोश। मुहा०—किसी की मौज पाना = मरजी जानना। इच्छा से अवगत होना। ३. धुन। ४. सुख। आनंद। मजा। ५. प्रभूति। विभव। विभूति।

मौजा—संज्ञा पुं० [अ०] गाँव। ग्राम।

मौजी—वि० [हिं० मौज + ई (प्रत्य०)] १. जो जी में आवे, वही करनेवाला। २. सदा प्रसन्न रहनेवाला। आनंदी।

मौजूद—वि० [अ०] १. उपस्थित। हाजिर। विद्यमान। २. प्रस्तुत। तैयार।

मौजूदगी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] उपस्थिति।

मौजूदा—वि० [अ०] वर्तमान काल का।

प्रस्तुत।
मौड़ा*†–संज्ञा पु० दे० "मौंड़ा"।
मौत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ मरण। मृत्यु।
मुहा०—मौत का सिर पर खेलना = १ मरने को होना। २ आपत्ति समीप होना। २ मरने का समय। काल। ३ अत्यंत कष्ट। आपत्ति।
मौताद–संज्ञा स्त्री० [अ० मात्रा]।
मौन–संज्ञा पु० [सं०] १ चुप रहना। न बोलना। चुप्पी।
मुहा०—मौन ग्रहण या धारण करना = चुप रहना। न बोलना। मौन खोलना = चुप रहने के उपरांत बोलना। मौन तजना=चुप्पी छोड़ना। बोलने लगना। मौन बाँधना = चुप हो जाना। मौन लेना या साधना = चुप होना। न बोलना। मौन सँभारना* = मौन साधना। चुप होना।
२ मुनियों का व्रत। मुनिव्रत।
वि० [सं० मौनी] जो न बोले। चुप।
*‡संज्ञा पु० [सं० मौण] १ बरतन। पात्र। २ डब्बा।
मौनव्रत–संज्ञा पु० [सं०] मौन धारण करने का व्रत। चुप रहने का व्रत।
मौनी–वि० [सं० मौनिन्] १ चुप रहनेवाला। मौन धारण करनेवाला। २ मुनि।
मौर–संज्ञा पु० [सं० मकुट] [स्त्री० अल्पा० मौरी] १ विवाह के समय का एक शिरोभूषण जो ताड़पत्र या खखड़ी आदि का बनाया जाता है। २ शिरोमणि। प्रधान।
संज्ञा पु० [सं० मुकुल] मंजरी। बौर।
संज्ञा पु० [सं० मौलि = सिर] गरदन।
मौरना–क्रि० स० [हिं० मौर=ना (प्रत्य०)] वृक्षों पर मंजरी लगना। बौर लगना।
मौरसिरी*–संज्ञा स्त्री० दे० 'मौलसिरी"।
मौरूसी–वि० [अ०] बाप-दादा के समय से चला आया हुआ। पैतृक।
मौर्य्य–संज्ञा पु० [सं०] क्षत्रियों के एक वंश का नाम। सम्राट चंद्रगुप्त और अशोक इसी वंश में हुए थे।
मौलवी–संज्ञा पु० [अ०] मुसलमान धर्म्म का आचार्य्य जो अरबी, फारसी आदि का पंडित होता है।
मौलसिरी–संज्ञा स्त्री० [सं० मौलि+श्री] एक बड़ा सदाबहार पेड़ जिसमें छोटे छोटे सुगंधित फूल लगते हैं। 'बकुल।
मौलि–संज्ञा पु० [सं०] १ चोटी। सिरा। चूड़ा। २ मस्तक। सिर। ३ किरीट। ४ जूड़ा। जटाजूट। ५, प्रधान व्यक्ति। सरदार।
मौसर*†–वि० दे० "मयस्सर"।
मौसा–संज्ञा पु० [हिं० मौसी का पु०] [स्त्री० मौसी] माता की बहिन का पति।
मौसिम–संज्ञा पु० [अ०] [वि० मौसिमी] १ उपयुक्त समय। २ ऋतु।
मौसी–संज्ञा स्त्री० [सं० मातृष्वसा] [वि० मौसेरा] माता की बहिन। मासी।
मौसेरा–वि० [हिं० मौसी + एरा (प्रत्य०)] मौसी के द्वारा संबद्ध। मौसी के संबंध का।
म्यावँ–संज्ञा स्त्री० [अनु०] बिल्ली की बोली।
मुहा०—म्यावँ म्यावँ करना = भयभीत होकर धीमी आवाज से बोलना।
म्यान–संज्ञा पु० [फा० मियान] १ तलवार, कटार आदि का फल रखने का खाना। २ अन्नमय कोश। शरीर।
म्याना*–क्रि०स० [हिं०म्यान] म्यान में रखना। *संज्ञा पु० दे० मियाना"।
म्यो–संज्ञा स्त्री० [अनु०] बिल्ली की बोली।
म्योंढ़ी–संज्ञा स्त्री० [सं० निर्गुंण्डी] एक सदाबहार भाड़ जिसमें पीले छोटे फूलों की मंजरियाँ लगती हैं।
म्लान–वि० [सं०] [भाव० संज्ञा म्लानता] १ मलिन। कुम्हलाया हुआ। २ दुर्बल। ३ मैला। मलिन।
म्लेच्छ–संज्ञा पु० [सं०] मनुष्यों की वे जातियाँ जिनमें वर्णाश्रम धर्म्म न हो। वि० १ नीच। २ पाप रत। पापी।
म्हा*†–सर्व० दे० 'मुझ"।
म्हारा*†–सर्व० दे० हमारा'।

य

य–हिंदी वर्णमाला का २६ वाँ अक्षर। इसका उच्चारण-स्थान तालु है।

यंत्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. तांत्रिकों के अनुसार कुछ विशिष्ट प्रकार से बने हुए कोष्टक आदि। जंतर। २. वह उपकरण, जो किसी विशेष कार्य के लिये प्रस्तुत किया जाय। औजार। ३. किसी खास काम के लिये बनाई हुई कल या औजार। ४. बंदूक। ५. बाजा। वाद्य। ६. ताला।

यंत्रण–संज्ञा पुं० [सं०] १. रक्षा करना। २. बाँधना। ३. नियम में रखना। नियंत्रण।

यंत्रणा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. क्लेश। तकलीफ। २. दर्द। वेदना। पीड़ा।

यंत्र-मंत्र–संज्ञा पुं० [सं०] जादू-टोना।

यंत्रविद्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] कलों के चलाने और बनाने की विद्या।

यंत्रशाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वेधशाला। २. वह स्थान जहाँ अनेक प्रकार के यंत्र हों।

यंत्रालय–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह स्थान जहाँ कलें हों। २. छापाखाना।

यंत्रित–वि० [सं०] १. यंत्र आदि की सहायता से रोका या बंद किया हुआ। २. ताले में बंद।

यंत्री–संज्ञा पुं० [सं० यंत्रिन्] १. यंत्र-मंत्र करनेवाला। तांत्रिक। २. बाजा बजानेवाला।

य–संज्ञा पुं० [सं०] १. यश। २. योग। ३. सवारी। ४. संयम। ५. छंद-शास्त्र में यगण का संक्षिप्त रूप।

यकअंगी–वि० दे० "एकांगी"।

यकता–वि० [फ़ा०] [संज्ञा यकताई] जो अपनी विद्या या विषय में एक ही हो। अद्वितीय।

यक-बयक, यकबारगी–क्रि० वि० [फ़ा०] यकबयक। अचानक। एकाएक। सहसा।

यकसाँ–वि० [फ़ा] एक समान। बराबर।

यकीन–संज्ञा पुं० [अ०] विश्वास। एतबार।

यकृत–संज्ञा पुं० [सं०] १. पेट में दाहिनी ओर की एक थैली जिसकी क्रिया से भोजन पचता है। जिगर। कालखंड। २. वह रोग जिसमें यह अंग दूषित होकर बढ़ जाता है। बर्म-जिगर।

यक्ष–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार के देवता जो कुबेर की निधियों के रक्षक माने जाते हैं। २. कुबेर।

यक्षकर्दम–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का अंग-लेप।

यक्षपति–संज्ञा पुं० [सं०] कुबेर।

यक्षपुर–संज्ञा पुं० [सं०] अलकापुरी।

यक्षिणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. यक्ष की पत्नी। २. कुबेर की पत्नी।

यक्षी–संज्ञा स्त्री० दे० "यक्षिणी"। संज्ञा पुं० [सं० यक्ष + ई (प्रत्य०)] वह जो यक्ष की साधना करता हो।

यक्षेश्वर–संज्ञा पुं० [सं०] कुबेर।

यक्ष्मा–संज्ञा पुं० [सं० यक्ष्मन्] क्षयी रोग। तपेदिक।

यख़नी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] उबले हुए मांस का रसा। शोरबा।

यगण–संज्ञा पुं० [सं०] छंदःशास्त्र में एक गण। यह एक लघु और दो गुरु मात्राओं का होता है (।SS)। संक्षिप्त रूप 'य'।

यच्छ*‡–संज्ञा पुं० दे० "यक्ष"।

यजन–संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञ करना।

यजमान–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो यज्ञ करता हो। यष्टा। २. वह जो ब्राह्मणों को दान देता हो।

यजमानी–संज्ञा स्त्री० [सं० यजमान + ई (प्रत्य०)] १. यजमान का भाव या धर्म। २. यजमान के प्रति पुरोहित की वृत्ति।

यजु–संज्ञा पुं० दे० "यजुर्वेद"।

यजुर्वेद–संज्ञा पुं० [सं०] चार प्रसिद्ध वेदों में से एक वेद जिसमें विशेषतः यज्ञ-कर्मों का विस्तृत विवरण है।

यजुर्वेदी–संज्ञा पुं० [सं० यजुर्वेदिन्] यजुर्वेद की शाखा या यजुर्वेद के अनुसार सब कृत्य करनेवाला।

यज्ञ–संज्ञा पु०[सं०] प्राचीन भारतीय आर्यों का एक प्रसिद्ध वैदिक कृत्य जिसमें प्रायः हवन और पूजन होता था। मख। याग।
यज्ञकुंड–संज्ञा पु०[सं०] हवन करने की वेदी या कुंड।
यज्ञपति–संज्ञा पु०[सं०] १ विष्णु। २ वह जो यज्ञ करता हो। यजमान।
यज्ञपत्नी–संज्ञा स्त्री०[सं०] यज्ञ की स्त्री, दक्षिणा।
यज्ञपशु–संज्ञा पु०[सं०] वह पशु जिसका यज्ञ में बलिदान किया जाय।
यज्ञपात्र–संज्ञा पु०[सं०] यज्ञ में काम आनेवाले काठ के बने हुए बरतन।
यज्ञपुरुष–संज्ञा पु०[सं०] विष्णु।
यज्ञभूमि–संज्ञा स्त्री०[सं०] वह स्थान जहाँ यज्ञ होता हो। यज्ञक्षेत्र।
यज्ञमंडप–संज्ञा पु०[सं०] यज्ञ करने के लिये बनाया हुआ मंडप।
यज्ञशाला–संज्ञा स्त्री०[सं०] यज्ञमंडप।
यज्ञसूत्र–संज्ञा पु० [सं०] यज्ञोपवीत।
यज्ञेश्वर–संज्ञा पु०[सं०] विष्णु।
यज्ञोपवीत–संज्ञा पु०[सं०] १ जनेऊ। यज्ञसूत्र। २ हिंदुओं में द्विजों का एक संस्कार। व्रतबन्ध। उपनयन। जनेऊ।
यति–संज्ञा पु० [सं०] १ संन्यासी। त्यागी। योगी। २ ब्रह्मचारी। ३ छप्पय के ६६वें भेद का नाम।
संज्ञा स्त्री०[सं० यती] छंदों के चरणों में वह स्थान जहाँ पढ़ते समय, लय ठीक रखने के लिये, थोड़ा विश्राम हो। विरति। विराम।
यतिधर्म–संज्ञा पु०[सं०] संन्यास।
यतिभंग–संज्ञा पु०[सं०] काव्य का वह दोष जिसमें यति अपने उचित स्थान पर न पड़कर कुछ आगे या पीछे पड़ती है।
यती–संज्ञा स्त्री० पु० दे० "यति"।
यतीम–संज्ञा पु०[अ०] जिसके माता पिता न हों। अनाथ।
यत्किंचित्–क्रि० वि०[सं०] थोड़ा। कुछ।
यत्न–संज्ञा पु० [सं०] १ न्याय में रूप आदि २४ गुणों के अंतर्गत एक गुण। २. उद्योग। कोशिश। ३ उपाय। तदबीर। ४. रक्षा या आयोजन। हिफाजत।
यत्नवान्–वि०[सं० यत्नवत्] यत्न करनेवाला
यत्र–क्रि० वि०[सं०] जिस जगह। जहाँ।
यत्रतत्र–क्रि० वि०[सं०] १ जहाँ-तहाँ। इधर-उधर। २ जगह जगह।
यथा–अव्य० [सं०] जिस प्रकार। जैसे।
यथाक्रम–क्रि० वि०[सं०] तरतीबवार। क्रमशः। क्रमानुसार।
यथातथ्य–अव्य०[सं०] ज्यों का त्यों। हू-ब-हू। जैसा हो, वैसा ही।
यथापूर्व–अव्य० [सं०] १. जैसा पहले था, वैसा ही। २ ज्यों का त्यों।
यथामति–अव्य० [सं०] बुद्धि के अनुसार। समझ के मुताबिक।
यथायोग्य–अव्य० [सं०] जैसा चाहिए, वैसा। उपयुक्त। मुनासिब।
यथारथ*–अव्य० दे० "यथार्थ"।
यथार्थ–अव्य०[सं०] १ ठीक। वाजिब। उचित। २ जैसा होना चाहिए, वैसा।
यथार्थता–संज्ञा स्त्री०[सं०] सचाई। सत्यता।
यथालाभ–वि० [सं०] जो कुछ प्राप्त हो, उसी पर निर्भर।
यथावत्–अव्य०[सं०] १ ज्यों का त्यों। जैसा था, वैसा ही। २ जैसा चाहिए, वैसा। ३ अच्छी तरह।
यथाशक्ति–अव्य० [सं०] सामर्थ्य के अनुसार। जितना हो सके। भरसक।
यथासंभव–अव्य०[सं०] जहाँ तक हो सके।
यथासाध्य–अव्य० दे० "यथाशक्ति"।
यथेच्छ–अव्य० [सं०] इच्छा के अनुसार। मनमाना।
यथेच्छाचार–संज्ञा पु० [सं०] जो जी में आवे, वही करना। स्वेच्छाचार।
यथेष्ट–वि०[सं०] जितना इष्ट हो, जितना चाहिए, उतना। काफी। पूरा।
यथोक्त–अव्य०[सं०] जैसा कहा गया हो।
यथोचित–वि० [सं०] मुनासिब। ठीक।
यदपि*–अव्य० दे० "यद्यपि"।

यदा–अव्य० [सं०] १. जिस समय। जिस वक्त। जब। २. जहाँ।
यदाकदा–अव्य० [सं०] कभी कभी।
यदि–अव्य० [सं०] अगर। जो।
यदिचेत्–अव्य० [सं०] यद्यपि। अगरचे।
यदु–संज्ञा पुं० [सं०] देवयानी के गर्भ से उत्पन्न ययाति राजा का बड़ा पुत्र।
यदुनंदन–संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्णचन्द्र।
यदुपति–संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।
यदुराई–संज्ञा पुं० दे० "यदुराज"।
यदुराज–संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।
यदुवंश–संज्ञा पुं० [सं०] राजा यदु का कुल। यदु का खानदान।
यदुवंशमणि–संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्णचंद्र।
यदुवंशी–संज्ञा पुं० [सं० यदुवंशिन्] यदुकुल में उत्पन्न। यदुकुल के लोग। यादव।
यद्यपि–अव्य० [सं०] अगरचे। हरचंद।
यदृच्छया–क्रि० वि० [सं०] १. अकस्मात्। २. दैवसंयोग से। ३. मनमाने तौर पर।
यदृच्छा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. स्वेच्छाचार। २. आकस्मिक संयोग।
यम–संज्ञा पुं० [सं०] १. दे० "यमज"। २. भारतीय आर्यों के एक प्रसिद्ध देवता जो मृत्यु के देवता माने जाते हैं। ३. मन, इंद्रिय आदि को वश या रोक में रखना। निग्रह। ४. चित्त को धर्म में स्थिर रखनेवाले कर्मों का साधन। ५. दो की संख्या। २. अश्विनीकुमार।
यमक–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का शब्दालंकार या अनुप्रास जिसमें एक ही शब्द कई बार आता है; पर हर बार उसके अर्थ भिन्न भिन्न होते हैं। २. एक वृत्त।
यमकातर–संज्ञा पुं० [सं० यम + हिं० कातर] १. यम का छुरा या खाँड़ा। २. एक प्रकार की तलवार।
यमघंट–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक दुष्ट योग जो कुछ विशिष्ट दिनों में कुछ विशेष नक्षत्र पड़ने पर होता है। २. दीपावली का दूसरा दिन।
यमज–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक साथ जन्म लेनेवाले दो बच्चों का जोड़ा। जोआँ।
यमदग्नि–संज्ञा पुं० दे० "जमदग्नि"।
यम-द्वितीया–संज्ञा स्त्री० [सं०] कार्तिक शुक्ला द्वितीया। भाई दूज।
यमनाह*–संज्ञा पुं० [सं० यमनाथ] धर्मराज।
यमपुर–संज्ञा पुं० दे० "यमलोक"।
यमपुरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] यमलोक।
यम-यातना–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नरक की पीड़ा। २. मृत्यु के समय की पीड़ा।
यमराज–संज्ञा पुं० [सं०] यमों के राजा धर्मराज, जो मरने पर प्राणी के कर्मों के अनुसार उसे दंड या उत्तम फल देते हैं।
यमल–संज्ञा पुं० [सं०] १. युग्म। जोड़। २. यमज।
यमलार्जुन–संज्ञा पुं० [सं०] कुबेर के पुत्र नलकूबर और मणिग्रीव जो नारद के शाप से पेड़ हो गए थे। श्रीकृष्ण ने इनका उद्धार किया था।
यमलोक–संज्ञा पुं० [सं०] वह लोक जहाँ मरने पर मनुष्य जाते हैं। यमपुरी।
यमालय–संज्ञा पुं० [सं०] यमपुर।
यमी–संज्ञा स्त्री० [सं०] यम की बहन, जो पीछे यमुना नदी होकर बही।
यमुना–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुर्गा। २. यम की बहन यमी। ३. उत्तर भारत की एक प्रसिद्ध बड़ी नदी।
ययाति–संज्ञा पुं० [सं०] राजा नहुष के पुत्र जिनका विवाह शुक्राचार्य की कन्या देवयानी के साथ हुआ था।
यव–संज्ञा पुं० [सं०] १. जौ नामक अन्न। २. १२ सरसों या एक जौ की तौल। ३. एक नाप जो एक इंच की एक तिहाई होती है। ४. सामुद्रिक के अनुसार जौ के आकार की एक प्रकार की रेखा जो उँगली में होती है। (शुभ)
यवद्वीप–संज्ञा पुं० [सं०] जावा द्वीप।
यवन–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० यवनी] १. यूनान देश का निवासी। यूनानी। २. मुसलमान। ३. कालयवन नामक राजा।
यवनानी–वि० [सं०] यवन देश-संबंधी।

यवनाल–संज्ञा स्त्री० [सं०] जुआर।
यवनिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] नाटक का परदा।
यवमती–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त।
यश–संज्ञा पु० [सं० यशस्] १. नेकनामी। कीर्ति। सुख्याति। २. बड़ाई। प्रशंसा।
मुहा०—यश गाना = १. प्रशंसा करना। २. एहसान मानना। यश मानना = कृतज्ञ होना।
यशब, यशम–संज्ञा पु० [अ०] एक प्रकार का हरा पत्थर जिसकी नादली बनती है।
यशस्वी–वि० [सं० यशस्विन्] [स्त्री० यशस्विनी] जिसका खूब यश हो। कीर्तिमान्।
यशी–वि० [सं० यश + ई (प्रत्य०)] यशस्वी।
यशील†*–वि० दे० "यशस्वी"।
यशुमति–संज्ञा स्त्री० दे० "यशोदा"।
यशोदा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नंद की स्त्री जिन्होंने श्रीकृष्ण को पाला था। २ एक वर्णवृत्त।
यशोधरा–संज्ञा स्त्री० [सं०] गौतम बुद्ध की पत्नी और राहुल की माता।
यशोमति–संज्ञा स्त्री० दे० "यशोदा"।
यष्टि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लाठी। छड़ी। लकड़ी। २ टहनी। शाखा। डाल। ३ जेठी मधु। मुलेठी।
यष्टिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] छड़ी। लकड़ी।
यह–सर्व० [सं० इद] एक सर्वनाम, जिसका प्रयोग वक्ता और श्रोता को छोड़कर निकट के और सब मनुष्यों तथा पदार्थों के लिये होता है।
यहाँ–क्रि० वि० [सं० इह] इस स्थान में। इस जगह पर।
यहि–सर्व०, वि० [हिं० यह] १ 'यह' का वह रूप जो पुरानी हिंदी में उसे कोई विभक्ति लगने के पहले प्राप्त होता है। २ 'ए' का विभक्ति-युक्त रूप इसको।
यही–अव्य० [हिं० यह + ही (प्रत्य०)] निश्चित रूप से यह। यह ही।
यहूद–संज्ञा पु० [इब्रानी] वह देश जहाँ हजरत ईसा पैदा हुए थ।
यहूदी–संज्ञा पु० [हिं० यहूद] [स्त्री० यहूदिन] यहूद देश का निवासी।
याँ†–क्रि० वि० दे० "यहाँ"।
या–अव्य० [फा०] अथवा। वा।
सर्व०, वि० 'यह' का वह रूप जो उसे व्रजभाषा में कारक-चिह्न लगने से पहले प्राप्त होता है।
याकु†–वि० दे० "एक"।
याकूत–संज्ञा पु० [अ०] एक प्रकार का बहुमूल्य पत्थर। लाल।
याग–संज्ञा पु० [सं०] यज्ञ।
याचक–संज्ञा पु० [सं०] १ जो माँगता हो। माँगनेवाला। २ भिक्षुक। भिखमंगा।
याचना–क्रि० स० [सं० याचन] [वि० याच्य, याचक] पाने के लिये विनती करना। माँगना।
संज्ञा स्त्री० *माँगने की क्रिया।*
याजक–संज्ञा पु० [सं०] यज्ञ करनेवाला।
याजन–संज्ञा पु० [सं०] यज्ञ की क्रिया।
याज्ञवल्क्य–संज्ञा पु० [सं०] १ एक प्रसिद्ध ऋषि जो वैशंपायन के शिष्य थे। वाजसनेय। २ एक ऋषि। योगीश्वर याज्ञवल्क्य। ३ योगीश्वर याज्ञवल्क्य के वंशधर एक स्मृतिकार।
याज्ञिक–संज्ञा पु० [सं०] यज्ञ करने या करानेवाला।
यातना–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ तकलीफ। पीड़ा। २ वह पीड़ा जो यमलोक में भोगनी पड़ती है।
याता–संज्ञा स्त्री० [सं० यातृ] पति के भाई की स्त्री। जेठानी या देवरानी।
यातायात–संज्ञा पु० [सं०] गमनागमन। आना-जाना। आमद-रफ्त।
यातुधान–संज्ञा पु० [सं०] राक्षस।
यात्रा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने की क्रिया। सफर। २ प्रयाण। प्रस्थान। ३ दर्शनार्थ देवस्थानों को जाना। तीर्थाटन।
यात्रावाल–संज्ञा पु० [सं० यात्रा + हिं० वाल (प्रत्य०)] वह पंडा जो यात्रियों को देवदर्शन कराता हो।
यात्री–संज्ञा पु० [सं० यात्रा] १ यात्रा करने-

वाला। मुसाफ़िर। २. तीर्थाटन के लिये जानेवाला।

याद–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. स्मरणशक्ति। स्मृति। २. स्मरण करने की क्रिया।

यादगार–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] स्मृति-चिह्न।

याददाश्त–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. स्मरण-शक्ति। स्मृति। २. स्मरण रखने के लिये लिखी हुई कोई बात।

यादव–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० यादवी] १. यदु के वंशज। २. श्रीकृष्ण।

यान–संज्ञा पुं० [सं०] १. गाड़ी, रथ आदि सवारी। वाहन। २. विमान। आकाश-यान। ३. शत्रु पर चढ़ाई करना।

यानी, याने–अव्य० [अ०] अर्थात्।

यापन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० यापित, याप्य] १. चलाना। वर्तन। २. व्यतीत करना। बिताना। ३. निपटाना।

याबू–संज्ञा पुं० [फ़ा०] छोटा घोड़ा। टट्टू।

याम–संज्ञा पुं० [सं०] १. तीन घंटे का समय। पहर। २. एक प्रकार के देवगण। ३. काल। समय।

संज्ञा स्त्री० [सं० यामि] रात।

यामल–संज्ञा पुं० [सं०] १. यमज संतान। जोड़ा। २. एक प्रकार का तंत्र ग्रंथ।

यामिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] रात। रात्रि।

याम्य–वि० [सं०] १. यम-संबंधी। यम का। २. दक्षिण का।

याम्योत्तर दिगंश–संज्ञा पुं० [सं०] लंबांश। दिगंश। (भूगोल, खगोल)

याम्योत्तर रेखा–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह कल्पित रेखा जो सुमेरु और कुमेरु से होती हुई भूगोल के चारों ओर मानी गई है।

यार–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. मित्र। दोस्त। २. उपपति। जार।

याराना–संज्ञा पुं० [फ़ा०] मित्रता। मैत्री। वि० मित्र का सा। मित्रता का।

यारी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. मित्रता। २. स्त्री और पुरुष का अनुचित प्रेम या संबंध।

यावनी–वि० [सं०] यवन-संबंधी।

यासु*–सर्व० दे० "जासु"।

यास्क–संज्ञा पुं० [सं०] वैदिक निरुक्त के रचयिता एक प्रसिद्ध ऋषि।

याहि*†–सर्व० [हिं० या + हि] इसको। इसे।

युंजान–संज्ञा पुं० [सं०] वह योगी जो अभ्यास कर रहा हो, पर मुक्त न हुआ हो।

युक्त–वि० [सं०] १. जुड़ा हुआ। मिला हुआ। २. मिलित। सम्मिलित। ३. नियुक्त। मुकर्रर। ४. संयुक्त। साथ। ५. उचित। ठीक। वाजिब।

युक्ता–संज्ञा स्त्री० [सं०] दो नगण और एक मगण का एक वृत्त।

युक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. उपाय। ढंग। तरकीब। २. कौशल। चातुरी। ३. चाल। रीति। प्रथा। ४. न्याय। नीति। ५. तर्क। ऊहा। ६. उचित विचार ठीक तर्क। ७. योग। मिलन। ८. एक अलंकार जिसमें अपने मर्म को छिपाने के लिये दूसरे को किसी क्रिया या युक्ति द्वारा वंचित करने का वर्णन होता है। ९. केशव के अनुसार स्वभावोक्ति।

युक्तियुक्त–वि० [सं०] उपयुक्त तर्क के अनुकूल। युक्ति-संगत। ठीक। वाजिब।

युगंधर–संज्ञा पुं० [सं०] १. कूबर। हरस। २. गाड़ी का बम। ३. एक पर्वत।

युग–संज्ञा पुं० [सं०] १. जोड़ा। युग्म। २. जुआ। जुआठा। ३. पाँसे के खेल की गोल गोटियाँ। ४. पाँसे के खेल की वे दो गोटियाँ जो एक घर में साथ आ बैठती हैं। ५. बारह वर्ष का काल। ६. समय। काल। ७. पुराणानुसार काल का एक दीर्घ परिमाण। ये संख्या में चार माने गए हैं–सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग। मुहा०–युग युग = बहुत दिनों तक। युग-धर्म = समय के अनुसार चाल या व्यवहार।

युगति*†–संज्ञा स्त्री० दे० "युक्ति"।

युगपत्–अव्य० [सं०] साथ साथ।

युगम*–संज्ञा पुं० दे० "युग्म"।

युगल–संज्ञा पुं० [सं०] युग्म। जोड़ा।

युगांतर–संज्ञा पुं० [सं०] १. दूसरा युग। २. दूसरा समय। और ज़माना।

मुहा०—युगांतर उपस्थित करना = किसी पुरानी प्रथा को हटाकर उसके स्थान पर नई प्रथा चलाना।

युगाद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह तिथि जिससे किसी युग का आरम्भ हुआ हो।

युग्म—संज्ञा पु० [सं०] १. जोड़ा। युग। २ द्वंद्व। ३ मिथुन राशि।

युत—वि० [सं०] १ युक्त। सहित। २ मिला हुआ। मिलित।

युति—संज्ञा स्त्री० [सं०] योग। मिलाप।

युद्ध—संज्ञा पु० [सं०] लड़ाई। संग्राम। रण।

मुहा०—युद्ध माँडना = लड़ाई ठानना।

युधिष्ठिर—संज्ञा पु० [सं०] पाँच पांडवों में एक जो सबसे बड़े और बहुत धर्मपरायण थे।

युयुत्सा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ युद्ध करने की इच्छा। २ शत्रुता। विरोध।

युयुत्सु—वि० [सं०] लड़ने की इच्छा रखनेवाला। जो लड़ना चाहता हो।

युयुधान—संज्ञा पु० [सं०] १ इंद्र। २ क्षत्रिय। ३ योद्धा।

युवक—संज्ञा पु० [सं०] सोलह वर्ष से पैंतीस वर्ष तक की अवस्था का मनुष्य। जवान। युवा।

युवति, युवती—संज्ञा स्त्री० [सं०] जवान स्त्री।

युवनाश्व—संज्ञा पु० [सं०] एक सूर्यवंशी राजा जो प्रसेनजित् का पुत्र था।

युवराई*—संज्ञा स्त्री० [हिं० युवराज] युवराज का पद।

युवराज—संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० युवराज्ञी] राजा का वह सबसे बड़ा लड़का जिसे आगे चलकर राज्य मिलनेवाला हो।

युवराजी—संज्ञा स्त्री० [सं० युवराज+ई (प्रत्य०)] युवराज का पद। यौवराज्य।

युवा—वि० [सं० युवन] [स्त्री० युवती] जवान। युवक।

यूँ†—अव्य० दे० "यों"।

यूत—संज्ञा पु० [सं० यूति] मिलावट। मेल।

यूथ—संज्ञा पु० [सं०] १ समूह। झुंड। गरोह। २ दल। ३ सेना। फौज।

यूथप, यूथपति—संज्ञा पु० [सं०] सेनापति।

यूथिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] जूही का फूल।

यूनान—संज्ञा पु० [ग्रीक आयोनिया] यूरोप का एक प्रदेश जो प्राचीन काल में अपनी सभ्यता, साहित्य आदि के लिये प्रसिद्ध था।

यूनानी—वि० [यूनान + ई (प्रत्य०)] यूनान देश-संबंधी। यूनान का।

संज्ञा स्त्री० १ यूनान देश की भाषा। २ यूनान देश का निवासी। ३. यूनान देश की चिकित्सा-प्रणाली। हकीमी।

यूप—संज्ञा पु० [सं०] यज्ञ में वह खंभा जिसमें बलि का पशु बाँधा जाता है।

यूपा†—संज्ञा पु० [सं० द्यूत] जूआ। द्यूतकर्म।

यूह*†—संज्ञा पु० [सं० यूथ] समूह। झुंड।

ये—सर्व० [हिं० यह का बहु०] यह सब।

येई*†—सर्व० [हिं० यह + ई (प्रत्य०)] यही।

येऊ†—सर्व० [हिं० ये + ऊ (प्रत्य०)] यह भी।

येतो*†—वि० दे० "एतो"।

येहू*†—अव्य० [हिं० यह + हू] यह भी।

यों—अव्य० [सं० एवमेव] इस तरह पर। इस भाँति। ऐसे।

योंही—अव्य० [हिं० यों ही] १ इसी प्रकार से। ऐसे ही। २ बिना काम। व्यर्थ ही। ३ बिना विशेष प्रयोजन या उद्देश्य के।

योग—संज्ञा पु० [सं०] १ मिलना। संयोग। मेल। २ उपाय। तरकीब। ३ ध्यान। ४ संगति। ५ प्रेम। ६ छल। धोखा। दगाबाजी। ७ प्रयोग। ८ औषध। दवा। ९ धन। दौलत। १० लाभ। फायदा। ११ कोई शुभ काल। १२ नियम। कायदा। १३ साम, दाम, दंड और भेद ये चारो उपाय। १४ संबंध। १५ धन और संपत्ति प्राप्त करना तथा बढ़ाना। १६ तप और ध्यान। वैराग्य। १७ गणित में दो या अधिक राशियों का जोड़। १८ एक प्रकार का छंद। १९ सुभीता। जुगाड़। तार-घात। २० फलित ज्योतिष में कुछ विशिष्ट काल या अवसर। २१ मुक्ति या मोक्ष का उपाय। २२ दर्शनकार पतंजलि के अनुसार चित्त की वृत्तियों को चंचल होने से रोकना। २३ छ

दर्शनों में से एक जिसमें चित्त को एकाग्र करके ईश्वर में लीन होने का विधान है।
योगक्षेम–संज्ञा पुं० [सं०] १. नया पदार्थ प्राप्त करना और मिले हुए पदार्थ की रक्षा करना। २. जीवन-निर्वाह। गुजारा। ३. कुशल-मंगल। खैरियत। ४. राष्ट्र की सुव्यवस्था। मुल्क का अच्छा इतजाम
योगतत्व–संज्ञा पुं० [सं०] एक उपनिषद्।
योगत्व–संज्ञा पुं० [सं०] योग का भाव।
योगदर्शन–संज्ञा पुं० दे० "योग" (२३)।
योगनिद्रा–संज्ञा स्त्री० [सं०] युग के अंत में होनेवाली विष्णु की निद्रा, जो दुर्गा मानी जाती है।
योगफल–संज्ञा पुं० [सं०] दो या अधिक संख्याओं को जोड़ने से प्राप्त संख्या।
योगबल–संज्ञा पुं० [सं०] वह शक्ति जो योग की साधना से प्राप्त हो। तपोबल।
योगमाया–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. भगवती। २. वह कन्या जो यशोदा के गर्भ से उत्पन्न हुई थी और जिसे कंस ने मार डाला था।
योगरूढ़ि–संज्ञा स्त्री० [सं०] दो शब्दों के योग से बना हुआ वह शब्द जो अपना सामान्य अर्थ छोड़कर कोई विशेष अर्थ बतावे।
योगवाशिष्ठ–संज्ञा पुं० [सं०] वेदांत शास्त्र का वशिष्ठ-कृत एक प्रसिद्ध ग्रंथ।
योगशास्त्र–संज्ञा पुं० [सं०] पतंजलि ऋषि-कृत योग-साधन पर एक दर्शन जिसमें चित्तवृत्ति को रोकने के उपाय बतलाए हैं।
योगसूत्र–संज्ञा पुं० [सं०] महर्षि पतंजलि के बनाए हुए योग-संबंधी सूत्रों का संग्रह।
योगांजन–संज्ञा पुं० दे० "सिद्धांजन"।
योगात्मा–संज्ञा पुं० [सं० योगात्मन्] योगी।
योगाभ्यास–संज्ञा पुं० [सं०] योगशास्त्र के अनुसार योग के आठ अंगों का अनुष्ठान।
योगाभ्यासी–संज्ञा पुं० [सं० योगाभ्यासिन्] योगी।
योगासन–संज्ञा पुं० [सं०] योग-साधन के आसन, अर्थात् बैठने के ढंग।
योगिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रण-पिशाचिनी। २. योगाभ्यासिनी। तपस्विनी। ३. ये आठ विशिष्ट देवियाँ-शैलपुत्री, चंद्रघंटा, स्कंदमाता, कालरात्रि, चंडिका, कूष्मांडी, कात्यायनी और महागौरी। ४. देवी। योगमाया।
योगिराज, योगींद्र–संज्ञा पुं० [सं०] बहुत बड़ा योगी।
योगी–संज्ञा पुं० [सं० योगिन्] १. आत्मज्ञानी २. वह जिसने योगाभ्यास करके सिद्धि प्राप्त कर ली हो। ३. महादेव। शिव।
योगीश, योगीश्वर–संज्ञा पुं० [सं०] १. बहुत बड़ा योगी। २. याज्ञवल्क्य।
योगीश्वरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।
योगेंद्र–संज्ञा पुं० [सं०] बहुत बड़ा योगी।
योगेश्वर–संज्ञा पुं० [सं०] १. श्रीकृष्ण। २. शिव। ३. बहुत बड़ा योगी। सिद्ध।
योगेश्वरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।
योग्य–वि० [सं०] १. ठीक। (पात्र)। क़ाबिल। लायक़। अधिकारी। २. श्रेष्ठ। अच्छा। ३ युक्ति भिड़ानेवाला। उपायी। ४. उचित। मुनासिब। ठीक। ५. आदरणीय। माननीय।
योग्यता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. क्षमता। लायक़ी। २. बड़ाई। ३. बुद्धिमानी। लियाक़त। ४. सामर्थ्य। ५. अनुकूलता। मुनासिबत ६. औक़ात। ७. गुण। ८. इज्जत। ९. उपयुक्तता।
योजक–वि० [सं०] मिलाने या जोड़नेवाला।
योजन–संज्ञा पुं० [सं०] १. परमात्मा। २. योग। ३. संयोग। मिलान। योग। ४. दूरी की एक नाप जो किसी के मत से दो कोस की, किसी के मत से चार कोस की और किसी के मत से आठ कोस की होती है।
योजनगंधा–संज्ञा स्त्री० [सं०] व्यास की माता और शांतनु की भार्या, सत्यवती।
योजना–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० योजनीय, योजित] १. नियुक्त करने की क्रिया। नियुक्ति। २. प्रयोग। व्यवहार। ३. जोड़। मिलान। मेल। ४, बनावट। रचना। ५. भावी कार्यों की व्यवस्था। आयोजन।
योद्धा–संज्ञा पुं० [सं० योद्धृ] वह जो युद्ध

करता हो। सिपाही।

योनि–सज्ञा स्त्री० [स०] १ आकर। खानि। २ उत्पत्ति-स्थान। उद्गम। ३ स्त्रियों की जननेंद्रिय। भग। ४ प्राणियों के विभाग, जातियाँ या वर्ग जिनकी सख्या ८४ लाख कही गई है। ५ देह। शरीर।

योनिज–सज्ञा पु० [स०] वह जीव जिसकी उत्पत्ति योनि से हुई हो।

यों*†–अव्य० दे० "यों"।

यो*†–सर्व० [हिं० यह] यह।

योषधर–सज्ञा पु० [स०] अस्त्र को निष्फल करने का एक प्रकार का अस्त्र।

यौगिक–सज्ञा पु० [स०] १ मिला हुआ। २ *प्रकृति और प्रत्यय से बना हुआ शब्द।* ३ दो शब्दो से मिलकर बना हुआ शब्द। ४ अट्ठाईस मात्राओ के छदो की सज्ञा।

यौतक, यौतुक–सज्ञा पु० [स०] वह धन जो विवाह के समय वर और कन्या को मिलता हो। दाइजा। जहेज। दहेज।

यौधेय–सज्ञा पु० [स०] १ योद्धा। २ एक प्राचीन देश का नाम। ३ प्राचीन काल की एक योद्धा जाति।

यौवन–सज्ञा पु० [स०] १ अवस्था का वह मध्य भाग जो बाल्यावस्था के उपरात और वृद्धावस्था के पहले होता है। २ युवा होने का भाव। जवानी। ३ दे० "जोबन"।

यौवराज्य–सज्ञा पु० [स०] १ युवराज होने का भाव। २ युवराज का पद।

यौवराज्याभिषेक–सज्ञा पु० [स०] वह अभिषेक तथा उत्सव जो किसी के युवराज बनाए जाने के समय हो।

र

र–हिंदी वर्णमाला का सत्ताइसवाँ व्यजन जिसका उच्चारण जीभ के अगले भाग को मूर्द्धा के साथ कुछ स्पर्श कराने से होता है।

रक–वि० [स०] १ धनहीन। गरीब। दरिद्र। २ कृपण। कजूस। ३ सुस्त।

रग–सज्ञा पु० [स०] १ राँगा नामक धातु। २ नृत्य-गीत आदि। नाचना-गाना। ३ वह स्थान जहाँ नृत्य या अभिनय होता हो। ४ युद्धस्थल। रणक्षेत्र। ५ आकार से भिन्न किसी दृश्य पदार्थ का वह गुण जिसका अनुभव केवल आँखो से ही होता है। वर्ण। जैसे—लाल, काला। ६ वह पदार्थ जिसका व्यवहार किसी चीज को रँगने के लिये होता है। ७ बदन और चेहरे *की रगत। वर्ण।*

मुहा०—(चेहरे का) रग उडना या उतरना=भय या लज्जा से चेहरे की रौनक का जाता रहना। कातिहीन होना। रग निखरना=चेहरा साफ और चमकदार होना। रग बदलना=क्रुद्ध होना। नाराज होना।

८ जवानी। युवावस्था।

मुहा०—रग चूना या टपकना=युवावस्था का पूर्ण विकास होना। यौवन उमडना।

९ शोभा। सौंदर्य। १० प्रभाव। असर।

मुहा०–रग जमना=प्रभाव या असर पडना।

११ गुण या महत्त्व का प्रभाव। धाक।

मुहा०—रग जमाना या बाँधना=प्रभाव डालना। रग लाना=प्रभाव या गुण दिखलाना।

१२ क्रीडा। कौतुक। आनद उत्सव।

यौ०—रग रलियाँ=आमोद प्रमोद। मौज।

मुहा०—रग रलना=आमोद प्रमोद करना। रग में भग पडना=आनद म विघ्न पडना।

१३ युद्ध। लडाई। समर।

मुहा०–रग मचाना=रण में खूब युद्ध करना।

१४ मन की उमग या तरग। मौज। १५ *आनद। मजा।*

मुहा०—रग जमना=आनद का पूर्णता पर आना। खूब मजा होना। रग मचाना=धूम मचाना। रग रचाना=उत्सव करना।

१६ दशा। *हालत। १७ अद्भुत व्यापार। काड। दृश्य। १८ प्रसन्नता। कृपा। दया। १९ प्रेम। अनुराग।

२०. ढंग। चाल। तर्ज़।
यौ०—रंग-ढंग = १. दशा। हालत। २. चाल-ढाल। तौर-तरीक़ा। ३. व्यवहार। बरताव। ४. लक्षण।
मुहा०—*रंग काछना = ढंग अख्तियार करना।
२१. भाँति। प्रकार। तरह। २२. चौपड़ की गोटियों के दो कृत्रिम विभागों में से एक।
मुहा०—रंग मारना = बाज़ी जीतना। विजय पाना।
रंगक्षेत्र–संज्ञा पुं० दे० "रंगभूमि"।
रंगत–संज्ञा स्त्री० [हिं० रंग + त (प्रत्य०)] १. रंग का भाव। २. मज़ा। आनंद। ३. हालत। दशा। अवस्था।
रंगतरा–संज्ञा पुं० [हिं० रंग] एक प्रकार की बड़ी और मीठी नारंगी। सगतरा।
रँगना–क्रि० स० [हिं० रंग + ना (प्रत्य०)] १. रंग में डुबाकर किसी चीज़ को रंगीन करना। २. किसी को अपने प्रेम में फँसाना। ३. अपने अनुकूल करना। क्रि० अ० किसी पर आसक्त होना।
रंगबिरंगा–वि० [हिं० रंगबिरंग] १. अनेक रंगों का। चित्रित। २. तरह तरह का।
रंगभवन–संज्ञा पु० दे० "रगमहल"।
रंगभूमि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह स्थान जहाँ कोई जलसा हो। २. खेल या तमाशे का स्थान। ३. नाटक खेलने का स्थान। नाट्यशाला। रंगस्थल। ४. अखाड़ा। रणभूमि। ५. युद्धक्षेत्र।
रंगमहल–संज्ञा पुं० [हिं० ग + अ० महल] भोग-विलास करने का स्थान।
रंग-रली–संज्ञा स्त्री० [हिं० रंग + रलना] आमोद-प्रमोद। आनंद। क्रीड़ा। चैन।
रँगरस–संज्ञा पुं० दे० "रंगरली"।
रंगरसिया–संज्ञा पुं० [हिं० रंग+रसिया] भोग-विलास करनेवाला। विलासी पुरुष।
रँगराता–वि० [हिं० रंग+राता] अनुरागपूर्ण।
रँगरूट–संज्ञा पुं० [अं० रिक्रूट] १. सेना या पुलिस आदि में नया भर्ती होनेवाला सिपाही। २. किसी काम में पहले-पहल हाथ डालनेवाला आदमी।
रँगरेज–संज्ञा पुं० [फ़ा०] [स्त्री० रंगरेजिन] वह जो कपड़े रँगने का काम करता हो।
रँगरेली†–संज्ञा स्त्री० दे० "रंगरली"।
रँगवाना–क्रि० स० [हिं० रँगना का प्रेर० रूप] रँगने का काम दूसरे से कराना।
रंगशाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] नाटक खेलने का स्थान। नाट्यशाला।
रंगसाज़–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. वह जो चीज़ों पर रंग चढ़ाता हो। २. रंग बनानेवाला।
रँगाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० रंग + आई (प्रत्य०)] रँगने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
रँगाना–क्रि० स० दे० "रँगवाना"।
रंगी–वि० [हिं० रंग + ई (प्रत्य०)] आनंदी। मौजी। विनोदशील।
रंगीन–वि० [फ़ा०] [भाव० संज्ञा रंगीनी] १. रँगा हुआ। रंगदार। २. विलास-प्रिय। आमोद-प्रिय। ३. चमत्कारपूर्ण। मजेदार।
रँगीला–वि० [हिं० रंग+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० रँगीली] १. आनंदी। रसिया। रसिक। २. सुंदर। ख़ूबसूरत। ३. प्रेमी।
रंच, रंचक*–वि० [सं० न्यंच] थोड़ा। अल्प।
रंज–संज्ञा पुं० [फ़ा०] [वि० रंजीदा] १. दुःख खेद। २. शोक।
रंजक–वि० [सं०] १. रँगनेवाला। जो रँगे। २. प्रसन्न करनेवाला।
संज्ञा स्त्री० [हिं० रंच अल्प] १. थोड़ी सी बारूद जो बत्ती लगाने के वास्ते बंदूक़ की प्याली पर रखी जाती है। २. वह बात जो किसी को भड़काने के लिये कही जाय।
रंजन–संज्ञा पु० [सं०] १. रँगने की क्रिया। २. चित्त प्रसन्न करने की क्रिया। ३. लाल चंदन। ४. छप्पय छंद का पचासवाँ भेद।
रंजना*–क्रि० स० [सं० रंजन] १. प्रसन्न करना। आनंदित करना। २. भजना। स्मरण करना। ३. रँगना।
रंजित–वि० [सं०] १. रँगा हुआ। २. आनंदित। प्रसन्न। ३. अनुरक्त।
रंजिश–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. रंज होने का

भाव। २ मन-मुटाव। ३ शत्रुता।

रंजीदा–वि० [फा०] [भाव० सज्ञा रंजीदगी] १ जिसे रंज हो। दुःखित। २ नाराज।

रँडापा–सज्ञा पु० [हिं० राँड़+आपा (प्रत्य०)] विधवा की दशा। वैधव्य। बेवापन।

रंडी–सज्ञा स्त्री० [स० रंडा] वेश्या। कसबी।

रँडुआ, रँडुवा–सज्ञा पु० [हिं० राँड़+उआ (प्रत्य०)] वह पुरुष जिसकी स्त्री मर गई हो।

रंता*†–वि० [स० रत] अनुरक्त।

रंद–सज्ञा पु० [स० रंध्र] १ रोशनदान। २ किले की दीवारों का वह मोखा जिसमें से बंदूक या तोप चलाई जाती है। मार।

रँदना–क्रि० स० [हिं० रंदा+ना (प्रत्य०)] रंदे से छीलकर लकड़ी चिकनी करना।

रंदा–सज्ञा पु० [स० रदन=काटना, चीरना] एक औजार जिससे लकड़ी की सतह छील कर चिकनी की जाती है।

रंधन–सज्ञा पु० [स०] रसोई बनाना।

रंध्र–सज्ञा पु० [स०] छेद। सूराख।

रंभ–सज्ञा पु० [स०] १ बाँस। २ एक प्रकार का बाण। ३ भारी शब्द।

रंभा–सज्ञा स्त्री० [स०] १ केला। २ गौरी। ३ उत्तर दिशा। ४ वेश्या। ५ पुराणानुसार एक प्रसिद्ध अप्सरा।

सज्ञा पु० [स० रंभ] लोहे का वह मोटा भारी डंडा जिससे दीवारों आदि को खोदते हैं।

रँभाना–क्रि० अ० [स० रंभण] गाय का बोलना। गाय का शब्द करना।

रँहचटा–सज्ञा पु० [हिं० रहस+चाट] मनोरथ-सिद्धि की लालसा। लालच। चस्का।

र–सज्ञा पु० [स०] १ पावक। अग्नि। २ कामाग्नि। ३ सितार का एक बोल।

रअय्यत–सज्ञा स्त्री० [अ०] प्रजा। रिआया।

रइको*†–क्रि० वि० [हिं० रची+कौ (प्रत्य०)] जरा भी। तनिक भी। कुछ भी।

रइनि*†–सज्ञा स्त्री० [स० रजनी] रात।

रई–सज्ञा स्त्री० [स० रय] मथानी। खैलर।

सज्ञा स्त्री० [हिं० रवा] १ दरदरा आटा। २ सूजी। ३ चूर्णमात्र।

वि० स्त्री० [स० रंजन] १ डूबी हुई। पगी हुई। २ अनुरक्त। ३ मस्त। शामिल। गद्धुमा। ४ मिली हुई।

रईस–सज्ञा पु० [अ०] १ जिसके पास रियासत या इलाका हो। तअल्लुकेदार। २ बड़ा आदमी। अमीर। धनी।

रउताई*†–सज्ञा स्त्री० [हिं० रावत+आई (प्रत्य०)] मालिक होने का भाव। स्वामित्व।

रउरे†–सर्व० [हिं० राव, रावल] मध्यम पुरुष के लिये आदर-सूचक शब्द। आप। जनाब।

रकछ†–सज्ञा पु० [हिं० रिकवँच] पत्ते की पकौड़ी। पतौड़।

रकत*–सज्ञा पु० [स० रक्त] लहू। खून। वि० लाल। सुर्ख।

रकताक*–सज्ञा पु० [स० रक्तांग] १ प्रवाल मूँगा। (डिं०) २ केसर। ३ लाल चंदन।

रकबा–सज्ञा पु० [अ०] क्षेत्रफल।

रकयाहा–सज्ञा पु० [देश०] घोड़े का एक भेद

रकम–सज्ञा स्त्री० [अ०] १ लिखने की क्रिया या भाव। २ छाप। मोहर। ३ धन। संपत्ति। दौलत। ४ गहना। जेवर। ५ चालाक। धूर्त। ६ प्रकार। तरह।

रकाब–सज्ञा स्त्री० [फा०] घोड़े की काठी का पावदान जिससे बैठने में सहारा लेते हैं।
मुहा०—रकाब पर या में पैर रखना=चलने के लिये बिलकुल तैयार होना।

रकाबदार–सज्ञा पु० [फा०] १ हलवाई। २ खानसामा। ३ साईस।

रकाबी–सज्ञा स्त्री० [फा०] एक प्रकार की छिछली छोटी थाली। तश्तरी।

रकीब–सज्ञा पु० [अ०] प्रेमिका का दूसरा प्रेमी। सपत्न।

रक्त–सज्ञा पु० [स०] १ लाल रंग का वह प्रसिद्ध तरल पदार्थ जो शरीर की नसों आदि में से होकर बहा करता है। लहू। रुधिर। खून। २ कुंकुम। केसर। ३ ताँबा। ४ कमल। ५ सिंदूर। ६ शिंगरफ। ईंगुर। ७ लाल चंदन। ८ लाल रंग। ९ कुसुम।

वि० [स०] १ रँगा हुआ। २ लाल। सुर्ख।

रक्तकंठ–सज्ञा पु० [स०] १ कोयल। २

भाँटा। बैगन।
रक्तकमल–संज्ञा पुं० [सं०] लाल कमल।
रक्तचंदन–संज्ञा पुं० [सं०] लालचंदन।
रक्तज–वि० [सं०] रक्त के विकार के कारण उत्पन्न होनेवाला (रोग)।
रक्तता–संज्ञा स्त्री० [सं०] लाली। सुर्खी।
रक्तपात–संज्ञा पुं० [सं०] ऐसा लड़ाई-झगड़ा जिसमें लोग ज़ख्मी हों। खून-खराबी।
रक्तपायी–वि० [सं० रक्तपायिन्] [स्त्री० रक्तपायिनी] रक्तपान करनेवाला। खून पीनेवाला।
रक्तपित्त–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का रोग जिसमें मुँह, नाक आदि इंद्रियों से रक्त गिरता है। २. नाक से लहू बहना। नकसीर।
रक्तबीज–संज्ञा पुं० [सं०] १. अनार। बीदाना। २. एक राक्षस जो शुंभ और निशुंभ का सेनापति था। कहते हैं कि युद्ध के समय इसके शरीर से रक्त की जितनी बूँदें गिरती थीं, उतने ही नए राक्षस उत्पन्न हो जाते थे।
रक्तवृष्टि–संज्ञा स्त्री० [सं०] आकाश से रक्त या लाल रंग के पानी की वृष्टि होना।
रक्तस्राव–संज्ञा पुं० [सं०] किसी अंग से रक्त का बहना या निकलना।
रक्तातिसार–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का अतिसार जिसमें लहू के दस्त आते हैं।
रक्तार्श–संज्ञा पुं० [सं० रक्तार्शस्] वह बवासीर जिसमें मसों में से खून भी निकलता है। खूनी बवासीर।
रक्तिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] घुँघची। रत्ती।
रक्ष–संज्ञा पुं० [सं०] १. रक्षक। रखवाला। २. रक्षा। हिफ़ाज़त। ३. छप्पय के साठवें भेद का नाम।
संज्ञा पुं० [सं० रक्षस्] राक्षस।
रक्षक–संज्ञा पुं० [सं०] १. रक्षा करनेवाला। बचानेवाला। २. पहरेदार।
रक्षण–संज्ञा पुं० [सं०] १. रक्षा करना। हिफ़ाज़त करना। २. पालन-पोषण।
रक्षन*–संज्ञा पुं० दे० "रक्षण"।
रक्षना*–क्रि० स० [सं० रक्षण] रक्षा करना।
रक्षस*–संज्ञा पुं० दे० "राक्षस"।
रक्षा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आपत्ति, कष्ट या नाश आदि से बचाना। रक्षण। बचाव। २. वह सूत्र आदि जो बालकों को भूत-प्रेत, नज़र आदि से बचाने के लिये बाँधा जाता है।
रक्षाइद*–संज्ञा स्त्री० [हिं० रक्ष + आइद (प्रत्य०)] राक्षसपन।
रक्षागृह–संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ प्रसूता प्रसव करे। सूतिकागृह। जच्चाखाना।
रक्षाबंधन–संज्ञा पुं० [सं०] हिन्दुओं का एक त्योहार जो श्रावण शुक्ला पूर्णिमा को होता है। सलोनो।
रक्षामंगल–संज्ञा पुं० [सं०] वह धार्मिक क्रिया जो भूत-प्रेत आदि की बाधा से रक्षित रहने के लिये की जाय।
रक्षित–वि० [सं०] १. जिसकी रक्षा की गई हो। हिफ़ाज़त किया हुआ। २. पाला पोसा। ३. रखा हुआ।
रक्षी–संज्ञा पुं० [सं० रक्षस् + ई (प्रत्य०)] राक्षसों के उपासक। राक्षस पूजनेवाले।
संज्ञा पुं० दे० "रक्षक"।
रक्ष्य–वि० [सं०] रक्षा करने के योग्य।
रखना–क्रि० स० [सं० रक्षण] १. एक वस्तु पर या दूसरी वस्तु में स्थित करना। ठहराना। टिकाना। धरना। २. रक्षा करना। हिफ़ाज़त करना। बचाना। यौ०—रख-रखाव = रक्षा। हिफ़ाज़त। ३. वृथा या नष्ट न होने देना। ४. संग्रह करना। जोड़ना। ५. सुपुर्द करना। सौंपना। ६. रेहन करना। बंधक में देना। ७. अपने अधिकार में लेना। ८. मनोविनोद या व्यवहार आदि के लिये अपने अधिकार में करना। ९. मुकर्रर करना। १०. व्यवहार करना। धारण करना। ११. जिम्मे लगाना। मढ़ना। १२. ऋणी होना। क़र्ज़दार होना। १३. मन में अनुभव या धारण करना। १४. स्त्री (या पुरुष) से संबंध करना। उपपत्नी (या उपपति) बनाना।

रखनी–संज्ञा स्त्री०[हिं० रखना + ई(प्रत्य०)] रखी हुई स्त्री। उपपत्नी। रखेली। सुरैतिन।
रखया–वि० स्त्री०[सं० रक्षा] रक्षा करनेवाली।
रखवाई–संज्ञा स्त्री०[हिं० रखना, या रखाना] १ रखने की रखवाली। चौकीदारी। २ रखवाली की मजदूरी। ३ रखने या रख-खाने की क्रिया या ढंग।
रखवाना–क्रि० स०[हिं० रखना का प्रेर०] रखने की क्रिया दूसरे से कराना। रखाना।
रखवार*†–संज्ञा पु० दे० "रखवाला"।
रखवाला–संज्ञा पु० [हिं० रखना + वाला (प्रत्य०)] १. रक्षक। २ पहरेदार।
रखवाली–संज्ञा स्त्री०[हिं० रखना + वाली (प्रत्य०)] रक्षा करने की क्रिया या भाव। हिफाजत।
रखाई–संज्ञा स्त्री०[हिं० रखना+आई(प्रत्य०)] १ हिफाजत। रखवाली। २ रक्षा करने का भाव क्रिया या मजदूरी।
रखाना–क्रि० स०[हिं० रखना का प्रेर०] रखने की क्रिया दूसरे से कराना। क्रि० अ० रखवाली करना। रक्षा करना।
रखिया*†–संज्ञा पु०[हिं० रखना + इया (प्रत्य०)] १ रक्षक। २ रखनेवाला।
रखेली–संज्ञा स्त्री० दे० "रखनी"।
रखैया†–संज्ञा पु० दे० "रक्षक"।
रग–संज्ञा स्त्री०[फा०] १ शरीर में की नस या नाड़ी।
मुहा०—रग दबना = दबाव मानना। किसी के प्रभाव या अधिकार में होना। रग रग फड़कना = शरीर में बहुत अधिक उत्साह या आवेश के लक्षण प्रकट होना। रग रग में = सारे शरीर में।
२ पत्तों में दिखाई पड़नेवाली नसें।
रगड़–संज्ञा स्त्री०[हिं० रगड़ना] १ रगड़ने की क्रिया या भाव। घर्षण। २ वह चिह्न जो रगड़ने से उत्पन्न हो। ३ हुज्जत। झगड़ा। ४ भारी श्रम।
रगड़ना–क्रि० स०[सं० घर्षण या अनु०] १ घर्षण करना। घिसना। जैसे—चंदन रगड़ना। २ पीसना। ३ किसी काम को जल्दी जल्दी और बहुत परिश्रम-पूर्वक करना। ४ तंग करना।
क्रि० अ० बहुत मेहनत करना।
रगड़वाना–क्रि० स० [हिं० रगड़ना का प्रेर० रूप] रगड़ने का काम दूसरे से कराना।
रगड़ा–संज्ञा पु०[हिं० रगड़ना] १ रगड़ने की क्रिया या भाव। घर्षण। रगड़। २ अयत परिश्रम। ३ वह झगड़ा जो बराबर होता रहे।
रगण–संज्ञा पु०[सं०] छंद शास्त्र में एक गण या तीन वर्णों का समूह जिसका पहला वर्ण गुरु, दूसरा लघु और तीसरा फिर गुरु होता है। (ऽ।ऽ)।
रगत*–संज्ञा पु०[सं० रक्त] रक्त। रुधिर।
रग-पट्ठा–संज्ञा पु०[फा० रग + हिं० पट्ठा] शरीर के भीतरी भिन्न भिन्न अंग।
रगर*†–संज्ञा स्त्री० दे० "रगड़"।
रग-रेशा–संज्ञा पु०[फा० रग + रेशा] १ पत्तियों की नसें। २ शरीर के अंदर का प्रत्येक अंग।
रगवाना*†–क्रि० स०[हिं० रगाना का प्रेर०] चुप कराना। शांत कराना।
रगाना†–क्रि० अ० [देश०] चुप होना। क्रि० स० चुप कराना। शांत करना।
रगेदना–क्रि० स० [सं० खेट, हिं० खदना] भगाना। खदेड़ना। दौड़ाना।
रघु–संज्ञा पु०[सं०] सूर्यवंशी राजा दिलीप के पुत्र जो अयोध्या के बहुत प्रतापी राजा और श्रीरामचन्द्र के परदादा थे।
रघुकुल–संज्ञा पु०[सं०] राजा रघु का वंश।
रघुनंदन–संज्ञा पु० [सं०] श्रीरामचन्द्र।
रघुनाथ–संज्ञा पु० [सं०] श्रीरामचन्द्र।
रघुनायक–संज्ञा पु० [सं०] श्रीरामचन्द्र।
रघुपति–संज्ञा पु०[सं०] श्रीरामचन्द्र।
रघुराई*–संज्ञा पु० [सं० रघुराज] श्रीरामचन्द्र।
रघुराज–संज्ञा पु०[सं०] श्रीरामचन्द्र।
रघुवंश–संज्ञा पु०[सं०] १ महाराज रघु का वंश या खानदान। २ महाकवि कालिदास का रचा हुआ एक प्रसिद्ध महाकाव्य।
रघुवंशी–संज्ञा पु०[सं०] १ वह जो रघु के

वंश में उत्पन्न हुआ हो। २. क्षत्रियों के अंतर्गत एक जाति।
रघुवर–संज्ञा पुं० [सं०] श्रीरामचन्द्र।
रघुवीर–संज्ञा पुं० [सं०] श्रीरामचन्द्र जी।
रचक–संज्ञा पुं० [सं०] रचना करनेवाला। रचयिता।
वि० दे० "रंचक"।
रचना–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रचने या बनाने की क्रिया या भाव। बनावट। निर्माण। २. बनाने का ढंग या कौशल। ३. बनाई हुई वस्तु। निर्मित वस्तु। ४. वह गद्य या पद्य जिसमें कोई विशेष चमत्कार हो।
क्रि० स० [सं० रचन] १. हाथों से बनाकर तैयार करना। बनाना। सिरजना। २. विधान करना। निश्चित करना। ३. ग्रंथ आदि लिखना। ४. उत्पन्न करना। पैदा करना। ५. अनुष्ठान करना। ठानना। ६. काल्पनिक सृष्टि करना। कल्पना करना। ७. शृंगार करना। सँवारना। सजाना। ८. तरतीब या क्रम से रखना।
मुहा०–*रचि रचि=बहुत होशियारी और कारीगरी के साथ (कोई काम करना)।
क्रि० स० [सं० रंजन] रँगना। रंजित करना।
क्रि० अ० [सं० रंजन] १. अनुरक्त होना। २. रंग चढ़ना। रँगा जाना।
रचयिता–संज्ञा पुं० [सं० रचयितृ] रचनेवाला। बनानेवाला।
रचवाना–क्रि० स० [हिं० रचना का प्रेर०] १. रचना कराना। बनवाना। २. मेहँदी या महावर लगवाना।
रचाना†*–क्रि० स० [सं० रचन] १. अनुष्ठान करना या कराना। बनाना। २. "रचवाना"।
क्रि० अ० [सं० रंजन] मेहँदी, महावर आदि से हाथ-पैर रँगाना।
रचित–वि० [सं०] बनाया हुआ। रचा हुआ।
रच्छस*–संज्ञा पुं० दे० "राक्षस"।
रच्छा*–संज्ञा स्त्री० दे० "रक्षा"।
रज–संज्ञा पुं० [सं० रजस्] १. वह रक्त जो स्त्रियों और स्तनपायी जाति के मादा प्राणियों के योनि-मार्ग से प्रति मास तीन चार दिन तक निकलता है। आर्तव। कुसुम। ऋतु। २. दे० "रजोगुण"। ३. पाप। ४. जल। पानी। ५. फूलों का पराग। ६. आठ परमाणुओं का एक मान।
संज्ञा स्त्री० [सं०] १. धूल। गर्द। २. रात। ३. ज्योति। प्रकाश।
संज्ञा पुं० [सं० रजत] चाँदी।
संज्ञा पुं० [सं० रजक] रजक। धोबी।
रजक–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० रजकी] धोबी।
रजगुण–संज्ञा पुं० दे० "रजोगुण"।
रजतंत–संज्ञा स्त्री० [सं० राजतत्त्व] वीरता।
रजत–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चाँदी। रूपा। २. सोना। ३. रक्त। लहू।
वि० १. सफ़ेद। शुक्ल। २. लाल। सुर्ख।
रजताई*–संज्ञा स्त्री० [हिं० रजत] सफ़ेदी।
रजधानी*–संज्ञा स्त्री० दे० "राजधानी"।
रजन–संज्ञा स्त्री० दे० "राल"।
रजना*–क्रि० अ० [सं० रंजन] रँगा जाना।
क्रि० स० रंग में डुबाना। रँगना।
रजनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रात। २. हल्दी।
रजनीकर–संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।
रजनीचर–संज्ञा पुं० [सं०] राक्षस।
रजनीपति–संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।
रजनीमुख–संज्ञा पुं० [सं०] संध्या।
रजनीश–संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।
रजपूत*†–संज्ञा पुं० [सं० राजपुत्र] १. दे० "राजपूत"। २. वीर पुरुष। योद्धा।
रजपूती†–संज्ञा स्त्री० [हिं० राजपूत+ई(प्रत्य०)] १. क्षत्रियता। क्षत्रियत्व। २. वीरता।
रजबहा–संज्ञा पुं० [सं० राज=बड़ा+हिं० बहना] वह बड़ा नल जिससे और भी अनेक छोटे छोटे नल निकलते हैं।
रजवाड़ा–संज्ञा पुं० [हिं० राज्य+वाड़ा] १. राज्य। देशी रियासत। २. राजा।
रजवार*†–संज्ञा पुं० [सं० राजद्वार] दरबार।
रजस्वला–वि० स्त्री० [सं०] जिसका रज प्रवाहित होता हो। ऋतुमती। रजस्वला।
रजा–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मरज़ी। इच्छा। २. रुखसत। छुट्टी। ३. अनुमति।

आज्ञा। ४ स्वीकृति।
रजाइ, रजाइय*—संज्ञा स्त्री० [अ० रज़ा] १ आज्ञा। हुक्म। २ दे० "रज़ा"।
रजाई—संज्ञा स्त्री० [सं० रजक=कपड़ा ?] एक प्रकार का रूईदार ओढ़ना। लिहाफ।
संज्ञा स्त्री० [हिं० राजा+आई (प्रत्य०)] राजा होने का भाव। राजापन।
संज्ञा स्त्री० दे० "रजाइ"।
रजाना—क्रि० स० [सं० राज्य] राज्य-सुख का भोग कराना।
रज़ामंद—वि० [फा०] [संज्ञा रज़ामंदी] जो किसी बात पर राज़ी हो गया हो। सहमत।
रजाय, रजायस*†—संज्ञा स्त्री० [अ० रज़ा] १ आज्ञा। हुक्म। २ मरज़ी। इच्छा।
रज़ील—वि० [अ०] छोटी जाति का। नीच।
रजोकुल*—संज्ञा पु० [सं० राजकुल] राजवंश।
रजोगुण—संज्ञा पु० [सं०] प्रकृति का वह स्वभाव जिससे जीवधारियों में भोग विलास तथा दिखावे की रुचि होती है। राजस।
रजोदर्शन—संज्ञा पु० [सं०] स्त्रियों का मासिक धर्म्म। रजस्वला होना।
रजोधर्म—संज्ञा पु० [सं०] स्त्रियों का मासिक धर्म्म।
रज्जु—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ रस्सी। जेवरी। २ लगाम की डोरी। बाग-डोर।
रट—संज्ञा स्त्री० [हिं० रटना] किसी शब्द को बार बार उच्चारण करने की क्रिया।
रटना—क्रि० स० [अनु०] १ किसी शब्द को बार बार कहना। २ ज़बानी याद करने के लिये बार बार उच्चारण करना। ३ बार बार शब्द करना। बजना।
रठ†—वि० [?] रूखा। शुष्क।
रढ़ना*—क्रि० स० दे० "रटना"।
रण—संज्ञा पु० [सं०] लड़ाई। युद्ध। जंग।
रणक्षेत्र—संज्ञा पु० [सं०] लड़ाई का मैदान।
रणछोड़—संज्ञा पु० [सं० रण+हिं० छोड़ना] श्रीकृष्ण का एक नाम
रणखेत*—संज्ञा पु० दे० "रणक्षेत्र"।
रणभूमि—संज्ञा स्त्री० [सं०] रणक्षेत्र।
रणरंग—संज्ञा पु० [सं०] १ लड़ाई का उत्साह। २ युद्ध। लड़ाई। ३ युद्धक्षेत्र।
रणलक्ष्मी—संज्ञा स्त्री० दे० "विजय-लक्ष्मी"
रणसिंघा—संज्ञा पु० [सं० रण+हिं० सिंघा] तुरही। नरसिंघा।
रणस्तंभ—संज्ञा पु० [सं०] विजय के स्मारक में बनवाया हुआ स्तंभ।
रणस्थल—संज्ञा पु० [सं०] रणभूमि।
रणहंस—संज्ञा पु० [सं०] एक वर्णवृत्त।
रणांगण—संज्ञा पु० [सं०] युद्ध-क्षेत्र।
रत—संज्ञा पु० [सं०] १ मैथुन। २ प्रीति। वि० १ अनुरक्त। आसक्त। २ (कार्य्य आदि में) लगा हुआ। लिप्त।
*संज्ञा पु० [सं० रक्त] रक्त। खून।
रतजगा—संज्ञा पु० [हिं० रात+जागना] उत्सव या विहार आदि के लिये सारी रात जागना।
रतन—संज्ञा पु० दे० "रत्न"।
रतनजोत—संज्ञा स्त्री० [सं० रत्न+ज्योति] १ एक प्रकार की मणि। २ एक प्रकार का बहुत छोटा क्षुप। इसकी जड़ से लाल रंग निकाला जाता है।
रतनागर*—संज्ञा पु० [सं० रत्नाकर] समुद्र।
रतनार, रतनारा—वि० [सं० रक्त] कुछ लाल। सुर्खी लिए हुए।
रतनारी—संज्ञा पु० [हिं० रतनार+ई (प्रत्य०)] एक प्रकार का धान।
संज्ञा स्त्री० लाली। ललिमा। सुर्खी।
रतनालिया*†—वि० दे० "रतनारा"।
रतमुँहाँ*†—वि० [हिं० रत=लाल+मुँह] [स्त्री० रतमुँही] लाल मुँहवाला।
रताना*†—क्रि० अ० [सं० रत] रत होना। क्रि० स० किसी को अपनी ओर रत करना।
रतालू—संज्ञा पु० [सं० रक्तालु] १ पिंडालू नामक कंद। २ वाराहीकंद। गैंठी।
रति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कामदेव की पत्नी जो दक्ष प्रजापति की कन्या और सौंदर्य की साक्षात् मूर्ति मानी जाती है। २ काम-क्रीड़ा। संभोग। मैथुन। ३ प्रीति। प्रेम। अनुराग। मुहब्बत। ४ शोभा। छवि। ५ साहित्य में शृंगार रस का स्थायी भाव। ६ नायक और नायिका की

परस्पर प्रीति या प्रेम।
क्रि० वि० दे० "रत्ती"।
*संज्ञा स्त्री०[हिं० रात] रात। रात्रि। रैन।
रतिक*†–क्रि० वि० [हिं० रत्ती] बहुत थोड़ा। जरा सा।
रतिदान–संज्ञा पुं० [सं०] संभोग। मैथुन।
रतिनायक–संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।
रतिनाह*–संज्ञा पुं०[सं०रतिनाथ] कामदेव।
रतिपति–संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।
रतिपद–संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्णवृत्त।
रतिप्रीता–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जिसका रति में प्रेम हो। कामिनी।
रतिबंध–संज्ञा पुं० [सं०] मैथुन या संभोग करने का प्रकार, जिसे आसन भी कहते हैं।
रतिभवन–संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ प्रेमी और प्रेमिका रतिक्रीड़ा करते हों।
रतिभौन*–संज्ञा पुं० दे० "रतिभवन"।
रतिमंदिर–संज्ञा पुं० [सं०] रतिभवन।
रतिमाना*†–क्रि० अ० [हिं० रति] प्रेम करना।
रतिरमण–संज्ञा पुं० [सं०] १. कामदेव। २. मैथुन।
रतिराई*–संज्ञा पुं० दे० "रतिराज"।
रतिराज–संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।
रतिवंत–वि० [सं० रति] सुंदर। खूबसूरत।
रतिशास्त्र–संज्ञा पुं० [सं०] काम-शास्त्र।
रती*†–संज्ञा स्त्री० [सं० रति] १. कामदेव की पत्नी। रति। २. सौंदर्य। शोभा। ३. मैथुन। ४. कांति। ५. दे० "रति"।
†*–संज्ञा स्त्री० दे० "रत्ती"।
क्रि० वि० अग सा। रत्ती भर। किंचित्।
रतोपल*†–संज्ञा पुं० [सं० रक्तोत्पल] लाल कमल।
रतौंधी–संज्ञा स्त्री० [हिं० रात + अंधा] एक प्रकार का रोग जिसमें रोगी को रात के समय बिलकुल दिखाई नहीं देता।
रत्त*–संज्ञा पुं० दे० "रक्त"।
रत्ती–संज्ञा स्त्री०[सं० रक्तिका] आठ चावल का मान या बाट। २. घुंघची का दाना। गुंजा।
मुहा०–रत्ती भर=बहुत थोड़ा सा। जरा सा।
वि० बहुत थोड़ा। किंचित।
* संज्ञा स्त्री० [सं० रति] शोभा। छबि।
रत्थी–संज्ञा स्त्री० [सं० रथ] वह ढाँचा या संदूक आदि जिसमें शव को रखकर अंतिम संस्कार के लिये ले जाते हैं। *टिकठी। अरथी।*
रत्न–संज्ञा पुं० [सं०] १. वे छोटे, चमकीले, बहुमूल्य खनिज पदार्थ, जिनका व्यवहार आभूषणों आदि में जड़ने के लिये होता है। मणि। जवाहिर। नगीना। २. मानिक। लाल। ३. सर्वश्रेष्ठ।
रत्नगर्भा–संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी। भूमि।
रत्ननिधि–संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।
रत्नपारखी–संज्ञा पुं० [सं० रत्न + हिं० पारखी] जौहरी।
रत्नाकर–संज्ञा पुं० [सं०] १. समुद्र। २. खान। ३. रत्नों का समूह।
रत्नावली–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मणियों की श्रेणी या माला। २. एक अर्थालंकार जिसमें प्रस्तुत अर्थ निकलने के अतिरिक्त ठीक क्रम से कुछ और वस्तु-समूह के नाम भी निकलते हैं।
रथ–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार की पुरानी सवारी जिसमें चार या दो पहिए हुआ करते थे। गाड़ी। बहल। २. शरीर। ३. चरण। पैर। ४. शतरंज में, ऊँट।
रथयात्रा–संज्ञा स्त्री० [सं०] हिंदुओं का एक पर्व जो आषाढ़ शुक्ल द्वितीया को होता है।
रथवाह–संज्ञा पुं० [सं० रथवाह] १. रथ चलानेवाला। सारथी। २. घोड़ा।
रथांगपाणि–संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।
रथिक–संज्ञा पुं० [सं०] रथी।
रथी–संज्ञा पुं० [सं० रथिन्] १. रथ पर चढ़कर लड़नेवाला। २. एक हजार योद्धाओं से अकेला युद्ध करनेवाला योद्धा।
वि० रथ पर चढ़ा हुआ।
संज्ञा स्त्री० दे० "रत्थी"।
रथोद्धता–संज्ञा स्त्री० [सं०] ग्यारह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।
रथ्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रास्ता। सड़क।

२ नाली। नाबदान।
रद–संज्ञा पु० [सं०] दंत। दाँत।
वि० दे० "रद्द"।
रदच्छद–संज्ञा पु० [सं०] ओठ। ओष्ठ।
रदछद*–संज्ञा पु० [सं० रदच्छद] ओंठ।
संज्ञा पु० [सं० रदक्षत] रति आदि के समय दाँतों के लगने का चिह्न।
रददान–संज्ञा पु० [सं० रद+दान] (रति के समय) दाँतों से ऐसा दबाना कि चिह्न पड़ जाय।
रदन–संज्ञा पु० [सं०] दशन। दाँत।
रदनी–वि० [सं० रदनिन्] दाँतवाला।
रदपद–संज्ञा पु० [सं०] ओष्ठ। ओठ।
रद्द–वि० [अ०] १ जो काट, छाँट, तोड़ या बदल दिया गया हो।
यौ०—रद्द बदल=परिवर्तन। फेरफार। २ जो खराब या निकम्मा हो गया हो।
संज्ञा स्त्री० कै। वमन।
रद्दा–संज्ञा पु० [देश०] १ ईंटों की, बेंड़े बल की, एक पंक्ति जो दीवार पर चुनी जाती है। २ थाली में स्तरों के रूप में मिठाइयों का चुनाव। ३ नीचे ऊपर रखी हुई वस्तुओं की एक तह।
रद्दी–वि० [फा० रद] निकम्मा। निष्प्रयोजन। बेकार।
रन*–संज्ञा पु० [सं० रण] युद्ध। लड़ाई।
संज्ञा पु० [सं० अरण्य] जंगल। वन।
संज्ञा पु० [?] १ झील। ताल। २ समुद्र का छोटा खंड।
रनकना*†–क्रि० अ० [सं० रणन=शब्द करना] घुँघरू आदि का मंद शब्द होना।
रनना*–क्रि० अ० [सं० रणन] बजना। शब्द करना। झनकार होना।
रनबंका, रनबाँकुरा–संज्ञा पु० [सं० रण+हिं० बाँका] शूरवीर। योद्धा।
रणवादी*–संज्ञा पु० [सं० रण+वादी] योद्धा।
रनवास–संज्ञा पु० [हिं० रानी+वास] १ रानियों के रहने का महल। अंतःपुर। २ जनानखाना।
रनित*–वि० [हिं० रनना] बजता हुआ। झनकार करता हुआ।
रनिवास–संज्ञा पु० दे० "रनवास"।
रनी*–संज्ञा पु० [सं० रण+ई (प्रत्य०)] योद्धा।
रपट†–संज्ञा स्त्री० [हिं० रपटना] १ रपटने की क्रिया या भाव। फिसलाहट। २ दौड़। ३ जमीन की ढाल।
संज्ञा स्त्री० [अं० रिपोर्ट] सूचना। इत्तला।
रपटना†–क्रि० अ० [सं० रफन] १ नीचे या आगे की ओर फिसलना। २ बहुत जल्दी जल्दी चलना। झपटना।
रपटाना–क्रि० स० [हिं० रपटना] रपटने का काम दूसरे से कराना।
रपट्टा†–संज्ञा पु० [हिं० रपटना] १ फिसलने की क्रिया। फिसलाव। २ दौड़ धूप। ३ झपट्टा। चपेट।
रफल–संज्ञा स्त्री० [अं० राइफल] विलायती ढंग की एक प्रकार की बंदूक।
संज्ञा पु० [अं० रैपर] जाड़े में ओढ़ने की मोटी गरम चादर।
रफा–वि० [अ०] १ दूर किया हुआ। २ निवृत्त। शांत। निवारित। दबाया हुआ।
रफा दफा–वि० दे० "रफा"।
रफू–संज्ञा पु० [अ०] फटे हुए कपड़े के छेद में तागे भरकर उसे बराबर करना।
रफूगर–संज्ञा पु० [फा०] रफू करने का व्यवसाय करनेवाला। रफू बनानेवाला।
रफूचक्कर–वि० [अ० रफू+हिं० चक्कर] चंपत। गायब।
रफतनी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १ जाने की क्रिया या भाव। २ माल का बाहर जाना।
रफता रफता–क्रि० वि० [फा०] धीरे धीरे। क्रम क्रम से।
रब–संज्ञा पु० [अ०] ईश्वर। परमेश्वर।
रबड़–संज्ञा पु० [अं० रबर] १ एक प्रसिद्ध लचीला पदार्थ जो अनेक वृक्षों के दूध से बनता है। २ एक वृक्ष जो वट वर्ग के अंतर्गत है। इसी के दूध से उपर्युक्त लचीला पदार्थ बनता है।
रबड़ना–क्रि० स० [हिं० रपटना] १ घुमाना। चलाना। २ फेंटना।

रबड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० रबड़ना] औटाकर गाढ़ा और लच्छेदार किया हुआ दूध। बसौंधी।

रबदा–संज्ञा पुं० [हिं० रबड़ना] १. चलने में होनेवाला श्रम। २. कीचड़।

मुहा०—रबदा पड़ना = खूब पानी बरसना।

रबर–संज्ञा पुं० दे० "रबड़"।

रबाना–संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का डफ।

रबाब–संज्ञा पुं० [अ०] सारंगी की तरह का एक प्रकार का बाजा।

रबी–संज्ञा स्त्री० [अ० रबीअ] १. वसंत ऋतु। २. वह फ़सल जो वसंत ऋतु में काटी जाती है।

रब्त–संज्ञा पुं० [अ०] १. अभ्यास। मश्क। मुहावरा। २. संबंध। मेल।

यौ०—रब्त-जब्त = मेलजोल। घनिष्ठता।

रब्ब–संज्ञा पुं० दे० "रब"।

रमक–संज्ञा स्त्री० [हिं० रमना ?] १. झूले की पेंग। २. तरंग। झकोरा।

रमकना–क्रि० अ० [हिं० रमना] १. हिंडोले पर झूलना। २. झूमते या इतराते हुए चलना।

रमजान–संज्ञा पुं० [अ०] एक अरबी महीना जिसमें मुसलमान रोजा रखते हैं।

रमण–संज्ञा पुं० [सं०] १. विलास। क्रीड़ा। केलि। २. मैथुन। ३. गमन। घूमना। ४. पति। ५. कामदेव। ६. एक वर्णिक छंद।

वि० १. मनोहर। सुंदर। २. प्रिय। ३. रमनेवाला।

रमणगमना–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जो यह समझकर दुःखी होती है कि संकेत-स्थान पर नायक आया होगा, और मैं वहाँ उपस्थित न थी।

रमणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] नारी। स्त्री।

रमणीक–वि० [सं० रमणीय] सुंदर।

रमणीय–वि० [सं०] सुंदर। मनोहर।

रमणीयता–संज्ञा स्त्री [सं०] १. सुंदरता। २. साहित्य-दर्पण के अनुसार वह माधुर्य जो सब अवस्थाओं में बना रहे।

रमता–वि० [हिं० रमना] एक जगह जमकर न रहनेवाला। घूमता फिरता। जैसे, रमता जोगी।

रमन*–संज्ञा पुं० वि० दे० "रमण"।

रमना–क्रि० अ० [सं० रमण] १. भोग-विलास के लिये कहीं रहना या ठहरना। २. आनंद करना। मजा उड़ाना। ३. व्याप्त होना। भीनना। ४. अनुरक्त होना। लग जाना। ५. फिरना। घूमना। ६. चलता होना। चल देना।

संज्ञा पुं० [सं० आराम या रमण] १. चरागाह। २. वह सुरक्षित स्थान या घेरा, जहाँ पशु शिकार के लिये या पालने के लिये छोड़ दिए जाते हैं। ३. बाग। ४. कोई सुंदर और रमणीक स्थान।

रमनी*–संज्ञा स्त्री० दे० "रमणी"।

रमनीक*–वि० दे० "रमणीक"।

रमल–संज्ञा पुं० [अ०] एक प्रकार का फलित ज्योतिष जिसमें पासे फेंककर शुभाशुभ फल जाना जाता है।

रमा–संज्ञा स्त्री० [सं०] लक्ष्मी।

रमाकांत–संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

रमानरेश*–संज्ञा पुं० दे० "रमाकांत"।

रमाना–क्रि० स० [हिं० रमना का स० रूप] १. मोहित करना। लुभाना। २. अपने अनुकूल बनाना। ३. ठहराना। रोक रखना। ४. लगाना। जोड़ना।

मुहा०—रास रमाना = रास रचना।

रमानिवास–संज्ञा पुं० [हिं० रमा + निवास] विष्णु।

रमारमण–संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

रमित*–वि० [हिं० रमना] लुभाया हुआ। मुग्ध।

रमूज़–संज्ञा स्त्री० [अ० रम्ज़ का बहु०] १. कटाक्ष। २. सैन। इशारा। ३. पहेली। ४. श्लेष। ५. भेद। रहस्य।

रमैनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० रामायण] कबीरदास के बीजक का एक भाग।

रमैया‡*–संज्ञा पुं० [हिं० राम + ऐया(प्रत्य०)] १. राम। २. ईश्वर।

रम्माल—संज्ञा पु० [अ०] रमल फेंकनेवाला।
रम्य—वि० [सं०] [स्त्री० रम्या] १ मनोहर। सुंदर। २ मनोरम। रमणीय।
रम्हाना—क्रि० अ० दे० "रँभाना"।
रय*—संज्ञा पु० [सं० रज] रज। धूल। गर्द।
संज्ञा पु० [सं०] १ वेग। तेजी। २ प्रवाह। ३ ऐल के छ पुत्रों में से चौथा।
रयन*†—संज्ञा स्त्री० [सं० रजनि] रात। रात्रि।
रयना*†—क्रि० स० [सं० रंजन] रंग में भिगोना। तराबोर करना।
क्रि० अ० १ अनुरक्त होना। २ संयुक्त होना। मिलना।
रय्यत†—संज्ञा स्त्री० [अ० रअय्यत] प्रजा।
ररकार—संज्ञा पु० [सं० रकार] रकार की ध्वनि।
रर*†—संज्ञा स्त्री० [हिं० ररना] रटन रट।
ररकना†—क्रि० अ० [अनु०] [संज्ञा ररक] कसकना। सालना। पीड़ा देना।
ररना†—क्रि० अ० [सं० रटन] लगातार एक ही बात कहना। रटना।
ररिहा*†—संज्ञा पु० [हिं० ररना + हा (प्रत्य०)] १ ररनेवाला। २ रटुआ या रटुआ नामक पक्षी। ३ भारी मंगन।
ररी—संज्ञा पु० [हिं० ररना] १ बहुत गिड़गिड़ाकर माँगनेवाला। २ अधम। नीच।
रलना*†—क्रि० अ० [सं० ललन] एक में मिलना। सम्मिलित होना।
रलाना*†—क्रि० स० [हिं० रलना का सक० रूप] एक में मिलाना। सम्मिलित करना।
रली—संज्ञा स्त्री० [सं० ललन=केलि, क्रीड़ा] १ विहार। क्रीड़ा। २ आनंद। प्रसन्नता।
रल्ल*†—संज्ञा पु० [हिं० रेला] रेला। हल्ला।
रव—संज्ञा पु० [सं०] १ गुंजार। नाद। २ आवाज। शब्द। ३ शोर। गुल।
संज्ञा पु० *‡ [सं० रवि] सूर्य।
रवकना—क्रि० अ० [हिं० रमना=चलना] १ दौड़ना। २ उमगना। उछलना।
रवताई*—संज्ञा स्त्री० [हिं० रावत + आई (प्रत्य०)] १ राजा या रावत होने का भाव। २ प्रभुत्व। स्वामित्व।
रवन*—संज्ञा पु० [सं० रमण] पति। स्वामी।
वि० रमण करनेवाला। क्रीड़ा करनेवाला।
रवना*—क्रि० अ० [सं० रमण] क्रीड़ा करना।
क्रि० अ० [हिं० रव=शब्द] शब्द करना।
‡संज्ञा पु० दे० "रावण"।
रवनि, रवनी*—संज्ञा स्त्री० [सं० रमणी] १ स्त्री। भार्या। पत्नी। २ रमणी। सुंदरी।
रवन्ना—संज्ञा पु० [फा० रवाना] १ वह कागज जिस पर रवाना किए हुए माल का ब्योरा होता है। २ राहदारी का परवाना।
रवा—संज्ञा पु० [सं० रज] १ बहुत छोटा टुकड़ा। कण। दाना। रेजा। २ सूजी। ३ बारूद का दाना।
वि० [फा०] १ उचित। ठीक। वाजिब। २ प्रचलित। चलनसार।
रवाज—संज्ञा स्त्री० [फा] परिपाटी। चाल। प्रथा। रस्म। चलन। रीति।
रवादार—वि० [फा० रवा + दार (प्रत्य०)] संबंध या लगाव रखनेवाला।
वि० [हिं० रवा + फा० दार] जिसमें कण या दाने हों। रवेवाला।
रवानगी—संज्ञा स्त्री० [फा०] रवाना होने की क्रिया या भाव। प्रस्थान। चालान।
रवाना—वि० [फा०] १ जो कहीं से चल पड़ा हो। प्रस्थित। २ भेजा हुआ।
रवा-रवी—संज्ञा स्त्री० [फा० रवा + अनु० रवी] जल्दी। शीघ्रता।
रवि—संज्ञा पु० [सं०] १ सूर्य। २ मदार का पेड़। आक। ३ अग्नि। ४ नायक। सरदार।
रविकुल—संज्ञा पु० [सं०] सूर्यवंश।
रविचंचल—संज्ञा पु० [सं०] लोलार्क नामक तीर्थस्थल जो काशी में है।
रवितनय—संज्ञा पु० [सं०] १ यमराज। २ शनैश्चर। ३ सुग्रीव। ४ कर्ण। ५ अश्विनीकुमार।
रवितनया—संज्ञा स्त्री० [सं०] यमुना।
रविनंदन—संज्ञा पु० दे० 'रवितनय'।
रविनंदिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] यमुना।
रविपूत*—संज्ञा पु० दे० "रविनंदन"।

रविमंडल—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य के चारों ओर का लाल मंडल या गोला। रविबिंब।
रविबाण—संज्ञा पुं० [सं०] वह बाण जिसके चलाने से सूर्य का सा प्रकाश हो।
रविवार—संज्ञा पुं० [सं०] एक वार जो शनिवार के बाद तथा सोमवार के पहले पड़ता है। आदित्यवार। एतवार।
रविश—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. गति। चाल। २. तौर। तरीक़ा। ढंग। ३. क्यारियों के बीच का छोटा मार्ग।
रविसुअन—संज्ञा पुं० दे० "रवितनय"।
रवैया‡—संज्ञा पुं० [फ़ा० रविश या रवाँ] १. चलन। चाल-चलन। २. तौर। ढंग।
रश्क—संज्ञा पुं० [फ़ा०] ईर्ष्या। डाह।
रश्मि—संज्ञा पुं० [सं०] १. किरण। २. घोड़े की लगाम। बाग।
रस—संज्ञा पुं० [सं०] १. खाने की चीज़ का स्वाद। रसनेंद्रिय का संवेदन या ज्ञान। हमारे यहाँ वैद्यक में मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त और कषाय ये छः रस माने गए हैं। २. छः की संख्या। ३. वैद्यक के अनुसार शरीर के अंदर की सात धातुओं में से पहली धातु। ४. किसी पदार्थ का सार। तत्त्व। ५. मन में उत्पन्न होनेवाला वह भाव या आनंद जो काव्य पढ़ने अथवा अभिनय देखने से उत्पन्न होता है। (साहित्य) ६. नौ की संख्या। ७. आनंद। मजा। मुहा०—रस भीजना या भीनना = यौवन का आरंभ या संचार होना।
८. प्रेम। प्रीति। मुहब्बत।
यौ०—रस-रंग = प्रेम-क्रीड़ा। केलि। रस-रीति = प्रेम का व्यवहार।
९. काम-क्रीड़ा। केलि। विहार। १०. उमंग। जोश। वेग। ११. गुण। सिफ़त। १२. कोई तरल या द्रव पदार्थ। १३. जल। पानी। १४. वह पानी जिसमें चीनी घुली हुई हो। शरबत। १५. पारा। १६. धातुओं को फूँककर तैयार किया हुआ भस्म। १७. केशव के अनुसार रगण और सगण। १८. भाँति। तरह। प्रकार। १९. मन की तरंग। मौज। इच्छा।
रसकपूर—संज्ञा पुं० [सं० रसकर्पूर] सफ़ेद रंग की एक प्रसिद्ध उपधातु।
रसकेलि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विहार। क्रीड़ा। २. हँसी-ठट्ठा। दिल्लगी।
रसकोरा—संज्ञा पुं० दे० "रसगुल्ला"।
रसगुनी†—संज्ञा पुं० [सं० रस + गुणी] काव्य या संगीत-शास्त्र का ज्ञाता।
रसगुल्ला—संज्ञा पुं० [हिं० रस + गोला] एक प्रकार की छेने की मिठाई।
रसज्ञ—वि० [सं०] [भाव० रसज्ञता] १. वह जो रस का ज्ञाता हो। २. काव्य-मर्मज्ञ। ३. निपुण। कुशल।
रसता—संज्ञा स्त्री० [सं०] रस का भाव या धर्म्म। रसत्व।
रसद—वि० [सं०] १. आनंददायक। सुखद। २. स्वादिष्ठ। मज़ेदार।
संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. बाँट। बखरा। मुहा०—हिस्सा रसद = बँटने पर अपने अपने हिस्से के अनुसार लाभ।
२. कच्चा अनाज जो पकाया न गया हो।
रसदार—वि० [हिं० रस + दार (प्रत्य०)] १. जिसमें किसी प्रकार का रस हो। २. स्वादिष्ठ। मज़ेदार।
रसन—संज्ञा पुं० [सं०] १. स्वाद लेना। चखना। २. ध्वनि। ३. जीभ। ज़बान।
रसना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जिह्वा। जीभ। मुहा०-रसना खोलना = बोलना आरंभ करना। रसना तालू से लगाना = बोलना बंद करना।
२. वह स्वाद, जिसका अनुभव जीभ से किया जाता है। ३. रस्सी। ४. लगाम।
क्रि० अ० [हिं० रस + ना (प्रत्य०)] १. धीरे धीरे बहना या टपकना। २. गीला होकर जल या और कोई द्रव पदार्थ छोड़ना या टपकाना।
मुहा०—रस रस या रसे रसे = धीरे धीरे।
३. रस में मग्न होना। प्रफुल्लित होना। ४. तन्मय होना। परिपूर्ण होना। ५. रस लेना। स्वाद लेना। ६. प्रेम में अनुरक्त होना।

रसनेंद्रिय–संज्ञा स्त्री० [स०] रसना। जीभ।
रसनोपमा–संज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार की उपमा जिसमें उपमाओं की एक शृंखला बँधी होती है और पहले कहा हुआ उपमेय आगे चलकर उपमान होता जाता है। गमनोपमा।
रसपति–संज्ञा पु० [स०] १ चंद्रमा। २ राजा। ३ पारा। ४ शृंगार रस।
रसभरी–संज्ञा स्त्री० [अ० रैस्पबेरी] एक प्रकार का स्वादिष्ट फल।
रसभीना–वि० [हिं० रस + भीनना] [स्त्री० रसभीनी] १ आनंद में मग्न। २ आर्द्र। तर। गीला।
रसम–संज्ञा स्त्री० [अ० रस्म] १ प्रथा। परिपाटी। चाल। प्रणाली। २ मेल-जोल।
रसमसा–वि० [हिं० रस + मस (अनु०)] [स्त्री० रसमसी] १ आनंदमग्न। अनुरक्त। २ तर। गीला। ३ पसीने से भरा।
रसमि*–संज्ञा स्त्री० [स० रश्मि] १ किरण। २ आभा। प्रकाश। चमक।
रसराज–संज्ञा पु० [स०] १ पारद। पारा। २ शृंगार रस।
रसराय*–संज्ञा पु० दे० "रसराज"।
रसरी†–संज्ञा स्त्री० दे० 'रस्सी'।
रसल–वि० दे० "रसीला"।
रसवत–संज्ञा पु० [स० रसवत्] रसिक। प्रेमी। वि० जिसमें रस हो। रसीला।
रसवती–संज्ञा स्त्री० [स० रसवती] रसोई।
° रसवत्–संज्ञा पु० [स०] वह काव्यालंकार जिसमें एक रस किसी दूसरे रस अथवा भाव का अंग होकर आवे।
रसवत–संज्ञा स्त्री० दे० "रसौत"।
रसवाद–संज्ञा पु० [स०] १ प्रेम या आनंद की बात-चीत। २ मनोरंजन के लिये कहा-सुनी। छेड़छाड़। ३ बकवाद।
रसविरोध–संज्ञा पु० [स०] साहित्य में एक ही पद्य में दो प्रतिकूल रसों की स्थिति। जैसे—शृंगार और रौद्र की।
रसांजन–संज्ञा पु० [स०] रसौत।
रसा–संज्ञा स्त्री० [स०] १ पृथ्वी। जमीन। २ जीभ। रसना। जबान।
संज्ञा पु० [हिं० रस] तरकारी आदि का झोल। शोरबा।
रसाइनी*–संज्ञा पु० [हिं० रसायन] रसायन विद्या जाननेवाला।
रसाई–संज्ञा स्त्री० [फा०] पहुँचने की क्रिया या भाव। पहुँच।
रसातल–संज्ञा पु० [स०] पुराणानुसार पृथ्वी के नीचे के सात लोकों में छठा लोक।
मुहा०—रसातल में पहुँचाना = मिट्टी में मिला देना। बरबाद कर देना।
रसाभास–संज्ञा पु० [स०] १ साहित्य में किसी रस का अनुचित विषय में अथवा अनुपयुक्त स्थान पर वर्णन। २ एक प्रकार का अलंकार जिसमें उक्त ढंग का वर्णन होता है।
रसायन–संज्ञा पु० [स०] १ वैद्यक के अनुसार वह औषध जिसके खाने से आदमी बुड्ढा या बीमार न हो। २ पदार्थों के तत्त्वों का ज्ञान। वि० दे० "रसायन शास्त्र"। ३ वह कल्पित योग जिसके द्वारा ताँबे से सोना बनना माना जाता है।
रसायन शास्त्र–संज्ञा पु० [स०] वह शास्त्र जिसमें यह विवेचन हो कि पदार्थों में कौन कौन से तत्त्व होते हैं और उनके परमाणुओं में परिवर्तन होने पर पदार्थों में क्या परिवर्तन होता है।
रसायनिक–वि० दे० "रासायनिक"।
रसाल–संज्ञा पु० [स०] १ ऊख। गन्ना। २ आम। ३ कटहल। ४ गोधूम। गेहूँ। वि० [स्त्री० रसाला] १ मधुर। मीठा। २ रसीला। ३ सुंदर। मनोहर।
संज्ञा पु० [अ० इरसाल] कर। राजस्व।
रसालस–संज्ञा पु० [हिं० रसाल] कौतुक।
रसालिका–वि० स्त्री० [स० रसालक] मधुर।
रसावर, रसावल–संज्ञा पु० दे० "रसौर"।
रसाव–संज्ञा पु० [हिं० रसना] रसने की क्रिया या भाव।
रसिआउर†–संज्ञा पु० [हिं० रस + चावल] १ रसौर। २ एक प्रकार का गीत जो विवाह की एक रीति में गाया जाता है।

रसिक–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो रस या स्वाद लेता हो। २. काव्य-मर्मज्ञ। सहृदय। ३. आनंदी। रसिया। ४. अच्छा ज्ञाता। मर्मज्ञ। ५. भावुक। सहृदय। ६. एक प्रकार का छंद।

रसिकता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रसिक होने का भाव या धर्म्म। २. हँसी-ठट्ठा।

रसिकविहारी–संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

रसिकाई*–संज्ञा स्त्री० दे० "रसिकता"।

रसित–संज्ञा पुं० [सं०] ध्वनि। शब्द।

रसिया–संज्ञा पुं० [सं० रसिक] १. रसिक। २. एक प्रकार का गाना जो फागुन में ब्रज आदि में गाया जाता है।

रसियाव–संज्ञा पुं० दे० "रसौर"।

रसी*‡–संज्ञा पुं० दे० "रसिक"।

रसीद–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. किसी चीज के पहुँचने या प्राप्त होने की क्रिया। प्राप्ति। पहुँच। २. किसी चीज के पहुँचने या मिलने के प्रमाण रूप में लिखा हुआ पत्र।

रसील–वि० दे० "रसीला"।

रसीला–वि० [हिं० रस+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० रसीली] १. रस में भरा हुआ। रस-युक्त। २. स्वादिष्ट। मज़ेदार। ३. रस या आनंद लेनेवाला। ४. बाँका। सुंदर।

रसुम–संज्ञा पुं० [अ०] १. रस्म का बहुवचन। २. नियम। क़ानून। ३. वह धन जो किसी को किसी प्रचलित प्रथा के अनुसार दिया जाता हो। नेग। लाग।

रसूल–संज्ञा पुं० [अ०] ईश्वर का दूत। पैगंबर।

रसेश्वर–संज्ञा पुं० [सं०] १. पारा। २. एक दर्शन जो छः दर्शनों में नहीं है।

रसेस*–संज्ञा पुं० [सं० रसेश] श्रीकृष्ण।

रसोइया–संज्ञा पुं० [हिं० रसोई+इया (प्रत्य०)] रसोई बनानेवाला। रसोईदार।

रसोई, रसोई–संज्ञा स्त्री० [हिं० रस+ओई (प्रत्य०)] १. पका हुआ खाद्य पदार्थ। मुहा०—रसोई तपना=भोजन पकाना। २. चौका। पाकशाला।

रसोईघर–संज्ञा पुं० [हिं० रसोई+घर] खाना बनाने की जगह। पाकशाला। चौका।

रसोईदार–संज्ञा पुं० दे० "रसोइया"।

रसोव*‡–संज्ञा स्त्री० दे० "रसोई"।

रसौत–संज्ञा स्त्री० [सं० रसोद्‌भूत] एक प्रसिद्ध औषध जो दारुहल्दी की जड़ और लकड़ी को पानी में औटाकर तैयार की जाती है।

रसौर–संज्ञा पुं० [हिं० रस+और (प्रत्य०)] ऊख के रस में पके हुए चावल।

रसौली–संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का रोग जिसमें शरीर में गिलटी निकल आती है।

रस्ता–संज्ञा पुं० दे० "रास्ता"।

रस्तोगी–संज्ञा पुं० [देश०] वैश्यों की एक जाति।

रस्म–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मेल-जोल। यौ०—राह-रस्म=मेलजोल। व्यवहार। २. रवाज। परिपाटी। चाल।

रस्मि*–संज्ञा स्त्री० दे० "रश्मि"।

रस्सा–संज्ञा पुं० [सं० रसना] [स्त्री० अल्पा० रस्सी] बहुत मोटी रस्सी।

रस्सी–संज्ञा स्त्री० [हिं० रस्सा] रुई, सन आदि के रेशों या डोरों को बटकर बनाया हुआ लंबा खंड। डोरी। गुण। रज्जु।

रहँकला–संज्ञा पुं० [हिं० रथ+कल] १. एक प्रकार की हलकी गाड़ी। २. तोप लादने की गाड़ी। ३. रहकले पर लदी हुई तोप।

रहँचटा–संज्ञा पुं० [हिं० रस+चाट] प्रीति की चाह। चसका। लिप्सा।

रहँट–संज्ञा पुं० [सं० आरघट्ट, प्रा० अरहट्ट] कूएँ से पानी निकालने का एक प्रकार का यंत्र।

रहँटा–संज्ञा पुं० [हिं० रहँट] सूत कातने का चर्खा।

रहचह–संज्ञा स्त्री० [अनु०] चिड़ियों का बोलना। चहचहाहट।

रहन–संज्ञा स्त्री० [हिं० रहना] १. रहने की क्रिया या भाव। २. व्यवहार। आचार।

रहन-सहन–संज्ञा स्त्री० [हिं० रहना+सहना] जीवन-निर्वाह का ढंग। तौर। चाल-ढाल।

रहना–क्रि० अ० [सं० राज=विराजना] १ स्थित होना। अवस्थान करना। ठहरना।

२ न जाना। रुकना। थमना।
मुहा०—रह चलना या जाना = रुक जाना।
३. बिना किसी परिवर्तन या गति के एक ही स्थिति में अवस्थान करना। ४ निवास करना। बसना या टिकना। ५ कोई काम करना बंद करना। थमना। ६ चलना बंद करना। रुकना। ७ विद्यमान होना। उपस्थित होना। ८ चुपचाप समय बिताना।
मुहा०—रह जाना = १ कुछ कार्रवाई न करना २ सफल न होना। लाभ न उठा सकना। ९ नौकरी करना। काम-काज करना। १० स्थित होना। स्थापित होना। ११ समागम करना। मैथुन करना। १२ जीवित रहना। जीना। १३ बचना। छूट जाना।
यौ०—रहा-सहा = बचा-बचाया। अवशिष्ट।
मुहा०—(अंग आदि का) रह जाना = थक जाना। शिथिल हो जाना। रह जाना = १ पीछे छूट जाना। २ अवशिष्ट होना। खर्च या व्यवहार से बचना।
रहनि*—संज्ञा स्त्री० [हिं० रहना] १ दे० "रहन"। २ प्रेम। प्रीति।
रहम—संज्ञा पु० [अ०] १ करुणा। दया। २ अनुकंपा। अनुग्रह।
यौ०—रहमदिल = दयालु। कृपालु।
संज्ञा पु० [अ० रहम] गर्भाशय।
रहमत—संज्ञा स्त्री० [अ०] कृपा। दया।
रहल—संज्ञा स्त्री० [अ०] एक प्रकार की छोटी चौकी जिस पर पढ़ने के समय पुस्तक रखी जाती है।
रहलू*†—संज्ञा स्त्री० दे० 'रहल"।
रहस—संज्ञा पु० [सं० रहस] १ गुप्त भेद। छिपी बात। २ आनंदमय लीला। क्रीड़ा। ३ आनंद। सुख। ४ गूढ़ तत्त्व। मर्म। ५ एकांत स्थान।
रहसना—क्रि० अ० [हिं० रहस + ना(प्रत्य०)] आनंदित होना। प्रसन्न होना।
रहसबधावा—संज्ञा पु० [सं० रहस् + बधाई] विवाह की एक रीति।
रहसि*—संज्ञा स्त्री० [सं० रहस्] गुप्त स्थान। एकांत स्थान।
रहस्य—संज्ञा पु० [सं०] १ गुप्त भेद। गोप्य विषय। २ मर्म या भेद की बात। ३ वह जिसका तत्त्व सहज में समझ में न आ सके। ४ हँसी ठट्ठा। मजाक।
रहाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० रहना] १ दे० "रहन"। २ कल। चैन। आराम।
रहाना*—क्रि० अ० [हिं० रहना] १ होना। २ रहना।
रहावन†—संज्ञा स्त्री० [हिं० रहना + आवन (प्रत्य०)] वह स्थान जहाँ गाँव भर के सब पशु एकत्र होकर खड़े हों। रहनिया।
रहित—वि० [सं०] बिना। बगैर। हीन।
रहिला—संज्ञा पु० [?] चना।
रहीम—वि० [अ०] कृपालु। दयालु।
संज्ञा पु० [अ०] १ रहीम खाँ खानखानाँ का उपनाम। २ ईश्वर।
रहुवा†—संज्ञा पु० [हिं० रहना] रोटियों पर रहनेवाला मनुष्य। टुकड़हा। रोटी-तोड़।
रांक†—वि० दे० "रंक"।
रांगा—संज्ञा पु० [सं० रंग] एक प्रसिद्ध धातु जो बहुत नरम और रंग में सफेद होती है। रंग। वंग।
रांच*†—अव्य० दे० "रंच"।
रांचना*†—क्रि० अ० [सं० रंजन] १ अनुरक्त होना। प्रेम करना। चाहना। २ रंग पकड़ना।
क्रि० स० [सं० रंजन] रंग चढ़ाना। रँगना।
रांजना—†क्रि० अ० [सं० रंजन] काजल लगाना।
क्रि० स० रंजित करना। रँगना।
रांटा†—संज्ञा पु० [देश०] टिटिहरी चिड़िया।
रांड़—वि० स्त्री० [सं० रंडा] १ विधवा। बेवा। २ रंडी। वेश्या।
रांदना†—क्रि० स० [सं० रुदन] रोना।
रांध—संज्ञा पु० [सं० परान्त] निकट। पास।
रांधना—क्रि० स० [सं० रंधन] (भोजन आदि) पकाना। पाक करना।
रांपी—संज्ञा स्त्री० [देश०] पतली खुरपी के

आकार का मोचियों का एक औजार।

राँभना–क्रि० अ० [सं० रंभण] (गाय का) बोलना या चिल्लाना। बँबाना।

राआ*†–संज्ञा पुं० दे० "राजा"।

राइ–संज्ञा पुं० [सं० राजा] छोटा राजा। राव। सरदार।

राई–संज्ञा स्त्री० [सं० राजिका] १. एक प्रकार की बहुत छोटी सरसों।

मुहा०—राई नोन उतारना = नजर लगे हुए बच्चे पर उतारा करके राई और नमक को आग में डालना। राई से पर्वत करना = थोड़ी बात को बहुत बढ़ा देना। राई काई करना = टुकड़े टुकड़े कर डालना।

२. बहुत थोड़ी मात्रा या परिमाण।

संज्ञा पुं० १. राजा। २. सर्वश्रेष्ठ।

*†संज्ञा स्त्री० [हिं० राइ] राजापन। राजसी।

राउ*–संज्ञा पुं० [सं० राजा] राजा। नरेश।

राउत†–संज्ञा पुं० [सं० राज + पुत्र] १. राज-वंश का कोई व्यक्ति। २. क्षत्रिय। ३. वीर पुरुष। बहादुर।

राउर*†–संज्ञा पुं० [सं० राज + पुर] अंतःपुर। रनवास। जनानखाना।

वि० श्रीमान् का। आपका।

राउल*†–संज्ञा पुं० [सं० राजकुल] १. राज-कुल में उत्पन्न पुरुष। २. राजा।

राकस*†–संज्ञा पुं० [सं० राक्षस] [स्त्री० राकसिन] राक्षस।

राका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पूर्णिमा की रात। २. पूर्णमासी।

राकेश–संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

राक्षस–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० राक्षसी] १. निशिचर। दैत्य। असुर। २. कुबेर के धन-कोश के रक्षक। ३. कोई दुष्ट प्राणी। ४. एक प्रकार का विवाह जिसमें कन्या प्राप्त करने के लिये युद्ध करना पड़ता है।

राख–संज्ञा स्त्री० [सं० रक्षा ?] भस्म। खाक।

राखना*†–क्रि० स० [सं० रक्षण] १. रक्षा करना। बचाना। २. रखवाली करना। ३. छिपाना। गुप्त करना। ४. रोक रखना। जाने न देना। ५. आरोप करना। बताना। ६. दे० "रखना"।

राखी–संज्ञा स्त्री० [सं० रक्षा] रक्षाबंधन का डोरा। रक्षा।

संज्ञा स्त्री० दे० "राख"।

राग–संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रिय या अभिमत वस्तु को प्राप्त करने की अभिलाषा। सांसारिक सुखों की चाह। २. कष्ट। पीड़ा। तकलीफ। ३. मत्सर। ईर्ष्या। द्वेष। ४. अनुराग। प्रेम। प्रीति। ५. अंग में लगाने का सुगंधित लेप। अंगराग। ६. एक वर्णवृत्त। ७. रंग, विशेषतः लाल रंग। ८. पैर में लगाने का अलता। ९. किसी खास धुन में बैठाए हुए स्वर जिनके उच्चारण से गान होता हो। भारतीय आचार्यों ने छः राग माने हैं; परंतु इन रागों के नामों के संबंध में कुछ मतभेद है।

मुहा०—अपना राग अलापना = अपनी ही बात कहना।

रागना*†–क्रि० अ० [सं० रागः] १. अनुराग करना। अनुरक्त होना। २. रँग जाना। रंजित होना। ३. निमग्न होना।

*क्रि० स० [सं० राग] गाना। अलापना।

रागिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] संगीत में किसी राग की पत्नी या स्त्री। प्रत्येक राग की पाँच या छः रागिनियाँ मानी गई हैं।

रागी–संज्ञा पुं० [सं० रागिन्] [स्त्री० रागिनी] १. अनुरागी। प्रेमी। २. छः मात्रावाले छंदों का नाम।

वि० १. रँगा हुआ। २. लाल। सुर्ख। ३. विषय-वासना में फँसा हुआ। विरागी का उलटा। ४. रँगनेवाला।

‡* संज्ञा स्त्री० [सं० राज्ञी] रानी।

राघव–संज्ञा पुं० [सं०] १. रघु के वंश में उत्पन्न व्यक्ति। २. श्रीरामचंद्र।

राचना*–क्रि० स० दे० "रचना"।

क्रि० अ० रचा जाना। बनना।

क्रि० अ० [सं० रंजन] १. रँगा जाना। रंजित होना। २. अनुरक्त होना। प्रेम करना। ३. लीन होना। मग्न होना। ४. प्रसन्न होना। ५. शोभा

देना। भला जान पड़ना। ६ सोच या चिंता में पड़ना।

राछ–संज्ञा पु० [सं० रक्ष] १ कारीगरों का औजार। २ जुलाहों के करघे में एक औजार जिससे ताने का तागा ऊपर नीचे उठता और गिरता है। ३ बरात। जलूस।

राछस*†–संज्ञा पु० दे० "राक्षस"।

राज–संज्ञा पु० [सं० राज्य] १ हुकूमत। राज्य। शासन।

मुहा०—राज काज=राज्य का प्रबंध। राज़ पर बैठना=राज-सिंहासन पर बैठना। राज रजना=१ राज्य करना। २ बहुत सुख से रहना।

यौ०—राजपाट=१ राज-सिंहासन। २ शासन।

२ एक राजा द्वारा शासित देश। जनपद। राज्य। ३ पूरा अधिकार। खूब चलती। ४ अधिकार-काल। समय। ५ देश। संज्ञा पु० [सं० राजन्] १ राजा। २ दे० "राजगीर"।

राज़–संज्ञा पु० [फा०] रहस्य। भेद।

राजकर–संज्ञा पु० [सं०] वह कर जो प्रजा से राजा लेता है। खिराज।

राजकीय–वि० [सं०] राजा या राज्य से संबंध रखनेवाला।

राजकुँअर*†–संज्ञा पु० दे० "राजकुमार"।

राजकुमार–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० राजकुमारी] राजा का पुत्र।

राजकुल–संज्ञा पु० दे० "राजवंश"।

राजगद्दी–संज्ञा स्त्री० [हिं० राज + गद्दी] १. राजसिंहासन। २ राज्याभिषेक। राज्यारोहण। ३ राज्याधिकार।

राजगिरि–संज्ञा पु० [सं०] १ मगध देश के एक पर्वत का नाम। २ दे० "राजगृह"।

राजगीर–संज्ञा पु० [सं० राज+गृह] मकान बनानेवाला कारीगर। राज। थवई।

राजगृह–संज्ञा पु० [सं०] १ राजा का महल। २ एक प्राचीन स्थान जो बिहार में पटने के पास है। प्राचीन गिरिव्रज जहाँ मगध की राजधानी थी।

राजतरंगिणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] कल्हण-कृत काश्मीर का एक प्रसिद्ध संस्कृत इतिहास।

राजतिलक–संज्ञा पु० दे० "राज्याभिषेक"।

राजत्व–संज्ञा पु० [सं०] १ राजा का भाव या कर्म। २ राजा का पद।

राजदंड–संज्ञा पु० [सं०] वह दंड जो राजा की आज्ञा से दिया जाय।

राजदंत–संज्ञा पु० [सं०] बीच का वह दाँत जो और दाँतों से बड़ा और चौड़ा होता है।

राजदूत–संज्ञा पु० [सं०] वह पुरुष जो एक राज्य की ओर से किसी अन्य राज्य में किसी प्रकार का संदेशा देकर भेजा जाता है।

राजद्रोह–संज्ञा पु० [सं०] [वि० राजद्रोही] राजा या राज्य के प्रति द्रोह। बग़ावत।

राजद्वार–संज्ञा पु० [सं०] १ राजा की ड्योढ़ी। २ न्यायालय।

राजधर्म्म–संज्ञा पु० [सं०] राजा का कर्त्तव्य या धर्म्म।

राजधानी–संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी प्रदेश का वह नगर जहाँ उस देश के शासन का केंद्र हो।

राजना*–क्रि० अ० [सं० राजन] १ उपस्थित होना। रहना। २ शोभित होना।

राजनीति–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नीति जिसका अवलंबन करके राजा अपने राज्य की रक्षा और शासन दृढ़ करता है।

राजनीतिक–वि० [सं०] राजनीति-संबंधी।

राजन्य–संज्ञा पु० [सं०] १. क्षत्रिय। २ राजा।

राजपक्षी–संज्ञा पु० दे० "राजहंस"।

राजपथ*–संज्ञा पु० दे० "राजपथ"।

राजपथ–संज्ञा पु० [सं०] बड़ी सड़क।

राजपुत्र–संज्ञा पु० [सं०] १ राजा का पुत्र। राजकुमार। २ एक वर्णसंकर जाति।

राजपूत–संज्ञा पु० [सं० राजपुत्र] १ दे० "राजपुत्र"। २ राजपूताने में रहनेवाले क्षत्रियों के कुछ विशिष्ट वंश।

राजबाहा–संज्ञा पु० [हिं० राज + बहना] वह बड़ी नहर जिससे अनेक छोटी छोटी नहरें निकाली जाती हैं।

राजभक्त–वि० [सं०] [संज्ञा राजभक्ति] जिसमें राजा या राज्य के प्रति भक्ति हो।
राजभक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] राजा या राज्य के प्रति भक्ति या प्रेम।
राजभवन–संज्ञा पुं० [सं०] राजा का महल।
राजभोग–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का महीन धान।
राजमहल–संज्ञा पुं० [हिं० राज + महल] १. राजा का महल। राजप्रासाद। २. एक पर्वत जो सँथाल परगने के पास है।
राजमार्ग–संज्ञा पुं० [सं०] चौड़ी सड़क।
राजयक्ष्मा–संज्ञा पुं० [सं० राजयक्ष्मन्] यक्ष्मा। क्षयरोग। तपेदिक।
राजयोग–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह प्राचीन योग जिसका उपदेश पतंजलि ने योगशास्त्र में किया है। २. ग्रहों का ऐसा योग जिसके जन्मकुंडली में पड़ने से मनुष्य राजा होता है।
राजराजेश्वर–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० राजराजेश्वरी] राजाओं का राजा। अधिराज।
राजरोग–संज्ञा पुं० [हिं० राजा + रोग] १. वह रोग जो असाध्य हो। २. क्षय रोग।
राजर्षि–संज्ञा पुं० [सं०] वह ऋषि जो राजवंश या क्षत्रिय-कुल का हो।
राजलक्ष्मी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. राजश्री। राजवैभव। २. राजा की शोभा।
राजवंत–वि० [हिं० राज + वंत] राजा के कर्म्म से युक्त।
राजवंश–संज्ञा पुं० [सं०] राजा का कुल या वंश। राजकुल।
राजवार–संज्ञा पुं० दे० "राजद्वार"।
राजश्री–संज्ञा स्त्री० [सं०] राजलक्ष्मी। राजा का ऐश्वर्य।
राजस–वि० [सं०] [स्त्री० राजसी] रजोगुण से उत्पन्न। रजोगुणी।
संज्ञा पुं० आवेश। क्रोध।
राजसत्ता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. राजशक्ति। २. राज्य की सत्ता।
राजसभा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दरबार। २. राजाओं की सभा।
राजसमाज–संज्ञा पुं० [सं०] राजाओं का दरबार या समाज। राजमंडली।
राजसिंहासन–संज्ञा पुं० [सं०] राजा के बैठने का सिंहासन। राजगद्दी।
राजसिक–वि० दे० "राजस"।
राजसिरी*–संज्ञा स्त्री० दे० "राजश्री"।
राजसी–वि० [हिं० राजा] राजा के योग्य, बहुमूल्य या भड़कीला।
वि० स्त्री० [सं०] जिसमें रजोगुण की प्रधानता हो। रजोगुणमयी।
राजसूय–संज्ञा पुं० [सं०] एक यज्ञ जिसके करने का अधिकार केवल ऐसे राजा को होता है, जो सम्राट् पद का अधिकारी हो।
राजस्थान–संज्ञा पुं० दे० "राजपूताना"।
राजस्व–संज्ञा पुं० दे० "राजकर"।
राजहंस–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० राजहंसी] एक प्रकार का हंस। सोना पक्षी।
राजा–संज्ञा पुं० [सं० राजन्] [स्त्री० राज्ञी, रानी] १ किसी देश या जाति का प्रधान शासक जो उस देश या जाति की, दूसरों के आक्रमण से, रक्षा करता है। बादशाह। अधिराज। प्रभु। २. अधिपति। स्वामी। मालिक। ३. एक उपाधि जो अँगरेजी सरकार बड़े रईसों को प्रदान करती है।
राजाज्ञा–संज्ञा स्त्री० [सं०] राजा की आज्ञा।
राजाधिराज–संज्ञा पुं० [सं०] राजाओं का राजा। शाहंशाह। बड़ा बादशाह।
राजावर्त्त–संज्ञा पुं० [सं०] लाजवर्द नामक उप-रत्न।
राजि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पंक्ति। कतार। २. रेखा। लकीर। ३. राई।
राजिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. राई। २. राजि। पंक्ति। ३. रेखा। लकीर।
राजित–वि० [सं०] १. फबता हुआ। शोभित। २. विराजा हुआ।
राजिव*–संज्ञा पुं० [सं० राजीव] कमल।
राजी–संज्ञा स्त्री० [सं०] पंक्ति। श्रेणी।
राजी–वि० [अ०] १. कही हुई बात मानने को तैयार। सम्मत। २. नीरोग। चंगा। ३. खुश। प्रसन्न। ४. सुखी।
यौ०—राजी-खुशी = सही-सलामत।

‡संज्ञा स्त्री० रज़ामदी। अनुकूलता।
राजीनामा–संज्ञा पु० [फा०] वह लेख जिसके द्वारा वादी और प्रतिवादी परस्पर मेल कर लें।
राजीव–संज्ञा पु० [स०] कमल। पद्म।
राजीवगण–संज्ञा पु० [स०] १८ मात्राओं का एक मात्रिक छंद।
राजुक–संज्ञा पु० [स०] मौर्य्य काल का एक राजकर्मचारी या सूबेदार।
राजेंद्र, राजेश्वर–संज्ञा पु० [स०] [स्त्री० राजेश्वरी] राजाओं का राजा। महाराज।
राज्ञी–संज्ञा स्त्री० [स०] १ रानी। राजमहिषी। २ सूर्य्य की पत्नी, संज्ञा।
राज्य–संज्ञा पु० [स०] १ राजा का काम। शासन। २ वह देश जिसमें एक राजा का शासन हो। बादशाहत।
राज्यतंत्र–संज्ञा पु० [स०] राज्य की शासन-प्रणाली।
राज्यव्यवस्था–संज्ञा स्त्री० [स०] राजनियम। नीति। कानून।
राज्याभिषेक–संज्ञा पु० [स०] १ राजसिंहासन पर बैठने के समय या राजसूय यज्ञ में राजा का अभिषेक। २ राजगद्दी पर बैठने की रीति। राज्यारोहण।
राट–संज्ञा पु० [स०] १ राजा। बादशाह। २ श्रेष्ठ व्यक्ति। सरदार।
राठ*–संज्ञा पु० [स० राष्ट्र] १ राज्य। २ राजा।
राठौर–संज्ञा पु० [स० राष्ट्रकूट] दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध राजवंश।
राड–वि० [हिं० राढ़?] १ नीच। निकम्मा। २ कायर। भगोड़ा।
राढ़‡–संज्ञा स्त्री० [स० राटि] १ रार। *झगड़ा। २ निकम्मा। ३ कायर।*
राढ़ि–संज्ञा पु० [स०] बंग के उत्तरी भाग का नाम।
राणा–संज्ञा पु० [स० राट] राजा।
रात–संज्ञा स्त्री० [स० रात्रि] संध्या से प्रात-काल तक का समय। रजनी। निशा। मुहा०—रात दिन=सदा। हमेशा।
रातड़ी, रातरी‡–संज्ञा स्त्री० दे० "रात"।
रातना*–क्रि० अ० [स० रक्त] १ लाल रंग से रँग जाना। २ रँगा जाना। ३ अनुरक्त होना। आसक्त होना।
राता*–वि० [स० रक्त] [स्त्री० राती] १ लाल। सुर्ख। २ रँगा हुआ।
रातिचर*–संज्ञा पु० दे० "राक्षस"।
रातिब–संज्ञा पु० [अ०] पशुओं का भोजन।
रातुल–वि० [स० रक्तालु] सुर्ख। लाल।
रात्रि–संज्ञा स्त्री० [स०] रात। निशा।
रात्रिचारी–संज्ञा पु० [स०] राक्षस। वि० रात के समय विचरनेवाला।
राधन–संज्ञा पु० [स०] १ साधने की क्रिया। साधना। २ मिलना। प्राप्ति। ३ संतोष। तुष्टि। ४ साधन।
राधना*‡–क्रि० स० [स० आराधना] १ आराधना करना। पूजा करना। २ सिद्ध करना। पूरा करना। ३ काम निकालना।
राधा–संज्ञा स्त्री० [स०] १ वैशाख की पूर्णिमा। २ प्रीति। ३ वृषभानु गोप की कन्या और श्रीकृष्ण की प्रेयसी। ४ एक वर्णवृत्त। ५ बिजली।
राधारमण–संज्ञा पु० [स०] श्रीकृष्ण।
राधावल्लभ–संज्ञा पु० [स०] श्रीकृष्ण।
राधावल्लभी–संज्ञा पु० [स०] वैष्णवों का एक प्रसिद्ध संप्रदाय।
राधिका–संज्ञा स्त्री० [स०] १ वृषभानु गोप की कन्या, राधा। २ बाइस मात्राओं का एक छंद।
रान–संज्ञा स्त्री० [फा०] जंघा। जाँघ।
राना–संज्ञा पु० दे० "राणा"। *क्रि० अ० [हिं० राचना] अनुरक्त होना।
रानी–संज्ञा स्त्री० [स० राज्ञी] १ राजा की स्त्री। २ *स्वामिनी। मालकिन।*
रानीकाजर–संज्ञा पु० [हिं० रानी+काजल] एक प्रकार का धान।
राब–संज्ञा स्त्री० [स० द्रावक] औटाकर *खूब गाढ़ा किया हुआ गन्ने का रस।*
राबड़ी–संज्ञा स्त्री दे० "रबड़ी"।
राम–संज्ञा पु० [स०] १ परशुराम। २

बलराम। बलदेव। ३. सूर्यवंशी महाराज दशरथ के पुत्र जो दस अवतारों में से एक माने जाते हैं। रामचंद्र।
मुहा०—राम शरण होना = १. साधु होना। विरक्त होना। २. मर जाना। राम राम करना = १. अभिवादन करना। प्रणाम करना। २. भगवान् का नाम जपना। राम राम करके = बड़ी कठिनता से। राम राम हो जाना = मर जाना।
४. तीन की संख्या। ५. ईश्वर। भगवान्। ६. एक प्रकार का मात्रिक छंद।
रामगिरि–संज्ञा पुं० दे० "रामटेक"।
रामगोती–संज्ञा पुं० [सं०] ३६ मात्राओं का एक मात्रिक छंद।
रामचंद्र–संज्ञा पुं० [सं०] अयोध्या के राजा महाराज दशरथ के बड़े पुत्र जो विष्णु के मुख्य अवतारों में हैं।
रामजना–संज्ञा पुं० [हिं० राम + जना = उत्पन्न] [स्त्री० रामजनी] १. एक संकर जाति जिसकी कन्याएँ वेश्या वृत्ति करती हैं। २. वर्णसंकर।
रामटेक–संज्ञा पुं० [हिं० राम + टेक = पहाड़ी] नागपुर जिले की एक पहाड़ी।
रामतरोई–संज्ञा स्त्री० दे० "भिंडी"।
रामता–संज्ञा स्त्री० [सं०] राम का गुण। रामपन।
रामतारक–संज्ञा पुं० [सं०] रामजी का मंत्र जो इस प्रकार है—रां रामाय नमः।
रामति*†–संज्ञा स्त्री० [हिं० रमन] भिक्षा के लिये इधर-उधर घूमना।
रामदल–संज्ञा पुं० [सं०] १. रामचंद्रजी की बंदरोंवाली सेना। २. कोई बड़ी और प्रबल सेना जिसका मुकाबला करना कठिन हो।
रामदाना–संज्ञा पुं० [सं० राम + हिं० दाना] मरसे या चौलाई की जाति का एक पौधा।
रामदास–संज्ञा पुं० [सं०] १. हनुमान्। २. दक्षिण भारत के एक प्रसिद्ध महात्मा जो छत्रपति महाराज शिवाजी के गुरु थे।
रामदूत–संज्ञा पुं० [सं०] हनुमान् जी।
रामधाम–संज्ञा पुं० [सं०] साकेत लोक।
रामनवमी–संज्ञा स्त्री० [सं०] चैत्र सुदी नौमी जिस दिन रामजी का जन्म हुआ था।
रमना*‡–क्रि० अ० दे० "रमना"।
रामनामी–संज्ञा पुं० [हिं० राम + नाम + ई (प्रत्य०)] १. वह कपड़ा जिस पर "राम राम" छपा रहता है। २. एक प्रकार का हार।
रामबाँस–संज्ञा पुं० [हिं० राम + बाँस] १. एक प्रकार का मोटा बाँस। २. केतकी या केवड़े की जाति का एक पौधा जिसके पत्तों के रेशे से रस्से बनते हैं।
रामरज–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की पीली मिट्टी जिसका तिलक लगाते हैं।
रामरस–संज्ञा पुं० [हिं० राम + रस] नमक।
रामराज्य–संज्ञा पुं० [सं०] अत्यंत सुखदायक शासन।
रामलीला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. राम के चरित्रों का अभिनय। २. एक मात्रिक छंद।
रामबाण–वि० [सं०] जो तुरंत उपयोगी सिद्ध हो। तुरंत प्रभाव दिखानेवाला। (औषध)
रामशर–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का नरसल या सरकंडा।
रामसनेही–संज्ञा पुं० [हिं० राम + स्नेह] वैष्णवों का एक संप्रदाय।
वि० राम से स्नेह रखनेवाला। रामभक्त।
रामसुंदर–संज्ञा स्त्री० [हिं० राम + सुंदर] एक प्रकार की नाव।
रामसेतु–संज्ञा पुं० [सं०] रामेश्वर तीर्थ के पास समुद्र में पड़ी हुई चट्टानों का समूह।
रामा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सुंदर स्त्री। २. नदी। ३. लक्ष्मी। ४. सीता। ५. रुक्मिणी। ६. राधा। ७. इंद्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा के मेल से बना हुआ एक उपजाति वृत्त। ८. आर्या छंद का १७वाँ भेद। ९. आठ अक्षरों का एक वृत्त।
रामानंद–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य जिनका चलाया हुआ रामावत नामक संप्रदाय अब तक प्रचलित है। ये विक्रमीय १४वीं शताब्दी में हुए थे।

रामानंदी–वि० [हिं० रामानंद + ई (प्रत्य०)] रामानंद के संप्रदाय का अनुयायी।
रामानुज–संज्ञा पुं० [सं०] श्रीवैष्णव संप्रदाय के प्रवर्तक एक प्रसिद्ध आचार्य। वेदांत में इनका सिद्धांत विशिष्टाद्वैत कहलाता है।
रामायण–संज्ञा पुं० [सं०] रामचंद्र के चरित्र से संबंध रखनेवाला ग्रंथ। संस्कृत में रामायण नाम के बहुत से ग्रंथ हैं, जिनमें से वाल्मीकि कृत रामायण सबसे प्राचीन और अधिक प्रसिद्ध है। यह आदि-काव्य है।
रामायणी–वि० [सं० रामायणीय] रामायण का। संज्ञा पुं० [सं० रामायण + ई (प्रत्य०)] वह रामायण की कथा कहता हो।
रामावत–संज्ञा पुं० [सं०] वैष्णव आचार्य रामानंद का चलाया हुआ एक संप्रदाय।
रामेश्वर–संज्ञा पुं० [सं०] दक्षिण भारत के समुद्र-तट का एक शिवलिंग।
राय–संज्ञा पुं० [सं० राजा] १ राजा। २ सरदार। सामंत। ३ भाट। वंदीजन। संज्ञा स्त्री० [फा०] सम्मति। मत। सलाह।
रायज–वि० [अ०] जिसका रवाज हो। प्रचलित। चलनसार।
रायता–संज्ञा पुं० [सं० राजिकाक्त] दही में पड़ा हुआ नमकीन साग या बुँदिया आदि।
रायभोग–संज्ञा पुं० दे० "राजभोग"।
रायरासि*–संज्ञा स्त्री० [सं० राजराशि] राजा का कोष। शाही खजाना।
रायसा–संज्ञा पुं० दे० 'रासो'।
रार–संज्ञा पुं० [सं० राटि] झगड़ा। टंटा। हुज्जत। तकरार।
राल–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक प्रकार का बड़ा पेड़। २ इसका निर्यास जो 'राल' नाम से प्रसिद्ध है। धूना। धूप। संज्ञा स्त्री० [सं० लाला] १ पतला लस-दार थूक। २ लार।
मुहा०–राल गिरना, चूना या टपकना=किसी पदार्थ को देखकर उसे पाने की बहुत इच्छा होना।
राव–संज्ञा पुं० दे० "राय"।
रावटी–संज्ञा स्त्री० [हिं० रावट] १ कपड़े का बना हुआ एक प्रकार का छोटा घर या डेरा। छोलदारी। २ कोई छोटा घर। ३ बारहदरी।
रावण–संज्ञा पुं० [सं०] लंका का प्रसिद्ध राजा जो राक्षसों का नायक था और जिसे युद्ध में भगवान् रामचंद्र ने मारा था। दशकंधर। दशानन।
रावत–संज्ञा पुं० [सं० राजपुत्र] १ छोटा राजा। २ शूर। वीर। बहादुर। ३ सामंत। सरदार।
रावनगढ़*–संज्ञा पुं० दे० "लंका"।
रावना*–क्रि० स० [सं० रावण] रुलाना।
रावर*–संज्ञा पुं० [सं० राजपुर] रनिवास। राजमहल। अंतःपुर। वि० [हिं० राउर] [स्त्री० राउरी] आपका।
रावल–संज्ञा पुं० [सं० राजपुर] अंतःपुर। राजमहल। रनिवास। संज्ञा पुं० [फा० राजुल] [स्त्री० रावलि, रावली] १ राजा। २ राजपूताने के कुछ राजाओं की उपाधि। ३ प्रधान। सरदार।
राशि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ढेर। पुंज। २ किसी का उत्तराधिकार। जा-नशीनी। ३ क्रांतिवृत्त में पड़नेवाले विशिष्ट तारा-समूह जो बारह है—मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुंभ और मीन।
राशिचक्र–संज्ञा पुं० [सं०] मेष, वृष, मिथुन आदि राशियों का चक्र या मंडल। भचक्र।
राशिनाम–संज्ञा पुं० [सं० राशिनामन्] किसी व्यक्ति का वह नाम जो उसके जन्म समय की राशि के अनुसार और पुकारने के नाम से भिन्न होता है।
राष्ट्र–संज्ञा पुं० [सं०] १ राज्य। २ देश। मुल्क। ३ प्रजा। ४ एक देश या राज्य में बसनेवाला जन-समुदाय।
राष्ट्रकूट–संज्ञा पुं० दे० "राठौर"।
राष्ट्रतंत्र–संज्ञा पुं० [सं०] राज्य का शासन करने की प्रणाली।
राष्ट्रपति–संज्ञा पुं० [सं०] आधुनिक प्रजातंत्र शासन प्रणाली में वह सर्व प्रधान शासक

जो शासन करने के लिये चुना जाता है।
राष्ट्रीय–वि० [सं०] राष्ट्र-संबंधी। राष्ट्र का। विशेषतः अपने राष्ट्र या देश का।
रास–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गोपों की प्राचीन काल की एक क्रीड़ा जिसमें वे सब घेरा बाँधकर नाचते थे। २. एक प्रकार का नाटक जिसमें श्रीकृष्ण की इस क्रीड़ा का अभिनय होता है।
संज्ञा स्त्री० [अ०] लगाम। बागडोर।
संज्ञा स्त्री० [सं० राशि] १. ढेर। समूह। २. दे० "राशि"। ३. एक प्रकार का छंद। ४. जोड़। ५. चौपायों का झुंड। ६. गोद। दत्तक। ७. सूद। ब्याज।
वि० [फ़ा० रास्त] अनुकूल। ठीक।
रासक–संज्ञा पुं० [सं०] हास्य रस के नाटक का एक भेद जो केवल एक अंक का होता है।
रासधारी–संज्ञा पुं० [सं० रासधारिन्] वह व्यक्ति या समाज जो श्रीकृष्ण की रासक्रीड़ा अथवा अन्य लीलाओं का अभिनय करता है।
रासना–संज्ञा पुं० दे० "रास्ना"।
रासभ–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० रासभी] १. गदंभ। गधा। २. अश्वतर। खच्चर।
रासमंडल–संज्ञा पुं० [सं०] १. रास-क्रीड़ा करनेवालों का समूह या मंडली। २. रासधारियों का अभिनय।
रासमंडली–संज्ञा स्त्री० [सं०] रासधारियों का समाज या टोली।
रासलीला–संज्ञा स्त्री० [सं०] रासधारियों का कृष्णलीला संबंधी अभिनय।
रासायनिक–वि० [सं०] १. रसायन शास्त्र-संबंधी। २. रसायन शास्त्र का ज्ञाता।
रासि–संज्ञा स्त्री० दे० "राशि"।
रासु*†–वि० [फ़ा० रास्त] १. सीधा। सरल। २. ठीक।
रासो–संज्ञा पुं० [सं० रहस्य] किसी राजा का वह पद्यमय जीवन-चरित्र जिसमें उसके युद्धों और वीरता आदि का वर्णन हो।
रास्त–वि० [फ़ा०] १. सीधा। सरल। २. दुरुस्त। ठीक। ३. उचित। वाजिब।
रास्ता–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. मार्ग। राह। मुहा०—रास्ता देखना=प्रतीक्षा करना। आसरा देखना। रास्ता पकड़ना=चल देना। चले जाना। रास्ता बताना=१. चलता करना। टालना। २. सिखाना। तरकीब बताना। २. प्रथा। चाल। ३. उपाय। तरकीब।
रास्ना–संज्ञा स्त्री० [सं०] गंधनाकुली नामक कंद। घोड़रासन।
राहु–संज्ञा पुं० दे० "राहु"।
संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. मार्ग। रास्ता। मुहा०—राह देखना या ताकना=प्रतीक्षा करना। राह पड़ना=डाका पड़ना। लूट पड़ना। २. प्रथा। चाल। ३. नियम। कायदा।
संज्ञा स्त्री० दे० "रोहू"।
राहखर्च–संज्ञा पुं० [फ़ा० राह + खर्च] रास्ते में होनेवाला खर्च। मार्ग-व्यय।
राहगीर–संज्ञा पुं० [फ़ा०] मुसाफ़िर। पथिक।
राहचलता–संज्ञा पुं०[फ़ा० राह + हिं० चलता] १. पथिक। राहगीर। बटोही। २. अजनबी। ग़ैर।
राहचौरंगी†–संज्ञा स्त्री० दे० "चौमुहानी"।
राहत–संज्ञा स्त्री० [अ०] आराम। सुख।
राहदारी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. राह पर चलने का महसूल। सड़क का कर। यौ०—परवाना राहदारी=वह आज्ञापत्र जिसके अनुसार किसी मार्ग से होकर जाने या माल ले जाने का अधिकार प्राप्त होता है। २. चुंगी। महसूल।
राहना‡*–क्रि० अ० दे० "रहना"।
राही–संज्ञा पु० [फ़ा०] मुसाफ़िर। यात्री।
राहु–संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार नौ ग्रहों में से एक।
संज्ञा पुं० [सं० राघव] रोहू मछली।
राहुल–संज्ञा पुं० [सं०] गौतम बुद्ध के पुत्र का नाम।
रिंगन–संज्ञा स्त्री० [सं० रिंगण] घुटनों के बल चलना। रेंगना।
रिंगाना*†–क्रि० स० [सं० रिंगण] १. रेंगने की क्रिया कराना। रेंगाना। २. घुमाना-फिराना। चलाना। (बच्चों के लिये)
रिंद–संज्ञा पु० [फ़ा०] १. धार्मिक बंधनों को

न माननेवाला पुरुष। २ मनमौजी आदमी। स्वच्छंद पुरुष।
वि० [फा०] १ मतवाला। २ मस्त।
रिंदा†–वि० [फा० रिंद] निरंकुश। उद्दंड।
रिआयत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ कोमल और दयापूर्ण व्यवहार। नरमी। २ न्यूनता। कमी। ३ खयाल। ध्यान। विचार।
रिआया–संज्ञा स्त्री० [अ०] प्रजा।
रिकवँछ–संज्ञा स्त्री० [देश०] एक भोज्य पदार्थ जो उर्द की पीठी और अरुई के पत्तों से बनता है।
रिकाब–संज्ञा स्त्री० दे० "रकाब"।
रिक्त–वि० [सं०] १ खाली। शून्य। २ निर्धन। गरीब।
रिक्ष–संज्ञा पु० दे० "ऋक्ष"।
रिखभ*†–संज्ञा पु० दे० "ऋषभ"।
रिग*–संज्ञा पु० दे० "ऋक्"।
रिच्छ*†–संज्ञा पु० [सं० ऋक्ष] भालू।
रिज़क–संज्ञा पु० [अ० रिज़्क] रोजी। जीविका। जीवनवृत्ति।
रिज़ाली–संज्ञा स्त्री० [फा० रज़ील=नीच] रज़ीलपन। निर्लज्जता। बेहयाई।
रिजु–वि० दे० "ऋजु"।
रिझकवार, रिझवार†–संज्ञा पु० [हिं० रीझना+वार (प्रत्य०)] १ किसी बात पर प्रसन्न होनेवाला। २ रूप पर मोहित होनेवाला। ३ अनुराग करनेवाला। प्रेमी। ४ कदरदान। गुणग्राहक।
रिझाना–क्रि० स० [सं० रंजन] १ किसी को अपने ऊपर प्रसन्न कर लेना। २ अपना प्रेमी बनाना। अनुरक्त करना।
रिझायल*†–वि० [हिं० रीझना] रीझनेवाला।
रिझाव–संज्ञा पु० [हिं० रीझना+आव (प्रत्य०)] प्रसन्न होने या रीझने का भाव।
रिझावना*†–क्रि० स० दे० "रिझाना"।
रित–संज्ञा स्त्री० दे० "ऋतु"।
रितवना*–क्रि० स० [हिं० रीता] खाली करना।
रिद्धि–संज्ञा स्त्री० दे० "ऋद्धि"।
रिनिआँ, रिनी†–वि० [सं० ऋण] जिसने ऋण लिया हो। कर्ज़दार।
रिपु–संज्ञा पु० [सं०] शत्रु। दुश्मन। वैरी।
रिपुता–संज्ञा स्त्री० [सं०] वैर। दुश्मनी।
रिमझिम–संज्ञा स्त्री० [अनु०] वर्षा की छोटी छोटी बूँदों का लगातार गिरना।
क्रि० वि० वर्षा की छोटी छोटी बूँदों से।
रियासत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ राज्य। अमलदारी। २ अमीरी। वैभव। ऐश्वर्य।
रिर*†–संज्ञा स्त्री० [हिं० रार] हठ। जिद।
रिरना†–क्रि० अ० [अनु०] गिड़गिड़ाना।
रिरिहा†–वि० [हिं० रिरना] बहुत गिड़गिड़ाकर और दीनतापूर्वक भीख माँगनेवाला।
रिलना*†–क्रि० अ० [हिं० रेलना] १ पैठना। घुसना। २ मिल जाना।
रिवाज–संज्ञा पु० [अ०] प्रथा। रस्म।
रिश्ता–संज्ञा पुं० [फा०] नाता। संबंध।
रिश्तेदार–संज्ञा पु० [फा०] संबंधी। नातेदार।
रिश्वत–संज्ञा स्त्री० [अ०] घूस। उत्कोच।
रिष्ट*–वि० [सं० हृष्ट] १ प्रसन्न। २ मोटा-ताज़ा।
रिष्यमूक–संज्ञा पु० [सं० ऋष्यमूक] दक्षिण भारत का एक पर्वत।
रिस–संज्ञा स्त्री० [सं० रुष] क्रोध। गुस्सा।
मुहा०–रिस मारना=क्रोध को रोकना।
रिसना†–क्रि० स० [हिं० रसना] छन छनकर बाहर निकल जाना। रसना।
रिसवाना†–क्रि० स० दे० "रिसाना"।
रिसहा†–वि० [हिं० रिस] क्रोधी।
रिसहाया†–वि० [हिं० रिस] [स्त्री० रिसहाई] क्रुद्ध। कुपित। नाराज़।
रिसाना†–क्रि० अ० [हिं० रिस] क्रुद्ध होना।
क्रि० स० किसी पर क्रुद्ध होना। बिगड़ना।
रिसाल†–संज्ञा पु० [अ० इरसाल] राज्यकर।
रिसालदार–संज्ञा पु० [फा०] घुड़सवार सेना का एक अफसर।
रिसाला–संज्ञा पु० [फा०] घोड़सवारों की सेना। अश्वारोही सेना।
रिसि*†–संज्ञा स्त्री० दे० "रिस"।
रिसिआना, रिसियाना†–क्रि० अ० [हिं०

रिस + आना (प्रत्य०)] क्रुद्ध या कुपित होना।
क्रि० स० किसी पर क्रुद्ध होना। बिगड़ना।
रिसिक*–संज्ञा स्त्री० [सं० रिष्टीक] तलवार।
रिसौहाँ–वि० [हिं० रिस + औहाँ (प्रत्य०)] १. क्रुद्ध सा। थोड़ा नाराज। २. क्रोध से भरा। कोपसूचक।
रिहल–संज्ञा स्त्री० [अ०] काठ की चौकी जिस पर रखकर पुस्तक पढ़ते हैं।
रिहा–वि० [फ़ा०] [संज्ञा रिहाई] (बंधन या बाधा आदि से) मुक्त। छूटा हुआ।
रींधना–क्रि० स० दे० "राँधना"।
री–अव्य० [सं०] सखियों के लिये संबोधन। अरी। एरी।
रीछ–संज्ञा पुं० [सं० ऋक्ष] भालू।
रीछराज*–संज्ञा पुं० [सं० ऋक्षराज] जामवंत
रीझ–संज्ञा स्त्री० [सं० रंजन] १. किसी की किसी बात पर प्रसन्नता। २. मुग्ध होने का भाव
रीझना–क्रि० अ० [सं० रंजन] १. किसी बात पर प्रसन्न होना। २. मोहित होना।
रीठ*–संज्ञा स्त्री० [सं० रिष्ट] १. तलवार। २. युद्ध। (डिं०)
वि० अशुभ। खराब।
रीठा–संज्ञा पुं० [सं० रिष्ट] १. एक बड़ा जंगली वृक्ष। २. इस वृक्ष का फल जो बेर के बराबर होता है।
रीढ़–संज्ञा स्त्री० [सं० रीढ़क] पीठ के बीचो-बीच की लंबी खड़ी हड्डी जिससे पसलियाँ मिली रहती है। मेरुदंड।
रीत–संज्ञा स्त्री० दे० "रीति"।
रीतना*†–क्रि० अ० [सं० रिक्त] खाली होना। रिक्त होना।
क्रि० स० खाली करना। रिक्त करना।
रीता–वि० [सं० रिक्त] खाली। रिक्त। शून्य
रीति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ढंग। प्रकार। तरह। ढब। २. रस्म। रिवाज। परिपाटी। ३. क़ायदा। नियम। ४. साहित्य में किसी विषय का वर्णन करने में वर्णों की वह योजना जिससे ओज, प्रसाद या माधुर्य्य आता है।
रीषमूक*–संज्ञा पुं० दे० "ऋष्यमूक"।
रीस–संज्ञा स्त्री० दे० "रिसि"।
संज्ञा स्त्री० [सं० ईर्ष्या] १. डाह। २. स्पर्द्धा। बराबरी।
रीसना–क्रि० अ० [हिं० रिस] क्रुद्ध होना।
रुंज–संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का बाजा।
रुंड–संज्ञा पुं० [सं०] १. बिना सिर का धड़। कबंध। २. वह शरीर जिसके हाथ-पैर कटे हों।
रुँदवाना–क्रि० स० [हिं० रौंदना का प्रे०] पैरों से कुचलवाना। रौंदवाना।
रुंधती*–संज्ञा स्त्री० दे० "अरुंधती"।
रुँधना–क्रि० अ० [सं० रुद्ध] १. मार्ग न मिलने के कारण अटकना। रुकना। २. उलझना। फँस जाना। ३. किसी काम में लगना। ४. घेरा जाना।
रु*–अव्य० [हिं० अरु] और।
रुआ*†–संज्ञा पुं० [सं० रोम] रोम। रोआँ।
रुआना*†–क्रि० स० दे० "रुलाना"।
रुआब–संज्ञा पुं० दे० "रोब"।
रुकना–क्रि० अ० [हिं० रोक] १. मार्ग आदि न मिलने के कारण ठहर जाना। अवरुद्ध होना। अटकना। २. अपनी इच्छा से ठहर जाना। ३. किसी कार्य्य का बीच में ही बंद हो जाना। ४. किसी चलते क्रम का बंद होना।
रुकमंगद–संज्ञा पुं० दे० "रुक्मांगद"।
रुकमिनी–संज्ञा स्त्री० दे० "रुक्मिणी"।
रुकवाना–क्रि० स० [हिं० रुकना का प्रेर०] रोकने का काम दूसरे से कराना।
रुकाव–संज्ञा पुं० दे० "रुकावट"।
रुकुम*–संज्ञा पुं० दे० "रुक्म"।
रुकुमी*–संज्ञा पुं० दे० "रुक्मी"।
रुक्का–संज्ञा पुं० [अ० रुक्अः] छोटा पत्र या चिट्ठी। पुरजा। परचा।
रुक्ख*†–संज्ञा पुं० [सं० रुक्ष] पेड़। वृक्ष।
रुक्म–संज्ञा पुं० [सं०] १. स्वर्ण। सोना। २. धत्तूर। धतूरा। ३. रुक्मिणी के एक भाई का नाम।
रुक्मवती–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वृत्त। रूपवती। चंपकमाला।

रुक्मसेन–संज्ञा पुं० [सं०] रुक्मिणी का छोटा भाई।
रुक्मांगद–संज्ञा पुं० [सं०] एक राजा।
रुक्मिणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] श्रीकृष्ण की बड़ी पटरानी जो विदर्भ के राजा भीष्मक की कन्या थी।
रुक्मी–संज्ञा पुं० [सं० रुक्मिन्] राजा भीष्मक का बड़ा पुत्र और रुक्मिणी का भाई।
रुक्ष–वि० [सं० रूक्ष] १ जिसमें चिकनाहट न हो। २ ऊबड़-खाबड़। खुदबुदा। ३ नीरस। ४ सूखा। शुष्क।
रुक्षता–संज्ञा स्त्री० [सं० रूक्षता] रुखाई।
रुख–संज्ञा पुं० [फा०] १ कपोल। गाल। २ मुख। मुँह। ३ आकृति। चेष्टा। ४ मन की इच्छा जो मुख की आकृति से प्रकट हो। ५ कृपादृष्टि। मेहरबानी की नजर। ६ सामने या आगे का भाग। ७ शतरंज का एक मोहरा।
क्रि० वि० १ तरफ। ओर। २ सामने।
रुखसत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ आज्ञा। परवानगी। (क्व०) २ रवानगी। कूच। प्रस्थान। ३ काम से छुट्टी। अवकाश।
वि० जो कहीं से चल पड़ा हो।
रुखसती–संज्ञा स्त्री० [अ० रुखसत] बिदाई, विशेषत दुलहिन की बिदाई।
रुखाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० रूखा+आई(प्रत्य०)] १ रूखे होने की क्रिया या भाव। रूखापन। रुखावट। २ शुष्कता। खुश्की। ३ शील का त्याग। बेमुरौवती।
रुखाना*†–क्रि० अ० [हिं० रूखा] १ रूखा होना। २ नीरस होना। सूखना।
रुखानी–संज्ञा स्त्री० [सं० रोक+खनित्र] बढ़इयों का लोहे का एक औजार।
रुखिता*–संज्ञा स्त्री० [सं० रुषिता] मानवती नायिका।
रुखौंहाँ–वि० [हिं० रूखा+औहाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० रुखौंही] रुखाई लिए हुए। रूखा-सा
रुग्न–वि० [सं०] रोगी। बीमार।
रुच*†–संज्ञा स्त्री० दे० "रुचि"।
रुचना–क्रि० अ० [सं० रुच+ना (प्रत्य०)] रुचि के अनुकूल होना। भला होना।
मुहा०—रुच रुच=बहुत रुचि से।
रुचि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रवृत्ति। तबीयत। २ अनुराग। प्रेम। चाह। ३ किरण। ४ शोभा। सुंदरता। ५ खाने की इच्छा। भूख। ६ स्वाद। जायका। ७ एक अप्सरा का नाम।
वि० फबता हुआ। योग्य। मुनासिब।
रुचिकर–वि० [सं०] अच्छा लगनेवाला। रुचि उत्पन्न करनेवाला। दिलपसंद।
रुचिकारक–वि० दे० "रुचिकर"।
रुचिर–वि० [सं०] १ सुंदर। २ मीठा।
रुचिरवृत्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] अस्त्र का एक प्रकार का संहार।
रुचिरा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक प्रकार का छंद। २ एक वृत्त।
रुचिराई*†–संज्ञा स्त्री० [सं० रुचिर आई (प्रत्य०)] सुंदरता। मनोहरता।
रुचिवर्द्धक–वि० [सं०] १ रुचि उत्पन्न करनेवाला। २ भूख बढ़ानेवाला।
रुच्छ*–वि० दे० "रूखा"।
संज्ञा पुं० दे० "रूख"।
रुज–संज्ञा पुं० [सं०] १ भंग। भाँग। २ वेदना। कष्ट। ३ क्षत। घाव।
रुजाली–संज्ञा स्त्री० [सं०] कष्टों का समूह।
रुजी–वि० [सं० रुज] अस्वस्थ। बीमार।
रुजू–वि० [अ० रुजूअ=प्रवृत्त] जिसकी तबीयत किसी ओर लगी हो। प्रवृत्त।
रुझना*†–क्रि० अ० [सं० रुद्ध] घाव आदि का भरना या पूजना।
क्रि० अ० दे० "उलझना"।
रुठ–संज्ञा पुं० [सं० रुष्ट] क्रोध। गुस्सा।
रुठाना–क्रि० स० [सं० रुष्ट] नाराज करना।
रुणित–वि० [सं०] झनकारता या बजता हुआ।
रुत–संज्ञा स्त्री० दे० "ऋतु"।
संज्ञा पुं० [सं०] १ पक्षियों का शब्द। कलरव। २ शब्द। ध्वनि।
रुतबा–संज्ञा पुं० [अ०] १ ओहदा। पद। २ इज्जत। प्रतिष्ठा।

रुदन–सं० पुं० [सं० रोदन] रोना। क्रंदन।
रुदराछ*†–संज्ञा पुं० दे० "रुद्राक्ष"।
रुदित–वि० [सं०] जो रो रहा हो।
रुद्ध–वि० [सं०] १. घेरा हुआ। वेष्टित। आवृत। २. मुँदा हुआ। बंद। ३. जिसकी गति रोक ली गई हो।
यौ०—रुद्धकंठ=जो प्रेम आदि के कारण बोलने में असमर्थ हो गया हो।
रुद्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार के गण-देवता जो कुल मिलाकर ग्यारह हैं। २. ग्यारह की संख्या। ३. शिव का एक रूप। ४. रौद्र रस।
वि० भयंकर। डरावना। भयानक।
रुद्रक†–संज्ञा पुं० [सं० रुद्राक्ष] रुद्राक्ष।
रुद्रगण–संज्ञा पु० [सं०] पुराणानुसार शिव के बहुत से पारिषद्।
रुद्रजटा–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का क्षुप।
रुद्रट–संज्ञा पु० [सं०] साहित्य के एक प्रसिद्ध आचार्य जिनका बनाया हुआ 'काव्यालंकार' ग्रंथ बहुत प्रसिद्ध है।
रुद्रतेज–संज्ञा पु० [सं० रुद्रतेजस्] कार्तिकेय।
रुद्रपति–संज्ञा पु० [सं०] शिव। महादेव।
रुद्रपत्नी–संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।
रुद्रयामल–संज्ञा पु० [सं०] तांत्रिकों का एक प्रसिद्ध ग्रंथ जिसमें भैरव और भैरवी का संवाद है।
रुद्रलोक–संज्ञा पु० [सं०] वह लोक जिसमें शिव का निवास माना जाता है।
रुद्रवंती–संज्ञा स्त्री० [सं० रुद्रवती] एक प्रसिद्ध वनौषधि जो दिव्यौषधि वर्ग में है।
रुद्रविंशति–संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रभव आदि साठ संवत्सरों या वर्षों में से अंतिम बीस वर्षों का समूह। रुद्र-बीसी।
रुद्राक्ष–संज्ञा पु० [सं०] १. एक प्रसिद्ध बड़ा वृक्ष। २. इस वृक्ष का गोल बीज। प्रायः शैव लोग इनकी मालाएँ पहनते हैं।
रुद्राणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पार्वती भवानी। २. रुद्रजटा नाम की लता।
रुद्री–संज्ञा स्त्री० [सं० रुद्र + ई (प्रत्य०)] वेद के रुद्रानुवाक या अघमर्षण सूक्त की ग्यारह आवृत्तियाँ।
रुधिर–संज्ञा पुं० [सं०] शरीर में का रक्त। शोणित। लहू। खून।
रुधिराशी–वि० [सं०] लहू पीनेवाला।
रुनझुन–संज्ञा स्त्री० [सं०] नूपुर, किंकिणी आदि का शब्द। कलरव। झनकार।
रुनित*–वि० [सं० रणित] बजता हुआ।
रुनी–संज्ञा पुं० [देश०] घोड़े की एक जाति।
रुनुकझुनुक–संज्ञा स्त्री० दे० "रुनझुन"।
रुपना–क्रि० अ० [हिं० रोपना का अकर्मक] १. रोपा जाना। जमीन में गाड़ा या लगाया जाना। २. डटना। अड़ना।
रुपया–संज्ञा पुं० [सं० रूप्य] १. भारत में प्रचलित चाँदी का सबसे बड़ा सोलह आने का सिक्का। २. धन। संपत्ति।
रुपहला–वि० [हिं० रूपा] [स्त्री० रुपहली] चाँदी के रंग का। चाँदी का सा।
रुमंच*–संज्ञा पुं० दे० "रोमांच"।
रुमन्वान–संज्ञा पु० [सं० रुमन्वत्] १. एक प्राचीन ऋषि। २. एक पर्वत का नाम।
रुमांचित*–वि० दे० "रोमांचित"।
रुमाली–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० रूमाल] एक प्रकार का लँगोट।
रुमावली*–संज्ञा स्त्री० दे० "रोमावली"।
रुराई*–संज्ञा स्त्री० [हिं० रूरा] सुंदरता।
रुरु–संज्ञा पुं० [सं०] १. कस्तूरी मृग। २. एक दैत्य जिसे दुर्गा ने मारा था। ३. एक भैरव का नाम।
रुरुआ–संज्ञा पु० [हिं० ररना] बड़ी जाति का उल्लू।
रुरुक्षु–वि० [सं०] रूखा। रूक्ष।
रुलना†–क्रि० अ० [सं० ललन=इधर-उधर डोलना] इधर-उधर मारा फिरना।
रुलाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० रोना + आई (प्रत्य०)] १. रोने की क्रिया या भाव। २. रोने की प्रवृत्ति।
रुलाना–क्रि० स० [हिं० रोना का प्रेर०] दूसरे को रोने में प्रवृत्त करना।
क्रि० स० [हिं० रुलना का सक०] १. इधर-

ऊपर गिराना। २. खराब करना।
रुवाँ†–संज्ञा पुं० [हिं० रोयाँ] रोमरूप से फूल में का भूआ। भूआ।
रुष–संज्ञा पु० [सं०] क्रोध। गुस्सा।
संज्ञा पु० "रुख"।
रुष्ट–वि० [सं०] क्रुद्ध। नाराज। कुपित।
रुष्टता–संज्ञा स्त्री० [सं०] अप्रसन्नता।
रुसना*–क्रि० अ० दे० "रूसना"।
रुसवा–वि० [फा०] [भाव० रुसवाई] जिसकी बहुत बदनामी हो। निंदित। जलील।
रुसित*–वि० [सं० रुषित] रुष्ट। नाराज।
रुस्तम–संज्ञा पु० [अ०] १. फ़ारस का एक प्रसिद्ध प्राचीन पहलवान। २. भारी वीर।
मुहा०—छिपा रुस्तम = वह जो देखने में सीधा सादा पर वास्तव में बहुत वीर हो।
रुहठि*†–संज्ञा स्त्री० [हिं० रोहट = रोना] रूठने की क्रिया या भाव।
रुहिर*–संज्ञा पु० दे० "रुधिर"।
रुहेलखंड–संज्ञा पु० [हिं० रुहेला] अवध के उत्तर पश्चिम पड़नेवाला एक प्रदेश।
रुहेला–संज्ञा पु० [?] पठानों की एक जाति जो प्राय. रुहेलखंड में बसी है।
रूँध–वि० [स० रुद्ध] रुका हुआ। अवरुद्ध।
रूँधना–क्रि० स० [स० रुधन] १. कँटीले झाड आदि से घेरना। बाड लगाना। २. चारो ओर से घेरना। रोकना। छेकना।
रू–संज्ञा पु० [फा०] १. मुँह। चेहरा। २ द्वार। कारण। ३. आगा। सामना।
रूई–संज्ञा स्त्री० [स० रोम] १. कपास के ढोडे या कोष के अन्दर का घूआ जिसे बट या कातकर सूत बनाते अथवा जिसे गद्दे, रजाई या जाड़े के पहनने के कपड़ों में भरते है। २. बीजो के ऊपर का रोआँ।
रूईदार–वि० [हिं० रूई + फा० दार(प्रत्य०)] जिसमें रूई भरी गई हो।
रूख–संज्ञा पु० [स० वृक्ष] पेड। वृक्ष। वि० दे० "रूखा"।
रूखड़ा†–संज्ञा पु० [हिं० रूख] पेड। वृक्ष।
रूखना*–क्रि० अ० [स० रुष] रूठना।
रूखा–वि० [सं० रूक्ष] १. जो चिकना न हो। अस्निग्ध। २. जिसमें घी, तेल आदि चिकने पदार्थ न पड़े हों। ३. जो खाने में स्वादिष्ट न हो। सीठा।
मुहा०—रूखा-सूखा = जिसमें चिकना और चरपरा पदार्थ न हो। बहुत साधारण भोजन।
४. सूखा। शुष्क। नीरस। ५. खुरदुरा। ६. नीरस। उदासीन। ७. परुष। कठोर।
मुहा०—रूखा पड़ना या होना = १. बे-मुरौवती करना। २. क्रुद्ध होना। नाराज होना। ८. उदासीन। विरक्त।
रूखापन–संज्ञा पु० [हिं० रूखा+पन (प्रत्य०)] रूखे होने का भाव। रुखाई।
रूचना*–क्रि० अ० दे० "रुचना"।
रूझना*–क्रि० अ० दे० "उलझना"।
रूठ, रूठन–संज्ञा स्त्री० [हिं० रूठना] रूठने की क्रिया या भाव। नाराजगी।
रूठना–क्रि० अ० [स० रुष्ट] नाराज होना।
रूड़, रूड़ा–वि० [हिं० रूरा] श्रेष्ठ। उत्तम।
रूढ़–वि० [स०] [स्त्री० रूढ़ा] १. चढ़ा हुआ। आरूढ़। २. उत्पन्न। जात। ३. प्रसिद्ध। ख्यात। ४. गँवार। उजड्ड। ५. कठोर। ६ अकेला। ७ अविभाज्य। संज्ञा पु० अर्थानुसार शब्द का वह भेद जो दो शब्दों या शब्द और प्रत्यय के योग से बना हो। यौगिक का उलटा। रूढ़ि।
रूढ़यौवना–संज्ञा स्त्री० दे० "आरूढ़यौवना"।
रूढ़ा–संज्ञा स्त्री० [स०] वह लक्षणा जो प्रचलित हो और जिसका व्यवहार प्रसिद्ध से भिन्न अभिप्राय-व्यंजन के लिये न हो।
रूढ़ि–संज्ञा स्त्री० [स०] १. चढ़ाई। चढ़ाव। २. उभार। उठान। ३. उत्पत्ति। जन्म। ४. ख्याति। प्रसिद्धि। ५. प्रथा। चाल। ६ विचार। निश्चय। ७. रूढ़ शब्द की शक्ति जिससे वह यौगिक न होने पर भी अपने अर्थ का बोध कराता है।
रूदाद–संज्ञा स्त्री० [फा० रूएदाद] १. समाचार। वृत्तांत। २. दशा। अवस्था। ३. विवरण। कैफियत। ४. अदालत की कारवाई।
रूप–संज्ञा पु० [सं०] १. शकल। सूरत।

यौ०—रूपरेखा=आकार। शकल।
२. स्वभाव। प्रकृति। ३. सौंदर्य।
मुहा०—रूप हरना=लज्जित करना।
यौ०—रूप-रेखा=१. चिह्न। २. पता।
४. शरीर। देह।
मुहा०—रूप लेना=रूप धारण करना।
४. वेष। भेस।
मुहा०—रूप भरना=भेस बनाना।
६. दशा। अवस्था। ७. समान। तुल्य। सदृश। ८. चिह्न। लक्षण। आकार।
९. रूपक। * १०. चाँदी। रूपा।
वि० रूपवान्। खूबसूरत।

रूपक–संज्ञा पुं०[सं०] १. मूर्त्ति। प्रतिकृति। २. वह काव्य जिसका अभिनय किया जाता है। दृश्यकाव्य। इसके प्रधान दस भेद हैं—नाटक, प्रकरण, भाण, व्यायोग, समवकार, डिम, ईहामृग, अंक, वीथी और प्रहसन। ३. एक अर्थालंकार जिसमें उपमेय में उपमान के साधर्म्य का आरोप करके उसका वर्णन उपमान के रूप से या अभेद-रूप से किया जाता है। ४. रुपया।

रूपकरण–संज्ञा पुं०[सं० रूप+करण] एक प्रकार का घोड़ा।

रूपकातिशयोक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह अतिशयोक्ति जिसमें केवल उपमान का उल्लेख करके उपमेयों का अर्थ समझाते हैं।

रूपक्रांता–संज्ञा स्त्री०[सं०] सत्रह अक्षरों की एक वर्णवृति।

रूपगर्विता–संज्ञा स्त्री०[सं०] वह गर्विता नायिका जिसे अपने रूप का अभिमान हो।

रूपघनाक्षरी–संज्ञा स्त्री०[सं०] ३२ वर्णों का एक प्रकार का दंडक छंद।

रूपमंजरी–संज्ञा स्त्री०[सं०] १. एक प्रकार का फूल। २. एक प्रकार का धान।

रूपमती*–वि० [हिं० रूपमान] रूपवती।

रूपमय–वि०[हिं० रूप+मय][स्त्री० रूपमयी] अति सुंदर। बहुत खूबसूरत।

रूपमान*–वि० दे० "रूपवान्"।

रूपमाला–संज्ञा स्त्री० [हिं० रूप+माला] २४ मात्राओं का एक मात्रिक छंद।

रूपमाली–संज्ञा स्त्री० [सं०] नौ दीर्घ वर्णों का एक छंद।

रूपरूपक–संज्ञा पुं० [सं० रूप+रूपक] रूपकालंकार के 'सावयव रूपक' भेद का एक नाम।

रूपवंत–वि० [सं० रूपवत्] [स्त्री० रूपवंती] खूबसूरत। रूपवान्। सुंदर।

रूपवती–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गौरी नामक छंद। २. चंपकमाला वृत्ति का एक नाम। वि० स्त्री० सुंदरी। खूबसूरत। (स्त्री०)

रूपवान्, रूपवान–वि० [सं० रूपवत्] [स्त्री० रूपवती] सुंदर। रूपवाला। खूबसूरत।

रूपा–संज्ञा पुं० [सं० रूप्य] १. चाँदी। २. घटिया चाँदी। ३. स्वच्छ सफ़ेद रंग का घोड़ा। नुकरा।

रूपित–संज्ञा पुं० [सं०] वह उपन्यास, जिसमें ज्ञान, वैराग्यादि पात्र हों।

रूपी–वि० [सं० रूपिन्] [स्त्री० रूपिणी] १. रूप-विशिष्ट। रूपवाला। रूपधारी। २. तुल्य। सदृश।

रूपोश–वि० [फ़ा०] [संज्ञा रूपोशी] १. छिपा हुआ। गुप्त। २. भागा हुआ। फ़रार।

रूप्यक–संज्ञा पुं० [सं०] रुपया।

रूबकार–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. सामने उपस्थित करने का भाव। पेशी। २. अदालत का हुक्म। ३. आज्ञापत्र।

रू-बरू–क्रि० वि० [फ़ा०] सम्मुख। सामने।

रूम–संज्ञा पुं० [फ़ा०] टर्की या तुर्की देश का एक नाम।

रूमना*–क्रि० स० [हिं० झूमना का अनु०] झूमना। झूलना।

रूमाल–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. कपड़े का वह चौकोर टुकड़ा जिससे हाथ-मुँह पोंछते हैं। २. चौकोना शाल या दुपट्टा।

रूमाली–संज्ञा स्त्री० दे० "रुमाली"।

रूमी–वि० [फ़ा०] १. रूम देश संबंधी। रूम का। २. रूम देश का निवासी।

रूरना*–क्रि० अ० [सं० रोरवण] चिल्लाना।

रूरा–वि० [सं० रूढ़=प्रशस्त] [स्त्री० रूरी] १. श्रेष्ठ। उत्तम। अच्छा। २. सुंदर।

३. बहुत बड़ा।

रूप—संज्ञा पुं० दे० "रूस"।

रूसना—क्रि० अ० दे० "रूठना"।

रूसा—संज्ञा पुं० [सं० रूपक] अडूसा। अरूसा।
संज्ञा पुं० [सं० रोहिष] एक सुगंधित घास जिसका तेल निकाला जाता है।

रूसी—वि० [हिं० रूस] १ रूस देश का निवासी। २ रूस देश का।
संज्ञा स्त्री० रूस देश की भाषा।
संज्ञा स्त्री० [देश०] सिर के चमड़े पर जमा हुआ भूसी के समान छिलका।

रूह—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ आत्मा। जीवात्मा। २ सत्त। सार। ३ इत्र का एक भेद।

रूहना*—क्रि० अ० [सं० रोहण] चढ़ना। उमड़ना।
क्रि० अ० [हिं० रूँधना] आवेष्टित करना। घेरना।

रेंकना—क्रि० अ० [अनु०] १ गदहे का बोलना। २ बुरे ढंग से गाना।

रेंगना—क्रि० अ० [सं० रिंगण] १ च्यूँटी आदि कीड़ों का चलना। २ धीरे धीरे चलना।

रेंट—संज्ञा पुं० [देश०] नाक का मल।

रेंड—संज्ञा पुं० [सं० एरंड] एक पौधा जिसके बीजों का तेल दस्तावर होता है।

रेंडी—संज्ञा स्त्री० [हिं० रेंड] रेंड के बीज।

रे—अव्य० [सं०] एक तुच्छ संबोधन शब्द।
संज्ञा पुं० [सं० ऋषभ] ऋषभ स्वर।

रेख—संज्ञा स्त्री० [सं० रेखा] १ लकीर।
मुहा०—रेख काढ़ना, खींचना या खाँचना = १ लकीर बनाना। २ (कहने में) जोर देना। प्रतिज्ञा करना।
२ चिह्न। निशान।
यौ०—रूप रेखा = स्वरूप। सूरत।
३ गिनती। गणना। शुमार। ४ नई निकलती हुई मूँछें।
मुहा०—रेख भीजना या भीनना = निकलती हुई मूँछों का दिखाई पड़ना।

रेखता—संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार की गज़ल।

रेखना*—क्रि० स० [सं० रेखन या लेखन] १ रेखा खींचना। लकीर खींचना। २. खरोंचना। खरोंच डालना।

रेखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सूत के आकार का लंबा चिह्न। डाँड़ी। लकीर। २ किसी वस्तु का सूचक चिह्न।
यौ०—कर्मरेखा = भाग्य का लेख।
३ गणना। शुमार। गिनती। ४ आकृति। आकार। सूरत। ५ हथेली, तलवे आदि में पड़ी हुई लकीरें जिनसे सामुद्रिक में शुभाशुभ का निर्णय होता है।

रेखागणित—संज्ञा पुं० [सं०] गणित का वह विभाग जिसमें रेखाओं द्वारा कुछ सिद्धांत निर्धारित किए जाते हैं।

रेखित—वि० [सं० रेखा] १ जिस पर रेखा या लकीर पड़ी हो। २ फटा हुआ।

रेगिस्तान—संज्ञा पुं० [फा०] बालू का मैदान। मरु देश।

रेचक—वि० [सं०] जिसके खाने से दस्त आवे। दस्तावर।
संज्ञा पुं० प्राणायाम की तीसरी क्रिया, जिसमें खींचे हुए साँस को विधिपूर्वक बाहर निकालना होता है।

रेचन—संज्ञा पुं० [सं०] १ दस्त लाना। कोष्ठशुद्धि करना। २ जुल्लाब।

रेचना*—क्रि० स० [सं० रेचन] वायु या मल को बाहर निकालना।

रेजगारी—संज्ञा स्त्री० दे० "रेजगी"।

रेजगी—संज्ञा स्त्री० [फा० रेजा] १ दुअन्नी चवन्नी आदि छोटे सिक्के। २ छोटे मट या कतरन आदि।

रेजा—संज्ञा पुं० [फा०] १ बहुत छोटा टुकड़ा। सूक्ष्म खंड। २ नग। थान। अदद।

रेणु—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ धूल। २ बालू। ३ अत्यंत लघु परिमाण। कणिका।

रेणुका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बालू। रेत। २ रज। धूल। ३ पृथ्वी। ४ परशुराम की माता का नाम।

रेत—संज्ञा पुं० [सं० रेतस्] १ वीर्य्य। शुक्र। २ पारा। ३ जल।
संज्ञा स्त्री० [सं० रेतजा] १ बालू। २ बलुआ

मैदान। मरुभूमि।
रेचना–क्रि० स० [हिं० रेत] १. रेती से रगड़कर किसी वस्तु में से छोटे छोटे कण गिराना। २. औज़ार से रगड़कर काटना।
रेता–संज्ञा पुं० [हिं० रेत] १. बालू। २. मिट्टी। ३. बालू का मैदान।
रेती–संज्ञा स्त्री० [हिं० रेतना] एक औज़ार जिसे किसी वस्तु पर रगड़ने से उसके महीन कण छूटकर गिरते हैं।
संज्ञा स्त्री० [हिं० रेत+ई (प्रत्य०)] नदी या समुद्र के किनारे पड़ी हुई बलुई जमीन। बलुआ किनारा।
रेतीला–वि० [हिं० रेत + ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० रेतीली] बालूवाला। बलुआ।
रेनु*–संज्ञा पुं० दे० "रेणु"।
रेफ–संज्ञा पुं० [सं०] १. हलंत रकार का वह रूप जो अन्य अक्षर के पहले आने पर उसके मस्तक पर रहता है। जैसे, सर्प, दर्प, हर्ष में। २. रकार (र)।
रेल–संज्ञा स्त्री० [अ] भाप के जोर से चलनेवाली गाड़ी। रेल-गाड़ी।
संज्ञा स्त्री०]हिं० रेलना] १. बहाव। धारा। २. आधिक्य। भरमार।
रेलठेल–संज्ञा स्त्री० दे० "रेलपेल"।
रेलना–क्रि० स० [देश०] १. आगे की ओर ढकेलना। धक्का देना। २. अधिक भोजन करना।
क्रि० अ० ठसाठस भरा होना।
रेलपेल–संज्ञा स्त्री० [हिं० रेलना+पेलना] १. भारी भीड़। २. भरमार। अधिकता।
रेला–संज्ञा पु० [देश०] १. जल का प्रवाह। बहाव। तोड़। २. समूह में चढ़ाई। धावा। दौड़। ३. धक्कमधक्का। ४. अधिकता। बहुतायत।
रेवंद–संज्ञा पु० [फ़ा०] एक पहाड़ी पेड़ जिसकी जड़ और लकड़ी रेवंद चीनी के नाम से बिकती और औषध के काम में आती है।
रेवड़–संज्ञा पुं० [देश०] भेड़-बकरी का झुंड। लेहड़ा। गल्ला।
रेवड़ी–संज्ञा स्त्री० [देश०] तिल और चीनी की बनी एक प्रसिद्ध मिठाई।
रेवती–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सत्ताइसवाँ नक्षत्र जो ३२ तारों से मिलकर बना है। २. गाय। ३. दुर्गा। ४. बलराम की पत्नी जो राजा रैवत की कन्या थी।
रेवतीरमण–संज्ञा पुं० [सं०] बलराम।
रेवा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नर्मदा नदी। २. काम की पत्नी रति। ३. दुर्गा। ४. रीवाँ राज्य। बघेलखंड।
रेशम–संज्ञा पुं० [फ़ा०] एक प्रकार का महीन चमकीला और दृढ़ तंतु जिससे कपड़े बुने जाते हैं। यह तंतु कोश में रहनेवाले एक प्रकार के कीड़े तैयार करते हैं। कौशेय।
रेशमी–वि० [फ़ा०] रेशम का बना हुआ।
रेशा–संज्ञा पु० [फ़ा०] तंतु या महीन सूत जो पौधों की छालों आदि से निकलता है।
रेह–संज्ञा स्त्री० [?] क्षार मिली हुई वह मिट्टी जो ऊसर मैदान में पाई जाती है।
रेहन–संज्ञा पु० [फ़ा०] महाजन के पास माल या जायदाद इस शर्त पर रखना कि जब वह रुपया पा जाय, तब माल या जायदाद वापस कर दे। बंधक। गिरवी।
रेहनदार–संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह जिसके पास कोई जायदाद रेहन रखी हो।
रेहननामा–संज्ञा पु० [फ़ा०] वह काग़ज़ जिस पर रेहन की शर्तें लिखी हों।
रेहल–संज्ञा स्त्री० दे० "रिहल"।
रैअति*–संज्ञा स्त्री० दे० "रैयत"।
रैतुआ–संज्ञा पु० दे० "रायता"।
रैदास–संज्ञा पु० १. एक प्रसिद्ध चमार भक्त जो रामानंद का शिष्य और कबीर का समकालीन था। २. चमार।
रैन, रैनि*–संज्ञा स्त्री० [सं० रजनि] रात्रि।
रैनिचर–संज्ञा पुं० [सं० रजनिचर] राक्षस।
रैयत–संज्ञा स्त्री० [अ०] प्रजा। रिआया।
रैयाराव–संज्ञा पु० [हिं०राजा + राव] छोटा राजा।
रैवतक–संज्ञा पुं० [सं०] गुजरात का एक पर्वत जो अब गिरनार कहलाता है।
रोंगटा–संज्ञा पु० [सं० रोमक] सारे शरीर

पर य याट।
मुहा०—रोंगटे खड़े होना=किसी भयानक कांड को देखकर शरीर में बहुत क्षोभ उत्पन्न होना।
रोंगटी—संज्ञा स्त्री०[हिं० रोना] खेल में बुरा मानना या बेईमानी करना।
रोंव*—संज्ञा पुं०[सं० रोम] रोआँ। रोम।
रोआ†—संज्ञा पुं० दे० "रोयाँ"।
रोआब†—संज्ञा पुं०[अ० रोअब] रोब। आतंक।
रोउँ*—संज्ञा पुं० दे० "रोव"।
रोक—संज्ञा स्त्री०[सं० रोधक] १ गति में बाधा। अटकाव। छेंक। अवरोध। २ मनाही। निषेध। ३ काम में बाधा। ४ रोकनेवाली वस्तु।
संज्ञा पुं० दे० 'रोकड़'।
रोक-टोक—संज्ञा स्त्री०[हिं० रोकना+टोकना] १ बाधा। प्रतिबंध। २ मनाही। निषेध।
रोकड़—संज्ञा स्त्री०[सं० रोक=नकद] १ नगद रुपया पैसा आदि। २ जमा। धन। पूँजी।
रोकड़िया—संज्ञा पुं०[हिं० रोकड़] खजानची।
रोकना—क्रि० स०[हिं० रोक] १ चलन या बढ़ने न देना। २ कहीं जाने से मना करना। ३ किसी चली आती हुई बात को बंद करना। ४ छेंकना। ५ अड़चन डालना। बाधा डालना। ६ ऊपर लेना। ओढ़ना। ७ वश में रखना। काबू में रखना।
रोख*‡—संज्ञा पुं० दे० "रोष"।
रोग—संज्ञा पुं०[सं०][वि० रोगी, रुग्न] व्याधि। मर्ज। बीमारी।
रोगदई, रोगदैया—संज्ञा स्त्री०[हिं० रोना?] १ बेईमानी। २ अन्याय। (लड़के)
रोगन—संज्ञा पुं०[फा० रौगन] १ तेल। चिकनाई। २ वह पतला लेप जिस किसी वस्तु पर पोतने से चमक आवे। पालिश। वारनिश। ३ वह मसाला जिसे मिट्टी के बरतन आदि पर चढ़ाते हैं।
रोगनी—वि०[फा०] रोगन किया हुआ।
रोगिया—संज्ञा पुं० दे० 'रोगी'।
रोगी—वि०[सं० रोगिन्][स्त्री० रोगिनी] जो स्वस्थ न हो। व्याधिग्रस्त। बीमार।
रोचक—वि०[सं०][संज्ञा रोचकता] १ रुचिकारक। अच्छा लगनेवाला। प्रिय। २ मनोरंजक। दिलचस्प।
रोचन—वि०[सं०] १ अच्छा लगनेवाला। रोचक। २ शोभा देनेवाला। ३ लाल।
संज्ञा पुं० १ काला सेमर। प्याज। २ स्वारोचिष मन्वंतर के इंद्र। ३ कामदेव के पाँच बाणों में से एक। ४ रोली।
रोचना—संज्ञा स्त्री०[सं०] १. रक्त-कमल। २ गोरोचन। ३ वसुदेव की स्त्री।
रोचि—संज्ञा स्त्री०[सं० रोचिस्] १ प्रभा। दीप्ति। २ प्रकट होती हुई शोभा। ३ किरण। रश्मि।
रोचित—वि०[सं० रोचना] शोभित।
रोज*—संज्ञा पुं०[सं० रोदन] रोना। रुदन।
रोज़—संज्ञा पुं०[फा०] दिन। दिवस।
अव्य० प्रतिदिन। नित्य।
रोज़गार—संज्ञा पुं०[फा०] १ जीविका या धन संचय के लिये हाथ में लिया हुआ काम। व्यवसाय। धंधा। पेशा। कारबार। २ व्यापार। तिजारत।
रोज़गारी—संज्ञा पुं०[फा०] व्यापारी।
रोज़नामचा—संज्ञा पुं०[फा०] वह किताब जिस पर रोज़ का किया हुआ काम लिखा जाता है।
रोज़मर्रा—अव्य०[फा०] प्रतिदिन। नित्य।
संज्ञा पुं० नित्य के व्यवहार में आनेवाली भाषा। बोलचाल। चलती बोली।
रोज़ा—संज्ञा पुं०[फा०] १ व्रत। उपवास। २ वह उपवास जो मुसलमान रमजान के महीने में करते हैं।
रोज़ी—संज्ञा स्त्री०[फा०] १ नित्य का भोजन। २ जीवन निर्वाह का अवलंब। जीविका।
रोझ—संज्ञा स्त्री०[देश०] नील गाय।
रोट—संज्ञा पुं०[हिं० रोटी] १ बहुत मोटी रोटी। लिट्टं। २ मीठी मोटी रोटी।
रोटा†—वि०[हिं० रोटी] पिसा हुआ।
रोटिहा†—संज्ञा पुं०[हिं० रोटी+हा (प्रत्य०)] केवल भोजन पर रहनेवाला चाकर।
रोटी—संज्ञा स्त्री०[?] १ गुंधे हुए आटे की

आँच पर सेंकी हुई लोई या टिकिया। चपाती। फुलका। २. भोजन। रसोई। मुहा०—रोटी-कपड़ा = भोजन-वस्त्र। जीवन-निर्वाह की सामग्री। किसी बात की रोटी खाना=किसी बात से जीविका कमाना। किसी के यहाँ रोटियाँ तोड़ना = किसी के घर पड़ा रहकर पेट पालना। रोटी दाल चलना = जीवन-निर्वाह होना।

रोटीफल—संज्ञा पुं० [हिं० रोटी + फल] एक वृक्ष का फल जो खाने में अच्छा होता है।

रोड़ा—संज्ञा पुं० [सं० लोष्ठ] ईंट या पत्थर का बड़ा ढेला। बड़ा कंकड़।
मुहा०—रोड़ा अटकाना या डालना = विघ्न या बाधा डालना।

रोदन—संज्ञा पुं० [सं०] क्रंदन। रोना।

रोदसी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. स्वर्ग। २. भूमि।

रोदा—संज्ञा पुं० [सं० रोध] कमान की डोरी। चिल्ला।

रोधन—संज्ञा पुं० [सं०] १. रोक। रुकावट। अवरोध। २. दमन।

रोधना*—क्रि० स० [सं० रोधन] रोकना।

रोना—क्रि० अ० [सं० रोदन] १. चिल्लाना और आँसू बहाना। रुदन करना।
मुहा०—रोना-पीटना=बहुत विलाप करना। रो रोकर=१. ज्यों-त्यों करके। कठिनता से। २. बहुत धीरे-धीरे। रोना गाना = विनती करना। गिड़गिड़ाना।
२. बुरा मानना। चिढ़ना। ३. दुःख करना। संज्ञा पुं० दुःख। रंज। खेद।
वि० [स्त्री० रोनी] १. थोड़ी सी बात पर भी रोनेवाला। २. चिड़चिड़ा। ३. रोनेवाले का सा। मुहर्रमी। रोवाँसा।

रोपण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० रोपित, रोप्य] १. ऊपर रखना या स्थापित करना। २. लगाना। जमाना। बैठाना। (बीज या पौधा) ३. मोहित करना। मोहन।

रोपना—क्रि० स० [सं० रोपण] १. जमाना। लगाना। बैठाना। २. पौधे को एक स्थान से उखाड़कर दूसरे स्थान पर जमाना। ३. अड़ाना। ठहराना। ४. बीज डालना। बोना। ५. लेने के लिये हथेली या कोई बरतन सामने करना। ६. रोकना।

रोपनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० रोपना] धान आदि के पौधों को गाड़ने का काम। रोपाई।

रोपित—वि० [सं०] १. लगाया हुआ। जमाया हुआ। २. स्थापित। रखा हुआ। ३. मोहित। भ्रांत।

रोब—संज्ञा पुं० [अ० रुअब] [वि० रोबीला] बड़प्पन की धाक। आतंक। दबदबा।
मुहा०—रोब जमाना=आतंक उत्पन्न करना। रोब में आना=१ आतंक के कारण कोई ऐसी बात कर डालना जो यों न की जाती हो। २. भय मानना।

रोबदार—वि० [अ०] रोबदाबवाला। प्रभावशाली। तेजस्वी।

रोम—संज्ञा पुं० [सं० रोमन्] १. देह के बाल। रोयाँ। लोम।
मुहा०—रोम रोम में = शरीर भर में। रोम रोम से = तन मन से। पूर्ण हृदय से।
२. छेद। सूराख। ३. जल। ४. ऊन।

रोमक—संज्ञा पुं० [सं०] १. रोम नगर का वासी। रोमन। २. रोम नगर या देश।

रोमकूप—संज्ञा पुं० [सं०] शरीर के वे छिद्र जिनमें से रोएँ निकले हुए होते हैं।

रोमपाट—संज्ञा पुं० [सं०] ऊनी कपड़ा।

रोमपाद—संज्ञा पुं० [सं०] अंग देश के एक प्राचीन राजा।

रोमराजी—संज्ञा स्त्री० दे० "रोमावलि"।

रोमलता—संज्ञा स्त्री० दे० "रोमावली"।

रोमहर्षण—संज्ञा पुं० [सं०] रोयों का खड़ा होना जो अत्यंत आनंद के सहसा अनुभव से अथवा भय से होता है।
वि० भयंकर। भीषण।

रोमांच—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० रोमांचित] १. आनंद से रोयों का उभर आना। पुलक। २. भय से रोंगटे खड़े होना।

रोमावलि, रोमावली—संज्ञा स्त्री० [सं०] रोयों की पंक्ति जो पेट के बीचोंबीच नाभि से ऊपर की ओर गई होती है। रोमाली।

रोगराजी।
रोयाँ–संज्ञा पु० [सं० रोमन्] वे बाल जो प्राणियों के शरीर पर थोड़े या बहुत उगते हैं। लोम। रोम।
मुहा०—रोयाँ खड़ा होना=हर्ष या भय से रोमकूपों का उभरना। रोयाँ पसीजना=हृदय में दया उत्पन्न होना। तरस आना।
रोर–संज्ञा स्त्री० [सं० रवण] १ हल्ला। कोलाहल। शोर-गुल। २ बहुत से लोगों के रोने चिल्लाने का शब्द। ३ उपद्रव। हलचल।
वि० १ प्रचंड। तेज। दुर्दमनीय। २ उपद्रवी। उद्धत। दुष्ट।
रोरी†–संज्ञा स्त्री० "रोली"।
*संज्ञा स्त्री० [हिं० रोर] चहल-पहल। धूम।
वि० स्त्री० [हिं० रुरा] सुंदर। रुचिर।
रोल*–संज्ञा स्त्री० [सं० रवण] १ रोर। हल्ला। कोलाहल। २ शब्द। ध्वनि।
संज्ञा पु० पानी का तोड़। रेला। बहाव।
रोला–संज्ञा पु० [सं० रावण] १ रोर। शोर-गुल। कोलाहल। २ घमासान युद्ध।
संज्ञा पु० [सं०] २४ मात्राओं का एक छंद।
रोली–संज्ञा स्त्री० [सं० रोचनी] चूने और हल्दी से बनी लाल बुकनी जिसका तिलक लगाते हैं। श्री।
रोवनहार–संज्ञा पु० [हिं० रोवना+हारा (प्रत्य०)] १ रोनेवाला। २ किसी के मर जाने पर उसका शोक करनेवाला कुटुंबी।
रोवना–क्रि० अ०, वि० दे० "रोना"।
रोवनिहारा*–वि० दे० "रोवनहार"।
रोवनी, धोवनी†–संज्ञा स्त्री० [हिं० रोवना-धोवना] रोने धोने की वृत्ति। मनहूसी।
रोवासा–वि० [हिं० रोना] [स्त्री० रोवासी] जो रो देना चाहता हो।
रोशन–वि० [फा०] १ जलता हुआ। प्रदीप्त। प्रकाशित। २ प्रकाशमान। चमकदार। ३ प्रसिद्ध। मशहूर। ४ प्रकट। जाहिर।
रोशन चौकी–संज्ञा स्त्री० [फा०] शहनाई का बाजा। नफीरी।
रोशनदान–संज्ञा पु० [फा०] प्रकाश आने का छिद्र। गवाक्ष। मोखा।
रोशनाई–संज्ञा स्त्री० [फा०] १ लिखने की स्याही। मसि। २ प्रकाश। रोशनी।
रोशनी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १ उजाला। प्रकाश। २ दीपक। चिराग। ३ दीप-माला का प्रकाश। ४ ज्ञान का प्रकाश।
रोष–संज्ञा पु० [सं० रुष्ट] १ क्रोध। कोप। गुस्सा। २ चिढ़। कुढ़न। ३ वैर। विरोध। ४ लड़ाई की उमंग। जोश।
रोषी–वि० [सं० रोषिन्] क्रोधी। गुस्सावर।
रोस–संज्ञा पु० दे० "रोष"।
रोह–संज्ञा पुं० [देश०] नील गाय।
रोहज*–संज्ञा पु० [?] नेत्र।
रोहण–संज्ञा पु० [सं०] १. चढ़ना। चढ़ाई। २ ऊपर को बढ़ना। ३ पौधे का उगना।
रोहना*–क्रि० अ० [सं० रोहण] १ चढ़ना। २ ऊपर की ओर जाना। ३ सवार होना।
क्रि० स० १ चढ़ाना। ऊपर करना। २ सवार कराना। ३ धारण करना।
रोहिणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गाय। २ बिजली। ३ वसुदेव की स्त्री जो बलराम की माता थीं। ४ नौ वर्ष की कन्या की संज्ञा। (स्मृति) ५ सत्ताइस नक्षत्रों में से चौथा नक्षत्र।
रोहित–वि० [सं०] लाल रंग का। लोहित।
संज्ञा पु० १ लाल रंग। २ रोहू मछली। ३ एक प्रकार का मृग। ४ इंद्र धनुष। ५ केसर। कुंकुम। ६ रक्त। लहू। खून।
रोहिताश्व–संज्ञा पु० [सं०] १ अग्नि। २ राजा हरिश्चंद्र के पुत्र का नाम।
रोही–वि० [सं० रोहिन्] [स्त्री० रोहिणी] चढ़नेवाला।
संज्ञा पु० [देश०] एक हथियार।
रोहू–संज्ञा स्त्री० [सं० रोहिष] एक प्रकार की बड़ी मछली।
रौंद–संज्ञा स्त्री० [हिं० रौंदना] रौंदने का भाव या क्रिया।
संज्ञा स्त्री० [अं० राउंड] चक्कर। गश्त।
रौंदना–क्रि० स० [सं० मर्दन] पैरों से

कुचलना। मर्दित करना।
री–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. गति। चाल।
२. वेग। झोंक। ३. पानी का बहाव। तोड़। ४. किसी बात की धुन। झोंक।
५. चाल। ढंग।
*‡ संज्ञा पु० दे० "रव"।
रौशन–संज्ञा पुं० दे० "रोशन"।
रौजा–संज्ञा पु० [अ०] कब्र। समाधि।
रौताइन–संज्ञा स्त्री० [हिं० राव, रावत] राव या रावत की स्त्री। ठकुराइन।
रौताई–संज्ञा स्त्री० [हिं० रावत+आई(प्रत्य०)] १. राव या रावत होने का भाव। २. ठकुराई। सरदारी।
रौद्र–वि० [सं०] १. रुद्र-संबंधी। २. प्रचंड। भयंकर। डरावना। ३. क्रोधपूर्ण।
संज्ञा पुं० १. काव्य के नौ रसों में से एक जिसमें क्रोधसूचक शब्दों और चेष्टाओं का वर्णन होता है। २. ग्यारह मात्राओं के छंदों की संज्ञा। ३. एक प्रकार का अस्त्र।
रौद्रार्क–संज्ञा पु० [सं०] २३ मात्राओं के छंदों की संज्ञा।
रौन*–संज्ञा पुं० दे० "रमण"।
रौनक़–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. वर्ण और आकृति। रूप। २. चमक-दमक। दीप्ति। कांति। ३. प्रफुल्लता। विकास। ४. शोभा। छटा। सुहावनापन।
रौना†–संज्ञा पुं० दे० "रोना"।
रौनी*–संज्ञा स्त्री० दे० "रमणी"।
रौप्य–संज्ञा पुं० [सं०] चाँदी। रूपा।
वि० चाँदी का बना हुआ। रूपे का।
रौरव–वि० [सं०] भयंकर। डरावना।
संज्ञा पुं० एक भीषण नरक का नाम।
रौरा†–संज्ञा पुं० दे० "रौला"।
†सर्व० [हिं० रावरा] [स्त्री० रौरी] आपका।
रौराना†–क्रि० स० [हिं० रौरा] प्रलाप करना। बकना।
रौरे†–सर्व० [हिं० राव, रावल] आप। (संबोधन)
रौला–संज्ञा पुं० [सं० रवण] १.हल्ला। गुल। शोर। २. हुल्लड़। धूम।
रौलि†–संज्ञा स्त्री० [देश०] धौल। चपत।
रौशन–वि० दे० "रोशन"।
रौस–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० रविश] १. गति। चाल। २. रंग ढंग। तौर तरीक़ा। ३. बाग की क्यारियों के बीच का मार्ग।
रौहाल–संज्ञा स्त्री० [देश०] १. घोड़े की एक चाल। २. घोड़े की एक जाति।

ल

ल–व्यंजन वर्ण का अट्ठाईसवाँ वर्ण जिसका उच्चारण स्थान दंत होता है। यह अल्प-प्राण है।
लंक–संज्ञा स्त्री० [सं०] कमर। कटि।
संज्ञा स्त्री० [सं० लंका] लंका नामक द्वीप।
लंकनाथ, लंकनायक–संज्ञा पुं० [हिं० लंक + सं०पति या नायक] १. रावण। २. विभीषण।
लंकलाट–संज्ञा पु० [अं० लांग क्लाथ] एक प्रकार का मोटा बढ़िया कपड़ा।
लंका–संज्ञा स्त्री० [सं०] भारत के दक्षिण का एक टापू जहाँ रावण का राज्य था।
लंकापति–संज्ञा पु० [सं०] १. रावण। २. विभीषण।
लंकेश, लंकेश्वर–संज्ञा पु० [सं०] रावण।
लंग–संज्ञा स्त्री० दे० "लाँग"।
संज्ञा पु० [फ़ा०] लँगड़ापन।
लंगड़–वि० दे० "लँगड़ा"।
संज्ञा पु० दे० "लंगर"।
लँगड़ा–वि० [फ़ा० लंग] जिसका एक पैर बेकाम या टूटा हो।
लँगड़ाना–क्रि० अ० [हिं० लँगड़ा] लंग करते हुए चलना। लँगड़े होकर चलना।

लँगड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० लँगड़ा] एक प्रकार का छंद।

लंगर—संज्ञा पुं० [फा०] १ लोहे का एक प्रकार का बहुत बड़ा काँटा जिसका व्यवहार बड़ी बड़ी नावों या जहाजों को एक ही स्थान पर ठहराए रखने के लिये होता है। २ लकड़ी का वह कुंदा जो किसी हरहाई गाय के गले में बाँधा जाता है। ठेंगुर। ३ लटकती हुई कोई भारी चीज। ४ लोहे की मोटी और भारी जंजीर। ५ चाँदी का तोड़ा जो पैर में पहना जाता है। ६ पहलवानों का लँगोट। ७ कपड़े में के वे टाँके जो दूर दूर पर डाले जाते हैं। कच्ची सिलाई। ८ वह भोजन जो प्रायः नित्य दरिद्रों को बाँटा जाता है। ९ वह स्थान जहाँ दरिद्रों आदि को भोजन बाँटा जाता हो। वि० १ भारी। वजनी। २ नटखट। ढीठ।

मुहा०—लंगर करना ॥ शरारत करना।

लँगरई, लँगराई*†—संज्ञा स्त्री० [हिं० लंगर+आई (प्रत्य०)] ढिठाई। शरारत।

लंगूर—संज्ञा पुं० [सं० लांगूली] १ बंदर। २ पूँछ। दुम। (बंदर की)। ३ एक प्रकार का बड़ा और काले मुँह का बंदर।

लंगूरफल—संज्ञा पुं० दे० 'नारियल'।

लँगूल—संज्ञा पुं० [सं० लांगूल] पूछ। दुम।

लँगोट, लँगोटा—संज्ञा पुं० [सं० लिंग+ओट] [स्त्री० लँगोटी] कमर पर बाँधने का एक प्रकार का बना हुआ वस्त्र जिससे केवल उपस्थ ढका जाता है। रूमाली।

यौ०—लँगोटबंद=ब्रह्मचारी। स्त्री-त्यागी।

लँगोटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० लँगोट] कौपीन। कछनी। भगई।

मुहा०—लँगोटिया यार=बचपन का मित्र। लँगोटी पर फाग खेलना=कम सामर्थ्य होने पर भी बहुत अधिक व्यय करना।

लंघन—संज्ञा पुं० [सं०] १ उपवास। अनाहार। फाका। २ लाँघने की क्रिया। डाँकना। ३ अतिक्रमण।

लँघना*—क्रि० स० दे० 'लाँघना'।

लंठ—वि० [हिं० लट्ठ] मूर्ख। उजड्ड।

लँडूरा—वि० [देश० या सं० लांगल] जिसकी सब पूँछ कट गई हो। (पक्षी)

लंतरानी—संज्ञा स्त्री० [अ०] व्यर्थ की बड़ी बड़ी बातें। शेखी।

लंपट—वि० [सं०] व्यभिचारी। विषयी। कामी। कामुक।

लंपटता—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुराचार। कुकर्म।

लंब—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह रेखा जो किसी दूसरी रेखा पर इस भाँति गिरे कि उसके साथ समकोण बनावे। २ एक राक्षस जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था। ३ अंग। ४ पति।

संज्ञा स्त्री० दे० "बिल्व"।

वि० [सं०] लंबा।

लंबकर्ण—वि० [सं०] जिसके कान लंबे हों।

लंबतड़ंग—वि० [सं० लंब+ताड़+अंग] ताड़ के समान लंबा। बहुत लंबा।

लंबा—वि० [सं० लंब] [स्त्री० लंबी] १ जो किसी एक ही दिशा में बहुत दूर तक चला गया हो। 'चौड़ा' का उल्टा।

मुहा०—लंबा करना=१ रवाना करना। चलता करना। २ जमीन पर पटक या लेटा देना। २ जिसकी ऊँचाई अधिक हो। ३ (समय) जिसका विस्तार अधिक हो। ४ विशाल। दीर्घ। बड़ा।

लंबाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० लंबा] लंबा होने का भाव। लंबापन।

लंबान—संज्ञा स्त्री० [हिं० लंबा] लम्बाई।

लंबित—वि० [सं०] लंबा।

लंबी—वि० स्त्री० [हिं० लंबा] लंबा का स्त्री-लिंग रूप।

मुहा०—लंबी तानना=लेटकर सो जाना।

लंबोतरा—वि० [हिं० लंबा] लंब आकार-वाला। जो कुछ लंबा हो।

लंबोदर—संज्ञा पुं० [सं०] गणेश।

लं—संज्ञा पुं० [सं०] १ इंद्र। २ पृथ्वी।

लउटी—संज्ञा स्त्री० दे० 'लकुटी'।

लकड़बग्घा—संज्ञा पुं० [हिं० लकड़ी+बाघ] एक मांसाहारी जंगली जंतु जो भेड़िए से कुछ बड़ा होता है। लग्घड़।

लकड़हारा–संज्ञा पुं० [हिं० लकड़ी + हारा] जंगल से लकड़ी तोड़कर बेचनेवाला।
लकड़ा–संज्ञा पुं० [हिं० लकड़ी] लकड़ी का मोटा कुंदा। लक्कड़।
लकड़ी–संज्ञा स्त्री० [सं० लगुड़] १. पेड़ का कोई स्थूल अंग जो कटकर उससे अलग हो गया हो। काष्ठ। काठ। २. ईंधन। जलावन। ३. गतका। ४. छड़ी। लाठी।
मुहा०–लकड़ी होना=१. बहुत दुबला पतला होना। २. सूखकर बहुत कड़ा हो जाना।
लक़ब–संज्ञा पुं० [अ०] उपाधि। खिताब।
लक़वा–संज्ञा पुं० [अ०] एक वात रोग जिसमें प्रायः चेहरा टेढ़ा हो जाता है।
लकीर–संज्ञा स्त्री० [सं० रेखा, हिं० लीक] १. वह सीधी आकृति जो बहुत दूर तक एक ही सीध में चली गई हो। रेखा। खत।
मुहा०—लकीर का फ़क़ीर=आँखें बंद करके पुराने ढंग पर चलनेवाला। लकीर पीटना=बिना समझे बूझे पुरानी प्रथा पर चले चलना।
२. धारी। ३. पंक्ति। सतर।
लकुच–संज्ञा पुं० [सं०] बड़हर।
संज्ञा पुं० दे० "लकुट"।
लकुट–संज्ञा स्त्री० [सं० लगुड] लाठी। छड़ी।
संज्ञा पुं० [सं० लकुच] १. एक प्रकार का फलदार वृक्ष। २. लुकाट। लखोट।
लकुटी†–संज्ञा स्त्री० [सं० लगुड] लाठी। छड़ी।
लक्कड़–संज्ञा पुं० [हिं० लकड़ी] काठ का बड़ा कुंदा।
लक्का–संज्ञा पुं० [अ०] एक प्रकार का कबूतर जिसकी पूँछ पंखे सी होती है।
लक्खी–वि० [हिं० लाख] लाख के रंग का। लाखी।
संज्ञा पुं० घोड़े की एक जाति।
संज्ञा पुं० [हिं० लाख (संख्या)] लखपती।
लक्ष–वि० [सं०] एक लाख। सौ हजार।
संज्ञा पुं० [सं०] १. वह अंक जिससे एक लाख की संख्या का ज्ञान हो। २. अस्त्र का एक प्रकार का संहार। ३. दे० "लक्ष्य"।
लक्षण–संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी पदार्थ की वह विशेषता जिसके द्वारा वह पहचाना जाय। चिह्न। निशान। आसार। २. नाम। ३. परिभाषा। ४. शरीर में दिखाई पड़नेवाले वे चिह्न आदि जो किसी रोग के सूचक हों। ५. सामुद्रिक के अनुसार शरीर के अंगों में होनेवाले कुछ विशेष चिह्न जो शुभ या अशुभ माने जाते हैं। ६. शरीर में होनेवाला एक विशेष प्रकार का काला दाग। लच्छन। ७. चाल-ढाल। तौर-तरीका। ८. दे० "लक्ष्मण"।
लक्षणा–संज्ञा स्त्री० [सं०] शब्द की वह शक्ति जिससे उसका अभिप्राय सूचित होता है।
लक्षना*–क्रि० स० दे० "लखना"।
लक्षि–संज्ञा स्त्री० दे० "लक्ष्मी"।
*संज्ञा पुं० दे० "लक्ष्य"।
लक्षित–वि० [सं०] १. बतलाया हुआ। निर्दिष्ट। २. देखा हुआ। ३. अनुमान से समझा या जाना हुआ।
संज्ञा पुं० वह अर्थ जो शब्द की लक्षणा शक्ति के द्वारा ज्ञात होता है।
लक्षितलक्षणा–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की लक्षणा।
लक्षिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह परकीया नायिका जिसका परपुरुष-प्रेम दूसरों को ज्ञात हो।
लक्षी–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में आठ रगण होते हैं। गंगाधर। खंजन।
लक्ष्मण–संज्ञा पुं० [सं०] १. राजा दशरथ के दूसरे पुत्र, जो सुमित्रा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे और जो रामचन्द्र के साथ वन में गए थे। ये शेषनाग के अवतार माने जाते हैं। २. चिह्न। लक्षण।
लक्ष्मी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हिंदुओं की एक प्रसिद्ध देवी जो विष्णु की पत्नी और धन की अधिष्ठात्री मानी जाती हैं। कमला। रमा। २. धन-संपत्ति। दौलत। ३. शोभा। सौंदर्य। छवि। ४. दुर्गा का एक नाम। ५. एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो रगण, एक गुरु और एक लघु अक्षर होता है। ६. आर्या छंद

का पहला भेद। ७ घर की मालकिन। गृहस्वामिनी।
लक्ष्मीधर–संज्ञा पु०[सं०] १. स्रग्विणी छंद का दूसरा नाम। २ विष्णु।
लक्ष्मीपति–संज्ञा पु०[सं०] विष्णु।
लक्ष्य–संज्ञा पु०[सं०] १ वह वस्तु जिस पर किसी प्रकार का निशाना लगाया जाय। निशाना। २ वह जिस पर किसी प्रकार का आक्षेप किया जाय। ३ अभिलषित पदार्थ। उद्देश्य। ४ अस्त्रों का एक प्रकार का संहार। ५ वह अर्थ जो किसी शब्द की लक्षणा शक्ति के द्वारा निकलता हो।
लक्ष्यभेद–संज्ञा पु०[सं०] एक प्रकार का निशाना जिसमें चलते या उड़ते हुए लक्ष्य को भेदते हैं।
लक्ष्यार्थ–संज्ञा पु० [सं०] वह अर्थ जो लक्षणा से निकले।
लखघर–संज्ञा पु० दे० 'लाक्षागृह"।
लखन*|–संज्ञा पु० दे० "लक्ष्मण"।
संज्ञा स्त्री०[हिं० लखना] लखने की क्रिया या भाव।
लखना*|–क्रि० स०[सं० लक्ष] १ लक्षण देखकर अनुमान कर लेना। ताड़ना। २ देखना।
लखपती–संज्ञा पु०[सं० लक्ष + पति] जिसके पास लाखों रुपयों की संपत्ति हो।
लखलखा–संज्ञा पु०[फा०] मूर्च्छा दूर करने का कोई सुगंधित द्रव्य।
लखलुट–वि० [हिं० लाख + लुटाना] १ बहुत बड़ा अपव्ययी।
लखाउ*–संज्ञा पु०[हिं० लखना] १ लक्षण। पहचान। चिह्न। २ चिह्न के रूप में दिया हुआ कोई पदार्थ।
लखाना*|–क्रि० अ०[हिं० लखना] दिखाई पड़ना।
क्रि० स० १ दिखलाना। २ अनुमान करा देना। समझा देना।
लखाव*–संज्ञा पु० दे० "लखाउ"।
लखिमी*|–संज्ञा स्त्री० दे० "लक्ष्मी"।
लखिया*|–संज्ञा पु०[हिं० लखना + इया (प्रत्य०)] लखनेवाला। जो लखता हो।
लखी–संज्ञा पु०[हिं० लाखी] लाख के रंग का घोड़ा। लाखी।
लखेरा–संज्ञा पु०[हिं० लाख + एरा (प्रत्य०)] वह जो लाख की चूड़ी आदि बनाता हो।
लखोट|–संज्ञा स्त्री० [हिं० लाख + ओट (प्रत्य०)] लाख की चूड़ी जो स्त्रियाँ हाथों में पहनती हैं।
लखौटा–संज्ञा स्त्री० [हिं० लाख + औटा (प्रत्य०)] १ चंदन, केसर आदि से बना हुआ अंगराग। २ एक प्रकार का छोटा डिब्बा जिसमें स्त्रियाँ प्रायः सिंदूर आदि रखती हैं।
लखौरी–संज्ञा स्त्री० [सं० लाक्षा, हिं० लाख +औरी (प्रत्य०)] १ एक प्रकार की भ्रमरी या भृङ्गी का घर। २ एक प्रकार की छोटी पतली ईंट। नौ-तेरही ईंट। ककैया ईंट।
संज्ञा स्त्री०[सं० लक्ष [किसी देवता को उसके प्रिय वृक्ष की एक लाख पत्तियाँ या फूल आदि चढ़ाना।
लगत–संज्ञा स्त्री०[हिं० लगना+अत(प्रत्य०)] लगने या लगन होने की क्रिया या भाव।
लग–क्रि० वि०[हिं० लौं] १ तक। पर्यंत। ताईं। २ निकट। समीप। पास।
संज्ञा स्त्री० लगन। लाग। प्रेम।
अव्य० १ वास्ते। लिये। २ साथ। संग।
लगदग–क्रि० वि० दे० "लगभग"।
लगन–संज्ञा स्त्री० [हिं० लगना] १ किसी ओर ध्यान लगने की क्रिया। लौ। २ प्रेम। स्नेह। मुहब्बत। प्यार। ३ लगाव। संबंध।
संज्ञा पु०[सं० लग्न]. १ ब्याह का मुहूर्त या साइत। २ वे दिन जिनमें विवाह आदि होते हों। सहालग। ३ दे० "लग्न"।
संज्ञा पु०[फा०] एक प्रकार की थाली।
लगनपत्री–संज्ञा स्त्री० [सं० लग्नपत्रिका] विवाह-समय के निर्णय की चिट्ठी जो कन्या का पिता वर के पिता को भेजता है।
लगनवट–संज्ञा स्त्री०[हिं० लगन] प्रेम। मुहब्बत।
लगना–क्रि० अ०[सं० लग्न] १. दो पदार्थों

के तल आपस में मिलना। सटना। २. मिलना। जुड़ना। ३. एक चीज का दूसरी चीज पर सीया, जड़ा, टाँका या चिपकाया जाना। ४. सम्मिलित होना। शामिल होना। मिलना। ५. छोर या प्रांत आदि पर पहुँचकर टिकना या रुकना। ६. क्रम से रखा या सजाया जाना। ७. व्यय होना। खर्च होना। ८. जान पड़ना। मालूम होना। ९. स्थापित होना। कायम होना। १०. संबंध या रिश्ते में कुछ होना। ११. आघात पड़ना। चोट पहुँचना। १२. किसी पदार्थ का किसी प्रकार की जलन या चुनचुनाहट आदि उत्पन्न करना। १३. खाद्य पदार्थ का बरतन के तल में जम जाना। १४. आरंभ होना। शुरू होना। १५. जारी होना। चलना। १६. सड़ना। गलना। १७. प्रभाव पड़ना। असर होना।

मुहा०—लगती बात कहना = मर्मभेदी बात कहना। चुटकी लेना।

१८. आरोप होना। १९. हिसाब होना। गणित होना। २०. पीछे पीछे चलना। साथ होना। २१. गौ, भैंस, बकरी आदि दूध देनेवाले पशुओं का दूहा जाना। २२. गड़ना। चुभना। धँसना। २३. छेड़खानी करना। छेड़छाड़ करना। २४. बंद होना। मुँदना। २५. दाँव पर रखा जाना। बदना। २६. घात में रहना। ताक में रहना। २७. होना।

विशेष—यह क्रिया बहुत से शब्दों के साथ लगकर भिन्न भिन्न अर्थ देती है।

संज्ञा पुं० [?] एक प्रकार का जगली मृग।

लगनि*—संज्ञा स्त्री० दे० "लगन"।

लगनी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० लगन = थाली] १. छोटी थाली। रिकाबी। २. परात।

लगभग—क्रि० वि० [हिं० लग = पास + भग (अनु०)] प्रायः। क़रीब क़रीब।

लगमात—संज्ञा स्त्री० [हिं० लगना + सं० मात्रा] स्वरों के वे चिह्न जो उच्चारण के लिये व्यंजनों में जोड़े जाते हैं।

लगर*†—संज्ञा पुं० [देश०] लगड़ पक्षी।

लगलग—वि० [अ० लक़लक़] बहुत दुबला पतला। अति सुकुमार।

लगव*†—वि० [अ० लग़ो] १. झूठ। मिथ्या। असत्य। २. व्यर्थ। बेकार।

लगवाना—क्रि० स० [हिं० लगाना का प्रेर०] लगाने का काम दूसरे से कराना।

लगवार†—संज्ञा पुं० [हिं० लगना] उपपति। यार। आशना।

लगातार—क्रि० वि० [हिं० लगना + तार = सिलसिला] एक के बाद एक। बराबर। निरंतर।

लगान—संज्ञा पुं० [हिं० लगना या लगाना] १. लगने या लगाने की क्रिया या भाव। २. भूमि पर लगनेवाला कर। राजस्व। जमाबंदी। पोत।

लगाना—क्रि० स० [हिं० लगना का स० रूप] १. सतह पर सतह रखना। सटाना। २. मिलाना। जोड़ना। ३. किसी पदार्थ के तल पर कोई चीज़ डालना, फेंकना, रगड़ना, चिपकाना या गिराना। ४. सम्मिलित करना। शामिल करना। ५. वृक्ष आदि आरोपित करना। जमाना। ६. एक ओर या किसी उपयुक्त स्थान पर पहुँचाना। ७. क्रम से रखना या सजाना। सजाना। चुनना। ८. खर्च करना। व्यय करना। ९. अनुभव कराना। मालूम कराना। १०. आघात करना। चोट पहुँचाना। ११. किसी में कोई नई प्रवृत्ति आदि उत्पन्न करना। १२. उपयोग में लाना। काम में लाना। १३. आरोपित करना। अभियोग लगाना।

मुहा०—किसी को लगाकर कुछ कहना या गाली देना = बीच में किसी का संबंध स्थापित करके किसी प्रकार का आरोप करना।

१४ प्रज्वलित करना। जलाना। १५. ठीक स्थान पर बैठाना। जड़ना। संबद्ध करना। १६. गणित करना। हिसाब करना। १७. कान भरना। चग़ली खाना।

यौ०—लगाना बुझाना = लड़ाई झगड़ा कैरा-

ना। दो आदमियों में वैमनस्य उत्पन्न करना। १८ नियुक्त करना। १९ गौ, भैंस, बकरी आदि दूध देनेवाले पशुओं को दूहना। २० गाड़ना। धँसाना। ठोकना। २१ स्पर्श कराना। छुआना। २२ जूए की बाजी पर रखना। दाँव पर रखना। २३ किसी बात का अभिमान करना। २४ अंग पर पहनना, ओढ़ना या रखना। २५ करना।

लगाम–संज्ञा स्त्री० [फा०] १ वह ढाँचा जो घोड़े के मुँह में रखा जाता है और जिसके दोनों ओर रस्सा या चमड़े का तस्मा बँधा रहता है। २ इस ढाँचे के दोनों ओर बँधा हुआ रस्सा या चमड़े का तस्मा जो सवार या हाँकनेवाले के हाथ में रहता है। रास। बाग।

लगार*†–संज्ञा स्त्री० [हिं० लगना + आर (प्रत्य०)] १ *नियमित रूप से कोई काम करना या कोई चीज देना।* बधी। बधेज। २ लगाव। संबंध। ३ तार। क्रम। सिलसिला। ४ लगन। प्रीति। मुहब्बत। ५ वह जो किसी की ओर से भेद लेने के लिये भेजा गया हो। ६ मेली। संबंधी।

लगालगी–संज्ञा स्त्री० [हिं० लगना] १ लाग। लगन। प्रेम। स्नेह। प्रीति। २ संबंध। मेल-जोल।

लगाव–संज्ञा पु० [हिं० लगना+आव (प्रत्य०)] लगे होने का भाव। संबंध। वास्ता।

लगावट–संज्ञा स्त्री० [हिं० लगना + आवट (प्रत्य०)] १ संबंध। वास्ता। लगाव। २ प्रेम। प्रीति। मुहब्बत।

लगावन*†–संज्ञा स्त्री० दे० "लगाव"।

लगावना–क्रि० स० दे० "लगाना"।

लगि*†–अव्य० दे० "लग"।

संज्ञा दे० "लग्गी"।

लगी*†–संज्ञा स्त्री० दे० "लग्गी"।

लगु*†–अव्य० दे० "लग"।

लगुड़–संज्ञा पु० [सं०] डंडा। लाठी।

लगूर*–संज्ञा स्त्री० [सं० लांगूल] पूँछ। दुम।

लगूल*–संज्ञा स्त्री० [सं० लांगूल] पूँछ। दुम।

लगौं†–अव्य० दे० "लग"।

लगौहाँ*–वि० [हिं० लगना+औहाँ (प्रत्य०)] जिसे लगन लगाने की कामना हो। रिझवार।

लग्गा–संज्ञा पु० [सं० लगुड़] १ लंबा बाँस। २ वृक्षों से फल आदि तोड़ने का लंबा बाँस। लकसी।

संज्ञा पु० [हिं० लगना] कार्य्य आरंभ करना। काम में हाथ लगाना।

लग्गी–संज्ञा स्त्री० दे० "लग्गा"।

लग्घड़–संज्ञा पु० [देश०] १ बाज। शचान। २ एक प्रकार का चीता। लकड़बग्घा।

लग्घा–संज्ञा पु० दे० "लग्गा"।

लग्न–संज्ञा पु० [सं०] १ ज्योतिष में दिन का उतना अंश, जितने में किसी एक राशि का उदय रहता है। २ कोई शुभ कार्य्य करने का मुहूर्त। ३ विवाह का समय। ४ *विवाह।* शादी। ५ *विवाह के दिन।* सहालग।

वि० १ लगा हुआ। मिला हुआ। २. लज्जित। ३ आसक्त।

संज्ञा पु० स्त्री० दे० "लगन"।

लग्नपत्र–संज्ञा पु० [सं०] वह पत्रिका जिसमें विवाह के कृत्यों का लग्न ब्योरेवार लिखा जाता है।

लघिमा–संज्ञा स्त्री० [सं० लघिमन्] १ एक सिद्धि जिसे प्राप्त कर लेने पर मनुष्य बहुत छोटा या हलका बन सकता है। २ लघु या ह्रस्व होने का भाव। लघुत्व।

लघु–वि० [सं०] १ शीघ्र। जल्दी। २ कनिष्ठ। छोटा। ३ सुंदर। बढ़िया। ४ निःसार। ५ थोड़ा। कम। ६ हलका।

संज्ञा पु० १ व्याकरण में वह स्वर जो एक ही मात्रा का होता है। जैसे—अ, इ। २ वह जिसमें एक ही मात्रा हो। इसका चिह्न "।" है।

लघुचेता–संज्ञा पु० [सं० लघुचेतस्] वह जिसके विचार तुच्छ और बुरे हों। नीच।

लघुता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लघु होने का

भाव। छोटापन। २. हलकापन। तुच्छता।

लघुपाक–संज्ञा पुं०[सं०] वह खाद्य पदार्थ जो सहज में पच जाय।

लघुमति–वि०[सं०] कम-समझ। मूर्ख।

लघुमान–संज्ञा पुं०[सं०] नायिका का वह मान जो नायक को किसी दूसरी स्त्री से बातचीत करते देखकर उत्पन्न होता है।

लघुशंका–संज्ञा स्त्री०[सं०] पेशाब करना।

लचक–संज्ञा स्त्री०[हिं० लचकाना] १. लचकने की क्रिया या भाव। लचन। झुकाव। २. वह गुण जिसके रहने से कोई वस्तु झुकती हो।

लचकना–क्रि० अ०[हिं० लच (अनु०)] १. लंबे पदार्थ का दबने आदि के कारण बीच से झुकना। लचना। २. स्त्रियों की कमर का कोमलता आदि के कारण झुकना।

लचकनि*–संज्ञा स्त्री०[हिं० लचकना] १. लचीलापन। २. लचक।

लचन–संज्ञा स्त्री० दे० "लचक"।

लचना–क्रि० अ० दे० "लचकना"।

लचार*†–वि० दे० "लाचार"।

लचारी–संज्ञा स्त्री० दे० "लाचारी"।
संज्ञा स्त्री०[देश०] १. भेंट। नजर। २. एक प्रकार का गीत।

लच्छ*–संज्ञा पुं०[सं० लक्ष्य] १. ब्याज। बहाना। मिस। २. निशाना। ताक।
संज्ञा पुं० सौ हजार की संख्या। लाख।
संज्ञा स्त्री० दे० "लक्ष्मी"।

लच्छन*–संज्ञा पुं० दे० "लक्षण"।

लच्छना*–क्रि० स० दे० "लखना"।

लच्छमी–संज्ञा स्त्री० दे० "लक्ष्मी"।

लच्छा–संज्ञा पुं०[अनु०] १. गुच्छे या झब्बे आदि के रूप में लगाए हुए तार। २. किसी चीज के सूत की तरह लंबे और पतले कटे हुए टुकड़े। ३. हाथ या पैर का एक प्रकार का गहना।

लच्छि*–संज्ञा स्त्री०[सं० लक्ष्मी] लक्ष्मी।
संज्ञा पुं०[सं० लक्ष] लाख की संख्या।

लच्छित*–वि०[सं० लक्षित] १. आलोकित। देखा हुआ। २. निशान किया हुआ। अंकित। ३. लक्षणवाला।

लच्छिनिवास*–संज्ञा पुं०[सं० लक्ष्मीनिवास] विष्णु। नारायण।

लच्छी–वि०[देश०] एक प्रकार का घोड़ा।
संज्ञा स्त्री० दे० "लक्ष्मी"।
संज्ञा स्त्री०[हिं० लच्छा] छोटा लच्छा। अंटी

लच्छेदार–वि०[हिं० लच्छा + फ़ा० दार (प्रत्य०)] १. (खाद्य पदार्थ जिसमें लच्छे पड़े हों। २. (बात-चीत) मजेदार या श्रुतिमधुर।

लछन–संज्ञा पुं०[सं० लक्ष्मण] लक्ष्मण।
संज्ञा पुं० दे० "लक्षण"।

लछना†–क्रि० अ० दे० "लखना"।

लछमन–संज्ञा पुं० दे० "लक्ष्मण"।

लछमन झूला–संज्ञा पुं०[हिं० लछमन + झूला] रस्सों या तारों आदि से बना पुल।

लछमना–संज्ञा स्त्री० दे० "लक्ष्मणा"।

लछमी–संज्ञा स्त्री० दे० "लक्ष्मी"।

लज*–संज्ञा स्त्री० दे० "लाज"।

लजना–क्रि० अ० दे० "लजाना"।

लजवाना–क्रि० स०[हिं० लजाना] दूसरे को लज्जित करना।

लजाधुर†–वि०[सं० लज्जाधर] जो बहुत लज्जा करे। लज्जावान्। शर्मीला।
संज्ञा पुं० लजालू नाम का पौधा।

लजाना–क्रि० अ०[सं० लज्जा] लज्जित होना। शर्म में पड़ना।
क्रि० स० लज्जित करना।

लजारु†–संज्ञा पुं०[सं० लज्जालु] लजालू पौधा।

लजालू–संज्ञा पुं०[सं० लज्जालु] एक काँटेदार छोटा पौधा जिसकी पत्तियाँ छूने से सिकुड़कर बंद हो जाती है।

लजावन*†–क्रि० स० दे० "लजाना"।

लजियाना*†–क्रि० अ० स० दे० "लजाना"।

लजीला–वि० दे० "लज्जाशील"।

लजुरी‡–संज्ञा स्त्री०[सं० रज्जु] कूएँ से पानी भरने की डोरी। रस्सी।

लजोर*†–वि० दे० "लज्जाशील"।

लजोहा, लजौहाँ–वि०[सं० लज्जावह] [स्त्री लजौहीं] जिसमें लज्जा हो। लज्जाशील।

लज्ज़त–संज्ञा स्त्री० [अ०] स्वाद। ज़ायका।
लज्जा–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० लज्जित] १ लाज। शर्म। हया। २ मान मर्य्यादा। पत। इज्ज़त।
लज्जाप्राया–संज्ञा स्त्री० [सं०] मुग्धा नायिका के चार भेदों में से एक। (केशव)
लज्जावती–वि० स्त्री० [सं०] शर्मीली।
लज्जावान्–वि० [स्त्री० लज्जावती] दे० "लज्जाशील"।
लज्जाशील–वि० [सं०] जिसमें लज्जा हो। लजीला।
लज्जित–वि० [सं०] शर्म में पड़ा हुआ। शर्माया हुआ।
लट–संज्ञा स्त्री० [सं० लट्वा] १ बालों का गुच्छा। केशपाश। अलक। केशलता। मुहा०—लट छिटकाना = सिर के बालों को खोलकर इधर-उधर बिखराना। २ एक में उलझे हुए बालों का गुच्छा। संज्ञा स्त्री० [हिं० लपट] लपट। लौ।
लटक–संज्ञा स्त्री० [हिं० लटकना] १ लटकने की क्रिया या भाव। २ झुकाव। लचक। ३ अंगों की मनोहर चेष्टा। अंग भंगी।
लटकन–संज्ञा पु० [हिं० लटकना] १ दे० "लटक"। २ लटकनेवाली चीज़। लटक। ३ नाक में पहनने का एक गहना। ४ कलँगी या सिरपेच में लगे हुए रत्नों का गुच्छा। संज्ञा पु० [?] एक पेड़ जिसके बीजों से बढ़िया गेरुआ रंग निकलता है।
लटकना–क्रि० अ० [सं० लटन = झूलना] १ ऊँचे स्थान से लगकर नीचे की ओर कुछ दूर तक फैला रहना। झूलना। २ किसी ऊँचे आधार पर इस प्रकार टिकना कि सब भाग नीचे की ओर अधर में हो। टँगना। ३ किसी खड़ी वस्तु का किसी ओर झुकना। ४ लचकना। बल खाना। मुहा०—लटकती चाल = बल खाती हुई मनोहर चाल। ५ किसी काम का बिना पूरा हुए पड़ा रहना। देर होना।
लटकाना–क्रि० स० [हिं० लटकाना का प्रेर०] लटकने का काम दूसरे से कराना।
लटका–संज्ञा पु० [हिं० लटक] १ गति। चाल। ढब। २ बनावटी चेष्टा। हाव-भाव। ३ बातचीत का बनावटी ढंग। ४ मंत्र-तंत्र या उपचार आदि की छोटी युक्ति। टोटका। संक्षिप्त उपचार।
लटकाना–क्रि० स० [हिं० लटकना का सक० रूप] किसी को लटकने में प्रवृत्त करना।
लटकीला–वि० [हिं० लटक] [स्त्री० लटकीली] लटकता या झूमता हुआ।
लटकौवाँ–वि० [हिं० लटकाना] लटकनेवाला जो लटकता हो।
लटजीरा–संज्ञा पु० [लट ? + हिं० जीरा] १ अपामार्ग। चिचड़ा। २ एक प्रकार का जड़हन धान।
लटना–क्रि० अ० [सं० लड] १ थककर गिर जाना। लड़खड़ाना। २ अशक्त होना। दुबला और कमज़ोर होना। ३ शक्ति और उत्साह से रहित या निकम्मा होना। ३ व्याकुल या विकल होना। क्रि० अ० [सं० लल] १ ललचाना। चाह करना। लुभाना। २ प्रेमपूर्वक तत्पर होना। लीन होना।
लटपटा–वि० [हिं० लटपटाना] [स्त्री० लटपटी] १ गिरता पड़ता। लड़खड़ाता हुआ। २ ढीला-ढाला। जो चुस्त और दुरुस्त न हो। अस्त-व्यस्त। ३ (शब्द) जो स्पष्ट या ठीक क्रम से न निकले। टूटा-फूटा। ४ अव्यवस्थित। अंडबंड। ५ थककर गिरा हुआ। अशक्त। वि० १ जो न बहुत पतला हो और न बहुत गाढ़ा। लुटपुटा। २ गिजा हुआ। मला दला हुआ। (कपड़ा आदि)
लटपटान–संज्ञा स्त्री० [हिं० लटपटाना] १ लड़खड़ाहट। २ लटक। लचक।
लटपटाना–क्रि० अ० [सं० लड + पत] १ गिरना पड़ना। लड़खड़ाना। २ डिगना। चूक जाना। ठीक तरह से न चलना। क्रि० अ० [सं० लल] १ लुभाना। मोहित

होना। २. लीन होना। अनुरक्त होना।

लटा†–वि०[सं० लट्ट][स्त्री० लटी] १. लोलुप। २. लंपट। लुच्चा। नीच। ३. तुच्छ। हीन। ४. बुरा। खराब।

लटापटी–संज्ञा स्त्री० [हिं० लटपटाना] १. लटपटाने की क्रिया या भाव। २. लड़ाई झगड़ा।

लटापोट*†–वि०[हिं० लोट पोट] मोहित। मुग्ध।

लटी–स्त्री० [हिं० लटा = बुरा] १. बुरी बात। २. झूठी। बात। गप। ३. साधुनी। भक्तिन। ४. वेश्या। रंडी।

लटुआ–संज्ञा पुं० दे० "लट्टू"।

लटुक–संज्ञा पुं० दे० "लकुट"।

लटूरी–संज्ञा स्त्री० दे० "लटूरी"।

लटू–संज्ञा पुं० दे० "लट्टू"।

लटूरी–संज्ञा स्त्री०[हिं० लट] सिर के बालों का लटकता हुआ गुच्छा। केश। अलक।

लटोरा–संज्ञा पुं०[हिं० लस=चिपचिपाहट]। एक प्रकार का छोटा पेड़ जिसके फलों में बहुत सा लसदार गूदा होता है।

लट्टपट्ट ‡–वि० दे० "लथपथ"।

लट्टू–संज्ञा पुं०[सं० लुठन = लुढ़कना] एक गोल खिलौना जिसे सूत के द्वारा जमीन पर फेंककर नचाते हैं।

मुहा०—(किसी पर) लट्टू होना = १. मोहित होना। आसक्त होना। २. प्राप्ति के लिये उत्कंठित होना।

लट्ठ–संज्ञा पुं०[सं० यष्टि] बड़ी लाठी।

लट्ठबाज–वि०[हिं० लट्ठ फ़ा० + बाज] लाठी लड़नेवाला। लठैत।

लट्ठमार–वि० [हिं० लट्ठ+मारना] १. लट्ठ मारनेवाला। २. अप्रिय और कठोर। कर्कश। कड़वा।

लट्ठा–संज्ञा पुं०[हिं० लट्ठ] १. लकड़ी का बहुत लंबा टुकड़ा। बल्ला। शहतीर। २. लकड़ी का बल्ला। धरन। कड़ी। ३. एक प्रकार का गाढ़ा मोटा कपड़ा।

लठैत–संज्ञा पुं० दे० "लट्ठबाज"।

लड़ंत–संज्ञा स्त्री०[हिं० लड़ना] १. लड़ाई। भिड़ंत। २. सामना। मुकाबला।

लड़–संज्ञा स्त्री० [सं० यष्टि] १. एक ही प्रकार की वस्तुओं की पंक्ति। माला। २. रस्सी का एक तार। पान। ३. पंक्ति। श्रेणी।

लड़कई†–संज्ञा स्त्री० दे० "लड़कपन"।

लड़कखेल–संज्ञा पुं० [हिं० लड़का + खेल] १. बालकों का खेल। २. सहज काम।

लड़कपन–संज्ञा पुं० [हिं० लड़का + पन] १. वह अवस्था जिसमें मनुष्य बालक हो। बाल्यावस्था। २. चपलता। चंचलता।

लड़कबुद्धि–संज्ञा स्त्री० [हिं० लड़का + बुद्धि] बालकों की सी समझ। नासमझी।

लड़का–संज्ञा पुं०[सं० लट अथवा हिं० लाड़ = दुलार][स्त्री० लड़की] १. थोड़ी अवस्था का मनुष्य। बालक। २. पुत्र। बेटा।

मुहा०—लड़कों का खेल=१. बिना महत्त्व की बात। २. सहज बात या काम।

लड़का-बाला–संज्ञा पुं० [हिं० लड़का + सं० बाल] १. संतान। औलाद। २. परिवार।

लड़कोरी–वि० स्त्री० [हिं० लड़का] (स्त्री) जिसकी गोद में लड़का हो

लड़खड़ाना–क्रि० अ०[सं० लड़ = डोलना = खड़ा] १. पूर्ण रूप से स्थित न रहने के कारण इधर-उधर झुक पड़ना। झोंका खाना। डगमगाना। २. डगमगाकर गिरना। विचलित होना। चूकना।

लड़ना–क्रि० अ०[सं० रणन] १. एक दूसरे को चोट पहुँचाना। युद्ध करना। भिड़ना। २. मल्ल युद्ध करना। ३. झगड़ा करना। हुज्जत करना। तकरार करना। ४. बहस करना। ५. टक्कर खाना। टकराना। भिड़ना। ६. व्यवहार आदि में सफलता के लिये एक दूसरे के विरुद्ध प्रयत्न करना। ७. पूर्ण रूप से घटित होना। सटीक बैठना। ८. बिच्छू, भिड़ आदि का डंक मारना। ९. लक्ष्य पर पहुँचना। भिड़ना।

लड़बड़ाना–क्रि० अ० दे० "लड़खड़ाना"।

लड़बावला–वि०[सं० लड़=लड़कों का सा + बावला][स्त्री० लड़बावरी] १. अल्हड़। मूर्ख। नासमझ। अहमक। २. गँवार।

अनाड़ी। ३ जिससे मूर्खता प्रकट हो।
लड़ाई–संज्ञा स्त्री०[हिं० लड़ना+आई(प्रत्य०)] १ एक दूसरे पर वार। भिड़ंत। युद्ध। २ संग्राम। जंग। युद्ध। ३ मल्लयुद्ध। कुश्ती। ४ झगड़ा। तकरार। हुज्जत। ५ वादविवाद। बहस। ६ टक्कर। ७ व्यवहार या मामले में सफलता के लिये एक दूसरे के विरुद्ध प्रयत्न या चाल। ८ अनबन। विरोध। वैर।
लड़ाका–वि०[हिं० लड़ना+आका (प्रत्य०)] [स्त्री० लड़ाकी] १ योद्धा। सिपाही। २ झगड़ा करनेवाला। झगड़ालू।
लड़ाना–क्रि० स०[हिं० लड़ना का प्रर०] १ दूसरे को लड़ने में प्रवृत्त करना। २ झगड़े में प्रवृत्त करना। ३ टक्कर मिलाना। भिड़ाना। ४ लक्ष्य पर पहुँचाना। ५ परस्पर उलझाना। ६ सफलता के लिये व्यवहार में लाना।
क्रि० स०[हिं० लाड़=प्यार] लाड़ प्यार करना। दुलार करना।
लड़ायता†–वि० दे० लड़ता।
लड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० लड़।
लड़ुआ–संज्ञा पु० दे० लड्डू।
लड़ैता–वि० [हिं० लाड़=प्यार+ऐता (प्रत्य०)] [स्त्री० लड़ैती] १ लाडला। दुलारा। २ जो लाड़-प्यार के कारण बहुत इतराया हो। धृष्ट। शोख। ३ प्यारा। प्रिय।
वि०[हिं० लड़ना] लड़नेवाला। योद्धा।
लड्डू–संज्ञा पु०[सं०लड्डुक] गोल बनी हुई मिठाई। मोदक।
मुहा०—ठग के लड्डू खाना=पागल होना। नासमझी करना। होश हवास में न रहना। मन के लड्डू खाना या फोड़ना=व्यर्थ किसी बड़े लाभ की कल्पना करना।
लड़याना*†–क्रि० स०[हिं० लाड़=प्यार] लाड़-प्यार करना। दुलार करना।
लढ़िया†–संज्ञा स्त्री०[हिं०लढ़कना]बैल गाड़ी
लत–संज्ञा स्त्री०[सं० रति] बुरी आदत। दुर्व्यसन। बुरी टेव।
लतखोर, लतखोरा–वि०[हिं०लात+फा० खोर=खानेवाला][स्त्री० लतखोरिन] १ सदा लात खानेवाला। २ नीच। कमीना। ३ दरवाजे पर पड़ा हुआ पैर पोछने का कपड़ा। पायदाज। गुलमगदा।
लतर–संज्ञा स्त्री०[सं० लता] बेल। वल्ली।
लतरी–संज्ञा स्त्री०[देश०] एक पौधा जिसकी फलियों से दाल निकलती है।
लता–संज्ञा स्त्री०[सं०] १ वह पौधा जो डोरी के रूप में जमीन पर फैले अथवा वृक्ष के साथ लिपटकर ऊपर चढ़े। वल्ली। बेल। बौर। २ कोमल काड या शाखा। ३ सुंदरी स्त्री।
लताकुंज, लतागृह–संज्ञा पु०[सं०] लताओं से मंडप की तरह छाया हुआ स्थान।
लताड़ना–क्रि० स०[हिं० लात] १ पैरों से कुचलना। रौंदना। २ हैरान करना।
लता-पता–संज्ञा पु०[सं० लतापत्र] १ पेड़ पत्ते। २ जड़ी-बूटी।
लताभवन–संज्ञा पु०[सं०] लतागृह।
लतामंडप–संज्ञा पु०[सं०] लतागृह।
लतिका–संज्ञा स्त्री०[सं०] छोटी लता। बेल।
लतियाना†–क्रि० स०[हिं० लात+आना (प्रत्य०)] १ पैरों से दबाना या रौंदना। खूब लात मारना।
लत्ता–संज्ञा पु०[सं० लत्तक] १ फटा पुराना कपड़ा। चीथड़ा। २ कपड़े का टुकड़ा।
यौ०—कपड़ा-लत्ता=पहनने के वस्त्र।
लत्ती–संज्ञा स्त्री०[हिं० लात] पशुओं का पाद प्रहार। लात।
संज्ञा स्त्री०[हिं० लत्ता] कपड़े की लंबी धज्जी।
लथपथ वि०[अनु०] १ भीगा हुआ। तरा बोर। २ (कीचड़ आदि में) सना हुआ।
लथाड़–संज्ञा स्त्री०[अनु० लथपथ] १ जमीन पर पटककर लोटाने या घसीटने की क्रिया। चपेट। २ पराजय। हार। ३ झिड़की।
लथाड़ना–क्रि० स० दे० लथेड़ना।
लथेड़ना–क्रि० स०[अनु०लथपथ] १ कीचड़ आदि से लथपथ गंदा करना। २ पटककर इधर उधर लोटाना या घसीटना। ३ हैरान करना। थकाना। ४ डाँटना। डपटना।

लदना–क्रि० अ० [सं० ऋदध] १. भारयुक्त होना। बोझ ऊपर लेना। २. आच्छादित होना। पूर्ण होना। ३. सामान ढोनेवाली सवारी पर बोझ भरा जाना। ४. बोझ का डाला या रखा जाना। ५. जेलखाने जाना। कैद होना।

लदवाना–क्रि० स० [हि० लादना का प्रेर०] लादने का काम दूसरे से कराना।

लदाऊ*†–वि० दे० "लदाव"।

लदाव–संज्ञा पु०[हिं० लादना] १. लादने की क्रिया या भाव। २. भार। बोझ। ३. छत आदि का पटाव। ४. ईंटों की जुड़ाई जो बिना धरन या कड़ी के अधर में ठहरी हो।

लदुवा, लद्दू–वि० [हि० लादना] बोझ ढोनेवाला। जिस पर बोझ लादा जाय।

लद्धड़–वि०[हि० लादना] सुस्त। आलसी।

लद्धना*–क्रि०स० [सं० लब्ध] प्राप्त करना।

लप–संज्ञा स्त्री०[अनु०] १. लचीली चीज़ को पकड़कर हिलाने का व्यापार। २. छुरी, तलवार आदि की चमक की गति।

संज्ञा पु० [देश०] अँजली।

लपक–संज्ञा स्त्री० [अनु० लप] १. ज्वाला। लपट। लौ। २. चमक। लपलपाहट। ३. तेज़ी। वेग।

लपकना–क्रि० अ० [हिं० लपक] १. झपट पड़ना। तुरत दौड़ पड़ना।

मुहा०—लपककर = १. तुरंत तेज़ी से जाकर। २. तुरंत। झट से।

२. आक्रमण करने या लेने के लिये झपटना।

लपट–संज्ञा स्त्री० [हिं० लौ+पट] १. अग्नि-शिखा। ज्वाला। आग की लौ। २. तपी हुई वायु। आँच। ३. गंध से भरा वायु का झोंका। ४. गंध। महक। यू।

लपटना†–क्रि० अ० दे० "लिपटना"।

लपटाना†–क्रि० स० दे० १. "लिपटाना"। २. दे० "लपेटना"।

*†क्रि० अ० १. संलग्न होना। सटना। २. उलझना। फँसना।

लपना†–क्रि० अ० [अनु० लप लप] १. झोंक के साथ इधर-उधर लचना। २. झुकना। लचना। ३. लपकना। ललचना। ४. हैरान होना।

लपलपाना–क्रि० अ० [अनु० लप लप] १. लपना। २. लंबी कोमल वस्तु का इधर-उधर हिलना-डुलना। ३. छुरी, तलवार आदि का चमकना। झलकना।

क्रि० स० १. दे० "लपाना"। २ छुरी, तलवार आदि को हिलाकर चमकाना।

लपसी–संज्ञा स्त्री० [सं० लप्सिका] १. थोड़े घी का हलुआ। २. गीली गाढ़ी वस्तु। ३. पानी में औटाया हुआ आटा जो कैदियों को दिया जाता है। लपटा।

लपाना–क्रि० स० [अनु० लपलप] १. लचीली छड़ी आदि को इधर-उधर लचाना। फटकारना। २. आगे बढ़ाना।

लपेट–संज्ञा स्त्री० [हिं० लपटना] १. लपटने की क्रिया या भाव। २. बंधन का चक्कर। घुमाव। फेरा। ३. ऐंठन। बल। मरोड़। ४. घेरा। परिधि। ५. उलझन। जाल या चक्कर।

लपेटन–संज्ञा स्त्री० दे० "लपेट"।

संज्ञा पु० [हिं० लपेटना] १. लपेटनेवाली वस्तु। २. बाँधने का कपड़ा। वेष्टन। बेठन। ३. पैरों में उलझनेवाली वस्तु।

लपेटना–क्रि० स० [हिं० लिपटना] १. घुमाव या फेरे के साथ चारों ओर फँसाना। चक्कर देकर चारों ओर ले जाना। २. फैली हुई वस्तु को लच्छे या गट्ठर के रूप में करना। समेटना। ३. कपड़े आदि के अंदर बाँधना। ४. पकड़ लेना। ५. गति-विधि बंद करना। ६. उलझन में डालना। झंझट में फँसाना।

लपेटवाँ–वि० [हिं० लपेटना] १. जो लपेटा हो। २. जिसमें सोने चाँदी के तार लपेटे गए हों। ३. जिसका अर्थ छिपा हो। गूढ़। व्यंग्य।

लफंगा–वि० [फा० लफ़ंग] १. लंपट। दुश्चरित्र। २. शोहदा। आवारा।

लफना*†–क्रि० अ० दे० "लपना"।

लपलपानि*†–संज्ञा स्त्री० दे० "लपलपाना"।
लपाना*†–क्रि० स० दे० "लपाना"।
लफ़्ज़–संज्ञा पुं० [अ०] शब्द।
लबझना*†–क्रि० अ० [देश] उलझना।
लबड़-धोंधों–संज्ञा स्त्री० [हिं० लबाड़+धूम] १. भूठमूठ का हल्ला। २ गड़बड़ी। अंधेर। कुव्यवस्था। ३ बेईमानी की चाल।
लबदना*†–क्रि० अ० [सं० लप=बकना] १. भूठ बोलना। २ गप हाँकना।
लबरा†–वि० दे० "लबार"।
लबादा–संज्ञा पुं० [फा०] १ रूईदार चोगा। दगला। २ अबा। चोगा।
लबार†–वि० [सं० लपन=बकना] १ भूठा। मिथ्यावादी। २ गप्पी। प्रपंची।
लबारी–संज्ञा स्त्री० [हिं० लबार] भूठ बोलने का काम।
वि० १ भूठा। २ चुगलखोर।
लबालब–क्रि० वि० [फा०] मुँह या किनारे तक। छलकता हुआ
लबेदा–संज्ञा पुं० [सं० लगुड] [स्त्री० अल्पा० लबेदी] मोटा बड़ा डंडा।
लब्ध–वि० [सं०] १ मिला हुआ। प्राप्त। २ भाग करने से आया हुआ फल। (गणित)
लब्धप्रतिष्ठ–वि० [सं०] प्रतिष्ठित।
लभ्य–वि० [सं०] १ पाने योग्य। जो मिल सके। २ उचित। मुनासिब।
लमकना†–क्रि० अ० [हिं० लपकना] १ लपकना। २ उत्कंठित होना।
लमतड़ंग–वि० [हिं० लंबा+ताड़+अंग] [स्त्री० लमतड़ंगी] बहुत लंबा या ऊँचा।
लमधी†–संज्ञा पुं० [देश०] समधी का बाप।
लमाना*†–क्रि० स० [हिं० लंबा+ना(प्रत्य०)] १ लंबा करना। २ दूर तक आगे बढ़ाना। क्रि० अ० दूर निकल जाना।
लय–संज्ञा पुं० [सं०] १ एक पदार्थ का दूसरे में मिलना। प्रवेश। २ विलीन होना। मग्नता। ३ ध्यान में डूबना। एकाग्रता। ४ अनुराग। प्रेम। ५ कार्य्य का फिर कारण के रूप में परिणत हो जाना। ६ जगत् का नाश। प्रलय। ७ विनाश। लोप। ८. मिल जाना। सादृश्य। ९ संगीत में नृत्य, गीत और वाद्य की समता।
संज्ञा स्त्री० १ गीत गाने का ढंग या तर्ज़। धुन। २ संगीत में, सम।
लर*†–संज्ञा स्त्री० दे० "लड़"।
लरकई*–संज्ञा स्त्री० दे० "लड़कपन"।
लरकना*†–क्रि० अ० दे० "लटकना"।
लरकिनी*†–संज्ञा स्त्री० दे० "लड़की"।
लरखरना*†–क्रि० अ० दे० "लड़खड़ाना"।
लरजना–क्रि० अ० [फा० लरज़ा=कंप] १ काँपना। हिलना। २ दहल जाना। डरना।
लरझर*‡–वि० [हिं० लड़+भड़ना] बहुत अधिक। प्रचुर।
लरना*–क्रि० अ० दे० "लड़ना"।
लरनि*–संज्ञा स्त्री० [हिं० लड़ना] लड़ाई।
लराई*†–संज्ञा स्त्री० दे० "लड़ाई"।
लरिकई*†–संज्ञा स्त्री० दे० "लड़कपन"।
लरिक-सलोरी†–संज्ञा स्त्री० [हिं० लरिका+लोल = चंचल] लड़कों का खेल। खेलवाड़।
लरिका*†–संज्ञा पुं० दे० "लड़का"।
लरिकाई*†–संज्ञा स्त्री० दे० "लड़कपन"।
लरी*–संज्ञा स्त्री० दे० "लड़ी"।
ललक–संज्ञा स्त्री० [सं० ललन] प्रबल अभिलाषा। गहरी चाह।
ललकना–क्रि० अ० [हिं० ललक] १ पाने की गहरी इच्छा करना। लालसा करना। ललचना। २ चाह की उमंग से भरना।
ललकार–संज्ञा स्त्री० [हिं० ले ले अनु०+कार] ललकारने की क्रिया या भाव।
ललकारना–क्रि० स० [हिं० ललकार] १ युद्ध या प्रतिद्वंद्विता के लिये उच्च स्वर से आह्वान करना। प्रचारण। २ लड़ने के लिये उसकाना या बढ़ावा देना।
ललचना–क्रि० अ० [हिं० लालच] १ लालच करना। २ मोहित होना। लुब्ध होना। ३ अभिलाषा से अधीर होना।
ललचाना–क्रि० स० [हिं० ललचना] १. किसी के मन में लालच उत्पन्न करना। २

मोहित करना। लुभाना। ३. कोई वस्तु दिखाकर उसके पाने के लिये अधीर करना। मुहा०—जी या मन ललचाना = मन मोहित करना। मुग्ध करना। लुभाना।
*†क्रि० अ० दे० "ललचना"।
ललचौहाँ–वि०[हिं० लालच+औहाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० ललचौहीं] लालच से भरा। ललचाया हुआ।
ललन–संज्ञा पुं० [सं०] १. प्यारा बालक। २. प्रिय नायक या पति। ३. क्रीड़ा।
ललना–संज्ञा स्त्री० [सं०] १.स्त्री। कामिनी। २. जिह्वा। जीभ। ३. एक वर्णवृत्त।
लला–संज्ञा पुं० [हिं० लाल] [स्त्री० लली] १. प्यारा या दुलारा लड़का। २. प्रिय नायक या पति।
ललाई–संज्ञा स्त्री० दे० "लाली"।
ललाट–संज्ञा पुं० [सं०] १. भाल। मस्तक। माथा। २. किस्मत का लिखा।
ललाट-पटल–संज्ञा पुं० [सं०] मस्तक का तल। माथे की सतह।
ललाट-रेखा–संज्ञा स्त्री० [सं०] कपाल का लेख। भाग्यलेख।
ललाना*†–क्रि० अ० [सं० ललन] लोभ करना। ललचना। लालायित होना।
ललाम–वि० [सं०] १. रमणीय। सुंदर। २. लाल। सुर्ख। ३. श्रेष्ठ। प्रधान।
संज्ञा पु० १. अलंकार। गहना। २. रत्न। ३. चिह्न। निशान। ४. घोड़ा।
ललित–वि० [सं०] १. सुंदर। मनोहर। २. मनचाहा। प्यारा। ३. हिलता डोलता हुआ।
संज्ञा पु० १. शृंगार रस में एक कायिक हाव या अंग-चेष्टा जिसमें सुकुमारता (नजाकत) के साथ अंग हिलाए जाते हैं। २. एक विषम वर्णवृत्त। ३. एक अलंकार जिसमें वर्ण्य-वस्तु (बात) के स्थान पर उसके प्रतिबिंब का वर्णन किया जाता है।
ललितई*†–संज्ञा स्त्री० दे० "ललिताई"।
ललित कला–संज्ञा स्त्री० [सं०ललित+कला] वे कलाएँ जिनके व्यक्त करने में किसी प्रकार के सौंदर्य की अपेक्षा हो। जैसे—संगीत, चित्रकला, वास्तुकला आदि।
ललितपद–संज्ञा पुं० [सं०] एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में २८ मात्राएँ होती हैं। नरेंद्र। दोवै। सार।
ललिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में त, भ, ज, र होता है। २. राधिका की प्रधान आठ सखियों में से एक।
ललिताई*–संज्ञा स्त्री० [हिं० ललित] सुंदरता।
ललितोपमा–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें उपमेय और उपमान की समता जताने के लिये सम, तुल्य आदि के वाचक पद न रखकर ऐसे पद लाए जाते हैं, जिनसे बराबरी, मित्रता, निरादर, ईर्ष्या इत्यादि भाव प्रकट होते हैं।
लली–संज्ञा स्त्री० [हिं० लला] १. लड़की के लिये प्यार का शब्द। २. नायिका। प्रेयसी। प्रेमिका।
ललौहाँ–वि० [हिं० लाल] [स्त्री० ललौंहीं] सुर्खी मायल। ललाई लिए हुए।
लल्ला–संज्ञा पु० दे० "लला"।
लल्लो–संज्ञा स्त्री० [सं०ललना] जीभ। जबान
लल्लो-चप्पो–संज्ञा स्त्री० [सं० लल + अनु० चप] चिकनी-चुपड़ी बात। ठकुर सोहाती।
लल्लो-पत्तो†–संज्ञा स्त्री० दे० "लल्लो-चप्पो"
लवंग–संज्ञा पु० [सं०] लौंग। (मसाला)
लव–संज्ञा पुं० [सं०] १. बहुत थोड़ी मात्रा। २. दो काष्ठा अर्थात् छत्तीस निमेष का अल्प समय। ३. लवा नाम की चिड़िया। ४. लवंग। ५. श्री रामचंद्र के दो यमज पुत्रों में से एक।
लवण–संज्ञा पुं० [सं०] १. नमक। नोन। २. दे० "लवणासुर"। ३. दे० "लवणसमुद्र"।
लवणसमुद्र–संज्ञा पुं० [सं०] पुराणोक्त सात समुद्रों में से एक। खारे पानी का समुद्र।
लवणासुर–संज्ञा पु०[सं०] मधु नामक असुर का पुत्र जिसे शत्रुघ्न ने मारा था।
लवन–संज्ञा पुं० [सं०] १. काटना। छेदना।

२ मन की कटाई। लुनाई। लौनी।

लवना–क्रि० स० दे० "लुनना"।

लवनाई*–संज्ञा स्त्री० दे० "लावण्य"।

लवनि, लवनी–संज्ञा स्त्री० [सं० लवन] खेत में अनाज की पकी फसल की कटाई। लुनाई।

संज्ञा स्त्री० [सं० नवनीत] मक्खन।

लवर†–संज्ञा स्त्री० [हि० लपट] अग्नि की लपट। ज्वाला।

लवलासी*†–संज्ञा स्त्री० [हि० लव=प्रेम+लासी=लसी, लगाव] प्रेम की लगावट।

लवली–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हरफारेवरी नाम का पेड़ और उसका फल। २ एक विषम वर्णवृत्त।

लवलीन–वि० [हि० लव+लीन] तन्मय। तल्लीन। मग्न।

लवलेश–संज्ञा पु० [सं०] १ अत्यंत अल्प मात्रा। २ अल्प संसर्ग।

लवा†–संज्ञा पु० [सं० लाजा] भुने हुए धान या ज्वार की खील। लावा।

संज्ञा पु० [सं० लव] तीतर की जाति का एक पक्षी।

लवाई–वि० [देश०] वह गाय जिसका बच्चा अभी बहुत ही छोटा हो।

संज्ञा स्त्री० [हि० लवना+आई(प्रत्य०)] खेत की फ़सल की कटाई। लुनाई।

लवाज़मा–संज्ञा पु० [अ० लवाज़िम] १ किसी के साथ रहनेवाला दल-बल और साज सामान। २ आवश्यक सामग्री।

लवारा–संज्ञा पु० [हि० लवाई] गौ का बच्चा

लवासी*†–वि० [सं० लव=बकना+आसी (प्रत्य०)] १ गप्पी। बकवादी। २ लपट।

लशकर–संज्ञा पु० [फा०] १ सेना। फौज। २ भीड़भाड़। दल। ३ सेना का पड़ाव। छावनी। ४ जहाज़ में काम करनेवाला का दल।

लशकरी–वि० [फा० लशकर] १ फौज का। सेना-संबंधी। २ जहाज़ पर काम करने वाला। खलासी। जहाज़ी।

संज्ञा स्त्री० जहाज़ियों या खलासियों की भाषा

लषन*–संज्ञा पु० दे० "लक्ष्मण"।

लस–संज्ञा पु० [सं०] १ चिपकने या चिपकाने का गुण। चिपचिपाहट। २ वह जिसके लगाव से एक वस्तु दूसरी वस्तु से चिपक जाय। लासा। ३ चित्त लगाने की बान। आकर्षण।

लसदार–वि० [हि० लस+फा० दार(प्रत्य०)] जिसमें लस हो। लसीला।

लसना–क्रि० स० [सं० लसन] एक वस्तु को दूसरी वस्तु के साथ सटाना। चिपकाना।

*क्रि० अ० १ शोभित होना। छजना। फबना। २ विराजना।

लसनि*–संज्ञा स्त्री० [हि० लसना] १ स्थिति। विद्यमानता। २ शोभा। छटा।

लसम–वि० [देश०] दूषित। खोटा।

लसलसा–वि० दे० "लसदार"।

लसी–संज्ञा स्त्री० [हि० लस] १ लस। चिपचिपाहट। २ दिल लगने की वस्तु। आकर्षण। ३ लाभ का योग। फायदे का डौल। ४ संबंध। लगाव। ५ दूध और पानी मिला शरबत।

लसीला–वि० [हि० लस] [स्त्री० लसीली] १ लसदार। २ सुंदर। शोभायुक्त।

लसोढ़ा–संज्ञा पु० [हि० लस=चिपचिपाहट] एक प्रकार का पेड़ जिसके फल औषध के काम में आते हैं।

लस्टम-पस्टम‡–क्रि० वि० [देश०] किसी न किसी तरह से। ज्यों-त्यों।

लस्त–वि० [हि० लटना] १ थका हुआ। शिथिल। २ अशक्त।

लस्सी–संज्ञा स्त्री० [हि० लयस] १ चिपचिपाहट। लसी। २ छाछ। मठा। तक्र।

लहँगा–संज्ञा पु० [हि० लक=कमर+अंग] कमर के नीचे का सारा अंग ढाँकने के लिये स्त्रियों का एक घेरेदार पहनावा।

लहक–संज्ञा स्त्री० [हि० लहकना] १ लहकने की क्रिया या भाव। २ आग की लपट। ३ शोभा। छवि। ४ चमक। द्युति।

लहकना–क्रि० अ० [अनु०] १ झोंके खाना। लहराना। २ हवा का बहना। ३ आग

का इधर-उधर लपट छोड़ना। दहकना। ४. लपकना। ५. उत्कंठित होना।

लहकाना, लहकारना–क्रि० स० [हिं० लहकना] लहकने में किसी को प्रवृत्त करना।

लहकौर, लहकौरि–संज्ञा स्त्री० [हिं० लहना+कौर(ग्रास)] विवाह की एक रीति जिसमें दूल्हा और दुलहिन एक दूसरे के मुँह में कौर(ग्रास) डालते हैं।

लहजा–संज्ञा पुं० [अ० लहजः] गाने या बोलने का ढंग। स्वर। लय।

लहज़ा–संज्ञा पुं० [अ०] पल। क्षण।

लहनदार–संज्ञा पुं०[हिं० लहना + फ़ा० दार] ऋण देनेवाला। महाजन।

लहना–क्रि० स० [सं० लभन] प्राप्त करना। संज्ञा पुं० [सं० लभन] १. उधार दिया हुआ रुपया-पैसा। २ रुपया-पैसा जो किसी कारण किसी से मिलनेवाला हो।

लहनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० लहना] १. प्राप्ति। २. फलभोग।

लहबर–संज्ञा पुं०[हिं० लहर ?] १. एक प्रकार का लंबा पहनावा। लबादा। चोगा। २. झंडा। निशान।

लहमा–संज्ञा पुं० [अ० लहम:] पल। क्षण।

लहर–संज्ञा स्त्री० [स० लहरी] १. ऊँची उठती हुई जल की राशि। बड़ा हिलोरा। मौज। २. उमंग। जोश। ३. मन की मौज। ४. बेहोशी, पीड़ा आदि का वेग जो कुछ अंतर पर रह रहकर उत्पन्न हो। झोंका। मुहा०—साँप काटने की लहर=साँप से काटे गए आदमी की वह अवस्था जिसमें वेहोशी से बीच बीच में वह जाग उठता है। ५. आनंद की उमग। मज़ा। मौज। यौ०—लहर बहर=आनद और सुख। ६ इधर-उधर मुड़ती हुई टेढ़ी चाल। ७. चलते हुए सर्प की सी कुटिल रेखा। ८. हवा का झोंका। महक। लपट।

लहरदार–वि०[हिं०लहर+फा०दार(प्रत्य०)] जो सीधा न जाकर बल खाता हुआ गया हो।

लहरना–क्रि० अ० दे० "लहराना"।

लहर-पटोर–संज्ञा पुं० [हिं० लहर + पट] एक प्रकार का धारीदार रेशमी कपड़ा।

लहरा–संज्ञा पुं० [हिं० लहर] १. लहर। तरंग। २. मौज। आनंद। मजा।

लहराना–क्रि०अ० [हिं०लहर+आना(प्रत्य०)] १. हवा के झोंके में इधर-उधर हिलना-डोलना। लहरें खाना। २. पानी का हवा के झोके से उठना और गिरना। बहना या हिलोरा मारना। ३. इधर-उधर मुड़ते या झोंका खाते हुए चलना। ४. मन का उमंग में होना। ५. उत्कंठित होना। लपकना। ६. आग की लपट का हिलना। दहकना। भड़कना। ७. शोभित होना। लसना। विराजना।

क्रि० स० १. हवा के झोके में इधर-उधर हिलाना। २. वक्र गति से ले जाना।

लहरिया–संज्ञा पुं० [हिं० लहर] १. लहरदार चिह्न। टेढ़ी मेढ़ी गई हुई लकीरों की श्रेणी। २. एक प्रकार का कपड़ा जिसमें रंग-बिरंगी टेढ़ी-मेढ़ी लकीरें बनी होती हैं। ३. उपर्युक्त प्रकार के कपड़े की साड़ी या धोती।

संज्ञा स्त्री० दे० "लहर"।

लहरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] लहर। तरंग। †वि० [हिं० लहर + ई (प्रत्य०)] मन की तरग के अनुसार चलनेवाला। मनमौजी।

लहलहा–वि० [हिं०लहलहाना] [स्त्री० लहलही] १. लहलहाता हुआ। हरा-भरा। २. आनंद में पूर्ण। प्रफुल्ल। ३. हृष्ट-पुष्ट।

लहलहाना–क्रि०अ०[हिं०लहरना(पत्तियों का)] १. हरी पत्तियों से भरना। हरा-भरा होना। २. प्रफुल्लित होना। खुशी से भरना। ३. सूखे पेड़ या पौधे में फिर से पत्तियाँ निकलना। पनपना।

लहसुन–संज्ञा पुं० [स० लशुन] एक पौधा जिसकी जड़ गोल गाँठ के रूप में होती और मसाले के काम में आती है।

लहसुनिया–संज्ञा पुं० [हिं० लहसुन] धूमिल रंग का एक रत्न। रुद्राक्षक।

लहा*–संज्ञा पुं० दे० "लाह"।

लहाछेह–संज्ञा पुं० [?] १. नाच की एक

गति। २ नाचने में तेजी और झपट।
लहालह†*-वि० दे० "लहलहा"।
लहालोट-वि० [हिं० लाभ, लाह+लोटना] १. हँसी से लोटता हुआ। २ खुशी से भरा हुआ। ३ प्रेम-मग्न। मोहित। लट्टू।
लहासी-सज्ञा स्त्री० [स० लमस] मोटी रस्सी।
लहिं†-अव्य० [हिं० लहना] पर्य्यंत। तक।
लहु*†-अव्य० दे० "लौ"।
लहुरा†-वि०[स०लघु][स्त्री० लहुरी] छोटा।
लहू-सज्ञा पु० [स० लोहू] रक्त। खून।
मुहा०—लहू-लुहान होना=खून से भर जाना। अत्यंत लहू बहना।
लहेरा-सज्ञा पु० [हिं० लाह=लाख+एरा (प्रत्य०)] लाह का पक्का रग चढ़ानेवाला।
लाँक†-सज्ञा स्त्री०[हिं० लक] कमर। कटि।
लाँग-सज्ञा स्त्री० [स० लांगूल=पूँछ] धोती का वह भाग जो पीछे की ओर कमर में खोस लिया जाता है। काछ।
लाँगल-सज्ञा पु० [स०] खेत जोतने का हल।
लांगली-सज्ञा पु० [स० लांगलिन] १ बलराम। २ नारियल। ३ साँप।
सज्ञा स्त्री० [स०] १ पुराणानुसार एक नदी का नाम। २ कलियारी। ३ मजीठ।
लांगूली-सज्ञा पु० [स० लांगूलिन] बदर।
लाँघना-क्रि० स० [स० लघन] इस पार से उस पार जाना। डाँकना। नाँघना।
लाँच-सज्ञा स्त्री० [देश०] रिशवत। घूस।
लांछन-सज्ञा पु० [स०] १ चिह्न। निशान। २ दाग। ३ दोष। कलक।
लांछनित-वि० दे० "लांछित"।
लाँबा†*-वि० दे० "लबा"।
लाई*†-सज्ञा पु० [स० अलात=लूक] अग्नि।
लाइक-वि० दे० "लायक"।
लाई†-सज्ञा स्त्री० [स० लाजा] धान का लावा।
सज्ञा स्त्री० [हिं० लगाना] चुगली। निंदा।
यौ०—लाई-लुतरी=१ चुगली। शिकायत। २ चुगलखोर। (स्त्री०)
लाकड़ी-सज्ञा स्त्री० दे० "लकड़ी"।
लाक्षणिक-वि० [स०] १ जिससे लक्षण प्रकट हो। २ लक्षण-सबधी।
सज्ञा पु० [स०] १. वह छद जिसके प्रत्येक चरण में ३२ मात्राएँ हों। २ लक्षण जाननेवाला।
लाक्षा-सज्ञा स्त्री० [स०] लाख। लाह।
लाक्षागृह-सज्ञा पु० [स०] लाख का वह घर जिसे दुर्योधन ने पाडवों को जला देने की इच्छा से बनवाया था।
लाक्षारस-सज्ञा पु० [स०] महावर।
लाख-वि० [स० लक्ष] १. सौ हजार। २ बहुत अधिक। बहुत ज्यादा।
सज्ञा पु० सौ हजार की सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—१०००००।
क्रि० वि० बहुत। अधिक।
मुहा०—लाख से लीख होना=सब कुछ से कुछ न रह जाना।
सज्ञा स्त्री० [स०] १ एक प्रसिद्ध लाल पदार्थ जो अनेक प्रकार के वृक्षों की टहनियों पर कई प्रकार के कीड़ों से बनता है। लाह। २ वे छोटे लाल कीड़े जिनसे उक्त द्रव्य निकलता है।
लाखना-क्रि० अ० [हिं० लाख+ना (प्रत्य०)] लाख लगाकर कोई छेद बद करना।
*† क्रि० स० [स० लक्षण] जानना।
लाखागृह-सज्ञा पु० दे० "लाक्षागृह"।
लाखी-वि० [हिं० लाख+ई (प्रत्य०)] लाख के रग का। मटमैला लाल।
सज्ञा पु० लाख के रग का घोड़ा।
लाग-सज्ञा स्त्री० [हिं० लगना] १ सपर्क। सबध। लगाव। २ प्रेम। प्रीति। मुहब्बत। ३ लगन। मन की तत्परता। ४ युक्ति। तरकीब। उपाय। ५ वह स्वाँग आदि जिसमें कोई विशेष कौशल हो। ६ प्रतियोगिता। चढ़ा-ऊपरी। ७ बैर। शत्रुता। दुश्मनी। ८ जादू। मत्र। टोना। ९ वह नियत धन जो शुभ अवसरों पर ब्राह्मणों, भाटों आदि को दिया जाता है। १०, भूमि-कर। लगान। ११ एक प्रकार का नृत्य।
क्रि० वि० [हिं० लौं] पर्य्यंत। तक।
लाग-डाँट-सज्ञा स्त्री० [हिं० लाग=बैर+डाँट]

१. शत्रुता। दुश्मनी। २. प्रतियोगिता। चढ़ा-ऊपरी।

संज्ञा स्त्री० [सं०लागदंड] नृत्य की एक क्रिया।

लागत–संज्ञा स्त्री० [हिं० लगना] वह खर्च जो किसी चीज की तैयारी या बनाने में लगे।

लागना*–क्रि० अ० दे० "लगना"।

लागि*†–अव्य० [हिं०लगना] १. कारण। हेतु। २. निमित्त। लिये। ३. द्वारा।

क्रि० वि० [हिं० लौं] तक। पर्य्यंत।

लागू†–वि० [हिं० लगना] जो लगने योग्य हो। प्रयुक्त या चरितार्थ होनेवाला।

लागे†–अव्य० [हिं० लगना] वास्ते। लिये।

लाघव–संज्ञा पुं० [सं०] १. लघु होने का भाव। लघुता। २. कमी। अल्पता। ३. हाथ की सफाई। फुर्ती। तेजी। ४. आरोग्य। तंदुरुस्ती।

अव्य० [सं०] फुर्ती से। सहज में।

लाघवी*–संज्ञा स्त्री० [सं० लाघव+ई (प्रत्य०)] फुर्ती। शीघ्रता।

लाचार–वि० [फ़ा०] जिसका कुछ वश न चलता हो। विवश। मजबूर।

क्रि० वि० विवश या मजबूर होकर।

लाचारी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] मजबूरी। विवशता।

लाछन*–संज्ञा पुं० दे० "लांछन"।

लाज–संज्ञा स्त्री० दे० "लज्जा"।

लाजक–संज्ञा पुं० [सं०लाजा] धान का लावा।

लाजना*|–क्रि० अ० [हिं० लाज+ना (प्रत्य०)] लज्जित होना। शरमाना।

लाजवंत–वि० [हिं० लाज+वंत (प्रत्य०)] [स्त्री०लाजवंती] जिसे लज्जा हो। शर्मदार।

लाजवंती–संज्ञा स्त्री० [हिं० लजालू] लजालू नाम का पौधा। छुई-मुई। लजाधुर।

लाजवर्द–संज्ञा पुं० [फ़ा०] एक प्रकार का प्रसिद्ध कीमती पत्थर। राजवर्तक।

ला-जवाब–वि० [फ़ा०] १.अनुपम। बेजोड़। २. निरुत्तर। चुप। खामोश।

लाजा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चावल। २. भूनकर फुलाया हुआ धान। लावा।

लाजिम–वि० [अ०] १. जो अवश्य कर्तव्य हो। २. उचित। मुनासिब। वाजिब।

लाजिमी–वि० [अ० लाजिम] जरूरी। आवश्यक।

लाट–संज्ञा स्त्री० [हिं० लट्ठा ?] मोटा और ऊँचा खंभा।

संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्राचीन देश जहाँ अब अहमदाबाद आदि नगर हैं। २. इस देश के निवासी। ३. दे० "लाटानुप्रास"।

लाटानुप्रास–संज्ञा पुं० [सं०] वह शब्दालंकार जिसमें शब्दों की पुनरुक्ति तो होती है, परन्तु अन्वय के हेर-फेर से तात्पर्य भिन्न हो जाता है।

लाटिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] साहित्य में एक प्रकार की रचना या रीति। इसमें छोटे छोटे पद और समास होते हैं।

लाटी†–संज्ञा स्त्री० [अनु० लट लट=गाढ़ा या चिपचिपा होना] वह अवस्था जिसमें मुँह का थूक और होंठ सूख जाते हैं।

संज्ञा स्त्री० [सं०] लाटिका रीति।

लाठ–संज्ञा स्त्री० दे० "लाट"।

लाठी–संज्ञा स्त्री० [सं० यष्टि] डंडा। लकड़ी।

मुहा०—लाठी चलना = लाठियों की मार-पीट होना।

लाड़–संज्ञा पुं० [सं० लालन] बच्चों का लालन। प्यार। दुलार।

लाड़लड़ैता–वि० दे० "लाड़ला"।

लाड़ला–वि० [हिं० लाड़] [स्त्री० लाड़ली] जिसका लाड़ किया जाय। प्यारा। दुलारा।

लात–संज्ञा स्त्री० [?] १. पैर। पाँव। पद। २. पैर से किया हुआ आघात या पाद-प्रहार।

मुहा०—लात खाना = पैरों की ठोकर या मार सहना। लात मारना = तुच्छ समझकर छोड़ देना। त्याग देना।

लाद–संज्ञा स्त्री० [हिं० लादना] १. लादने की क्रिया। २. पेट। उदर। ३. आँत। अँतड़ी।

लादना–क्रि० स० [सं० लब्ध] १. किसी चीज पर बहुत सी वस्तुएँ रखना। २. ढोने या ले जाने के लिये वस्तुओं को भरना। किसी बात का भार रखना।

लादी–संज्ञा स्त्री० [हिं० लादना] वह गठरी

जो किसी पशु पर लादी जाती है।
लाधना*†–क्रि० स० [सं० लब्ध] प्राप्त करना। पाना।
लानत–संज्ञा स्त्री० [अ० ल्अनत] धिक्कार। फिटकार। भर्त्सना।
लाना–क्रि० अ० [हिं० लेना + आना] १ कोई चीज़ उठाकर या अपने साथ लेकर आना। २ उपस्थित करना। सामने रखना।
क्रि० स० [हिं० लाय = आग] आग लगाना। जलाना।
*† क्रि० स० [हिं० लगाना] लगाना।
लाने*†–अव्य० [हिं० लाना] वास्ते। लिये।
लापता–वि० [अ० ला = बिना + हिं० पता] १ जिसका पता न लगे। २ गुप्त। गायब।
लापरवा, लापरवाह–वि० [अ० ला + फा० परवाह] १ जिसे किसी बात की परवा न हो। बेफिक्र। २ असावधान।
लापरवाही–संज्ञा स्त्री० [अ० ला + फ़ा० परवाह] १ बेफिक्री। २ असावधानी।
लापसी†–संज्ञा स्त्री० दे० "लपसी"।
लाबर*†–वि० दे० 'लबार'।
लाभ–संज्ञा पु० [सं०] १ मिलना। प्राप्ति। लब्धि। २ मुनाफा। नफा। ३ उपकार। भलाई।
लाभकारी, लाभदायक–वि० [सं० लाभ कारिन्] फायदा करनेवाला। गुणकारक।
लाम–संज्ञा पु० [फा० लाम] १ सेना। फ़ौज। २ बहुत से लोगों का समूह।
[illegible]–संज्ञा पु० [सं० लामज्जक] खस की [illegible]ह का एक प्रकार का तृण। पीला वाला।
लामा–संज्ञा पु० [ति०] तिब्बत या मंगोलिया के बौद्धों का धर्माचार्य।
वि० दे० 'लंबा'।
लामें†–क्रि० वि० [हिं० लाम = लंबा] दूर। अंतर पर।
लाय*–संज्ञा स्त्री० [सं० अलात] १ लपट। ज्वाला। २ आग। अग्नि।
लायक़–वि० [अ०] १ उचित। ठीक। वाजिब। २ उपयुक्त। मुनासिब। ३ सुयोग्य। गुणवान्। ४ समर्थ। सामर्थ्यवान्।
संज्ञा पु० [सं० लाजा] धान का लावा।
लायक़ी–संज्ञा स्त्री० [अ० लायक] लायक होने का भाव या धर्म्म। योग्यता।
लार–संज्ञा स्त्री० [सं० लाला] १ वह पतला लसदार थूक जो मुँह में से तार के रूप में निकलता है।
मुहा०—मुँह से लार टपकना = किसी चीज़ को देखकर उसके पाने की परम लालसा होना। २ कतार। पंक्ति। ३ लासा। लुआब।
क्रि० वि० [मार० लैर = पीछे] साथ। पीछे।
मुहा०—लार लगाना = फँसाना। बझाना।
लाल–संज्ञा पु० [सं० लालक] १ छोटा और प्रिय बालक। २ बेटा। पुत्र। लड़का। ३ प्यारा आदमी। ४ श्रीकृष्णचंद्र।
संज्ञा पु० [सं० लालन] दुलार। लाड़। प्यार। संज्ञा पु० दे० "लार"।
*†संज्ञा स्त्री० [सं० लालसा] इच्छा। चाह।
संज्ञा पु० दे० "मानिक"।
वि० १ रक्तवर्ण। सुर्ख। २ बहुत अधिक क्रुद्ध।
मुहा०—लाल पड़ना या होना = क्रुद्ध होना। नाराज़ होना। लाल पीले होना = गुस्सा होना। क्रोध करना।
३ (खलाड़ी) जो खेल में औरों से पहले जीत गया हो।
मुहा०—लाल होना = बहुत अधिक संपत्ति पाकर संपन्न होना।
संज्ञा पु० एक प्रसिद्ध छोटी चिड़िया। इसकी मादा को 'मुनियाँ' कहते हैं।
लालचंदन–संज्ञा पु० [हिं० लाल + चंदन] एक प्रकार का चंदन जिसे घिसने से लाल रंग और अच्छी सुगंध निकलती है। रक्त-चंदन। देवी चंदन।
लालच–संज्ञा पु० [सं० लालसा] [वि० लाल-ची] १ कोई चीज़ पाने की बहुत बुरी तरह इच्छा करना। २ लोभ। लोलुपता।
लालचहा†–वि० दे० 'लालची'।
लालची–वि० [हिं० लालच + ई (प्रत्य०)] जिसे बहुत अधिक लालच हो। लोभी।
लालटेन–संज्ञा स्त्री० [अं० लैंटर्न] किसी प्रकार

का वह खाना आदि जिसमें तेल का खजाना और जलाने के लिये बत्ती लगी रहती है; और जिसके चारों ओर, शीशा या कोई पारदर्शी पदार्थ लगा रहता है। कंदील।

लालड़ी–संज्ञा पुं० [हिं० लाल(रत्न) + ड़ी (प्रत्य०)] एक प्रकार का लाल नगीना।

लालन–संज्ञा पुं० [सं०] प्रेमपूर्वक बालकों का आदर करना। लाड़। प्यार।

संज्ञा पुं० [हिं० लाला] १. प्रिय पुत्र। प्यारा बच्चा। २. कुमार। बालक।

क्रि० अ० लाड़ करना। प्यार करना।

लालना*–क्रि० स० [सं० लालन] दुलार करना। लाड़ करना। प्यार करना।

लाल-बुझक्कड़–संज्ञा पुं० [हिं० लाल + बूझना] बातों का अटकलपच्चू मतलब लगानेवाला।

लालमन–संज्ञा पुं० [हिं० लाल + मणि] १. श्रीकृष्ण। २. एक प्रकार का तोता।

लालमिर्च–संज्ञा स्त्री० दे० "मिर्च"।

लालरी–संज्ञा स्त्री० दे० "लालड़ी"।

लालसमुद्र–संज्ञा पुं० दे० "लाल सागर"।

लालसा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बहुत अधिक इच्छा या चाह। लिप्सा। २. उत्सुकता।

लाल सागर–संज्ञा पुं० [हिं० लाल + सागर] भारतीय महासागर का वह अंश जो अरब और अफ्रिका के मध्य में पड़ता है।

लालसिखी†–संज्ञा पुं० [हिं० लाल + शिखा] मुर्गा।

लालसी*–वि० [सं० लालसा] अभिलाषा या इच्छा करनेवाला। उत्सुक।

लाला–संज्ञा पुं० [सं० लालक] १. एक प्रकार का संबोधन। महाशय। साहब। २. कायस्थ जाति का सूचक एक शब्द। ३. छोटे प्रिय बच्चे के लिये संबोधन।

संज्ञा स्त्री० [सं०] मुँह से निकलनेवाली लार। थूक।

संज्ञा पुं० [फ़ा०] पोस्त का लाल रंग का फूल।

वि० [हिं० लाल] लाल रंग का।

लालायित–वि० [सं०] ललचाया हुआ।

लालित–वि० [सं०] १. दुलारा। प्यारा। २. जो पाला-पोसा गया हो।

लालित्य–संज्ञा पुं० [सं०] ललित का भाव; सौंदर्य। सुंदरता। सरसता।

लालिमा–संज्ञा स्त्री० [सं०] लाली। सुर्खी।

लाली–संज्ञा स्त्री० [हिं० लाल + ई (प्रत्य०)] १. लाल होने का भाव। ललाई। लाल-पन। सुर्खी। २. इज्जत। पत। आबरू।

लाले–संज्ञा पुं० [सं० लाला] लालसा। अभिलाषा।

मुहा०—किसी चीज के लाले पड़ना = किसी चीज के लिये बहुत तरसना।

लाल्हा†–संज्ञा पुं० दे० "मरसा"। (साग)

लाव*†–संज्ञा स्त्री० [हिं० लाय] आग।

संज्ञा स्त्री० [देश०] मोटा रस्सा।

लावक–संज्ञा पुं० [सं०] लवा पक्षी।

लावण्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. लवण का भाव या धर्म। नमकपन। २. अत्यंत सुंदरता।

लावदार–वि० [हिं० लाव = आग फा० दार (प्रत्य०)] (तोप) जो छोड़ी जाने या रंजक देने के लिये तैयार हो।

संज्ञा पुं० तोप छोड़नेवाला। तोपची।

लावनता*–संज्ञा स्त्री० दे० "लावण्य"।

लावना*†–क्रि० स० दे० "लाना"।

क्रि० स० [हिं० लगाना] १. लगाना। स्पर्श कराना। २. जलाना। आग लगाना।

लावनि*–संज्ञा स्त्री० [सं० लावण्य] सौंदर्य।

लावनी–संज्ञा स्त्री० [देश०] १. एक प्रकार का छंद। २. इस छंद का एक प्रकार जो प्रायः चंग बजाकर गाया जाता है। ख्याल।

लावल्द–वि० [फ़ा०] निःसंतान।

लावा–संज्ञा पुं० [सं०] लवा नामक पक्षी।

संज्ञा पुं० [सं० लाजा] भूना हुआ धान, या रामदाना आदि जो भुनने के कारण फूटकर फूल जाता है। खील। लाई। फुल्ला।

लावा-परछन–संज्ञा पुं० [हिं० लावा + परछना] विवाह के समय की एक रीति।

लावारिस–संज्ञा पुं० [अ०][वि० लावारिसी] वह जिसका कोई उत्तराधिकारी या वारिस न हो।

लाश–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] किसी प्राणी का मृतक देह। कोप। मुरदा। शव।

लाव*–संज्ञा पु०, वि० दे० "लाग"।
लावना*†–क्रि० स० दे० "लखना"।
लास–संज्ञा पु० [सं० लास्य] १. एक प्रकार का नाच। २ नटक।
लासा–संज्ञा पु० [हिं० रस] १. कोई लसदार चीज। लेप। लुआब। २. एक प्रकार का चिपचिपा पदार्थ जो बहेलिये लोग चिड़ियों को फँसाने के लिये बनाते हैं।
लासानी–वि० [अ०] अद्वितीय। बेजोड़।
लासि–संज्ञा पु० दे० "लास्य"।
लास्य–संज्ञा पु० [सं०] १ नृत्य। नाच। २ वह नृत्य जो कोमल अंगों से द्वारा और जिससे शृंगार आदि कोमल रसों का उद्दीपन होता हो।
लाह*–संज्ञा स्त्री० [सं० लाक्षा] लाख। चपड़ा। संज्ञा पु० [सं० लाभ] लाभ। नफा। संज्ञा स्त्री० [?] चमक। आभा। कांति।
लाहल–संज्ञा पु० दे० "लाहौल"।
लाही*–संज्ञा स्त्री० [सं० लाक्षा] १ दे० "लाख"। २ लाख से मिलता-जुलता एक कीड़ा जो फसल को प्राय हानि पहुँचाता है। वि० मटमैलापन लिए लाल।
लाहु*–संज्ञा पु० [सं० लाभ] नफा। लाभ।
लाहौल–संज्ञा पु० [अ०] एक अरबी वाक्य का पहला शब्द जिसका व्यवहार प्राय भूत प्रेत आदि को भगाने या घृणा प्रकट करने के लिये किया जाता है।
लिंग–संज्ञा पु० [सं०] १ चिह्न। लक्षण। निशान। २ वह जिससे किसी वस्तु का अनुमान हो। ३ सांख्य के अनुसार मूल प्रकृति। ४ पुरुष की गुप्त इंद्रिय। शिश्न। ५ शिव की एक विशेष प्रकार की मूर्ति। ६ व्याकरण में वह भेद जिससे पुरुष और स्त्री का पता लगता है। जैसे, पुल्लिंग, स्त्रीलिंग।
लिंगदेह–संज्ञा पु० [सं०] वह सूक्ष्म शरीर जो इस स्थूल शरीर के नष्ट होने पर भी कर्मों के फल भोगने के लिये जीवात्मा के साथ लगा रहता है। (अध्यात्म)
लिंगपुराण–संज्ञा पु० [सं०] अठारह पुराणों में से एक जिसमें शिव का माहात्म्य वर्णित है।
लिंगशरीर–संज्ञा पु० दे० "लिंगदेह"।
लिंगायत–संज्ञा पु० [सं०] एक शैव संप्रदाय जिसका प्रचार दक्षिण में बहुत है।
लिंगी–संज्ञा पु० [सं० लिंगिन्] १. चिह्नवाला। निशानवाला। २ आडंबरी। धर्मध्वजी।
लिंगेंद्रिय–संज्ञा पु० [सं०] पुरुषों की मूत्रेंद्रिय।
लिए–हिंदी का एक कारक-चिह्न जो संप्रदान में आता है, और जिस शब्द के आगे लगता है, उसके अर्थ या निमित्त किसी क्रिया का होना सूचित करता है। जैसे—उसके लिए।
लिक्खाड़–संज्ञा पु० [हिं० लिखना] बहुत लिखनेवाला। भारी लेखक। (व्यंग्य)
लिक्षा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जूँ का अंडा। लीख। २ एक परिमाण जो कई प्रकार का कहा गया है।
लिखत–संज्ञा स्त्री० [सं० लिखित] १ लिखी हुई बात। लेख। २ दस्तावेज।
लिखधार*–संज्ञा पु० [हिं० लिखना + धार (प्रत्य०)] लिखनेवाला। मुहर्रिर या मुंशी।
लिखना–क्रि० स० [सं० लिखन] १. चिह्न करना। अंकित करना। २ स्याही में डूबी हुई कलम से अक्षरों की आकृति बनाना। लिपिबद्ध करना। ३ चित्रित करना। चित्र बनाना। ४ पुस्तक, लेख या काव्य आदि की रचना करना।
लिखाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० लिखना] १ लेख। लिपि। २ लिखने का कार्य्य। ३ लिखने का ढंग। लिखावट। ४ लिखने की मजदूरी।
लिखाना–क्रि० स० [सं० लिखन] दूसरे के द्वारा लिखने का काम कराना।
लिखापढ़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० लिखना+पढ़ना] १ पत्र-व्यवहार। चिट्ठियों का आना जाना। २ किसी विषय को कागज पर लिखकर निश्चित या पक्का करना।
लिखावट–संज्ञा स्त्री० [हिं० लिखना+आवट (प्रत्य०)] १. लेख। लिपि। २. लिखने का ढंग।
लिखित–वि० [सं०] लिखा हुआ। अंकित।

लिखितक–संज्ञा पुं० [सं० लिखित] एक प्रकार के प्राचीन चौखूंटे अक्षर।
लिख्या–संज्ञा स्त्री० दे० "लिक्षा"।
लिच्छवि–संज्ञा पुं० [सं०] एक इतिहास-प्रसिद्ध राजवंश जिसका राज्य नैपाल मगध और कोशल में था।
लिटाना–क्रि० स० [हिं० लेटना] दूसरे को लेटने में प्रवृत्त कराना।
लिट्ट–संज्ञा पुं० [देश०] [स्त्री० अल्पा० लिट्टी] मोटी रोटी। अंगाकड़ी। बाटी।
लिडार†–संज्ञा पुं० [देश०] शृगाल। गीदड़। वि० डरपोक। कायर। बुजदिल।
लिपटना–क्रि० अ० [सं० लिप्त] १. एक वस्तु का दूसरी को घेरकर उससे खूब सट जाना। चिमटना। २. गले लगना। आलिंगन करना। ३. किसी काम में जी-जान से लग जाना।
लिपटाना–क्रि० स० [हिं० लिपटना का स० रूप] १. संलग्न करना। चिमटाना। २. आलिंगन करना। गले लगाना।
लिपड़ा–संज्ञा पुं० [देश०] कपड़ा। वि० [हिं० लेप] गीला और चिपचिपा। संज्ञा स्त्री० दे० "लिबड़ी"।
लिपना–क्रि० अ० [हिं० लिप] १. लीपा या पोता जाना। २. रंग या गीली वस्तु का फैल जाना।
लिपवाना–क्रि० स० [हिं० लीपना] लीपने का काम दूसरे से कराना।
लिपाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० लीपना] लीपने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
लिपाना–क्रि० स० [हिं० लीपना] १. रंग या किसी गीली वस्तु की तह चढ़वाना। पुताना। २. चूने, मिट्टी, गोबर आदि लेप कराना।
लिपि–संज्ञा स्त्री [सं०] १. अक्षर या वर्ण के अंकित चिह्न। लिखावट। २. अक्षर लिखने की प्रणाली। जैसे—ब्राह्मी लिपि, अरबी लिपि। ३. लिखे हुए अक्षर या बात। लेख।
लिपिबद्ध–वि० [सं०] लिखा हुआ। लिखित।
लिप्त–वि० [सं०] १. लिपा हुआ। पुता हुआ। २. जिसकी पतली तह चढ़ी हो। ३. खूब तत्पर। लीन। अनुरक्त।
लिप्सा–संज्ञा स्त्री० [सं०] लालच। लोभ।
लिफ़ाफ़ा–संज्ञा पुं० [अ०] १. कागज की बनी हुई वह चौकोर थैली जिसके अंदर कागज-पत्र रखकर भेजे जाते हैं। २. दिखावटी कपड़े लत्ते। ३. ऊपरी आडंबर। मुलम्मा। क़लई। ४. जल्दी नष्ट हो जानेवाली वस्तु।
लिबड़ी–संज्ञा [हिं० लुगड़ी ?] कपड़ा-लत्ता।
यौ०—लिबड़ी बरतना या बारदाना = निर्वाह का मामूली सामान। असबाब।
लिबास–संज्ञा पुं० [अ०] पहनने का कपड़ा। आच्छादन। पहनावा। पोशाक।
लियाक़त–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. योग्यता। क़ाबिलीयत। २. गुण। हुनर। ३. सामर्थ्य। ४. शील। शिष्टता।
लिलाट, लिलार*†–संज्ञा पुं० दे० "ललाट"।
लिलोही†–वि० [सं० लल = चाह करना] लालची।
लिवाना–क्रि० स० [हिं० लेना या लाना] लेने या लाने का काम दूसरे से कराना।
लिवाल–संज्ञा पुं० [हिं० लेना + वाल (प्रत्य०)] खरीदने या लेनेवाला।
लिसोड़ा–संज्ञा पुं० [हिं० लस = चिपचिपाहट] एक मँझोला पेड़ जिसके फल छोटे बेर के बराबर होते हैं।
लिहाज–संज्ञा पुं० [अ०] १. व्यवहार या बरताव में किसी बात का ध्यान। २. मेहरबानी का खयाल। कृपा-दृष्टि। ३. मुरव्वत। मुलाहज़ा। शील-संकोच। ४. पक्षपात। तरफ़दारी। ५. सम्मान या मर्यादा का ध्यान। ६. लज्जा। शर्म। हया।
लिहाड़ा–वि० [देश०] १. नीच। वाहियात। गिरा हुआ। २. खराब। निकम्मा।
लिहाड़ी†–संज्ञा स्त्री० [देश०] उपहास। निंदा।
लिहाफ़–संज्ञा पुं० [अ०] रात को सोते

समय ओढ़ने का रूईदार कपड़ा। भारी रजाई।

लिहित –वि० [स० लिह्] चाटता हुआ।

लीक–सज्ञा स्त्री० [लिग्] १ लकीर। रेखा।

मुहा०–लीक करके=दे० 'लीक खींचकर"। लीक खिचना=१ किसी बात का अटल और दृढ़ होना। २ मर्य्यादा बँधना। ३ नाम बँधना। प्रतिष्ठा स्थिर होना। लीक खींचकर= निश्चयपूर्वक। जोर देकर।

२ गहरी पड़ी हुई लकीर।

मुहा०–लीक पीटना = चली आई हुई प्रथा का ही अनुसरण करना।

३ मर्य्यादा। नाम। यश। ४ बँधी हुई मर्य्यादा। लोक-नियम। ५ रीति। प्रथा। चाल। दस्तूर। ६ हद। प्रतिबंध। ७ धब्बा। बदनामी। लाछन। ८ गिनती। गणना।

लीख–सज्ञा स्त्री० [स० लिक्षा] १ जूँ का अडा। २ लिक्षा नामक परिमाण।

लीचड़–वि० [देश०] १ सुस्त। काहिल। निकम्मा। २ जल्दी न छोड़नेवाला। ३ जिसका लेन-देन ठीक न हो।

लीची–सज्ञा स्त्री० [चीनी लीचू] एक सदा बहार बड़ा पेड़ जिसका फल मीठा होता है।

लीझो–वि० [देश०] १ नीरस। निस्सार। २ निकम्मा।

लीद–सज्ञा स्त्री० [देश०] घोड़े, गधे, हाथी आदि पशुओ का मल।

लीन–वि० [स०] [भाव० लीनता] १ जो किसी वस्तु में समा गया हो। २ तन्मय। मग्न। ३ बिल्कुल लगा हुआ। तत्पर।

लीपना–क्रि० स० [स० लेपन] किसी गीली वस्तु की पतली तह चढ़ाना। पोतना।

मुहा०–लीप पोतकर बराबर करना= चौपट करना। चौका लगाना।

लील†–सज्ञा पु० [स० नील] नील।

वि० नीला। नीले रग का।

लीलना–क्रि० स० [स० गिलन या लीन] गले के नीचे पेट में उतारना। निगलना।

लीलया–क्रि० वि० [स०] १ खल में। २ सहज में ही। बिना प्रयास।

लीला–सज्ञा स्त्री० [स०] १ वह व्यापार जो केवल मनोरजन के लिये किया जाय। केलि। क्रीड़ा। खेल। २ प्रेम का खेलवाड़। प्रेम विनोद। ३ नायिकाओ का एक हाव जिसमें वे प्राय वेश, गति, वाणी आदि का अनुकरण करती हैं। ४ विचित्र काम। ५ मनुष्यों के मनोरजन के लिये किए हुए ईश्वरावतारों का अभिनय। चरित्र। ६ बारह मात्राओ का एक छद। ७ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में भगण, नगण और एक गुरु होता है। ८ एक छद जिसमें २४ मात्राएँ और अत में सगण होता है।

सज्ञा पु० [स० नील] स्याह रग का घोड़ा।

वि० नीला।

लीलापुरुषोत्तम–सज्ञा पु० [स०] श्रीकृष्ण।

लीलावती–सज्ञा स्त्री० [स०] १ प्रसिद्ध ज्योतिर्विद भास्कराचार्य्य की पत्नी जिसने लीलावती नाम की गणित की एक पुस्तक बनाई थी। २ ३२ मात्राओ का एक छद।

लुंगाड़ा–सज्ञा पु० [देश०] शोहदा। लुच्चा।

लुंगी–सज्ञा स्त्री० [हि० लँगोट या लांग] धोती के स्थान पर कमर में लपेटने का छोटा टुकड़ा। तहमत।

लुंचन–सज्ञा पु० [स०] चुटकी से पकड़कर उखाड़ना। नोचना। उत्पाटन।

लुंज–वि० [स० लुचन] १ बिना हाथ-पैर का। लँगड़ा लूला। २ बिना पत्त का। ठूँठ। (पेड़)

लुंठन–क्रि० स० [स०] [वि० लुंठित] १. लुढ़कना। २ लूटना। चुराना।

लुंड–सज्ञा पु० [स० रुड] बिना सिर का धड़। कबध। रुड।

लुंड-मुंड–वि० [स० रुड + मुड] १ जिसका सिर, हाथ, पर आदि कट हो, केवल धड़ का लोथड़ा रह गया हो। २ बिना पत्त का। ठूँठ।

लुंडा–वि० [स० रुड] [स्त्री० लुंडी] जिसकी पूँछ और पर झड़ गए हों। (पक्षी)

लुंबिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] कपिलवस्तु के पास का एक वन जहाँ गौतम बुद्ध उत्पन्न हुए थे।
लुआठा–संज्ञा पुं० [सं० लोक=काष्ठ] [स्त्री० अल्पा० लुआठी] सुलगती हुई लकड़ी। लुआती
लुआब–संज्ञा पुं० [अ०] लसदार गूदा। चिपचिपा गूदा। लासा।
लुकंजन*†–संज्ञा पुं० दे० "लोपांजन"।
लुक–संज्ञा पुं० [सं० लोक=चमकना] १. चमकदार रोगन। वार्निश। २. आग की लपट। लौ। ज्वाला।
लुकठी–संज्ञा स्त्री० [हिं० लुक] लुआठा।
लुकना–क्रि० अ० [सं० लुक=लोप] आड़ में होना। छिपना।
लुकमा–संज्ञा पुं० [अ०] ग्रास। कौर।
लुकाना–क्रि० स० [हिं० लुकना] आड़ में करना। छिपाना।
† क्रि० अ० लुकना। छिपना।
लुकेठा†–संज्ञा पुं० दे० "लुआठा"।
लुगड़ा–संज्ञा पुं० दे० "लूगड़ा"।
लुगदी–संज्ञा स्त्री० [देश०] गीली वस्तु का पिंड या गोला। छोटा लोंदा।
लुगरा†–संज्ञा पुं० [हिं० लूगा+ड़ा (प्रत्य०)] १. कपड़ा। वस्त्र। २. ओढ़नी। छोटी चादर। ३. फटा पुराना कपड़ा। लत्ता।
लुगरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० लूगरा] फटी पुरानी धोती।
लुगाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० लोग] स्त्री। औरत
लुगी†–संज्ञा स्त्री० [हिं० लूगा] १. पुराना कपड़ा २. लहँगे का संजाफ़ या फटा चौड़ा किनारा।
लुग्गा‡–संज्ञा पुं० दे० "लूगा"।
लुचई†–संज्ञा स्त्री० [सं० रुचि] मैदे की पतली पूरी। लूची।
लुच्चा–वि० [हिं० लुचकना] [स्त्री० लुच्ची] १. दुराचारी। कुमार्गी। कुचाली। २. शोहदा। बदमाश।
लुटंत*‡–संज्ञा स्त्री० [हिं० लूट] लूट।
लुटकना–क्रि० अ० दे० "लटकना"।
लुटना–क्रि० अ० [सं० लुट=लुटना] १. दूसरे के द्वारा लूटा जाना। २. तबाह होना। बरबाद होना।
* क्रि० अ० दे० "लुठना"।
लुटाना–क्रि० स० [हिं० लूटना का प्रेर०] १. दूसरे को लूटने देना। २. मुफ्त में बिना पूरा मूल्य लिए देना। ३. व्यर्थ फेंकना या व्यय करना। ४. बहुतायत से बाँटना। अंधाधुंध दान करना।
लुटावना*†–क्रि० स० दे० "लुटाना"।
लुटिया–संज्ञा स्त्री० [हिं० लोटा] छोटा लोटा
लुटेरा–संज्ञा पुं० [हिं० लूटना+एरा (प्रत्य०)] लूटनेवाला। डाकू। दस्यु।
लुठना*–क्रि० अ० [सं० लुंठन] १. भूमि पर पड़ना। लोटना। २. लुढ़कना।
लुठाना*–क्रि० स० [हिं० लुठना] १. भूमि पर डालना। लोटाना। २. लुढ़काना।
लुढ़कना–क्रि० अ० [सं० लुंठन] गेंद की तरह नीचे ऊपर चक्कर खाते हुए गमन करना। ढुलकना।
लुढ़काना–क्रि० स० [हिं० लुढ़कना] इस प्रकार फेंकना या छोड़ना कि चक्कर खाते हुए कुछ दूर चला जाय। ढुलकाना।
लुढ़ना*†–क्रि० अ० दे० "लुढ़कना"।
लुढ़ाना*–क्रि० स० दे० "लुढ़काना"।
लुतरा–वि० [देश०] [स्त्री० लुतरी] १. चुगलखोर। २. नटखट। शरारती।
लुत्थ*–संज्ञा स्त्री० दे० "लोथ"।
लुत्फ़–संज्ञा पुं० [अ०] १. कृपा। मेहरबानी। २. खूबी। उत्तमता। ३. मज़ा। आनंद। ४. रोचकता।
लुनना–क्रि० स० [सं० लवन] १. खेत की तैयार फ़सल काटना। २. नष्ट करना।
लुनाई*–संज्ञा स्त्री० दे० "लावण्य"।
लुनेरा–संज्ञा पुं० [हिं० लुनना] खेत की फ़सल काटनेवाला। लूननेवाला।
लुपना*–क्रि० अ० [सं० लुप] छिपना।
लुप्त–वि० [सं०] १. छिपा हुआ। गुप्त। अंतर्हित। २. गायब। अदृश्य।
लुप्तोपमा–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह उपमा अलंकार जिसमें उसका कोई अंग लुप्त हो, अर्थात् न कहा गया हो।
लुबुध*‡–वि० दे० "लुब्ध"।

लुबुधना†–क्रि० अ० [हिं० लुबुध+ना (प्रत्य०)] लुब्ध होना। लुभाना।
संज्ञा पुं० [सं० लुब्धक] अहेरी। बहेलिया।
लुबुधा*–वि० [सं० लुब्ध] १. लोभी। लालची। २. चाहनेवाला। इच्छुक। ३. प्रेमी।
लुब्ध–वि० [सं०] १. लुभाया हुआ। ललचाया हुआ। २. तन-मन की सुध भूला हुआ। मोहित।
लुब्धक–संज्ञा पुं० [सं०] १. व्याध। बहेलिया। शिकारी। २. उत्तरी गोलार्द्ध का एक बहुत तेजवान् तारा। (आधुनिक)
लुब्धना*–क्रि० अ० दे० "लुबुधना"।
लुब्धापति–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह प्रौढ़ा नायिका जो पति और कुल के लोगों की लज्जा करे।
लुब्बलुबाब–संज्ञा पुं० [अ०] किसी बात का तत्व। सारांश।
लुभाना–क्रि० अ० [हिं० लोभ] १ लुब्ध होना। मोहित होना। रीझना। २. लालच में पड़ना। ३ तन-मन की सुध भूलना।
क्रि० स० १ लुब्ध करना। मोहित करना। रिझाना। २. प्राप्त करने की गहरी चाह उत्पन्न करना। ललचाना। ३. सुध-बुध भुलाना। मोह में डालना।
लुरकी–संज्ञा स्त्री० [हिं० लरकना=लटकना] कान में पहनने की बाली। मुरकी।
लुरना*†–क्रि० अ० [सं० लुलन] १ झूलना। लहराना। २ ढल पड़ना। झुक पड़ना। ३. कहीं से एकबारगी आ जाना। ४. आकर्षित होना। प्रवृत्त होना।
लुरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० लेरुवा = बछड़ा ?] वह गाय जिसे बच्चा दिए थोड़े ही दिन हुए हों।
लुलना*–क्रि० अ० दे० "लुरना"।
लुवार†–वि० दे० "लू"।
लुहना*–क्रि० अ० दे० "लुभाना"।
लुहार–संज्ञा पुं० [सं० लौहकार] [स्त्री० लुहारिन, लुहारी] १. लोहे की चीजें बनानेवाला। २. वह जाति जो लोहे की चीजें बनाती है।
लुहारी–संज्ञा स्त्री० [हिं० लुहार] १. लुहार जाति की स्त्री। २. लोहे की वस्तु बनाने का काम।
लू–संज्ञा स्त्री० [सं० लुक=जलना या हिं० लौ=लपट] गरमी के दिनों की तपी हुई हवा।
मुहा०—लू मारना या लगना = शरीर में तपी हवा लगने से ज्वर आदि उत्पन्न होना।
लूक–संज्ञा स्त्री० [सं० लुक] १. आग की लपट। २. जलती हुई लकड़ी। लुआठी।
मुहा०—लूक लगाना = जलती लकड़ी या बत्ती छुलाना। आग लगाना।
३. गरमी के दिनों की तपी हवा। ४. टूटा हुआ तारा। उल्का।
लूकना*–क्रि० स० [हिं० लूक+ना] आग लगाना। जलाना।
*‡ क्रि० अ० दे० "लुकना"।
लूका–संज्ञा पुं० [सं० लुक] [स्त्री० अल्पा० लूकी] १. आग की लौ या लपट। २ लुआठा।
लूकी†–संज्ञा स्त्री० [हिं० लूका] १. आग की चिनगारी। स्फुलिंग। २ लूका।
लूखा*–वि० [सं० रूक्ष] रूखा।
लूगा†–संज्ञा पुं० [देश०] १. वस्त्र। कपड़ा। २ धोती।
लूट–संज्ञा स्त्री० [हिं० लूटना] १ किसी के माल का जबरदस्ती छीना जाना। डकैती।
यौ०—लूटमार, लूटपाट = लोगों को मारना पीटना और उनका धन छीनना।
२ लूटने से मिला हुआ माल।
लूटक–संज्ञा पुं० [हिं० लूट] १. लूटनेवाला। लुटेरा। २ कांति हरनेवाला।
लूटना–क्रि० स० [सं० लुट = लूटना] १. मार पीटकर या छीन-झपटकर ले लेना। २. अनुचित रीति से किसी का माल लेना। ३. वाजिब से बहुत ज्यादा दाम लेना। ठगना। ४. मोहित करना। मुग्ध करना।
लूटि*†–संज्ञा स्त्री० दे० "लूट"।
लूत–संज्ञा स्त्री० [सं० लूता] मकड़ी।
लूता–संज्ञा स्त्री० [सं०] मकड़ी।
संज्ञा पुं० [हिं० लूका] लूका। लुआठा।

लूनना*†–क्रि० अ० दे० "लुनना"।
लूमना*–क्रि० अ० [सं० लंबन] लटकना।
लूरना*–क्रि० अ० दे० "लुरना"।
लूला–वि० [सं० लून = कटा हुआ] [स्त्री० लूली] १. जिसका हाथ कट गया हो। लुंजा। टुंडा। २. बेकाम। असमर्थ।
लूह, लूहर†–संज्ञा स्त्री० दे० "लू"।
लेंड़–संज्ञा पुं० दे० "लेंड़ी"।
लेंड़ी–संज्ञा स्त्री० [देश०] १. मल की बत्ती। बँधा मल। २. बकरी या ऊँट की मेंगनी।
लेंहड़, लेंहड़ा–संज्ञा पुं० [देश०] झुंड। दल। समूह। गल्ला। (चौपायों के लिये)
ले–अव्य० [हिं० लेकर] आरंभ होकर।
‡ [सं० लग्न, हिं० लग, लगि] तक। पर्यंत।
लेई–संज्ञा स्त्री० [सं० लेही, लेह्य] १. किसी चूर्ण को गाढ़ा करके बनाया हुआ लसीला पदार्थ। अवलेह। २. लपसी।
यौ०—लेई पूंजी = सारी जमा। सर्वस्व। ३. घुला हुआ आटा जिसे आग पर पकाकर कागज़ आदि चिपकाने के काम में लाते हैं। ४. सुरखी मिला हुआ बरी का गीला चूना जो ईंटों की जोड़ाई में काम आता है।
लेख–संज्ञा पुं० [सं०] १. लिखे हुए अक्षर। लिपि। २. लिखावट। लिखाई। ३. लेखा। हिसाब-किताब। ४. देव। देवता।
*वि० लेख्य। लिखने योग्य।
संज्ञा स्त्री० [हिं० लीक] पक्की बात। लकीर।
लेखक–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० लेखिका] १. लिखनेवाला। लिपिकार। २. ग्रंथकार।
लेखन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० लेखनीय, लेख्य] १. लिखने का कार्य। अक्षर बनाना। २. लिखने की कला या विद्या। ३. चित्र बनाना। ४. हिसाब करना। लेखा लगाना।
लेखना*–क्रि० स० [सं० लेखन] १. अक्षर या चित्र बनाना। लिखना। २. गिनना।
यौ०—लेखना-जोखना = १. ठीक ठीक अंदाज करना। हिसाब करना। २. परीक्षा करना। ३. समझना। सोचना। विचारना।
लेखनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] कलम।
लेखा–संज्ञा पुं० [हिं० लिखना] १. गणना। गिनती। हिसाब-किताब। २. ठीक ठीक अंदाज़। कूत। ३. आय-व्यय का विवरण।
मुहा०—लेखा डेवढ़ करना = १. हिसाब चुकता करना। २. चौपट करना। नाश करना। ४. अनुमान। विचार। समझ।
मुहा०—किसी के लेखे = किसी की समझ में। किसी के विचार के अनुसार।
लेखिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लिखनेवाली। २. ग्रंथ या पुस्तक बनानेवाली।
लेख्य–वि० [सं०] १. लिखने योग्य। २. जो लिखा जाने को हो।
संज्ञा पुं० १. लेख। २. दस्तावेज़।
लेज़म–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. एक प्रकार की नरम और लचकदार कमान जिससे धनुष चलाने का अभ्यास किया जाता है। २. वह कमान जिसमें लोहे की ज़ंजीर लगी रहती है और जिससे कसरत करते हैं।
लेजुर, लेजुरी†–संज्ञा स्त्री० [सं० रज्जु] १. डोरी। २. कुएँ से पानी खींचने की रस्सी।
लेटना–क्रि० अ० [सं० लुंठन, हिं० लोटना] १. पीठ, ज़मीन या बिस्तरे आदि से लगाकर बदन की सारी लंबाई उस पर ठहराना। पौढ़ना। २. किसी चीज़ का बग़ल की ओर झुककर ज़मीन पर गिर जाना।
लेटाना–क्रि० स० [हिं० लेटना का प्रेर०] दूसरे को लेटने में प्रवृत्त करना।
लेदी–संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का पक्षी।
लेन–संज्ञा पुं० [हिं० लेना] १. लेने की क्रिया या भाव। २. लहना। पावना।
लेनदार–संज्ञा पुं० [हिं० लेन + फा० दार (प्रत्य०)] जिसका कुछ बाकी हो। महाजन। लहनदार।
लेन-देन–संज्ञा पुं० [हिं० लेना + देना] १. लेने और देने का व्यवहार। आदान-प्रदान। २. ऋण देने और लेने का व्यवहार।
मुहा०—लेन-देन = सरोकार। संबंध।
लेनहार–वि० [हिं० लेना + हार] लेनेवाला।
लेना–क्रि० स० [हिं० लहना] १. दूसरे के हाथ से अपने हाथ में करना। ग्रहण करना। प्राप्त करना। २. थामना। पकड़ना। ३.

मोल लेना। खरीदना। ४. अपने अधिकार में करना। ५. जीतना। ७. धरना। ७ अगवानी करना। अभ्यर्थना करना। ८. भार ग्रहण करना। जिम्मे लेना। ९. सेवन करना। पीना। १०. धारण करना। स्वीकार करना। ११. किसी को उपहास द्वारा लज्जित करना।

मुहा०—आड़े हाथों लेना=गूढ़ व्यंग्य द्वारा लज्जित करना। लेने के देने पड़ना=लेने के स्थान पर उलटे देना पड़ना। (किसी मामले में) लाभ के बदले हानि होना। ले डालना=१. खराब करना। चौपट करना। २. पराजित करना। हराना। ३. पूरा करना। समाप्त करना। ले दे करना=हुज्जत करना। तकरार करना। लेना एक न देना दो=कुछ मतलब नहीं। कुछ सरोकार नहीं। ले मरना=अपने साथ नष्ट या बरबाद करना। कान में लेना=सुनना।

लेप—संज्ञा पु० [सं०] १ लेई के समान पोतने, पोछने या चुपड़न की चीज़। २. गाढ़ी गीली वस्तु की वह तह जो किसी वस्तु के ऊपर फैलाई जाय।

लेपना—क्रि० स० [सं० लेपन] गाढ़ी गीली वस्तु की तह चढ़ाना। छोपना।

ले-पालक—संज्ञा पु० [हिं० लेना + पालना] गोद लिया हुआ पुत्र। दत्तक। पालट।

लेरुवा—संज्ञा पु० [सं० लेह] बछड़ा।

लेव—संज्ञा पु० [सं० लेप्य] १ लेप। २. मिट्टी का लेप जो बर्तनों की पेंदी पर उन्हें आग पर चढ़ाने से पहले किया जाता है। ३ दे० "लेवा"।

लेवा—संज्ञा पु० [सं० लेप्य] १. गिलावा। २ मिट्टी का गिलावा। कहगिल। ३ लेप। वि० [हिं० लेना] लेनेवाला।

यौ०—लेवा देई=लेन-देन।

लेवाल—संज्ञा पु० [हिं० लेना+वाल (प्रत्य०)] लेने या खरीदनेवाला।

लेश—संज्ञा पु० [सं०] १. अणु। २. छोटाई। सूक्ष्मता। ३. चिह्न। निशान। ४. संसर्ग। लगाव। संबंध। ५ एक अलंकार, जिसमें किसी वस्तु के वर्णन के केवल एक ही भाग या अंग में रोचकता आती है। वि० अल्प। थोड़ा।

लेश्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जैनियों के अनुसार जीव की वह अवस्था जिसके कारण कर्म जीव को बाँधता है। २. जीव।

लेषना*—क्रि० स० १. दे० "लखना"। २. दे० "लिखना"।

लेसना—क्रि० स० [सं० लेश्या] जलाना। क्रि० स० [हिं० लस] १. किसी चीज पर लेस लगाना। पोतना। २. दीवार पर मिट्टी का गिलावा पोतना। कहगिल करना। ३. चिपकाना। सटाना। ४. चुगली खाना।

लेहन—संज्ञा पु० [सं० लेहक] चाटना।

लेहना—संज्ञा पु० दे० "लहना"।

लेहाज़ा—क्रि० वि० [अ०] इसलिये। इस वास्ते

लेह्य—वि० [सं०] चाटने के योग्य।

लैंगिक—संज्ञा पु० [सं०] वैशेषिक दर्शन के अनुसार वह ज्ञान जो लिंग या स्वरूप के वर्णन द्वारा प्राप्त हो। अनुमान।

लैं*—अव्य० [हिं० लगना] तक। पर्यंत।

लैस—वि० [अ० लेस] वर्दी और हथियारों से सजा हुआ। कटिबद्ध। तैयार। संज्ञा पु० कपड़े पर चढ़ाने का फीता। संज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का बाण।

लौं—अव्य० दे० "लौं"।

लोंदा—संज्ञा पु० [सं० लुंठन] किसी गीले पदार्थ का डले की तरह बँधा अंश।

लोइ*—संज्ञा पु० [सं० लोक] लोग। संज्ञा स्त्री० [सं० रोचि] १. प्रभा। दीप्ति। २ लव। शिखा।

लोइन*—संज्ञा पु० १. दे० "लावण्य"। २. दे० "लोचन"।

लोई—संज्ञा स्त्री० [सं० लोप्त्री] गुँधे हुए आटे का उतना अंश जिसे बेलकर रोटी बनाते हैं। संज्ञा स्त्री० [सं० लोमीय] एक प्रकार का कम्मल।

लोकंजन*—संज्ञा पु० दे० "लोपांजन"।

लोकंदा†—संज्ञा पु० [हिं० लोकना ?] [स्त्री० लोकंदी] विवाह में कन्या के डोले के साथ दासी को भेजना।

लोकंदी†–संज्ञा स्त्री० [हिं० लोकना ?] वह दासी जो कन्या के ससुराल जाते समय उसके साथ भेजी जाती है।
लोक–संज्ञा पुं० [सं०] १. स्थान-विशेष जिसका बोध प्राणी को हो।
विशेष—उपनिषदों में दो लोक माने गए हैं—इहलोक और परलोक। निरुक्त में तीन लोकों का उल्लेख है–पृथ्वी, अंतरिक्ष और द्युलोक। पौराणिक काल में इन सात लोकों की कल्पना हुई—भूलोक, भुवर्लोक, स्वर्गलोक, महर्लोक, जनर्लोक, तपलोक और सत्यलोक। फिर पीछे इनके साथ सात पाताल—अतल, नितल, वितल, गभस्तिमान्, तल, सुतल, और पाताल मिलाकर चौदह लोक किए गए।
२. संसार। जगत्। ३. स्थान। निवास-स्थान। ४. प्रदेश। दिशा। ५. लोग। जन। ६. समाज। ७. प्राणी। ८. यश। कीर्ति।
लोकधुनि*–संज्ञा स्त्री० [सं० लोकध्वनि] अफ़वाह।
लोकना–क्रि० स० [सं० लोपन] १. ऊपर से गिरती हुई वस्तु को हाथों से पकड़ लेना। २. बीच में से ही उड़ा लेना।
लोकप, लोकपति–संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्रह्मा। २. लोकपाल। ३ राजा।
लोकपाल–संज्ञा पु० [सं०] १. किसी दिशा का स्वामी। दिक्पाल। २. राजा।
लोकलीक*–संज्ञा स्त्री० [हिं०लोक + लीक] लोक की मर्य्यादा।
लोकसंग्रह–संज्ञा पुं० [सं०] १. संसार के लोगों को प्रसन्न करना। २. सबकी भलाई।
लोकहार–वि० [सं० लोक-हरण] लोक या संसार को नष्ट करनेवाला।
लोकांतर–संज्ञा पुं० [सं०] वह लोक जहाँ मरने पर जीव जाता है।
लोकांतरित–वि० [सं०] मरा हुआ। मृत।
लोकाचार–संज्ञा पुं० [सं०] संसार में बरता जानेवाला व्यवहार। लोक-व्यवहार।
लोकाट–संज्ञा पुं० चीनी [लुः + क्यू] एक पौधा जिसमें बड़े बेर के बराबर मीठे, गुदार फल लगते हैं।
लोकाना†–क्रि० स० [हिं० लोकना का प्रेर०] अधर में फेंकना। उछालना।
लोकायत–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह मनुष्य जो इस लोक के अतिरिक्त दूसरे लोक को न मानता हो। २. चार्वाक दर्शन। ३. दुर्मिल नामक छंद।
लोकोक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं] १. कहावत। मसल। २. काव्य में वह अलंकार जिसमें किसी लोकोक्ति का प्रयोग करके कुछ रोचकता या चमत्कार लाया जाय।
लोकोत्तर–वि० [सं०] बहुत ही अद्भुत और विलक्षण। अलौकिक।
लोखर–संज्ञा स्त्री० [हिं० लोह + खंड] १. नाई के औजार। २. लोहारों या बढ़इयों आदि के औजार।
लोग–संज्ञा पुं० बहु० [सं० लोक] [स्त्री० लुगाई] जन। मनुष्य। आदमी।
लोगाई†–संज्ञा स्त्री० [हिं० लोग] स्त्री।
लोच–संज्ञा स्त्री० [हिं० लचक] १. लचलचाहट। लचक। २. कोमलता।
संज्ञा पुं० [सं० रुचि] अभिलाषा।
लोचन–संज्ञा पुं० [सं०] आँख। नेत्र।
लोचना†–क्रि० स० [हिं० लोचन] १. प्रकाशित करना। २. रुचि उत्पन्न करना। ३. अभिलाषा करना।
क्रि० अ० शोभित होना।
क्रि० अ० १. अभिलाषा करना। कामना करना। २. ललचना। तरसना।
लोट–संज्ञा स्त्री० [हिं० लोटना] लोटने का भाव। लुढ़कना।
संज्ञा पुं० [हिं० लोटना] १. उतार। घाट। * २. त्रिबली।
लोटन–संज्ञा पुं० [हिं० लोटना] १. एक प्रकार का कबूतर। २. राह में की छोटी कँकड़ियाँ।
लोटना–क्रि० अ० [सं० लुंठन] १. सीधे और उलटे लेटते हुए किसी ओर को जाना। २. लुढ़कना। ३. कष्ट से करवट बदलना। तड़पना।

की तरफ से बहस करने का पेशा।
वकालतनामा–संज्ञा पु० [अ० फ़ा०] वह अधिकारपत्र जिसके द्वारा कोई किसी वकील को अपनी तरफ से मुकदमे में बहस करने के लिये मुकर्रर करता है।
वकासुर–संज्ञा पु० [सं०] एक राक्षस।
वकील–संज्ञा पु० [अ०] १ दूत। २ राजदूत। एलची। ३ प्रतिनिधि। ४ दूसरे का पक्ष मंडन करनेवाला। ५ वह आदमी जिसने वकालत की परीक्षा पास की हो और जो अदालतों में मुद्दई या मुद्दालय की ओर से बहस करे।
वकुल–संज्ञा पु० [सं०] अगस्त का पेड़ या फूल।
वक्त–संज्ञा पु० [अ०] १ समय। काल। २ अवसर। मौका। ३ अवकाश। फुरसत।
वक्तव्य–वि० [सं०] कहने योग्य। वाच्य। संज्ञा पु० [सं०] १ कथन। वचन। २ वह बात जो किसी विषय में कहनी हो।
वक्ता–वि० [सं० वक्तृ] १ वाग्मी। बोलनेवाला। २ भाषण-पटु।
संज्ञा पु० कथा कहनेवाला पुरुष। व्यास।
वक्तृता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वाक्पटुता। २ व्याख्यान। ३ कथन। भाषण।
वक्तृत्व–संज्ञा पु० [सं०] १. वक्तृता। वाग्मिता। २ व्याख्यान। ३ कथन।
वक्त्र–संज्ञा पु० [सं०] १ मुख। २ एक प्रकार का छंद।
वक्फ–संज्ञा पु० [अ०] १ वह संपत्ति जो धर्मार्थ दान कर दी गई हो। २ किसी के लिये कोई चीज छोड़ देना। (क्व०)
वक्र–वि० [सं०] १ टेढ़ा। बाँका। २ झुका हुआ। तिरछा। ३ कुटिल।
वक्रगामी–वि० [सं० वक्रगामिन्] १ टेढ़ी चाल चलनेवाला। २ शठ। कुटिल।
वक्रतुंड–संज्ञा पु० [सं०] गणेश।
वक्रदृष्टि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ टेढ़ी दृष्टि। २ क्रोध की दृष्टि।
वक्री–संज्ञा पु० [सं०] १ वह प्राणी जिसके अंग जन्म से टेढ़े हों। २ बुद्धदेव।
वक्रोक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक प्रकार का काव्यालंकार जिसमें काकु या श्लेष से वाक्य का और का और अर्थ किया जाता है। २ काकूक्ति। ३ बढ़िया उक्ति।
वक्ष–संज्ञा पु० [सं० वक्षस्] छाती। उरस्थल।
वक्ष स्थल–संज्ञा पु० [सं०] उर। छाती।
वक्षु–संज्ञा पु० दे० "वंक्षु"।
वगलामुखी–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक महाविद्या।
वगैरह–अव्य० [अ०] इत्यादि। आदि।
वच–संज्ञा पु० [सं० वचन] वाक्य।
वचन–संज्ञा पु० [सं०] १ मनुष्य के मुँह से निकला हुआ सार्थक शब्द। वाणी। वाक्य। २ कथन। उक्ति। ३ व्याकरण में शब्द के रूप में वह विधान जिससे एकत्व या बहुत्व का बोध होता है। हिंदी में दो वचन होते हैं—एकवचन और बहुवचन।
वचनलक्षिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह परकीया नायिका जिसकी बातचीत से उसके उपपति से प्रेम लक्षित या प्रकट होता हो।
वचनविदग्धा–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह परकीया नायिका जो अपने वचन की चतुराई से नायक की प्रीति का साधन करता हो।
वचा–संज्ञा स्त्री० [सं०] वच नाम की ओषधि।
वच्छ*–संज्ञा पु० [सं० वक्षस्] उर। छाती।
वज़न–संज्ञा पु० [अ०] १ भार। बोझ। २ तौल। ३ मान। मर्यादा। गौरव।
वज़नी–वि० [अ० वज़न + ई] जिसका बहुत बोझ हो। भारी।
वजह–संज्ञा स्त्री० [अ०] कारण। हेतु।
वज़ा–संज्ञा स्त्री० [अ० वज़अ] १ बनावट। रचना। २ सज धज। ३ दशा। अवस्था। रीति। प्रणाली। ५ मुजरा। मिनहा।
वज़ादार–वि० [अ० वज़ा+फ़ा० दार] जिसकी बनावट आदि बहुत अच्छी हो। तरहदार।
वज़ीफ़ा–संज्ञा पु० [अ०] १ वह वृत्ति या आर्थिक सहायता जो विद्वानों, छात्रों, सन्यासियों आदि को दी जाती है। २ जप या पाठ। (मुसलमान)
वज़ीर–संज्ञा पु० [अ०] १ मंत्री। अमात्य। दीवान। २ शतरंज की एक गोटी।
वज़ीरी–संज्ञा स्त्री० [अ०] वज़ीर का काम या

पद। संज्ञा पुं० घोड़ों की एक जाति।
वज़ू–संज्ञा पुं० [अ० वुज़ू] नमाज पढ़ने के पूर्व शौच के लिये हाथ-पाँव आदि धोना।
वज्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. पुराणानुसार भाले के फल के समान एक शस्त्र जो इंद्र का प्रधान शस्त्र कहा गया है। कुलिश। पवि। २. विद्युत्। बिजली। ३. हीरा। ४. फ़ौलाद। ५. भाला। बरछा। वि० १. बहुत कड़ा या मजबूत। २. घोर। दारुण। भीषण।
वज्रलेप–संज्ञा पुं० [सं०] एक मसाला जिसका लेप करने से दीवार, मूर्ति आदि मजबूत हो जाती है।
वज्रसार–संज्ञा पुं० [सं०] हीरा।
वज्रावर्त–संज्ञा पुं० [सं०] एक मेघ का नाम।
वज्रासन–संज्ञा पुं० [सं०] हठ योग के चौरासी आसनों में से एक।
वज्री–संज्ञा पुं० [सं० वज्रिन्] इंद्र।
वज्रोली–संज्ञा स्त्री० [हिं० वज्र] हठयोग की एक मुद्रा का नाम।
वट–संज्ञा पुं० [सं०] बरगद का पेड़।
वटक–संज्ञा पुं० [सं०] १. बड़ी टिकिया या गोला। बट्टा। २. बड़ा। पकौड़ा।
वटसावित्री–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक व्रत का नाम जिसमे स्त्रियाँ वट का पूजन करती हैं।
वटिका, वटी–संज्ञा स्त्री० [सं०] गोली या टिकिया। बटी।
वटु–संज्ञा पुं० [सं०] १. बालक। २. ब्रह्मचारी। माणवक।
वटुक–संज्ञा पुं० [सं०] १. बालक। २. ब्रह्मचारी। ३. एक भैरव।
वणिक्–संज्ञा पुं० [सं०] १. रोज़गार करनेवाला। २. वैश्य। बनिया।
वतंस–संज्ञा पुं० दे० "अवतंस"।
वतन–संज्ञा पुं० [अ०] जन्मभूमि।
वत्–संज्ञा पुं० [सं०] समान। तुल्य।
वत्स–संज्ञा पुं० [सं०] १. गाय का बच्चा। बछड़ा। २. बालक। ३. वत्सासुर।
वत्सनाभ–संज्ञा पुं० [सं०] एक विष जिसे 'बछनाग' या 'बच्छनाग' भी कहते हैं। यह एक पौधे की जड़ है। मीठा जहर।
वत्सर–संज्ञा पुं० [सं०] वर्ष। साल।
वत्सल–वि० [सं०] [स्त्री० वत्सला] १. बच्चे के प्रेम से भरा हुआ। २. अपने से छोटों के प्रति अत्यंत स्नेहवान् या कृपालु। संज्ञा पुं० साहित्य में कुछ लोगों के द्वारा माना हुआ दसवाँ रस जिसमें माता-पिता का संतान के प्रति प्रेम प्रदर्शित होता है।
वदतोव्याघात–संज्ञा पुं० [सं०] कथन का एक दोप जिसमें कोई एक बात कहकर फिर उसके विरुद्ध बात कही जाती है।
वदन–संज्ञा पुं० [सं०] १. मुख। मुँह। २. अगला भाग। ३. कथन। बात कहना।
वदान्य–वि० [सं०] १. अतिशय दाता। उदार। २. मधुरभाषी।
वदि–संज्ञा पुं० [सं० अवदिन] कृष्ण पक्ष। जैसे—जेठ वदि ४।
वदूसना*–क्रि० स० [सं० विदूपण] दोष देना। भला-बुरा कहना। इलज़ाम लगाना।
वध–संज्ञा पुं० [सं०] जान से मार डालना। घात। हत्या।
वधक–संज्ञा पुं० [सं०] १. घातक। हिंसक। २. व्याध। ३. मृत्यु।
वधू–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नव-विवाहिता स्त्री। दुलहन। २. पत्नी। भार्य्या। ३. पुत्र की बहू। पतोहू।
वधूटी–संज्ञा स्त्री० दे० "वधू"।
वधूत*–संज्ञा पुं० दे० "अवधूत"।
वध्य–वि० [सं०] मार डालने योग्य।
वन–संज्ञा पुं० [सं०] १. वन। जंगल। २. वाटिका। ३. जल। ४. घर। आलय। ५. शंकराचार्य के अनुयायी संन्यासियों की एक उपाधि।
वनचर–वि० [सं०] वन में भ्रमण करने या रहनेवाला।
वनज–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो वन (जंगल या पानी) में उत्पन्न हो। २. कमल।
वनदेव–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० वनदेवी] वन का अधिष्ठाता देवता।
वनमाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वन के फूलों

मोल लेना। खरीदना। ४. अपने अधिकार में करना। ५. जीमना। ७. धरना। ७ अगवानी करना। अभ्यर्थना करना। ८. भार ग्रहण करना। जिम्मे लेना। ९. सेवन करना। पीना। १०. धारण करना। स्वीकार करना। ११. किसी को उपहास द्वारा लज्जित करना।

मुहा०—आड़े हाथों लेना=गूढ़ व्यंग्य द्वारा लज्जित करना। लेने के देने पड़ना=लेने के स्थान पर उलटे देना पड़ना। (किसी मामले में) लाभ के बदले हानि होना। ले डालना=१. खराब करना। चौपट करना। २. पराजित करना। हराना। ३ पूरा करना। समाप्त करना। ले दे करना=हुज्जत करना। तकरार करना। लेना एक न देना दो=कुछ मतलब नहीं। कुछ सरोकार नहीं। ले मरना=अपने साथ नष्ट या बरबाद करना। कान में लेना=सुनना।

लेप—संज्ञा पु० [सं०] १. लेई के समान पोतने, पोछने या चुपड़ने की चीज। २. गाढ़ी गीली वस्तु की वह तह जो किसी वस्तु के ऊपर फैलाई जाय।

लेपना—क्रि० स० [सं० लेपन] गाढ़ी गीली वस्तु की तह चढ़ाना। छोपना।

ले-पालक—संज्ञा पु० [हिं० लेना + पालना] गोद लिया हुआ पुत्र। दत्तक। पालट।

लेरुवा—संज्ञा पु० [सं० लेह] बछड़ा।

लेव—संज्ञा पु० [सं० लेप्य] १. लेप। २ मिट्टी का लेप जो बर्तनों की पेंदी पर उन्हें आग पर चढ़ाने से पहले किया जाता है। ३ दे० "लेवा"।

लेवा—संज्ञा पु० [सं० लेप्य] १. गिलावा। २ मिट्टी का गिलावा। कहगिल। ३. लेप। वि० [हिं० लेना] लेनेवाला।

यौ०—लेवा देई=लेन-देन।

लेवाल—संज्ञा पु० [हिं० लेना+वाल (प्रत्य०)] ने या खरीदनेवाला।

...। पु० [सं०] १. अणु। २ छोटाई। । ३. चिह्न। निशान। ४. संसर्ग। । सबंध। ५ एक अलंकार, जिसमें किसी वस्तु के वर्णन के केवल एक ही भाग या अंश में रोचकता आती है। वि० अल्प। थोड़ा।

लेश्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जैनियों के अनुसार जीव की वह अवस्था जिसके कारण कर्म जीव को बाँधता है। २. जीव।

लेषना*—क्रि० स० १. दे० "लखना"। २. दे० "लिखना"।

लेसना—क्रि० स० [सं० लेश्या] जलाना। क्रि० स० [हिं० लस] १. किसी चीज पर लेस लगाना। पोतना। २. दीवार पर मिट्टी का गिलावा पोतना। कहगिल करना। ३. चिपकाना। सटाना। ४. चुगली खाना।

लेहन—संज्ञा पु० [सं० लेहक] चाटना।

लेहना—संज्ञा पु० दे० "लहना"।

लेहाजा—क्रि० वि० [अ०] इसलिये। इस वास्ते

लेह्य—वि० [सं०] चाटने के योग्य।

लैंगिक—संज्ञा पु० [सं०] वैशेषिक दर्शन के अनुसार वह ज्ञान जो लिंग या स्वरूप के वर्णन द्वारा प्राप्त हो। अनुमान।

लै*—अव्य० [हिं० लगना] तक। पर्यंत।

लैस—वि० [अ० लेस] वर्दी और हथियारों से सजा हुआ। कटिबद्ध। तैयार। संज्ञा पु० कपड़े पर चढ़ाने का फीता। संज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का बाण।

लों—अव्य० दे० "लौं"।

लोंदा—संज्ञा पु० [सं० लुठन] किसी गीले पदार्थ का डले की तरह बँधा अंश।

लोइ*—संज्ञा पु० [सं० लोक] लोग। संज्ञा स्त्री० [सं० रोचि] १. प्रभा। दीप्ति। २ लव। शिखा।

लोइन*—संज्ञा पु० १. दे० "लावण्य"। २. दे० "लोयन"।

लोई—संज्ञा स्त्री० [सं० लोप्ती] गुँधे हुए आटे का उतना अंश जिसे बेलकर रोटी बनाते हैं। संज्ञा स्त्री० [सं० लोमीय] एक प्रकार का कम्मल।

लोकंजन*—संज्ञा पु० दे० "लोपांजन"।

लोकंदा†—संज्ञा पु० [हिं० लोकना ?] [स्त्री० लोकंदी] विवाह में कन्या के डोले के साथ दासी को भेजना।

लोकंदी†–संज्ञा स्त्री० [हिं० लोकना ?] वह दासी जो कन्या के ससुराल जाते समय उसके साथ भेजी जाती है।

लोक–संज्ञा पुं० [सं०] १. स्थान-विशेष जिसका बोध प्राणी को हो।

विशेष—उपनिषदों में दो लोक माने गए हैं—इहलोक और परलोक। निरुक्त में तीन लोकों का उल्लेख है–पृथ्वी, अंतरिक्ष और द्युलोक। पौराणिक काल में इन सात लोकों की कल्पना हुई—भूलोक, भुवर्लोक, स्वर्गलोक, महर्लोक, जनर्लोक, तपलोक और सत्यलोक। फिर पीछे इनके साथ सात पाताल—अतल, नितल, वितल, गभस्तिमान्, तल, सुतल, और पाताल मिलाकर चौदह लोक किए गए।

२. संसार। जगत्। ३. स्थान। निवास-स्थान। ४. प्रदेश। दिशा। ५. लोग। जन। ६. समाज। ७. प्राणी। ८. यश। कीर्त्ति।

लोकधुनि*–संज्ञा स्त्री० [सं० लोकध्वनि] अफवाह।

लोकना–क्रि० स० [सं० लोपन] १. ऊपर से गिरती हुई वस्तु को हाथों से पकड़ लेना। २. बीच में से ही उड़ा लेना।

लोकप, लोकपति–संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्रह्मा। २. लोकपाल। ३. राजा।

लोकपाल–संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी दिशा का स्वामी। दिक्पाल। २. राजा।

लोकलीक*–संज्ञा स्त्री० [हिं० लोक + लीक] लोक की मर्य्यादा।

लोकसंग्रह–संज्ञा पुं० [सं०] १. संसार के लोगों को प्रसन्न करना। २. सबकी भलाई।

लोकहार–वि० [सं० लोक-हरण] लोक या संसार को नष्ट करनेवाला।

लोकांतर–संज्ञा पुं० [सं०] वह लोक जहाँ मरने पर जीव जाता है।

लोकांतरित–वि० [सं०] मरा हुआ। मृत।

लोकाचार–संज्ञा पुं० [सं०] संसार में बरता जानेवाला व्यवहार। लोक-व्यवहार।

लोकाट–संज्ञा पुं० चीनी [लु + क्यू] एक पौधा जिसमें बड़े बेर के बराबर मीठे, गूदार फल लगते हैं।

लोकाना†–क्रि० स० [हिं० लोकना का प्रेर०] अधर में फेंकना। उछालना।

लोकायत–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह मनुष्य जो इस लोक के अतिरिक्त दूसरे लोक को न मानता हो। २. चार्वाक दर्शन। ३. दुर्मिल नामक छंद।

लोकोक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कहावत। मसल। २. काव्य में वह अलंकार जिसमें किसी लोकोक्ति का प्रयोग करके कुछ रोचकता या चमत्कार लाया जाय।

लोकोत्तर–वि० [सं०] बहुत ही अद्भुत और विलक्षण। अलौकिक।

लोखर–संज्ञा स्त्री० [हिं० लोह + खंड] १. नाई के औजार। २. लोहारों या बढ़इयों आदि के औजार।

लोग–संज्ञा पुं० बहु० [सं० लोक] [स्त्री० लुगाई] जन। मनुष्य। आदमी।

लोगाई†–संज्ञा स्त्री० [हिं० लोग] स्त्री।

लोच–संज्ञा स्त्री० [हिं० लचक] १. लचलचाहट। लचक। २. कोमलता।

संज्ञा पुं० [सं० रुचि] अभिलाषा।

लोचन–संज्ञा पुं० [सं०] आँख। नेत्र।

लोचना†–क्रि० स० [हिं० लोचन] १. प्रकाशित करना। २. रुचि उत्पन्न करना। ३. अभिलाषा करना।

क्रि० अ० शोभित होना।

क्रि० अ० १. अभिलाषा करना। कामना करना। २. ललचना। तरसना।

लोट–संज्ञा स्त्री० [हिं० लोटना] लोटने का भाव। लुढ़कना।

संज्ञा पुं० [हिं० लोटना] १. उतार। घाट। * २. त्रिवली।

लोटन–संज्ञा पुं० [हिं० लोटना] १. एक प्रकार का कबूतर। २. राह में की छोटी कँकड़ियाँ।

लोटना–क्रि० अ० [सं० लुठन] १. सीधे और उलटे लेटते हुए किसी ओर को जाना। २. लुढ़कना। ३. कष्ट से करवट बदलना। तड़पना।

मुहा०—लोट जाना = १. बेसुध होना। बेहोश हो जाना। २. मर जाना। ४. विश्राम करना। लेटना। ५. मुग्ध होना। मोहित होना।

लोटपटा†—संज्ञा पु० [हिं० लोटना + पाटा] १. विवाह के समय पीढ़ा या स्थान बदलने की रीति। २. दाँव का उलट-फेर।

लोटा—संज्ञा पुं० [हिं० लोटना][स्त्री० अल्पा० लुटिया] धातु का एक गोल पात्र जो पानी रखने के काम में आता है।

लोटिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० लोटा] छोटा लोटा।

लोड़ना*†—क्रि० स० [सं० लोड़=आवश्यकता] आवश्यकता होना। दरकार होना।

लोढ़ना—क्रि० स० [स० लुंचन] १. चुनना। तोड़ना। २. ओटना।

लोढ़ा—संज्ञा पु० [सं० लोष्ठ] [स्त्री० अल्पा० लोढ़िया] पत्थर का वह टुकड़ा जिससे सिल पर किसी चीज़ को रखकर पीसते है। बट्टा।
मुहा०—लोढ़ा डालना = बराबर करना। लोढ़ाढाल = चौपट। सत्यानाश।

लोढ़िया—संज्ञा स्त्री० [हिं० लोढ़ा] छोटा लोढ़ा।

लोथ, लोथि—संज्ञा स्त्री० [स० लोष्ठ] मृत-शरीर। लाश। शव।
मुहा०—लोथ गिरना=मारा जाना। लोथ डालना = मार गिराना। हत्या करना।

लोथड़ा—संज्ञा पु० [हिं० लोथ] मांसपिंड।

लोध—संज्ञा स्त्री० [स० लोध्र] एक प्रकार का वृक्ष। वैद्यक में इसकी छाल और लकड़ी दोनों का प्रयोग होता है।

लोध्र—संज्ञा पु० दे० "लोध"।

लोध्रतिलक—संज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का अलंकार जो उपमा का एक भेद है।

लोन*†—संज्ञा पु० [स० लवण] १. लवण। नमक।
मुहा०—किसी का लोन खाना = अन्न खाना। पाला जाना। किसी का लोन निकलना=नमकहरामी का फल मिलना। लोन न मानना = उपकार न मानना। जले पर लोन लगाना या देना = दु:ख पर दु:ख देना। किसी बात का लोन सा लगना = अरुचिकर होना। अप्रिय होना।
२. सौंदर्य। लावण्य। वि० दे० "नमक"।

लोनहरामी†—वि० दे० "नमकहराम"।

लोना—वि० [हिं० लोन] [भाव० लोनाई] १. नमकीन। सलोना। २. सुंदर। संज्ञा पु० [हिं० लोन] १. दीवारों का एक प्रकार का रोग जिसमें वह झड़ने लगती और कमजोर हो जाती है। २. वह धूल या जो लोना लगने पर दीवार मिट्टी से झड़कर गिरती है। ३. नमकीन मिट्टी, जिससे शोरा बनाया जाता है। ४. अमलोनी। संज्ञा स्त्री० [देश०] एक कल्पित चमारी जो जादू-टोने में प्रवीण मानी जाती है।
क्रि० स० [स० लवण] फसल काटना।

लोनाई—संज्ञा स्त्री० दे० "लावण्य"।

लोनार†—संज्ञा पु० [हिं० लोन] वह स्थान जहाँ नमक होता है।

लोनिका—संज्ञा स्त्री० दे० "लोनी"।

लोनिया—संज्ञा पु० [हिं० लोन] एक जाति जो लोन या नमक बनाने का व्यवसाय करती है। नोनियाँ।

लोनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० लवण, लोन] कुलफे की जाति का एक प्रकार का साग।

लोप—संज्ञा पु० [स०] [संज्ञा लोपन] [वि० लुप्त, लोपक, लोप्ता, लोप्य] १. नाश। क्षय। २. विच्छेद। ३ अदर्शन। अभाव। ४. व्याकरण में वह नियम जिसके अनुसार शब्द के साधन में किसी वर्ण को उड़ा देते हैं। ५. छिपना। अंतर्धान होना।

लोपन—संज्ञा पु० [स०] १. लुप्त करना। तिरोहित करना। २. नष्ट करना।

लोपना*†—क्रि० स० [स० लोपन] १ लुप्त करना। मिटाना। २. छिपाना।
क्रि० अ० लुप्त होना। मिटना।

लोपांजन—संज्ञा पु० [स०] वह कल्पित अंजन जिसके विषय में यह प्रसिद्ध है कि इसके लगाने से लगानेवाला अदृश्य हो जाता है।

लोपामुद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अगस्त्य ऋषि की स्त्री का नाम। २. एक तारा

जो अगस्त्य-मंडल के पास उदय होता है।
लोवा-संज्ञा स्त्री० [हिं० लोमड़ी] लोमड़ी।
लोबान-संज्ञा पुं० [अ०] एक वृक्ष का सुगंधित गोंद जो जलाने और दवा के काम में लाया जाता है।
लोबिया-संज्ञा पुं० [सं० लोभ्य] एक प्रकार का बड़ा बोड़ा। (फली)
लोभ-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० लुब्ध, लोभी] दूसरे के पदार्थ को लेने की कामना। लालच। लिप्सा।
लोभना, लोभाना*†-क्रि० स० [हिं० लोभना का सक०] मोहित करना। मुग्ध करना। क्रि० अ० मोहित होना। मुग्ध होना।
लोभार*†-वि० [हिं० लोभ] लुभानेवाला।
लोभित-वि० [हिं० लोभ] लुब्ध। मुग्ध।
लोभी-वि० [सं० लोभिन्] १. जिसे किसी बात का लोभ हो। लालची। २. लुब्ध। लुभाया हुआ।
लोम-संज्ञा पुं० [सं०] १. शरीर पर के छोटे छोटे बाल। रोवाँ। रोम। २. बाल। संज्ञा पु० [सं० लोमश] लोमड़ी।
लोमड़ी-संज्ञा स्त्री० [सं० लोमश] गीदड़ की जाति का एक प्रसिद्ध जंतु।
लोमपाद-संज्ञा पु० [सं०] अंग देश के एक राजा जो दशरथ के मित्र थे।
लोमश-संज्ञा पुं० [सं०] एक ऋषि जिनको पुराणों में अमर माना गया है। वि० अधिक और बड़े बड़े रोएँवाला।
लोमहर्षण-वि० [सं०] ऐसा भीषण जिससे रोएँ खड़े हो जायँ। बहुत भयानक।
लोय*†-संज्ञा पुं० [सं० लोक] लोग। संज्ञा स्त्री० [हिं० लव या लाव] लौ। लपट। संज्ञा पुं० [सं० लोचन] आँख। नेत्र। अव्य० दे० "लौं"।
लोयन*-संज्ञा पुं० [सं० लोचन] आँख।
लोर†-वि० [सं० लोल] १. लोल। चंचल। २. उत्सुक। इच्छुक।
लोरना*-क्रि० अ० [सं० लोल] १. चंचल होना। २. लपकना। ललकना। ३. लिपटना। ४. झुकना। ५. लोटना।
लोरी-संज्ञा स्त्री० [सं० लोल] एक प्रकार का गीत जो स्त्रियाँ बच्चों को सुलाने के लिये गाती है।
लोल-वि० [सं०] १. हिलता-डोलता। कंपायमान। २. परिवर्तनशील। ३. क्षणिक। क्षणभंगुर। ४. उत्सुक।
लोलक-संज्ञा पुं० [सं०] १. लटकन जो बालियों में पहना जाता है। २. कान की लव। लोलकी।
लोलदिनेश-संज्ञा पुं० दे० "लोलार्क"।
लोलना*-क्रि० अ० [सं० लोल] हिलना।
लोला-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जिह्वा। जीभ। २. लक्ष्मी। ३. एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में मगण, सगण, मगण, भगण और अंत में दो गुरु होते हैं।
लोलार्क-संज्ञा पुं० [सं०] काशी के एक प्रसिद्ध तीर्थ का नाम।
लोलिनी-वि० स्त्री० [सं० लोल] चंचल प्रकृतिवाली।
लोलुप-वि० [सं०] १. लोभी। लालची। २. चटोरा। चट्टू। ३. परम उत्सुक।
लोवा-संज्ञा स्त्री० [सं० लोमश] लोमड़ी।
लोष्ठ-संज्ञा पु० [सं०] १. पत्थर। २. ढेला।
लोहँड़ा-संज्ञा पुं० [सं० लोहभांड] [स्त्री० लोहँड़ी] १. लोहे का एक प्रकार का पात्र। २. तसला।
लोह-संज्ञा पुं० [सं०] लोहा। (धातु)
लोहसार-संज्ञा पु० [सं०] १. फ़ौलाद। २. फ़ौलाद की बनी हुई जंजीर।
लोहा-संज्ञा पु० [सं० लोह] १. काले रंग की एक प्रसिद्ध धातु जिसके बरतन, शस्त्र और मशीनें आदि बनती हैं। मुहा०-लोहे के चने=अत्यंत कठिन काम। २. अस्त्र। हथियार। मुहा०-लोहा गहना=हथियार उठाना। युद्ध करना। लोहा बजना=युद्ध होना। किसी का लोहा मानना=१. किसी विषय में किसी का प्रभुत्व स्वीकार करना। २. पराजित होना। हार जाना। लोहा लेना=लड़ना। युद्ध करना। ३. लोहे की बनाई हुई कोई चीज या उप-

करण। ४. लाल रंग का बैल।
लोहाना–क्रि० अ० [हिं० लोहा + आना (प्रत्य०)] किसी पदार्थ में लोहे का रंग या स्वाद आ जाना।
लोहार–संज्ञा पुं० [सं० लौहकार] [स्त्री० लोहारिन, लोहाइन] एक जाति जो लोहे की चीज़ें बनाती है।
लोहारी–संज्ञा स्त्री० [हिं० लोहार+ई(प्रत्य०)] लोहारी का काम।
लोहित–वि० [सं०] रक्त। लाल।
संज्ञा पुं० [सं० लोहितक] मंगल ग्रह।
लोहित्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्रह्मपुत्र नद। २ एक समुद्र का नाम।
लोहिया–संज्ञा पुं० लोहा + इया (प्रत्य०)] १. लोहे की चीज़ों का व्यापार करनेवाला। २ बनियों और मारवाड़ियों की एक जाति। ३. लाल रंग का बैल।
लोहू–संज्ञा पुं० दे० "लहू"।
लौं*†–अव्य० [हिं० लग] १. तक। पर्य्यंत। २ समान। तुल्य। बराबर।
लौंकना*†–क्रि० अ० [सं० लोकन] १. दृष्टि-गोचर होना। दिखाई देना। २ चमकना।
लौंग–संज्ञा पुं० [सं० लवंग] १. एक झाड़ की कली जो खिलने के पहले ही तोड़कर सुखा ली जाती है। यह मसाले और दवा के काम में आती है। २. लौंग के आकार का एक आभूषण जिसे स्त्रियाँ नाक या कान में पहनती हैं।
लौंडा–संज्ञा पुं० [?] [स्त्री० लौंडी, लौंडिया] छोकरा। बालक। लड़का।
लौंडी–संज्ञा स्त्री० [हिं० लौंडा] दासी।
लौंद–संज्ञा पुं० [?] अधिमास। मलमास।
लौंदा*–संज्ञा पुं० दे० "लोंदा"।
लौ–संज्ञा स्त्री० [सं० दावा] १. आग की लपट। ज्वाला। २ दीपक की टेम।
संज्ञा स्त्री० [हिं० लाग] १ लाग। चाह। २. चित्त की वृत्ति।
यौ०–लौलीन=किसी के ध्यान में डूबा हुआ ३. आशा। कामना।
लौआ†–संज्ञा पुं० [सं० लावुक] कद्दू।
लौकना–क्रि० अ० [हिं० लौ] दूर से दिखाई पड़ना।
लौकिक–वि० [सं०] १. लोक-संबंधी। सांसारिक। २. व्यावहारिक।
संज्ञा पुं० सात मात्राओं के छंदों का नाम।
लौकी†–संज्ञा स्त्री० दे० "कद्दू"।
लौजोड़ा*†–संज्ञा पुं० [हिं० लौ + जोड़ना] धातु गलानेवाला कारीगर।
लौट–संज्ञा स्त्री० [हिं० लौटना] लौटने की क्रिया, भाव या ढंग।
लौटना–क्रि० अ० [हिं० उलटना] १. वापस आना। पलटना। २ पीछे की ओर मुड़ना।
क्रि० स० पलटना। उलटना।
लौट-फेर–संज्ञा पुं० [हिं० लौट + फेर] उलट-फेर। हेर-फेर। भारी परिवर्तन।
लौटाना–क्रि० स० [हिं० लौटना का सक०] १ फेरना। पलटाना। २. वापस करना। ३. ऊपर-नीचे करना।
लौन*–संज्ञा पुं० [सं० लवण] नमक।
लौना†–संज्ञा पुं० दे० "लौनी"।
*वि० [सं० लावण्य=लोन] [स्त्री० लौनी] लावण्ययुक्त। सुंदर।
लौनी‡–संज्ञा स्त्री० [हिं० लौना] फसल की कटनी। कटाई।
*संज्ञा स्त्री० [सं० नवनीत] मक्खन। नैनू।
लौह–संज्ञा पुं० [सं०] लोहा।
लौहित्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्रह्मपुत्र नद। २ लाल सागर।
ल्याना*–क्रि० स० दे० "लाना"।
ल्यारी†–संज्ञा पुं० [देश०] भेड़िया।
ल्यावना*–क्रि० स० दे० "लाना"।
ल्वारि*†–संज्ञा स्त्री० दे० "लूह"।

व

व–हिंदी या संस्कृत वर्णमाला का उन्नीसवाँ व्यंजन वर्ण, जो उकार का विकार और अंतस्थ अर्द्धव्यंजन माना जाता है।
वंक–वि० [सं०] टेढ़ा। वक्र।
वंकट–वि० [सं० वंक] १. टेढ़ा। बाँका। कुटिल। २ विकट। दुर्गम।
वंकनाली–संज्ञा स्त्री० [सं० वंक + नाड़ी] सुषुम्ना नामक नाड़ी।
वंकिम–वि० [सं०] टेढ़ा। झुका हुआ। बाँका।
वंक्षु–संज्ञा स्त्री० [सं०] आक्सस नदी जो हिंदूकुश पर्वत से निकलकर आरल समुद्र में गिरती है।
वंग–संज्ञा पुं० [सं०] १. बंगाल प्रदेश। २. राँगा नाम की धातु। ३. राँगे का भस्म।
वंगज–संज्ञा पुं० [सं०] १. सिंदूर। २. पीतल वि० बंगाल में उत्पन्न होनेवाला।
वंचक–वि० [सं०] १. धूर्त। धोखेबाज। ठग। २. खल।
वंचना–संज्ञा स्त्री० [सं०] धोखा। छल। * क्रि० स० [सं० वंचन] धोखा देना। ठगना।
† क्रि० स० [सं० वाचन] पढ़ना। बाँचना।
वंचित–वि० [सं०] १. जो ठगा गया हो। २. अलग किया हुआ। ३. अलग। हीन। रहित।
वंदन–संज्ञा पुं० [सं०] स्तुति और प्रणाम। पूजन।
वंदनमाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] बंदनवार।
वंदना–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० वंदित, वंदनीय] १. स्तुति २. प्रणाम। वंदन।
वंदनीय–वि० [सं०] वंदना करने योग्य। आदर करने योग्य।
वंदित–वि० [सं०] पूज्य। आदरणीय।
वंदी–संज्ञा पुं० दे० "बंदी"।
वंदीजन–संज्ञा पुं० [सं०] राजाओं आदि का यश वर्णन करनेवाली एक प्राचीन जाति।
वंद्य–वि० [सं०] वंदनीय। पूजनीय।
वंश–संज्ञा पुं० [सं०] १. बाँस। २. पीठ की हड्डी। ३. नाक के ऊपर की हड्डी। बाँसा। ४. बाँसुरी। ५. बाहु आदि की लंबी हड्डियाँ।
वंशज–संज्ञा पुं० [सं०] १. बाँस का चावल। २. संतान। संतति। औलाद।
वंशतिलक–संज्ञा पुं० [सं०] एक छंद।
वंशधर–संज्ञा पुं० [सं०] कुल में उत्पन्न। वंशज। संतति। संतान।
वंशलोचन–संज्ञा पुं० [सं०] बंसलोचन।
वंशस्थ–संज्ञा पुं० [सं०] बारह वर्णों का एक वर्णवृत्त।
वंशावली–संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी वंश में उत्पन्न पुरुषों की पूर्वोत्तर क्रम से सूची।
वंशी–संज्ञा स्त्री० [सं०] मुँह से फूँककर बजाया जानेवाला एक प्रकार का बाजा। बाँसुरी। मुरली।
वंशीधर–संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।
वंशीय–वि० [सं०] कुल में उत्पन्न।
वंशीवट–संज्ञा पुं० [सं०] वृन्दावन में वह बरगद का पेड़ जिसके नीचे श्रीकृष्ण वंशी बजाया करते थे।
व–संज्ञा पुं० [सं०] १. वायु। २. बाण। ३. वरुण। ४. बाहु। ५. कल्याण। ६. समुद्र। ७. वस्त्र। ८. वंदन। अव्य० [फ़ा०] और। जैसे—राजा व रईस।
वक–संज्ञा पुं० [सं०] १. बगला पक्षी। २. अगस्त का पेड़ या फूल। ३. एक दैत्य जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था। ४. एक राक्षस जिसे भीम ने मारा था।
वकवृत्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] धोखा देकर काम निकालने की घात में रहना।
वकालत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. दूत-कर्म। २. दूसरे की ओर से उसके अनुकूल बातचीत करना। ३. मुकदमे में किसी फ़रीक

की तरफ से बहस करने का पेशा।
वकालतनामा–संज्ञा पु० [अ० फा०] वह अधिकारपत्र जिसके द्वारा कोई किसी वकील को अपनी तरफ़ से मुकदमे में बहस करने के लिये मुकर्रर करता है।
वकासुर–संज्ञा पु० [सं०] एक राक्षस।
वकील–संज्ञा पु० [अ०] १ दूत। २ राजदूत। एलची। ३ प्रतिनिधि। ४ दूसरे का पक्ष मंडन करनेवाला। ५ वह आदमी जिसने वकालत की परीक्षा पास की हो और जो अदालतों में मुद्दई या मुद्दालय की ओर से बहस करे।
वकुल–संज्ञा पु० [सं०] अगस्त का पेड़ या फूल।
वक्त–संज्ञा पु० [अ०] १ समय। काल। २ अवसर। मौका। ३ अवकाश। फुरसत।
वक्तव्य–वि० [सं०] कहने योग्य। वाच्य। संज्ञा पु० [सं०] १ कथन। वचन। २ वह बात जो किसी विषय में कहनी हो।
वक्ता–वि० [सं० वक्तृ] १ वाग्मी। बोलनेवाला। २ भाषण-पटु।
संज्ञा पु० कथा कहनेवाला पुरुष। व्यास।
वक्तृता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वाक्पटुता। २ व्याख्यान। ३ कथन। भाषण।
वक्तृत्व–संज्ञा पु० [सं०] १. वक्तृता। वाग्मिता। २ व्याख्यान। ३ कथन।
वक्त्र–संज्ञा पु० [सं०] १ मुख। २ एक प्रकार का छंद।
वक्फ़–संज्ञा पु० [अ०] १ वह संपत्ति जो धर्मार्थ दान कर दी गई हो। २ किसी के लिये कोई चीज छोड़ देना। (मुस०)
वक्र–वि० [सं०] १ टेढ़ा। बाँका। २ झुका हुआ। तिरछा। ३ कुटिल।
वक्रगामी–वि० [सं० वक्रगामिन] १ टेढ़ी चाल चलनेवाला। २ शठ। कुटिल।
वक्रतुंड–संज्ञा पु० [सं०] गणेश।
वक्रदृष्टि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ टेढ़ी दृष्टि। २ क्रोध की दृष्टि।
[illegible]–संज्ञा पु० [सं०] १ वह प्राणी जिसके अंग जन्म से टेढ़े हों। २ बुद्धदेव।
वक्रोक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक प्रकार का काव्यालंकार जिसमें काकु या श्लेष से वाक्य का और का और अर्थ किया जाता है। २ काकूक्ति। ३ बढ़िया उक्ति।
वक्ष–संज्ञा पु० [सं० वक्षस्] छाती। उरस्थल।
वक्षस्थल–संज्ञा पु० [सं०] उर। छाती।
वक्षु–संज्ञा पु० दे० "वंक्षु"।
वगलामुखी–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक महाविद्या।
वगैरह–अव्य० [अ०] इत्यादि। आदि।
वच–संज्ञा पु० [सं० वचन] वाक्य।
वचन–संज्ञा पु० [सं०] १ मनुष्य के मुँह से निकला हुआ सार्थक शब्द। वाणी। वाक्य। २ कथन। उक्ति। ३ व्याकरण में शब्द के रूप में वह विधान जिससे एकत्व या बहुत्व का बोध होता है। हिंदी में दो वचन होते हैं—एकवचन और बहुवचन।
वचनलक्षिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह परकीया नायिका जिसकी बात-चीत से उसके उपपति से प्रेम लक्षित या प्रकट होता हो।
वचनविदग्धा–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह परकीया नायिका जो अपने वचन की चतुराई से नायक की प्रीति का साधन करती हो।
वचा–संज्ञा स्त्री० [सं०] वच नाम की ओषधि।
वच्छ*–संज्ञा पु० [सं० वक्षस्] उर। छाती।
वज़न–संज्ञा पु० [अ०] १ भार। बोझ। २ तौल। ३ मान। मर्यादा। गौरव।
वज़नी–वि० [अ० वज़न+ई] जिसका बहुत बोझ हो। भारी।
वजह–संज्ञा स्त्री० [अ०] कारण। हेतु।
वज़ा–संज्ञा स्त्री० [अ० वज़अ] १ बनावट। रचना। २ सज धज। ३ दशा। अवस्था। रीति। प्रणाली। ५ मुजरा। मिनहा।
वज़ादार–वि० [अ० वज़ा+फा० दार] जिसकी बनावट आदि बहुत अच्छी हो। तरहदार।
वज़ीफ़ा–संज्ञा पु० [अ०] १ वह वृत्ति या आर्थिक सहायता जो विद्वानों, छात्रों, सन्यासियों आदि को दी जाती है। २ जप या पाठ। (मुसलमान)
वज़ीर–संज्ञा पु० [अ०] १ मंत्री। अमात्य। दीवान। २ शतरंज की एक गोटी।
वज़ीरी–संज्ञा स्त्री० [अ०] वज़ीर का काम या

पद। संज्ञा पुं० घोड़ों की एक जाति।
वजू–संज्ञा पुं० [अ० वुज़ू] नमाज़ पढ़ने के पूर्व शौच के लिये हाथ-पाँव आदि धोना।
वज्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. पुराणानुसार भाले के फल के समान एक शस्त्र जो इंद्र का प्रधान शस्त्र कहा गया है। कुलिश। पवि। २. विद्युत्। बिजली। ३. हीरा। ४. फ़ौलाद। ५. भाला। बरछा। वि० १. बहुत कड़ा या मजबूत। २. घोर। दारुण। भीषण।
वज्रलेप–संज्ञा पुं० [सं०] एक मसाला जिसका लेप करने से दीवार, मूर्ति आदि मजबूत हो जाती है।
वज्रसार–संज्ञा पुं० [सं०] हीरा।
वज्रावर्त–संज्ञा पुं० [सं०] एक मेघ का नाम।
वज्रासन–संज्ञा पुं० [सं०] हठ योग के चौरासी आसनों में से एक।
वज्री–संज्ञा पुं० [सं० वज्रिन्] इंद्र।
वज्रोली–संज्ञा स्त्री० [हिं० वज्र] हठयोग की एक मुद्रा का नाम।
वट–संज्ञा पुं० [सं०] बरगद का पेड़।
वटक–संज्ञा पुं० [सं०] १. बड़ी टिकिया या गोला। बट्टा। २. बड़ा। पकौड़ा।
वटसावित्री–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक व्रत का नाम जिसमें स्त्रियाँ वट का पूजन करती हैं।
वटिका, वटी–संज्ञा स्त्री० [सं०] गोली या टिकिया। वटी।
वटु–संज्ञा पुं० [सं०] १. बालक। २. ब्रह्मचारी। माणवक।
वटुक–संज्ञा पुं० [सं०] १. बालक। २. ब्रह्मचारी। ३. एक भैरव।
वणिक्–संज्ञा पुं० [सं०] १. रोजगार करनेवाला। २. वैश्य। बनिया।
वतंस–संज्ञा पुं० दे० "अवतंस"।
वतन–संज्ञा पुं० [अ०] जन्मभूमि।
वत्–संज्ञा पुं० [सं०] समान। तुल्य।
वत्स–संज्ञा पुं० [सं०] १. गाय का बच्चा। बछड़ा। २. बालक। ३. वत्सासुर।
वत्सनाभ–संज्ञा पुं० [सं०] एक विष जिसे 'बछनाग' या 'बच्छनाग' भी कहते हैं। यह एक पौधे की जड़ है। मीठा जहर।
वत्सर–संज्ञा पुं० [सं०] वर्ष। साल।
वत्सल–वि० [सं०] [स्त्री० वत्सला] १. बच्चे के प्रेम से भरा हुआ। २. अपने से छोटों के प्रति अत्यंत स्नेहवान् या कृपालु। संज्ञा पुं० साहित्य में कुछ लोगों के द्वारा माना हुआ दसवाँ रस जिसमें माता-पिता का संतान के प्रति प्रेम प्रदर्शित होता है।
वदतोव्याघात–संज्ञा पुं० [सं०] कथन का एक दोष जिसमें कोई एक बात कहकर फिर उसके विरुद्ध बात कही जाती है।
वदन–संज्ञा पुं० [सं०] १. मुख। मुँह। २. अगला भाग। ३. कथन। बात कहना।
वदान्य–वि० [सं०] १. अतिशय दाता। उदार। २. मधुरभाषी।
वदि–संज्ञा पुं० [सं० अवदिन] कृष्ण पक्ष। जैसे—जेठ वदि ४।
वदूसना*–क्रि० स० [सं० विदूषण] दोष देना। भला-बुरा कहना। इलज़ाम लगाना।
वध–संज्ञा पुं० [सं०] जान से मार डालना। घात। हत्या।
वधक–संज्ञा पुं० [सं०] १. घातक। हिंसक। २. व्याध। ३. मृत्यु।
वधू–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नव-विवाहिता स्त्री। दुलहन। २. पत्नी। भार्य्या। ३. पुत्र की बहू। पतोहू।
वधूटी–संज्ञा स्त्री० दे० "वधू"।
वधूत*–संज्ञा पुं० दे० "अवधूत"।
वध्य–वि० [सं०] मार डालने योग्य।
वन–संज्ञा पुं० [सं०] १. वन। जंगल। २. वाटिका। ३. जल। ४. घर। आलय। ५. शंकराचार्य के अनुयायी संन्यासियों की एक उपाधि।
वनचर–वि० [सं०] वन में भ्रमण करने या रहनेवाला।
वनज–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो वन (जंगल या पानी) में उत्पन्न हो। २. कमल।
वनदेव–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० वनदेवी] वन का अधिष्ठाता देवता।
वनमाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वन के फूलों

की माला। २ एक विशेष प्रकार की माला जो श्रीकृष्ण धारण करते थे।
वनमाली–संज्ञा पु० [स०] श्रीकृष्ण।
वनराज–संज्ञा पु० [स०] सिंह।
वनरुह–संज्ञा पु० [स०] कमल।
वनलक्ष्मी–संज्ञा स्त्री० [स०] वन की शोभा। वनश्री।
वनवास–संज्ञा पु० [स०] १ जगल में रहना। २ बस्ती छोड़कर जगल में रहने की व्यवस्था या विधान।
वनवासी–वि० [स० वनवासिन्] [स्त्री० वनवासिनी] बस्ती छोड़कर जगल में निवास करनेवाला।
वनस्थली–संज्ञा स्त्री० [स०] वनभूमि।
वनस्पति–संज्ञा स्त्री० [स०] वृक्ष मात्र। पेड़-पौधे।
वनस्पति शास्त्र–संज्ञा पु० [स०] वह शास्त्र जिसमें पौधों और वृक्षों आदि के रूपो, जातियों और भिन्न भिन्न अगो का विवेचन होता है। वनस्पति विज्ञान।
वनिता–संज्ञा स्त्री० [स०] १ प्रिया। प्रियतमा। २ स्त्री। औरत। ३ छ वर्णों की एक वृत्ति। तिलका। डिल्ला।
वनी–संज्ञा स्त्री० [स०] छोटा वन।
वनौषध–संज्ञा स्त्री० [स०] वन की ओषधियाँ। जगली जड़ी-बूटी।
वन्य–वि० [स०] १ वन में उत्पन्न होनेवाला। वनोद्भव। २ जगली।
वपन–संज्ञा पु० [स०] बीज बोना।
वपा–संज्ञा स्त्री० [स०] चरबी। मेद।
वपु–संज्ञा पु० [स० वपुस्] शरीर। देह।
वपुष्टमा–संज्ञा स्त्री० [स०] काशिराज की एक कन्या, जो जनमजय से ब्याही थी।
वफा–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ वादा पूरा करना। बात निबाहना। २ निर्वाह। पूर्णता। ३ मुरौवत। सुशीलता।
वफादार–वि० [अ० वफा+फा० दार] [संज्ञा वफादारी] वचन या कर्त्तव्य का पालन करनेवाला।
वबा–संज्ञा स्त्री० [अ०] फैलनेवाला भयकर रोग। मरी। जैसे—हैज़ा, प्लेग आदि।
वबाल–संज्ञा पु० [अ०] १ बोझ। भार। २ आपत्ति। कठिनाई। आफत।
वभ्र–संज्ञा पु० दे० "वभ्र"।
वमन–संज्ञा पु० [स०] १ कै करना। उल्टी करना। २ वमन किया हुआ पदार्थ।
वमि–संज्ञा स्त्री० [स०] वमन का रोग।
वयं*–सर्व० [स० प्र०] हम।
वयःक्रम–संज्ञा पु० [स०] अवस्था। उम्र।
वयःसंधि–संज्ञा स्त्री० [स०] बाल्यावस्था और यौवनावस्था के बीच की स्थिति।
वय–संज्ञा स्त्री० [स० वयस्] अवस्था। उम्र।
वयस्क–वि० [स०] [स्त्री० वयस्का] १ उमर का। अवस्थावाला। (यौ० में) २ पूरी अवस्था को पहुँचा हुआ। सयाना। बालिग।
वयोवृद्ध–वि० [स०] बड़ा-बूढ़ा।
वरच–अव्य० [स०] १ ऐसा न होकर ऐसा। बल्कि। २ परतु। लेकिन।
वर–संज्ञा पु० [स०] १ किसी देवता या बड़े से माँगा हुआ मनोरथ। २ किसी देवता या बड़े से प्राप्त किया हुआ फल या सिद्धि। ३ पति या दूल्हा।
वि० श्रेष्ठ। उत्तम। जैसे—प्रियवर।
वरक़–संज्ञा पु० [अ०] १ पत्र। २ पुस्तक का पन्ना। पत्रा। ३ सोने, चाँदी आदि के पतले पत्तर।
वरजिश–संज्ञा स्त्री० [फा०] व्यायाम।
वरण–संज्ञा पु० [स०] १ किसी को किसी काम के लिये चुनना या मुकर्रर करना। २ मगल-कार्य्य के विधान में होता आदि कार्य्य-कर्त्ताओं को नियत करके उनका सत्कार करना। ३ मगल-कार्य्य में नियत किए हुए होता आदि के सत्कारार्थ दी हुई वस्तु या दान। ४ कन्या के विवाह में वर को अंगीकार करने की रीति। ५ पूजा। अर्चना। सत्कार।
वरणी–संज्ञा स्त्री० दे० "वरण" ३।
वरद–वि० [स०] [स्त्री० वरदा] वर देनेवाला।
वरदाता–वि० [स०] वर देनेवाला।

वरदान–संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी देवता या बड़े का प्रसन्न होकर कोई अभिलषित वस्तु या सिद्धि देना। २. किसी फल का लाभ जो किसी की प्रसन्नता से हो।
वरदानी–संज्ञा पुं० [सं०] वर देनेवाला।
वरदी–संज्ञा स्त्री० [अ०] वह पहनावा जो किसी खास महकमे के अफ़सरों और नौकरों के लिये मुकर्रर हो।
वरन्–अव्य० [सं० वरम्] ऐसा नहीं। बल्कि।
वरना*–संज्ञा पुं० [सं० वरण] ऊँट।
अव्य० [अ०] नहीं तो। यदि ऐसा न होगा तो।
वरम–संज्ञा पुं० दे० "वर्म"।
वरयात्रा–संज्ञा स्त्री० [सं०] दूल्हे का बाजे-गाजे के साथ दुलहिन के घर विवाह के लिये जाना। बारात।
वररुचि–संज्ञा पुं० [सं०] एक अत्यंत प्रसिद्ध प्राचीन पंडित, वैयाकरण और कवि।
वरही*–संज्ञा पुं० दे० "वहीं"।
वराटिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] कौड़ी। कपर्दिका।
वरानना–संज्ञा स्त्री० [सं०] सुंदर स्त्री।
वराह–संज्ञा पुं० [सं०] १. शूकर। सूअर। २. विष्णु। ३. अठारह द्वीपों में से एक।
वराहकांता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वाराही। २ लज्जालु। लजालू।
वराहमिहिर–संज्ञा पुं० [सं०] ज्योतिष के एक प्रधान आचार्य जिनके बनाए बृहत्संहिता आदि ग्रंथ प्रचलित हैं।
वरिष्ठ–वि० [सं०] श्रेष्ठ। पूजनीय।
वरुण–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक वैदिक देवता जो जल का अधिपति, दस्युओं का नाशक और देवताओं का रक्षक कहा गया है। इसका अस्त्र पाश है। २. वरना का पेड़। ३ जल। पानी। ४. सूर्य्य। ५. एक ग्रह जिसे अँगरेजी में "नेपचून" कहते हैं।
वरुणपाश–संज्ञा पुं० [सं०] वरुण का अस्त्र-पाश या फंदा।
वरुणानी–संज्ञा स्त्री० [सं०] वरुण की स्त्री।
वरुणालय–संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।
वरूथिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] सेना।
वर्ग–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक ही प्रकार की अनेक वस्तुओं का समूह। जाति। कोटि। श्रेणी। २. एक सामान्य धर्म रखनेवाले पदार्थों का समूह। ३. शब्द-शास्त्र में एक स्थान से उच्चरित होनेवाले स्पर्श व्यंजन-वर्णों का समूह। ४ परिच्छेद। प्रकरण। अध्याय। ५. दो समान अंकों या राशियों का घात या गुणन-फल। ६ वह चौखूँटा क्षेत्र जिसकी लंबाई चौड़ाई बराबर और चारों कोण समकोण हों। (रेखा-गणित)
वर्गफल–संज्ञा पुं० [सं०] वह गुणन-फल जो दो समान राशियों के घात से प्राप्त हो।
वर्गमूल–संज्ञा पुं० [सं०] किसी वर्गांक का वह अंक जिसे यदि उसी से गुणन करें तो गुणन वही वर्गांक हो। जैसे—२५ का वर्गमूल ५ होगा।
वर्गलाना–क्रि० स० [फ़ा० 'वरग़लानीदन' से] १. कोई काम करने के लिये उभारना। उकसाना। २. बहकाना। फुसलाना।
वर्जन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० वर्जनीय, वर्ज्य, वर्जित] १. त्याग। छोड़ना। २. मनाही। मुमानियत।
वर्जित–वि० [सं०] १. त्यागा हुआ। त्यक्त। २. जो ग्रहण के अयोग्य ठहराया गया हो। निषिद्ध।
वर्ज्य–वि० [सं०] १. छोड़ने योग्य। त्याज्य। २. जो मना हो।
वर्ण–संज्ञा पुं० [सं०] १. पदार्थों के लाल, पीले आदि भेदों का नाम। रंग। २. जन-समुदाय के चार विभाग—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र—जो प्राचीन आर्य्यों ने किए थे। जाति। ३. भेद। प्रकार। क़िस्म। ४. अकारादि शब्दों के चिह्न या संकेत। अक्षर। ५. रूप।
वर्णखंड मेरु–संज्ञा पुं० [सं०] पिंगल में वह क्रिया जिससे बिना मेरु बनाए यह ज्ञात हो जाता है कि इतने वर्णों के कितने वृत्त हो सकते हैं।
वर्णन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० वर्णनीय, वर्ण्य,

वर्णना] १ चित्रण। रँगना। २ मढ़ि स्यार करना। वर्णन। बयान। ३ गुण-कथा। स्तुति।
वर्णनष्ट–संज्ञा पुं० [सं०] छंद शास्त्र में एक क्रिया जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि प्रस्तार में अनुसार इतने वर्णों के वृत्त में अमुक संख्यक भेद का रूप लघु गुरु के हिसाब से कैसा होगा।
वर्णपताका–संज्ञा स्त्री० [सं०] छंद शास्त्र में एक क्रिया जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि वर्णवृत्त के भेदों में से कौन सा ऐसा है, जिसमें इतने लघु और इतने गुरु होंगे।
वर्णप्रस्तार–संज्ञा पुं० [सं०] छंदशास्त्र में वह क्रिया जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि इतने वर्णों के वृत्त के इतने भेद हो सकते हैं और उन भेदों के स्वरूप इस प्रकार होंगे।
वर्णमाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] अक्षरों के रूपों की यथा-श्रेणी लिखित सूची।
वर्णविचार–संज्ञा पुं० [सं०] आधुनिक व्याकरण का वह अंश जिसमें वर्णों के आकार, उच्चारण और संधि आदि के नियमों का वर्णन हो। प्राचीन वेदांग में यह विषय 'शिक्षा' कहलाता था।
वर्णवृत्त–संज्ञा पुं० [सं०] वह पद्य जिसके चरणों में वर्णों की संख्या और लघु-गुरु के क्रमों में समानता हो।
वर्णसंकर–संज्ञा पुं० [सं०] १ वह व्यक्ति या जाति जो दो भिन्न भिन्न जातियों के स्त्री पुरुष के संयोग से उत्पन्न हो। २ व्यभिचार से उत्पन्न मनुष्य। दोगला।
वर्णसूची–संज्ञा स्त्री० [सं०] छंद शास्त्र या पिंगल में एक क्रिया जिसके द्वारा वर्णवृत्तों की संख्या की शुद्धता, उनके भेदों में आदि अंत लघु और आदि अंत गुरु की संख्या जानी जाती है।
वर्णिक वृत्त–संज्ञा पुं० दे० 'वर्णवृत्त'।
वर्णित–वि० [सं०] १ कथित। कहा हुआ। २ जिसका वर्णन हो चुका हो।
वर्ण्य–वि० [सं०] १ वर्णन के योग्य। २ जो वर्णन का विषय हो।
वर्त्तन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० वर्तित] १ बरताव। व्यवहार। २ व्यवसाय। वृत्ति। रोजी। ३ फेरना। घुमाना। ४ परिवर्तन। फेरफार। ५ स्थापन। रखना। ६ सिल बट्टे से पीसना। ७ पात्र। बरतन।
वर्त्तमान–वि० [सं०] १ चलता हुआ। जो जारी हो। २ उपस्थित। मौजूद। विद्यमान। ३ आधुनिक। हाल का। संज्ञा पुं० १ व्याकरण में क्रिया के तीन कालों में से एक, जिससे सूचित होता है कि क्रिया अभी चली चलती है, समाप्त नहीं हुई है। २ वृत्तांत। समाचार। ३ चलता व्यवहार।
वर्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बत्ती। २ अंजन। ३ गोली। बटी।
वर्तिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बत्ती। २ शलाका। सलाई।
वर्तित–वि० [सं०] १. संपादित किया हुआ। २ चलाया हुआ। जारी किया हुआ।
वर्त्ती–वि० [सं० वर्तिन्] [स्त्री० वर्तिनी] १ वर्तनशील। बरतनेवाला। २ स्थित रहनेवाला।
वर्तुल–वि० [सं०] गोल। वृत्ताकार।
वर्त्म–संज्ञा पुं० [सं०] १ मार्ग। पथ। २ किनारा। ओठ। बारी। ३ आँख की पलक। ४ आधार। आश्रय।
वर्दी–संज्ञा स्त्री० दे० 'वरदी'।
वर्द्धक–वि० [सं०] बढ़ानेवाला। पूरक।
वर्द्धन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० वर्द्धित] १ बढ़ाना। २ वृद्धि। बढ़ती। उन्नति। ३ काटना। तराशना।
वर्द्धमान–वि० [सं०] १ जो बढ़ता जा रहा हो। २ बढ़नेवाला। वर्द्धनशील। संज्ञा पुं० १ एक वर्णवृत्त जिसके चारों चरणों में वर्णों की संख्या भिन्न अर्थात् १४, १३, १८ और १५ होती है। २ जैनियों के २४वें जिन महावीर।
वर्द्धित–वि० [सं०] १ बढ़ा हुआ। २ पूर्ण। ३ छिन्न। कटा हुआ।

वर्म-संज्ञा पुं० [सं० वर्म्मन्] १. कवच । बकतर । २. घर ।

वर्मा-संज्ञा पुं० [सं० वर्म्मन्] क्षत्रियों आदि की उपाधि जो उनके नाम के अंत में लगाई जाती है ।

वर्य्य-वि० [सं०] श्रेष्ठ । जैसे—विद्वद्वर्य्य ।

वर्वर-संज्ञा पुं० [सं०] १. एक देश का नाम । २. इस देश के असभ्य निवासी जिनके बाल घुँघराले कहे गए हैं । ३. पामर । नीच ।

वर्ष-संज्ञा पुं० [सं०] १. वृष्टि । जलवर्षण । २. काल का एक मान जिसमें बारह महीने होते हैं । संवत्सर । साल । वर्ष चार प्रकार के होते हैं—सौर, चांद्र, सावन और नाक्षत्र । ३. पुराणों में माने हुए सात द्वीपों का एक विभाग । ४. किसी द्वीप का प्रधान भाग । ५. मेघ । बादल ।

वर्षगाँठ-संज्ञा स्त्री० दे० "बरस गाँठ" ।

वर्षण-संज्ञा पु० [सं०] [वि० वर्षित] वृष्टि । बरसना ।

वर्षफल-संज्ञा पु० [सं०] फलित ज्योतिष में वह कुंडली जिससे किसी के वर्ष भर के ग्रहों के शुभाशुभ फलों का विवरण जाना जाता है ।

वर्षा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह ऋतु जिसमें पानी बरसता है । २. पानी बरसने की क्रिया या भाव । वृष्टि ।

मुहा०—(किसी वस्तु की) वर्षा होना = १. बहुत अधिक परिमाण में ऊपर से गिरना । २. बहुत अधिक संख्या में मिलना ।

वर्षाकाल-संज्ञा पु० [सं०] बरसात ।

वर्हो-संज्ञा पु० [सं० वर्हिन्] मयूर । मोर ।

वल-संज्ञा पुं० [सं०] १. मेघ । २. एक असुर जो बृहस्पति के हाथ से मारा गया ।

वलन-संज्ञा पु० [सं०] ज्योतिष-शास्त्रानुसार ग्रह, नक्षत्रादि का गमनाश से हटकर चलना । विचलन ।

वलभी-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक पुरानी नगरी जो काठियावाड़ में थी ।

वलय-संज्ञा पु० [सं०] १. मंडल । २. कंकण । ३. चूड़ी । ४. वेष्टन ।

वलवला-संज्ञा पु० [अ०] उमंग । आवेश ।

वलाहक-संज्ञा पु० [सं०] १. मेघ । बादल । २. पर्वत । ३. एक दैत्य का नाम ।

वलि-संज्ञा पुं० [सं०] १. रेखा । लकीर । २. पेट के दोनों ओर पेटी के सिकुड़ने से पड़ी हुई रेखा । बल । ३. देवता को चढ़ाने की वस्तु । ४. एक दैत्य जिसे विष्णु ने वामन अवतार लेकर छला था । ५. श्रेणी । पंक्ति ।

वलित-वि० [सं०] १. बल खाया हुआ । २. झुकाया या मोड़ा हुआ । ३. घेरा हुआ । ४. जिसमें झुर्रियाँ पड़ी हों । ५. लिपटा हुआ । लगा हुआ । ६. ढका हुआ । ७. युक्त । सहित ।

वली-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. झुर्री । शिकन । २. अवली । श्रेणी । ३. रेखा । लकीर । संज्ञा पु० [अ०] १. मालिक । स्वामी । २. शासक । हाकिम । ३. साधु । फकीर ।

वल्कल-संज्ञा पुं० [सं०] १. वृक्ष की छाल । त्वक् । २. वृक्ष की छाल का वस्त्र, जिसे तपस्वी पहना करते थे ।

वल्द-संज्ञा पु० [अ०] औरस बेटा । पुत्र । जैसे "गोकुल वल्द बलदेव" अर्थात् 'गोकुल, बेटा बलदेव का' ।

वल्दियत-संज्ञा स्त्री० [अ०] पिता के नाम का परिचय ।

वल्मीक-संज्ञा पु० [सं०] १. दीमकों का लगाया हुआ मिट्टी का ढेर । बाँबी । बिमौट । २. वाल्मीकि मुनि ।

वल्लभ-वि० [सं०] प्रियतम । प्यारा । संज्ञा पु० १. प्रिय मित्र । नायक । २. पति । स्वामी । ३. अध्यक्ष । मालिक । ४. वैष्णव-संप्रदाय के प्रवर्तक एक प्रसिद्ध आचार्य्य ।

वल्लभा-संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रिय स्त्री ।

वल्लभाचार्य्य-संज्ञा पु० दे० "वल्लभ" ४.।

वल्लभी-संज्ञा पुं० दे० "वलभी" ।

वल्लरि, वल्लरी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वल्ली । लता । २. मंजरी ।

वल्ली-संज्ञा स्त्री० [सं०] लता । बेल ।

वल्वल-संज्ञा पु० [सं०] एक दैत्य जिसे बलराम जी ने मारा था । इल्वल ।

वश–संज्ञा पु० [सं०] १ इच्छा। चाह। २ काबू। इख्तियार। अधिकार। मुहा०—वश का=जिस पर अधिकार हो। ३ शक्ति की पहुँच। दाब। मुहा०–वश चलना=शक्ति काम करना। ४ अधिकार। कब्जा। प्रभुत्व।

वशवर्त्ती–वि० [सं० वशवर्त्तिन] जो दूसरे के वश में रहे। अधीन। ताबे।

वशिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अधीनता। तावेदारी। २ मोहने की क्रिया या भाव।

वशित्व–संज्ञा पु० [सं०] १ वशता। २ योग के अणिमादि आठ ऐश्वर्यों में से एक।

वशिष्ठ–संज्ञा पु० दे० "वसिष्ठ"।

वशी–वि० [सं० वशिन्] [स्त्री० वशिनी] १ अपने को वश में रखनेवाला। २ अधीन।

वशीकरण–संज्ञा पु० [सं०] [वि० वशीकृत] १ वश में लाने की क्रिया। २ मणि, मंत्र आदि के द्वारा किसी को वश में करना।

वशीभूत–वि० [सं०] १ अधीन। ताबे। २ दूसरे की इच्छा के अधीन।

वश्य–वि० [सं०] वश में आनेवाला।

वश्यता–संज्ञा स्त्री० [सं०] अधीनता।

वसंत–संज्ञा पु० [सं०] [वि० वासंत, वासंतक, वासंतिक, वसंती] १ वर्ष की छ ऋतुओं में से प्रधान और प्रथम ऋतु जिसके अंतर्गत चैत और बैसाख के महीने माने गए हैं। बहार का मौसिम। २ शीतला रोग। चेचक। ३ छ रागों में से दूसरा राग।

वसंततिलक–संज्ञा पु० [सं०] चौदह वर्णों का एक वर्णवृत्त।

वसंततिलका–संज्ञा स्त्री० दे० "वसंततिलक"।

वसंतदूत–संज्ञा पु० [सं०] १ आम का वृक्ष। २ कोयल। ३ चैत्र मास।

वसंतदूती–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कोकिला। कोयल। २ माधवी लता।

वसंत पंचमी–संज्ञा स्त्री० [सं०] माघ महीने की शुक्ल पंचमी। श्रीपंचमी।

वसंती–संज्ञा पु० दे० "बसंती"।

वसंतोत्सव–संज्ञा पु० [सं०] १ एक उत्सव जो प्राचीन काल में वसंतपंचमी के दूसरे दिन होता था। मदनोत्सव। २ होली का उत्सव।

वसअत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ विस्तार। फैलाव। २, समाई। अँटने की जगह। ३ चौड़ाई। ४ *सामर्थ्य। शक्ति।*

वसन–संज्ञा पु० [सं०] १ वस्त्र। २ ढकने की वस्तु। आवरण। ३ निवास।

वसमा–संज्ञा पु० [अ०] १ खिजाब। २ उबटन। ३ एक प्रकार का छपा कपड़ा।

वसवास–संज्ञा पु० [अ०] [वि० वसवासी] १ भ्रम। संदेह। २ प्रलोभन या मोह।

वसह*–संज्ञा पु० [सं० वृषभ] बैल।

वसा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मेद। २ चरबी।

वसिष्ठ–संज्ञा पु० [सं०] १ एक प्राचीन ऋषि जिनका उल्लेख वेदों से लेकर रामायण, महाभारत और पुराणों आदि तक में है। २ सप्तर्षि-मंडल का एक तारा।

वसिष्ठ पुराण–संज्ञा पु० [सं०] एक उपपुराण। *कुछ लोग कहते हैं कि लिंग पुराण ही वसिष्ठ पुराण है।*

वसीक़ा–संज्ञा पु० [अ०] १ वह धन जो इस उद्देश्य से सरकारी खजाने में जमा किया जाय कि उसका सूद जमा करनेवाले के संबंधियों को मिला करे। २ ऐसे धन से आया हुआ सूद। वृत्ति।

वसीयत–संज्ञा स्त्री० [अ०] अपनी संपत्ति के विभाग और प्रबंध आदि के संबंध में की हुई वह व्यवस्था, जो मरने के समय कोई मनुष्य लिख जाता है।

वसीयतनामा–संज्ञा पु० [अ० वसीयत+फा० नामा] वह लेख जिसके द्वारा कोई मनुष्य *यह व्यवस्था करता है कि मेरी संपत्ति का विभाग और प्रबंध मेरे मरने के पीछे किस* प्रकार हो।

वसीला–संज्ञा पु० [अ०] १ संबंध। २ आश्रय। सहायता। ३ जरिया। द्वार।

वसुंधरा–संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

वसु–संज्ञा पु० [सं०] १ देवताओं का एक

गण जिसके अंतर्गत आठ देवता हैं। २. आठ की संख्या। ३. रत्न। ४. धन। ५. अग्नि। ६. रश्मि। किरण। ७. जल। ८. सुवर्ण। सोना। ९. कुबेर। १०. शिव। ११. सूर्य्य। १२. विष्णु। १३. साधु पुरुष। सज्जन। १४. सरोवर। तालाव। १५. छप्पय का ६९वाँ भेद।

वसुदा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पृथ्वी। २. माली राक्षस की पत्नी। इसके अनल, निल, हर और संपाति नामक चार पुत्र थे।

वसुदेव–संज्ञा पुं० [सं०] यदुवंशियों के शूर कुल के एक राजा जो श्रीकृष्ण के पिता थे।

वसुधा–संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

वसुधारा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जैनों की एक देवी। २. कुबेर की पुरी, अलका।

वसुमती–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पृथ्वी। २. छः वर्णों का एक वृत्त।

वसुहंस–संज्ञा पुं० [सं०] वसुदेव के पुत्र एक यादव का नाम।

वसूल–वि० [अ०] १. मिला हुआ। प्राप्त। २. जो चुका लिया गया हो। लब्ध।

वसूली–संज्ञा स्त्री० [अ० वसूल] दूसरे से रुपया-पैसा या वस्तु लेने का काम। प्राप्ति।

वस्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पेड़ू। २. मूत्राशय। ३. पिचकारी।

वस्तिकर्म–संज्ञा पुं० [सं०] लिंगेंद्रिय, गुदेंद्रिय आदि मार्गों में पिचकारी देना।

वस्तु–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० वास्तव, वास्तविक] १. वह जिसका अस्तित्व या सत्ता हो। वह जो सचमुच हो। २. सत्य। ३. गोचर पदार्थ। चीज। ४. नाटक का कथन या आख्यान। कथावस्तु।

वस्तुतः–अव्य० [सं०] यथार्थतः। सचमुच।

वस्तुनिर्देश–संज्ञा पुं० [सं०] मंगलाचरण का एक भेद जिसमें कथा का कुछ आभास दे दिया जाता है।

वस्तुवाद–संज्ञा पुं० [सं०] वह दार्शनिक सिद्धांत जिसमे जगत् जैसा दृश्य है, उसी रूप में उसकी सत्ता मानी जाती है। जैसे— न्याय और वैशेषिक।

२. वस्त्र–संज्ञा पुं० [सं०] कपड़ा।

वस्त्र-भवन–संज्ञा पुं० [सं०] कपड़े का बना घर। जैसे—खेमा, रावटी आदि।

वस्फ़–संज्ञा पुं० [अ०] १. प्रशंसा। स्तुति। २. गुण। सिफ़त। ३. विशेषता।

वस्ल–संज्ञा पुं० [अ०] १. दो चीजों का मेल। मिलन। २. संयोग। मिलाप।

वह–सर्व० [सं० सः] १. एक शब्द जिसके द्वारा किसी तीसरे मनुष्य का संकेत किया जाता है। कर्तृकारक प्रथम पुरुष सर्वनाम। २. एक निर्देशकारक शब्द जिससे दूर की या परोक्ष वस्तुओं का संकेत करते हैं। वि० वाहक। (समास में)

वहन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० वहनीय, वहमान, वहित] १. बेड़ा। तरेंदा। २. खींचकर अथवा सिर या कंधे पर लादकर एक जगह से दूसरी जगह ले जाना। ३. ऊपर लेना। उठाना।

वहम–संज्ञा पुं० [अ०] १. मिथ्या धारणा। झूठा खयाल। २. भ्रम। ३. व्यर्थ की शंका। मिथ्या संदेह।

वहमी–वि० [अ० वहम] वहम करनेवाला। जो व्यर्थ संदेह में पड़े।

वहशत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. जंगलीपन। असभ्यता। २. उजड्डपन। ३. पागलपन। ४. चित्त की चंचलता। अधीरता।

वहशी–वि० [अ०] १. जंगल में रहनेवाला २. जो पालतू न हो। ३. असभ्य।

वहाँ–अव्य० [हिं० वह] उस जगह।

वहाबी–संज्ञा पुं० [अ०] १. अब्दुल वहाब नज्दी का चलाया हुआ मुसलमानों का एक संप्रदाय। २. इस संप्रदाय का अनुयायी।

वहिः–अव्य० [सं०] जो अन्दर न हो। बाहर।

वहित्र–संज्ञा पुं० [सं० वहित्थ] जहाज।

वहिरंग–संज्ञा पुं० [सं०] १. शरीर का बाहरी भाग। २. बाहरी भाग। अंतरंग का उलटा। ३. कहीं बाहर से आया हुआ आदमी। बाहरी आदमी। वि० ऊपर ऊपर का। बाहरी।

बहिर्गत–वि० [स०] जो बाहर गया हो। निकला हुआ। बाहर का।
बहिर्द्वार–सज्ञा पु० [स०] बाहरी फाटक। सदर फाटक। तोरण।
बहिर्भूत–वि० [स०] बहिर्गत।
बहिर्मुख–वि० [स०] विमुख।
बहिर्लापिका–सज्ञा स्त्री० [स०] पहेली।
बहिष्कृत–वि० [स०] १ बाहर निकाला हुआ। २ त्यागा हुआ। त्यक्त।
वहीं–अव्य० [हि० वहाँ+ही] उसी जगह।
वही–सर्व० [हि० वह+ही] उस तृतीय व्यक्ति की ओर निश्चित रूप से सकेत करनेवाला सर्वनाम, जिसके सबध म कुछ कहा जा चुका हो। पूर्वोक्त व्यक्ति। २ निर्दिष्ट व्यक्ति। अन्य नही।
वह्नि–सज्ञा पु० [स०] १ अग्नि। २ कृष्ण के एक पुत्र का नाम। ३ तीन की सख्या।
वाछनीय–वि० [स०] १. चाहने योग्य। २ जिसकी इच्छा हो।
वाछा–सज्ञा स्त्री० [स०] [वि० वाछित, वाछनीय] इच्छा। अभिलाषा। चाह।
वांछित–वि० [स०] इच्छित। चाहा हुआ।
वा–अव्य० [स०] विकल्प या सदेहवाचक शब्द। या। अथवा।
*†सर्व० [हि० वह] ब्रज भाषा मे प्रथम पुरुष का वह एकवचन रूप जो कारक-चिह्न लगने के पहले उसे प्राप्त होता है। जैसे—वाको, वामे।
वाइ*†–सर्व० दे० "वाहि"।
वाक्–सज्ञा पु० [स०] १ वाणी। २ सरस्वती। ३ बोलने की इद्रिय।
वाकई–वि० [अ०] सच। वास्तव। अव्य० सचमुच। यथार्थ में। वास्तव म।
वाकफियत–सज्ञा स्त्री० [अ०] १ जानकारी। ज्ञान। २ परिचय। जान-पहचान।
वाकया–सज्ञा पु० [अ०] १ घटना। २ वृत्तात। समाचार।
वाकर–वि० [अ०] १ होने या घटनेवाला। २ स्थित। खडा।
वाकिफ–वि० [अ०] १ जानकार। ज्ञाता। २ जानकारी रखनेवाला। अनुभवी।
वाक्छल–सज्ञा पु० [स०] न्यायशास्त्र के अनुसार छल के तीन भेदो में से एक।
वाक्पटु–वि० [स०] बात करने में चतुर।
वाक्पति–सज्ञा पु० [स०] १ बृहस्पति। २ विष्णु।
वाक्फियत–सज्ञा स्त्री० [अ०] जानकारी।
वाक्य–सज्ञा पु० [स०] वह पद-समूह जिसमे श्रोता को वक्ता के अभिप्राय का बोध हो। जुमला।
वाक्सिद्धि–सज्ञा स्त्री० [स०] इस प्रकार की सिद्धि या शक्ति कि जो बात मुँह से निकले, वह ठीक घटे।
वागीश–सज्ञा पु० [स०] १ बृहस्पति। २ ब्रह्मा। ३ वाग्मी। कवि। वि० अच्छा बोलनेवाला। वक्ता।
वागीश्वरी–सज्ञा स्त्री० [स०] सरस्वती।
वाग्जाल–सज्ञा पु० [स०] बातो की लपेट। बातो का आडबर या भरमार।
वाग्दड–सज्ञा पु० [स०] भला-बुरा कहने का दड। डाँट-डपट। झिड़की।
वाग्दत्त–वि० [स०] जिसे दूसरे को देने के लिये वह चुके हो।
वाग्दत्ता–सज्ञा स्त्री० [स०] वह कन्या जिसके विवाह की बात किसी के साथ ठहराई जा चुकी हो।
वाग्दान–सज्ञा पु० [स०] कन्या के पिता का किसी से जाकर यह कहना कि मैं अपनी कन्या तुम्हे ब्याहूँगा।
वाग्देवी–सज्ञा स्त्री० [स०] सरस्वती। वाणी।
वाग्भट्ट–सज्ञा पु० [स०] १ अष्टागहृदय सहिता नामक वैद्यक के ग्रथ के रचयिता। २ भावप्रकाश, शास्त्रदर्पण आदि के रचयिता। ३ वैद्यक निघटु के रचयिता।
वाग्मी–सज्ञा पु० [स०] १ वाचाल। अच्छा वक्ता। २ पडित। ३ बृहस्पति।
वाग्विलास–सज्ञा पु० [स०] आनदपूर्वक परस्पर बात-चीत करना।
वाङ्मय–वि० [स०] १ वचन-सबधी। २ वचन द्वारा किया हुआ।

संज्ञा पुं० गद्य-पद्यात्मक वाक्य आदि जो पठन-पाठन का विषय हो। साहित्य।
वाङ्मुख–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का गद्य-काव्य। उपन्यास।
वाच्–संज्ञा स्त्री० [सं०] वाचा। वाणी।
वाच–संज्ञा स्त्री० दे० "वाच्"।
वाचक–वि० [सं०] बतानेवाला। सूचक। संज्ञा पुं० नाम। संज्ञा। संकेत।
वाचकधर्मलुप्ता–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह उपमा जिसमें वाचक शब्द और सामान्य धर्म का लोप हो।
वाचकलुप्ता–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह उपमालंकार जिसमें उपमावाचक शब्द का लोप हो।
वाचकोपमानधर्मलुप्ता–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह उपमा जिसमें वाचक शब्द, उपमान और धर्म तीनों लुप्त हों, केवल उपमेय हो।
वाचकोपमानलुप्ता–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह उपमालंकार जिसमें वाचक और उपमान का लोप होता है।
वाचकोपमेयलुप्ता–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह उपमालंकार जिसमें वाचक और उपमेय का लोप होता है।
वाचक्नवी–संज्ञा स्त्री०[सं०]गार्गी।वाचकुटी।
वाचन–संज्ञा पुं० [सं०] १. पढ़ना। पठन। बाँचना। २ कहना। ३. प्रतिपादन।
वाचनालय–संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ बैठकर लोग समाचारपत्र या पुस्तकें आदि पढ़ते हों।
वाचसांपति–संज्ञा पुं० [सं०] वृहस्पति।
वाचस्पति–संज्ञा पुं० [सं०] वृहस्पति।
वाचा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वाणी। २. वाक्य। वचन। शब्द।
वाचाबंध*–वि० [सं० वाचाबद्ध] प्रतिज्ञाबद्ध।
वाचाल–वि० [सं०] [संज्ञा वाचालता] १. बोलने में तेज। वाक्पटु। २. बकवादी।
वाचिक–वि० [सं०] १. वक्ता-संबंधी। २. वाणी से किया हुआ।
संज्ञा पुं० अभिनय का एक भेद जिसमें केवल वाक्य-विन्यास द्वारा अभिनय का कार्य साधन होता है।
वाची–वि० [सं० वाचिन्] प्रकट करनेवाला। सूचक।
वाच्य–वि० [सं०] १. कहने योग्य। २. शब्द-संकेत द्वारा जिसका बोध हो। अभिधेय।
संज्ञा पुं० १. अभिधेयार्थ। २. दे० "वाच्यार्थ"।
वाच्यार्थ–संज्ञा पुं० [सं०] वह अभिप्राय जो शब्दों के नियत अर्थ द्वारा ही प्रकट हो। मूल शब्दार्थ।
वाच्यावाच्य–संज्ञा पुं० [सं०] भली-बुरी या कहने न कहने योग्य बात।
वाज–संज्ञा पुं० [अ०] १. उपदेश। शिक्षा। २. धार्मिक उपदेश। कथा।
वाजपेई*–संज्ञा पुं० दे० "वाजपेयी"।
वाजपेय–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध यज्ञ, जो सात श्रौत यज्ञों में पाँचवाँ है।
वाजपेयी–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह पुरुष जिसने वाजपेय यज्ञ किया हो। २. ब्राह्मणों की एक उपाधि। ३. अत्यंत कुलीन पुरुष।
वाजसनेय–संज्ञा पुं० [सं०] १. यजुर्वेद की एक शाखा। २. याज्ञवल्क्य ऋषि।
वाजिब–वि० [अ०] उचित। ठीक।
वाजिबी–वि० [अ०] उचित। ठीक।
वाजी–संज्ञा पुं० [सं० वाजिन्] १. घोड़ा। २. फटे हुए दूध का पानी।
वाजीकरण–संज्ञा पुं० [सं०] वह आयुर्वेदिक प्रयोग जिससे मनुष्य में वीर्य की वृद्धि हो।
वाट–संज्ञा पुं० [सं०] मार्ग। रास्ता।
वाटधान–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक जनपद जो काश्मीर के नैर्ऋत्य कोण में कहा गया है। २. एक वर्णसंकर जाति।
वाटिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] बाग। बगीचा।
वाड़वाग्नि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. समुद्र के अंदर की आग। २. समुद्री आग।
वाण–संज्ञा पुं० [सं०] धारदार फल लगा हुआ एक छोटा अस्त्र जो धनुष की डोरी पर खींचकर छोड़ा जाता है। तीर।
वाणावली–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वाणों की अवली। २. तीरों की लगातार वर्षा। ३. एक साथ बने हुए पाँच श्लोक।
वाणिज्य–संज्ञा पुं० दे० "वाणिज्य"।

वाणिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त।

वाणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सरस्वती। २ मुँह से निकले हुए सार्थक शब्द। वचन। मुहा०—वाणी फुरना = मुँह से शब्द निकलना। ३ वाक्शक्ति। ४ जीभ। रसना।

वात—संज्ञा पु० [सं०] १ वायु। हवा। २ वैद्यक के अनुसार शरीर के अंदर पक्वाशय में रहनेवाली वह वायु जिसके कुपित होने से अनेक प्रकार के रोग होते हैं।

वातज—वि० [सं०] वायु द्वारा उत्पन्न।

वातजात—संज्ञा पु० [सं० वात + जात] हनुमान्।

वात प्रकोप—संज्ञा पु० [सं०] वायु का बढ़ जाना जिससे अनेक प्रकार के रोग होते हैं।

वातापि—संज्ञा पु० [सं०] एक असुर का नाम जो आतापि का भाई था और जिसे अगस्त्य ऋषि ने खा डाला था।

वातायन—संज्ञा पु० [सं०] १ झरोखा। छोटी खिड़की। २ रामायण के अनुसार एक जनपद।

वातुल—संज्ञा पु० [सं०] बावला। उन्मत्त।

वातोर्मी—संज्ञा पु० [सं०] ग्यारह अक्षर का एक वर्णवृत्त।

वात्सल्य—संज्ञा पु० [सं०] १ प्रेम। स्नेह। २ माता पिता का संतति के प्रति प्रेम।

वात्स्यायन—संज्ञा पु० [सं०] १ न्यायशास्त्र के प्रसिद्ध भाष्यकार। २ कामसूत्र प्रणेता एक प्रसिद्ध ऋषि।

वाद—संज्ञा पु० [सं०] १ वह बात-चीत जो किसी तत्त्व के निर्णय के लिये हो। तर्क। शास्त्रार्थ। दलील। २ किसी पक्ष के तत्त्वज्ञों द्वारा निश्चित सिद्धांत। उसूल। जैसे—अद्वैतवाद। ३ बहस। झगड़ा।

वादक—संज्ञा पु० [सं०] १ बाजा बजानेवाला। २ वक्ता। ३ तर्क या शास्त्रार्थ करनेवाला।

वादन—संज्ञा पु० [सं०] बाजा बजाना।

वाद-प्रतिवाद—संज्ञा पु० [सं०] शास्त्रीय विषयों में होनेवाला कथोपकथन। बहस।

वादरायण—संज्ञा पु० [सं०] वेदव्यास।

वाद-विवाद—संज्ञा पु० [सं०] बहस।

वादा—संज्ञा पु० [अ० वाइदः] वचन। प्रतिज्ञा। इकरार। मुहा०—वादाखिलाफी करना = वचन के विरुद्ध कार्य्य करना। वादा लेना = वचन लेना। प्रतिज्ञा कराना।

वादानुवाद—संज्ञा पु० दे० "वाद विवाद"।

वादी—संज्ञा पु० [सं० वादिन्] १ वक्ता। बोलनेवाला। २ मुकदमा लानेवाला। फ़रियादी। मुद्दई। ३ पक्ष या प्रस्ताव उपस्थित करनेवाला।

वाद्य—संज्ञा पु० [सं०] बाजा।

वानप्रस्थ—संज्ञा पु० [सं०] प्राचीन भारतीय आर्य्यों के अनुसार मनुष्य-जीवन के चार आश्रमों में से तीसरा आश्रम।

वानर—संज्ञा पु० [सं०] १ बंदर। २ दोहे का एक भेद।

वानवासिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] सोलह मात्राओं के छंदों या चौपाई का एक भेद।

वापस—वि० [फ़ा०] लौटा हुआ। फिरता।

वापसी—वि० [फ़ा० वापस] लौटा हुआ या फेरा हुआ। वापस होने के संबंध का। संज्ञा स्त्री० लौटने की क्रिया या भाव। प्रत्यावर्त्तन।

वापिका, वापी—संज्ञा स्त्री० [सं०] छोटा जलाशय। बावली।

वाम—वि० [सं०] १ बायाँ। दक्षिण या दाहिने का उलटा। २ प्रतिकूल। विरुद्ध। खिलाफ़। ३ टेढ़ा। कुटिल। ४ दुष्ट। संज्ञा पु० १ कामदेव। २ एक रुद्र का नाम। वामदेव। ३ वरुण। ४ धन। ५ २४ अक्षरों का एक वर्णवृत्त। मंजरी। मकरंद। माधवी।

वामकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक देवी जिनकी पूजा जादूगर करते हैं।

वामदेव—संज्ञा पु० [सं०] १ शिव। महादेव। २ एक वैदिक ऋषि।

वामन—वि० [सं०] १ बौना। छोटे डील का। २ ह्रस्व। खर्व। संज्ञा पु० [सं०] १ विष्णु। २ शिव।

३. एक दिग्गज का नाम। ४. विष्णु भगवान् का पाँचवाँ अवतार जो बलि को छलने के लिये हुआ था। ५. अठारह पुराणों में से एक।
वाम-मार्ग–संज्ञा पुं० [सं०] तांत्रिक मत जिसमें मद्य, मांस आदि का विधान है।
वामा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. स्त्री। २. दुर्गा। ३. दस अक्षरों का एक वृत्त।
वामावर्त–वि० [सं०] १. दक्षिणावर्त का उलटा। (वह फेरी) जो किसी वस्तु की बाईं ओर से आरंभ की जाय। २. जिसमें बाईं ओर का घुमाव या भँवरी हो।
वायव्य–वि० [सं०] वायु-संबंधी।
संज्ञा पुं० १. उत्तर-पच्छिम का कोना। पश्चिमोत्तर दिशा। २. एक अस्त्र का नाम।
वायस–संज्ञा पुं० [सं०] कौआ। काक।
वायु–संज्ञा स्त्री० [सं०] हवा। वात।
वायुकोण–संज्ञा पु० [सं०] पश्चिमोत्तर दिशा।
वायुमंडल–संज्ञा पु० [सं०] आकाश।
वायुलोक–संज्ञा पु० [सं०] १. पुराणानुसार एक लोक का नाम। २. आकाश।
वारंवार–अव्य० दे० "बारंबार"।
वार–संज्ञा पु० [सं०] १. द्वार। दरवाजा। २. रोक। रुकावट। ३. आवरण। ४ अवसर। दफ़ा। मरतबः। ५. क्षण। ६. सप्ताह का दिन। जैसे—आज कौन वार है? ७. दाँव। वारी।
संज्ञा पु० [सं० वार] चोट। आघात। आक्रमण। हमला।
वारण–संज्ञा पु० [सं०] [वि० वारक] १. किसी बात को न करने की आज्ञा। निषेध। मनाही। २. रुकावट। बाधा। ३. कवच। बकतर। ४. छप्पय छंद का एक भेद।
वारणावत–संज्ञा पु० [सं०] महाभारत के अनुसार एक जनपद जो गंगा के किनारे था।
वारतिय*–संज्ञा स्त्री० [सं० वारस्त्री] वेश्या।
वारद*–संज्ञा पुं० [सं० वारिद] बादल।
वारदात–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. कोई भीषण कांड। दुर्घटना। २. मार-पीट। दंगा-फ़साद।
वारन*–संज्ञा स्त्री० [हिं० वारना] निछावर। बलि।
संज्ञा पुं० [सं० वंदन] वंदनवार। वंदनमाला।
वारना–क्रि० स० [हिं० उतारना] निछावर करना। उत्सर्ग करना।
संज्ञा पुं० निछावर। उत्सर्ग।
मुहा०—वारने जाना = निछावर होना।
वार-पार–संज्ञा पुं० [सं० अवर + पार] १. (नदी आदि का) यह किनारा और वह किनारा। पूरा विस्तार। २. यह छोर और वह छोर। अंत।
अव्य० १. इस किनारे से उस किनारे तक। २. एक पार्श्व से दूसरे पार्श्व तक।
वारफेर–संज्ञा पुं० [हिं० वारना + फेर] निछावर। बलि।
वारमुखी–संज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या।
वारांगना–संज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या। रंडी।
वारांनिधि–संज्ञा पु० [सं०] समुद्र।
वारा–संज्ञा पु० [सं० वारण] १. खर्च की बचत। किफ़ायत। २. लाभ। फ़ायदा।
वि० किफ़ायत। सस्ता।
वाराणसी–संज्ञा स्त्री० [सं०] काशी नगरी।
वारा-न्यारा–संज्ञा पु० [हिं० वार + न्यारा] १. किसी ओर निश्चय। फ़ैसला। २. झंझट या झगड़े का निबटेरा।
वाराह–संज्ञा पुं० दे० "वराह"।
वाराही–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आठ मातृकाओं में से एक। २. एक योगिनी।
वाराहीकंद–संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का महाकंद जो गेंठी कहलाता है।
वारि–संज्ञा पु० [सं०] जल। पानी।
वारिज–संज्ञा पु० [सं०] १. कमल। २ शंख। ३. घोंघा। ४. कौड़ी। ५. खरा सोना।
वारित–वि० [सं०] जो मना किया गया हो। निवारित।
वारिद–संज्ञा पु० [सं०] मेघ। बादल।
वारिधि–संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।
वारियाँ–संज्ञा स्त्री० [हिं० वारी] निछावर। बलि।
वारिवर्त*–संज्ञा पु० [सं० वारि + आवर्त] एक मेघ का नाम।

वारिस—संज्ञा पुं० [अ०] वह पुरुष जो किसी के मरने के पीछे उसकी संपत्ति आदि का स्वामी हो। उत्तराधिकारी।
वारींद्र—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।
वारी-फेरी—संज्ञा स्त्री० दे० "वारफेर"।
वारुणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मदिरा। शराब। २ वरुण की स्त्री। वरुणानी। ३ उपनिषद् विद्या। ४ पश्चिम दिशा। ५ एक पर्व जिसमें गंगा-स्नान करते हैं।
वारेंद्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन जनपद जहाँ आजकल का राजशाही जिला है।
वार्त्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जनश्रुति। अफवाह। २ संवाद। वृत्तांत। हाल। ३ विषय। मामला। ४ बातचीत। ५ वैश्य-वृत्ति, जिसके अंतर्गत कृषि, वाणिज्य, गोरक्षा और कुसीद हैं।
वार्त्तालाप—संज्ञा पुं० [सं०] बातचीत।
वार्त्तिक—संज्ञा पुं० [सं०] किसी ग्रंथ के उक्त, अनुक्त और दुरुक्त अर्थों को स्पष्ट करनेवाला वाक्य या ग्रंथ।
वार्द्धक्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ बुढ़ापा। २ वृद्धि। बढ़ती।
वार्षिक—वि० [सं०] १ वर्ष-संबंधी। २ जो प्रतिवर्ष होता हो। सालाना।
वार्ष्णेय—संज्ञा पुं० [सं०] कृष्णचंद्र।
वाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का उपजाति वृत्त।
प्रत्य० [स्त्री० वाली] एक संबंध-सूचक प्रत्यय। जैसे—मकानवाला।
वालिद—संज्ञा पुं० [अ०] पिता। बाप।
वालिदा—संज्ञा स्त्री० [अ०] माता। माँ।
वाल्मीकि—संज्ञा पुं० [सं०] एक भृगुवंशी मुनि जो रामायण के रचयिता और आदि कवि कहे जाते हैं।
वाल्मीकीय—वि० [सं०] १ वाल्मीकि संबंधी। २ वाल्मीकि का बनाया हुआ।
वावैला—संज्ञा पुं० [अ०] १ विलाप। रोना पीटना। २ शोरगुल। हल्ला।
वाशिष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] एक उपपुराण। वि० [सं०] वशिष्ठ-संबंधी। वशिष्ठ का।
वाष्प—संज्ञा पुं० [सं०] १ आँसू। २ भाप।
वासंतिक—संज्ञा पुं० [सं०] १ भाँड़। विदूषक। २ नाचनेवाला। नर्तक। वि० वसंत-संबंधी।
वासंती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ माधवी लता। २ जूही। ३ मदनोत्सव। ४ दुर्गा। ५ चौदह वर्णों का एक वृत्त।
वास—संज्ञा पुं० [सं०] १ रहना। निवास। २ गृह। घर। मकान। ३ सुगंध। बू।
वासक—संज्ञा पुं० [सं०] अडूसा।
वासकसज्जा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जो नायक से मिलने की तैयारी किए हुए घर आदि सजाकर और आप भी सजकर बैठी हो।
वासन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० वासित] १ सुगंधित करना। २ वस्त्र। ३ वास।
वासना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रत्याशा। २ ज्ञान। ३ भावना। संस्कार। स्मृति-हेतु। ४ इच्छा। कामना।
वासर—संज्ञा पुं० [सं०] दिन। दिवस।
वासव—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।
वासित—वि० [सं०] १ सुगंधित किया हुआ। २ कपड़े से ढका हुआ। ३ बासी।
वासिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्त्री। २ आर्या छंद का एक भेद।
वासिल—वि० [अ०] १ पहुँचाया हुआ। प्राप्त। २ जो वसूल हुआ हो।
यौ०—वासिल-बाकी=वसूल और बाकी रकम।
वासिष्ठ—वि० [सं०] वसिष्ठ-संबंधी।
वासी—संज्ञा पुं० [सं० वासिन] रहनेवाला।
वासुकी—संज्ञा पुं० [सं०] आठ नागों में से दूसरा नागराज।
वासुदेव—संज्ञा पुं० [सं०] १ वसुदेव के पुत्र श्रीकृष्णचंद्र। २ पीपल का पेड़।
वास्तव—वि० [सं०] प्रकृत। यथार्थ।
वास्तविक—वि० [सं०] यथार्थ। ठीक।
वास्तव्य—वि० [सं०] रहने या बसने योग्य। संज्ञा पुं० बस्ती। आबादी।
वास्ता—संज्ञा पुं० [अ०] संबंध। लगाव।
वास्तु—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह स्थान जिस

पर घर उठाया जाय। डीह। २. घर। मकान। ३. इमारत।

वास्तु-पूजा–संज्ञा स्त्री० [सं०] वास्तु पुरुष की पूजा जो नवीन घर में गृह-प्रवेश के आरंभ में की जाती है।

वास्तु-विद्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह विद्या जिसमें इमारत के संबंध की सारी बातों का परिज्ञान होता है।

वास्तुशास्त्र–संज्ञा पुं० दे० "वास्तुविद्या"।

वास्ते–अव्य० [अ०] १. लिये। निमित्त। २. हेतु। सबब।

वाह–अव्य० [फ़ा०] १. प्रशंसासूचक शब्द। धन्य। २. आश्चर्यसूचक शब्द। ३. घृणाद्योतक शब्द।

वाहक–संज्ञा पुं० [सं०] १. बोझ ढोने या खींचनेवाला। २. सारथी।

वाहन–संज्ञा पुं० [सं०] सवारी।

वाह-वाही–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] लोगों की प्रशंसा। स्तुति। साधुवाद।

वाहिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सेना। २. सेना का एक भेद जिसमें ८१ हाथी, ८१ रथ, २४३ घोड़े और ४०५ पैदल होते थे।

वाहियात–वि० [अ० वाही + फ़ा० यात] १. व्यर्थ। फ़जूल। २. बुरा। खराब।

वाही–वि० [अ०] १. सुस्त। ढीला। २. निकम्मा। ३. मूर्ख। ४. आवारा।

वाही-तबाही–वि० [अ० वाही + तबाही] १. बेहूदा। २. आवारा। ३. अंडबंड। बे सिर पैर का।

संज्ञा स्त्री० अंडबंड बातें। गाली-गलौज।

वाह्य–क्रि० वि० [सं०] बाहर। अलग।

वाह्यांतर–वि० [सं०] भीतर और बाहर का।

वाह्येंद्रिय–संज्ञा स्त्री० [सं०] पाँचों ज्ञानेंद्रियाँ जिनका काम बाह्य विषयों का ग्रहण करना है। आँख, कान, नाक, जिह्वा और त्वचा।

वाह्लीक–संज्ञा पुं० [सं०] १. गांधार के पास का एक प्रदेश। २. वाह्लीक देश का घोड़ा।

विंजन–संज्ञा पुं० दे० "व्यंजन"

विंद–संज्ञा पुं० दे० "वृन्द" और "विंदु"।

विंदक*–संज्ञा पुं० [सं०] १. प्राप्त करनेवाला। २. जाननेवाला। ज्ञाता।

विंदु–संज्ञा पुं० [सं० विंदु] १. जलकण। बूँद। २. बुंदकी। बिंदी। ३. अनुस्वार। ४. शून्य। ५. एक बूँद परिमाण। ६. रेखा-गणित के अनुसार वह जिसका स्थान नियत हो, पर विभाग न हो सके। ७. बहुत छोटा टुकड़ा।

विंदुमाधव–संज्ञा पुं० [सं०] काशी की एक प्रसिद्ध विष्णुमूर्ति का नाम।

विंदुर–संज्ञा पुं० [सं० विंदु] बुँदकी।

विंदुसार–संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रगुप्त के एक पुत्र का नाम। सम्राट् अशोक इसी का पुत्र था।

विंध*–संज्ञा पुं० [सं० विंध्य] विंध्य पर्वत।

विंध्य–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध पर्वत-श्रेणी जो भारतवर्ष के मध्य में पूर्व से पश्चिम को फैली है।

विंध्यकूट–संज्ञा पुं० [सं०] विंध्य पर्वत।

विंध्यवासिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] देवी की एक प्रसिद्ध मूर्त्ति जो मिर्ज़ापुर ज़िले में है।

विंध्याचल–संज्ञा पुं० [सं०] विंध्य पर्वत।

विंशोत्तरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] फलित ज्योतिष में मनुष्य के शुभाशुभ फल जानने की एक रीति।

वि–उप० [सं०] एक उपसर्ग जो शब्द के पहले लगकर इस प्रकार अर्थ देता है—१. विशेष; जैसे—विकराल। २. वैरूप्य; जैसे—विविध। ३. निषेध; जैसे—विक्रय।

विकंकत–संज्ञा पुं० [सं०] एक जंगली वृक्ष जिसे कँटाई, किंकिणी और बंज कहते हैं।

विकट–वि० [सं०] १. विशाल। २. भयंकर। भीषण। ३. वक्र। टेढ़ा। ४ कठिन। मुश्किल। ५. दुर्गम। ६. दुस्साध्य।

विकर–संज्ञा पुं० [सं०] १. रोग। व्याधि। २. तलवार के ३२ हाथों में से एक।

विकरार*–वि० दे० "विकराल"।

वि० [अ० फ़ा० बेकरार] विकल। बेचैन।

विकराल–वि० [सं०] भीषण। डरावना।

विकर्षण–संज्ञा [पुं० सं०] १. आकर्षण। २. एक शास्त्र जिसमें आकर्षण करने की विद्या का वर्णन है।

विकल–वि० [सं०] १ विह्वल। व्याकुल। बेचैन। २ कलाहीन। ३ खंडित। अपूर्ण।
विकलांग–वि० [सं०] जिसका कोई अंग टूटा या खराब हो। न्यूनांग। अंगहीन।
विकला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कला का साठवाँ अंश। २ समय का एक बहुत छोटा भाग।
विकलाना*–क्रि० अ० [सं० विकल] व्याकुल होना। घबराना। बेचैन होना।
विकल्प–संज्ञा पु० [सं०] १ भ्रांति। भ्रम। धोखा। २ एक बात मन में बैठाकर फिर उसके विरुद्ध सोच विचार। ३ किसी विषय में कई प्रकार की विधियाँ का मिलना। ४ योगशास्त्रानुसार पंचविध चित्तवृत्तियों में एक। ५ अवांतर कल्प। ६ एक काव्यालंकार जिसमें दो विरुद्ध बातों को लेकर कहा जाता है कि या तो यही होगा या वही। ७ समाधि का एक भेद। सविकल्प। ८ व्याकरण में एक ही विषय के कई नियमों में से किसी एक का इच्छानुसार ग्रहण।
विकसन–संज्ञा पु० [सं०] [वि० विकसित] प्रस्फुटन। फूटना। खिलना।
विकसना–क्रि० अ० दे० विकसन।
विकस्वर–संज्ञा पु० [सं०] एक काव्यालंकार जिसमें पहले कोई विशेष बात कहकर उसकी पुष्टि सामान्य बात से की जाती है।
विकार–संज्ञा पु० [सं०] १ किसी वस्तु का रूप, रंग आदि बदल जाना। २ बिगड़ना। खराबी। ३ दोष। बुराई। अवगुण। ४ मनोवेग या प्रवृत्ति। वासना। ५ किसी पदार्थ के रूप आदि का बदल जाना। परिणाम।
विकारी–वि० [सं० विकारिन्] १ जिसमें विकार या परिवर्तन हुआ हो। युक्त। २ क्रोधादि मनोविकारों से युक्त।
विकाश–संज्ञा पु० [सं०] १ प्रकाश। २ प्रसार। फैलाव। ३ एक काव्यालंकार जिसमें किसी वस्तु का बिना निज का आधार छोड़े अत्यंत विकसित होना वर्णन किया जाता है ४ दे० विकास'।
विकास–संज्ञा पु० [सं०] १. प्रसार। फैलाव। २ खिलना। प्रस्फुटित होना। ३ किसी पदार्थ का उत्पन्न होकर भिन्न भिन्न रूप धारण करते हुए उत्तरोत्तर बढ़ना। क्रमशः उन्नत होना। ४ एक प्रसिद्ध पाश्चात्य सिद्धांत जिसमें यह माना जाता है कि आधुनिक समस्त सृष्टि और जीव जंतु तथा वृक्ष आदि एक ही मूल तत्त्व से उत्तरोत्तर निकलते गए हैं।
विकासना*–क्रि० स० [सं० विकास] १ प्रकट करना। निकालना। २ विकसित करना। खिलने में प्रवृत्त करना।
क्रि० अ० १ खिलना। २ प्रकट होना।
विकिर–संज्ञा पु० [सं०] पक्षी। चिड़िया।
विकीर्ण–वि० [सं०] १ चारों ओर फैला या छितराया हुआ। २ प्रसिद्ध। मशहूर।
विकुंठ*–संज्ञा पु० [सं० वैकुंठ] वैकुंठ।
विकृत–वि० [सं०] १ जिसमें किसी प्रकार का विकार आ गया हो। बिगड़ा हुआ। २ जो भद्दा या कुरूप हो गया हो। ३ असाधारण। अस्वाभाविक।
विकृति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विकार। खराबी। बिगाड़। २ बिगड़ा हुआ रूप। ३ रोग। बीमारी। ४ सांख्य के अनुसार मूल प्रकृति का वह रूप जो उसमें विकार आने पर होता है। विकार। परिणाम। ५ परिवर्तन। ६ मन में होनेवाला क्षोभ। ७ मूल धातु से बिगड़कर बना हुआ शब्द का रूप। ८ २३ वर्ण के वृत्तों की संज्ञा।
विकृष्ट–वि० [सं०] खींचा हुआ। आकृष्ट।
विक्रम–संज्ञा पु० [सं०] १ विष्णु। २ बहादुरी। पराक्रम। ३ ताकत। बल। ४ गति। ५ दे० 'विक्रमादित्य'। वि० श्रेष्ठ। उत्तम।
विक्रमाजीत–संज्ञा पु० दे० 'विक्रमादित्य'।
विक्रमादित्य–संज्ञा पु० [सं०] उज्जयिनी के एक प्रसिद्ध प्रतापी राजा जिनके संबंध में अनेक प्रकार के प्रवाद प्रचलित हैं। विक्रमी संवत् इन्हीं का चलाया हुआ

माना जाता है।
विक्रमाब्द–संज्ञा पुं० [सं०] विक्रमादित्य के नाम से चला हुआ संवत्। विक्रम संवत्।
विक्रमी–संज्ञा पुं० [सं० विक्रमिन्] १. विक्रम-वाला। पराक्रमी। २. विष्णु।
वि० विक्रम का। विक्रम-संबंधी।
विक्रय–संज्ञा पुं० [सं०] बेचना। बिक्री।
विक्रांत–संज्ञा पुं० [सं०] १. वैक्रांत मणि। २. शूर। वीर। बहादुर। ३. व्याकरण में एक प्रकार की संधि जिसमें विसर्ग अविकृत ही रहता है।
विक्रियोपमा–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक उपमा-लंकार जिसमें किसी विशिष्ट क्रिया या उपाय का अवलंबन कहा जाता है।
विक्रेता–संज्ञा पुं० [सं०] बेचनेवाला।
विक्षिप्त–वि० [सं०] १. फेंका या छितराया हुआ। २. जिसका दिमाग ठिकाने न हो। पागल। ३. विकल। व्याकुल।
संज्ञा पुं० [सं०] योग में चित्त की एक अवस्था जिसमें चित्त कभी स्थिर और कभी अस्थिर रहता है।
विक्षिप्तता–संज्ञा स्त्री० [सं०] पागलपन।
विक्षुब्ध–वि० [सं०] जिसमें क्षोभ उत्पन्न हुआ हो।
विक्षेप–संज्ञा पुं० [सं०] १. ऊपर की ओर अथवा इधर-उधर फेंकना। डालना। २. इधर-उधर हिलाना। झटका देना। ३. (धनुष की डोरी) खींचना। चिल्ला चढ़ाना। ४. मन को इधर-उधर भटकाना। संयम का उलटा। ५. एक प्रकार का अस्त्र जो फेंककर चलाया जाता था। ६. बाधा। विघ्न।
विक्षोभ–संज्ञा पुं० [सं०] मन की चंचलता या उद्विग्नता। क्षोभ।
विखान*–संज्ञा पुं० [सं० विषाण] सींग।
विख्यात–वि० [सं०] सिद्ध। मशहूर।
विख्याति–संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रसिद्ध। शोहरत।
विगंध–वि० [सं०] १. जिसमें किसी प्रकार की गंध न हो। २. बदबूदार।
विगत–वि० [सं०] १. जो गत हो गया हो। जो बीत चुका हो। २. अंतिम या बीते हुए से पहले का। ३. रहित। विहीन।
विगर्हणा–संज्ञा स्त्री० [सं०] डाँट। फटकार।
विगर्हित–वि० [सं०] १. जिसे डाँट या फट-कार बतलाई गई हो। २. बुरा। खराब।
विगलित–वि० [सं०] १. जो गल या गिर गया हो। २. ढीला पड़ा हुआ। शिथिल। ३. बिगड़ा हुआ।
विगाथा–संज्ञा स्त्री० [सं०] आर्य्या छंद का एक भेद। विग्गाहा। उद्गीति।
विगुण–वि० [सं०] गुण-रहित। निर्गुण।
विग्गाहा–संज्ञा स्त्री० दे० "विगाथा"।
विग्रह–संज्ञा पुं० [सं०] १. दूर या अलग करना। २. विभाग। ३. यौगिक शब्दों अथवा समस्त पदों के किसी एक अथवा प्रत्येक शब्द को अलग करना। (व्याकरण) ४. कलह। लड़ाई। झगड़ा। ५. युद्ध। समर। ६. विपक्षियों में फूट या कलह उत्पन्न करना। ७. आकृति। शकल। ८. शरीर। ९. मूर्त्ति।
विग्रही–संज्ञा पुं० [सं० विग्रहिन्] १. लड़ाई झगड़ा करनेवाला। २. युद्ध करनेवाला।
विघटन–संज्ञा पुं० [सं०] १. तोड़ना-फोड़ना। २. नष्ट करना।
विघटिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] समय का एक छोटा मान। घड़ी का २३वाँ भाग।
विघ्न–संज्ञा पुं० [सं०] अड़चन। बाधा।
विघ्नविनाशक–संज्ञा पुं० [सं०] गणेश।
विघ्नविनायक–संज्ञा पुं० [सं०] गणेश।
विचक्षण–वि० [सं०] १. चमकता हुआ। २. निपुण। पारदर्शी। ३. पंडित। विद्वान्। ४. बहुत बड़ा चतुर या बुद्धिमान्।
विचच्छन–संज्ञा पुं० दे० "विचक्षण"।
विचरण–संज्ञा पुं० [सं०] १. चलना। २. घूमना-फिरना। पर्य्यटन करना।
विचरन*–संज्ञा पुं० दे० "विचरण"।
विचरना–क्रि० अ० [सं० विचरण] चलना-फिरना।
विचल–वि० [सं०] १. जो स्थिर न हो। अस्थिर। २. स्थान से हटा हुआ।
विचलता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चंचलता।

अस्थिरता। २ घबराहट।

विचलना*†–क्रि० अ० [सं० विचलन] १ अपने स्थान से हट जाना या चल पड़ना। २ अधीर होना। घबराना। ३ प्रतिज्ञा या संकल्प पर दृढ़ न रहना।

विचलाना*†–क्रि० स० [सं० विचलन] विचलित करना।

विचलित–वि० [सं०] १ अस्थिर। चंचल। २ प्रतिज्ञा या संकल्प से हटा हुआ।

विचार–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो कुछ मन से सोचा जाय अथवा सोचकर निश्चित किया जाय। २ मन में उठनेवाली कोई बात। भावना। खयाल। ३ मुकदमे की सुनवाई और फैसला।

विचारक–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० विचारिका] १ विचार करनेवाला। २ फैसला करनेवाला। न्यायकर्ता।

विचारणा–संज्ञा स्त्री० [सं०] विचार करने की क्रिया या भाव।

विचारणीय–वि० [सं०] १ जिस पर कुछ विचार करने की आवश्यकता हो। २ जिसे प्रमाणित करने की आवश्यकता हो। चिंत्य। संदिग्ध।

विचारना–क्रि० अ० [सं० विचार+ना(प्रत्य०)] १ विचार करना। सोचना। समझना। २ पूछना। ३ ढूँढ़ना। पता लगाना।

विचारपति–संज्ञा पुं० [सं० विचार + पति] विचारक। न्यायाधीश।

विचारवान्–संज्ञा पुं० दे० 'विचारशील'।

विचारशक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] सोचने या भला-बुरा पहचानने की शक्ति।

विचारशील–संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसमें विचारने की अच्छी शक्ति हो। विचारवान्।

विचारशीलता–संज्ञा स्त्री० [सं०] बुद्धिमत्ता।

विचारालय–संज्ञा पुं० [सं०] न्यायालय।

विचारी–संज्ञा पुं० [सं० विचारिन्] वह जो विचार करता हो। विचार करनेवाला।

विचार्य्य–वि० दे० "विचारणीय"।

विचिकित्सा–संज्ञा स्त्री० [सं०] संदेह। शक।

विचित्र–वि० [सं०] १ कई तरह के रंगों या वर्णोंवाला। २. अद्भुत। विलक्षण। ३. विस्मित या चकित करनेवाला।
संज्ञा पुं० साहित्य में एक प्रकार का अर्थालंकार जो उस समय होता है, जब किसी फल की सिद्धि के लिये किसी प्रकार का उलटा प्रयत्न करने का उल्लेख हो।

विचित्रता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ रंग बिरंगे होने का भाव। २ विलक्षण होने का भाव।

विचित्रवीर्य्य–संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रवंशी राजा शांतनु के पुत्र का नाम।

विच्छित्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विच्छेद। अलगाव। २ कमी। त्रुटि। ३ रंगों आदि से शरीर को चित्रित करना। ४ कविता में की यति। ५ साहित्य में एक हाव जिसमें स्त्री थोड़े शृंगार से पुरुष को मोहित करने की चेष्टा करती है।

विच्छिन्न–वि० [सं०] १ जो काट या छेदकर अलग कर दिया गया हो। विभक्त। २ जुदा। अलग।
संज्ञा पुं० योग में चारों क्लेशों की वह अवस्था जिसमें बीच में उनका विच्छेद हो जाता है।

विच्छेद–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विच्छेदक] १ काट या छेदकर अलग करने की क्रिया। २ क्रम का बीच से टूट जाना। ३ टुकड़े टुकड़े करना। ४ नाश। ५ विरह। वियोग। ६ कविता में की यति।

विच्छेदन–संज्ञा पुं० [सं०] १ काट या छेदकर अलग करना। २ नष्ट करना।

विछलना*†–क्रि० अ० दे० "फिसलना"।

विछेद*–संज्ञा पुं० दे० "विच्छेद"।

विछोई*†–संज्ञा पुं० दे० "वियोगी"।

विछोह*†–संज्ञा पुं० [सं० विच्छेद] प्रिय से अलग या दूर होना। वियोग।

विजन–वि० [सं०] एकांत। निराला।
संज्ञा पुं० [सं० व्यजन] पंखा। बीजन।

विजना*†–संज्ञा पुं० [सं० व्यजन] पंखा।

विजय–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ युद्ध या विवाद आदि में होनेवाली जीत। जय। २ एक प्रकार का छंद जो केशव के अनुसार सवैया का मत्तगयंद नामक भेद है।

विजय-पताका—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह पताका जो जीत के समय फहराई जाती है।
विजय-यात्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह यात्रा जो किसी पर विजय प्राप्त करने के उद्देश्य से की जाय।
विजयलक्ष्मी, विजयश्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] विजय की अधिष्ठात्री देवी, जिसकी कृपा पर विजय निर्भर मानी जाती है।
विजया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुर्गा। २. भाँग। सिद्धि। भंग। ३. श्रीकृष्ण की माला का नाम। ४. दस मात्राओं का एक मात्रिक छंद। ५. आठ वर्णों का एक वर्णिक वृत्त। ६. दे० "विजया दशमी"।
विजया दशमी—संज्ञा स्त्री० [सं०] आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी जो हिंदुओं का बहुत बड़ा त्योहार है।
विजयी—संज्ञा पुं० [सं० विजयिन्] [स्त्री० विजयिनी] वह जिसने विजय प्राप्त की हो। जीतनेवाला। विजेता।
विजयोत्सव—संज्ञा पुं० [सं०] १ विजया दशमी का उत्सव। २. वह उत्सव जो विजय प्राप्त करने पर होता है।
विजोग*—संज्ञा पुं० [सं० वियोग] वियोग।
विजात—संज्ञा पुं० [सं०] सखी छंद का एक भेद।
विजातीय—वि० [सं०] दूसरी जाति का।
विजानु—संज्ञा पुं० [सं०] तलवार चलाने के ३२ हाथों में से एक हाथ या प्रकार।
विजारत—संज्ञा स्त्री० [अ०] वजीर का पद, धर्म या भाव। मंत्रित्व।
विजित—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो जीत लिया गया हो। २. जीता हुआ देश।
विजेता—संज्ञा पुं० [सं० विजेतृ] जिसने विजय पाई हो। जीतनेवाला।
विजै*†—संज्ञा स्त्री० दे० "विजय"।
विजैसार—संज्ञा पुं० [सं० विजयसार] साल की तरह का एक प्रकार का बड़ा वृक्ष।
विजोर—वि० [हिं० वि + जोर] कमजोर।
विजोहा—संज्ञा पुं० [सं० विमोह] एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो रगण होते हैं। जोहा। विमोहा। विज्जोहा।
विज्जु, विज्जुलता*—संज्ञा स्त्री० दे० "विद्युत्"।
विज्जोहा—संज्ञा पुं० दे० "विजोहा"।
विज्ञ—वि० [सं०] [भाव० विज्ञता] १. जानकार। २. बुद्धिमान्। ३. विद्वान्। पंडित।
विज्ञप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जतलाने या सूचित करने की क्रिया। २. विज्ञापन। इश्तहार।
विज्ञान—संज्ञा पुं० [सं०] १. ज्ञान। जानकारी। २. किसी विषय की जानी हुई बातों का संग्रह जो एक अलग शास्त्र के रूप में हो। शास्त्र। जैसे—पदार्थ विज्ञान। ३. माया या अविद्या नाम की वृत्ति। ४. ब्रह्म। ५. आत्मा। ७. निश्चयात्मिका बुद्धि।
विज्ञानमय कोष—संज्ञा पुं० [सं०] ज्ञानेंद्रियों और बुद्धि का समूह। (वेदांत)
विज्ञानवाद—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह सिद्धांत जिसमें ब्रह्म और आत्मा की एकता प्रतिपादित हो। २. वह सिद्धांत जिसमें आधुनिक विज्ञान की बातें मान्य हों।
विज्ञानी—संज्ञा पुं० [सं० विज्ञानिन्] १. वह जिसे किसी विषय का अच्छा ज्ञान हो। २ वैज्ञानिक।
विज्ञापन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विज्ञापक, विज्ञापनीय] १. जानकारी कराना। सूचना देना। २. वह पत्र जिसके द्वारा कोई बात लोगों को बतलाई जाय। इश्तहार।
विट—संज्ञा पुं० [सं०] १. कामुक। लंपट। २. वेश्यागामी। ३ धूर्त। चालाक। ४. साहित्य में वह धूर्त और स्वार्थी नायक जो विषय-भोग में सारी संपत्ति नष्ट कर चुका हो। ५. विष्ठा। मल। गुह।
विटप—संज्ञा पुं० [सं०] १. नई शाखा। कोंपल। २. वृक्ष। पेड़।
विट लवण—संज्ञा पुं० [सं०] साँचर नमक।
विट्ठल—संज्ञा पुं० [?] दक्षिण भारत की विष्णु की एक मूर्त्ति का नाम।
विडंबना—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० विडंबनीय, विडंबित] १. किसी को चिढ़ाने या बनाने

के लिये उसकी नकल उतारना। २ हँसी उड़ाना। मजाक करना।
विडरना*†–क्रि० अ० [?] १ तितर-बितर होना। २ भागना। दौड़ना।
विडराना*†–क्रि० स० दे० "विडारना"।
विडारना–क्रि० स० [हिं० विडरना का स० रूप] १ तितर-बितर करना। छितराना। २ नष्ट करना। ३ भगाना। दौड़ाना।
विडाल–संज्ञा पु० [सं०] बिल्ली।
विडौजा–संज्ञा पु० [सं० विडौजस्] इंद्र का एक नाम।
वितंडा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दूसरे के पक्ष को दबाते हुए अपने मत की स्थापना करना। २ व्यर्थ का झगड़ा या कहा-सुनी।
वितत*–संज्ञा पु० [सं० वि + तंत्र] वह बाजा जिसमें तार न लगे हों।
वित*–वि० [सं० विद्] १ जाननेवाला। ज्ञाता। २ चतुर। निपुण।
विततानाः*†–क्रि० अ० [सं० व्यथा] व्याकुल होना। बेचैन होना।
वितद्रु–संज्ञा पु० [सं०] झेलम नदी।
वितपन्न*–संज्ञा पु० [सं० व्युत्पन्न] वह जो किसी काम में कुशल हो। दक्ष। प्रवीण। वि० घबराया हुआ। व्याकुल।
वितरक–संज्ञा पु० [सं० वितरण] बाँटनेवाला।
वितरण–संज्ञा पु० [सं०] १ दान या अर्पण करना। देना। २ बाँटना।
वितरन*–संज्ञा पु० [सं० वितरण] १ बाँटनेवाला। २ दे० 'वितरण"।
वितरना*–क्रि० स० [सं० वितरण] बाँटना।
वितरिक्त*–अव्य० दे० "अतिरिक्त"।
वितरित–वि० [सं०] बाँटा हुआ।
वितरेक*–क्रि० वि० [सं० व्यतिरिक्त] छोड़कर। सिवा।
वितर्क–संज्ञा पु० [सं०] १ एक तर्क के उपरांत होनेवाला दूसरा तर्क। २ संदेह। शक। ३ एक अर्थालंकार जिसमें संदेह या वितर्क का उल्लेख होता है।
वितल–संज्ञा पु० [सं०] पुराणानुसार सात पातालों में से तीसरा पाताल।
वितस्ता–संज्ञा स्त्री० [सं०] झेलम नदी।
वितान–संज्ञा पु० [सं०] १ यज्ञ। २ विस्तार। फैलाव। ३ बड़ा चँदोआ या खेमा। ४ समूह। संघ। जमाव। ५ शून्य। खाली स्थान। ६ एक प्रकार का छंद। ७ एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सगण, भगण और दो गुरु होते हैं।
वितानना*†–क्रि० स० [सं० वितान] शामियाना आदि तानना।
वितिक्रम*–संज्ञा पु० दे० "व्यतिक्रम"।
वितीत*†–वि० दे० "व्यतीत"।
वितुंड–संज्ञा पु० [सं० वि + तुंड] हाथी।
वितु*†–संज्ञा पु० [सं० वित्त] धन। संपत्ति।
वित्त–संज्ञा पु० [सं०] धन। संपत्ति।
वित्तपति–संज्ञा पु० [सं०] कुबेर।
वित्तहीन–संज्ञा पु० [सं०] दरिद्र। ग़रीब।
विथक–संज्ञा पु० [हिं० थकना] पवन।
विथकना*†–क्रि० अ० [हिं० थकना] १ थकना। शिथिल होना। २ मोहित या चकित होकर चुप हो जाना।
विथकित*–वि० [हिं० विथकना] १ थका हुआ। शिथिल। २ जो आश्चर्य या मोह आदि के कारण चुप हो।
विथराना*–क्रि० स० [सं विगरण] १ फैलाना। २ इधर-उधर करना।
विथा*†–संज्ञा स्त्री० दे० "व्यथा"।
विथारना*–क्रि० स० [सं० वितरण] फैलाना।
विथित*–वि० [सं० व्यथित] दुखी।
विदग्ध–संज्ञा पु० [सं०] १ रसिक पुरुष। २ पंडित। विद्वान्। ३ चतुर। चालाक।
विदग्धता–संज्ञा स्त्री० [सं०] विद्वत्ता।
विदग्धा–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह परकीया नायिका जो होशियारी के साथ पर-पुरुष को अपनी ओर अनुरक्त करे।
विदमान*–अव्य० दे० 'विद्यमान'।
विदरना*–क्रि० अ० [सं० विदरण] फटना। क्रि० स० विदीर्ण करना। फाड़ना।
विदर्भ–संज्ञा पु० [सं०] आधुनिक बरार प्रदेश का प्राचीन नाम।
विदर्भराज–संज्ञा पु० [सं०] दमयंती के

पिता राजा भीष्म जो विदर्भ के राजा थे।
विदलन–संज्ञा पुं० [सं०] १. मलने-दलने या दबाने आदि की क्रिया। २. फाड़ना।
विदलना*–क्रि० स० [सं० विदलन] दलित करना। नष्ट करना।
विदा–संज्ञा स्त्री० [सं० विदाय] १.प्रस्थान। रवाना होना। २.कहीं से चलने की अनुमति।
विदाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० विदा+ई (प्रत्य०)] १. रुखसती। प्रस्थान। २. विदा होने की आज्ञा या अनुमति। ३. वह धन जो विदा होने के समय दिया जाय।
विदारक–वि० [सं०] फाड़ डालनेवाला।
विदारण–संज्ञा पुं० [सं०] १. फाड़ना। २. मार डालना।
विदारना*–क्रि० स० [हिं० विदरना] फाड़ना।
विदारी–वि० [सं० विदारिन्] फाड़नेवाला।
विदारीकंद–संज्ञा पुं० [सं०] भुईं-कुम्हड़ा।
विदाही–संज्ञा पुं० [सं० विदाहिन्] वह पदार्थ जिससे जलन पैदा हो।
विदित–वि० [सं०] जाना हुआ। ज्ञात।
विदिशा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वर्तमान भेलसा नामक नगर का प्राचीन नाम। २. दे० "विदिश्"।
विदिश्–संज्ञा स्त्री० [सं०] दो दिशाओं के बीच का कोना। कोण।
विदीर्ण–वि० [सं०] १. बीच से फाड़ा हुआ। २. मार डाला हुआ। निहत।
विदुर–संज्ञा पुं० [सं०] १. जानकार। ज्ञाता। २. पंडित। ज्ञानी। ३. कौरवों के सुप्रसिद्ध मंत्री जो राजनीति और धर्म-नीति में बहुत निपुण थे।
विदुष–संज्ञा पुं० [सं०] विद्वान्। पंडित।
विदुषी–संज्ञा स्त्री० [सं०] विद्वान् स्त्री।
विदूर–वि० [सं०] जो बहुत दूर हो। संज्ञा पुं० दे० "वैदूर्य" (मणि)।
विदूषक–संज्ञा पुं० [सं०] १. विषयी। कामुक। २. वह जो तरह तरह की नकलें अथवा बात-चीत करके दूसरों को हँसाता हो। मसखरा। ३. एक प्रकार का नायक जो अपने परिहास आदि के कारण काम-केलि में सहायक होता है। ४. भाँड़।
विदूषना–क्रि० स० [सं० विदूषण] १.सताना। दुःख देना। २. दोष लगाना। क्रि० अ० दुःखी होना।
विदेश–संज्ञा पुं० [सं०] अपने देश को छोड़कर दूसरा देश। परदेश।
विदेह–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो शरीर से रहित हो। २. वह जिसकी उत्पत्ति माता-पिता से न हो। ३. राजा जनक। ४. प्राचीन मिथिला।
वि० [सं०] संज्ञा-रहित। बेसुध। अचेत।
विदेह-कुमारी–संज्ञा स्त्री० [सं०] जानकी। सीता।
विदेहपुर–संज्ञा पुं० [सं०] जनकपुर।
विदेही–संज्ञा पुं० [सं० विदेहिन्] ब्रह्म।
विद्–संज्ञा पुं० [सं०] १. जानकार। २.पंडित। विद्वान्। ३. बुध ग्रह।
विद्ध–वि० [सं०] १. बीच में से छेद किया हुआ। २. फेंका हुआ। ३. जिसको चोट लगी हो। ४. टेढ़ा। ५. सटा हुआ।
विद्यमान–वि० [सं०] उपस्थित। मौजूद।
विद्यमानता–संज्ञा स्त्री० [सं०] विद्यमान होने का भाव। उपस्थिति। मौजूदगी।
विद्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] १.वह ज्ञान जो शिक्षा आदि के द्वारा प्राप्त किया जाता है। इल्म। २. वे शास्त्र आदि जिनके द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जाता है। यथा—चारों वेद, छओं अंग, मीमांसा, न्याय, धर्म्मशास्त्र, पुराण, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गांधर्ववेद और अर्थ-शास्त्र। ३. दुर्गा। ४. आर्य्या छंद का पाँचवाँ भेद।
विद्यागुरु–संज्ञा पुं० [सं०] शिक्षक।
विद्यादान–संज्ञा पुं० [सं०] विद्या पढ़ाना।
विद्याधर–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार की देवयोनि जिसके अंतर्गत खेचर, गंधर्व, किन्नर आदि माने जाते हैं। २. एक प्रकार का अस्त्र। ३. विद्वान्। पंडित।
विद्याधरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] विद्याधर नामक देवता की स्त्री।
विद्याधारी–संज्ञा पुं० [सं० विद्याधारिन्] एकवृत्त

जिसके प्रत्येक चरण में चार भगण होते हैं।
विद्यारंभ–संज्ञा पु० [सं०] वह संस्कार जिसमें विद्या की पढ़ाई आरंभ होती है।
विद्यार्थी–संज्ञा पु० [सं० विद्यार्थिन्] वह जो विद्या पढ़ता हो। छात्र। शिष्य।
विद्यालय–संज्ञा पु० [सं०] वह स्थान जहाँ विद्या पढ़ाई जाती हो। पाठशाला।
विद्यावान्–संज्ञा पु० दे० "विद्वान्"।
विद्युत्–संज्ञा स्त्री० [सं०] बिजली।
विद्युत्मापक–संज्ञा पु० [सं० विद्युत्+मापक] वह यंत्र जिससे यह जाना जाता है कि विद्युत् का बल कितना और प्रवाह किस ओर है।
विद्युन्माला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बिजली का समूह या सिलसिला। २ आठ गुरु वर्णों का एक छंद।
विद्युन्माली–संज्ञा पु० [सं० विद्युन्मालिन्] १ पुराणानुसार एक राक्षस। २ एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में भगण, मगण और दो गुरु होते हैं।
विद्युल्लेखा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दो मगण का एक वृत्त। शेषराज। २ विद्युत्।
विद्रधि–संज्ञा पु० स्त्री० [सं०] पेट के अंदर का एक प्रकार का घातक फोड़ा।
विद्रावण–संज्ञा पु० [सं०] १ भागना। २ पिघलना। ३ उड़ना। ४ फाड़ना। ५ वह जो नष्ट करता हो।
विद्रुम संज्ञा पु० [सं०] प्रवाल। मूँगा।
विद्रोह–संज्ञा पु० [सं०] १ द्वेष। २ वह भारी उपद्रव जो राज्य को हानि पहुँचाने या नष्ट करने के उद्देश्य से हो। बलवा। बगावत।
विद्रोही–संज्ञा पु० [सं० विद्रोहिन्] १ विद्रोह या द्वेष करनेवाला। २ राज्य का अनिष्ट करनेवाला। बागी।
विद्वत्ता–संज्ञा स्त्री० [सं०] बहुत अधिक विद्वान् होने का भाव। पांडित्य।
विद्वान्–संज्ञा पु० [सं० विद्वस्] वह जिसने बहुत अधिक विद्या पढ़ी हो। पंडित।
विद्वेष–संज्ञा पु० [सं०] शत्रुता। वैर।
विद्वेषण–संज्ञा पु० [सं०] १ शत्रुता। वैर। २ एक क्रिया जिससे दो व्यक्तियों में द्वेष या शत्रुता उत्पन्न की जाती है। (तंत्र) ३ शत्रु। वैरी। ४ दुष्टता।
विधस*–संज्ञा पु० [सं० विध्वंस] नाश। वि० विध्वस्त। नष्ट। विनष्ट।
विधसना*†–क्रि० स० [सं० विध्वसन] नष्ट करना। बरबाद करना।
विध*–संज्ञा पु० [सं० विधि] ब्रह्मा।
विधना–क्रि० स० [सं० विधि] प्राप्त करना। अपने साथ लगाना। ऊपर लेना। संज्ञा स्त्री० [सं० विधि] वह जो कुछ होनेवाला हो। भवितव्यता। होनी। संज्ञा पु० विधि। ब्रह्मा।
विधर†–क्रि० वि० दे० "उधर"।
विधर्म्म–संज्ञा पु० [सं०] दूसरे किसी का धर्म्म। पराया धर्म्म।
विधर्मी–संज्ञा पु० [सं० विधर्म्मिन्] १ वह जो धर्म्म के विपरीत आचरण करता हो। धर्म्म-भ्रष्ट। २ किसी दूसरे धर्म्म का अनुयायी।
विधवा–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसका पति मर गया हो। राँड़। बेवा।
विधवापन–संज्ञा पु० [सं० विधवा+हिं० पन] विधवा होने की अवस्था। रँड़ापा। वैधव्य।
विधवाश्रम–संज्ञा पु० [सं० विधवा + आश्रम] वह स्थान जहाँ विधवाओं के पालन-पोषण आदि का प्रबंध किया जाता है।
विधांसना*†–क्रि० स० दे० "विधसना"।
विधाता–संज्ञा पु० [सं० विधातृ] [स्त्री० विधात्री] १ विधान करनेवाला। २ उत्पन्न करनेवाला। ३ प्रबंध करनेवाला। ४ सृष्टि बनानेवाला। ब्रह्मा या ईश्वर।
विधान–संज्ञा पु० [सं०] १ किसी कार्य्य का आयोजन। अनुष्ठान। २ व्यवस्था। प्रबंध। इंतजाम। ३ विधि। प्रणाली। पद्धति। ४ रचना। निर्माण। ५ ढंग। उपाय। युक्ति। ६ आज्ञा करना। ७ नाटक में वह स्थान जहाँ किसी वाक्य द्वारा एक साथ सुख और दुःख दोनों प्रकट किए जाते हैं।
विधायक–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० विधायिका]

१. विधान करनेवाला। २. बनानेवाला। ३. प्रबंध करनेवाला।

विधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कार्य्य करने की रीति। प्रणाली। ढंग। २. व्यवस्था। योजना। क़रीना।
मुहा०—विधि बैठाना=१. परस्पर अनुकूलता होना। मेल बैठना। २. इच्छानुकूल व्यवस्था होना। ३. किसी शास्त्र या ग्रंथ में लिखी हुई व्यवस्था। शास्त्रोक्त विधान। ४. शास्त्र में इस प्रकार का कथन कि मनुष्य यह काम करे। ५. व्याकरण में क्रिया का वह रूप जिसके द्वारा किसी को कोई काम करने का आदेश किया जाता है। ६. साहित्य में एक अर्थालंकार जिसमें किसी सिद्ध विषय का फिर से विधान किया जाता है। ७. आचार-व्यवहार। चाल-ढाल।
यौ०—गतिविधि = चेष्टा और कारवाई।
८. भाँति। प्रकार। क़िस्म।
संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा।

विधिपुर—संज्ञा पुं० [सं० विधि=पुर] ब्रह्मलोक

विधिरानी*—संज्ञा स्त्री० [सं० विधि + हिं० रानी] ब्रह्मा की पत्नी, सरस्वती।

विधिवत्—क्रि० वि० [सं०] १. विधिपूर्वक। विधि या पद्धति के अनुसार। २. जैसा चाहिए। उचित रूप से।

विधुंतुद—संज्ञा पुं० [सं० विधु + तुद] राहु।

विधु—संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा। २. ब्रह्मा। ३. विष्णु।

विधुदारा—संज्ञा पुं० [सं० विधु+दारा] चंद्रमा की स्त्री, रोहिणी।

विधुबंधु—संज्ञा पुं० [सं०] कुमुद का फूल।

विधुबैनी*—संज्ञा स्त्री० दे० "विधु-बदनी"।

विधुर—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० विधुरा] १ दुःखी। २. घबराया हुआ। व्याकुल। ३. असमर्थ। अशक्त।

विधुवदनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुंदरी स्त्री।

विधेय—वि० [सं०] १. जिसका विधान या अनुष्ठान उचित हो। कर्त्तव्य। २. जिसका विधान होनेवाला हो। ३. जो नियम या विधि द्वारा जाना जाय। ४. वशीभूत। अधीन। ५. वह (शब्द या वाक्य) जिसके द्वारा किसी के संबंध में कुछ कहा जाय। (व्या०)

विधेयाविमर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] साहित्य में एक वाक्य-दोष। जो बात प्रधानतः कहनी है, उसका वाक्य-रचना के बीच दबा रहना।

विध्याभास—संज्ञा पुं० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें घोर अनिष्ट की संभावना दिखाते हुए अनिच्छापूर्वक किसी बात की अनुमति दी जाती है।

विध्वंस—संज्ञा पुं० [सं०] नाश। बरबादी।

विध्वंसी—संज्ञा पुं० [सं० विध्वंसिन्] [स्त्री० विध्वंसिनी] नाश या बरबाद करनेवाला।

विध्वस्त—वि० [सं०] नष्ट किया हुआ।

विन†—सर्व० [हिं० उस] "उस" का बहुवचन। उन।

विनत—वि० [सं०] १. झुका हुआ। २. विनीत। नम्र। ३. शिष्ट।

विनतड़ी*†—संज्ञा स्त्री० दे० "विनति"।

विनता—संज्ञा स्त्री० [सं०] दक्ष प्रजापति की एक कन्या जो कश्यप की स्त्री और गरुड़ की माता थी।

विनति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. झुकाव। २. नम्रता। विनय। शिष्टता। सुशीलता। ३. प्रार्थना। विनती।

विनती—संज्ञा स्त्री० दे० "विनति"।

विनम्र—वि० [सं०] १. झुका हुआ। २. विनीत। सुशील।

विनय—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नम्रता। आजिज़ी। २. शिक्षा। ३. प्रार्थना। विनती। ४. शासन। तंबीह। ५. नीति।

विनय-पिटक—संज्ञा पुं० [सं०] आदि बौद्ध शास्त्रों में से एक।

विनयशील—वि० [सं०] नम्र। सुशील।

विनयी—वि० [सं० विनयिन्] विनययुक्त। नम्र।

विनशन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विनष्ट, विनश्वर] नष्ट होना। नाश। बरबादी।

विनश्वर—वि० [सं०] सब दिन या बहुत दिन न रहनेवाला। अनित्य।

विनष्ट–वि० [सं०] जो बरबाद हो गया हो। ध्वस्त। २. मृत। मरा हुआ। ३ बिगड़ा हुआ। ४. भ्रष्ट। पतित।

विनसना*–क्रि० अ० [सं० विनशन] नष्ट होना।

विनसाना*–क्रि० स० [हिं० विनसना का स० रूप] १. नष्ट करना। २. बिगाड़ना।

क्रि० अ० दे० "विनसना"।

विना–अव्य० [सं०] १. अभाव में। न रहने की अवस्था में। बगैर। २ छोड़कर। अतिरिक्त। सिवा।

विनाती*‡–संज्ञा स्त्री० [सं० विनति] विनय

विनाथ–वि० दे० "अनाथ"।

विनायक–संज्ञा पु० [सं०] गणेश।

विनाश–संज्ञा पु० [सं०] [वि० विनाशक] १. नाश। ध्वंस। बरबादी। २ लोप। ३ बिगड़ जाने का भाव। खराबी।

विनाशन–संज्ञा पु० [सं०] [वि० विनाशी, विनाश्य] १. नष्ट करना। बरबाद करना। २ संहार करना। वध करना। ३ खराब करना।

विनास*‡–संज्ञा पु० दे० "विनाश"।

विनासन*–संज्ञा पु० दे० "विनाशन"।

विनासना*–क्रि० स० [सं० विनाशन] १ नष्ट करना। बरबाद करना। २. संहार करना। ३ बिगाड़ना।

क्रि० अ० नष्ट होना। बरबाद होना।

विनिमय–संज्ञा पु० [सं०] एक वस्तु लेकर बदले में दूसरी वस्तु देना। परिवर्तन।

विनियोग–संज्ञा पु० [सं०] १ किसी फल के उद्देश्य से किसी वस्तु का उपयोग। प्रयोग। २. वैदिक कृत्य में मंत्र का प्रयोग। ३ प्रेषण। भेजना।

विनीत–वि० [सं०] १ विनययुक्त। सुशील। २ शिष्ट। नम्र। ३ नीतिपूर्वक व्यवहार करनेवाला। धार्मिक।

विनु*†–अव्य० दे० "बिना"।

विनूठा†–वि० [हिं० अनूठा] अनूठा। सुंदर।

विनोक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अलंकार जिसमें किसी वस्तु की हीनता या श्रेष्ठता की जाती है।

विनोद–संज्ञा पु० [सं०] १. कुतूहल। तमाशा। २. क्रीड़ा। खेल-कूद। ३. हँसी-दिल्लगी। परिहास। ४. हर्ष। आनंद। प्रसन्नता।

विनोदी–वि० [सं० विनोदिन्] [स्त्री० विनोदिनी] १ आमोद प्रमाद करनेवाला। २ कुतूहल-प्रिय। ३ आनंदी। ४ खेल-कूद या हँसी ठट्ठे में रहनेवाला।

विन्यास–संज्ञा पु० [सं०] [वि० विन्यस्त] १ स्थापन। रखना। धरना। २ यथास्थान स्थापन। सजाना। ३ जड़ना।

विपंची–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक प्रकार की वीणा। २ क्रीड़ा। खेल।

विपक्ष–संज्ञा पु० [सं०] १ विरुद्ध पक्ष। २ विरोधी। प्रतिद्वंद्वी। ३ प्रतिवादी या शत्रु। ४ विरोध। खंडन। ५ व्याकरण में बाधक नियम। अपवाद।

विपक्षी–संज्ञा पु० [सं० विपक्षिन्] १ विरुद्ध पक्ष का। दूसरी तरफ का। २ शत्रु। प्रतिद्वंद्वी। प्रतिवादी। ३ बिना पंख का। बगैर डैने का।

विपत्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कष्ट, दुःख या शोक की प्राप्ति। आफत। २ संकट की अवस्था। बुरे दिन।

मुहा०—(किसी पर) विपत्ति ढहना=सहसा कोई दुःख या शोक उपस्थित होना।

३ कठिनाई। झंझट। बखेड़ा।

विपद्–संज्ञा स्त्री० [सं०] विपत्ति। आफत।

विपदा–संज्ञा स्त्री० [सं०] विपत्ति। आफत।

विपन्न–वि० [सं०] १ जिस पर विपत्ति पड़ी हो। २ दुःखी। आर्त्त।

विपरीत–वि० [सं०] १ उलटा। विरुद्ध। खिलाफ। २ प्रतिकूल। ३ अनिष्ट साधन में तत्पर। रुष्ट। ४ हित साधन के अनुपयुक्त।

संज्ञा पु० एक अर्थालंकार जिसमें कार्य्य की सिद्धि में स्वयं साधक का बाधक होना दिखाया जाता है। (केशव)

विपरीतोपमा–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अलंकार जिसमें कोई भाग्यवान् व्यक्ति अति हीन दशा में दिखाया जाय। (केशव)

विपर्य्यय–संज्ञा पुं० [सं०] १. उलट-पलट। इधर का उधर। २. और का और। व्यतिक्रम। ३. और का और समझना। ४. भूल। ग़लती। ५. गड़बड़ी। अव्यवस्था।
विपर्य्यस्त–वि० [सं०] १. जिसका विपर्य्यय हुआ हो। २. अस्त-व्यस्त। गड़बड़।
विपर्य्यास–संज्ञा पुं० दे० "विपर्य्यय"।
विपल–संज्ञा पुं० [सं०] एक पल का साठवाँ भाग।
विपाक–संज्ञा पुं० [सं०] १. परिपक्व होना। पकना। २. पूर्ण दशा को पहुँचना। ३. फल। परिणाम। ४. कर्म का फल। ५. पचना। ६. दुर्गति। दुर्दशा।
विपादिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बिवाई नामक रोग। २. प्रहेलिका। पहेली।
विपासा–संज्ञा स्त्री० [सं०] ब्यास नदी।
विपिन–संज्ञा पुं० [सं०] १. वन। जंगल। २. उपवन। वाटिका।
विपिनतिलका–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्ण-वृत्ति जिसके प्रत्येक चरण में नगण, सगण, नगण और दो रगण होते हैं।
विपिनपति–संज्ञा पुं० [सं०] सिंह।
विपिनविहारी–संज्ञा पुं० [सं०] १. वन में विहार करनेवाला। २. श्रीकृष्ण।
विपुल–वि० [सं०] [स्त्री० विपुला] १. विस्तार, संख्या या परिमाण में बहुत अधिक। २. बृहत्। बड़ा। अगाध।
विपुलता–संज्ञा स्त्री० [सं०] आधिक्य।
विपुला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पृथ्वी। वसुंधरा। २. एक प्रकार का छंद, जिसके प्रत्येक चरण में मगण, रगण और दो लघु होते हैं। ३. आर्य्या छंद के तीन भेदों में से एक।
विपुलाई*–संज्ञा स्त्री० दे० "विपुलता"।
विपोहना*–क्रि० स० [सं० वि + प्रोत] १. पोतना। लीपना। २. नाश करना। ३. दे० "पोहना"।
विप्र–संज्ञा पुं० [सं०] १.ब्राह्मण। २.पुरोहित।
विप्रचरण–संज्ञा पुं० [सं०] [सं० विप्र+चरण] भृगु मुनि की लात का चिह्न जो विष्णु के हृदय पर माना जाता है।
विप्रचित्ति–संज्ञा पुं० [सं०] एक दानव जिसकी पत्नी सिंहिका के गर्भ से राहु हुआ था।
विप्रपद–संज्ञा पुं० दे० "विप्रचरण"।
विप्रराम–संज्ञा पुं० [सं०] परशुराम।
विप्रलंभ–संज्ञा पुं० [सं०] १. चाही हुई वस्तु का न मिलना। २. प्रिय का न मिलना। वियोग। विरह। ३. अलग होना। विच्छेद। ४. धोखा। छल। धूर्त्तता।
विप्रलब्ध–वि० [सं०] १. जिसे चाही हुई वस्तु न प्राप्त हुई हो। रहित। वंचित। २. वियोग-दशा को प्राप्त।
विप्रलब्धा–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जो संकेतस्थान में प्रिय को न पाकर दुःखी हो।
विप्लव–संज्ञा पुं० [सं०] १. उपद्रव। अशांति और हलचल। २. विद्रोह। बलवा। ३. उथल-पुथल। अव्यवस्था। ४. आफ़त। विपत्ति। ५. जल की बाढ़।
विफल–वि० [सं०] [संज्ञा विफलता] १. जिसमें फल न लगा हो। २. निष्फल। व्यर्थ। बेफ़ायदा। ३. जिसके प्रयत्न का कुछ परिणाम न हुआ हो। नाकामयाब।
विबुध–संज्ञा पुं० [सं० वि० + बुध] १. पंडित। बुद्धिमान्। २. देवता। ३. चंद्रमा।
विबुधविलासिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. देवांगना। देवता की स्त्री। २. अप्सरा।
विबुधबेलि–संज्ञा स्त्री० [सं०] कल्पलता।
विबोध–संज्ञा पुं० [सं०] १. जागरण। जागना। २. सम्यक् बोध। अच्छा ज्ञान। ३. सचेत होना। सावधान होना।
विभंग–संज्ञा पुं० [सं०] उगल।
विभक्त–वि० [सं० वि० + भज्] १. बँटा हुआ। विभाजित। २. अलग किया हुआ।
विभक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विभक्त होने की क्रिया या भाव। विभाग। बाँट। २. अलगाव। पार्थक्य। ३. शब्द के आगे लगा हुआ वह प्रत्यय या चिह्न जिससे यह पता लगता है कि उस शब्द का क्रिया पद से क्या संबंध है। (व्याकरण)
विभव–संज्ञा पुं० [सं०] १. धन। संपत्ति।

२ ऐश्वर्य्य। ३ बहुतायत। ४ मोक्ष।
विभवशाली–वि० [सं०] १ विभववाला। २ प्रतापवाला। ऐश्वर्य्यवाला।
विभांडक–संज्ञा पुं० [सं०] एक ऋषि जो ऋष्यशृंग के पिता थे।
विभाँति–संज्ञा स्त्री० [सं० वि+हिं० भाँति] प्रकार। भेद। किस्म।
वि० अनेक प्रकार का।
अव्य० अनेक प्रकार से।
विभाग–संज्ञा पुं० [सं०] १ बाँटने की क्रिया या भाव। बँटवारा। तकसीम। २ भाग। अंश। हिस्सा। बखरा। ३ प्रकरण। अध्याय। ४ कार्य्य-क्षेत्र। मुहकमा।
विभाजित–वि० [सं०] जिसका विभाग किया गया हो। विभक्त।
विभाज्य–वि० [सं०] १ विभाग करने योग्य। २ जिसका विभाग करना हो।
विभाति–संज्ञा स्त्री० [सं० विभा] शोभा।
विभाना*–क्रि० अ० [सं० विभा+ना (प्रत्य०)] १ चमकना। झलकना। २ शोभित होना।
विभारना*–क्रि० अ० दे० 'विभाना"।
विभाव–संज्ञा पुं० [सं०] साहित्य में वह वस्तु जो रति आदि भावों को आश्रय में उत्पन्न करनेवाली,या उद्दीप्त करनेवाली हो।
विभावना–संज्ञा स्त्री० [सं०] साहित्य में एक अर्थालंकार जिसमें कारण के बिना कार्य्य की उत्पत्ति, अथवा विरुद्ध कारण से किसी कार्य्य की उत्पत्ति दिखाई जाती है।
विभावरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ रात्रि। रात। २ वह रात जिसमें तारे चमकते हों। ३ कुटनी। कुटनी। दूती।
विभावसु–संज्ञा पुं० [सं०] १ वसुओं के एक पुत्र। २ सूर्य्य। ३ अग्नि। ४ चंद्रमा।
विभासना*–क्रि० अ० [सं० विभास+ना (हिं० प्रत्य०)] चमकना। झलकना।
विभिन्न–वि० [सं०] १ बिल्कुल अलग। पृथक्। जुदा। २ अनेक प्रकार का।
विभीति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ डर। भय। २ शंका। संदेह।
विभीषण–संज्ञा पुं० [सं०] रावण का भाई एक राक्षस जो रावण के मारे जाने पर लंका का राजा बनाया गया था।
विभीषिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ डर दिखाना २ भयानक कांड या दृश्य।
विभु–वि० [सं०] १ जो सर्वत्र वर्तमान हो। सर्वव्यापक। २ जो सब जगह जा सकता हो। जैसे, मन। ३ बहुत बड़ा। महान्। ४ सर्वकाल-व्यापी। नित्य। ५ दृढ़। अचल। ६ शक्तिमान्।
संज्ञा पुं० १ ब्रह्मा। २ जीवात्मा। ३ प्रभु। ४ ईश्वर। ५ शिव। ६ विष्णु।
विभूति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बहुतायत। वृद्धि। बढ़ती। २ विभव। ऐश्वर्य। ३ संपत्ति। धन। ४ दिव्य या अलौकिक शक्ति जिसके अंतर्गत अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व ये आठ सिद्धियाँ हैं। ५ शिव के अंग में चढ़ाने की राख या भस्म। ६ लक्ष्मी। ७ एक दिव्यास्त्र जो विश्वामित्र ने राम को दिया था। ८ सृष्टि।
विभूषना*–क्रि० स० [सं० विभूषण] १ गहने आदि से सजाना। २ सुशोभित करना। ३ आगमन से सुशोभित करना।
विभूषित–वि० [सं०] १ गहनों आदि से सजाया हुआ। अलंकृत। २ (अच्छी वस्तु गुण आदि से) युक्त। सहित। ३ शोभित।
विभेंटन*–संज्ञा पुं० [हिं० भेंट] गले मिलना।
विभेद–संज्ञा पुं० [सं०] १ विभिन्नता। फरक। अंतर। २ अनेक भेद। कई प्रकार। ३ छेदकर घुसना। धँसना।
विभेदना*–क्रि० स० [सं० विभेदन] १ भेदन करना। छेदना। २ घुसना। ३ भेद या फर्क डालना।
विभौ*–संज्ञा पुं० दे० 'विभव"।
विभ्रम–संज्ञा पुं० [सं०] १ भ्रमण। चक्कर। फेरा। २ भ्रांति। धोखा। ३ संदेह। संशय। ४ घबराहट। ५ स्त्रियों का एक हाव जिसमें वे भ्रम से उलटे-पलटे भूषण वस्त्र पहनकर कभी क्रोध, कभी हर्ष आदि

भाव प्रकट करती हैं।

विभ्राट्–संज्ञा पुं० [सं०] १. आपत्ति। विपत्ति। संकट। २. उपद्रव। बखेड़ा।

विमंडन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विमंडित] सजाना। शृंगार करना। सँवारना।

विमंडित–वि० [सं०] १. अलंकृत। सजा हुआ। २. सुशोभित। ३. सहित। युक्त। (अच्छी वस्तु से)

विमत–संज्ञा पुं० [सं०] १. विरुद्ध मत। विपरीत सिद्धांत। २. प्रतिकूल सम्मति।

विमत्सर–संज्ञा पुं० [सं०] अधिक अहंकार।

विमन–वि० [सं०विमनस्] अनमना। उदास।

विमर्दन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विमर्दनीय, विमर्दित] १. अच्छी तरह मलना-दलना। २. नष्ट करना। ३. मार डालना।

विमर्श–संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी बात का विवेचन या विचार। २. आलोचना। समीक्षा। ३. परीक्षा। ४. परामर्श।

विमर्ष–संज्ञा पुं० [सं०] १. दे० "विमर्श"। २. *नाटक का एक अंग जिसके अंतर्गत अप*वाद, व्यवसाय, शक्ति, प्रसग, खेद, विरोध और आदान आदि का वर्णन होता है।

विमल–वि० [सं०] [संज्ञा विमलता] [स्त्री० विमला] १. निर्मल। स्वच्छ। साफ़। २. निर्दोष। शुद्ध। ३. सुंदर। मनोहर।

विमलध्वनि–संज्ञा पुं० [सं०] छः चरणों का एक छंद।

विमलापति–संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा।

विमाता–संज्ञा स्त्री० [सं० विमातृ] सौतेली माँ

विमान–संज्ञा पुं० [सं०] १. आकाश-मार्ग से गमन करनेवाला रथ। वायुयान। उड़नखटोला। २. मरे हुए वृद्ध मनुष्य की अरथी जो राजवज के साथ निकाली जाती है। ३. रथ। गाड़ी। ४. घोड़ा।

विमुक्त–वि० [सं०] १. अच्छी तरह मुक्त। छूटा हुआ। २. स्वतंत्र। स्वच्छंद। ३. (हानि, दंड आदि से) बचा हुआ। ४. अलग किया हुआ। वरी। ५. फेंका हुआ। छोड़ा हुआ।

विमुक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. छुटकारा। रिहाई। २. मुक्ति। मोक्ष।

विमुख–वि० [सं०] [भाव० विमुखता] १. मुख-रहित। जिसके मुँह न हो। २. जिसने किसी बात से मुँह फेर लिया हो। विरत। निवृत्त। ३. जिसे परवाह न हो। उदासीन। ४. विरुद्ध। खिलाफ़। अप्रसन्न। ५. अप्राप्त-मनोरथ। निराश।

विमुद–वि० [सं०] उदास। खिन्न।

विमूढ़–वि० [सं०] [स्त्री० विमूढ़ा] १. विशेष रूप से मुग्ध। अत्यंत विमोहित। २. भ्रम में पड़ा हुआ। ३. बेसुध। अचेत। ४. ज्ञान-रहित। मूर्ख। नासमझ।

विमूढ़गर्भ–संज्ञा पुं० [सं०] वह गर्भ जिसमें बच्चा मरा या बेहोश हो और प्रसव में बड़ी कठिनता हो।

विमोचन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विमोचनीय, विमोचित, विमोच्य] १. बंधन, गाँठ आदि खोलना। २. बंधन से छुड़ाना। मुक्त करना। ३. निकालना। ४. छोड़ना। फेंकना।

विमोचना*–*क्रि० स० [सं० विमोचन]* १. बंधन आदि खोलना। मुक्त करना। छोड़ना। २. निकालना। बाहर करना।

विमोह–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विमोहक] १. मोह। अज्ञान। भ्रम। २. बेसुध होना। बेहोशी। ३. मोहित होना। आसक्ति।

विमोहन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विमोहित, विमोही] १. मोहित करना। मन लुभाना। २. सुध-बुध भुलाना। ३. कामदेव के पाँच बाणों में से एक।

विमोहना*–क्रि० अ० [सं० विमोहन] १. मोहित होना। लुभा जाना। २. बेसुध होना। ३. धोखा खाना।

क्रि० स० १. मोहित करना। लुभाना। २. बेसुध करना। ३. धोखे में डालना।

विमोहा–संज्ञा स्त्री० दे० "विजोहा"।

विमोहित–वि० [सं०] १. लुभाया हुआ। मुग्ध। २. तन मन की सुध भूला हुआ। ३. मूर्च्छित।

विमोही–वि० [सं० विमोहिन्] [स्त्री० विमोहिनी] १. मोहित करनेवाला। जी लुभाने-

वाला। २. सुध-बुध भुलानेवाला। ३. मूर्च्छित या बेहोश करनेवाला। ४ भ्रम में डालनेवाला। ५. निष्ठुर। कठोर-हृदय।
विमोट—संज्ञा पु० [सं० वल्मीक] दीमकों का उठाया हुआ मिट्टी का ढूह। बाँबी।
वियंग*—संज्ञा पु० [हिं० विय+अंग] महादेव।
विय*—वि० [सं० द्वि] १. दो। जोड़ा। २. दूसरा।
वियुक्त—वि० [सं०] १ बिछुड़ा हुआ। वियोग-प्राप्त। २. जुदा। अलग। ३. रहित। हीन।
वियो*—वि० [सं० द्वितीय] दूसरा। अन्य।
वियोग*—संज्ञा पु० [सं०] १. मिलाप का न होना। विच्छेद। २. अलगाव। ३. विरह। जुदाई।
वियोगांत—वि० [सं०] (नाटक या उपन्यास आदि) जिसकी कथा का अंत दुःखपूर्ण हो।
वियोगिनी—वि० स्त्री० [सं०] जो अपने पति या प्रिय से अलग हो।
वियोगी—वि० [सं० वियोगिन्] [स्त्री० वियोगिनी] जो प्रिया से दूर या वियुक्त हो।
वियोजक—संज्ञा पु० [सं०] १ दो मिली हुई वस्तुओं को पृथक् करनेवाला। २ गणित में वह संख्या जिसे किसी दूसरी बड़ी संख्या में से घटाना हो।
विरंग—वि० [सं०] १. बुरे रंग का। बदरंग। फीका। २ अनेक रंगों का।
विरंचि—संज्ञा पु० [सं०] ब्रह्मा। विधाता।
विरंचिसुत—संज्ञा पु० [सं०] नारद।
विरक्त—वि० [सं०] १ जिसका जी हटा हो। विमुख। २ उदासीन। ३ अप्रसन्न।
विरक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अनुराग का अभाव। २ उदासीनता। ३ अप्रसन्नता।
विरचन—संज्ञा पु० [सं०] निर्माण। बनाना।
विरचना*—क्रि० स० [सं० विरचन] १ रचना। बनाना। निर्माण करना। २ सजाना। क्रि० अ० [सं० वि+रंजन] विरक्त होना।
विरचित—वि० [सं०] १ बनाया हुआ। निर्मित। २ रचा हुआ। लिखित।
विरत—वि० [सं०] १. जो अनुरक्त न हो। विमुख। २. जो लीन या तत्पर न हो। निवृत्त। ३ विरक्त। वैरागी। ४. विशेष रूप से रत। बहुत लीन।
विरति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चाह का न होना। २ उदासीनता। ३. वैराग्य।
विरथ—वि० [सं०] १. जिसके पास रथ या सवारी न हो। २ पैदल।
विरद—संज्ञा पु० [सं० विरुद] १. ख्याति। प्रसिद्धि। २. यश। कीर्ति। दे० "विरुद"।
विरदावली—संज्ञा स्त्री० [सं० विरुदावली] यश की कथा। कीर्ति की गाथा।
विरदैत*—वि० [हिं० विरद+ऐत (प्रत्य०)] बड़े विरदवाला। कीर्ति या यशवाला।
विरमना*†—क्रि० अ० [सं० विरमण] १. रम जाना। मन लगाना। २ विराम करना। ठहरना। ३ मोहित होकर रुक जाना। ४. वेग आदि का थमना या कम होना। क्रि० अ० दे० "विलमना"।
विरमाना*†—क्रि० स० [हिं० विरमना का स० रूप] दूसरे को विरमने में प्रवृत्त करना।
विरल—वि० [सं०] १ जो घना न हो। 'सघन' का उलटा। २ जो दूर दूर पर हो। ३ दुर्लभ। ४. पतला। ५. शून्य। निर्जन। ६. अल्प। थोड़ा।
विरस—वि० [सं०] [संज्ञा विरसता] १ रसहीन। फीका। नीरस। २ जो अच्छा न लगे। अप्रिय। अरुचिकर। ३ (काव्य) जिसमें रस का निर्वाह न हो सका हो।
विरह—संज्ञा पु० [सं०] १ किसी वस्तु से रहित होने का भाव। २ किसी प्रिय व्यक्ति का पास से अलग होना। विच्छेद। वियोग। जुदाई। ३ वियोग का दुःख।
विरहिणी—वि० स्त्री० दे० 'वियोगिनी'।
विरहित—वि० [सं०] रहित। शून्य। बिना।
विरही—वि० [सं० विरहिन्] [स्त्री० विरहिणी] जो प्रियतमा से अलग होने के कारण दुःखी हो। वियोगी।
विरहोत्कंठिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह दुःखी नायिका जिसके मन में पूरा विश्वास हो

कि पति या नायक आवेगा, पर फिर भी वह किसी कारणवश न आवे।

विराग–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विरागी] १. अनुराग का अभाव। चाह का न होना। २. विषय-भोग आदि से निवृत्ति। वैराग्य।

विराजना–क्रि० अ० [सं० विराजन] १. शोभित होना। सोहना। फबना। २. मौजूद रहना। उपस्थित होना। ३. बैठना।

विराजमान–वि० [सं०] १. चमकता हुआ। २. उपस्थित। मौजूद। ३. बैठा हुआ।

विराट्–संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्रह्म का वह स्थूल स्वरूप, जिसका शरीर संपूर्ण विश्व है। २. क्षत्रिय। ३. कांति। दीप्ति। वि० बहुत बड़ा। बहुत भारी।

विराट–संज्ञा पुं० [सं०] १. मत्स्य देश। २. मत्स्य देश का राजा जिसके यहाँ अज्ञातवास के समय पांडव नौकर रहे थे।

विराध–संज्ञा पुं० [सं०] १. पीड़ा। तकलीफ़। २. सतानेवाला। ३. एक राक्षस जिसे दंडकारण्य में लक्ष्मण ने मारा था।

विराम–संज्ञा पुं० [सं०] १. रुकना या थमना। ठहरना। २. सुस्ताना। विश्राम करना। ३. वाक्य के अंतर्गत वह स्थान जहाँ बोलते समय ठहरना पड़ता हो। ४. छंद के चरण में यति।

विराव–संज्ञा पुं० [सं०] १. शब्द। बोली। कलरव। २. हल्ला-गुल्ला। शोर-गुल।

विरासी*–वि० दे० "विलासी"।

विरुझना*†–क्रि० अ० दे० "उलझना"।

विरुद–संज्ञा पुं० [सं०] १. राजाओं की स्तुति या प्रशंसा जो सुंदर भाषा में की गई हो। यशकीर्तन। प्रशस्ति। २. यश या प्रशंसासूचक पदवी जो राजा लोग प्राचीन काल में धारण करते थे। ३. यश।

विरुदावली–संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी के गुण, प्रताप, पराक्रम आदि का सविस्तर कथन। यश-वर्णन। प्रशंसा।

विरुद्ध–वि० [सं०] १. जो हित के अनुकूल न हो। प्रतिकूल। खिलाफ़। २. अप्रसन्न। ३. विपरीत। ४. अनुचित। क्रि० वि० प्रतिकूल स्थिति में। खिलाफ़।

विरुद्धकर्मा–संज्ञा पुं० [सं० विरुद्धकर्मन्] १. बुरे चलन का आदमी। २. श्लेष अलंकार का एक भेद जिसमें एक ही क्रिया के कई परस्पर विरुद्ध फल दिखाए जाते हैं।

विरुद्धता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विरुद्ध होने का भाव। २. प्रतिकूलता। विपरीतता।

विरुद्धरूपक–संज्ञा पुं० [सं०] केशव के अनुसार रूपक अलंकार का एक भेद जो "रूपकातिशयोक्ति" ही है।

विरुद्धार्थ दीपक–संज्ञा पुं० [सं०] दीपक अलंकार का एक भेद जिसमें एक ही बात से दो परस्पर विरुद्ध क्रियाओं का एक साथ होना दिखाया जाता है।

विरूप–वि० [सं०] [स्त्री० विरूपा] १. कई रंग रूप का। २. कुरूप। बदसूरत। भद्दा। ३. बदला हुआ। परिवर्तित। ४. शोभाहीन। ५. विरुद्ध। उलटा।

विरूपाक्ष–संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव। शंकर। २. शिव के एक गण का नाम। ३. रावण का एक सेनानायक। ४. एक दिग्गज।

विरेचक–वि० [सं०] दस्त लानेवाला। मलभेदक। दस्तावर।

विरेचन–संज्ञा पुं० [सं०] १. दस्त लानेवाली दवा। जुलाब। २. दस्त लाना।

विरोचन–संज्ञा पुं० [सं०] १. चमकना। प्रकाशित होना। २. प्रकाशमान। ३. सूर्य की किरण। ४. सूर्य। ५. चंद्रमा। ६. अग्नि। ७. विष्णु। ८. प्रह्लाद के पुत्र और बलि के पिता।

विरोध–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विरोधक] १. मेल में न होना। विपरीत भाव। अनैक्य। २. वैर। शत्रुता। बिगाड़। अनबन। ३. दो बातों का एक साथ न हो सकना। व्याघात। ४. उलटी स्थिति। ५. नाश। ६. नाटक का एक अंग जिसमें किसी बात का वर्णन करते समय विपत्ति का आभास दिखाया जाता है। ७. एक अर्थालंकार जिसमें जाति, गुण, क्रिया और द्रव्य में से किसी एक का दूसरी जाति

गुण, क्रिया या द्रव्य में से किसी एक के साथ विरोध होता है।

विरोधन–संज्ञा पु० [सं०] [वि० विरोधी, विरोधित, विरोध्य] १ विरोध करना। वैर करना। २ नाश। बरबादी। ३ नाटक में विमर्श का एक अंग जो उस समय होता है, जब किसी कारणवश कार्यध्वंस का उपक्रम (सामान) होता है।

विरोधना*–क्रि० स० [सं० विरोधन] विरोध करना। शत्रुता या झगड़ा करना।

विरोधाभास–संज्ञा पु० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें जाति, गुण, क्रिया और द्रव्य का विरोध दिखाई पड़ता है।

विरोधी–वि० [सं० विरोधिन्] [स्त्री० विरोधिनी] १ विरोध करनेवाला। बाधा डालनेवाला। २ विपक्षी। शत्रु। वैरी।

विरोधी श्लेष–संज्ञा पु० [सं०] श्लेष अलंकार का एक भेद जिसमें श्लिष्ट शब्दों द्वारा दो पदार्थों में भेद, विरोध या न्यूनाधिकता दिखाई जाती है। (केशव)

विरोधोपमा–संज्ञा स्त्री० [सं०] उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें किसी वस्तु की उपमा एक साथ दो विरोधी पदार्थों से दी जाती है।

बिलंब–वि० [सं० विलंब] आवश्यकता, अनुमान आदि से अधिक समय (जो किसी बात में लगे)। अतिकाल। देर।

बिलंबना–क्रि० अ० [सं० विलंबन] १ देर करना। विलंब करना। २ मन लगने के कारण बस जाना। ३ लटकना। ४ सहारा लेना।

बिलंबित–वि० [सं०] १ लटकता हुआ। झूलता हुआ। २ जिसमें देर हुई हो।

बिलक्षण–वि० [सं०] [संज्ञा बिलक्षणता] असाधारण। अनोखा। अनूठा।

बिलखना–क्रि० अ० दे० "बिलखना"।

*क्रि० अ० [सं० लक्ष] ताड़ना। पता पाना।

बिलग–वि० [हिं० वि (उप०)+लगना] अलग या अलग दिखाई देना।

बिलगाना–क्रि० अ० [हिं० बिलग+ना (प्रत्य०)] १ अलग होना। पृथक् होना। २ विभक्त या अलग दिखाई देना।

क्रि० स० पृथक् करना। अलग करना।

बिलच्छन–वि० दे० "बिलक्षण"।

बिलपना*–क्रि० अ० [सं० विलाप] रोना।

बिलपाना*–क्रि० स० [हिं० बिलपना का स०] दूसरे को विलाप में प्रवृत्त करना। रुलाना।

बिलम*–संज्ञा पु० [सं० विलंब] देर। अबेर।

बिलमना*–क्रि० अ० दे० "बिलंबना"।

बिलसन–संज्ञा पु० [सं०] १ चमकने की क्रिया। २ क्रीडा। प्रमोद।

बिलसना*–क्रि० अ० [सं० विलस] १ शोभा पाना। २ विलास करना। ३ आनंद मनाना।

विलाप–संज्ञा पु० [सं०] रोकर दुःख प्रकट करने की क्रिया। क्रंदन। रुदन।

बिलापना*–क्रि० अ० [सं० विलापन] शोक करना। विलाप करना।

बिलायत–संज्ञा पु० [अ०] १ पराया देश। दूसरों का देश। २ दूर का देश।

बिलायती–वि० [अ०] १ विलायत का। विदेशी। २ दूसरे देश में बना हुआ।

विलास–संज्ञा पु० [सं०] १ प्रसन्न या प्रफुल्लित करनेवाली क्रिया। २ मनोरंजन। मनोविनोद। ३ आनंद। हर्ष। ४ वे प्रेमसूचक क्रियाएँ जिनसे स्त्रियाँ पुरुषों को अपनी ओर अनुरक्त करती हैं। हाव भाव। नाज-नखरा। ५ किसी अंग की मनोहर चेष्टा। कर विलास। ६ किसी चीज का हिलना-डोलना। ७ अतिशय सुख भोग।

विलासिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का रूपक जिसमें एक ही अंक होता है।

विलासिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सुंदरी स्त्री। कामिनी। २ वेश्या। गणिका। ३ एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में जगण, रगण, जगण और दो गुरु होते हैं।

विलासी–संज्ञा पु० [सं० विलासिन्] [स्त्री० विलासिनी] १ सुख भोग में अनुरक्त पुरुष। कामी। २ क्रीडाशील। हँसोड़। कौतुकी। ३ आराम-तलब।

बिलीक*–वि० पु० [सं० व्यलीक] अनुचित।

विलीन–वि० [सं०] १. जो अदृश्य हो गया हो। लुप्त। २. जो किसी दूसरे में मिल गया हो। ३. छिपा हुआ।

विलेशय–संज्ञा पुं० [सं०] १. बिल या दरार में रहनेवाले जीव। २. सर्प। साँप।

विलोकना–क्रि० स० [सं० विलोकन] देखना।

विलोचन–संज्ञा पुं० [सं०] १. नेत्र। नयन। आँख। २. आँख फोड़ने की क्रिया।

विलोम–वि० [सं०] विपरीत। उलटा। संज्ञा पुं० ऊँचे से नीचे की ओर आना।

विलोल–वि० [सं०] १. चंचल। २. सुंदर।

विल्व–संज्ञा पु० [सं०] बेल का पेड़।

विल्वपत्र–संज्ञा पुं० [सं०] बेल का पत्ता, जो शिव पर चढ़ाते हैं। बेलपत्र।

विल्वमंगल–संज्ञा पुं० [सं०] महाकवि सूरदास का अंधे होने से पूर्व का नाम।

विवक्षा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कोई बात कहने की इच्छा। २. अर्थ। तात्पर्य्य। ३. अनिश्चय। शक।

विवक्षित–वि० [सं०] जिसकी आवश्यकता या इच्छा हो। अपेक्षित।

विवदना*–क्रि० अ० [सं० विवाद+हिं० ना] शास्त्रार्थ करना। विवाद करना।

विवर–संज्ञा पुं० [सं०] १. छिद्र। बिल। २. गड्ढा। दरार। गर्त। ३. गुफा। कंदरा।

विवरण–संज्ञा पुं० [सं०] १. विवेचन। व्याख्या। २. वृत्तांत। बयान। हाल। ३. भाष्य। टीका।

विवर्ण–संज्ञा पुं० [सं०] साहित्य में एक भाव जिसमें भय, मोह, क्रोध आदि के कारण मुख का रंग बदल जाता है। वि० [सं०] १. नीच। कमीना। २. कुजाति। ३. बदरंग। बुरे रंग का। ४. जिसके चेहरे का रंग उतरा हुआ हो। कांतिहीन।

विवर्त–संज्ञा पुं० [सं०] १. समुदाय। समूह। २. आकाश। ३. भ्रांति। भ्रम।

विवर्तन–संज्ञा पुं० [सं०] घूमना। फिरना।

विवर्तवाद–संज्ञा पुं० [सं०] वेदांत में एक सिद्धांत जिसके अनुसार ब्रह्मा को सृष्टि का मुख्य उत्पत्ति-स्थान और संसार को माया मानते हैं। परिणामवाद।

विवश–वि० [सं०] १. जिसका कुछ वश न चले। लाचार। बेबस। २. पराधीन।

विवस्त्र–वि० [सं०] नग्न। नंगा।

विवस्वत्–संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य्य। २. सूर्य्य का सारथी, अरुण।

विवाद–संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी बात पर जबानी झगड़ा। वाक्-युद्ध। २. झगड़ा। कलह। ३. मुकदमेबाजी।

विवादास्पद–वि० [सं०] जिस पर विवाद या झगड़ा हो। विवाद योग्य। विवादयुक्त।

विवादी–संज्ञा पुं० [सं० विवादिन] १. कहा-सुनी या झगड़ा करनेवाला। २. मुकदमा लड़नेवालों में से कोई एक पक्ष।

विवाह–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रथा जिसके अनुसार स्त्री और पुरुष आपस में दांपत्य सूत्र में बँधते हैं। शादी। ब्याह। हमारे यहाँ विवाह आठ प्रकार के माने गए हैं—ब्राह्म, दैव, आर्ष, प्राजापत्य, आसुर, गांधर्व, राक्षस और पैशाच। पर आजकल केवल ब्राह्म-विवाह प्रचलित है। परिणय। पाणिग्रहण।

विवाहना–क्रि० स० दे० "ब्याहना"।

विवाहित–वि० पुं० [सं०] [स्त्री० विवाहिता] जिसका विवाह हो गया हो। ब्याहा हुआ।

विवाही–वि० स्त्री० [सं० विवाहिता] जिसका विवाह हो चुका हो।

विवि*–वि० [सं० द्वि] १. दो। २. दूसरा।

विविचार–वि० [सं०] १. विचार-रहित। विवेक-रहित। २. आचार-रहित।

विविध–वि० [सं०] बहुत प्रकार का। अनेक तरह का।

विविर–संज्ञा पुं० [सं०] १. खोह। गुफा। २. बिल। ३. दरार।

विवृत–वि० [सं०] १. विस्तृत। फैला हुआ। २. खुला हुआ। संज्ञा पुं० ऊष्म स्वरों के उच्चारण करने का एक प्रयत्न। (व्या०)

विवृतोक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अलंकार जिसमें श्लेष से छिपाया हुआ अर्थ कवि स्वयं अपने शब्दों द्वारा प्रकट कर देता है।

विवेक–सज्ञा पु० [स०] १ भली-बुरी वस्तु का ज्ञान। २ मन की वह शक्ति जिससे भले-बुरे का ज्ञान होता है। ३ बुद्धि।

विवेकी–सज्ञा पु० [स० विवेकिन्] १ वह जिसे विवेक हो। भले-बुरे का ज्ञान रखने-वाला। २ बुद्धिमान्। समझदार। ३, ज्ञानी। ४ न्यायशील। ५ न्यायाधीश।

विवेचन–सज्ञा पु० [स०] १ भली भाँति परीक्षा करना। जाँचना। २ यह देखना कि कौन सी बात ठीक है और कौन नहीं। निर्णय। तर्क वितर्क। ३ मीमासा।

विवेचनीय–वि० [स०] विवेचन करने योग्य। विचार करने लायक।

विव्वोक–सज्ञा पु० [स०] साहित्य में एक हाव जिसमें स्त्रियाँ सयोग के समय प्रिय का अनादर करती हैं।

विशद–वि० [स०] १ स्वच्छ। विमल। २ साफ। स्पष्ट। ३ जो दिखाई पडता हो। व्यक्त। ४ सफेद। ५ सुदर। खबसूरत।

विशापति–सज्ञा पु० [स०] राजा।

विशाख–सज्ञा पु० [स०] १ कार्तिकेय। २ एक देवता जिनका जन्म कार्तिकेय के वज्र चलाने से हुआ था। ३ शिव।

विशाखा–सज्ञा स्त्री० [स०] १ सत्ताईस नक्षत्रों में से सोलहवाँ नक्षत्र जिसे राधा भी कहते हैं। २ एक प्राचीन जनपद जो कौशाबी के पास था।

विशारद–सज्ञा पु० [स०] १ वह जो किसी विषय का अच्छा पडित या विद्वान् हो। २ कुशल। दक्ष।

विशाल–वि० [स०] [सज्ञा विशालता] १ बहुत बडा और विस्तृत। लबा-चौडा। २ सुदर और भव्य। ३ प्रसिद्ध। मशहूर।

विशालाक्ष–सज्ञा पु० [स०] १ महादेव। शिव। २ विष्णु। ३ गरुड।

विशालाक्षी–सज्ञा स्त्री० [स०] १ वह स्त्री जिसकी आँखें बडी और सुदर हों। २ पार्वती। ३ देवी की एक मूर्ति।

विशिख–सज्ञा पु० [स०] बाण।

विशिष्ट–वि० [स०] [सज्ञा विशिष्टता] १ मिला हुआ। युक्त। २ जिसमें किसी प्रकार की विशेषता हो। ३ विलक्षण।

विशिष्टाद्वैत–सज्ञा पु० [स०] एक प्रसिद्ध दार्शनिक सिद्धात जिसके अनुसार यह माना जाता है कि जीवात्मा और जगत् दोनों ब्रह्म से भिन्न होने पर भी वास्तव में भिन्न नहीं हैं।

विशुद्ध–वि० [स०] [भाव० विशुद्धता] १ जिसमें किसी प्रकार की मिलावट आदि न हो। २ सत्य। सच्चा।

विशुद्धि–सज्ञा स्त्री० [स०] शुद्धता।

विशूचिका–सज्ञा स्त्री० दे० "विसूचिका"।

विशृखल–वि० [स०] जिसमें क्रम या शृखला न हो।

विशेष–सज्ञा पु० [स०] १ भेद। अतर। २ वह जो साधारण के अतिरिक्त और उससे अधिक हो। अधिकता। ज्यादती। ३ वस्तु। पदार्थ। ४ साहित्य में एक प्रकार का अलकार जिसमें (क) बिना आधार के आधेय या (ख) थोडा काम करने पर बहुत सी प्राप्ति या (ग) एक ही चीज का अनेक स्थानों में होना वर्णित होता है। ५ सात प्रकार के पदार्थों में से एक। (वैशेषिक)

विशेषज्ञ–सज्ञा पु० [स०] वह जिसे किसी विषय का विशेष ज्ञान हो।

विशेषण–सज्ञा पु० [स०] १ वह जो किसी प्रकार की विशेषता उत्पन्न करता या बत-लाता हो। २ व्याकरण में वह विकारी शब्द जिससे किसी सज्ञा की कोई विशेषता सूचित होती है, अथवा उसकी व्याप्ति मर्य्यादित होती है। विशेषण तीन प्रकार के होते हैं—सार्वनामिक, गुणवाचक और सख्या-वाचक।

विशेषता–सज्ञा स्त्री० [स०] विशेष का भाव या धर्म। खसूसियत। खासपन।

विशेषना–क्रि० अ० [स० विशेष] १ निश्चय या निर्णय करना। २ विशेष रूप देना।

विशेषोक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] काव्य में एक प्रकार का अलंकार जिसमें पूर्ण कारण के रहते हुए भी कार्य्य के न होने का वर्णन रहता है।
विशेष्य–संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण में वह संज्ञा जिसके साथ कोई विशेषण लगा होता हो।
विश्–संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रजा।
विशपति–संज्ञा पुं० [सं०] राजा।
विश्रंभ–संज्ञा पुं० [सं०] १. विश्वास। एतबार। २. प्रेमी और प्रेमिका में रति के समय होनेवाला झगड़ा। ३. प्रेम।
विश्रब्ध–वि० [सं०] १. शांत। २. विश्वसनीय। ३. निर्भय। निडर।
विश्रब्धनवोढ़ा–संज्ञा स्त्री० [सं०] साहित्य में वह नवोढ़ा नायिका जिसका अपने पति पर कुछ कुछ अनुराग और कुछ कुछ विश्वास होने लगा हो।
विश्रवा–संज्ञा पुं० [सं० विश्रवस्] एक प्राचीन ऋषि जो कुबेर के पिता थे।
विश्रांति–संज्ञा स्त्री० [सं०] विश्राम। आराम
विश्राम–संज्ञा पुं० [सं०] १. श्रम मिटाना। थकावट दूर करना। आराम करना। २. ठहरने का स्थान। ३. आराम। चैन। सुख।
विश्रुत–वि० [सं०] प्रसिद्ध। मशहूर।
विश्लिष्ट–वि० [सं०] १. जिसका विश्लेषण हो चुका हो। २. विकसित। खिला हुआ। ३. प्रकट। प्रकाशित।
विश्लेषण–संज्ञा पुं० [सं०] किसी पदार्थ के संयोजक द्रव्यों को अलग अलग करना।
विश्वंभर–संज्ञा पुं० [सं०] १. परमेश्वर। २. विष्णु। ३ एक उपनिषद् का नाम।
विश्वंभरा–संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी।
विश्व–संज्ञा पुं० [सं०] १. चौदहों भुवनों का समूह। समस्त ब्रह्मांड। २. संसार। जगत्। दुनिया। ३. देवताओं का एक गण जिसमें ये दस देवता हैं—वसु, सत्य, ऋतु, दक्ष, काल, काम, धृति, कुरु, पुरूरवा और माद्रवा। ४. विष्णु। ५. शरीर। वि० १. समस्त। सब। २. बहुत।
विश्वकर्मा–संज्ञा पुं० [सं० विश्वकर्मन्] १. ईश्वर। २. ब्रह्मा। ३. सूर्य्य। ४. एक प्रसिद्ध देवता जो सब प्रकार के शिल्पशास्त्र के आविष्कर्ता माने जाते हैं। कारु। तक्षक। देववर्द्धन। ५. शिव। ६. बढ़ई। ७. मेमार। राज। ८. लोहार।
विश्वकोष–संज्ञा पुं० [सं०] वह ग्रंथ जिसमें सब प्रकार के विषयों का विस्तृत वर्णन हो।
विश्वनाथ–संज्ञा पुं० [सं०] शिव। महादेव।
विश्वरूप–संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु। २. शिव। ३. श्रीकृष्ण का वह स्वरूप जो उन्होंने गीता का उपदेश करते समय अर्जुन को दिखलाया था।
विश्वलोचन–संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य और चंद्रमा।
विश्वविद्यालय–संज्ञा पुं० [सं०] वह संस्था जिसमें सभी प्रकार की विद्याओं की उच्च कोटि की शिक्षा दी जाती हो। यूनिवर्सिटी।
विश्वव्यापी–संज्ञा पुं० [सं० विश्वव्यापिन्] ईश्वर।
वि० जो सारे विश्व में व्याप्त हो।
विश्वश्रवा–संज्ञा पुं० [सं० विश्वश्रवस्] एक मुनि जो कुबेर और रावण आदि के पिता थे।
विश्वसनीय–वि० [सं०] विश्वास करने के योग्य। जिसका एतबार किया जा सके।
विश्वस्त–वि० [सं०] विश्वसनीय।
विश्वात्मा–संज्ञा पुं० [सं० विश्वात्मन्] १. विष्णु। २. शिव। ३. ब्रह्मा।
विश्वाधार–संज्ञा पुं० [सं०] परमेश्वर।
विश्वामित्र–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध ब्रह्मर्षि जो गाधिज, गाधेय और कौशिक भी कहे जाते हैं। कहा जाता है कि ये बहुत बड़े क्रोधी थे और प्रायः लोगों को शाप दे दिया करते थे।
विश्वास–संज्ञा पुं० [सं०] एतबार। यक़ीन।
विश्वासघात–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विश्वासघातक] अपने पर विश्वास करनेवाले के साथ ऐसा कार्य्य करना जो उसके विश्वास के बिल्कुल विपरीत हो। धोखा
विश्वासपात्र–संज्ञा पुं० [सं०] विश्वसनीय॥
विश्वासी–संज्ञा पुं० [सं० विश्वासिन्] १.

विश्वास करनेवाला। २ विश्वसनीय।

विश्वेदेव–संज्ञा पु० [स०] १ अग्नि। २ देवताओं का एक गण जिसमें इंद्र, अग्नि आदि नौ देवता माने जाते हैं।

विश्वेश्वर–संज्ञा पु० [स०] १ ईश्वर। २ शिव की एक मूर्ति का नाम।

विष–संज्ञा पु० [स०] १ गरल। जहर। २ वह जो किसी की सुख-शांति आदि में बाधक हो।

मुहा०–विष की गाँठ=वह जो अनेक प्रकार के उपद्रव और अपकार आदि करता हो। ३ बछनाग। ४ बलिहारी।

विषकन्या–संज्ञा स्त्री० [स०] वह स्त्री जिसके शरीर में इस आशय से कुछ विष प्रविष्ट कर दिए गए हों कि जो उसके साथ संभोग करे, वह मर जाय।

विषण्ण–वि० [स०] दुखी। विषादयुक्त।

विषदंड–संज्ञा पु० [स०] कमल की नाल।

विषधर–संज्ञा पु० [स०] साँप।

विषमंत्र–संज्ञा पु० [स०] १ वह जो विष उतारने का मंत्र जानता हो। २ सँपेरा।

विषम–वि० [स०] १ जो सम या समान न हो। असमान। २ (वह संख्या) जिसमें दो से भाग देने पर एक बचे। ताक। ३ बहुत कठिन। ४ बहुत तीव्र। बहुत तेज। ५ भीषण। विकट।

संज्ञा पु० १ वह वृत्त जिसके चारो चरणों में बराबर बराबर अक्षर न हों, बल्कि कम और ज्यादा अक्षर हों। २ एक अर्थालंकार जिसमें दो विरोधी वस्तुओं का संबंध वर्णन किया जाता है या यथायोग्य का अभाव कहा जाता है।

विषमज्वर–संज्ञा पु० [स०] १ एक प्रकार का ज्वर जो होता तो नित्य है, पर जिसके आने का कोई समय नियत नहीं होता। २ जाड़ा देकर आनेवाला ज्वर।

विषमता–संज्ञा स्त्री० [स०] १ विषम होने का भाव। २ वैर। विरोध।

विषमबाण–संज्ञा पु० [स०] कामदेव।

विषमवृत्त–संज्ञा पु० स०] वह वृत्त या छंद जिसके चरण या पद समान न हों।

विषय–संज्ञा पु० [स०] १. वह जिस पर कुछ विचार किया जाय। २ मजमून। ३ स्त्री-संभोग। ४ संपत्ति। ५ बड़ा प्रदेश या राज्य।

विषयक–अव्य० [स०] विषय का। संबंधी।

विषयी–संज्ञा पु० [स० विषयिन्] १ वह जो भोग विलास में बहुत आसक्त हो। विलासी। कामी। २ कामदेव। ३ धनवान्। अमीर।

विषविद्या–संज्ञा स्त्री० [स०] मंत्र आदि की सहायता से विष उतारने की विद्या।

विषवैद्य–संज्ञा पु० [स०] वह जो मंत्र-तंत्र आदि की सहायता से विष उतारता हो।

विषांगना–संज्ञा स्त्री० दे० "विषकन्या"।

विषाक्त–वि० [स०] जिसमें विष मिला हो। विष-युक्त। विषपूर्ण। जहरीला।

विषाण–संज्ञा पु० [स०] १ पशु का सींग। २ सूअर का दाँत।

विषाद–संज्ञा पु० [स०] [वि० विषादी] १ खेद। दुख। रंज। २ जड़ या निश्चेष्ट होने का भाव।

विषुव–संज्ञा पु० [स०] वह समय जब कि सूर्य्य विषुवत रेखा पर पहुँचता है और दिन तथा रात दोनों बराबर होते हैं। ऐसा समय वर्ष में दो बार आता है।

विषुवत रेखा–संज्ञा स्त्री० [स०] ज्योतिष के कार्य्य के लिये कल्पित एक रेखा जो पृथ्वी-तल पर उसके ठीक मध्य भाग में पूर्व-पश्चिम पृथ्वी के चारो ओर मानी जाती है।

विषूचिका–संज्ञा स्त्री० दे० "विसूचिका"।

विष्कंभ–संज्ञा पु० [स०] १ ज्योतिष में एक प्रकार का योग। २ विस्तार। ३ बाधा। विघ्न। ४ नाटक का एक प्रकार का अंक। जो कथा पहले हो चुकी हो अथवा जो अभी होनेवाली हो, उसकी इसमें मध्यम पात्रों द्वारा सूचना दी जाती है।

विष्कंभक–संज्ञा पु० दे० "विष्कंभ"।

विष्कीर–संज्ञा पु० [स०] पक्षी। चिड़िया।

विष्टंभ–संज्ञा पु० [स०] १ बाधा। रुका-

वट। २. पेट फूलने का रोग। अनाह।

विष्टंभन–संज्ञा पुं० [सं०] रोकने या संकुचित करने की क्रिया।

विष्ठा–संज्ञा स्त्री० [सं०] मल। मैला। गुह। पाखाना।

विष्णु–संज्ञा पु० [सं०] १. हिंदुओं के एक प्रधान और बहुत बड़े देवता जो सृष्टि का भरण-पोषण और पालन करनेवाले तथा ब्रह्मा का एक विशेष रूप माने जाते हैं। २. बारह आदित्यों में से एक।

विष्णुक्रांता–संज्ञा स्त्री० [सं०] नीली अपराजिता। नीली कोयल लता।

विष्णुगुप्त–संज्ञा पु० [सं०] १. एक प्रसिद्ध ऋषि और वैयाकरण जो कौटिल्य नाम से प्रसिद्ध थे। २. प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ चाणक्य का असली नाम।

विष्णुपदी–संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा नदी।

विष्णुलोक–संज्ञा पु० [सं०] वैकुंठ।

विष्वक्सेन–संज्ञा पुं० [स०] १. विष्णु। २. एक मनु का नाम। ३. शिव।

विसदृश–वि० [स०] १. विपरीत। विरुद्ध। उलटा। २. विलक्षण। अद्भुत।

विसर्ग–संज्ञा पुं० [सं०] १. दान। २. त्याग। ३. व्याकरण में एक वर्ण जिसमें ऊपर-नीचे दो बिंदु होते हैं और जिनका उच्चारण प्रायः अर्ध ह के समान होता है। ४. मोक्ष। ५. मृत्यु। ६. प्रलय। ७. वियोग। विछोह।

विसर्जन–संज्ञा पुं० [सं०] १. परित्याग। छोड़ना। २. विदा होना। चला जाना। ३. षोडशोपचार पूजन में अंतिम उपचार। आवाहन किए हुए देवता से पुनः स्वस्थान-गमन की प्रार्थना करना। ४. समाप्ति।

विसर्प–संज्ञा पुं० [सं०] एक रोग जिसमें ज्वर के साथ फुंसियाँ हो जाती हैं।

विसर्पी–वि० [स० विसर्पिन्] फैलनेवाला।

विसाल–संज्ञा पुं० [अ०] १. संयोग। मिलाप। २. मृत्यु।

विसूचिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] वैद्यक के अनुसार एक रोग जिसे कुछ लोग "हैज़ा" मानते हैं।

विस्तार–संज्ञा पुं० [सं०] लंबे या चौड़े होने का भाव। फैलाव।

विस्तीर्ण–वि० [सं०] १. विस्तृत। २. विशाल। बहुत बड़ा। ३ बहुत अधिक।

विस्तृत–वि० [सं०] [संज्ञा विस्तार, विस्तृति] १. लंबा-चौड़ा। विस्तारवाला। २. यथेष्ट विवरणवाला। ३. बहुत बड़ा या लंबा-चौड़ा। विशाल।

विस्फोट–संज्ञा पु० [सं०] १. किसी पदार्थ का गरमी आदि के कारण उबल या फूट पड़ना। २. ज़हरीला और खराब फोड़ा।

विस्फोटक–संज्ञा पुं० [सं०] १. ज़हरीला फोड़ा। २. वह पदार्थ जो गरमी या आघात के कारण भभक उठे। भभकनेवाला पदार्थ। ३. शीतला का रोग। चेचक।

विस्मय–संज्ञा पुं० [सं०] १. आश्चर्य। ताज्जुब। २. साहित्य में अद्भुत रस का एक स्थायी भाव।

विस्मरण–संज्ञा पुं० [सं०] भूल जाना।

विस्मित–वि० [सं०] जिसे विस्मय या आश्चर्य हुआ हो। चकित।

विस्मृत–वि० [सं०] जो स्मरण न हो। जो याद न हो। भूला हुआ।

विस्मृति–संज्ञा स्त्री० [सं०] विस्मरण।

विहंग–संज्ञा पुं० [सं०] १. पक्षी। चिड़िया। २. बाण। तीर। ३. मेघ। बादल। ४. चंद्रमा। ५. सूर्य।

विहग–संज्ञा पुं० दे० "विहंग"।

विहसित–संज्ञा पुं० [सं०] वह हास्य जो न बहुत उच्च हो, न बहुत मधुर। मध्यम हास्य।

विहार–संज्ञा पुं० [सं०] १. टहलना। घूमना। फिरना। २. रति क्रीड़ा। संभोग। ३. बौद्ध श्रमणों के रहने का मठ। संघाराम।

विहारी–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० विहारिणी] १. विहार करनेवाला। २. श्रीकृष्ण।

विहित–वि० [सं०] जिसका विधान किया गया हो।

विहीन–वि० [सं०] [संज्ञा विहीनता] १. बग़ैर। बिना। २. त्यागा हुआ।

विह्वल—वि० [सं०] [संज्ञा विह्वलता] घबराया हुआ। व्याकुल।
वीक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] देखना।
वीचि—संज्ञा स्त्री० [सं०] लहर। तरंग।
वीचिमाली—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।
वीची—संज्ञा स्त्री० [सं०] तरंग। लहर।
वीज—संज्ञा पुं० [सं०] १ मूल कारण। २ शुक्र। वीर्य्य। ३ तेज। ४ अन्न आदि का बीज। बीआ। ५ अंकुर। ६ तत्त्व। ७ तान्त्रिकों के अनुसार एक प्रकार के मंत्र। ८ बीजगणित।
वीजगणित—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का गणित जिसमें अज्ञात राशियों को जानने के लिये कुछ सांकेतिक चिह्नों आदि की सहायता से गणना की जाती है।
वीणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्राचीन काल का एक प्रसिद्ध बाजा। बीन।
वीणापाणि—संज्ञा स्त्री० [सं०] सरस्वती।
वीत—वि० [सं०] १ जो छोड़ दिया गया हो। २ जो छूट गया हो। मुक्त। ३. जो बीत गया हो। ४ जो निवृत्त हो चुका हो।
वीतराग—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसने राग या आसक्ति आदि का परित्याग कर दिया हो। २ बुद्ध का एक नाम।
वीतिहोत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ अग्नि। २ सूर्य। ३ राजा प्रियव्रत के एक पुत्र।
वीथिका—संज्ञा स्त्री० दे० 'वीथी'।
वीथी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दृश्य काव्य या रूपक का एक भेद जो एक ही अंक का होता है और जिसमें एक ही नायक होता है। २ मार्ग। रास्ता। सड़क। ३ वह आकाश-मार्ग जिससे होकर सूर्य चलता है। रविमार्ग। ४ आकाश में नक्षत्रों के रहने के स्थानों के कुछ विशिष्ट भाग जो वीथी या सड़क के रूप में माने गए हैं।
वीथ्यंग—संज्ञा पुं० [सं०] रूपक में वीथी के अंग जो १३ माने गए हैं।
वीर—संज्ञा पुं० [सं०] १ साहसी और बलवान्। शूर। बहादुर। २ योद्धा। सैनिक। सिपाही। ३ वह जो किसी काम में और लोगों से बहुत बढ़कर हो। ४ पुत्र। लड़का। ५ पति। खसम। ६ भाई। (स्त्री०) ७ साहित्य में एक रस जिसमें उत्साह और वीरता आदि की परिपुष्टि होती है। ८ तान्त्रिकों के अनुसार साधना के तीन भावों में से एक भाव।
वीरकेशरी—संज्ञा पुं० [सं० वीरकेशरिन्] वह जो वीरों में सिंह के समान श्रेष्ठ हो।
वीरगति—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह उत्तम गति जो वीरों को रणक्षेत्र में मरने से प्राप्त होती है।
वीरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] शूरता। बहादुरी।
वीरभद्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा। २ उशीर। खस। ३ शिव के एक प्रसिद्ध गण जो उनके पुत्र और अवतार माने जाते हैं।
वीरमाता—संज्ञा स्त्री० [सं० वीरमातृ] वह स्त्री जो वीर पुत्र प्रसव करे। वीर-जननी।
वीरललित—संज्ञा पुं० [सं०] वीरों का सा, पर साथ ही कोमल, स्वभाव।
वीरशय्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] रणभूमि।
वीरशैव—संज्ञा पुं० [सं०] शैवों का एक भेद।
वीरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मदिरा। शराब। २ वह स्त्री जिसके पति और पुत्र हों।
वीराचारी—संज्ञा पुं० [सं० वीराचारिन्] एक प्रकार के वाममार्गी जो देवताओं की वीर भाव से उपासना करते हैं।
वीरान—वि० [फा०] १ उजड़ा हुआ। जिसमें आबादी न रह गई हो। २ श्रीहीन।
वीरासन—संज्ञा पुं० [सं०] बैठने का एक प्रकार का आसन या मुद्रा।
वीर्य्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ शरीर के सात धातुओं में से एक धातु जिसके कारण शरीर में बल और कांति आती है। शुक्र। रेत। बीज। २ दे० "रज"। ३ पराक्रम। बल। शक्ति। ४ बीन। बीआ।
वृंत—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्तन का अगला भाग। २ बोंडी। ढेंपी।
वृंद—संज्ञा पुं० [सं०] समूह। झुंड।
वृंदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ तुलसी। २

राधिका का एक नाम।
वृंदावन–संज्ञा पुं० [सं०] मथुरा ज़िले का एक प्रसिद्ध प्राचीन तीर्थ जो भगवान् श्रीकृष्णचंद्र का क्रीड़ा-क्षेत्र माना जाता है।
वृक–संज्ञा पु० [स०] १. भेड़िया। २. श्रृगाल। गीदड़। ३. कौवा। ४. क्षत्रिय।
वृकोदर–संज्ञा पुं० [सं०] भीमसेन।
वृक्ष–संज्ञा पुं० [सं०] १. पेड़। दरख्त। द्रुम। विटप। २. वृक्ष से मिलती-जुलती वह आकृति जिसमें किसी चीज का मूल अथवा उदगम और उसकी अनेक शाखाएँ आदि दी गई हों। जैसे—वंशवृक्ष।
वृक्षायुर्वेद–संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें वृक्षों के रोगों आदि की चिकित्सा का वर्णन हो।
वृज–संज्ञा पु० दे० "व्रज"।
वृजिन–संज्ञा पुं० [स०] १. पाप। गुनाह। २. दुःख। कष्ट। तकलीफ़। ३. खाल।
वृत्त–संज्ञा पु० [सं०] १. चरित्र। चरित। २. आचार। चाल-चलन। ३. समाचार। वृत्तांत। हाल। ४. जीविका का साधन। वृत्ति। ५. वह छंद जिसके प्रत्येक पद में अक्षरों की संख्या और लघु गुरु के क्रम का नियम हो। वर्णिक छंद। ६. एक छद जिसके प्रत्येक चरण में बीस वर्ण होते हैं। गंडका। दडिका। ७. वह क्षेत्र जिसका घेरा या परिधि गोल हो। मंडल। ८. वह गोल रेखा जिसका प्रत्येक विंदु उसके अंदर के मध्यविंदु से समान अंतर पर हो।
वृत्तखंड–संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी वृत्त या गोलाई का कोई अंश। २. मेहराब।
वृत्तांत–संज्ञा पु० [सं०] घटना का विवरण। समाचार। हाल।
वृत्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह कार्य्य जिसके द्वारा जीविका का निर्वाह होता हो। जीविका। रोजी। २. वह धन जो किसी दीन या छात्र आदि को बराबर उसके सहायतार्थ दिया जाय। ३. सूत्रों आदि का वह विवरण या व्याख्या जो उनका अर्थ स्पष्ट करने के लिये की जाती है। ४. नाटकों में विषय के विचार से वर्णन करने की शैली जो चार प्रकार की कही गई है। ५. योग के अनुसार चित्त की अवस्था जो पाँच प्रकार की मानी गई है—क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध। ६. व्यापार। कार्य्य। ७. स्वभाव। प्रकृति। ८. संहार करने का एक प्रकार का शस्त्र।
वृत्यनुप्रास–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का अनुप्रास या शब्दालंकार। इसमें एक या कई व्यंजन वर्ण एक ही या भिन्न भिन्न रूपों में बार बार आते हैं।
वृत्र–संज्ञा पु० [सं०] १. अँधेरा। २. मेघ। बादल। ३. शत्रु। दुश्मन। ४. पुराणानुसार त्वष्टा का पुत्र एक असुर जिसे इंद्र ने मारा था। इसी को मारने के लिये दधीचि ऋषि की हड्डियों का वज्र बना था।
वृत्रासुर–संज्ञा पुं० दे० "वृत्र" ४।
वृथा–वि० [सं०] [भाव० वृथात्व] बिना मतलब का। निष्प्रयोजन। व्यर्थ। फ़जूल। क्रि वि० बिना मतलब के। बेफ़ायदा।
वृद्ध–संज्ञा पुं० [सं०] १. मनुष्य की एक अवस्था जो सबके अंत में प्रायः ६० वर्ष के उपरांत आती है। बुढ़ापा। जरा। २. वह जो इस अवस्था में पहुँच गया हो। बड्ढा। ३. पंडित। विद्वान्।
वृद्धता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वृद्ध का भाव या धर्म। बुढ़ापा। २. पांडित्य।
वृद्धश्रवा–संज्ञा पुं० [स० वृद्धश्रवस्] इंद्र।
वृद्धा–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जो अवस्था में वृद्ध हो गई हो। बुड्ढी।
वृद्धि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बढ़ने या अधिक होने की क्रिया या भाव। बढ़ती। ज्यादती। अधिकता। २. ब्याज। सूद। ३. वह अशौच जो घर में संतान उत्पन्न होने पर होता है। ४. अभ्युदय। समृद्धि। ५. अष्टवर्ग के अंतर्गत एक प्रसिद्ध लता।
वृश्चिक–संज्ञा पु [सं०] १. बिच्छू नामक प्रसिद्ध कीड़ा। २. वृश्चिकाली या बिच्छू नाम की लता। ३. मेष आदि बारह

राशियों में से आठवीं राशि जिसके मत्र तारों से बिच्छू का आकार बनता है।

वृश्चिककाली–संज्ञा स्त्री० [सं०] बिच्छू नाम की लता जिसके रोएँ शरीर में लगने से बहुत तेज जलन होती है।

वृष–संज्ञा पुं० [सं०] १ गौ का नर। साँड। २ कामशास्त्र के अनुसार चार प्रकार के पुरुषों में से एक। ३ श्रीकृष्ण । ४ बारह राशियों में से दूसरी राशि।

वृषकेतन–संज्ञा पुं० [सं०] शिव। महादेव।

वृषकेतु–संज्ञा पुं० [सं०] शिव। महादेव।

वृषण–संज्ञा पुं० [सं०] १ इंद्र। २ कर्ण। ३ विष्णु। ४ साँड। ५ घोड़ा। ६ अंडकोश। फोता।

वृषध्वज–संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव। महादेव। २ गणेश। ३ पुराणानुसार एक पर्वत।

वृषभ–संज्ञा पुं० [सं०] १ बैल या साँड। २ साहित्य में वैदर्भी रीति का एक भेद। ३ कामशास्त्र के अनुसार चार प्रकार के पुरुषों में श्रेष्ठ पुरुष।

वृषभधुज*–संज्ञा पुं० दे० "वृषभध्वज"।

वृषभध्वज–संज्ञा पुं० [सं०] शिव। महादेव।

वृषभानु–संज्ञा पुं० [सं०] श्री राधिकाजी के पिता जो नारायण के अंश से उत्पन्न माने जाते हैं।

वृषल–संज्ञा पुं० [सं०] १ शूद्र। २ पापी और दुष्कर्मी। ३ घोड़ा। ४ सम्राट् चंद्रगुप्त का एक नाम।

वृषली–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्मृतियों के अनुसार वह कुँआरी कन्या जो रजस्वला हो गई हो। २ कुलटा। दुराचारिणी। ३ नीच जाति की स्त्री। ४ रजस्वला स्त्री।

वृषवाही–संज्ञा पुं० [सं०] शिवजी।

वृषासुर–संज्ञा पुं० दे० "भस्मासुर"।

वृषोत्सर्ग–संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक प्रकार का धार्मिक कृत्य जिसमें लोग अपने मृत पिता आदि के नाम पर साँड पर चक्र दागकर उसे छोड़ देते हैं।

वृष्टि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वर्षा। बारिश। मेह। २ ऊपर से बहुत सी चीजों का एक साथ गिरना या गिराया जाना। ३ किसी क्रिया का कुछ समय तक लगातार होना।

वृष्टिमान–संज्ञा पुं० [सं०] वह यंत्र जिससे यह जाना जाता है कि कितनी वृष्टि हुई।

वृष्णि–संज्ञा पुं० [सं०] १ मेघ। बादल। २ यादववंश। ३ श्रीकृष्ण। ४ इंद्र। ५ अग्नि। ६ वायु।

वृष्य–संज्ञा पुं० [सं०] वह चीज जिससे वीर्य, बल और आनंद बढ़ता हो।

बृहती–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कटकारी। २ *वनभंटा। बड़ी कटाई।* ३ *बैंगन।* ४ एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण में भगण, मगण और सगण होता है।

बृहत्–वि० [सं०] बड़ा। भारी। महान्।

बृहद्रथ–संज्ञा पुं० [सं०] १ इंद्र। २ यज्ञ-पात्र। ३ सामवेद।

बृहन्नला–संज्ञा स्त्री० [सं०] अर्जुन का उस समय का नाम जब वे अज्ञातवास में राजा विराट के यहाँ स्त्री के वेश में रहते थे।

बृहस्पति–संज्ञा पुं० दे० "बृहस्पति"।

वेंकटगिरि–संज्ञा पुं० [सं०] दक्षिण भारत के एक पर्वत का नाम।

वेग–संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रवाह। बहाव। २ शरीर में से मल, मूत्र आदि निकलने की प्रवृत्ति। ३ किसी ओर प्रवृत्त होने का जोर। तेजी। ४ शीघ्रता। जल्दी। ५ आनंद। प्रसन्नता। खुशी।

वेगवान्–वि० [सं०] तेज चलनेवाला।

वेगी–संज्ञा पुं० [सं० वेगिन्] वह जिसमें बहुत अधिक वेग हो। वेगवान्।

वेण–संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्राचीन वर्णसंकर जाति। २ राजा पृथु के पिता का नाम।

वेणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] स्त्रियों के बालों की *गूँथी हुई चोटी।*

वेणु–संज्ञा पुं० [सं०] १ बाँस। २ बाँस की बनी हुई बंसी। ३ दे० "वेण"।

वेतन–संज्ञा पुं० [सं०] १ वह धन जो किसी को कोई काम करने के बदले में दिया जाय। पारिश्रमिक। उजरत। २ तनखाह। दर-माहा। महीना।

वेतनभोगी–संज्ञा पुं० [सं० वेतनभोगिन्] वह जो वेतन लेकर काम करता हो।
वेताल–संज्ञा पुं० [सं०] १. द्वारपाल। संतरी। २. शिव के एक गणाधिप। ३. पुराणों के अनुसार भूतों की एक प्रकार की योनि। ४. वह शव जिस पर भूतों ने अधिकार कर लिया हो। ५. छप्पय का छठा भेद।
वेत्ता–वि० [सं०] जाननेवाला। ज्ञाता।
वेत्र–संज्ञा पुं० [सं०] बेंत।
वेत्रधर–संज्ञा पुं० [सं०] द्वारपाल। संतरी।
वेत्रवती–संज्ञा स्त्री० [सं०] बेतवा नदी।
वेत्रासुर–संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक प्रसिद्ध असुर जो प्राग्ज्योतिष का राजा था।
वेद–संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी विषय का, विशेषत: धार्मिक या आध्यात्मिक विषय का सच्चा और वास्तविक ज्ञान। २. वृत्त। ३. वित्त। ४. यज्ञांग। ५. भारतीय आर्य्यों के सर्वप्रधान और सर्वमान्य धार्मिक ग्रंथ जिनकी संख्या चार है। आम्नाय। श्रुति। आरम्भ में वेद केवल तीन ही थे—ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद। चौथा अथर्ववेद पीछे से वेदों में सम्मिलित हुआ था।
वेदज्ञ–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो वेदों का ज्ञाता हो। २. ब्रह्मज्ञानी।
वेदना–संज्ञा स्त्री० [सं०] पीड़ा। व्यथा।
वेदनिंदक–संज्ञा पुं० [सं०] १. वेदों की बुराई करनेवाला। २. नास्तिक।
वेदमंत्र–संज्ञा पुं० [सं०] वेदों में के मंत्र।
वेदमाता–संज्ञा स्त्री० [सं० वेदमातृ] १. गायत्री। सावित्री। २. दुर्गा। ३. सरस्वती।
वेदवाक्य–संज्ञा पुं० [सं०] पूर्ण रूप से प्रामाणिक बात जिसका खंडन न हो सकता हो।
वेदव्यास–संज्ञा पुं० दे० "व्यास" (१)।
वेदांग–संज्ञा पुं० [सं०] वेदों के अंग या शास्त्र जो छः हैं—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष और छंद।
वेदांत–संज्ञा पुं० [सं०] १. उपनिषद् और आरण्यक आदि वेद के अंतिम भाग जिनमें आत्मा, परमात्मा, जगत् आदि के संबंध में निरूपण है। ब्रह्म-विद्या। अध्यात्म। ज्ञानकांड। २. छः दर्शनों में से प्रधान दर्शन जिसमें चैतन्य या ब्रह्म ही एक मात्र पारमार्थिक सत्ता स्वीकार किया गया है। उत्तर मीमांसा। अद्वैतवाद।
वेदांतसूत्र–संज्ञा पुं० [सं०] महर्षि बादरायण-कृत सूत्र जो वेदांत-शास्त्र के मूल माने जाते हैं।
वेदांती–संज्ञा पुं० [सं० वेदांतिन्] वह जो वेदांत का अच्छा ज्ञाता हो। ब्रह्मवादी।
वेदी–संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी शुभ कार्य, विशेषतः धार्मिक कार्य के लिये तैयार की हुई ऊँची भूमि।
वेध–संज्ञा पुं० [सं०] १. छेदना। बेधना। विद्ध करना। २. यंत्रों आदि की सहायता से नक्षत्रों और तारों आदि को देखना।
वेधशाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्थान जहाँ ग्रहों और नक्षत्रों आदि के वेध करने के यंत्र आदि रखे हों।
वेधा–संज्ञा पुं० [सं० वेधस्] १. ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. शिव। ४. सूर्य।
वेधी–संज्ञा पुं० [सं० वेधिन्] [स्त्री० वेधिनी] वह जो वेध करता हो। वेध करनेवाला।
वेपथु–संज्ञा पुं० [सं०] कँपकपी। कंप।
वेपन–संज्ञा पुं० [सं०] काँपना। कंप।
वेला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. काल। समय। वक्त। २. दिन और रात का चौबीसवाँ भाग। ३. समुद्र की लहर।
वेश–संज्ञा पुं० [सं०] १. कपड़े-लत्ते आदि से अपने आपको सजाना। २. किसी के कपड़े-लत्ते आदि पहनने का ढंग।
मुहा०—किसी का वेश धारण करना = किसी के रूप-रंग और पहनावे की नकल करना। ३. पहनने के वस्त्र। पोशाक।
यौ०—वेशभूषा = पहनने के कपड़े आदि।
४. खेमा। तंबू। ५. घर। मकान।
वेशधारी–संज्ञा पुं० [सं० वेशधारिन्] वेश धारण करनेवाला।
वेश्म–संज्ञा पुं० [सं०] घर। मकान।

वेश्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] गाने और कसब कमानेवाली औरत। रंडी। गणिका।
वेष–संज्ञा पुं० [सं०] १ दे० "वेश"। २ रंगमंच में नेपथ्य।
वेष्टन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० वेष्टित] १ वह कपड़ा आदि जिससे कोई चीज लपेटी जाय। वेठन। २ घेरने या लपेटने की क्रिया या भाव। ३ उष्णीष। पगड़ी।
वैकल्पिक–वि० [सं०] १ जो किसी एक पक्ष में हो। एकांगी। २ संदिग्ध। ३ जो अपने इच्छानुसार ग्रहण किया जा सके।
वैकुंठ–संज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु। २ पुराणानुसार वह स्थान जहाँ भगवान या विष्णु रहते हैं। ३ स्वर्ग। (क्व०)
वैकृत–संज्ञा पुं० [सं०] १ विकार। खराबी। २ वीभत्स रस। ३ वीभत्स रस का आलंबन, जैसे—खून, गोश्त। वि० १ जो विकार से उत्पन्न हुआ हो। २ जो जल्दी ठीक न हो सके। दुःसाध्य।
वैक्रमीय–वि० [सं०] विक्रम का। विक्रम-संबंधी।
वैक्रांत–संज्ञा पुं० [सं०] चुन्नी नामक मणि।
वैखरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह स्वर जो उच्च और गंभीर हो और बहुत स्पष्ट सुनाई पड़े। २ वाक्शक्ति। ३ वाग्देवी।
वैखानस–संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो वानप्रस्थ आश्रम में हो। २ एक प्रकार के ब्रह्मचारी या तपस्वी जो वन में रहते थे।
वैचित्र्य–संज्ञा पुं० दे० 'विचित्रता'।
वैजयंत–संज्ञा पुं० [सं०] १ इंद्र की पुरी का नाम। २ इंद्र।
वैजयंती–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पताका। झंडी। २ पाँच रंगों की एक प्रकार की माला।
वैज्ञानिक–संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो विज्ञान का अच्छा ज्ञाता हो। २ निपुण। दक्ष। वि० विज्ञान-संबंधी। विज्ञान का।
वैतनिक–संज्ञा पुं० [सं०] तनखाह लेकर काम करनेवाला। नौकर। भृत्य।
वैतरणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रसिद्ध पौराणिक नदी जो यम के द्वार पर है।
वैतालिक–संज्ञा पुं० [सं०] वह स्तुति-पाठक जो राजाओं की स्तुति करके जगाता था।
वैतालीय–संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्णवृत्त। वि० वेताल-संबंधी। वेताल का।
वैदर्भ–संज्ञा पुं० [सं०] १ विदर्भ देश का राजा या शासक। २ दमयंती के पिता भीमसेन। ३ रुक्मिणी के पिता भीष्मक। वि० विदर्भ देश का।
वैदर्भी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ काव्य की वह रीति या शैली जिसमें मधुर वर्णों के द्वारा मधुर रचना होती है। २ दमयंती। ३ रुक्मिणी।
वैदिक–संज्ञा पुं० [सं०] १ वेद में कहे हुए कृत्य करनेवाला। २ वेदों का पंडित। वि० वेद-संबंधी। वेद का।
वैदूर्य–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का रत्न जिसे "लहसुनिया" कहते हैं।
वैदेशिक–वि० [सं०] विदेश-संबंधी।
वैदेही–संज्ञा स्त्री० [सं०] विदेह राजा जनक की कन्या, सीता।
वैद्य–संज्ञा पुं० [सं०] १ पंडित। विद्वान। २ वह जो आयुर्वेद के अनुसार रोगियों की चिकित्सा आदि करता हो। भिषक्। चिकित्सक।
वैद्यक–संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें रोगों के निदान और चिकित्सा आदि का विवेचन हो। चिकित्सा-शास्त्र। आयुर्वेद।
वैद्युत–वि० [सं०] विद्युत् संबंधी।
वैध–वि० [सं०] जो विधि के अनुसार हो। कायदे या कानून के मुताबिक। ठीक।
वैधर्म्य–संज्ञा पुं० [सं०] १ विधर्मी होने का भाव। २ नास्तिकता।
वैधव्य–संज्ञा पुं० [सं०] विधवा होने का भाव। रँडापा।
वैधेय–वि० [सं०] विधि-संबंधी। विधि का।
वैनतेय–संज्ञा पुं० [सं०] १ विनता की संतान। २ गरुड़। ३ अरुण।
वैभव–संज्ञा पुं० [सं०] १ धन-संपत्ति। दौलत। विभव। २ महत्त्व। बड़प्पन।
वैभवशाली–संज्ञा पुं० [सं०] जिसके पास

बहुत धन-संपत्ति हो। मालदार।

वैमनस्य–संज्ञा पुं० [सं०] वैर। दुश्मनी।

वैमात्रेय–वि० [सं०] [स्त्री० वैमात्रेयी] विमाता से उत्पन्न। सौतेला।

वैयाकरण–संज्ञा पुं० [सं०] वह जो व्याकरण का अच्छा ज्ञाता हो। व्याकरण का पंडित।

वैर–संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० वैरता] शत्रुता दुश्मनी। द्वेष। विरोध।

वैरशुद्धि–संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी से वैर का बदला चुकाना।

वैरागी–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जिसके मन में विराग उत्पन्न हुआ हो। विरक्त। २. उदासीन वैष्णवों का एक संप्रदाय।

वैराग्य–संज्ञा पुं० [सं०] मन की वह वृत्ति जिससे लोग संसार की झंझटें छोड़कर एकांत में ईश्वर का भजन करते हैं। विरक्ति।

वैराज्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक ही देश में दो राजाओं का शासन। २. वह देश जहाँ इस प्रकार की शासन-प्रणाली हो।

वैलक्षण्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. विलक्षणता। २. विभिन्न होने का भाव। विभिन्नता।

वैवस्वत–संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य के एक पुत्र का नाम। २. एक रुद्र। ३. एक मनु। ४. वर्त्तमान मन्वंतर का नाम।

वैवाहिक–संज्ञा पुं० [सं०] कन्या अथवा वर का श्वशुर। समधी।

वि० विवाह-संबंधी। विवाह का।

वैशंपायन–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध ऋषि जो वेदव्यास के शिष्य थे।

वैशाख–संज्ञा पुं० [सं०] चैत के बाद का और जेठ के पहले का महीना।

वैशाखी–संज्ञा स्त्री० [सं०] वैशाख मास की पूर्णिमा।

वैशाली–संज्ञा स्त्री० [सं०] प्राचीन बौद्ध काल की एक प्रसिद्ध नगरी। विशाल नगरी। विशालपुरी। (मुजफ़्फ़रपुर ज़िले का बसाढ़ नामक गाँव।)

वैशिक–संज्ञा पुं० [सं०] साहित्य के अनुसार वेश्यागामी नायक।

वैशेषिक–संज्ञा पुं० [सं०] १. छः दर्शनों में से एक जो महर्षि कणाद-कृत है और जिसमें पदार्थों का विचार तथा द्रव्यों का निरूपण है। पदार्थ-विद्या। औलूक्य दर्शन। २. वैशेषिक दर्शन *का माननेवाला।*

वैश्य–संज्ञा पुं० [सं०] भारतीय आर्यों के चार वर्णों में से तीसरा वर्ण। इनका धर्म्म यजन, अध्ययन और पशुपालन तथा वृत्ति कृषि और वाणिज्य है।

वैश्यता–संज्ञा स्त्री० [सं०] वैश्य का भाव या धर्म्म। वैश्यत्व।

वैश्वजनीन–वि० [सं०] विश्व भर के लोगों से संबंध रखनेवाला। सब लोगों का।

वैश्वदेव–संज्ञा पुं० [सं०] वह होम या यज्ञ आदि जो विश्वदेव के उद्देश्य से किया जाय।

वैश्वानर–संज्ञा पुं० [सं०] १. अग्नि। २. परमात्मा। ३. चेतन।

वैषम्य–संज्ञा पुं० [सं०] विषमता।

वैषयिक–वि० [सं०] विषय-संबंधी। विषय का।

संज्ञा पुं० विषयी। लंपट।

वैष्णव–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० वैष्णवी] १. विष्णु की उपासना करनेवाला। २. हिंदुओं का एक प्रसिद्ध धार्म्मिक संप्रदाय। इस संप्रदाय के लोग विष्णु की उपासना करते और विशेष आचार-विचार से रहते हैं।

वि० विष्णु-संबंधी। विष्णु का।

वैष्णवी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विष्णु की शक्ति। २. दुर्गा। ३. गंगा। ४. तुलसी।

वोल्लाह–संज्ञा पुं० [सं०] वह घोड़ा जिसकी दुम और अयाल के बाल पीले रंग के हों।

वोहित्थ–संज्ञा पुं० [सं०] बड़ी नाव।

व्यंग्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. शब्द का वह गूढ़ अर्थ जो उसकी व्यंजना वृत्ति के द्वारा प्रकट हो। २. ताना। बोली। चुटकी।

व्यंजन–संज्ञा पुं० [सं०] १. व्यक्त या प्रकट करने अथवा होने की क्रिया। २. अवयव। अंग। ३. तरकारी और साग आदि जो चावल, रोटी आदि के साथ खाये जाते हैं। ४. पका हुआ भोजन। ५. वर्णमाला में का वह वर्ण जो बिना स्वर की सहायता से

न बोला जा सकता हो। हिंदी वर्णमाला में "क" "ह" तक के सब वर्ण।

व्यंजना–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्रकट करने की क्रिया। २. शब्द की वह शक्ति जिसके द्वारा साधारण अर्थ को छोड़कर कोई विशेष अर्थ प्रकट होता हो।

व्यक्त–वि० [सं०] [भाव० व्यक्तता] १. प्रकट। जाहिर। २. साफ। स्पष्ट।

व्यक्तगणित–संज्ञा पु० दे० "अंकगणित"।

व्यक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. व्यक्त होने की क्रिया या भाव। प्रकट होना। २. मनुष्य या किसी और शरीरधारी का शरीर, जिसकी पृथक् सत्ता मानी जाती है। समष्टि का उलटा। व्यष्टि। ३. मनुष्य। आदमी।

व्यग्र–वि० [सं०] [भाव० व्यग्रता] १. घबराया हुआ। व्याकुल। २. डरा हुआ। भयभीत। ३. काम में फँसा हुआ।

व्यतिक्रम–संज्ञा पु० [सं०] १. क्रम में होनेवाला उलट-फेर। २. बाधा। विघ्न।

व्यतिरिक्त–क्रि० वि० [सं०] अतिरिक्त। सिवा। अलावा।

व्यतिरेक–संज्ञा पु० [सं०] १. अभाव। २. भेद। अंतर। ३. अतिक्रम। ४. एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें उपमान की अपेक्षा उपमेय में कुछ और भी विशेषता या अधिकता का वर्णन होता है।

व्यतिरेकी–संज्ञा पु० [सं० व्यतिरेकिन्] वह जो किसी को अतिक्रमण करके जाता हो।

व्यतीत–वि० [सं०] बीता हुआ। गत।

व्यतीपात–संज्ञा पु० [सं०] १. बहुत बड़ा उत्पात। २. ज्योतिष में एक योग जिसमें यात्रा अथवा शुभ काम करने का निषेध है।

व्यत्यय–संज्ञा पु० दे० "व्यतिक्रम"।

व्यथा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पीड़ा। वेदना। तकलीफ। २. दुःख। क्लेश।

व्यथित–वि० [सं०] १. जिसे किसी प्रकार की व्यथा या तकलीफ हो। २. दुःखित। रंजीदा।

व्यभिचार–संज्ञा पुं० [सं०] १. बुरा या दूषित आचार। बदचलनी। २. स्त्री का पर-पुरुष से अथवा पुरुष का पर-स्त्री से अनुचित संबंध। छिनाला।

व्यभिचारी–संज्ञा पु० [सं० व्यभिचारिन्] [स्त्री० व्यभिचारिणी] १. मार्ग-भ्रष्ट। २. बदचलन। ३. पर-स्त्री-गामी। ४. दे० "संचारी" (भाव)।

व्यय–संज्ञा पु० [सं०] १. खर्च। सरफा। २. खपत। ३. नाश। बरबादी।

व्यर्थ–वि० [सं०] १. बिना माने का। अर्थरहित। २. जिसमें कोई लाभ न हो। निरर्थक।

क्रि० वि० फजूल। योंही।

व्यलीक–संज्ञा पु० [सं०] १. अपराध। कसूर। २. डाँट-डपट। ३. दुःख। ४. विट।

व्यवकलन–संज्ञा पु० [सं०] एक रकम में से दूसरी रकम घटाना। बाकी निकालना।

व्यवच्छेद–संज्ञा पु० [सं०] १. पृथक्ता। पार्थक्य। अलगाव। २. विभाग। हिस्सा। ३. विराम। ठहरना।

व्यवधान–संज्ञा पु० [सं०] १. वह चीज जो बीच में पड़कर आड़ करती हो। परदा। २. भेद। विभाग। खंड। ३. विच्छेद।

व्यवसाय–संज्ञा पु० [सं०] १. जीविका। २. रोजगार। व्यापार। ३. काम-धंधा।

व्यवसायी–संज्ञा पु० [सं० व्यवसायिन्] १. व्यवसाय करनेवाला। २. रोजगारी।

व्यवस्था–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. किसी कार्य्य का वह विधान जो शास्त्रों आदि के द्वारा निश्चित या निर्धारित हुआ हो।

मुहा०—व्यवस्था देना=पंडितों आदि का किसी विषय में शास्त्रों का विधान बतलाना। २. चीजों को सजाकर या ठिकाने से रखना। ३. प्रबंध। इंतजाम। ४. स्थिरता। स्थिति।

व्यवस्थापक–संज्ञा पु० [सं०] १. शास्त्रीय व्यवस्था देनेवाला। २. वह जो किसी कार्य्य आदि को नियमपूर्वक चलाता हो। ३. प्रबन्धकर्त्ता। इंतजामकार।

व्यवस्थापत्र–संज्ञा पु० [सं०] वह पत्र जिसमें किसी विषय की शास्त्रीय व्यवस्था हो।

व्यवस्थित–वि० [सं०] जिसमें किसी प्रकार

की व्यवस्था या नियम हो। क़ायदे का।

व्यवहार–संज्ञा पुं० [सं०] १. क्रिया। कार्य्य। काम। २. आपस में एक दूसरे के साथ वरतना। बरताव। ३. व्यापार। रोजगार। ४. लेन-देन का काम। महाजनी। ५. झगड़ा। विवाद। ६. मुकदमा।

व्यवहार-शास्त्र–संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें यह बतलाया गया हो कि विवाद का किस प्रकार निर्णय करना चाहिए और किस अपराध के लिये कितना दंड देना चाहिए आदि। धर्म्मशास्त्र।

व्यवहृत–वि० [सं०] [संज्ञा व्यवहृति] १. जिसका आचरण या अनुष्ठान किया गया हो। २. जो काम में लाया गया हो।

व्यष्टि–संज्ञा स्त्री० [सं०] समष्टि का एक विशिष्ट और पृथक् अंश। समष्टि का उलटा।

व्यसन–संज्ञा पु० [सं०] १. विपत्ति। आफ़त। २. कोई बुरी या अमंगल बात। ३. विषयों के प्रति आसक्ति। ४. वह दोष जो काम या क्रोध आदि विकारों से उत्पन्न हुआ हो। ५. किसी प्रकार का शौक़।

व्यसनी–संज्ञा पु० [सं० व्यसनिन्] वह जिसे किसी प्रकार का व्यसन या शौक हो।

व्यस्त–वि० [सं०] १. घबराया हुआ। व्याकुल। २. काम में लगा या फँसा हुआ। ३. व्याप्त।

व्याकरण–संज्ञा पु० [सं०] वह विद्या या शास्त्र जिसमें किसी भाषा के शब्दों के शुद्ध रूपों और वाक्यों के प्रयोग के नियमों आदि का निरूपण होता है।

व्याकुल–संज्ञा पु० [सं०] [भाव० व्याकुलता] घबराया हुआ। विकल। २. बहुत अधिक उत्कंठित।

व्याक्षेप–संज्ञा पुं० [सं०] १. तिरस्कार करते हुए कटाक्ष करना। २. चिल्लाना।

व्याख्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह वाक्य आदि जो किसी जटिल वाक्य आदि का अर्थ स्पष्ट करता हो। टीका। व्याख्यान। २. कहना। वर्णन।

व्याख्याता–संज्ञा पुं० [सं० व्याख्यातृ] १. व्याख्या करनेवाला। २. भाषण करनेवाला।

व्याख्यान–संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी विषय की व्याख्या या टीका करने अथवा विवरण बतलाने का काम। २. वक्तृता। भाषण।

व्याघात–संज्ञा पुं० [सं०] १. विघ्न। खलल। बाधा। २. आघात। प्रहार। मार। ३. ज्योतिष में एक अशुभ योग। ४. एक प्रकार का अलंकार जिसमें एक ही उपाय या साधन के द्वारा दो विरोधी कार्य्यों के होने का वर्णन होता है।

व्याघ्र–संज्ञा पुं० [सं०] बाघ। शेर।

व्याघ्रचर्म्म–संज्ञा पु० [सं०] बाघ या शेर की खाल जिस पर प्रायः लोग बैठते हैं।

व्याघ्रनख–संज्ञा पु० [सं०] १. शेर का नाखून जो प्रायः बच्चों के गले में, उन्हें नजर से बचाने के लिये, पहनाया जाता है। २. नख नामक गंध-द्रव्य।

व्याज–संज्ञा पुं० [सं०] १. कपट। छल। फ़रेब। २. बाधा। विघ्न। खलल। ३. विलंब। देर।

संज्ञा पुं० दे० "ब्याज"।

व्याजनिंदा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ऐसी निंदा जो ऊपर से देखने में स्पष्ट निंदा न जान पड़े। २. एक प्रकार का शब्दालंकार जिसमें इस प्रकार की निंदा की जाती है।

व्याजस्तुति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह स्तुति जो व्याज अथवा किसी बहाने से की जाय और ऊपर से देखने में स्तुति न जान पड़े। २. एक प्रकार का शब्दालंकार जिसमें उक्त प्रकार से स्तुति की जाती है।

व्याजोक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कपट भरी बात। २. एक प्रकार का अलंकार जिसमें किसी स्पष्ट या प्रकट बात को छिपाने के लिये किसी प्रकार का बहाना किया जाता है।

व्याडि–संज्ञा पु० [सं०] एक प्राचीन ऋषि जिन्होंने एक व्याकरण बनाया था।

व्याध–संज्ञा पु० [सं०] १. वह जो जंगली पशुओं आदि का शिकार करता हो। शिकारी। २. एक प्राचीन जाति जो जंगली पशुओं को मारकर निर्वाह करती थी।

व्याधि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ रोग। बीमारी। २ आफत। झंझट। ३ विष या काम आदि के कारण शरीर में किसी प्रकार का रोग होना। (साहित्य)

व्यान–संज्ञा पुं० [सं०] शरीर की पाँच वायुओं में से एक जो सारे शरीर में संचार करनेवाली मानी जाती है।

व्यापक–वि० [सं०] १ चारों ओर फैला हुआ। २ घेरने या ढकनेवाला। आच्छादक।

व्यापना–क्रि० अ० [सं० व्यापन] किसी चीज के अंदर फैलना। व्याप्त होना।

व्यापार–संज्ञा पुं० [सं०] १ कर्म। कार्य। काम। २ क्रय विक्रय या कार्य। रोजगार। व्यवसाय।

व्यापारी–संज्ञा पुं० [सं० व्यापारिन्] व्यवसाय या रोजगार करनेवाला। व्यवसायी। रोजगारी।

वि० [सं० व्यापार] व्यापार-संबंधी।

व्याप्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ व्याप्त होने की क्रिया या भाव। २ न्याय के अनुसार किसी एक पदार्थ में दूसरे पदार्थ का पूर्ण रूप से मिला या फैला हुआ होना। ३ आठ प्रकार के ऐश्वर्यों में से एक।

व्यामोह–संज्ञा पुं० [सं०] मोह। अज्ञान।

व्यायाम–संज्ञा पुं० [सं०] १ वह शारीरिक श्रम जो बल बढ़ाने के उद्देश्य से किया जाता है। कसरत। जोर। २ परिश्रम।

व्यायोग–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का रूपक या दृश्य काव्य।

व्याल–संज्ञा पुं० [सं०] १ साँप। २ बाघ। चीता। ३ राजा। ४ विष्णु। ५ दंडक छंद का एक भेद।

व्यालि–संज्ञा पुं० दे० "व्याडि"।

व्यालू†–संज्ञा स्त्री०, पुं० [सं० वेला] रात के समय का भोजन। रात का खाना।

व्यावहारिक–वि० [सं०] १ व्यवहार-संबंधी। व्यवहार या बरताव का। २ व्यवहारशास्त्र-संबंधी।

व्यासंग–संज्ञा पुं० [सं०] बहुत अधिक आसक्ति या मनोयोग।

व्यास–संज्ञा पुं० [सं०] १ पराशर के पुत्र कृष्ण द्वैपायन जिन्होंने वेदों का संग्रह विभाग और संपादन किया था। कहा जाता है कि अठारहों पुराण, महाभारत, भागवत और वेदांत आदि की रचना भी इन्हीं ने की थी। २ वह ब्राह्मण जो रामायण, महाभारत या पुराण आदि की कथाएँ लोगों को सुनाता हो। कथावाचक। ३ वह रेखा जो किसी बिल्कुल गोल रेखा या वृत्त के किसी एक स्थान से बिल्कुल सीधी चलकर दूसरे सिरे तक पहुँची हो। ४ विस्तार। फैलाव।

व्याहार–संज्ञा पुं० [सं०] वाक्य। जुमला।

व्याहृति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कथन। उक्ति। २ भूः, भुवः, स्वः इन तीनों का मंत्र।

व्युत्पत्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ किसी चीज का मूल उद्गम या उत्पत्ति-स्थान। २ शब्द का वह मूलरूप, जिससे वह शब्द निकला हो। ३ किसी विज्ञान या शास्त्र आदि का अच्छा ज्ञान।

व्युत्पन्न–वि० [सं०] जो किसी शास्त्र आदि का अच्छा ज्ञाता हो।

व्यूह–संज्ञा पुं० [सं०] १ समूह। जमघट। २ निर्माण। रचना। ३ शरीर। बदन। ४ सेना। फौज। ५ युद्ध के समय की जानेवाली सेना की स्थापना। सेना का विन्यास।

व्योम–संज्ञा पुं० [सं० व्योमन्] १ आकाश। आसमान। २ जल। ३ बादल।

व्योमचारी–संज्ञा पुं० [सं० व्योमचारिन्] १ देवता। २ पक्षी। चिड़िया। ३ वह जो आकाश में विचरण करता हो।

व्योमयान–संज्ञा पुं० [सं०] वह यान या सवारी जिस पर चढ़कर मनुष्य आकाश में उड़ सकता हो। विमान। हवाई जहाज।

व्रज–संज्ञा पुं० [सं०] १ जाना या चलना। गमन। २ समूह। झुंड। ३ मथुरा और वृन्दावन के आस-पास का प्रांत जो भगवान् श्रीकृष्ण का लीला-क्षेत्र है।

व्रजन–संज्ञा पुं० [सं०] चलना। जाना।

व्रजभाषा–संज्ञा स्त्री० [सं०] मथुरा, आगरा और इसके आस-पास के प्रदेशों में बोली जानेवाली एक प्रसिद्ध भाषा। इधर चार-पाँच सौ वर्षों के उत्तर भारत के अधिकांश कवियों ने प्रायः इसी भाषा में कविताएँ की हैं, जिनमें से सूर, तुलसी, बिहारी आदि बहुत अधिक प्रसिद्ध हैं।
व्रजमंडल–संज्ञा पुं० [सं०] व्रज और उसके आस-पास का प्रदेश।
व्रजराज–संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।
व्रज्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. घूमना। फिरना। पर्य्यटन। २. गमन। जाना। ३. आक्रमण। चढ़ाई।
व्रण–संज्ञा पुं० [सं०] शरीर में का फोड़ा।
व्रत–संज्ञा पुं० [सं०] १. भोजन करना। भक्षण। खाना। २. किसी पुण्यतिथि को अथवा पुण्य की प्राप्ति के विचार से नियम-पूर्वक उपवास करना। ३. संकल्प।
व्रती–संज्ञा पुं० [सं० व्रतिन्] १. वह जिसने किसी प्रकार का व्रत धारण किया हो। २. यजमान। ३. ब्रह्मचारी।
व्राचड़-संज्ञा स्त्री० [अप०] १. अपभ्रंश भाषा का एक भेद जिसका व्यवहार आठवीं से ग्यारहवीं शताब्दी तक सिंध प्रांत में था। २. पैशाचिक भाषा का एक भेद।
व्रात्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जिसके दस संस्कार न हुए हों। २. वह जिसका यज्ञोपवीत संस्कार न हुआ हो। ऐसा मनुष्य पतित या अनार्य्य समझा जाता है। ३. दोगला। वर्ण-संकर।
व्रीड़ा–संज्ञा स्त्री० [सं०] लज्जा। शरम।
व्रीहि–संज्ञा पुं० [सं०] धान। चावल।

श

श–हिंदी वर्णमाला में व्यंजन का तीसवाँ वर्ण। इसका उच्चारण प्रधानतया तालू की सहायता से होता है, इससे इसे तालव्य श कहते हैं।
शं–संज्ञा पुं० [सं०] १. कल्याण। मंगल। २. सुख। ३. शांति। ४. वैराग्य। वि० शुभ।
शंक–संज्ञा पुं० [सं०] भय। डर। आशंका।
शंकना*–क्रि० अ० [सं० शंका] १. शंका करना। संदेह करना। २. डरना।
शंकर–वि० [सं०] १. मंगल करनेवाला। २. शुभ। ३. लाभदायक।
संज्ञा पुं० १. शिव। महादेव। शंभु। २. दे० "शंकराचार्य्य"। ३. छब्बीस मात्राओं का एक छंद।
संज्ञा पुं० दे० "संकर"।
शंकर-शैल–संज्ञा पुं० [सं०] कैलास।
शंकरस्वामी–संज्ञा पुं० दे० "शंकराचार्य्य"।
शंकराचार्य्य–संज्ञा पुं० [सं०] अद्वैत मत के प्रवर्त्तक एक प्रसिद्ध शैव आचार्य्य जिनका जन्म सन् ७८८ ई० में केरल देश में हुआ था और जो ३२ वर्ष की अल्प आयु में स्वर्गवासी हुए थे।
शंका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अनिष्ट का भय। डर। खौफ़। खटक। २. संदेह। आशंका। संशय। शक। ३. अपने किसी अनुचित व्यवहार आदि से होनेवाली इष्ट-हानि की चिंता। साहित्य का एक संचारी भाव।
शंकित–वि० [सं०] [स्त्री० शंकिता] १. डरा हुआ। २. जिसे संदेह हुआ हो। ३. अनिश्चित। संदेहयुक्त।
शंकु–संज्ञा पुं० [सं०] १. कोई नुकीली वस्तु। २. मेख। कील। ३. खूँटी। ४. भाला। बरछा। ५. गाँसी। फल। ६. लीलावती के अनुसार दस लक्ष कोटि की एक संख्या। शंख। ७. कामदेव। ८. शिव। ९. वह खूँटी जिसका व्यवहार प्राचीन काल में सूर्य या दीए की छाया आदि नापने में होता था।
शंख–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का बड़ा घोंघा जो समुद्र में पाया जाता है। इसका कोष बहुत पवित्र समझा जाता और देवताओं के आगे बाजे की भाँति

बजाया जाता है। कंबु। २ दस रत्नों में से एक रत्न। ३ हाथी का गंडस्थल। ४. एक दैत्य। शंखासुर। ५. एक निधि। ६ छप्पय का एक भेद। ७ दस्त मूत्र में अनर्गत प्रवित्त का एक भेद।
शंखचूड़—संज्ञा पु० [सं०] १. एक राक्षस जो कृष्ण द्वारा मारा गया था। २. कुबेर के दूत और सखा का नाम।
शंखद्राव—संज्ञा पु० [सं०] वैद्यक में एक प्रकार का अर्क जिसमें शंख भी गल जाता है।
शंखधर—संज्ञा पु० [सं०] १ विष्णु। २ श्रीकृष्ण।
शंखनारी—संज्ञा स्त्री० [सं०] छ वर्णों का एक वृत्त। सोमराजी।
शंखपाणि—संज्ञा पु० [सं०] विष्णु।
शंखासुर—संज्ञा पु० [सं०] एक दैत्य जो ब्रह्मा के पास से वेद चुराकर समुद्र में जा छिपा था। इसी को मारने के लिये विष्णु ने मत्स्यावतार धारण किया था।
शंखाहुली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शंखपुष्पी। दे० "कौडियाला"। २ सफेद अपराजिता।
शंखिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार की वनौषधि। २ पद्मिनी आदि स्त्रियों के चार भेदों में से एक भेद।
शंखिनी-डंकिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का उन्माद।
शंजरफ—संज्ञा पु० दे० "शिंगरफ"।
शंठ—संज्ञा पु० [सं०] १ नपुंसक। हीजड़ा। २ मूर्ख। बेवकूफ।
शंड—संज्ञा पु० [सं०] १. नपुंसक। हीजड़ा। २. वह जिसे संतान न होती हो। ३ साँड।
शंडामर्क—संज्ञा पु० [सं०] शंड और मर्क नाम के दो दैत्य।
शंतनु—संज्ञा पु० दे० 'शांतनु"।
शंतनु-सुत—संज्ञा पु० दे० "भीष्मपितामह"।
शंबर—संज्ञा पु० [सं०] १ एक दैत्य जो इंद्र के बाण से मारा गया था। २ प्राचीन काल का एक प्रकार का शस्त्र। ३ युद्ध। लड़ाई।
शंबरारि—संज्ञा पु० [सं०] १ शंबर का शत्रु, कामदेव। मदन। २ प्रद्युम्न।
शंबुक—संज्ञा पु० [सं०] घोंघा।
शंबूक—संज्ञा पु० [सं०] १. एक तपस्वी शूद्र, जिसकी तपस्या के कारण राम-राज्य में एक ब्राह्मण का पुत्र अकाल-मृत्यु को प्राप्त हुआ था। इसे राम ने मारकर मृत ब्राह्मण-पुत्र को जिलाया था। २. घोंघा। ३ शंख।
शंभु—संज्ञा पु० [सं०] १ शिव। महादेव। २ ग्यारह रुद्रों में से एक। ३ एक दैत्य का नाम। ४ उन्नीस वर्णों का एक वृत्त। संज्ञा पु० दे० "स्वायंभुव"।
शंभुगिरि—संज्ञा पु० [सं०] कैलास।
शंभुबीज—संज्ञा पु० [सं०] पारा। पारद।
शंभुभूषण—संज्ञा पु० [सं०] चंद्रमा।
शंभुलोक—संज्ञा पु० [सं०] कैलास।
श—संज्ञा पु० [सं०] १ शिव। २, कल्याण। मंगल। ३ शस्त्र। हथियार।
शऊर—संज्ञा पु० [अ०] १ काम करने की योग्यता। ढंग। २ बुद्धि। अक्ल।
शऊरदार—संज्ञा पु० [अ० शऊर + फा० दार (प्रत्य०)] जिसमें शऊर हो। हुनरमंद।
शक—संज्ञा पु० [सं०] १ एक प्राचीन जाति। पुराणों में इस जाति की उत्पत्ति सूर्यवंशी राजा नरिष्यंत से कही गई है, पर पीछे यह म्लेच्छों में गिनी जाने लगी थी। २ वह राजा या शासक जिसके नाम से कोई संवत् चले। ३ राजा शालिवाहन का चलाया हुआ संवत् जो ईसा के ७८ वर्ष पश्चात आरंभ हुआ था।
संज्ञा पु० [अ०] शंका। संदेह।
शकट—संज्ञा पु० [सं०] १ छकड़ा। बैल गाड़ी। २ भार। बोझ। ३ शकटासुर नामक दैत्य जिसे कृष्ण ने मारा था। ४ शरीर। देह।
शकटासुर—संज्ञा पु० दे० "शकट" ३।
शकठ—संज्ञा पु० [सं० शकट] मचान।
शकर—संज्ञा स्त्री० दे० "शक्कर"।
शकरकंद—संज्ञा पु० [हिं० शकर+सं० कंद] एक प्रकार का प्रसिद्ध कंद।
शकरपारा—संज्ञा पु० [फा०] १ एक प्रकार का फल जो नींबू से कुछ बड़ा होता है।

२. चौकोर कटा हुआ एक प्रकार का प्रसिद्ध पकवान। ३. शकरपारे के आकार की चौकोर सिलाई।

शकल—संज्ञा स्त्री० [अ० शक्ल] १. मुख की बनावट। आकृति। चेहरा। रूप। २. मुख का भाव। चेष्टा। ३. बनावट। गढ़न। ढाँचा। ४. आकृति। स्वरूप। ५. उपाय। तरकीब। ढब।

शकाब्द—संज्ञा पुं० [सं०] राजा शालिवाहन का चलाया हुआ शक संवत्। (ईसवी संवत् में से ७८, ७९ घटाने से शकाब्द निकल आता है।)

शकार—संज्ञा पुं० [सं०] शक-वंशीय व्यक्ति।

शकारि—संज्ञा पु० [सं०] विक्रमादित्य।

शकुंत—संज्ञा पुं० [सं०] १. पक्षी। चिड़िया। २. विश्वामित्र के लड़के का नाम।

शकुंतला—संज्ञा स्त्री० [सं०] राजा दुष्यंत की स्त्री जो भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध राजा भरत की माता और मेनका की कन्या थी।

शकुन—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी काम के समय दिखाई देनेवाले लक्षण जो उस काम के संबंध में शुभ या अशुभ माने जाते हैं। मुहा०—शकुन विचारना या देखना = कोई कार्य्य करने से पहले लक्षण आदि देखकर यह निश्चय करना कि यह काम होगा या नहीं। २. शुभ मुहूर्त या उसमें होनेवाला कार्य्य। ३. पक्षी। चिड़िया।

शकुनशास्त्र—संज्ञा पु० [सं०] वह शास्त्र जिसमें शकुनों के शुभ और अशुभ फलों का विवेचन हो।

शकुनि—संज्ञा पु० [सं०] १ पक्षी। चिड़िया। २. एक दैत्य जो हिरण्याक्ष का पुत्र था। ३. कौरवों का मामा जो दुर्योधन का मंत्री और कौरवों के नाश का मुख्य कारण था।

शक्कर—संज्ञा स्त्री० [सं० शर्करा, मि० फा० शक्कर] १. चीनी। २. कच्ची चीनी। खाँड़।

शक्करी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वर्ण-वृत्त के अंतर्गत चौदह अक्षरोंवाले छंदों की संज्ञा।

शक्की—वि० [अ० शक + ई(प्रत्य०)] जिसे हर बात में संदेह हो। शक करनेवाला।

शक्त—संज्ञा पुं० [सं०] शक्तिसंपन्न। समर्थ।

शक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बल। पराक्रम। ताकत। ज़ोर। २. दूसरे पदार्थों पर प्रभाव डालनेवाला बल। ३. वश। अधिकार। ४. राज्य के वे साधन जिनसे शत्रुओं पर विजय प्राप्त की जाती है। ५ बड़ा और पराक्रमी राज्य जिसमें यथेष्ट धन और सेना आदि हो। ६. न्याय के अनुसार वह संबंध जो किसी पदार्थ और उसका बोध करानेवाले शब्द में होता है। ७. प्रकृति। माया। ८. तंत्र के अनुसार किसी पीठ की अधिष्ठात्री देवी जिसकी उपासना करनेवाले शाक्त कहे जाते हैं। ९. दुर्गा। भगवती। १०. गौरी। ११. लक्ष्मी। १२. एक प्रकार का शस्त्र। साँग। १३. तलवार।

शक्तिधर—संज्ञा पुं० [सं०] कार्त्तिकेय।

शक्तिपूजक—संज्ञा पुं० [सं०] १. शाक्त। २. तांत्रिक। वाममार्गी।

शक्तिपूजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] शक्ति का शाक्त द्वारा होनेवाला पूजन।

शक्तिमान्—वि० [सं० शक्तिमत्] [स्त्री० शक्तिमती] बलवान्। बलिष्ठ। ताकतवर।

शक्तिहीन—वि० [सं०] १. बलहीन। निर्बल। असमर्थ। २. नामर्द। नपुंसक।

शक्ती—संज्ञा पुं० [सं० शक्ति] अठारह मात्राओं के एक मात्रिक छंद का नाम।

शक्तु—संज्ञा पु० [सं०] सत्तू।

शक्य—वि० [सं०] १. किया जाने योग्य। संभव। क्रियात्मक। २ जिसमें शक्ति हो। संज्ञा पु० शब्द-शक्ति के द्वारा प्रकट होनेवाला अर्थ। (व्याकरण)

शक्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] शक्य होने का भाव या धर्म्म। क्रियात्मकता।

शक्र—संज्ञा पु० [सं०] १. इंद्र। २. रगण का चौथा भेद जिसमें छः मात्राएँ होती हैं।

शक्रप्रस्थ—संज्ञा पु० [सं०] इंद्रप्रस्थ।

शक्ल—संज्ञा स्त्री० दे० "शकल"।

शख़्स—संज्ञा पु० [अ०] व्यक्ति। जन।

शग़ल—संज्ञा पुं० [अ०] १. व्यापार। कामधंधा। २. मनोविनोद।

शगुन—संज्ञा पुं० [सं० शकुन] १ दे० "शकुन"। २ एक प्रकार की रसम जो विवाह की बातचीत पक्की होने पर होती है। तिलक। टीका।

शगुनियाँ—संज्ञा पुं० [हिं० शगुन + इयाँ (प्रत्य०)] साधारण कोटि का ज्योतिषी।

शगूफा—संज्ञा पुं० [फा०] १ बिना खिला हुआ फूल। कली। २ पुष्प। फूल। ३ कोई नई और विलक्षण घटना।

शचि, शची—संज्ञा स्त्री० [सं०] इंद्र की पत्नी, इंद्राणी जो पुलोमा की कन्या थी।

शचीपति—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

शजरा—संज्ञा पुं० [अ०] १ वंशवृक्ष। कुर्सीनामा। वंशावली। २ पटवारी का तैयार किया हुआ खेतों का नक्शा।

शठ—वि० [सं०] १ धूर्त्त। चालाक। धोखेबाज। २ पाजी। लुच्चा। बदमाश। ३ मूर्ख। बेवकूफ।
संज्ञा पुं० साहित्य में वह पति या नायक जो छलपूर्वक अपना अपराध छिपाने में चतुर हो।

शठता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शठ का भाव या धर्म्म। धूर्त्तता। २ बदमाशी।

शत—वि० [सं०] दस का दस गुना। सौ।
संज्ञा पुं० सौ की संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—१००।

शतक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० शतिका] १ सौ का समूह। २ एक ही तरह की सौ चीजों का संग्रह। ३ शताब्दी।

शतघ्नी—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्राचीन काल का एक प्रकार का शस्त्र।

शतदल—संज्ञा पुं० [सं०] पद्म।

शतद्रु—संज्ञा स्त्री० [सं०] सतलज नदी।

शतपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ कमल। २ सेवती। शतपत्री। ३ मोर नामक पक्षी।

शतपथ ब्राह्मण—संज्ञा पुं० [सं०] यजुर्वेद का एक ब्राह्मण। इसके कर्त्ता महर्षि याज्ञवल्क्य माने जाते हैं।

शतपद—संज्ञा पुं० [सं०] १ कनखजूरा। गोजर। २ च्यूँटी।

शतभिषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] चौबीसवाँ नक्षत्र जो सौ तारों का समूह है और जिसकी आकृति मंडलाकार है।

शतरंज—संज्ञा स्त्री० [फा० मि० सं० चतुरंग] एक प्रकार का प्रसिद्ध खेल जो चौसठ खानों की बिसात पर खेला जाता है।

शतरंजी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ वह दरी जो कई प्रकार के रंग बिरंगे सूतों से बनी हो। २ शतरंज खेलने की बिसात। ३ वह जो शतरंज का अच्छा खिलाड़ी हो।

शतरूपा—संज्ञा स्त्री० [सं०] ब्रह्मा की मानसी कन्या तथा पत्नी जिसके गर्भ से स्वायंभुव मनु की उत्पत्ति हुई थी।

शतानंद—संज्ञा पुं० [सं०] १ ब्रह्मा। २ विष्णु। ३ कृष्ण। ४ गौतम मुनि। ५ राजा जनक के एक पुरोहित।

शतानीक—संज्ञा पुं० [सं०] १ वृद्ध पुरुष। २ पुराणानुसार चंद्रवंश का द्वितीय राजा। इसका पिता जनमेजय और पुत्र सहस्रानीक था। ३ सौ सिपाहियों का नायक।

शताब्दी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सौ वर्षों का समय। २ किसी संवत् के सैकड़े के अनुसार एक से सौ वर्ष तक का समय।

शतायुध—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो सौ अस्त्र धारण करता हो। सौ अस्त्रोंवाला।

शतायु—संज्ञा पुं० [सं० शतायुस] वह जिसकी आयु सौ वर्षों की हो।

शतावधान—संज्ञा पुं० [सं०] वह मनुष्य जो एक साथ बहुत सी बातें सुनकर उन्हें सिलसिलेवार याद रख सकता हो और बहुत से काम एक साथ कर सकता हो। श्रुतिधर।

शतावर—संज्ञा स्त्री० [सं० शतावरी] सतावर नाम की ओषधि। सफेद मूसली।

शती—संज्ञा स्त्री० [सं० शतिन्] सौ का समूह। सैकड़ा। जैसे—दुर्गा सप्तशती।

शत्रु—संज्ञा पुं० [सं०] रिपु। अरि। दुश्मन।

शत्रुघ्न—संज्ञा पुं० [सं०] राम के एक भाई जो सुमित्रा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे।

शत्रुता—संज्ञा पुं० [सं०] शत्रु का भाव या धर्म्म। दुश्मनी। वैर भाव।

शत्रुताई*—संज्ञा स्त्री० दे० "शत्रुता"।

शत्रुदमन–संज्ञा पुं० दे० "शत्रुघ्न"।
शत्रुमर्द्दन–संज्ञा पुं० [सं०] शत्रुघ्न।
शत्रुसाल–वि० [सं० शत्रु + हिं० सालना] शत्रु के हृदय में शूल उत्पन्न करनेवाला।
शदीद–वि० [अ०] बहुत ज्यादह। भारी। सख्त। जैसे—शदीद चोट।
शनाख़्त–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. पहचानने की क्रिया। पहचान। २. जान-पहचान। परिचय।
शनि–संज्ञा पुं० [सं०] १. सौर जगत् का सातवाँ ग्रह। सूर्य्य से इसका अंतर ८८३०००००० मील है और सूर्य्य की परिक्रमा में इसको २९ वर्ष और १६७ दिन लगते हैं। २. दुर्भाग्य। अभाग्य। बदक़िस्मती।
शनिवार–संज्ञा पुं० [सं०] रविवार से पहले और शुक्रवार के बाद का वार।
शनिश्चर–संज्ञा पुं० दे० "शनि"।
शनैः–अव्य० [सं०] धीरे। आहिस्ता।
शनैश्चर–संज्ञा पुं० दे० "शनि"।
शपथ–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. क़सम। सौगंद। २. दे० "दिव्य"। ३. प्रतिज्ञा या दृढ़ता-पूर्वक कोई काम करने या न करने के संबंध में कथन। क़ौल। वचन।
शफ़तालू–संज्ञा पुं० [फ़ा०] एक प्रकार का बड़ा आड़ू। सताल्।
शफ़ा–संज्ञा स्त्री० [अ०] शरीर का स्वस्थ होना। आरोग्य। तंदुरुस्ती।
शफ़ाख़ाना–संज्ञा पुं० [अ० शफा + फ़ा० खाना] चिकित्सालय। अस्पताल।
शब–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] रात। रात्रि।
शबनम–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. ओस। तुषार। २. एक प्रकार का बहुत बारीक कपड़ा।
शबाब–संज्ञा पुं० [अ०] १. यौवन-काल। जवानी। २. बहुत अधिक सौंदर्य।
शबीह–संज्ञा स्त्री० [अ०] चित्र। तसवीर।
शब्द–संज्ञा पुं० [सं०] १. ध्वनि। आवाज। २. वह सार्थक ध्वनि जिससे किसी पदार्थ या भाव आदि का बोध हो। लफ्ज। ३. किसी साधु या महात्मा के बनाए हुए पद।
शब्दचित्र–संज्ञा पुं० [सं०] अनुप्रास नामक अलंकार।
शब्द-प्रमाण–संज्ञा पुं० [सं०] वह प्रमाण जो किसी के केवल कथन के ही आधार पर हो।
शब्दब्रह्म–संज्ञा पुं० [सं०] वेद।
शब्दभेदी–संज्ञा पुं० दे० "शब्दवेधी"।
शब्दवेधी–संज्ञा पुं० [सं० शब्दवेधिन्] १. वह जो बिना देखे हुए केवल शब्द से दिशा का ज्ञान करके किसी वस्तु को बाण से मारता हो। २. अर्जुन। ३. दशरथ।
शब्दशक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] शब्द की वह शक्ति जिसके द्वारा उसका कोई विशेष भाव प्रदर्शित होता है। यह तीन प्रकार की है—अभिधा, लक्षणा और व्यंजना।
शब्दशास्त्र–संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण।
शब्दसाधन–संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण का वह अंग जिसमें शब्दों की व्युत्पत्ति, भेद और रूपांतर आदि का विवेचन होता है।
शब्दाडंबर–संज्ञा पुं० [सं०] बड़े बड़े शब्दों का ऐसा प्रयोग जिसमें भाव की बहुत ही न्यूनता हो। शब्दजाल।
शब्दानुशासन–संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण।
शब्दालंकार–संज्ञा पुं० [सं०] वह अलंकार जिसमें केवल शब्दों या वर्णों के विन्यास से लालित्य उत्पन्न किया जाय। जैसे—अनुप्रास आदि।
शम–संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० शमता] १. शांति। २. मोक्ष। ३. उपचार। ४. अंतःकरण तथा बाह्य इंद्रियों का निग्रह। ५. साहित्य में शांत रस का स्थायी भाव। ६. क्षमा।
शमन–संज्ञा पुं० [सं०] १. यज्ञ में पशुओं का बलिदान। २. यम। ३. हिंसा। ४. शांति। ५. दमन।
शमशेर–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] तलवार।
शमा–संज्ञा स्त्री० [अ० शमअ] मोमबत्ती।
शमादान–संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह आधार जिसमें मोम की बत्ती लगाकर जलाते हैं।
शमित–वि० [सं०] १. जिसका शमन किया गया हो। २. शांत। ठहरा हुआ।

शमी—संज्ञा स्त्री० [सं० शिवा ?] एक प्रकार का बड़ा वृक्ष। विजयादशमी पर इसका पूजन भी करते हैं। सफेद कीकर। छिकुर। छोंकर।

शमीक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध क्षमा-शील ऋषि। परीक्षित ने इनके गले में एक बार मरा हुआ साँप डाल दिया था, परन्तु ये कुछ न बोले।

शयन—संज्ञा पुं० [सं०] १ निद्रा लेना। सोना। २ शय्या। बिछौना।

शयन आरती—संज्ञा स्त्री० [सं० शयन + आरती] देवताओं की वह आरती जो रात को सोने के समय होती है।

शयनगृह—संज्ञा पुं० दे० "शयनागार"।

शयनबोधिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] अगहन मास के कृष्णपक्ष की एकादशी।

शयनागार—संज्ञा पुं० [सं०] सोने का स्थान। शयन-मंदिर। शयनगृह।

शय्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बिस्तर। बिछौना। बिछावन। २ पलंग। खाट। खटिया।

शय्यादान—संज्ञा पुं० [सं०] मृतक के उद्देश्य से महापात्र को चारपाई, बिछावन आदि दान देना। सज्जा-दान।

शर—संज्ञा पुं० [सं०] १ वाण। तीर। नाराच। २. सरकंडा। सरई। ३ शरपत। रामशर। ४ दूध या दही की मलाई। ५ भाले का फल। ६ चिता। ७ पाँच की संख्या। ८ एक असुर का नाम।

शरअ—संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० शरई] १ कुरान में दी हुई आज्ञा। २ दीन। मजहब। ३ दस्तूर। तौर। तरीका। ४ मुसल-मानों का धर्मशास्त्र।

शरण—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ रक्षा। आड़। आश्रय। पनाह। २ बचाव की जगह। ३ घर। मकान। ४ अधीन। मातहत।

शरणागत—संज्ञा पुं० [सं०] १ शरण में आया हुआ व्यक्ति। २ शिष्य। चेला।

शरणी—वि० [सं० शरण] शरण देनेवाली।

शरण्य—वि० [सं०] शरण में आए हुए की रक्षा करनेवाला।

शरत—संज्ञा स्त्री० दे० "शर्त" और "शरत्"।

शरत्—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वर्ष। साल। २ एक ऋतु जो आजकल आश्विन और कार्तिक मास में मानी जाती है।

शरत्काल—संज्ञा पुं० दे० "शरत्" २।

शरद—संज्ञा स्त्री० दे० "शरत"।

शरद पूर्णिमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] कुआर मास की पूर्णमासी। शरद् पूनो।

शरदचंद्र—संज्ञा पुं० [सं० शरच्चन्द्र] शरद् ऋतु का चंद्रमा।

शरद्वत्—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि।

शरपट्टा—संज्ञा पुं० [सं० शर+हिं० पट्टा] एक प्रकार का शस्त्र।

शरपुंख—संज्ञा पुं० [सं०] १ सरफोंका। २ तीर में लगा हुआ पंख।

शरबत—संज्ञा पुं० [अ०] १ पीने की मीठी वस्तु। रस। २ चीनी आदि में पका हुआ किसी ओषधि का अर्क। ३ पानी में घोली हुई शक्कर या खाँड।

शरबती—संज्ञा पुं० [हिं० शरबत+ई(प्रत्य०)] १ एक प्रकार का हलका पीला रंग। २ एक प्रकार का नगीना। ३ एक प्रकार का नीबू। ४ एक प्रकार का बढ़िया कपड़ा।

शरभंग—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन महर्षि। वनवास के समय रामचन्द्र इनके दर्शन करने गए थे।

शरभ—संज्ञा पुं० [सं०] १ राम की सेना का एक बंदर। २ टिड्डी। ३ हाथी का बच्चा। ४ विष्णु। ५ एक प्रकार का पक्षी। ६ आठ पैरोंवाला एक कल्पित मृग। ७ एक वृत्त का नाम। शशिकला। मणिगुण। ८ दोहे का एक भेद। ९ शर।

शरम—संज्ञा स्त्री० [फा० शर्म] १ लज्जा। हया। मुहा०—शरम से गड़ना या पानी पानी होना = बहुत लज्जित होना। २ लिहाज। संकोच। ३ प्रतिष्ठा। इज्जत।

शरमाना—क्रि० अ० [अ० शर्म+आना(प्रत्य०)] शर्मिन्दा होना। लज्जित होना। क्रि० स० शर्मिंदा करना। लज्जित करना।

शर्मिंदगी—संज्ञा स्त्री० [फा०] शर्मिंदा होने

का भाव। नदामत। लाज।
शरमिंदा–वि० [फा०] लज्जित।
शरमीला–वि० [फ़ा० शर्म+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० शरमीली] जिसे जल्दी शरम या लज्जा आवे। लज्जालु।
शरह–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. टीका। भाष्य। व्याख्या। २. दर। भाव।
शराकत–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. शरीक होने का भाव। २. साझा। हिस्सेदारी।
शराफ़त–संज्ञा स्त्री० [अ०] शरीफ़ होने का भाव। भलमनसी। सज्जनता।
शराब–संज्ञा स्त्री० [अ०] मदिरा। मद्य।
शराबखाना–संज्ञा पु० [अ० शराब + फा० खाना] वह स्थान जहाँ शराब मिलती हो।
शराबखोरी–संज्ञा स्त्री० [फा०] मदिरा-पान।
शराबी–संज्ञा पु० [हि० शराब+ई (प्रत्य०)] वह जो शराब पीता हो। मद्यप।
शराबोर–वि० [फा०] जल आदि मे बिल्कुल भीगा हुआ। लथपथ। तर-बतर।
शरारत–संज्ञा स्त्री० [अ०] पाजीपन। दुष्टता
शरासन–संज्ञा पु० [स०] धनुष। कमान।
शरिष्ठ*–वि० दे० "श्रेष्ठ"।
शरीअत–संज्ञा स्त्री० [अ०] मुसलमानो का धर्म्म-शास्त्र।
शरीक–वि० [अ०] शामिल। सम्मिलित। मिला हुआ।
संज्ञा पुं० १. साथी। २. साझी। हिस्सेदार। ३. सहायक। मददगार।
शरीफ–संज्ञा पु० [अ०] १. कुलीन मनुष्य। २ सभ्य पुरुष। भला मानुस।
वि० पाक। पवित्र।
शरीफा–संज्ञा पु० [सं० श्रीफल या सीताफल] १ मझोले आकार का एक प्रकार का प्रसिद्ध वृक्ष। २. इस वृक्ष का खाकी रंग का फल जो गोल होता है। श्रीफल। सीताफल।
शरीर–संज्ञा पुं० [सं०] देह। तन। बदन। जिस्म। काया।
वि० [अ०] [संज्ञा शरारत] दुष्ट। नटखट।
शरीरत्याग–संज्ञा पु० [सं०] मृत्यु। मौत।
शरीरपात–संज्ञा पु० [सं०] मृत्यु। मौत।
शरीररक्षक–संज्ञा पं० [सं०] वह जो राजा आदि के साथ उसकी रक्षा के लिये रहता हो। अंगरक्षक।
शरीर शास्त्र–संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमे यह जाना जाता है कि शरीर का कौन सा अंग कैसा है और क्या काम करता है। शरीर-विज्ञान।
शरीरांत–संज्ञा पुं० [सं०] मृत्यु। मौत।
शरीरार्पण–संज्ञा पुं० [सं०] किसी कार्य्य के निमित्त अपने शरीर को पूर्ण रूप से लगा देना।
शरीरी–संज्ञा पु० [सं० शरीरिन्] १. शरीरवाला। शरीरवान्। २. आत्मा। जीव। ३. प्राणी। जीवधारी।
शर्करा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शक्कर। चीनी। खाँड़। २. बालू का कण।
शर्करी–संज्ञा स्त्री० [सं०] चौदह अक्षरों की एक वृत्ति।
शर्त्त–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. वह बाजी जिसमे हार-जीत के अनुसार कुछ लेन-देन भी हो। दाँव। बदान। २. किसी कार्य्य की सिद्धि के लिये आवश्यक या अपेक्षित बात या कार्य्य।
शर्तिया–क्रि० वि० [अ०] शर्त्त बदकर। बहुत ही निश्चय या दृढ़तापूर्वक।
वि० बिलकुल ठीक। निश्चित।
शर्म–संज्ञा स्त्री० दे० "शरम"।
शर्म्म–संज्ञा पु० [स०] १. सुख। आनंद। २. गृह। घर।
शर्म्मद–वि० [स०] [स्त्री० शर्म्मदा] आनंद देनेवाला। सुखदायक।
शर्म्मा–संज्ञा पु० [स० शर्म्मन्] ब्राह्मणों की उपाधि।
शर्मिष्ठा–संज्ञा स्त्री० [सं०] दैत्यों के राजा वृषपर्वा की कन्या जो देवयानी की राखी थी।
शर्य्यणावत–संज्ञा पुं० [स०] शर्यण नामक जनपद के पास का एक प्राचीन सरोवर।
शर्वरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रात। रात्रि। निशा। २. संध्या। शाम। ३. स्त्री।

शल–संज्ञा पुं० [सं०] १ वस में एक मल्ल का नाम। २ ब्रह्मा। ३ भाला।
शलगम–संज्ञा पुं० दे० "शलजम"।
शलजम–संज्ञा पुं० [फा०] गाजर की तरह का एक भेद।
शलभ–संज्ञा पुं० [सं०] १ टीडी। टिड्डी। शरभ। २ पतंग। फतिंगा। ३ छप्पय के ३१वें भेद का नाम।
शलाका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लोहे आदि की लंबी सलाई। सलाख। सीख। २ बाण। तीर। ३ जूआ खेलने का पासा।
शलातुर–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन जनपद जो पाणिनि का निवास-स्थान था।
शलूका–संज्ञा पुं० [फा०] आधी बाँह की एक प्रकार की कुरती।
शल्य–संज्ञा पुं० [सं०] १ मद्र देश के एक राजा जो द्रौपदी के स्वयंवर के समय मल्ल युद्ध में भीमसेन से हार गए थे। २ अस्त्र चिकित्सा। ३ छप्पय के ५६वें भेद का नाम। ४ हड्डी। अस्थि। ५ शलाका। ६ साँग नामक अस्त्र। ७ दुर्वाक्य।
शल्यकी–संज्ञा स्त्री० [सं० शल्यकी] साही। (जतु)
शल्यक्रिया–संज्ञा स्त्री० [सं०] चीर फाड़ का इलाज। शस्त्र चिकित्सा।
शल्व–संज्ञा पुं० दे० "शाल्व"।
शव–संज्ञा पुं० [सं०] मृत शरीर। लाश।
शवदाह–संज्ञा पुं० [सं०] मनुष्य के मृत शरीर को जलाने की क्रिया या भाव।
शवभस्म–संज्ञा पुं० [सं०] चिता की भस्म।
शवरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शवर जाति की श्रमणा नाम की एक तपस्विनी। २ शवर जाति की स्त्री।
शश–संज्ञा पुं० [सं०] १ खरहा। खरगोश। २ चंद्रमा का लांछन या कलंक। ३ कामशास्त्र में मनुष्य के चार भेदों में से एक।
शशक–संज्ञा पुं० [सं०] खरगोश।
शशधर–संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।
शशशृंग–संज्ञा पुं० [सं०] वैसा ही असंभव कार्य जैसा खरगोश को सींग होना होता है।
शशांक–संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।
शशा–संज्ञा पुं० दे० "शश"।
शशि–संज्ञा पुं० [सं० शशिन्] १ चंद्रमा। इंदु। २ छप्पय के ५४वें भेद का नाम। रगण के दूसरे भेद (ISS) की संज्ञा। ३ छ की संख्या।
शशिकला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चंद्रमा की कला। २ एक प्रकार का वृत्त।
शशिकुल–संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रवंश।
शशिज–संज्ञा पुं० [सं०] बुध ग्रह।
शशिधर–संज्ञा पुं० [सं०] शिव।
शशिभाल–संज्ञा पुं० [सं०] शिव। महादेव।
शशिभूषण–संज्ञा पुं० [सं०] शिव।
शशिमंडल–संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा का घेरा या मंडल। चंद्रमंडल।
शशिमुख–वि० [सं०] [स्त्री० शशिमुखी] (वह) जिसका मुख चंद्रमा के सदृश सुंदर हो।
शशिवदना–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वृत्त। चौवंसा। चंडरसा। पादांकुलक। वि० स्त्री० शशिमुखी।
शशिशाला–संज्ञा स्त्री० [फा० शीशा + सं० शाला] वह घर जिसमें बहुत से शीशे लगे हुए हों। शीशमहल।
शशिशेखर–संज्ञा पुं० [सं०] शिव। महादेव।
शशिहीरा–संज्ञा पुं० [सं० शशि+हिं० हीरा] चंद्रकांत मणि।
शसा*–संज्ञा पुं० [सं० शश] खरगोश। खरहा।
शसि, शसी*–संज्ञा पुं० दे० "शशि"।
शस्त–संज्ञा पुं० [फा०] वह जिस पर तीर आदि चलाया जाता है। लक्ष्य। निशाना।
शस्त्र–संज्ञा पुं० [सं०] १ वे उपकरण जिनसे किसी को काटा या मारा जाय। हथियार। २ कार्य्य-सिद्धि का अच्छा उपाय।
शस्त्रक्रिया–संज्ञा स्त्री० [सं०] फोड़ों आदि की चीर-फाड़। नश्तर लगाने की क्रिया।
शस्त्रधारी–वि० [सं० शस्त्रधारिन्] [स्त्री० शस्त्रधारिणी] शस्त्र धारण करनेवाला। हथियारबंद
शस्त्रविद्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हथियार

चलाने की विद्या। २. यजुर्वेद का उपवेद, धनुर्वेद, जिसमें युद्ध करने और अस्त्र चलाने की विधियाँ हैं।

शस्त्रशाला–संज्ञा स्त्री० दे० "शस्त्रागार"।

शस्त्रागार–संज्ञा पुं० [सं०] शस्त्रों के रखने का स्थान। शस्त्रशाला। सिलहखाना।

शस्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. नई घास। २. वृक्षों का फल। ३. खेती। फ़सल। ४. अन्न।

शहंशाह–संज्ञा पुं० दे० "शाहंशाह"।

शह–संज्ञा पुं० [फ़ा० शाह का संक्षिप्त रूप] १. बादशाह। २. वर। दूल्हा। वि० बढ़ा-चढ़ा। श्रेष्ठतर।

संज्ञा स्त्री० १. शतरंज के खेल में कोई मुहरा किसी ऐसे स्थान पर रखना जहाँ से बादशाह उसकी घात में पड़ता हो। किस्त। २. गुप्त रूप से किसी को भड़काने या उभारने की क्रिया या भाव।

शहजादा–संज्ञा पुं० दे० "शाहजादा"।

शहजोर–वि० [फ़ा०] बली। बलवान्।

शहतीर–संज्ञा पुं० [फ़ा०] लकड़ी का बहुत बड़ा और लंबा लट्ठा।

शहतूत–संज्ञा पुं० दे० "तूत"।

शहद–संज्ञा पुं० [अ०] शीरे की तरह का एक प्रसिद्ध मीठा, तरल पदार्थ जो मधुमक्खियाँ फूलों के मकरंद से संग्रह करके अपने छत्तों में रखती हैं।

मुहा०—शहद लगाकर चाटना = किसी निरर्थक पदार्थ को व्यर्थ लिए रहना। (व्यंग्य)

शहनाई–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. नफ़ीरी नामक बाजा। २. दे० "रौशनचौकी"।

शहबाला–संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह छोटा बालक जो विवाह के समय दूल्हे के साथ जाता है।

शह-मात–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] शतरंज के खेल में एक प्रकार की मात।

शहर–संज्ञा पुं० [फ़ा०] मनुष्यों की बड़ी बस्ती। नगर। पुर।

शहरपनाह–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] शहर की चारदीवारी। प्राचीर। नगर-कोटा।

शहरी–वि० [फ़ा०] १. शहर का। २. नगर-निवासी। नागरिक।

शहादत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. गवाही। साक्षी। २. सबूत। प्रमाण। ३. शहीद होना।

शहाना–संज्ञा पुं० [देश० या फ़ा० शाह ?] संपूर्ण जाति का एक राग।

वि० [फ़ा०] १. शाही। राजसी। २. बहुत बढ़िया। उत्तम।

शहाब–संज्ञा पुं० [फ़ा०] एक प्रकार का गहरा लाल रंग।

शहिजदा*–संज्ञा पुं० दे० "शाहजादा"।

शहीद–संज्ञा पुं० [अ०] धर्म आदि के लिये बलिदान होनेवाला व्यक्ति। (मुसल०)

शांकर–वि० [सं०] १. शंकर-संबंधी। २. शंकराचार्य का।

संज्ञा पुं० एक छंद का नाम।

शांडिल्य–संज्ञा पुं० [सं०] एक स्मृतिकार मुनि जो भक्तिसूत्र के कर्त्ता माने जाते हैं।

शांत–वि० [सं०] १. जिसमें वेग, क्षोभ या क्रिया न हो। रुका हुआ। बंद। २. नष्ट। मिटा हुआ। ३. जिसमें क्रोध आदि न रह गया हो। स्थिर। ४. मृत। मरा हुआ। ५. धीर। सौम्य। गंभीर। ६. मौन। चुप। खामोश। ७. रागादि-शून्य। जितेंद्रिय। ८. उत्साह या तत्परता-रहित। शिथिल। ढीला। ९. विघ्न-बाधा-रहित। १०. स्वस्थ-चित्त।

संज्ञा पुं० काव्य के नौ रसों में से एक जिसका स्थाई भाव "निर्वेद" है। इस रस में संसार की दुःखपूर्णता, असारता आदि का ज्ञान अथवा परमात्मा का स्वरूप आलंबन होता है।

शांतता–संज्ञा स्त्री० दे० "शांति"।

शांतनु–संज्ञा पुं० [सं०] द्वापर युग के इक्कीसवें चंद्रवंशी राजा।

शांता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. राजा दशरथ की कन्या और महर्षि ऋष्यशृंग की पत्नी। २. रेणुका।

शांति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वेग, क्षोभ या क्रिया का अभाव। २. स्तब्धता। सन्नाटा। ३. चित्त का ठिकाने होना। स्वस्थता। ४. रोग आदि का दूर होना। ५. मृत्यु।

मरण। ६ धीरता। गंभीरता। ७ वास-नाओं से छुटकारा। विराग। ८ दुर्गा। ९ अमंगल दूर करने का उपचार।

शांतिकर्म–संज्ञा पुं० [सं०] बुरे ग्रह आदि से होनेवाले अमंगल के निवारण का उपचार।

शाइस्तगी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १ शिष्टता। सभ्यता। २ भलमनसी। आदमियत।

शाइस्ता–वि० [फा० शाइस्त] १ शिष्ट। सभ्य। तहजीबवाला। २ विनीत। नम्र।

शाक–संज्ञा पुं० [सं०] भाजी। तरकारी। वि० [सं०] शक जाति-संबंधी।

शाकटायन–संज्ञा पुं० [सं०] १ एक बहुत प्राचीन वैयाकरण जिनका उल्लेख पाणिनि ने किया है। २ एक अर्वाचीन वैयाकरण।

शाकद्वीप–संज्ञा पुं० [सं०] १ पुराणानुसार सात द्वीपों में से एक द्वीप। २ ईरान और तुर्किस्तान के बीच में पड़नेवाला वह प्रदेश जिसमें आर्य और शक बसते थे।

शाकद्वीपीय–वि० [सं०] शाकद्वीप का। संज्ञा पुं० ब्राह्मणों का एक भेद। मग ब्राह्मण।

शाकल–संज्ञा पुं० [सं०] १ खंड। टुकड़ा। २ ऋग्वेद की एक शाखा या संहिता। ३ मद्र देश का एक नगर।

शाकाहार–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० शाकाहारी] अनाज का भोजन। मांसाहार का उलटा।

शाकिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] डाइन। चुड़ैल।

शाक्त–वि० [सं०] शक्ति-संबंधी। संज्ञा पुं० शक्ति का उपासक। तंत्र-पद्धति से देवी की पूजा करनेवाला।

शाक्य–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन क्षत्रिय जाति जो नैपाल की तराई में बसती थी।

शाक्य मुनि, शाक्यसिंह–संज्ञा पुं० [सं०] गौतम बुद्ध।

शाख–संज्ञा स्त्री० [फा०] १ टहनी। डाल। मुहा०—शाख निकालना=दोष निकालना। २ लगा हुआ टुकड़ा। खंड। फाँक। ३ दे० 'शाखा'।

शाखा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पेड़ की टहनी। डाल। २ हाथ और पैर। ३ किसी मूल वस्तु से निकले हुए उसके भेद।

प्रकार। ४ विभाग। हिस्सा। ५ अंग। ६ वेद की संहिताओं के पाठ और क्रमभेद।

शाखामृग–संज्ञा पुं० [सं०] वानर। बंदर।

शाखोच्चार–संज्ञा पुं० [सं०] विवाह के समय वंशावली का कथन।

शागिर्द–संज्ञा पुं० [फा०] [भाव० शागिर्दी] किसी से विद्या प्राप्त करनेवाला। शिष्य।

शातवाहन–संज्ञा पुं० दे० "शालिवाहन"।

शाद–वि० [फा०] खुश। प्रसन्न।

शादियाना–संज्ञा पुं० [फा०] १ खुशी का बाजा। आनंद और मंगल-सूचक बाद्य। २ बधावा। बधाई।

शादी–संज्ञा स्त्री० [फा०] खुशी। आनंद। २ आनंदोत्सव। ३ विवाह। ब्याह।

शाद्वल–वि० [सं०] हरी हरी घास से ढका हुआ। हराभरा। संज्ञा पुं० १ हरी घास। दूब। २ बैल। ३ रेगिस्तान के बीच की हरियाली और बस्ती।

शान–संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० शानदार] १ तड़क भड़क। ठाट-बाट। सजावट। २ गर्वीली चेष्टा। ठसक। ३ भव्यता। विशालता। ४ शक्ति। करामात। विभूति। ५ प्रतिष्ठा। इज्जत। मुहा०—किसी की शान में=किसी बड़े के संबंध में।

शान-शौकत–संज्ञा स्त्री० [अ०] तड़क भड़क। ठाट-बाट। तैयारी। सजावट।

शाप–संज्ञा पुं० [सं०] १ अहित-कामना सूचक शब्द। कोसना। बददुआ। २ धिक्कार। फटकारना। भर्त्सना।

शापग्रस्त–वि० दे० "शापित"।

शापित–वि० [सं०] जिसे शाप दिया गया हो। शाप-ग्रस्त।

शाबर भाष्य–संज्ञा पुं० [सं०] मीमांसा सूत्र पर प्रसिद्ध भाष्य या व्यवस्था।

शाबरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] शबरों की भाषा। एक प्रकार की प्राकृत भाषा।

शाबाश–अव्य० [फा०] [संज्ञा शाबाशी] एक प्रशंसा-सूचक शब्द। खुश रहो। वाह वाह। धन्य हो।

शाब्द–वि० [सं०] [स्त्री० शाब्दी] १. शब्द-संबंधी। शब्द का। २. शब्द विशेष पर निर्भर।
शाब्दिक–वि० [सं०] शब्द-संबंधी।
शाब्दी–वि० स्त्री० [सं०] १. शब्द-संबंधिनी। २. केवल शब्द विशेष पर निर्भर रहनेवाली।
शाब्दी व्यंजना–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह व्यंजना जो शब्दविशेष के प्रयोग पर ही निर्भर हो; अर्थात् उसका पर्य्यायवाची शब्द रखने पर न रह जाय। आर्थी व्यंजना का उलटा।
शाम–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] साँझ। संध्या।
*वि० संज्ञा पुं० दे० "श्याम"।
संज्ञा स्त्री० दे० "शामी"।
संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध प्राचीन देश जो अरब के उत्तर में है। सीरिया।
शामकर्ण–संज्ञा पुं० [सं० श्यामकर्ण] वह घोड़ा जिसके कान श्याम रंग के हों।
शामत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. दुर्भाग्य। २. विपत्ति। आफ़त। ३. दुर्दशा। दुरवस्था।
मुहा०—शामत का घेरा या मारा=जिसकी दुर्दशा का समय आया हुआ हो। शामत सवार होना या सिर पर खेलना=दुर्दशा का समय आना।
शामियाना–संज्ञा पुं० [फ़ा० शाम ?] एक प्रकार का बड़ा तंबू।
शामिल–वि० [फ़ा०] जो साथ में हो। मिला हुआ। सम्मिलित।
शामी–संज्ञा स्त्री० [देश०] धातु का वह छल्ला जो लकड़ियों या औज़ारों के दस्ते के सिरे पर उसकी रक्षा के लिये लगाया जाता है। शाम।
वि० [शाम (देश)] शाम देश का।
शायक–संज्ञा पुं० [सं०] १. बाण। तीर। शर। २. खड्ग। तलवार।
शायक़–वि० [अ०] १. शौक़ीन। २. इच्छुक।
शायद–अव्य० [फ़ा०] कदाचित्। संभव है।
शायर–संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० शायरा] कवि।
शायी–वि० [सं० शायिन्] सोनेवाला।
शारंग–संज्ञा पुं० दे० "सारंग"।
शारंगपाणि–संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु। २. कृष्ण। ३. राम।
शारद–वि० [सं०] शरद् काल का।
शारदा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सरस्वती। २. दुर्गा। ३. प्राचीन काल की एक लिपि।
शारदीय–वि० [सं०] शरद् काल का।
शारदीय महापूजा–संज्ञा स्त्री० [सं०] शरत्काल में होनेवाली नवरात्रि की दुर्गा-पूजा।
शारिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] मैना। (चिड़िया)
शारिया–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अनंतमूल। सालसा। २. जवासा। धमासा।
शारीर–वि० [सं०] शरीर-संबंधी।
शारीरिक भाष्य–संज्ञा पुं० [सं०] शंकराचार्य्य का किया हुआ ब्रह्मसूत्र का भाष्य।
शारीरिक सूत्र–संज्ञा पुं० [सं०] वेदांत सूत्र।
शारीर विज्ञान (शास्त्र)–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह शास्त्र जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि जीव किस प्रकार उत्पन्न होते और बढ़ते हैं। २. दे० "शरीर-शास्त्र"।
शारीरिक–वि० [सं०] शरीर-संबंधी।
शार्ङ्ग–संज्ञा पुं० [सं०] १. धनुष। कमान। २. विष्णु के हाथ में रहनेवाला धनुष।
शार्ङ्गधर, शार्ङ्गपाणि–संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु। २. श्रीकृष्ण।
शार्दूल–संज्ञा पुं० [सं०] १. चीता। बाघ। २. राक्षस। ३. शरभ नामक जंतु। ४. एक प्रकार का पक्षी। ५. दोहे का एक भेद। ६. सिंह।
वि० सर्वश्रेष्ठ। सर्वोत्तम।
शार्दूलललित–संज्ञा पुं० [सं०] अठारह अक्षरों का एक प्रकार का वर्णवृत्त]
शार्दूलविक्रीड़ित–संज्ञा पुं० [सं०] उन्नीस अक्षरों का एक प्रकार का वर्णवृत्त।
शालंकि–संज्ञा पुं० [सं०] पाणिनि ऋषि।
शाल–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का बहुत बड़ा और विशाल वृक्ष। साखू।
संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] एक प्रकार की ऊनी या रेशमी चादर। दुशाला।
शालग्राम–संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु की एक प्रकार की पत्थर की मूर्त्ति।

शालपर्णी–सज्ञा स्त्री० दे० "सरिवन"।

शाला–सज्ञा स्त्री० [स०] १ घर। गृह। मकान। २ जगह। स्थान। जैसे—पाठशाला। ३ इद्रवज्रा और उपेंद्रवज्रा के योग से बननेवाला एक वृत्त।

शालातुरीय–सज्ञा पु० [स०] पाणिनि ऋषि।

शालि–सज्ञा पु० [स०] १ जडहन धान। २ बासमती चावल। ३ गन्ना। पौंढा।

शालिधान–सज्ञा पु० [स० शालिधान्य] बासमती चावल।

शालिनी–सज्ञा स्त्री० [स०] ग्यारह अक्षरो का एक वृत्त।

शालिवाहन–सज्ञा पु० [स०] एक प्रसिद्ध शक राजा जिसने 'शक' नामक सवत् चलाया था।

शालिहोत्र–सज्ञा पु० [स०] १ घोडा। २ शालिहोत्री की विद्या। अश्व विद्या।

शालिहोत्री–सज्ञा पु० [स० शालिहोत्र + ई (प्रत्य०)] वह जो पशुओ आदि की चिकित्सा करता हो। अश्व-वैद्य।

शालीन–वि० [स०] [भाव० शालीनता] १ विनीत। नम्र। २ जिसे लज्जा आती हो। ३ सदृश। समान। तुल्य। ४ अच्छे आचार विचारवाला। ५ धनवान्। अमीर। ६ दक्ष। चतुर।

शाल्मलि–सज्ञा पु० [स०] १ सेमल का पेड। २ पुराणानुसार एक द्वीप का नाम। ३ एक नरक का नाम।

शाल्व–सज्ञा पु० [स०] १ सौभराज्य के एक राजा जो श्रीकृष्ण द्वारा मारे गए थे। २ एक प्राचीन देश का नाम।

शावक–सज्ञा पु० [स०] बच्चा, विशेषत पशु या पक्षी का बच्चा।

शाश्वत–वि० [स०] जो सदा स्थायी रहे। कभी नष्ट न हो। नित्य।

शासक–सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० शासिका] १ वह जो शासन करता हो। २ हाकिम।

शासन–सज्ञा पु० [स०] १ आज्ञा। आदेश। हुक्म। २ अधिकार या वश मे रखना। ३ लिखित प्रतिज्ञा। पट्टा। टीका। ४ राजा की दान की हुई भूमि। मुआफी। ५ वह परवाना या फरमान जिसके द्वारा किसी व्यक्ति को कोई अधिकार दिया जाय। ६ शास्त्र। ७ इंद्रिय निग्रह। ८ दड़-मन। ९ दड। सजा।

शासित–वि० [स०] [स्त्री० शासिता] १ जिसका शासन किया जाय। २ जिसे दड दिया जाय।

शास्ता–सज्ञा पु० [स० शास्तृ] १ शासक। २ राजा। ३ पिता। ४ उपाध्याय। गुरु।

शास्ति–सज्ञा स्त्री० [स०] १ शासन। २ दड। सजा।

शास्त्र–सज्ञा पु० [स०] १ वे धार्मिक ग्रथ जो लोगो के हित और अनुशासन के लिये बनाए गए है। इनकी सख्या १८ कही गई है—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष, छद, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, मीमासा, न्याय, धर्मशास्त्र, पुराण, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गाधर्ववेद, और अर्थशास्त्र। २ किसी विशिष्ट विषय के सबध का वह समस्त ज्ञान जो ठीक क्रम से सग्रह करके रखा गया हो। विज्ञान।

शास्त्रकार–सज्ञा पु० [स०] वह जिसने शास्त्रो की रचना की हो। शास्त्र बनानेवाला।

शास्त्रज्ञ–सज्ञा पु० [स०] शास्त्रवेत्ता।

शास्त्री–सज्ञा पु० [स० शास्त्रिन्] १ शास्त्रज्ञ। २ वह जो धर्म-शास्त्र का ज्ञाता हो।

शास्त्रीय–वि० [स०] शास्त्र-सबधी।

शास्त्रोक्त–वि० [स०] शास्त्रो मे कहा हुआ।

शाहशाह–सज्ञा पु० [फा०] बादशाहो का बादशाह। महाराजाधिराज।

शाहशाही–सज्ञा स्त्री० [फा०] १ शाहशाह का कार्य्य या भाव। २ व्यवहार का तरापन। (बोलचाल)

शाह–सज्ञा पु० [फा०] १ महाराज। बादशाह। २ मुसलमान फकीरो की उपाधि। वि० बडा। भारी। महान्।

शाहजादा–सज्ञा पु० [फा०] [स्त्री० शाहजादी] बादशाह का लडका। महाराजकुमार।

शाहाना–वि० [फा०] राजसी।

संज्ञा पुं० १. विवाह का जोड़ा जो दूल्हे को पहनाया जाता है। जामा। २. दे० "शहाना" (राग)।

शाही–वि० [फ़ा०] शाहों या बादशाहों का।

शिंगरफ–संज्ञा पुं० दे० "इँगुर"।

शिंबी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. छीमी। फली। बोंड़ी। २. सेम। ३. कौंछ। केवाँच।

शिंबी धान्य–संज्ञा पुं० [सं०] द्विदल अन्न। दाल।

शिंशपा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शीशम का पेड़। २. अशोक वृक्ष।

शिंशुपा*–संज्ञा स्त्री० दे० "शिंशपा"।

शिशुमार–संज्ञा पुं० [सं०] सूँस। (जलजंतु)

शिकंजा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. दबाने, कसने या निचोड़ने का यंत्र। २. एक यंत्र जिससे जिल्दबंद किताबें दबाते और उसके पन्ने काटते हैं। ३. अपराधियों को कठोर दंड देने लिये एक प्राचीन यंत्र जिसमें उनकी टाँगें कस दी जाती थीं।

मुहा०—शिकंजे में खिंचवाना=घोर यंत्रणा दिलाना। साँसत कराना।

शिकन–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] सिकुड़ने से पड़ी हुई धारी। सिलवट। बल।

शिकम–संज्ञा पुं० [फ़ा०] पेट। उदर।

शिकमी काश्तकार–संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह काश्तकार जिसे जोतने के लिये खेत दूसरे काश्तकार से मिला हो।

शिकरा–संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का बाज पक्षी।

शिकायत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. बुराई करना। गिला। चुगली। २. उपालंभ। उलाहना। ३ रोग। बीमारी।

शिकार–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. जंगली पशुओं को मारने का कार्य्य या क्रीड़ा। आखेट। मृगया। अहेर। २. वह जानवर जो मारा गया हो। ३. गोश्त। मांस। ४. आहार। भक्ष्य। ५. कोई ऐसा आदमी जिसके फँसने से बहुत लाभ हो। असामी।

मुहा०—शिकार खेलना = शिकार करना। किसी का शिकार होना=१. किसी के द्वारा मारा जाना। २. वश में आना। फँसना।

शिकारगाह–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] शिकार खेलने का स्थान।

शिकारी–वि० [फ़ा०] १. शिकार करनेवाला। २. शिकार में काम आनेवाला।

शिक्षक–संज्ञा पुं० [सं०] शिक्षा देनेवाला। सिखानेवाला। गुरु। उस्ताद।

शिक्षण–संज्ञा पुं० [सं०] तालीम। शिक्षा।

शिक्षा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. किसी विद्या को सीखने या सिखाने की क्रिया। सीख। तालीम। २. गुरु के निकट विद्या का अभ्यास। ३. उपदेश। मंत्र। सलाह। ४. छः वेदांगों में से एक जिसमें वेदों के वर्ण, स्वर, मात्रा आदि का निरूपण है। ५. शासन। दबाव। ६. सबक़। दंड।

शिक्षाक्षेप–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का अलंकार जिसमें शिक्षा द्वारा गमन-स्वरूप कार्य रोका जाता है। (केशव)

शिक्षागुरु–संज्ञा पुं० [सं०] विद्या पढ़ानेवाला गुरु।

शिक्षार्थी–संज्ञा पुं० [सं० शिक्षार्थिन्] विद्यार्थी।

शिक्षालय–संज्ञा पुं० [सं०] विद्यालय।

शिक्षाविभाग–संज्ञा पुं० [सं० शिक्षा + विभाग] वह सरकारी विभाग जिसके द्वारा शिक्षा का प्रबंध होता है।

शिक्षित–वि० पुं० [सं०] [स्त्री० शिक्षिता] १. जिसने शिक्षा पाई हो। २. विद्वान्।

शिखंड–संज्ञा पुं० [सं०] १. मोर की पूँछ। मयूरपुच्छ। २. चोटी। शिखा। चुटिया। ३. काकपक्ष। काकुल।

शिखंडिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मोरनी। मयूरी। २. द्रुपदराज की एक कन्या जो पीछे पुरुष के रूप में होकर कुरुक्षेत्र के युद्ध में लड़ी थी।

शिखंडी–संज्ञा पुं० [सं० शिखंडिन्] १. मोर। मयूर पक्षी। २. मुर्गा। ३. बाण। ४. विष्णु। ५. कृष्ण। ६. शिव। ७. शिखा। ८. दे० "शिखंडिनी"।

शिख*–संज्ञा स्त्री० दे० "शिखा"।

शिखर–संज्ञा पुं० [सं०] १. सिरा। चोटी।

२ पहाड़ की चोटी। ३ मकान के ऊपर का निकला हुआ नुकीला सिरा। कँगूरा। कलश। ४ मंडप। गुंबद। ५ जैनियों का एक तीर्थ। ६ एक अस्त्र का नाम।
शिखरन–संज्ञा स्त्री० [सं० शिखरिणी] दही और चीनी का बनाया हुआ शरबत।
शिखरिणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ रसाल। २ नारी-रत्न। स्त्रियों में श्रेष्ठ। ३ रोमावली। ४ दही और चीनी का रस। शिखरन। ५ सत्रह अक्षरों की एक वर्ण-वृत्ति।
शिखरी–संज्ञा स्त्री० [सं० शिखरा] एक गदा जो विश्वामित्र ने रामचंद्र को दी थी।
शिखा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चोटी। चुटैया। यौ०—शिखासूत्र=चोटी और जनेऊ जो द्विजों के चिह्न हैं।
२ पक्षियों के सिर पर उठी हुई चोटी। कलगी। ३ आग की लपट। ज्वाला। ४ दीपक की लौ। टेम। ५ प्रकाश की किरन। ६ नुकीला छोर या सिरा। नोक। ७ चोटी। शिखर। ८ शाखा। डाली। ९ एक विषम वृत्त।
शिखि–संज्ञा पु० [सं०] १ मोर। मयूर। २ कामदेव। ३ अग्नि। ४ तीन की संख्या।
शिखिध्वज–संज्ञा पु० [सं०] १ धूम्र। धूआँ। २ कार्तिकेय। ३ मयूरध्वज।
शिखी–वि० [शिखिन्] [स्त्री० शिखिनी] शिखावाला। चोटीवाला।
संज्ञा पु० १ मोर। मयूर। २ मुर्गा। ३ बैल। साँड़। ४ घोड़ा। ५ अग्नि। ६ तीन की संख्या। ७ पुच्छल तारा। केतु। ८ बाण। तीर।
शिगाफ़–संज्ञा पु० [फ़ा०] १ चीरा। नश्तर। २ दरार। दर्ज। ३ छेद। सूराख।
शिगूफ़ा–संज्ञा पु० दे० "शगूफा"।
शित*–वि० दे० 'सित'।
शिताब–क्रि० वि० [फ़ा०] [संज्ञा शिताबी] जल्द। शीघ्र।
शिति–वि० [सं०] १ सफ़ेद। शुभ्र। श्वेत। २. काला। कृष्ण।
शितिकंठ–संज्ञा पु० [सं०] १ मुर्गाबी। जलकाक। २ पपीहा। चातक। ३ मोर। मयूर। ४ शिव। महादेव।
शिथिल–वि० [सं०] १ जो कसा या जकड़ा न हो। ढीला। २ सुस्त। मंद। धीमा। ३ थका हुआ। श्रांत। ४ जो पूरा मुस्तैद न हो। आलस्ययुक्त। ५ जिसकी पूरी पाबंदी न हो।
शिथिलता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ढीलापन। ढिलाई। २ थकावट। थकान। ३ मुस्तैदी का न होना। आलस्य। ४ नियम-पालन की कड़ाई का न होना। ५ वाक्यों में शब्दों का परस्पर गठा हुआ अर्थ-संबंध न होना।
शिथिलाई*†–संज्ञा स्त्री० दे० 'शिथिलता'।
शिथिलाना*–क्रि० अ० [सं० शिथिल+आना (प्रत्य०)] १ शिथिल होना। २ थकना।
शिद्दत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ तेज़ी। ज़ोर। उग्रता। २ अधिकता। ज़्यादती।
शिनाख़्त–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १ यह निश्चय कि अमुक वस्तु या व्यक्ति यही है। पहचान। २ परख। तमीज़।
शिपर‡*–संज्ञा पु० [फ़ा० सिपर] ढाल।
शिया–संज्ञा पु० [अ० शीया] हज़रत अली को पैगंबर का ठीक उत्तराधिकारी माननेवाला एक मुसलमान संप्रदाय।
शिर–संज्ञा पु० [सं० शिरस्] १ सिर। कपाल। खोपड़ा। २ मस्तक। माथा। ३ सिरा। चोटी। ४ शिखर।
शिरकत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ किसी वस्तु के अधिकार में भाग। साझा। हिस्सा। २ किसी काम में शामिल होना।
शिरस्त्रान–संज्ञा पु० दे० 'शिरस्त्राण'।
शिरनेत–संज्ञा पु० [देश०] १ गढ़वाल या श्रीनगर के आस-पास का प्रदेश। २ क्षत्रियों की एक शाखा।
शिरफूल–संज्ञा पु० दे० 'सीसफूल'।
शिरमौर–संज्ञा पु० [सं० शिरस् + सं० मुकुट] १ शिरोभूषण। मुकुट। २ प्रधान।

शिरस्त्राण—संज्ञा पुं० [सं०] युद्ध में पहनी जानेवाली लोहे की टोपी। कूँड़। खोद।
शिरहन*†—संज्ञा पुं० [हिं० शिर+आधान] १. उसीसा। तकिया। २. सिरहाना।
शिरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रक्त की छोटी नाड़ी। २. पानी का सोता या धारा।
शिरीष—संज्ञा पुं० [सं०] सिरस। (पेड़)
शिरोधार्य—वि० [सं०] सिर पर धरने या आदरपूर्वक मानने के योग्य।
शिरोभूषण*—संज्ञा पुं० [सं०] १. सिर पर पहनने का गहना। २. मुकुट। ३. श्रेष्ठ व्यक्ति।
शिरोमणि—संज्ञा पुं० [सं०] १. सिर पर का रत्न। चूड़ामणि। २. श्रेष्ठ व्यक्ति।
शिल—संज्ञा पुं० दे० "उंछ"।
संज्ञा स्त्री० दे० "शिला"।
शिला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पाषाण। पत्थर। २. पत्थर का बड़ा चौड़ा टुकड़ा। चट्टान। ३. शिलाजीत। ४. पत्थर की कंकड़ी अथवा बटिया। ५. उंछ वृत्ति।
शिलाजतु—संज्ञा पुं० [सं०] शिलाजीत।
शिलाजीत—संज्ञा पुं०, स्त्री० [सं० शिलाजतु] काले रंग की एक प्रसिद्ध पौष्टिक ओषधि जो शिलाओं का रस है। मोमियाई।
शिलादित्य—संज्ञा पुं० दे० "हर्षवर्द्धन"।
शिलापट्ट—संज्ञा पुं० [सं०] पत्थर की चट्टान।
शिलारस—संज्ञा पुं० [सं०] लोहबान की तरह का एक प्रकार का सुगंधित गोंद।
शिलालेख—संज्ञा पुं० [सं०] पत्थर का लिखा या खोदा हुआ कोई प्राचीन लेख।
शिलाहार—संज्ञा पुं० [सं०] शालिग्राम।
शिलीमुख—संज्ञा पुं० [सं०] भ्रमर। भौंरा।
शिल्प—संज्ञा पुं० [सं०] १. हाथ से कोई चीज बनाकर तैयार करने का काम। दस्तकारी। कारीगरी। २. कला-संबंधी व्यवसाय।
शिल्पकला—संज्ञा स्त्री० [सं०] हाथ से चीजें बनाने की कला। कारीगरी। दस्तकारी।
शिल्पकार—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिल्पी। कारीगर। २. राज। मेमार।
शिल्पविद्या—संज्ञा स्त्री० दे० "शिल्पकला"।
शिल्पशास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिल्प-संबंधी शास्त्र। २. गृह-निर्माण का शास्त्र।
शिल्पी—संज्ञा पुं० [सं० शिल्पिन्] १. शिल्पकार। कारीगर। २. राज। थवई।
शिव—संज्ञा पुं० [सं०] १. मंगल। कल्याण। क्षेम। २. जल। पानी। ३. पारा। ४. मोक्ष। ५. वेद। ६. देव। ७. रुद्र। काल। ८. वसु। ९. लिंग। १०. ग्यारह मात्राओं का एक छंद। ११. परमेश्वर। भगवान्। १२. हिंदुओं के एक प्रसिद्ध देवता जो सृष्टि का संहार करनेवाले और पौराणिक त्रिमूर्ति के अंतिम देवता हैं।
शिवता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शिव का भाव या धर्म्म। २. मोक्ष।
शिवनंदन—संज्ञा पुं० [सं०] गणेश जी।
शिव-निर्माल्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह पदार्थ जो शिवजी को अर्पित किया गया हो। (ऐसी चीजों के ग्रहण करने का निषेध है।) २. परम त्याज्य वस्तु।
शिवपुराण—संज्ञा पुं० [सं०] अठारह पुराणों में से एक। यह शिव-प्रोक्त माना जाता है और इसमें शिव का माहात्म्य है।
शिवपुरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] काशी।
शिवरात्रि—संज्ञा स्त्री० [सं०] फाल्गुन बदी चतुर्दशी। शिव चतुर्दशी।
शिवरानी—संज्ञा स्त्री० [सं० शिव+हिं० रानी] पार्वती।
शिवलिंग—संज्ञा पुं० [सं०] महादेव का लिंग या पिंडी जिसका पूजन होता है।
शिवलिंगी—संज्ञा स्त्री० [सं० लिंगिनी] एक प्रसिद्ध लता जिसका व्यवहार ओषधि के रूप में होता है।
शिवलोक—संज्ञा पुं० [सं०] कैलास।
शिववृषभ—संज्ञा पुं० [सं०] शिवजी की सवारी का बैल।
शिवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुर्गा। २. पार्वती। गिरिजा। ३. मुक्ति। मोक्ष। ४. शृगाली। सियारिन।
शिवालय—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिवजी का मंदिर। २. कोई देव-मंदिर। (क्व०)

शिवाला–संज्ञा पु० [सं० शिवालय] १ शिव-जी का मंदिर। शिवालय। २ देव-मंदिर।
शिवि–संज्ञा पु० [सं०] राजा उशीनर के पुत्र तथा ययाति के दौहित्र एक राजा जो अपनी दानशीलता के लिये प्रसिद्ध हैं।
शिविका–संज्ञा स्त्री० [सं०] पालकी। डोली।
शिविर–संज्ञा पु० [सं०] १ डेरा। खेमा। निवेश। २ फौज के ठहरने का पड़ाव। छावनी। ३ किला। कोट।
शिशिर–संज्ञा पु० [सं०] १ एक ऋतु जो माघ और फाल्गुन मास में होती है। २ जाड़ा। शीतकाल। ३ हिम।
शिशिरांत–संज्ञा पु० [सं०] वसंत ऋतु।
शिशु–संज्ञा पु० [सं०] छोटा बच्चा, विशेषतः आठ वर्ष तक की अवस्था का बच्चा।
शिशुता–संज्ञा स्त्री० [सं०] बचपन। शिशुत्व।
शिशुताई*–संज्ञा स्त्री० दे० 'शिशुता'।
शिशुनाग–संज्ञा पु० दे० "शैशुनाग"।
शिशुपन*–संज्ञा पु० दे० "शिशुता"।
शिशुपाल–संज्ञा पु० [सं०] चेदि देश का एक प्रसिद्ध राजा जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।
शिशुमार–संज्ञा पु० [सं०] १ सूँस नामक जल जंतु। २ नक्षत्र-मंडल। ३ कृष्ण।
शिशुमार चक्र–संज्ञा पु० [सं०] सब ग्रहों सहित सूर्य। सौर जगत्।
शिश्न–संज्ञा पु० [सं०] पुरुष का लिंग।
शिष*–संज्ञा पु० दे० 'शिष्य'।
संज्ञा स्त्री० [सं० शिक्षा] सीख। शिक्षा।
संज्ञा स्त्री० [सं० शिखा] शिखा। चोटी।
शिषरी*–वि० [सं० शिखर] शिखरवाला।
शिषा*–संज्ञा स्त्री० दे० 'शिखा'।
शिषि*–संज्ञा पु० दे० 'शिष्य'।
शिषी–संज्ञा पु० दे० 'शिखी'।
शिष्ट–वि० पु० [सं०] १ धर्मशील। २ शांत। धीर। ३ अच्छे स्वभाव और आचरणवाला। सुशील। ४ बुद्धिमान। ५ सभ्य। सज्जन। ६ भला। उत्तम।
शिष्टता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शिष्ट होने का भाव या धर्म। २ सभ्यता। सज्जनता। ३ उत्तमता। श्रेष्ठता।
शिष्टाचार–संज्ञा पु० [सं०] १ सभ्य पुरुषों के योग्य आचरण। साधु-व्यवहार। २ आदर। सम्मान। खातिरदारी। ३ विनय। नम्रता। ४ दिखावटी सभ्य व्यवहार। ५ आव भगत।
शिष्य–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० शिष्या] [भाव० शिष्यता] १ वह जो शिक्षा या उपदेश देने के योग्य हो। २ विद्यार्थी। अंतेवासी ३ शागिर्द। चेला। ४ मुरीद। चेला।
शिष्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] सात गुरु अक्षरों का एक वृत्त। शीर्षरूपक।
शिस्त–संज्ञा स्त्री० [फा०] १ मछली पकड़ने का काँटा। २ निशाना। लक्ष्य।
शीघ्र–क्रि० वि० [सं०] बिना विलंब। बिना देर के। चटपट। तुरंत। जल्द।
शीघ्रगामी–वि० [सं० शीघ्रगामिन्] जल्दी या तेज चलनेवाला।
शीघ्रता–संज्ञा स्त्री० [सं०] जल्दी। फुरती।
शीत–वि० [सं०] ठंढा। सर्द। शीतल। संज्ञा पु० १ जाड़ा। सर्दी। ठंढ। २ ओस। तुषार। ३ जाड़े का मौसिम। ४ जुकाम। सरदी। प्रतिश्याय।
शीत कटिबंध–संज्ञा पु० [सं०] पृथ्वी के उत्तर और दक्षिण के भूमि-खंड के वे कल्पित विभाग जो भूमध्य रेखा से २३½ अंश उत्तर के बाद और २३½ अंश दक्षिण के बाद माने गए हैं।
शीतकाल–संज्ञा पु० [सं०] १ अगहन और पूस के महीने। २ जाड़े का मौसिम।
शीतल–वि० [सं०] १ ठंढा। सर्द। गरम का उलटा। २ क्षोभ या उद्वेग रहित। शांत।
शीतल चीनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० शीतल+चीन देश] कबाब चीनी।
शीतलता–संज्ञा स्त्री० [सं०] ठंढापन।
शीतलताई*–संज्ञा स्त्री० दे० "शीतलता"।
शीतला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विस्फोटक रोग। चेचक। २ एक देवी जो विस्फोटक की अधिष्ठात्री मानी जाती हैं।
शीतलाष्टमी–संज्ञा स्त्री० [सं०] चैत्र कृष्ण-पक्ष की अष्टमी।

शीया–संज्ञा पुं० [अ०] मुसलमानों का एक प्रसिद्ध संप्रदाय जो हजरत अली का अनुयायी है।
शीरा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] चीनी या गुड़ को पकाकर गाढ़ा किया हुआ रस। चाशनी।
शीरीं–वि० [फ़ा०] १. मीठा। मधुर। २. प्रिय। प्यारा।
शीरीनी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. मिठास। मीठापन। २. मिठाई। मिष्टान्न।
शीर्ण–वि० [सं०] १. टूटा फूटा-हुआ। २. जीर्ण। फटा-पुराना। ३. मुरझाया हुआ। ४. कृश। दुबला। पतला।
शीर्ष–संज्ञा पुं० [सं०] १. सिर। कपाल। २. माथा। ३. शिरा। चोटी। ४. सामना। अग्रभाग।
शीर्षक–संज्ञा पुं० [सं०] १. दे० "शीर्ष"। २. वह शब्द या वाक्य जो विषय के परिचय के लिये किसी लेख के ऊपर हो।
शीर्षबिंदु–संज्ञा पुं० [सं०] सिर के ऊपर ओर ऊँचाई में सबसे ऊपर का स्थान।
शील–संज्ञा पुं० [सं०] १. चाल। व्यवहार। आचरण। चरित्र। २. स्वभाव। प्रवृत्ति। मिजाज। ३. उत्तम आचरण। सद्वृत्ति। ४. उत्तम स्वभाव। अच्छा मिजाज। ५. संकोच का स्वभाव। मुरौवत। वि० प्रवृत्त। तत्पर। (यौ० में)
शीलवान्–वि० [सं० शीलवत्] [स्त्री० शीलवती] १. अच्छे आचरण का। २. सुशील।
शीश*†–संज्ञा पुं० दे० "शीर्ष"।
शीशम–संज्ञा पुं० [फ़ा०] एक पेड़ जिसका तना भारी, सुंदर और मजबूत होता है।
शीशमहल–संज्ञा पुं० [फ़ा० शीशा+अ० महल] वह कोठरी जिसकी दीवारों में शीशे जड़े हों।
शीशा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. एक पारदर्शी मिश्र धातु, जो बालू या रेह या खारी मिट्टी को आग में गलाने से बनती है। काँच। २. दर्पण। आइना। ३. झाड़, फ़ानूस आदि काँच के बने सामान।
शीशी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० शीशा] शीशे का छोटा पात्र जिसमें तेल, दवा आदि रखते हैं। मुहा०—शीशी सुँघाना=दवा सुँघाकर बेहोश करना। (अस्त्र-चिकित्सा आदि में)
शुंग–संज्ञा पुं० [सं०] एक क्षत्रियवंश जो मौर्यों के पीछे मगध के सिंहासन पर बैठा था।
शुंठि, शुंठी–संज्ञा स्त्री० [सं०] सोंठ।
शुंड–संज्ञा पुं० [सं०] हाथी की सूँड़।
शुंडी–संज्ञा पुं० [सं० शुंडिन्] १. हाथी। २. मद्य बनानेवाला। कलवार।
शुंभ–संज्ञा पुं० [सं०] एक असुर जिसे दुर्गा ने मारा था।
शुक–संज्ञा पुं० [सं०] १. तोता। सुग्गा। २. शुकदेव। ३. वस्त्र। कपड़ा।
शुकदेव–संज्ञा पुं० [सं०] कृष्णद्वैपायन के पुत्र जो पुराणों के वक्ता और ज्ञानी थे।
शुकराना–संज्ञा पुं० [अ० शुक्र] १. शुक्रिया। कृतज्ञता। २. वह धन जो कार्य्य हो जाने पर धन्यवाद के रूप में दिया जाय।
शुक्त–वि० [सं०] १. सड़ाकर खट्टा किया हुआ। २. खट्टा। अम्ल। ३. कड़ा। कठोर। ४. अप्रिय। नापसंद। ५. सुनसान। उजाड़।
शुक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] सीप। सीपी।
शुक्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. अग्नि। २. एक बहुत चमकीला ग्रह जो पुराणानुसार दैत्यों का गुरु कहा गया है। ३. वीर्य्य। मनी। ४. बल। सामर्थ्य। शक्ति। ५. सप्ताह का छठा दिन जो बृहस्पतिवार के बाद और शनिवार से पहले पड़ता है। संज्ञा पुं० [अ०] धन्यवाद।
शुक्रगुजार–वि० [अ० शुक्र+फ़ा० गुजार] एहसान माननेवाला। आभारी। कृतज्ञ।
शुक्राचार्य्य–संज्ञा पुं० [सं०] एक ऋषि जो दैत्यों के गुरु थे।
शुक्रिया–संज्ञा पुं० [फ़ा०] धन्यवाद। कृतज्ञता-प्रकाश।
शुक्ल–वि० [सं०] सफेद। उजला। धवल। संज्ञा पुं० ब्राह्मणों की एक पदवी।
शुक्ल पक्ष–संज्ञा पुं० [सं०] अमावस्या के उपरांत प्रतिपदा से लेकर पूर्णिमा तक का पक्ष।
शुक्ला–संज्ञा स्त्री० [सं०] सरस्वती।
शुचि–संज्ञा स्त्री० [सं०] [भाव० शुचिता]

पवित्रता। स्वच्छता। शुद्धता।
वि० १ शुद्ध। पवित्र। २ स्वच्छ। साफ। ३ निर्दोष। ४ स्वच्छ हृदयवाला।

शुचिकर्म्मा–वि० [सं० शुचिकर्म्मन्] पवित्र कार्य्य करनेवाला। सदाचारी। कर्मनिष्ठ।

शुतुर-मुर्ग–संज्ञा पु० [फा०] एक प्रकार का बहुत बड़ा पक्षी जिसकी गरदन ऊँट की तरह बहुत लम्बी होती है।

शुदनी–संज्ञा स्त्री० [फा०] भावी। होनी। होनहार। नियति।

शुद्ध–वि० [सं०] [भाव० शुद्धता] १ पवित्र। साफ। स्वच्छ। २ सफेद। उज्ज्वल। ३ जिसमें किसी प्रकार की अशुद्धि न हो। ठीक। सही। ४ निर्दोष। बे-ऐब। ५ जिसमें मिलावट न हो। खालिस।

शुद्ध पक्ष–संज्ञा पु० [सं०] शुक्ल पक्ष।

शुद्धापह्नुति–संज्ञा स्त्री० [सं०]एक अलंकार जिसमें उपमेय को झूठ ठहराकर या उसका निषेध करके उपमान की सत्यता स्थापित की जाती है।

शुद्धि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शुद्ध होने का कार्य्य। २ सफाई। स्वच्छता। ३ वह कृत्य या संस्कार जो किसी अशुद्ध या अशुचि व्यक्ति के शुद्ध होने के समय होता है।

शुद्धिपत्र–संज्ञा पु० [सं०] वह पत्र जिसमें सूचित हो कि कहाँ क्या अशुद्धि है।

शुद्धोदन–संज्ञा पु० [सं०] एक सुप्रसिद्ध शाक्य राजा जो बुद्धदेव के पिता थे।

शुनःशेप–संज्ञा पु० [सं०] वैदिक काल के एक प्रसिद्ध ऋषि जो महर्षि ऋचीक के पुत्र थे।

शुनासीर–संज्ञा पु० [सं०] इंद्र।

शुनि–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० शुनी] कुत्ता।

शुबहा–संज्ञा पु० [अ०] १ संदेह। शक। २ धोखा। वहम। भ्रम।

शुभ–वि० [सं०] १ अच्छा। भला। उत्तम। २ कल्याणकारी। मंगलप्रद।
संज्ञा पु० मंगल। कल्याण। भलाई।

शुभचिंतक–वि० [सं०] शुभ या भला चाहनेवाला। हितैषी। खैरख्वाह।

शुभदर्शन–वि० [सं०] सुंदर। खूबसूरत।

शुभ्र–वि० [सं०] सफेद। श्वेत। उजला।

शुभ्रता–संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेदी। श्वेतता।

शुमार–संज्ञा पु० [फा०] १ गिनती। संख्या। २ हिसाब। लेखा।

शुरू–संज्ञा पु० [अ० शुरूअ] १ आरंभ। प्रारंभ। २ वह स्थान जहाँ से किसी वस्तु का आरंभ हो। उत्थान।

शुल्क–संज्ञा पु० [सं०] १ वह महसूल जो घाटों आदि पर वसूल किया जाता है। २ दहेज। दायजा। ३ बाजी। शर्त। ४ किराया। भाड़ा। ५ मूल्य। दाम। ६ वह धन जो किसी कार्य्य के बदले में लिया या दिया जाय। फीस।

शुश्रूषा–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० शुश्रूष्य] १ सेवा। टहल। परिचर्य्या। २ खुशामद।

शुष्क–वि० [सं०] [भाव० शुष्कता] १ आर्द्रता-रहित। सूखा। खुश्क। २ नीरस। रसहीन। ३ जिसमें मन न लगता हो। ४ निरर्थक। व्यर्थ। ५ स्नेह आदि से रहित। निर्मोही।

शूक–संज्ञा पु० [सं०] १ अन्न की बाल या सीका। २ यव। जौ। ३ एक प्रकार का कीड़ा।

शूकर–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० शूकरी] १ सूअर। वाराह। २ विष्णु का तीसरा अवतार। वाराह अवतार।

शूकरक्षेत्र–संज्ञा पु० [सं०] एक तीर्थ जो नैमिषारण्य के पास है। (आज-कल का सोरों।)

शूची–संज्ञा स्त्री० [सं० सूची] सूई।

शूद्र–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० शूद्रा, शूद्री] १ आर्यों के चार वर्णों में से चौथा और अंतिम वर्ण। इनका कार्य्य अन्य तीनों वर्णों की सेवा करना माना गया है। २ शूद्र जाति का पुरुष। ३ खराब। निकृष्ट।

शूद्रक–संज्ञा पु० [सं०] १ विदिशा नगरी का एक राजा और 'मृच्छकटिक' का रचयिता महाकवि। २ शूद्र जाति का एक राजा। शबूक।

शूद्रता–संज्ञा स्त्री० [सं०] शूद्र का भाव या धर्म्म। शूद्रत्व। शूद्रपन।

शूद्रद्युति–संज्ञा पुं० [सं०] नीला रंग।
शूद्री–संज्ञा स्त्री० [सं०] शूद्र की स्त्री।
शूना–संज्ञा स्त्री० [सं०] गृहस्थ के घर के वे स्थान जहाँ नित्य अनजान में अनेक जीवों की हत्या हुआ करती है। जैसे—चूल्हा, चक्की, पानी का बरतन आदि।
शून्य–संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० शून्यता] १. खाली स्थान। २. आकाश। ३. एकांत स्थान। ४. विंदु। बिंदी। सिफ़र। ५. अभाव। कुछ न होना। ६. स्वर्ग। ७. विष्णु। ८. ईश्वर।
वि० १. जिसके अंदर कुछ न हो। खाली। २. निराकार। ३. विहीन। रहित।
शून्यवाद–संज्ञा पुं० [सं०] बौद्धों का एक सिद्धांत।
शून्यवादी–संज्ञा पुं० [सं० शून्यवादिन्] १. वह व्यक्ति जो ईश्वर और जीव के अस्तित्व में विश्वास न करता हो। २. बौद्ध। ३. नास्तिक।
शूप–संज्ञा पुं० [सं० शूर्प] सूप जिसमें अन्न आदि पछोरा जाता है। पटकनी।
शूर–संज्ञा पुं० [सं०] १. वीर। बहादुर। सूरमा। २. योद्धा। सिपाही। ३. सूर्य्य। ४. सिंह। ५. कृष्ण के पितामह का नाम। ६. विष्णु।
शूरता–संज्ञा स्त्री० [सं०] बहादुरी। वीरता।
शूरताई*–संज्ञा स्त्री० दे० "शूरता"।
शूरवीर–संज्ञा पुं० [सं०] वह जो अच्छा वीर और योद्धा हो। सूरमा।
शूरसेन–संज्ञा पुं० [सं०] १. मथुरा के एक प्रसिद्ध राजा जो कृष्ण के पितामह थे। २. मथुरा प्रदेश का प्राचीन नाम।
शूरा*†–संज्ञा पुं० [सं० शूर] सामंत। वीर।
संज्ञा पुं० [सं० सूर्य्य] सूर्य्य।
शूर्प–संज्ञा पुं० दे० "शूप"।
शूर्पणखा–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रसिद्ध राक्षसी जो रावण की बहन थी। वन में लक्ष्मण ने इसके नाक और कान काटे थे।
शूर्पनखा–संज्ञा स्त्री० दे० "शूर्पणखा"।
शूर्पारक–संज्ञा पुं० [सं०] बंबई प्रान्त के सोपारा नाम स्थान का प्राचीन नाम।
शूल–संज्ञा पुं० [सं०] १. प्राचीन काल का बरछे के आकार का एक अस्त्र। २. सूली, जिससे प्राचीन काल में प्राण-दंड दिया जाता था। ३. दे० "त्रिशूल"। ४. बड़ा, लंबा और नुकीला काँटा। ५. वायु के प्रकोप से होनेवाला एक प्रकार का बहुत तेज दर्द। ६. कौंच। टीस। ७. पीड़ा। दुःख। दर्द। ८. ज्योतिष में एक अशुभ योग। ९. छड़। सलाख। सींक। १०. मृत्यु। मौत। ११. झंडा। पताका।
वि० काँटे की तरह नोकवाला। नुकीला।
शूलधारी–संज्ञा पुं० [सं० शूलधारिन्] महादेव।
शूलना*–क्रि० अ० [हिं० शूल + ना (प्रत्य०)] १. शूल के समान गड़ना। २. दुःख देना।
शूलपाणि–संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।
शूलहस्त–संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।
शूलि–संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।
संज्ञा स्त्री० दे० "सूली"।
शूलिक–संज्ञा पुं० [सं०] सूली देनेवाला।
शूली–संज्ञा पुं० [सं० शूलिन्] १. शिव। महादेव। २. वह जिसे शूल रोग हुआ हो। ३. एक नरक का नाम।
संज्ञा स्त्री० दे० "सूली"।
संज्ञा स्त्री० [सं० शूल] पीड़ा। शूल।
शृंखल–संज्ञा पुं० [सं०] १. मेखला। २. हाथी आदि के बाँधने की लोहे की जंजीर। साँकल। सिक्कड़। ३. हथकड़ी-बेड़ी।
शृंखलता–संज्ञा स्त्री० [सं०] सिलसिलेवार या क्रमबद्ध होने का भाव।
शृंखला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. क्रम। सिलसिला। २. जंजीर। साँकल। ३. कटि-बंध। मेखला। ४. करधनी। तागड़ी। ५. श्रेणी। कतार। ६. एक प्रकार का अलंकार जिसमें कथित पदार्थों का वर्णन सिलसिलेवार किया जाता है।
शृंखलाबद्ध–वि० [सं०] १. सिलसिलेवार। २. जो शृंखला से बाँधा हुआ हो।
शृंग–संज्ञा पुं० [सं०] १. पर्वत का ऊपरी भाग। शिखर। चोटी। २. गौ, भैंस,

खपरी आदि के सिर के सींग। ३ कँगूरा। ४. सिंगी बाजा। ५ कमल। पद्म। दे० "ऋष्यशृंग"।

शृंगपुर—संज्ञा पु० दे० "शृंगवेरपुर"।

शृंगवेरपुर—संज्ञा पु० [सं०] एक प्राचीन नगर जहाँ रामचंद्र के समय निषाद राजा गुह की राजधानी थी।

शृंगार—संज्ञा पु० [सं०] १ नौ रसों में से एक रस जो सबसे अधिक प्रसिद्ध और प्रधान है। इसमें नायक-नायिका के परस्पर मिलन के कारण होनेवाले सुख की परिपुष्टता दिखलाई जाती है। यह दो प्रकार का होता है—एक संयोग और दूसरा वियोग या विप्रलंभ। २. स्त्रियों का वस्त्राभूषण आदि से शरीर को सुशोभित करना। ३ सजावट। बनाव-चुनाव। ४ भक्ति का एक भाव या प्रकार जिसमें भक्त अपने आपको पत्नी के रूप में और अपने इष्टदेव को पति के रूप में मानते हैं। ५ वह जिससे किसी चीज की शोभा हो।

शृंगारना—क्रि० स० [हिं० शृंगार+ना (प्रत्य०)] शृङ्गार करना। सजाना। सँवारना।

शृंगारहाट—संज्ञा स्त्री० [सं० शृंगार+हिं० हाट] वह बाजार जहाँ वेश्याएँ रहती हों।

शृंगारिक—वि० [सं०] शृंगार-संबंधी।

शृंगारिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्रग्विणी छंद।

शृंगारित—वि० [सं०] जिसका शृंगार किया गया हो। सजाया हुआ।

शृंगारिया—संज्ञा पु० [सं० शृंगार+इया (प्रत्य०)] १ वह जो देवताओं आदि का शृंगार करता हो। २ बहुरूपिया।

शृंगि—संज्ञा पु० [सं०] सिंगी मछली।

संज्ञा पु० [सं० शृंगिन्] सींगवाला जानवर।

शृंगी—संज्ञा पु० [सं० शृंगिन्] १ हाथी। हस्ती। २ वृक्ष। पेड़। ३ पर्वत। पहाड़। ४ एक ऋषि जो शमीक के पुत्र थे। इन्हीं के शाप से अभिमन्यु के पुत्र परीक्षित को तक्षक ने डसा था। ५ ऋषभक नामक अष्टवर्गीय ओषधि। ६ सींगवाला पशु। ७ सींग का बना हुआ एक प्रकार का बाजा, जिसे कनफटे बजाते हैं। ८ महादेव। शिव।

शृंगीगिरि—संज्ञा पु० [सं०] एक प्राचीन पर्वत जिस पर शृंगी ऋषि तप करते थे।

शृग*—संज्ञा पु० दे० "शृगाल"।

शृगाल—संज्ञा पु० [सं०] गीदड़। सियार।

शृष्टि—संज्ञा पु० [सं०] कंस के एक भाई।

शेख—संज्ञा पु० [अ०] [स्त्री० शेखानी] १ पैगंबर मुहम्मद के वंशजों की उपाधि। २ मुसलमानों के चार वर्गों में से सबसे पहला वर्ग। ३. इसलाम धर्म का आचार्य्य।

शेख*—संज्ञा पु० दे० "शेष"।

शेखचिल्ली—संज्ञा पु० [अ०+हिं०] १ एक कल्पित मूर्ख व्यक्ति। २ बड़े बड़े मंसूबे बाँधनेवाला।

शेखर—संज्ञा पु० [सं०] १ शीर्ष। सिर। माथा। २ मुकुट। किरीट। ३ सिरा। चोटी। शिखर। (पर्वत आदि का) ४ सबसे श्रेष्ठ या उत्तम व्यक्ति या वस्तु। ५ टगण के पाँचवें भेद की संज्ञा। (।।ऽ।)

शेखावत—संज्ञा पु० [अ० शेख] कछवाहे राजपूतों की एक शाखा।

शेखी—संज्ञा स्त्री० [अ० शेख] १ गर्व। अहंकार। घमंड। २ शान। ऐंठ। अकड़। ३ डींग।

मुहा०—शेखी बघारना, हाँकना या मारना=बढ़ बढ़कर बातें करना। डींग मारना।

शेखीबाज—वि० [फा० शेखी+फा० बाज] १ अभिमानी। २ डींग मारनेवाला व्यक्ति।

शेर—संज्ञा पु० [फा०] [स्त्री० शेरनी] १. बिल्ली की जाति का एक भयंकर प्रसिद्ध हिंसक पशु। व्याघ्र। नाहर।

मुहा०—शेर होना=निर्भय और धृष्ट होना।

२ अत्यंत वीर और साहसी पुरुष।

संज्ञा पु० [अ०] उर्दू कविता के दो चरण।

शेर-दहाँ—वि० [फा०] १ जिसका मुँह शेर का सा हो। २ जिसके छोरों पर शेर का मुँह बना हो।

संज्ञा पु० १ वह जिसकी घुंडी शेर के मुँह के आकार की बनी हो। २ वह मकान

जो आगे चौड़ा और पीछे सँकरा हो।
शेर-पंजा—संज्ञा पुं० [फ़ा० शेर+हिं० पंजा] शेर के पंजे के आकार का एक अस्त्र। बघनहा।
शेर बबर—संज्ञा पुं० [फ़ा०] सिंह। केसरी।
शेरवानी—संज्ञा स्त्री० [देश०] अँगरेजी ढंग की काट का एक प्रकार का अंगा।
शेष—संज्ञा पुं० [सं०] १. बची हुई वस्तु। बाक़ी। २. वह शब्द जो किसी वाक्य का अर्थ करने के लिये ऊपर से लगाया जाय। अध्याहार। ३. घटाने से बची हुई संख्या। बाक़ी। ४. समाप्ति। अंत। खातमा। ५. पुराणानुसार सहस्र फनों के सर्पराज जिनके फनों पर पृथ्वी ठहरी है। ६. लक्ष्मण। ७ बलराम। ८ दिग्गजों में से एक। ९. परमेश्वर। १०. पिंगल में टगण के पाँचवें भेद का नाम। ११. छप्पय छंद के पचीसवें भेद का नाम।
वि० १. बचा हुआ। बाकी। २. अंत को पहुँचा हुआ। समाप्त। खतम।
शेषधर—संज्ञा पुं० [सं०] शिवजी।
शेषनाग—संज्ञा पुं० दे० "शेष" ५.।
शेषर*†—संज्ञा पुं० दे० "शेखर"।
शेषराज—संज्ञा पुं० [सं०] दो मगण का एक वर्णवृत्त। विद्युल्लेखा।
शेषवत—संज्ञा पुं० [सं०] न्याय में कार्य्य को देखकर कारण का निश्चय।
शेषशायी—संज्ञा पुं० [सं० शेषशायिन्] विष्णु।
शेषांश—संज्ञा पुं० [सं०] १. बचा हुआ अंश। अवशिष्ट भाग। २. अंतिम अंश।
शेषाचल—संज्ञा पुं० [सं०] दक्षिण का एक पर्वत।
शेषोक्त—वि० [सं०] अंत में कहा हुआ।
शैतान—संज्ञा पुं० [अ०] १. तमोगुण-मय देवता जो मनुष्यों को बहकाकर धर्म-मार्ग से भ्रष्ट करता है।
मुहा०—शैतान की आँत=बहुत लंबी वस्तु।
२. दुष्ट। देवयोनि। भूत। प्रेत। ३. दुष्ट।
शैतानी—संज्ञा स्त्री० [अ० शैतान] दुष्टता। शरारत। पाजीपन।
वि० १. शैतान-संबंधी। शैतान का। २. नटखटी से भरा। दुष्टतापूर्ण।
शैथिल्य—संज्ञा पुं० [सं०] शिथिलता।
शैल—संज्ञा पुं० [सं०] १. पर्वत। पहाड़। २. चट्टान। ३. शिलाजीत।
शैलकुमारी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पार्वती।
शैलगंगा—संज्ञा स्त्री० [सं०] गोवर्द्धन पर्वत की एक नदी।
शैलजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पार्वती। दुर्गा।
शैलतटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पहाड़ की तराई।
शैलनंदिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पार्वती।
शैलपुत्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पार्वती। २. नौ दुर्गाओं में से एक। ३. गंगा नदी।
शैलसुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] पार्वती।
शैली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चाल। ढब। ढंग। २. प्रणाली। तर्ज़। तरीक़ा। ३. रीति। प्रथा। रस्म। रवाज। ४. वाक्य-रचना का प्रकार।
शैलूष—संज्ञा पुं० [सं०] १. नाटक खेलने-वाला। नट। २. धूर्त्त।
शैलेंद्र—संज्ञा पुं० [सं०] हिमालय।
शैलेय—वि० [सं०] १. पत्थर का। पथरीला। २. पहाड़ी।
संज्ञा पुं० १. छरीला। २. शिलाजीत।
शैव—वि० [सं०] शिव-संबंधी। शिव का।
संज्ञा पुं० १. शिव का अनन्य उपासक। २. पाशुपत अस्त्र। ३. धतूरा।
शैवलिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी।
शैवाल—संज्ञा पुं० [सं०] सिवार। सेवार।
शैव्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] अयोध्या के सत्य-*व्रती राजा हरिश्चंद्र की रानी का नाम।*
शैशव—वि० [सं०] १. शिशु-संबंधी। बच्चों का। २. बाल्यावस्था-संबंधी।
संज्ञा पुं० १. बचपन। २. बच्चों का सा व्यवहार। लड़कपन।
शैशुनाग—संज्ञा पुं० [सं०] मगध के प्राचीन राजा शिशुनाग का वंशज।
शोक—संज्ञा पुं० [सं०] प्रिय व्यक्ति के अभाव या पीड़ा से उत्पन्न क्षोभ। रंज। ग़म।
शोकहार—संज्ञा पुं० [सं०] तीन मात्राओं के एक छंद का नाम। शुभगी।

शोख-वि० [फा०][सज्ञा शोखी] १ ढीठ। धृष्ट। २ शरीर। नटखट। ३ चचल। चपल। ४. गहरा और चमकदार। (रग)

शोच-सज्ञा पु० [स० शोचन] १ दुख। रज। अफसोस। २. चिंता। फिक्र।

शोचनीय-वि० [स०] १ जिसकी दशा देखकर दुख हो। २ बहुत हीन या बुरा।

शोण-सज्ञा पु० [स०] १. लाल रग। २ लाली। अरुणता। ३ अग्नि। आग। ४ रक्त। ५ एक नद का नाम। सोन।

शोणित-वि० [स०] लाल। रक्त वर्ण का। सज्ञा पु० रक्त। रुधिर। खून।

शोथ-सज्ञा पु० [स०] किसी अग का फूलना। सूजन। वरम।

शोध-सज्ञा पु० [स०] १. शुद्धि-सस्कार। सफाई। २ ठीक किया जाना। दुरुस्ती। ३ चुकता होना। अदा होना। ४ जाँच। परीक्षा। ५ खोज। ढूँढ। तलाश।

शोधक-सज्ञा पु० [स०] १ शोधनेवाला। २ सुधार करनेवाला। सुधारक। ३ ढूँढनेवाला। खोजनेवाला।

शोधन-सज्ञा पु० [स०] [वि० शोधित, शोधनीय, शोध्य] १ शुद्ध करना। साफ करना। २ दुरुस्त करना। ठीक करना। सुधारना। ३. धातुओ का औषध रूप मे व्यवहार करने के लिये सस्कार। ४ छान-बीन। जाँच। ५ ढूँढना। तलाश करना। ६ ऋण चुकाना। ७ प्रायश्चित्त। ८ साफ करना। ९ दस्त लाकर कोठा साफ करना। विरेचन।

शोधना-क्रि० स० [स० शोधन] १ शुद्ध करना। साफ करना। २ दुरुस्त करना। ठीक करना। सुधारना। ३ औषध के लिये धातु का सस्कार करना। ४ ढूँढना।

शोधवाना-क्रि० स० [स० शोधना का प्रे०] १ शुद्ध कराना। २ तलाश कराना।

शोबदा-सज्ञा पु० [अ०] जादू। इद्रजाल।

शोभन-वि० [स०] १ शोभायुक्त। सुदर २ सुहावना। ३ उत्तम। ४ शुभ। सज्ञा पु० १ अग्नि। २ शिव। ३ इष्टि-योग। ४. २४ मात्राओ का एक छद। सिंहिका। ५ आभूषण। गहना। ६ मगल। कल्याण। ७ दीप्ति। सौंदर्य।

शोभना-सज्ञा स्त्री० [स०] १ सुदरी स्त्री। २ हल्दी। हरिद्रा।

*क्रि० स० [स० शोभन] शोभित होना।

शोभांजन-सज्ञा पु० [स०] सहिजन।

शोभा-सज्ञा स्त्री० [स०] १. दीप्ति। काति। चमक। २ छवि। सुदरता। छटा। ३ सजावट। ४. वर्ण। रग। ५ बीस अक्षरो का एक वर्णवृत्त।

शोभायमान-वि० [स०] सोहता हुआ। सुदर।

शोभित-वि० [स०] १. सुदर। सजीला। २ अच्छा लगता हुआ।

शोर-सज्ञा पु० [फा०] १ जोर की आवाज। गुल-गपाडा। कोलाहल। २ धूम। प्रसिद्धि।

शोरबा-सज्ञा पु० [फा०] किसी उबाली हुई वस्तु का पानी। जूस। रसा।

शोरा-सज्ञा पु० [फा० शोर] एक प्रकार का क्षार जो मिट्टी मे निकलता है।

शोला-सज्ञा पु० [अ०] आग की लपट।

शोशा-सज्ञा पु० [फा०] १ निकली हुई नोक। २ अद्भुत या अनोखी बात।

शोष-सज्ञा पु० [स०] १ सूखने का भाव। खुश्क होना। २ शरीर का घुलना या क्षीण होना। ३ राजयक्ष्मा का भेद। क्षयी। ४ बच्चो का सुखडी रोग।

शोषक-सज्ञा पु० [स०][स्त्री० शोषिका] १ जल, रस या तरी खीचनेवाला। सोखनेवाला। २ सुखानेवाला। ३ क्षीण करनेवाला।

शोषण-सज्ञा पु० [स०] [वि० शोषी, शोषित, शोषणीय] १ जल या रस खीचना। सोखना। २ सुखाना। खुश्क करना। ३ घुलाना। क्षीण करना। ४ नाश करना। ५ कामदेव के एक बाण का नाम।

शोहदा-सज्ञा पु० [अ०] १ व्यभिचारी। लपट। २ गुडा। बदमाश।

शोहरत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ नामवरी।

ख्याति। प्रसिद्धि। २ धूम। जनरव।
शोहरा—संज्ञा पुं० दे० "शोहरत"।
शौंडिक—संज्ञा पुं० [सं०] कलवार।
शौक़—संज्ञा पुं० [अ०] १. किसी वस्तु की प्राप्ति या भोग के लिये होनेवाली तीव्र अभिलाषा। प्रबल लालसा।
मुहा०—शौक़ करना=किसी वस्तु या पदार्थ का भोग करना। शौक़ से=प्रसन्नतापूर्वक।
२. आकांक्षा। लालसा। हौसला। ३. व्यसन। चसका। ४. प्रवृत्ति। झुकाव।
शौकत—संज्ञा स्त्री० दे० "शान"।
शौक़ीन—संज्ञा पुं० [अ० शौक़+ईन (प्रत्य०)] १. वह जिसे किसी बात का बहुत शौक़ हो। शौक़ करनेवाला। २. सदा बना-ठना रहनेवाला।
शौक़ीनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० शौकीन+ई (प्रत्य०)] शौकीन होने का भाव या काम।
शौच—संज्ञा पुं० [सं०] १. शुद्धता। पवित्रता। २. शास्त्रीय परिभाषा में, सब प्रकार से शुद्धता-पूर्वक जीवन व्यतीत करना। ३. वे कृत्य जो प्रातःकाल उठकर सबसे पहले किए जाते हैं। ४. पाखाने जाना। टट्टी जाना। ५. दे० "अशौच"।
शौत—संज्ञा स्त्री० दे० "सौत"।
शौध*—वि० [सं० शुद्ध] निर्मल। पवित्र।
शौनक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि।
शौरसेन—संज्ञा पुं० [सं०] आधुनिक ब्रज-मंडल का प्राचीन नाम।
शौरसेनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रसिद्ध प्राचीन प्राकृत भाषा जो शौरसेन प्रदेश में बोली जाती थी। २. एक प्रसिद्ध प्राचीन अपभ्रंश भाषा जो नागर भी कहलाती थी।
शौर्य्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. शूर का भाव। शूरता। वीरता। बहादुरी। २. नाटक में आरभटी नाम की वृत्ति।
शौहर—संज्ञा पुं० [फ़ा०] स्त्री का पति। स्वामी। खाविंद। मालिक।
श्मशान—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ मुरदे जलाए जाते हों। मसान। मरघट।
श्मशानपति—संज्ञा पुं० [सं०] शिव।
श्मश्रु—संज्ञा पुं० [सं०] मुँह पर के बाल। दाढ़ी मूछ।
श्याम—संज्ञा पुं० [सं०] १. श्रीकृष्ण का एक नाम। २. मेघ। बादल। ३. प्राचीन काल का एक देश जो कन्नौज के पश्चिम ओर था। ४. स्याम नामक देश।
वि० १. काला और नीला मिला हुआ (रंग)। २. काला। साँवला।
श्यामकर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] वह घोड़ा जिसका सारा शरीर सफ़ेद और एक कान काला हो।
श्याम-जीरा—संज्ञा पुं० [सं० श्याम+जीरक] १. एक प्रकार का धान। २. काला जीरा।
श्याम टीका—संज्ञा पुं० [सं० श्याम+हिं० टीका] वह काला टीका जो बच्चों को नजर से बचाने के लिये लगाया जाता है।
श्यामता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. श्याम का भाव या धर्म्म। २. कालापन। साँवला-पन। ३. मलिनता। उदासी।
श्यामल—वि० [सं०] [भाव० श्यामलता] जिसका वर्ण कृष्ण हो। काला। साँवला।
श्यामसुंदर—संज्ञा पुं० [सं०] १. श्रीकृष्ण का एक नाम। २. एक प्रकार का वृक्ष।
श्यामा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. राधा। राधिका। २. एक गोपी का नाम। ३. एक प्रसिद्ध काला पक्षी। इसका स्वर बहुत ही मधुर और कोमल होता है। ४. सोलह वर्ष की तरुणी। ५. काले रंग की गाय। ६. तुलसी। सुरसा क्षुप। ७. कोयल नामक पक्षी। ८. यमुना। ९. रात। रात्रि। १०. स्त्री। औरत।
वि० श्याम रंगवाली। काली।
श्याल—संज्ञा पुं० [सं०] १. पत्नी का भाई। साला। २. बहन का पति। बहनोई।
संज्ञा पुं० [सं० शृगाल] गीदड़। सियार।
श्येन—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिकरा या बाज पक्षी। २. दोहे के चौथे भेद का नाम।
श्येनिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] ११ अक्षरों का एक प्रकार का वृत्त। श्येनी।
श्येनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दे० "श्येनिका"। २. मार्कंडेय पुराण के अनुसार कश्यप की

एक कन्या जो पक्षियों की जननी थी।
श्योनाक–संज्ञा पुं० [सं०] १ सोनापाढ़ा वृक्ष। २ लोध्र। लोध।
श्रद्धा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बड़े के प्रति मन में होनेवाला आदर और पूज्य भाव। २ वेदादि शास्त्रों और आप्त पुरुषों के वचनों पर विश्वास। भक्ति। आस्था। ३ कर्दम मुनि की कन्या जो अंगिरा ऋषि की पत्नी थी।
श्रद्धालु–वि० [सं०] जिसके मन में श्रद्धा हो। श्रद्धायुक्त। श्रद्धावान्।
श्रद्धावान्–संज्ञा पुं० [सं० श्रद्धावत्] १ श्रद्धायुक्त। श्रद्धालु पुरुष। २ धर्मनिष्ठ।
श्रद्धास्पद–वि० [सं०] जिसके प्रति श्रद्धा की जा सके। श्रद्धेय। पूजनीय।
श्रद्धेय–वि० [सं०] श्रद्धास्पद।
श्रम–संज्ञा पुं० [सं०] १ परिश्रम। मेहनत। मशक्कत। २ थकावट। क्लांति। ३ साहित्य में संचारी भावों में से एक। कोई कार्य्य करते करते संतुष्ट और शिथिल हो जाना। ४ क्लेश। दुःख। तकलीफ़। ५ दौड़ धूप। परेशानी। ६ पसीना। स्वेद। ७ व्यायाम। कसरत। ८ प्रयास।
श्रमकण–संज्ञा पुं० [सं०] पसीने की बूँदें।
श्रमजल–संज्ञा पुं० [सं०] पसीना। स्वेद।
श्रमजित–वि० [सं० श्रम+जित्] जो बहुत परिश्रम करने पर भी न थके।
श्रमजीवी–वि० [सं० श्रमजीविन्] मेहनत करके पेट पालनेवाला।
श्रमण–संज्ञा पुं० [सं०] १ बौद्ध मतावलंबी सन्यासी। २ यति। मुनि। ३ मजदूर।
श्रमबिंदु–संज्ञा पुं० [सं०] पसीना।
श्रमवारि–संज्ञा पुं० [सं०] पसीना।
श्रम-विभाग–संज्ञा पुं० [सं०] किसी कार्य्य के भिन्न भिन्न अंगों के संपादन के लिये अलग अलग व्यक्तियों की नियुक्ति।
श्रमसीकर–संज्ञा पुं० [सं०] पसीना।
श्रमित–वि० [सं० श्रम] जो श्रम से शिथिल हो गया हो। थका हुआ। श्रांत।
श्रमी–संज्ञा पुं० [सं० श्रमिन्] १ मेहनती। परिश्रमी। २. श्रमजीवी। मजदूर।
श्रवण–संज्ञा पुं० [सं०] १ वह इंद्रिय जिससे शब्द का ज्ञान होता है। कान। कर्ण। २ शास्त्रों में लिखी हुई बातें सुनना और उनके अनुसार कार्य्य करना अथवा देवताओं आदि के चरित्र सुनना। ३ एक प्रकार की भक्ति। ४ वैश्य तपस्वी अंधक मुनि के पुत्र का नाम। ५ बाईसवाँ नक्षत्र, जिसका आकार तीर का सा है।
श्रवन*–संज्ञा पुं० [सं० श्रवण] श्रवण। कान।
श्रवना*–क्रि० स० [सं० स्राव] बहना। चूना। रसना।
क्रि० स० गिराना। बहाना।
श्रवित*–वि० [सं० स्राव] बहा हुआ।
श्रव्य–वि० [सं०] जो सुना जा सके। सुनने योग्य। जैसे—संगीत।
यौ०—श्रव्य काव्य=वह काव्य जो केवल सुना जा सके, अभिनय आदि के रूप में देखा न जा सके।
श्रांत–वि० [सं०] १ जितेंद्रिय। २ शांत। ३ परिश्रम से थका हुआ। ४ दुःखी।
श्रांति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ परिश्रम। मेहनत। २ थकावट। ३ विश्राम।
श्राद्ध–संज्ञा पुं० [सं०] १ वह कार्य्य जो श्रद्धापूर्वक किया जाय। २ वह कृत्य जो शास्त्र के विधान के अनुसार पितरों के उद्देश्य से किया जाता है। जैसे—तर्पण, पिंडदान तथा ब्राह्मणों को भोजन कराना। ३ पितृ-पक्ष।
श्राप–संज्ञा पुं० दे० "शाप"।
श्रावक–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० श्राविका] १ बौद्ध साधु या सन्यासी। २ जैन धर्म्म का अनुयायी। जैनी। ३ नास्तिक।
वि० श्रवण करनेवाला। सुननेवाला।
श्रावग–संज्ञा पुं० दे० "श्रावक"।
श्रावगी–संज्ञा पुं० [सं० श्रावक] जैनी।
श्रावण–संज्ञा पुं० [सं०] आषाढ़ के बाद और भादों के पहले का महीना। सावन।
श्रावणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] सावन मास की पूर्णमासी। इस दिन प्रसिद्ध त्योहार

'रक्षा-बंधन' तथा पूजन आदि होते हैं।
श्रावन*–क्रि० स० [हिं० स्रवना] गिराना।
श्रावस्ती–संज्ञा स्त्री० [सं०] उत्तर कोशल में गंगा के तट की एक प्राचीन नगरी, जो अब सहेत-महेत कहलाती है।
श्राव्य–वि० [सं०] सुनने के योग्य। सुनने लायक। श्रोतव्य।
श्रिय–संज्ञा स्त्री० [सं० श्रिया] मंगल। कल्याण संज्ञा स्त्री० [सं० श्री] शोभा। प्रभा।
श्री–संज्ञा स्त्री [सं०] १. विष्णु की पत्नी, लक्ष्मी। कमला। २. सरस्वती। ३. कमल। पद्म। ४. सफ़ेद चंदन। संदल। ५. धर्म्म, अर्थ और काम। त्रिवर्ग। ६. संपत्ति। धन। दौलत। ७. विभूति। ऐश्वर्य। ८. कीर्ति। यश। ९. प्रभा। शोभा। १०. कांति। चमक। ११. एक प्रकार का पद-चिह्न। १२. स्त्रियों का बेंदी नामक आभूषण। ३. आदर-सूचक शब्द जो नाम के आदि में रखा जाता है। संज्ञा पु० १. वैष्णवों का एक संप्रदाय। २. एक एकाक्षरा वृत्त का नाम। ३. संपूर्ण जाति का एक राग।
श्रीकंठ–संज्ञा पुं० [सं०] शिव। महादेव।
श्रीकांत–संज्ञा पुं० [स०] विष्णु।
श्रीकृष्ण–संज्ञा पु० दे० "कृष्ण" १.।
श्रीक्षेत्र–संज्ञा पु० [सं०] जगन्नाथपुरी।
श्रीखंड–संज्ञा पु० [सं०] १. हरि-चंदन। मलयागिरि चंदन। २. दे० "शिखरण"।
श्रीखंड शैल–संज्ञा पु० [सं०] मलय पर्वत।
श्रीगदित–संज्ञा पुं० [सं०] उपरूपक के अठारह भेदों में से एक। श्रीरासिका।
श्रीदाम–संज्ञा पु० [सं० श्रीदामन्] श्रीकृष्ण के एक बाल-सखा का नाम। सुदामा।
श्रीधर–संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।
श्रीनिकेतन–संज्ञा पुं० [स०] १. वैकुंठ। २. लाल कमल। ३. स्वर्ण। सोना।
श्रीनिवास–संज्ञा पुं० [स०] १. विष्णु। २. वैकुंठ।
श्रीपंचमी–संज्ञा स्त्री० [सं०] वसंत पंचमी।
श्रीपति–संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु। नारायण। हरि। २. रामचंद्र। ३. कृष्ण। ४. कुबेर। ५. नृप। राजा।
श्रीपाद–संज्ञा पुं० [सं०] पूज्य। श्रेष्ठ।
श्रीफल–संज्ञा पुं० [सं०] १. बेल। २. नारियल। ३. खिरनी। ४. आँवला। ५. धन-संपत्ति।
श्रीमंत–संज्ञा पुं० [सं० सीमंत] १. एक प्रकार का शिरोभूषण। २. स्त्रियों के सिर के बीच की माँग।
वि० श्रीमान्। धनवान्। धनी।
श्रीमत्–वि० [सं०] १. धनवान्। अमीर। २. जिसमें श्री या शोभा हो। ३. सुंदर।
श्रीमती–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. "श्रीमान्" का स्त्रीलिंग। २. लक्ष्मी। ३. राधा।
श्रीमान्–संज्ञा पुं० [सं० श्रीमत्] १. आदर-सूचक शब्द जो नाम के आदि में रखा जाता है। श्रीयुत। २. धनवान्। अमीर।
श्रीमाल–संज्ञा स्त्री० [सं० श्री + माला] गले में पहनने का एक आभूषण। कंठ-श्री।
श्रीमुख–संज्ञा पुं० [सं०] १. शोभित या सुंदर मुख। २. वेद। ३. सूर्य्य।
श्रीयुक्त–वि० [सं०] १. जिसमें श्री या शोभा हो। २. बड़े आदमियों के लिए एक आदरसूचक विशेषण।
श्रीयुत–वि० दे० "श्रीयुक्त"।
श्रीरंग–संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।
श्रीरमण–संज्ञा पुं० [स०] विष्णु।
श्रीवत्स–संज्ञा पु० [सं०] १. विष्णु। २. विष्णु के वक्षस्थल पर का एक चिह्न, जो भृगु के चरण-प्रहार का चिह्न माना जाता है।
श्रीवास, श्रीवासक–संज्ञा पु० [सं०] १. गंधाबिरोजा। २. देवदारु। ३. चंदन। ४. कमल। ५. विष्णु। ६. शिव।
श्रीहत–वि० [सं०] १. शोभा-रहित। २. निस्तेज। निष्प्रभ। प्रभाहीन।
श्रीहर्ष–संज्ञा पुं० [सं०] १. नैषध काव्य के रचयिता संस्कृत के प्रसिद्ध पंडित और कवि। २. रत्नावली, नागानंद और प्रियदर्शिका नाटकों के रचयिता जो संभवतः कान्यकुब्ज के प्रसिद्ध सम्राट् हर्षवर्द्धन थे।

श्रुत–वि० [सं०] १ सुना हुआ। २ जिसे परंपरा से सुनते आते हों। ३ प्रसिद्ध।

श्रुतकीर्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] राजा जनक के भाई कुशध्वज की कन्या जो शत्रुघ्न को व्याही थी।

श्रुति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ श्रवण करना। सुनना। २ सुनने की इंद्रिय। कान। ३ सुनी हुई बात। ४ शब्द। ध्वनि। आवाज़। ५ खबर। शोहरत। किंवदंती। ६ वह पवित्र ज्ञान जो सृष्टि के आदि में ब्रह्मा या कुछ महर्षियों द्वारा सुना गया और जिसे परंपरा से ऋषि सुनते आए। वेद। निगम। ७ चार की संख्या। (वेद चार होने से)। ८ अनुप्रास का एक भेद। ९ त्रिभुज के समकोण के सामने की भुजा। १० नाम। ११ विष्णु।

श्रुतिकटु–संज्ञा पुं० [सं०] काव्य में कठोर और कर्कश वर्णों का व्यवहार। (दोष)

श्रुतिपथ–संज्ञा पुं० [सं०] १ श्रवण-मार्ग। श्रवणेंद्रिय। २ वेद विहित मार्ग। सन्मार्ग।

श्रुत्यनुप्रास–संज्ञा पुं० [सं०] वह अनुप्रास जिसमें एक ही स्थान से उच्चरित होनेवाले व्यंजन दो या अधिक बार आवें।

श्रुवा–संज्ञा पुं० दे० स्रुवा।

श्रेणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पंक्ति। पाँती। कतार। २ क्रम। शृंखला। परंपरा। सिलसिला। ३ दल। समूह। ४ सेना। फौज। ५ एक ही कारबार करनेवालों की मंडली। कंपनी। ६ सिक्कड़ी। जंजीर। ७ सीढ़ी। ज़ीना।

श्रेणीबद्ध–वि० [सं०] पंक्ति के रूप में स्थित। कतार बाँधे हुए।

श्रेय–वि० [सं० श्रेयस्] [स्त्री० श्रेयसी] १ अधिक अच्छा। बेहतर। २ श्रेष्ठ। उत्तम। बहुत अच्छा। ३ मंगलदायक। शुभ। संज्ञा पुं० १ अच्छापन। २ कल्याण। मंगल। ३ धर्म। पुण्य। सदाचार।

श्रेयस्कर–वि० [सं०] शुभदायक।

श्रेष्ठ–वि० [सं०] [स्त्री० श्रेष्ठा] १ सर्वोत्तम। उत्कृष्ट। बहुत अच्छा। २ मान्य। प्रधान। ३ पूज्य। बड़ा। ४ वृद्ध।

श्रेष्ठता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ उत्तमता। २ गुरुता। बड़ाई। बड़प्पन।

श्रेष्ठी–संज्ञा पुं० [सं०] व्यापारियों या वणिकों का मुखिया। महाजन। सेठ।

श्रोत–संज्ञा पुं० [सं० श्रोतस्] श्रवणेंद्रिय। कान।

श्रोता–संज्ञा पुं० [सं० श्रोतृ] सुननेवाला।

श्रोत्र–संज्ञा पुं० [सं०] १ श्रवणेंद्रिय। कान। २ वेदज्ञान।

श्रोत्रिय–संज्ञा पुं० [सं०] १ वेद-वेदांग में पारगत। २ ब्राह्मणों का एक भेद।

श्रोत्री–संज्ञा पुं० दे० श्रोत्रिय।

श्रोन*–संज्ञा पुं० दे० शोण।

श्रोनित*–संज्ञा पुं० दे० शोणित।

श्रौत–वि० [सं०] १ श्रवण-संबंधी। २ श्रुति-संबंधी। ३ जो वेद के अनुसार हो। ४ यज्ञ-संबंधी।

श्रौतसूत्र–संज्ञा पुं० [सं०] कल्प ग्रंथ का वह अंग जिसमें यज्ञों का विधान है।

श्रौन*–संज्ञा पुं० दे० श्रवण।

श्लथ–वि० [सं०] १ शिथिल। ढीला। २ मंद। धीमा। ३ दुर्बल। अशक्त।

श्लाघनीय–वि० [सं०] १ प्रशंसनीय। तारीफ के लायक। २ उत्तम। श्रेष्ठ।

श्लाघा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रशंसा। तारीफ। २ स्तुति। बड़ाई। ३ खुशामद। चापलूसी। ४ इच्छा। चाह।

श्लाघ्य–वि० [सं०] १ प्रशंसनीय। तारीफ के लायक। २ श्रेष्ठ। अच्छा।

श्लिष्ट–वि० [सं०] १ मिला हुआ। एक में जुड़ा हुआ। २ (साहित्य में) श्लेष-युक्त। जिसके दोहरे अर्थ हों।

श्लीपद–संज्ञा पुं० [सं०] टाँग फूलने का रोग। फीलपाँव।

श्लील–वि० [सं०] १ उत्तम। नफीस। जो भद्दा न हो। २ शुभ।

श्लेष–संज्ञा पुं० [सं०] १ मिलना। जुड़ना। २ संयोग। जोड़। मिलान। ३ साहित्य में एक अलंकार जिसमें एक शब्द के दो या अधिक अर्थ लिए जाते हैं।

श्लेषक–वि० [सं०] जोड़नेवाला।
संज्ञा पुं० दे० "श्लेष"।
श्लेषण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० श्लेषणीय, श्लेषित, श्लेषी, श्लिष्ट] १. मिलाना। जोड़ना। २. आलिंगन।
श्लेषोपमा–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अलंकार जिसमें ऐसे श्लिष्ट शब्दों का प्रयोग होता है जिनके अर्थ उपमेय और उपमान दोनों में लग जाते हैं।
श्लेष्मा–संज्ञा पुं० [सं० श्लेष्मन्] १. शरीर की तीन धातुओं में से एक। कफ। बलगम। २. लिसोड़े का फल। लभेरा।
श्लोक–संज्ञा पुं० [सं०] १ शब्द। आवाज़। २. पुकार। आह्वान। ३. स्तुति। प्रशंसा। ४. कीर्त्ति। यश। ५. अनुष्टुप् छंद। ६. संस्कृत का कोई पद्य।
श्वन्–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० शुनी] कुत्ता।
श्वपच–संज्ञा पुं० [सं०] चांडाल। डोम।
श्वफल्क–संज्ञा पुं० [सं०] यादव वृष्णि के पुत्र और अक्रूर के पिता।
श्वशुर–संज्ञा पुं० [सं०] ससुर।
श्वश्रू–संज्ञा स्त्री० [सं०] सास।
श्वान–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० श्वानी] १. कुत्ता। कुक्कुर। २. दोहे का इक्कीसवाँ भेद। ३. छप्पय का पंद्रहवाँ भेद।
श्वास–संज्ञा पुं० [सं०] १. नाक से हवा खींचने और बाहर निकालने का व्यापार। साँस। दम। २. जल्दी जल्दी साँस लेना। हाँफना। ३. दम फूलने का रोग। दमा।
श्वासा–संज्ञा स्त्री० [सं० श्वास] १. साँस। दम। २. प्राण। प्राणवायु।
श्वासोच्छ्वास–संज्ञा पुं० [सं०] वेग से साँस खींचना और निकालना।
श्वेत–वि० [सं०] १. सफ़ेद। धौला। चिट्टा। २. उज्ज्वल। साफ़। ३. निर्दोष। निष्कलंक। ४. गोरा।
संज्ञा पुं० १. सफ़ेद रंग। २. चाँदी। रजत। ३. पुराणानुसार एक द्वीप। ४. शिव का एक अवतार। ५. श्वेत वराह।
श्वेत-कृष्ण–संज्ञा पुं० [सं०] १. सफ़ेद और काला। २. यह और वह पक्ष। एक बात और दूसरी बात।
श्वेतकेतु–संज्ञा पुं० [सं०] १. महर्षि उद्दालक के पुत्र का नाम। २. एक केतु ग्रह।
श्वेतगज–संज्ञा पुं० [सं०] ऐरावत हाथी।
श्वेतता–संज्ञा स्त्री० [सं०] सफ़ेदी।
श्वेतद्वीप–संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक उज्ज्वल द्वीप जहाँ विष्णु रहते हैं।
श्वेतप्रदर–संज्ञा पुं० [सं०] वह प्रदर रोग जिसमें स्त्रियों को सफ़ेद रंग की धातु गिरती है।
श्वेतवाराह–संज्ञा पुं० [सं०] १. वराह भगवान् की एक मूर्त्ति। २. एक कल्प का नाम जो ब्रह्मा के मास का प्रथम दिन माना गया है।
श्वेतांबर–संज्ञा पुं० [सं०] जैनों के दो प्रधान संप्रदायों में से एक।
श्वेता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक। २. कौड़ी। ३. श्वेत या शंख नामक हस्ती की माता। शंखिनी। ४. चीनी। शक्कर।
श्वेताश्वतर–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कृष्ण यजुर्वेद की एक शाखा। २ कृष्ण यजुर्वेद का एक उपनिषद।

ष

ष–संस्कृत या हिंदी वर्णमाला के व्यंजन वर्णों में ३१वाँ वर्ण या अक्षर। इसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है, इससे यह मूर्द्धन्य वर्णों में कहा गया है। इसका उच्चारण दो प्रकार से होता है—'श' के समान और 'ख' के समान।
षंड–संज्ञा पुं० [सं०] १. हीजड़ा। नपुंसक। नामर्द। २. शिव का एक नाम।
षंडत्व–संज्ञा पुं० [सं०] नामर्दी। हीजड़ापन।
षंडामर्क–संज्ञा पुं० [सं०] शुक्राचार्य के पुत्र

का नाम।

षट्–वि० [सं०] गिनती में ६। छ। संज्ञा पु० छ की संख्या।

षटक–संज्ञा पु० [सं०] १ ६ की संख्या। २ ६ वस्तुओं का समूह।

षट्कर्म–संज्ञा पु० [सं० षट्कर्म्मन्] ब्राह्मणों के छ कर्म—यजन, याजन, अध्ययन, अध्यापन, दान देना और दान लेना।

षट्कोण–वि० [सं०] छ कोनोंवाला। छ कोना। छ पहला।

षट्चक्र–संज्ञा पु० [सं०] १ हठयोग में माने हुए कुंडलिनी के ऊपर पड़नेवाले छ चक्र। २ भीतरी चाल। षड्यंत्र।

षट्तिला–संज्ञा स्त्री० [सं०] माघ महीने के कृष्ण पक्ष की एकादशी।

षट्पद–वि० [सं०] [स्त्री० षट्पदी] छ पैरोंवाला। संज्ञा पु० भ्रमर। भौंरा।

षट्पदी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ भ्रमरी। २ छप्पय।

षट्मुख–संज्ञा पु० [सं०] कार्त्तिकेय।

षट्राग–संज्ञा पु० [सं० षट् + राग] १ संगीत के छ राग—भैरव, मलार, श्रीराग, हिंडोल, मालकोस और दीपक। २ बखेड़ा।

षट्रिपु–संज्ञा पु० दे० "षड्रिपु"।

षट्शास्त्र–संज्ञा पु० [सं०] हिंदुओं के छ दर्शन।

षट्वाग–संज्ञा पु० [सं०] खट्वांग नामक राजर्षि जिन्हें केवल दो घड़ी की साधना से मुक्ति प्राप्त हुई थी।

[ ]ना० पु० [सं०] १ वेद के छ अंग—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद और ज्योतिष। २ शरीर के छ अवयव—दो पैर, दो हाथ, सिर और धड़। वि० जिसके छ अंग या अवयव हों।

षडानन–वि० [सं०] जिसे छ मुँह हों। संज्ञा पु० कार्त्तिकेय।

षड्गुण–संज्ञा पु० [सं०] छ गुणों का समूह।

षड्ज–संज्ञा पु० [सं०] संगीत के सात स्वरों में से पहला स्वर।

षड्दर्शन–संज्ञा पु० [सं०] न्याय, मीमांसा आदि हिंदुओं के छ दर्शन।

षड्दर्शनी–संज्ञा पु० [सं० षड्दर्शन+ई (प्रत्य०)] दर्शनों को जाननेवाला। ज्ञानी।

षड्यंत्र–संज्ञा पु० [सं०] १ किसी के विरुद्ध गुप्त रीति से की गई कार्रवाई। भीतरी चाल। २ जाल। कपटपूर्ण आयोजन।

षड्रस–संज्ञा पु० [सं०] छ प्रकार के रस या स्वाद—मधुर, लवण, तिक्त, कटु, कषाय और अम्ल।

षड्रिपु–संज्ञा पु० [सं०] काम, क्रोध आदि मनुष्य के छ विकार।

षष्ठ–वि० [सं०] जिसका स्थान पाँचवें के उपरांत हो। छठा।

षष्ठी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शुक्ल या कृष्ण पक्ष की छठी तिथि। २ षोडश मातृकाओं में से एक। ३ कात्यायिनी। दुर्गा। ४ संबंधकारक। (व्याकरण) ५ बालक उत्पन्न होने से छठा दिन तथा उक्त दिन का उत्सव।

षाडव–संज्ञा पु० [सं०] वह राग जिसमें केवल छ स्वर लगते हों।

षाण्मातुर–संज्ञा पु० [सं०] कार्त्तिकेय।

षाण्मासिक–वि० [सं०] छ महीने का। छठे महीने में पड़नेवाला।

षोडश–वि० [सं०] सोलहवाँ। वि० [सं० षोडशन्] जो गिनती में दस से छ अधिक हो। सोलह। संज्ञा पु० सोलह की संख्या।

षोडश कला–संज्ञा स्त्री० [सं०] चंद्रमा के सोलह भाग जो क्रम से एक एक करके निकलते और क्षीण होते हैं।

षोडश पूजन–संज्ञा पु० दे० 'षोडशोपचार'।

षोडश मातृका–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की देवियाँ जो सोलह मानी गई हैं—गौरी, पद्मा, शची, मेधा, सावित्री, विजया, जया, देवसेना, स्वधा, स्वाहा, शांति, पुष्टि, धृति, तुष्टि, मातर और आत्म-देवता।

षोडश शृंगार–संज्ञा पु० [सं०] पूर्ण शृंगार जो सोलह प्रकार का है।

षोडशी–वि० स्त्री० [सं०] १ सोलहवीं। २ सोलह वर्ष की (लड़की या स्त्री)।

संज्ञा स्त्री० १. दस महाविद्याओं में से एक। २. मृतक-संबंधी एक कर्म जो मृत्यु के दसवें या ग्यारहवें दिन होता है।

षोड़शोपचार–संज्ञा पुं० [सं०] पूजन के पूर्ण अंग जो सोलह माने गए हैं—आवाहन, आसन, अर्घ्य पाद्य, आचमन, मधुपर्क, स्नान, वस्त्राभरण, यज्ञोपवीत, गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, तांबूल, परिक्रमा और वंदना।

षोड़श संस्कार–संज्ञा पुं० [सं०] गर्भाधान से लेकर मृतक कर्म तक के १६ संस्कार।

ष्ठीवन–संज्ञा पुं० [सं०] थूकना।

स

स–हिंदी वर्णमाला का बत्तीसवाँ व्यंजन। इसका उच्चारण स्थान दंत है, इसलिये यह दंती या दंत्य स कहा जाता है।

सं–अव्य० [सं० सम्] १. एक अव्यय जिसका व्यवहार शोभा, समानता, संगति, उत्कृष्टता, निरंतरता आदि सूचित करने के लिये शब्द के आरंभ में होता है। जैसे—संयोग, संताप, संतुष्ट आदि। २. से।

सँइतना†–क्रि० स० [सं० संचय] १. लीपना। पोतना। २ं संचय करना। ३. सहेजना।

सँउपना*‡–क्रि० स० दे० "सौंपना"।

संक*†–संज्ञा स्त्री० दे० "शंका"।

संकट–वि० [सं० सम + कृत] सँकरा। तंग। संज्ञा पुं० १. विपत्ति। आफ़त। मुसीबत। २. दुःख। कष्ट। तकलीफ़। ३. दो पहाड़ों के बीच का तंग रास्ता।

संकटा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रसिद्ध देवी। २. ज्योतिष में एक योगिनी दशा।

संकत*–संज्ञा पुं० दे० "संकेत"।

संकना*†–क्रि० अ० [सं० शंका] १. शंका करना। संदेह करना। २. डरना।

संकर–संज्ञा पुं० [सं०] १. दो चीजों का आपस में मिलना। २. वह जिसकी उत्पत्ति भिन्न वर्ण या जाति के पिता और माता से हुई हो। दोगला। संज्ञा पुं० दे० "शंकर"।

संकर-घरनी*–संज्ञा स्त्री० [सं० शंकर + गृहिणी] शंकर की पत्नी, पार्वती।

संकरता–संज्ञा स्त्री० [सं०] संकर होने का भाव या धर्म। मिलावट। घाल-मेल।

सँकरा†–वि० [सं० संकीर्ण] [स्त्री० सँकरी] पतला और तंग। संज्ञा पुं० कष्ट। दुःख। विपत्ति।

*†संज्ञा स्त्री० [सं० शृंखला] साँकल। जंजीर

संकर्षण–संज्ञा पुं० [सं०] १. खींचने की क्रिया। २. हल से जोतने की क्रिया। ३. कृष्ण के भाई बलराम। ४. वैष्णवों का एक संप्रदाय।

संकल†–संज्ञा स्त्री० [सं० शृंखला] १. सिकड़ी जंजीर। २. पशुओं को बाँधने का सिक्कड़।

संकलन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संकलित] १. संग्रह करना। जमा करना। २. संग्रह। ढेर। ३. गणित की योग नाम की क्रिया। जोड़। ४. अनेक ग्रंथों से अच्छे अच्छे विषय चुनने की क्रिया।

संकलपना*†–क्रि० स० [सं० संकल्प] १. किसी बात का दृढ़ निश्चय करना। २. किसी धार्मिक कार्य्य के निमित्त कुछ दान देना। संकल्प करना। क्रि० अ० विचार करना। इच्छा करना।

सकलित–वि० [स०] १ चुना हुआ। सगृहीत। २ इकट्ठा किया हुआ।
सकल्प–सज्ञा पु० [स०] १ कार्य्य करने की इच्छा। विचार। इरादा। २ कोई देवकार्य्य करने से पहले एक निश्चित मत्र का उच्चारण करते हुए अपना दृढ निश्चय या विचार प्रकट करना। ३ ऐसे समय पढा जानेवाला मत्र। ५ दृढ निश्चय। पक्का विचार।
सँकाना*†–क्रि० अ० [स० शक] डरना।
सकार‡–सज्ञा स्त्री० [स० सकेत] इशारा।
सकारना†–क्रि०स० [हि०सकार,सकेत करना
सकाश–अव्य० [स०] १ समान। सदृश। २ समीप। निकट। पास।
सज्ञा पु० [?] प्रकाश। चमक।
सकीर्ण–वि० [स०] [भाव० सकीर्णता] १ सकुचित। तग। सँकरा। २ मिश्रित। मिला हुआ। क्षुद्र। छोटा।
सज्ञा पु० १ वह राग जो दो अन्य रागो को मिलाकर बने। २ सकट। विपत्ति।
सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का गद्य जिसमे कुछ वृत्तगधि और कुछ अवृत्तगधि का मल होता है।
सकीर्त्तन–सज्ञा पु० [स०] १ किसी की कीर्त्ति का वर्णन करना। २ देवता की वदना या भजन आदि।
सँकुचना–क्रि० अ० दे० 'सकुचना"।
सकुचित–वि० [स०] १ सकोचयुक्त। लज्जित। २ सिकुडा हुआ। तग। सँकरा। ४ क्षुद्र। उदार का उलटा।
–वि० [स०] १ सकीर्ण। घना। २ भरा हुआ। परिपूर्ण।
सज्ञा पु० १ युद्ध। लडाई। २ समूह। भीड। ३ भीड। जनता। ४ परस्पर विरोधी वाक्य।
सकेत–सज्ञा पु० [स०] १ भाव प्रकट करने के लिये कायिक चेष्टा। इशारा। इगित। २ वह स्थान जहाँ प्रेमी और प्रेमिका मिलना निश्चित करें। सहेट। ३ चिह्न। निशान। ४ पते की बातें।
सँकेरा†–वि० दे० "सँकरा"।
सँकेतना–क्रि० स० [स० सकीर्ण] सकट मे डालना। कष्ट मे डालना।
सकोच–सज्ञा पु० [स०] १ सिकुडने की क्रिया। खिचाव। तनाव। २ लज्जा। शर्म। ३ भय। ४ आगा-पीछा। हिचकिचाहट। ५ एक अलकार जिसमे 'विकास अलकार' से विरुद्ध वर्णन होता है या किसी वस्तु का अतिशय सकोच वर्णन किया जाता है।
सँकोचना–क्रि० स० [स० सकोच] १ सकुचित करना। २ सकोच करना।
सकोचित–सज्ञा पु० [स०] तलवार चलाने का एक ढग या प्रकार।
सकोची–सज्ञा पु० [स० सकोचिन] १ सिकुडनेवाला। २ शर्म करनेवाला।
सकोपना*–क्रि० अ० [स० सकोप] क्रोध करना।
सक्रदन–सज्ञा पु० [स०] इन्द्र। इद्र।
सक्रमण–सज्ञा पु० [स०] १ गमन। चलना। २ सूर्य का एक राशि से निकल कर दूसरी राशि मे प्रवेश करना।
सक्राति–सज्ञा स्त्री० [स०] सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि मे प्रवेश करना या प्रवेश करने का समय।
सक्रामक–वि० [स०] जो ससर्ग या छूत आदि के कारण फैलता हो।
सक्रौन*†–सज्ञा स्त्री० दे० "सक्राति"।
सक्षिप्त–वि० [स०] १ जो सक्षेप में हो। खुलासा। २ थोडा। अल्प।
सक्षिप्त लिपि–सज्ञा स्त्री० [स०] एक लेखन-प्रणाली जिसमें थोडे काल और स्थान में बहुत सी बातें लिखी जा सकती है।
सक्षिप्ति–सज्ञा स्त्री० [स०] नाटक मे एक आरभटी जिसमें क्रोध आदि उग्र भावो की निवृत्ति होती है।
सक्षेप–सज्ञा पु० [स०] १ थोडे मे कोई बात कहना। २ घटाना। कम करना।
सक्षेपत–अव्य० [स०] सक्षेप में। थोडे में।
सखनारी–सज्ञा स्त्री० [स० शखनारी] दो यगण का एक छद। सोमराजी।

संखिया–संज्ञा पुं० [सं० शृंगिका] १. एक बहुत जहरीली प्रसिद्ध सफ़ेद उपधातु या पत्थर। २. उक्त धातु का तैयार किया हुआ भस्म जो दवा के काम में आता है।

संख्यक–वि० [सं०] संख्यावाला।

संख्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक, दो, तीन, चार आदि की गिनती। तादाद। शुमार। २. गणित में वह अंक जो किसी वस्तु का, गिनती में, परिमाण बतलावे। अदद।

संग–संज्ञा पुं० [सं० सङ्ग] १. मिलना। मिलन। २. सहवास। सोहबत।

मुहा०—(किसी के) संग लगना=साथ हो लेना। पीछे लगना।

३. विषयों के प्रति होनेवाला अनुराग। ४. वासना। आसक्ति।

क्रि० वि० साथ। हमराह। सहित।

संज्ञा पुं० [फ़ा०] पत्थर। जैसे संगमरमर।

वि० पत्थर की तरह कठोर। बहुत कड़ा।

संग जराहत–संज्ञा पुं० [फ़ा० संग + अ० जराहत] एक सफ़ेद चिकना पत्थर जो घाव भरने के लिये बहुत उपयोगी होता है।

संगठन–संज्ञा पुं० [सं० सं + हिं० गठना] १. बिखरी हुई शक्तियों या लोगों आदि को इस प्रकार मिलाकर एक करना कि उनमें नवीन बल आ जाय। २. वह संस्था जो इस प्रकार की व्यवस्था से तैयार हो।

संगठित–वि० [हिं० संगठन] जो भली भाँति व्यवस्था करके एक में मिलाया हुआ हो।

संगत–संज्ञा स्त्री० [सं० संगति] १. संग रहना। सोहबत। संगति। २. संग रहनेवाला। साथी। ३. वह मठ जहाँ उदासी या निर्मले साधु रहते हैं। ४ संबंध। संसर्ग।

संग-तराश–संज्ञा पुं० [फ़ा०] पत्थर काटने या गढ़नेवाला मज़दूर। पत्थर-कट।

संगति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मिलने की क्रिया। मेल। मिलाप। २. संग। साथ। संगत। ३ प्रसंग। मैथुन। ४ संबंध। ताल्लुक। ५. ज्ञान। ६ आगे-पीछे की बातों या वाक्यों आदि का मिलान।

संगदिल–वि० [फ़ा०] [संज्ञा संगदिली] कठोर-हृदय। निर्दय। दयाहीन।

संगम–संज्ञा पुं० [सं०] १. मिलाप। सम्मेलन। संयोग। मेल। २. दो नदियों के मिलने का स्थान। ३. साथ। संग।

संग-मर्मर–संज्ञा पुं० [फ़ा० संग + अ० मर्मर] एक प्रकार का बहुत चिकना, मुलायम और सफ़ेद प्रसिद्ध कीमती पत्थर।

संग-मूसा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] एक प्रकार का काला चिकना, कीमती पत्थर।

संग-यशब–संज्ञा पुं० [फ़ा०] एक प्रकार का हरा कीमती पत्थर। हौल-दिली।

संगाती–संज्ञा पुं० [हिं० संग + आती (प्रत्य०)] १. साथी। संगी। २. दोस्त। मित्र।

संगिनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० संगी का स्त्री० रूप]

संगी–संज्ञा पुं० [हिं० संग + ई (प्रत्य०)] १. संग रहनेवाला। साथी। २. मित्र। बंधु।

संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का कपड़ा।

वि० [फ़ा० संग=पत्थर] पत्थर का। संगीन।

संगीत–संज्ञा पुं० [सं०] वह कार्य्य जिसमें नाचना, गाना और बजाना तीनों हों।

संगीत-शास्त्र–संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें संगीत का विवेचन हो।

संगीन–संज्ञा पुं० [फ़ा०] लोहे का एक नुकीला अस्त्र जो बंदूक के सिरे पर लगाया जाता है।

वि० १. पत्थर का बना हुआ। २. मोटा। ३ टिकाऊ। मजबूत। ४. विकट।

संगृहीत–वि० [सं०] संग्रह किया हुआ। एकत्र किया हुआ। संकलित।

संग्रह–संज्ञा पुं० [सं०] १ एकत्र करना। जमा करना। संचय। २. वह ग्रंथ जिसमें अनेक विषयों की बातें एकत्र की गई हों। ३. रक्षा। हिफ़ाज़त। ४. पाणिग्रहण। विवाह। ५. ग्रहण करने की क्रिया।

संग्रहणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक रोग जिसमें खाद्य पदार्थ बराबर पाखाने के रास्ते निकल जाता है।

संग्रहना*–क्रि० स० [सं० संग्रहण] संग्रह करना। संचय करना। जमा करना।

संग्राम–संज्ञा पुं० [सं०] युद्ध। लड़ाई।

संग्राह्य–वि० [सं०] संग्रह करने योग्य।
संघ–संज्ञा पु० [सं०] १. समूह। समुदाय। दल। २. समिति। सभा। समाज। ३. प्राचीन भारत का एक प्रकार का प्रजातंत्र राज्य। ४. बौद्ध श्रमणों आदि का धार्मिक समाज। ५. साधुओं आदि के रहने का मठ। संगत।
संघट–संज्ञा पु० [सं०] १. संघटन। २. युद्ध। ३. समूह। ढेर। राशि।
संघटन–संज्ञा पु० [सं०] १. मेल। संयोग। २. नायक-नायिका का संयोग। मिलाप। ३. रचना। ४. बनावट। ५. दे० "संगठन"।
संघट्ट, संघट्टन–संज्ञा पु० [सं०] १. बनावट। रचना। २. मिलन। संयोग। ३. दे० "संघटन"।
संघती–संज्ञा पु० दे० "संघाती"।
संघरना–क्रि० स० [सं० संहार] १ संहार या नाश करना। २. मार डालना।
संघर्ष, संघर्षण–संज्ञा पु० [सं०] १ रगड खाना। रगड। घिस्सा। २. प्रतियोगिता। स्पर्धा। ३. रगडना। घिसना।
संघात–संज्ञा पु० [सं०] १. समूह। समष्टि। २. आघात। चोट। ३. हत्या। वध। ४. नाटक में एक प्रकार की गति। ५ शरीर। ६. निवासस्थान।
संघाती–संज्ञा पु० [सं० संघ] १. साथी। सहचर। २. मित्र।
संघार*†–संज्ञा पु० दे० "संहार"।
संघारना*–क्रि० स० [सं० संहार] १ संहार करना। नाश करना। २. मार डालना।
संघाराम–संज्ञा पु० [सं०] बौद्ध भिक्षुओं आदि के रहने का मठ। विहार।
संच*†–संज्ञा पु० [सं० संचय] १. संग्रह करना। संचय। २ रक्षा। देखभाल।
संचकर*–संज्ञा पु० [सं० संचय+कर] १. संचय करनेवाला। २. कंजूस।
संचना*†–क्रि० स० [सं० संचयन] १. संग्रह करना। संचय करना। २ रक्षा करना।
संचय–संज्ञा पु० [सं०] १. समूह। ढेर। २. एकत्र या संग्रह करना। जमा करना।
संचरण–संज्ञा पु० [सं०] संचार करने की क्रिया। चलना। गमन।
संचरना*†–क्रि० अ० [सं० संचरण] १. घूमना। फिरना। चलना। २. फैलना। प्रसारित होना। ३ प्रचलित होना।
संचार–संज्ञा पु० [सं०] [कर्त्ता संचारक, वि० संचारित] १. गमन। चलना। २. फैलना। ३. चलना।
संचारना*†–क्रि० स० [सं० संचारण] १. किसी वस्तु का संचार करना। २. प्रचार करना। फैलाना। ३. जन्म देना।
संचारिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] दूती। कुटनी।
संचारी–संज्ञा पु० [सं० संचारिन्] १. वायु। हवा। २. साहित्य में वे भाव जो मुख्य भाव की पुष्टि करने है। ३. व्यभिचारीभाव। वि० संचरण करनेवाला। गतिशील।
संचालक–संज्ञा पु० [सं०] चलाने या गति देनेवाला। परिचालक।
संचालन–संज्ञा पु० [सं०] १. चलाने की क्रिया। परिचालन। २ काम जारी रखना।
संचित–वि० [सं०] संचय या जमा किया हुआ।
संजम*–संज्ञा पु० दे० "संयम"।
संजय–संज्ञा पु० [सं०] धृतराष्ट्र का मंत्री जो महाभारत के युद्ध के समय धृतराष्ट्र को उस युद्ध का विवरण सुनाता था।
संजात–वि० [सं०] १. उत्पन्न। २. प्राप्त।
संजाफ–संज्ञा स्त्री० [फा० संजफ या संजाफ] १. झालर। किनारा। २ चौडी और आडी गोट जो रजाइयों आदि में लगाई जाती है। गोट। मगजी। संज्ञा पु० एक प्रकार का घोडा जिसका रंग आधा लाल और आधा सफेद या आधा हरा होता है।
संजाफी–संज्ञा पु० [हिं० संजाफ] आधा लाल और आधा हरा घोडा।
संजाव–संज्ञा पु० दे० "संजाफ"।
संजीदा–वि० [फा०] [संज्ञा संजीदगी] १ गंभीर। शांत। २ समझदार। बुद्धिमान्।
संजीवन–संज्ञा पु० [सं०] १ भली भाँति जीवन व्यतीत करना। २. जीवन देनेवाला।

संजीवनी–वि० स्त्री० [सं०] जीवन देनेवाली। संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की कल्पित ओषधि। कहते हैं कि इसके सेवन से मरा हुआ मनुष्य जी उठता है।
संजीवनी विद्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की कल्पित विद्या। कहते है कि मरे हुए व्यक्ति को इस विद्या के द्वारा जिलाया जा सकता है।
संजुक्त*–वि० दे० "संयुक्त"।
संजुग*–संज्ञा पुं० [सं० सयुत] संग्राम। युद्ध।
संजुत*–वि० दे० "संयुक्त"।
संजुता–संज्ञा स्त्री० "संयुत"। (छद)
सँजोइ*–क्रि० वि० [सं० सयोग] साथ में।
सँजोइल*–वि० [स० सज्जित, हि० सँजोना] १. अच्छी तरह सजाया हुआ। सुसज्जित। २. जमा किया हुआ। एकत्र।
सँजोऊ*–सज्ञा पु० [हि० सँजोना] १. तैयारी। उपक्रम। २. सामान। सामग्री।
सँजोग–सज्ञा पु० दे० "सयोग"।
सँजोगी–सज्ञा पु० दे० "संयोगी"।
सँजोना†–क्रि० स० [सं० सज्जा] सजाना।
सँजोवल*†–वि० [हि० सँजोना] १. सुसज्जित। २. सेना-सहित। ३. सावधान।
संज्ञक–वि० [सं०] संज्ञावाला। जिसकी सज्ञा हो। (यौगिक में)
संज्ञा–सज्ञा स्त्री० [स०] १. चेतना। होश। २. बुद्धि। अकल। ३. ज्ञान। ४. नाम। आख्या। ५. व्याकरण में वह विकारी शब्द जिससे किसी यथार्थ या कल्पित वस्तु का बोध होता है। जैसे—मकान, नदी। ६. सूर्य की पत्नी जो विश्वकर्मा की कन्या थी
संज्ञाहीन–वि० [सं०] बेहोश। बेसुध।
सँझला‡–वि० [सं० सध्या] सध्या का।
सँझवाती–सज्ञा स्त्री० [स० संध्या+वती] १. सध्या के समय जलाया जानेवाला दीपक। २. वह गीत जो सध्या समय गाया जाता है।
सँझा†–संज्ञा स्त्री० [सं० सध्या] सध्या। शाम
सँझोले*–सज्ञा स्त्री० [स० संध्या] संध्या का समय। शाम का वक्त।
संड–संज्ञा पुं० [सं० षंड] साँड।
संड मुसंड–वि० [हि० संड+मुसंड (अनु०)] हट्टा-कट्टा। मोटा-ताजा। बहुत मोटा।
सँड़सा–सज्ञा पुं० [सं० संदेश] [स्त्री० अल्पा० सँड़सी] लोहे का एक औजार। इससे गरम चीजें पकड़ते हैं। गहुआ। जबूरा।
संडा–वि० [सं० शंड] मोटा-ताजा। हृष्ट-पुष्ट
संडास–संज्ञा पुं० [?] कूएँ की तरह का एक प्रकार का गहरा पाखाना। शौच-कूप।
संत–सज्ञा पुं० [सं० सत्] १. साधु, संन्यासी या त्यागी पुरुष। महात्मा। २. ईश्वर-भक्त। धार्मिक पुरुष। ३. २१ मात्राओं का एक छंद।
संतत–अव्य० [सं०] सदा। निरंतर। बराबर।
संतति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बाल-बच्चे। संतान। औलाद। २. प्रजा। रिआया।
संतपन–सज्ञा पुं० [सं०] १. अच्छी तरह तपना। २. बहुत दुःख देना।
संतप्त–वि० [सं०] १. बहुत तपा हुआ। जला हुआ। दग्ध। २. दुखी। पीड़ित।
संतरण–सज्ञा पुं० [सं०] १. अच्छी तरह से तरना या पार होना। २. तारनेवाला।
संतरा–संज्ञा पुं० [पुर्त्त० संगतरा] एक प्रकार का बड़ा और मीठा नीबू।
संतरी–संज्ञा पु० [अं० संटरी] १. पहरा देनेवाला। पहरेदार। २. द्वारपाल।
संतान–सज्ञा पुं० [सं०] १. बाल-बच्चे। संतति। औलाद। २. कल्पवृक्ष।
संताप–सज्ञा पु० [सं०] १. ताप। जलन। आँच। २. दुःख। कष्ट। ३. मानसिक कष्ट।
संतापन–सज्ञा पुं० [सं०] १. संताप देना। जलाना। २. बहुत दुःख या कष्ट देना। ३. कामदेव के पाँच बाणों में से एक।
संतापना*†–क्रि० स० [सं० संतापन] संताप देना। दुःख देना। कष्ट पहुँचाना।
संतापित–वि० दे० "संतप्त"।
संतापी–संज्ञा पुं० [सं० संतापिन्] संताप देनेवाला।
संती‡–अव्य० [सं० संति?] १. बदले में। एवज में। स्थान में। २. द्वारा। से।
संतुष्ट–वि० [सं०] १. जिसका संतोष हो

गया हो। तृप्त। २ जो मान गया हो।
संतोख—संज्ञा पु० दे० "संतोष"।
संतोष—संज्ञा पु० [सं०] १. हर हालत में प्रसन्न रहना। संतुष्टि। सब्र। कनाअत। २ तृप्ति। शांति। इतमीनान। ३ प्रसन्नता। सुख। आनंद।
संतोषना*†—क्रि० स० [सं० संतोष+ना (प्रत्य०)] संतोष दिलाना। संतुष्ट करना। क्रि० अ० संतुष्ट होना। प्रसन्न होना।
संतोषित—वि० दे० "संतुष्ट"।
संतोषी—संज्ञा पु० [सं० संतोषिन्] वह जो सदा संतोष रखता हो। सब्र करनेवाला।
संथा—संज्ञा पु० [सं० संहिता ?] एक बार में पढ़ाया हुआ अंश। पाठ। सबक।
संद†—संज्ञा पु० [?] दबाव।
संदर्भ—संज्ञा पु० [सं०] १ रचना। बनावट। २ निबंध। लेख। ३ कोई छोटी पुस्तक।
संदल—संज्ञा पु० [फा०] श्रीखंड। चंदन।
संदली—वि० [फा० संदल] १ संदल के रंग का। हलका पीला (रंग)। २ चंदन का। संज्ञा पु० १ एक प्रकार का हलका पीला रंग। २ एक प्रकार का हाथी। ३ घोड़े की एक जाति।
संदि—संज्ञा स्त्री० [सं० संधि] मेल। संधि।
संदिग्ध—वि० [सं०] १ जिसमें संदेह हो। संदेहपूर्ण। २ जिस पर संदेह हो।
संदिग्धत्व—संज्ञा पु० [सं०] १ संदिग्ध होने का भाव या धर्म। संदिग्धता। २ अलंकार-शास्त्रानुसार एक दोष। किसी उक्ति का ठीक ठीक अर्थ प्रकट न होना।
संदीपन—संज्ञा पु० [सं०] [वि० संदीपक] १ उद्दीप्त करने की क्रिया। उद्दीपन। २ कृष्ण के गुरु का नाम। ३ कामदेव के पाँच बाणों में से एक। वि० उद्दीपन या उत्तेजना करनेवाला।
संदूक—संज्ञा पु० [अ० संदूक] [अल्पा० संदूकचा] लकड़ी, लोहे आदि का बना हुआ चौकोर पिटारा। पेटी। बकस।
संदूकड़ी—संज्ञा स्त्री० [अ० संदूक] छोटा संदूक।
संदूर—संज्ञा पु० दे० 'सिंदूर'।
संदेश—संज्ञा पु० [सं०] १ समाचार। हाल। खबर। २ एक प्रकार की बँगला मिठाई।
संदेसा—संज्ञा पु० [सं० संदेश] जबानी कहलाया हुआ समाचार। खबर। हाल।
संदेसी—संज्ञा पु० [हिं० संदेसा] संदेसा ले जानेवाला। दूत। बसीठ।
संदेह—संज्ञा पु० [सं०] १ किसी विषय में निश्चित न होनेवाला विश्वास। संशय। शंका। शक। २ एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें किसी चीज को देखकर संदेह बना रहता है।
संदोह—संज्ञा पु० [सं०] समूह। झुंड।
संध*†—संज्ञा स्त्री० दे० "संधि"।
संधना—क्रि० अ० [सं० संधि] संयुक्त होना।
संधान—संज्ञा पु० [सं०] १ लक्ष्य करने का व्यापार। निशाना लगाना। २ योजन। मिलाना। ३ अन्वेषण। खोज। ४ काठियावाड़ का एक नाम। ५ संधि। ६ काँजी।
संधानना†—क्रि० स० [सं० संधान+ना (प्रत्य०)] १ निशाना लगाना। २ बाण छोड़ना।
संधाना—संज्ञा पु० [सं० संधानिका] अचार।
संधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मेल। संयोग। २ मिलने की जगह। जोड़। ३ राजाओं आदि में होनेवाली वह प्रतिज्ञा जिससे अनुमा* युद्ध बंद किया जाता है अथवा मित्रता या व्यापार-संबंध स्थापित किया जाता है। ४ सुलह। मित्रता। मैत्री। ५ शरीर में का कोई जोड़। गाँठ। ६ व्याकरण में वह विकार जो दो अक्षरों के पास पास आने के कारण उनके मेल से होता है। ७ नाटक में किसी प्रधान प्रयोजन के साधक कथांशों का किसी एक मध्यवर्ती प्रयोजन के साथ होनेवाला संबंध। ८ चोरी आदि करने के लिये दीवार में किया हुआ छेद। सेंध। ९ एक अवस्था के अंत और दूसरी अवस्था के आरंभ के बीच का समय। वयःसंधि। १० बीच की खाली जगह। अवकाश।
संध्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दिन और रात दोनों के मिलने का समय। संधिकाल। २ शाम। सायंकाल। ३ आर्यों की

एक विशिष्ट उपासना जो प्रतिदिन प्रातः-काल, मध्याह्न और संध्या के समय होती है।
संन्यास–संज्ञा पुं० [सं०] भारतीय आर्य्यों के चार आश्रमों में से अंतिम आश्रम। इनमें काम्य और नित्य आदि कर्म्म निष्काम भाव से किए जाते हैं।
संन्यासी–संज्ञा पुं० [सं० संन्यासिन्] संन्यास आश्रम में रहने और उसके नियमों का पालन करनेवाला।
संपति–संज्ञा स्त्री० दे० "संपत्ति"।
संपत्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ऐश्वर्य्य। वैभव। २. धन। दौलत। जायदाद।
संपद्–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सिद्धि। पूर्णता। २. ऐश्वर्य्य। वैभव। गौरव। ३. सौभाग्य।
संपदा–संज्ञा स्त्री० [सं० संपद्] १. धन। दौलत। २. ऐश्वर्य्य। वैभव।
संपन्न–वि० [सं०] १. पूरा किया हुआ। पूर्ण। सिद्ध। २. सहित। युक्त ३. धनी। दौलतमंद।
संपर्क–संज्ञा पुं० [सं०] [वि०संपृक्त] १. मिश्रण। मिलावट। २. लगाव। संसर्ग। वास्ता। ३. स्पर्श। सटना।
संपा–संज्ञा स्त्री० [सं०] विद्युत्। बिजली।
संपात–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक साथ गिरना या पड़ना। २. संसर्ग। मेल। ३ संगम। समागम। ४. वह स्थान जहाँ एक रेखा दूसरी पर पड़े या मिले।
संपाति–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक गीध जो गरुड़ का ज्येष्ठ पुत्र और जटायु का भाई था। २. माली नाम राक्षस का एक पुत्र।
संपाती–संज्ञा पुं० दे० "संपाति"।
संपादक–संज्ञा पुं० [सं०] १ कोई काम संपन्न या पूरा करनेवाला। २. तैयार करनेवाला। ३. किसी समाचारपत्र या पुस्तक को क्रम आदि लगाकर निकालनेवाला।
संपादकत्व–संज्ञा पुं० [सं०] संपादन करने का भाव या अवस्था।
संपादकीय–वि० [सं०] संपादक का।
संपादन–संज्ञा पुं० [सं०] १. काम को पूरा करना। २. प्रदान करना। ३. ठीक करना। दुरुस्त करना। ४. किसी पुस्तक या संवाद-पत्र आदि को क्रम, पाठ आदि लगाकर प्रकाशित करना।
संपादित–वि० [सं०] १. पूरा किया हुआ। २. क्रम, पाठ आदि लगाकर ठीक किया हुआ। (पत्र, पुस्तक आदि)
संपुट–संज्ञा पुं० [सं०] १. पात्र के आकार की कोई वस्तु। २. खप्पर। ठीकरा। कपाल। ३. दोना। ४. डिब्बा। ५. अंजली। ६. फूल के दलों का ऐसा समूह जिसके बीच में खाली जगह हो। कोश। ७. कपड़े और गीली मिट्टी से लपेटा हुआ वह बरतन जिसके भीतर कोई रस या ओषधि फूँकते हैं।
संपूर्ण–वि० [सं०] १. खूब भरा हुआ। २. सब। बिलकुल। ३. समाप्त। खतम। संज्ञा पुं० १. वह राग जिसमें सातों स्वर लगते हों। २. आकाश भूत।
संपूर्णतः–क्रि० वि० [सं०] पूरी तरह से।
संपूर्णतया–क्रि० वि० सं०] पूरी तरह से।
संपूर्णता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. संपूर्ण होने का भाव। पूरापन। २. समाप्ति।
सँपेरा–संज्ञा पुं० [हिं० साँप+एरा (हिं० प्रत्य०)] [स्त्री० सँपेरिन] साँप पालनेवाला। मदारी।
सँपोला–संज्ञा पुं० [हिं० साँप] साँप का बच्चा।
संप्रज्ञात संज्ञा पुं० [सं०] योग में वह समाधि जिसमें आत्मा अपने स्वरूप के बोध तक न पहुँची हो।
संप्रति–अव्य० [सं०] १. इस समय। अभी। आजकल। २. मुकाबले में।
संप्रदान–संज्ञा पुं० [सं०] १. दान देने की क्रिया या भाव। २. दीक्षा। मंत्रोपदेश। ३. व्याकरण में एक कारक जिसमें शब्द 'देना' क्रिया का लक्ष्य होता है। इसका चिह्न "को" है।
संप्रदाय–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सांप्रदायिक] १. गुरुमंत्र। २. कोई विशेष धर्म-संबंधी मत। ३. किसी मत के अनुयायियों की मंडली। फिरका। ४. परिपाटी। रीति। चाल।
संप्राप्त–वि० [सं०] [संज्ञा संप्राप्ति] १. पहुँचा हुआ। उपस्थित। २. पाया हुआ।

३ घटित। जो हुआ हो।

सबध–संज्ञा पु० [सं०] १ एक साथ बँधना, जुड़ना या मिलना। २ लगाव। सपर्क। वास्ता। ३ नाता। रिश्ता। ४ सयोग। मेल। ५ विवाह। सगाई। ६ व्याकरण म एप कारक जिससे एक शब्द के साथ दूसरे शब्द का सबध सूचित होता है। जैसे—राम का घोडा।

सबंधातिशयोक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] अतिशयोक्ति अलकार का एक भेद जिसमें अस बध में सबध दिखाया जाता है।

सबधी–वि० [सं० सबधिन्] [स्त्री० सबधिनी] १ सबध या लगाव रखनेवाला। २ विषयक। संज्ञा पु० १ रिश्तेदार। २ समधी।

सबत्–संज्ञा पु० दे० सवत्।

सबद्ध–वि० [सं०] १ बँधा हुआ। जुड़ा हुआ। २ सबध-युक्त। ३ बद।

सबल–संज्ञा पु० [सं०] रास्ते का भोजन। सफर-खर्च।

सबुद्ध–संज्ञा पु० [सं०] [संज्ञा सबुद्धि] १ ज्ञानी। ज्ञानवान। २ जाना हुआ। ज्ञात। ३ बुद्ध। ४ जिन।

सबोधन–संज्ञा पु० [सं०] [वि० सबोधित सबोध्य] १ जगाना। नींद से उठाना। २ पुकारना। ३ व्याकरण में वह कारक जिससे शब्द का किसी को पुकारने या बुलाने के लिये प्रयोग सूचित होता है। जैसे–हे राम! ४ जताना। विदित कराना। ५ नाटक म आकाश भाषित। ६ समझाना-बुझाना।

सबोधना*–क्रि० स० [सं०] समझाना-बुझाना।

सँभरना*†–क्रि० अ० दे० सँभलना।

सँभलना–क्रि० अ० [हिं० सँभालना] १ किसी बोझ आदि का थामा जा सकना। २ किसी सहारे पर रुका रह सकना। ३ होशियार होना। सावधान होना। ४ चोट या हानि से बचाव करना। ५ कार्य का भार उठाया जाना। ६ स्वस्थता प्राप्त करना। चगा होना।

सभव–संज्ञा पु० [सं० सम्भव] १ उत्पत्ति। जन्म। २ मेल। सयोग। ३ होना। ४ हो सकने के योग्य होना।

सभवत–अव्य० [सं०] हो सकता है। मुमकिन है। गालिबन्।

सभवना*–क्रि० स० [सं० सभव] उत्पन्न करना।

क्रि० अ० १ उत्पन्न होना। पैदा होना। २ सभव होना। हो सकना।

सभार–संज्ञा पु० [सं०] १ सचय। एकत्र करना। २ तैयारी। साज-सामान। ३ धन। सपत्ति। ४ पालन। पोषण।

सँभार†*–संज्ञा पु० [हिं० सँभालना] १ देख रेख। खबरदारी। २ पालन-पोषण।

यौ०—सार सँभार = पालन-पोषण और निरीक्षण का भार।

३ वश में रखने का भाव। रोक। निरोध। ४ तन-बदन की सुध।

सँभारना†*–क्रि० स० [सं० सभार] १ दे० 'सँभालना'। २ याद करना।

सँभाल–संज्ञा स्त्री० [सं० सभार] १ रक्षा। हिफाजत। २ पोषण का भार। ३ देख रेख। निगरानी। ४ तन-बदन की सुध।

सँभालना–क्रि० स० [सं० सभार] १ भार ऊपर ले सकना। २ रोके रहना। काबू म रखना। ३ गिरने न देना। थामना। ४ रक्षा करना। हिफाजत करना। ५ बुरी दशा को प्राप्त होने से बचाना। उद्धार करना। ६ पालन-पोषण करना। ७ देख-रेख करना। निगरानी करना। ८ निर्वाह करना। चलाना। ९ कोई वस्तु ठीक ठीक है, इसका इतमीनान कर लेना। सहेजना। १० किसी मनोवेग को रोकना।

सँभालू–संज्ञा पु० [हिं० सिंधुवार] श्वेत सिंधुवार वृक्ष। मेवडी।

सभावना–संज्ञा स्त्री० [सं० सम्भावना] १ कल्पना। अनुमान। २ हो सकना। मुमकिन होना। ३ प्रतिष्ठा। मान। इज्जत। ४ एक अलकार जिसमें किसी एक बात के होने पर दूसरी का होना निर्भर होता है।

सभावित–वि० [सं० सम्भावित] १ कल्पित।

मन में माना हुआ। २. जुटाया हुआ। ३. संभव। मुमकिन।
संभाव्य–वि० [सं० संभाव्य] संभव। मुमकिन।
संभाषण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सम्भाषणीय, संभाषित, संभाष्य] कथोपकथन। बातचीत।
संभाषी–वि० [सं०] [स्त्री० संभाषिणी] कहनेवाला। बोलनेवाला।
संभाष्य–वि० [सं० सम्भाष्य] जिससे बात-चीत करना उचित हो।
संभूत–वि० [सं० सम्भूत] [संज्ञा संभूति] १. एक साथ उत्पन्न। २. उत्पन्न। उद्भूत। पैदा। ३. युक्त। सहित।
संभूय–अव्य० [सं०] साझे में।
संभूय समुत्थान–संज्ञा पुं० [सं०] साझे का कारबार।
संभोग–संज्ञा पुं० [सं०] १. सुखपूर्वक व्यवहार। २. रति। क्रीड़ा। मैथुन। ३. संयोग शृंगार। मिलाप की दशा।
संभ्रम–संज्ञा पुं० [सं० सम्भ्रम] १. घबराहट। व्याकुलता। २. सहम। सिटपिटाना। ३. आदर। मान। गौरव।
संभ्रांत–वि० [सं० सम्भ्रान्त] १. घबराया हुआ। उद्विग्न। २. सम्मानित। प्रतिष्ठित।
संभ्राजना*–क्रि० अ० [सं० संभ्राज्] पूर्णतः सुशोभित होना।
संमत–वि० दे० "सम्मत"।
संयत–वि० [सं०] १. बद्ध। बँधा हुआ। २. दबाव में रखा हुआ। ३. दमन किया हुआ। वशीभूत। ४. बंद किया हुआ। कैद। ५. क्रमबद्ध। व्यवस्थित। ६. *जिसने इंद्रियों और मन को वश में किया* हो। निग्रही। ७. उचित सीमा के भीतर रोका हुआ।
संयम–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संयमी, संयमित, संयत] १. रोक। दाब। २. इंद्रियनिग्रह। चित्तवृत्ति का निरोध। ३. हानिकारक या बुरी वस्तुओं से बचने की क्रिया। परहेज। ४. बाँधना। बंधन। ५. बंद करना। मूँदना। ६. योग में ध्यान, धारणा और समाधि का साधन।
संयमनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] यमपुरी।
संयमी–वि० [सं० संयमिन्] १. रोक या दबाव में रखनेवाला। २. मन और इंद्रियों को वश में रखनेवाला। आत्म-निग्रही। योगी। ३. परहेजगार।
संयुक्त–वि० [सं०] १. जुड़ा हुआ। लगा हुआ। २. मिला हुआ। ३. संबद्ध। लगाव रखता हुआ। ४. सहित। साथ।
संयुक्ता–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक छंद का नाम।
संयुग–संज्ञा पुं० [सं०] १. मेल। मिलाप। संयोग। २. युद्ध। लड़ाई।
संयुत–वि० [सं०] १. जुड़ा हुआ। मिला हुआ। २. सहित। साथ।
संज्ञा पुं० एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में एक सगण, दो जगण और एक गुरु होता है।
संयोग–संज्ञा पुं० [सं०] १. मेल। मिलान। मिलावट। मिश्रण। २. समागम। मिलाप। ३. लगाव। संबंध। ४. सहवास। स्त्री-पुरुष का प्रसंग। ५. विवाह-संबंध। ६. जोड़। योग। मीजान। ७. दो या कई बातों का इकट्ठा होना। इत्तफ़ाक़।
मुहा०—*संयोग से=बिना पहले से निश्चित* हुए। इत्तफाक़ से। दैववशात्।
संयोगी–संज्ञा पुं० [सं० संयोगिन्] [स्त्री० संयोगिनी] १. संयोग करनेवाला। २. वह पुरुष जो अपनी प्रिया के साथ हो।
संयोजक–संज्ञा पुं० [सं०] १. मिलानेवाला। २. व्याकरण में वह शब्द जो दो शब्दों या वाक्यों के बीच केवल जोड़ने के लिये आता है।
संयोजन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संयोगी, संयोजनीय, संयोज्य, संयोजित] जोड़ने या मिलाने की क्रिया।
सँयोना*–क्रि० स० दे० "सँजोना"।
संरक्षक–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० संरक्षिका] १. रक्षा करनेवाला। रक्षक। २. देख-रेख और पालन-पोषण करनेवाला। ३. आश्रय देनेवाला।
संरक्षण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संरक्षी, संरक्षित, संरक्ष्य, संरक्षणीय] १. हानि या नाश आदि

से बचाने का काम। हिफाजत। २ देख-रेख। निगरानी। ३ अधिकार। कब्जा।

सरक्षित–वि० [स०] १ हिफाजत से रखा हुआ। २ अच्छी तरह से बचाया हुआ।

सलक्ष्य–वि० [स०] जो लखा जाय।

सलक्ष्य-क्रम-व्यग्य–सज्ञा पु० [स०] वह व्यजना जिसमे वाच्यार्थ से व्यग्यार्थ की प्राप्ति का क्रम लक्षित हो। (साहित्य)

सलग्न–वि० [स०] १ सटा हुआ। २ सबद्ध। ३ लडाई में गुथा हुआ।

सलाप–सज्ञा पु० [स०] १ वार्तालाप। बात चीत। २ नाटक में एक प्रकार का सवाद जिसमे धीरता होती है।

सवत्–सज्ञा पु० [स०] १ वर्ष। साल। २ वर्ष विशेष जो किसी सख्या द्वारा सूचित किया जाता है। सन्। ३ महाराज विक्रमादित्य के काल से चली हुई मानी जानेवाली वर्ष-गणना।

सवत्सर–सज्ञा पु० [स०] वर्ष। साल।

सँवर–सज्ञा स्त्री० [स० स्मृति] १ स्मरण। याद। २ खबर। ३ हाल।

सवरण–सज्ञा पु० [स०] [वि० सवरणीय सवृत] १ हटाना। दूर रखना। २ बद करना। ३ आच्छादित करना। छीपना। ४ छिपाना। गोपन करना। ५ किसी चित्तवृत्ति को दबाना या रोकना। निग्रह। ६ पसद करना। चुनना। ७ कन्या का विवाह के लिये वर या पति चुनना।

सँवरना–क्रि० अ० [स० सवर्णन] १ दुरुस्त होना। २ सजना। अलकृत होना। *क्रि० स० [हिं० सुमिरना] स्मरण करना।

सँवरिया–वि० दे० "साँवला"।

सवर्द्धक–सज्ञा पु० [स०] बढानेवाला।

सवर्द्धन–सज्ञा पु० [स०] [वि० सवर्द्धनीय, सवर्द्धित, सवृद्ध] १ बढना। २ पालना। पोसना। ३ बढाना।

सवाद–सज्ञा पु० [स० [कर्त्ता० सवादक] १ बात-चीत। कथोपकथन। २ खबर। हाल। समाचार। ३ प्रसग। चर्चा। ४ मामला। मुकदमा।

सवादी–वि० [स० सवादिन्] [स्त्री० सवादिनी] १ सवाद या बात-चीत करनेवाला। २ सहमत या अनुकूल होनेवाला। सज्ञा पु० सगीत में वह स्वर जो वादी के साथ सब स्वरो के साथ मिलता और सहायक होता है।

सवार–सज्ञा पु० [स०] १ ढाँकना। छिपाना। २ शब्दो के उच्चारण में बाह्य प्रयत्नो में से एक जिसमें कठ का आकुचन होता है।

सँवार–सज्ञा स्त्री० [स० स्मृति] हाल। खबर। सज्ञा स्त्री० सँवारने की क्रिया या भाव।

सँवारना–क्रि० स० [स० सवर्णन] १ सजाना। अलकृत करना। २ दुरुस्त करना। ठीक करना। ३ क्रम से रखना। ४ काम ठीक करना।

सवाहन–सज्ञा पु० [स०] [वि० सवाहनीय, सवाहित, सवाही, सवाह्य] १ उठाकर ले चलना। ढोना। २ ले जाना। पहुँचाना। ३ चलाना। परिचालन।

सविद्–सज्ञा स्त्री० [स०] १ चेतना। ज्ञान शक्ति। २ बोध। समझ। ३ बुद्धि। महत्तत्त्व। ४ सवेदन। अनुभूति। ५ मिलन का स्थान जो पहले से ठहराया हो। ६ वृत्तात। हाल। सवाद। ७ नाम। ८ युद्ध। लडाई। ९ सपत्ति। जायदाद।

सविद–वि० [स०] चेतन। चेतनायुक्त।

सवेद–सज्ञा पु० [स०] १ अनुभव। वेदना। २ ज्ञान। बोध।

सवेदन–सज्ञा पु० [स०] [वि० सवेदनीय, सवेदित, सवेद्य] १ अनुभव करना। सुख-दुख आदि की प्रतीति करना। २ जताना। प्रकट करना।

सवेद्य–वि० [स०] १ अनुभव करने योग्य। २ जताने योग्य। बताने लायक।

सशय–सज्ञा पु० [स०] १ अनिश्चयात्मक ज्ञान। सदेह। शक। शुबहा। २ आशका। डर। ३ सदेह नामक काव्यालकार।

सशयात्मक–वि० [स०] जिसमे सदेह हो। सदिग्ध। शुबहे का।

संशयात्मा–संज्ञा पुं० [सं० सशयात्मन्] जो किसी बात पर विश्वास न करे।
संशयी–वि० [स० संशयिन्] १. सशय या संदेह करनेवाला। २. शक्की।
संशयोपमा–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक उपमा अलंकार जिसमे कई वस्तुओं के साथ समानता सशय के रूप में कही जाती है।
संशोधक–संज्ञा पुं० [सं०] १. सुधारनेवाला। ठीक करनेवाला। २. बुरी से अच्छी दशा में लानेवाला।
संशोधन–संज्ञा पु० [सं०] [वि० संशोधनीय, सशोधित, संशुद्ध, संशोध्य] १. शुद्ध करना। साफ करना। २. दुरुस्त करना। ठीक करना। सुधारना। ३. चुकता करना। अदा करना। (ऋण आदि)
संशोधित–वि० [स०] १. शुद्ध किया हुआ। २ सुधारा हुआ।
संश्रय–सज्ञा पु० [सं०] १. सयोग। मेल। २ सबध। लगाव। ३ आश्रय। शरण। ४. सहारा। अवलंब। ५. मकान। घर।
संश्रयण–संज्ञा पु० [स०] [वि० सश्रयणीय, सश्रयी, संश्रित] १. सहारा लेना। २. शरण लेना।
संश्लिष्ट–वि० [स०] १ मिला हुआ। सम्मिलित। २ आलिंगित। परिरंभित।
संश्लेषण–सज्ञा पु० [स०] [वि०सश्लेषणीय, सश्लेषित, संश्लिष्ट] १ एक में मिलाना। सटाना। २. अँटकाना। टाँगना।
संस, संसइ*–सज्ञा पु० [स० संशय] आशंका।
संसरण–सज्ञा पु० [सं०] [वि० ससरणीय, ससरित, ससृत] १ चलना। गमन करना। २. ससार। जगत्। ३. सड़क। रास्ता।
संसर्ग–संज्ञा पु० [स०] १ सबध। लगाव। २. मेल। मिलाप। ३. संग। साथ। ४ स्त्री-पुरुष का सहवास।
संसर्ग-दोष–सज्ञा पु० [स०] वह बुराई जो किसी के साथ रहने से आवे।
संसर्गी–वि० [स० संसर्गिन्] [स्त्री० ससर्गिणी] ससर्ग या लगाव रखनेवाला।
संसा*–सज्ञा पु० दे० "संशय"।
संसार–संज्ञा पु० [सं०] १. लगातार एक अवस्था से दूसरी अवस्था में जाता रहना। २. बार बार जन्म लेने की परपरा। आवागमन। ३. जगत्। दुनिया। सृष्टि। ४. इहलोक। मर्त्यलोक। ५. गृहस्थी।
संसार-तिलक–संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का उत्तम चावल।
संसारी–वि० [सं० संसारिन्] [स्त्री० संसारिणी] १. संसार-संबंधी। लौकिक। २. संसार की माया में फँसा हुआ। लोक-व्यवहार में कुशल। ३. बार बार जन्म लेनेवाला।
संसृति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जन्म पर जन्म लेने की परंपरा। आवागमन। २. संसार।
संसृष्ट–वि० [स०] १. एक में मिला-जुला। मिश्रित। २. संबद्ध। परस्पर लगा हुआ। ३. अंतर्गत। शामिल।
संसृष्टि–सज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक साथ उत्पत्ति या आविर्भाव। २. मिलावट। मिश्रण। ३ संबंध। लगाव। ४. हेलमेल। घनिष्ठता। ५ इकट्ठा करना। संग्रह। ६. दो या अधिक काव्यालंकारों का ऐसा मेल जिसमें सब अलग अलग हों।
संस्करण–संज्ञा पु० [स०] १. ठीक करना। दुरुस्त करना। २. शुद्ध करना। सुधारना ३. द्विजातियों के लिये विहित संस्कार करना। ४. पुस्तकों की एक बार की छपाई। आवृत्ति। (आधुनिक)
संस्कर्ता–संज्ञा पु० [सं०] संस्कार करनेवाला
संस्कार–सज्ञा पु० [सं०] १. ठीक करना दुरुस्ती। सुधार। २. सजाना। ३. साफ करना। परिष्कार। ४. शिक्षा, उपदेश सगत आदि का मन पर पड़ा हुआ प्रभाव ५. पिछले जन्म की बातों का असर जो आत्मा के साथ लगा रहता है। ६. धर्म की दृष्टि से शुद्ध करना। ७. वे १६ कृत्य जो जन्म से लेकर मरण-काल तक द्विजातियों के संबंध में आवश्यक होते हैं। ८ मृतक की क्रिया। ९. इंद्रियों के विषयों के ग्रहण से मन में उत्पन्न प्रभाव।

सस्कारहीन–वि० [स०] जिसका सस्कार न हुआ हो। व्रात्य।

सस्कृत–वि० [स०] १ सस्कार किया हुआ। शुद्ध किया हुआ। २ परिमार्जित। परिष्कृत। ३ साफ किया हुआ। ४ सुधारा हुआ। ठीक किया हुआ। ५ सँवारा हुआ। सजाया हुआ। ६ जिसका उपनयन आदि सस्कार हुआ हो।

सज्ञा स्त्री० भारतीय आर्य्यों की प्राचीन साहित्यिक भाषा जिसमे उनके धर्मग्रथ आदि है। देववाणी।

सस्कृति–सज्ञा स्त्री० [स०] १ शुद्धि। सफाई। २ सस्कार। सुधार। ३ सजावट। ४ सभ्यता। शाइस्तगी। ५ २४ वर्ण के वृत्तो की सज्ञा।

सस्था–सज्ञा स्त्री० [स०] १ ठहरने की क्रिया या भाव। स्थिति। २ व्यवस्था। विधि। मर्य्यादा। ३ जत्था। गरोह। ४ सघटित समुदाय। समाज। मडल। सभा।

सस्थान–सज्ञा पु० [स०] १ ठहराव। स्थिति। २ खडा रहना। डटा रहना। ३ बैठाना। स्थापन। ४ अस्तित्व। जीवन। ५ डेरा। घर। ६ बस्ती। जनपद। सार्वजनिक स्थान। सर्वसाधारण के इकट्ठे होने की जगह। ७ समष्टि। योग। जोड। ८ नाश। मृत्यु।

सस्थापक–सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० सस्थापिका] सस्थापन करनेवाला।

सस्थापन–सज्ञा पु० [स०] [वि० सस्थापनीय, सस्थापित, सस्थाप्य] १ खडा करना। उठाना। (भवन आदि) २ जमाना। बैठाना। ३ कोई नई बात चलाना।

सस्मरण–सज्ञा पु० [स०] [वि० सस्मरणीय, सस्मृत] १ पूर्ण स्मरण। खूब याद। २ अच्छी तरह सुमिरना या नाम लेना।

सहत–वि० [स०] १ खूब मिला हुआ। जुडा या सटा हुआ। २ सयुक्त। सहित। ३ कडा। सख्त। ४ गठा हुआ। घना। ५ मजबूत। ६ एकत्र। इकट्ठा।

सहति–सज्ञा स्त्री० [स०] १ मिलाव। मेल। २ जुटाव। बटोर। ३ राशि। ढेर। ४. समूह। झुड। ५ ठोसपन। घनत्व। ६ सधि। जोड।

सहरना–क्रि० अ० [स० सहार] नष्ट होना। सहार होना।

क्रि० स० सहार करना।

सहार–सज्ञा पु० [स०] १ इकट्ठा करना। बटोरना। २ समेटकर बाँधना। गूँथना। (केशो का) ३ छोडे हुए बाण को फिर वापस लेना। ४ नाश। ध्वस। ५ समाप्ति। अत। ६ निवारण। परिहार।

सहारक–सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० सहारिका] सहार करनेवाला। नाशक।

सहार-काल–सज्ञा पु० [स०] प्रलय-काल।

सहारना*–क्रि० स० [स० सहरण] १ मार डालना। २ नाश करना। ध्वस करना।

सहित–वि० [स०] १ एकत्र किया हुआ। २ मिलाया हुआ। ३ जुडा हुआ।

सहिता–सज्ञा स्त्री० [स०] १ मेल। मिलावट। २ व्याकरण के अनुसार दो अक्षरो का मिलकर एक होना। सधि। ३ वह ग्रथ जिसमें पद पाठ आदि का क्रम नियमानुसार चला आता हो। जैसे—धर्मसहिताएँ या स्मृतियाँ।

स–सज्ञा पु० [स०] १ ईश्वर। २ शिव। महादेव। ३ साँप। ४ पक्षी। चिडिया। ५ वायु। हवा। ६ जीवात्मा। ७ चद्रमा। ८ ज्ञान। ९ सगीत मे षड्ज स्वर का सूचक अक्षर। १० छद शास्त्र में 'सगण' शब्द का सक्षिप्त रूप।

उप० एक उपसर्ग जिसका प्रयोग शब्दो के आरभ में कुछ विशिष्ट अर्थ उत्पन्न करने के लिये होता है। जैसे—(क) सजीव = सह + जीव। (ख) सगोत्र। (ग) सपूत।

सइ*–अव्य० [स० सह] से। साथ।

*अव्य० [प्रा० सुतो] एक विभक्ति जो करण और अपादान कारक का चिह्न है।

सइयो*†–सज्ञा स्त्री० [स० सखी] सखी।

सई–सज्ञा स्त्री० [?] वृद्धि। बढती।

सउँ*–अव्य० दे० "सो"।

सक†—संज्ञा स्त्री० दे० "शक्ति" या "सकत"। संज्ञा पुं० [हिं० साका] साका। धाक।
सकट—संज्ञा पुं० [सं० शकट] गाड़ी। छकड़ा।
सकत†—संज्ञा स्त्री० [सं० शक्ति] १. बल। शक्ति। सामर्थ्य। २. वैभव। संपत्ति। क्रि० वि० जहाँ तक हो सके। भरसक।
सकता—संज्ञा स्त्री० [सं० शक्ति] १. शक्ति। ताक़त। बल। २. सामर्थ्य।
संज्ञा पुं० [अ० सकतः] १. बेहोशी की बीमारी। २. विराम। यति।
मुहा०—सकता पड़ना = छंद में यति-भंग दोष होना।
सकती—संज्ञा स्त्री० दे० "शक्ति"।
सकना—क्रि० अ० [सं० शक् या शक्य] कोई काम करने में समर्थ होना। करने योग्य होना।
सकपकाना—क्रि० अ० [अनु० सक-पक] १. आश्चर्यमुक्त होना। २. हिचकना। ३. लज्जित होना। ४. प्रेम, लज्जा या शंका के कारण उद्भूत एक प्रकार की चेष्टा। ५. हिलना-डोलना।
सकरना—क्रि० अ० [सं० स्वीकरण] १. सकारा जाना। मंजूर होना। २. क़बूला जाना।
सकरपाला—संज्ञा पुं० दे० "शकरपारा"।
सकर्मक क्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] व्याकरण में वह क्रिया जिसका कार्य्य उसके कर्म पर समाप्त हो। जैसे—खाना, देना, लेना।
सकल—वि० [सं०] सब। समस्त। कुल। संज्ञा पुं० निर्गुण ब्रह्म और सगुण प्रकृति।
सकलात—संज्ञा पुं० [?] १. ओढ़न की रजाई। दुलाई। २. सौगात। उपहार।
सकसकाना, सकसाना*†—क्रि० अ० [अनु०] डर के मारे काँपना।
सकाना*†—क्रि० अ० [सं० शंका] १. शंका करना। संदेह करना। २. भय के कारण संकोच करना। हिचकना। ३. दुःखी होना।
क्रि० स० "सकना" का प्रेरणार्थक। (क्व०)
सकाम—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह व्यक्ति जिसे कोई कामना या इच्छा हो। २. वह व्यक्ति जिसकी कामना पूर्ण हुई हो। ३. काम-वासना-युक्त व्यक्ति। कामी। ४. वह जो कोई कार्य फल मिलने की इच्छा से करे।
सकारना—क्रि० अ० [सं० स्वीकरण] १. स्वीकार करना। मंजूर करना। २. महाजनों का हुंडी की मिती पूरी होने के एक दिन पहले उस पर हस्ताक्षर करना।
सकारे†—क्रि० वि० [सं० सकाल] सवेरे।
सकिलना†—क्रि० अ० [हिं० फिसलना का अनु०] १. फिसलना। सरकना। २. सिमटना।
सकुच*†—संज्ञा स्त्री० [सं० संकोच] लाज। शर्म।
सकुचना—क्रि० अ० [सं० संकोच] १. लज्जा करना। शरमाना। २. (फूलों का) संपुटित होना। बंद होना।
सकुचाई*—संज्ञा स्त्री० [सं० संकोच] लज्जा।
सकुचाना—क्रि० अ० [सं० संकोच] संकोच करना।
क्रि० स० १. सिकोड़ना। २. किसी को संकुचित या लज्जित करना।
सकुची—संज्ञा स्त्री० [सं० शकुल मत्स्य] कछुए के आकार की एक प्रकार की मछली।
सकुचौहाँ—वि० [हिं० संकोच] संकोच करनेवाला। लजीला।
सकुन*—संज्ञा पुं० [सं० शकुंत] पक्षी। चिड़िया। संज्ञा पुं० दे० "शकुन"।
सकुनी*†—संज्ञा स्त्री० [सं० शकुन] चिड़िया।
सकुपना*—क्रि० अ० दे० "सकोपना"।
सकूनत—संज्ञा स्त्री० [अ०] निवास-स्थान।
सकृत्—अव्य० [सं०] १. एक बार। एक मरतबा। २. सदा। ३. साथ। सह।
सकेत*†—संज्ञा पुं० [सं० संकेत] १. संकेत। इशारा। २. प्रेमी और प्रेमिका के मिलने का निर्दिष्ट स्थान।
वि० [सं० संकीर्ण] तंग। संकुचित।
संज्ञा पुं० विपत्ति। दुःख। कष्ट।
सकेतना*†—क्रि० अ० दे० "सिकुड़ना"।
सकेलना†—क्रि० स० [सं० संकल ?] एकत्र करना। इकट्ठा करना। जमा करना।
सकेला—संज्ञा स्त्री० [अ० सैकल] एक प्रकार

की तलवार।
सकोच–सज्ञा पु० दे० "सकोच"।
सकोचना–क्रि० स० दे० "सिकोडना"।
सकोपना*†–क्रि० अ० [स० कोप] कोप करना। क्रोध करना। गुस्सा करना।
सकोरा–सज्ञा पु० दे० "कसोरा"।
सक्का–सज्ञा पु० [अ०] भिश्ती। माशकी।
सक्ति–सज्ञा स्त्री० दे० "शक्ति"।
सक्तु, सक्तुक–सज्ञा पु० [स० सक्तु] भुने हुए अनाज का आटा। सत्तू।
सक्र*–सज्ञा पु० [स० शक्र] इद्र।
सक्रारि*–सज्ञा पु० [स० शक्रारि] मेघनाद।
सक्षम–वि० [स०] १ जिसमें क्षमता हो। क्षमताशाली। २ समर्थ।
सख–सज्ञा पु० [स० सखिन्] सखा। मित्र।
सखरा–सज्ञा पु० दे० "सखरी"।
सखरी–सज्ञा स्त्री० [हि० निखरा या निखरी] कच्ची रसोई। जैसे—दाल भात।
सखा–सज्ञा पु० [स० सखिन] १ साथी। सगी। २ मित्र। दोस्त। ३ सहयोगी। सहचर। ४ साहित्य में 'नायक' का सहचर। ये चार प्रकार के होते हैं—पीठमर्द, विट, चेट और विदूषक।
सखावत–सज्ञा स्त्री० [अ०] १ दानशीलता। २ उदारता। फैयाजी।
सखी–सज्ञा स्त्री० [स०] १ सहेली। सहचरी। २ सगिनी। ३ साहित्य मे वह स्त्री जो नायिका के साथ रहती हो और जिससे वह अपनी कोई बात न छिपावे। ४ १४ मात्राओं का एक छद।
वि० [अ० सखी] दाता। दानी। दानशील।
सखी भाव–सज्ञा पु० [स०] भक्ति का एक प्रकार जिसमे भक्त अपने आपको इष्ट देवता की पत्नी या सखी मानकर उपासना करते हैं।
सखुआ–सज्ञा पु० दे० "शाल"। (वृक्ष)
सखुन–सज्ञा पु० [फा० सखुन] १ बातचीत। वार्तालाप। २ कविता। काव्य। ३ कौल। वचन। ४ कथन। उक्ति।
सखुन-तकिया–सज्ञा पु० [फा०] वह शब्द या वाक्यांश जो कुछ लोगों के मुँह से प्राय निकला करता है। तकिया कलाम।
सख्त–वि० [फा०] १ कठोर। कडा। २. मुश्किल। कठिन।
क्रि० वि० बहुत अधिक।
सख्य–सज्ञा पु० [स०] १ सखा का भाव। सखापन। २. मित्रता। दोस्ती। ३ वैष्णव मतानुसार ईश्वर के प्रति वह भाव जिसमे ईश्वरानुरागी या भक्त अपना सखा मानता है।
सख्यता–सज्ञा स्त्री० दे० "सख्य"।
सगण–सज्ञा पु० [स०] छद शास्त्र में एक गण जिसमें दो लघु और एक गुरु अक्षर होते हैं। इसका रूप ।।ऽ है।
सग-पहती–सज्ञा स्त्री० [हि० साग+पहिती= दाल] एक प्रकार की दाल जो साग मिलाकर बनाई जाती है।
सगबग–वि० [अनु०] १ सराबोर। लथपथ। २ द्रवित। ३ परिपूर्ण।
क्रि० वि० तेजी से। जल्दी से। चटपट।
सगबगाना–क्रि० अ० [अनु० सगबग] १ लथपथ होना। भीगना या सराबोर होना। २ सकपकाना। शकित होना।
सगर–सज्ञा पु० [स०] अयोध्या के एक प्रसिद्ध सूर्य्यवशी राजा जो बडे धर्म्मात्मा तथा प्रजा-रजक थे। इन्हें ६० हजार पुत्र हुए थे। राजा भगीरथ इन्हीं के वश के थे।
सगरा†–वि० [स० सकल] [स्त्री० सगरी] सब। तमाम। सकल। कुल।
सगल*†–वि० दे० "सकल"।
सगा–वि० [स० स्वक] [स्त्री० सगी] १ एक माता से उत्पन्न। सहोदर। २ जो सबध में अपने ही कुल का हो।
सगाई–सज्ञा स्त्री० [हि० सगा+आई (प्रत्य०)] १ विवाह-सबधी निश्चय। मँगनी। २ स्त्री-पुरुष का वह सबध जो छोटी जातियों में विवाह के तुल्य माना जाता है। ३ सबध। नाता। रिश्ता।
सगापन–सज्ञा पु० [हि० सगा+पन] सगा होने का भाव। सबध की आत्मीयता।
सगुण–सज्ञा पु० [स०] १ परमात्मा का वह

रूप जो सत्त्व, रज और तम तीनों गुणों से युक्त है। साकार ब्रह्म। २. वह सम्प्रदाय जिसमे ईश्वर का सगुण रूप मानकर अवतारों की पूजा होती है।
सगुन–संज्ञा पुं० १. दे० "शकुन"। २. दे० "सगुण"।
सगुनाना–क्रि० स० [सं० शकुन + आना (प्रत्य०)] १. शकुन बतलाना। २. शकुन निकालना या देखना।
सगुनिया–संज्ञा पुं० [सं० शकुन+इया(प्रत्य०)] शकुन विचारने और बतलानेवाला।
सगुनौती–संज्ञा स्त्री० [हिं० सगुन + औती (प्रत्य०)] शकुन विचारने की क्रिया।
सगोती–संज्ञा पुं० [सं० सगोत्र] १. एक गोत्र के लोग। सगोत्र। २. भाई-बंधु।
सगोत्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक गोत्र के लोग। सजातीय। २. कुल। जाति।
सघन–वि० [सं०] [भाव० सघनता] १. घना। गझिन। अविरल। गुंजान। २. ठोस। ठस।
सच–वि० [सं० सत्य] जो यथार्थ हो। सत्य। वास्तविक। ठीक। दे० "सत्य"।
सचना*†–क्रि० स० [सं० संचयन] १. संचय करना। एकत्र करना। २. पूरा करना। क्रि० अ० स० दे० "सजना"।
सचमुच–अव्य० [हिं० सच + मुच (अनु०)] १. यथार्थतः। ठीक ठीक। वास्तव में। २. अवश्य। निश्चय।
सचरना*–क्रि० अ० [सं० सचरण] १. संचरित होना। फैलना। २. बहुत प्रचलित होना। ३. संचार करना। प्रवेश करना।
सचराचर–संज्ञा पुं० [सं०] संसार की सब चर और अचर वस्तुएँ।
सचाई–संज्ञा स्त्री० [सं० सत्य, प्रा० सच्च + आई (प्रत्य०)] १. सत्यता। सच्चापन। २. वास्तविकता। यथार्थता।
सचान–संज्ञा पुं० [सं० संचान + श्येन] श्येन पक्षी। बाज।
सचारना*†–क्रि० स० [सं० संचारण] सचरना का सकर्मक रूप। फैलाना।
सचिंत–वि० [सं०] जिसे चिंता हो।
सचिक्कण–वि० [सं०] अत्यंत चिकना।
सचिव–संज्ञा पुं० [सं०] १. मित्र। दोस्त। २. मंत्री। वज़ीर। ३. सहायक।
सची–संज्ञा स्त्री० दे० "शची"।
सचु*†–संज्ञा पुं० [?] १. सुख। आनंद। २. प्रसन्नता। खुशी।
सचेत–वि० दे० "सचेतन"।
सचेतन–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जिसमें चेतना हो। २. वह जो जड़ न हो। चेतन। वि० १. चेतनायुक्त। २. सावधान। होशियार। ३. समझदार। चतुर।
सचेष्ट–वि० [सं०] १. जिसमें चेष्टा हो। २. जो चेष्टा करे।
सच्चा–वि० [सं० सत्य] [स्त्री० सच्ची] १. सच बोलनेवाला। सत्यवादी। २. यथार्थ। ठीक। वास्तविक। ३. असली। विशुद्ध। ४. बिलकुल ठीक और पूरा।
सच्चाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० सच्चा+आई(प्रत्य०)] सच्चा होने का भाव। सच्चापन। सत्यता।
सच्चापन–संज्ञा पुं० दे० "सच्चाई"।
सच्चिकन*–वि० दे० "सचिक्कण"।
सच्चिदानंद–संज्ञा पुं० [सं०] (सत्, चित् और आनंद से युक्त) परमात्मा। ईश्वर।
सच्छत*–वि० [सं० सक्षत] घायल। ज़ख्मी।
सच्छंद*–वि० दे० "स्वच्छंद"।
सच्छी*–संज्ञा पुं०, स्त्री० दे० "साक्षी"।
सज–संज्ञा स्त्री० [हिं० सजावट] १. सजने की क्रिया या भाव। २. डौल। शकल। ३. शोभा। सौंदर्य। सजावट।
सजा–संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का वृक्ष।
सजग–वि० [सं० जागरण] सावधान। सचेत। सतर्क। होशियार।
सजदार–वि० [हिं० सज+फ़ा० दार(प्रत्य०)] जिसकी आकृति अच्छी हो। सुंदर।
सज-धज–संज्ञा स्त्री० [हिं० सज + धज (अनु०)] बनाव-सिंगार। सजावट।
सजन–संज्ञा पुं० [सं० सत + जन = सज्जन] [स्त्री० सजनी] १. भला आदमी। सज्जन। शरीफ़। २. पति। भर्ता। ३. प्रियतम। यार।
सजना–क्रि० स० [सं० सज्जा] १. सज्जित

करना। अलंकृत करना। शृंगार करना। २ शोभा देना। भला जान पड़ना।
क्रि० अ० सुसज्जित होना।
सजल–वि० [सं०] १. जल से युक्त या पूर्ण। २. आँसुओं से पूर्ण। (आँख)
सजवल–संज्ञा पु० [हिं० सजना] तैयारी।
सजवाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० सजना + वाई (प्रत्य०)] सजवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
सजवाना–क्रि० स० [हिं० सजाना का प्रेर०] किसी के द्वारा सुसज्जित कराना।
सजा–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. दंड। २ जेल में रखने का दंड।
सजाइ*†–संज्ञा स्त्री० [फा० सजा] सजा। दंड
सजाई–संज्ञा स्त्री० [फा० सजाना] सजाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
सजातीय–वि० [सं०] एक जाति या गोत्र का।
सजान*–संज्ञा पु० [सं० सज्ञान] १ जानकार। जाननेवाला। २ चतुर। होशियार।
सजाना–क्रि० स० [सं० सज्जा] १ वस्तुओं को यथास्थान रखना। तरतीब लगाना। २ अलंकृत करना। शृंगार करना।
सजाय*†–संज्ञा स्त्री० दे० "सजा"।
सजायाफ्ता, सजायाब–संज्ञा पु० [फा०] वह जो कैद की सजा भोग चुका हो।
सजाव–संज्ञा पु० [हिं० सजाना ?] एक प्रकार का दही।
सजावट–संज्ञा स्त्री० [हिं० सजाना + आवट (प्रत्य०)] सज्जित होने का भाव या धर्म।
सजावन*†–संज्ञा पु० [हिं० सजाना] सजाने या तैयार करने की क्रिया।
सजावल–संज्ञा पु० (तु० सजावुल] १ सरकारी कर उगाहनेवाला कर्मचारी। तहसीलदार। २ सिपाही। जमादार।
सजीउ*†–वि० दे० "सजीव"।
सजीला–वि० [हिं० सजना+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० सजीली] १ सजधज के साथ रहनेवाला। छैला। २ सुंदर। मनोहर।
सजीव–वि० [सं०] १ जिसमें प्राण हो। २ फुरतीला। तेज। ३ ओजयुक्त।
सजीवन–संज्ञा पु० दे० "सजीवनी"।
सजीवन मूल*–संज्ञा पु० दे० "सजीवनी"।
सजीवनी मंत्र–संज्ञा पु० [सं० सजीवन+मंत्र] वह कल्पित मंत्र जिसके संबंध में लोगों का विश्वास है कि मरे हुए को जिलाने की शक्ति रखता है।
सजुग*†–वि० [हिं० सजग] सचेत।
सजुता–संज्ञा स्त्री० दे० "संयुता"। (छंद)
सजूरी–संज्ञा स्त्री० [?] एक प्रकार की मिठाई।
सजोना†–क्रि० स० दे० "सजाना"।
सज्ज*–संज्ञा पु० दे० "साज"।
सज्जन–संज्ञा पु० [सं० सत् + जन] १ भला आदमी। शरीफ। २ प्रिय मनुष्य। प्रियतम। ३ सजाने की क्रिया या भाव।
सज्जनता–संज्ञा स्त्री० [सं०] सज्जन होने का भाव। भलमंसाहत। सौजन्य।
सज्जनताई*–संज्ञा स्त्री० दे० "सज्जनता"।
सज्जा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सजाने की क्रिया या भाव। सजावट। २ वेष-भूषा।
संज्ञा स्त्री० [सं० शय्या] १ सोने की चारपाई। शय्या। २ दे० "शय्यादान"।
सज्जित–वि० [सं०] १ सजा हुआ। अलंकृत। २ आवश्यक वस्तुओं से युक्त।
सज्जी–संज्ञा स्त्री० [सं० सर्जिका] भूरे रंग का एक प्रसिद्ध क्षार।
सज्जीखार–संज्ञा पु० दे० "सज्जी"।
सज्जुता–संज्ञा स्त्री० दे० "संयुता"। (छंद)
सज्ञान–वि० [सं०] १ ज्ञानयुक्त। २ चतुर। बुद्धिमान्। ३ सावधान।
सटक–संज्ञा स्त्री० [अनु० सट से] १ सटकने की क्रिया। धीरे से चंपत होना। २ तंबाकू पीने का लंबा लचीला नैचा। ३ पतली लचनेवाली छड़ी।
सटकना–क्रि० अ० [अनु० सट से] धीरे से खिसक जाना। चंपत होना।
सटकाना–क्रि० स० [अनु० सट से] छड़ी, कोड़े आदि से मारना।
सटकार–संज्ञा स्त्री० [अनु० सट] १. सटकाने की क्रिया या भाव। २ गौ आदि को हाँकने की क्रिया। हटकार।

सटकारना–क्रि० स० [अनु० सट से] छड़ी या कोड़े से मारना। सट सट मारना।
सटकारा–वि० [अनु०] चिकना और लंबा। (बाल)
सटकारी–संज्ञा स्त्री० [अनु०] पतली छड़ी।
सटना–क्रि० अ० [सं० स+स्था] १. दो चीजों का इस प्रकार एक में मिलना जिसमें दोनों के पार्श्व एक दूसरे से लग जायँ। २. चिपकना। ३. मार-पीट होना।
सटपट–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. सिटपिटाने की क्रिया। चकपकाहट। २. शील। संकोच। ३. दुविधा। असमंजस।
सटपटाना–क्रि० अ० दे० "सिटपिटाना"।
सटरपटर–वि० [अनु०] छोटा मोटा। तुच्छ। मामूली।
संज्ञा स्त्री० बखेड़े का या तुच्छ काम।
सटसट–क्रि० वि० [अनु०] १. सट शब्द के साथ। सटासट। २. शीघ्र। जल्दी।
सटाना–क्रि० स० [सं० स+स्था या स निष्ट] १. दो चीजों के पार्श्वों को आपस में मिलाना। मिलाना। २. लाठी डंडे आदि से लड़ाई करना। (बदमाश)
सटीक–वि० [सं०] जिसमें मूल के साथ टीका भी हो। व्याख्या-सहित।
वि० [हिं० ठीक] बिलकुल ठीक।
सट्टक–संज्ञा पु० [सं०] प्राकृत भाषा में प्रणीत छोटा रूपक।
सट्टा–संज्ञा पु० [देश०] इकरारनामा।
सट्टा बट्टा–संज्ञा पुं० [हिं० सटना+अनु० बट्टा] १. मेल-मिलाप। हेल-मेल। २. धूर्तता-पूर्ण युक्ति। चालबाजी।
सट्टी–संज्ञा स्त्री० [हिं० हाट या हट्टी] वह बाजार जिसमें एक ही मेल की चीजें लोग लाकर बेचते हों। हाट।
सठ–संज्ञा पु० दे० "शठ"।
सठता–संज्ञा स्त्री० [सं० शठ] १. शठ होने का भाव। शठता। २. मूर्खता। बेवकूफी।
सठियाना–क्रि० अ० [हिं० साठ+याना (प्रत्य०)] १. साठ बरस का होना। २. बुड्ढा होना। वृद्धावस्था के कारण बुद्धि का कम हो जाना।
सड़क–संज्ञा स्त्री० [अ० शरक] आने-जाने का चौड़ा रास्ता। राजमार्ग। राजपथ।
सड़ना–क्रि० अ० [सं० सरण] १. किसी पदार्थ में ऐसा विकार होना जिससे उसके अंग अलग हो जायँ और उसमें दुर्गन्ध आने लगे। २. किसी पदार्थ में खमीर उठना या आना। ३. दुर्दशा में पड़ा रहना।
सड़ाना–क्रि० स० [हिं० सड़ना का स०] किसी वस्तु को सड़ने में प्रवृत्त करना।
सड़ायँध–संज्ञा स्त्री० [हिं० सड़ना+गंध] सड़ी हुई चीज की गंध।
सड़ासड़–अव्य० [अनु० सड़ से] सड़ शब्द के साथ। जिसमें सड़ शब्द हो।
सड़ियल–वि० [हिं० सड़ना+इयल (प्रत्य०)] १. सड़ा हुआ। गला हुआ। २. रद्दी। खराब। ३. नीच। तुच्छ।
सत्–संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्म।
वि० १. सत्य। २. साधु। सज्जन। ३. धीर। ४. नित्य। स्थायी। ५. विद्वान्। पंडित। ६. शुद्ध। पवित्र। ७. श्रेष्ठ।
सत–वि० दे० "सत्"।
संज्ञा पुं० [सं० सत्] सभ्यतापूर्ण धर्म।
मुहा०—सत पर चढ़ना=पति के मृत शरीर के साथ सती होना। सत पर रहना=पतिव्रता रहना।
वि० दे० "सात"।
संज्ञा पु० [सं० सत्त्व] १. मूल तत्त्व। सार भाग। २. जीवनी-शक्ति। ताकत।
वि० "सात" (संख्या) का संक्षिप्त रूप। (यौगिक)
सतकार–संज्ञा पुं० दे० "सत्कार"।
सतकारना*–क्रि० स० [सं० सत्कार+ना (प्रत्य०)] सत्कार करना। सम्मान करना।
सतगुरु–संज्ञा पुं० [हिं० सत=सच्चा+गुरु] १. अच्छा गुरु। २. परमात्मा। परमेश्वर।
सतजुग–संज्ञा पु० दे० "सत्ययुग"।
सतत–अव्य० [सं०] सदा। हमेशा।
सतनजा–संज्ञा पुं० [हिं० सात+अनाज] सात भिन्न प्रकार के अन्नों का मेल।

सतपुतिया–संज्ञा स्त्री०[सं० सप्तपुत्रिका] एक प्रकार की तरोई।

सतफेरा–संज्ञा पुं० [हिं० सात + फेरा] विवाह के समय का सप्तपदी कर्म।

सतमासा–संज्ञा पुं० [हिं० सात + मास] वह बच्चा जो गर्भ में सातवें महीने उत्पन्न हो।

सतयुग–संज्ञा पुं० दे० "सत्ययुग"।

सतर–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ लकीर। रेखा। पंक्ति। अवली। कतार।

वि० १ टेढ़ा। वक्र। २ कुपित। क्रुद्ध।

संज्ञा स्त्री०[अ०] १ मनुष्य की गुह्य इंद्रिय। २ ओट। आड़। परदा।

सतराना–क्रि० अ० [हिं० सतर या सं० संतर्जन] १ क्रोध करना। २ चिढ़ना।

सतरौहाँ†–वि०[हिं० सतराना] १ कुपित। क्रोधयुक्त। २ कोपसूचक।

सतर्क–वि० [सं०][भाव० सतर्कता] १ तर्कयुक्त। युक्ति से पुष्ट। २ सावधान।

सतर्पना–क्रि० स० [सं० संतर्पण] अच्छी तरह संतुष्ट या तृप्त करना।

सतलज–संज्ञा स्त्री०[सं० शतद्रु] पंजाब की पाँच नदियों में से एक। शतद्रु नदी।

सतवंती–वि० स्त्री० [हिं० सत्य + वन्ती (प्रत्य०)] सतवाली। सती। पतिव्रता।

सतसंग–संज्ञा पुं० दे० "सत्संग"।

सतसई–संज्ञा स्त्री० [सं० सप्तशती] वह ग्रंथ जिसमें सात सौ पद्य हों। सप्तशती।

सतह–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ किसी वस्तु का ऊपरी भाग। तल। २ वह विस्तार जिसमें केवल लंबाई और चौड़ाई हो।

सतांग–संज्ञा पुं० [सं० शतांग] रथ। यान।

सतानंद–संज्ञा पुं० [सं०] गौतम ऋषि के पुत्र, जो राजा जनक के पुरोहित थे।

सताना–क्रि० स० [सं० संतापन] १ संताप देना। दुःख देना। २ हैरान करना।

सतालू–संज्ञा पुं० [सं० सप्तालुक] शफ़्ताल। आड़ू।

सतावना*†–क्रि० स० दे० "सताना"।

सतावर–संज्ञा स्त्री०[सं० शतावरी] एक बेल जिसकी जड़ और बीज औषध के काम में आते हैं। शतमूली।

सति*–संज्ञा पुं० दे० "सत्य"।

सतिवन–संज्ञा पुं० [सं० सप्तपर्ण] छतिवन।

सती–वि० स्त्री० [सं०] साध्वी। पतिव्रता।

संज्ञा स्त्री० १ दक्ष प्रजापति की कन्या जो शिव को ब्याही थीं। २ पतिव्रता स्त्री। ३ वह स्त्री जो अपने पति के शव के साथ चिता में जले। ४ एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में एक नगण और एक गुरु होता है।

सतीत्व–संज्ञा पुं० [सं०] सती होने का भाव। पातिव्रत्य।

सतीत्व-हरण–संज्ञा पुं० [सं०] परस्त्री के साथ बलात्कार। सतीत्व बिगाड़ना।

सतीपन–संज्ञा पुं० दे० "सतीत्व"।

सतुआ†–संज्ञा पुं० दे० "सत्तू"।

सतुआ संक्रांति–संज्ञा स्त्री० [हिं० सतुआ + संक्रांति] मेष की संक्रांति।

सतून–संज्ञा पुं० [फ़ा०] स्तंभ। खंभा।

सतूना–संज्ञा पुं० [फ़ा० सतून] बाज की एक प्रकार की झपट।

सतोखना*†–क्रि० स० [सं० संतोषण] १ संतुष्ट करना। २ ढारस देना।

सतोगुण–संज्ञा पुं० दे० सत्व गुण।

सतोगुणी–संज्ञा पुं० [हिं० सतोगुण + ई (प्रत्य०)] सत्त्वगुणवाला। सात्त्विक।

सत्कर्म–संज्ञा पुं०[सं० सत्कर्मन्] १ अच्छा काम। २ धर्म का काम। पुण्य।

सत्कार–संज्ञा पुं० [सं०] १ आदर सम्मान। खातिरदारी। २ आतिथ्य।

सत्कार्य्य–वि० [सं०] सत्कार करने योग्य।

संज्ञा पुं० उत्तम कार्य्य। अच्छा काम।

सत्कीर्त्ति–संज्ञा स्त्री०[सं०] यश। नेकनामी।

सत्कुल–संज्ञा पुं० [सं०] उत्तम कुल। अच्छा या बड़ा खानदान।

सत्त–संज्ञा पुं० [सं० सत्त्व] १ सार भाग। असली चीज। २ तत्त्व। काम की वस्तु।

‡*संज्ञा पुं० [सं० सत्य] १ सत्य। सच बात। २ सतीत्व। पातिव्रत्य।

सत्ता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ होने का भाव। अस्तित्व। हस्ती। २ शक्ति। दम।

३. अधिकार। प्रभुत्व। हुकूमत।
संज्ञा पुं० [हिं० सात] ताश या गंजीफ़े का वह पत्ता जिसमें सात बूटियाँ हों।
सत्ताधारी–संज्ञा पुं० [सं० सत्ताधारिन्] अधिकारी। अफ़सर। हाकिम।
सत्ताशास्त्र–संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें मूल या पारमार्थिक सत्ता का विवेचन हो।
सत्तू–संज्ञा पुं० [सं० सक्तुक] भुने हुए जौ और चने का चूर्ण। सतुआ।
सत्पथ–संज्ञा पुं० [सं०] १. उत्तम मार्ग। २. सदाचार। अच्छी चाल।
सत्पात्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. दान आदि देने के योग्य उत्तम व्यक्ति। २. श्रेष्ठ और सदाचारी।
सत्पुरुष–संज्ञा पुं० [सं०] भला आदमी।
सत्य–वि० [सं०] १. यथार्थ। ठीक। वास्तविक। सही। २. असल।
संज्ञा पुं० १. ठीक बात। यथार्थ-तत्त्व। २. उचित पक्ष। धर्म की बात। ३. वह वस्तु जिसमें किसी प्रकार का विकार न हो। (वेदांत) ४. ऊपर के सात लोकों में से सब से ऊपर का लोक। ५. विष्णु। ६. चार युगों में से पहला युग। कृतयुग।
सत्यकाम–वि० [सं०] सत्य का प्रेमी।
सत्यतः–अव्य० [सं०] वास्तव में। सचमुच।
सत्यता–संज्ञा स्त्री० [सं०] सत्य होने का भाव। वास्तविकता। सच्चाई।
सत्यनारायण–संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।
सत्यभामा–संज्ञा स्त्री० [सं०] श्रीकृष्ण की आठ पटरानियों में से एक।
सत्ययुग–संज्ञा पुं० [सं०] चार युगों में से पहला जो सबसे उत्तम माना जाता है।
सत्यवती–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मत्स्यगंधा नामक धीवर-कन्या जिसके गर्भ से कृष्ण द्वैपायन या व्यास की उत्पत्ति हुई थी। २. गाधि की पुत्री और ऋचीक की पत्नी।
सत्यवादी–वि० [सं० सत्यवादिन्] [स्त्री० सत्यवादिनी] १. सत्य कहनेवाला। सच बोलनेवाला। २. वचन को पूरा करनेवाला।
सत्यवान–संज्ञा पुं० [सं० सत्यवत्] शाल्व देश के राजा द्युमत्सेन का पुत्र जिसकी पत्नी सावित्री के पातिव्रत्य की कथा प्रसिद्ध है।
सत्यव्रत–संज्ञा पुं० [सं०] सत्य बोलने की प्रतिज्ञा या नियम।
सत्यसंध–वि० [सं०] [स्त्री० सत्यसंधा] सत्य-प्रतिज्ञ। वचन को पूरा करनेवाला।
संज्ञा पुं० १. रामचन्द्र। २. जनमेजय।
सत्याग्रह–संज्ञा पुं० [सं०] किसी सत्य या न्यायपूर्ण पक्ष की स्थापना के लिये शांतिपूर्वक निरंतर हठ करना।
सत्यानास–संज्ञा पुं० [सं० सत्ता + नाश] सर्वनाश। मटियामेट। ध्वंस। बरबादी।
सत्यानासी–वि० [हिं० सत्यानास] सत्यानास करनेवाला। चौपट करनेवाला।
संज्ञा स्त्री० एक कँटीला पौधा। भड़भाँड़।
सत्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. यज्ञ। २. एक सोमयाग। ३. घर। मकान। ४. धन। ५. वह स्थान जहाँ असहायों को भोजन बाँटा जाता है। छेत्र। सदावर्त्त।
सत्रुहन*†–संज्ञा पुं० दे० "शत्रुघ्न"।
सत्व–संज्ञा पुं० [सं०] १. सत्ता। अस्तित्व। हस्ती। २. सार। तत्त्व। ३. चित्त की प्रवृत्ति। ४. आत्म-तत्त्व। चैतन्य। चित्तत्व। ५. प्राण। जीव। तत्त्व।
सत्वगुण–संज्ञा पुं० [सं०] अच्छे कर्मों की ओर प्रवृत्त करनेवाला गुण।
सत्वर–अव्य० [सं०] शीघ्र। जल्द।
सत्संग–संज्ञा पुं० [सं०] साधुओं या सज्जनों के साथ उठना-बैठना। भली संगत।
सत्संगति–संज्ञा स्त्री० दे० "सत्संग"।
सत्संगी–वि० [सं० सत्संगिन्] [स्त्री० सत्संगिनी] १. अच्छी सोहबत में रहनेवाला। २. मेल-जोल रखनेवाला।
सथर*–संज्ञा स्त्री० [सं० स्थल] भूमि।
सथिया–संज्ञा पुं० [सं० स्वस्तिक] १. एक प्रकार का मंगल-सूचक या सिद्धिदायक चिह्न। स्वस्तिक चिह्न 卐। २. फोड़े आदि की चीरफाड़ करनेवाला। जर्राह।
सद–संज्ञा स्त्री० [सं० सत्व] प्रकृति। आदत।
सदई*–अव्य० [सं० सदैव] सदा।

सदका–संज्ञा पु० [अ० सद्क] १ खैरात। दान। २ निछावर। उतारा।
सदन–संज्ञा पु० [सं०] १ घर। मकान। २ विराम। स्थिरता। ३ एक प्रसिद्ध भगवद्भक्त कसाई।
सदमा–संज्ञा पु० [अ० सद्म] १ आघात। धक्का। चोट। २ रंज। दुःख।
सदय–वि० [सं०] दयायुक्त। दयालु।
सदर–वि० [अ०] प्रधान। मुख्य।
संज्ञा पु० वह स्थान जहाँ कोई बड़ा हाकिम रहता हो। केंद्र-स्थल।
सदर-आला–संज्ञा पु० [अ०] अदालत का वह हाकिम जो जज के नीचे का हो। छोटा जज।
सदरी–संज्ञा स्त्री० [अ०] बिना आस्तीन की एक प्रकार की कुरती।
सदर्थना*–क्रि० स० [सं० सदर्थ या समर्थन] समर्थन करना। पुष्टि करना।
सदसद्विवेक–संज्ञा पु० [सं०] अच्छे और बुरे की पहचान। भले बुरे का ज्ञान।
सदस्य–संज्ञा पु० [सं०] १ यज्ञ करनेवाला। २ सभा या समाज में सम्मिलित व्यक्ति। सभासद। मेंबर।
सदा–अव्य० [सं०] १ नित्य। हमेशा। सर्वदा। २ निरंतर। लगातार।
संज्ञा स्त्री० [अ०] १ गूँज। प्रतिध्वनि। २ आवाज। शब्द। ३ पुकार।
सदाचरण, सदाचार–संज्ञा पु० [सं०] १ अच्छा आचरण। २ भलमनसाहत।
सदाचारी–संज्ञा पु० [सं० सदाचारिन्] [स्त्री० सदाचारिणी] १ अच्छे आचरणवाला पुरुष। २ धर्मात्मा।
सदाफल–वि० [सं०] सदा फलनेवाला।
संज्ञा पु० १ गूलर। ऊमर। २ श्रीफल। बेल। ३ नारियल। ४ एक प्रकार का नीबू।
सदाबरत–संज्ञा पु० दे० सदावर्त।
सदावर्त–संज्ञा पु० [सं० सदाव्रत] १ नित्य भूखों और दीनों को भोजन बाँटना। २ वह भोजन जो नित्य गरीबों को बाँटा जाय। खैरात।
सदा-बहार–वि० [हिं० सदा+फा० बहार] १ जो सदा फूले। २ जो सदा हरा रहे। (वृक्ष)
सदाशय–वि० [सं०] जिसका भाव उदार और श्रेष्ठ हो। सज्जन। भला मानस।
सदाशिव–संज्ञा पु० [सं०] महादेव।
सदा-सुहागिन–संज्ञा स्त्री० [हिं० सदा + सुहागिन] वेश्या। रंडी। (विनोद)
सदिया–संज्ञा स्त्री० [फा० साद] वह लाल पक्षी जिसका शरीर भूरे रंग का होता है। लाल पक्षी की मादा।
सदी–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ सौ वर्षों का समूह। शताब्दी। २ सैकड़ा।
सदुपदेश–संज्ञा पु० [सं०] १ अच्छा उपदेश। उत्तम शिक्षा। २ अच्छी सलाह।
सदूर*–संज्ञा पु० दे० "शार्दूल"।
सदृश–वि० [सं०] १ समान। अनुरूप। २ तुल्य। बराबर।
सदेह–क्रि० वि० [सं०] १ इसी शरीर से। बिना शरीर-त्याग किए। २ मूर्तिमान्। सशरीर।
सदैव–अव्य० [सं०] सदा। हमेशा।
सद्गति–संज्ञा स्त्री० [सं०] मरण के उपरांत उत्तम लोक की प्राप्ति।
सद्गुण–संज्ञा पु० [सं०] [हिं० सद्गुणी] अच्छा गुण। अच्छी सिफत।
सद्गुरु–संज्ञा पु० [सं०] १ अच्छा गुरु। उत्तम शिक्षक। २ परमात्मा।
सद्ग्रंथ–संज्ञा पु० [सं० सत् + ग्रंथ] अच्छा ग्रंथ। सन्मार्ग बतानेवाली पुस्तक।
सद्द*†–संज्ञा पु० [सं० शब्द] शब्द। ध्वनि।
अव्य० [सं० सद्य] तुरंत। तत्काल।
सद्भाव–संज्ञा पु० [सं०] १ प्रेम और हित का भाव। २ मेल-जोल। मैत्री। ३ सच्चा भाव। अच्छी नीयत।
सद्म–संज्ञा पु० [सं० सद्मन्] १ घर। मकान। २ संग्राम। युद्ध। ३ पृथ्वी और आकाश।
सद्य–अव्य० [सं०] १ आज ही। २ इसी समय। अभी। ३ तुरंत। शीघ्र।
सद्य–अव्य० दे० "सद्द"।
सधना–क्रि० अ० [हिं० साधना] १ सिद्ध

होना। पूरा होना। काम होना। २. काम चलना। मतलब निकलना। ३. अभ्यस्त होना। मँजना। ४. प्रयोजन-सिद्धि के अनुकूल होना। गौं पर चढ़ना। ५. निशाना ठीक होना।
सघवा–संज्ञा स्त्री० [हिं० विधवा का अनु०] वह स्त्री जिसका पति जीवित हो। सुहागिन।
सधाना–क्रि० स० [हिं० सधना का प्रेर०] साधने का काम दूसरे से कराना।
सनंदन–संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक मानस पुत्र।
सन्–संज्ञा पुं० [अ०] १. वर्ष। साल। संवत्सर। २. कोई विशेष वर्ष। सवत्।
सन–संज्ञा पुं० [सं० शण] एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी छाल के रेशे से रस्सियाँ आदि बनती है।
*† प्रत्य० [सं० सग] अवधी में करण कारक का चिह्न। से। साथ।
संज्ञा स्त्री० [अनु०] वेग से निकलने का शब्द।
वि० [अनु० सुन] १. सन्नाटे में आया हुआ। स्तब्ध। ठक। २. मौन। चुप।
सनई–संज्ञा स्त्री० [हिं० सन] छोटी जाति का सन।
सनक–संज्ञा स्त्री० [स० शंक = खटका] १. किसी बात की धुन। मन की झोंक। वेग के साथ मन की प्रवृत्ति।
मुहा०–सनक सवार होना = धुन होना।
२. खब्त। जुनून।
संज्ञा पु० [सं०] ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक।
सनकना–क्रि० अ० [हिं० सनक] पागल हो जाना। पगलाना।
सनकारना*†–क्रि० स० [हिं० सैन + करना] संकेत करना। इशारा करना।
सनत्–संज्ञा पु० [सं०] ब्रह्मा।
सनत्कुमार–संज्ञा पु० [सं०] ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक। वैधात्र।
सनद–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. प्रमाण। सबूत। दलील। २. प्रमाण-पत्र। सर्टिफिकेट।
सनदयाफ्ता–वि० [अ० सनद + फा० याफ्तः] जिसे किसी बात की सनद मिली हो।
सनना–क्रि० अ० [सं० संधम्] १. गीला होकर लेई के रूप में मिलना। २. एक में मिलना। लीन होना।
सनम–संज्ञा पुं० [अ०] प्रिय। प्यारा।
सनमान–संज्ञा पुं० दे० "सम्मान"।
सनमानना*–क्रि० स० [सं० सम्मान] खातिर करना। सत्कार करना।
सनमुख*–अव्य० दे० "सम्मुख"।
सनसनी–संज्ञा स्त्री० [अनु० सन-सन] १. संवेदन-सूत्रों का एक प्रकार का स्पंदन। झनझनाहट। झुनझुनी। २. भय, आश्चर्य आदि के कारण उत्पन्न स्तब्धता। ३. उद्वेग। घबराहट।
सनहकी–संज्ञा स्त्री० [अ० सनहक] मिट्टी का एक बरतन। (मुसलमान)
सनाढ्य–संज्ञा पुं० [स० सन] ब्राह्मणों की एक शाखा जो गौड़ों के अंतर्गत है।
सनातन–संज्ञा पुं० [सं०] १. प्राचीन काल। अत्यंत पुराना समय। २ प्राचीन परंपरा। बहुत दिनों से चला आता हुआ क्रम। ३. ब्रह्मा। ४. विष्णु।
वि० १. अत्यंत प्राचीन। बहुत पुराना। २. जो बहुत दिनों से चला आता हो। परंपरागत। ३. नित्य। शाश्वत।
सनातन धर्म–संज्ञा पु० [सं०] १. प्राचीन या परंपरागत धर्म। २. वर्तमान हिंदू धर्म का वह स्वरूप जिसमें पुराण, तंत्र, प्रतिमा-पूजन, तीर्थ-माहात्म्य आदि सब समान रूप से माननीय हैं।
सनातनपुरुष–संज्ञा पु० [सं०] विष्णु भगवान्।
सनातनी–संज्ञा पु० [सं० सनातन + ई(प्रत्य०)] १. जो बहुत दिनों से चला आता हो। २. सनातन धर्म का अनुयायी।
सनाथ–वि० [सं०] [स्त्री० सनाथा] जिसकी रक्षा करनेवाला कोई स्वामी हो।
सनाय–संज्ञा स्त्री० [अ० सनाऽ] एक पौधा जिसकी पत्तियाँ दस्तावर होती हैं। सोनामुखी।
सनाह–संज्ञा पु० [सं० सन्नाह] कवच। बकतर।

सनीचर—संज्ञा पुं० दे० "शनैश्चर"।
सनीचरी—संज्ञा पुं० [हिं० सनीचर] शनि की दशा, जिसमें अधिक दुख होता है।
सनेह*†—संज्ञा पुं० दे० "स्नेह"।
सनेहिया*†—संज्ञा पुं० दे० "सनेही"।
सनेही—वि० [सं० स्नेही, स्नेहिन्] स्नेह या प्रेम करनेवाला। प्रेमी।
सनोवर—संज्ञा पुं० [अ०] चीड़ (पेड़)।
सन्न—वि० [सं० शून्य] १. संज्ञा-शून्य। स्तब्ध। जड़। २ चौकन्ना। ठक। ३ डर से चुप।
सन्नद्ध—वि० [सं०] १. बँधा हुआ। २ तैयार। उद्यत। ३. लगा हुआ। जुड़ा हुआ।
सन्नाटा—संज्ञा पुं० [सं० शून्य] १ निःशब्दता। नीरवता। निस्तब्धता। २ निर्जनता। निरालापन। एकांतता। ३. ठक रह जाने का भाव। स्तब्धता।
मुहा०—सन्नाटे में आना = ठक रह जाना। कुछ कहते-सुनते न बनना।
४ एकदम खामोशी। चुप्पी।
मुहा०—सन्नाटा खींचना या मारना = एक बारगी चुप हो जाना।
५. चहल-पहल का अभाव। उदासी। ६ काम-धंधे में गुलजार न रहना।
वि० १. नीरव। स्तब्ध। २ निर्जन।
संज्ञा पुं० [अनु० सन सन] १ हवा के जोर से चलने की आवाज। २ हवा चीरते हुए तेजी से निकल जाने का शब्द।
सन्नाह संज्ञा पुं० [सं०] कवच। बखतर।
सन्निकट—अव्य० [सं०] समीप। पास।
सन्निकर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सन्निकृष्ट] १ संबंध। लगाव। २ नाता। रिश्ता। ३ सामीप्य। समीपता।
सन्निधान—संज्ञा पुं० [सं०] १ निकटता। समीपता। २ स्थापित करना।
सन्निधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ समीपता। निकटता। २ आमने-सामने की स्थिति।
सन्निपात—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक साथ गिरना या पड़ना। २ संयोग। मेल। ३ इकट्ठा होना। एक साथ जुटना। ४ कफ, वात और पित्त तीनों का एक साथ बिगड़ना। त्रिदोष। सरसाम।
सन्निविष्ट—वि० [सं०] १. एक साथ बैठा हुआ। जमा हुआ। २ रखा हुआ। धरा हुआ। ३ स्थापित। प्रतिष्ठित। ४. पास का। समीप का।
सन्निवेश—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक साथ बैठना। २. जमना। स्थित होना। ३ रखना। धरना। ४ लगाना। जड़ना। ५ अँटना। समाना। ६ निवास। घर। ७ एकत्र होना। जुटना। ८ समूह। समाज। ९. गठन। गढ़न। बनावट।
सन्निहित—वि० [सं०] १ एक साथ या पास रखा हुआ। २ समीपस्थ। निकटस्थ। ३ ठहराया हुआ। टिकाया हुआ।
सन्मान—संज्ञा पुं० दे० "सम्मान"।
सन्मुख—अव्य० दे० "सम्मुख"।
सन्यास—संज्ञा पुं० [सं० संन्यास] १ छोड़ना। त्याग। २ दुनिया के जंजाल से अलग होने की अवस्था। वैराग्य। ३ चतुर्थ आश्रम। यति-धर्म।
सन्यासी—संज्ञा पुं० [सं० संन्यासिन्] [स्त्री० सन्यासिनी संन्यासिन] १ वह पुरुष जिसने संन्यास धारण किया हो। चतुर्थ आश्रमी। २ विरागी। त्यागी।
सपक्ष—वि० [सं०] १ जो अपने पक्ष में हो। तरफदार। २ समर्थक। पोषक।
संज्ञा पुं० तरफदार। मित्र। सहायक। २ न्याय में वह बात या दृष्टांत जिसमें साध्य अवश्य हो।
सपत्नी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक ही पति की दूसरी स्त्री। सौत। सौतिन।
सपत्नीक—वि० [सं०] पत्नी के सहित।
सपना—संज्ञा पुं० [सं० स्वप्न] वह दृश्य जो निद्रा की दशा में दिखाई पड़े। स्वप्न।
सपरदाई—संज्ञा पुं० [सं० संप्रदायी] तवायफ के साथ तबला, सारंगी आदि बजानेवाला। भड़आ। समाजी।
सपरना—क्रि० अ० [सं० संपादन] १ काम का पूरा होना। समाप्त होना। निबटना। २ काम का किया जा सकना। हो सकना।

सपरिकर–वि० [सं०] अनुचर-वर्ग के साथ। ठाठ-बाट के साथ।
सपाट–वि० [सं० स+पट्ट] १. बराबर। समतल। २ जिसकी सतह पर कोई उभरी हुई वस्तु न हो। चिकना।
सपाटा–संज्ञा पुं० [सं०] सर्पण १. चलने या दौड़ने का वेग। झोंक। तेजी। २. तीव्र गति। दौड़। झपट।
यौ०—सैर-सपाटा = घूमना-फिरना।
सपाद–वि० [सं०] १. चरण-सहित। २. जिसमें एक का चौथाई और मिला हो। सवाया
सपिंड–संज्ञा पुं० [सं०] एक ही कुल का पुरुष जो एक ही पितरों को पिंडदान करता हो।
सपिंडी–संज्ञा स्त्री० [सं०] मृतक के निमित्त वह कर्म्म जिसमें वह और पितरों के साथ मिलाया जाता है।
सपुर्द–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सिपुर्द] अमानत। धरोहर।
वि० किसी के जिम्मे किया हुआ। सौंपा हुआ।
सपुर्दगी–संज्ञा स्त्री० [फा०] सपुर्द करने या होने की क्रिया।
सपूत–संज्ञा पुं० [सं० सत्पुत्र] वह पुत्र जो अपने कर्त्तव्य का पालन करे। अच्छा पुत्र।
सपूती–संज्ञा स्त्री० [हिं० सपूत+ई (प्रत्य०)] १. सपूत होने का भाव। लायकी। २. योग्य पुत्र उत्पन्न करनेवाली माता।
सपेद‡*–वि० दे० "सफ़ेद"।
सपोला–संज्ञा पु० [हिं० साँप+ओला (प्रत्य०)] साँप का छोटा बच्चा।
सप्त–वि० [सं०] गिनती में सात।
सप्तऋषि–संज्ञा पु० दे० "सप्तक"।
सप्तक–संज्ञा पु० [सं०] १. सात वस्तुओं का समूह। २. सात स्वरों का समूह।
सप्तद्वीप–संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार पृथ्वी के सात बड़े और मुख्य विभाग। जम्बु, कुश, प्लक्ष, शाल्मलि, क्रौंच, शाक और पुष्कर द्वीप।
सप्तपदी–संज्ञा स्त्री० [सं०] विवाह की एक रीति जिसमें वर और वधू अग्नि के चारों ओर ७ परिक्रमाएँ करते हैं। भाँवर। भँवरी।
सप्तपर्ण–संज्ञा पुं० [सं०] छतिवन (पेड़)।
सप्तपर्णी–संज्ञा स्त्री० [सं०] *लज्जावंती लता।*
सप्त-पाताल–संज्ञा पुं० [सं०] पृथ्वी के नीचे के ये सातों लोक—अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल और पाताल।
सप्तपुरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] ये सात पवित्र नगर या तीर्थ जो मोक्षदायक कहे गये हैं—अयोध्या, मथुरा, माया (हरिद्वार), काशी, कांची, अवंतिका (उज्जयिनी) और द्वारका।
सप्तम–वि० [सं०] [स्त्री० सप्तमी] सातवाँ।
सप्तमी–वि० स्त्री० [सं०] सातवी।
संज्ञा स्त्री० १. किसी पक्ष की सातवी तिथि। २. अधिकरण कारक की विभक्ति। (व्याकरण)
सप्तर्षि–संज्ञा पुं० [सं०] १. सात ऋषियों का समूह या मंडल। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार—गौतम, भरद्वाज, विश्वामित्र, जमदग्नि, वसिष्ठ, कश्यप और अत्रि। महाभारत के अनुसार—मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलह, क्रतु, पुलस्त्य और वसिष्ठ। २. उत्तर दिशा के सात तारे जो ध्रुव के चारों ओर फिरते हुए दिखाई पड़ते है।
सप्तशती–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सात सौ का समूह। २. सात सौ पद्यों का समूह। सतसई।
सप्ताह–संज्ञा पुं० [सं०] १. सात दिनों का काल। हफ़्ता। २. भागवत की कथा जो सात ही दिनों में सब पढ़ी या सुनी जाय।
सफ़–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. पंक्ति। क़तार। २. लंबी चटाई। सीतल पाटी।
सफ़र–संज्ञा पु० [अ०] १. प्रस्थान। यात्रा। २. रास्ते में चलने का समय या दशा।
सफरमैना–संज्ञा स्त्री० [अं० सैपर माइनर] सेना के वे सिपाही जो खाईं आदि खोदने को आगे चलते हैं।
सफ़री–वि० [अ० सफर] सफर में का। सफ़र में काम आनेवाला।
संज्ञा पु० १. राह-खर्च। २. अमरूद।
सफरी–संज्ञा स्त्री० [सं० शफरी] सौरी मछली।
सफल–वि० [सं०] १. जिसमें फल लगा हो। २. जिसका कुछ परिणाम हो। सार्थक।

३ धृतकार्य्य। कामयाब।

सफलता–संज्ञा स्त्री० [स०] १ सफल होने का भाव। कामयाबी। सिद्धि। २ पूर्णता।

सफलीभूत–वि० [स०] जो सफल हुआ हो। जो सिद्ध या पूरा हुआ हो।

सफ्हा–संज्ञा पु० [अ०] पृष्ठ। पन्ना।

सफा–वि० [अ०] १ साफ। स्वच्छ। २ पाक। पवित्र। ३ चिकना। बराबर।

सफाई–संज्ञा स्त्री० [अ० सफा + ई(प्रत्य०)] १ स्वच्छता। निर्मलता। २ मैल या कूडा करकट आदि हटाने की क्रिया। ३ स्पष्टता। मन में मैल न रहना। ४ कपट या कुटिलता का अभाव। ५ दोषारोप का हटना। निर्दोपता। ६ मामले का निबटरा। निर्णय।

सफाचट–वि० [हिं० सफा] एकदम स्वच्छ। बिलकुल साफ या चिकना।

सफीना–संज्ञा पु० [अ० सफीन] अदालती परवाना। इत्तलानामा। समन।

सफीर–संज्ञा पु० [अ०] एल्ची। राजदूत।

सफेद–वि० [फा० सुफैद] १ चूने के रंग का। धौला। श्वेत। चिट्टा। २ जिस पर कुछ लिखा न हो। कोरा। सादा।

मुहा०—स्याह सफेद=भला-बुरा। इष्ट अनिष्ट

सफेदपोश–संज्ञा पु० [फा०] १ साफ कपडे पहननेवाला। २ भलामानस। शिष्ट।

सफेदा–संज्ञा पु० [फा० सुफैदा] १ जस्ते का चूर्ण या भस्म जो दवा तथा रँगाई के काम मे आता है। २ आम का एक भेद। ३ खरबूजे का एक भेद।

सफेदी–संज्ञा स्त्री० [फा० सुफैदी] १ सफेद होने का भाव। श्वेतता। धवलता।

मुहा०—सफेदी आना=बुढापा आना।

२ दीवार आदि पर सफेद रंग या चूने की पोताई। चूनाकारी।

सब–वि० [स० सर्व] १ जितने हो, वे कुल। समस्त। २ पूरा। सारा।

सबक–संज्ञा पु० [फा०] १ पाठ। २ शिक्षा।

सबज–वि० दे० 'सब्ज'।

सबद–संज्ञा पु० [स० शब्द] १ दे० 'शब्द"। २ किसी महात्मा के वचन।

सबब–संज्ञा पु० [अ०] १ कारण। वजह। हेतु। २ द्वार। साधन।

सबर–संज्ञा पु० दे० "सब्र"।

सबल–वि० [स०] १ बलवान्। ताकतवर। २ जिसके साथ सेना हो।

सबार–क्रि० वि० [हिं० सबेरा] शीघ्र।

सबील–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ मार्ग। सडक। २ उपाय। तरकीब। ३ प्याऊ। पौसला।

सबूत–संज्ञा पु० [अ०] वह जिससे कोई बात प्रमाणित की जाय। प्रमाण।

वि० जो खंडित न हो। पूरा।

सब्ज–वि० [फा०] १ कच्चा और ताजा। (फल फूल आदि)।

मुहा०—सब्ज बाग दिखलाना=काम निकालने के लिये बडी बडी आशाएँ दिलाना।

२ हरा। हरित। (रंग) ३ शुभ। उत्तम।

सब्जा–संज्ञा पु० [फा० सब्ज] १ हरियाली। २ भंग। भाँग। विजया। ३ पन्ना नामक रत्न। ४ घोडे का एक रंग जिसमें सफेदी के साथ कुछ कालापन होता है।

सब्जी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १ वनस्पति आदि हरियाली। २ हरी तरकारी। ३ भाँग।

सब्र–संज्ञा पु० [अ०] संतोष। धैर्य्य।

मुहा०—किसी का सब्र पडना=किसी के धैर्य्यपूर्वक सहन किए हुए कष्ट का प्रतिफल होना।

सभा–संज्ञा स्त्री० [स०] १ परिषद्। गोष्ठी। समिति। मजलिस। २ वह संस्था जो किसी विषय पर विचार करने के लिए संघटित हो।

सभागा–वि० [स० सौभाग्य] १ भाग्यवान्। २ सुंदर। खूबसूरत।

सभागृह–संज्ञा पु० [स०] बहुत से लोगों के एक साथ बैठने का स्थान। मजलिस की जगह।

सभापति–संज्ञा पु० [स०] वह जो सभा का प्रधान या नेता हो। सभा का मुखिया।

सभासद–संज्ञा पु० [स०] वह जो किसी सभा में सम्मिलित हो। सदस्य। सामाजिक।

सभ्य–संज्ञा पु० [स०] १ सभासद। सदस्य। २ वह जिसका आचार-व्यवहार उत्तम हो। भला आदमी।

सभ्यता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सभ्य होने का भाव। २. सदस्यता। ३. सुशिक्षित और सज्जन होने की अवस्था। ४. भलमनसाहत। शराफ़त।
समंजस–वि० [सं०] उचित। ठीक।
समंत–संज्ञा पुं० [सं०] सीमा। सिरा।
समंद–संज्ञा पुं० [फ़ा०] घोड़ा।
सम–वि० [सं०] १. समान। तुल्य। बराबर। २. सब। कुल। तमाम। ३ जिसका तल ऊबड़-खाबड़ न हो। चौरस। ४. (संख्या) जिसे दो से भाग देने पर शेष कुछ न बचे। जूस।
संज्ञा पुं० १. संगीत में वह स्थान जहाँ गाने-बजानेवालों का सिर या हाथ आपसे आप हिल जाता है। २. साहित्य में एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें योग्य वस्तुओं के संयोग या संबंध का वर्णन होता है।
संज्ञा पुं० [अ०] विष। जहर।
समकक्ष–वि० [सं०] समान। तुल्य।
समकालीन–वि० [सं०] जो (दो या कई) एक ही समय में हों।
समकोण–वि० [सं०] (त्रिभुज या चतुर्भुज) जिसके आमने सामने के दो कोण समान हों।
समक्ष–अव्य० [सं०] सामने।
समग्र–वि० [सं०] कुल। पूरा। सब।
सम चतुर्भुज–संज्ञा पुं० [सं०] वह चतुर्भुज जिसके चारो भुज समान हों।
समचर–वि० [सं०] समान आचरण करनेवाला।
समझ–संज्ञा स्त्री० [सं० ज्ञान] बुद्धि। अक़्ल।
समझदार–वि० [हिं० समझ + फ़ा० दार] बुद्धिमान्।
समझना–क्रि० अ० [हिं० समझ] किसी बात को अच्छी तरह ध्यान में लाना।
समझाना–क्रि० स० [हिं० समझना] दूसरे को समझने में प्रवृत्त करना।
समझौता–संज्ञा पुं० [हिं० समझ] आपस का निपटारा।
समतल–वि० [सं०] जिसकी सतह बराबर हो। हमवार।
समता–संज्ञा स्त्री० [सं०] सम या समान होने का भाव। बराबरी। तुल्यता।
समत्रिभुज–संज्ञा पुं० [सं०] वह त्रिभुज जिसके तीनों भुज समान हों।
समदन–संज्ञा स्त्री० [?] भेंट। नजर।
समदना–क्रि० अ० [?] प्रेमपूर्वक मिलना।
समदर्शी–संज्ञा पुं० [सं० समदर्शिन्] सबको एक सा देखनेवाला।
समधियाना–संज्ञा पुं० [हिं० समधी] समधी का घर।
समधी–संज्ञा पुं० [सं० संबंधी] पुत्र या पुत्री का ससुर।
समन्वय–संज्ञा पुं० [सं०] १. संयोग। मिलन। मिलाप। २. विरोध का न होना। ३. कार्य्य-कारण का प्रवाह या निर्वाह।
समन्वित–वि० [सं०] मिला हुआ। संयुक्त।
समपाद–संज्ञा पुं० [सं०] वह छंद या कविता जिसके चारों चरण समान हों।
समय–संज्ञा पुं० [सं०] १. वक्त। काल। २. अवसर। मौका। ३. अवकाश। फ़ुरसत। ४. अंतिम काल।
समर–संज्ञा पुं० [सं०] युद्ध। लड़ाई।
समरथ–वि० दे० "समर्थ"।
समरभूमि–संज्ञा स्त्री० [सं०] युद्ध-क्षेत्र। लड़ाई का मैदान।
समरांगण–संज्ञा पुं० दे० "समरभूमि"।
समर्थ–वि० [सं०] जिसमें कोई काम करने की सामर्थ्य हो। उपयुक्त। योग्य।
समर्थक–वि० [सं०] जो समर्थन करता हो। समर्थन करनेवाला।
समर्थता–संज्ञा स्त्री० [सं०] सामर्थ्य। शक्ति।
समर्थन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० समर्थनीय, समर्थक, समर्थ्य] १. यह निश्चय करना कि अमुक बात उचित है या अनुचित। २. यह कहना कि अमुक बात ठीक है। किसी के मत का पोषण करना। ३. विवेचन।
समर्पक–वि० [सं०] समर्पण करनेवाला।
समर्पण–संज्ञा पुं० [सं०] १. आदरपूर्वक भेंट

करना। प्रतिष्ठापूर्वक देना। २ दान देना।

समर्पित–वि० [स०] जो समर्पण किया गया हो। समर्पण किया हुआ।

समल–वि० [स०] मलीन। मैला। गदा।

समवकार–सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का वीर-रस प्रधान नाटक जिसमें किसी देवता या असुर आदि के जीवन की कोई घटना होनी है।

समवर्त्ती–वि० [स० समवर्तिन] १ जो समान रूप से स्थित हो। २ जो पास मे स्थित हो।

समवाय–सज्ञा पु० [स०] १ समूह। झुड। २ न्यायशास्त्र के अनुसार वह सबध जो अवयवी के साथ अवयव का या गुणी के साथ गुण का होता है।

समवायी–वि० [स० समवायिन्] जिसमें समवाय या नित्य सबध हो।

समवृत्त–सज्ञा पु० [स०] वह छद जिसके चारो चरण समान हो।

समवेत–वि० [स०] १ इकट्ठा किया हुआ। एकत्र। २ जमा किया हुआ। सचित।

समशीतोष्ण कटिबध–सज्ञा पु० [स०] पृथ्वी के वे भाग जो उष्ण कटिबध के उत्तर में कर्क रेखा से उत्तर वृत्त तक और दक्षिण मे मकर रेखा से दक्षिण वृत्त तक है।

समष्टि–सज्ञा स्त्री० [स०] सबका समूह। कुल। व्यष्टि का उलटा।

समस्त–वि० [स०] १ सब। कुल। समग्र। २ एक मे मिलाया हुआ। सयुक्त। ३ जो समास द्वारा मिलाया गया हो। समासयुक्त।

समस्थली–सज्ञा स्त्री० [स०] गगा और यमुना के बीच का देश। अतर्वेद।

समस्या–सज्ञा स्त्री० [स०] १ सघटन। २ मिलाने की क्रिया। मिश्रण। ३ किसी श्लोक या छद आदि का वह अतिम पद जो पूरा श्लोक या छद बनाने के लिये तैयार करके दूसरो को दिया जाता है। ४ कठिन अवसर या प्रसग।

समस्यापूर्त्ति–सज्ञा स्त्री० [स०] किसी समस्या के आधार पर छद आदि बनाना।

समाँ–सज्ञा पु० [स० समय] समय। वक्त। मुहा०—समाँ बँधना=(सगीत आदि का) इतनी उत्तमता से होना कि लोग स्तब्ध हो जायँ

समागत–वि० [स०] जिसका आगमन हुआ हो। आया हुआ।

समागम–सज्ञा पु० [स०] १ आगमन। आना। २ मिलना। भेंट। ३ मैथुन।

समाचार–सज्ञा पु० [स०] सवाद। खबर। हाल।

समाचारपत्र–सज्ञा पु० [स० समाचार+पत्र] वह पत्र जिसमें अनेक प्रकार के समाचार रहते हो। अखबार।

समाज–सज्ञा पु० [स०] १ समूह। गरोह। दल। २ सभा। ३ एक ही स्थान पर रहनेवाले अथवा एक ही प्रकार का व्यवसाय आदि करनेवाले लोगो का समूह। समुदाय। ४ वह सस्था जो बहुत से लोगो ने मिलकर किसी विशिष्ट उद्देश्य से स्थापित की हो। सभा।

समादर–सज्ञा पु० [स०] [वि० समादृत, समादरणीय] आदर। सम्मान। खातिर।

समाधान–सज्ञा पु० [स०] [वि० समाधानीय] १ चित्त को सब ओर से हटाकर ब्रह्म की ओर लगाना। समाधि। २ किसी के मन का सदेह दूर करनेवाली बात या काम। ३ किसी प्रकार का विरोध दूर करना। ४ निष्पत्ति। निराकरण। ५ बीज को ऐसे रूप मे पुन प्रदर्शित करना जिससे नायक अथवा नायिका का अभिमत प्रतीत हो। (नाटक)

समाधि–सज्ञा स्त्री० [स०] १ समर्थन। २ ग्रहण करना। अगीकार। ३ ध्यान। ४ प्रतिज्ञा। ५ निद्रा। नीद। ६ योग। ७ योग का चरम फल। इस अवस्था मे मनुष्य सब प्रकार के क्लेशो से मुक्त हो जाता है और उसे अनेक प्रकार की शक्तियाँ प्राप्त हो जाती है। ८ किसी मृत व्यक्ति की अस्थियाँ या शव जमीन में गाडना। ९ वह स्थान जहाँ इस प्रकार शव या

अस्थियाँ आदि गाड़ी गई हों। १०. काव्य का एक गुण जिसके द्वारा दो घटनाओं का देव-संयोग से एक ही समय में होना प्रकट होता है। ११. एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें किसी आकस्मिक कारण से कोई कार्य्य बहुत ही सुगमतापूर्वक होना बतलाया जाता है।
संज्ञा स्त्री० दे० "समाधान"।
समाधि-क्षेत्र–संज्ञा पु० [सं०] १. वह स्थान जहाँ योगियों आदि के मृत शरीर गाड़े जाते हों। २. क़ब्रिस्तान।
समाधित–वि० [सं०] जिसने समाधि लगाई या ली हो।
समाधिस्थ–वि० [सं०] जो समाधि लगाए हुए हो।
समान–वि० [सं०] जो रूप, गुण, मान, मूल्य, महत्त्व आदि में एक से हों। बराबर। तुल्य।
समानता–संज्ञा स्त्री० [सं०] समान होने का भाव। तुल्यता। बराबरी।
समाना–क्रि० अ० [सं० समावेश] अंदर आना। भरना। अटना।
क्रि० स० अंदर करना। भरना।
समानाधिकरण–संज्ञा पु० [सं०] व्याकरण में वह शब्द या वाक्यांश जो वाक्य में किसी समानार्थी शब्द का अर्थ स्पष्ट करने के लिये आता है।
समानार्थ–संज्ञा पु० [सं०] वे शब्द आदि जिनका अर्थ एक ही हो। पर्य्याय।
समानिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में रगण, जगण और एक गुरु होता है। समानी।
समापक–संज्ञा पु० [सं०] समाप्त करनेवाला। पूरा करनेवाला।
समापन–संज्ञा पु० [सं०] [वि० समाप्य, समापनीय] १. समाप्त करना। पूरा करना। २. मार डालना। वध।
समापिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] व्याकरण में वह क्रिया जिससे किसी कार्य्य का समाप्त हो जाना सूचित होता है।
समापित–वि० [सं०] समाप्त, खतम या पूरा किया हुआ।
समाप्त–वि० [सं०] जो खतम या पूरा हो गया हो।
समाप्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी कार्य्य या बात आदि का खतम या पूरा होना।
समायोग–संज्ञा पुं० [सं०] १. संयोग। २. लोगों का एकत्र होना।
समारंभ–संज्ञा पुं० [सं०] १. अच्छी तरह आरंभ होना। २. समारोह। (क्व०)
समारोह–संज्ञा पुं० [सं०] १. तड़क-भड़क। धूम-धाम। २. कोई ऐसा कार्य्य या उत्सव जिसमें बहुत धूम-धाम हो।
समालोचक–संज्ञा पु० [सं०] समालोचना करनेवाला।
समालोचन–संज्ञा पु० दे० "समालोचना"।
समालोचना–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. खूब देखना भालना। २. किसी पदार्थ के दोषों और गुणों को अच्छी तरह देखना। ३. वह कथन या लेख आदि जिसमें इस प्रकार गुण और दोषों की विवेचना हो। आलोचना।
समावर्त्तन–संज्ञा पु० [सं०] [वि० समावर्त्तनीय] १. वापस आना। लौटना। २. वैदिक काल का एक संस्कार जो उस समय होता था, जब ब्रह्मचारी नियत समय तक गुरु-कुल में रहकर और विद्याओं का अध्ययन करके स्नातक बनकर घर लौटता था।
समाविष्ट–वि० [सं०] जिसका समावेश हुआ हो। समाया हुआ।
समावेश–संज्ञा पु० [सं०] १. एक साथ या एक जगह रहना। २. एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ के अंतर्गत होना। ३. मनोनिवेश।
समास–संज्ञा पु० [सं०] १. संक्षेप। २. समर्थन। ३. संग्रह। ४. सम्मिलन। ५. व्याकरण में शब्दों का कुछ नियमों के अनुसार मिलकर एक होना। यह चार प्रकार का होता है—अव्ययीभाव, समानाधिकरण, तत्पुरुष और द्वंद्व।
समासोक्ति–संज्ञा स्त्री [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें समान कार्य्य और समान

विशेषण आदि के द्वारा किसी प्रस्तुत वर्णन से अप्रस्तुत का ज्ञान होना है।

समाहरण–संज्ञा पु० दे० "समाहार"।

समाहर्त्ता–संज्ञा पु० [सं० समाहर्तृ] १ समाहार करनेवाला। मिलानेवाला। २ प्राचीन काल का राज-कर एकत्र करनेवाला एक कर्मचारी।

समाहार–संज्ञा पु० [सं०] १ बहुत सी चीजों को एक जगह इकट्ठा करना। संग्रह। २ समूह। राशि। ढेर। ३ मिलना।

समाहार द्वंद्व–संज्ञा पु० [सं०] वह द्वंद्व समास जिससे उसके पदों के अर्थ के सिवा कुछ और अर्थ भी सूचित होता हो। जैसे—सेठ साहूकार।

समिति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सभा। समाज। २ प्राचीन वैदिक काल की एक संस्था जिसमें राजनीतिक विषयों पर विचार होता था। ३ किसी विशिष्ट कार्य्य के लिये नियुक्त की हुई सभा।

समिध–संज्ञा पु० [सं०] अग्नि।

समिधा–संज्ञा स्त्री० [सं० समिधि] हवन या यज्ञ में जलाने की लकड़ी।

समीकरण संज्ञा पु० [सं०] १ समान या बराबर करना। २ गणित में एक क्रिया जिससे किसी ज्ञात राशि की सहायता से अज्ञात राशि का पता लगाते हैं।

समीक्षा–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० समीक्षित, समीक्ष्य] १ अच्छी तरह देखना। २ आलोचन। समालोचना। ३ बुद्धि। ४ यत्न। कोशिश। ५ मीमांसा शास्त्र।

समीचीन–वि० [सं०] [भाव० समीचीनता] १ यथार्थ। ठीक। २ उचित। वाजिब।

समीति*–संज्ञा स्त्री० दे० समिति।

समीप–वि० [सं०] [भाव० समीपता] दूर का उलटा। पास। निकट। नजदीक।

समीपवर्त्ती–वि० [सं० समीपवर्त्तिन्] समीप का। पास का।

समीर–संज्ञा पु० [सं०] १ वायु। हवा। २ प्राण वायु।

समीरण–संज्ञा पु० [सं०] वायु। हवा।

समुंदर–संज्ञा पु० दे० "समुद्र"।

समुंदरफल–संज्ञा पु० [हिं० समुंदर + फल] एक प्रकार का विधारा।

समुचित–वि० [सं०] १ उचित। ठीक। वाजिब। २ जैसा चाहिए, वैसा। उपयुक्त।

समुच्चय–संज्ञा पु० [सं०] १ मिलान। समाहार। मिलन। २ समूह राशि। ढेर। ३ साहित्य में एक अलंकार जिसके दो भेद हैं। एक तो वह जहाँ आश्चर्य, हर्ष, विषाद आदि बहुत से भावों के एक साथ उदित होने का वर्णन हो। दूसरा वह जहाँ किसी एक ही कार्य्य के लिये बहुत से कारणों का वर्णन हो।

समुझ*†–संज्ञा स्त्री० दे० "समझ"।

समुत्थान–संज्ञा पु० [सं०] १ उठने की क्रिया। २ उत्पत्ति। ३ आरंभ।

समुदाय–संज्ञा पु० [सं०] १ समूह। ढेर। २ झुंड। गरोह।

समुदाव–संज्ञा पु० दे० "समुदाय"।

समुद्र–संज्ञा पु० [सं०] १ वह जल राशि जो पृथ्वी को चारों ओर से घेरे हुए है और जो इस पृथ्वी-तल के प्रायः तीन चतुर्थांश में व्याप्त है। सागर। अंबुधि। उदधि। २ किसी विषय या गुण आदि का बहुत बड़ा आगार।

समुद्रफेन–संज्ञा पु० [सं०] समुद्र के पानी का फेन या झाग जिसका व्यवहार ओषधि के रूप में होता है। समुंदर फेन।

समुद्रयात्रा–संज्ञा स्त्री० [सं०] समुद्र के द्वारा दूसरे देशों की यात्रा।

समुद्रयान–संज्ञा पु० [सं०] जहाज।

समुद्रलवण–संज्ञा पु० [सं०] करकच लवण जो समुद्र के जल से बनता है।

समुन्नति–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० समुन्नत] १ यथेष्ट उन्नति। काफी तरक्की। २ महत्त्व। बड़ाई। ३ उच्चता।

समुल्लास–संज्ञा पु० [सं०] [वि० समुल्लसित] १ उल्लास। आनंद। खुशी। २ ग्रंथ आदि का प्रकरण या परिच्छेद।

समुहा–वि० [सं० सम्मुख] सामने का।

क्रि० वि० सामने। आगे।
समुहाना–क्रि० अ० [सं० सम्मुख] सामने आना।
समूर–संज्ञा पुं० [सं०] शंबर या साबर नामक हिरन।
समूल–वि० [सं०] १. जिसमें मूल या जड़ हो। २. जिसका कोई हेतु हो। कारण सहित।
क्रि० वि० जड़ से। मूल सहित।
समूह–संज्ञा पुं० [सं०] १. बहुत सी चीजों का ढेर। राशि। २ समुदाय। झुंड। गरोह।
समृद्ध–वि० [सं०] संपन्न। धनवान्।
समृद्धि–संज्ञा स्त्री० [सं०] बहुत अधिक संपन्नता। अमीरी।
समेटना–क्रि० स० [हिं० सिमटना] १. बिखरी हुई चीजों को इकट्ठा करना। २. अपने ऊपर लेना।
समेत–वि० [सं०] संयुक्त। मिला हुआ।
अव्य० सहित। साथ।
समौरिया–वि० [सं० सम+उमरिया] बराबर की उमरवाला। समवयस्क।
सम्मत–वि० [सं०] जिसकी राय मिलती हो। सहमत। अनुमत।
सम्मति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सलाह। राय। २ अनुमति। आदेश। अनुज्ञा। ३. मत। अभिप्राय।
सम्मन–संज्ञा पुं० [अं० समन] अदालत का वह आज्ञापत्र जिसमें किसी को हाजिर होने का हुक्म दिया जाता है।
सम्मान–संज्ञा पुं० [सं०] समादर। इज्जत। मान। गौरव। प्रतिष्ठा।
सम्मानना–संज्ञा स्त्री० दे० "सम्मान"।
*क्रि० स० सम्मान या आदर करना।
सम्मानित–वि० [सं०] जिसका सम्मान हुआ हो। प्रतिष्ठित। इज्जतदार।
सम्मिलन–संज्ञा पुं० [सं०] मिलाप। मेल।
सम्मिलित–वि० [सं०] मिला हुआ। मिश्रित। युक्त।
सम्मिश्रण–संज्ञा पुं० [सं०] १. मिलने की क्रिया। २. मेल। मिलावट।
सम्मुख–अव्य० [सं०] सामने।
सम्मेलन–संज्ञा पुं० [सं०] १. मनुष्यों का किसी निमित्त एकत्र हुआ समाज। सभा। समाज। २. जमावड़ा। जमघट। ३. मिलाप। संगम।
सम्मोहन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सम्मोहक] १. मोहित या मुग्ध करना। २. मोह उत्पन्न करनेवाला। ३. एक प्राचीन अस्त्र जिससे शत्रु को मोहित कर लेते थे। ४. कामदेव के पाँच बाणों में से एक।
सम्यक्–वि० [सं०] पूरा। सब।
क्रि० वि० १. सब प्रकार से। २. अच्छी तरह। भली भाँति।
सम्राज्ञी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सम्राट् की पत्नी। २. साम्राज्य की अधीश्वरी।
सम्राट्–संज्ञा पुं० [सं० सम्राज्] बहुत बड़ा राजा। महाराजाधिराज। शाहंशाह।
सयन*–संज्ञा पुं० [सं० शयन] दे० "शयन"।
सयानपत–संज्ञा स्त्री० दे० "सयानपन"।
सयानपन–संज्ञा पुं० [हिं० सयाना + पन] चालाकी।
सयाना–संज्ञा पुं० [सं० सज्ञान] १. अधिक अवस्थावाला। वयस्क। २. बुद्धिमान्। होशियार। ३. चालाक। धूर्त।
सर–संज्ञा पुं० [सं० सरस्] ताल। तालाब।
*† संज्ञा पुं० दे० "शर"।
संज्ञा स्त्री० [सं० शर] चिता।
संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. सिर। २. सिरा। चोटी।
वि० १. दमन किया हुआ। २. जीता हुआ। पराजित। अभिभूत।
सरअंजाम–संज्ञा पुं० [फ़ा०] सामग्री।
सरकंडा–संज्ञा पुं० [सं० शरकांड] सरपत की जाति का एक पौधा।
सरक–संज्ञा स्त्री० [हिं० सरकना] १. सरकने की क्रिया या भाव। २. शराब की खुमारी।
सरकना–क्रि० अ० [सं० सरक, सरण] १. जमीन से लगे हुए किसी ओर धीरे से बढ़ना। खिसकना। २. नियत काल से और आगे जाना। टलना। ३. काम चलना। निर्वाह होना।

विशेषण आदि ...

...विरोध में सिर ...

...ना॰ [फा॰] [वि॰ सरकारी] ...। प्रभु। २ राज्य-संस्था। ...शासन-सत्ता। ३ रियासत।

सरकारी–वि॰ [फा॰] १ सरकार या मालिक का। २ राज्य का। राजकीय।

यौ॰—सरकारी कागज = १ राज्य के दफ्तर का कागज। २ प्रामिसरी नोट।

सरखत–संज्ञा पु॰ [फा॰] १ वह दस्तावेज जिस पर मकान आदि किराए पर दिए जाने की शर्तें होती हैं। २ दिए और चुकाए हुए ऋण आदि का ब्योरा। ३ आज्ञापत्र। परवाना।

सरग*–संज्ञा पु॰ दे॰ "स्वर्ग"।

सरगना–संज्ञा पु॰ [फा॰] सरदार। अगुआ।

सरगम–संज्ञा पु॰ [हिं॰ सा, रे, ग, म] संगीत में सात स्वरों के चढ़ाव-उतार का क्रम। स्वरग्राम।

सर-गर्म–वि॰ [फा॰] [संज्ञा सरगर्मी] १ जोशीला। आवेशपूर्ण। २ उमंग से भरा हुआ। उत्साही।

सर-घर–संज्ञा पु॰ [सं॰ शर+हिं॰ घर] तीर रखने का खाना। तरकश।

सरघा–संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] मधुमक्खी।

सरजना–क्रि॰ स॰ [सं॰ सृजन] १ सृष्टि करना। २ रचना। बनाना।

सरजा–संज्ञा पु॰ [फा॰ सरजाह] १ श्रेष्ठ व्यक्ति। सरदार। २ सिंह।

सरजीवन†–वि॰ [सं॰ सजीवन] १ जिलानेवाला। २ हरा-भरा। उपजाऊ।

सरणी–संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १ मार्ग। रास्ता। २ ढर्रा। ३ लकीर।

सरद–वि॰ दे॰ "सर्द"।

सरदई–वि॰ [फ़ा॰ सरद] सरदे के रंग का। हरापन लिए पीला।

सर-दर–क्रि॰ वि॰ [फा॰ सर + दर = भाव] १ एक सिरे से। २ सब एक साथ मिलाकर। औसत में।

...सरदी] सरदा–संज्ञा पु॰ [फा॰ सर्द] एक प्रकार का बहुत बढ़िया खरबूजा।

सरदार–संज्ञा पु॰ [फा॰] १ नायक। अगुआ। श्रेष्ठ व्यक्ति। २ शासक। ३ अमीर। रईस।

सरदारी–संज्ञा स्त्री॰ [फा॰] सरदार का पद या भाव।

सरन*‡–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "शरण"।

सरनदीप–संज्ञा पु॰ दे॰ "सिंहल द्वीप"।

सरना–क्रि॰ अ॰ [सं॰ सरण] १ सरकना। खिसकना। २ हिलना। डोलना। ३ काम चलना। पूरा पड़ना। ४ किया जाना। निबटना।

सरनाम–वि॰ [फा॰] प्रसिद्ध। मशहूर।

सरनामा–संज्ञा पु॰ [फा॰] १ शीर्षक। २ पत्र का आरंभ या संबोधन। ३ पत्र पर लिखा जानेवाला पता।

सरपंच–संज्ञा पु॰ [फा॰ सर+हिं॰ पंच] पंचों में बड़ा व्यक्ति। पंचायत का सभापति।

सरपट–क्रि॰ वि॰ [सं॰ सर्पण] घोड़े की बहुत तेज दौड़ जिसमें वह दोनों अगले पैर साथ साथ आगे फेंकता है।

सरपत–संज्ञा पु॰ [सं॰ शरपत्र] कुश की तरह की एक घास जो छप्पर आदि छाने के काम में आती है।

सर-परस्त–संज्ञा पु॰ [फा॰] [भाव॰ सर-परस्ती] अभिभावक। संरक्षक।

सरपेंच–संज्ञा पु॰ [फा॰] पगड़ी के ऊपर लगाने का एक जड़ाऊ गहना।

सरपोश–संज्ञा पु॰ [फा॰] थाल या तश्तरी ढकने का कपड़ा।

सरफोका–संज्ञा पु॰ दे॰ "सरकंडा"।

सरबधी*–संज्ञा पु॰ [सं॰ शरबध] तीरदाज। धनुर्धर।

सरब*†–वि॰ दे॰ "सर्व"।

सर-बराह–संज्ञा पु॰ [फा॰] १ प्रबंधकर्त्ता। कारिंदा। २ मजदूरों आदि का सरदार।

सरबराहकार–संज्ञा पु॰ [फा॰ सरबराह+कार] किसी कार्य का प्रबंध करनेवाला। कारिंदा।

सरबस*‡–संज्ञा पु॰ दे॰ "सर्वस्व"।

सरमा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. देवताओं की एक प्रसिद्ध कुतिया। (वैदिक) २. कुतिया।
सरयू–संज्ञा स्त्री० [सं०] उत्तर भारत की एक प्रसिद्ध नदी।
सरराना†–क्रि० अ० [अनु० सर सर] हवा में किसी वस्तु के वेग से चलने का शब्द होना।
सरल–वि० [सं०] [स्त्री० सरला] १. जो टेढ़ा न हो। सीधा। २. निष्कपट। सीधा-सादा। ३. सहज। आसान।
संज्ञा पुं० १. चीड़ का पेड़। २. सरल का गोंद। गंधा विरोजा।
सरलता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. टेढ़ा न होने का भाव। सीधापन। २. निष्कपटता। सिधाई। ३. सुगमता। आसानी। ४. सादगी। भोलापन।
सरल-निर्यास–संज्ञा पुं० [सं०] १. गंधा-विरोजा। २. तारपीन का तेल।
सरवन–संज्ञा पु० [सं० श्रमण] अंधक मुनि के पुत्र जो अपने पिता को एक बहँगी में बैठाकर ढोया करते थे।
*‡संज्ञा पुं० दे० "श्रवण"।
सरवर–संज्ञा पु० दे० "सरोवर"।
सरवरि*‡–संज्ञा स्त्री० [स० सदृश] बरा-बरी। तुलना। समता।
सरवाक–संज्ञा पुं० [स० शरावक] १. सपुट। प्याला। २. दीया। कसोरा।
सरवान–संज्ञा पु० [?] तंबू। खेमा।
सरस–वि० [सं०] १. रसयुक्त। रसीला। २. गीला। भीगा। सजल। ३. हरा। ताजा। ४. सुंदर। मनोहर। ५. मधुर। मीठा। ६. जिसमें भाव जगाने की शक्ति हो। भावपूर्ण। ७. बढ़कर। उत्तम। ८. रसिक। सहृदय।
संज्ञा पुं० छप्पय छंद के ३५वें भेद का नाम।
सरसई*–संज्ञा स्त्री० [सं० सरस्वती] सर-स्वती नदी या देवी।
*संज्ञा स्त्री० [सं० सरस] १. सरसता। रसपूर्णता। २. हरापन। ताजापन।
संज्ञा स्त्री० [हिं० सरसों] फल के छोटे अंकुर या दाने जो पहले दिखाई पड़ते हैं।
सरसना–क्रि० अ० [सं० सरस+ना (प्रत्य०)] १. हरा होना। पनपना। २. वृद्धि को प्राप्त होना। बढ़ना। ३. शोभित होना। सोहाना। ४. रसपूर्ण होना। ५. भाव की उमंग से भरना।
सरसब्ज–वि० [फ़ा०] १. हरा-भरा। लह-लहाता हुआ। २. जहाँ हरियाली हो।
सर-सर–संज्ञा पुं० [अनु०] १. जमीन पर रेंगने का शब्द। २. वायु के चलने से उत्पन्न ध्वनि।
सरसराना–क्रि० अ० [अनु० सरसर] १. वायु का सर सर की ध्वनि करते हुए बहना। सनसनाना। २. साँप आदि का रेंगना।
सरसराहट–संज्ञा स्त्री० [हिं० सरसर आहट (प्रत्य०)] १. साँप आदि के रेंगने से उत्पन्न ध्वनि। २. खुजली। सुरसुराहट। ३. वायु बहने का शब्द।
सरसरी–वि० [फ़ा० सरासरी] १. जमकर या अच्छी तरह नहीं। जल्दी में। २. स्थूल रूप से। मोटे तौर पर।
सरसाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० सरस+आई (प्रत्य०)] १. सरसता। २. शोभा। सुंदरता। ३. अधिकता।
सरसाना–क्रि० स० [हिं० सरसना] १. रसपूर्ण करना। २. हरा भरा करना।
*क्रि० अ० दे० "सरसना"।
*क्रि० अ० शोभा देना। सजना।
सरसाम–संज्ञा पु० [फ़ा०] सन्निपात।
सरसार–वि० [फ़ा० सरशार] १. डूबा हुआ। मग्न। २. चूर। मदमस्त (नशे में)।
सरसिज–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो ताल में होता हो। २. कमल।
सरसिरुह–संज्ञा पुं० [सं०] कमल।
सरसी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. छोटा सरोवर। तलैया। २. पुष्करिणी। बावली। ३. एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में न, ज, भ, ज, ज, ज, ज और र होते हैं।
सरसीरुह–संज्ञा पु० [सं०] कमल।

सरसेटना–क्रि० स० [अनु०] खरी-खोटी सुनाना। फटकारना।
सरसों–संज्ञा स्त्री० [सं० सर्षप] एक पौधा जिसके छोटे गोल बीजों से तेल निकलता है।
सरसौहाँ–वि० [हिं० सरस] सरस बनाया हुआ।
सरस्वती–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पंजाब की एक प्राचीन नदी। २ विद्या या वाणी की देवी। वाग्देवी। भारती। शारदा। ३ विद्या। इल्म। ४ ब्राह्मी बूटी। ५ सोमलता। ६ एक छंद का नाम।
सरस्वती-पूजा–संज्ञा स्त्री० [सं०] सरस्वती का उत्सव जो कहीं वसंतपंचमी को और कहीं आश्विन में होता है।
सरह–संज्ञा पु० [सं० शलभ] १. पतंग। फतिंगा। २ टिड्डी।
सरहज–संज्ञा स्त्री० [सं० श्यालजाया] साले की स्त्री। पत्नी के भाई की स्त्री।
सरहटी–संज्ञा स्त्री० [सं० सर्पाक्षी] सर्पाक्षी नाम का पौधा। नकुलकंद।
सरहद–संज्ञा स्त्री० [फा० सर + अ० हद] १ सीमा। २ किसी भूमि की चौहद्दी निर्धारित करनेवाली रेखा या चिह्न।
सरहदी–वि० [फा० सरहद + ई(प्रत्य०)] सरहद संबंधी। सीमा-संबंधी।
सरहरी–संज्ञा स्त्री० [सं० शर] मूँज या सरपत की जाति का एक पौधा।
सरा*–संज्ञा स्त्री० [सं० शर] चिता।
संज्ञा स्त्री० दे० "सराय"।
सराई†–संज्ञा स्त्री० [सं० शलाका] १ शलाका सलाई। २ सरकंडे की पतली छड़ी।
संज्ञा स्त्री० [सं० शराव] दीया। सकोरा।
सराग†–संज्ञा पु० [सं० शलाका] लोहे की सीख। सीखचा। छड़।
सराध*‡–संज्ञा पु० दे० "श्राद्ध"।
सराना*†–क्रि० स० [हिं० सारना का प्रेर०] १ पूर्ण करना। संपादित कराना। (काम) २ कराना।
सराप–संज्ञा पु० दे० "शाप"।
सरापना*†–क्रि० स० [सं० शाप + हिं० ना (प्रत्य०)] शाप देना। बद दुआ देना।
सराफ–संज्ञा पु० [अ० सर्राफ] १ सोने-चाँदी का व्यापारी। २ बदले के लिये रुपए पैसे रखकर बैठनेवाला दूकानदार।
सराफा–संज्ञा पु० [अ० सर्राफ] १ सराफी का काम। रुपए-पैसे या सोने-चाँदी के लेन-देन का काम। २ सराफों का बाजार। ३ कोठी। बंक।
सराफी–संज्ञा स्त्री० [हिं० सराफ+ई(प्रत्य०)] १ चाँदी-सोने या रुपए-पैसे के लेन-देन का रोजगार। २ महाजनी लिपि। मुड़िया।
सराबोर–वि० [सं० स्राव हिं० बोर] बिलकुल भीगा हुआ। तरबतर। आप्लावित।
सराय–संज्ञा स्त्री० [फा०] १ घर। मकान। २. यात्रियों के ठहरने का स्थान। मुसाफिरखाना।
सराव*†–संज्ञा पु० [सं० शराव] १ मद्य-पात्र। प्याला (शराब पीने का)। २ कसोरा। कटोरा। ३ दीया।
सरावग, सरावगी–संज्ञा पु० [सं० श्रावक] जैन धर्म माननेवाला। जैन।
सरासन*–संज्ञा पु० दे० "शरासन"।
सरासर–अव्य० [फा०] १ एक सिरे से दूसरे सिरे तक। २ बिलकुल। पूर्णतया। ३ साक्षात्। प्रत्यक्ष।
सरासरी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १ आसानी। फुरती। २ शीघ्रता। जल्दी। ३ मोटा अंदाज।
क्रि० वि० १ जल्दी में। हड़बड़ी में। २ मोटे तौर पर।
सराह*–संज्ञा स्त्री० [सं० श्लाघा] प्रशंसा।
सराहना–क्रि० स० [सं० श्लाघन] तारीफ करना। बड़ाई करना। प्रशंसा करना।
संज्ञा स्त्री० प्रशंसा। तारीफ।
सराहनीय*–वि० [हिं० सराहना] १ प्रशंसा के योग्य। २ अच्छा। बढ़िया।
सरि*–संज्ञा स्त्री० [सं० सरित्] नदी।
*संज्ञा स्त्री० [सं० सदृश] बराबरी। समता
वि० सदृश। समान। बराबर।
सरित्–संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी।

सरिता–संज्ञा स्त्री० [सं० सरित्] १. धारा। २. नदी। दरिया।
सरित्पति–संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।
सरियाना†–क्रि० स० [?] १. तरतीब से लगाकर इकट्ठा करना। २. मारना। लगाना। (बाज़ारू)
सरिवन–संज्ञा पुं० [सं० शालपर्ण] शालपर्ण नाम का पौधा। त्रिपर्णी।
सरिवरि*†–संज्ञा स्त्री० [हिं० सरि + सं० प्रति] बराबरी। समता।
सरिश्ता–संज्ञा पुं० [फ़ा० सरिश्तः] १. अदालत। कचहरी। २. कार्य्यालय का विभाग। महकमा। दफ़्तर।
सरिश्तेदार–संज्ञा पुं० [फ़ा० सरिश्तःदार] १. किसी विभाग का प्रधान कर्मचारी। २. अदालतों में देशी भाषाओं में मुक़दमों की मिसलें रखनेवाला कर्मचारी।
सरिस*–वि० [सं० सदृश] सदृश। समान।
सरीकता*–संज्ञा स्त्री० [अ० शरीक + सं० ता (प्रत्य०)] साझा। हिस्सा। शिरकत।
सरीखा–वि० [सं० सदृश] समान। तुल्य।
सरीफा–संज्ञा पुं० [सं० श्रीफल] एक छोटा पेड़ जिसके गोल फल खाए जाते हैं।
सरीर*†–संज्ञा पुं० दे० "शरीर"।
सरीसृप–संज्ञा पुं० [सं०] १. रेंगनेवाला जंतु। २. सर्प। साँप।
सरुज–वि० [सं०] रोगी। रोग-युक्त।
सरुष–वि० [सं०] क्रोध-युक्त। कुपित।
सरुहाना–क्रि० स० [?] रोगयुक्त करना।
सरूप–वि० [सं०] १. रूप-युक्त। आकारवाला। २. सदृश। समान। ३. रूपवान्। सुंदर।
‡ संज्ञा पुं० दे० "स्वरूप"।
सरूर–संज्ञा पुं० [फ़ा० सुरूर] १ खुशी। प्रसन्नता। २. हलका नशा।
सरेख†*–वि० [सं० श्रेष्ठ] [स्त्री० सरेखी] बड़ा और समझदार। चालाक। सयाना।
सरेखना–क्रि० स० दे० "सहेजना"।
सरे-दस्त–क्रि० वि० [फ़ा०] १. इस समय। अभी। २. इस समय के लिये।
सरे-बाज़ार–क्रि० वि० [फ़ा०] १. बाज़ार में। जनता के सामने। २. सबके सामने।
सरेस–संज्ञा पुं० [फ़ा० सरेश] एक लसदार वस्तु जो ऊँट, भैंस आदि के चमड़े या मछली के पोटे को पकाकर निकालते हैं। सहरेश। सरेस।
सरोट*†–संज्ञा पुं० [हिं० सिलवट] कपड़ों में पड़ी हुई सिलवट। शिकन। बली।
सरो–संज्ञा पुं० [फ़ा० सर्व] एक सीधा पेड़ जो बग़ीचों में शोभा के लिये लगाया जाता है। बनझाऊ।
सरोकार–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. परस्पर व्यवहार का संबंध। २. लगाव। वास्ता।
सरोज–संज्ञा पुं० [सं०] कमल।
सरोजना–क्रि० स० [?] पाना।
सरोजिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कमलों से भरा हुआ ताल। २. कमलों का समूह। ३. कमल का फूल।
सरोद–संज्ञा पुं० [फ़ा०] बीन की तरह का एक प्रकार का बाजा।
सरोरुह–संज्ञा पुं० [सं०] कमल।
सरोवर–संज्ञा पुं० [सं०] १. तालाब। पोखरा। २. झील। ताल।
सरोष–वि० [सं०] क्रोधयुक्त। कुपित।
सरो-सामान–संज्ञा पुं० [फ़ा० सर + व + सामान] सामग्री। उपकरण। असबाब।
सरौता–संज्ञा पुं० [सं० सार = लोहा + पत्र] [स्त्री० अल्पा० सरौती] सुपारी काटने का एक प्रसिद्ध औज़ार।
सर्ग–संज्ञा पुं० [सं०] १. गमन। गति। चलना या बढ़ना। २. संसार। सृष्टि। ३. बहाव। प्रवाह। ४. छोड़ना। चलाना। फेंकना। ५. उद्गम। उत्पत्ति-स्थान। ६. प्राणी। जीव। ७. संतान। औलाद। ८. स्वभाव। प्रकृति। ९. किसी ग्रंथ (विशेषतः काव्य) का अध्याय। प्रकरण।
सर्गबंध–वि० [सं०] जो कई अध्यायों में विभक्त हो। जैसे—सर्गबंध काव्य।
सर्गुन‡–वि० दे० "सगुण"।
सर्ज–संज्ञा पुं० [सं०] १. बड़ी जाति का

शाल वृक्ष। २. राल। धूना। ३. सलई का पेड़।

सर्जन–संज्ञा पु० [सं०] [वि० सर्जनीय, सर्जित] १. छोड़ना। फेंकना। २. निकालना। ३ सृष्टि।

सर्जू–संज्ञा स्त्री० दे० "सरयू"।

सर्द–वि० [फा०] १ ठंढा। शीतल। २ सुस्त। काहिल। ढीला। ३. मद। धीमा। ४. नपुंसक। नामर्द।

सर्दी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १ सर्द होने का भाव। ठंढ। शीतलता। २ जाड़ा। शीत। ३ जुकाम। नजला।

सर्प–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० सर्पिणी] १ रेंगना। २ साँप। ३ एक म्लेच्छ जाति।

सर्पकाल–संज्ञा पु० [सं०] गरुड़।

सर्पयज्ञ, सर्पयाग–संज्ञा पु० [सं०] एक यज्ञ जो नागों के संहार के लिये जनमेजय ने किया था।

सर्पराज–संज्ञा पु० [सं०] १ सर्पों के राजा, शेषनाग। २ वासुकि।

सर्पविद्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] साँप को पकड़ने या वश में करने की विद्या।

सर्पिणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] २ साँपिन। मादा साँप। २ भुजगी लता।

सर्फ–संज्ञा पु० [अ०] व्यय किया हुआ। खर्च किया हुआ।

सर्फा–संज्ञा पु० [अ० सर्फ] खर्च। व्यय।

सर्वस–संज्ञा पु० दे० "सर्वस्व"।

सर्राफ–संज्ञा पु० दे० "सराफ"।

सर्व–वि० [सं०] सब। तमाम। कुल। संज्ञा पु० १ शिव। २ विष्णु। ३. पारा।

सर्वकाम–संज्ञा पु० [सं०] १ सब इच्छाएँ रखनेवाला। २ सब इच्छाएँ पूरी करनेवाला। ३ शिव।

सर्वगत–वि० [सं०] सर्वव्यापक।

सर्वग्रास–संज्ञा पु० [सं०] चंद्र या सूर्य्य का पूर्ण ग्रहण। खग्रास ग्रहण।

सर्वज्ञ–वि० [सं०] [स्त्री० सर्वज्ञा] सब कुछ जाननेवाला। जिसे कुछ अज्ञात न हो। संज्ञा पु० १ ईश्वर। २ देवता। ३ बुद्ध या अर्हत्। ४. शिव।

सर्वज्ञता–संज्ञा स्त्री० [सं०] 'सर्वज्ञ' का भाव।

सर्वतंत्र–संज्ञा पु० [सं०] सब प्रकार के शास्त्र सिद्धांत। वि० जिसे सब शास्त्र मानते हों।

सर्वतः–अव्य० [सं०] १ सब ओर। चारों तरफ। २ सब प्रकार से।

सर्वतोभद्र–वि० [सं०] १ सब ओर से मंगल। २ जिसके सिर, दाढ़ी, मूँछ आदि सबके बाल मुँड़े हों। संज्ञा पु० १ वह चौखूँटा मंदिर जिसके चारों ओर दरवाजे हों। २ एक प्रकार का मांगलिक चिह्न जो पूजा के वस्त्र पर बनाया जाता है। ३ एक प्रकार का चित्रकाव्य। ४ एक प्रकार की पहेली जिसमें शब्द के खंडाक्षरों के भी अलग अलग अर्थ लिए जाते हैं। ५. विष्णु का रथ।

सर्वतोभाव–अव्य० [सं०] सब प्रकार से। अच्छी तरह। भली भाँति।

सर्वतोमुख–वि० [सं०] १ जिसका मुँह चारों ओर हो। २ पूर्ण। व्यापक।

सर्वत्र–अव्य० [सं०] सब कहीं। सब जगह।

सर्वथा–अव्य० [सं०] १ सब प्रकार से। सब तरह से। २ बिल्कुल। सब।

सर्वदर्शी–संज्ञा पु० [सं० सर्वदर्शिन्] [स्त्री० सर्वदर्शिणी] सब कुछ देखनेवाला।

सर्वदा–अव्य० [सं०] हमेशा। सदा।

सर्वनाम–संज्ञा पु० [सं० सर्वनामन्] व्याकरण में वह शब्द जो संज्ञा के स्थान में प्रयुक्त होता है। जैसे—मैं, तू, वह।

सर्वनाश–संज्ञा पु० [सं०] सत्यानाश। विध्वंस। पूरी बरबादी।

सर्वप्रिय–वि० [सं०] सब को प्यारा। जो सब को अच्छा लगे।

सर्वभक्षी–संज्ञा पु० [सं० सर्वभक्षिन्] [स्त्री० सर्वभक्षिणी] सब कुछ खानेवाला। संज्ञा पु० अग्नि।

सर्वभोगी–वि० [सं० सर्वभोगिन] [स्त्री० सर्वभोगिनी] १. सब का आनंद लेनेवाला। २ सब कुछ खानेवाला।

सर्वमंगला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुर्गा। २. लक्ष्मी।
सर्वरी*–संज्ञा स्त्री० दे० "शर्वरी"।
सर्वव्यापक–संज्ञा पुं० दे० "सर्वव्यापी"।
सर्वव्यापी–वि० [सं० सर्वव्यापिन्] [स्त्री० सर्वव्यापिनी] सब में रहनेवाला। सब पदार्थों मे रमणशील।
सर्वशक्तिमान्–वि० [सं० सर्वशक्तिमत्] [स्त्री० सर्वशक्तिमती] सब कुछ करने की सामर्थ्य रखनेवाला।
संज्ञा पुं० ईश्वर।
सर्वश्रेष्ठ–वि० [सं०] सबसे उत्तम।
सर्व-साधारण–संज्ञा पुं० [सं०] साधारण लोग। जनता। आम लोग।
वि० जो सबमें पाया जाय। आम।
सर्व-सामान्य–वि० [सं०] जो सब में एक सा पाया जाय। मामूली।
सर्वस्व–संज्ञा पुं० [सं०] सारी संपत्ति। सब कुछ। कुल माल-मता।
सर्वहर–संज्ञा पुं० [सं०] १. सब कुछ हर लेनेवाला। २. महादेव। शंकर। ३. यमराज। ४. काल।
सर्वांग–संज्ञा पुं० [सं०] १. संपूर्ण शरीर। सारा बदन। २. सब अवयव या अंश।
सर्वात्मा–संज्ञा पुं० [सं० सर्वात्मन्] १. सारे विश्व की आत्मा। ब्रह्म। २. शिव।
सर्वाधिकार–संज्ञा पुं० [सं०] सब कुछ करने का अधिकार। पूरा इख्तियार।
सर्वाधिकारी–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जिसके हाथ में पूरा इख्तियार हो। २. हाकिम।
सर्वाशी–वि० [सं० सर्वाशिन्] [स्त्री० सर्वाशिनी] सब कुछ खानेवाला। सर्वभक्षी।
सर्वास्तिवाद–संज्ञा पुं० [सं०] यह दार्शनिक सिद्धांत कि सब वस्तुओं की वास्तव मे सत्ता है, वे असत् नहीं हैं।
सर्वेश, सर्वेश्वर–संज्ञा पुं० [सं०] १. सब का स्वामी। २. ईश्वर। ३. चक्रवर्ती राजा।
सर्वौषधि–संज्ञा स्त्री० [सं०] आयुर्वेद में ओषधियों का एक वर्ग जिसके अंतर्गत दस जड़ी-बूटियाँ हैं।
सर्षप–संज्ञा पुं० [सं०] १. सरसों। २. सरसों भर का मान या तौल।
सलई–संज्ञा स्त्री० [सं० शल्लकी] १. शल्लकी वृक्ष। चीड़। २. चीड़ का गोंद। कुंदुर।
सलगम–संज्ञा पुं० दे० "शलजम"।
सलज्ज–वि० [सं०] जिसे लज्जा हो। शर्म और हयावाला। लज्जाशील।
सलतनत–संज्ञा स्त्री० [अ० सल्तनत] १. राज्य। बादशाहत। २. साम्राज्य। ३. इंतज़ाम। प्रबंध। ४. सुभीता। आराम।
सलना–क्रि० अ० [सं० शल्य] १. साला जाना। छिदना। भिदना। २. छेद में डाला या पहनाया जाना।
सलब–वि० [अ० सल्ब] नष्ट। बरबाद।
सलमा–संज्ञा पुं० [अ० सलम ?] सोने या चाँदी का गोल लपेटा हुआ तार जो बेल-बूटे बनाने के काम में आता है। बादला।
सलवट–संज्ञा स्त्री० दे० "सिलवट"।
सलहज–संज्ञा स्त्री० [हिं० साला] सरहज।
सलाई–संज्ञा स्त्री० [सं० शलाका] धातु का बना हुआ कोई पतला छोटा छड़।
मुहा०—सलाई फेरना=सलाई गरम करके अंधा करने के लिये आँखों में लगाना।
संज्ञा स्त्री० [हिं० सालना] सालने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
सलाक–संज्ञा पुं० [सं० शलाका] तीर।
सलाख–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० मि० सं० शलाका] धातु का बना हुआ छड़। शलाका। सलाई।
सलाद–संज्ञा पुं० [अ० सैलाड] १. मूली, प्याज आदि के पत्तों का अँगरेज़ी ढंग से डाला हुआ अचार। २. एक प्रकार के कंद के पत्ते जो प्रायः कच्चे खाए जाते हैं।
सलाम–संज्ञा पुं० [अ०] प्रणाम करने की क्रिया। प्रणाम। बंदगी। आदाब।
मुहा०—दूर से सलाम करना=किसी बुरी वस्तु के पास न जाना। सलाम लेना=सलाम का जवाब देना। सलाम देना=सलाम करना।
सलामत–वि० [अ०] १. सब प्रकार की आपत्तियों से बचा हुआ। रक्षित। २. जीवित और स्वस्थ। तंदुरुस्त और ज़िंदा।

२ कायम। बरकरार।
क्रि० वि० कुशलपूर्वक। खैरियत से।

सलामती–संज्ञा स्त्री० [अ० सलामत + ई (प्रत्य०)] १ तंदुरुस्ती। स्वस्थता। २ कुशल। क्षेम।

सलामी–संज्ञा स्त्री० [अ० सलाम+ई (प्रत्य०)] १ प्रणाम करने की क्रिया। सलाम करना। २ सैनिकों की प्रणाम करने की प्रणाली। ३ तोपों या बन्दूकों की बाढ़ जो किसी बड़े अधिकारी या माननीय व्यक्ति के आने पर दागी जाती है।
मुहा०—सलामी उतारना = किसी के स्वागतार्थ बन्दूकों या तोपों की बाढ़ दागना।

सलार–संज्ञा पु० [?] एक प्रकार का पक्षी।

सलाह–संज्ञा स्त्री० [अ०] सम्मति। परामर्श। राय। मशवरा।

सलाहकार–संज्ञा पु० [अ० सलाह + फा० कार (प्रत्य०)] वह जो परामर्श देता हो। राय देनेवाला।

सलाही–संज्ञा पु० दे० "सलाहकार"।

सलिल–संज्ञा पु० [सं०] जल। पानी।

सलिलपति–संज्ञा पु० [सं०] १ वरुण। २ समुद्र।

सलीका–संज्ञा पु० [अ०] १ काम करने का अच्छा ढंग। शऊर। तमीज। २ हुनर। लियाकत। ३ चाल-चलन। बरताव। ४ तहजीब। सभ्यता।

सलीकामंद–वि० [अ० सलीका + फा० मंद (प्रत्य०)] १ शऊरदार। तमीजदार। २ हुनरमंद। ३ सभ्य।

सलीता–संज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का बहुत मोटा कपड़ा।

सलीस–वि० [अ०] १ सहज। सुगम। २ मुहावरेदार और चलती हुई (भाषा)।

सलूक–संज्ञा पु० [अ०] १ बरताव। व्यवहार। आचरण। २ मिलाप। मेल। ३ भलाई। नेकी। उपकार।

सलोतर–संज्ञा पु० [सं० शालिहोत्र] पशुओं, विशेषतः घोड़ों की चिकित्सा का विज्ञान।

सलोतरी–संज्ञा पु० [सं० शालिहोत्री] पशुओं, विशेषतः घोड़ों की चिकित्सा करनेवाला। शालिहोत्री।

सलोना–वि० [हिं० स + लोन=नमक] [स्त्री० सलोनी] १ जिसमें नमक पड़ा हो। नमकीन। २ रसीला। सुंदर।

सलोनापन–संज्ञा पु० [हिं० सलोना + पन (प्रत्य०)] सलोना होने का भाव।

सलोनो–संज्ञा पु० [सं० श्रावणी ?] हिंदुओं का एक त्योहार जो श्रावण मास में पूर्णिमा को पड़ता है। रक्षा-बंधन। राखी पूनो।

सल्लम–संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का मोटा कपड़ा। गजी। गाढ़ा।

सवत–संज्ञा स्त्री० दे० "सौत"।

सवत्स–वि० [सं०] बच्चे के सहित। जिसके साथ बच्चा हो।

सवन–संज्ञा पु० [सं०] १ प्रसव। बच्चा जनना। २ यज्ञस्नान। ३ यज्ञ। ४ चंद्रमा। ५ अग्नि।

सवर्ण–वि० [सं०] १ समान। सदृश। २ समान वर्ण या जाति का।

सवाँग–संज्ञा पु० दे० "स्वाँग"।

सवा–संज्ञा स्त्री० [सं० स + पाद] चौथाई सहित। संपूर्ण और एक का चतुर्थांश।

सवाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० सवा + ई (प्रत्य०)] १ ऋण का एक प्रकार जिसमें मूलधन का चतुर्थांश ब्याज में देना पड़ता है। २ जयपुर के महाराजाओं की एक उपाधि।
वि० एक और चौथाई। सवा।

सवाद–संज्ञा पु० दे० "स्वाद"।

सवादिक*†–वि० [हिं० सवाद+इक (प्रत्य०)] स्वाद देनेवाला। स्वादिष्ठ।

सवाब–संज्ञा पु० [अ०] १ शुभ कृत्य का फल जो स्वर्ग में मिलेगा। पुण्य। २ भलाई। नेकी।

सवार–संज्ञा पु० [फा०] १ वह जो घोड़े पर चढ़ा हो। अश्वारोही। २ अश्वारोही सैनिक। ३ वह जो किसी चीज पर चढ़ा हो।
वि० किसी चीज पर चढ़ा या बैठा हुआ।

सवारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १ किसी चीज पर विशेषतः चलने के लिये चढ़ने की क्रिया।

२. सवार होने की वस्तु। चढ़ने की चीज। ३. वह व्यक्ति जो सवार हो। ४. जलूस।
सवाल–संज्ञा पुं० [अ०] १. पूछने की क्रिया। २. वह जो कुछ पूछा जाय। प्रश्न। ३. दरखास्त। माँग। ४. निवेदन। प्रार्थना। ५. गणित का प्रश्न जो उत्तर निकालने के लिये दिया जाता है।
सवाल-जवाब–संज्ञा पुं० [अ०] १. बहस। वाद-विवाद। २. तकरार। हुज्जत। झगड़ा।
सविकल्प–वि० [सं०] १. विकल्प-सहित। संदेह-युक्त। संदिग्ध। २. जो किसी विषय के दोनों पक्षों या मतों आदि को, कुछ निर्णय न कर सकने के कारण, मानता हो।
संज्ञा पु० वह समाधि जो किसी आलम्बन की सहायता से होती है।
सविता–संज्ञा पुं० [सं० सवितृ] १. सूर्य्य। २. बारह की संख्या। ३. आक। मदार।
सवितापुत्र–संज्ञा पु० [सं० सवितृपुत्र] सूर्य्य के पुत्र, हिरण्यपाणि।
सवितासुत–संज्ञा पु० [सं० सवितृसुत] शनैश्चर।
सविनय अवज्ञा–संज्ञा स्त्री० [सं० सविनय + अवज्ञा] राज्य की किसी आज्ञा या कानून को न मानना।
सवेरा–संज्ञा पु० [हिं० स + सं० वेला] १. प्रातःकाल। सुबह। २. निश्चित समय के पूर्व का समय। (क्व०)
सवैया–संज्ञा पु० [हिं० सवा+ऐया (प्रत्य०)] १. तौलने का सवा सेर का बाट। २. एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में सात भगण और एक गुरु होता है। मालिनी। दिवा। ३. वह पहाड़ा जिसमें एक, दो, तीन आदि संख्याओं का सवाया रहता है।
सव्य–वि० [सं०] १. वाम। बायाँ। २. दक्षिण। दाहिना। ३. प्रतिकूल। विरुद्ध।
संज्ञा पुं० १. यज्ञोपवीत। २. विष्णु।
सव्यसाची–संज्ञा पुं० [सं०] अर्जुन।
सशंक–वि० [सं०] १. जिसे शंका हो। शंकित। भयभीत। २. भयानक।
सशकना*–क्रि० अ० [सं० सशंक + ना (प्रत्य०)] १. शंका करना। २. भयभीत होना।
सस*–संज्ञा पुं० [सं० शशि] चंद्रमा।
संज्ञा पुं० [सं० शस्य] खेती-बारी।
ससक†–संज्ञा पुं० [सं० शशक] खरगोश।
ससि*–संज्ञा पुं० [सं० शशि] चंद्रमा।
ससिधर*–संज्ञा पुं० [सं० शशिधर] चंद्रमा।
सची*–संज्ञा स्त्री० दे० "शची"।
ससहर–संज्ञा पुं० दे० "ससिधर"।
ससुर–संज्ञा पुं० [सं० श्वशुर] पति या पत्नी का पिता। श्वशुर।
ससुरा–संज्ञा पु० [सं० श्वशुर] १. श्वशुर। ससुर। २. एक प्रकार की गाली। ३. दे० "ससुराल"।
ससुराल–संज्ञा स्त्री० [श्वशुरालय] श्वशुर का घर। पति या पत्नी के पिता का घर।
सस्ता–वि० [सं० स्वस्थ] [स्त्री० सस्ती] १. जो महँगा न हो। थोड़े मूल्य का। २. जिसका भाव बहुत उतर गया हो।
मुहा०—सस्ते छूटना = थोड़े व्यय, परिश्रम या कष्ट में कोई काम हो जाना।
३. घटिया। साधारण। मामूली। (क्व०)
सस्ताना†–क्रि० अ० [हिं० सस्ता+ना (प्रत्य०)] किसी वस्तु का कम दाम पर बिकना।
क्रि० स० सस्ते दामों पर बेचना।
सस्ती–संज्ञा स्त्री० [हिं० सस्ता] १. सस्ता होने का भाव। सस्तापन। २. वह समय जब कि सब चीजें सस्ती मिलें।
सस्त्रीक–वि० [सं०] जिसके साथ स्त्री हो। स्त्री या पत्नी के सहित।
सह–अव्य० [सं०] सहित। समेत।
वि० [सं०] १. उपस्थित। मौजूद। २. सहनशील। ३. समर्थ। योग्य।
सहकार–संज्ञा पु० [सं०] १. सुगंधित पदार्थ। २. आम का पेड़। ३. सहायक। ४. सहयोग।
सहकारता–संज्ञा स्त्री० [सं०] सहायता।
सहकारिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सहकारी या सहायक होने का भाव। २. सहायता।
सहकारी–संज्ञा पुं० [सं० सहकारिन्] [स्त्री०

सहचारिणी] १ एक साथ काम करनेवाला। साथी। सहयोगी। २. सहायक। मददगार।
सहगमन–संज्ञा पु० [सं०] पति के शव के साथ पत्नी का सती होना।
सहगामिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह स्त्री जो पति के शव के साथ सती हो। २ स्त्री। पत्नी। ३ सहचरी। साथिन।
सहगामी–संज्ञा पु० [सं० सहगामिन्] [स्त्री० सहगामिनी] साथ चलनेवाला। साथी।
सहगौन*–संज्ञा पु० दे० "सहगमन"।
सहचर–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० सहचरी] १ साथ चलनेवाला। साथी। २ सेवक। नौकर। ३ दोस्त। मित्र।
सहचरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सहचर का स्त्री० रूप। २ पत्नी। जोरू। ३ सखी।
सहचार–संज्ञा पु० [सं०] १ संगी। साथी। २ साथ। संग। सोहबत।
सहचारिणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ साथ में रहनेवाली। सखी। २ पत्नी। स्त्री।
सहचारिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] सहचारी होने का भाव।
सहचारी–संज्ञा पु० [सं० सहचारिन्] [स्त्री० सहचारिणी] १ संगी। साथी। २ सेवक।
सहज–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० सहजा] १ सहोदर भाई। सगा भाई। २ स्वभाव। वि० १ स्वाभाविक। प्राकृतिक। २ साधारण। ३ सरल। सुगम। आसान। ४ साथ उत्पन्न होनेवाला।
सहजपथ–संज्ञा पु० [हिं० सहज+पथ] गौड़ीय वैष्णव संप्रदाय का एक निम्न वर्ग।
सहजात–वि० [सं०] १ सहोदर। २ यमज।
सहजिया–संज्ञा पु० [हिं० सहज पथ] वह जो सहज पथ का अनुयायी हो।
सहतमहत–संज्ञा पु० दे० 'श्रावस्ति'।
सहतरा–संज्ञा पु० [फा० शाहतरह] पित्त पापड़ा। पर्पटक।
सहताना*†–क्रि० अ० दे० 'सुस्ताना"।
सहत्व–संज्ञा पु० [सं०] १ 'सह' का भाव। २ एकता। ३ मेल-जोल।
सहदानी*–संज्ञा स्त्री० [सं० सज्ञान] निशानी। पहचान। चिह्न।
सहदेई–संज्ञा स्त्री० [सं० सहदेवा] क्षुप जाति की एक पहाड़ी वनौषधि।
सहदेव–संज्ञा पु० [सं०] राजा पांडु के सबसे छोटे पुत्र। माद्री के गर्भ और अश्विनीकुमारों के औरस से इनका जन्म हुआ था।
सहधर्मचारिणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] पत्नी।
सहन–संज्ञा पु० [सं०] १ सहने की क्रिया। बरदाश्त करना। २ क्षमा। क्षांति। तितिक्षा।
संज्ञा पु० [अ०] १ मकान के बीच में या सामने का खुला छोड़ा हुआ भाग। आँगन। चौक। २ एक प्रकार का बढ़िया रेशमी कपड़ा।
सहनभंडार–संज्ञा पु० [सहन+सं० भंडार] १ कोष। खजाना। २ धन राशि। दौलत।
सहनशील–वि० [सं०] [भाव० सहनशीलता] १ बरदाश्त करनेवाला। सहिष्णु। २ संतोषी।
सहना–क्रि० स० [सं० सहन] १ बरदाश्त करना। झेलना। भोगना। २ परिणाम भोगना। अपने ऊपर लेना। ३ बोझ बर्दाश्त करना।
सहनायन†–संज्ञा स्त्री० [फा० शहनाई] शहनाई बजानेवाली स्त्री।
सहनीय–वि० [सं०] सहन करने योग्य।
सहपाठी–संज्ञा पु० [सं० सहपाठिन्] वह जो साथ में पढ़ा हो। सहाध्यायी।
सहभोज, सहभोजन–संज्ञा पु० [सं०] एक साथ बैठकर भोजन करना। साथ खाना।
सहभोजी–संज्ञा पु० [सं० सहभोजिन्] वे जो एक साथ बैठकर खाते हों।
सहम–संज्ञा पु० [फा०] १ डर। भय। खौफ। २ संकोच। लिहाज। मुलाहजा।
सहमत–वि० [सं०] जिसका मत दूसरे के साथ मिलता हो। एक मत का।
सहमना–क्रि० अ० [फा० सहम+ना (प्रत्य०)] भयभीत होना। डरना।
सहमरण–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री का मृत पति

के शव के साथ सती होना।

सहमाना–क्रि० स० [हिं० सहमना का सक०] भयभीत करना। डराना।

सहमृता–संज्ञा स्त्री० [सं०] सहमरण करनेवाली स्त्री। सती।

सहयोग–संज्ञा पुं० [सं०] १. साथ मिलकर काम करने का भाव। २. साथ। संग। ३. मदद। सहायता। ४. आधुनिक भारतीय राजनीति में सरकार के साथ मिलकर काम करने, उसकी काउंसिलों आदि में सम्मिलित होने और उसके पद आदि ग्रहण करने का सिद्धांत।

सहयोगी–संज्ञा पुं० [सं०] १. सहायक। मददगार। २. सहयोग करनेवाला। साथ मिलकर कोई काम करनेवाला। ३. वह जो किसी के साथ एक ही समय में वर्तमान हो। समकालीन। ४. आधुनिक भारतीय राजनीति में सब कामों में सरकार के साथ मिले रहने, उसकी काउंसिलों आदि में सम्मिलित होने और उसके पद तथा उपाधियाँ आदि ग्रहण करनेवाला व्यक्ति।

सहर–संज्ञा पुं० [अ०] प्रातःकाल।
संज्ञा पुं० [अ० सेह्र] जादू। टोना।
संज्ञा पुं० दे० "शहर"।
†क्रि० वि० [हिं० सहारना] धीरे। मंद गति से। रुक रुककर।

सहरगही–संज्ञा स्त्री० [अ० सहर + फा० गह] वह भोजन जो निर्जल व्रत करने के पहले बहुत तड़के किया जाता है। सहरी।

सहराना*†–क्रि० स० दे० "सहलाना"।
*†क्रि० अ० [हिं० सिहरना] डर से काँपना।

सहरी–संज्ञा स्त्री० [सं० शफरी] सफरी मछली।
संज्ञा स्त्री० दे० "सहरगही"।

सहल–वि० [अ० मि० सं० सरल] जो कठिन न हो। सरल। सहज। आसान।

सहलाना–क्रि० स० [अनु०] १. धीरे धीरे किसी वस्तु पर हाथ फेरना। सहराना। गुदराना। २. मलना। ३. गुदगुदाना।
क्रि० अ० गुदगुदी होना। खुजलाना।

सहवास–संज्ञा पुं० [सं०] १. संग। साथ। २. मैथुन। रति। संभोग।

सहस–वि० दे० "सहस्र"।

सहसकिरन–संज्ञा पुं० [सं० सहस्रकिरण] सूर्य्य।

सहसगो*–संज्ञा पुं० [सं० सहस्रगु] सूर्य्य।

सहसा–अव्य० [सं०] एकदम से। एकाएक। अचानक। अकस्मात्।

सहसाक्षि*–संज्ञा पुं० [सं० सहस्राक्ष] इंद्र।

सहसाखी*–संज्ञा पुं० [सं० सहस्राक्ष] इंद्र।

सहसासन*–संज्ञा पुं० [सं० सहस्रानन] शेषनाग।

सहस्र–संज्ञा पुं० [सं०] दस सौ की संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—१०००।
वि० जो गिनती में दस सौ हो।

सहस्रकर–संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य्य।

सहस्रकिरण–संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य्य।

सहस्रचक्षु–संज्ञा पुं० [सं० सहस्रचक्षस्] इंद्र।

सहस्रदल–संज्ञा पुं० [सं०] पद्म। कमल।

सहस्रधारा–संज्ञा स्त्री० [सं०] देवताओं को स्नान कराने का एक प्रकार का छेददार पात्र।

सहस्रनाम–संज्ञा पुं० [सं०] वह स्तोत्र जिसमें किसी देवता के हजार नाम हों।

सहस्रनेत्र–संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

सहस्रपाद–संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य्य। २. विष्णु ३. सारस पक्षी।

सहस्रबाहु–संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव। २. कार्त्तवीर्यार्जुन, जो क्षत्रिय राजा कृतवीर्य्य का पुत्र था। इसका दूसरा नाम हैहय था।

सहस्रभुजा–संज्ञा स्त्री० [सं०] देवी का एक रूप।

सहस्ररश्मि–संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य्य।

सहस्रशीर्ष–संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

सहस्राक्ष–संज्ञा पुं० [सं०] १. इंद्र। २. विष्णु।

सहाइ, सहाई*†–संज्ञा पुं० [सं० साहाय्य] सहायक। मददगार।
संज्ञा स्त्री० सहायता। मदद।

सहाउ–संज्ञा पुं० दे० "सहाय"।

सहाध्यायी–संज्ञा पुं० दे० "सहपाठी"।

सहानुभूति–संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी को दुःखी देखकर स्वयं दुःखी होना। हमदर्दी।

सहाय–संज्ञा पुं० [सं०] १. सहायता। मदद। सहारा। २. आश्रय। भरोसा। ३. सहायक। मददगार।

सहायक–वि० [सं०] १ सहायता करनेवाला। मददगार। २ (वह छोटी नदी) जो किसी बड़ी नदी में मिलती हो। ३ किसी की अधीनता में रहकर काम में उसकी सहायता करनेवाला।

सहायता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ किसी के कार्य्य में शारीरिक या और किसी प्रकार का योग देना। मदद। साहाय्य। २ वह धन जो किसी का कार्य्य आगे बढ़ाने के लिये दिया जाय। मदद।

सहायी–संज्ञा पु० [सं० सहाय + ई (प्रत्य०)] १ सहायक। मददगार। २ सहायता। मदद।

सहार–संज्ञा पु० [हिं० सहना] १ बर्दाश्त। सहनशीलता। २ सहना।

सहारना†–क्रि० स० [सं० सहन या हिं० सहारा] १ सहन करना। बर्दाश्त करना। सहना। २ अपने ऊपर भार लेना।

सहारा–संज्ञा पु० [सं० सहाय] १ मदद। सहायता। २ आश्रय। आसरा। ३ भरोसा। ४ इतमीनान।

सहालग–संज्ञा पु० [सं० साहित्य] वे मास या दिन जिसमें विवाह के मुहूर्त्त हों। ब्याह शादी के दिन।

सहिजन–संज्ञा पु० [सं० शोभांजन] एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जिसकी लंबी फलियों की तरकारी होती है। शोभांजन। मुनगा।

सहिजानी*†–संज्ञा स्त्री० [सं० संज्ञान] निशानी। चिह्न। पहचान।

सहित–अव्य० [सं०] समेत। संग।

सहिदान*†–संज्ञा पु० दे० "सहिदानी"।

सहिदानी†–संज्ञा स्त्री० [सं० संज्ञान] चिह्न। पहचान। निशान।

सहिष्णु–वि० [सं०] सहनशील।

सहिष्णुता–संज्ञा स्त्री० [सं०] सहनशीलता।

सही–वि० [फा० सहीह] १ सत्य। सच। २ प्रामाणिक। यथार्थ। ३ शुद्ध। ठीक। मुहा०—सही भरना = मान लेना। ४ हस्ताक्षर। दस्तखत।

सही-सलामत–वि० [फा० अ०] १ आरोग्य। भला-चंगा। तंदुरुस्त। २ जिसमें कोई दोष या न्यूनता न आई हो।

सहुँ–अव्य० [सं० सम्मुख] १ सम्मुख। सामने। २ ओर। तरफ।

सहूलियत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ आसानी। सुगमता। २ अदब। कायदा। शऊर।

सहृदय–वि० [सं०] [भाव० सहृदयता] १ जो दूसरे के दुःख सुख आदि समझता हो। २ दयालु। दयावान्। ३ रसिक। ४ सज्जन। भला आदमी।

सहेजना–क्रि० स० [अ० सही ?] १ भली भाँति जाँचना। सँभालना। २ अच्छी तरह यह-सुपुर्द करना।

सहेजवाना–क्रि० स० [हिं० सहेजना का प्रे०] सहेजने का काम दूसरे से कराना।

सहेट–संज्ञा पु० दे० "सहेत"।

सहेत*†–संज्ञा पु० [सं० संकेत] वह निर्दिष्ट स्थान जहाँ प्रेमी प्रेमिका मिलते हैं।

सहेतुक–वि० [सं०] जिसका कुछ हेतु उद्देश्य या मतलब हो।

सहेली–संज्ञा स्त्री० [सं० सह + हिं० एली (प्रत्य०)] १ साथ में रहनेवाली स्त्री। संगिनी। २ परिचारिका। दासी।

सहैया*†–संज्ञा पु० [हिं० सहाय] सहायक। वि० [सं० सहन] सहन करनेवाला।

सहोक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक काव्यालंकार जिसमें 'सह', 'संग', 'साथ' आदि शब्दों का व्यवहार होता है और अनेक कार्य्य साथ ही होते हुए दिखाए जाते हैं।

सहोदर–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० सहोदरा] एक ही माता के उदर से उत्पन्न संतान। वि० सगा। अपना। खास। (क्व०)

सह्य–संज्ञा पु० दे० "सह्याद्रि"। वि० [सं०] सहने योग्य। बर्दाश्त करने लायक।

सह्याद्रि–संज्ञा पु० [सं०] बंबई प्रांत का एक प्रसिद्ध पर्वत।

साँई–संज्ञा पु० [सं० स्वामी] १ स्वामी। मालिक। २ ईश्वर। परमेश्वर। ३ पति। शौहर। भर्ता। ४ मुसलमान फकीरों की एक उपाधि।

साँकड़ा–संज्ञा पुं० [सं० शृंखला] पैरों में पहनने का एक आभूषण।

साँकर*†–संज्ञा स्त्री० [सं० शृंखल] शृंखला। जंजीर। सीकड़।
संज्ञा पुं० [सं० संकीर्ण] संकट। कष्ट।
वि० १. संकीर्ण। तंग। सँकरा। २. दुःखमय। कष्टमय।

साँकरा†–वि० दे० "सँकरा"।

सांख्य–संज्ञा पुं० [सं०] महर्षि कपिल-कृत एक प्रसिद्ध दर्शन। इसमें प्रकृति को ही जगत् का मूल माना है और कहा है कि सत्त्व, रज और तम के योग से सृष्टि और उसके सब पदार्थों का विकास हुआ है।

साँग–संज्ञा स्त्री० [सं० शक्ति] एक प्रकार की बरछी जो फेंककर मारी जाती है। शक्ति।

सांग–वि० [सं० साङ्ग] संपूर्ण। पूरा।

साँगी–संज्ञा स्त्री० [सं० शंकु] बरछी। साँग।

सांगोपांग–अव्य० [सं० साङ्गोपाङ्ग] अंगों और उपांगों सहित। संपूर्ण। समस्त।

साँच*†–वि० पुं० [सं० सत्य] [स्त्री० साँची] सत्य। यथार्थ। ठीक।

साँचला†–वि० [हिं० साँच + ला (प्रत्य०)] [स्त्री० साँचली] सच्चा। सत्यवादी।

साँचा–संज्ञा पुं० [सं० स्थाता] १. वह उपकरण जिसमें कोई गीली चीज रखकर किसी विशिष्ट आकार-प्रकार की कोई चीज बनाई जाती है। फरमा।
मुहा०—साँचे में ढला होना = अंग-प्रत्यंग से बहुत ही सुंदर होना।
२. वह छोटी आकृति जो कोई बड़ी आकृति बनाने से पहले नमूने के तौर पर तैयार की जाती है। ३. कपड़े पर बेल-बूटा छापने का ठप्पा। छापा।

साँची–संज्ञा पुं० [साँची नगर ?] एक प्रकार का पान जो खाने में ठंढा होता है।
संज्ञा पुं० [?] पुस्तकों की वह छपाई जिसमें पंक्तियाँ बेड़े बल में होती हैं।

साँझ†–संज्ञा स्त्री० [सं० संध्या] संध्या।

साँझा–संज्ञा पुं० दे० "साझा"।

साँझी–संज्ञा स्त्री० [?] देव-मंदिरों में जमीन पर की हुई फूल-पत्तों आदि की सजावट जो प्रायः सावन में होती है।

साँट–संज्ञा स्त्री० [सट से अनु०] १. छडी। पतली कमची। २. कोड़ा। ३. शरीर पर का वह दाग जो कोड़े आदि का आघात पड़ने से होता है।

साँटा–संज्ञा पुं० [हिं० साँट = छड़ी] १. कोड़ा। २. ईख। गन्ना।

साँटिया–संज्ञा पुं० [हिं० साँटी] डौंड़ी या डुग्गी पीटनेवाला।

साँटी–संज्ञा स्त्री० [सं० यष्टिका या सट से अनु०] पतली छोटी छडी।
संज्ञा स्त्री० [हिं० सटना] १. मेल-मिलाप। २. बदला। प्रतिकार। प्रतिहिंसा।

साँठ–संज्ञा पुं० [देश०] १. दे० "साँकड़ा"। २. ईख। गन्ना। ३. सरकंडा।
यौ०—साँठ-गाँठ = १. मेल-मिलाप। २. गुप्त और अनुचित संबंध।

साँठना–क्रि० स० [हिं० साँठ] पकड़े रहना।

साँठी–संज्ञा स्त्री० [हिं० गाँठ ?] पूँजी। धन।

साँड़–संज्ञा पुं० [सं० पंड] १. वह बैल (या घोड़ा) जिसे लोग केवल जोड़ा खिलाने के लिये पालते हैं। २. वह बैल जिसे हिंदू लोग मृतक की स्मृति में दागकर छोड़ देते हैं।

साँड़नी–संज्ञा स्त्री० [हिं० साँड़िया] ऊँटनी या मादा ऊँट जो बहुत तेज चलता है।

साँड़ा–संज्ञा पुं० [हिं० साँड़] एक प्रकार का जंगली जानवर जिसकी चरबी दवा के काम में आती है।

साँड़िया–संज्ञा पुं० [हिं० साँड़ ?] १. बहुत तेज चलनेवाला एक प्रकार का ऊँट। २. साँड़नी पर सवारी करनेवाला।

सांत–वि० [सं०] जिसका अंत होता हो। अंतयुक्त।

सांत्वना–संज्ञा स्त्री० [सं०] दुःखी व्यक्ति को उसका दुःख हलका करने के लिये शांति देना। ढारस। आश्वासन।

सांदीपनि–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध मुनि जिन्होंने श्रीकृष्ण तथा बलराम को धनुर्वेद की शिक्षा दी थी।

साँधना–क्रि० स० [स० संधान] निशाना साधना। लक्ष्य करना। संधान करना। क्रि०स० [स० साधन] पूरा करना। साधना। क्रि० स० [स० संधि] मिलाना। मिश्रण।

सांध्य–वि० [स०] संध्या-संबंधी। संध्या का।

साँप–संज्ञा पु० [स० सर्प, प्रा० सप्प] [स्त्री० साँपिन] एक प्रसिद्ध रेंगनेवाला लंबा कीड़ा जिसकी सैकड़ों जातियाँ होती हैं। कुछ जातियाँ जहरीली और बहुत ही घातक होती हैं। भुजंग। विषधर।

मुहा०—कलेजे पर साँप लोटना = अत्यंत दुःखी होना (ईर्ष्या आदि के कारण)। साँप सूँघ जाना = मर जाना। निर्जीव हो जाना। साँप छछूँदर की दशा = भारी असमंजस की दशा।

सांपत्तिक–वि० [स० साम्पत्तिक] संपत्ति से संबंध रखनेवाला। आर्थिक। माली।

साँपधरन*–संज्ञा पु० [हिं० साँप + धारण] शिव। महादेव।

साँपिन–संज्ञा स्त्री० [हिं० साँप + इन (प्रत्य०)] साँप की मादा।

सांप्रत–अव्य० [स० साम्प्रत] इसी समय। सद्य। अभी। तत्काल।

सांप्रदायिक–वि० [स० साम्प्रदायिक] किसी संप्रदाय से संबंध रखनेवाला। संप्रदाय का।

सांब–संज्ञा पु० [स० साम्ब] जांबवती के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण के एक पुत्र। ये बहुत सुंदर थे, पर दुर्वासा और श्रीकृष्ण के शाप से कोढ़ी हो गए थे।

साँभर–संज्ञा पु० [स० सम्भल या साम्भल] १ राजपूताने की एक झील जिसके पानी से साँभर नमक बनता है। २ उक्त झील के जल से बना हुआ नमक। ३ भारतीय मृगों की एक जाति।

संज्ञा पु० [स० संबल] रास्ते का जलपान। संबल। पाथेय।

साँमुहे†–अव्य० [स० सम्मुखे] सामने।

संज्ञा पु० [स० श्यामक] साँवाँ नामक अन्न।

साँवत†–संज्ञा पु० दे० "सामंत"।

साँवर‡–वि० दे० "साँवला"।

साँवलताई†–संज्ञा स्त्री० [हिं० साँवला] साँवला होने का भाव। श्यामता।

साँवला–वि० [स० श्यामला] [स्त्री० साँवली] जिसका रंग कुछ कालापन लिए हुए हो। श्याम वर्ण का।

संज्ञा पु० १ श्रीकृष्ण। २ पति या प्रेमी आदि का बोधक एक नाम। (गीतों में)

साँवलापन–संज्ञा पु० [हिं० साँवला + पन (प्रत्य०)] साँवला होने का भाव। वर्ण की श्यामता।

साँवाँ–संज्ञा पु० [स० श्यामक] कँगनी या चेना की जाति का एक अन्न।

साँस–संज्ञा स्त्री० [स० श्वास] १ नाक या मुँह के द्वारा बाहर से हवा खींचकर अंदर फेफड़ों तक पहुँचाने और उसे फिर बाहर निकालने की क्रिया। श्वास। दम।

मुहा०—साँस उखड़ना = मरने के समय रोगी का बड़े कष्ट से साँस लेना। साँस टूटना। साँस ऊपर नीचे होना = साँस का ठीक तरह से ऊपर नीचे न आना। साँस रुकना। साँस चढ़ना = बहुत परिश्रम करने के कारण साँस का जल्दी-जल्दी आना और जाना। साँस टूटना = दे० "साँस उखड़ना"। साँस तक न लेना = बिलकुल चुपचाप रहना। कुछ न बोलना। साँस फूलना = बार बार साँस आना और जाना। साँस चढ़ना। साँस रहते = जीते जी। उलटी साँस लेना = १ दे० "गहरी साँस लेना"। २ मरने के समय रोगी का बड़े कष्ट से अंतिम साँस लेना। गहरी, ठंढी या लंबी साँस लेना = बहुत अधिक दुःख आदि के कारण बहुत देर तक अंदर की ओर वायु खींचते रहना और उसे कुछ देर तक रोककर बाहर निकालना।

२ अवकाश। फुरसत।

मुहा०—साँस लेना = विश्राम लेना। ठहरना।

३ गुंजाइश। दम। ४ संधि या दरार जिसमें से हवा जा या आ सकती हो। ५ किसी अवकाश के अंदर भरी हुई हवा।

मुहा०—साँस भरना = किसी चीज के अंदर हवा भरना।

६ दम फूलने का रोग। श्वास। दमा।

साँसत–संज्ञा स्त्री० [हिं० साँस + त (प्रत्य०)]

१. दम घुटने का सा कष्ट। २. बहुत अधिक कष्ट या पीड़ा। ३. झंझट। बखेड़ा।

साँसतघर—संज्ञा पुं० [हिं० साँसत + घर] वह तंग और अँधेरी कोठरी जिसमें अपराधियों को विशेष दंड देने के लिये रखा जाता है। काल-कोठरी।

साँसना*†—क्रि० स० [सं० शासन] १. शासन करना। दंड देना। २. डाँटना। डपटना। ३. कष्ट देना। दुःख देना।

साँसा†—संज्ञा पुं० [सं० श्वास] १. साँस। श्वास। २. जीवन। जिंदगी। ३. प्राण। संज्ञा पुं० [सं० संशय] १. संशय। संदेह। शक। २. डर। भय। दहशत।

सांसारिक—वि० [सं०] इस संसार का। लौकिक। ऐहिक।

सा—अव्य० [सं० सदृश] १. समान। तुल्य। सदृश। बराबर। २. एक मानसूचक शब्द; जैसे—थोड़ा सा।

साइक*—संज्ञा पुं० दे० "शायक"।

साइत—संज्ञा स्त्री० [अ० साअत] १. एक घंटे या ढाई घड़ी का समय। २. पल। लहमा। ३. मुहूर्त्त। शुभ लग्न।

साइयाँ—संज्ञा पुं० दे० "साईं"।

साइर†—संज्ञा पुं० दे० "सायर"।

साइँ—संज्ञा पुं० [सं० स्वामी] १. स्वामी। मालिक। २. ईश्वर। ३. पति। सांविद।

साई—संज्ञा स्त्री० [हिं० साइत ?] वह धन जो पेशेकारों को, किसी अवसर के लिये उनकी नियुक्ति पक्की करके, पेशगी दिया जाता है। पेशगी। बयाना।

साईस—संज्ञा पुं० [हिं० रईस का अनु०] वह नौकर जो घोड़े की खबरदारी और सेवा करता है।

साईसी—संज्ञा स्त्री० [हिं० साईस ई (प्रत्य०)] साईस का काम, भाव या पद।

साकंभरी—संज्ञा पुं० [सं० शाकंभरी] साँभर झील या उसके आस-पास का प्रांत।

साकचेरि†—संज्ञा स्त्री० [?] मेहँदी।

साकट—संज्ञा पुं० [सं० शाक्त] १. शाक्त मत का अनुयायी। २. वह जिसने किसी गुरु से दीक्षा न ली हो। ३. दुष्ट। पाजी।

साकर†—वि० दे० "सँकरा"।

साका—संज्ञा पुं० [सं० शाका] १. संवत्। शाका। २. ख्याति। प्रसिद्धि। ३. यश। कीर्त्ति। ४. कीर्त्ति का स्मारक। ५. धाक। रोब। ६. अवसर। मौका। मुहा०—साँका चलाना = रोब जमाना। साँका बाँधना = दे० "साँका चलाना"। ७. कोई ऐसा बड़ा काम जिससे कर्त्ता की कीर्त्ति हो।

साकार—वि० [सं०] १. जिसका कोई आकार या स्वरूप हो। २. मूर्त्तिमान्। साक्षात्। ३. स्थूल।
संज्ञा पुं० [सं०] ईश्वर का साकार रूप।

साकारोपासना—संज्ञा स्त्री० [सं०] ईश्वर की मूर्त्ति बनाकर उसकी उपासना करना।

साकिन—वि० [अ०] निवासी। रहनेवाला।

साक़ी—संज्ञा पुं० [अ०] १. शराब पिलानेवाला। २. माशूक़।

साकेत—संज्ञा पुं० [सं०] अयोध्या नगरी।

साक्षर—वि० [सं०] जो पढ़ना-लिखना जानता हो। शिक्षित।

साक्षात्—अव्य० [सं०] सामने। सम्मुख।
वि० मूर्त्तिमान्। साकार।
संज्ञा पुं० भेंट। मुलाकात। देखा-देखी।

साक्षात्कार—संज्ञा पुं० [सं०] १. भेंट। मुलाक़ात। २. पदार्थों का इंद्रियों द्वारा होनेवाला ज्ञान।

साक्षी—संज्ञा पुं० [सं० साक्षिन्] [स्त्री० साक्षिणी] १. वह मनुष्य जिसने किसी घटना को अपनी आँखों देखा हो। चश्मदीद गवाह। २. देखनेवाला। दर्शक।
संज्ञा स्त्री० किसी बात को कहकर प्रमाणित करने की क्रिया। गवाही। शहादत।

साक्ष्य—संज्ञा पुं० [सं०] गवाही। शहादत।

साख—संज्ञा पुं० [हिं० साक्षी] १. साक्षी। गवाह। २. गवाही। प्रमाण। शहादत।
संज्ञा पुं० [सं० शाका] १. धाक। रोब। २. मर्य्यादा। ३. लेन-देन की प्रामाणिकता।

साखना*—क्रि० स० [सं० साक्षि] साखी देना। गवाही देना। शहादत देना।

साखर*†—वि० दे० "साक्षर"।
साखा*†—संज्ञा स्त्री० दे० "शाखा"।
साखी—संज्ञा पु० [सं० साक्षिन्] गवाह।
संज्ञा स्त्री० १ साक्षी। गवाही।
मुहा०—साखी पुकारना=गवाही देना।
२ ज्ञान-संबंधी पद या कविता।
संज्ञा पु० [सं० शाखिन्] वृक्ष। पेड़।
साखू—संज्ञा पु० [सं० शाल] शाल वृक्ष।
साखोचारन*†—संज्ञा पु० [सं० शाखोच्चारण] विवाह के अवसर पर वर और वधू के वंश-गोत्रादि का चिल्ला-चिल्लाकर परिचय देने की क्रिया। गोत्रोच्चार।
साग—संज्ञा पु० [सं० शाक] १ पौधों की खाने योग्य पत्तियाँ। शाक। भाजी। २ पकाई हुई भाजी। तरकारी।
यौ०—साग-पात=रूखा-सूखा भोजन।
सागर—संज्ञा पु० [सं०] १ समुद्र। उदधि। २ बड़ा तालाब। झील। ३ संन्यासियों का एक भेद।
सागू—संज्ञा पु० [अं० सैगो] १ ताड़ की जाति का एक पेड़। २ दे० "सागूदाना"।
सागूदाना—संज्ञा पु० [हिं० सागू+दाना] सागू नामक वृक्ष के तने का गूदा जो कूट-कर दानों के रूप में सुखा लिया जाता है। यह बहुत जल्दी पच जाता है। सागूदाना।
सागौन—संज्ञा पु० दे० 'शाल' (१)।
साग्निक—संज्ञा पु० [सं०] वह जो बराबर अग्निहोत्र आदि किया करता हो।
साग्र—वि० [सं०] समस्त। कुल। सब।
साज—संज्ञा पु० [फा०, मि० सं० सज्जा] १ सजावट का काम। ठाठ-बाट। २ सजावट का सामान। उपकरण। सामग्री। जैसे—घोड़े का साज। नाव का साज। ३ वाद्य। बाजा। ४ लड़ाई में काम आनेवाले हथियार। ५ मेल-जोल।
वि० मरम्मत या तैयार करनेवाला। बनानेवाला। (यौगिक में, अंत में)
साजन—संज्ञा पु० [सं० सज्जन] १ पति। स्वामी। २ प्रेमी। वल्लभ। ३ ईश्वर। ४ सज्जन। भला आदमी।
साजना*†—क्रि० स० दे० "सजाना"।
संज्ञा पु० दे० "साजन"।
साज-बाज—संज्ञा पु० [सं० साज+बाज (अनु०)] १ तैयारी। २ मेल-जोल।
साज-सामान—संज्ञा पु० [फा०] १ सामग्री। उपकरण। असबाब। २ ठाठ-बाट।
साजिंदा—संज्ञा पु० [फा० साजिन्द] १ साज या बाजा बजानेवाला। २ सपरदाई। समाजी।
साजिश—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ मेल। मिलाप। २ किसी के विरुद्ध कोई काम करने में सहायक होना। षड्यंत्र।
साजुज्य*—संज्ञा पु० दे० "सायुज्य"।
साझा—संज्ञा पु० [सं० सहार्घ्य] १ शराकत। हिस्सेदारी। २ हिस्सा। भाग। बाँट।
साझी—संज्ञा पु० दे० "साझेदार"।
साझेदार—संज्ञा पु० [हिं० साझा+दार(प्रत्य०)] शरीक होनेवाला। हिस्सेदार। साझी।
साटक—संज्ञा पु० [?] १ भूसी। छिलका। २ तुच्छ और निकम्मी चीज। ३ एक प्रकार का छंद।
साटन—संज्ञा पु० [अं० सैटिन] एक प्रकार का बढ़िया रेशमी कपड़ा।
साटना*†—क्रि० स० दे० "सटाना"।
साठ—वि० [सं० षष्टि] पचास और दस।
संज्ञा पु० पचास और दस के योग की संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—६०।
साठ-नाठ—वि० [हिं० साँठि+नाठ(नष्ट)] १ निर्धन। दरिद्र। २ नीरस। रूखा। ३ इधर-उधर। तितर बितर।
साठसाती—संज्ञा स्त्री० दे० "साढ़ेसाती"।
साठा—संज्ञा पु० [देश०] १ ईख। गन्ना। ऊख। २ साठी धान।
वि० [हिं० साठ] साठ वर्ष की उम्रवाला।
साठी—संज्ञा पु० [सं० षष्टिक] एक प्रकार का धान।
साड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० शाटिका] स्त्रियों के पहनने की चौड़े किनारे की या बेलदार धोती। सारी।
संज्ञा स्त्री० दे० "साढ़ी"।

साढ़साती–संज्ञा स्त्री० दे० "साढ़ेसाती"।
साढ़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० असाढ़] वह फ़सल जो असाढ़ में बोई जाती है। असाढ़ी। संज्ञा स्त्री० [सं० सार ?] दूध के ऊपर जमनेवाली बालाई। मलाई। संज्ञा स्त्री० दे० "साड़ी"।
साढ़ू–संज्ञा पुं० [सं० स्यालिवोढ़ृ] साली का पति। पत्नी की बहन का पति।
साढ़ेसाती–संज्ञा स्त्री० [हिं० साढ़े + सात + ई (प्रत्य०)] शनि ग्रह की साढ़े सात वर्ष, साढ़े सात मास या साढ़े सात दिन आदि की दशा। (अशुभ)
सात–वि० [सं० सप्त] पाँच और दो। संज्ञा पु० पाँच और दो के योग की संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—७। मुहा०—सात पाँच = चालाकी। मक्कारी। धूर्तता। सात समुद्र पार = बहुत दूर। सात राजाओं की साक्षी देना = किसी बात की सत्यता पर बहुत जोर देना। सात सींके बनाना = शिशु के जन्म के छठे दिन की एक रीति जिसमें सात सींकें रखी जाती हैं।
सात-फेरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० सात + फेरी] विवाह की भाँवर नामक रीति।
सातला–संज्ञा पु० [सं० सप्तला] एक प्रकार का थूहर। सप्तला। स्वर्णपुष्पी।
सात्मक–वि० [सं०] आत्मा के सहित।
सात्म्य–संज्ञा पु० [सं०] सारूप्य। सरूपता।
सात्यकि–संज्ञा पुं० [सं०] एक यादव जिसने महाभारत के युद्ध में पांडवों का पक्ष लिया था। युयुधान।
सात्वत–संज्ञा पुं० [सं०] १. बलराम। २. श्रीकृष्ण। ३. विष्णु। ४. यदुवंशी।
सात्वती–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शिशुपाल की माता का नाम। २. सुभद्रा।
सात्वती वृत्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] साहित्य में एक प्रकार की वृत्ति जिसका व्यवहार वीर, रौद्र, अद्भुत और शांत रसों में होता है।
सात्विक–वि० [सं०] १. सत्त्वगुणवाला। सतोगुणी। २. सत्त्वगुण से उत्पन्न। संज्ञा पुं० १. सतोगुण से उत्पन्न होनेवाले निसर्गजात अंग-विकार। यथा—स्तंभ, स्वेद, रोमांच, स्वरभंग, कंप, वैवर्ण्य, अश्रु और प्रलय। २. सात्वती वृत्ति। (साहित्य)
साथ–संज्ञा पुं० [सं० सहित] १. मिलकर या संग रहने का भाव। संगत। सहचार। २. बराबर पास रहनेवाला। साथी। संगी। ३. मेल-मिलाप। घनिष्ठता। अव्य० १. संबंधसूचक अव्यय जिससे सहचार का बोध होता है। सहित। से। मुहा०—साथ ही = सिवा। अतिरिक्त। साथ ही साथ = एक साथ। एक सिलसिले में। एक साथ = एक सिलसिले में। २. विरुद्ध। ३. प्रति। से। ४. द्वारा।
साथरा†–संज्ञा पुं० [?] [स्त्री० साथरी] १. बिछौना। बिस्तर। २. कुश की बनी चटाई।
साथी–संज्ञा पु० [हिं० साथ] [स्त्री० साथिन] १. साथ रहनेवाला। हमराही। संगी। २. दोस्त। मित्र।
सादगी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. सादापन। सरलता। २. सीधापन। निष्कपटता।
सादा–वि० [फ़ा० सादः] [स्त्री० सादी] १. जिसकी बनावट आदि बहुत संक्षिप्त हो। २. जिसके ऊपर कोई अतिरिक्त काम न बना हो। ३. बिना मिलावट का। ख़ालिस। ४. जिसके ऊपर कुछ अंकित न हो। ५. जो कुछ छल-कपट न जानता हो। सरल-हृदय। सीधा। ६. मूर्ख।
सादापन–संज्ञा पु० [फ़ा० सादा + पन (प्रत्य०)] सादा होने का भाव। सादगी। सरलता।
सादी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सादः] १. लाल की जाति की एक प्रकार की छोटी चिड़िया। सदिया। २. वह पूरी जिसमें पीठी आदि नहीं भरी होती। संज्ञा पुं० १. शिकारी। २. घोड़ा।
सादूर–संज्ञा पु० [सं० शार्दूल] १. शार्दूल। सिंह। २. कोई हिंसक पशु।
सादृश्य–संज्ञा पु० [सं०] १. समानता। एक-रूपता। २. बराबरी। तुलना।

साघ–सज्ञा पु० [स० साधु] १ साधु। महात्मा। २ योगी। ३ सज्जन।
सज्ञा स्त्री० [स० उत्साह] १ इच्छा। ख्वाहिश। कामना। २ गर्भ धारण करने के सातवें मास में होनेवाला एक प्रकार का उत्सव।
सज्ञा पु० फर्रुखाबाद और कनौज के आस-पास पाई जानेवाली एक जाति।
वि० [स० साधु] उत्तम। अच्छा।
साधक–सज्ञा पु० [स०] १ साधना करने-वाला। साधनवाला। २ योगी। तपस्वी। ३ करण। वसीला। जरिया। ४ वह जो किसी दूसरे के स्वार्थ-साधन में सहायक हो।
साधन–सज्ञा पु० [स०] १ काम को सिद्ध करने की क्रिया। सिद्धि। विधान। २ सामग्री। सामान। उपकरण। ३ उपाय। युक्ति। हिकमत। ४ उपासना। साधना। ५ धातुओ को शोधने की क्रिया। शोधन। ६ कारण। हेतु।
साधनता–सज्ञा स्त्री० [स०] १ साधन का भाव या धर्म्म। २ साधना।
साधनहार*–सज्ञा पु० [स० साधन + हार] १ साधनेवाला। २ जो साधा जा सके।
साधना–सज्ञा स्त्री० [स०] १ कोई कार्य्य सिद्ध या सपन्न करने की क्रिया। सिद्धि। २ देवता आदि को सिद्ध करने के लिये उसकी उपासना। ३ दे० 'साधन"।
क्रि० स० [स० साधन] १ कोई कार्य्य सिद्ध करना। पूरा करना। २ निशाना लगाना। सधान करना। ३ नापना। पैमाइश करना। ४ अभ्यास करना। आदत डालना। ५ शोधना। शुद्ध करना। ६ पक्का करना। ठहराना। ७ एकत्र करना। इकट्ठा करना। ८ वश में करना।
साधर्म्य–सज्ञा पु० [स०] समान धर्म होने का भाव। एकधर्मता।
साधारण–वि० [स०] १ मामूली। सामान्य। २ सरल। सहज। ३ सार्व-जनिक। आम। ४. समान। सदृश।
साधारणत–अव्य० [स०] १ मामूली तौर पर। सामान्यत। २ बहुधा। प्राय।
साधित–वि० [स०] जो सिद्ध किया या साधा गया हो।
साधु–सज्ञा पु० [स०] १ कुलीन। आर्य्य। २ धार्मिक पुरुष। महात्मा। सत। ३. भला आदमी। सज्जन।
मुहा०—*साधु साधु कहना=किसी के कोई अच्छा काम करने पर उसकी प्रशसा करना।*
वि० १ अच्छा। उत्तम। भला। २ सच्चा। ३ प्रशसनीय। ४ उचित।
साधुता–सज्ञा स्त्री० [स०] १ साधु होने का भाव या धर्म्म। २ सज्जनता। भल-मनसाहत। ३ सीधापन। सिधाई।
साधुवाद–सज्ञा पु० [स०] किसी के कोई उत्तम कार्य्य करने पर "साधु साधु" कह-कर उसकी प्रशसा करना।
साधु साधु–अव्य० [स०] धन्य धन्य। वाह वाह। बहुत खूब।
साधू–सज्ञा पु० दे० 'साधु"।
साधो–सज्ञा पु० [स० साधु] सत। साधु।
साध्य–वि० [स०] १ सिद्ध करने योग्य। २ जो सिद्ध हो सके। ३ सहज। सरल। आसान। ४ जो प्रमाणित करना हो।
सज्ञा पु० १ देवता। २ न्याय में वह पदार्थ जिसका अनुमान किया जाय। ३ शक्ति। सामर्थ्य।
साध्यता–सज्ञा स्त्री० [स०] साध्य का भाव या धर्म्म। साध्यत्व।
साध्यवसानिका–सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार की लक्षणा। (सा० द०)
साध्यसम–सज्ञा पु० [स०] न्याय मे वह हेतु जिसका साधन साध्य की भाँति करना पडे।
साध्वी–वि० स्त्री० [स०] १ पतिव्रता। (स्त्री) २ शुद्ध चरित्रवाली। (स्त्री)
सानद–वि० [स०] आनद के साथ। आनदपूर्वक।
सान–सज्ञा पु० [स० शाण] वह पत्थर जिस

पर अस्त्रादि तेज किए जाते हैं। कुरंड।
मुहा०—सान देना या धरना = धार तेज़ करना।

सानना†–क्रि० स० [हिं० सनना का सक०] १. चूर्ण आदि को तरल पदार्थ में मिलाकर गीला करना। गूँधना। २. उत्तरदायी बनाना। ३. मिलाना। मिश्रित करना।

सानी–संज्ञा स्त्री० [हिं० सानना] वह भोजन जो पानी में सानकर पशुओं को देते हैं। वि० [अ०] १. दूसरा। द्वितीय। २ बराबरी का। मुकाबले का।
यौ०—लासानी = अद्वितीय।

सानु–संज्ञा पुं० [सं०] १. पर्वत की चोटी। शिखर। २. अंत। सिरा। ३. चौरस ज़मीन। ४. वन। जंगल।

सान्निध्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. समीपता। सामीप्य। सन्निकटता। २. एक प्रकार की मुक्ति। मोक्ष।

साप*–संज्ञा पुं० दे० "शाप"।

सापत्न्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. सपत्नी का भाव या धर्म्म। सौतपन। २. सौत का लड़का।

सापना*†–क्रि० स० [सं० शाप] १. शाप देना। बददुआ देना। २. गाली देना। कोसना।

साफ़–वि० [अ०] १. जिसमें किसी प्रकार की मैल आदि न हो। स्वच्छ। निर्मल। २. शुद्ध। खालिश। ३. निर्दोष। बे-ऐब। ४. स्पष्ट। ५. उज्ज्वल। ६. जिसमें कोई बखेड़ा या झंझट न हो। ७. स्वच्छ। चमकीला। ८. जिसमें छल-कपट न हो। निष्कपट। ९. समतल। हमवार। १०. सादा। कोरा। ११. जिसमें से अनावश्यक या रद्दी अंश निकाल दिया गया हो। १२. जिसमें कुछ तत्त्व न रह गया हो।
मुहा०—साफ़ करना = १. मार डालना। हत्या करना। २. नष्ट करना। बरबाद करना।
१३. लेन-देन आदि का निपटना। चुकती। क्रि० वि० १. बिना किसी प्रकार के दोष, कलंक या अपवाद आदि के। २. बिना किसी प्रकार की हानि या कष्ट उठाए हुए। ३. इस प्रकार जिसमें किसी को पता न लगे। ४. बिलकुल। नितांत।

साफल्य–संज्ञा पुं० दे० "सफलता"।

साफ़ा–संज्ञा पुं० [अ० साफ़] १. पगड़ी। २. मुरेठा। मुँड़ासा। ३. नित्य के पहनने के वस्त्रों को साबुन लगाकर साफ़ करना। कपड़े धोना।

साफ़ी–संज्ञा स्त्री० [अ० साफ़] १. रूमाल। दस्ती। २. वह कपड़ा जो गाँजा पीनेवाले चिलम के नीचे लपेटते हैं। ३. भाँग छानने का कपड़ा। छनना।

साबर–संज्ञा पुं० [सं० शंबर] १. दे० "साँभर"। २. साँभर मृग का चमड़ा। ३. मिट्टी खोदने का एक औज़ार। सबरी। ४. शिव-कृत एक प्रकार का सिद्ध मंत्र।

साबस‡–संज्ञा पुं० दे० "शाबाश"।

साबिक़–वि० [अ०] पूर्व का। पहले का।
यौ०—साबिक़ दस्तूर = जैसा पहले था, वैसा ही। पहले की ही तरह।

साबिक़ा–संज्ञा पुं० [अ०] १. मुलाक़ात। भेंट। २. संबंध। सरोकार।

साबित–वि० [फ़ा०] जिसका सबूत दिया गया हो। प्रमाणित। सिद्ध। वि० [अ० सबूत] १. साबूत। पूरा। २. दुरुस्त। ठीक।

साबुत–वि० [फ़ा० सबूत] १. साबूत। संपूर्ण। २. दुरुस्त।

साबुन–संज्ञा पुं० [अ०] रासायनिक क्रिया से प्रस्तुत एक प्रसिद्ध पदार्थ जिससे शरीर और वस्त्रादि साफ़ किए जाते हैं।

साबूदाना–संज्ञा पुं० दे० "सागूदाना"।

सामंजस्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. औचित्य। २. उपयुक्तता। ३. अनुकूलता।

सामंत–संज्ञा पुं० [सं०] १. वीर। योद्धा। २. बड़ा ज़मींदार या सरदार।

साम–संज्ञा पुं० [सं० सामन्] १. वेद-मंत्र जो प्राचीन काल में यज्ञ आदि के समय गाए जाते थे। २. दे० "सामवेद"। ३. मधुर भाषण। ४. राजनीति में अपने वैरी या विरोधी को मीठी बातें करके अपनी

और मिला लेना। ५. सामान।
सज्ञा पु० दे० "स्याम" और "शाम"।
सज्ञा स्त्री० दे० "शाम" और "शामी"।
सामग–सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० सामगी] वह जो सामवेद का अच्छा ज्ञाता हो।
सामग्री–सज्ञा स्त्री० [स०] १ वे पदार्थ जिनका किसी विशेष कार्य्य में उपयोग होता हो। २. असबाब। सामान। ३. आवश्यक द्रव्य। जरूरी चीज। ४. साधन।
सामना–सज्ञा पु० [हि० सामने] १. किसी के समक्ष होने की क्रिया या भाव।
मुहा०—सामने होना=(स्त्रियो का) परदा न करके समक्ष आना।
२ भेंट। मुलाकात। ३. किसी पदार्थ का अगला भाग। ४ विरोध। मुकाबला।
मुहा०—सामना करना=धृष्टता करना। सामने होकर जवाब देना।
सामने–क्रि० वि० [स० सम्मुख] १ सम्मुख। समक्ष। आगे। २ उपस्थिति में। मौजूदगी में। ३ सीधे। आगे। ४. मुकाबले में। विरुद्ध।
सामयिक–वि० [स०] १ समय-सबधी। २ वर्त्तमान समय से सबध रखनेवाला। ३ समय के अनुसार।
यौ०—सामयिक पत्र=समाचार-पत्र।
सामरथ†–सज्ञा स्त्री० दे० "सामर्थ्य"।
सामरिक–वि० [स०] समर-सबधी। युद्ध का।
सामर्थ–सज्ञा स्त्री० दे० "सामर्थ्य"।
सामर्थी–सज्ञा पु० [स० सामर्थ्य] १ सामर्थ्य रखनेवाला। २ पराक्रमी। बलवान्।
सामर्थ्य–सज्ञा पु०, स्त्री० [स० सामर्थ्य] १. समर्थ होने का भाव। २ शक्ति। ताकत। ३ योग्यता। ४ शब्द की वह शक्ति जिससे वह भाव प्रकट करता है।
सामवायिक–वि० [स०] १ समवाय-सबधी। २. समूह या झुड-सबधी।
सामवेद–सज्ञा पु० [स० सामन] भारतीय आर्यों के चार वेदो में से तीसरा। यज्ञों के समय जो स्तोत्र आदि गाए जाते थे, उन्ही स्तोत्रो का इस वेद में सग्रह है।
सामवेदीय–वि० [स०] सामवेद सबधी। सज्ञा पु० सामवेद का ज्ञाता या अनुयायी।
सामसाली–सज्ञा पु० [स० साम + शाली] राजनीतिज्ञ।
सामहिं*–अव्य० [स० सम्मुख] सामने।
सामाजिक–वि० [स०] १. समाज से सबध रखनेवाला। समाज का। २ सभा से सबध रखनेवाला।
सामाजिकता–सज्ञा स्त्री० [स०] सामाजिक का भाव। लौकिकता।
सामान–सज्ञा पु० [फा०] १. किसी कार्य्य के साधन की आवश्यक वस्तुएँ। उपकरण। सामग्री। २. माल। असबाब। ३ बदोबस्त। इतजाम।
सामान्य–वि० [स०] जिसमें कोई विशेषता न हो। साधारण। मामूली।
सज्ञा पु० [स०] १ समानता। बराबरी। २ वह गुण जो किसी जाति की सब चीजों में समान रूप से पाया जाय। जैसे—मनुष्यो में मनुष्यत्व। ३ साहित्य में एक अलकार। एक ही आकार की दो या अधिक ऐसी वस्तुओ का वर्णन जिनमें देखने में कुछ भी अतर नही जान पड़ता।
सामान्यत, **सामान्यतया**–अव्य० [स०] सामान्य या साधारण रीति से। साधारणत।
सामान्यतोदृष्ट–सज्ञा पु० [स०] १ तर्क में अनुमान सबधी एक प्रकार की भूल। किसी ऐसे पदार्थ के द्वारा अनुमान करना जो न कार्य्य हो और न कारण। २ दो वस्तुओ या बातो में ऐसा साधर्म्य जो कार्य्य कारण सबध से भिन्न हो।
सामान्य भविष्यत्–सज्ञा पु० [स०] भविष्य क्रिया का वह काल जो साधारण रूप बतलाता है। (व्या०)
सामान्य भूत–सज्ञा पु० [स०] भूत क्रिया का वह रूप जिसमे क्रिया की पूर्णता होनी है और भूत काल की विशेषता नही पाई जाती। जैसे—खाया।
सामान्य लक्षणा–सज्ञा स्त्री० [स०] किसी पदार्थ को देखकर उस जाति के और सब

पदार्थों को बोध करानेवाली शक्ति।
सामान्य वर्तमान–संज्ञा पुं० [सं०] वर्तमान क्रिया का वह रूप जिसमें कर्त्ता का उसी समय कोई कार्य्य करते रहना सूचित होता है। जैसे—खाता है।
सामान्य विधि–संज्ञा स्त्री० [सं०] साधारण विधि या आज्ञा। आम हुक्म। जैसे—हिंसा मत करो, झूठ मत बोलो।
सामान्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] साहित्य में वह नायिका जो धन लेकर प्रेम करती है। गणिका।
सामासिक–वि० [सं०] समास से संबंध रखनेवाला। समास का।
सामिग्री–संज्ञा स्त्री० दे० "सामग्री"।
सामिष–वि० [सं०] मांस, मत्स्य आदि के सहित। निरामिष का उलटा।
सामी*†–संज्ञा पुं० दे० "स्वामी"।
संज्ञा स्त्री० दे० "शामी"।
सामीप्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. निकटता। २. वह मुक्ति जिसमें मुक्त जीव का भगवान् के समीप पहुँच जाना माना जाता है।
सामुझि*†–संज्ञा स्त्री० दे० "समझ"।
सामुदायिक–वि० [सं०] समुदाय का।
सामुद्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. समुद्र से निकला हुआ नमक। २. समुद्रफेन। ३. दे० "सामुद्रिक"।
वि० १. समुद्र से उत्पन्न। २. समुद्र-संबंधी। समुद्र का।
सामुद्रिक–वि० [सं०] सागर-संबंधी।
संज्ञा पुं० १. फलित ज्योतिष का एक अंग जिसमें हथेली की रेखाओं और शरीर पर के तिलों आदि को देखकर मनुष्य के जीवन की घटनाएँ तथा शुभाशुभ फल बतलाए जाते हैं। २. वह जो इस शास्त्र का ज्ञाता हो।
सामुहाँ*†–अव्य० [सं० सम्मुख] सामने।
सामुहे*†–अव्य० [सं० सन्मुख] सामने।
साम्य–संज्ञा पुं० [सं०] समान होने का भाव। तुल्यता। समानता।
साम्यता–संज्ञा स्त्री० दे० "साम्य"।
साम्यवाद–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का पाश्चात्य सामाजिक सिद्धांत। इसके प्रचारक समाज में बहुत अधिक साम्य स्थापित करना चाहते हैं और उसका वर्तमान वैषम्य दूर करना चाहते हैं।
साम्यावस्था–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह अवस्था जिसमें सत्त्व, रज और तम तीनों गुण बराबर हों। प्रकृति।
साम्राज्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह राज्य जिसके अधीन बहुत से देश हों और जिसमें किसी एक सम्राट् का शासन हो। सार्वभौम राज्य। सलतनत। २. आधिपत्य। पूर्ण अधिकार।
साम्राज्यवाद–संज्ञा पुं० [सं०] साम्राज्य को बराबर बढ़ाते रहने का सिद्धांत।
सायं–वि० [सं०] संध्या-संबंधी।
संज्ञा पुं० संध्या। शाम।
सायंकाल–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सायंकालीन] दिन का अंतिम भाग। संध्या। शाम।
सायंसंध्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह संध्या (उपासना) जो सायंकाल में की जाती है।
सायक–संज्ञा पुं० [सं०] १. बाण। तीर। शर। २. खड्ग। ३. एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक पाद में सगण, भगण, तगण, एक लघु और एक गुरु होता है। ४. पाँच की संख्या।
सायण–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध आचार्य जिन्होंने वेदों के प्रसिद्ध भाष्य लिखे हैं।
सायत–संज्ञा स्त्री० [अ० साअत] १. एक घंटे या ढाई घड़ी का समय। २. दंड। पल। ३. शुभ मुहूर्त। अच्छा समय।
सायन–संज्ञा पुं० दे० "सायण"।
वि० [सं०] अयनयुक्त। जिसमें अयन हो। (ग्रह आदि)
संज्ञा पुं० सूर्य्य की एक प्रकार की गति।
सायबान–संज्ञा पुं० [फ़ा० सायःबान] मकान के आगे की वह छाजन या छप्पर आदि जो छाया के लिये बनाई गई हो।
सायर†–संज्ञा पुं० [सं० सागर] १. सागर। समुद्र। २. ऊपरी भाग। शीर्ष।
संज्ञा पुं० [अ०] १. वह भूमि जिसकी आय पर कर नहीं लगता। २. मुतफ़र्रकात। फुटकर।

सायल—संज्ञा पु० [अ०] १ सवाल करने-वाला। प्रश्नकर्ता। २ माँगनेवाला। ३ भिखारी। फकीर। ४ प्रार्थना करने-वाला। ५ उम्मीदवार। आकांक्षी।

साया—संज्ञा पु० [फा० साय] १ छाया। मुहा०—साये में रहना = शरण में रहना। २ परछाईं। ३ जिन, भूत, प्रेत, परी आदि। ४ असर। प्रभाव।

सज्ञा पु० [अ० शमीज] घाँघरे की तरह का एक जनाना पहनावा।

सायाह्न—संज्ञा पु० [सं०] संध्या। शाम।

सायुज्य—संज्ञा पु० [सं०] [भाव० सायुज्यता] १ ऐसा मिलना कि कोई भेद न रह जाय। २ वह मुक्ति जिसमें जीवात्मा परमात्मा में लीन हो जाता है।

सारंग—संज्ञा पु० [सं०] १ एक प्रकार का मृग। २ कोकिल। कोयल। ३ श्येन। बाज। ४ सूर्य। ५ सिंह। ६ हंस पक्षी। ७ मयूर। मोर। ८ चातक। ९ हाथी। १० घोड़ा। अश्व। ११ छाता। छत्र। १२ शंख। १३ कमल। कंज। १४ स्वर्ण। सोना। १५ आभूषण। गहना। १६ सर। तालाब। १७ भ्रमर। भौंरा। १८ एक प्रकार की मधुमक्खी। १९ विष्णु का धनुष। २० कपूर। कपूर। २१ श्रीकृष्ण। २२ चंद्रमा। शशि। २३ समुद्र। सागर। २४ जल। पानी। २५ बाण। तीर। २६ दीपक। दीया। २७ पपीहा। २८ शंभु। शिव। २९ सर्प। साँप। ३० चंदन। ३१ भूमि। जमीन। ३२ केश। बाल। अलक। ३३ शोभा। सुंदरता। ३४ स्त्री। नारी। ३५ रात्रि। रात। ३६ दिन। ३७ तलवार। खड्ग। (डिं०) ३८ एक प्रकार का छंद जिसमें चार तगण होते है। इसे मैनावली भी कहते है। ३९ छप्पय के २६वें भेद का नाम। ४० मृग। हिरन। ४१ मेघ। बादल। ४२ हाथ। कर। ४३ ग्रह। नक्षत्र। ४४ खंजन पक्षी। सोनचिड़ी। ४५ मेढक। ४६ गगन। आकाश। ४७ पक्षी। चिड़िया। ४८ सारंगी नामक वाद्य-यंत्र। ४९ ईश्वर। भगवान्। ५० कामदेव। मन्मथ। ५१ विद्युत्। बिजली। ५२ पुष्प। फूल। ५३ संपूर्ण जाति का एक राग।

वि० १ रँगा हुआ। रंगीन। २ सुंदर। सुहावना। ३ सरस।

सारंगपाणि—संज्ञा पु० [सं०] विष्णु।

सारंगिक—संज्ञा पु० [सं०] १ चिड़ीमार। बहेलिया। २ एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक पद में न, य, स होते हैं।

सारंगिया—संज्ञा पु० [हिं० सारंगी + इया (प्रत्य०)] सारंगी बजानेवाला। साजिंदा।

सारंगी—संज्ञा स्त्री० [सं० सारंग] एक प्रकार का बहुत प्रसिद्ध तारवाला बाजा। इसका स्वर बहुत ही मधुर और प्रिय होता है।

सार—संज्ञा पु० [सं०] १ किसी पदार्थ में का मूल या असली भाग। तत्त्व। सत्त। २ मुख्य अभिप्राय। निष्कर्ष। ३ निर्यास या अर्क आदि। रस। ४ जल। पानी। ५ गूदा। मज्जा। ६ दूध पर की साढ़ी। मलाई। ७ लकड़ी का हीर। ८ परिणाम। फल। नतीजा। ९ धन। दौलत। १० नवनीत। मक्खन। ११ अमृत। १२ बल। शक्ति। ताकत। १३ मज्जा। १४ जुआ खेलने का पासा। १५ तलवार। (डिं०) १६ २८ मात्राओं का एक छंद। १७ एक प्रकार का वर्ण वृत्त। वि० दे० "ग्वाल"। १८ एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें उत्तरोत्तर वस्तुओं का उत्कर्ष या अपकर्ष वर्णित होता है। उदार।

वि० १ उत्तम। श्रेष्ठ। २ दृढ़। मजबूत।

*संज्ञा पु० [सं० सारिका] सारिका। मैना।

संज्ञा पु० [हिं० सारना] १ पालन-पोषण। २ देख रेख। ३ शय्या। पलंग।

†संज्ञा पु० [सं० श्याल] पत्नी का भाई। साला।

सारगर्भित—वि० [सं०] जिसमें तत्त्व भरा हो। सार-युक्त। तत्त्वपूर्ण।

सारता†—संज्ञा स्त्री० [सं०] सार का भाव या धर्म। सारत्व।
सारथि—संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० सारथ्य] १. रथादि का चलानेवाला। सूत। २. समुद्र। सागर।
सारद*—संज्ञा स्त्री० [सं० शारदा] सरस्वती।
वि० शारद। शरद-संबंधी।
संज्ञा पुं० [सं० शरद्] शरद ऋतु।
सारदा—संज्ञा स्त्री० दे० "शारदा"।
सारदी—वि० दे० "शारदीय"।
सारदूल—संज्ञा पुं० दे० "शार्दूल"।
सारना—क्रि० स० [हि० सरना का सक०] १. पूर्ण करना। समाप्त करना। २. साधना। बनाना। दुरुस्त करना। ३. सुशोभित करना। सुंदर बनाना। ४. रक्षा करना। सँभालना। ५. आँखों में अंजन आदि लगाना। ६. अस्त्र चलाना।
सारभाटा—संज्ञा पुं० [हि० ज्वार का अनु० + भाटा] ज्वारभाटा का उलटा। समुद्र की वह बाढ़ जिसमें पानी पहले समुद्र के तट से आगे निकल जाता है और फिर कुछ देर बाद पीछे लौटता है।
सारमेय—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सारमेयी] १. सरमा की संतान। २. कुत्ता।
सारल्य—संज्ञा पुं० [सं०] सरलता।
सारवती—संज्ञा स्त्री० [सं०] तीन भगण और एक गुरु का एक छंद।
सारस—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सारसी] १. एक प्रकार का प्रसिद्ध सुंदर बड़ा पक्षी। २. हंस। ३. चंद्रमा। ४. कमल। जलज। ५. छप्पय का ३७वाँ भेद।
सारसी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आर्य्या छंद का २३वाँ भेद। २. मादा सारस।
सारसुता—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरसुता] यमुना।
सारसुनी*†—संज्ञा स्त्री० दे० "सरस्वती"।
सारस्वत—संज्ञा पुं० [सं०] १. दिल्ली के उत्तर-पश्चिम का वह भाग जो सरस्वती नदी के तट पर है और जिसमें पंजाब का कुछ भाग सम्मिलित है। २. इस देश के ब्राह्मण। ३. एक प्रसिद्ध व्याकरण।
वि० १. सरस्वती-संबंधी। २. सारस्वत देश का।
सारांश—संज्ञा पुं० [सं०] १. खुलासा। संक्षेप। सार। २. तात्पर्य। मतलब। ३. नतीजा। परिणाम।
सारा—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का अलंकार जिसमें एक वस्तु दूसरी से बढ़कर कही जाती है।
† संज्ञा पुं० दे० "साला"।
वि० [स्त्री० सारी] समस्त। संपूर्ण। पूरा।
सारावती—संज्ञा स्त्री० [सं०] सारावली छंद।
सारि—संज्ञा पुं० [सं०] १. पासा या चौपड़ खेलनेवाला। २. जूआ खेलने का पासा।
सारिक—संज्ञा पुं० दे० "सारिका"।
सारिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] मैना पक्षी।
सारिखा*†—वि० दे० "सरीखा"।
सारिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सहदेई। नागबला। २. कषाय। ३. गंधप्रसारिणी। ४. रक्त पुनर्नवा।
सारिवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] अनंतमूल।
सारी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सारिका पक्षी। मैना। २. पासा। गोटी। ३. थूहर।
संज्ञा स्त्री० दे० "साड़ी"।
संज्ञा पुं० [सं० सारिन्] अनुकरण करनेवाला।
सारु*†—संज्ञा पुं० दे० "सार"।
सारूप्य—संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० सारूप्यता] १. एक प्रकार की मुक्ति जिसमें उपासक अपने उपास्य देव का रूप प्राप्त कर लेता है। २. समान रूप होने का भाव। एकरूपता। सरूपता।
सारूप्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सारूप्य का भाव या धर्म।
सारो*†—संज्ञा स्त्री० दे० "सारिका"।
सारोपा—संज्ञा स्त्री० [सं०] साहित्य में एक लक्षणा जो वहाँ होती है जहाँ एक पदार्थ में दूसरे का आरोप होने पर कुछ विशिष्ट अर्थ निकलता है।
सार्थ—वि० [सं०] अर्थ सहित।
सार्थक—वि० [सं०] [भाव० सार्थकता] १. अर्थ सहित। २. सफल। पूर्ण-मनोरथ

उपकारी। गुणकारी।

सार्दूल–संज्ञा पुं० दे० "शार्दूल"।

सार्द्ध–वि० [सं०] जिसमें पूरे के साथ आधा भी मिला हो। अर्धयुक्त।

सार्व–वि० [सं०] सबसे संबंध रखनेवाला।

सार्वकालिक–वि० [सं०] जो सब कालों में होता हो। सब समयों का।

सार्वजनिक, सार्वजनीन–वि० [सं०] सब लोगों से संबंध रखनेवाला। सर्वसाधारण-संबंधी।

सार्वत्रिक–वि० [सं०] सर्वत्र-व्यापी।

सार्वदेशिक–वि० [सं०] संपूर्ण देशों का। सर्वदेश-संबंधी।

सार्वभौम–संज्ञा पुं० [सं०] १ चक्रवर्ती राजा। २ हाथी।

वि० समस्त भूमि संबंधी।

सार्वराष्ट्रीय–वि० [सं०] जिसका संबंध अनेक राष्ट्रों से हो।

सालंक–संज्ञा पुं० [सं०] वह राग जिसमें किसी और राग का मेल न हो, पर फिर भी किसी राग का आभास जान पड़ता हो।

साल–संज्ञा स्त्री० [हिं० सालना] १ सालने या सलने की क्रिया या भाव। २ छेद। सूराख। ३ चारपाई के पावों में किया हुआ चौकोर छेद। ४ घाव। जख्म। ५ दुःख। पीड़ा। वेदना।

संज्ञा पुं० [सं०] १ जड़। २ राल। ३ वृक्ष

संज्ञा पुं० [फा०] वर्ष। बरस।

संज्ञा पुं० दे० "शालि' और 'शाल"।

संज्ञा स्त्री० दे० "शाला"।

सालक–वि० [हिं० सालना] सालनेवाला। दुःख देनेवाला।

सालगिरह–संज्ञा स्त्री० [फा०] बरस-गाँठ। जन्म दिन।

सालग्रामी–संज्ञा स्त्री० [सं० शालग्राम] गंडक नदी।

सालन–संज्ञा पुं० [सं० सलवण] मांस, मछली या साग-सब्जी की मसालेदार तरकारी।

सालना–क्रि० अ० [सं० शल्य] १ दुःख देना। खटकना। कसकना। २ चुभना।

क्रि० स० १ दुःख पहुँचाना। २ चुभाना।

सालनिर्यास–संज्ञा पुं० [सं०] राल। धूना।

सालम मिश्री–संज्ञा स्त्री० [अ० सालब+मिश्री] एक प्रकार का क्षुप जिसका कंद पौष्टिक होता है। सुधामूली। वीरकंदा।

सालरस–संज्ञा पुं० [सं०] राल। धूना।

सालस–संज्ञा पुं० [अ०] वह जो दो पक्षों के झगड़े का निपटारा करे। पंच।

सालसा–संज्ञा पुं० [अ०] खून साफ करने का एक प्रकार का अँगरेजी ढंग का काढ़ा।

सालसी–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ सालस होने की क्रिया या भाव। २ पंचायत।

साला–संज्ञा पुं० [सं० श्यालक] [स्त्री० साली] १ पत्नी का भाई। २ एकप्रकार की गाली।

संज्ञा पुं० [सं० सारिका] सारिका। मैना।

संज्ञा स्त्री० दे० "शाला"।

सालाना–वि० [फा०] साल का। वार्षिक।

सालिब मिश्री–संज्ञा स्त्री० दे० "सालम मिश्री"।

सालिम–वि० [अ०] संपूर्ण। पूरा।

सालियाना–वि० दे० "सालाना"।

सालु*†–संज्ञा पुं० [हिं० सालना] १ ईर्ष्या। २ कष्ट।

सालू–संज्ञा पुं० [देश०] १ एक प्रकार का लाल कपड़ा (मांगलिक)। २ सारी।

सालोक्य–संज्ञा पुं० [सं०] वह मुक्ति जिसमें मुक्त जीव भगवान् के साथ एक लोक में वास करता है। सलोकता।

सावंत–संज्ञा पुं० दे० "सामंत"।

साव–संज्ञा पुं० दे० "साहु"।

सावकाश–संज्ञा पुं० [सं०] १ अवकाश। फुर्सत। छुट्टी। २ मौका। अवसर।

सावचेत*‡–वि० दे० "सावधान"।

सावज–संज्ञा पुं० [?] वह जंगली जानवर जिसका शिकार किया जाय।

सावत–संज्ञा पुं० [हिं० सौत] १ सौतों का पारस्परिक द्वेष। २ ईर्ष्या। डाह।

सावधान–वि० [सं०] सचेत। सतर्क। होशियार। खबरदार। सजग।

सावधानता–संज्ञा स्त्री० [सं०] सावधान होने का भाव। सतर्कता। होशियारी।

सावन–संज्ञा पुं० [सं० श्रावण] १. आषाढ़ के बाद और भाद्रपद के पहले का महीना। श्रावण। २. एक प्रकार का गीत जो श्रावण महीने में गाया जाता है। (पूरब)
संज्ञा पुं० [सं०] एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का समय। ६० दंड।

सावनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० सावन + ई(प्रत्य०)] १. वह बायन जो सावन महीने में वर-पक्ष से वधू के यहाँ भेजा जाता है। २. दे० "श्रावणी"।
वि० सावन-संबंधी। सावन का।

सावर–संज्ञा पुं० [सं० शावर] १. शिव-कृत एक प्रसिद्ध तन्त्र। २. एक प्रकार का लोहे का लंबा औजार।
संज्ञा पुं० [सं० शवर] एक प्रकार का हिरन।

सावर्णि–संज्ञा पुं० [सं०] १. आठवें मनु जो सूर्य्य के पुत्र थे। २ एक मन्वतर का नाम।

सावित्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य। २. शिव। ३. वसु। ४. ब्राह्मण। ५. यज्ञोपवीत। ६. एक प्रकार का अस्त्र।
वि० १. सविता-संबंधी। सविता का। २. सूर्यवंशी।

सावित्री–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वेदमाता गायत्री। २. सरस्वती। ३. ब्रह्मा की पत्नी। ४. वह संस्कार जो उपनयन के समय होता है। ५. धर्म की पत्नी और दक्ष की कन्या। ६. मद्र देश के राजा अश्वपति की कन्या और सत्यवान् की सती पत्नी। ७. यमुना नदी। ८. सरस्वती नदी। ९. सधवा स्त्री।

साष्टांग–वि० [सं०] आठों अंग सहित।
यौ०–साष्टांग प्रणाम = मस्तक, हाथ, पैर, हृदय, आँख, जाँघ, वचन और मन से भूमि पर लेटकर प्रणाम करना।
मुहा०—साष्टांग प्रणाम करना = बहुत बचना। दूर रहना। (व्यंग्य)

सास–संज्ञा स्त्री० [सं० श्वश्रू] पति या पत्नी की माँ।

साससलेट–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का सफ़ेद जालीदार कपड़ा।

सासना–संज्ञा स्त्री० दे० "शासन"।

सासरा†–संज्ञा पुं० दे० "ससुराल"।

सासा*†–संज्ञा स्त्री० [सं० संशय] संदेह।
संज्ञा पुं०, स्त्री० दे० "श्वास" या "साँस"।

सासुर†–संज्ञा पुं० [हिं० ससुर] १. ससुर। २. ससुराल।

साहु–संज्ञा पुं० [सं० साधु] १. साधु। सज्जन। भला आदमी। २. व्यापारी। साहूकार। ३. धनी। महाजन। सेठ। ४. दे० "शाह"।

साहचर्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. सहचर होने का भाव। सहचरता। २. संग। साथ।

साहनी–संज्ञा स्त्री० [सं० सेनानी ?] १. सेना फौज। २. साथी। संगी। ३. पारिषद।

साहब–संज्ञा पुं० [अ० साहिब] [स्त्री० साहिबा] १. मित्र। दोस्त। २. मालिक। स्वामी ३. परमेश्वर। ४ एक सम्मानसूचक शब्द। महाशय। ५. गोरी जाति का कोई व्यक्ति।

साहबजादा–संज्ञा पुं० [अ० साहिब + फ़ा० जादा] [स्त्री० साहबजादी] १. भले आदमी का लड़का। २. पुत्र। बेटा।

साहब-सलामत–संज्ञा स्त्री० [अ०] परस्पर अभिवादन। बंदगी। सलाम।

साहबी–वि० [अ० साहिब] साहब का।
संज्ञा स्त्री० १. साहब होने का भाव। २. प्रभुता। मालिकपन। ३. बड़ाई। बड़प्पन।

साहस–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह मानसिक शक्ति जिसके द्वारा मनुष्य दृढ़तापूर्वक विपत्तियों आदि का सामना करता है। हिम्मत। हियाव। २. जबरदस्ती दूसरे का धन लेना। लूटना। ३. कोई बुरा काम। ४. दंड। सज़ा। ५. जुर्माना।

साहसिक–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जिसमें साहस हो। हिम्मतवर। पराक्रमी। २. डाकू। चोर। ३. निर्भीक। निर्भय। निडर।

साहसी–वि० [सं० साहसिन्] वह जो साहस करता हो। हिम्मती। दिलेर।

साहस्र, साहस्रिक–वि० [सं०] सहस्र-संबंधी। हज़ार का।

साहा–संज्ञा पुं० [सं० साहित्य] विवाह आदि शुभ कार्यों के लिये निश्चित लग्न या मुहूर्त।
साहाय्य–संज्ञा पुं० [सं०] सहायता।
साहि*†–संज्ञा पुं० [फ़ा० शाह] १. राजा। २. दे० "साहु"।
साहित्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. एकत्र होना। मिलना। २. वाक्य में पदों का एक प्रकार का संबंध जिसमें उनका एक ही क्रिया से अन्वय होता है। ३. गद्य और पद्य सब प्रकार के उन ग्रंथों का समूह जिनमें सार्वजनीन हित-संबंधी स्थायी विचार रक्षित रहते हैं। वाङ्मय।
साहित्यिक–वि० [सं०] साहित्य-संबंधी। संज्ञा पुं० वह जो साहित्य-सेवा करता हो। साहित्य-सेवी।
साहिब–संज्ञा पुं० दे० "साहब"।
साहियाँ*‡–संज्ञा पुं० दे० "साँई"।
साही–संज्ञा स्त्री० [सं० शल्यकी] एक प्रसिद्ध जंतु जिसकी पीठ पर नुकीले काँटे होते हैं। इन काँटों से लिखने की क़लम बनती है।
साहु–संज्ञा पुं० [सं० साधु] १. सज्जन। २. महाजन। साहूकार। चोर का उलटा।
साहुल–संज्ञा पुं० [फ़ा० शाकूल] दीवार की सीध नापने का एक प्रकार का यंत्र।
साहू–संज्ञा पुं० दे० "साहु"।
साहूकार–संज्ञा पुं०[हिं०साहू + कार(प्रत्य०)] बड़ा महाजन या व्यापारी। कोठीवाल।
साहूकारा–संज्ञा पुं० [हिं० साहूकार+आ (प्रत्य०)] १. रुपयों का लेन-देन। महाजनी। २. वह बाज़ार जहाँ बहुत से साहूकार कारबार करते हों।
वि० साहूकारों का।
साहूकारी–संज्ञा स्त्री० [हिं० साहूकार + ई] साहूकार होने का भाव। साहूकारपन।
साहेब–संज्ञा पुं० दे० "साहब"।
साहैं*†–संज्ञा स्त्री० [हिं० बाँह] भुजदंड। बाजू।
अव्य० [हिं० सामुहें] सामने। सम्मुख।
सिउँ‡*–प्रत्य० दे० "स्यों"।
सिकना–क्रि० अ० [हिं० सेंकना] आँच पर गरम होना या पकना। सेंका जाना।
सिंगा–संज्ञा पुं० [हिं० सींग] फूँककर बजाया जानेवाला सींग या लोहे का एक बाजा। तुरही। रणसिंगा।
सिंगार–संज्ञा पुं० [सं० शृंगार] १. सजावट। सज्जा। बनाव। २. शोभा। ३. शृंगार रस।
सिंगारदान–संज्ञा पुं० [हिं० सिंगार + फ़ा० दान] वह छोटा संदूक जिसमें शीशा, कंघी आदि शृंगार की सामग्री रखी जाती है।
सिंगारना–क्रि० स० [हिं० सिंगार] सुसज्जित करना। सजाना। सँवारना।
सिंगारहाट–संज्ञा स्त्री० [हिं० सिंगार + हाट] वेश्याओं के रहने का स्थान। चकला।
सिंगारहार–संज्ञा पुं० [सं० हारशृंगार] हरसिंगार नामक फूल। परजाता।
सिंगारिया–वि० [सं० शृंगार] देवमूर्त्ति का सिंगार करनेवाला पुजारी।
सिंगारी–वि० पुं० [हिं० सिंगार+ई] शृंगार करनेवाला। सजानेवाला।
सिंगिया–संज्ञा पुं० [सं० शृंगिक] एक प्रसिद्ध स्थावर विष।
सिंगी–संज्ञा पुं० [हिं० सींग] फूँककर बजाया जानेवाला सींग का एक बाजा।
संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की मछली। २. सींग की नली जिससे देहाती जर्राह शरीर का रक्त चूसकर निकालते हैं।
सिंगौटी–संज्ञा स्त्री० [हिं० सींग] बैल के सींग पर पहनाने का एक आभूषण।
संज्ञा स्त्री० [हिं० सिंगार + औटी] सिंदूर, कंघी आदि रखने की स्त्रियों की पिटारी।
सिंघ†*–संज्ञा पुं० दे० "सिंह"।
सिंघल–संज्ञा पुं० दे० "सिंहल"।
सिंघाड़ा–संज्ञा पुं० [सं० शृंगाटक] १. पानी में फैलनेवाली एक लता जिसके तिकोने फल खाए जाते हैं। पानीफल। २. इस आकार की सिलाई या बेल-बूटा। ३. समोसा नाम का नमकीन पकवान।
सिंघासन–संज्ञा पुं० दे० "सिंहासन"।
सिंघी–संज्ञा स्त्री० [हिं० सींग] १. एक प्रकार की छोटी मछली। २. सोंठ। सुंठी।

सिंघेला–संज्ञा पुं० [सं० सिंह] शेर का बच्चा।
सिंचन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सिंचित] १. जल छिड़कना। २. सींचना।
सिंचना–क्रि० अ० [हिं० सींचना] सींचा जाना।
सिंचाई–संज्ञा स्त्री० [सं० सिंचन] १. पानी छिड़कने का काम। २. सींचने का काम। ३. सींचने का कर या मजदूरी।
सिंचाना–क्रि० स० [हिं० सींचना का प्रेर०] सींचने का काम दूसरे से कराना।
सिंजा–संज्ञा स्त्री० दे० "शिंजा"।
सिंजित–संज्ञा स्त्री० [सं० सिंजा] शब्द। ध्वनि। झनक। झंकार।
सिंदन*‡–संज्ञा पुं० दे० "स्यंदन"।
सिंदुवार–संज्ञा पुं० [सं०] सँभालू वृक्ष। निर्गुंडी।
सिंदूर–संज्ञा पुं० [सं०] ईंगुर को पीसकर बनाया हुआ एक प्रकार का लाल रंग का चूर्ण जिसे सौभाग्यवती हिंदू स्त्रियाँ माँग में भरती हैं।
सिंदूरदान–संज्ञा पुं० [सं०] विवाह में वर का कन्या की माँग में सिंदूर देना।
सिंदूरपुष्पी–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक पौधा जिसमें लाल फूल लगते हैं। वीरपुष्पी।
सिंदूरवंदन–संज्ञा पुं० दे० "सिंदूरदान"।
सिंदूरिया–वि० [सं० सिंदूर + इया (प्रत्य०)] सिंदूर के रंग का। खूब लाल।
सिंदूरी–वि० [सं० सिंदूर + ई (प्रत्य०)] सिंदूर के रंग का।
सिंदौरा–संज्ञा पुं० दे० "सिंधोरा"।
सिंध–संज्ञा पुं० [सं० सिन्धु] भारत के पश्चिम का एक प्रदेश जो अब बम्बई प्रांत में है। संज्ञा स्त्री० १. पंजाब की एक प्रधान नदी। २. भैरव राग की एक रागिनी।
सिंधव–संज्ञा पुं० दे० "सैंधव"।
सिंधी–संज्ञा स्त्री० [हिं० सिंध + ई (प्रत्य०)] सिंध देश की बोली। वि० सिंध देश का। संज्ञा पुं० १. सिंध देश का निवासी। २. सिंध देश का घोड़ा।
सिंधु–संज्ञा पुं० [सं०] १. नद। नदी। २. एक प्रसिद्ध नद जो पंजाब के पश्चिमी भाग में है। ३. समुद्र। सागर। ४. चार की संख्या। ५. सात की संख्या। ६. सिंध प्रदेश। ७. एक राग।
सिंधुज–संज्ञा पुं० [सं०] सेंधा नमक।
सिंधुजा–संज्ञा स्त्री० [सं०] लक्ष्मी।
सिंधुपुत्र–संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।
सिंधुमाता–संज्ञा स्त्री० [सं० सिंधुमातृ] सरस्वती।
सिंधुर–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सिंधुरी] १. हस्ती। हाथी। २. आठ की संख्या।
सिंधुरमणि–संज्ञा पुं० [सं०] गजमुक्ता।
सिंधुरवदन–संज्ञा पुं० [सं०] गणेश।
सिंधुरगामिनी–वि० स्त्री० [सं०] गजगामिनी। हाथी की सी चालवाली।
सिंधुविष–संज्ञा पुं० [सं०] हलाहल विष।
सिंधुसुत–संज्ञा पुं० [सं०] जलंधर राक्षस।
सिंधुसुता–संज्ञा स्त्री० [सं०] लक्ष्मी।
सिंधुसुतासुत–संज्ञा पुं० [सं०] मोती।
सिंधूरा–संज्ञा पुं० [सं० सिंधुर] संपूर्ण जाति का एक राग।
सिंधोरा–संज्ञा पुं० [हिं० सिंदूर] सिंदूर रखने का लकड़ी का पात्र।
सिंह–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सिंहनी] १. बिल्ली की जाति का सबसे बलवान्, पराक्रमी और भव्य जंगली जंतु जिसके नरवर्ग की गरदन पर बड़े बड़े बाल होते हैं। शेर बबर। मृगराज। मृगेंद्र। केसरी। २. ज्योतिष में मेष आदि बारह राशियों में से पाँचवीं राशि। ३. वीरता या श्रेष्ठतावाचक शब्द। जैसे—पुरुष-सिंह। ४. छप्पय छंद का सोलहवाँ भेद।
सिंहद्वार–संज्ञा पुं० [सं०] सदर फाटक।
सिंहनाद–संज्ञा पुं० [सं०] १. सिंह की गरज। २. युद्ध में वीरों की ललकार। ३. जोर देकर कहना। ललकारकर कहना। ४. एक वर्णवृत्त। कलहंस। नंदिनी।
सिंहनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सिंह की मादा। शेरनी। २. एक छंद जिसके चारों

पदों में क्रम से १२, १८, २० और २२ मात्राएँ होती हैं। इसका उलटा गाहिनी है।
सिंहपौर–संज्ञा पुं० दे० "सिंहद्वार"।
सिंहल–संज्ञा पुं० [सं०] एक द्वीप जो भारतवर्ष के दक्षिण में है और जिसे लोग रामायणवाली लंका अनुमान करते हैं।
सिंहलद्वीप–संज्ञा पुं० दे० "सिंहल"।
सिंहलद्वीपी–वि० दे० "सिंहली"।
सिंहली–वि० [हिं० सिंहल] १ सिंहल द्वीप का। २ सिंहल द्वीप का निवासी।
संज्ञा स्त्री० सिंहल द्वीप की भाषा।
सिंहवाहिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा देवी।
सिंहस्थ–वि० [सं०] सिंह राशि में स्थित (बृहस्पति)।
सिंहावलोकन–संज्ञा पुं० [सं०] १ सिंह के समान पीछे देखते हुए आगे बढ़ना। २ आगे बढ़ने के पहले पिछली बातों का संक्षेप में कथन। ३ पद्य रचना की एक युक्ति जिसमें पिछले चरण के अंत के कुछ शब्द लेकर अगला चरण चलता है।
सिंहासन–संज्ञा पुं० [सं०] राजा या देवता के बैठने का आसन या चौकी।
सिंहिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक राक्षसी जो राहु की माता थी। इसको लंका जाते समय हनुमान् ने मारा था। २ शोभन छंद का एक नाम।
सिंहिकासूनु–संज्ञा पुं० [सं०] राहु।
सिंहिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] शेरनी।
सिंही–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सिंह की मादा। शेरनी। २ आर्य्या का पचीसवाँ भेद। इसमें ३ गुरु और ५१ लघु होते हैं।
सिंहोदरी–वि० स्त्री० [सं०] सिंह के समान पतली कमरवाली।
सिअरा*–वि० [सं० शीतल] ठंढा।
संज्ञा पुं० छाया। छाहँ।
सिआना–क्रि० स० दे० 'सिलाना'।
सिआर–संज्ञा पुं० [सं० शृगाल] [स्त्री० सिआरी] शृगाल। गीदड़।
सिकंजबीन–संज्ञा स्त्री० [फा०] सिरके या नीबू के रस में पका हुआ शरबत।
सिकंदरा–संज्ञा पुं० [फा० सिकंदर] रेल की लाइन के किनारे ऊँचे खंभे पर लगा हुआ हाथ या डंडा जो झुककर आती हुई गाड़ी की सूचना देता है। सिगनल।
सिकड़ी–संज्ञा स्त्री० [सं० शृंखला] १ किवाड़ की कुंडी। साँकल। जंजीर। २ जंजीर के आकार का सोने का गले में पहनने का गहना। ३ करधनी। तागड़ी।
सिकता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बालू। रेत। २ बलुई जमीन। ३ चीनी। शर्करा।
सिकत्तर–संज्ञा पुं० [अं० सेक्रेटरी] किसी संस्था या सभा का मंत्री। सेक्रेटरी।
सिकरवार–संज्ञा पुं० [देश०] क्षत्रियों की एक शाखा।
सिकली–संज्ञा स्त्री० [अ० सैकल] धारदार हथियारों को माँजने और उन पर सान चढ़ाने की क्रिया।
सिकलीगर–संज्ञा पुं० [अ० सैकल+फा० गर] तलवार आदि पर सान धरनेवाला।
सिकहर–संज्ञा पुं० [सं० शिक्य+धर] छींका।
सिकुड़न–संज्ञा स्त्री० [सं० संकुचन] १ सकोच। आकुंचन। २ बल। शिकन।
सिकुड़ना–क्रि० अ० [सं० संकुचन] १ सिमटकर थोड़े स्थान में होना। सिकुड़ना। आकुंचित होना। बटुरना। २ संकीर्ण होना। ३ बल पड़ना। शिकन पड़ना।
सिकुरना*†–क्रि० अ० दे० "सिकुड़ना"।
सिकोड़ना–क्रि० स० [हिं० सिकुड़ना] १ समेटकर थोड़े स्थान में करना। संकुचित करना। २ समेटना। बटोरना।
सिकोरना*†–क्रि० स० दे० "सिकोड़ना"।
सिकोरा–संज्ञा पुं० दे० "कसोरा"।
सिकोली–संज्ञा स्त्री० [देश०] कास, मूँज, *बेंत आदि की बनी डलिया।*
सिकोही–वि० [फा० शिकोह] १ आन-बानवाला। गर्वीला। २ वीर। बहादुर।
सिक्कड़–संज्ञा पुं० दे० "सीकड़"।
सिक्का–संज्ञा पुं० [अ० सिक्क] १ मुहर। छाप। ठप्पा। २ रुपए, पैसे आदि पर की राजकीय छाप। मुद्रित। चिह्न। ३ टक-

साल में ढला हुआ धातु का टुकड़ा जो निर्दिष्ट मूल्य का धन माना जाता है। रुपया, पैसा आदि। मुद्रा।
मुहा०—सिक्का बैठना या जमना = १. अधिकार स्थापित होना। प्रभुत्व होना। २. आतंक जमना। रोब जमना।
४. पदक। तमगा। ५. मुहर पर अंक बनाने का ठप्पा।
सिक्ख–संज्ञा पुं० दे० "सिख"।
सिक्त–वि० [सं०] १. सींचा हुआ। २. भीगा हुआ। तर। गीला।
सिखंड–संज्ञा पुं० दे० "शिखंड"।
सिख–संज्ञा स्त्री० [सं० शिक्षा] सीख। *संज्ञा स्त्री० [सं० शिखा] शिखा। चोटी। संज्ञा पुं० [सं० शिष्य] १. शिष्य। चेला। २. गुरु नानक आदि दस गुरुओं का अनुयायी। नानकपंथी।
सिखना†*–क्रि० स० दे० "सीखना"।
सिखर–संज्ञा पुं० दे० "शिखर"।
सिखरन–संज्ञा स्त्री० [सं० श्रीखंड] दही मिला हुआ चीनी का शरबत।
सिखलाना–क्रि० स० दे० "सिखाना"।
सिखा–संज्ञा स्त्री० दे० "शिखा"।
सिखाना–क्रि० स० [सं० शिक्षण] १. शिक्षा देना। उपदेश देना। २. पढ़ाना।
यौ०—सिखाना-पढ़ाना=चालाकी सिखाना।
सिखापन–संज्ञा पु० [सं० शिक्षा + हिं० पन] १. शिक्षा। उपदेश। २. सिखाने का काम।
सिखावन–संज्ञा पुं० [सं० शिक्षण] शिक्षा। उपदेश।
सिखावना*†–क्रि० स० दे० "सिखाना"।
सिखिर*–संज्ञा पु० दे० "शिखर"।
सिखी–संज्ञा पु० दे० "शिखी"।
सिगरा, सिगरो*†–वि० [सं० समग्र] [स्त्री० सिगरी] सब। संपूर्ण। सारा।
सिचान*–संज्ञा पु० [सं० संचान] बाज पक्षी।
सिच्छा–संज्ञा स्त्री० दे० "शिक्षा"।
सिजदा–संज्ञा पुं० [अ०] प्रणाम। दंडवत।
सिझना–क्रि० अ० [सं० सिद्ध] आँच पर पकना। सिझाया जाना।
सिझाना–क्रि० स० [सं० सिद्ध] १. आँच पर पकाकर गलाना। २. तपस्या करना।
सिटकिनी–संज्ञा स्त्री० [अनु०] किवाड़ों के बंद करने के लिये लोहे या पीतल का छड़। अगरी। चटकनी। चटखनी।
सिटपिटाना–क्रि० अ० [अनु०] १. दब जाना। मंद पड़ जाना। २. किंकर्तव्य-विमूढ़ होना। ३. सकुचाना।
सिट्टी–संज्ञा स्त्री० [हिं० सीटना] बहुत बढ़ बढ़कर बोलना। वाक्पटुता।
मुहा०—सिट्टी भूलना = सिटपिटा जाना।
सिठनी–संज्ञा स्त्री० [सं० अशिष्ट] विवाह के अवसर पर गाई जानेवाली गाली। सीठना।
सिठाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० सीठी] १. फीका-पन। नीरसता। २. मंदता।
सिड़–संज्ञा स्त्री० [हिं० सिड़ी] १. पागल-पन। उन्माद। २. सनक। धुन।
सिड़ी–वि० [स० शृणीक] [स्त्री० सिड़िन] १. पागल। बावला। उन्मत्त। २. सनकी। धुनवाला।
सित–वि० [सं०] १ श्वेत। सफ़ेद। २. उज्ज्वल। चमकीला। ३. साफ। संज्ञा पु० १. शुक्लपक्ष। उजाला पाख। २. चीनी। शक्कर। ३. चाँदी।
सितकंठ–वि० [स०] सफ़ेद गर्दनवाला। संज्ञा पु० [स० शितिकंठ] महादेव।
सितता–संज्ञा स्त्री० [स०] सफ़ेदी। श्वेतता।
सितपक्ष–संज्ञा पु० [स०] हंस।
सितभानु–संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।
सितम–संज्ञा पुं० [फा०] १. ग़ज़ब। अनर्थ। २. जुल्म। अत्याचार।
सितमगर–संज्ञा पुं० [फ़ा०] ज़ालिम। अन्यायी। दुःखदायी।
सितवराह–संज्ञा पुं० [सं०] श्वेत वराह।
सितवराहपत्नी–संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी।
सितसागर–संज्ञा पु० [सं०] क्षीर-सागर।
सिता–संज्ञा स्त्री० [स०] १. चीनी। शक्कर। २. शुक्ल पक्ष। ३. मल्लिका। मोतिया। ४. मद्य। शराब।

सिताखंड–संज्ञा पुं० [सं०] १ सफ़ेद से बनाई हुई शक्कर। २ मिस्री।
सिताब*–क्रि० वि० [फा० शिताब] जल्दी। तुरत। झटपट।
सितार–संज्ञा पुं० [सं० सप्त + तार, फा० सेह्-तार] एक प्रकार का प्रसिद्ध बाजा जो तारों को उँगली से झनकारने से बजता है।
सितारा–संज्ञा पुं० [फा० सितारः] १ तारा। नक्षत्र। २ भाग्य। प्रारब्ध। नसीब।
मुहा०—सितारा चमकना या बलंद होना= भाग्योदय होना। अच्छी किस्मत होना।
३ चाँदी या सोने के पत्तर की बनी हुई छोटी गोल बिंदी जो शोभा के लिये चीजों पर लगाई जाती है। चमकी।•
संज्ञा पुं० दे० "सितार"।
सितारिया–संज्ञा पुं० [हिं० सितार + इया] सितार बजानेवाला।
सितारेहिंद–संज्ञा पुं० [फा०] एक उपाधि जो सरकार की ओर से दी जाती है।
सितासित–संज्ञा पुं० [सं०] १ श्वेत और श्याम। सफ़ेद और काला। २ बलदेव।
सिति–वि० दे० "शिति"।
सितिकंठ–संज्ञा पुं० [सं० शितिकंठ] महादेव।
सिथिल*–वि० दे० "शिथिल"।
सिदरी–संज्ञा स्त्री० [फा० सहदरी] तीन दरवाजोंवाला कमरा या बरामदा।
सिदिक–वि० [अ० सिदक] सच्चा। सत्य।
सिद्ध–वि० [सं०] १ जिसका साधन हो चुका हो। संपन्न। संपादित। २ प्राप्त। हासिल। उपलब्ध। ३ प्रयत्न में सफल। कृतकार्य्य। ४ जिसने योग या तप द्वारा अलौकिक लाभ या सिद्धि प्राप्त की हो। ५ योग की विभूतियाँ दिखानेवाला। ६ मोक्ष का अधिकारी। ७ जिस (कथन) के अनुसार कोई बात हुई हो। ८ जो तर्क या प्रमाण द्वारा निश्चित हो। प्रमाणित। साबित। निरूपित। ९ जो अनुकूल किया गया हो। कार्य्य-साधन के उपयुक्त बनाया हुआ। १० आँच पर पका हुआ। उबला हुआ।
संज्ञा पुं० १ वह जिसने योग या तप में सिद्धि प्राप्त की हो। २ ज्ञानी या भक्त महात्मा। ३ एक प्रकार के देवता। ४ ज्योतिष में एक योग।
सिद्धकाम–वि० [सं०] १ जिसकी कामना पूरी हुई हो। २ सफल। कृतार्थ।
सिद्धगुटिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह मंत्र-सिद्ध गोली जिसे मुँह में रख लेने से अदृश्य होने आदि की अद्भुत शक्ति आ जाती है।
सिद्धता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सिद्ध होने की अवस्था। २ प्रामाणिकता। सिद्धि। ३ पूर्णता।
सिद्धत्व–संज्ञा पुं० [सं०] सिद्धता।
सिद्धपीठ–संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ योग, तप या तांत्रिक प्रयोग करने से शीघ्र सिद्धि प्राप्त हो।
सिद्धरस–संज्ञा पुं० [सं०] पारा।
सिद्ध रसायन–संज्ञा पुं० [सं०] वह रसौषध जिससे दीर्घ जीवन और प्रभूत शक्ति प्राप्त हो।
सिद्धहस्त–वि० [सं०] १ जिसका हाथ किसी काम में मँजा हो। २ निपुण।
सिद्धांजन–संज्ञा पुं० [सं०] वह अंजन जिसे आँख में लगा लेने से भूमि में गड़ी वस्तुएँ भी दिखाई देती हैं।
सिद्धांत–संज्ञा पुं० [सं०] १ भली भाँति सोच विचारकर स्थिर किया हुआ मत। उसूल। २ मुख्य उद्देश्य या अभिप्राय। ३ वह बात जो विद्वानों या उनके किसी वर्ग या संप्रदाय द्वारा सत्य मानी जाती हो। मत। ४ निर्णीत अर्थ या विषय। तत्त्व की बात। ५ पूर्व-पक्ष के खंडन के उपरांत स्थिर मत। ६ किसी शास्त्र (ज्योतिष, गणित आदि) पर लिखी हुई कोई विशेष पुस्तक।
सिद्धा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सिद्ध की स्त्री। देवांगना। २ आर्य्या छंद का १५वाँ भेद, जिसमें १३ गुरु और ३१ लघु होते हैं।
सिद्धाई–संज्ञा स्त्री० [सं० सिद्ध+हिं० आई] सिद्धपन। सिद्ध होने की अवस्था।

सिद्धार्थ–वि० [सं०] जिसकी कामनाएँ पूर्ण हो गई हों। पूर्णकाम।
संज्ञा पुं० १. गौतम बुद्ध। २. जैनों के २४वें अर्हत् महावीर के पिता का नाम।
सिद्धि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. काम का पूरा होना। प्रयोजन निकलना। २. सफलता। कामयाबी। ३. प्रमाणित होना। साबित होना। ४. किसी बात का ठहराया जाना। निश्चय। ५. निर्णय। फ़ैसला। ६. पकना। सीझना। ७. तप या योग के पूरे होने का अलौकिक फल। विभूति। योग की अष्ट सिद्धियाँ प्रसिद्ध हैं—अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व। ८. मुक्ति। मोक्ष। ९. कौशल। निपुणता। दक्षता। १०. दक्ष प्रजापति की एक कन्या जो धर्म की पत्नी थी। ११. गणेश की दो स्त्रियों में से एक। १२. भाँग। विजया। १३. छप्पय छंद के ४१वें भेद का नाम जिसमें ३० गुरु और ९२ लघु वर्ण होते हैं।
सिद्धिगुटिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] रसायन आदि बनाने की गुटिका।
सिद्धिदाता–संज्ञा पुं० [सं० सिद्धिदातृ] गणेश।
सिद्धेश्वर–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सिद्धेश्वरी] १. बड़ा सिद्ध। महायोगी। २ महादेव।
सिधाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० सीधा] सीधापन।
सिधाना*–क्रि० अ० दे० "सिधारना"।
सिधारना–क्रि० अ० [हिं० सिधाना] १. जाना। गमन करना। प्रस्थान करना। २. मरना। स्वर्गवास होना।
‡* क्रि० स० दे० "सुधारना"।
सिधि‡*–संज्ञा स्त्री० दे० "सिद्धि"।
सिन–संज्ञा पुं० [अ०] उम्र। अवस्था।
सिनकना–क्रि० अ० [सं० सिंघाणक + ना] जोर से हवा निकालकर नाक का मल बाहर फेंकना।
सिनि–संज्ञा पुं० [सं० शिनि] १. एक यादव जो सात्यकि का पिता था। २. क्षत्रियों की एक प्राचीन शाखा।
सिनी–संज्ञा पुं० दे० "शिनि"।
सिनीवाली–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक वैदिक देवी। २. शुक्लपक्ष की प्रतिपदा।
सिन्नी†–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० शीरीनी] १. मिठाई। २. वह मिठाई जो किसी पीर या देवता को चढ़ाकर प्रसाद की तरह बाँटी जाय।
सिपर–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] ढाल।
सिपहगरी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] सिपाही का काम। युद्ध-व्यवसाय।
सिपहसालार–संज्ञा पुं० [फ़ा०] सेनापति।
सिपाह–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] फ़ौज। सेना।
सिपाहगिरी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] दे० "सिपहगरी"।
सिपाहियाना–वि० [फ़ा०] सिपाहियों या सैनिकों का सा।
सिपाही–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. सैनिक। शूर। योद्धा। २. कांस्टेबिल। तिलंगा।
सिपुर्द‡–संज्ञा पुं० दे० "सपुर्द"।
सिप्पर–संज्ञा स्त्री० दे० "सिपर"।
सिप्पा–संज्ञा पुं० [देश०] १. निशाने पर किया हुआ वार। २. कार्य्य-साधन का उपाय। तदबीर। ३. सूत्रपात।
मुहा०–सिप्पा जमाना = किसी कार्य्य के *अनुकूल परिस्थिति उत्पन्न करना।* भूमिका बाँधना। ४. रंग। प्रभाव। धाक।
सिप्रा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. महिषी। भैंस। २. मालवा की एक नदी जिसके किनारे उज्जैन बसा है।
सिफ़त–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. विशेषता। गुण। २ लक्षण। ३. स्वभाव।
सिफर–संज्ञा पुं० [अं० साइफर] शून्य। सुन्ना।
सिफ़ला–वि० [अ०] [भाव० सिफ़लापन] १ नीच। कमीना। २. छिछोरा। ओछा।
सिफ़ारिश–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] किसी के दोष क्षमा करने के लिये या किसी के पक्ष में कुछ कहना सुनना। अनुरोध।
सिफ़ारिशी–वि० [फ़ा०] १. जिसमें सिफ़ारिश हो। २. जिसकी सिफ़ारिश की गई हो।
सिफ़ारिशी टट्टू–संज्ञा पुं० [फ़ा० सिफ़ारिशी + हिं० टट्टू] वह जो केवल सिफ़ारिश

गे किसी पर पर पहुँचा हो।
सिविया*–संज्ञा स्त्री० दे० "शिविका"।
सिमत–संज्ञा पु० दे० "सीमत"।
सिमटना–क्रि० अ०[स० समित + ना] १ सिकुड़ना। सकुचित होना। २ शिकन पड़ना। सलवट पड़ना। ३ बटुरना। इकट्ठा होना। ४ व्यवस्थित होना। तरतीब में लगना। ५ पूरा होना। निबटना। ६ लज्जित होना। ७ सहमना।
सिमरना†–क्रि०स० दे०"सुमिरना"।
सिमाना†–सज्ञा पु०[स० सीमान्त] सिवाना। हद।
*†क्रि०स०दे०"मिलाना"।
सिमिटना†*–क्रि० अ० दे० 'सिमटना"।
सिमृति*‡–सज्ञा स्त्री० दे० "स्मृति"।
सिमेटना*†–क्रि० स० दे० "समेटना"।
सिय*–सज्ञा स्त्री० [स० सीता] जानकी।
सियना*–क्रि० अ० [स० सृजन] उत्पन्न करना। रचना।
सियरा*–वि०[स०शीतल][स्त्री०सियरी] १ ठंढा। शीतल। २ कच्चा।
सियराई*–संज्ञा स्त्री०[हिं०सियरा]शीतलता।
सियराना*–क्रि० अ० [हिं० सियरा + ना] ठढा होना। जुड़ाना। शीतल होना।
सिया–सज्ञा स्त्री० [स० सीता]जानकी।
सियापा–सज्ञा पु० [फा० सियाहपोश] मर हुए मनुष्य के शोक में बहुत सी स्त्रियों के इकट्ठा होकर रोने की रीति।
सियार†–सज्ञा पु० [स० शृगाल] [स्त्री० सियारी, सियारिन] गीदड़। जबुक।
सियाल–सज्ञा पु० [स० शृगाल] गीदड़।
सियाला–सज्ञा पु० [स० शीतकाल] शीतकाल। जाड़े का मौसिम।
सियाह–वि० दे० "स्याह"।
सियाहगोश–सज्ञा पु०[फा०] बिल्ली की जाति का एक जगली जानवर। बन बिलाव।
सियाहा–सज्ञा पु० [फा०] १ आय-व्यय की बही। रोजनामचा। २ सरकारी खजाने का वह रजिस्टर जिसम जमींदारो स प्राप्त मालगुजारी लिखी जाती है।
सियाहानवीस–संज्ञा पु० [फा०] सरकारी खजाने में सियाहा लिखनेवाला।
सियाही–सज्ञा स्त्री० दे० "स्याही"।
सिर–संज्ञा पु० [स० शिरस्] १. शरीर के सब से अगले या ऊपरी भाग का गोल तल। कपाल। खोपड़ी। २ शरीर का सबसे अगला या ऊपर का गोल या लबोतरा अग जिसमें आँख, कान, नाक आदि होते हैं।
मुहा०–सिर-आँखों पर होना = सहर्ष स्वीकार होना। माननीय होना। सिर-आँखों पर बैठाना=बहुत आदर-सत्कार करना। भूत-प्रेत या देवी-देवता का) सिर पर आना=आवेश होना। प्रभाव होना। खेलना। सिर उठाना= १ विरोध में खड़ा होना। २ ऊधम मचाना= ३ सामने मुँह करना। लज्जित न होना। ४ प्रतिष्ठा के साथ खड़ा होना। (अपना) सिर ऊँचा करना=प्रतिष्ठा के साथ लोगो के बीच खड़ा होना। सिर करना=(स्त्रियो के) बाल सँवारना। चोटी गूँथना। सिर के बल जाना=बहुत अधिक आदरपूर्वक किसी के पास जाना। सिर खाली करना=१ बकवाद करना। २ माथा-पच्ची करना। सोच विचार में हैरान होना। सिर खाना=बकवाद करके जी उबाना। सिर खपाना=१ सोचने-विचारने में हैरान होना। २ कार्य्य मे व्यग्र होना। सिर चकराना=दे० "सिर घूमना"। सिर चढ़ाना = १ माथे से लगाना। पूज्य भाव दिखाना। २ बहुत बढ़ा देना मुँह लगाना। सिर घमना=१ सिर मे दर्द होना। २ घबराहट या मोह होना। बेहोशी होना। सिर झुकाना=१ सिर नवाना। नमस्कार करना। २ लज्जा से गर्दन नीची करना। सिर देना= प्राण निछावर करना। जान देना। सिर धरना=सादर स्वीकार करना। अंगीकार करना सिर धुनना=शोक या पछतावे से सिर पीटना। पछताना। सिर नीचा करना=लज्जा से सिर झुकाना। शर्माना। सिर पटकना=१ सिर फोड़ना। सिर धुनना। २ बहुत परिश्रम करना ३ अफसोस करना। हाथ मलना। सिर पर पाँव रखना=बहुत जल्द भाग जाना। हवा होना। सिर पर पड़ना=१ जिम्मे पड़ना।

२. अपने ऊपर घटित होना। गुज़रना। सिर पर खून चढ़ना या सवार होना = १. जान लेने पर उतारू होना। २. हत्या के कारण आपे में न रहना। सिर पर होना = थोड़े ही दिन रह जाना। बहुत निकट होना। सिर पड़ना= १. जिम्मे पड़ना। भार ऊपर दिया जाना। २. हिस्से में आना। सिर फिरना=१. सिर घूमना सिर चकराना। २. पागल हो जाना। उन्माद होना। सिर मारना = १. समझाते समझाते हैरान होना। २. सोचने विचारने में हैरान होना। सिर खपाना। सिर मुड़ाते ही ओले पड़ना = प्रारंभ में ही कार्य्य बिगड़ना। कार्य्यारंभ होते ही विघ्न पड़ना। सिर पर सेहरा होना=किसी कार्य्य का श्रेय प्राप्त होना। वाह-वाही मिलना। सिर से पैर तक = आरंभ से अंत तक। सर्वांग में। पूर्णतया। सिर से पैर तक आग लगना = अत्यंत क्रोध चढ़ना। सिर में कफन बाँधना = मरने के लिये उद्यत होना। सिर से खेल जाना = प्राण दे देना। सिर पर सींग होना=कोई विशेषता होना। खसूसियत होना। सिर होना = १. पीछे पड़ना। पीछा न छोड़ना। २. बार बार किसी बात का आग्रह करके तंग करना। ३. उलझ पड़ना। झगड़ा करना। (किसी बात के) सिर होना = ताड़ लेना। समझ लेना।

३. ऊपर का छोर। सिरा। चोटी।

सिरकटा–वि० [हिं० सिर + कटना] [स्त्री० सिरकटी] १. जिसका सिर कट गया हो। २. दूसरों का अनिष्ट करनेवाला।

सिरका–संज्ञा पु० [फ़ा०] धूप में पकाकर खट्टा किया हुआ ईख आदि का रस।

सिरकी–संज्ञा स्त्री० [हिं० सरकंडा] १. सरकंडा। सरई। २. सरकंडे की बनी हुई टट्टी जो प्रायः दीवार या गाड़ियों पर धूप और वर्षा से बचाव के लिये डालते हैं।

सिरगा–संज्ञा पुं० [देश०] घोड़े की एक जाति।

सिरचंद–संज्ञा पु० [हिं० सिर + चंद्र] हाथी का एक प्रकार का अर्द्धचंद्राकार गहना।

सिरजक*–संज्ञा पु० [हिं० सिरजना] बनाने-वाला। रचनेवाला। सृष्टिकर्त्ता।

सिरजनहार*–संज्ञा पुं० [सं० सृजन + हिं० हार] १. रचनेवाला। २. परमेश्वर।

सिरजना*–क्रि० स० [सं० सृजन] रचना। उत्पन्न करना। सृष्टि करना।

क्रि० स० [सं० संचय] संचय करना।

सिरजित*–वि० [सं० सर्जित] रचा हुआ।

सिरताज–संज्ञा पुं० [सं० सिर + फ़ा० ताज] १. मुकुट। २. शिरोमणि। ३. सरदार।

सिर-ता-पा–क्रि० वि० [फ़ा० सर + ता + पा = पैर] १. सिर से पाँव तक। २. आदि से अंत तक।

सिरत्राण–संज्ञा पुं० दे० "शिरस्त्राण"।

सिरदार*‡–संज्ञा पु० दे० "सरदार"।

सिरनामा–संज्ञा पुं० [फ़ा० सर + नामा=पत्र] १. लिफाफे पर लिखा जानेवाला पता। २. किसी लेख के विषय का निर्देश करनेवाला शब्द या वाक्य। शीर्षक। सुर्खी।

सिरनेत–संज्ञा पुं० [हिं० सिर + सं० नेत्री] १. पगड़ी। पटा। चीरा। २. क्षत्रियों की एक शाखा।

सिरपाव–संज्ञा पुं० दे० "सिरोपाव"।

सिरपेच–संज्ञा पु० [फ़ा० सर + पेच] १. पगड़ी। २. पगड़ी पर बाँधने का एक आभूषण।

सिरपोश–संज्ञा पु० [फ़ा० सरपोश] १. सिर पर का आवरण। २. टोप। कुलाह।

सिरफूल–संज्ञा पु० [हिं० सिर + फूल] सिर पर पहना जानेवाला एक आभूषण।

सिरफेंटा–संज्ञा पुं० दे० "सिरबंद"।

सिरबंद–संज्ञा पु० [हिं० सिर + फ़ा० बंद] साफा।

सिरबंदी–संज्ञा स्त्री० [हिं० सिर + फ़ा० बंदी] माथे पर पहनने का एक आभूषण।

सिरमनि*–संज्ञा पु० दे० "शिरोमणि"।

सिरमौर–संज्ञा पुं० [हिं० सिर + मौर] १. सिर का मुकुट। २. सिरताज। शिरोमणि।

सिररुह–संज्ञा पुं० दे० "शिरोरुह"।

सिरस–संज्ञा पु० [सं० शिरीष] शीशम की तरह का लंबा एक प्रकार का ऊँचा पेड़।

सिरहाना—संज्ञा पु० [सं० शिरस् + आधान] चारपाई में सिर की ओर का भाग।

सिरा—संज्ञा पु० [हिं० सिर] १ लंबाई का अंत। छोर। टोंक। २ ऊपर का भाग। ३ अंतिम भाग। आखिरी हिस्सा। ४ आरंभ का भाग। ५ नोक। अनी। मुहा०—सिरे का = अव्वल दरजे का।
संज्ञा स्त्री० [सं० शिरा] १ रक्त-नाड़ी। २ सिंचाई की नाली।

सिराजी—संज्ञा पु० [फा० शीराज़ (नगर)] १. शीराज का घोड़ा। २ शीराज का कबूतर।

सिराना*†—क्रि० अ० [हिं० सीरा + ना] १ ठंढा होना। शीतल होना। २ मंद पड़ना। हतोत्साह होना। ३ समाप्त होना। खतम होना। ४ मिटना। दूर होना। ५ बीत जाना। गुज़र जाना। †६ काम से फुरसत मिलना।
क्रि० स० १ ठंढा करना। शीतल करना। २ समाप्त करना। ३ बिताना।

सिरावना*†—क्रि० स० दे० "सिराना"।

सिरिश्ता—संज्ञा पु० [फा० सरिश्त] विभाग।

सिरिश्तेदार—संज्ञा पु० [फा०] अदालत का वह कर्मचारी जो मुकदमे के कागज-पत्र रखता है।

सिरिस—संज्ञा पु० दे० "सिरस"।

सिरी*‡—संज्ञा स्त्री० [सं० श्री] १ लक्ष्मी। २ शोभा। कांति। ३ रोली। रोचना। ४ माथे पर का एक गहना।

सिरोपाव—संज्ञा पु० [हिं० सिर + पाँव] सिर से पैर तक का पहनावा जो राज-दरबार से सम्मान के रूप में दिया जाता है। खिलअत।

सिरोमनि—संज्ञा पु० दे० "शिरोमणि"।

सिरोरुह—संज्ञा पु० दे० "शिरोरुह"।

सिरोही—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की काली चिड़िया।
संज्ञा पु० १ राजपूताने में एक स्थान जहाँ की तलवार बहुत बढ़िया होती है। २ तलवार।

सिर्फ—क्रि० वि० [अ०] केवल। मात्र।
वि० १ एकमात्र। अकेला। २ शुद्ध।

सिल—संज्ञा स्त्री० [सं० शिला] १ पत्थर। चट्टान। शिला। २ पत्थर की चौकोर पटिया जिस पर बट्टे से मसाला आदि पीसते हैं। ३ पत्थर की चौकोर पटिया।
संज्ञा पु० दे० "शिल", "उंछ"।
संज्ञा पु० [अ०] राजयक्ष्मा। क्षयरोग।

सिलकी—संज्ञा पु० [देश०] बेल।

सिलखड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिल + खड़िया] १ एक प्रकार का चिकना मुलायम पत्थर। २ खरिया मिट्टी। दुद्धी।

सिलगना—क्रि० अ० दे० "सुलगना"।

सिलप*‡—संज्ञा पु० दे० "शिल्प"।

सिलपट—वि० [सं० शिलापट्ट] १ साफ। बराबर। चौरस। २ घिसा हुआ। ३ चौपट। सत्यानाश।

सिलपोहनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिल + पोहना] विवाह की एक रीति।

सिलवट—संज्ञा स्त्री० [देश०] सिकुड़ने से पड़ी हुई लकीर। शिकन। सिकुड़न।

सिलवाना—क्रि० स० दे० "सिलाना"।

सिलसिला—संज्ञा पु० [अ०] १ बँधा हुआ तार। क्रम। परंपरा। २ श्रेणी। पंक्ति। ३ शृंखला। जंजीर। लड़ी। ४ व्यवस्था। तरतीब।
वि० [सं० सिक्त] १ भीगा हुआ। गीला। २ जिस पर पैर फिसले। ३ चिकना।

सिलसिलेवार—वि० [अ० + फा०] तरतीबवार। क्रमानुसार।

सिलह—संज्ञा पु० [अ० सिलाह] हथियार।

सिलहखाना—संज्ञा पु० [अ० सिलाह + फा० खान] अस्त्रागार। हथियार रखने का घर।

सिलहारा—संज्ञा पु० [सं० शिलकार] खेत में गिरा हुआ अनाज बीननेवाला।

सिलहिला—वि० [हिं० सीड + हीला = कीचड़] [स्त्री० सिलहिली] जिस पर पैर फिसले। कीचड़ से चिकना।

सिला—संज्ञा स्त्री० दे० "शिला"।
संज्ञा पु० [सं० शिल] १ कटे खेत में से

चुना हुआ दाना। २. कटे हुए खेत में गिरे अनाज के दाने चुनना। शिलवृत्ति। संज्ञा पुं० [अ० सिलह:] बदला। एवज।
सिलाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० सीना + आई (प्रत्य०)] १.सीनेका कामयाढंग। २.सीने की मजदूरी। ३. टाँका। सीवन।
सिलाजीत–संज्ञा पुं० दे० "शिलाजतु"।
सिलाना–क्रि० स० [हिं० सीना का प्रे०] सीने का काम दूसरे से कराना। सिलवाना। *क्रि० स० दे० "सिराना"।
सिलारस–संज्ञा पुं० [सं० शिलारस] १. सिल्हक वृक्ष। २. सिल्हक वृक्ष का गोंद।
सिलावट–संज्ञा पुं० [सं० शिला + पट्ट] पत्थर काटने और गढ़नेवाला। संगतराश।
सिलाह–संज्ञा पुं० [अ०] १. जिरह बकतर। कवच। २. अस्त्र-शस्त्र। हथियार।
सिलाहबंद–वि० [अ० + फ़ा०] सशस्त्र। हथियारबंद। शस्त्रों से सुसज्जित।
सिलाहर–संज्ञा पुं० "सिलहार"।
सिलाही–संज्ञा पुं० [अ० सिलाह] सैनिक।
सिलिप‡*–संज्ञा पुं० दे० "शिल्प"।
सिलीमुख–संज्ञा पुं० दे० "शिलीमुख"।
सिलोच्च–संज्ञा पुं० [सं० शिलोच्च] एक प्राचीन पर्वत।
सिलोट, सिलौटा–संज्ञा पुं० [हिं० सिल + बट्टा] [स्त्री० अल्पा० सिलौटी] १. सिल। २. सिल तथा बट्टा।
सिल्ला–संज्ञा पुं० [सं० शिल] अनाज की बालियाँ या दाने जो फ़सल कट जाने पर खेत में पड़े रह जाते हैं।
सिल्ली–संज्ञा स्त्री० [सं० शिला] १. हथियार की धार चोखी करने का पत्थर। सान। २. पत्थर की छोटी पतली पटिया।
सिल्हक–संज्ञा पुं० [सं०] सिलारस।
सिव*‡–संज्ञा पुं० दे० "शिव"।
सिवईं–संज्ञा स्त्री० [सं० समिता] गुँधे हुए आटे के सूत से सूखे लच्छे जो दूध में पकाकर खाए जाते हैं। सिवैयाँ।
सिवा–संज्ञा स्त्री० दे० "शिवा"।
अव्य० [अ०] अतिरिक्त। अलावा।
वि० अधिक। ज्यादा। फ़ालतू।
सिवाइ–अव्य० दे० "सिवाय", "सिवा"।
सिवाई–संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मिट्टी।
सिवान–संज्ञा पुं० [सं० सीमंत] हद। सीमा।
सिवाय–क्रि० वि० [अ० सिवा] अतिरिक्त। अलावा। छोड़कर। बाद देकर।
वि० १. अधिक। ज्यादा। २. ऊपरी।
सिवार–संज्ञा स्त्री० [सं० शैवाल] पानी में लच्छों की तरह फैलनेवाला एक तृण।
सिवाल–संज्ञा स्त्री०, पुं० दे० "सिवार"।
सिवाला–संज्ञा पुं० दे० "शिवालय"।
सिविर–संज्ञा पुं० दे० "शिविर"।
सिष्ट–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० शिस्त] बंसी की डोरी। *‡वि० दे० "शिष्ट"।
सिसकना–क्रि० अ० [अनु०] १. रोने में रुक रुककर निकलती हुई साँस छोड़ना। २. भीतर ही भीतर रोना। खुलकर न रोना। ३. जी धड़कना। ४. उलटी साँस लेना। मरने के निकट होना। ५. तरसना।
सिसकारना–क्रि० अ० [अनु० सी सी + करना] १. सीटी का सा शब्द मुँह से निकालना। सुसकारना। २. अत्यंत पीड़ा या आनंद के कारण मुँह से साँस खींचना। सीत्कार करना।
सिसकारी–संज्ञा स्त्री० [हिं० सिसकारना] १. सिसकारने का शब्द। सीटी का सा शब्द। २. पीड़ा या आनंद के कारण मुँह से निकला हुआ 'सी सी' शब्द। सीत्कार।
सिसकी–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. खुलकर न रोने का शब्द। २. सिसकारी। सीत्कार।
सिसिर*–संज्ञा पुं० दे० "शिशिर"।
सिसु*–संज्ञा पुं० दे० "शिशु"।
सिसोदिया–संज्ञा पुं० [सिसोद (स्थान)] गुहलौत राजपूतों की एक शाखा।
सिहरना†–क्रि० अ० [सं० शीत + ना] १. ठंढ से काँपना। २. काँपना। ३. डरना।
सिहराना†–क्रि० स० [हिं० सिहरना] १. सरदी से कँपाना। २. डराना।
सिहरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० सिहरना] १. कँप-

कँपी। कप। २ भय से दहलना। ३ जूड़ी या बुखार। ४ रोंगटे खड़े होना। रोमहर्ष।
सिहाना†–क्रि० अ० [स० ईर्ष्या] १ ईर्ष्या करना। डाह करना। २ स्पर्द्धा करना। ३ पाने के लिये ललचना। लुभाना। ४ मुग्ध होना। मोहित होना।
क्रि० स० १ ईर्ष्या की दृष्टि से देखना। २ अभिलाष की दृष्टि से देखना। ललचना।
सिहारना*†–क्रि० स० [देश०] १ तलाश करना। ढूँढ़ना। २ जुटाना।
सिहोड़, सिहोर†–सज्ञा पु० दे० "सेहुँड"।
सींक–सज्ञा स्त्री० [स० इषीका] १ मूँज आदि की पतली तीली। २ किसी घास का महीन डठल। ३ तिनका। ४ शकु। ५ नाक का एक गहना। लौंग। कील।
सींका–सज्ञा पु० [हिं० सींक] पेड़-पौधो की बहुत पतली उपशाखा या टहनी। डाँडी।
सींकिया–सज्ञा पु० [हिं० सींक] एक प्रकार का रगीन धारीदार कपड़ा।
वि० सीक सा पतला।
सींग–सज्ञा पु० [स० शृग] १ खुरवाले कुछ पशुओ के सिर के दोनो ओर निकले हुए कड़े नुकीले अवयव। विषाण।
मुहा०–(किसी के सिर पर) सींग होना= कोई विशेषता होना। (व्यग्य) सींग कटा-कर बछडा मे मिलना=वृद्ध होकर भी बच्चो मे मिलना। कही सीग समाना=कही ठिकाना मिलना।
२ सीग का बना फूँककर बजाया जानेवाला एक बाजा। सिंगी।
सींगरी–सज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का लोबिया या फली। मोगरे की फली।
सींगी–सज्ञा स्त्री० [हिं० सींग] १ हिरन के सींग का बना बाजा। सिंगी। २ वह पोला सीग जिससे जर्राह शरीर से दूषित रक्त खीचते है। ३ एक प्रकार की मछली।
सींचना–क्रि० स० [स० सिचन] १ पानी देना। आबपाशी करना। २ पानी छिड़क-कर तर करना। भिगोना। ३ छिड़कना।
सींव*–सज्ञा पु० [स० सीमा] सीमा। हद।
मुहा०–सींव चरना या काँडना=अधिकार दिखाना। जबरदस्ती करना।
सी–वि० स्त्री० [स० सम] समान। तुल्य। सदृश। जैसे, वह स्त्री बावली सी है।
मुहा०–अपनी सी=अपने भरसक। जहाँ तक अपने से हो सके, वहाँ तक।
सज्ञा स्त्री० [अनु०] सी-कार। सिसकारी।
सीउ*–सज्ञा पु० [स० शीत] शीत। ठढ।
सीकर–सज्ञा पु० [स०] १ जल-कण। पानी की बूँद। छीट। २ पसीना।
*†–सज्ञा स्त्री० [स० शृखला] जजीर।
सीकल–सज्ञा स्त्री० [अ० सैकल] हथियारो का मोरचा छुड़ाने की क्रिया।
सीकस–सज्ञा पु० [देश०] ऊसर।
सीकुर–सज्ञा पु० [स० शूक] गहूँ, जौ आदि की बाल के ऊपर के कड़े सूत। शूक।
सीख–सज्ञा स्त्री० [स० शिक्षा] १ शिक्षा। तालीम। २ वह बात जो सिखाई जाय। ३ परामर्श। सलाह। मत्रणा।
सीख–सज्ञा स्त्री० [फा०] लोहे की लबी पतली छड़। शलाका। तीली।
सीखचा–सज्ञा पु० [फा०] १ लोहे की सीक जिस पर मास लपेटकर भूनते है। २ लोहे का छड़।
सीखन*†–सज्ञा स्त्री० [हिं० सीखना] शिक्षा।
सीखना–क्रि० स० [स० शिक्षण] १ ज्ञान प्राप्त करना। किसी से कोई बात जानना। २ काम करने का ढग आदि जानना।
सीगा–सज्ञा पु० [अ०] विभाग। महकमा।
सीझ–सज्ञा स्त्री० [स० सिद्धि] सीझने की क्रिया या भाव। गरमी से गलाव।
सीझना–क्रि० अ० [स० सिद्ध] १ आँच या गरमी पाकर गलना। पकना। चुरना। २ आँच या गरमी से मुलायम पड़ना। ३, सूखे हुए चमड़े का मसाले आदि मे भीगकर मुलायम होना। ४ कष्ट सहना। क्लेश झेलना। ५ तपस्या करना। ६ मिलने के योग्य होना।
सीटना–क्रि० स० [अनु०] डीग मारना। शेखी मारना। बढ़ बढ़कर बातें करना।

सीटपटांग—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीटना+(ऊट) पटांग] घमंड भरी बातें।

सीटी—संज्ञा स्त्री० [सं० शीत] १. वह महीन शब्द जो ओठों को सिकोड़कर नीचे की ओर आघात के साथ वायु निकालने से होता है। २. इसी प्रकार का शब्द जो किसी बाजे या यंत्र आदि से होता है। ३. वह बाजा या खिलौना जिसे फूँकने से उक्त प्रकार का शब्द निकले।

सीठना—संज्ञा पुं० [सं० अशिष्ट] वह अश्लील गीत जो स्त्रियाँ विवाहादि मांगलिक अवसरों पर गाती हैं। सीठनी।

सीठनी—संज्ञा स्त्री० दे० "सीठना"।

सीठा—वि० [सं० शिष्ट] नीरस। फीका।

सीठी—संज्ञा स्त्री० [सं० शिष्ट] १. किसी फल, पत्ते आदि का रस निकल जाने पर बचा हुआ निकम्मा अंश। खूद। २. सारहीन पदार्थ। ३. फीकी चीज।

सीड़—संज्ञा स्त्री० [सं० शीत] तरी। नमी।

सीढ़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० श्रेणी] १. ऊँचे स्थान पर चढ़ने के लिये एक के ऊपर एक बना हुआ पैर रखने का स्थान। निसेनी। जीना। पैड़ी। २. धीरे धीरे आगे बढ़ने की परंपरा।

सीत*‡—संज्ञा पुं० दे० "शीत"।

सीतल‡*—वि० दे० "शीतल"।

सीतलपाटी—संज्ञा स्त्री० [सं० शीतल + हिं० पाटी] एक प्रकार की बढ़िया चटाई।

सीतला—संज्ञा स्त्री० दे० "शीतला"।

सीता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह रेखा जो जमीन जोतते समय हल की फाल से पड़ती जाती है। कूँड़। २. मिथिला के राजा सीरध्वज जनक की कन्या जो श्रीरामचंद्र जी की पत्नी थीं। वैदेही। जानकी। ३. एक वर्णवृत्ति जिसके प्रत्येक चरण में रगण, तगण, मगण, यगण और रगण होते हैं।

सीताध्यक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] वह राजकर्मचारी जो राजा की निज की भूमि में खेती-बारी आदि का प्रबंध करता हो।

सीतापति—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीरामचंद्र।

सीताफल—संज्ञा पुं० [सं०] १. शरीफा। २. कुम्हड़ा।

सीत्कार—संज्ञा पुं० [सं०] वह सी सी शब्द जो पीड़ा या आनन्द के समय मुँह से निकलता है। सिसकारी।

सीथ—संज्ञा पुं० [सं० सिक्थ] पके हुए अन्न का दाना। भात का दाना।

सीद—संज्ञा पुं० [सं०] सूदखोरी। कुसीद।

सीदना—क्रि० अ० [सं० सीदति] दुःख पाना।

सीध—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीधा] १. वह लंबाई जो बिना इधर-उधर मुड़े एक-तार चली गई हो। २. लक्ष्य। निशाना।

सीधा—वि० [सं० शुद्ध] [स्त्री० सीधी] १. जो टेढ़ा न हो। अवक्र। सरल। ऋजु। २. जो ठीक लक्ष्य की ओर हो। ३. सरल प्रकृति का। भोला-भाला। ४. शांत और सुशील।

मुहा०—सीधी तरह = शिष्ट व्यवहार से।

यौ०—सीधा सादा = भोला भाला।

मुहा०—(किसी को) सीधा करना = दंड देकर ठीक करना।

५. सुकर। आसान। सहज। ६. दहिना। क्रि० वि० ठीक सामने की ओर। सम्मुख। संज्ञा पुं० [सं० असिद्ध] बिना पका हुआ अन्न।

सीधापन—संज्ञा पुं० [हिं० सीधा + पन (प्रत्य०)] सीधा होने का भाव। सिधाई।

सीधे—क्रि० वि० [हिं० सीधा] १. बराबर सामने की ओर। सम्मुख। २. बिना कहीं मुड़े या रुके। ३. नरमी से। शिष्ट व्यवहार से।

सीना—क्रि० स० [सं० सीवन] १. कपड़े, चमड़े आदि के दो टुकड़ों को सूई तागों से जोड़ना। २. टाँका मारना। संज्ञा पुं० [फ़ा० सीना] छाती। वक्षःस्थल।

सीनाबंद—संज्ञा पुं० [फ़ा०] अँगिया। चोली।

सीप—संज्ञा पुं० [सं० शुक्ति, प्रा० सुत्ति] १. कड़े आवरण के भीतर रहनेवाला शंख, घोंघे आदि की जाति का एक जलजंतु। सीपी। सितुही। २. इस समुद्री जलजंतु का सफ़ेद, कड़ा, चमकीला आवरण जो

बटन आदि बनाने के काम में आता है। ३ ताल में सीप का संपुट जो चम्मच आदि के समान काम में लाया जाता है।
सीपति–संज्ञा पु० [सं० श्रीपति] विष्णु।
सीपर*‡–संज्ञा पु० [फा० सिपर] ढाल।
सीपसुत–संज्ञा पु० [हिं० सीप + सुत] मोती।
सीपिज–संज्ञा पु० [हिं० सीपी] मोती।
सीपी–संज्ञा स्त्री० दे० "सीप"।
सीबी–संज्ञा स्त्री० [अनु० सी सी] सी सी शब्द। सिसकारी। सीत्कार।
सीमंत–संज्ञा पु० [सं०] १. स्त्रियों की माँग। २ हड्डियों का संधि-स्थान। ३ दे० "सीमंतोन्नयन"।
सीमंतिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] स्त्री। नारी।
सीमंतोन्नयन–संज्ञा पु० [सं०] द्विजों के दस संस्कारों में से तीसरा संस्कार जो प्रथम गर्भ के चौथे, छठे या आठवें महीने होता है।
सीम–संज्ञा पु० [सं० सीमा] सीमा। हद्द।
मुहा०—सीम चरना या चाँडना = अधिकार जताना। दबाना। जबरदस्ती करना।
सीमांत–संज्ञा पु० [सं०] वह स्थान जहाँ सीमा का अंत होता हो। सरहद।
सीमा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ माँग। २ किसी प्रदेश या वस्तु के विस्तार का अंतिम स्थान। हद। सरहद। मर्य्यादा।
मुहा०—सीमा से बाहर जाना = उचित से अधिक बढ़ जाना।
सीमाब–संज्ञा पु० [फा०] पारा।
सीमाबद्ध–संज्ञा पु० [सं०] रेखा से घिरा हुआ। हद के भीतर किया हुआ।
सीमोल्लंघन–संज्ञा पु० [सं०] १ सीमा का उल्लंघन करना। २ विजय-यात्रा। सीमातिक्रमणोत्सव। ३ मर्य्यादा के विरुद्ध कार्य करना।
सीय–संज्ञा स्त्री० [सं० सीता] जानकी।
सीयन†–संज्ञा स्त्री० दे० "सीवन"।
सीर–संज्ञा पु० [सं०] १ हल। २ हल जोतनेवाले बैल। ३ सूर्य्य।
संज्ञा स्त्री० [सं० सीर = हल] १ वह जमीन जिसे भू-स्वामी या जमींदार स्वयं जोतता आ रहा हो। २ वह जमीन जिसकी उपज कई हिस्सेदारों में बँटती हो।
संज्ञा पु० [सं० शिरा] रक्त की नाड़ी।
*†वि० [सं० शीतल] ठंढा। शीतल।
सीरक*–संज्ञा पु० [हिं० सीरा] ठंढा करनेवाला।
सीरख*–संज्ञा पु० दे० "शीर्ष"।
सीरध्वज–संज्ञा पु० [सं०] राजा जनक।
सीरनी–संज्ञा स्त्री० [फा० शीरीनी] मिठाई।
सीरष*–संज्ञा पु० दे० "शीर्ष"।
सीरा–संज्ञा पु० [फा शीर] १ पकाकर गाढ़ा किया हुआ चीनी का रस। चाशनी। २ हलवा।
*†वि० [सं० शीतल] [स्त्री० सीरी] १ ठंढा शीतल। २ शांत। मौन। चुपचाप।
सील–संज्ञा स्त्री० [सं० शीतल] भूमि में जल की आर्द्रता। सीड़। नमी। तरी।
*‡ संज्ञा पु० दे० "शील"।
सीला–संज्ञा पु० [सं० शिल] १ अनाज के वे दाने जो खेत में से तपस्वी या ग़रीब चुनते हैं। सिल्ला। २ खेत में गिरे दानों से निर्वाह करने की मुनियों की वृत्ति।
वि० [सं० शीतल] [स्त्री० सीली] गीला।
सीवन–संज्ञा पु०, स्त्री० [सं०] १ सीने का काम। सिलाई। २ सीने में पड़ी हुई लकीर। ३ दरार। संधि। दराज।
सीवना–संज्ञा पु० दे० "सिवाना"।
क्रि० स० दे० "सीना"।
सीस–संज्ञा पु० [सं० शीर्ष] सिर। माथा।
सीसक–संज्ञा पु० [सं०] सीसा (धातु)।
सीसताज–संज्ञा पु० [हिं० सीस फा० ताज] वह टोपी जो शिकारी जानवरों के सिर पर रहती और शिकार के समय खोली जाती है। कुलाह।
सीसत्रान–संज्ञा पु० दे० 'शिरस्त्राण"।
सीसफूल–संज्ञा पु० [हिं० सीस + फूल] सिर पर पहनने का फूल। (गहना)
सीसमहल–संज्ञा पु० [फा० शीशा अ० महल] वह मकान जिसकी दीवारों में शीशे जड़े हों।

सीसा–संज्ञा पुं० [सं० सीसक] नीलापन लिए काले रंग की एक मूल धातु।
*‡ संज्ञा पुं० दे० "शीशा"।
सीसी–संज्ञा स्त्री० [अनु०] शीत, पीड़ा या आनन्द के समय मुंह से निकला हुआ शब्द। सीत्कार। सिसकारी।
*‡ संज्ञा स्त्री० दे० "शीशी"।
सीसोदिया–संज्ञा पुं० दे० "सिसोदिया"।
सीह–संज्ञा स्त्री० [सं० साधु] महक। गंध।
* संज्ञा पुं० दे० "सिंह"।
सीहगोस–संज्ञा पुं० [फ़ा० सियहगोश] एक प्रकार का जंतु जिसके कान काले होते हैं।
सुं*†–प्रत्य० दे० "सो"।
सुंघनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० सूंघना] तंबाकू के पत्ते की बारीक बुकनी जो सूंघी जाती है। हुलास। नस्य। मग़जरोशन।
सुंघाना–क्रि० स० [हिं० सूंघना] आघ्राण कराना। सूंघने की क्रिया कराना।
सुंड भुसुंड–संज्ञा पुं० [सं० शुडभुशुडि] हाथी, जिसका अस्त्र सूंड है।
सुंडा–संज्ञा स्त्री० [हिं० सूंड़] सूंड़। शुंड।
सुंडाल–संज्ञा पुं० [सं०] हाथी।
सुंद–संज्ञा पु० [सं०] एक असुर जो निसुंद का पुत्र और उपसुंद का भाई था।
सुंदर–वि० [सं०] [स्त्री० सुंदरी] १. जो देखने में अच्छा लगे। रूपवान्। खूबसूरत। मनोहर। २. अच्छा। बढ़िया।
सुंदरता–संज्ञा स्त्री० [सं०] सुंदर होने का भाव। सौंदर्य्य। खूबसूरती।
सुंदरताई*–संज्ञा स्त्री० दे० "सुंदरता"।
सुंदरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सुदर स्त्री। २. त्रिपुर-सुदरी देवी। ३. एक योगिनी का नाम। ४. सवैया नामक छंद का एक भेद जिसमें आठ सगण और एक गुरु होता है। ५. बारह अक्षरों का एक वर्ण-वृत्त। द्रुतविलंबित। ६. तेईस अक्षरों की एक वर्णवृत्ति।
सुंबा–संज्ञा पु० [देश०] १. इस्पज। २. तोप या बंदूक की गरम नली को ठंढा करने के लिये गीला कपड़ा। पुचारा।
सु–उप० [सं०] एक उपसर्ग जो संज्ञा के साथ लगकर श्रेष्ठ, सुंदर, बढ़िया आदि का अर्थ देता है। जैसे—सुनाम, सुशील आदि।
वि० १. सुंदर। अच्छा। २. उत्तम। श्रेष्ठ। ३. शुभ। भला।
* अव्य० [सं० सह] तृतीया, पंचमी और षष्ठी विभक्ति का चिह्न।
सर्व० [सं० स] सो। वह।
सुअटा†–संज्ञा पुं० [सं० शुक] सुग्गा। तोता।
सुअन*–संज्ञा पुं० [सं० सुत] पुत्र। बेटा।
सुअनजद–संज्ञा पुं० दे० "सोनजर्द"।
सुअना*–क्रि० अ० [हिं० सुअन] उत्पन्न होना। उगना। उदय होना।
संज्ञा पुं० दे० "सुअटा"।
सुआ–संज्ञा पुं० दे० "सूआ"।
सुआउ*–वि० [सं० सु+आयु] बड़ी उम्र-वाला। दीर्घजीवी।
सुआन*–संज्ञा पुं० दे० "श्वान"।
सुआना†–क्रि० स० [हिं० सूना का प्रेरणा०] उत्पन्न कराना। पैदा कराना।
सुआमी*–संज्ञा पुं० दे० "स्वामी"।
सुआर†–संज्ञा पं० [सं० सूपकार] रसोइया।
सुआरव–वि० [सं०] मीठे स्वर से बोलने या बजानेवाला।
सुआसिनी*†–संज्ञा स्त्री० [सं० सुवासिनी?] १. स्त्री, विशेषतः पास रहनेवाली स्त्री। २. सौभाग्यवती स्त्री। सधवा।
सुआहित–संज्ञा पुं० [सं० सु+आहत?] तलवार के ३२ हाथों में से एक हाथ।
सुकंठ–वि० [सं०] १. जिसका कंठ सुंदर हो। २. सुरीला।
संज्ञा पुं० [सं०] सुग्रीव।
सुक–संज्ञा पुं० दे० "शुक"।
सुकचाना*–क्रि० अ० दे० "सकुचाना"।
सुकड़ना–क्रि० अ० दे० "सिकुड़ना"।
सुकनासा*–वि० [सं० शुक+नासिका] जिसकी नाक शुक पक्षी की ठोर के समान सुंदर हो।
सुकर–वि० [सं०] सुसाध्य। सहज।
सुकरता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सहज में होने

का भाव। सौकर्य। २. सुंदरता।
सुकराना–संज्ञा पुं० दे० "शुकराना"।
सुकरित*–वि० [सं० सुकृति] शुभ। अच्छा।
सुकर्म–संज्ञा पुं० [सं०] अच्छा काम। सत्कर्म।
सुकर्म्मी–वि० [सं० सुकर्म्मिन्] १. अच्छा काम करनेवाला। २ धार्म्मिक। ३ सदाचारी।
सुकल–संज्ञा पुं० दे० "शुक्ल"।
सुकचाना–क्रि० अ० [?] अचभे म आना।
सुकवि–संज्ञा पुं० [सं०] अच्छा कवि।
सुकाना*–क्रि० स० दे० "सुखाना"।
सुकाल–संज्ञा पुं० [सं०] १. उत्तम समय। २ वह समय जिसमे अन्न आदि की उपज अच्छी हो। अकाल का उलटा।
सुकावना*–क्रि० स० दे० "सुखाना"।
सुकिज*–संज्ञा पुं० [सं० सुकृत] शुभ कर्म।
सुकिया*–संज्ञा स्त्री० दे० "स्वकीया"।
सुकी–संज्ञा स्त्री० [सं० शुक] तोते की मादा। सुग्गी। सारिका। तोती।
सुकीउ*–संज्ञा स्त्री० दे० "स्वकीया"। (नायिका)
सुकुआर–वि० दे० "सुकुमार"।
सुकुति*†–संज्ञा स्त्री० [सं० शुक्ति] सीप।
सुकुमार–वि० [सं०] [स्त्री० सुकुमारी] जिसके अंग बहुत कोमल हो। नाजुक।
संज्ञा पुं० १ कोमलांग बालक। २ काव्य का कोमल अक्षरो या शब्दो से युक्त होना।
सुकुमारता–संज्ञा स्त्री० [सं०] सुकुमार का भाव या धर्म्म। कोमलता। नजाकत।
सुकुमारी–वि० [सं०] कोमल अंगोवाली। कोमलांगी।
सुकुरना*†–क्रि० अ० दे० "सिकुडना"।
सुकुल–संज्ञा पुं० [सं०] १. उत्तम कुल। २ वह जो उत्तम कुल में उत्पन्न हो। कुलीन।
संज्ञा पुं० दे० "शुक्ल"।
सुकुवाँर, सुकुवार–वि० दे० "सुकुमार"।
सुकृत्–वि० [सं०] १ उत्तम और शुभ कार्य्य करनेवाला। २ धार्म्मिक।
सुकृत–संज्ञा पुं० [सं०] १ पुण्य। २ दान।
वि० १. भाग्यवान्। २. धर्म्मशील।
सुकृतात्मा–वि० [सं० सुकृतात्मन्] धर्म्मात्मा।
सुकृति–संज्ञा स्त्री० [सं०] [भाव० सुकृतित्व] शुभ कार्य्य। अच्छा काम। पुण्य। सत्कर्म।
सुकृती–वि० [सं० सुकृतिन्] १. धार्म्मिक। पुण्यवान्। २ भाग्यवान्। ३ बुद्धिमान्।
सुकृत्य–संज्ञा पुं० [सं०] पुण्य। धर्मकार्य।
सुकेशि–संज्ञा पुं० [सं०] विद्युत्केश राक्षस का पुत्र तथा माल्यवान्, सुमाली और माली नामक राक्षसो का पिता।
सुकेशी–संज्ञा स्त्री० [सं०] उत्तम केशोंवाली स्त्री
संज्ञा पुं० [सं० सुकेशिन्] [स्त्री० सुकेशिनी] वह जिसके बाल बहुत सुंदर हो।
सुक्ख–संज्ञा पुं० दे० "सुख"।
सुक्ति–संज्ञा स्त्री० दे० "शुक्ति"।
सुक्रित–संज्ञा पुं० दे० "सुकृत"।
सुक्षम*†–वि० दे० "सूक्ष्म"।
सुखंडी–संज्ञा स्त्री० [हिं० सूखना] बच्चो का एक रोग जिसम शरीर सूख जाता है।
वि० बहुत दुबला-पतला।
सुखद–वि० [सं० सुखद] सुखदायी।
सुख–संज्ञा पुं० [सं०] १ वह अनुकूल और प्रिय वेदना जिसकी सब को अभिलाषा रहती है। दुख का उलटा। आराम।
मुहा०–सुख मानना = परिस्थिति आदि की अनुकूलता के कारण ठीक अवस्था मे रहना। सुख की नींद सोना = निश्चित होकर रहना।
२ एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे ८ सगण और २ लघु होते है। ३ आरोग्य। तंदुरुस्ती। ४ स्वर्ग। ५ जल। पानी।
क्रि० वि० १ स्वभावत । २ सुखपूर्वक।
सुखआसन–संज्ञा पुं० [सं० सुख + आसन] पालकी।
सुखकंद–वि० [सं० सुख + कंद] सुखद।
सुखकदन–वि० दे० "सुखकंद"।
सुखकंदर–वि० [सं० सुख + कंदरा] सुख का घर। सुख का आकर।
सुखक*†–वि० [हिं० सूखा] सूखा। शुष्क।
सुखकर–वि० [सं०] १. सुख देनेवाला। २ जो सहज में किया जाय। सुकर।

सुखकरण†–वि० [सं० सुख + करण] सुखद।
सुखकारक–वि० [सं०] सुखदायक।
सुखकारी–वि० दे० "सुखकारक"।
सुखजननी–वि० स्त्री० [सं०] सुख देनेवाली।
सुखज्ञ–वि० [सं० सुख + ज्ञ] सुख का ज्ञाता।
सुखढरन–वि० दे० "सुखद"।
सुखथर*†–संज्ञा पु० [सं० सुख + स्थल] सुख का स्थल। सुख देनेवाला स्थान।
सुखद–वि० [सं०] [स्त्री० सुखदा] सुख देनेवाला। आनंद देनेवाला। सुखदायी।
सुखदगीत–वि० [सं० सुखद + गीत] प्रशंसनीय।
सुखदनियाँ*–वि० दे० "सुखदानी"।
सुखदा–वि० स्त्री० [सं०] सुख देनेवाली। संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का छंद।
सुखदाइन*–वि० दे० "सुखदायिनी"।
सुखदाइ–वि० दे० "सुखदायी"।
सुखदाता–वि० [सं० सुखदातृ] सुखद।
सुखदान–वि० दे० "सुखदाता"।
सुखदानी–वि० स्त्री० [हिं० सुखदान] सुख देनेवाली। आनंद देनेवाली।
संज्ञा स्त्री० ८ सगण और १ गुरु का एक वृत्त। सुंदरी। मल्ली। चंद्रकला।
सुखदायक–वि० [सं०] सुख देनेवाला।
संज्ञा पु० एक प्रकार का छंद।
सुखदायी–वि० [सं० सुखदायिन्] [स्त्री० सुखदायिनी] सुख देनेवाला। सुखद।
सुखदायो*–वि० दे० "सुखदायी"।
सुखदास–संज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का अगहनी बढ़िया धान।
सुखदेनो–वि० दे० "सुखदायिनी"।
सुखदैन–वि० दे० "सुखदायी"।
सुखदैनी–वि० [सं० सुखदायिनी] सुखदेनेवाली
सुखधाम–संज्ञा पु० [सं०] १ सुख का घर। आनंद-सदन। २. वैकुंठ। स्वर्ग।
सुखना*–क्रि० अ० दे० "सूखना"।
सुखपाल–संज्ञा पु० [सं० सुख + पाल (की)] एक प्रकार की पालकी।
सुखपूर्वक–क्रि० वि० [सं०] सुख से। आनंद से। आराम के साथ।
सुखप्रद–वि० [सं०] सुख देनेवाला।
सुखमन*†–संज्ञा स्त्री० दे० "सुषुम्ना"।
सुखमा–संज्ञा स्त्री० [सं० सुषमा] १. शोभा। छवि। २. एक प्रकार का वृत्त। वामा।
सुखरास, सुखरासी*–वि० [सं० सुख + राशि] जो सर्वथा सुखमय हो।
सुखलाना–क्रि० स० दे० "सुखाना"।
सुखवंत–वि० [सं० सुखवत्] १. सुखी। प्रसन्न। खुश। २. सुखदायक।
सुखवन†–संज्ञा पु० [हिं० सूखना] वह कमी जो किसी चीज के सूखने के कारण होती है। संज्ञा पु० [हिं० सूखना] वह बालू जिससे लिखे हुए अक्षरों आदि पर की स्याही सुखाते हैं।
सुखवार–वि० [सं० सुख] [स्त्री० सुखवारी] सुखी। प्रसन्न। खुश।
सुखसाध्य–वि० [सं०] सुकर। सहज।
सुखसार–संज्ञा पु० [सं० सुख + सार] मोक्ष।
सुखांत–संज्ञा पु० [सं०] १. वह जिसका अंत सुखमय हो। २. वह नाटक जिसके अंत में कोई सुखपूर्ण घटना (जैसे संयोग) हो।
सुखाना–क्रि० स० [हिं० सूखना का प्रेर०] १. गीली या नम चीज को धूप आदि में इस प्रकार रखना जिससे उसकी नमी दूर हो। २. कोई ऐसी क्रिया करना जिससे आर्द्रता दूर हो।
†क्रि० अ० दे० "सूखना"।
सुखारा, सुखारी*†–वि० [हिं० सुख + आरा (प्रत्य०)] १. सुखी। प्रसन्न। २. सुखद।
सुखाला–वि० [सं० सुख] [स्त्री० सुखाली] १. सुखदायक। आनंददायक। २. सहज।
सुखावह–वि० [सं०] सुख देनेवाला।
सुखासन–संज्ञा पु० [सं०] १. सुखद आसन। २. पालकी। डोली।
सुखिआ–वि० दे० "सुखिया"।
सुखित–वि० [हिं० सूखना] सूखा हुआ। वि० [हिं० सुखी] सुखी। प्रसन्न। खुश।
सुखिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] सुख। आनंद।
सुखिया–वि० दे० "सुखी"।
सुखिर–संज्ञा पु० [देश०] साँप का बिल।
सुखी–वि० [सं० सुखिन्] जिसे सब प्रकार

या सुख हो। आनंदित। खुश।
सुखेन–संज्ञा पु० दे० "सुषेण"।
सुखेलव–संज्ञा पु० [सं०] एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में न, ज, भ, ज, र आता है। प्रभद्रिका। प्रभद्रक।
सुखैना*†–वि० [सं० सुख] सुख देनेवाला।
सुख्याति–संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रसिद्धि। शोहरत। कीर्ति। यश। बड़ाई।
सुगंध–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अच्छी और प्रिय महक। सुवास। खुशबू। २ वह जिससे अच्छी महक निकलती हो। ३ श्रीखंड। चंदन।
वि० सुगंधित। खुशबूदार।
सुगंधबाला–संज्ञा स्त्री० [सं० सुगंध+हिं० बाला] एक प्रकार की सुगंधित वनौषधि।
सुगंधि–संज्ञा स्त्री० [सं० सुगंध] १ अच्छी महक। सौरभ। सुगंध। सुवास। खुशबू। २ परमात्मा। ३ आम।
सुगंधित–वि० [सं० सुगंधि] जिसमें अच्छी गंध हो। सुगंधयुक्त। खुशबूदार।
सुगत–संज्ञा पु० [सं०] १ बुद्धदेव। २ बौद्ध।
सुगति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मरने के उपरांत होनेवाली उत्तम गति। मोक्ष। २ एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सात मात्राएँ और अंत में एक गुरु होता है।
सुगना†–संज्ञा पु० [सं० शुक] तोता।
सुगम–वि० [सं०] १ जिसमें गमन करने में कठिनता न हो। २ सरल। सहज।
सुगमता–संज्ञा स्त्री० [सं०] सुगम होने का भाव। सरलता। आसानी।
सुगम्य–वि० [सं०] जिसमें सहज में प्रवेश हो सके।
सुगल–संज्ञा पु० [सं० सु हिं० गल=गला] बालि का भाई सुग्रीव।
सुगाना*–क्रि० अ० [सं० शोक] १ दुःखित होना। २ बिगड़ना। नाराज होना।
क्रि० अ० [?] संदेह करना। शक करना।
सुगीतिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में २५ मात्राएँ और आदि में लघु और अंत में गुरु लघु होते हैं।
सुगुरा–संज्ञा पु० [सं० सुगुरु] वह जिसने अच्छे गुरु से मंत्र लिया हो।
सुगैया†–संज्ञा स्त्री० [हिं० सुग्गा] चोली।
सुग्गा†–संज्ञा पु० [सं०] तोता। सुआ।
सुग्रीव–संज्ञा पु० [सं०] १ बालि का भाई, वानरों का राजा और श्रीरामचंद्र का सखा। २ इंद्र। ३ शंख।
वि० जिसकी ग्रीवा सुंदर हो।
सुघट–वि० [सं०] १ सुंदर। सुडौल। २ जो सहज में बन सकता हो।
सुघटित–वि० [सं० सुघट] अच्छी तरह से बना या गढ़ा हुआ।
सुघड़–वि० [सं० सुघट] १ सुंदर। सुडौल। २ निपुण। कुशल। प्रवीण।
सुघड़ई–संज्ञा स्त्री० [हिं० सुघड़] १ सुंदरता। सुडौलपन। २ चतुरता। निपुणता।
सुघड़ता–संज्ञा स्त्री० दे० "सुघड़पन"।
सुघड़पन–संज्ञा पु० [हिं० सुघड़+पन (प्रत्य०)] १ सुंदरता। २ निपुणता। कुशलता।
सुघड़ाई–संज्ञा स्त्री० दे० "सुघड़ई"।
सुघड़ापा–संज्ञा पु० दे० "सुघड़पन"।
सुघर–वि० दे० "सुघड़"।
सुघरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० सु+घड़ी] अच्छी घड़ी। शुभ समय।
वि० स्त्री० [हिं० सुघड़] सुंदर। सुडौल।
सुच*–वि० दे० "शुचि"।
सुचना–क्रि० स० [सं० संचय] संचय करना। एकत्र करना। इकट्ठा करना।
सुचरित, सुचरित्र–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० सुचरित्रा] उत्तम आचरणवाला। नेक चलन।
सुचा–वि० दे० "शुचि"।
संज्ञा स्त्री० [सं० सूचना] ज्ञान। चेतना।
सुचाना–क्रि० स० [हिं० सोचना का प्रे०] १ किसी को सोचने या समझने में प्रवृत्त करना। २ दिखलाना। ३ किसी बात की ओर ध्यान आकृष्ट करना।
सुचार*–संज्ञा स्त्री० दे० "सुचाल"।
वि० [सं० सुचारु] सुंदर। मनोहर।
सुचारु–वि० [सं०] अत्यंत सुंदर।
सुचाल–संज्ञा स्त्री० [सं० सु+हिं० चाल]

उत्तम आचरण। अच्छी चाल। सदाचार।
सुचाली-वि० [हिं० सु + चाल] अच्छे चाल-चलनवाला। सदाचारी।
सुचि-वि० दे० "शुचि"।
सुचित-वि० [सं० सु + चित्त] १. जो (किसी काम से) निवृत्त हो गया हो। २. निश्चित। बे-फ़िक्र। ३. एकाग्र। स्थिर। सावधान।
सुचितई†-संज्ञा स्त्री० [हिं० सुचित + ई (प्रत्य०)] १. निश्चितता। बे-फ़िक्री। २. एकाग्रता। शांति। ३. छुट्टी। फ़ुर्सत।
सुचिती†-वि० दे० "सुचित"।
सुचित्त-वि० [सं०] १. जिसका चित्त स्थिर हो। शांत। २. जो (किसी काम से) निवृत्त हो गया हो।
सुचिमंत-वि० [सं० शुचि + मत्] शुद्ध आचरणवाला। सदाचारी। शुद्धाचारी।
सुची-संज्ञा स्त्री० दे० "शुची"।
सुचेत-वि० [सं० सुचेतस्] चौकन्ना। सावधान। सतर्क। होशियार।
सुच्छंद*†-वि० दे० "स्वच्छंद"।
सुच्छ*†-वि० दे० "स्वच्छ"।
सुच्छम*-वि० दे० "सूक्ष्म"।
सुजन-संज्ञा पुं० [सं०] सज्जन। सत्पुरुष। भला आदमी। शरीफ़।
संज्ञा पुं० [सं० स्वजन] परिवार के लोग।
सुजनता-संज्ञा स्त्री० [सं०] सुजन का भाव। सौजन्य। भद्रता। भलमनसत।
सुजनी-संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सोज़नी] एक प्रकार की बिछाने की बड़ी चादर।
सुजस-संज्ञा पुं० दे० "सुयश"।
सुजागर-वि० [सं० सु + जागर] देखने में बहुत सुंदर। प्रकाशमान। सुशोभित।
सुजात-वि० [सं०] [स्त्री० सुजाता] १. विवाहित स्त्री-पुरुष से उत्पन्न। २. अच्छे कुल में उत्पन्न। ३. सुंदर।
सुजाति-संज्ञा स्त्री० [सं०] उत्तम जाति। वि० उत्तम जाति या कुल का।
सुजातिया-वि० [हिं० सुजाति + इया (प्रत्य०)] उत्तम जाति का। अच्छे कुल का।
वि० [सं० स्व + जाति] अपनी जाति का।
सुजान-वि० [सं० सज्ञान] १. समझदार। चतुर। सयाना। २. निपुण। कुशल। प्रवीण। ३. विज्ञ। पंडित। ४. सज्जन।
संज्ञा पुं० १. पति या प्रेमी। २. ईश्वर।
सुजानता-संज्ञा स्त्री० [हिं० सुजान + ता (प्रत्य०)] सुजान होने का भाव या धर्म।
सुजानी-वि० [हिं० सुजान] पंडित। ज्ञानी।
सुजोग*†-संज्ञा पुं० [सं० सु + योग] १. अच्छा अवसर। सुयोग। २. अच्छा संयोग।
सुजोधन*-संज्ञा पुं० दे० "सुयोधन"।
सुजोर-वि० [सं० सु + फ़ा० ज़ोर] दृढ़।
सुझाना-क्रि० स० [हिं० सूझना का प्रेर०] दूसरे के ध्यान या दृष्टि में लाना। दिखाना।
सुटकना-क्रि० अ० १. दे० "सुड़कना"। २. दे० "सिकुड़ना"।
क्रि० स० [अनु०] चाबुक लगाना।
सुठ-वि० दे० "सुठि"।
सुठहर†-संज्ञा पुं० [सं० सु + हिं० ठहर = जगह] अच्छा स्थान। बढ़िया जगह।
सुठार*†-वि० [सं० सुष्ठु] सुडौल। सुंदर।
सुठि*†-वि० [सं० सुष्ठु] १. सुंदर। बढ़िया। अच्छा। २. अत्यंत। बहुत।
अव्य० [सं० सुष्ठु] पूरा पूरा। बिलकुल।
सुठौना*†-वि० दे० "सुठि"।
सुड़सुड़ाना-क्रि० स० [अनु०] सुड़सुड़ शब्द उत्पन्न करना।
सुडौल-वि० [सं० सु + हिं० डौल] सुंदर डौल या आकार का। सुंदर।
सुढंग-संज्ञा पुं० [सं० सु + हिं० ढंग] १. अच्छा ढंग। अच्छी रीति। २. सुघड़।
सुढर-वि० [सं० सु + हिं० ढलना] प्रसन्न और दयालु। जिसकी अनुकंपा हो।
वि० [हिं० सुघड़] सुंदर। सुडौल।
सुढार, सुढारु*†-वि० [सं० सु + हिं० ढलना] [स्त्री० सुढारी] सुंदर। सुडौल।
सुतंत, सुतंतर*-वि० दे० "स्वतंत्र"।
सुतंत्र*-वि० दे० "स्वतंत्र"।
क्रि० वि० स्वतंत्रतापूर्वक।
सुत-संज्ञा पुं० [सं०] पुत्र। बेटा। लड़का।
वि० १. पार्थिव। २. उत्पन्न। जात।

सुतनु-वि० [सं०] सुंदर शरीरवाला।
संज्ञा स्त्री० सुंदर शरीरवाली स्त्री। कृशांगी।
सुतर*†-संज्ञा पुं० दे० "शुतुर"।
सुतरनाल-संज्ञा स्त्री० दे० "शुतुरनाल"।
सुतरां-अव्य० [सं० सुतराम्] १. अतः। इसलिये। २. और भी। कि बहुना।
सुतरी†-संज्ञा स्त्री० [हिं० तुरही] तुरही।
संज्ञा स्त्री० दे० "सुतली"।
सुतल-संज्ञा पुं० [सं०] सात पाताल लोकों में से एक लोक।
सुतली-संज्ञा स्त्री० [हिं० सूत+ली (प्रत्य०)] रस्सी। डोरी। सुतरी।
सुतवाना†-क्रि० स० दे० "सुलवाना"।
सुतहर, सुतहार†-संज्ञा पुं० दे० "सुतार"।
सुता-संज्ञा स्त्री० [सं०] कन्या। पुत्री। बेटी।
सुतार-संज्ञा पुं० [सं० सूत्रकार] १ बढ़ई। २ शिल्पकार। कारीगर।
वि० [सं० सु+तार] अच्छा। उत्तम।
संज्ञा पुं० दे० "सुभीता"।
सुतारी-संज्ञा स्त्री० [सं० सूत्रकार] १ मोचियों का सूआ जिससे वे जूता सीते हैं। २ सुतार या बढ़ई का काम।
संज्ञा पुं० [हिं० सुतार] शिल्पकार। कारीगर।
सुतिन*-संज्ञा स्त्री० [सं० सुतनु] रूपवती स्त्री
सुतिहार†-संज्ञा पुं० दे० "सुतार"।
सुतीक्ष्ण-संज्ञा पुं० [सं०] अगस्त्य मुनि के भाई जो वनवास में श्रीरामचंद्र से मिले थे।
सुतीच्छन*-संज्ञा पुं० दे० "सुतीक्ष्ण"।
सुतुही†-संज्ञा स्त्री० [सं० शुक्ति] १. सीपी, जिससे छोटे बच्चों को दूध पिलाते हैं। २. वह सीप जिससे अचार के लिये कच्चा आम छीला जाता है। सीपी।
सुतून-संज्ञा पुं० [फा०] खंभा। स्तंभ।
सुत्रामा-संज्ञा पुं० [सं० सुत्रामन्] इंद्र।
सुथना-संज्ञा पुं० दे० "सूथन"।
सुथनी-संज्ञा स्त्री० [देश०] १ स्त्रियों के पहनने का एक प्रकार का ढीला पायजामा। सूथन। २ पिंडालू। रतालू।
सुथरा-वि० [सं० स्वच्छ] [स्त्री० सुथरी] स्वच्छ। निर्मल। साफ।
सुथराई-संज्ञा स्त्री० [हिं० सुथरा] सुथरापन।
सुथरापन-संज्ञा पुं० [हिं० सुथरा+पन (प्रत्य०)] स्वच्छता। निर्मलता। सफाई।
सुथरेशाही-संज्ञा पुं० [सुथराशाह (महात्मा)] १. गुरु नानक के शिष्य सुथराशाह का चलाया संप्रदाय। २ इस संप्रदाय के अनुयायी।
सुदंती-वि० [सं०] सुंदर दाँतोंवाली स्त्री।
सुदर्शन-संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु भगवान् के चक्र का नाम। २ शिव। ३ सुमेरु।
वि० जो देखने में सुंदर हो। मनोरम।
सुदामा-संज्ञा पुं० [सं० सुदामन्] एक दरिद्र ब्राह्मण जो श्रीकृष्ण का सखा था और जिसे पीछे श्रीकृष्ण ने ऐश्वर्यवान् बना दिया था।
सुदावन-संज्ञा पुं० दे० "सुदामा"।
सुदास-संज्ञा पुं० [सं०] १. दिवोदास का पुत्र। २ एक प्राचीन जनपद।
सुदि-संज्ञा स्त्री० दे० "सुदी"।
सुदिन-संज्ञा पुं० [सं० सु+दिन] शुभ दिन।
सुदी-संज्ञा स्त्री० [सं० शुक्ल या शुद्ध] किसी मास का उजाला पक्ष। शुक्ल पक्ष।
सुदीपति*-संज्ञा स्त्री० दे० "सुदीप्ति"।
सुदीप्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] बहुत अधिक प्रकाश। खूब उजाला।
सुदूर-वि० [सं०] बहुत दूर। अति दूर।
सुदृढ़-वि० [सं०] बहुत दृढ़। खूब मजबूत।
सुदेव-संज्ञा पुं० [सं०] देवता।
सुदेश-संज्ञा पुं० [सं०] १. सुंदर देश। उत्तम देश। २ उपयुक्त स्थान।
वि० सुंदर। खूबसूरत।
सुदेह-वि० [सं०] सुंदर। कमनीय।
सुद्दा-संज्ञा स्त्री० [अ० सुद्द.] पेट का जमा हुआ सूखा मल।
सुद्ध*-वि० दे० "शुद्ध"।
सुद्धाँ†-अव्य० [सं० सह] सहित। समेत।
सुद्धि-संज्ञा स्त्री० दे० "सुध"।
सुधंग-संज्ञा पुं० [हिं० सु+ढंग?] अच्छा ढंग।
सुध-संज्ञा स्त्री० [सं० शुद्ध (बुद्धि)] १ स्मृति। स्मरण। याद। चेत।

मुहा०—सुध दिलाना = याद दिलाना। सुध न रहना = भूल जाना। याद न रहना। सुध विसरना = भूल जाना। सुध विसराना या विसारना = किसी को भूल जाना। सुध भूलना = दे० "सुध विसरना"।
२. चेतना। होश।
यौ०—सुध-बुध = होश-हवास।
मुहा०—सुध विसरना = होश में न रहना। सुध विसारना = अचेत करना।
३. खबर। पता।
वि० दे० "शुद्ध"।
संज्ञा स्त्री० दे० "सुधा"।
सुधन्वा–संज्ञा पुं० [सं० सुधन्वन्] १. अच्छा धनुर्धर। २. विष्णु। ३. विश्वकर्मा। ४. आंगिरस।
सुधमना*†–वि० [हिं० सुध + होश = मन] [स्त्री० सुधमनी] जिसे होश हो। सचेत।
सुधरना–क्रि० अ० [सं० शोधन] विगड़े हुए का बनना। संशोधन होना।
सुधराई–संज्ञा स्त्री० [हिं० सुधरना] १. सुधरने की क्रिया। सुधार। २. सुधारने की मजदूरी।
सुधर्म–संज्ञा पुं० [सं०] उत्तम धर्म। पुण्य कर्त्तव्य।
सुधर्मी–वि० [सं० सुधर्मिन्] धर्मनिष्ठ।
सुधवाना–क्रि० स० [हिं० सुधरना का प्रेर० रूप] दोष या त्रुटि दूर कराना। शोधन कराना। दुरुस्त कराना।
सुधाँ–अव्य० दे० "सुद्धाँ"।
सुधांग–संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।
सुधांशु–संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।
सुधा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अमृत। पीयूष। २. मकरंद। ३. गंगा। ४. जल। ५. दूध। ६. रस। अर्क। ७. पृथ्वी। धरती। ८. विष। जहर। ९. एक प्रकार का वृत्त।
सुधाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० सूधा=सीधा] सीधापन। सिधाई। सरलता।
सुधाकर–संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।
सुधागेह–संज्ञा पुं० [सं० सुधा + हिं० गेह] चंद्रमा।
सुधाघट–संज्ञा पुं० [सं० सुधा + घट] चंद्रमा।
सुधाधर–संज्ञा पुं० [सं० सुधा+धर] चंद्रमा। वि० [सं० सुधा + अधर] जिसके अधरों में अमृत हो।
सुधाधाम–संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।
सुधाधार–संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।
सुधाधी–वि० [सं० सुधा] सुधा के समान।
सुधाना*–क्रि० स० [हिं० सुध] सुध कराना। स्मरण कराना। याद दिलाना।
क्रि० स० १. शोधने का काम दूसरे से कराना। दुरुस्त कराना। २. (लग्न या कुंडली आदि) ठीक कराना।
सुधानिधि–संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा। २. समुद्र। ३. दंडक वृत्त का एक भेद। इसमें १६ बार क्रम से गुरु लघु आते हैं।
सुधापाणि–संज्ञा पुं० [सं०] धन्वंतरि।
सुधार–संज्ञा पुं० [हिं० सुधरना] सुधरने की क्रिया या भाव। संशोधन। संस्कार।
सुधारक–संज्ञा पुं० [हिं० सुधार+क (प्रत्य०)] १. वह जो दोषों या त्रुटियों का सुधार करता हो। संशोधक। २. वह जो धार्मिक, या सामाजिक सुधार के लिये प्रयत्न करता हो।
सुधारना–क्रि० स० [हिं० सुधरना] दोष या बुराई दूर करना। संशोधन करना। वि० [स्त्री० सुधारनी] सुधारनेवाला।
सुधारा–वि० [हिं० सूधा] सीधा। निष्कपट।
सुधास्रवा–संज्ञा पुं० [सं० सुधा + स्रवण] अमृत बरसानेवाला।
सुधासदन–संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।
सुधि–संज्ञा स्त्री० दे० "सुध"।
सुधी–संज्ञा पुं० [सं०] विद्वान्। पंडित। वि० १. बुद्धिमान्। चतुर। २. धार्मिक।
सुनंदिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में स ज स ज ग रहते हैं। प्रबोधिता। मंजुभाषिणी।
सुनकिरवा–संज्ञा पुं० [हिं० सोना + किरवा= कीड़ा] एक प्रकार का कीड़ा जिसके पर पन्ने के रंग के होते हैं।
सुन-गुन–संज्ञा स्त्री० [हिं० सुनना+अनु० गुन] १. भेद। टोह। सुराग। २. कानाफूसी।

सुनत, सुनति*†–संज्ञा स्त्री० दे० "सुन्नत"।
सुनना–क्रि० स० [स० श्रवण] १ कानों के द्वारा शब्द का ज्ञान प्राप्त करना। श्रवण करना।
मुहा०—सुनी अनसुनी कर देना=कोई बात सुनकर भी उस पर ध्यान न देना।
२ किसी के वचन पर ध्यान देना। ३ भली बुरी बातें श्रवण करना।
सुनहरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० सुन्न+बहरी ?] फीलपा। (रोग)
सुनय–संज्ञा पु० [स०] सुनीति। उत्तम नीति।
सुनवाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० सुनना+वाई(प्रत्य०)] १ सुनने की क्रिया या भाव। २ मुकदमे या शिकायत आदि का सुना जाना।
सुनवैया–वि० [हिं० सुनना+वैया (प्रत्य०)] १ सुननेवाला। २ सुनानेवाला।
सुनसान–वि० [स० शून्य + स्थान] १ जहाँ कोई न हो। खाली। निर्जन। जनहीन। २ उजाड़। वीरान।
संज्ञा पु० सन्नाटा।
सुनहरा–वि० दे० "सुनहला"।
सुनहला–वि० [हिं० सोना+हला (प्रत्य०)] [स्त्री० सुनहली] सोने के रंग का।
सुनाई–संज्ञा स्त्री० दे० सुनवाई।
सुनाना–क्रि० स० [हिं० सुनना का प्रर०)] १ दूसरे को सुनने में प्रवृत्त करना। श्रवण कराना। २ खरी खोटी कहना।
सुनाम–संज्ञा पु० [स०] यश। कीर्त्ति।
सुनार–संज्ञा पु० [स० स्वर्णकार] [स्त्री० सुनारिन, सुनारी] सोने चाँदी के गहने आदि बनानेवाली जाति। स्वर्णकार।
सुनारी–संज्ञा स्त्री० [हिं० सुनार+ई(प्रत्य०)] १ सुनार का काम। २ सुनार की स्त्री।
सुनावनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० सुनना+आवनी (प्रत्य०)] १ कहीं विदेश से किसी संबंधी आदि की मृत्यु का समाचार आना। २ वह स्नान आदि कृत्य जो ऐसा समाचार आने पर होता है।
सुनाहक*–क्रि० वि० दे० "नाहक"।
सुनीति–संज्ञा स्त्री० [स०] १ उत्तम नीति। २ उत्तानपाद की पत्नी और ध्रुव की माता।
सुनैया–वि० [हिं० सुनना+ऐया (प्रत्य०)] सुननेवाला।
सुनौची–संज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का घोड़ा
सुन्न–वि० [स० शून्य] निर्जीव। स्पंदन-हीन। निःस्तब्ध। निश्चेष्ट।
संज्ञा पु० शून्य। सिफर।
सुन्नत–संज्ञा स्त्री० [अ०] मुसलमानों की एक रस्म जिसमें लड़के की लिंगेन्द्रिय के अगले भाग का चमड़ा काट दिया जाता है। खतना। मुसलमानी।
सुन्ना–संज्ञा पु० [स० शून्य] बिंदी। सिफर
सुन्नी–संज्ञा पु० [अ०] मुसलमानों का एक भेद जो चारों खलीफाओं को प्रधान मानता है। चारयारी।
सुपक्व–वि० [स०] अच्छी तरह पका हुआ।
सुपच–संज्ञा पु० [स० श्वपच] चांडाल। डोम।
सुपत–वि० [स० सु + हिं० पत = प्रतिष्ठा] प्रतिष्ठायुक्त।
सुपत्थ–संज्ञा पु० दे० "सुपथ"।
सुपथ–संज्ञा पु० [स०] १ उत्तम पथ। अच्छा रास्ता। सदाचरण। २ एक वृत्त जो एक रगण, एक नगण, एक भगण और दो गुरु का होता है।
वि० [स० सु + पथ] समतल। हमवार।
सुपन, सुपना–संज्ञा पु० दे० "स्वप्न"।
सुपनाना*–क्रि० स० [हिं० सुपना] स्वप्न दिखाना।
सुपरस*–संज्ञा पु० दे० "स्पर्श"।
सुपर्ण–संज्ञा पु० [स०] १ गरुड़। २ पक्षी। चिड़िया। ३ किरण। ४ विष्णु। ५ घोड़ा। अश्व।
सुपर्णी–संज्ञा स्त्री० [स०] १ गरुड़ की माता। सुपर्णा। २ कमलिनी। पद्मिनी।
सुपात्र–संज्ञा पु० [स०] वह जो किसी काम के लिये योग्य या उपयुक्त हो। अच्छा पात्र।
सुपारी–संज्ञा स्त्री० [स० सुप्रिय] नारियल की जाति का एक पेड़। इसके फल टुकड़े करके पान के साथ खाए जाते हैं। पूग। गुवाक।
मुहा०—सुपारी लगना=खाने में सुपारी का

कलेजे में अटकना जो कष्टप्रद होता है।

सुपार्श्व–संज्ञा पुं० [सं०] जैनियों के २४ तीर्थंकरों में से सातवें तीर्थंकर।

सुपास–संज्ञा पुं० [देश०] सुख। आराम।

सुपासी–वि० [हिं० सुपास] सुख देनेवाला।

सुपुर्द–संज्ञा पुं० दे० "सपुर्द"।

सुपूत–संज्ञा पुं० दे० "सपूत"।

सुपूती–संज्ञा स्त्री० [हिं० सुपूत + ई (प्रत्य०)] सुपूत होने का भाव। सुपूत-पन।

सुपेती*†–संज्ञा स्त्री० दे० "सफ़ेदी"।

सुपेद†–वि० दे० "सफ़ेद"।

सुपेदी*†–संज्ञा स्त्री०[फ़ा० सफ़ेदी] १.सफ़ेदी। उज्ज्वलता। २. ओढ़ने की रजाई। ३. बिछाने की तोशक। ४. बिछौना। बिस्तर।

सुपेली–संज्ञा स्त्री० [हिं० सूप] छोटा सूप।

सुप्त–वि० [सं०] १. सोया हुआ। निद्रित। २. ठिठुरा हुआ। ३. बंद। मुँदा हुआ।

सुप्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. निद्रा। नींद। २. निंदास। उँघाई।

सुप्रज्ञ–वि० [सं०] बहुत बुद्धिमान्।

सुप्रतिष्ठ–वि० [सं०] १. उत्तम प्रतिष्ठा-वाला। २. बहुत प्रसिद्ध। मशहूर।

सुप्रतिष्ठा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में पाँच वर्ण होते हैं। २. प्रसिद्धि। शोहरत।

सुप्रतिष्ठित–वि० [सं०] उत्तम रूप से प्रतिष्ठित। विशेष माननीय।

सुप्रसिद्ध–वि० [सं०] बहुत प्रसिद्ध। सुविख्यात। बहुत मशहूर।

सुप्रिया–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की चौपाई जिसमें अंतिम वर्ण के अतिरिक्त और सब वर्ण लघु होते हैं।

सुफल–संज्ञा पुं० [सं०] १. सुंदर फल। २. अच्छा परिणाम।

र फलवाला। (अस्त्र) २.

कार्य्य। कृतार्थ। कामयाब।

० [सं०] १. शिवजी। २.

राजा और शकुनि का पिता।

बलवान्। बहुत मजबूत।

सुबह–संज्ञा स्त्री० [अ०] प्रातःकाल। सबेरा।

सुबहान–संज्ञा पुं० [अ०] पवित्र। शुद्ध।

सुबहान अल्ला–अव्य० [अ०] अरबी का एक पद जिसका प्रयोग किसी बात पर हर्ष या आश्चर्य होने पर होता है।

सुबास–संज्ञा स्त्री० [सं० सु+बास] अच्छी महक। सुगंध।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का धान।

सुबासना–संज्ञा स्त्री० [सं० सु+बास] सुगंध। खुशबू।

क्रि० स० सुगंधित करना। महकाना।

सुबासिक–वि० [सं० सु+बास] सुगंधित।

सुबाहु–संज्ञा पुं० [सं०] १. धृतराष्ट्र का पुत्र और चेदि का राजा। २. सेना। फ़ौज।

वि० दृढ़ या सुंदर बाँहोंवाला।

सुबिस्ता, सुबीता–संज्ञा पुं० दे० "सुभीता"।

सुबुक–वि० [फ़ा०] १. हलका। भारी का उलटा। २. सुंदर। खूबसूरत।

संज्ञा पुं० घोड़े की एक जाति।

सुबुद्धि–वि० [सं०] बुद्धिमान्।

संज्ञा स्त्री० उत्तम बुद्धि। अच्छी अक्ल।

सुबू–संज्ञा पुं० दे० "सुबह"।

सुबूत–संज्ञा पुं० दे० "सबूत"।

संज्ञा पुं० [अ०] वह जिससे कोई बात साबित हो। प्रमाण।

सुबोध–वि० [सं०] १. अच्छी बुद्धिवाला। २. जो कोई बात सहज में समझ सके।

सुब्रह्मण्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव। २. विष्णु। ३. दक्षिण का एक प्राचीन प्रांत।

सुभ*–वि० दे० "शुभ"।

सुभग–वि० [सं०] [भाव० संज्ञा सुभगता] १. सुंदर। मनोहर। २. भाग्यवान्। खुश-किस्मत। ३. प्रिय। प्रियतम। ४. सुखद।

सुभगा–वि० [स्त्री०] १. सुंदरी। खूबसूरत (स्त्री)। २. (स्त्री) सौभाग्यवती। सुहागिन।

संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह स्त्री जो अपने पति को प्रिय हो। २. पाँच वर्ष की कुमारी।

सुभग्ग–वि० दे० "सुभग"।

सुभट–संज्ञा पुं० [सं०] भारी योद्धा।

सुभटयंत–वि० [स० सुभट] अच्छा योद्धा।
सुभद्र–सज्ञा पु० [स०] १ विष्णु। २ सनत्-कुमार। ३ श्रीकृष्ण के एक पुत्र। ४ सौभाग्य। ५ कल्याण। मगल।
वि० १ भाग्यवान्। २ सज्जन।
सुभद्रा–सज्ञा स्त्री० [स०] १ श्रीकृष्ण की बहन और अर्जुन की पत्नी। २ दुर्गा।
सुभद्रिका–सज्ञा स्त्री० [स०] एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में न न र ल ग होता है।
सुभर*–वि० दे० 'शुभ्र"।
सुभा–सज्ञा स्त्री० [स० शुभा] १ सुधा। २ शोभा। ३ पर-नारी। ४ हरीतकी। हड।
सुभाइ, सुभाउ*†–सज्ञा पु० दे० स्वभाव'।
क्रि० वि० सहज भाव से। स्वभावत ।
सुभाग*‡–सज्ञा पु० दे० "सौभाग्य ।
सुभागी–वि० [स० सुभाग] भाग्यवान्।
सुभागीन–सज्ञा पु० [स० सौभाग्य] [स्त्री० सुभागिनी] भाग्यवान्। सुभग।
सुभान–अव्य० दे० सुबहान ।
सुभाना*†–क्रि० अ० [हि० शोभना] शोभित होना। देखने म भला जान पडना।
सुभाय*†–सज्ञा पु० दे० स्वभाव ।
सुभायक*–वि० दे० "स्वाभाविक ।
सुभाव*†–सज्ञा पु० दे० स्वभाव ।
सुभाषित–वि० [स०] सुदर रूप से कहा हुआ। अच्छी तरह कहा हुआ।
सुभाषी–वि० [स० सुभाषिन्] [स्त्री० सुभाषिणी] उत्तम रूप से बोलनेवाला। मिष्टभाषी।
सुभिक्ष–सज्ञा पु० [स०] एसा समय जिसम अन्न खूब हो। सुकाल।
सुभी–वि० स्त्री० [स० शुभ] शुभकारक।
सुभीता–सज्ञा पु० [देश०] १ सुगमता। सहूलियत। २ सुअवसर। सुयोग।
सुभौटी*†–सज्ञा स्त्री० [स० शोभा] शोभा।
सुभ्र–वि० दे० 'शुभ्र'।
सुमगली–सज्ञा स्त्री० [स० सुमगल] विवाह में सप्तपदी पूजा के बाद पुरोहित को दी जानेवाली दक्षिणा।
सुमंत–सज्ञा पु० दे० "सुमत्र"।
सुमत्र–सज्ञा पु० [स०] राजा दशरथ का मत्री और सारथि।
सुमथन–सज्ञा पु० दे० "मदर"। (पर्वत)
सुमदर–सज्ञा पु० [स०] २७ मात्राओ का एक वृत्त जिसके अत में गुरु लघु होते है। सरसी।
सुम–सज्ञा पु० [फा०] घोडे या दूसरे चौपाया के खुर। टाप।
सुमत–सज्ञा स्त्री० दे० "सुमति"।
सुमति–सज्ञा स्त्री० [स०] १ सगर की पत्नी। २ सुदर मति। सुबुद्धि। अच्छी बुद्धि। ३ मेल-जोल। ४ भक्ति। प्रार्थना।
वि० अच्छी बुद्धिवाला। बुद्धिमान्।
सुमन–सज्ञा पु० [स० सुमनस्] १ देवता। २ पडित। विद्वान्। ३ पुष्प। फल।
वि० १ सहृदय। दयालु। २ सुदर।
सुमनचाप–सज्ञा पु० [स०] कामदेव।
सुमनस–सज्ञा पु० [स० सुमनस्] १ देवता। २ पुष्प। फूल।
वि० प्रसन्न चित्त।
सुमनित–वि० [स० सुमणि + त(प्रत्य०)] उत्तम मणियो से जडा हुआ।
सुमरन*–सज्ञा पु० दे० 'स्मरण ।
सुमरना*†–क्रि० स० [स० स्मरण] १ स्मरण करना। ध्यान करना। २ जपना।
सुमरनी–सज्ञा स्त्री० [हि० सुमरना] नाम जपने की सत्ताइस दानो की छोटी माला।
सुमानिका–सज्ञा स्त्री० [स०] सात अक्षरो का एक वृत्त।
सुमार्ग–सज्ञा पु० [स०] उत्तम मार्ग। अच्छा रास्ता। सुपथ। सन्मार्ग।
सुमालिनी–सज्ञा स्त्री० [स०] एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण म छ वर्ण होने है।
सुमाली–सज्ञा पु० [स० सुमालिन्] एक राक्षस, जिसकी कन्या कैकसी के गर्भ से रावण, कुभकर्ण, शूर्पणखा और विभीषण हुए थे।
सुमित्रा–सज्ञा स्त्री० [स०] दशरथ की एक

पत्नी जो लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न की माता थीं।
सुमित्रानंदन–संज्ञा पुं० [सं०] लक्ष्मण और शत्रुघ्न।
सुमिरण*–संज्ञा पुं० दे० "स्मरण"।
सुमिरना*†–क्रि० स० दे० "सुमरना"।
सुमिरनी–संज्ञा स्त्री० दे० "सुमरनी"।
सुमुख–संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव। २. गणेश। ३. पंडित। आचार्य।
वि० १. सुंदर मुखवाला। २. सुंदर। मनोहर। ३. प्रसन्न। ४. कृपालु।
सुमुखी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सुंदर मुखवाली स्त्री। २. दर्पण। आइना। ३. एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे ११ अक्षर होते है।
सुमृत, सुमृति*–संज्ञा स्त्री० दे० "स्मृति"।
सुमेध–वि० दे० "सुमेधा"।
सुमेधा–वि० [सं० सुमेधस्] बुद्धिमान्।
सुमेर–संज्ञा पु०[सं० सुमेरु] सुमेरु पर्वत।
सुमेरु–संज्ञा पु० [सं०] १. एक पुराणोक्त पर्वत जो सब पर्वतों का राजा और सोने का कहा गया है। २. शिवजी। ३. जप-माला के बीच का बड़ा और ऊपरवाला दाना। ४. उत्तर-ध्रुव। ५. एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में १७ मात्राएँ होती हैं।
वि० १. बहुत ऊँचा। २ सुंदर।
सुमेरुवृत्त–संज्ञा पु० [सं०] वह रेखा जो उत्तर ध्रुव से २३॥ अक्षांश पर स्थित है।
सुयश–संज्ञा पुं० [सं०] अच्छी कीर्ति। सुख्याति। सुकीर्ति। सनाम।
वि० [सं० सुयशस्] यशस्वी। कीर्तिमान्।
सुयोग–संज्ञा पु० [सं०] सुंदर योग। संयोग। सुअवसर। अच्छा मौका।
सुयोग्य–वि० [सं०] बहुत योग्य। लायक।
सुयोधन–संज्ञा पु० दे० "दुर्योधन"।
सुरंग–वि० [सं०] १. सुंदर रंग का। २. सुंदर। सुडौल। ३. रसपूर्ण। ४. लाल रंग का। ५. निर्मल। स्वच्छ। साफ़।
संज्ञा पुं० १. सिंगरफ। २. नारंगी। ३. रंग के अनुसार घोड़ों का एक भेद।
संज्ञा स्त्री० [सं० सुरंगा] १. जमीन या पहाड़ के नीचे खोदकर या बारूद से उड़ाकर बनाया हुआ रास्ता। २. किले या दीवार आदि के नीचे खोदकर बनाया हुआ वह रास्ता जिसमें बारूद भरकर और आग लगाकर क़िला या दीवार उड़ाते हैं। ३. एक प्रकार का आधुनिक यंत्र जिससे शत्रुओं के जहाज़ नष्ट किए जाते हैं। सेंध।
सुर–संज्ञा पुं० [सं०] १. देवता। २. सूर्य। ३. पंडित। विद्वान्। ४. मुनि। ऋषि।
संज्ञा पुं० [सं० स्वर] स्वर। ध्वनि।
मुहा०—सुर में सुर मिलाना=हाँ में हाँ मिलाना। चापलूसी करना।
सुरकंत*–संज्ञा पु० [सं० सुर + कान्त] इंद्र।
सुरक–संज्ञा पु० [सं० सुर] नाक पर का वह तिलक जो भाल की आकृति का होता है।
सुरकना–क्रि० स० [अनु०] हवा के साथ ऊपर की ओर धीरे धीरे खींचना।
सुरकरी–संज्ञा पुं० [सं० सुरकरिन्] देवताओं का हाथी। दिग्गज। सुरगज।
सुर-कुदाव*–संज्ञा पु० [सं० स्वर, सं० कु + हिं० दाँव=धोखा] धोखा देने के लिये स्वर बदलकर बोलना।
सुरकेतु–संज्ञा पु० [सं०] १. देवताओं या इंद्र की ध्वजा। २. इंद्र।
सुरक्षण–संज्ञा पु० [सं०] उत्तम रूप से रक्षा करना। रखवाली। हिफ़ाजत।
सुरक्षित–वि० [सं०] जिसकी भली भाँति रक्षा की गई हो। उत्तम रूप से रक्षित।
सुरख, सुरखा–वि० दे० "सुर्ख"।
सुरखाब–संज्ञा पुं० [फ़ा०] चकवा।
मुहा०—सुरखाब का पर लगना=विलक्षणता या विशेषता होना। अनोखापन होना।
सुरखी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सुर्ख] १. ईंटों का महीन चूरा जो इमारत बनाने के काम में आता है। २. दे० "सुर्खी"।
सुरखुरू–वि० दे० "सुर्खरू"।
सुरग*†–संज्ञा पु० दे० "स्वर्ग"।
सुरगिरि–संज्ञा पु० [सं०] सुमेरु।
सुरगुरु–संज्ञा पु० [सं०] बृहस्पति।

सुरगैया–संज्ञा स्त्री० दे० "कामधेनु"।
सुरचाप–संज्ञा पु० [सं०] इंद्रधनुष।
सुरज*†–संज्ञा पु० दे० "सूर्य"।
सुरजन–संज्ञा पु० [सं०] देव-समूह।
वि० १ सज्जन। सुजन। २ चतुर।
सुरझना–क्रि० अ० दे० "सुलझना"।
सुरझाना–क्रि० स० दे० "सुलझाना"।
सुरत–संज्ञा पु० [सं०] संभोग। मैथुन।
संज्ञा स्त्री० [सं० स्मृति] ध्यान। याद। सुध।
मुहा०—सुरत बिसारना = भूल जाना।
सुरतरंगिणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा।
सुरतरु–संज्ञा पु० [सं०] कल्पवृक्ष।
सुरता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सुर या देवता का भाव या कार्य। देवत्व। २ देव-समूह।
संज्ञा स्त्री० [हिं० सुरत] १ चिंता। ध्यान। २ चेत। सुध।
वि० सयाना। होशियार। चतुर।
सुरतान*–संज्ञा पु० दे० "सुलतान"।
सुरति–संज्ञा स्त्री० [सं० सु + रति] भोग-विलास। कामकेलि। संभोग।
संज्ञा स्त्री० [सं० स्मृति] स्मरण। सुधि।
संज्ञा स्त्री० दे० "सूरत"।
सुरतिगोपना–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जो रति-क्रीडा करके अपनी सखियों आदि से छिपाती हो।
सुरतिवंत–वि० [सं० सुरत + वान्] कामातुर।
सुरतिविचित्रा–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह मध्या जिसकी रति-क्रिया विचित्र हो।
सुरती–संज्ञा स्त्री० [सूरत (नगर)] तंबाकू के पत्तों का चूरा जो पान के साथ या योंही खाया जाता है। खैनी।
सुरत्राण–संज्ञा पु० दे० "सुरत्राता"।
सुरत्राता–संज्ञा पु० [सं० सुर + त्रातृ] १. विष्णु। २ श्रीकृष्ण। ३ इंद्र।
सुरथ–संज्ञा पु० [सं०] १ एक चंद्रवंशी राजा, पुराणों के अनुसार, जिन्होंने पहले-पहल दुर्गा की आराधना की थी। २ जयद्रथ के एक पुत्र का नाम। ३ एक पर्वत।
सुरदार–वि० [हिं० सुर+फा० दार] जिसके गले का स्वर सुंदर हो। सुस्वर। सुरीला।
सुरदीर्घिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] आकाश-गंगा।
सुरद्रुम–संज्ञा पु० [सं०] कल्पवृक्ष।
सुरधाम–संज्ञा पु० [सं० सुरधामन्] स्वर्ग।
सुरधुनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा।
सुरधेनु–संज्ञा स्त्री० [सं०] कामधेनु।
सुरनदी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गंगा। २ आकाश-गंगा।
सुरनारी–संज्ञा स्त्री० [सं०] देववधू।
सुरनाह–संज्ञा पु० [सं० सुरनाथ] इंद्र।
सुरनिलय–संज्ञा पु० [सं०] सुमेरु पर्वत।
सुरप*–संज्ञा पु० [सं० सुरपति] इंद्र।
सुरपति–संज्ञा पु० [सं०] १ इंद्र। २ विष्णु।
सुरपथ–संज्ञा पु० [सं०] आकाश।
सुरपाल–संज्ञा पु० [सं० सुर+पालक] इंद्र।
सुरपुर–संज्ञा पु० [सं०] स्वर्ग।
सुरबहार–संज्ञा पु० [हिं० सुर+फा० बहार] सितार की तरह का एक बाजा।
सुरबाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] देवांगना।
सुरबृच्छ*–संज्ञा पु० दे० "सुरवृक्ष"।
सुरबेल–संज्ञा स्त्री० [सं० सुर+वल्ली] कल्पलता।
सुरभंग–संज्ञा पु० [सं० स्वरभंग] प्रेम, भय आदि में होनेवाला स्वर का विपर्य्यास जो सात्विक भावों के अंतर्गत है।
सुरभवन–संज्ञा पु० [सं०] १ मंदिर। २ सुरपुरी। अमरावती।
सुरभान–संज्ञा पु० [सं० सुर + भानु] १ इंद्र। २ सूर्य्य।
सुरभि–संज्ञा पु० [सं०] १. वसंत-काल। २ चैत्र मास। ३ सोना। स्वर्ण।
संज्ञा स्त्री० १ पृथ्वी। २ गौ। ३ गायों की अधिष्ठात्री देवी तथा गो जाति की आदि जननी। ४ सुरा। शराब। ५ तुलसी। ६ सुगंधि। खुशबू।
वि० १ सुगंधित। सुवासित। २ मनोरम। सुंदर। ३ उत्तम। श्रेष्ठ।
सुरभित–वि० [सं०] सुगंधित।
सुरभी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सुगंधित।

खुशबू। २. गाय। ३. चंदन।
सुरभीपुर—संज्ञा पुं० [सं०] गोलोक।
सुरभूप—संज्ञा पुं० [सं०] १. इंद्र। २. विष्णु।
सुरभोग—संज्ञा पुं० [सं०] अमृत।
सुरभौन*—संज्ञा पुं० दे० "सुरभवन"।
सुरमंडल—संज्ञा पुं० [सं०] १. देवताओं का मंडल। २. एक प्रकार का बाजा।
सुरमई—वि० [फ़ा०] सुरमे के रंग का। हलका नीला।
संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का हलका नीला रंग। २. इस रंग में रँगा हुआ कपड़ा।
सुरमचू—संज्ञा पुं० [फ़ा०सुरमः + चू (प्रत्य०)] सुरमा लगाने की सलाई।
सुरमणि—संज्ञा पुं० [सं०] चिंतामणि।
सुरमा—संज्ञा पुं० [फ़ा० सुरमः] नीले रंग का एक प्रसिद्ध खनिज पदार्थ जिसका महीन चूर्ण स्त्रियाँ आँखों में लगाती हैं।
सुरमादानी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सुरमः + दान (प्रत्य०)] वह शीशीनुमा पात्र जिसमें सुरमा रखते हैं।
सुरमै*—वि० दे० "सुरमई"।
सुरमौर—संज्ञा पुं० [सं० सुर + हिं० मौर] विष्णु।
सुरम्य—वि० [सं०] अत्यंत मनोरम। सुंदर।
सुरराई*—संज्ञा पुं० दे० "सुरराज"।
सुरराज—संज्ञा पुं० [सं०] १. इंद्र। २. विष्णु।
सुरराय*—संज्ञा पुं० दे० "सुरराज"।
सुररिपु—संज्ञा पुं० [सं०] असुर। राक्षस।
सुररूख—संज्ञा पुं० दे० "सुरतरु"।
सुररली—संज्ञा स्त्री० [सं० सु + हिं० रली] सुंदर क्रीड़ा।
सुरलोक—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग।
सुरवधू—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवांगना।
सुरवृक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] कल्पतरु।
सुरश्रेष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] १ देवताओं में श्रेष्ठ। २. विष्णु। ३. शिव। ४. इंद्र।
सुरस—वि० [सं०] १. सरस। रसीला। २. स्वादिष्ट। मधुर। ३. सुंदर।
सुरसती*†—संज्ञा स्त्री० दे० "सरस्वती"।
सुरसदन—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग।
सुरसर—संज्ञा पुं० [सं०] मानसरोवर।
संज्ञा स्त्री० दे० "सुरसरि"।
सुरसरसुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सरयू नदी।
सुरसरि, सुरसरी—संज्ञा स्त्री० [सं०सुरसरित] १. गंगा। २. गोदावरी।
सुरसरिता—संज्ञा स्त्री० दे० "गंगा"।
सुरसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रसिद्ध नागमाता जिसने हनुमानजी को समुद्र पार करने के समय रोका था। २. एक अप्सरा। ३. तुलसी। ४. ब्राह्मी। ५. दुर्गा। ६. एक वृत्त का नाम।
सुरसाईं—संज्ञा पुं० [सं० सुर + हिं० साईं] १. इंद्र। २. शिव।
सुरसारी*—संज्ञा स्त्री० दे० "सुरसरी"।
सुरसालु*—वि० [सं० सुर हिं० सालना] देवताओं को सतानेवाला।
सुरसाहब—संज्ञा पुं० [सं० सुर + फ़ा० साहब] देवताओं के स्वामी।
सुरसुंदरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अप्सरा। २. दुर्गा। ३. देवकन्या। ४. एक योगिनी।
सुरसुरभी—संज्ञा स्त्री० [सं०] कामधेनु।
सुरसुराना—क्रि० अ० [अनु०] [भाव० सुरसुराहट, सुरसुरी] १. कीड़ों आदि का रेंगना। २. खुजली होना।
सुरसैयाँ*—संज्ञा पुं० [सं० सुर + हिं० सैयाँ] इंद्र।
सुरस्वामी—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।
सुरहरा—वि० [अनु०] जिसमें सुरसुर शब्द हो। सुरसुर शब्द से युक्त।
सुरही†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोलह] १. एक प्रकार की सोलह चित्ती कौड़ियाँ जिनसे जुआ खेलते हैं। २. इन कौड़ियों से होनेवाला जुआ।
सुरांगना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. देवपत्नी। देवांगना। २. अप्सरा।
सुरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] मदिरा। शराब।
सुराई*—संज्ञा स्त्री० [सं० शूर + आई(प्रत्य०)] शूरता। वीरता। बहादुरी।
सुराख—संज्ञा पुं० [फ़ा० सूराख]

संज्ञा पु० दे० "सुराग"।

सुराग–संज्ञा पु० [स० सु+राग] १ अत्यंत प्रेम। अत्यंत अनुराग। २ सुंदर राग। संज्ञा पु० [अ० सुराग] टोह। पता।

सुरागाय–संज्ञा स्त्री० [स० सुर+गाय] एक प्रकार की दो नस्ली गाय जिसकी पूछ से चँवर बनता है।

सुराज–संज्ञा पु० १. दे० "सुराज्य"। २ दे० "स्वराज्य"।

सुराज्य–संज्ञा पु० [स०] वह राज्य या शासन जिसमें सुख और शांति विराजती हो। संज्ञा पु० दे० "स्वराज्य"।

सुराधिप–संज्ञा पु० [स०] इंद्र।

सुरानीक–संज्ञा पु० [स०] देवताओं की सेना।

सुरापगा–संज्ञा स्त्री० [स०] गगा।

सुरापान–संज्ञा पु० [स०] शराब पीना।

सुरापात्र–संज्ञा पु० [स०] मदिरा रखने या पीने का पात्र।

सुरारि–संज्ञा पु० [स०] राक्षस। असुर।

सुरालय–संज्ञा पु० [स०] १ स्वर्ग। २ सुमेरु। ३ देवमंदिर। ४ शराबखाना।

सुरावती–संज्ञा स्त्री० [स० सुरावनि] कश्यप की पत्नी और देवताओं की माता, अदिति।

सुराष्ट्र–संज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन देश। किसी के मत से यह सूरत और किसी के मत से काठियावाड है।

सुरासुर–संज्ञा पु० [स०] सुर और असुर। देवता और दानव।

सुरासुरगुरु–संज्ञा पु० [स०] १ शिव। २ कश्यप।

सुराही–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ जल रखने का एक प्रकार का प्रसिद्ध पात्र। २ बाजू, जोशन आदि म घुडी के ऊपर लगनेवाला सुराही के आकार का छोटा टुकडा।

सुराहीदार–वि० [अ० सुराही + फा० दार] सुराही की तरह का गोल और लबोतरा।

सुरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] देवांगना।

सुरीला–वि० [हिं० सुर + ईला (प्रत्य०)] [स्त्री सुरीली] मीठे सुरवाला। सुस्वर। सुकंठ।

सुरुख–वि० [स० सु + फा० रुख] अनुकूल। सदय। प्रसन्न। वि० दे० "सुर्ख"।

सुरुखरू–वि० [फा० सुर्खरू] जिसे किसी काम में यश मिला हो। यशस्वी।

सुरुचि–संज्ञा स्त्री० [स०] १ राजा उत्तानपाद की एक पत्नी जो उत्तम की माता और ध्रुव की विमाता थी। २ उत्तम रुचि। वि० जिसकी रुचि उत्तम हो।

सुरुज*‡–संज्ञा पु० दे० "सूर्य"।

सुरुजमुखी†–संज्ञा पु० दे० "सूर्यमुखी"।

सुरूप–वि० [स०] [स्त्री० सुरूपा] सुंदर रूपवाला। खूबसूरत। संज्ञा पु० कुछ विशिष्ट देवता और व्यक्ति। यथा कामदेव, दोनों अश्विनीकुमार, नकुल, पुरूरवा, नलकूबर और साब। *संज्ञा पु० दे० "स्वरूप"।

सुरूपता–संज्ञा स्त्री० [स०] सुंदरता।

सुरूपा–वि० स्त्री० [स०] सुंदरी।

सुरेंद्र–संज्ञा पु० [स०] १ इंद्र। २ राजा।

सुरेंद्रचाप–संज्ञा पु० [स०] इंद्रधनुष।

सुरेंद्रवज्रा–संज्ञा स्त्री० [स०] एक वर्णवृत्त जिसमे दो तगण, एक जगण और दो गुरु होते हैं। इंद्रवज्रा।

सुरेय–संज्ञा पु० [?] सूँस। शिशुमार।

सुरेश–संज्ञा पु० [स०] १ इंद्र। २ शिव। ३ विष्णु। ४ कृष्ण। ५ लोकपाल।

सुरेश्वर–संज्ञा पु० [स०] १ इंद्र। २ ब्रह्मा। ३ शिव। ४ रुद्र।

सुरेश्वरी–संज्ञा स्त्री० [स०] १ दुर्गा। २ लक्ष्मी। ३ स्वर्ग-गंगा।

सुरैत–संज्ञा स्त्री० [स० सुरति] उपपत्नी। रखनी। रखेली। सुरैतिन।

सुरैतिन–संज्ञा स्त्री० दे० "सुरैत"।

सुरोचि–वि० [स० सुरुचि] सुंदर।

सुर्ख–वि० [फा०] रक्त वर्ण का। लाल। संज्ञा पु० गहरा लाल रंग।

सुर्खरू–वि० [फा०] [भाव० सुर्खरूई] १ तेजस्वी। कांतिवान्। २ प्रतिष्ठित। ३ सफलता प्राप्त करने के कारण जिसके मुँह की लाली रह गई हो।

सुर्खी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. लाली। अरुणता। २. लेख आदि का शीर्षक। ३. रक्त। लहू। खून। ४. दे० "सुरखी"।
सुर्ती–वि० [हिं०सुरति=स्मृति] समझदार। होशियार। बुद्धिमान्।
सुलंक–संज्ञा पुं० दे० "सोलंक"।
सुलंकी–संज्ञा पुं० दे० "सोलंकी"।
सुलक्षण–वि० [सं०] १. अच्छे लक्षणोंवाला। २. भाग्यवान्। क़िस्मतवर।
संज्ञा पुं० १. शुभ लक्षण। शुभ चिह्न। २. १४ मात्राओं का एक छंद जिसमें सात मात्राओं के बाद एक गुरु, एक लघु और तब विराम होता है।
सुलक्षणा–वि० स्त्री० [सं०] अच्छे लक्षणोंवाली।
सुलक्षणी–वि० स्त्री० दे० "सुलक्षणा"।
सुलग–अव्य० [हिं० सु+लगना] पास। निकट।
सुलगना–क्रि० अ० [सं० सु+हिं० लगना] १. (लकड़ी आदि का) जलना। दहकना। २. बहुत संताप होना।
सुलगाना–क्रि० स० [हिं० सुलगना का स० रूप] १. जलाना। प्रज्वलित करना। २. दुःखी करना।
सुलच्छन–वि० दे० "सुलक्षण"।
सुलच्छनी–वि० दे० "सुलक्षणा"।
सुलछ–वि० [सं० सुलक्ष] सुंदर।
सुलझन–संज्ञा स्त्री० [हिं० सुलझना] सुलझने की क्रिया या भाव। सुलझाव।
सुलझना–क्रि० अ० [हिं० उलझना] १. उलझी हुई वस्तु की उलझन दूर होना या खुलना। २. जटिलताओं का दूर होना।
सुलझाना–क्रि० स० [हिं० सुलझना का स० रूप] उलझन या गुत्थी खोलना। जटिलताओं को दूर करना।
सुलझाव–संज्ञा पुं० दे० "सुलझन"।
सुलटा–वि० [हिं० उलटा] [स्त्री० सुलटी] सीधा। उलटा का विपरीत।
सुलतान–संज्ञा पुं० [फ़ा०] बादशाह।
सुलताना चंपा–संज्ञा पुं० [फ़ा० सुलतान+हिं० चंपा] एक प्रकार का पेड़। पुन्नाग।
सुलतानी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सुलतान] १. बादशाही। बादशाहत। राज्य। २. एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।
वि० लाल रंग का।
सुलप*–वि० दे० "स्वल्प"।
संज्ञा पुं० [सं० सु+आलाप] सुंदर आलाप।
सुलफ–वि० [सं० सु+हिं० लपना] १. लचीला। लचनेवाला। २. नाजुक। कोमल।
सुलफ़ा–संज्ञा पुं० [फ़ा० सुल्फ़ः] १. वह तमाकू जो चिलम में बिना तवा रखे भरकर पिया जाता है। २. चरस।
सुलफ़ेबाज़–वि० [हिं० सुलफ़ा+फ़ा० बाज़] गाँजा या चरस पीनेवाला।
सुलभ–वि० [सं०] [भाव० सुलभता, सुलभत्व] १. सहज में मिलनेवाला। २. सहज। सुगम। आसान। ३. साधारण। मामूली।
सुलह–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मेल। मिलाप। २. वह मेल जो किसी प्रकार की लड़ाई समाप्त होने पर हो।
सुलहनामा–संज्ञा पुं० [अ० सुलह+फ़ा० नामः] १. वह कागज जिस पर परस्पर लड़नेवाले राजाओं या राष्ट्रों की ओर से मेल की शर्तें लिखी रहती हैं। संधिपत्र। २. वह कागज जिस पर लड़नेवाले व्यक्तियों या दलों की ओर से समझौते की शर्तें लिखी रहती हैं।
सुलागना*†–क्रि० अ० दे० "सुलगना"।
सुलाना–क्रि० स० [हिं० सोना का प्रेर०] १. सोने में प्रवृत्त करना। शयन कराना। २. लिटाना। डाल देना।
सुलेखक–संज्ञा पुं० [सं०] अच्छा लेख या निबंध लिखनेवाला। लेखक।
सुलेमान–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. यहूदियों का एक प्रसिद्ध बादशाह जो पैगम्बर माना जाता है। २. एक पहाड़ जो बलोचिस्तान और पंजाब के बीच में है।
सुलेमानी–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. वह घोड़ा जिसकी आँखें सफ़ेद हों। २. एक प्रकार का दोरंगा पत्थर।

वि० सुलेमान का। सुलेमान-संबंधी।
सुलोचन–वि० [सं०], [स्त्री० सुलोचना] सुंदर आँखोंवाला। सुनेत्र। सुनयन।
सुलोचना–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक अप्सरा। २ राजा माधव की पत्नी। ३ मेघनाद की पत्नी।
सुलोचनी–वि० स्त्री० [सं० सुलोचना] सुंदर नेत्रोंवाली। जिसके नेत्र सुंदर हों।
सुल्तान–संज्ञा पु० दे० "सुल्तान"।
सुव–संज्ञा पु० दे० "सुअन"।
सुवक्ता–वि०[सं०सु + वक्तृ] उत्तम व्याख्यान देनेवाला। वाक्पटु। वाग्मी।
सुवचन–वि० [सं०] [स्त्री० सुवचनी] १ सुंदर बोलनेवाला। २ मिष्टभाषी।
सुवटा–संज्ञा पु० दे० "सुअटा"।
सुवन–संज्ञा पु० [सं०] १ सूर्य। २ अग्नि। ३ चद्रमा।
संज्ञा पु० १ दे० "सुअन"। २ दे० "सुमन"।
सुवनारा–संज्ञा पु० दे० "सुअन"।
सुवर्ण–संज्ञा पु० [सं०] १ सोना। स्वर्ण। २ धन। संपत्ति। ३ एक प्राचीन स्वर्ण-मुद्रा जो दस माशे की होती थी। ४ सोलह माशे का एक मान। ५ धतूरा। ६ एक वृत्त का नाम।
वि० १ सुंदर वर्ण या रंग का। उज्ज्वल। २ सोने के रंग का। पीला।
सुवर्णकरणी–संज्ञा स्त्री० [सं० सुवर्ण + करण] शरीर के वर्ण को सुंदर करनेवाली एक प्रकार की जड़ी।
सुवर्णरेखा–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक नदी जो बिहार के राँची जिले से निकलकर बंगाल की खाड़ी में गिरती है।
सुवस*–वि० [सं० स्व + वश] जो अपने वश या अधिकार में हो।
सुवांग†–संज्ञा पु० दे० "स्वाँग"।
... ‍संज्ञा पु० दे० "सुआ"।
सुवाना*†–क्रि० स० दे० "सुलाना"।
सुवार*†–संज्ञा पु० [सं० सूपकार] रसोइया।
संज्ञा पु० [सं० सु + वार] अच्छा दिन।
सुवाल*†–संज्ञा पु० दे० "सवाल"।
सुवास–संज्ञा पु० [सं०] १ सुगंध। अच्छी महक। खुशबू। २ सुंदर घर। ३ एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में न, ज, ल (।।।, ।ऽ।,।) होता है।
सुवासिका–वि० स्त्री० [सं० सुवासिक] सुवास करनेवाली। सुगंध करनेवाली।
सुवासित–वि० [सं०] खुशबूदार।
सुवासिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ युवावस्था में भी पिता के यहाँ रहनेवाली स्त्री। चिरंटी। २ सधवा स्त्री।
सुविचार–संज्ञा पु० [सं०] १ सूक्ष्म या उत्तम विचार। २ अच्छा फैसला। सुंदर न्याय।
सुविज्ञ–वि० [सं०] बहुत चतुर।
सुविधा–संज्ञा स्त्री० दे० "सुभीता"।
सुवृत्ती–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक अप्सरा का नाम। २ १९ अक्षरों का एक वृत्त।
सुवेल–संज्ञा पु० [सं०] त्रिकूट पर्वत जो रामायण के अनुसार लंका में था।
सुवेश–वि० [सं०] १ वस्त्रादि से सुसज्जित। सुंदर वेशयुक्त। २ सुंदर। रूपवान्।
सुवेष–वि० दे० "सुवेश"।
सुवेषित–वि० दे० "सुवेश"।
सुवेसउ–वि० [सं० सुवेश] सुंदर। मनोहर।
सुव्रत–वि० [सं०] दृढ़ता से व्रत पालन करनेवाला।
सुशिक्षित–वि० [सं०] उत्तम रूप से शिक्षित। अच्छी तरह शिक्षा पाया हुआ।
सुशील–वि० [सं०] [स्त्री० सुशीला] [भाव० सुशीलता] १ उत्तम शील या स्वभाववाला। २ सच्चरित्र। साधु। ३ विनीत। नम्र।
सुशृंग–संज्ञा पु० [सं०] शृंगी ऋषि।
सुशोभन–वि० [सं०] १ अत्यंत शोभायुक्त। दिव्य। २ बहुत सुंदर।
सुशोभित–वि० [सं०] उत्तम रूप से शोभित। अत्यंत शोभायमान।
सुश्राव्य–वि० [सं०] जो सुनने में अच्छा लगे।
सुश्री–वि० [सं०] १ बहुत सुंदर। शोभा-युक्त। २ बहुत धनी।

सुश्रुत–संज्ञा पुं० [सं०] आयुर्वेदीय चिकित्सा-शास्त्र के एक प्रसिद्ध आचार्य जिनका रचा हुआ "सुश्रुत-संहिता" ग्रंथ बहुत मान्य है।
सुश्रूखा*–संज्ञा स्त्री० दे० "शुश्रूषा"।
सुष*–संज्ञा पुं० दे० "सुख"।
सुषमना*–संज्ञा स्त्री० दे० "सुषुम्ना"।
सुषमनि–संज्ञा स्त्री० दे० "सुषुम्ना"।
सुषमा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. परम शोभा। अत्यंत सुंदरता। २. दस अक्षरों का एक वृत्त।
सुषाना*–क्रि० अ० दे० "सुखाना"।
सुषारा*–वि० दे० "सुखारा"।
सुषिर–संज्ञा पुं० [सं०] १. बाँस। २. बेत। ३. अग्नि। आग। ४. संगीत में वह यंत्र जो वायु के जोर से बजता हो।
वि० छिद्रयुक्त। छेदवाला। पोला।
सुषुप्त–वि० [सं०] गहरी नींद में सोया हुआ। घोर निद्रित।
संज्ञा स्त्री० दे० "सुषुप्ति"।
सुषुप्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. घोर निद्रा। गहरी नींद। २. अज्ञान। (वेदांत) ३. पातंजल दर्शन के अनुसार चित्त की एक वृत्ति या अनुभूति जिसमें जीव नित्य ब्रह्म की प्राप्ति करता है, परंतु उसे उसका ज्ञान नहीं होता।
सुषुम्ना–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हठयोग में शरीर की तीन प्रधान नाड़ियों में से एक जो नासिका के मध्य भाग (ब्रह्मरंध्र) में स्थित है। २. वैद्यक में चौदह प्रधान नाड़ियों में से एक जो नाभि के मध्य में है।
सुषेण–संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु। २. परीक्षित के एक पुत्र का नाम। ३. एक बानर जो वरुण का पुत्र, बालि का ससुर और सुग्रीव का वैद्य था।
सुषोपति*–संज्ञा स्त्री० दे० "सुषुप्ति"।
सुष्ट–वि [सं० दुष्ट का अनु०] अच्छा। भला। दुष्ट का उलटा।
सुष्ठ–क्रि० वि० [सं०] अच्छी तरह। वि० सुंदर। उत्तम।
सुष्ठुता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सौभाग्य। २. सुंदरता।
सुष्मना*–संज्ञा स्त्री० दे० "सुषुम्ना"।
सुसंग–संज्ञा पुं० दे० "सुसंगति"।
सुसंगति–संज्ञा स्त्री० [सं० सु + हिं० संगत] अच्छी संगत। अच्छी सोहबत। सत्संग।
सुस–संज्ञा स्त्री० दे० "सुसा"।
सुसकना–क्रि० अ० दे० "सिसकना"।
सुसज्जित–वि० [सं०] भली भाँति सजाया हुआ। शोभायमान।
सुसताना–क्रि० अ० [फ़ा० सुस्त + आना (प्रत्य०)] थकावट दूर करना। विश्राम करना।
सुसमय–संज्ञा पुं० [सं०] वे दिन जिनमें अकाल न हो। सुकाल। सुभिक्ष।
सुसमा–संज्ञा स्त्री० दे० "सुषमा"।
सुसमुझि*–वि० दे० "समझदार"।
सुसर, सुसरा–संज्ञा पु० दे० "ससुर"।
सुसराल–संज्ञा स्त्री० [सं० श्वशुरालय] ससुर का घर। ससुराल।
सुसरित–संज्ञा स्त्री० [सं० सु + सरित्] गंगा।
सुसरी–संज्ञा स्त्री० १. दे० "ससुरी"। २. दे० "सुरसुरी"।
सुसा*†–संज्ञा स्त्री० [सं० स्वसृ] बहन।
संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का पक्षी।
सुसाध्य–वि० [सं०] [संज्ञा सुसाधन] जो सहज में किया जा सके। सुखसाध्य।
सुसाना–क्रि० अ० [हिं० साँस] सिसकना।
सुसिद्धि–संज्ञा स्त्री० [सं०] साहित्य में एक अलंकार। जहाँ परिश्रम एक मनुष्य करता है, पर उसका फल दूसरा भोगता है, वहाँ यह अलंकार माना जाता है।
सुसीतलाई*–संज्ञा स्त्री० दे० "सुशीतलता"।
सुसुकना–क्रि० अ० दे० "सिसकना"।
सुसुप्ति*–संज्ञा स्त्री० दे० "सुषुप्ति"।
सुसेन–संज्ञा पु० दे० "सुषेण"।
सुस्त–वि० [फ़ा०] १. दुर्बल। कमज़ोर। २ चिंता आदि के कारण निस्तेज। उदास। हतप्रभ। ३. जिसकी प्रबलता या गति आदि घट गई हो। ४. जिसमें तत्परता न हो। आलसी। ५. धीमी चालवाला।

सुस्तना—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुंदर स्तनों से युक्त स्त्री।
सुस्ताई—संज्ञा स्त्री० दे० "सुस्ती"।
सुस्ताना—क्रि० अ० दे० "सुसताना"।
सुस्ती—संज्ञा स्त्री० [फा० सुस्त] १. सुस्त होने का भाव। २ आलस्य। शिथिलता।
सुस्तैन—संज्ञा पु० दे० "स्वस्त्ययन"।
सुस्थ—वि० [सं०] [भाव० सुस्थता, सुस्थत्व] १. भला चंगा। नीरोग। तंदुरुस्त। २. प्रसन्न। खुश। ३ भली भाँति स्थित।
सुस्थिर—वि० [सं०] [स्त्री० सुस्थिरा] अत्यंत स्थिर या दृढ़। अविचल।
सुस्वर—वि० [सं०] [स्त्री० सुस्वरा] [भाव० सुस्वरता] जिसका सुर मधुर हो। सुकंठ। सुरीला।
सुस्वादु—वि० [सं०] अत्यंत स्वाद-युक्त। बहुत स्वादिष्ट।
सुहँग*—वि० [हिं० महँगा का अनु०] सस्ता।
सुहगम*—वि० [सं० सुगम] सहज।
सुहटा*—वि० [हिं० सुहावना] [स्त्री० सुहटी] सुहावना। सुंदर।
सुहनी*—संज्ञा स्त्री० दे० "सोहनी"।
सुहराना†—क्रि० स० दे० "सहलाना"।
सुहव—संज्ञा पु० दे० "सूहा" (राग)।
सुहवी*—संज्ञा स्त्री० दे० "सूहा"। (राग)
सुहाग—संज्ञा पु० [सं० सौभाग्य] १ स्त्री की सधवा रहने की अवस्था। अहिवात। सौभाग्य। २ वह वस्त्र जो वर विवाह के समय पहनता है। जामा। ३ मांगलिक गीत जो वर पक्ष की स्त्रियाँ विवाह के अवसर पर गाती है।
सुहागा—संज्ञा पु० [सं० सुभग] एक प्रकार का क्षार जो गरम गंधकी सोतों से निकलता है।
सुहागिन—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुहाग] वह स्त्री जिसका पति जीवित हो। सधवा स्त्री। सौभाग्यवती।
सुहागिनी—संज्ञा स्त्री० दे० "सुहागिन"।
सुहागिल*—संज्ञा स्त्री० दे० "सुहागिन"।
सुहाता—वि० [हिं० सहना] सहने योग्य। सह्य।
सुहाना—क्रि० अ० [सं० शोभन] १. शोभायमान होना। शोभा देना। २. अच्छा लगना। भला मालूम होना।
वि० दे० "सुहावना"।
सुहाया*—वि० दे० "सुहावना"।
सुहारी†—संज्ञा स्त्री० [सं० सु + आहार] सादी पूरी।
सुहाल—संज्ञा पु० [सं० सु + आहार] एक प्रकार का नमकीन पकवान।
सुहाव*—वि० दे० "सुहावना"।
संज्ञा पु० [सं० सु + हाव] सुंदर हाव।
सुहावता*—वि० दे० "सुहावना"।
सुहावन*—वि० दे० "सुहावना"।
सुहावना—वि० [हिं० सुहाना] [स्त्री० सुहावनी] देखने में भला। सुंदर। प्रियदर्शन।
क्रि० अ० दे० "सुहाना"।
सुहावला*—वि० दे० "सुहाना"।
सुहास—वि० [सं०] [स्त्री० सुहासा] सुंदर या मधुर मुसकानवाला।
सुहासी—वि० [सं० सुहासिन्] [स्त्री० सुहासिनी] मधुर मुसकानवाला। चारुहासी।
सुहृत्—संज्ञा पु० [सं०] [भाव० सुहृत्ता] १. अच्छे हृदयवाला। २ मित्र। सखा। दोस्त।
सुहृद्—संज्ञा पु० दे० "सुहृत्"।
सुहेल—संज्ञा पु० [अ०] एक चमकीला तारा जिसका उदय शुभ माना जाता है।
सुहेलरा*†—वि० दे० "सुहेला"।
सुहेला—वि० [सं० शुभ ?] १. सुहावना। सुंदर। २ सुखदायक। सुखद।
संज्ञा पु० १ मंगल गीत। २ स्तुति।
सूं*†—अव्य० [सं० सह] करण और अपादान का चिह्न। सों। से।
सूंघना—क्रि० स० [सं० सं + घ्राण] १ नाक द्वारा गंध का अनुभव करना। वास लेना।
मुहा०—सिर सूंघना=बड़ों का मंगल-कामना के लिये छोटों का मस्तक सूंघना।
२ बहुत कम भोजन करना। (व्यंग्य)
३ (साँप का) काटना।
सूंघा—संज्ञा पु० [हिं० सूंघना] १ वह जो केवल

सूँघकर बतलाता हो कि अमुक स्थान पर जमीन के अंदर पानी या खजाना है। २. भेदिया। जासूस।
सूँड़–संज्ञा स्त्री० [सं० शुण्ड] हाथी की लंबी नाक जो प्रायः जमीन तक लटकती है। शुंड। शुंडादंड।
सूँड़ी–संज्ञा स्त्री० [सं० शुंडी] एक प्रकार का सफ़ेद कीड़ा जो पौधों को हानि पहुँचाता है।
सूँस–संज्ञा स्त्री० [सं० शिशुमार] एक प्रसिद्ध बड़ा जल-जंतु। सूस। सूसमार।
सूँह*†–अव्य० [सं० सम्मुख] सामने।
सूअर–संज्ञा पुं० [सं० शूकर] [स्त्री० सुअरी] १. एक प्रसिद्ध स्तन्यपायी जंतु जो मुख्यतः दो प्रकार का होता है—जंगली और पालतू। २. एक प्रकार की गाली।
सूआ†–संज्ञा पुं० [सं० शुक] सुग्गा। तोता।
संज्ञा पुं० [हिं० सूई] बड़ी सूई। सूजा।
सूई–संज्ञा स्त्री० [सं० सूची] १. एक छोटा पतला तार जिसके छेद में तागा पिरोकर कपड़ा सिया जाता है। सूची। २. वह तार या काँटा जिससे कोई बात सूचित होती हो। ३. अनाज, कपास आदि का अँखुआ।
सूक†–संज्ञा पुं० दे० "शुक"।
संज्ञा पुं० दे० "शुक्र" (नक्षत्र)।
सूकना†–क्रि० अ० दे० "सूखना"।
सूकर–संज्ञा पुं० [सं०] सूअर। शूकर।
सूकरक्षेत्र–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन तीर्थ जो मथुरा जिले में है। सोरों।
सूकरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] मादा सूअर।
सूका†–संज्ञा पुं० [सं० सपादक] चार आने के मूल्य का सिक्का। चवन्नी।
सूक्त–संज्ञा पुं० [सं०] १. वेदमंत्रों या ऋचाओं का समूह। २. उत्तम कथन।
वि० भली भाँति कहा हुआ।
सूक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] उत्तम उक्ति या कथन। सुंदर पद या वाक्य आदि।
सूक्षम–वि०, संज्ञा पुं० दे० "सूक्ष्म"।
सूक्ष्म–वि० [सं०] [स्त्री० सूक्ष्मा] १. बहुत छोटा। २. बारीक या महीन।
संज्ञा पुं० १. परमाणु। २. परब्रह्म। ३. लिंग शरीर। ४. एक काव्यालंकार जिसमें चित्तवृत्ति को सूक्ष्म चेष्टा से लक्षित कराने का वर्णन होता है।
सूक्ष्मता–संज्ञा [सं०] सूक्ष्म होने का भाव। बारीकी। महीनपन। सूक्ष्मत्व।
सूक्ष्मदर्शक यंत्र–संज्ञा पुं० [सं०] एक यंत्र जिससे देखने पर सूक्ष्म पदार्थ बड़े दिखाई देते हैं। खुर्दबीन।
सूक्ष्मदर्शिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] सूक्ष्म या बारीक बात सोचने-समझने का गुण।
सूक्ष्मदर्शी–वि० [सं० सूक्ष्मदर्शिन्] बारीक बात को सोचने-समझनेवाला। कुशाग्रबुद्धि।
सूक्ष्मदृष्टि–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह दृष्टि जिससे बहुत ही सूक्ष्म बातें भी समझ में आ जायँ।
संज्ञा पुं० दे० "सूक्ष्मदर्शी"।
सूक्ष्म शरीर–संज्ञा पुं० [सं०] पाँच प्राण, पाँच ज्ञानेंद्रियाँ, पाँच सूक्ष्म भूत, मन और बुद्धि इन सत्रह तत्त्वों का समूह।
सूख*†–वि० दे० "सूखा"।
सूखना–क्रि० अ० [सं० शुष्क] १. नमी या तरी का निकल जाना। रसहीन होना। २. जल का न रहना या कम हो जाना। ३. उदास होना। तेज नष्ट होना। ४. नष्ट होना। बरबाद होना। ५. डरना। सन्न होना। ६. दुबला होना।
सूखा–वि० [सं० शुष्क] [स्त्री० सूखी] १. जिसका पानी निकल, उड़ या जल गया हो। २. जिसकी आर्द्रता निकल गई हो। ३. उदास। तेज-रहित। ४. हृदयहीन। कठोर। ५. कोरा। ६. केवल। निरा।
मुहा०—सूखा जवाब देना = साफ़ इनकार करना।
संज्ञा पुं० १. पानी न बरसना। अनावृष्टि। २. नदी का किनारा। जहाँ पानी न हो। ३. ऐसा स्थान जहाँ जल न हो। ४. सूखा हुआ तंबाकू का पत्ता। ५. एक प्रकार की खाँसी। हब्बा-डब्बा। ६. दे० "सुरंटी"।
सूघर*–वि० दे० "सुघड़"।
सूचक–वि० [सं०] [स्त्री० सूचिका] सूचना देनेवाला। बतानेवाला। ज्ञापक। बोधक।

संज्ञा पु० १ सूई। सूजी। २ सीनेवाला। दरजी। ३ नाट्यकार। सूत्रधार। ४ सुता।

सूचना–संज्ञा स्त्री० [स०] १ वह बात जो किसी को बताने, जताने या सावधान करने के लिये कही जाय। विज्ञापन। विज्ञप्ति। २ वह पत्र आदि जिस पर किसी को सूचित करने के लिए कोई बात लिखी हो। विज्ञापन। इश्तहार। ३ बेधना। छेदना।

* क्रि० अ० [स० सूचन] बतलाना।

सूचनापत्र–संज्ञा पु० [स०] विज्ञापन। विज्ञप्ति। इश्तहार।

सूचा–संज्ञा स्त्री० दे० "सूचना"।

†संज्ञा स्त्री० [हिं० सूचित] जो होश में हो। सावधान।

सूचिका–संज्ञा स्त्री० [स०] १ सूई। २ हाथी की सूँड। हस्तिशुंड।

सूचिकाभरण–संज्ञा पु० [स०] एक प्रकार की औषध जो सन्निपात आदि प्राण-नाशक रोगों की अंतिम औषध मानी गई है।

सूचित–वि० [स०] जिसकी सूचना दी गई हो। जताया हुआ। ज्ञापित। प्रकाशित।

सूची–संज्ञा पु० [स० सूचिन्] १ चर। भेदिया। २ चुगलखोर। ३ खल। दुष्ट। संज्ञा स्त्री० १ कपड़ा सीने की सूई। २ दृष्टि। नजर। ३ सेना का एक प्रकार का व्यूह। ४ दे० "सूचीपत्र"। पिंगल के अनुसार एक रीति जिसके द्वारा मात्रिक छंदों के भेदों में आदि-अंत लघु या आदि-अंत गुरु की संख्या जानी जाती है।

सूचीकर्म–संज्ञा पु० [स० सूचीकर्मन्] सिलाई या सूई का काम।

सूचीपत्र–संज्ञा पु० [स०] वह पुस्तिका आदि जिसमें एक ही प्रकार की बहुत सी चीजों अथवा उनके अंगों की नामावली हो। तालिका। फेहरिस्त। सूची।

सूच्छम*–वि० दे० "सूक्ष्म"।

सूच्छिम*†–वि० दे० "सूक्ष्म"।

सूच्यार्थ–संज्ञा पु० [स०] वह अर्थ जो शब्दों की व्यंजना-शक्ति से जाना जाता हो।

सूछम*†–वि० दे० "सूक्ष्म"।

सूजन–संज्ञा स्त्री० [हिं० सूजना] १ सूजने की क्रिया या भाव। २ फुलाव। शोथ।

सूजना–क्रि० अ० [फा० सोजिश] रोग, चोट आदि के कारण शरीर के किसी अंग का फूलना। शोथ होना।

सूजनी–संज्ञा स्त्री० दे० "सुजनी"।

सूजा–संज्ञा पु० [स० सूची] बड़ी मोटी सूई। सूआ।

सूजाक–संज्ञा पु० [फा०] मूत्रेंद्रिय का एक प्रदाह-युक्त रोग। औपसर्गिक प्रमेह।

सूजी–संज्ञा स्त्री० [स० शुचि] गेहूँ का दरदरा आटा जिससे पकवान बनाते हैं।

संज्ञा स्त्री० [स० सूची] सूई।

संज्ञा पु० [स० सूची] दरजी। सूचिक।

सूझ–संज्ञा स्त्री० [हिं० सूझना] १ सूझने का भाव। २ दृष्टि। नजर।

यौ०—सूझ-बूझ = समझ। अक्ल।

३ अनूठी कल्पना। उद्भावना। उपज।

सूझना–क्रि० अ० [स० संज्ञान] १ दिखाई देना। नजर आना। २ ध्यान में आना। खयाल में आना। ३ छुट्टी पाना।

सूटा†–संज्ञा पु० [अनु०] मुँह से तंबाकू या गाँजे का धूँआ जोर से खींचना।

सूत–संज्ञा पु० [स० सूत्र] १ रूई, रेशम आदि का महीन तार जिससे कपड़ा बुना जाता है। तंतु। सूता। २ तागा। धागा। डोरा। सूत्र। ३ नापने का एक मान। ४ संगतराशों और बढ़इयों की पत्थर या लकड़ी पर निशान डालने की डोरी।

मुहा०—सूत धरना = निशान लगाना।

संज्ञा पु० [स०] [स्त्री० सूती] १ एक वर्ण-संकर जाति। २ रथ हाँकनेवाला। सारथि। ३ बंदी। भाट। चारण। ४ पुराण-वक्ता। पौराणिक। ५ बढ़ई। ६ सूत्रकार। सूत्रधार। ७ सूर्य्य।

वि० [स०] प्रसूत। उत्पन्न।

संज्ञा पु० [स० सूत्र] थोड़े शब्दों में ऐसा पद या वचन जिसमें बहुत अर्थ हो।

वि० [स० सूत्र = सूत] भला। अच्छा।

संज्ञा पुं० दे० "गुत"।
सूतक–संज्ञा पुं० [सं०] १. जन्म। २. वह अशौच जो संतान होने या किसी के मरने पर परिवारवालों को होता है।
सूतक-गेह–संज्ञा पुं० दे० "सूतिकागार"।
सूतकी–वि० [सं० सूतकिन्] परिवार में किसी की मृत्यु या जन्म होने के कारण जिसे सूतक लगा हो।
सूतधार–संज्ञा पुं० [सं० सूत्रधार] बढ़ई।
सूतना†–क्रि० अ० दे० "सोना"।
सूतपुत्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. सारथि। २. कर्ण।
सूता–संज्ञा पुं० [सं० सूत्र] तंतु। सूत। संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रसूता।
सूति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जन्म। २. प्रसव। जनन। ३. उत्पत्ति का स्थान। उद्‌गम।
सूतिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसने अभी हाल में बच्चा जना हो। जच्चा।
सूतिकागार, सूतिकागृह–संज्ञा पुं० [सं०] सौरी। प्रसव-गृह।
सूती–वि० [हिं० सूत] सूत का बना हुआ। संज्ञा स्त्री० [सं० शुक्ति] सीपी।
सूतीघर–संज्ञा पु० दे० "सूतिकागार"।
सूत्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. सूत। तागा। डोरा। २. यज्ञोपवीत। जनेऊ। ३. रेखा। लकीर। ४. करधनी। कटि-भूषण। ५. नियम। व्यवस्था। ६. थोड़े अक्षरों या शब्दों में कहा हुआ ऐसा पद या वचन जो बहुत अर्थ प्रकट करे। ७. पता। सुराग।
सूत्रकार–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जिसने सूत्रों की रचना की हो। सूत्र-रचयिता। २. बढ़ई। ३. जुलाहा।
सूत्रग्रंथ–संज्ञा पुं० [सं०] वह ग्रंथ जो सूत्रों में हो। जैसे—सांख्यसूत्र।
सूत्रधर, सूत्रधार–संज्ञा पु० [सं०] १. नाट्यशाला का व्यवस्थापक या प्रधान नट। २. बढ़ई। काष्ठशिल्पी। ३. पुराणानुसार एक वर्णसंकर जाति।
सूत्रपात–संज्ञा पु० [सं०] प्रारंभ। शुरू।
सूत्रपिटक–संज्ञा पु० [सं०] बौद्ध सूत्रों का एक प्रसिद्ध संग्रह।
सूत्रात्मा–संज्ञा पुं० [सं० सूत्रात्मन्] जीवात्मा।
सूथन–संज्ञा स्त्री० [देश०] पायजामा। सुथना।
सूथनी–संज्ञा स्त्री० [देश०] १. पायजामा। सुथना। २. एक प्रकार का कंद।
सूद–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. लाभ। फ़ायदा। २. ब्याज। वृद्धि।
मुहा०—सूद दर सूद = ब्याज पर ब्याज।
सूदन–वि० [सं०] विनाश करनेवाला। संज्ञा पु० [सं०] १. वध करने की क्रिया। हनन। २. अंगीकरण। ३. फेंकने की क्रिया।
सूदना–क्रि० स० [सं० सूदन] नाश करना।
सूदी–वि० [फ़ा० सूद] (पूँजी या रक़म) जो सूद या ब्याज पर हो। ब्याजू।
सूध*–वि० १. दे० "सीधा"। २. दे० "शुद्ध"।
सूधना*–क्रि० अ० [सं० शुद्ध] सिद्ध होना। सत्य होना। ठीक होना।
सूधरा†–वि० दे० "सूधा"।
सूधा–वि० दे० "सीधा"।
सूधे–क्रि० वि० [हिं० सूधा] सीधे से।
सून–संज्ञा पु० [सं०] १. प्रसव। जनन। २. कली। कलिका। ३. फूल। पुष्प। ४. फल। ५. पुत्र।
*† संज्ञा पु० वि० दे० "शून्य"।
सूना–वि० [सं० शून्य] [स्त्री० सूनी] जिसमें या जिस पर कोई न हो। निर्जन। सुनसान। संज्ञा पु० एकांत। निर्जन स्थान। संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पुत्री। बेटी। २. क़साईखाना। ३. गृहस्थ के यहाँ ऐसा स्थान या चूल्हा, चक्की आदि चीज़ जिनसे जीवहिंसा की संभावना रहती है। ४. हत्या। घात।
सूनापन–संज्ञा पु० [हिं० सूना + पन (प्रत्य०)] १. सूना होने का भाव। २. सन्नाटा।
सूनु–संज्ञा पु० [सं०] १. पुत्र। संतान। २. छोटा भाई। ३. नाती। दौहित्र। ४. सूर्य।
सूप–संज्ञा पु० [सं०] १. पकी हुई दाल या उसका रसा। २. रसे की तरकारी आदि व्यंजन। ३. रसोइया। पाचक। ४ बाण।

संज्ञा पु० [सं० सूर्प] अनाज फटकने का सरई या सींक का छाज।
सूपक–संज्ञा पु० [सं० सूप] रसोइया।
सूपकार–संज्ञा पु० [सं०] रसोइया। पाचक।
सूपच*†–संज्ञा पु० दे० "श्वपच"।
सूपनखा–संज्ञा स्त्री० दे० "शूर्पणखा"।
सूपशास्त्र–संज्ञा पु० [सं०] पाकशास्त्र।
सूफ–संज्ञा पु० [अ०] १ पशम। ऊन। २ वह लत्ता जो देशी काली स्याहीवाली दावात मे डाला जाता है।
सूफी–संज्ञा पु० [अ०] मुसलमानो का एक धार्मिक उदार संप्रदाय। इस संप्रदाय के लोग अपेक्षाकृत अधिक उदार विचार के होते है।
सूबा–संज्ञा पु० [फा०] १ किसी देश का कोई भाग। प्रांत। प्रदेश। २ दे० "सूबेदार"।
सूबेदार–संज्ञा पु० [फा० सूबादार (प्रत्य०)] १ किसी सूबे या प्रांत का शासक। २ एक छोटा फौजी ओहदा।
सूबेदारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] सूबेदार का ओहदा या पद।
सूभर*–वि० [सं० शुभ्र] १ सुंदर। दिव्य। २ श्वेत। सफेद।
सूम–वि० [अ० शूम] कृपण। कंजूस।
सूर–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० सूरी] १ सूर्य। २ आक। मदार। ३ पंडित। आचार्य। ४ दे० "सूरदास"। ५ अंधा। ६ छप्पय छंद के ५५वें भेद का नाम जिसमे १६ गुरु और १२० लघु होते हैं।
*संज्ञा पु० [सं० शूर] वीर। बहादुर।
*†संज्ञा पु० [सं० शूकर] १ सूअर। २ भूरे रंग का घोड़ा।
संज्ञा पु० दे० "शूल"।
संज्ञा पु० [देश०] पठानो की एक जाति।
सूरकांत–संज्ञा पु० दे० "सूर्य्यकांत"।
सूरकुमार–संज्ञा पु० [सं० शूरसेन + कुमार] वसुदेव।
सूरज–संज्ञा पु० [सं० सूर्य्य] १ सूर्य।
मुहा०—सूरज पर थूकना या धूल फेंकना = किसी निर्दोष या साधु व्यक्ति पर लांछन लगाना। सूरज को दीपक दिखाना = १ जो स्वयं अत्यंत गुणवान् हो, उसे कुछ बतलाना। २ जो स्वयं विख्यात हो उसका परिचय देना। २ दे० "सूरदास"।
संज्ञा पु० [सं० सूर + ज] १ शनि। २ सुग्रीव।
संज्ञा पु० [सं० शूर + ज] शूर का पुत्र।
सूरजतनी*‡–संज्ञा स्त्री० दे० "सूर्यतनया"।
सूरजमुखी–संज्ञा पु० [सं० सूर्य्यमुखी] १ एक प्रकार का पौधा जिसका पीले रंग का फूल दिन के समय ऊपर की ओर रहता और सूर्यास्त के बाद झुक जाता है। २ एक प्रकार की आतिशबाजी। ३ एक प्रकार का छत्र या पंखा।
सूरजसुत–संज्ञा पु० [हिं० सूरज + सं० सुत] सुग्रीव।
सूरजसुता–संज्ञा स्त्री० दे० "सूर्य्यसुता"।
सूरत–संज्ञा स्त्री० [फा०] १ रूप। आकृति। शक्ल।
मुहा०—सूरत बिगड़ना = चेहरे की रंगत फीकी पड़ना। सूरत बनाना = १ रूप बनाना। २ भेस बदलना। ३ मुँह बनाना। नाक-भौं सिकोड़ना। सूरत दिखाना = सामने आना।
२ छवि। शोभा। सौंदर्य। ३ उपाय। युक्ति। ढंग। ४ अवस्था। दशा। हालत।
संज्ञा स्त्री० [अ० सूर] कुरान का प्रकरण।
*संज्ञा स्त्री० [सं० स्मृति] सुध। स्मरण।
वि० [सं० सुरत] अनुकूल। मेहरबान।
सूरता, सूरताई*–संज्ञा स्त्री० दे० "शूरता"।
सूरति–संज्ञा स्त्री० दे० "सूरत"।
संज्ञा स्त्री० [सं० स्मृति] सुध। स्मरण।
सूरदास–संज्ञा पु० [सं०] उत्तर भारत के एक प्रसिद्ध कृष्ण-भक्त महाकवि और महात्मा जो अंधे थे। ये हिंदी भाषा के दो सर्वश्रेष्ठ कवियों में से एक हैं।
सूरन–संज्ञा पु० [सं० सूरण] एक प्रकार का कंद। जमींकंद। ओल।
सूपनखा*‡–संज्ञा स्त्री० दे० "शूर्पनखा"।
सूरपुत्र–संज्ञा पु० [सं०] सुग्रीव।

सूरमा–संज्ञा पुं० [सं० शूरमानी] योद्धा। वीर।
सूरमापन–संज्ञा पुं० [हिं० सूरमा + पन] वीरत्व। शूरता। बहादुरी।
सूरमुखी–संज्ञा पुं० [सं० सूर्यमुखी शीशा।
सूरमुखीमनि‡–संज्ञा पुं० दे० "सूर्य्यकांत मणि"।
सूरवाँ‡–संज्ञा पुं० दे० "सूरमा"।
सूर-सावंत–संज्ञा पुं० [सं० शूर + सामंत] १. युद्धमंत्री। २. नायक। सरदार।
सूरसुत–संज्ञा पुं० [सं०] १. शनि ग्रह। २. सुग्रीव।
सूरसुता–संज्ञा स्त्री० [सं०] यमुना।
सूरसेन*–संज्ञा पु० दे० "शूरसेन"।
सूरसेनपुर*–संज्ञा पुं० दे० "मथुरा"।
सूराख़–संज्ञा पु० [फ़ा०] छेद। छिद्र।
सूरि–संज्ञा पुं० [सं०] १. यज्ञ करानेवाला। ऋत्विज्। २. पंडित। विद्वान्। आचार्य। ३. कृष्ण का एक नाम। ४. सूर्य्य।
सूरी–संज्ञा पु० [सं० सूरिन्] विद्वान्। पंडित। संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विदुषी। पंडिता। २. सूर्य की पत्नी। ३. कुंती।
*‡ संज्ञा स्त्री० दे० "सली"।
*‡ संज्ञा पुं० [सं० शूल] भाला।
सूरज*‡–संज्ञा पुं० दे० "सूर्य"।
सूरवाँ‡*–संज्ञा पुं० दे० "सूरमा"।
सूर्पनखा*–संज्ञा स्त्री० दे० "शूर्पणखा"।
सूर्य्य–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सूर्य्या, सूर्य्याणी] १. अंतरिक्ष में ग्रहों के बीच सबसे बड़ा ज्वलंत पिंड जिसकी सब ग्रह परिक्रमा करते हैं और जिससे सब ग्रहों को गरमी और रोशनी मिलती है। सूरज। आफ़ताब। भास्कर। भानु। प्रभाकर। दिनकर। २. बारह की संख्या। ३. मंदार। आक
सूर्य्यकांत–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का स्फटिक या बिल्लौर। २. सूरजमुखी शीशा। आतशी शीशा।
सूर्य्यग्रहण–संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य्य का ग्रहण या चंद्रमा की छाया में आना।
सूर्य्यतनय–संज्ञा पुं० दे० "सूर्य्यपुत्र"।
सूर्य्यतनया–संज्ञा स्त्री० [सं०] यमुना।
सूर्य्यतापिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक उपनिषद् का नाम।
सूर्य्यपुत्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. शनि। २. यम। ३. वरुण। ५. अश्विनीकुमार। ५. सुग्रीव। ६. कर्ण।
सूर्य्यपुत्री–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. यमुना। २. विद्युत्। बिजली। (क्व०)
सूर्य्यप्रभ–वि० [सं०] सूर्य्य के समान दीप्तिमान्।
सूर्य्यमणि–संज्ञा पुं० [सं०] "सूर्य्यकांत मणि"।
सूर्य्यमुखी–संज्ञा पु० दे० "सूरजमुखी"।
सूर्य्यलोक–संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य्य का लोक। कहते हैं कि युद्ध में मरनेवाले इसी लोक को प्राप्त होते हैं।
सूर्य्यवंश–संज्ञा पुं० [सं०] क्षत्रियों के दो आदि और प्रधान कुलों में से एक जिसका आरंभ इक्ष्वाकु से माना जाता है।
सूर्य्यवंशी–वि० [सं० सूर्य्यवंशिन्] सूर्य्यवंश का। जो सूर्य्यवंश में उत्पन्न हुआ हो।
सूर्य्यसंक्रांति–संज्ञा स्त्री० [सं०] सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश।
सूर्य्यसुत–संज्ञा पु० दे० "सूर्य्यपुत्र"।
सूर्य्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] सूर्य्य की पत्नी संज्ञा।
सूर्य्यावर्त्त–संज्ञा पु० [सं०] १. हुलहुल का पौधा। २. एक प्रकार की सिर की पीड़ा। आधासीसी।
सूर्य्यास्त–संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य का छिपना या डूबना। २. सायंकाल।
सूर्य्योदय–संज्ञा पु० [सं०] १. सूर्य्य का उदय या निकलना। २. प्रातःकाल।
सूर्य्योपासक–संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य्य की उपासना करनेवाला। सूर्यपूजक। सौर।
सूर्य्योपासना–संज्ञा स्त्री० [सं०] सूर्य्य की आराधना या पूजा।
सूल–संज्ञा पुं० [सं० शूल] १. बरछा। भाला। साँग। २. कोई चुभनेवाली नुकीली चीज़। काँटा। ३. भाला चुभने की सी पीड़ा। कसक। ४. दर्द। पीड़ा। ५. भाला का ऊपरी भाग।
सूलना–क्रि० स० [हिं० सूल + ना (प्रत्य०)]

१ भाले से छेदना। २ पीड़ित करना।
क्रि० अ० १ भाले से छिदना। २ पीड़ित होना। व्यथित होना। दुखना।
सूलपानि*–संज्ञा पु० दे० "शूलपाणि"।
सूली–संज्ञा स्त्री० [सं० शूल] १. प्राणदंड देने की एक प्राचीन प्रथा जिसमें दंडित मनुष्य एक नुकीले लोहे के डंडे पर बैठा दिया जाता था और उसके ऊपर मुँगरा मारा जाता था। २. फाँसी।
*संज्ञा पु० [सं० शूलिन्] महादेव। शिव।
सूवना*†–क्रि० अ० [सं० स्रवण] बहना।
संज्ञा पु० दे० "सूआ"।
सूस–संज्ञा पु० [सं० शिशुमार] मगर की तरह का एक बड़ा जलजंतु। सूइँस।
सूसि*‡–संज्ञा पु० दे० "सूस"।
सूहा–संज्ञा पु० [हिं० सोहना] १ एक प्रकार का लाल रंग। २ एक संकर राग।
वि० [स्त्री० सूही] लाल रंग का। लाल।
सूही–वि० स्त्री० दे० "सूहा"।
सृखला*–संज्ञा स्त्री० दे० "शृंखला"।
सृंग*–संज्ञा पु० दे० "शृंग"।
सृगवेरपुर*–संज्ञा पु० दे० "शृंगवेरपुर"।
सृंगी–संज्ञा पु० दे० "शृंगी"।
सृंजय–संज्ञा पु० [सं०] १ मनु के एक पुत्र का नाम। २ एक वंश जिसमें धृष्टद्युम्न हुए थे।
सृक–संज्ञा पु० [सं०] १. शूल। भाला। २ बाण। तीर। ३ वायु। हवा।
*संज्ञा पु० [सं० स्रज्, स्रक्] माला।
सृकाल–संज्ञा पु० दे० "सृगाल"।
सृग*–संज्ञा पु० [सं० सृक] १ बरछा। भाला। २ बाण। तीर।
संज्ञा पु० [सं० स्रज्, स्रक] माला। गजरा।
सृग्विनी*‡–संज्ञा स्त्री० दे० "स्रग्विणी"।
सृजक*–संज्ञा पु० [सं० सृज्] सृष्टि करनेवाला। उत्पन्न करनेवाला। सर्जक।
सृजन*–संज्ञा पु० [सं० सृज्, सर्जन] सृष्टि करने की क्रिया। उत्पादन। सृष्टि।
सृजनहार*–संज्ञा पु० [सं० सृज्, सर्जन + हिं० हार] सृष्टिकर्त्ता।
सृजना*–क्रि० स० [सं० सृज् + हिं० ना (प्रत्य०)] सृष्टि करना। उत्पन्न करना। बनाना।
सृष्ट–वि० [सं०] १ उत्पन्न। पैदा। २ निर्मित। रचित। ३ युक्त। ४ छोड़ा हुआ।
सृष्टि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. उत्पत्ति। पैदाइश। २ निर्माण। रचना। बनावट। ३ संसार की उत्पत्ति। दुनिया की पैदाइश। ४ संसार। दुनिया। ५ प्रकृति। निसर्ग।
सृष्टिकर्त्ता–संज्ञा पु० [सं० सृष्टिकर्तृ] १ संसार की रचना करनेवाला, ब्रह्मा। २ ईश्वर।
सृष्टिविज्ञान–संज्ञा पु० [सं०] वह शास्त्र जिसमें सृष्टि की रचना आदि पर विचार हो।
सेंक–संज्ञा स्त्री० [हिं० सेंकना] सेंकने की क्रिया या भाव।
सेंकना–क्रि० स० [सं० श्रेपण] १ आँच के पास या आग पर रखकर भूनना। २ आँच के द्वारा गरमी पहुँचाना।
मुहा०–आँख सेंकना = सुंदर रूप देखना। धूप सेंकना = धूप में रहकर शरीर में गरमी पहुँचाना।
सेंगर–संज्ञा पु० [सं० शृंगार] १ एक पौधा जिसकी फलियों की तरकारी बनती है। २ एक प्रकार का अगहनी धान।
संज्ञा पु० [सं० शृंगीवर] क्षत्रियों की एक जाति।
सेंत–संज्ञा स्त्री० [सं० संहति] पास का कुछ न लगना। कुछ खर्च न होना।
मुहा०–सेंत का = १ जिसमें कुछ दाम न लगा हो। मुफ्त का। *†२ बहुत। ढेर का ढेर। सेंत में = १ बिना कुछ दाम दिए। मुफ्त में। २ व्यर्थ। निष्प्रयोजन। फजूल।
सेंतना*†–क्रि० स० दे० "सैंतना"।
सेंत-मेंत–क्रि० वि० [हिं० सेंत+मेंत (अनु०)] १ बिना दाम दिए। मुफ्त में। २ व्यर्थ।
सेंति, सेंती–*†–संज्ञा स्त्री० दे० "सेंत"।
प्रत्य० [प्रा० सुंतो] पुरानी हिंदी की करण और अपादान की विभक्ति।
सेंथी†–संज्ञा स्त्री० [सं० शक्ति] बरछी। भाला।
सेंदुर*†–संज्ञा पु० [सं० सिंदूर] इंगुर की बुकनी। सिंदुर।

मुहा०—सेंदुर चढ़ना=स्त्री का विवाह होना। सेंदुर देना = विवाह के समय पति का पत्नी की माँग भरना।

सँदुरिया—संज्ञा पुं० [सं० सिंदुर] एक सदाबहार पौधा जिसमें लाल फूल लगते हैं। वि० सिंदूर के रंग का। खूब लाल।

सँदुरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सेंदुर] लाल गाय।

सेंद्रिय—वि० [सं०] जिसमें इंद्रियाँ हों।

सेंध—संज्ञा स्त्री० [सं० संधि] चोरी करने के लिये दीवार में किया हुआ बड़ा छेद। संधि। सुरंग। सेन। नक़ब।

सेंधना—क्रि० स० [हिं०सेंध] सेंध या सुरंग लगाना।

सेंधा—संज्ञा पुं० [सं० सैंधव] एक प्रकार का खनिज नमक। सेंधव। लाहौरी नमक।

सेंधिया—वि० [हिं० सेंध] दीवार में सेंध लगाकर चोरी करनेवाला। संज्ञा पुं० [मरा० शिंदे] ग्वालियर के प्रसिद्ध मराठा राजवंश की उपाधि।

सेंधुर‡—संज्ञा पुं० दे० "सेंदुर"।

सेंवई—संज्ञा स्त्री० [सं० सेविका] मैदे के सुखाए हुए सूत के से लच्छे जो दूध में पकाकर खाए जाते हैं।

सेंवर*‡—संज्ञा पुं० दे० "सेमल"।

सेंहुड़—संज्ञा पुं० दे० "थूहर"।

से—प्रत्य० [प्रा० सुंतो] करण और अपादान कारक का चिह्न। तृतीया और पंचमी की विभक्ति।
वि० [हिं० 'सा' का बहुवचन] समान। सदृश।
*सर्व० [हिं० 'सो' का बहुवचन] वे।

सेउ*‡—संज्ञा पुं० दे० "सेव"।

सेक—संज्ञा पुं० [सं०] १. जल-सिंचन। सिंचाई। २. जल-प्रक्षेप। छिड़काव।

सेख*—संज्ञा पुं० दे० "शेष" और "शेख"।

सेखर*—संज्ञा पुं० दे० "शेखर"।

सेग्ा—संज्ञा पुं० [अ०] १. विभाग। महकमा। २. विषय। क्षेत्र।

सेचक—वि० [सं०] सींचनेवाला।

सेचन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सेचनीय, सेचित, सेच्य] १. जल-सिंचन। सिंचाई। २. मार्जन। छिड़काव। ३. अभिषेक।

सेज—संज्ञा स्त्री० [सं० शय्या] शय्या। पलंग।

सेजपाल—संज्ञा पुं० [हिं० सेज + पाल] राजा की सेज पर पहरा देनेवाला। शयनागाररक्षक।

सेजरिया*‡—संज्ञा स्त्री० दे० "सेज"।

सेज्या*—संज्ञा स्त्री० दे० "शय्या"।

सेझादि*—संज्ञा पुं० दे० "सह्याद्रि"।

सेझना—क्रि० अ० [सं० सेधन] दूर होना।

सेटना*†—क्रि० अ० [सं० श्रुत] १. समझना। मानना। २. कुछ समझना। महत्त्व स्वीकार करना।

सेठ—संज्ञा पुं० [सं० श्रेष्ठी] [स्त्री० सेठानी] १. बड़ा साहूकार। महाजन। कोठीवाल। २. बड़ा या थोक व्यापारी। ३. मालदार आदमी। ४. सुनार।

सेत*—संज्ञा पुं० दे० "सेतु" और "श्वेत"।

सेतकुली—संज्ञा पुं० [सं० श्वेतकुलीय] सफ़ेद जाति के नाग।

सेतदुति*—संज्ञा पुं० [सं० श्वेतद्युति] चंद्रमा।

सेतबाह*—संज्ञा पुं० [सं० श्वेतवाहन] १. अर्जुन। २. चंद्रमा। (डिं०)

सेतिका—संज्ञा स्त्री० [सं० साकेत ?] अयोध्या।

सेतु—संज्ञा पुं० [सं०] १. बंधन। बँधाव। २. बाँध। धुस्स। ३. मेंड़। डाँड़। ४. नदी आदि के आर-पार जाने का रास्ता जो लकड़ी आदि बिछाकर या पक्की जोड़ाई करके बना हो। पुल। ५. सीमा। हदबंदी। ६. मर्य्यादा। नियम या व्यवस्था। ७. प्रणव। ओंकार। ८. व्याख्या।

सेतुबंध—संज्ञा पुं० [सं०] १. पुल की बँधाई। २. वह पुल जो लंका पर चढ़ाई के समय रामचंद्रजी ने समुद्र पर बँधवाया था।

सेतुवा†—संज्ञा पुं० दे० "सत्तू"।

सेथिया—संज्ञा पुं० [तेलगु० चेट्टि] आँखों का इलाज करनेवाला।

सेद*—संज्ञा पुं० दे० "स्वेद"।

सेदज*—वि० दे० "स्वेदज"।

सेन—संज्ञा पुं० [सं०] १. शरीर। २. जीवन। ३. एक भक्त नाई।

संज्ञा पुं० [सं० श्येन] बाज पक्षी।
*संज्ञा स्त्री० दे० "सेना"।
सेनजित्—वि० [सं०] सेना को जीतनेवाला।
संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।
सेनप, सेनपति*—संज्ञा पुं० दे० "सेनापति"।
सेन वंश—संज्ञा पुं० [सं०] बंगाल का एक हिंदू राजवंश जिसने ११वीं शताब्दी से १४वीं शताब्दी तक राज्य किया था।
सेना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ युद्ध की शिक्षा पाए हुए और अस्त्र-शस्त्र से सजे हुए मनुष्यों का बड़ा समूह। फौज। पल्टन। २ भाला। बरछी। ३ इंद्र का वज्र। ४ इंद्राणी।
क्रि० स० [सं० सेवन] १ सेवा करना। खिदमत करना। टहल करना।
मुहा०—चरण सेना=तुच्छ चाकरी बजाना।
२ आराधना करना। पूजना। ३ नियमपूर्वक व्यवहार करना। ४ पड़ा रहना। निरंतर वास करना। ५ लिए बैठे रहना। दूर न करना। ६ मादा चिड़िया का गरमी पहुँचाने के लिये अपने अंडों पर बैठना।
सेनाजीवी—संज्ञा पुं० [सं० सेनाजीविन्] सैनिक। सिपाही। योद्धा।
सेनादार—संज्ञा पुं० दे० "सेनानायक"।
सेनाध्यक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] सेनापति।
सेनानायक—संज्ञा पुं० [सं०] सेना का अफसर। फौजदार।
सेनानी—संज्ञा पुं० [सं०] १ सेनापति। २ कार्तिकेय। ३ एक रुद्र का नाम।
सेनापति—संज्ञा पुं० [सं०] १ सेना का नायक। फौज का अफसर। २ कार्तिकेय। ३ शिव।
सेनापत्य—संज्ञा पुं० [सं०] सेनापति का कार्य, पद या अधिकार।
सेनापाल—संज्ञा पुं० दे० 'सेनापति'।
सेनामुख—संज्ञा पुं० [सं०] १ सेना का अग्रभाग। २ सेना का एक खंड जिसमें ३ या ९ हाथी, ३ या ९ रथ, ९ या २७ घोड़े और १५ या ४५ पैदल होते थे।
सेनावास—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह स्थान जहाँ सेना रहती हो। छावनी। २ खेमा।
सेनाव्यूह—संज्ञा पुं० [सं०] युद्ध के समय भिन्न भिन्न स्थानों पर की हुई सेना के भिन्न भिन्न अंगों की स्थापना या नियुक्ति। सैन्य-विन्यास।
सेनि*—संज्ञा स्त्री० दे० "श्रेणी"।
सेनिका—संज्ञा स्त्री० [सं० श्येनिका] १ मादा बाज पक्षी। २ एक छंद। दे० "श्येनिका"।
सेनी—संज्ञा स्त्री० [फा० सीनी] तश्तरी।
*संज्ञा स्त्री० [सं० श्येनी] मादा बाज पक्षी।
*संज्ञा स्त्री० [सं० श्रेणी] १ पंक्ति। कतार। २ सीढ़ी। जीना।
संज्ञा पुं० विराट के यहाँ अज्ञातवास करने समय का सहदेव का रखा हुआ नाम।
सेब—संज्ञा पुं० [फा०] नाशपाती की जाति का मझोले आकार का एक पेड़ जिसका फल मेवों में गिना जाता है।
सेम—संज्ञा स्त्री० [सं० शिंबी] एक प्रकार की फली जिसकी तरकारी खाई जाती है।
सेमई*†—संज्ञा स्त्री० दे० "सेंवई"।
सेमल—संज्ञा पुं० [सं० शाल्मली] एक बहुत बड़ा पेड़ जिसमें बड़े लाल फूल लगते हैं, और जिसके फलों में केवल रूई होती है।
सेर—संज्ञा पुं० [सं० सेटक] सोलह छटाँक या अस्सी तोले की एक तौल।
संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का धान।
संज्ञा पुं० दे० "शेर"।
वि० [फा०] तृप्त।
सेरसाहि—संज्ञा पुं० [फा० शेरशाह] दिल्ली का बादशाह शेरशाह।
सेरा—संज्ञा पुं० [हिं० सिर] चारपाई की वे पाटियाँ जो सिरहाने की ओर रहती हैं।
संज्ञा पुं० [फा० सेराब] सींची हुई जमीन।
सेराना*†—क्रि० अ० [सं० शीतल] १ ठंढा होना। शीतल होना। २ तृप्त होना। तुष्ट होना। ३ जीवित न रहना। ४ समाप्त होना। ५ चुकना। तै होना।
क्रि० स० २ ठंढा करना। शीतल करना। २ मूर्ति आदि जल में प्रवाह करना।
सेराब—वि० [फा०] १ पानी से भरा हुआ।

२. सिंचा हुआ। तराबोर।
सेल–संज्ञा पुं० [सं० शल] बरछा। भाला।
संज्ञा स्त्री० [देश०] बद्धी। माला।
सेलखड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "खड़िया"।
सेलना–क्रि० अ० [सं० शेल] मर जाना।
सेला–संज्ञा पुं० [सं० शल्लक] रेशमी चादर।
सेलिया–संज्ञा पुं० [देश०] घोड़े की एक जाति।
सेली–संज्ञा स्त्री० [हिं० सेल] छोटा भाला।
संज्ञा स्त्री० [हिं० सेला] १. छोटा दुपट्टा। २. गाँती। ३. वह बद्धी या माला जिसे योगी यती लोग गले में डालते या सिर में लपेटते हैं। ४. स्त्रियों का एक गहना।
सेल्ला–संज्ञा पुं० [सं० शल] भाला। सेल।
सेल्ह–संज्ञा पुं० दे० "सेल"।
सेल्हा†–संज्ञा पुं० दे० "सेला"।
सेवईं–संज्ञा स्त्री० [सं० सेविका] गुँधे हुए मैदे के सूत के से लच्छे जो दूध में पकाकर खाए जाते हैं।
सेवँर*†–संज्ञा पुं० दे० "सेमल"।
सेव–संज्ञा पुं० [सं० सेविका] सूत या डोरी के रूप में बेसन का एक पकवान।
*संज्ञा स्त्री० दे० "सेवा"।
संज्ञा पुं० दे० "सेब"।
सेवक–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सेविका, सेवकी, सेवकनी, सेवकिन, सेवकिनी] १. सेवा करनेवाला। नौकर। चाकर। २. भक्त। आराधक। उपासक। ३. काम में लाने-वाला। इस्तेमाल करनेवाला। ४. छोड़-कर कहीं न जानेवाला। वास करनेवाला। ५. सीनेवाला। दरजी।
सेवकाई–संज्ञा स्त्री० [सं० सेवक + आई (प्रत्य०)] सेवा। टहल। खिदमत।
सेवड़ा–संज्ञा पुं० [?] जैन साधुओं का एक भेद।
संज्ञा पुं० [हिं० सेव] मैदे का एक प्रकार का मोटा सेव या पकवान।
सेवति*‡–संज्ञा स्त्री० दे० "स्वाति"।
सेवती–संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेद गुलाब।
सेवन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सेवनीय, सेवित, सेव्य, सेवितव्य] १. परिचर्या। खिदमत। २. उपासना। आराधना। ३. प्रयोग। उपयोग। नियमित व्यवहार। इस्तेमाल। ४. छोड़कर न जाना। वास करना। ५. उपभोग। ६. सीना। ७. गूँथना।
सेवना*†–क्रि० स० दे० "सेना"।
सेवनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० सेवकिनी] दासी।
सेवनीय–वि० [सं०] १. सेवा योग्य। २. पूजा के योग्य। ३. व्यवहार के योग्य। ४. सीने के योग्य।
सेवर–संज्ञा पुं० दे० "शबर"।
सेवरा*†–संज्ञा पुं० दे० "सेवड़ा"।
सेवरी*‡–संज्ञा स्त्री० दे० "शबरी"।
सेवल–संज्ञा पुं० [देश०] ब्याह की एक रस्म।
सेवा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दूसरे को आराम पहुँचाने की क्रिया। खिदमत। टहल। परिचर्य्या। २. नौकरी। चाकरी। ३. आराधना। उपासना। पूजा।
मुहा०—सेवा में = समीप। सामने।
४. आश्रय। शरण। ५. रक्षा। हिफ़ाज़त। ६. संभोग। मैथुन।
सेवा-टहल–संज्ञा स्त्री० [सं० सेवा + हिं० टहल] परिचर्य्या। खिदमत। सेवा-शुश्रूषा।
सेवाती–संज्ञा स्त्री० दे० "स्वाति"।
सेवाधारी–संज्ञा पुं० दे० "पुजारी"।
सेवापन–संज्ञा पुं० [सं० सेवा + हिं० पन] दासत्व। सेवावृत्ति। नौकरी।
सेवा-बंदगी–संज्ञा स्त्री० [सेवा + फ़ा० बंदगी] आराधना। पूजा।
सेवार, सेवाल–संज्ञा स्त्री० [सं० शैवाल] पानी में फैलनेवाली एक घास।
सेवावृत्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] नौकरी। दासत्व। चाकरी की जीविका।
सेवि–संज्ञा पुं० [सं०] 'सेवी' का वह रूप जो समास में होता है।
*वि० दे० "सेव्य", "सेवित"।
सेविका–संज्ञा स्त्री० [सं०] सेवा करनेवाली। दासी। नौकरानी।
सेवित–वि० [सं०] १. जिसकी सेवा की गई हो। २. जिसकी पूजा की गई हो।

पूजित। ३ जिसका प्रयोग किया गया हो। व्यवहृत। ४ उपभोग किया हुआ।
सेवी–वि० [सं० सेविन्] १.सेवा करनेवाला। २ पूजा करनेवाला। ३ संभोग करनेवाला।
सेव्य–वि० [सं०] [स्त्री० सेव्या] १ जिसकी सेवा करना उचित हो। २ जिसकी सेवा करनी हो या जिसकी सेवा की जाय। ३ पूजा या आराधना के योग्य। ४ काम में लाने लायक। ५ रक्षण के योग्य। ६ संभोग के योग्य।
संज्ञा पु० १ स्वामी। मालिक। २ अश्वत्थ। पीपल का पेड़। ३ जल। पानी।
सेव्य-सेवक–संज्ञा पु० [सं०] स्वामी और सेवक।
यौ०—सेव्य-सेवक भाव = *उपास्य को स्वामी या मालिक के रूप में समझना। (भक्तिमार्ग में उपासना का एक भाव)*
सेश्वर–वि० [सं०] १ ईश्वर-युक्त। २ जिसमें ईश्वर की सत्ता मानी गई हो।
सेष*–संज्ञा पु० दे० "शेष", "शेख"।
सेस*–संज्ञा पु०, वि० दे० "शेष"।
सेसनाग*‡–संज्ञा पु० दे० "शेषनाग"।
सेस रंग*–संज्ञा पु० [सं० शेष + रंग] सफेद रंग।
सेसर–संज्ञा पु० [फा० सेह = तीन + सर = बाजी] १ ताश का एक खेल। २ जाल-साजी। ३ जाल।
सेसरिया–वि० [हिं० सेसर=इया(प्रत्य०)] छल-कपट कर दूसरों का माल मारनेवाला। जालिया।
सेहत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ सुख। चैन। २ रोग से छुटकारा। रोगमुक्ति।
सेहतखाना–संज्ञा पु० [अ० सेहत + फा० खाना] पाखाने पेशाब आदि की कोठरी।
सेहरा–संज्ञा पु० [हिं० सिर + हार] १ फूल की या तार और गोटों की बनी मालाओं की पंक्ति जो दूल्हे के मौर के नीचे रहती है। २ विवाह का मुकुट। मौर।
मुहा०—किसी के सिर सेहरा बँधना = किसी का कृतकार्य्य होना।
३ वे मांगलिक गीत जो विवाह के अवसर पर वर के यहाँ गाए जाते हैं।
सेही–संज्ञा स्त्री० [सं० सेधा] साही। (जंतु)
सेहुँड़*†–संज्ञा पु० [सं० सेहुंड] थूहर।
सेहुआँ–संज्ञा पु० [?] एक प्रकार का चर्म-रोग।
सैंतना–क्रि० स० [सं० संचय] १ संचित करना। बटोरना। इकट्ठा करना। २ हाथों से समेटना। बटोरना। ३ सहे-जना। सँभालकर रखना।
सैंधव–संज्ञा पु० [सं०] १ सेंधा नमक। २ सिंध का घोड़ा। ३ सिंध देश का निवासी।
वि० १ सिंध देश का। २ समुद्र-संबंधी।
सैंधवपति–संज्ञा पु० [सं० सैंधव + पति = राजा] *सिंध-वासियों के राजा जयद्रथ।*
सैंधवी–संज्ञा स्त्री० [सं०] संपूर्ण जाति की एक रागिनी।
सैंधू–संज्ञा स्त्री० दे० "सैंधवी"।
सैंबर†–संज्ञा पु० दे० "साँभर"।
सैंह*‡–क्रि० वि० दे० "सौंह"।
सैं†–वि०, संज्ञा पु० [सं० शत] सौ।
संज्ञा स्त्री० [सं० सत्त्व] १ तत्त्व। सार। २ वीर्य। शक्ति। ३ बढ़ती। बरकत।
सैकड़ा–संज्ञा पु० [सं० शतकांड] सौ का समूह। शत-समष्टि।
सैकड़े–क्रि० वि० [हिं० सैकड़ा] प्रति सौ के हिसाब से। प्रतिशत। फी सदी।
सैकड़ों–वि० [हिं० सैकड़ा] १. कई सौ। २ बहु-संख्यक। गिनती में बहुत।
सैकत–वि० [सं०] [स्त्री० सैकती] १ रेतीला। बलुआ। २ बालू का बना।
सैकल–संज्ञा पु० [अ०] हथियारों को साफ करने और उन पर सान चढ़ाने का काम।
सैकलगर–संज्ञा पु० [अ० सैकल + फा० गर] तलवार, छुरी आदि पर बाढ़ रखनेवाला।
सैथी–संज्ञा स्त्री० [सं० शक्ति] बरछी।
सैद*‡–संज्ञा पु० दे० "सैयद"।
सैद्धांतिक–संज्ञा पु० [सं०] १ सिद्धांत का

जाननेवाला। विद्वान्। २. तांत्रिक। वि० सिद्धांत-संबंधी। तत्त्व-संबंधी।

सैन–संज्ञा स्त्री० [सं० संज्ञपन] १. संकेत। इंगित। इशारा। २. चिह्न। निशान।
*‡संज्ञा पुं० १. दे० "शयन"। २. दे० "श्येन"।
*‡संज्ञा स्त्री० दे० "सेना"।
*‡संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का बगला।

सैनपति*–संज्ञा पुं० दे० "सेनापति"।

सैनभोग–संज्ञा पुं० [सं० शयन+भोग] रात्रि का नैवेद्य जो मंदिरों में चढ़ता है।

सैना*‡–संज्ञा स्त्री० दे० "सेना"।

सैनापत्य–संज्ञा पुं० [सं०] सेनापति का पद या कार्य। सेनापतित्व।
वि० सेनापति-संबंधी।

सैनिक–संज्ञा पुं० [सं०] १. सेना या फ़ौज का आदमी। सिपाही। २. संतरी।
वि० सेना-संबंधी। सेना का।

सैनिकता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सेना या सैनिक का कार्य्य। २. युद्ध। लड़ाई।

सैनिका–संज्ञा स्त्री० [सं० श्येनिका] एक छंद।

सैनी–संज्ञा पुं० [सेना भगत] हज्जाम।
*‡संज्ञा स्त्री० दे० "सेना"।

सैनू–संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का बूटेदार कपड़ा। नैनू।

सैनेय*–वि० [सं० सेना] लड़ने के योग्य।

सैनेश–संज्ञा पुं० [सं० सैन्येश] सेनापति।

सैन्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. सैनिक। सिपाही। २. सेना। फ़ौज। ३. शिविर। छावनी।
वि० सेना संबंधी। फ़ौज का।

सैफ़–संज्ञा स्त्री० [अ०] तलवार।

सैफ़ी–वि० [अ० सैफ़=तलवार] तिरछा।

सैमंतिक–संज्ञा पुं० [सं०] सिंदूर। सेंदुर।

सैयद–संज्ञा पुं० [अ०] १. मुहम्मद साहब के नाती हुसैन के वंश का आदमी। २. मुसलमानों के चार वर्गों में से एक वर्ग।

सैयाँ*‡–संज्ञा पुं० [सं० स्वामी] पति।

सैया*–संज्ञा स्त्री० दे० "शय्या"।

सैरंध्र–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सैरंध्री] १. घर का नौकर। २. एक संकर जाति।

सैरंध्री–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सैरंध्र नामक संकर जाति की स्त्री। २. अंतःपुर या जनाने में रहनेवाली दासी। ३. द्रौपदी।

सैर–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. मन बहलाने के लिये घूमना-फिरना। २. बहार। मौज। आनंद। ३. मित्र-मंडली का कहीं बगीचे आदि में खान-पान और नाच-रंग। ४. मनोरंजक दृश्य। कौतुक। तमाशा।

सैल‡–संज्ञा स्त्री० दे० "सैर"।
संज्ञा पुं० दे० "शैल"।
संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सैलाब] १. बाढ़। जल-प्लावन। २. स्रोत। बहाव।

सैलजा*–संज्ञा स्त्री० दे० "शैलजा"।

सैलसुता*–संज्ञा स्त्री० दे० "शैलसुता"।

सैलात्मजा*–संज्ञा स्त्री० [सं० शैलात्मजा] पार्वती।

सैलानी–वि० [फ़ा० सैर] १. सैर करने-वाला। मनमाना घूमनेवाला। २ आनंदी। मनमौजी।

सैलाब–संज्ञा पुं० [फ़ा०] बाढ़। जलप्लावन।

सैलाबी–वि० [फ़ा०] जो बाढ़ आने पर डूब जाता हो। बाढ़वाला।
संज्ञा स्त्री० तरी। सील। सीड़।

सैलूख*–संज्ञा पुं० दे० "शैलूष" †

सैव*‡–संज्ञा पुं० दे० "शैव"।

सैवल*–संज्ञा पुं० दे० "शैवाल"।

सैवलिनी*–संज्ञा स्त्री० दे० "शैवलिनी"।

सैव्य*–संज्ञा पुं० दे० "शैव्य"।

सैसव*–संज्ञा पुं० दे० "शैशव"।

सैहथी–संज्ञा स्त्री० [सं० शक्ति] बरछी।

सौं*†–प्रत्य० [प्रा० सुन्तो] करण और अपादान कारक का चिह्न। द्वारा। से।
वि० दे० "सा"।
अव्य० दे० "सौंह"।
क्रि० वि० संग। साथ।
सर्व० दे० "सो"।
संज्ञा स्त्री० दे० "सौंह"।

सोंच–संज्ञा पुं० दे० "सोच"।

सोंचर नमक–संज्ञा पुं० दे० "काला नमक"।

सोंटा–संज्ञा पुं० [...]

१ मोटी छडी। डडा। लाठी। २ भंग घोटने का मोटा डडा।

सोंटा-बरदार–सज्ञा पु० [हिं० सोंटा + फा० बरदार] आसाबरदार। बल्लमदार।

सोंठ–सज्ञा स्त्री० [स० शुण्ठी] सुखाया हुआ अदरक। शुठि।

सोंठौरा†–सज्ञा पु० [हिं० सोंठ + औरा (प्रत्य०)] एक प्रकार का लड्डू जिसमें मेवों के सिवा सोंठ भी पडती है। (प्रसूती स्त्री के लिये)

सोंध*–अव्य० दे० "सौंह"।

सोंधा–वि० [स० सुगध] [स्त्री० सोंधी] १ सुगधित। खुशबूदार। महकनेवाला। २ मिट्टी के नए बरतन में पानी पडने या चना, बेसन आदि भुनने से निकलनेवाली सुगध के समान।

सज्ञा पु० १ एक प्रकार का सुगधित मसाला जिससे स्त्रियाँ केश धोती हैं। २ एक सुगधित मसाला जो नारियल के तेल में उसे सुगधित करने के लिये मिलाते हैं। सज्ञा पु० सुगध।

सोंधु*–वि० दे० "सोंधा"।

सोंपना–क्रि० स० दे० "सौंपना"।

सोंवनिया–सज्ञा पु० [स० सुवर्ण] एक आभूषण जो नाक में पहना जाता है।

सोंह*†–सज्ञा स्त्री०, अव्य० दे० "सौंह"।

सोंहीं*–अव्य० दे० "सौंह"।

सो–सर्व० [स० स] वह।

*वि० दे० "सा"।

अव्य० अत। इसलिये। निदान।

सोऽहम्–[स० स + अहम्] वही मैं हूँ—अर्थात् मैं ब्रह्म हूँ। (वेदांत का सिद्धात है कि जीव और ब्रह्म एक ही है। इसी सिद्धात का प्रतिपादन करने के लिये वेदाती लोग कहा करते हैं सोऽहम्; अर्थात् मैं वही ब्रह्म हूँ। उपनिषदों में यह बात "अहं ब्रह्मास्मि" और "तत्त्वमसि" रूप में कही गई है।)

सोऽहमस्मि–दे० "सोऽहम्"।

सोअना*–क्रि० अ० दे० "सोना"।

सोआ–सज्ञा पु० [स० मिश्रेया] एक प्रकार का साग।

सोई–सर्व० दे० "वही"।

अव्य० दे० "सो"।

सोकन–सज्ञा पु० दे० "सोखन"।

सोकना*–क्रि० स० [स० शोक] शोक करना। रज करना।

सोकित*–वि० [स० शोक] शोकयुक्त।

सोक्कन–सज्ञा पु० दे० "सोखन"।

सोखक*–वि० [स० शोषक] १ शोषण करनेवाला। २ नाश करनेवाला।

सोखता–वि०, सज्ञा पु० दे० "सोख्ता"।

सोखन्–सज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का जगली धान।

सोखना–क्रि० स० [स० शोषण] शोषण करना। चूस लेना। सुखा डालना।

सोख्ता–सज्ञा पु० [फा०] एक प्रकार का खुरदुरा कागज जो स्याही सोख लेता है।

वि० जला हुआ।

सोग*–सज्ञा पु० [स० शोक] दुख। रज।

सोगिनी*–वि० स्त्री० [हिं० सोग] शोक करनेवाली। शोकार्त्ता। शोकाकुला।

सोगी–वि० [स० शोक] [स्त्री० सोगिनी] शोक मनानेवाला। शोकाकुल। दुखित।

सोच–सज्ञा पु० [स० शोच] १ सोचने की क्रिया या भाव। २ चिंता। फिक्र। ३ शोक। दुख। रज। ४ पछतावा।

सोचना–क्रि० अ० [स० शोचन] १ मन में किसी बात पर विचार करना। गौर करना। २ चिंता करना। फिक्र करना। ३ खेद करना। दुख करना।

सोच-विचार–सज्ञा पु० [हिं० सोच + स० विचार] समझ-बूझ। गौर।

सोचाना–क्रि० स० दे० "सुचाना"।

सोचु*–सज्ञा पु० दे० "सोच"।

सोज–सज्ञा स्त्री० [हिं० सूजना] १ सूजन। शोथ। २ दे० "सौंज"।

सोजन–सज्ञा पु० [फा०] सूई।

सोजिश–सज्ञा स्त्री० [फा०] सूजन। शोथ।

सोझ, सोझा–वि० [स० सम्मुख] [स्त्री० सोझी] १ सीधा। सरल। २ सामने की

ओर गया हुआ। सीधा।
सोटा—संज्ञा पुं० दे० "सुअटा"।
सोढर—वि० [देश०] भोंदू। बेवकूफ़।
सोत—संज्ञा पुं० दे० "स्रोत" या "सोता"।
सोता—संज्ञा पुं० [सं० स्रोत] १. जल की बराबर बहनेवाली छोटी धारा। झरना। चश्मा। २. नदी की शाखा। नहर।
सोति—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोता] स्रोत। धारा।
संज्ञा स्त्री० दे० "स्वाति"।
संज्ञा पुं० दे० "श्रोत्रिय"।
सोदर—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सोदरा, सोदरी] सहोदर भ्राता। सगा भाई।
वि० एक गर्भ से उत्पन्न।
सोध*†—संज्ञा पुं० [सं० शोध] १. खोज। खबर। पता। टोह। २. संशोधन। सुधारना। ३. चुकता होना। अदा होना।
संज्ञा पुं० [सं० सौध] महल। प्रासाद।
सोधन—संज्ञा पुं० [सं० शोधन] ढूँढ़। खोज।
सोधना†—क्रि० स० [सं० शोधन] १. शुद्ध करना। साफ़ करना। २. ग़लती या दोष दूर करना। ३. निश्चित करना। निर्णय करना। ४. खोजना। ढूँढ़ना। ५. धातुओं का औषध रूप में व्यवहार करने के लिए संस्कार। ६. ठीक करना। दुरुस्त करना। ७. ऋण चुकाना। अदा करना।
सोधाना†—क्रि० स० [हिं० सोधना] सोधने का काम दूसरे से कराना।
सोन—संज्ञा पुं० [सं० शोण] एक प्रसिद्ध नद जो गंगा में मिला है।
संज्ञा पुं० दे० "सोना"।
संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का जलपक्षी।
वि० [सं० शोण] लाल। अरुण।
सोनकीकर—संज्ञा पुं० [हिं० सोना + कीकर] एक प्रकार का बहुत बड़ा पेड़।
सोनकेला—संज्ञा पुं० [हिं० सोना + केला] चंपा केला। सुवर्ण-कदली। पीला केला।
सोनचिरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोना + चिड़िया] नटी।
सोनजर्द—संज्ञा स्त्री० दे० "सोनजूही"।
सोनजूही—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोना + जूही] एक प्रकार की जूही जिसके फूल पीले होते हैं। पीली जूही। स्वर्ण-यूथिका।
सोनभद्र—संज्ञा पुं० दे० "सोन"।
सोनवाना—वि० दे० "सुनहला"।
सोनहला—वि० दे० "सुनहला"।
सोनहा—संज्ञा पुं० [सं० शुन = कुत्ता] कुत्ते की जाति का एक छोटा जंगली जानवर।
सोनहार—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का समुद्री पक्षी।
सोना—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्ण] १. सुंदर उज्ज्वल पीले रंग की एक प्रसिद्ध बहुमूल्य धातु जिसके सिक्के और गहने बनते हैं। स्वर्ण। कनक। कांचन। हेम।
मुहा०—सोने का घर मिट्टी होना = सब कुछ नष्ट होना। सोने में घुन लगना असंभव या अनहोनी बात होना। सोने में सुगंध किसी बहुत बढ़िया चीज़ में और अधिक विशेषता होना। २. बहुत सुंदर वस्तु। ३. राजहंस।
संज्ञा पुं० मझोले कद का एक वृक्ष।
संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की मछली।
क्रि० अ० [सं० शयन] १. नींद लेना। शयन करना। आँख लगना।
मुहा०—सोते जागते = हर समय।
२. शरीर के किसी अंग का सुन्न होना।
सोनागेरू—संज्ञा पुं० [हिं० सोना + गेरू] गेरू का एक भेद।
सोनापाठा—संज्ञा पुं० [सं० शोण + हिं० पाठा] १. एक प्रकार का ऊँचा वृक्ष। इसकी छाल, फल और बीज औषध के काम में आते हैं। २. इसी वृक्ष का एक और भेद।
सोनामक्खी—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वर्णमाक्षिक] एक खनिज पदार्थ जिसकी गणना उप-धातुओं में है।
सोनार—संज्ञा पुं० दे० "सुनार"।
सोनित*—संज्ञा पुं० दे० "शोणित"।
सोनी†—संज्ञा पुं० [हिं० सोना] सुनार।
सोपत—संज्ञा पुं० [सं० सूपपत्ति] सुभीता। सुपास। आराम का प्रबंध।
सोपान—संज्ञा पुं० [सं०] सीढ़ी। जीना।

सोपानित–वि० [स०] सोपान से युक्त।
सोपि–वि० [स० स + अपि] १ वही। २ वह भी।
सोफ्ता–संज्ञा पु० [हि० सुभीता] १ एकांत स्थान। निराली जगह। २ रोग आदि में कुछ कमी होना।
सोफियाना–वि० [अ० सूफी + इयाना (फा० प्रत्य०)] १ सूफिया का। सूफी संबंधी। २ जो देखने में सादा, पर बहुत भला लगे।
सोफी–संज्ञा पु० दे० "सूफी"।
सोभ*–संज्ञा स्त्री० दे० "शोभा"।
सोभना*†–क्रि० अ० [स० शोभन] सोहना। शोभित होना।
सोभाकारी–वि० [स० शोभाकर] सुंदर।
सोभित–वि० दे० 'शोभित'।
सोम–संज्ञा पु० [स०] १ प्राचीन काल की एक लता जिसका रस मादक होता था और जिसे प्राचीन वैदिक ऋषि पान करते थे। २ एक प्रकार की लता जो वैदिक काल के सोम से भिन्न है। ३ वैदिक काल के एक प्राचीन देवता। ४ चंद्रमा। ५ सोमवार। ६ कुबेर। ७ यम। ८ वायु। ९ अमृत। १०, जल। ११ सोमयज्ञ। १२ स्वर्ग। आकाश।
सोमकर–संज्ञा पु० [स० सोम + कर] चंद्रमा की किरण।
सोमजाजी–संज्ञा पु० दे० 'सोमयाजी"।
सोमन–संज्ञा पु० [स० सौमन] एक प्रकार का अस्त्र।
सोमनस–संज्ञा पु० दे० 'सौमनस्य"।
सोमनाथ–संज्ञा पु० [स०] १ प्रसिद्ध द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक। २ काठियावाड़ के पश्चिम तट पर स्थित एक प्राचीन नगर जहाँ उक्त ज्योतिर्लिंग है।
सोमपान–संज्ञा पु० [स०] सोम पीना।
सोमपायी–वि० [स० सोमपायिन] [स्त्री० सोमपायिनी] सोम पीनेवाला।
सोमप्रदोष–संज्ञा पु० [स०] सोमवार को किया जानेवाला एक व्रत।
सोमयाग–संज्ञा पु० [स०] एक त्रैवार्षिक यज्ञ जिसमें सोम-रस पान किया जाता था।
सोमयाजी–संज्ञा पु० [स० सोमयाजिन्] वह जो सोमयाग करता हो।
सोमरस–संज्ञा पु० [स०] सोमलता का रस।
सोमराज–संज्ञा पु० [स०] चंद्रमा।
सोमराजी–संज्ञा पु० [स० सोमराजिन्] १ बकुची। २ दो यगण का एक वृत्त।
सोमवंश–संज्ञा पु० [स०] चंद्रवंश।
सोमवंशीय–वि० [स०] १ चंद्रवंश में उत्पन्न। २ चंद्रवंश-संबंधी।
सोमवती अमावस्या–संज्ञा स्त्री० [स०] सोमवार को पड़नेवाली अमावस्या जो पुराणानुसार पुण्य-तिथि मानी जाती है।
सोमवल्लरी–संज्ञा स्त्री० [स०] १ ब्राह्मी। २ एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में रगण, जगण, रगण, जगण और रगण होते हैं। चामर। तूण।
सोमवल्ली–संज्ञा स्त्री० दे० "सोम" १।
सोमवार–संज्ञा पु० [स०] एक वार जो सोम अर्थात् चंद्रमा का माना जाता और रविवार के बाद पड़ता है। चंद्रवार।
सोमवारी–संज्ञा स्त्री० दे० "सोमवती अमावस्या"।
वि० सोमवार-संबंधी।
सोमसुत–संज्ञा पु० [स०] बुध।
सोमावती–संज्ञा स्त्री० [स०] चंद्रमा की माता
सोमास्त्र–संज्ञा पु० [स०] एक अस्त्र जो चंद्रमा का अस्त्र माना जाता है।
सोमेश्वर–संज्ञा पु० [स०] १ दे० "सोमनाथ"। २ संगीत शास्त्र के एक आचार्य का नाम।
सोय*–सर्व० [हि० सो + ही, ई] वही। सर्व० दे० "सो"।
सोया–संज्ञा पु० दे० 'सोआ'।
सोर*–संज्ञा पु० [फा० शोर] १ शोर। हल्ला। कोलाहल। २ प्रसिद्धि। नाम। संज्ञा स्त्री० [स० शटा] जड़। मूल।
सोरठ–संज्ञा पु० [स० सौराष्ट्र] १ गुजरात और दक्षिणी काठियावाड़ का प्राचीन नाम। २ सोरठ देश की राजधानी सूरत।

संज्ञा पुं० एक ओड़व राग।
सोरठा–संज्ञा पुं० [सं० सौराष्ट्र] अड़तालीस मात्राओं का एक छंद जिसके पहले और तीसरे चरण में ग्यारह ग्यारह और दूसरे तथा चौथे चरण में तेरह तेरह मात्राएँ होती हैं। दोहे को उलट देने से सोरठा हो जाता है।
सोरनी†–संज्ञा स्त्री० [हिं० सँवारना + ई (प्रत्य०)] १. झाड़ू। बुहारी। कूचा। २. मृतक का त्रिरात्रि नामक संस्कार।
सोरह‡*–वि०, संज्ञा पुं० दे० "सोलह"।
सोरही†–संज्ञा स्त्री० [हिं० सोलह] १. जूआ खेलने के लिये सोलह चित्ती कौड़ियाँ। २. वह जूआ जो सोलह कौड़ियों से खेलते हैं।
सोरा‡*–संज्ञा पुं० दे० "शोरा"।
सोलंकी–संज्ञा पुं० [देश०] क्षत्रियों का एक प्राचीन राजवंश जिसका अधिकार गुजरात पर बहुत दिनों तक था।
सोलह–वि० [सं० षोडश] जो गिनती में दस से छः अधिक हो। षोडश।
संज्ञा पुं० दस और छः की सख्या या अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—१६।
मुहा०—सोलहो आने = संपूर्ण। पूरा पूरा।
सोला–संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का ऊँचा झाड़ जिसकी डालियों के छिलके से अँगरेजी ढंग की टोपी बनती है।
सोवज–संज्ञा पुं० दे० "सावज"।
सोवन*†–संज्ञा पुं० [हिं० सोवना] सोने की क्रिया या भाव।
सोवना*†–क्रि० अ० दे० "सोना"।
सोवा–संज्ञा पुं० दे० "सोआ"।
सोवाना–क्रि० स० दे० "सुलाना"।
सोवैया*†–संज्ञा पुं० [हिं० सोवना] सोनेवाला।
सोषण*–संज्ञा पुं० दे० "शोषण"।
सोषना*–क्रि० अ० दे० "सोखना"।
सोषु, सोसु*–वि० [हिं० सोखना] सोखनेवाला।
सोसन–संज्ञा पुं० [फ़ा० सौसन] फ़ारस की ओर का एक प्रसिद्ध फूल का पौधा।
सोसनी–वि० [फ़ा० सौसन] सोसन के फूल के रंग का। लाली लिए नीला।
सोस्मि*–दे० "सोऽहम्"।
सोह‡*–क्रि० वि० दे० "सौंह"।
सोहं, सोहंग–दे० "सोऽहम्"।
सोहगी–संज्ञा स्त्री० [हिं० सोहाग] १. तिलक चढ़ने के बाद की एक रस्म जिसमें लड़की के लिये कपड़े, गहने आदि जाते हैं। २. सिंदूर, मेंहदी आदि सुहाग की वस्तुएँ।
सोहन–वि० [सं० शोभन] [स्त्री० सोहनी] अच्छा लगनेवाला। सुंदर। सुहावना।
संज्ञा पुं० सुंदर पुरुष। नायक।
संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की बड़ी चिड़िया।
सोहन पपड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० सोहन + पपड़ी] एक प्रकार की मिठाई।
सोहन हलवा–संज्ञा पुं० [हिं० सोहन + अ० हलवा] एक प्रकार की स्वादिष्ठ मिठाई।
सोहना–क्रि० अ० [सं० शोभन] १. शोभित होना। सजना। २. अच्छा लगना।
†वि० [स्त्री० सोहनी] सुंदर। मनोहर।
सोहनी–संज्ञा स्त्री० [सं० शोधनी] झाड़ू।
वि० स्त्री० [हिं० सोहना] सुंदर। सुहावनी।
सोहबत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. संग-साथ। संगत। २. संभोग। स्त्री-प्रसंग।
सोहमस्मि–दे० "सोऽहम्"।
सोहर–संज्ञा पुं० दे० "सोहला"।
संज्ञा स्त्री० [सं० सूतका] सूतिकागृह। सौरी।
सोहराना–क्रि० स० दे० "सहलाना"।
सोहला–संज्ञा पुं० [हिं० सोहना] १. वह गीत जो घर में बच्चा पैदा होने पर स्त्रियाँ गाती हैं। २. मांगलिक गीत।
सोहाइन*‡–वि० दे० "सुहावना"।
सोहाग†–संज्ञा पुं० दे० "सुहाग"।
सोहागिन–संज्ञा स्त्री० दे० "सुहागिन"।
सोहागिल–संज्ञा स्त्री० दे० "सुहागिन"।
सोहाता–वि० [हिं० सोहना] [स्त्री० सोहाती] सुहावना। शोभित। सुंदर। अच्छा।
सोहाना–क्रि० अ० [सं० शोभन] १. शोभित होना। सजना। २. रुचिकर होना। अच्छा लगना। फबना।
सोहाया–वि० [हिं० सोहाना] [स्त्री० सोहाई]

शोभित। शोभायमान। सुंदर।
सोहरद‡*–संज्ञा पु० दे० "सौहार्द"।
सोहारी–संज्ञा स्त्री० [हिं० सोहाना] पूरी।
सोहावना–वि० दे० "सुहावना"।
क्रि० अ० दे० "सोहाना"।
सोहासित*†–वि० [हिं० सोहना] १ प्रिय लगनेवाला। रुचिकर। २ ठकुर-सोहाती।
सोहिं‡–क्रि० वि० दे० "सौंह"।
सोहिनी–वि० स्त्री० [हिं० सोहना] सुहावनी। संज्ञा स्त्री० करुण रस की एक रागिनी।
सोहिल–संज्ञा पु० [अ० सुहैल] अगस्त्य तारा।
सोहिला–संज्ञा पु० दे० "सोहला"।
सोहीं†*–क्रि० वि० [सं० सम्मुख] सामने।
सोहैं*–क्रि० वि० [सं०सम्मुख] सामने। आगे।
सौं*–संज्ञा स्त्री० दे० "सौंह"।
अव्य०, प्रत्य० दे० "सो" या "सा"।
सौंघा–वि० [हिं० महँगा का उलटा] १ अच्छा। उत्तम। २ उचित। ठीक।
सौंघाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० सौंघा] अधिकता।
सौंचना†–क्रि० स० [सं० शौच] मल त्याग करना या उसके बाद हाथ-पैर धोना।
सौंचर–संज्ञा पु० दे० "साचर नमक"।
सौंचाना†–क्रि० स० [हिं० सौंचना] शौच कराना। मल त्याग कराना। हगाना।
सौंज*–संज्ञा स्त्री० दे० "सौज"।
सौंड, सौंड़ा†–संज्ञा पु० [हिं० सोना + ओढ़ना] ओढ़ने का भारी कपड़ा।
सौंतुख*–संज्ञा पु० [सं० सम्मुख] सामने। क्रि० वि० आँखों के आगे। सामने।
सौंदन–संज्ञा स्त्री० [हिं० सौंदना] धोबियों का कपड़ों को धोने से पहले रेह मिले पानी में भिगोना।
सौंदना–क्रि० स० [सं० सधम] आपस में मिलाना। सानना। ओतप्रोत करना।
सौंदर्ज–संज्ञा पु० दे० "सौंदर्य"।
सौंदर्य–संज्ञा पु० [सं०] सुंदर होने का भाव या धर्म। सुंदरता। खूबसूरती।
सौंदर्यता–संज्ञा स्त्री० दे० "सौंदर्य"।
सौंध*–संज्ञा पु० दे० "सौध"।
संज्ञा स्त्री० [सं० सुगंध] सुगंध। खुशबू।
सौंधना–क्रि० स० [सं० सुगंधि] सुगंधित करना। सुवासित करना। बासना।
सौंधा–वि० [हिं० सोंधा] १. दे० "सोंधा"। २ रुचिकर। अच्छा।
सौंनमक्खी–संज्ञा स्त्री० दे० "सोनामक्खी"।
सौंपना–क्रि० स० [सं० समर्पण] १ सुपुर्द करना। हवाले करना। २ सहेजना।
सौंफ–संज्ञा स्त्री० [सं० शतपुष्पा] एक छोटा पौधा जिसके बीजों का औषध के अतिरिक्त मसाले में भी व्यवहार करते हैं।
सौंफिया, सौंफी–संज्ञा स्त्री० [हिं० सौंफ + इया (प्रत्य०)] सौंफ की बनी हुई शराब।
सौंभरि–संज्ञा पु० दे० "सौभरि"।
सौंर–संज्ञा स्त्री० दे० "सौरी"।
सौंरई‡–संज्ञा स्त्री० [हिं० साँवर] साँवलापन।
सौंरना*–क्रि० स० [सं० स्मरण] स्मरण करना।
क्रि० अ० दे० "सँवारना"।
सौंह*†–संज्ञा स्त्री० [हिं० सौगंद] शपथ। कसम। संज्ञा पु० क्रि० वि० [सं० सम्मुख] सामने।
सौंहन–संज्ञा पु० दे० "सोहन"।
सौंहो–संज्ञा स्त्री० [?] एक प्रकार का हथियार।
सौ–वि० [सं० शत] जो गिनती में पचास का दूना हो। नब्बे और दस। शत।
संज्ञा पु० नब्बे और दस की संख्या या अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—१००।
मुहा०–सौ बात की एक बात = सारांश। तात्पर्य। निचोड़।
* वि० दे० "सा"।
सौक–संज्ञा स्त्री० [हिं० सौत] सौत। सपत्नी।
वि० [हिं० सौ + एक] एक सौ।
सौकन†–संज्ञा स्त्री० दे० "सौत"।
सौकर्य–संज्ञा पु० [सं०] १. सुकरता। सुसाध्यता। २ सुविधा। सुभीता। ३ सूकरता। सुअरपन।
सौकुमार्य–संज्ञा पु० [सं०] १ सुकुमारता। कोमलता। नाजुकपन। २ यौवन। जवानी। ३ काव्य का एक गुण जिसमें ग्राम्य और श्रुति-कटु शब्दों का प्रयोग

त्याज्य माना गया है।
सौख*†–संज्ञा पुं० दे० "शौक"।
सौख्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. सुख का भाव। सुखता। सुखत्व। २. सुख। आराम।
सौगंद–संज्ञा स्त्री० [सं० सौगंध] शपथ। कसम।
सौगंध–संज्ञा पुं० [सं०] १. सुगंधित तेल, इत्र आदि का व्यापार करनेवाला। गंधी। २. सुगंध। खुशबू।
संज्ञा स्त्री० दे० "सौगंद"।
सौगरिया–संज्ञा पुं० [?] क्षत्रियों की एक जाति।
सौगात–संज्ञा स्त्री० [तु०] वह वस्तु जो परदेश से इष्ट-मित्रों को देने के लिये लाई जाय। भेंट। उपहार। तोहफ़ा।
सौघा†–वि० [हिं० महँगा का अनु०] सस्ता। कम दाम का। महँगा का उलटा।
सौच*–संज्ञा पुं० दे० "शौच"।
सौज–संज्ञा स्त्री० [सं० शय्या] उपकरण। सामग्री। साज-सामान।
सौजना–क्रि० अ० दे० "सजना"।
सौजन्य–संज्ञा पुं० [सं०] सुजन का भाव। सुजनता। भलमनसत।
सौजन्यता–संज्ञा स्त्री० दे० "सौजन्य"।
सौजा–संज्ञा पुं० [हिं० सावज] वह पशु या पक्षी जिसका शिकार किया जाय।
सौत–संज्ञा स्त्री० [सं० सपत्नी] किसी स्त्री के पति या प्रेमी की दूसरी स्त्री या प्रेमिका। सपत्नी। सवत।
मुहा०—सौतिया डाह = १. दो सौतों में होनेवाली डाह या ईर्ष्या। २. द्वेष। जलन।
सौतन, सौतिन–संज्ञा स्त्री० दे० "सौत"।
सौतुक, सौतुख*–संज्ञा पुं० दे० "सौंतुख"।
सौतेला–वि० [हिं० सौत] [स्त्री० सौतेली] १. सौत से उत्पन्न। सौत का। २ जिसका संबंध सौत के रिश्ते से हो।
सौत्रामणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] इंद्र के प्रीत्यर्थ किया जानेवाला एक प्रकार का यज्ञ।
सौदा–संज्ञा पुं० [अ०] १. क्रय-विक्रय की वस्तु। चीज। माल। २. लेन-देन। व्यवहार। ३. क्रय-विक्रय। व्यापार।
यौ०—सौदा सुलुफ = खरीदने की चीज-वस्तु। सौदा सूत = व्यवहार।
संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] पागलपन। उन्माद।
सौदाई–संज्ञा पुं० [अ० सौदा] पागल। बावला।
सौदागर–संज्ञा पुं० [फ़ा०] व्यापारी। व्यवसायी। तिजारत करनेवाला।
सौदागरी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] व्यापार। व्यवसाय। तिजारत। रोजगार।
सौदामनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] बिजली। विद्युत।
सौदामिनी–संज्ञा स्त्री० दे० "सौदामनी"।
सौध–संज्ञा पुं० [सं०] १. भवन। प्रासाद। २. चाँदी। रजत। ३. दूधिया पत्थर।
सौधना–क्रि० स० दे० "सोंधना"।
सौन*–क्रि० वि० [सं० सम्मुख] सामने।
सौनक–संज्ञा पुं० दे० "शौनक"।
सौनन†–संज्ञा स्त्री० दे० "सौदन"।
सौना*–संज्ञा पुं० दे० "सोना"।
सौपना*–क्रि० स० दे० "सौंपना"।
सौबल–संज्ञा पुं० [सं०] गांधार देश के राजा सुबल का पुत्र, शकुनि।
सौभ–संज्ञा पुं० [सं०] १. राजा हरिश्चंद्र की वह कल्पित नगरी जो आकाश में मानी गई है। कामचारिपुर। २. एक प्राचीन जनपद। ३. उक्त जनपद के राजा।
सौभग–संज्ञा पुं० [सं०] १. सौभाग्य। खुशकिस्मती। २. सुख। आनंद। ३. ऐश्वर्य। धन-दौलत। ४. सुंदरता। सौंदर्य।
सौभद्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. सुभद्रा के पुत्र, अभिमन्यु। २ वह युद्ध जो सुभद्रा के कारण हुआ था।
वि० सुभद्रा-संबंधी।
सौभरि–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि जिन्होंने मांधाता की पचास कन्याओं से विवाह करके ५००० पुत्र उत्पन्न किए थे।
सौभागिनी–संज्ञा स्त्री० [सं० सौभाग्य] सधवा स्त्री। सोहागिन।
सौभाग्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. अच्छा भाग्य। खुशकिस्मती। २. सुख। आनंद। ३. कल्याण। कुशल क्षेम। ४. स्त्री के सधवा रहने की अवस्था। सुहाग। अहिवात।

५ ऐश्वर्य। वैभव। ६ सुंदरता। सौंदर्य।
सौभाग्यवती–वि० स्त्री० [सं०] (स्त्री) जिसका सौभाग्य या सुहाग बना हो। सधवा। सुहागिन।
सौभाग्यवान्–वि० [सं० सौभाग्यवत्] [स्त्री० सौभाग्यवती] १ अच्छे भाग्यवाला। खुश-किस्मत। २ सुखी और संपन्न।
सौम*–वि० दे० "सौम्य"।
सौमन–संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का अस्त्र।
सौमनस–वि० [सं०] १ फूलों का। २ मनोहर। रुचिकर। प्रिय।
संज्ञा पु० १ प्रसन्नता। आनंद। २ पश्चिम दिशा का हाथी। (पुराण) ३ अस्त्र निष्फल करने का एक अस्त्र।
सौमनस्य–संज्ञा पु० [सं०] प्रसन्नता।
सौमित्र–संज्ञा पु० [सं०] १ सुमित्रा के पुत्र, लक्ष्मण। २ मित्रता। दोस्ती।
सौमित्रा*–संज्ञा स्त्री० दे० "सुमित्रा"।
सौम्य–वि० [सं०] [स्त्री० सौम्या] १ सोम-लता-संबंधी। २ चंद्रमा-संबंधी। ३ शीतल और स्निग्ध। ४ सुशील। शांत। ५. मांगलिक। शुभ। ६ मनोहर। सुंदर।
संज्ञा पु० १ सोम यज्ञ। २ चंद्रमा के पुत्र, बुध। ३ ब्राह्मण। ४ मार्गशीर्ष मास। अगहन। ५ साठ संवत्सरों में से एक। ६ सज्जनता। ७ एक दिव्यास्त्र।
सौम्यकृच्छ्र–संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का व्रत।
सौम्यता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सौम्य होने का भाव या धर्म। २ सुशीलता। शांतता। ३ सुंदरता। सौंदर्य।
सौम्यदर्शन–वि० [सं०] सुंदर। प्रियदर्शन।
सौम्यशिखा–संज्ञा स्त्री० [सं०] मुक्तक विषम वृत्त के दो भेदों में से एक।
सौम्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] आर्य्या छंद का एक भेद।
सौर–[सं०] १ सूर्य्य-संबंधी। सूर्य्य का। २ सूर्य्य से उत्पन्न।
संज्ञा पु० १ शनि। २ सूर्य्य का उपासक।
*संज्ञा स्त्री० [हिं० सौंर] चादर। ओढ़ना।
सौरज*–संज्ञा पु० दे० "शौर्य्य"।
सौर दिवस–संज्ञा पु० [सं०] एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का समय।
सौरभ–संज्ञा पु० [सं०] १ सुगंध। खुशबू। महक। २ केसर। ३ आम। आम्र।
सौरभक–संज्ञा पु० [सं०] एक वर्ण-वृत्त।
सौरभित–वि० [सं० सौरभ] सौरभ-युक्त। सुगंधित। खुशबूदार।
सौर मास–संज्ञा पु० [सं०] एक संक्रांति से दूसरी संक्रांति तक का समय।
सौर वर्ष–संज्ञा पु० [सं०] एक मेष संक्रांति से दूसरी मेष संक्रांति तक का समय।
सौरसेन–संज्ञा पु० दे० "शौरसेन"।
सौराष्ट्र–संज्ञा पु० [सं०] १ गुजरात काठिया-वाड़ का प्राचीन नाम। सोरठ देश। २ उक्त प्रदेश का निवासी। ३ एक वर्णवृत्त।
सौराष्ट्र-मृत्तिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] गोपी चंदन।
सौराष्ट्रिक–वि० [सं०] सौराष्ट्र देश-संबंधी।
सौरास्त्र–संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का दिव्यास्त्र।
सौरि–संज्ञा पु० दे० 'शौरि"।
सौरी–संज्ञा स्त्री० [सं० सूतिका] वह कोठरी या कमरा जिसमें स्त्री बच्चा जने। सूतिका-गार। जच्चाखाना।
संज्ञा स्त्री० [सं० शफरी] एक प्रकार की मछली।
सौर्य–वि० [सं०] सूर्य्य-संबंधी। सूर्य्य का।
सौवर्चल–संज्ञा पु० [सं०] सोंचर नमक।
सौवीर–संज्ञा पु० [सं०] १ सिंधु नद के आस-पास का प्राचीन प्रदेश। २ उक्त प्रदेश का निवासी या राजा।
सौवीराजन–संज्ञा पु० [सं०] सुरमा।
सौष्ठव–संज्ञा पु० [सं०] १ सुडौलपन। उपयुक्तता। २ सुंदरता। सौंदर्य। ३ नाटक का एक अंग।
सौसन–संज्ञा पु० दे० 'सोसन'।
सौसनी–वि० संज्ञा पु० दे० 'सोसनी'।

सौहें–संज्ञा स्त्री० [सं० शपथ] । क़सम।
त्रि० वि० [सं० सम्मुख] सामने। आगे।
सौहार्द, सौहार्द्य–संज्ञा पुं० [सं०] सुहृद् का भाव। मित्रता। मैत्री।
सौहीं–त्रि० वि० [हिं० सौंह] सामने। आगे।
सौहृद–संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० सौहृद्य] १. मित्रता। दोस्ती। २. मित्र। दोस्त।
स्कंद–संज्ञा पुं० [सं०] १. निकलना। बहना। गिरना। २. विनाश। ध्वंस। ३. कार्त्तिकेय जो शिव के पुत्र, देवताओं के सेनापति और युद्ध के देवता माने जाते हैं। ४. शिव। ५. शरीर। देह। ६. बालकों के नौ प्राणघातक ग्रहों या रोगों में से एक।
स्कंदगुप्त–संज्ञा पुं० [सं०] गुप्तवंश के एक प्रसिद्ध सम्राट्। (ई० ४५० से ४६७ तक)
स्कंदन–संज्ञा पुं० [सं०] १. कोठा साफ होना। रेचन। २. निकलना। बहना। गिरना।
स्कंदपुराण–संज्ञा पुं० [सं०] अठारह पुराणों में से एक प्रसिद्ध पुराण।
स्कंदित–वि० [सं०] निकला हुआ। गिरा हुआ। स्खलित। पतित।
स्कंध–संज्ञा पुं० [सं०] १. कंधा। मोढ़ा। २. वृक्ष के तने का वह भाग जहाँ से डालियाँ निकलती है। काड। धंड। ३. डाल। शाखा। ४. समूह। गरोह। झुंड। ५. सेना का अंग। व्यूह। ६. ग्रंथ का विभाग जिसमें कोई पूरा प्रसग हो। खंड। ७. शरीर। देह। ८. मुनि। आचार्य। ९. युद्ध। संग्राम। १०. आर्या छंद का एक भेद। ११. बौद्धों के अनुसार रूप, वेदना, विज्ञान, संज्ञा और संस्कार ये पाँचों पदार्थ। १२. दर्शन-शास्त्र के अनुसार शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध।
स्कंधावार–संज्ञा पुं० [सं०] १. राजा का डेरा या शिविर। कंपू। २. छावनी। सेनानिवास। ३. सेना। फौज।
स्कंभ–संज्ञा पुं० [सं०] १. खंभा। स्तंभ। २. परमेश्वर। ईश्वर।
स्खलित–वि० [सं०] १. गिरा हुआ। पतित। च्युत। २. फिसला हुआ। लड़खड़ाया हुआ। विचलित। ३. चूका हुआ।
स्तंभ–संज्ञा पुं० [सं०] १. खंभा। थंभा। थूनी। २. पेड़ का तना। तरुस्कंध। ३. साहित्य में एक प्रकार का सात्त्विक भाव। किसी कारण से संपूर्ण अंगों की गति का अवरोध। जड़ता। अचलता। ४. प्रतिबंध। रुकावट। ५. एक प्रकार का तांत्रिक प्रयोग जिससे किसी शक्ति को रोकते हैं।
स्तंभक–वि० [सं०] १. रोकनेवाला। रोधक। २. क़ब्ज करनेवाला। ३. वीर्य रोकनेवाला।
स्तंभन–संज्ञा पुं० [सं०] १. रुकावट। अवरोध। निवारण। २. वीर्य आदि के स्खलन में बाधा या विलंब। ३. वीर्य्यपात रोकने की दवा। ४. जड़ या निश्चेष्ट करना। जड़ीकरण। ५. एक प्रकार का तांत्रिक प्रयोग जिससे किसी की चेष्टा या शक्ति को रोकते हैं। ६. कब्ज़। मलावरोध। ७. कामदेव के पाँच बाणों में से एक।
स्तंभित–वि० [सं०] १. जो जड़ या अचल हो गया हो। निश्चल। निःस्तब्ध। सुन्न। २. रुका या रोका हुआ। अवरुद्ध।
स्तन–संज्ञा पुं० [सं०] स्त्रियों या मादा पशुओं की छाती जिसमें दूध रहता है।
मुहा०–स्तन पीना=स्तन में मुँह लगाकर उसका दूध पीना।
स्तनपान–संज्ञा पुं० [सं०] स्तन में के दूध का पीना। स्तन्यपान।
स्तनपायी–वि० [सं० स्तनपायिन्] जो माता के स्तन से दूध पीता हो।
स्तब्ध–वि० [सं०] १. जो जड़ या अचल हो गया हो। जड़ीभूत। स्तंभित। निश्चेष्ट। २. दृढ़। स्थिर। ३. मंद। धीमा।
स्तब्धता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. स्तब्ध का भाव। जड़ता। २. स्थिरता। दृढ़ता।
स्तर–संज्ञा पुं० [सं०] १. तह। परत। तबक। थर। २. सेज। शय्या। तल्प। ३. भूमि आदि का एक प्रकार का विभाग जो उसकी भिन्न भिन्न कालों में बनी हुई तहों के आधार पर होता है।
स्तरण–संज्ञा पुं० [सं०] फैलाने या बिखेरने

की क्रिया।

स्तव–संज्ञा पुं० [सं०] किसी देवता का छंदोबद्ध स्वरूप-कथन या गुण-गान। स्तुति। स्तोत्र।

स्तबक–संज्ञा पुं० [सं०] १ फूलों का गुच्छा। गुलदस्ता। २ समूह। ढेर। ३ पुस्तक का कोई अध्याय या परिच्छेद। ४ वह जो किसी की स्तुति या स्तव करता हो।

स्तवन–संज्ञा पुं० [सं०] स्तुति करने की क्रिया। गुण-कीर्त्तन। स्तव। स्तुति।

स्तीर्ण–वि० [सं०] फैलाया, बिखेरा या छितराया हुआ। विस्तृत। विकीर्ण।

स्तुत–वि० [सं०] जिसकी स्तुति या प्रार्थना की गई हो। प्रशंसित।

स्तुति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गुणकीर्त्तन। स्तव। प्रशंसा। तारीफ। बड़ाई। २ दुर्गा।

स्तुतिपाठक–संज्ञा पुं० [सं०] १ स्तुतिपाठ करनेवाला। २ चारण। भाट। मागध। सूत।

स्तुतिवाचक–संज्ञा पुं० [सं०] १ स्तुति या प्रशंसा करनेवाला। २ खुशामदी।

स्तुत्य–वि० [सं०] स्तुति या प्रशंसा के योग्य। प्रशंसनीय।

स्तूप–संज्ञा पुं० [सं०] १ ऊँचा ढूह या टीला। २ वह ढूह या टीला जिसके नीचे भगवान् बुद्ध या किसी बौद्ध महात्मा की अस्थि, दाँत, केश आदि स्मृति चिह्न सुरक्षित हों।

स्तेय–संज्ञा पुं० [सं०] चोरी। चौर्य्य।

स्तोक–संज्ञा पुं० [सं०] १ बूँद। बिंदु। २ पपीहा। चातक।

स्तोता–वि० [सं० स्तोतृ] स्तुति करनेवाला।

स्तोत्र–संज्ञा पुं० [सं०] किसी देवता का छंदोबद्ध स्वरूप-कथन या गुणकीर्तन। स्तव। स्तुति।

स्तोम–संज्ञा पुं० [सं०] १ स्तुति। प्रार्थना। २ यज्ञ। ३ एक विशेष प्रकार का यज्ञ। ४ समूह। राशि।

स्त्री–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नारी। औरत। २ पत्नी। जोरू। ३ मादा। ४ एक वृत्ति जिसके प्रति चरण में दो गुरु होते हैं। संज्ञा स्त्री० दे० "इस्तिरी"।

स्त्रीत्व–संज्ञा पुं० [सं०] १ स्त्री का भाव या धर्म। स्त्रीपन। जनानापन। २ व्याकरण में वह प्रत्यय जो स्त्री-लिंग का सूचक होता है।

स्त्रीधन–संज्ञा पुं० [सं०] वह धन जिस पर स्त्रियों का विशेष रूप से पूरा अधिकार हो।

स्त्रीधर्म–संज्ञा पुं० [सं०] स्त्री का रजस्वला होना। रजोदर्शन।

स्त्रीप्रसंग–संज्ञा पुं० [सं०] मैथुन। संभोग।

स्त्रीलिंग–संज्ञा पुं० [सं०] १ भग। योनि। २ हिंदी व्याकरण में अनुसार दो लिंगों में से एक जो स्त्री-वाचक होता है। जैसे— घोड़ा शब्द पुल्लिंग और घोड़ी स्त्रीलिंग है।

स्त्रीव्रत–संज्ञा पुं० [सं०] अपनी स्त्री के अतिरिक्त दूसरी स्त्री की कामना न करना। पत्नीव्रत।

स्त्रीसमागम–संज्ञा पुं० [सं०] मैथुन। प्रसंग।

स्त्रैण–वि० [सं०] १ स्त्री-संबंधी। स्त्रियों का। २ स्त्रियों के कहने के अनुसार चलनेवाला। स्त्रीरत।

स्थ–प्रत्य० [सं०] एक प्रत्यय जो शब्दों के अन्त में लगकर नीचे लिखे अर्थ देता है—(क) स्थित। कायम। (ख) उपस्थित। वर्तमान। (ग) रहनेवाला। निवासी। (घ) लीन। रत।

स्थकित–वि० [हिं० थकित] थका हुआ।

स्थगित–वि० [सं०] १ ढका हुआ। आच्छादित। २ रोका हुआ। अवरुद्ध। ३ जो कुछ समय के लिये रोक दिया गया हो। मुल्तवी।

स्थल–संज्ञा पुं० [सं०] १ भूमि। भूभाग। जमीन। २ जल-शून्य भूभाग। खुश्की। ३ स्थान। जगह। ४ अवसर। मौका। ५ निर्जल और मरु भूमि। थर।

स्थलकमल–संज्ञा पुं० [सं०] कमल की आकृति का एक पुष्प जो स्थल में होता है।

स्थलचर, स्थलचारी–वि० [सं०] स्थल पर रहने या विचरण करनेवाला।

स्थलज–वि० [सं०] स्थल या भूमि में

उत्पन्न। स्थल में उत्पन्न होनेवाला।
स्थलपद्म–संज्ञा पुं० [सं०] स्थलकमल।
स्थलयुद्ध–संज्ञा पुं० [सं०] वह युद्ध या संग्राम जो स्थल या भूभाग पर होता है।
स्थली–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. खुश्क जमीन। भूमि। २. स्थान। जगह।
स्थलीय–वि० [सं०] १. स्थल या भूमि संबंधी। स्थल का। २. किसी स्थान का। स्थानीय।
स्थविर–संज्ञा पुं० [सं०] १. वृद्ध। बुड्ढा। २. ब्रह्मा। ३. वृद्ध और पूज्य बौद्ध भिक्षु।
स्थाई–वि० दे० "स्थायी"।
स्थाणु–संज्ञा पुं० [सं०] १. खंभ। थूनी। स्तंभ। २. पेड़ का वह धड़ जिसके ऊपर की डालियाँ और पत्ते आदि न रह गए हों। ठूँठ। ३. शिव।
वि० स्थिर। अचल।
स्थान–संज्ञा पुं० [सं०] १. ठहराव। टिकाव। स्थिति। २. भूमिभाग। ज़मीन। मैदान। ३. जगह। ठाम। स्थल। ४. डेरा। घर। आवास। ५. काम करने की जगह। पद। ओहदा। ६ मंदिर। देवालय। ७. अवसर। मौक़ा।
स्थानच्युत–वि० [सं०] जो अपने स्थान से गिर या हट गया हो।
स्थानभ्रष्ट–वि० दे० "स्थानच्युत"।
स्थानांतर–संज्ञा पु० [सं०] दूसरा स्थान। प्रकृत या प्रस्तुत से भिन्न स्थान।
स्थानांतरित–वि० [सं०] जो एक स्थान से हट या उठकर दूसरे स्थान पर गया हो।
स्थानापन्न–वि० [सं०] दूसरे के स्थान पर अस्थायी रूप से काम करनेवाला। क़ायम-मुकाम। एवजी।
स्थानिक–वि० [सं०] उस स्थान का जिसके विषय में कोई उल्लेख हो।
स्थानीय–वि० [सं०] उस स्थान का जिसके संबंध में कोई उल्लेख हो। स्थानिक।
स्थापक–वि० [सं०] १. रखने या क़ायम करनेवाला। स्थापनकर्त्ता। २. मूर्त्ति बनानेवाला। ३. सूत्रधार का सहकारी। (नाटक) ४. कोई संस्था खोलने या खड़ी करनेवाला। संस्थापक।
स्थापत्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. भवन-निर्माण। राजगीरी। मेमारी। २. वह विद्या जिसमें भवन-निर्माण-संबंधी सिद्धान्तों आदि का विवेचन होता है।
स्थापत्य वेद–संज्ञा पुं० [सं०] चार उपवेदों में से एक जिसमें वास्तुशिल्प या भवन-निर्माण का विषय वर्णित है।
स्थापन–संज्ञा पु० [सं०] [वि० स्थापनीय] १. खड़ा करना। उठाना। २. रखना। जमाना। ३. नया काम जारी करना। ४. (प्रमाणपूर्वक किसी विषय को) सिद्ध करना। साबित करना। प्रतिपादन। ५. निरूपण।
स्थापना–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्रतिष्ठित या स्थित करना। बैठाना। थापना। २. जमा कर रखना। ३. सिद्ध करना। साबित करना। प्रतिपादन करना।
स्थापित–वि० [सं०] १. जिसकी स्थापना की गई हो। प्रतिष्ठित। २. व्यवस्थित। निर्दिष्ट। ३. निश्चित।
स्थायित्व–संज्ञा पु० [सं०] १. स्थायी होने का भाव। २. स्थिरता। दृढ़ता। मज़बूती।
स्थायी–वि० [सं० स्थायिन्] १. ठहरनेवाला। जो स्थिर रहे। २. बहुत दिन चलनेवाला। टिकाऊ।
स्थायी भाव–संज्ञा पुं० [सं०] साहित्य में तीन प्रकार के भावों में से एक जिसकी सदा रस में स्थिति रहती है। ये विभाव आदि में अभिव्यक्त होकर रसत्व को प्राप्त होते हैं। ये संख्या में नौ हैं; यथा—रति, हास्य, शोक, क्रोध, उत्साह, भय, निंदा, विस्मय और निर्वेद।
स्थायी समिति–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह समिति जो किसी सभा या सम्मेलन के दो अधिवेशनों के मध्य के काल में उसके कार्यों का संचालन करती है।
स्थाली–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हंडी। हँडिया। २. मिट्टी की रिकाबी।

स्थालीपुलाक न्याय–संज्ञा पुं० [सं०] एक बात को देखकर उस संबंध की और सब बातों का मालूम होना।

स्थावर–वि० [सं०] [भाव० संज्ञा स्थावरता] १. अचल। स्थिर। २. जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर लाया न जा सके। जंगम का उलटा। अचल। गैर-मनकूला।

संज्ञा पुं० १. पहाड़। पर्वत। २ अचल संपत्ति। गैर-मनकूला जायदाद।

स्थावर विष–संज्ञा पुं० [सं०] स्थावर पदार्थों में होनेवाला ज़हर।

स्थित–वि० [सं०] १. अपने स्थान पर ठहरा हुआ। अवलंबित। २. बैठा हुआ। आसीन। ३. अपनी प्रतिज्ञा पर डटा हुआ। ४. विद्यमान। मौजूद। ५. रहनेवाला। निवासी। अवस्थित। ६. खड़ा हुआ। ७ ऊर्ध्व।

स्थितता–संज्ञा स्त्री० [सं०] ठहराव। स्थिति।

स्थितप्रज्ञ–वि० [सं०] १. जिसकी विवेक-बुद्धि स्थिर हो। २. समस्त मनोविकारों से रहित। आत्म-संतोषी।

स्थिति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ रहना। ठहरना। टिकाव। ठहराव। २ निवास। अवस्थान। ३. अवस्था। दशा। ४. पद। दर्जा। ५ एक स्थान या अवस्था में रहना। अवस्थान। ६. निरंतर बना रहना। अस्तित्व। ७. पालन। ८. स्थिरता।

स्थितिस्थापक–संज्ञा पुं० [सं०] वह गुण जिससे कोई वस्तु नवीन स्थिति में आने पर फिर अपनी पूर्व अवस्था को प्राप्त हो जाय। वि० १. किसी वस्तु को उसकी पूर्व अवस्था में प्राप्त करानेवाला। २ लचीला।

स्थितिस्थापकता–संज्ञा स्त्री० [सं०] लचीलापन।

स्थिर–वि० [सं०] १. निश्चल। ठहरा हुआ। २. निश्चित। ३. शांत। ४. दृढ़। अटल। ५. स्थायी। सदा बना रहनेवाला। ६. नियत। मुकर्रर।

संज्ञा पुं० १. शिव। २ ज्योतिष में एक योग। ३. देवता। ४. पहाड़। पर्वत। ५. एक प्रकार का छंद।

स्थिरचित्त–वि० [सं०] जिसका मन स्थिर या दृढ़ हो। दृढ़चित्त।

स्थिरता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. स्थिर होने का भाव। ठहराव। निश्चलता। २. दृढ़ता। मजबूती। ३. स्थायित्व। ४. धैर्य।

स्थिरबुद्धि–वि० [सं०] जिसकी बुद्धि स्थिर हो। दृढ़चित्त।

स्थूल–वि० [सं०] १. मोटा। पीन। २. सहज में दिखाई देने या समझ में आने योग्य। सूक्ष्म का उलटा।

संज्ञा पुं० वह पदार्थ जिसका इंद्रियों द्वारा ग्रहण हो सके। गोचर पिंड।

स्थूलता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. स्थूल होने का भाव। २. मोटापन। मोटाई। ३. भारीपन।

स्थैर्य्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. स्थिरता। २ दृढ़ता।

स्नात–वि० [सं०] जिसने स्नान किया हो। नहाया हुआ।

स्नातक–संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसने ब्रह्मचर्य्यव्रत की समाप्ति पर गृहस्थ आश्रम में प्रवेश किया हो।

स्नान–संज्ञा पुं० [सं०] १. शरीर को स्वच्छ करने के लिये उसे जल से धोना। अवगाहन। नहाना। २. शरीर के अंगों को धूप या वायु के सामने इस प्रकार करना कि उनके ऊपर उसका पूरा प्रभाव पड़े। जैसे—वायु-स्नान।

स्नानागार–संज्ञा पुं० [सं०] वह कमरा जिसमें स्नान किया जाता है।

स्नायविक–वि० [सं०] स्नायु-संबंधी।

स्नायु–संज्ञा स्त्री० [सं०] शरीर के अंदर की वह नसें जिनसे स्पर्श और वेदना आदि का ज्ञान होता है।

स्निग्ध–वि० [सं०] जिसमें स्नेह या तेल हो।

स्निग्धता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. स्निग्ध या चिकना होने का भाव। चिकनापन। २. प्रिय होने का भाव।

स्नेह–संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रेम। प्यार। मुहब्बत। २. चिकना पदार्थ। चिकनाहटवाली चीज़; विशेषतः तेल। ३. कोमलता।
स्नेहपात्र–संज्ञा पुं० [सं०] प्रेमपात्र। प्यारा।
स्नेहपान–संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक की एक क्रिया जिसमें कुछ विशिष्ट रोगों में तेल, घी, चरबी आदि पीते हैं।
स्नेही–संज्ञा पुं० [सं० स्नेहिन्] वह जिसके साथ स्नेह या प्रेम हो। प्रेमी। मित्र।
स्पंदन–संज्ञा पुं० [सं०] १. धीरे धीरे हिलना। काँपना। २. (अंगों आदि का) फड़कना।
स्पर्द्धा–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० स्पर्द्धिन्] १. संघर्ष। रगड़। २. किसी के मुकाबिले में आगे बढ़ने की इच्छा। होड़। ३. साहस। हौसला। ४. साम्य। बराबरी।
स्पर्द्धी–वि० [सं०] स्पर्द्धा करनेवाला।
स्पर्श–संज्ञा पुं० [सं०] १. दो वस्तुओं का आपस में इतना पास पहुँचना कि उनके तलों का कुछ अंश आपस में सट जाय। छूना। २. त्वगिंद्रिय का वह गुण जिसके कारण ऊपर पड़नेवाले दबाव का ज्ञान होता है। ३. त्वगिंद्रिय का विषय। ४. व्याकरण में उच्चारण के आभ्यंतर प्रयत्न के चार भेदों में से "स्पष्ट" नामक भेद के अनुसार "क" से लेकर "म" तक के २५ व्यंजन जिनके उच्चारण में वागिंद्रिय का द्वार बंद रहता है। ५. ग्रहण या उपराग में सूर्य्य अथवा चंद्रमा पर छाया पड़ने का आरंभ।
स्पर्शजन्य–वि० [सं०] १. जो स्पर्श के कारण उत्पन्न हो। २. संक्रामक। छूतहा।
स्पर्शनेंद्रिय–संज्ञा स्त्री० [सं०] छूने की इंद्रिय। त्वगिंद्रिय। त्वचा।
स्पर्शमणि–संज्ञा पुं० [सं०] पारस पत्थर।
स्पर्शास्पर्श–संज्ञा पुं० [सं० स्पर्श + अस्पर्श] छूने या न छूने का भाव या विचार।
स्पर्शी–वि० [सं० स्पर्शिन्] छूनेवाला।
स्पर्शेंद्रिय–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह इंद्रिय जिससे स्पर्श का ज्ञान होता है। त्वगिंद्रिय। त्वचा।
स्पष्ट–वि० [सं०] साफ़ दिखाई देने या समझ में आनेवाला।
संज्ञा पुं० व्याकरण में वर्णों के उच्चारण का एक प्रकार का प्रयत्न जिसमें दोनों होंठ एक दूसरे से छू जाते हैं।
स्पष्ट कथन–संज्ञा पुं० [सं०] वह कथन जिसमें किसी की कही हुई बात ठीक उसी रूप में कही जाती है, जिस रूप में वह उसके मुँह से निकली हुई होती है।
स्पष्टतया–क्रि० वि० [सं०] स्पष्ट रूप से। साफ़ साफ़।
स्पष्टता–संज्ञा स्त्री० [सं०] स्पष्ट होने का भाव। सफ़ाई।
स्पष्टवक्ता–संज्ञा पुं० [सं०] वह जो कहने में किसी का मुलाहज़ा न करता हो।
स्पष्टवादी–संज्ञा पुं० दे० "स्पष्टवक्ता"।
स्पष्टीकरण–संज्ञा पुं० [सं०] स्पष्ट करने की क्रिया। किसी बात को स्पष्ट या साफ़ करना।
स्पृक्का–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. असवरग। २. लजालू। लाजवंती। ३. ब्राह्मी बूटी।
स्पृश–वि० [सं०] स्पर्श करनेवाला।
स्पृश्य–वि० [सं०] जो स्पर्श करने के योग्य हो। छूने लायक़।
स्पृष्ट–वि० [सं०] छूआ हुआ।
स्पृहणीय–वि० [सं०] १. जिसके लिये अभिलाषा या कामना की जा सके। वांछनीय। २. गौरवशाली।
स्पृहा–संज्ञा स्त्री० [सं०] इच्छा। कामना।
स्पृही–वि० [सं०] इच्छा करनेवाला।
स्फटिक–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का सफ़ेद बहुमूल्य पत्थर जो काँच के समान पारदर्शी होता है। २. सूर्य्यकांत मणि। ३. शीशा। काँच। ४. फिटकिरी।
स्फार–वि० [सं०] १. प्रचुर। विपुल। बहुत। २. विकट।
स्फाल–संज्ञा पुं० दे० "स्फूर्त्ति"।
स्फीत–वि० [सं०] १. बढ़ा हुआ। वर्द्धित। २. फूला हुआ। ३. समृद्ध।
स्फुट–वि० [सं०] १. जो सामने दिखाई

दिया हो। प्रकाशित। व्यक्त। २ खिला हुआ। विकसित। ३ स्पष्ट। साफ। ४. फूटकर। अलग अलग।

स्फुटित-वि० [सं०] १. विकसित। खिला हुआ। २. जो स्पष्ट किया गया हो। ३. हँसता हुआ।

स्फुरण-संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी पदार्थ का जरा जरा हिलना। २ अंग का फड़कना। ३ दे० "स्फूर्त्ति"।

स्फुरति*-संज्ञा स्त्री० दे० "स्फूर्त्ति"।

स्फुरित-वि० [सं०] जिसमें स्फुरण हो।

स्फुलिंग-संज्ञा पुं० [सं०] चिनगारी।

स्फूर्त्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ धीरे धीरे हिलना। फड़कना। स्फुरण। २ कोई काम करने के लिये मन में उत्पन्न होनेवाली हलकी उत्तेजना। ३ फुरती। तेजी।

स्फोट-संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी पदार्थ का अपने ऊपरी आवरण को भेदकर बाहर निकलना। फूटना। २ शरीर में होनेवाला फोड़ा, फुंसी आदि।

स्फोटक-संज्ञा पुं० [सं०] फोड़ा। फुंसी।

स्फोटन-संज्ञा पुं० [सं०] १ अंदर से फोड़ना। २ विदारण। फाड़ना।

स्मर-संज्ञा पुं० [सं०] १ कामदेव। मदन। २ स्मरण। स्मृति। याद।

स्मरण-संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी देखी, सुनी या अनुभव में आई हुई बात का फिर से मन में आना। याद आना। २ नौ प्रकार की भक्तियों में से एक जिसमें उपासक अपने उपास्य देव को बराबर याद किया करता है। ३ एक अलंकार जिसमें कोई बात या पदार्थ देखकर किसी विशिष्ट पदार्थ या बात का स्मरण हो आने का वर्णन होता है।

स्मरणपत्र-संज्ञा पुं० [सं०] वह पत्र जो किसी को कोई बात स्मरण दिलाने के लिये लिखा जाय।

स्मरणशक्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह मानसिक शक्ति जो अपने सामने होनेवाली घटनाओं और सुनी जानेवाली बातों को ग्रहण करके फिर छोड़ती है। याद रखने की शक्ति। याददाश्त।

स्मरणीय-वि० [सं०] स्मरण रखने योग्य। याद रखने लायक।

स्मरना*-क्रि० स० [सं० स्मरण] स्मरण करना। याद करना।

स्मरारि-संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।

स्मर्ण*-संज्ञा पुं० दे० "स्मरण"।

स्मशान-संज्ञा पुं० दे० "श्मशान"।

स्मारक-वि० [सं०] स्मरण करानेवाला। संज्ञा पुं० १ वह कृत्य या वस्तु जो किसी की स्मृति बनाए रखने के लिये प्रस्तुत की जाय। यादगार। २ वह चीज जो किसी को अपना स्मरण रखने के लिये दी जाय। यादगार।

स्मार्त्त-संज्ञा पुं० [सं०] १ वे कृत्य आदि जो स्मृतियों में लिखे हुए हैं। २ वह जो स्मृतियों में लिखे अनुसार सब कृत्य करता हो। ३ स्मृतिशास्त्र का पंडित। वि० स्मृति संबंधी। स्मृति का।

स्मित-संज्ञा पुं० [सं०] धीमी हँसी। वि० खिला हुआ। विकसित। प्रस्फुटित।

स्मृत-वि० [सं०] याद किया हुआ। जो स्मरण में आया हो।

स्मृति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्मरण शक्ति के द्वारा संचित होनेवाला ज्ञान। स्मरण। याद। २ हिंदुओं के धर्मशास्त्र जिनमें धर्म्म, दर्शन, आचार-व्यवहार, शासन नीति आदि के विवेचन हैं। ३ १८ की संख्या। ४ एक प्रकार का छंद।

स्मृतिकार-संज्ञा पुं० [सं०] स्मृति या धर्म-शास्त्र जाननेवाला।

स्यंदन-संज्ञा पुं० [सं०] १ चूना। टपकना। रसना। २ गरना। ३ जाना। चलना। ४ रथ, विशेषतः युद्ध में काम आनेवाला रथ। ५ वायु। हवा।

स्यमंतक-संज्ञा पुं० [सं०] पुराणोक्त एक प्रसिद्ध मणि जिसकी चोरी का कलंक श्रीकृष्णचंद्र पर लगा था।

स्यात्-अव्य० [सं०] कदाचित्। शायद।

स्याद्वाद–संज्ञा पुं० [सं०] जैन दर्शन जिसमें किसी वस्तु के संबंध में कहा जाता है कि स्यात् यह भी है, स्यात् वह भी है आदि। अनेकांतवाद।
स्यान*–वि० दे० "स्याना"।
स्यानप–संज्ञा पुं० दे० "स्यानपन"।
स्यानपन–संज्ञा पुं०[हिं०स्याना+पन (प्रत्य०)] १. चतुरता। बुद्धिमानी। २. चालाकी।
स्याना–वि० [सं० सज्ञान] [स्त्री० स्यानी] १. चतुर। बुद्धिमान्। होशियार। २. चालाक। धूर्त। ३. वयस्क। बालिग़।
संज्ञा पुं० १. बड़ा-बूढ़ा। वृद्ध पुरुष। २. ओझा। ३. चिकित्सक। हकीम।
स्यानापन–संज्ञा पुं० [हिं० स्याना + पन (प्रत्य०)] १. स्याने होने की अवस्था। युवावस्था। २. चतुराई। होशियारी। ३. चालाकी। धूर्त्तता।
स्यापा–संज्ञा पुं० [फ़ा० स्याहपोश] मरे हुए मनुष्य के शोक में कुछ काल तक स्त्रियों के प्रतिदिन एकत्र होकर रोने और शोक मनाने की रीति।
मुहा०–स्यापा पड़ना = १. रोना चिल्लाना मचना। २. बिलकुल उजाड़ या सुनसान होना।
स्याबास*–अव्य० दे० "शाबाश"।
स्याम*–संज्ञा पुं० वि० दे० "श्याम"।
संज्ञा पुं० भारतवर्ष के पूर्व का एक देश।
स्यामक–संज्ञा पुं० दे० "श्यामक"।
स्यामकरन*–संज्ञा पुं० दे० "श्यामकर्ण"।
स्यामता*–संज्ञा स्त्री० दे० "श्यामता"।
स्यामल–वि० दे० "श्यामल"।
स्यामलिया–संज्ञा पुं० दे० "साँवला"।
स्यामा*–संज्ञा स्त्री० दे० "श्यामा"।
स्यार†–संज्ञा पुं० [हिं० सियार] [स्त्री० स्यारनी] सियार। गीदड़। शृगाल।
स्यारपन–संज्ञा पुं० [हिं०सियार+पन(प्रत्य०)] सियार या गीदड़ का सा स्वभाव।
स्यारी–संज्ञा स्त्री० [हिं० सियारी] सियार की मादा। गीदड़ी।
स्याल–संज्ञा पुं० [सं०] पत्नी का भाई। साला। श्याल। श्यालक।
संज्ञा पुं० दे० "सियार" या "स्यार"।
स्यालिया†–संज्ञा पुं० [हिं० सियार] गीदड़।
स्याह–वि० [फ़ा०] काला। कृष्ण वर्ण का।
संज्ञा पुं० घोड़े की एक जाति।
स्याहगोश–संज्ञा पुं० दे० "सियाहगोश"।
स्याहा–संज्ञा पुं० दे० "सियाहा"।
स्याही–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. एक प्रसिद्ध रंगीन तरल पदार्थ जो लिखने के काम में आता है। रोशनाई। मसि। २. कालापन। कालिमा।
मुहा०–स्याही जाना = बालों का कालापन जाना। जवानी का बीत जाना।
३. कालिख। कालिमा।
संज्ञा स्त्री० [सं० शल्यकी] साही। (जंतु)
स्यों, स्यो*–अव्य० [सं० सह] १. सह। सहित। २. पास। समीप।
स्रंग*–संज्ञा पुं० दे० "शृंग"।
स्रक्–संज्ञा स्त्री० पुं० [सं०] १. फूलों की माला। २. एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चार नगण और एक सगण होता है।
स्रग*–संज्ञा स्त्री० पुं० दे० "स्रक्"।
स्रग्धरा–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में म र भ न य य य होता है।
स्रग्विणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चार रगण होते हैं।
स्रज–संज्ञा स्त्री० [सं०] माला।
स्रजना*–क्रि० स० दे० "सृजना"।
स्रद्धा*–संज्ञा स्त्री० दे० "श्रद्धा"।
स्रम*–संज्ञा पुं० दे० "श्रम"।
स्रमित*–वि० दे० "श्रमित"।
स्रवण–संज्ञा पुं० [सं०] १. बहना। बहाव। प्रवाह। २. कच्चे गर्भ का गिरना। गर्भपात। ३. मूत्र। पेशाब। ४. पसीना।
स्रवन*–संज्ञा पुं० दे० "श्रवण"।
स्रवना*–क्रि० अ० [सं० स्रवण] १. बहना। चूना। टपकना। २. गिरना।
क्रि० स० १. बहाना। टपकाना। २. गिराना।
स्रष्टा–संज्ञा पुं० [सं० स्रष्टृ] १. सृष्टि या विश्व की रचना करनेवाले, ब्रह्मा। २. विष्णु।

३ शिव।
वि० सृष्टि रचनेवाला। जगत् का रचयिता।
स्राप*–संज्ञा पु० दे० "शाप"।
स्रापित*–वि० दे० "शापित"।
स्राव–संज्ञा पु० [सं०] १. बहना। झरना। क्षरण। २ गर्भपात। गर्भस्राव। ३. निर्यास। रस।
स्रावक–वि० [सं०] बहाने, चुआने या टपकानेवाला। स्राव करानेवाला।
स्रावी–वि० [सं० स्राविन्] बहानेवाला।
स्रिंग*–संज्ञा पु० दे० "शृंग"।
स्रिजन*–संज्ञा पु० दे० "सुजन"।
स्रिय*–संज्ञा स्त्री० दे० "श्रिय"।
स्रुत*–वि० दे० "श्रुत"।
स्रुति–संज्ञा स्त्री० दे० 'श्रुति"।
स्रुतिमाथ*–संज्ञा पु० [सं० श्रुति + मस्तक] विष्णु।
स्रुवा–संज्ञा स्त्री० [सं०] लकड़ी की एक प्रकार की छोटी करछी जिससे हवनादि में घी की आहुति देते हैं। सुरवा।
स्रेनी*–संज्ञा स्त्री० दे० "श्रेणी"।
स्रोत–संज्ञा पु० [सं० स्रोतस्] १ पानी का बहाव या झरना। धारा। २ नदी।
स्रोतस्विनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी।
स्रोता*–संज्ञा पु० दे० "श्रोता"।
स्रोन*–संज्ञा पु० दे० "श्रवण"।
स्रोनित*–संज्ञा पु० दे० "शोणित"।
स्व –संज्ञा पु० [सं०] स्वर्ग।
स्व–वि० [सं०] अपना। निज का।
स्वकीया–संज्ञा स्त्री० [सं०] अपने ही पति में अनुराग रखनेवाली स्त्री। (साहित्य)।
स्वच्छ*–वि० दे० "स्वच्छ"।
स्वगत–संज्ञा पु० दे० "स्वगत-कथन"।
क्रि० वि० [सं०] आप ही आप। अपने आप से। (कहना या बोलना)
स्वगत-कथन–संज्ञा पु० [सं०] नाट्य में पात्र का आप ही आप इस प्रकार बोलना कि मानो वह किसी को सुनाना नहीं चाहता और न कोई उसकी बात सुनता ही है। आत्मगत। अश्राव्य।
स्वच्छंद–वि० [सं०] १ जो अपनी इच्छा के अनुसार सब कार्य करे। स्वाधीन। स्वतंत्र। आजाद। २. मनमाना काम करनेवाला। निरंकुश।
क्रि० वि० मनमाना। बेधड़क। निर्द्वंद्व।
स्वच्छन्दता–संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वतंत्रता।
स्वच्छ–वि० [सं०] १ जिसमें किसी प्रकार की गंदगी न हो। निर्मल। साफ़। २ उज्जवल। शुभ्र। ३ स्पष्ट। साफ। ४ शुद्ध। पवित्र।
स्वच्छता–संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वच्छ होने का भाव। निर्मलता। विशुद्धता। सफाई।
स्वच्छना*–क्रि० स० [सं० स्वच्छ] निर्मल करना। शुद्ध करना। साफ करना।
स्वच्छी–वि० दे० "स्वच्छ"।
स्वजन–संज्ञा पु० [सं०] १. अपने परिवार के लोग। आत्मीय जन। २ रिश्तेदार।
स्वजन्मा–वि० [सं० स्वजन्मन्] अपने आप से उत्पन्न (ईश्वर आदि)।
स्वजात–वि० [सं०] अपने से उत्पन्न। संज्ञा पु० पुत्र। बेटा।
स्वजाति–संज्ञा स्त्री० [सं०] अपनी जाति। वि० अपनी जाति या काम का।
स्वजातीय–वि० [सं०] अपनी जाति का। अपने वर्ग का।
स्वतंत्र–वि० [सं०] १ जो किसी के अधीन न हो। स्वाधीन। मुक्त। आजाद। २ मनमानी करनेवाला। स्वेच्छाचारी। निरंकुश। ३ अलग। जुदा। पृथक्। ४ किसी प्रकार के बंधन या नियम आदि से रहित।
स्वतंत्रता–संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वतंत्र होने का भाव। स्वाधीनता। आजादी।
स्वत –अव्य० [सं० स्वतस्] अपने आप। आप ही।
स्वतोविरोधी–संज्ञा पु० [सं० स्वत +विरोधी] अपना ही विरोध या खंडन करनेवाला।
स्वत्व–संज्ञा पु० [सं०] किसी वस्तु को अपने अधिकार में रखने, या लेने का अधिकार। अधिकार। हक।

संज्ञा पुं० "स्व" या अपने होने का भाव।
स्वत्वाधिकारी–संज्ञा पुं० [सं० स्वत्वाधिकारिन्] १. वह जिसके हाथ में किसी विषय का पूरा स्वत्व हो। २. स्वामी। मालिक।
स्वदेश–संज्ञा पुं० [सं०] अपना और अपने पूर्वजों का देश। मातृ-भूमि। वतन।
स्वदेशी–वि० [सं० स्वदेशीय] अपने देश का। अपने देश संबंधी।
स्वधर्म–संज्ञा पुं० [सं०] अपना धर्म।
स्वधा–अव्य० [सं०] एक शब्द जिसका उच्चारण देवताओं या पितरों को हवि देने के समय किया जाता है।
संज्ञा स्त्री० १. पितरों को दिया जानेवाला अन्न या भोजन। पितृ-अन्न। २. दक्ष की एक कन्या।
स्वन–संज्ञा पुं० [सं०] शब्द। आवाज।
स्वनामधन्य–वि० [सं०] जो अपने नाम के कारण धन्य हो।
स्वपच*–संज्ञा पुं० दे० "श्वपच"।
स्वपन, स्वपना*|–संज्ञा पु० दे० "स्वप्न"।
स्वप्न–संज्ञा पुं० [सं०] १. सोने की क्रिया या अवस्था। निद्रा। नींद। २. निद्रावस्था में कुछ घटना आदि दिखाई देना। ३. वह घटना आदि जो इस प्रकार निद्रित अवस्था में दिखाई दे अथवा मन में आवे। ४. मन में उठनेवाली ऊँची या असम्भव कल्पना या विचार।
स्वप्नगृह–संज्ञा पुं० [सं०] शयनागार।
स्वप्नदोष–संज्ञा पुं० [सं०] निद्रावस्था में वीर्यपात होना जो एक प्रकार का रोग है।
स्वप्नाना–क्रि० स० [सं० स्वप्न + आना (प्रत्य०)] स्वप्न देना। स्वप्न दिखाना।
स्वबरन*–संज्ञा पुं० दे० "सुवर्ण"।
स्वभाउ*–संज्ञा पु० दे० "स्वभाव"।
स्वभाव–संज्ञा पुं० [सं०] १. सदा रहनेवाला मूल या प्रधान गुण। तासीर। २. मन की प्रवृत्ति। मिजाज। प्रकृति। ३. आदत। बान।
स्वभावज–वि० [सं०] प्राकृतिक। स्वाभाविक। सहज।
स्वभावतः अव्य० [सं० स्वभावतस्] स्वभाव से। प्राकृतिक रूप से। सहज ही।
स्वभावसिद्ध–वि० [सं०] सहज। प्राकृतिक। स्वाभाविक।
स्वभावोक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें किसी जाति या अवस्था आदि के अनुसार यथावत् और प्राकृतिक स्वरूप का वर्णन होता है।
स्वभू–संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्रह्मा। २. विष्णु। वि० आप से आप होनेवाला।
स्वयं–अव्य० [सं० स्वयम्] १. खुद। आप। २. आप से आप। खुद ब खुद।
स्वयंदूत–संज्ञा पुं० [सं०] नायिका पर अपनी कामवासना स्वयं ही प्रकट करनेवाला नायक।
स्वयंदूती–संज्ञा स्त्री० [सं०] नायक पर स्वयं ही वासना प्रकट करनेवाली परकीया नायिका।
स्वयंप्रकाश–संज्ञा पु० [सं०] १. वह जो बिना किसी दूसरे की सहायता के प्रकाशित हो। २. परमात्मा। परमेश्वर।
स्वयंभू–संज्ञा पुं० [सं० स्वयंभू] १. ब्रह्मा। २. काल। ३. कामदेव। ४. विष्णु। ५. शिव। ६. दे० "स्वायंभुव"। वि० जो आप से आप उत्पन्न हुआ हो।
स्वयंवर–संज्ञा पुं० [सं०] १. प्राचीन भारत का एक प्रसिद्ध विधान जिसमें कन्या कुछ उपस्थित व्यक्तियों में से अपने लिये स्वयं वर चुनती थी। २. वह स्थान जहाँ इस प्रकार कन्या अपने लिये वर चुने।
स्वयंवरण–संज्ञा पु० दे० "स्वयंवर"।
स्वयंवरा–संज्ञा स्त्री० [सं०] अपने इच्छानुसार अपना पति नियत करनेवाली स्त्री। पतिंवरा। वर्य्या।
स्वयंसिद्ध–वि० [सं०] (बात) जिसकी सिद्धि के लिये किसी तर्क या प्रमाण की आवश्यकता न हो।
स्वयंसेवक–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० स्वयंसेविका] वह जो बिना किसी पुरस्कार के किसी कार्य में अपनी इच्छा से योग दे। स्वेच्छासेवक।

स्वयमेव–क्रि० वि० [सं०] खुद ही। स्वयं ही।
स्वर्–संज्ञा पु० [सं०] १. स्वर्ग। २ परलोक। आकाश।
स्वर–संज्ञा पु० [सं०] १. प्राणी के कंठ से अथवा किसी पदार्थ पर आघात पड़ने के कारण उत्पन्न होनेवाला शब्द, जिसमें कोमलता, तीव्रता, उदात्तता, अनुदात्तता आदि गुण हों। २ संगीत में वह शब्द जिसका कोई निश्चित रूप हो और जिसके उतार-चढ़ाव आदि का, सुनते ही, सहज में अनुमान हो सके। सुर। सुभीते के लिये सात स्वर नियत किए गए हैं। इन सातों स्वरों के नाम क्रम से षड्ज, ऋषभ, गांधार, मध्यम, पंचम, धैवत और निषाद रखे गए हैं जिनके संक्षिप्त रूप सा, रे, ग, म, प, ध और नि हैं।
मुहा०–स्वर उतारना=स्वर नीचा या धीमा करना। स्वर चढ़ाना=स्वर ऊँचा करना।
३ व्याकरण में वह वर्णात्मक शब्द जिसका उच्चारण आप से आप स्वतंत्रतापूर्वक होता है और जो किसी व्यंजन के उच्चारण में सहायक होता है। हिंदी वर्णमाला में ११ स्वर हैं—अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ और औ। ४ वेदपाठ में होनेवाले शब्दों का उतार-चढ़ाव।
संज्ञा पु० [सं० स्वर्] आकाश।
स्वरग*–संज्ञा पु० दे० "स्वर्ग"।
स्वरभंग–संज्ञा पु० [सं०] आवाज का बैठना जो एक रोग माना गया है।
स्वरमंडल–संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का वाद्य जिसमें तार लगे होते हैं।
स्वरवेधी–संज्ञा पु० दे० "शब्दवेधी"।
स्वरशास्त्र–संज्ञा पु० [सं०] वह शास्त्र जिसमें स्वर संबंधी बातों का विवेचन हो। स्वर-विज्ञान।
स्वरस–संज्ञा पु० [सं०] पत्ती आदि को कूट, पीस और छानकर निकाला हुआ रस।
स्वरांत–वि० [सं०] (शब्द) जिसके अंत में कोई स्वर हो। जैसे—माला, टोपी।
स्वराज्य–संज्ञा पु० [सं०] वह राज्य जिसमें किसी देश के निवासी स्वयं ही अपने देश का सब प्रबंध करते हों। अपना राज्य।
स्वराट्–संज्ञा पु० [सं०] १. ब्रह्मा। २ ईश्वर। ३ वह राजा जो किसी ऐसे राज्य का स्वामी हो जिसमें स्वराज्य शासन-प्रणाली प्रचलित हो।
वि० जो स्वयं प्रकाशमान हो और दूसरों को प्रकाशित करता हो।
स्वरित–संज्ञा पु० [सं०] वह स्वर जिसका उच्चारण न बहुत जोर से हो और न बहुत धीरे से हो।
वि० १ स्वर से युक्त। २ गूँजता हुआ।
स्वरूप–संज्ञा पु० [सं०] १ आकार। आकृति। शक्ल। २ मूर्ति या चित्र आदि। ३ देवताओं आदि का धारण किया हुआ रूप। ४ वह जो किसी देवता का रूप धारण किए हो।
वि० १ खूबसूरत। २ तुल्य। समान।
अव्य० रूप में। तौर पर।
संज्ञा पु० दे० "सारूप्य"।
स्वरूपज्ञ–संज्ञा पु० [सं०] वह जो परमात्मा और आत्मा का स्वरूप पहचानता हो। तत्त्वज्ञ।
स्वरूपमान*–संज्ञा पु० दे० "स्वरूपवान्"।
स्वरूपवान्–वि० [सं० स्वरूपवत्] [स्त्री० स्वरूपवती] जिसका स्वरूप अच्छा हो। सुंदर। खूबसूरत।
स्वरूपी–वि० [सं० स्वरूपिन्] १ स्वरूपवाला। स्वरूपयुक्त। २ जो किसी के स्वरूप के अनुसार हो।
* संज्ञा पु० दे० "सारूप्य"।
स्वरोचिस्–संज्ञा पु० [सं०] स्वारोचिष् मनु के पिता जो कलि नामक गंधर्व के पुत्र थे।
स्वरोद–संज्ञा पु० [सं० स्वरोदय] एक प्रकार का बाजा जिसमें तार लगे होते हैं।
स्वरोदय–संज्ञा पु० [सं०] वह शास्त्र जिसमें श्वासों के द्वारा सब प्रकार के शुभ और अशुभ फल जाने जाते हैं।
स्वर्गंगा–संज्ञा स्त्री० [सं०] मंदाकिनी।
स्वर्ग–संज्ञा पु० [सं०] १ हिंदुओं के सात

लोकों में से तीसरा लोक। कहा गया है कि जो लोग पुण्य और सत्कर्म्म करके मरते हैं, उनकी आत्माएँ इसी लोक में जाकर निवास करती हैं। नाक। देवलोक। मुहा०—स्वर्ग के पंथ पर पैर देना=१. मरना। २. जान जोखिम में डालना। स्वर्ग जाना या सिधारना=मरना। देहांत होना। यौ०—स्वर्ग-सुख=बहुत अधिक और उच्च कोटि का सुख। स्वर्ग की धार=आकाश-गंगा। २. ईश्वर। ३. सुख। ४. वह स्थान जहाँ स्वर्ग का सा सुख मिले। ५. आकाश।

स्वर्गगमन—संज्ञा पुं० [सं०] मरना।

स्वर्गगामी—वि० [सं० स्वर्गगामिन्] १. स्वर्ग जानेवाला। २. मरा हुआ। मृत। स्वर्गीय।

स्वर्गतरु—संज्ञा पुं० [सं०] कल्पतरु वृक्ष।

स्वर्गद—वि० [सं०] स्वर्ग देनेवाला।

स्वर्गनदी—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वर्ग+नदी] आकाशगंगा।

स्वर्गपुरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] अमरावती।

स्वर्गलोक—संज्ञा पुं० दे० "स्वर्ग"।

स्वर्गवधू—संज्ञा स्त्री० [सं०] अप्सरा।

स्वर्गवाणी—संज्ञा स्त्री० दे० "आकाशवाणी"।

स्वर्गवास—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग को प्रस्थान करना। मरना।

स्वर्गवासी—वि० [सं० स्वर्गवासिन्] [स्त्री० स्वर्गवासिनी] १. स्वर्ग में रहनेवाला। २. जो मर गया हो। मृत।

स्वर्गारोहण—संज्ञा पुं० [सं०] १. स्वर्ग की ओर जाना। २. स्वर्ग सिधारना। मरना।

स्वर्गीय—वि० [सं०] [स्त्री० स्वर्गीया] १. स्वर्ग-संबंधी। स्वर्ग का। २. जो मर गया हो। मृत।

स्वर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुवर्ण या सोना नामक बहुमूल्य धातु। २. धतूरा।

स्वर्णकमल—संज्ञा पुं० [सं०] लाल कमल।

स्वर्णकार—संज्ञा पुं० [सं०] सुनार।

स्वर्णगिरि—संज्ञा पुं० [सं०] सुमेरु पर्वत।

स्वर्णपर्पटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वैद्यक में एक प्रसिद्ध औषध जो संग्रहणी के लिये बहुत गुणकारी मानी जाती है।

स्वर्णमय—वि० [सं०] जो बिलकुल सोने का हो।

स्वर्णमाक्षिक—संज्ञा पुं० दे० "सोनामक्खी"।

स्वर्णमुद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] अशरफ़ी।

स्वर्णयूथिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] पीली जूही।

स्वर्धुनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा।

स्वर्नगरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] अमरावती।

स्वर्नदी—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वर्गंगा।

स्वर्लोक—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग।

स्वर्वेश्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] अप्सरा।

स्वर्वैद्य—संज्ञा पुं० [सं०] अश्विनी-कुमार।

स्वल्प—वि० [सं०] बहुत थोड़ा।

स्ववरन*—संज्ञा पुं० दे० "सुवर्ण"।

स्वसा—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वसृ] बहिन।

स्वस्ति—अव्य० [सं०] कल्याण हो। मंगल हो। (आशीर्वाद) संज्ञा स्त्री० १. कल्याण। मंगल। २. ब्रह्मा की तीन स्त्रियों में से एक। ३. सुख।

स्वस्तिक—संज्ञा पुं० [सं०] १. हठयोग में एक प्रकार का आसन। २. चावल पीसकर और पानी में मिलाकर बनाया हुआ एक मंगलद्रव्य जिसमें देवताओं का निवास माना जाता है। ३. प्राचीन काल का एक मंगल चिह्न जो शुभ अवसरों पर मांगलिक द्रव्यों से अंकित किया जाता था। आज-कल इसका मुख्य आकार यह प्रचलित है 卐। ४. शरीर के विशिष्ट अंगों में होनेवाला उक्त आकार का एक चिह्न। (शुभ)

स्वस्तिवाचन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० स्वस्तिवाचक] कर्म्मकांड के अनुसार मंगल कार्य्यों के आरंभ में किया जानेवाला एक प्रकार का धार्मिक कृत्य जिसमें पूजन और मंगल-सूचक मंत्रों का पाठ किया जाता है।

स्वस्त्ययन—संज्ञा पुं० [सं०] एक धार्मिक कृत्य जो किसी विशिष्ट कार्य्य में शुभ की स्थापना के विचार से किया जाता है।

स्वस्थ—वि० [सं०] [संज्ञा स्वस्थता] १. नीरोग। तंदुरुस्त। भला। चंगा। २. जिसका चित्त ठिकाने हो। सावधान।

स्वहाना*–क्रि० अ० दे० "सोहाना"।
स्वाँग–संज्ञा पु० [स० सु+अंग] १ बनावटी वेप जो दूसरे का रूप बनने के लिये धारण किया जाय। भेस। रूप। २. मजाक या खेल या तमाशा। नकल। ३ धोखा देने को बनाया हुआ कोई रूप।
स्वाँगना*–क्रि० स० [हिं० स्वाँग] स्वाँग बनाना। बनावटी वेप धारण करना।
स्वाँगी–संज्ञा पु० [हिं० स्वाँग] १ वह जो स्वाँग सजकर जीविका उपार्जन करता हो। २ अनेक रूप धारण करनेवाला। बहुरूपिया। वि० रूप धारण करनेवाला।
स्वांत–संज्ञा पु० [स०] अंतकरण। मन।
स्वाँस–संज्ञा स्त्री० दे० "साँस"।
स्वाँसा–संज्ञा पु० दे० "साँस"।
स्वाक्षर–संज्ञा पु० [स०] हस्ताक्षर। दस्तखत
स्वाक्षरित–वि० [स०] अपने हस्ताक्षर से युक्त। अपना दस्तखत किया हुआ।
स्वागत–संज्ञा पु० [स०] अतिथि आदि के पधारने पर उसका सादर अभिनंदन करना। अगवानी। अभ्यर्थना। पेशवाई।
स्वागतकारिणी सभा–संज्ञा स्त्री० [स०] वह सभा जो किसी विराट सभा या सम्मेलन में आनेवाले प्रतिनिधियों के स्वागत आदि की व्यवस्था करने के लिये संघटित हो।
स्वागतपतिका–संज्ञा स्त्री० [स०] वह नायिका जो अपने पति के परदेश से लौटने से प्रसन्न हो। आगत-पतिका।
स्वागतप्रिया–संज्ञा पु० [स०] वह नायक जो अपनी पत्नी के परदेश से लौटने से उत्साहपूर्ण और प्रसन्न हो।
स्वागता–संज्ञा स्त्री० [स०] एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में (र, न, भ, ग, ग) ऽ।ऽ+ ।।।+ऽ।।+ऽऽ होता है।
स्वातंत्र्य–संज्ञा पु० दे० "स्वतंत्रता"।
स्वाति–संज्ञा स्त्री० दे० "स्वाति"।
स्वाति–संज्ञा स्त्री० [स०] पंद्रहवाँ नक्षत्र जो फलित में शुभ माना गया है।
स्वातिपथ–संज्ञा पु० [स० स्वाति+पथ] आकाश-गंगा।
स्वातिसुत–संज्ञा पु० [स०] मोती। मुक्ता।
स्वातिसुवन–संज्ञा पु० दे० "स्वातिसुत"।
स्वाती–संज्ञा स्त्री० दे० "स्वाति"।
स्वाद–संज्ञा पु० [स०] १ किसी पदार्थ के खाने या पीने से रसनेंद्रिय को होनेवाला अनुभव। जायका। २ रसानुभूति। आनंद। मुहा०—स्वाद चखाना=किसी को उसके किए हुए अपराध का दंड देना। ३ चाह। इच्छा। कामना।
स्वादक–संज्ञा पु० [स० स्वाद] वह जो भोज्य पदार्थ प्रस्तुत होने पर चखता है। स्वादु-विवेकी।
स्वादन–संज्ञा पु० [स०] १ चखना। स्वाद लेना। २ मज़ा लेना। आनंद लेना।
स्वादिष्ट, स्वादिष्ठ–वि० [स० स्वादिष्ठ] जिसका स्वाद अच्छा हो। जायकेदार। सुस्वादु।
स्वादी–वि० [स० स्वादिन्] १ स्वाद चखनेवाला। २ मज़ा लेनेवाला। रसिक।
स्वादीला†–वि० दे० "स्वादिष्ठ"।
स्वादु–संज्ञा पु० [स०] १ मीठा रस। मधुरता। २ गुड़। ३ दूध। दुग्ध। वि० १ मीठा। मधुर। मिष्ट। २ जायकेदार। स्वादिष्ठ। ३ सुंदर।
स्वाद्य–वि० [स०] स्वाद लेने योग्य।
स्वाधीन–वि० [स०] १ जो किसी के अधीन न हो। स्वतंत्र। आजाद। २. मनमाना काम करनेवाला। निरंकुश। संज्ञा पु० समर्पण। हवाला। सपुर्द।
स्वाधीनता–संज्ञा स्त्री० [स०] स्वाधीन होने का भाव। स्वतंत्रता। आज़ादी।
स्वाधीनपतिका–संज्ञा स्त्री० [स०] वह नायिका जिसका पति उसके वश में हो।
स्वाधीनभर्त्तृका–संज्ञा स्त्री० दे० "स्वाधीनपतिका"।
स्वाधीनी–संज्ञा स्त्री० दे० "स्वाधीनता"।
स्वाध्याय–संज्ञा पु० [स०] १ वेदों का निरंतर और नियमपूर्वक अभ्यास करना। वेदाध्ययन। २ अनुशीलन। अध्ययन। ३ वेद।

स्वान–संज्ञा पुं० दे० "श्वान"।
स्वाना*†–क्रि० सं० दे० "सुलाना"।
स्वापन–संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र जिससे शत्रु निद्रित किए जाते थे।
वि० नींद लानेवाला। निद्राकारक।
स्वाभाविक–वि० [सं०] १. जो आप ही आप हो। २. स्वभावसिद्ध। प्राकृतिक। नैसर्गिक। क़ुदरती।
स्वाभाविकी–वि० दे० "स्वाभाविक"।
स्वामि*–संज्ञा पुं० दे० "स्वामी"।
स्वामिकार्त्तिक–संज्ञा पुं० [सं०] शिव के पुत्र कार्त्तिकेय। स्कंद।
स्वामिता–संज्ञा स्त्री० दे० "स्वामित्व"।
स्वामित्व–संज्ञा पुं० [सं०] स्वामी होने का भाव। प्रभुत्व। मालिकपन।
स्वामिन–संज्ञा स्त्री० दे० "स्वामिनी"।
स्वामिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मालकिन। स्वत्वाधिकारिणी। २. घर की मालकिन। गृहिणी। ३. श्रीराधिका।
स्वामी–संज्ञा पुं० [सं० स्वामिन्] [स्त्री० स्वामिनी] १. मालिक। प्रभु। अन्नदाता। २. घर का प्रधान पुरुष। ३. स्वत्वाधिकारी। मालिक। ४. पति। शौहर। ५. भगवान्। ६. राजा। नरपति। ७. कार्त्तिकेय। ८. साधु, सन्यासी और धर्म्माचार्यों की उपाधि।
स्वायंभुव–संज्ञा पुं० [सं०] चौदह मनुष्यों में से पहले मनु जो स्वयंभू ब्रह्मा से उत्पन्न माने जाते हैं।
स्वायंभू–संज्ञा पुं० दे० "स्वायंभुव"।
स्वायत्त–वि० [सं०] जो अपने अधीन हो। जिस पर अपना ही अधिकार हो।
स्वायत्त शासन–संज्ञा पुं० [सं०] वह शासन जो अपने अधिकार में हो। स्थानिक स्वराज्य।
स्वारथ*†–संज्ञा पुं० दे० "स्वार्थ"।
वि० [सं० सार्थ] सफल। सिद्ध। सार्थक।
स्वारथी–वि० दे० "स्वार्थी"।
स्वारस्य–वि० [सं०] १. सरसता। रसीलापन। २. स्वाभाविकता।
स्वाराज्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. स्वाधीन राज्य। २. स्वर्ग का राज्य। स्वर्गलोक।
स्वारी*†–संज्ञा स्त्री० दे० "सवारी"।
स्वारोचिष–संज्ञा पुं० [सं०] (स्वरोचिष के पुत्र) दूसरे मनु का नाम।
स्वार्थ–संज्ञा पुं० [सं०] १. अपना उद्देश्य या मतलब। २. अपना लाभ। अपनी भलाई। अपना हित।
मुहा०—(किसी बात में) स्वार्थ लेना = दिलचस्पी लेना। अनुराग रखना। (आधुनिक)
वि० [सं० सार्थक] सार्थक। सफल।
स्वार्थता–संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वार्थ का भाव या धर्म्म। खुदगर्जी।
स्वार्थत्याग–संज्ञा पुं० [सं०] किसी भले काम के लिये अपने हित या लाभ का विचार छोड़ना।
स्वार्थत्यागी–वि० [सं० स्वार्थत्यागिन्] दूसरे के भले के लिये अपने लाभ का विचार न रखनेवाला।
स्वार्थपर–वि० [सं०] स्वार्थी। खुदगरज़।
स्वार्थपरता–संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वार्थपर होने का भाव। खुदगरज़ी।
स्वार्थपरायण–वि० [सं०] [संज्ञा स्वार्थपरायणता] स्वार्थपर। स्वार्थी। खुदगरज़।
स्वार्थसाधन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० स्वार्थसाधक] अपना प्रयोजन सिद्ध करना। अपना काम निकालना।
स्वार्थांध–वि० [सं०] जो अपने स्वार्थ के वश होकर अंधा हो जाता हो।
स्वार्थी–वि० [सं० स्वार्थिन्] अपना ही मतलब देखनेवाला। मतलबी। खुदगरज़।
स्वाल*–संज्ञा पुं० दे० "सवाल"।
स्वास*–संज्ञा पुं० [सं० श्वास] साँस। श्वास।
स्वासा–संज्ञा स्त्री० [सं० श्वास] साँस। श्वास।
स्वास्थ्य–संज्ञा पुं० [सं०] नीरोग या स्वस्थ होने की अवस्था। आरोग्य। तंदुरुस्ती।
स्वास्थ्यकर–वि० [सं०] तंदुरुस्त करनेवाला। आरोग्यवर्द्धक।
स्वाहा–अव्य० [सं०] एक शब्द जिसका

प्रयोग देवताओं को हवि देने के समय किया जाता है।
मुहा०—स्वाहा करना=नष्ट करना।
संज्ञा स्त्री० अग्नि की पत्नी का नाम।
स्वीकरण—संज्ञा पु० [सं०] १ अपनाना। अंगीकार करना। २ मानना। राजी होना।
स्वीकारोक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह बयान जिसमें अभियुक्त अपना अपराध स्वयं ही स्वीकृत कर ले।
स्वीकार—संज्ञा पु० [सं०] १ अपनाने की क्रिया। अंगीकार। कबूल। २ लेना।
स्वीकार्य—वि० [सं०] स्वीकार करने या मानने के योग्य।
स्वीकृत—वि० [सं०] स्वीकार किया हुआ। माना हुआ। मंजूर।
स्वीकृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वीकार का भाव। मंजूरी। सम्मति। रजामंदी।
स्वीय—वि० [सं०] अपना। निज का। संज्ञा पु० स्वजन। आत्मीय। संबंधी।
स्वे*—वि० दे० "स्व"।
स्वेच्छा—संज्ञा स्त्री० [सं०] अपनी इच्छा।
स्वेच्छाचार—संज्ञा पु० [सं०] [भाव० स्वेच्छाचारिता] जो जी में आवे, वही करना। यथेच्छाचार।
स्वेच्छाचारी—वि०[सं० स्वेच्छाचारिन्] [स्त्री० स्वेच्छाचारिणी] मनमाना काम करनेवाला। निरंकुश। अबाध्य।
स्वेच्छासेवक—संज्ञा पु० दे० "स्वयंसेवक"।
स्वेत*—वि० दे० "श्वेत"।
स्वेद—संज्ञा पु० [सं०] १ पसीना। प्रस्वेद। २ भाप। वाष्प। ३ ताप। गरमी।
स्वेदक—वि० [सं०] पसीना लानेवाला।
स्वेदज—वि० [सं०] पसीने से उत्पन्न होनेवाला। (जूँ, खटमल, मच्छर आदि)
स्वेदन—संज्ञा पु० [सं०] पसीना निकलना।
स्वेदित—वि० [सं०] १ पसीने से युक्त। २ भपारा दिया हुआ। सेंका हुआ।
स्वैं*—वि० [सं० स्वीय] अपना। निज का। सर्व० दे० "सो"।
स्वैर—वि० [सं०] १ मनमाना काम करनेवाला। स्वच्छंद। स्वतंत्र। २ धीमा। मंद। ३ यथेच्छ। मनमाना।
स्वैरचारी—वि० [सं० स्वैरचारिन्] [स्त्री० स्वैरचारिणी] १ मनमाना काम करनेवाला। निरंकुश। २ व्यभिचारी।
स्वैरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] यथेच्छाचारिता।
स्वैरिणी—संज्ञा स्त्री०[सं०]व्यभिचारिणी स्त्री।
स्वैरिता—संज्ञा स्त्री० दे० "स्वैरता"।
स्वोपार्जित—वि० [सं०] अपना उपार्जन किया या कमाया हुआ।

ह

ह—संस्कृत या हिंदी वर्णमाला का तेंतीसवाँ व्यंजन जो उच्चारण विभाग के अनुसार *ऊष्म वर्ण कहलाता है।*
हँक—संज्ञा स्त्री० दे० "हाँक"।
हँकड़ना—क्रि० अ० [हिं० हाँक] दर्प के साथ बोलना। ललकारना।
हँकरना—क्रि० अ० दे० "हँकड़ना"।
हँकवा—संज्ञा पु० [हिं० हाँक] शेर के शिकार का एक ढंग जिसमें बहुत से लोग शेर को हाँककर शिकारी की ओर ले जाते हैं।
हँकवाना—क्रि० स० [हिं० हाँकना का प्रे०] १ हाँक लगवाना। बुलवाना। २ हाँकने का काम दूसरे से कराना।
हँकैया*†—संज्ञा पु० [हिं० हाँकना+वैया (प्रत्य०)] हाँकनेवाला।
हका—संज्ञा स्त्री० [हिं० हाँक] ललकार।

हँकाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० हाँकना] हाँकने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
हँकाना–क्रि० स० [हिं० हाँक] १. दे० "हाँकना"। २. पुकारना। बुलाना। ३. हँकवाना।
हँकार–संज्ञा स्त्री० [सं० हक्कार] १. आवाज़ लगाकर बुलाना। पुकार। २. वह ऊँचा शब्द जो किसी को बुलाने या संबोधन करने के लिये किया जाय। पुकार।
मुहा०—हँकार पड़ना = बुलाने के लिये आवाज़ लगना।
हंकार*†–संज्ञा पुं० दे० "अहंकार"।
संज्ञा पु० [सं० हुंकार] ललकार। दपट।
हँकारना†*–क्रि० स० [हिं० हाँक] १. हाँक देकर बुलाना। २. बुलाना। पुकारना। ३. पुकारने का काम दूसरे से कराना। बुलवाना।
हँकारना–क्रि० स० [हिं० हँकार] १. जोर से पुकारना। टेरना। २. बुलाना। पुकारना। ३. युद्ध के लिये आह्वान करना। ललकारना।
हँकारना–क्रि० अ० [हिं० हुंकार] हुंकार शब्द करना। दपटना।
हँकारा–संज्ञा पु० [हिं० हँकारना] १. पुकार। बुलाहट। २. निमंत्रण। बुलौवा। न्योता
हँकारी–संज्ञा स्त्री० [हिं० हँकार] १. वह जो लोगों को बुलाकर लाता हो। २. दूत।
हंगामा–संज्ञा पु० [फा० हंगाम:] १. उपद्रव। दंगा। लड़ाई-झगड़ा। २. शोर-गुल। कलकल। हल्ला।
हंडना–क्रि० अ० [सं० अभ्यटन] १. घूमना फिरना। २. व्यर्थ इधर-उधर फिरना। ३. इधर-उधर ढूँढ़ना। ४. वस्त्र आदि का पहना या ओढ़ा जाना।
हंडा–संज्ञा पु० [सं० भांडक] पीतल या ताँबे का बहुत बड़ा बरतन जिसमें पानी रखते हैं।
हँडाना–क्रि० स० [हिं० हँडना] १. घुमाना। फिराना। २. काम में लाना।
हँडिया–संज्ञा स्त्री० [सं० भांडिका] १. बड़े लोटे के आकार का मिट्टी का बरतन। हाँडी। २. इस आकार का शीशे का पात्र जो शोभा के लिये लटकाया जाता है।
हंडी–संज्ञा स्त्री० दे० हँडिया", "हाँडी"।
हंत–अव्य० [सं०] खेद या शोकसूचक शब्द।
हंता–संज्ञा पुं० [सं० हंतृ] [स्त्री० हंत्री] मारनेवाला। वध करनेवाला।
हँफनि–संज्ञा स्त्री० [हिं० हाँफना] हाँफने की क्रिया या भाव।
मुहा०—हँफनि मिटाना = सुस्ताना।
हंस–संज्ञा पु० [सं०] १. बत्तख के आकार का एक जलपक्षी जो बड़ी बड़ी झीलों में रहता है। २. सूर्य्य। ३. ब्रह्म। परमात्मा। ४. माया से निर्लिप्त आत्मा। ५. जीवात्मा। जीव। ६. विष्णु। ७. संन्यासियों का एक भेद। ८. प्राणवायु। ९. घोड़ा। १०. शिव। महादेव। ११ दोहे के नवें भेद का नाम जिसमें १४ गुरु और २० लघु वर्ण होते हैं। (पिंगल) १२. एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक भगण और दो गुरु होते हैं। पंक्ति।
हंसक–संज्ञा पुं० [सं०] १. हंस पक्षी। २. पैर की उँगलियों में पहनने का बिछुआ।
हंसगति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हंस के समान सुंदर धीमी चाल। २. सायुज्य मुक्ति। ३. बीस मात्राओं का एक छंद।
हंसगामिनी–वि० स्त्री० [सं०] हंस के समान सुंदर मंद गति से चलनेवाली।
हँसता-मुखी–संज्ञा पु० [हिं० हँसना + मुख] हँसते चेहरेवाला। प्रसन्नमुख।
हँसन–संज्ञा स्त्री० [हिं० हँसना] हँसने की क्रिया, भाव या ढंग।
हसना–क्रि० अ० [सं० हँसन] १. खुशी के मारे मुँह फैलाकर एक तरह की आवाज़ करना। खिलखिलाना। हास करना। क़हक़हा लगाना।
यौ०—हँसना बोलना = आनंद की बात-चीत करना। हँसना खेलना = आनंद करना।
मुहा०—किसी पर हँसना = विनोद की बात कहकर तुच्छ या मूर्ख ठहराना। उपहास करना।

हँसने-हँसने = प्रसन्नता से। खुशी से। ठठा कर हँसना = जोर से हँसना। अट्टहास करना। बात हँसकर उड़ाना = तुच्छ या साधारण समझकर विनोद में टाल देना।
२ रमणीय लगना। गुलजार या रौनक होना। ३ दिल्लगी करना। हँसी करना। ४ प्रसन्न या सुखी होना। खुशी मनाना।
क्रि० स० किसी का उपहास करना। अनादर करना। हँसी उड़ाना।

हसनि*†–संज्ञा स्त्री० दे० "हँसन"।

हसनी–संज्ञा स्त्री० दे० "हंसी"।

हंसपदी–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक लता।

हँसमुख–वि० [हिं० हँसना + मुख] १ प्रसन्नवदन। जिसके चेहरे से प्रसन्नता प्रकट होती हो। २ विनोदशील। हास्यप्रिय।

हंसराज–संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार की पहाड़ी बूटी। समलपत्ती। २ एक प्रकार का अगहनी धान।

हँसली–संज्ञा स्त्री० [सं० असली] १ गरदन के नीचे और छाती के ऊपर की धन्वाकार हड्डी। २ गले में पहनने का स्त्रियों का एक मंडलाकार गहना।

हंसवंश–संज्ञा पुं० [सं०] सूर्यवंश।

हंसवाहन–संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा।

हंसवाहिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] सरस्वती।

हंससुता–संज्ञा स्त्री० [सं०] यमुना नदी।

हँसाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० हँसना] १ हँसने की क्रिया या भाव। २ निंदा। बदनामी।

हँसाना–क्रि० स० [हिं० हँसना] दूसरे को हँसने में प्रवृत्त करना।

हँसाय*†–संज्ञा स्त्री० दे० "हँसाई"।

हंसालि–संज्ञा स्त्री० [सं०] ३७ मात्राओं का एक छंद।

हंसिनी–संज्ञा स्त्री० दे० "हंसी"।

हँसिया–संज्ञा स्त्री० [देश०] एक औजार जिससे खेत की फसल या तरकारी आदि काटी जाती है।

हंसी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हंस की मादा। २ बाईस अक्षरों की एक वर्णवृत्ति।

हँसी–संज्ञा स्त्री० [हिं० हँसना] १ हँसने की क्रिया या भाव। हास।
यौ०–हँसी खुशी = प्रसन्नता। हँसी ठट्ठा = आनंद-क्रीड़ा। मजाक।
मुहा०–हँसी छूटना = हँसी आना।
२ मजाक। दिल्लगी। विनोद।
यौ०–हँसी खेल = १ विनोद और क्रीड़ा। २ साधारण या सहज बात।
मुहा०–हँसी समझना या हँसी-खेल समझना = साधारण बात समझना। आसान बात समझना। हँसी में उड़ाना = परिहास की बात कहकर टाल देना। हँसी में ले जाना = किसी बात को मजाक समझना।
३ अनादर-सूचक हास। उपहास।
मुहा०–हँसी उड़ाना = व्यंगपूर्ण निंदा करना। उपहास करना।
४ लोक-निंदा। बदनामी। अनादर।

हँसुआ, हँसुवा†–संज्ञा पुं० दे० "हँसिया"।

हँसोड़–वि० [हिं० हँसना + ओड़ (प्रत्य०)] हँसी-ठट्ठा करनेवाला। दिल्लगीबाज। मसखरा।

हँसोर*–वि० दे० "हँसोड़"।

हँसौहाँ*–वि० [हिं० हँसना] [स्त्री० हँसौहीं] १ ईषद् हासयुक्त। कुछ हँसी लिए। २ हँसने का स्वभाव रखनेवाला। ३ दिल्लगी का। मजाक से भरा।

ह–संज्ञा पुं० [सं०] १ हास। हँसी। २ शिव। महादेव। ३ जल। पानी। ४ शून्य। सिफर। ५ शुभ। मंगल। ६ आकाश। ७ ज्ञान। ८ घोड़ा। अश्व।

हई–संज्ञा पुं० [सं० हयिन्] घुड़सवार।
संज्ञा स्त्री० [हिं० ह!] आश्चर्य।

हउँ*–क्रि० अ० सर्व० दे० "हौं"।

हक़–वि० [अ०] १ सच। सत्य। २ वाजिब। ठीक। उचित। न्याय्य।
संज्ञा पुं० १ किसी वस्तु को अपने कब्जे में रखने, काम में लाने या लेने का अधिकार। स्वत्व। २ कोई काम करने या किसी से कराने का अधिकार। इख्तियार।
मुहा०–हक़ में = विषय में। पक्ष में।

३. कर्त्तव्य। फ़र्ज़।
मुहा०—हक अदा करना = कर्त्तव्य पालन करना।
४. वह वस्तु जिसे पाने, पास रखने या काम में लाने का न्याय से अधिकार प्राप्त हो। ५. किसी मामले में दस्तूर के मुताबिक़ मिलनेवाली कुछ रकम। दस्तूरी। ६. ठीक या वाजिब बात। ७. उचित पक्ष। न्याय्य पक्ष।
मुहा०—हक पर होना = उचित बात का आग्रह करना।
८. ख़ुदा। ईश्वर। (मुसलमान)
हक़दार—संज्ञा पुं० [अ० हक़ + फ़ा० दार] स्वत्व या अधिकार रखनेवाला।
हक-नाहक—अव्य० [अ० फ़ा०] १. जबरदस्ती। धींगाधींगी से। २. बिना कारण या प्रयोजन। व्यर्थ। फजूल।
हकबकाना—क्रि० अ० [अनु० हक्का बक्का] हक्का बक्का हो जाना। घबरा जाना।
हकला—वि० [हिं० हकलाना] रुक रुककर बोलनेवाला। हकलानेवाला।
हकलाना—क्रि० अ० [अनु० हक] बोलने में अटकना। रुक रुककर बोलना।
हकसफा—संज्ञा पुं० [अ०] किसी जमीन को खरीदने का औरों से ऊपर या अधिक वह हक जो गाँव के हिस्सेदारों अथवा पड़ोसियों को प्राप्त होता है।
हक़ीक़त—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. तत्त्व। सचाई। असलियत। २. तथ्य। ठीक बात। ३. असल हाल। सत्य वृत्त।
मुहा०—हक़ीक़त में = वास्तव में। सचमुच। हक़ीक़त खुलना = असल बात का पता लगना।
हकीम—संज्ञा पुं० [अ०] १ विद्वान्। आचार्य्य। २. यूनानी रीति से चिकित्सा करनेवाला। वैद्य। चिकित्सक।
हकीमी—संज्ञा स्त्री० [अ० हकीम + ई (प्रत्य०)] १. यूनानी चिकित्सा-शास्त्र। २. हकीम का पेशा या काम।
हकूमत‡—संज्ञा स्त्री० दे० "हुकूमत"।
हक्काक़—संज्ञा पुं० [?] नग को काटने, सान पर चढ़ाने, जड़ने आदि का काम करनेवाला।
हक्का बक्का—वि० [अनु० हक, धक] भौचक। घबराया हुआ। ठक।
हगना—क्रि० अ० [सं० भग ?] १. मल त्याग करना। झाड़ा फिरना। पाखाना फिरना। २. भख मारकर अदा कर देना।
हगाना—क्रि० स० [हिं० हगना] हगने की क्रिया कराना।
हगास—संज्ञा स्त्री० [हिं० हगना + आस (प्रत्य०)] मलत्याग का वेग या इच्छा।
हचकोला—संज्ञा पुं० [हिं० हचकना] वह धक्का जो गाड़ी, चारपाई आदि पर हिलने-डोलने से लगे। धचका।
हचना*†—क्रि० अ० दे० "हिचकना"।
हज—संज्ञा पुं० [अ०] मुसलमानों का काबे के दर्शन के लिये मक्के जाना।
हजम—संज्ञा पुं० [अ०] पेट में पचने की क्रिया या भाव। पाचन।
वि० १. पेट में पचा हुआ। २. बेईमानी या अनुचित रीति से अधिकार किया हुआ।
हज़रत—संज्ञा पुं० [अ०] १. महात्मा। महापुरुष। २. महाशय। ३. नटखट या खोटा आदमी। (व्यंग्य)
हजामत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. हज्जाम का काम। बाल बनाने का काम। क्षौर। २. बाल बनाने की मजदूरी। ३. सिर या दाढ़ी के बढ़े हुए बाल जिन्हें कटाना या मुड़ाना हो।
मुहा०—हजामत बनाना = १. दाढ़ी या सिर के बाल साफ़ करना या काटना। २ लूटना। धन हरण करना। ३. मारना-पीटना।
हज़ार—वि० [फ़ा०] १. जो गिनती में दस सौ हो। सहस्र। २. बहुत से। अनेक।
संज्ञा पुं० दस सौ की संख्या या अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—१०००।
क्रि० वि० कितना ही। चाहे जितना अधिक।
हज़ारा—वि० [फ़ा०] (फूल) जिसमें हज़ार या बहुत अधिक पखड़ियाँ हों। सहस्रदल।
संज्ञा पुं० फुहारा। फौवारा।

हजारी–संज्ञा पु० [फा०] १ एक हजार सिपाहियों का सरदार। २ दोगला। वर्णसंकर।
हजूर–संज्ञा पु० दे० "हुजूर"।
हजूरी–संज्ञा पु० [अ० हुजूर] [स्त्री० हजूरी] बादशाह या राजा के सदा पास रहनेवाला सेवक।
हजो–संज्ञा स्त्री० [अ० हज्व] निंदा। बुराई।
हज्ज–संज्ञा पु० दे० "हज"।
हज्जाम–संज्ञा पु० [अ०] हजामत बनानेवाला। नाई। नापित।
हटक*†–संज्ञा स्त्री० [हिं० हटकना] १ वारण। वर्जन।
मुहा०–हटक मानना = मना करने पर किसी काम से रुकना।
२ गायों को हाँकने की क्रिया या भाव।
हटकन–संज्ञा स्त्री० [हिं० हटकना] १ दे० "हटक"। २ चौपायों को हाँकने की छड़ी या लाठी।
हटकना–क्रि० स० [हिं० हट = दूर होना + करना] १ मना करना। निषेध करना। रोकना। २ चौपायों का किसी ओर जाने से रोककर दूसरी तरफ हाँकना।
मुहा०–हटकि = १ जबरदस्ती। २ बिना कारण।
हटतार†–संज्ञा पु० दे० "हरताल"।
संज्ञा स्त्री० [हिं० हठतार] माला का सूत।
हटना–क्रि० अ० [सं० घट्टन] १ एक जगह से दूसरी जगह पर जा रहना। खिसकना। सरकना। टलना। २ पीछे सरकना। ३ जी चुराना। भागना। ४ सामने से दूर होना। सामने से चला जाना। ५ टलना। ६ न रह जाना। दूर होना। ७ बात पर दृढ़ न रहना।
*† [हिं० हटकना] मना या निषेध करना।
हटवा–संज्ञा पु० [हिं० हाट] दूकानदार।
हटवाई*†–संज्ञा स्त्री० [हिं० हाट+वाई(प्रत्य०)] सौदा लेना या बेचना। क्रय विक्रय।
हटवाना–क्रि० स० [हिं० हटाना] हटाने का काम दूसरे से कराना।
हटवार*†–संज्ञा पु० [हिं० हाट + वारा(वाला)] हाट में सौदा बेचनेवाला। दूकानदार।
हटाना–क्रि० स० [हिं० हटना का स०] १ एक स्थान से दूसरे स्थान पर करना। सरकाना। खिसकाना। २ किसी स्थान पर न रहने देना। दूर करना। ३ आक्रमण-द्वारा भगाना। ४ जाने देना।
हट्ट–संज्ञा पु० [सं०] १ बाजार। २ दूकान।
यौ०—चौहट्ट = बाजार का चौक।
हट्टा कट्टा–वि० [सं० हृष्ट + काष्ठ] [स्त्री० हट्टी-कट्टी] हृष्ट-पुष्ट। मोटा-ताजा।
हट्टी–संज्ञा स्त्री० [हिं० हाट] दूकान।
हठ–संज्ञा पु० [सं०] [वि० हठी, हठीला] १ किसी बात के लिये अड़ना। टेक। जिद। आग्रह।
मुहा०–हठ पकड़ना = जिद करना। हठ रखना = जिस बात के लिये कोई अड़े, उसे पूरा करना। हठ में पड़ना = हठ करना। हठ माँड़ना = हठ ठानना।
२ दृढ़ प्रतिज्ञा। अटल संकल्प। ३ बलात्कार। जबरदस्ती।
हठधर्म–संज्ञा पु० [सं०] अपने मत पर, सत्य असत्य का विचार छोड़कर, जमा रहना। दुराग्रह। कट्टरपन।
हठधर्मी–संज्ञा स्त्री० [सं० हठ + धर्म] १ उचित अनुचित का विचार छोड़कर अपनी बात पर जमे रहना। दुराग्रह। २ अपने मत या संप्रदाय की बात लेकर अड़ने की क्रिया या प्रवृत्ति। कट्टरपन।
हठना–क्रि० अ० [हिं० हठ] १ हठ करना। जिद पकड़ना। दुराग्रह करना।
मुहा०—हठ कर = बलात्। जबरदस्ती।
२ प्रतिज्ञा करना। दृढ़ संकल्प करना।
हठयोग–संज्ञा पु० [सं०] वह योग जिसमें शरीर को साधने के लिये बड़ी कठिन कठिन मुद्राओं और आसनों आदि का विधान है। नेती, धोती आदि क्रियाएँ इसी में है।
हठात्–प्रत्य० [सं०] १ हठपूर्वक। दुराग्रह के साथ। जबरदस्ती से। २ अवश्य।
हठी–वि० [सं० हठिन्] हठ करनेवाला।

जिद्दी। टेकी।

हठीला–वि० [सं० हठ+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० हठीली] १. हठ करनेवाला। हठी। जिद्दी। २. दृढ़-प्रतिज्ञ। बात का पक्का। ३. लड़ाई में जमा रहनेवाला। धीर।

हड़–संज्ञा स्त्री० [सं० हरीतकी] १. एक बड़ा पेड़ जिसका फल औषध के रूप में काम में लाया जाता है। २. हड़ के आकार का एक प्रकार का गहना। लटकन।

हड़कंप–संज्ञा पुं० [हिं० हाड़+काँपना] भारी हलचल। तहलका।

हड़क–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. पागल कुत्ते के काटने पर पानी के लिये गहरी आकुलता। २. किसी वस्तु को पानी की गहरी झक। उत्कट इच्छा। रट। धुन।

हड़कना–क्रि० अ० [हिं० हड़क] किसी वस्तु के अभाव से दुःखी होना। तरसना।

हड़काना–क्रि० स० [देश०] १. आक्रमण करने या तंग करने आदि के लिये पीछे लगा देना। लहकारना। २. किसी वस्तु के अभाव का दुःख देना। तरसाना। ३. कोई वस्तु माँगनेवाले को न देकर भगाना।

हड़काया–वि० [हिं० हड़क] पागल। (कुत्ता)

हड़गीला–संज्ञा पुं० [हिं० हाड़+गिलना ?] बगले की जाति का एक पक्षी।

हड़जोड़–संज्ञा पुं० [हिं० हाड़+जोड़ना] एक प्रकार की लता। कहते हैं कि इससे टूटी हुई हड्डी भी जुड़ जाती है।

हड़ताल–संज्ञा स्त्री० [सं० हट्ट=दूकान+ताला] किसी बात से असंतोष प्रकट करने के लिये दूकानदारों का दूकानें बन्द कर देना। संज्ञा स्त्री० दे० "हरताल"।

हड़ना–क्रि० अ० [हिं० घड़ा] तौल में जाँचा जाना।

हड़प–वि० [अनु०] १. पेट में डाला हुआ। निगला हुआ। २. ग़ायब किया हुआ।

हड़पना–क्रि० स० [अनु० हड़प] १ मुँह में डाल लेना। खा जाना। २. अनुचित रीति से ले लेना। उड़ा लेना।

हड़बड़–संज्ञा स्त्री० [अनु०] जल्दबाजी प्रकट करनेवाली गति-विधि।

हड़बड़ाना–क्रि० अ० [अनु०] जल्दी करना। उतावलापन करना। आतुर होना। क्रि० स० किसी को जल्दी करने के लिये कहना।

हड़बड़िया–वि० [हिं० हड़बड़ी+इया (प्रत्य०)] हड़बड़ी करनेवाला। जल्दबाज। उतावला।

हड़बड़ी–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. जल्दी। उतावली। २. जल्दी के कारण घबराहट।

हड़हड़ाना–क्रि० स० [अनु०] जल्दी मचाकर दूसरे को घबराना।

हड़ावरि, हड़ावल–संज्ञा स्त्री० [हिं० हाड़+सं० अवलि] १. हड्डियों का ढाँचा। ठठरी। २. हड्डियों की माला।

हड्डा–संज्ञा पुं० [सं० हडाचिका] मधुमक्खियों की तरह का एक कीड़ा। भिड़। बर्रे।

हड्डी–संज्ञा स्त्री० [सं० अस्थि] १. शरीर के अंदर की वह कठोर वस्तु जो भीतरी ढाँचे के रूप में होती है। अस्थि।

मुहा०—हड्डियाँ गढ़ना या तोड़ना = खूब मारना। खूब पीटना। हड्डियाँ निकल आना = शरीर बहुत दुबला होना। पुरानी हड्डी = पुराने आदमी का दृढ़ शरीर। २. कुल। वंश। खानदान।

हत–वि० [सं०] १. वध किया हुआ। मारा हुआ। २. पीटा हुआ। ताड़ित। ३. खोया हुआ। गँवाया हुआ। विहीन। ४. जिसमें या जिस पर ठोकर लगी हो। ५. नष्ट किया हुआ। बिगाड़ा हुआ। ६. पीड़ित। ग्रस्त। ७. गुणा किया हुआ। गुणित। (गणित)

हतक–संज्ञा स्त्री० [अ० हतक=फाड़ना] हेठी। बेइज्जती। अप्रतिष्ठा।

हतक इज्जती–संज्ञा स्त्री० [अ० हतक+इज्जत] अप्रतिष्ठा। मानहानि। बेइज्जती।

हतदैव–वि० [सं०] अभागा।

हतना–क्रि० स० [सं० हत+ना (हिं० प्रत्य०)] १. वध करना। मार डालना। २. मारना। पीटना। ३. पालन न करना। न मानना।

हतबुद्धि–वि० [स०] बुद्धिशून्य। मूर्ख।
हतभागा, हतभागी–वि० [स० हत+हि० भाग्य] [स्त्री० हतभागिन, हतभागिनी] अभागा। भाग्यहीन। बदकिस्मत।
हतभाग्य–वि० [स०] भाग्यहीन। बदकिस्मत।
हतवाना–क्रि० स० [हि० हतना का प्रेर०] वध कराना। मरवाना।
हता*†–क्रि० स०[होना का भूतकाल] था।
हताना–क्रि० स० दे० "हतवाना"।
हताश–वि० [स०] जिसे आशा न रह गई हो। निराश। नाउम्मीद।
हताहत–वि० [स०] मारे गए और घायल।
हतोत्साह–वि० [स०] जिसे कुछ करने का उत्साह न रह गया हो।
हत्थ*–संज्ञा पु० दे० "हाथ"।
हत्था–संज्ञा पु०[हि० हत्थ, हाथ] १ औजार का वह भाग जो हाथ से पकडा जाता है। दस्ता। मूठ। २ लकडी का वह बल्ला जिससे खेत की नालियो का पानी चारो ओर उलीचा जाता है। हाथा। हथेरा। ३ केले के फलो का घौद।
हत्थी–संज्ञा स्त्री०[हि० हत्था, हाथ] औजार या हथियार का वह भाग जो हाथ से पकडा जाता है। दस्ता। मूठ।
हत्थे–क्रि० वि० [हि० हाथ, हत्थ] हाथ मे। मुहा०—हत्थे चढ़ना = १ हाथ में आना। प्राप्त होना। २ वश मे होना।
हत्या–संज्ञा स्त्री० [स०] १ मार डालने की क्रिया। वध। खून।
मुहा०–हत्या लगना=हत्या का पाप लगना। किसी के वध का दोष ऊपर आना।
२ झंझट। बखेडा।
हत्यारा–संज्ञा पु०[स० हत्या+कार] [स्त्री० हत्यारिन, हत्यारी] हत्या करनेवाला। जान लेनेवाला।
हत्यारी–संज्ञा स्त्री०[हि० हत्यारा] १ हत्या करनेवाली। २ हत्या का पाप। प्राण-वध का दोष।
हथ–संज्ञा पु०[हि० हाथ] 'हाथ' का संक्षिप्त रूप (समस्त पदों में)।
हथकंडा–संज्ञा पु० [हि० हाथ+स० काड] १ हाथ की सफाई। हस्तलाघव। हस्त-कौशल। २ गुप्त चाल। चालाकी का ढग।
हथकडी–संज्ञा स्त्री०[हि० हाथ+कडी] लोहे का वह कडा जो कैदी के हाथ में पहनाया जाता है।
हथनाल–संज्ञा पु०[हि० हाथी+नाल] वह तोप जो हाथी पर चलती थी। गजनाल।
हथनी–संज्ञा स्त्री०[हि० हाथी नी (प्रत्य०)] हाथी की मादा।
हथफूल–संज्ञा पु० [हि० हाथ+फूल] हथेली की पीठ पर पहनने का एक जडाऊ गहना। हथसांकर। हथसकर।
हथफेर–संज्ञा पु० [हि० हाथ+फेरना] १ प्यार करते हुए शरीर पर हाथ फेरने की क्रिया। २ दूसरे के माल को सफाई से उडा लेना। ३ थोडे दिनो के लिये लिया या दिया हुआ कर्ज। हाथ-उधार।
हथलेवा–संज्ञा पु०[हि० हाथ+लेना] विवाह मे वर का कन्या का हाथ अपने हाथ म लेने की रीति। पाणिग्रहण।
हथवांस–संज्ञा पु० [हि० हाथ] नाव चलाने के सामान। जैसे—पतवार, डांडा।
हथसांकर–संज्ञा पु० दे० "हथफूल"।
हथसार–संज्ञा स्त्री०[हि० हाथी+स० शाला] वह घर जिसमें हाथी रखे जाते हैं। फील-खाना।
हथाहथी*†–अव्य० [हि० हाथ] १ हाथो-हाथ। २ शीघ्र। तुरत।
हथिनी–संज्ञा स्त्री० दे० "हथनी"।
हथिया–संज्ञा पु० [स० हस्त] हस्त नक्षत्र।
हथियाना–क्रि० स० [हि० हाथ+आना (प्रत्य०)] १ हाथ में करना। ले लेना। २ धोखा देकर ले लेना। उडा लेना। ३ हाथ मे पकडना।
हथियार–संज्ञा पु० [हि० हथियाना] १ हाथ से पकडकर काम म लाने की साधन-वस्तु। औजार। २ तलवार, भाला आदि आक्रमण करने का साधन। अस्त्र-शस्त्र।

मुहा०—१. मारने के लिये अस्त्र हाथ में लेना। २. लड़ाई के लिये तैयार होना।
हथियारबंद–वि० [हि० हथियार + फ़ा० बंद] जो हथियार बांधे हो। सशस्त्र।
हथेरी*†–संज्ञा स्त्री० दे० "हथेली"।
हथेली–संज्ञा स्त्री० [सं० हस्ततल] हाथ की कलाई का चौड़ा सिरा जिसमें उँगलियाँ लगी होती हैं। करतल।
मुहा०—हथेली में आना = १. मिलना। प्राप्त होना। २. वश में होना। हथेली पर जान होना = ऐसी स्थिति में पड़ना जिसमें जान जाने का भय हो।
हथेव–संज्ञा पुं० [हि० हाथ] हथौटी।
हथोरी*†–संज्ञा स्त्री० दे० "हथेली"।
हथौटी–संज्ञा स्त्री० [हि० हाथ+औटी (प्रत्य०)] १. किसी काम में हाथ लगाने का ढंग। हस्तकौशल। २. किसी काम में हाथ डालने की क्रिया या भाव।
हथौड़ा–संज्ञा पुं० [हि० हाथ + औड़ा (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० हथौड़ी] १. वह औजार जिससे कारीगर किसी धातुखंड को तोड़ते, पीटते या गढ़ते हैं। मारतौल। २. कील ठोंकने, खूँटे गाड़ने आदि का औजार।
हथौड़ी–संज्ञा स्त्री० [हि० हथौड़ी] छोटा हथौड़ा।
हथ्यार*†–संज्ञा पुं० दे० "हथियार"।
हद–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. किसी चीज की लंबाई, चौड़ाई, ऊँचाई या गहराई की सबसे अधिक पहुँच। सीमा। मर्यादा।
मुहा०—हद बाँधना=सीमा निर्धारित करना।
२. किसी वस्तु या बात का सबसे अधिक परिणाम जो ठहराया गया हो।
मुहा०—हद से ज्यादा = बहुत अधिक। अत्यंत। हद व हिसाब नहीं = बहुत ही ज्यादा। अत्यत।
३. किसी बात की उचित सीमा। मर्य्यादा।
हदीस–संज्ञा स्त्री० [अ०] मुसलमानों का वह धर्मग्रंथ जिसमें मुहम्मद साहब के वचनों का संग्रह है और जिसका व्यवहार बहुत कुछ स्मृति के रूप में होता है।
हनन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० हननीय, हनित] १. मार डालना। वध करना। २. आघात करना। पीटना। गुणा करना। (गणित)
हनना†*–क्रि० स० [सं० हनन] १. मार डालना। वध करना। २. आघात करना। प्रहार करना। ३. पीटना। ठोंकना। ४. लकड़ी से पीट या ठोंककर बजाना।
हनवाना–क्रि० स० [हि० हनना का प्रेरणा०] हनने का कार्य्य दूसरे से कराना।
हनिवंत*‡–संज्ञा पु० दे० "हनुमान्"।
हनुंव–संज्ञा पु० दे० "हनुमान्"।
हनु–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दाढ़ की हड्डी। जबड़ा। *२. ठुड्डी। चिबुक।
हनुमंत–संज्ञा पुं० दे० "हनुमान्"।
हनुमान्–वि० [सं० हनुमत्] १. दाढ़ या जबड़ेवाला। २. भारी दाढ़ या जबड़े-वाला। ३. बहुत बड़ा वीर या बहादुर। संज्ञा पुं० पंपा के एक वीर बंदर जिन्होंने सीता-हरण के उपरांत रामचंद्र की बड़ी सेवा और सहायता की थी। महावीर।
हनूफाल–संज्ञा पु० [सं० हनु + हि० फाल] एक प्रकार का मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में बारह मात्राएँ और अन्त में गुरु लघु होते हैं।
हनूमान्–संज्ञा पुं० दे० "हनुमान्"।
हनोज–अव्य० [फ़ा०] अभी। अभी तक।
हप–संज्ञा पु० [अनु०] मुँह में चट से लेकर ओठ बंद करने का शब्द।
मुहा०—हप कर जाना = झट से मुँह में डालकर खा जाना।
हफ़्ता–संज्ञा पु० [फ़ा०] सप्ताह।
हबकना†–क्रि० अ० [अनु० हप] खाने या दाँत काटने के लिये झट से मुँह खोलना। क्रि० स० दाँत काटना।
हबर हबर–क्रि० वि० [अनु० हड़बड़] १. जल्दी जल्दी। उतावली से। २. जल्दी के कारण ठीक तौर से नहीं। हड़बड़ी से।
हबराना†*–क्रि० अ० दे० "हड़बड़ाना"।
हबशी–संज्ञा पु० [फा०] हबश देश का निवासी जो बहुत काला होता है।

हबूब–संज्ञा पुं० [अ० हबाब] १ पानी का बुलबुला। बुल्ला। २ झूठ मूठ की बात।

हब्बा डब्बा–संज्ञा पुं० [हि० हाँफ + अनु० डब्बा] जोर जोर से साँस या पसली चलने की बीमारी जो बच्चों को होती है।

हब्स–संज्ञा पुं० [अ०] कैद।

हम–सर्व० [सं० अहम्] उत्तम पुरुष बहुवचन-सूचक सर्वनाम शब्द। "मैं" का बहुवचन।

संज्ञा पुं० अहंकार। 'हम' का भाव।

अव्य० [फा०] १ साथ। संग। २ समान। तुल्य।

हमजोली–संज्ञा पुं० [फा० हम + हि० जोड़ी ?] साथी। संगी। सहयोगी। सखा।

हमता*–संज्ञा स्त्री० [हि० हम + ता (प्रत्य०)] अहंभाव। अहंकार।

हमदर्द–संज्ञा पुं० [फा०] दुःख में सहानुभूति रखनेवाला।

हमदर्दी–संज्ञा स्त्री० [फा०] सहानुभूति।

हमरा†–सर्व० दे० "हमारा"।

हमराह–अव्य० [फा०] (कहीं जाने में किसी के) साथ। संग में।

हमल–संज्ञा पुं० [अ०] स्त्री के पेट में बच्चे का होना। गर्भ।

वि० दे० 'गर्भ'।

हमला–संज्ञा पुं० [अ०] १ लड़ाई करने के लिये चढ़ दौड़ना। युद्ध-यात्रा। चढ़ाई। धावा। २ मारने के लिये झपटना। आक्रमण। ३ प्रहार। वार। ४ विरोध में कही हुई बात।

हमवार–वि० [फा०] जिसकी सतह बराबर हो। समतल। सपाट।

हमसर–संज्ञा पुं० [फा०] गुण, बल या पद में समान व्यक्ति।

हमसरी–संज्ञा स्त्री० [फा०] बराबरी।

हमहमी–संज्ञा स्त्री० दे० "हमाहमी"।

हमाम–संज्ञा पुं० दे० "हम्माम"।

हमारा–सर्व० [हि० हम + आरा (प्रत्य०)] [स्त्री० हमारी] 'हम' का संबंधकारक रूप।

हमाल–संज्ञा पुं० [अ० हम्माल] १ बोझ उठानेवाला। २ रक्षक। रखवाला। ३ मजदूर। कुली।

हमाहमी–संज्ञा स्त्री० [हि० हम] १ अपने अपने लाभ का आतुर प्रयत्न। स्वार्थपरता। २ अहंकार।

हमीर–संज्ञा पुं० दे० "हम्मीर"।

हमें–सर्व० [हि० हम] 'हम' का कर्म और संप्रदान कारक का रूप। हमको।

हमेल–संज्ञा स्त्री० [अ० हमायल] सिक्कों आदि की माला जो गले में पहनी जाती है।

हमेव*†–संज्ञा पुं० [सं० अहम्] अहंकार।

हमेशा–अव्य० [फा०] सब दिन या सब समय। सदा। सर्वदा। सदैव।

हमेस*–अव्य० दे० "हमेशा"।

हमैं*–अव्य० दे० "हमें"।

हम्माम–संज्ञा पुं० [अ०] नहाने की वह कोठरी जिसमें गरम पानी रखा रहता है। स्नानागार।

हम्मीर–संज्ञा पुं० [सं०] १ एक संकर राग। २ रणथम्भौर गढ़ का एक अत्यंत वीर चौहान राजा जो सन १३०० ई० में अलाउद्दीन खिल्जी के साथ लड़कर मरा था।

हयंद*–संज्ञा पुं० [सं० हयेंद्र] बड़ा या अच्छा घोड़ा।

हय–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० हया, हयी] १ घोड़ा। अश्व। २ कविता में सात की मात्रा सूचित करने का शब्द। ३ चार मात्राओं का एक छंद। ४ इंद्र।

हयग्रीव–संज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु के चौबीस अवतारों में से एक अवतार। २ एक राक्षस जो कल्पांत में ब्रह्मा की निद्रा के समय वेद उठा ले गया था।

हयना*–क्रि० स० [सं० हत + ना (प्रत्य०)] १ वध करना। मार डालना। २ मारना पीटना। ३ ठोंककर बजाना। ४ नष्ट करना। न रहने देना।

हयनाल–संज्ञा स्त्री० [सं० हय + हि० नाल] वह तोप जिसे घोड़े खींचते हैं।

हयमेध–संज्ञा पुं० [सं०] अश्वमेध यज्ञ।

हया–संज्ञा स्त्री० [अ०] लज्जा। शर्म।

हयात–संज्ञा स्त्री० [अ०] ज़िंदगी। जीवन।

यौ०—हीन हयात में=जीवनकाल में।

हयादार–संज्ञा पुं० [अ० हया + फा० दार] [भाव० हयादारी] वह जिसे हया हो। लज्जाशील। शर्मदार।

हर–वि० [सं०] १. हरण करनेवाला। छीनने या लूटनेवाला। २. दूर करनेवाला। मिटानेवाला। ३. वध या नाश करनेवाला। ४. ले जानेवाला। वाहक। संज्ञा पुं० १. शिव। महादेव। २. एक राक्षस जो विभीषण का मंत्री था। ३. वह संख्या जिससे भाग दे। भाजक। (गणित) ४. अग्नि। आग। ५. छप्पय के दसवें भेद का नाम। ६. टगण के पहले भेद का नाम।

† संज्ञा पुं० [सं० हल] हल।

वि० [फा०] प्रत्येक। एक एक।

मुहा०—हर एक=प्रत्येक। एक एक। हर रोज=प्रतिदिन। हर दम=सदा।

हरएँ*–अव्य० [हिं० हरुवा] धीरे धीरे।

हरकत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. गति। चाल। हिलना-डोलना। २. चेष्टा। क्रिया। ३. दुष्ट व्यवहार। नटखटी।

हरकना*†–क्रि० स० दे० "हटकना"।

हरकारा–संज्ञा पुं० [फा०] १. चिट्ठी पत्री ले जानेवाला। २. चिट्ठीरसाँ। डाकिया।

हरख*‡–संज्ञा पुं० दे० "हर्ष"।

हरखना–क्रि० अ० [सं० हर्ष, हिं० हरख] हर्षित होना। प्रसन्न होना। खुश होना।

हरखाना–क्रि० अ० दे० "हरखना"। क्रि० स० [हिं० हरखना] प्रसन्न करना। खुश करना। आनंदित करना।

हरगिज–अव्य० [फ़ा०] किसी दशा में भी। कदापि। कभी।

हरचंद–अव्य० [फ़ा०] १. कितना ही। बहुत या बहुत बार। २. यद्यपि। अगरचे।

हरज–संज्ञा पुं० दे० "हर्ज"।

हरजा–संज्ञा पुं० दे० "हर्ज" और "हरजाना"।

हरजाई–संज्ञा पुं० [फा०] १. हर जगह घूमनेवाला। २. बहल्ला। आवारा। संज्ञा स्त्री० व्यभिचारिणी स्त्री। कुलटा।

हरजाना–संज्ञा पुं० [फ़ा०] हानि का बदला। क्षतिपूर्ति।

हरट्ठ*–वि० [सं० हृष्ट] हृष्ट-पुष्ट। मजबूत।

हरण–संज्ञा पुं० [सं०] १. छीनना, लूटना या चुराना। २. दूर करना। हटाना। मिटाना। ३. नाश। संहार। ४. ले जाना। वहन। ५. भाग देना। तक़सीम करना। (गणित)

हरता–संज्ञा पुं० दे० "हर्त्ता"।

हरता धरता–संज्ञा पुं० [सं० हर्त्ता + धर्त्ता] [(वैदिक)] सब बातों का अधिकार रखनेवाला। पूर्ण अधिकारी।

हरतार–संज्ञा स्त्री० दे० "हरताल"।

हरताल–संज्ञा स्त्री० [सं० हरिताल] पीले रंग का एक खनिज पदार्थ जो खानों में मिलता है और बनाया भी जा सकता है।

मुहा०—(किसी बात पर) हरताल लगाना=नष्ट करना। रद करना।

हरद*–संज्ञा स्त्री० दे० "हल्दी"।

हरदौल–संज्ञा पुं० [सं० हरदत्त] ओड़छा के राजा जुझारसिंह (सन् १६२६–३५ ई०) के छोटे भाई जो बड़े भ्रातृभक्त थे। इन्हें 'हरदिया देव' भी कहते हैं।

हरद्वान–संज्ञा पुं० [?] एक प्राचीन स्थान जहाँ की तलवार प्रसिद्ध थी।

हरद्वार–संज्ञा पुं० दे० "हरिद्वार"।

हरना–क्रि० स० [सं० हरण] १. छीनना, लूटना या चुराना। २. दूर करना। हटाना। ३. मिटाना। नाश करना। ४. उठाकर ले जाना।

मुहा०—मन हरना मन आकर्षित करना। लुभाना। प्राण हरना=१. मार डालना। २. बहुत संताप या दुःख देना।

* क्रि० अ० दे० "हारना"।

*† संज्ञा पुं० दे० "हिरन"।

हरनाकस*‡–संज्ञा पुं० दे० "हिरण्यकशिपु"।

हरनाच्छ†*–संज्ञा पुं० दे० "हिरण्याक्ष"।

हरनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० हिरन] हिरन की मादा। मृगी।

हरनौटा–संज्ञा पुं० [हिं० हिरन] हिरन का बच्चा।

हरफ–संज्ञा पुं० [अ०] अक्षर। वर्ण।
मुहा०—किसी पर हरफ आना=दोष लगना। कसूर लगना। हरफ उठाना=अक्षर पहचानकर पढ़ लेना।

हरफा-रेवड़ी–संज्ञा स्त्री० [सं० हरिपर्वरी] १ कमरख की जाति का एक पेड़। २ उक्त पेड़ का फल।

हड़बड़ाना*†–क्रि० अ० दे० "हड़बड़ाना"।

हरबा–संज्ञा पुं० [अ० हरब] हथियार।

हरबोंग–वि० [हिं० हल+बोंग] १ गँवार। लट्ठमार] अक्खड़। २ मूर्ख। जड़।
संज्ञा पुं० १ अंधेर। कुशासन। २ उपद्रव।

हरम–संज्ञा पुं० [अ०] अंत पुर। जनानखाना।
संज्ञा स्त्री० १ मुताही। रखेली स्त्री। २ दासी। ३ पत्नी।
यौ०—हरमसरा अंत पुर। जनानखाना।

हरमजदगी–संज्ञा स्त्री० [फा० हरामजाद] शरारत। नटखटी। बदमाशी।

हरयें*–अव्य० दे० "हरएँ"।

हरवल*–संज्ञा पुं० दे० "हरावल"।

हरवली–संज्ञा स्त्री० [तु० हरावल] सेना की अध्यक्षता। फौज की अफसरी।

हरवा‡–संज्ञा पुं० दे० "हार"।
वि० दे० "हरुवा"।

हड़वाना–क्रि० अ० [हिं० हड़बड़] जल्दी करना। शीघ्रता करना। उतावली करना।
क्रि० स० [हिं० हारना] 'हारना' का प्रेरणार्थक रूप।

हड़वाहा–संज्ञा पुं० दे० 'हलवाहा"।

हरष*‡–संज्ञा पुं० दे० "हर्ष"।

हरषना*–क्रि०अ०[हिं०हरष+ना (प्रत्य०)] १ हर्षित होना। प्रसन्न होना। २ पुलकित होना। रोमांच से प्रफुल्ल होना।

हरषाना*–क्रि० अ० [हिं० हरष+आना (प्रत्य०)] १ हर्षित होना। प्रसन्न होना। २ रोमांच से प्रफुल्ल होना।
क्रि० स० हर्षित करना। प्रसन्न करना।

हरषित*–वि० दे० "हर्षित"।

हरसाना*–क्रि० अ० दे० "हरषना"।

हरसिंगार–संज्ञा पुं० [सं० हार+सिंगार] एक पेड़ जिसके फूल में पाँच दल और नारंगी रंग की डाँड़ी होती है। परजाता।

हरहाई–वि० स्त्री० [?] नटखट (गाय)।

हरहार–संज्ञा पुं० [सं०] १ (शिव का हार) सर्प। साँप। २ शेषनाग।

हरा–वि० [सं० हरित] [स्त्री० हरी] १ घास या पत्ती के रंग का। हरित। सब्ज। २ प्रफुल्ल। प्रसन्न। ताजा। ३ जो मुरझाया न हो। ताजा। ४ (घाव) जो सूखा या भरा न हो। ५ दाना या फल जो पका न हो।
मुहा०—हरा बाग=व्यर्थ आशा बँधानेवाली बात। हरा भरा १ जो सूखा या मुरझाया न हो। २ जो हरे पेड़-पौधों से भरा हो।
संज्ञा पुं० घास या पत्ती का सा रंग। हरित वर्ण।
*‡ संज्ञा पुं० [हिं० हार] हार। माला।
संज्ञा स्त्री० [सं०] हर की स्त्री। पार्वती।

हराई–संज्ञा स्त्री० [हिं० हारना] हारने की क्रिया या भाव। हार।

हराना–क्रि० स० [हिं० हारना] १ युद्ध में प्रतिद्वंद्वी को पीछे हटाना। परास्त करना। पराजित करना। २ शत्रु को विफल-मनोरथ करना। ३ प्रयत्न में शिथिल करना। थकाना।

हरापन–संज्ञा पुं० [हिं० हरा+पन (प्रत्य०)] हरे होने का भाव। हरितता। सब्जी।

हराम–वि० [अ०] निषिद्ध। विधि-विरुद्ध। बुरा। अनुचित। दूषित।
संज्ञा पुं० १ वह वस्तु या बात जिसका धर्म-शास्त्र में निषेध हो। २ सूअर। (मुसल०)
मुहा०—(कोई बात) हराम करना=किसी बात का करना मुश्किल कर देना। (कोई बात) हराम होना=किसी बात का मुश्किल हो जाना।
३ बेईमानी। अधर्म। पाप।
मुहा०–हराम का=१. जो बेईमानी से प्राप्त

हो। २. मुफ्त का।
४. स्त्री-पुरुष का अनुचित संबंध। व्यभिचार।
हरामख़ोर–संज्ञा पुं० [अ० + फ़ा०] १. पाप की कमाई खानेवाला। २. मुफ़्त-ख़ोर। ३. आलसी। निकम्मा।
हरामज़ादा–संज्ञा पुं० [अ० + फ़ा०] [स्त्री० हरामज़ादी] १. दोगला। वर्णसंकर। २. दुष्ट। पाजी। बदमाश।
हरामी–वि० [अ० हराम + ई (प्रत्य०)] १. व्यभिचार से उत्पन्न। २. दुष्ट। पाजी।
हरारत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. गर्मी। ताप। २. हलका ज्वर। ज्वरांश।
हरावरि*–संज्ञा स्त्री० दे० "हड़ावरि"। संज्ञा पुं० दे० "हरावल"।
हरावल–संज्ञा पुं० [तु०] सिपाहियों का वह दल जो सबके आगे रहता है।
हरास–संज्ञा पुं० [फ़ा० हिरास] १. भय। डर। २. आशंका। खटका। ३. दुःख। रंज। ४. नैराश्य। नाउम्मेदी।
हराहर*–संज्ञा पुं० दे० "हलाहल"।
हरि–वि० [सं०] १. भूरा या बादामी। २. पीला। हरा। हरित्।
संज्ञा पु० १. विष्णु। २ इंद्र। ३. घोड़ा। ४. बंदर। ५. सिंह। ६. सूर्य्य। ७. चंद्रमा। ८. मोर। मयूर। ९. सर्प। साँप। १०. अग्नि। आग। ११. वायु। १२. विष्णु के अवतार श्रीकृष्ण। १३. श्रीराम। १४. शिव। १५. एक पर्वत का नाम। १६. एक वर्ष या भू-भाग का नाम। १७. अठारह वर्णों का एक छंद।
अव्य० [हिं० हरुए] धीरे। आहिस्ते।
हरिअर*‡–वि० [सं० हरित्] हरा। सब्ज़।
हरिअरी†*–संज्ञा स्त्री० दे० "हरियाली"।
हरिआली–संज्ञा स्त्री० [सं० हरित् + आलि] १. हरेपन का विस्तार। २. घास और पेड़-पौधों का फैला हुआ समूह।
हरिकथा–संज्ञा स्त्री० [सं०] भगवान् या उनके अवतारों का चरित्र-वर्णन।
हरिकीर्त्तन–संज्ञा पुं० [सं०] भगवान् या उनके अवतारों की स्तुति का गान।
हरिगीतिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] अट्ठाईस मात्राओं का एक छंद जिसकी पाँचवीं, बारहवीं, उन्नीसवीं और छब्बीसवीं मात्रा लघु और अंत में लघु गुरु होता है।
हरिचंद–संज्ञा पुं० दे० "हरिश्चंद्र"।
हरिचंदन–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का चंदन।
हरिजन–संज्ञा पुं० [सं०] ईश्वर का भक्त।
हरिजान*–संज्ञा पुं० दे० "हरियान"।
हरिण–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० हरिणी] १. मृग। हिरन। २. हिरन की एक जाति। ३. हंस। ४. सूर्य्य।
हरिणप्लुता–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णार्द्धसम वृत्त जिसके विषम चरणों में तीन सगण, दो भगण और एक रगण होता है।
हरिणाक्षी–वि० स्त्री० [सं०] हिरन की आँखों के समान सुंदर आँखोंवाली। सुंदरी।
हरिणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हिरन की मादा। २. स्त्रियों के चार भेदों में से एक जिसे चित्रिणी भी कहते हैं। (कामशास्त्र) ३. एक वर्णवृत्त का नाम जिसमें सत्रह वर्ण होते हैं। ४. दस वर्णों का एक वृत्त।
हरित्–वि० [सं०] १. भूरे या बादामी रंग का। कपिश। २. हरा। सब्ज़। संज्ञा पु० १. सूर्य्य के घोड़े का नाम। २. मरकत। पन्ना। ३. सिंह। ४. सूर्य्य।
हरित–वि० [सं०] १. भूरे या बादामी रंग का। २. पीला। ज़र्द। ३. हरा। सब्ज़।
हरितमणि–संज्ञा पुं० [सं०] मरकत। पन्ना।
हरितालिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] भादों के शुक्ल पक्ष की तृतीया। तीज। (स्त्रियों का व्रत)
हरिद्रा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हलदी। २. वन। जंगल। ३. मंगल। ४. सीसा धातु। (अनेकार्थ०)
हरिद्राराग–संज्ञा पु० [सं०] साहित्य में वह पूर्वराग जो स्थायी या पक्का न हो।
हरिद्वार–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध तीर्थ

जहाँ से गंगा पहाड़ों को छोड़कर मैदान में आती है।
हरिधाम—संज्ञा पुं० [सं०] वैकुंठ।
हरिन—संज्ञा पुं० [सं० हरिण] [स्त्री० हरिनी] खुर और सींगवाला एक चौपाया जो प्राय सुनसान मैदानों, जंगलों और पहाड़ों में रहता है। मृग।
हरिनग*—संज्ञा पुं० [सं०] सर्प की मणि।
हरिनाकुस*‡—संज्ञा पुं० दे० "हिरण्यकशिपु"।
हरिनाक्ष—संज्ञा पुं० दे० "हिरण्याक्ष"।
हरिनाथ—संज्ञा पुं० [सं०] हनुमान्।
हरिनाम—संज्ञा पुं० [सं० हरिनामन्] भगवान् का नाम।
हरिनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० हरिन] मादा हिरन। स्त्री जाति का मृग।
हरिपद—संज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु का लोक। वैकुंठ। २ एक छंद जिसके विषम चरणों में १६ तथा सम चरणों में ११ मात्राएँ तथा अंत में गुरु लघु होता है।
हरिपुर—संज्ञा पुं० [सं०] वैकुंठ।
हरिप्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लक्ष्मी। २ एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में ४६ मात्राएँ और अंत में गुरु होता है। चंचरी। ३ तुलसी। ४ लाल चंदन।
हरिप्रीता—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का शुभ मुहूर्त। (ज्योतिष)
हरिभक्त—संज्ञा पुं० [सं०] ईश्वर का प्रेमी। ईश्वर का भजन करनेवाला।
हरिभक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] ईश्वर-प्रेम।
हरियर‡—वि० दे० "हरा"।
हरियाना—संज्ञा पुं० [?] हिसार और रोहतक तक के आस-पास का प्रांत।
हरियाई‡*—संज्ञा स्त्री० दे० "हरियाली"।
हरियाली—संज्ञा स्त्री० [सं० हरित + आलि] १ हरे रंग का फैलाव। २ हरे हरे पेड़-पौधों का समूह या विस्तार। ३ दूब।
मुहा०—हरियाली सूझना = चारों ओर आनंद ही आनंद दिखाई पड़ना।
हरियाली तीज—संज्ञा स्त्री० [हिं० हरियाली + तीज] सावन बदी तीज।
हरिलीला—संज्ञा स्त्री० [सं०] चौदह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।
हरिलोक—संज्ञा पुं० [सं०] वैकुंठ।
हरिवंश—संज्ञा पुं० [सं०] १ कृष्ण का कुल। २ एक ग्रंथ जिसमें कृष्ण तथा उनके कुल के यादवों का वृत्तांत है।
हरिवासर—संज्ञा पुं० [सं०] १ रविवार। २ विष्णु का दिन, एकादशी।
हरिशयनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] आषाढ़ शुक्ल एकादशी।
हरिश्चंद्र—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य वंश का अट्ठाईसवाँ राजा जो त्रिशंकु का पुत्र था। यह बड़ा दानी और सत्यव्रती प्रसिद्ध है।
हरिस—संज्ञा स्त्री० [सं० हलीषा] हल का वह लट्ठा जिसके एक छोर पर फालवाली लकड़ी और दूसरे छोर पर जुआ रहता है। ईषा।
हरिहर क्षेत्र—संज्ञा पुं० [सं०] बिहार में एक तीर्थस्थान जहाँ कार्तिक पूर्णिमा को भारी मेला होता है।
हरिहाई*—वि० स्त्री० दे० "हरहाई"।
हरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १४ वर्णों का एक वृत्त। अनंद।
संज्ञा पुं० दे० "हरि"।
हरीतकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] हड़। हर्रे।
हरीरा—संज्ञा पुं० [अ० हरीर] एक प्रकार का पेय पदार्थ जो दूध में मसाले और मेवे डालकर औटाने से बनता है।
*† वि० [हिं० हरिअर] [स्त्री० हरीरी] १. हरा। सब्ज। २ हर्षित। प्रसन्न। प्रफुल्ल।
हरीस—संज्ञा स्त्री० दे० "हरिस"।
हरुआ†*—वि० [सं० लघुक] हलका।
हरुआ†*—वि० दे० "हलका"।
हरुआई‡—संज्ञा स्त्री० [हिं० हरुआ] १ हलकापन। २ फुरती।
हरुआना†—क्रि० अ० [हिं० हरुआ] १ हलका होना। लघु होना। २ फुरती करना।
हरुए†*—क्रि० वि० [हिं० हरुआ] १ धीरे धीरे। आहिस्ता से। २ इस प्रकार जिसमें आहट न मिले। चुपचाप।

हरूफ़–संज्ञा पुं० [अ० हरफ़ का बहु०] अक्षर।
हरे*–क्रि० वि० [हिं० हरुए] १. धीरे से। आहिस्ता से। मंद। २. (शब्द) जो ऊँचा या जोर का न हो। ३. हलका। कोमल। (आघात, स्पर्श आदि)
हरेव–संज्ञा पुं० [देश०] १. मंगोलों का देश। २. मंगोल जाति।
हरेवा–संज्ञा पुं० [हिं० हरा] हरे रंग की एक चिड़िया। हरी बुलबुल।
हरैं*–क्रि० वि० दे० "हरे"।
हरैया†*–संज्ञा पु० [हिं० हरना] हरनेवाला। दूर करनेवाला।
हरौल–संज्ञा पुं० दे० "हरावल"।
हर्ज–संज्ञा पुं० [अ०] १. काम में रुकावट। बाधा। अड़चन। २. हानि। नुकसान।
हर्ता–संज्ञा पुं० [सं० हर्तृ] [स्त्री० हर्त्री] १. हरण करनेवाला। २. नाश करनेवाला।
हर्त्तार–संज्ञा पु० [सं०] हर्त्ता।
हर्फ़–संज्ञा पुं० दे० "हरफ़"।
हर्रे–संज्ञा स्त्री० दे० "हड़"।
हर्रा–संज्ञा पुं० [सं० हरीतकी] बड़ी जाति की हड़।
हर्रे–संज्ञा स्त्री० दे० "हड़"।
हर्ष–संज्ञा पु० [सं०] १. प्रफुल्लता या भय के कारण रोंगटों का खड़ा होना। २. प्रफुल्लता। आनंद। खुशी।
हर्षण–संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रफुल्लता या भय से रोंगटों का खड़ा होना। २. प्रफुल्लित करना या होना। ३. कामदेव के पाँच बाणों में से एक।
हर्षना–क्रि० अ० [सं० हर्षण] प्रसन्न होना।
हर्षवर्द्धन–संज्ञा पुं० [सं०] भारत का वैस क्षत्रिय-वंशी एक बौद्ध सम्राट् जिसकी सभा में बाण कवि रहते थे।
हर्षाना*–क्रि० अ० [सं० हर्ष] आनंदित होना। प्रसन्न होना। प्रफुल्ल होना। क्रि० स० हर्षित करना। आनंदित करना।
हर्षित–वि० [सं०] आनंदित। प्रसन्न।
हल–संज्ञा पुं० [सं०] शुद्ध व्यंजन जिसमें स्वर न मिला हो।
हलंत–संज्ञा पुं० दे० "हल्"।
हल–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह औजार जिससे जमीन जोती जाती है। सीर। लांगल। मुहा०—हल जोतना=१. खेत में हल चलाना। २. खेती करना।
२. एक अस्त्र का नाम।
संज्ञा पुं० [अ०] १. हिसाब लगाना। गणित करना। २. किसी समस्या का समाधान या उत्तर निकालना।
हलकंप–संज्ञा पुं० [हिं० हलना (हिलना) + कंप] १. हलचल। हड़कंप। २. चारों ओर फैली हुई घबराहट।
हलक़–संज्ञा पुं० [अ०] गले की नली। कंठ। मुहा०—हलक़ के नीचे उतरना=१. पेट में जाना। २. (किसी बात का) मन में बैठना।
हलकई†–संज्ञा स्त्री० [हिं० हलका+ई (प्रत्य०)] १. हलकापन। २. ओछापन। तुच्छता। ३. हेठी। अप्रतिष्ठा।
हलकना†*–क्रि० अ० [सं० हल्लन] १. किसी वस्तु में भरे हुए जल का हिलाने से हिलना-डोलना या शब्द करना। २. हिलोरें लेना। लहराना। ३. बत्ती की लौ का झिलमिलाना। ४. हिलना। डोलना।
हलका–वि० [सं० लघुक] [स्त्री० हलकी] १. जो तौल में भारी न हो। २. जो गाढ़ा न हो। पतला। ३. जो गहरा या चटकीला न हो। ४. जो गहरा न हो। उथला। ५. जो उपजाऊ न हो। ६. कम। थोड़ा। ७. जो जोर का न हो। मंद। ८. ओछा। तुच्छ। टुच्चा। ९. आसान। सुख-साध्य। १०. जिसे किसी बात के करने की फ़िक्र न रह गई हो। निश्चित। ११. प्रफुल्ल। ताजा। १२. पतला। महीन। १३. कम अच्छा। घटिया। १४. खाली। छूँछा। मुहा०—हलका करना=अपमानित करना। तुच्छ ठहराना। हलके-हलके=धीरे-धीरे। †संज्ञा पु० [अनु० हलहल] तरंग। लहर।
हलका–संज्ञा पुं० [अ०] १. वृत्त। मंडल। गोलाई। २. घेरा। परिधि। ३. मंडली।

झुंड। दल। ४. हाथियों का झुंड। ५ कई गाँवों या कसबों का समूह जो किसी काम के लिये नियत हो।

हलकाई†–संज्ञा स्त्री० दे० "हलकापन"।

हलकान‡–वि० दे० "हैरान"।

हलकाना†–क्रि० अ० [हिं० हलका+ना (प्रत्य०)] हलका होना। बोझ कम होना। क्रि० स० [हिं० हलकना] हिलोरा देना। क्रि० स० दे० "हिलाना"।

हलकापन–संज्ञा पु०[हिं०हलका+पन(प्रत्य०)] १ हलका होने का भाव। लघुता। २. ओछापन। नीचता। तुच्छ बुद्धि। ३ अप्रतिष्ठा। हेटी।

हलकारा‡–संज्ञा पु० दे० "हरकारा"।

हलकोरा†–संज्ञा पु०[अनु०] तरंग। लहर।

हलचल–संज्ञा स्त्री० [हिं० हलना+चलना] १ लोगों के बीच फैली हुई अधीरता, घबराहट, दौड़-धूप, शोर-गुल आदि। खलबली। धूम। २ उपद्रव। दंगा। कप। विचलन। वि० डगमगाता हुआ। कंपायमान।

हलद-हात–संज्ञा स्त्री० [हिं० हलदी+हाथ] विवाह में हल्दी चढ़ने की रस्म।

हलदी–संज्ञा स्त्री० [सं०हरिद्रा] १ एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी जड़, जो गाँठ के रूप में होती है, मसाले के रूप में और रँगाई के काम में भी आती है। २ उक्त पौधे की गाँठ जो मसाले आदि के काम में आती है।
मुहा०–हल्दी उठना या चढ़ना=विवाह के पहले दूल्ह और दुलहिन के शरीर में हल्दी और तेल लगाने की रस्म होना। हल्दी लगना =विवाह होना। हलदी लगे न फिटकिरी= बिना कुछ खर्च किए। मुफ्त में।

हलदू–संज्ञा पु० [देश०] एक बहुत बड़ा और ऊँचा पेड़। करन।

हलधर–संज्ञा पु० [सं०] बलरामजी।

हलना†*–क्रि० अ० [सं०हल्लन] १ हिलना-डोलना। २ घुसना। पैठना।

हलफ़–संज्ञा पु० [अ०] किसी पवित्र वस्तु की शपथ। कसम। सौगंध।
मुहा०–हलफ़ उठाना=कसम खाना।

हलफ़नामा–संज्ञा पु० [अ०+फ़ा०] वह कागज़ जिस पर कोई बात ईश्वर को साक्षी मानकर अथवा शपथपूर्वक लिखी गई हो।

हलबा–संज्ञा पु० [अनु० हलहल] लहर। तरंग।

हलबल†*–संज्ञा पु० [हिं० हल+बल] खल-बली। हलचल। धूम।

हलबी, हलब्बी–वि० [हलब देश] हलब देश का (शीशा)। बढ़िया (शीशा)।

हलमुखी–संज्ञा पु० [सं०] एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से रगण, नगण और सगण आते हैं।

हलराना–क्रि० स० [हिं० हिलोरा] (बच्चों को) हाथ पर लेकर इधर उधर हिलाना।

हलवा–संज्ञा पु० [अ०] एक प्रकार का प्रसिद्ध मीठा भोजन। मोहनभोग।
मुहा०–हलवे माँडे से काम=केवल स्वार्थ-साधन से प्रयोजन। अपने लाभ ही से मतलब।

हलवाई–संज्ञा पु० [अ० हलवा+ई (प्रत्य०)] [स्त्री० हलवाइन] मिठाई बनाने और बेचनेवाला।

हलवाह, हलवाहा–संज्ञा पु० [सं० हलवाह] वह जो दूसरे के यहाँ हल जोतने का काम करता हो।

हलहलाना†–क्रि० स० [अनु० हलहल] खूब ज़ोर से हिलाना-डुलाना। झकझोरना। क्रि० अ० काँपना। थरथराना।

हलाक–वि० [अ० हलाकत] मारा हुआ।

हलाकान‡–वि० [अ० हलाक][संज्ञा हला-कानी] परेशान। हैरान। तंग।

हलाकी–वि० [अ० हलाक] मार डालने-वाला। मारू। घातक।

हलाकू–वि० [हलाक] हलाक करनेवाला। संज्ञा पु० एक तुर्क सरदार जो चंगेज़ खाँ का पोता और उसी के समान हत्याकारी था।

हला-भला–संज्ञा पु० [हिं० भला+हला (अनु०)] १ निबटारा। निर्णय। २ परिणाम

हलायुध–संज्ञा पु० [सं०] बलराम।

हलाल–वि० [अ०] जो शरअ या मुसल-मानी धर्मपुस्तक के अनुकूल हो। जायज़। संज्ञा पु० वह पशु जिसका मांस खाने की

मुसलमानी धर्म-पुस्तक में आज्ञा हो।
मुहा०—हलाल करना=खाने के लिये पशुओं को मुसलमानी शरअ के मुताबिक (धीरे धीरे गला रेतकर) मारना। ज़बह करना।
हलाल का=ईमानदारी से पाया हुआ।
हलालखोर-संज्ञा पुं० [अ० फ़ा०] [स्त्री० हलालखोरी, हलालखोरिन] १. मिहनत करके जीविका करनेवाला। २. मेहतर। भंगी।
हलाहल-संज्ञा पुं० [सं०] १. वह प्रचंड विष जो समुद्र-मंथन के समय निकला था। २. भारी ज़हर। ३. एक जहरीला पौधा।
हलीम-वि० [अ०] सीधा। शांत।
हलुक†*-वि० दे० "हलका"।
हलूक-संज्ञा स्त्री० [अनु०] वमन। कै।
हलेरा-हलोर†*-संज्ञा पुं० दे० "हिलोरा"।
हलोरना-क्रि० स० [हिं० हिलोर] १. पानी में हाथ डालकर उसे हिलाना-डुलाना। २. मथना। ३. अनाज फटकना। ४. बहुत अधिक मान में किसी पदार्थ का संग्रह करना।
हलोरा†*-संज्ञा पु० दे० "हिलोरा"।
हल्दी-संज्ञा स्त्री० दे० "हलदी"।
हल्ला-संज्ञा पु० [अनु०] १. चिल्लाहट। शोर-गुल। कोलाहल। २. लड़ाई के समय की ललकार। हाँक। ३ आक्रमण। धावा। हमला।
हल्लीश-संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का उपरूपक जिसमें एक ही अंक होता है और नृत्य की प्रधानता रहती है।
हवन-संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी देवता के निमित्त मंत्र पढ़कर घी, जौ, तिल आदि अग्नि में डालने का कृत्य। होम। २. अग्नि। आग। ३. हवन करने का चमचा। स्रुवा।
हवनीय-वि० [सं०] हवन के योग्य। संज्ञा पु० वह पदार्थ जो हवन करने के समय अग्नि में डाला जाता है।
हवलदार-संज्ञा पु० [अ० हवाल + फ़ा० दार] १. बादशाही जमाने का वह अफ़सर जो राजकर की ठीक ठीक वसूली और फ़सल की निगरानी के लिये तैनात रहता था। २. फ़ौज में एक सबसे छोटा अफसर।
हवस-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. लालसा। कामना। चाह। २. तृष्णा।
हवा-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. वह सूक्ष्म प्रवाह रूप पदार्थ जो भूमंडल को चारों ओर से घेरे हुए है और जो प्राणियों के जीवन के लिये सबसे अधिक आवश्यक है। वायु। पवन।
मुहा०—हवा उड़ना=खबर फैलना। हवा करना=पंखे से हवा का झोंका लाना। पंखा हाँकना। हवा के घोड़े पर सवार=बहुत उतावली में। बहुत जल्दी में। हवा खाना=१. शुद्ध वायु के सेवन के लिये बाहर निकलना। टहलना २. प्रयोजन सिद्धि तक न पहुँचना। अकृतकार्य्य होना। हवा पीकर रहना=बिना आहार के रहना। (व्यंग्य) हवा बताना=किसी वस्तु से वंचित रखना। टाल देना। हवा बाँधना=१. लंबी चौड़ी बातें कहना। शेखी हाँकना। २. गप हाँकना। हवा पलटना, फिरना या बदलना=१. दूसरी ओर की हवा चलने लगना। २. दूसरी स्थिति या अवस्था होना। हालत बदलना। हवा बिगड़ना=१. संक्रामक रोग फैलना। २. रीति या चाल बिगड़ना। बुरे विचार फैलना। हवा सा=बिलकुल महीन या हलका। हवा से लड़ना=किसी से अकारण लड़ना। हवा से बातें करना=१. बहुत तेज दौड़ना या चलना। २. आप ही आप या व्यर्थ बहुत बोलना। किसी की हवा लगना=किसी की संगत का प्रभाव पड़ना। हवा हो जाना=१. झटपट कर चल देना। भाग जाना। २. न रह जाना। एकबारगी गायब हो जाना।
२. भूत। प्रेत। ३. अच्छा नाम। प्रसिद्धि। ख्याति। ४. बड़प्पन या उत्तम व्यवहार का विश्वास। साख।
मुहा०—हवा बँधना=१. अच्छा नाम हो जाना। २. बाजार में साख होना।
५. किसी बात की सनक। धुन।
हवाई-वि० [अ० हवा] १. हवा का। वायु-संबंधी। २. हवा में चलनेवाला। ३.

कल्पित•या झूठ। निर्मूल।
सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की आतिशबाजी। यान। आसमानी।
मुहा०-(मुँह पर) हवाइयाँ उड़ना=चेहरे का रंग फीका पड़ जाना। विवर्णता होना।
हवाचक्की-सज्ञा स्त्री० [हि० हवा+चक्की] आटा पीसने की वह चक्की जो हवा के जोर से चलती हो।
हवादार-वि० [फा०] जिसमें हवा आने-जाने के लिये खिड़कियाँ या दरवाजे हों।
सज्ञा पु० बादशाहों की सवारी का एक प्रकार का हलका तख्त।
हवाल-सज्ञा पु० [अ० अहवाल] १ हाल। दशा। अवस्था। २ गति। परिणाम। ३ समाचार। वृत्तात।
हवालदार-सज्ञा पु० दे० "हवलदार"।
हवाला-सज्ञा पु० [अ०] १ प्रमाण का उल्लेख। २ उदाहरण। दृष्टात। मिसाल। ३ सुपुर्दगी। जिम्मेदारी।
मुहा०-(किसी के) हवाले करना=किसी के सुपुर्द करना। सौंपना।
हवालात-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ पहरे के भीतर रखे जाने की क्रिया या भाव। नजरबदी। २ अभियुक्त की वह साधारण कैद जो मुकदमे के फैसले के पहले उसे भागने से रोकने के लिए दी जाती है। हाजत। ३ वह मकान जिसमें ऐसे अभियुक्त रखे जाते है।
हवास-सज्ञा पु० [अ०] १ इद्रियाँ। २ सवेदन। ३ चेतना। सज्ञा। होश।
मुहा०-हवास गुम होना=होश ठिकाने न रहना। भय आदि से स्तभित होना।
हवि-सज्ञा पु० [स० हविस] वह द्रव्य जिसकी आहुति दी जाय। हवन की वस्तु।
हविष्य-वि० [स०] हवन करने योग्य।
सज्ञा पु० वह वस्तु जो किसी देवता के निमित्त अग्नि मे डाली जाय। बलि। हवि।
हविष्यान्न-सज्ञा पु० [स०] वह आहार जो यज्ञ के समय किया जाय।
हवेली-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ पक्का बड़ा मकान। प्रासाद। २ पत्नी। स्त्री।
हव्य-सज्ञा पु० [स०] हवन की सामग्री।
हशमत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ गौरव। बड़ाई। २ वैभव। ऐश्वर्य।
हसद-सज्ञा पु० [अ०] ईर्ष्या। डाह।
हसन-सज्ञा पु० [स०] १ हँसना। २ परिहास। दिल्लगी। ३ विनोद।
हसब-अव्य० [अ०] अनुसार। मुताबिक।
हसरत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ रज। अफसोस। २ हार्दिक कामना।
हसित-वि० [स०] १ जिस पर लोग हँसते हो। २ जो हँसा हो।
सज्ञा पु० १ हँसना। २ हँसी-ठट्ठा। ३ कामदेव का धनुष।
हसीन-वि० [अ०] सुदर। खबसूरत।
हस्त-सज्ञा पु० [स०] १ हाथ। २ हाथी की सूँड़। ३ एक नाप जो २४ अगुल की होती है। हाथ। ४ हाथ का लिखा हुआ लेख। लिखावट। ५ एक नक्षत्र जिसमे पाँच तारे होते है और जिसका आकार हाथ का सा माना गया है।
हस्तकौशल-सज्ञा पु० [स०] किसी काम में हाथ चलाने की निपुणता।
हस्तक्रिया-सज्ञा स्त्री० [स०] १ हाथ का काम। दस्तकारी। २ हाथ से इद्रिय-सचालन। सरका कूटना।
हस्तक्षेप-सज्ञा पु० [स०] किसी होते हुए काम में कुछ कार्रवाई कर बैठना। दखल देना।
हस्तगत-वि० [स०] हाथ में आया हुआ। प्राप्त। लब्ध। हासिल।
हस्तत्राण-सज्ञा पु० [स०] अस्त्रो के आघात से रक्षा के लिये हाथ में पहना जानेवाला दस्ताना।
हस्तमैथुन-सज्ञा पु० [स०] हाथ के द्वारा इद्रिय-सचालन। सरका कूटना।
हस्तरेखा-सज्ञा स्त्री० [स०] हथेली में पड़ी हुई लकीर जिनके अनुसार सामुद्रिक में शुभाशुभ का विचार किया जाता है।
हस्तलाघव-सज्ञा पु० [स०] हाथ की फुरती। हाथ की सफ़ाई।

हस्तलिखित–वि० [सं०] हाथ का लिखा हुआ। (ग्रंथ आदि)
हस्तलिपि–संज्ञा स्त्री० [सं०] हाथ की लिखावट। लेख।
हस्ताक्षर–संज्ञा पुं० [सं०] अपना नाम जो किसी लेख आदि के नीचे अपने हाथ से लिखा जाय। दस्तखत।
हस्तामलक–संज्ञा पुं० [सं०] वह चीज या बात जिसका हर एक पहलू साफ़ साफ़ जाहिर हो गया हो।
हस्ति–संज्ञा पुं० दे० "हस्ती"।
हस्तिकंद–संज्ञा पुं० [सं०] एक पौधा जिसका कंद खाया जाता है। हाथीकंद।
हस्तिनापुर–संज्ञा पुं० [सं०] कौरवों की राजधानी जो वर्त्तमान दिल्ली नगर से कुछ दूरी पर थी।
हस्तिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मादा हाथी। हथिनी। २. काम-शास्त्र के अनुसार स्त्री के चार भेदों में से सबसे निकृष्ट भेद।
हस्ती–संज्ञा पुं० [सं०हस्तिन्] [स्त्री०हस्तिनी] हाथी।
संज्ञा स्त्री० [फ़ा] अस्तित्व। होने का भाव।
हस्ते–अव्य० [सं०] हाथ में। मारफत।
हहर–संज्ञा स्त्री० [हिं० हहरना] १. थर्राहट। कँपकँपी। २. भय। डर।
हहरना–क्रि० अ० [अनु०] १. काँपना। थरथराना। २. डर के मारे काँप उठना। दहलना। थर्राना। ३. दंग रह जाना। चकित रह जाना। ४. डाह करना। सिहाना। ५. अधिकता देखकर मकपकाना।
हहराना–क्रि० अ० [अनु०] १. काँपना। थरथराना। २. डरना। भयभीत होना। ३. दे० "हरहराना"।
क्रि० स० दहलाना। भयभीत करना।
हहा–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ हँसने का शब्द। ठट्ठा। २. दीनतासूचक शब्द। गिड़गिड़ाने का शब्द।
मुहा०—हहा खाना = बहुत गिड़गिड़ाना।
३. हाहाकार।
हाँ–अव्य० [सं० आम्] १. स्वीकृति-सूचक शब्द। सम्मति-सूचक शब्द। २. एक शब्द जिसके द्वारा यह प्रकट किया जाता है कि वह बात जो पूछी जा रही है, ठीक है।
मुहा०—हाँ करना = सम्मत होना। राजी होना। हाँ जी हाँ जी करना, खुशामद करना।
३. वह शब्द जिसके द्वारा किसी बात का दूसरे रूप में, या अंशतः, माना जाना प्रकट किया जाता है। *४. दे० "यहाँ"।
हाँक–संज्ञा स्त्री० [सं० हुंकार] १. किसी को बुलाने के लिये जोर से निकाला हुआ शब्द।
मुहा०—हाँक देना या हाँक लगाना = जोर से पुकारना। हाँक मारना = दे० "हाँक लगाना"। हाँक पुकारकर कहना = सबके सामने निर्भय और निस्संकोच कहना।
२. ललकार। हुंकार। गर्जन। ३. उत्साह दिलाने का शब्द। बढ़ावा। ४. सहायता के लिए की हुई पुकार। दुहाई।
हाँकना–क्रि० स० [हिं० हाँक] १. जोर से पुकारना। चिल्लाकर बुलाना। २. लड़ाई या धावे के समय गर्व से चिल्लाना। हुंकार करना। ३. बढ़ बढ़कर बोलना। सीटना। ४. मुँह से बोलकर या चाबुक आदि मारकर जानवरों को आगे बढ़ाना। जानवरों को चलाना। ५. खींचनेवाले जानवर को चलाकर गाड़ी, रथ आदि चलाना। ६. मारकर या बोलकर चौपायों को भगाना। ७. पंखे से हवा पहुँचाना।
हाँगी–संज्ञा स्त्री० [हिं० हाँ] हामी। स्वीकृति।
मुहा०—हाँगी भरना = स्वीकार करना।
हाँड़ना†–क्रि० स० [सं० भंडन] व्यर्थ इधर-उधर फिरना। आवारा घूमना।
वि० [स्त्री० हाँड़नी] आवारा फिरनेवाला।
हाँड़ी–संज्ञा स्त्री० [सं० भांड] १. मिट्टी का मँझोला बरतन जो बटलोई के आकार का हो। हँड़िया।
मुहा०—हाँड़ी पकना = १. हाँड़ी में पकाई जानेवाली चीज का पकना। २. भीतर ही भीतर कोई युक्ति खड़ी होना। कोई षट्चक्र रचा जाना। हांड़ी चढ़ना = कोई चीज पकाने के लिये हाँड़ी का आग पर रखा जाना।

२ इसी आकार का थैली या वह पात्र जो मजावट के लिये कमर में टाँगा जाता है।
हाँता*–वि० [स० हात] [स्त्री० हाँती] १ अलग किया हुआ। छोड़ा हुआ। २ दूर किया हुआ। हटाया हुआ।
हाँपना, हाँफना–अ० अ० [अनु० हँफ हँफ] कड़ी मिहनत करने, दौड़ने या रोग आदि के कारण जोर जोर से और जल्दी जल्दी साँस लेना। तीव्र श्वास लेना।
हाँफा–सज्ञा पु० [हि० हाँफना] हाँफने की क्रिया या भाव। तीव्र और क्षिप्र श्वास।
हाँसना‡*–क्रि० अ० दे० 'हँसना'।
हाँसल–सज्ञा पु० [हि० हाँस] वह घोड़ा जिसका रग मेहँदी सा लाल और चारो पैर कुछ काले हो। कुम्मैत हिनाई।
हाँसी–सज्ञा स्त्री० [स० हास] १ हँसी। हँसने की क्रिया या भाव। २ परिहास। हँसी-ठट्ठा। दिल्लगी। मजाक। ३ उपहास। निंदा।
हाँ हाँ–अव्य० [हिं० अहाँ = नही] निषेध या वारण करने का शब्द।
हा–अव्य० [स०] १ शोक या दुःखसूचक शब्द। २ आश्चर्य्य या आह्लादसूचक शब्द। ३ भयसूचक शब्द।
सज्ञा पु० हनन करनेवाला। मारनेवाला।
हाइ‡*–अव्य० दे० "हाय"।
हाइ–सज्ञा स्त्री० [स० घात] १ दशा। हालत। अवस्था। २ ढग। घात। तौर। ढब।
हाऊ–सज्ञा पु० [अनु०] हौवा। भकाऊँ।
हाकल–सज्ञा पु० [सं०] एक छद जिसके प्रत्येक चरण में १५ मात्राएँ और अत में एक गुरु होता है।
हाकलिका–सज्ञा स्त्री० [स०] पद्रह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।
हाकली–सज्ञा स्त्री० [सं०] दस अक्षरो का एक वर्णवृत्त।
हाकिम–सज्ञा पु० [अ०] १ हुकूमत करने-वाला। शासक। २ बड़ा अफसर।
हाकिमी–सज्ञा स्त्री० [अ० हाकिम] हाकिम का काम। हुकूमत। प्रभुत्व। शासन।
वि० हाकिम का। हाकिम-सबधी।
हाजत–सज्ञा स्त्री० [अ०] १ जरूरत। आवश्यकता। २ चाह। ३ पहरे के भीतर रखा जाना। हिरासत।
मुहा०—हाजत में देना या रखना = पहरे के भीतर देना। हवालात में डालना।
हाजमा–सज्ञा पु० [अ०] पाचन क्रिया। पाचन शक्ति। भोजन पचने की क्रिया।
हाजिम–वि० [अ०] हज्म करनेवाला। भोजन पचानेवाला। पाचक।
हाजिर–वि० [अ०] १ सम्मुख। उपस्थित। २ मौजूद। विद्यमान।
हाजिर-जवाब–वि० [अ०] [सज्ञा हाजिर-जवाबी] बात का चटपट अच्छा जवाब देने में होशियार। प्रत्युत्पन्न मति।
हाजिरात–सज्ञा स्त्री० [अ०] मंत्र आदि के द्वारा किसी के ऊपर कोई आत्मा बुलाना जिससे वह अनेक प्रकार की बात कहने लगता है।
हाजी–सज्ञा पु० [अ०] वह जो हज कर आया हो। (मुसल०)
हाट–सज्ञा स्त्री० [स० हट्ट] १ दुकान। २ बाजार।
मुहा०—हाट करना = १ दुकान रखकर बैठना। २ सौदा लेने के लिये बाजार जाना। हाट लगना = दूकान या बाजार में बिक्री की चीज रखी जाना। हाट चढ़ना = बाजार में बिकने के लिये आना।
३ बाजार लगने का दिन।
हाटक–सज्ञा पु० [स०] सोना। स्वर्ण।
हाटकपुर–सज्ञा पु० [स०] लका।
हाटकलोचन–सज्ञा पु० [स०] हिरण्याक्ष।
हाड़‡*–सज्ञा पु० [स० हड्डी] १ हड्डी। अस्थि। २ वश या जाति की मर्यादा। कुलीनता।
हाता–सज्ञा पु० [अ० इहात] १ घिरा हुआ स्थान। बाड़ा। २ दल विभाग। हल्का या सूबा। प्रांत। ३ सीमा। हद।
वि० [स० हात] [स्त्री० हाती] १ अलग। दूर किया हुआ। २ नष्ट। बरबाद।
सज्ञा पु० [स० हन्ता] मारनेवाला।

हातिम—संज्ञा पुं० [अ०] १. निपुण। चतुर। कुशल। २. किसी काम में पक्का आदमी। उस्ताद। ३. एक प्राचीन अरब सरदार जो बड़ा दानी, परोपकारी और उदार प्रसिद्ध है। मुहा०—हातिम की कबर पर लात मारना=बहुत अधिक उदारता या परोपकार करना। (व्यंग्य) ४. अत्यंत दानी मनुष्य।

हाथ—संज्ञा पुं० [सं० हस्त] १. बाहु से लेकर पंजे तक का अंग, विशेषतः कलाई और हथेली या पंजा। कर। हस्त।

मुहा०—हाथ में आना या पड़ना = अधिकार या वश में आना। मिलना। (किसी को) हाथ उठाना सलाम करना। प्रणाम करना। (किसी पर) हाथ उठाना=किसी को मारने के लिये थप्पड़ या घूँसा तानना। मारना। हाथ ऊँचा होना = १. दान देने में प्रवृत्त होना। २. संपन्न होना। हाथ कट जाना = १. कुछ करने लायक न रह जाना। २. प्रतिज्ञा आदि से बद्ध हो जाना। हाथ की मैल = तुच्छ वस्तु। हाथ खाली होना=पास में कुछ द्रव्य न रह जाना। हाथ खुजलाना = १. मारने को जी करना। २. प्राप्ति के लक्षण दिखाई पड़ना। हाथ खींचना = १. किसी काम से अलग हो जाना। योग न देना। २. देना बंद कर देना। हाथ चलाना = मारने के लिये थप्पड़ तानना। मारना। हाथ चूमना = किसी की कारीगरी पर इतना खुश होना कि उसके हाथों को प्रेम की दृष्टि से देखना। हाथ छोड़ना = मारना। प्रहार करना। हाथ जोड़ना = १. प्रणाम करना। नमस्कार करना। २ अनुनय-विनय करना। (दूर से) हाथ जोड़ना = संसर्ग या संबंध न रखना। किनारे रहना। हाथ डालना = किसी काम में हाथ लगाना। योग देना। हाथ तंग होना = खर्च करने के लिये रुपया-पैसा न रहना। (किसी वस्तु या बात से) हाथ धोना = खो देना। प्राप्ति की संभावना न रखना। नष्ट करना। हाथ धोकर पीछे पड़ना = किसी काम में जी-जान से लग जाना। हाथ पकड़ना = १. किसी काम से रोकना। २. आश्रय देना। शरण में लेना। ३. पाणिग्रहण करना। विवाह करना। हाथ पत्थर तले दबना = १. संकट या कठिनता की स्थिति में पड़ना। २. लाचार होना। विवश होना। हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना = खाली बैठे रहना। कुछ काम-धंधा न करना। हाथ पसारना या फैलाना = कुछ माँगना। याचना करना। हाथ-पाँव चलना=काम-धंधे के लिये सामर्थ्य होना। कार्य्य करने की योग्यता होना। हाथ-पाँव ठंढे होना = १. मरणासन्न होना। २. भय या आशंका से स्तब्ध हो जाना। हाथ-पाँव निकालना = १. मोटा ताजा होना। २. सीमा का अतिक्रमण करना। ३. शरारत करना। हाथ-पाँव फूलना=डर या शोक से घबरा जाना हाथ-पाँव पटकना = छटपटाना। हाथ-पाँव मारना या हिलाना=१. प्रयत्न करना। कोशिश करना। २. बहुत परिश्रम करना। हाथ-पैर जोड़ना=विनती करना। अनुनय विनय करना। (किसी वस्तु पर) हाथ फेरना = किसी वस्तु को उड़ा लेना। ले लेना। (किसी काम में) हाथ बँटाना=शामिल होना। शरीक होना। हाथ बाँधे खड़ा रहना = सेवा में बराबर उपस्थित रहना। हाथ मलना = १. बहुत पछताना। २. निराश और दुःखी होना। (किसी वस्तु पर) हाथ मारना = उड़ा लेना। ग़ायब कर लेना। हाथ में करना=वश में करना। ले लेना। (मन) हाथ में करना = मोहित करना। लुभाना। हाथ में होना = १. अधिकार में होना। २. वश में होना। हाथ रँगना = घूस लेना। हाथ रोपना या ओड़ना = हाथ फैलाना। माँगना। (कोई वस्तु) हाथ लगना = हाथ में आना। मिलना। प्राप्त होना। (किसी काम में) हाथ लगना = १. आरंभ होना। शुरू किया जाना। २. किसी के द्वारा किया जाना। (किसी वस्तु में) हाथ लगना = छू जाना। स्पर्श होना। किसी काम में हाथ लगाना = १. आरंभ करना। शुरू करना। २. योग देना। हाथ लगाना = छूना। स्पर्श करना। हाथ लगे मैला होना=इतना स्वच्छ और पवित्र होना कि हाथ से छूने से मैला होना। हाथों हाथ = एक के

हाथ में दूसरे के हाथ में होते हुए। हाथों हाथ लेना = बड़े आदर और सम्मान से स्वागत करना। २.ग्वाई की एक नाप जो मनुष्य की कुहनी से लेकर पंजे के छोर तक की मानी जाती है। ३ ताश, जुए आदि के खेल में एक एक आदमी के खेलने की बारी। दाँव।

हाथपान—संज्ञा पु० [हि० हाथ + पान] हथेली की पीठ पर पहनने का एक गहना।

हाथफूल—संज्ञा पु० [हि० हाथ + फूल] हथेली की पीठ पर पहनने का एक गहना।

हाथा—संज्ञा पु० [हि० हाथ] १ मुठिया। दस्ता। २ पंजे की छाप या चिह्न जो गीले पिसे चावल और हल्दी आदि पोत-कर दीवार पर छापने से बनता है। छापा।

हाथाजोड़ी—संज्ञा स्त्री० [हि० हाथ + जोड़ना] एक पौधा जो औषध के काम में आता है।

हाथापाई, हाथाबाँही—संज्ञा स्त्री० [हि० हाथ + पायँ या बाँह] वह लड़ाई जिसमें हाथ पैर चलाए जायें। भिड़त। धौल-धप्पड़।

हाथी—संज्ञा पु० [स० हस्तिन्] [स्त्री० हथिनी] एक बहुत बड़ा स्तनपायी चौपाया जो सूँड के रूप में बढ़ी हुई नाक के कारण और सब जानवरों से विलक्षण दिखाई पड़ता है।
मुहा०—हाथी की राह = आकाश-गंगा। डहर। हाथी पर चढ़ना = बहुत अमीर होना। हाथी बाँधना = बहुत अमीर होना। हाथी के संग गाँड़े खाना = बहुत बड़े बलवान् की बराबरी करना।
संज्ञा स्त्री० [हि० हाथ] हाथ का सहारा। करावलंब।

हाथीखाना—संज्ञा पु० [हि० हाथी + फा० खान] वह घर जिसमें हाथी रखा जाय। फीलखाना।

हाथीदाँत—संज्ञा पु० [हि० हाथी + दाँत] हाथी के मुँह के दोनों छोरों पर निकले हुए सफेद दाँत जो केवल दिखावटी होते हैं।

हाथीनाल—संज्ञा स्त्री० [हि० हाथी + नाल] हाथी पर चलनेवाली तोप। हथनाल। गजनाल।

हाथीवान—संज्ञा पु० [हि० हाथी + वान (प्रत्य०)] हाथी को चलाने के लिये नियुक्त पुरुष। फीलवान। महावत।

हादसा—संज्ञा पु० [अ०] दुर्घटना।

हान*‡—संज्ञा स्त्री० दे० "हानि"।

हानि—संज्ञा स्त्री० [स०] १ नाश। अभाव। क्षय। २ नुकसान। क्षति। लाभ का उलटा। घाटा। टोटा। ३ स्वास्थ्य में बाधा। ४ अनिष्ट। अपकार। बुराई।

हानिकर—वि० [स०] १ हानि करनेवाला। जिससे नुकसान पहुँचे। २ बुरा परिणाम उपस्थित करनेवाला। ३ तंदुरुस्ती बिगाड़नेवाला।

हानिकारक—वि० दे० "हानिकर"।

हानिकारी—वि० दे० "हानिकर"।

हाफ़िज़—संज्ञा पु० [अ०] वह धार्मिक मुसल-मान जिसे कुरान कंठ हो।

हामी—संज्ञा स्त्री० [हि० हाँ] 'हाँ' करने की क्रिया या भाव। स्वीकृति। स्वीकार।
मुहा०—हामी भरना = मंजूर करना।
संज्ञा पु० १ वह जो हिमायत करता हो। २ सहायता करनेवाला। सहायक।

हाय—अव्य० [स० हा] शोक, दुःख या कष्ट सूचित करनेवाला शब्द।
संज्ञा स्त्री० कष्ट। पीड़ा। दुःख।
मुहा०—(किसी की) हाय पड़ना = पहुँचाए हुए दुःख या कष्ट का बुरा फल मिलना।

हायल*—वि० [हि० घायल] १ घायल। २ शिथिल। मूर्च्छित। बेकाम।
वि० [अ०] दो वस्तुओं के बीच में पड़ने-वाला। रोकनेवाला। अंतरवर्ती।

हाय हाय—अव्य० [स० हा हा] शोक, दुःख या शारीरिक कष्टसूचक शब्द। दे० "हाय"।
संज्ञा स्त्री० १ कष्ट। दुःख। शोक। २ घबराहट। परेशानी। झंझट।

हार—संज्ञा स्त्री० [स० हारि] १ लड़ाई, खेल, बाजी या चढ़ा-ऊपरी में जोड़ या प्रतिद्वंद्वी के सामने न जीत सकने का भाव। पराजय। शिकस्त।
मुहा०—हार खाना = हारना।
२ शिथिलता। थकावट। ३ हानि। क्षति। ४ ज़ब्ती। राज्य-द्वारा हरण।

५. विरह। वियोग।

संज्ञा पुं० [सं०] १. सोने, चाँदी या मोतियों आदि की माला जो गले में पहनी जाय। २. ले जानेवाला। वहन करनेवाला। ३. मनोहर। सुंदर। ४. अंकगणित में भाजक। ५. पिंगल या छंदःशास्त्र में गुरु मात्रा। ६. नाश करनेवाला। नाशक।

प्रत्य० दे० "हारा"।

हारक–संज्ञा पुं० [सं०] १. हरण करनेवाला। २. मनोहर। सुंदर। ३. चोर। लुटेरा। ४. गणित में भाजक। ५. हार। माला।

हारद*–वि० दे० "हार्दिक"।

हारना–क्रि० अ० [सं० हार] १. प्रतिद्वंद्विता आदि में शत्रु के सामने विफल होना। पराजित होना। शिकस्त खाना। २. शिथिल होना। थक जाना। ३. प्रयत्न में निराश होना। असमर्थ होना।

मुहा०—हारे दर्जे = लाचार होकर। विवश होकर। हारकर = १. असमर्थ होकर। २. लाचार होकर।

क्रि० स० १. लड़ाई, बाज़ी आदि को सफलता के साथ न पूरा करना। २. गँवाना। खोना। ३. छोड़ देना। न रख सकना। ४. दे देना।

हारबंध–संज्ञा पुं० [सं०] एक चित्र-काव्य जिसमें पद्य हार के आकार में रखे जाते हैं।

हारवार*–संज्ञा स्त्री० दे० "हड़बड़ी"।

हारसिंगार–संज्ञा पुं० दे० "परजाता"।

हारा†–प्रत्य० [सं० धार = रखनेवाला] [स्त्री० हारी] एक पुराना प्रत्यय जो किसी शब्द के आगे लगकर कर्तव्य, धारण या संयोग आदि सूचित करता है। वाला।

हारिल–संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की चिड़िया जो प्रायः अपने चंगुल में कोई लकड़ी या तिनका लिए रहती है।

हारी–वि० [सं० हारिन्] [स्त्री० हारिणी] हरण करनेवाला। २. ले जानेवाला। पहुँचानेवाला। ३. चुरानेवाला। ४. दूर करनेवाला। ५. नाश करनेवाला। ६. मोहित करनेवाला।

संज्ञा पुं० एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक तगण और दो गुरु होते हैं।

हारीत–संज्ञा पुं० [सं०] १. चोर। लुटेरा। २. चोरी। लुटेरापन। ३. कण्व ऋषि के एक शिष्य।

हार्दिक–वि० [सं०] १. हृदय-संबंधी। २. हृदय से निकला हुआ। सच्चा।

हाल–संज्ञा पुं० [अ०] १. दशा। अवस्था। २. परिस्थिति। ३. माजरा। संवाद। समाचार। वृत्तांत। ४. ब्योरा। विवरण। कैफ़ियत। ५. कथा। आख्यान। चरित्र। ६. ईश्वर में तन्मयता। लीनता। (मुसल०)

वि० वर्तमान। चलता। उपस्थित।

मुहा०—हाल में = थोड़े ही दिन हुए। हाल का = नया। ताजा।

अव्य० १. इस समय। अभी। २. तुरंत।

संज्ञा स्त्री० [हिं० हालना] १. हिलने की क्रिया या भाव। २. लोहे का वह बंद जो पहिए के चारों ओर घेरे में चढ़ाया जाता है।

हालगोला–संज्ञा पुं० [हिं० हाल? + गोला] गेंद।

हालडोल–संज्ञा पुं० [हिं० हालना + डोलना] १. हिलने की क्रिया या भाव। गति। २. हलकंप। हलचल।

हालत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. दशा। अवस्था। २. आर्थिक दशा। सांपत्तिक स्थिति। ३. संयोग। परिस्थिति।

हालना†*–क्रि० अ० [सं० हल्लान] १. हिलना। डोलना। हरकत करना। २. काँपना। भूमना।

हालरा–संज्ञा पुं० [हिं० हालना] १. बच्चों को लेकर हिलाना-डुलाना। २. झोंका। ३. लहर। हिलोर।

हालाँकि–अव्य० [फ़ा०] यद्यपि। गो कि। ऐसी बात है, फिर भी।

हालाहल–संज्ञा पुं० दे० "हलाहल"।

हालिम–संज्ञा पुं० [देश०] एक पौधा जिसके बीज औषध के काम में आते हैं। चंसुर।

हाली–अव्य० [अ० हाल] जल्दी। शीघ्र।

हालों–संज्ञा पुं० दे० "हालिम"।

हाव–संज्ञा पु० [सं०] संयोग के समय में नायिका की स्वाभाविक चेष्टाएँ जो पुरुष को आकर्षित करती हैं। इनकी संख्या ११ है—लीला, विलास, विच्छित्ति, विभ्रम, किलकिंचित, मोट्टायित, बिब्बोक, विहृत, कुट्टमित, ललित और हेला। भाव-विधान में "हाव" अनुभाव के ही अंतर्गत है।
हावनदस्ता–संज्ञा पु० [फा०] खरल और बट्टा। खल और लोढा।
हावभाव–संज्ञा पु० [सं०] स्त्रियों की वह मनोहर चेष्टा जिससे पुरुषों का चित्त आकर्षित होता है। नाज-नखरा।
हाशिया–संज्ञा पु० [अ० हाशिय] १ किनारा। कोर। पाड। २ गोट। मगजी। ३ हाशिए या किनारे पर का लेख। नोट। मुहा०–हाशिए का गवाह वह गवाह जिसका नाम किसी दस्तावेज के किनारे दर्ज हो। हाशिया चढाना = किसी बात में मनोरंजन आदि के लिये कुछ और बात जोडना।
हास–संज्ञा पु० [सं०] १ हँसने की क्रिया या भाव। हँसी। २ दिल्लगी। ठट्ठा। मजाक। ३ उपहास।
हासिल–वि० [अ०] प्राप्त। लब्ध। पाया हुआ। मिला हुआ।
संज्ञा पु० १ गणित करने में किसी संख्या का वह भाग या अंक जो शेष भाग के कहीं रखे जाने पर बच रहे। २ उपज। पैदावार। ३ लाभ। नफा। ४ गणित की क्रिया का फल। ५ जमा। लगान।
हासी–वि० [सं० हासिन्] [स्त्री० हासिनी] हँसनेवाला।
हास्य–वि० [सं०] १ जिस पर लोग हँसें। २ उपहास के योग्य।
संज्ञा पु० १. हँसने की क्रिया या भाव। हँसी। २ नौ स्थायी भावों और रसों में से एक। ३ उपहास। निंदापूर्ण हँसी। ४ दिल्लगी। मजाक।
हास्यास्पद–संज्ञा पु० [सं०] वह जिसके बेढंगेपन पर लोग हँसी उडावें।
हा हंत–अव्य० [सं०] अत्यंत शोकसूचक शब्द।
हाहा–संज्ञा पु० [अनु०] १. हँसने का शब्द। यौ०–हाहा हीही, हाहा ठीठी = हँसी ठट्ठा। २. बहुत विनती की पुकार। दुहाई। मुहा०–हाहा करना या खाना = गिडगिडाना। बहुत विनती करना।
हाहाकार–संज्ञा पु० [सं०] घबराहट की चिल्लाहट। कुहराम।
हाहो–संज्ञा स्त्री० [हिं० हाय] कुछ पाने के लिये 'हाय हाय' करते रहना।
हाहू†*–संज्ञा पु० [अनु०] १ हल्लागुल्ला। कोलाहल। २ हलचल। धूम।
हाहूबेर–संज्ञा पु० [हाहू ? + हिं० बेर] जंगली बेर। झडबेरी।
हिंकरना–क्रि० अ० दे० "हिनहिनाना"।
हिंकार–संज्ञा पु० [सं०] गाय के रँभाने का शब्द।
हिंगलाज–संज्ञा स्त्री० [सं० हिंगुलाजा] दुर्गा या देवी की एक मूर्ति जो सिंध में है।
हिंगु–संज्ञा पु० [सं०] हींग।
हिंगोट–संज्ञा पु० [सं० हिंगुपत्र] एक कँटीला जंगली पेड। इसके गोल छोटे फलों से तेल निकलता है। इंगुदी।
हिंछा*‡–संज्ञा स्त्री० दे० "इच्छा"।
हिंडन–संज्ञा पु० [सं०] घूमना। फिरना।
हिंडोरा–संज्ञा पु० दे० "हिंडोला"।
हिंडोल–संज्ञा पु० [सं० हिन्दोल] १ हिंडोला। २ एक प्रकार का राग।
हिंडोलना‡–संज्ञा पु० दे० "हिंडोला"।
हिंडोला–संज्ञा पु० [सं० हिन्दोल] १ नीचे-ऊपर घूमनेवाला एक चक्कर जिसमें लोगों के बैठने के लिए छोटे छोटे मंच बने रहते हैं। २ पालना। ३ झूला।
हिंताल–संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का खजूर।
हिंद–संज्ञा पु० [फा०] हिंदोस्तान। भारतवर्ष।
हिंदवाना†–संज्ञा पु० [फा० हिंद + वान] तरबूज। कलींदा।
हिंदवी–संज्ञा स्त्री० [फा०] हिंदी भाषा।
हिंदी–वि० [फा०] हिंदुस्तान का। भारतीय। संज्ञा पु० हिंद का रहनेवाला। भारतवासी।

संज्ञा स्त्री० १. हिंदुस्तान की भाषा। २. हिंदुस्तान के उत्तरी या प्रधान भाग की भाषा जिसके अंतर्गत कई बोलियाँ हैं और जो बहुत से अंशों में सारे देश की एक सामान्य भाषा मानी जाती है।
हिंदुस्तान–संज्ञा पुं० [फ़ा० हिंदोस्तान] १. भारतवर्ष। २. भारतवर्ष का उत्तरीय मध्य भाग जो दिल्ली से पटने तक है।
हिंदुस्तानी–वि० [फ़ा०] हिंदुस्तान का। संज्ञा पुं० हिंदुस्तान का निवासी। भारतवासी। संज्ञा स्त्री० १. हिंदुस्तान की भाषा। २. बोल-चाल या व्यवहार की वह हिंदी जिसमें न तो बहुत अरबी, फ़ारसी के शब्द हों, न संस्कृत के।
हिंदुस्थान–संज्ञा पुं० दे० "हिंदुस्तान"।
हिंदू–संज्ञा पुं० [फ़ा०] भारतवर्ष में बसनेवाली आर्य्य जाति के वंशज। वेद, स्मृति, पुराण आदि अथवा इनमें से किसी एक के अनुसार चलनेवाला।
हिंदूपन–संज्ञा पुं० [फ़ा० हिंदू + पन(प्रत्य०)] हिंदू होने का भाव या गुण।
हिंदोस्तान–संज्ञा पुं० दे० "हिंदुस्तान"।
हियाँ†*–अव्य० दे० "यहाँ"।
हिंव–संज्ञा पुं० दे० "हिम"।
हिंवार–संज्ञा पुं० [सं० हिमालि] हिम। बर्फ़। पाला।
हिंस–संज्ञा स्त्री० [अनु० हिं हिं] घोड़ों के बोलने का शब्द। हिनहिनाहट।
हिंसक–संज्ञा पुं० [सं०] १. हिंसा करनेवाला। हत्यारा। घातक। २. बुराई या हानि करनेवाला। ३. जीवों को मारनेवाला पशु। ४. शत्रु। दुश्मन।
हिंसन–संज्ञा पुं० [सं०] [हिंसनीय, हिंसित, हिंस्य] १. जीवों का वध करना। जान मारना। २. पीड़ा पहुँचाना। सताना। ३. अनिष्ट करना या चाहना।
हिंसा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्राण मारना या कष्ट देना। २. हानि पहुँचाना।
हिंसात्मक–वि० [सं०] जिसमें हिंसा हो।
हिंसालु–वि० [सं०] हिंसा करनेवाला।
हिंस्र–वि० [सं०] हिंसा करनेवाला। खूँखार।
हि–एक पुरानी विभक्ति जिसका प्रयोग पहले तो सब कारकों में होता था, पर पीछे कर्म और संप्रदान में ही ('को' के अर्थ में) रह गया।
‡*अव्य० दे० "ही"।
हिअ, हिआ–संज्ञा पुं० दे० "हृदय"।
हिआव–संज्ञा पुं० दे० "हियाव"।
हिकमत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. विद्या। तत्त्वज्ञान। २. कला-कौशल। निर्माण की बुद्धि। ३. युक्ति। तदबीर। उपाय। ४. चतुराई का ढंग। चाल। ५. हकीम का काम या पेशा। हकीमी। वैद्यक।
हिकमती–वि० [अ० हिकमत] १. कार्य-साधन की युक्ति निकालनेवाला। तदबीर सोचनेवाला। कार्य्य-पटु। २. चतुर। चालाक। ३. किफ़ायती।
हिकायत–संज्ञा स्त्री० [अ०] कथा। कहानी।
हिक्का–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हिचकी। २. बहुत हिचकी आने का रोग।
हिचक–संज्ञा स्त्री० [हिं० हिचकना] किसी काम के करने में वह रुकावट जो मन में मालूम हो। आगा-पीछा।
हिचकना–क्रि० अ० [सं० हिक्का] १. हिचकी लेना। २. किसी काम के करने में कुछ अनिच्छा, भय या संकोच के कारण प्रवृत्त न होना। आगा-पीछा करना।
हिचकिचाना–क्रि० अ० दे० "हिचकना"।
हिचकी–संज्ञा स्त्री० [अनु० हिच या सं० हिक्का] १ पेट की वायु का झोंके के साथ ऊपर चढ़कर कंठ में धक्का देते हुए निकलना। मुहा०—हिचकियाँ लगना = मरने के निकट होना।
२. रह रहकर सिसकने का शब्द।
हिजड़ा–संज्ञा पुं० दे० "हीजड़ा"।
हिजरी–संज्ञा पुं० [अ०] मुसलमानी सन् या संवत् जो मुहम्मद साहब के मक्के से मदीने भागने की तारीख (१५ जुलाई सन् ६२२ ई०)।

हिज्जे—संज्ञा पु० [अ० हिज्ज] किसी शब्द में आए हुए अक्षरों को मात्राओं सहित कहना।
हिज्र—संज्ञा पु० [अ०] जुदाई। वियोग।
हिडिंब—संज्ञा पु० [सं०] एक राक्षस जिसे भीम ने पांडवों के वनवास के समय मारा था।
हिडिंबा—संज्ञा स्त्री० [सं०] हिडिंब राक्षस की बहिन जिसके साथ भीम ने विवाह किया था।
हित—वि० [सं०] भलाई करने या चाहने-वाला। खैरख्वाह।
संज्ञा पु० १ लाभ। फायदा। २ कल्याण। मंगल। भलाई। उपकार। बेहतरी। ३ स्वास्थ्य के लिये लाभ। ४ प्रेम। स्नेह। अनुराग। ५ मित्रता। खैरख्वाही। ६ भला चाहने-वाला आदमी। मित्र। ७ संबंधी। नातेदार।
अव्य० १ (किसी के) लाभ के हेतु। खातिर या प्रसन्नता के लिये। २ हेतु। लिये। वास्ते।
हितकर, हितकारक—संज्ञा पु० [सं०] १ भलाई करनेवाला। २ लाभ पहुँचाने वाला। फायदेमंद। ३ स्वास्थ्यकर।
हितकारी—वि० दे० "हितकर"।
हितचिंतक—संज्ञा पु० [सं०] भला चाहने-वाला। खैरख्वाह।
हितचिंतन—संज्ञा पु० [सं०] किसी की भलाई की कामना या इच्छा। खैरख्वाही।
हितता*—संज्ञा स्त्री० [सं० हित+ता] भलाई।
हितवना*†—क्रि० अ० दे० 'हिताना"।
हितवादी—वि० [सं० हितवादिन्] [स्त्री० हितवादिनी] हित की बात कहनेवाला।
हिताई—संज्ञा स्त्री०[सं० हित] नाता। रिश्ता।
हिताना*—क्रि० अ० [सं० हित] १ हित-कारी होना। अनुकूल होना। २ प्रेम-युक्त होना। ३ प्यारा या अच्छा लगना।
हितावह—वि० दे० 'हितकारी"।
हिताहित—संज्ञा पु० [सं०] भलाई-बुराई। लाभ-हानि। नफा-नुकसान।
हिती, हितू—संज्ञा पु० [सं० हित] १ भलाई करने या चाहनेवाला। खैरख्वाह। २ संबंधी। नातेदार। ३ सुहृद। स्नेही।
हितैषिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] भलाई चाहने की वृत्ति। खैरख्वाही।
हितैषी—वि० [सं० हितैषिन्] [स्त्री० हितैषिणी] भला चाहनेवाला। खैरख्वाह।
हितौना†*—क्रि० अ० दे० "हिताना"।
हिदायत—संज्ञा स्त्री० [अ०] अधिकारी की शिक्षा। आदेश। निर्देश।
हिनती*‡—संज्ञा स्त्री० दे० "हीनता"।
हिनहिनाना—क्रि० अ० [अनु०] [संज्ञा हिन-हिनाहट] घोड़े का बोलना। हींसना।
हिना—संज्ञा स्त्री० [अ०] मेंहदी।
हिफाजत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ किसी वस्तु को इस प्रकार रखना कि वह नष्ट न होने पावे। रक्षा। २ देख रेख। खबरदारी।
हिब्बा—संज्ञा पु० [अ० हिब्ब] १ दाना। २ दान।
हिब्बानामा—संज्ञा पु० [अ० + फा०] दानपत्र।
हिमचल‡*—संज्ञा पु० दे० "हिमाचल"।
हिमत‡*—संज्ञा पु० दे० "हेमंत"।
हिम—संज्ञा पु० [सं०] १ पाला। बर्फ। तुषार। २ जाड़ा। ठंढ। ३ जाड़े की ऋतु। ४ चंद्रमा। ५ चंदन। ६ कपूर। ७ मोती। ८ कमल।
वि० ठंढा। सर्द।
हिम-उपल—संज्ञा पु० [सं०] ओला। पत्थर।
हिमकण—संज्ञा पु० [सं०] बर्फ या पाले के महीन टुकड़े।
हिमकर—संज्ञा पु० [सं०] चंद्रमा।
हिमकिरण—संज्ञा पु० [सं०] चंद्रमा।
हिमभानु—संज्ञा पु० [सं०] चंद्रमा।
हिमयानी—संज्ञा स्त्री० [फा०] रुपया पैसा रखने की जालीदार लंबी थैली जो कमर में बाँधी जाती है।
हिमवत्—संज्ञा पु० दे० "हिमवान्"।
हिमवान्—वि० [सं० हिमवत्] [स्त्री० हिमवती] बर्फवाला। जिसमें बर्फ या पाला हो।
संज्ञा पु० १ हिमालय। २ कैलास पर्वत। ३ चंद्रमा।

हिमांशु–संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।
हिमाक़त–संज्ञा स्त्री० [अ०] बेवक़ूफ़ी।
हिमाचल–संज्ञा पुं० [सं०] हिमालय।
हिमाद्रि–संज्ञा पुं० [सं०] हिमालय पहाड़।
हिमामदस्ता–संज्ञा पुं० [फ़ा० हावनदस्तः] खरल और बट्टा।
हिमायत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. पक्षपात। २. मंडन। समर्थन।
हिमायती–वि० [फ़ा०] १. समर्थन या मंडन करनेवाला। २. सहायता करनेवाला। मददगार।
हिमालय–संज्ञा पुं० [सं०] भारतवर्ष की उत्तरी सीमा पर का पहाड़ जो संसार के सब पर्वतों से बड़ा और ऊँचा है।
हिमि*–संज्ञा पुं० दे० "हिम"।
हिम्मत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. कठिन या कष्टसाध्य कर्म करने की मानसिक दृढ़ता। साहस। जिगरा। २. बहादुरी। पराक्रम।
मुहा०–हिम्मत हारना = साहस छोड़ना।
हिम्मती–वि० [फ़ा०] १. साहसी। दृढ़। २. पराक्रमी। बहादुर।
हिय–संज्ञा पुं० [सं० हृदय, प्रा० हिअ] १. हृदय। मन। २. छाती। वक्षःस्थल।
मुहा०—हिय हारना = हिम्मत छोड़ना।
हियरा–संज्ञा पुं० [हिं० हिय] १. हृदय। मन। २. छाती। वक्षःस्थल।
हियाँ†–अव्य० दे० "यहाँ"।
हिया–संज्ञा पुं० [सं० हृदय] १ हृदय। मन। २. छाती। वक्षःस्थल।
मुहा०–हिये का अंधा = अज्ञान। मूर्ख। हिये की फूटना = बुद्धि न होना। हिय जलना = अत्यंत क्रोध में होना। हिये लगना = गले से लगना। हिये में लोन सा लगना = बहुत बुरा लगना। विशेष—मुहा० दे० "जी" और "कलेजा"।
हियाव–संज्ञा पुं० [हिं० हिय] साहस। हिम्मत। जीवट।
मुहा०–हियाव खुलना = १. साहस हो जाना। हिम्मत बँधना। २. संकोच या भय न रहना। हियाव पड़ना = साहस होना।
हिरकना†*–क्रि० अ० [सं० हुरुक् समीप] १. पास होना। निकट जाना। २. सटना।
हिरकाना†*–क्रि० स० [हिं० हिरकना] १. पास करना। नजदीक ले जाना। २. सटाना। भिड़ाना।
हिरण*‡–संज्ञा पुं० दे० "हिरन"।
हिरण्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. सोना। स्वर्ण। २. वीर्य्य। शुक्र। ३. कौड़ी। ४. धतूरा। ५. अमृत।
हिरण्यकशिपु–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध विष्णु-विरोधी दैत्य राजा जो प्रह्लाद का पिता था। भगवान् ने नृसिंहावतार धारण करके इसे मारा था।
हिरण्य-कश्यप–संज्ञा पुं० दे० "हिरण्य-कशिपु"।
हिरण्यगर्भ–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह ज्योतिर्मय अंड जिससे ब्रह्मा और सारी सृष्टि की उत्पत्ति हुई है। २. ब्रह्मा। ३. सूक्ष्म शरीर से युक्त आत्मा। ४. विष्णु।
हिरण्यनाभ–संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु। २. मैनाक पर्वत।
हिरण्यरेता–संज्ञा पुं० [सं० हिरण्यरेतस्] १. अग्नि। आग। २. सूर्य्य। ३. शिव।
हिरण्याक्ष–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध दैत्य जो हिरण्यकशिपु का भाई था।
हिरदय†*–संज्ञा पुं० दे० "हृदय"।
हिरन–संज्ञा पुं० [सं० हरिण] हरिन। मृग।
मुहा०—हिरन हो जाना = भाग जाना।
हिरनाकुस–संज्ञा पुं० दे० "हिरण्यकशिपु"।
हिरफ़त–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. हाथ की कारीगरी। दस्तकारी। २. हुनर। कला-कौशल। ३. चतुराई। चालाकी। ४. चालबाजी। धूर्त्तता।
हिरफ़तबाज–वि० [अ० + फ़ा०] चालबाज।
हिरमजी–संज्ञा स्त्री० [अ०] लाल रंग की एक प्रकार की मिट्टी।
हिरस‡–संज्ञा स्त्री० दे० "हिर्स"।
हिराती–संज्ञा पुं० [हिरात देश] एक जाति का घोड़ा जो अफ़गानिस्तान के उत्तर हिरात देश में होता है। यह गरमी में नहीं

थकना।
हिराना†–क्रि० अ० [स० हरण] १ खो जाना। गायब होना। २ न रह जाना। ३ मिटना। दूर होना। ४ हक्का-बक्का होना। अत्यंत चकित होना। ५ अपने को भूल जाना।
क्रि० स० भूल जाना। ध्यान में न रहना।
हिरावल–संज्ञा पु० दे० "हरावल"।
हिरासत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ पहरा। चौकी। २ कैद। नजरबंदी।
हिरौंजी‡–संज्ञा स्त्री० दे० "हिरमजी"।
हिरौल*–संज्ञा पु० दे० "हरावल"।
हिर्स–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ लालच। तृष्णा। लोभ। २ इच्छा का वेग।
मुहा०—हिर्स छूटना=लालच होना।
३ किसी की देखादेखी कुछ काम करने की इच्छा। स्पर्धा।
हिलकी†*–संज्ञा स्त्री० [स० हिक्का] १ हिचकी। २ सिसकने का शब्द। सिसक।
हिलकोर, हिलकोरा–संज्ञा पु० [स० हिल्लोल] हिलोर। लहर। तरंग।
हिलग–संज्ञा स्त्री० [हिं० हिलगना] १ लगाव। संबंध। २ लगन। प्रेम। ३ परिचय।
हिलगना–क्रि० अ० [स० अधिलग्न] १ अटकना। टँगना। २ फँसना। बझना। ३ हिल मिल जाना। परचना।
क्रि० अ० [स० हिरुक=पास] पास होना। सटना। भिड़ना। हिरकना।
हिलगाना–क्रि० स० [हिं० हिलगना] १ अटकाना। टाँगना। २ फँसाना। बझाना। ३ मेल-जोल में करना। ४ परचाना। परिचित और अनुरक्त करना।
क्रि० स० [स० हिरुक=पास] सटाना।
हिलना–क्रि० अ० [स० हल्लन] १ चलायमान होना। स्थिर न रहना। हरकत करना।
मुहा०—हिलना डोलना=१ चलायमान होना। २ चलना। फिरना। घूमना। ३ प्रयत्न करना। उद्योग करना।
२ हलना। सरकना। चलना। ३ काँपना। थरथराना। ४ खूब जमकर बैठा न रहना। ढीला होना। ५ धमना। लहराना। ६ पैठना। प्रवेश करना। (विशेषत पानी में)
क्रि० अ० [हिं० हिलगना] परिचित और अनुरक्त होना। परचना।
मुहा०—हिलना मिलना=घनिष्ठ संबंध रखना।
क्रि० अ० [देश०] प्रवेश करना। घुसना। (विशेषत पानी में)
हिलसा–संज्ञा स्त्री० [स० इल्लिश] एक प्रकार की मछली।
हिलाना–क्रि० स० [हिं० हिलना] १ डुलाना। चलायमान करना। हरकत देना। २ स्थान से उठाना। टालना। हटाना। ३ कँपाना। कंपित करना। ४ नीचे ऊपर या इधर उधर डुलाना। झुलाना।
क्रि० स० [हिं० हिलगना] परिचित और अनुरक्त करना। परचाना।
क्रि० स० [देश०] घुसाना। पैठाना।
हिलोर, हिलोरा–संज्ञा पु० [स० हिल्लोल] तरंग। लहर। मौज।
मुहा०—हिलोरे लेना=लहराना।
हिलोरना–क्रि० स० [हिं० हिलोरना + (प्रत्य०)] १ पानी को इस प्रकार हिलाना कि लहरें उठें। २ लहराना।
हिलोल–संज्ञा पु० दे० हिलोर।
हिल्लोल–संज्ञा पु० [स०] १ हिलोरा। तरंग। लहर। २ आनंद की तरंग। मौज।
हिवंचल–संज्ञा पु० [स० हिम] पाला। बरफ।
हिवर–संज्ञा पु० [स० हिम] बर्फ। पाला।
हिसका–संज्ञा पु० [स० ईर्ष्या] १ ईर्ष्या। डाह। २ स्पर्धा। देखादेखी किसी बात की इच्छा।
हिसाब–संज्ञा पु० [अ०] १ गिनती। गणित। लेखा। २ लेन-देन या आमदनी खर्च आदि का लिखा हुआ ब्यौरा। लेखा। उचापत।
मुहा०–हिसाब चुकाना या चुकता करना=जो कुछ जिम्मे निकलता हो उसे दे देना। हिसाब करना=जो जिम्मे आता हो उसे दे

देना। हिसाब देना = जमा-खर्च का ब्योरा बताना। हिसाब लेना या समझना=यह पूछना या जानना कि कितनी रकम कहाँ खर्च हुई। बेहिसाब=बहुत अधिक। अत्यंत। हिसाब रखना=आमदनी, खर्च आदि का ब्योरा लिखकर रखना। हिसाब बैठना = १. ठीक ठीक जैसा चाहिए, वैसा प्रबंध होना। २. सुबीता होना। सुपास होना। हिसाब से = १. संयम से। परिमित। २. लिखे हुए ब्योरे के मुताबिक। वेढा या टेढ़ा हिसाब = १. कठिन कार्य्य। मुश्किल काम। २. अव्यवस्था। गड़बड़। ३. वह विद्या जिसके द्वारा संख्या, मान आदि निर्धारित हो। गणित विद्या। ४. गणित विद्या का प्रश्न। ५. भाव। दर। *मुहा०*—हिसाब से = १. परिमाण, क्रम या गति के अनुसार। मुताबिक। २ विचार से। ध्यान से।

६. नियम। क़ायदा। व्यवस्था। ७. धारणा। समझ। मत। विचार। ८. हाल। दशा। अवस्था। ९. चाल। व्यवहार। रहन। १० ढंग। रीति। तरीका। ११. किफायत। मितव्यय।

हिसाब-किताब—संज्ञा पुं० [अ०] १. आमदनी, खर्च आदि का ब्योरा जो लिखा हो। २. ढंग। चाल। रीति। कायदा।

हिसिषा*†—संज्ञा स्त्री० [सं० ईर्ष्या] १ स्पर्द्धा। बराबरी करने का भाव। होड़। २. ममता। तुल्य भावना।

हिस्सा—संज्ञा पुं० [अ० हिस्स.] १. भाग। अंश। २. टुकड़ा। खंड। ३. उतना अंश जितना प्रत्येक को विभाग करने पर मिले। बखरा। ४. विभाग। तकसीम। ५. विभाग। खंड। ६. अंग। अवयव। अंतर्भूत वस्तु। ७. साझा।

हिस्सेदार—संज्ञा पुं० [अ० हिस्स. + फा० दार (प्रत्य०)] १. वह जिसे कुछ हिस्सा मिला हो। २. रोजगार में शरीक। साझेदार।

हिहिनाना—क्रि० अ० दे० "हिनहिनाना"।

हींग—संज्ञा स्त्री० [सं० हिंगु] १. एक छोटा पौधा जो अफगानिस्तान और फ़ारस में आप से आप और बहुत होता है। २. इस पौधे का जमाया हुआ दूध या गोंद जिसमें बड़ी तीक्ष्ण गंध होती है और जिसका व्यवहार दवा और मसाले में होता है।

हींस—संज्ञा स्त्री० [सं० हेष] घोड़े या गधे के बोलने का शब्द। रेंक या हिनहिनाहट।

हींसना—क्रि० अ० [अनु०] १. दे० "हिनहिनाना"। २ गदहे का बोलना। रेंकना।

हींहीं—संज्ञा स्त्री० [अनु०] हँसने का शब्द।

ही—अव्य० [सं० हि० (निश्चयार्थक)] एक अव्यय जिसका व्यवहार ज़ोर देने के लिये या निश्चय, अल्पता, परिमिति तथा स्वीकृति आदि सूचित करने के लिये होता है। संज्ञा पुं० दे० "हिय", "हृदय"। क्रि० अ० ब्रजभाषा के 'होनो' (=होना) क्रिया के भूतकाल 'हो' (=था) का स्त्री० रूप। थी।

हीअ—संज्ञा पुं० दे० "हिय"।

हीक—संज्ञा स्त्री० [सं० हिक्का] १. हिचकी। २. हलकी अरुचिकर गंध।

हीचना*†—क्रि० अ० दे० "हिचकना"।

हीठना—क्रि० अ० [सं० अधिष्ठा] १. पास जाना। समीप होना। फटकना। २. जाना। पहुँचना।

हीन—वि० [सं०] १. परित्यक्त। छोड़ा हुआ। २. रहित। शून्य। वंचित। ३. निम्नकोटि का। निकृष्ट। घटिया। ४. ओछा। नीच। बुरा। ५. तुच्छ। नाचीज। ६. सुख-समृद्धि-रहित। दीन। ७. अल्प। कम। थोड़ा। ८. दीन। नम्र। *संज्ञा पुं० १. प्रमाण के अयोग्य साक्षी।* बुरा गवाह। २. अधम नायक। (साहित्य)

हीनकुल—वि० [सं०] नीच कुल का।

हीनक्रम—संज्ञा पुं० [सं०] काव्य में एक दोष जो उस स्थान पर माना जाता है जहाँ जिस क्रम से गुण गिनाए गए हों, उसी क्रम में गुणी न गिनाए जायँ।

हीनचरित—वि० [सं०] बुरे आचरणवाला।

हीनता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कमी। त्रुटि।

२ क्षुद्रता। तुच्छता। ३. ओछापन। ४. बुराई। निकृष्टता।
हीनत्व–संज्ञा पु० [सं०] हीनता।
हीनबल–वि० [सं०] कमजोर।
हीनबुद्धि–वि० [सं०] दुर्बुद्धि। मूर्ख।
हीनयान–संज्ञा पु० [सं०] बौद्ध सिद्धांत की आदि और प्राचीन शाखा जिसके ग्रंथ पाली भाषा में हैं। इसकी रचना बरमा और स्याम आदि में हुई है।
हीनरस–संज्ञा पु० [सं०] काव्य में एक दोष जो किसी रस का वर्णन करते समय उस रस के विरुद्ध प्रसंग लाने से होता है। यह वास्तव में रस विरोध ही है।
हीनवीर्य्य–संज्ञा पु० [सं०] कमजोर।
हीन-ह्यात–संज्ञा स्त्री० [अ०] जीवन-काल। अव्य० जब तक जीवन रहे, तब तक।
हीनांग–वि० [सं०] १ जिसका कोई अंग न हो। खंडित अंगवाला। २. अधूरा।
हीनोपमा–संज्ञा स्त्री० [सं०] काव्य में वह उपमा जिसमें बड़े उपमेय के लिये छोटा उपमान लाया जाय।
हीय, हीया*–संज्ञा पु० दे० ?"हिय"।
हीर–संज्ञा पु० [सं०] १ हीरा नामक रत्न। २ वज्र। बिजली। ३ सर्प। साँप। ४ छप्पय के ६२वें भेद का नाम। ५ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में भगण, सगण,नगण, जगण और रगण होते है। ६ एक मात्रिक छंद जिसमें ६, ६ और ११ के विराम से २३ मात्राएँ होती हैं। संज्ञा पु० [हिं० हीरा] १ किसी वस्तु के भीतर का सार भाग। गूदा या सत। सार। २ लकड़ी के भीतर का सार भाग। ३ शरीर की सार वस्तु। धातु। वीर्य्य। ४ शक्ति। बल।
हीरक–संज्ञा पु० [सं०] १ हीरा नामक रत्न। २ हीर छंद।
हीरा–संज्ञा पु० [सं० हीरक] एक रत्न या बहुमूल्य पत्थर जो अपनी चमक और कड़ाई के लिये प्रसिद्ध है। वज्रमणि। मुहा०—हीरे की कनी चाटना=हीरे का चूर खाकर आत्म-हत्या करना।
हीरा कसीस–संज्ञा पु० [हिं० हीर+सं० कसीस] लोहे का वह विकार जो देखने में कुछ हरापन लिये मटमैले रंग का होता है।
हीरामन–संज्ञा पु० [हिं० हीरा+मणि] तोते की एक कल्पित जाति जिसका रंग सोने का सा माना जाता है।
हीलना†*–क्रि० अ० दे० "हिलना"।
हीला–संज्ञा पु० [अ० हील] १ बहाना। मिस। यौ०—हीला हवाला=बहाना। २ निमित्त। द्वार। वसीला। व्याज।
ही ही–संज्ञा स्त्री० [अनु०] ही ही शब्द के साथ हँसने की क्रिया।
हुँ–अव्य० दे० "हू"। अव्य० स्वीकृति-सूचक शब्द। हाँ।
हुँकरना–क्रि० अ० दे० "हुंकारना"।
हुंकार–संज्ञा पु० [सं०] १ ललकार। डाँटने का शब्द। २ गर्जन। गरज। ३ चीत्कार। चिल्लाहट।
हुंकारना–क्रि०अ०[सं० हुंकार+ना(प्रत्य०)] १ डपटना। डाँटना। २ गरजना। ३ चिंघाड़ना। चिल्लाना।
हुँकारी–संज्ञा स्त्री० [अनु० हुँहुँ+करना] १ 'हुँ' करने की क्रिया। २ स्वीकृति-सूचक शब्द। हामी। संज्ञा स्त्री० दे० "बिकारी"।
हुँड़ार–संज्ञा पु० दे० "भेड़िया"।
हुंडी–संज्ञा स्त्री० [?] १ वह कागज जिस पर एक महाजन दूसरे महाजन को, कुछ रुपया देने के लिये, लिखकर किसी को रुपए के बदले में देता है। निधिपत्र। लोटपत्र। चेक। मुहा०—हुंडी सकारना=हुंडी के रुपए का देना स्वीकार करना। दर्शनी हुंडी=वह हुंडी जिसके दिखाते ही रुपए चुकता कर देने का नियम हो। २ उधार रुपए देने की एक रीति जिसमें लेनेवाले को साल भर में २०) या २५)

या १५) का २०) देना पड़ता है।
हुँत–प्रत्य० [प्रा० विभक्ति 'हिंतो] १. पुरानी हिंदी की पंचमी और तृतीया की विभक्ति। से। २. लिये। निमित्त। वास्ते। खातिर। ३. द्वारा। जरिए से।
हु*†–अव्य० [सं० उप] अतिरेक-सूचक शब्द। कथित के अतिरिक्त और भी।
हुआना–क्रि० अ० [अनु० हुआँ] 'हुआँ हुआँ' करना। गीदड़ों का बोलना।
हुकरना–क्रि० अ० दे० "हुँकारना"।
हुकारना–क्रि० अ० दे० "हुँकारना"।
हुकुम‡–संज्ञा पुं० दे० "हुक्म"।
हुकूमत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. प्रभुत्व। शासन। आधिपत्य। अधिकार।
मुहा०—हुकूमत चलाना=प्रभुत्व या अधिकार से काम लेना। हुकूमत जताना=अधिकार या बड़प्पन प्रकट करना। रोब दिखाना।
२. राज्य। शासन। राजनीतिक आधिपत्य।
हुक्का–संज्ञा पुं० [अ०] तंबाकू का धुआँ खींचने या तंबाकू पीने के लिये विशेष रूप से बना एक नलयंत्र। गड़गड़ा। फ़रशी।
हुक्का-पानी–संज्ञा पुं० [अ० हुक्का + हिं० पानी] एक दूसरे के हाथ से हुक्का तंबाकू, जल आदि पीने और पिलाने का व्यवहार। बिरादरी की राह-रस्म।
मुहा०—हुक्का पानी बंद करना = बिरादरी से अलग करना।
हुक्काम–संज्ञा पुं० [अ० 'हाकिम' का बहुवचन रूप] हाकिम लोग। अधिकारीवर्ग।
हुक्म–संज्ञा पुं० [अ०] १. बड़े का वचन जिसका पालन कर्त्तव्य हो। आज्ञा। आदेश।
मुहा०—हुक्म उठाना = १. हुक्म रद करना। २. आज्ञा पालन करना = हुक्म की तामील। *आज्ञा का पालन। हुक्म चलाना या जारी करना* = आज्ञा देना। हुक्म तोड़ना = आज्ञा भंग करना। हुक्म देना = आज्ञा करना। हुक्म बजाना या बजा लाना = आज्ञा पालन करना। हुक्म मानना = आज्ञा पालन करना।
२. स्वीकृति। अनुमति। इजाजत। ३. अधिकार। प्रभुत्व। शासन। ४. विधि। नियम। शिक्षा। ५. ताश का एक रंग।
हुक्मनामा–संज्ञा पुं० [अ० + फ़ा०] वह कागज़ जिस पर हुक्म लिखा हो। आज्ञा-पत्र।
हुक्मबरदार–संज्ञा पुं० [अ० + फ़ा०] आज्ञाकारी। सेवक। अधीन।
हुक्मी–वि० [अ० हुक्म] १. दूसरे की आज्ञा के अनुसार काम करनेवाला। पराधीन। २. जरूर असर करनेवाला। अचूक। अव्यर्थ। ३. अवश्य कर्त्तव्य। लाजिमी। जरूरी।
हुजूम–संज्ञा पुं० [अ०] भीड़।
हुजूर–संज्ञा पुं० [अ०] १. किसी बड़े का सामीप्य। समक्षता। २. बादशाह या हाकिम का दरबार। कचहरी। ३. *बहुत बड़े लोगों के संबोधन का शब्द।*
हुजूरी–संज्ञा पुं० [अ० हुजूर] १. खास सेवा में रहनेवाला नौकर। २. दरबारी। मुसाहब।
वि० हुजूर का। सरकारी।
हुज्जत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. व्यर्थ का तर्क। २. विवाद। झगड़ा। तकरार।
हुज्जती–वि० [हिं० हुज्जत] हुज्जत करनेवाला।
हुड़काना–क्रि० स० [हिं० हुड़क]' १. भयभीत और दुःखी करना। २. तरसाना।
हुड़दंग–संज्ञा पुं० [अनु० हुड़ + हिं० दंगा] धमाचौकड़ी। उपद्रव। उत्पात।
हुडुक–संज्ञा पुं० [सं० हुडुक] एक प्रकार का बहुत छोटा ढोल।
हुडुक्क†*–संज्ञा पु० दे० "हुडुक"।
हुत–वि० [सं०] हवन किया हुआ। आहुति दिया हुआ।
*क्रि० अ० 'होना' क्रिया का प्राचीन भूत-*कालिक रूप। था।*
हुता†*–क्रि० अ० [हिं० हुत] 'होना' क्रिया का पुरानी अवधी हिंदी का भूतकलिक रूप। था।
हुताशन–संज्ञा पु० [सं०] अग्नि। आग।
हुति*–अव्य० [प्रा० हिंतो] १. अपादान

और शरण कारक का चिह्न। द्वारा। २ ओर से। तरफ से।
हुते-अव्य० [प्रा० हिंतो] १ से। द्वारा। २ ओर से। तरफ से।
हुतो*-क्रि० अ० ['होना' क्रि० का ब्रज० भूत-कालिक रूप] था।
हुदकाना|*-क्रि० स० [देश०] उकसाना। उभारना।
हुदना*|-क्रि० अ० [स० हुडन] स्तब्ध होना। रुकना।
हुदहुद-सज्ञा पु० [अ०] एक चिड़िया।
हुन-सज्ञा पु० [स० हूण] १ मोहर। अश-रफी। २ सोना। सुवर्ण।
मुहा०—हुन बरसना=धन की बहुत अधिकता होना।
हुनर-सज्ञा पु० [फा०] १ कला। कारी-गरी। २ गुण। करतब। ३ कौशल। युक्ति। चतुराई।
हुनरमद-वि० [फा०] कला कुशल। निपुण।
हुमकना-क्रि० अ० [अनु० हुँ] १ उछलना कूदना। २ पैरो से ज़ोर लगाना। ३ पैरो को आघात के लिये ज़ोर से उठाना। ४ चलने का प्रयत्न करना। ठुमकना। (बच्चो का) ५ दबाने के लिये ज़ोर लगाना।
हुमगना-क्रि० अ० दे० 'हुमकना"।
हुमा-सज्ञा स्त्री० [फा] एक कल्पित पक्षी जिसके सबध में प्रसिद्ध है कि जिसके ऊपर उसकी छाया पड जाय, वह बादशाह हो जाता है।
हुमेल-सज्ञा स्त्री० [अ० हमायल] अशर्फियो को गूँथकर बनी हुई एक प्रकार की माला।
हुरदगा-सज्ञा पु० दे० "हुडदग"।
हुरमत-सज्ञा स्त्री० [अ०] आबरू। इज्जत। मान। मर्यादा।
हुरुमयी-सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का नृत्य।
हुलसना-क्रि० अ० [हिं० हुलास] १ आनद से फूलना। खुशी से भरना। २ उभरना। उठना। ३ उमडना। बढना।
*क्रि० स० आनदित करना।
हुलसाना-क्रि० स० [हिं० हुलसना] आन-दित करना।
क्रि० अ० दे० "हुलसना"।
हुलसी-सज्ञा स्त्री० [हिं० हुलसना] १ हुलास। उल्लास। आनद की उमग। २ किसी किसी के मत म तुलसीदासजी की माता का नाम।
हुलहुल-सज्ञा पु० [?] एक छोटा पौधा।
हुलास-सज्ञा पु० [स० उल्लास] १ आनद की उमग। उल्लास। आह्लाद। २ उत्साह। हौसला। ३ उमगना। बढना। सज्ञा स्त्री० सुँघनी। नस्यरोशन।
हुलिया-सज्ञा पु० [अ० हुलिय] १ शकल। आकृति। २ किसी मनुष्य के रूप रग आदि का विवरण।
मुहा०—हुलिया कराना या लिखाना= किसी आदमी का पता लगाने के लिये उसकी शक्ल सूरत आदि पुलिस म दर्ज कराना।
हुल्लड-सज्ञा पु० [अनु०] १ शोरगुल। हल्ला। कोलाहल। २ उपद्रव। ऊधम। धम। ३ हलचल। आदोलन।
हुल्लास-सज्ञा पु० [स० उल्लास] चौपाई और त्रिभगी के मेल से बना एक छद।
हुश-अव्य० [अनु०] अनुचित बात मुँह स निकालने पर रोकने का शब्द।
हुसियार*|-वि० दे० 'होशियार'।
हुसैन-सज्ञा पु० [अ०] मुहम्मद साहब के दामाद अली के बेटे जो करबला के मैदान म मारे गये थे। मुहर्रम इन्ही के शोक में मनाया जाता है।
हुस्न-सज्ञा पु० [अ०] १ सौंदर्य। सुदरता। लावण्य। २ तारीफ की बात। खूबी।
हुस्यार|*-वि० दे० "होशियार"।
हूँ-अव्य० [अनु०] स्वीकार-सूचक शब्द। अव्य० दे० 'हू"।
सर्व० वर्तमान कालिक क्रिया "है" का उत्तम पुरुष एकवचन का रूप।
हूँकना-क्रि० अ० [अनु०] १ गाय का दुःख सूचित करने के लिये धीरे धीरे बोलना।

हुँड़कना। २. हुंकार शब्द करना। वीरों का ललकारना या डपटना।

हूँठा–संज्ञा पुं० [हिं० हूँठ] साढ़े तीन का पहाड़ा।

हूँस–संज्ञा स्त्री० [सं० हिंस] १. ईर्ष्या। डाह। २. बुरी नजर। टोक। ३. कोसना। फटकार।

हूँसना–क्रि० स० [हिं० हूँस] नजर लगाना। क्रि० अ० १. ईर्ष्या से लजाना। २. ललचाना। ३. कोसना।

हू†–अव्य० [सं० उप = आगे] एक अतिरेक-बोधक शब्द। भी।

हूक–संज्ञा स्त्री० [सं० हिक्का] १. छाती या कलेजे का दर्द। साल। २. दर्द। पीड़ा। कसक। ३. संताप। दुःख। ४. आशंका। खटका।

हूकना–क्रि० अ० [हिं० हूक] १. सालना। दुखना। दर्द करना। २. पीड़ा से चौंक उठना।

हूटना*†–क्रि० अ० [सं० हुड् = चलना] १. हटना। टलना। २. मुड़ना। पीठ फेरना।

हूठा–संज्ञा पुं० [हिं० अँगूठा] १. अँगूठा दिखाने की अशिष्ट मुद्रा। ठेंगा। २. भद्दी या गँवारू चेष्टा।

मुहा०–हूठा देना = ठेंगा दिखाना। अशिष्टता से हाथ मटकाना।

हूण–संज्ञा पुं० [?] एक प्राचीन मंगोल जाति जो प्रबल होकर एशिया और योरप के सभ्य देशों पर आक्रमण करती हुई फैली थी।

हू-बहू–वि० [अ०] ज्यों का त्यों। ठीक। वैसा ही। बिलकुल समान।

हूर–संज्ञा स्त्री० [अ०] मुसलमानों के स्वर्ग की अप्सरा।

हूल–संज्ञा स्त्री० [सं० शूल] १. भाले, डंडे आदि की नोक को ज़ोर से ठेलना अथवा भोंकना। २. हूक। शूल। पीड़ा। संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. कोलाहल। हल्ला। धूम। २. हर्षध्वनि। ३. ललकार। ४. खुशी। आनंद।

हूलना–क्रि० स० [हिं० हूल] १. लाठी, भाले आदि की नोक को ज़ोर से ठेलना या घुसाना। गड़ाना। २. शूल उत्पन्न करना।

हूला–संज्ञा पुं० [हिं० हूलना] हूलने की क्रिया या भाव।

हूश–वि० [हिं० हुड़] १. असभ्य। उजड्ड। २. अशिष्ट। बेहूदा।

हूह–संज्ञा स्त्री० [अनु०] हुँकार। कोलाहल। युद्धनाद।

हूह–संज्ञा पुं० [अनु०] अग्नि के जलने का शब्द। धायँ धायँ।

हृत–वि० [सं०] १. पहुँचाया हुआ। २. हरण किया हुआ। लिया हुआ।

हृति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ले जाना। हरण। २. नाश। ३. लूट।

हृत्कंप–संज्ञा पुं० [सं०] १. हृदय की कँपकँपी। २. अत्यंत भय। दहशत।

हृत्पिंड–संज्ञा पुं० [सं०] कलेजा।

हृद्–संज्ञा पुं० [सं०] हृदय। दिल।

हृदयंगम–वि० [सं०] मन में बैठा हुआ। समझ में आया हुआ।

हृदय–संज्ञा पुं० [सं०] १. छाती के भीतर बाईं ओर का मांसकोश जिसमें से होकर शुद्ध लाल रक्त नाड़ियों के द्वारा शरीर में संचार करता है। दिल। कलेजा। २. छाती। वक्षस्थल।

मुहा०—हृदय विदीर्ण होना = अत्यंत शोक होना।

३. प्रेम, हर्ष, शोक, करुणा, क्रोध आदि मनोविकारों का स्थान। ४. अंतःकरण। मन। ५. अंतरात्मा। विवेक-बुद्धि।

हृदयग्राही–संज्ञा पुं० [सं० हृदयग्राहिन्] [स्त्री० हृदयग्राहिणी] मन को मोहित करनेवाला।

हृदयनिकेत–संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।

हृदय-विदारक–वि० [सं०] अत्यंत शोक, करुणा या दया उत्पन्न करनेवाला।

हृदयवेधी–वि० [सं० हृदय-वेधिन्] [स्त्री० हृदयवेधिनी] १. मन को अत्यंत मोहित

करनेवाला। २ अत्यंत शोक करनेवाला। अत्यंत मृदु।

हृदयस्पर्शी–वि० [सं० हृदयस्पर्शिन्] [स्त्री० हृदयस्पर्शिणी] हृदय पर प्रभाव डालनेवाला।

हृदयहारी–वि० [सं० हृदयहारिन्] [स्त्री० हृदयहारिणी] मन को लुभानेवाला।

हृदयेश, हृदयेश्वर–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० हृदयेश्वरी] १ प्यारा। प्रियतम। २ पति।

हृदि–क्रि० वि० [सं० हृद्] हृदय में।

हृद्गत–वि० [सं०] १. हृदय का। आनरिक। भीतरी। २ मन में बैठा या जमा हुआ। ३ प्रिय। रुचिकर।

हृद्य–वि० [सं०] १ हृदय का। भीतरी। २ अच्छा लगनेवाला। ३ सुंदर। लुभावना। ४ स्वादिष्ट। जायकेदार।

हृषि–संज्ञा स्त्री० [सं०] हर्ष। आनंद।

हृषीकेश–संज्ञा पु० [सं०] १ विष्णु। २ श्रीकृष्ण। ३ पूस का महीना।

हृष्ट–वि० [सं०] हर्षित। अत्यंत प्रसन्न।

हृष्ट-पुष्ट–वि० [सं०] मोटा। ताजा। तगड़ा।

हें हें–संज्ञा पु० [अनु०] १ धीरे से हँसने का शब्द। २ गिड़गिड़ाने का शब्द।

हेंगा†–संज्ञा पु० [सं० अभ्यंग] जुते हुए खेत की मिट्टी बराबर करने का पाटा। पहटा।

हे–अव्य० [सं०] संबोधन का शब्द। ‡क्रि० अ० ब्रजभाषा के 'हो' (=था) का बहुवचन। थे।

हेकड़–वि० [हिं० हिया+कड़ा] १ हृष्ट-पुष्ट। मोटा-ताजा। २ जबरदस्त। प्रबल। प्रचंड। बली। ३ अक्खड़। उजड्ड।

हेकड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० हेकड़ी] १ अक्खड़पन। उग्रता। २ जबरदस्ती। बलात्कार।

हेच–वि० [फ़ा०] १. तुच्छ। नाचीज। २ निःसार। पोच।

हेठा–वि० [हिं० हेठ=नीचे] १ नीचा। २ घटकर। कम। ३ तुच्छ। नीच।

हेठापन–संज्ञा पु० [हिं० हेठा+पन (प्रत्य०)] तुच्छता। नीचता। क्षुद्रता।

हेठी–संज्ञा स्त्री० [हिं० हेठा] प्रतिष्ठा में कमी। मानहानि। तौहीन।

हेत*–संज्ञा पु० दे० "हेतु"।

हेतु–संज्ञा पु० [सं०] १ वह बात जिसे ध्यान में रखकर कोई दूसरी बात की जाय। अभिप्राय। उद्देश्य। २ कारक या उत्पादक विषय। कारण। वजह। सबब। ३ उत्पन्न करनेवाला व्यक्ति या वस्तु। ४ वह बात जिसके होने से कोई दूसरी बात सिद्ध हो। ५ तर्क। दलील। ६ एक अर्थालंकार जिसमें कारण ही कार्य्य कह दिया जाता है।
संज्ञा पु० [सं० हित] १ लगाव। प्रेम-संबंध। २ प्रेम। प्रीति। अनुराग।

हेतुवाद–संज्ञा पु० [सं०] १ तर्कविद्या। २ कुतर्क। नास्तिकता।

हेतुशास्त्र–संज्ञा पु० [सं०] तर्कशास्त्र।

हेतुहेतुमद्भाव–संज्ञा पु० [सं०] कार्य्य-कारण भाव। कारण और कार्य्य का संबंध।

हेतुहेतुमद्भूत काल–संज्ञा पु० [सं०] क्रिया के भूतकाल का वह भेद जिसमें ऐसी दो बातों का न होना सूचित होता है जिनमें दूसरी पहली पर निर्भर होती है। (व्या०)

हेतूपमा–संज्ञा स्त्री० दे० "उत्प्रेक्षा" (२)।

हेत्वपह्नुति–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह अपह्नुति अलंकार जिसमें प्रकृत के निषेध का कुछ कारण भी दिया जाय।

हेत्वाभास–संज्ञा पु० [सं०] किसी बात को सिद्ध करने के लिये उपस्थित किया हुआ वह कारण जो कारण सा प्रतीत होता हुआ भी ठीक न हो। असत् हेतु।

हेमंत–संज्ञा पु० [सं०] छः ऋतुओं में से एक। अगहन और पूस। शीतकाल।

हेम–संज्ञा पु० [सं० हेमन्] १ हिम। पाला। बर्फ़। २ सोना। स्वर्ण।

हेमकूट–संज्ञा पु० [सं०] हिमालय के उत्तर का एक पर्वत। (पुराण)

हेमगिरि–संज्ञा पु० [सं०] सुमेरु पर्वत।

हेमचन्द्र–संज्ञा पु० [सं०] एक प्रसिद्ध जैन आचार्य्य जो ईसवी सन् १०८९ और ११७३ के बीच हुए थे और गुजरात के

राजा कुमारपाल के गुरु थे। इन्होंने व्याकरण और कोश के कई ग्रंथ लिखे हैं।
हेमपर्वत–संज्ञा पुं० [सं०] सुमेरु पर्वत।
हेमाद्रि–संज्ञा पुं० [सं०] १. सुमेरु पर्वत। २. ईसा की १३वीं शताब्दी के एक प्रसिद्ध ग्रंथकार।
हेय–वि० [सं०] १. छोड़ने योग्य। त्याज्य। २. बुरा। खराब। निकृष्ट।
हेरंब–संज्ञा पुं० [सं०] गणेश।
हेर†*–संज्ञा स्त्री० [हिं० हेरना] ढूँढ़। तलाश।
संज्ञा पुं० दे० "अहेर"।
हेरना|*–क्रि० स० [सं० आखेट] १. ढूँढ़ना। खोजना। पता लगाना। २. देखना। ताकना। ३. जाँचना। परखना।
हेरना फेरना–क्रि० स० [हेरना (अनु०)+हिं० फेरना] १. इधर का उधर करना। २. बदलना। परिवर्तन करना।
हेर फेर–संज्ञा पु० [हिं० हेरना + फेरना] १. घुमाव। चक्कर। २. बात का आडंबर। ३. कुटिल युक्ति। दावँ पेंच। चाल। ४. अदल-बदल। उलट-पलट। ५. अंतर। फर्क। ६. अदला-बदला। विनिमय।
हेरवाना†–क्रि० स० [हिं० हेराना] गँवाना।
क्रि० स० [हिं० हेरना का प्रेर०] ढुँढ़वाना।
हेराना†–क्रि० अ० [सं० हरण] १ खो जाना। पास से निकल जाना। २. न रह जाना। अभाव हो जाना। ३. लुप्त हो जाना। नष्ट हो जाना। ४. फीका पड़ जाना। मंद पड़ जाना। ५. सुध-बुध भूलना। तन्मय होना।
क्रि० स० [हिं० हेरना का प्रेर०] खोजवाना। ढुँढ़वाना। तलाश कराना।
हेराफेरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० हेरना + फेरना] १. हेर-फेर। अदल-बदल। २. इधर का उधर होना या करना।
हेरी†*–संज्ञा स्त्री० [संबोधन हे+री] पुकार। मुहा०–हेरी देना=पुकारना। आवाज़ देना।
हेल–संज्ञा पु० [हिं० हील] १. कीचड़, गोबर इत्यादि। २. गोबर का खेप।
हेलना*–क्रि० अ० [सं० हेलन] १. क्रीड़ा करना। केलि करना। २. हँसी ठट्ठा करना।
क्रि० स० तुच्छ समझना।
†क्रि० अ० [हिं० हिलना] १. प्रवेश करना। घुसना। २. तैरना।
हेल मेल–संज्ञा पुं० [हिं० हिलना+मिलना] १. मिलने जुलने आदि का संबंध। घनिष्ठता। मित्रता। रब्त-ज़ब्त। २. संग। साथ। सुहबत। ३. परिचय।
हेला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. तुच्छ समझना। तिरस्कार। २. खेलवाड़। क्रीड़ा। ३. प्रेम की क्रीड़ा। केलि। ४. नायक से मिलने के समय नायिका का विविध विलास या विनोद-सूचक मुद्रा। (साहित्य)
संज्ञा पुं० [हिं० हल्ला] १. पुकार। हाँक। २. धावा। आक्रमण। चढ़ाई।
संज्ञा पुं० [हिं० रेलना] ठेलने की क्रिया या भाव।
संज्ञा पुं० [हिं० हेल] [स्त्री० हेलिन] गलीज़ उठानेवाला। हलालखोर। मेहतर।
हेली*–अव्य० [संबो० हे + अली] हे सखी! संज्ञा स्त्री० सहेली। सखी।
हेवंत*–संज्ञा पुं० दे० "हेमंत"।
है–अव्य० १. एक आश्चर्य-सूचक शब्द। २. एक निषेध या असम्मति-सूचक शब्द।
क्रि० अ० सत्तार्थक क्रिया 'होना' के वर्तमान रूप "है" का बहुवचन।
है–क्रि० अ० [हिं० क्रि० 'होना' का वर्तमान-कालिक एक-वचन रूप।
‡* संज्ञा पु० दे० "हय"।
हैकड़–वि० दे० "हेकड़"।
हैकल–संज्ञा स्त्री० [सं० हय + गल] १. एक गहना जो घोड़ों के गले में पहनाया जाता है। २. तावीज़। हुमेल।
हैज़ा–संज्ञा पु० [अ० हैज़ः] दस्त और कै की बीमारी। विशूचिका।
हैफ–अव्य० [अ०] अफसोस। हाय। हा।
हैबत–संज्ञा स्त्री० [अ०] भय। दहशत।
हैबर*–संज्ञा पुं० [सं० हयवर] अच्छा घोड़ा।

हैम–वि० [स०] [स्त्री० हैमी] १ सोने का। स्वर्णमय। २ सुनहरे रंग का।
वि० [स०] १. हिम-संबंधी। २ जाड़े या बर्फ में होनेवाला।
हैमवत–वि० [स०] [स्त्री० हैमवती] हिमालय का। हिमालय-संबंधी।
संज्ञा पु० १ हिमालय का निवासी। २ एक राक्षस। ३ एक संप्रदाय का नाम।
हैमवती–संज्ञा स्त्री० [स०] १. पार्वती। २ गंगा।
हैरत–संज्ञा स्त्री० [अ०] आश्चर्य्य। अचंभा।
हैरान–वि० [अ०] [संज्ञा हैरानी] १ आश्चर्य्य से स्तब्ध। चकित। भौचक्का। २ परेशान। व्यग्र। तंग।
हैवान–संज्ञा पु० [अ०] १ पशु। जानवर। २ बेवकूफ या गँवार आदमी।
हैवानी–वि० [अ० हैवान] १ पशु का। २ पशु के करने के योग्य।
हैसियत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ योग्यता। सामर्थ्य। शक्ति। २ वित्त। बिसात। आर्थिक दशा। ३ श्रेणी। दरजा। ४ धन। दौलत।
हैहय–संज्ञा पु० [स०] १ एक क्षत्रिय वंश जो यदु से उत्पन्न कहा गया है और कलचुरि के नाम से प्रसिद्ध है। २ हैहयवंशी कार्त्तवीर्य्य सहस्रार्जुन।
हैहयराज, हैहयाधिराज–संज्ञा पु० [स०] हैहयवंशी कार्त्तवीर्य्य सहस्रार्जुन।
हैं हैं–अव्य० [हा हा !] शोक या दुःख-सूचक शब्द। हाय। अफसोस।
हों–क्रि० अ० सत्तार्थक क्रिया 'होना' का बहुवचन संभाव्य काल का रूप।
होंठ–संज्ञा पु० [स० ओष्ठ] मुख विवर का उभरा हुआ किनारा जिससे दाँत ढँके रहते हैं। ओष्ठ। रदच्छद।
मुहा०–होंठ काटना या चबाना=भीतरी क्रोध या क्षोभ प्रकट करना।
हो–संज्ञा पु० [स०] पुकारने का शब्द या संबोधन।
क्रि० अ० सत्तार्थक क्रिया 'होना' के अन्य-पुरुष संभाव्य काल तथा मध्यम पुरुष बहुवचन के वर्तमान काल का रूप।
*† ब्रज की वर्तमान-कालिक क्रिया "है" का सामान्य भूत का रूप। था।
होई–संज्ञा स्त्री० [हि० होना] एक पूजन जो दीवाली के आठ दिन पहले होता है।
होड़–संज्ञा स्त्री० [स० हार=विवाद] १ शर्त। बाजी। २ एक दूसरे से बढ़ जाने का प्रयत्न। स्पर्द्धा। ३ समान होने का प्रयास। बराबरी। ४. हठ। जिद।
होड़ाबादी–संज्ञा स्त्री० दे० "होड़ाहोड़ी"।
होड़ाहोड़ी–संज्ञा स्त्री० [हि० होड़] १ लाग-डाँट। चढ़ा-ऊपरी। २ शर्त। बाजी।
होत†–संज्ञा स्त्री० [हि० होना] १ पास में धन होने की दशा। संपन्नता। २ वित्त। सामर्थ्य। समाई।
होतब, होतव्य–संज्ञा पु० दे० "होनहार"।
होतव्यता–संज्ञा स्त्री० दे० "होनहार"।
होता–संज्ञा पु० [स० होतृ] [स्त्री० होत्री] यज्ञ में आहुति देनेवाला।
होनहार–वि० [हि० होना + हारा (प्रत्य०)] १ जो अवश्य होगा। जो होने को है। भावी। २ जिसके बढ़ने या श्रेष्ठ होने की आशा हो। अच्छे लक्षणोंवाला।
संज्ञा पु० वह बात जो होने को हो। वह बात जो अवश्य हो। होनी। भविष्यता।
होना–क्रि० अ० [स० भवन] १ प्रधान सत्तार्थक क्रिया। अस्तित्व रखना। उपस्थित या मौजूद रहना।
मुहा०—किसी का होना=१ किसी के अधिकार में, अधीन या आज्ञावर्ती होना। २ किसी का प्रेमी या प्रेमपात्र होना। ३ किसी का आत्मीय, कुटुंबी या संबंधी होना। सगा होना कहीं का हो रहना=(कहीं से) न लौटना। बहुत रुक या ठहर जाना। (कहीं से) होकर या होते हुए=१ गुजरते हुए। बीच से। मध्य से। २ बीच में ठहरते हुए। ३ पहुँचना। जाना। मिलना। हो आना=भेंट करने के लिये जाना। मिल आना। होते पर=पास में धन होने की दशा में। संपन्नता में।

२. एक रूप से दूसरे रूप में आना। अन्य दशा, स्वरूप या गुण प्राप्त करना।
मुहा०—हो बैठना = १. बन जाना। अपने को समझने लगना या प्रकट करने लगना। २. मासिक धर्म से होना।
३. साधित किया जाना। कार्य्य का संपन्न किया जाना। भुगतना। सरना।
मुहा०—हो जाना या चुकना = समाप्ति पर पहुँचना। पूरा होना।
४. बनना। निर्माण किया जाना। ५. किसी घटना या व्यवहार का प्रस्तुत रूप में आना। घटित किया जाना।
मुहा०—होकर रहना = अवश्य घटित होना। न टलना। जरूर होना।
६. किसी रोग, व्याधि, अस्वस्थता, प्रेतबाधा आदि का आना। ७. बीतना। गुज़रना। ८. परिणाम निकलना। फल देखने में आना। ९. प्रभाव या गुण दिखाई पड़ना। जन्म लेना। १०. काम निकलना। प्रयोजन या कार्य्य सधना। ११. काम बिगड़ना। हानि पहुँचना।
होनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० होना] १. उत्पत्ति। पैदाइश। २. हाल। वृत्तांत। ३. होनेवाली बात या घटना। वह बात जिसका होना ध्रुव हो। भावी। भवितव्यता। ४. वह बात जिसका होना संभव हो।
होम—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं के उद्देश्य से अग्नि में घृत, जौ आदि डालना। हवन। यज्ञ।
मुहा०—होम कर देना = १. जला डालना। भस्म कर देना। २. नष्ट करना। बरबाद करना। ३. उत्सर्ग करना। छोड़ देना।
होमकुंड—संज्ञा पुं० [सं०] होम की अग्नि रखने का गड्ढा।
होमना—क्रि० स० [सं० होम + ना (प्रत्य०)] १. देवता के उद्देश्य से अग्नि में डालना। हवन करना। २. उत्सर्ग करना। छोड़ देना। ३. नष्ट करना। बरबाद करना।
होमीय—वि० [सं०] होम-संबंधी। होम का।
होरसा—संज्ञा पुं० [सं० घर्ष = घिसना] पत्थर की गोल छोटी चौकी जिस पर चंदन घिसते या रोटी बेलते हैं। चौका।
होरहा—संज्ञा पुं० [सं० होलक] चने का पौधा।
होरा—संज्ञा पुं० दे० "होला"।
संज्ञा स्त्री० [सं० (यूनानी भाषा से गृहीत)] १. एक अहोरात्र का २४वाँ भाग। घंटा। ढाई घड़ी का समय। २. एक राशि या लग्न का आधा भाग। ३. जन्मकुंडली।
होरिल—संज्ञा पुं० [देश०] नवजात बालक।
होरिहार*†—संज्ञा पुं० [हिं० होरी] होली खेलनेवाला।
होरी—संज्ञा स्त्री० दे० "होली"।
होला—संज्ञा स्त्री० [सं०] होली का त्योहार। संज्ञा पुं० सिखों की होली जो होली के दूसरे दिन होती है।
संज्ञा पुं० [सं० होलक] १. आग में भूनी हुई हरे चने या मटर की फलियाँ। २. चने का हरा दाना। होरहा।
होलाष्टक—संज्ञा पुं० [सं०] होली के पहले के आठ दिन जिनमें विवाह-कृत्य नहीं किया जाता। जरता-बरता।
होलिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. होली का त्योहार। २. लकड़ी, घास-फूस आदि का वह ढेर जो होली के दिन जलाया जाता है। ३. एक राक्षसी का नाम।
होली—संज्ञा स्त्री० [सं० होलिका] १. हिंदुओं का एक बड़ा त्योहार जो फाल्गुन के अंत में मनाया जाता है और जिसमें लोग एक दूसरे पर रंग-अबीर आदि डालते हैं।
मुहा०—होली खेलना = एक दूसरे पर रंग, अबीर आदि डालना।
२. लकड़ी, घास-फूस आदि का वह ढेर जो होली के दिन जलाया जाता है। ३. एक प्रकार का गीत जो होली के उत्सव में गाया जाता है।
होश—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. बोध या ज्ञान की वृत्ति। संज्ञा। चेतना। चेत।
यौ०—होश व हवास = चेतना और बुद्धि।
मुहा०—होश उड़ना या जाता रहना = भय या आशंका से चित्त व्याकुल होना। सुध बुध

भूल जाना। होश करना = सचेत होना। बुद्धि ठीक करना। होश दंग होना = चित्त चकित होना। आश्चर्य से स्तब्ध होना। होश सँभालना=अवस्था बढ़ने पर सब बातें समझने-बूझने लगना। सयाना होना।। होश में आना = चेतना प्राप्त करना। बोध या ज्ञान की वृत्ति फिर लाभ करना। होश की दवा करो = बुद्धि ठीक करो। समझ-बूझकर बोलो। होश ठिकाने होना = १ बुद्धि ठीक होना। भ्रांति या मोह दूर होना। २ चित्त की अधीरता या व्याकुलता मिटना। ३ दंड पाकर भूल का पछतावा। होना।

२ स्मरण। सुध। याद।

मुहा०—होश दिलाना = याद दिलाना।

३ बुद्धि। समझ। अक्ल।

होशियार–वि० [फा०] १ चतुर। समझदार। बुद्धिमान। २ दक्ष। निपुण। कुशल। ३ सचेत। सावधान। खबरदार। ४ जिसने होश सँभाला हो। सयाना। ५ चालाक। धूर्त।

होशियारी–सज्ञा स्त्री० [फा०] १ समझदारी। बुद्धिमानी। चतुराई। २ निपुणता। कौशल। सावधानी।

होस*‡–सज्ञा पु० दे० होश व 'हौस'।

हौं*†–सर्व० [स० अहम्] ब्रजभाषा का उत्तम पुरुष एक-वचन सर्वनाम। मैं।

क्रि० अ० 'होना' क्रिया का वर्तमान-कालिक उत्तम पुरुष एक वचन रूप। हूँ।

हौंकना*†–क्रि० अ० [हिं० हुंकार] १ गरजना। हुंकार करना। २ हाँफना।

हौंस–सज्ञा स्त्री० दे० 'हौस'।

हौ*–अव्य० [हिं० हाँ] स्वीकृति-सूचक शब्द। हाँ। (मध्य प्रदेश)।

क्रि० अ० १ होना क्रिया का मध्यम पुरुष एक-वचन का वर्तमान-कालिक रूप। हो। २ होना का भूतकाल। था।

हौआ–सज्ञा पु० [अनु० हौ] लड़कों को डराने के लिये एक कल्पित भयानक वस्तु का नाम। हाऊ। भकाऊँ।

सज्ञा स्त्री० दे० 'हौवा'।

हौज–सज्ञा पु० [अ०] पानी जमा रहने का चहबच्चा। कुंड।

हौद–सज्ञा पु० दे० "हौज"।

हौदा–सज्ञा पु० [फा० हौज] हाथी की पीठ पर कसा जानेवाला आसन जिसके चारों ओर रोक रहती है।

हौरा†–सज्ञा पु० [अनु० हाव, हाव] शोर। गुल। हल्ला। कोलाहल।

हौल–सज्ञा पु० [अ०] डर। भय।

मुहा०—हौल पैठना या बैठना = जी में डर समाना।

हौलदिल–सज्ञा पु० [फा०] १ कलेजा धड़कना। दिल की धड़कन। २ दिल धड़कने का रोग।

वि० १ जिसका दिल धड़कता हो। २ दहशत में पड़ा हुआ। डरा हुआ।

हौलदिला–वि० [फा० हौलदिल] डरपोक।

हौलनाक–वि० [अ० + फा०] भयानक।

हौली–सज्ञा स्त्री० [स० हाला = मद्य] वह स्थान जहाँ मद्य उतरता और बिकता है। आबकारी। कलवरिया।

हौलू–वि० [हिं० हौल] जिसके मन में जल्दी हौल या भय उत्पन्न हो।

हौले–क्रि० वि० [हिं० हरुआ] १ धीरे। आहिस्ता। मंद गति से। शिघ्रता के साथ नहीं। २ हलके हाथ से। जोर से नहीं।

हौवा–सज्ञा स्त्री० [अ०] पैगम्बरी मतों के अनुसार सबसे पहली स्त्री जो मनुष्य जाति की आदि माता मानी जाती है।

सज्ञा पु० दे० हौआ।

हौस–सज्ञा स्त्री० [अ० हवस] १ चाह। प्रबल इच्छा। लालसा। कामना। २ उमंग। हर्षोत्कंठा। ३ हौसला। उत्साह। साहसपूर्ण इच्छा।

हौसला–सज्ञा पु० [अ०] १ किसी काम को करने की आनंदपूर्ण इच्छा। उत्कंठा। लालसा।

मुहा०—हौसला निकालना = इच्छा पूरी होना। अरमान निकलना।

२ उत्साह। जोश और हिम्मत।

मुहा०—हौसला पस्त होना = उत्साह न

रह जाना। जोश ठंडा पड़ना।
३. प्रफुल्लता। उमंग। बढ़ी हुई तबीयत।
हौसलामंद–वि०[फ़ा०]१.लालसा रखनेवाला।
२. बढ़ी हुई तबीयत का। ३.उत्साही। साहसी
ह्याँ†*–अव्य० दे० "यहाँ"।
ह्यो‡*–संज्ञा पुं० दे० "हियो", "हिया"।
ह्रद–संज्ञा पुं० [सं०] १.बड़ा ताल। भील।
२. सरोवर। तालाब। ३. ध्वनि। आवाज। ४. किरण।
ह्रदिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी।
ह्रस्व–वि० [सं०] १. छोटा। जो बड़ा न हो। २. नाटा। छोटे आकार का।
३. कम। थोड़ा। ४. नीचा। ५. तुच्छ। नाचीज।
संज्ञा पुं० १. वामन। बौना। २. दीर्घ की अपेक्षा कम खींचकर बोला जानेवाला स्वर। जैसे—अ, इ, उ।
ह्रस्वता–संज्ञा स्त्री० [सं०] छोटाई। लघुता।
ह्रास–संज्ञा पुं० [सं०] १. कमी। घटती। घटाव। क्षीणता। अवनति। २. शक्ति, वैभव, गुण आदि की कमी। ३. ध्वनि। आवाज।
ह्री–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लज्जा। शर्म। हया। २. दक्ष प्रजापति की एक कन्या जो धर्म की पत्नी मानी जाती है।
ह्वाँ†*–अव्य० दे० "वहाँ"।

छूटे हुए शब्द और अर्थ

अँकना–क्रि० अ० [सं० अंकन] आँका या कूता जाना।
अँकवारना–क्रि० स० [हिं० अँकवार + ना] गले लगाना। आलिंगन करना।
अंकुरना–संज्ञा पुं० [सं०] चिड़ियों का घोसला। नीड़।
अंगरक्षक–संज्ञा पुं० [सं०] राजा आदि के साथ रहकर उनके शरीर की रक्षा करनेवाले सेवक या सैनिक।
अँगरेजियत–संज्ञा स्त्री० [हिं० अँगरेज + इयत (प्रत्य०)] अँगरेजीपन। अँगरेजी रंग-ढंग।
अँचवना–क्रि० अ० [सं० आचमन] १. भोजन के उपरांत हाथ और मुँह धोना। २. आचमन करना।
अंजुमन–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] सभा। मजलिस।
अंतच्छद–संज्ञा पुं० [सं० अन्तश्छद] अंदर से ढकनेवाला। आच्छादन।
अंततः–क्रि० वि० [सं०] १. अंत में। २. कम से कम।
अंतरंग-सभा–संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी संस्था की वह चुनी हुई छोटी सभा या समिति जो उसकी व्यवस्था करती है। प्रबंध-कारिणी।
अंतरंगी–वि० दे० "अंतरंग"।
अंतरतम–संज्ञा पुं० [सं० अन्तस् + तम (प्रत्य०)] १. हृदय का सबसे भीतरी भाग। २. विशुद्ध अंतःकरण। ३. किसी वस्तु का सबसे भीतरी भाग।
अँतराना–क्रि० स० [सं० अन्तर] १. अलग करना। पृथक करना। २. अंदर करना।
अँतरिया–संज्ञा पुं० [हिं० अंतर] एक दिन का अंतर देकर आनेवाला ज्वर। पारी का बुखार। इकतरा।
अंतर्घट–संज्ञा पुं० [सं०] अंतःकरण। हृदय।
अंतर्ज्ञान–संज्ञा पुं० [सं०] मन के अंदर होनेवाला ज्ञान। अंतर्बोध। प्रज्ञा।
अंतर्दाह–संज्ञा पुं० [सं०] हृदय का दाह या

जलन। मन या घोर कष्ट।
अतर्नयन–सज्ञा पु० [स०] भीतरी या ज्ञान के नयन।
अतर्निहित–वि० [स०] अदर छिपा हुआ।
अतर्पट–सज्ञा पु० [स०] १ आड। ओट। परदा। २ अतच्छद।
अतर्भुक्त–वि० [स०] भीतर आया हुआ। शामिल। अतर्भूत।
अतर्मना–वि० [स० अन्त + मन] अनमना। उदास।
अतर्मल–सज्ञा पु० [स०] मन का कलुष या बुराई।
अतर्राष्ट्रीय–वि० [स० अतस + राष्ट्रीय] ससार के सब या अनेक राष्ट्रों से सबध रखनेवाला। सार्वराष्ट्रीय।
अतर्वेदना–सज्ञा स्त्री० [स०] अतःकरण की वेदना। भीतरी या मानसिक कष्ट।
अतस्तल–सज्ञा पु० [स०] शरीर का भीतरी या मध्यवर्ती स्थान। मन।
अतस्ताप–सज्ञा पु० [स०] मानसिक कष्ट।
अँथऊ–सज्ञा पु० [?] सूर्यास्त से पहले का भोजन। (जैन)
अभसार–सज्ञा पु० [स० अभ + सार] मोती।
अशत–क्रि० वि० [स०] किसी अश म।
अशुमाला–सज्ञा स्त्री० [स०] सूर्य की किरणें या उनका जाल।
अकराल–वि० [स० अ + कराल] १ जो कराल या भीषण न हो। २ सुदर।
अकरुण–वि० [स०] जिसम करुणा न हो। कठोर हृदय।
अकर्तृत्व–सज्ञा पु० [स०] १ कर्तृत्व का न होना। २ कर्तृत्व का अभिमान न होना।
अकर्मण्यता–सज्ञा स्त्री० [स०] अकर्मण्य होने का भाव। निकम्मापन। आलस्य।
अकलुष–वि० [स०] १ जिसम किसी प्रकार का कलुष न हो। २ पवित्र। शुद्ध। ३ निर्मल। साफ।
अकालिक–वि० [स०] असमय म होनेवाला। बमौका।
अकिंचित्कर–वि० [स०] जिससे कुछ न हो सके। अशक्त। असमर्थ।
अकूल–वि० [स०] जिसका किनारा या अत न हो।
अकृती–वि० [स० अ + कृती] जिसम कुछ न हो सके। अकर्मण्य।
अकोट*–वि० [स० अ + कोटि] १ करोड़। २ बहुत अधिक।
अक्ली–वि० [अ०] १ अक्ल या बुद्धि सबधी। २ तर्क सिद्ध। वाजिब।
अक्षोभ–वि० [स०] सहनशील। शात।
अखबार-नवीस–सज्ञा पु० [अ० + फा० भाव० अखबार-नवीसी] अखबार लिखने वाला। सपादक।
अखब–वि० [स०] जो खव या छोटा न हो। बहुत बडा।
अखलाक–सज्ञा पु० [अ०] १ आचार। २ मुरव्वत। शील। ३ नीति।
अखात–सज्ञा पु० [स०] १ उपसागर। खाडी। २ भील। बडा तालाब।
अखिलेश–सज्ञा पु० [स०] अखिल जगत का स्वामी। ईश्वर।
अगता–क्रि० वि० [स० अग्रत] अग्रिम। पेशगी।
अगत्या–क्रि० वि० [स०] १ जब कोई और गति न हो। लाचारी हालत म।
अगराना*–क्रि० स० [स० अग + राग] दुलार दिखाना।
अगरो*–वि० [स० आग्र] १ अगला। आगे का। २ बडा। ३ निपुण। चतुर।
अगहार–सज्ञा पु० [स० अग्राह्य] वह भूमि जिसे बचन का अधिकार न हो।
अगिन गोला–सज्ञा पु० [हिं० अगिन + गोला] वह गोला जो फटने पर आग लगा दे।
अगुसारना*–क्रि० स० [स० अग्रसर] आगे बढ़ाना। आगे करना।
अगेह–वि० [स० अ + हिं० गेह] जिसका घर बार न हो।
अगोई–वि० स्त्री० [स० अ + गोप] प्रकट। जाहिर।
अग्निपूजक–सज्ञा पु० [स०] १ अग्नि को

देवता मानकर उनकी पूजा करनेवाला। २. पारसी।

अग्निवर्त्त–संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक प्रकार के मेघ।

अग्रदूत–संज्ञा पुं० [सं०] वह जो आगे बढ़कर किसी के आने की सूचना दे।

अग्रसोची–वि० [सं० अग्र + हिं० सोचना] पहले से सोचनेवाला। दूरदर्शी।

अचगरा*–वि० [सं० अत्याचार] छेड़छाड़ करनेवाला। शरारती। नटखट।

अचाह–संज्ञा स्त्री० [हिं० अ + चाह] चाह या इच्छा का अभाव। अरुचि।
वि० जिसे चाह या इच्छा न हो।

अछोर–वि० [हिं० अ + छोर] १. जिसका ओर छोर न हो। २. बेहद। बहुत। अधिक।

अजगैबी–वि० [हिं० अजगैब] १. छिपा हुआ। गुप्त। २. आकस्मिक। अचानक आया हुआ।

अजहुँ, अजहूँ*–क्रि० वि० [हिं० आज + हूँ (प्रत्य०)] १. आज तक। २. अभी तक।

अजाब–संज्ञा पुं० [अ०] १. दुःख। कष्ट। २. विपत्ति। आफत। ३. पीड़ा का पाप।

अजूरा*–संज्ञा पुं० [हिं० अ + जुड़ना] जो जुड़ा न हो। पृथक्। अलग।
संज्ञा पुं० [अ०] १. मजदूरी। २. भाड़ा।

अजोरना*–क्रि० स० [हिं० जोड़ना] इकट्ठा करना। जमा करना।
क्रि० वि० दे० "अँजोरना"।

अट्ट–संज्ञा पुं० [सं०] १. अट्टालिका। अटारी। २. मकान में सबसे ऊपर का कोठा। ३. हाट। बाजार।
वि० १. ऊँचा। २. जिसमें जोर का शब्द हो।

अडिग–वि० [हिं० अ + डिगना] न डिगनेवाला। दृढ़। स्थिर।

अडीठ–वि० [हिं० अ + डीठ] १. जो दिखाई न दे। २. छिपा हुआ। गुप्त।

अणि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नोक। २. धार। ३. सीमा। हद। ४. किनारा।
वि० बहुत छोटा।

अणी*–संबो० [सं० अयि] अरी। एरी।

अतलांतक–संज्ञा पुं० [अं० एटलाण्टिक से सं०] यूरोप और आफ्रिका के पश्चिमी तटों से अमेरिका के पूर्वी तटों तक फैला हुआ महासागर। एटलाण्टिक।

अतवान–वि० [सं० अति] बहुत। ज्यादा।

अतिगति–संज्ञा स्त्री० [सं०] मोक्ष। मुक्ति।

अतिरेक–संज्ञा पुं० [सं०] १. अधिकता। ज्यादती। २. व्यर्थ की वृद्धि। बाहुल्य।

अथयना*–क्रि० अ० [सं० अस्तमन] अस्त होना।

अथावत*–वि० [सं० अस्तिमत] डूबा हुआ। अस्त।

अदम–संज्ञा पुं० [अ०] १. अभाव। न होना। २. परलोक।

अदानी–वि० [सं०] कंजूस। कृपण।

अदायगी–संज्ञा स्त्री० [अ० अदा] ऋण या देन का चुकाया जाना।

अदायाँ–वि० [हिं० अ + दायाँ] जो दायाँ या अनुकूल न हो। प्रतिकूल। वाम।

अद्यतन–वि० [सं०] १. आजकल का। वर्तमान समय का। २. इस समय तक का।

अधखुला–वि० [हिं० आधा + खुला] आधा खुला हुआ।

अधफर–संज्ञा पुं० [सं० अर्द्ध + फलक] १. बीच का भाग। अधर। २. अंतरिक्ष।

अधबुध–वि० [सं० अर्द्ध + बुध] जिसका ज्ञान अधूरा हो। अर्द्ध शिक्षित।

अधराधर–संज्ञा पुं० [सं० अध + अधर] नीचे का होंठ।

अधार्मिक–वि० [सं०] १ जो धार्मिक न हो। २. अधर्मी। दुराचारी।

अधिक्रम–संज्ञा पुं० [सं०] आरोहण। चढ़ाव।

अधिनायकतंत्र–संज्ञा पुं० [सं०] वह राज्य-प्रणाली जिसमें राज्य के सब कार्य उसके अधिनायक की ही इच्छा और आज्ञा से होते हों।

अधिनायकी–संज्ञा स्त्री० [सं० अधिनायक] अधिनायक का कार्य, पद या भाव।

अधीत–वि० [सं०] जो पढ़ा जा चुका हो।

अधोवस्त्र–संज्ञा पुं० [सं०] नीचे के अंगों में पहनने का कपड़ा। धोती।
अध्यात्मवाद–संज्ञा पुं० [सं०] वह सिद्धान्त जिसमें ब्रह्म और आत्मा का ज्ञान ही मुख्य माना जाता हो।
अन-करीब–क्रि० वि० [अ०] करीब-करीब। प्राय। लगभग।
अनघ–वि० [सं०] १ पाप रहित। निर्दोष। २ शुद्ध। पवित्र।
संज्ञा पुं० वह जो पाप न हो। पुण्य।
अनचाहा–वि० [हिं० अन + चाहना] जिसकी इच्छा न की जाय।
अनजनमा–वि० [हिं० अन + जनमना] १ जिसका जन्म न हुआ हो। २ ईश्वर का एक विशेषण।
अनधिकृत–वि० [सं०] जिस पर अधिकार न किया गया हो।
अनधिगत–वि० [सं०] बिना जाना या समझा हुआ। अज्ञात।
अनपत्य–वि० [सं० स्त्री० अनपत्या] नि-संतान।
अनपराध–वि० [हिं० अन+अपराध] जिसका कोई अपराध न हो। निर्दोष।
अनपेक्षा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अपेक्षा का न होना। २ लापरवाही।
अनबूझ–वि० [हिं० अन + बूझना] १ ना-समझ। अज्ञान। २ जो बूझा या समझा न जा सके।
अन-बोला–संज्ञा पुं० [हिं० अन + बोलना] बोलचाल या बातचीत न होना।
वि० दे० "अनबोलता"।
अनभिमत–संज्ञा पुं० [सं० अन + अभिमत] अभिमत का न होना। असम्मति।
अनभीष्ट–वि० [सं० अन् + अभीष्ट] जो अभीष्ट न हो।
अनरसना*–क्रि० अ० [हिं० अनरस] १ उदास होना। २ नाराज होना। ३ दुःखी होना।
अनर्ह–वि० [सं०] अयोग्य। अपात्र।
अनल्प–वि० [सं०] जो अल्प या थोड़ा न हो। बहुत।
अनवकाश–संज्ञा पुं० [सं०] अवकाश या फुरसत न होना।
अनस्तित्व–संज्ञा पुं० [सं० अन् + अस्तित्व] अस्तित्व का न होना। अभाव।
अनहित–वि० [हिं० अनहित] अनहित चाहनेवाला। अशुभचिंतक।
अनातप–संज्ञा पुं० [सं०] छाया। छाँह।
वि० ठंढा। शीतल।
अनार्यता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अनार्य होने का भाव या धर्म। २ नीचता। क्षुद्रता।
अनासक्त–वि० [सं०] [संज्ञा अनासक्ति] १ जो किसी विषय में आसक्त न हो। २ निर्लेप।
अनिच्छा–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० अनिच्छित] इच्छा न होना।
अनिर्बंध–वि० [सं०] १ जिसके लिए कोई बंधन न हो। २ स्वतंत्र।
अनिर्वाप्य–वि० [सं०] १ जिसका निर्वापन न हो सके। २ जो बुझाई न जा सके। (आग)
अनीप्सित–वि० [सं०] [स्त्री० अनीप्सिता] जिसकी चाह न हो। अनचाहा।
अनीह–वि० [सं०] [संज्ञा अनीहा] १ इच्छा रहित। निस्पृह। २ निश्चेष्ट। ३ बेपरवाह।
अनुजीवी–संज्ञा पुं० [सं० अनुजीविन्] [स्त्री० अनुजीविनी] १ आश्रित। २ सेवक। नौकर।
अनुत्तीर्ण–वि० [सं०] १ जो उत्तीर्ण न हुआ हो। जो पार न उतरा हो। २ जो परीक्षा में पूरा न उतरा हो।
अनुदार–वि० [सं०] [भाव० अनुदारता] १ जो उदार न हो। संकीर्ण। २ नीच। तुच्छ। ३ कृपण। कंजूस।
अनुनाद–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अनुनादित] १ प्रतिध्वनि। २ जोर का शब्द।
अनुपद–वि० [सं०] पीछे पीछे चलनेवाला। अनुगामी। क्रि० वि० १ पीछे पीछे। २ कदम कदम पर। ३ जल्दी। शीघ्र। ४

पीछे। बाद।

अनुपादेय–वि० [सं०] जो उपादेय या ठीक न हो।

अनुप्राणित–वि० [सं०] जिसमें प्राण या जीवनी-शक्ति भरी गई हो।

अनुरूपना*–क्रि० अ० [सं० अनुरूप+ना (प्रत्य०)] किसी के अनुरूप होना। क्रि० स० किसी के अनुरूप बनाना।

अनुवाद्य–वि० [सं०] १. अनुवाद करने के योग्य। २. जिसका अनुवाद हो।

अनुशय–संज्ञा पुं० [सं०] १. घनिष्ठ संबंध। २. परिणाम। ३. पश्चात्ताप। पछतावा। ४. घृणा। ५. पुराना वैर। ६. वाद-विवाद। झगड़ा।

अनुशोचना–संज्ञा स्त्री० [सं०] अनुताप। पछतावा। अफ़सोस।

अनुश्रुत–वि० [सं०] वैदिक परंपरा से चला आया हुआ।

अनुश्रुति–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह जो लोग परंपरा से सुनते चले आए हों। परंपरागत कथा या उक्ति।

अनुष्ठित–वि० [सं०] [स्त्री० अनुष्ठिता] जिसका अनुष्ठान, प्रयोग या कार्य किया गया हो।

अनुसंधि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गुप्त परामर्श या संधि। २. षड्यंत्र। कुचक्र।

अनूअर*–क्रि० वि० [सं० अनवरत ?] निरंतर। लगातार। वि० दे० "अनूतर"।

अनूजरा*–वि० [हिं० अन+ऊजरा] १. जो उज्वल न हो। २. मैला।

अनेऊ*–वि० सं० [अनृत ?] १. बुरा। खराब। २. टेढ़ा-मेढ़ा। कुटिल।

अनैतिक–वि० [सं०] जो नैतिक न हो। नीति-विरुद्ध।

अन्यतम–वि० [सं०] १. बहुतों में से एक। २. सबसे बढ़कर। प्रधान। मुख्य।

अन्यून–वि० [सं०] [संज्ञा अन्यूनता] १. जो न्यून न हो। २. बहुत। अधिक।

अन्वितार्थ–संज्ञा पुं० [सं०] १. अन्वय के द्वारा निकलनेवाला अर्थ। २. अंदर छिपा या मिला हुआ अर्थ।

अपकारिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] अपकार करने की क्रिया या भाव।

अपगत–वि० [सं०] [संज्ञा अपगति] १. भागा हुआ। २. हटा हुआ। ३. मरा हुआ। ४. नष्ट।

अपगा–संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी। दरिया।

अपघन–संज्ञा पुं० [सं०] शरीर। वि० बिना बादल का। मेघ-रहित।

अपचय–संज्ञा पुं० [सं०] १. नाश। बरबादी। २. गँवाना। खोना।

अपचिति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पूजा। २. नाश।

अपतोस*–संज्ञा पुं० [सं० अप+तोष] दुःख। रंज।

अपध्वंस–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अपध्वंसी, अपध्वस्त] १. विनाश। क्षय। २. अधःपतन। ३. अपमान। ४. पराजय। हार।

अपनाम–संज्ञा पुं० [सं०] बदनामी। निंदा।

अपनोदन–संज्ञा पुं० [सं०] १. हटाना। २. खंडन। तोड़ना। ३. नाश।

अपबस*–वि० [हिं० अपना+वश] अपने वश या काबू का।

अपभ्रष्ट–वि० [सं०] १. गिरा हुआ। पतित। २. बिगड़ा हुआ। विकृत।

अपमार्ग–संज्ञा पुं० [सं०] बुरा रास्ता। कुपंथ।

अपयोग–संज्ञा पुं० [सं०] १. बुरा योग। २. कुसमय। ३. अशकुन।

अपरबल*–वि० [सं० प्रबल] प्रबल। बलवान्।

अपराग–संज्ञा पुं० [सं०] १. द्वेष। वैर। २. अरुचि।

अपरिवर्त्तनीय–वि० [सं०] जिसमें कोई परिवर्तन या फेर बदल न हो सके।

अपलक–वि० [सं० अ+हिं० पलक] जिसकी पलकें न गिरें। क्रि० वि० बिना पलक झपकाए। टक लगाए।

अपलाप–संज्ञा पु० [सं०] व्यर्थ की बकवाद।
अपलोक–संज्ञा पु० [सं०] १ बदनामी। २ मिथ्या दोषारोपण। अपवाद।
अपवर्जन–संज्ञा पु० [सं०] [वि० अपवर्जित] १. त्यागना। २ मुक्त करना। छोड़ना।
अपसवना*–क्रि० अ० [सं० अपसरण] खिसकना। भागना। चल देना।
अपस्वर–संज्ञा पु० [सं०] बुरा, बेसुरा या कर्कश स्वर।
अपहारी–संज्ञा पु० [स्त्री० अपहारिणी] दे० "अपहर्त्ता"।
अपा*–संज्ञा पु० [हिं० आपा] घमंड। गर्व।
अपिंडी–वि० [सं० अपिंडिन्] पिंड या शरीर रहित। अशरीरी।
अपेक्ष्य–वि० [सं०] १ अपेक्षा करने के योग्य।
२ दे० "अपेक्षित"।
अपैठ*–वि० [हिं० अ + पैठना] जहाँ पैठ न हो सके। दुर्गम। अगम।
अप्रकट–वि० [सं०] जो प्रकट न हो। छिपा हुआ। गुप्त।
अप्रत्याशित–वि० [सं०] जिसकी आशा न की गई हो। अचानक होनेवाला।
अप्रमाद–संज्ञा पु० [सं०] प्रमाद का अभाव। बुद्धि का ठीक ठिकाने होना।
वि० प्रमाद रहित।
अबस–क्रि० वि० [अ०] व्यर्थ।
वि० [सं० अवश] जो अपने वश में न हो।
अबाँह*–वि० [हिं० अ + बाँह] १ जिसकी बाँह न हो। निहत्था। २. जिसकी बाँह पकड़नेवाला कोई न हो। अनाथ।
अबूत*–वि० [हिं० अ + पूत] १ निकम्मा। व्यर्थ का। २ निसंतान।
अबेध–वि० [हिं० अ + बेधना] जो बेधा या छेदा न गया हो।
अब्जद–संज्ञा पु० [अ०] १ वर्णमाला। २ अरबी में अक्षरों द्वारा अंक सूचित करने की प्रणाली।
अब्बा–संज्ञा पु० [फा० बाबा] पिता।
अब्रू–संज्ञा स्त्री० [फा०] भौंह।
अभयकर–वि० [सं०] जो भयंकर न हो। वि० दे० "अभयकर"।
अभयकर–वि० [सं० अभय + कर (प्रत्य०)] अभयदान देनेवाला।
अभावना–वि० [हिं० अ + भाना] जो अच्छा न लगे। अप्रिय।
अभावनीय–वि० [सं०] जिसका पहले से अनुमान या विचार न किया गया हो। अकल्पित।
अभाषण–संज्ञा पु० [सं०] भाषण या बातचीत न करना।
अभिज्ञा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्मृति। याद। २ बुद्ध का अलौकिक ज्ञान-बल जो ध्यान की चारों अवस्थाओं के बाद होता है।
अभिभाषण–संज्ञा पु० [सं०] भाषण। व्याख्यान। वक्तृता।
अभियान–संज्ञा पु० [सं०] १ चढ़कर या चलकर जाना। २ चढ़ाई। धावा।
अभिरत–वि० [सं०] १ लीन। अनुरक्त। २ युक्त। सहित।
अभीप्सा–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० अभीप्सित, अभीप्सु] किसी वस्तु के पाने की नितांत इच्छा। उत्कट अभिलाषा।
अमनैक–संज्ञा पु० [सं० अम्नायिक] १ सरदार। २ हकदार। अधिकारी। ३ ढीठ।
अमरीका–संज्ञा पु० दे० "अमेरिका"।
अमरीकी–वि० [हिं० अमेरिका] अमेरिका महादेश का। अमेरिका संबंधी।
संज्ञा पु० अमेरिका का निवासी।
अमलिन–वि० [सं०] जो मलिन न हो। स्वच्छ। साफ।
अमाँ–अव्य० [हिं० ऐ + फा० मियाँ] मुसलमानों का एक संबोधन। ऐ मियाँ।
अमानतनामा–संज्ञा पु० [अ० + फा०] वह पत्र जिस पर अमानत में रखी हुई चीजों का विवरण हो।
अमेरिका–संज्ञा पु० [अ०] पश्चिमी गोलार्द्ध का महादेश जो उत्तरी और दक्षिणी दो भागों में है।
अमेल, अमेली–वि० [हिं० अ + मेल] १

असंबद्ध। २. जिसमें मेल-मिलाप न हो।
अमेव–वि० दे० "अमेय"।
अमोद–वि० [सं०] मोद रहित।
संज्ञा पुं० दे० "अमोद"।
अयाँ–वि० [अ०] १. स्पष्ट। साफ़। २. प्रकट। जाहिर।
अयास–क्रि० वि० [सं० अ + आयास] बिना परिश्रम के। अनायास।
अरकान–संज्ञा पुं० [अ० रुक्न का बहु०] राज्य के प्रमुख कर्मचारी या स्तंभ।
अरजना*–क्रि० अ० [अ० + अर्ज] निवेदन करना।
अरदन–वि० [सं० अ + रदन] बिना दाँत का। वि० दे० "अर्दन"।
अराधी–वि० [सं० आराधन] आराधना या पूजा करनेवाला। पूजक।
अरुंतुद–वि० [सं०] १. मर्म तक को कष्ट पहुँचानेवाला। मर्मभेदी। २. कठोर। कर्कश।
अरुणाभ–वि० [सं०] लाल आभा से युक्त। लाली लिये हुए।
अरुरना*–क्रि० अ० [सं० अरुस्] दुःखी या पीड़ित होना।
अर्चि–संज्ञा स्त्री० [सं० अर्च्चि] १. सूर्य की किरण। २. धूप। ३. आग की लपट।
अर्जीनवीस–संज्ञा पुं० [अ० + फ़ा०] [भा० अर्जीनवीसी] वह जो दूसरों की अर्जियाँ लिखने का काम करता हो।
अर्धवृत्त–संज्ञा पुं० [सं०] मध्य-विंदु से समान अंतर पर खींची हुई गोल रेखा का आधा अंश। आधा गोला या वृत्त।
अर्भ–संज्ञा पुं० [सं०] १. बालक। २. शिशिर ऋतु। ३. शिष्य। ४. साग-पात।
अलंकरण–संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी चीज को अलंकारों या बेलबूटों से अलंकृत करना। सजाना। २. सजावट।
अलक्षण–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अलक्षणा] १. लक्षण का न होना। २. बुरा या अशुभ लक्षण। ३. वह जिसमें बुरे लक्षण हों।
अलबम–संज्ञा पुं० दे० "चित्राधार"।
अलल-हिसाब–क्रि० वि० [अ०] बिना हिसाब किए। उचित (धन देना या लेना)
अलहदगी–संज्ञा स्त्री० [अ०] जुदा होने का भाव। पार्थक्य। अलगाव।
अलात–संज्ञा पुं० [सं०] १. जलती हुई लकड़ी। २. अंगारा।
अलात-चक्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. जलती हुई लकड़ी को जोर से घुमाने से बना हुआ मंडल। २. बनेठी।
अलानिया–क्रि० वि० [अ०] खुले आम। सबके सामने।
अलामत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. निशान। चिह्न। २. पहचान।
अलिक–संज्ञा पुं० [सं०] ललाट। माथा। संज्ञा पुं० दे० "अलि"।
अलीजा*वि० [अ० आलीजाह] बहुत। अधिक।
अलक़त–वि० [अ०] काटा या रद्द किया हुआ।
अल्पमत–संज्ञा पुं० [सं०] थोड़े से लोगों का मत। बहुमत का उलटा। २. वे लोग जिनकी संख्या या मत औरों के मुकाबिले में कम हो। अल्प-संख्यक।
अल्प-संख्यक–वि० [सं०] गिनती के थोड़े या कम। संज्ञा पुं० वह समाज जिसके सदस्यों की संख्या औरों की अपेक्षा कम हो।
अल्लाह–संज्ञा पुं० [अ०] ईश्वर।
यौ० अल्लाहो-अकबर = ईश्वर महान् है।
अवकृपा–संज्ञा स्त्री० [सं०] कृपा का न होना। नाराजगी।
अवगुंफन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवगुंफित] गूँथना। गुहना।
अवचय–संज्ञा पुं० [सं०] फूल-फल आदि तोड़ या चुनकर इकट्ठा करना।
अवचेतन–वि० [सं०] जिसे केवल आंशिक चेतना हो पूरी पूरी न हो।
अवचेतना–संज्ञा स्त्री० [सं०] चेतना की वह प्रायः सुपुप्त सी अवस्था जिसमें किसी वस्तु का स्पष्ट ज्ञान नहीं होता।
अवतरित–वि० [सं०] १. ऊपर से नीचे उतारा हुआ। २. किसी दूसरे स्थल से लिया हुआ। उद्धृत। ३. जिसने अवतार धारण किया हो।

अवतीर्ण–वि० [सं०] १ ऊपर से नीचे आया हुआ। उतरा हुआ। २. जिसने अवतार धारण किया हो। उत्तीर्ण।
अवन–संज्ञा पु० [सं०] १ प्रसन्न करना। २ रक्षा। बचाव।
*संज्ञा स्त्री० दे० "अवनि"।
अवबोध–संज्ञा पु० [सं०] १ जागना। २ ज्ञान। बोध।
अवमर्दन–संज्ञा पु० [सं०] [वि० अवमर्दित] १ कष्ट पहुँचाना। २ कुचलना। रौंदना या मलना।
अवमानना संज्ञा स्त्री० दे० "अवमान"।
क्रि० स० किसी का अपमान करना।
अवर्त्त*–संज्ञा पु० [सं० आवर्त्त] १ पानी का भँवर या चक्कर। नाँच। २ घुमाव। चक्कर।
अवलिप्त–वि० [सं०] १ लगा या पोता हुआ। २ आसक्त। ३ घमंडी।
अवसित–वि० [सं०] १ जिसका अवसान या अंत हुआ हो। समाप्त। २ गत। बीता हुआ। ३ बदला हुआ। परिणत।
अवहेला–संज्ञा स्त्री० दे० "अवहेलना"।
अवाछनीय–वि० [सं० अवाञ्छनीय] जिसका होना अच्छा न समझा जाय। जिसके न होने की इच्छा की जाय।
अविकच–वि० [सं० अ+विकच] १ जो विकसित न हुआ हो। बिना खिला हुआ। २ जो सफल या पूर्णकाम न हुआ हो।
अविज्ञ–वि० [सं०] [भाव० अविज्ञता] अनजान। अज्ञानी।
अविभिन्न–वि० [सं०] जो विभिन्न या अलग न हो। एक में मिला हुआ। अभिन्न।
अविरुद्ध–वि० [सं०] जो विरुद्ध न हो। अनुकूल।
अविलंब–क्रि० वि० [सं०] बिना विलंब किए। तुरन्त। फौरन।
अविहित–वि० [सं०] जो विहित या ठीक न हो। अनुचित।
अवैध–वि० [सं०] विधि या क़ानून आदि के विरुद्ध। गैर कानूनी।
अशना–वि० स्त्री० [सं० अशन] खानेवाली।
अशनि–संज्ञा पु० [सं०] वज्र। बिजली।
अशरीरी–वि० [सं० अ+शरीरिन्] जिसका शरीर न हो। बिना शरीर का।
अशिव–संज्ञा पु० [सं०] अमंगल। अहित।
वि० अमंगल या अहित करनेवाला।
अशोच्य–वि० [सं०] जिसके संबंध में किसी प्रकार का शोच या चिंता करने की आवश्यकता न हो।
अश्म–संज्ञा पु० [सं०] १ पहाड़। पर्वत। २ पत्थर। ३ बादल। मेघ।
अष्टापद–संज्ञा पु० [सं०] १ सोना। स्वर्ण। २ मकड़ी। ३ कैलाश। ४ सिंह। शेर।
असंभवता–संज्ञा स्त्री० [सं०] असंभव होने का भाव। नामुमकिनपन।
असफल–वि० दे० "विफल"।
असफलता–संज्ञा स्त्री० दे० "विफलता"।
असमान–वि० [सं० अ+समान] जो समान या बराबर न हो। असम।
संज्ञा पु० दे० "आसमान"।
असावधानी–संज्ञा स्त्री० दे० "असावधानता"।
असिस्टेंट–संज्ञा पु० [अं०] सहायक। मददगार (कर्मचारी)।
असुंदर–वि० [सं० अ+सुंदर] जो सुंदर न हो। कुरूप। भद्दा।
असुग*–वि० [सं० आशुग] जल्दी चलनेवाला। संज्ञा पुं० १ वायु। २ तीर। बाण।
असुराई–संज्ञा स्त्री० [सं० असुर] १ असुरों का सा काम या व्यवहार। राक्षसता। २ नीचता। खोटाई।
असृक–संज्ञा पु० [सं०] रक्त। खून।
असोच–संज्ञा पु० [हिं० अ+सोच] चिंता-रहित। निश्चित।
वि० [सं० अशुचि] अपवित्र। अशुद्ध।
अस्थिरता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अस्थिर होने का भाव। २ चंचलता। डाँवाँडोलपन।
अहरह–क्रि० वि० [सं०] १ प्रतिदिन। २ नित्य। सदा। ३ लगातार। निरंतर।
अहवान*–संज्ञा पु० [सं० आह्वान] आवाहन। बुलाना।

अहिंसक–संज्ञा पुं० दे० "अहिंस"।
अहित्व–संज्ञा पुं० [सं० अहित] शत्रु। दुश्मन।
अहिपुच्छ–संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र का शत्रु वृत्र जो दैत्यों का सरदार था।
अहिवल्ली–संज्ञा स्त्री० [सं०] नागवल्ली। पान।
अहिसाव*–संज्ञा पुं० [सं० अहि + शावक] साँप का बच्चा। सँपोला।
आँड़ी–संज्ञा स्त्री० [सं० अण्ड] गाँठ। कंद।
आ-कटि–क्रि० वि० [सं०] कमर तक।
आकर भाषा–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह मूल प्राचीन भाषा जिससे कोई नई भाषा आवश्यकतानुसार नये नये शब्द ले।
आकाश-जल–संज्ञा पुं० [सं०] १. वर्षा का जल। २. ओस।
आकाश-दीप–संज्ञा पुं० दे० "आकाश दीया"।
आकुलि–संज्ञा पुं० [सं०] असुरों के एक पुरोहित का नाम।
आकुलित–वि० दे० "आकुल"।
आक्रीड़–संज्ञा पुं० [सं०] १. क्रीड़ा करने का स्थान। २. केलि-कानन। ३. उपवन। बाग। ४. बिहार। ५. दे० "क्रीड़ा"।
आंगिवर्त्त*–संज्ञा पुं० दे० "अग्निवर्त्त"।
आचित्य–वि० [सं०] सब प्रकार से चिंतन करने के योग्य।
संज्ञा पुं० [सं० अचिंत्य] ईश्वर जो चिंतन में नहीं आ सकता।
आजगव–संज्ञा पुं० [सं०] शिव का धनुष। पिनाक।
आजमूदा–वि० [फ़ा० आजमूदः] आजमाया हुआ। परीक्षित।
आज्य–संज्ञा पुं० [सं०] वे वस्तुएँ जिनकी आहुति दी जाय। हवि।
आठें–संज्ञा स्त्री० [हिं० आठ] अष्टमी।
आणविक–वि० [सं०] अणु-संबंधी।
आतपत्र–संज्ञा पुं० [सं०] छाता।
आतशबाज–संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह जो आतशबाजी के खिलौने और सामान बनाता है।
आतिथेय–संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० आतिथेयत्व] १. अतिथि की सेवा करनेवाला। २. अतिथि-सेवा की सामग्री।
आती-पाती–संज्ञा स्त्री० [हिं० पाती] लड़कों का एक प्रकार का खेल। पहाड़वा।
आत्मगत–वि० [सं०] १. अपने में आया या लगा हुआ। २. स्वगत।
आत्म-बल–संज्ञा पुं० [सं०] अपना अथवा अपनी आत्मा का बल।
आत्मवाद–संज्ञा पुं० [सं०] वह सिद्धांत जिसमें आत्मा और परमात्मा का ज्ञान ही सबसे बढ़कर माना जाता हो। अध्यात्म-वाद।
आत्मवादी–संज्ञा पुं० [सं० आत्मवादिन्] वह जो आत्मवाद को मुख्य मानता हो।
आत्मविद्–संज्ञा पुं० [सं०] वह जो आत्मा और परमात्मा का स्वरूप पहचानता हो। ब्रह्मविद।
आत्म-सम्मान–संज्ञा पुं० दे० "आत्मगौरव"।
आत्मसिद्धि–संज्ञा स्त्री० [सं०] मोक्ष।
आत्मोन्नति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आत्मा की उन्नति। २. अपनी उन्नति।
आदमक़द–वि० [अ० आदम + फ़ा० क़द] आदमी के ऊँचाई के बराबर (चित्र, मूर्त्ति या और कोई चीज़)।
आदि कवि–संज्ञा पुं० [सं०] १. वाल्मीकि ऋषि। २. शुक्राचार्य्य।
आदिष्ट–वि० [सं०] जिसे आदेश मिला हो।
आधारित–वि० [सं० आधार] किसी के आधार पर ठहरा हुआ। अवलंबित।
आनंदना*–क्रि० अ० [सं० आनन्द + ना (प्रत्य०)] आनंदित या प्रसन्न होना।
आनत–वि० [सं०] १. कुछ झुका हुआ। २. नम्र।
आन-तान–संज्ञा स्त्री० [हिं० आन] १. ठसक। शेखी। २. ज़िद। अड़। ३. बे सिर-पैर की बात।
आनरेबुल–वि० [अं०] प्रतिष्ठित। मान्य। (बड़े या छोटे लाट की काउंसिल के सदस्यों और हाईकोर्ट के जजों आदि की उपाधि।
आनुगत्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. अनुगत होने की क्रिया या भाव। २. अनुकरण।

आपत्य–वि० [स०] अपत्य या सतान सबधी। औलाद का।

आपरेशन–सज्ञा पु० [अ०] फोड़ों आदि की चीरफाड़। अस्त्र-चिकित्सा।

आपसी–वि० [हि० आपस] आपस का। पारस्परिक।

आपान–सज्ञा पु० [स०] १. मद्यपान का स्थान। २. शराबियों की मडली।

आब-दोज–वि० [फा०] १ पानी में डूबा हुआ। २ पानी के अदर डूब कर चलनेवाला। (जहाज या नाव)
सज्ञा पु० दे० "पनडुब्बी"।

आभासीन–वि० [स० आभास] आभास रूप में दिखाई देनेवाला।

आभिजात्य–सज्ञा पु० [स०] कुलीनों के लक्षण और गुण। कुल-सस्कार।

आमन–सज्ञा स्त्री० [देश०] वह भूमि जिसमे साल में एक ही फसल हो। २ जाडे में होनेवाला धान।

आमान्न–सज्ञा पु० [स०] कच्चा और बिना पकाया हुआ अन्न। सीधा। रसद।

आमोख्ता–सज्ञा पु० [फा० आमोख्त] पढे हुए पाठ की आवृत्ति। उद्धरणी।

आयोजना–सज्ञा स्त्री० दे० "आयोजन"।

आराइश–सज्ञा स्त्री० [फा०] सजावट।
यौ०—आरायशी सामान=कमरे की सजावट का सामान जैसे मेज, कुरसी आदि।

आराधनीय–वि० [स०] आराधना करने के योग्य। पूज्य। उपास्य।

आराधित–वि० [स०] जिसकी आराधना की जाय।

आराध्य–वि० [स०] १ जिसकी आराधना की जाय। २ आराधना करने के योग्य। पूज्य। उपास्य।

आरामगाह–सज्ञा स्त्री० [फा०] १ विश्राम करने का स्थान। २ सोने की जगह।

आरुण्य–सज्ञा पु० [स०] 'अरुण' का भाव। अरुणता। लाली।

आर्य्यत्व–सज्ञा पु० [स०] आर्य्य या श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न होने का भाव। आर्यपन।

आल-जाल–वि० [हि० आल=भभट] व्यर्थ का। ऊटपटाँग।

आलन–सज्ञा पु० [?] १. दीवार की मिट्टी में मिलाया जानेवाला घास-भूसा। २ साग में मिलाया जानेवाला आटा या बेसन।

आलापिनी–सज्ञा स्त्री० [स०] बाँसुरी।

आलारासी–वि० [?] १. लापरवाह। २. जिसमें या जहाँ ला-परवाही हो।

आलीजाह–वि० [अ०] बहुत ऊँचे पद या मर्यादावाला।

आलेखन–सज्ञा पु० [स०] १. लिखना। लिखाई। २ चित्र अकित करना।

आलोकन–सज्ञा पु० [स०] १ प्रकाश डालना। २ चमकाना। ३ दिखलाना।

आलोकित–वि० [स०] १ जिस पर प्रकाश पड रहा हो। २. चमकता हुआ।

आवज, आवझ–सज्ञा पु० [स० वाद्य] ताश नाम का बाजा।

आवर्जन–सज्ञा पु० [स०] [वि० आवर्जित] छोड देना। परित्याग।

आवर्जना–सज्ञा स्त्री० दे० "आवर्जन"।

आवारापना–सज्ञा पु० [फा० आवारा + हि० पन] आवारा होने का भाव। शुहदापन।

आशसा–सज्ञा स्त्री० [स०] [वि० आशसित] १ आशा। २ इच्छा। कामना। ३ सभावना। ४ सदेह। शक। ५ प्रशसा। तारीफ। ६ अभ्यर्थना। आदर-सत्कार।

आशातीत–वि० [स० आशा + अतीत] आशा से बढकर। बहुत अधिक।

आशिकाना–वि० [अ०] १ आशिकों का सा। २ प्रेम-पूर्ण।

आशिकी–सज्ञा स्त्री० [अ०] १ प्रेम का व्यवहार। २ आशिक या आसक्त होना। आसक्ति।

आशियाना–सज्ञा पु० [फा०] घोसला।

आशुग–वि० [स०] जल्दी चलनेवाला।
वि० १ वायु। हवा। २ बाण। तीर।

आश्वस्त–वि० [स०] जिसे आश्वासन मिला हो। जिसे तसल्ली दी गई हो।

आसवी–सज्ञा स्त्री० [स०] काठ की छोटी

चौकी।
आसवी–संज्ञा पुं० [सं० आसविन्] शराब पीनेवाला। मद्यप।
वि० आसव-संबंधी।
आस्तरण–संज्ञा पुं० [सं०] १. शय्या। २. बिछौना। विस्तर। ३. दुपट्टा।
आस्त्रव–संज्ञा पुं० [सं०] उबलते हुए चावल का फेन। २. पनाला। ३. कष्ट। पीड़ा। ४. इंद्रिय-द्वार।
आस्फालन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आस्फालित] १. आत्मश्लाघा। डींग। २. संघर्ष। ३. शब्द करना।
इंक–संज्ञा स्त्री० [अं०] स्याही। रोशनाई।
इंग–संज्ञा पुं० [सं० इङ्ग=संकेत] १. चलना। हिलना। २. संकेत। इशारा। ३. हाथी का दाँत।
इंगलिश–वि० [अं०] १. इँगलैंड संबंधी। अँगरेजी। संज्ञा स्त्री० अँगरेजी भाषा।
इंचार्ज–संज्ञा पु० [अं०] वह जिस पर किसी कार्य या विभाग का सारा भार हो।
इँडहर–संज्ञा पु० [?] उर्द की दाल में बना हुआ एक प्रकार का सालन।
इंतखाब–संज्ञा पुं० [अ०] १. चुनाव। निर्वाचन। २. पसंद। ३. पटवारी के खाते की नकल।
इंतहा–संज्ञा स्त्री० [अ० इन्तिहा] १. चरम सीमा। २. अंत। समाप्ति। ३. परिणाम। फल।
इंदुमणि–संज्ञा पुं० दे० "चंद्रकान्त मणि"।
इंदुर–संज्ञा पु० [सं० इन्दुर] चूहा।
इंद्रचाप–संज्ञा पु० दे० "इंद्रधनुष"।
इंद्रधनुषी–वि० [सं० इंद्रधनुष + ई (प्रत्य०)] इंद्रधनुष की तरह सात रंगोंवाला।
इंपीरियल–वि० [अं०] साम्राज्य संबंधी।
इंस्टिट्यूट–संज्ञा पुं० [अं०] सभा। संस्था।
इंस्पेक्टर–संज्ञा पु० [अं०] निरीक्षक।
इकौना–वि० [हिं० एक] [स्त्री० इकौनी] अनुपम। बेजोड़।
इख्तलाफ़–संज्ञा पुं० [अ०] १. विरोध। २ विगाड़। अनबन।
इच्छाचारी–वि० [सं० इच्छाचारिन्] [स्त्री० इच्छाचारिणी] अपनी इच्छा के अनुसार सब काम करनेवाला। स्वतंत्र-प्रकृति।
इज्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] यज्ञ।
इत्तहाम–संज्ञा पुं० [अ०] झूठा दोष। तोहमत।
इनकम–संज्ञा स्त्री० [अं०] आमदनी। आय।
इनकम-टैक्स–संज्ञा पुं० [अं०] आमदनी पर लगनेवाला टैक्स या कर।
इनफ्लुएंजा–संज्ञा पुं० [अं०] सर्दी के कारण होनेवाला एक प्रकार का ज्वर।
इरशाद–संज्ञा पुं० [अ०] आज्ञा। हुक्म।
इरषित*–वि० [सं० ईर्ष्या] जिससे ईर्ष्या की जाय।
इराक़–संज्ञा पु० [अ०] अरब का एक प्रदेश।
इषीका–संज्ञा स्त्री० [सं०] बाण। तीर।
इसराज–संज्ञा पुं० [?] सारंगी की तरह का एक प्रकार का बाजा।
इसरार–संज्ञा पुं० [अ०] हक। जिद।
इस्म–संज्ञा पुं० [अ०] नाम। संज्ञा।
इस्म-नवीसी–संज्ञा स्त्री० [अ० + फ़ा०] १. लोगों के नाम लिखना या लिखाना। २. अदालत मे अपने गवाहों की सूची पेश करना।
इह-लीला–संज्ञा स्त्री० [सं०] इस लोक की लीला या जीवन। जिंदगी।
ईड़ा–संज्ञा स्त्री० [सं०] स्तुति। प्रशंसा।
ईरानी–संज्ञा पुं० [फ़ा०] ईरान देश का निवासी। संज्ञा स्त्री० ईरान देश की भाषा।
वि० ईरान का। ईरान-संबंधी।
ईवनिंग–संज्ञा स्त्री० [अं०] संध्या।
ईवनिंग पार्टी–संज्ञा स्त्री० [अं०] संध्या समय दी जानेवाली जल-पान की दावत। सांध्य भोज।
ईश्वरता–संज्ञा स्त्री० [सं०] ईश्वर का गुण, धर्म या भाव। ईश्वरपन।
उंछशील–वि० [सं०] उंछ वृत्ति से जीवन-निर्वाह करनेवाला।
उँडेलना–क्रि० स० [सं० उद्धारण] १. तरल पदार्थ को दूसरे बरतन में डालना। ढालना।

२ तरल पदार्थ को निराना या फेंकना।

उकचन–संज्ञा पु० [सं० मुचकुंद] मुचकुंद या फूल।

उकसाहट–संज्ञा स्त्री० [हिं० उकसाना + हट (प्रत्य०)] उकसाने की क्रिया या भाव। उत्तेजना।

उकासी–संज्ञा स्त्री० [हिं० उकसाना] परदा आदि हट जाने से सामने आना। संज्ञा स्त्री० [सं० अवकाश] अवकाश। छुट्टी।

उखाड़ू–वि० [हिं० उखाड़ना] १ उखाड़नेवाला। २ चुगली खानेवाला।

उखालिया–संज्ञा पु० [सं० उप + काल] बहुत सबेरे का भोजन। सरगही।

उघाड़ा–वि० [हिं० उघड़ना] जिसके ऊपर कोई आवरण न हो।

उचत–वि० दे० "उचित"।

उचित–वि० [?] (वह दी हुई रकम) जिसका हिसाब बाद मे या खर्च होने पर मिलने को हो।

उच्चरित–वि० [सं०] १ जिसका उच्चारण हुआ हो। २ जिसका उल्लेख या कथन हुआ हो।

उच्चाकांक्षा–संज्ञा स्त्री० [सं०] बड़ी या महत्त्व की आकांक्षा।

उच्चाशा–संज्ञा स्त्री० [सं०] बड़ी या ऊँची आशा।

उच्छलन–संज्ञा पु० [सं०] [वि० उच्छलित] ऊपर उठने या उछलने की क्रिया। उछाल।

उजासना–क्रि० अ० [हिं० उजास] प्रकाशित होना। चमकना। क्रि० स० प्रकाशित करना। चमकाना।

उझिला–संज्ञा पु० [हिं० उझिलना] उबटन बनाने के लिये उबाली हुई सरसों। वि० कम गहरा। छिछला।

उटंग–वि० [सं० उत्तुंग] पहनने में ऊँचा या छोटा (कपड़ा)।

उड़नी मछली–संज्ञा स्त्री० [हिं० उड़ना + मछली] एक प्रकार की मछली जो पानी से निकलकर कुछ दूर तक उड़ती भी है।

उड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० उड़ना] १ मालखंभ की एक कसरत। २ कलाबाजी।

उड़ीसा–संज्ञा पु० [सं० ओड्र] उत्कल देश

उडेरना, उड़ेलना–क्रि० स० दे० "उँडेलना"।

उड्डयन-विभाग–संज्ञा पु० [सं०] राज्य का वह विभाग जिसके जिम्मे सब तरह के हवाई जहाजों आदि की व्यवस्था हो।

उतमंग*–संज्ञा पु० [सं० उत्तमांग] सिर।

उतरायल–वि० [हिं० उतरना] किसी के द्वारा पहनकर उतारा हुआ (कपड़ा)।

उतराई–संज्ञा स्त्री० [सं० उत्तर] उत्तर दिशा से आनेवाली हवा।

उताहल–क्रि० वि० [सं० उद् + त्वर] जल्दी से।

उत्कंठ–वि० [सं०] जिसे उत्कंठा हो। उत्कंठित।

उत्कर्ण–वि० [सं०] [भा० उत्कर्णता] जो सुनने के लिए कान खड़े करे।

उत्कलिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ तरंग। लहर। २ कली। ३ उत्कंठा। ४. मन का उद्वेग।

उत्कलित–वि० [सं०] १ तरंगों से युक्त। लहराता हुआ। २ खिला हुआ। ३ उत्कंठित। ४ उद्विग्न। अनमना।

उत्क्रांत–वि० [सं०] १ ऊपर की ओर चढ़नेवाला। २ उत्पन्न। ३ जिसका उल्लंघन या अतिक्रमण किया गया हो।

उत्खनन–संज्ञा पु० [सं०] [वि० उत्खात] खोदने की क्रिया। खोदाई।

उत्खाता–वि० [सं० उत्खातृ] खोदनेवाला।

उत्तमश्लोक–वि० [सं०] यशस्वी। कीर्तिशाली। संज्ञा पु० १ यश। कीर्ति। २ विष्णु।

उत्तमांग–संज्ञा पु० [सं०] सिर।

उत्सर्गीकृत–वि० [सं०] जो या जिसका उत्सर्ग किया जा चुका हो। दिया या छोड़ा हुआ।

उत्सृष्ट–वि० [सं०] छोड़ा हुआ। त्यक्त।

उत्सेध–संज्ञा पु० [सं०] १. उन्नति। वृद्धि। २ ऊँचाई। वि० १ ऊँचा। २ श्रेष्ठ। उत्तम।

उदगाढ़–वि० [सं०] १. उच्च।

उदगारी*–वि० [सं० उद्गार] १. उगलनेवाला। २. बाहर निकलनेवाला।
उदग्र–वि० [सं०] १. उच्च। ऊँचा। २. विशाल। बड़ा। ३. उद्दंड। ४. विकट। ५. तीव्र। तेज।
उदपान–संज्ञा पुं० [सं०] १. कूएँ के पास का गड्ढा। खाता। २. कमंडल।
उदमादो*–वि० दे० "उन्मत्त"।
उदमानना*–क्रि० अ० [सं० उन्मत्त] उन्मत्त होना। पागल होना।
उदयना*–क्रि०अ०[सं०उदय] उदय होना।
उदरंभर–वि० [सं० उदरंभरि]. केवल अपना पेट भरनेवाला। पेटू।
उदसना*–क्रि० अ० [सं० उदसन] १. उजड़ना। २. तितर-बितर होना।
उदाराशय–वि० [सं०] जिसके विचार और उद्देश्य उच्च हों। महापुरुष।
उदासना*–क्रि० अ० [हिं० उदास] उदास होना।
क्रि० स० [सं० उदमन] १. उजाडना। २. तितर-बितर करना।
उदीयमान–वि० [स०] [स्त्री० उदीयमाना] १. जिसका उदय हो रहा हो। २ उठता या उमड़ता हुआ।
उद्गत–वि०[सं०] १ निकला हुआ। उत्पन्न। २. प्रकट। जाहिर। ३. फैला हुआ। व्याप्त।
उद्गीत–वि० [सं०] जो ऊँचे स्वर से गाया गया हो।
उद्गीथ–संज्ञा पुं० [सं०] १. साम-गान। २. प्रणव।
उद्ग्रीव–वि० [सं०] १. जो गरदन ऊपर उठाए हो। २. उत्सुक।
उद्दित*–वि० १. दे०"उदित"। २. दे० "उद्धत"। ३. दे० "उद्यत"।
उद्दीप्त–वि० [सं०] जिसका उद्दीपन हुआ हो। उभड़ा, बढ़ा या जागा हुआ। उत्तेजित।
उद्दोत*–संज्ञा पु० [सं० उद्योत] प्रकाश। वि० १. चमकीला। २. उदित। उत्पन्न।
उद्धना*–क्रि० अ० [सं० उद्धरण] १. ऊपर उठना। २. उड़ना या फैलना।
उद्भूति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. उत्पत्ति। २. उन्नति। ३. विभूति।
उद्भ्रम–संज्ञा पुं० [सं०] १. ऊपर की ओर भ्रमण करना। २. बुद्धि का विनाश। विभ्रम। ३. उद्वेग। व्याकुलता।
उद्वर्त्तन–संज्ञा पुं० [सं०] १. शरीर में तेल, चंदन या उबटन आदि मलना। २. उबटन। बटना।
उद्वेजक–संज्ञा पुं०[सं०] उद्विग्न करनेवाला।
उद्वेजन–संज्ञा पुं० [सं०] उद्विग्न करना।
उद्वेल–संज्ञा पु० [सं०] १. किसी चीज में भर जाने के कारण इधर-उधर बिखरना। २. छलकना। छलछलाना।
उद्वेलित–वि० [सं०] १. सीमा के बाहर फैलता हुआ। २. छलछलाता या छलकता हुआ।
उधेड़–संज्ञा स्त्री० [हिं० उधेड़ना] उधेड़ने की क्रिया या भाव।
यौ०—उधेड़-बुन।
उनमेद–संज्ञा पु० [?] बरसात के आरंभ में होनेवाला जल का जहरीला फेन। माँजा।
उनारना†–क्रि० स० [सं० उन्नयन] १. उठाना। २. बढ़ाना। दे० "उनाना"।
उन्मद–संज्ञा पु० [स०] १. उन्मत्त। प्रमत्त। २ पागल। बावला। ३. उन्माद। पागलपन।
उन्मन–वि० [सं०] १. जिसमे उद्वेग या व्याकुलता हो। २. अन्य-मनस्क।
उन्मनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] हठयोग मे नाक की नोक पर दृष्टि गड़ाना।
उन्मुक्त–वि० [सं०] १. जिसके बंधन खुल गए हों। छूटा हुआ। २. खुला हुआ। ३. उदार।
उन्मूलना*–क्रि० स० [सं० उन्मूलन] जड़ से उखाड़ फेंकना।
उपंग–संज्ञा पु० [सं० उपाङ्ग] १. नसतरंग नामक बाजा। २. उद्धव के पिता का नाम।
उपचर्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सेवा-शुश्रूषा। २. चिकित्सा। इलाज।
उपचारात्–क्रि० वि० [सं०] केवल व्यवहार, दिखावे या रसम अदा करने के रूप में।
उपटा–संज्ञा पु० [सं० उत्पतन] १. पानी

की याद। २ टोपरा।
उपनाना*–क्रि० स० [स० उत्पादन] उपन्न या पैदा करना।
उपभोग्य–वि० [स०] उपभोग या व्यवहार करने के योग्य।
उपमर्द–सज्ञा पु० दे० "उपमर्दन"।
उपमर्दन–सज्ञा पु० [स०] [वि० उपमर्दित, उपमर्द्य] १ बुरी तरह से दबाना या रौंदना। २ उपेक्षा और तिरस्कार करना।
उपमाना*–क्रि० स० [स० उपमा] उपमा देना।
उपयोगिता-वाद–सज्ञा पु० [स०] वह सिद्धात जिसमें वस्तु और बात का विचार केवल उसकी उपयोगिता की दृष्टि से किया जाता है।
उपराग–सज्ञा पु० [स०] १ त्याग। २ उदासीनता। ३ विराम। विश्राम।
उपशाला–सज्ञा स्त्री० [स०] मकान के पास का उठने-बैठने के लिए दालान या छोटा कमरा। बैठक।
उपहास्य–वि० दे० "उपहासास्पद"।
उपाकर्म–सज्ञा पु० [स०] १ विधि पूर्वक वेदों का अध्ययन करना। २ यज्ञोपवीत सस्कार।
उपाधिधारी–सज्ञा पु० [स० उपाधिधारिन्] वह जिसे कोई उपाधि या खिताब मिला हो।
उपेत–वि० [स०] १ बीता हुआ। गत। २ मिला हुआ। प्राप्त। ३ सयुक्त।
उफाल–सज्ञा स्त्री० [हि० फाल] लबा डग।
उभना*–क्रि० अ० [स० उद्भरण] १ उठना। २ उभडना।
उमगाना–क्रि० स० [हि० उमगना] १ उभाडना। २ उल्लसित करना।
उमरती–सज्ञा स्त्री० [स० अमृत?] एक प्रकार का बाजा।
उमहाना*–क्रि० स० दे० "उमाहना"।
उमाधव–सज्ञा पु० [स०] महादेव।
उरमी*–सज्ञा स्त्री० [स० ऊर्मि] १ लहर। २ दुख। पीडा। कष्ट।
उलछारना*–क्रि० स० दे० "उछालना"।
उलफत–सज्ञा स्त्री० [अ० उल्फत] प्रेम।
उल्लसित–वि० [सं०] [स्त्री० उल्लसिता] प्रसन्न। खुश।
उल्लसना–क्रि० स० [स० उल्लासन] १ प्रकट करना। २ प्रसन्न करना।
उस्वास–सज्ञा पु० दे० "उसाँस"।
ऊमना*–क्रि० अ० दे० "उजडना"।
ऊर्जस्वल–वि० दे० "ऊर्जस्वी"।
ऊर्ध्वस्थित–वि० [स०] १ ऊपर की ओर चढा हुआ। २ बहुत बढा हुआ।
ऊर्जित–वि० [स्त्री० ऊर्जिता] दे० "ऊर्ज"।
ऊर्मिमाली–सज्ञा पु० [स०] समुद्र।
ऊर्मिल–वि० [स०] जिसमें लहरें उठती हो। तरगित।
ऊर्मी–सज्ञा स्त्री० दे० "ऊर्मि"।
ऊलना*क्रि० अ० दे० "उछलना"।
ऊहा–सज्ञा स्त्री० दे० "ऊह"।
ऋतुकात–सज्ञा पु० [स०] वसत ऋतु।
ऋषित्व–सज्ञा पु० [स०] ऋषि होने की अवस्था या भाव। ऋषि-पन। ऋषिता।
एपरर–सज्ञा पु० [अ०] सम्राट्।
एपायर–सज्ञा पु० [अ०] साम्राज्य।
एप्रेस–सज्ञा स्त्री० [अ०] सम्राज्ञी।
एकतत्र–सज्ञा पु० दे० "एकछत्र"।
एकत्त्व–सज्ञा पु० [स०] १ एक होने का भाव। एकता। २ एक ही तरह का या बिल्कुल एक सा होना। पूरी समानता।
एकल*–वि० [हि० एक] १ अकेला। २ अनुपम। बजोड।
एकाकीपन–सज्ञा पु० [स० एकाकी+हि० पन (प्रत्य०)] अकेलापन।
एकात्मवाद–सज्ञा पु० [स०] यह सिद्धात कि सारे ससार के प्राणियो और वस्तुओ म एक ही आत्मा व्याप्त है।
एकाधिकार–सज्ञा पु० दे० "एकाधिपत्य"।
एडिशन–सज्ञा पु० [अ०] किसी पुस्तक का किसी बार छपना। आवृत्ति। सस्करण।
एड्रेस–सज्ञा पु० [अ०] १ पता। २ अभिनदन-पत्र।

एण–संज्ञा पुं० [सं०] कस्तूरी मृग।
एतकाद–संज्ञा पुं० [अ०] विश्वास।
एतदर्थ–क्रि० वि० [सं०] इसलिए।
एतिहात–संज्ञा स्त्री० दे० "एहतियात"।
एवमस्तु–अव्य० [सं०] ऐसा ही हो। आमीन (शुभाशीर्वाद)
एषण–संज्ञा स्त्री० [सं०] इच्छा। अभिलाषा।
ऐंचा–संज्ञा पुं० १. दे० "ऐंचा ताना।" २. दे० "अँकुड़ा"।
ऐकमत्य–संज्ञा पुं० [सं०] एकमत होने का भाव।
ऐतिहासिकता–संज्ञा स्त्री० [सं०] ऐतिहासिक होने का भाव।
ऐबजोई–संज्ञा स्त्री० [अ० + फा०] दूसरों के दोष देखना या ढूँढ़ना।
ऐयाम–संज्ञा पुं० [अ० योम का बहु०] १. दिन। २. समय। जमाना। ३ मौसिम।
ओंकना–क्रि० अ० [अनु०] हट या फिर जाना। (मन का) क्रि० अ० दे० "ओकना"।
ओजना†–क्रि० स० [सं० अवरुन्धन] अपने ऊपर लेना। सहना।
ओदर*–संज्ञा पुं० दे० "उदर"।
ओनंत*–वि० [सं० अनुन्नत] झुका हुआ।
ओपनि*–संज्ञा स्त्री० दे० "ओप"।
ओपनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० ओपना] १. यशब या अकीक पत्थर का वह टुकड़ा जिससे रगड़कर चित्र पर का सोना या चाँदी चमकाते है। मोहरा। २. रगड़कर चमक लाने की कोई चीज। बट्टी।
ओबरी†–संज्ञा स्त्री० [सं० विवर] छोटा घर।
ओरमना–क्रि० अ० [सं० अवलम्बन] लटकना।
ओवर-कोट–संज्ञा पु० [अं०] जाड़े में पहनने का एक प्रकार का बड़ा कोट।
ओसर†–संज्ञा स्त्री० [सं० उपसर्या] बिना ब्याई हुई जवान भैंस।
ओसरा†–संज्ञा स्त्री० [सं० अवसर] पारी।
औचित*–वि० [सं० अव + चिंता] १. निश्चित। २. बेखबर।
औत्तापिक–वि० [सं०] उत्ताप-संबंधी।
औत्पत्तिक–वि० [सं०] उत्पत्ति-संबंधी।
औदास्य–संज्ञा पुं० [सं०] उदासीनता।
औधारना–क्रि० स० दे० "अवधारना"।
औनिप*–संज्ञा पुं० [सं० अवनिप] राजा।
औपनिवेशिक स्वराज्य–कुछ विशिष्ट अधिकारों से युक्त एक प्रकार का स्वराज्य जो ब्रिटिश साम्राज्यों में आस्ट्रेलिया और कनाडा आदि उपनिवेशों को प्राप्त है।
औपपत्तिक–वि० [सं०] तर्क या युक्ति के द्वारा सिद्ध होनेवाला।
औलना–क्रि० अ० [सं० उल + जलना] १. जलना। गरम होना। २. गरमी पड़ना।
औहत–संज्ञा स्त्री० [सं० अपघात] १. अपमृत्यु। २. दुर्गति। दुर्दशा।
कंकालिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुर्गा। २. उग्र और दुष्ट स्वभाव की स्त्री। कर्कशा।
कंजियाना–क्रि० अ० [?] १. अंगारों का ठंढा पड़ना। २. काला पड़ना। ३. आँखों का कजा होना।
कंधार–संज्ञा पु० [सं० कर्णधार] १. केवट। २. पार लगानेवाला।
संज्ञा पु० [सं० गान्धार] अफगानिस्तान का एक नगर और प्रदेश।
कंसताल–संज्ञा पु० [सं० कास्यताल] झाँझ।
ककोरना†–क्रि० स० [?] १. खँरोचना। २. मोड़ना। ३. सिकोड़ना।
कचियाना†–क्रि० अ० दे० "कचाना"।
कचोटना–क्रि० अ० [हिं० कोंचना] मन में पीड़ा अनुभव करना।
कठवत–संज्ञा स्त्री० दे० "कठौता"।
कढ़िहार–वि० [हिं० काढ़ना] १. काढ़ने या निकालनेवाला। २. उद्धार करनेवाला।
कतल–संज्ञा पु० दे० "कतल"।
कथीर–संज्ञा पुं० [सं० कस्तीर] राँगा।
कथ्य–वि० [सं०] १. कहने के योग्य। कथनीय। २. साधारण बोलचाल की भाषा में प्रचलित। ३. जो कहा जाता हो। कहलानेवाला।

कनेक्शन–संज्ञा पु० [अं०] लगाव। संबंध।
कनूका–संज्ञा पु० [सं० कण] अनाज का दाना। कनका।
कनौखी–वि० [हिं० कनखी] तिरछी (आँख या दृष्टि)।
कबरी–संज्ञा स्त्री० [सं० कबरी] स्त्रियों के सिर की चोटी।
कमनी–वि० दे० "कमनीय"।
कमोदिक–संज्ञा पु० [सं०] कामोद (राग) गवैया।
कम्यूनिज़्म–संज्ञा पु० दे० "समाजवाद"।
कम्यूनिस्ट–वि० दे० "समाजवादी"।
कम्यूनीक–संज्ञा पु० [अं०] सरकारी सूचना या विवरण का पत्र।
करकरा–संज्ञा पु० [सं० कर्करेटु] एक प्रकार का सारस।
वि० [सं० कर्कर] खुरखुरा।
करका–संज्ञा स्त्री० [सं०] आकाश से गिरने-वाला पत्थर। ओला।
करखना*–क्रि० अ० [सं० कर्षण] जोश में आना। उत्तेजित होना।
कर-गत–वि० [सं०] हाथ में आया हुआ। हस्तगत।
करगल–संज्ञा पु० [फा०] १ गिद्ध। २ तीर।
करपरी–संज्ञा स्त्री० [देश०] पीठी की बरी।
करबोटी–संज्ञा स्त्री० [देश०] एक तरह का पक्षी।
करमात*–संज्ञा पु० [सं० कर्म्म] भाग्य।
कररुह–संज्ञा पु० [सं०] नाखून।
करवानक–संज्ञा पु० [?] गौरैया। चिड़ा।
करहाट, करहाटक–संज्ञा पु० [सं०] १ कमल की जड़। भसींड। २ कमल का छत्ता।
कलवार–संज्ञा पु० [सं० कर + वार (प्रत्य०)] नाव चलाने का डाँड़ा।
कर्ण-कुसुम–संज्ञा पु० [सं०] कान में पहनने का करनफूल।
कर्णपाली–संज्ञा स्त्री० [सं०] कान की लौंग। २ कान की बाली। मुरकी।
कर्ण भूषण–संज्ञा पु० [सं०] कान में पहनने का गहना।
कलईगर–संज्ञा पु० [अ० + फा०] वह जो बरतनों पर कलई करता हो।
कलना–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ धारण या ग्रहण करना। २ विशेष बातों या ज्ञान प्राप्त करना। ३ गणना। विचार। ४ लेन-देन। व्यवहार।
कलभ–संज्ञा पु० [सं०] १. हाथी या उसका बच्चा। २ ऊँट का बच्चा। ३ धतूरा।
कलाधार–संज्ञा पु० [सं०] वह जो कोई कलापूर्ण कार्य करता हो।
कलानाथ–संज्ञा पु० [सं०] चंद्रमा।
कलामुख–संज्ञा पु० [सं०] चंद्रमा।
कलिल–वि० [सं०] १ मिला हुआ। मिश्रित। २ घना। ३ दुर्गम।
कल्पलता–संज्ञा स्त्री० दे० "कल्पवृक्ष"।
कश्मल–संज्ञा पु० [सं०] १ पाप। २ मोह। ३ मूर्च्छा।
वि० [स्त्री० कश्मला] १ पापी। २ मलिन।
कसहँडा–संज्ञा पु० [हिं० काँसा] [स्त्री० कसहँडी] काँसे का एक प्रकार का बड़ा बरतन।
कसौटना*–क्रि० स० दे० "कसना"।
कस्टम–संज्ञा पु० [अं०] १ प्रथा। रवाज। २ आयात और निर्यात पर लगनेवाला कर।
कहकहा†–संज्ञा पु० [अ० अनु०] ठठाकर हँसना। अट्टहास।
कहाकही–संज्ञा स्त्री० दे० "कहा-सुनी"।
काँजी हाउस–संज्ञा पु० [अं० काइन हाउस] वह सरकारी मवेशीखाना जिसमें लोगों के छूटे हुए पशु बंद किए जाते हैं।
कांतिमान–वि० [सं०] [स्त्री० कांतिमती] कांतिवाला। दीप्तियुक्त।
संज्ञा पु० १ चंद्रमा। २ कामदेव।
काउन्सिल–संज्ञा स्त्री० [अं०] कुछ विशिष्ट विषयों पर विचार करनेवाली सभा या समिति।
काटर*–वि० [सं० कठोर] १ कड़ा। कठिन। २ कट्टर। ३ काटनेवाला।

कादंब–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक तरह का हंस। २. ऊख। ३. बाण।
वि० कदंब-संबंधी।
कापाल–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का अस्त्र। २. एक प्रकार की संधि।
कापी–संज्ञा स्त्री० [अं०] १. नकल। प्रतिलिपि। २. लिखने की कोरे कागजों की पुस्तक। ३. प्रति। जिल्द।
कापी राइट–संज्ञा पुं० [अं०] क़ानून के अनुसार पुस्तक के प्रकाशन या अनुवाद आदि का वह स्वत्व जो उसके ग्रंथकार या प्रकाशक को प्राप्त होता है।
कामग–संज्ञा पुं० [सं०] १. अपनी इच्छा के अनुसार चलनेवाला। २. दुराचारी। लंपट।
कामांध–वि० [सं०] जिसे काम-वासना की प्रबलता में भले बुरे का ज्ञान न हो।
कामायनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] वैवस्वत मनु की पत्नी श्रद्धा का एक नाम।
कामारि–संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।
कायली–संज्ञा स्त्री० [सं० क्ष्वेलिका] मथानी।
संज्ञा स्त्री० [हिं० कायर] ग्लानि। लज्जा।
संज्ञा स्त्री० [अ० क़ायल] क़ायल या तर्क में परास्त होने की क्रिया या भाव।
यौ०—क़ायली-माक़ूली = तर्क करना और तर्क सिद्ध बात मानना।
कारु–संज्ञा पुं० [सं०] [भा० कारुता] शिल्पी। कारीगर। दस्तकार।
कार्ड–संज्ञा पुं० [अं०] १. मोटे कागज़ का तख्ता। २. ऐसे क़ाग़ज का वह टुकड़ा जिस पर समाचार या पता आदि लिखा जाता है।
कार्यान्वित–वि० [सं०] १. कार्य में लगा हुआ। २. कार्य के रूप में किया हुआ।
कालर–संज्ञा पुं० दे० "कल्लर"।
संज्ञा पुं० [अं०] १. कुत्तों आदि के गले में बाँधनेवाला पट्टा। २. कोट या कमीज़ में की वह पट्टी जो गले के चारों ओर रहती है।
काल-विपाक–संज्ञा पुं० [सं०] किसी काम के होने का समय पूरा होना।
काल-सर्प–संज्ञा पुं० [सं०] वह साँप जिसके काटने से आदमी मर जाय।
कालापान–संज्ञा पुं० [हिं० काला + पान] ताश की बूटियों का वह रंग जो "हुकुम" कहलाता है।
किमरिक–संज्ञा पुं० [अं० केंब्रिक] एक प्रकार का चिकना सफ़ेद कपड़ा।
किरीटी–संज्ञा पुं० [सं० किरीटिन्] १. वह जो किरीट पहने। २. इंद्र। ३. अर्जुन। ४. राजा।
किलकारना–क्रि० अ० [हिं० किलक] १. हर्षध्वनि करना। २ चिल्लाना।
क़िलेदार–संज्ञा पुं० [अ० क़िलः + फ़ा० दार] [भा० क़िलेदारी] क़िले का प्रधान अधिकारी। दुर्गपति। गढ़पति।
किसनई*–संज्ञा स्त्री० दे० "किसानी"।
क़िस्साख्वाँ–संज्ञा पुं० [अ० + फ़ा०] [भा० क़िस्साख्वानी] वह जो क़िस्से-कहानियाँ सुनाने का काम करता हो।
क़िस्सागो–संज्ञा पुं० [भा० क़िस्सागोई] दे० "क़िस्साख्वाँ"।
कींका–संज्ञा पुं० [सं० केकाण] घोड़ा।
कीर्ण–वि० [सं०] १. बिखरा हुआ। २. फैला हुआ। व्याप्त। ३. छाया हुआ। आच्छन्न।
कुंजरारि–संज्ञा पुं० [सं०] सिंह।
कुंजित–वि० [सं०] कुंजों से युक्त। लता-मंडपोंवाला।
कुकर–संज्ञा पुं० [अं०] एक प्रकार का कटोरदान जिसमें दाल, चावल, तरकारी आदि एक साथ पकाई जा सकती है।
कुकुरमाछी–संज्ञा स्त्री० [हिं० कुक्कुर + मक्खी] एक प्रकार की मक्खी जो पशुओं को काटती है।
कुग्रह–संज्ञा पुं० [सं०] बुरे ग्रह।
कुचियां†–संज्ञा स्त्री० [सं० कुचिका] छोटी टिकिया।
कुजन–संज्ञा पुं० [सं०] दुष्ट।
कुड्मल–संज्ञा पुं० [सं० कुड्मल] कली।

कुतुक–संज्ञा पु० [सं०] १ उत्सुकता। कुतूहल। २. आनंद।
कुदाग–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० कुदागी] दुष्ट या बुरा सेवक।
कुनना–क्रि० स० [सं० क्षुणन] १. बरतन आदि खरादना। २ खरोंचना।
कुपुटना–क्रि० स० [?] चुटकी में फूल या साग आदि तोड़ना।
कुप्रबंध–संज्ञा पु० [सं०] बुरा प्रबंध। खराब इंतजाम।
कुबोलना–वि० [हि० कु + बोलना] [स्त्री० कुबोलनी] बुरी या अशुभ बातें कहनेवाला।
कुमुद्वती–संज्ञा स्त्री० दे० "कुमुदिनी"।
कुयश–संज्ञा पु० [सं०] बदनामी। अपयश।
कुरकुटा†–संज्ञा पु० [सं०] १ छोटा टुकड़ा। २ रोटी का टुकड़ा।
कुरवारना*–क्रि० स० [सं० कर्तन] १ खोदना। २ खरोंचना। कुरेदना।
कुल-केतु–संज्ञा पु० [सं०] वह जो अपने वंश में ध्वजा के समान हो। कुल की शोभा बढ़ानेवाला।
कुलज–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० कुलजा] उत्तम वंश में उत्पन्न पुरुष।
कुलधन्य–वि० [सं०] अपने कुल को धन्य करनेवाला। कुल का नाम उज्ज्वल करनेवाला।
कुल-संस्कार–संज्ञा पु० [सं०] कुलीनों के लक्षण और गुण। आभिजात्य।
कुलाधि–संज्ञा स्त्री० [सं० कुल + आधि] पाप।
कुशेशय–संज्ञा पु० [सं०] कमल।
कुसी–संज्ञा पु० [सं० कुशी] हल का फाल।
कुसुमासव–संज्ञा पु० [सं०] १. फूलों का रस। मकरंद। २ शहद। मधु।
कुहकिनी–वि० हि० [कुहकना] कुहकनेवाली। संज्ञा स्त्री० कोयल।
कुहना*–क्रि० स० [सं० कु + हनन] बुरी तरह से मारना। खूब पीटना।
कूकस–संज्ञा पु० [?] अनाज की भूसी।
कूट-योजना–संज्ञा स्त्री० [सं०] षड्यंत्र। भीतरी चालबाजी।
कूलिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी।
कृतहीन–वि० दे० "कृतघ्न"।
कृतात्मा–संज्ञा पु० [सं०] महात्मा।
कृषीवल–संज्ञा पु० [सं०] किसान।
कृष्ण लोह–संज्ञा पु० [सं०] दे० "चुंबक"।
केंद्रित–वि० [सं०] एक ही केंद्र में इकट्ठा किया हुआ। एक जगह लाया हुआ।
केंद्रीकरण–संज्ञा पु० [सं०] कुछ चीजों, शक्तियों या अधिकारों को एक केंद्र में लाने का काम।
केबिन–संज्ञा पु० [अं०] १. छोटा कमरा या घर। २ जहाज में अफसरों या यात्रियों के रहने की कोठरी।
केसू–संज्ञा पु० दे० "टेसू"।
कैंकर्य–संज्ञा पु० [सं०] १ "किंकर" का भाव। किंकरता। २ सेवा।
कैंम, कैंमा*–संज्ञा पु० दे० "कदंब"।
कैरवाली–संज्ञा स्त्री० [सं०] कैरवों का समूह।
कैलेंडर–संज्ञा पु० दे० "दिनपत्र"।
कोकी–संज्ञा स्त्री० [सं०] मादा चकवा।
कोड़ाई–संज्ञा स्त्री० [हि० कोड़ना] कोड़ने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
कोपन–वि० [सं०] [स्त्री० कोपना] कोप करनेवाला। क्रोधी। गुस्सेवर।
कोरना†–क्रि० स० [हि० कोर] १ कोड़ना। २ खरोंचना। ३ कुतरना।
कोलना–क्रि० स० [सं० क्रोडन] खोदकर बीच में पोला करना।
कोशकीट–संज्ञा पु० [सं०] रेशम का कीड़ा।
कौरा–संज्ञा पु० [सं० कोल] द्वार के दोनों ओर के वे भाग जिनसे खुलने पर किवाड़ सटे रहते हैं।
कौलटेय–संज्ञा पु० [सं०] कुलटा का पुत्र।
क्रमात्–क्रि० वि० [सं०] १ क्रम या सिलसिले से। यथानुक्रम। २ क्रम-क्रम से। धीरे धीरे।
क्रियात्मक–वि० [सं०] क्रिया के रूप में किया हुआ जो सचमुच कर दिखलाया गया हो।

क्रीड़ित–वि० [सं०] जिससे क्रीड़ा की जाय। क्रीड़ा के काम में आया हुआ।
क्रास–संज्ञा पु० [अं० क्रास] ईसाइयों का एक धर्म-चिह्न जो उस सूली का सूचक है जिस पर ईसामसीह चढ़ाये गये थे।
क्लब–संज्ञा पुं० [अं०] सार्वजनिक विषयों के विचार या आमोद-प्रमोद के लिए बनी संस्था या समिति।
क्लर्क–संज्ञा पुं० [अं०] कार्यालय का मुंशी। मुहर्रिर।
क्वण–संज्ञा पुं० [सं०] १. घुंघरू का शब्द। २. वीणा की झंकार।
क्लिप–संज्ञा स्त्री० [अं०] काग़ज या बालों आदि को दबाने की कमानी।
क्लिशित–वि० [सं०] दे० "क्लेशित"।
क्वारंटाइन–संज्ञा पुं० [अं०] वह स्थान जहाँ बाहर से आये हुए लोग इसलिए कुछ समय तक रोक रखे जाते हैं कि उनके द्वारा कोई सक्रामक रोग देश में न फैले।
क्षणिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] बिजली।
क्षणेक–क्रि० वि० [सं० क्षण + एक] क्षण भर। बहुत थोड़ी देर तक।
क्षय पक्ष–संज्ञा पु० [सं०] कृष्ण पक्ष।
क्षालम–संज्ञा पु० [स०] धोना।
क्षालित–वि० [स०] धुला हुआ।
खँगैल–वि० [हि० खाँग] जिसे खाँग या दाँत निकले हो।
खँडना†–संज्ञा पुं० [सं० खंड] एक प्रकार का नमकीन पकवान।
खंडपाल–संज्ञा पुं० [सं०] हलवाई।
खखेटा–संज्ञा पु० [?] १. छिद्र। छेद। २. शंका। खटका।
खजीना–संज्ञा पुं० दे० "खजाना"।
खटपटिया–वि० [अनु०] झगड़ालू। संज्ञा स्त्री० [अ०] खड़ाऊँ।
खटाका–संज्ञा पुं० [अ०] 'खट' शब्द। क्रि० वि० जल्दी। तुरंत।
खड्गकोश–संज्ञा पु० [सं०] म्यान।
खतकशी–संज्ञा स्त्री० [अ० खत + फ़ा० कशी] चित्र बनाने से पहले आवश्यक रेखाएँ अंकित करना। रेखा-कर्म। टीपना।
खतना–क्रि० अ० [हिं० खाता] खाते पर चढ़ना। खतियाया जाना।
खदंग–संज्ञा पुं० [अ०] तीर।
खदरा†–संज्ञा पुं० [सं० खनन] गड्ढा। वि० रद्दी। निकम्मा।
खनवाना-खनाना–क्रि० स० [हिं० खनना] खनने का काम दूसरों से कराना।
खनित्र–संज्ञा पु० [सं०] गैंती। खंता।
खबरगीर–वि० [अ० + फ़ा०] [संज्ञा खबरगीरी] देख-भाल करनेवाला।
खबरनवीस–संज्ञा पुं० [फ़ा०] [भाव० खबरनवीसी] वह जो राजाओं आदि के पास नित्य के समाचार लिखकर भेजता हो। समाचार-लेखक।
खमकना–क्रि० अ० [अनु०] खम खम शब्द करना।
खरतुआ–संज्ञा पुं० [हिं० खर] बथुए की तरह की एक घास। चमर। बथुआ।
खरभरना–क्रि० अ० [हिं० खरभर] १. क्षुब्ध होना। २. घबराना।
खरहरी–संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का मेवा। (कदाचित् खजूर)।
खरांशु–संज्ञा पु० [सं०] सूर्य।
खरेई–क्रि० वि० [हिं० खरा + ही] सचमुच।
खरोटना–क्रि० स० [सं० क्षुरण] १. नाखून गड़ाकर शरीर मे घाव करना। १. दे० "खरोंचना"।
खाँडर–संज्ञा पु० [सं० खड] टुकड़ा।
खाँधना*–क्रि० स० [सं० खादन] खाना।
खाकसार–वि० [फ़ा०] [संज्ञा खाकसारी] १. धूल में मिला हुआ। २. तुच्छ। अकिंचन।
खादिम–संज्ञा पु० [फ़ा०] सेवक। नौकर।
खाधुक*–वि० [सं० खादक] खानेवाला।
खाना-खराब–वि० [फा०] जिसका घर-बार तक न रह गया हो। दुर्दशाग्रस्त।
खाम–वि० [फ़ा०] १. जो पका न हो। कच्चा। २ जिसे अनुभव न हो।
खाम-ख़याली–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] व्यर्थ का या बिना आधार का विचार।

खामी—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ कच्चापन। कचाई। २ त्रुटि। दोष।
खारक—सज्ञा पु० [स० क्षारक] छुहारा।
खाहिश—सज्ञा स्त्री० दे० "ख्वाहिश"।
खिजमत*—सज्ञा स्त्री० दे० "खिदमत"।
खिजाँ—सज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १ वृक्षो के पत्ते झडने के दिन। हेमत ऋतु। २ पतझड। ३ ह्रास या पतन के दिन।
खिसकना—क्रि० अ० [हि० खिसकना] चुप-चाप बिना कह सुने चल देना।
खिरिरना*—क्रि० स० [अनु०] १ अनाज छानना। २ खुरचना।
खुदकुशी—सज्ञा स्त्री० [फा०] आत्महत्या।
खुदाव—सज्ञा पु० [हि० खोदाव] १ खुदाई। २ खोदकर बनाये हुए बेल-बूटे। नक्काशी।
खुरचनी—सज्ञा स्त्री० [हि० खुरचना] खुरचने का औज़ार।
खुश मिजाज—वि० [फा०] सदा प्रसन्न रहने-वाला। हँसमुख।
खुश-मिजाजी—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ मन का सदा प्रसन्न रहना। २ कुशल-समाचार। खैरियत।
खैर-भैर—सज्ञा पु० [अनु०] १ हो-हल्ला। २ हलचल।
खैला—सज्ञा स्त्री० [स० क्ष्वेड] मथानी।
खोइचा—सज्ञा पु० [हि० खूँट] स्त्रियो की धोती का आंचल। पल्ला। खूट।
खोंची—सज्ञा स्त्री० [हि० खूँट] भिक्षा। भीख।
खोंडर—सज्ञा पु० [स० कोटर] पेड का भीतरी पोला भाग।
खोखा—सज्ञा पु० [हि० खुक्ख] १ वह कागज़ जिस पर हुडी लिखी जाती है। २ वह हुडी जिसका रुपया चुका दिया गया हो।
खोज़ी—वि० [हि० खोज] खोजने या ढूढने-वाला।
खोटता*—सज्ञा स्त्री० दे० "खोटाई"।
खोड—सज्ञा स्त्री० [हि० खोट] भूत प्रेत आदि की बाधा।
खोभरा*—सज्ञा पु० [हि० खुभना] खूंटी आदि चुभनेवाली चीज़।
खोभार†—सज्ञा पु० [?] कूडा-करकट फेंकने का गड्ढा।
खोरिया—सज्ञा स्त्री० [हि० खोरा] १ छोटी कटोरी। २ सिर पर लगाने के चमकीले बूंद। (स्त्रि०)
खोही—सज्ञा स्त्री० [स० खोलक] १ पत्तो की छतरी। २ घुग्घी।
ख्वारी—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ खराबी। दुर्दशा। २ सर्वनाश।
गगागति—सज्ञा स्त्री० [स०] मृत्यु।
गगोक*—सज्ञा पु० दे० "गगोदक"।
गॅगोटी—सज्ञा स्त्री० [हि० गगा + मिट्टी] गगा के किनारे की मिट्टी।
गॅजाना—क्रि० स० [स० गजन] १ दे० 'गजना'। २ गजने का काम दूसरे से कराना ३ गाँजने का काम दूसरे से कराना।
गडूप—सज्ञा पु० [स० गडूषा] १ चुल्लू। २ कुल्ला।
गत्ता—वि० [स० गन्तृ] जानेवाला।
गधवह—सज्ञा पु० [स०] १ वायु। हवा। २ चदन।
वि० १ गध ले जाने या पहुँचानेवाला। २ सुगधित। खुशबूदार।
गधा—वि० स्त्री० [स०] गधवाली (यौगिक शब्दो के अत मे)।
गॅधिया—सज्ञा पु० [हि० गध] १ एक प्रकार का बदबूदार कीडा। २ एक तरह की घास।
गॅधीला—वि० [हि० गध] बुरी गधवाला। बदबूदार।
गचगीर—सज्ञा पु० [हि० गच + फा० गीर] [भाव० गचगीरी] गच बनानेवाला।
गजद*—सज्ञा पु० दे० "गयद"।
गज-गौहर—सज्ञा पु० दे० "गज-मुक्ता"।
गज-दती—वि० [हि० गज + दत] हाथीदाँत का बना हुआ।
गजनवी—वि० [फा०] गजनी नगर का रहने-वाला।
गजना*—क्रि० अ० दे० "गाजना"।
गजपति—सज्ञा पु० [स०] १ बहुत बडा हाथी। २ वह राजा जिसके पास बहुत से

हाथी हों।
गजा–संज्ञा पुं० [फ़ा० गज] नगाड़ा बजाने का डंडा।
गज्जूह*–संज्ञा पुं० [सं० गज + व्यूह] हाथियों का झुंड।
गटई–संज्ञा स्त्री० [सं० कंठ] गला।
गटकीला–वि० [हिं० गटकना] गटकने या निगलनेवाला।
गटरमाला–संज्ञा स्त्री० [अनु० गट्ट + माला] बड़े दानों की माला।
गड़कना–क्रि० अ० [अ० ग़र्क़] डूबना। क्रि० अ० दे० "गरजना"।
गढ़ीश–संज्ञा पुं० [हिं० गढ़ + सं० ईश] गढ़ का स्वामी या प्रधान अधिकारी।
गणतंत्र–संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन भारत का एक प्रकार का प्रजातंत्र।
गतानुगतिक–वि० [सं०] १. पुराने उदाहरण को देखकर उसके अनुसार चलनेवाला। २. अनुकरण करनेवाला।
गदहिला†–संज्ञा पुं० [हिं० गदहा] वह गदहा जिस पर ईंटें या मिट्टी लादते हैं।
गद्दी-नशीनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० गद्दी + फ़ा० नशीनी] गद्दी पर बैठने का समारोह। राज्यारोहण।
गनक*–संज्ञा पुं० [सं० गणक] ज्योतिषी।
गफिलाई*–संज्ञा स्त्री० दे० "गफ़लत"।
गमगीन–वि० [अ० + फ़ा०] दुःखी। उदास।
गरदनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० गरदन] १. कुरते का गला। २. गले में पहनने की हँसली। ३. घोड़े की गरदन और पीठ पर रखने का कपड़ा। ४. कारनिस। कँगनी।
गरमाई–संज्ञा स्त्री० दे० "गरमी"।
गरमागरम–वि० [फा० गर्म] १. बिलकुल गरम। २. ताजा।
गरमीदाना–संज्ञा पुं० [हिं० गरमी + दाना] अम्हौरी। पित्ती।
गरीबाना–क्रि० वि० [फा० गरीबानः] गरीबों का सा।
गरुआना†–क्रि० अ० [सं० गुरु] भारी होना।
गर्विष्ठ–संज्ञा पुं० [सं०] घमंडी।
गलगला–वि० [हिं० गीला] आर्द्र। तर।
गलतंस–संज्ञा पुं० [सं० गलित + वंश] निस्संतान व्यक्ति की संपत्ति। लावारिस जायदाद।
गलतान–वि० [फ़ा० ग़ल्ताँ] लुढ़कता या लड़खड़ाता हुआ।
संज्ञा पुं० एक प्रकार का कपड़ा।
गलही†–संज्ञा स्त्री० [हिं० गला] नाव का अगला उठा हुआ भाग।
गलियारा–संज्ञा पुं० [हिं० गली] गली की तरह का छोटा तंग रास्ता।
गलेबाजी–संज्ञा स्त्री० [हिं० गला + बाजी] १. अच्छा गाना। २. बहुत बढ़ बढ़कर बातें बनाना। डींग।
गवास*–संज्ञा पुं० [सं० गवाशन] कसाई। संज्ञा स्त्री० [हिं० गाना] गाने की इच्छा। क्रि० अ० लगना।
गवीश–संज्ञा पुं० [सं०] १. गोस्वामी। २. विष्णु। ३. साँड़।
गवेसना*–क्रि० स० [सं० गवेषणा] ढूँढ़ना।
गहनता–संज्ञा स्त्री० [सं०] गहन। दुर्गम या गभीर होने का भाव।
गहुआ†–संज्ञा पुं० [हिं० गहना] एक तरह की सँड़सी।
गाकरी†–संज्ञा स्त्री० [?] १. लिट्टी। बाटी। २. रोटी।
गाड़ीखाना–संज्ञा पुं० [हिं० गाड़ी + खाना] वह स्थान जहाँ गाड़ियाँ रहती हों।
गादुर†–संज्ञा पुं० दे० "चमगादड़"।
गायकी–संज्ञा स्त्री० [सं०] गानेवाली स्त्री। संज्ञा स्त्री० [हिं० गाना या सं० गायक] १. गान विद्या का पूरा ज्ञान। २. गान विद्या के नियमों के अनुसार ठीक तरह से गाना। ३. गान-विद्या।
गायबाना–क्रि० वि० [अ०] पीठ पीछे। अनुपस्थिति में।
गार्जियन–संज्ञा पुं० [अं०] नाबालिगों आदि का अभिभावक।
गार्ड–संज्ञा पुं० [अं०] १. वह जो रक्षा आदि के लिए नियुक्त हो। रक्षक। २. दूर रेल-

गाड़ी के साथ रहनेवाला उसका जिम्मेदार कर्मचारी।
गिरिपथ–संज्ञा पु० [सं०] १ दो पर्वतों के बीच का तंग रास्ता। दर्रा। २ पहाड़ी रास्ता।
गीड़, गीडर–संज्ञा पु० [सं० कीट] आँख का कीचड़ या मैल।
गुंजित–वि० [सं०] भौंरों आदि के गुंजन से युक्त। जिसमें गुंजार हो।
गुट्ठी–संज्ञा स्त्री० [सं० गोष्ठ] मोटी गाँठ।
गुढ़ना–क्रि० अ० [सं० गूढ] १ छिपना। २ गूढ़ अर्थ समझना। जैसे—पढ़ना-गुढ़ना।
गुणाकर–वि० [सं०] जिसमें बहुत से गुण हों। गुणनिधान।
गुरम्मर†–संज्ञा पु० [हिं० गुड़ + आम] मीठे आमों का वृक्ष।
गुरबी–वि० [सं० गर्व] घमंडी।
गुरुबिनी*–संज्ञा स्त्री० दे० "गुर्विणी"।
गुर्वी–वि० स्त्री० [सं०] १ बड़ी। भारी। २ प्रधान। मुख्य। ३ गौरववाली। ४ गर्भवती।
संज्ञा स्त्री० गुरु की पत्नी।
गुलावा–संज्ञा पु० [फा०] एक प्रकार का बरतन।
गुल्ली-डंडा–संज्ञा पु० [हिं० गुल्ली + डंडा] लड़कों का एक प्रसिद्ध खेल जो एक गुल्ली और एक डंडे से खेला जाता है।
गुहेरा–संज्ञा पु० [सं० गोधा] गोह।
गुहेरी–संज्ञा स्त्री० [?] आँख की पलक की फुंसी। बिलनी।
गूढ़गेह*–संज्ञा पु० दे० "यज्ञशाला"।
गूढ़ पुरुष–संज्ञा पु० [सं०] जासूस।
गृह-मंत्री–संज्ञा पु० दे० "गृह-सचिव"।
गृह-सचिव–संज्ञा पु० [सं०] राज्य का वह मंत्री जो देश की भीतरी बातों की व्यवस्था करता हो।
गृहीत–वि० [सं०] [स्त्री० गृहीता] १ जो ग्रहण किया गया हो। स्वीकृत। २ लिया, पकड़ा या रखा हुआ। ३ आश्रित।
गेंद-तड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० गेंद + तड़ (अनु०)] वह खेल जिसमें लड़के एक दूसरे को गेंद से मारते हैं।
गेरुई–संज्ञा स्त्री० [हिं० गेरू] खेत की फसल का एक रोग।
गैनी–संज्ञा स्त्री० दे० "लता"।
वि० [सं० गमन] चलनेवाली।
गैवर*–संज्ञा पु० [सं० गजवर] १ बड़ा हाथी। २ एक प्रकार की चिड़िया।
गैरजिम्मेवार–वि० [अ० + फा०] [सं० गैर जिम्मेदारी] अपनी जिम्मेदारी न समझनेवाला।
गैर-मिसिल–वि० [अ०] १ अनुचित। २ बेसिलसिले।
गैर-सरकारी–वि० [अ० + फा०] जो सरकारी न हो।
गोद नशीन–संज्ञा पु० [हिं० गोद + फा० नशीन] वह जिसे किसी ने गोद लिया हो। दत्तक।
गोद-नशीनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० गोद + फा० नशीनी] गोद बैठने का समारोह। दत्तक होना।
गोपति–संज्ञा पु० [सं०] १ शिव। २ २ विष्णु। ३ श्रीकृष्ण। ४ ग्वाल। गोप। ५ राजा। ६ सूर्य।
गोपद–संज्ञा पु० [सं० गोष्पद] १ गौशाला। २ गौ के खुर का निशान।
गोपदी–वि० [हिं० गोपद] गौ के खुर के समान। बहुत छोटा।
गोप्ता–वि० [सं० गोप्तृ] रक्षा करनेवाला। रक्षक।
गोप्य–वि० [सं०] गुप्त रखने योग्य।
गोरसा–संज्ञा पु० [सं० गोरस] गौ के दूध से पला हुआ बच्चा।
गौरवान्वित–वि० [सं०] गौरव या महिमा से युक्त। मान्य। सम्मानित।
गौरवित–वि० दे० "गौरवान्वित"।
गौरवी–वि० [सं० गौरविन्] [स्त्री० गौरविनी] १ गौरवान्वित। २ अभिमानी।
ग्रथना*–क्रि० स० दे० "ग्रथन"।

ग्रथित–वि० [सं०] १. गाँठ देकर बाँधा हुआ। २. एक में गुथा या पिरोया हुआ।
ग्राउंड–संज्ञा पुं० [अं०] १. ज़मीन। भूमि। २. खुला मैदान। ३. आधार।
ग्राव–संज्ञा पुं० [सं०] १. पर्वत। २. पत्थर। ३. ओला।
घटिताई*–संज्ञा स्त्री० [हिं० घटी] घाटा। कमी।
घनक–संज्ञा स्त्री० [अनु०] गड़गड़ाहट। गरज।
घनकना–क्रि० अ० [अनु०] गरजना।
घनकोदंड–संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रधनुष।
घन-वर्धन–संज्ञा पुं० [सं०] धातुओं आदि को पीटकर बढ़ाना।
घन-वर्धनीयता–संज्ञा स्त्री० [सं०] धातुओं आदि का वह गुण जिससे वे पीटने पर बढ़ती हैं।
घनाली–संज्ञा स्त्री० [सं० घन + अवली] मेघों की पंक्ति या समूह।
घर्षित–वि० [सं०] [स्त्री० घर्षिता] रगड़ा हुआ। रगड़ खाया हुआ।
घुँगची, घुँघची–संज्ञा स्त्री० [सं० गुंजा] एक प्रकार की बेल जिसके लाल बीज प्रसिद्ध हैं। गुंजा।
घुटरुअन–क्रि० वि० [हिं० घुटना] घुटनों के बल।
घुड़सवार–संज्ञा पुं० [हिं० घोड़ा + फ़ा० सवार] [भाव० घुड़सवारी] वह जो घोड़े पर सवार हो। अश्वारोही।
चंद्रबाण–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का बाण जिसका फल अर्द्ध चंद्राकार होता था।
चंद्रशाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चाँदनी। चंद्रमा का प्रकाश। २. घर के ऊपर की कोठरी। अटारी।
चंद्रार्क–संज्ञा पुं० [सं०] चाँदी और ताँबे या सोने के योग से बननेवाली एक मिश्रित धातु।
चकचौहना–क्रि० स० [देश०] चाह भरी दृष्टि से देखना।
चकचौहा–वि० [देश०] देखने योग्य। सुंदर।
चक-पक चकबक–वि० [सं० चक्र] चकित। स्तंभित।
चकरा*–वि० [सं० चक्र] [स्त्री० चकरी] चौड़ा। विस्तृत।
यौ०—चौड़ा चकरा।
चकिताई*–संज्ञा स्त्री० [सं० चकित] चकित होने की क्रिया या भाव। आश्चर्य।
चखनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० चखना] खाने की स्वादिष्ट और चटपटी चीज़। चाट।
चक्रबंध–संज्ञा पुं० [सं०] चक्र के आकार का एक चित्र-काव्य।
चक्रवाल–संज्ञा पुं० [सं०] १. परिधि। घेरा। २. समूह। जन-समाज। ३. एक पौराणिक पर्वतमाला जो पृथ्वी के चारों ओर फैली हुई मानी जाती है।
चक्रांक–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० चक्रांकित] चक्र का चिह्न जो वैष्णव अपने शरीर पर दगवाते हैं।
चटकोरा†–संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का खिलौना।
चट-चेटक–संज्ञा पुं० [सं० चेटक] इंद्रजाल। जादू।
चटुला–संज्ञा स्त्री० [सं०] बिजली। संज्ञा पुं० एक प्रकार का केशविन्यास।
चड्ढी–संज्ञा स्त्री० [हिं० चढ़ना] एक खेल जिसमें लड़के एक दूसरे की पीठ पर चढ़कर चलते हैं।
चपड़ना–क्रि० स० [हिं० चिपटा] ठोंक या पीटकर चिपटा करना।
चबाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० चबाना] चबाने की क्रिया या भाव।
संज्ञा पुं० दे० "चवाई"।
चरई–संज्ञा स्त्री० [हिं० चारा] पशुओं के चारा खाने का गड्ढा।
संज्ञा स्त्री० [?] सितार आदि की खूँटी।
चरेरू†–संज्ञा पुं० [हिं० चरना] चिड़िया।
चर्म-पादुका–संज्ञा स्त्री० [सं० जूता]
चल-चित्र–संज्ञा पुं० [सं०] वे चित्र जो परदे पर सजीव प्राणियों की तरह चलते-फिरते और बोलते दिखाई देते हैं। सिनेमा।

चलता खाता–संज्ञा पु० [हिं० चलना + खाता] बैंक आदि का वह खाता जिसमें हर समय लेन-देन हो सकता हो।
चातुर्वर्ण्य–संज्ञा पु० [सं०] ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये चारो वर्ण।
चापट, चापड़–वि० [हिं० चिपटा] १. दबाया या कुचला हुआ। २ बराबर। समतल। ३ बरबाद। चौपट।
चापल्य–संज्ञा स्त्री० [सं०] चपलता।
चिपाजी–संज्ञा पु० [अं०] एक प्रकार का वन-मानुष।
चिकवा†–संज्ञा पु० [हिं० चिक] मास बेचने-वाला। बूचड़।
संज्ञा पु० [?] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।
चित्तता–संज्ञा स्त्री० [सं०] चित्त का भाव। चित्तपन। चित्तत्व।
चित्रजल्प–संज्ञा पु० [सं०] वह भावगर्भित वाक्य जो नायक और नायिका रूठकर एक-दूसरे से कहते हैं। (साहित्य)
चित्रस्थ–वि० [सं०] १ चित्र में अंकित किया हुआ। २ चित्र में अंकित व्यक्ति के समान निस्तब्ध।
चित्रांगद–संज्ञा पु० [सं०] १ राजा शातनु के पुत्र का नाम। २ गधर्व। ३ विद्याधर।
चित्रांगदा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अर्जुन की पत्नी का नाम। २ रावण की पत्नी का नाम।
चित्राधार–संज्ञा पु० [सं०] वह पुस्तक जिसमे अनेक प्रकार के चित्र एकत्र करके रखे जाते हैं। चित्र-संग्रह।
चिद्रूप–संज्ञा पु० [सं०] परमात्मा।
चिद्विलास–संज्ञा पु० [सं०] चैतन्य स्वरूप ईश्वर की माया।
चिह्नार†–वि० [हिं० चीह्नना] अपने पह-चान का। परिचित।
चिमनी–संज्ञा स्त्री० [अं०] १ मकान का धूआँ बाहर निकालनेवाला छिद्र या नल। २ लप या लालटेन पर की शीशे की नली।
चिर-कालिक–वि० [सं०] बहुत दिनों का। पुराना।
चिर-जीवन–संज्ञा पु० [सं०] सदा बना रहनेवाला जीवन। अमर-जीवन।
चिर-निद्रा–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० चिर-निद्रित] मृत्यु। मौत।
चिरागदान–संज्ञा पु० [फा०] दीयट। शमा-दान।
चिरागी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १ किसी पवित्र स्थान पर चिराग आदि जलाने का खर्च। २ मजार पर चढ़ाई जानेवाली भेंट।
चिरौरी–संज्ञा स्त्री० [अनु०] दीनतापूर्ण प्रार्थना।
चिलकी–संज्ञा पु० [हिं० चिलकना] चमकता हुआ नया रुपया।
चिलबिल–संज्ञा पु० [सं० चिल्बिल्व] १ एक प्रकार का बड़ा जंगली वृक्ष। २ एक प्रकार का बरसाती पौधा जो प्राय तालों में होता है।
चिलवांस–संज्ञा पु० [?] चिड़िया फँसाने का फंदा।
चीखुर–संज्ञा पु० [हिं० चिखुरा] गिलहरी।
चीठ–संज्ञा स्त्री० [हिं० चीकड] मैल।
चीफ–संज्ञा पु० [अं०] बड़ा सरदार या राजा।
यौ०—रूलिंग चीफ = वह राजा जिसे अपने राज्य में पूरा अधिकार हो।
वि० प्रधान। मुख्य।
चुबकत्व–संज्ञा पु० [सं०] चुबक पत्थर का वह गुण जिससे वह लोहे को अपनी तरफ खींचता है।
चुलुक–संज्ञा पु० [सं०] १ भारी दलदल या कीचड़। २ चुल्लू।
चुल्ला, चुल्ली–वि० [अनु०] चुलबुला। पाजी। शरारती।
चूचुक–संज्ञा पु० [सं०] स्तन का अगला भाग।
चूड़ाभरण–संज्ञा पु० [सं०] प्राचीन काल का एक प्रकार का केश विन्यास।
चेटका*–संज्ञा स्त्री० [सं० चिता] १ चिता। २ श्मशान। मरघट।
चेटिका–संज्ञा स्त्री० दे० "चेटी"।

चेटिया—संज्ञा पुं० [सं० चेटक] चेला। शिष्य।

चेता-वि० [सं०] चितवाला। (यौ० के अंत में। जैसे—सुचेता।)

चेस्टर—संज्ञा पुं० [अं०] ओवरकोट की तरह का एक प्रकार का बड़ा कोट।

चेहराई—संज्ञा स्त्री० [फा० चेहरा] चित्र या मूर्ति आदि में चेहरे की रचना।

चेहलुम—संज्ञा पुं० [फा०] वह रस्म जो मुहर्रम के चालीसवें दिन होती है। (मुसल०)

चैंचा—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का पक्षी।

चैला†—संज्ञा स्त्री० [?] चोट।

चोई—संज्ञा स्त्री० [?] भीगी हुई दाल का छिलका।

चोसना†—क्रि० स० [सं० चूषण] चूसना।

चोसनी*—संज्ञा स्त्री० [सं० चूषण] चूसकर पीने की क्रिया।

चोटहा†—वि० [हिं० चोट] चोट खाया हुआ। चुटैल।

चोटियाना—क्रि० स० [हिं० चोट] चोट लगाना।

क्रि० स० [हिं० चोटी] १. चोटी पकड़ना। २. वश में करना।

चोपना*—क्रि० अ० [हिं० चोप] इस प्रकार चमकना कि चकाचौंध उत्पन्न हो।

चोहोल—संज्ञा पुं० [हिं० चहोल] १. एक प्रकार का बाजा। २. दे० "चहोल"।

चौदंता—वि० [हिं० चौ + दाँत] १. चार दाँतोंवाला। २. उद्दंड। बदमाश।

चौपतरना, चौपताना—क्रि० स० [हिं० चौपत] कपड़े की तह लगाना।

चौपदा—संज्ञा पुं० [सं० चतुष्पद] एक प्रकार का छंद।

चौपुरा—संज्ञा पुं० [हिं० चौ + पुरवट] वह कूआँ जिस पर चारों ओर चार पुरवट या मोट एक साथ चल सकें।

चौफला—वि० [हिं० चौ + फल] चार फलोंवाला। (चाकू आदि)

चौफेर—क्रि० वि० [हिं० चौ० + फेरा] चारों [illegible]।

चौमेला—वि० [हिं० चौ + मेल] चार मेलोंवाला।

संज्ञा पुं० प्राचीन काल का एक प्रकार का दह या गड्ढा।

चौरसाना—क्रि० स० [हिं० चौरस] चौरस करना।

छकौना—वि० [हिं० छकना] १. छका हुआ। तृप्त। २. मस्त। मत्त।

छटैल—वि० [हिं० छँटना] १. छँटा हुआ। २ धूर्त या चालाक।

छत्रधर—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो राजाओं पर छत्र लगाता हो।

छत्रबंधु—संज्ञा पुं० [सं०] नीच कुल का क्षत्रिय।

छनक-मनक—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. गहनों की झनकार। २. सजधज। ३. ठसक। ४. दे० "छमक-मनक"।

छन्ना—संज्ञा पुं० [हिं० छानना] वह कपड़ा जिससे कोई चीज छानी जाय। साफी।

छप्परबंद—वि० [हिं० छप्पर + फ़ा० बंद] १. जो छप्पर या झोपड़ा बनाकर रहता हो। २ छप्पर छाने या बनानेवाला।

छबूंदा—संज्ञा पुं० [हिं० छ + बूँद] एक प्रकार का जहरीला कीड़ा।

छमासी—संज्ञा स्त्री० [हिं० छ + मास] मृत्यु के छः महीने बाद होनेवाला श्राद्ध।

संज्ञा स्त्री० [हिं० छ + माशा] छः माशे की तौल या बटखरा।

छरीदा—वि० [अ० जरीदः] १. अकेला। २. जिसके पास बोझ या असबाब न हो। (यात्री)

छींट-छिड़का—संज्ञा पुं० [हिं० छींटा + छिड़काव] बहुत हलकी और थोड़ी वर्षा।

छाँटा—संज्ञा पुं० [हिं० छाँटना] १. छाँटने की क्रिया या भाव। २. किसी को छल से अलग करना।

मुहा०—छाँटा देना = किसी छल से साथ या मंडली से अलग करना।

छाँदा—संज्ञा पुं० [हिं० छाँदना] १. वह

भोजन जो ज्योनार आदि से अपने घर लाया जाय। परोसा। २ हिस्सा। भाग।
छाविक–संज्ञा पु० [सं०] १ वह जो भेस बदले हो। २ मक्कार। ढोंगी। ३. बहुरूपिया।
छानी–संज्ञा स्त्री० [हिं० छाना] घास-फूस की छाजन।
छाबड़ी–संज्ञा स्त्री० [देश०] वह दौरी आदि जिसमें खाने-पीने की चीजें रखकर बेची जाती है। खोनचा।
छाबड़ीवाला–संज्ञा पु० [हिं० छाबड़ी+वाला] वह जो छाबड़ी या खोनचे में रखकर खाने-पीने की चीजें बेचता हो।
छायल–संज्ञा पु० [हिं० छाना] स्त्रियों का एक पहनावा।
छायाभ–वि०[सं०छाया+भ(प्रत्य०)] १ छाया से युक्त। २ जिस पर छाया पड़ी हो।
छायावाद–संज्ञा पु० [सं०] वह सिद्धांत या उक्ति आदि जिसमें अज्ञात या अज्ञेय के प्रति कोई जिज्ञासा या कथन हो। रहस्यवाद।
छालित*–वि० [सं० प्रक्षालित] धोया हुआ।
छिकना–क्रि० अ० [हिं० छेंकना] छेका या घेरा जाना।
छिजाना–क्रि० स० [हिं० छीजना] छीजने का काम कराना।
†क्रि० अ० दे० "छीजना"।
छिड़का–संज्ञा पु० दे० 'छिड़काव'।
छितनी–संज्ञा स्त्री० [?] छोटी टोकरी।
छितीस*–संज्ञा पु० [सं० क्षितीश] राजा।
छिहानी†–संज्ञा स्त्री० [?] मरघट। श्मशान।
छीरप*–संज्ञा पु० [सं० क्षीरप] दूध पीता बच्चा।
छुँगली*–संज्ञा स्त्री० [हिं० छँगुली] एक प्रकार की घुँघरूदार अँगूठी।
छुलछुलाना–क्रि० अ० [अनु०] थोड़ा थोड़ा मूतना।
छैंना–संज्ञा पु० [?] करताल या जोड़ी की तरह का एक बाजा।
*क्रि० अ० [सं० क्षय] क्षीण होना।
छोई–संज्ञा स्त्री० [?] १ दे० "खोई"। २ निस्सार वस्तु।
छौंड़ा†–संज्ञा पु० [सं० चुडा] अनाज रखने का गड्ढा। खत्ता।
संज्ञा पु० [सं० शावक] [स्त्री० छौंडी] लड़का। बच्चा।
जगजू–वि० [फा०] लड़ाका। योद्धा।
जँतसर–संज्ञा पु० [हिं० जाँता] वह गीत जो स्त्रियाँ चक्की पीसते समय गाती हैं।
जज–संज्ञा पु० [अं०] न्यायाधीश।
जजी–संज्ञा स्त्री० [अं० जज] १ जज का पद या काम। २ जज की कचहरी।
जटिलता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जटिल होने का भाव। २ दुरूहता। पेचीलापन।
जडिमा–संज्ञा स्त्री० [सं०] जड़ता।
जड़ीभूत–वि० [सं०] जो बिलकुल जड़ के समान हो गया हो। सुन्न।
जदुपुर–संज्ञा पु० [सं० यदुपुर] मथुरा नगरी।
जदुराई, जदुराज–संज्ञा पु० [सं० यदुराज] श्रीकृष्ण।
जनकजा–संज्ञा स्त्री० [सं०] सीता।
जनकता–संज्ञा स्त्री० [सं०] 'जनक' होने का भाव।
जनकात्मजा–संज्ञा स्त्री० [सं०] सीता।
जनरल–संज्ञा पु० [अं०] फौज का सेनापति। वि० साधारण। आम।
जन-स्थान–संज्ञा पु० [सं०] १ मनुष्यों का निवासस्थान। २ दंडकारण्य का एक प्रदेश।
जनाश्रय–संज्ञा पु० [सं०] १ धर्मशाला। सराय। २ घर। मकान।
जनित्री–संज्ञा स्त्री० [सं०] माता। माँ।
जनून–संज्ञा पु० [अ०] पागलपन। उन्माद।
जनूनी–संज्ञा पु० [अ० जनून] पागल।
जन्म सिद्ध–वि० [सं०] जिसकी सिद्धि जन्म से ही हो। जन्म मात्र से प्राप्त।
जन्मा–संज्ञा पु० [सं० जन्मन्] वह जिसका जन्म हो। (समास के अंत में)
वि० जो पैदा हुआ हो। उत्पन्न।
जपिया, जपी–वि० [हिं० जप] जप करनेवाला।

जवानबंदी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. किसी घटना के संबंध में लिखा जानेवाला इजहार या गवाही। २. मौन। चुप्पी।
जब्रन, जब्रिया–क्रि० वि० दे० "जबरन"।
जभी–क्रि० वि० [हिं० जब+ही (प्रत्य०)] १. जिस समय ही। २. ज्योंही।
जमनिका*–संज्ञा स्त्री० [सं० यवनिका] १. यवनिका। परदा। २. काई। ३ मैल।
जमवार*–संज्ञा पुं० [सं० यमद्वार] यम का द्वार।
जमानतनामा–संज्ञा पुं० [फ़ा०+अ०] वह काग़ज़ जो जमानत करते समय लिखा जाता है।
जमींदोज़–वि० [फ़ा०] जो तोड़-फोड़कर जमीन के बराबर कर दिया गया हो। विनष्ट।
जमौआ–वि० [हिं० जमाना] जमाकर बनाया हुआ। जैसे जमौआ कंबल।
जयजयकार–संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी की जय मनाने का घोष।
जयति–अव्य० [सं०] जय हो।
जरनल–संज्ञा पुं० [अं०] सामयिक पत्र।
जरनैल–संज्ञा पुं० १. दे० "जनरल"। २. दे० "जरनल"।
जरमन–संज्ञा पुं० [अं०] जरमनी का निवासी। संज्ञा स्त्री० जरमनी की भाषा। वि० जरमनी देश का।
जरमन सिलवर–संज्ञा पुं० [अं०] एक प्रसिद्ध सफ़ेद और चमकीली धातु।
जरवारा*–वि० [फ़ा० जर+हिं० वाला] धनी। संपन्न।
जराअत–संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० जराअती] जराअत-पेशा। खेती-बारी।
जर्जरित–वि० दे० "जर्जर"।
जल-कल–संज्ञा स्त्री० [सं० जल+हिं० कल] १. नगर के सब घरों में नल या कल के द्वारा पानी पहुँचाने की व्यवस्था करनेवाला विभाग। २. पानी देनेवाला कल। ३. आग बुझानेवाला दमकल।
जलचरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] मछली।
जलदागम–संज्ञा पुं० [सं०] १. वर्षा ऋतु का आगमन या आरंभ। २. आकाश में बादलों का घिरना।
जलधरमाल–संज्ञा स्त्री० [सं०] बारह अक्षरों की एक वृत्ति।
जलपना–क्रि० अ० [सं० जल्पन] लंबी-चौड़ी बातें करना। बकवाद करना।
जलरुह–संज्ञा पुं० [सं०] कमल।
जलसिंह–संज्ञा पुं० [सं०] सील की तरह का एक समुद्री जंतु।
जलहर–वि० [हिं० जल] जल से भरा हुआ। जलमय।
जलांजलि–संज्ञा स्त्री० [सं०] मृतक के उद्देश्य से दी जानेवाली जल की अंजलि।
जलाक–संज्ञा पुं० [हिं० जलना] १. पेट की ज्वाला। २. लू।
जलावतन–वि० [अ०] [सं० जलावतनी] जो देश से निकाल दिया गया हो। निर्वासित।
जलावर्त्त–संज्ञा पु० [सं०] १. पानी का भँवर। नाल। २. एक प्रकार का मेघ।
जवादि–संज्ञा पु० [अ० जव्वाद] एक सुगंधित द्रव्य जो गंधविलाव के शरीर से निकलता है। गौरासार।
जवारी–संज्ञा स्त्री० [हिं० जौ] जौ छुहारे और मोतियों आदि से गुँधा हुआ हार।
जहदजहल्लक्षणा–संज्ञा स्त्री० [सं०] लक्षणा का वह प्रकार जिसमें वक्ता के शब्दों के कई भावों में से केवल एक भाव ग्रहण किया जाता है।
जहन्नुम*–संज्ञा पु० दे० "जहन्नुम"।
जहाँदीदा–वि० [फ़ा०] जिसने संसार को देखकर उसका अनुभव किया हो। तजरबेकार।
जहूर–संज्ञा पुं० [अ०] प्रकाश।
जह्नुतनया, जह्नुनंदिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा। भागीरथी।
जाँग–संज्ञा पुं० [देश०] घोड़ों की एक जाति।
जाँघिल–संज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार की चिड़िया। वि० [हिं० जाँघ] जिसका पैर चलने में

रूप गाता हो।

जांझ*–संज्ञा स्त्री० [सं० झंझा] वह वर्षा जिसके साथ तेज हवा भी हो।

जांतव–वि० [सं० जान्तव] १ जंतु-संबंधी। जीव-जन्तुओं का। २ जीव-जंतुओं से उत्पन्न या मिलनेवाला।

जाख*–संज्ञा पु० [सं० यक्ष] यक्ष।

जाकेट–संज्ञा स्त्री० [अं० जैकेट] एक प्रकार की कुरती या सदरी।

जागरूप–वि० [हिं० जागना+रूप] जो बिलकुल स्पष्ट और प्रत्यक्ष।

जाठर–वि० [सं०] १ जठर संबंधी। २ जठर से उत्पन्न।

संज्ञा पु० १ जठर। पेट। २ भूख।

जादा*–वि० दे० "ज्यादा"।

जादा–वि० [फा० ज्याद][स्त्री० जादी] उत्पन्न। जन्मा हुआ।

(यौ० के अंत में जैसे शाहजादा)

जाननहार*–वि० [हिं० जानना] जाननेवाला।

जा-नशीन–वि० [फा०] [संज्ञा जानशीनी] १ दूसरे के स्थान या पद पर बैठनेवाला। २ उत्तराधिकारी।

जानिब–संज्ञा स्त्री० [अ०] तरफ। ओर।

यौ०—जानिबदार=पक्षपाती।

जानू–संज्ञा पु० [फा०] जंघा। जांघ।

जाबिर–वि० [फा०] जब्र या ज्यादती करनेवाला। अत्याचारी।

जामी*–संज्ञा स्त्री० दे० "जमीन"।

जायद–वि० [अ०] १ ज्यादा। अधिक। २ बढ़ा हुआ। अतिरिक्त।

जायल–वि० [अ०] विनष्ट। बरबाद।

जायस–संज्ञा पु० रायबरेली जिले का एक प्राचीन नगर।

जायसी–वि० [हिं० जायस] जायस नगर का रहनेवाला।

जालना*–क्रि० स० दे० "जलाना"।

जालरंध्र–संज्ञा पु० [सं०] झरोखा।

जावर†–संज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार की खीर।

जाहिरी–वि० [अ०] जो जाहिर हो। प्रकट।

जिक्र–संज्ञा पु० [अ०] जन्म का सार।

जिंदगानी–संज्ञा स्त्री० दे० "जिंदगी"।

जिगीषा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जीतने की इच्छा। २ उद्योग। प्रयत्न।

जितात्मा–वि० दे० "जितेंद्रिय"।

जितैया–वि० [हिं० जीतना] जीतनेवाला।

जित्वरी–संज्ञा पु० [सं०] काशी का एक प्राचीन नाम।

जिमनास्टिक–संज्ञा पु० [अं०] एक प्रकार की अँगरेजी कसरत।

जिष्णु–वि० [सं०] सदा जीतनेवाला। विजयी।

संज्ञा पु० १ विष्णु। २ कृष्ण। ३ इंद्र। ४ सूर्य। ५ अर्जुन।

जिह्म–वि० [सं०] वक्र। टेढ़ा।

जिह्मग–संज्ञा पु० [सं०] १ वह जो टेढ़ा या तिरछा चलता हो। २ सर्प। साँप।

जीअन*–संज्ञा पु० दे० "जीवन"।

जीरना*–क्रि० अ० [सं० जीर्ण] १ जीर्ण होना। २ कुम्हलाना। ३ फटना।

जीव-धन–संज्ञा पु० [सं०] १ जीवों और पशुओं के रूप में संपत्ति। २ जीवन-धन।

जीव-प्रभा–संज्ञा स्त्री० [सं०] आत्मा।

जीवबंद*–वि० दे० "जीवबधु"।

जीवबधु–संज्ञा पु० [सं०] गुल दुपहरिया। बधूक।

जीवांतक–वि० [सं०] जीवों की हत्या करनेवाला।

जीवाणु–संज्ञा पु० [सं०] जीव-युक्त अणु जो प्राय अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न करते हैं।

जीवितेश–संज्ञा पु० [सं०] १ जीता जागता और प्रत्यक्ष ईश्वर। २ स्वामी। पति।

जुगती–संज्ञा पु० [हिं० जुगत] अनेक प्रकार की युक्तियाँ निकालने या लगानेवाला। चतुर। चालाक।

संज्ञा स्त्री० दे० "जुगत"।

जुगम*–वि० दे० "युग्म"।

जुगार†–संज्ञा स्त्री० दे० "जुगाली"।

जुटाव–संज्ञा पुं० [हिं० जुटना] १. जुटने की क्रिया या भाव। २. जमावड़ा।
जुडीशल–वि० [अं०] दीवानी या फौजदारी संबंधी। न्याय संबंधी।
जुपना†–क्रि० अ० [हिं० जुड़ना ?] (चराग का) बुभना।
जुबली–संज्ञा स्त्री० [अं०] किसी बड़ी घटना का स्मारक महोत्सव। जश्न।
जुबान–संज्ञा स्त्री० दे० "जबान"।
जुमेरात–संज्ञा स्त्री० [अ०] बृहस्पतिवार।
जुरा*–संज्ञा स्त्री० दे० "जरा"।
जुराना*–क्रि० अ० दे० "जुड़ाना"। क्रि० स० दे० "जोड़ना"।
जूनियर–वि० [अं०] काल-क्रम से बाद का। छोटा।
जूलाई–संज्ञा स्त्री० [अं०] अँगरेजी सातवाँ महीना।
जेंगना†–संज्ञा पुं० दे० "जुगनूँ"।
जेंवा–क्रि० स० दे० "जेवना"।
जेटी–संज्ञा स्त्री० [अं०] वह स्थान जहाँ जहाजों पर माल चढ़ता या उतरता है।
जेलाटिन जेलाटीन–संज्ञा पु० [अं०] सरेस की तरह का एक पदार्थ जो मांस, हड्डी और खाल से निकलता है।
जैमाल–संज्ञा स्त्री० दे० "जयमाल"।
जैल–संज्ञा पुं० [अ०] १. नीचे का भाग। २. पंक्ति। सफ। ३. इलाका।
जोंकी–संज्ञा स्त्री० [हिं० जोंक] १. लोहे का वह काँटा जो दो तख्तों को जोड़ता है। २. दे० "जोंक"।
जोखिता*–संज्ञा स्त्री० दे० "योषिता"।
जोट*–संज्ञा पु० [सं० योटक] १. जोड़ी। २. साथी।
जोहारना†–क्रि० अ० [हिं० जोहार] जोहार या अभिवादन करना।
जौरे‡–क्रि० वि० [फ़ा० जवार] पास। निकट।
जौवति*–संज्ञा स्त्री० दे० "युवती"।
ज्ञातृत्व–संज्ञा पुं० [सं०] जानकारी।
ज्यान*–संज्ञा पुं० [फ़ा० जियान] हानि।
ज्याना*–क्रि० स० दे० "जिलाना"।
ज्योतित–वि० [सं० ज्योति] ज्योति से भरा हुआ। प्रकाशमान। उजला।
ज्योतिरिंगण–संज्ञा पुं० [सं०] जुगनू।
ज्योतिर्मान–वि० दे० "ज्योतिर्मय"।
ज्वरा–संज्ञा पु० [सं० जरा] मृत्यु।
ज्वरी†*–संज्ञा पुं० दे० "जुरी"।
झंकृत–वि० [सं०] जिसमें झनकार हुई हो।
झंकृति–संज्ञा स्त्री० दे० "झंकार"।
झंडी–संज्ञा स्त्री० [हिं० झंडा] छोटा झंडा।
झंपित*–वि० [सं० झंप] ढका या छिपाया हुआ।
झंब–संज्ञा पुं० [देश०] गुच्छा।
झका*–वि० [हिं० झक] चमकीला। साफ।
झक्क–वि० [अ०] साफ़ और चमकता हुआ। संज्ञा स्त्री० दे० "झक"।
झड़कना*–क्रि० स० दे० "झिड़कना"।
झड़झड़ाना–क्रि० स० १. दे० "झिड़कना"। २. दे० "झझोड़ना"।
झड़ाका–संज्ञा पु० [अनु०] मुठभेड़। झड़प। क्रि० वि० झट से। चटपट।
झनकवात–संज्ञा स्त्री० [हिं० झनक + वात] घोड़ों का एक रोग।
झनस–संज्ञा पु० [?] एक प्रकार का पुराना बाजा।
झपटान–संज्ञा स्त्री० [हिं० झपटना] झपटने की क्रिया या भाव। झपट।
झपटानी–संज्ञा पु० [हिं० झपटना] एक प्रकार का लड़ाई का हवाई जहाज।
झपलैया*–संज्ञा स्त्री० दे० "झपोला"।
झपाका–संज्ञा पु० [हिं० झप] शीघ्रता। क्रि० वि० झप से। जल्दी।
झपाटा–संज्ञा पु० [हिं० झपट] चपेट। आक्रमण।
झमकीला–वि० [हिं० झमकना] १. चमकीला। २. चंचल।
झमा*–संज्ञा पु० दे० "झाँवाँ"।
झरक*–संज्ञा स्त्री० दे० "झलक"।

झरझराना–क्रि० स० [हिं० झरझर] १. झरझर शब्द के साथ गिराना। २. दे० "भड़भड़ाना"।
क्रि० अ० झरझर शब्द के साथ जलना।
झरना*–क्रि० अ० दे० "झुलसना"।
झरिफ*–संज्ञा पु० [हिं० झरप] चिलमन। चिक।
झाँझिया–संज्ञा पु० [हिं० झाँझ] वह जो झाँझ बजाता हो।
झाड़बरदार–वि० [हिं० झाड़+फा० बरदार] झाड़ू देनेवाला। चमार।
झामर–संज्ञा पु० दे० "झूमर"।
झामरा*–वि० [हिं० साँवला] मैला। मलिन।
झारा–संज्ञा पु० [हिं० झाड़ना] १ सूप। २ झरना। ३ दे० "झाड़ा"।
झाला–संज्ञा पु० [अनु०] १ सितार या बीन बजाते समय बीच में पैदा की जानेवाली एक प्रकार की सुंदर झनकार। २ इस प्रकार की झनकार के साथ बजाया जानेवाला टुकड़ा।
झिटका|–संज्ञा पु० दे० "झटका"।
झिरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० झरना] १ छोटा छेद जिसमें से कोई चीज निकल जाय। २ पानी का छोटा सोता। ३ पाला। तुषार।
झिलाना–क्रि० स० [हिं० झेलना] दूसरे को झेलने के लिये बाध्य करना।
झींख–संज्ञा स्त्री० [हिं० खीज] झीखने का भाव। कुढ़न।
झुठकाना–क्रि० स० [हिं० झूठ] झूठी बात कहकर विश्वास दिलाना।
झुबझुबी–संज्ञा स्त्री० [देश०] कान में पहनने का एक गहना।
झुरावन|–संज्ञा पु० [हिं० झुराना] सूखने के कारण कम होनेवाला अंश।
झुलसन–संज्ञा स्त्री० [हिं० झुलसना] १ झुलसने की क्रिया या भाव। २ शरीर झुलसनेवाली गरमी।
झुल्ला–संज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का कुरता।
झौंरा|–संज्ञा पु० [?] झुंड।
टंकशाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] टकसाल।
टका–संज्ञा पु० [सं० टंक] १. एक तोले की तौल। २ ताँबे का एक पुराना सिक्का।
टंडल, टंडैल–संज्ञा पु० [अं० जनरल] मजदूरों का सरदार।
टई–संज्ञा स्त्री० दे० "टही"।
टकाही–वि० स्त्री० [हिं० टका] नीच और दुश्चरित्रा (स्त्री)।
टकोरी–संज्ञा स्त्री० [सं० टंकार] आघात। चोट।
टटोहना*–क्रि० स० दे० "टटोलना"।
टपरना–क्रि० स० [अनु० टप] १ टाँकी की चोट से पत्थर की सतह खुरदुरी करना। २ जमीन या दीवार पर नया मसाला लगाने से पहले उसे थोड़ा थोड़ा खोदना या तोड़ना।
टरकुल–वि० [हिं० टरकाना] बहुत ही मामूली और निकम्मा।
टला-टली–संज्ञा स्त्री० दे० "टालमटोल"।
टहकना–क्रि० अ० [अनु०] १ रह रहकर दर्द करना। २ पिघलना।
टाइटिल–संज्ञा पु० [अं०] पुस्तक का आवरण-पृष्ठ। मुख-पृष्ठ।
टाइप–संज्ञा पु० [अं०] छापने के लिए सीसे के ढले हुए अक्षर।
टाइप-राइटर–संज्ञा पु० [अं०] एक कल जिससे टाइप के से अक्षर छापे जाते हैं।
टाइम–संज्ञा पु० [अं०] समय। वक्त। यौ०—टाइम-पीस=एक प्रकार की छोटी घड़ी।
टाइमटेबुल–संज्ञा पु० [अं०] १ वह सारिणी जिसमें भिन्न कार्यों का समय लिखा रहता है। २ वह पुस्तक जिसमें रेल-गाड़ियों के पहुँचने और छूटने का समय रहता है।
टाड़–संज्ञा स्त्री० दे० "टाँड़"।
टावर–संज्ञा पु० [अं०] मीनार।
टिफिन–संज्ञा पु० [अं०] दोपहर का भोजन या जलपान।

यौ०—टिफिन-कैरियर = कटोरदान।
टिमाक–संज्ञा पुं० [देश०] बनाव-सिंगार।
टीडी†–संज्ञा स्त्री० दे० "टिड्डी"।
टीप-टाप–संज्ञा स्त्री० [हिं० टीप] १. बनाव-सिंगार। २. आडंबर।
टीवा†–संज्ञा पुं० दे० "टीला"।
टूरनामेंट–संज्ञा पुं० [अं०] साहस और बल संबंधी खेलों की प्रतियोगिता।
टेकनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० टेकना] वह चीज जो किसी चीज को गिरने से रोकने के लिये लगाई जाय।
टेढ़–संज्ञा स्त्री० [हिं० टेढ़ा] टेढ़ापन। वक्रता।
† वि० दे० "टेढ़ा"।
टेनिस–संज्ञा पुं० [अं०] एक प्रकार का अँगरेजी खेल जो गेंद से खेला जाता है।
टेबुल–संज्ञा पुं० [अं०] १. एक प्रकार की बड़ी ऊँची चौकी। मेज। २. सारिणी जैसे टाइमटेबुल।
टेलिग्राफ–संज्ञा पुं० [अं०] तार जिसके द्वारा खबरें भेजी जाती हैं।
टेलिग्राम–संज्ञा पुं० [अं०] तार से भेजी हुई खबर।
टेलिफोन–संज्ञा पुं० [अं०] वह तार जिसके द्वारा एक स्थान पर कही हुई बात बहुत दूर के दूसरे स्थान पर सुनाई देती है।
टैंक–संज्ञा पुं० [अं०] १. तालाब। २. पानी रखने का हौज या खजाना। ३. लोहे की एक प्रकार की बहुत बड़ी गाड़ी जिस पर तोपें लगी रहती हैं।
टैक्स–संज्ञा पुं० [अं०] कर। महसूल।
यौ०—इन्कम टैक्स = आमदनी पर लगने-वाला कर।
टोडी–संज्ञा पुं० [अं०] १. नीच और तुच्छ वृत्ति का मनुष्य। कमीना और खुशामदी।
यौ०—टोडी बच्चा = सरकारी अफ़सरों का खुशामदी।
ठगवाई†–संज्ञा पुं० दे० "ठग"।
ठाढ़ेश्वरी–संज्ञा पुं० [हिं० ठाढ़ा] एक प्रकार के साधु जो दिन-रात खड़े ही रहते हैं।
ठिकानेदार–संज्ञा पुं० [हिं० ठिकाना + फ़ा० दार] वह जिसे रियासत की ओर से ठिकाना (जागीर) मिला हो।
ठोंगा–संज्ञा पुं० [देश०] कागज का बना हुआ एक खास तरह का दोना या पात्र।
ठोली–संज्ञा स्त्री० दे० "ठठोली"।
संज्ञा स्त्री० [देश०] दुश्चरित्र या रखेली स्त्री।
डंकिनी–संज्ञा स्त्री० दे० "डाकिनी"।
डँगवारा–संज्ञा पुं० [हिं० डंगर] किसानों की पारस्परिक हल-बैल आदि की सहायता। जिता।
डंडा-डोली–संज्ञा स्त्री० [हिं० डंडा + डोली] लड़कों का एक खेल।
डगमग–वि० [हिं० डग + मग] लड़खड़ाता हुआ। विचलित।
डभकौहाँ–वि० [हिं० डभकना] अश्रुपूर्ण (नेत्र)।
डयन–संज्ञा पुं० [सं०] १. उड़ान। २. पंख।
डाँग–संज्ञा स्त्री० [देश०] १. जंगल। २. लट्ठ। ३. डंका।
डाक्टर–संज्ञा पुं० [अं०] १. किसी विषय का बहुत बड़ा विद्वान् या पंडित। २. वह जिसे अँगरेजी ढंग से चिकित्सा करने का अधिकार प्राप्त हो।
डाक्टरी–संज्ञा स्त्री० [अं० डाक्टर] डाक्टर का काम, पद या पदवी आदि।
डाही–वि० [हिं० डाह] डाह या ईर्ष्या करने-वाला।
डिंडिम–संज्ञा पुं० [सं०] डुगडुगी। डुग्गी।
डिक्टेटर–संज्ञा पुं० [अं०] विशेष अवसरों के लिये चुना हुआ प्रधान और पूर्ण अधि-कार-प्राप्त अधिकारी। अधिनायक।
डिगरी–संज्ञा स्त्री० [अं०] १. विश्वविद्यालय की परीक्षा की पदवी। २. अंश। कला।
संज्ञा स्त्री० [अं० डिक्री] दीवानी अदालत का वह फैसला जिसमें किसी फरीक को कोई हक मिलता है।
डिगरीदार–वि० [हिं० डिगरी + फ़ा० दार] वह जिसके पक्ष में डिगरी या हक का फैसला

हुआ हो।
डिजाइन–संज्ञा पुं० [अं०] १. अंकित चित्र। २. सर्ज। ढंग। तरह।
डिटेक्टिव–संज्ञा पु० [अं०] जासूस।
डिढ़–वि० दे० "दृढ़"।
डिनर–संज्ञा पु० [अं०] रात का भोजन।
डिप्लोमा–संज्ञा पु० [अं०] वह लिखित प्रमाणपत्र जो किसी को विशेष योग्यता आदि प्राप्त करने पर मिलता है।
डिमरेज–संज्ञा पु० [अं०] बंदरगाह या स्टेशन पर पड़े रहनेवाले माल का हरजाना जो माल छुड़ानेवाले को देना पड़ता है।
डिसमिस–वि० [अं०] १ नामंजूर। खारिज। २. नौकरी से हटाया हुआ। बरखास्त।
डीन–संज्ञा स्त्री० [सं०] पक्षियों की उड़ान। संज्ञा पु० [अं०] विश्वविद्यालय में किसी विभाग का अध्यक्ष।
डुक–संज्ञा पु० [देश०] घूंसा। मुक्का।
डुबकनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० डुबकी] अंदर डूबकर चलनेवाली नाव। पनडुब्बी। सब-मेरीन।
डुब्बा–संज्ञा पु० दे० "पन-डुब्बा"।
डुब्बी–संज्ञा स्त्री० दे० "डुबकी"।
डेक–संज्ञा पु० [अं०] १ जहाज की छत। २. बकरम नाम का कपड़ा।
डेरी–संज्ञा स्त्री० [अं०] वह स्थान जहाँ दूध और मक्खन आदि के लिये गौएँ और भैंसें रखी जाती हों।
ड्राइवर–संज्ञा पु० [अं०] गाड़ी आदि हाँकने या चलानेवाला।
ड्राम–संज्ञा पु० [अं०] एक अँगरेजी तौल जो तीन माशे के लगभग होती है।
ड्रामा–संज्ञा पु० [अं०] नाटक।
ड्रेस–संज्ञा पु० [अं०] पहनने के कपड़े। पोशाक। लिबास।
ढंढोरिया–संज्ञा पु० [हिं० ढंढोरा] ढंढोरा पीटने या मुनादी करनेवाला।
ढलैत–संज्ञा पु० [हिं० ढाल] ढाल रखने-वाला सिपाही।
ढाँसी–संज्ञा स्त्री० [हिं० ढाँसना] सूखी खाँसी।
ढाका-पाटन–संज्ञा पु० [ढाका नगर] एक प्रकार की बूटीदार मलमल।
ढाटा, ढाठा–संज्ञा पु० [देश०] दाढ़ी पर बाँधने की पट्टी।
ढाबा–संज्ञा पु० [देश०] १. छोटी अटारी। २ ओलती। ३. रोटी दाल आदि बिकने का स्थान।
ढिल्लड़–वि० [हिं० ढीला] सुस्त। आलसी।
ढींचा–संज्ञा पु० [देश०] ढूँढ़ा।
ढूटौना*–संज्ञा पु० दे० "ढोटा"।
ढोलकिया–वि० [हिं० ढोलक] ढोलक बजानेवाला।
ढोवा–संज्ञा पु० [हिं० ढोना] १. ढोने की क्रिया या भाव। २. लूट। ३ दे० "ढोव"।
ढोहना*–क्रि० स० १. दे० "ढोना"। २ दे० "ढूंढ़ना"।
तंद्रालस–संज्ञा पु० [सं० तन्द्रा + आलस्य] तंद्रा या ऊँघने के कारण होनेवाला आलस्य।
तंबूर–संज्ञा पु० [फा०] एक प्रकार का छोटा ढोल।
तकली–संज्ञा स्त्री० [हिं० तकला] सूत कातने का एक छोटा यंत्र जिसमें काठ के एक लट्टू में छोटा सा तकला लगा रहता है।
तकसीर–संज्ञा स्त्री० [अ०] दोष। कसूर।
तगना–क्रि० अ० [हिं० तागना] तागा जाना।
तचित–वि० [हिं० तचना] संतप्त। दुःखी।
तज्जन्य–वि० [सं०] उससे उत्पन्न।
तड़क-भड़क–संज्ञा स्त्री० [अनु०] ठाठ-बाट।
तड़ागना–क्रि० अ० [अनु०] १ डींग हाँकना। २. हाथ पैर हिलाना। प्रयत्न करना।
तड़ीत*–संज्ञा स्त्री० दे० "तड़ित"।
ततखन*–क्रि० वि० दे० "तत्क्षण"।
ततोधिक–वि० [सं०] उससे बढ़कर।
तत्कालिक–वि० दे० "तात्कालिक"।
तत्सामयिक–वि० [सं०] उस समय का।
तथा-कथित–वि० [सं०] जो कोई काम करनेवाला कहा जाय, पर जिसके संबंध

में कोई प्रमाण न हो। कहा जानेवाला।
तथोक्त–वि० दे० "तथा-कथित"।
तन-तनहा–वि० [हिं० तन + फ़ा० तनहा] बिलकुल अकेला।
तनाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० तानना] तानने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
तनिमा–संज्ञा स्त्री० [सं०] शरीर का दुबलापन। कृशता।
तनूजा–संज्ञा स्त्री० [सं० तनुजा] लड़की। बेटी।
तन्यता–संज्ञा स्त्री० [सं०] धातुओं आदि का वह गुण जिससे उनके तार खींचे जाते हैं।
तन्वंग–वि० [सं० तनु + अंग] [स्त्री० तन्वंगी] दुबले पतले अंगोंवाला।
तप-रितु–संज्ञा स्त्री० [हिं० तपना + ऋतु] गरमी का मौसिम।
तपश्चरण–संज्ञा पुं० दे० "तपश्चर्य्या"।
तपस–संज्ञा पुं० दे० "तपस्या"।
तपिया*–संज्ञा पुं० दे० "तपस्वी"।
तफरका–संज्ञा पु० [अ०] १. अनर। दूरी। २. वियोग।
तफ़रीक़–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. विभाग। बँटवारा। २. अंतर। फरक। ३. गणित में घटाने की क्रिया। बाकी।
तबलीग–संज्ञा पुं० [अ०] दूसरों को अपने धर्म में मिलाना।
तबादला–संज्ञा पुं० [अ०] १. बदला जाना। परिवर्तन। २. किसी कर्मचारी का एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजा जाना।
तबेला–संज्ञा पु० दे० "तवेला"।
तब्बर*–संज्ञा पुं० दे० "टाबर"।
तमच्छन्न–वि० दे० "तमाच्छन्न"।
तमन्ना–संज्ञा स्त्री० [अ०] ख्वाहिश। इच्छा।
तमयी*–संज्ञा स्त्री० [सं० तम + मयी] रात।
तमस्विनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] अँधेरी रात।
तमस्वी–वि० [सं० तमस्विन्] अधकारपूर्ण।
तमाच्छन्न–वि० [सं०] तम या अंधकार से घिरा हुआ।
तमाच्छादित–वि० दे० "तमाच्छन्न"।
तमाशाई–संज्ञा पुं० [अ०] तमाशा देखनेवाला।
तमिस्ला–संज्ञा स्त्री० [सं०] काली या अँधेरी रात।
तरंगायित–वि० [सं०] १. जिसमें तरंगें उठती हों। तरंगित। २. तरंगों की तरह का। लहरियादार। लहरदार।
तरजीला–वि० [सं० तर्जन] १. क्रोधपूर्ण। २. उग्र। प्रचंड।
तरजीह–संज्ञा स्त्री० [अ०] किसी को औरों से अच्छा समझना या प्रधानता देना।
तरजौंहाँ–वि० दे० "तरजीला"।
तरण–संज्ञा पुं० [सं०] १. तरना। तैरना। २. पार जाना।
तरपीला*–वि० [हिं० तड़प] चमकदार।
तरबोना*–क्रि० अ० [हिं० तर] तर करना। भिगाना।
तरराना*–क्रि० अ० [अनु०] मरोड़ना। ऐंठना।
तरवरिया*–वि० [हिं० तलवार] तलवार चलानेवाला।
तरसौंहाँ*–वि० [हिं० तरसना] तरसनेवाला।
तरहुँड*–क्रि० वि० दे० "तरहर"।
तराटक*–संज्ञा पु० दे० "त्राटिका"।
तरामर*–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. जल्दी-जल्दी होनेवाली कारवाई। २. घूस।
तरायला–वि० [हिं० तर ?] १. तरल। २. चपल। चचल।
तरासन*–क्रि० स० [सं० त्रसन] त्रास या कष्ट देना।
तराहीं*–क्रि० वि० [हिं० तले] नीचे।
तरिता*–संज्ञा स्त्री० दे० "तड़िता"।
तरैया–संज्ञा स्त्री० [हिं० तारा] तारा। नक्षत्र। वि० [हिं० तरना] १. तरनेवाला। २. तारनेवाला।
तरौंछ–संज्ञा स्त्री० दे० "तलछट"।
तलकीन–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. समझाना-बुझाना। २. शिक्षा देना।
तलगृह–संज्ञा पु० [सं०] तहखाना।

तलघर–संज्ञा पु० [सं० तलगृह] जमीन के नीचे बनी हुई कोठरी। भुइँधरा। तहखाना।
तलामली*–संज्ञा स्त्री० दे० "तल्वेली"।
तलौवन–संज्ञा पु० [अ० तलव्वुन] १ स्वभाव की अस्थिरता। २ जल्दी जल्दी विचार बदलना।
तल्लीन–वि० [सं०] [संज्ञा तल्लीनता] किसी विषय म लीन। निमग्न।
तवक्का–संज्ञा स्त्री० [अ०] आशा। उम्मेद।
तवक्कुफ–संज्ञा पु० [अ०] विलंब।
तश्त–संज्ञा प० [फा०] बडा थाल।
तस्फिया–संज्ञा पु० [अ०] फैसला। निर्णय।
तह-दरज–वि० [फा०] (कपडा) जिसकी तह तक न खुली हो। बिलकुल नया।
तहना*–क्रि० अ० दे० "तपना।
तह-बाजारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] बाजार या सट्टी म सौदा बेचनेवालो से लिया जानेवाला कर।
तहरीक–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ गति देना। २ उसकाना। ३ आंदोलन। ४ प्रस्ताव।
ताका–वि० [हिं० ताकना] तिरछा ताकनेवाला। भेंगा।
ताखा–संज्ञा पु० [अ० ताक] कपडे का लपटा हुआ थान।
ताग–संज्ञा पु० [हिं० तागना] १ तागने की क्रिया या भाव। २ दे० तागा"।
ताज़ियाना–संज्ञा पु० [फा०] कोडा।
ताजीर–संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० ताजीरी] दंड।
ताजीरात–संज्ञा पु० [अ०] दंड संबंधी कानूनो का संग्रह।
ताजीरी–वि० [अ०] दंड के रूप में लगाया या बैठाया हुआ। जैसे ताजीरी पुलिस।
ताना-पाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० ताना + पाई] बार बार आना जाना।
ताना-शाह–संज्ञा पु० [फा०] वह जो अपने अधिकारो का बहुत मनमाना उपयोग करे।
ताना-शाही–संज्ञा स्त्री० १ [फा०] अधिकारो का मनमाना उपयोग। २ वह राज्य-व्यवस्था जिसमें सारा अधिकार एक ही आदमी के हाथ में हो।
ताप-चालक–संज्ञा पु० [सं०] वह पदार्थ जिसमें ताप एक सिरे से चलकर दूसरे सिरे तक पहुँच सकता हो। जैसे धातु।
ताप-चालकता–संज्ञा स्त्री० [सं०] पदार्थों का वह गुण जिसमे गरमी या ताप उनके एक सिरे से चलकर दूसरे सिरे तक पहुँचता हो।
तापिच्छ–संज्ञा पु० [सं०] तमाल वृक्ष।
तामिल–संज्ञा पु० [देश०] १ दक्षिण भारत की एक जाति। २ इस जाति की भाषा।
तामीर–संज्ञा स्त्री० [अ०] [बहु० तामीरात] इमारत बनाने का काम।
तामोर*–संज्ञा पु० दे० "तांबूल"।
ताम्र-युग–संज्ञा पु० [सं०] पुरातत्व के अनुसार किसी देश या जाति के इतिहास का वह समय जब कि वह पहले-पहले तांबे आदि धातुओ का व्यवहार करने लगी थी। यह युग प्रस्तर-युग के बाद और लौह-युग के पहले पडता है।
तारकूट–संज्ञा पु० [सं० तार] चाँदी और पीतल के योग से बनी एक धातु।
तारकेश–संज्ञा पु० [सं० तारका + ईश] चंद्रमा।
तारकोल–संज्ञा पु० दे० "अलकतरा"।
तार-तोड़–संज्ञा पु० [हिं० तार] कारचोबी का काम।
तारेश–संज्ञा पु० [हिं० तारा + ईश] चंद्रमा।
तास्सुब–संज्ञा पु० [अ०] १ पक्षपात। २ धार्मिक पक्षपात या कट्टरपन।
तिकड़म–संज्ञा पु० [देश०] [कर्ता तिकड़मी] युक्ति। तरकीब। चाल।
तिकड़ा–संज्ञा पु० [हिं० तीन] एक साथ बुनी हुई तीन धोतियाँ।
तिजहरो*–संज्ञा स्त्री० [हिं० तीन + पहर] तीसरा पहर।
तिजोरी–संज्ञा स्त्री० [देश०] वह लोहे का संदूक या छोटी अलमारी जिसमें रुपए आदि रखे जाते है।
तिब्ब–संज्ञा स्त्री० [अ०] यूनानी चिकित्सा-

शास्त्र।
तिरकना–क्रि० अ० [?] १. बाल सफ़ेद होना। २. दे० "तड़कना"।
तिल-चावला–वि० [हिं० तिल + चावल] काला और सफ़ेद मिला हुआ।
तिल-चावली–संज्ञा स्त्री० [हिं० तिल + चावल] तिल और चावल की खिचड़ी।
तिष्टना*–क्रि० स० [सं० सृष्टि] बनाना। रचना।
तुजुक–संज्ञा पुं० [तु०] १. शोभा। शान। २. कानून। नियम। ३. आत्म-चरित्र।
तुनक–वि० [फ़ा०] १. दुर्बल। २. नाजुक। कोमल।
यौ०—तुनक-मिजाज = बात बात पर बिगड़ने या रूठनेवाला।
तुफ़ैल–संज्ञा पु० [अ०] १. साधन। द्वार। २. कृपा। अनुग्रह।
तुलनात्मक–वि० [सं०] जिसमें और काम के साथ साथ तुलना भी हो।
तुहिनांशु–संज्ञा पु० [सं०] चंद्रमा।
तुहिनाचल–संज्ञा पु० [स०] हिमालय।
तूटना*–क्रि० अ० दे० "टूटना"।
तूरा–संज्ञा पु० दे० "तुरही"।
तूलम-तूल–क्रि० वि० [अनु० तूल] आमने-सामने।
तेजना*–क्रि० स० दे० "तजना"।
तेजोहत–वि० [स०] जिसका तेज नष्ट हो गया हो।
तेरह–वि० [स० त्रयोदश] दस और तीन। संज्ञा पुं० दस और तीन का जोड़।
तेलिया पखान–संज्ञा पुं० [हिं० तेलिया + सं० पाषाण] एक प्रकार का चिकना पत्थर।
तोई–संज्ञा स्त्री० [देश०] मगजी। गोट।
तोड़क–वि० [हिं० तोड़ना] तोड़नेवाला।
तोडर–संज्ञा पु० दे० "तोड़ा"।
तोतक–संज्ञा पुं० [हिं० तोता ?] पपीहा।
तौंकना–क्रि० अ० दे० "तौंसना"।
तौफ़ीक़–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. श्रद्धा। २. सामर्थ्य। शक्ति।
त्योराना*–क्रि० अ० [?] सिर घूमना।
त्राटक–संज्ञा पुं० दे० "त्राटिका"।
त्राटिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] योग की मुद्रा।
त्रिदल–संज्ञा पुं० [सं०] बिल्वपत्र।
त्रिदिव–संज्ञा पुं० [सं०] १. स्वर्ग। २. आकाश।
त्रुटित–वि० [सं०] १. कटा या टूटा हुआ। २. आहत। घायल।
त्रैवर्णिक–संज्ञा पुं० [सं०] ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य तीनों वर्णों के लोग।
त्रोण–संज्ञा पुं० [सं०] तूणीर। तरकश।
त्वचकना*–क्रि० अ० [सं० त्वचा] वृद्धावस्था में शरीर का चमड़ा भूलना।
त्वेष–संज्ञा पुं० [सं० त्वेषस्] १. उत्साह। उमंग। २. मन का आवेग। आवेश।
थंडिल*–संज्ञा पुं० [सं० स्थंडिल] यज्ञ की वेदी।
थक–संज्ञा पु० स्त्री० दे० "थाक"।
थकन–संज्ञा स्त्री० दे० "थकान"।
थपक–संज्ञा स्त्री० दे० "थपकी"।
थपका*–संज्ञा पुं० दे० "थक्का"।
थपकाना–क्रि० स० [हिं० थपकना] १. थपकने का काम दूसरे से कराना। २. दे० "थपकना"।
थपेड़ना–क्रि० स० [हिं० थपेड़ा] थपेड़ा लगाना।
थपोड़ी–संज्ञा स्त्री० [अनु० थप] दोनों हथेलियों को टकराकर ध्वनि उत्पन्न करना। कर-तल-ध्वनि। ताली।
थम*–संज्ञा पु० दे० "स्तंभ"।
थरकौंहाँ–वि० [हिं० थरकना] काँपता या हिलता हुआ।
थरमामीटर–संज्ञा पु० [अं०] शरीर का ताप नापने का यंत्र। तापमापक यंत्र।
थरी–संज्ञा स्त्री० [सं० स्थली] १. शेरों आदि की माँद। २. गुफा।
थल*–संज्ञा पुं० [सं० स्थल] जगह।
थलज–संज्ञा पु० [हिं० थल] गुलाब।
थलपति–संज्ञा पु० [सं० स्थल + पति] राजा।
थानुसुत*–संज्ञा पुं० [सं० स्थाणु + सुत] गणेशजी।

थापर*–संज्ञा पु० दे० "थप्पड़"।
थावर*–वि० दे० "स्थावर"।
थिएटर–संज्ञा पु० [अं०] १. रंग-भूमि। २ नाटक या अभिनय।
थियासफी–संज्ञा स्त्री० [अं०] १ ब्रह्मविद्या। २ सब धर्मों का समन्वय करनेवाला एक संप्रदाय।
थिरकौंहाँ–वि० [हिं० थिरकना] थिरकनेवाला।
थिर-थानी–वि० [सं० स्थिर+स्थान] एक जगह जमकर रहनेवाला।
थीर*–वि० दे० "थिर"।
थुथकार–संज्ञा स्त्री० [हिं० थूक] थूकने की क्रिया, भाव या शब्द।
थुथकारना–क्रि० स० [हिं० थुथकार] थुडी थुडी करना। परम घृणा प्रकट करना।
थुलमा–संज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का बढ़िया पहाड़ी कम्बल।
थेथर–वि० [देश०] १ लस्त-पस्त करना। थका हुआ। २ परेशान।
थोंद*–संज्ञा स्त्री० दे० "तोंद"।
दंगली–वि० [फा० दंगल] १ दंगल-संबंधी। २ बहुत बड़ा।
दंतबीज–संज्ञा पु० [सं०] अनार।
दंतार†–वि० [हिं० दाँत] बड़े दाँतोंवाला।
दंदन–वि० [सं० द्वंद्व] [स्त्री० दंदनी] दमन करनेवाला।
दंभान*–संज्ञा पु० दे० "दंभ"।
दँवारि*–संज्ञा स्त्री० दे० "दवाग्नि"।
दंशना*–क्रि० स० [सं० दंशन] १ दाँत से काटना। २ डराना।
दकन–संज्ञा पु० [सं० दक्षिण] दक्षिणी भारत।
दकनी–संज्ञा पु० [हिं० दकन] दक्षिण भारत का निवासी।
वि० दक्षिण भारत का।
संज्ञा स्त्री० १ दक्षिण भारत की भाषा। २ उर्दू भाषा का पुराना नाम।
दकियानूसी–वि० [अ०] बहुत पुराना।
दखल-दिहानी–संज्ञा स्त्री० [अ०+फा०] अदालत से दखल दिलाने की क्रिया।
दग्धित*–वि० दे० "दग्ध"।
दचक–संज्ञा स्त्री० [हिं० दचकना] दचकने की क्रिया या भाव।
दचका–संज्ञा पु० दे० "दचक"।
दढ़ना*–क्रि० अ० [सं० दहन] जलना।
दमकना*–क्रि० अ० दे० "दमकना"।
दयित–वि० [सं०] [स्त्री० दयिता] प्रिय। प्यारा।
दरक–संज्ञा स्त्री० [हिं० दरकना] १ दरकने की क्रिया या भाव। २ दराज़। दरज।
वि० [सं०] डरपोक। कायर।
दरकार–संज्ञा स्त्री० [फा०] आवश्यकता। ज़रूरत।
दरगह–संज्ञा स्त्री० दे० "दरगाह"।
दरन*–वि० संज्ञा पु० दे० "दलन"।
दरबंदी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १ अलग-अलग दर या विभाग बनाना। २ चीज़ों की दर या भाव निश्चित करना।
दरबी–संज्ञा स्त्री० [सं० दर्वी] कलछी।
दरसनिया–संज्ञा पु० [सं० दर्शन] वह जो शीतला आदि की शांति की पूजा कराता हो।
दरिद्र नारायण–संज्ञा पु० [सं०] दरिद्रों और दीन दुखियों के रूप में रहनेवाले नारायण।
दरेसी–संज्ञा स्त्री० [हिं० दरेस] समतल या दुरुस्त करना।
दर्पित–वि० [सं०] १ दर्प या अभिमान से भरा हुआ। अभिमानी। २ उद्दंड। अक्खड़। ३ जिस पर आतंक छाया हो।
दर्पी–संज्ञा पु० [सं० दर्पिन्] दर्प से भरा हुआ। अभिमानी। घमंडी।
दलनीय–वि० [सं० दलनीया] दलन करने योग्य।
दलवैया–वि० [हिं० दलना] १ दलन या नाश करनेवाला। २ दलने या चूर्ण करने वाला।
दली–वि० [सं० दल] १ दलवाला। २ पत्तोंवाला।
दशक–संज्ञा पु० [सं०] १ दस वस्तुओं का समूह। २ सन-संवत् आदि में इकाई से

दहाई तक के दस वर्ष।
दशना–वि० स्त्री० [सं०] दशन या दाँतों-वाली।
दशनावली–संज्ञा स्त्री० [सं०] दाँतों की पंक्ति।
दसवाँ–वि० [हिं० दस] गिनती में दस के स्थान पर पड़नेवाला।
संज्ञा पुं० किसी की मृत्यु के दसवें दिन होनेवाला कृत्य।
दसाना†–क्रि० स० [?] बिछाना।
दस्तगीर–वि० [फ़ा०] [संज्ञा दस्तगीरी] सहायक। मददगार।
दस्त-दराज़–वि० [फ़ा०] [संज्ञा दस्त-दराज़ी] १ जल्दी मार बैठनेवाला। २. उचक्का। हाथ-लपक।
दस्युज–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० दस्युजा] दस्यु की संतान। नीच।
दहक़ान–संज्ञा पु० [फ़ा०] [वि० दहकानी, भाव० दहकानियत] गँवार। देहाती।
दहरौरा–संज्ञा पुं० [हिं० दही + बड़ा] १. दही में पड़ा हुआ बड़ा। २. एक प्रकार का गुलगुला।
दह्यो*–संज्ञा पुं० दे० "दही"।
दाँड़ना†–क्रि० स० [सं० दंड] १. दंड या सजा देना। २. जुरमाना करना।
दाँवँ–संज्ञा पु० दे० "दावँ"।
दाइज, दाइजा–संज्ञा पु० दे० "दायजा"।
दाबा–संज्ञा पु० [हिं० दाबना] कलम लगाने के लिए पौधे की टहनी मिट्टी में गाड़ना।
दामनगीर–वि० [फ़ा०] १. दामन या पल्ला पकड़नेवाला। २. दावादार।
दायम–क्रि० वि० [अ०] सदा। हमेशा।
दायमी–वि० [अ०] सदा बना रहनेवाला। स्थायी।
दारुपुत्रिका–संज्ञा स्त्री० [स०] कठपुतली।
दारुसार–संज्ञा पुं० [सं०] चंदन।
दासेय–वि० [सं०] [स्त्री० दासेयी] दास से उत्पन्न। गुलामज़ादा।
दिंड–संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का नाच।
दिअना*–संज्ञा पुं० दे० "दीया"।
दिगंगना–संज्ञा स्त्री० [सं०] दिशारूपिणी स्त्री।
दिढ़ाव*–संज्ञा पुं० दे० "दृढ़ता"।
दिनपत्र–संज्ञा पु० [सं०] वह पत्र या पत्र-समूह जिसमें वार, तिथियाँ और तारीखें आदि दी रहती है। कलेंडर।
दिनांत–संज्ञा पुं० [सं० दिनान्त] दिन का अंत। संध्या।
दिनार*–संज्ञा पुं० दे० "दीनार"।
दिमागचट–वि० [हिं० दिमाग + चाटना] बक बक कर सिर खानेवाला। बकवादी।
दिरानी–संज्ञा स्त्री० दे० "देवरानी"।
दिल-जोई–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] किसी का मन रखने के लिए उसे प्रसन्न करना।
दिलबस्तगी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] किसी बात में दिल लगाना। मनोरंजन।
दिल-शिकन–वि० [फा] [स० दिलशिकनी] दु.खी या निराश करके दिल तोड़नेवाला।
दिल्लीवाल–संज्ञा पु० [दिल्ली नगर] एक प्रकार का जूता। सलेमशाही।
दिवला*–संज्ञा पु० दे० "दीया"।
दिवस-मुख–संज्ञा पुं० [सं०] प्रातःकाल। सवेरा।
दिश्य–वि० [स०] दिशा-संबंधी।
दीर्ण–वि० [सं०] १. फटा हुआ। विदीर्ण। २. टूटा हुआ। भग्न।
दुंदभ–संज्ञा पु० [स०] नगारा।
*संज्ञा पु० [सं० द्वंद्व] बार बार जन्म लेने और मरने का कष्ट।
दुःखकर–संज्ञा पु० दे० "दु.खद"।
दुःखवाद–संज्ञा पु० [सं०] वह सिद्धात जिसमें सारा संसार और उसकी सब बातें दु.खमय मानी जाती है।
दुःखवादी–संज्ञा पु० [सं०] वह जो दुःखवाद पर विश्वास करता हो।
दुअन्नी–संज्ञा स्त्री० [हिं० दो + आना] दो आने का सिक्का।
दुई–संज्ञा स्त्री० [हिं० दो] अपने को दूसरे से अलग समझना। दुजायगी।
दुकड़हा†–वि० [हिं० टुकड़ा] तुच्छ। नीच।

दुकना*–क्रि० अ० [देश०] लुकना। छिपना।
दुकूलिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी।
दुखद–वि० दे० "दुःखद"।
दुजायगी–संज्ञा स्त्री० दे० "दुई"।
दुडयड़ी†–संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का बाजा।
दुडी–संज्ञा स्त्री० दे० "दुक्की"।
दुपद–संज्ञा पु० वि० दे० "द्विपद"।
दुमन, दुमना–वि० [हिं० दो + मन] दुःखी। चिंतित।
दुमाहा–वि० [हिं० दो + माह] हर दो महीने पर पूरा होनेवाला। (वेतन आदि)
दुरत्यय–वि० [सं०] [स्त्री० दुरत्यया] १ जिसे पार करना बहुत कठिन हो। २ दुस्तर। कठिन। ३ दुर्दमनीय।
दुरथल*–संज्ञा पु० [सं० दुः + स्थल] बुरी जगह।
दुरदृष्ट–संज्ञा पु० [सं०] दुर्भाग्य। बद-किस्मती।
दुरियाना†–क्रि० स० [हिं० दूर] दूर करना। हटाना।
दुर्जय–वि० दे० "दुर्जेय"।
दुर्दम–वि० दे० "दुर्दमनीय"।
दुर्दर*–वि० दे० 'दुर्द्धर"।
दुर्दांत–वि० [सं०] जिसे दबाना बहुत कठिन हो। दुर्दमनीय।
दुर्निवार–वि० दे० "दुर्निवार्य्य"।
दुर्मद–वि० [सं०] १ घमडी। २ मदमस्त।
दुलीचा, दुलैचा–संज्ञा पु० दे० "गलीचा"।
दुष्कीर्त्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] बदनामी।
दुश्चिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] बुरी या विकट चिंता।
दुष्प्रवृत्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] बुरी प्रवृत्ति। वि० दुष्ट या बुरी प्रवृत्तिवाला।
दुहरा–वि० पु० दे० "दोहरा"।
दुहागिल–वि० [हिं० दुहाग] १. अभागा। २ अनाथ। ३ सूना।
दूंद*–संज्ञा पु० दे० "द्वंद"।
दूदना*–क्रि० अ० [हिं० दुंद] लड़ाई-झगड़ा या उपद्रव करना।
दूंदि*–संज्ञा स्त्री० दे० "दुंद"।
दूत-मंडल–संज्ञा पु० [सं०] किसी काम के लिए भेजे हुए दूतों का समूह या दल।
दूत्य–संज्ञा पु० दे० "दौत्य"।
दूध-फेनी–संज्ञा स्त्री० दे० "फेनी"।
दूध-भाई–संज्ञा पु० [हिं० दूध + भाई] [स्त्री० दूध + बहन] ऐसे बालकों में से एक जो एक ही स्त्री का स्तन पीकर पले हों, पर दूसरे माता-पिता से उत्पन्न हों।
दूरागत–वि० [सं०] दूर से आया हुआ।
दूरीकृत–वि० [सं०] दूर किया हुआ।
दूलित*–वि० दे० "दौलित"।
दूसर*†–वि० दे० "दूसरा"।
दृगंबु–संज्ञा पु० [सं०] १ आँखों से निकलने-वाला जल। २ आँसू।
दृढ़चेता–वि० [सं० दृढ़ चेतस्] पक्के विचारोंवाला।
दृप्त–वि० [सं०] १ उग्र। प्रचड। २ प्रज्व-लित। ३ तेजयुक्त। ४ अभिमानी।
दृष्टव्य–वि० [सं०] देखने योग्य।
दृष्टिकूट–संज्ञा पु० दे० "दृष्टकूट"।
दृष्टिकोण–संज्ञा पु० [सं०] वह अंग या कोण जिससे कोई चीज देखी या कोई बात सोची जाय।
दृष्टिक्रम–संज्ञा पु० [सं०] चित्र आदि में वह अभिव्यक्ति जिससे दर्शक को यथाक्रम एक एक वस्तु अपने उपयुक्त स्थान पर दिखाई पड़े। मुनासिबत।
दृष्टि-परंपरा–संज्ञा स्त्री० दे० "दृष्टिक्रम"।
देखा-भाली–संज्ञा स्त्री० दे० 'देख-भाल"।
देन-लेन–संज्ञा पु० [हिं० देना + लेना] लेने और देने का व्यवहार।
देयासी†–वि० [?] [स्त्री० देयासिन्] झाड़-फूँक करनेवाला। ओझा।
देवगज–संज्ञा पु० [सं०] ऐरावत।
देवपुरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] इंद्र की नगरी। अमरावती।
देवयुग–संज्ञा पु० [सं०] सत्ययुग।
देवायतन–संज्ञा पु० [सं०] स्वर्ग।
देवेश–संज्ञा पु० [सं०] इंद्र।

देहक़ान–संज्ञा पुं० दे० "दहकान"।
देह-यात्रा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शरीर का खान-पान आदि व्यवहार। २. मृत्यु।
देहात्मवाद–संज्ञा पु० [सं०] देह या शरीर को ही आत्मा मानने का सिद्धांत।
दैं*–अव्य० [अनु०] से। जैसे चपाक दैं।
दैत्यारि–संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु। २. इंद्र।
दोचंद–वि० [फ़ा०] दुगना। दूना।
दो-जानू–क्रि० वि० [फ़ा०] घुटनों के बल। घुटने टेककर। (बैठना)
दोतही–संज्ञा स्त्री० [हिं० दो + तह] एक प्रकार की मोटी दोहरी चादर।
दोदिला–वि० दे० "दो-चित्ता"।
दोबाला–वि० [फ़ा०] दुगना। दूना।
दोयम–वि० [फ़ा०] दूसरा। द्वितीय।
दोलित–वि० [स०] [स्त्री० दोलिता] हिलता या झूलता हुआ।
दोषारोपण–संज्ञा पुं० [सं० दोष + आरोपण] किसी पर कोई दोष लगाना।
दोषित*–वि० दे० "दूषित"।
दौर्भाग्य–संज्ञा पुं० दे० "दुर्भाग्य"।
द्याना, द्यावना*–क्रि० स० दे० "दिलाना"।
द्रवणशील–वि० [स०] जो पिघलता या पसीजता हो।
द्रवित–वि० दे० "द्रवीभूत"।
द्वयता–संज्ञा स्त्री० [स० द्वय + ता (प्रत्य०)] १. दो का भाव। द्वैत। २. अपनेपन और परायेपन का भाव। भेद-भाव। दुजायगी।
द्वादशबानी–संज्ञा पुं० दे० "बारह बानी"।
द्वारचार–संज्ञा पु० दे० "द्वारपूजा"।
द्वार-पटी–संज्ञा स्त्री० [सं०] दरवाजे पर टाँगने का परदा।
द्विपद–वि० [सं०] दो पैरोंवाला।
संज्ञा पुं० मनुष्य।
द्विरसन–वि० [सं०] [स्त्री० द्विरसना] १ दो जबानोंवाला। द्विजिह्व। २ कभी कुछ और कभी कुछ कहनेवाला।
संज्ञा पुं० [स्त्री० द्विरसना] साँप।
द्विष, द्विषत्–संज्ञा पुं० [सं०] शत्रु। वैरी।
धँवना*–क्रि० स० दे० "धौंकना"।
धड़ा-बंदी–संज्ञा स्त्री० [हिं० धड़ा + बंद] १. तौल में धड़ा बाँधना। २. युद्ध के समय दोनों पक्षों का अपना सैनिक बल बराबर करना।
धमगजर–संज्ञा पुं० [देश०] उपद्रव। उत्पात।
धमधूसर–वि० [देश०] १. मोटा और भद्दा। २. मूर्ख।
धमाकना*–क्रि० अ० दे० "धमकना"।
धमारिया–संज्ञा पुं० [हिं० धमार] धमार गानेवाला।
धमारी–संज्ञा पु० [हिं० धमार] १. उपद्रव। उत्पात। २. होली की क्रीड़ा। वि० उपद्रवी।
धराशायी–वि० [सं०] धराशायिन्] [स्त्री० धराशायिनी] ज़मीन पर गिरा, पड़ा या लेटा हुआ।
धरेजा–संज्ञा पु० [हिं० धरना] किसी स्त्री को पत्नी की तरह रखना।
संज्ञा स्त्री० दे० "धरेल"।
धरेल, धरेली–संज्ञा स्त्री० [हिं० धरना] उपपत्नी। रखेली।
धरेश–संज्ञा पुं० [स०] राजा।
धर्मच्युत–वि० [सं०] [संज्ञा धर्मच्युति] अपने धर्म से गिरा या हटा हुआ।
धर्मणा–क्रि० वि० [सं०] धर्म के विचार से।
धर्म-पुस्तक–संज्ञा स्त्री० [सं० धर्म + पुस्तक] वह पुस्तक जो किसी धर्म का मूल आधार हो। किसी धर्म का मुख्य ग्रंथ।
धर्मांध–वि० [सं०] [भा० धर्मांधता] जो धर्म के नाम पर अंधा हो रहा हो। धर्म के नाम पर बुरे से बुरे काम करनेवाला।
धवलित–वि० [सं०] १. सफेद। २. उज्ज्वल।
धवलिया–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सफेदी। २. उज्ज्वलता।
धाई*–संज्ञा स्त्री० १. दे० "दाई"। २. दे० "धव"।
धातुराग–संज्ञा पुं० [सं०] गेरू।
धारायंत्र–संज्ञा पु० [सं०] १. पिचकारी। २. फुहारा।
धारा-सभा–संज्ञा स्त्री० दे० "व्यवस्थापिका-सभा"।

धार्तराष्ट्र–संज्ञा पु० [स०] धृतराष्ट्र के वंशज।
धावित–वि० [स०] दौड़ता या भागता हुआ।
धुंधलाना–क्रि० अ० [हिं० धुंधला] धुंधला होना।
धुंधाना–क्रि० अ० [हिं० धुंध] १ धुआँ देना। २ दे० "धुंधलाना"।
धुतारा*–वि० दे० "धूर्त"।
धुनी–संज्ञा स्त्री० [स०] नदी।
धुमिलाना*–क्रि० अ० [हिं० धूमिल] धूमिल होना। काला पड़ना
धुरवा*†–संज्ञा पु० [स० धुर् + वाह] बादल। मेघ।
धुरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० धुरा] गाड़ी का अक्ष।
धुरी-राष्ट्र–संज्ञा पु० [हिं० धुरी + स० राष्ट्र] आधुनिक सार्वराष्ट्रीय राजनीति में जर्मनी, इटली और जापान का गुट।
धुधर*–वि० दे० "धुंधला"।
धूईं†–संज्ञा स्त्री० [हिं० धुआँ] धूनी।
धूकना*–क्रि० अ० दे० 'ढुकना'।
धूजना–क्रि० अ० [?] १ हिलना। २ काँपना।
धूताई*–संज्ञा स्त्री० दे० "धूर्तता'।
धूतुक धूतू–संज्ञा पु० [अनु०] तुरही।
धूपित–वि० [स०] १ धूप जलाकर सुगंधित किया हुआ। २ थका हुआ। शिथिल।
धृती–वि० [स० धृतिन्] धीर। धैर्यवान्।
धृष्णु–वि० [स०] १ धृष्ट। ढीठ। २ साहसी।
धेनमुख–संज्ञा पु० [स०] गोमुख नामक बाजा। नरसिंहा।
धेरिया, धेरी–संज्ञा स्त्री० [स० दुहिता] लड़की। बेटी।
ध्वसावशेष–संज्ञा पु० [स०] किसी चीज के टूट-फूट जाने पर बचा हुआ अंश।
नंग्याना*–क्रि० स० दे० "नंगियाना"।
नउज*–अव्य० दे० "नौज"।
नकल-बही–संज्ञा स्त्री० [हिं० नकल + बही] वह बही जिस पर चिट्ठियों और हुंडियों आदि की नकल रखी जाती है।
नकवानी*–संज्ञा स्त्री० दे० "नकबानी"।
नक्की–वि० [देश०] १ पक्का। दृढ़। २ ठीक।
नक्की-मूठ–संज्ञा पु० [हिं० नक्की + मूठ] कौड़ियों से खेला जानेवाला एक खेल।
नक्कावद–संज्ञा पु० [अ० + फ़ा०] वह जो साड़ियों आदि में बेल-बूटे में नक्श या तर्ज तैयार करता है।
नखतराज, नखतेस*–संज्ञा पु० दे० "चंद्रमा"।
नखबान*–संज्ञा पु० [हिं० नख] नाखून।
नखायुध–संज्ञा पु० [स०] १ शेर, चीता आदि नखों से फाड़नेवाले जानवर। २ नृसिंह।
नखेध*–संज्ञा पु० दे० "निषेध"।
नगराध्यक्ष–संज्ञा पु० दे० "नगरपाल"।
नग्मा–संज्ञा पु० दे० "नगमा"।
नचवैया–संज्ञा पु० [हिं० नाच] नाचने या नचानेवाला।
नचीला–वि० [हिं० नाच] १ जो नाचता या इधर उधर घूमता रहे। २ चंचल।
नटन–संज्ञा पु० [स०] १ नृत्य। नाचना। २ नाट्य करना।
नटराज–संज्ञा पु० [स०] महादेव। शिव।
नटसारी*–संज्ञा स्त्री० [हिं० नट] नट का काम।
नत–वि० [स०] झुका हुआ।
ननुवा–अव्य० [स०] नहीं तो क्या?
नतैती–संज्ञा स्त्री० [हिं० नतैत] रिश्तेदारी। संबंध।
ननिआउर†–संज्ञा पु० दे० "ननिहाल"।
नपुआ†–संज्ञा पु० [हिं० नाप] वह बरतन जिससे कोई चीज नापी जाय।
नब्बे–वि० [स० नवति] जो गिनती में ८० और १० हो।
संज्ञा पु० ८० और १० के जोड़ की संख्या ९०।
नभोमणि–संज्ञा पु० [स०] सूर्य।
नभोवाणी–संज्ञा स्त्री० दे० "रेडियो"।
नमस्कारना*–क्रि० स० [स० नमस्कार]

नमस्कार करना।
नयनागार–वि० [सं०] नीतिज्ञ।
नरई†–संज्ञा स्त्री० [देश०] १. गेहूँ की बाल का डंठल। २. एक तरह की घास।
नरतात–संज्ञा पुं० [सं०] राजा।
नरदमा, नरदा–संज्ञा पुं० [फ़ा० नावदान] मैले पानी का नल।
नरवाह,नरवाहन–संज्ञा पुं० [सं०] वह सवारी जिसे मनुष्य उठाकर ले चलते हों। जैसे पालकी आदि।
नरसों–क्रि० वि० दे० "अतरसों"।
नरियर†–संज्ञा पुं० दे० "नारियल"।
नरियाना†–क्रि० अ० [देश०] जोर से चिल्लाना।
नरेली–संज्ञा स्त्री० [हिं० नारियल] १. नारियल की खोपड़ी। २. नारियल की खोपड़ी से बना हुआ हुक्का।
नर्त्तित–वि० [सं०] नृत्य करता हुआ। नाचता हुआ।
नलिन–संज्ञा पुं० [सं०] १. कमल। २. जल। ३. सारस। ४. नीली कुमुदिनी।
नवका*–संज्ञा स्त्री० [सं० नौका] नाव।
नवखंड–संज्ञा पुं० [सं०] पृथ्वी के नौ खंड— भारत, किंपुरुष, भद्र, हरि, हिरण्य, केतुमाल, इलावृत्त, कुश और रम्य।
नव-जात–वि० [सं०] जो अभी पैदा हुआ हो।
नवरस–संज्ञा पुं० [सं०] काव्य के ये नौ रस—शृंगार, करुण, हास्य, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्भुत और शांत।
नवाजिश–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] कृपा। दया।
नसीत*–संज्ञा स्त्री० दे० "नसीहत"।
नहला–संज्ञा पुं० [हिं० नौ] ताश का वह पत्ता जिस पर नौ बूटियाँ होती हैं।
नाकाबिल–वि० [फ़ा०] अयोग्य। नालायक।
नाकाम–वि० [फ़ा०] [संज्ञा नाकामी] १. विफल-मनोरथ। २. निराश।
ना-खुदा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] मल्लाह।
नागना*–क्रि० अ० [हिं० नागा] नागा करना। अंतर डालना।
नाचार–वि० [फ़ा०] [संज्ञा नाचारी] विवश। लाचार।
नाज-बरदारी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] नाज़ उठाना। चोचले सहना।
नाज़िल–वि० [अ०] ऊपर से उतरनेवाला।
नाजी–संज्ञा पुं० १. आधुनिक जर्मनी का एक बहुत बलवान दल जो अपने आपको राष्ट्रीय साम्यवादी कहता है। २. इस दल का सदस्य।
नाजो–वि० स्त्री० [हिं० नाज] १. दुलारी। २. प्रियतमा। ३. नाजनी।
नातरफदार–वि० [हिं० ना + फ़ा० तरफ़दार] [भाव० ना-तरफदारी] जो किसी एक पक्ष की तरफ न हो। तटस्थ।
नातवाँ–वि० [फ़ा०] [संज्ञा नातवानी] कमजोर। दुर्बल।
नादित–वि० [सं०] जिसमें नाद या शब्द होता हो। शब्दित।
ना-पायदार–वि० [फ़ा०] [संज्ञा नापायदारी] जो मजबूत या टिकाऊ न हो। कमजोर।
ना-पास–वि० [हिं० ना + अं० पास] जो पास या उत्तीर्ण न हुआ हो। अनुत्तीर्ण।
नापैद–वि० [फ़ा० ना + पैदा] १. जो पैदा न हुआ हो। २. विनष्ट। ३. अप्राप्य।
नाम-जदगी–संज्ञा स्त्री० [फा०] किसी काम या चुनाव आदि में किसी का नाम निश्चित किया जाना।
नामदार–वि० दे० "नामवर"।
नाम-पट्ट–संज्ञा पुं० [सं०] वह पट्ट जिस पर किसी व्यक्ति या संस्था आदि का नाम लिखा हो। साइनबोर्ड।
नामांतर–संज्ञा पुं० [सं०] एक ही वस्तु या व्यक्ति का दूसरा नाम। पर्याय।
नामालूम–वि० [फ़ा०+अ०] १. बिना जाना हुआ। अज्ञात। २. अपरिचित। ३. अप्रसिद्ध।
नायाब–वि० [फ़ा०] १. जो जल्दी न मिले। अप्राप्य। २. बहुत बढ़िया।
नारिदान*–संज्ञा पुं० नाबदान।
नारीत्व–संज्ञा पुं० [सं०] नारी या स्त्री

होने या भाव। स्त्रीत्व। औरतपन।
नायाशिफ–वि० [फा० + अ०] अपरिचित। अनजान।
नाशन–सज्ञा पु० [स०] नाश करना।
वि० [स्त्री० नाशिनी] नाश करनेवाला।
नाशमय–वि० [स० नाश + मय] [स्त्री० नाशमयी] नश्वर। नाशवान्।
नासीर–सज्ञा पु० [अ०] सेना का अग्र-भाग।
नास्य–वि० [स०] नाक सबधी। नासिका।
निंदाई–सज्ञा स्त्री० [हिं० निराना] निराने की क्रिया या भाव या मजदूरी।
नि स्पद–वि० [स०] जिसमें किसी प्रकार का स्पदन न हो। निश्चल।
नि स्वन–वि० [स०] जिसमें किसी प्रकार का शब्द न हो। नि शब्द।
निआर्थी*–वि० [हिं० न + अर्थ] निर्धन। गरीब।
निकदना*–क्रि० स० [स० निकदन] नष्ट करना।
निकष–सज्ञा पु० [स०] १ कसौटी का पत्थर। २ तलवार की म्यान।
निखर्व–वि० [स०] दस हजार करोड।
सज्ञा पु० दस हजार करोड की सख्या या अक।
निखुटना–क्रि० अ० [?] खतम होना।
निखोटना–क्रि० स० [हिं० नख] नाखून से नोडना या काटना।
निगद, निगदन–सज्ञा पु० [स०] [वि० निग-दित] भाषण। कथन।
निजस्व–सज्ञा पु० [स०] १ अपनापन। २ मौलिकता।
निजाअ–सज्ञा पु० [अ०] १ झगडा। तकरार। २ शत्रुता। बैर।
निजाई–वि० [अ०] जिसके सबध में कोई झगडा हो।
निजी–वि० [स० निज] निज का। अपना। व्यक्तिगत।
निदाह*–सज्ञा पु० दे० 'निदाघ'।
निनरआ†–वि० [हिं० निनारा] [स्त्री० निनरई] एकमात्र पुत्र।
निनादना*–क्रि० अ [स० निनाद] निनाद या शब्द करना।
निर्मम–वि० [स० नि + मर्म] जिसमें मर्म न हो। मर्म-रहित।
निमाज–सज्ञा स्त्री० १ दे० "नवाज"। २ दे० "नमाज"।
निमिस–सज्ञा स्त्री० दे० "नमिस"।
निमीलन–वि० [स०] [वि० निमीलित] १ बद करना। मूंदना। २ सिकोडना।
निमोक्त–वि० [स०] नीचे कहा हुआ।
नियाज–सज्ञा स्त्री० [फा०] १ इच्छा। २ दीनता। ३ बडो का प्रसाद। ४ मृतक के उद्देश्य म दरिद्रो को दिया जानेवाला भोजन। ५ बडो में होनेवाली भेंट।
निरतरता–सज्ञा स्त्री० [स०] निरतर या लगातार होनेवाला भाव। अविच्छिन्नता।
निरकार*–वि० दे० "निराकार"।
निरतिशय–वि० [स०] हद दरजे का। सबसे बढकर।
निरदई*–वि० दे० 'निर्दय"।
निरपवाद–वि० [स०] जिसम कोई अपवाद या दोष न हो। निर्दोष।
निरर्थ–वि० दे० 'निरर्थक'।
निरवच्छिन्न–वि० [स०] जिसका क्रम न टूटा हो। सिलसिलेवार।
निरवद्य–वि० [स०] निंदा या दोष से रहित।
निरवधि–वि० [स०] जिसकी कोई अवधि न हो।
क्रि० वि० लगातार। निरतर।
निरवाहना*–क्रि० अ० [स० निर्वाह] निर्वाह करना। निभाना।
निराकाक्षा–सज्ञा स्त्री० [स०] [वि० निरा-काक्षी] आकाक्षा या कामना का अभाव।
निरानद–वि० [स०] आनद रहित। जिसम आनद न हो।
सज्ञा पु० आनद का अभाव। दु ख।
निरावृत्त–वि० [स०] बिना ढँका हुआ।
निरीश्वर–वि० [स०] जिसमे ईश्वर न हो। ईश्वर से रहित।
सज्ञा पु० दे० "निरीश्वरवादी।

निरुद्देश्य–वि० [सं०] जिसका कोई उद्देश्य न हो।
क्रि० वि० विना किसी उद्देश्य के।
निरूप्य–वि० [सं०] १. निरूपण या निर्णय करने के योग्य। २. जिसका निरूपण होने को हो।
निरोधी–वि० दे० "निरोधक"।
निर्खनामा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह पत्र जिस पर सब चीजों का निर्ख या भाव लिखा हो।
निर्खबंदी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] चीजों के भाव या दर निश्चित करना।
निर्घात–संज्ञा पुं० [सं०] १. तेज हवा चलने का शब्द। २. बिजली की कड़क। ३. एक प्रकार का अस्त्र।
निर्झरिणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी। दरिया।
निर्णायक–संज्ञा पु० [सं०] वह जो निर्णय या फैसला करे।
निर्दंभ–वि० [सं०] जिसे दंभ या अभिमान न हो।
निर्दयपन–संज्ञा पुं० दे० "निर्दयता"।
निर्दल–वि० [सं०] जिसमें दल या पत्र न हों।
निर्धंधा–वि० [हिं० निः + धंधा] जिसके हाथ में काम धंधा न हो। बे-रोजगार।
निर्धार–संज्ञा पु० दे० "निर्धारण"।
निर्धारक–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० निर्धारिका, निर्धारिणी] वह जो किसी बात का निर्धारण या निश्चय करता हो।
निर्बाध–वि० [सं०] जिसमें कोई बाधा न हो। बाधा रहित।
क्रि० वि० बिना किसी प्रकार की बाधा के।
निर्बाधित–वि० दे० "निर्बाध"।
निर्ममता–संज्ञा स्त्री० [सं०] निर्मम होने की अवस्था या भाव।
निर्यात–संज्ञा पु० [सं०] १. वह जो कहीं से बाहर निकले। २. देश से बाहर जाने की क्रिया या जानेवाला माल।
निर्लेप–वि० दे० "निर्लिप्त"।
निर्वचन–संज्ञा पु० [सं०] निश्चित रूप से कोई बात कहना। निरूपण।
वि० चुप। मौन। निर्वाक्।
निर्वसन–वि० [सं०] [स्त्री० निर्वसना] नग्न। नंगा।
निर्वाक्–वि० [सं०] मौन। चुप।
निर्वाचन-क्षेत्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान या क्षेत्र जिसे अपना प्रतिनिधि चुनने का अधिकार हो।
निर्वापण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० निर्वापित, निर्वाप्य] १. अंत। समाप्ति। २. विनाश। ३. आग का बुझना। ४. दान।
निर्वासक–संज्ञा पु० [सं०] १. वह जो निर्वासन करता हो। २. देश निकाला देनेवाला।
निर्वासित–वि० [सं०] जिसे देश निकाला मिला हो। अपने निवासस्थान से निकाला हुआ।
निर्विरोध–वि० [सं०] जिसमें कोई विरोध या बाधा न हो।
क्रि० वि० बिना किसी विरोध या रुकावट के।
निर्वेद–संज्ञा पु० [सं०] १. अपना अपमान। २. खेद। दुःख। ३. वैराग्य।
निर्वैर–वि० [सं०] वैर या द्वेष से रहित।
निशामुख–संज्ञा पु० [सं०] संध्या का समय।
निशिचारी–संज्ञा पु० दे० "निशाचर"।
निशित–वि० [सं०] चोखा। तेज।
संज्ञा पु० लोहा।
निश्चेतन–वि० [सं०] १. बेसुध। बेहोश। २. जड़।
निष्कंप–वि० [सं०] जो काँपता या हिलता न हो। स्थिर।
निष्करुण–वि० [सं०] जिसमें करुणा न हो। करुणारहित।
निष्कृत–वि० [सं०] [संज्ञा निष्कृति] १. निकला हुआ। २. छूटा हुआ। मुक्त।
निष्क्रांत–वि० [सं०] [भा० निष्क्रांति] १. निकला या निकाला हुआ। २. छूटा हुआ। मुक्त।
निष्पाप–वि० [सं०] जो पाप से बहुत दूर हो। पापरहित।
निष्प्राण–वि० [सं०] प्राण रहित। मृत। मुरदा।
निसंग–वि० दे० "निःसंग"।

निसरावन–संज्ञा पुं० [सं० निस्सरण] ब्राह्मण को दिया जानेवाला अगिद्ध अन्न। सीधा।
निसहाय–वि० दे० "निस्सहाय"।
निस्तंद्र–वि० [सं०] १ जिसे तंद्रा न आई हो। २ जागा हुआ। जाग्रत।
निस्तरंग–वि० [सं०] जिसमें तरंग या लहर न हो। शांत।
निस्तल–वि० [सं०] [भा० निस्तलता] १ जिसका तल न हो। २ जिसके तल की थाह न हो। बहुत गहरा। ३ गोल। वृत्ताकार। ४ नीचा। निम्न।
निस्पंद–वि० [सं०] [भा० निस्पंदता] १ जो हिलता-डोलता न हो। स्थिर। २ निश्चेष्ट। स्तब्ध।
निस्वन–संज्ञा पुं० [सं०] ध्वनि। शब्द।
निस्संग–वि० [सं०] १ जो किसी से कोई संबंध न रखता हो। २ विषय-विकार से रहित। ३ निर्जन। एकांत। ४ अकेला।
निस्संबल–वि० [सं०] जिसका कोई संबल, सहारा या ठिकाना न हो।
निस्सत्व–वि० [सं०] जिसमें कुछ भी सत्व न हो। असार।
निस्सहाय–वि० [सं०] जिसका कोई सहायक न हो। असहाय।
निस्स्नेह–वि० [सं०] जिसमें स्नेह या प्रेम न हो।
संज्ञा पुं० स्नेह या प्रेम का अभाव।
निहुराई–संज्ञा स्त्री० [हिं० निहुरना] निहुरने या झुकने की क्रिया।
*संज्ञा स्त्री० दे० 'निष्ठुरता''।
नींदना*–क्रि० अ० [हिं० नींद] नींद लेना। सोना।
क्रि० स० दे० 'निराना'।
नीड़ज, नीड़ज–संज्ञा पुं० [सं०] चिड़िया। पक्षी।
नीतिवादी–संज्ञा पुं० [सं०] वह जो सब काम नीति-शास्त्र के अनुसार करना चाहता हो।
नीप–संज्ञा पुं० [सं०] १ कदंब। २ गुलदुपहरिया। ३ पहाड़ का निचला भाग।
नीपना*–क्रि० स० दे० "लीपना"।
नीरता–संज्ञा स्त्री० [सं०] "नीर" का भाव। पानीपन।
नीरधर–संज्ञा पुं० [सं०] बादल। मेघ।
नीरव–वि० [सं०] १ जिसमें किसी प्रकार का शब्द न हो। २ जो कुछ न बोलता हो। चुप।
नीरवता–संज्ञा स्त्री० [सं०] निःशब्द या चुप होने का भाव। चुप्पी। सन्नाटा।
नीरा*–क्रि० वि० [हिं० नियर] पास। समीप।
नीराजना*–क्रि० अ० [सं० निराजन] आरती करना।
नीसक*–वि० [सं० निःशक्त] कमजोर।
नुकना*–क्रि० अ० दे० "लुकना"।
नुमाइंदा–संज्ञा पुं० [फा०] प्रतिनिधि।
नृमणि–संज्ञा पुं० [सं०] श्रेष्ठ पुरुष।
नेई*–संज्ञा स्त्री० दे० "नींव"।
नेगम–संज्ञा पुं० दे० 'निगम''।
नेतक–संज्ञा पुं० [देश०] चुँदरी। चूनर।
नेतागिरी–संज्ञा स्त्री० दे० "नेतृत्व"।
नेतृत्व–संज्ञा पुं० [सं०] नेता होने का भाव, कार्य या पद। नायकत्व। सरदारी।
नेपुर*–संज्ञा पुं० दे० "नूपुर"।
नेमत–संज्ञा स्त्री० दे० 'नियामत''।
नैचाबंद–संज्ञा पुं० [फा०] वह जो हुक्के का नैचा बनाता हो।
नैरंतर्य–संज्ञा पुं० दे० 'निरंतरता'।
नैर्मल्य–संज्ञा पुं० [सं०] निर्मलता।
नैश–वि० [सं०] निशा संबंधी। रात का।
नैसिक, नैसुक–वि० [हिं० नेक] थोड़ा। तनिक।
नोइनी, नोई–संज्ञा स्त्री० [हिं० नोवना] वह रस्सी जो गौ दूहते समय उसके पिछले पैरों में बाँधी जाती है।
नोचू–वि० [हिं० नोचना] नोचन खसोटने या छीनने झपटनेवाला।
नोनखा–संज्ञा पुं० [हिं० नोन] १ नमक मिली हुई आम की फाँकें। २ नमकीन अचार।

नोन-हरामी–वि० दे० "नमक-हराम"।
नौकराना–संज्ञा पुं० [हिं० नौकर] नौकरों को मिलनेवाली दस्तूरी।
नौगर, नौगिरहो*–संज्ञा स्त्री० दे० "नौग्रह"।
नौग्रहो–संज्ञा स्त्री० [हिं० नौ + ग्रह] हाथ में पहनने का एक गहना।
नौजी–संज्ञा स्त्री० दे० "न्योजी"।
नौबतीदार–संज्ञा पुं० दे० "नौबती"।
नौसर–संज्ञा पुं० [हिं० नौ + सर] १. धूर्तता। चालबाजी। २. जालसाजी।
नौसरा–संज्ञा पुं० [हिं० नौ + सर] नौ लड़ों का हार।
नौसरिया–वि० [हिं० नौसर] १. धूर्त्त। चालबाज़। २. जालसाज़।
न्याना*†–वि० [सं० अज्ञान] अनजान। नासमझ।
न्यायसभा–संज्ञा स्त्री० दे० "न्यायालय"।
पंकजयोनि–संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा।
पंचाशिक–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक ही प्रकार की पचास चीजों का समूह।
पंजरना*–क्रि० अ० दे० "पजरना"।
पंत्यारी*–संज्ञा स्त्री० दे० "पंक्ति"।
पंदरह–वि० [सं० पंचदश] दस और पाँच। संज्ञा पु० दस और पाँच की सूचक संख्या १५।
पंप–संज्ञा पु० [अं० पम्प] १. वह नल जिसके द्वारा पानी या हवा एक तरफ से दूसरी तरफ पहुँचाई जाती है। २. एक प्रकार का जूता।
पंपाल–वि० [हिं० पाप ?] १. पापी। २. दुष्ट।
पइठना*–क्रि० अ० दे० "पैठना"।
पक्ष्म–संज्ञा पु० [सं०] आँख की बरौनी।
पक्ष्मिल–वि० [सं०] जिसमें बरौनी हो।
पखाली–संज्ञा पुं० [हिं० पखाल] पखाल या मशक से पानी भरनेवाला। माशकी। भिश्ती।
पचपन–वि० [सं० पंचपंचाश] पचास और पाँच।
संज्ञा पु० पचास और पाँच की सूचक संख्या ५५।
पचवाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० पाँच] एक प्रकार की देशी शराब।
पचौनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० पचना] पेट के अंदर की वह थैली जिसमें भोजन पचता है।
पच्छताई*–संज्ञा स्त्री० दे० "पक्षपात"।
पछमन*–क्रि० वि० [हिं० पीछ] पीछे।
पछलगा–वि० दे० "पिछलगा"।
पछलत्त–संज्ञा स्त्री० दे० "पिछलत्ती"।
पजोखा†–संज्ञा पुं० [?] मातमपुरसी।
पटइन–संज्ञा स्त्री० [हिं० पटवा] पटवा जाति की स्त्री।
पटकार–संज्ञा पु० [सं०] जुलाहा।
पटझोल*–संज्ञा पु० [हिं० पट + झोल] अंचल। आँचल।
पटासन–संज्ञा पुं० [सं०] बैठने के लिये कपड़े का बना आसन।
पटौतन–संज्ञा पुं० [हिं० पटना] ऋण आदि का परिशोध। कर्ज चुकना।
पटौनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० पटना] पटने या पटाने की क्रिया या भाव।
पटौहाँ†–संज्ञा पुं० [हिं० पटना] १. पटा हुआ स्थान। २. पट-बंधक।
पढ़वाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० पढ़वाना] पढ़-वाने की क्रिया, भाव, पारिश्रमिक।
पढ़वैया–वि० [हिं० पढ़ना] पढ़ने पढ़ानेवाला।
पढ़ैया–संज्ञा पु० [हिं० पढ़ना] पढ़नेवाला।
पण्यवीथी–संज्ञा स्त्री० [सं०] बाजार।
पतंगम*–संज्ञा पुं० [सं० पतंग] १. पक्षी। २. फतिंगा।
पतझर–संज्ञा स्त्री० दे० "पतझड़"।
पतिकामा–वि० स्त्री० [सं०] पति की कामना रखनेवाली स्त्री।
पति-देवता–संज्ञा स्त्री० [सं०] पति को देवता के समान माननेवाली स्त्री।
पतुकी*–संज्ञा स्त्री० दे० "पतीली"।
पत्राचार–संज्ञा पुं० [सं०] चिट्ठियों का आना-जाना। पत्र-व्यवहार।
पथरौटा–संज्ञा पुं० [हिं० पत्थर] [स्त्री० अल्पा० पथरौटी] पत्थर का कटोरा।

पयेरा–संज्ञा पु० [हिं० पाथना] १ पाथने या काम करनेवाला। २ कुम्हार।
पयौरा–संज्ञा पु० [हिं० पाथना] वह स्थान जहाँ कडे पाथे जाते हैं।
पदग–वि० [स०] पैदल चलनेवाला।
पदचार–संज्ञा पु० दे० "पदचारण"।
पदचारण–संज्ञा पु० [स०] १ चलना। २ टहलना।
पदचारी–संज्ञा पु० [स० पद+चारिन्] [स्त्री० पदचारिणी] पैदल चलनेवाला। संज्ञा स्त्री० दे० "पदचारण"।
पदाक्रांत–वि० [स०] पैरों तले कुचला या रौंदा हुआ।
पद्मिनी*–संज्ञा स्त्री० दे० "पद्मिनी"।
पद्मेशय–संज्ञा पु० [स०] विष्णु।
पनकाल–संज्ञा पु० [हिं० पानी+अकाल] अति वृष्टि के कारण होनेवाला अकाल।
पनग*–संज्ञा पु० [स० पन्नग] [स्त्री० पनगिन, पनगनि] साँप।
पन-डब्बा–संज्ञा पु० [हिं० पान+डब्बा] [स्त्री० अल्पा० पनडब्बी] पानदान।
पनह*–संज्ञा स्त्री दे० "पनाह"।
पनियाना†–क्रि० अ० [हिं० पानी] पानी देना। सींचना।
पनिहार–संज्ञा पु० [स्त्री० पनिहारिन] दे० "पनहार"।
पपडीला–वि० [हिं० पपडी] जिस पर पपडी जमी हो। पपडीदार।
पपीलि*–संज्ञा स्त्री [स० पिपीलिका] च्यूँटी। चीटी।
पपीहरा–संज्ञा पु० दे० "पपीहा"।
पवरना*–क्रि० स० दे० "पँवारना"।
पब्बि*–संज्ञा स्त्री० [स० पवि] वज्र।
पब्लिक–संज्ञा स्त्री० [अ०] जन साधारण। जनता।
वि० जन साधारण का। सार्वजनिक।
पमाना*–क्रि० अ० [?] डींग हाँकना।
परजंक*–संज्ञा पु० दे० "पर्यंक"।
परजात–संज्ञा स्त्री० [स० पर+जाति] दूसरी जाति।
वि० दूसरी जाति का।
परतिग्या*–संज्ञा स्त्री० दे० "प्रतिज्ञा"।
परद*–संज्ञा पु० दे० "परदा"।
परदानी*–संज्ञा स्त्री० [देश०] १ धोती। २ दान-दक्षिणा।
परदाज–संज्ञा पु० [फा०] [भाव० परदाजी] १ सजाना। २ चित्र आदि के चारों ओर बेल-बूटे बनाना। ३ चित्रों में अभीष्ट रंगत लाने के लिए बहुत पास पास महीन बिंदु लगाना।
परपरा–वि० [अनु०] १ जो परपराता हो। २ पर पर शब्द के साथ टटनेवाला।
पर-पुरुष–संज्ञा पु० [स०] स्त्रियों के लिए अपने पति के अतिरिक्त दूसरे लोग।
परबल*–वि० दे० "प्रबल"।
परबस–वि० [हिं० पर+वश] दूसरे के वश में पड़ा हुआ। पर-तंत्र।
परमटा–संज्ञा पु० दे० "परनेला"।
परम-पुरुष–संज्ञा पु० [स०] परमात्मा।
परमिति*–संज्ञा स्त्री० [स० परम] चरम सीमा या मर्यादा।
परमेष्ट–वि० [स० परम+इष्ट] जो परम इष्ट या प्रिय हो।
परमोदना*†–क्रि० स० [स० प्रबोध] १ दे० "परबोधना"। २ मीठी मीठी बात करके अपनी तरफ मिलाना।
परारब्ध, परालब्ध–संज्ञा स्त्री० दे० "प्रारब्ध"।
परावृत्त–वि० [स०] [स परावृत्ति] १ लौटा या लौटाया हुआ। २ बदला हुआ। परिवर्तित। ३ भागा हुआ।
परास्तता–संज्ञा स्त्री० [स०] पराजय। हार।
परिघोष–संज्ञा पु० [स०] १ तेज या भारी आवाज। २ बादल का गरजना।
परिचना*–क्रि० अ० दे० "परचना"।
परिच्छा*–संज्ञा स्त्री० दे० "परीक्षा"।
परितप्त–वि० [स०] १ तपा हुआ। उत्तप्त। २ जिसे दुःख पहुँचा हो। ३ पछतानेवाला।
परितृप्त–वि० [स०] [स० परितृप्ति] जिसका अच्छी तरह परितोष हो गया हो। भली भाँति तृप्त।

परित्यागना*–क्रि० स० [सं० परित्याग] छोड़ देना। त्यागना।
परित्राता–संज्ञा पुं० [सं० परित्रातृ] परित्राण या रक्षा करनेवाला।
परिदर्शन–संज्ञा पुं० [सं०] १. घूम घूमकर देखना। २. निरीक्षण। मुआयना।
परिदाह–संज्ञा पुं० [सं०] बहुत अधिक मानसिक कष्ट।
परिपालना–संज्ञा स्त्री० दे० "परिपालन"।
परिपालित–वि० [सं०] १. जिसका परिपालन किया गया हो। २. पाला-पोसा हुआ।
परिपूत–वि० [सं०] १.पवित्र। २. साफ किया हुआ। विशुद्ध।
परिप्रोत–वि० [सं०] पूरी तरह से भरा हुआ। भरपूर।
परिप्लावित–वि० दे० "परिप्लुत"।
परिबृंहण–संज्ञा पु० [सं०] १. उन्नति। तरक्की। २. परिशिष्ट।
परिमाप–संज्ञा पु० [सं०] [वि० परिमापक] १. नापने की क्रिया या भाव। २. वह पदार्थ या आदर्श जिससे दूसरे पदार्थों का माप किया जाय। मानदंड।
परिवर्जन–संज्ञा पु० [सं०] [वि० परिवर्जनीय] मना करना।
परिसर–संज्ञा पु० [सं०] १. आस पास की जमीन। २. मैदान। ३. पड़ोस। ४. स्थिति। ५. मृत्यु।
परिसेवना, परिसेवा–संज्ञा स्त्री० दे० "सेवा"।
परिहारना–क्रि० स० [सं० परिहार + ना (प्रत्य०)] १. परिहार करना। दूर करना। २. दे० "परिहरना"।
परीशान–वि० दे० "परेशान"।
परेड–संज्ञा स्त्री० [अं०] सैनिकों आदि की क़वायद।
परोना–क्रि० स० दे० "पिरोना"।
पर्यवेक्षण–संज्ञा पु० [सं०] [वि० पर्यवेक्षित] अच्छी तरह देखना। निरीक्षण।
पर्यसन–संज्ञा पु० [सं०] [वि० पर्यस्त] १.दूर करना। हटाना। २. फेंकना। ३. नष्ट करना।
पलटी–संज्ञा स्त्री० [हिं० पलटना] १. पलटे या पलटे जाने की क्रिया या भाव। २. बदली। तबादला।
पलिका*–संज्ञा पुं० दे० "पलका"।
पल्टा–संज्ञा पुं० दे० "पलटा"।
पल्लवग्राही–वि० [सं०] केवल ऊपर ऊपर से ज्ञान प्राप्त करनेवाला।
पल्लवन–संज्ञा पुं० [सं०] १. पल्लव उत्पन्न करना या निकालना। २. किसी बात या विषय का विस्तार करना।
पल्वल–संज्ञा पु० [सं०] छोटा तालाब या गड्ढा।
पवमान–संज्ञा पु० [सं०] १. पवन। वायु। हवा। २. गार्हपत्य अग्नि।
वि० पवित्र करनेवाला।
पसारा–संज्ञा पु० दे० "पसार"।
पसाहन*–संज्ञा पु० [सं० प्रसाधन] अंग-राग।
पसिंजर–संज्ञा पुं० [अं० पैसिंजर] रेल या जहाज आदि का यात्री।
संज्ञा स्त्री० मुसाफिरों के लिए वह गाड़ी जो हर स्टेशन पर ठहरती चलती है।
पसित*–वि० [सं० पस] बँधा हुआ।
पहराइत*–संज्ञा पु० [हिं० पहरा] पहरे-दार।
पहरावन–संज्ञा पु० [हिं० पहराना] १. पह-नावा। पोशाक। २. दे० "पहरावनी"।
पहांटना*–क्रि० स० [?] तेज करना।
पहु*–संज्ञा स्त्री० दे० "पौ"।
पहुड़ना–क्रि० अ० दे० "पौढ़ना"।
पाउडर–संज्ञा पु० [अं०] १. चूर्ण। बुकनी। २. चेहरे या शरीर पर लगाने का चूर्ण।
पाकिस्तान–संज्ञा पुं० [फा०] [वि० पाकि-स्तानी] भारत का वह कल्पित खंड जो आजकल कुछ मुसलमान उन प्रान्तों को मिलाकर बनाना चाहते हैं जिनमें मुसलमानों की बस्ती अधिक है।
पाकेट–संज्ञा पु० [अं०] जेब। खीसा।
यौ०—पाकेटमार = गिरहकट।
पाटीर–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का चंदन।

पाठावली–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पाठों का समूह। २ पाठों की पुस्तक।
पादज–वि० [सं०] पैर से उत्पन्न।
संज्ञा पु० शूद्र।
पान्यो*–संज्ञा पु० दे० "पानी"।
पापग्रह–संज्ञा पु० [सं०] शनि, राहु, केतु आदि अशुभ फल देनेवाले ग्रह। (फलित)
पापीयस–वि० [सं०] [स्त्री० पापीयसी] पापी। पातकी।
पायतख्त–संज्ञा पु० [फा०] राजधानी।
पायतन*–संज्ञा पु० दे० "पायँता"।
पायान–वि० [फा०] [संज्ञा पायाबी] इतना कम गहरा (जल) जो पैदल चलकर पार किया जा सके।
पारंपरीण–वि० [सं०] परंपरा से चला आया हुआ। परंपरा-गत।
पारत्रिक–वि० दे० "पारलौकिक"।
पारदर्शिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] पारदर्शी होने का भाव।
पारसा–वि० [फा०] [संज्ञा पारसाई] धर्मनिष्ठ। सदाचारी।
पार्क–संज्ञा पु० [अं०] उद्यान। बाग।
पार्टी–संज्ञा स्त्री० [अं०] १ दल। २ वह सम्मिलन जिसमें लोगों को बुलाकर जलपान या भोजन कराया जाता है।
पार्थी–संज्ञा पु० वि० दे० "पार्थिव"।
पालनीय–वि० [सं०] पालन करने योग्य। पाल्य।
पावती–संज्ञा स्त्री० [हिं० पाना] रुपये पाने का सूचक पत्र। रसीद।
पाशवता–संज्ञा स्त्री० दे० "पशुता"।
पाशविक–वि० दे० "पाशव"।
पाश्चात्यीकरण–संज्ञा पु० [सं० पाश्चात्य + करण] किसी देश या जाति आदि को पाश्चात्य सभ्यता के साँचे में ढालना। पाश्चात्य ढंग का बनाना।
पाषाणी–वि० स्त्री० [सं०] पत्थर की तरह कठोर हृदयवाला।
पाषाणीय–वि० [सं०] पत्थर का।
पासबान–संज्ञा पु० [फ़ा०] १ चौकीदार। पहरेदार। २ रक्षक। रखवाला।
संज्ञा स्त्री० रखी हुई स्त्री। रखेली। रखनी। (राजपूताना)।
पासबानी–संज्ञा स्त्री० [फा०] २ चौकीदारी। २ रक्षा। हिफ़ाजत।
पासि, पासिक*–संज्ञा पु० [सं० पाश] १. फंदा। २ बंधन।
पिचपिचा–वि० [अनु०] १. लसदार। चिपचिपा। २ दबा हुआ और गुलगुला।
पिछलत्ती–संज्ञा स्त्री० [हिं० पीछा + लात] घोड़े आदि का पिछले पैरों से मारना।
पिछआर*–संज्ञा पु० दे० "पिछवाड़ा"।
पिछेलना–क्रि० स० [हिं० पीछे] १ धक्का देकर पीछे हटाना। २. पीछे छोड़ना।
पिट्टस–संज्ञा स्त्री० [हिं० पीटना] शोक के समय छाती पीटना।
पितिया–संज्ञा पु० [सं० पितृव्य] [स्त्री० पितियानी] चाचा।
वि० चाचा के स्थान का। जैसे पितिया ससुर।
पितृवन–संज्ञा पु० [सं०] श्मशान।
पिथौरा–संज्ञा पु० दिल्ली के महाराज पृथ्वीराज चौहान।
पिपरमेंट–संज्ञा पु० [अं० पेपरमिंट] १ पुदीने की तरह का एक पौधा। २ इस पौधे का प्रसिद्ध सत्त जो दवा के काम आता है।
पियाबाँसा–संज्ञा पु० दे० "कटसरैया"।
पिरोहना*–क्रि० अ० दे० "पिरोना"।
पिलकना*–क्रि० अ० [देश०] गिरना, भूलना या लटकना।
पिलकुआँ–संज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का देशी जूता।
पिसाना–क्रि० स० [हिं० पीसना] पीसने का काम दूसरे से कराना।
† क्रि० अ० दे० "पिसना"।
पींडुरी*–संज्ञा स्त्री० दे० "पिंडली"।
पीठिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आधार। २ आसन। ३. छोटा पीढ़ा। ४ परिच्छेद।
पीतमणि–संज्ञा पु० [सं०] पुखराज।

पीयर*–वि० दे० "पीला"।
पीटना*–क्रि० स० दे० "पेरना"।
पुछवैया–वि० [हिं० पूछना] १. पूछनेवाला। २. खोज खबर लेनेवाला।
पुजंता–वि० [हिं० पूजना] पूजा करनेवाला। पूजक।
पुटरी, पुटली–संज्ञा स्त्री० दे० "पोटली"।
पुटियाना†–क्रि० स० [?] फुसलाना।
पुतना–क्रि० अ० [हिं० पोतना] पोता जाना। पुताई होना।
पुतारा–संज्ञा पुं० दे० "पुचारा"।
पुत्रवान्–वि० पुं० [सं०] [स्त्री० पुत्रवती] जिसके पुत्र हों।
पुनरावर्त्तन–संज्ञा पुं० [सं०] [कर्त्ता पुनरावर्त्ती] १. बार बार लौटकर आना। २. बार बार संसार में जन्म लेना।
पुनरुज्जीवन–संज्ञा पुं० [सं०] [संज्ञा पुनरुज्जीवित] फिर से जीवित होना।
पुनरुत्थान–संज्ञा पुं० [सं०] १. फिर से उठना। २. पतन होने के बाद फिर से उठना या उन्नति करना।
पुनर्जीवन–संज्ञा पु० १. दे० "पुनरुज्जीवन"। २. पुनर्जन्म।
पुन्यता, पुन्यताई*–संज्ञा स्त्री० [सं० पुण्य] १. धर्मशीलता। २. पवित्रता।
पुरंध्री–संज्ञा स्त्री० [सं० पुरन्ध्री] १. पत्नी। भार्या। स्त्री। २. बालबच्चोंवाली स्त्री।
पुरइया†–संज्ञा पु० [देश०] १. तकली। २. बुनाई में कातना।
पुरट–संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ण। सोना।
पुरस्सर–वि० दे० "पुरःसर"।
पुरांगना–संज्ञा स्त्री० [सं०] नगर में रहनेवाली स्त्री। नगर-निवासिनी।
पुरातनता–संज्ञा स्त्री० [सं०] प्राचीनता। पुरानापन।
पुरैन, पुरैन–संज्ञा स्त्री० [सं० पुटकिनी] १. कमल का पत्ता। २. कमल।
पुरौं*–संज्ञा पु० दे० "पुरवट"।
पुरौती†–संज्ञा स्त्री० दे० "पूर्त्ति"
पुष्करिणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] छोटा तालाब।
पुष्पागम–संज्ञा पुं० [सं०] वसंत ऋतु।
पुसकर*–संज्ञा पु० दे० "पुष्कर"।
पुस्तिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] छोटी पुस्तक।
पुहना–क्रि० अ० [हिं० पोहना का अ०] पोहा जाना। पिरोया या गूँथा जाना।
पुहुपराग*–संज्ञा पुं० दे० "पुखराज"।
पूँगी–संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की बाँसुरी।
पूँजीदारी–संज्ञा स्त्री० [हिं० पूँजी + फ़ा० दारी] ऐसी आर्थिक व्यवस्था जिसमें पूँजीदारों का स्थान प्रधान और सबसे बढ़कर हो।
पूँजीवाद–संज्ञा पुं० [हिं० पूँजी+सं० वाद] वह सिद्धान्त जिसमें आर्थिक क्षेत्र में पूँजीदारों का स्थान आवश्यक रूप से प्रमुख माना जाता हो।
पूँजीवादी–संज्ञा पुं० [हिं० पूँजी+सं० वादिन्] वह जो पूँजीवाद के सिद्धांत मानता हो।
पूजार्ह–वि० [सं०] पूज्य।
पूतनारि–संज्ञा पु० [सं०] श्रीकृष्ण।
पृथकता–संज्ञा स्त्री० दे० "पृथक्ता"।
पृथक्ता–संज्ञा स्त्री० [सं०] अलग होने का भाव। पार्थक्य। अलगाव।
पृथुल–वि० [सं०] [संज्ञा पृथुला] १. स्थूल। बड़ा। २. विशाल। ३. विस्तृत।
पृष्ठ-भूमि–संज्ञा स्त्री० दे० "पृष्ठिका"।
पृष्ठिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पिछला भाग। २. मूर्त्ति या चित्र में वह सबसे पीछे का भाग जो अंकित दृश्य या घटना का आश्रय होता है। पृष्ठ-भूमि।
पेट्रोल–संज्ञा पु० [अं०] मिट्टी के तेल की तरह का एक प्रसिद्ध खनिज तरल पदार्थ जिसके ताप से मोटरें आदि चलती हैं। संज्ञा पुं० [अं० पैट्रोल] १. सैनिक रक्षा के लिए घूम घूमकर पहरा देना। २. वह सिपाही जो इस प्रकार पहरा देता हो।
पेन्शन–संज्ञा स्त्री० [अं०] वह वृत्ति जो किसी को उसकी पिछली सेवाओं के कारण मिलती है।
पेन्सिल–संज्ञा स्त्री० [अं०] एक तरह की

कलम जिसमें बिना स्याही के लिखा जाता है।
पेपर–संज्ञा पु० [अं०] १. कागज। २ समाचार पत्र।
पेमचा–संज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का रेशमी कपडा।
पेशकश–संज्ञा पु० [फा०] भेंट। उपहार।
पैग–संज्ञा स्त्री० दे० "पग"।
पैताना–संज्ञा पु० दे० "पायँता"।
पैराशूट–संज्ञा पु० दे० "छतरी"।
पैरी†–संज्ञा स्त्री० १ दे० "पीढी। २ दे० पैडी।"
पोंकना†–क्रि० अ० [अनु०] १ पतला पाखाना फिरना। २ बहुत डर जाना।
पोटी–संज्ञा स्त्री० [हिं० पोटा] कलेजा।
पोतडा–संज्ञा पु० [?] छोटे बच्चों के नीचे बिछाने का कपडे का टुकडा।
पोप–संज्ञा पु० [अं०] ईसाई धर्म का सबसे बडा प्रधान या पुरोहित।
पोलो–संज्ञा पु० [अं०] घोडे पर चढकर खेला जानेवाला चौगान।
पोस्ट आफिस–संज्ञा पु० [अं०] डाकखाना।
पोस्टमैन–संज्ञा पु० [अं०] डाकिया। चिट्ठीरसाँ।
पोस्टर–संज्ञा पु० [अं०] बहुत मोटे अक्षरों में छपा हुआ बडा विज्ञापन।
पौडना–क्रि० अ० दे० "तैरना"।
पौध–संज्ञा स्त्री० दे० "पौद"।
पौन पुनिक–वि० [सं०] पुन पुन. या बार बार होनेवाला।
पौरजन–संज्ञा पु० [सं०] नगर निवासी। नागरिक।
पौरुख*–संज्ञा पु० दे० "पौरुष"।
पौर्वापर्य–संज्ञा पु० [सं०] पूर्वापर का भाव। आगे पीछे होने का क्रम।
पौल–संज्ञा स्त्री० [सं० प्रतोली] बडा दरवाजा। फाटक।
प्यूनी*–संज्ञा स्त्री० दे० "पूनी"।
प्रकटना*–क्रि० अ० दे० "प्रगटना"।
प्रकटाना*–क्रि० स० दे० "प्रगटाना"।
प्रकाम–वि० [सं०] १ प्रचुर। बहुत अधिक। २ यथेष्ट। काफी।
प्रकाम्य–वि० दे० "प्राकाम्य"।
प्रकाशगृह–संज्ञा पु० [सं०] वह ऊँची इमारत, विशेषत समुद्र में बनी हुई इमारत जहाँ से बहुत प्रबल प्रकाश निकलकर चारों ओर फैलता हो।
प्रकीर्ण–वि० [सं०] १ बिखरा हुआ। २ मिला हुआ। मिश्रित।
प्रकृष्ट–वि० [सं०] १. उत्तम। श्रेष्ठ। २ खिंचा हुआ। ३. जोता हुआ खेत।
प्रखरता–संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रखर होने का भाव।
प्रखरताई*–संज्ञा स्त्री दे० "प्रखरता"।
प्रगत–वि० [सं०] १. मरा हुआ। मृत। २ छूटा हुआ।
प्रगति–संज्ञा स्त्री० [सं० प्र०+गति] १ आगे की ओर बढना। अग्रसर होना। २ उन्नति।
प्रगतिशील–संज्ञा पु० [हिं० प्रगति + सं० शील] वह जो बराबर आगे की ओर बढता हो।
प्रचारणा–संज्ञा स्त्री [सं०] १ प्रकट करना। फैलाना। २ चलाना।
प्रच्छाय–संज्ञा पु० [सं०] घनी छाया।
प्रच्छालना*–क्रि० स० [सं० प्रक्षालन] धोना।
प्रजातंत्री–वि० [सं०] १ प्रजातंत्र संबंधी। २ प्रजातंत्र के सिद्धांतों के अनुसार हो।
प्रजावती–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कई बच्चों की माता। २ गर्भवती। ३ बडी भौजाई।
प्रजावान्–वि० [सं०] [स्त्री० प्रजावती] जिसके आगे बाल बच्चे हों।
प्रजा-सत्तात्मक–वि० [सं०] (वह शासन-प्रणाली) जिसमें प्रजा या देश के प्रतिनिधियों की सत्ता प्रधान हो। 'राजसत्तात्मक' का उल्टा।
प्रजुरना*–क्रि० अ० [सं० प्रज्वलन] १ प्रज्वलित होना। २ चमकना।
प्रणाम–संज्ञा पु० [सं०] झुककर अभिवादन करना। नमस्कार। दंडवत्।
प्रणिधि–संज्ञा पु० [सं०] १ राजदूत। २. प्रार्थना। निवेदन। ३ मन की एकाग्रता। ४. तत्परता।

प्रणिपात–संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रणाम।
प्रतति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लंबाई-चौड़ाई। विस्तार। २. लंबी-चौड़ी और बड़ी लता।
प्रतनु–वि० [सं०] १. हलके या छोटे शरीर वाला। २. दुबला-पतला। ३. सूक्ष्म।
प्रतारित–वि० [सं०] जो ठगा गया हो। जिसे धोखा दिया गया हो।
प्रतिग्राही–संज्ञा पुं० [सं०] वह जो दान ले।
प्रतिच्छवि–संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रतिबिंब। परछाईं।
प्रतिच्छायित–वि० [सं०] १. जिसकी परछाईं पड़ी हो। २. जिस पर किसी की परछाईं पड़ी हो।
प्रतिछाया–संज्ञा स्त्री० दे० "प्रतिच्छाया"।
प्रतिज्ञात–वि० [स०] जिसके विषय में प्रतिज्ञा की गई हो।
प्रतिद्वंद्व–संज्ञा पु० [सं०] बराबरी वालों का विरोध। टक्कर।
प्रतिद्वंद्विता–संज्ञा स्त्री० [स०] बराबर वालों की लड़ाई या विरोध।
प्रतिध्वनित–वि० [सं०] प्रतिध्वनि से व्याप्त। गूँजा हुआ।
प्रतिनाद–संज्ञा पु० [सं०] प्रतिध्वनि।
प्रतिनिधि सत्तात्मक–वि० [सं०] (वह शासन-प्रणाली) जिसमे प्रजा के चुने हुए प्रतिनिधियों की सत्ता प्रधान हो। 'राज-सत्तात्मक' का उल्टा।
प्रतिनिधित्व–संज्ञा पु० [स०] प्रतिनिधि होने की क्रिया या भाव।
प्रतिफलक–संज्ञा पु० [स०] वह यंत्र जो कोई प्रतिबिंब करके उसे दूसरी वस्तु या पट पर डालता हो।
प्रतिफलित–वि० [सं०] जिसे प्रतिफल या बदला मिला हो।
प्रतिबद्ध–वि० [सं०] जिसमें कोई प्रतिबंध हो।
प्रतिभात–वि० [सं०] १. चमकता हुआ। प्रकाशित। प्रदीप्त। २. जिसका प्रादुर्भाव हुआ हो। सामने आया हुआ। ३. प्रतीत। ४. ज्ञात।
प्रतिवचन–संज्ञा पुं० [सं०] १. उत्तर (जवाब)। २. प्रतिध्वनि।
प्रतिवर्त्तन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रतिवर्तित] चक्कर काटना। फेरा लगाना। घूमना।
प्रतिविधान–संज्ञा पुं० [सं०] किसी विधान के मुकाबिले में किया जानेवाला विधान। प्रतिकार।
प्रतिश्रुति–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० प्रतिश्रुत] १. प्रतिध्वनि। २. प्रतिज्ञा। ३. मंजूरी। स्वीकृति।
प्रतिहत–वि० [सं०] जिसे कोई ठोकर या आघात लगा हो। चोट खाया हुआ।
प्रतीक्ष्य–वि० [सं०] १. प्रतीक्षा करने योग्य। २. जिसकी प्रतीक्षा की जाय।
प्रतोद–संज्ञा पुं० [सं०] १. चाबुक। कोड़ा। २. अंकुश।
प्रत्यक्षवाद–संज्ञा पु० [सं०] वह सिद्धांत जिसमें केवल प्रत्यक्ष को ही प्रधान मानते है।
प्रत्यक्षीकरण–संज्ञा पुं० [सं०] किसी वस्तु या विषय का प्रत्यक्ष ज्ञान करना।
प्रत्यपकार–संज्ञा पु० [सं०] अपकार के बदले में किया जाने वाला अपकार।
प्रत्यवाय–संज्ञा पु० [सं०] [वि० प्रत्यवायी] १. पाप। दुष्कर्म। २. विरोध। ३. अपकार। हानि। ४. बाधा। ५. निराशा।
प्रथित–वि० [स०] [स्त्री० प्रथिता] १. लंबा-चौड़ा। विस्तृत। २. प्रसिद्ध। मशहूर।
प्रदिशा–संज्ञा स्त्री० [सं०] दो दिशाओं के बीच की दिशा। कोण।
प्रदेय–वि० [स०] प्रदान करने के योग्य।
प्रपूर्ण–वि० [सं०] [संज्ञा प्रपूर्णता] अच्छी तरह भरा हुआ।
प्रबंध-कारिणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह समिति जो किसी सभा, समाज या आयोजन के सब प्रबंध करती हो।
प्रभविष्णु–वि० [स०] [संज्ञा प्रभविष्णुता] १. प्रभावशाली। २. बलवान।
प्रभात फेरी–संज्ञा स्त्री० [स० प्रभात + हिं० फेरी] प्रचार आदि के लिए बहुत सवेरे दल

बाँधकर शहर का चक्कर लगाना।
प्रभावक–वि० [सं०] प्रभाव करने या डालनेवाला।
प्रभावान्वित–वि० [सं०] जिस पर प्रभाव पड़ा हो। प्रभावित।
प्रभायित–वि० [सं० प्रभाव] जिसपर प्रभाव पडा हो।
प्रभेव*–सज्ञा पु० दे० "प्रभेद"।
प्रमथनाथ–सज्ञा पु० [सं०] शिव।
प्रमुद–वि० दे० "प्रमुदित"।
सज्ञा पु० दे० "प्रमोद"।
प्रमुदना–क्रि० अ० [सं० प्रमोद] प्रमुदित होना। प्रसन्न होना।
प्रलयकर–वि० दे० "प्रलयंकर"।
प्रवचन–सज्ञा पु० दे० "प्रवचना"।
प्रवंचित–वि० [सं०] [स्त्री० प्रवंचिता] जो ठगा गया हो।
प्रवहमान–वि० [सं० प्रवहमत] जोरो से बहता या चलता हुआ।
प्रवाहक–वि० [सं०] [स्त्री० प्रवाहिका] १ अच्छी तरह वहन करनेवाला। २ जोर से चलने या बहनेवाला।
प्रवेशक–सज्ञा पु० [सं०] १ प्रवेश करानेवाला। २ नाटको में वह अश जिसमें बीच की किसी घटना का परिचय केवल बातचीत से कराया जाता है।
प्रशंसित–वि० [सं०] [स्त्री० प्रशंसिता] जिसकी प्रशंसा की गई हो।
प्रशांति–सज्ञा स्त्री० [सं०] प्रशात या निश्चल होने का भाव। पूर्ण शांति।
प्रश्नोत्तरी–सज्ञा स्त्री० [सं० प्रश्नोत्तर] किसी विषय के प्रश्नो और उनके उत्तरो का सग्रह।
प्रष्टा–वि० [सं०] पूछने या प्रश्न करनेवाला।
प्रसवना*–क्रि० स० [सं० प्रसव] उत्पन्न करना। जन्म देना।
प्रसाधक–सज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० प्रसाधिका] १ वह जो किसी कार्य का निर्वाह करे। सपादक। २ सजावट का काम करनेवाला। ३ दूसरे के शरीर या अगों का शृगार करनेवाला।
प्रसाधन–सज्ञा पु० [सं०] १ अलकार आदि से युक्त करना। शृगार करना। सजाना। २ शृगार की सामग्री। सजावट का सामान। ३ कार्य का सम्पादन। ४. कघी से बाल झाडना।
प्रसाधिका–सज्ञा स्त्री० [सं०] वह दासी जो रानियो का शृगार करती हो।
प्रस्तर-युग–सज्ञा पु० [सं०] पुरातत्व के अनुसार किसी देश या जाति की सस्कृति के इतिहास में वह समय जब कि अस्त्र-शस्त्र और औजार आदि केवल पत्थर के ही बनते थे। यह सभ्यता का बिलकुल आरभिक काल था और इसमे लोगो को धातुओं का पता नहीं था।
प्रस्तावक–सज्ञा पु० [सं०] प्रस्ताव करनेवाला। तजवीज करनेवाला।
प्रस्तावकर्त्ता–सज्ञा पु० दे० "प्रस्तावक"।
प्रस्तोता–सज्ञा पु० [सं० प्रस्तोतृ] प्रस्ताव करनेवाला। प्रस्तावक।
प्रस्थानिक–वि० [सं०] जिसने प्रस्थान किया हो। जो चला गया हो।
प्रस्फुटित–वि० [सं०] १ फूटा या खुला हुआ। २ खिला हुआ। विकसित।
प्रस्राव–सज्ञा पु० [सं०] १ जल आदि का टपकना या रसना। २ पेशाब।
प्रहसित–वि० [सं०] १ हँसी से भरा हुआ। २ जिसकी हँसी उडाई जाय। उपहास्यास्पद।
प्रहान*–सज्ञा पु० [सं० प्रहाण] १ परित्याग। २ चित्त की एकाग्रता। ध्यान।
प्रहारक–वि० [सं०] [स्त्री० प्रहारिका] प्रहार करनेवाला।
प्रांतर–सज्ञा पु० [सं०] १ वह प्रदेश जिसमें जल या वृक्ष न हो। उजाड। २ जगल। वन। ३ वृक्ष या कोटर।
प्रांतीयता–सज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रांतीय होने का भाव। २ अपने प्रांत का विशेष पक्षपात या मोह।

प्राइमर–संज्ञा स्त्री० [अं०] प्रारंभिक पाठ्य-पुस्तक।
प्राइवेट–वि० [अं०] व्यक्तिगत। निजी।
प्रागैतिहासिक–वि० [सं०] जिस समय का निश्चित और पूरा इतिहास मिलता हो, उससे पहले का। इतिहास पूर्वकाल का।
प्राच्छित*–संज्ञा पुं० दे० "प्रायश्चित्त"।
प्राणता–संज्ञा स्त्री० [सं०] 'प्राण' का भाव। जीवन।
प्रातिकूल्य–संज्ञा पुं० दे० "प्रतिकूलता"।
प्रातिलोमिक–वि० [सं०] प्रतिलोम संबंधी। प्रतिलोम का।
प्रातिदेशिक–संज्ञा पुं० [सं०] पड़ोसी।
प्रायिक–वि० [सं०] प्रायः होनेवाला।
प्रायौगिक–वि० [सं०] १. प्रयोग संबंधी। २. प्रयोग के रूप में किया जानेवाला।
प्रार्थित–वि० [सं०] जिसके लिए प्रार्थना की गई हो।
प्रारलब्ध–संज्ञा स्त्री० दे० "प्रारब्ध"।
प्रावण–संज्ञा पुं० [सं०] १. उत्तम आवरण। २. उत्तरीय। उपरना। दुपट्टा।
प्राश–संज्ञा पुं० दे० "प्राशन"।
प्रिंटर–संज्ञा पुं० [अं०] छापनेवाला। मुद्रक।
प्रिंटिंग–संज्ञा स्त्री० [अं०] छपाई का काम। मुद्रण।
प्रिंस–संज्ञा पुं० [अं०] राजकुमार।
प्रिंसिपल–संज्ञा पुं० [अं०] १. कालिज या महाविद्यालय का प्रधान अध्यापक। २. मूल धन। पूंजी।
प्रियाल–संज्ञा पुं० [सं०] चिरौंजी।
प्रिवीकाउंसिल–संज्ञा स्त्री० [अं०] इंग्लैंड की एक संस्था जिसके एक विभाग में न्याय के सर्वप्रधान अधिकारी होते हैं और दूसरा विभाग शासन-संबंधी कार्यों में सम्राट् को परामर्श देता है।
प्रीमियम–संज्ञा पुं० [अं०] जान-बीमे की किस्त।
प्रीमियर–संज्ञा पुं० [अं०] प्रधान मंत्री।
प्रूफ–संज्ञा पुं० [अं० [१. प्रमाण। सबूत। २. छपनेवाली चीज का वह छपा हुआ नमूना जिसमें अशुद्धियाँ ठीक की जाती हैं।
प्रेमजल–संज्ञा पुं० दे० "प्रेमाश्रु"।
प्रेमवंत–वि० [सं० प्रेम + वंत (प्रत्य०)] १. प्रेम से भरा हुआ। २. प्रेमी।
प्रेरण–संज्ञा पुं० दे० "प्रेरणा"।
प्रेरना*–क्रि० स० [सं० प्रेरणा] प्रवृत्त करना। प्रेरणा करना।
प्रेस–संज्ञा पुं० [अं०] १. छापाखाना। २. छापने की कल। ३. समाचारपत्रों का वर्ग।
प्रेसिडेंट–संज्ञा पुं० [अं०] १. सभापति। २. राष्ट्रपति।
प्रोग्राम–संज्ञा पुं० [अं०] कार्य-क्रम।
प्रोफेसर–संज्ञा पुं० [अं०] १. किसी विषय का बड़ा विद्वान्। २. कालिज या महाविद्यालय का अध्यापक।
प्लांचेट–संज्ञा पुं० [अं०] पान के आकार की एक तख्ती जिससे मेस्मेरिज्मवाले प्रेतात्माओं की बातें जानते हैं।
प्लाट–संज्ञा पुं० [अं०] १. कथावस्तु। २. षड्यंत्र। ३. जमीन का बड़ा टुकड़ा।
प्लेग–संज्ञा पुं० [अं०] १. महामारी। २. एक भीषण संक्रामक रोग। ताऊन।
प्लैटफार्म–संज्ञा पुं० [अं०] १. मंच। चबूतरा। २. वह बड़ा चबूतरा जो मुसाफिरों के रेल पर चढ़ने उतरने के लिए होता है।
फँसौरी†–संज्ञा स्त्री० [हिं० फाँसी] फाँसी की रस्सी। २. जाल। फंदा।
फक्कड़–संज्ञा पुं० [सं० फक्किका] १. गाली-गलौज। गंदी बातें। २. सदा दरिद्र परंतु मस्त रहनेवाला। ३. वाहियात और उद्दंड आदमी।
फक्कड़बाजी–संज्ञा स्त्री० [हिं० फक्कड़ + फ़ा० बाजी (प्रत्य०)] गंदी और वाहियात बातें बकना।
फटहा–वि० [हिं० फटना] १. फटा हुआ। २. गाली गलौज बकनेवाला।
फड़िया–संज्ञा पुं० [हिं० फड़] १. खुदरा अन्न बेचनेवाला। २. फड़बाज।

फनहमंद–वि० [अ०+फ़ा०] विजयी। विजेता।

फदफदाना–क्रि० अ० [अनु०] १. शरीर का फुंसियों आदि से भर जाना। २. वृक्ष का शाखाओं में भरना।

फनाना*–क्रि० स० [?] १. तैयार करना। तैयार कराना।

फरमाँ-बरदार–वि० [फ़ा०] [संज्ञा फरमाँ-बरदारी] आज्ञाकारी।

फरलांग–संज्ञा पुं० [अ०] एक मील का आठवाँ भाग।

फरहरी*–संज्ञा स्त्री० दे० "फलहरी"।

फराक–संज्ञा स्त्री० [अ० फ़्राक] स्त्रियों और बच्चों का एक पहनावा।

*वि० दे० "फराख"।

फराना*–क्रि० स० दे० "फलाना"।

फरामोशी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] भूल जाना। विस्मृति।

फरारी–संज्ञा स्त्री० [अ०] भागने की क्रिया या भाव।

फरास*–संज्ञा पुं० दे० "फर्राश"।

फरोश–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] [संज्ञा फरोशी] बेचनेवाला। (यौ० के अंत में)

फर्ज़ंद–संज्ञा पुं० [फ़ा०] बेटा। पुत्र।

फलवान–वि० [सं०] १. फलों से युक्त। २. सफल।

फलाकना*–क्रि० स० दे० "फलाँगना"।

फलाशी–वि० [सं० फलाशिन] फल खाने-वाला।

फसकड़ा–संज्ञा पुं० [अनु०] पलथी (तिर०)

फाँट–संज्ञा पुं० [देश०] काढ़ा। क्वाथ।

फाँटना–क्रि० स० [हिं० फाँट] काढ़ा बनाना।

फाइल–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. कागजों आदि की नत्थी। २ कागज-पत्रों का समूह। मिसिल।

फाड़खाऊ–वि० [हिं० फाड़ना+खाना] फाड़ खानेवाला। हिंसक।

फारम–संज्ञा पुं० [अ० फार्म] १ दरखास्तों और रसीदों आदि के वे नमूने जिनमें यह लिखा रहता है कि कहाँ क्या लिखना चाहिए। २ दे० "फरमा"।

संज्ञा पुं० [अ० फ़ार्म] ज़मीन का वह बड़ा टुकड़ा जिसमें बहुत से खेत होते हैं और जिनमें व्यवस्थित रूप से बड़े पैमाने पर खेती-बारी होती है।

फारिग़–वि० [अ०] १. जो कोई काम करके छुट्टी पा गया हो। २ मुक्त। स्वतंत्र।

फार्म–संज्ञा पुं० १ दे० "फारम"। २. दे० "फरमा"।

फिटाना–क्रि० स० [देश०] हटाना। दूर करना।

फिरंगाना*–वि० दे० "फिरंगी"।

फिरनी–संज्ञा स्त्री० दे० "फीरनी"।

फिराऊ–वि० [हिं० फिरना] १. फिरनेवाला। २. जाकड़।

फीलपाया–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. खंभा। २. कमरकोट।

फुतकार*–संज्ञा पुं० दे० "फूत्कार"।

फुनि–अव्य० [सं० पुनः] पुनः। फिर।

फुरक़त–संज्ञा स्त्री० [अ०] वियोग। जुदाई।

फुलसुंघनी–संज्ञा स्त्री० दे० "फुलचुही"।

फूटन–संज्ञा स्त्री० [हिं० फूटना] १. फूटकर अलग होनेवाला अंश। २ हड्डियों का दर्द।

फेकैत–संज्ञा पुं० [हिं० फेंकना] १ वह जो फेंकता हो। २ पहलवान। ३ दे० "फिकैत"।

फेनिल–वि० [सं०] फेन या भाग से भरा हुआ।

फेलो–संज्ञा पुं० [अ०] सभ्य। सदस्य।

फेल्ट–संज्ञा पुं० [अ०] नमदा।

फैंसी–वि० [अ०] अच्छी काट-छाँट का। देखने में सुंदर।

फैक्टरी–संज्ञा स्त्री० [अ०] कारखाना।

फैज़–संज्ञा पुं० [अ०] १. उपकार। २ फायदा।

फैयाज़–वि० [अ०] [संज्ञा फैयाजी] बहुत अधिक उदार और दानी।

फैशन–संज्ञा पुं० [अ०] १. ढंग। तर्ज़। २. रीति। प्रथा।

फैसिज़्म–संज्ञा पुं० [अं०] फैसिस्ट दल का

संघटन और सिद्धांत।
फैसिस्ट–संज्ञा पुं० [अं०] इटली के राष्ट्र-वादियों का एक आधुनिक दल जो बोल्शेविकों का विरोध करने के लिए बना था।
फोका–वि० [हिं० फोकला] पोथा। निस्सार।
संज्ञा पुं० दे० "फोकला"।
फोटक*–वि० दे० "फोकट"।
फोटा–संज्ञा पुं० [सं० स्फोट] बिंदी। टीका।
फोटो–संज्ञा पुं० [अं०] १. फोटोग्राफी के द्वारा उतरा हुआ चित्र। छायाचित्र। २. प्रतिबिंब।
फोटोग्राफी–संज्ञा स्त्री० [अं०] प्रकाश की किरणों द्वारा रासायनिक पदार्थों की सहायता से आकृति या चित्र तैयार करने की क्रिया।
फोनोग्राफ–संज्ञा पु० [अं०] एक यंत्र जिसमे कही हुई बातें या गाये हुए गाने बाद में ज्यों के त्यों सुनाई देते हो।
फौती–संज्ञा स्त्री० [अ० फौत] मरने की वह सूचना जो सरकारी कागजों में लिखाई जाती है।
फौवारा–संज्ञा पुं० दे० "फुहारा"।
फ्रॉक–संज्ञा पुं० [अं०] स्त्रियों और बच्चों का एक प्रकार का कुरता।
फ्रेंच–वि० [अं०] फ्रांस देश का।
संज्ञा स्त्री० फ्रांस देश की भाषा।
बंग–संज्ञा पु० दे० "वंग"।
*वि० [सं० वक्र] १. टेढ़ा। २. उद्दंड। ३. अभिमानी।
बँगली–संज्ञा स्त्री० [सं० वंग] १. एक प्रकार का पान। २. एक प्रकार का गहना।
बंजुल–संज्ञा पुं० [स० वंजुल] १. अशोक वृक्ष। २. बेंत।
बंटाधार–वि० [देश०] विनष्ट। बरबाद।
बंडल–संज्ञा पुं० [अं०] पुलिंदा। गड्डी।
बँभनाई|–संज्ञा स्त्री० [हिं० ब्राह्मण] ब्राह्मणत्व।
बँसवाड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० बाँस] बाँसों का भुरमुट।
बँहोलनी*–संज्ञा स्त्री० [हिं० बाँह] आस्तीन।
बक-वृत्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] बक ध्यान लगानेवालों की वृत्ति।
वि० बक-ध्यान लगानेवाला।
बकिनव*–संज्ञा पुं० दे० "बकायन"।
बकुरना*–क्रि० स० दे० "बरकरना"।
बखत–संज्ञा पुं० १. दे० "वक्त"। २. दे० "वस्त"।
बगदर–संज्ञा पुं० दे० "मच्छड़। (बुंदेल०)"
बगलेंदी–संज्ञा स्त्री० [हिं० बगला] एक प्रकार का पक्षी।
बगेदना|–क्रि० स० [हिं० बगदना] १. धक्का देकर गिराना या हटाना। २. विचलित करना।
बघछाला–संज्ञा स्त्री० दे० "बघंबर"।
बघूरा*–संज्ञा पुं० दे० "बगूला"।
बच्ची–संज्ञा स्त्री० [?] पाजेब आदि का घुँघरू।
बजकना–क्रि० अ० दे० "बजबजाना"।
बजट–संज्ञा पुं० [अं०] आय-व्यय का अनुमान-पत्र।
बजबजाना–क्रि० अ० [अनु०] तरल पदार्थ का सड़कर बुलबुले छोड़ना।
बजवाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० बजवाना] बजवाने की मजदूरी।
बटाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० बटना] बटने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
बटुक–संज्ञा पुं० दे० "बटुक"।
बट्टेबाज–वि० [हिं० बट्टा+फ़ा० बाज] [संज्ञा बट्टेबाजी] १. जादूगर। २. धूर्त। चालाक।
बड़क–संज्ञा स्त्री० [हिं० बड़] १. डींग। शेखी। २. दे० "बड़"।
बड़बड़िया–वि० [हिं० बड़] व्यर्थ की बातें करनेवाला। बकवादी।
बढ़–संज्ञा स्त्री० दे० "बढ़ती"।
बढ़ाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० बढ़ाना] बढ़ाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
बत-कहाव–संज्ञा पुं० दे० "बत-कही"।
बतर*–वि० दे० "बदतर"।
बतरान*–संज्ञा स्त्री० [हिं० बात] १. बात-

चीत। २ बोली।

बतौरी–सज्ञा स्त्री० [स० वात] मास का उभडा हुआ अश। गुम्मड।

बत्तक–सज्ञा स्त्री० दे० "बतख"।

बद-इतजामी–सज्ञा स्त्री० [अ०+फा०] कुप्रबध। अव्यवस्था।

बद-खत–वि० [अ०+फा०] लिखने में जिसके अक्षर अच्छे न हो।

बद-ख्वाह–वि० [फा०] [सज्ञा बदख्वाही] बुरा चाहनेवाला। अशुभचितक।

बद-गुमान–वि० [फा०] [सज्ञा बदगुमानी] सदेह की दृष्टि से देखनेवाला।

बद-गो–वि० [फा०] [सज्ञा बदगोई] १ बुरी बातें कहनेवाला। २ निदक।

बद-जबान–वि० [फा०] [सज्ञा बदजबानी] गाली-गलौज बकनेवाला।

बद-परहेज–वि० [फा०] [सज्ञा बदपरहेजी] जो ठीक तरह से परहेज न करे।

बद-मस्त–वि० [फा०] [सज्ञा बदमस्ती] नशे म चूर। मत्त।

बद-रोब–वि० [फा०+अ०] [सज्ञा बद-रोबी] १ जिसका कुछ रोब न हो। २ तुच्छ। ३ भद्दा।

बद-शकल–वि० [फा०] भद्दा। कुरूप।

बदूख*–सज्ञा स्त्री० दे० "बदूक"।

बद्धाजलि–वि० [स०] हाथ जोडे हुए। करबद्ध।

बधावना, बधावरा–सज्ञा पु० दे० "बधावा"।

बधैया*–सज्ञा स्त्री० दे० "बधाई"।

बन-कडा–सज्ञा पु० [हिं० बन+कडा] गोबर के आप से आप सूख जाने से बना हुआ कडा।

बनकट–सज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का बाँस।

बनकटा–वि० [हिं० बन] जगली।

बनगरी–सज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मछली।

बनजना*–क्रि० अ० [हिं० बनज] व्यापार या रोजगार करना।

बनैनी–सज्ञा स्त्री० [हिं० बनिया] बनिये की स्त्री। वैश्य स्त्री।

बफौरी–सज्ञा स्त्री० [हिं० वाफ=भाप] भाप से पकी हुई बरी।

बमबाज–सज्ञा पु० [हिं० बम+फा० बाज] [भा० बमबाजी] शत्रुओ पर बम के गोले फेंकनेवाला।

बममार–वि० [हिं० बम+मारना] बम मारनेवाला।
सज्ञा पु० एक प्रकार का बडा हवाई जहाज जिससे शत्रुओ पर बम के गोले फेंके जाते है।

बमीठा–सज्ञा पु० दे० "बाँबी"।

बरगा–सज्ञा पु० [देश०] वह पटिया या कडी जिससे छत पाटते है।

बरग*–सज्ञा पु० १ दे० "वर्ग"। २ दे० "वरक"।

बरघ-मुतान–सज्ञा स्त्री० दे० "गोमूत्रिका"।

बरनेत–सज्ञा स्त्री० [स० वरण] विवाह की एक रीति।

बरफानी–वि० [फा०] जिसमें या जिस पर बरफ हो।

बरफीला–वि० दे० "बरफानी"।

बरदाना*–क्रि० अ० दे० "बर्दाना"।

बर सायत–सज्ञा स्त्री० [स० वर+हिं० सायत] शुभ घडी या मुहूर्त।
सज्ञा स्त्री० दे० "बर साइत"।

बरसीला–वि० [हिं० बरसना] बरसनेवाला।

बरांडी–सज्ञा स्त्री० [अ० ब्राडी] एक प्रकार की विलायती शराब।

बरार–सज्ञा पु० [फा०] कर। चदा।
वि० १ लानेवाला। २ लाया हुआ। (यौ० के अत में)

बरिआत*–सज्ञा स्त्री० दे० "बरात"।

बरेठा–सज्ञा पु० [देश०] [स्त्री० बरेठिन] धोबी।

बरेता–सज्ञा स्त्री० [देश०] मकान की रस्सी।

बर्तन–सज्ञा पु० १ दे० "बरतन"। २ दे० "वर्तन"।

बर्ताव–सज्ञा पु० दे० "बरताव"।

बलकल*–सज्ञा पु० दे० "वल्कल"।

बलगना–क्रि० अ० दे० "बलकना"।
बलतंत्र–संज्ञा पुं० [सं०] शक्ति या सेना आदि का प्रबंध। सैनिक व्यवस्था।
बलमीक–संज्ञा स्त्री० दे० "बाँबी"।
बलवंता–संज्ञा पुं० [सं०] बलवान् होने का भाव। शक्ति-संपन्नता।
बलसूदन–संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।
बलिदानी–वि० [सं० बलिदान] बलिदान संबंधी।
संज्ञा पुं० वह जो बलिदान करता हो।
बलीयस्–वि० [सं०] [स्त्री० बलीयसी] बहुत अधिक बलवान।
बवंडा†–संज्ञा पुं० दे० "बवंडर"।
बसति, बसती*–संज्ञा स्त्री० दे० "बस्ती"।
बसाँधा–वि० [हिं० बास] बसाया या बासा हुआ। सुगंधित।
बसीता*–संज्ञा पु० [हिं० बसना] १. निवास। २. निवास-स्थान।
बहनौता†–संज्ञा पु० [हिं० बहन+पुत्र] भानजा।
बहादुराना–वि० [फ़ा०] बहादुरों का सा। वीरतापूर्ण।
बहिर्जगत–संज्ञा पुं० [सं०] बाहरी दृश्य या जगत।
बहिश्त–संज्ञा पुं० [फ़ा० बिहिश्त] मुसलमानों के अनुसार स्वर्ग।
बहुँटा–संज्ञा पु० [हिं० बाँह] बाँह पर पहनने का एक गहना।
बहुभाषज्ञ–वि० [सं०] बहुत सी भाषाएँ जाननेवाला।
बहुभाषी–वि० [सं० बहुभाषिन्] बहुत बोलनेवाला।
बहुविद्य–वि० दे० "बहुज्ञ"।
बाँड़ा–वि० [देश०] १. बिना पूँछ का। २. असहाय। दीन।
बाइबिल–संज्ञा स्त्री० [अं०] ईसाइयों की धर्म-पुस्तक।
बाइसिकिल–संज्ञा स्त्री० [अं०] दो पहियों की एक प्रसिद्ध गाड़ी जो पैरों से चलाई जाती है।
बाक*–संज्ञा पुं० [सं० वाक्य] बात। बचन।
बाकुल*–संज्ञा पुं० दे० "वल्कल"।
बागीचा–संज्ञा पुं० [फ़ा० बागचः] छोटा बाग।
बागुर*–संज्ञा पुं० [?] जाल। फंदा।
बाच*–वि० [सं० वाच्य] १. वर्णन करने के योग्य। २. सुंदर।
बाझ*–अव्य० [देश०] बगैर। बिना।
बाटकी*–संज्ञा स्त्री० दे० "बटलोई"।
बाड़*–संज्ञा स्त्री० दे० "बाढ़"।
बाढ़ीवान–वि० [हिं० बाढ़] शस्त्रों आदि पर बाढ़ या सान रखनेवाला।
बादनुमा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] वायु की दिशा और गति आदि बतलानेवाला यंत्र।
बाद-हवाई–वि० [फ़ा० बाद+हवा] बे-सिर पैर की। ऊट-पटांग। (बात)
बादित*–[सं० वादन] बजाया हुआ।
बादीगर–संज्ञा पुं० दे० "बाजीगर"।
बादुर–संज्ञा पु० [देश०] चमगादड़।
बानना*–क्रि० स० दे० "बनाना"।
बायकाट–संज्ञा पुं० [अं०] बहिष्कार।
बायला†–वि० [सं० वात] वायु या वात का प्रकोप उत्पन्न करनेवाला।
बायस–संज्ञा पुं० [सं० वायस] कौआ।
बायस्कोप–संज्ञा पुं० [अं०] एक प्रसिद्ध यंत्र जिससे परदे पर चलते-फिरते चित्र दिखाये जाते हैं।
बारता*–संज्ञा स्त्री० दे० "वार्त्ता"।
बारह-वफ़ात–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] मुहम्मद साहब के जीवन के वे अंतिम बारह दिन जिनमें वे बीमार थे।
बारहाँ–वि० [?] बहादुर। वीर।
बारिज*–संज्ञा पुं० [सं० वारिज] कमल।
बारूदखाना–संज्ञा पुं० [हिं० बारूद+खाना] वह स्थान जहाँ गोले और बारूद आदि रहती है।
बालखोरा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] सिर के बाल झड़ने का रोग।
बालचर–संज्ञा पुं० [सं०] वह बालक जिसे

शिक्षा मिली हो।
बाल-ब्रह्मचारी–संज्ञा पु० [सं०] वह जिसने बाल्यावस्था से ही ब्रह्मचर्य का व्रत धारण किया हो।
बाल-विधवा–वि० [सं०] (स्त्री) जो बाल्यावस्था से ही विधवा हो गई है।
बासुकी–संज्ञा स्त्री० [हिं० बास] सुगंधित फूलों की माला।
संज्ञा पु० दे० "वासुकी"।
बासौंधी–संज्ञा स्त्री० दे० "बसौंधी"।
बाह–संज्ञा स्त्री० [हिं० बाहना] १ बाहने की क्रिया या भाव। २ खेत की जोताई।
संज्ञा पु० दे० "प्रवाह"।
बाहक*–संज्ञा पु० [सं० वाहन] सवार।
बाहुज–संज्ञा पु० [सं०] १ वह जो बाहु से उत्पन्न हुआ हो। २ क्षत्रिय।
बिंबित–वि० [सं० बिम्बित] जिसका बिंब या अक्स उतर रहा हो।
बिआहना*–क्रि० स० दे० "ब्याहना"।
बिकासना*–क्रि० स० [सं० विकासन] १ विकसित करना। २ (फूल आदि) खिलाना।
बिकुंठ*–संज्ञा पु० दे० "बैकुंठ"।
बिख*–संज्ञा पु० [सं० विष] जहर।
बिखाद*–संज्ञा पु० दे० 'विषाद"।
बिखान*–संज्ञा पु० दे०"विषाण"।
बिखोला–वि० [सं० विष] जहरीला।
बिग†–संज्ञा पु० दे० "बीग"।
बिघार†–संज्ञा पु० दे० "बाघ'।
बिचकना–क्रि० अ० [अनु०] १ मुँह का टेढ़ा होना। २ भड़कना। चौंकना।
बिचवई–संज्ञा पु० दे० "बिचवान'।
बिचौनी, बिचौहाँ–संज्ञा पु० दे० "बिचवान"।
बिच्छी–संज्ञा स्त्री० दे० "बिच्छू"।
बिछलना–क्रि० अ० दे० 'फिसलना"।
बिछावत–संज्ञा स्त्री० दे० "बिछौना"।
बिजली घर–संज्ञा पु० [हिं० बिजली+ घर] वह स्थान जहाँ से सारे नगर या आस-पास के स्थानों को बिजली पहुँचाई जाती हो।
बिजहन–वि० [हिं० बीज+हनन] जिसका बीज नष्ट हो गया हो।
बिजोहा*–क्रि० स० [हिं० जोवना] अच्छी तरह देखना।
बिजौरी–संज्ञा स्त्री० दे० "कुम्हड़ौरी"।
बिडई†–संज्ञा स्त्री० दे० "इंडुरी"।
बिथुरना–क्रि० अ० दे० "बिथरना"।
बिथुरित–वि० [हिं० बिथरना] बिखरा या छितराया हुआ।
बिदरना*–क्रि० अ० [सं० विदीर्ण] फटना।
बिदीरना*–क्रि० स० [सं० विदीर्ण] फाड़ना।
बिदोरना†–क्रि० अ० [सं० विदारण] (मुँह) या (दाँत) खोलकर दिखाना।
बिधवपन*–संज्ञा पु० दे० "वैधव्य"।
बिधुसना*–क्रि० स० [सं० विध्वंसन] नष्ट करना।
बिनकार–वि० [हिं० बुनना] [संज्ञा बिनकारी] कपड़ा बुननेवाला। जुलाहा।
बिनठना*–क्रि० अ० [सं० विनष्ट] नष्ट होना।
बिनवट–संज्ञा स्त्री० [हिं० बनेठी] पटा-बनेठी चलाने की क्रिया या खेल।
बिनवाना–क्रि० अ० [हिं० बीनना या बुनना] बुनने या बीनने का काम दूसरे से कराना।
बिनाह*–संज्ञा पु० दे० "विनाश"।
बिनौरी–संज्ञा स्त्री० [?] ओले के छोटे टुकड़े।
बिबसना*–क्रि० अ० [हिं० बिबस] विवश होना।
बिभाना*–क्रि० अ० [सं० विभा] चमकना।
बिभिचारी– *वि० दे० "व्यभिचारी"।
बिभोर–वि० दे० "विभोर"।
बिरई†–संज्ञा स्त्री० [हिं० बिरवा] १ छोटा बिरवा। २ जड़ी-बूटी।
बिरता–संज्ञा पु० [देश०] सामर्थ्य। बूता। शक्ति।
बिरधाई*–संज्ञा स्त्री० [सं० वृद्ध] वृद्धावस्था।
बिरवा–संज्ञा पु० [सं० विरुह] वृक्ष। पेड़।

बिरहा–संज्ञा पुं० [सं० विरह] एक प्रकार का देहाती गीत।
बिरहाना–क्रि० अ० [सं० विरह] विरह से पीड़ित होना।
बिरुदैत–संज्ञा पुं० दे० "बिरदैत"।
बिरधाई–संज्ञा स्त्री० १. दे० "बुढ़ापा"। २. दे० "विरोध"।
बिरोग–संज्ञा पुं० [सं० वियोग] १. वियोग। विछोह। २. दुःख। चिंता।
बिलापना*–क्रि० अ० [सं० विलाप] विलाप करना।
बिलाव–संज्ञा पुं० [हिं० बिल्ली] बड़ी या नर बिल्ली।
बिलुठना*–क्रि० अ० [सं० लुंठन] जमीन पर लेटना।
बिलूर*–संज्ञा पुं० दे० "बिल्लौर"।
बिलेशय–संज्ञा पुं० [सं०] बिल में रहनेवाले चूहे, साँप आदि जानवर।
बिलोचन–संज्ञा पुं० [सं० लोचन] आँख।
बिल्लाना–क्रि० अ० [सं० विलाप] विकल होकर चिल्लाना। विलाप करना।
बिवाई–संज्ञा स्त्री० [सं० विपादिका] पैरों की उँगलियाँ फटने का रोग।
बिसातवाना–संज्ञा पुं० [हिं० बिसात+वाना] बिसाती के यहाँ मिलनेवाली चीजें।
बिस्तरा–संज्ञा पुं० दे० "बिस्तर"।
बिस्मिल्लाह–[अ०] एक अरबी पद का पूर्वार्द्ध जिसका अर्थ है—ईश्वर के नाम से। इसका प्रयोग कोई कार्य आरंभ करते समय होता है।
बिहँसौहाँ–वि० [सं० विहसन] हँसता हुआ।
बिहुरना*–क्रि० अ० दे० "बिछुरना"।
बींदना*–क्रि० स० दे० "बींधना"।
क्रि० स० [?] अनुमान करना।
बीचि–संज्ञा स्त्री० [सं० वीचि] लहर। तरंग।
बीता†–संज्ञा पुं० दे० "बित्ता"।
बीनकार–संज्ञा पुं० [हिं० बीन+फ़ा० कार] वह जो बीन बजाता हो। बीन बजानेवाला।
बील–वि० [सं० बिल] पोला। खोखला। संज्ञा पुं० नीची भूमि।
संज्ञा पुं० [?] मंत्र।
बीवी–संज्ञा स्त्री० दे० "बीबी"।
बुकवा*–संज्ञा पुं० [हिं० बूकना] १. उबटन। २. बुकका।
बुड़की–संज्ञा स्त्री० [हिं० बूड़ना] डुबकी। गोता।
बुढ़िया–संज्ञा स्त्री० [सं० वृद्धा] ५०-६० वर्ष से अधिक अवस्थावाली स्त्री। वृद्धा। यौ०—बुढ़िया का काता=एक प्रकार की मिठाई जो काते हुए सूत के लच्छों की तरह होती है।
बुत-शिकन–वि० [फ़ा०] [संज्ञा बुतशिकनी] मूर्त्तियों को तोड़नेवाला। मूर्त्ति-पूजा का विरोधी।
बुताम–संज्ञा पुं० [अं० बटन] १. बटन। २. घुंडी।
बुद्धिजीवी–वि० [सं०] वह जो केवल बुद्धि-बल से जीविका उपार्जन करता हो।
बुद्धि-वाद–संज्ञा पुं० [सं०] वह सिद्धांत जिसमें केवल बुद्धि-संगत बातें ही मानी जाती हैं।
बुद्धिशाली–वि० दे० "बुद्धिमान"।
बुधंगड़–संज्ञा पुं० [हिं० बुद्धू] मूर्ख। बेवकूफ।
बुनकर–संज्ञा पुं० [हिं० बुनना] कपड़ा बुननेवाला। जुलाहा।
बुनत–संज्ञा स्त्री० [हिं० बुनना] बुनने की क्रिया या भाव। बुनाई।
बुना–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० बिना] मूल कारण। आधार।
बुनिया–संज्ञा पुं० दे० "बुनकर"।
†संज्ञा स्त्री० दे० "बुँदिया"।
बुनियादी–वि० [फ़ा०] १. बुनियाद या जड़ से संबंध रखनेवाला। २. नितांत आरंभिक।
बुरुश–संज्ञा पुं० [अं० ब्रश] रँगने या सफ़ाई करने के लिए खास तरह की बनी हुई कूँची।
बुलौआ–संज्ञा पुं० दे० "बुलावा"।
बूक–संज्ञा पुं० [हिं० बकोटा] कोई वस्तु

उठाने के लिए हथेली की गहरी की हुई मुद्रा। चंगुल। कसोरा।
बूका–संज्ञा पुं० १. दे० "गग-बगर"। २. दे० "बुकवा"।
बूटना*–क्रि० अ० [?] भागना।
बेंच–संज्ञा स्त्री० [अं०] १. लकड़ी, लोहे आदि की एक प्रकार की लंबी चौकी २. सरकारी न्यायालय में न्याय-कर्त्ता।
बेंड़ना*–क्रि० स० दे० "बेड़ना"।
बेंवत–संज्ञा स्त्री० दे० "ब्योंत"।
बेइंसाफी–संज्ञा स्त्री० [फा०] अन्याय।
बेखतर–वि० [फा०] निर्भय। निडर।
बेगर–वि० दे० "बेहर"।
क्रि० वि० दे० "बगैर"।
बेगैरत–वि० [फा०] [संज्ञा बेगैरती] निर्लज्ज। बेशरम।
बेजार–वि० [फा०] [संज्ञा बेजारी] १ नाराज। २ दुखी।
बेटौना†–संज्ञा पुं० दे० "बेटा"।
बेदाम–वि० [फा०] बिना दाम का। मुफ्त।
संज्ञा पुं० दे० "बादाम"।
बेदार–वि० [फा०] [संज्ञा बेदारी] जागा हुआ। जाग्रत।
बेध–संज्ञा पुं० [सं० वेध] १ छेद। २ दे० "वेध"।
बेनजीर–वि० [फा०] अनुपम। बेजोड़।
बेनिया–संज्ञा स्त्री० [हिं० बेना] छोटा पंखा। पंखी।
बे-पनाह–वि० [हिं० बे+फा० पनाह] जिससे किसी प्रकार रक्षा न हो सके। बहुत भीषण।
बेबहा–वि० [फा०] बहुमूल्य।
बेबाक–वि० [अ०+फा०] [संज्ञा बेबाकी] निडर। निर्भय।
बे-मौसिम–वि० [फा०] १ मौसिम न होने पर भी होनेवाला। २ जिसका मौसिम न हो।
बेला–संज्ञा पुं० [?] चाँदी का कड़ा।
संज्ञा पुं० दे० "बेवरा"।
बेराम†–वि० दे० "बीमार"।

बेलज्जत–वि० [फा०] [संज्ञा बेलज्जती] जिसमें कोई लज्जत या स्वाद न हो।
बेलपत्ती–संज्ञा स्त्री० दे० "बेलपत्र"।
बेलरी*–संज्ञा स्त्री० दे० "बेल"।
बेवट†–संज्ञा स्त्री० [?] १. संकट। २ विवशता।
बेवाई–संज्ञा स्त्री० दे० "बिवाई"।
बेशकीमत, बेशकीमती–वि० [फा०] बहुमूल्य।
बेस*–संज्ञा पुं० [सं० वेष] भेस।
बेसमझ–वि० [हिं० बे+समझ] [संज्ञा बेसमझी]। नासमझ। मूर्ख।
बे-सिलसिले–वि० [फा०] जिसमें कोई क्रम या सिलसिला न हो। अव्यवस्थित।
बेसूद–वि० [फा०] व्यर्थ। बेफायदा।
बेहूदी–संज्ञा स्त्री० [फा०] भलाई। बेहरी।
बेहूदगी–संज्ञा स्त्री० दे० "बेहूदापन"।
बैंक–संज्ञा पुं० [अं०] महाजनी लेनदेन की बड़ी कोठी। बंक।
बैंड–संज्ञा पुं० [अं०] अँगरेजी बाजे या उनके बजानेवालों का समूह।
बैंत–संज्ञा पुं० दे० "बेंत"।
संज्ञा स्त्री० दे० "बेंत"।
बैकना*–क्रि० अ० दे० "बहकना"।
बैठकबाज–वि० [हिं० बैठक+बाज] [संज्ञा बैठकबाजी] बातें बनाकर काम निकालनेवाला। धूर्त्त चालाक।
बैदाई*–संज्ञा स्त्री० दे० "बैदगी"।
बैयाँ*–क्रि० वि० [?] घुटनों के बल।
बैरंग–वि० [अं० बेयरिंग] १. वह चिट्ठी आदि जिसका महसूल भेजनेवाले ने न दिया हो। २ विफल।
बैरिस्टर–संज्ञा पुं० [अं०] [भाव० बैरिस्टरी] एक प्रकार के कानून-दाँ जिनकी मर्यादा वकीलों से बढ़कर होती है।
बैल-मुतनी–संज्ञा स्त्री० दे० "गोमूत्रिका"।
बैलून–संज्ञा पुं० [अं०] गुब्बारा।
बोंड़ा–संज्ञा पुं० [देश०] बारूद में आग लगाने का पलीता।
बोंडी–संज्ञा स्त्री० दे० "बौंडी"।

बोट–संज्ञा स्त्री० [अ०] नाव। नौका।
बोड़ना*–क्रि० स० दे० "बोरना"।
बोदरी–संज्ञा स्त्री० [देश०] खसरा रोग।
बोरका†–संज्ञा पुं० [हिं० बोरना] दावात।
बोर्ड–संज्ञा पुं० [अं०] १. किसी स्थाई कार्य के लिए बनी हुई समिति। २. माल के मामलों का फैसला करनेवाली कमेटी। ३. कागज की मोटी दफ्ती। ४. नाम-पट्ट। साइनबोर्ड।
बोर्डिंगहाउस–संज्ञा पुं० [अं०] विद्यार्थियों के रहने का स्थान। छात्रावास।
बोलती–संज्ञा स्त्री० [हिं० बोलना] बोलने की शक्ति।
बोल्शेविक–संज्ञा पुं० [अं०] रूस के साम्य-वादी दल का चरम-पंथी सदस्य।
बोल्शेविज्म–संज्ञा पु० [अं०] रूस के साम्य-वादी दल के चरमपंथ का सिद्धांत।
ब्याजू–वि० [हिं० ब्याज] ब्याज या सूद पर दिया जानेवाला (धन)
ब्रह्मपुरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ब्राह्मणों की बस्ती। २. उन बहुत से मकानों का समूह जो राजा-महाराजा ब्राह्मणों को दान करते हैं। ३. ब्रह्मलोक।
ब्रिगेड–संज्ञा पु० [अं०] १. सेना का एक समूह। २. सैनिक ढंग पर बना हुआ समूह।
ब्रिटिश–वि० [अं०] ग्रेटब्रिटेन या इंग-लिस्तान से संबंध रखनेवाला। अँगरेजी।
ब्लाक–संज्ञा पुं० [अं०] १. छापे के काम के लिए काठ, ताँबे या जस्ते आदि पर बना हुआ चित्रों आदि का ठप्पा। २. इमारतों का वह समूह जिसके बीच में खाली जगह न हो।
भंगि, भंगिमा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. टेढ़ा-पन। कुटिलता। २. स्त्रियों का हाव-भाव। अंगनिवेश। अंदाज। ३. लहर। ४. प्रतिकृति।
भँजाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० भाँजना] भाँजने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
संज्ञा स्त्री० [हिं० भाँजना] भँजाने या भुनाने की मजदूरी।
भँड़रिया–संज्ञा पुं० दे० "भड्डर"।
भकभकाना–क्रि० अ० [अनु०] १. भकभक शब्द करके जलना। २. चमकना।
भकूट–संज्ञा पुं० [सं०] विवाह के लिए शुभ मानी जानेवाली कुछ राशियाँ।
भक्षित–वि० [सं०] खाया हुआ।
भगवदीय–वि० [सं० भगवत्] १. भगवत्-संबंधी। २. भगवान् का भक्त।
भग्गी†–संज्ञा स्त्री० दे० "भगदड़"।
भग्नाश–वि० [सं०] जिसकी आशा भंग हो गई हो। निराश।
भट्टारक–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० भट्टारिका] १. ऋषि। २. पंडित। ३. सूर्य। ४. राजा। ५. देवता।
वि० माननीय। मान्य।
भड़साईं–संज्ञा स्त्री० दे० "भाड़"।
भड़ास–संज्ञा स्त्री० [देश०] मन में छिपा हुआ असंतोष या क्रोध।
भड़ैत–संज्ञा पु० [हिं० भाड़ा] किरायेदार।
भयियान†–संज्ञा पु० [?] स्त्री की गुह्ये-न्द्रिय। भग।
भदंत–वि० [सं० भद्र] पूज्य। मान्य।
संज्ञा पु० बौद्ध भिक्षु या साधु।
भभक–संज्ञा स्त्री० [अनु०] भभकने की क्रिया या भाव।
भमीरी†–संज्ञा स्त्री० दे० "भँमीरी"।
भयकर–वि० [सं०] [स्त्री० भयकरी] भयानक। भयंकर।
भयातुर–वि० [सं०] [संज्ञा भयातुरता] भय से विकल। डरा और घबराया हुआ।
भयारा†–वि० दे० "भयानक"।
भरका–संज्ञा पु० [देश०] पहाड़ों या जंगलों में वह गहरा गड्ढा जिसमें चोर डाकू छिपते हैं।
भरवाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० भरवाना] भरवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
भराना–क्रि० स० दे० "भरवाना"।
भर्रा–संज्ञा पुं० [अनु०] झाँसा। दमपट्टी।
भलका†–संज्ञा पुं० [हिं० फल ?] तीर का फल। गाँसी।
भव-जाल–संज्ञा पुं० [सं० भव+जाल] १. संसार का जाल या माया। २. झंझट।

बखेड़ा।
भव-भूति–संज्ञा स्त्री० [स०] सृष्टि।
भव-सागर–संज्ञा पु० [स०] संसाररूपी सागर।
भवाब्धि, भवार्णव–संज्ञा पु० [स०] संसार रूपी सागर।
भस्मत–वि० दे० "भस्म"।
भांड–संज्ञा पु० [स०] भाँडा। बरतन।
भांत†–संज्ञा स्त्री० [?] आवाज। शब्द।
भाकुर–संज्ञा स्त्री० [देश०] १ एक प्रकार की मछली। २ हौआ।
वि० भद्दा और भयानक।
भाग-दौड़–संज्ञा स्त्री० [हिं० भागना + दौड़ना] १ भगदड़। भागड़। २ दौड़-धूप।
भागधेय–संज्ञा पु० [स०] १ भाग्य। २ राजकर। ३ दायाद। सपिंड।
भागाभाग–संज्ञा स्त्री० दे० "भागड़"।
भाग्यवान–संज्ञा पु० [स०] [स्त्री० भाग्यवती] वह जिसका भाग्य अच्छा हो। सौभाग्यशाली। किस्मतवर।
भामता*–वि० दे० "भावता"।
भारतवासी–संज्ञा पु० [स०] भारतवर्ष का रहनेवाला। भारतीय।
भारवाह–वि० दे० "भारवाहक"।
भारवाही–संज्ञा पु० [स० भारवाहिन्] [स्त्री भारवाहिनी] भार या बोझ ढोनेवाला।
भारशिव–संज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन शैव- संप्रदाय जिसके अनुसार पापी सिर पर शिव की मूर्त्ति रखते थे।
भावज्ञ–वि० [स०] [भाव० भावज्ञता] मन की प्रवृत्ति या भाव जाननेवाला।
भाव प्रवण–वि० दे० "भावुक"।
भावित–वि० [स०] १ जिसका ध्यान या विचार किया गया हो। जो सोचा गया हो। २ चिंतित। उद्विग्न। ३ जिसमें किसी पदार्थ की भावना या सुगन्ध दी गई हो।
भाव्य–वि० [स०] चिंता करने या सोचने योग्य।
भिंग*–संज्ञा पु० [स० भृंग] १. भौंरा। २ बिल्ली। (कीड़ा)।
भिंदिपाल–संज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का डंडा जो फेंककर मारा जाता था।
भिड़ंत–संज्ञा स्त्री० [हिं० भिड़ना] भिड़ने की क्रिया या भाव। मुठ-भेड़।
भितरिया–संज्ञा पु० [हिं० भीतर] मंदिर के बिलकुल भीतरी भाग में रहनेवाला पुजारी।
वि० भीतरी। अंदर का।
भित्तिचित्र–संज्ञा पु० [स०] दीवार पर अंकित किया हुआ चित्र।
भिन्नाना–क्रि० अ० [अनु०] (दुर्गंध आदि से) सिर चकराना।
भींडी†–संज्ञा स्त्री० दे० "भिंडी"।
भुंकाना–क्रि० स० [हिं० भूंकना] किसी को भूकने में प्रवृत्त करना।
भुंडा–वि० [स० रुंड का अनु०] १ बिना सींग का। २ दुष्ट। बदमाश।
भुकड़ी–संज्ञा स्त्री० [अनु०] सड़े हुए खाद्य पदार्थों पर निकलनेवाली एक वनस्पति।
भुकरांद, भुकरायंध–संज्ञा स्त्री० [हिं० भुकड़ी] सड़ने की दुर्गंध।
भुगाना–क्रि० स० दे० "भोगनेवाला"।
भुजगेंद्र, भुजगेश–संज्ञा पु० [स०] शेषनाग।
भुजइल*–संज्ञा पु० दे० "भुजगा"।
भुजपात*–संज्ञा पु० दे० "भोजपत्र"।
भुयरा–वि० दे० "भोयरा"।
भुनवाई, भुनाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० भुनाना] भुनाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
भुरभुराना–क्रि० स० [अनु०] १ (चूर्ण आदि) छिड़कना। बुरकना। २ भुरभुरा करना।
भुरहरा–संज्ञा पु० [हिं० भोर] सबेरा। तड़का।
भूआ–संज्ञा स्त्री० दे० "बूआ"।
* संज्ञा पु० दे० "घूआ"।
भूख-हड़ताल–संज्ञा स्त्री० दे० "अनशन"।
भूतवाद–संज्ञा पु० दे० "पदार्थवाद"।
भूभृत–संज्ञा पु० [स०] राजा।
भूमध्यसागर–संज्ञा पु० [स०] यूरोप और

अफ्रिका के बीच का समुद्र।
भूमा–संज्ञा पुं० [सं०] ईश्वर। परमात्मा। वि० बहुत अधिक।
भूयसी–वि० [सं०] १. बहुत अधिक। २. बार बार।
भूसना*–क्रि० अ० दे० "भूँकना"।
भूहरा*–संज्ञा पुं० दे० "भुँइहरा"।
भेंड़िहर†–संज्ञा पुं० दे० "गड़ेरिया"।
भेदना–संज्ञा पुं० [सं० भेदन] बेधना। छेदना।
भेडू–संज्ञा पुं० दे० "भेड़िया"।
भोजनभट्ट–संज्ञा पुं० [सं० भोजन + भट] बहुत अधिक खानेवाला।
भोथरा–वि० [अनु०] जिसकी धार तेज न हो। कुंठित। कुंद।
भोलना*–क्रि० स० [हिं० भुलाना] भुलावा देना। बहकाना।
भौंराला–वि० [हिं० भँवर] घुँघराला या छल्लेदार (बाल)।
भौंहरा*–संज्ञा पुं० दे० "भुइँहरा"।
भौजल*–संज्ञा पुं० दे० "भवजाल"।
भौतिकवाद–संज्ञा पुं० दे० "पदार्थवाद"।
भ्रंग*–संज्ञा पुं० दे० "भृंग"।
भ्रमनि*–संज्ञा स्त्री० दे० "भ्रमण"।
भ्रमित–वि० [सं०] १. भ्रम में पड़ा हुआ। २. चक्कर खाता हुआ।
भ्रातृजाया–संज्ञा स्त्री० [सं०] भावज।
भ्रूविक्षेप–संज्ञा पुं० [सं०] १. देखना। २. त्यौरी चढ़ाना।
मंकुर*–संज्ञा पुं० [सं० मुकुर] शीशा। आइना।
मंगलपाठ–संज्ञा पुं० दे० "मंगलाचरण"।
मंगल पाठक–संज्ञा पुं० [सं०] वंदीजन।
मंछर*–संज्ञा पुं० १. दे० "मत्सर"। २. दे० "मच्छर"।
मंजरित–वि० [सं० मंजरी + त (प्रत्य०)] जिसमें मंजरी लगी हो। मंजरियों या कोंपलों से युक्त।
मँजाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० मँजाना] मँजाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
मँड़ई–संज्ञा स्त्री० [सं० मंडप] झोंपड़ी।
मंडील–संज्ञा पुं० दे० "मंदील"।
मंत्र-गृह–संज्ञा पुं० [सं०] मंत्रणा करने का स्थान।
मंत्र-पूत–वि० [सं०] मंत्र पढ़कर पवित्र किया हुआ। जिस पर मंत्र पढ़कर फूँका गया हो।
मंत्रेला†–संज्ञा पुं० [सं० मंत्र] मंत्र-तंत्र जाननेवाला।
मंदग–वि० [सं०] धीरे धीरे चलनेवाला।
मँदोवै*–संज्ञा स्त्री० दे० "मंदोदरी"।
मंसबदार–संज्ञा पुं० [अ० + फ़ा०] बादशाही जमाने के एक प्रकार के अधिकारी।
मंसूबा–संज्ञा पुं० दे० "मनसूबा"।
मँहगा–वि० दे० "महँगा"।
मइका*–संज्ञा पुं० दे० "मायका"।
मकनातीस–संज्ञा पुं० [अ०] [वि० मकनातीसी] चुंबक पत्थर।
मक़फ़ूल–वि० [अ०] [भा० मकफूलियत] रेहन या बंधक रखा हुआ।
मक़बूल–वि० [अ०] १. जो कबूल किया गया हो। २. प्रिय।
मकर कुंडल–संज्ञा पुं० [सं०] मगर के आकार का कुंडल।
मकराज*–संज्ञा स्त्री० दे० "मिकराज"।
मकरालय–संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।
मक़ला–संज्ञा पुं० [अ०] १. कहावत। २. उक्ति। कथन।
मक़सद–संज्ञा पुं० [अ०] अभिप्राय। उद्देश्य।
मकसूद–वि० [अ०] अभिप्रेत। उद्दिष्ट।
मक़ूला–संज्ञा पुं० [अ०] १. कहावत। २. उक्ति। कथन।
मख़ज़न–संज्ञा पुं० [अ०] खजाना। भंडार।
मख़लूक़–संज्ञा स्त्री० [अ०] सृष्टि के प्राणी और जीव आदि।
मखौलिया–वि० [हिं० मखौल] दिल्लगीबाज।
मगरिब–संज्ञा पुं० [अ०] [वि० मगरिबी] पश्चिम दिशा।
मचका–संज्ञा पुं० [हिं० मचकना] [स्त्री० मचकी] १. धक्का। २. झोंका। ३. पेंग।

मचमचाना–क्रि० स० [अनु०] इस प्रकार दबाना कि मचमच शब्द हो।
मचलाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० मचलना] मचलने की क्रिया या भाव।
मच्छरदानी–संज्ञा स्त्री दे० "मसहरी"।
मज़कूर–वि० [अ०] जिसका जिक्र हुआ हो। उक्त।
संज्ञा पु० लिखित विवरण।
मज़कूरी–संज्ञा पु० [फा०] सम्मन तामील करनेवाला चपरासी।
मजबूरन–क्रि० वि० [अ०] लाचारी की हालत में।
मजमूआ–संज्ञा पु० [अ०] बहुत सी चीजों का समूह। संग्रह।
वि० एकत्र किया हुआ।
मजमूई–वि० [अ०] सामूहिक।
मज़लूम–वि० [सं०] जिस पर जुल्म हो। सताया हुआ। पीड़ित।
मज़ाक़न्–क्रि० वि० [अ०] मज़ाक या हँसी में।
मज़ाक़िया–वि० [अ०] १ मज़ाक़ संबंधी। २ हँसोड़। ठठोल।
क्रि० वि० दे० "मज़ाक़न"।
मजाज–संज्ञा पु० [अ०] नियमानुसार मिला हुआ अधिकार।
मजाज़ी–वि० [अ०] १ नकली। २ सांसारिक। लौकिक।
मझोला*–वि० दे० "मझोला"।
मझु–*सर्व० [हिं० में] १ में। २ मेरा।
मटुक†–संज्ञा पु० दे० 'मुकुट"।
मठोठा†–संज्ञा पु० [देश०] कुएँ की जगत।
मड़हट*–संज्ञा पु० दे० 'मरघट"।
मत भिन्नता–संज्ञा स्त्री० दे० "मतभेद"।
मतभेद–संज्ञा पु० [सं०] दो व्यक्तियों या पक्षों के मत न मिलना।
मथित–वि० [सं०] मथा हुआ।
मथी–संज्ञा स्त्री० दे० "मथानी"।
मथूल*–संज्ञा पु० दे० "मस्तूल"।
मदजल–संज्ञा पु० [सं०] हाथी का मद।
मदाखिलत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ दखल देना। २ दखल जमाना।
मदिर–वि० [सं०] १ मत्तता उत्पन्न करनेवाला। मस्त करनेवाला। २ नशीला।
मदिराभ–वि० [सं०] १ मदिरा की मत्तता से भरा हुआ। २ मस्त। मतवाला।
मदिरालस–संज्ञा पु० [सं० मदिरा + अलस] मदिरा से उत्पन्न होनेवाला आलस्य। खुमारी।
मदीयून–वि० [अ०] कर्जदार। ऋणी।
मुद्दत*–संज्ञा स्त्री० [अ० मदद] सहायता।
संज्ञा स्त्री० [अ० मदद] प्रशंसा। तारीफ़।
मधुकंठ–संज्ञा पु० [सं०] कोयल।
मधुक–संज्ञा पु० [सं०] महुआ।
मधुमाधवी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वासंती या माधवी लता। २ एक प्रकार की रागिनी।
मधुरिपु–संज्ञा पु० दे० "मधुसूदन"।
मध्य-गत–वि० [सं०] बीच का।
मध्य-युग–संज्ञा पु० [सं०] १ एक प्राचीन युग और आधुनिक युग के बीच का समय। २ यूरोप के इतिहास में ईसवी छठी शताब्दी से पंद्रहवीं शताब्दी तक का समय।
मध्य-युगीन–वि० [सं०] मध्य युग का।
मनदूत–वि० [सं०] १ मन चाहा। २ मन को प्रसन्न करनेवाला।
मनचीतना–क्रि० स० [हिं० मन + चाहना] मन को अच्छा लगना।
मनस्विता–संज्ञा स्त्री० [सं०] बुद्धिमत्ता।
मनादी–संज्ञा स्त्री० दे० "मुनादी"।
मनुजता–संज्ञा स्त्री० दे० 'मनुजत्व"।
मनुजत्व–संज्ञा पु० [सं०] मनुष्यत्व। आदमीयत।
मनुजोचित–वि० [सं०] जो मनुष्य के लिए उचित हो। मनुष्य के उपयुक्त।
मनोनियोग–संज्ञा पु० [सं०] किसी काम में मन लगाना।
मनोभाव–संज्ञा पु० [सं०] मन में उत्पन्न होनेवाला भाव।
मनोभिराम–वि० [सं०] सुंदर। मनोहर।
मनोमय–वि० [सं०] १ मन से युक्त या पूर्ण। २ मानसिक। मन-संबंधी।

मनोमालिन्य–संज्ञा पुं० [सं०] मन-मुटाव। रंजिश।
मनोवांछा–संज्ञा स्त्री० [सं०][वि० मनोवांछित] इच्छा। कामना।
मनोविश्लेषण–संज्ञा पुं० [सं०] इस बात का विश्लेषण या जाँच कि मनुष्य का मन किस समय किस प्रकार कार्य करता है।
मनोवैज्ञानिक–वि० [सं०] मनोविज्ञान-संबंधी।
मफ़रूर–वि० [अ०][संज्ञा मफ़रूरी] भागा हुआ।
ममरखी*–संज्ञा स्त्री० [अ० मुबारक] बधाई।
ममाखी–संज्ञा स्त्री० दे० "मधुमक्खी"।
ममास*–संज्ञा पुं० दे० "मवास"।
ममिया–वि० [हिं० मामा] संबंध में मामा के स्थान का जैसे—ममिया ससुर।
मरकज़–वि० [अ०][वि० मरकजी] केन्द्र।
मरमी–वि० दे० "मर्मज्ञ"।
मराठा–संज्ञा पुं० दे० "मरहठा"।
मरोरना–क्रि० सं० [भाव० मरोर*] दे० "मरोड़ना"।
मर्मरित–वि० [अनु० मर मर से] जिसमें मर मर शब्द होता है।
मर्मस्पर्शी–वि० [सं० मर्मस्पर्शिन्] [स्त्री० मर्मस्पर्शिनी][भाव० मर्मस्पर्शिता] मर्म पर प्रभाव डालनेवाला।
मर्मांतिक–वि० दे० "मर्मांतक"।
मर्य्यादित–वि० [सं०] १. जिसकी सीमा या हद निश्चित हो। २. जो अपनी मर्यादा या सीमा के अंदर हो।
मर्षण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० मर्षणीय] १. क्षमा। माफी। २. रगड़। घर्षण। वि० १. नाशक। २. दूर करनेवाला।
मलकुलमौत–संज्ञा पुं० [अ०] जीवों के प्राण लेनेवाला देवदूत।
मलता–वि० [हिं० मलना] घिसा हुआ (सिक्का)।
मलराना*–क्रि० स० दे० "मल्हाना"।
मलाट–संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का मोटा घटिया काग़ज।
मलेरिया–संज्ञा पुं० [अं०] जाड़ा देकर आनेवाला बुखार। जूड़ी।
मलोल्य–संज्ञा पुं० दे० "मलोला"।
मलोलना–क्रि० अ० [हिं० मलोला] १. मन का दुखी होना। २. पछताना।
मवाज़ी–वि० [अ०] १. कुल। सब। २. प्रायः बराबर। लगभग।
मशीन–संज्ञा स्त्री० [अं० मेशीन] पेचों और पुरजों से बनी हुई वह वस्तु जिससे कुछ काम होता हो। कल। यंत्र।
मशीन-गन–संज्ञा स्त्री० [अं०] वह मशीन जो गोलियाँ चलाती है।
मसनवी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार की कविता। २. कथा-काव्य। (उर्दू-फ़ारसी)
मसरूफ़–वि० [अ०] काम में लगा हुआ।
मसलति*–संज्ञा स्त्री० दे० "मसलहत"।
मसलन–संज्ञा स्त्री० [हिं० मसलना] मसलने की क्रिया या भाव।
मसानिया–संज्ञा पुं० [हिं० मसान] १. मसान पर रहनेवाला। २. डोम। वि० मसान संबंधी।
मसाहत–संज्ञा स्त्री० [अ०] नाप-जोख।
मसीना†–संज्ञा पुं० [देश०] मोटा अन्न।
मसूरिया–संज्ञा स्त्री० दे० "मसूरी"।
मसोसा–संज्ञा पुं० [हिं० मसोसना] मन का दुःख।
मस्कला–संज्ञा पुं० दे० "मसकला"।
महकीला–वि० [हिं० महक] खुशबूदार।
महजिद†–संज्ञा स्त्री० दे० "मसजिद"।
महज्जन–संज्ञा पुं० [सं०] महापुरुष।
महतो–संज्ञा पुं० [हिं० महता] १. कहार। २. प्रधान।
महत्ता–संज्ञा स्त्री० दे० "महत्त्व"।
महदूद–वि० [अ०] परिमित। सीमित।
महनीय–वि० [सं० भाव० महनीयता] १. मान्य। पूज्य। २. महत्। महान्।
महफ़ूज़–वि० [अ०] सुरक्षित।
महर्घ–वि० दे० "महार्घ"
महलसरा–संज्ञा स्त्री० [अ०] अंतःपुर।

महसूली–वि० [हिं० महसूल] जिस पर महसूल लगता हो।
महसूस–वि० [अ०] जिसका ज्ञान या अनुभव हो। अनुभूत।
महाकाय–वि० [सं०] जिसका शरीर बहुत बड़ा हो।
संज्ञा पु० १ शिव का एक गण। २ हाथी।
महानद–संज्ञा पु० [सं०] बहुत बड़ा नद।
महानता–संज्ञा स्त्री० दे० "महत्व"।
महानवमी–संज्ञा स्त्री० [सं०] आश्विन शुक्ल नवमी।
महानस–संज्ञा पु० [सं०] रसोईघर।
महाप्राज्ञ–संज्ञा पु० [सं०] बहुत बड़ा पंडित। दिग्गज विद्वान्।
महाभाग–वि० [सं०] भाग्यवान।
महामना–वि० [सं० महामनस्] बहुत उच्च और उदार मनवाला। महानुभाव।
महामहिम–वि० [सं०] जिसकी महिमा बहुत अधिक हो।
महायुद्ध–संज्ञा पु० [सं०] वह बहुत बड़ा युद्ध जिसमें बहुत से बड़े बड़े देश या राष्ट्र सम्मिलित हों।
महाराज्ञी–संज्ञा स्त्री० [सं०] महारानी।
महारानी–संज्ञा स्त्री० [सं० महाराज्ञी] महाराज की रानी। बहुत बड़ी रानी।
महाव्रत–संज्ञा पु० [सं०] बहुत बड़ा और ऊँचा व्रत।
वि० [स्त्री० महाव्रता] बहुत बड़ा व्रत धारण करनेवाला।
महाश्मशान–संज्ञा पु० [सं०] काशी नगरी।
महा-संस्कार–संज्ञा पु० [सं०] मृतक की अंत्येष्टि क्रिया।
महिजा–संज्ञा स्त्री० [सं०] सीता जी।
महिधर–संज्ञा पु० [सं०] १ पर्वत २ शेष-नाग।
महिमावान्–वि० [सं०] महिमा या गौरव-वाला।
महिसुता–संज्ञा स्त्री० [सं०] सीता जी।
महीर–संज्ञा स्त्री० [हिं० मठा + खीर] १ मठ्ठे में पकाया हुआ चावल। २ तपाये हुए मक्खन की तलछट।
महुकम*–वि० [अ० मुहकम] पक्का। दृढ़।
महूम*–संज्ञा स्त्री० दे० "मुहिम"।
महूव*–संज्ञा पु० दे० "महुआ"।
महेशानी–संज्ञा स्त्री० दे० "महेशी"।
महौघ–संज्ञा पु० [सं०] समुद्री तूफान।
मह्यो*–संज्ञा पु० [हिं० मही] मठा। छाछ।
माँग फूल–संज्ञा पु० दे० "माँग-टीका"।
माँठी*–संज्ञा स्त्री० [देश०] १ एक प्रकार की चूड़ी। २ मठठी या मठरी नामक पकवान।
माक्षिक–संज्ञा पु० [सं०] १ शहद। २ सोना मक्खी। ३ रूपा मक्खी।
माजूर–वि० [अ०] [संज्ञा माजूरी] १ जिसमें उज्र हो। २ असमर्थ।
माटा†–संज्ञा पु० [हिं० मटा] एक प्रकार की लाल च्यूँटी।
मातृश्री–संज्ञा स्त्री० [सं० माता + श्री] माता जी।
मातृत्व–संज्ञा पु० [सं०] 'माता' होने का भाव। माँ-पन।
मातृष्वसा–संज्ञा स्त्री० [सं०] माँ की बहन। मौसी।
माथना*–क्रि० स० दे० "मथना"।
माद*–संज्ञा पु० दे० "मद"।
मादन–वि० [सं०] १ मादक। २ मस्त करनेवाला।
संज्ञा पु० कामदेव के पाँच बाणों में से एक।
मादरी–वि० [फा०] मादर या माता से संबंध रखनेवाला। माता का। जैसे—मादरी जबान।
माध्यस्थ–संज्ञा पु० दे० "मध्यस्थ"।
मानदंड–संज्ञा पु० [सं० मान + दंड] वह निश्चित या स्थिर किया हुआ माप जिसके अनुसार किसी प्रकार की योग्यता या गुण आदि का अंदाज लगाया जाय।
मान-परेखा–संज्ञा पु० [?] आशा। भरोसा।
मानवता–संज्ञा स्त्री० [सं०] मनुष्यत्व। आदमीयत। आदमीपन।

मानवीय–वि० [सं०] मानव संबंधी।
मानवेंद्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. राजा। २. श्रेष्ठ पुरुष।
मानिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गौरव। सम्मान। २. अभिमान।
मानुष्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. मनुष्य का धर्म या भाव। मनुष्यता। २. मनुष्य का शरीर।
मायापात्र–वि० [सं०] धनवान।
मायूस–वि० [अ०] [संज्ञा मायूसी] निराश। ना-उम्मेद।
मारकेश–संज्ञा पुं० [सं०] ग्रहों का वह योग जो किसी मनुष्य के लिए घातक होता है।
मारतौल–संज्ञा पुं० [पुर्त्त० मोर्टली] एक प्रकार का हथौड़ा।
मार-पीट–संज्ञा स्त्री० [हिं० मारना + पीटना] ऐसी लड़ाई जिसमें लोग मारे और पीटे जायँ।
मार्शल-ला–संज्ञा पुं० [अं०] १. फौजी कानून। २. फौजी कानूनों और अधिकारियों का शासन जो बहुत कठोर होता है।
मालिया–संज्ञा पु० [अ० माल] जमीन का लगान। राजस्व। कर।
माशकी–संज्ञा पु० [फ़ा० मशक] मशक में पानी भरनेवाला। भिश्ती।
माशूक–संज्ञा पु० [अ०] [स्त्री० माशूका] प्रेम-पात्र। प्रिय।
मासूम–वि० [अ०] [संज्ञा मासूमियत] १. निरपराध। बेगुनाह। २. निरीह।
माहर–संज्ञा पुं० [सं० माहिर] इन्द्रासन। वि० दे० "माहिर"।
माहिर–वि० [अ०] निपुण। तत्वज्ञ।
मित*–संज्ञा पु० दे० "मित्र"।
मिक़राज–संज्ञा स्त्री० [अ०] क़ैंची। कतरनी।
मिचकी†–संज्ञा स्त्री० [देश०] छलाँग।
मिचली–संज्ञा स्त्री० [हिं० मिचलाना] जी मिचलाने की क्रिया। मतली।
मिचौनी–संज्ञा स्त्री० दे० "आँख-मिचौनी"।
मिजाज-पुरसी–संज्ञा स्त्री० [अ० मिजाज + फ़ा० पुरसी] किसी का मिजाज या कुशल समाचार पूछना।
मिजाजी–वि० दे० "मिजाजदार"।
मिठाना–क्रि० अ० [हिं० मीठा] मीठा होना।
मितमति–वि० [सं०] थोड़ी बुद्धिवाला।
मितीकाटा–संज्ञा पुं० [हिं० मिती + काटना] सूद जोड़ने का एक देशी सहज ढंग।
मिथः–अव्य० [सं०] १. आपस में। २. एकान्त में। ३. गुप्त रूप से।
मिथ्याचार–संज्ञा पु० [सं०] कपटपूर्ण व्यवहार।
मिथ्यापन–संज्ञा पुं० दे० "मिथ्यात्व"।
मिनमिन–क्रि० वि० [अनु०] मंद या स्पष्ट स्वर में।
मिनिस्टर–संज्ञा पुं० [अं०] १. एक प्रकार का पादरी या ईसाई धर्माधिकारी। २. प्रान्तीय शासन में किसी विभाग का मंत्री।
यौ०—प्राइम मिनिस्टर = प्रधान मंत्री।
मिनिस्टरी–संज्ञा स्त्री० [अं० मिनिस्टर] मिनिस्टर का कार्य या पद।
मियाद–संज्ञा स्त्री० दे० "मीयाद"।
मिरियास*–संज्ञा स्त्री० दे० "मीरास"।
मिलकना*–क्रि० स० [?] जलाना।
मिलवाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० मिलाना] मिलाने की क्रिया या भाव।
मिलाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० मिलना] १. मिलने या मिलाने की क्रिया या भाव। २. भेंट। मुलाकात। (जेल के कैदियों के साथ)।
मिलिंद–संज्ञा पुं० [सं०] भौंरा।
मिलिटरी–वि० [अं०] सेना संबंधी। फौजी।
मिलौनी–संज्ञा स्त्री० दे० "मिलाई"।
मिशन–संज्ञा पु० [अं०] १. किसी विशिष्ट कार्य के लिये जाना या भेजा जाना। २. इस प्रकार भेजे जानेवाले व्यक्ति। ३. ईसाई धर्म-प्रचारकों का निवासस्थान।
मिशनरी–संज्ञा पु० [अं०] ईसाई धर्म-प्रचारक। वि० मिशन संबंधी। मिशन का।

मिसहा†–वि० [हिं० मिस] १. बहानेबाज। २ कपटी।
मिस्कोट–संज्ञा पु० [अ० मेस] १ भोजन। २ गुप्त परामर्श।
मिहचना*–क्रि० स० दे० "मीचना"।
मिहानी*–संज्ञा स्त्री० दे० "मथानी"।
मिहीं–वि० दे० "महीन"।
मींडक*–संज्ञा पु० दे० "मेढक"।
मीच–संज्ञा स्त्री० दे० "मीचु"।
मीत–संज्ञा पु० दे० "मित्र"।
मीयाद–संज्ञा स्त्री० [अ०] किसी कार्य के लिए नियत समय। अवधि।
मीयादी–वि० [अ०] जिसके लिये मीयाद निश्चित हो। जैसे—मीयादी हुंडी। मीयादी बुखार।
मीरजा–संज्ञा पु० दे० "मिरजा"।
मीरमजलिस–संज्ञा पु० [फा०] सभापति।
मुचना*–क्रि० स० [सं० मोचन] मुक्त करना।
मुतजिम–वि० [अ०] इतजाम करनेवाला। प्रबंधक।
मतजिर–वि० [अ०] जो इतजार या प्रतीक्षा करे।
मुशियाना–वि० [अ० मुशी] मुशियो का सा।
मुहँचग–संज्ञा पु० दे० "मुरचग"।
मुँहचोर–वि० [हिं० मुँह + चोर] जो किसी के सामने जाने म हिचकता हो।
मुँहछुट–वि० दे० "मुँहफट"।
मुँह-पातर†–वि० [हिं० मुँह + पतला] १ बकवादी। २ मुँहफट।
मुअज्जन–संज्ञा पु० [अ०] वह जो नमाज के समय अजान या बाँग देता हो।
मुअम्मा–संज्ञा पु० [अ०] १ पहेली। २ समस्या।
मुआफ–वि० दे० "माफ"।
मुकताली–संज्ञा स्त्री० दे० "मुक्तावली"।
मुकति*–संज्ञा स्त्री० दे० "मुक्ति"।
मुकद्दम–वि० [अ०] प्रधान। मुख्य।
मुकद्दमा–संज्ञा पु० दे० "मुकदमा"।
मुकद्दर–संज्ञा पु० [अ०] भाग्य।
मुकद्दस–संज्ञा पु० [अ०] पवित्र।
मुकम्मल–वि० [अ०] पूरा किया हुआ। पूर्ण।
मुकुता*–संज्ञा पु० दे० "मुक्ता"।
मुकेस*–संज्ञा पु० दे० "मुकेश"।
मुकैश–संज्ञा पु० [अ०] १ बादला। २ वह कपडा जिस पर कलाबत्तू आदि का काम हो।
मुक्त-व्यापार–संज्ञा पु० [सं०] ऐसा व्यापार जिसम किसी के लिए कोई रुकावट न हो।
मुक्तावली–संज्ञा स्त्री० [सं०] मोतियों की माला या लडी।
मुक्ताहल–संज्ञा पु० [सं०] दे० "मुक्ताफल"।
मुक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ छुटकारा। २ आत्मा का मोक्ष।
मुखचित्र–संज्ञा पु० [सं०] किसी पुस्तक के मुखपृष्ठ पर या बिल्कुल आरभ में दिया हुआ चित्र।
मुखपृष्ठ–संज्ञा पु० [सं०] किसी पुस्तक में सबसे ऊपर का पृष्ठ। पहला आवरण पृष्ठ।
मुखभेड*–संज्ञा स्त्री० दे० "मुठभेड"।
मुखरित–वि० [सं०] शब्दों या ध्वनियों से युक्त।
मुखिल–वि० [अ०] खलल डालनेवाला। बाधक।
मुख्तलिफ–वि० [अ०] १ भिन्न। २ भिन्न भिन्न।
मुख्यत –क्रि० वि० [सं०] मुख्य रूप से। खास तौर पर।
मुगलानी–संज्ञा स्त्री० [हिं० मुगल] १ मुगल स्त्री। २ दासी। ३ कपडे सीनेवाली।
मुग्धकर–वि० [सं०][स्त्री० मुग्धकरी] मुग्ध करनेवाला। मोहक।
मुचना*–क्रि० अ० [सं० मोचन] मोचन होना।
मुजमिल–वि० [अ०] १ एकत्र किया हुआ। २ कुल। सब।
संज्ञा पु० योग। जोड।
मुजायका–संज्ञा पु० [अ०] हर्ज। हानि।
मुजाहिम–वि० [अ०] आपत्ति करनेवाला।

मोहनिशा–संज्ञा स्त्री० दे० "मोहरात्रि"।
मोहसिन–वि० [अ० मुहसिन] एहसान या उपकार करनेवाला। हितैषी।
मौनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० मौन] चुप्पी। मौन।
मौंजिबंधन–संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञोपवीत संस्कार।
मौक्तिक–संज्ञा पुं० [सं०] मुक्ता। मोती। वि० मोतियों का। मुक्ता-संबंधी।
मौखर्य–संज्ञा पुं० [सं०] मुखर होने का भाव। मुखरता।
मौजूं–वि० [अ०] [भाव० मौजूनियत] उपयुक्त।
मौना†–संज्ञा पुं० दे० "मोना"।
मौर्ख्य–संज्ञा पु० [सं०] मूर्खता।
मौर्वी–संज्ञा स्त्री० [सं०] धनुष की डोरी।
मौलिक–वि० [सं०] १. मूल से संबंध रखनेवाला। २. असली। ३. (ग्रंथ या विचार आदि) जो किसी का अनुवाद, नकल या आधार पर न हो बल्कि अपनी उद्भावना से निकला हो।
मौलिकता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मौलिक होने का भाव। २. अपनी उद्भावना से कुछ कहने या लिखने की शक्ति।
मौली–वि० [सं० मौलिन्] मौलि धारण करनेवाला।
मौलूद–संज्ञा पु० [अ०] मुहम्मद साहब के जन्म का उत्सव (मुसल०)
मौसिया–वि० दे० "मौसेरा"।
म्यूजियम–संज्ञा पुं० [अ०] अद्भुत पदार्थ संग्रहालय। अजायबघर।
म्लानता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. म्लान होने का भाव। मलिनता। २. दुर्बलता।
म्लानि–संज्ञा स्त्री० दे० "म्लानता"।
यंत्र युक्त–वि० दे० "यंत्र-सज्ज"।
यंत्र-सज्ज–वि० [सं०] मशीन गनों और टैंकों आदि से युक्त और सजी हुई (सेना)।
यंत्रिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] ताला।
यंत्रीकरण–संज्ञा पुं० दे० "यांत्रीकरण"।
यकायक–क्रि० वि० दे० "यक-बयक"।
यजना*–क्रि० स० [सं० यजन] १. पूजा करना। २. यज्ञ करना।
यति-भ्रष्ट–वि० [सं०] (काव्य) जिसमें यति-भंग दोष हो।
यतीमखाना–संज्ञा पुं० [अ० फ़ा०] अनाथालय।
यथानुक्रम–वि० दे० "यथाक्रम"।
यथावय–क्रि० वि० [सं०] जैसा चाहिए, वैसा। वि० पूर्ववर्तियों का अनुयायी।
यथार्थतः–अव्य० [सं०] यथार्थ में। सचमुच।
यथार्थवादी–संज्ञा पुं० [सं०] यथार्थ या सत्य कहनेवाला। सत्यवादी।
यथाविधि–अव्य० [सं०] विधि के अनुसार ठीक।
यथाशक्य–अव्य० दे० "यथाशक्ति"।
यथेच्छित–वि० दे० "यथेच्छ"।
यद्वातद्वा–क्रि० वि० [सं०] कभी कभी।
यमधार–संज्ञा पुं० [सं०] वह तलवार जिसमें दोनों ओर धार हो।
यमन*–संज्ञा पुं० दे० "यवन"।
यमनिका–संज्ञा स्त्री० दे० "यवनिका"।
यमानुजा–संज्ञा स्त्री० [सं०] यमुना।
यांत्रिक–वि० [सं०] यंत्र-संबंधी।
यांत्री-करण–संज्ञा पु० [सं०] यंत्रों आदि से युक्त या सज्जित करना।
याचित–वि० [सं०] माँगा हुआ।
याजी–वि० दे० "याजक"।
याथातथ्य–संज्ञा पु० [सं०] यथातथ्य होने का भाव। ज्यों का त्यों होना।
यादृश–वि० [सं०] जिस तरह का। जैसा।
यापना–संज्ञा स्त्री० दे० "यापन"।
यायावर–संज्ञा पु० [सं०] १. वह जो एक जगह टिक कर न रहता हो। २. संन्यासी। ३. ब्राह्मण। ४. अश्वमेध का घोड़ा।
यारबाश–वि० [फा०] [भाव० यारबाशी] यार दोस्तों में प्रसन्नता से समय बितानेवाला।
यावज्जीवन–क्रि० वि० [सं०] जब तक जीवन रहे। जीवनभर।
यावत्–अव्य० [सं०] १. जब तक। जिस

। सव। युद्ध।
संज्ञा पु० [सं०] अपने समय
महत वडा आदमी।
युगांत—संज्ञा पु० [सं०] युग का अंत।
युग्मज—संज्ञा पुं० दे० "यमज"।
युद्ध-पोत—संज्ञा पु० [सं०] लड़ाई का जहाज।
युद्ध-मंत्री—संज्ञा पु० [सं०] राज्य का वह मंत्री जिसके जिम्मे युद्ध विभाग हो।
युद्धयमान—वि० [सं०] युद्ध करनेवाला।
युधाजित्—संज्ञा पु० [सं०] भरत के मामा और कैकेयी के भाई का नाम।
युरोप—संज्ञा पु० [अं०] पूर्वी गोलार्द्ध का एक महाद्वीप जो एशिया के पश्चिम में है।
युरोपियन—वि० [सं०] १ युरोप का। २ युरोप का रहनेवाला।
युवरानी—संज्ञा स्त्री० [सं० युवराज्ञी] युवराज की पत्नी।
येन-केन-प्रकारेण—क्रि० वि० [सं०] जैसे-तैसे। किसी तरह से।
योग-दान—संज्ञा पु० [सं०] किसी काम में साथ देना।
योजनीय-योज्य—वि० [सं०] योजना करने के योग्य।
योषिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्त्री। औरत।
यौक्तिक—वि० [सं०] १ युक्ति-संबंधी। २ युक्ति-युक्त।
यौद्धिक—वि० [सं०] युद्ध संबंधी।
रंगबाती—संज्ञा स्त्री० [हिं० रंग + बत्ती] शरीर पर मलने के लिए सुगंधित द्रव्यों की बत्ती।
रंगमंडप—संज्ञा पु० दे० "रंगभूमि"।
रंगमार—संज्ञा पु० [हिं० रंग + मारना] ताश का एक खेल।
रँगवाई—संज्ञा स्त्री० दे० "रँगाई"।
रँगावट—संज्ञा स्त्री० [हिं० रंग] रँगने का भाव।
रंगोपजीवी—संज्ञा पु० [सं०] अभिनेता। नट।
रंडा—संज्ञा स्त्री० [सं०] राँड। विधवा।
रंडीबाज—वि० [हिं० रंडी + फा० बाज] [संज्ञा रंडीबाजी] वेश्यागामी।
रंति—संज्ञा स्त्री० [सं०] क्रीड़ा। केलि।
रंभण—संज्ञा पु० [सं०] गले लगाना। आलिंगन।
रक्त-प्रदर—संज्ञा पु० [सं०] स्त्रियों का एक रोग।
रक्ताभ—वि० [सं०] लाल रंग की आभा से युक्त।
रक्तिम—वि० [सं०] लाल रंग का।
रक्तिमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] लाली। सुर्खी।
रक्तोत्पल—संज्ञा पु० [सं०] लाल कमल।
रक्षणीय—वि० [सं०] [स्त्री० रक्षणीया] जिसकी रक्षा करना उचित हो। रखने लायक।
रक्षित-राज्य—संज्ञा पु० [सं०] वह छोटा राज्य जो किसी बड़े राज्य या साम्राज्य की रक्षा में हो और जिसे स्वराज्य के बहुत ही परिमित अधिकार प्राप्त हों।
रक्षिता—संज्ञा स्त्री० [सं० रक्षित] रखी हुई स्त्री। रखेली।
रक्ष्यमाण—वि० [सं०] १ जिसकी रक्षा हो सके। २ जिसकी रक्षा होती है।
रखला*—संज्ञा पु० दे० "रहँकला"।
रखा—संज्ञा स्त्री० [हिं० रखना] गौओं के लिए रक्षित भूमि। गोचर-भूमि।
रगदना*—क्रि० स० दे० "रगेदना"।
रगबत—संज्ञा स्त्री० [अ०] इच्छा। ख्वाहिश।
रगीला—वि० [हिं० रग] १ हठी। जिद्दी। २ दुष्ट। पाजी।
वि० [फा० रग] जिसमें रगें हों।
रगेद—संज्ञा स्त्री० [हिं० रगेदना] रगेदने की क्रिया या भाव।
रचौहाँ*—वि० [हिं० रचना] १. रचा या रंगा हुआ। २ अनुरक्त।
रजनीगंधा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रसिद्ध सुगंधित फूल जो रात को खूब महकता है। गुलशब्बो।
रजवती—वि० दे० "रजस्वला"।
रजा—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ मरजी। इच्छा। २ अनुमति। आज्ञा।
रटंत—संज्ञा स्त्री० [हिं० रटना] रटने की

क्रिया या भाव।
रणन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० रणित] १. शब्द या गुंजार करना। २. बजना।
रणित–वि० [सं०] १. शब्द या गुंजार करता हुआ। २. बजता हुआ।
रतताली–संज्ञा स्त्री० [?] कुटनी।
रतीक*–क्रि० वि० दे० "रतिक"।
रत्तल–संज्ञा पुं० [देश०] आध सेर के लगभग एक तौल।
रत्नमाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] रत्नों या जवाहिरात की माला।
रत्नसू–संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी।
रथवान–संज्ञा पुं० [हिं० रथ + वान] रथ। चलानेवाला। सारथी।
रथांग–संज्ञा पुं० [सं०] १. रथ का पहिया। २. चक्र नामक अस्त्र। ३. चकवा।
रनसाजी–संज्ञा स्त्री० [हिं० रण + फ़ा० साजी] लड़ाई छेड़ना।
रफ़–वि० [अं०] १. जो अभी माफ और ठीक किया जाने को हो। २. खुरदुरा।
रफ़ीक़–संज्ञा पुं० [अ०] १. साथी। २. मित्र।
रफ़्तार–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] चाल। गति।
रबाबिया, रबाबी–वि० [हिं० रबाब] रबाबा बजानेवाला।
रभस–संज्ञा पुं० [सं०] १. वेग। तेजी। २. हर्ष। आनंद। ३. प्रेम का उत्साह। ४. पछतावा। रंज।
रम–वि० [सं०] १. प्रिय। २. सुंदर।
संज्ञा पुं० पति।
संज्ञा स्त्री० [अं०] जौ की शराब।
रमली–संज्ञा पु० [अ० रमल + ई प्रत्य०] वह जो रमल की सहायता से भविष्य की बातें बतलाता हो।
रमसरा*–संज्ञा पुं० दे० "रामशर"।
रयासत–संज्ञा स्त्री० दे० "रियासत"।
रलमल–संज्ञा स्त्री० [हिं० रलना + मिलना] १. रलने मिलने की क्रिया या भाव। २. सम्मिश्रण।
रवाँ–वि० [फा०] १. चलता हुआ। २. बहता हुआ। ३. जिसका आवास हो।
रवानी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. प्रवाह। २. तेजी।
रविजा–संज्ञा स्त्री० [सं०] यमुना।
रवीला–वि० [हिं० रवाँ] जिसमें कण या रवे हों। रवेवाला।
रशना–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कमर में पहनने की करधनी। २. दे० "रसना"।
रसखीर–संज्ञा स्त्री० [हिं० रस + खीर] ऊख के रस में पकाया चावल।
रस-प्रबंध–संज्ञा पुं० [सं०] १. नाटक। २. वह कविता जिसमें एक ही विषय बहुत से संबद्ध पद्यों में वर्णित हो।
रसवान्–वि० [सं०] [स्त्री० रसवती] १. सरस। रसीला। २. मधुर।
रसाँ–वि० [फ़ा०] पहुँचानेवाला। जैसे—चिट्ठीरसाँ।
रसाना*–क्रि० स० [सं० रस] १. रसपूर्ण करना। २. प्रसन्न करना।
क्रि० अ० १. रसयुक्त होना। २. आनंद लूटना।
रसेंद्र–संज्ञा पुं० [सं०] पारा।
रसोड़ा†–संज्ञा पुं० दे० "रसोई"।
रहमान–वि० [अ०] १. दयालु। २. ईश्वर का एक विशेषण।
रहरू–संज्ञा स्त्री० [हिं० रिढ़ना] एक प्रकार की छोटी देहाती गाड़ी।
रहवैया–वि० [हिं० रहना + वैया (प्रत्य०)] रहनेवाला।
रहस्यवाद–संज्ञा पुं० [सं०] किसी परोक्ष सत्ता का अवलंब लेकर प्रणय के शब्दों में हृदय की आकुलता प्रकट करना। छायावाद।
रहस्यवादी–वि० [सं०] १. रहस्यवाद का अनुयायी। २. रहस्यवाद संबंधी।
राइट–संज्ञा पु० [अं०] अधिकार। हक।
वि० ठीक। दुरुस्त।
राजप्रासाद–संज्ञा पुं० [सं०] राजा का महल।
राजबाड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "राज-प्रासाद"।
राजमाता–संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी देश के राजा या शासक की माता।
राजलोक*–संज्ञा पुं० दे० "राज-प्रार

- . स०] (वह शासन- ।में केवल राजा की सत्ता ही (ई)। प्रजातंत्तात्मक का उल्टा।

२-श्री–संज्ञा स्त्री० [स०] राज्य की शोभा और वैभव।

रामचंगी–संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की तोप।

राम धनुष–संज्ञा पु० [स०] इंद्रधनुष।

राम-भोग–संज्ञा पु० [हिं० राम + भोग] १ एक प्रकार का आम। २ एक प्रकार का चावल।

राम-मंत्र–संज्ञा पु० दे० "रामतारक"।

रामुनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० राम + मुनिया] लाल नामक पक्षी की मादा। सदिया।

रायल्टी–संज्ञा स्त्री० [अ०] वह धन जो किसी आविष्कारक या ग्रंथकर्त्ता आदि को उसके आविष्कार या कृति से होनेवाले लाभ के अंश के रूप में बराबर मिलता रहता है।

राव-चाव–संज्ञा पु० [हिं० चाव] लाड़-प्यार। दुलारा।

रावट*–संज्ञा पु० [हिं० रावल] राज-महल।

राष्ट्रवाद–संज्ञा पु० [स०] [वि० राष्ट्रवादी] वह सिद्धांत जिसमें अपने राष्ट्र के हितों को सबसे अधिक प्रधानता दी जाती है।

राष्ट्रीयता–संज्ञा स्त्री० [स०] १ किसी राष्ट्र के विशेष गुण। २ अपने देश या राष्ट्र का उत्कट प्रेम।

रासनशीन–संज्ञा पु० [स० राशि + फा० नशीन] गोद लिया हुआ लड़का। दत्तक।

रास-विलास–संज्ञा पु० [स०] १ रास क्रीड़ा। २ आनंद-मंगल।

राहज़न–संज्ञा पु० [फा०] [भाव० राहज़नी] डाकू। लुटेरा।

राहित्य–संज्ञा पु० [स०] 'रहित' का भाव। खालीपन। अभाव।

राहिन–वि० [अ०] रेहन या बंधक रखने-वाला।

रिंगना*–क्रि० अ० दे० "रेंगना"।

रिक्ति–संज्ञा स्त्री० [स०] १ रिक्त होने का भाव। खालीपन। २ खाली जगह।

रिक्शा–संज्ञा स्त्री० [अ०] एक प्रकार की सवारी जिसे आदमी खींचते हैं।

रिचा–संज्ञा स्त्री० दे० "ऋचा"।

रिढ़ना†–क्रि० अ० [?] घसीटते हुए चलना।

रिन*–संज्ञा पु० दे० "ऋण"।

रिपोर्ट–संज्ञा पु० [अ०] १ किसी घटना की सूचना। २ कार्य-विवरण।

रिपोर्टर–संज्ञा पु० [अ०] समाचार पत्र का संवाददाता।

रिलमिल–संज्ञा स्त्री० [हिं० रिलना + मिलना] मेल-जोल। मेल-मिलाप।

रिश्वतखोर–वि० [अ० + फा०] रिश्वत खानेवाला।

रिश्वती–वि० दे० 'रिश्वतखोर'।

रिसानी*–संज्ञा स्त्री० दे० 'रिस'।

रिहाई–संज्ञा स्त्री० [फा०] छुटकारा। मुक्ति।

रिहाना*–क्रि० स० [फा० रिहा] मुक्त कराना। छुड़ाना।

रीडर–संज्ञा स्त्री० [अ०] किसी भाषा की शिक्षा देनेवाली आरंभिक पुस्तक। संज्ञा पु० [अ०] किसी अधिकारी या न्यायालय का पेशकार।

रुकावट–संज्ञा स्त्री० [हिं० रुकना] १ रुकने की क्रिया या भाव। रोक। २ बाधा। विघ्न।

रुखसताना–संज्ञा पु० [फा०] वह धन जो विदा होने के समय दिया जाय। विदाई।

रुखसार–संज्ञा पु० [फा०] कपोल। गाल।

रुखावट–संज्ञा स्त्री० दे० रुखाई।

रुचिता–संज्ञा स्त्री० [स०] १ सौंदर्य। २ रोचकता। ३ अनुराग।

रुचिमान–वि० [स० रुचि + मान हिं० प्रत्य०] मनोहर। सुंदर। रुचिर।

रुनाई*–संज्ञा स्त्री० [स० अरुण] अरुणता। लाली।

रुपमनी*–संज्ञा स्त्री० [हिं० रुपवनी] सुंदरी स्त्री।

रुबाई–संज्ञा स्त्री० [अ०] चार चरणों का पद्य। चौबोला।
रुसूम–संज्ञा पुं० दे० "रसूम"।
रूपकार–संज्ञा पुं० [सं०] मूर्ति बनानेवाला।
रूपजीविनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या।
रूपजीवी–संज्ञा पुं० [सं०] बहुरूपिया।
रूपधर–संज्ञा पुं० [सं०] रूप धारण करनेवाला। रूपधारी।
रूपधारी–संज्ञा पं० दे० "रूपधर"।
रूपसी–संज्ञा स्त्री० [सं०] सुंदरी स्त्री।
रूल–संज्ञा पुं० [अं०] १. नियम। कायदा। २. वह लकड़ी जिसकी सहायता से सीधी लकीरें खींची जाती हैं। ३. सीधी खींची हुई लकीर।
रूलना–क्रि० स० [?] दबाना।
रूलर–संज्ञा पु० [अं०] १. शासक। राजा। २. सीधी लकीर खींचने की पट्टी या डंडा।
रूस–संज्ञा पुं० [अं० रशा] उत्तर-पूरबी योरोप का एक बड़ा देश।
रूहानी–वि० [अ०] १. रूह या आत्मा संबंधी। २. आध्यात्मिक।
रेखांकण–संज्ञा पु० [सं०] १. चित्र का खाका बनाने के लिये रेखाएँ अंकित करना। २. दे० "रेखा-चित्र"।
रेखा-कर्म–संज्ञा पुं० दे० "रेखांकण"।
रेखा-चित्र–संज्ञा पु० [सं०] किसी वस्तु का केवल रेखाओं से बनाया हुआ चित्र। खाका।
रेग–संज्ञा स्त्री० [फा०] बालू।
रेगमाल–संज्ञा पु० [फा० रेग + हिं० मलना] एक प्रकार का कागज जिसके ऊपर रेत जमाई हुई होती है और जिससे रगड़कर धातुएँ साफ की जाती है।
रेडियम–संज्ञा पु० [अ०] एक उज्ज्वल मूल द्रव्य धातु जिसे शक्ति संचित रूप ही समझना चाहिए।
रेडियो–संज्ञा पुं० [अं०] एक प्रसिद्ध विद्युत-यंत्र जिसमें बिना तार के संबंध के बहुत दूर से कही हुई बातें आदि सुनाई देती है।
रेढ़ना†–क्रि० स० [?] १. लुढ़कना। २. घसीटते हुए चलने में प्रवृत्त करना।
रेढ़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० रिढ़ना] बैलगाड़ी। लढ़िया।
रेल-मेल–संज्ञा पुं० [हिं० रिलना + मिलना] मेल-जोल। हेल-मेल।
रेप*–संज्ञा स्त्री० दे० "रेख"।
रेस–संज्ञा स्त्री० [अं०] दौड़, विशेषतः घोड़ों की दौड़ जिसमें प्रतियोगिता होती है।
रेहू–संज्ञा स्त्री० दे० "रोहू"।
रैल–संज्ञा स्त्री० [हिं० रेला] प्रवाह। रेला।
रोजीना–संज्ञा पुं० [फा०] दैनिक वृत्ति या मजदूरी।
रोठा*–संज्ञा पुं० दे० "रोड़ा"।
रोपक–वि० [सं०] रोकनेवाला।
रोबकार–संज्ञा पु० दे० "रूबकार"।
रोमन–वि० [अं०] रोम नगर या राष्ट्र-संबंधी।
संज्ञा स्त्री० वह लिपि जिसमें अँगरेजी आदि भाषाएँ लिखी जाती हैं।
रोमहर्ष–संज्ञा पु० दे० "रोमहर्षण"।
रोमाली*–संज्ञा स्त्री० दे० "रोमावलि"।
रोमिल–वि० [सं० रोम] रोएँदार।
रौदन–संज्ञा स्त्री० दे० "रौंद"।
रौल–संज्ञा पुं० दे० "रौला"।
संज्ञा स्त्री० दे० "रौलि"।
लंगरखाना–संज्ञा पु० दे० "लंगर"।
लंगरगाह–संज्ञा पुं० दे० "बंदरगाह"।
लंच–संज्ञा पु० [अं०] दोपहर का भोजन या जलपान।
लंबायमान–वि० [हिं० लंबा] १. बहुत लंबा। २ लेटा हुआ।
लक़-दक़–वि० [अ०] वनस्पति आदि से रहित और खुला (मैदान)।
लक़लक़–संज्ञा पुं० [अ०] सारस।
वि० बहुत दुबला पतला।
लक्ष्मीपुत्र–संज्ञा पुं० [सं०] धनवान्। अमीर।
लखराँव–संज्ञा पुं० [हिं० लाख] १. वह बाग जिसमें लाख पेड़ हों। २. बहुत बड़ा बाग।
लखेदना†–क्रि० स० दे० "खदेड़ना"।

...० [सं०] जन्मकुंडली में स्वामी ग्रह।
...ना-क्रि० स० [हिं० लचकना] लचकने में प्रवृत्त करना।
लचकीला-वि० दे० "लचीला"।
लचलचा-वि० दे० "लचीला"।
लचीला-वि० [हिं० लचना + ईला (प्रत्य०)] १. जो सहज में लच या झुक सकता हो। लचकदार। २ जिसमे सहज में परिवर्तन या उतार चढ़ाव हो सकता हो।
लचीलापन-संज्ञा पु० [हिं० लचीला + पन (प्रत्य०)] वस्तुओं का वह गुण जिससे वे लचकती, दबती या झुकती हैं।
लछारा*-वि० दे० "लवा"।
लजीज-वि० [अ०] अच्छे स्वादवाला। स्वादिष्ट।
लज्जालु-वि० [सं०] लज्जाशील। संज्ञा पु० दे० "लजालू"।
लठिया-संज्ञा स्त्री० दे० "लाठी"।
लड़काई*-संज्ञा स्त्री० दे० "लड़कपन"।
लड़ीला-वि० दे० "लाडला"।
लढ़ा-संज्ञा पु० दे० "लढ़िया"।
लताड़-संज्ञा स्त्री० [हिं० लताड़ना] १ लताड़ने की क्रिया या भाव। २ दे० "लथाड़"।
लतियर, लतियल-वि० दे० "लतखोर"।
लतीफ-वि० [अ०] १ मजेदार। स्वादिष्ट। २ सूक्ष्म। ३ कोमल।
लतीफा-संज्ञा पु० [अ०] १ चोज की बात। चुटकुला। २ हँसी की छोटी कहानियाँ।
लपझप-वि० [अनु०] १ चंचल। चपल। २ तेज। फुरतीला।
लपटा-संज्ञा पु० [हिं० लपटना] १ गाढ़ी गीली वस्तु। २ लपसी। ३ कढ़ी।
लपेटा-संज्ञा पु० दे० "लपेट"।
लब-संज्ञा पु० [फा०] १ होंठ। अधर। २ किनारा। जैसे लबे दरिया।
लबरेज-वि० [फा०] ऊपर तक या लबालब भरा हुआ।
लबेद-संज्ञा पु० [सं० वेद का अनु०] लोकाचार की भद्दी या भोंडी बात।
लब्धकाम-वि० [सं०] जिसकी कामना पूरी हो गई हो।
लब्धि-संज्ञा स्त्री० [सं०] प्राप्ति। लाभ।
लमछड़-वि० [हिं० लंबा] बिलकुल लंबा। संज्ञा पु० भाला। बरछा।
लमटंगा-वि० [हिं० लंबा + टाँग] लंबी टाँगोंवाला।
लयन-संज्ञा पु० [सं०] लय होने की क्रिया या भाव।
लयमान-वि० [सं० लय] जो लय हो गया हो। लय हो जानेवाला।
लरखरनि*-संज्ञा स्त्री० [हिं० लड़खड़ाना] लड़खड़ाने की क्रिया या भाव।
लरजा-संज्ञा पु० [फा० लर्ज] १. काँपना। २ कँपकँपी का रोग। ३ भूकंप।
ललकित-वि० [हिं० ललक] गहरी चाह से भरा हुआ।
ललामी-संज्ञा स्त्री० [सं० ललाम] १ सुंदरता। २ लालिमा। लाली।
लवकना†-क्रि० स० दे० "लौकना"।
लवका†-संज्ञा स्त्री० [हिं० लौकना] बिजली विद्युत्।
लसलसाना-क्रि० अ० [हिं० लस] चिपचिपा होना।
लसित-वि० [सं०] सजता हुआ। सुशोभित।
लहद-संज्ञा स्त्री० [अ०] कब्र।
लांछना-संज्ञा स्त्री० दे० "लांछन"।
लांछित-वि० [सं०] जिसे लांछन लगा हो। कलंकित।
लांपट्य-संज्ञा पु० [सं०] 'लंपट' का भाव। लंपटता।
लाइट-संज्ञा स्त्री० [अं०] प्रकाश। रोशनी।
लाइट हाउस-संज्ञा पु० [अं०] वह स्थान जहाँ बहुत दूर तक पहुँचनेवाला प्रकाश जलता है। प्रकाशगृह।
लाइन-संज्ञा स्त्री० [अं०] १ पंक्ति। कतार। २ सतर। ३ रेखा। लकीर। ४ रेल की सड़क। ५ घरों की वह पंक्ति जिसमें सिपाही रहते हैं। बारिक। लैन।
लाक्षिक-वि० [सं०] १. लाख का बना

हुआ। २. लाख संबंधी।
ला-खिराज–वि० [अ०] (जमीन) जिसका खिराज या लगान न देना पड़ता हो। माफी।
लाटरी–संज्ञा स्त्री० [अं०] वह योजना जिसमें लोगों को गोटी या गोली उठाकर केवल उनके भाग्य के अनुसार धन आदि बाँटा जाता है।
लाठी-चार्ज–संज्ञा पुं० [हिं० लाठी+अं० चार्ज] भीड़ आदि हटाने के लिए पुलिस आदि का लोगों पर लाठियाँ चलाना।
लाडू†–संज्ञा पुं० दे० "लड्डू"।
लादिया–संज्ञा पुं० [हिं० लादना] वह जो एक स्थान से माल लादकर दूसरे स्थान पर ले जाता है।
लामन–संज्ञा पुं० [देश०] लहँगा।
लायची–संज्ञा स्त्री० दे० "इलायची"।
लारी–संज्ञा स्त्री० [अं०] वह लंबी मोटर गाड़ी जिस पर बहुत से आदमियों के बैठने और माल लादने की जगह होती है।
लालस–वि० [सं०] ललचाया हुआ। लोलुप।
लालो*–सं० पु० दे० "लाले"।
ला-बवाली–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. अविचार। २. लापरवाही। उपेक्षा।
वि० १. आवारा। २. बेफिक्र।
लाव-लश्कर–संज्ञा पुं० [फ़ा०] सेना और उसके साथ रहनेवाले लोग तथा सामग्री।
लिखवार–संज्ञा पु० दे० "लिखधार"।
लिपिकार–संज्ञा पुं० [सं०] लिखनेवाला। लेखक।
लिबड़ना–क्रि० अ० [अनु०] कीचड़ आदि में लथपथ होना।
क्रि० स० कीचड आदि में लथपथ करना।
लिबरल–संज्ञा पु० [अं०] वह राजनीतिक दल जो प्रतिपक्षी के साथ उदारता का व्यवहार करना चाहता हो।
वि० उदार।
लिव*–संज्ञा स्त्री० [हिं० लौ] लगन।
लिवैया–वि० [हिं० लेना] लेने, लाने या लिया ले जानेवाला।
लीग–संज्ञा स्त्री० [अं०] १. किसी विशिष्ट दलों का किसी उद्देश्य से आपस में मिलन। २. बहुत बड़ी सभा या संस्था। ३. लंबाई की एक नाप जो स्थल के लिए तीन मील की और समुद्र के लिए साढ़े तीन मील की होती है।
लीवर*–वि० [हिं० लिबड़ना] कीचड़ आदि से भरा हुआ।
लीर†–संज्ञा स्त्री० [सं० चीर] कपड़े की धज्जी। चिथड़ा।
लुंठित–वि० [सं०] १. जो जमीन पर गिरा या लुढ़का हुआ हो। २. जो लूटा खसोटा गया हो।
लुआर–संज्ञा स्त्री० दे० "लू"।
लुकाठ–संज्ञा पु० [सं० लकुच] एक प्रकार का वृक्ष और उसका फल जो खाया जाता है। लुक्कुट।
*–संज्ञा पु० दे० "लुआठा"।
लुकार–संज्ञा स्त्री० दे० "लुक"।
लुकोना–क्रि० सं० दे० "लुकाना"।
लुटरना–क्रि० अ० [सं० लुठन] इधर उधर लुढकना या लोटना।
लुरकना†–क्रि० अ० [सं० लुलन] लटकना। झूलना।
लुरियाना†–क्रि० अ० दे० "लुरना"।
लूँबरी†–संज्ञा स्त्री० दे० "लोमड़ी"।
लूकट*–संज्ञा पु० दे० "लुआठा"।
लूम–संज्ञा पुं० [सं०] पूँछ। दुम।
संज्ञा स्त्री० [अं० हेंडलूम] कपड़ा बुनने का करघा।
लूलू–वि० [अनु०] मूर्ख। बेवकूफ
लेक्चर–संज्ञा पु० [अं०] व्याख्यान। भाषण।
लेखनहार–*वि० दे० "लेखक"।
लेट–संज्ञा पु० [देश०] चूने-सुरखी की छत। गच।
लेपट–संज्ञा पुं० [सं०] लेपने की क्रिया या भाव।
लेलिहान–वि० [सं०] १. बार बार चखने या चाटनेवाला। २. ललचाया हुआ।
संज्ञा पु० सर्प। साँप।

लैन†–सज्ञा स्त्री० दे० "लाइन"।
लैया–सज्ञा स्त्री दे० "लाई"।
लैरू†–सज्ञा पु०[?] १ बछड़ा। २ बच्चा।
लोकटी*–सज्ञा स्त्री० दे० "लोमड़ी"।
लोक्नी–सज्ञा स्त्री दे० "लोमड़ी"।
लोक-मत–सज्ञा [स०] किसी विषय में लोक या जनता की राय। समाज के बहुत से लोगो का मत।
लोकल–वि० [अ०] अपने नगर या स्थान का। स्थानीय।
लोकसत्ता–सज्ञा स्त्री० [स०] वह शासन-प्रणाली जिसमें सब अधिकार लोक या जनता के हाथ में हो।
लोकापवाद–सज्ञा पु० [स०] लोगो म होने-वाली बदनामी। लोकनिंदा।
लोकेश–सज्ञा पु० [स०] सब लोगो का स्वामी, ईश्वर।
लोकेश्वर–सज्ञा पु० दे० "लोकेश"।
लोट-पोट–सज्ञा स्त्री० [हि० लोटना] लेटना। आराम करना।
वि० १ हँसी या प्रसन्नता के कारण लेट लेट जानेवाला। २ बहुत अधिक प्रसन्न।
लोभनीय–वि० [स० लोभ] जिस पर लोभ हो सके। सुदर। मनोहर।
लोरा†–सज्ञा पु० [?] आँसू। अश्रु।
लोहचून–सज्ञा पु० [हि० लोहा + चूर] लोहे का चूरा या बुरादा।
लोहबान–सज्ञा पु० दे० "लोबान"।
लोही–सज्ञा स्त्री० [स० लौहित्य] उप काल की लाली।
सज्ञा स्त्री० दे० "लाई"।
लौंगलता–सज्ञा स्त्री० [हि० लौंग + लता] एक प्रकार की बँगला मिठाई।
लौका–सज्ञा पु० [स० लावुक] [स्त्री० अल्पा लौकी] कद्दू।
लौह-युग–सज्ञा पु० [स०] सस्कृति के इति-हास में वह समय जब कि अस्त्र शस्त्र और औजार लोहे के ही बनते थे। (पुरा०)
वकअत–सज्ञा स्त्री० [अ०] १ एतबार। साख। २ प्रतिष्ठा। मान। इज्जत।
वकार–सज्ञा पु० [अ०] १ शान शौकत। २ गौरव। मान।
वकूआ–सज्ञा पु० [अ० वुकूअ] घटना।
वकूफ–सज्ञा पु० [अ०] अक्ल। शऊर।
यौ०—बेवकूफ = मूर्ख।
वक्रता–सज्ञा स्त्री० [स०] १ टेढ़े या तिरछे होने का भाव। टेढ़ापन। २ कुटिलता।
वक्षोज वक्षोरुह–सज्ञा पु० [स०] स्तन। कुच।
वजूद–सज्ञा पु० [अ०] अस्तित्व। मौजूदगी।
यौ०—बावजूद = इतने होने पर भी।
वज्रपाणि–सज्ञा पु० [स०] इद्र।
वतीरा–सज्ञा पु० [अ०] रग-ढग। तौर-तरीका।
वध-भूमि–सज्ञा स्त्री० [स०] वह स्थान जहाँ वध किया जाता हो।
वनचारी–सज्ञा पु० [स्त्री० वनचारिणी] दे० "वनचर"।
वनप्रिय–सज्ञा पु० [स०] कोयल।
वनराजि–सज्ञा स्त्री० [स०] वन की श्रेणी। २ वन के बीच की पगडडी।
वनेचर–वि० दे० "वनचर"।
वन्यचर–वि० दे० "वनचर"।
वपित–वि० [स०] बोया हुआ।
वपुमान–सज्ञा पु० [स० वपुष्मान्] सुदर और हृष्ट-पुष्ट शरीरवाला।
वफात–सज्ञा स्त्री० [अ०] मृत्यु। मौत।
वयन–सज्ञा पु० [स०] बनने का काम। बुनाई।
वयस–सज्ञा पु० [स० वयस] बीता हुआ जीवनकाल। उम्र। अवस्था।
वयस्य–सज्ञा पु० [स०] १ समान अवस्था या उम्रवाला। २ मित्र। दोस्त।
वरणीय–वि० [स०] १ वरण करने के योग्य। २ पूजनीय।
वराक–वि० [स०] बेचारा। बापुरा।
वरासत–सज्ञा स्त्री० [अ० विरासत] १ वारिस होने का भाव। उत्तराधिकार। २ उत्तराधिकार से मिला हुआ धन। तरका। बपौती।
वरूथ–सज्ञा पु० [स०] १ कवच। २ ढाल।

३. सेना। फौज।
वरेण्य–वि० [सं०] १. प्रधान। मुख्य। २. पूज्य। श्रेष्ठ।
वर्गीकरण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० वर्गीकृत] बहुत सी वस्तुओं को उनके अलग अलग वर्ग के अनुसार छाँटना और लगाना।
वर्चस्वी–वि० [सं० वर्चस्विन्] तेजस्वी।
वर्जना–संज्ञा स्त्री० दे० "वर्जन"।
क्रि० स० [सं० वर्जन] मना करना। रोकना।
वर्णतूलिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] रंग पोतने की कूँची या बुरुश।
वर्णनातीत–वि० [सं०] जिसका वर्णन न हो सके। वर्णन के बाहर।
वर्णनीय–वि० दे० "वर्ण्य"।
वर्णिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] कुछ विशिष्ट रंगों का समवाय जो किसी चित्र या शैली में विशेष रूप से बरता जाय।
वर्णिकाभंग–संज्ञा पुं० [सं०] चित्र के विषय और भाव के अनुसार उपयुक्त रंगों का व्यवहार।
वर्षक–वि० [सं०] १. वर्षा करनेवाला। २. बरसानेवाला।
वर्ह–संज्ञा पुं० [सं०] १ मोर का पर। मोरपंख। २. पत्ता।
बलाक–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० वलाकी] बगला।
वल्लकी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वीणा। २ सलाई का पेड़।
वसति, वसती–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. निवास। २. घर। ३. बस्ती।
वस्त–संज्ञा पुं० [अ०] बीच का भाग। मध्य। संज्ञा स्त्री० दे० "वस्तु"।
वस्तु-स्थिति–संज्ञा स्त्री० [सं०] परिस्थिति।
वहिष्कार–संज्ञा पुं० दे० "बहिष्कार"।
वातावरण–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह हवा जिसने पृथ्वी को चारों ओर से घेर रखा है। २. आस-पास की परिस्थिति जिसका जीवन पर प्रभाव पड़ता है।
वात्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] बवंडर।
वात्सरिक–वि० [सं०] सालाना। वार्षिक।
वादग्रस्त–वि० [सं०] जिसके संबंध में विवाद या मतभेद हो।
वादित्र–संज्ञा पुं० [सं०] वाद्य। बाजा।
वानीर–संज्ञा पुं० [सं०] बेंत।
वापन–संज्ञा पुं० [सं०] बीज बोना।
वामांगिनी, वामांगी–संज्ञा स्त्री० [सं०] पत्नी।
वाय*–सर्व० दे० "वाहि"।
वायु-यान–संज्ञा पुं० [सं०] हवा में उड़नेवाला यान। हवाई जहाज।
वारक–वि० [सं०] १. वारण या निषेध करनेवाला। २. दूर करनेवाला।
वारनारी–संज्ञा स्त्री० दे० "वार-वधू"।
वार-वधू–संज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या। रंडी।
वारिवाह–संज्ञा पुं० [सं०] मेघ। बादल।
वारीश–संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।
वार्त्तावह–संज्ञा पुं० [सं०] संदेश ले जानेवाला दूत।
वार्य्य–वि० [सं०] १. वारण करने योग्य। २. निवारण करने योग्य।
वाल्देन–संज्ञा पुं० [अ० वालिदैन] माता-पिता।
वासंत–वि० [सं०] वसंत का। वसंती।
वास्कट–संज्ञा स्त्री० [अं० वेस्टकोट] एक प्रकार की कुरती। फतुही।
वाहना–क्रि० स० दे० "वाहना"।
वाहित–वि० [सं०] १. वहन किया हुआ। ढोया हुआ। २. विताया हुआ।
वाहिनीपति–संज्ञा पुं० [सं०] सेनापति।
वाही–वि० [सं० वाहिन] [स्त्री० वाहिनी] वहन करनेवाला।
विंश–वि० [सं०] बीसवाँ।
विकंपन–संज्ञा पुं० दे० "कंपना"।
विकंपित–वि० दे० "कंपित"।
विकच–वि० [सं०] १. खिला हुआ। विकसित। २. जिसके कच या बाल न हों। संज्ञा पुं० बालों का समूह या लट।
विकर्म–वि० [सं०] बुरा काम करनेवाला। संज्ञा पुं० बुरा काम। दुष्काम।

'विहारी"।

विहारना-क्रि० अ० दे० "विहारना"।

विहून-वि० दे० "विहीन"।

वीटिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] पान का बीड़ा।

वीप्सा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ व्याप्त होने की इच्छा। २ द्विरुक्ति। ३ एक प्रकार का शब्दालंकार।

वीभत्स-वि० दे० "बीभत्स"।

वीरकर्मा-वि० [सं० वीरकर्म्मन्] वीरता-पूर्ण कार्य करनेवाला।

वीरप्रसू-वि० दे० "वीरमाता"।

वीरव्रती-संज्ञा पु० [सं० वीरव्रतिन्] वह जिसने वीरता का व्रत लिया हो। परम वीर।

वीरसू-वि० स्त्री० [सं०] वीरों को उत्पन्न करनेवाली।

वीराना-संज्ञा पु० [फा० वीरान] उजाड़ जगह।

वीरुध-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लता। २ पौधा।

वृंदारक-संज्ञा पु० [सं०] देवता।

वृत्तगंधि-संज्ञा पु० [सं०] वह गद्य जिसमें अनुप्रास और समास अधिक हों।

वृत्तचूड़-वि० [सं०] मेहराबदार। संज्ञा पु० मेहराब।

वृत्तबंध-संज्ञा पु० [सं०] वृत्त या छंद के रूप में बना हुआ वाक्य।

वृषादित्य-संज्ञा पु० [सं०] वृषराशि में का सूर्य।

वृषी-संज्ञा पु० [सं० वृषिन्] मयूर। मोर।

वे-वि० [हिं० वह] 'वह' का बहु० रूप।

वेक्षण-संज्ञा पु० [सं०] अच्छी तरह देखना या ढूँढ़ना।

वेग-धारण-संज्ञा पु० [सं०] मल-मूत्र आदि का वेग रोकना।

वेतस-संज्ञा पु० दे० "वेत्र"।

वेतसी-संज्ञा स्त्री० दे० "वेत्र"।

वेत्रासन-संज्ञा पु० [सं०] वह आसन जिसमें बैठने की जगह बेत से बुनी हो। जैसे—कुर्सी, कोच आदि।

वेदन-संज्ञा पु० दे० "वेदना"।

वेदिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह चबूतरा जिसके ऊपर इमारत बनती है। २ दे० "वेदी"।

वेधक-वि० [सं०] १ बेध छेदनेवाला।

वेधालय-संज्ञा पु० दे० "वेधशाला"।

वेल्लि, वेल्ली-संज्ञा स्त्री० [सं०]

वेशवधू-संज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या।

वेष्टित-वि० [सं०] किसी चीज से लपेटा हुआ।

वै*-वि० १ दे० "वे"। २ दे० "वा"।

वैकटय-संज्ञा पु० [सं०] विकटता।

वैकाल-संज्ञा पु० [सं०] तीसरा अपराह्न।

वैकाली-वि० [सं०] तीसरे पहर का। संज्ञा स्त्री० तीसरे पहर का जलपान।

वैक्लव्य-संज्ञा पु० [सं०] ... व्याकुलता।

वैदग्ध्य-संज्ञा पु० [सं०] विदग्धता।

वैधानिक-वि० [सं०] विधान या संघटन नियमों से संबंध रखनेवाला।

वैपरीत्य-संज्ञा पु० [सं०] विपरीतता।

वैमानिक-वि० [सं०] विमान-संबंधी। संज्ञा पु० १ वह जो विमान पर सवार हो। २ हवाई जहाज चलानेवाला।

वैयक्तिक-वि० [सं०] किसी एक व्यक्ति से संबंध रखनेवाला। व्यक्तिगत। 'सामूहिक' का उलटा।

वैराज-संज्ञा पु० [सं०] १ परमात्मा। २ ब्रह्मा। ३ दे० "वैराज्य"।

वैरी-संज्ञा पु० [सं०] दुश्मन। शत्रु।

वैरूप्य-संज्ञा पु० [सं०] विरूपता। शक्ल का भद्दापन।

वैसा-वि० [हिं० वह+सा] उस तरह का।

वैसे-क्रि० वि० [हिं० वैसा] उस तरह।

वोक*-संज्ञा पु० [?] ओर। तरफ।

वोट-संज्ञा स्त्री० [अं०] किसी चुनाव में दी जानेवाली राय। मत।

वोटर-संज्ञा पु० [अं०] वह जो किसी चुनाव में राय देता हो। मत-दाता।

... स्त्री० [अं०] किसी चुनाव के

लिए वोट या मत लिया जाना।
व्यंजक–वि० [सं०] व्यक्त, प्रकट या सूचित करनेवाला।
व्यक्तिगत–वि० [सं०] किसी व्यक्ति से संबंध रखनेवाला। निजी।
व्यक्तित्व–संज्ञा पुं० [सं०] १. व्यक्ति का गुण या भाव। २. वे विशिष्ट गुण जिनके कारण किसी व्यक्ति की स्पष्ट और स्वतंत्र सत्ता सिद्ध होती है।
व्यजन–संज्ञा पुं० [सं०] पंखा।
व्यतिव्यस्त–वि० [सं०] अस्त-व्यस्त।
व्यतीतना*–क्रि० अ० दे० "बीतना"।
व्ययी–वि० [सं० व्ययिन] व्यय करनेवाला। खर्चीला।
व्यवस्थाता–संज्ञा पुं० दे० "व्यवस्थापक"।
व्यवस्थापिका सभा–संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी देश के प्रतिनिधियों आदि की वह सभा जो देश के लिए क़ानून आदि बनाती है।
व्यवहारतः–क्रि० वि० [सं०] व्यवहार की दृष्टि से। उपयोग के विचार से।
व्यवहार्य–वि० [सं०] व्यवहार या काम में लाने के योग्य।
व्यापन–संज्ञा पुं० [सं०] व्याप्त होना। फैलना।
व्यापारिक–वि० [सं०] व्यापार-संबंधी रोजगार का।
व्यापित–वि० [स्त्री० व्यापिता] दे० "व्याप्त"।
व्याप्त–वि० [सं०] चारों ओर फैला या भरा हुआ।
व्याहत–वि० [सं०] १. मना किया हुआ। निषिद्ध। २. व्यर्थ।
व्योमकेश–संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।
व्रजांगना–संज्ञा स्त्री० [सं०] व्रज की स्त्री।
व्रणी–वि० [सं० व्रण] १. जिसे फोड़ा हुआ हो। २. घायल।
व्रतति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लंबाई-चौड़ाई विस्तार। २. लता।
शंकरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] पार्वती।
शंख-विष–संज्ञा पुं० दे० "संखिया"।
शंपा–संज्ञा स्त्री० [सं० शम्पा] १. विद्युत्।

शक्तिमत्ता–संज्ञा स्त्री० [सं०] शक्तिमान होने का भाव। ताकत।
शक्तिशाली–वि० [सं०] [स्त्री० शक्तिशालिनी] बलवान्। ताकतवर।
शक्तिशील–वि० [स्त्री० शक्तिशीला] दे० "शक्तिशाली"।
शक्रचाप–संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रधनुष।
शख़्सियत–संज्ञा स्त्री० [अ०] "शख़्स" का भाव। व्यक्तित्व।
शतधा–अव्य० [सं०] १. सैकड़ों बार। २. सैकड़ों प्रकार से। ३. सैकड़ों टुकड़ों में।
शफ़क़त–संज्ञा स्त्री० [अ०] कृपा। दया।
शफ़र–संज्ञा पुं० [सं०] सफरी या सौरी नाम की मछली।
शबनमी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] मसहरी।
शबल–वि० [सं०] १. चितकबरा। २. रंग-बिरंगा। बहुरंगा।
शबलित–वि० दे० "शबल"।
शबाहत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. आकृति। शक्ल। सूरत। २. चित्रकारी में किसी रूप या आकृति की विशेषताएँ।
शब्दभेद–संज्ञा पुं० दे० "शब्दवेध"।
शब्दवेध–संज्ञा पुं० [सं०] लक्ष्य को बिना देखे केवल शब्द से दिशा का ज्ञान करके उस पर निशाना लगाना।
शब्दित–वि० [सं०] १. जिसमें शब्द होता हो। २. बोलता हुआ।
शमलोक–संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग।
शयनालय–संज्ञा पुं० दे० "शयनागार"।
शयित–वि० [सं०] १. सोया हुआ। निद्रित। २. शय्या पर पड़ा या लेटा हुआ।
शरई–वि० [अ०] शरअ या इस्लामी धर्म-शास्त्र के अनुसार।
शरणगृह–संज्ञा पुं० [सं०] जमीन के नीचे बनाया हुआ वह स्थान जहाँ लोग हवाई जहाजों के आक्रमण से बचने के लिए छिपकर रहते हैं।
शरणालय–संज्ञा पुं० दे० "शरणगृह"।
शरता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. 'शर' का भाव। २. तीरंदाजी।

"विहारी"।
विहारना–क्रि० अ० दे० "विहारना"।
विहून–वि० दे० "विहीन"।
वीटिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] पान का बीड़ा।
वीप्सा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ व्याप्त होने की इच्छा। २ द्विरुक्ति। ३ एक प्रकार का शब्दालंकार।
वीभत्स–वि० दे० "बीभत्स"।
वीरकर्मा–वि० [सं० वीरकर्म्मन्] वीरता-पूर्ण कार्य करनेवाला।
वीरप्रसू–वि० दे० "वीरमाता"।
वीरव्रती–संज्ञा पु० [सं० वीरव्रतिन्] वह जिसने वीरता का व्रत लिया हो। परम वीर।
वीरसू–वि० स्त्री० [सं०] वीरों को उत्पन्न करनेवाली।
वीराना–संज्ञा पु० [फा० वीरान] उजाड़ जगह।
वीरुध–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लता। २ पौधा।
वृंदारक–संज्ञा पु० [सं०] देवता।
वृत्तगंधि–संज्ञा पु० [सं०] वह गद्य जिसमें अनुप्रास और समास अधिक हो।
वृत्तचूड़–वि० [सं०] मेहराबदार। संज्ञा पु० मेहराब।
वृत्तबंध–संज्ञा पु० [सं०] वृत्त या छंद के रूप में बना हुआ वाक्य।
वृषादित्य–संज्ञा पु० [सं०] वृषराशि में का सूर्य।
वृषी–संज्ञा पु० [सं० वृषिन्] मयूर। मोर।
वे–वि० [हिं० वह] 'वह' का बहु० रूप।
वेक्षण–संज्ञा पु० [सं०] अच्छी तरह देखना या ढूँढना।
वेग-धारण–संज्ञा पु० [सं०] मल-मूत्र आदि का वेग रोकना।
वेतस–संज्ञा पु० दे० 'वेत्र'।
वेतसी–संज्ञा स्त्री० दे० "वेत्र"।
वेत्रासन–संज्ञा पु० [सं०] वह आसन जिसमें बैठने की जगह बेंत से बुनी हो। जैसे—कुर्सी, कोच आदि।
वेदन–संज्ञा पु० दे० "वेदना"।
वेदिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह चबूतरा जिसके ऊपर इमारत बनती है। कुरसी। २ दे० "वेदी"।
वेधक–वि० [सं०] १ वेध करनेवाला। २ छेदनेवाला।
वेधालय–संज्ञा पु० दे० "वेधशाला"।
वेल्लि, वेल्ली–संज्ञा स्त्री० [सं०] बेल। लता
वेशवधू–संज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या।
वेष्टित–वि० [सं०] किसी चीज से घेरा या लपेटा हुआ।
वै*–वि० १ दे० "वे"। २ दे० "दो"।
वैकट्य–संज्ञा पु० [सं०] विकटता।
वैकाल–संज्ञा पु० [सं०] तीसरा पहर। अपराह्न।
वैकाली–वि० [सं०] तीसरे पहर का। संज्ञा स्त्री० तीसरे पहर का जलपान।
वैक्लव्य–संज्ञा पु० [सं०] विकलता। व्याकुलता।
वैदग्ध्य–संज्ञा पु० [सं०] विदग्धता।
वैधानिक–वि० [सं०] विधान या संघटन के नियमों से संबंध रखनेवाला।
वैपरीत्य–संज्ञा पु० [सं०] विपरीतता।
वैमानिक–वि० [सं०] विमान-संबंधी। संज्ञा पु० १ वह जो विमान पर सवार हो। २ हवाई जहाज चलानेवाला।
वैयक्तिक–वि० [सं०] किसी एक व्यक्ति से संबंध रखनेवाला। व्यक्तिगत। 'सामूहिक' का उलटा।
वैराज–संज्ञा पु० [सं०] १. परमात्मा। २ ब्रह्मा। ३ दे० "वैराज्य"।
वैरी–संज्ञा पु० [सं०] दुश्मन। शत्रु।
वैरूप्य–संज्ञा पु० [सं०] विरूपता। शक्ल का भद्दापन।
वैसा–वि० [हिं० वह+सा] उस तरह का।
वैसे–क्रि० वि० [हिं० वैसा] उस तरह।
वोर*–संज्ञा पु० [?] ओर। तरफ।
वोट–संज्ञा स्त्री० [अं०] किसी चुनाव में दी जानेवाली राय। मत।
वोटर–संज्ञा पु० [अं०] वह जो किसी चुनाव में राय देता हो। मत-दाता।
वोटिंग–संज्ञा स्त्री० [अं०] किसी चुनाव के

लिए वोट या मत लिया जाना।
व्यंजक–वि० [सं०] व्यक्त, प्रकट या सूचित करनेवाला।
व्यक्तिगत–वि० [सं०] किसी व्यक्ति से संबंध रखनेवाला। निजी।
व्यक्तित्व–संज्ञा पुं० [सं०] १. व्यक्ति का गुण या भाव। २. वे विशिष्ट गुण जिनके कारण किसी व्यक्ति की स्पष्ट और स्वतंत्र सत्ता सिद्ध होती है।
व्यजन–संज्ञा पुं० [सं०] पंखा।
व्यतिव्यस्त–वि० [सं०] अस्त-व्यस्त।
व्यतीतना*–क्रि० अ० दे० "बीतना"।
व्ययी–वि० [सं० व्ययिन] व्यय करनेवाला। खर्चीला।
व्यवस्थाता–संज्ञा पुं० दे० "व्यवस्थापक"।
व्यवस्थापिका सभा–संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी देश के प्रतिनिधियों आदि की वह सभा जो देश के लिए क़ानून आदि बनाती है।
व्यवहारतः–क्रि० वि० [सं०] व्यवहार की दृष्टि से। उपयोग के विचार से।
व्यवहार्य–वि० [सं०] व्यवहार या काम में लाने के योग्य।
व्यापन–संज्ञा पुं० [सं०] व्याप्त होना। फैलना।
व्यापारिक–वि० [सं०] व्यापार-संबंधी रोजगार का।
व्यापित–वि० [स्त्री० व्यापिता] दे० "व्याप्त"।
व्याप्त–वि० [सं०] चारों ओर फैला या भरा हुआ।
व्याहत–वि० [सं०] १. मना किया हुआ। निषिद्ध। २. व्यर्थ।
व्योमकेश–संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।
व्रजांगना–संज्ञा स्त्री० [सं०] व्रज की स्त्री।
व्रणी–वि० [सं० व्रण] १. जिसे फोड़ा हुआ हो। २. घायल।
व्रतति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लंबाई-चौड़ाई विस्तार। २. लता।
शंकरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] पार्वती।
शंख-विष–संज्ञा पुं० दे० "संखिया"।
शंपा–संज्ञा स्त्री० [सं० शम्पा] १. विद्युत्।

शक्तिमत्ता–संज्ञा स्त्री० [सं०] शक्तिमान होने का भाव। ताकत।
शक्तिशाली–वि० [सं०] [स्त्री० शक्तिशालिनी] बलवान्। ताकतवर।
शक्तिशील–वि० [स्त्री० शक्तिशीला] दे० "शक्तिशाली"।
शक्रचाप–संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रधनुष।
शख़्सियत–संज्ञा स्त्री० [अ०] "शख़्स" का भाव। व्यक्तित्व।
शतधा–अव्य० [सं०] १. सैकड़ों बार। २. सैकड़ों प्रकार से। ३. सैकड़ों टुकड़ों में।
शफ़क़त–संज्ञा स्त्री० [अ०] कृपा। दया।
शफ़र–संज्ञा पुं० [सं०] सफरी या सौरी नाम की मछली।
शबनमी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] मसहरी।
शबल–वि० [सं०] १. चितकबरा। २. रंग-बिरंगा। बहुरंगा।
शबलित–वि० दे० "शबल"।
शबाहत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. आकृति। शक्ल। सूरत। २. चित्रकारी में किसी रूप या आकृति की विशेषताएँ।
शब्दभेद–संज्ञा पुं० दे० "शब्दवेध"।
शब्दवेध–संज्ञा पुं० [सं०] लक्ष्य को बिना देखे केवल शब्द से दिशा का ज्ञान करके उस पर निशाना लगाना।
शब्दित–वि० [सं०] १. जिसमें शब्द होता हो। २. बोलता हुआ।
शमलोक–संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग।
शयनालय–संज्ञा पुं० दे० "शयनागार"।
शयित–वि० [सं०] १. सोया हुआ। निद्रित। २. शय्या पर पड़ा या लेटा हुआ।
शरई–वि० [अ०] शरअ या इस्लामी धर्म-शास्त्र के अनुसार।
शरणगृह–संज्ञा पुं० [सं०] जमीन के नीचे बनाया हुआ वह स्थान जहाँ लोग हवाई जहाजों के आक्रमण से बचने के लिए छिपकर रहते हैं।
शरणालय–संज्ञा पुं० दे० "शरणगृह"।
शरता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. 'शर' का भाव। २. तीरंदाजी।

शरतिया–क्रि० वि० दे० "शर्तिया"।

शरमाऊ–वि० दे० "शरमीला"।

शराबखोर–संज्ञा पुं० दे० "शराबी"।

शराश्रय–संज्ञा पुं० [सं०] तरकश।

शराह–संज्ञा पुं० दे० "शरासन"।

शरीअत–संज्ञा स्त्री० दे० "शरीयत"।

शल्ल–वि० [अ०] शिथिल। सुन्न। (हाथ-पैर)

शवता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शव का भाव। लाशपन। २ मुरदापन।

शवल–वि० दे० "शबल"।

शशमाही–वि० [फा०] हर छः महीने का। षण्मासिक।

शशिकांत–संज्ञा पुं० [सं०] १ चंद्रकांतमणि। २ कोईं। कुमुद।

शशिप्रभा–संज्ञा स्त्री० [सं०] ज्योत्स्ना। चाँदनी।

शस्त्रगृह–संज्ञा पुं० दे० "शस्त्रागार"।

शस्त्रीकरण–संज्ञा पुं० [सं०] सेना या राष्ट्र को शस्त्रों आदि से सज्जित करना।

शहत–संज्ञा पुं० दे० "शहद"।

शहना–संज्ञा पुं० [अ० शिहन] १ शासक। २ कोतवाल। ३ कर संग्रह करनेवाला।

शहवत–संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० शहवती] संभोग की इच्छा। काम वासना।

शांतिवाद–संज्ञा पुं० [सं०] यह सिद्धांत कि सब लोगों को यथासाध्य शांति-पूर्वक रहना चाहिए और संसार से लड़ाई-झगड़े और युद्ध आदि का अंत हो जाना चाहिए।

शांतिवादी–संज्ञा पुं० [सं० शान्तिवादिन्] वह जो शांतिवाद का समर्थक और पक्षपाती हो।

शाकंभरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] शिवा। दुर्गा।

शाखी–वि० [सं० शाखिन्] शाखाओंवाला। संज्ञा पुं० वृक्ष। पेड़।

शाठ्य–संज्ञा पुं० [सं०] शठता।

शाण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० शाणित] १. सान रखने का पत्थर। कुरंड। २ पत्थर। ३ कसौटी।

शातिर–संज्ञा पुं० [अ०] १. शतरंज का खेलाड़ी। २. धूर्त। चालाक।

शापना*–क्रि० स० [सं० शाप] शाप देना।

शामिलात–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ 'शामिल' का बहु०। २ हिस्सेदारी। साझा।

शायरी–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ कविताएँ रचना। २ काव्य।

शाया–वि० [अ० शाइअ] १. प्रकट। जाहिर। २ छपा हुआ। प्रकाशित।

शालबाफ–संज्ञा पुं० [फा०] [भाव० शालबाफी] शाल या दुशाले बुननेवाला।

शास्त्रीकरण–संज्ञा पुं० [सं०] किसी विषय को शास्त्र का रूप देना।

शाहखर्च–वि० [फा०] [संज्ञा शाहखर्ची] बहुत खर्च करनेवाला।

शाहबाला–संज्ञा पुं० दे० "शहबाला"।

शाहराह–संज्ञा स्त्री० [फा०] बड़ी सड़क। राजमार्ग।

शिंजन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० शिंजित] १ मधुर ध्वनि। २ आभूषणों की झंकार। वि० मधुर-ध्वनि करनेवाला।

शिंजिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नूपुर। पैंजनी। २ अँगूठी। ३ धनुष की डोरी।

शिकरम–संज्ञा स्त्री० [?] एक प्रकार की गाड़ी।

शिकवा–संज्ञा पुं० [फा०] शिकायत। गिला।

शिकस्त–वि० [फा०] पराजय। हार।

शिक्षणालय–संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ किसी प्रकार की शिक्षा दी जाय। विद्यालय।

शिखंडिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] चोटी। शिखा।

शिथिलित–वि० [सं० शिथिल] १ जो शिथिल हो गया हो। २ थका-माँदा। सुस्त।

शिरधरू–संज्ञा पुं० दे० "सिर-धरू"।

शिरोरुह–संज्ञा पुं० [सं०] सिर के बाल।

शिलान्यास–संज्ञा पुं० [सं०] सिर के बाल।

शिलारोपण–संज्ञा पुं० दे० "शिलान्यास"।

शिलावृष्टि–संज्ञा स्त्री० [सं०] ओले गिरना।

शिलीपद–संज्ञा पुं० दे० "श्लीपद"।

शिशुत्व–संज्ञा पुं० दे० "शिशुता"।

शीतकर–संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।
शीतज्वर–संज्ञा पुं० [सं०] जाड़ा देकर आनेवाला बुखार। जूड़ी।
शीतपित्त–संज्ञा पुं० [सं०] जुड़पित्ती।
शुंडा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सूंड। २. एक तरह की शराब।
शुंडिक–संज्ञा पुं० [सं०] शराब बनानेवाला। कलवार।
शुक्तिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] सीपी।
शुजा–वि० [अ० शुजाअ] वीर। बहादुर।
शुजाअत–संज्ञा स्त्री० [अ०] वीरता। बहादुरी।
शुतुर–संज्ञा पुं० [अ०] ऊँट।
शुतुरनाल–संज्ञा स्त्री० [अ० + फ़ा०] ऊँट पर रखकर चलाई जानेवाली तोप।
शुद्धांत–संज्ञा पु० [सं०] अंतःपुर। जनाना महल।
शुभंकर–वि० [सं०] मंगल-कारक।
शुभंकरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] पार्वती।
शुभा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शोभा। २. कांति। ३. देव-सभा।
संज्ञा पुं० दे० "शुबहा"।
शुभाकांक्षी–वि० [स्त्री० शुभाकांक्षिणी] दे० "शुभचिंतक"।
शुभाशय–संज्ञा पु० [सं०] वह जिसका आशय या विचार शुभ हो।
शुमाल–संज्ञा पुं० [अ०] [वि० शुमाली] उत्तर दिशा।
शून्यता–संज्ञा स्त्री० [सं०] शून्य होने का भाव। खालीपन।
शेफालिका, शेफाली–संज्ञा स्त्री० [सं०] नील सिंधुवार का पौधा। निर्गुंडी।
शेर-बच्चा–संज्ञा पु० [फ़ा०] एक प्रकार की तोप।
शेर-मर्द–संज्ञा पुं० [फ़ा०] वीर। बहादुर।
शैत्य–संज्ञा पुं० [सं०] 'शीत' का भाव। शीतता।
शैवल–संज्ञा पुं० दे० "शैवाल"।
शोच्य–वि० [सं०] १. सोचने या विचार करने के योग्य। २. "शोचनीय"।

शोधित–वि० [सं० शोध] १. शुद्ध या साफ़ किया हुआ। २. जिसका या जिसके संबंध में शोध हुआ हो।
शोभनीय–वि० दे० "शोभन"।
शोरिश–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. हो-हल्ला। २. झगड़ा। फसाद। ३. हलचल। खलबली।
शोषणीय–वि० [सं०] शोषण करने के योग्य। जो शोषित हो सके।
शोषित–वि० [सं०] जिसका शोषण किया गया हो।
शोषी–वि० दे० "शोषक"।
शौक़िया–वि० शौकवाला। क्रि० वि० शौक से।
शौक्तिक–संज्ञा पुं० [सं०] मोती।
श्यंग*–संज्ञा पुं० दे० "शृंग"।
श्रद्धादेव–संज्ञा पुं० [सं०] वैवस्वत मनु जो श्रद्धा के पति थे।
श्रमजन–संज्ञा पुं० दे० "श्रमजीवी"।
श्रमिक–संज्ञा पुं० दे० "श्रमजीवी"।
श्रवणीय–वि० [सं०] सुनने योग्य।
श्रीधाम–संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग।
श्रीश–संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।
श्रुत पूर्व–वि० [सं०] जो पहले सुना हो।
श्रुतिगह्वर–संज्ञा पुं० [सं०] सुनने की इंद्रिय। कर्ण। कान।
श्वसन–संज्ञा पुं० [सं०] १. श्वास। सांस। २. जीवन।
श्वसित–वि० [सं०] जो श्वास लेता हो। जीवित।
संज्ञा पु० निश्वास।
श्वापद–संज्ञा पु० [सं०] हिंसक पशु।
श्वेत-सार–संज्ञा पुं० [सं०] अनाजों और तरकारियों आदि का सफ़ेद सत्त जो प्रायः कपड़ों में कलफ देने या दवाओं आदि में काम आता है। माड़ी। कलफ।
श्वेतांशु–संज्ञा पु० [सं०] चंद्रमा।
षट्रस–संज्ञा पु० दे० "षड्रस"।
षरामुख–संज्ञा पु० दे० "षडानन"।
सँकराना*–क्रि० स० [हिं० सँकरा] सँकरा या संकुचित करना।

सकलप–सज्ञा पु० दे० "सकल्प"।
सकल्पित–वि० [स०] जिसका सकल्प या निश्चय किया गया हो।
सकष्ट–सज्ञा पु० दे० "सकट"।
सकुलित–वि० [स० सकुल] भरा हुआ। व्याप्त।
सँकेलना*–क्रि० स० दे० "सकेलना"।
सक्रामी–वि० दे० "सक्रामक"।
सक्षेपण–सज्ञा पु० [स०] सक्षिप्त करने की क्रिया या भाव।
सख*–सज्ञा पु० दे० "शख"।
सगतरा–सज्ञा पु० दे० "सतरा"।
सगतिया, सगती–वि० [हि० सगत] १ साथी। २ गवैये के साथ बाजा बजानेवाला"।
सगर–सज्ञा पु० [स०] १ युद्ध। सग्राम। २ विपत्ति। ३ नियम।
सज्ञा पु० [फा०] १ सेना की रक्षा के लिए बनी हुई चारो ओर की खाई या धुस आदि। २ मोरचा।
सगसार–सज्ञा पु० [फा०] अपराधी को पत्थर मारकर उसके प्राण लेना।
सग्रहणीय–वि० दे० "सग्राह्य'।
सग्रहाध्यक्ष–सज्ञा पु० [स०] वह जो किसी सग्रह या सग्रहालय का अध्यक्ष या व्यवस्थापक हो।
सग्रहालय–सज्ञा पु० [स०] वह स्थान जहां एक ही प्रकार की बहुत सी चीजो का सग्रह हो। म्यूजियम।
सग्रही–वि० दे० 'सग्राहक"।
सग्राहक–सज्ञा पु० [स०] सग्रह करनवाला। सग्रहकर्ता।
सघटित–वि० [स०] १ जिसका सघटन हुआ हो। २ दे० "सगठित"।
सघपति–सज्ञा पु० [स०] सघ या दल का नायक।
सघ-स्थविर–सज्ञा पु० [स०] सघाराम का प्रधान बौद्ध भिक्षु।
सघोष–सज्ञा पु० [स०] जोर का शब्द।
सचरित–वि० [स०] जिसमें सचार हुआ हो।
सचारक–वि० [स०] [स्त्री० सचारिणी] सचार करनेवाला।
सचालित–वि० [स०] जिसका सचालन किया गया हो। चलाया या जारी किया हुआ।
सँजोवना*–क्रि० स० [स० सज्जा] सजाना।
सतुलन–सज्ञा पु० [स०] १ तौल या भार बराबर और ठीक करना। २ दो पक्षों का बल बराबर रखना।
सत्रस्त–वि० [स० त्रस्त] १ डरा हुआ। भयभीत। २ घबराया हुआ। व्याकुल। ३ जिसे कष्ट पहुँचा हो। पीडित।
सदर्शन–सज्ञा पु० [स०] अच्छी तरह देखना।
सदूकचा–सज्ञा पु० दे० "सदूकडी"।
सनिवेश–सज्ञा पु० दे० "सन्निवेश"।
सन्यस्त–वि० [स० सन्यास] १ जिसने सन्यास लिया हो। २ पूरी तरह से किसी काम मे लगा हुआ। कटिबद्ध।
सपकित–वि० दे० "सपृक्त"।
सपुटी–सज्ञा स्त्री० [स० सपुट] कटोरी। प्याली।
सपृक्त–वि० [स०] जिसमे सपर्क हो।
सपै*–सज्ञा स्त्री० दे० "सपत्ति"।
सपोषण–सज्ञा पु० [स०] [वि० सपोषित] अच्छी तरह पालन पोषण करना।
सबधित–वि० दे० "सबद्ध'।
सभवनीय–वि० [स०] सभव। मुमकिन।
सँभाला–सज्ञा पु० [हि० सँभाल] मरने से पहले कुछ चेतनता-सी आना।
सयमन–सज्ञा पु० दे० "सयम'।
सयमित–वि० [स०] १ जो सयम के अधीन हो। २ रोका या बाँधा हुआ।
संलापक–सज्ञा पु० [स०] १ एक प्रकार का उपरूपक। २ 'सलाप"।
सवाददाता–सज्ञा पु० [स०] वह जो समाचार-पत्रो म स्थानीय समाचार भेजता हो।
सवास–सज्ञा पु० [स०] [वि० सवासित] १ सुगधि। खुशबू। २ श्वास के साथ मुँह से निकलनेवाली दुर्गंध। ३ सार्वजनिक निवास-स्थान। ४ मकान। घर।
संविधान–सज्ञा पु० [स०] १ प्रबंध। व्यवस्था। २ रीति। दस्तूर। ३ रचना।

संवृत्त–वि० [सं०] १. ढका या घिरा हुआ। २. रक्षित।
संवेदना–संज्ञा स्त्री० दे० "संवेदन"।
संशुद्ध–वि० [सं०] जिसका संशोधन हुआ हो।
संश्रित–वि० [सं०] १. लगा हुआ। २. शरण में आया हुआ। ३. दूसरे के सहारे रहनेवाला। आश्रित।
संसक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० संसक्त] १. लगाव। संबंध। २. आसक्ति। लगन। ३. लीनता। ४. प्रवृत्ति।
संसिक्त–वि० [सं०] बहुत गीला या आर्द्र।
संसेवन–संज्ञा पुं० [वि० संसेवित] दे० "सेवन"।
सकर्मक–वि० [सं०] १. कर्म से युक्त। २. काम में लगा हुआ। क्रियाशील।
सकलाती–वि० [हिं० सकलात] १. उपहार में देने के योग्य। बहुत बढ़िया। २. मखमल का।
सक्रिय–वि० [सं०] [भाव० सक्रियता] १. जिसमें क्रिया भी हो। २. क्रियात्मक रूप में। जिससे कुछ करके दिखलाया जाय।
सखरच*–वि० दे० "शाहखर्च"।
सखरस–संज्ञा पु० [?] मक्खन।
सख्ती–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. कड़ापन। कड़ाई। २. व्यवहार की कठोरता।
सग–संज्ञा पु० [फ़ा०] कुत्ता।
सगपन–संज्ञा पु० दे० "सगापन"।
सगारत†–संज्ञा स्त्री० दे० "सगापन"।
सचल–वि० [सं०] [संज्ञा सचलता] १. जो अचल न हो। चलता हुआ। २. चंचल। ३. जंगम।
सच्चरित–वि० [सं०] अच्छे चरित्र या चाल-चलनवाला। सदाचारी।
सच्चरित्र–वि० दे० "सच्चरित"।
सजागर–वि० [सं०] १. जागता हुआ। २. सजग। होशियार।
सज़ावार–वि० [फ़ा०] उचित। वाजिब। वि० [फ़ा० सज़ा] दंड पाने के योग्य। दंडनीय।
सजोयल*–वि० दे० "सँजोइल"।
सज्या*–संज्ञा स्त्री० १. दे० "सज्जा"। २. दे० "शय्या"।
सटियल–वि० [?] घटिया।
सटोरिया–संज्ञा पुं० दे० "सट्टेबाज"।
सट्टेबाज–संज्ञा पुं० [हिं० + फ़ा०] [भाव० सट्टेबाजी] वह जो केवल तेजी मंदी के विचार से खरीद बिक्री करता हो। सटोरिया।
सठोरा–संज्ञा पुं० दे० "सोंठौरा"।
सड़ाव–संज्ञा पु० [हिं० सड़ना] सड़ने की क्रिया या भाव।
सतंत*–अव्य० दे० "सतत"।
सतपदी–संज्ञा स्त्री० दे० "सप्तपदी"।
सतरंगा–वि० [हिं० सात + रंग] सात रंगोंवाला। संज्ञा पु० इंद्रधनुष।
सतलड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० सात + लड़] सात लड़ों की माला।
सतृष्ण–वि० [सं०] तृष्णा से युक्त। तृष्णापूर्ण।
सत्कृत–वि० [सं०] जिसका सत्कार किया जाय। आदृत।
सत्कृति–संज्ञा पु० [सं०] वह जो अच्छे कार्य करता हो। सत्कर्मी।
संज्ञा स्त्री० अच्छी कृति। उत्तम कार्य।
सत्तम–वि० [सं०] १. सबसे बढ़कर। सर्वश्रेष्ठ। २. परमपूज्य। ३. परमसाधु।
सत्तर–वि० [सं० सप्तति] साठ और दस। संज्ञा पु० साठ और दस की संख्या। ७०।
सत्यनिष्ठ–वि० [सं०] [संज्ञा सत्यनिष्ठा] सदा सत्य पर दृढ़ रहनेवाला। सत्यव्रत।
सत्यप्रतिज्ञ–वि० [सं०] अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहनेवाला।
सत्यलोक–संज्ञा पु० [सं०] सबसे ऊपर का लोक जिसमें ब्रह्मा रहते हैं।
सत्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] सत्यभामा।
संज्ञा स्त्री० १. दे० "सत्ता"। २. दे० "सत्यता"।
सत्याग्रही–संज्ञा पुं० [सं० सत्याग्रहिन्] वह जो सत्याग्रह करता हो।
सत्रह–वि० संज्ञा पु० दे० "सत्तरह"।
सदबर्ग–संज्ञा पुं० [फ़ा०] हजार गेंदा।
सदस्यता–संज्ञा स्त्री० [सं०] सदस्य का भाव

या पद।
सवहा–वि० [फा०] सैकड़ों।
सदागति–संज्ञा पु० [सं०] १. वायु। २ सूर्य।
सदाचारिता–संज्ञा स्त्री० दे० "सदाचरण"।
सदारत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ सद्र या प्रधान का धर्म, भाव या कार्य। २ सभापतित्व।
सद्र–संज्ञा पु० दे० "सदर"।
सद्व्रत–वि० [सं०] [स्त्री० सद्व्रता] १. जिसने अच्छा व्रत धारण किया हो। २ सदाचारी।
सधर–संज्ञा पु० [सं०] ऊपर का होंठ।
सनअत–संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० सनअती] कारीगरी। शिल्प-कौशल।
सनकियाना–क्रि० स० [हिं० सनक] पागल बनाना। क्रि० स० [हिं० सैन] संकेत या इशारा करना।
सनसनाना–क्रि० अ० [अनु०] (हवा का) सन सन शब्द करते हुए बहना।
सनसनाहट–संज्ञा स्त्री० [अनु०] सन सन शब्द होने का भाव या क्रिया।
सनातनता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्राचीनता। पुरानापन। २ परंपरागत होने का भाव
सनित–वि० [हिं० सनना] सना या एक में मिलाया हुआ। मिश्रित।
सनेस, सनेसा–संज्ञा पु० दे० "संदेश"।
सपदि–अव्य० [सं०] उसी समय। तुरत।
सफलित–वि० दे० "सफलीभूत"।
सफूफ–संज्ञा पु० [अ०] बुकनी। चूर्ण।
सब-मरीन–संज्ञा स्त्री० [अं०] पानी के नीचे डूबकर चलनेवाली एक प्रकार की नाव। पनडुब्बी।
सबू–संज्ञा पु० [फा०] मटका। घड़ा।
सबेरा–संज्ञा पु० दे० "सवेरा"।
सब्ज-कदमी–संज्ञा पु० [फा०] वह जिसका आना अशुभ माना जाय। मनहूस।
सभीत–वि० दे० "भीत"।
समझाव, समझावा–संज्ञा पु० [हिं० समझाना] समझने या समझाने की क्रिया या भाव।
समतोल–वि० [सं० सम + सं० तौल] महत्त्व आदि के विचार से समान। बराबर।
समतोलन–संज्ञा पु० [सं०] १ महत्त्व आदि के विचार से सबको समान रखना। २ दोनों पलड़ों या पक्षों को समान रखना।
समत्व–संज्ञा पु० दे० "समता"।
समधिक–वि० [सं०] बहुत। अधिक।
समनाम–संज्ञा पु० [सं०] १ समान नामवाला। नामरासी। २ समानार्थ। पर्याय।
समरस–वि० [सं० सम + रस] [भाव० समरसता] १. एक ही प्रकार के रसवाले (पदार्थ) २ एक ही तरह के।
समराना*–क्रि० स० [हिं० सँवारना] सजाना या सजवाना।
समर्चना–संज्ञा स्त्री० [सं०] भली भाँति की हुई अर्चना।
समर्थित–वि० [सं०] जिसका समर्थन हुआ हो।
समर्पना*–क्रि० स० [सं० समर्पण] समर्पण करना। सौंपना।
समवयस्क–वि० [सं०] समान वयस या उम्रवाला। हमउम्र।
समा–संज्ञा पु० दे० "समाँ"। वि० 'सम' का स्त्री०।
समाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० समाना] १ समाने की क्रिया या भाव। २ सामर्थ्य। शक्ति।
समाजवाद–संज्ञा पु० [सं०] वह सिद्धांत जिसमें सारी संपत्ति समाज या समूह की मानी जाती है और सब लोग सबके लाभ के लिए काम करते हैं।
समाजवादी–वि० [सं०] वह जो समाजवाद का सिद्धांत मानता हो।
समाजशास्त्र–संज्ञा पु० [सं०] वह शास्त्र जो मनुष्य को सामाजिक प्राणी मानकर मनुष्य के समाज और संस्कृति की उत्पत्ति और विवेचन करता है।
समाजशास्त्री–संज्ञा पु० [सं० समाजशास्त्रिन्] समाज-शास्त्र का ज्ञाता या पंडित।
समादृत–वि० [सं०] जिसका खूब आदर हुआ

हो। सम्मानित।
समाद्रित–वि० दे० "समादृत"।
समाधानना*–क्रि० स० [सं० समाधान] १. समाधान या संतोष करना। २. सांत्वना देना।
समाश्रय–संज्ञा पुं० [सं०] आश्रय। शरण।
समाश्रित–वि० [सं०] आश्रय या शरण में रहनेवाला।
समासीन–वि० [सं०] भली भाँति आसीन या बैठा हुआ। आसीन।
समाहित–वि० [सं०] १. एक जगह इकट्ठा किया हुआ। केंद्रित। २. शान्त। ३. समाप्त। ४. स्वीकृत।
समिद्ध–वि० [सं०] १. प्रज्वलित। २. उत्तेजित। भड़का या भड़काया हुआ।
समीक्षक–वि० [सं०] १. अच्छी तरह देखने-भालनेवाला। २. आलोचना करनेवाला। समालोचक।
समुज्ज्वल–वि० [सं०] [भाव० समुज्ज्वलता] विशेष रूप से उज्वल। प्रकाशमान। चमकीला।
समुत्सुक–वि० [सं०] [भा० समुत्सुकता] विशेष रूप से उत्सुक।
समुदय–संज्ञा पु० वि० दे० "समुदाय"।
समुद्यत–वि० [सं०] जो भली भाँति उद्यत या तैयार हो।
समुद्रीय–वि० [सं०] समुद्र-संबंधी।
समुन्नत–वि० [सं०] भली भाँति उन्नत।
समुपस्थित–वि० दे० "उपस्थित"।
*समै, समैया**–संज्ञा पुं० दे० "समय"।*
समोखना–क्रि० स० [स० सम्मुख ?] बहुत ताकीद से कहना।
समोना–क्रि० स० [?] मिलोना।
समोसा–संज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का नमकीन पकवान। तिकोना।
समौ*–संज्ञा पुं० दे० "समय"।
सम्मार्जनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] झाड़ू।
सम्याना*–संज्ञा पुं० दे० "शामियाना"।
सम्हलना–क्रि० अ० दे० "सँभलना"।
सयान*–संज्ञा पुं० १. दे० "सयाना"। २. दे० "सयानापन"।
सरंजाम–संज्ञा पुं० [फ़ा० सर+अंजाम] १. कार्य की समाप्ति। २. व्यवस्था। प्रबंध। ३. सामग्री। सामान।
सरकस–संज्ञा पुं० [अं०] पशुओं और कलाबाजी आदि का कौशल या उसे दिखलानेवालों का दल।
सरगतिय*–संज्ञा स्त्री० [सं० स्वर्ग + तिय] अप्सरा।
सर-गरदाँ–वि० [फ़ा०] [संज्ञा सरगरदानी] घबराया हुआ। चक्कर में पड़ा हुआ।
सर-ज़ोर–वि० [फ़ा०] [संज्ञा सरज़ोरी] १. बलवान। ताकतवर। २. प्रबल। जबरदस्त। ३. उद्दंड। ४. विद्रोही।
सर-ताज–संज्ञा पुं० दे० "सिर-ताज"।
सरतारा–वि० [हिं० सिर + तरना ?] जो अपने काम करके निश्चिंत हो गया हो।
सरधन*–वि० [सं० स + धन] धनवान। अमीर।
सरधा*–संज्ञा स्त्री० दे० "श्रद्धा"। संज्ञा पुं० दे० "सरदा"।
सरनी*–संज्ञा स्त्री० [सं० सरणी] मार्ग। रास्ता।
सर-पंजर*–संज्ञा पुं० [सं० सर + पिंजरा] बाणों का बना हुआ पिंजड़ा या घेरा।
सरफ़राज़–वि० [फ़ा०] [संज्ञा सरफ़राज़ी] उच्च पद पर पहुँचा हुआ। सम्मानित।
सरफराना*–क्रि० अ० [अनु०] व्याकुल होना घबराना।
सरवरिया–वि० [हिं० सरवार] सरवार या सरयू पार का।
संज्ञा पु० सरयूपारी।
सरवार–संज्ञा पुं० [सं० सरयू + पार] सरयू नदी के उस पार का देश जिसमें गोरखपुर और बस्ती आदि जिले हैं।
सरविस–संज्ञा स्त्री० [अं०] १. नौकरी। २. सेवा। खिदमत।
सरवे–संज्ञा पु० [अं०] १. जमीन की पैमाइश २. यह पैमाइश करनेवाला सरकारी विभाग।
सरसता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. 'सरस' होने

का भाव। २ रसीलापन। ३ गीलापन। आर्द्रता। ४. सुदरता। ५ मधुरता। ६ भावपूर्णता। रसिकता।
सरहग–सज्ञा पु० [फा०] १. सेनापति। २ पहलवान। ३. कोतवाल। ४. सिपाही।
सराजाम†–सज्ञा पु० दे० "सरजाम"।
सरी–सज्ञा स्त्री० [स०] १. छोटा सर या तालाब। २. झरना। चश्मा। सोता।
सर्पिल–वि० [स०] साँप के आकार का। साँप की तरह कुडली मारे हुए।
सर्रक–सज्ञा स्त्री० [अनु०] सरकते हुए आगे बढने की क्रिया या भाव।
सर्राटा–सज्ञा पु० [हि० सर्र से अनु०] १ हवा के जोर से चलने से होनेवाला सर्र सर्र शब्द। २ इस प्रकार तेजी से भागना कि सर्र सर्र शब्द हो।
मुहा०—सर्राटा भरना=तेजी के साथ सर्र सर्र शब्द करते हुए इधर से उधर जाना।
सर्वजनीन–वि० दे० "सार्वजनिक"।
सर्वजित्–वि० [स०] सब को जीतनेवाला।
सर्वांगीण–वि० [स०] १ सब अगो से सबध रखनेवाला। २ सब अगो से युक्त। सपूर्ण।
सर्विस–सज्ञा स्त्री० [अ०] १ सेवा का भाव या काम। २ नौकरी। सेवा।
सर्वोत्तम–वि० [स०] सब से उत्तम। सबसे बढकर।
सर्वोपरि–वि० [स०] सबसे ऊपर या बढकर।
सलवात–सज्ञा स्त्री० [अ०] १ शुभ कामना। २ सलाम। ३ दुर्वचन। गाली-गलौज।
सलील–वि० [स०] १ लीला-युक्त। २ क्रीडाशील। खेलवाडी। ३ कुतूहल-प्रिय। कौतुकी। ४ किसी प्रकार की भाव-भगी से युक्त। ५ लीला या क्रीडा से युक्त।
सलेमशाही–सज्ञा पु० [सलेमशाहनाम] एक प्रकार का देशी जूता।
सल्लाह–सज्ञा स्त्री० दे० "सलाह"।
सवाया–वि० [हि० सवा] पूरे से एक चौथाई अधिक। सवागुना।
सवारा*–सँज्ञा पु० दे० "सवेरा"।
सव्रण–वि० [स०] १. जिसे व्रण हों। २. जिसे घाव लगे हों। घायल।
ससाना*–क्रि० अ० [?] १. घबराना। २ काँपना।
ससी*–सज्ञा पु० दे० "शशि"।
सस्मित–वि० [स० स+स्मित] मुस्कराता या हँसता हुआ।
क्रि० वि० मुस्कराकर। हँसकर।
सहँगा–वि० [हि० महँगा का अनु०] सस्ता।
सहदूल*–सज्ञा पु० दे० "शार्दूल"।
सहधर्म्मी–वि० [स०] समान धर्मवाला।
सज्ञा पु० [स्त्री० सहधर्म्मिणी] पति।
सहबाला–सज्ञा पु० दे० "शहबाला"।
सहरा–सज्ञा पु० [अ०] १ जगल। वन। २ मैदान। ३ वन-बिलाव।
सहव्रता–सज्ञा स्त्री० [स०] धर्मपत्नी। स्त्री।
सहस्रलोचन–सज्ञा पु० [स०] इद्र।
सहस्राब्दी–सज्ञा स्त्री० [स०] किसी सवत् या सन् के हजार हजार वर्षों का समूह।
साहस्री।
सहाना*–वि० [स्त्री० सहानी] दे० "शहाना"
सहानुगमन–सज्ञा पु० दे० "सहगमन"।
सहावल–सज्ञा पु० दे० "साहुल"।
सांकेतिक–वि० [स०] जो सकेत रूप में हो। इशारे का।
सांघातिक–वि० [स० सघात] इकट्ठा करनेवाला। वि० [स० सघात] १ सघात-सबधी। २ प्राणो को सकट में डालने या मार डालनेवाला।
सांत्वन–सज्ञा पु० दे० "सांत्वना"।
सांध*–सज्ञा पु० [स० सधान] वह जिस पर सधान किया जाय। लक्ष्य।
सांपिया–सज्ञा पु० [हि० साँप] साँप के रग से मिलता-जुलता एक प्रकार का रग।
वि० साँप के रग।
सांप्रदायिकता–सज्ञा स्त्री० [स०] १ साप्रदायिक होने का भाव। २ केवल अपने सप्रदाय की श्रेष्ठता और हितो का विशेष ध्यान रखना।
सांसर्गिक–वि० [स०] १ ससर्ग-सबधी। २ ससर्ग से उत्पन्न होनेवाला।

सांस्कृतिक–वि० [सं०] संस्कृति से संबंध रखनेवाला। संस्कृति-संबंधी।

साइनबोर्ड–संज्ञा पुं० [अं०] नाम और व्यवसाय आदि का सूचक तख्त। नामपट्ट।

साइन्स–संज्ञा स्त्री० [अं०] विज्ञान।

साउज*–संज्ञा पुं० दे० "सावज"।

साकल्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. सकल का भाव। २. समुदाय। समूह। ३. हवन की सामग्री।

साग्रह–क्रि० वि० [सं०] आग्रहपूर्वक। जोर देकर।

साटिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] साड़ी।

साढ़े–अव्य० [सं० सार्द्ध] एक अव्यय जो पूरे के साथ और आधे का सूचक होता है। जैसे साढ़े चार।

सादिर–वि० [अ०] निकलने या जारी होनेवाला।

साधार–वि० [सं० स + आधार] जिसका आधार हो। आधार-सहित।

साधिकार–क्रि० वि० [सं०] अधिकार पूर्वक। अधिकार सहित।

वि० जिसे अधिकार प्राप्त हो।

सानुज–क्रि० वि० [सं० स + अनुज] अनुज या छोटे भाई के साथ।

सान्निपातिक–वि० [सं०] सन्निपात-संबंधी।

सापेक्ष–वि० [सं०] [संज्ञा सापेक्षता] १. एक दूसरे की अपेक्षा रखनेवाले। २. जिसे किसी की अपेक्षा हो।

सापेक्षवाद–संज्ञा पुं० [सं०] वह सिद्धांत जिसमें दो वस्तुओं या बातों का अपेक्षक माना जाय।

साप्ताहिक–वि० [सं०] १. सप्ताह-संबंधी। २. प्रति सप्ताह होनेवाला।

साभार–वि० [सं० स + आभार] भार से युक्त। क्रि० वि० १. भार-सहित। भार-पूर्वक। २. आभार या कृतज्ञतापूर्वक।

सामूहिक–वि० [सं०] समूह से संबंध रखनेवाला। वैयक्तिक का उल्टा।

सामूहिकता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. 'सामूहिक' का भाव। २. साम्यवाद का वह सिद्धांत कि शिल्पों आदि पर व्यक्ति का नहीं बल्कि समूह या समाज का अधिकार हो।

साम्यवादी–संज्ञा पुं० [सं० साम्यवादिन्] वह जो साम्यवाद के सिद्धांत मानता हो।

सायास–क्रि० वि० [सं० स + आयास] परिश्रमपूर्वक। मेहनत से।

सारंग लोचन–वि० [सं०] [स्त्री० सारंग-लोचना] जिसके नेत्र मृग के समान हों।

सारखा–वि० दे० "सरीखा"।

सारथ्य–संज्ञा पुं० [सं०] सारथी का कार्य, पद या भाव।

सारवत्ता–संज्ञा स्त्री० [सं०] सार ग्रहण करने का भाव। सार-ग्राहिता।

सारस्य–संज्ञा पुं० [सं०] सरसता।

सारौं*–संज्ञा स्त्री० दे० "सारिका"।

सार्द्र–वि० [सं०] आर्द्र। गीला।

सार्वभौतिक–वि० [सं०] सब भूतों या तत्वों से संबंध रखनेवाला।

सालिग्राम–संज्ञा पुं० दे० "शालग्राम"।

सावक*–संज्ञा पुं० दे० "शावक"।

सावधानी–संज्ञा स्त्री० दे० "सावधानता"।

साशंक–वि० दे० "सशंक"।

साश्रु–क्रि० वि० [सं० स + अश्रु] आँखोंमें आँसू भरकर।

वि० जिसमें आँसू भरे हों।

सासन*–संज्ञा पुं० दे० "शासन"।

साहजिक–वि० [सं०] १. सहज में होनेवाला। स्वाभाविक।

साहस्री–संज्ञा स्त्री० [सं० साहस्रिक] किसी सन् या संवत् के हजार हजार वर्षों का समूह। सहस्राब्दी।

साहिनी*–संज्ञा स्त्री० दे० "साहनी"।

सिंचित–वि० [सं०] सींचा हुआ।

सिंहारहार*–संज्ञा पुं० दे० "हरसिंगार"।

सिअन–संज्ञा स्त्री० दे० "सीयन"।

सिकटा†–संज्ञा पुं० [देश०] [स्त्री० अल्पा० सिकटी] १. मिट्टी के बर्तन का छोटा टुकड़ा। २. कंकड़।

सिकत*–संज्ञा स्त्री० दे० "सिकता"।

सिकतिल–वि० [सं० सिकता] रेतीला।

सिट्ठी–सज्ञा स्त्री० दे० "सीठी"।
सितकर–सज्ञा पु० [स०] चद्रमा।
सिदोसी†–क्रि० वि० [स०] जल्दी। शीघ्र।
सिद्धाती–वि० [स० सिद्धात] १ शास्त्रों आदि के सिद्धात जाननेवाला। २ अपने सिद्धात पर दृढ रहनेवाला।
सिद्धासन–सज्ञा पु० [स०] १ योग का एक आसन। २ सिद्धपीठ।
सिनक–सज्ञा स्त्री० [हिं० सिनकना] नाक से निकला हुआ कफ या मल।
सिनेमा–सज्ञा पु० [अ०] परदे पर दिखलाया जानेवाला नाटकों आदि का चलता फिरता छाया-चित्र।
सिपारस†–सज्ञा स्त्री० [फा० सिफारिश] १ सिफारिश। २ खुशामद।
सिपास–सज्ञा स्त्री० [फा०] १ कृतज्ञता। २ प्रशसा।
सिप्र–सज्ञा पु० [स०] १ चद्रमा। २ पसीना।
सिफात–सज्ञा स्त्री० अ० 'सिफत' का बहु०।
सियासत–सज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० सियासनी, सियासी] १ देश की रक्षा और शासन। २ प्रबध। व्यवस्था। ३ राजनीति।
सियासी–वि० [अ०] राजनीतिक।
सिर-धरा–सज्ञा पु० [स्त्री० सिर धरी] दे० "सिर-धरू"।
सिर-धरू–सज्ञा पु० [हिं० सिर + धरना (पकडना)] सिर पर रहनेवाला। रक्षक। पृष्ठपोषक।
सिरनी–सज्ञा स्त्री० [फा० शीरीनी] मिठाई आदि जो वडो या गुरु आदि के आगे रखी जाय।
सिर-पच्ची–सज्ञा स्त्री० [हिं० सिर+पचाना] सिर खपाना। माथा-पच्ची।
सिर-मगजन–सज्ञा पु० स्त्री० दे० सिर पच्ची"।
सिलबची–सज्ञा स्त्री० [फा० सैलाबची] चिलमची।
सिलिक†–सज्ञा पु० दे० 'सिल्क'।
सिल्क–सज्ञा पु० [अ०] १ रेशम। २ रेशमी कपडा।
सिसुमार*–सज्ञा पु० दे० "शिशुमार'।
सिहद्दा–सज्ञा पु० [फा० सेह + हद] वह स्थान जहाँ तीन सीमाएँ मिलती हों।
सिहरन–सज्ञा स्त्री० [हिं० सिहरना] सिहरने की क्रिया या भाव। सिहरी।
सिहरा–सज्ञा पु० दे० "सेहरा"।
सिहरावन†–सज्ञा पु० दे० 'सिहरन"।
सींगदाना–सज्ञा पु० दे० "मूँगफली"।
सींच–सज्ञा स्त्री० [हिं० सींचना] सिंचाई।
सींढ–सज्ञा पु० [स० सिंहाणा] नाक से निकला हुआ मल या कफ।
सीतकर–सज्ञा पु० [स० शीतकर] चद्रमा।
सीनियर–वि० [अ०] १ बडा। वयस्क। २ पद या मर्यादा म ऊँचा। श्रेष्ठ।
सीपा–सज्ञा पु० [देश०] बडा जाडा।
सीयरा*–वि० दे० "सियरा"।
सीरीज–सज्ञा स्त्री० [अ०] एक ही तरह की बहुत सी चीजों का क्रमिक स्थापना। माला।
सीव*–सज्ञा स्त्री० दे० "सीमा"।
सुदरापा–सज्ञा पु० दे० "सुदरता"।
सुंधावट–सज्ञा स्त्री० [हिं० सोधा] सोधापन।
सुगर*†–वि० १ दे "सुघड"। २ दे० सुकठ'। ३ दे० "सुगल"।
सुघराई–सज्ञा स्त्री० दे० "सुघडई'।
सुचरन–सज्ञा स्त्री० [हिं० सुचाना + आव (प्रत्य०)] १ सुचाने की क्रिया या भाव। २ सुभाव। सूचना।
सुचाव–सज्ञा पु० [हिं० सुचाना + आव (प्रत्य०)] सुचाने की क्रिया या भाव। २ सुभाव। सूचना।
सुचिर–वि० [स०] १ चिरस्थायी। २ पुराना।
सुजन्मा–वि० [स० सुजन्मन्] उत्तम कुलका।
सुजल–सज्ञा पु० [स०] कमल।
सुज्ञ–वि० [स०] सुविज्ञ। विद्वान।
सुझाव–सज्ञा पु० [हिं० सुझाना आव (प्रत्य०)] १ सुझाने की क्रिया या भाव। २ वह बात जो सुझाई जाय। सुचाव।

सूचना।
सुड़कना–क्रि० अ० [अनु०] सुड़-सुड़ शब्द के साथ पीना या निगलना।
सुतधार*–संज्ञा पुं० दे० "सूत्रधार"।
सुती–वि० [सं० सुतिन] जिसे पुत्र हो। पुत्रवाला।
सुदौसो–क्रि० वि० [?] शीघ्र। जल्दी।
सुनदरी*–संज्ञा स्त्री० [सं० सुन्दरी] सुंदर स्त्री। सुंदरी।
सुपुत्र–संज्ञा पुं० [सं०] अच्छा और योग्य पुत्र।
सुमिष्ठ–वि० [सं०] बहुत मीठा।
सुरगज–संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र का हाथी। ऐरावत।
सुरधनु–संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रधनुष।
सुरपादप–संज्ञा पु० [सं०] कल्पवृक्ष।
सुरभिषक–संज्ञा पु० [सं०] अश्विनीकुमार।
सुरवा–संज्ञा पु० दे० "स्रुवा"।
सुरवैद्य–संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं के वैद्य अश्विनीकुमार।
सुरसिंधु–संज्ञा पु० [सं०] गंगा।
सुरापी–वि० [सं० सुरापिन्] शराब पीने-वाला। मद्यप।
सुरावट–संज्ञा स्त्री० [हिं० सुर] १. स्वरों का विन्यास या उतार-चढ़ाव। २. सुरीलापन।
सुरुवा†–संज्ञा पु० दे० "शोरवा"।
सुलगन–संज्ञा स्त्री० [हिं० सुलगना] सुलगने की क्रिया या भाव।
सुलाह*–संज्ञा स्त्री० दे० "सुलह"।
सुलिपि–संज्ञा स्त्री० [सं० सु + लिपि] १. उत्तम लिपि। २. स्पष्ट लिपि।
सुलूक–संज्ञा पु० दे० "सलूक"।
सुहल*–संज्ञा पुं० दे० "सुलेह"।
सूच्य–वि० [सं०] सूचित करने योग्य।
सूज†–संज्ञा स्त्री० १. दे० "सूजन"। २. दे० "सूई"।
सूट–संज्ञा पु० [अं०] पहनने के कपड़े, विशेष कोट पतलून आदि।
सूट-केस–संज्ञा पुं० [अं०] पहनने के कपड़े रखने का चिपटा बक्स।

सूतता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सूत का भाव। २. सूत या सारथी का काम।
सूतिग†–संज्ञा पुं० दे० "सूतक"।
सूत्रकर्म–संज्ञा पु० [सं०] १. बढ़ई या मेमार का काम। २. जुलाहे का काम।
सूदखोर–वि० [फ़ा०] [संज्ञा सूदखोरी] बहुत सूद या ब्याज लेनेवाला।
सृत–वि० [सं०] चला या खिसका हुआ।
सृति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पथ। रास्ता। २. गमन। चलना। ३. सरकना।
सेंट–संज्ञा स्त्री० [?] दूध की धार।
सेंट–संज्ञा पु० [अं०] १. खुशबू। सुगंध। २. पाश्चात्य ढंग से तैयार किया हुआ सुगंधित द्रव्य।
सेंटर–संज्ञा पु० [अं०] केंद्र।
सेंट्रल–वि० [अं०] केंद्रीय।
सेंधुआर–संज्ञा पु० देश०] एक प्रकार का मांसाहारी जंतु।
सेकंड–संज्ञा पु० [अं०] एक मिनट का साठवाँ भाग।
वि० दूसरा। द्वितीय।
सेकेंड–संज्ञा पु० वि० दे० "सेकंड"।
सेक्रेटरी–संज्ञा पु० [अं०] मंत्री।
सेढ़ा–संज्ञा पु० दे० "सीड़"।
सेती†–अव्य० दे० "से"।
सेतुक*–संज्ञा पुं० दे० "सौतुख"।
संज्ञा पु० [सं०] १. पुल। २. बाँध।
सेमा–संज्ञा पु० [हिं० सेम] एक प्रकार की बड़ी सेम।
सेमेटिक–संज्ञा पु० [सामदेश] मनुष्यों का वह आधुनिक वर्ग-विभाग जिसमें यहूदी अरब सीरियन और मिस्री आदि जातियाँ हैं।
सेरी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] तृप्ति। तुष्टि।
सेवग*–संज्ञा पु० दे० "सेवक"।
सेवदाना–संज्ञा पु० [अं० सोयाबीन] एक प्रकार की फलियों के दाने जो मटर की तरह होते हैं।
सैंथी†–संज्ञा स्त्री० [?] १. भाला। २. बरछी।
सैंहथी†–संज्ञा स्त्री० दे० "सैंथी"।

सैन्य-सज्जा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सेना को आवश्यक अस्त्र-शस्त्रों से सज्जित करना।
सैन्याध्यक्ष—संज्ञा पु० [सं०] सेनापति।
सोग*—संज्ञा पु० दे० "शोक"।
सोजनकारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] सुई से किया हुआ काम।
सोजनी—संज्ञा स्त्री० दे० "सुजनी"।
सोफा—संज्ञा पु० [अं०] एक प्रकार का लंबा गद्दीदार आसन। कोच।
सोभार—वि० [सं० स + हिं० उभार] जिसमें उभार हो। उभारदार।
क्रि० वि० उभार के साथ।
सोल्लास—क्रि० वि० [सं० स + उल्लास] उल्लासपूर्वक। आनंद और उत्साह से।
सोवरी†—संज्ञा स्त्री० दे० "सौरी"।
सोवियट, सोवियत—संज्ञा पु० [रूसी] १ रूस में सैनिकों या मजदूरों के प्रतिनिधियों की सभा। २ आधुनिक रूसी प्रजातंत्र जो इन सभाओं के प्रतिनिधियों से चलता है।
सोसाइटी, सोसायटी—संज्ञा स्त्री० [अं०] १ समाज। २ सभा। समिति।
सौंकारा, सौंकेरा—संज्ञा पु० [सं० सकाल] सवेरा। तड़का।
सौंकेरे—क्रि० वि० [हिं० सौंकारा] १ सवेरे। तड़के। २ जल्दी।
सौगत, सौगतिक—संज्ञा पु० [सं०] १ 'सुगत' का अनुयायी। बौद्ध। २ अनीश्वरवादी। नास्तिक।
सौगाती—वि० [हिं० सौगात] १ सौगात संबंधी। २ सौगात में देने योग्य। बढ़िया।
सौभिक्ष्य—संज्ञा पु० दे० "सुभिक्ष"।
सौरस्य—संज्ञा पु० [सं०] 'सुरस' का भाव। सुरसता।
सौवर्ण—वि० [सं०] सोने का।
संज्ञा पु० स्वर्ण। सोना।
स्काउट—संज्ञा पु० दे० "बालचर"।
स्कूल—संज्ञा पु० [अं०] [वि० स्कूली] १ विद्यालय। २ संप्रदाय या शाखा।
स्खलन—संज्ञा पु० [सं०] १ चीरना। फाड़ना। २ हत्या। ३ पतन। गिरना।
स्टांप—संज्ञा पुं० [अं०] १. वह सरकारी कागज जिस पर किसी तरह की लिखा-पढ़ी होती है। २. डाक या अदालत का टिकट। ३ मोहर। छाप।
स्टाक—संज्ञा पु० [अं०] १ बिक्री या बेचने का माल। २ गोदाम।
स्टीम—संज्ञा पु० [अं०] भाप। वाष्प।
स्टीमर—संज्ञा पु० [अं०] भाप से चलने-वाला जहाज।
स्टूल—संज्ञा पु० [अं०] तिपाई।
स्टेज—संज्ञा पु० [अं०] १. रंगमंच। २ रंग-भूमि। ३ मंच।
स्टेट—संज्ञा पु० [अं०] १ राज्य। २ देशी-राज्य। संज्ञा पु० [अं० एस्टेट] १ बड़ी जमींदारी। २ स्थावर और जंगम संपत्ति।
स्टेशन—संज्ञा पु० [अं०] १ रेलगाड़ी के ठहरने का स्थान। २ किसी विशिष्ट कार्य्य के लिए नियत स्थान।
स्तनन—संज्ञा पु० [सं०] १. बादल का गरजना। २ ध्वनि या शब्द करना। ३ आर्त्तनाद।
स्तनहार—संज्ञा पु० [सं०] गले में पहनने का एक प्रकार का हार।
स्तनित—संज्ञा पु० [सं०] १ बादल की गरज। २. बिजली की कड़क। ३ ताली बजाने का शब्द। वि० गरजता या शब्द करता हुआ।
स्तन्य—वि० [सं०] स्तन-संबंधी।
संज्ञा पु० दे० "दूध"।
स्तिमित—वि० [सं०] १ ठहरा हुआ। निश्चल। २ भीगा हुआ गीला।
स्तेन—संज्ञा पु० [सं०] १. चोर २ चोरी।
स्तैन्य—संज्ञा पु० [सं०] चोर का काम। चोरी।
स्थल-सेना—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्थल या जमीन पर लड़नेवाली फौज। पैदल सिपाही और घुड़सवार आदि।
स्थिरीकरण—संज्ञा पु० [सं०] स्थिर या दृढ़ करना।
स्पंदित—वि० [सं०] हिलता, काँपता या फड़-

कता हुआ।
स्पीकर–संज्ञा पुं० [अं०] १. वक्ता। व्याख्यानदाता। २. असेम्बली या काउन्सिल आदि का सभापति।
स्पीच–संज्ञा स्त्री० [अं०] व्याख्यान। भाषण
स्पीड–संज्ञा स्त्री० [अं०] गति। चाल।
स्पेशल–वि० [अं०] विशेष। खास।
संज्ञा स्त्री० किसी व्यक्ति या अफसर के लिए खास तौर पर चलनेवाली रेलगाड़ी।
स्प्रिंग–संज्ञा स्त्री० [अं०] कमानी।
स्प्रिट–संज्ञा स्त्री० [अं०] १. आत्मा। २. मुख्य सिद्धांत या अभिप्राय। ३. एक प्रसिद्ध तरल पदार्थ जो जलाने और दवा के काम में आता है।
स्फुटन–संज्ञा पुं० [सं०] १. सामने आना। २. खिलना। फूलना। ३. फूटना।
स्मिति–संज्ञा स्त्री० दे० "स्मित"।
स्यावाज*–संज्ञा पुं० दे० "सावज"।
स्रस्त–वि० [सं०] १. अपने स्थान से गिरा हुआ। च्युत। २. शिथिल।
स्राध†–संज्ञा पुं० दे० "श्राद्ध"।
स्वकीय–वि० [सं०] अपना। निज का।
स्वजनि, स्वजनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अपने कुटुंब की या आपसदारी की स्त्री। आत्मीया। २. सखी। सहेली।
स्वप्निल–वि० [सं०] १. सोया हुआ। २. स्वप्न देखता हुआ। ३. स्वप्न-संबंधी। स्वप्न का।
स्वयंदेव–संज्ञा पु० [सं०] प्रत्यक्ष देवता।
स्वयंपाक–संज्ञा पु० [सं०] [कर्त्ता स्वयंपाकी] अपना भोजन आप पकाना। अपने हाथ से बनाकर खाना।
स्वयंभूत–वि० दे० स्वयंभू"।
स्वरसाधना–संगीत के सातों स्वरों का साधन या अभ्यास करना।
स्वरपात–संज्ञा पु० [सं०] किसी शब्द का उच्चारण करने में उसके किसी वर्ण पर कुछ ठहरना या रुकना।
स्वर-लिपि–संज्ञा स्त्री० [सं०] संगीत में किसी गीत या तर्ज आदि में लगानेवाले स्वरों का लेख।
स्वर्गस्थ–वि० दे० "स्वर्गवासी"।
स्वर्गिक–वि० दे० "स्वर्गीय"।
स्वर्णपुरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] लंका।
स्वर्णयुग–संज्ञा पुं० [सं०] सबसे अच्छा और श्रेष्ठ युग का समय।
स्वर्णिम–वि० [सं० स्वर्ण] सोने के रंग का। सुनहला।
स्वस्थता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. स्वस्थ या तंदुरुस्त होने का भाव। तंदुरुस्ती। २. निर्दोष और ठीक अवस्था में होने का भाव। ३. दे० "स्वास्थ्य"।
स्वात्म–वि० [सं० स्व+आत्म] अपना।
स्वाधिकार–संज्ञा पु० [सं०] १. अपना अधिकार। २. स्वाधीनता। स्वतंत्रता।
स्वाप–संज्ञा पु० [सं०] १. निद्रा। नींद। २. अज्ञान।
स्वाभिमान–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० स्वाभिमानी] अपनी प्रतिष्ठा या गौरव का अभिमान।
स्वाम्य–संज्ञा पुं० दे० "स्वामित्व"।
स्वावलंब–संज्ञा पु० दे० "स्वावलंबन"।
स्वावलंबन–संज्ञा पु० [सं०] अपने ही भरोसे पर रहना। अपने बल पर काम करना।
स्वावलंबी–वि० [सं० स्वावलम्बिन्] अपने ही अवलंब या सहारे पर रहनेवाला।
स्वाश्रय–संज्ञा पु० [सं०] वह जिसे केवल अपना ही सहारा हो; दूसरों का सहारा न हो।
स्वाश्रित–वि० [सं०] केवल अपने सहारे पर रहनेवाला।
स्वीयत्व–संज्ञा पु० [सं०] १. अपनापन। निजत्व। २. आपसदारी। आत्मीयता।
स्वैराचार–संज्ञा पुं० दे० "स्वेच्छाचार"।
हँवाना†–क्रि० अ० दे० "रँभाना"।
हक़-तलफ़ी–संज्ञा स्त्री० किसी का हक मारना। अन्याय।
हक-दक–वि० [अनु०] चकित। भौचक्का।
हकबक–वि० दे० "हक्का-बक्का"।
हक़ीक़ी–वि० [अ०] १. असली। २. सगा।

कता हुआ।
स्पीकर–संज्ञा पुं० [अं०] १. वक्ता। व्याख्यानदाता। २. असेम्बली या काउन्सिल आदि का सभापति।
स्पीच–संज्ञा स्त्री० [अं०] व्याख्यान। भाषण
स्पीड–संज्ञा स्त्री० [अं०] गति। चाल।
स्पेशल–वि० [अं०] विशेष। खास।
संज्ञा स्त्री० किसी व्यक्ति या अफसर के लिए खास तौर पर चलनेवाली रेलगाड़ी।
स्प्रिंग–संज्ञा स्त्री० [अं०] कमानी।
स्प्रिट–संज्ञा स्त्री० [अं०] १. आत्मा। २. मुख्य सिद्धांत या अभिप्राय। ३. एक प्रसिद्ध तरल पदार्थ जो जलाने और दवा के काम में आता है।
स्फुटन–संज्ञा पुं० [सं०] १. सामने आना। २. खिलना। फूलना। ३. फूटना।
स्मिति–संज्ञा स्त्री० दे० "स्मित"।
स्यावज*–संज्ञा पुं० दे० "सावज"।
स्रस्त–वि० [सं०] १. अपने स्थान से गिरा हुआ। च्युत। २, शिथिल।
स्राध†–संज्ञा पुं० दे० "श्राद्ध"।
स्वकीय–वि० [सं०] अपना। निज का।
स्वजनि, स्वजनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अपने कुटुंब की या आपसदारी की स्त्री। आत्मीया। २. सखी। सहेली।
स्वप्निल–वि० [सं०] १. सोया हुआ। २. स्वप्न देखता हुआ। ३. स्वप्न-संबंधी। स्वप्न का।
स्वयंदेव–संज्ञा पुं० [सं०] प्रत्यक्ष देवता।
स्वयंपाक–संज्ञा पुं० [सं०] [कर्ता स्वयपाकी] अपना भोजन आप पकाना। अपने हाथ से बनाकर खाना।
स्वयंभूत–वि० दे० स्वयंभू"।
स्वरसाधना–संगीत के सातों स्वरों का साधन या अभ्यास करना।
स्वरपात–संज्ञा पुं० [सं०] किसी शब्द का उच्चारण करने में उसके किसी वर्ण पर कुछ ठहरना या रुकना।
स्वर-लिपि–संज्ञा स्त्री० [सं०] संगीत में किसी गीत या तान आदि में लगानेवाले स्वरों का लेख।
स्वर्गस्थ–वि० दे० "स्वर्गवासी"।
स्वर्गिक–वि० दे० "स्वर्गीय"।
स्वर्णपुरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] लंका।
स्वर्णयुग–संज्ञा पुं० [सं०] सबसे अच्छा और श्रेष्ठ युग का समय।
स्वर्णिम–वि० [सं० स्वर्ण] सोने के रंग का। सुनहला।
स्वस्थता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. स्वस्थ या तंदुरुस्त होने का भाव। तंदुरुस्ती। २. निर्दोष और ठीक अवस्था में होने का भाव। ३. दे० "स्वास्थ्य"।
स्वात्म–वि० [सं० स्व + आत्म] अपना।
स्वाधिकार–संज्ञा पुं० [सं०] १. अपना अधिकार। २. स्वाधीनता। स्वतंत्रता।
स्वाप–संज्ञा पुं० [सं०] १. निद्रा। नींद। २. अज्ञान।
स्वाभिमान–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० स्वाभिमानी] अपनी प्रतिष्ठा या गौरव का अभिमान।
स्वाम्य–संज्ञा पुं० दे० "स्वामित्व"।
स्वावलंब–संज्ञा पुं० दे० "स्वावलंबन"।
स्वावलंबन–संज्ञा पुं० [सं०] अपने ही भरोसे पर रहना। अपने बल पर काम करना।
स्वावलंबी–वि० [सं० स्वावलम्बिन्] अपने ही अवलंब या सहारे पर रहनेवाला।
स्वाश्रय–संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसे केवल अपना ही सहारा हो; दूसरों का सहारा न हो।
स्वाश्रित–वि० [सं०] केवल अपने सहारे पर रहनेवाला।
स्वकीयत्व–संज्ञा पुं० [सं०] १. अपनापन। निजत्व। २. आपसदारी। आत्मीयता।
स्वैराचार–संज्ञा पुं० दे० "स्वेच्छाचार"।
हँबाना†–क्रि० अ० दे० "रँभाना"।
हक़-तलफ़ी–संज्ञा स्त्री० किसी का हक़ मारना। अन्याय।
हक-दक–वि० [अनु०] चकित। भौचक्का।
हकबक–वि० दे० "हक्का-बक्का"।
हक़ीक़ी–वि० [अ०] १. असली। २. सगा।

सैन्य-सज्जा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सेना को आवश्यक अस्त्र-शस्त्रों से सज्जित करना।
सैन्याध्यक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] सेनापति।
सोष*—संज्ञा पुं० दे० "शोष"।
सोजनकारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] सूई से किया हुआ काम।
सोजनी—संज्ञा स्त्री० दे० "सुजनी"।
सोफा—संज्ञा पुं० [अं०] एक प्रकार का लंबा गद्दीदार आसन। कोच।
सोभार—वि० [सं० स + हिं० उभार] जिसमें उभार हो। उभारदार।
क्रि० वि० उभार के साथ।
सोल्लास—क्रि० वि० [सं० स + उल्लास] उल्लासपूर्वक। आनंद और उत्साह से।
सोवरी†—संज्ञा स्त्री० दे० "सौरी"।
सोवियट, सोवियत—संज्ञा पुं० [रूसी] १ रूस में सैनिकों या मजदूरों के प्रतिनिधियों की सभा। २ आधुनिक रूसी प्रजातंत्र जो इन सभाओं के प्रतिनिधियों से चलता है।
सोसाइटी, सोसायटी—संज्ञा स्त्री० [अं०] १ समाज। २ सभा। समिति।
सौंकरा, सौंकेरा—संज्ञा पुं० [सं० सकाल] सबेरा। तड़का।
सौंकेरे—क्रि० वि० [हिं० सौंकारा] १ सबेरे। तड़के। २ जल्दी।
सौगत, सौगतिक—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुगत का अनुयायी। बौद्ध। २ अनीश्वरवादी। नास्तिक।
सौगाती—वि० [हिं० सौगात] १ सौगात संबंधी। २ सौगात में देने योग्य। बढ़िया।
सौभिक्ष्य—संज्ञा पुं० दे० "सुभिक्ष"।
सौरस्य—संज्ञा पुं० [सं०] सुरस का भाव। सुरसता।
सौवर्ण—वि० [सं०] सोने का।
संज्ञा पुं० स्वर्ण। सोना।
स्काउट—संज्ञा पुं० दे० "बालचर"।
स्कूल—संज्ञा पुं० [अं०] [वि० स्कूली] १ विद्यालय। २ संप्रदाय या शाखा।
स्खलन—संज्ञा पुं० [सं०] १ चीरना। फाड़ना। २ हत्या। ३ पतन। गिरना।
स्टांप—संज्ञा पुं० [अं०] १ वह सरकारी कागज जिस पर किसी तरह की लिखा-पढ़ी होती है। २ डाक या अदालत का टिकट। ३ मोहर। छाप।
स्टाक—संज्ञा पुं० [अं०] १ बिक्री या वेचन का माल। २ गोदाम।
स्टीम—संज्ञा पुं० [अं०] भाप। वाष्प।
स्टीमर—संज्ञा पुं० [अं०] भाप से चलनेवाला जहाज।
स्टूल—संज्ञा पुं० [अं०] तिपाई।
स्टेज—संज्ञा पुं० [अं०] १ रंगमंच। २ रंग-भूमि। ३ मंच।
स्टेट—संज्ञा पुं० [अं०] १ राज्य। २ देशी-राज्य। संज्ञा पुं० [अं० एस्टेट] १ बड़ी जमींदारी। २ स्थावर और जंगम संपत्ति।
स्टेशन—संज्ञा पुं० [अं०] १ रेलगाड़ी के ठहरने का स्थान। २ किसी विशिष्ट कार्य के लिए नियत स्थान।
स्तनन—संज्ञा पुं० [सं०] १ बादल का गरजना। २ ध्वनि या शब्द करना। ३ आर्तनाद।
स्तनहार—संज्ञा पुं० [सं०] गले में पहनने का एक प्रकार का हार।
स्तनित—संज्ञा पुं० [सं०] १ बादल की गरज। २ बिजली की कड़क। ३ ताली बजाने का शब्द। वि० गरजता या शब्द करता हुआ।
स्तन्य—वि० [सं०] स्तन-संबंधी।
संज्ञा पुं० दे० "दूध"।
स्तिमित—वि० [सं०] १ ठहरा हुआ। निश्चल २ भीगा हुआ। गीला।
स्तेन—संज्ञा पुं० [सं०] १ चोर २ चोरी।
स्तैन्य—संज्ञा पुं० [सं०] चोर का काम। चोरी।
स्थल-सेना—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्थल या जमीन पर लड़नेवाली फौज। पैदल सिपाही और घुड़सवार आदि।
स्थिरीकरण—संज्ञा पुं० [सं०] स्थिर या दृढ़ करना।
स्पंदित—वि० [सं०] हिलता, काँपता या फड़-

कता हुआ।

स्पीकर–संज्ञा पुं० [अं०] १. वक्ता। व्याख्यानदाता। २. असेम्बली या काउन्सिल आदि का सभापति।

स्पीच–संज्ञा स्त्री० [अं०] व्याख्यान। भाषण

स्पीड–संज्ञा स्त्री० [अं०] गति। चाल।

स्पेशल–वि० [अं०] विशेष। खास। संज्ञा स्त्री० किसी व्यक्ति या अफसर के लिए खास तौर पर चलनेवाली रेलगाड़ी।

स्प्रिंग–संज्ञा स्त्री० [अं०] कमानी।

स्प्रिट–संज्ञा स्त्री० [अं०] १. आत्मा। २. मुख्य सिद्धांत या अभिप्राय। ३. एक प्रसिद्ध तरल पदार्थ जो जलाने और दवा के काम में आता है।

स्फुटन–संज्ञा पुं० [सं०] १. सामने आना। २. खिलना। फूलना। ३. फूटना।

स्मिति–संज्ञा स्त्री० दे० "स्मित"।

स्यावज*–संज्ञा पुं० दे० "सावज"।

स्रस्त–वि० [सं०] १. अपने स्थान से गिरा हुआ। च्युत। २. शिथिल।

स्राध†–संज्ञा पुं० दे० "श्राद्ध"।

स्वकीय–वि० [सं०] अपना। निज का।

स्वजनि, स्वजनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अपने कुटुंब की या आपसदारी की स्त्री। आत्मीया। २. सखी। सहेली।

स्वप्निल–वि० [सं०] १. सोया हुआ। २. स्वप्न देखता हुआ। ३. स्वप्न-संबंधी। स्वप्न का।

स्वयंदेव–संज्ञा पुं० [सं०] प्रत्यक्ष देवता।

स्वयंपाक–संज्ञा पुं० [सं०] [कर्ता स्वयंपाकी] अपना भोजन आप पकाना। अपने हाथ से बनाकर खाना।

स्वयंभूत–वि० दे० स्वयंभू"।

स्वरसाधना–संगीत के सातों स्वरों का साधन या अभ्यास करना।

स्वरपात–संज्ञा पुं० [सं०] किसी शब्द का उच्चारण करने में उसके किसी वर्ण पर कुछ ठहरना या रुकना।

स्वर-लिपि–संज्ञा स्त्री० [सं०] संगीत में किसी गीत या तान आदि में लगानेवाले स्वरों का लेख।

स्वर्गस्थ–वि० दे० "स्वर्गवासी"।

स्वर्गिक–वि० दे० "स्वर्गीय"।

स्वर्णपुरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] लंका।

स्वर्णयुग–संज्ञा पुं० [सं०] सबसे अच्छा और श्रेष्ठ युग का समय।

स्वर्णिम–वि० [सं० स्वर्ण] सोने के रंग का। सुनहला।

स्वस्थता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. स्वस्थ या तंदुरुस्त होने का भाव। तंदुरुस्ती। २. निर्दोष और ठीक अवस्था में होने का भाव। ३. दे० "स्वास्थ्य"।

स्वात्म–वि० [सं० स्व + आत्म] अपना।

स्वाधिकार–संज्ञा पुं० [सं०] १. अपना अधिकार। २. स्वाधीनता। स्वतंत्रता।

स्वाप–संज्ञा पुं० [सं०] १. निद्रा। नींद। २. अज्ञान।

स्वाभिमान–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० स्वाभिमानी] अपनी प्रतिष्ठा या गौरव का अभिमान।

स्वाम्य–संज्ञा पुं० दे० "स्वामित्व"।

स्वावलंब–संज्ञा पुं० दे० "स्वावलंबन"।

स्वावलंबन–संज्ञा पुं० [सं०] अपने ही भरोसे पर रहना। अपने बल पर काम करना।

स्वावलंबी–वि० [सं० स्वावलम्बिन्] अपने ही अवलंब या सहारे पर रहनेवाला।

स्वाश्रय–संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसे केवल अपना ही सहारा हो; दूसरों का सहारा न हो।

स्वाश्रित–वि० [सं०] केवल अपने सहारे पर रहनेवाला।

स्वीयत्व–संज्ञा पुं० [सं०] १. अपनापन। निजत्व। २. आपसदारी। आत्मीयता।

स्वैराचार–संज्ञा पुं० दे० "स्वेच्छाचार"।

हँबाना†–क्रि० अ० दे० "रँभाना"।

हक-तलफ़ी–संज्ञा स्त्री० किसी का हक मारना। अन्याय।

हक-दक–वि० [अनु०] चकित। भौचक्का।

हकबक–वि० दे० "हक्का-बक्का"।

हक़ीक़ी–वि० [अ०] १. असली। २. सगा।

हकीयत—संज्ञा स्त्री० [अ०] हकदार या अधिकारी होने का भाव। अधिकार।
हकीर—वि० [अ०] तुच्छ। हीन।
हजारहा—वि० [फा०] १ हजारों। २ बहुत से।
हजूम—संज्ञा पु० [अ० हुजूम] जन-समूह। भीड।
हड़ताल—संज्ञा स्त्री० दे० "हड़ताल"।
हठाहठ*—क्रि० वि० दे० "हठात"।
हड़ीला—वि० [हिं० हाड] १ जिसमे हड्डियाँ हो। २ दुबला-पतला।
हतचेत—वि० दे० "हतज्ञान"।
हतज्ञान—वि० [स०] बेहोश। बेसुध।
हतप्रभ—वि० [स०] जिसकी प्रभा या श्री नष्ट हो गई हो।
हतश्री—वि० [स०] १ जिसके चेहरे पर कांति न रह गई हो। २ मुरझाया हुआ। उदास।
हथछुट—वि० [हिं० हाथ + छोड़ना] जरा सी बात पर मार बैठनेवाला।
हथबासना†—क्रि० स० [हिं० हाथ] १ हाथ म लेना। पकडना। २ काम म लाना। प्रयोग करना।
हथा†—संज्ञा पु० [हिं० हाथ] हाथ का छापा जो शुभ अवसरो पर दीवारो पर लगाया जाता है।
हथ्याना*—क्रि० स० दे० "हथियाना"।
हदका—संज्ञा पु० [अनु०] धक्का। आघात।
हबीब—संज्ञा पु० [अ०] १ मित्र। २ प्रिय।
हम-उम्र—वि० [अ० + फा०] एक ही उम्र के। सम-वयस्क।
हमजिंस—वि० [फा० + अ०] एक ही जाति या प्रकार के।
हमवजन—वि० [फा० हम + अ० वजन] १ जो वजन या तौल म किसी मुकाबिल की चीज के बराबर हो। २ (चित्र या मूर्ति) जिसके सब अंगो म समानता हो।
हमवतन—वि० [फा० + अ०] एक ही देश का रहनेवाला। स्वदेशीय।
हयशाला—संज्ञा स्त्री० [स०] अस्तबल। घुड़साल।
हरउद†—संज्ञा पु० [?] शिशुओं को सुलाने के गीत। लोरी।
हरताल—संज्ञा पु० [हिं० हरताल] एक तरह का पीला रंग।
वि० हरताल के रंग का।
हरफा—संज्ञा पु० [देश०] १ सिंघोरा। २ डिब्बा।
हरयाल*—संज्ञा स्त्री० दे० "हरियाली"।
हरसा—संज्ञा पु० दे० "हरिस"।
हरांस—संज्ञा स्त्री० [अ० हिरास] १ भय। डर। २ दुख। चिंता। ३ थकावट। ४ हरारत।
हरामकार—वि० [अ० + फा०] [संज्ञा हरामकारी] व्यभिचारी।
हरिताभ—वि० [स०] जिसमें हरे रंग की आभा हो। हरापन लिए हुए।
हरिसौरभ—संज्ञा पु० [स०] कस्तूरी। मृग-मद।
हरीकेन—संज्ञा स्त्री० [अ०] एक प्रकार की लालटेन।
हरीतिमा—संज्ञा स्त्री० [स०] हरे भरे पेड़ो का विस्तार। हरियाली।
हरीफ—संज्ञा पु० [अ०] १ समान व्यवसाय करनेवाला। हमपेशा। २ प्रतिद्वंद्वी। ३ शत्रु। ४ धूर्त। चालाक।
हरू*—वि० दे० "हलका"।
हरेक—वि० दे० "हरएक"।
हरेरी*—संज्ञा स्त्री० दे० "हरियाली"।
हर्म्य—संज्ञा पु० [स०] सुंदर प्रासाद। महल।
हलकन—संज्ञा स्त्री० [हिं० हलकना] हलकने की क्रिया या भाव। हिलना।
हल-जुता, हल-जोता—संज्ञा पु० [हिं० हल जोतना] हल जोतनेवाला। किसान। (उपेक्षा)
हलबलाना†—क्रि० अ० स० दे० "हड़बड़ाना"।
हली—संज्ञा पु० [स० हलिन्] १ बलराम २ किसान।
हलुआ—संज्ञा पु० "हलवा"।
हवाई जहाज—संज्ञा पु० [अ०] हवा मे उड़नेवाली सवारी। वायुयान।
हवागाड़ी—संज्ञा स्त्री० दे० "मोटर"।

हवाबाज–संज्ञा पुं० [अ० हवा फ़ा० बाज] वह जो हवाई जहाज चलाता या उड़ाता हो। उड़ाका।
हवाबाजी–संज्ञा स्त्री० [अ० हवा + फ़ा० बाजी] हवाई जहाज चलाने का काम।
हविस–संज्ञा स्त्री० दे० "हवस"।
हसील†–वि० [अ० असील] सीधा। सादा।
हस्तक–संज्ञा पुं० [सं०] १. हाथ। २. हाथ से बजाई जानेवाली ताली। ३. करताल। ४. नृत्य की मुद्रा।
हस्तायुर्वेद–संज्ञा पुं० [सं०] हाथियों के रोगों की चिकित्सा का शास्त्र।
हाँका–संज्ञा पुं० [हिं० हाँक] १. पुकार। टेर। हाँक। २. ललकार। ३. गरज। ४. दे० "हँकवा"।
हाजिर-बाश–वि० [अ० + फा०] [संज्ञा हाजिरबाशी] सदा हाजिर रहनेवाला।
हाथीपाँव–संज्ञा पुं० दे० "फीलपा"।
हाफ़िज़ा–संज्ञा पुं० [अ०] स्मरण-शक्ति।
हायन–संज्ञा पुं० [सं०] वर्ष। साल।
हारित–संज्ञा पुं० [सं०] १.एक प्रकार का वर्णवृत्त।
वि० हारा हुआ। २. खोया हुआ। ३. दे० "हारा"।
हारौल–संज्ञा पु० दे० "हरावल"।
हाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] मद्य। शराब।
हासक–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० हासिका] हँसने-हँसानेवाला। हँसोड़।
हास्यक–संज्ञा पुं० [सं० हास्य + क (प्रत्य०)] हँसी की बात या किस्सा। चुटकुला।
हाहाहूत*–संज्ञा पुं० दे० "हाहाकार"।
हिंगुल–संज्ञा पुं० [सं०] ईंगुर। सिंगरफ।
हिंडोल–संज्ञा पुं० [सं०] हिंडोला। २. एक राग।
हिचकिचाहट–संज्ञा स्त्री० दे० "हिचक"।
हिचर-मिचर–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. सोच-विचार। २. आना-कानी। टाल-मटोल।
हितकारिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] 'हितकारक' होने का भाव।
हिन्दु–वि० दे० "हिंदी"।

हिमानी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. तुषार। पाला। २. बरफ। ३. बरफ की वे बड़ी चट्टानें या नदियाँ जो ऊँचे पहाड़ों पर होती हैं। ग्लेशियर।
हिरण्मय–वि० [सं०] सोने का। सुनहला।
हिरनौटा–संज्ञा पुं० [हिं० हिरन] हिरन का बच्चा।
हिरास–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. चिंता। दुःख। २. भय।
वि० निराश।
हिलकना–क्रि० अ० [सं० हिक्का] १. हिचकी लेना। २. हिसकना। ३. दे० "हिलगना"।
हिलाल–संज्ञा पुं० [अ०] दूज का चंद्रमा।
हींछना‡–क्रि० अ० [सं० इच्छा] उत्साह करना। चाहना।
हींछा‡–संज्ञा स्त्री० [सं० इच्छा] चाह। ख्वाहिश।
हीनकला–वि० [सं०] जिसमें कला न हो। कला-रहित।
हीनयोनि–वि० [सं०] नीच कुल या जाति का।
हीसका, हीसा†–संज्ञा स्त्री० [सं० हिंसा] १. ईर्ष्या। डाह। २. प्रतियोगिता। होड़।
हुंडावन–संज्ञा स्त्री० [हिं० हुंडी] १. हुंडी की दर। २. हुंडी की दस्तूरी।
हुक–संज्ञा पु० [अं०] १. टेढ़ी कील। २. २. अँकुसी।
संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का नस का दर्द जो प्रायः पीठ में होता है।
हुक़ना–संज्ञा पु० [अ० हुक्न.] दस्त लगने के लिए गुदा में दी जाने वाली पिचकारी। वस्ति-कर्म।
हुचकी†–संज्ञा स्त्री० दे० "हिचकी"।
हुड़कना–संज्ञा स्त्री० [अनु०] हुड़कने की क्रिया या भाव।
हुड़कना–क्रि० अ० [अनु०] [स० हुड़काना] १. वियोग के कारण बहुत दुःखी होना। २. भयभीत और चिंतित होना। ३. तरसना।
हुड्ड–वि० [देश०] १. जंगली। गँवार।